Böhtlingk, Otto von

Sanskrit-Wörterbuch

Bd.: 6

St. Petersburg 1871

39. Lieferung.

SANSKRIT-WÖRTERBUCH

HERAUSGEGEBEN

VON DER

KAISERLICHEN AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN,

BEARBEITET

VON

OTTO BÖHTLINGK UND RUDOLPH ROTH.

SECHSTER THEIL.

Bogen 1 — 10.

प — पुत्र.

ST. PETERSBURG.
BUCHDRUCKEREI DER KAISERLICHEN AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN.
(Wass.-Ostr. 9. L. No. 12.)
1868.

Zu beziehen durch Eggers & Comp. in St. Petersburg und durch Leopold Voss in Leipzig.

Preis dieser Lieferung: 90 Cop. Silb. = 1 Thlr.

SANSKRIT-WÖRTERBUCH

HERAUSGEGEBEN

VON DER

KAISERLICHEN AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN,

BEARBEITET

VON

OTTO BÖHTLINGK UND RUDOLPH ROTH.

SECHSTER THEIL.

(1868 — 1871)

य — व्.

6

YA-VLE

ST. PETERSBURG.

Buchdruckerei der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.

(Wass.-Ostr. 9. L. No. 12.)

1871.

Zu beziehen durch Eggers & Comp. in St. Petersburg und durch Leopold Voss in Leipzig.

Preis des sechsten Theils: 8 Rbl. 45 Cop. Silb. = 9 Thlr. 12 Ngr.

Gedruckt auf Verfügung der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.
Den 8. December 1871.

K. Vesselofsky, beständiger Secretair.

य

1. य pron. relat. nom. m. यम्, f. या, nom. acc. n. यद्; die übrigen Casus regelmässig nach der pronom. Declination, gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. 56. Am Anfange eines comp. यद्, z. B. यत्कण्ठे, यन्माया Spr. 2277. यच्छत्त्रे Kathâs. 18,71. यत्सदृशी 54,166. यद्वीर्य, यत्पराक्रम adjj. MBh. 1,3691.8302. यत्सेन, यच्छील, यत्स्वभाव, यद्बल adjj. 5,2724. यदार्षेयो यजमानः Ind. St. 10,90. यन्नामन् Hariv. 9970. Einfluss auf den Ton des verbi finiti VS. Prât. 6,14. P. 8,1,66. 1) *wer, welcher:* य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः। तेषां सं हन्मो अक्षाणि ṚV. 7,55,6. 2,12,9. 7,6,6. 49,3. 4. 8,3,23. AV. 6,84,1. 12,1,5. मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन so v. a. *pro robore vestro* ṚV. 1,37,12. श्रूयतां येन दोषेण मृत्युर्विप्रान् जिघांसति M. 5,3. R. 1,8,5. आचक्ष्व यद्धृतं द्रव्यमवशिष्टं च यद्वसु MBh. 3,2276. ज्ञायतामस्य यद्दुःखम् Brâhmaṇ. 1,10. एक एव सुहृद्धर्मो निधने ऽप्यनुयाति यः M. 8,17. ये — सर्वे ते 2,86. सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता Spr. 5225. M. 2,167. 234. यस्ते युद्धमयं दर्पं कामं च व्यपनाशयेत्। सो ऽहं जातः MBh. 5,7090. यः — असौ M. 4,170. Spr. 2438. H. 344. Sâh. D. 216,2. यद् — अस्य Spr. 5417. यस्य — एतम् MBh. 3,15700. यद् — एतद् R. 1,60,5. Spr. 2337. यः — स एषः MBh. 3,15707. यम् — अयं सः 2430. fg. यद् — इदं तद् Çâk. 186. यद् — तदिदम् 27. यः — तादृशः Spr. 4908. 4186. यद्ब्रवीमि तथा कुरु MBh. 1,5965. एष एव — यः Taitt. Up. 2,3. एते — ये M. 9,257. इदं तद् — यद् Çâk. 67,23. ईदृग्विज्ञानम् — येन Kathâs. 96,31. mit Fehlen des erwarteten demonstr.: सूर्येण ह्यभिनिर्मुक्तः शयानो ऽभ्युदितश्च यः। प्रायश्चित्तमकुर्वाणो युक्तः स्यान्महतैनसा॥ M. 2,221. 3,191. 4,158. 8,313. 10,8. MBh. 3,2656. 2778. 5,7079. R. 1,55,17. Spr. 1696. 2416. 2692. 2975. 3699. 4617. अन्धः शत्रुकुलं गच्छेद्यः साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 94. 9,91. öfters fehlt auch das erwartete relat.: अन्धकं कुब्जकं चैव कुष्ठाङ्गं व्याधिपीडितम्। आपद्गतं च भर्तारं न त्यजेत्सा महासती॥ Spr. 3494. 4071. 4335. 4353. MBh. 11,40. Bhâg. P. 1,5,38. Zwei und mehr Rell. in demselben Satze: यस्मिन्नहनि यदहः प्रदिश्यते Çâṅkh. Çr. 14,1,2. यः करोति वृतो यस्य स तस्यर्त्विगिहोच्यते M. 2,143. 149. 174. 3,22. 193. यो यज्जयति तस्य तत् 7,96. 8,158. यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् Spr. 683. 2392. 2442. यस्य यावांश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती 2444. 2541. 2559. येन यावान्यथा धर्मो धर्मो वेह समीहितः। स एव तत्फलं भुङ्क्ते तथा तावदमुत्र वै॥ 2503. यो ऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् 2532. यो यथा निक्षिपेद्धस्ते यमर्थं यस्य मानवः। स तथैव ग्रहीतव्यः M. 8,180. Ein oder mehrere Subjecte durch das Rel. zu einem Satze erweitert und dadurch hervorgehoben: यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्मबन्धविति *wie weisst du Etwas?* Ait. Br. 7,27. यो रामस्तमचिन्तिपत् Weber, Râmat. Up. 298. तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम् M. 12,99. क्षत्रियस्य तु धर्मो ऽयं यद्युद्धम् MBh. 5,7300. रेतःशोणितयोरियं परिणतिर्यद्वर्ष्म Spr. 2641. यन्मरणं सो ऽस्य विश्वासः 2646. Kathâs. 17,46. मा भूत्स कालो यत्कष्टम् R. 2,85,9. यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्। एते Spr. 4759. Bhag. 6,21. पृष्ठमांसादनं तद्यत्परोक्षे दोषकीर्तनम् H. 268. 149. आत्मपरित्यागेण यदाश्रितानां रक्षणं तन्नीतिविदां न संमतम् Hit. 15,12. fg. 30,17. fg. 31,8. neutr. sg. auch in Verbindung mit Wörtern andern Geschlechts und anderer Zahl: परोक्षमिवैष ब्रह्मणो रूपमुपनिगच्छति यत्क्षत्रियः Ait. Br. 7,31. क्षत्रं वा एतद्वनस्पतीनां यन्न्यग्रोधः ebend. यज्ञ उ ह वा एष प्रत्यक्षं यद्ब्रह्मा 26. प्रजापतेर्वा एषा होत्रा यद्वावस्तोत्रीया 6,2. Çat. Br. 1,2,3,5. 8,1,11. 3,3,4,25. असिधाराव्रतमिदं मन्ये यदरिणा सह संवासः Pańkat. 196,15. Spr. 2183. Bhâg. P. 6,1,1. प्रकाशमेतत्तास्कर्यं यद्देवनसमाह्वयौ M. 9,222. एतावानेव पुरुषो यज्जायात्मा प्रजेति ह 45. यत्क्षान्तिः समये श्रुतिः शिव शिवेत्युक्तिः u. s. w. असौ सन्मुक्तिमार्गे स्थितिः Spr. 2279. यदेतत्स्वाच्छन्द्याद्विहरणमकार्पण्यमशनं सहार्यैः संवासः u. s. w. न जाने कस्यैषा परिणतिरुदारस्य तपसः Spr. 4821. Ein solches यद् lässt sich durch *was — betrifft* wiedergeben; eben so in den folgenden Stellen: पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम सांप्रतम्। एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि॥ Daç. 2,52. तद्यदृक्थो न तदवकल्पते Ait. Br. 6,2. Bisweilen wird ein auf diese Weise erweitertes Subject andern Subjecten angereiht, ohne dass ein besonderer Nachdruck auf ihm läge, aus rein metrischen Rücksichten: अन्धो जडः पीठसर्पी सप्तत्या स्थविरश्च यः। श्रोत्रियेषूपकुर्वंश्च न दाप्याः केनचित्करम्॥ M. 8,394. तीव्रः खेदश्च दाहश्च तदा ग्लानिश्च या परा। समाविवेश मोहश्च R. 4,60,14. Auffallender ist, dass sogar ein Object in einen solchen relativen Satz aufgelöst und andern Objecten ohne Weiteres angereiht wird: सर्वांश्चमानपेक्षित कृतान्नं च तिलैः सह। अश्मनो लवणं चैव पशवो ये च मानुषाः॥ M. 10,86. आशाव्याशास्वप्यथात्मानम् u. s. w. अर्चयेत् तस्य दिक्षु मायाविद्ये ये कलापारतत्त्वे Weber, Râmat. Up. 325. इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ च यत्। पृथगुत्पद्यमानानाम् Kaṭhop. 6,6. ohne च so v. a. *nämlich:* ततो देवा एतं वज्रं ददृशुः। यदपः Çat. Br. 1,1,1,17. Das Rel. in Verbindung mit andern Pronomm.: यस्ये ते ṚV. 7,3,4. यं त्वा 8,43,27. यो ऽयम् Çat. Br. 1,7,1,3. MBh. 3,2568. fg. यमिमम् ṚV. 10,86,4. यं त्विमं धर्मम् Spr. 4835. येयम् Kathâs. 18,69. P. 3,3,135, Sch. यदिदम् — अनेन R. 1,59,4. एष मे हृदि संकल्पो यदिदं कथितं मया MBh. 5,7374. यानिमान् 1,5980. यो ऽसौ M. 1,7. MBh. 3,2906. 16812. R. Gorr. 2,49,26. Vet. in LA. (III) 7,14. असौ तु यस्तिष्ठति MBh. 3,15593. fg. 15595. fg. ये ऽमी Spr. 2517. स यः Çat. Br. 14,9,3,1. स य एषः 3,9,4,7. 11,7,3,1. यः सः — सः Sâh. D. 216,8. यत्तद् M. 1,11. Spr. 4769. य एषः Çat. Br. 11,7,3,1. MBh. 3,15701. 15711. fg. यदेतद् M. 1,71. 6,82. MBh. 1,6011. Spr. 2379. य एते M. 3,200. Bhag. 1,23. Besondere Beachtung verdienen folgende Verbindungen: *a*) mit dem relat. य *wer —, welcher —, was immer:* यया यद्यद्दति तत्तद्भवति Çat. Br. 14,4,3,27. Kâtj. Çr. 24,4,26. Lâṭj. 3,1,9. 5,11,15. यं यं क्रतुमधीते Âçv. Gṛhj. 3,4,6. 1,14,8. M. 2,236. 3,231. 275. 8,48. उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति 9,40. MBh. 3,2202. 11499. 13,126. Bhag. 10,41. कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा R. 1,53,1 (54,1 Gorr.). Spr. 2318. 2387. 2518. 4769. 4829. 4893. 5026. Çâk. 141. 150. Kathâs. 18,247. Çiç. 3,16. Sâh. D. 217,10. Hit. 40,9. यो यो यावतिथश्चैषां स स तावद्गुणः स्मृतः M. 1,20. येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रयच्छति। तत्तत्तेनैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः॥ 4,234. 12,53. MBh. 13,346. Bhag. 7,21. — *b*) mit dem demonstr. त *beliebig, gleichviel wer, — welcher:* यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात् M. 4,191. यस्य तस्य (यस्यां तस्यां v. l.) प्रसूतः Spr. 2429. कर्मणा येन तेनैव 3878.

यस्मिंस्तस्मिन् Mârk. P. 125,32. यद्या तद्या परद्रव्यम् M. 12,68. यद्या तद्या — साधु वा गर्हितं वा — कर्म Spr. 2396. यद्या तद्या भाषताम् als Erkl. von प्रलपतु Schol. zu Çâk. 23,14. यद्या तद्यास्तु Dhûrtas. in LA. 75, 9. — c) mit dem interrog. क und einer nachfolgenden Partikel: α) यः कश्च *wer —, welcher immer, der erste beste, gleichviel wer, — welcher, beliebig:* एवा दृक्ष यो अस्मधुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति Ṛv. 8,49,7. यस्यै कस्यै च देवतायै Çat. Br. 1,6,3,19. य एव कश्च 1,4,13. 4,6,6,5. याम् — कां च 1,8,1,9. ये के च भ्रातरः स्थ Çâṅkh. Çr. 15,26,1. इदं सर्वं यदिदं किं च Çat. Br. 14,4,2,25. 3,3,2,3. यत्किं चेदम् Ṛv. 7,89,5 (vgl. M. 11,252, wo eben so zu lesen ist). यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि च Spr. 2472. अतः परं न दातव्यं यस्मै कस्मै च Pańkar. 2,1,16. याश्च काश्च कुदृष्टयः M. 12,95. यच्चत्किं च Âçv. Gṛhj. 1,22,15. — β) यः को ऽपि dass.: येन केनाप्युपायेन MBh. 3,3038. Spr. 2501. — γ) यः कश्चित् dass. M. 2,7. 8,69. 193. ये केचित् 2,123. 8,62. 9,271. ये च केचिन्निरिन्द्रियाः 201. ये तु तत्र विनिर्मुक्ताः सार्थात्केचिद्विक्षताः MBh. 3,2552. कर्मणा येन केनचित् Spr. 4893. M. 8,279. तुष्येस्त्वं येन केनचित् R. Gorr. 2,100,3. प्राणिनो यस्य कस्यचित् Kathâs. 96,31. यस्मै कस्मैचित् Hit. 11,5. यत्किंचित् Çâṅkh. Çr. 16, 20,2. M. 1,100. 3,273. 4,117. 8,405. 9,115. R. 1,3,38. यद्दुष्कृतं किंचित् — तत्सर्वम् M. 3,191. 7,94. fg. यच्च सातिशयं किंचित् 9,114. यद्या यच्चिन्त्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् Kathâs. 3,50. यच्चान्यत्किंचिदीदृशम् M. 1,45. यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम् 2,4. — δ) यः कश्चिदपि dass. Spr. 4754. यानि कानिचिदपि R. 3,55,48. यत्किंचिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया Spr. 4766. M. 7,137. im comp.: यत्किंचिदपिसंकल्पात् gegenüber नाकिंचिदपिसंकल्पात् Verz. d. Oxf. H. 232,*b*,32. — ε) यः कश्चन dass.: जना ये तत्र केचन MBh. 3,2522. im comp.: यत्किंचनप्रलापिन् R. 4, 17, 4. — ζ) यः को वा dass.: शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा देशे निवसेत् M. 2,24. संतुष्टो येन केन वा Bhâg. P. 4,31,19. — d) mit त्वद् (vgl. u. 3. त्व): शूद्रास्त्वद्योऽस्त्वत् *oder sonst wen* Çat. Br. 5,3,2,2. स्तोमहृदयं त्वद्यत्त्वत् 4, 5,4,6. 13,8,1,5. 2,1. — 2) यो ऽहम् (त्वम् u. s. w.) *der ich* (*du* u. s. w.) so v. a. *da ich:* किं नु दुःखतरं शक्यं मया द्रष्टुमतः परम्। यो ऽहमद्य नरव्याघ्रान्सुप्तान्पश्यामि भूतले ॥ MBh. 1,5909. 3,2570. हस्तप्राप्तमहं मन्ये स्वर्गं तव — यस्त्वं कौशिकमागम्य शरण्यः शरणं गतः R. 1,59,5. अद्यैव ब्रूहि माम् — यः शरैणीकपुत्रं मां त्वमकार्षीरिपुत्रकम् Daç. 2,50. जीव वर्षायुतं सुखी। यो मे वितरसि प्राणानधिष्ठानं च MBh. 3,3057. अप्रसाधुदर्शी खलु तत्रभवान्काश्यपः। य (यद् v. l.) इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते Çâk. 9,12. fg. सफलः कृष्ण संकल्पः सिद्धिश्च नियता मम। यस्य मे त्वं हृषीकेश यथेप्सितमुपस्थितः ॥ MBh. 2,1229. R. 1,47,22. Vikr. 35. Hit. 99,12. परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहम् — याहं राजभटैर्दीना ह्रियेय *dass ich* 54,3. — 3) *wenn Jemand:* यो नो वृकताति मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः Ṛv. 2,34,9. स्त्रियं स्पृशेद्देशे यः स्पृष्टो वा मर्षयेत्तया। परस्परस्यानुमते सर्वं संग्रहणं स्मृतम् ॥ M. 8,358. यश्च यद्वचनं ब्रूयात् — तत्सर्वम् — ममाख्येयम् R. 1,59, 8. यः कामानाप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत्। प्रापणात्सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते ॥ Spr. 4756. यस्तु सूर्येण निष्टप्तं गाङ्गेयं पिबते जलम्। गवां निर्हारनिर्मुक्ताद्यावकात्तद्विशिष्यते ॥ 4845. यस्य so v. a. *si cujus*, याम् so v. a. *si quam:* ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति। क्षेत्रिकस्यैव तद्बीजम् M. 9,54. यां (अजाम्) प्रसह्य वृको हन्यात्पाले तत्किल्विषं भवेत् 8,235. fg. Dass यः in Wirklichkeit nicht *wenn Jmd* bedeutet, dass vielmehr in allen angeführten Beispielen eine Anakoluthie anzunehmen ist, braucht wohl kaum bemerkt zu werden. — 4) m. Synonym von पुरुष Tattvas. 19. — Vgl. यतम, यतर, यतस्, 1. यति, यत्र, यथा, यद्, यदा, यदि, यर्हि, यस्मात्, 1. यात्, याभिस्, यावत्, येन.

2. य 1) m. = गन्तर्, वायु, यमन Med. j. 1. = वायु, यशस्, योग, यान, यातर् Çabdar. im ÇKDr. *fame, celebrity; barley; light, lustre; abandoning;* Jama (vgl. Verz. d. Oxf. H. 189, *a*, No. 431) Anekârthak. bei Wilson. — 2) f. या यात्राप्तिधृमितत्यागेषु, वारणयोगसमज्ञायानेषु Med. *going, proceeding; a car, carriage; prohibiting, restraining, checking; religious meditation; getting, obtaining* Wilson nach ders. Aut.; *pudendum muliebre* ders. nach Anekârthak.

यक pron. rel. so v. a. 1. य. चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु Ṛv. 8,21,18. यकः VS. 23,23. यका 22. P. 7,3,45. Vop. 4,6.

यकन् s. यकृत्.

यकार m. *der Buchstabe* य: यकारादिपद n. *ein mit* य *anlautendes Wort* euphemistisch für *eine Form von* यभ् Kâvjâd. 1,65.

यकृत् n. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,58. Siddh. K. 251,*a*, 8. Trik. 3,5,8. यकन् neben यकृत् in einigen Casus P. 6,1,63. Vop. 3,39. 165. *Leber* AK. 2,6,2,17. H. 604. Halâj. 3,13. यक्नस् Ṛv. 10,163,3. यक्ना VS. 39,8. यकृत् (nom. sg. und am Anf. eines comp.) 19,85. AV. 9,7,11. 10,9,16. Çat. Br. 10,6,4,1. 12,9,1,3. 15. Kâtj. Çr. 6,7,6. Suçr. 1,43,12. 77,15. शोणितस्य स्थानं यकृत्प्लीहानौ 79,9. 2,313,16. Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,3. यकृद्रञ्जकपित्तस्य स्थानं रञ्जकसंश्रयम् Çârṅg. Saṃh. 1,5,21. यकृन्मेदस् n. sg. *Leber und Fett* गवाश्वादि zu P. 2,4,11. यकृद्दर्ण Suçr. 1,41,3. 259,6. यकृति 276,9. यकृतस् 2,340,2. यकृत्तस् Nir. 4,3. — Vgl. याकृतक.

यकृदात्मिका (von यकृत् + आत्मन्) f. *eine Art Schabe* (तैलपायिका) Çabdak. im ÇKDr.

यकृदुदर (यकृत् + उ°) n. *Leberanschwellung* Wise 357.

यकृद्दाल्य n. dass. Suçr. 1,360,17. 2,89,19.

यकृद्दाल्युदर (यकृत्-दालिन् + उ°) n. dass. Suçr. 1,276,9. 360,17 nach der Berliner Hdschr.

यकृद्वैरिन् (यकृत् + वै°) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* Çabdak. im ÇKDr.

यकृल्लोम (यकृत् + लोमन्) gaṇa पलद्यादि zu P. 4,2,110. m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 4,144. °लोमन् 6,353 (VP. 188; vgl. II,166). — Vgl. याकृल्लोम.

यत्, यतति wohl mit der Grundbedeutung *sich regen, sich rühren;* auf diese Wurzel gehen zurück यत्त, यत्नु, इयत्; vgl. 1. यन्न. Das simpl. यत्तामस् R. 7,4,12. fg. zur Erklärung des Namens यत्त; nach dem Schol. *ehren*, welche Bed. Dhâtup. 33,19 der Form यत्तयते ertheilt wird.

— प्र *vorwärts eilen, — streben:* धनें ह्विते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः Ṛv. 1,132,5. *nachstreben einer Sache, erstreben, erreichen* (mit acc.): प्रयक्षं जेन्यं वसु 2,5,1. प्र ऽयक्षन् Padap., प्रयक्षं प्रकर्षेण पूज्यम् Sâj. दीर्घमायुः प्रयक्षे 3,7,1. महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे 31,3. — Vgl. प्रयक्ष.

1. यक्ष (von यत्) 1) n. *ein lebendes oder übernatürliches Wesen; eine unkörperliche, geisterhafte Erscheinung, Ding, Spukgestalt:* न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् *unter denen nicht Gestalt und Wesen sichtbar ist* d. h. *welche unsichtbar sind* Ṛv. 7,61,5. तस्मिन्हिरण्यये कोशे यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः *das lebendige Ding* AV. 10,2,32. 8,43. महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये 7,38. 8,15. 8,9,25. 11,6,10. यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम् VS.

34,2. तेषां ह यक्षं प्रथमं सं बभूव TBr. 3,12,3,1. Çat. Br. 11,2,3,5. 14, 8,5,1. यक्षमिव चक्षुषः प्रियो वो भूयासम् Gobh. 3,4,24. यक्षाणि दृश्यन्ते तद्यथैतन्मर्कटः श्वापदो वायसः पुरुषरूपमिति Kauç. 95. तन्न व्यजानन्त किमिदं यक्षमिति Kenop. 15. fg. मा कस्य यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः *Gespenst eines Verstorbenen* RV. 4,3,13. मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः 5,70,4. sg. coll. *die Wesen* u. s. w.: यस्या व्रते प्रसवे यक्षमेजति AV. 8,9,8. तवं यक्षं पशुपते अप्स्वन्तः 11,2,24. यक्षस्याध्यक्षः Agni Vaiçvânara RV. 10,88,13. विश्वं यक्षं विश्वं भूतं सुभूतम् TS. 3, 11,1,1. Die Commentatoren erklären das Wort durch यज्ञ, पूजा, पूजित, पूज्य und ähnlich. — 2) m. *a*) Bez. *besonderer Genien im Gefolge* Kubera's AK. 1,1,1,6. H. 194. an. 2,569. Med. sh. 22. Halâj. 1,87. Âçv. Grhj. 3,4,1. Çâñkh. Grhj. 4,9. Maitrj. Up. 1,4. M. 1,37. 3,196. 11,95. 12,47. Indr. 5,25. Sund. 2,7. Hip. 2,36. न देवेषु न यक्षेषु तादृग्रूपवती क्वचित् N. 1,13. MBh. 5,7476. वित्तेशो यक्षरक्षसाम् (sagt Krshna von sich) Bhag. 10,23. 11,22. 17,4. यक्षोत्तमा यक्षपतिं धनेशं रक्षन्ति वै प्रासगदासिहस्ताः Hariv. 13132. Megh. 1. 67. Varâh. Brh. S. 13,8. 46, 92. 48,25. 54,111. Kathâs. 2,18. Râǵa-Tar. 1,159. वटवृक्षाधिरूढेन यक्षेण (vgl. यक्षतरु, यक्षावास) Vet. in LA. (II) 21,11. °लोक R. 3,47,11. °देवगृह Kathâs. 13,170. यक्षायतन 172. °भवन 177. °बलि Uǵǵval. zu Unâdis. 4,123. आविशन्ति च यं यक्षाः (vgl. यक्षग्रह) MBh. 3,14507. यक्षाङ्गना Megh. 69. °कन्यकासाधन Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,17. सर्वयक्षेशधनेश्वर (Kubera) R. 4,11,12. Söhne Pulastja's MBh. 1,2571. Pulaha's 2572. der Khaçâ (Khasâ) Hariv. 234. VP. 150 (nach dem Vâju-P. ebend. ist Jaksha ein Sohn der Khasâ und Urvater der Jaksha). der Krodhâ Hariv. 11555 (wo die neuere Ausg. यक्षगणाश्च st. पक्षिगणाश्च liest). Kaçjapa's 11850. entstehen aus Brahman's Füssen 11794. im Dienste Vishnu's Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,35. bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 8,20. 75,12 (°सेनापतयः). 81,9. Burn. Intr. 600. Lot. de la b. l. 54. Wassiljew 164. bei den Ǵaina eine Unterabtheilung der Vjantara H. 91. Herleitung des Namens von यक्ष् R. 7,4,13. खादाम इति ये चोचुस्ते यक्षा यक्षणात् (= जक्षणात्?) Mârk. P. 48,20. — *b*) Bein. Kubera's AK. 1,1,1,65. H. 189. H. an. Med. Halâj. 1,79. — *c*) N. pr. eines Muni R. 6,82,162. — *d*) Indra's *Palast* Sârasvata im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) *ein weiblicher* Jaksha MBh. 1,3895. 3,2519. R. 1,27,8 (28,8. 11 Gorr.). 3,38,15. 52,35. 7,5,41. Kathâs. 26,220. 49,166. 169. 121,20. 216. 227. यक्षीणां (so die neuere Ausg.) प्रथमा यक्षी (= कुबेरमाता Schol.) wird Durgâ genannt Hariv. 3282. Vgl. यक्षिणी. — *b*) Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पूर्व°, महा°.

2. यक्ष am Ende eines comp. aus यक्षत् (aor. von 1. यज्): होतायक्षं च होतर्यक्षं च Çâñkh. Çr. 7,1,5. 8,4.

यक्षक m. = 1. यक्ष 2) *a*) R. 7,14,20.

यक्षकर्दम (1. यक्ष + क°) m. *eine aus Kampher, Agallochum, Moschus und* Kakkola *zusammengesetzte Salbe* AK. 2,6,3,34. nach H. 639 auch *Sandel* enthaltend, so auch nach Dhanvantari im ÇKDr., aber *Safran* st. Kakkola. Schol. zu Kâtj. Çr. 25,8,2.

यक्षकूप m. *der* Jaksha-*Teich*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षग्रह m. *das Besessensein durch* Jaksha, Bez. *einer best. Tobsucht* MBh. 3,14507. °परिपीडित Suçr. 2,532,18. Verz. d. B. H. No. 955.

यक्षण n. Mârk. P. 48,20 wohl = जक्षण. यक्षणी in संभोग° Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,40 fehlerhaft für यक्षिणी.

यक्षतरु m. *der Baum der* Jaksha, *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. Vet. in LA. (II) 21,11.

यक्षता f. *der Zustand eines* Jaksha Kathâs. 63,88.

यक्षत्व n. dass. R. 3,17,32.

यक्षदर (1. यक्ष + दर) N. pr. einer Gegend Râǵa-Tar. 5,87.

यक्षदासी (1. यक्ष + दा°) f. N. pr. einer Gattin Çûdraka's Daçak. 118,3.

यक्षदृश् (1. यक्ष + दृश्) adj. *wie eine lebende Erscheinung aussehend, wesenhaft, leibhaftig* RV. 7,56,16. = उत्सवस्य द्रष्टा Sâj.

यक्षधूप (1. यक्ष + धूप) m. *das Harz der Shorea robusta* AK. 2,6,3, 29. H. 647.

यक्षन् Mârk. P. 51,121 wohl fehlerhaft für यक्ष्मन्.

यक्षनायक (1. यक्ष + ना°) m. N. pr. des Dieners des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpinî H. 41.

यक्षपति m. *ein* Jaksha-*Fürst* Kathâs. 26,213. Bein. Kubera's Hariv. 13132. Bhâg. P. 4,1,37.

यक्षपाल (1. यक्ष + पाल) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षभृत् (1. यक्ष + भृत्) adj. *die Wesen tragend, — erhaltend* (?): अत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः RV. 1,190,4.

यक्षमल्ल (1. यक्ष + मल्ल) m. bei den Buddhisten N. pr. eines der fünf Lokeçvara Wilson, Sel. Works 2,23.

यक्षरस (1. यक्ष + रस) m. *ein best. berauschendes Getränk* Trik. 2,10,15.

यक्षराज् m. 1) *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's AK. 1,1,1,63. Med. ǵ. 35. R. 4,44,30. Bhâg. P. 8,18,17. Manibhadra's MBh. 3,2529.

यक्षराट्पुरी f. Kubera's *Stadt* Alakâ Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) *eine Palaestra* Med.

यक्षराज m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's Çabdar. im ÇKDr. MBh. 5,7538.

यक्षरात्रि f. *die Nacht der* Jaksha, Bez. *eines best. Festtages* (= दीपाली) Trik. 1,1,108.

यक्षवर्मन् (1. यक्ष + व°) m. N. pr. eines Commentators des Çâkaṭâjana Or. und Occ. 2,692,8.

यक्षवित्त adj. *dessen Besitz dem der* Jaksha *gleicht* so v. a. *eine Habe bloss hütend, nicht benutzend* Bhâg. P. 11,23,9. 24.

यक्षसेन (1. यक्ष + सेना) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षस्थल (यक्ष + स्थल) m. (sic) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षाङ्गी (von 1. यक्ष + 3. अङ्ग) f. N. pr. eines Flusses Çatr. 1,54.

यक्षाधिप (1. यक्ष + अ°) m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Vaiçravaṇa's (Kubera's) MBh. 3,2554.

यक्षाधिपति (1. यक्ष + अ°) m. dass. Shaḍv. Br. 5,6.

यक्षामलक (1. यक्ष + आ°) n. *die Frucht der* Pindakharǵûra *genannten Dattelart* Çabdam. im ÇKDr.

यक्षावास (1. यक्ष + आ°) m. *der Aufenthaltsort der* Jaksha d. i. *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. LA. (II) 21,11.

यक्षिणीत्व n. *der Zustand einer* Jakshinî Kathâs. 73,430.

यक्षिन् (von 1. यक्ष) 1) adj. *lebendig, wesenhaft:* Varuṇa Ṛv. 7,88,6. = यजनीय Sâj. — 2) f. यक्षिणी *ein weiblicher* Jaksha (= यक्षी) MBh. 3,5093. 8083. fg. R. 1,26,25 (27,24 Gorr.). Kathâs. 10,178. 28,65. 34, 79. 37,58. fgg. 49,164. fgg. 66,27. 73,25. fgg. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 4. Verz. d. B. H. No. 904. Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr.

यक्षीत्व n. *der Zustand einer* Jakshî Kathâs. 26,225.

यक्षु (von यक्ष्) m. N. pr. eines Volksstammes, sg. Ṛv. 7,18,6. pl. 19.

यक्षेन्द्र (1. यक्ष + इन्द्र) m. *ein Fürst der* Jaksha R. 7,14,20. Mârk. P. 53,9. Bein. Kubera's MBh. 5,7536. R. 5,5,8.

यक्षेश (1. यक्ष + 2. ईश) m. N. pr. der Diener des 11ten und 18ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 42. fg.

यक्षेश्वर (1. यक्ष + ई°) m. *ein Fürst der* Jaksha Megh. 7. Trik. 3,3, 297. Bein. Kubera's H. 190. Hit. 101,4.

यक्षोडुम्बरक (1. यक्ष + उ°) n. *die Frucht der Ficus religiosa* Trik. 2,4,6.

यक्ष्म Uṇâdis. 1,139. m. *Krankheit* überh. oder Bez. *einer ganzen Klasse von Krankheiten,* etwa *der mit Abmagerung verbundenen:* स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्ते Ṛv. 1,122,9. 10,85,31. 97,11. 12. 137,4. 163, 1—6. AV. 2,10,5. 6. 3,31,1. 5,4,9. 30,8. अज्ञात 6,127,3. 8,7,2. 9,8,3. 7. यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् 10. यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मः 12,2,1. 2. 4,8. 19,36,1. 38,1. शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी VS. 12,97. fg. Später *Auszehrung* TS. 2,3,5,2. 5,6,5. Kâṭh. 11,3. 13,6. Çat. Br. 4,1,2,9. Mârk. P. 34,101. — Vgl. अ°, अज्ञात°, पाप°, राज° und यक्ष्मन्.

यक्ष्मगृहीत (यक्ष्मन् + गृ°) adj. *von der Auszehrung heimgesucht* Âçv. Gṛhj. 1,23,20. 3,6,3.

यक्ष्मग्रह (यक्ष्मन् + ग्रह) m. *Auszehrung:* °ग्रहार्दित (इन्दु) Bhâg. P. 6,6,23.

यक्ष्मघ्नी (यक्ष्मन् + घ्नी) f. *Weintraube* Çabdam. im ÇKDr.

यक्ष्मन् m. *Auszehrung* (welche gewöhnlich शोष und क्षय heisst) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,139. 4,150. AK. 2,6,2,2. H. 463. Suçr. 1,121,6. 159,20. 2,449,5. Verz. d. B. H. No. 929. 966. 996. गृहीतो यक्ष्मणा Ṛgvidh. 4,16 (nach Aufrecht). Kathâs. 73,259. Bhâg. P. 9,22,23. Schol. zu Kâtj. Çr. 295,16. यक्ष्मणा समगृह्यत MBh. 1,4142. 9,2011. यक्ष्मणा समपद्यत 1, 4696. 5,4981 nach der Lesart der ed. Bomb. (यक्ष्माणं स° ed. Calc.). यक्ष्मणा क्लिश्यमानः (उडुराट्) 9,2009. यक्ष्मणा परिपीडितः Mârk. P. 15, 35. यक्ष्मणापि परिक्षाणिः Ragh. 19,50 (यक्ष्मणाङ्गपरि° ed. Calc.). यक्ष्माकृत MBh. 13,1584. यक्ष्माभिभूत Hariv. 1358. यक्ष्मग्रस्त Bhâg. P. 6,13,12. स° adj. *die Auszehrung habend* MBh. 3,10721. — Vgl. पाप°, राज°.

यक्ष्मनाशन (यक्ष्म + ना°) 1) adj. *Krankheit vertreibend* AV. 3,12,9. — 2) m. angeblicher Verfasser von Ṛv. 10,161, mit dem patron. Prâǵâpatja.

यक्ष्मिन् (von यक्ष्मन्) adj. *die Auszehrung habend* M. 3,154. MBh. 13,4275.

यक्ष्मोधा (यक्ष्मः ऽधा Padap.) f. *eine best. Krankheit* AV. 9,8,9.

यक्ष्य adj. so v. a. यष्टव्य nach Sâj.: अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः Ṛv. 8,49,3. Könnte zu यक्ष् gezogen werden und *rührig* bedeuten.

यङ् in der Gramm. Bez. *der Silbe* य *als Charakter des Intensivum,* यङ्लुक् *der Ausfall dieser Silbe* य; vgl. P. 2,4,74. यङ्लुगन्तशिरोमणि Titel einer Abhandlung über das *Intensivum ohne* य Colebr. Misc. Ess. II, 43.

यच्छन्दस् (1. यद् + छन्दस्) adj. *welches* (rel.) *Metrum habend* Çâṅkh. Gṛhj. 2,7.

यच्छ् s. यम्.

1. यज्, यजति, °ते Dhâtup. 23,33 (देवपूजासंगतिकरणदानेषु). Vop. 8, 133 (देवार्चादानसङ्गतौ). यजधैनम् = यजध्वमेनम् P. 7,1,43. इयाज, इयजिथ, इयष्ठ, येजिथ, ईजितुम् Schol. zu P. 6,1,17. 7,2,62. fg. Vop. 8,124. 133. fg. ईजे, ईजिरे; यक्ष्यति, °ते; अयक्ष्यत; यष्टा Schol. zu P. 7,2,62. 8,2,36. Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. यष्टा स्मके TBr. अयष्ट Schol. zu P. 1,2,11. यक्षि 2. sg., यक्षत्, यक्षतम् 3. du., यक्षताम् 3. du., यक्षि 1. sg. Ṛv. 3,53,2. 10,52,5. अयक्षत, अयक्ष्महि, (आ)यक्षते, यक्ष्व, अयाम् 2. sg. Ṛv. 3, 29,16. 9,82,5. याट् 2. sg. 10,61,21. अयाट् 3. sg. VS. 7,15. 21,47. अयाक्ष्म; यजासे Ṛv. 8,25,1 wohl 1. sg., nach Sâj. 2. sg. इज्यात्, इज्यास्ताम्, इज्यासुम्, यक्षीष्ट, यक्षीध्म् Schol. zu P. 3,4,104. 1,2,11. 8,3,78. pass. इज्यते, इज्यत्, यज्यमान neben इज्यमान Pat. zu P. 6,1,108. इष्ट; यष्टुम्, यष्टवे, यजध्यै, ईजितुम् MBh. 2,1230. इष्ट्वा, इष्ट्वीनम् P. 7,1,48. 1) *einen Gott verehren, huldigen,* auch *mit Gebet und Darbringung,* daher *weihen, opfern.* In der alten Sprache in der Regel act., wenn Agni oder ein anderer Mittler handelt, und med., wenn der Mensch für sich verehrt und darbringt; später act. vom Opferpriester, med. vom Veranstalter des Opfers (यजन्ति याजकाः, यजमानो यजेत Schol. zu P. 1,3,72. Vop. 23,58). Ausnahmen sind jedoch häufig. *a)* mit acc. des Gottes, dat. der Person oder des Zweckes, für welchen, und instr. der Sache oder des Werkzeuges, womit die Handlung vollzogen wird. अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् Ṛv. 7,17,3. ऋतं होता न इषितो यजाति 39,1. देवान्देवयते यज 5, 21,1. अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहूतिभिः 1,45,10. 75,5. यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रम् 5,42,11. यजस्व सु पुर्वणीक देवान् 7,42,3. देवं देवं यजामहे 1,26,6. स चा बोधाति मनसा यजाति 77,2. स्रुचा यजाति 84,18. अग्निं यजध्यै हविषा तना गिरा 2,2,1. 4,24,5. 5,3,8. 77,2. 7,73,2. 8,23,1. सखा सखीन्सुमना यक्ष्यग्ने 3,4,1. 7,2,10. यो यजाति यजात इत् *wer für Andere oder für sich einen Gott ehrt* 8,31,1. यथायज ऋतुभिर्देव देवानेवा यजस्व तन्वं सुजात 10,7,6. महामु षु एवमवसे यजाधम् 6,29,1. AV. 1,31,3. 3,10,9. 7,5,3. 4. 18,3,25. Ait. Br. 4,27. तेन त्वा यजा इति 7,14. 8,22. पाकयज्ञेनेजे Çat. Br. 1,8,1,7. 10,2,2,1. Pañkav. Br. 14,6,8. Âçv. Gṛhj. 1,7,13. 4, 8,40. Çâṅkh. Br. 23,5. Lâṭj. 8,1,19. 27. 3,7. 13. यजन्त् Ṛv. 4,16,11. यजमान (s. auch bes.) Ṛv. 1,51,8. 7,16,6. 8,86,2. AV. 2,34,1. 2. 4, 14,5. VS. 6,6. ईजानं Ṛv. 1,125,4. 7,59,2. AV. 9,5,8. 18,4,1. Kaṭhop. 3,2. Çat. Br. 4,4,4,4. अनीजान 2,4,2,13. Ait. Br. 1,4. यक्ष्यमाण Ṛv. 1,113,9. 125,4. TS. 1,6,7,3. Kâtj. Çr. 23,4,4. Kaush. Up. 1,1. इष्ट *derjenige, welchem geopfert worden ist,* und *geopfert* Kâtj. Çr. 25,10,22. Çâṅkh. Çr. 4,9,7. जीवन्नेव पशुनेष्टं भवति Çat. Br. 13,2,8,2. वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै Ṛv. 3,1,1. 4,3. 6,12,1. 2. 7,2,7. 8,39,1. यष्टवे 1,13,6. 4,37,7. इष्ट्वा AV. 9,6,40. Mit gen. partit. der Sache P. 2,3,63. सोमस्य त्वा यक्षि Ṛv. 3,53,2. आज्यस्यैव यजेत् Çat. Br. 2,4,2,10. घृतस्य 4,4,2,4. Kâtj. Çr. 10,1,24. — वाजिमेधैस्त्रिभिः — यज्ञेशमयजद्धरिम् Bhâg. P. 1, 12,35. 3,13,11. 10,70,41. Mârk. P. 16,39. Varâh. Bṛh. S. 46,59. पशुना रुद्रं यजते Schol. zu P. 1,4,32, Vârtt. सुराघटसहस्रेण मांसभूतोदनेन च। यक्ष्ये त्वाम् R. 2,52,83. 55,20. M. 8,105. 11,118. यस्तिलैर्यजते पितॄन् MBh. 13,3317. Bhâg. P. 1,5,38. यजते क्रतुभिर्देवान्पितॄंश्च 3,32,2. 4,12,

Muir, ST. 3,70. — °वध Gild. Bibl. 118. fgg. — Vgl. याज्ञदत्ति.

यज्ञदत्तक m. Hypokoristikon von यज्ञदत्त P. 5,3,78, Sch.

यज्ञदत्तशर्मन् m. N. pr. beispielsweise gebraucht wie *Gajus* Schol. zu Kâtj. Çr. 158,3. 286,17. 396,20.

यज्ञदीक्षा (यज्ञ + दी°) f. *Weihe zu einem Opfer* M. 2,169. R. Gorr. 1,22,7. 7,57,10.

यज्ञदेव (यज्ञ + देव) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 114,91.

यज्ञद्रव्य (यज्ञ + द्रव्य) n. *ein zum Opfer erforderlicher Gegenstand* R. Gorr. 1,61,7. = पात्रीय Trik. 2,7,9.

यज्ञद्रुह् (यज्ञ + द्रुह्) m. *ein Feind der Opfer, ein* Râkshasa Wilson.

यज्ञधर (यज्ञ + धर) adj. *das Opfer tragend;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 67.

यज्ञधीर (यज्ञ + 2. धीर) adj. *der Götterverehrung kundig* ṚV. 7,87,3.

यज्ञनारायण (यज्ञ + ना°) m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 2,49. °दीक्षित Hall 172.

यज्ञनिष्कृत् (यज्ञ + नि°) adj. *den Gottesdienst ordnend* ṚV. 10,66,8.

यज्ञनी (यज्ञ + 2. नी) adj. *den Gottesdienst leitend* ṚV. 1,15,12. 10, 88,17. 107,6. VS. 2,6.

यज्ञनेमि (यज्ञ + ने°) adj. *von Opfern rings umgeben*, Beiw. Kṛshṇa's Pankar. 4,8,26.

यज्ञपति (यज्ञ + प°) m. 1) *Herr des Gottesdienstes*, so heisst *derjenige, welcher eine Cerimonie anstellen lässt und bestreitet*, ṚV. 10,170,1. AV. 2,35,2. 4,11,5. VS. 1,2. 12.2,6. 12. 5,3. 6,10. 11. 18,59. Ait. Br. 5,27. TS. 3,1,4,4. 6,6,2,3. Çat. Br. 1,8,1,28. Çânkh. Çr. 10,15,13. VP. bei Muir, ST. 1,62. *derjenige, welchem zu Ehren ein Opfer dargebracht wird*, Bein. Soma's (nach Mahîdh.) VS. 8,25. Vishṇu's Bhâg. P. 2,4, 20. 9,14. 4,19,3. 20,1. 21,26. 8,17,7. Verz. d. Oxf. H. 9, *b*, 1. — 2) N. pr. eines Autors Hall 30. — Vgl. याज्ञपत.

यज्ञपत्नी (यज्ञ + प°) f. *die am Opfer theilnehmende Gattin des Veranstalters eines Opfers* MBh. 1,7353. 12,9816 (die ed. Bomb. °पत्नी-त्वमानीता). Bhâg. P. 11,12,6.

यज्ञपथ (यज्ञ + पथ) m. *Pfad der Verehrung* oder *des Opfers* Çat. Br. 5,1,3,6. 3,2,4. 7,3,1,22. 12,4,4,1.

यज्ञपद् oder °पाद्, adj. f. °पदी etwa *im Opfer fussend* AV. 10,10,6.

यज्ञपरिभाषा f. Titel eines Sûtra des Âpastamba Muir, ST. 2,181, 1 v. u. 3,41,7. °सूत्राणि Z. d. d. m. G. 9, xliii.

यज्ञपरुस् (यज्ञ + प°) n. *Fuge des Opfers:* यन्न इन्द्राग्नी यज्ञपरुरन्तरियात् TBr. 3,7,1,5. 12,3,12. 1,1,9,5. TS. 5,2,5,1. 6. 6,1,4,5.

यज्ञपशु (यज्ञ + 1. पशु) m. *Opferthier* Bhâg. P. 4,19,11. 28,26. *Pferd* Çabdam. im ÇKDr.

यज्ञपात्र (यज्ञ + पात्र) n. *Opfergeräth* Çat. Br. 1,1,2,12. 4,17. 12,5, 2,7. Âçv. Gṛhj. 4,2,1. Kauç. 81. Kâtj. Çr. 25,7,31. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 90. M. 5,116. 167. R. Gorr. 2,83,32. 34. 3,76,23. Bhâg. P. 4, 5,15. P. 1,3,64. 8,1,15. Vop. 23,51.

यज्ञपात्रीय (von यज्ञपात्र) adj. *zu einem Opfergeräth geeignet* Çat. Br. 2,2,4,10.

यज्ञपार्श्व (यज्ञ + पार्श्व) n. Titel einer Schrift Ind. St. 3,269. Weber, Gjot. 49. Müller, SL. 236. Hall 192. Verz. d. B. H. No. 261. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 32. 277, *a*, 12. 279, *a*, 21. 292, *a*, 51. Nach Aufrecht m. N. pr. eines Autors.

यज्ञपुच्छ (यज्ञ + पुच्छ) n. *Schwanz* d. h. *Endstück des Opfers* Âçv. Çr. 6,11,2. Lâtj. 9,5,4. Çat. Br. 11,5,5,11.

यज्ञपुंस् (यज्ञ + पु°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,25,29. Pankar. 4,3,36 (S. 248).

यज्ञपुरश्चरण (यज्ञ + पु°) n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,470.

यज्ञपुरुष (यज्ञ + पु°) m. = यज्ञपुंस् H. 214. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*, 36. VP. bei Muir, ST. 1,63. Bhâg. P. 1,5,38. 2,7,11. 3,13,23. 22,31. 4,14,25. 5,3,1. 8,17,8. 9,18,48. °पूरुष 4,13,4. 14,18.

यज्ञप्री (यज्ञ + 2. प्री) adj. *am Opfer sich vergnügend:* इमं इन्द्र सुदृशं विश्वधायसं यज्ञप्रियं यजमानाय सुक्रतो ṚV. 10,122,6. VS. 27,31.

यज्ञफलद (यज्ञ - फल + 1. द) adj. *Opfer belohnend*, Bein. Vishṇu's Pankar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञबन्धु (यज्ञ + ब°) m. *Opfergenosse* ṚV. 4,1,9.

यज्ञबाहु (यज्ञ + बाहु) m. *des Opfers Arm*, ein N. des *Feuers* und zugleich N. pr. eines Sohnes des Prijavrata Bhâg. P. 5,1,25. 34. 20,9.

1. यज्ञभाग (यज्ञ + भाग) m. *Antheil am Opfer* Hariv. 8002. 8006. Kumâras. 1,17. Bhâg. P. 9,17,15. Mârk. P. 105,4. °क्रतानरीन् 105,20. °भुज् *einen Opferantheil geniessend;* m. *ein Gott* Bhâg. P. 8,14,6. Mârk. P. 105,6. Kumâras. 6,72.

2. यज्ञभाग (wie eben) adj. *einen Antheil am Opfer habend:* सुराः Mârk. P. 118,7. m. *ein Gott:* यज्ञभागेश्वर m. Bein. Indra's Çâk. 186.

यज्ञभाजन (यज्ञ + भा°) n. *Opfergeräth* Gaṭâdh. im ÇKDr.

यज्ञभाण्ड (यज्ञ + भा°) n. dass. R. 1,4,21.

यज्ञभावन (यज्ञ + भा°) adj. *Opfer fördernd*, Beiw. Vishṇu's Bhâg. P. 3,13,33. 4,7,48. Pankar. 4,3,35 (S. 248). यज्ञैर्भाव्यत आक्रियते Comm. zu Bhâg. P.

यज्ञभुज् (यज्ञ + 4. भुज्) adj. *Opfer geniessend;* m. *ein Gott*, insbes. Vishṇu MBh. 13,7054. Bhâg. P. 4,13,32. 9,17,4. Mârk. P. 73,6. 104, 12. Pankar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञभूमि (यज्ञ + भू°) f. *Opferstätte* R. 1,11,14 (19 Gorr.). 73,14 (75, 15 Gorr.). R. Gorr. 1,13,1. Kathâs. 51,105.

यज्ञभूषण (यज्ञ + भू°) m. *weisses* Darbha-*Gras* Râgan. im ÇKDr.

यज्ञभृत् (यज्ञ + भृत्) m. *der Veranstalter eines Opfers* Varâh. Bṛh. S. 13,11. Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7054.

यज्ञभोक्तर् (यज्ञ + भो°) m. *Geniesser der Opfer*, Beiw. Kṛshṇa's Pankar. 4,1,34.

यज्ञमण्डल (यज्ञ + म°) n. *Opferrund, Opferstätte* R. 3,4,12.

यज्ञमनस् (यज्ञ + म°) adj. *auf das Opfer merkend* Âçv. Çr. 1,12,30.

यज्ञमन्मन् (यज्ञ + म°) adj. *opferwillig* ṚV. 7,61,4.

यज्ञमय (von यज्ञ) adj. *das Opfer in sich enthaltend* Hariv. 11365. — Vgl. वेदयज्ञमय.

यज्ञमहोत्सव (यज्ञ + म°) m. *eine grosse Opferfeier* Bhâg. P. 4,19,2.

यज्ञमालि (यज्ञ + मा°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, 6. Verz. d. B. H. 130.

यज्ञमुख (यज्ञ + मुख) n. *Mund und Eingang des Opfers* Ait. Br. 1,8. fgg. TBr. 1,1,9,4. 2,1,8. अग्निर्वै यज्ञमुखम् 6,1,8. 11. यज्ञमुखं वा अग्निहोत्रं ब्रह्मैता व्याहृतयो यज्ञमुख एव ब्रह्म कुरुते TS. 1,6,10,2. 3,1,3,1.

ÇAT. BR. 1,1,2,3. 2,3,1,20. 12,7,2,12.

यज्ञमु॑ष् (यज्ञ + 2. मुष्) adj. *das Opfer raubend;* m. *ein dem Opfer nachstellender Dämon* TS. 3,5,4,1. KÂTH. 32,6. MBH. 3,14165. fg. VARÂH. BRH. S. 19,13. — Vgl. इष्टिमुष्.

यज्ञमुक् in der Stelle पुरा यज्ञमुहो रक्षांसि तीर्थेष्वपो गोपायन्ति ÇÂÑKH. BR. 12,1.

यज्ञमूर्ति (यज्ञ + मू°) m. N. pr. eines Mannes HALL 54.

यज्ञमेनि s. u. मेनि.

यज्ञयशसे (यज्ञ + यशस्) n. *Anmuth des Opfers* TS. 5,1,1,3. 6,5,1,4.

यज्ञयोग्य (यज्ञ + योग्य) adj. *zum Opfer geeignet;* m. *Ficus glomerata* RÂGAN. im ÇKDR.

यज्ञरस (यज्ञ + रस) m. *Opfernass* d. i. *der* Soma HARIV. 2589. — Vgl. यज्ञरेतस्.

यज्ञराज् (यज्ञ + राज्) m. *König des Opfers, der Mond* H. ç. 11. wohl fehlerhaft fur यज्वराज्; vgl. यज्वनां पतिः u. यज्वन्.

यज्ञरुचि (यज्ञ + रु°) m. N. pr. eines Dânava KATHÂS. 47,25.

यज्ञरेतस् (यज्ञ + रे°) n. *der Same des Opfers* d. i. *der* Soma BHÂG. P. 4,24,38. — Vgl. यज्ञरस.

यज्ञर्त (यज्ञ + ऋत) adj. etwa *opfergerecht* AV. 8,10,4.

1. यज्ञवचस् (यज्ञ + व°) n. *Opferwort* AV. 11,3,19.

2. यज्ञवचस् (wie eben) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Râgastambâjana ÇAT. BR. 10,6,5,9. pl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,13.

यज्ञवनस् (यज्ञ + व°) adj. *Opfer liebend* R̥V. 10,50,5.

यज्ञवत् (von यज्ञ) adj. *verehrend* R̥V. 3,27,6.

यज्ञवराह (यज्ञ + व°) m. Vishṇu *als Eber* WILSON. — Vgl. यज्ञसूकर.

यज्ञवर्धन (यज्ञ + व°) adj. *Opfer fördernd* AV. 10,6,34.

यज्ञवर्मन् (यज्ञ + व°) m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 3,168.

यज्ञवल्क m. N. pr. eines Mannes: यज्ञस्य वल्को वक्ता यज्ञवल्कः तस्यापत्यं याज्ञवल्क्यः ÇAṄK. zu BRH. ÂR. UP. 1,4,3.

यज्ञवल्ली (यज्ञ + व°) f. = सोमवल्ली *Cocculus cordifolius DC.* RÂGAN. im ÇKDR.

यज्ञवाट (यज्ञ + वाट) m. *Opferstätte* HÂR. 125. ÇAUNAKA bei MÜLLER, SL. 236,5. MBH. 3,9910. 15290. 7,2173. 12,9468. 14,90. 282. HARIV. 1418. 8010. R. 1,44,35. 50,1 (51,1 GORR.). 62,23. R. GORR. 1,4,23. 7,91,15. MRKKH. 174,19. BHÂG. P. 10,23,33.

यज्ञवाम (यज्ञ + वाम) m. N. pr. eines Mannes VÂJU-P. in VP. I, 153.

यज्ञवास्तु (यज्ञ + वा°) n. *Stätte des Gottesdienstes, Opferplatz* AIT. BR. 2,1.13. TS. 2,6,2,2. 3,1,9,5. 4,10,2. ÇAT. BR. 12,3,4,1. ÇÂÑKH. BR. 10,2. KAUÇ. 67. Kurzer Ausdruck für यज्ञवास्तुक्रिया (vgl. GRHJASAṄGR. 2,12) GOBH. 1,8,26. 31.

यज्ञवाह (यज्ञ + वाह) 1) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd* MBH. 1,8354. 2,304. 13,625. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,12. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9,2572.

यज्ञवाहन (यज्ञ + वा°) adj. 1) *das Opfer geleitend* so v. a. *vollführend:* विप्राः MBH. 12,9721. — 2) *dessen Vehikel das Opfer ist,* Bein. Vishṇu's MBH. 13,7053. Çiva's ÇIV.

यज्ञवाहस् (यज्ञ + वा°) adj. 1) *Verehrung bringend:* वर्चो धा यज्ञवाहसे R̥V. 3,8,3. 24,1. देवीं धियं मनामहे वर्चोधां यज्ञवाहसम् VS. 4,11. — 2) *Verehrung empfangend,* von Göttern: यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम्। होत्राभिरिन्द्रं वावृधुः R̥V. 8,12,20. 1,3,11. 86,2. 4,47,4. AV. 6,114,2. TS. 1,8,3,1.

यज्ञवाहिन् (यज्ञ + वा°) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd:* अ° MBH. 13,1318.

यज्ञविद् (यज्ञ + विद्) adj. *opferkundig* ÇAT. BR. 14,6,1,4. VARÂH. BRH. S. 16,8.

यज्ञविद्या (यज्ञ + वि°) f. *Opferkunde* PRAB. 107,5. 108,11.

यज्ञविभ्रष्ट s. u. 1. भ्रंश् mit वि 3).

यज्ञवीर्य (यज्ञ + वीर्य) adj. *dessen Macht auf dem Opfer beruht,* Beiw. Vishṇu's BHÂG. P. 6,9,30.

यज्ञवृक्ष (यज्ञ + वृक्ष) m. *Opferbaum* d. i. *Ficus indica* RÂGAN. im ÇKDR.

यज्ञवृद्ध (यज्ञ + वृद्ध) adj. *durch Opfer ergötzt:* Indra R̥V. 6,21,2.

यज्ञवृध् (यज्ञ + वृध्) adj. *opferfroh* oder *opferreich* AV. 4,23,3.

यज्ञवेशसे (यज्ञ + वे°) n. *Einbruch in den Gottesdienst, Opferstörung, Entweihung* AIT. BR. 2,11. 31. 3,46. देवा वै यज्ञमतन्वत तांस्तन्वानानसुरा अभ्यायन्यज्ञवेशसमेषां करिष्याम इति 6,4. स यज्ञवेशसं कृत्वा प्रासहा सोममपिबत् TS. 2,4,12,1. 5,2,1. 3,4,3,8. 10,4. 5,1,8,3. 6,3,4,9. ÇAT. BR. 1,6,3,8. 12,7,1,1. 8,3,1. 13,2,3,3. ÇÂÑKH. BR. 7,8.

यज्ञवोढवे (यज्ञ + वो°, dat. von वोढु und infin. zu वह्) *um die Opfer zu geleiten, — zu den Göttern zu befördern* NIDÂNAS. 1,6,14 in Ind. St. 8,114.

यज्ञव्रत (यज्ञ + व्रत) adj. *in der Observanz des Opfers stehend* TS. 6,1,4,4.

यज्ञशत्रु (यज्ञ + शत्रु) m. *Feind des Opfers;* N. pr. eines Râkshasa R. 3,29,30. 6,19,22.

यज्ञशमल s. शमल.

यज्ञशरण (यज्ञ + श°) n. *Opferschuppen* MÂLAV. 70,21.

यज्ञशाला (यज्ञ + शा°) f. *Opferhalle* BHÂG. P. 4,4,21. SÂJ. zu R̥V. 1,1,8. 13,6 (bei ROSEN यज्ञशालाद्वाराणि, bei MÜLLER यज्ञस्य शा°). 3,53,17. = अग्निशरण Schol. zu ÇÂK. 48,4.

यज्ञशास्त्र (यज्ञ + शास्त्र) n. *die Lehre vom Opfer* M. 4,22.

यज्ञशील (यज्ञ + शील) 1) adj. *an Opfer gewöhnt, häufig Opfer vollbringend* M. 11,20. Spr. 4420. BHÂG. P. 5,4,12. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,23.

यज्ञशेष (यज्ञ + शेष) *Ueberbleibsel von einem Opfer* H. 834. M. 3,285.

यज्ञश्री (यज्ञ + श्री) 1) adj. *das Opfer fördernd* R̥V. 1,4,7. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 473. BHÂG. P. 12,1,25.

यज्ञश्रेष्ठा (यज्ञ + श्रे°) f. *Cocculus cordifolius DC.* RÂGAN. im ÇKDR.

यज्ञसंशित (यज्ञ + सं°) adj. *vom Opfer getrieben* AV. 10,5,31.

यज्ञसंस्था (यज्ञ + सं°) f. *Opfergrundform* ÇÂÑKH. GRHJ. 1,1. 21.

यज्ञसदन (यज्ञ + स°) n. *Opferhalle* MBH. 2,1856. BHÂG. P. 9,6,27.

यज्ञसदस् (यज्ञ + स°) n. *Opferversammlung* BHÂG. P. 4,4,9.

यज्ञसाध् (यज्ञ + साध्) adj. *Gottesdienst vollführend* R̥V. 1,96,3. 114,4.

यज्ञसाधन (यज्ञ + सा°) adj. dass. R̥V. 1,145,3. 9,72,4. als Beiw. Vishṇu's *Opfer zu Wege bringend, — veranlassend* MBH. 13,7054.

यज्ञसार (यज्ञ + सार) m. 1) *das Beste beim Opfer,* als Bein. Vishṇu's PAÑKAR. 4,3,50. — 2) *Ficus glomerata* ÇABDAK. in Verz. d. Oxf. H. 195,*b*,45. RÂGAN. im ÇKDR.

यज्ञसारथि (यज्ञ + सा°) N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*. LÂTJ. 1,6,40.

यज्ञसूकर (यज्ञ + सू°) m. = यज्ञवराह Bhâg. P. 3,19,9.

यज्ञसूत्र (यज्ञ + सूत्र) n. *die beim Opfer über die linke Schulter hängende heilige Schnur* Gaṭâdh., Vṛddhâditjasaṁhitâ und Kalki-P. 4 im ÇKDr. R. 1,4,19. AK. 2,7,49. H. 845.

यज्ञसेन (यज्ञ + सेना) m. N. pr. eines Mannes TS. 5,3,8,1. Kâṭh. 21,4. Bein. Drupada's MBh. 1,5174. 6351. 2,126. 5,7461. ein Fürst von Vidarbha Mâlav. 69,17. ein Dânava Kathâs. 47,17. unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 12,1510. — Vgl. याज्ञसेन, याज्ञसेनि.

यज्ञसोम (यज्ञ + सोम) m. N. pr. verschiedener Brahmanen Kathâs. 10,6. 61,300. 97,8. 114,83. Verz. d. Oxf. H. 153,a,9.

यज्ञस्थल (यज्ञ + स्थल) n. 1) *Opferstätte* Verz. d. Oxf. H. 138,b,18. — 2) N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 28,156. 97,7. 114,83. eines Grâma 96,8. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 153,a,8.

यज्ञस्थाणु s. स्थाणु.

यज्ञस्थान (यज्ञ + स्थान) n. *Opferstätte* Hâr. 125. Gaṭâdh. im ÇKDr.

यज्ञस्वामिन् (यज्ञ + स्वा°) m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 123,239.

यज्ञहन् (यज्ञ + हन्) adj. *Gottesdienst —, Opfer störend, — verderbend* TS. 3,5,4,1. Kâṭh. 32,6. Pañkav. Br. 13,6,9. Bhâg. P. 4,19,15. Çiva 6,53. MBh. 3,15855.

यज्ञहन (यज्ञ + हन) adj. dass.; m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,79,12.

यज्ञहृदय (यज्ञ + हृ°) adj. *bei dem das Opfer das Herz ist, der das Opfer über Alles gern hat* Bhâg. P. 4,9,24.

यज्ञहोतृ (यज्ञ + हो°) m. 1) *Opferer im Gottesdienst* R̥V. 8,9,17. — 2) N. pr. eines Sohnes des Manu Uttama: °होत्रादयः Bhâg. P. 8,1,23. °होत्र Burnouf.

यज्ञांश (यज्ञ + अंश) m. *Opferantheil*: °भुज् *ein Gott* Kumâras. 3,14.

यज्ञागार (यज्ञ + अ° oder आ°) n. *Opferschuppen* Çâṅkh. Çr. 5,14,1. 18,24,14. MBh. 2,832.

यज्ञाङ्ग (यज्ञ + अङ्ग) 1) n. *Glied — d. h. Theil, Mittel, Werkzeug des Opfers* Lâṭj. 1,2,15. Kâtj. Çr. 24,6,1. Kauç. 1. 2. Nir. 7,4. 14,1. Kumâras. 1,17. — 2) m. a) *Ficus glomerata* AK. 2,4,2,2. *Acacia Catechu Willd.* Râgan. im ÇKDr. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Çabdak. ebend. — b) Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's MBh. 13,7053. Pañkar. 4,3,59. 8,26. Çiva's Çiv. — 3) f. आ *Cocculus cordifolius DC.* Râgan. im ÇKDr.

यज्ञात्मन् (यज्ञ + आ°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,7,33.

यज्ञात्ममिश्र (यज्ञात्मन् + मिश्र) m. N. pr. eines Mannes Hall 171. fgg.

यज्ञानुकाशिन् (यज्ञ + अ°) adj. *Opfer beschauend* TBr. 1,1,4,4. = यज्ञतत्त्वप्रकाशनसमर्थ Comm.

यज्ञान्त (यज्ञ + अन्त) m. *Beschluss eines Opfers* H. 834. Halâj. 2,262. °कृत् unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 13,7054.

यज्ञाय् (von यज्ञ), partic. °यत् *im Gottesdienst thätig* R̥V. 5,41,1.

यज्ञायज्ञीय n. N. eines nach dem Verse यज्ञा यज्ञा° (R̥V. 1,168,1) benannten Sâman, welches als letztes Glied des Agnishṭoma auch Agnishṭoma-Sâman heisst, AV. 8,10,13. 15. 17. 15,2,2. 3,5. 4,2. VS. 12,4. TS. 5,4,10,2. 5,8,1. TBr. 2,2,8,3. Çat. Br. 9,1,2,39. 4,4,10. 13. Pañkav. Br. 15,9,12. Kâtj. Çr. 4,10,1. 22,6,5. Lâṭj. 6,12,6. Âçv. Çr. 6,8,12. 7,5,7. 9,6,4. Khând. Up. 2,19,1. 2. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,a. अग्नेर्वैश्वानरस्य य° 201,a. अनुष्टु° 202,b. भरद्वाजस्य य° 227,a.

यज्ञायतन (यज्ञ + आ°) n. *Opferstätte* MBh. 1,861. 3,10376. R. 1,12,35. 4,37,33.

यज्ञायुध (यज्ञ + आ°) n. *Opfergeräthe* AV. 12,3,23. 18,4,2. Ait. Br. 7,19. zehn sind aufgezählt TS. 1,6,8,2. 3. TBr. 3,2,5,9. Çat. Br. 1,6,8,2. Kâṭh. 32,7. die Bez. scheint übertragen zu sein auf eine gewisse, mit च मे endigende Litanei TS. 5,4,8,3.

यज्ञायुधिन् (von यज्ञायुध) adj. *mit den Opfergeräthen versehen* Çat. Br. 12,5,2,8.

यज्ञारङ्गेशपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Roth in der Einl. zu Nir. l. wohl fehlerhaft für यज्ञर°.

यज्ञारि (यज्ञ + अ°) m. *Feind des Opfers*, Bein. Çiva's Dhanaṁgaja im ÇKDr.

यज्ञार्ह (यज्ञ + अर्ह) 1) adj. *Opfer verdienend, zum Opfer geeignet* H. 830. — 2) m. du. Bez. der Açvin H. ç. 35, wo wohl यज्ञार्हौ zu lesen ist.

यज्ञावयव (यज्ञ + अ°) adj. *dessen Glieder aus Opfern bestehen*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 3,18,20.

यज्ञाशन (यज्ञ + 2. अ°) m. *Opferverzehrer, ein Gott* H. 88, Sch.

यज्ञासाह् (यज्ञ + साह्) adj. *des Opfers mächtig*: °साहम् acc. R̥V. 10,20,7.

यज्ञिक m. 1) (von यज्ञ) *Butea frondosa* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) oxyt. = यज्ञदत्तक P. 5,3,78, Sch. — Vgl. पैतृ°.

यज्ञिन् (von यज्ञ) adj. *opferreich*: Vishṇu MBh. 13,7054. दाक्षायणयज्ञिन् s. u. दाक्षायणयज्ञ.

यज्ञिय् (wie eben), partic. °यत् zur Erkl. von अध्वर्यत् Çat. Br. 9,2,3,10.

यज्ञिय (wie eben) 1) adj. P. 5,1,71 nebst Vârtt. Vop. 7,15. a) *verehrungswürdig, opferwürdig, am Opfer Theil habend, heilig, göttlich*; gew. Beiw. der Götter und dessen was ihnen gehört; m. *Gott*. Nir. 7,27. 29. यज्ञियाः, मानुषाः R̥V. 4,1,20. 43,1. शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः 7,35,14. ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्राः 15. ये स्था मनोर्यज्ञियाः 10,36,10. साकं देवैर्यज्ञियासो भविष्यथ 1,161,2. 6. इन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् 6,41,1. देवाः 1,139,7. 188,3. 2,41,21. 3,6,3. 10,53,2. प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः 5,52,5. पितरो नमस्या देवा यज्ञियाः TS. 2,5,9,6. Bhâg. P. 4,7,41. Hariv. 1528. यज्ञियान्कृतवान्दैत्यान्देवांश्चाप्ययज्ञियान् 2266. 12639. भाग R̥V. 2,23,2. 3,60,1. 10,124,3. Hariv. 2803 (यज्ञीय die neuere Ausg.). नामन् R̥V. 1,72,3. 6,48,21. 1,4. Ait. Br. 5,23. AV. 2,12,2. Wagen der Açvin R̥V. 1,119,1. Flüsse 3,33,11. भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः 10,50,4. AV. 6,108,1. 7,80,4. गावः MBh. 13,3848. — b) *im Gottesdienst thätig, — kundig, dazu fähig* u. s. w.; *andächtig, fromm*: प्र यज्ञियेषु शवसा मदन्ति R̥V. 7,57,1. 1,148,3. 6,5,2. अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा 8,39,7. 10,11,1. 18,2. AV. 7,28,1. अभूम यज्ञियाः शुद्धाः 12,2,13. TS. 3,2,4,1. Çat. Br. 3,1,1,9. Hariv. 11363. — c) *zur Verehrung —, zum Gottesdienst —, zum Opfer gehörig, — passend* u. s. w.; *heilig* AK. 2,7,27. H. 830. स्तोम R̥V. 3,60,7. अरमति 7,42,3. 10,44,6. व्रत 66,9. धी 101,9. स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून् 10,11,1. कर्मन् *Opferhandlung* Jâgn. 3,28. अन्न AV. 6,116,1. 122,5. 10,9,3. चरु 11,1,16. द्यावापृथिव्योरिव यज्ञिये ऽग्निमादधे TBr. 1,1,3,3. 2,1,2. अग्नेस्तनूः 8. केतवः 9. TS. 2,6,3,1. वृत्त Çat. Br. 1,

यस्मिंस्तस्मिन् Mârk. P. 125,32. यद्वा तद्वा परद्रव्यम् M. 12,68. यद्वा तद्वा — साधु वा गर्हितं वा — कर्म Spr. 2396. यद्वा तद्वा भाषताम् als Erkl. von प्रलपतु Schol. zu Çâk. 23,14. यद्वा तद्वास्तु Dhûrtas. in LA. 75, 9. — c) mit dem interrog. क und einer nachfolgenden Partikel: α) यः कश्च *wer —, welcher immer, der erste beste, gleichviel wer, — welcher, beliebig:* एवा दूक् यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति RV. 8,49,7. यस्यै कस्यै च देवतायै Çat. Br. 1,6,2,19. य एव कश्च 1,4,13. 4,6,6,5. याम् — कां च 1,8,1,9. ये के च भ्रातरः स्थ Çâñkh. Çr. 15,26,1. इदं सर्वं यदिदं किं च Çat. Br. 14,4,2,25. 3,3,2,3. यत्किं चेदम् RV. 7,89,5 (vgl. M. 11,252, wo eben so zu lesen ist). यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि च Spr. 2472. अतः परं न दातव्यं यस्मै कस्मै च Pańkar. 2,1,16. याश्च काश्च कुदृष्टयः M. 12,95. यद्यत्किं च Âçv. Gṛhj. 1,22,15. — β) यः को ऽपि dass.: येन केनाप्युपायेन MBh. 3,3038. Spr. 2501. — γ) यः कश्चित् dass. M. 2,7. 8,69. 193. ये केचित् 2,123. 8,62. 9,271. ये च केचिन्निरिन्द्रियाः 201. ये तु तत्र विनिर्मुक्ताः सार्थात्केचिदविक्षताः MBh. 3,2552. कर्मणा येन केनचित् Spr. 4893. M. 8,279. तुष्येस्त्वं येन केनचित् R. Gorr. 2,100,3. प्राणिनो यस्य कस्यचित् Kathâs. 96,31. यस्मै कस्मैचित् Hit. 11,5. यत्किंचित् Çâñkh. Çr. 16, 20,2. M. 1,100. 3,273. 4,117. 8,405. 9,115. R. 1,3,38. यद्दुष्कृतं किंचित् — तत्सर्वम् M. 3,191. 7,94. fg. यच्च सातिशयं किंचित् 9,114. यद्या यच्छिष्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् Kathâs. 3,50. यच्चान्यत्किंचिदीदृशम् M. 1,45. यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम् 2,4. — δ) यः कश्चिदपि dass. Spr. 4754. यानि कानिचिदपि R. 3,55,48. यत्किंचिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया Spr. 4766. M. 7,137. im comp.: यत्किंचिदपिसंकल्पात् gegenüber नाकिंचिदपिसंकल्पात् Verz. d. Oxf. H. 232, *b*, 32. — ε) यः कश्चन dass.: जना ये तत्र केचन MBh. 3,2522. im comp.: यत्किंचनप्रलापिन् R. 4, 17, 4. — ζ) यः को वा dass.: शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा (देशे) निवसेत् M. 2,24. संतुष्टो येन केन वा Bhâg. P. 4,31,19. — *d*) mit त्वद् (vgl. u. 3. त्व): शूद्रांस्त्वद्योंस्त्वत् *oder sonst wen* Çat. Br. 5,3,2,2. क्लोमहृदयं त्वद्यत्त्वत् 4, 5,4,6. 13,8,4,5. 2,1. — 2) यो ऽहम् (त्वम् u. s. w.) *der ich* (*du* u. s. w.) so v. a. *da ich:* किं नु दुःखतरं शक्यं मया द्रष्टुमतः परम्। यो ऽहमद्य नरव्याघ्रान्सुप्तान्पश्यामि भूतले ॥ MBh. 1,5909. 3,2570. हस्तप्राप्तमहं मन्ये स्वर्गं तव — यस्त्वं कौशिकमागम्य शरण्यः शरणं गतः R. 1,59,5. अद्यैव जहि माम् — यः शरैणीकपुत्रं मां त्वमकार्षीरपुत्रकम् Daç. 2,50. जीव वर्षायुतं सुखी। यो मे वितरसि प्राणानधिष्ठानं च MBh. 3,3057. असाधुदर्शी खलु तत्रभवान्काश्यपः। य (यद् v. l.) इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते Çâk. 9,12. fg. सफलः कृष्ण संकल्पः सिद्धिश्च नियता मम। यस्य मे त्वं हृषीकेश यथेप्सितमुपस्थितः ॥ MBh. 2,1229. R. 1,47,22. Vikr. 35. Hit. 99,12. परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहम् — याहं राजभटैर्दीना ह्रियेय *dass ich* 54,3. — 3) *wenn Jemand:* यो नो वृकताति मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः RV. 2,34,9. स्त्रियं स्पृशेददेशे यः स्पृष्टो वा मर्षयेत्तया। परस्परस्यानुमते सर्वं संग्रहणं स्मृतम् ॥ M. 8,358. यश्च यद्वचनं ब्रूयात् — तत्सर्वम् — ममाख्येयम् R. 1,59, 8. यः कामानाप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत्। प्रापणात्सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते ॥ Spr. 4756. यस्तु सूर्येण निष्टप्तं गाङ्गेयं पिबते जलम्। गवां निर्हारनिर्मुक्ताद्यावकात्तद्विशिष्यते ॥ 4845. यस्य so v. a. *si cujus*, याम् so v. a. *si quam:* ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति। क्षेत्रिकस्यैव तद्बीजम् M. 9,54. यां (अजाम्) प्रसह्य वृको हन्यात्पाले तत्किल्बिषं भवेत् 8,235. fg. Dass यः in Wirklichkeit nicht *wenn Jmd* bedeutet, dass vielmehr in allen angeführten Beispielen eine Anakoluthie anzunehmen ist, braucht wohl kaum bemerkt zu werden. — 4) m. Synonym von पुरुष Tattvas. 19. — Vgl. यतम, यतर, यतस्, 1. यति, यत्र, यथा, यद्, यदा, यदि, यर्हि, यस्मात्, 1. यात्, याभिस्, यावत्, येन.

2. य 1) m. = गन्तर्, वायु, यमन Med. j. 1. = वायु, यशस्, योग, यान, यातर् Çabdar. im ÇKDr. *fame, celebrity; barley; light, lustre; abandoning;* Jama (vgl. Verz. d. Oxf. H. 189, *a*, No. 431) Anekârthak. bei Wilson. — 2) f. या यात्राप्तिधूमितत्यागेषु, वारणयोगसमज्ञायानेषु Med. *going, proceeding; a car, carriage; prohibiting, restraining, checking; religious meditation; getting, obtaining* Wilson nach ders. Aut.; *pudendum muliebre* ders. nach Anekârthak.

यक pron. rel. so v. a. 1. य. चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु RV. 8,21,18. यकः VS. 23,23. यका 22. P. 7,3,45. Vop. 4,6.

यकन् s. यकृत्.

यकार m. *der Buchstabe* य: यकारादिपद n. *ein mit* य *anlautendes Wort* euphemistisch für *eine Form von* यभ् Kâvjâd. 1,65.

यकृत् n. Uggval. zu Uṇâdis. 4,58. Siddh. K. 251, *a*, 8. Trik. 3,5,8. यकन् neben यकृत् in einigen Casus P. 6,1,63. Vop. 3,39. 165. *Leber* AK. 2,6,2,17. H. 604. Halâj. 3,13. यक्नस् RV. 10,163,3. यक्ना VS. 39,8. यकृत् (nom. sg. und am Anf. eines comp.) 19,85. AV. 9,7,11. 10,9,16. Çat. Br. 10,6,4,1. 12,9,1,3. 15. Kâtj. Çr. 6,7,6. Suçr. 1,43,12. 77,15. शोणितस्य स्थानं यकृत्प्लीहानौ 79,9. 2,313,16. Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 3. यकृद्रञ्जकपित्तस्य स्थानं रञ्जकसंश्रयम् Çârñg. Saṁh. 1,5,21. यकृन्मेदस् n. sg. *Leber und Fett* गवाश्वादि zu P. 2,4,11. यकृद्वर्णा Suçr. 1,41,3. 259,6. यकृति 276,9. यकृतस् 2,340,2. यकृत्तस् Nir. 4,3. — Vgl. याकृत्क.

यकृदात्मिका (von यकृत् + आत्मन्) f. *eine Art Schabe* (तैलपायिका) Çabdak. im ÇKDr.

यकृदुदर (यकृत् + उ°) n. *Leberanschwellung* Wise 357.

यकृद्दाल्य n. dass. Suçr. 1,360,17. 2,89,19.

यकृद्दाल्युदर (यकृत्-दालिन् + उ°) n. dass. Suçr. 1,276,9. 360,17 nach der Berliner Hdschr.

यकृद्वैरिन् (यकृत् + वै°) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* Çabdak. im ÇKDr.

यकृल्लोम (यकृत् + लोमन्) gaṇa पलद्यादि zu P. 4,2,110. m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 4,144. °लोमन् 6,353 (VP. 188; vgl. II,166). — Vgl. याकृल्लोम.

यक्ष्, यक्षति wohl mit der Grundbedeutung *sich regen, sich rühren;* auf diese Wurzel gehen zurück यक्ष, यक्षु, इयक्ष्; vgl. 1. यज्. Das simpl. यक्षामस् R. 7,4,12. fg. zur Erklärung des Namens यक्ष; nach dem Schol. *ehren*, welche Bed. Dhâtup. 33,19 der Form यक्षयते ertheilt wird.

— प्र *vorwärts eilen, — streben:* धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः RV. 1,132,5. *nachstreben einer Sache, erstreben, erreichen* (mit acc.): प्रयक्षं जेन्यं वसु 2,5,1. प्रऽयक्षन् Padap., प्रयक्षं प्रकर्षेण पूज्यम् Sâj. दीर्घमायुः प्रयक्षे 3,7,1. महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे 31,3. — Vgl. प्रयक्ष.

1. यक्ष (von यक्ष्) 1) n. *ein lebendes* oder *übernatürliches Wesen; eine unkörperliche, geisterhafte Erscheinung, Ding, Spukgestalt:* न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम् *unter denen nicht Gestalt und Wesen sichtbar ist* d. h. *welche unsichtbar sind* RV. 7,61,5. तस्मिन्हिरण्यये कोशे यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः *das lebendige Ding* AV. 10,2,32. 8,43. महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये 7,38. 8,15. 8,9,25. 11,6,10. यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम् VS.

34,2. तपो ह यक्षं प्रथमं सं बभूव TBr. 3,12,3,1. Çat. Br. 11,2,3,5. 14, 8,5,1. यक्षमिव चक्षुषः प्रियो वो भूयासम् Gobh. 3,4,24. यक्षाणि दृश्यन्ते तद्यथैतन्मर्कटः श्वापदो वायसः पुरुषरूपमिति Kauç. 95. तन्न व्यजानन्त किमिदं यक्षमिति Kenop. 15. fg. मा कस्यं यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्यं प्रमिनतो मापेः *Gespenst eines Verstorbenen* R̥V. 4,3,13. मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः 5,70,4. sg. coll. *die Wesen* u. s. w.: यस्यां व्रते प्रसवे यक्षमेजति AV. 8,9,8. तवं यक्षं पशुपते अप्स्वर्न्तः 11,2,24. यक्षस्याध्यक्षः Agni Vaiçvânara R̥V. 10,88,13. विश्वं यक्षं विश्वं भूतं सुभूतम् TS. 3, 11,1,1. Die Commentatoren erklären das Wort durch यज्ञ, पूजा, पूजित, पूज्य und ähnlich. — 2) m. *a)* Bez. *besonderer Genien im Gefolge* Kubera's AK. 1,1,1,6. H. 194. an. 2,569. Med. sh. 22. Halâj. 1,87. Âçv. Gr̥hj. 3,4,1. Çâṅkh. Gr̥hj. 4,9. Maitrj. Up. 1,4. M. 1,37. 3,196. 11,95. 12,47. Indr. 5,25. Sund. 2,7. Hid. 2,36. न देवेषु न यक्षेषु तादृग्रूपवती क्वचित् N. 1,13. MBh. 5,7476. वित्तेशो यक्षरक्षसाम् (sagt Kr̥shṇa von sich) Bhag. 10,23. 11,22. 17,4. यक्षोत्तमा यक्षपतिं धनेशं रक्षन्ति वै प्रासगदासिहस्ताः Hariv. 13132. Megh. 1. 67. Varâh. Br̥h. S. 13,8. 46, 92. 48,25. 54,111. Kathâs. 2,18. Râǵa-Tar. 1,159. वटवृक्षाधिरूढेन यक्षेण (vgl. यक्षतरु, यक्षावास) Vet. in LA. (II) 21,11. °लोक R. 3,47,11. °देवगृह Kathâs. 13,170. यक्षायतन 172. °भवन 177. °बलि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,123. अविशन्ति च यं यक्षाः (vgl. यक्षग्रह) MBh. 3,14507. यक्षाङ्गना Megh. 69. °कन्यकासाधन Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,17. सर्वयक्षेशधनेश्वर (Kubera) R. 4,11,12. Söhne Pulastja's MBh. 1,2571. Pulaha's 2572. der Khaçâ (Khasâ) Hariv. 234. VP. 150 (nach dem Vâju-P. ebend. ist Jaksha ein Sohn der Khasâ und Urvater der Jaksha). der Krodhâ Hariv. 11555 (wo die neuere Ausg. यक्षगणाश्च st. पक्षिगणाश्च liest). Kaçjapa's 11850. entstehen aus Brahman's Füssen 11794. im Dienste Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,35. bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 8, 20. 75,12 (°सेनापतयः). 81,9. Burn. Intr. 600. Lot. de la b. l. 54. Wassiljew 164. bei den Ǵaina eine Unterabtheilung der Vjantara H. 91. Herleitung des Namens von यक्ष् R. 7,4,13. खादाम इति ये चोचुस्ते यक्षा यक्षणात् (= ज्ञणात्?) Mârk. P. 48,20. — *b)* Bein. Kubera's AK. 1,1,1,65. H. 189. H. an. Med. Halâj. 1,79. — *c)* N. pr. eines Muni R. 6,82,162. — *d)* Indra's *Palast* Sârasvata im ÇKDr. — 3) f. ई *a)* *ein weiblicher* Jaksha MBh. 1,3895. 3,2519. R. 1,27,8 (28,8. 11 Gorr.). 3,38,15. 52,35. 7,5,41. Kathâs. 26,220. 49,166. 169. 121,20. 216. 227. यक्षीणां (so die neuere Ausg.) प्रथमा यक्षी (= कुबेरमाता Schol.) wird Durgâ genannt Hariv. 3282. Vgl. यक्षिणी. — *b)* Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पूर्व°, महा°.

2. यक्ष am Ende eines comp. aus यक्षत् (aor. von 1. यज्): होतायक्षं च होतर्यक्षं च Çâṅkh. Çr. 7,1,5. 8,4.

यक्षक m. = 1. यक्ष 2) *a)* R. 7,14,20.

यक्षकर्दम (1. यक्ष + क°) m. *eine aus Kampher, Agallochum, Moschus und* Kakkola *zusammengesetzte Salbe* AK. 2,6,3,34. nach H. 639 auch *Sandel* enthaltend, so auch nach Dhanvantari im ÇKDr., aber *Safran* st. Kakkola. Schol. zu Kâtj. Çr. 25,8,2.

यक्षकूप m. *der* Jaksha-*Teich*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षग्रह m. *das Besessensein durch* Jaksha, Bez. *einer best. Tobsucht* MBh. 3,14507. °परिपीडित Suçr. 2,532,18. Verz. d. B. H. No. 955.

यक्षण n. Mârk. P. 48,20 wohl = ज्ञणा. यक्षणी in संभोग° Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,40 fehlerhaft für यक्षिणी.

यक्षतरु m. *der Baum der* Jaksha, *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. Vet. in LA. (II) 21,11.

यक्षता f. *der Zustand eines* Jaksha Kathâs. 63,88.

यक्षत्व n. dass. R. 3,17,32.

यक्षदर (1. यक्ष + दर) N. pr. einer Gegend Râǵa-Tar. 5,87.

यक्षदासी (1. यक्ष + दा°) f. N. pr. einer Gattin Çûdraka's Daçak. 118,3.

यक्षदृश् (1. यक्ष + दृश्) adj. *wie eine lebende Erscheinung aussehend, wesenhaft, leibhaftig* R̥V. 7,56,16. = उत्सवस्य द्रष्टा Sâj.

यक्षधूप (1. यक्ष + धूप) m. *das Harz der Shorea robusta* AK. 2,6,3, 29. H. 647.

यक्षन् Mârk. P. 51,121 wohl fehlerhaft für यक्ष्मन्.

यक्षनायक (1. यक्ष + ना°) m. N. pr. des Dieners des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 41.

यक्षपति m. *ein* Jaksha-*Fürst* Kathâs. 26,213. Bein. Kubera's Hariv. 13132. Bhâg. P. 4,1,37.

यक्षपाल (1. यक्ष + पाल) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षभृत् (1. यक्ष + भृत्) adj. *die Wesen tragend, — erhaltend* (?): अत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः R̥V. 1,190,4.

यक्षमल्ल (1. यक्ष + मल्ल) m. bei den Buddhisten N. pr. eines der fünf Lokeçvara Wilson, Sel. Works 2,23.

यक्षरस (1. यक्ष + रस) m. *ein best. berauschendes Getränk* Trik. 2,10,15.

यक्षराज् m. 1) *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's AK. 1,1,1,63. Med. ǵ. 35. R. 4,44,30. Bhâg. P. 8,18,17. Maṇibhadra's MBh. 3,2529. यक्षराट्पुरी f. Kubera's *Stadt* Alakâ Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) *eine Palaestra* Med.

यक्षराज m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's Çabdar. im ÇKDr. MBh. 5,7538.

यक्षरात्रि f. *die Nacht der* Jaksha, Bez. *eines best. Festtages* (= दीपाली) Trik. 1,1,108.

यक्षवर्मन् (1. यक्ष + व°) m. N. pr. eines Commentators des Çâkaṭâjana Or. und Occ. 2,692,8.

यक्षवित्त adj. *dessen Besitz dem der* Jaksha *gleicht* so v. a. *eine Habe bloss hütend, nicht benutzend* Bhâg. P. 11,23,9. 24.

यक्षसेन (1. यक्ष + सेना) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षस्थल (यक्ष + स्थल) m. (sic) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षाङ्गी (von 1. यक्ष + 3. अङ्ग) f. N. pr. eines Flusses Çatr. 1,54.

यक्षाधिप (1. यक्ष + अ°) m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Vaiçravaṇa's (Kubera's) MBh. 3,2554.

यक्षाधिपति (1. यक्ष + अ°) m. dass. Shadv. Br. 5,6.

यक्षामलक (1. यक्ष + आ°) n. *die Frucht der* Piṇḍakharǵûra *genannten Dattelart* Çabdam. im ÇKDr.

यक्षावास (1. यक्ष + आ°) m. *der Aufenthaltsort der* Jaksha d. i. *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. LA. (II) 21,11.

यक्षिणीत्व n. *der Zustand einer* Jakshiṇî Kathâs. 73,430.

Gedruckt auf Verfügung der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften.
Den 8. December 1871.

K. Vesselofsky, beständiger Secretair.

य

1. य pron. relat. nom. m. यस्, f. या, nom. acc. n. यद्; die übrigen Casus regelmässig nach der pronom. Declination, gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. 56. Am Anfange eines comp. यद्, z. B. यत्कण्ठे, यन्माया Spr. 2277. यच्छृत्ते Kathâs. 18,71. यत्सदृशी 54,166. यद्वीर्य, यत्पराक्रम adjj. MBh. 1,3691. 8302. यत्सेन, यच्छील, यत्स्वभाव, यद्बल adjj. 5,2724. यद्राध्येयो यजमानः Ind. St. 10,90. यन्नामन् Hariv. 9970. Einfluss auf den Ton des verbi finiti VS. Prât. 6,14. P. 8,1,66. 1) *wer, welcher:* य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः। तेषां सं हन्मो अक्षाणि ṚV. 7,55,6. 2,12,9. 7,6,6. 49,3. 4. 8,3,23. AV. 6,84,1. 12,1,5. महो वो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन so v. a. *pro robore vestro* ṚV. 1,37,12. श्रूयतां येन दोषेण मृत्युर्विप्रान् जिघांसति M. 5,3. R. 1,8,5. आचक्ष्व यद्धृतं द्रव्यमवशिष्टं च यद्धनम् MBh. 3,2276. ज्ञायतामस्य यद्दुःखम् Brâhman. 1,10. एक एव सुहृद्धर्मो निधने ऽप्यनुयाति यः M. 8,17. ये — सर्वे ते 2,86. सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता Spr. 5225. M. 2,167. 234. यस्ते युद्धमयं दर्पं कामं च व्यपनाशयेत्। सो ऽहं जातः MBh. 5,7090. यः — असौ M. 4,170. Spr. 2458. H. 344. Sâh. D. 216,2. यद् — अस्य Spr. 5417. यस्य — एतम् MBh. 3, 15700. यद् — एतद् R. 1,60,5. Spr. 2337. यः — स एषः MBh. 3,15707. यम् — अयं सः 2430. fg. यद् — इदं तद् Çâk. 186. यद् — तदिदम् 27. यः — तादृशः Spr. 4908. 4186. यद्ब्रवीमि तथा कुरु MBh. 1,5965. एष एव — यः Taitt. Up. 2,3. एते — ये M. 9,257. इदं तद् — यद् Çâk. 67,23. इदं विज्ञानम् — येन Kathâs. 96,31. mit Fehlen des erwarteten demonstr.: सूर्येण ह्यभिनिर्मुक्तः शयानो ऽभ्युदितश्च यः। प्रायश्चित्तमकुर्वाणो युक्तः स्यान्महतैनसा ॥ M. 2,221. 3,191. 4,158. 8,313. 10,8. MBh. 3,2656. 2778. 5,7079. R. 1,55,17. Spr. 1696. 2416. 2692. 2975. 3699. 4617. अन्धः शत्रुकुलं गच्छेद्यः साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 94. 9,91. öfters fehlt auch das erwartete relat.: अन्धकं कुब्जकं चैव कुष्ठाङ्गं व्याधिपीडितम्। आपन्नं च भर्तारं न त्यजेत्सा महासती ॥ Spr. 3494. 4071. 4333. 4353. MBh. 11, 40. Bhâg. P. 1,5,38. Zwei und mehr Rell. in demselben Satze: यस्मिन्नहनि यदहः प्रदिश्यते Çâṅkh. Çr. 14,1,2. यः करोति वृतो यस्य स तस्यर्त्विगिहोच्यते M. 2,143. 149. 174. 3,22. 193. यो यज्ञायति तस्य तत् 7,96. 8,158. यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् Spr. 683. 2392. 2442. यस्य यावांश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती 2444. 2541. 2559. येन यावान्यथा धर्मो धर्मो वेह समीहितः। स एव तत्फलं भुङ्क्ते तथा तावदमुत्र वै ॥ 2503. यो ऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् 2532. यो यथा निक्षिपेद्धस्ते यमर्थं यस्य मानवः। स तथैव ग्रहीतव्यः M. 8,180. Ein oder mehrere Subjecte durch das Rel. zu einem Satze erweitert und dadurch hervorgehoben: यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्मबन्धविति *wie weisst du Etwas?* Ait. Br. 7, 27. यो रामस्तमचिन्तयत् Weber, Râmat. Up. 298. तस्मादेतत्परं मन्ये यज्ज्ञानोरस्य साधनम् M. 12,99. क्षत्रियस्य तु धर्मो ऽयं यद्युद्धम् MBh. 5,7300. रेतःशोणितयोरियं परिणतिर्यद्वर्ष्म Spr. 2641. यन्मरणं सो ऽस्य विश्रामः 2646. Kathâs. 17,46. मा भूत्स कालो यत्कष्टम् R. 2,85,9. यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्। एते Spr. 4759. Bhag. 6,21. पृष्ठमांसादनं तद्यत्परोक्षे दोषकीर्तनम् H. 268. 149. आत्मपरित्यागेण यदाश्रितानां रक्षणं तन्नीतिविदां न संमतम् Hit. 15,12. fg. 30,17. fg. 31,8. neutr. sg. auch in Verbindung mit Wörtern andern Geschlechts und anderer Zahl: परोक्षमिवैष ब्राह्मणो रूपमुपनिगच्छति यत्क्षत्रियः Ait. Br. 7,31. क्षत्रं वा एतद्वनस्पतीनां यन्न्यग्रोधः ebend. यज्ञ उ ह वा एष प्रत्यक्षं यद्ब्रह्मा 26. प्रजापतेर्वा एषा होत्रा यद्ग्रावस्तोत्रीया 6,2. Çat. Br. 1,2,3,5. 8,1,11. 3,3,1, 25. असिधाराव्रतमिदं मन्ये यदरिणा सह संवासः Pañkat. 196,15. Spr. 2183. Bhâg. P. 6,1,1. प्रकाशमेतत्तास्कर्यं यदेवनसमाह्वयौ M. 9,222. एतावानेव पुरुषो यज्जायात्मा प्रजेति ह 45. यत्तालिः समये श्रुतिः शिव शिवेत्युक्तिः u. s. w. असौ सन्मुक्तिमार्गे स्थितिः Spr. 2279. यदेतत्स्वाच्छन्द्याद्विहरणमकार्पण्यमशनं सहार्यैः संवासः u. s. w. न जाने कस्यैषा परिणतिरुदारस्य तपसः Spr. 4821. Ein solches यद् lässt sich durch *was — betrifft* wiedergeben; eben so in den folgenden Stellen: पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम सांप्रतम्। एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि ॥ Daç. 2, 52. तच्चदक्षो न तदवकल्पते Ait. Br. 6,2. Bisweilen wird ein auf diese Weise erweitertes Subject andern Subjecten angereiht, ohne dass ein besonderer Nachdruck auf ihm läge, aus rein metrischen Rücksichten: अन्धो जडः पीठसर्पी सप्तत्या स्थविरश्च यः। श्रोत्रियेषूपकुर्वंश्च न दाप्याः केनचित्करम् ॥ M. 8,394. तीव्रः खेदश्च दाहश्च तदा ग्लानिश्च या परा। समाविवेश मोहश्च R. 4,60,14. Auffallender ist, dass sogar ein Object in einen solchen relativen Satz aufgelöst und andern Objecten ohne Weiteres angereiht wird: सर्वांश्चर्मानवोहित कृतान्नं च तिलैः सह। अश्मनो लवणं चैव पशवो ये च मानुषाः ॥ M. 10,86. आशाव्याशास्त्वप्यथात्मानम् u. s. w. अर्चयेत् तस्य दितु मायाविद्ये ये कलापारतन्त्रे Weber, Râmat. Up. 325. इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ च यत्। पृथगुत्पद्यमानानाम् Kathop. 6, 6. ohne च so v. a. *nämlich:* ततो देवा एतं वज्रं ददृशुः। यद्यपः Çat. Br. 1,1, 1,17. Das Rel. in Verbindung mit andern Pronomm.: यस्ये ते ṚV. 7, 3,4. यं त्वा 8,43,27. यो ऽयम् Çat. Br. 1,7,1,3. MBh. 3,2568. fg. यमिमम् ṚV. 10,86,4. यं त्विमं धर्मम् Spr. 4835. येयम् Kathâs. 18, 69. P. 3,3,135, Sch. यदिदम् — अनेन R. 1,59,4. एष मे हृदि संकल्पो यदिदं कथितं मया MBh. 5,7374. यानिमान् 1,5980. यो ऽसौ M. 1,7. MBh. 3,2906. 16812. R. Gorr. 2,49,26. Vet. in LA. (III) 7,14. असौ तु यस्तिष्ठति MBh. 3, 15593. fg. 15595. fg. ये ऽमी Spr. 2317. स यः Çat. Br. 14,9,3,1. स य एषः 3,9,4,7. 11,7,3,1. यः सः — सः Sâh. D. 216,8. यत्तद् M. 1,11. Spr. 4769. य एषः Çat. Br. 11,7,3,1. MBh. 3,15701. 15711. fg. यदेतद् M. 1, 71. 6,82. MBh. 1,6011. Spr. 2379. य एते M. 3,200. Bhag. 1,23. Besondere Beachtung verdienen folgende Verbindungen: *a)* mit dem relat. य *wer —, welcher —, was immer:* यद्यद्वदति तत्तद्भवति Çat. Br. 14,4,3,27. Kâtj. Çr. 24,4,26. Lâtj. 3,1,9. 5,11,15. यं यं क्रतुमधीते Âçv. Gṛhj. 3,4,6. 1,14,8. M. 2,236. 3,231. 275. 8,48. उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति 9,40. MBh. 3,2202. 11499. 13,126. Bhag. 10,41. कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा R. 1,53,1 (54,1 Gorr.). Spr. 2318. 2387. 2518. 4769. 4829. 4893. 5026. Çâk. 141. 150. Kathâs. 18,247. Çiç. 3,16. Sâh. D. 217,10. Hit. 40,9. यो यो यावतिथश्चैषां स स तावद्गुणः स्मृतः M. 1,20. येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रयच्छति। तत्तत्तेनैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः ॥ 4,234. 12,53. MBh. 13,346. Bhag. 7,21. — *b)* mit dem demonstr. त *beliebig, gleichviel wer, — welcher:* यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात् M. 4,191. यस्य तस्य (यस्यां तस्यां v. l.) प्रसूतः Spr. 2429. कर्मणा येन तेनैव 3878.

यस्मिंस्तस्मिन् MÂRK. P. 125,32. यद्वा तद्वा परद्रव्यम् M. 12,68. यद्वा तद्वा — साधु वा गर्हितं वा — कर्म Spr. 2396. यद्वा तद्वा भाषताम् als Erkl. von प्रलपतु Schol. zu ÇÂK. 23,14. यद्वा तद्वास्तु DHÛRTAS. in LA. 75, 9. — c) mit dem interrog. क und einer nachfolgenden Partikel: α) यः कश्च *wer —, welcher immer, der erste beste, gleichviel wer, — welcher, beliebig:* एवा दक्ष यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति ṚV. 8, 49, 7. यस्यै कस्यै च देवतायै ÇAT. BR. 1,6,3,19. य एव कश्च 1,4,13. 4,6,6,5. याम् — कां च 1,8,1,9. ये के च भ्रातरः स्थ ÇÂÑKH. ÇR. 15,26,1. इदं सर्वं यदिदं किं च ÇAT. BR. 14,4,2,25. 3,3,2,3. यत्किं चेदम् ṚV. 7,89,5 (vgl. M. 11,252, wo eben so zu lesen ist). यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि च Spr. 2472. अतः परं न दातव्यं यस्मै कस्मै च PAÑKAR. 2,1,16. याश्च काश्च कुदृष्टयः M. 12,95. यद्यत्किं च ÂÇV. GṚHJ. 1,22,15. — β) यः को ऽपि dass.: येन केनाप्युपायेन MBH. 3,3038. Spr. 2501. — γ) यः कश्चित् dass. M. 2,7. 8,69. 193. ये केचित् 2,123. 8,62. 9,271. ये च केचिन्निरिन्द्रियाः 201. ये तु तत्र विनिर्मुक्ताः सार्थात्केचिद्विलताः MBH. 3, 2552. कर्मणा येन केनचित् Spr. 4893. M. 8,279. तुष्येस्त्वं येन केनचित् R. GORR. 2,100,3. प्राणिनो यस्य कस्यचित् KATHÂS. 96,31. यस्मै कस्मैचित् HIT. 11,5. यत्किंचित् ÇÂÑKH. ÇR. 16, 20,2. M. 1,100. 3,273. 4,117. 8,405. 9,115. R. 1,3,38. यद्दुष्कृतं किंचित् — तत्सर्वम् M. 3,191. 7,94. fg. यच्च सातिशयं किंचित् 9,114. यद्या यच्छिद्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् KATHÂS. 3,50. यच्चान्यत्किंचिदीदृशम् M. 1,45. यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम् 2,4. — δ) यः कश्चिदपि dass. Spr. 4754. यानि कानिचिदपि R. 3,55,48. यत्किंचिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया Spr. 4766. M. 7,137. im comp.: यत्किंचिदपिसंकल्पात् gegenüber नाकिंदिपिसंकल्पात् Verz. d. Oxf. H. 232, b, 32. — ε) यः कश्चन dass.: जना ये तत्र केचन MBH. 3, 2522. im comp.: यत्किंचनप्रलापिन् R. 4, 17, 4. — ζ) यः को वा dass.: शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा देशे निवसेत् M. 2,24. संतुष्टो येन केन वा BHÂG. P. 4,31,19. — d) mit त्वद् (vgl. u. 3. त्व): अग्नींस्त्वद्यांस्त्वत् *oder sonst wen* ÇAT. BR. 5,3,2,2. क्लोमहृदयं त्वद्यत्त्वत् 4, 5,2,6. 13,8,1,5. 2,1. — 2) यो ऽहम् (त्वम् u. s. w.) *der ich* (*du* u. s. w.) so v. a. *da ich:* किं नु दुःखतरं शक्यं मया द्रष्टुमतः परम्। यो ऽहमद्य नरव्याघ्रान्सुतान्पश्यामि भूतले॥ MBH. 1,5909. 3,2570. दृष्टप्राप्तमहं मन्ये स्वर्गं तव — यस्त्वं कौशिकमागम्य शरण्यः शरणं गतः R. 1,59,5. अद्यैव जहि माम् — यः श्रेणीकपुत्रं मां त्वमकार्षीरपुत्रकम् DAÇ. 2,50. जीव वर्षायुतं सुखी। यो मे वितरसि प्राणानधिष्ठानं च MBH. 3,3057. असाधुदर्शी खलु तत्रभवान्काश्यपः। य (यद् v. l.) इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते ÇÂK. 9,12. fg. सफलः कृत संकल्पः सिद्धिश्च नियता मम। यस्य मे त्वं हृषीकेश यथेप्सितमुपस्थितः॥ MBH. 2,1229. R. 1,47,22. VIKR. 35. HIT. 99,12. परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहम् — यान्हं राजभटैर्दीना ह्रियेय *dass ich* 54,3. — 3) *wenn Jemand:* यो नो वृकतातिं मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः ṚV. 2, 34, 9. स्त्रियं स्पृशेद्देशे यः स्पृष्टो वा मर्षयेत्तया। परस्परस्यानुमते सर्वं संग्रहणं स्मृतम्॥ M. 8,358. यश्च यद्वचनं ब्रूयात् — तत्सर्वम् — ममाख्येयम् R. 1,59, 8. यः कामानाप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत्। प्रापणात्सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते॥ Spr. 4756. यस्तु सूर्येण निष्टप्तं गाङ्गेयं पिबते जलम्। गवां निर्हारनिर्मुक्तायावकात्तद्विशिष्यते॥ 4845. यस्य so v. a. *si cujus,* याम् so v. a. *si quam:* ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति। क्षेत्रिकस्यैव तद्बीजम् M. 9, 54. यां (अजाम्) प्रसह्य वृको हन्यात्पाले तत्किल्बिषं भवेत् 8,235. fg. Dass यः in Wirklichkeit nicht *wenn Jmd* bedeutet, dass vielmehr in allen angeführten Beispielen eine Anakoluthie anzunehmen ist, braucht wohl kaum bemerkt zu werden. — 4) m. Synonym von पुरुष TATTVAS. 19. — Vgl. यतम, यतर, यतस्, 1. यति, यत्र, यथा, यद्, यदा, यदि, यर्हि, यस्मात्, 1. यात्, याभिस्, यावत्, येन.

2. य 1) m. = गन्तर्, वायु, यमन MED. j. 1. = वायु, यशस्, योग, यान, यातर् ÇABDAR. im ÇKDR. *fame, celebrity; barley; light, lustre; abandoning;* Jama (vgl. Verz. d. Oxf. H. 189, a, No. 431) ANEKÂRTHAK. bei WILSON. — 2) f. या यात्राप्तिधृमितत्यागेषु, वारणयोगसमज्ञायानेषु MED. *going, proceeding; a car, carriage; prohibiting, restraining, checking; religious meditation; getting, obtaining* WILSON nach ders. Aut.; *pudendum muliebre* ders. nach ANEKÂRTHAK.

यकं pron. rel. so v. a. 1. य. चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ṚV. 8,21,18. यकाः VS. 23,23. यका 22. P. 7,3,45. VOP. 4,6.

यकन् s. यकृत्.

यकार m. *der Buchstabe* य: यकारादिपद n. *ein mit* य *anlautendes Wort* euphemistisch für *eine Form von* यभ् KÂVJÂD. 1,65.

यकृत् n. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 4, 58. SIDDH. K. 251, a, 8. TRIK. 3, 5, 8. यकन् neben यकृत् in einigen Casus P. 6, 1, 63. VOP. 3, 39. 165. *Leber* AK. 2,6,2,17. H. 604. HALÂJ. 3,13. यक्नस् ṚV. 10,163,3. यक्ना VS. 39,8. यकृत् (nom. sg. und am Anf. eines comp.) 19,85. AV. 9,7,11. 10,9,16. ÇAT. BR. 10,6,1,1. 12,9,1,3. 15. KÂTJ. ÇR. 6,7,6. SUÇR. 1,43,12. 77,15. शोणितस्य स्थानं यकृत्प्लीहानौ 79,9. 2,313,16. Verz. d. Oxf. H. 316, b, 3. यकृद्रञ्जकपित्तस्य स्थानं रञ्जकसंश्रयम् ÇÂRÑG. SAṂH. 1,5,21. यकृन्मेदस् n. sg. *Leber und Fett* गवाश्वादि zu P. 2,4,11. यकृद्वर्णं SUÇR. 1,41,3. 259,6. यकृति 276,9. यकृतस् 2,340,2. यकृत्तस् NIR. 4,3. — Vgl. याकृतक.

यकृदात्मिका (von यकृत् + आत्मन्) f. *eine Art Schabe* (तैलपायिका) ÇABDAK. im ÇKDR.

यकृदुदर (यकृत् + उ°) n. *Leberanschwellung* WISE 337.

यकृदाल्य n. dass. SUÇR. 1,360,17. 2,89,19.

यकृद्दाल्युदर (यकृत्-दालिन् + उ°) n. dass. SUÇR. 1, 276, 9. 360, 17 nach der Berliner Hdschr.

यकृद्वैरिन् (यकृत् + वै°) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* ÇABDAK. im ÇKDR.

यकृल्लोम (यकृत् + लोमन्) gaṇa पलद्यादि zu P. 4,2,110. m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 4,144. °लोमन् 6,353 (VP. 188; vgl. II,166). — Vgl. याकृल्लोम.

यत्, यतति wohl mit der Grundbedeutung *sich regen, sich rühren;* auf diese Wurzel gehen zurück यत्न, यत्नु, इयत्; vgl. 1. यत्. Das simpl. यत्तामस् R. 7,4,12. fg. zur Erklärung des Namens यत्न; nach dem Schol. *ehren,* welche Bed. DHÂTUP. 33,19 der Form यत्नयते ertheilt wird.

— प्र *vorwärts eilen, — streben:* धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यत्तन्त श्रवस्यवः ṚV. 1, 132, 5. *nachstreben einer Sache, erstreben, erreichen* (mit acc.): प्रयत्तं जेन्यं वसु 2,5,1. प्रऽयत्तन् Padap., प्रयत्तं प्रकर्षेण पूज्यम् SÂJ. दीर्घमायुः प्रयत्ते 3,7,1. महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयत्ते 31,3. — Vgl. प्रयत्त.

1. यत्तै (von यत्) 1) n. *ein lebendes* oder *übernatürliches Wesen; eine unkörperliche, geisterhafte Erscheinung, Ding, Spukgestalt:* न यासु चित्रं ददृशे न यत्तम् *unter denen nicht Gestalt und Wesen sichtbar ist* d. h. *welche unsichtbar sind* ṚV. 7, 61, 5. तस्मिन्हिरण्यये कोशे यद्यत्तमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः *das lebendige Ding* AV. 10,2,32. 8,43. महद्यत्तं भुवनस्य मध्ये 7,38. 8,15. 8,9,25. 11,6,10. यदपूर्वं यत्तमत्तः प्रजानाम् VS.

34,2. तयो क्व यक्षं प्रथमं सं बभूव TBr. 3,12,3,1. Çat. Br. 11,2,3,5. 14,8,5,1. यक्षमिव चक्षुषः प्रियो वो भूयासम् Gobh. 3,4,24. यक्षाणि दृश्यन्ते तथ्यथैतन्मर्कटः श्वापदो वायसः पुरुषरूपमिति Kauç. 95. तन्न व्यजानन्त किमिदं यक्षमिति Kenop. 15. fg. मा कस्यं यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः *Gespenst eines Verstorbenen* RV. 4,3,13. मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः 5,70,4. sg. coll. *die Wesen u. s. w.*: यस्यां व्रते प्रसवे यक्षमेजति AV. 8,9,8. तवं यक्षं पशुपते अप्स्वन्तः 11,2,24. यक्षस्याध्यक्षः Agni Vaiçvânara RV. 10,88,13. विश्वं यक्षं विश्वं भूतं सुभृतम् TS. 3,11,1,1. Die Commentatoren erklären das Wort durch यज्ञ, पूजा, पूजित, पूज्य und ähnlich. — 2) m. a) Bez. *besonderer Genien im Gefolge* Kubera's AK. 1,1,1,6. H. 194. an. 2,569. Med. sh. 22. Halâj. 1,87. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. Maitrj. Up. 1,4. M. 1,37. 3,196. 11,95. 12,47. Indr. 5,25. Sund. 2,7. Hiḍ. 2,36. न देवेषु न यक्षेषु तादृग्रूपवती क्वचित् N. 1,13. MBh. 5,7476. वित्तेशो यक्षरक्षसाम् (sagt Kṛshṇa von sich) Bhag. 10,23. 11,22. 17,4. यक्षोत्तमा यक्षपतिं धनेशं रक्षन्ति वै प्रासगदासिहस्ताः Hariv. 13132. Megh. 1. 67. Varâh. Bṛh. S. 13,8. 46,92. 48,25. 54,111. Kathâs. 2,18. Râǵa-Tar. 1,159. वटवृक्षाधिरूढेन यक्षेण (vgl. यक्षतरु, यक्षावास) Vet. in LA. (II) 21,11. °लोक R. 3,47,11. °देवगृह Kathâs. 13,170. यक्षायतन 172. °भवन 177. °बलि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,123. आविशन्ति च यं यक्षाः (vgl. यक्षग्रह) MBh. 3,14507. यक्षाङ्गना Megh. 69. °कन्यकासाधन Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,17. सर्वयक्षेशधनेश्वर (Kubera) R. 4,11,12. Söhne Pulastja's MBh. 1,2571. Pulaha's 2572. der Khaçâ (Khasâ) Hariv. 234. VP. 150 (nach dem Vâju-P. ebend. ist Jaksha ein Sohn der Khasâ und Urvater der Jaksha). der Krodhâ Hariv. 11555 (wo die neuere Ausg. यक्षगणाश्च st. पक्षिगणाश्च liest). Kaçjapa's 11850. entstehen aus Brahman's Füssen 11794. im Dienste Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,35. bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 8,20. 75,12 (°सेनापतयः). 81,9. Burn. Intr. 600. Lot. de la b. l. 54. Wassiljew 164. bei den Ǵaina eine Unterabtheilung der Vjantara H. 91. Herleitung des Namens von यक्ष् R. 7,4,13. खादाम इति ये चोचुस्ते यक्षा यक्षणात् (= जक्षणात्?) Mârk. P. 48,20. — b) Bein. Kubera's AK. 1,1,1,65. H. 189. H. an. Med. Halâj. 1,79. — c) N. pr. eines Muni R. 6,82,162. — d) Indra's *Palast* Sârasvata im ÇKDr. — 3) f. ई a) *ein weiblicher* Jaksha MBh. 1,3895. 3,2519. R. 1,27,8 (28,8. 11 Gorr.). 3,38,15. 52,35. 7,5,41. Kathâs. 26,220. 49,166. 169. 121,20. 216. 227. यक्षीणां (so die neuere Ausg.) प्रथमा यक्षी (= कुबेरमाता Schol.) wird Durgâ genannt Hariv. 3282. Vgl. यक्षिणी. — b) Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पूर्व°, महा°.

2. यक्ष am Ende eines comp. aus यक्षत् (aor. von 1. यज्): होतायक्षं च होतर्यक्षं च Çâṅkh. Çr. 7,1,5. 8,4.

यक्षक m. = 1. यक्ष 2) a) R. 7,14,20.

यक्षकर्दम (1. यक्ष + क°) m. *eine aus Kampher, Agallochum, Moschus und* Kakkola *zusammengesetzte Salbe* AK. 2,6,3,34. nach H. 639 auch *Sandel* enthaltend, so auch nach Dhanvantari im ÇKDr., aber *Safran* st. Kakkola. Schol. zu Kâtj. Çr. 25,8,2.

यक्षकूप m. *der* Jaksha-*Teich*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षग्रह m. *das Besessensein durch* Jaksha, Bez. *einer best. Tobsucht* MBh. 3,14507. °परिपीडित Suçr. 2,532,18. Verz. d. B. H. No. 955.

यक्षण n. Mârk. P. 48,20 wohl = जक्षण. यक्षणी in संभोग° Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,40 fehlerhaft für यक्षिणी.

यक्षतरु m. *der Baum der* Jaksha, *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. Vet. in LA. (II) 21,11.

यक्षता f. *der Zustand eines* Jaksha Kathâs. 63,88.

यक्षत्व n. dass. R. 3,17,32.

यक्षदर (1. यक्ष + दर) N. pr. einer Gegend Râǵa-Tar. 5,87.

यक्षदासी (1. यक्ष + दा°) f. N. pr. einer Gattin Çûdraka's Daçak. 118,3.

यक्षदृश् (1. यक्ष + दृश्) adj. *wie eine lebende Erscheinung aussehend, wesenhaft, leibhaftig* RV. 7,56,16. = उत्सवस्य द्रष्टा Sâj.

यक्षधूप (1. यक्ष + धूप) m. *das Harz der Shorea robusta* AK. 2,6,3,29. H. 647.

यक्षन् Mârk. P. 51,121 wohl fehlerhaft für यक्ष्मन्.

यक्षनायक (1. यक्ष + ना°) m. N. pr. des Dieners des 4ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 41.

यक्षपति m. *ein* Jaksha-*Fürst* Kathâs. 26,213. Bein. Kubera's Hariv. 13132. Bhâg. P. 4,1,37.

यक्षपाल (1. यक्ष + पाल) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षभृत् (1. यक्ष + भृत्) adj. *die Wesen tragend, — erhaltend* (?): अत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः RV. 1,190,4.

यक्षमल्ल (1. यक्ष + मल्ल) m. bei den Buddhisten N. pr. eines der fünf Lokeçvara Wilson, Sel. Works 2,23.

यक्षरस (1. यक्ष + रस) m. *ein best. berauschendes Getränk* Trik. 2,10,15.

यक्षराज् m. 1) *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's AK. 1,1,1,63. Med. ǵ. 35. R. 4,44,30. Bhâg. P. 8,18,17. Maṇibhadra's MBh. 3,2529.

यक्षराट्पुरी f. Kubera's *Stadt* Alakâ Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) *eine Palaestra* Med.

यक्षराज m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Kubera's Çabdar. im ÇKDr. MBh. 5,7538.

यक्षरात्रि f. *die Nacht der* Jaksha, Bez. *eines best. Festtages* (= दीपाली) Trik. 1,1,108.

यक्षवर्मन् (1. यक्ष + व°) m. N. pr. eines Commentators des Çâkaṭâjana Or. und Occ. 2,692,8.

यक्षवित्त adj. *dessen Besitz dem der* Jaksha *gleicht* so v. a. *eine Habe bloss hütend, nicht benutzend* Bhâg. P. 11,23,9. 24.

यक्षसेन (1. यक्ष + सेना) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

यक्षस्थल (यक्ष + स्थल) m. (sic) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,41.

यक्षाङ्गी (von 1. यक्ष + 3. अङ्ग) f. N. pr. eines Flusses Çatr. 1,54.

यक्षाधिप (1. यक्ष + अ°) m. *der Fürst der* Jaksha, Bein. Vaiçravaṇa's (Kubera's) MBh. 3,2554.

यक्षाधिपति (1. यक्ष + अ°) m. dass. Shaḍv. Br. 5,6.

यक्षामलक (1. यक्ष + आ°) n. *die Frucht der* Piṇḍakharǵûra *genannten Dattelart* Çabdam. im ÇKDr.

यक्षावास (1. यक्ष + आ°) m. *der Aufenthaltsort der* Jaksha d. i. *Ficus indica* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. LA. (II) 21,11.

यक्षिणीत्व n. *der Zustand einer* Jakshiṇî Kathâs. 73,430.

यक्षिन् (von 1. यक्ष) 1) adj. *lebendig, wesenhaft:* Varuṇa ṚV. 7,88,6. = यजनीय Sâj. — 2) f. यक्षिणी *ein weiblicher* Jaksha (= यक्षी) MBh. 3,5093. 8083. fg. R. 1,26,25 (27,24 Gorr.). Kathâs. 10,178. 28,65. 34,79. 37,58. fgg. 49,164. fgg. 66,27. 73,25. fgg. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 4. Verz. d. B. H. No. 904. Kubera's *Gattin* Çabdar. im ÇKDr.

यक्षीत्व n. *der Zustand einer* Jakshî Kathâs. 26,225.

यक्षु (von यक्ष्) m. N. pr. eines Volksstammes, sg. ṚV. 7,18,6. pl. 19.

यक्षेन्द्र (1. यक्ष + इन्द्र) m. *ein Fürst der* Jaksha R. 7,14,20. Mârk. P. 53,9. Bein. Kubera's MBh. 5,7536. R. 5,5,8.

यक्षेश् (1. यक्ष + 2. ईश्) m. N. pr. der Diener des 11ten und 18ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 42. fg.

यक्षेश्वर (1. यक्ष + ई°) m. *ein Fürst der* Jaksha Megh. 7. Trik. 3,3,297. Bein. Kubera's H. 190. Hit. 101,4.

यक्षोडुम्बरक (1. यक्ष + उ°) n. *die Frucht der Ficus religiosa* Trik. 2,4,6.

यक्ष्म Uṇâdis. 1,139. m. *Krankheit* überh. oder Bez. *einer ganzen Klasse von Krankheiten*, etwa *der mit Abmagerung verbundenen:* स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्ते ṚV. 1,122,9. 10,85,31. 97,11. 12. 137,4. 163,1—6. AV. 2,10,5. 6. 3,31,1. 5,4,9. 30,8. अज्ञात 6,127,3. 8,7,2. 9,8,3. 7. यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् 10. यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मः 12,2,1. 2. 4,8. 19,36,1. 38,1. शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी VS. 12,97. fg. Später *Auszehrung* TS. 2,3,5,2. 5,6,5. Kâṭh. 11,3. 13,6. Çat. Br. 4,1,3,9. Mârk. P. 34,101. — Vgl. अ°, अज्ञात°, पाप°, राज° und यक्ष्मन्.

यक्ष्मगृहीत (यक्ष्मन् + गृ°) adj. *von der Auszehrung heimgesucht* Âçv. Gṛhj. 1,23,20. 3,6,3.

यक्ष्मग्रह (यक्ष्मन् + ग्रह) m. *Auszehrung:* °ग्रहार्दित (इन्दु) Bhâg. P. 6,6,23.

यक्ष्मघ्नी (यक्ष्मन् + घ्नी) f. *Weintraube* Çabdam. im ÇKDr.

यक्ष्मन् m. *Auszehrung* (welche gewöhnlich शोष und क्षय heisst) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,139. 4,150. AK. 2,6,2,2. H. 463. Suçr. 1,121,6. 159,20. 2,449,5. Verz. d. B. H. No. 929. 966. 996. गृहीतो यक्ष्मणा Ṛgvidh. 4,16 (nach Aufrecht). Kathâs. 73,259. Bhâg. P. 9,22,23. Schol. zu Kâtj. Çr. 295,16. यक्ष्मणा समगृह्यत MBh. 1,4142. 9,2011. यक्ष्मणा समपद्यत 1,4696. 5,4981 nach der Lesart der ed. Bomb. (यक्ष्माणं स° ed. Calc.). यक्ष्मणा क्लिश्यमानः (उडुराट्) 9,2009. यक्ष्मणा परिपीडितः Mârk. P. 15,35. यक्ष्मणापि परिहाणिः Ragh. 19,50 (यक्ष्मणाङ्गपरि° ed. Calc.). यक्ष्माकृत MBh. 13,1584. यक्ष्माभिभूत Hariv. 1358. यक्ष्मग्रस्त Bhâg. P. 6,13,12. स° adj. *die Auszehrung habend* MBh. 3,10721. — Vgl. पाप°, राज°.

यक्ष्मनाशन (यक्ष्म + ना°) 1) adj. *Krankheit vertreibend* AV. 3,12,9. — 2) m. angeblicher Verfasser von ṚV. 10,161, mit dem patron. Prâǵâpatja.

यक्ष्मिन् (von यक्ष्मन्) adj. *die Auszehrung habend* M. 3,154. MBh. 13,4275.

यक्ष्मोधा (यक्ष्मःऽधा Padap.) f. *eine best. Krankheit* AV. 9,8,9.

यक्ष्य adj. so v. a. यष्टव्य nach Sâj.: अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः ṚV. 8,49,3. Könnte zu यक्ष् gezogen werden und *rührig* bedeuten.

यङ् in der Gramm. Bez. *der Silbe* य *als Charakter des Intensivum*, यङ्लुक् *der Ausfall dieser Silbe* य; vgl. P. 2,4,74. यङ्लुगन्तशिरोमणि Titel einer Abhandlung über das *Intensivum ohne* य Colebr. Misc. Ess. II,43.

यच्छन्दस् (1. यद् + छन्दस्) adj. *welches* (rel.) *Metrum habend* Çâṅkh. Gṛhj. 2,7.

यछ् s. यम्.

1. यज्, यजति, °ते Dhâtup. 23,33 (देवपूजासंगतिकरणदानेषु). Vop. 8,133 (देवार्चादानसङ्गतौ). यजध्यैनम् = यजध्वमेनम् P. 7,1,43. इयाज, इयजिथ, इयष्ठ, येजिथ, ईजतुस् Schol. zu P. 6,1,17. 7,2,62. fg. Vop. 8,124. 133. fg. ईजे, ईजिरे; यक्ष्यति, °ते; अयक्ष्यत; यष्टा Schol. zu P. 7,2,62. 8,2,36. Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. यष्टा स्महे TBr. अयष्ट Schol. zu P. 1,2,11. यक्षि 2. sg., यक्षत्, यक्षतस् 3. du., यक्षताम् 3. du., यक्षि 1. sg. ṚV. 3,53,2. 10,52,5. अयक्षत, अयक्ष्महि, (आ)यक्षते, यक्ष्व, अयास् 2. sg. ṚV. 3,29,16. 9,82,5. याट् 2. sg. 10,61,21. अयाट् 3. sg. VS. 7,15. 21,47. अयाक्ष्म; यजसे ṚV. 8,25,1 wohl 1. sg., nach Sâj. 2. sg. इज्यात्, इज्यास्ताम्, इज्यासुस्, यक्षीष्ट, यक्षीध्वम् Schol. zu P. 3,4,104. 1,2,11. 8,3,78. pass. इज्यते, इज्य-त्, यज्यमान neben इज्यमान Pat. zu P. 6,1,108. इष्ट; यष्टुम्, यष्टवे, यजध्यै, ईजितुम् MBh. 2,1230. इष्ट्वा, इष्ट्वीनम् P. 7,1,48. 1) *einen Gott verehren, huldigen*, auch *mit Gebet und Darbringung*, daher *weihen, opfern*. In der alten Sprache in der Regel act., wenn Agni oder ein anderer Mittler handelt, und med., wenn der Mensch für sich verehrt und darbringt; später act. vom Opferpriester, med. vom Veranstalter des Opfers (यजन्ति याजकाः, यजमानो यजेत Schol. zu P. 1,3,72. Vop. 23,58). Ausnahmen sind jedoch häufig. *a*) mit acc. des Gottes, dat. der Person oder des Zweckes, für welchen, und instr. der Sache oder des Werkzeuges, womit die Handlung vollzogen wird. अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् ṚV. 7,17,3. ऋतं होता न इषितो यजाति 39,1. देवान्देवयते यज 5,21,1. अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहूतिभिः 1,45,10. 75,5. यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रम् 5,42,11. यजस्व सु पुर्वणीक देवान् 7,42,3. देवं देवं यजामहे 1,26,6. स चा बोधाति मनसा यजाति 77,2. स्रुचा यजाते 84,18. अग्निं यजध्यै हविषा तना गिरा 2,2,1. 4,24,5. 5,3,8. 77,2. 7,73,2. 8,23,1. सखा सखीन्त्सुमना यक्ष्यग्ने 3,4,1. 7,2,10. यो यजाति यजात इत् *wer für Andere oder für sich einen Gott ehrt* 8,31,1. यथायज ऋतुभिर्देव देवानेवा यजस्व तन्वं सुजात 10,7,6. महामु रण्वमवसे यजध्वम् 6,29,1. AV. 1,31,3. 3,10,9. 7,5,3. 4. 18,3,25. Ait. Br. 4,27. तेन त्वा यजा इति 7,14. 8,22. पाकयज्ञेनेजे Çat. Br. 1,8,1,7. 10,2,2,1. Paṅkav. Br. 14,6,8. Âçv. Gṛhj. 1,7,13. 4,8,40. Çâṅkh. Br. 23,5. Lâṭj. 8,1,19. 27. 3,7,13. यजन्त् ṚV. 4,16,11. यजमान (s. auch bes.) ṚV. 1,51,8. 7,16,6. 8,86,2. AV. 2,34,1. 2. 4,14,5. VS. 6,6. ईजाने ṚV. 1,125,4. 7,59,2. AV. 9,5,8. 18,4,1. Kaṭhop. 3,2. Çat. Br. 4,4,4,4. अनीजान 2,4,3,13. Ait. Br. 1,4. यक्ष्यमाण ṚV. 1,113,9. 125,4. TS. 1,6,7,3. Kâtj. Çr. 23,4,4. Kaush. Up. 1,1. इष्ट *derjenige, welchem geopfert worden ist*, und *geopfert* Kâtj. Çr. 25,10,22. Çâṅkh. Çr. 4,9,7. जीवतैव पशुनेष्टं भवति Çat. Br. 13,2,8,2. वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै ṚV. 3,1,1. 4,3. 6,12,1. 2. 7,2,7. 8,39,1. यष्टवे 1,13,6. 4,37,7. इष्ट्वा AV. 9,6,40. Mit gen. partit. der Sache P. 2,3,63. सोमस्य त्वा यक्षि ṚV. 3,53,2. आज्यस्यैव यजेत् Çat. Br. 2,4,3,10. घृतस्य 4,4,2,4. Kâtj. Çr. 10,1,24. — वाजिमेधैस्त्रिभिः — यज्ञेशमयजद्धरिम् Bhâg. P. 1,12,35. 3,13,11. 10,70,41. Mârk. P. 16,39. Varâh. Bṛh. S. 46,59. पशुना रुद्रं यजते Schol. zu P. 1,4,32, Vârtt. सुराघटसहस्रेण मांसभूतोदनेन च । यक्ष्ये त्वाम् R. 2,52,83. 55,20. M. 8,105. 11,118. यस्तिलैर्यजते पितॄन् MBh. 13,3317. Bhâg. P. 1,5,38. यजते क्रतुभिर्देवान्पितॄंश्च 3,32,2. 4,12,

Muir, ST. 3,70. — °वध Gild. Bibl. 118. fgg. — Vgl. याज्ञदत्ति.

यज्ञदत्तक m. Hypokoristikon von यज्ञदत्त P. 5,3,78, Sch.

यज्ञदत्तशर्मन् m. N. pr. beispielsweise gebraucht wie *Gajus* Schol. zu Kâtj. Çr. 158,3. 286,17. 396,20.

यज्ञदीक्षा (यज्ञ + दी°) f. *Weihe zu einem Opfer* M. 2,169. R. Gorr. 1,22,7. 7,37,10.

यज्ञदेव (यज्ञ + देव) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 114,91.

यज्ञद्रव्य (यज्ञ + द्रव्य) n. *ein zum Opfer erforderlicher Gegenstand* R. Gorr. 1,61,7. = पात्रीय Trik. 2,7,9.

यज्ञद्रुह् (यज्ञ + द्रुह्) m. *ein Feind der Opfer, ein* Râkshasa Wilson.

यज्ञधर (यज्ञ + धर) adj. *das Opfer tragend;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 67.

यज्ञधीर (यज्ञ + 2. धीर) adj. *der Götterverehrung kundig* ṚV. 7,87,3.

यज्ञनारायण (यज्ञ + ना°) m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 2,49. °दीक्षित Hall 172.

यज्ञनिष्कृत् (यज्ञ + नि°) adj. *den Gottesdienst ordnend* ṚV. 10,66,8.

यज्ञनी (यज्ञ + 2. नी) adj. *den Gottesdienst leitend* ṚV. 1,15,12. 10, 88,17. 107,6. VS. 2,6.

यज्ञनेमि (यज्ञ + ने°) adj. *von Opfern rings umgeben*, Beiw. Kṛshṇa's Pańkar. 4,8,26.

यज्ञपति (यज्ञ + प°) m. 1) *Herr des Gottesdienstes*, so heisst *derjenige, welcher eine Cerimonie anstellen lässt und bestreitet*, ṚV. 10,170,1. AV. 2,35,2. 4,11,5. VS. 1,2. 12. 2,6. 12. 5,3. 6,10. 11. 18,59. Ait. Br. 5,27. TS. 3,1,4,4. 6,6,2,3. Çat. Br. 1,8,1,28. Çâṅkh. Çr. 10,15,13. VP. bei Muir, ST. 1,62. *derjenige, welchem zu Ehren ein Opfer dargebracht wird*, Bein. Soma's (nach Mahîdh.) VS. 8,25. Vishṇu's Bhâg. P. 2,4, 20. 9,14. 4,19,3. 20,1. 21,26. 8,17,7. Verz. d. Oxf. H. 9, *b*, 1. — 2) N. pr. eines Autors Hall 30. — Vgl. याज्ञपत.

यज्ञपत्नी (यज्ञ + प°) f. *die am Opfer theilnehmende Gattin des Veranstalters eines Opfers* MBh. 1,7353. 12,9816 (die ed. Bomb. °पत्नीसमानीता). Bhâg. P. 11,12,6.

यज्ञपथ (यज्ञ + पथ) m. *Pfad der Verehrung* oder *des Opfers* Çat. Br. 5,1,3,6. 3,2,4. 7,3,1,22. 12,4,4,1.

यज्ञपद् oder °पाद्, adj. f. °पदी etwa *im Opfer fussend* AV. 10,10,6.

यज्ञपरिभाषा f. Titel eines Sûtra des Âpastamba Muir, ST. 2,181, 1 v. u. 3,41,7. °सूत्राणि Z. d. d. m. G. 9, xlii.

यज्ञपरुस् (यज्ञ + प°) n. *Fuge des Opfers*: यन्न दुह्याद्यज्ञपरुरन्तरियात् TBr. 3,7,1,5. 12,3,12. 1,1,9,5. TS. 5,2,5,1. 6. 6,1,4,5.

यज्ञपशु (यज्ञ + 1. पशु) m. *Opferthier* Bhâg. P. 4,19,11. 28,26. *Pferd* Çabdam. im ÇKDr.

यज्ञपात्र (यज्ञ + पात्र) n. *Oppergeräth* Çat. Br. 1,1,2,12. 4,17. 12,5, 2,7. Âçv. Gṛhj. 4,2,1. Kauç. 81. Kâtj. Çr. 25,7,31. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 90. M. 5,116. 167. R. Gorr. 2,83,32. 34. 3,76,23. Bhâg. P. 4, 5,15. P. 1,3,64. 8,1,15. Vop. 23,51.

यज्ञपात्रीय (von यज्ञपात्र) adj. *zu einem Opfergeräth geeignet* Çat. Br. 2,2,4,10.

यज्ञपार्श्व (यज्ञ + पार्श्व) n. Titel einer Schrift Ind. St. 3,269. Weber, Gjot. 49. Müller, SL. 236. Hall 192. Verz. d. B. H. No. 261. Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 32. 277, *a*, 12. 279, *a*, 21. 292, *a*, 51. Nach Aufrecht m. N. pr. eines Autors.

यज्ञपुच्छ (यज्ञ + पुच्छ) n. *Schwanz d. h. Endstück des Opfers* Âçv. Çr. 6,11,2. Lâtj. 9,5,4. Çat. Br. 11,5,5,11.

यज्ञपुंस् (यज्ञ + पु°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,25,29. Pańkar. 4,3,36 (S. 248).

यज्ञपुरश्चरण (यज्ञ + पु°) n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,470.

यज्ञपुरुष (यज्ञ + पु°) m. = यज्ञपुंस् H. 214. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*, 36. VP. bei Muir, ST. 1,63. Bhâg. P. 1,5,38. 2,7,11. 3,13,23. 22,31. 4,14,25. 5,3,1. 8,17,8. 9,18,48. °पूरुष 4,13,4. 14,18.

यज्ञप्री (यज्ञ + 2. प्री) adj. *am Opfer sich vergnügend*: इषं दुहन्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो ṚV. 10,122,6. VS. 27,31.

यज्ञफलद (यज्ञ-फल + 1. द) adj. *Opfer belohnend*, Bein. Vishṇu's Pańkar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञबन्धु (यज्ञ + ब°) m. *Opfergenosse* ṚV. 4,1,9.

यज्ञबाहु (यज्ञ + बाहु) m. *des Opfers Arm*, ein N. des *Feuers* und zugleich N. pr. eines Sohnes des Prijavrata Bhâg. P. 5,1,25. 34. 20,9.

1. यज्ञभाग (यज्ञ + भाग) m. *Antheil am Opfer* Hariv. 8002. 8006. Kumâras. 1,17. Bhâg. P. 9,17,15. Mârk. P. 105,4. °ऋतानरीन् 105,20. °भुज् *einen Opferantheil geniessend;* m. *ein Gott* Bhâg. P. 8,14,6. Mârk. P. 105,6. Kumâras. 6,72.

2. यज्ञभाग (wie eben) adj. *einen Antheil am Opfer habend*: सुराः Mârk. P. 118,7. m. *ein Gott*: यज्ञभागेश्वर m. Bein. Indra's Çâk. 186.

यज्ञभाजन (यज्ञ + भा°) n. *Opfergeräth* Gatâdh. im ÇKDr.

यज्ञभाण्ड (यज्ञ + भा°) n. dass. R. 1,4,21.

यज्ञभावन (यज्ञ + भा°) adj. *Opfer fördernd*, Beiw. Vishṇu's Bhâg. P. 3,13,33. 4,7,48. Pańkar. 4,3,35 (S. 248). यज्ञैर्भाव्यत आक्रियते Comm. zu Bhâg. P.

यज्ञभुज् (यज्ञ + 4. भुज्) adj. *Opfer geniessend;* m. *ein Gott*, insbes. Vishṇu MBh. 13,7054. Bhâg. P. 4,13,32. 9,17,4. Mârk. P. 73,6. 104, 12. Pańkar. 4,3,35 (S. 248).

यज्ञभूमि (यज्ञ + भू°) f. *Opferstätte* R. 1,11,14 (19 Gorr.). 73,14 (75, 15 Gorr.). R. Gorr. 1,13,1. Kathâs. 51,105.

यज्ञभूषण (यज्ञ + भू°) m. *weisses* Darbha-*Gras* Râgan. im ÇKDr.

यज्ञभृत् (यज्ञ + भृत्) m. *der Veranstalter eines Opfers* Varâh. Bṛh. S. 13,11. Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7054.

यज्ञभोक्तृ (यज्ञ + भो°) m. *Geniesser der Opfer*, Beiw. Kṛshṇa's Pańkar. 4,1,34.

यज्ञमण्डल (यज्ञ + म°) n. *Opferrund, Opferstätte* R. 3,4,12.

यज्ञमनस् (यज्ञ + म°) adj. *auf das Opfer merkend* Âçv. Çr. 1,12,30.

यज्ञमन्मन् (यज्ञ + म°) adj. *opferwillig* ṚV. 7,61,4.

यज्ञमय (von यज्ञ) adj. *das Opfer in sich enthaltend* Hariv. 11365. — Vgl. वेदयज्ञमय.

यज्ञमहोत्सव (यज्ञ + म°) m. *eine grosse Opferfeier* Bhâg. P. 4,19,2.

यज्ञमालि (यज्ञ + मा°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, 6. Verz. d. B. H. 130.

यज्ञमुख (यज्ञ + मुख) n. *Mund und Eingang des Opfers* Ait. Br. 1,8. fgg. TBr. 1,1,9,4. 2,1,8. अग्निर्वै यज्ञमुखम् 6,1,8. 11. यज्ञमुखं वा अग्निहोत्रं ब्रह्मैता व्याहृतयो यज्ञमुख एव ब्रह्म कुरुते TS. 1,6,10,2. 3,1,3,1.

ÇAT. BR. **1**,1,**2**,3. **2**,3,**1**,20. **12**,7,**2**,12.

यज्ञमुँष् (यज्ञ + 2. मुष्) adj. *das Opfer raubend; m. ein dem Opfer nachstellender Dämon* TS. **3**, 5, **4**, 1. KÂTH. 32, 6. MBH. **3**,14165. fg. VARÂH. BṚH. S. 19, 13. — Vgl. इष्टिमुष्.

यज्ञमुह् in der Stelle पुरा यज्ञमुहो रक्षांसि तीर्थेषयो गोपायन्ति ÇÂṄKH. BR. 12, 1.

यज्ञमूर्ति (यज्ञ + मू°) m. N. pr. eines Mannes HALL 54.

यज्ञमेनि s. u. मेनि.

यज्ञयशसं (यज्ञ + यशस्) n. *Anmuth des Opfers* TS. **5**,1,**1**,3. **6**,5,**1**,4.

यज्ञयोग्य (यज्ञ + योग्य) adj. *zum Opfer geeignet; m. Ficus glomerata* RÂǴAN. im ÇKDR.

यज्ञरस (यज्ञ + रस) m. *Opfernass* d. i. *der* Soma HARIV. 2589. — Vgl. यज्ञरेतस्.

यज्ञराज् (यज्ञ + राज्) m. *König des Opfers, der Mond* H. ç. **11**. wohl fehlerhaft für यज्वराज्; vgl. यज्वनां पतिः u. यज्वन्.

यज्ञरुचि (यज्ञ + रु°) m. N. pr. eines Dânava KATHÂS. 47, 25.

यज्ञरेतस् (यज्ञ + रे°) n. *der Same des Opfers* d. i. *der* Soma BHÂG. P. **4**,24,38. — Vgl. यज्ञरस.

यज्ञर्त (यज्ञ + ऋत) adj. etwa *opfergerecht* AV. **8**,10,4.

1. यज्ञवचंस् (यज्ञ + व°) n. *Opferwort* AV. **11**,3,19.

2. यज्ञवचस् (wie eben) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Râǵastambâjana ÇAT. BR. **10**,6,**5**,9. pl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,13.

यज्ञवनस् (यज्ञ + व°) adj. *Opfer liebend* ṚV. **10**,50,5.

यज्ञवत् (von यज्ञ) adj. *verehrend* ṚV. **3**,27,6.

यज्ञवराह (यज्ञ + व°) m. Vishṇu *als Eber* WILSON. — Vgl. यज्ञसूकर.

यज्ञवर्धन (यज्ञ + व°) adj. *Opfer fördernd* AV. **10**,6,34.

यज्ञवर्मन् (यज्ञ + व°) m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. **3**,168.

यज्ञवल्क m. N. pr. eines Mannes: यज्ञस्य वल्को वक्ता यज्ञवल्कः तस्यापत्यं याज्ञवल्क्यः ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. **1**,4,3.

यज्ञवल्ली (यज्ञ + व°) f. = सोमवल्ली *Cocculus cordifolius DC.* RÂǴAN. im ÇKDR.

यज्ञवाट (यज्ञ + वाट) m. *Opferstätte* HÂR. 125. ÇAUNAKA bei MÜLLER, SL. 236, 5. MBH. 3, 9910. 15290. 7, 2173. 12, 9468. 14, 90. 282. HARIV. 1418. 8010. R. **1**,44,35. 50,1 (51,1 GORR.). 62, 23. R. GORR. **1**,4,23. **7**, 91,15. MṚKKH. 174,19. BHÂG. P. **10**,23,33.

यज्ञवाम (यज्ञ + वाम) m. N. pr. eines Mannes VÂJU-P. in VP. I, 153.

यज्ञवास्तुं (यज्ञ + वा°) n. *Stätte des Gottesdienstes, Opferplatz* AIT. BR. 2, 1. 13. TS. **2**,6,**2**,2. **3**,1,**9**,5. 4,**10**,2. ÇAT. BR. **12**,3,**4**,1. ÇÂṄKH. BR. 10, 2. KAUÇ. 67. Kurzer Ausdruck für यज्ञवास्तुक्रिया (vgl. GṚHJASAṂGR. 2,12) GOBH. **1**,8,26. 31.

यज्ञवाह् (यज्ञ + वाह्) 1) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd* MBH. **1**,8354. 2, 304. 13, 625. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 12. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9,2572.

यज्ञवाहन (यज्ञ + वा°) adj. 1) *das Opfer geleitend* so v. a. *vollführend:* विप्राः MBH. 12,9721. — 2) *dessen Vehikel das Opfer ist*, Bein. Vishṇu's MBH. 13,7053. Çiva's ÇIV.

यज्ञवाहस् (यज्ञ + वा°) adj. 1) *Verehrung bringend:* वर्चो धा यज्ञवाहसे ṚV. 3,8,3. 24,1. दैवीं धियं मनामहे वर्चोधां यज्ञवाहसम् VS. 4,11. — 2) *Verehrung empfangend*, von Göttern: यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम्। होत्राभिरिन्द्रं वावृधुः ṚV. **8**,12,20. **1**,5,11. 86,2. **4**, 47, 4. AV. **6**, 114, 2. TS. **1**,8,**3**,1.

यज्ञवाहिन् (यज्ञ + वा°) adj. *das Opfer geleitend, — zu den Göttern befördernd:* अ° MBH. 13,1318.

यज्ञविद् (यज्ञ + विद्) adj. *opferkundig* ÇAT. BR. **14**, 6, **3**, 4. VARÂH. BṚH. S. 16, 8.

यज्ञविद्या (यज्ञ + वि°) f. *Opferkunde* PRAB. 107, 5. 108, 11.

यज्ञविभ्रष्ट s. u. 1. भ्रंश् mit वि 3).

यज्ञवीर्य (यज्ञ + वीर्य) adj. *dessen Macht auf dem Opfer beruht*, Beiw. Vishṇu's BHÂG. P. **6**,9,30.

यज्ञवृत्त (यज्ञ + वृत्त) m. *Opferbaum* d. i. *Ficus indica* RÂǴAN. im ÇKDR.

यज्ञवृद्ध (यज्ञ + वृद्ध) adj. *durch Opfer ergötzt:* Indra ṚV. **6**,21,2.

यज्ञवृध् (यज्ञ + वृध्) adj. *opferfroh* oder *opferreich* AV. **4**,23,3.

यज्ञवेशसं (यज्ञ + वे°) n. *Einbruch in den Gottesdienst, Opferstörung, Entweihung* AIT. BR. 2, 11. 31. 3, 46. देवा वै यज्ञमतन्वत तांस्तन्वानानसुरा अभ्यायन्यज्ञवेशसमेषां करिष्याम इति 6, 4. स यज्ञवेशसं कृत्वा प्रासहा सोममपिबत् TS. **2**,4,**12**,1. 5,**2**,1. **3**,4,**3**,8. **10**,4. **5**,1,**8**,3. **6**,3,**4**,9. ÇAT. BR. **1**,6,**3**,8. **12**,7,**1**,1. 8,**3**,1. **13**,2,**3**,3. ÇÂṄKH. BR. 7, 8.

यज्ञवोढवे (यज्ञ + वो°, dat. von वोढु und infin. zu वह्) *um die Opfer zu geleiten, — zu den Göttern zu befördern* NIDÂNAS. **1**,6,14 in Ind. St. **8**,114.

यज्ञव्रत (यज्ञ + व्रत) adj. *in der Observanz des Opfers stehend* TS. **6**,1,**4**,4.

यज्ञशत्रु (यज्ञ + शत्रु) m. *Feind des Opfers;* N. pr. eines Râkshasa R. **3**,29,30. **6**,19,22.

यज्ञशमल s. शमल.

यज्ञशरण (यज्ञ + श°) n. *Opferschuppen* MÂLAV. 70, 21.

यज्ञशाला (यज्ञ + शा°) f. *Opferhalle* BHÂG. P. **4**,4,21. SÂJ. zu ṚV. **1**,1, 8. 13,6 (bei ROSEN यज्ञशालाद्वाराणि, bei MÜLLER यज्ञस्य शा°). **3**,53,17. = अग्निशरण Schol. zu ÇÂK. 48, 4.

यज्ञशास्त्र (यज्ञ + शास्त्र) n. *die Lehre vom Opfer* M. 4, 22.

यज्ञशील (यज्ञ + शील) 1) adj. *an Opfer gewöhnt, häufig Opfer vollbringend* M. 11, 20. Spr. 4420. BHÂG. P. **5**, 4, 12. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, 23.

यज्ञशेष (यज्ञ + शेष) *Ueberbleibsel von einem Opfer* H. 834. M. 3, 285.

यज्ञश्री (यज्ञ + श्री) 1) adj. *das Opfer fördernd* ṚV. **1**,4,7. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 473. BHÂG. P. **12**,1,25.

यज्ञश्रेष्ठा (यज्ञ + श्रे°) f. *Cocculus cordifolius DC.* RÂǴAN. im ÇKDR.

यज्ञसंशित (यज्ञ + सं°) adj. *vom Opfer getrieben* AV. **10**,5,31.

यज्ञसंस्था (यज्ञ + सं°) f. *Opfergrundform* ÇÂṄKH. GṚHJ. 1, 1. 21.

यज्ञसदन (यज्ञ + स°) n. *Opferhalle* MBH. 2,1856. BHÂG. P. **9**,6,27.

यज्ञसदस् (यज्ञ + स°) n. *Opferversammlung* BHÂG. P. **4**,4,9.

यज्ञसाध् (यज्ञ + साध्) adj. *Gottesdienst vollführend* ṚV. **1**,96,3. 114,4.

यज्ञसाधन (यज्ञ + सा°) adj. dass. ṚV. **1**,145,3. **9**,72,4. als Beiw. Vishṇu's *Opfer zu Wege bringend, — veranlassend* MBH. 13,7054.

यज्ञसार (यज्ञ + सार) m. 1) *das Beste beim Opfer*, als Bein. Vishṇu's PAṄKAR. **4**,3,50. — 2) *Ficus glomerata* ÇABDAK. in Verz. d. Oxf. H. 195, *b*, 45. RÂǴAN. im ÇKDR.

यज्ञसारथि (यज्ञ + सा°) N. eines Sâman Ind. St. **3**,230, *a*. LÂṬJ. **1**,6,40.

यज्ञसूकर (यज्ञ + सू°) m. = यज्ञवराह Bhâg. P. 3,19,9.

यज्ञसूत्र (यज्ञ + सूत्र) n. *die beim Opfer über die linke Schulter hängende heilige Schnur* Gaṭâdh., Vṛddhâditjasaṁhitâ und Kalki-P. 4 im ÇKDr. R. 1,4,19. AK. 2,7,49. H. 845.

यज्ञसेन (यज्ञ + सेना) m. N. pr. eines Mannes TS. 5,3,8,1. Kâṭh. 21, 4. Bein. Drupada's MBh. 1,5174. 6351. 2,126. 5,7461. ein Fürst von Vidarbha Mâlav. 69,17. ein Dânava Kathâs. 47,17. unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 12,1510. — Vgl. याज्ञसेन, याज्ञसेनि.

यज्ञसोम (यज्ञ + सोम) m. N. pr. verschiedener Brahmanen Kathâs. 10, 6. 61,300. 97,8. 114,83. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,9.

यज्ञस्थल (यज्ञ + स्थल) n. 1) *Opferstätte* Verz. d. Oxf. H. 138,*b*,18. — 2) N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 28,156. 97,7. 114,83. eines Grâma 96,8. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,8.

यज्ञस्थाणु s. स्थाणु.

यज्ञस्थान (यज्ञ + स्थान) n. *Opferstätte* Hâr. 125. Gaṭâdh. im ÇKDr.

यज्ञस्वामिन् (यज्ञ + स्वा°) m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 123,239.

यज्ञहन् (यज्ञ + हन्) adj. *Gottesdienst —, Opfer störend, — verderbend* TS. 3,5,4,1. Kâṭh. 32,6. Pañkav. Br. 13,6,9. Bhâg. P. 4,19,15. Çiva 6,53. MBh. 3,15855.

यज्ञहन (यज्ञ + हन) adj. dass.; m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,79,12.

यज्ञहृदय (यज्ञ + हृ°) adj. *bei dem das Opfer das Herz ist, der das Opfer über Alles gern hat* Bhâg. P. 4,9,24.

यज्ञहोतर् (यज्ञ + हो°) m. 1) *Opferer im Gottesdienst* Ṛv. 8,9,17. — 2) N. pr. eines Sohnes des Manu Uttama: °होत्रादय: Bhâg. P. 8,1,23. °होत्र Burnouf.

यज्ञांश (यज्ञ + अंश) m. *Opferantheil:* °भुज् *ein Gott* Kumâras. 3,14.

यज्ञागार (यज्ञ + अ° oder आ°) n. *Opferschuppen* Çâñkh. Çr. 5,14,1. 18,24,14. MBh. 2,832.

यज्ञाङ्ग (यज्ञ + अङ्ग) 1) n. *Glied — d. h. Theil, Mittel, Werkzeug des Opfers* Lâṭj. 1,2,15. Kâtj. Çr. 24,6,1. Kauç. 1. 2. Nir. 7,4. 14,1. Kumâras. 1, 17. — 2) m. *a*) *Ficus glomerata* AK. 2,4,2,2. *Acacia Catechu Willd.* Râǵan. im ÇKDr. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Çabdak ebend. — *b*) Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's MBh. 13,7053. Pañkar. 4,3,59. 8,26. Çiva's Çiv. — 3) f. आ *Cocculus cordifolius DC.* Râǵan. im ÇKDr.

यज्ञात्मन् (यज्ञ + आ°) m. *die Seele des Opfers*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 4,7,33.

यज्ञात्ममिश्र (यज्ञात्मन् + मिश्र) m. N. pr. eines Mannes Hall 171. fgg.

यज्ञानुकाशिन् (यज्ञ + अ°) adj. *Opfer beschauend* TBr. 1,1,4,4. = यज्ञतत्त्वप्रकाशनसमर्थ Comm.

यज्ञान्त (यज्ञ + अन्त) m. *Beschluss eines Opfers* H. 834. Halâj. 2,262. °कृत् unter den Beinamen Vishṇu's MBh. 13,7054.

यज्ञाय् (von यज्ञ), partic. °यत् *im Gottesdienst thätig* Ṛv. 5,41,1.

यज्ञायज्ञीय n. N. eines nach dem Verse यज्ञा यज्ञा° (Ṛv. 1,168,1) benannten Sâman, welches als letztes Glied des Agnishṭoma auch Agnishṭoma-Sâman heisst, AV. 8,10,13. 15. 17. 15,2,2. 3, 5. 4, 2. VS. 12,4. TS. 5,4,10,2. 5,8,1. TBr. 2,2,8,3. Çat. Br. 9,1,2,39. 4,4, 10. 13. Pañkav. Br. 15,9,12. Kâtj. Çr. 4,10,1. 22,6,5. Lâṭj. 6,12,6. Âçv. Çr. 6,8,12. 7,5,7. 9,6,4. Khând. Up. 2,19,1. 2. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,*a*. अग्नेर्वैश्वानरस्य य° 201,*a*. अनुष्टा° 202,*b*. भरद्वाजस्य य° 227,*a*.

यज्ञायतन (यज्ञ + आ°) n. *Opferstätte* MBh. 1,861. 3,10376. R. 1,12, 35. 4,37,33.

यज्ञायुध (यज्ञ + आ°) n. *Opfergeräthe* AV. 12,3,23. 18,4,2. Ait. Br. 7,19. zehn sind aufgezählt TS. 1,6,8,2. 3. TBr. 3,2,5,9. Çat. Br. 1,6, 8,2. Kâṭh. 32,7. die Bez. scheint übertragen zu sein auf eine gewisse, mit च मे endigende Litanei TS. 5,4,8,3.

यज्ञायुधिन् (von यज्ञायुध) adj. *mit den Opfergeräthen versehen* Çat. Br. 12,5,2,8.

यज्ञारङ्गेशपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Roth in der Einl. zu Nir. l. wohl fehlerhaft für यज्ञर°.

यज्ञारि (यज्ञ + अ°) m. *Feind des Opfers*, Bein. Çiva's Dhanaṁǵaja im ÇKDr.

यज्ञार्ह (यज्ञ + अर्ह) 1) adj. *Opfer verdienend, zum Opfer geeignet* H. 830. — 2) m. du. Bez. der Açvin H. ç. 35, wo wohl यज्ञार्हौ zu lesen ist.

यज्ञावयव (यज्ञ + अ°) adj. *dessen Glieder aus Opfern bestehen*, Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 3,18,20.

यज्ञाशन (यज्ञ + 2. अ°) m. *Opferverzehrer, ein Gott* H. 88, Sch.

यज्ञासाह् (यज्ञ + साह्) adj. *des Opfers mächtig:* °साहम् acc. Ṛv. 10,20,7.

यज्ञिक m. 1) (von यज्ञ) *Butea frondosa* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) oxyt. = यज्ञदत्तक P. 5,3,78, Sch. — Vgl. पैत्°.

यज्ञिन् (von यज्ञ) adj. *opferreich:* Vishṇu MBh. 13,7054. दाक्षायणयज्ञिन् s. u. दाक्षायणयज्ञ.

यज्ञिय् (wie eben), partic. °यत् zur Erkl. von अध्वरयत् Çat. Br. 9,2,3,10.

यज्ञिय (wie eben) 1) adj. P. 5,1,71 nebst Vârtt. Vop. 7,15. *a*) *verehrungswürdig, opferwürdig, am Opfer Theil habend, heilig, göttlich;* gew. Beiw. der Götter und dessen was ihnen gehört; m. *Gott.* Nir. 7, 27. 29. यज्ञियाः, मानुषाः Ṛv. 4,1,20. 43,1. प्राप्वतु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः 7,35,14. ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्राः 15. ये स्था मनोर्यज्ञियाः 10,36,10. साकं देवैर्यज्ञियासो भविष्यथ 1,161,2. 6. इन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् 6.41,1. देवाः 1,139,7. 188,3. 2,41,21. 3,6,3. 10,53,2. प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः 5,52,5. पितरो नमस्या देवा यज्ञियाः TS. 2,5,9,6. Bhâg. P. 4,7,41. Hariv. 1528. यज्ञियान्कृतवान्दैत्यान्देवांश्चाप्ययज्ञियान् 2266. 12639. भाग Ṛv. 2,23,2. 3,60,1. 10,124,3. Hariv. 2803 (यज्ञीय die neuere Ausg.). नामन् Ṛv. 1,72,3. 6, 48,21. 1,4. Ait. Br. 5,23. AV. 2,12,2. Wagen der Açvin Ṛv. 1,119,1. Flüsse 3,33,11. भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः 10,50,4. AV. 6,108,1. 7, 80,4. गावः MBh. 13,3848. — *b*) *im Gottesdienst thätig, — kundig, dazu fähig* u. s. w.; *andächtig, fromm:* प्र यज्ञियेषु शवसा मदन्ति Ṛv. 7,57,1. 1,148,3. 6,5,2. अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा 8,39,7. 10,11,1. 18,2. AV. 7,28,1. अभूम यज्ञियाः शुद्धाः 12,2,13. TS. 3,2,4,1. Çat. Br. 3,1,1,9. Hariv. 11363. — *c*) *zur Verehrung —, zum Gottesdienst —, zum Opfer gehörig, — passend* u. s. w.; *heilig* AK. 2,7,27. H. 830. स्तोम Ṛv. 3,60,7. अरमति 7,42,3. 10,44,6. व्रत 66,9. धी 101,9. स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून् 10,11,1. कर्मन् *Opferhandlung* Jâǵn. 3,28. अन्न AV. 6,116,1. 122,5. 10,9,3. चरु 11,1,16. द्यावापृथिव्योरेव यज्ञिये ऽग्निमाधत्ते TBr. 1,1,3,3. 2,1,2. अग्नेस्तनूः 8. केतवः 9. TS. 2,6,7,1. वृक्ष Çat. Br. 1,

3,3,20. 10,2,2,1. Âçv. Gṛhj. 3,8,3. MBh. 13,4700. Mârk. P. 49,70. AK. 3,4,13,99. ग्रापः Âçv. Gṛhj. 4,7,15. द्रव्य Hariv. 2161. पशु, ग्रश्व, गो R. 1,40,7. 61,14. R. Gorr. 1,41,7. 8. MBh. 13,3848. 14,2224. — R. Gorr. 1,12,28. = मेध्य Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 57. दिश् Âçv. Gṛhj. 4,8,11. Gobh. 1,9,15. देश M. 2,23. तस्माद्धिंसा न यज्ञिया MBh. 12,9828. यज्ञितम Çat. Br. 1,1,4,12. — 2) m. Bez. *des dritten Zeitalters* Trik. 1,1,112. — Vgl. ग्र°, पूग° (unter पूगयज्ञ) und पैतृ°.

यज्ञियशाला (य° + शा°) f. *Opferhalle* Gaṭâdh. im ÇKDr.

यज्ञीय (von यज्ञ) 1) adj. *zum Opfer passend:* ग्रहन् MBh. 3,10376. ग्रयज्ञीयद्रुमे देशे 13,1320. 4700. भाग *Opferantheil* Hariv. 2803 (die ältere Ausg. यज्ञिय). = मेध्य Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 18. An den drei ersten Stellen durch das Metrum bedingt. — 2) m. *Ficus glomerata* Râǵan. im ÇKDr.

यज्ञीयब्रह्मपादप (य° + ब्र°) m. *eine best. Pflanze,* = विकङ्कत Râǵan. im ÇKDr.

यज्ञेश (यज्ञ + ईश) m. *Herr der Verehrung, — des Opfers,* Bein. Vishṇu's Bhâg. P. 1,3,7. 12,35. 4,7,47. 12,10. 23,25. 5,4,7. 6,6,22. 8,17,8. 9,14,47. Pańkar. 4,3,35 (S. 248). der Sonne Mârk. P. 104,38. 111,2.

यज्ञेश्वर 1) m. (यज्ञ + ई°) *a) Herr der Verehrung, — des Opfers,* Bein. Vishṇu's VP. bei Muir, ST. 1,62. Bhâg. P. 1,17,33. 3,13,29. 4,7,25. 20,36. 8,15,2. — *b)* N. pr. eines Autors Ind. St. 1,467. — 2) f. ई (यज्ञ + ई°) Bez. *eines best. Zauberspruches:* °विद्यामाहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,29.

यज्ञेश्वरार्य (यज्ञेश्वर + ग्रा°) m. N. pr. eines Mannes Roth in der Einl. zu Nir. l.

यज्ञेषु (यज्ञ + इषु) m. N. pr. eines Mannes TBr. 1,5,2,1.

यज्ञेष्ट (यज्ञ + 1. इष्ट) n. *ein best. wohlriechendes Gras,* = दीर्घरोहिषक Râǵan. im ÇKDr.

यज्ञोडुम्बर m. = उडुम्बर *Ficus glomerata* Çabdar. im ÇKDr.

यज्ञोपकरण (यज्ञ + उ°) n. *Opferzubehör* Ind. St. 1,52. MBh. 7,2366.

यज्ञोपवीत (यज्ञ + उ°) n. *die für das Opfer übliche Behängung mit der heiligen Schnur über die linke Schulter;* später auch Bez. *der heiligen Schnur selbst.* Trik. 2,7,12. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. S. 117. TBr. 3,10,9,12. Lâṭj. 1,2,14. 5,2,1. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. 13. 4,12. °वीतं कृत्वा Kaush. Up. 2,7. — Ind. St. 2,174. 178. Mṛkkh. 48,1. Varâh. Bṛh. S. 48,33. Verz. d. B. H. No. 1021. fg. Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,1 v. u. 281,*b*,1 v. u. 286,*a*, No. 670. केशयज्ञोपवीतभृत् Kathâs. 94,69. 99,11. नाग° adj. MBh. 7,9456. Hariv. 10592. — Vgl. unter उपवीत und बालयज्ञोपवीतक.

यज्ञोपवीतवत् (von यज्ञोपवीत) adj. *mit der heiligen Schnur behängt:* हेम° *mit einer goldenen Opferschnur beh.* Hariv. 3048. ग्रज्ञ° MBh. 1,5330.

यज्ञोपवीतिन् (wie eben) adj. dass. Gobh. 1,1,2. 2,2. 2,1,19. Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. Hariv. 14205. Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,31. नित्य° MBh. 5,1557. नाग° 10,219. रज्जु° Hariv. 3479. — Vgl. unter उपवीतिन्.

यज्ञोपासक (यज्ञ + उ°) m. *ein Verehrer der Opfer* Kap. 4,21.

यज्य partic. fut. pass. von 1. यज् Vop. 26,12. n. und f. ग्रा nom. abstr.; s. देव°. — Vgl. इज्य, याज्य.

यज्यु (von 1. यज्) ved., यज्युँ Uṇâdis. 3,20. adj. 1) *verehrend, huldigend, fromm* ṚV. 1,31,13. 55,6. इन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत 2,14,8. देवस्य यज्यवो जनासः 3,19,4. 4,23,2. 5,31,13. 41,3. 8,52,5. विश्वानि कृण्वन्सुपथानि यज्यवे 9,86,26. = ग्रध्वर्यु Uǵǵval. = यजमान Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. — 2) *der Verehrung theilhaftig* ṚV. 9,61,12. विद्द्रु यज्यू 10,61,15. — Vgl. ग्र°.

यज्वन् (wie eben) adj. P. 3,2,103. f. ved. यज्वरी (angeblich auch यज्वनी P. 4,1,7, Vârtt. 2, Schol.) *Verehrer, Gläubiger, Frommer; Opferer* AK. 2,7,8. H. 818. Halâj. 2,265. स्वाहा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय यज्वनो गृहे ṚV. 1,13,12. 33,5. यज्वेदयज्योर्वि भजाति भोजनम् 2,26,1. 3,14,1. इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षति 6,28,2. 4. विशः 10,41,2. 96,5. 151,3. Agni 6,15,14. — M. 11,11. 12,49. MBh. 1,8099. 3,1729. Hariv. 11067. R. 1,6,2. Ragh. 1,44. 3,39. 6,46. 18,11. Kumâras. 2,46. Varâh. Bṛh. S. 68,16. 47. Spr. 1435. 4418. 5363. Bhâg. P. 1,12,20. 5,15,7. Mârk. P. 121,2. Kathâs. 82,3. Vop. 3,6. यज्वनां पतिः Bez. *des Mondes* Trik. 1,1,86. *sacrificalis:* इषः ṚV. 1,3,1. — Vgl. ग्र°, ग्रभ्यर्ध°, ग्रस्तृत°, देवराज°, पृष्ठ°, बह्व°.

यज्विन् adj. = यज्वन् MBh. 7,2466. VP. bei Muir, ST. 1,188. Bhâg. P. 5,14,39. Mârk. P. 111,2. 16. 130,10. 133,8. 15. — Vgl. कु°.

यण्व n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*. Pańkav. Br. 13,3,6. Lâṭj. 7,3,11. 13. 10,5,7. यण्वापत्य n. desgl. Ind. St. 3,230,*a*. यण्वापत्योत्तर n. desgl. ebend.

यत्, यँतति und यँतते (nur dieses nach Dhâtup. 2,29), यँतमान, यतानँ und यँतान; येतिरे, यतिष्यते, ग्रयतिष्ट; 1) act. *anschliessen, aneinanderfügen; verbinden:* जनं न मित्रो यँतति ब्रुवाणः ṚV. 7,36,2. कृतं च शत्रून्यतंतं च मित्रिणः 8,35,12. युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः 5,65,6. 48,5. — 2) med. *sich anschliessen, — anreihen; in Reihen ziehen:* हंसा इव श्रेणिशो यतानाः ṚV. 3,8,9 (vgl. 1,163,10). ग्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे 1,85,8. 5,33,10. 59,2. विशो न युक्ता उषसो यतन्ते 7,79,2. 10,13,2. 5. ग्रनुपूर्वं यतमानाः 18,6. 77,2. 8,43,4. Auch act. etwa so v. a. *in einer Reihe —, auf einer Stufe stehen:* नकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा 6,67,10. — 3) med. *sich verbinden, — vereinigen, zusammentreffen mit* (instr.): वैश्वानरो यतते सूर्येण ṚV. 1,98,1. (उषासः) यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य 123,12. 5,4,4. 10,62,11. परि वामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमानाः 3,58,8. 10,113,7. तत्राणांग्ने स्वायुः सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व (P. 5,4,36, Vârtt. 3, Sch.) VS. 27,5. 7,45. 10,29. पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतानः *wie ein Sohn des Vaters Willen sich fügend* ṚV. 9,97,30. — 4) med. *sich zu vereinigen suchen mit* (loc.), *zu erreichen suchen* (einen Ort), *zustreben, auf Etwas zuhalten:* दिवि स्वनो यतते ṚV. 10,75,3. महः पार्थिवे सदने यतस्व 1,169,6. TBr. 1,4,6,2. TS. 2,2,6,1. ग्रन्तरिक्षे यतस्व 5,6,1,4. Çat. Br. 12,2,3,1. — 5) med. (aus metrischen Rücksichten auch act.) *streben nach, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich ganz einer Sache hingeben:* a) mit loc.: यतध्वं नलमार्गणे MBh. 3,2727. हितानुदर्शने R. 5,76,22. Bhâg. P. 3,25,26. जीवितहृतौ Spr. 1140. द्विषतां वधे R. 3,71,16. पितुर्विनिग्रहे R. Gorr. 2,20,46. Bhaṭṭ. 5,29. संसिद्धौ Bhag. 6,43. ग्रर्थसिद्धौ धर्मे यतितुमर्हसि R. Gorr. 2,20,11. MBh. 4,680. सिद्धे ऽन्यार्थे न यतेत Bhâg. P. 2,2,3. नलस्यानयने यत MBh. 3,2722. Mârk. P. 69,26. 126,3. 132,10. यतिष्यति महाभये R. 4,14,29. स्वादन्ने न तु यत्यताम् (impers.) Spr. 795. — b) mit dat.: यतेत तत्प्राप्त्यै Jâǵń. 1,351. यतिष्ये वः सखीप्रत्यानयनाय Vikr. 5,16. Mâlav. 9,2. तस्य नाशाय Spr. 95. परमार्थसिद्धै 1901. Bhag. 7,3. Hariv. 15636. जरामरणमोक्षाय Bhag. 7,29.

10. मां कर्मभिर्विप्रा यजधम् 14,28. पुण्येन ह्यमेधेन मामिष्ट्वा R. 7,85,21. यज्ञैरिष्यत्तमीश्वरम् MBh. 2,1325. Hariv. 2806. तानि सर्वाणि दैवतानि यक्ष्यामि तीर्थान्यायतनानि च 52,84. 5,33,18. Bhâg. P. 3,32,17. इष्टुर्देवान्पुरोहिताः Bhatt. 14,90. यजन्त इह देवताः Bhag. 4,12. 9,23. MBh. 3, 8390. R. 2,52,79 (19 Gorr.). 7,85,20. Bhâg. P. 5,3,1. Bhatt. 1,2. एणेयं मांसमाहृत्य शालां (= पर्णशालाधिष्ठातृदेवताम् Schol.) यक्ष्यामहे वयम् R. 2,56,18. 21. इष्ट्वा देवान्पितॄन् Kathâs. 27,118. शक्रस्य यदर्थं धन इज्यते Hariv. 3790. गिरिरस्माभिरिज्यताम् 3850. ज्ञानेनैवापरे विप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा M. 4,24. यक्ष्यन्ति च नरव्याघ्राः — राजसूयाश्वमेधाद्यैः क्रतुभिः MBh. 1,6098. 7664. सुतार्थं वाजिमेधेन किमर्थं न यजाम्यहम् R. 1,8,2. 11, 8. Mârk. P. 36,2. इयाज च महामखैः 37,2. यज्ञैर्बहुभिरीजिवान् R. Gorr. 1,44,6. यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैः M. 7,79. 5,53. 8,306. 11,74. MBh. 9,2885. 13,3331. 14,22. Mârk. P. 26,39. यक्ष्ये 22,9. Hariv. 11088. यक्ष्यमाण Bhâg. P. 1,12,33. 7,15,10. ईजिरे च महायज्ञैः क्षत्रियाः MBh. 1, 2473. 3120. 3,2235. 3067. 8385. 8523. 11000 (S. 569). 12745. 14864. R. Gorr. 1,1,92. महद्भिः क्रतुभिरीजानो भरतः MBh. 1,3712. 3,10526. इजितुं राजसूयेन 2,1230. इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः M. 6,36. 37. 4,27. MBh. 3, 2414. 13,328. R. 1,1,91. Bhâg. P. 4,3,3. इष्टवानश्वमेधेन R. 1,14,7. इष्टं स्यात्क्रतुभिस्तेन Jâgn. 1,358. AK. 2,8,1,3. तस्मान्नाल्पधनो यजेत् M. 11, 40. क्षत्रियो धनुराश्रित्य यजेच्चैव न याजयेत् MBh. 4,1558. R. 1,57,11. 59,3. 2,32,41. 36,8. Bhâg. P. 10,72,14. यज्वा तु विधिनेष्टवान् AK. 2, 7,8. अधीत्य ब्राह्मणो वेदान् याजयेत यजेत च MBh. 4,1558. 12,234. यत्रायजत धर्मो ऽपि 3,10098. यदर्थं यजसे R. 1,13,14. 2,56,24. तस्मिंश्च यजमाने MBh. 1,4687. 3,2238. 8331. R. 1,61,6. R. Gorr. 1,15,3. M. 11,24. Çâk. 31,1. यक्ष्ये Bhag. 16,15. R. 1,11,20. यक्ष्यमाण M. 11,1. इजान 87. यष्टुं समुपचक्रमे R. 1,39,25. 61,5. इष्ट्वा M. 4,236. R. 2,72,25. — b) mit dem acc. des Opfers, Liedes u. s. w., worin sich die Cultushandlung vollzieht: सेमं नो अध्वरं यज RV. 1,26,1. 6,52,12. यज्ञं नो यजतामिमम् 1, 142,8. 188,7. 10,130,6. यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्याः 3,17,2. शतयाजं स यजते AV. 9,4,18. ऋचं साम यजामहे 7,54,1. इष्टो यज्ञो भृगुभिः VS. 18,56. दर्शपूर्णमासौ TS. 2,5,4,1. Kâtj. Çr. 4,6,10. आज्यभागौ 19,4,3. प्रयाजान् Çâñkh. Çr. 5,15,13. यजस्वभीप्सितं यज्ञम् MBh. 2,1228. R. Gorr. 1,41,7. 2,74,28. दर्शं पौर्णमासं च MBh. 9,2884. पुत्रियामिष्टिम् R. 1,15,3 (2 Gorr.). राजसूयम् H. 691. सर्वस्वदक्षिणं यज्ञमिष्टवान् 819. मा यक्षीथाः क्रतुम् Hariv. 11111. बलौ तदा यज्ञं यजमाने R. 1,31,5 (32,5 Gorr.). 40,7. ईजिरे यज्ञम् MBh. 13,3333. R. 2,72,27. 7,90,13. यष्टुकामो महायज्ञम् 1,57,17. यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते Bhag. 17,11. अश्वमेधादयो यज्ञास्त्वयेष्टाः Mârk. P. 15, 54. सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः AK. 2,7,9. — c) mit dat. der Person und acc. der Sache: मह्यं यजन्तु (AV. यजन्ताम्) मम यानि हव्या RV. 10,128,4. mit loc. der Person Maitrjup. 6,9. die Person im acc. mit प्रति R. 2,107,11. — d) opfern so v. a. hingeben: यजन्तीभिः स्वविग्रहान् Bhatt. 8,49. — e) med. verehren, opfern um Etwas (acc.): सख्यम् RV. 7,36,5. — 2) im Ritual *durch die* Jâgjâ-*Strophe zum Opfer einladen:* चतस्रो देवता यजति Çat. Br. 1,9,2,6. 4,4,5,16. Çâñkh. Çr. 7,4,3. 10,7,9. — Vgl. 2. अनिष्ट und 2. इष्ट.

— caus. याजयति, अयीयजत् *Jmd* (acc.) *zum Opfer verhelfen, für Jmd als Opferpriester thätig sein,* mit instr. der Feier TS. 2,2,10,2. 6,2,6, 2. याजयत मा द्वादशाहेन Ait. Br. 4,25. 8,11. याभिर्गोभिरहमयं प्रत्यमेधा अयाजयन् 22. Çat. Br. 13,5,4,1. अयाज्यं याजयित्वा Âçv. Gṛhj. 3,6,8. 1, 23,4.19. एते ऽहीनैकाहैर्याजयन्ति Âçv. Çr. 4,1,7. Kauç. 46. Kaush. Up. 1,1. Ind. St. 3,461. 4,330. संवत्सरे ऽस्थीनि याजयेयुः *sie sollen den* Asthijagña *anstellen* Kâtj. Çr. 25,13,36. Çâñkh. Çr. 13,11,9. यज्ञैर्यजन्ति ये केचिद्याजयन्ति च ये द्विजाः MBh. 1,7664. 4,1558 (act. und med.). 12,234. याजयन्ति च ये पूगान् M. 3,151. वृषलम् P. 3,3,145, Sch. याजयामास तं कण्वः MBh. 1,3121. 6377. 14,125. 127. R. 1,10,26 (27 Gorr.). 57,19 (59,17 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 59,b,22. स्वयं मां देवदेवेश याजयस्व MBh. 1,8123. 14,127. ययातिं शुभकर्माणं देवैर्यो याजितः स्वयम् 1,222 (S. 9). ततः स याजयामास सोमकं तेन जन्तुना 3,10492. सोमेन याजयन्वीरम् Bhâg. P. 9,3,24. याजयित्वाश्वमेधैस्तम् 1,8,6. 6,13,6. 10,74,16. 79,30. अयाजयद्गोसवेन गोपराजं द्विजोत्तमैः *er hiess ihn opfern vermittelst ausgezeichneter Brahmanen* 3,2,32. 1,12,36. mit zwei acc.: तं च ते याजयामासुर्वृत्रदीताम् R. 7,57,10.

— desid. यियक्षति *zu opfern verlangen* Schol. zu P. 1,2,10. चाण्डालस्य यियक्षतः R. Gorr. 1,61,14. यियक्षमाण MBh. 2,59.

— intens. यायज्यते, यायजीति Schol. zu P. 7,4,83.

— अति *mit dem Opfer übergehen:* यः स्वां देवतामतियजति TS. 2,5,4,4.

— अनु *nachher verehren:* तमग्निष्टोमेनानुयजति Schol. zu Kâtj. Çr. 16, 1,4 (ungedr.). Pañkar. 3,7,17 ist तदनु यजेच्च zu schreiben. — Vgl. अनुयाग, अनुयाज.

— अप *mit einem Opfer vertreiben, wegopfern:* तांस्ते यज्ञस्य मायया सर्वानपयजामसि Kauç. 97.

— अभि *mit Opfer ehren:* देवता अभियजेत् Gobh. 4,7,16. आमावास्येन हविषा पूर्वपक्षमभियजते 1,5,6. Pañkar. 3,7,12. Hierher zieht Sâj. भरद्वाजान्सार्ञ्जयो अभ्ययष्ट (= अपूजयत्) RV. 6,47,25. *ein Opfer* (acc.) *darbringen:* अश्वमेधं यज्ञं वैष्णवं शक्रो ऽभियजताम् MBh. 12,13217.

— अव *durch Opfer* oder *Gebete abwenden, vertreiben, durch Gaben abfinden:* सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषः RV. 1,133,7. अव नो वरुणं रराणः 4,1,5. 7,60,9. अव देवानां यज हेडो अग्ने AV. 19,3,4. TBr. 1,4,2,3. यज्ञस्य मायया सर्वानवयजामहे (वरुणस्य पाशान्) 3,10,8,2. TS. 2,3,12,1. निर्ऋतिम् 5,2,4,3. 6,3,1. एनः 6,6,3,1. Çat. Br. 12,9,2,4. 13, 3,6,5. Kâth. 21,6. 36,6. — Vgl. अवयजन, अवयाज, अवेष्टि.

— निरव *abfinden gegenüber von* (abl.): ऋतुभ्य एव रुद्रं निरवयजते Kâth. 21,6.

— आ 1) *huldigend darbringen, weihen:* येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे (vgl. zu P. 6,4,120) मनुः RV. 10,63,7. 61,11. 1,121,5. आहुतिम् AV. 19,4,1. Partic. ईष्ट. Die unter 3. इष् mit आ aufgeführten Stellen sind vielleicht hierher zu ziehen, da इष् sonst mit dieser Praep. nicht vorkommt; und zwar RV. 1,184,2 so v. a. *Huldigungen* (अन्वेष्टारौ Sâj.), Ait. Br. 1,26 und VS. 5,7 so v. a. *eropfert, durch Verehrung gewonnen;* s. unten 3). Mah. zu VS. theilt diese Auffassung, während Sâj. zu Ait. Br. एष्टृ und एष्टा als nom. ag. zu इष् annimmt, ähnlich auch im Comm. zu TS. 1,2,11,1. — 2) *verehren,* mit acc.: आ यं होता यजति विश्ववारम् RV. 7,7,5. यं देवासस्त्रिरहन्नायजन्ते 3,4,2. येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टः VS. 23,49. — 3) *eropfern;* überh. *verschaffen* (dem Menschen von den Göttern), *zuwenden;* med. auch *sich verschaffen:* आ हि ष्मा सूनवे पिता यजति RV. 1,26,3. 40,4. अग्ने महि द्रविणमा यजस्व 3,1,22. यस्मै त्व-

मायजसि स साधति 1,94,2. स आ यजस्व नृवतीरनु क्षा स्पार्हा इषः 10,2,6. 70,7. 80,7. मयि देवा द्रविणमा यजन्ताम् 128,3. तेषां न स्फातिमा यज 1, 188,9. 8,11,10. अपामा सुम्नं यक्षते 19,4. आ वो यक्ष्यमृतत्वम् 10,52,5. 4, 42,8. उरुष्य राय एषो यजस्व VS. 7,4. 14,4. ÇAT. BR. 1,7,2,14. — Vgl. आयजि fgg. und आयाग.

— समा *verschaffen*: त आयजन्त द्रविणं समस्मै ṚV. 10,82,4.

— उप *dazu opfern*: उपयजः TS. 6,4,1,1. ÇAT. BR. 3,8,4,9. 10. KÂTJ. ÇR. 6,9,10. स्विष्टयोपयजेरन् PÂR. GṚHJ. 2,17. — Vgl. उपयज्, उपयष्टर्, उपयाज.

— अत्युप *weiter dazu opfern* ÇAT. BR. 3,8,4,18. 5,1.

— परि 1) *eropfern, erlangen, verschaffen*: यथा पूर्वेभ्यः परियया वाजं मिन्द्रो ṚV. 9,82,5. — 2) im Ritual *vor und nach Jmd opfern*, — *verehren, eine Opferhandlung durch andere gleichsam unterstützen*: धातारमेव सर्वासां पुरस्तात्पुरस्ताद्राज्येन परियजेत् AIT. BR. 3,47. यद्वषां महिम्नोभयतः परियजति TBR. 3,9,10,1. ÇAT. BR. 4,4,2,6. 13,2,11,3. KÂTJ. ÇR. 10,6,8. ÂÇV. ÇR. 5,19,2. LÂṬJ. 8,11,12. 9,4,1. 2.

— प्र 1) *verehren, huldigen, Jmd* (acc.) *Opfer bringen*: देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा ṚV. 6,15,13. प्र देवं जन्म गृणते यजध्यै 6,11,3. प्र यः सत्राचा मनसा यजाते 7,100,1. प्र ते यन्ति प्र त इयर्मि मन्म 10,4,1. तव प्र यक्षि संदृशम् 6,16,8. (होतुः) तस्यानु धर्म प्र यजा 3,17, 5. TS. 3,2,2,1. PAṄKAR. 3,6,13. 15. 8,5. 10,9. med. 8,1. — 2) *ein best. Opfer* (प्रयाज) *darbringen*: यावानेव पशुस्तं प्रयजति TS. 6,3,2,5. — Vgl. प्रयज्, fg., प्रयाग, प्रयाज.

— प्रति *dagegen opfern*: आग्नेयेनेतरे प्रतियजन्त आसते ÇAT. BR. 4,6,8,19.

— सम् *zusammen* (den Göttern) *huldigen*, — *opfern*: होतारा अनु यक्षतः समृचा ṚV. 2,3,7. यद्ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः 10,71,8. विश्वे देवाः समयजन्त TBR. 1,4,10,3. ÇAT. BR. 4,2,1,33. ÇÂṄKH. ÇR. 14,29,6. 39,7. *opfern*: संयष्टुं (यष्टुं स die neuere Ausg.) वाजिमेधेन संभारानुपचक्रमे HARIV. 11087. क्रतुभिः समीजे BHÂG. P. 9,24,65. *Jmd huldigen*: पूज्यांश्च संयजेत् Spr. 4114, v. l. *zusammen darbringen*: अवप्रुषो विप्रुषो संयजामि TBR. 3,7,6,21. *weihen*: समयष्टास्त्रमण्डलम् BHAṬṬ. 15,96. — caus. *zusammen opfern lassen, die* Patnîsamjâga *machen* AIT. BR. 1,11. 3,45. TBR. 1,1,10,5. ÇAT. BR. 1,3,1,21. 9,2,1. 3,1,3,6. 2,3,23. 4,2,1,31. KÂṬH. 23,9. *für Jmd* (acc.) *als Opferpriester thätig sein* MBH. 1,6375. 12,12372. — Vgl. संयाज, संयाज्य, समिष्टयजुस्.

2. यज् (= 1. यज्) nom. ag. (nom. यट् nach P. 8,2,36) am Ende eines comp. *huldigend, opfernd*; s. दिवि°, देव°.

यज (von 1. यज्) m. zur Etymologie gebildet: यजो ह वै नामैतद्यद्यजुः ÇAT. BR. 4,6,2,13. Am Ende eines comp.: होतायक्षदसौयजयोः (aus dem imperat. यज) स्थाने ÂÇV. ÇR. 5,4,5. — यजा s. bes.

यजत (von 1. यज्) UṆÂDIS. 3,110. 1) adj. *verehrungswürdig, dem man huldigen muss* so v. a. *heilig, göttlich* (vgl. jazata im Zend) NIR. 12, 17. देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ṚV. 7,75,7. 4,56,2. यथा विद्वाँ अरं करद्विश्वेभ्यो यजतेभ्यः 2,5,8. Agni 3,5,3. 4,1,2. 5,8,1. Indra 2,14,10. 16,4. 21,1. Savitar 1,35,3. 6,50,8. 71,4. von andern Göttern 5,67,7. 6, 50,2. AV. 2,2,2. vom Wagen der Açvin ṚV. 1,181,3. आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह 10,101,9. Ueberh. *was Ehrfurcht oder Staunen einflösst, hehr*: दृशी ṚV. 4,15,8. निष्क 2,33, 10. मद 9,69,3. 10,11,8. 99,11. क्षत्र 5,67,1. शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि 6,58,1. धूम 7,8,1. — 2) m. *a*) = ऋत्विज् UGGVAL. — *b*) *der Mond* H. ç. 10. — *c*) Bein. Çiva's H. ç. 45. — *d*) N. pr. eines Ṛshi mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von ṚV. 5,67. 68.

यजति (3. sg. praes. von 1. यज्) m. *die mit* यज् (nicht जु; vgl. जुहोति) *ausgedrückte Handlung* KÂTJ. ÇR. 1,2,4. fgg. 4,3,1. Schol. zu 23,2,2. Z. d. d. m. G. 9, LXI. जुहोतियजतिक्रियाः M. 2,84. °देश und °स्थान *der Stand südlich von der* Vedi Schol. zu KÂTJ. ÇR. 3,5,6. 13. 4,4,16.

यजत्र (von 1. यज्) UṆÂDIS. 3,105. adj. *dem göttliche Verehrung und Opfer gebühren*: ये यजत्रा य ईड्यास्ते ते पिबन्तु जिह्वया ṚV. 1,14,8. 65, 2. 3,31,17. देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः 4,56,2. 6,21,11. 50,15. ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृताः 7,35,15. पिता महान्यजत्रः 52,3. 10, 70,11. Agni 1,76,4. 3,22,2. VS. 11,76. Varuṇa und die Âditja ṚV. 2,27,16. 29,6. 7,88,1. AV. 6,114,2. Himmel und Erde ṚV. 7,53,1. सं ते प्राणो वातेन गच्छतां समङ्गानि यजत्रैः (= यागैः MAHÎDH.) VS. 6,10. AV. 13,2,44. पश्चेदमन्यदभवद्यजत्रम् ṚV. 10,149,3. n. = अग्निहोत्र UGGVAL. m. = अग्निहोत्रिन् ÇKDR. nach UṆÂDIK.

यजध्य (wie eben) *Verehrung* (der Götter), *das Huldigen, Opfern;* nur im dat. und construirt wie ein infin. ṚV. 2,28,1. आ दैव देवान्यजथाय वक्षि 3,4,1. सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान् 17,1. 19,5. 5,1,2. 11,2. 7,10,5. 10,7,1. 12,1.

यजन (wie eben) n. 1) *das Opfern* M. 1,88. 10,75. MBH. 12,6733. (चक्रुः) यजनं बहुशस्त्वग्नौ 13,7774. MÂRK. P. 99,66. fg. यजनात्ते MBH. 7,2173. HARIV. 3873. °समता Spr. 2657. तव यजनाय *um dir zu opfern* BHÂG. P. 4,7,33. — 2) *Opferplatz* R. GORR. 1,64,23. BHÂG. P. 4,4,6. — 3) N. pr. eines Tirtha MBH. 3,5048. — Vgl. देव°.

यजनीय (von यजन) adj. mit und ohne अहन् *Weihetag, Opfertag* d. i. *der erste eines Monats*: माघीपक्षयजनीये so v. a. *am ersten des* Phâlguna KÂTJ. ÇR. 15,1,6. 3,49. 24,6,3. 26. LÂṬJ. 8,8,45. 9,3,7. GOBH. 4, 5,8. 6,3. 8,16.

यजप्रैष adj. *wobei die Aufforderung* (प्रैष) *mit dem Worte* यज *geschieht* KÂTJ. ÇR. 15,4,4. 18,6,20.

यजमान (von 1. यज्) P. 3,2,128. 1) adj. s. u. 1. यज्. — 2) m. *a*) *der Opferer* d. h. *derjenige, welcher ein Opfer für sich veranstaltet und bestreitet* AK. 2,7,7. H. 817. HALÂJ. 2,265. ÇAT. BR. 1,6,1,20. 2,3,2,6. 3,7,4,10. KÂTJ. ÇR. 1,10,12. 3,1,6. 2,7. 4,30. ÂÇV. GṚHJ. 1,11,9. यजमानो ह्येतेनात्मानं निष्क्रीणीते AIT. BR. 2,3. KHÂND. UP. 1,11,1. R. GORR. 1,41,8. VARÂH. BṚH. S. 10,5. BHÂG. P. 4,5,7. 24. 13,26. VṚDDHA-KÂṆ. 8,23. P. 1,3,72, Sch. °भाग ÇAT. BR. 2,4,2,24. 11,4,1,11. °चमस AIT. BR. 7,33. fg. LÂṬJ. 9,2,4. °शिष्य *der Schüler eines auf seine Kosten ein Opfer bestreitenden Brahmanen* ÇÂK. 31,1, v. l. °हविस् BHÂG. P. 3,16,8. °लोक TS. 5,2,2,3. RAGH. 18,11. यजमानी f. *die Frau des* Jagamâna BHÂG. P. 4,7,36. — *b*) *ein Mann, der auf seine Kosten Opfer zu veranstalten im Stande ist, ein wohlhabender Mann* PAṄKAT. 169,7. 8. 182,12. — Vgl. याजमान.

यजमानक m. = यजमान 2) *a*) VṚDDHA-KÂṆ. 2,18.

यजमानत्व n. nom. abstr. von यजमान 2) *a*) ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 84.

यजमानब्राह्मण n. *das* Brâhmaṇa *des Darbringenden* AV. 9,6,18.

यजस् (von 1. यज्) n. *Verehrung:* अभ्यर्च नभाकवदिन्द्राग्नी यजसा गिरा ṚV. 8,40,4. = याग Sâj.

यजा (wie eben) f. N. pr. einer neben Sîtâ, Çamâ, Bhûti genannten Genie Pâr. Gṛhj. 2,17.

यजाक (wie eben) adj. = दानकर्तर् *Spender* Uṇâdik. im ÇKDr.

यजि (wie eben) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,117. 1) *das Opfern:* दानमध्ययनं यजिः M. 10,79. — 2) *die Wurzel* यज् Çâṇḍ. 66. Schol. zu Kâtj. Çr. 101, 3, v. l. — 3) nom. ag. *verehrend, opfernd* in देव°.

यजिन् (wie eben) nom. ag. *Verehrer, Opferer* MBh. 12,10380.

यजिष्ठ (wie eben mit dem suff. des superl.) adj. *am besten —, am meisten verehrend* oder *opfernd* ṚV. 1,36,10. होतर् Agni 58,7. 127, 2. 149,4. 3,10,7. यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान् 14,5. 4,2,1. 5,14,2. देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा 6,15,13. — Vgl. यजीयंस्.

यजिष्णु (von 1. यज्) adj. *der den Göttern huldigt, — opfert* MBh. 13,5148.

यजीयंस् (wie eben mit dem suff. des compar.) adj. *besser —, mehr verehrend* oder *opfernd, ausgezeichnet verehrend:* अग्ने यजस्व हविषा यजीयान् ṚV. 2,9,4. 3,4,3. 13,5. 19,1. 5,1,5. न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् 3,5. 6,11,1. मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान् 10,12,2.

यजु (von 1. यज्) m. N. eines der zehn Rosse des Mondes Vjâḍi beim Schol. zu H. 104.

यजुर्मय adj. *aus* Jaǵus *bestehend* Ait. Br. 1,22. Çat. Br. 4,3,2,5. 10, 5,1,5. Kaush. Up. 2,6. MBh. 13,1085 (ed. Bomb. besser यजुर्भिर्यत् st. यजुर्मयं). Mârk. P. 78,12. 102,10. 19.

यजुर्लक्ष्मी (यजुस् + ल°) f. Bez. *eines best. Spruches* Ind. St. 10,78. 101. 104. — Vgl. लक्ष्मीयजुस्.

यजुर्विद् (यजुस् + विद्) adj. H. 819. *der Opfersprüche —, Weihsprüche kundig* AV. 12,1,38. M. 12,112.

यजुर्विधान (यजुस् + वि°) n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1173.

यजुर्वेद m. *der* Veda *der* Jaǵus TBr. 3,12,9,1. Ait. Br. 5,28. Çat. Br. 11,5,8,3. fgg. 12,3,4,9. Âçv. Çr. 10,7,2. Çâṅkh. Çr. 3,21,3. Gṛhj. 1,25. Ind. St. 3,266. M. 4,124. VP. 276. 279. fgg. Kathâs. 49,157. Verz. d. Oxf. H. 54,b,5. 8. 15. 55,a,6. 88,b,30. 265,b,25. H. 249. Weber, Lit. 83. fgg. °श्राद्ध n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 384,b, No. 476.

यजुर्वेदिन् adj. *mit dem* Jaǵurveda *vertraut* Kull. zu M. 3,145. यजुर्वेदिवृषोत्सर्गतत्त्व Verz. d. Oxf. H. 290,a, No. 697. यजुर्वेदिश्राद्धतत्त्व 291,b, No. 706.

यजुःशाखिन् adj. *mit einer* Çâkhâ *des* Jaǵurveda *vertraut* Verz. d. B. H. No. 1278.

यजुष in ऋग्यजुष n. sg. *der* Ṛg- *und der* Jaǵurveda P. 5,4,77.

यजुष्क am Ende eines adj. comp. von यजुस् in अ°.

यजुष्कृत (यजुस् + कृत) adj. *mit einem Opferspruch geweiht* TS. 5,2,8, 2. Çat. Br. 1,2,1,6. 3,8,2,18. 6,5,3,6. 7. अ° ebend. und Lâṭj. 9,12,12.

यजुष्कृति (यजुस् + कृ°) f. *Weihe mit einem Spruch* TBr. 3,8,3,2. TS. 5,1,2,1. Çat. Br. 13,1,2,1.

यजुष्क्रिया (यजुस् + क्रि°) f. *eine mit* Jaǵus *verbundene Handlung* Kâtj. Çr. 1,10,13.

यजुष्टम n. superl. von यजुस् Kâç. zu P. 8,3,101.

यजुष्टर n. compar. von यजुस् Schol. zu AV. Prât. 2,83 und zu P. 8,3,101.

यजुष्टस् (von यजुस्) adv. *von Seiten des* Jaǵus, *in Beziehung auf das* J., *im Gebiete des* J. Çat. Br. 4,1,1,7. 4,1,11. 6,2,1. 5,1,1,10. यदि न ऋक्तो वा यजुष्टो वा सामतो वा यज्ञो ह्वलेत् 11,5,8,5. 6. Âçv. Çr. 1,12, 32. Khând. Up. 4,17,5.

यजुष्टा f. nom. abstr. von यजुस् Kâç. zu P. 8,3,101. यजुष्ट्व n. dass. ebend. Vop. 7,25.

यजुष्पति (यजुस् + प°) m. *der Herr der Opfersprüche,* Bez. Vishṇu's Bhâg. P. 4,19,11.

यजुष्पात्र (यजुस् + पात्र) n. gaṇa कस्कादि zu P. 8,3,48.

यजुष्मन्त् (von यजुस्) adj. *von einem Weihespruch begleitet:* पयस् Nir. 11,43. इष्टका: Bez. *gewisser Backsteine beim* Agnikajana Ait. Br. 5,28. Çat. Br. 6,1,2,25. 7,3,1,25. 8,7,2,8. 10,4,3,5. 14.

यजुष्य (wie eben) adj. *zum Cult gehörig* AV. 10,5,15.

यजुस् (von 1. यज्) Uṇâdis. 2,118. 1) n. a) *heilige Scheu, Verehrung:* बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा ṚV. 5,62,5. नि यदामु यजुर्दधे 8,41,8. विश्वे देवा अनु तत्ते यजुर्गुः 10,12,3. — b) *Verehrung* so v. a. *Opferhandlung:* यजुरा गमिष्टम् ṚV. 10,106,3. यजुःसुत (= यज्ञसुत nach Durga) Nir. 11,4. — c) *Weihespruch, Opferspruch,* als technische Bez. *der von den Hymnen* (ऋच्) *und Gesängen* (सामन्) *unterschiedenen liturgischen Worte.* ṚV. 10,90,9. यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहा AV. 5,26,1. 9,6,2. VS. 1,30. 4, 1. 19,28. Ait. Br. 1,29. 8,13. fg. TS. 5,5,3,1. गार्वीधुकं चरुमेतेन यजुषा चरमायामिष्टकायां निदध्यात् 9,4. (अनुहोत्) यजुंषान्यत्तूष्णीमन्यत् TBr. 2,1,2,8. 3,9. येन मन्त्रेण जुहोति तद्यजुः Çat. Br. 2,3,3,17. बह्वी वै यजुष्ठ्वाशीः 1,2,1,7. 6,5,1,2. अचारिषुर्यजुर्भिः 4,6,9,20. त्रेधा विहिता वागृचो यजूंषि सामानि 6,5,3,4. 10,2,4,6. ग्रहणानि 14,9,4,33. Lâṭj. 1,1,5. 25. 8,4. Kâtj. Çr. 1,3,1. यजुर्युक्त *unter Aufsagung eines Spruchs geschirrt* 14,3,16. Kauç. 68. Kaush. Up. 1,5. VS. Prât. 1,132. 4,76. ṚV. Prât. 11,37. 16,6. 8. ऋक्साम यजुरेव च Bhag. 9,17. ऋग्यजुषी M. 4,123. सामयजुषी AK. 1,1,5,4. यजुषि P. 6,1,117. यजुषि काठके 7,4,38. ऋग्भिर्यजुर्भिः सामभिरथर्वाङ्गिरसैरपि Hariv. 1323. M. 11,264. Sûrjas. 12,17. Varâh. Bṛh. S. 48,31. यजुषां शतरुद्रियम् MBh. 13,915. Verz. d. Oxf. H. 54,b,9. 16. 56,a,11. संहिता यजुषाम् 55,a,7. M. 11,262. Bhâg. P. 1,4,21. यजुषां पतिः 3,14,8. 4,1,6. यजुःश्राद्ध Verz. d. Oxf. H. 289,b, No. 693. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 73,103. — Vgl. इष्ट°, द्वि°, समिष्ट°, स्तम्ब°.

यजुस्सात् (von यजुस्) adv. Schol. zu AV. Prât. 2,83.

यजूदर (यजुस् + उदर) adj. *die* Jaǵus *zum Bauche habend* Kaush. Up. 1,7.

यज्ञ (von 1. यज्) m. P. 3,3,90. Vop. 26,180. *Gottesverehrung* im weitesten Sinne; sowohl a) *Verehrung in Worten der Andacht, Preis, Huldigung* (so in der alten Sprache gebraucht, vgl. jaçna im Zend), als b) *Gottesdienst, Weihehandlung, Opfer;* diese Bed. wird herrschend. Naigh. 3,17. AK. 2,7,13. H. 820. an. 2,78. Halâj. 2,259. a) उप स्तोमान् यज्ञैः ṚV. 7,2,2. ब्रह्मन्, यज्ञ 1,10,4. यज्ञ, वचस् 91,10. 131,2. 156,1. 2,35,12. 5,12,6. यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च 43,10. प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः 52,5. जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः 3,12,2. 6,2,2. 3,2. 6,1. उक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः 18,15. 20,10. 21,4. 34,2. 48,1. 8,60,10. 78,6. सोम, हविस्, यज्ञ 10,14,13. यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन् 3,32,12. VS. 6,26. — b) सं यज्ञेषु पिबधम् ṚV. 7,37,2. 70,6. 1,13,12. 34,

3.9. 84,2. तेनं यज्ञेनं वृतपा अ पृणाधम् 162,5. ह्रूयमाना: सोतृभिरूपं यज्ञम् 4,29,2. इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन्यं ते आसानो तुंकृते कविष्मान् 6,10,6. 14,2. AV. 1,15,1. 4,23,2. 7,20,1. 4. 5. 12,1,22. VS. 2,6. 4,9. Çat. Br. 1,1,4,3. 3,2,2. यज्ञा: संकल्पसंभवा: M. 2,3. यज्ञाध्ययननित्य R. 1,6,14. यज्ञाश्चैवाप्तदक्षिणा: 53,24. कृतो यज्ञस्वदक्षिणा: Spr. 809. Ragh. 1,26. Varâh. Brh. S. 13,11. 45,5. यज्ञं यज् RV. 1,142,8. 13,8. R. 2,72,27. ईजे यज्ञेषु यज्ञियम् RV. 6,16,4. VS. 17,55. यज्ञेन यज् Çâñkh. Çr. 16,10,15. M. 6,36. fg. 8,306. 11,39. MBh. 13,328. Bhag. 9,20. R. 1,58,20. Bhâg. P. 3,13,11. यज्ञेन चर् Kâtj. Çr. 25,14,29. यज्ञं भर् RV. 1,122,1. 2,5,8. यज्ञं तन् 7,10,2. AV. 4,14,4. Ait. Br. 2,11. M. 4,205. यज्ञं वितन् 3,28. Çâk. 193. Bhâg. P. 3,24,24. °वितान 1,33. °संतति 4,7,17. यज्ञं कर् RV. 4,34,3. प्र यन्ति यज्ञम् 7,21,2. 44,2. 4,39,5. यज्ञं गच्छेन्न चावृत: M. 4,57. यज्ञमेव देवा उपायन् Çat. Br. 3,2,1,18. परि यज्ञं नि षेदथु: RV. 4,56,7. यज्ञमधीयाना: Çat. Br. 14,6,2,1. प्रयति यज्ञे RV. 3,29,16. 6,10,1. सद्य: संतिष्ठते यज्ञ: M. 5,98. सर्वथा वर्तते यज्ञ: 2,15. °निर्वृत्ति 4,23. °सिद्धि 1,23. 11,12. °संस्तर MBh. 12,791. °प्रयान Verz. d. Oxf. H. 345, b,31. °समृद्धि ebend. °भङ्ग 138, b, No. 272. दिवं देवांस्तृतीयं यज्ञो ऽगात् Çâñkh. Çr. 3,20,4. यज्ञस्य ऋत्विक् RV. 1,1,1. 44,11. यज्ञस्य केतु: s. u. केतु. ब्राह्मण° Kâtj. Çr. 19,1,1. राज° 20,1,1. वैश्य° 22,11,7. गण° 12. एक° 25,13,30. द्वि° 22,11,14. द्विजदेवयज्ञयोगप्रसक्तधी Varâh. Brh. S. 69,38. गिरि° *ein zu Ehren eines Berges veranstaltetes Opfer* Hariv. 3850. युद्ध° *eine als Opfer gedachte Schlacht* 13213. fg. विवाहयज्ञे वितते Kumâras. 7,47. ज्ञान° Bhag. 9,15. प्रस्ताव° Spr. 3273. तूष्णीमयज्ञे दक्षिणा: Lâtj. 2,8,30. वेदिर्यज्ञस्याग्नेरुत्तरवेदि: Kauç. 127. °काण्ड Pañkav. Br. 11,11,2. 13,6,2. °रूप Çat. Br. 5,3,5,20. 12,8,2,15. Kâtj. Çr. 15, 5,11. Muṇḍ. Up. 1,2,7. °रूपधृक् Pañkar. 4,8,26. °लिङ्ग Bhâg. P. 3,13, 13. °कीर्ति Ind. St. 3,459,9. °संभारा: Bhâg. P. 2,6,22. °गोष्ठ्य: (°गोष्ठा: ed. Bomb.) R. 2,71,37. °शिष्टाशन M. 3,118. fünf Opfer: देव°, भूत°, पितृ°, ब्रह्म°, मनुष्य° Âçv. Grhj. 3,1,1—4. M. 3,70. 73. 5,169. MBh. 3,5025. 10662. चतुर्दद्यान्मनो दद्याद्वाचं दद्याच्च सूनृताम्। अनुव्रजेदुपासीत स यज्ञ: पञ्चदक्षिण: ॥ 349. fg. Personificirt Hariv. 11674. 14187. VP. 67. fg. Bhâg. P. 8,16,31. mit dem patron. Prâgâpatja, angeblicher Verfasser von RV. 10,130. गाथा यज्ञगीता (vgl. यज्ञगाथा) MBh. 12,791. 2316. *eine Form* Vishṇu's 1510. Bhâg. P. 3,13,22. 8,1,18. 14,3. Pañkar. 4,3,119. H. an. ein Sohn Ruki's von der Âkûti VP. 54. Indra unter Manu Svâjambhuva Bhâg. P. 4,1,8. Nach H. an. noch ein Name des *Feuers* und = आत्मन्. — Vgl. अ°, अधि°, ऋषि°, गो°, ग्रह°, जप°, देव°, नाम°, नृ°, परि°, पशु°, पाक°, पितृ°, पुनर्यज्ञ, प्रथम°, बीज°, ब्रह्म°, ब्राह्मण°, भर्तृ°, भूत°, मनुष्य°, महा°, मातृ°, मित्र°, राज°, विधि°, वेद°, याज्ञायनि, याज्ञिक.

यज्ञक MBh. 13,4818 fehlerhaft für याजक, wie die ed. Bomb. liest.

1. यज्ञकर्मन् (यज्ञ + क°) n. *Opferhandlung* Kâtj. Çr. 1,8,19. Weber, Gjot. 94. M. 2,208. 3,120. 5,116. P. 1,2,34. R. 1,12,8. 39,25. R. Gorr. 1,12,5. 39,25. Vgl. यज्ञानां कर्म Verz. d. Oxf. H. 30,b,3.

2. यज्ञकर्मन् (wie eben) adj. *mit einem Opfer beschäftigt:* ब्राह्मण R. Gorr. 1,13,26. 28.

यज्ञकल्प (यज्ञ + क°) adj. *opferähnlich* Bhâg. P. 6,8,13. यज्ञैरवयवत्रूपै: कल्प्यते निरूप्यते Comm.

यज्ञका f. Hypokoristikon von यज्ञदत्ता P. 7,3,45, Vârtt. 5, Schol.

यज्ञकाम (यज्ञ + काम) adj. *nach Gottesdienst begierig* RV. 10,51,5. TS. 3,2,8,3. AV. 7,28,1. 103,1. Ait. Br. 1,5. Çâñkh. Çr. 5,2,2. 16,29,7.

यज्ञकार (यज्ञ + 1. कार) adj. *mit einem Opfer beschäftigt* MBh. 13,1874.

यज्ञकाल (यज्ञ + 2. काल) m. 1) *Opferzeit* Lâtj. 8,1,1. — 2) Bez. *des letzten Tages in einem Halbmonate* H. 148.

यज्ञकीलक (यज्ञ + की°) m. *Opferpfosten* H. 824.

यज्ञकृत् (यज्ञ + कृत्) 1) adj. *Gottesdienst verrichtend, mit einem Opfer beschäftigt* TS. 3,2,4,1. 8,3. Bhâg. P. 4,4,7. *Opfer veranlassend*, Beiw. Vishṇu's MBh. 13,7054. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 412.

यज्ञकृत्तत्र s. u. कृत्तत्र und die Nachträge u. d. W.

यज्ञकेतु (यज्ञ + केतु) m. 1) *Kenntniss des Gottesdienstes habend* (etwa so v. a. यज्ञधीर) RV. 4,51,11. = यज्ञ: प्रज्ञापको यस्य Sâj. — 2) N. pr. eines Râkshasa R. 6,18,14. wohl fehlerhaft für यज्ञकोप.

यज्ञकोप (यज्ञ + कोप) m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,80,1. 6,69,11. 7,5,36.

यज्ञक्रतु (यज्ञ + क्रतु) m. 1) *eine gottesdienstliche Handlung, Ritus; das Ganze einer Feier, Haupthandlung* Ait. Br. 1,22. अग्निष्टोमं यथा समुद्रं स्रोत्या एवं सर्वे यज्ञक्रतवो ऽपियन्ति 3,39. इळादधो नाम यज्ञक्रतु: 40. 43. 6,31. राजसूय 7,15. TBr. 1,3,4,1. 4,6,3. 5,9,1. 7,3,2. 2,2,4,1. अग्निहोत्र 3,6,1. 3,8,19,1. 10,9,2. TS. 3,1,2,3. 6,4,3,4. Çat. Br. 2,3, 3,10. 3,9,3,33. 5,2,3,9. 10,4,3,4. सौत्रामणी 12,8,2,1. अश्वमेध 13,4,1,1. Çâñkh. Çr. 15,1,3. 16,23,6. 29,8. Bhâg. P. 8,20,11. Personif. *eine Form* Vishṇu's 4,7,46. 5,18,35. — 2) pl. *die* Jagña *und* Kratu *genannten Opfer* Ind. St. 2,96. fg. Weber, Râmat. Up. 354. — Vgl. आहुत°.

यज्ञक्रिया (यज्ञ + क्रि°) f. *Opferhandlung* Kathâs. 82,9. P. 1,2,34, Sch. Verz. d. Oxf. H. 339,b,4.

यज्ञगाथा (यज्ञ + गा°) f. *ritueller Gedenkvers* Ait. Br. 3,43. Âçv. Çr. 2,12,6. Grhj. 1,3,10. Çâñkh. Çr. 16,8,26. 9,6. Vgl. गाथा यज्ञगीता MBh. 12,791. 2316.

यज्ञगिरि (यज्ञ + गि°) m. N. pr. eines *Berges* Hariv. 5327.

यज्ञघ्न (यज्ञ + घ्न) adj. *Opfer störend;* m. *ein Opfer störender Dämon* R. 1,11,16 (21 Gorr.). 12,3. Bhâg. P. 3,22,30. 4,4,32. 6,6,34.

यज्ञज्ञ (यज्ञ + ज्ञ) adj. *des Gottesdienstes kundig* Nir. 11,18.

यज्ञतति (यज्ञ + 2. त°) f. *Opferdarbringung* AV. Prât. 4,104.

यज्ञतनू (यज्ञ + तनू) f. *eine Form —, Species des Gottesdienstes* Kauç. 138. Bez. gewisser Vjâhrti Çat. Br. 4,5,2,3. gewisser Ishṭakâ TS. 5,4,1,2.

यज्ञतत्त्वसुधानिधि m. Titel eines Werkes Ind. St. 1,470. Colebr. Misc. Ess. 1,81.

यज्ञतत्त्वसूत्र n. Titel eines Sûtra Ind. St. 1,470.

यज्ञत्रातर् (यज्ञ + त्रा°) m. *Beschützer des Opfers*, Bein. Vishṇu's Pañkar. 4,3,36 (S. 248).

यज्ञदक्षिणा (यज्ञ + द°) f. *ein den dienstthuenden Priestern verabfolgtes Opfergeschenk* R. 2,75,24.

यज्ञदत्त (यज्ञ + दत्त) m. ein häufig vorkommender Mannsname R. Gorr. 2,66,6. Kathâs. 21,109. 28,162. Pañkat. 199,8. ed. orn. 63,17. beispielsweise gebraucht wie *Gajus* Kâṇ. 3,2,6. 10. Weber, Nax. 2,319.

MBh. 5,5957. Kathâs. 27,40. उदयाय Ragh. 9,7. अपुनर्मृताय Bhâg. P. 5,19,25. भूत्यै (Conj.) Spr. 3413. अर्थाय 4121. लाभाय Kâm. Nîtis. 1,17. श्रेयसे Çâk. 113,3. — c) mit gen.: तस्यान्नस्य (Nîlak. ergänzt दाने) MBh. 1,8085. — d) mit अर्थे, अर्थाय, अर्थम्, हेतोस्, प्रति: मित्रार्थे बान्धवार्थे च बुद्धिमान्यतते सदा Spr. 2205. ममायं नूनमर्थाय यतमानः R. 3,73,2. तदर्थम् Spr. 2582. मोक्षार्थम् MBh. 1,1591. स्वर्गार्थे न यतिष्यन्ति Hariv. 7273. सो ऽहं यातिष्ये (lies यतिष्ये) पुत्रार्थम् Mârk. P. 121,39. धर्मार्थे यतताम् (gen. pl.) Spr. 4258. शापान्तहेतोस्तस्या न किं यते Kathâs. 121,153. कथं यतिष्ये भोजनं प्रति 92,29. — e) mit acc.: यतन्ते प्राणिपीडनम् Hariv. 14603. राक्षसा दुष्टभावा हि यतन्ते विक्रियां वने R. 3,49,56. यतस्वान्यतमं रणम् so v. a. *mache dich gefasst auf* 35,60. Vgl. u. h) α) am Ende. — f) mit infin. M. 9,6. MBh. 1,6360. 3,2637. R. Gorr. 2,13,14. 3,23,22. Ragh. 5,17. 25. Kumâras. 2,59. Kathâs. 5,128. 19,51. Râǵa-Tar. 1,159. 3,282. 6,334. Bhâg. P. 3,24,28. Bhaṭṭ. 15,58. — g) ohne Ergänzung *sich anstrengen, alle seine Kräfte anwenden, Sorge tragen, auf seiner Hut sein, sich vorsehen:* यतमाना वनं राजन्गहनं प्रतिपेदिरे MBh. 1,5877. 3,8814. R. 1,63,22. 3,34,21. 26. 44,27. Suçr. 2,23,8. तथा नित्यं यतेयाताम् — यथा न M. 9,102. Daçak. in Benf. Chr. 185,12. Prab. 91,4. Bhaṭṭ. 12,4. act.: यततो ह्यपि — पुरुषस्य — इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः Bhag. 2,60. 7,3. 9,14. MBh. 5,3313. Hariv. 15637. Bhâg. P. 1,6,21. 4,8,32. 23,10. 5,18,27. 6,2,35. 10,30,20. Ḱaurap. 30. — h) partic. α) यत्त *bedacht auf:* पृतनासु so v. a. *kampfbereit* MBh. 3,4010. रणे 5,7139. 6,1738. संयुगे R. 7,29,13. चित्तविजये Bhâg. P. 7,15,30. प्रजाविवृद्धये 6,5,5. यत्तो (यत्नो die neuere Ausg.) ऽभूद्धन्तुं प्रति Hariv. 9118. mit infin. MBh. 3,14944. *zu Allem vorbereitet, der seine Maassregeln getroffen hat, auf seiner Hut seiend, sich vorsehend:* शप्तो ऽसि मम पुत्रेण यत्तो भव महीपते MBh. 1,1976. 3,790. 4,1282. 1291. R. 1,32,6. 7. 2,55,18. 93,24 (102,26 Gorr.). 97,13 (106,9 Gorr.). Bhâg. P. 4,10,22. 8,7,2. 10,1. 9,2,3. mit pass. Bed. *besorgt —, gelenkt von:* रथ MBh. 2,2011. 5,1703. हयः 3,12111. Westergaard stellt dieses यत्त zu यम्; an der ersten und dritten Stelle würde यत्त nicht zum Metrum passen; vgl. unter — अभिसम्. — β) यतित mit einem infin. *derjenige, den zu — man sich bemüht hat* (vgl. शकित): असकृद्यतितो ह्येष हन्तुं व्याघ्र वने त्वया MBh. 1,5570. अपनेतुं च यतितो न चैव शकितो मया 6015. impers.: यतितं वै मया पूर्वं वेत्थ ब्राह्मणि तत्तथा। क्षेमं यतस्ततो गन्तुम् *ich war darauf bedacht* 6128. — 6) med. *feindlich zusammengerathen:* त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे *greifen sich nicht unter einander selbst an* Ṛv. 8,20,12. सं जानते न यतन्ते मिथस्ते 7,76,5. *im Kampfe liegen* Ait. Br. 1,14. 8,10. देवासुरा यत्ता आसन् Kâṭh. 37,11.

— caus. यातयति Dhâtup. 33,62 (निकारोपस्कारयोः, nach Andern निराकार und खेद st. निकार). 1) *verbünden, vereinigen:* द्वा जना यातयन्नन्तरीयते Ṛv. 9,86,42. मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणः 3,59,1; vgl. यातयज्जन. med. *sich verbünden:* अयातयन्त क्षितयो नवग्वाः Ṛv. 1,33,6. — 2) *anfügen, anbringen:* आयतने पृष्ठानि यातयति Pańḱav. Br. 13,10,16; vgl. वि caus. — 3) *Jmd* (gen.) *Etwas* (acc.) *an's Herz legen:* मदीयेष्वेव लेखेषु तत्रभवतस्त्वामुद्दिश्य सभाजनानि यातयिष्यामः Mâlav. 74,10. — 4) *vergelten* (*lohnen* oder *strafen*): एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि Ṛv. 5,32,12. जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव 9,39,2. कदा ऋतचिद्यातयासे 5,3,9. उषं ऋणोत्रं यातय 10,127,7; vgl. ऋणयात्. यो ऽपगुरातै शतेनं यातयात् (= क्लेशयेत् Comm.) TS. 2,6,10,2. किल्बिषं नु मा यातयन्निति *damit man es nicht als Fehler rüge* Ait. Br. 1,13. यो न यातयते वैरम् *vergelten, erwiedern* MBh. 3,1383. अयातयित्वा वैराणि 1382. वैरं ते यातितं (पातितं ed. Bomb.) मया 13,567. यत्राबला बलिनं यातयन्ति 4858. med. *den Lohn für Etwas empfangen:* तत्र त्वाहं हस्तिनं यातयिष्ये so v. a. *dort werde ich dir den Elephanten abtreten* 4856. 4858. 4860 u. s. w. तत्राहं ते भवने भूरितेजसो राजन्निमं हस्तिनं यातयिष्ये 4880. — 5) *sich bemühen lassen* (nach Sâj.) Ait. Br. 1,14. — — 6) *kämpfen lassen* TBr. 1,5,2,4, wo mit dem Comm. यातयेत् (= प्रयत्नं कारयेत्) st. पातयेत् zu lesen ist. — 7) *Jmd peinigen, quälen* (vgl. यातना), act. Bhâg. P. 5,26,31. fg. 6,1,22. med.: आत्मानं यातयते 5,26,18. यात्यमान pass. 8.

— अधि *aufreihen:* वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे Ṛv. 1,64,4. — caus. med. *sich vereinigen mit:* अध भ्रमस्त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः *erreichend* Ṛv. 6,6,4.

— अनु med. *zustreben, reichen zu* (acc.): अनु जनान्यतते पञ्च धीरः Ṛv. 9,92,3.

— आ *anlangen, erreichen, Fuss fassen, wohnen in* (loc.): कस्मिन्ना यतथो जने Ṛv. 5,47,2. आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम 6,1,10. आ यद्वां यतेमहि स्वराज्ये 5,66,6. आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः 10,29,8. 91,7. सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् AV. 17,1,30. आ देवेषु यतत आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम् *bleiben* Ṛv. 3,16,4. partic.: स्वायां दिश्यायत्तम् Çat. Br. 9,3,4,13. अन्नमायत्ता 14,4,3. 10. Das partic. आयत्त hat noch folgende Bedd. 1) *abhängig von, beruhend auf, zu Jmdes Verfügung stehend* (die Ergänzung im loc., gen. oder im comp. vorangehend) AK. 3,1,16. अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया। नृपतौ कोषराष्ट्रे च दूते संधिविपर्ययौ॥ M. 7,65. 205. Spr. 5274. MBh. 14,2084. 2351. Hariv. 5021. R. 1,53,14. fg. (54,15. fg. Gorr.). 2,45,28. Megh. 16. Kathâs. 46,180. त्वायत्ताः प्रजाश्चेमाः R. Gorr. 2,2,26. प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम् Varâh. Bṛh. S. 21,1. Kathâs. 46,19. Mârk. P. 72,21. 126,3. 4. 7. Hit. 84,5. विदधे तस्यायत्तं निजं धनम् *stellte es zu seiner Verfügung* Râǵa-Tar. 5,83. चक्षुरायत्ता Maitrjup. 6,6. R. 1,4,29. 5,86,12. Çâk. 92. Spr. 1431. 2263. 5384. Vṛddha-Ḱâṇ. 13,14. Kâm. Nîtis. 5,77. 18,20 (मित्रायत्ते zu lesen). Daçar. 2,40. Mârk. P. 126,5. LA. (II) 90,13. Kathâs. 18,136. 20,151. 52,211. 53,7. Râǵa-Tar. 4,491. Ind. St. 2,305,1. Pańḱat. 85,17. Hit. 52,9. 130,3. ed. Johns. 1086. Daçak. in Benf. Chr. 197,19. H. 918. Vop. 7,85. मदेकायत्ततां गता Kathâs. 32,171. ईश्वरेच्छायत्तत्व Sarvadarçanas. 79,14. ohne Ergänzung R. 7,38,9. Daçar. 2,22. आयत्तीकृत Râǵa-Tar. 4,680. Vgl. अनायत्त, परायत्त, स्वायत्त. — 2) *sich anstrengend, sich bemühend:* परमायत्ताः Bhâg. P. 8,7,5. *auf seiner Hut seiend, sich vorsehend* R. 7,19,10. धनुरायत्तमुत्तमम् so v. a. *bereit stehend* 109,7. — Vgl. आयतन, आयत्ति. — caus. act. *anlangen machen in:* स्वर्गे लोके Çat. Br. 11,5,2,10. Ait. Br. 2,34. irrig als Erklärung von यातयति Nir. 10,22. = कर्मसु प्रवर्तयति Durga.

— अत्या med. *sich sehr* (अति adv.) *bemühen um* (loc.), *sehr bedacht sein auf* Daçak. 64,7.

— अन्वा partic. °यत्त *betheiligt bei, verbunden mit, in Beziehung stehend zu, abhängig von, beruhend auf, sich erstreckend auf, vorhanden*

in oder *bei;* mit loc. oder acc.: अग्नौ वै सर्वा देवता अन्वायत्ताः TBr. 3,8,1,3. सर्वेषु लोकेषु मृत्यवो ऽन्वायत्ताः 9,15,1. TS. 1,6,11,1. Çat. Br. 1,6,3,41. 7,2,7. 13,1,2,9. संवत्सरं वा अन्नाद्यमन्वायत्तम् 12,7,2,19. 14,5,2,3. दर्व्यं पितरो ऽन्वायत्ताः 6,8,9. Khând. Up. 1,10,9. fgg. 11,4. fgg. 2,9,2. एता एव (दिशः) क्षात्रका अन्वायत्ताः Âçv. Çr. 10,10,10. — caus. *anreihen, folgen lassen; in Verbindung bringen, sich betheiligen lassen;* mit loc. oder acc.: देवता एवास्मिन्नन्वायातयति TBr. 3,8,1,3. Çat. Br. 13,1,2,9. छन्दांसि यज्ञमन्वायातयति 3,4,1,23. Çâñkh. Br. 12,7. 24,5. Âçv. Çr. 4,11,5. पुरोळाशेषु हवींष्यन्वायातयेयुः 9,2,22. Çâñkh. Çr. 12,9,8. 13,20,9. 14,3,1. 5,5.

— समा, partic. °यत्त *beruhend auf, abhängig von* (loc.): असौ प्राणाः समायत्ता मम चात्रिकपुत्रके MBh. 3,10484. 7,5458. R. 7,35,30.

— उप med. *betreffen:* इदं न्विमं स पाप्मा नोपयतते Çat. Br. 8,5,1,7.

— नि med. *anlangen bei:* नि या देवेषु यतते वसूयुः R̥V. 1,186,11.

— निस् caus. 1) *fortreissen, fortschaffen, wegführen:* संयुज्यमानानि निशम्य लोके निर्यात्यमानानि (= निपीड्यमानानि Nilak.) च सात्त्विकानि MBh. 12,13789. पुत्रो निर्यातितः क्रोधात् (so die neuere Ausg., es ist aber wohl क्रोडात् zu lesen) Hariv. 4857. निर्यातयत मे सेनाम् MBh. 15,610. असतीं वपुष्टमां चैव निर्यातयत मे गृहात् Hariv. 11243. यमो वैवस्वतस्य निर्यातयति दुष्कृतम्। हृदि स्थितः कर्मसाक्षी क्षेत्रज्ञो यस्य तुष्यति॥ Spr. 2404. *herausholen, herbeischaffen:* गृहात् R. 6,96,5. — 2) *herausgeben, schenken, ausliefern, zurückgeben:* निवृत्तेषु च मेघेषु निर्यात्य ज्ञगतो जलम् Hariv. 4013. निर्यात्य महिषं तस्य Kathâs. 62,224. Saddh. P. 4,25,*b*. M. 11,164. न्यासम् MBh. 3,16596. 5,3979. fg. 4021. fg. Hariv. 2770. 4061. 6778. R. Gorr. 1,71,23. 2,117,7. 5,37,8. 66,24. 26. 89,56. 6,16,69. 94,21. 7,30,26. 98,6. 8. med. 5,76,18. 7,59,10. Mr̥kkh. 25,9. वैरम् *eine Feindschaft erwiedern, Rache nehmen:* रामलक्ष्मणयोर्वैरं स्वयं निर्यातयामि वै R. 6,33,4. 3,60,33. MBh. 2,2660. — 3) *verbringen, verleben:* चतुर्दश समा वीर वने निर्यातितास्त्वया R. 6,104,26. — Vgl. निर्यातक fg. und निर्यात्य.

— प्रतिनिस् caus. *wieder ausliefern, zurückgeben* MBh. 3,13183. — Vgl. प्रतिनिर्यातन.

— परि med. *umstellen, umringen* Pañkav. Br. 7,5,6. 15,3,7. दाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः R̥V. 7,83,8. Ait. Br. 2,31. वद्धो वा परियत्तो वेन्द्रं त्रातारमुपधावति TS. 2,2,3,5.

— प्र med. *einwirken:* प्र रश्मिभिर्यतमानाः TBr. 2,8,2,2. *sich bestreben, sich bemühen um, bedacht sein auf, sich befleissigen;* med. und act. (aus metrischen Rücksichten) mit loc. Âçv. Çr. 4,12,3. Lâṭy. 8,8,1. धर्मे Hariv. 2870. R. 1,58,21 (60,24 Gorr.). 2,82,10 (88,10 Gorr.). Suçr. 1,127,14. Çâk. 113,3, v. l. प्रयतेतास्य रक्षणे MBh. 14,1186. 3,2726. 14417 (wo mit der ed. Bomb. भेदे प्रयतिष्यन्ति zu lesen ist). Hariv. 5284. मया — तद्व्याख्यायां प्रयत्यते Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,20. अतः प्रयतितं राज्ये — मया तव MBh. 1,5508. mit dat.: प्रयतेतार्थसिद्धये M. 7,215. राज्याय MBh. 1,3734. मोक्षाय 3,14944. mit अर्थे, अर्थम्, हेतोस् R. 2,39,7. 3,57,31. MBh. 4,1205. Hariv. 1503 (act.). Prab. 19,9. Bhâg. P. 1,5,18. mit acc.: धर्मार्थयोगान्प्रयतन्ति (so die ed. Bomb.) MBh. 5,649. महाक्रियाम्। प्रयतन्ते 14,46. तस्मात्तत् (युद्धं) प्रयताम्यहम् Hariv. 8022. mit infin.: विजेतुं प्रयतेतारीन् Spr. 3242. MBh. 14,343. fgg. Ragh. 8,2. Daçak. in Benf. Chr. 196,13. Bhaṭṭ. 19,15. तत्कर्तुं प्रयताम्यहम् R. 3,68,56. ohne Ergänzung Varâh. Bṛh. S. 106,2. प्रयतस्व यथाविधि MBh. 1,4754. यथाशक्ति R. 3,35,17. प्रयतिष्ये तथा राजन्यथा श्रेयो भविष्यति MBh. 1,2085. Suçr. 2,32,18. Çâk. 18,14. प्रयतमन्विच्छति प्रलिनं मनः *sich bestrebend, ganz bei der Sache seiend* Spr. 4591. — Vgl. प्रयतितव्य fgg.

— संप्र med. *sich bemühen um, bedacht sein auf:* सिद्धये Kâm. Nîtis. 10,41.

— प्रति med. 1) *entgegenwirken:* रक्षांसि Çat. Br. 9,2,3,3. आश्रमपीडा यथा न भविष्यति तथा प्रतियतिष्यामहे (v. l. für प्रयति°) Çâk. 18,14. — caus. *zurückgeben, erwiedern:* वैराणि, वैरम् so v. a. *Rache nehmen* MBh. 3,14728. 9,3256. — Vgl. प्रतियातन.

— वि med. etwa *in verschiedene Reihen bringen* AV. 18,1,17. — caus. 1) *anreihen, anbringen:* त्रिवृतमेव यज्ञमुखे वियातयति TS. 5,1,1,3. 3,3,2. 3. — 2) *büssen:* तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्ताम् AV. 5,29,6. — 3) *peinigen, quälen:* तं यमः पापकर्माणं वियातयति Spr. 2405.

— अधिवि caus. *anreihen, anbringen* Kâṭh. 24,8. 26,10. 29,9. 37,16.

— सम् 1) act. *vereinigen:* सं श्रुधीयतश्चियतथो महित्वा R̥V. 6,67,3. — 2) med. *sich aneinander reihen:* सं प्रूर्णासो दिव्यासो अत्याः। हंसा इव श्रेणिशो यतन्ते R̥V. 1,163,10. सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम् 5,59,8. — 3) med. *sich vereinigen, zusammentreffen, sich verbinden mit:* सं भानुना यतते सूर्यस्य R̥V. 5,37,1. सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथः 9,111,3. — 4) med. *an einander gerathen, in Streit kommen:* सं यन्मही मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा प्रूरसाता यतैते R̥V. 7,93,5. Ait. Br. 1,14. 23. TBr. 1,5,2,3. देवासुराः संयत्ता आसन् TS. 1,5,1,1. समयतन्त Çâñkh. Çr. 14,23,1. Çat. Br. 1,5,3,17. 3,5,1,21. Kâṭh. 24,10. 25,6. Khând. Up. 1,2,1. संग्रामं संयतिष्यमाणाः Ait. Br. 8,10. संग्रामे संयत्ते TS. 2,2,8,2. — 5) संयत्त *vorbereitet, ganz bei der Sache seiend, der seine Maassregeln getroffen hat, auf der Hut seiend, sich vorsehend:* समरे MBh. 7,5179. तथा युध्येत संयत्तो (v. l. für संपन्नो) विजयेत रिपून्यथा M. 7,200. Hariv. 8067. Bhâg. P. 10,44,41. सु° Hariv. 15389 (सुसंपन्न die neuere Ausg.). Bhâg. P. 8,7,2 (nach der Lesart der ed. Bomb.). अ° 6,28. — Vgl. असंयत्त.

— अभिसम्, partic. °यत्त *besorgt, gelenkt von:* रूपोत्तमाः MBh. 7,5173. अभिसंपन्न ed. Bomb.; °संयत würde nicht zum Metrum passen; vgl. simpl. 5) *h)* α) am Ende.

— प्रतिसम् med. *bekämpfen* Çat. Br. 11,4,1,3. partic. °यत्त *vollkommen vorbereitet, — gerüstet* MBh. 7,3534.

यत 1) partic. adj. s. u. यम्. — 2) n. *die Fussbewegungen des Führers beim Lenken eines Elephanten* H. 1231. Halâj. 2,67.

यतकृत् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,23. falsche, gegen das Metrum verstossende Form.

यतगिर् (यत + गिर्) adj. = यतवाच् Ragh. 9,17.

यतंकर m. nach Sâj. = यमनकर्तर्; wenn zu यत् gehörig, etwa *Vergelter:* वेतीदस्य प्रयता यतंकरः R̥V. 5,34,4.

यतनीय n. partic. fut. pass. impers. von यत्: सदैव यतनीयम्। मुक्तौ *man soll bedacht sein auf* Sarvadarçanas. 98,7.

यतमँ (superl. zu 1. य) pron. rel.; acc. sg. neutr. °मद्, nom. pl. m. °मे; *welcher von Mehreren* P. 5,3,93. Vop. 7,96. इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यो यातुधानः R̥V. 10,87,8. AV. 4,11,5. 5,29,2. 5. (यथाम्) तेषामज्ञ्यानिं यतमो वहाति 6,55,1. 8,9,17. त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे तास्ते

समंद्वीरिह राधयामि 11,1,10. 13.26. 2,12. ÇAT. BR. 1,6,2,26. 6,2,2,15. 13,4,2,4. यतमो भवतां कठः। ततम आगच्छतु P., Sch. यतमदेव कतमच्च *welches immer* ÇAT. BR. 8,4,4,12. SHADV. BR. 1,5.

यतमँथा (von यतम) adv. rel. *auf welche unter mehreren Weisen:* यतमथा कामयेत तथा कुर्यात् ÇAT. BR. 2,1,4,27. 6,1,2,11. यतमथा कतमथा *wie immer* SHADV. BR. 3,1.

यतरँ (compar. von 1. य) pron. rel. *welcher von Zweien* P. 5,3,92. VOP. 7,96. तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयः RV. 7,104,12. AV. 10,7,43. AIT. BR. 3,9. 43. यतरान्वा इयमुपावर्त्स्यति त इदं भविष्यन्तीति TS. 6,2,2,1. ÇAT. BR. 1,5,3,6. यतरा नौ जयति 3,6,2,6. 11,2,2,33. यतरो नौ ब्रह्मीयान् PAÑKAV. BR. 14,6,6. यतरे nom. pl. m. KHÂND. UP. 8,8,4, wo यतर st. यत zu lesen ist.

यतरँथा (von यतर) adv. rel. *auf welche von zwei Weisen* ÇAT. BR. 1,7, 3,27. 2,5,3,17. 13,4,3,4. यतरथा कतरथा SHADV. BR. 3,1.

यतँरश्मि (यत + र°) adj. *mit angespannten Strängen* oder *Zügeln:* अश्वाः RV. 5,62,4.

यतवाच् (यत + वाच्) adj. *die Rede hemmend, schweigend* MAITRJUP. 6,9. BHÂG. P. 4,8,56. 23,7. 28,19. 10,84,8. Davon nom. abstr. °वाक्त n. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 354,14. — Vgl. वाग्यत.

यतव्यँ (von यत्) adj.: तनू TS. 2,3,13,1. = प्रयत्नवत् Comm. यातव्य (von यात्) st. dessen KÂTH. 11,11.

यतव्रत (यत + व्रत) adj. f. आ *an seinem Vornehmen fest haltend* MBH. 1,6936. 3,9996. 13,2038. MÂRK. P. 74,7.

यँतस् (von 1. य) adv. rel. und conj. P. 5,3,7. 8. H. an. 7,49. fg. 1) *aus welchem, woher, woraus, wovor, von wo an, in Folge wovon* RV. 1,22, 16. 3,4,9. 13,4. 29,10. यतं उ आयन्तदुदीयुराविशम् 2,24,6. पन्था यतो देवा उदाजयन्त 4,18,1. 5,48,5. यतं इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि 8, 50,13. 6,29. यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः 10,31,7. 87,2. VS. 11,19. TBR. 2,7,3,6. LÂTJ. 9,2,7. KAUÇ. 34. AV. 2,2,3. 10,1,19. 8,16. KATHOP. 4,9. TAITT. UP. 3,1. ÇVETÂÇV. UP. 4,4. चरकेभ्यो वा यतो वा *oder von irgend einem Andern* ÇAT. BR. 4,2,4,1. — = यस्मात् M. 2,117. R. GORR. 2,15, 20. 119,25. यश्च यतश्चाहम् 3,53,27. ÇÂK. 62. VARÂH. BRH. S. 48,1. Spr. 2387. BHÂG. P. 1,1,1. 3,8. 15,11. 3,26,24. 4,2,3. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 2. VOP. 5,20. = यस्याम् R. 6,108,34. = येभ्यम् BHÂG. P. 1,15,21. = येन 2,5,2. 6,4,22. PRAB. 93,17. यतश्च भयमाशङ्केत् *woher, von welcher Seite her* M. 7,188. fg. 11,17. यतश्चैव समुत्थितम् (दुःखम्) MBH. 1,6118. Spr. 2276. VARÂH. BRH. S. 33,30. BHÂG. P. 1,15,44. *aus welchem Grunde, in Folge wovon* 8,5,11. R. 4,8,25. *von wann an, seitdem* MBH. 13,2231. यतः प्रभृति dass. Spr. 1780. KATHÂS. 23,2. यतो जाता so v. a. *von ihrer Geburt an* MBH. 4,76. R. 2,7,1. यतो यतः *je von welchem, je woher, je woraus* Spr. 4762. ÇAT. BR. 14,5,4,12. KAUÇ. 4. — यतस्ततः *vom ersten Besten, von diesem oder jenem* M. 4, 15. 10,104. 11,261. KATHÂS. 124,206. *woher es auch sei, woher immer, irgendwoher* M. 10,112. मम दुःखं भगवता व्यपनेयं यतस्ततः MBH. 5,7029. Spr. 227. KATHÂS. 43,130. — यत एव कुतश्च *von diesem oder jenem, woher immer* AIT. BR. 7,2. — 2) *wo:* यतो घृतेनाक्तं स्यात्ततः पुरोळाशस्य प्राश्नीयात् AIT. BR. 2,23. 7,30. यतो दृष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि विषम् AV. 7,56,3. ÇAT. BR. 1,1,2,8. यतः पुच्छं ततः स्थिताः MBH. 1,1126. 1148. N. 2,25. ततेमं यतस्ततो गतुम् MBH. 1,6128. 3,16776. DAÇ. 1,42. R. 1,26,28. 2,21,57. 115,10. प्रदुद्राव यतो मृगः 3,50,1. 5,75,8. Spr. 4761. RAGH. 11,69. VARÂH. BRH. S. 11,62. 47,16. 54,100. KATHÂS. 25, 176. 28,147. BHÂG. P. 3,22,31. — 3) *wohin* R. 1,44,34 (45,30 GORR.). 4,27,8. VARÂH. BRH. S. 39,5. BHÂG. P. 4,30,20. यतो यतः *wohin immer* BHAG. 6,26. ÇÂK. 23. ÇÂNTIÇ. in ÇATAKÂV. S. 40. यतस्ततः *wohin es auch sei, irgendwohin* KATHÂS. 44,155. 106,95. — 4) *sobald als:* अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत RV. 3,10,6. — 5) *da, weil* AK. 3,5,3. H. 1537. AV. 1,13,2. JÁGN. 1,81. 212. R. 2,44,22. 5,14,66. Spr. 35. 149. 1637. 1650. 3051. RAGH. 8,75. 16,74. ed. Calc. 3,44. क्रूरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् KUMÂRAS. 5,75. KATHÂS. 11,40. 15,65. 20,19. 25,210. 32,21. 52,255. RÂGA-TAR. 4,240. BHÂG. P. 4,3,20. MÂRK. P. 14,85. 37,36. fg. HIT. 27, 5. 127,10. DAÇAK. in BENF. Chr. 194,4. PRAB. 22,3. 59,13. SÂH. D. 44, 10. Häufig wird mit यतस् ein Vers angeknüpft, der einen ausgesprochenen Gedanken begründen soll, z. B. ÇÂK. 37,5. HIT. 6,1. 10. 7,16. 8,1. LA. (II) 13,7. 33,16. — 6) *dass:* कमपराधं मम पश्यसि त्यजसि मानिनि दासजनं यतः VIKR. 118. किं नु दुःखमतः परम्। इच्छासंपद्यतो नास्ति यच्चेच्छा न निवर्तते॥ Spr. 935. BHÂG. P. 3,15,33. wie ὅτι vor einer oratio directa: पुनः पुनश्चैव समादिदेश यतस्त्वया वीर न खेदितव्यम् R. 3, 49,57. — 7) *auf dass* mit folg. potent. BHÂG. P. 2,1,12. 2,34.

यतँस्रुच् (यत + स्रुच्) adj. *der die Opferschale ausstreckt, — bereit hält, — darbietet* NAIGH. 3,18. RV. 1,83,3. 108,4. आ वक्ष देवाँ अग्ने यतस्रुचे 142,1. 5. 2,34,11. 3,2,5. 8,7. 27,6. 4,2,9. 12,1. 8,23,20. — Vgl. उद्यतस्रुच्.

यतात्मन् (यत + आ°) adj. *sich zügelnd, — beherrschend* M. 11,215. R. 1,5,21. R. GORR. 1,44,11. KÂM. NÎTIS. 2,44. KUMÂRAS. 1,55. 3,16.

1. यँति (von 1. य) pron. rel. *quot, wie viele* VOP. 7,94. nom. und acc. flexionslos, यतिभिस्, यतिभ्यस्, यतीनाम्, यतिषु 3,54. P. 1,1,23. 25. 4,1,10. 7,1,22. 55. 6,1,179 — 181. त्वं वेत्थ यति ते RV. 10,15,13. अनुपूर्वं यतमाना यति ष्ठ 18,6. 63,6. *wie oft* AV. 10,3,6, wofern hier nicht vielmehr यदि zu lesen ist.

2. यँति (von यत्) m. 1) N. eines mit den **Bhṛgu** zusammenhängenden alten Geschlechts; pl. RV. 8,3,9. 6,18. Ind. St. 3,465, N. ÇVETÂÇV. UP. 5,3. Es scheint ihnen eine Thätigkeit bei der Bildung der Welt zugeschrieben zu werden: यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत RV. 10, 72,7. Die **Brâhmaṇa** haben eine Legende, nach der **Indra** die **Jati** dem Wilde zum Frass hinwirft, was als Frevel bezeichnet wird. AIT. BR. 7,28. TS. 2,4,9,2. 6,2,7,5. ÇÂÑKH. ÇR. 14,50,2. KÂTH. 8,5. 11,10. 25,6. 36,7. PAÑKAV. BR. 8,1,4. 13,4,16. KAUSH. UP. 3,1. Die Commentatoren sehen darin entweder wirkliche *Asketen* oder in solche verwandelte **Asura**. sg.: यतिर्न, भृगुर्न ÂÇV. ÇR. 6,3,1; vgl. AV. 2,5,3. ein Sohn **Brahman's** BHÂG. P. 4,8,1. **Nahusha's** MBH. 1,3155. HARIV. 1600. fgg. VP. 413. BHÂG. P. 9,18,1. 2. **Viçvâmitra's** MBH. 13,257. — 2) *ein Asket, ein Mann, der der Welt entsagt hat* (zur Festsetzung dieser Bedeutung mag ein mit यम् angenommener Zusammenhang beigetragen haben) AK. 2,7,43. TRIK. 3,3,178. H. 75. 809. an. 2,188. MED. t. 47. HALÂJ. 2,189. 238. fg. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 4,117. यतयः संन्यासयोगात् MUṆD. UP. 3,1,5. PRAKETAS bei COLEBR. Misc. Ess. 1,117. गृहस्थ, ब्रह्मचारिन्, वनस्थ, यति M. 5,137. 6,54. fgg. 58. 69. 86. fg. 12,48. BHAG.

4,28. 5,26. R. 1,5,21. R. Gorr. 2,16,45. 53,2. 3,53,26. Ind. St. 2,10. 172. 9,121. Çâk. 179. Ragh. 8,16. Mâlav. 13. Spr. 782. 2064. 4265. Varâh. Brh. S. 51,5. Bhâg. P. 2,2,15. 7,48. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,39. 282, *b*,41. Weber, Râmat. Up. 362. Dhûrtas. in LA. 76,12. 85,3. Pańkat. 34,4. महा° Mârk. P. 41,22. यतीन्द्र LA. (II) 87,19. यतीन्दु Verz. d. Oxf. H. 210,*b*, No. 497. अयति Bhag. 6,37. Jati bei den Gaina Colebr. Misc. Ess. 2,195. Wilson, Sel. Works 1,317. fgg. 342. fg. Bein. Çiva's MBh. 14,196. यतिपञ्चक n. *fünf über die* Jati *handelnde Strophen* Haeb. Anth. 487. fg. — 3) = निकार H. an. Med.

3. यति (von यम्) f. P. 6,4,37, Sch. 1) *Festhaltung, Leitung* TBr. 3, 2,2,1. 4,6. विशो यत्वे स्थ इत्याह । विशां यत्यै 3,6,10. अश्वस्य TS. 5,4, 12,3. Pańkav. Br. 12,10,1. — 2) *Pause* (in der Musik); *Cäsur* (im Verse) Trik. 3,3,178. H. an. 2,188. Med. t. 47. ṚV. 9,71,7 (?). °त्रय Mârk. P. 23,54. Pańkat. V,44. Çrut. 18. 35. 39. Ind. St. 8,303. 305. 363. fg. 464. Kâvjâd. 3,152. Nâgân. 8,8. = राग und संधि Çabdar. im ÇKDr. — 3) यति und यती *Wittwe* ebend.; vgl. यतिनी. — Vgl. परायति.

यतिचान्द्रायण (2. यति + चा°) n. Bez. *einer best. Busse* M. 5,20. अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्मध्यंदिने स्थिते । नियतात्मा हविष्याशी यतिचान्द्रायणं चरन् ॥ 11,218. — Vgl. यतिसांतपन.

यतितव्य (von यत्) partic. fut. pass. impers. *connitendum, laborandum;* mit loc.: अर्थार्जने Pańkat. 240,4. तत्तद्दुःखोच्छेदे Comm. zu Kap. 1,5. मया — यथा ते न विनाशः स्यात् R. 3,46,2.

यतित्व (von 2. यति) n. *der Stand eines Asketen, eines Mannes, der der Welt entsagt hat,* Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,30.

यतिथ (von 1. यति) adj. f. ई *der wievielste:* समा Çat. Br. 1,8,1,5. 14,9,1,3.

यतिधर्म (2. य° + धर्म) m. *die Pflichten eines Asketen* MBh. 12,11821. Verz. d. Oxf. H. 83,*a*,32. 85,*b*,37. Wilson, Sel. Works 1,311. °समुच्चय m. Titel einer Schrift Hall 141.

यतिधर्मन् (2. य° + ध°) m. N. pr. eines Sohnes des Çvaphalka Hariv. 1918. °धर्मिन् die neuere Ausg. 2084 haben beide Ausgg. st. dessen einfach धर्मिन्.

यतिधा (von 1. यति) adv. *in wie vielen* (rel.) *Theilen, — Arten* AV. 8, 9,7. विद्मा तें कृत्ये यतिधा परूंषि 10,1,20.

यतिन् 1) m. = यति *ein Asket* AK. 2,7,43. H. 76. Pańkar. 1,10,80. — 2) यतिनी f. *Wittwe* Çabdar. im ÇKDr.

यतिमैथुन (2. य° + मै°) n. *das unkeusche Leben der Asketen* Trik. 2,7,28.

यतिभ्रष्ट (3. य° + भ्रष्ट) adj. *der geforderten Cäsur ermangelnd* Kâvjâd. 3,152. Pratâpar. 64,*a*,8. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,15.

यतिवर्य (2. य° + वर्य) m. N. pr. eines Autors Hall 34.

यतिविलास (2. य° + वि°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 251,*a*,13.

यतिसांतपन (2. य° + सां°) n. Bez. *einer best. Busse, dreitägiges* Pańkagavja Prâjaçkittend. 9,*b*,1. — Vgl. यतिचान्द्रायण.

यतीयस (?) n. *Silber* H. ç. 161.

यतु s. यतव्य.

यतुका und यतूका f. *eine best. Pflanze,* = रजनी und जननी Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. जतुका und जतूका.

यतुन adj. ṚV. 5,44,8 nach den Comm. von यत्, = गन्तृ Sâj., = यतनशील Durga zu Nir. 6,15.

यतोजा (यतस् + जा) adj. *woraus* (rel.) *entstanden* VS. 23,60.

यतोद्भव (यतस् + उद्भव) adj. dass. Hariv. 11335.

यतोमूल (यतस् + मूल) adj. *worin* (rel.) *wurzelnd* R. 2,18,16. 92,26. Spr. 2400.

यत्कर (यद् + 1. कर) adj. *was* (rel.) *thuend, — vornehmend* P. 3,2,21. f. आ Vârtt.

यत्काम (यद् + काम) adj. *was* (rel.) *wünschend:* यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु ṚV. 10,121,10. VS. 4,4. Çat. Br. 1,6,2,7. 4,6,9,23.

यत्काम्या (यद् + का°) adv. *in welcher* (rel.) *Absicht* Çat. Br. 1,1,2,19. 3,9,3,4. 4,6,5,5.

यत्कारणम् (von यद् + 1. कारण) adv. 1) *aus welchem* (rel.) *Grunde, in Folge wovon, weshalb* Mârk. P. 71,25. 119,4. — 2) *da, weil* Pańkat. 30,25. 34,3. ed. orn. 44,23; vgl. यत्कारणात् Pańkat. 235,16. यत्कारणम् ed. orn. 46,13 ist यत् कारणम् *welcher Grund.*

यत्कारिन् (यत् + का°) adj. *was* (rel.) *vornehmend* TBr. 1,5,2,1.

यत्कार्यम् (von यद् + कार्य) adv. *in welcher* (rel.) *Absicht* Mârk. P. 125,53.

यत्कृते (यद् + कृते) adv. rel. *wessentwegen* MBh. 3,2487. 2622. 5,7373. Kathâs. 71,121.

यत्क्रतु (यद् + क्रतु) adj. *welchen Entschluss fassend* Brh. Âr. Up. 4,4,5. यथाक्रतु Çat. Br.

यत्न (von यत्) m. P. 3,3,90. Vop. 26,180. *Willensthätigkeit, Bestrebung* Kan. 5,13. Colebr. Misc. Ess. 1,285. Bhâshâp. 4. 33. Kusum. 5,8. Jagn. 3,175 (wo wohl चेतना यत्नः zu lesen ist). *Verrichtung, Arbeit* Bhar. Nâtj. 34,42. *Bemühung, Mühe, Anstrengung* AK. 3,4,2,27. MBh. 3,2807. Jogas. 1,13. तस्य यत्नः श्रम एव केवलम् Bhâg. P. 5,19,14. व्यर्थ° Spr. 65. विनापि यत्नेन 1509. Varâh. Brh. S. 44,17. mit loc.: यदि परोपकृतौ न यत्नः *wenn man sich nicht bemüht Andern Gefälligkeiten zu erweisen* Spr. 2791. दोषेषु यत्नः सुमहान्खलस्य *der Bösewicht kümmert sich gar sehr um Fehler* 3872. Ragh. 2,56. अवन्ध्ययत्नाश्च बभूवुरर्भके 3,29. Bhâg. P. 3, 15,21. Die Ergänzung im comp. vorangehend: निष्फलारम्भयत्नाः Megh. 53. रूपविधान° Kumâras. 7,66. Kathâs. 55,43. परार्थघटनायत्नैर्विना Spr. 2958. यत्नं कर् *sich Mühe geben, Mühe auf Etwas* (loc.) *wenden, sich Etwas angelegen sein lassen:* यत्ने कृते यदि न सिध्यति 471. मा विषादं गमो वीर कुरु यत्नं मया सह R. 3,68,5. Schol. zu ṚV. Prât. 3,15. क्रियतां च तथा यत्नः — यथा R. 1,60,7. कुर्याद्ध्ययने यत्नमाचार्यस्य क्लिवेषु च M. 2,191. MBh. 1,1116. 5,7409. Hariv. 4428. R. 1,9,12. 3,68,9. 4, 6,19. 41,34. 5,77,9. Spr. 4023. 4193. 5061. Prab. 93,7. स प्रज्ञार्थे परं यत्नमकरोत् MBh. 3,2077. मन्त्रं मोचयितुं यत्नः क्रियताम् Hit. 43,13. यत्नमास्था dass. R. 1,44,11. Spr. 5353. यत्नात्तरमास्थेयम् Kâç. zu P. 6,1, 26. इन्द्रियाणां संयमे यत्नमातिष्ठेत् M. 2,88. 8,302. 9,252. 333. R. Gorr. 1,69,13. परमं यत्नमातिष्ठेत्पुरुषो रत्नणं प्रति M. 9,16. परं यत्नं समास्थितः MBh. 3,2823. प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः Çâk. 3,13. परार्थे यत्नमारभ्य MBh. 3,2175. यत्नेन *sorgfältig, eifrig:* यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे बह्वृचं वेदपारगम् so v. a. *er lasse es sich angelegen sein zu speisen* M. 3,145. 234. तद्यत्नेन वर्जयेत् 4,159. 7,49. 10,83. R. 2,75,26. Spr. 439. Pańkat. 192,12. यत्नेनाप्यनिवार्यम् *trotz aller Anstrengung* Kathâs. 51,36. अयत्नेन (s. auch u. अयत्न) *ohne Mühe* R. 4,44,78. Varâh. Brh. S. 75,6. Pańkat. 201,14.

यत्नैस् = यत्नेन MBh. 15,186. उपसेवेत तं नित्यं सर्वयत्नैर्गुरुं यथा M. 7, 175. न विषममृतं कर्तुं शक्यं यत्नशतैरपि Spr. 1470. यत्नात् *bei aller Anstrengung* 2281. 2905. *sorgfältig, eifrig* Suçr. 1,102,12. Varâh. Bṛh. S. 53,66. Sarvadarçanas. 39,13. महता यत्नात् *mit grosser Anstrengung* R. 6,84,26. अयत्नात् (s. auch u. अयत्न) *ohne Anstrengung* Pañkat. 176,8, wo ऽयत्नादेव zu lesen ist. यत्नतम् *sorgfältig, eifrig* M. 3,135. 9,15. R. 1,8,19. 2,91,7. 4,8,53. 6,1,15. Spr. 379. 843. 1897. 2661. Kathâs. 26,4. 52,376. 53,7. Sarvadarçanas. 39,10. अयत्नतम् (s. auch u. अयत्न) *ohne Mühe* Vid. 282. Vedântas. (Allah.) No. 148. H. 1481. यत्नप्रतिपाद्य *mit Mühe, nicht leicht* Kâç. zu P. 1,2,53. — Vgl. अ°, निर्यत्न, प्र°, प्रति°, स°.

यत्नवन्त् (von यत्न) adj. *sich Mühe gebend, sich Etwas angelegen sein lassend* MBh. 1,1042. 13,1932. Spr. 5353. Hariv. 4694. R. Gorr. 1,79, 47. 2,31,28. die Ergänzung im loc.: दोषस्यैतस्य विघाते MBh. 3,13804. M. 9,222. 12,92. R. 1,67,14 (69,15 Gorr.). Kathâs. 61,117. Kusum. 1,6. राघवार्थे R. 4,47,18. *Willensthätigkeit besitzend;* davon nom. abstr. यत्नवत्त्व Schol. zu Kusum. 5,4.

यत्नाक्षेप (यत्न + आ°) m. in der Rhetorik *eine Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei, trotz des Bestrebens es sein zu wollen,* Kâvjâd. 2,148. Beispiel Spr. 4003.

यत्य partic. fut. pass. impers. von यत् Pat. zu P. 3,1,97. Vop. 26,12.

यत्यनुष्ठानपद्धति (2. यति - अनु° + प°) f. Titel einer Abhandlung Hall 141.

यत्र (von 1. य) adv. rel. und conj. VS. Prât. 6,27. P. 5,3,10. Einfluss auf den Ton des verbi finiti 8,1,30. यत्रा VS. Prât. 3,120. 1) *wo, wohin;* häufig auch = यस्मिन्, यस्याम् u. s. w. ṚV. 1,83,6. 115,2. यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतम् 135,7. 7,1,4. 14. 63,5. यज्ञे यत्र देवयवो मदन्ति 97,1. VS. 4,1. 32. AV. 9,5,5. चतुष्पथे यत्र वा *oder sonst wo* Âçv. Gṛhj. 4,6,3. — यत्र (= यस्मिन्) वास्य रमेन्मनः M. 2,223. 5,47. R. 1,4,5. 2,55,27. Çâk. 22,21. Spr. 746. 1059. 2292. 2294. Megh. 13. Bhâg. P. 1,18,22. यत्र काले Bhag. 8,23. यत्र देशे R. 1,40,4 (41,4 Gorr.). Spr. 2287. यत्र काष्ठे AK. 3,3,35. = येषु Spr. 2773. यत्र ते कीर्तिताः सर्वे तान्वरान्समवाप्स्यसि Mârk. P. 19,19. यत्र in einem Conditionalsatze: आद्यचतुर्थं पञ्चमकं चेत्। यत्र गुरु स्यात्साक्षरपङ्क्तिः ॥ Çrut. 7. *wo* M. 2,23. 3,103. MBh. 1,5941. 3,2181. 2254. 2689. 2956. प्रयाता यत्र वै मुनिः *(dahin) wo* R. 1,9,11. 52. 2,32,31. 4,3,29. 5,25. Çâk. 170. Megh. 49. Spr. 1768. 2291. Vid. 5. Mârk. P. 50,78. 88. LA. (II) 7,3. *wohin:* यत्र मे नीयते भर्ता स्वयं वा यत्र गच्छति MBh. 3,[illegible]767. R. 2,35,10. क्षिप्रं त्वां प्रापयिष्यामि यत्र मां राम वक्ष्यसे 40,11. गम्यतां यत्र वाञ्छितम् Mârk. P. 106,9. Spr. 2289. Bemerkenswerth sind folgende Verbindungen: *a)* यत्र यत्र *wo immer, wo es auch sei:* यत्स्कन्देद्धविषो यत्र यत्र Kauç. 6. MBh. 3, 12163 (यत्र तत्र ed. Calc.). 12,8198. Spr. 2286, v. l. 4305. Bhâg. P. 5, 16,1. *wohin immer, wohin es auch sei* MBh. 5,2396. Hariv. 15056. R. 2,96,46. Bhâg. P. 4,17,15. — *b)* यत्र तत्र *wo es sich gerade trifft, an jedem beliebigen Orte, am ersten besten Orte* MBh. 12,13092. 13,2518. Spr. 2286. Kathâs. 64,99. 107,36. गमिष्यामि यत्र तत्र *an den ersten besten Ort, weiss Gott wohin* MBh. 5,5997. यत्र तत्राश्रमे वसन् *in welchem Lebensstadium es auch sei* M. 3,50. 12,102. Spr. 1225. यत्र तत्र दिने *an einem beliebigen Tage* Pañkar. 2,7,33. — *c)* यत्र कुत्राश्रमे रतः *in welchem Lebensstadium es auch sei, in jedem beliebigen L.* Tattvas. 19. Spr. 1225, v. l. यत्र कुत्र *überall* R. 7,20,10. यत्र कुत्रापि *wo es sich gerade trifft* Prasañgâbh. 16,*b*. यत्र कुत्रापि जन्मनि *in welcher Geburt es auch sei* Kathâs. 80,41. — *d)* यत्र क्व च *wo —, wohin immer* ṚV. 6, 16,17 (P. 8,1,30, Sch.). Âçv. Gṛhj. 1,3,1. Lâṭj. 10,5,11. *so oft, jedesmal wenn* Khând. Up. 6,2,3. — *e)* यत्र क्वाचन *an einem beliebigen Orte* P. 8,1,66, Vârtt., Sch. *weiss Gott wohin:* °गामिन् MBh. 1,6192. 12, 13023. *irgendwann, wann es auch sei* M. 9,233. — *f)* यत्र क्वापि *irgendwohin, hierhin oder dorthin* Bhâg. P. 10,47,68. — *g)* यत्र क्व वा *wo es auch sei* Bhâg. P. 1,5,17. 17,36. 10,4,12. — 2) *wann, als; wenn* ṚV. 1,113,16. 121,9. 7,63,2. यत्र प्र सुदासमावतम् 83,6. यत्र गा असृजत AV. 3,28,1. यत्र पशुं संज्ञपयन्ति Çat. Br. 13,5,2,2. यत्र समा नानु चन स्मरेयुः 8,1,2. 1,1,1,21. 4,13. 16. 4,1,19. 14,4,1,30. 5,1,16. Khând. Up. 6, 8,1. Çâñkh. Çr. 10,1,20. 14,62,2. यत्राब्राह्मणामधिगच्छेयुः Lâṭj. 9,2,6. श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यात् M. 2,14. 8,104. 336. MBh. 3,1256. Spr. 2288. 4775. सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति M. 3,34. 131. 4,206. 8,12. 14. 19. 348. 9,34. MBh. 3,2227. fg. 13238. R. 5,77,14. Spr. 63. 104. 4773. ad Çâk. 8,20. 51,16. Kâç. zu P. 1,1,50. P. 1,1,3, Sch. ohne verbum finitum Jâǵn. 2,83. MBh. 3,2188. Spr. 2295. 2298. 2577. 2740. — 3) *damit:* निदो यत्र मुमुच्महे ṚV. 9,29,5. neben यथा, अंहसो यत्र पीपरद्यथा नः 3, 32,14. — 4) *da, quum* N. 8,17 (beide Ausgg. des MBh. यत्तु st. dessen). नाकाले विहितो मृत्युर्मर्त्यानाम् — यत्र कान्ता त्वयोत्सृष्टा मुहूर्तमपि जीवति MBh. 3,2368. R. 2,57,20. 6,82,9. Spr. 1352. 5240. Kathâs. 78,76. — 5) mit potent. *dass* nach *nicht glauben, nicht zugeben, tadeln, sich wundern* P. 3,3,148. fgg. न श्रद्दधे न मर्षये यत्र तत्रभवान्वृषलं याजयेत्, यत्र तत्रभवान्वृद्धः सन्वृषलं याजयेद्गर्हामहे, यत्र तत्रभवान्वृषलं याजयेदाश्चर्यमेतत् Schol. Vop. 25,14. *dass* mit praes.: किं नु दुःखमतः परम्। इच्छासंपद्यतो नास्ति यत्रेच्छा (v. l. für यच्चेच्छा) न निवर्तते ॥ Spr. 935. Saddh. P. 4,14,*a*.

यत्रकामम् (von यत्र + काम) adv. *wohin das Verlangen geht* AV. 9,3, 24. Çat. Br. 14,7,1,13.

यत्रकामावसाय (यत्र - काम + अ°) m. *die Zauberkraft sich dahin zu versetzen, wohin man gerade Lust hat,* Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,13.

यत्रकामावसायिन् (यत्र - काम + अ°) adj. *die Zauberkraft besitzend sich dahin zu versetzen, wohin man gerade Lust hat;* davon nom. abstr. °सायिता f. und °सायित्व n. = यत्रकामावसाय Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,19. Gauḍap. zu Sâmkhjak. 23. Mârk. P. 40,30 (°शायित्व). 33 (°शायिता). H. 202. Vgl. कामावसायिता Pañkar. 2,8,2. कामावशायिता 1,1,49 mit vorangehendem तथा, wofür vielleicht यथा (यथाकामा°) zu lesen ist.

यत्रतत्रशय (यत्र - तत्र + शय) adj. *sich hinlegend, wo es sich gerade trifft, dem es einerlei ist wo er schläft* MBh. 5,3560.

यत्रत्य (von यत्र) adj. *wo* (rel.) *seiend, wo wohnend* Mâlatim. 144,17. Bhâg. P. 5,2,12. 6,14.

यत्रसायंगृह (यत्र - सायम् + गृह) adj. *dort seine Wohnung aufschlagend, wo Einen der Abend ereilt,* MBh. 1,1031. 1813. 3,471. Spr. 4410. — Vgl. सायंगृह.

यत्रसायंप्रतिश्रय (यत्र - सायम् + प्र°) adj. f. आ dass. MBh. 3,2587.

यत्रस्थ (यत्र + स्थ) adj. *wo* (rel.) *sich aufhaltend* MBh. 9,2252.

यत्राकूतँ (यत्र + आ°) n. *das beabsichtigte Ziel* TS. 5,4,10,1.

यथऋषि (यथा + ऋषि) adv. *je nach dem* Ṛshi Ait. Br. 2,4. 4,26. Âçv. Çr. 3,2,7. — Vgl. यथर्षि.

यथर्चम् (von यथा + ऋच्) adv. *je nach der* Ṛk Lâṭj. 7,11,9. Drâhj. 7,10,26.

यथर्तु (यथा + ऋतु) adv. *der jedesmaligen Zeit entsprechend* Ait. Br. 5,9. Kâtj. Çr. 22,7,15. Kauç. 74. Pâr. Gṛhj. 1,11. Taitt. Âr. 1,9,2. °पुष्पिता द्रुमाः R. 5,73,59.

यथर्तुक (wie eben) adj. *der Jahreszeit entsprechend* MBh. 1,5005.

यथर्षि adv. = यथऋषि Kâtj. Çr. 4,9,1.

यँथा (von 1. य) rel. adv. und conj. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,36. fgg. Kâç. zu 36. 1) *wie* (einem तथा, एवम्, एव, तद्वत् entsprechend); tonlos nachgesetzt am Ende eines Pâda Çânt. 4,17. z. B. विशो यथा ṚV. 1,25,1. 50,3. 2,43,3. 3,45,3. 8,29,6. 64,5. Çat. Br. 11,5,5,13. AV. 6,14,2. 3. doch auch betont: पिता पुत्रेभ्यो यथा ṚV. 7, 32,26. 8,46,14. — नष्टं यथा पशुम् ṚV. 1,23,13. तथा तदस्तु — यथा 30, 12. नूनं यथा पुरा 39,7. यथेदं कृम्य तथा 7,55,6. विद्मा हि ते यथा मनः 1, 170,3. यथा देवानां जनिमानि वेद 3,4,10. 7,3,7. क्रत्वा यथा वशत् 8,55, 4. नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते 7,57,3. परश्वर्यथा वनम् 104,21. AV. 1, 11,6. 3,9,1. Ait. Br. 1,23. Çat. Br. 1,5,1,26. तदु किल तथैवास यथैवैनं प्रोवाच Çâṅkh. Çr. 15,16,13. यत्परःपुंसा वा पत्नी स्याद्यथा वा *oder wie sonst* Çat. Br. 1,3,1,21. यथा मे पुत्रो जायेत Çâṅkh. Çr. 15,18,1. यथा हि ṚV. 8,24,9. यथा चित् 5,25. 46,21. 49,7. 5,56,2. यथा ह 4,12,6. — यथर्तुलिङ्गान्यृतवः स्वयमेवर्तुपर्यये। स्वानि स्वान्यभिपश्यन्ते तथा कर्माणि देहिनः॥ M. 1,30. 119. यथा शूद्रस्तथैव सः 2,126. यथा कृतयुगे तथा R. 1,1,90. एतत्सर्वं यथा वृत्तं तथा (so die ed. Bomb.) गावल्गणे मम। आचक्ष्व MBh. 8,47. यथा भवितव्यं तथा भवतु Hit. 18,15. यथा तव तथा मम Kathâs. 4,33. (विलासवत्यः) अनङ्गसंदीपनमाशु कुर्वते यथा प्रदोषाः शशिचारुभूषणाः Ṛt. 1,12. यथा पुरा प्रकृतिभिर्न प्रत्यक्षं सेव्यते Çâk. 132. यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि 123. घर्मार्तं न तथा सुशीतलजलैः स्नानम् — सुखयति — प्रीत्यै सज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः Spr. 886. यथा — एवम् 2318. R. 1,6,19. यथा — तद्वत् Sâṁkhjak. 41. 58. Spr. 2301. fg. 2316. fg. 2326. यथा वक्ष्यसि धर्मज्ञ तत्करिष्यामहे वयम् R. 1, 69,14. एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं यथा यास्यामि तत्र वै MBh. 5,6052. ब्रूयाश्चैनं कथान्ते त्वं पर्णादवचनं यथा *wie* Parṇâda's *Worte waren* 3,2893. शृणु राजन्निहोत्पत्तिं शैनेयस्य यथा पुरा। यथा च भूरिश्रवसः 7,6027. राज्ञ आवेदयद्यथा (= यथावत् Comm.) *wie es sich verhielt* Bhâg. P. 7,8,2. मंस्यन्ते मां यथा नृपम् MBh. 4,32. नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं विभावसौ Kumâras. 4,34. विदधे कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा (vgl. यथेप्सित) R. 1,53,1. Bisweilen zum Ueberfluss mit इव verbunden: तत्र मेधाविनः केचिदर्थमन्यैरुदीरितम्। विचिन्तिपुर्यथा श्येना नभोगतमिवामिषम्॥ MBh. 2,1311. द्वेष्यो ऽपि संमतः शिष्ट आर्तस्येव यथौषधम् Spr. 4234. सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् 85. यथा — तथा oder यथा — तेन सत्येन bei Betheuerungen und festen Behauptungen *so gewiss — so wahr* N. 11,36 (MBh. 2,2399 यदि st. यथा). MBh. 3,16867. 16871. fg. 2207. fgg. 2981. Daç. 2,39. R. Gorr. 2,71,23 (wo यथा ध्रुवं zu trennen ist). mit Verstellung der beiden advv.: यथा शाल्वपते नान्यं वरं ध्यायामि कं च न। त्वामृते पुरुषव्याघ्र तथा मूर्धानमालभे॥ MBh. 5, 5991. *quam, wie* als Ausruf der Verwunderung: यथा पचति शोभनम् P. 8,1,37, Sch. *wie, zum Beispiel* Nir. 1,14. 7,7. Çâṅkh. Çr. 12,13,5. Gobh. 4,4,18. यथो एतत् *was das betrifft (dass)* Nir. 1,14. 7,7. यथैवैतत् Ait. Br. 7,25. Bemerkenswerth sind folgende Verbindungen: *a)* यथा यथा (einem एवैव, तथा तथा entsprechend) *je nachdem, in welchem Maasse, je mehr:* यथा यथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते ṚV. 4, 54,5. यथा यथा कृपयति 8,39,4. यथा यथा मतयः सन्ति नृणाम् 10,111, 1. 100,4. यथा यथास्य अर्पणं तथा तथा TBr. 3,6,6,4. M. 4,20. 8,285. यथा यथा महद्दुःखं दण्डं कुर्यात्तथा तथा 286. 10,128. 11,228. fg. 12,73. MBh. 3,2285. 16798. Spr. 2319. fg. 4788. fg. 5397. Suçr. 2,442,1. Varâh. Bṛh. S. 11,33. Kathâs. 14,63. Bhâg. P. 2,2,13. यथा यथा भर्ता तथा सह स्नेहवचनानि वदति तथा तथाधिकं दुःखं भवति Vet. in LA. (II) 20,2. Vgl. यथायथम्. — *b)* यथा तथा *wie immer, wie es auch sei, auf irgend eine Weise, auf beliebige Weise* M. 4,17. MBh. 2,2139. 3,3038. 13,2748. Hariv. 4238. R. Gorr. 2,116,48. 4,17,38. 5,90,30. Varâh. Bṛh. S. 24, 28. 77,25. Kathâs. 54,150. 62,36. 117,26. Râǵa-Tar. 5,276. यथा तथा न तप्येयुः *auf keine Weise* R. Gorr. 2,21,10. Kathâs. 43,108. 61,169. अस्ति त्वेको ऽद्य नस्तत्तुः सो ऽपि नास्ति यथा तथा so v. a. *aber auch der ist genau genommen nicht da* MBh. 1,1830. यथा तथा MBh. 3,1168 so v. a. यथातथम्, wie Indr. 5,52 gelesen wird. — *c)* यथा कथंचित् *auf irgend eine Weise, wie es sich gerade macht* M. 11,220. MBh. 11,772. Mâlav. 41,3. Daçak. in Benf. Chr. 182,6. Sarvadarçanas. 167,18. fg. — *d)* तद्यथा *dieses wie* so v. a. *nämlich, so zum Beispiel* Kaush. Up. 3,8. Çâk. 21,7. Bhâg. P. 5,3,9. Pañkat. 3,10. 7,15. 156,16. भवति च पुनर्भूयान्भेदः फलं प्रति तद्यथा प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिर्न मृदां चयः Uttararâmak. 27,7 (35,17). Sarvadarçanas. 125,8. 166,17. — 2) = यथावत् *wie es sich gehört, richtig* Bhâg. P. 6,1,1. अ° 3,31,14. 5,5,7. 18,3. 8,5,19. 10, 87,15. Vgl. यथाकृत. — 3) *ut, auf dass, damit, (so) dass;* mit opt. und conj., später auch fut., praes., imperf., perf. und aor.; gern dem ersten Worte des Satzes nachgestellt in der älteren Sprache. देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन् ṚV. 1,89,1. 173,9. सुभगो यथासंसि 2,26,2. यथा नो मित्रो अर्यमा जुजोषत् 3,4,6. यथा भवेम 7,97,2. पर्षी यथा नः 100,2. VS. 2,33. AV. 2,28,4. 3,8,2. न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तद्यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति ṚV. 4,54, 4. Çat. Br. 1,7,4,5. 6,4,7. TBr. 3,1,4,2. 11. यथा न रोदात् Pâr. Gṛhj. 1,5. यथा भूमिमाढ्यं प्राप्स्यतीति Lâṭj. 1,7,9. Gobh. 3,7,12. यथा भवाम्युत्तमः Âçv. Gṛhj. 2,10,6. — तथा प्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानं न पीडयेत् M. 7, 68. 128. 177. 180. 200. 9,102. MBh. 1,7699. 3,1911. 2212. 2506. 2733. 2739. 2759. 4,519. 5,6035. R. 1,2,8. 8,14. 57,19. 69,5. 2,38,16. fg. 46. 31. 3, 60,23. 34. 4,43,67. 53,26. Spr. 2113. Kathâs. 13,55. Bhâg. P. 6,1,64. Pat. zu P. 1,1,62. Kâç. zu P. 1,1,50. 56. यथा यथैव जीवेद्धि तत्कर्तव्यमहेलया Spr. 4790. मा भूत्कलात्ययो यथा R. 7,107,3. दमयन्तीसकाशे त्वां कथयिष्यामि नैषध। यथा त्वदन्यं पुरुषं न मां मंस्यति कर्हिचित्॥ MBh. 3,2092. आश्रमपीडा यथा न भविष्यति (भवति v. l.) तथा प्रयतिष्यामहे Çâk. 18,13. अथ तान् (तथैतान् ed. Bomb.) पातयिष्यामि यथा यास्यन्ति न क्षयम् MBh. 4,35. R. 1,60,3. 4,6,4. 5. यथा न विघ्नः क्रियते R. 1,12,3. 2,93,19. R. Gorr. 2,6,28. 5,37,13. 76,22. Jâǵñ. 1,343. Çâk. 24,7. Ragh. 1,72. 3,66. Kathâs. 18,243. Prab. 91,3. क्रमेण च ययौ तत्र प्रकर्षं स तथा यथा। अजीयत न केनापि प्रतिमल्लेन भूतले॥ Kathâs. 25,120. 52,267. 348. 54,222. 55,23. ततस्तथा ददौ तस्मै रत्नानि मगधाधिपः। निर्दुग्धर-

त्वरितेव पृथिवी बुबुधे यथा ॥ 16,83. 18,81. 54,241. RÂGA-TAR. 6,277. ततो वसु तथार्थिभ्यो भृत्येभ्यश्च ववर्ष सः । एको दरिद्रशब्दो ऽत्र यथाभूद्वर्जितः ॥ KATHÂS. 52,380. ohne verbum finitum RAGH. 14,66. — 4) *dass* nach *wissen, glauben, meinen, sagen, melden, anweisen, hören, bekannt werden, zweifeln* u. s. w. vor einer oratio directa mit oder ohne nachfolgendem इति. वेद यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति PRAÇNOP. 6,6. अकथितो ऽपि ज्ञायत एव यथायमाभोगस्तपोवनस्येति ÇÂK. 7,23. उवाच यत्रा KHÂND. UP. 5,3,7. MUDRÂR. 18,9. 21,2. 112,8. 115,4. PAÑKAT. ed. orn. 4,18. जानीषे त्वं यथा राज्ञा सम्यग्वृत्तः सदा त्वयि MBH. 3,2284. विद्धि यथाद्य कृष्णा पुनरेष्यतीति 15681. विदितं ते यथा R. GORR. 1,72, 14. 4,9,10. KUMÂRAS. 4,36. PAÑKAT. ed. orn. 4,22. यत्रैष: u. s. w. तथा तर्कयामि PRAB. 20,2. fgg. त्वयोक्तं मे यथा KATHÂS. 31,81. आवेद्य यथा ÇÂK. 112,15. आदिष्टो ऽस्मि यथा VIKR. 37,7. RATNÂV. 103,16. KATHÂS. 56,48. PRAB. 19,4. 67,16. 91,2. आज्ञापितो ऽस्मि परिषदा यथा MUDRÂR. 1,3 v. u. 141,6. वृद्धेभ्यः श्रूयते यथा KATHÂS. 6,74. कथं प्रकाशतां गतो ऽयमर्थः पौरेषु यथा MUDRÂR. 5,10. रामो मे संशयो नास्ति यथा त्वां सत्करिष्यति R. 3,53,25. — 5) *da*: निःसंशयं क्षत्रियपुंगवास्ते यथा हि युद्धं कथयन्ति MBH. 1,7185. fg. यथासौ रथनिर्घोषः पूरयन्निव मेदिनीम् । ममाह्लादयते चेतो नल एष महीपतिः ॥ 3,2859. fg. 6,2850. R. 3,30,8. नूनं न तपसः किंचित्फलं मन्ये श्रुतस्य वा । यथा मां नाभिजानाति पिता मूढ त्वया कृतम् ॥ JAǴNADATTAV. 1,35. ÇÂK. 85. Spr. 4794. — 6) *wie wenn*, mit potent.: तदिदं मे ऽनुसंप्राप्तं देवि दुःखं स्वयंकृतम् । संमोहादिह बालेन यथा स्याद्भक्षितं विषम् ॥ DAÇ. 1,11. ÇÂK. 190. — 7) *sobald* MEGH. 9. — Zum Schluss verzeichnen wir die von den vedischen Lexicographen angegebenen Bedeutungen: यथा साम्ये AK. 3,5,9. यथा निदर्शने द्वौ तूद्देशे निर्देशसाम्ययोः । हेतूपपत्तौ च H. an. 7,29. यथा तुल्यार्थमानयोः ॥ प्रशंसायाम् MED. avj. 36. fg. यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वार्थानतिक्रमे JÂDAVA bei MALLIN. zu MEGH. 9. योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिसादृश्यानि यथार्थाः Schol. zu P. 2,1,6.

यथाकनिष्ठम् (य° + कनिष्ठ) adv. *dem Alter nach vom Jüngsten zum Aeltesten hinauf* PÂR. GṚHJ. 3,2. — Vgl. यथाज्येष्ठम्.

यथाकर्तव्य (य° + क°) adj. *was in einem betreffenden Falle zu thun ist*: तदयमेव यथाकर्तव्यं (so ist zu schreiben) पृच्छ्यताम् HIT. 87,16. 114, 4. — Vgl. यथाकार्य.

यथाकर्मॆ (य° + कर्मन्) adv. *je nach der betreffenden Thätigkeit, je nach den Handlungen* ÇAT. BR. 14,4,2,30. यथाकर्म त्वादेशाः ÂÇV. ÇR. 1,12,13. ÇÂÑKH. ÇR. 4,6,17. 5,10,13. KAṬHOP. 5,7. KAUSH. UP. 1,2. M. 1,41. BHÂG. P. 4,29,27. 5,25,14. 26,6. 11,14,9.

यथाकर्मगुणम् (य° + कर्मन् - गुण) adv. *je nach den Handlungen und je nach den (drei) Qualitäten* BHÂG. P. 4,29,29.

यथाकल्पम् (य° + कल्प) adv. *dem Ritus gemäss* R. 1,11,14. 60,9.

यथाकाण्डम् (य° + काण्ड) adv. *je nach den Abschnitten* Ind. St. 3,391.

यॆथाकाम (य° + काम) adj. *je welches Verlangen habend* ÇAT. BR. 14,7,2,7.

यथाकामॆम् (wie eben) adv. *nach Wunsch, nach Belieben* ṚV. 10,146, 5. ÇAT. BR. 14,5,1,20. KÂTJ. ÇR. 22,5,1. KAUÇ. 57. 60. MBH. 3,1816. 2291. 2232. 2903. उपागमत् so v. a. *gemächlich* 4,735. 5,7472. R. 1,52, 23. 2,58,25. 97,20. R. GORR. 1,48,9. RAGH. 4,51. 16,73. ÇÂK. 80,22. KATHÂS. 16,29. 17,146. 27,125. 29,35. 52,199. 54,177. 55,44. RÂGA-TAR. 3,499. BHÂG. P. 4,18,13. BRAHMA-P. in LA. (II) 57,9. Am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen: °प्रयाप्य, °ज्येय, °वध्य AIT. BR. 7, 29. °चार KHÂND. UP. 7,1,5. °विचारिणी MBH. 5,7352. R. 3,25,2. यथाकामार्चितार्थिन् RAGH. 1,6.

यथाकामिन् (य° + का°) adj. *nach Belieben verfahrend* H. 355. HALÂJ. 2,224. ÇÂÑKH. ÇR. 1,3,7. 6,6,40. PÂR. GṚHJ. 1,11. JÂǴN. 1,81.

यथाकाम्य (von यथाकामम्) n. *Belieben* P. 8,1,66, Vârtt. wohl fehlerhaft für या°.

यथाकायम् (य° + काय) adv. *je nach dem Umfange* (des Jûpa) KÂTJ. ÇR. 6,1,35.

यथाकारम् (von य° + 1. कर्) adv. *auf welche* (rel.) *Weise* P. 3,4,28.

यथाकारिॆन् (य° + का°) adj. *wie* (rel.) *handelnd* ÇAT. BR. 14,7,2,6.

यथाकार्य (य° + कार्य) adj. = यथाकर्तव्य HIT. 132,13. ed. JOHNS. 1843. 2326. VET. in LA. (II) 22,11.

यथाकाल (य° + 2. काल) m. *ein entsprechender Zeitpunkt*: एवं द्वितीये संप्राप्ते यथाकाले so v. a. *Essenszeit* MBH. 3,15422. °कालम् adv. *je zur Zeit, zur richtigen Zeit* KÂTJ. ÇR. 4,12,16. 16,7,7. 25,2,4. 6,7. MUṆḌ. UP. 1,2,5. M. 2,39. 66. 4,147. 7,221. 225. 8,406. MBH. 1,1894. 3,15425. 5,7401. 6,4403 (°काले ed. Calc.). HARIV. 6817. R. 2,58,15. 65,8. R. GORR. 1,13,4. 3,12,2. SUÇR. 1,128,5. RAGH. 17,51. KÂM. NÎTIS. 5,17. VARÂH. BṚH. S. 2, S. 6,8. BHÂG. P. 4,22,50. 7,14,3. 9,11,36. यथाकालप्रबोधिन् RAGH. 1,6. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,16.

यथाकुलधर्मम् (य° + कुल - धर्म) adv. *je nach Familienbrauch* ÂÇV. GṚHJ. 1,17,1. 18. KAUÇ. 82. Verz. d. Oxf. H. 268,*b*,20.

यथाकृत (य° + कृत) adj. *verabredet* JÂǴN. 2,200. अ° *nicht regelrecht —, falsch gemacht, — vollbracht* Spr. 892. MBH. 5,1226. VARÂH. BṚH. S. 104,59; vgl. यथा 2). यथाकृतॆम् adv. etwa *wie gewöhnlich, wie herkömmlich*: ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ṚV. 7,18, 10. *je nach der Anfertigung* KÂTJ. ÇR. 16,4,10. *in verabredeter Weise* M. 8,183. *in der Weise, wie es geschah*: यथाकृतं शशंसैतन्माधवाय KATHÂS. 24,159. 46,152. 49,82. 51,151. 64,83. 75,161. 79,26.

यथाकृष्टम् (य° + कृष्ट) adj. *Furche um Furche* KÂTJ. ÇR. 17,3,3.

यथाकॢप्ति s. u. कॢप्ति 1).

यॆथाक्रतु (य° + क्रतु) adj. *welchen Entschluss fassend* ÇAT. BR. 14,7, 2,7. यत्क्रतु BṚH. ÂR. UP. 4,4,5.

यथाक्रमम् (य° + क्रम) adv. *der Reihe nach, successive, respective* M. 2,66. 3,2. 7,50. 9,295. R. 1,4,32. 17,41. 34,49. 70,17 (72,15 GORR.). SUÇR. 1,134,7. 2,60,12. VIKR. 66,21. RAGH. 3,10. 9,26. VARÂH. BṚH. S. 9,9. 86,58. KATHÂS. 28,187. AK. 2,1,12. 7,54. H. 169. 595. Am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen KATHÂS. 23,17. 45,226.

यथाक्रमेण adv. dass. MAITRJUP. 6,26. 31. VARÂH. BṚH. S. 8,31. 96,11. 103,7. ÇRÂDDHAT. im ÇKDR.

यथाक्रोशम् (य° + क्रोश) adv. *nach der Zahl der* Kroça KÂTJ. ÇR. 22,3,38.

यथाक्षमम् (य° + क्षम) adv. *nach Möglichkeit, so viel als möglich* KATHÂS. 28,165. 62,11.

यथाक्षेमेण (instr. von य° + क्षेम) adv. *in aller Ruhe, — Behaglichkeit* R. 2,54,4.

यथाखातॆम् (य° + खात) adv. *je nachdem gegraben ist* ÇAT. BR. 3,5,1,

10. KÂTJ. ÇR. 8,5,8. 13. 8,18.

यथाख्यम् (यथा + आख्या) adv. *den Benennungen entsprechend* KÂTJ. ÇR. 1,7,23.

यथाख्यात (यथा + आ°) adj. *früher erzählt, — erwähnt, — angegeben* R. 3,8,24. 15,40. DAÇ. 2,13. MÂRK. P. 113,17. Ueber die Bed. des Wortes bei den Ǵaina s. WILSON, Sel. Works 1, 312.

यथाख्यानम् (यथा + आख्यान) adv. *dem Bericht —, der Angabe gemäss* KATHÂS. 29, 33.

यथागत (यथा + आ°) adj. 1) *auf dem man vorher gekommen ist:* यथागतेनैव मार्गेण — अयोध्यागमनम् *des Weges, auf welchem sie gekommen waren,* R. 2,47,15. R. GORR. 1, 29, 22. HARIV. 14137. KATHÂS. 58, 131. 77,31. 81,15. यथागतम् adv. *des Weges, auf dem man gekommen ist:* गताः MBH. 1,1187. 3,2230. 5,5447. 12,4261. R. 1,17,1. 23,3. 60, 33. 65,24. 2,91,75. RAGH. 3, 67. KATHÂS. 8,16. 12, 105. 34, 20. 51, 225. 52,167. 56,168. यथागतेन dass. MBH. 3,1712. Vgl. जग्मुर्यथागताः BRAHMA-P. in LA. (II) 53,18. ततो यथागताः सर्वे यथावासं ययुस्तथा R. 6,112,107. — 2) *wie zur Welt gekommen, dumm, einfältig* H. 352, Sch.; vgl. यथाजात, यथोद्गत.

यथागमम् (यथा + आगम) adv. *der Ueberlieferung gemäss* MBH. 14,2699. R. 7,88,4. PAŃKAR. 1,2,26. 30.

यथागात्रम् (य° + गात्र) adv. *Glied um Glied* KAUÇ. 81.

यथागुणम् (य° + गुण) adv. *den Qualitäten —, den Vorzügen gemäss* ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 53. RÂǴA-TAR. 3,137.

यथागृहम् (य° + गृह) adv. *in sein respectives Haus:* रात्रौ यान्ति यथागृहम् MBH. 4,696.

यथागृहीत॑म् (य° + गृहीत) adv. *je nach der Reihe des Fassens:* समिधो ऽभ्यादधाति य° *wer gerade ein Scheit in die Hand bekömmt* ÂÇV. ÇR. 3,6,27. °गृहीतमाज्यं गृहीत्वा ÇAT. BR. 12,4,4,7. KÂTJ. ÇR. 9,7,9. *nach der Reihe des Aufführens* ṚV. PRÂT. 2,39.

यथागोत्रकुलकल्पम् (य° + [गोत्र - कुल] - कल्प) adv. *je nach dem Brauch der Familie oder des Geschlechts* GOBH. 2,9,20.

यथाग्नि (यथा + अ°) adv. *nach der Grösse des Feuers* KÂTJ. ÇR. 16,8,26.

यथाग्रहणम् (य° + ग्रहण) adv. *der Angabe gemäss* ÂÇV. ÇR. 5,10,20.

यथाङ्ग॑म् (यथा + अङ्ग) adv. *Glied um Glied:* यथाङ्गं वर्धतां शेपः AV. 6, 101,1. ÇAT. BR. 13,8,3,5. KÂTJ. ÇR. 21,4,8. ÇÂṄKH. ÇR. 17,12,7. ÂÇV. GṚHJ. 4,3,25.

यथाचमस॑म् (य° + चमस) adv. *Kamasa um Kamasa* ÇAT. BR. 4,4,3, 10. ÇÂṄKH. ÇR. 8,2,14. 9,3.

यथाचारम् (यथा + आचार) adv. *dem Brauche gemäss, wie üblich* R. 4, 40,8. PRAJOGAR. 2,*b*,6. 3,*a*,1. SAṂSK. K. 221,*a*,8.

यथाचारि॑न् (य° + चा°) adj. *wie (rel.) zu Werke gehend, wie verfahrend* ÇAT. BR. 14,7,2,6.

यथाचिन्तित (य° + चि°) adj. *vorher bedacht, beabsichtigt* VARÂH. BṚH. S. 88,41. KATHÂS. 19,2.

यथाचोदितम् (य° + चोदित) adj. *je nach der Aufforderung* ÂÇV. ÇR. 1,5,24. ÇÂṄKH. ÇR. 2,5,18.

यथाछन्दसम् (य° + छन्दस्) adv. *ein Metrum um's andere* AIT. BR. 2, 18. 4,29. 6,12. ÇÂṄKH. ÇR. 9,20,6.

यथाजात (य° + जात) adj. *wie ein zur Welt Gekommener, dumm, einfältig* AK. 3,1,48. H. 352. — Vgl. यथागत 2) und यथोद्गत.

यथाजात॑म् (wie eben) adv. *Geschlecht um Geschlecht* ÇAT. BR. 9,1,2,19.

यथाजाति (य° + जा°) adv. *Art um Art* LÂṬJ. 2,7,15. 6,5,25. 8,2,17.

यथाजोषम् (य° + जोष) adv. *nach Herzenslust* MBH. 3,11054 (S. 571, °योषम् ed. Calc.). 12,1520. 14,112.

यथाज्ञप्त (यथा + आ°) adj. *vorhin befohlen, anbefohlen* R. GORR. 1,11, 24. 2,87,18.

यथाज्ञानम् (य° + ज्ञान) adv. *nach Wissen, so gut man es weiss* GOBH. 3,9,18. PAŃKAR. 1,2,26. 45. 4,5,33.

यथाज्येष्ठम् (य° + ज्येष्ठ) adv. *dem Alter nach, vom Aeltesten zum Jüngsten hinab* LÂṬJ. 1,3,19. 2,11,3. GOBH. 2,8,23. 3,9,13. PAŃKAT. 198,10. — Vgl. यथाकनिष्ठम्.

यथातत्त्वम् (य° + तत्त्व) adv. *der Wahrheit gemäss, wie es sich wirklich verhält, genau* MBH. 3,2891. 5,7004. R. 2,72,35. 41. 97,11. 3,38,4. 4, 51,28. 5,32,4. 6,109,4. KATHÂS. 5,104. 11,50. 31,52. 42,96. 49,42. 52, 166. 110,40. 123,114. यथातत्त्वार्थदर्शिन् MBH. 12,11608.

यथातथम् (य° + तथा) adv. *wie es sich in Wirklichkeit verhält, genau* (Etwas berichten), *wie es sich gebührt, wie es sich gehört* AK. 3,5,15. H. 264. HÂR. 199. HALÂJ. 1,144. MBH. 1,286. 5566. 3,2136. 2693. 2879. 5,5444. 13,464. 3628. 14,757. 986. INDR. 5,52. R. 2,72,46. 3,7,19. KATHÂS. 57,28. 70,93. BHÂG. P. 6,1,41. MÂRK. P. 56,19. 100,25. 135,12. Verz. d. Oxf. H. 36,*a*, No. 78. — Vgl. अ°, याथातथ्य.

यथातथ्यम् (य° + तथ्य) adv. *der Wahrheit gemäss* MBH. 13,5205. R. 3,75,22. 4,61,38. 7,83,3.

यथातथ्येन (wie eben, instr.) adv. dass. HARIV. 9104. R. 6,13,11.

यथात्मक (von यथा + आत्मन्) adj. *welche (rel.) Natur immer habend* PAŃKAR. 2,1,30.

यथादत्त (य° + दत्त) adj. *wie immer gegeben:* उपभोक्ष्ये यथादत्तं भागं पित्रा R. GORR. 2,110,22.

यथादर्शनम् (य° + दर्शन) adv. *bei jedem Vorkommen, in jedem einzelnen Falle* SÂH. D. 36,16. व्याप्त्या यथादर्शनप्रवृत्तया KUSUM. 49,13.

यथादायम् (य° + 2. दाय) adv. *je nach dem Erbtheil* BHÂG. P. 5,1,39. 7,8.

यथादिक् (य° + 2. दिश्) adv. *nach den verschiedenen Himmelsgegenden, nach der entsprechenden H.* ÂÇV. GṚHJ. 2,8,9. VARÂH. BṚH. S. 55,6.

यथादिशम् (wie eben) adv. dass. MBH. 5,1753. VARÂH. BṚH. S. 59,7. BHÂG. P. 5,16,30.

यथादिष्ट (यथा + आ°) adj. *der Angabe —, der Anweisung entsprechend* R. 2,100,32. KATHÂS. 40,88. 71,10. यथादिष्ट॑म् adv. *der Angabe —, der Anweisung gemäss* ÇAT. BR. 1,3,4,21. KAUÇ. 1. ṚV. PRÂT. 4,14. 7,1. KATHÂS. 49,80. यथादिष्टः 36,20 ist यथा आदिष्टः.

यथादीक्षम् (य° + दीक्षा) adv. *den übernommenen religiösen Observanzen gemäss* MBH. 14,1270.

यथादृष्टम् (य° + दृष्ट) adv. *wie man Etwas gesehen hat* M. 8,76. 101. KATHÂS. 12,119. 33,179. 35,89. 56,211.

यथादृष्टि (य° + दृ°) adv. dass. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,16.

यथादेवत॑म् (य° + देवता) adv. *Gottheit um Gottheit* AIT. BR. 4,29. TS. 2,2,11,3. 3,1,6,1. TBR. 1,1,4,8. 3,3,10,1. ÇAT. BR. 1,4,2,17. 4,2,2,11.

यथादेशकालदेहावस्थानविशेषम् adv. *je nach der Verschiedenheit* (विशेष) *des Ortes* (देश), *der Zeit* (काल) *und der Körpergestalt* (देहाव°) Bhâg. P. 6,9,41.

1. यथादेशम् (य° + देश) adv. *je nach dem Platze, — Orte* Çâṅkh. Çr. 13,24,16. Kâtj. Çr. 20,5,15. Lâṭj. 10,15,10. M. 8,406. Bhâg. P. 4,22, 50. 7,14,10.

2. यथादेशम् (यथा + आदेश) adv. *je nach der Weisung, nach Vorschrift* Âçv. Gṛhj. 1,23,18. Kâtj. Çr. 4,15,3. Bhâg. P. 4,31,4.

यथाद्रव्य (य° + द्र°) adj.: °द्रव्ये जनपदे यजेत *je nachdem die Besitzgegenstände des Stammes sind, bei welchem er opfert,* Kâtj. Çr. 22,2,22.

यथाधर्मम् (य° + धर्म) adv. *in richtiger Ordnung, nach Recht und Gesetz* Çat. Br. 11,1,6,24. R. 1,70,17 (72,15 Gorr.). Bhâg. P. 9,20,16. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,18.

यथाधिकारम् (यथा + अधिकार) adv. *der Berechtigung gemäss;* am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen Bhâg. P. 4,21,32.

यथाधिष्ण्यम् adv. *nach der Reihe der* Dhishṇja Çat. Br. 4,6,8,7.17. 9,16.

यथाधीत (यथा + अ°) adj. und °तम् adv. *wie gelernt, wie der Text lautet,* d. h. *in der Grundform ohne wesentliche Abänderung* Lâṭj. 2, 9,13. 11,11. 3,7,4. 5,12,16. 17. 7,6,26. Bhâg. P. 1,3,44.

यथाध्यापकम् (यथा + अध्यापक) adv. *in Uebereinstimmung mit dem Lehrer* P. 2,1,7, Sch.

यथानाम (य° + नामन्) adv. *Name um Name* AV. 4,30,7.

यथानारदभाषित (य° + ना° - भा°) adj. *genau so seiend wie es* Narada *verkündet hat:* विद्या Bhâg. P. 6,16,27. der Comm. zieht यथा, welches er durch यथावत् umschreibt, zum verbum finitum des Satzes.

यथानिरुप्तम् (य° + निरुप्त) adv. *wie hingeworfen* Âçv. Gṛhj. 1,10,7. Kauç. 88.

यथानिर्दिष्ट (य° + नि°) adj. *vorhin angegeben* Çâk. 21,2. 102,1. Prab. 19,11. Dhûrtas. in LA. 71,1.

यथानिलयम् (य° + निलय) adv. *in sein entsprechendes Nest, in seine entsprechende Wohnstätte* R. 2,46,3.

यथानिवासिन् (य° + नि°) adj. *wo gerade wohnend* R. 7,40,31.

यथानिःसृप्तम् (य° + निःसृप्त) adv. *wie hinausgegangen* Çâṅkh. Çr. 7,14,12.

यथानुपूर्वम् (यथा + अनुपूर्व) adv. *der Reihe nach, respective* Bhâg. P. 5,1,34.

यथानुपूर्व्यम् (यथा + आनुपूर्व्य) adv. dass.: °पूर्व्यकरण Kâtj. Çr. 25, 5,18. 10,20.

यथानुपूर्व्या (instr. von यथा + आनुपूर्वी) adv. dass. Varâh. Bṛh. S. 68,94.

यथानुभूतम् (यथा + अनुभूत) adv. *wie man es erfahren hat, wie man es erlebt hat* R. 3,4,4. Bhâg. P. 1,13,11. 5,1,16.

यथानुरूपम् (यथा + अनुरूप) adv. *regelrecht, genau entsprechend* Varâh. Bṛh. S. 24,27. 53,69. Kathâs. 46,104.

यथान्यस्तम् (य° + न्यस्त) adv. *in der Weise, wie es deponirt war,* M. 8,183.

यथान्यायम् (य° + न्याय) adv. *nach der Regel, nach Gebühr* Âçv. Gṛhj. 3,5,16. Kâtj. Çr. 14,2,22. M. 1,1. 3,135. 190. 5,35. 7,2. MBh. 1,6134. 3,1734. 2468. 2896. R. 1,52,3. 2,36,13,*g*. 58,18. 82,2. Bhâg. P. 8,9,7. Mârk. P. 16,90.

यथान्युप्त (य° + न्युप्त) adj. *wie je hingeworfen* M. 3,218. यथान्युप्तम् adv. *Wurf um Wurf* TBr. 3,11,9,3. Kâtj. Çr. 9,7,6. 10,6,14.

यथापण्यम् (य° + 1. पण्य) adv. *je nach der Waare, für jede Waare* M. 8,398.

यथापदम् (य° + पद) adv. *wie das Wort ist* RV. Prât. 11,12.

यथापराधम् (यथा + अपराध) adv. *je nach dem Vergehen* Bhâg. P. 6, 9,39. यथापराधदण्ड *je nach dem Vergehen strafend* Ragh. 1,6.

यथापरु (य° + परु) adv. *Gelenk um Gelenk, Glied um Glied* AV. 9, 5,4. 18,4,52. Kauç. 64. 85. fg.

यथापुरम् (य° + पुरस्) adv. *wie ehemals* R. 2,114,9. Verz. d. Oxf. H. 256,*a*,20. — Vgl. अ°.

यथापूर्व (य° + पूर्व) 1) adj. *wie ehemals seiend:* बाणैर्यथापूर्वविशुद्धिभिः Ragh. 12,48. अयथापूर्वः 88. Bhâg. P. 1,14,23. यथापूर्वम् adv. *wie ehemals, wie sonst* R. 4,18,31. Pañkat. 23,11. 36,18. ed. orn. 55,5. Bhâg. P. 3,9,43. 32,14. Getrennt zu schreiben MBh. 3,1754. Varâh. Bṛh. S. 43, 11. — 2) °पूर्वम् adv. *nach einander, der Reihe nach* RV. 10,190,3. Ait. Br. 2,33. TS. 1,7,5,4. 5,2,1,1. 7,2,7,1. TBr. 1,1,6,9. Çat. Br. 1,1,2,19. 3,5,4,8. 6,2,1,18. Kâtj. Çr. 3,5,24. 5,9,2. M. 11,187. Jâgñ. 1,35.

यथाप्रज्ञम् (य° + प्रज्ञा) adv. *nach bester Einsicht, so gut man es versteht* Verz. d. Oxf. H. 170,*a*,6.

यथाप्रतिगुणैस् (य° + प्र° - गुण) m. instr. pl. *je nach den Eigenschaften, — Vorzügen* so v. a. *so gut man es vermag* Hariv. 11929.

यथाप्रतिज्ञाभिस् (य° + प्रतिज्ञा) f. instr. pl. *wie man übereingekommen war* MBh. 4,177. 324.

यथाप्रतिरूपम् (य° + प्रतिरूप) adv. *wie es passend ist* Çat. Br. 9,5,1,54.

यथाप्रत्यर्कम् s. u. प्रत्यर्कम्.

यथाप्रदिष्टम् (य° + प्रदिष्ट) adv. *der Vorschrift gemäss, wie es sich gehört* R. Gorr. 2,116,49.

यथाप्रदेशम् (य° + प्रदेश) adv. 1) *an der entsprechenden, richtigen Stelle, an die richtige Stelle* Ragh. 6,14, v. l. 83. Kumâras. 1,50. 7,34. *nach allen Seiten hin* R. 2,56,32. — 2) *der Vorschrift gemäss, wie es sich gehört:* यो ब्रह्म जानाति यथाप्रदेशम् MBh. 3,12719. यथाप्रदेशमद्यापि धर्मेण परिपाल्यते (पृथिवी) Hariv. 278 = 1620.

यथाप्रधानतम् adv. = यथाप्रधानम् Hariv. 9983.

यथाप्रधानम् (य° + प्रधान) adv. *je nach dem Vorzug, — Vorrang* Çâṅkh. Gṛhj. 6,3. Kumâras. 7,46. Râga-Tar. 3,233.

यथाप्रयोगम् (य° + प्रयोग) adv. *je nach dem Gebrauch* Taitt. Prât. 2,6 in Ind. St. 4,167.

यथाप्रश्नम् (य° + प्रश्न) adv. *den Fragen gemäss* Bhâg. P. 5,25,15.

यथाप्राणम् (य° + 1. प्राण) adv. *aus Leibeskräften* MBh. 4,761.

यथाप्राप्त (य° + प्राप्त) adj. *aus den Verhältnissen —, aus den Umständen sich ergebend, den Verhältnissen entsprechend, angemessen:* ये तु सभ्याः — यथाप्राप्तं न ब्रुवते R. 7,59,3,34. यथाप्राप्तमकृत्वा 4,53,3. अन्यथाहं यथाप्राप्तां (°प्राप्तिं ed. Schl. und Lass. 100,5) गतिं गच्छामि Hit. ed. Johns. 2115. °स्वर *ein Accent, wie er sich aus einer Regel ergiebt,* Ind. St. 10,427. °प्राप्तम् adv. *der Regel gemäss, regelmässig* P. 3, 3,110, Sch.

यथाप्राप्ति s. u. यथाप्राप्त.

यथाप्रार्थितम् (य° + प्रार्थित) adv. *nach Wunsch* Ragh. 14,25.

यथाप्रीति (य° + प्री°) adj. *nach Herzenslust* MBH. 15,864.

यथाबलम् (य° + बल) adv. 1) *nach Kräften* AV. 3,20,9. MBH. 1,7023. R. 3,47,5. 5,29,21. SUÇR. 2,51,2. KÂM. NÎTIS. 13,17. BHÂG. P. 4,22,48. 7,2,13. नूनं न बुध्यसे रामं यथावीर्यं यथाबलम् *in Bezug auf seine Kraft* R. 3,41,2. R. ed. SCHL. 1,51,16 ist यथा बलं zu schreiben. — 2) *je nach dem Bestande des Heeres* M. 7,182. KÂM. NÎTIS. 15,39.

यथाबीजम् (य° + बीज) adv. *je nach dem Samen* M. 9,39. BHÂG. P. 6,1,54.

यथाबुद्धि (य° + बु°) adv. *nach bestem Wissen* R. 4,32,5. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92.

यथाभक्त्या (instr. von य° + भक्ति) adv. *mit voller Hingebung* BHÂG. P. 7,1,29.

यथाभक्षितम् (य° + भक्षित) adj. *wie gegessen* KÂTJ. ÇR. 19,3,14.

यथाभव scheinbar adj. BHÂG. P. 4,27,11, wo aber यथा भवान् *wie du* zu lesen ist.

यथाभवनम् (य° + भवन) adv. *Haus für Haus* VARÂH. BRH. S. 53,70.

यथाभागम् (य° + भाग) adv. 1) *je nach dem Antheil:* य° कृव्यदातिं नुषाणाः AV. 7,109,2. VS. 2,31. TS. 1,8,5,1. AIT. BR. 3,38. य° वक्तु कृव्यमग्निः KAUÇ. 6. R. 2,101,26 (110,21 GORR.). R. GORR. 1,13,38. 4,25,27. BHÂG. P. 4,16,5. 5,2,20. 20,14. In der Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,19 ist यथा भागा इति zu schreiben. — 2) *je an ihrem Platze* MBH. 4,1771. BHAG. 1,11. *am rechten Platze* RAGH. 6,19.

यथाभाजनम् (य° + भाजन) adv. *je an richtiger Stelle* (यथास्थानम् SÂJ.) AIT. BR. 1,2.

1. यथाभाव (य° + भाव) m. *das Schicksal* Spr. 4388.

2. यथाभाव (wie eben) adj. *welche* (rel.) *Natur habend* BHÂG. P. 2,9,31.

यथाभिकामम् (यथा + अभिकाम) adv. *nach Wunsch* BHÂG. P. 10,88,20.

यथाभिज्ञायम् (यथा + अ° absol.) adv. *je wie man erkannte* TBR. 1,3,1,2.

यथाभिप्रेत (यथा + अ°) adj. *erwünscht:* अयथाभिप्रेताख्याने P. 3,4,59. °प्रेतम् adv. *nach eigenem Gefallen, wie man es will* PAÑKAT. 57,24. HIT. 21,7, v. l. 54,17. 129,13. यथाभिप्रेतमात्मनः MÂRK. P. 21,78.

यथाभिमत (यथा + अ°) adj. *erwünscht, wonach man Verlangen trägt:* यथाभिमतभोगभुज् KATHÂS. 44,188. अथ प्रातः सर्वे यथाभिमतदेशं गताः *jeder an den Platz, der ihm behagte,* HIT. 21,7. *beliebig:* °ध्यान JOGAS. 1,39. °मतम् adv. *nach eigenem Gefallen, wohin Einen das Verlangen zieht, nach Lust* KATHÂS. 37,51. PAÑKAT. 167,24. HIT. 56,17.

यथाभिरुचित (यथा + अ°) adj. *woran man Gefallen hat, beliebt* KATHÂS. 99,30.

यथाभिरूपम् adv. = अभिरूपस्य योग्यम् P. 2,1,7, Sch.

यथाभिलषित (यथा + अ°) adj. *erwünscht* R. 2,115,7 (126,7 GORR.). R. GORR. 1,13,47. KÂM. NÎTIS. 17,24. BHÂG. P. 5,4,4. MÂRK. P. 110,31. PAÑKAT. ed. orn. 4,20.

यथाभिलिखित (यथा + अ°) adj. *auf die angegebene Weise gemahlt* VARÂH. BRH. S. 48,29.

यथाभिवृष्टम् (यथा + अभिवृष्ट) adv. *nach der Menge des gefallenen Regens* VARÂH. BRH. S. 23,4.

यथाभीष्ट (यथा + अ°) adj. *erwünscht* KATHÂS. 34,233. 90,88. °दिशं जग्मुः *wohin es Jedem von ihnen beliebte* PAÑKAT. 63,2.

यथाभूतम् (य° + भूत) adv. *der Wahrheit gemäss* MBH. 3,12070.

यथाभूयसोवाद (य° - भूयसस्, gen. von भूयंस्, + वाद) m. *eine allgemeine Regel* LÂTJ. 4,10,15. 10,7,7. 10,2,4.

यथाभ्यर्थित (यथा + अ°) adj. *worum man vorher gebeten hat* ÇÂK. 103,19.

यथामङ्गलम् (य° + मङ्गल) adv. *nach der Sitte* PÂR. GRHJ. 2,1.

यथामति (य° + म°) adv. 1) *nach Gutdünken:* तस्याः कुरु य° R. 2,78,9. तन्निबोध य° *wenn es dir gut dünkt* 5,90,29. — 2) *nach bestem Verstande* BHÂG. P. 1,3,44. 3,6,36. 4,7,24. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 2. Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255. 136,*a*, No. 259. 151,*a*, 32. 238,*a*, No. 574. 239,*b*, No. 580.

यथामनीषितम् (य° + मनीषित) adv. *nach Wunsch* HARIV. 14138.

यथामात्रम् (य° + मात्र) adv. *nach Quantität:* अ° RV. PRÂT. 14,4.

यथामानम् (य° + 2. मान) adv. *je nach dem Maasse, je nach dem Umfange* MBH. 4,1771 nach der Lesart der ed. Bomb. st. यथाभागम् der ed. Calc.

यथामुखम् (य° + मुख) adv. *von Angesicht zu Angesicht* P. 5,2,6.

यथामुखीन (vom vorherg.) adj. *Jmd* (gen.) *in's Gesicht sehend, mit dem Gesicht gerichtet auf* P. 5,2,6. (मृगः) यथामुखीनः सीतायाः पुप्लुवे *sprang gerade auf* Sîtâ *los* BHATT. 5,48.

यथामुख्यम् (य° + मुख्य) adv. *was die Hauptpersonen betrifft, soweit von diesen die Rede ist* MBH. 15,672.

यथामुख्येन (instr. von य° + मुख्य) adv. *vorzugsweise, vor Allem* MBH. 15,233.

यथाम्नातम् (यथा + आम्नात) adv. *nach dem Wortlaut des Textes* KÂTJ. ÇR. 1,8,16. 6,7,24. 19,5,6. *der heiligen Ueberlieferung gemäss* BHÂG. P. 10,84,52.

यथाम्नायम् (यथा + आम्नाय) adv. *den heiligen Ueberlieferungen gemäss, nach dem Wortlaut des Textes* LÂTJ. 2,1,3. 5,26. 11,7. BHÂG. P. 10,74,12.

यथायजुस् (य° + य°) adv. *je nach dem* Jagus TS. 1,7,6,4. 5. 2,3,11,3. 3,3,4,2. TBR. 3,3,9,2.

यथायतनम् (यथा + आयतन) adv. *je auf der Stelle, je an seiner Stelle* TS. 7,5,6,4. ÇAT. BR. 11,5,5,11. 13,5,2,16. KAUSH. UP. 3,3. 4,20. °नात् *je von der Stelle aus* TS. 7,5,6,4. TBR. 1,2,5,2.

यथायथम् (य° + यथा) adv. *wie es sich gebührt, richtig, in der Ordnung, nach und nach, allmählich* P. 8,1,14. AK. 3,5,14. AV. 10,8,33. सर्वे यत्ति य° 9,4. AIT. BR. 2,26. 5,9. 23. TS. 1,5,10,1. 2,2,11,3. TBR. 1,7,3,1. ÂÇV. ÇR. 2,5,10. ÇAT. BR. 1,9,2,27. 4,2,5,14. KAUÇ. 119. R. 5,10,20. 11,12. 12,41. Bd. IV, S. XVIII. SUÇR. 1,364,6. DAÇAR. 1,44 (SÂH. D. 337). TARKAS. 59. KATHÂS. 26,59. 50,169. BHÂG. P. 10,18,19. MÂRK. P. 26,2. PAÑKAR. 4,3,2. SIDDH. K. zu P. 4,4,110. — Vgl. अ°.

यथायुक्तम् (य° + युक्त) adj. *den Umständen entsprechend* KATHÂS. 32,8.

यथायुक्ति (य° + यु°) adv. *nach Umständen, nach Bewandtniss* VARÂH. BRH. S. 44,18. °तस् dass. 84,2.

यथायूथम् (य° + यूथ) adv. *je nach den Heerden* HARIV. 3949.

यथायोगम् (य° + योग) adv. *nach Umständen, nach Bewandtniss, nach Bedürfniss* KÂTJ. ÇR. 17,6,3 (= समविभागेन Comm.). M. 5,92. MBH. 4,157. 6,28. HARIV. 15632. R. GORR. 1,9,6. 51,9. 2,67,7. 7,93,9. SUÇR. 1,24,17. 25,14. KÂM. NÎTIS. 11,71. VARÂH. BRH. S. 48,17. SÂH. D. 559. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,42. Schol. zu KAP. 1,96. Ind. St. 10,290.

यथायोगेन (instr. von य° + योग) adv. dass. Kâm. Nîtis. 17,50.

यथायोग्यम् (य° + योग्य) adv. *nach Gebühr, wie es sich schickt* Spr. 443. Verz. d. Oxf. H. 82,*a*,31.

यथायोनि (य° + यो°) adj. *je nach dem Mutterleibe* Bhâg. P. 6,1,54.

यथारब्ध (यथा + आ°) adj. *früher begonnen* Vâju-P. bei Muir, ST. 1,31.

यथारम्भम् (यथा + आरम्भ) adv. *der Reihe nach* Kâtj. Çr. 10,2,25.

यथारुचम् (य° + 2. रुच्) adv. *nach Gefallen* Bhâg. P. 2,4,21.

यथारुचि (य° + रु°) adv. dass. Kathâs. 49,167. 56,291. 89,33. 98,26. Bhâg. P. 3,24,15. 11,14,9. Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,8. 154,*b*, N. 1. 231,*a*, 46. *je nach Geschmack* Sâh. D. 286,1.

यथारूप (य° + रूप) adj. f. आ *wie beschaffen:* यथारूपाः पञ्चशारदीये पशव आलभ्यन्ते Lâtj. 8,10,6. 9,4,26. *ein entsprechendes Aussehen habend, überaus schön:* सीता R. 7,98,9. MBh. 4,832. *ausserordentlich gross:* प्रीति R. 2,91,4.

यथारूपम् (wie eben) adv. 1) *in passender Weise, angemessen, richtig:* य° पशूनां रशनाः करोति Çat. Br. 6,2,1,9. योनौ गर्भं न य° पश्यति 7,1,1,10. 12,8,2,11. 26. 13,6,2,10. Çâṅkh. Gṛhj. 2,14. Bhâg. P. 5,16, 30. — 2) *dem Aussehen nach, desselben Aussehens* Bhâg. P. 10,89,62.

यथार्थ (यथा + अर्थ) adj. f. आ *entsprechend, angemessen, richtig, wahr:* यथार्थेषु त्रिविधेष्वेव कर्मसु Spr. 2066. अनुभव *richtig* Tarkas. 19. Sarvadarçanas. 114,1. Kusum. 34,19. 43,8. वाक्य R. 3,60,39. 5,90,24. Kumâras. 2,16. Kathâs. 17,49. स्वप्न *ein Traum, der in Erfüllung geht*, 46,147. यथार्थस्य वाचकः (दूतः) Spr. 467. °वादिन् Pańkat. 161,19. °भाषिन् Ragh. 14,44. °वक्तर् Tarkas. 49. °कथन im Gegens. zu परिहास *Ironie* P. 1, 4,106, Sch. अद्य जन्म यथार्थं ते भविष्यति *ein Leben im wahren Sinne des Wortes* R. 6,92,37. नामन् *ein zutreffender Name* Ragh. 15,6. Kathâs. 6, 69. 29,69. 78,60. अभिधान 36,10. °नामन् adj. Ragh. 6,21. Mâlav. 47,22. Daçak. in Benf. Chr. 184,13. 186,22. Kathâs. 54,220. यथार्थाख्य adj. 53, 140. 60,233. यथार्थाक्षर adj. Vikr. 1. °नामकत्व Mallin. zu Kir. 8,49. रत्नपुरं नाम यथार्थं नगरोत्तमम् so v. a. *einen zutreffenden Namen führend* Kathâs. 24,82. 52,92. अयथार्थः क्षितिपतिः *ein Fürst, der seinen Namen* («*Herr des Landes*») *mit Unrecht führt*, Spr. 4513. अ° *unrichtig, falsch* MBh. 12,11904. Çâk. 54.

यथार्थक (von यथार्थ) adj. *richtig, wahr:* स्वप्न *ein Traum, der in Erfüllung geht*, Kathâs. 46,148.

यथार्थतत्त्वम् (यथा + अर्थ - तत्त्व) adv. *der Wahrheit gemäss, so wie es sich in Wirklichkeit verhält* MBh. 12,11497.

यथार्थतस् (von यथा + अर्थ) adv. *der Wahrheit gemäss* Hariv. 4579. R. 7,37,1,59. Ashṭâv. 1,15.

यथार्थता (von यथार्थ) f. *das Zutreffen:* नाम्नः Kathâs. 35,49. 55,185. 102,70. so v. a. यथार्थनामकत्व Kir. 8,49.

यथार्थम् (यथा + अर्थ) adv. *je nach Ziel, — Geschäft, — Zweck, — Bedürfniss, passend; nach Belieben* Nir. 2,1. 7. विसृज्यन्ते Çat. Br. 2,3,1, 6. Kâtj. Çr. 22,6,17. 24,6,13. Âçv. Gṛhj. 1,23,24. ऊह्यः Kâtj. Çr. 4,3, 20. 5,3,32. 11,1,11. Âçv. Çr. 1,9,3. 3,2,11. प्राश्नीयात् Lâtj. 5,1,11. इध्मो य° स्यात् Gobh. 1,5,18. कृत्वा यथार्थं स्युः *sind sie fertig, so mögen sie machen was sie wollen*, Lâtj. 4,3,22. 1,2,22. 3,14. in diesem Sinne häufig ohne Beifügung von अस् oder einem andern Zeitworte, z. B. प्राश्नाना यथार्थम् Kâtj. Çr. 16,6,18. Gobh. 1,3,14. 2,3,20. 4,10. आदाय यथार्थमन्येष्वर्हत्सु Âçv. Çr. 5,12,12. अतिसृष्टा य° Ṛv. Prât. 15,13. यथार्थप्रत्यासत्ति Lâtj. 9,7,6. यथार्थस्तोमान्वयात् Drâhj. 9,13,2. यथार्थम् = यथातथम् *wie es sich in Wirklichkeit verhält, genau, gehörig* AK. 3, 5,15. Hâr. 199. MBh. 13,322. R. 4,39,43. Vet. in LA. (III) 22,11. यथार्थकृतनामन् *zutreffend benannt* R. 3,22,9.

यथार्थित (यथा + अ°) adj. *vorher erbeten* Kathâs. 73,247.

यथार्थित्वम् (यथा + अर्थित्व) adv. *je nach der Absicht* Sâh. D. 286,1.

यथार्पित (यथा + अ°) adj. *wie übergeben* Jâǵn. 2,164.

यथार्ह (यथा + अर्ह) 1) adj. *je welche Würde habend:* ब्राह्मणेभ्यो यथार्हेभ्यो दद्दौ वित्तान्यनेकशः so v. a. *je nach ihrem Verdienst* MBh. 15, 35. *dem Verdienst entsprechend, angemessen:* स्वागतेन यथार्हेण R. 6, 111,31. आसनेषु यथार्हेषु Kathâs. 50,108. यथार्हैः पानभोजनैः 80,21. — 2) यथार्हम् adv. *nach Werth, nach Würde, nach Verdienst, nach Gebühr* Kauç. 111. 127. Pâr. Gṛhj. 2,9. M. 5,114. 8,391. 11,4. MBh. 3,2115. 3011. 11924. 16706. 4,330. R. 1,12,34 (32 Gorr.). 20,13. 52,13. 2,50, 5. 76,19. 103,47 (111,52 Gorr.). Ragh. 16,40. Verz. d. Oxf. H. 9,*b*,26. यथार्हकृतपूज Kathâs. 45,5. 51,215.

यथार्हणम् (यथा + अर्हणा) adv. *nach Verdienst, nach Gebühr* Bhâg. P. 3,21,47. nach dem Comm. *wie einen kostbaren Edelstein* (2 Worte).

यथार्हतस् (abl. von यथार्ह) adv. *nach Würde, nach Verdienst, nach Gebühr, wie es sich gehört* M. 7,16. 9,193. 10,124. MBh. 2,193. 2031. 5, 3020. 13,6445. 15,674. R. 1,13,9 (19 Gorr.). 36,10. 20,14. Spr. 473. Varâh. Bṛh. S. 48,80. Bhâg. P. 4,18,30. 21,14. 7,11,10.

यथार्हवर्ण (य° + वर्ण) m. *Späher* (*ein den Umständen entsprechendes Aeusseres annehmend*) AK. 2,8,1,13. H. 733. Halâj. 2,270.

यथालब्ध (य° + ल°) adj. *was man gerade findet* R. 2,28,17. Kathâs. 74,15.

यथालाभम् (य + लाभ) adv. *wie man es gerade hat, wie es sich gerade trifft* Jâǵn. 1,304. Varâh. Bṛh. S. 12,18. 48,41. Daçak. 3,24. 61. Sâh. D. 294. 433.

यथालिङ्गम् (य° + लिङ्ग) adv. *nach den unterscheidenden Zeichen* Kâtj. Çr. 3,3,7. 5,4,11. 9,8,8. 10,6. 11,22. Kauç. 16. 60. 63.

यथालोकम् (य° + लोक) adv. *je nach Raum, — Platz* AV. 11,9,26. Ait. Br. 3,42. Kauç. 88. Lâtj. 10,4,9.

यथावकाशम् (यथा + अवकाश) adv. 1) *wie eben Raum ist* TBr. 3,12, 5,5. Âçv. Gṛhj. 2,3,8. Çâṅkh. Gṛhj. 4,8. Ṛv. Prât. 15,2. — 2) *an seinen Ort, an die richtige Stelle* Ragh. 6,14. — 3) *bei erster Gelegenheit* Hit. 102,11.

यथावचस् scheinbar R. 4,63,6, wo aber wohl प्रभाषधे यथा वचः zu lesen ist.

यथावत् (von यथा) adv. *wie es sich gebührt, regelmässig, gehörig, richtig, genau* Ṛv. Prât. 11,31. M. 1,2. 2,89. 5,57. 6,1. 8,214. Jâǵn. 1,346. MBh. 1,7162. 3,2246. 2287. 11914. 16729. 5,7549. 7,4337. R. 1,3,4. 8, 28. 62,25. 2,21,59. Suçr. 1,60,14. 126,14. 160,19. Ragh. 3,28. 5,19. Spr. 637. Kathâs. 51,124. 54,169. 188. 215. Râǵa-Tar. 1,118. 3,149. Sarvadarçanas. 176,21. यथावद्ग्रहण *richtige Auffassung* 63,10. यथावत्तत्त्वनिश्चय 80,1. fg. अयथावत्प्रजानाति Bhag. 18,31. यथावत् = यथा *wie* Mârk.

P. 37,4.

यथावयम् (य° + व°) adv. *dem Alter nach* MBh. 2,2031. 5,1806. fg. 15,870. Hariv. 6817. R. 2,35,9. Bhâg. P. 10,65,4. so v. a. *desselben Alters* 89,62.

यथावयसम् (wie eben) adv. *dem Alter nach* Lâtj. 8,12,3. Gobh. 2,4,10.

यथावर्णम् (य° + वर्ण) adv. *nach den Kasten* Bhâg. P. 1,9,26.

यथावर्णविधानम् (य° + वर्ण - विधान) adv. *nach den Regeln der Kasten* Bhâg. P. 5,19,19.

यथावशम् (य° + वश) adv. *nach Belieben* ṚV. 2,24,14. य° तन्वं चक्र एषः 3,48,4. य° नयति दासमार्यः 5,34,6. 7,101,3. 10,15,14. 168,4. AV. 3,13,4. 7,104,1.

यथावसरम् (यथा + अवसर) adv. *bei jeder Gelegenheit* Hit. 62,9.

यथावस्तु (य° + व°) adj. *nach dem Sachverhalt, genau* Kathâs. 16,57. 18,367. 27,194. 29,64. 161. 34,72. 44,123. 45,98. 56,256. 335. 60,65. Prab. 70,18.

यथावस्थम् (यथा + अवस्था) adv. *dem Zustande —, der Lage gemäss* Kathâs. 87,26. *je unter denselben Verhältnissen* Sâh. D. 637.

यथावासम् (यथा + आवास) adv. *je zu ihrer Wohnung:* ततो यथागताः सर्वे यथावासं ययुस्तथा R. 6,112,107. 7,6,22.

यथावास्तु (य° + वा°) adv. *dem Boden —, dem Platze gemäss* Bhâg. P. 10,50,51.

यथावित्तम् (य° + वित्त) adv. 1) *kraft des Rechts der Erwerbung* Ait. Br. 3,28. — 2) *nach dem Vermögen, im Verhältniss zum Besitz* Bhâg. P. 4,22,50. 7,14,19. 10,53,35.

यथाविद्यम् (य° + विद्या) adv. *je nach dem Wissen* Kaush. Up. 1,2.

यथाविध (य° + विधा) adj. *qualis* MBh. 8,1962. 2987. 9,1289. Ragh. 13,19.

यथाविधानम् (य° + विधान) adv. *nach Vorschrift* Pankar. 3,11,7.

यथाविधानेन adv. dass. Jâǵn. 3,112.

यथाविधि (य° + वि°) adv. 1) *nach Vorschrift* Kauç. 68. M. 2,48. 142. 222. 3,4. 67. 81. 4,95 u. s. w. MBh. 3,1734. 3012. R. 1,2,23. 60,9. 2,25,44. 56,28. 65,8. Pańkat. III,162. Ragh. 1,6. 3,70. 15,31. Varâh. Bṛh. S. 43,16. Kathâs. 14,6. 31,70. 52,387. 408. Halâj. 2,243. — 2) *entsprechend, übereinstimmend* P. 3,4,44. कुरुष्वास्या य° *verfahre mit ihr, wie sie es verdient hat,* R. Gorr. 2,77,9.

यथाविधिम् (aus metrischen Rücksichten) adv. = यथाविधि 1) Hariv. 7138.

यथाविभवम् (य° + विभव) adv. *nach dem Vermögen, im Verhältniss zum Besitz* Mârk. P. 28,22. आत्मनः 29,37. यथाविभवकृतालंकार Pańkat. ed. orn. 49,19.

यथावीर्यम् (य° + वीर्य) adv. *im Verhältniss zur Mannheit, in Betreff des Heldenmuthes* Bhâg. P. 10,53,35. R. 3,41,2.

यथावृत्त (य° + वृत्त) 1) adj. *a) wie sich benehmend, — betragend:* राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः M. 7,1. MBh. 5,112. fg. — *b) wie geschehen, wie erfolgt* R. 7,71,16. n. *eine frühere —, vorangegangene Begebenheit:* तस्मिन्गीते यथावृत्तं वर्तमानमिवाशृणोत् R. 7,71,18. शृणु — यथावृत्तं वने निवसतः पुरा। जम्बुकस्य MBh. 1,5567. ततः सर्वं यथावृत्तं दमयन्त्या नलस्य च। भीमायाकथयत् 3,3002. ज्ञाते यथावृत्ते महाद्भुते Kathâs. 101,359. यथावृत्तम् in Verbindung mit einem Verbum des Erzählens, Fragens oder Hörens so v. a. *die näheren Umstände einer Begebenheit* (nom. oder acc.) oder *wie Etwas sich ereignet, — begeben hat* (adv.) MBh. 1,7619. 3,1869. 2190. 2393. 2927. 5,6012. 6043. 7117. 7340. 7426. 7497. R. 1,42,24. 48,6 (49,7 Gorr.). 51,16. 70,7. R. Gorr. 1,52,6. 2,6,6. 5,56,6. Kathâs. 7,67. 8,16. 12,188. 13,140. 192. 18,195. 198. 25,111. 29,26. 32,151. 46,4. 51,91. 148. 54,112. Prab. 83,8. — 2) °वृत्तम् adv. *je nach dem Metrum:* यथावृत्तसमाप्ति Ind. St. 8,286.

यथावृत्तान्त (य° + वृ°) *Erlebnisse, Abenteuer:* अन्योऽन्योदितस्वस्वयथावृत्तान्ततोषिणः Kathâs. 80,49.

यथावृत्ति (य° + वृ°) adv. *in Bezug auf die Art und Weise des Lebensunterhaltes* MBh. 13,2593.

यथावृद्धम् (य° + वृद्ध) adv. *dem Alter nach, so dass der Aeltere stets vorangeht,* R. 5,60,6. यथावृद्धपुरःसरा (मुनिपरंपरा) Kumâras. 6,49.

यथावृद्धि (य° + वृ°) adv. *dem Wachsthum* (des Mondes) *gemäss* R. 6,16,10.

यथाव्यवहारम् (य° + व्यवहार) adv. *dem Brauche gemäss* Hit. 87,15.

यथाव्याधि (य° + व्या°) adv. *der Krankheit gemäss:* चिकित्सितः *richtig behandelt* Malamâsat. im ÇKDr. u. यथाशास्त्रम्.

यथाव्युत्पत्ति (य° + व्यु°) adv. *je nach der Denkungsart, — Anschauungsweise* Sâh. D. 286,1.

यथाशक्ति (य° + श°) adv. *nach Vermögen, nach Kräften* P. 2,1,6, Sch. Vop. 6,61. Kâtj. Çr. 22,10,8. 24,5,13. Gobh. 1,1,6. Âçv. Gṛhj. 1, 21,6. Kauç. 139. Jâǵn. 1,115. MBh. 5,7334. Spr. 2531. 3801. 4793. R. 2, 111,10. 3,35,17. 5,90,33. Çâk. 113,3. Kathâs. 51,208. Bhâg. P. 6,12,16. Brahma-P. in LA. (II) 57,15. Pańkat. 117,5. ed. orn. 63,20, wo °शक्तिकम° zu trennen ist.

यथाशक्त्या (instr.) adv. dass. MBh. 5,828. 7328. 13,6287. Hariv. 7330. Spr. 745 (der Comm. zu Kâm. Nitis. liest यथाशक्त्यवि°). Mârk. P. S. 659, Çl. 9. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,13.

यथाशयम् (यथा + आशय) adv. 1) *wie es Jmd am Herzen liegt* Râǵa-Tar. 4,66. Bhâg. P. 6,4,34. — 2) *je nach den Bedingungen, Voraussetzungen* (= यथोपाधि Comm.) Bhâg. P. 10,85,25.

यथाशरीरम् (य° + शरीर) adv. *Leib für Leib* TBr. 1,2,1,9.

यथाशास्त्रम् (य° + शास्त्र) adv. *nach Vorschrift, nach den vorgeschriebenen Regeln* AV. Prât. 4,122. M. 2,70. 4,97. 6,88. 10,56. R. 1,12,3 (2 Gorr.). 2,52,73. 76,18. Kâm. Nitis. 2,18. Bhâg. P. 1,17,16. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen M. 7,31. Çaṅk. zu Khând. Up. S. 8.

यथाशीलम् (य° + शील) adv. *dem Charakter gemäss* Bhâg. P. 3,24,15.

यथाश्रद्धम् (य° + श्रद्धा) adv. *nach Neigung* TBr. 3,12,5,11. Çat. Br. 2,2,2,5. 13,8,1,10. Kâtj. Çr. 4,10,13. MBh. 3,2160.

यथाश्रमम् (यथा + आश्रम) adv. *nach dem Lebensstadium* Bhâg. P. 1,9,26.

यथाश्रयम् (यथा + आश्रय) adv. *in Bezug auf die Art und Weise des Anschlusses, — der Verbindung* MBh. 13,2593. Kathâs. 70,90.

यथाश्रुत (य° + श्रुत) 1) adj. *übereinstimmend mit dem, was man davon gehört hat:* सैष मार्जारः प्राप्तो ऽस्माभिर्यथाश्रुतः Kathâs. 65,168. n. *eine bezügliche Ueberlieferung* Çaṅk. zu Khând. Up. S. 36. °श्रुतम् adv. *wie man es gehört hat* M. 8,76. 101. Kathâs. 9,52. 117,121. Bhâg. P. 1,6,16. 3,6,36. 7,13,22. Mârk. P. 116,29. — 2) adv. °श्रुतम् *a) den*

Kenntnissen gemäss KATHOP. 5,7. BHÂG. P. 6,1,62. — *b) nach den Vorschriften der heiligen Bücher* ÇÂK. 152, v. l.

यथाश्रुति (य° + श्रु°) adv. *nach den Vorschriften der heiligen Bücher* ÇÂK. 152. Verz. d. Oxf. H. 31,*b*, N. 3.

यथाश्रेष्ठम् (य° + श्रेष्ठ) adv. *in der Weise, dass der Beste vorangeht,* ÇAT. BR. 6,2,1,18. HARIV. 3949.

यथासंस्थम् (य° + संस्था) adv. *nach Umständen* BHÂG. P. 11,5,11.

यथासंहितम् (य° + संहिता) adv. *der* Saṁhitâ *gemäss* ṚV. PRÂT. 10,5.

यथासख्यम् (य° + सख्य) adv. *im Verhältniss zur Freundschaft* BHÂG. P. 10,65,4.

यथासंकल्पित (य° + सं°) adj. *den Wünschen entsprechend* PRAÇNOP. 3,10. M. 2,5.

यथासंख्यम् (य° + संख्या) adv. *Zahl für Zahl* d. i. *in der Weise, dass in zwei Reihen mit Gliedern von gleicher Anzahl die einzelnen Glieder der Reihe nach sich entsprechen,* VS. PRÂT. 1,143. AV. PRÂT. 1,99. P. 1,3,10. KÂTJ. ÇR. 1,3,23. 2,3,5. 3,3,3. JÂGN. 1,21. SUÇR. 1,135,13. 169, 14. 311,1. AK. 2,9,3. VARÂH. BṚH. S. 68,24. 79,9. 97,16. 104,49. 105, 15. BHÂG. P. 3,5,36. 5,1,33. 16,9. PANKAR. 2,8,11. SÂH. D. 27,10.

यथासंख्येन (instr.) adv. dass. BHÂG. P. 5,1,34. P. 8,3,32, Sch.

यथासङ्गम् (य° + सङ्ग) adv. *nach Bedarf, entsprechend* MBH. 3,2930.

यथासत्यम् (य° + सत्य) adv. *der Wahrheit gemäss* MBH. 3,2990. R. 3,56,24. 5,3,11.

यथासनम् (यथा + 1. आसन) adv. *je auf dem gehörigen Platze* ÇÂÑKH. ÇR. 6,13,7. 7,14,12. LÂTJ. 2,4,8. 7,6. 8,16.

यथासंदिष्टम् (य° + संदिष्ट) adv. *dem Auftrage gemäss* R. GORR. 2,89,4. KATHÂS. 16,65.

यथासंधि (य° + सं°) adv. *je nach dem* Saṁdhi ṚV. PRÂT. 3,10.

यथासमयम् (य° + समय) adv. *der Zeit gemäss, zu rechter Zeit* MBH. 1,5332. PRAB. 68,2.

यथासमाम्नातम् (य° + समाम्नात) adv. *der Aufführung —, der Erwähnung gemäss* VS. PRÂT. 4,194. AV. PRÂT. 4,103 ist यथा समा° zu schreiben.

यथासंपद् (य° + सं°) adv. *wie es sich trifft* KAUÇ. 111. 127.

यथासंप्रत्ययम् (य° + संप्रत्यय) adv. *nach der Uebereinkunft* MBH. 1,5841.

यथासंप्रदायम् (य° + संप्रदाय) adv. *nach der Ueberlieferung* SIDDH. K. zu P. 1,2,36.

यथासंबन्धम् (य° + संबन्ध) adv. *nach der Verwandtschaft* BHÂG. P. 10,65,4.

यथासंभव (य° + सं°) 1) adj. *nach Möglichkeit entsprechend* SÂH. D. 96. — 2) °संभवम् adj. *wie sich Etwas zu etwas Anderem fügt, je nach der vorkommenden Verbindung* Schol. zu VS. PRÂT. in Ind. St. 4,168. 256. SÂH. D. 239,17. Schol. zu P. 3,2,46. 6,2,72. 8,4,2. *respective* VARÂH. BṚH. S. 18,1. 93,14. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 22. SARVADARÇANAS. 78,20.

यथासंभविन् (य° + सं°) adj. *entsprechend* KATHÂS. 24,171. 94,131.

यथासंभावित (य° + सं°) adj. dass. MÂRK. P. 33,6.

यथासवनम् (य° + सवन) adv. *nach der Folge der* Savana KÂTJ. ÇR. 9,9,8. 24,3,13. LÂTJ. 1,11,10. 2,5,5. *der Zeit gemäss* (= यथाकालम् Comm.) BHÂG. P. 5,21,3.

यथासाम (य° + सामन्) adv. *nach der Folge der* Sâman AIT. BR. 4,29.

यथासारम् (य° + सार) adv. *je nach der Qualität* HARIV. 3949.

यथासिद्ध (य° + सिद्ध) adj. *wie gerade fertig:* भोजन R. 7,105,13. fg.

यथासुखम् (य° + सुख) adv. *nach Bequemlichkeit, nach Behagen, nach Lust, nach Belieben* ÇÂÑKH. GṚHJ. 4,18. M. 4,43. N. 23,26. MBH. 1,5997. 3,2930. 3052. 4,403. 5,5429. HARIV. 3948. fg. R. 1,65,19. 2,25,38. 38,6. 40,7. R. GORR. 1,37,6. 2,39,12. 100,56. 3,7,22. 15,18. 24,17. 44,18. 6,100,22. SUÇR. 2,334,5. KÂM. NÎTIS. 15,40. ÇÂK. 69. RAGH. 9,48. KATHÂS. 12,90. 194. 17,132. 28,151. 184. 49,215. 52,344. 56,137. 58,23. BHÂG. P. 4,18,32. PANKAR. 1,3,7. PANKAT. 57,18. HIT. 44,6. 78,2. DHÛRTAS. in LA. 84,16. यथासुखमुख M. 4,51.

यथास्तुत् (य° + स्तुत्) adv. Stut *für* Stut KÂTJ. ÇR. 22,5,3.

यथास्तुतम् (य° + स्तुत) adv. *nach der Folge der* Stoma ÂÇV. ÇR. 5, 15,14. 6,5,9. ÇÂÑKH. ÇR. 11,3,2.

यथास्तोमम् (य° + स्तोम) adv. dass. AIT. BR. 4,29. ÇÂÑKH. ÇR. 12,8,11. 14,19,2. LÂTJ. 10,14,7.

1. यथास्थान (य° + स्थान) n. *die betreffende Stelle, die richtige —:* °स्थाने *an seinem Platze* PANKAR. 1,14,38. °स्थानेषु R. GORR. 2,83,33.

2. यथास्थान (wie eben) adj. *je an seiner Stelle befindlich* ÇÂÑKH. ÇR. 14,10,12.

यथास्थानम् (wie eben) adv. *je an der (die) betreffenden (betreffende) Stelle, am gehörigen Platze, an den gehörigen Platz* TS. 5,2,2,6. 6,4, 1,4. प्राणानेव यथास्थानं कल्पयित्वा TBR. 1,3,7,4. ÇAT. BR. 14,9,4,5. KÂTJ. ÇR. 15,4,15. ÂÇV. ÇR. 3,8,8. 4,15,7. 11,6,9. MBH. 3,12005. R. 2, 103,36 (= यथोचितम् Comm.). 6,96,11. 14. ÇÂK. ed. CH. 61,7. VARÂH. BṚH. S. 48,25. KATHÂS. 20,146. BHÂG. P. 4,23,16. 5,23,2. 7,12,27. PANKAT. in Ind. St. 3,373,4. ed. orn. 57,15.

यथास्थाम (य° + स्थामन्) adv. dass. AV. 7,67,1.

यथास्थितम् (य° + स्थित) adv. 1) *je nach dem Standorte* KÂTJ. ÇR. 24, 6,1. — 2) *sicher, gewiss* H. 265. KATHÂS. 15,56. BHÂG. P. 1,12,17.

यथास्थिति (य° + स्थि°) adv. *der Gewohnheit gemäss, wie sonst* KATHÂS. 53,43.

यथास्मृति (य° + स्मृ°) adv. 1) *nach dem Gedächtniss, wie man sich einer Sache erinnert* MBH. 6,345. — 2) *nach den Vorschriften der Gesetzbücher* ÇÂK. 152, v. l.

यथास्मृतिमय (von यथास्मृति) adj. *wie dem Gedächtniss eingeprägt* HARIV. 12944.

यथास्व (य° + स्व) 1) adj. f. आ *je sein, je ihr, je der gehörige:* गतिं प्राप्स्यति — यथास्वाम् MBH. 3,1687. 4,1696. जग्मुर्यथास्वान्पुनरालयान् 3,1550. 12,1516. यथास्वान्स्वान्यपुर्गृह्यान् 3,17474. यथास्वैरौषधैर्लेपं प्रत्येकं कारयेत् SUÇR. 2,4,19; vgl. 6,15. — 2) °स्वम् adv. *jede —, jeden —, jedem für sich, — besonders, je auf seine Weise* P. 8,1,14. AK. 3,5,14. यथास्वमासने ÂÇV. ÇR. 9,3,16. LÂTJ. 9,9,17. KÂTJ. ÇR. 6,3,18. 10,5,11. यथास्वं चमसानवमृशन्ति 8,7. 25,14,28. यथास्वधिष्ण्यो ÂÇV. ÇR. 4,11,3; vgl. 5,3,28. यथास्वं शोधयेद्भिषक् SUÇR. 2,60,11. 289,4. 336,3. 1,127, 13. 191,6. MBH. 4,1015. 1019. RAGH. 13,22. 17,65. KIR. 14,43. VARÂH. BṚH. S. 48,27. KATHÂS. 30,85. 34,213. 45,241. 364. 70,111.

यथास्वैरम् (य° + स्वै°) adv. *frei, ungehemmt, nach Herzenslust* MBH.

13,3408. यथास्वैरप्रचारिन् 12,1783.

यथाहार (यथा + आ°) adj. *die erste beste Nahrung zu sich nehmend, essend was sich eben trifft* R. ed. Bomb. 2,28,17. यताहार ed. Schl.

यथेक्षितम् (यथा + ईक्षित) adv. *wie man es mit eigenen Augen sah* Kathâs. 117,20.

यथेच्छ (यथा + इच्छा) adj. *den Wünschen entsprechend* Pańkar. 4,8,52. यथेच्छम् adv. *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* MBh. 6, 4867. Kathâs. 20,229. 51,187. Râǵa-Tar. 2,106. Daçak. in Benf. Chr. 189,21. Pańkat. 192,13.

यथेच्छकाम् (von यथेच्छम्) adv. *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* MBh. 5,5825. 8,50. 11,311. 15,216.

यथेच्छा (यथा + इ°) f. *ein entsprechender Wunsch;* instr. यथेच्छया *nach Wunsch, nach Belieben, nach Herzenslust* Kathâs. 54,131. Pańkat. 38,5. 116,25. 169,23. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen: यथेच्छाचार, यथेच्छालाभ Pańkar. 4,8,52.

यथेतम् (यथा + एत) adv. *wie gekommen:* यथेतं प्रत्येत्य Âçv. Çr. 2,5, 3. 5,20,1. Lâṭj. 1,7,19. 2,6,13. 3,2,11. Çat. Br. 13,5,2,9. 14,9,3,4. Kâtj. Çr. 2,2,23. यथैतम् Çâṅkh. Çr. 17,17,9.

यथेप्सया (instr. von यथा + ईप्सा) adv. *nach Wunsch, nach Belieben* MBh. 3,116. 7,2147.

यथेप्सित (यथा + ई°) adj. *den Wünschen entsprechend, gewünscht:* कामान् R. Gorr. 1,13,43. कामान्मनसा यथेप्सितान् MBh. 3,161. देशेषु 1,7715. दिक्षु Pańkat. 168,3. Varâh. Bṛh. S. 95,29.41. Verz. d. Oxf. H. 251,b,41. यथेप्सितम् adv. *nach Wunsch, nach Herzenslust* AK. 2,9,57. H. 1505. MBh. 1,5588. R. 2,96,57. 4,44,129. Kathâs. 16,60. 33,84. 35, 71. Pańkar. 1,4,26. Bhaṭṭ. 2,28.

यथेष्ट (यथा + 1. इष्ट) adj. *den Wünschen entsprechend, gewünscht, beliebig:* यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम् M. 12,126. Varâh. Bṛh. S. 85,8. Râǵa-Tar. 1,132. यथेष्टम् adv. *nach Wunsch, nach Belieben* Kâtj. Çr. 14,4,18. Pâr. Gṛhj. 3,2. MBh. 5,5984. 7330. R. 1,30,12. Spr. 1581. 3675. Kathâs. 32, 181. 95,65. Kaurap. 3. Vop. 24,13. Sarvadarçanas. 136,17. Am Anfange eines comp. adj. und adv. (ohne Flexionszeichen) Varâh. Bṛh. S. 11,20. 61,19. 81,36. न यथेष्टासनो भवेत् *er sitze nicht, wie es ihm gerade beliebt (bequem ist),* M. 2,198. °गति Ragh. 17,20. °संचारिन् Spr. 844. Kathâs. 24,156. 25,296. 37,52. Pańkat. 126,11. Zwei getrennte Wörter bildend in यथेष्टं नृपतेस्तथा M. 9,228.

यथेष्टचारिन् (1. यथेष्टम् + चा°) adj. *nach Belieben sich bewegend, gehend wohin man will;* m. *Vogel* Çabdak. im ÇKDr.

यथेष्टतस् (von यथेष्ट) adv. *nach Wunsch, nach Herzenslust* MBh. 1, 5938. R. 2,43,5 (42,5 Gorr.). Nîlak. 27.

1. यथेष्टम् (यथा + 1. इष्ट) adv. s. u. यथेष्ट.

2. यथेष्टम् (यथा + 2. इष्ट) adv. = यागक्रमेण Kâtj. Çr. 5,12,16.

यथैतम् s. u. यथेतम्.

यथोक्त (यथा + उक्त) adj. *wie angegeben, oben angegeben, früher erwähnt, — genannt, — besprochen:* यथोक्ता दक्षिणा Kauç. 68. M. 5,2. 72. 8,217. 10,81. 11,71. 12,92. MBh. 1,7643. 3,2214. Ragh. 2,70. Çâk. 9,5. 33,5. Varâh. Bṛh. S. 9,22. 48,23. 56,19. 67,3. Sâh. D. 403. Bhâg. P. 7,10,22. 8,16,45. Mârk. P. 126,9. Pańkat. 5,12. यथोक्तम् adv. *nach Angabe* Kâtj. Çr. 2,6,30. 6,8,9. 10,4. 8,3,19. 10,1,21. R. 2,34,43. 56, 20. 57,23. R. Gorr. 1,12,16. 4,27,22. Kâm. Nîtis. 12,8. Çâk. 7,3. 37, 12. 66,7. 86,21. 108,5. Kathâs. 12,171. यथोक्तकारिन् M. 6,88. यथोक्तवादिन् (दूत) Spr. 3953. R. Gorr. 2,109,44. यथोक्तेन *auf die angegebene, vorgeschriebene Weise* M. 8,257.

यथोचित (यथा + उ°) adj. *angemessen, entsprechend, geziemend* R. Gorr. 2,60,8. 109,41. Kathâs. 17,61. 25,69. Mârk. P. 16,38. Hit. 27,2. 42,3. अंशो यथोचितात् AK. 2,8,1,23. H. 1517. अयथोचितजल्पन Spr. 2898. यथोचितम् adv. *wie es sich geziemt* R. 4,39,41. Spr. 1029, v. l. Kathâs. 12,63. 14,34. 29,27. 51,198. 212. Bhâg. P. 4,22,50. Pańkar. 1,2, 45. H. 12. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen Kathâs. 43,249.

यथोत्तर (यथा + उ°) adj. *je der Reihe nach folgend* Varâh. Bṛh. S. 8, 29. यथोत्तरम् adv. *Eins ums Andere, der Reihe nach* 86,15. 18. 102,7. M. 12,38, v. l. für यथाक्रमम्. Suçr. 1,125,14. 169,6. 184,13. AK. 2,8, 2,48. H. 661. 873. Râǵa-Tar. 6,70. Sâh. D. 729. Verz. d. Oxf. H. 200, b,3. Siddh. K. zu P. 7,3,59.

यथोत्साहम् (यथा + उत्साह) adv. *nach Kräften* Kâtj. Çr. 6,10,13. 22, 2,22. 5,5. Lâṭj. 4,9,7. 8,4,13. 9,8. 11,6. M. 5,86. MBh. 5,7334.

यथोदय (यथा + उ°) 1) adj. *wie gerade folgend* ṚV. Prât. 8,8. — 2) °यम् adv. *nach den Vermögensverhältnissen* Bhâg. P. 11,17,49.

यथोदित (यथा + उदित von वद्) adj. *wie angegeben, wie angeführt, früher besprochen* ṚV. Prât. 16,21. M. 3,187. 4,100. 5,1. 7,203. 8,215. 9,180. 240. 12,107. Bhâg. P. 6,13,21. यथोदितम् adv. *wie angegeben, nach der Angabe* M. 9,113. Kathâs. 43,92. 56,369. Bhâg. P. 3,24,21. 7,12,4. Mârk. P. 114,5.

यथोद्गत (यथा + उ°) adj. *wie zur Welt gekommen, dumm, einfältig* Halâj. 2,181. — Vgl. यथागत 2) und यथाजात.

यथोद्दिष्ट (यथा + उ°) adj. *wie angegeben* M. 3,182. R. Gorr. 2,108, 30. 4,17,21. 49,5. 20. 7,52,8. Çâk. 49,7. सुग्रीवेण यथोद्दिष्टां दक्षिणामगमद्दिशम् *wie angewiesen von* Sugr. R. 4,48,1. यथोद्दिष्टम् *auf die angegebene Weise* R. Gorr. 2,81,32. 4,41,74.

यथोद्देशम् (यथा + उद्देश) adv. *der Anweisung gemäss* Hariv. 9026. fg. (die neuere Ausg. liest 9026 यशोदा च st. यथोद्देशम्). R. 2,99,1.

यथोद्भवम् (यथा + उद्भव) adv. *je nach der Entstehung* Bhâg. P. 4,23, 17. 7,12,25.

यथोपजोषम् (यथा + उपजोष) adv. *nach Gefallen, nach Behagen* MBh. 1,7332. 3,10036. 11394. 14855. 17054. R. 2,89,23 (98,24 Gorr.). Bhâg. P. 3,23,21. 5,22,3. 7,4,19. 8,9,15. 9,18,46. 10,25,20.

यथोपदिष्ट (यथा + उ°) adj. *wie —, vorher angegeben:* °दिष्टेन पथा R. 3,17,3. 19,27. °दिष्टम् adv. *auf die angegebene, vorgeschriebene Weise* 1,4,12.

यथोपदेशम् (यथा + उपदेश) adv. *der Anweisung —, der Angabe —, der Lehre —, der Vorschrift gemäss* Kâtj. Çr. 24,1,3. MBh. 3,8710. Bhâg. P. 3,23,11. 4,16,3. 5,4,16. 5,14. 9,4. 19,31. 25,14. 11,18,13.

यथोपपत्ति (यथा + उ°) adv. *wie es sich trifft* Âçv. Çr. 2,20,2. 4,1,2.

यथोपपन्न (यथा + उ°) adj. *wie gerade sich machend, ungesucht, ungezwungen:* सपर्या Bhâg. P. 10,86,41.

यथोपपादम् (यथा + उ° absol.) adv. *wie es sich trifft* Çâṅkh. Br. 16,4.

25,10. GOBH. 1,4,22. ÇÂÑKH. GRHJ. 4,19. Verz. d. Oxf. H. 216,a,21.

यथोपयोगम् (यथा + उपयोग) adv. *je nach dem Gebrauch, je nach Bedarf, je nach den Umständen* RÂGA-TAR. 4, 306. MÂRK. P. 23,115. am Anfange eines comp. ohne Flexionszeichen KATHÂS. 49,180.

यथोपस्मारम् (यथा + उ° absol.) adv. *wie es Einem beifällt* ÇAT. BR. 5,2,2,2.

यथोपाधि (यथा + उ°) adv. *je nach den Bedingungen, — Voraussetzungen* Comm. zu BHÂG. P. 10,85,25.

यथोप्त (यथा + उप्त) adj. *wie gesäet, der Saat entsprechend* M. 9,247.

यथौकसम् (यथा + ओकस्) adv. *je an seinem besondern Wohnsitz* AV. 12,1,45.

यथौचित्य (यथा + औ°) n. *eine entsprechende Weise:* यथौचित्यात् *in entsprechender Weise* SÂH. D. 158. यथौचित्यम् adv. *nach Gebühr* Spr. 1420. KATHÂS. 110,119.

यद् (von 1. य) 1) nom. und acc. sg. neutr. von य und als Thema am Anf. von compp.; s. u. 1. य. — 2) indecl. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,30. 56. *a) dass:* विद्रुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः RV. 1,131,4. 7,61,2. एतत्तु न परे चक्रुर्नापरे जातु साधवः। यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते॥ M. 9,99. यत्सा तेन परित्यक्ता तत्र न क्रोद्धुमर्हसि MBH. 3,2753. RAGH. 1,63. त्वया हि मे बहु कृतम् — यद्धन्त्राहं समेष्यामि शीघ्रमेव MBH. 3,2763. 2935. 2937. 2967. fg. PAT. zu P. 7,4,77. Spr. 455. 1811. 2338. 2346. 4676. ÇÂK. 35. 38. 99. 136. 163. 65,3. RAGH. 1,27. 2,40. 12,43. KATHÂS. 3,64. HIT. 12,10. 19,4. 24,11. LA. (III) 6,19. fgg. नृशंसं यत् MBH. 3,2371. इदमत्यद्भुतं चात्र चकार — जघान यत् 15768. एष मे प्रथमः कल्पो यत् mit folg. potent. R. 2,52,58. एष मे परमः कामो यत् mit folg. potent. 6,97,13. eben so nach काल, समय, वेला P. 3,3,168. युक्तम् und अयुक्तं यत् R. 4,16,49. आश्चर्यं यत् KATHÂS. 17,28. एषैव महती लज्जा यत् RÂGA-TAR. 4,84. चिन्ता मे पुत्र यद्भार्या सदृशी नास्ति ते क्वचित् KATHÂS. 3,57. दुष्करं क्रियते त्वया — यद्यासि विजनं वनम् R. 2,34,35. MBH. 3,2673. किं तवापकृतं मया यदहं ताडितस्त्वया DAÇ. 1,36. अतस्तु किं दुःखतरं यदहं जीवितक्षये। नहि पश्यामि धर्मज्ञं रामम् 2,64. MBH. 1,5878. 5903. 6196. fg. स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि यत्सावमानपरपिण्डरता मनुष्याः Spr. 807. वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून् 243. किं यन्न वेत्सि त्वम् *wie kommt es, dass du es nicht weisst?* KATHÂS. 52,281. न किल श्रुतं युवाभ्यां यत् ÇÂK. 78, 18. जनास्त्वलक्षयन्यत्स स्वयं पीठमवातरत् RÂGA-TAR. 3,458. अभिजानासि देवदत्त यत्काश्मीरेष्ववसाम P. 3,2,113, Sch. स्मरसि देवदत्त यत्काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रौदनं भोक्ष्यामहे 114, Sch. तद्वचः। यदहं पुत्रशोकेन संत्यक्ष्यामि जीवितम् DAÇ. 2,58. वक्तव्यं यदिह मया हता प्रियेति MṚKKH. 167,12. एते पक्षिण एवं वदन्ति। यदस्माकं राजा किं करिष्यति। न कस्याप्यावासं दद्मः PAÑKAT. 175,13. 227,7. HIT. 110,3. 120,12, v. l. LA. (III) 8,2. 38,2. *so dass* BHÂG. P. 1,1,1. — *b) was das betrifft, dass:* एको ऽहमस्मीत्यात्मानं यत्त्वं कल्याण मन्यसे। नित्यं स्थितस्ते हृद्येष पुण्यपापेक्षिता मुनिः॥ Spr. 563. बलिनं मन्यसे यच्चाप्यात्मानम् — ज्ञास्यस्यद्य समागम्य मयात्मानं बलाधिकम् MBH. 1,5996. तद्यदप उपस्पृशत्यमेध्यो वै पुरुषः ÇAT. BR. 1,1,1,1. 6. 2,1,22. यद्विजृम्भते तद्विद्योतते 10,6, 1,1. — *c) weshalb:* किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांससि RV. 7,86,4. श्रूयतां यदस्मि हरिणा भवत्सकाशं प्रेषितः ÇÂK. 95,1. *wessentwegen* MBH. 3,2571. fg. — *d) wann, als:* यत्सानोः सानुमारुहत् RV. 1,10,2. यद्ध यान्ति मरुतः सह ब्रुवते ऽध्वन्ना 37,13. 39,3. 7,3,6. 5,3. 19,2. 25,1. 30,3. 55,2. यदीमाग्रुर्वहति 66,14. 103,3. 4. यदत्र शिष्टं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबत् *was übrig blieb, als* Indra *getrunken hatte*, AIT. BR. 7,33. — — *e) wenn, wofern:* यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय RV. 7,32,18. 40,1. 1,38,4. 8,10,1. 5,6. तस्य द्वावनध्यायौ यदात्माशुचिर्यद्देशः ÂÇV. GRHJ. 3,4,7. AV. 6,120,1. 12,4,9. स यदिदं पुरा मानुषीं वाचं व्याहरेत् ÇAT. BR. 1,1,4,9. 14,5,4,2. KAUSH. UP. 3,8. त्यस्य राज्ञा मूर्धानं विपातयताद्यदितो ऽयास्य आङ्गिरसो ऽन्येनोदगायत् ÇAT. BR. 14,4,1,26. मूर्धा ते विपतिष्यद्यन्मां नागमिष्यः KHÂND. UP. 5,12,2. 15,2. — *f) weil, da* AK. 3,5,3. H. 1537. MED. avj. 39. M. 1,10. 17. 2,147. Spr. 4492. MBH. 1,5589. 3, 2221. 2244. 15784. R. 1,55,27. 59,17. 64,12. 2,55,11. 68,2. 74,25. DAÇ. 1,39. 2,7. 51. Spr. 2336. 2398. RAGH. 1,87. ÇÂK. 21. 138. 182. 9,13, v. l. 107,2. KATHÂS. 18,173. 52,76. HIT. 6,3. 40,22. NAISH. 22,46. — *g) auf dass, damit:* लङ्कायां यत्तु पश्येयमभिषिक्तं विभीषणम्। ततस्ततो हरिश्रेष्ठैरागाम सहानुगः॥ R. 6,97,10. किं नु शक्यं मया कर्तुं यत्ते न क्रुध्यते नृपः MBH. 1,5921. — *h)* यदपि *obgleich* MEGH. 28. — *i)* यद् *wie* — एवम् *so* ÇVETÂÇV. UP. 5,4. — *k)* यच्च *dass* mit potent. nach *nicht für möglich halten, nicht glauben (hoffen), nicht leiden, tadeln, Wunder* P. 3,3,147. fgg. VOP. 25,14. न श्रद्दधे (न मर्षये, गर्हामहे, आश्चर्यमेतत्) यच्च तत्रभवान्वृषलं याजयेत् P., Sch. Vgl. MED. avj. 39. — *l)* यद्वा α) *oder* TRIK. 3, 4,4. Spr. 289. RÂGA-TAR. 4,59. 5,441 und überaus häufig bei den Commentatoren. — β) *entweder dass:* न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः BHAG. 2,6.

यद् am Ende eines adv. comp. (°यदम्) = यद् = 1. य gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. VOP. 6,62.

यदर्थ (यद् + अर्थ) adj. *welches* (rel.) *Ziel vor Augen habend, was bezweckend* BHÂG. P. 8,6,14.

यदर्थम् (wie eben) adv. 1) *weshalb, weswegen, wessentwillen* (rel.) u. s. w. MBH. 1,6149. 5,5944. HARIV. 3790. R. 1,15,14. 66,7. 2,52,55. 3, 48,10. 4,16,47. fg. ÇÂK. 95,1, v. l. RÂGA-TAR. 6,167. BHÂG. P. 4,7,27. 23,2. 8,5,11. 24,2. 29. MÂRK. P. 18,3. — 2) *da, quum:* नूनं दैवं न शक्यं हि पौरुषेणातिवर्तितुम्। यदर्थं यत्नवानेव (so die ed. Bomb.) न लभे विप्रतां विभो॥ MBH. 13,1932.

यदर्थे adv. = यदर्थम् 1) Spr. 2343. fg.

यदा (von 1. य) adv. *wann, als* (P. 5,3,15. VOP. 7,101); *wenn;* folgt तदा, ततस्, अथ, आदित्, तर्हि (BHÂG. P. 5,8,11) oder einfacher Nachsatz. RV. 1,82,1. वृत्रमिन्द्र यदावधीः 103,8. 115,4. 163,7. 4,33,2. 24,8. यदा महः संवरणाद्व्यस्थात् 7,3,2. 42,4. 8,12,26. 10,23,3. 68,6. AV. 3, 13,6. यदानुन्मदितो ऽसति 6,111,1. 11,4,5. 8,11. 12,4,29. 14,2,20. AIT. BR. 7,14. 29. 8,5. ÇAT. BR. 1,1,1,22. 4,22. 8,1,3. 13,1,5,4. 14,1,1,24. 3,1. 4,3,25. 6,9,22. KHÂND. UP. 6,15,2. TAITT. UP. 2,7. यदा सहस्रं संपद्यते ऽथोत्थानम् ÇÂÑKH. ÇR. 13,29,21. यदाधिगच्छेत् GOBH. 1,9,20. यदास्मै कुमारं जातमाचक्षीरन् 2,7,17. ÂÇV. GRHJ. 1,14,2. KAUÇ. 51. — यदा स देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत् M. 1,52. 54. 56. यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निःस्पृहः। तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥ 6,80. MBH. 3,13612. R. 1,41,15. ÇÂK. 132. Spr. 405. 2354. fg. 2358. 3902. 4805—4809. HIT. 98,18. LA. (III) 7,2. 24,8. यदाहं शब्दं करोमि (= करिष्यामि) तदा त्वमुत्थाय सत्वरमपसरिष्यसि HIT. 23,8. यदा न प्रतिषेद्धारस्तयोः स-

त्तीक् (statt des praet.) के च न। निरुद्योगो तदा भूत्वा विज्ञक्षाते ऽमराविव ॥ MBh. 1,7713. 7634. 3,11964. R. 1,54,1. 2,115,25. 4,9,21. Kathâs. 18,264. Mârk. P. 17,22. इन्द्रसेनस्य जननी कुपिता मां शपत्पुरा। यदा MBh. 3,2842. यदाकिंचिज्ज्ञो ऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम् Spr. 2347. 2350. fg. 2357. Kathâs. 18,138. 24,76. Râga-Tar. 6,217. नाभ्यगमन्यदा तत्र भागार्थं सर्वदेवताः R. 1,60,11. Kathâs. 20,73. Râga-Tar. 3,23. कामधेनुं वसिष्ठो ऽसौ न तत्याज यदा मुनिः R. Gorr. 1,55,1. Kathâs. 18,295. Hit. 58,12. यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति Bhag. 2,52. fg. MBh. 3,2629. 15656 (यदा द्रष्टास्पर्शनं ed. Bomb.). R. 1,8,18. 48,32. 2,70,15. R. Gorr. 2,10,6. R. ed. Bomb. 3,4,17. Kathâs. 1,61. 18,341. 22,141. 34,37. Hit. I,32. यदा शरानर्पयिता तवोरसि तदा मनस्ते किमिवाभविष्यत् MBh. 3,15657. Kathâs. 1,60. एतांस्त्वभ्युदितान्विद्याद्यदा प्रादुष्कृताग्निषु M. 4,104. 6,2. 7,169. fgg. 181. 183. 8,9. 130. MBh. 3, 2631. 5,1832 (nach der Lesart der ed. Bomb., तदा mit condit. im Nachsatz). R. Gorr. 1,64,19. 2,8,16. Çrut. 30. Bhâg. P. 5,8,11. यदा भवद्विधः क्षत्रियं याचयेन्नात्रकल्पयामि न मर्षयामि P. 3,3,147, Vârtt., Sch. Vop. 25,13. यदा मे मरणं भूयात्तदा मा भूत्स्मृतिभ्रमः Hariv. 14673. Häufig ist die Copula zu ergänzen, insbes. nach einem partic. praet. auf त R. 1, 4,8. यदा त्वयं गतं सर्वं तदा विद्धः — अब्रवत् 43,47. 3,66,2. स्मरसि ननु यदा परिक्षितः स च धृतराष्ट्रसुतो ऽपि मोक्षितः MBh. 8,1743 (vgl. dagegen स्मरसि ननु यदा — जिताः स्थ गोग्रहे 1745). Spr. 2352. यदा तु पूर्ववृत्तमन्यसङ्गाद्विस्मृतो भवान्। तदा कथमधर्मभीरुः Çâk. 71,3. Kathâs. 51,139. तथाप्यप्रत्ययस्तेषां यदा सीता तदाभ्यधात् 51,76. पत्त्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् Spr. 1688. 2349. 2353. 4810. Naish. 22,55. यदा ओकारस्तदा सर्वादेशो यथा स्यात् Pat. zu P. 8,2,89. Schol. zu P. 6, 1,196. Siddh.-K. zu P. 7,1,68. Çrut. 14. यदा in Verbindung mit andern Relativen: यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते M. 12,25. यो ऽत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् Spr. 2532. यदा mit इद्: यदेदेवीरसंक्षिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य RV. 7,98,5. 10,88,11. यदेव — तदेव Çâk. 111,3. यदैव खलु — तदा प्रभृत्येव 79,14. यदा प्रभृति — तदा प्रभृति R. 3,1,20. यदा यदा *quandocunque, so oft* — तदा तदा oder einfach तदा Bhag. 4,7. Kathâs. 25,216. 54,154. Hit. 58,9. das einfache यदा mit verdoppeltem verbum finitum dass. Spr. 2356. यदा कदा च सुनवाम सोमम् *so oft* RV. 3,53,4. यदा कदा चित् *jederzeit* Kauç. 94. — यदा MBh. 1,5598 in beiden Ausgg. fehlerhaft für पदा.

यदात्मक (यद् + आत्मन्) adj. *wessen* (rel.) *Wesen habend* Bhâg. P. 9, 6,36. Çañk. zu Khând. Up. S. 72.

यदावाजदावर्य m. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*. — Vgl. वाजदावर्य.

यदि (von 1. य) conj. oft gedehnt im Veda; vgl. VS. Prât. 3,128. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,30. 1) *wenn* AK. 3,5,12. H. 1542. mit ind., conj., pot. und fut. in der älteren Sprache; gewöhnlich einfacher Nachsatz ohne Partikel: यज्ञाम देवान्यदि शक्नवाम RV. 1,27,13. आ घा गमद्यदि श्रवत् 30,8. 178,3. 3,31,6. यदि च तिष्ठासि यदि च शयासै Ait. Br. 2,2. AV. 10,3,6. यदि तन्नेव कृणवथ RV. 1,161,8. यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथ 7,56,15. 104,14. अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि 15. Çat. Br. 1,1,1,9. 6,1,15. AV. 1,16,4. 5,8,6. 6,124,2. Khând. Up. 6,16,1. 2. यद्यनुस्मरेयुः Çat. Br. 13,8,1,2. यदीच्छेत् Kâtj. Çr. 2,6, 34. यदि मन्येत Çâñkh. Çr. 14,14,4. Âçv. Grhj. 1,9,3. यदि न विन्देत 3, 8,2. Taitt. Up. 1,11,3. यदि विवदिष्येते Çâñkh. Çr. 14,29,2. 40,4. 50,5. यदि चित् AV. 5,2,4. यदि ह वै Ait. Br. 2,2. यदीत् AV. 4,27,6. यद्यु त्वै Gobh. 1,8,3. 4,1,13. In den nachvedischen Schriften *a*) mit praes.; im Nachsatz α) praes. M. 5,102. 8,233. 12,20. fg. R. 1,61,13. 65,11. Çâk. 67. Spr. 1673, v. l. 2366. 2368. Kathâs. 54,96. mit अथ RV. Prât. 11,23. mit तद् MBh. 3,2328. Kathâs. 22,111. 30,9. mit ततस् Spr. 2365. mit तदा 2367. LA. (II) 6,5. 7,18. mit तर्हि 27,12. — β) fut. MBh. 3,2861. fgg. 15715. 5,7362. R. 2,63,4. 78,23. 5,9,43. mit ततस् Ragh. 3,65. mit तदा Hit. 40,17. mit तर्हि LA. (II) 4,3. — γ) Participialfut. MBh. 7,2606. — δ) imperat. MBh. 3,2171. 2435. 2688. 2714. 2982. fg. 4812. 5,7125. R. 1,9,33. R. Gorr. 1,22,16. Spr. 2373. 4819. mit तद् Kathâs. 11,58. 18,161. mit तर्हि Çâk. 113,5, v. l. — ε) potent.: पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रो ऽनुजायते। समस्तत्र विभागः स्यात् M. 9,134. इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते (= दीप्येत) ॥ Spr. 3743. 3891. 4816. Kathâs. 16,72. 18,189. Gît. 4,19. यदि वेद न याचेत Bhâg. P. 6,10,6. mit तस्मात् Spr. 1597. — ζ) kein verbum finitum: आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति M. 11,17. Spr. 4811. Râga-Tar. 4,538. तस्य तत्किल्बिषं लुब्ध विद्यते यदि किल्बिषम् MBh. 13,36. यदि दहत्यनलो ऽत्र किमद्भुतम् Spr. 2360. 3713. Çâk. 123. Çrut. 18 (भवति यदि या — सा). mit ततस् Pat. zu P. 6,4,159. mit तर्हि Schol. zu P. 6,4,11. Prab. 18,4. Sarvadarçanas. 92,20. mit तदा 133,2. Hit. 21,22. mit तदानीम् Çrut. 22. — *b*) mit fut.; im Nachsatz α) fut. MBh. 3,2163. 2488. 2845. 5,7362. R. Gorr. 2,10,7. Bhâg. P. 4,14,12. mit ततस् Hariv. 7294. 9978. mit तद् Pañkat. 229,13. — β) praes. R. 2,61,11. mit ततस् Pañkat. 5,6. — γ) kein verbum finitum: तदुःखं यदि कौसल्या वीरसूर्विनशिष्यति R. 2,51,15. यदि — ततः परम् Spr. 4833. — *c*) mit dem Participialfut., im Nachsatz das andere fut. MBh. 3,2827. — *d*) mit potent.; im Nachsatz α) potent. M. 2,223. 243. 3,61. 108. 111. 7,108. 8,90. 184. MBh. 3,2099. 2559. 5,7034. fg. 6,5825. 12,430. 13,43. 14,244. Hariv. 9714. Bhag. 1,46. 11,12. Daç. 2,60. R. 2,78,22. 4,46,13. 57,17. 5,1,67. 31,39. 45,17. 6,23,29. 7,35,10. Megh. 62. 95. Spr. 2656. 2853. 3026. 3254. 4820. Kathâs. 103,166. Bhâg. P. 4,26,15. mit ततस् R. 4, 9,99. Spr. 2361. 2840. Kathâs. 18,18. 22,83. 51,121. mit तद् 4,15. 5, 89. Spr. 2372. 2393. mit तदा 2364. Schol. zu P. 7,1,24. mit अथ Spr. 2760. mit तर्हि Sarvadarçanas. 66,6. 120,11. — β) condit. mit potent. abwechselnd Spr. 4813. fg. — γ) praes. R. 4,20,9. 7,94,14. Spr. 1364. Kathâs. 52,101. Bhâg. P. 10,77,18. Prab. 89,3. mit तद् Spr. 2371. — δ) imperat. Megh. 61. — ε) fut. R. 3,65,9. — ζ) Participialfut. MBh. 7, 2605. — η) kein verbum finitum MBh. 3,2737. R. 1,11,15. Çrut. 13. Spr. 155, v. l. 2586. 3082. Kathâs. 39,135. H. 1240. fg. mit तद् Kathâs. 22,81. 30,5. 53,131. mit तदा R. 4,62,7. mit ततस् Mârk. P. 18,43. mit तर्हि Sarvadarçanas. 79,8. fg. — *e*) mit condit.; im Nachsatz α) condit. MBh. 7,6579. R. 4,12,37. Kathâs. 7,12. 34,26. 35,75. mit न च MBh. 13,4797. mit तद् Kathâs. 49,120. 63,77. mit ततस् P. 3,3,140, Sch. — β) potent. MBh. 7,3069. mit तद् Kathâs. 63,62. mit ततस् Mârk. P. 119,11. — γ) aor. MBh. 13,12. — *f*) mit imperf.; im Nachsatz α) condit. MBh. 8,3384. — β) potent.: यद्येतदशुभं कर्म न स्म मे ऽकथयः स्वयम्। फलेन्मूर्धा स्म ते राजन्सद्यः शतसहस्रधा ॥ Daç. 2,21. — *g*) mit aor.; im

Nachsatz α) condit. PRAÇNOP. 6, 1. — β) potent. Spr. 3662. — h) im perf. (ग्राह); im Nachsatz ततस् ohne verbum finitum R. 1, 63, 21. — i) ohne verbum finitum; im Nachsatz α) praes. MBH. 3, 2331. R. 7, 94, 14. Spr. 2363. 2370. 4112. किमत्र चित्रं यदि विशाखे शशाङ्कलेखामनुवर्तेते ÇÂK. 35, 21. mit तद् KATHÂS. 63, 80. mit तदा PAT. zu P. 7, 1, 30. — β) fut. MBH. 3, 15757. 16735. mit तद् KATHÂS. 55, 20. — γ) imperat. MBH. 3, 2434. 2768. 16847. R. 1, 55, 16. 65, 21. RAGH. 3 51. Spr. 855. 3713. 4818. KATHÂS. 17, 23. mit तद् (v. l. ततस्) ÇÂK. 3, 6. KATHÂS. 24, 193. mit तदा GÎT. 1, 3. मा स्म कृथाः (= imperat.) im Nachsatz KATHÂS. 18, 272. — δ) potent. Spr. 4052. 5213. BHÂG. P. 6, 10, 32. चित्रम् — पश्येत्यदीश्वरम् VOP. 25, 15. — ε) perf. (ग्राह) BHÂG. P. 6, 10, 6. — ζ) kein verbum finitum M. 9, 149. 204. ÇÂK. 16. Spr. 1139. 2359. 2362. 2369. 4817. KATHÂS. 40, 22. KÂÇ. zu P. 1, 2, 35. mit तद् KATHÂS. 26, 97. mit ततस् Spr. 2360. mit तदा HIT. 18, 19. mit तर्हि PAÑKAT. 24, 9. mit तथा R̥V. PRÂT. 11, 35. — 2) *wenn* so v. a. *so wahr* bei Betheuerungen: यद्यहं (यथाहं N. 11, 36) नैषधादन्यं मनसापि न चिन्तये। तथायं पततां तुद्रः परासुर्मृगजीवनः॥ MBH. 3, 2399. fg. यदि मे ऽस्ति तपस्तप्तं यदि दत्तं हुतं यदि। श्वश्रूश्वशुरभर्तॄणां मम पुण्यास्तु शर्वरी॥ 16844. यद्यार्यपुत्रादन्यत्र न स्वप्ने ऽपि मनो मम। तदुत्तरेयं सरसः पारम् KATHÂS. 51, 81. — 3) *ob:* तं च पापं न जानीमो यदि दग्धः पुरोचनः MBH. 1, 5879. कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्ति किंचित् Spr. 711. KUMÂRAS. 5, 44. तां समाचक्ष्व कल्याणीं यदि स्याच्छ्रेय मानुषी MBH. 3, 15615. विचार्यतां यदि — स्यात् ÇÂK. 90, 21. जानीहि यदि केनापि दृष्टा सा नगरी न वा KATHÂS. 24, 51. यद्येको यदि बहवः किमनेन फलं तु सर्वथा वाच्यम् VARÂH. BR̥H. S. 11, 6. Zum Ueberfluss noch किम् hinzugefügt: हंहो पश्यत तत्त्वतो यदि पुनश्छिन्नादतो वर्ष्मणो दृष्टः किं परिणामरूपितचितिर्जीवः पृथक्कैरपि PRAB. 27, 11. fg. — 4) *wenn* so v. a. *dass* nach *nicht glauben, nicht für möglich halten, nicht dulden:* नाशंसे यदि जीवन्ति सर्वे ते शर्वरीमिमाम् R. 2, 51, 14. नाशंसे यदि ते सर्वे जीवेयुः शर्वरीमिमाम् 86, 15. यदि भवद्विधः स्त्रियं याचयेत् नावकल्पयामि, न मर्षयामि P. 3, 3, 147, Vârtt., Sch. VOP. 25, 13. दुष्करं यदि mit praes. oder potent. so v. a. *schwerlich* MBH. 3, 2650. fg. R. 2, 73, 7. R. GORR. 2, 75, 20. मन्दप्राणो ह्ययं पत्नी कथं चिद्यदि जीवति *lebt nur kaum* 3, 73, 3. — 5) *ob nicht vielleicht, vielleicht dass:* ममाप्येष सदा ब्रह्मन्हृदि कामो ऽभिवर्तते। घातयेयं यदि रणे भीष्ममित्येव नित्यदा॥ MBH. 5, 6095. भोजनं च समानाय्य यत्तदादीपितं मया। क्रुध्येथा यदि मात्सर्यादिति 13, 2888. रामं दर्शय धर्मज्ञं यदि किंचिदवाप्स्यसि (°से ed. Bomb.) R. 2, 32, 30. ग्राशया यदि मां रामः पुनः शब्दापयेदिति 59, 7. तस्य बुद्धिरभूदियम्। स्वरमेतं यदि श्रुत्वा लक्ष्मणं प्रेरयेदिह॥ सीता शून्येन मनसा भर्तृस्नेहसमुत्सुका। ततो लक्ष्मणहीनां तां रावणो वै हरेदिति॥ 3, 50, 23. fg. उत्तरीयं वरारोहा शुभान्याभरणानि च। मुमोच यदि रामस्य शंसेयुरिति जानकी॥ 60, 6. fg. एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येको ऽपि (so die ed. Bomb. st. यद्यप्येको der ed. Calc.) गयां व्रजेत् MBH. 3, 8075 = 8305 = 13, 4253; vgl. R. 2, 107, 13 (115, 13 GORR.). MEGH. 106. यद्यप्येको (= यद्येको ऽपि) ऽनुवेदैयां भावानां चैव संस्थितिम् JÂGN. 3, 104. एतस्य गुणास्तुतिं जिह्वासहस्रेण द्वितीयेन (so zu lesen) यदि (so die Hdschrr.) कदाचित्कर्तुं समर्थः स्यात् HIT. 27, 7. यदि तावदेवं क्रियताम् so v. a. *wie, wenn man nun etwa so thäte?* ÇÂK. 71, 8. यदि तावदस्य शिशोर्नामत मातरं पृच्छामि 104, 21. — 6) zum Ueberfluss mit चेद् verbunden: कैकेय्या यदि चेद्राज्यं स्यादधर्म्यमनाथवत्। नहि नो जीवितेनार्थः R. 2, 48, 19. — 7) überflüssig nach पुरा *bevor, ehe:* पुरा मातुः पितुर्वापि यदि पश्यामि विप्रियम्। न जीविष्ये MBH. 3, 16846. fg. — 8) यद्यपि *auch wenn, obgleich, etsi* ÇAT. BR. 14, 4, 2, 23. M. 8, 164. 9, 154. 319. MBH. 1, 6118. BHAG. 1, 38. R. 2, 37, 30. 61, 2. ÇÂK. 30. Spr. 1931. 2390. 4832. ÇIÇ. 16, 82. तथापि im Nachsatze R. 2, 23, 16. 3, 3, 3. RAGH. 4, 7. Spr. 2389. 4830. KATHÂS. 52, 375. HIT. 69, 22. 73, 16. 92, 16. 120, 5. DHÛRTAS. 76, 17. PRAB. 97, 3. SÂJ. zu R̥V. 1, 125, 1. SARVADARÇANAS. 90, 3. 172, 22. तदपि Spr. 2388. 4831. KATHÂS. 56, 80. 114. HIT. 55, 8. यदि — यदि च — यद्यपि Spr. 4817. ग्रपि यदि — तथापि PRAB. 7, 13. fg. Ueber यद्यप्येकः st. यद्येको ऽपि s. u. 5). — 9) यदि — यदि वा, यदि वा — यदि वा, यदि वा — यदि, यदि वा — वा, वा — यदि वा *wenn — oder wenn, ob — oder:* यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः AV. 1, 25, 2. 2, 14, 5. 4, 12, 7. यदि धर्मं यशोलाभमभिवाञ्छसि पार्थिव। ततो रामं प्रयच्छैकं यदि वा श्रद्दधासि मे॥ R. GORR. 1, 22, 16. यदि — वा — यदि वा Spr. 2372. यदि वा दधे यदि वा न R̥V. 10, 129, 7. AV. 7, 38, 5. यदि वास्य वनस्य त्वं (v. l. वनस्यासि) देवता यदि वाप्सराः। ग्राचक्ष्व MBH. 1, 6010. यदि वानौ समृद्धः स्याद्यदि वाप्यधनो भवेत्। यदि वाप्यसमर्थः स्याज्ज्ञेयमस्य चिकीर्षितम्॥ 3, 2740. यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे AV. 4, 9, 10. यदि वा बुद्धिपूर्वाणि यद्यबुद्धापि कानिचित्। मया कृतान्यकार्याणि तानि त्वं तत्तुमर्हसि॥ MBH. 3, 3021. पातालं यदि वा नीता वर्तते वा नभस्तले R. 4, 5, 5. को हि तद्वेद यद्यमुष्मिं लोके ऽस्ति वा न वा TS. 6, 1, 1, 1. तन्न जानामि वार्ष्णेय यदि जीवति वा न वा MBH. 7, 4217. R. 3, 65, 10. 4, 40, 9. 5, 9, 30. ग्रस्तमर्को वा यदि वोर्धमुत्पतेः। समुद्रपारं यदि वा प्रधावसि। तथापि MBH. 4, 428. R. 2, 30, 10. M. 3, 242. 4, 117. MBH. 3, 3036. 5, 7080. R. GORR. 2, 30, 17. 3, 46, 21. 4, 45, 9. 50, 18. Spr. 2181. 2348. 3001. fg. BRAHMA-P. in LA. (II) 52, 14. न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः BHAG. 2, 6. यदि वा allein *oder wenn, oder* (TRIK. 3, 4, 4) R. GORR. 2, 7, 28. 20, 12. HIT. 19, 7. सो ग्रङ्ग वेद यदि वा न वेद R̥V. 10, 129, 7. यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः AV. 13, 2, 6. ÇAT. BR. 1, 1, 4, 2. KHÂND. UP. 7, 24, 1. ग्रात्मनो यदि वान्येषाम् M. 11, 114. ग्रज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात् Spr. 3396. R. 1, 2, 37. 40, 13. सुवृत्ता यदि वावृत्ता (so ist zu lesen) 3, 65, 8. DAÇ. 2, 8. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु Spr. 1581. 5268. VARÂH. BR̥H. S. 18, 1. 43, 34. 54, 91. यत्कोरात्यग्रभं कर्म ग्रुभं वा यदि (= यदि वा) Spr. 4733. यदि वा = ग्रथ वा (s. u. ग्रथ 7, b, β) KATHÂS. 26, 24. 90. 233. — Nach MED. avj. 39 wird यदि गर्हाविकल्पयोः gebraucht, nach TRIK. 3, 4. 5 ist यदि शेषगीः (?). Ausführlich hat über यदि gehandelt LASSEN in seiner Ausg. des GÎT. S. 106. fgg.

यदिच्छा in °मात्रतस् KATHÂS. 121, 100 wohl fehlerhaft für यदृच्छा.

यदीय (von 1. य) adj. *cujus* (relat.) P. 1, 4, 74, Sch. KHANDOM. 42. RÂGA-TAR. 4, 48. BHÂG. P. 10, 59, 44. 61, 5. KULL. zu M. 5, 15. 9, 170. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 34. 7, 12, Çl. 44.

यँदु m. N. pr. eines Stammes und Stammhelden, gewöhnlich neben Turvaça (Turvasu) genannt; auf einem Zuge aus der Ferne her und beim Uebergange über einen Strom von Indra beschützt R̥V. 1, 54, 6. पारयी तुर्वशं यदुं स्वस्ति 174, 9. उत त्या तुर्वशायदू ग्रस्नातारा शचीपतिः। इन्द्रो विद्वाँ ग्रपारयत् 4, 30, 17. 5, 31, 8. य ग्रानयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् 6, 45, 1. 8, 4, 7. 7, 18. 10, 49, 8. 1, 36, 18. 8, 9, 14. 10, 5. 45, 27. 9, 61, 2. pl. 1, 108, 8. MBH. 1, 46. BHÂG. P. 1, 12, 37. 3, 2, 8. 12, 1, 34. ÇIÇ. 9, 38.

°पुंगवाः MBh. 1,7012. यदवः = दशार्हाः Trik. 2,1,10. °वंश Verz. d. Oxf. H. 8,a,27. 12,b,17. sg. 40,a,37. ein Sohn Jajâti's und Bruder Turvasu's MBh. 1,3162. 3432. 5,5043. 7,6030. Hariv. 1604. 1618. fgg. 1829. 1842. fg. VP. 413. fgg. Bhâg. P. 1,10,26. 9,18,33. ein Sohn Vasu's, Fürsten der Kedi, MBh. 1,2364. Hariv. 1806. ein Sohn Harjaçva's 5175. fgg. In Jadu's Familie wird Kṛshṇa geboren und heisst demzufolge यदुवीरमुख्य MBh. 1,7013. यदुपति Vṛddha-Kâṇ. 10,7. यदुनाथ H. 219. यदुश्रेष्ठ Pañkar. 3,8,7. यदूद्वह 4,1,24. यदुकुलोद्वह 3,130. यदवः wie auch andere Stammnamen unter den Namen für *Nachkommenschaft* aufgeführt Naigh. 2,3. — Vgl. यादव, याद्व.

यदुध्र (यदु + ध्र) m. N. pr. eines Ṛshi Hariv. 435. 14152.

यदृच्छा (यद् + ऋ° von 1. ऋच्छ्) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. = स्वैरिता, स्वाच्छन्द्य, निर्निमित्त AK. 3,3,2 (vgl. v. l.). H. 356. Halâj. 4,89. *Zufall* Çvetâçv. Up. 1,2. Suçr. 1,311,20. यदृच्छया instr. *zufällig, von ungefähr, ganz von selbst, ohne besondere Veranlassung, unerwarteter Weise* M. 7,165. Bhag. 2,32. MBh. 1,5930. fg. 3,17155. 10,83. 12,6676. 13,2659. R. 1,1,74 (79 Gorr.). 48,4. 2,7,1. 59,22. 3,23,12. 4,50,25. 5,16,50. Suçr. 2,299,1. Kumâras. 1,14. Ragh. 3,40. Vikr. 10. Spr. 2260. Kathâs. 14,76. 21,76. 28,55. 29,20. 37,204. 38,93. Râga-Tar. 3,122. Bhâg. P. 1,19,25. 2,8,7. 3,4,9. 26,4. 4,25,20. 5,5,35. 9,15,23. 18,18. यदृच्छातस् dass. 11,7,63. Kull. zu M. 2,245. Am Anf. eines comp. यदृच्छा in adv. Bed.: यदृच्छोपनत Ṛv. Prât. 11,18. Bhâg. P. 7,13,36. °प्रोद्गत Kathâs. 26,9. °संवाद Uttararâmak. 97,6 (127,11). °लाभसंतुष्ट Bhag. 4,22. यदृच्छामात्रतस् (so ist zu lesen) *nur ganz zufällig* Kathâs. 121,100. °शब्द *das erste beste Wort* Spr. 281. mit Kürzung des Auslauts: यदृच्छज्ञ Kauç. 135.

यद्देवत (यद् + देवता) adj. *welche* (rel.) *Gottheit habend* Çâñkh. Çr. 13,20,8. यद्देवत्य dass. Çat. Br. 3,8,2,1. Lâṭj. 6,9,4.

यद्वंद्व (यद् + द्वंद्व) n. N. eines Sâman Lâṭj. 3,9,18.

यद्धेतोस् (यद् + हेतोस्, abl. von हेतु) adv. *weshalb, wessentwegen* (rel.) Bhâg. P. 3,29,4.

यद्भविष्य (यद् + भ°) adj. *der da sagt «was kommt das kommt»,* m. *Fatalist* H. 383. Halâj. 2,222. zugleich N. pr. eines Fisches Kathâs. 60,180. 184. Spr. 92, v. l. Pañkat. 77,9. Hit. 110,16.

यद्र्यञ्च् (von 1. य) adj. *in welcher* (rel.) *Richtung sich bewegend:* यद्रियङ्वायुर्वाति TS. 5,5,1,1. यद्र्यञ्च् Schol. zu P. 6,3,92. 8,1,66. fälschlich यद्रञ्च्, यद्र्ञ्च् Kâth. 19,8. 26,9.

यद्र्यञ्च् s. यद्रियञ्च्.

यद्वत् (von यद्) adv. *wie* (rel.; es entsprechen तद्वत् und एवम्) MBh. 7,3941. Spr. 362. 1937. 2140. 2465. 3512. 3986. Varâh. Bṛh. S. 75,2. Kathâs. 45,56. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. 38. Bhâg. P. 1,15,25. 7,8,26. Mârk. P. 11,6. Pañkat. II,62. Nach H. an. 7,25 und Med. avj. 31 प्रश्ने und वितर्के.

यद्वद (यद् + वद) adj. *in's Blaue schwatzend, Ungereimtes redend* H. 347. Halâj. 2,222.

यद्वा f. = बुद्धि ÇKDr. nach Uṇâdivṛtti im Saṁkshiptas.

यद्वाहिष्ठीय (von यद्वाहिष्ठम्, womit Ṛv. 5,25,7 beginnt) n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 15,5,25. Lâṭj. 6,1,3. अग्नेर्यद्वाहिष्ठीयम् Ind. St. 3,201,a. यद्वाहिष्ठीयोत्तरम् 230,a.

यद्विध (यद् + विधा) adj. *qualis* (rel.) R. 2,87,14.

यद्वृत्त (यद् + वृत्त) n. 1) *Begebenheit, Ereigniss, Erlebniss, Abenteuer* (vgl. यथावृत्त) Hariv. 1181. R. 1,51,6. Kathâs. 5,108. — 2) *eine Form von* 1. य VS. Prât. 6,14. P. 8,1,66.

यन्त् (partic. praes. von 3. इ) adj. *laufend:* अब्दे यति *im laufenden Jahre, heuer* AK. 3,5,20.

यन्तृ (von यम्) nom. ag. 1) *Lenker* (der Rosse, des Wagens): अश्वस्य Ṛv. 1,162,19. 10,22,5. Kâtj. Çr. 15,6,29. 27 (सयन्तृक). *Wagenlenker* AK. 2,8,2,27. 3,4,14,62. H. 760. an. 2,188. Med. t. 47. MBh. 3,761. 2825. 4,1172. 1183. 7,6383 (सु° adj.). Hariv. 6575. R. 6,69,40. fg. 7,7,29. Spr. 2453. 3746. 3823. Ragh. 1,54. 12,103. Bhâg. P. 8,11,17. Brahma-P. in LA. (II) 52,12. *Elephantentreiber* AK. 3,4,14,62. H. 762. H. an. Med. Spr. 5143. Ragh. 4,39. 7,34. Kathâs. 115,65. *Lenker, Regierer:* अग्नेः (der Wind) Hariv. 2480. धीनाम् Ṛv. 3,3,8. 13,3. 2,23,19. यन्तारो ये मघवानो जनानाम् 7,16,7. — 2) *befestigend, aufrichtend:* उरु यन्तासि वरूथम् Ṛv. 8,68,3. AV. 6,81,1. VS. 9,22. 30. 18,7. 37. 22,3. TS. 2,2,12,4. यन्त्री f. VS. 14,22; vgl. VS. Prât. 2,37. — 3) *gebend:* स यन्ता शश्वतीरिषः Ṛv. 1,27,7. यन्ता वसूनि 10,46,1. — यन्तारः wird Naigh. 3,19 unter den याच्ञाकर्माणः aufgeführt.

यन्तव्य (wie eben) adj. *zu lenken, im Zaum zu halten:* प्रजाः (राज्ञा) MBh. 12,3446.

यन्ति f. nom. act. von यम् P. 6,4,39, Sch.

यन्तुर m. Bez. des Agni Ṛv. 3,27,11. 8,19,2. scheint eine Nebenform von यन्तृ zu sein, = नियन्तृ Sâj.

यन्त्र (von यम्) Uṇâdis. 4,166. n. (scheinbar f. MBh. 6,2659, wo aber mit der ed. Bomb. सोत्तरबन्धुरेषं यत्तं zu lesen ist) Siddh. K. 249,b,2. 1) *Mittel zum Halten, Stütze, Befestigung; Schranke:* सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णात् Ṛv. 1,149,1. तन्वः VS. 4,18. यन्तुर्यन्त्रेणा 18,37 (st. dessen यन्त्रिय 9,30). युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससः *Mittel zu halten* Ṛv. 1,34,1. विशः TS. 1,1,11,2. वातानाम्, ऋतूनाम् u. s. w. 6,1,2. TBr. 3,7,6,7. चक्षुषी यन्त्र धर्मस्य यन्त्रं वै (यन्त्रवै ed. Bomb., in der Bed. eines infin. = यन्त्रणार्थम् Nīlak.) MBh. 5,3764. दश° *mit zehn Bändern* oder *Streifen versehen:* सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम् Ṛv. 6,44,24. *zehnfach eingespannt:* अद्रयः 10,94,8. *Stränge am Wagen* u. s. w. M. 8,292. MBh. 7,3204. 6383. — 2) *Werkzeug zum Halten,* so heissen in der Chirurgie *alle stumpfen Instrumente,* wie *Zangen, Haken, Röhren* und dergl. im Gegensatz zu den *Messern* (शस्त्र); die Lehre davon यन्त्रविधि Suçr. 1,23,12. fgg. °कर्मन् 25,15. 100,17. 358,19. 359,5. 2,16,7. 343,4. Vâgbh. 25,1. fgg. Verz. d. Oxf. H. 305,a,9. fg. 311,b,18. 321,b,1 v. u. *Zange, Zwinge* u. s. w.: सोऽप्येव यन्त्रपीडाभिः पीड्यते यमकिंकरैः Mârk. P. 14,71. यन्त्रावपीडन 88. MBh. 1,1123. भुजयन्त्रनिपीडित R. 4,10,31. — 3) *eine zusammengesetzte* oder *künstliche Vorrichtung* überh., *Maschine* AK. 3,4,9,39. यन्त्रपूतं वारि Gṛhjas. 1,100. यन्त्रमुक्तं शरादिकम् Halâj. 2,308. 307. H. 774. Madhus. in Ind. St. 1,21,16. 18. MBh. 1,1498. 6954. 6978 (vgl. Jâǵn. 3,83). 3,905. 16128. 16352. 14,2246. Hariv. 2656. 4515. 12538. R. 2,80,2. R. Gorr. 2,101,39. 5,9,51. 6,38,35. 72,24. 7,23,5,8. यन्त्रेणेवेरितः शरः Kathâs. 18,92. यन्त्राणां धनुरेव (ist Çiva) MBh. 12,10404. कोदण्ड° Râ-

ǴA-TAR. 5,104. यन्त्रोत्क्षिप्तोपला इव R. 5,64,24. RÂǴA-TAR. 1,365. स्त्रिंस्रयन्त्रविधान JÂǴN. 3,240. ईश्वरः सर्वभूतानाम् भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया BHAG. 18,61. यन्त्रैरुद्घाटयामास (मञ्जूषाम्) MBH. 3,17158. H. 1006. यन्त्रमुक्त इव ध्वजः (vgl. ध्वजयन्त्र) MBH. 7,3332. R. GORR. 2,84,8. यन्त्रध्वज R. SCHL. 2,77,9. गृहयन्त्रपताका KUMÂRAS. 6,41. °दृढ कपाट so v. a. Schloss MṚKKH. 48,5. नावं यन्त्रयुक्ताम् mit Rudern, Segeln u. s. w. MBH. 1,5639. कूप° Brunnenrad RÂǴA-TAR. 1,284. कूपयन्त्रघटिका MṚKKH. 178, 7. MÂRK. P. 39,43. यन्त्रैश्च परिपूर्णानि (दुर्गाणि) MBH. 2,170. 1,5003. 3, 640. 12,2640. M. 7,75. HARIV. 8936. R. 1,5,17. R. GORR. 2,87,22. 109, 52. 4,33,5. 5,9,19. 72,8. 13. fg. Spr. 4194. KÂM. NITIS. 4,60. 13,65. अश्मयन्त्राणि HARIV. 5008. गरुड° ein künstlicher Garuḍa, der sich bewegt, PAÑḰAT. ed. orn. 52,18. यन्त्रगरुड dass. 53,14. °हंस KATHÂS. 43, 33. °हस्तिन् 12,4. °विमान ein Wagen, der von selbst geht, 43,134. 38. °विमानक 201. मायायन्त्ररथ 79,16. स्त्री° die Kunstpuppe Weib Spr. 392. — SÛRJAS. 13,19. 20. 23. VARÂH. BṚH. S. 43,29. 58. KATHÂS. 29,42. fgg. 49. 63. 30,19. 35. 31,5. 43,14. 26. 60,28. 61,104. RÂǴA-TAR. 3,350. 454. PAÑḰAT. ed. orn. 3,6. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 363,14. मोच्यन्तां यन्त्रमार्गाः PRAB. 26,6. महा° M. 11,63. MBH. 5,5184. — 4) Amulet, ein dazu dienendes Diagramm WILSON, Sel. Works 2,33. WEBER, RÂMAT. UP. 288. 320. 329. KATHÂS. 22,12. PAÑḰAR. 1,1,76. Verz. d. Oxf. H. 94,a,17. b,8. fgg. 15. 95, b,40. 98 b,12. 100,a,20. 102,a,32. 105,b,23. 106,a,38. — Nach H. an. 2,448 hat यन्त्र die Bedd. देवाद्यधिष्ठान, पात्रभेद und नियन्त्रण. — Vgl. अ°, कूट°, कोश°, गृह°, गोल° (auch SÛRJAS. 13,17), घटि° (u. घटिक 2) a), घटी°, जल°, ताल°, तैल°, तोय°, दारु°, द्वार°, धारण°, धारा°, ध्वज°, नर°, नाडी°, नित्यपूजा°, पद्म°, मल्ल°, मेरु°, वारि°, श्लोक°, सूत्र°.

यन्त्रक (von यन्त्र und यन्त्रय्) 1) m. a) Bändiger, f. यन्त्रिका PAÑḰAV. BR. 16,1,7. — 2) m. Maschinist R. 2,80,1 (87,1 GORR.). — 3) f. यन्त्रिका schlechte Lesart für यन्त्रणी H. 555. — 4) n. a) Bandage SUÇR. 2,23,11. — b) Drechselrad H. 909. — Vgl. जल°.

यन्त्रकरण्डिका (यन्त्र + क°) f. Zauberkorb KATHÂS. 29,21.

यन्त्रकर्मकृत् (य° - कर्मन् + कृत्) m. Maschinist R. GORR. 2,90,12.

यन्त्रगृह (य° + गृह) n. Oelmühle H. 997.

यन्त्रगोल (य° + गोल) m. eine Art Erbsen ÇABDAK. im ÇKDR.

यन्त्रचेष्टित (य° + चे°) n. Zauberwerk KATHÂS. 29,41.

यन्त्रण (von यन्त्रय्) 1) n. das Anlegen eines Verbandes SUÇR. 1,66,5. °शाटक 358,15. °विधि 20. f. आ dass. 67,21. अयन्त्रणा 2,229,6. यन्त्रण n. = बन्धन H. an. 3,220. MED. ṇ. 72. — 2) n. Beschränkung: आहार° SUÇR. 2,447,1 (°यन्त्रणात् zu lesen). f. आ Zwang R. GORR. 1,1,79. बलवती DAÇAK. in BENF. Chr. 185,5. विगतयन्त्रणार्गल KATHÂS. 47,120. in comp. mit dem, woher der Zwang, die Gêne herrührt: महत्या रुद्रवादियन्त्रणया (so ist zu lesen, wie schon BENFEY bemerkt hat) Ind. St. 3, 372,4 v. u. ह्री° RAGH. 7,20 (= KUMÂRAS. 7,75). SÂH. D. 40,10. उपचार° MÂLAV. 46,3. स्नानादि° KATHÂS. 27,19. प्रादुर्भवद्यन्त्रणा Spr. 5146. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): निविडपीनकुचद्वययन्त्रणा NAISH. 4,10. कृतयन्त्रणाः (स्त्रियः) sich Zwang anlegend KATHÂS. 61,294. त्वं मे मित्रं त्यक्तयन्त्रणम् der sich keinen Zwang anzulegen braucht 49,15. कथालापानयन्त्रणान् ungezwungen 54,81. यन्त्रणा n. = नियम, नियमन H. an. MED. यन्त्रणा = नियम TRIK. 3,3,299. — 3) n. das Schützen, Hüten (त्राण, रक्षण) H. an. MED. — 4) f. यन्त्रणी der Frau jüngere Schwester H. 555. — Vgl. जठरयन्त्रणा, निर्यन्त्रण, मुखयन्त्रणा.

यन्त्रतक्षन् (य° + त°) m. Maschinenbauer, Verfertiger von Zauberwerken KATHÂS. 43,223.

यन्त्रधारागृह n. = धारागृह eine Badstube mit Wasserwerk; davon nom. abstr. °त्व n. MEGH. 62.

यन्त्रपुत्रक (य° + पु°) m. Gliederpuppe RÂǴA-TAR. 6,160. °पुत्रिका f. KATHÂS. 29,1. 18.

यन्त्रपेषणी (य° + पे°) f. Handmühle ǴAṬÂDH. im ÇKDR.

यन्त्रप्रकाश (य° + प्र°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 276,a,21.

यन्त्रप्रवाह (य° + प्र°) m. ein künstlicher Wasserstrom, Wasserwerk RAGH. 16,49.

यन्त्रमय (von यन्त्र) adj. künstlich nachgebildet: मृग BHÂG. P. 6,12,10. गज KATHÂS. 12,5. 20. यत 29,38. जन 43,58. काष्ठ° aus Holz 10.

यन्त्रमातृका f. Bez. einer der 64 Kalâ Verz. d. Oxf. H. 217,a,16 (vgl. u. कला 11). Comm. zu BHÂG. P. 10,45,36 fasst यन्त्रमातृका धारणमातृका als eine Kalâ.

यन्त्रमार्ग (य° + मार्ग) m. Wasserleitung PRAB. 26,6.

यन्त्रय् (von यन्त्र), यन्त्रयति DHÂTUP. 32,3 (संकोचने). in Binden —, Schienen u. s. w. legen SUÇR. 1,15,7. 358,8. 2,58,7. 343,14. सुयन्त्रित 20,6. 337, 10. यन्त्रित gebunden, gefesselt; in der Gewalt stehend von H. 438. an. 3,282. अयन्त्रितहृदया (राजधानी) R. 2,88,19. वृक्षमूले महानागो यथा पाशेन यन्त्रितः 4,10,22. बाणसहस्र° MBH. 8,4082. °सायक ein Selbstgeschoss befestigt habend (vgl. यन्त्रशर) KATHÂS. 61,101. शकुन्ता इव सूत्रयन्त्रिताः BHÂG. P. 5,17,23. वरुणपाश° 8,22,14. गावो यथा वै नसि दामयन्त्रिताः 4,11,27. यस्य वाचा प्रजाः सर्वा गावस्तन्त्येव यन्त्रिताः 3,15,8. यन्त्रितो नियमैरुग्रैः R. 7,3,11. आज्ञया यन्त्रितः प्रभोः KATHÂS. 72,335. BHÂG. P. 6,5,5. गौरवाद्यन्त्रितः 4,22,4. गौरवाद्यन्त्रितकथः R. GORR. 1,77,33. BHÂG. P. 10,29,23. पितृगौरव° MBH. 1,5420. 7,6490. R. 1,76,1. R. GORR. 2,75,19. 4,8,56. स्नेहकारुण्य° MBH. 3,33. पितृवचन° R. 1,40, 17. R. GORR. 1,22,6. 80,10. 2,15,36. 50,19. शाप° RAGH. 10,48. KATHÂS. 32,51. BHÂG. P. 4,20,16. 5,4,18. 6,1,26. 11,20. 7,2,52. 13,19. 9,7,14. 17,12. अ° ungebunden, frei, sich keinen Zwang anthuend KATHÂS. 66, 43. M. 2,118. सु° der sich Zügel anlegt, sich ganz in der Gewalt hat ebend. BHÂG. P. 7,12,3. 10,84,28. यन्त्रित der sich anspannt, — zusammennimmt, — eifrig bemüht: त्वत्कृते च वयं सर्वे यन्त्रिताः R. 7,9,9. परम° 1,77,23. सुयन्त्रितत्व n. das Festgebundensein PAÑḰAT. 146,25.

— उप, °यन्त्रिता M. 11,177 fehlerhaft für °मन्त्रिता.

— नि zügeln, im Zaum halten: निसर्गतरला नार्यः को नियन्त्रयितुं क्षमः Spr. 1621. नियन्त्रित gebunden, gefesselt UTTARARÂMAḰ. 82,9 (106, 1). पाश° PAÑḰAT. 142,13. Verz. d. Oxf. H. 91,a,2. eingedämmt RÂǴA-TAR. 5,103. beschränkt, abhängig von, in der Gewalt stehend von VEDÂNTAS. (Allah.) No. 74. SÂH. D. 25. RÂǴA-TAR. 4,54. ईर्ष्या° KATHÂS. 61, 167. शास्त्र° Spr. 129. अ° SÂH. D. 18,10. — Vgl. नियन्त्रण.

— सम् anhalten: संयन्त्रितो मया रथः ÇÂK. 100,21.

यन्त्रवत् (von यन्त्र) adj. mit einer künstlichen Vorrichtung versehen KÂM. NITIS. 16,13.

यन्त्रवे s. oben u. यन्त्र 1).

यन्त्रशर (य° + शर) m. *Selbstgeschoss* KATHÂS. 61,104.

यन्त्रसूत्र (य° + सूत्र) n. 1) *die Schnur einer Gliederpuppe* RÂGA-TAR. 5,223. — 2) *ein über* (Kriegs-) *Maschinen handelndes* Sûtra MBH. 2, 256. — Vgl. सूत्रयन्त्र.

यन्त्राकार (यन्त्र + आ°) Titel einer Schrift Ind. St. 2,252.

यन्त्रिन् (von यन्त्र und यन्त्रय्) 1) adj. *mit Geschirr versehen:* ein Ross KÂTJ. ÇR. 14,3,9. — 2) adj. *mit einem Amulet versehen* Verz. d. Oxf. H. 98, *b*, 23. — 3) nom. ag. *Peiniger, Quäler* R. 1,1,74. — 4) f. यन्त्रिणी = यन्त्रणी H. 555, Sch.

यन्त्रिय s. u. यन्त्र 1).

यन्त्रोद्धार (यन्त्र + उ°) m. Titel einer Schrift MACK. Coll. 1,137.

यन्त्रोपल (यन्त्र + उ°) pl. *Mühle* LA. (III) 91,19. यन्त्रोत्क्षिप्तोपलाः R. 5,64,24 sind *mit einer Schleuder geworfene Steine.*

यन्निमित्तम् (यद् + निमित्त) adv. *wessentwegen* (rel.), *in Folge wovon* R. 2,69,7. 97,23. Spr. 2400. MÂRK. P. 119,7.

यन्मंह्तिष्ठीय n. अग्नेर्यन्मंह्तिष्ठीयम् N. eines Sâman Ind. St. 3,201,*a*.

यन्मय (von यद्) adj. *aus welchem* (rel.) *hervorgegangen, — gebildet, — bestehend* u. s. w. BHÂG. P. 3,10,16. 7,14,34. 10,23,10. 47. MÂRK. P. 103,2. KÂVJÂD. 1,34.

यन्मात्र (यद् + मात्रा) adj. *welches* (rel.) *Maass habend, von welchem Umfange* u. s. w. MBH. 11,114. VARÂH. BṚH. S. 69,28.

यप्य (?) BHAR. NÂṬJAÇ. 20,22.

यभ्, यँभति DHÂTUP. 23,11. यप्स्यति (vgl. Kâr. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10); *futuere* (die entsprechende slavische Wurzel verzeichnet bei MIKLOSICH, Vgl. Gr. III, S. VIII und Wurzeln des Altslov. S. 15): यभ माम् spricht ein Weib AV. 20,136,11. न मा यभति कश्चन TS. 7,4,19,2. कं (= प्रजापतिं) जक्मुर्वीक्ष्य सुतां यभितुमुद्यतम् BHÂG. P. 10,85,47. Vgl. KÂVJÂD. 1,65 und याभ. — desid.: यियप्सत इव ते मनः ÇÂÑKH. ÇR. 16, 4,6. यियप्स्यमाना *quae futui cupit* 12,23,16.

— प्र *futuere:* प्रयप्स्यन्निव सक्थ्यौ TBR. 2,4,6,5. ÂÇV. ÇR. 2,10,14.

— प्रति dass.: प्रतियब्धुमुद्युक्तः Comm. zu TBR. 2,568,10.

यभन (von यभ्) n. *fututio* VOP. zu DHÂTUP. 23,11.

यभ्य (wie eben) adj. अँयभ्या *non futuenda* AV. 20,128,8. सुँयभ्या *bene futuenda* 9.

यम्, यँच्छति DHÂTUP. 23,15 (उपरमे). P. 7,3,77. fg. VOP. 8,70. यँच्छते, ved. यँमति, यमते, यमत्, यंसि, यमुस्; यन्धि (P. 6,4,103, Sch.), यन्त, यन्तम् 2. du.; यम्यास् 3. sg.; ययाम, येमुँस्, येमे, येमिरे, येमानँ; aor. अयंसीत् P. 7,2,73. ved. यँसत्, यँसन्, अयांसम्, अयान् 3. sg., अयांसि, अयंस्त, यंसि 1. sg., यंसते, अयंसत; यंस्यति (vgl. Kâr. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10); pass. यम्यते, अयामि; absol. यत्वा, °यत्य und °यम्य P. 6,4,37. fg.; infin. यँमम्, यँन्तवे, यँमितवै, यन्तुम्, यमितुम् (RÂGA-TAR. 1,251); partic. praet. pass. यत. 1) *halten, festhalten; tragen, sustentare:* स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ RV. 1, 59,1. 3,38,3. वयाम् 10,134,6. अत्यो न यंसद्यन्तभृद्धिचेताः 1,190,4. 119,5. सत्यं वा एतं यन्तमुर्कृति ÇAT. BR. 6,7,1,1. 1,1,2,16. तं बृहत्यास्तभ्नुवन्सायच्छन् PAÑKAV. BR. 25,10,11. KHÂND. UP. 8,3,5. med. *sich stützen auf, sustentari:* इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे RV. 8,3,6; vgl. 9,86,30. — 2) *erheben, schwingen* (in der Hand): वज्रम् RV. 1,52,8. वधम् 5,34,2. 10,49,3. आयुधैर्यच्छमानाः *mit den Waffen auslangend* 7,56,13. *in die Höhe treiben* (die andere Wagschale): यतरद्यंस्यति so v. a. *welches von beiden ziehen wird* ÇAT. BR. 11,2,7,33. साधुकृत्या कैवास्य यच्छति ebend. — 3) *aufrichten, errichten, über Jmd halten* (ein Obdach, einen Schirm u. s. w.): शर्म RV. 1,46,15. 4,25,4. 7,5,9. 101,2. AV. 1,26,3. छर्दिः RV. 4,53,1. 6,15,3. 46,9. सुतिनिम् 2,35,15. वरूथम् 7,30,4. 88,6. शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत् 1,114,5. स्वसराणि 3,60,6. *ausbreiten:* ज्योतिः 7,78,3. 79, 2. उरू णो यन्धि जीवसे 8,57,12. *aufstellen, zu Stande bringen:* ऋतम् 4,2,14. 23,10. 44,3. विदथानि 7,66,10. — 4) *zusammenhalten, cohibere; zügeln, bändigen; anhalten:* स सव्येन यमति व्राधतश्चित् RV. 1,100,9. यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवा इव 28,4. रश्मीरिव यो यमति जन्मनी 141,11. मुहूर्तमपि वार्ष्णेयो रश्मीन्यच्छतु वाजिनाम् *anziehen* MBH. 3, 2822. शकेम वाजिनो यमम् RV. 2,5,1. 1,73,10. क्रयान्येमे च रश्मिभिः MBH. 3,1732. 751. रथम् — यतं (यत्तं MBH. 3,12023) मातलिना *gelenkt* ARG. 4,32. चक्रं रथस्य RV. 5,73,3. दामभिर्यम्यमानेषु (दम्यमानेषु die neuere Ausg.) वत्सेषु तरुणेषु च HARIV. 4425. वृषा दशभिर्नामिभिर्यतः RV. 9,28,4. 107,16. 109,8. 18. 8,15,3. 24,22. रश्मिना वा अश्वो यतः TS. 5,4,12,3. ÇAT. BR. 7,2,1,10. अयंत 3,2,4,18. 13,3,3,5. *zurückhalten:* गा येमानं परि षन्तमद्रिम् RV. 4,1,15. 8,21,4. *an sich halten* (den Athem, die Stimme): प्राणम् AIT. BR. 2,21. वाचम् ebend. 23. 5,24. ÇAT. BR. 1,1,2,2. 4,8. 2,4,1,6. 3,2,1,36. PÂR. GṚHJ. 2,3. यच्छेद्वाङ्मनसी *zügeln* KAṬHOP. 3,13. नियच्छ यच्छ संयच्छ इन्द्रियाणि मनो गिरम् MBH. 12, 3894. मनो यच्छेत् BHÂG. P. 2,1,17. 20. कोपं यच्छत दीपितम् 6,4,11. मन्युम् 14. यतमन्यु 7,9,51. यतचित्तेन्द्रियानल 6,2,35. यतात्मासुमनोबुद्धि 10,12. दर्पक्रोधौ यतौ यस्य Spr. 5394. यतमानस MÂRK. P. 31,35. यतचित्तात्मन् BHAG. 4,21. यतमैथुन R. GORR. 1,44,11. यताहार (v. l. यथाहार ed. Bomb.) so v. a. *beschränkt, mässig, wenig* R. SCHL. 2,28,17. Vgl. यतगिर्, यतवाच्, यतात्मन्, वाग्यत. — 5) med. *stille halten, sich fügen, gehorchen, treu bleiben:* तुभ्यं हि पूर्वपीतये देवा देवाय येमिरे RV. 1,135, 1. मित्राय पञ्च येमिरे जनाः 3,59,8. 8,43,18. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे 78,2. 87,3. 9,86,30. *sich darbieten:* इन्द्राय गातुरुशतीव येमे 5,32,10. *Stand halten:* निःषक्ममाणो यमते नायते 1,127,3. — 6) med. *festhalten* so v. a. *Feuer fangen* (Comm.): निर्हितो यूपो यच्छते। रुद्रास्तर्ह्यग्निः TBR. 2, 1,10,1. — 7) *Jmd* (loc. oder dat.) *darreichen, darbieten, verleihen, gewähren, hergeben:* स नो यन्धि महीमिषम् RV. 4,32,7. रयिं यच्छतास्मासु 51,10. शं योः 12,5. अयं प्रक्रो अयामि ते 2,41,2. यज्ञं देवेषु 20. सुम्नम् 5,67,2. बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् 10,98,7. AV. 7,54,1. 10,5,37. TBR. 1,4,7,1. वर्णं मे यच्छ ÇÂÑKH. ÇR. 7,10,15. सोमो अध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत (pass.) RV. 1,135,6. सर्वं ह्यस्मा इदं श्रैष्ठ्याय यम्यते KAUSH. UP. 4,15. ज्ञात्यन्धाय — यच्छतीषु मनोहरं निजवपुः — पण्यस्त्रीषु Spr. 967. ब्राह्मणाः सिद्धमप्यर्थं कृच्छ्रेणापि न यच्छति 1996. PAÑKAT. IV, 27. अर्घम् VARÂH. BṚH. S. 12,11. अपः (die Wolken) 28,14. 43,13. फलम् 55,13. 88,28. पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति M. 2,55. BHÂG. P. 3,5,4. 24,22. 5,12,13. 6,14,20. 9,10,22. MÂRK. P. 18,52. अभयवाचम् HIT. 59,2 (प्रयच्छ ed. JOHNS.). मार्गार्हस्य च यो मार्गं न यच्छति (ददति ed. Calc.) so v. a. *aus dem Wege gehen* MBH. 13,6700. *hinstrecken:* यद्दतो यच्छसे *wenn du die Zähne zeigst* RV. 7,55,2. *Jmd beschenken mit* (instr.): स नः पूर्णेन यच्छतु AV. 7,17,1 (jedoch TS. v. l.). — 8) (*darbringend*) *erheben* (einen Ruf, Gesang u. s. w.): अयामि घोषः RV. 7,23,2. स्तोमः 64,5. य-

घ्कल्वर्कम् 39,7.

— caus. यमयति (nach Andern यामयति) DHÂTUP. 19,71. 32,81 (परिवेषणे und अपरिवेषणे). *in Schranken halten* ÇAT. BR. 14,1,2,4. 6,2,3. 8. RÂGA-TAR. 4,670. *in Ordnung bringen:* परिवृत्तं किरीटं तद्यमयन् (so die ed. Bomb.) MBH. 7,1269. मूर्धज्ञान्यमयस्व MBH. 9,1876. यमयन्मूर्धजान् 3585. बन्धे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः ÇÂK. 29. अयमितनख *nicht in Ordnung gehalten, vernachlässigt* MEGH. 89. *einhalten* (die Stimme) LÂTY. 5,5,5. 12,5.

— intens. यंयम्यते, यंयमीति P. 7,4,85, Vârtt. Schol. zu 83.

— अधि 1) *aufrichten, ausbreiten über:* या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि RV. 1,85,12. — 2) *erheben zu:* देवेषु मे अधि कामा अयंसत (pass.) RV. 10,64,2.

— अनु *lenken, richten:* मनः पश्चादनु यच्छति रश्मयः RV. 6,75,6. ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना 1,123,13. सीतां पूषानु यच्छतु 4,57,7. मर्तमनुयतं वधस्नैः *auf welchen die Geschosse gezückt sind* 5,41,13. प्रत्ना तं इन्द्र श्रुत्यानु येमुः etwa *anordnen, aneinanderreihen* 6,21,6. med. *sich richten nach, nachfolgen:* पितॄणां शक्तीरनुयच्छमानाः 1,109,3. अनु कृष्णे वसुधिती येमाते 4,48,3.

— अन्तर् *anhalten, Einhalt thun; drinnen halten:* अन्तर्यच्छ जिघांसतो वज्रम् RV. 10,102,3. अन्तर्यच्छ मघवन्पाहि सोमम् VS. 7,4. TS. 2,2,12,4. अन्तर्यच्छतु मे मनः ÂÇV. GṚHY. 3,6,8.

— आ 1) *anspannen, aufziehen* (ein Gewebe u. dgl.), *dehnen, ziehen* (eine Linie u. s. w.), *verlängern* RV. 10,130,1. दुन्दुभिम् AV. 6,38,4. वाह्य 65,1. 137,3. 9,3,3. मेखलाम् KÂTH. 24,9. die Zügel LÂTY. 2,8,12. KÂTY. ÇR. 8,3,12. 16,8,7. fgg. — SUÇR. 1,286,19. पदशिर आयच्छति *ausstrecken* VOP. 23,19. आयच्छति कूपाद्रज्जुम् *hinaufziehen* P. 1,3,28, Sch. (Bogen und Pfeil) *spannen und anlegen, zielen:* आयच्छतः AV. 6,66,2. प्रतिहितामायताम् (इषुम्) 11,1,1. KÂTH. 34,18. यथेषुरायतानस्ता ÇAT. BR. 3,7,2,2. MUṆḌ. UP. 2,2,3. धनुरायम्य MBH. 1,148. 6460. 7040. 3,8665. R. 1,66,9. 3,50,9. आयतमुक्तेन शरेण so v. a. *von einem gespannten Bogen abgeschossen* R. 5,31,30. शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैः 7,7,7. HARIV. 13413. तां तु शक्तिम् — दोर्भ्यामायम्य — चिक्षेप so v. a. *ausholend* MBH. 7,4028. बाणामुद्यतमायंसीत् so v. a. *zog zurück* (उपसंहृतवान्, संहृतवान् Comm.) BHAṬṬ. 6,119. *hinziehen,* den Ton SHAḌV. BR. 2,2. *anhalten,* den Athem GOBH. 4,5,5. KAUÇ. 47. M. 3,217. 11,149. JÂGN. 1,24. BHÂG. P. 3,14,31. *zügeln:* आत्मनात्मानम् 10,49,25. med. *eingespannt sein* (am Wagen) RV. 3,6,8. *sich strecken* P. 1,3,28. VOP. 23,17. Spr. 3759. *ausstrecken* (ein Glied des eigenen Körpers) P. 1,3,28, Vârtt. VOP. 23,17. आयच्छते पाणिम् P., Sch. पश्चाडुच्चैर्भवति हरिणः स्वाङ्गमायच्छमानः ad ÇÂK. 78. पदान्यायच्छते *macht grosse Schritte* Spr. 3762. वस्त्रमायच्छते wohl *lang herabhängen lassen* P. 1,3,75, Sch. *ausbreiten, an den Tag legen* (सूचने) VOP. 23,19. दिव्यनारीभिः — श्रियमायच्छमानाभिः — अनुत्तमाम् BHAṬṬ. 8,46. = स्वीकुर्वाणाभिः Comm. दक्षिणापूर्वायतां कर्षूं खात्वा *nach Südost gezogen, — sich ausdehnend* KÂTY. ÇR. 25,8,3. वेदिं विदध्यात्प्रागुदीचीं प्रागायताम् KAUÇ. 137. उदगायता, प्रागायता (लेखा) ÂÇV. GṚHY. 1,3,1. BHÂG. P. 5,16,8. सव्यायतं कृत्वा वेषं विपरिवर्त्य च *nach links geschoben* (NÎLAK. trennt स व्या° und erklärt व्यायतं व्यापारं यत्नं कृत्वा) MBH. 4,809. आयत *gestreckt, gedehnt, lang* AK. 3,2,18. H. 784. 1428. HALÂY. 4,66. आयतलोचना MBH. 3,2217. 2388. 2466. 2674. 3000. R. 1,9,24. 2,24,29. 59,16. Spr. 568. 1231. BRAHMA-P. in LA. (II) 55,3. °पोत्रमण्डलैः RT. 1,17. — MBH. 1,1779. R. 1,5,7. 2,80,9. R. GORR. 2,8,42. 4,40,55. SUÇR. 1,15,10. 125,1. RAGH. 9,59. COLEBR. Alg. 74. Spr. 997. KÂM. NÎTIS. 16,4. 16. KATHÂS. 26,259. 54,32. BHÂG. P. 4,6,32. °चतुरस्र *länglich viereckig* ÂÇV. GṚHY. 2,8,10. COLEBR. Alg. 271. °समचतुरस्र 295. °दीर्घचतुरस्र, °समलम्ब 58. आयतार्ध 308. *lang* (in der Zeit) SUÇR. 1,242,7. 8. °क्लेश Spr. 4609. तृष्णा AK. 3,4,28,218. RAGH. 19,20. BHÂG. P. 2,7,33. मन्त्रं कुर्यादनायतम् KATHÂS. 34,199. अटवीवासवियोगविषमायतम् (वृत्तान्तम्) 103,129. आयतम् *angespannt* so v. a. *gewaltsam, plötzlich* ÇAT. BR. 14,7,1,15. — 2) *herbeiziehen, — bringen; hinbringen:* आ त्वा यच्छतु हरितो न सूर्यम् RV. 1,130,2. 8,4,2. आ ते वत्सो मनो यमत् 11,7. 21,4. 32,23. 34,2. 4,22,8. 32,15. 6,23,8. स नः सोमो देवेषा यमत् 9,44,5. अभिङ्क्त्वा यमत् 8,81,3. गीर्भिरायतम् *hingezogen zu, gerichtet auf* 7. — 3) so v. a. यम् 3): शर्मवदास्मा अयांसि (v. l. आयांसि) *ich habe mich wie ein Schirm vor ihn ausgebreitet, stehe wie ein Schild vor ihm* AIT. BR. 2,40. — 4) आयत m. v. l. für आयति *Zukunft* AK. 2,8,1,29. — Vgl. अनायत, आयति, आयत्तर् fgg., आयाम, कृत्स्नायत, पदायत, पदायता. — caus. 1) *hinbringen zu, versetzen in:* आ नः सुम्नेषु यामय (यमय Padap.) RV. 8,3,2. प्रिया देवेषा यामयति (यम° Padap.) 162,16. — 2) *strecken* SUÇR. 2,28,16. — 3) *entfalten, an den Tag legen:* घायामितमत्त्ववीर्य (नारायण) MBH. 12,2402. — 4) med. caus. zu आयच्छते P. 1,3,89. VOP. 23,58.

— अभ्या 1) *dehnen, hinziehen,* den Ton AIT. BR. 5,3. *ziehen,* beim Saugen: ऊधः KÂTH. 10,11. — 2) med. *anziehen, an sich nehmen:* अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व (*verleihe* Comm.) VS. 3,38. — 3) *zielen auf:* मा न इन्द्राभ्याऽऽदिशः सूरो अक्तुष्वा यमन् RV. 8,81,31. तमभ्यायत्याविध्यत् *er zielte auf ihn und traf* AIT. BR. 3,33. ÇAT. BR. 1,7,4,1. 4,3,3,3,4,10. — 4) verwechselt mit अभ्यागम् in der Stelle: स प्रजापतिं पितरमभ्यायच्छत् (= प्रत्यागतवान् Comm.) तमब्रवीत् कथा माभ्यायच्छसीति ÇÂṄKH. BR. 6,2. — Vgl. अभ्यायंसेन्य.

— उदा 1) *herausheben, — holen:* सूर्यस्त्वा मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः AV. 5,30,15. — 2) med. in der Bed. von ग्रन्थन P. 1,2,15, Sch.

— उपा *zeigen, an den Tag legen:* नोपायंसे (oder zu उप) भयम् BHAṬṬ. 7,101.

— निरा 1) *ausstrecken:* निरायतपूर्वकाय ÇÂK. 8. — 2) *herauskriegen:* निरायत्यास्य शिश्नम् ÇAT. BR. 13,5,2,2. AV. 20,133,3.

— पर्या, पर्यायत (= परि + आ°) adj. *überaus lang* R. 5,28,14.

— व्या 1) act. *auseinanderziehen, — zerren:* चर्म LÂṬY. 4,3,7. med. *sich um Etwas* (loc.) *zerren, — abmühen, — streiten, kämpfen* TBR. 1,2,6,6. चर्मकर्ते व्यायच्छेते 7.5,6,3. 2,1,6,2. TS. 3,1,2,2. राष्ट्रे व्यायच्छन्ते ये संग्रामं संयन्ति 4,8,3. 7,5,9,3. 1,5,5. ÇAT. BR. 13,1,6,3. KÂTY. ÇR. 13,3,7. MBH. 1,7015. इदं श्रेयः परमं मन्यमाना व्यायच्छन्ते मुनयः 3,12740. 5,825. अन्योऽन्यस्पर्धया — व्यायच्छन्त महारथाः 6,1661. व्यायच्छमानं गदया दिक्षु सर्वासु 6,2773. 16,90. R. 6,91,23. Spr. 3058. BHAṬṬ. 6,119. SADDH. P. 4,27, *a. b* (°यमित्वा). auch act. MBH. 4,1960 (wo mit der ed. Bomb. व्यायच्छतस्तव zu lesen ist). HARIV. 5112. वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धनम् (so ist zu lesen) MṚKKH. 102,7. स्त्रीषु व्यायच्छतः *schäkern* SUÇR. 1,328,7. — 2) व्यायत *a) auseinandergerissen, getrennt:*

अ° RV. Prât. 14, 19. = अपृथग्भूत Comm. — b) lang AK. 3, 2, 62. H. an. 3, 294. Med. t. 151. युगव्यायतबाहु Ragh. 3, 34. वातव्यायतपातिनः (तुरगाः) *weit laufend* Spr. 5155. °पातम् adv. Kumâras. 5, 54. गदाव्यायतसंप्रहारी *aus der Entfernung kämpfend* Ragh. 7, 49. — c) *kräftig*, von Personen R. 1, 67, 4 (69, 4 Gorr.). Kâm. Nîtis. 18, 31. व्यायतत्व (गात्रस्य) Çâk. 37. व्यायत = दृढ Trik. 3, 3, 186. H. an. Med. = अतिशय *über das gewöhnliche Maass hinausgehend, gesteigert* H. an. Med. व्यायतोद्यम Hariv. 4211. व्यायतम् *überaus, in hohem Grade* R. 5, 5, 27. — d) = व्यापृत *beschäftigt* H. an. Med. — Vgl. व्यायाम. — caus. *sich abmühen:* व्यायाम्य (व्यायम्य?) M. 7, 216.

— समा *anziehen* (die Stränge): उग्रा इ॑व प्र॒वह॑न्तः स॒मायमुः॑ RV. 10, 94, 6. *zusammenziehen:* संतरां मेखलां समायच्छते TS. 6, 2, 2, 7. तमयतीव वा एनमेतत्समायच्छन् Çat. Br. 3, 3, 2, 19. समायत in der Stelle द्विपोत्तमसमायताः MBh. 1, 2164 ist wohl in सम + आ° *gleich lang, so lang wie* zu zerlegen.

— अभिसमा *befestigen an:* यथा शालायै पक्षसी मध्यमं वंशमभि समायच्छन्ति TBr. 1, 2, 3, 1.

— उद् 1) *erheben, in die Höhe strecken* (die Arme, Waffen u. s. w.) RV. 5, 32, 7. 6, 71, 1. 5. AV. 4, 24, 6. 12, 3, 18. वज्रमसुरेभ्य उदयच्छत् Ait. Br. 2, 31. 4, 2. 18. 2, 1. वज्रमुद्यन्तं नाशक्नोत् TS. 2, 4, 12, 2. Kâth. 36, 8. Çat. Br. 1, 1, 4, 17. Bhâg. P. 8, 11, 2. 27. परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् M. 4, 164. 8, 280. दण्डकाष्ठमुद्यम्य Çâk. 81, 15. धनुरुद्यम्य Bhag. 1, 20. R. Gorr. 1, 29, 5. 68, 17. 69, 8. चक्रम् MBh. 1, 8325. खड्गम् Spr. 1348. Prab. 55, 8. असिम् Bhaṭṭ. 4, 31. महाशक्तिम् 17, 92. लगुडम् Pańkat. 249, 7. वृक्षम् R. 4, 9, 26. स्फ्यम् Çat. Br. 1, 2, 5, 20. स्रुवम् R. 1, 60, 12 (62, 12 Gorr.). जलभाजनम् 3, 4, 49. पार्ष्णीः Lâṭy. 1, 9, 11. 10, 15, 15. बाहू, बाहून् R. 1, 28, 12. 2, 47, 12. Çâk. 7, 7. भुजौ, भुजम् R. 2, 42, 30 (41, 26 Gorr.). 50, 4. Râǵa-Tar. 4, 296. हस्तम् Çâk. 6, 18. पाणिम् M. 8, 2. 280. दक्षिणं दोः Ragh. 15, 23. लाङ्गूलम् Bhâg. P. 4, 16, 23. med. (कर्त्रभिप्राये क्रियाफले) P. 1, 3, 75. Vop. 23, 58. भारमुद्यच्छते P., Sch. उद्यत *erhoben* AK. 3, 2, 39. वज्र Kaṭhop. 6, 2. शस्त्र M. 5, 98. Spr. 467. ब्रह्मदण्डः करोद्यतः R. 1, 56, 19. °दण्ड M. 7, 102. fg. Daçak. in Benf. Chr. 193, 16. उद्यतास्त्र MBh. 7, 8210 (नद्युद्यतास्त्रं ed. Bomb. st. न सूद्यतास्त्रं der ed. Calc.). R. 1, 56, 5. उद्यतायुध MBh. 3, 15777. R. 2, 97, 21. Kathâs. 29, 117. 52, 119. उद्यतायुधनिस्त्रिंश Hariv. 12572. देवान्प्रत्युद्यतायुधाः Bhâg. P. 8, 10, 3. उद्यतासि 1, 17, 35. Kathâs. 25, 107. °गद 50, 82. उद्यतेषु MBh. 5, 5942. 7077. 7359. उद्यतैकभुजयष्टि Ragh. 11, 17. उद्यताञ्जलि R. 2, 13, 14. 3, 44, 9. Bhâg. P. 3, 14, 1. प्रोत्तुङ्गपीनस्तनद्वंद्वेनोद्यतचक्रवाकमिथुना (नदी) Spr. 477. Häufig ist उद्यत im comp. verstellt: दीप्तप्रहरणोद्यत (सैन्य) = उद्यतदीप्तप्रहरण Hariv. 10485. दैत्यैः सर्वायुधोद्यतैः 12573. R. 7, 27, 35. 28, 34. नानायुधोद्यत Kathâs. 46, 199. युद्धं नानाप्रहरणोद्यतम् R. 7, 27, 26. शङ्खचक्रोद्यतकर so v. a. *eine Muschel und einen Discus in der Hand haltend* Hariv. 12570. 5814. 10804. नानायुधोद्यतकर 13111. नानाशस्त्रोद्यतकर 11009 (S. 790). पाशोद्यतकर 14293. पद्मोद्यतकर 14028. अर्घोद्यतकर 6300. वज्रोद्यतकर Çaṅk. zu Kaṭhop. 6, 2. विविधोद्यतायुध = उद्यतविविधायुध Bhâg. P. 4, 5, 3. Vgl. अस्त्युद्यत, पाशगृहीतहस्त Hariv. 12744 und मांसपिण्डगृहीतवदना Pańkat. 226, 20. — 2) *aufrichten, aufstellen; erhöhen, höherlegen; hinaufbringen:* छ॒र्दिः RV. 4, 53, 1. ज्ञालदण्डम् AV. 8, 8, 12. स प्र यज्ञुरर्वीनात्प्र साम तमृगुदयच्छत् TS. 6, 1, 2, 4. रथमाग्नीध्रमुद्यच्छन्ति Çat. Br. 5, 4, 3, 6. 9. *durch eine Unterlage erhöhen und stützen*, von den Vorgängen des Heraufhebens auf dem Opferheerde, namentlich dem Anbringen der sog. उपयमनी (s. u. d. W.) und dgl. TBr. 1, 2, 1, 21. 3, 8, 11, 1. TS. 5, 1, 10, 5. Çâṅkh. Çr. 5, 10, 12. इध्मम् Çat. Br. 3, 5, 2, 2. 4, 6, 8, 7. 11, 6, 2, 4. 14, 9, 3, 10. Kâty. Çr. 12, 2, 1. 18, 3, 16. पश्चादुद्यततर *hinten höher* Kauç. 137. — 3) *Jmd Etwas hinhalten, antragen, darbieten, anbieten:* उद्यम्य MBh. 1, 1053. Bhâg. P. 10, 56, 43. Mârk. P. 16, 77. उद्यत *dargeboten, angeboten* MBh. 1, 1054. 1853. R. 1, 52, 14 (53, 14 Gorr.). 73, 28. R. Gorr. 1, 15, 14. 30, 8. 10. 3, 63, 18. 4, 9, 3. Spr. 3788. Bhâg. P. 3, 22, 13. ततो ऽहं तत्र रामाय पित्रा — भार्यार्थमुद्यता दातुम् R. 3, 4, 49. — 4) *Opfergaben, Anrufungen u. s. w. erheben, darbringen:* घृताचीः RV. 7, 43, 2. 10, 8, 2. AV. 5, 11, 9. ब्रह्म RV. 1, 80, 9. हव्यानि 8, 63, 3. 6, 68, 1. 9, 86, 46. 10, 50, 6. सवनम् TS. 6, 5, 3, 2. — 5) die Stimme *erheben* RV. 8, 90, 7. *in die Höhe tragen, hinaufbefördern:* (अग्निः) उदु नो यंसते धियम् 1, 143, 7. *erheben* so v. a. *aufgehen lassen* (Strahlen, Licht): उदु ष्य शरणे दिवो ज्योतिरयंस्त सूर्यः 8, 25, 19. 7, 38, 1. 10, 139, 1. — 6) *Etwas* (acc.) *auf sich nehmen, sich aufladen, unternehmen, beginnen:* वोढव्यो भवता चैष (चैव ed. Bomb. und Gorr.) भारो यज्ञार्थमुद्यतः (यज्ञस्य चोद्यतः ed. Bomb.) R. 1, 12, 4 (13, 4 ed. Bomb.). 2, 22, 4. अभिषेके नृपोद्यते 26, 22. कार्यं हि महदुद्यतम् R. Gorr. 1, 10, 22. उद्यच्छति वेदम् *er macht sich an das Studium des* Veda P. 1, 3, 75, Sch. Vop. 23, 58. med. intrans. *sich anschicken, sich rüsten, an Etwas gehen:* उद्यच्छमाना गमनाय Ragh. 16, 29. नित्यमुद्यच्छमानाभिः स्मरसंभोगकर्मसु Bhaṭṭ. 8, 47. auch act.: स्वर्गार्थं नोद्यमिष्यन्ति दृष्ट्वा स्वर्गफलं नितिौ *werden sich nicht bemühen um* Hariv. 7271. त्यक्त्वा भयं विषादं च उद्यच्छेद्बुद्धिमान्नरः *gehe an's Werk* Verz. d. Oxf. H. 51, b, 38. उद्यम्योद्यम्य (उद्दम्योद्दम्य ed. Calc., उद्यम्य = उत्प्लुत्य Nîlak.) मे दम्यौ विषमेणेव गच्छतः so v. a. *mit der grössten Anstrengung* MBh. 12, 6596. उद्यत (वर्तमाने) Kâr. zu P. 3, 2, 188. *sich anschickend, gerüstet zu, im Begriff stehend zu, begriffen in, bedacht auf, entschlossen zu, bereit zu, beschäftigt mit, sich befleissigend;* die Ergänzung a) im infin. Bhag. 1, 45. MBh. 1, 1274. 5, 3848. R. Gorr. 2, 27, 7. 3, 56, 24. 4, 17, 37. Mâlav. 10, 19. Ragh. 3, 48. 9, 29. 11, 74. Spr. 4689. Kathâs. 3, 40. 12, 139. 20, 158. 24, 147. 60, 171. fg. Râǵa-Tar. 1, 61. 290. 3, 180. 333. 4, 593. 5, 246. 429. 6, 201. Prab. 10, 7. Bhâg. P. 4, 17, 31. Mârk. P. 15, 47. Pańkar. 1, 3, 58. 5, 32. Pańkat. 108, 10. Hit. 19, 4. 81, 4. — b) im dat.: तस्यैव त्वमनर्थाय किमर्थं चैवमुद्यता R. Gorr. 2, 9, 39. युद्धाय 3, 30, 9. अग्निप्रवेशाय Kathâs. 92, 70. क्षितितलोद्धरणाय Bhâg. P. 2, 7, 1. मृतये 4, 4, 30. सत्त्वहिताय Praçnottaram. 2 (Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 98). स्वपरहितायोद्यतं जन्म 5. — c) im loc.: सर्वास्त्रेषु MBh. 1, 4405. कर्मसु AK. 3, 1, 18. H. 353. आयकर्मान्तव्ययकर्मसु Jâǵń. 1, 321. क्रूरकर्मणि Suçr. 1, 106, 1. सर्गकर्मणि Bhâg. P. 6, 4, 49. ज्ञानतत्त्वार्थवेदने R. Gorr. 1, 80, 16. — d) mit अर्थम् verbunden: राज्यप्राप्त्यर्थम् R. Gorr. 2, 18, 11. Râǵa-Tar. 2, 17. पुत्रदारार्थम् Spr. 4748. — e) im comp. vorangehend: त्रिविक्रमोद्यत Kumâras. 6, 71. पक्षच्छेदोद्यत Ragh. 4, 40. सुरकार्योद्यत 10, 50. निदेशकरणोद्यत 11, 4. Spr. 794. 2954, v. l. Kathâs. 4, 63. 19, 5. 56. 28, 70. 161. 47, 92. Râǵa-Tar. 1, 139. 3, 92. 393. 5, 237. 6, 237. Mârk. P. 64, 12. H.

372. — Ohne Ergänzung *frisch an's Werk gehend, ganz bei einer Sache seiend, Etwas angelegentlich betreibend, gerüstet, zu handeln bereit:* कलिनापहृतज्ञानो नलः प्रातिष्ठदुद्यतः MBh. 3,2357. Hariv. 11091 (S. 792). R. 2,27,15. R. Gorr. 1,65,21. 2,16,22. Spr. 471, v. l. Kathâs. 12, 39. 45,29. Râǵa-Tar. 3,11. Bhâg. P. 3,3,15. 23,3. — 7) *aufrütteln, aufschütteln; auftreiben:* प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत R̥V. 10, 119,2. ब्राह्मणास्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे 1,10,1. अत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः 56,1. AV. 14,1,59. — 8) *zügeln, lenken:* उद्यम्य हयान् MBh. 5,7235. उद्यम्यात्मानमात्मना 3,302. = उत्क्षिप्य देहम् Nîlak. — 9) *droben halten, aufhalten:* वृष्टिम् TBr. 3,3,1,3. TS. 6,3,4,6. — 10) verwechselt mit उद्गम् (vgl. u. अभ्युद्, प्रत्युद्, समुद्, उप und नि): एष लोकविनाशाय रविरुद्यन्तुमुद्यतः (lies उद्गन्तुमु°) MBh. 1,1274. उद्यच्छन्तं (d. i. उद्गच्छन्तं) पूर्णचन्द्रम् (उद्यतं पूर्णचन्द्रं सा die neuere Ausg.) Hariv. 8719. उद्यतक्रुध् d. i. उद्गतक्रुध् Râǵa-Tar. 4,380. — Vgl. उद्यति, उद्यन्तर् fgg. und उद्याम. — intens. *ausstrecken:* उद्यंयमीति सवितेव बाहू R̥V. 1,95,7.

— अभ्युद्, partic. अभ्युद्यत 1) *erhoben:* चक्र Hariv. 10804. °बाहुदण्डाः 12744. अभ्युद्यतायुध R. 6,36,104. शस्त्र Mr̥ćch. 171,21. °स्रुव R. Gorr. 2,83,33. कराः *Hände* 3,77,23. प्रसादार्थं मया ते ऽयं शिरस्यभ्युद्यतो ऽञ्जलिः MBh. 1,4744. — 2) *dargeboten, angeboten* M. 4,247. fg. — 3) *im Begriff stehend zu, gerüstet, bereit, beschäftigt mit, begriffen in;* die Ergänzung im infin. Hariv. 14586. Kumâras. 3,70. Mâlav. 56. Varâh. Br̥h. S. 24,3. im dat.: दिनकररथमार्गविच्छित्तये 12,6. im loc.: कर्मसु M. 9,302. अभ्युद्यतो (अभ्युद्यातो ed. Calc.) रणे MBh. 6,5217. इहाभ्युद्यतमानसः *dessen Geist mit dem Hier beschäftigt ist, — sich hierher sehnt* R. 5,56,108. im comp. vorangehend: बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः Megh. 58. — 4) fehlerhaft für अभ्युद्गत (vgl. u. उद्, प्रत्युद्, समुद्, उप und नि): अभ्युद्यतः (अभिमुखमागत्य सत्कृतः Comm.) *ehrfurchtsvoll bewillkommnet* Bhâg. P. 10,63,52. प्रशमस्थितपूर्वपार्थिवं कुलमभ्युद्यतनूतनेश्वरम् (ऊर्जस्वल st. अभ्युद्यत ed. Calc.) *aufgetreten, erschienen* Ragh. 8,15. अभ्युद्यत = विजृम्भित Trik. 3,3,185.

— उपोद् *aufstellen* mittelst einer Unterlage oder dgl. Âçv. Çr. 5,6, 12. चमसान् 13. Çâñkh. Çr. 7,5,9.

— प्रोद् 1) *erheben:* प्रोदयंसीच्च मुद्गरम् Bhaṭṭ. 15,66. प्रोद्यतयष्टि Pańkat. 105,19. die Stimme *erheben:* प्र सोमाय वच उद्यतम् R̥V. 9,103,1. — 2) प्रोद्यत *im Begriff stehend zu* (infin.) Hariv. 7305. = उत्थित AK. 3,4,14,88.

— प्रत्युद् 1) *darbieten, anbieten:* प्रत्युद्यतार्हणा Bhâg. P. 1,10,36. — 2) *Jmd* (acc.) *das Gleichgewicht halten, aufwiegen:* तमेकादशिन्या पुरस्तात्प्रत्युद्यच्छति Pańkav. Br. 20,2,4. — 3) प्रत्युद्यत fehlerhaft fur प्रत्युद्गत (vgl. u. उद्, अभ्युद्, समुद्, उप und नि): पादुके शिरसि न्यस्य रामं प्रत्युद्यतो ऽग्रजम् Bhâg. P. 9,10,35. — Vgl. प्रत्युद्यम fgg. und प्रत्युद्यामिन्.

— समुद् 1) *erheben, aufheben:* समुद्यम्य करावुभौ MBh. 1,6278. 2, 2464. 3,15779. 4,148. 753. 10,624. R. 1,56,2. 2,73,14. 3,8,21. 4,13,2. 15,21. Mâlav. 57. Mârk. P. 77,27. 118,48. 133,20. — 2) *darbieten, anbieten* R. Gorr. 2,37,9. त्वया समुद्यतो दातुम् Mârk. P. 69,51. — 3) *sich zu Etwas* (acc.) *anschicken, beabsichtigen:* गिरं समुद्यतां (= उपस्थितां Nîlak.) मयोच्यमानां शृणु भूय एव च MBh. 3,16787. यस्ते समुद्यतः शापो द्वितीयः so v. a. *die zweite Verwünschung, welche ich auszusprechen beabsichtigte,* Mârk. P. 112,24. समुद्यत *im Begriff stehend, sich anschickend;* mit infin. R. 1,14,8. R. Gorr. 2,39,34. Kathâs. 65,152. Râǵa-Tar. 2,89. 97. 153. 3,50. Hit. 113,14, v. l. Bhâg. P. 9,9,23. Pańkar. 1,4,41. 12,66. 15,30. mit dat.: मैथुनाय Bhâg. P. 9,9,37. mit अर्थम्: उद्वाहार्थम् 3,22,14. mit loc. *begriffen in:* रणोश्वरप्रतिष्ठायाम् Râǵa-Tar. 3,453. mit प्रति *im Begriff stehend auf Jmd loszugehen:* विराटद्रुपदौ वीरौ भीष्मं प्रति समुद्यतौ MBh. 6,5166. ohne Ergänzung *gerüstet, zu handeln bereit* R. 3,1,33. Bhâg. P. 7,8,23. — 4) *zügeln, lenken:* रश्मिभिर्हयान् MBh. 3,756. 2793. 4,1445. — 5) समुद्यत wohl fehlerhaft für समुद्गत (vgl. u. उद्, अभ्युद्, प्रत्युद्, उप, नि) in der Stelle: तस्य तां तरसा सर्वां बाणवृष्टिं समुद्यताम्। — वारयामास Hariv. 10764.

— उप 1) *aufstellen* oder *darbieten:* उपो ते अन्धो मद्यमयामि R̥V. 7, 92,1. — 2) *ergreifen, fassen* R̥V. 8,35,21. Çat. Br. 14,4,2,31. Çâñkh. Çr. 16,17,10. उप यच्छ शूर्पम् AV. 12,3,19. परस्य भार्यामुपयच्छति P. 1, 3,56, Sch. med.: उपायंस्त महास्त्राणि Bhaṭṭ. 15,21. *annehmen:* कोपात्काश्चित्प्रियैः प्रत्तमुपायंसत नासवम् 8,33. *sich aneignen, sich vertraut machen mit:* शस्त्राण्युपायंसत (pass.) 1,16. — 3) *stützen, als Unterlage einschieben, unterfassen, unterlegen* Çat. Br. 3,5,2,2. 6,2,9. 14,2,1,17. Kâtj. Çr. 4,9,10. 5,4,2. 18,3,16. Kauç. 14. 42. fg. — 4) *zum Weibe nehmen, heirathen;* med. P. 1,3,56. उपायत oder उपायंस्त 2,16. Vop. 23,19. 48. नाग्नात्रीमुपयच्छेत Nir. 3,5. Âçv. Gr̥hj. 1,5,3. 6,4. fgg. M. 3, 11. MBh. 1,1047. 3765. 3791. 5181. 2,692. 3,13154. Ragh. 14,87. Kumâras. 1,18. Çâk. 65,3. 110,15. Kathâs. 14,69. 15,44. 33,161. 36,49. 42,142. 49,249. 51,52. 156. 67,51. 87. 69,121. 108,117. Bhâg. P. 1,16, 2. 4,1,47. 10,1. 24,11. 30,48. 9,15,7. Mârk. P. 52,14. 63,61. 69,6. 76, 47. Daçak. in Benf. Chr. 188,7. 193,23. Bhaṭṭ. 4,20. 28. 7,101. act. Gobh. 2,1,5. Kathâs. 14,67. — 5) *zeigen, an den Tag legen:* नोपायंस्त (kann auch zu उपा gezogen werden) भयम् Bhaṭṭ. 7,101. — 6) *inire* (feminam) fälschlich für उपगम् (vgl. u. उद्, अभ्युद्, प्रत्युद्, समुद्, नि): एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु (v. l. नोपयच्छेत) बुद्धिमान् M. 11,172. — Vgl. उपयन्तर्, उपयम fg. und उपयाम.

— नि 1) *anhalten* (den Wagen u. s. w.) *bei Jmd* (loc.), *festhalten; zum Stehen bringen:* रथम् R̥V. 7,74,2. चक्रम् 1,30,19. 4,47,4. 8,35,22. सुते नि यच्छ तन्वम् 3,51,11. 10,19,2. मा त्वा केचिन्नि यमन्विं न पाशिनः *einfangen* 3,45,1. 7,69,6. अक्षार्पूणां न्ययाँ अविष्याम् 2,38,3. वाचस्पतिर्नि यच्छतु मयि AV. 1,1,3. गोष्ठे 2,26,1. 2. क ईं नि येमे *wer hat sie bei sich festgehalten* R̥V. 10,40,14. med. *sich aufhalten* R̥V. 8,2,26. *bleiben:* तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे 10,56,5. In der klassischen Sprache *zurückhalten, zügeln, bändigen, lenken:* हयोत्तमान् MBh. 4,1953. Hariv. 6640. रश्मीन् *die Zügel anziehen* MBh. 4,1647. सुतां शशाक मेना न नियन्तुमुद्यमात् *abhalten von* Kumâras. 5,5. धावन्तमुन्मत्तमन्तःकरणवारणम्। बलान्नियमितुम् *gewaltsam zurückhalten* Râǵa-Tar. 1,251. ये त्वामुत्पथमारूढं न नियच्छन्ति शास्त्रतः R. 3,45,6. 4,17,37. Spr. 4070. यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति, तथा राज्ञा नियन्तव्याः प्रजाः 2321. वरुणं नियच्छेत् R. 3,43,42. नियेमिरे pass. Bhaṭṭ. 14,89. प्रकृत्या नियताः स्वया Bhag. 7,20. die Sinne, den Geist u. s. w. *zügeln:* इन्द्रियाणि मनसा

नियम्य 3,7. MBh. 12,3894. शरीरं चैव वाचं च बुद्धीन्द्रियमनांसि च । नियम्य M. 2,192. Maitrjup. 6,19. Bhâg. P. 2,2,16. नियतेन्द्रिय M. 6,4. 11, 75. 106. 109. MBh. 12,4256. R. 1,7,4. Ragh. 9,18. नियतात्मन् M. 3,188. 6,86. 11,218. R. 1,1,10. 2,28,12. Bhâg. P. 8,16,59. अनियतात्मन् Spr. 1291. — 2) *befestigen —, festbinden an* (loc.): वृत्ते नियता गोः ṚV. 10, 27,22. पशूनां त्रिशतं तत्रासीद्यूपेषु नियतं तदा R. 1,13,33. नियम्य पृष्ठे — इषुधी 2,87,23 (95,27). गले यावत्सा तं पाशं नियच्छति Kathâs. 90,75. केशान्नियम्य (so die ed. Bomb.) *die Haare aufbindend* MBh. 9,3586. नियताञ्जलि (vgl. बद्धाञ्जलि) *die Hände zusammengelegt habend* R. 3,18, 15. वाच्यर्था नियताः सर्वे *verbunden mit, abhängend von* M. 4,256. चन्द्रे लक्ष्मीः प्रभा सूर्ये गतिर्वायौ भुवि क्षमा । एतत्तु नियतं सर्वं त्वयि चानुत्तमं यशः ॥ *alles dieses ist in dir verbunden* R. 3,70,5. Mârk. P. 41,22. — 3) *anhalten, unterdrücken, hemmen:* धूमम् Kauç. 18. प्राणं नियच्छेन्मनसा Bhâg. P. 2,2,15. वाचम् M. 2,185. 4,49. MBh. 3,15689. P. 1,4,76, Sch. नियच्छ क्रोधमात्मनः MBh. 1,6833. न्यपच्छत्कोपमात्मनः 3,2845. नियच्छ मन्युम् Bhâg. P. 7,5,28. तद्दर्शनक्षोभं नियम्य Kathâs. 33,60. Kaṭhop. 3,13. न कथं च न दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति *unterdrücken* so v. a. *verläugnen* M. 10,59. MBh. 13,2604. स्वमायपेदं सृजतो नियच्छतः *schaffend und unterdrückend* d. i. *zu Nichte machend* Bhâg. P. 10,70, 38; vgl. 2,4,6. 6,38. 10,43. सह वैदेह्या भूत्वा नियतमैथुनः *den fleischlichen Umgang einstellend* R. Gorr. 2,5,4. नियम्यतां विनिर्माणम् Râǵa-Tar. 4,59. *bei sich behalten, versagen:* न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः ṚV. 6,45,23. 7,27,4. 37,3. नाह्व दामानं मघवा नि यंसत् 10,42, 8. न ते वज्रो नि यंसते *dein Donnerkeil versage nicht* 1,80,3. *beschränken:* नियताहार *seine Nahrung beschränkend* M. 11,77. Bhag. 4,30. R. 2,24,27. Mârk. P. 23,29. नियतभोजन R. 2,109,26. नियताशिन् *mässig essend* Jâǵn. 3,249. श्वमांसनियताहार *seine Nahrung auf Hundefleisch beschränkend, nur Hundefleisch geniessend* R. 1,59,19. नियत *sich beschränkend, ein einziges bestimmtes Ziel verfolgend, nur mit einer Sache beschäftigt, ganz bei einer Sache seiend* M. 2,104. 107. 115. 3,258. 4, 98. 5,158. 6,1. 52. 95. 7,218. 11,111. 128. 217. Jâǵn. 3,12. 249. MBh. 3, 2462. 16695. 16724. 5,7397. 12,4256. R. 2,21,24. 24,27. 56,25. 74,10. 3,13,27. 5,18,11. Spr. 4419. Bhâg. P. 1,17,37. नियतेन मनसा 4,8,51. die Ergänzung im loc.: सत्ये च नियतः सदा MBh. 1,5267. — 4) *festsetzen, bestimmen* Sarvadarçanas. 123,7. इति नियम्यते *so steht es fest* Bhâg. P. 4,26,6. एवं नियम्य Kathâs. 119,64. वचसा नियम्यागमनं पुनः 25,213. नियत *bestimmt, festgestellt, sicher —, fest stehend, constant, regelmässig, unveränderlich* Kâtj. Çr. 1,1,10. 2,14. 4,2. 5,14. 7,1,27. 10,9,24. 12,1,20. Çâṅkh. Çr. 3,4,2. Gṛhj. 1,3. Kauç. 55. नियतवाचो युक्तयो नियतानुपूर्व्या भवन्ति Nir. 1,15. M. 5,44. 8,164. 227. 419. MBh. 5,1159. 4548. Bhag. 3,8. 18,7. 9. Suçr. 1,312,8. Çâk. 179. Megh. 44. Spr. 1297. 1372. Varâh. Bṛh. S. 5,4. Uttararâmać. 38,19 (52,12). Kap. 1,57. Sâṁkhjak. 39. fg. Kumârila bei Müller, SL. 227. Bhâshâp. 15. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 35. Bhâg. P. 2,2,6. 4,26,7. Matsja-P. bei Muir, ST. 1, 55, N. 49. Schol. zu P. 1,2,44. 4,44. 3,21, Vârtt. 5 und zu Kap. 1,25. आचार° P. 6,2,65, Sch. निसर्ग° Kathâs. 19,28. स्वभाव° Spr. 5093. अष्टषष्ट्युत्तमस्थाननियतैर्नामभिः (हरस्य) Kathâs. 54,215. 55,166. युगान्तनियते काले so v. a. *zur Zeit des Weltendes* R. 4,60,16. °व्रत MBh. 3, 16636. R. 1,62,28. Kathâs. 35,26. नियतानि als Synonym von इन्द्रियाणि Tattvas. 15. अनियत *nicht bestimmt* u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 5,5. 11, 15. Schol. zu P. 4,1,131. विश्रब्धानियतं वेषमुन्मत्त इव so v. a. *absonderlich, ungewöhnlich* MBh. 3,15416. नियतम् adv. *bestimmt, gewiss, ganz sicher, constant, regelmässig* Halâj. 4,25. Bhag. 1,44. R. Gorr. 1,11,15. 32,7. 2,18,15. 3,3,3. 4,23,6. 5,1,83. Ṛt. 6,20. Spr. 1801. 2032. 2386, v. l. 5173. Varâh. Bṛh. S. 103,2. Pańkat. II, 199. Kâm. Nîtis. 3,37. 10, 28. 14,68. 15,35. 18,69. Kathâs. 25,32. Râǵa-Tar. 1,109. 4,270. 5,200. Prab. 8,10. 84,4. Daçak. in Benf. Chr. 189,20. 193,3. Z. d. d. m. G. 14, 574,4. 575,7. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 17. Schol. zu P. 4,4,66. — 5) *festhalten, herbeiziehen; dauernd verleihen, einpflanzen:* वृष्टिम् Çat. Br. 1,8,3,14. TBr. 3,3,1,3. TS. 6,4,1,4. Ait. Br. 5, 24. अस्मे रयिं नि यच्छतम् ṚV. 4,50,10. 7,82,8. न्यश्विना हृत्सु कामाँ अयंसत 10,40,12. मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः 6,34,4. VS. 9,24. AV. 3, 20,8. 4,25,6. 7,24,1. संज्ञानमिन्द्रास्मासु नि यच्छतम् 52,1. 115,3. 10,3, 17. Çat. Br. 4,6,9,2. स एवास्मै प्रजा नस्योता निर्यच्छति TS. 2,1,1,2. 4,3,11,5. को नः कुले निवपनानि नियच्छति *regelmässig darbringen* Çâk. 152. — 6) *über Jmd halten* (vgl. u. simpl. 3): शर्म AV. 7,6,4. 12,3,8. — 7) *nach unten kehren* (die Hand) TS. 2,6,5,4. — 8) in der Gramm. *niedrig halten im Ton* so v. a. *mit dem* Anudâtta *sprechen* ṚV. Prât. 3,9. 12. 11,25. — 9) नियत heisst *der* Saṁdhi *von* आम् *vor Tönenden* ṚV. Prât. 4,8. 9. — 10) नियच्छति fehlerhaft für निगच्छति (vgl. u. उद्, अभ्युद्, प्रत्युद्, समुद् und उप): मोक्षमार्गं नियच्छति Jâǵn. 3, 115. भावो भावं नियच्छति MBh. 13,1878; vgl. u. भाव 5). Eine Menge anderer Belege findet man in den Nachträgen u. गम् mit नि, woselbst aber die Stelle MBh. 13,2604 zu streichen ist, da hier नियच्छति richtig ist; vgl. oben u. 2). — Vgl. अनियत, नियति fgg., नियम fg., नियम्य, नियामक fgg. — caus. 1) *zurückhalten, festhalten, anhalten, zügeln, bändigen, fesseln:* नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः Çâk. 105. Kâm. Nîtis. 2,44. Spr. 440. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 243. तेन हि नियम्यन्ते सर्वे 241. 253. Çâk. 77. यथा बलिर्नियमितः Hariv. 9898. श्लाघ्यं जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमितं यत्र तेजस्वि चक्रम् *an den gekettet* Spr. 956. 641. 711. 1994. भगवान् — धर्मार्थयशःप्रजानन्दामृतावरोधेन गृहेषु लोकं न्ययमयत् *fesselte sie an's Haus* Bhâg. P. 5,4,13. क्रियानियमित *durch Geschäfte zurückgehalten* MBh. 13,3014. दीर्घेष्वमी (वाहाः) नियमिताः पटमण्डपेषु *angebunden* Ragh. 5,73. श्रवणनियमित *am Ohr befestigt, an's Ohr gebunden* Çiç. 7,56. अन्तर्नाडीनियमितमरुत् *eingeschlossen in* Prab. 1,10. — 2) *hemmen, unterdrücken:* नियमितप्राण Vikr. 1. Spr. 784. *lindern:* छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूखतापः (पन्थाः) Çâk. 86. नियमितगदोद्रेकवृत्तिर्यमः Ragh. 17,81. नियमितपरिखेदा तच्छिरश्चन्द्रपादैः Kumâras. 1,61. — 3) *bestimmen:* कल्याणदेव्यसौ । तस्मै नियमिता दातुं निष्पुत्रेण सता मया Râǵa-Tar. 4,461. गते नियमिते काले Pańkar. 1,15,1. *beschränken:* पूर्वोक्तं फलाभिलाषनिषेधं नियमयति Kull. zu M. 2,5.

— परिणि P. 8,4,17, Sch. — प्रणि ebend. und 1,1,20, Sch.

— प्रतिनि, partic. °यत *für jeden einzelnen Fall besonders bestimmt, je anders bestimmt, je ein anderer* Spr. 1431. Daçak. in Benf. Chr. 187, 22. Kull. zu M. 1,118. 2,237. 8,41. 11,59. fgg. S. 358. Z. 13. fg. Kusum. 9,16. 18,20. Sarvadarçanas. 131,14. fg. 146,16. 177,4. Müller, SL.

170. — Vgl. प्रतिनियम.

— विनि 1) *zügeln, bändigen, im Zaum halten* M. 9,249. मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य Bhag. 6,24. विनियतं चित्तम् 18. विनियतचेतस् Mârk. P. 104,38. — 2) *zurückziehen, einziehen:* यथा कूर्म इवाङ्गानि प्रसार्य विनियच्छति । एवमेवेन्द्रियग्रामं बुद्धिः सृष्ट्वा नियच्छति ॥ MBh. 12,8987. — 3) *hemmen, unterdrücken, von sich fern halten:* प्रमोदं विनियच्छति MBh. 13,1012; vgl. jedoch 14,1086. — 4) *beschränken:* विनियताहार *mässige Nahrung zu sich nehmend* R. 3,6,7. — 5) विनियतम् Bhâg. P. 1,15,38 bei Burnouf wohl nur Druckfehler für विनयिनम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. विनियम.

— संनि *festhalten, anziehen:* अभीषून् *die Zügel* MBh. 7,8180. *Jmd zurückhalten* 14,225. *zügeln, bändigen, im Zaum halten:* इन्द्रियाणि Spr. 3748. M. 2,96. 175. Bhag. 12,4. MBh. 15,535. धैर्यान्मनः संनियम्य Hariv. 6742. संनियम्यात्मनात्मानम् Bhâg. P. 4,8,24. *unterdrücken:* रोगान् Suçr. 2,371,18. वेगं हर्षक्रोधयोः Spr. 5160. क्रोधम् R. 5,24,3. 6,7,14. मन्युम् Bhâg. P. 4,18,2. वेदनाम् MBh. 6,5816. चिरसंनियतं बाष्पम् R. 2,30,23. *unterdrücken* so v. a. *zu Nichte machen* (Gegens. सर्ग) Bhâg. P. 2,10,43; vgl. 2,4,6. 6,38. 10,70,38. — Vgl. संनियच्छन fgg.

— परि *zielen, schiessen:* परि यद्वज्रेण सीमयच्छत् *nachdem er mit dem Donnerkeile geschossen hat* RV. 1,61,11. — caus. *ministrare:* परियमयति (परिगमयति?) ब्राह्मणाम् Sâjaṇa nach West.

— प्र 1) *strecken, vorstreken:* प्रयता ऋष्टयः RV. 1,166,4. बाहू 190,3. हस्त Ait. Br. 5,31. प्रयताञ्जलि R. 3,68,23. प्रयत *langgestreckt:* इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थम् RV. 1,154,3. *weitreichend:* दुन्दुभेर्वाक् AV. 5,20,5. 13,2,31. — 2) *über Jmd halten:* प्र नो यच्छतादवृकं छर्दिः RV. 1,48,15. 8,9,1; vgl. u. simpl. 3). — 3) *darreichen, anbieten; darbringen, geben, übergeben, dahingeben, verleihen;* mit acc. der Sache und dat., gen. oder loc. der Person. शग्धि पूर्धि प्र यंसि च RV. 1,42,9. 61,2. शतमश्वान्प्रयतान्सद्य आदम् 126,2. 3,1,22. प्रयतं हस्ताद्धोतुर्यज्ञम् 3,35,10. स्वधाभिर्यज्ञं प्रयतं जुषन्ताम् TBr. 3,1,1,6. RV. 3,36,2. 9. 10. रायः 4,2,20. मघानि 5,30,12. 36,4. 8,17,10. अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिषि *auf die Streu gesetzt* 10,15,11. AV. 8,8,10. 12,3,31. 5,57. Ait. Br. 1,4. व्रतम् 3,40. Çat. Br. 1,3,3,3. स्तनम् 14,9,4,28. इन्द्रो यतीन्सालावृकेभ्यः प्रायच्छत् Çâñkh. Çr. 14,50,2. Kaush. Up. 3,1. सजातान् TS. 2,2,11,3. असिम् Kâtj. Çr. 6,4,13. Çâñkh. Gṛhj. 2,12. Maitrjup. 6,33. P. 4,4,30. fg. M. 3,249. 4,192. 234. 11,15. 25. MBh. 1,5704. 2,1356 (करान् *Tribut darbringen*). 3,8544. 12018. 12277. 5,623. 13,6699 (mit der ed. Bomb. आसनार्हस्य zu lesen). Bhag. 9,26. R. 2,20,29. 30,43. 32,8. 39,16. 55,27. 98,18. 112,22. R. Gorr. 2,124,12. 3,63,7. 4,24,25. 51,20. Mṛkkh. 105,10. Çâk. 75,14. Vikr. 96. Spr. 1112. 3970. 4046. Varâh. Bṛh. S. 12,15. Kâm. Nîtis. 17,21. fg. Kathâs. 13,185. 19,58. 23,18. 35,25. 39,112. 54,158. Râga-Tar. 4,191. 257. Daçak. in Benf. Chr. 196,11. Bhâg. P. 4,1,20. Mârk. P. 32,18. 63,24. Pañkat. 96,20. Hit. 65,15. med. M. 3,223. Hariv. 10263. R. Gorr. 2,123,21. Pañkat. IV, 27. मधुसर्पिषी लेढुं प्रयच्छेत् Suçr. 1,101,18. गृहीतमूल्यं यः पण्यं क्रेतुर्नैव प्रयच्छति *abliefern* Jâgñ. 2,254. स्वशिरो मे प्रयच्छ *hergeben* Kathâs. 41,37. शरीरम् Pañkat. 88,14. आत्मनो जीवितम् 70,3. तद्गान्धर्वविवाहेनात्मानं प्रयच्छ 45,6. वेदम् *übergeben* so v. a. *lehren* Jâgñ. 1,34. विषम् *Jmd Gift geben* Pañkat. 34,16. अम्भः *geben, bringen* (vom Regenbogen) Varâh. Bṛh. S. 35,3. फलम् *verleihen, bringen* Bhâg. P. 6,6,9. Mârk. P. 18,48. द्विगुणं लाभम् Varâh. Bṛh. S. 42,9. निद्राम् Sâh. D. 57,7. कामान् MBh. 1,6657. तृप्तिम् 8084. R. 1,62,11. भोगं मोक्षं चैव Kathâs. 52,16. पीडाम् Varâh. Bṛh. S. 53,58. भयम् Spr. 892. MBh. 5,1226 (wo die ed. Bomb. richtig प्रयच्छन्ति liest). अभयम् Bhâg. P. 3,5,42. अभयवाचम् Hit. ed. Johns. 1234. सत्क्रियाम् Spr. 2513. मानमात्रम् 2612. पुष्टिम् 4748. पराभवम् 2425. अनिष्टम् Kathâs. 32,92. अनुज्ञाम् 53,154. MBh. 1,5919. आज्ञाम् Bhaṭṭ. 17,27. शापम् *einen Fluch über Jmd* (gen.) *aussprechen* Kathâs. 41,23. Mârk. P. 74,30. मम युद्धं प्रयच्छ so v. a. *kämpfe mit mir* R. 4,9,38. 7,18,7. Hariv. 8364 (med.). *wiedergeben* M. 8,181. MBh. 3,15131. Bhâg. P. 9,14,8. सुकृतं न (so ist wohl zu lesen) प्रयच्छन्ति यावज्जन्म कृतं नराः *eine Wohlthat erwiedern* Mârk. P. 14,72. ऋणम् *eine Schuld bezahlen* M. 8,158. विक्रयेण *verkaufen* Râga-Tar. 4,397. कैकेयेषु च दूतान्स मातुलाय प्रयच्छति *absenden* R. 6,82,140. कृत्स्नं पुरुषस्यार्थं प्रकाश्य बुद्धौ प्रयच्छति so v. a. *vorführen* Sâṁkhjak. 36. सख्या वक्त्रमभि प्रयच्छति परं पर्यश्रुणी लोचने *richten auf* Spr. 1425. — 4) *in die Ehe geben,* vom Vater, der die Tochter verheirathet: प्रजापतिः सोमाय दुहितरं प्रायच्छत् Ait. Br. 4,7. Âçv. Gṛhj. 1,5,2. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1,442. M. 8,224. 9,71. 89. R. 1,8,16. Kathâs. 45,196. Bhâg. P. 4,1,11. Mârk. P. 14,68. — 5) प्रयत *eine dem Ernst des Augenblicks entsprechende Stimmung und Haltung zeigend, innerlich und äusserlich zu einer ernsten Handlung gehörig vorbereitet;* = पवित्र, पूत AK. 2,7,44. = अनुच्छिष्ट Halâj. 2,247. = शुचि, अतिनम्र, यत्नवत्, प्रयत्नयुक्त, धीर, नियमतत्पर Comm. य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि । प्रयतः Kathop. 3,17. VS. Prât. 1,20. M. 2,183. 185. 222. 3,216. 226. 228. 4,49. 5,86. 145. 8,258. 11,258. MBh. 3,3010. 11931. 5,426 (प्रयता च mit der ed. Bomb. zu lesen). 12,9058. 13,382 (प्रयताः mit der ed. Bomb. zu lesen). 2669. 7101. R. 1,2,27. 50,16. 2,31,19. 52,83. 104,28. R. Gorr. 1,12,27. 27,9. 35,39. 2,17,6. 98,21. 4,27,11. 5,93,2. 7,83,8. Kumâras. 1,59. 3,16. Ragh. 1,35. 90. 95. 5,28. 8,11. 13,70. Varâh. Bṛh. S. 46,64. 48,19. 88,40. Bhâg. P. 1,3,29. 2,2,14. 5,7. 4,7,25. 8,71. 12,47. 5,23,8. 6,15,27. 8,4,24. 16,62. Mârk. P. 51,51. 96,12. सर्वकर्मसु MBh. 13,7100. रणे 3,12237. अजस्रदीक्षा° Ragh. 3,44. 65. अवभृथ° 9,18. अभिषेक° 14,82. आचार° Vikr. 43. अप्रयत M. 5,142. 11,153. R. 3,42,8. Spr. 4216. Varâh. Bṛh. S. 50,6. Kathâs. 35,65. Bhâg. P. 6,18,49. प्रयतेनान्तरात्मना MBh. 2,428. प्रयतात्मन् M. 4,145. fg. R. 4,8,39. Spr. 5323. Bhâg. P. 7,10,28. प्रयतात्मवत् R. ed. Bomb. 6,106,28. 7,3,22. प्रयतमानस MBh. 3,5001. प्रयते देशे *an einem reinen, einer heiligen Handlung entsprechenden Orte* R. 6,96,7. st. प्रयतवाग्भूत्वा Hariv. 12285 liest die neuere Ausg. प्रयतवान्भूत्वा. — Vgl. प्रयत, प्रयति, प्रयन्तृ, प्रयाम.

— अतिप्र *hinüberreichen, weitergeben* TS. 2,4,12,7. TBr. 1,1,3,9. 2,1,5.

— अनुप्र *reichen, geben* TS. 2,2,1,5.

— आप्र *darreichen:* आप्रयच्छ (आ प्र यच्छ VS. und TS.) दक्षिणादोत सव्यात् AV. 7,26,8.

— उपप्र *dazu reichen* Çat. Br. 5,4,5,13.

— प्रतिप्र *wieder ausliefern, zurückgeben; weitergeben* TS. 6,5,6,3. 8,4. Âçv. Çr. 5,12,13. Gṛhj. 1,8,9. Lâtj. 5,2,7. Daçak. in Benf. Chr. 195,14.

— संप्र (*zusammen*) *übergeben, hingeben, darbringen, geben, verleihen* ṚV. 10,98,11. AV. 10,5,45. Kaush. Up. 2,15. Ait. Br. 2,7. 41. प्रजापतिर्यज्ञं देवेभ्यः संप्रायच्छत् 5,32. Çat. Br. 1,5,2,10. Çâṅkh. Gṛhj. 2,10. Nir. 2,4. प्रातःसवनम् Khând. Up. 2,24,6. श्राद्धम् Jâǵn. 1,266. यो ऽसाधुभ्यो ऽर्थमादाय साधुभ्यः संप्रयच्छति M. 11,29. MBh. 1,8087. 3,14024. 4,132. 12,4010. (अमृतं st. अनृतं mit der ed. Bomb. zu lesen). 13,676. R. 2,7,7. R. Gorr. 2,109,33. Spr. 4895. Varâh. Bṛh. S. 90,11. Mârk. P. 18,49. अर्बुदेन गवां ब्रह्मन्मम राज्येन वा पुनः । नन्दिनीं संप्रयच्छस्व *abtreten für* MBh. 1,6664. (eine Tochter) *in die Ehe geben* 3,16661 (= Sâv. 2,4 mit falscher Lesart). R. Gorr. 1,74,6. *wiedergeben* 6,6,13. med. *sich gegenseitig darreichen* Çat. Br. 5,4,4,19. कुमारं मातापितरौ त्रिः संप्रयच्छेते Kauç. 54. mit instr. der Person (st. dat. oder gen.) und acc. der Sache *Jmd Etwas geben* Bhaṭṭ. 8,32; vgl. P. 1,3,55.

— प्रति 1) *Jmd das Gleichgewicht halten, aufwiegen:* सहस्रं वै प्रति पुरुषः पशूनां यच्छति TS. 5,2,9,2; vgl. u. प्रत्युद्. — 2) *dauernd verleihen:* यथा शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरध्यै ṚV. 1,63,8. *wiedergeben* Bhâg. P. 3,1,11. 9,6,19.

— वि 1) *aufrichten, ausbreiten:* शर्म ṚV. 6,51,5. 1,85,12. 5,55,9. 8,47,2. AV. 1,20,3. छर्दिः ṚV. 8,27,20. 42,2. वरूथम् 1,189,6. — 2) *ausspreizen:* वि सक्थानि नरो यमुः ṚV. 5,61,3. *ausgreifen* (von Rossen im Lauf) 9. *auseinanderhalten:* यत्संयमो न वि यमः AV. 4,3,7. यथा पथा पतयन्तो वियेमिरे ṚV. 4,54,5. वियत *ausgestreckt, ausgebreitet:* सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ AV. 10,8,18. 13,3,14. ṚV. 4,19,3. TS. 4,4,5,1. वियतम् adv. *auseinandergehalten, in Absätzen:* वियतं पच्छो निविदः शंसति Çâṅkh. Çr. 7,19,23. 8,7,19. Âçv. Çr. 5,20,6. — caus. *ausdehnen:* वि मध्यं यामयौषधे AV. 6,137,3; vgl. AV. Prât. 4,93.

— सम् 1) *zusammenhalten, — ziehen, anziehen, festhalten, zügeln, in der Gewalt haben* ṚV. 9,69,3. वोळ्हुर्न रश्मीन्समयंस्त सारथिः 1,144,3. सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्ठा द्वा जनाँ असमा बाहुभिः स्वैः 6,67,1. AV. 4,3,7. संयतरश्मि Nir. 5,8. संयच्छ वाजिनां रश्मीन् R. 2,40,22. संयतप्रग्रहं रथं कृत्वा Çâk. 100,15. संयच्छ मामकानश्वान् *lenken* MBh. 4,1212. यस्तान्संयमते (so beide Ausgg.) 11,177. हयाः सुसंयता मातलिना 3,12110. संयच्छ वाजिनः सूत शनैर्याहि R. Gorr. 2,39,26. 44,12 (46,11 Schl.). यमः संयमतामहम् Bhag. 10,29. Bhâg. P. 11,16,18. सर्वेन्द्रियाणि संयम्य Spr. 3218. Bhag. 2,61. Mârk. P. 43,81. संयतेन्द्रिय MBh. 3,2075. 2463. 16676. Brahma-P. in LA. (III) 48,18. संयतात्त Bhâg. P. 9,2,12. संयतप्राण (= संयतेन्द्रिय) 6,16,16. प्राणा इव सुसंयताः 10,68,4. संयम्यात्मानमात्मना Kâm. Nitis. 1,36. आत्मा संयतो मनीषिणः Spr. 641. संयतात्मन् M. 11,236. R. Gorr. 1,1,12. Bhâg. P. 7,4,23. असंयतात्मन् Bhag. 6,36. संयम्य चित्तानि MBh. 4,133. धृतिसंयतचेतस् R. Gorr. 2,16,43. संयम्य च मनः M. 2,100. Bhâg. P. 4,1,19. मानसमसंयतम् Praçnottaram. 14 in Monatsb. d. B. Akad. 1868, S. 99. यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम् Prab. 26,1. कथमिदं शरीरं संयम्यते Nir. 14,6. सं या दानूनि येमथुः ṚV. 8,25,6. — TBr. 2,1,2,8. 5,2,10,6. Çat. Br. 14,1,1,6. संयत (वर्तमाने) Kâr. zu P. 3,2,188. *der sich zügelt, — beherrscht, — in der Gewalt hat* Halâj. 2,189. MBh. 11,177. Spr. 5100. 5152. Bhâg. P. 3,21,49. 4,24,15. Pańkar. 1,2,4. सु° 7,94. Kathâs. 49,234. Mârk. P. 34,115. अ° Spr. 4979. संयतो मनोवाक्कायकर्मभिः Jâǵn. 1,225. स्त्रीषु Suçr. 2,147,9. मनोवाग्देहसंयता M. 5,165. fg. 9,29. मनोवाक्कायसंयता R. 2,94,18. वाग्बाहूदरसंयत M. 4,175. संयतवक्त्र dass. Hariv. 15456. *hemmen, unterdrücken:* गिरम् MBh. 12,3894. कामक्रोधौ Spr. 3899. M. 12,11. कोपम् MBh. 3,2841. रोषम् R. Gorr. 2,77,28. 30. Bhâg. P. 4,11,31. मन्युसंरम्भम् 8,11,45. संयतं क्रोधम् R. 2,97,28 (106,25 Gorr.). व्यसनानि 3,13,5. संयतमैथुन MBh. 13,3321. *unterdrücken* so v. a. *aufheben, zu Nichte machen* (Gegens. सर्ज्) Bhâg. P. 2,4,6 (med.). 6,38; vgl. 2,10,43. 10,70,88. पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिः *war eingeschränkt* ṚV. 1,136,2. *zusammenbinden, aufbinden, binden, anbinden, fesseln:* केशान्संयम्य MBh. 3,16848. केशाः संयताः AK. 3,4,26,195. H. 570. संयताः कचाः AK. 2,6,2,48. संयतवस्त्र Spr. 657. संयम्यैनं (मुनिं) ततो राज्ञे दस्यूंश्च न्यवेदयत् MBh. 1,4315. R. 4,8,22. मत्तान्वनद्विपान् Kathâs. 11,4. 12,156. 27,204. 37,40. 42,42. 54,141. 88,32. 123,130. वानरं मा न संयंसीः Bhaṭṭ. 9,50. संयम्यमान Kathâs. 71,143. संयत *gebunden, angebunden, gefesselt, gefangen* AK. 3,1,42. H. 439. Halâj. 2,185. M. 8,365. MBh. 3,1694. 12786. Hariv. 9390. 10868. 14370. R. 1,1,23 (26 Gorr.). Ragh. 3,20. 42. Mâlav. 7. Kathâs. 14,4. 51,5. 56,25. 61,126. 65,51. 118,146. 149. *zusammenthun, aufhäufen;* med. *für sich:* व्रीहीन्संयच्छते P. 1,3,75, Sch. *schliessen:* सर्वद्वाराणि संयम्य Bhag. 8,12. असंयतकवाट R. 2,71,34. संयत im Gegens. zu व्यात्त AV. 6,56,1. 10,4,8. वस्तिं संयम्य धारयेत् *andrückend* Suçr. 2,352,6. — 2) *zusammenhalten* so v. a. *in Ordnung halten:* संयतोपस्करा Jâǵn. 1,83. — 3) *Jmd beschenken;* med. und instr. der Person, wenn es eine unerlaubte, act. und dat. der Person, wenn es eine erlaubte Handlung ist, P. 1,3,55 und Siddh. K. zu P. 2,3,27. दास्या संयच्छते कामुकः, भार्यायै संयच्छति. — 4) संयत = उद्यत *im Begriff stehend, gerüstet, bereit;* mit infin. Hariv. 14645. fg. — Vgl. असंयत, संयम fgg. — caus. *bezwingen:* संयमितारि Ragh. ed. Calc. 1,62. *aufbinden:* संयमयामि तावत् — पाणिना पाञ्चाल्या दुःशासनावकृष्टं केशहस्तम् Veṇîs. in Sâh. D. 161,19. संयमित *gebunden, gefesselt* Mṛkkh. 98,12. Kathâs. 64,55. दोर्भ्यां संयमितः *umfangen, umschlossen* Gît. 12,11. हेलासंयमित (स्वरसंक्रम) wohl *unterbrochen* Mṛkkh. 44,15. संयमित *gesammelt, fromm gestimmt* R. Gorr. 2,3,34.

— उपसम्, partic. °यत *eingezwängt in* (loc.) Suçr. 1,101,7.

1. यँम (von यम्) m. Vop. 26,170. 1) *Zügel:* पृष्ठे सदो नसोर्यमः ṚV. 5,61,2. — 2) *Lenker:* रथानाम् ṚV. 8,92,10. — 3) *das Hemmen, Unterdrücken:* वाचाम् *Schweigsamkeit* Bhâg. P. 5,5,12. = संयम AK. 3,3,18. Trik. 3,3,302. H. an. 2,332. fg. Med. m. 23. = यमन H. an. — 4) in der Phil. *Selbstbezwingung, das Verbot der Beschädigung Anderer durch Wort oder That und der Ueppigkeit, ein allgemeines Sittengesetz* AK. 2,7,48. Med. Jogas. 2,29. अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः 30. Nîlak. 28. Tattvas. 19. Sarvadarçanas. 155,10. 161,2. 173,16. fgg. Madhus. in Ind. St. 1,22,22. Vedântas. (Allah.) No. 128. VP. 288. 653. Bhâg. P. 1,6,36. 4,22,24. H. 81. H. an. यमान्सेवेत सततं न नित्यं नियमान्बुधः M. 4,204. MBh. 12,8913. राज्ञो विवेकस्य बलवतो यमादीनमात्यान् Prab. 8,9. fg. यमश्च दशधा प्रोक्तः Verz. d. Oxf. H. 233, *b*, 6. ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं (st. dessen fälschlich ध्यानं Gâruḍa-P. 105 im ÇKDr.) सत्यमकल्कता । अहिंसास्तेयमाधुर्यदमाश्चेति यमाः स्मृताः ॥ Jâǵn. 3,313. आनृशंस्यं क्षमा सत्यमहिंसा दम आर्जवम् । प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश ॥

Spr. 350. *Observanz* überh. Pâr. Gṛhj. 2,7. — 5) *festgesetzte Ordnung*, s. याम°. — Vgl. प्राण°, वाचं°, सु°.

2. यमँ 1) adj. (f. श्रा und ई) *geminus, von Geburt doppelt, gepaart;* m. *Zwilling* Trik. 3,3,302. H. 1424. H. an. 2,232. fg. Med. m. 23. Halâj. 4,15. सप्तर्थमाकुरेकजं षळिद्यमाः ṚV. 1,164,15 (vgl. AV. 10,8,5). 2,39,2. यमा चित्रे यमसूरसूत 3,39,3. यमा इंव सुसंदृशाः सुपेशसः 5,57,4. 6,59,2. 10,117,9. 1,66,4. यमे इंव यतमाने यदैतम् 10,13,2. यस्य भार्या गौर्वा यमौ जनयेत् Ait. Br. 7,9. अग्निर्वाव यम इयं यमी TS. 3,3,8,3. यमी वशा 2,1,9,5. अष्टौ यमा आदित्याः Nidâna 10,2. यमौ मिथुनौ *Zwillinge verschiedenen Geschlechts* Kâṭh. 13,4. Nir. 12,10. — Pañkav. Br. 16,4,10. Kâtj. Çr. 25,4,35. यमां द्विगुणामिव श्रियमिच्छत: Âçv. Çr. 11,5,4. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1,442. पुत्रौ प्रसुषुवे यमौ Bhâg. P. 3,17,2. 9,11,11. यमौ *Zwillinge* M. 9,126. MBh. 1,124. 3818. 15694. 7,68. Suçr. 1,318,7. Varâh. Bṛh. S. 78,24. Kathâs. 21,49. Bhâg. P. 1,10,9. 3,16,35. यमाभ्यां सुप्रवृद्धाभ्यामर्जुनाभ्याम् Hariv. 3451 (nach der Lesart der neueren Ausg.). Bhâg. P. 10,10,26. n. *Paar* Varâh. Bṛh. S. 77,33. यमौ heissen die Açvin H. 182. उष उषो हि वंसो अग्रमेषि त्वं यमयौरभवो विभावा *du* **Agni** *gehst voran jeder Morgenröthe, du strahltest für die Zwillinge* (nämlich, wenn sie zum Frühopfer kommen) ṚV. 10,8,4. *thou wast the divider of the two twins i. e. of day and night* M. Müller, Lect. II, 511. यम als Bez. *der Zahl zwei* Sûrjas. 1,32. fg. 2,19. — 2) m. N. des Gottes, der im Himmel über die Seligen (पितरः) herrscht, deshalb auch König heisst, ein Sohn **Vivasvant's**. Die nachvedische Zeit sieht in ihm den Beherrscher der Todten in der Unterwelt und fasst seinen Namen als *Bändiger* (schon Çat. Br. 7,2,1,10. auch von यु abgeleitet TS. 2,1,4,3). Die wirkliche Bed. ist *Zwilling:* **Jama** und **Jamî** sind das erste Menschenpaar. Wie diese nach der Legende Nir. 12,10 von **Vivasvant** mit der **Saraṇjû** erzeugt sind, so zeugt derselbe mit dem Abbilde der **Saraṇjû** den **Manu**, eine andere Form des Erstlings der Menschheit. Ueber den ganzen Mythus vgl. Roth in Z. d. d. m. G. 4, 425. fgg. und J. Muir in Journ. R. As. S. new ser. I, 287. — AK. 1,1,1,54. 3,4,1,33. Trik. 1,1,71. 3,3,302. H. 169. 184. H. an. Med. Hâr. 57. Halâj. 1,72. 100. 5,70. 83. ṚV. 10,14,1. fgg. 15,8. 18,13. यत्ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम् 57,7. 60,10. यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः 135,1. तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे 165,4. आस्ते यम उप याति देवान् AV. 4,34,3. 4. यमस्य जातममृतं यजामहे ṚV. 1,83,5. यो ममार प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयाय प्रथमो लोकमेतम्। वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ॥ AV. 18,3,13. 6,28,3. यमस्य भवनम् ṚV. 1,35,6. पड्वीशम् 10,97,16. योनिः 123,6. लोकः AV. 6,118,2. 19,56,1. सादनम् 2,12,7. 18,2,56. 3,70. गृहम् 6,29,3. राज्यम् 18,4,31. fg. Ross 5,5,8. Boten 30,6. श्वानौ 8,1,9. Mutter ṚV. 10,17,1. König **Jama** AV. 8,10,23. 15,14,7. 18,3,69. 1,14,2. Ait. Br. 8,7. Çat. Br. 2,3,2,1. Kaush. Up. 4,15. यावन्तो वै मृत्युबन्धवस्तेषां यम आधिपत्यं परीयाय TS. 5,1,8,2. — **Jama** und **Jamî** (**Jamunâ**) Hariv. 552. VP. 266. Bhâg. P. 6,6,38. 8,13,9. Mârk. P. 77,7. 106,4. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,41. fg. ein jüngerer Bruder **Manu's** MBh. 1,3136. fg. Hariv. 552. Mârk. P. 108,15. fgg. माण्डव्यशापाद्भगवान्प्रजासंयमनो यमः। भ्रातुः क्षेत्रे भुजिष्यायां जातः सत्यवतीसुतात् ॥ Bhâg. P. 3,5,20. यमः संयमतामहम् sagt **Kṛshṇa** Bhag. 10, 29. पितॄणामधिपः MBh. 14,1176. Hariv. 260. VP. 153. — 207. 286. Verz. d. Oxf. H. 61,*a*,1. fgg. einer der 8 Welthüter M. 5,96. im Süden MBh. 8,2102. R. 4,51,32. यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति Spr. 2321. शरीरान्तकरो नृणाम् MBh. 3,2138. यमो वैवस्वतो देवो यस्तवैष हृदि स्थितः Spr. 2406. समतया — अनुययौ यमम् Ragh. 9,6. यमस्त्वनन्तरं प्राद्धर्मे च परमां स्थितिम् MBh. 3,2228. रक्तान्तं यमप्रभं व्याधम् Çuk. in LA. (III) 34,17. यमक्षपद् Spr. 803; vgl. Hariv. 565. fgg. und शीर्णपाद्. यमाय नी Bhâg. P. 9,6,17. यमस्य सदनम् Daç. 2,35. दण्डी यमो महिषगः Varâh. Bṛh. S. 58,57. °मतनिबर्हणा Verz. d. Oxf. H. 250,*b*,37. als Gottheit (Beherrscher) des Nakshatra **Apabharaṇî** (**Bharaṇî**) Weber Ǵjot. 94. fg. Nax. 2,300. 376. Varâh. Bṛh. S. 98,4. der 4ten **Tithi** 99,1. eines **Karaṇa** 4. Liedverfasser von ṚV. 10,10. 14. Verfasser einer Hymne auf **Vishṇu** Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,39. eines Gesetzbuchs Jâǵn. 1,4. Verz. d. B. H. No. 140. 322. 1017. 1166. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, N. 1. 266,*a*,41. 268,*a*,6. 12. 270,*b*,32. 279,*a*,22. Madhus. in Ind. St. 1,20,21. °संहिता Gild. Bibl. 430. Vgl. कालान्तक°, बृहद्यम, महा°, लघु°, स्वल्प°. — 3) m. *der Planet Saturn* H. ç. 14. Med. Varâh. Bṛh. S. 4,21. 20,7. 28,21. 98,13. Ind. St. 2,278. fg. 283. Verz. d. B. H. No. 1249. auch Saturn gilt für einen Sohn **Vivasvant's**, aber von der **Khâjâ**; vgl. Hariv. 564. Bhâg. P. 8,13,10. — 4) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge **Skanda's** (neben **Atijama**) MBh. 9,2547. — 5) m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 58,4. fehlerhaft für याम. — 6) m. *Krähe* H. an. Med. Vgl. यमदूतक. — 7) n. in der Gramm. *a*) *Zwillingslaut; so heissen gewisse von den Grammatikern angenommene nasale Zwischenlaute zwischen Mutis und folgenden Nasalen;* vgl. Whitney in AV. Prât. S. 63. Weber in Ind. St. 4,123. ṚV. Prât. 1,10. 49. 6,8. fgg. 14,10. 22. VS. Prât. 1,41. 74. 82. 103. 4,111. 161. 8,29. AV. Prât. 1,99. TS. Prât. 21,8. 22,12. Pat. zu P. 1,1,8. — *b*) *Tonlage:* समान° AV. Prât. 1,14. एक° (= एकश्रुति Comm.) TS. Prât. 15,9. द्वि° (= स्वरित Comm.) 19,3. 23,16. चतुर्यम 18. सप्त° ṚV. Prât. 13,17. — 8) f. यमी N. pr. der Zwillingsschwester **Jama's**, die in der nachvedischen Zeit der **Jamunâ** gleichgesetzt wird, Naigh. 5,5. Nir. 11,33. Trik. 1,2,31. H. 1083. ṚV. 10,10,7. 9. Çat. Br. 7,2,1,10. VS. 12,63. Kâṭh. 7,10. Pañkav. Br. 11,10,23. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1,442. Hariv. 609. fg. VP. 266. Bhâg. P. 6,6,38. 8,13,9. Mârk. P. 106,4. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,41. fg.

1. यमक (von यम्) *Hemmung* u. s. w.; = संयम, m. Med. k. 141. n. Trik. 3,3,38. m. = व्रत H. an. 3,84.

2. यमक (von 2. यम) 1) adj. *doppelt, zweifach:* मण्डलानि विचित्राणि यमकानीतराणि च (यमकानि = सदृशानि Nilak.)। सव्यानि च विचित्राणि दक्षिणानि च सर्वशः ॥ — व्यचरंस्ते रथोत्तमाः MBh. 3,757. 7,4926. 9,3267. यमकं (= शत्रूणां निरोधकं Nilak.) कृत्वा तान्योधान्प्रत्यवारयत् 4,1821. यमक = यमज *von Geburt doppelt* Trik. 3,3,38. H. an. 3,84. Med. k. 141. — 2) m. (sc. स्नेह) *zwei verbundene Fettstoffe: Oel und* **Ghṛta** Çârṅg. Saṁh. 3,1,3. Suçr. 2,440,8. — 3) n. *a*) *Doppelverband* Suçr. 1,65,17. 66,1. — *b*) *Wiederkehr gleichlautender Silben, Agnominatio, Paronomasie* Trik. H. an. Med. Kâvjâd. 1,61. 3,1. fgg. Sâh. D. 640. Pratâpar. 72,*b*,3. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,33. 208,*a*, No. 489. 210,*a*,

N. 1. Ghaṭ. 22. Arten derselben: युक्पाद° Bhaṭṭ. 10,2. अयुक्पाद° (अयुग्मपाद°) 10. आद्यन्त° 21. पादादि° 4. पादमध्य° 5. पादान्त° 3. पादादिमध्य° 15. पादाद्यन्त° 11. मध्यान्त° 17. काञ्ची° 8. गर्भ° 18. चक्रवाल° 6. पुष्प° 14. महा° 20. मिथुन° 12. वृत्त° 13. विपथ° 16. समुद्र° 7. सर्व° 19. यमकावली 9. °काव्य heisst das dem Ghaṭakarpara zugeschriebene künstliche Gedicht Haeb. Anth. S. 124. यमकत्व n. nom. abstr. Schol. zu Kāvjād. 1,61. — c) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑ Colebr. Misc. Ess. II,158 (V,5).

यमकालिन्दी (2. यम + का°) f. Bein. der Saṁǵńâ, der Mutter Jama's, Trik. 1,1,100.

यमकिंकर m. Jama's *Scherge* (किं°) Mârk. P. 14,70. Pańkat. 104,15. 247,8.

यमकीट (2. यम + कीट) m. *Holzwurm* Trik. 2,5,28.

यमकील (2. यम + कील) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 74.

यमकेतु (2. यम + केतु) m. *eine Fahne* Jama's so v. a. *ein Todeszeichen* Bhâg. P. 11,30,5.

यमकोटि und °कोटी (2. यम + को°) f. N. pr. einer mythischen Stadt, die nach den Astronomen 90° östlich von Lankâ liegen soll, Sûrjas. 12,38. Siddhântaçir. 3,28. 44. 46. Verz. d. B. H. No. 1240. Reinaud, Mém. sur l'Inde 341. fg. 347. 350.

यमक्षय m. Jama's *Behausung* MBh. 12,11128. R. Gorr. 2,18,13. Bhâg. P. 2,8,6. 9,20,22. — Vgl. u. 1. क्षय.

यमगाथा f. *ein über* Jama *handelnder Vers* oder *ein solches Lied* TS. 5,1,8,2. Kâṭh. 20,8. Pâr. Gṛhj. 3,10; vgl. Ǵâǵń. 3,2, wo zu गाथा aus यमसूक्त यम zu ergänzen ist.

यमगीत n. *der über* Jama *handelnde Gesang*, Bez. des 7ten Kapitels im 3ten Buche des VP.

यमघण्ट m. Bez. eines astr. Joga Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,41.

यमघ्न adj. Jama (*den Tod*) *vernichtend*, Beiw. Vishṇu's Praçnottaram. in Monatsb. d. Berl. Ak. 1868, S. 110.

यमज (2. यम + 1. ज) adj. *von Geburt doppelt*, m. du. *Zwillinge* MBh. 1,5271. 3,10858. 15608. Hariv. 552. Kathâs. 23,91. 63,7. Uttararâmak. 87,7 (112,3).

यमजात dass. R. 7,97,5. °जातक dass. 66,9. 96,17.

यमजित् m. Jama's *Besieger*, Bein. Çiva's H. 200, Sch.

यमजिह्वा f. Jama's *Zunge*, N. pr. einer Kupplerin Kathâs. 57,59.

यमतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 73,*b*,17.

यमत्व n. *das* Jama-*Sein* TS. 2,1,4,4. MBh. 3,16781. Pańkar. 1,8,23.

यमदंष्ट्र (2. यम + दंष्ट्रा) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 9,16. eines Râkshasa 18,336. 42,125. eines Kriegers auf Seiten der Götter 48,17.

यमदंष्ट्रा (wie eben) f. Jama's *Spitzzahn*: यमदंष्ट्रान्तरं गतः so v. a. *dem Tode verfallen* MBh. 7,4152.

यमदग्नि falsche Schreibart für जमदग्नि Bhar., Dvirûpak. nach ÇKDr.

यमदण्ड m. Jama's *Keule* R. 1,56,19. R. Gorr. 1,56,28. Kathâs. 18,281.

यमदूत 1) m. Jama's *Bote* AV. 8,2,11. 8,11. Pâr. Gṛhj. 3,15. Spr. 1261. Pańkar. 1,3,32. Kaurap. 31. — 2) f. ई N. einer der neun Samidh Gṛhjas. 1,28.

यमदूतक 1) m. *a)* Jama's *Bote*. — *b) Krähe* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. °दूतिका *die indische Tamarinde* Wilson nach Çabdar., ÇKDr. angeblich nach AK.

यमदेवता f. Bez. *des unter* Jama *stehenden* Nakshatra Bharaṇî H. 108.

यमदैवत adj. Jama *zum Beherrscher habend* Varâh. Bṛh. S. 81,8.

यमद्रुम m. Jama's *Baum*, *Bombax heptaphyllum* Râǵan. im ÇKDr.

यमद्वितीया (2. यम *Zwilling* + द्वि°) f. Bez. *des 2ten Tages in der lichten Hälfte des* Kârttika Verz. d. Oxf. H. 284,*a*,45. °व्रत 34,*a*,23.

यमद्वीप m. N. pr. einer *Insel* VP. 175, N. 3. — Vgl. यवद्वीप.

यमधानी f. Jama's *Behausung* Spr. 779.

यमधार (2. यम + 2. धारा) m. *eine best. zweischneidige Waffe* ÇKDr.

यमन (von यम्) 1) adj. f. ई *bändigend, lenkend* VS. 9,22. 14,22. — 2) m. *der Gott* Jama Med. n. 109. — 3) n. *das Bändigen, Zügeln* H. an. 3,401. यमनाद्यतिरुच्यसे Hariv. 14953. कालियस्य Râǵa-Tar. 5,114. *das Binden* H. an. Med. *das Aufhören* Med.

यमनक्षत्र n. Jama's *Sternbild* TBr. 1,5,2,7. Weber, Nax. 1,323. 2,309. fg. 384.

यमनिका f. falsche Schreibart für यवनिका ÇKDr. nach Râmâçrama zu AK. 2,6,3,22.

यमनेत्र adj. Jama *zum Führer habend* VS. 9,35. TS. 1,8,7,1.

यमन्वन् m. oder यमन्वा f. *eine durch* Vṛddhi *gesteigerte Nominalform* Çânt. 2,18.

यमपुरुष m. Jama's *Scherge* Âçv. Gṛhj. 1,2,5. Verz. d. B. H. No. 324. Bhâg. P. 5,26,8.

यमप्रस्थपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 250,*b*,37.

यमप्रिय adj. *dem* Jama *lieb*; m. *Ficus indica* Çabdar. im ÇKDr.

यमभगिनी f. Jama's *Schwester* d. i. *der Fluss* Jamunâ H. 1083.

यममार्ग m. Jama's *Pfad*: °गमन *das Betreten dieses Pfades* so v. a. *das Empfangen des Lohnes für seine Thaten* Verz. d. Oxf. H. 10,*b*,17.

यमयन als Beiw. Çiva's Hariv. 14894 fehlerhaft für ऽब्रह्ममथन (= ब्रह्मशिरोहर्तृ Nilak.), wie die neuere Ausg. liest.

यमया N. der 4ten Constellation (योग) Ind. St. 2,269.

यमयिष्णु adj. fehlerhafte Lesart des SV. (I,5,1,2,3) für नमयिष्णु des ṚV.

यमरथ m. Jama's *Vehikel* d. i. *ein Büffel* H. 1281, Sch.

यमराज् m. (nom. °राट्) *König* Jama AK. 1,1,1,54. H. 185, Sch.

यमराज m. dass. H. 185. N. pr. eines Arztes Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,6.

1. यमराजन् m. *König* Jama Bhâg. P. 6,2,21.

2. यमराजन् adj. Jama *zum König habend*, Jama's *Unterthan* ṚV. 10,16,9. AV. 18,2,25. 46. TS. 5,5,9,4. Çâṅkh. Çr. 4,21,9. Kauç. 62.

यमराज्य n. Jama's *Herrschaft* AV. 12,3,1. 3. 4,36. VS. 19,45. Çat. Br. 12,8,1,19. Çâṅkh. Gṛhj. 5,9. Maitrjup. 6,36.

यमराष्ट्र n. Jama's *Reich* Suçr. 1,116,15. Râǵa-Tar. 4,292.

यमर्क्ष n. *ein unter* Jama (*Saturn*) *stehendes Sternbild*, — *astrol. Haus* (ऋक्ष = गृह) Varâh. Bṛh. S. 96,6.

यमल (von 2. यम) 1) adj. *verzwillingt, gepaart, doppelt* (n. *Paar* Trik. 2,5,38. H. 1425. Med. l. 125. Halâj. 4,15) Suçr. 1,66,1. छिद्राः 2,247,11. यमलैर्वेगैः 495,1. यमला भद्रपदाः Varâh. Bṛh. S. 105,2. यमलं जातं च कुसुमफलम् 46,33. यमलोद्भव *Geburt von Zwillingen* 46,53. °शान्ति

eine Sühnungshandlung nach der Geburt von Zwillingen Saṁsk. K. 91, *a.* यमलौ *Zwillinge* Mârk. P. 106,4. यमलाभ्यामर्जुनाभ्याम् *ein Paar* Arǵuna-*Bäume* (die Kṛshṇa im Wege standen und von ihm entwurzelt wurden) Hariv. 3451 (यमाभ्याम् die neuere Ausg.). यमलार्जुनौ personificirt als Feinde Kṛshṇa's und später als Verwandlungen Nalakubara's und Maṇigrîva's, zweier Söhne des Kubera, angesehen, H. 219. R. 7,6,35. 7,23,1,42. Bhâg. P. 10,10,23. fgg. यमलार्जुनकौ Hariv. 5876. यमलार्जुनभञ्जन Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's H. 221, Sch. Pańkar. 4,1,23. 3,132. यमल m. als Bez. *der Zahl zwei* Sûrjas. 8,5. 7. — 2) f. आ *a) eine best. Form des Schluchzens* (हिक्का) Suçr. 2,494,15. 495,2. — *b)* N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 27. Vgl. यामल. — *c)* N. pr. eines Flusses Çatr. 1,54. — 3) f. ई *ein Paar Stöcke* Med.

यमलोक m. Jama's *Welt* Pańkav. Br. 9,8,4. MBh. 7,3002. Spr. 2093. Pańkar. 1,3,31. Verz. d. B. H. 146,*a*,9.

यमवत्स (2. यम + वत्स) adj. *Zwillingskälber werfend* Kauç. 93.

यमवत् (von 1. यम) adj. *der sich bändigt, seine Leidenschaften in der Gewalt hat* Ragh. 9,1. *modestus* Stenzler.

यमवाहन m. Jama's *Reitthier* d. i. *ein Büffel* Trik. 2,5,4. H. 1281.

यमविषय m. Jama's *Reich* Maitrjup. 4,2. R. 3,54,28.

यमव्रत n. *eine dem* Jama *geltende Observanz* Kauç. 82. Jama's *Verfahren, — Weise* Spr. 2321. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*.

यमशिख (2. यम + शिखा) m. N. pr. eines Vetâla Kathâs. 121,29.

यमश्रेष्ठ adj. *deren Erster* Jama *ist:* पितरः AV. 11,6,11.

यमश्व m. Jama's *Hund* (श्वन्) Kâṭh. 37,14.

यमसदन n. Jama's *Sitz, — Behausung* Spr. 743. 1928. Bhâg. P. 5, 26,31. — Vgl. यमसादन.

यमसभ n. Jama's *Gericht* (सभा) P. 4,3,88. °सभा f. dass. Kathâs. 72, 349. Davon adj. °सभीय *darüber handelnd* P. 4,3,88.

यमसात् (von 2. यम) adv. in Verbindung mit कृ *dem Todesgotte übergeben, — zuführen* Bhaṭṭ. 5,3.

यमसादन n. = यमसदन AV. 12,5,64. Taitt. Âr. 6,7,6. MBh. 1,5990. 6276. R. Gorr. 2,37,24. 77,12. 3,28,4. Mârk. P. S. 657, Z. 11. Vet. in LA. (III) 13,18.

यमसान (von यम्) adj. *Zügel —, Gebiss führend:* भसद्श्वो न यमसान आसा ṚV. 6,3,4.

यमसू 1) adj. *Zwillinge* (2. यम) *gebärend* ṚV. 3,39,3. VS. 30,15. Çâṅkh. Gṛhj. 3,10. अ° Kauç. 109. — 2) m. Jama's *Erzeuger* d. i. *der Sonnengott* H. 95, Sch.

यमसूक्त n. *die* Jama-*Hymne* Pâr. Gṛhj. 3,10. Jâǵń. 3, 2.

यमसूर्य n. *ein Gebäude mit zwei Hallen, von denen die eine nach Westen, die andere nach Norden gerichtet ist,* Varâh. Bṛh. S. 53,39. fg.

यमस्तोम m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 15,9,1. 2.

यमस्वसृ f. Jama's *Schwester*, Bez. 1) der Jamunâ Med. s. 59. Hariv. 6784. — 2) der Durgâ Trik. 1,1,52. H. ç. 56. Med.; vgl. ज्येष्ठा यमस्य भगिनी Hariv. 3271.

यमह्लादिका f. N. pr. eines Wesens im Gefolge der Devî Wilson, Sel. Works 2,39.

यमह्रासेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,5.

यमातिरात्र (2. यम + अ°) m. N. eines 49tägigen Sattra Pańkav. Br. 24,12,3. Âçv. Çr. 11,5,4. Maç. 9,10.

यमादर्शनत्रयोदशी f. Bez. *eines best. 13ten Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,21 (Verz. d. B. H. 135,*b*,28).

यमादित्य m. *eine best. Form der Sonne* (आदित्य) Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,8. 35.

यमानिका f. *Ptychotis Ajowan Dec.* Ratnam. 97. — Vgl. नेत्र° und यवानिका.

यमानी f. dass. Ratnam. 97. Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 2,220,12. 224, 12. 306,8. — Vgl. यवानी.

यमानुग (2. यम + अ°) adj. *in* Jama's *Gefolge seiend:* पुरुष *ein Scherge* Jama's Mârk. P. 14,76.

यमानुचर (2. यम + अ°) m. *ein Scherge* Jama's Bhâg. P. 5,26,13.

यमान्तक (2. यम + अ°) m. Jama *als Todesgott:* °समः क्रोधे MBh. 2, 690. 5,4664. R. 6,79,55. Burn. Intr. 531. Wassiljew 186. Bein. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. du. Jama *und der Todesgott* Mârk. P. 43,34. — Vgl. कालान्तक und कालान्तकयम.

यमाय्, °यते *den Todesgott* Jama *darstellen* Gît. 4,10.

यमारि m. Jama's *Feind* (अरि), Beiw. Vishṇu's Pańkar. 4,3,70.

यमालय m. Jama's *Behausung* (आलय) Bhâg. P. 5,26,37.

यमिक n.: अगस्त्यस्य यमिके N. eines Sâman Ind. St. 3,237,*b*.

1. यमिन् (von 1. यम) adj. *der sich zügelt* Çâk. 47, v. l. Spr. 3143. 4089. Prab. 1,12.

2. यमिन् (von 2. यम) adj. °नी *Zwillinge werfend* AV. 3,28,1.

यमिष्ठ (von यम् mit der Endung des superl.) adj. *am besten zügelnd* ṚV. 1,55,7. 6,67,1.

यमुना (यमुना Uṇâdis. 3,61) f. 1) N. pr. eines Flusses AK. 1,2,3,31. Trik. 1,2,31. H. 1083. Halâj. 3,52. LIA. I, 47. fg. ṚV. 5,52,17. आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च 7,18,19. 10,75,5. Ait. Br. 8,23 (vgl. Çat. Br. 13, 5,4,11). Çâṅkh. Çr. 13,29,25. 33. Pańkav. Br. 9,4,11. 25,10,24. 13,4. Kâtj. Çr. 24,6,10. 39. Lâṭj. 10,19,9. 10. Âçv. Çr. 12,6,28. MBh. 3,8217. 5,7346. 6,322. Hariv. 3620. 5768. fgg. 9506. R. 2,71,6. Megh. 52. Varâh. Bṛh. S. 5,37. 16,2. 69,26. VP. 572. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*, N. 3. °तीर्थमाहात्म्य Verz. d. B. H. 144,14. mit यमी, der Zwillingsschwester Jama's, identificirt Hariv. 552. 6784. Mârk. P. 77,7. 78,30. 106,3. 108, 19. °पति Bein. Vishṇu's Pańkar. 4,3,147. — 2) N. pr. einer Tochter des Muni Mataṅga Kathâs. 67,74. fgg. 101,151.

यमुनाजनक m. *der Vater* (जनक) *der* Jamunâ, Bein. *des Sonnengottes* H. 95.

यमुनादत्त (य° + दत्त) m. N. pr. eines Frosches Pańkat. 212,25.

यमुनाद्वीप m. N. pr. einer Oertlichkeit Schiefner, Lebensb. 308 (78).

यमुनाप्रभव (य° + प्र°) m. *die Quelle der* Jamunâ (ein Wallfahrtsort) MBh. 3,8022.

यमुनाभिद् (य° + भिद्) m. Bein. Baladeva's H. 224.

यमुनाभ्रातृ m. *der Bruder der* Jamunâ d. i. Jama AK. 1,1,1,54.

यमुनाष्टक (यमुना + अ°) n. *acht Strophen zu Ehren der* Jamunâ, Titel eines Gedichtes Hall 147.

यमुनाष्टपदी (यमुना + अ°) f. Titel einer Schrift Hall 152.

यमुन्द् m. N. pr. eines Mannes P. **4**,**1**,149, Sch. — Vgl. यामुन्दायनि.

यमुषदेव Bez. *einer Art Zeug* Râǵa-Tar. **1**,299.

यमेरुका f. *eine Art Pauke, auf der die Stunden angeschlagen werden*, Trik. **1**,1,121.

यमेश (2. यम + ईश) adj. Jama *zum Beherrscher habend;* n. *das* Nakshatra Bharaṇî Varâh. Bṛh. S. 7,5.

यमेश्वर (2. यम + ई°) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,15.

1. यम्य partic. fut. pass. von यम् P. **3**,1,100. Vop. 26,15.

2. यम्य (von 2. यम) adj. *verzwillingt:* नाना चक्राते यम्याऽ वपूंषि Ṛv. **3**,55,11. Dagegen scheint zu यमी (f. von यम) zu gehören यम्यः Ṛv. **5**,44,4 und यम्या संयती **9**,68,3 und auf die letztere Stelle dürfte die Aufnahme von यम्या (sollte wohl यम्या betont sein) unter den Namen für *Nacht* Naigh. **1**,7 (vgl. Çat. Br. **8**,5,**2**,5) zu beziehen sein.

ययाति (vielleicht von यत्) m. N. pr. eines Stammhaupts der Vorzeit, eines Sohnes des Nahusha, Trik. **2**,8,8. LIA. I,713. 726. ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते Ṛv. **10**,63,1. ययातिवत् **1**,31,17. — Ṛv. Anukr. Maitrjup. **1**,4. MBh. **1**,47. 222 (S. 9). 3155. **2**,319. **3**,2235. 16675. **4**,1768. **5**,3903. 3918. **7**,2292. 6029. **12**,987. fgg. **13**,324. Hariv. 1599. fgg. R. **1**,70,41 (72,30 Gorr.). **2**,21,46. 61. 77,10 (84,9 Gorr.). R. Gorr. **2**,116,32. **3**,71,8. **4**,16,8. Çâk. 82. Kathâs. 27,67. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,4. 40,*a*,35. 73,*b*,11. 345,*b*,16. fg. VP. 413. Bhâg. P. **1**,12,24. **6**,6,31. **9**,18,1. 23,18.

ययातिचरित n. Jajâti's *Geschichte* Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,3. 44,*b*,30. Titel eines Schauspiels 144,*b*, No. 301. fg.

ययातिपतन n. Jajâti's *Fall* (पतन), N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. **3**,4089.

ययातिविजय m. Jajâti's *Sieg*, Titel eines Werkes Sâh. D. 176,1.

ययावर (v. l. या°) m.: तस्माद्ययावरः क्षेम्यस्येशे तस्माद्ययावरः क्षेम्यमध्यवस्यति TS. **5**,2,**1**,7.

ययि und ययी (von 1. या) Uṇâdis. **3**,159. adj. *laufend, eilend:* उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजत् die Wolke Ṛv. **1**,51,11. उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिम् 87,2. उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः 5,73,7. प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवः **10**,92,5. सिन्धवो न ययियः 78,7. अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृवाहणं रथं युञ्जाथाम् 2,37,5. ययीरथः Uǵǵval. ययी (ययिन् ÇKDr.) Çiva Uṇâdik. bei Wilson.

ययु (wie eben) Pat. zu P. **6**,1,12. adj. dass. Bez. des *Rosses* VS. 22,19. ययु (Uṇâdis. **1**,22) steht AV. **4**,24,2, die Stelle ist aber verdorben. Nach AK. **2**,8,**2**,13. Trik. **3**,3,318. H. 1243. an. 2,377 und Med. j. 46 *ein zum Rossopfer bestimmtes (frei umherlaufendes) Ross;* nach Trik. H. an. und Med. auch *Pferd* überh.

यर्हि (von 1. य) conj. *wann* P. **5**,3,21. Vop. 7,101. H. ç. 203. mit ind. und potent., es entsprechen तर्हि und एतर्हि. रक्षांसि वा एनं तर्ह्यालभन्ते यर्हि न जायते यर्हि चिरं जायते Ait. Br. **1**,16. 27. TS. **1**,7,**1**,2. यर्हि होता यजमानस्य नाम गृह्णीयात्तर्हि ब्रूयात् **4**,3. **3**,1,**1**,3. **2**,1. **5**,1,**2**,4. 4,**2**,1. **7**,2,**4**,1. **2**,5. Das Wort erscheint erst wieder im Bhâg. P. und **zwar** in der Bed. *wann, als, wenn* (es entsprechen तत्र, तदा, अथ, तत्प्रभृति, gewöhnlich fehlt aber das correl.); mit perf. **1**,11,9. 18,6. imperf. **5**,1,6. 3,10. aor. **10**,29,36. praes. **3**,27,2. 32,9. **7**,9,20. potent. **2**,7,38. 9,3. ohne verbum finitum **1**,8,38. **3**,15,46. **4**,25,55. 28,15. **5**,5,32. **6**,2,42. **10**,8,24. *da, weil* **3**,21,20. **4**,20,3. **5**,18,3.

1. यव m. 1) *Getraide*, in frühester Zeit vermuthlich *mehlgebende Körnerfrucht* überh., *Korn;* in der Folge *Gerste*, pl. *Gerstenkörner* (AK. **2**,9,15. 24. H. 401. 1170. 1181. an. 2,534. Halâj. 2,430. P. **4**,3,166, Vârtt. 1, Sch.). Im AV. und namentlich in den Brâhmaṇa sind यव und व्रीहि die Hauptarten der Körner, während im Ṛv. der Reis nicht genannt wird. Ṛv. **1**,23,15. 66,3. यवं वर्पन्ता 117,21. पच्यते यवः *es reift die Frucht* 135,8. यवं न चर्कृषद्वृषा 176,2. यवो वृष्टीव मोदते **2**,5,6. 14,11. **5**,85,3. **7**,3,4. **8**,2,3. 22,6. 52,9. 67,10. **9**,55,1. 68,4. **10**,27,8. यवेन क्षुधं तरेम 42,10. 68,3. 131,2. AV. **2**,8,3. **6**,30,1. 50,1. 2. 91,1. व्रीहि, यव, माष, तिल 140,2. 142,1. 2. **8**,7,20. **9**,1,22. 6,14. व्रीहियवौ **12**,1,42. VS. 5,26. 18,12. 23,30. TS. **6**,2,**10**,3. 4,**10**,5. 7,2,**10**,2. TBr. **1**,8,**4**,1. Çat. Br. **1**,1,**4**,20. **2**,5,**2**,1. **3**,6,**1**,9. 10. **4**,2,**1**,11. **12**,7,**2**,9. व्रीहियवाः **14**,9,**3**,22. Kâtj. Çr. **1**,4,14. 9,1. व्रीहीन्यवान्वा पक्वानध्यवस्यति *reife Fruchtfelder* **22**,3,42. Âçv. Çr. **6**,9,1. Kauç. 8. 24. 34. 69. सयव 28. 86. °कलापि Çâṅkh. Çr. **14**,40,17. °खल 15. °वेला Lâṭj. **8**,3,7. °मुष्टि Gobh. **3**,7,5. Kathâs. 71,266. °चूर्ण Çâṅkh. Çr. **4**,15,31. °क्षोद H. 402. — M. **3**,267. **5**,29. **9**,39. यवान्पिबेत् **11**,108. 152. 198. Jâǵṅ. **1**,230. पञ्चशीर्षा यवाश्चापि शतशीर्षाश्च शालयः MBh. **6**,87. ओषधीनां यवाः (उत्तमाः) **14**,1220. Bhâg. P. **11**,16,21. R. **3**,22,7. 16. Suçr. **1**,73,6. 145,18. 164,2. 189,9. 198,19. यवान्न **2**,131,4. 135,5. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,38. यवाङ्कुर Ragh. 9,42. °प्ररोह Kumâras. 7,17. 82. यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयः Spr. 1416. 1713. 1908. व्रीहियवम् 2282. fgg. Varâh. Bṛh. S. **8**,30. 15,6. 16,7. 19,6. 29,4. 41,2. 46,33. 55,16. °क्षेत्र Kathâs. 33,111. Pańkat. 224,4. Mârk. P. 15,7. 49,67. P. **1**,4,27, Sch. **4**,2,16, Sch. **1**,4,52, Vârtt. 7, Sch. आर्या हि यवशब्दादीर्घशूकविशेषं प्रतियन्ति म्लेच्छास्तु कङ्गुम् Schol. zu Njâjas. 2,56 (ed. Calc. 1828). Am Ende eines adj. comp. f. आ P. **4**,1,54, Sch. Vgl. इन्द्र°, काक°, कु°, तिक्तयवा, पूतयवम्, पूयमानयवम्, भद्रयव. — 2) *ein Gerstenkorn* als Maass = $\frac{1}{6}$ Aṅgula Kâtj. Paddh. 356,16. 26. 357,10. Trik. **2**,2,2. = $\frac{1}{8}$ Aṅgula Varâh. Bṛh. S. 58,2. 79,8. als Gewicht = 6 Senfkörner M. **8**,134. Jâǵṅ. **1**,362. Wise 125. = 12 Senfkörner = $\frac{1}{2}$ Guṅǵâ Çârṅg. Saṁh. **1**,1,30. यवाः सप्त विषस्य Jâǵṅ. 2,98. Vgl. त्रि°. — 3) in der Chiromantie *eine dem Gerstenkorn ähnliche Figur an der Hand* Varâh. Bṛh. S. 68,42. 70,2. Sâmudraka im ÇKDr. — 4) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich die günstigen Planeten in den Häusern 4 und 10, die ungünstigen in 1 und 7 stehen,* Varâh. Bṛh. 12,5. 14.

2. यव m. pl. nach den Comm. so v. a. पूर्वपक्षाः *die ersten Monatshälften* VS. 14,26. 31. Çat. Br. **8**,4,**2**,1. मासा वै यवाः Kâṭh. 21,2. Mah. zu VS. 12,74. यवात्तर Schol. zu Lâṭj. **1**,11,27. **2**,2,6. Andere Texte haben die Form याव.

3. यव (von यु) P. **3**,3,57, Sch. 23, Sch. nach gaṇa उञ्छादि zu P. **6**,1,160 im Veda यवं; adj. *fernhaltend, abwehrend:* अग्निर्यव इन्द्रो यवः सोमो यवः। यवयावानो देवा यावयन्त्वेनम् AV. **9**,2,13. यवो ऽसि (Anfang eines Mantra) Jâǵṅ. **1**,230.

यवक (von 1. यव) m. Trik. **3**,5,3. P. **5**,2,3. *Gerste* Râmâçr. zu AK. ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 29,3. Vâgbh. 6,5. 25. यवक = यवप्रकार gaṇa स्थूलादि zu P. **5**,4,3.

यवक्य adj. *mit* Javaka *besäet* P. 5,2,3. AK. 2,9,7. H. 967.

यवक्रिन् m. = यवक्री, यवक्रीत MBh. 3,10733. यवक्रीस् st. यवक्रिन् ed. Bomb.

यवक्री m. = यवक्रीत MBh. 3,10704. 10706. 10758. gen. °क्रेस् 10759. Decl. Vop. 3,58. fg.

यवक्रीत (1. यव + क्रीत) m. N. pr. eines Sohnes des Bharadvâǵa (*für Gerste gekauft*) MBh. 3,10700. fgg. 5,3789. 12,7592. 13,1763. 7108. 7663. Hariv. 9571. R. 7,1,2. Varâh. Bṛh. S. 48,65.

यवत्ता f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184).

यवक्षार m. *Aetzkali* (क्षार), *aus der Asche von Gerstenstroh* (1. यव) *bereitet*, AK. 2,9,109. Trik. 2,9,36. H. 943. Ratnam. 86. Suçr. 1,132,16. 227,10. 2,89,11. 125,15. 508,11. Çârṅg. Saṁh. 2,6,18. The Vytians know how to prepare an alkaline salt from the ashes of burnt vegetables, which they usually distinguish by the name of the plant from which it is obtained, Ainslie 1,327.

यवखद् (1. यव + खद्) gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5,2,116. Davon adj. (मत्वर्थे) यैवखदिक ebend.

यवगण्ड m. = युवगण्ड Çabdar. im ÇKDr.

यवग्रीव adj. *dessen Hals* (ग्रीवा) *einem Gerstenkorne* (1. यव) *gleicht*, von einem Hahne Varâh. Bṛh. S. 63,2. nach dem Comm. wird ein solcher Hahn gewöhnlich यवशिरस् genannt.

यवचतुर्थी f. Bez. *eines best. Spiels am 4ten Tage* (चतुर्थी) *in der lichten Hälfte des* Vaiçâkha, *bei dem man sich gegenseitig mit Gerstenmehl* (1. यव) *bestreut*, Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,45.

यवज (1. यव + 1. ज) m. 1) = यवक्षार Ratnam. 86. — 2) = यवानी Râǵan. im ÇKDr.

यवतिक्ता f. *eine best. Pflanze*, = शङ्खिनी, vulgo यवेची (nach Nigh. Pr. यवेचिा) Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,183,20.

यवद्वीप m. *die Insel* Java R. ed. Bomb. 4,40,30. fg. जलद्वीप ed. Gorr. — Vgl. यमद्वीप und Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 40.

यैवन् m. so v. a. 2. यव. स यो देवानामासीत्स यवाुवत ह्वि तेन देवा यो ऽसुराणामासीत्सो ऽयवा नहि तेनासुरा श्रयुवत Çat. Br. 1,7,3,25. fg.

1. **यवनँ** Uṇâdis. 2,74. m. 1) *ein Grieche, ein Fürst der Griechen* (gaṇa कम्बोजादि zu P. 4,1,175, Vârtt.); pl. *die Griechen, die griechischen Astrologen* Med. n. 109. AV. Par. in Verz. d. B. H. 93. P. 4,1,49. M. 10,44. यदोस्तु यादवा ज्ञातास्तुर्वसोर्यवनाः स्मृताः MBh. 1,3533. 5535. योनिदेशाच्च (der Kuh Vasishṭha's) यवनान् (असृजत्) 6683. 2,578. 6,373 (VP. 194). 7,399. सर्वज्ञा यवनाः — शूराश्चैव विशेषतः 8,2107. 12,2429. 13,2103. 2159. Hariv. 760. 768. 776. यवनानां शिरः सर्वम् (मुण्डयित्वा) 780. 2362. 4969. R. 1,54,20 (55,20 Gorr.). 55,3 (56,3 Gorr.). 4,43,20. 44,13. अरुणाद्यवनो माध्यमिकान् Pat. bei Gold. Mân. 230, *a*. यवनपाण्ड्यसल्पीतनादीनि नेत्राणि Suçr. 1,41,6. Varâh. Bṛh. S. 2,15 (Cit. aus Garga). 4,22. 5,78. 80. 9,21. 35. 10,6. 15. 18. 13,9. 14,18. 16,1. 18,6. Bṛh. 7,1. 8,9. 11,1. 12,1. 21,3. 27,2. 19. 21. Bhaṭṭotp. zu 7,9. सर्वाचारविहीनश्च म्लेच्छ इत्यभिधीयते। स एव यवनदेशोद्भवो यावनः Prâjaçkittend. 20,*a*,2. यवनम्लेच्छयावनानामन्नभोजने 57,*a*,1. VP. 175. 374. Bhâg. P. 2,4,18. 4,27,23. fg. 9,8,5. 12,1,28. Mârk. P. 58,52. Daçak. 111,8. 148,15. 149,1. 2. Verz. d. B. H. 287. No. 857. 862. 865. 1403. Verz. d. Oxf. H. 74,*b*,15. 154,*b*,9. 329,*a*, No. 780. 338,*a*,14. Ind. St. 2,251. fg. चाण्डालानां सहस्रैश्च (lies सहस्रं च) सूरिभिस्तत्त्वदर्शिभिः। एको हि यवनः प्रोक्तो न नीचो यवनात्परः॥ Vṛddha-Kâṇ. 8,5. यवनानां लिपिः P. 4,1,49, Sch. यवनाचार्य Colebr. Misc. Ess. 2,365. 367. 411. Ind. St. 1,467. 2,247. 258. Verz. d. B. H. No. 881. यवनेश्वर Verfasser eines Ǵâtaka Bhaṭṭotp. zu Varâh. Bṛh. 7,9. zu Bṛh. S. 104. Verz. d. Oxf. H. 329,*a*, No. 781. 336,*b*,16. 338,*a*,15. Z. f. d. K. d. M. 4,342. fgg. °जातक Ind. St. 2,247. वृद्धयवनजातक 1,467. यवनप्रयुक्तपुराण Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. यवनाः eine Dynastie VP. 474. 477, N. 66. Bhâg. P. 12,1, 28. यवनी f. *eine Griechin* Ragh. 4,61. Çâk. 93,17. Vikr. 77,5. किराती चामरधारिर्यवनी शस्त्रधारिणी Cit. beim Schol. zu Çâk. 20,16. यवनी युद्धकाले राज्ञो ऽस्त्रं ददाति ebend. यवन्यः als Erklärung von वानवासिकाः स्त्रियः Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,20. fg. Heutigen Tages bezeichnet यवन nach Molesw. *einen Muhammedaner* und überh. *einen Mann fremden Stammes*. Vgl. काल°. — 2) *Waizen*. — 3) *Möhre*. — 4) *Olibanum* (तुरुष्क) Râǵan. im ÇKDr.

2. **यैवन** nom. ag. von यु gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134.

3. **यवन** adj. falsche Schreibart für 1. जवन *rasch, schnell* Med. n. 109. अश्वानीक Mâlav. 71,2. *eine* Javana-*Reiterschaar* nach Weber. m. *ein schnell laufendes Pferd, Renner* Med.

4. **यवन** M. 7,41 und Kâm. Nîtis. 1,14 fehlerhaft für पैजवन.

यवनक 1) m. *eine best. Getraideart* (= थोरगहूं d. i. स्थविरगोधूम) Ratnâk. in Nigh. Pr. — 2) यवनिका f. = यवनी (s. u. 1. यवन 1) Çâk. 93,17, v. l.

यवनदेशज *Styrax* oder *Benzoin* (*im Lande der* Javana *wachsend*) Bhâvapr. in Nigh. Pr.

यवनद्विष्ट m. *Bdellion* (*den* Javana *verhasst*) Râǵan. im ÇKDr.

यवनपुर n. *die Stadt der* Javana, wohl *Alexandrien* Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 54.

यवनप्रिय n. *Pfeffer* (*den* Javana *lieb*) H. 420.

यवनमुण्ड m. *ein kahl geschorener* Javana gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72; vgl. Hariv. 780 oben u. 1. यवन 1).

यवनसेन (1. य° + सेना) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 36,73.

यवनानी (von 1. यवन) f. P. 4,1,49. Vop. 4,26. *die Schrift der* Javana P., Schol.

यवनारि m. *der Feind* (अरि) *der* Javana: 1) Bein. Kṛshṇa's oder Vishṇu's Trik. 1,1,31. H. ç. 73. — 2) N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 121,*b*,2 v. u. 122,*a*,5.

यवनाल m. *Andropogon bicolor Roxb.* H. 1178. Suçr. 2,279,5. 335,9. — Vgl. यावनाल.

यवनालज m. *Aetzkali aus der Asche von* Javanâla H. 944.

1. **यवनिका** s. u. यवनक.

2. **यवनिका** f. = जवनिका *Vorhang* Schol. zu AK. 2,6,3,22. Trik. 2,6,35. Daçar. 1,55. Spr. 779. Çiç. 4,54. Bhâg. P. 1,8,19 (ed. Bomb. ज°). Schol. zu Çâk. 46,18.

1. **यवनी** s. u. 1. यवन 1).

2. **यवनी** f. = जवनी *Vorhang* H. 680 (falschlich यमनी).

यवनेष्ट adj. *den* Javana *lieb* (1. इष्ट); 1) m. *a*) *eine Art Zwiebel* oder *Knoblauch* (लशुन, पलाण्डु, राजपलाण्डु). — *b*) *Azadirachta indica Juss.*

— 2) f. आ *der wilde Dattelbaum* Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. *a*) *Blei* H. 1041. — *b*) *Zwiebel, Knoblauch.* — *c*) *Pfeffer* Râǵan. im ÇKDr.

यॅवपाल (यव + पाल) m. P. 6,2,78.

यवपिष्ट (1. यव + पिष्ट) n. *Gerstenmehl* Gobh. 3,5,4. Suçr. 2,348,11.

यवप्रख्य (1. यव + प्रख्या) adj. *gerstenähnlich;* f. आ Bez. *eines best. Ausschlages* Bhâvapr. im ÇKDr.

यवफल (1. यव + फल) m. 1) *Bambusrohr* AK. 2,4,5,26. H. 1153. an. 4,297. Med. l. 162. Hâr. 176. — 2) *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) Dec. — 3) *Wrightia antidysenterica R. Br.* H. an. Med. — 4) *Ficus infectoria Willd.* (प्लक्ष) Çabdar. im ÇKDr. *Zwiebel* Wilson nach ders. Aut.

यवबुस (1. यव + बुस) *Gerstenspreu* P. 4,3,48. Davon adj. यवबुसक *zur Zeit der Gerstenspreu abzutragen:* ऋण ebend.

यॅवमध्य (1. यव + म°) 1) adj. f. आ *dessen Mitte der eines Gerstenkorns gleicht* d. i. *in der Mitte am stärksten und nach den Enden abnehmend* Çat. Br. 13,6,1,9. Suçr. 1,295,7. 2,17,13. eine Kuh Varâh. Bṛh. S. 61,3. गायत्री (7 + 10 + 7 Silben) ṚV. Prât. 16,17. त्रिष्टुभ् (8 + 8 + 12 + 8 + 8) 47. Verz. d. B. H. 100,16. Ind. St. 8,254. — 2) m. *eine Art Tamburin* H. 293, Sch. — 3) n. *eine Art* Kândrâjaṇa Prâjaçkittat. im ÇKDr. Kull. zu M. 11,217. — 4) n. *ein best. Längenmaass* Mârk. P. 49,38.

यवमध्यम n. = यवमध्य 3) M. 11,217.

यॅवमत् (von 1. यव) P. 8,2,9. 1) adj. *getraidereich;* n. *Kornreichthum:* अश्वावद्गोमद्यवमत् ṚV. 8,82,3. 9,69,8. 10,42,7. कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय *Kornbauer* 131,2. *Gerste enthaltend, mit Gerste vermengt* TS. 6,2,10,3. 11,2. Kâṭh. 25,10. 26,5. Çat. Br. 3,6,1,7. 7,1,3. Âçv. Gṛhj. 1,11,3. 2,8,15. 4,8,7. — 2) m. N. pr. eines Gandharva Çat. Br. 11,2,3,9. Verfassers von VS. 2,19 VS. Anukr. — 3) °मती f. *ein best. Metrum, 2 Mal* —◡—◡—◡—◡—◡—◡,◡—◡—◡ —◡—◡—◡—— Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VI, 11). Ind. St. 8,362.

यवमॅय (wie eben) adj. *aus Gerste bestehend, — bereitet* P. 4,3,149. चरु TS. 1,8,7,1. 2,4,11,5. Çat. Br. 2,2,3,13. 5,2,16. 5,2,4,11. 5,5,9.

यवमात्र (1. यव + मात्रा) adj. *so gross wie ein Gerstenkorn* Kâtj. Çr. 3,4,1.

यवय्, यवॅयति denom. von युवन् West.

यवयस n. N. pr. eines Varsha im Plakshadvîpa Bhâg. P. 5,20,3.

यवयॅावन् (von यु) adj. *abwehrend:* यवयावानो देवा यावयत्वेनम् AV. 9,2,13.

यवयुॅ (von 1. यव) adj. *Korn wünschend* ṚV. 8,67,9.

यववक्त्र (1. यव + वक्त्र) adj. *mit einer dem Gerstenkorne ähnlichen Spitze versehen:* सूची Suçr. 2,103,13. शलाका 343,14.

यवशिरस् adj. *dessen Kopf die Gestalt eines Gerstenkorns hat;* s. u. यवग्रीव.

यवशूक m. = यवक्षार Trik. 2,9,36. Ratnam. 86.

यवशूकज m. dass. Râǵan. im ÇKDr.

यॅवस n. (m. AK. 2,4,5,33. Halâj. 2,36, die v. l. aber n.) *Gras, Futter, Weide* H. 1195. ṚV. 1,38,5. 3,45,3. 4,41,5. 42,10. ईयुर्गावो न यवसादगोपाः 7,18,10. 87,2. तर्यन्तो रयो यवसस्य भूरेः 93,2. स नो यवसमिच्छतु 102,1. धेनुर्यवसस्य पिप्युषी 2,16,8. सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते 10,11,5. 25,1. 99,8. 100,10. 115,2. गावो न यवसेषा 1,91,13. °मुष्टि Çâṅkh. Çr. 3,20,1. Âçv. Gṛhj. 2,4,8. यवसोदके *Futter und Wasser* Kâtj. Çr. 26,6,23. Pâr. Gṛhj. 3,14. M. 7,75. 195. 11,196. Jâǵn. 3,300. देशे सुयवसोदके MBh. 3,2534. 15043. 12,8393. Hariv. 4429. R. 2,46,12 (44, 12 Gorr.). 91,72. R. Gorr. 2,47,14. Suçr. 1,122,7. Kâm. Nîtis. 11,16 (lies °यवसेन्धनं). 15,41. 19,6. Kathâs. 18,114. 75,92. Varâh. Bṛh. S. 93,5. Bhâg. P. 1,17,3. 4,17,23. 18,23. Pańkat. 47,10. 182,13. ed. orn. 4,18. — Vgl. आ°, सु°, सू°.

यॅवसप्रथम adj. VS. 21,43 nach Mah. *unter den Speisen* (य°) *die erste* (प्र°) *Stelle einnehmend;* eher *mit der Weide beginnend* d. h. *auf guter Weide beruhend, wohlgenährt.*

यवसाॅद् (यवस + 2. अद्) adj. *Gras verzehrend* ṚV. 1,94,11. *weidend* 10,27,9.

यवसिन् und यवस्यु s. सु°.

यवसुर n. *ein aus Gerste* (1. यव) *bereitetet berauschendes Getränk* (सुरा) ÇKDr. nach Siddh. K.

यवागूॅ Uṇâdis. 3,81. f. Siddh. K. 248,*a*,8. *Reisbrühe* (Wasser mit wenigen Reiskörnern gekocht; nach einigen Angaben 6 Theile Wasser auf einen Theil Reis); auch *dünne Abkochungen von andern Körnern und Stoffen.* AK. 2,9,50. H. 397. Halâj. 2,165. TS. 6,2,5,2. Taitt. Âr. 2,8,8. जर्तिल°, गवीधुक° TS. 5,4,3,2. TBr. 2,1,5,6. Çat. Br. 1,7,1,10. 2,5,3,16. Kâtj. Çr. 4,2,17. 15,22. 5,11,10. 7,4,27. Schol. 308,21. Gobh. 1,3,9. Çâṅkh. Çr. 2,7,9. 3,12,15. Âçv. Çr. 2,3,2. M. 6,20. 11,106. तिलतण्डुल° Suçr. 1,158,13. क्षीर° 159,18. रस° 128,8. सिक्थैर्विरहितो मण्डः पेया सिक्थसमन्विता। विलेपी बहुसिक्था स्याद्यवागूर्विरलद्रवा॥ 229,15. 2,22,5. 56,16. स्वल्पतण्डुला 229,18. Çârṅg. Saṁh. 2,2,112. 3,1,20. Varâh. Bṛh. S. 51,31. Mârk. P. 39,54. fg. P. 7,3,69, Vârtt., Sch. त्रैरेयी P. 4,2,20, Sch. Nach Çârṅg. Saṁh. 2,2,101. fg. *ein Decoct, für welches 4 Theile eines Stoffes in 64 Theilen Wasser gesotten und der Abguss auf die Hälfte eingekocht wird.*

यवागूमॅय adj. (f. ई) von यवागू P. 5,4,21, Sch.

यवाग्रज (1. यव - अग्र + 1. ज) m. 1) = यवक्षार AK. 2,9,109. H. 943. Med. ṇ. 15 (जवाग्रज). Ratnam. 86. — 2) = यवानी Râǵan. im ÇKDr.

यवाग्रयण (1. यव + आ°) n. *Gerstenerstlinge* Schol. zu Kâtj. Çr. 1,8,6. 4,6,1.

यवाचित (1. यव + आ°) adj. *mit Gerste (Korn) beladen* TS. 1,8,18,1. Çat. Br. 5,4,5,22. Pańkav. Br. 18,9,17. Kâtj. Çr. 15,8,27. Âçv. Çr. 9,4,18.

यवाॅद् (1. यव + 2. अद्) adj. *Gerste essend* ṚV. 10,27,9.

यवान adj. *rasch, schnell* Med. n. 110 fehlerhafte Schreibart für जवान, partic. von 1. जू; vgl. 1. जवन.

यवानिका f. = यवानी AK. 2,4,5,10.

यवानॅी (von 1. यव) f. P. 4,1,49. Vop. 4,26. *Ptychotis Ajowan Dec.* AK. 3,4,1,11. Med. n. 110. Suçr. 2,50,2. 222,12. 410,8. 453,12. 459,13. Çârṅg. Saṁh. 2,6,42. Schol. zu Kâtj. Çr. 946,1 v. u. = दुष्टो यवः P., Sch. — Vgl. यमानी.

यवापत्य (1. यव + अ°) n. = यवक्षार Râǵan. im ÇKDr.

यवाम्लज (1. यव - अम्ल + 1. ज) n. *saurer Gerstenbrei* (सौवीरक) Râǵan. im ÇKDr.

यॅवाशिर् (1. यव + आ°) adj. *mit Getraide vermengt, gemalzt:* Soma ṚV. 1,187,9. 2,22,1. 3,42,7. 8,81,4.

यवाष s. येवाष.

यवाषिकं adj. von यवाष gaṇa 1. कुमुदादि zu P. 4,2,80.

यवाषिन् desgl. gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80.

यवास Uṇâdis. 4, 2. 1) m. *Alhagi Maurorum Tourn.*, *Mannapflanze* AK. 2,4,3,10. Ratnam. 119. *eine Art* Khadira Çabdam. im ÇKDr. = यास, त्रिकर्णिका u. s. w. Râǵan. ebend. — gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2, 135. — 2) f. आ *ein best. Gras*, = गुण्डासिनी Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. धन्व°.

यवासक m. *Alhagi Maurorum Tournef.* Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 1, 165,5. 2,418,4.

यवासशर्करा (य°+श°) f. *Mannazucker* Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,188,6.

यवासिनी f. *eine mit* Javâsa *bestandene Gegend* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

यवाह्व (1. यव + आह्वा) m. = यवक्षार Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 2,119,6.

यविक, यविन् und यविल adjj. (मत्वर्थे) von 1. यव gaṇa तुन्दादि zu P. 5,2,117.

यविष्ठ (superl. zu युवन्) 1) adj. *der jüngste* (m. *ein jüngerer Bruder* H. 552) P. 5,3,64. 6,4,156. Vop. 7,56. किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठो न आजगन् ṚV. 1,161,1. 10,143,2. Bhâg. P. 3,1,6. 6,7,33. 9,4,1. 10,82,16. Pańkar. 4,8,68. Sehr häufig heisst so *das jüngste* d. h. *eben aus den Hölzern geborene* oder *auf den Altar gesetzte Feuer*, ṚV. 1,22,10. 147, 2. 189,4. 2,6,6. 3,15,3. 19,4. 4,2,10. 13. 4,6. 11. दधाति रत्नं विधते यविष्ठः 12,3. 4. हुवे वः सूनुं सहसो युवानमद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् 6, 5,1. 6,2. 7,3,5. यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः 4,2. 7,3. 12,1. 10,20,2. Çat. Br. 7,5,2,38. Daher Bein. Agni's TS. 2,2,3,1. Agni Javishṭha angeblicher Liedverfasser zu ṚV. 8,91 und Kâṭh. 16,16. fg. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,10. pl. *seine Nachkommen* 19,*a*,26. — Vgl. यवीयंस्.

यविष्ठवत् adj. *das Wort* यविष्ठ *enthaltend* Çat. Br. 7,5,2,38. 10,1,3,11.

यविष्ठ्य adj. = यविष्ठ VS. Prât. 4,153. stets am Ende eines Pâda als Dijambus ṚV. 5,26,7. 1,36,6. 3,9,6. 28,2. 5,8,6. यविष्ठ्य nach P. 5, 4,36, Vârtt. und Kâç. zu P. 5,4,30.

यवीनर m. N. pr. eines Sohnes des Aǵamîḍha Hariv. 1075. des Dvimîḍha VP. 453. Bhâg. P. 9,21,27. des Bharmjâçva 32. des Vâhjâçva Hariv. 1779.

यवीयंस् (compar. zu युवन्) adj. *jünger*; m. *ein jüngerer Bruder*, f. °यसी *eine jüngere Schwester* P. 5,3,64. 6,4,156. Vop. 7, 56. AK. 2, 6, 1,43. H. 552. Med. s. 60. Kauç. 82. 84. M. 2,128. 130. 8,116. 9,57. fg. 11,185. Jâǵn. 1,52. MBh. 5,5044. यवीयसः nom. pl. Hariv. 6481. R. 1, 31,15. 70,2. यवीयसं भ्रातरम् 105,39. 3,24,10. 4,3,12. 17,31. 56,24. fg. Bhâg. P. 4,13,11. 24,1. 5,9,1. 9,15,13. 10,54,52. Mârk. P. 50,22. मातृ, जननी, अम्बा *eine jüngere Stiefmutter* R. 2,22,30 (19,22 Gorr.). 52,56. 58 (51,23. 25 Gorr.). der Çûdra im Gegensatz zu den drei übrigen Kasten MBh. 1,6487 (nom. pl. यवीयसः). in Verbindung mit भूत im Gegens. zu महाभूत 12,8977. — Vgl. यविष्ठ.

यवीयस (von यवीयंस्) m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,24.

यवीयुध् (vom intens. von 1. युध्) adj. *kriegerisch*, *streitbar* ṚV. 8,4,6. 10,61,9. यव्युध् Çatar. in Ind. St. 2,47.

यवोत्थ (1. यव + उत्थ) n. = यवाम्ल Râǵan. im ÇKDr.

यवोदर (1. यव + उ°) n. *der Leib* —, *die dicke Stelle eines Gerstenkorns* als *best. Längenmaass* Ind. St. 8,437. Mârk. P. 49,37.

यवोर्वरा (1. यव + उ°) f. *Gerstenacker* Çâṅkh. Çr. 14,40,14. Lâṭj. 8,3,4.

1. यव्य (von 1. यव) 1) adj. *zu Gerste geeignet* P. 5,1,7. *mit Gerste besäet*, — *bestanden* 2,3. AK. 2,9,7. H. 967. Halâj. 2,8. — 2) m. nach Mah. *Gersten-*, *Fruchtvorrath* VS. 23,8; vgl. VS. Prât. 2,20. — 3) m. pl. Bez. eines Ṛshi-Geschlechts: सोमपा यव्याः (सोमवायव्याः ed. Bomb.) MBh. 12,6143.

2. यव्य (wie eben) n. Bez. gewisser Homamantra (neben गव्य) TBr. 3,8,18,3.

3. यव्य (von 2. यव) adj. etwa *die* Java *enthaltend*; m. *Monat* Çat. Br. 1,7,2,46. Gaṅgâmâh. im Prâjaçkittat. im ÇKDr.

यव्या nach Naigh. f. so v. a. *Fluss*; wohl aus der Stelle वार्णा त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि ṚV. 8,87,8 gefolgert. Hier wie in den folgenden Stellen könnte der adverbial gebrauchte instr. sg. *in Menge* (also etwa auch *in Strömen*) bedeuten. परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ṚV. 1,167,4. महश्चिद्यस्य मीळ्हुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः 173,12. Die Comm. leiten das Wort bald von 1. यव, bald von यु ab; das Metrum erfordert यवीया zu sprechen.

यव्यावती f. N. pr. eines Flusses oder einer Oertlichkeit ṚV. 6,27,6. Pańkav. Br. 25,7,2. Im ersten Fall zu यव्या, im andern etwa zu यव्य = 1. यव्य mit Dehnung des Auslauts.

यव्युध् s. यवीयुध्.

यश am Ende eines adj. comp. = यशस् in अति° und सु°. n. यशम् (Benfey vermuthet यशस्) N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*a*; vgl. कार्त°.

यशःकर्ण (यशस् + कर्ण) m. N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 14. 7,5, Çl. 7.

यशःकेतु (यशस् + केतु) m. N. pr. verschiedener Fürsten Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,25. Kathâs. 80,4. 86,4. 89,3.

यशःपटह (यशस् + प°) m. *Pauke* AK. 1,1,7,6. H. 293.

यशःपाल (यशस् + पाल) m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. 2,278.

यशद n. *ein best. Mineral*, vulgo दस्ता ÇKDr. nach Bhâvapr. दस्ता ist nach Haughton *zinc, lapis calaminaris, pewter, tutenag.*

यशश्चन्द्र (यशस् + चन्द्र) m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 7.

यशःशेष (यशस् + शेष) adj. *von dem nur der Ruhm übriggeblieben ist* d. i. *todt* H. 374. °शेषीभूत *verstorben* Ind. St. 8,393. °शेषतां प्रया so v. a. *sterben* Kathâs. 91,44. °शेषतां नी *tödten* Râǵa-Tar. 4,112.

1. यशस् 1) n. Uṇâdis. 4,190. *a*) *Ansehen*, *schöne* oder *stattliche Erscheinung*; *Schönheit*, *Würde*, *Herrlichkeit*: आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः ṚV. 4,1,16. 1,25,15. प्रति प्रयुष्यतु यशो अस्य 7,104,11. 5,4,10. 6,2,1. 79,7. 9,20,4. वीरवत् 4,32,13. 7,15,12. 8,23,21. 9,61,26. ध्रुव 7,74,5. द्युम्नितम 8,19,6. द्युमत् 9,32,6. AV. 3,22,1. 6,39,1. 2. हिरण्ये गोषु यश्वशः 69,1. (पुरं) यशसा संपरीवृताम् 10,2,33. यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च 3,18. विश्वरूप 8,9. चक्षुः श्रोत्रं यशो अस्मासु धेहि 11,5,25. 12,5,8. 19, 37,1. 58,3. VS. 18,8. 20,3. 32,3. यशस्, श्री Çat. Br. 11,6,2,2. 13,1,2,8. 14,9,4,6. 7. TS. 5,7,6,4. अप्सरसाम् Pâr. Gṛhj. 2,6. Kauç. 70. — *b*) *Ansehen*, *Ehre*, *Lob*, *Ruhm* AK. 1,1,5,12. H. 273. Halâj. 1,153. AV. 9,6,

35. 10,6,27. 13,4,14. ईश्वरो ह यश्चाप्यन्यो यतेताथ होतारं यशो ऽर्तो: Ait. Br. 2,20. उद्गातरि यशो ऽधात् 22. यं ब्राह्मणमनूचानं यशो नर्छेत् 5,23. 6, 34. 7,18. 32. आयुर्विद्या यशो बलम् M. 2,121. यशोमेधासमन्वित 3,263. यशो ऽस्य प्रथते 11,15. Hariv. 8391. विस्तीर्यते यशो लोके M. 7,33. संलिप्यते यशो लोके 34. कार्यत्ति च महद्यशः 3,66. यशः प्राप् 8,343. पुण्यैर्यशो लभ्यते Vṛddha-Kāṇ. 15,19. Spr. 2364. वर्धनं यशसः R. 2,74, 26. लोकानाविशते यशः Bhāg. P. 3,14,11. यशः स्फीतं निधाय 4,21,7. यशः पालय Spr. 2160. यशः रुद्यम् Ragh. 3,48. यशःशरीर 2,57. Kathās. 34,11. यशःकाय Spr. 940. यशोराशि Vikr. 11,17. यशोयुत *angesehen, berühmt* Varāh. Bṛh. S. 16,5. यशः कुमुदपाण्डुरम् Spr. 5070. Haeb. Anth. 483, Çl. 1. उद्दाम° Bhāg. P. 4,12,43. आढ्य° Kathās. 18,205. — MBh. 3,2081. 2410. Suçr. 1,123, 3. Ragh. 1,3. 7. 27. Megh. 58. Spr. 2627. Varāh. Bṛh. S. 15,16. 48,82. 63,3. 65,11. Bhāg. P. 3,28,18. pl. Ragh. 2,3. 4,19. यशांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वत्ति नः Spr. 1078. 2137. 5282. Prab. 3,14. यशस् neben कीर्ति M. 4,94. 11,40. Spr. 3108. Der personificirte *Ruhm* als Sohn Kâma's von der Rati Hariv. 12482. Dharma's von der Kîrti VP. 55. Mārk. P. 50,58. — c) *Gegenstand der Ehre, Respectsperson:* यशो भवति य एवं विद्वानाधत्ते Çat. Br. 2,2,3,1. 4,2,4,9. 5,3,2,3. ब्राह्मणं राजानमनु यशः करोति तस्माद्ब्राह्मणो राजानमनु यशः 4,2,7. 5,5,16. यशः स्याम 14,1,1,3. — d) *gefälliges* oder *angenehmes Wesen, Gunst:* देवेषु यशो मर्ताय भूषन् Ṛv. 9,94,3. मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या 10,22,2. 1,25,15. छार्दि त्यद्यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः 3,62,1. — e) N. eines Sâman Pañkav. Br. 15,3,32. 19,8,4. 9,3. Lāṭy. 3,4,8. Ind. St. 3,230,a. अगस्त्यस्य 200,a. इन्द्रस्य 208,b. — f) = उदक Naigh. 1,12. = अन्न 2,7. = धन 10. — 2) m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 373. fg. 397. Wassiljew 28. 47. 56. Schiefner, Lebensb. 247 (17). 308 (78). — Vgl. अ°, अति°, अप°, दीर्घ°, दुर्यशस्, निर्यशस्, पुण्य°, पृथु°, ब्रह्म°, भट्ट°, महा°, यज्ञ°, स्व°.

2. यशॅस् adj. 1) *ansehnlich, schön, würdig, herrlich:* भाग Ṛv. 3,1,19. 10,39,2. पोष 1,1,3. 31,8. 60,1. वर्णा 2,3,5. 3,1,11. रयि 6,8,5. 7,75,2. त्वमिन्द्र यशा असि 8,79,5. Agni 5,15,1. 32,11. — 2,8,1. 7,16,4 (यशस्तम). 8,2,22. 10,76,6. AV. 3,21,5. 6,39,2. 3. 13,1,38. VS. 20,44. — 2) *angesehen, geehrt:* भग Ṛv. 8,80,5. यशसामर्दुष्टिः 6,3,2. गोभिः ष्याम यशसो जनेष्वा 10,64,11. सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन 71,10. 9,97,3. ब्रह्माणास्ते यशसः सन्तु मान्ये AV. 2,6,2. — 3) *angenehm, werth:* वयं स्याम यशसो जनेषु Ṛv. 4,51,11. अधरमिन्द्रै यशसं कृधी नः 7,42,5. 8,48,5. 23,10. 9, 61,28. दधि *beliebt* 10,81,1. AV. 6,58,2. — Ṛv. 5,8,4 scheint यशसा irrig für यशसा (Bed. 1,c) betont zu sein.

यशस am Ende eines comp. = 1. यशस् in श्रीयशसानि Çat. Br. 12, 8,3,1. — Vgl. ब्रह्म°, यज्ञ°, हस्ति°.

यशस्कर (1. य° + 1. कर) 2) adj. f. ई *Ruhm verleihend, ruhmvoll* P. 3,2,20, Sch. Vop. 26,47. M. 8,387. MBh. 1,6147. 6396. R. 1,2,45. 3, 10,25. 5,35,47. Spr. 760. Mārk. P. 77,19. पितृमातृ° Bhāg. P. 4,27,7. 3,28,18. 4,17,36. सु° Pañkar. 1,1,25. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Kathās. 104,19. Rāja-Tar. 5,472. 6,53. 84. 119. 138. 8,2698. °स्वामिन् Bez. eines von einem Jaçaskara errichteten Heiligthums 6,140.

यॅशस्काम (1. य° + काम) 1) adj. *ehrbegierig* TS. 2,3,3,1. Ait. Br. 1,5. Kāty. Çr. 4,4,1. 11,2. 15,8. Lāṭy. 3,5,22. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 14.

यशस्काम्य् s. u. काम्य्.

यशस्कृत् (1. य° + कृत्) adj. *Ansehen verleihend* TS. 1,5,5,4 (महस्कृत् VS.).

यशस्य (von 1. यशस्) 1) adj. gaṇa स्वर्गादि P. 5,1,111, Vārtt. 2. Schol. zu P. 5,1,39. *Ansehen gebend, ruhmvoll:* सुयवसिनी मनवे यशस्ये (दशस्ये VS.) Himmel und Erde TS. 1,2,13,2. मूलग्रव Āçv. Gṛhj. 4,8, 35. VS. Prāt. 8,38. M. 1,106. 2,52. 3,106. 4,13. MBh. 1,2309. 2,236. R. 1,44,63. Suçr. 1,3,15. *geehrt:* अहं यशस्या धन्या च यस्यास्त्वं समुपस्थिता R. Gorr. 2,38,33. Vgl. अ° (auch R. 2,27,3). — 2) f. आ N. zweier Pflanzen: = जीवन्ती und ऋद्धि Rāgan. im ÇKDr.

यशस्यु (wie eben) adj. *Gunst suchend* AV. 4,11,6.

यॅशस्वत् (wie eben) 1) adj. Schol. zu P. 5,2,121. 8,2,9. Vop. 7,28. a) *ansehnlich, schön, herrlich, würdig* Ṛv. 1,9,6. यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः 79,1. राया 3,16,8. 8,23,27. Agni 91,8. 10,11,3. 20,9. TS. 1,5, 5,4. 4,4,12,2. — b) *rühmlich, ehrenvoll:* पृत्सुति Ṛv. 10,38,1. — c) *angenehm, werth:* यथेन्द्रो द्यावापृथिव्योर्यशस्वान्यथाप ओषधीषु यशस्वतीः AV. 6,58,2. — 2) f. °वती N. pr. eines Frauenzimmers Kathās. 73,257.

यशस्विन् (wie eben) adj. Sch. zu P. 5,2,121 und 1,4,19. 1) *ansehnlich, schön, herrlich, würdig* AV. 6,39,2. 19,56,6. Agni TS. 5,7,4,3. अग्नेः पशूनां यशस्वितमः TBr. 3,8,7,2. वृत्त Āçv. Gṛhj. 2,6,9. Çat. Br. 4,2,4, 10. 10,4,1,11. 11,2,3,11. 14,9,4,7. तेजस् Çāñkh. Gṛhj. 2,2. ओषधयः Kauç. 135. अयोध्या R. 2,71,19. गङ्गा 1,44,34 (45,30 Gorr.). मर्यादां तां समुद्रस्य वेलां गत्वा यशस्विनीम् 4,41,26. — b) *hoch angesehen, berühmt;* von Personen Khând. Up. 3,13,2. M. 3,40. 9,334. MBh. 1,5888. 3,2346. 2471. 2513. 2719. 15578. 5,7055. R. 1,2,45. 4,3. 8,10. 2,25,24. 29,17. 74,16. R. Gorr. 2,38,33. Spr. 1791. Kathās. 16,22. 21,108. 51,70. यशस्वितम von einem Bogen und einer Person Kaush. Up. 2,6. — 2) f. °विनी a) Bez. *einer best. Arterie* Verz. d. Oxf. H. 236,a,2 v. u. b,8. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: = वनकार्पासी Çabdar., = यवतिक्ता und महाज्योतिष्मती Rāgan. im ÇKDr. — c) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2628.

यशोगोपि m. N. pr. eines Scholiasten des Kāty. Çr.; s. Einl. S. VII. यशोग Weber, Lit. 137.

यशोघ्न (1. यशस् + घ्न) adj. f. ई *das Ansehen —, die Schönheit vernichtend* Pār. Gṛhj. 1,11,1. *den Ruhm vernichtend* M. 8,127. Bhāg. P. 4,2,10.

यशोद (1. यशस् + 1. द) 1) adj. *Ansehen —, Ruhm verleihend.* — 2) m. *Quecksilber* Rāgan. im ÇKDr. — 3) f. आ N. pr. a) der geistigen Tochter einer Klasse von Manen Hariv. 989. Verz. d. Oxf. H. 39,b,1 v. u. — b) der Frau des Kuhhirten Nanda, der Kṛshṇa gleich nach seiner Geburt als Kind untergeschoben wurde, und die daher als seine Mutter angesehen wird (यशोदानन्द u. s. w. Bez. Kṛshṇa's), Hariv. 3316. fgg. 8391. Spr. 4897. VP. 503. Pañkar. 1,7,78. 3,7,32. 4,1,18. 3,115. 8,14. Verz. d. B. H. No. 576. 1194. Verz. d. Oxf. H. 25,a,14. 27,a,45. 68,b,24. °गर्भसंभूता als Beiw. der Durgâ MBh. 4,179. — c) der Gattin Mahâvîra's und Tochter Samaravîra's Wilson, Sel. Works 1,293.

यशोदत्त (1. यशस् + दत्त) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 201,13.

यशोदा (1. यशस् + 2. दा) adj. *Ansehen gebend* TS. 4,4,6,2. Bez. gewisser Ishṭakâ 5,3,10,4.

यशोदेव 1) m. (1. यशस् + देव) N. pr. eines buddhistischen Bhikshu Lalit. ed. Calc. 1,9. eines Sohnes des Râmakandra Verz. d. Oxf. H. 280,b,12. — 2) f. ई (1. यशस् + देवी) N. pr. einer Tochter Vainateja's und Gattin des Bṛhanmanas Hariv. 1706. fg.

यशोधन (1. यशस् + धन) 1) adj. *dessen Reichthum im Ruhm besteht, reich an Ruhm, berühmt;* von Personen Ragh. 2,1. 3,48. 14,35. Bhâravi bei Uggval. zu Uṇâdis. 4,190. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Çl. 27. लोके यशोधनं किंचित् MBh. 1,6486. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 91,4. Verz. d. Oxf. H. 152,b,38.

यशोधर (1. यशस् + धर) 1) adj. *Jmdes Ruhm erhaltend* Bhâg. P. 1,17, 31. 9,2,36. — 2) m. a) Bez. *des 5ten Tages im bürgerlichen Monat* Ind. St. 10,296. — b) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 63,7. Râga-Tar. 6,219. 228. 250. 253. 8,2455. des 18ten Arhant's der vergangenen und des 19ten der zukünftigen Utsarpiṇî H. 52. 53. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Rukmiṇî MBh. 13,621 nach der Lesart der ed. Bomb. (यशोवर ed. Calc.). — 3) f. आ a) Bez. *der 4ten Nacht im bürgerlichen Monat* Ind. St. 10,296. — b) N. pr. verschiedener Frauen MBh. 1,3788. VP. 83, N. 6. Kathâs. 55,28. der Mutter Râhula's Burn. Intr. 278. Lot. de la b. l. 2. 164. Schiefner, Lebensb. 236 (6).

यशोधरेय m. Trik. 1,1,12 fehlerhaft für याशो°.

यशोधा (1. यशस् + 2. धा) adj. *Ansehen —, Ruhm verleihend* TBr. 3, 6,2,2. Bhâg. P. 3,1,38.

यशोधामन् (1. यशस् + 1. धा°) n. *eine Stätte des Ruhmes* Bhâg. P. 8,4,4.

यशोनन्दि (1. यशस् + न°) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,31.

यशोभगिन् (von 1. यशस् + भग) adj. *ruhmreich* VS. 2,20.

यशोभगीन und यशोभग्य ved. adjj. von 1. यशस् + भग P. 4,4,131. fg.

यशोभद्र (1. यशस् + भद्र) m. N. pr. eines der 6 Çrutakevalin bei den Gaina H. 33. Wilson, Sel. Works 1,336. 338. — Vgl. याशोभद्र.

यशोभृत् (1. यशस् + भृत्) adj. *Ruhm besitzend, berühmt* oder *Ruhm bringend* MBh. 1,561.

यशोमती (f. von यशोमत् und dieses von 1. यशस्) f. N. *der 5ten lunaren Nacht* Ind. St. 10,297. — Vgl. यशोवती.

यशोमत्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,46.

यशोमाधव (1. यशस् + मा°) m. *eine Form* Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 148,b,29.

यशोमित्र (1. यशस् + मित्र) m. N. pr. eines buddh. Autors Burn. Intr. 512. 563. fg. 566. 571. 574. Schiefner, Lebensb. 310 (80).

यशोराज (1. यशस् + राजन्) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,536. 561. 1119. 2842. 2846. 2908.

यशोलेखा (1. यशस् + ले°) f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 54,232. 234.

यशोवति s. u. यशोवती 2).

यशोवती (f. von यशोवत् und dieses von 1. यशस्) f. N. pr. 1) verschiedener Frauen Râga-Tar. 1,70. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. = यशोधरा Lalit. ed. Calc. 109,2. यशवती 270,17. — b) einer Gegend (urspr. eines Flusses) Varâh. Bṛh. S. 14,28 (verkürzt °वति). — 3) einer mythischen Stadt auf dem Meru Comm. zu Bhâg. P. 5,16,30. — Vgl. यशोमती.

यशोवर (1. यशस् + वर) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Rukmiṇî MBh. 13,621. यशोधर ed. Bomb.

यशोवर्मन् (1. यशस् + व°) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 54,153. fgg. Râga-Tar. 4,134. 137. fg. 705. Colebr. Misc. Ess. 2,299. 307. 309. 312. 314. Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 11; vgl. S. 36. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,11. Am Ende eines adj. comp. °वर्मक Kathâs. 54,198.

यशोघ्न (1. यशस् + घ्न) adj. *Jmdes Ruhm vernichtend* Bhâg. P. 6,5,38.

यशोहर (1. यशस् + हर) 1) adj. *den Ruhm raubend, Schande bereitend, schändend* MBh. 1,5987. R. Gorr. 2,110,5. आत्म° R. Schl. 2, 101,7. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Kshitîç. 17,10. 50,15. 17. °जित् Bein. Kakurâja's 17,11.

यष्टर् und येष्टर् (von 1. यज्) nom. ag. *Verehrer, Opferer* (= यजमान AK. 2,7,7. H. 817. Halâj. 2,265): यष्टा देवान् ṚV. 2,9,6. अतियाजस्य यष्टा 6,52,1. 10,61,17. TS. 1,1,12,1. अग्निर्वै देवानां यष्टा TBr. 3,3,2,6. ohne Object MBh. 3,511. 2451. Hariv. 298. Verz. d. Oxf. H. 33,b,12. 59,b,21. क्रतुसहस्राणाम् MBh. 5,3918. Hariv. 13060. Mârk. P. 120,2. 127,32. क्रतुशतैः Hariv. 12990. 13768. यष्टतर Nir. 8,8.

यष्टव्य (wie eben) adj. P. 8,2,36, Sch. *derjenige, welchem geopfert werden muss,* Maitrjup. 6,34. MBh. 3,511. 7,9488. Kathâs. 41,18. n. impers. *zu opfern* Nir. 8,12. Maitrjup. 6,36. Bhag. 17,11. MBh. 13,5107. Hariv. 297. 8005. Bhâg. P. 3,29,10. 4,14,6. Mârk. P. 35,56. 125,58. Pankat. 167,1. Bhâg. P. 10,71,3. सुनिश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्ये *zu opfern* R. 1,8,3. — Vgl. सु°.

1. यष्टि (von यम्, यज्) Uggval. zu Uṇâdis. 4,179. m. (dieses nicht zu belegen) und f. AK. 3,6,5,38. Siddh. K. 251,a,12. auch यष्टी f. gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. 1) *Stab, Stock, Keule, Flaggenstock* AK. 2,8,2,38. H. 785. 774. an. 2,96. Med. t. 25. Halâj. 4,41. 2,308. 321. Çat. Br. 14, 9,4,7. Kaush. Up. 4,19. वेणु° Çat. Br. 2,6,2,17. Kâtj. Çr. 5,10,21. पलाश° Kauç. 18. 39. 47. वेत्र° Çâk. 100. वैणवी M. 4,36. MBh. 1,2350. 14,1253. M. 5,99. MBh. 1,5464. 3,16836. 5,572. 5184. 6,2776. 7,6432. शनैर्यष्ट्युत्थानम् Spr. 1615. गतिरपि तथा यष्टिशरणा 4965. Suçr. 13,20. Schol. zu 7,10. Varâh. Bṛh. S. 103,13. Kathâs. 3,47. 60,173. fg. Çiç. 9, 39. Daçak. in Benf. Chr. 187,4. Pankat. III, 179. 105,19. 261,12. Verz. d. Oxf. H. 129,b,4. ध्वजाकारासु यष्टिषु Hariv. 4019. Varâh. Bṛh. S. 43, 8. 21. 24. 28. 72,4. — 2) *Stengel:* स्नुग्यष्टिर्लता यथा Hariv. 4495. R. 7, 37,1,28. कर्णिकार° 3,79,30. Vikr. 44. चूत° Kumâras. 6,2. कदम्ब° Uttararâmak. 63,7 (81,5). — 3) भुज° (यष्टि m. = भुजदण्डक Med.) *ein schlanker Arm* Ragh. 11,17. अङ्ग° *ein schlanker Leib* MBh. 2,2228. Hariv. 8387. Ragh. 14,27. Kumâras. 1,31. Spr. 991. 1654. Kaurap. 6. गात्र° (s. auch bes.) dass. Hariv. 8452. शरीर° dass. Ragh. 6,65. — 4) असि° *Klinge eines Schwertes* Varâh. Bṛh. S. 50,6. — 5) *Perlenschnur* H. 661. H. an. = हारलता (woraus Wilson zwei Bedd. macht) Med. = तन्तु *Schnur* Çabdam. im ÇKDr. मुक्तामयी Ragh. 13,54. मणि° Vikr. 51. Kumâras. 5,8. Halâj. 2,408. Vgl. हार°. — 6) *ein bes. Perlenschmuck* Varâh. Bṛh. S. 81,36. — 7) = यष्टीमधुक, मधुका *Süssholz* Med. Ratnam. 57. Suçr. 2,21,14. = मधुयष्टि H. an. = भार्गी *Clerodendrum Siphonan-*

thus R. Br. H. an. Med. यष्टी = यष्टिमधु Bhâvapr. im ÇKDr. — Vgl. केतु°, को°, गात्र°, चाप°, तुला°, त्रि°, ध्रुव°, ध्वज°, नाग°, ब्रह्म°, ब्राह्मणयष्टी (u. ब्राह्मणयष्टिका), भारयष्टि, वास°, हार°.

2. यष्टि f. nom. act. von 1. यज् P. 3,3,110, Sch. wohl fehlerhaft für इष्टि.

यष्टिक (von 1. यष्टि) 1) m. *ein best. Wasservogel*, = जलकुक्कुट Çabdar. im ÇKDr.; vgl. कोयष्टि. — 2) f. यष्टिका a) *Stab* Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 1,171,21. ममान्धस्यान्धयष्टिका R. Gorr. 2,66,23. — b) *ein best. Perlenschmuck* Gatâdh. im ÇKDr. — c) *ein länglicher Teich* Trik. 1,2, 28. — d) *Süssholz* Çabdar. im ÇKDr. Ratnam. 37. Suçr. 2,47,10. 54,16. 324,8. — Vgl. एकयष्टिका, नील°, ब्राह्मण°.

यष्टिगृह (1. य° + गृह) n. N. pr. einer Oertlichkeit Hall in der Einl. zu Vâsavad. 13.

यष्टिग्रह (1. य° + ग्रह) adj. *einen Stab tragend* P. 3,2,9, Vârtt. 1.

यष्टिनिवास (1. य° + नि°) m. *ein aus aufgerichteten Stangen bestehendes Taubenhaus* Ragh. 16,14. — Vgl. वासयष्टि.

यष्टिप्राण (1. य° + प्राण) adj. *dessen Kraft im Stabe liegt, ohne Stab Nichts vermögend* MBh. 1,5419.

यष्टिमधु (1. य° + मधु) n. *Süssholz* Halâj. 2,460.

यष्टिमधुका f. dass. AK. 2,4,3,28.

यष्टिमत् (von 1. यष्टि) adj. *mit einem Stocke (Flaggenstocke) versehen:* शक्तीकनक° (das suff. gehört zum ganzen comp.) von einem Wagen gesagt MBh. 13,2784.

यष्टियन्त्र (1. य° + यन्त्र) n. *ein best. astronomisches Instrument* Schol. zu Sûrjas. 13,20. Weber, Nax. 1,314.

यष्टी s. u. 1. यष्टि.

यष्टीक n. = यष्टिमधु *Süssholz* Râgan. im ÇKDr.

यष्टीपुष्प (य° + पुष्प) m. *Putranjiva* (पुत्रंजीव) *Roxburghii Wall.* Bhâvapr. im ÇKDr.

यष्टीमधु und °मधुक n. = यष्टिमधु *Süssholz* Ratnam. 37. Suçr. 1,18, 16. 60,15. 158,7. 2,137,13.

यष्ट्याह्व (1. यष्टि + आह्वा) und यष्ट्याह्वय (1. यष्टि + आ°) m. dass. Ratnam. 37. Suçr. 1,58,1. 94,7. 2,126,9. 222,6.

यष्ट्रस्क (?) m. pl. N. pr. eines Volkes Trik. 2,1,9.

यस्, यस्यति (प्रयत्ने Dhâtup. 26,101) und यसति P. 3,1,71. Vop. 8,67. 11,5. 1) *sprudeln* (von siedender Flüssigkeit), *Schaum auswerfen* (vgl. येष्): तपुर्ययस्तु चरुरग्निवाँ इव ṚV. 7,104,2. — 2) *sich's heiss werden lassen, sich abmühen;* mit dat. eines nom. act.: त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायेव यस्यति (v. l. für कल्पते) Spr. 4330.

— अव, davon अवयासे m. etwa *Abspannung* TS. 1,4,35,1.

— आ, आयस्यति *sich's heiss werden lassen, sich anstrengen:* रामाभिषेकार्थमिहायस्यसि (अभिषेकार्थे ed. Bomb.) R. 2,14,62. पिण्डार्थमायस्यतः (Conj. für आयास्यतः) Spr. 4675. आत्मार्थमायस्य Mârk. P. 34,12. *ermüden:* नायस्यसि तपस्यन्ती Bhaṭṭ. 6,69. नाययास द्विषां दैत्यैः 14,104. न चायसत् 15,54. — आयस्त = तेजित, क्षिप्त Trik. 3,3,149. H. an. 3, 248. Med. t. 93. = क्रोशित, क्रुद्ध (कुपित), हत H. an. Med. 1) *angefacht:* अनलः पवनायस्तः Hariv. 5522. — 2) *angestrengt, sich anstrengend* MBh. 7,1360 (ed. Bomb. आसाद्य st. आयस्तो). Mârk. P. 109,52. परमायस्त R. Gorr. 1,55,19. आयस्तनयन (= क्रोधप्रसारितनेत्र Nîlak.) so v. a. *die Augen aufreissend* Hariv. 4756. अनायस्तानना so v. a. *das Gesicht nicht verziehend* Mârk. P. 82,49. अनायस्त *wobei man sich nicht anstrengt* Bhâg. P. 11,25,28. अनायस्तम् adv. *ruhig* (= अकर्कशान्तरम् Nîlak.) Hariv. 16160. — 3) *ermüdet, erschlafft; niedergeschlagen:* मथनायस्तैर्बाहुभिः Spr. 767. Khând. Up. 5,3,4. Hariv. 4761. 13218. R. 2,20,8. 30,22. परमायस्त 37,16 (परमायत्त ed. Bomb.). 3,40,11. 6,19,65. 87,28. 7,99,4. आयस्तमनस् 2,114,34. नित्यायस्त *für immer erschlafft* so v. a. *todt* MBh. 13,26. — Vgl. आयास, आयासिन्. — caus. angeblich stets med. P. 1,3, 89. Vop. 23,58. *anstrengen, ermüden, quälen, peinigen:* न चायासयेच्छरीरम् Suçr. 1,367,3. नायासयामि भर्तारं कुटुम्बार्थे MBh. 13,5876. येनातिमात्रमात्मानमायासयसि Hariv. 7084. Kathâs. 117,93. im Prâkrit Vikr. 16,16. Mâlav. 32,7. काकेनायासिता भृशम् R. 2,96,39 (105,38 Gorr.). pass. *sich abhärmen, sich quälen:* मन्निमित्तं च — कच्चिद्राघवः। अत्यर्थमायास्यते रामो विदेशे R. 5,33,36. einen Bogen *anstrengen* so v. a. *häufig in Bewegung setzen:* अनायासितकार्मुक Spr. 912. so v. a. *verkümmern, schmälern:* नायासयन्त (= नोपपीडयन्ति स्म) ऋतवो ऽन्योऽन्यसंपदः Bhaṭṭ. 8,61.

— समा, partic. °यस्त *hart bedrängt:* शरौघ° R. 6,36,48.

— उद् s. उद्यास.

— नि, नियस्य MBh. 9,3586 fehlerhaft für नियम्य (so die ed. Bomb.).

— निस् s. निर्यास.

— प्र, °यस्यति P. 3,1,71, Sch. Vop. 8,67. 11,5. 1) partic. प्रयस्त *überwallend:* उखा चिदिन्द्र येषन्ती प्रयस्ता फेनमस्यति ṚV. 3,53,22. प्रयस्यन्ती, प्रयस्ता *in's Wallen gerathend, im Wallen befindlich* AV. 12,5,31. प्रयस्त = सुसंस्कृत *schmackhaft zubereitet (gut gekocht)* AK. 2,9,45. H. 411. — 2) *sich bemühen:* पुनः पुनः प्रायसडुत्प्लवाय सः Naish. 1,125. प्रयस्त *sich bemühend, eifrig* Çâk. 75. — Vgl. प्रयास, प्रायास. — caus. partic. प्रयासित n. *Anstrengung, Bemühung* Mâlatîm. 153,6.

— वि s. वियास.

— सम्, संयस्यति und संयसति P. 3,1,72. Vop. 8,67. 11,5. — Vgl. संयास.

यस्क (von यस्) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* P. 2, 4,63. Vop. 7,14. Âçv. Çr. 12,10. Saṁsk. K. 185,a,10. यस्का गैरिक्षिताः N. einer Schule Kâth. in Ind. St. 3,453. 475. fg. 8,245. fg.

यस्मात् (abl. von 1. य) conj. *weil, da;* mit entsprechendem तस्मात् M. 3,78. 102. 7,5. 199. 9,138. 10,72. Spr. 1372. 2418. R. Gorr. 1,46,22. Daç. 2,53. Sâṁkhjak. 35. ततस् Mârk. P. 16,87. तद् Dhûrtas. in LA. 77,4. तेन MBh. 5,6093. Daç. 2,24. अतस् R. Gorr. 1,1,22. Ragh. 1,77. 16,74. Kathâs. 55,178. ohne correlative Partikel Jâǵn. 1,334. R. 1,20, 19. 48,27. 66,10. Sâṁkhjak. 37. Spr. 1491. 3328. Kathâs. 34,26. 53,83. 56,7. 61,312. Râǵa-Tar. 4,363. Vet. in LA. (III) 3,15. *da* so v. a. *dass:* किं परित्यक्ता त्वयाहम् — यस्माद्राजभटा मां हि नयन्ति R. 1,54,8. इच्छसि त्वं विनश्यन्तं रामं लक्ष्मण मत्कृते। न मे शुश्रूषसे वाक्यं यस्मादभिहितं मया ॥ R. 3,51,11.

यस्य (von यस्) adj. = वध्य (Schol.) *zu tödten, dem Tode verfallen;* davon nom. abstr. °त्व n. Bhaṭṭ. 6,49.

यह्व m. oder यह्वस् n. *Wasser* Naigh. 1,12. *Kraft* 2,9.

यह्व adj. = महत् *gross* nach Sâj.: विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यह्वो नि वृक्षा इव येमिरे ṚV. 8,4,5. m. = अपत्य *Kind* Naigh. 2,2. Agni heisst

सहसो यह्वः ṚV. 8,49,13. sonst stets im voc. 1,26,10. 74,5. 79,4. 8,73,5.

यह्वै adj. (f. ई) nach Naigh. 3, 3 so v. a. महत् *gross;* etwa *in fortwährender Bewegung* oder *Thätigkeit befindlich, rastlos; continuus, beständig;* von Gewässern u. dgl. *beständig fliessend, jugis.* So heisst Agni ṚV. 1,36,1. 3,1,12. 2,9. 3,8. यासि यह्वश्चरणं सूर्यस्य 5, 5. 28, 4. 4,5,2. 7,11. 5,16,4. 7,6,5. 8,2. 10,92,2. 110,3. Rudra 8,13,24. Soma: अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते 9,75,1. वृषा इडुक्षे पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः 10,11,1. यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ 5,1,1. मनस् 8,13,20. 4,5,6. गिरः 1, 59,4. सूर्यं हरितः सप्त यह्वीर्वहन्ति 4,13,3. आपः 5,29,2. अवनीः 10,99,4. सप्त स्रवतः 1,71,7. ऊर्मयः 4,58,7. नद्यः 9,92,4. — f. pl. *fliessendes Wasser* Naigh. 1,15. यह्वीष्वोषधीषु विक्षु 7,56,22. 70,3. सप्त 1,72,8. 3, 1,4. दिवः 6,9. 2,35,9. 14; vgl. 9,33,5. — du.: यह्वी ऋतस्य मातरा Bez. von *Tag und Nacht, Himmel und Erde* ṚV. 1,142,7. 5,5,6. 41,7. — 6,17,7. 10,59,8 (vgl. 93,1); vielleicht *die beiden Hände* 9,102,7. — यह्व Uṇâdis. 1,154. m. = यजमान Uģģval.

यह्वत् adj. f. यह्वती so v. a. यह्व. आपः ṚV. 1,105,11. 9,113,8.

1. या, याति Dhâtup. 24,41. partic. यात्, gen. यातस्; याहि; अयुस् und अयान् P. 3,4,111, Sch.; ययौ,ययाथ, ययिम 6,1,196, Sch. 7,2,61, Sch., ved. ययुः 2. pl.; ययिवंस्; अयासीत् P. 7,2,73. अयासुस्, यासत्, यासिष्टम्, यासीष्ट 2. pl.; यास्यति, याता P. 7,2,61, Sch.; aus metrischen Rücksichten auch med.; infin. यातुम्, यातवे, यातवै (P. 3,4,9). 1) *fahren* (in weiterem Sinne), *gehen, ziehen, marschiren;* überh. *sich in Bewegung setzen, reisen; fortgehen:* यद्ध यान्ति मरुतः ṚV. 1,37,13. अयं वातो अन्तरिक्षेण याति 161,14. आशुभिश्चिद्यान् 2,38,3. रथेन 6,62,10. अर्वाची ते चक्रे यात्याः 10,85,12. नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति *einspännig ist nicht ordentlich gefahren* 131,3. नावेव यान्तम् 3,32,14. 33,2. इन्द्रेण याथ सरथम् 60,4. याहि राजेवामवाँ इभेन 4,4,1. इन्द्रो यातो ऽवसितस्य राजा *des Reisigen und des Rastenden* 1,32,15. 4,25,8. नियन्तो यान्तो अध्वना 8, 72,6. श्लोको न याताम् 10,12,5. अरिष्टो याति प्रथमः सिषासन् 5,31,1. 61,2. मित्रस्य यायां पथा 64,3. पन्थां सूर्यस्य यातवे 8,7,8. AV. 13,1,21. 2,28. 12,1,47. हरितो यातवे रथे बृहतीरयुक्त 13,2,8. Ait. Br. 4,27. ययैकतश्चक्रेण यायात्तादृक्तत् 5,30. Çat. Br. 13,3,2,9. प्राञ्चो यज्ञस्तायमानो यात् 1,3,1,12. 5,5,2,3. Kâtj. Çr. 7,9,18. 15,6,16. — यान्तो ददृशुरायान्तं द्वापरम् MBh. 3,2239. R. 1,5,2. 2,33,6. 58,6. वेगवान्राघवो ययौ 3,50,5. अन्वगययौ Ragh. 2,16. fg. 3,25. अग्रतो लक्ष्मणः यातः R. 2,59,4. यतो यास्ये सानुगा यातु मामनु Bhâg. P. 9,18,28. तस्यानुपदं ययौ Vet. in LA. (III) 25,8. तया यातं (impers.) यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दम् Çâk. 35. येनास्य पितरो याता येन याताः पितामहाः। तेन यायात्सतां मार्गम् M. 4,178. उत्पत्य नभसा ययौ Kathâs. 18,165. रथेन P. 8,1,60, Sch. यानेन खरयुक्तेन R. 2,69,18. येन (विमानेन) यामि विहायसा 3,54,6. संयच्छ वाजिनां रश्मीन्सूत याहि शनैः शनैः 2,40,22. 32. 70,29. वहन्ति शिविकामन्ये यान्त्यन्ये शिविकागताः Spr. 4699. प्लवमानो ययावब्धौ Kathâs. 52,329. नोदके शकटं याति Spr. 2345. एष याति शिवः पन्थाः MBh. 3,2824. शिरा यान्ति *die Adern laufen* Varâh. Bṛh. S. 54,62. von der *Bewegung* der Gestirne (यात *gegangen, stehend*) 4,5. 18,1. 2. 24,29. कुटिलं याता (उल्का) 33,29. *hingehen* Hariv. 10067 (med.). *kommen:* नो यान्ति मित्राणि च Spr. 5381. *marschiren, gegen den Feind ziehen* M. 7,183. *gehen, aufbrechen, fortgehen, sich entfernen* MBh. 3,2760. 2793. 5,7337. R. 1,17, 32. Çâk. 81. भूय आयाहि याहि Spr. 1579. याताः किं न मिलन्ति 2463. यातु यातु किमनेन तिष्ठता 2464. Mṛkkh. 33,10. Ragh. 3,67. Kathâs. 11, 28. 18,35. Bhâg. P. 3,1,16. 16,29. आश्रममण्डलात् R. 3,48,6. कृर्म्यतः Spr. 405. Kathâs. 52,229. विमुखो ऽर्थी न याति मे 41,18. अर्थिनाम् u. s. w. पराङ्मुखः। यो न याति Spr. 3601. मृतं शरीरमुत्सृज्य — विमुखा बान्धवा यान्ति M. 4,241. यात *gegangen, fortgegangen* MBh. 3,2297. R. 4, 54,21. 5,89,16. Bhâg. P. 9,20,38. पलाय्य या *fliehen* Kathâs. 12,114. 48,87. 90. तेनैव यातः पथा *entschlüpfte* (eine Schlange) Spr. 2012. जीवन्नेव न यास्यसि *lebendig entkommen* R. 3,56,11. 6,85,11 (med.). अतृप्ता मानवाः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च *zu Grunde gehen* Spr. 1303. 2070. स वै देहस्तु पारक्यो भङ्गुरो यात्युपैति च Bhâg. P. 7,7,43. यान्त्येतस्य हि नासवः *entfliehen* Kathâs. 25,143. तेन प्राणा न यान्ति मे 56,156. Pańkat. 70,6. अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः *von dannen gehen* Spr. 243. धनानि भवन्ति यान्ति 3129. 1399. शशिना सह याति कौमुदी 2970. (अर्थः) अन्यथास्माकं प्राणैः सह यास्यति Pańkat. 97,14. भयं महन्महद्यान्न याति वै R. 2,69,21. ययौ तेजस्वती देव्या मनसश्च महाज्वरः Kathâs. 18, 120. 29,167. यातविवेक Sarvadarçanas. 101,4. बहिस् *hinausgehen* Kathâs. 28,143. Spr. 5337. Bhâg. P. 4,29,8. अधस् *hinuntergehen, sinken* 3,30, 11. Spr. 2465. स्वस्ति *mit heiler Haut davonkommen* Bhâg. P. 3,18,3. क्षेमेण dass. Spr. 754. खण्डशस् *in Stücke gehen, entzweigehen* Kathâs. 57,46. 77,92. दलशस् dass. 19,109. शतधा *in hundert Stücke gehen* 61,315. सहस्रधा *in tausend Stücke gehen* MBh. 7,2534. यात्राम् *einen Marsch unternehmen, aufbrechen* M. 7,182. R. 2,72,27. गतिम् *einen Weg gehen, — einschlagen:* यां शूरा गतिं यान्ति so v. a. *wohin sie gelangen* Daç. 2, 40. गतिं मुनेर्यामि Bhâg. P. 6,11,21. यामः स्वपुण्यविजितां गतिम् Bhaṭṭ. 4,6. परमां गतिम् M. 6,93. परां गतिम् R. Einl. 2. अधोगतिम् M. 3,17. 52. दण्डव्यूहेन तं मार्गं यायात् *marschire* M. 7,187. रथेन ययौ मार्गम् Ragh. 2,72. अध्वानम् R. 2,49,16. पन्थानम् 56,4. स पन्थाश्चित्रकूटस्य यातः सुबहुशो मया 55,9. महर्षियाते पथि *gewandelt* 60,22. पूर्वेषामानुपूर्व्येण यातं वर्त्मानुयामहे MBh. 1,7246. पदवीम् Bhâg. P. 7,14,1. अग्रे यान्ति रथस्य रेणुपदवीं चूर्णीभवन्तो घनाः Vikr. 4. यात n. *Gang, incessus:* ममं यातमनुवर्त्मान एतं AV. 3,8,6. 10,8,8. Varâh. Bṛh. S. 68,115. 86,6 (oft mit यान verwechselt). *der Ort, wo Jmd gegangen ist:* इदं यातं रमापतेः Vop. 26,130. — 2) *verstreichen, vergehen, verlaufen, verfliessen* (von der Zeit): चतुर्दश हि वर्षाणि — क्षणभूतानि यास्यन्ति R. 2,52,52. 3,22,12. 7,99,19. Spr. 309. 421. 1138. 2432. Kathâs. 1,63. 34,173. 46,29. Râģa-Tar. 1, 193. 244. 3,364. Kaurap. 37. जरसा यात्युत्तमं यौवनम् Spr. 311. आयुर्याति दिने दिने 4958. यात्रास्वेव वयो ययौ Râģa-Tar. 4,131. यात *verstrichen* u. s. w. Hariv. 7711. R. 2,53,2. 4,49,7. Spr. 193. 2070. Varâh. Bṛh. S. 77,3. Kathâs. 18,206. 20,72. 22,98. 24,170. 45,317. 51,185. 52,30. Râģa-Tar. 1,52. Mârk. P. 110,30. Bhaṭṭ. 7,89. यातं वयः Verz. d. Oxf. H. 130,b,6. नवमो ऽङ्कः *der 9te Act ist zu Ende* 143,b, No. 295. यातमनागतं च *das Vergangene und das Zukünftige* Varâh. Bṛh. S. 68,1. — 3) *gehen* so v. a. auf eine best. Entfernung (acc.) *reichen, sich erstrecken:* पञ्च (योजनानि) अब्दानां गर्जितं याति शब्दः Varâh. Bṛh. S. 30,32. für eine best. Zeit (acc.) *hinreichen:* मासमेको नरो याति द्वौ मासौ मृगसूकरौ Hit. I,158. — 4) *gehen* so v. a. *von Statten gehen, gelingen, zu Stande*

kommen: एतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्वपणादृहाद्वा Bhâg. P. 5,12,12. — 5) *verfahren, sich benehmen:* नैवमन्याः स्त्रियो यान्ति MBh. 4,77. — 6) *gehen —, kommen —, sich begeben —, fahren —, reisen —, gelangen zu, nach, in; marschiren gegen;* die Ergänzung oder nähere Bestimmung *a*) im acc.: कं याथ Ṛv. 1,39,1. यथो वां दूरादनसा रथेन 3,33,9. वर्तिः 7,40,5. स प्रीतो याति वार्यम् 5,6,3. 81,4. सोमपेयम् 6,40,4. 7,28, 2. ग्राग्निम् Vâlakh. 5,8. AV. 2,12,7. — कुण्डिनम् MBh. 3,2290. 2293. 2714. विदर्भा यातुमिच्छामि दमयन्त्याः स्वयंवरम् 2772. 2827. fg. 3,3028. 5,5977. 7099. 12,6352 (med.). Hariv. 7396 (med.). R. 1,1,85. 2,5,21. 34,35. 50,1. 5,89,27 (med.). ग्रहं यास्ये रणाजिरम् 6,34,16. संकेतम् AK. 2,6,1,10. पतिगृहम् Çâk. 84. Megh. 34. Spr. 4406. 4544. Kathâs. 18,80. 40,89. तीर्थानि 52,239. Bhâg. P. 5,13,1. Mârk. P. 109,30 (act. und med.). Pańkar. 1,2,75. द्वारकां याताः Hariv. 8929. Spr. 2462. Bhâg. P. 6,1,58. प्रवहणेन सः — पारमम्बुनिधेर्ययौ Kathâs. 18,306. यास्ये परं पारं महोदधेः R. 5,1,83. Varâh. Bṛh. S. 104,60. दिवम् M. 11,240. R. 1,55,18. 58,18. 60,24. त्रिदिवम् M. 9,253. R. 7,30,48 (med.). यास्ये त्रिविष्टपम् Bhâg. P. 4,12,31. स्वर्गम् M. 7,89. स्वः 53. नरकम् 3,172. 249. 4,87. रसातलम्, भुवम् Bhâg. P. 9,9,4. 5. 10,49,19 (med.). सर्वतोदिशम् MBh. 3,2658. शिरसा च महीं ययौ so v. a. *verneigte sich bis zur Erde* R. 1,9, 67 (65 Gorr.). पादैा ते याम मूर्धभिः Hariv. 4814. नदी मगधान्ययौ R. 1, 34,9. यात्येव यमुना पूर्णा समुद्रम् Spr. 3426. इयमेकपदी याति मम तं पितुराश्रमम् R. Gorr. 2,65,40. ग्रन्तिकं मातुः Kathâs. 18,223. यां यां योनिम् M. 12,53. Bhâg. P. 6,17,15. 7,1,37. दृष्टिपथम् *zu Gesicht kommen* Varâh. Bṛh. S. 54,20. लोचनपथम् Spr. 1246. ग्रदर्शनपथम् *unsichtbar werden* MBh. 3,1744. दृग्गोचरम् Râǵa-Tar. 6,320. कर्तुर्न याति गोचरम् Spr. 3346. ग्रगोचरं नयनयोः *den Augen entschwinden* Vikr. 72. यायादरिपुरम् *marschire gegen* M. 7,181. 185. विषयं परस्य Kâm. Nîtis. 15,4. परम् *gegen den Feind* 1. 11,3. 10. तामेव याहि प्रियाम् *gehe zu* Spr. 688. H. 529. हरिम् Bhâg. P. 5,12,6. 5,9. कैासल्यां शरणं यामः R. 2,78,15. 3, 55,48. Bhâg. P. 9,7,7. MBh. 3,2845. शत्रुहस्तम् *in die Hand des Feindes gerathen* Bhaṭṭ. 5,60. कर्णौ *zu Ohren kommen* Spr. 4007. *auf Jmd stossen* 3882. von der *Bewegung* der Gestirne *nach einer best. Richtung hin:* कृत्तादृत्तम् — यात्सु चित्रशिखण्डिषु Râǵa-Tar. 1,55. ग्रस्तं यात्यादित्ये Âçv. Gṛhj. 2,6,14. M. 4,37. Varâh. Bṛh. S. 39,4. यात्यस्तशिखरं पतिरोषधीनाम् Çâk. 77. हिमकरे याते स्थाणुदिशम् Varâh. Bṛh. S. 24,33. 28,1. 104,36. 43. द्व्हनर्तयात *stehend in* 10,19. — ग्रन्तम् *an's Ende zu stehen kommen* Ṛv. Prât. 12,1. *zu Ende kommen* Çâk. 139, v. l. Ragh. 3,21. यायाद्य त्वं द्विषामन्तं भूयो यातासि चासकृत् so v. a. *fertig werden mit* Bhaṭṭ. 9,47. — *b*) im loc.: पुनरेव याहि राज्ञः सकाशे R. 2,52,12. याता गङ्गायाम् Bhâg. P. 9,16,2. वृत्ते Vet. in LA. (III) 4,4. कीर्तिश्च ते ऽतुला वत्स त्रिषु लोकेषु यास्यति MBh. 13,1937. तस्यां तस्य — च मनो ययौ Kathâs. 32,148. चक्रं करे यातम् *in die Hand gelangt* Hariv. 8905. तत्र MBh. 1,6194. 4,444. R. 1,33,6. ग्रन्यत्र Kathâs. 52,232. क्व MBh. 3,2240. 2530. प्रिया नान्या त्वत्तो मे ऽस्तीति यद्धि माम्। त्वमवोचः क्व तद्यातम् so v. a. *was ist daraus geworden? wie steht es damit?* Hariv. 7121. — *c*) im dat.: ययतुः स्वनिवेशायाभे वले Kathâs. 47,92. न देवाय न विप्राय न बन्धुभ्यो न चात्मने। कृपणस्य धनं याति so v. a. *zu Gute kommen* Spr 1399. फलेभ्यः *nach Früchten gehen* P. 2,3,14, Sch. रामलक्ष्मणनाशाय *zum Verderben von* R. 3,56,23. कुशेध्माहरणाय Ragh. 14,70. तपसे *um sich zu kasteien* R. 1,46,7. — *d*) im acc. mit प्रति: दोलेव मुहुरायाति याति चैव सभां प्रति MBh. 3,2359. ग्रयं स रथ ग्रायाति यो ऽयासीत्पाण्डवान्प्रति 5,1803. Kathâs. 24,252. तदा यायाद्रिपुं प्रति M. 7,171. — *e*) im infin.: कृत्स्नं द्रष्टुम् Vop. 26,200. विगाहितुं यामुनमम्बु Bhaṭṭ. 3,39. daneben noch ein acc. des Ortes: उद्यानानि — सायाह्ने क्रीडितुं यान्ति कुमार्यः Spr. 4406. Râǵa-Tar. 5,48. 6,186. Bhaṭṭ. 7,53. — 7) *an eine Beschäftigung gehen, in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen;* mit acc.: सर्गव्यापारम् Kumâras. 2,54. मृगयाम् R. 4,17,18. Bhâg. P. 9,20,6. ग्रन्त्यां दशाम् Pańkat. 70,5. ग्रमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थाम् Megh. 18. वशम् *in die Gewalt Jmds* (gen.) *kommen* R. 3,62,14. Varâh. Bṛh. S. 34,17. प्रकृतिम् *zu seiner Natur zurückkehren* Spr. 3144. MBh. 3,8826. निद्राम् *einschlafen* Spr. 2475. Kathâs. 12,109. 18,191. स्वापम् Bhâg. P. 10,51,23. निधनम् *den Tod finden* Spr. 3310. Varâh. Bṛh. S. 24,33. विक्रियाम् Spr. 3266. दर्शनम् *sichtbar werden* Varâh. Bṛh. S. 11,42. 58,1. Bhâg. P. 1,6,34. ग्रालोकम् dass. Varâh. Bṛh. S. 47,10. गर्हणाम् M. 2,80. संसर्गम् 11,181. संपर्कम् Vikr. 13. उदयम् *aufgehen* (von Gestirnen) Varâh. Bṛh. S. 8,27. 11,17. विस्मयम् MBh. 3,2795. R. 1,2,1. मोहम् Bhag. 4,35. प्रसादम् Pańkat. 67,8. प्रबोधम् 37,20. विषादम् Kathâs. 52,209. उपतापम् Varâh. Bṛh. S. 10,12. 14. पाकम् 32,23. संप्रयोगम् 78,25. खेदम् Râǵa-Tar. 4,691. पराभवम् Spr. 4871. लयम् MBh. 3,8840. R. 1,64,20. 3,62,14. Varâh. Bṛh. S. 10,11. 14,32. 46,78. 93,2. Kathâs. 18,269. विनाशम् R. 2,44,13. विलयम् Spr. 1371. संस्थितिम् M. 6,90. ख्यातिम् MBh. 3,8273. निर्वृतिम् R. 3,71,7. समुन्नतिम् Spr. 3107. निष्पत्तिम् Varâh. Bṛh. S. 8,13. प्रौढिम् Kathâs. 14,63. तृप्तिम् Mârk. P. 61,30. वृद्धिम् Vop. 2,11. Varâh. Bṛh. S. 4,32. दूत्यम् *Botendienst thun* Ṛv. 1,74,7. 6,58,3. 7,9,5. काठिन्यम् Varâh. Bṛh. S. 21,34. कालुष्यम् Kathâs. 19,95. लाघवम् Bhag. 2,35. Çrut. (Br.) 4. उदात्तश्रुतिताम् Ṛv. Prât. 3,11. ग्रकुलताम् M. 3,63. 5,35. 50. 11,25. 12,9. 40. 68. 70. MBh. 3,3066. 5,7148. R. Gorr. 2,33,24. 3, 61,44. Ṛt. 1,2. 9. Megh. 94. Ragh. 3,26. 5,71. 9,32. 12,11. Spr. 689. 1979. 2042, v. l. 2795. Varâh. Bṛh. S. 5,1. 12,17. 42,10. 75,4. 78,20. 79,39. 104,57. Kathâs. 18,262. 53,35. Râǵa-Tar. 3,318. 6,180. Prab. 70,3. यास्यत्याख्यां भरत इति Çâk. 192. स्थानभ्रंशम् Spr. 2807. ग्रन्यत् (so die v. l.) Çvetâçv. Up. 6,4. ग्रकुतोभयम् Bhâg. P. 1,12,28. यो ऽग्रविद्यामयानलात् *empfangen —, lernen von* 9,9,17. उत्सवादुत्सवम् *ein Fest nach dem andern erleben* Kathâs. 39,218. — 8) *inire* (feminam), mit acc.: स्त्रियम् MBh. 13,4518. ग्रात्मतनयां प्रजानाथो ऽयासीत् Prab. 8,3. — 9) *angehen, anflehen;* mit dopp. acc. Ṛv. 1,24,11. 58,7. तद्वो यामि द्रविणम् 5,54,15. भगमनुग्रो ग्रध याति रत्नम् 7,38,7. 8,3,9. 27,1. यद्वा यामि दद्धि तन्नः 10,47,8. 8,50,6. 62,6. — 10) *hinter Etwas kommen, erkennen:* तथास्य चित्तं क्वापि संवितर्कयन्नरर्षभस्यास्य न यामि तत्त्वतः MBh. 4,234. — 11) यातु so v. a. *dem sei wie ihm wolle* Hit. 101,18. 128,9. — 12) यात fehlerhaft für ज्ञात in यातमन्यु MBh. 15,509. ज्ञात° ed. Bomb. — Vgl. 3. इ und गम्.

— caus. यापयति 1) *Jmd gehen heissen, aufbrechen lassen, entlassen* Bhâg. P. 10,58,52. 84,68. *zu einem Marsche veranlassen* Kâm. Nîtis. 11,25. दृष्टिम् *den Blick gehen lassen, — richten:* दृष्टिं पथिकः क्व याप-

यतु (v. l. für पातयतु) Spr. 491. *vertreiben, verscheuchen:* मद्यापितलज्जा Ragh. 9,27. *lindern* (eine Krankheit) Suçr. 1,30,21. — 2) *verstreichen lassen; zubringen* (eine Zeit): नायं यापयितुं (so die ed. Bomb.) कालो विद्यते माधव कर्हिचित् MBh. 6,4334. (रात्रिम्) उच्छ्वैर्विरुतनिनदैरश्रुभिर्यापयन्ती Megh. 87. Mâlav. 28,15. Pańkat. 183,24. — 3) *gelangen lassen zu, theilhaft werden lassen;* mit dopp. acc.: यापितो येन पीतसलिलो (सागरः) ऽमरश्रियम् Varâh. Bṛh. S. 12,3. — 4) यापितायाः Daçak. 83,9 (Benf. Chr. 194,4) wohl fehlerhaft für पायितायाः (caus. von 1. पा). — Vgl. यापक fgg.

— desid. यियासति *zu gehen —, zu reisen —, zu marschiren —, fortzugehen —, zu gelangen beabsichtigen, — sich anschicken, — im Begriff stehen* MBh. 7,1226. Varâh. Bṛh. S. 88,30. 89,14. Kathâs. 121,160. वनम् MBh. 3,47. परं स्थानम् 7,5908. दिनशतप्राप्यं देशम् Spr. 1883. पारमब्धेः Kathâs. 18,292. स्वर्णद्वीपम् 36,80. अस्तं महीधरं श्रेष्ठं यियासति दिवाकरः so v. a. *ist im Begriff unterzugehen* MBh. 7,6257. — Vgl. यियासु.

— intens. ईयायते *sich bewegen:* नेयायते Praçnop. 4,2. nach dem Comm. intens. von 3. इ. — Vgl. यायावर.

— अच्छ *herbei —, nahekommen;* mit acc. RV. 1,31,17. 44,4. मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छ 2,18,7. 3,33,2. 3. 6,16,44. अनसाच्छ याति महिमानमेवास्याच्छ याति TS. 6,1,9,3.

— अति 1) *vorübergehen:* मातियासीः Bhaṭṭ. 2,51. (einen Ort) *passiren, vorüberkommen an, überholen; superare:* (रथः) येनातियाथो दुरितानि विश्वा RV. 5,77,3. AV. 13,2,5. अपो धन्वान्यति याथो अज्रान् RV. 6,62,2. 9,15,6. ग्रामान् — पुष्पितानि वनानि च। पश्यन्नतिययौ शीघ्रं शरैरिव कपोत्तमैः॥ R. 2,49,3. 8. 57,4. 71,4. 8. °यात mit act. Bed. Bhâg. P. 1,6,14. Hierher gehört wohl auch अश्वीव ताँ अति येषं (von येष् nach Sâj.) रंहेन RV. 2,27,16. — 2) *übergéhen:* अति वायो ससतो याहि RV. 1,135,7. *übertréten:* निदेशम् Bhâg. P. 10,70,27.

— व्यति 1) *durchdringen:* वि वारमव्यं समयाति याति RV. 9,97,56. — 2) *verstreichen, verfliessen:* दिवसाः सुभगाः पुण्यास्त्वरिता व्यतियान्ति नः R. 3,22,10. °यात Hariv. 3787.

— समति *verstreichen, verfliessen:* ऋतूनां षट्समत्ययुः R. 1,19,1.

— अधि *entkommen:* कुतो ऽधियास्यसि क्रूर निहतस्तेन पत्रिभिः Bhaṭṭ. 8,90.

— अनु *hingehen zu, hinfahren; nachgehen, nachfolgen:* अनु देवान्रथिरो यासि साधन् RV. 3,1,17. यस्य प्रयाणमन्वन्य इद्ययुः 5,81,3. यः पूर्व्यामिरनुयाति भर्वन् 6,6,2. 12,5. Çat. Br. 10,6,1,7. Lâṭy. 8,5,22. पूर्वेषामानुपूर्व्येण यातं वर्त्मानुयामहे *nachwandeln* MBh. 1,7246. अनुयाहि साधुपदवीम् Spr. 1051. गङ्गां चैवानुयास्यामः *sich hinbegeben zu* MBh. 1,4999. संप्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् *hingegangen zu* Gît. 11,2. अनुययुर्गृहान् *giengen von Haus zu Haus* Hariv. 3431. एक एव सुहृद्धर्मो निधने ऽप्यनुयाति यः *nachgehen, folgen* Spr. 516. त्वामनुयास्यामि MBh. 1,3355. 2,1606. 3,11920. 15684. 4,537. 655. 1029. 7,71. Hariv. 4860. N. 9,7 (अन्वगात् MBh. 3,2303). R. 1,2,24. 24,6. 60,31. 73,37. 2,30,39. 31,3. 33,6. 37,24. 58,6. 70,29. 83,3. 91,8. R. Gorr. 1,75,30. Mṛkkh. 131,22. Çâk. 28. Ragh. 9,34. 10,50. Kumâras. 4,21. Kathâs. 82,52. Râǵa-Tar. 3,230. Bhâg. P. 1,4,5. 3,31,31. 9,6,53. med. MBh. 3,57 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 7,163. 10,142. तिष्ठन्तमनुतिष्ठन्ति यान्तं यान्ति (अनु zu ergänzen) दिवौकसः Mârk. P. 18,24. अनुयात mit act. Bed., *secutus:* मां चानुयाता विजनं तपोवनम् R. 2,54,13. R. Gorr. 2,62,6. 4,9,11. Kathâs. 51,44. mit pass. Bed., *begleitet von* MBh. 14,1184. Hariv. 2455. 4988. Ragh. 12,104. 14,29. Kathâs. 10,208. 14,11. 18,11. 46,248. Râǵa-Tar. 5,358. लोकलोचनमानसानुयाता प्रातिष्ठत Daçak. in Benf. Chr. 190,17. कफानुयात Suçr. 2,361,15. भर्तारमनुया so v. a. *dem Gatten im Tode folgen, sich mit ihm verbrennen lassen* Spr. 3485. Râǵa-Tar. 5,225. भर्तारमनुयाता Mârk. P. 22,34. *folgen* so v. a. *gleichen Schritt mit Jmd halten, Jmd nachkommen* R. 3,44,30. *nachthun, nachahmen, erreichen, gleichkommen:* तेषां कश्चरितं शक्तस्त्वनुयातुम् Mârk. P. 133,9. न किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः Ragh. 1,27. अनुयातलील 16,71. समतया — अनुययौ यमम् 9,6. अनुयातः स्ववीर्येण वासुदेवम् MBh. 3,10890. mit gen. der Person: तेषां महात्मनां राज्ञां को ऽनुयास्यति मद्विधः Mârk. P. 120,7. *nachgehen* so v. a. *befolgen:* शक्रच्छन्दानुयाता 1,39. *erreichen, erlangen:* सर्वान्कामाननुयातो ऽसि MBh. 14,223. — In der Stelle ओषधीनां शिरांसीव द्विषच्छीर्षाणि सो ऽन्वयात् MBh. 4,1727 ist vielleicht ऽन्ववृक्षात् *hieb ab* zu lesen. Nîlak. fasst अन्वयात् als abl., indem er अनुक्रमात् erklärt. — Vgl. अनुया, अनुयातर् fgg. — caus. *Jmd theilhaft werden lassen,* mit dopp. acc.: यातनामनुयापितः Bhâg. P. 3,22,29.

— समनु *folgen* MBh. 2,1608. Varâh. Bṛh. S. 104,54. °यात mit pass. Bed. MBh. 7,3261.

— अन्तर् s. अन्तर्याणीय.

— अप *fortgehen, sich entfernen, sich zurückziehen, fliehen, weichen von* (abl.) AV. 6,73,3. 19,56,6. MBh. 3,248. 674. रणात् 15214. 15750. रथोपस्थात् 5,7219. भीमात् 7,5806. 6307. Hariv. 5684. 10698. 14015. अपयात ह्यात्मा: *schert euch* Mṛkkh. 174,4. Kathâs. 52,249. 55,72. पार्श्वान्नापयाति स्म मे सदा *wich nicht von meiner Seite* 124,197. Çiç. 9,83. Bhâg. P. 4,29,76. Pańkat. 129,24. 232,7. नातिदूरापयाते तु रथे MBh. 3,720. अपयास्यति मम शोकः Çâk. 96, v. l. Spr. 42. शापो ऽपयातु ते Kathâs. 56,159. मिथ्याज्ञानापाये दोषा अपयान्ति Sarvadarçanas. 116,6. शेषं गृहेषु सक्तस्य प्रमत्तस्यापयाति हि Bhâg. P. 7,6,8. MBh. 12,3470. न चास्य नियमाद्बुद्धिरपयाति महात्मनः *lässt nicht ab von* 9,2310. नापयाति 5,7486 fehlerhaft für नोपयाति, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अपयातव्य fg. — caus. *entführen, rauben* Bhâg. P. 9,10,11.

— अभ्यप scheinbar in der Stelle सो ऽभ्यपयाद्धवेन MBh. 4,1669, wo aber mit der ed. Bomb. सो ऽप्यपया° zu lesen ist.

— प्रत्यप *sich zurückziehen, heimwärts fliehen* MBh. 8,4840. रथान्तरम् *seinen Wagen verlassen und einen andern besteigen* 7,8670. 8,1003.

— व्यप *fortgehen, sich entfernen, sich zurückziehen:* स त्वं मा व्यपयाः पुनः MBh. 3,739. 775 (wo व्यपायात् mit der ed. Bomb. zu lesen ist). 12165. 4,1900. 5,7200. रणात् 7302. व्यपयातेषु वासाय सैन्येषु 7,2478. 8,4045 (med.). Hariv. 6427. आपदः — व्यपयान्ति *weichen* R. ed. Bomb. 3,66,6 (प्रतियान्ति Gorr. 71,5). तथैव गच्छतस्तस्य व्यपयाद्रजनी शिवा *verstrich* R. Schl. 2,49,2.

— व्याप scheinbar MBh. 3,775, wo aber mit der ed. Bomb. व्यपायात् zu lesen ist.

— अपि, AV. 4,37,3 lesen die Hdschr. अपि यामि, was keinen Sinn giebt (vgl. 3. इ mit अपि); die Ausg. hat dafür व्यामि gesetzt.

— अभि 1) *adire, zugehen auf, hingehen —, treten —, kommen —, sich hinbegeben zu, sich drohend wenden gegen, begegnen:* अभि स्पृधो यासिषद्वज्रबाहुः ṚV. 1,174,5. AV. 4,29,7. अन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः 6,40,2. 10,1,15. मृडतं माभि यातम् 11,2,1. KAUÇ. 14. — तत्रैनं नागराः सर्वे सत्कारेणाभ्ययुस्तदा MBH. 2, 952. 3, 2259. 14443. 5, 6099. 7, 2630. HARIV. 11031. KATHÂS. 30,15. 36,16. 84, 25. BHÂG. P. 4,23, 36 (अनुयाति ed. Bomb.). कुबेरादभियास्यमानात् (pass.) RAGH. 5, 30. शत्रुम् MBH. 2, 191. 4,2142. 5,7447. 7483. ये च — अभियाता धनंजयम् 6,5542. परचक्राभियात (mit pass. Bed.) 12, 4729. राष्ट्रं तस्याभियास्यामः 4, 978. समुद्रम् HARIV. 322. गिरिश्रेष्ठम् 6933. R. 2,50,16. गृहम् R. GORR. 2,3,28. 47,6. 73,7. 8. 4,25,7. 41,8. 5,73,2. 6,16,13. KIR. 5,1. BHÂG. P. 3,24,9. 5,13, 6. भूपतेः श्रियम् RAGH. 9,30. स्वर्गम् *zum Himmel gehen* so v. a. *sterben* DAÇ. 2,55. संकेतनम् *zu einem Stelldichein* VET. in LA. (III) 20,14. ohne Object *herbeikommen* MBH. 5,7133. 12, 4264. HARIV. 4993. R. 1,25,10. 2,71,21. R. GORR. 1,21,1. BHÂG. P. 1, 9, 37. 3, 22,18. 8,11,13. 9,6,17. 8,10. देवविमानानि — अभियातानि MBH. 3,1763. *einen Angriff machen* KÂM. NÎTIS. 15,2. 13. *kommen*, von der Zeit: कालो ऽभियातस्त्रिणवचतुर्युगविकल्पितः (genauer wäre अतियातः *verstrichen*) BHÂG. P. 9,3, 33. — 2) *an Etwas gehen, sich hingeben:* वासम् so v. a. *sich niederlassen* R. 7,66,15. पाषण्डम् *sich der Ketzerei hingeben* BHÂG. P. 5,14,13. — 3) *theilhaft werden*, mit acc. MBH. 5,1699. 13,5851. न तु तद्वजति यन्यस्तद्दण्डो गतवैरो ऽभियाति BHÂG. P. 5, 13, 15. ऐश्वर्यमभियातः R. 5, 88, 10. — Vgl. अभियातर् fgg. — caus. *herbeikommen lassen, hinsenden* BHÂG. P. 5,2,3.

— प्रत्यभि *auf Jmd* (acc.) *losgehen* BHÂG. P. 10,17,6.

— समभि (*zusammen*) *zugehen auf, hingehen zu* (acc.); *herbeikommen* MBH. 1,1338. 7,3974. 8,3078. 9,1547. HARIV. 10509. MÂRK. P. 105,22.

— अव 1) *herbeikommen:* अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययुः ṚV. 1,168, 4. नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै (infin.) नोपया उत 8,47,12. — 2) *abbitten, abwenden:* त्वं नो अग्ने वरुणस्य हेळो ऽव यासिसीष्ठाः (VS. PRÂT. 3,82. P. 3,1,34, Vârtt.) ṚV. 4,1,4. नू चित्सुदानुरव यासदुग्रान् 6,66,5. अवं देवैर्देवकृतमेनो ऽयासिषम् VS. 3,48. अवयाताम् ṚV. 1,94,12 halten wir für fehlerhaft st. अवयाता nom. ag. — Vgl. अवया, अवयातर् fgg.

— आ 1) *herankommen, kommen nach, in, zu* (acc.): आ पूर्णया नियुता याथो अध्वरम् ṚV. 1,135,7. 168,6. आयै infin. 2,18,3. 4,16,1. अस्तम् 10. 20,1. 5,61,1. वर्तिः 8,22,17. 10,130,1. आ — अच्छ 1,167,2. 4,20,2. 44, 5. AV. 3,8,1. परा यात पितर आ च यात 18,3,14. ÇAT. BR. 14,7,1, 43. आततायिनमायान्तं हन्यात् M. 8,350. MBH. 1,717. 3,2182. 2239. 5,6065. R. 1,9,53. 2,34,16. 39,10. 40,42 (आयान्ती mit der ed. Bomb. zu lesen). 91,9. R. GORR. 1,66,11. 3,62,29. KÂM. NÎTIS. 15, 56. RAGH. 12,64. Spr. 371. fg. 374. 1579. KATHÂS. 12,65. 13,29. 15, 46. 18,167. 275. 356. 25, 204. RÂGA-TAR. 5,31. 341. BHÂG. P. 1,11,17. 14,2. 7. 3,21,26. HIT. 9,6. 18,10. fgg. ÇUK. in LA. (III) 33,3. 7. तेन श्रुत्वायातमपि (impers.) VET. 8, 6. ग्रामात् P. 1,4,24, Sch. वनात् R. GORR. 2,100,44. KATHÂS. 18,280. 26, 4. RÂGA-TAR. 1, 330. कुतो ऽयमायाति MBH. 4, 300. त्रिषष्टियोजनायाता KATHÂS. 13, 32. संमुखम् *entgegenkommen* RÂGA-TAR. 5,146. हास्तिनपुरम् MBH. 5,5964. ÇÂK. 14,1. KATHÂS. 18,120. 52,25. 55,182. RÂGA-TAR. 2,114. NALOD. 3,2. यज्ञम् R. GORR. 1,43,23. स्वर्गम् 4,17,24. कालिन्दीमध्यम् R. SCHL. 2,55,19. अन्तिकम् VIKR. 121. KATHÂS. 42,107. अस्तम् *untergehen* und *sterben* RÂGA-TAR. 3, 122. 4, 366. कर्णपथम् *zu Ohren kommen* ÇÂK. 79,12. रामम् BHAṬṬ. 5,57. मयं शरणम् BHÂG. P. 7,10, 52. 8,8,36. वद्गृहे PAÑKAT. 214,4. लक्ष्मीरधनस्य पुनर्लोचनमार्गे ऽपि नायाति KATHÂS. 53,32. ज्वलौघो भृशमाययौ 12,111. परत्र च सहायान्ति न भोगा नार्थसंचयाः 51,28. आयाता मधुयामिनी Spr. 3713. अष्टमे ऽन्तर आयाते BHÂG. P. 8,13,11. यस्य धर्मविहीनस्य दिनान्यायान्ति यान्ति च Spr. 2432. नायात्यकाले शिशिरोष्णवर्षाः 4379. भयमायातम् VARÂH. BṚH. S. 46, 44. पुनरया *wiederkommen* R. 1,1,75 (80 GORR.). 42,23. 2,40,48. पूरा नदीनां पुष्पाणि तरूणां शशिनः कलाः । क्षीणानि पुनरायान्ति यौवनानि न देहिनाम् ॥ KATHÂS. 55,110. so v. a. *wiedergeboren werden* BHÂG. P. 3,32, 15. अनायान्त (*zurückkommend*) वक्त्रोरात्रात्स्नेहम् (vom Klystier) SUÇR. 2, 214,19. स्नेहवस्तावनायाते 20. *sich bei Jmd* (acc.) *einstellen:* तेन तस्यापयौ निद्रा KATHÂS. 29,167. निद्रास्त्री — अस्य नाययौ 45,183. *zu Jmd* (acc.) *kommen* so v. a. *Jmd treffen, Jmd zu Theil werden:* त्वामायान्ति शिलीमुखाः (*Bienen* und *Pfeile*) स्मरधनुर्मुक्तास्तथा मामपि Spr. 2579. अनार्यवृत्तम् u. s. w. अनर्थाः क्षिप्रमायान्ति 3466. मामेव चैतान्यायान्ति महारत्नानि KATHÂS. 53,63. *eingehen —, aufgehen in* (acc.) BHÂG. P. 9,20, 27. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen;* mit acc.: वशम् SUÇR. 1,149,14. बन्धनम् Spr. 844. दर्शनम् *sichtbar werden* VARÂH. BṚH. S. 11,40. 48. मृत्युम् 14,33. तुलाम् RAGH. 19,50. विक्रियाम् Spr. 3234. 3314. निर्वेदम् MUṆḌ. UP. 1,2,12. तोषम् Spr. 383. संकोचम् 3258. नवीभावम् KATHÂS. 14,63. प्रकाशम् Spr. 3848. प्रबोधम् ÇÂK. CH. 91,11. क्षयम् Spr. 2292. संक्षयम् RÂGA-TAR. 3,403. VARÂH. BṚH. S. 5,26. प्रध्वंसम् 76. विनाशम् 46,41. प्रसवम् 21,7. प्रसूतिम् 10. विशुद्धिम् 106,4. विवृद्धिम् 53,84. वृद्धिम् 29,13. RAGH. 17,41. KATHÂS. 52,366. तृप्तिम् 21,9. RAGH. 3,3. उन्नतिम्, अधोगतिम् Spr. 3299. व्यक्तिम् SARVADARÇANAS. 90,2. वैपुल्यम् RÂGA-TAR. 4, 712. दैर्घ्यम् VARÂH. BṚH. S. 11,33. बाह्लाभ्यम् 75,6. 85,7. मान्यत्वम् 4. एकत्वम् HARIV. 10674. हेतुताम् Spr. 357. 3572. पञ्चत्वम् KATHÂS. 34,20. 41,12. RÂGA-TAR. 5,376. — 3) *hervorgehen, resultiren* SARVADARÇANAS. 25,4. 79,9. — 4) *angehen, sich für Jmd* (gen.) *schicken;* mit infin.: वक्तुं नायाति राजेन्द्र एतयोर्नियमस्त्वयोः । अर्वाङ्गिशीयात् MBH. 2,831. — Vgl. आयात fgg., क्रमायात, मार्गायात. — caus. s. आयापन.

— अत्या *vorübergehen an* (acc.): अत्यायाहि शश्वतः ṚV. 3,35,5. 5,75,2.

— अभ्या *herbeikommen, kommen nach, zu* MBH. 2,1213. 3,246. 12305. पुरम् R. GORR. 1,68,16. 2,73,14. MÂRK. P. 125,47. *zu Jmd* MBH. 1,562.

— उदा *sich hinaufbegeben zu:* सभाम् KAUÇ. 17.

— उपा 1) *herbeikommen, kommen nach, zu* ṚV. 1,171,2. 4,21,1. 5, 53,3. आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि 7,14,3. उपायातं दाशुषे रथेन वर्हता 71,2. 72,1. 8,81,10. प्रद्युम्नो ऽयमुपायाति MBH. 3,738. 4,231. HARIV. 6200. R. GORR. 1,12,32. 4,33,22. KATHÂS. 25,268. 30,54. BHÂG. P. 10, 23,18. राजमार्गम् MBH. 1,5451. राजधानीम् R. 1,9,66 (64 GORR.). R. GORR. 1,2,22. KATHÂS. 16,87. 33,89. BHÂG. P. 3,21,48. यज्ञम् R. 1,73,7 (75,8 GORR.). तस्यान्तिकम् KATHÂS. 10,102. 13,12. अस्तम् *untergehen* und auch *sterben* 10,129. RÂGA-TAR. 4,6. 5,126. माम् MBH. 7,2814. KATHÂS. 16, 17. 18,231. 20,181. 22,193. 35,13. 143. 45,209. 54,169. 56,406. MÂRK. P. 72,17. BHAṬṬ. 4,44. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhält-*

niss kommen; mit acc.: तृप्तिम् Mârk. P. 31, 8. विलोकनीयताम् Kir. 8, 45. — Vgl. उपायात.

— अभ्युपा *hinzukommen, herankommen* Kathâs. 18,132.

— समुपा dass.: तत्रैव समुपाययौ Kathâs. 12, 102. 17,159. विराटम् *gehen zu* MBh. 4,280. वसन्ते समुपायाते *gekommen* Spr. 623.

— पर्या *herkommen von* (abl.) Ṛv. 8,8,3. आ नो यातं दिवस्परि 4. आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये 34,10.

— अनुपर्या, so Âçv. Gṛhj. 3,12,15 bei Stenzler; s. jedoch u. अनुपरि.

— प्रा *herbeikommen:* तमा प्र याहि Ṛv. 7,24,1. आ तु प्र याहि 29,1. 3,30,2. 8,2,19.

— उपप्रा dass.: उप प्र यातं वरमा वसिष्ठम् Ṛv. 7,70,6.

— प्रतिप्रा dass.: प्रति प्र यातं वरमा जनाय Ṛv. 7,70,5.

— प्रत्या *zurückkommen, zurückkehren* MBh. 4,1698. Râǵa-Tar. 6,205. आश्रमम् Ragh. 2,67. Kathâs. 13,194. 53,22.

— समा 1) *zusammen herbeikommen, zusammenkommen, hinzukommen, herantreten, kommen, kommen nach, zu:* लोकपाला महेन्द्राद्याः समायान्ति (सभां या° ed. Calc.) दिदृक्षवः MBh. 3,2139 (N. 3, 5). R. 1,59,11. 2,91,14. 4,37,23. Mârk. P. 109,37. 128,27. LA. (III) 91,1. चत्वारो वराः समायाताः 13,1. द्वौ पन्थानौ समायातौ Pańkat. 243,2. समायात् MBh. 4,1107. R. Gorr. 2,33,6. समायाते कान्ते Spr. 3178. Kathâs. 104,50. Râǵa-Tar. 6,246. Pańkat. 34,17. 46,6. Hit. 14,22. कस्त्वं कुतः समायातः 40,21. 83,2. Vet. in LA. (III) 7,11. 9,13. Verz. d. Oxf. H. 14,*b*,40. कृत्वा नन्दस्य मन्त्रिताम्। खिन्नः समाययौ द्रष्टुं कदाचिद्विन्ध्यवासिनीम् *er ging* Kathâs. 2,2. वृष्णयः सर्व एवैते स्वं स्वं सद्म समाययुः Hariv. 14494. R. 2,71,10. Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,29. तमुद्देशं समायातः *gekommen* Pańkat. 199,2. वत्सराजस्य पार्श्वम् Kathâs. 14,1. निकटं तस्य 45,279. समायास्यन्ति ते ऽन्तिकम् MBh. 12,7213. Mârk. P. S. 656, Z. 12. अत्र समाययौ Kathâs. 34,144. Hit. 27,14. Vet. in LA. (III) 3,22. कुतो ऽपि स्थानात् — राजसभायां समायातः 2,3. तस्मिंस्तडागे 5,16. ताम् *ging auf sie zu* Kathâs. 9,62. कालमेघः समाययौ *zog auf* 32,323. शक्तिं समायान्तीं *herangeflogen kommend* MBh. 5,7206. समायाति सदा लक्ष्मीर्नारिकेलफलाम्बुवत् Spr. 3177. तिलपुष्पात्समायाति वायुः 1034. अस्या दुष्टा दशा समायाता *kam über sie* Z. d. d. m. G. 14,374,3. मम बलान्निद्रा समायाता Pańkat. 27,10. यावत्कृष्णपक्षः समायाति Vet. in LA. (III) 8,3. शशकस्यावसरः समायातः Pańkat. 55,4. — 2) *verstreichen, verfliessen:* मासा दश समाययुः MBh. 4,373. — 3) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen;* mit acc.: वृद्धिम् Spr. 3257. Mârk. P. 25,13. सौहित्यम् Râǵa-Tar. 4,625.

— अभिसमा *zusammen herbeikommen* MBh. 5,1974.

— उद् 1) *hinausgehen, weggehen:* स्थानात् Çat. Br. 14,5,4,1. *abfliegen:* क्रमशस्ते (शराः) पुनस्तस्य चापात्सममिवोद्ययुः Ragh. 12,47. — 2) *sich erheben:* पतत्युद्याति Gît. 4,19. खम् Kathâs. 26,231. दिवम् 28,92. 107,39. — 3) *sich erheben* so v. a. *entstehen:* विरोधो ऽन्योऽन्यमुद्ययौ Râǵa-Tar. 4,687. इति मतिरुदयासीत् Naish. 2,109. — 4) *überragen, übertreffen:* त्वामुद्यातितराम् Mârk. P. 69,60. — Vgl. उद्यान. — caus. s. उद्यापन.

— अभ्युद् *sich gegen Jmd erheben* MBh. 6,5217. अभ्युद्यतो st. अभ्युद्यातो ed. Bomb.

— प्रत्युद् *sich erheben und Jmd* (acc.) *entgegen gehen* (in freundlicher oder feindlicher Absicht) MBh. 4,1666. 1834. 2185. 2187. 5,2255. 6,1690. 2392. 14,176. 2106. 2222. 16,129. R. Gorr. 1,21,7 (20,8 Schl.). 2,46,20. Kumâras. 6,50. Kathâs. 16,73. 121,271. Râǵa-Tar. 3,226. Bhâg. P. 1,11,3. प्रत्युद्यात mit pass. Bed. Ragh. 1,49. Megh. 23. auch mit gen. der Person: प्रोष्यागच्छतामाहिताग्नीनामग्नयः प्रत्युद्यान्ति ved. Cit. bei Mallin. zu Ragh. 1,49. — Vgl. प्रत्युद्यातृ.

— समुद् *sich gegen Jmd* (acc.) *erheben* MBh. 8,1316. यश्च नः सहितान्सर्वान्विराटनगरे तदा। एक एव समुद्यातः 6,4456.

— उप 1) *herbeikommen, besuchen, hingehen —, kommen nach, zu, sich Jmd nähern:* यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञम् Ṛv. 7,1,12. 28,1. TBr. 3,1,2,4. चन्द्रो याति सभामुप Ṛv. 8,4,9. जायाम् 1,82,5. बर्हिः 135,1. युक्त्वा रथमुप देवाँ अयातन 161,7. स्तोमम् 3,60,7. इहोप यात 4,35,1. निष्कृतम् 9,86,32. AV. 13,2,37. 18,4,8. संसदम् Âçv. Gṛhj. 2,6,11. Gobh. 3,4,28. — रथं गृहीत्वोपययौ R. 2,82,27. स्यन्दनेनोपयान् R. Gorr. 2,125,1. 4,37,37. Gît. 9,8. Bhâg. P. 3,31,40. कस्मान्नेहोपयातो ऽसि R. 2,91,5. 6. 5,27,13. R. Gorr. 1,75,6. 2,100,6. 3,42,31. MBh. 3,11903. Kathâs. 52,231. 55,142. Bhâg. P. 1,19,15 (um Schutz zu suchen). 3,31,20. यत्रोपयाति हरिभिः सोमवीथीम् MBh. 13,4896. उत्तमां गतिम् Kathâs. 111,72. स्वपुरम् MBh. 2,49. 3,618. 637. 2764. 5,7106. 7486 (wo नोपयाति mit der ed. Bomb. zu lesen ist). तदर्थमुपयातो ऽहमयोध्याम् R. 1,73,4. 2,50,15. 57,16. 71,9. 5,65,13. Ṛt. 1,23. Bhâg. P. 3,21,37. 4,30,18. 5,21,10. दिवमुपयातानाम् Spr. 1157. अस्तम् Kathâs. 30,144. सकाशम् Bhâg. P. 3,16,26. श्रोत्रपदवीम् Verz. d. Oxf. H. 58,*b*,4. सवितरि वृषमुपयाते Varâh. Bṛh. S. 42,12. उपचयभवनोपयातस्य भानोः 104,61. गृहोपयात Bhâg. P. 4,20,15. (नदी) अर्चिता चोपयाता (*besucht*) च गन्धर्वैः MBh. 3,10903. उपयान्त्यर्चयित्वा तु त्वाम् 172. 4,1149. 7,6406. अहं तु तं नरव्याघ्रमुपयातः प्रसादकः R. 2,90,17. 4,35,31. Spr. 2500. Kathâs. 84,25. Bhâg. P. 1,2,3. 3,16,20. 5,14,40. त्वामेव शरणं नित्यमुपयास्ये Hariv. 2918. 12350. पुरुषं पुराणं ब्रह्म प्रधानमुपयान्ति *eingehen in* Bhâg. P. 3,32,10. मधुः (= वसन्तः) उपययौ Ragh. ed. Calc. 9,24. शरद्यथोपयातायाम् R. 4,29,1. जरां प्रशान्तिदूतीमुपयाताम् Kathâs. 10,216. दुर्मन्त्रिणं कमुपयान्ति न नीतिदोषाः so v. a. *begegnen* Spr. 1195. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaftig werden, erlangen, finden:* मृत्युम् Varâh. Bṛh. S. 69,30. अमी घना वायुवशोपयाताः Hariv. 8785. मुदम् Spr. 3529. रुजम् Gît. 5,4. आप्तभावम् Spr. 1322 (= MBh. 1,654). क्षोभम् MBh. 1,7634. नाशम् Mârk. P. 49,25. विनाशम् R. 2,48,22. R. Gorr. 2,69,7. Varâh. Bṛh. S. 17,21. 54,61. पाकम् 8,12. 46,7. 51. शमम् 5,62. मोक्षम् 7,19. प्रकोपम् 38,3. संक्षयम् 47,14. विषादम् Spr. 1292. प्रसादम् Prab. 68,12. प्रकाशम् Hariv. 5224. मूर्छाम् Bhâg. P. 5,26,8. पीडाम् Varâh. Bṛh. S. 5,35. वृद्धिम् 25,2. आर्तिम् MBh. 1,7634. ख्यातिम् Hariv. 6497. पुष्टिम् Mârk. P. 16,71. यां यां सृष्टिम् Bhâg. P. 1,19,16. भृतिं चोपययौ तस्य सारथ्येन महीपतेः MBh. 3,2296. भार्यात्वम् M. 12,69. स्थिरत्वम् Spr. 1322. तनुताम् Ragh. 9,37. सुजनताम् Spr. 2051. मृदुत्वम् Mârk. P. 68,32. एकत्वम् 102,10. ब्रह्मवाय्वग्निसोमानां सालोक्यम् MBh. 13,4173. काठिन्यम् Varâh. Bṛh. S. 21,34. माधुर्यम् Spr. 4966. तस्य साहाय्यम् Kathâs. 32,35. क्व शरणमुपयान्ति तत्र जनाः Varâh. Bṛh. S. 5,88. कश्मलम् Bhâg. P. 5,13,7. किंचिद्वनम् 14,35. सालादन्यैरपकृतमपि प्रीतिमेवो-

पयाति *wird zur Freude* Spr. 2042. — 3) *inire* (feminam): अनुपयान्पतिः Spr. 656, v. l. तस्मात्स युवतीमन्यां नाकामामुपयास्यति R. 7,26,55. अध-र्मतश्चोपयाता MBH. 8,2081. — Vgl. उपयान, उपयायिन्.

— अभ्युप 1) *herbeikommen, hingehen zu, losgehen auf* R. 1,73,5. 4, 62,12. निवेशायाभ्युपायाम[:] MBH. 7,1967. तौ राजपुत्रौ सहसाभ्युपाया-ञ्छायेव राहोर्दिवि चन्द्रसूर्यौ R. 2,29,33. — 2) *in einen Zustand* u. s. w. *kommen:* शमम् *zur Ruhe gelangen* MÂRK. P. 131,19.

— उपोप *gelangen zu, antreten:* ते द्वादशं वर्षमुपोपयाता (wohl so zu lesen) वने विहर्तुं कुरवः MBH. 3,12358.

— प्रत्युप *zurückkehren* MBH. 4,2356. प्रत्युपायां पुनर्गृहम् (so die ed. Bomb. st. गृहे der ed. Calc.) 1,8393. प्रत्युपायाद्गृहं प्रति 13,1883. काल-स्त्वयं प्रत्युपयाति दारुणो दुर्योधनो युद्धमुपागमच्चत् 8,1991.

— समुप 1) *zusammen herbeikommen:* ततौघः सुमहांस्तत्र समुपायात्स-मन्ततः R. GORR. 2,82,12. *hingehen —, sich begeben zu:* महीतलम् MBH. 3,1912. वाहिनीम् VARÂH. BṚH. S. 47,25. अस्तम् 11,34. अतस्त्वां शरण्य-शरणं समुपयाताः 43,1. — 2) *in einen Zustand* u. s. w. *kommen:* संदर्श-नम् *sichtbar werden* VARÂH. BṚH. S. 87,26.

— नि 1) *überfahren* (mit einem Wagen): अमित्रयन्तं सर्वरथा नि याहि ṚV. 5,35,5. अचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात 42,10. गिरिम् 54,5. — 2) *herabkommen zu:* विभिश्वयवानमश्विना नि याथः ṚV. 5,75,5. — 3) *gerathen in:* माहं पौत्रमघं नियाम् ÂÇV. GṚHJ. 1,13,7. — Vgl. नियविन्, नियान.

— परिणि P. 8,4,17, Sch.

— प्रणि P. 8,4,17, Sch. VOP. 8,22. 9,16. *gerathen in:* रुषम् BHAṬṬ. 9,100.

— निस् 1) *hinausgehen, — fahren, — ziehen, das Haus verlassen, hervorkommen aus* MBH. 1,4912. 2,951. 4,987. चतुरङ्गबलं चापि शीघ्रं निर्यातु R. 1,69,3. 2,47,11. 57,19. fg. 68,7. 70,3. निर्यान्तो वाभियान्तो वा 71,20. R. GORR. 1,71,2. 3,28,27. 4,35,29. 6,11,6. Spr. 1084. KATHÂS. 12,67. 154. 15,90. 18,108. 186. 25,53. 28,144. 52,308. fg. 53,37. राज्ञो यात्रासु RÂGA-TAR. 3,78. 121. 5,53. 254. 257. 259. BHÂG. P. 8,16,7. 9,15, 27. VET. in LA. (III) 20,19. BHAṬṬ. 8,5. 15,95. बहिस् KATHÂS. 18,182. 53,48. नगरात् MBH. 1,5001. गृहात् 5452. R. 2,76,19. Spr. 1230. RAGH. 10,38. KATHÂS. 13,95. 27,151. RÂGA-TAR. 5,104. BHÂG. P. 1,10,14. 4, 30,44. BHAṬṬ. 2,1. युद्धाय MBH. 8,1260. HARIV. 10732. RAGH. 12,83. KATHÂS. 49,87. दिग्जयाय RÂGA-TAR. 4,403. क्वाचिद्वित्तार्थम् PAÑKAT. 238,19. मृगयाम् *auf die Jagd* MBH. 13,546. समीपं मानवेन्द्राणाम् HARIV. 9603. वाहनैः — नरा निर्यान्त्यरण्यानि Spr. 4423. BHÂG. P. 2,2,26. न च निर्या-न्ति प्राणा मे KATHÂS. 25,131. Spr. 5337. हिरण्मयानि बिल्वानि तदा नि-र्यान्ति कुण्डतः KATHÂS. 35,61. 53,68. यथार्चिषो ऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो नि-र्यान्ति BHÂG. P. 8,3,23. जालनिर्यातधूप 10,71,33. तन्मुखनिर्यातं यशः 4, 31,24. — 2) *vergehen, verstreichen:* कृपणानि दिनानीव तदानीं मम नि-र्ययुः Spr. 5401. — 3) *bereinigen* (ein Feld) MBH. 12,3586; vgl. निर्यातृ (auch in den Nachträgen). — 4) *bei Seite legen:* आपदर्थं च निर्यातं (= दत्तं NILAK.) धनं विह विवर्धयेत् (so die ed. Bomb. st. राज्ञा न इह वि-न्दते der ed. Calc.) MBH. 12,3283. — Vgl. निर्या fg. und निर्याति. — caus. 1) *hinausgehen —, hinausziehen lassen:* सेनाम् MBH. 5,5702. R. 7,64, 18. *hinausjagen:* शिबिरात् BHÂG. P. 1,7,56. स्वपुर्याः 3,1,41. — 2) *wegschaffen, aufheben:* निर्यापितदेहधर्म BHÂG. P. 3,21,17. — 3) *beginnen, unternehmen:* निर्यापितो महोत्सवः BHÂG. P. 4,3,8. — Vgl. निर्यापण.

— desid. s. निर्यियासु.

— अभिनिस् *hinausgehen, — ziehen* MBH. 3,654. 4,1033. 1252. BHÂG. P. 10,63,5. नगरात् MBH. 14,2177. R. 2,71,1. 7,23,1,89. युद्धाय 6,27, 19. वधायास्य 3,28,16. — Vgl. अभिनिर्याण.

— प्रतिनिस् *wieder herauskommen:* (यथा) न जीवन्प्रतिनिर्याति महतो ऽस्माद्व्यत्रजात् MBH. 6,5155. यथा प्रयुक्त ओंकारः प्रतिनिर्याति मूर्धनि MÂRK. P. 42,6.

— विनिस् *hinausgehen, — fahren, — ziehen* MBH. 1,4913. 2,2592. 4,985. 5,7436. KATHÂS. 12,62. 24,51. 32,75. 34,125. 88,14. RÂGA-TAR. 5,59. 327. 448. बहिस् 3,160. उदरात् KATHÂS. 25,52. तरोः 26,208. स्था-नात् RÂGA-TAR. 5,218. 2,164. राजधान्याः 256. युद्धाय KATHÂS. 58,6. दि-ग्जयाय RÂGA-TAR. 3,27. 4,513. तान्प्रति HARIV. 10626. प्राणास्तस्या वि-निर्ययुः KATHÂS. 15,90. षष्टिः पुत्रसहस्राणि भिन्ने तुम्बे विनिर्ययुः R. GORR. 1,40,17. विकोशासिविनिर्यातैः खड्गरश्मिभिः KATHÂS. 112,153. विनिर्या-न्ती वक्त्रात् — आज्ञा RÂGA-TAR. 4,218. मानम्लानिर्विनिर्ययौ । मानसात् 585. यथा मात्रा कृतास्तस्माद् (हृदयात्) उपदेशा विनिर्ययुः KATHÂS. 12,81. विनिर्याति (im Gegens. zu समायाति) सदा लक्ष्मीर्गजभुक्तकपित्थवत् Spr. 3177. — Vgl. विनिर्याण.

— परा *weggehen, hingehen:* परा याहि मघवन्ना च याहि ṚV. 3,53,5. AV. 18,3,14. — caus. KAUÇ. 88.

— परि *umherwandeln, umwandeln, umfahren, durchwandern; herbeikommen:* याभिः सूर्यं परियाथः परावति ṚV. 1,112,13. द्यावापृथिवी या-थना परि 5,55,7. 10,49,7. रथः 3,58,8. 4,15,2. 7,69,5. वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू 8,26,14. 5,75,7. 10,85,18. AV. 13,2,4. 6. KAUÇ. 16. LÂṬJ. 3, 10,4. MBH. 12,8019. शनैस्तदा परिययौ श्वेताश्वश्च महारथः 14,2135. स-मन्तात्परियातो ऽसि R. GORR. 2,106,19. सेनां कृत्स्नाम् MBH. 5,5701. म-हीम् 12,2527. पुरीम् R. 6,31,3. *abrinnen*, vom Soma ṚV. 9,82,2. 5. 83,5. *durchlaufen:* विश्वा रूपा 9,111,1. *umringen, umgeben:* अनन्तैर्वधैः 1,121,9. *umgehen* so v. a. *hüten:* परि ह त्यद्वर्तिर्याथो रिषः 6,63,2. अग्निः सहस्रा परि याति गोनाम् 10,80,5. *umgéhen* so v. a. *vermeiden:* यथा परियास्यंहः 6,37,4. — Vgl. परियाण fgg. — caus. *Jmd umherwandeln —, die Runde machen lassen:* पुरोहितं तं परियाप्य (= प्रस्था-प्य NILAK.) MBH. 1,7205. — परियापयमाण KÂÇ. zu P. 8,4,29.

— अनुपरि *rings durchfahren:* सर्वा दिशो ऽनुपरियायात् ÂÇV. GṚHJ. 3,12,15. Diese Lesart halten wir für die richtige.

— प्र 1) *sich auf den Weg machen, aufbrechen, eine Fahrt antreten; gehen —, sich hinbegeben —, fahren zu* (acc.): प्र ये ययुरवृकासो रथा इव ṚV. 7,74,6. 92,3. 95,1. प्र स्यन्द्रा याथो मनुषो न होता 1,180,9. प्र यां-तन सखीँरच्छा सखायः 165,13. 2,16,7. अस्तमिन्द्र प्र याहि 3,53,6. 4,19, 5. 8,27,8. 9,69,9. 86,16. 97,8. प्र याश्चहोशतो यविष्ठ 10,1,7. 8,1. VS. 12,32. 28,14. TBR. 3,7,1,1. ÇAT. BR. 6,7,4,9. 8,1,3. 5. MUṆḌ. UP. 1, 2,11. Der inf. प्रयै (vgl. P. 3,4,10) findet sich ṚV. 10,104,3 (in anderer Verbindung beim Schol. zu P.), wo übrigens प्रयै zu vermuthen ist. ततः सर्वे तथेत्युक्त्वा मात्रा सह महारथाः। प्रययुः MBH. 1,6041. 3,2634. 15690. 16908. HARIV. 3525. R. 1,69,5. 2,46,30. R. GORR. 1,9,40. 58,32. 92,35. MṚKKH. 11,18. 120,1 (प्रयाम शीघ्रं zu trennen). विमुखाः प्रयान्ति Spr. 3054. 4590. VARÂH. BṚH. S. 28,15. KATHÂS. 12,43. 105. 14,64. 18,346. 26,133. 32,48. 51,193. 52,90. 276. RÂGA-TAR. 5,292. BHÂG. P. 1,13,28.

4,3,12. Mârk. P. 61,29. Daçak. in Benf. Chr. 187,15. Pañkat. 221,12. रथमारुह्य — प्रययौ जवनैर्हयैः MBh. 3,2848. ततः प्रायामहं तेन स्यन्दनेन 12068. R. Gorr. 2,44,25. रथेन खरयुक्तेन प्रयातो दक्षिणामुखः R. Schl. 2,69,15. नेमिः प्रयाताः 1,9,11 (9 Gorr.). MBh. 1,5586. सेना प्रयाता R. 2,92,36. 3,54,9. Ragh. 2,6. 16,28. Kathâs. 51,173. 54,150. Varâh. Bṛh. S. 33,30. 88,24. Râǵa-Tar. 1,301. Prab. 88,4. Pañkat. 168,22. प्रयायताम् (3. sg. imper. pass. impers.) MBh. 12,12077. युवभिः प्रयये (pass. impers.) Çiç. 9,70. इतो ऽन्यतः प्रयातुम् Spr. 2369. गृहात् Kathâs. 16,88. उज्जयिन्याः 18,86. 24,89. 25,37. 56,73. रणात् 50,16. दूरम् Sûrjas. 7, 24. Râǵa-Tar. 5,147. दूरप्रयात 4,410. स्वगृहाभिमुखम् Hit. 42,14. अस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः Maitrjup. 1,4. दक्षिणां दिशम् MBh. 1,5876. 3,240. 2616. 3058. 5,5079 (med.). 7106. 7342. 7503. 13,4889. Hariv. 8122. R. 1,1,93. 2,40,18. 49,9. 80,4. 96,28. R. Gorr. 1,26,5. 5,27,16. Ragh. 12,25. Sûrjas. 12,72. आकाशं विपुलम् Spr. 2085. 3928. Kathâs. 10,8. 13,132. 18,145. 21,22. 52,258. 56,56. Bhâg. P. 1,10,33. 2,2,24. 3,4,4. Mârk. P. 43,15. Bhaṭṭ. 3,36. नरकम् Prab. 21,2. विन्ध्यवासिनीम् Kathâs. 54,160. शत्रुबलम् *ziehen gegen* Hariv. 13161. ये मां युद्धे प्रयास्यन्ति (ऽभियोत्स्यन्ति ed. Bomb.) तान्हनिष्यामि MBh. 7,7159. शङ्कूटं सा प्रयाता वै महानदी Mârk. P. 56,17. पर्वतं मन्दरं दिव्यमेष पन्थाः प्रयास्यति MBh. 3,10900. यानि यानि योनिशतानि Mârk. P. 14,95. तत्र MBh. 13,4890. Hit. 84,10. Kathâs. 26,14. पुरं प्रति MBh. 3,15081. Kathâs. 18,392. तां भद्रां प्रति 289. पुण्यवनाय Bhaṭṭ. 1,25. वनवासाय R. 2,45,1. MBh. 3,785. द्रौपदीं द्रष्टुम् 1,6925. R. Gorr. 2,25,24 (wo हन्तुं zu lesen ist). Kathâs. 18,86. असवः प्रयान्ति *entfliehen* Git. 10,11. मम प्राणाः प्रयान्तु Kathâs. 18,187. *sich auf den Weg machen* so v. a. *sterben* Bhag. 8,5. प्रयात *gestorben* 23. *verfliessen, vergehen:* प्रयाताः सप्त वासराः Kathâs. 4,23. *vergehen, verschwinden;* von Krankheiten Verz. d. Oxf. H. 234,*b*,5. ललाटलेखा न पुनः प्रयाति Spr. 4948. Bâlab. 17. *auseinanderfliegen:* यथा प्रयान्ति संयान्ति स्रोतोवेगेन वालुकाः Spr. 4787. त्रुटत्तनुकं मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति ध्वस्यद्दिशः 3003. — 2) = या *wandeln, gehen, sich bewegen, fahren:* यं च पन्थानमाक्रम्य प्रयाति मनुजेश्वरः R. 5,81,22. प्रजासु कः केन पथा प्रयाति Çâk. 153. (सारङ्गः) वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति 7. रात्रिंदिवं गन्धवहः प्रयाति 101. इह तुरगशतैः प्रयान्तु मूर्खाः Spr. 431. अप्रयान्त् *sich nicht bewegend* MBh. 5,7178. प्रयात (*sich in Bewegung gesetzt habend*) = प्रयान्त् *gehend, sich bewegend, fliegend:* प्रयाते तु रथे MBh. 3,2809. सो ऽपश्यद्धंसयुगलं प्रयातं गगणे निशि Kathâs. 3,27. — 3) *sich benehmen:* तस्मिन्मित्रमापदि सुखे च समं प्रयाति Spr. 1926, l. l. — 4) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss gerathen, theilhaftig werden:* निन्द्यां गतिम् Kathâs. 52,409. निधनम् Spr. 3346. परितापदुःखम् 2931. निद्राम् Ṛt. 4,14. कोपस्य वशम् Varâh. Bṛh. S. 68,110. निष्ठाम् Hariv. 8464. fg. मुदम् Mârk. P. 74,45. Spr. 618. भवं योनिशतेषु Jâǵn. 3,131. सङ्गम् Ṛt. 4,3. 6,6. पराभवम् MBh. 4,902. Spr. 3241. उदयम्, क्षयम् 3783. Mârk. P. 112,10. विरामम् Spr. 2585. नाशम् Varâh. Bṛh. S. 84,1. समाप्तिम् Spr. 2460. परमां वृद्धिम् 3763. सौख्यम् 1391. Ṛt. 6,4. मानुष्यम् Kathâs. 27,71. पारमेष्ठ्यम् Bhâg. P. 2,2,22. स्थैर्यम् Mârk. P. 21,56. संमूढत्वम् Maitrjup. 3,2. विषमत्वम् 5,2. अन्त्यपक्षिस्थावरताम् Jâǵn. 3,131. श्लाघनीयताम् Spr. 167. देवत्वम् 171. 500. Kâm. Nîtis. 15,9. Râǵa-Tar. 1,283. Mârk. P. 23,65. Bhaṭṭ. 6,49. Sarvadarçanas. 170,9. — Vgl. प्रया, प्रयाण fgg., प्रयामन् fgg., प्रयियु, गणेशभुजंगप्रयात, चण्डवृष्टि°, भुजंग°. — caus. प्रयापयमाण Kâç. zu P. 8,4,29. प्रयाप्यमाण und प्रयाप्यमान Schol. zu P. 8,4,30. *aufbrechen heissen* Çat. Br. 11,8,1,3. Vgl. प्रयापण fgg. — desid. *sich auf den Weg machen wollen:* राजानं प्रयियासन्तम् Çat. Br. 14,7,1,44. — caus. vom desid.: *veranlassen, dass Jmd sich auf den Weg machen will:* प्रयियासयन्त Bhaṭṭ. 3,25.

— अनुप्र *auf dem Wege nachfolgen* TBr. 3,7,1,1. *den Weg einschlagen nach:* आघातमध्यानुप्रयामि शामित्रमालब्धुमिवाधरे ऽज्ञः Mṛkkh. 161, 12. *nach Jmd* (acc.) *aufbrechen, Jmd begleiten:* तं प्रयान्तमनुप्रयात् MBh. 5,2949. R. Gorr. 2,33,7. पृष्ठतो ऽनुप्रयातानि (mit act. Bed.) 43,23 (45, 22 Schl.). अनुप्रयात *begleitet von* Kumâras. 3,23. 52.

— अभिप्र *herbeikommen zu:* अभि प्रिया मरुतो या वो अश्व्या हव्या मित्र प्रयाथन Ṛv. 8,27,6. *aufbrechen* MBh. 4,1650. R. 5,73,15. दिशं दक्षिणपश्चिमाम् Kathâs. 101,174. वनम् R. 2,31,37. अभिप्रयातस्य वनं चिराय ते 25,43. *angreifen:* अभिप्रयामि संग्रामे यदहं युद्धदुर्मदान् MBh. 4,1381. परं चाभिप्रयातस्य चक्रं तस्य महात्मनः । भविष्यति चाप्रतिहतं सततं चक्रवर्तिनः ॥ 1,2983. — Vgl. अभिप्रयायम्, अभिप्रयायिन्.

— उपप्र *herbeikommen, — fahren; sich aufmachen zu* Ṛv. 1,82,6. संग्रामम् TS. 2,2,1,2. 3. Çâñkh. Br. 22,9.

— परिप्र *herbeikommen zu:* यूयं हि देवीः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः Ṛv. 4,51,5.

— प्रतिप्र *heimkehren* Ṛv. 1,169,6. MBh. 3,10287. स्वगृहम् Itih. bei Sâj. zu Ṛv. 1,125,1. प्रतिप्रयात MBh. 12,8330. R. 3,1,1. 6,105,1. 7, 64,18. Ragh. 14,19. Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,5 (hier vielleicht °यान्तं zu lesen). *zurückfliessen* Shaḍv. Br. 5,10. — Vgl. प्रतिप्रयाण.

— विप्र *auseinandergehen, — laufen:* विप्रयातरथानीकाः MBh. 6, 2131. 7,3760. 9,1055. An der ersten Stelle die ed. Bomb. विप्रद्रुत°.

— संप्र 1) (*zusammen*) *aufbrechen, hingehen zu* Çâñkh. Çr. 2,16,1. MBh. 1,4645. 2,2517. तदनीकं विराटस्य प्रभुभे — संप्रयान्तं (= संप्रयात्; संप्रयातं ed. Bomb.) तदा राजन्निरीक्षन्तं (d. i. निरीक्षत् = निरीक्षमाणाम्) गवां पदम् 4,1034. 5,3463. 5154. Hariv. 4461. 10911. 11071. R. Gorr. 2,101,40. 5,35,27. 7,14,2. नह्यहं संप्रयास्यामि पुरम् MBh. 3,15082. ब्राह्मणः सदनम् 13,1851. नभस्तलम् R. 3,60,1. 5,55,13. 7,18,19. ततो दिवाकरो राशिं संप्रयाति च कर्कटम् Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,42. (नदी) संप्रयात्युत्तरान्कुरून् MBh. 6,278. संप्रायादाश्रमं प्रति 3,16857. *sich bewegen* (von Gestirnen): (पथा) येनासौ संप्रयास्यति Sûrjas. 6,16. नखरैः संप्रयातः *mit Nägeln zu Werke gehend, sich der Nägel bedienend* MBh. 12, 8863. — 2) (*zusammen*) *in ein Verhältniss, eine Lage, einen Zustand gerathen:* समताम् Varâh. Bṛh. S. 17,2. उच्छ्रितीः Mârk. P. 121,28.

— अनुसंप्र *hingehen* AV. 11,1,36.

— अभिसंप्र *hingehen, sich nähern* MBh. 6,3762. संवारयिष्णुनभिवारयित्वा ed. Bomb. st. आवारयिष्यन्नभिसंप्रयाय der ed. Calc.

— उपसंप्र *hingehen* VS. 15,53.

— प्रति 1) *herkommen zu:* उभा यातं प्रति हव्यानि वीतये Ṛv. 8,90, 7. *hingehen zu:* भानावस्तं प्रतियाते महीध्रम् MBh. 5,7216. सूतपुत्ररथं प्रति । प्रतियातम् (आयान्तं तु ed. Bomb.) 7,7844. *losgehen auf Jmd* (acc.) Hariv. 5608. रणाय वीरः प्रतियातबुद्धिः *gerichtet auf* R. 5,43,14. — 2)

heimkehren, wiederkehren MBh. 3,1712. 5,7493. 7518. Hariv. 3958. R. 1,66,6. 3,4,36. 11,17. त्वं न जीवन्प्रतियास्यसि 59,10. 6,12,13. 7,18,13. Ragh. 5,18. Daçak. in Benf. Chr. 181,17. अन्तिकमस्य गुरोः Ragh. 8,90. पुरीमिमाम् MBh. 1,6780. 5,6081. 16,171. R. 2,52,37 (51,3 Gorr.). 5, 53,27. 73,50. गृहान् MBh. 4,1253. Bhâg. P. 10,29,27. स्वधाम 4,8,82. स्वमावासम् R. 3,46,19. उर्वीम् Ragh. 1,75. स्वमनीकम् MBh. 9,1241. पाण्डवान् 5,643. कथं पुनर्नः प्रतियास्यते Bhâg. P. 10,39,24. *wieder von dannen gehen:* विसृज्य सलिलं मेघाः प्रतियाताः R. 4,29,9. प्राणिनं सर्वमापदः । स्पृशन्त्यनिलवल्लोके क्षणेन प्रतियान्ति (व्यपयान्ति ed. Bomb.) च ॥ 3,71,5. प्रतियातनिद्र so v. a. *erwacht* Bhâg. P. 5,1,16. — 3) *Jmd* (acc.) *willfahren:* यावन्मां प्रतियास्यति R. 2,111,14. मद्वचनमङ्गीकृत्य प्रतियास्यत्ययोध्याम् Comm. in der ed. Bomb., यावन्न प्रतियास्यति Gorr. (2, 120,14). — 4) *Jmd* (acc.) *gleichkommen:* गयं नृपः कः प्रतियाति कर्मभिः Bhâg. P. 5,15,7. — 5) *vergolten werden* Bhâg. P. 10,32,22. — Vgl. प्रतियान fg. — caus. *heimkehren lassen nach* (acc.) Bhâg. P. 10,73,28.

— वि 1) *weggehen, sich abwenden:* यस्मिन्मनो दृगपि नो न वियाति लग्नम् Bhâg. P. 5,2,16. — 2) *durchfahren, mit dem Wagen —, mit den Rädern durchschneiden:* वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम् Ṛv. 1,39,3. वि यात विश्वमत्रिणम् 86,10. विभिन्दुना रथेन वि पर्वतां अयातम् 116,20. 117,16. 3,31,9. दुच्छुनाः 6,12,6. 62,7. तमः 65,2. वि वृत्रं पर्वशो ययुः 8,7,23. — 3) *durchlaufen, durchschneiden:* तुविग्रेभिः सत्वभिर्याति वि ज्रयः Ṛv. 1,140,9. वि रोदसी पथ्या याति साधन् 6,66,7. 8, 62,13. 9,91,3. रोचना 10,32,2. *zwischen durch gehen, — fahren* Çat. Br. 12,4,1,2. 3. — 4) वियात *dreist, unverschämt* AK. 3,1,25. H. 432. Halâj. 2,216. विरूपं यातं गमनं चेष्टनं यस्य स वियातो ऽविनीतः Kâç. zu P. 7,2,19. urspr. wohl *aus der Art geschlagen;* vgl. वैयात्य. — AV. 3,31, 5 scheint der Text entstellt zu sein.

— अभिवि *herbeifahren:* शतं रथेभिरुषा वि यात्यभि मानुषान् Ṛv. 1,48,7.

— सम् 1) *zusammen gehen, — fahren, gehen, wandeln, fahren* TS. 5, 3,10,1. TBr. 2,4,3,3. Çat. Br. 8,3,4,7. 7,1,13. नाराजके जनपदे व्हष्टैः परमवाजिभिः । नराः संयान्ति सहसा रथैश्च प्रतिमण्डितैः ॥ Spr. 4431. को ऽयं स्यन्दनारूढः — निर्लज्ज इव संयाति R. 7,23,3,5. Bhag. 15,8. *zusammenkommen, sich vereinigen:* यथा प्रयान्ति संयान्ति स्रोतोवेगेन वालुकाः Spr. 4787. Bhâg. P. 8,3,23. *mit Jmd* (acc.) *feindlich zusammenstossen, kämpfen* MBh. 6,2143. *hingehen:* संयाहि यतो बाणो रथे स्थितः Hariv. 10783. अर्जुनं वीक्ष्य संयातं जयद्रथवधं प्रति MBh. 7,6065. स्वपुरम् Hariv. 5636. अभयं पदं क्षेमं Bhâg. P. 5,19,23. *kommen* R. 6,33,34. पुनरपि वीरवरः संयातः Vet. in LA. (III) 28,15. विधूमामिव (so die ed. Bomb.) संयान्तीमुल्काम् MBh. 7,8881. — 2) *in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss treten, theilhaftig werden:* निर्वाणम् Bhâg. P. 11,14,46. एकताम् R. 4,33,26. पापान्संसारान् M. 12,52. तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही Bhag. 2,22. अमूँल्लोकान् MBh. 3,6013. अपावृतमृतम् Bhâg. P. 3,9,15. — 3) *sich richten nach* (acc.): गुरुमिव कृतमग्र्यं कर्म (acc.) संयाति दैवम् (nom.) MBh. 13,341. — संययुः Hariv. 15892 fehlerhaft für खं ययुः, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. संयान.

— अनुसम् *auf- und abgehen:* रक्षिणश्चानुसंयान्तु पथि R. 2,79,13. *hingehen zu, nach, besuchen:* शक्रस्त्रैलोक्यमनुसंययौ MBh. 12,8222. आदित्यमनुसंयातो R. 4,58,5. महेन्द्रस्य कुबेरस्य यमस्य वरुणस्य च । भवनान्यनुसंयामि MBh. 1,3072. तीर्थान्यन्यान्यनुसंयाहि 3,10094. — Vgl. अनुसंयान.

— अभिसम् *besuchen, kommen zu:* अतो विश्वा अभि सं याति संयतः Ṛv. 9,86,15. नावोदकाडुदकमभिसंयाति Kâth. 22,6. *losgehen auf Jmd* (acc.): मामेकमभिसंयातो MBh. 8,1828.

— उपसम् *vereint kommen zu:* अस्य श्रियमुपसंयात सर्वे Ṛv. 6,73,1.

— प्रतिसम् *auf Jmd losgehen, Jmd angreifen:* सो ऽर्जुनं प्रतिसंयातः (प्रति könnte auch mit अर्जुनं verbunden werden) MBh. 6,2697. सो ऽर्जुनप्रमुखे यान्तम् ed. Bomb.

2. या (= 1. या) am Ende eines comp. *gehend;* s. ऋणा°, एव°, तुर°, देव°.

3. या f. zu 1. य.

4. या f. zu 2. य; nachzuholen wäre die Bed. लक्ष्मी H. 226.

याकृत्क adj. von यकृत् P. 7,3,51, Sch.

याकृल्लोम adj. von यकृल्लोम gaṇa पलद्यादि zu P. 4,2,110.

यात (von 1. यत्) adj. *den* Jaksha *eigen:* स्थान Gaudap. zu Sâṁkhjak. 44.

याग (von 1. यज्) m. *Opfer* AK. 2,7,4. 9. 13. 47. 3,4,9,41. 6,2,11. Trik. 2,7,9. H. 820. Halâj. 2,259. °स्थ Jâǵn. 3,251. Colebr. Misc. Ess. I,318. Ragh. 8,30. यात्रायागादि नागानां प्रावर्तयत Râǵa-Tar. 1,185. 334. मत्स्यापूपयागविधायिन् 6,11. 143. Verz. d. Oxf. H. 79, *a*, 24. Bhâshâp. 160. Schol. zu Kâtj. Çr. 250,7. 254,16. 271,9. 562,2. 5. °संप्रदानं देवता Kâç. zu P. 4,2,24. Weber, Ǵjot. 111. °काल 49. 53. 68. 72. fg. 75. 88. 109. gegenüber होम Ind. St. 2,96. — Vgl. गणा°, अह°, ब्रह्म°, मातृ°, सत्त्र°, सोम°.

यागकर्मन् (याग + क°) n. *Opferhandlung* Mârk. P. 16,71. Weber, Ǵjot. 111.

यागमण्डप (याग + म°) *Opferhalle, Tempel* Verz. d. Oxf. H. 105, *a*, 20.

यागसंतान (याग + सं°) m. ein anderer Name Ǵajanta's (Sohnes des Indra) H. ç. 33.

यागसूत्र (याग + सूत्र) n. *Opferschnur*, neben यज्ञोपवीत Ind. St. 2, 174. 178.

याच्, याँचति, °ते Dhâtup. 21,3. ययाचे; अयाचिषम्, याचिषत्, अयाचिष्ट; याचिष्यामि, याचिष्ये; याचिता; याचितुम्; partic. praet. pass. याचित. 1) *flehen, heischen, betteln, bittend angehen* (mit dopp. acc.; vgl. P. 1,4,51, Sch. Vop. 5,6), *anflehen:* सदा याचन्नहं गिरा Ṛv. 8,1,20. प्रुक्षा आशिरं याचन्ते 2,10. अवं आदित्यान्याचिषामहे (daneben auch यियाचिषामहे nach P. 6,1,8, Vârtt. 3, Sch.) 56,1. याचन्ते सुम्नं पवमानमुक्षितम् 9,78,3. पीत इन्दविन्द्रमस्मभ्यं याचतात् 86,41. 10,9,5. 22,7. 48,5. AV. 5,7,5. 12,4, 1. fgg. Çat. Br. 2,3,4,3. fgg. 3,9,3,24. fg. 9,4,2,17. 13,8,1,12. TS. 1, 5,9,6. दीक्षिष्यमाणः क्षत्रियं देवयजनं याचति Ait. Br. 7,20. Kâtj. Çr. 10, 2,35. 22,1,31. Âçv. Çr. 2,10,6. तं देवाः पुनरयाचन्त *zurückfordern, wiederhaben wollen* TBr. 1,3,10,1. TS. 2,1,2,1. 3,5,1. Çat. Br. 11,4,3,4. न याचेत् Kaush. Up. 2,1. MBh. 3,2924. ये दद्युर्न च याचेयुः 4,474. 5,7120. 7,2104. 13,3047. Spr. 4550. R. 1,10,24. 5,91,8. Bhâg. P. 3,1,8. अयाचमान Kaush. Up. 2,1. याचते M. 8,191. याचमान Spr. 4348. MBh. 3,15761. R. 2,31,9. 45,29. 52,45. 54. शिरसा याचे 62,12. 3,53,11. Spr. 2459. अयाचन्त दिनं देवा भवत्विति यथा पुरा Mârk. P. 16,50. Daçak. in Benf. Chr. 195,1. कस्मैचिद्याचते (dat. partic.) धनम् M. 8,212. MBh. 13,2435. Bhâg. P. 6,9,50. Mârk. P. 29,35. Bhaṭṭ. 14,105. अयाचन्त वरम् MBh.

3,8708. Hariv. 4470. R. 1,1,22. 3,53,6. Mṛkkh. 107,15. Vikr. 41. Ragh. 2,64. 8,12. 9,81. Kathâs. 25,144. 55,170. Bhâg. P. 4,9,31. Mârk. P. 16,70. Pañkat. 251,15. Çuk. in LA. (III) 37,7. Vet. ebend. 24,2. वरं याचितवत्यसि R. Gorr. 2,37,16. याचित्वा ज्ञलम् Kathâs. 25,202. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तत्स्त्रीबन्धुभिर्याच्यते Çâk. 92, v. l. याचित *erbeten, gefordert* AK. 2,9,3. H. 866. Jâǵn. 2,67 (so v. a. *geborgt;* vgl. याचितक). 238. R. 1,33,12. Spr. 1373. 2648. Kumâras. 4,17. Kathâs. 27,162. 32, 157. Pañkat. 182,13. अयाचित AK. 2,9,3. H. 866. M. 4,5. 11,211. Jâǵn. 1,215. Bhâg. P. 7,11,19. अयाचं भृगुशार्दूलम् MBh. 5,7063. 7,2106. मा च याचिष्म कं च न 12,1014. 15,291. R. 1,1,35. याचे ऽद्य वः सर्वान् MBh. 15,300. R. 1,57,18. 2,106,33. Megh. 5. Spr. 514. Kathâs. 22,19. राघवं याच्य शिरसा R. 6,33,37. पुनर्नरो याचति याच्यते च Spr. 4550. Kathâs. 54,154. याच्यमान MBh. 1,6129. 5,5995. 7396. R. 2,45,4. याचित *gebeten* M. 4,228. Jâǵn. 1,203. 2,256. R. 1,46,15. 2,45,27. 90,19. शिरसा याचितो मया 101,13. Mâlav. 55. Megh. 112. Kumâras. 4,35. Kathâs. 12, 140. Bhâg. P. 4,3,14. 6,9,53. Mârk. P. 61,61. Pañkat. 169,8. IV,7. अतियाचित Spr. 1939. तौ वरौ याच भर्तारम् R. Gorr. 2,8,17. 5,56,106. याचेतेमान्वरान्पितॄन् M. 3,258. MBh. 1,3961. R. 1,65,5. 2,107,5. 111, 25. R. Gorr. 1,1,25. Ragh. 12,17. Kumâras. 7,52. Spr. 444. Kathâs. 1, 31. 22,67. 185. 27,111. 32,59. 46,226. 228. 56,97. 174. 101,265. Râga-Tar. 3,422. 6,36. Bhâg. P. 4,9,34. Bhaṭṭ. 6,8. 7,11. बालानिमान्वसु याचितुम् MBh. 14,50. निक्षेपं याच्यमानः M. 8,181. भोजनं राज्ञा स कदाचिद्याच्यत Râga-Tar. 1,162. Pañkat. 212,15. अयाचि संभोगम् Vop. 24, 13. याचितस्ते पिता राज्यं रामस्य च विवासनम् R. 2,72,48. Ragh. 11,1. Kumâras. 6,27. Kathâs. 4,103. 14,64. 27,142. Bhâg. P. 9,15,9. Hit. 64, 19. Die Person steht häufig auch im abl., seltener im gen.: यज्ञसिद्ध्यै धनं ब्राह्मणः कदाचिन्न शूद्राद्याचेत् Kull. zu M. 11,24. याचमानाः परादन्नम् MBh. 1,6197. Kathâs. 8,31. 56,44. 63,159. 113,38. Bhâg. P. 8,15,1. नन्दाद्याचितुं गुरुदक्षिणाम् Kathâs. 4,94. 27,110. कुतो ऽपि क्षीरं याचित्वा Pañkat. 174,14. केनाम्भो याचितं भूपात् Kathâs. 25,137. राज्ञस्तस्य कदाचित्तु व्रजतो विजयेश्वरम्। ययाचे काचिदबला भोजनम् Râga-Tar. 1,131. Die Sache in comp. mit अर्थे (अर्थम्): शय्यर्थे (शय्यर्थं ed. Bomb.) महेन्द्रेण याचितः MBh. 5,2198. मोक्षार्थं तव याचितः R. 6,10,27. im acc. mit प्रति: तं स याचते गमनं प्रति 2,29,21. प्रसूतिं प्रति याचितः Kumâras. 6,27. im dat.: व्रतसंपादनाय मया निपुणिकामुखेन पूर्वं याचितो महाराजः Vikr. 37, 7. 8. तं ययाचे ऽभ्यवहाराय *er forderte ihn auf zu essen* Bhâg. P. 9,4, 36. तेन तदुत्पादनाय याचितः Sâj. zu Ṛv. 1,125,1. कन्यां याच् *um ein Mädchen werben, ein Mädchen zur Ehe verlangen von Jmd* (abl., seltener acc.) *für Jmd* (कृते, अर्थे) Kathâs. 17,75. 52,94. 55,86. 90. 105,22 (विवाहार्थम्). Bhâg. P. 9,6,40. 15,5. यन्मे कन्या स्वकन्यार्थे मोहाद्याचितवानसि MBh. 5,7432. याचितुं तां च कन्यां स तत्पितुः — अयोध्यां प्राहिणोद्दूतम् Kathâs. 9,37. स्वपुत्रगुहसेनस्य कृते 13,69. 14,78. 32,115. 56,84. 66,81. 88,8. 104,63. अयाच्यमानां च वरैः Sâv. 1,28. Kathâs. 52, 400. याचिता 401. 35 (पितुः). Vet. in LA. (III) 16,10. तत्पितरं सुषेणं तामयाचत Kathâs. 28,83. पिता मे याच्यताम् 82. तां सुतां याच्यतां तावत् 112,173. — 2) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *anbieten:* अस्यै देवतायै उदकं याचामि AV. 15,13,8. 9,6,4. 48. याचति वित्तं गुरवे शिष्यः Durgad. bei West. — 3) vielleicht so v. a. *versprechen* AV. 6,118,3. 119,3. 7,57,1.

— caus. याचयति, अययाचत् P. 7,4,2. *werben lassen:* याचयन्ति परस्परम् MBh. 13,2438. याचयित्वा Pañkat. 25,15 fehlerhaft für याचित्वा.

— desid. यियाचिषते; vgl. oben u. simpl. Z. 5.

— अनु *Jmd* (acc.) *in Bezug auf Etwas anflehen,* act. MBh. 10,611. R. Gorr. 2,120,20. med. Kathâs. 92,48.

— प्रत्यनु *Jmd* (acc.) *anflehen,* act. R. 2,105,11.

— अपि, caus. wofern अपि zum Verbum zu ziehen ist, etwa *nicht haben wollen, verwerfen:* अप्यस्य पुत्रान्पौत्रांश्च याचयते बृहस्पतिः AV. 12,4,38.

— अभि *flehen, heischen, anflehen, bittend angehen* (mit dopp. acc.): अभियाचते (dat. partic.) Bhâg. P. 5,18,6. Mârk. P. 38,20. शिरसा त्वभियाचे ऽहं कुरुष्व करुणां मयि R. 2,106,29. रामस्यैवाभियाचन्ते यौवराज्ये ऽभिषेचनम् R. Gorr. 2,1,40. पितरं नो ऽभियाच 1,35,27. 5,27,30. सगरं चाभ्ययाचन्त सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः MBh. 3,8890. 10586. R. 1,14,6. 9. 7, 46,18. Bhâg. P. 3,22,13. अभियाचित: *angefleht, gebeten* Spr. 4717. Bhâg. P. 3,2,25. यदेनं कश्चिद्ब्राह्मणः कंचिदर्थमभियाचेत् MBh. 1,679. Mârk. P. 72,20. राज्यं राज्ञाभियाचितः R. Gorr. 2,17,19. Bhâg. P. 5,3,17. — Vgl. अभियाचन.

— समभि *anflehen:* कंसं समभियाचती Hariv. 3336.

— आ *flehen:* आयाचन्ती R. 2,55,25. *flehen um:* आयाचमानाम् — रामस्य च भवं नित्यमभवं रावणस्य च 5,21,22. आयाचित n. *Gebet* R. Gorr. 2,1,40.

— उप *um Etwas bitten:* त्वया पुरस्तादुपयाचितो यः सो ऽयं वटः Ragh. 13,53. भक्तिलक्ष्मीसमृद्धानां किमन्यदुपयाचितम् (subst.) Sarvadarçanas. 92,8. fg. नगरद्वारलोष्टस्य यद्वत्स्यादुपयाचितम् Varâh. Bṛh. S. 2,19. — Vgl. उपयाचन, उपयाचित (vgl. noch Kathâs. 11,13. Pañkat. 213,14).

— निस् *losbitten, sich ausbitten:* निर्याचन्भूतात्पुरुषं यमाय AV. 6,133, 3. TS. 3,1,8,2. एष ते रुद्र भागो यं निरयाचथाः 9,4. 5,1,2,4. यमेव दैवयजनमस्यै निर्याच्यात्मने ऽग्निं चिनुते *nachdem er bei* Jama *einen Fleck der Erde zur Cultusstätte sich auserbeten hatte* 2,2,1.

— प्र *flehen, bitten um, heischen, anflehen, bittend angehen* (mit dopp. acc.): प्रसीद नः प्रयाचताम् (gen. pl. partic.) MBh. 1,1259. 12,9213. 13, 4629. प्रयाचिष्ये 5,7114. वरमन्यं प्रयाचसे 7,441. R. 2,43,31. कुण्डले मे प्रयाचितुम् MBh. 3,16948. प्रयाचस्व नदीम् 9950. स पारिजातं यदि न प्रदास्यति प्रयाच्यमानो भवता Hariv. 7210. युक्तास्तेन प्रयाचितुम् R. 5,81, 42. प्रयाचामो वरं त्वाम् MBh. 3,8780. st. प्रयाचत 13,114 liest die ed. Bomb. besser अयाचत. — Vgl. प्रयाचक fg.

— संप्र dass.: तं गत्वा सहिताः सर्वे वरं वै संप्रयाचत MBh. 3,8696.

— सम् dass., med. Kathâs. 105,16. तं पुत्रार्थं समयाचत MBh. 1,8837. Bhâg. P. 9,1,14. गद्दर्भेधिनं समयाचेरन् 10,72,17.

याचक (von याच्) nom. ag. *ein Bittender, Bettler* AK. 3,1,49. Trik. 2,8,56. H. 387. Halâj. 2,204. Jâǵn. 3,139. MBh. 1,2330. 2,493. R. 7, 92,11. Spr. 80. 1048. 1301, v. l. 4957. Kathâs. 38,35. 39. 58,24. Verz. d. Oxf. H. 123,a,21. 165,a,1. Bhâg. P. 4,2,26. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 33. अयाचकः सदा योगी MBh. 12,342. याचकी f. *Bettlerin* 1,3289.

याचन (wie eben) 1) n. *das Bitten, Betteln:* भ्रान्तं याचनतत्परेण मनसा Spr. 2079. अनेन पथिकस्य वसतियाचनं प्रतीयते *das Bitten um* Sâh. D. 332,11. *das Werben um:* दुहितृ° Vet. in LA. (III) 16,9. — 2) f.

ग्रा a) *das Bitten, Betteln, Bitte* AK. 2,7,32. H. 388. HALÂJ. 2,205. याचना माननाशाय KÂN. 91 in HAEB. Anth. 320. याचना हि पुरुषस्य महत्त्वं नाशयति Spr. 4870. बध्यतामभययाचनाञ्जलिः *das Bitten um* RAGH. 11, 78. किं पर्याचनाभिः *das Anbetteln eines Andern* Spr. 1256. कुरुष्व याचनाम् *erfülle die Bitte* R. 2,27,22. 37,19. 112,10. 45,15. — b) schlechte v. l. für यातना AK. 1,2,2,3.

याचनक (von याचन) m. *Bettler* AK. 3,1,49. H. 388. HÂR. 38. M. 3, 165. MBH. 12,3325. HARIV. 11152.

याचनीय (von याच्) adj. *zu fordern, zu verlangen* PANKAT. 88,11. n. impers.: याचनीयं मुनेस्तुष्टात् *man muss eine Bitte an ihn richten* MBH. 3,15510.

याचितक (von याचित, part. praet. pass. von याच्) n. *eine geborgte Summe* P. 4,4,21. AK. 2,9,4. H. 881. MIT. 260,4.

याचितर् (von याच्) nom. ag. *Forderer* KULL. zu M. 8, 190. *ein Bittender, Bettler* R. 1,31,7. कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च Spr. 3920. *Werber* (um eine Jungfrau) KUMÂRAS. 1,53. 6,82.

याचितव्य (wie eben) adj. *zu bitten:* न केनचिद्याचितव्यः कश्चित्कस्यांचिदापदि MBH. 12,3317. तामस्मदर्थे युष्माभिर्याचितव्यः *ihr sollt für uns bei ihm um sie werben* KUMÂRAS. 6,29.

याचिन् (wie eben) adj. *heischend:* वृष्टि° NIR. 2,12.

याचिष्णु (wie eben) adj. *bittend, Bittsteller:* भृगूणां तु धनं ज्ञात्वा राजानः सर्व एव ते। याचिष्णवो ऽभिजग्मुस्तान् MBH. 1,6805. BHÂG. P. 10,81,34. Davon nom. abstr. °ता *Bettelei* M. 12,33.

याच्छ्रेष्ठ (1. यात् + श्रेष्ठ) adj. *bestmöglich:* ऊतयः ṚV. 3,53,21. — Vgl. यावच्छ्रेष्ठ.

याच्ञा (wie eben) f. *das Heischen, Bitten, Betteln; Bitte, Gesuch* P. 3, 3,90. VOP. 26,180. AK. 2,7,32. 3,3,6. H. 388. HALÂJ. 2,205. TS. 1,5, 2,4. °प्राप्त AK. 2,9,4. Spr. 2492. मृतं तु नित्ययाच्ञा स्यात् BHÂG. P. 7, 11,19. °जीवन HIT. 31,8. °वचांसि Spr. 1894. पातालाभय° KATHÂS. 19, 91. याच्ञामृते *ohne zu bitten* BHÂG. P. 2,7,17. तद्याच्ञां न चक्रे *erfüllte nicht die Bitte* 4,14,29. MÂRK. P. 37,13. याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा MEGH. 6. मद्याच्ञाविमुख BHÂG. P. 4,27,22. भग्नायां भव्ययाच्ञायाम् 14,30. भग्नयाच्ञ adj. 5,18,21. °भङ्ग *Fehlbitte* Spr. 1163. *Werbung* (um ein Mädchen): कृतयाच्ञ KATHÂS. 17,76. In der Dramatik: याच्ञा तु क्वापि याच्ञा या (so ist zu lesen) स्वयं दूतमुखेन वा SÂH. D. 496. 471.

याच्ञ्य m. dass.: श्रेयो ह ब्रह्मभ्यो वशा याच्ञ्याय कृणुते मनः AV. 12,4, 30. AIT. BR. 7,20. याच्ञ्या f. ÇAT. BR. 2,3,4,4.

याच्य (von याच्) adj. P. 7,3,66. *zu Etwas aufzufordern, anzugehen, um ein Almosen anzusprechen* M. 8,181. 10,113. सुहृदपि न याच्यः कृशधनः Spr. 1922. 3233. RAGH. ed. Calc. 1,87. *zu fordern, zu verlangen, worum man bitten muss* oder *kann:* याचते न त्वयाच्यानि HARIV. 1023. अयाच्यमपि देयं खलु स्यात् *auch worum man nicht gebeten wird* MBH. 5,1727. n. *das Betteln* 13,3047. स्त्रियो नार्हन्ति याच्यताम् so v. a. *um Weiber braucht man nicht zu werben* 12,9516.

याज् (von 1. यज्) nom. ag. *Opferer:* हयमेधशतस्य याट् BHÂG. P. 9,23, 32. हयमेध° 1,18,46. तुरगमेध° 9,22,36.

याज (wie eben) m. 1) *Opfer* in अति° (hier vielleicht nom. ag. *Opferer*), उपांशु° (s. u. उपांशु 1, a), क्रतु°, जीव°, शत°. — 2) *gekochter Reis* oder *Speise* überh. H. 395. — 3) N. pr. eines Brahmarshi (neben उपयाज) MBH. 1,6362. 2,662. LIA. I, 641. — 4) याजभोजयः MBH. 7, 804 fehlerhaft für ऋषभो जयः, wie die ed. Bomb. liest.

याजक (vom caus. von 1. यज्) m. 1) *Opferpriester* AK. 2,7,17. H. 817 (= यजमान!). an. 3,85. MED. k. 142. M. 3,172. Spr. 3068. MBH. 1,2032. 8113. 2,179 (= R. GORR. 2, 109, 36). 3,10494. 7,3027. 13,4818 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 14,260. 15,516. R. 1,13,3. 59,13 (61,14 GORR.). 60,8. 2,76,13. R. GORR. 1,13,2. 38. VARÂH. BṚH. S. 10,5. 48,18. KATHÂS. 41,18. BHÂG. P. 10,74,16. P. 1,3,72, Sch. VOP. 23,58. गणानाम् M. 3,164. in Comp. mit dem Veranstalter des Opfers (das comp. ein Oxytonon) P. 2,2,9. 6,2,151. ब्राह्मण°, क्षत्रिय° Sch. शूद्र° M. 3,178. व्रात्य° JÂGN. 3,289. असुर° MBH. 1,2544. दैत्य° BHÂG. P. 7,5,8. पतित° MÂRK. P. 15,1. नक्षत्रग्रामयाजकाः *diejenigen, welche den Gestirnen Opfer darbringen und für eine ganze Gemeinde als Opferpriester fungiren,* MBH. 12,2874. राज° *der einen Fürsten (Krieger) zum Opferpriester erwählt* (vgl. R. 1,59,13) 8,1846. 2095. fg. Davon nom. abstr. याजकत्व n. Verz. d. Oxf. H. 267,a,28. 30. Vgl. ग्राम°, नक्षत्र°. — 2) *ein königlicher Elephant* H. an. MED. °गज HÂR. 49. *ein brünstiger Elephant* GAṬÂDH. im ÇKDR.

याजन (wie eben) n. *das Versehen des Opfers für Andere* (gen. oder im comp. vorangehend) ÇÂÑKH. GṚHJ. 4,11. DRÂHJ. 9,13,27. 29. M. 1,88. 8,340. 10,75. fgg. 103. 109. fgg. 11,180. JÂGN. 1,118. MBH. 1,8113. 3, 5048. 12,6733. 14,127. 176. R. GORR. 1,60,6. KÂM. NÎTIS. 2,19. Verz. d. Oxf. H. 266,b,33. 267,a,7. fgg. MÂRK. P. 14,83. व्रात्यानाम् M. 11,197. 60. JÂGN. 3,237. R. 1,58,5. अयाज्य° M. 3,65. P. 2,1,53, Sch. JÂGN. 3,238.

याजनीय (wie eben) adj. *für den man als Opferpriester thätig sein darf* KULL. zu M. 9,238.

याजमान (von यजमान) n. *die Handlung, welche der Veranstalter eines Opfers selbst vollzieht,* gaṇa महिष्यादि zu P. 4,4,48 und युवादि zu 5, 1,130. KÂTJ. ÇR. 1,8,19. 4,12,16. 12,1,9. 25,13,42. ÇÂÑKH. ÇR. 2,11,1. LÂṬJ. 2,3,17. Ind. St. 3,888. 5,15.

याजमानिक (wie eben) adj. *den Veranstalter eines Opfers betreffend* ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 84.

याजयितर् (vom caus. von 1. यज्) nom. ag. *der fungirende Opferpriester* Verz. d. Oxf. H. 267,a,24. fg.

याजि (von यज्) UṆÂDIS. 4,124. f. *Opfer* (आख्यानपरिप्रश्नयोः): कां याजिमकार्षीः। सर्वां याजिमकार्षम् P. 3,3,110, Sch. nach UǴǴVAL. m. = यष्टर्, nach UṆÂDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. aber = यज्ञ ÇKDR.

याजिका f. dass. P. 3,3,110, Sch.

याजिन् (von 1. यज्) nom. ag. *Opferer* JÂGN. 1,220. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,9. gewöhnlich am Ende eines comp. (भूते) P. 3,2,85. अग्निष्टोम° Sch. दर्शपूर्णमास° TS. 2,2,2,1. अश्वमेध° ÇAT. BR. 14, 6,3,2. KATHÂS. 44,123. सोम° KÂTJ. ÇR. 4,2,45. H. 817. असोम° ÇAT. BR. 1,6,4,10. fg. अमहायज्ञ° MBH. 3,15443. दशप्रयुत° 7,2314. यज्ञसहस्र° 13,3458. क्रतुप्रवर° R. 5,16,41. सत्त्र° HARIV. 2780. मद्याजिन् BHÂG. 9, 25. 34. सद्याजिन् MAITRJUP. 6,30. नित्य° HARIV. 6763. — Vgl. आत्म° (auch MAITRJUP. 6,10. BHÂG. P. 7,15,55), ग्राम° (auch JÂGN. 1,163), देव°, वक्र° (auch Verz. d. Oxf. H. 267,a,29), सहस्र°.

यौज्ञुक (wie eben) adj. am Ende eines comp. (*gewöhnlich*) *opfernd:* इ-ष्टि° Çat. Br. 14,4,2,3.

याजुर्वैदिक adj. *zum* Jagurveda *in Beziehung stehend* Schol. zu Kâtj. Çr. 1055, 6. Müller, SL. 170. याजुर्वेदिक 178. Schol. zu Kâtj. Çr. 172, 9. 12.

याजुष adj. (f. ई) *zu den* Jagus *in Beziehung stehend* TBr. 3,12,9,1. Ind. St. 1,83,5. 10,436. गायत्री 9,103. शाखा Verz. d. Oxf. H. 257, *b*, 8. 264, *a*, 15.

याजुष्मत adj. f. ई in Verbindung mit इष्टका = यजुष्मती — Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 278.

याज्ञ (von यज्ञ) adj. *zum Opfer gehörig:* मन्त्र Nir. 7,3. 4.

याज्ञतुर (von यज्ञ + तुर) 1) m. patron. des Ṛshabha Çat. Br. 12,8, 3,7. 13,5,4,15. Çâṅkh. Çr. 16,9,8. 10. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230, *b*.

यौज्ञदत्तक adj. von यज्ञदत्त gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80.

यौज्ञदत्ति m. patron. von यज्ञदत्त P. 4,1,157, Sch.

याज्ञदेव m. N. pr. eines Autors Colebr. Misc. Ess. I, 61. यज्ञदेव im Index; Beides fehlerhaft für याज्ञिकदेव.

याज्ञपत adj. von यज्ञपति gaṇa अश्वपत्यादि zu P. 4,1,84.

याज्ञवल्क 1) adj. *von* Jâǵṅavalkja *herrührend:* ब्राह्मणानि Schol. zu P. 4,2,66. 3,105. wohl fehlerhaft याज्ञवल्क्य in der neueren Ausg. an beiden Stellen, in der alten an der ersten. — 2) m. pl. der entsprechende pl. zu याज्ञवल्क्य 1) gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

याज्ञवल्कीय adj. *zu* Jâǵṅavalkja *in Beziehung stehend*, *von ihm herrührend:* काण्ड Verz. d. B. H. No. 211. धर्मशास्त्र Jâǵṅ. in der Unterschr. n. mit Ergänzung von धर्मशास्त्र Kull. zu M. 4,212.

याज्ञवल्क्य 1) m. (von यज्ञवल्क) patron. यौ° gaṇa गर्गादि zu P. 4,1, 105. N. pr. eines besonders im Çat. Br. als Autorität viel angeführten Lehrers, z. B. 1,3,1,21. 26. 2,4,3,2. 5,1,2. 3,1,1,4. 2,21. 3,10. Jâǵṅ. 1,4. MBh. 2,107. 13,250. Hariv. 1466 (sein Geschlecht). 2368. 7993. Uttararâmaḱ. 76,7 (98,4). VP. 279. fgg. Bhâg. P. 6,15,13. 9,12,4. 22, 37. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 22 u. s. w. Paṅḱat. 188, 14 (यज्ञाव° gedr.). °स्मृति (verschieden von der uns bekannten) Sarvadarçanas. 158, 17. ist राजसगुणा Verz. d. Oxf. H. 14, *a*, N. °गीता 87, *b*, 35. Hall 14. °शिक्षा Ind. St. 10,433. वृद्ध° Verz. d. B. H. No. 1166; vgl. बृहद्याज्ञ°. — 2) adj. *zu* Jâǵṅavalkja *in Beziehung stehend*, *von ihm herrührend:* धर्माः Verz. d. Oxf. H. 266, *b*, 18. n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325. साखिल° (?) Verz. d. Oxf. H. 56, *a*, 17; vgl. याज्ञवल्क 1).

याज्ञसेन (von यज्ञसेन) patron. 1) m. des Çikhaṇḍin Kaush. Br. 7,4. — 2) f. ई der Draupadî Trik. 2,8,18. H. 711. MBh. 1,6322. 7131. 3, 15682. 4,138. 9,3318.

याज्ञसेनि (wie eben) m. patron. des Çikhaṇḍin MBh. 5,725. 6,5216. 7,216. 9,3161.

यौज्ञायनि m. patron. von यज्ञ gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

याज्ञिक (von यज्ञ) 1) adj. (f. ई) *zum Opfer gehörig*, *darauf bezüglich* u. s. w.: स्तुति Çâṅkh. Çr. 1,2,3. नामधेय 7,4,15. व्रत 3,9,4. Kauç. 73. क्रिया R. 1,30,19. जन्मन् Bhâg. P. 4,31,10. उपनिषद् Ind. St. 2,79. 208. 3,386. Verz. d. B. H. No. 152. — 2) m. *a*) *ein Kenner des Opfers*, *Liturgiker* gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. = याज्ञक Trik. 3,3,39. Med. k. 142. = याज्ञक und यज्ञकर्तर् Çabdar. im ÇKDr. — Çat. Br. 14,6,3,2. 4. Çâṅkh. Gṛhj. 1,14. Pâr. Gṛhj. 2,6. Nidânas. 2,1. Nir. 5,11. 7,4. 23. 11,29. 42. 13,9. AV. Prât. 4,103. P. 4,3,129. Hariv. 11450 (याज्ञिय die neuere Ausg.). 11363. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 60. Kumârila bei Müller, SL. 187. Verz. d. B. H. No. 246. Verz. d. Oxf. H. 216, *b*, 35. Bhâg. P. 11, 10,23. Vop. 5,5. Kusum. 3,15. Kull. zu M. 3,271. °कितव P. 2,1,53, Sch. यौज्ञिकाश्व 6,2,65, Sch. याज्ञिकाश्रय unter den Beiww. Vishṇu's Paṅḱar. 4,3,61. Vgl. देव° und दीक्षित° als N. pr. Verz. d. B. H. No. 246. — *b*) Bez. verschiedener *beim Opfer zur Anwendung kommender Pflanzen:* Kuça-*Gras* Trik. Med. *eine Art* Kuça-*Gras* (दर्भभेद्) Çabdar. im ÇKDr. *Ficus religiosa; Butea frondosa; rothblühender* Khadira Râǵan. im ÇKDr.

याज्ञिकदेव (या° + देव) m. N. pr. eines Schol. des Kâtj. Çr. Verz. d. Oxf. H. 382, *a*, No. 450. Weber in Kâtj. Çr. S. X. — Vgl. देवयाज्ञिक.

याज्ञिकवल्लभा (या° + व°) f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 246.

याज्ञिकानन्त (याज्ञिक + अ°) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 364, *b*, N. 1.

यौज्ञिक्य (von याज्ञिक) n. *die Regeln der Liturgiker* P. 4,3,129.

याज्ञिय 1) adj. = यज्ञिय *zum Opfer gehörig*, — *geeignet:* द्रव्य MBh. 10,787 (यज्ञिय ed. Bomb.). काल Bhâg. P. 10,74,6. — 2) m. v. l. für याज्ञिक in der Bed. 2) *a*) Hariv. 11450. यज्ञियं देशमिच्छन्ति ते याज्ञियाः Nilak.

याज्ञीय adj. wohl nur fehlerhaft für यज्ञीय Çaṅk. zu Ḱhând. Up. S. 46 (°कर्मन्).

याज्य (vom caus. von 1. यज्) P. 7,3,66. Vop. 26,8. 9. 12. 1) adj. *derjenige*, *zu dessen Gunsten das Opfer darzubringen ist* oder *dargebracht wird;* m. *Opferherr* Ait. Br. 4,25. याजयेच्चापि याज्यान् MBh. 5,831. ऋत्विग्याज्यौ M. 3,148. 4,33. 8,317. 388. Jâǵṅ. 1,130. MBh. 1,747. 6386. याज्यस्ते 6774. रैभ्य° 3,10791. राजयाजक° 8,1846. 2096. भृगूणां क्षत्रिया याज्याः 13,2905. 4422. 14,99 (wo mit der ed. Bomb. पूर्वम् st. पुत्रम् zu lesen ist). 124. 162. 178. Hariv. 3880 (चेज्यो st. याज्यो die neuere Ausg.). R. 7,23,1,81. Ragh. 1,86. बहु° *der viele Opferherren hat*, *für Viele opfert* Vas. bei Kull. zu M. 3,151. अ° *für den man nicht opfern darf* Çat. Br. 14,6,10,3. Kâtj. Çr. 25,8,16. M. 11,59. Jâǵṅ. 3,237. MBh. 13, 4527. P. 2,1,53, Sch. — 2) f. याज्या Vop. 26,11. (sc. ऋच्) *die Worte*, *welche im Augenblick der Hingabe des Opfers gesprochen werden*, *Begleitspruch* Z. d. d. m. G. IX, lii. lxii. VS. 19,20. 20,12. Ait. Br. 1,4. 11. 2,13. 26. याज्यया यजति प्रत्तिर्वै याज्या 40. घृत° 3,32. TS. 1,5,2,1. 6, 10,5. आसीनो याज्यां यजति Çat. Br. 1,4,2,19. 7,2,7. 11. 3,4,4,2. Âçv. Çr. 1,5,4. fgg. 6,1. 3,7,2. 3. 9,3. 5,18,13. 19,1. Kâtj. Çr. 1,2,6. Çâṅkh. Çr. 1,17,1. fgg. 7,3,4. 7,6. P. 8,2,90. याज्यानुवाक्ये gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. त्रिवती याज्यानुवाक्या भवति P. 6,1,176, Vârtt. 2, Sch. याज्यानुवाक्याः Ind. St. 1,69. 72 (hier auch °वाक्यकाः). प्रयाजयाज्याः 73.

याज्यता (von याज्य) f. *der Stand eines Opferherrn* MBh. 14,126. याज्यत्व n. dass. 168.

याज्यवत् adj. *mit einem Begleitspruch* (याज्या) *versehen* Çat. Br. 4,1, 1,26. 9,3,1,16. 11,2,1,6.

याज्वन (von यज्वन्) m. *der Sohn eines Opferers* Vop. 7,1. 10.

1. यात् (abl. von **1.** य) adv. conj. *in soweit als, so viel als; so lange als, seit:* यादधीमसि *soviel wir verstehen* ṚV. **1**,80,15. अर्चामसि यादेव विद्मा तात्त्वा महान्तम् (vgl. Siddh. K. zu P. 7,1,39) **6**,21,6. यान्नु च्यावं स्ततनन्याड्रुषासः 7,88,4. यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः **10**,68,10. य आसि यत्पृथिवीं यादजायत AV. **12**,1,57. — Vgl. याच्छ्रेष्ठ, यादाध्य.

2. यात् adj. von यत् in ऋणयात्.

यात 1) adj. *gegangen* u. s. w.; n. *Gang* s. u. **1.** या. — 2) n. *das Lenken eines Elephanten mit dem Haken* H. 1231. Halâj. 2,67; vgl. यत 2).

यातन (vom caus. von यत्) 1) n. *das Vergelten:* वैरस्य यातनम् *das Racheüben* MBh. 9,258. — 2) f. आ a) dass.: यातनां दा *es Jmd vergelten* MBh. 1,1997. वैर° *Rache* 12,5150. Hariv. 11232. Pańkat. 111,9. 188,3. — b) *Qual, Pein;* insbes. *Höllenqual* AK. **1**,2,**2**,3. 3,4,**1**,15. H. 1358. Halâj. 3,4.5,80. घोरा R. 5,19,9. 26,16. Spr. 1973. Kathâs. 38,111. Gît. 9,10. Râǵa-Tar. 6,332. अकरोन्नाना यातना मृत्युकेतवे Bhâg. P. 7,1, 41. यातनामनुयापितः 8,22,29. गर्भ° Pańkar. **2**, 2, 66. **4**, 3, 204. Verz. d. Oxf. H. 28,*a*, No. 71. यमत्तये M. 6,61. 12,16. यामीः प्राप्नोति यातनाः 21. fg. MBh. 14,443. Bhâg. P. **3**,30,21. 25. 29. 35. **5**, 26, 7. fgg. 30. यामयातनाः 32. **6**,2,29. °गृहाः 3,9. निरय° Pańkar. **4**,4,1. Verz. d. B. H. 143, 9. Kusum. 63,7. Personificirt als Tochter von Bhaja *Furcht* und Mṛtju *Tod* Bhâg. P. **4**,8,4.

यातयज्जन (यातयत्, partic. vom caus. von यत्, + जन) adj. *die Leute verbündend, vereinigend:* Mitra ṚV. **1**,136,3. **3**,59,5. **5**,72,2.

यातयाम s. u. यातयामन्.

यातयामन् (यात + या°) und °याम adj. *was seinen Gang gemacht —, seine Arbeit gethan hat* d. i. *erschöpft, ausgenützt, verbraucht;* überh. *untauglich, unbrauchbar geworden* (AK. **3**,4,**22**,147. H. an. 4,218. Med. m. 62), ein im Ritual oft gebrauchter technischer Ausdruck, z. B. न दारुपात्रेण दुह्यात्। अग्निर्वहि दारुपात्रम्। यद्दारुपात्रेण दुह्यात्। यातयाम्ना हविषा यजेत *man soll nicht in ein Holzgeschirr melken, denn in demselben* (im Holze) *steckt* Agni (welcher also die Milch unmittelbar empfängt); *melkt man in's Holzgeschirr, so opfert man nachher eine verbrauchte (schon ein Mal vergebene) Opfergabe* TBr. **3**,2,**3**,9. 3,**4**,1. TS. **5**,1,**5**,2. अघर्यु **6**,5,**9**,3. Atri 7,1,**8**,1. यज्ञ Çat. Br. **1**,5,**3**,23. **9**,1,**2**,24. °याम TS. 2,6,**3**,1. कस्मात्सत्याद्यातयामान्यन्यानि हवींष्ययातयाममाज्यम् *weshalb werden andere Opferstoffe unbrauchbar, während das Opferschmalz brauchbar bleibt?* **3**,4,**9**,4. **5**,1,**8**,3. Çat. Br. **4**,3,**2**,5. **6**, 3,**1**,23. स्तोमाः **9**, 3, **3**, 4. न यातयामैः कार्यं कुर्यान्न सह भुञ्जीत Çâńkh. Gṛhj. 4,11. Pańkav. Br. **13**,10,1. छन्दांसि Müller, SL. 227. छत्रं वेष्टनमौशीरमुपानद्व्यजनानि च। यातयामानि देयानि शूद्राय परिचारिणे ॥ MBh. 12,2299. fg. भोजन Bhag. 17,10. R. **2**, 61, 67 (62,26 Gorr.). छन्दांस्ययातयामानि Bhâg. P. **4**,13,27. अयातयामोपहृतैः 19,28. अयातयामास्तस्यासन्यामाः स्वान्तरयापनाः *unnütz verstrichen* **3**,22,35. कामा यातयामाः *schal* **4**,28,9. महार्ता° *ergraut, alt geworden bei* (nach dem Comm. *der seine Zeit zugebracht hat mit*) 30,19. *alt an Jahren* AK. H. 340. H. an. Med. Halâj. 2,348.

यातयामत्व n. nom. abstr. davon Gobh. **1**,8,14. — Vgl. अयातयाम.

1. यातर् (von **1.** या) nom. ag. *gehend, fahrend, auf der Reise —, auf einem Marsche befindlich* Sûrjas. 12,72. Varâh. Bṛh. S. 33,13. 86,51. 54. 87,5. 88,19. 22. 35. 89,1. 95,25. Jâtrâ 4,42. *Wagenfahrer* ṚV. **1**,70,11. यानस्य चैव यातुश्च यानस्वामिन एव च *Wagenführer* M. 8,290. अग्र° *vorangehend* R. 7,21,28. खरोष्ट्र° *reitend auf* Hariv. 2443. स्वर्यातर् *zum Himmel gehend, sterbend* MBh. 5,4341. Als fut. z. B. यातारस्ते यमालयम् Suçr. **1**, 116, 61.

2. यातर् nom. ag. scheint *Rächer* zu bedeuten in der Stelle: अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत् ṚV. **1**, 32, 14. = हन्तर् Sâj.; vgl. ऋणया.

3. यातर् Uṇâdis. 2,98. acc. यातरम्, nom. acc. du. यातरौ, nom. pl. यातरस् Vop. 3, 65. *die Frau des Bruders des Gatten* AK. **2**,6,**1**,30. H. 514. Halâj. 2,353. Sâh. D. 45,8. याताननान्दरौ P. **6**,3,25, Sch.

यातलराय m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. B. H. 368,31.

1. यातव्य (von **1.** या) 1) n. impers. *eundum, proficiscendum, zu marschiren* MBh. 3,13304. 4,2118. 13,1402. 2789. Hariv. 10321. Spr. 3027. Kâm. Nîtis. 15,2. यातव्याय प्रदक्षिणायादृतम् *zur Abreise* 12,1. अवश्ययातव्यता 15,18. — 2) adj. *petendus, impugnandus* Kâm. Nîtis. 18, 11.

2. यातव्य (von **1.** यातु) adj. *gegen Spuk —, gegen Hexerei dienend* P. **4**,4,121. तनू Kâṭh. 11,11.

यातस्रुच (von यतस्रुच्) n. = यैतस्रुच N. eines Sâman Ind. St. **3**,230,*b*.

यातानप्रस्थ N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. यैतानप्रस्थक P. **4**, 2,104, Vârtt. 33, Sch.

यातानुयात (यात + अनु°) wohl n. *das Gehen und Folgen* gaṇa शाकपार्थिवादि zu P. **2**,1,69.

यातायात (यात + आ°) n. *das Gehen und Kommen* Bhâg. P. **12**,13,2.

याति f. angeblich nom. act. vom intens. von **1.** या P. **1**, 1, 58, Sch. — Vgl. अहं°.

यातिक m. *Wanderer, Reisender* Çabdar. im ÇKDr. wohl fehlerhaft für यात्रिक.

1. यातु Uṇâdis. 1,73. m. 1) etwa *Spuk, Hexerei:* नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः ṚV. 5,12,2. मा नो रक्ष आ वेशीन्मा यातुयावताम् 8,49,20. auch wohl AV. **2**,24,1. Kâṭh. 37,17. Çat. Br. **10**, 5, **2**,20. — 2) Bez. *einer Gattung von Dämonen, die in allerhand spukhaften Formen erscheinen,* ṚV. **7**,21,5. 104, 21. AV. **4**,9,9. 5,29,8. **10**,7,18. **13**,4,27. Kauç. 106. neutr. = रक्षस् nach AK. **1**,1,**1**,56. H. 187. Halâj. 1,73. — Vgl. अ°, उलूक°, कोक°, गृध्र°, देव°, ब्रह्म°, शत°, शुशुलूक°, श्व°, सुपर्ण° und यातुधान.

2. यातु (von **1.** या) m. 1) *ein Reisender* Trik. **2**, 8, 29. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,73. — 2) *Wind* Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. — 3) *Zeit* Uǵǵval.

यातुघ्न (**1.** यातु + घ्न) adj. *die* Jâtu *vernichtend;* m. *Bdellion* Râǵan. im ÇKDr.

यातुचातन (**1.** यातु + चा°) adj. *die* Jâtu *verscheuchend* AV. **1**,16,2.

यातुजम्भन (**1.** यातु + ज°) adj. *die* Jâtu *verschlingend* AV. **4**,9,3.

यातुजू (**1.** यातु + जू; vgl. ṚV. 7,21,5) adj. *von* Jâtu *getrieben, besessen* ṚV. **4**,4,5. **10**,116,5.

यातुधान (**1.** यातु + **2.** धान) m. = **1.** यातु 2) AK. **1**, **1**, **1**, 56. H. 187. Halâj. 1,73. ṚV. **1**,35,10. अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य 7,104,15. 16. 24. **10**,87,2. 3. 7. 10. 120,4. VS. 13,7. AV. **1**,7,1. fgg. **4**,3,4. **6**,32,2. 13,3. **7**,70,2. **19**,46,2. Çat. Br. **7**,4,**1**,29. Kâṭh.

37,14. MBh. 3,8438. 12248. 5,3571. 4851. 13,184. 14,185. R. 3,30,27. 5,10,16. 6,33,3. 7,59,20. Ragh. 12,45. Ind. St. 10,175. Varâh. Bṛh. S. 46,80. Bhâg. P. 2,10,39. 5,21,18. 6,6,28. Prab. 3,12. fem. ई ṚV. 1,191, 8. 10,118,8. VS. 16,5. AV. 1,28,2. 4. 2,14,3. 4,9,9. 18,17. 20, 6. 19,39, 8. MBh. 13,4453. Bhâg. P. 3,19,20. 8,10,47. 10,6,3.

यातुमत् (von 1. यातु) adj. *Spuk treibend, hexend* ṚV. 1,133,2. 7,104, 20. 25. AV. 1,7,4.

यातुमावत् adj. dass. AV. Prât. 4,8. ṚV. 1, 36, 20. न यं यावा तरति यातुमावान् 7,1,5. मा नो रक्षो अभिनड्यातुमावताम् 104,23. मा नो रक्ष आ वेशीन्मा यातुर्यातुमवताम् 8,49,20.

यातुविद् (1. यातु + विद्) adj. *des Spuks kundig* Çat. Br. 10,5,2,20.

यातुहन् (1. यातु + हन्) adj. *Spuk vertreibend* AV. 1,16,1.

यातृक m. *Wanderer, Reisender* Çabdar. im CKDr. fehlerhaft für यात्रिक.

यातोपयात (यात + उप°) n. *das Gehen und Kommen;* davon adj. यातोपयातिक (in der Bed. तेन निर्वृत्तम्) gaṇa अक्षद्यूतादि zu P. 4,4,19.

यात्निक (von यत्न) m. pl. N. einer buddhistischen Schule Burn. Intr. 441. 443. fg.

यात्य (vom caus. von यत्) m. *Bewohner der Hölle (Qualen unterliegend)* H. 1358. Halâj. 3,3.

यात्रा (von 1. या) Uṇâdis. 4, 167. 1) *Gang, Aufbruch, Fahrt, Reise, Marsch, Kriegszug* AK. 2,8,2,63. 3,4,25,177. Trik. 3,3,367. H. 790. an. 2,449. Med. r. 79. Halâj. 2,297. Hariv. 5284. श्वो यात्रा R. 1,68,17. यात्रामयासिषम् *ich machte mich auf die Reise* 2,72,27. 78,1. 82,19. 21. Suçr. 1,108,20. Ragh. 16,25. न चिरं तापाय तव यात्रा भविष्यति Spr. 1376. 4727. 4818. Sûrjas. 14,13. Varâh. Bṛh. S. 72,6. 79,23. 86,10. 87,5. 6. 27. 89,12. 14 93,11. 13. 94,13. 95,25. Bhâg. P. 11,2,4. Mârk. P. 51, 59. वारणावत° *Gang nach* MBh. 1,143 in der Unterschr. समुद्र° Hariv. 8304. मार्गशीर्षे शुभे मासि यायाद्यात्रां महीपतिः *einen Feldzug unternehmen* M. 7,182. 207. MBh. 2,192. 12,2662. fg. R. 2,82,23. °गमन 24. 3,22, 7. 4,30,3. 6,1,7. यात्रायुक्त Suçr. 1,122,5. Bhar. Nâṭj. 34,68. Kâm. Nîtis. 11,1. 5. दूर° 15,43. Ragh. 4, 24. 6, 54. शक्यैवैवंभवद्यात्रा तस्य शक्तिमतः सतः 17,56. Spr. 4231. Kathâs. 19,60. 69. 42,81. 83. 54,212. Râga-Tar. 1,67. 115. 4,131. 282. 405. 5, 326. यात्रां दा *einen Feldzug unternehmen* 6,230. दत्तयात्र 5,214. Hit. 94,9. 10. Verz. d. Oxf. H. 332,b,14. fg. *Ausfahrt* (des Viehes) Kṛshisaṁgr. 8, 18. 21. तस्मिन्प्रयाते परलोकयात्राम् *der Gang in die andere Welt* Ragh. 18,15. प्राणान्तिकी so v. a. *Tod* Hariv. 4713. और्ध्वदेहिकी dass. 4803. — 2) *ein festlicher Zug, Procession;* = उत्सव Trik. H. an. Med. Kathâs. 10,87. 34,174. जन्ययात्राजन 30,96. 123, 159. यात्रायोगादि नागानाम् Râga-Tar. 1, 185. 220. अमरेश्वर° 267. Verz. d. B. H. No. 1236. Sâh. D. 109. Hit. 85,12. देव° Verz. d. Oxf. H. 200,a,15. Trik. 2,7,8. — 3) *Lebensunterhalt,* = यापन (*passing away time* Colebr. und Wilson), वृत्ति AK. 3, 4, 25, 177. Med. H. an. Halâj. 5,33 (= अनुवृत्ति?). M. 4,3. Jâgn. 3,54. 59. तस्मिन्हि यात्रा लोकस्य MBh. 5,3027. 13,2089. 14,1281. Spr. 4872. Bhâg. P. 7,15,15. 10,86,15. शरीर° *Unterhalt des Körpers* Bhag. 3, 8. Kathâs. 52,101. देह° (s. auch bes.) dass. Nîlak. 32. — 4) *Verkehr:* लौकिकी M. 11, 184. जगद्यात्रा Bhâg. P. 8,14,3. — 5) *Mittel* Viçva im ÇKDr. — 6) Bez. *einer gewissen Gattung astrologischer Werke* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 6, Z. 4. von Varâhamihira verfasst 1,10. 43,31. 44,14. 18. 48,22. Der vollständige Titel dieses Werkes ist योगयात्रा; vgl. Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 25. fgg. und Ind. St. 10,161. fgg. — 7) *a sort of dramatic entertainment* Wilson. — Vgl. गङ्गा°, तीर्थ° (auch Kathâs. 33,28. 39,34. 38. 52, 242. Dhûrtas. 83,12), दण्ड°, देव°, देह°, दोल°, पुनर्यात्रा, प्राण°, बहिर्यात्रा, बृहद्यात्रा, मक्ष°, योग°, रथ°, लोक°.

यात्राकार (या° + 1. कार) m. *der Verfasser eines Werkes von der Art der* Jâtrâ Varâh. Bṛh. S. 86,3; s. यात्रा 6).

यात्रामहोत्सव (या° + म°) m. *ein grosser festlicher Aufzug* Râga-Tar. 1,222. Pañkat. 43,3. — Vgl. यात्रोत्सव.

यात्रिक (von यात्रा) 1) adj. a) *zu einem Marsche, einem Feldzuge in Beziehung stehend* M. 7,184. — b) *zum Unterhalt erforderlich* M. 6,27. — 2) n. a) *Marsch, Feldzug* MBh. 12, 3833. — b) Titel *einer gewissen Gattung astrologischer Werke* (vgl. यात्रा) Verz. d. B. H. 256, 9. Ind. St. 10,161. 164. 195. — Vgl. प्राणयात्रिक, सिद्धियात्रिक, यातिक, यातृक.

यात्रिन् (wie eben) adj. *auf einem Zuge befindlich* Kâm. Nîtis. 12,19.

यात्रोत्सव (यात्रा + उ°) m. *ein festlicher Aufzug, Procession* Spr. 5373. Kathâs. 12,177. 26,4. 73,327. 74,208. 89,6.

यात्सत्त्र (यात्, partic. von 1. या, + स°) n. *fahrende Feier,* Bez. *gewisser langdauernder Feiern, welche* Sârasvata *heissen,* Kâtj. Çr. 25,5, 25; vgl. Âçv. Çr. 12,6,1. fgg.

याथ (von 1. या) s. दीर्घ°.

याथाकथाच (von यथा कथा च) n. *ein Stattfinden unter allen Umständen* P. 5,1,98.

याथाकामी (von यथा + काम) f. *das Handeln nach Gutdünken* Kâtj. Çr. 1,2,10. Çâñkh. Çr. 1,3,6. 6,6,40. Lâṭj. 2,5,16. 10,20,14. Kauç. 60. 75.

याथाकाम्य n. dass. Çâñkh. Çr. 2,1,6. 10,13,5. Schol. zu Kâtj. Çr. 30,1 v. u. — Vgl. यथाकाम्य.

याथातथ्य (von यथातथम्) n. *ein richtiges Verhältniss, die gebührliche Art, Wahrheit* Tattvas. 2. याथातथ्येन पण्डितम् (गृह्णीयात्) Spr. 2676, v. l. याथातथ्यम् adv. *der Wahrheit gemäss* MBh. 3,17404. 13,6312. °तथ्येन dass. 2,1501. 13,3065. 7153. 14,36. 530. R. Gorr. 2,15,25. 4,3,16. 7,12,13. *nach Gebühr* Bhâg. P. 11,16,2. °तथ्यम् adv. dass. VS. 40,8.

याथात्म्य (von यथा + आत्मन्) n. *die wahre Natur, das wahre Wesen* Hariv. 14918. fgg. Ragh. 10,25. Bhâg. P. 1, 12, 28. 7, 10, 42. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 76. 283. zu Khând. Up. S. 22. Schol. zu Naish. 22,55. Sarvadarçanas. 56, 3.

याथार्थिक adj. = यथार्थ Wilson.

याथार्थ्य (von यथार्थ) n. *die wahre Bedeutung* Kumâras. 5, 77. Sâh. D. 323, 17.

याथासंस्तरिक von यथा + संस्तर) adj. *den Teppich in seiner ursprünglichen Lage belassend* Burn. Intr. 310.

याद्, nur im partic. praes. med. *eng verbunden —, im Verein mit:* शश्वच्चक्रैर्यद्भूतिभिर्यादमानः ṚV. 3,36,1. समुद्रेण सिन्धवो यादमानाः 7. विवां रथो वध्वा३ यादमानो ऽन्तान्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् 7,69,3. अमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः 76,5.

यादईश (यादस् + ईश) m. *das Meer* H. 1073.

यादःपति (यादस् + प°) m. 1) dass. AK. 1,2,3,2. H. 1073, Sch. — 2)

Bein. Varuṇa's H. 188.

यादव 1) adj. (f. ई) *zu* Jadu *in Beziehung stehend, von ihm herstammend:* कुल Bhâg. P. 11,1,3. वंश Hariv. 5164. 5253. पुरी 6987. स्त्री 9595. कन्या MBh. 1,4367. राजन् Râǵa-Tar. 1,63. m. *ein Nachkomme* Jadu's (= कृष्ण Med. v. 48. Çabdar. im ÇKDr.) Vop. 7,1. 9. Bhag. 11,41. MBh. 7,6031. Hariv. 4238. Nalod. 1,1 (यादवतम्). यादवी f. MBh. 1,3766. Hariv. 770. 11069. Râǵa-Tar. 1,60. °पुत्र MBh. 12,2660. °मातर् adj. 15,89. यादवी unter den Namen der Durgâ Trik. 1,1,53. H. ç. 48. pl. यादवाः Jadu's *Nachkommen* MBh. 1,3533. 5,4896. 14,2479. Hariv. 1898. 5180. VP. 418. 441. 609. fgg. = माधवाः, वृष्णयः (वृष्णि = यादव Trik. 3,3,138) Bhâg. P. 9,23,29. यादवशार्दूल = कृष्ण MBh. 13,1024. यादवेन्द्र desgl. Pańkar. 4,1,24. अयादवीं (vgl. निर्यादव) महीं कर्तुम् Bhâg. P. 10,50,3. — 2) m. N. pr. eines Lexicographen Colebr. Misc. Ess. II,49. Journ. of the Am. Or. S. 6,524. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,3. 126,*a*,17. 164,*a*,4. 182,*b*,43. 194,*a*,13. °कोष 162,*b*,21. eines Astronomen Ind. St. 2,251. 256. 270. fg. यादवाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Hall 203. °पण्डित (= यादवव्यास) eines Autors 105. — 3) n. *Reichthum an Hausvieh* AK. 2,9,58, v. l. Med., wo यादवं st. यादवः zu lesen ist. — Vgl. याद्व.

यादवक m. pl. Jadu's *Nachkommen* Hariv. 15795. 15823.

यादवगिरि (या° + गिरि) N. pr. eines Landes Wilson, Sel. Works 1,37.

यादवराय m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 2.

यादवव्यास m. N. pr. eines Autors Hall 25. 27. = यादवपण्डित 105.

यादवाभ्युदय (यादव + अ°) m. Titel eines Werkes Mack. Coll. I,113. — Vgl. यादवोदय.

यादवेन्द्र (यादव + इन्द्र) m. 1) Bein. Kṛshṇa's Pańkar. 4,1,24. — 2) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 280,*a*, N. 2. श्रीयादवेन्द्रपुरी Verz. d. Tüb. H. 13.

यादवोदय (यादव + उ°) m. *das Aufsteigen der* Jâdava, Titel eines Kâvja genannten Schauspiels, Sâh. D. 203,5. — Vgl. यादवाभ्युदय.

यादस् n. Siddh. K. 247,*b*,11. 1) so v. a. *Flüssigkeit* (उदक) Naigh. 1,12. = सरित् *Fluss* Siddh. K. 247,*b*,12. *Samenerguss* Durga zu Nir. 5,15. *im Wasser lebend* Comm. zu TBr. 3,4,1,15; aus der Zusammenstellung hier und VS. 30,20 ist eher *Lust, Wollust* (urspr. *enge, fleischliche Verbindung;* vgl. याद्) zu folgern. — 2) *ein im Wasser lebendes Ungeheuer, ein grosses Wasserthier* AK. 1,2,3,20. H. 1348. Halâj. 3,34. वरुणो यादसामहम् sagt Kṛshṇa Bhag. 10,29. R. Gorr. 1,42,7. 5,74,27. Ragh. 1,16. Kathâs. 81,42. Kir. 5,29. Râǵa-Tar. 1,40. Bhâg. P. 1,8,30. 2,6,43. 3,17,25. 8,10,15. यादसां नाथः Bein. Varuṇa's Halâj. 1,74. यादसां प्रभुः desgl. Râǵa-Tar. 3,62. यादसां पतिः *a*) desgl. AK. 1,1,1,56. Trik. 3,3,179. H. an. 5,21. Med. t. 234. Mârk. P. 22,11. — *b*) *das Meer* AK. Trik. H. an. Med.

यादु m. so v. a. *Flüssigkeit* Naigh. 1,12.

यादुर (von याद्) adj. (f. ई) nach Sâj. *reichliche Flüssigkeit* (*beim coitus*) *ergiessend* ṚV. 1,126,6. eher *wollüstig umarmend* oder dergl.; vgl. यादस् 1).

यादृक्ष (1. य + दृक्ष) adj. *wie aussehend, qualis* (rel.) P. 6,3,90, Sch.

यादृच्छिक (von यदृच्छा) adj. (f. ई) *zufällig* MBh. 12,3769. Daçak. 153,7. Mallin. zu Çiç. 3,58. Sarvadarçanas. 5,17. *unerwartet zugefallen:* राज्य MBh. 12,3872. *dem Zufall Alles anheimstellend, kein bestimmtes Ziel verfolgend* Ind. St. 2,175. Bhâg. P. 1,6,38.

यादृश् (1. य + दृश्) adj. *wie aussehend, qualis* (rel.) Nir. 6,15. P. 6,3,91. 7,1,83 (nom. यादृङ् im Veda). यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते ṚV. 5,44,6. loc. यादृश्मिन् 8. Nir. 1,15. — MBh. 2,1366. 7,4787. 5279. 13,3558. Bhag. 13,3. R. Gorr. 2,117,21. Spr. 497. 1432. 3719. 4873. Varâh. Bṛh. S. 104,50. Kathâs. 20,204. 46,216. Bhâg. P. 4,29,64. Mârk. P. 39,27. 102,3. 120,4. तदेव यादृक्कीदृक्क होतव्यम् *quale tale* TBr. 1,4,2,4.

यादृश (1. य + दृश) adj. (f. ई) dass. P. 3,2,60. 6,3,91. 4,1,15. Çat. Br. 1,3,5,12. 7,4,1,1. 13,2,3,11. M. 1,42. 4,254. 5,34. 8,61. 9,9. 161. 12,81. Sund. 3,7. R. 2,71,33. 93,6. 106,2. 3,69,22. 4,5,23. 43,44. Suçr. 1,215,17. Spr. 2422. 2468. fgg. 3732. 4374. 4874. Varâh. Bṛh. S. 104,56. Prab. 99,12. उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने *dem ersten Besten* Spr. 488. Ind. St. 2,254. कुलाद्यादृशतादृशात् Kathâs. 24,152.

यादोनाथ (यादस् + नाथ) m. Bein. Varuṇa's H. 188, Sch. Râǵan. im ÇKDr. Ragh. 17,81.

यादोनिवास (यादस् + नि°) m. *das Meer* H. 1069.

याद्राध्य adj. nach Sâj. *für die Gehenden* (यात्, partic. von 1. या) d. h. *Lebendigen erreichbar* (राध्य); wir vermuthen याद्राध्यम् (1. यात् + रा°) adv. *so weit es sich thun lässt, so gut* oder *so schnell als möglich:* याद्राध्यं१ वरुणो योनिमप्यमनिशितं निमिषि जर्भुराणः ṚV. 2,38,8.

याद्व adj. patron. *zum* Jadu-*Geschlecht gehörig:* नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीहि ṚV. 7,19,8. यो अस्ति याद्वः पशुः 8,1,31. राधांसि याद्वानाम् 6,46. Ueberall dreisilbig zu sprechen.

यान (von 1. या) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,*a*,9. 1) m. *Bahn*, neben पथि *Wegbahn, gebahnter Weg:* पथ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन् ṚV. 10,110,2. त्वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान् *zu den Göttern führend* 73,7. सुगैर्नो यानैरुपयातां यज्ञम् TBr. 3,1,2,10. — 2) f. यानी (यानी gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41) in einer Formel TS. 4,4,6,2. Kâṭh. 22,5. — 3) n. *a*) *das Gehen, Fahren, Reiten, Marschiren* (gegen den Feind) Trik. 3,3,254. fg. H. an. 2,280. Med. n. 16. यानशय्यासनाशने M. 7,220. 11,180. Suçr. 1,244,8. 277,9 (neben वाहन). Varâh. Bṛh. S. 43,34. 86,47. 98,9. शीघ्र° MBh. 3,2638. 2749 (pl.). मृगया° *das auf-die-Jagd-Gehen* Kâm. Nîtis. 14,41. समुद्र° *Seefahrt* M. 8,157. परगृहे *das Gehen in ein fremdes Haus* Jâǵń. 1,84. अशोकवनिका° R. 1,3,29. परलोक° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,13. गवां च यानं पृष्ठेन *das Reiten auf* M. 4,72. अश्वैर्यानं यानम् Prasaṅgâbh. 14,*b*. न तथा करिणा यानं तुरगेण रथेन वा । नारायणेन वा यानं यथा मन्दविषेण मे ॥ Pańkat. III,248. गज° MBh. 3,15733. गो°, उष्ट्र°, खर° Hariv. 7781. शिबिका°, रथ° R. Gorr. 2,34,13. विमानयाना adj. f. *fahrend auf* Bhâg. P. 4,3,6. — अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानम् AK. 2,8,2,64. 1,18. H. 791. 735. M. 7,160. fgg. 165. यदा तु यानमातिष्ठेदरिराष्ट्रं प्रति 181. Jâǵń. 1,346. Kâm. Nîtis. 11,1. fgg. Ind. St. 10,166. Spr. 4231. 4619. — *b*) *Fuhrwerk, Wagen, Vehikel* überh. AK. 2,8,2,26. 3,4,3,25. Trik. 2,8,48. 3,3,254. fg. H. 89. 759. H. an. Med. Halâj. 2,294. चक्रिन् AK. 2,8,2,19. H. 751. ṚV. 4,43,6. यदस्य यानं भवति रथो वा किंचिद्वा Çat. Br. 5,5,3,7. Çâṅkh. Çr. 15,3,15. Lâṭj. 8,4,13. 5,6. 11,16. Âçv. Gṛhj. 1,8,1. Shaḍv.

Br. 6,3. 10. Pâr. Gṛhj. 1,10. Kauç. 14. 42. Khând. Up. 8,12,3. M. 2,202. 3, 64. 4, 120. 202. 232. 8, 290. fg. 404. fg. Jâǵn. 1, 151. 2, 299. MBh. 1, 7205. 3,939. 2262. 4,96. 13,352. R. 1,5,16. 17,14. 2,30,45. 32,16. 19. 40,40. खरयुक्त 69,18. यानैश्च शकटैश्चैव 113,20. 4,38,30. 6,99,8. Suçr. 1,68,15. 98,3. Ragh. 13, 69. Kumâras. 6, 76. Kâm. Nîtis. 7, 30. Varâh. Bṛh. S. 46,60. 52,7. 68,116. 88,12. Bhâg. P. 8,10,16. Pańkar. 1,3,24. 4,68. गोऽश्वोष्ट्र° gezogen von M. 2,204. 11,201. Jâǵn. 3,291. MBh. 13, 2585. Suçr. 1,106,19. शतसहस्र° Spr. 5053. नरवाह्निना। यानेन Sänfte MBh. 3,2716. 2714. मनुष्यवाह्यं चतुरस्रयानम् Ragh. 6,10. Bhâg. P. 5,10, 2. 15. यानरत्नं तुरंगः Spr. 5000. हंसेन यानेन Bhâg. P. 3,24,20. हंस° 5, 1,9. Am Ende eines adj. comp. H. 9. — c) bei den Buddhisten *das zur Erkenntniss führende Vehikel, das Mittel zur Erlösung von der Wiedergeburt* Burn. Intr. 63, N. 2. Lot. de la b. l. 315. — Vgl. अग्र°, अग्न्यो°, गो°, जल°, देव°, नर°, नारी°, नौ° (auch *Schiff* R. 1,9,65 = 63 Gorr.), पति°, पितृ°, पुं°, पूर्याण, पृष्ठ°, बर्हि°, बर्हियान, भद्र°, मध्यम°, महा° रथ°, वसुभृद्यान, स्वर्ग°.

यानक (von यान) n. *Fuhrwerk, Wagen* Bhâg. P. 9,10,21.

यानकर (यान + 1. कर) m. *Wagner* Varâh. Bṛh. S. 10,17.

यानपात्र (यान + पात्र) n. *Schiff, Boot* AK. 3,4,14,62. H. 875. Hariv. 8363. Kathâs. 18, 293. fg. 25, 40. 26, 133. 36, 83. 100. 51,175. 52, 322. 324. 56,57. Pańkat. 262,3.

यानपात्रिका (von यानपात्र) n. *ein kleines Schiff, Boot* Kathâs. 101,187.

यानभङ्ग (यान + भङ्ग) m. *Schiffbruch* Ratnâv. 4,5. — Vgl. पोतभङ्ग.

यानमुख (यान + मुख) n. *der Vordertheil eines Wagens* AK. 2,8,2,23. H. 757.

यानयान (यान 3) *b*) + यान 3) *a*)) n. *das Fahren* oder *Reiten* Suçr. 1, 69,19. 267,3.

यानवत् (von यान) adj. *mit einem Wagen versehen, zu Wagen fahrend* MBh. 3,10895. अथा जितो यानवता Spr. 4075. Kâm. Nîtis. 14,19.

यानशाला (यान + शा°) f. *Wagenschauer* R. 3,39,3. 4.

यान्त्रिक (von यन्त्र) adj. 1) *von den stumpfen chirurgischen Instrumenten handelnd* Suçr. 1,8,7. — 2) *künstlich geläutert* oder dergl., Bez. einer Art Zucker Suçr. 1,187,11.

याप (vom caus. von 1. या) m. nom. act.; s. काल°.

यापक (wie eben) adj. *bringend, verleihend:* तीर्थमाशिषां यापकं नृणाम् Bhâg. P. 3,23,23.

यापन (wie eben) 1) adj. *a*) *verstreichen lassend, zu Ende bringend:* यामाः स्वान्तरयापनाः Bhâg. P. 3,22,35. — *b*) *erleichternd, lindernd;* so heisst ein gewöhnlich aus Honig und Oel bereitetes Klystier (daher माधुतैलिक genannt) Suçr. 2, 198,3. — *c*) *das Leben fristend, unterhaltend:* अस्वादपि हि यापनम् MBh. 12,7719. — 2) f. (आ) und n. *a*) n. *das Verjagen* Trik. 3,3,254. H. an. 3,401. Med. n. 110. — *b*) *das Verstreichenlassen der Zeit, Aufschieben, Versäumen, Versäumniss;* n. = कालक्षेप, कालविक्षेप Trik. H. an. Med. P. 5,4,60. Vop. 7, 90. यापना Nalod. 2,18. कालयापन (s. auch bes.) dass. Kâm. Nîtis. 17,31. कालयापना Spr. 1949. — *c*) *das Lindern* (einer Krankheit): यापनार्थम् Suçr. 2,78,11. 343,8. — *d*) *das Fristen, Erhalten:* देह्यापनं कुरु MBh. 3,15410. विना वधं न कुर्वन्ति तापसाः प्राणयापनम् 12,447. fg. आत्मयापनाय स्थापनं प्रतिष्ठा P. 6,1,146, Sch. यापन = वर्तन, यात्रा *Lebensunterhalt* AK. 3,4, 25,177. Trik. H. an. Med. n. 110. r. 79. — *e*) *das Ausüben, Ueben:* धर्मयापना MBh. 12,4836. = धर्मोपदेश Nîlak.

यापनीय (wie eben) adj. als Erkl. von याप्य Med. j. 47.

यापा f. = जटा *Flechte* Bhûripr. im ÇKDr.

याप्य (vom caus. von 1. या) adj. = यापनीय Med. j. 47. 1) *zu lindern, sich lindern lassend;* von Krankheiten Suçr. 1,30,21. 87,5. 127,7. 253, 20. 2,305,4. 319,17. Çârṅg. Saṁh. 1,5,31. °त्व n. ebend. — 2) *gering, unbedeutend* AK. 3,2,3. H. 1442. Med. P. 5,3,47. वैयाकरणा Sch. फल Varâh. Bṛh. S. 4,21. 19,22. 86,61.

याप्ययान (या° + यान) n. *Sänfte* AK. 2, 8, 2, 21. H. 758. Hâr. 158. Halâj. 2,295.

याभ (von यभ्) m. *fututio* Vop. 21, 5. Bhâg. P. 9, 19, 5. Comm. zu Kâvjâd. 1, 66.

याभवत् (von याभ) adj. *fututor, bene futuens:* याभवतः (zugleich या भवतः) प्रिया Kâvjâd. 1,66.

याभिस् (instr. pl. f. von 1. य) adv. *damit:* प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः। याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद्वज्री *damit er komme* ṚV. 8,1,8.

1. याम (von यम्) m. nom. act. Vop. 26,170. = यम, संयम u. s. w. AK. 3,3,18. H. an. 2,333. Med. m. 24. — Vgl. अन्तर्याम.

2. यामं (von 2. यम) 1) adj. (f. ई) Jama *betreffend, von ihm kommend* u. s. w. Ait. Br. 3,37. Taitt. Br. 1,4,6,6. Kauç. 83. Kâth. 22,11. अद्भुतानि Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,36. fg. यातनाः M. 12,17. 21. fg. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,*b*. TBr. 3,9,10,1. Çâṅkh. Çr. 16,12,20. Pańkav. Br. 9,8,4. Kâtj. Çr. 22,6,15; vgl. महा°.

3. यामं (von 1. या) 1) m. Uṇâdis. 1,139. Çânt. 2,15. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. *a*) *Fahrt, Lauf; Bahn; Fortgang* ṚV. 1,39,6. 48,4. 87,3. यस्यानाप्तः सूर्यस्येव यामः 100,2. चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु 166,4. मा यामादस्मादव जीहिपो नः 3,53,19. वधू यामेषु शोभते 4,32,23. fg. 5,53,12. मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत् 56,7. यामं येष्ठाः 7,56,6. 69,2. यद्यामं यान्ति वायुभिः 8,7,4. 5. 20,5. उषास आतिरन्त याममिन्द्राय 85,1. AV. 10,2, 6. याम, प्रतिष्ठा Çat. Br. 3,7,3,4. 5. TS. 6,3,1,6. 6,6,2. याम, क्षेम Kâth. 19,12. 31,2. TBr. 3,2,3,9. पञ्चयाम *in fünf Gängen verlaufend:* यज्ञ ṚV. 10,52, 4. 124,1. — *b*) *Wagen:* कुवित्स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयात् ṚV. 4,51,4. 6,66,7. 10,20,9. — *c*) *Nachtwache* (*Periode*), *ein Zeitraum von drei Stunden* AK. 1, 1, 3, 6. H. 145. an. 2,333. Med. m. 24. Halâj. 1,106. उत्थाय पश्चिमे यामे M. 7,145. द्वौ प्रथमौ यामौ रात्रेः MBh. 2,219. सहस्रयामप्रतिमा (रजनी) 7,8376. याममात्रार्धशेषायां यामिन्यां प्रत्यबुध्यत 12,1896. R. Gorr. 2,5,5. Suçr. 1,111,12. 242,6. 2,264,21. Megh. 95. Ragh. 17,1. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 3. 11,44. 39,4. Kathâs. 4,46. 13,149. 17,101. 24,112. Râǵa-Tar. 3,178. Bhâg. P. 3,11,8. 10. 22,35. 5,8,28. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): त्रियामा रजनी MBh. 7,8375. दीर्घयामा त्रियामा Megh. 107. Vikr. 45. शतयामेव बभूव शर्वरी R. Gorr. 2,81,33. Kathâs. 29,4. 85,33. 109,107. — *d*) wohl *Wandelstern, Planet:* सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा AV. 6,21,2. — *e*) pl. Bez. *einer Klasse von Göttern* MBh. 3,15446. 9,2482. Hariv. 414. VP. 54. Bhâg. P. 1,3,12. 8,1,18. Mârk. P. 50,18. Burn. Intr. 202. 605.

Lalit. ed. Calc. 71,5. 170,20. 268,6. fälschlich यमाः 58,4. Vgl. सुयाम. — f) यामस्य (oder इन्द्रस्य) अर्कः N. eines Sâman Ind. St. 3,230, b. — 2) f. ई a) N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's (Manu's) Hariv. 143. 12449. VP. 119. यामि (ed. Bomb. जामि) Bhâg. P. 6,6,4. नागवीथी च यामिज्ञा (aus metrischen Rücksichten verkürzt) Hariv. 148. नागवीथी च जामिज्ञा (so beide Ausgg.) 12480. — b) N. pr. einer Apsaras Hariv. 14162. जामी die neuere Ausg. — Vgl. अतीयाम, कृष्ण°, चित्र°, त्रि°, त्वेष°, दण्ड°, पञ्च°, पूत°, यात° und 1. यामन्.

याँमक (von यम्) P. 7,3,34, Sch, 1) m. du. Bez. des Nakshatra Punarvasu H. 110. — 2) der voc. यामकि vom f. यामकी als Schimpfwort in der Stelle: नो त्वेवान्यत्र यामकि पुंश्चल्या अयनं मे अस्ति Çâṅkh. Br. 27,1.

यामकिनी f. = 1. यामि Hâr. 139.

यामकोशँ (3. याम + कोश) nach Sâj. adj. den Weg sperrend; vermuthlich m. Wagenkasten (vgl. कोश 1) e): इन्द्र दृह्ळ यामकोशा अभूवन् RV. 3,30,15.

यामघोष (3. याम + घोष) 1) m. Hahn Çabdam. im ÇKDr. — 2) eine metallene Platte oder eine Pauke, an der die Nachtwachen angeschlagen werden; m. Trik. 1,1,121.; ÇKDr. und Wilson f. आ nach derselben Autorität.

यामतूर्य (3. याम + 3. तूर्य) n. = यामघोष 2) Ragh. 6,56.

यामदुन्दुभि (3. याम + दु°) m. dass. R. 2,81,2.

यामदूत (von यमदूत) m. pl. N. pr. eines Geschlechts Hariv. 1465. 1771. an der ersten Stelle liest die neuere Ausg. लोहितायनपूताश्च st. लोहिता यामदूताश्च.

1. याँमन् (von 1. या) n. 1) Gang, Lauf, Fahrt, Flug; das Kommen: विश्वो वो यामन्भयते स्वर्दृक् RV. 7,58,2. 3,54,14. 4,27,4. यामन्नयामं कृणुतं कृवं मे 1,181,7. 131,7. गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः 5,56,4. 1,37, 11. उत पूषा भवसि देव यामभिः 5,81,5. उपसो यामन्नक्तोः 6,38,4. 3,30, 13. 9,45,4. अयाम् 10,77,4. 92,13. नि ते यामन्नविद्महि bei deinem Kommen 10,127,4. Namentlich Marsch, Kriegszug RV. 4,24,2. 9,64,10. महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा 10,78,6. वि ह्वयन्ते ऽग्निं नरो यामनि बाधितासः (oder zu 2) 80,5. 7,66,5. ता नो यामन्नुरुष्यतामभीके 85,1. — 2) das Angehen (mit Bitten u. s. w.), Anrufen, überh. das Nahen zu den Göttern (= यज्ञ Comm.): स यामनि प्रति श्रुधि RV. 1,25,20. यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन् 33,2. पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामं जनस्य रातिं वनते सुदानुः 6,38,1. स यामन्नग्ने स्तुवते वयो धाः 10,46,10. कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे 64,1. मरुश्च यामन्नध्वरे चकानाः 77,8. शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि 7,32,26. 1,112,1. यामन्यामन्नुपयुक्तं वह्निष्ठम् Agni AV. 4,23,2. इष्टेन यामन्नर्मतिं जहातु सः TS. 3,2,8, 4. — Es lässt sich übrigens nicht verkennen, dass in vielen dieser Stellen eine adverbiale Bed. des loc. etwa hac vice, dieses Mal oder ähnlich besser befriedigen würde. — पुनर्यामन् adj. wieder brauchbar (vgl. यातयामन्) Kâth. 12,8. Çâṅkh. Br. 19,7. — Vgl. अखिद्र°, अनुन्न°, इष्ट°, उग्र°, दुर्यामन्, च्युतच्यामन्, पृथु°, प्रवच्यामन्, यात°, सु° und 3. याम.

2. यामन् = यामिन् in अन्तर्यामन्.

यामन scheinbar Hit. 1,38, wo aber mit MBh. 1,5912 याविमौ st. यामनौ zu lesen ist.

यामनाली f. = यामघोष 2) Trik. 1,1,121.

यामनेमि m. Bein. Indra's Trik. 1,1,57. H. ç. 31.

यामयम (3. याम + यम) m. eine für jede Stunde bestimmte Beschäftigung Bhâg. P. 10,13,23.

यामरथ n. (sc. व्रत) Bez. einer best. zu Jama in Beziehung stehenden Observanz Hariv. 7941. 7943. — Vgl. यमरथ.

यामल n. 1) = यमल Paar Trik. 2,5,38. H. 1424. — 2) Bez. einer Klasse von Tantra-Schriften Verz. d. Oxf. H. 7,b,2. 88,a,5. fgg. 90,a, N. 1. 97,a, No. 151. 101,b,44. 103,b,9. 104,a,17. 109,a,1. °ला f. 29. Häufig fälschlich जामल geschrieben; vgl. आदि°, कृष्ण° (u. गौराङ्ग), ब्रह्म°, रुद्र°, सिद्ध°.

यामलायनँ adj. von यमल gaṇa पक्षादि zu P. 4,2,80.

यामलीय (von यामल) n. Titel einer Schrift oder Bez. einer Gattung von Schriften Verz. d. Oxf. H. 95,b,9.

यामवती (von 3. याम) f. Nacht H. 142, Sch. (wo so zu ändern ist) und Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. यामिनी.

यामवृत्ति (3. याम + वृ°) f. das Wachestehen Kâm. Nîtis. 16,9.

याँमश्रुत adj. nach Sâj. durch raschen Lauf (3. याम) berühmt RV. 5,52,15.

यामहूँ (1. यामन् + हू) adj. der durch Bitten sich rufen lässt, hilfsbereit; nach Sâj. zum Kommen — oder zur Zeit zu rufen; die Açvin: ता यामन्यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा RV. 5,73,9. अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् 8,62,6.

याँमहूति (1. यामन् + हूति) f. Hilferuf: राजन्तावध्वराणामश्विना यामहूतिषु RV. 8,8,18. अरंमस्मै भवति यामहूतौ 10,117,3.

यामातृ m. = जामातृ Tochtermann Verz. d. Oxf. H. 189,a,1. Çabdar. und Udvâhat. im ÇKDr.

यामातृक m. dass. Vet. in LA. (III) 19,22.

यामायन (von 2. यम) m. patron. der Liedverfasser Ûrdhvakṛçana, Kumâra, Damana, Devaçravas, Mathita, Çaṅkha und Saṁkasuka RV. Anukr.

1. यामिँ f. = जामि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,43. = कुलस्त्री und स्वसृ Med. m. 24. यामयः M. 4,183. Mârk. P. 14,59. 50,64. यामीभिः M. 4, 180; vgl. जामि 2) a).

2. यामि = यामी; s. u. 3. याम 2) a).

यामिक (von 3. याम) adj. auf der Wache stehend: पुरुष so v. a. Nachtwächter Kathâs. 3,63. °भट ÇKDr. mit einem Citat der Prâkṛta. m. Nachtwächter, ein auf der Wache stehender Mann Kathâs. 122,30. fg. Râǵa-Tar. 3,173. 4,515. 6,77.

यामिका f. = यामिनी Nacht Wilson nach Çabdârthak.

यामित्र m. = जामित्र ÇKDr. nach dem Jâmitravedha und Ǵotistattva; Varâh. Bṛh. 1,18.

यामिन् (von यम्) in अन्तर्यामिन्. — यामिनी s. bes.

यामिनय् (von यामिनी), °यति als Nacht erscheinen: यामिनयन्ति दिनानि Kâvjapr. 139,14.

यामिनी (von 3. याम 1, c) f. 1) Nacht AK. 1,1,3,4. H. 142. Halâj. 1, 107. MBh. 12,1896. R. 6,14,24. Suçr. 2,154,1. Ragh. 15,13. 17,1. 19, 39. Spr. 1928. 2475. 3713. Kir. 5,44. Gît. 7,6. 8,1. Kathâs. 3,67. 25, 92. 54,206. 55,193. 56,31. Râǵa-Tar. 3,178. 4,379. 6,77. Bhâg. P. 6,5, 33. Daçak. in Benf. Chr. 188,8. Vgl. दर्श°. — 2) N. pr. a) einer Toch-

ter Prahlâda's Kathâs. 46,22. — *b)* der Gattin Târksha's und Mutter der Çalabha Bhâg. P. 6,6,21.

यामिनीपति (य° + पति) m. *der Gatte der Nacht, der Mond* Çabdar. im ÇKDr. Bhâg. P. 10,35,25.

यामी s. u. 3. याम 2) und 1. यामि.

यामीर 1) m. *der Mond.* — 2) f. ग्रा *Nacht* Çabdârthak. bei Wilson.

यामुनँ 1) adj. *zur* Jamunâ *in Beziehung stehend, von ihr kommend, an ihr wachsend* u. s. w.: स्रोतसा यामुनेनेव (so die ed. Bomb.) MBh. 7, 92. जल Hariv. 14747. Spr. 829. वंशैश्च (वन्यैश्च ed. Bomb.) यामुनैः R. 2, 55,8. — 2) m. *a)* metron. P. 4,1,113, Sch. Verz. d. Oxf. H. 127,*a*, No. 227. — *b)* pl. Bez. eines Volkes MBh. 6,358 (VP. 190). Varâh. Bṛh. S. 14,2. 25. Bhâg. P. 1,10,34. Mârk. P. 58,42. — *c)* N. eines Berges MBh. 3,12353. 5,600. गङ्गायमुनयोर्मध्ये यामुनस्य गिरेरधः 13,3397. R. 4,40, 19. — *d)* N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 60,2. यामुनाचार्य Hall 203. यामुनाचार्यस्वामिन् 117. — 3) n. *a)* (sc. ग्राञ्जन) *Spiessglanz* AK. 2, 9,101. H. 1031. AV. 4,9,10. — *b)* N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8022.

यामुनेष्टक n. *Blei* Gaṭâdh. im ÇKDr.; vgl. यवनेष्ट.

यौमुन्दायनि m. patron. von यमुन्द् gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. Schol. zu 149.

यामुन्दायनिकँ m. Geringachtung ausdrückendes patron. von यामुन्दायनि Schol. zu P. 4,1,149.

यामुन्दायनीँय m. desgl. ebend.

1. यामेय (von 1. यामि) m. *der Schwester Sohn* ÇKDr. und Wilson.

2. यामेय metron. von 2. यामि Bhâg. P. 6,6,6.

यामोत्तर (2. याम + उ°) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230,*b*.

यौम्य (याम्यँ Kâç. zu P. 4,1,85) 1) adj. *zu* Jama *in Beziehung stehend, ihm gehörend, ihm eigen* u. s. w.: काकाः Âçv. Gṛhj. bei Stenzler S. 46. होम Kauç. 81. वृत्ति M. 8,173. कोपविधारणा MBh. 2,2577. °सत्त्ववत् (v. l. यम°) Suçr. 1,335,12. सभा MBh. 2,310. fg. 13,3795. धनुस् 7,1041. सामानि 2,2627. मातरः कार्त्तिकेयस्य 9,2654. Varâh. Bṛh. S. 5,23. 80,8. पुरी Bhâg. P. 5,21,7. 10. Mârk. P. 10,76. 15,54. नियोग 78,29 (नियोगे zu lesen). 108,18. °पाश Bhâg. P. 6,2,20. दूताः 21. नराः Mârk. P. 12, 38. यातनाः Kusum. 65,7. मुहूर्त Verz. d. B. H. No. 912. व्रत Kull. zu M. 9,307. ऋक्ष *das von* Jama *beherrschte* Nakshatra Bharaṇî Suçr. 2,261,12. Varâh. Bṛh. S. 7,9. 9,2. 6. 35. 10,3. 15,27. Mârk. P. 58,53. याम्या f. dass. H. an. 2,378. Med. j. 47. Insbes. *südlich;* in Verbindung mit दिश् und ग्राशा oder याम्या f. mit Ergänzung des subst. *der Süden* H. 169, Sch. Halâj. 1,101. (याम्या = प्राची! H. an. Med.). TS. 4,4,12,4. Hariv. 4857. R. 2,103,26 (111,32 Gorr.). 3,29,6. 54,10. 4,60,16. 5,27,17. Weber, Gjot. 35. Mârk. P. 29,18. Sûrjas. 2,7. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,24. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 13. 3,4. 11,12. 19. 33. 35. 37. 53,38. 54,65. उदङ्मध्ययाम्यमार्गस्थाः 9,4. fgg. याम्योदधि 14,15. 26,7. 54,40. 44. 60,2. 86,30. याम्याद् 87,6. 90,7. Sûrjas. 2,63. 3,15. Bhaṭṭ. 14,15. याम्ये *im Süden, in südlicher Richtung* Weber, Râmat. Up. 300. Varâh. Bṛh. S. 8,15. 31,3. 54,33. 48. 68. 70. 78. 87,43. 95,21. याम्येन dass. 4,5. 5,33. 11,34. 18,1. 53,73. 54,18. 41. 87,4. याम्यतस् *von Süden her* 86,21. याम्योत्तर *südlich und nördlich* Sûrjas. 3,4. Varâh. Bṛh. S. 5,15. *von Süden nach Norden gehend* 4,12. 54,118. — 2) m. *a)* (sc. नर, पुरुष, दूत) *ein Scherge* Jama's: नमो यमाय याम्येभ्यश्च Çâṅkh. Gṛhj. 2,14. Shaḍv. Br. 5,1. Mârk. P. 11,30. 12,35. 14,64. — *b)* Bein. Agastja's Med. — *c)* Bein. Çiva's Ind. St. 2,39. MBh. 7,9521 (= यामकर्ता कालः Nîlak.). 14,193. — *d)* Bein. Vishṇu's (neben मह्रा°) MBh. 12,12864 (= यमगण Nîlak.). — *e)* *Sandelbaum* Med.

याम्यतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,37.

याम्या (von 3. याम 1, *c*) f. = यामिनी *Nacht* Trik. 1,1,104. H. ç. 18. — याम्या *Süden* s. u. याम्य 1).

याम्यायन n. *der Gang der Sonne nach Süden,* = दक्षिणायन Malamâsat. im ÇKDr.

याम्योद्भूत (याम्या + उ°) m. *im Süden entstanden, wachsend;* m. *ein best. Baum,* = श्रीताल Râǵan. im ÇKDr.

यायजूँक (vom intens. von 1. यज्) adj. *fleissig opfernd* P. 3,2,166. Vop. 26,153. AK. 2,7,8. H. 818. Halâj. 2,265. Çat. Br. 1,7,3,14. 4,1,2,15. MBh. 13,3072. Hariv. 11381. 12590. R. 2,72,15. 102,5. 5,56,83. Kâçîkh. 3,95. 10,27. 52,35. 80,17 (nach Aufrecht). Bhaṭṭ. 2,20.

यायात adj. Jajâti *betreffend, ihm gehörend* u. s. w.: वयस् MBh. 1, 3170. तीर्थ 9,2349. वंश Hariv. 5164. n. Jajâti's *Geschichte,* Titel des 18ten Kapitels im 9ten Buche des Bhâg. P. — Vgl. ग्रपर°, पूर्व°.

यायावँर (vom intens. von 1. या) 1) adj. P. 3,2,176. 1,1,58, Sch. Vop. 26,156. *umherwandernd, keinen festen Wohnsitz habend:* तस्मीद्यायावरः क्षेम्यस्यैशे तस्माद्यायावरः क्षेम्यमध्यवस्यति TS. 5,2,1,7. Kâṭh. 19,12. भैक्षं चेरुद्गृहस्थेषु यायावरगृहेषु च Mârk. P. 41,8. Bhaṭṭ. 2,20. — 2) m. *a)* *ein zum Rossopfer bestimmtes (frei umherwanderndes) Ross* Trik. 2, 8,43. — *b)* pl. Name eines Brahmanengeschlechts, zu welchem Ǵaratkâru gehört, MBh. 1,1030. 1036. 1633. 1828. यायावरा गणाः। ऋषीणाम् 12,8902. यायावरा नाम ब्राह्मणा ग्रासंस्ते ऽर्धमासायाग्निहोत्रमजुह्वन् Bharadvâǵa bei Nîlak. zu MBh. 1,1030. sg. = जरत्कारु Trik. 2,8, 20. — 3) n. *das Leben eines umherziehenden Bettlers* Bhâg. P. 7,11,16.

यायिन् (von 1. या) adj. *gehend, reisend, marschirend, laufend, fahrend, fliegend, sich bewegend:* यायिन्या धन्विन्या R. 2,93,1 (102,1 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 89,1. 12. 95,27. 51. शलभैरिव यायिभिः MBh. 8,3160. यायिन्यो न निवर्तन्ते सतां मैत्र्यः सरित्समाः Spr. 345. वीरेण पृष्ठतो यायिना MBh. 2,50. ग्रनुलोम° (ग्रश्व) Varâh. Bṛh. S. 93,14. भूतसंसारे सततयायिनि M. 1,50. भीष्मद्रोणप्रभृतयः संत्रस्ताः साधुयायिनः MBh. 5,2478. वाजिभिः शीघ्रयायिभिः R. 2,57,8. सेनाग्र° MBh. 3,14874. 8,3358. शतयोजन° (कृप) 3,2898. गजाश्वरथ° *reitend —, fahrend auf* 6,3738. कृपस्यन्दन° R. 5,12,21. सारथेर्लघुयायिनः Hariv. 9300. पश्च° Pańkar. 1,3,25. संग्राम° *ziehend in* Ragh. 17,8. उत्स्थलद्वीप° *gehend nach* Kathâs. 25,39. प्राग्यायिन् Sûrjas. 7,2. 3. चित्रकूटयायिनि वर्त्मनि Uttararâmak. 11,7 (15, 10). Insbes. *in's Feld ziehend* Hariv. 6606. Varâh. Bṛh. S. 9,35. 17,13. 18,2. 5. 34,22. 39,5. von Planeten im Grahajuddha 16,5. 17,6. fgg. 20,6. Jogaj. 1,14. fg. AV. Par. in Ind. St. 10,318. — Vgl. ग्रग्र° (auch Kathâs. 21,46. 46,86. 54,4), नौ°, मनो° (auch Brahmav.-P. 1,40, wo मनोयायि मनो° zu trennen ist), समुद्र°.

यार्कायण m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184,*a*,2.

1. यौव m. = 2. यव TS. 4,3,9,2. 10,3. 4,7,2. 5,3,4,5.

2. याव (von 1. यव) = यावक P. 5,4,29. adj. *aus Gerste bestehend,*

— *bereitet* Kâtj. Çr. 4,11,8. अ° 5,12,5. m. *eine best. aus Gerstenkörnern bereitete Speise* H. an. 2,535.

3. याव m. *Lackfarbe* AK. 2,6,3,26. H. 686. an. 2,535. Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,4. Naish. 22,46.

1. यावक m. n. = 2. याव P. 5,4,29. *eine best. aus Gerstenkörnern bereitete Speise* 4,3,149, Sch. औलूखल 2,92, Sch. AK. 2,9,18. H. 1175. M. 11,125. MBh. 12,7815. 11080. 12092. 13,3841. 6228. Spr. 4845. Hariv. 7855. 7872. 7885. Suçr. 2,72,19. 163,8. Varâh. Bṛh. S. 44,11. 51,30. Bhâg. P. 9,10,34. Mârk. P. 41,11. Râǵa-Tar. 3,415 (zugleich = 2. यावक). °कृच्छ्र m. *eine best. Askese:* यवानामप्सु साधितानां सप्तरात्रं पक्षं मासं वा प्राशने यावककृच्छ्रः Prâjaçkittend. 9,*a*,7.

2. यावक m. = 3. याव H. 686, Sch. Halâj. 2,400. Çabdar. im ÇKDr. Kir. 5,40. Gît. 7,27. Kathâs. 37,44. Râǵa-Tar. 3,145 (zugleich = 1. यावक). Schol. zu Naish. 22,46.

यावक्रीतिक m. *ein Kenner der Geschichte des* Javakrita P. 4,2,60, Vârtt. 5, Sch.

यावच्छक्यम् (यावत् + शक्य) adv. *nach Möglichkeit* Hit. 15,11.

यावच्छस् (von यावत्) adv. *wie* (rel.) *vielfach* Vop. 7,69. TS. 1,5,9,1. Çat. Br. 2,2,3,4.

यावच्छास्त्रम् (यावत् + शास्त्र) adv. *wie weit das* Çastra *reicht* Çâṅkh. Çr. 18,21,1.

यावच्छेषम् (यावत् + शेष) adv. *wie viel übrig ist* Kâtj. Çr. 12,6,17.

यावच्छ्रेष्ठ (यावत् + श्रेष्ठ) adj. *bestmöglich* AV. 7,31,1.

यावच्छ्लोकम् (यावत् + श्लोक) adv. *der Zahl der* Çloka *entsprechend* Vop. 6,61.

यावज्जन्म (यावत् + जन्म) adv. *das ganze Leben hindurch* Mârk. P. 14,72.

यावज्जीवम् (यावत् + जीवम् absol.) adv. *das ganze Leben hindurch, auf Lebenszeit* P. 3,4,30. Çat. Br. 5,2,2,4. 5,3,6. 9,3,4,4. Kâtj. Çr. 18,6,30. Çâṅkh. Çr. 3,1,8. R. 2,36,24. Spr. 35. 901. Râǵa-Tar. 2,90. Bhâg. P. 5,16,26. Mârk. P. 21,40. Pañkat. 221,17. fg. Sarvadarçanas. 1,17. Vet. in LA. (III) 35,3. यावज्जीवेन dass. Spr. 5470. यावज्जीवकृतसुकृत Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,28.

यावज्जीविक (von यावज्जीवम्) adj. *lebenslänglich* Âçv. Çr. 3,14,22. Davon nom. abstr. °ता Schol. zu Kâtj. Çr. 32,4.

यावत् indecl. s. u. यावत्.

यावतिथ (von यावत्) adj. *der wievielte* (rel.) P. 5,2,53. Vop. 7,42. M. 1,20. P. 1,3,11, Vârtt. 1.

यावत्कपालम् (यावत् + कपाल) adv. *nach dem Umfange der Schalen* Kâtj. Çr. 2,5,20.

यावत्कामम् (यावत् + काम) adv. *wie viel —, wie lang man mag* Ait. Br. 6,33.

यावत्कालम् (यावत् + काल) adv. *wie lange es dauert* Çâṅkh. Gṛhj. 6,1. *eine Zeit lang* Kathâs. 32,19. 57,97.

यावत्कृत्वस् (यावत् + कृ°) adv. *wie* (rel.) *oft* Kauç. 80.

यावत्तरसम् (यावत् + 1. तरस्) adv. *nach Vermögen* (= यावद्बलम्, यथाशक्ति) Taitt. Âr. 2,15,3. यावत्तरसम् accentuirt, also nicht als comp. gefasst.

यावत्मूत (यावत् + त्मूत) adv. *wie weit mit Fett getränkt* TS. 6,1,9,4.

यावत्प्रमाण (यावत् + प्र°) adj. *wie* (rel.) *gross:* °विस्तार Bhâg. P. 5,20,2.

यावत्सत्त्वम् (यावत् + सत्त्व) adv. *so weit der Verstand reicht, nach bestem Verstande* Bhâg. P. 6,1,62. सत्त्व = धैर्य Comm.

यावत्संबन्धु (यावत् + स°) adv. *wie weit die Verwandtschaft reicht, mit Inbegriff aller Verwandten* RV. 18,4,37.

यावत्स्वम् (यावत् + स्व) adv. *so viele man besitzt* Kâtj. Çr. 4,2,28.

यावदङ्गीन (von यावत् + अङ्ग) adj. *ein wie* (rel.) *grosses Glied bildend* AV. 6,72,3.

यावदन्तम् (यावत् + अन्त) adv. *bis zum Ende* Bhâg. P. 8,14,6. यावदन्ताय dass. Gṛhjasaṁgr. 2,54. fg.

यावदभीक्ष्णम् (यावत् + अ°) adv. *für die Dauer eines Augenblicks* Nir. 2,25.

यावदमत्रम् (यावत् + 2. अमत्र) adv. *den Krügen entsprechend, in der Anzahl, als Krüge da sind,* P. 2,1,8, Sch.

यावदर्थ (यावत् + अर्थ) adj. 1) *so viel wie nöthig, dem Bedarf entsprechend* M. 2,51. 182. Bhâg. P. 5,5,3. °परिग्रह 3,28,4. °प्रतिग्रह 8,19, 17. यावदर्थम् adv. Spr. 220. Bhâg. P. 4,26,6. 7,12,6. 13. 14,5. यावदर्थकृत 12,9. — 2) *nicht mehr als nöthig an Etwas* (loc.) *hängend* Bhâg. P. 2,2,3.

यावदह (यावत् + 2. अह) n. *der wievielte* (rel.) *Tag* Çat. Br. 3,3,4, 19. Kâtj. Çr. 7,9,20. Lâtj. 1,3,1.

यावदाभूतसंप्लवम् (यावत् - 2. आ + भूत - संप्लव) adv. *bis zum Untergange der Geschöpfe, bis zum Ende der Welt* Spr. 2199. 2854. — Vgl. भूतसंप्लव und यावदाह्नुतसंप्लवम्.

यावदायुषम् (यावत् + 2. आयुस्) adv. *so lange die Lebenszeit währt, das ganze Leben hindurch, für's ganze Leben* Khând. Up. 5,9,2. 8,15.

यावदायुस् (wie eben) adv. dass. Vikr. 87,3. Râǵa-Tar. 2,68. Spr. 2888. यावदायुःप्रमाण adj. *lebenslänglich* 4880.

यावदाह्नुतसंप्लवम् Jâǵń. 3,188 und Bṛhannârad. im Âhnikat. fehlerhaft für यावदाभूतसंप्लवम्. = प्राकृतप्रलयपर्यन्तम् Mit., भकारस्य हकारश्छान्दसः Raghun.

यावदित्थम् (यावत् + इ°) adv. *so viel wie nöthig* Spr. 220, v. l.

यावदीप्सितम् (यावत् + ईप्सित) adv. *so viel Einem beliebt* R. Gorr. 2,100,49.

यावदुक्त (यावत् + उक्त) adj. *so viel wie angegeben ist* Kâtj. Çr. 9, 13,23. 10,6,12. °क्तम् adv. 15,9,33.

यावदुत्तमम् (यावत् + उत्तम) adv. *bis zur äussersten Grenze:* सुवाजिंया° MBh. 5,4509.

यावद्गमम् (यावत् + गम) adv. *so schnell man gehen kann:* पराद्रवत् so v. a. *so schnell als möglich* Bhâg. P. 1,7,18.

यावद्बलम् (यावत् + बल) adv. *nach Kräften* Comm. zu Taitt. Âr. 2,15,3.

यावद्भाषित (यावत् + भा°) adj. *so viel wie gesprochen worden ist:* °संदेशकार Sâh. D. 88.

यावद्राज्यम् (यावत् + राज्य) adv. *für die ganze Regierungszeit* Râǵa-Tar. 3,256.

यावद्वेदम् (यावत् + वे° absol.) adv. *so viel man bekommt* P. 3,4,30.

यावद्व्याप्ति (यावत् + व्या°) adv. *wie weit Etwas reicht* Nir. 3,15.

1. यावन् (von 1. या) nom. ag. *Reisiger* oder *Angreifer* (vgl. यातर्):

न यं यावा तरति यातुमावान् ṚV. 7,1,5. *gehend, fahrend* am Ende eines comp.; s. अक्षणा°, अग्र°, एक°, एव°, देव°, पुरो°, पूर्व°, प्रातर्यावन्, शुभं°, अध°, स°, सायं°.

2. यावन् in क्षणा° nach Sâj. von 3. यु; s. daselbst.

3. यावन् so v. a. 2. यव in अयावन् TS. 5,6,4,1.

1. यावन (von 1. यवन) 1) adj. *im Lande der* Javana *geboren* Prâjaçkittend. 20,*a*,3. 57,*a*,1. — 2) m. *Weihrauch* AK. 2,6,3,30. H. 648, Sch.

2. यावन (vom caus. von 2. यु) n. *das Verbinden, Vermengen:* अ° (= अमिश्रणा Comm.) ṚV. Prât. 11,12.

3. यावन (vom caus. von 3. यु) n. *das Entfernen:* भयानाम् Nir. 4, 21. — Vgl. शपथ°.

यावनाल 1) m. = यवनाल Râǵan. im ÇKDr. Schol. zu Kâtj. Çr. 422, 12. Vgl. कषाय°, तुवर°, धवल°. — 2) f. ई *aus* Javanâla *gewonnener Zucker* Râǵan. im ÇKDr.

यावनालनिभ m. *eine dem* Jâvanâla *ähnliche* (निभ) *Rohrart* Râǵan. im ÇKDr. u. यावनालशर.

यावनालशर m. = यावनालनिभ Râǵan. im ÇKDr.

यावत् (von 1. य) 1) adj. *wie* (rel.) *gross, wie weit reichend, wie lange dauernd, wie viel* P. 5,2,39. 6,3,91. Vop. 7,94. यावत्तरो मघवन्यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः ṚV. 1,33,12. 7,91,4. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय 32,18. 79,4. यावदिदं भुवनं विश्वमस्ति 1,108,2. AV. 3,22,4. यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा 4,6,2. 6,72,2. यावतः सपत्नानाम् 7,13,2. 12,1,33. 3, 36. 14,2,49. यावन्तः — तेभ्यः सर्वेभ्यः Ait. Br. 1,5. यावल्लोहितं तावत्परिवासय 2,14. 6,9. Çat. Br. 1,2,5,13. 13,2,3,11. 14,1,1,13. Kâtj. Çr. 3,2,8. Lâṭj. 1,8,2. Âçv. Gṛhj. 2,4,6. 4,1,9. 6,4. यावान्यश्चास्मि Bhag. 18,55. Bhâg. P. 2,9,31. यावती संभवेद्वृद्धिस्तावतीं दातुमर्हति M. 8,155. 394. आचत्व विषयं राज्ञन्यावांस्तव वशे स्थितः MBh. 14,889. Bhâg. P. 3,23,43. 7,14,38. यावान्पत्तिगणः R. 3,55,49. 4,19,5. यावानर्थः Bhag. 2,46. यावच्छस्यं विनश्येत् Jâǵn. 2,161. यावच्च कुर्यादन्यो ऽस्य कुर्याद्दक्षगुणं ततः Spr. 3845. पिच्येणार्थेन यावता Bhâg. P. 6,1,64. तावन्मात्रं प्रकुर्वन्ति यावता प्राणधारणम् Hariv. 1204. प्रयोजनं यस्य तु यावता स्यात् Verz. d. Oxf. H. 195,*a*,3. काले यावति Mârk. P. 43,41. यावता क्षणेन Râǵa-Tar. 5,110. आत्मावगमो ऽत्र यावान् Bhâg. P. 1,18,23. यावन्तः *quot* M. 3,124. 133. 176. 178. 4,168. 5,38. MBh. 2,603. R. Gorr. 2,35,7. Spr. 2480. 4883. Ragh. 12,45. Bhâg. P. 3,30,35. 4,25,12. यावानेव पुरुषः *aus wie vielen Theilen bestehend, wie vielfach* Ait. Br. 6,29. TS. 5,1,6, 1. TBr. 1,1,5,3. Bhâg. P. 2,8,8. ṚV. Prât. 18,21. यावन्तावग्रे प्रथमं संमेयथुः *wie viele Jahre zählend* AV. 12,3,1. यावज्जननं तावन्मरणम् *wie oft sich wiederholend* Spr. 4876. सा च मे यावती त्यक्ता विशालनृपतेः सुता *qualis* Mârk. P. 127,29. आश्चर्यं यावत् Saddh. P. 4,14,*a*. अधिकारः प्रस्तावः प्रारम्भ इति यावत् *so viel als* Sarvadarçanas. 135,10. 180,10. Schol. zu Gaim. 1,1,5. 2,16. प्रविश्य विज्ञातं यावच्चर्म दारु च *nichts als Haut und Holz* Pańkat. ed. orn. I, 89. यावत्तावत् *wie viel immer*, Bez. *einer unbestimmten Zahl* Colebr. Alg. 139. 228. यावन्तः कियन्तः *wie viele immer:* यावतीः कियतीश्च प्रजा वाचं वदन्ति तासां सर्वासां सूयते TBr. 2,7,5,1. यावत् am Anfange eines comp.: यावद्देवत्यं Çat. Br. 1,2,1,22. यावद्धीतिन् Lâṭj. 3,2,6. Kusum. 26,9. — 2) यावत् indecl. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,36. fgg. साकल्ये कार्त्स्न्ये ऽवधौ माने ऽवधारणे AK. 3,4,32(28),8. H. an. 7,23. कार्त्स्न्ये ऽवधारणे ॥ प्रशंसायां परिच्छेदे मानाधिकारसंभमे । पक्षान्तरे च Med. avj. 31. fg. *a*) *wie weit, wie sehr, wie viel, in welcher Menge, — Anzahl:* यावद्द्यावापृथिवी तावदित्तत् ṚV. 10,114,8. AV. 3,22,5. 5,22,5. यावदस्य वशः स्यात् Çat. Br. 1,3,5,14. 5,1,5,13. Ait. Br. 1,13. यावदेवायं विष्णुस्त्रिर्विक्रमेत तावदस्माकम् 6,15. TBr. 2,1,11,1. यावत्पुरुष ऊर्ध्वबाहुस्तावदग्निश्चितः Kauç. 85. यावन्नाम्नो गतम् Khând. Up. 7,1,5. यावद्गम्यं गतं त्वया MBh. 3, 16767. यावत्प्रपश्यति 13,4287. परिक्षिपसि दण्डेन यावत्तावदवाप्स्यसि R. 2,32,25. R. Gorr. 2,34,31. यावत्सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति so v. a. *von da, wo die Sonne aufgeht, bis dahin, wo sie untergeht,* Bhâg. P. 9,6,37. 5,16,1. 24,5. 8,21,30. जीव शरदो यावदिच्छसि Kathop. 1,23. यावदिच्छसि रत्नानि हिरण्यं वा तावद्ददामि ते सर्वम् R. 1,53,21. R. Gorr. 2,32,18. 41. यावन्त्स्वलोमसंख्यास्ति Spr. 2481. यो यावन्निक्षुवीतार्थम् *in welchem Betrage* M. 8,59. *wie oft* Bhag. 13,26. पूर्वं यावत्समुद्यतः *in welchem Maasse* Râǵa-Tar. 3,453. यावद्देवदत्तः पचति शोभनम् als Ausruf P. 8,1,37, Sch. Kâç. zu 36. — *b*) *wie lange, während:* यावद्धि नुष्टाका भवामः Çat. Br. 1,8,1,3. यावत्सूर्यो असद्दिवि AV. 6,75,3. 5,19,4. TBr. 3,3, 9,5. यावद्ध्यस्मिं शरीरे प्राणो वसति Kaush. Up. 3,2. M. 3,237. 4,111. R. 1,51,8. 2,42,2. 3,73,4. Spr. 1024. 4877. 4879. Râǵa-Tar. 5,36. यावत्त्वयस्ते जीवेयुः M. 2,235. Bhâg. P. 1,13,47. यावच्च मे धरिष्यन्ति प्राणाः MBh. 3,2222. 16835. R. 1,2,39. 60,28. यावत्तु निर्यतस्तस्य रजोऽग्रममदृश्यत 2,42,1. Kathâs. 3,63. 4,54. Râǵa-Tar. 5,253. 340. यावदेव तु संसुप्ताः R. 2,46,21. यावदध्ययनम् M. 2,241. यावल्लोचनगोचरा Spr. 1028. 2182. 2483. 4878. 4882. यावदिन्द्राश्चतुर्दश (so ist zu lesen) Mârk. P. 100, 44. यावद्दक्षिणायनमहानि वर्धन्ते यावदुदगयनं रात्रयः Bhâg. P. 5,21,6. 7,12,10. — *c*) *mittlerweile, inzwischen;* mit der 1ten Person praes. als Ankündigung eines Vorhabens Bhag. 1,22. MBh. 3,12213. 4,1641. 5, 7016. नियुङ्क्ष्व माम् — बलं दर्पं च यावद्धि नाशयामि दुरात्मनः so v. a. *ich gedenke zu Nichte zu machen* R. Gorr. 1,55,16. 5,9,30. Çâk. 8,10. 16. 22. 9,4. 31,6. 32,13. 33,1. 59,5. 61,1. Vikr. 3,12. 38,5. 78,11. Kathâs. 5,84. 33,36. 124,98. potent. st. praes. Çâk. 18,22 (v. l. praes.). 104,22, v. l. Bei der 3ten Person steht der imper.: अनुगृह्णीष्व रूपान् — वार्ष्णेयो यावदेतं मे पद्मानयतामिह MBh. 3,2811. Kathâs. 39,61. — *d*) *sobald als, im Augenblick als;* mit praes. Çâk. 139. Megh. 103. Kathâs. 18,363. 39,119. 53,126. Pańkat. 48,24. 173,18. I,123. Hit. 12,1. 43,21. 85,9. Vet. in LA. (III) 5,15. 18,4. 20,8. 28,8. Çuk. ebend. 36,4. mit potent. Spr. 2908. mit perf. Kathâs. 18,149. 172. 182. mit aor. 13,105. ohne verbum finitum: यावत्किंचिद्गता तावन्निरुद्धा सा पुरोधसा 4,36. 52,46. Pańkat. 63,1. जाता नोत्कलिका स्तनौ न लुलितौ u. s. w. सहसा यावच्छठेनामुना । दृष्टेनैव मनो हृतम् — मे *es war noch keine Sehnsucht da, der Busen wogte noch nicht, als jener Bösewicht, nur erblickt, mir plötzlich schon das Herz entwandte,* Spr. 962. यावत् mit यदा *sobald als:* यावत्क्षिमानमिदं भस्म गङ्गया लोककान्तया । यदैषां भविता तात स्वर्गमेष्यन्ति वै तदा ॥ R. Gorr. 1,43,20. — *e*) *bis dass;* mit praes. st. fut. P. 3,3,4. Vop. 25,3. R. 2,32,16. 3,26,4. 49,13. Megh. 35. Çâk. 8,13. 101,11. Vikr. 13. Spr. 1358. 4123. Kathâs. 16,22. 38. 18,167. Pańkat. 76,22. Vet. in LA. (III) 8,3. mit potent.: यावद्भूयेनेतो भूय इच्छाम इति Lâṭj. 9,11,2. M. 8,27. 11,233. R. Gorr. 2,8,58. Spr. 4140. Daçak. in Benf. Chr. 195,1. mit

fut.: अनाहारो u. s. w. शये पुरस्ताच्छालायां यावन्मां प्रतियास्यति R. 2,111,14. DAÇAK. in BENF. Chr. 181,16. यावदेव नलः क्वचित् । इतो नेता हि MBH. 3,2613. mit aor.: तावच्चेटिकाभिर्विमोहितः । यावत्तृतीये प्रहरे दण्डाधिपतिरागमत् ॥ KATHÂS. 4,58. 18,122. mit imperf.: यावत्तत्रागतो ऽभवत् 4,61. mit Ergänzung der copula: उच्छेषणं तु तत्तिष्ठेद्यावद्विप्रा विसर्जिताः M. 3,265. JÂGÑ. 2,141. R. 1,64,19. 3,55,19. VARÂH. BṚH. S. 53,25. KATHÂS. 7,28. यावत्कालस्य पर्ययः MBH. 1,5729. Spr. 2764. यावच्चन्द्ररोहिणीयोगः VIKR. 38,12. यावज्जीवितसंक्षयः MÂRK. P. 110,26. BHÂG. P. 11,24,19. स्थीयतामत्र यावदागमनं मम MBH. 1,2876. R. 2,32,24. R. GORR. 2,26,26. 31,13. 5,3,74. MÂRK. P. 22,14. यावत्तुरगदर्शनम् R. 1,40,14 (41,15. 17 GORR.). 49,18 (50,17 GORR.). यावद्व्रतसमापनम् BHÂG. P. 8,16,45. दक्षिणांश्चापि पाञ्चालान्यावच्चर्मण्वती नदी (चर्मण्वतीं नदीम्?) MBH. 1,5513; vgl. *h*) β). — *f*) यावत् mit einer Negation *so lange nicht, bevor, ehe, bis dass;* mit praes.: शूद्रेण हि समस्तावद्यावद्वेदे न जायते M. 2,172. 5,126. 11,153. भवतो ऽश्रमाय गच्छाव यावन्न पिता ममेति MBH. 3,10076. 5,7486. न हन्मि (निहन्मि ed. Calc.) फाल्गुनं यावत्तावत्पादौ न धावये 8,304. 13,4558. R. 1,63,15. R. GORR. 1,41,29. 67,8. 3,1,28. 30. 68,37. KUMÂRAS. 4,20. VIKR. 61,10. ÇÂK. 139, v. l. Spr. 533. 1026. fg. 1030. 1861. 1916. 2485. 2601. 3168. KATHÂS. 15,42. 52,206. 53,4. 6. MÂRK. P. 109,37. PAÑKAT. 21,3. 61,3. HIT. 15,10. 43,12. VET. in LA. (III) 21,15. पुराधर्मो वर्तते नेह यावत्तावद्गच्छामः सुरलोकं चिराय MBH. 13,4556. mit potent. AV. 12,4,27. Spr. 2479. BHÂG. P. 3,18,25. तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्तत्स्यादनिर्दशम् M. 5,79. mit fut. KHÂND. UP. 6,14,2. MBH. 3,2623. 13,4558. R. 2,99,5. fgg. R. GORR. 2,16,19. mit imperf. RÂGA-TAR. 4,579. ohne verbum finitum: यावन्न कृतमूलास्ते — तावत्प्रहरणीयास्ते MBH. 1,7426. यावत्परधनैषिणः ॥ न दूरं ते गताः 7763. 3,15340. R. 2,99,8. KATHÂS. 10,119. यावन्न शून्या दिशः Spr. 634. 2482. यावद्भयमनागतम् 1029. 2484. यावन्न bedeutet auch *falls nicht:* यावत्त्वं नास्वादयसि प्रथमं भूपते रक्तं तावन्मम देवगुरुकृतः शपथः स्यात् PAÑKAT. 62,1. *ob nicht:* जिज्ञासनाय रक्तं ते मया शाकरसीकृतम् । यावन्नाद्याप्यहंकारः परित्यक्तस्त्वया मुने ॥ KATHÂS. 5,136. — *g*) न परम् und न केवलम् — यावत् so v. a. *nicht nur — sondern sogar:* प्रजानां न परं चक्रे यः पितेवानुपालनम् । यावद्गुरुरिव ज्ञानमपि स्वयमादिशत् ॥ KATHÂS. 27,14. ततश्चिकित्स्यमानः सन्व्रणस्तस्य दिने दिने । न परं न रुरोहैव यावन्नाडीत्वमाययौ 28,160. 29,123. fg. त्यक्त्वास्मान्किं त्वया नीतं न परं बत मानसम् । यावच्छरीरम् (von BROCKHAUS als comp. gefasst) अप्येतां निःस्नेहपरुषां दशाम् ॥ 86,59. न केवलम् । प्रबुद्धा नैक्षतानङ्गप्रभां यावत्स्वमप्यसिम् ॥ 52,217. 53,125. PAÑKAT. 31,17. — *h*) praep. α) *während,* mit acc.: सप्ताष्टदिवसं यावत् R. 1,10,20 (21 GORR., सप्ताष्टदिवसात्राज्ञा ed. Bomb.). वर्षं यावत् *ein Jahr lang* Spr. 1441. सकलां रात्रिं यावत् PAÑKAT. 117,8. मासमेकं यावत् HIT. 42,2. यावद्वर्षाणि द्वादश SUÇR. 1,167,14. — β) *bis* (räumlich und zeitlich), mit acc.: धरणीं बिभिदुः क्रुद्धाः सर्वे यावद्रसातलम् R. GORR. 1,41,23. यावदग्रनखं लिप्ता चन्दनेन सुगन्धिना 2,8,48 (9,43 SCHL.). रविरस्यानुयातव्यो यावदस्तमथोदयम् 4,60,8. स्वगृहं यावत् KATHÂS. 54,47. सर्पकोटरं यावत् PAÑKAT. 98,22. HIT. 111,18. नदीं यावच्छरावतीम् H. 952. दक्षिणां वेदिश्रोणिं यावत् Schol. zu KÂTJ. ÇR. 5,4,9. पादाडरो यावत् VARÂH. BṚH. S. 58,46. समयः परिपाल्यो नो यावद्वर्षं त्रयोदशम् MBH. 3,15311. यावच्छुक्लत्रयोदशीम् BHÂG. P. 8,16,48. यावत्स्तोत्रसमाप्तिम् Schol. zu KÂTJ. ÇR. 9,7,4. अवभृथकालं यावत् 6,8,3. सूर्योदयं यावत् R. 2,65,11. परिणयनं यावत् DÂJ. 166,14. आगमनं यावत् KATHÂS. 93,71. संध्याकालं यावत् PAÑKAT. 87,20. जयपराजयं यावत् DHÛRTAS. 92,3. Statt des acc. der nom. mit folgendem इतिः प्रकृत्या इत्यधिकारो ऽन्त इति यावत् Schol. zu P. 6,2,137. 3,3,19. SIDDH. K. zu 4,1,82. अत ऊर्ध्वमीषत्परिहाणिर्यावत्सप्ततिरिति *allmähliche Abnahme bis man siebenzig zählt* SUÇR. 1,129,6. त्रिंशदिति यावत् VARÂH. BṚH. S. 50,19. fg. पञ्च यावदिति 53,10. अद्य यावत् *bis heute* HIT. 20,19. ततः प्रभृति सर्गाश्च यावद्विंशत्यगापताम् *bis zwanzig, bis zum zwanzigsten* (adv. comp.) R. 7,94,16; vgl. oben u. *e*) am Ende. यावदा mit abl. dass.: यावदा स्थैर्यसंभवात् SUÇR. 1,18,10. यावत् allein mit abl.: यावद्गोस्तनपानाच्च यावच्छायोपसेवनात् । जन्तवः कर्मणा वृत्तिमाप्नुवन्ति युधिष्ठिर ॥ MBH. 3,1205. — 3) यावता (instr.) *wie weit, wie lange:* यावता (= यदा Comm.) चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते R. 2,54,29. यावता जीवेत BHÂG. P. 1,2,10. 5,22,5. 6. *bis dass:* यावता दश पूर्येरन् LÂṬJ. 9,2,4. mit einer Negation *so lange nicht, bevor:* नागमद्यावता गुरुः BHÂG. P. 9,13,3. यावता नागतो गतः 5,23. तावतैव कुलवृद्धिर्यावता पाणिग्रहणं न भविष्यति Z. d. d. m. G. 14,570,19. यावता *sobald als, in dem Augenblick als:* यावता राजा द्वारमुद्घाट्य पश्यति तावता u. s. w. 571,23. यावता सर्वे ऽपि तं लात्वा कियत्तं मार्गं गतास्तावत् Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,27. — 4) यावति (loc.) *wie weit* ÇAT. BR. 8,6,2,8. *wie lange:* यावति तत्र सूर्यो गच्छेत् TBR. 1,5,2,1. — Vgl. तावत्.

यावन्मात्र (यावत् + मात्रा) adj. (f. आ) 1) *welches Maass habend, wie gross, wie weit sich erstreckend:* यावन्मात्रमुल्बणं तावद्ब्रूयादृचं वार्धर्चं वा u. s. w. ÇÂÑKH. BR. 26,5 bei MÜLLER, SL. 406. पुरे तावन्तमेवास्य तनोति रविरातपम् । दीर्घिकाकमलोन्मेषे यावन्मात्रेण साध्यते ॥ KUMÂRAS. 2,33. — 2) *mässig, unbedeutend, winzig;* °मात्रम् adv. *ein wenig, einigermaassen:* यावन्मात्रेण च मया सहायेन MBH. 7,7274. यावन्मात्रापि सत्क्रिया Spr. 3423. यावन्मात्रमिवैवावद्येत् ÇAT. BR. 1,7,2,9. तस्य देवा यावन्मात्रमिव गन्धस्यापजघ्नुः 4,1,3,8. यावन्मात्र इवान्नस्य रसः सर्वमन्नमवति 10,3,5,12. नक्तं यावन्मात्रमिवैवापक्रम्य बिभेति AIT. BR. 4,5. यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्यो३ वसते ṚV. 10,88,19.

यावयत्सख (यावयत्, partic. praes. vom caus. von 1. यु, + सखि) m. *ein abwendender* d. h. *vertheidigender, schützender Gefährte:* ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सखः ṚV. 10,26,5.

यावयद्द्वेषस् (यावयत् + द्वे°) adj. *Feinde fernhaltend* ṚV. 1,113,12. 4,52,4.

यावशूक m. = यवक्षार RATNAM. im ÇKDR. SUÇR. 2,7,12. ÇÂRÑG. SAṀH. 2,2,63. °ज SUÇR. 1,227,13. 2,127,7. VÂGBH. 6,151.

यावस (von यवस) UṆÂDIS. 3,119. m. = तृणसंहति UGGVAL. — यावसानि HIT. III,53 unnöthige Aenderung LASSEN's; vgl. Spr. 5028.

यावास und यावास adj. von यवास (विकारे, अवयवे) gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141.

याव्य partic. fut. pass. von यु P. 3,1,126. VOP. 26,7 (von यु, यौति). = याप्य *unbedeutend* H. 1442, Sch.

याशु n. nach SÂJ. *Umarmung, coitus;* nach den Zusammensetzungen eher *die beim coitus stattfindende Ergiessung* (auch des Weibes): ददाति मह्यं यादुरी याशूनां भोज्या शता ṚV. 1,126,6. — Vgl. अ°, बुद्बुद°,

यु°. Könnte zu यम् gehören.

याशोधरेय (von यशोधरा) m. metron. des Râhula Trik. 1,1,12, wo fälschlich यशो° gedruckt ist; ÇKDr. und Wilson haben die richtige Form.

याशोभद्र (von यशोभद्र) m. Bez. *des 4ten Tages im* Karmamâsa Ind. St. 10, 296.

याष्टीकं (von यष्टि) adj. *mit einem Stocke —, mit einer Keule bewaffnet* P. 4,4,59. Vop. 7,15. AK. 2,8,2,38. H. 771. Râǵa-Tar. 6, 203. 215. 217. 237. f. ई Pat. zu P. 4,1,15.

यास 1) m. = यवास *Alhagi Maurorum Tournef.* AK. 2,4,3,10. Ratnam. 119. Vgl. धन्व°. — 2) f. आ *eine Drosselart, Turdus Salica* Çabdam. im ÇKDr.

यास्कं (von यस्क) m. patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. N. pr. eines Lehrers, Verfassers des Nirukta, Çat. Br. 14,5,5,21. 7,3,27. Ṛv. Prât. 17,25. MBh. 12,13230. Ind. St. 1,17. 103. 3, 396. 8, 243. Verz. d. Oxf. H. 113,b,3. 162,b,21. pl. यास्काः Jaska's *Nachkommen* (fehlerhaft für यस्काः nach P. 2,4,63) Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60, 26. Sañsk. K. 183, b, 8. f. यास्की und pl. यास्कद्याः P. 2,4,63, Sch. यास्काः *die Schüler* Jaska's ebend.

यास्कायनि m. patron. von यास्क P. 4,1,91, Sch.

यास्कायनीय m. pl. *die Schüler* Jâskâjani's ebend.

यास्कीय m. pl. desgl. ebend.

यित्य m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,274.

यियतु (vom desid. von 1. यज्) adj. *zu opfern im Begriff stehend* MBh. 2,533. 7,2172. 12,4483. 13,3326. Ragh. 13,3.

यियविषु (vom desid. von 2. यु) adj. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *zu bedecken —, zu überschütten im Begriff stehend* Bhaṭṭ. 9,35.

यियासु (vom desid. von 1. या) adj. *zu gehen —, aufzubrechen —, in's Feld zu ziehen im Begriff stehend* MBh. 1,844. 7,697. 8,3386. Kâm. Nîtis. 11,21. Mârk. P. 99,11. Varâh. Bṛh. S. 88,23. 95,49. Jogajâtrâ 1,5. योगयात्राम् Spr. 2310. वितस्तातः Râǵa-Tar. 1,163. यमसादनम् MBh. 1,6276. स्वर्णद्वीपम् Kathâs. 86,75. तपसे वनम् Mârk. P. 36,4. 109,38. 42. 119,15. 129,19. 21. यमलोकाय MBh. 7,3002. ब्रह्मलोकाय 5985. तज्जयाय Kathâs. 54,148. मिथिलां प्रति R. 1,33,15 (34,13 Gorr.). प्रियां प्रति Kathâs. 71,107. भीष्मम् *auf* Bhîshma *loszugehen beabsichtigend* MBh. 6,3761. दृंसैर्यियासुभिः *im Begriff stehend davonzufliegen* Mṛkkh. 76,4. यियासवः प्राणाः Râǵa-Tar. 4,230.

1. यु pronom. Stamm der 2ten Person in den Formen: 1) du. युवम् nom. Ṛv. 1,15,6. 93,5. 112,3. 117,13. 119,10. Çat. Br. 1,6,3,13. युवाम् acc. Ṛv. 1,109,5. 7,83,1. nom. und acc. in der klassischen Sprache; युवभ्याम् Ṛv. 1,108,2. 109,2. 117,25. युवाभ्याम् 109,4. 8,5,3. 26,16 und in der klass. Spr.; युवत् Ṛv. 1,109,1. युवोस् 112,2. 117,13. 119,3. 5. 7,72,2. युवयोस् Çat. Br. 1,6,3,13. 18 und in der klass. Spr.; vgl. युवद्वेवत्य, युवद्रिक्, युवधित, युवयु, युवाकु, युवादत्त, युवानीत, युवायु, युवायुज्, युवावत्. — 2) pl. यूयम् Ṛv. 1,15,2. 86,9. 4,41,5. त्वं मे गुरुः = यूयं मे गुरवः Kâç. zu P. 1, 2, 59. युष्मान् Ṛv. 8,7,6. युष्मास् (falscher) acc. pl. f. VS. 11,47, wofür युष्मान् TS.; युष्माभिस्, युष्मभ्यम् Ṛv. 1,88,3. युष्मत् 7,60,10. 95,5. युष्मत्तस् R. 7,8,7. युष्माकम् Ṛv. 1,39,2. 110,7. युष्माकमेकः Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 11,5,1,12. öfters mit Elision des Endconsonanten: युष्माकोती Ṛv. 7,59,9. युष्माकैकः Çat. Br. 3,2,1,39. 5, 2,2,15. युष्मासु, युष्मे loc. (angeblich nom. P. 7,1,39, Sch.) Ṛv. 8,47,8. 57,19.; vgl. युष्मदीय, युष्मयत्, युष्माक, युष्मादत्त, युष्मानीत, युष्मावत्, युष्मेषित, युष्मोत; am Anf. eines comp. युष्मत् in der klass. Sprache gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. AK. 3,6,8,46.

2. यु, यौति Dhâtup. 24,23 (मिश्रणे und अमिश्रणे; vgl. 3. यु). P. 7,3, 89, Sch. युनाति, युनोते Dhâtup. 31,9 (बन्धने). erhält den Bindevocal इ Kâr. 1. 9 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Vop. 8,60. युयविथ P. 6,4,126, Sch. यविता Vop. 9,11. युत्वा P. 7,2,11, Sch. In der klassischen Sprache haben wir keine Form des verbi finiti angetroffen; in der älteren Sprache erscheinen folgende Formen: यौमि, युवते, युवासे, युवस्व, अयुवत, युते, युवते 3 pl., युताम् 3. sg., (नि)युयोतम्, युयवत्, युयुवे, युविता fut.; (नि)यूय, partic. युत. 1) *anziehen, anspannen; anbinden, festhalten:* योक्त्रे युते TBr. 3,3,3,3. युक्ष्वा हि त्वं रथासहा युवस्व पोष्या वसो Ṛv. 8,26,20. वायो शतं हरीणां युवस्व पोष्याणाम् 4,48,5. कदा धियो न नियुतो युवासे 6,35,3. वडिशयुतं पिशितम् *befestigt an* Spr. 36. — 2) *an sich ziehen, in Besitz nehmen, in die Gewalt bekommen:* योषा वा इयं वाग्यदेनं न युविता *weil sie ihn nicht an sich ziehen* — d. h. *nicht an sich herankommen lassen will* Çat. Br. 3,2,1,22. स यमो देवानामिन्द्रियं वीर्यमयुवत TS. 2,1,4,3. 2,3,2. 6,6,3,3. यद्वै ज्ञात इदं सर्वमयुवत तस्माद्यविष्ठः Çat. Br. 7,5,2,38. सर्वाः सपत्नानामोषधीर्युते 3,6,1,10. 1,7,2,25. fg. 8,4,2,11. 13,6,1,9. संवत्सरमेव भ्रातृव्याद्युवते Kâth. 36,2. तं त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव *festhalten* AV. 2,2,1. चन्द्रमा युतामगतस्य पन्थाम् K. *zwinge ihn auf den Weg der Nimmerwiederkehr* 11,10,16. — 3) *Jmd in die Gewalt geben:* चन्द्रं रयिं चन्द्रं चन्द्राभिर्गृणते युवस्व Ṛv. 6,6,7. — 4) *verbinden, vermengen:* यूयं यौतेः Nir. 4,24. युत *hinzugefügt* Sûrjas. 8,1. *verbunden, vereinigt* Trik. 3,2,1. H. an. 2,188. Med. t. 48. पाणिर्निकुब्जः प्रसृतस्तौ युतावञ्जलिः AK. 2,6,2,36. H. 596. °जानु 456. यौतकं युतयोर्देयम् *ehelich Verbundene* 520. *in Conjunction stehend mit:* रोहिणीयुतः शशी Varâh. Bṛh. S. 24,12. 36. सूर्यः सौम्ययुतो वोदितो ऽपि वा 40,13. 42,14. 69,4. राकया वानुमत्या वा मासर्क्षाणि युतान्यपि Bhâg. P. 7,14,22. *verbunden mit, vermehrt um* (d. i. *wozu hinzugefügt worden ist*), *versehen mit, im Besitz seiend von* Sûrjas. 1,67. युता मासैर्मधुप्रज्ञादिभिर्गतैः 48. लब्ध° 2,59. 3,23. 9,5. 10,2. Varâh. Bṛh. S. 8,20. 53,6. 10. 13. चतुर्युता विंशतिः *vierundzwanzig* 58,17. 23. 81,32. षड्द्विकपञ्चद्वियुतः शककालस्तस्य राज्यस्य so v. a. *2526 Jahre vor der Çaka-Aera* 13,3 (= Râǵa-Tar. 1,56). Bhâshâp. 31. दिव्यै रत्नमयैर्वृतैः फलपुष्पप्रदैर्युता (सभा) *versehen mit* MBh. 2,354. 3,2402. तेजसा यशसा लक्ष्म्या स्थित्या च परया युता (वैदर्भी) 2410. 12004. हृष्टपुष्टजनैर्युता (नगरी) R. 1,5,14. Bhaṭṭ. 1,7. स्वपत्न्या युतः सर्वैः स ददृशे वणिक् so v. a. *der Kaufmann mit seiner Frau* Kathâs. 13,176. भ्रातृभ्यां हनुमद्युतः *mit seinen beiden Brüdern und mit* Han. Bhâg. P. 9,10,32. पयः शकृता युतम् Varâh. Bṛh. S. 50,25. 51,5. गुणैरपरैर्युतम् (सलिलम्) 54,122. 56,20. 27. मुद्ा (könnte auch मुद् + आयुत sein) MBh. 5,6061. 7226. स्नायु° M. 6,76. मधु° Suçr. 2,162,13. श्री° R. Einl. राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि 1,1,90. गोयुतानूप 2,49,10. मालां पद्मोत्पलयुताम् *zusammengefügt aus, bestehend aus* 3, 52,26. फलानि घृतकाण्डयुतानि *mit* LA. (III) 59,4. शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतम् Spr. 2833. AK. 2,6,2,34. Varâh. Bṛh. S. 12,16. 20,6. 30,21. 30. 46,32. 48,31. 53,68. 125. आज्ययुतहस्त *beschmiert mit* 55,19. स्वे-

दृयुताङ्ग 78,17. भोगयुत = भोगिन् 68,18. त्याग° = त्यागिन् 111. बल° = बलिन् 69,1. 81,9. 12. 13,10. 15,24. 54,106. वाक्ययुत (यान) 46,60. पर्याणादियुतो वाजी 93,6. वसत्तकयुता देवी दृग्धा *zugleich mit* Kathâs. 16,14. 25,224. 123,262. Çuk. in LA. (III) 33,13. नानारत्न° *im Besitz seiend von* Vet. ebend. 1,17. षट्कर्मा यागादिभिर्युतः so v. a. *der Opfer u. s. w. vollbringt* AK. 2,7,4. (नृणां धर्मम्) वर्णाश्रमाचारयुतम् *in Verbindung stehend mit, betreffend* Bhâg. P. 7,11,2. रामसंदर्शनयुतां सीते बुद्धिं निवर्तय R. 3,61,35. — 3) यौति = अर्चतिकर्मन् Naigh. 3,14; vgl. oben u. 2) AV. 2,2,1. — Vgl. अयुत, गोयुत.

— caus. यावयति, अयीयवत् P. 7,4,80, Sch.

— desid. यियविषति und युयूषति P. 7,2,49. 4,80, Sch. Vop. 19,8. *an sich ziehen —, festhalten wollen:* युयूषतः सवयसा तदिद्वपुः R̥V. 1,144,3. *zügeln:* अश्वा वाजं न गध्यं युयूषन् 4,16,11. — Vgl. यियविषु.

— desid. vom caus. यियावयिषति P. 7,4,80, Sch.

— intens. योयोति P. 7,3,89, Sch. योयुवति 6,4,87, Sch.

— व्यति *unter einander mengen, vermengen:* अन्योऽन्यं स्म व्यतियुतः (2. du.) शब्दान् शब्दैस्तु भीषणान् Bhaṭṭ. 8,6.

— अभि, partic. °युत *enthalten in* (acc.), *eingefasst in:* स्त्रीयोनिमभियुतो गर्भः Nir. 2,19.

— आ 1) *an sich ziehen, erfassen* R̥V. 2,37,2. स मध्व आ युवते 9,77,2. आ स्वमद्म युवमानः 1,58,2. आ जाया युवते पतिम् *zieht in ihre Arme* 105,2. आ रश्मीन्देव युवसे स्वश्वः *die Zügel* TBr. 2,7,16,2. वयांसि समासं पत्रावायुवानानि पतन्ति *indem sie die Flügel anziehen* Çat. Br. 4,1,2,26. आयुवाना इव हि प्लवन्ते 9,4,1,8. युक्तः सर्वैः पद्भिः सममायुते *das Zugthier zieht mit allen Füssen zugleich an* 13,2,7,6. 11,5,2,8. — 2) *sich einer Sache bemächtigen, einnehmen:* विश्वस्य यो मन आयुयुवे R̥V. 1,138,1. — 3) *Jmd Etwas verschaffen:* रायस्पोषं त्वमस्मभ्यं गवां कुल्मिं जीवस आयुवस्व TS. 2,4,5,2. — 4) आयुत *am Ende eines comp. verbunden —, versehen mit:* सिंहशार्दूलमातङ्गवराहर्क्षमृगायुत (वन) MBh. 3,2439. 2464. पद्मसौगन्धिकायुत 12041. 14,2548. R. 1,50,5. 53,5. 2,31,3. 55,33. 59,31. 94,23. 96,3. R. Gorr. 2,57,5. 3,79,40. 5,14,43. Bhâg. P. 11,14,41. Ueberall am Ende eines Çloka durch das Metrum bedingt für das einfache युत. — Vgl. आयवन (*Geräth zum Mengen*). — intens. etwa *sich zusammenziehen, sich hineinschmiegen:* आयोयुवानो वृषभस्य नीळे R̥V. 4,1,11.

— अभ्या (mit Flügelschlag) *zustreben auf:* पादाभ्यामेव तच्छ्रियं शिरोऽभ्यायत्ति, पक्षाभ्यासे तच्छ्रियं शिरोऽभ्यायुवते Ait. Br. 4,13.

— उदा *aufstören, aufrühren:* चरुं नेत्रणेन त्रिरुदायौति Kauç. 2. Gobh. 1,7,7. 4,1,5. 2,11.

— समा, partic. °युत *zusammengebracht, — getrieben* Nir. 4,24. मालां पद्मोत्पलसमायुताम् *zusammengefügt —, bestehend aus* MBh. 4,1778. तक्रं व्योषक्षारसमायुतम् *verbunden mit* Suçr. 1,179,14. शरीरं श्रीसमायुतम् MBh. 13,7445.

— उद् *in die Höhe ziehen:* उत्पूषणं युवामहे ऽभीशूँरिव सारथिः R̥V. 6,57,6. ऊर्ध्वमुद्यौति (प्रस्तरम्) TS. 2,6,5,5. यदि ते मन उद्युतम् *verrückt* AV. 6,111,2. — Vgl. उद्याव.

— नि 1) *anbinden, festmachen:* रशनया नियूय R̥V. 10,70,10. TBr. 3,6,11,2. तदद्भ्यं नियुतं तस्तम्भद्द्याम् R̥V. 1,121,3. नि यद्युवेथे नियुतः 180,6. 7,91,5. — 2) *Jmd Etwas in die Gewalt geben, verschaffen:* रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व R̥V. 7,5,9. 40,2. 92,3. भोजनं न्यत्रये युयोतम् 68,5. तस्मै शत्रून्त्स्वष्ट्रान्युवति क्षितिं वृत्रम् 10,42,5. भ्रातृव्यस्य पशून्नियुवते *er bringt in seine Gewalt* TS. 2,6,2,3. विप्रो न द्युम्ना नि युवे जनानाम् R̥V. 8,19,33. — Vgl. नियव, नियुत् (u. 1) ist zu setzen: *Verleihung, Gewährung;* 3) die Bed. *Zugthier* ergiebt sich unmittelbar), नियुत. — intens. *anbinden:* न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे R̥V. 10,93,9.

— परि, partic. °युत *rings umfassend:* योनिः परियुतो भवति Nir. 2,8.

— प्र *umrühren, mengen:* पार्श्वेन वसाहोमं प्रयौति TS. 6,3,11,1. auch Çat. Br. 3,8,2,24, wo damit in Verbindung gesetzt ist प्रयुतं द्वेषः VS. 6,18; etwa durch *verstört* wiederzugeben. Hierher das adj. प्रयुत् in प्रयुतो न पातारः (irrig betont) *Menger* oder *Verstörer* (des Soma), *nicht Trinker*, von den Steinen gesagt. प्रयुवतो गच्छति *mengend* Nir. 9,26. युवा प्रयौति कर्माणि *vermengt, stört* 4,19. प्रयुवतीमिव शरमयीमिषुम् *zerstörend* 10,29. — Vgl. प्रयुत.

— प्रतिप्र s. प्रतिप्रयवण.

— प्रति *anbinden, hemmen:* प्राणानेवास्य प्रतीचः प्रतियौति TS. 3,4,8,5. प्रतियुतो वरुणस्य पाशः 6,6,3,5.

— वि s. u. 3. यु mit वि.

— प्रवि partic. °युत *vollgestopft:* यमुना प्रयुवती गच्छतीति वा प्रवियुतं (= स्तिमितमिव तरंगैः Durga) गच्छतीति वा Nir. 9,26.

— सम् 1) med. *an sich bringen, in sich aufnehmen; aufzehren:* सं यो वना युवते शुचिदन् R̥V. 7,4,2. सं यो वना युवते भस्मना दता 10,115,2. 191,1. अपो गा वज्रिन्युवसे समिन्दून् 6,47,14. — 2) *Etwas mit Jmd verbinden* so v. a. *mittheilen:* सं यदेषो युवते विश्वमाभिः R̥V. 5,32,10. — 3) *verbinden, vermengen* VS. 1,22. मृदम् Çat. Br. 6,5,1,3. TS. 2,4,9,2. 5,1,9,5. Kâtj. Çr. 2,5,14. न च कां च न काञ्चनसन्नचितिं न कपिः शिखिना शिखिना समयौत् *mit Feuer in Verbindung bringen* so v. a. *in Flammen setzen* Bhaṭṭ. 10,5. मुदा संयुह्वि काकुत्स्थम् so v. a. *in Freude versetzen* 20,16. संयुत *gebunden:* सत्यपाशेन R. 2,34,30. अश्वं रथरश्मिसंयुतम् Ragh. 3,42. नावः सुसंयुताः *gut zusammengefügt, — gezimmert* R. Gorr. 2,97,17 (सुसंहताः 89,12 Schl.). असंयुत *nicht zusammengefügt, — zusammengesetzt* Bhâg. P. 3,11,1. संयुत und अ° *verbunden* und *unverbunden* (Hände) Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,24. fgg. 201,*b*,30. 31. 36. 202,*a*,1. 15. एकत्र संयुतौ Varâh. Bṛh. S. 54,76. परस्परं संयुतौ 79,16. किमस्मान्संयुतदोषान्तरेण क्षिणुथ (v. l. संभृत°) *gehäuft, allerhand* Çâk. 69,15. मधुना संयुतं यवम् *verbunden mit* AV. 6,30,1. Gobh. 4,7,21. सत्त्वेन Çârṅg. Saṁh. 1,3,10. लिङ्गदेहेन Bâlab. 16. षष्टिः षड्भिश्च संयुता *sechsundsechzig* Râga-Tar. 1,54. कामो धर्मो वार्थेन संयुतः Bhâg. P. 4,8,64. रसेनान्नेन पेयेन लेह्यचोष्येण संयुतम्। अन्नानां निचयं सर्वं सृजस्व *bestehend aus* R. 1,52,24. यावकं (पावकं die neuere Ausg.) च बलिं कुर्याद्दधिना (दध्ना च die neuere Ausg.) सह संयुतम् Hariv. 7853. ग्रामे चाण्डालसंयुते Kauç. 141. देशे पाण्डवसंयुते MBh. 4,938. Spr. 4118. मृत्युसंयुत TS. 1,5,9,4. तपोनियमसंयुताः (दिवौकसः) MBh. 1,1108. 5,7479. शमसंयुता (गौतमी) 13,17. मुखवैवर्ण्य° Spr. 372. प्रतिष्ठां भाग्यसंयुताम् 3965. Ragh. 9,54. वित्त° Varâh. Bṛh. S. 15,21. 21,31. 24,36. 55,20. 68,112. 77,16. 31. 86,74. Kathâs. 44,163. Bhâg. P. 1,1,3. 2,1,25. 3,33,17. 4,20,13. विद्याविक्रम° Râga-Tar. 4,530. Brahma-P. in LA. (III) 49,14. अशीतिसंयुतं शतम् *hundert*

und achtzig VARÂH. BṚH. S. 32,31. 7,13. 53,13. 54,85. SÛRJAS. 1,52. 2, 58. 3,19. प्रभ° *in Conjunction stehend mit* VARÂH. BṚH. S. 21,31. 105,6. मत्त्वमिन्द्राभिष्टवसंयुतम् so v. a. *enthaltend* R. GORR. 1,64,19. प्रैष्य° (नामन्) so v. a. *Bezug habend auf* M. 2,32. मत्त्वं षाड्गुण्यसंयुतम् 7,58. क्रोधमात्मनि संयुतम् (संश्रितम् ed. SCHL.) so v. a. *gerichtet gegen* R. GORR. 2,9,7. संयुत SÂV. 5,33 fehlerhaft für संयत, wie MBH. 3,16781 gelesen wird. — Vgl. संयाव. — desid. s. संयुयूषु.

3. यु, युयोति, angeblich युयुधि neben युयोधि P. 3,4,88, Sch. (वि)युयोत्, युयवत्, युयुवत्, युयवन्, (वि)युव, युवते, युवत्त, (वि)यवत्त, युयात्, अयावि, यावीस्, यूषम्, यौषत्, योषति, योषुस्, योष्टम्, योस् 2. sg.; infin. यौतवे, यौतवै, यैतोस्. 1) *fernhalten, trennen von; bewahren vor* (abl.); *verwehren, vorenthalten; abwehren* (mit acc.): युयोध्यस्मद्द्वेषांसि ṚV. 2,6,4. 29,2. युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः 189,1. युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः 3,54,15. द्वेषांसि युयुतं सूर्यादधि 6,59,8. 7,34,13. 56,9. 71,1. 2. 8,18,5. 8. युयोतना नो अंहसः 10. 11. 31,16. 60,15. न तमग्ने अरातयो मर्तं युवन्त रायः 4. यस्य नू चिदेव ईशे योतोः 6,18,11. विश्वा अभीती रपसा युयोधि 2,33,3. ÇAT. BR. 6,8,1,9. med.: मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः ṚV. 2,33,1. माकिष्टे रातिमेवो युयोत 8,60,8. अयाव्यन्याघा द्वेषांसि VS. 28,15; vgl. TBR. 3,6,13, 1. NIR. 9,42. अरया यूयते 10,39. युत *getrennt*, = पृथक् H. an. 2,188. = पृथग्भूत (so ist zu lesen st. ऽपृ°) MED. t. 48. KAN. 7,2,13. तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येकशीर्षाणो युता (könnte auch zu 2. यु gehören) दश AV. 13,4,6. Dieses ist das यु अमिश्रणे DHÂTUP. 24,23. — 2) *sich fernhalten, getrennt bleiben, — werden*: गमत्स शिप्री न स योषत् ṚV. 8,1,27. 33,9. मा ते युयोम संदृशः AV. 7,68,3. स दत्तान्मा यूषम् 6,123,4. न राष्ट्रान्न तस्मै विशो युवते यो ऽयुतं ददाति ÇÂÑKH. ÇR. 15,16,17.

— caus. यवयति und यावयति (vgl. AV. PRÂT. 4,92) *trennen, fernhalten* u. s. w.: संस्थावाना यवयसि त्वमेक इत् ṚV. 8,37,4. 1,5,10. यावया दिद्युमेभ्यः 6,46,9. 12. उत मा स्रामाद्यवयन्त्विन्दवः 8,48,5. 10,102,3. 127, 6. 152,5. ब्रह्मद्विषः सूर्याद्यावयस्व 5,42,9. AV. 1,2,3. 5,22,6. 7,65,1. VS. 5,26. ÇAT. BR. 13,8,3,13. यावयते (जुगुप्सायाम्) DHÂTUP. 33,36.

— intens. *sich zurückziehen, zurückweichen; klaffen*: द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वनादयोयवीद्भियसा वज्र इन्द्र ते ṚV. 1,52,10. नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम्। पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि *aestuantium, recedentium* 8,58,2. न यस्याः पारं ददृशे न योयुवत् *kein Ende —, keine Lücke habend* AV. 19,47,2. — Vgl. यवयावन्.

— अप *beseitigen*: अप स्वसारं सनुतर्युयोति ṚV. 1,92,11. 5,87,8. 8, 11,3. 9. 104,6.

— अव *abtrennen*: अवयुवती NIR. 4,11. — caus. *fernhalten* NIR. 9,42.

— निस् *beseitigen*: निर्युवाणो अशस्तीः ṚV. 4,48,2.

— प्र *beseitigen*: नकिष्टं कर्मणा नशन्न प्र योषत् ṚV. 8,31,17. partic. प्रयुत nach den Comm. *getrennt, zerstreut*; wohl besser *abwesend, zerstreut* so v. a. *achtlos, sorglos* (मनसा प्रयुतः). MAH. zu VS. 11,75 erklärt अप्रयावम् durch अप्रमत्तम् und für अप्रयुत ṚV. 7,100,2 würde *achtsam* passen. Man vgl. ausserdem प्रयुति, अप्रयुत्वन् und युङ् mit प्र. धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् ṚV. 3,57,1. 55,4. अह्निं प्रयुतं शयानम् 5,32,2. — Vgl. प्रयोतर्.

— वि 1) *sich trennen, — scheiden*: न म इन्द्रेण सख्यं वि योषत् ṚV. 2,18,8. मा वि यौष्टम् 10,85,42. AV. 3,30,5. 9,5,27. — 2) *getrennt werden von, beraubt werden, einer Sache* (instr.) *verlustig gehen*: न स राया शशमानो वि योषत् ṚV. 4,2,9. अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूयाः (vgl. P. 3,1, 85, KÂR., Sch.) 7,104,15. 10,61,12. रायस्पोषेण VS. 4,22. गावो वत्सैर्वियुताः ṚV. 5,30,10. स्वजनैर्वियुतः VARÂH. BṚH. S. 104,39. मृगाङ्कदत्तवियुत KATHÂS. 75,18. कान्तामुखश्रीवियुत *privatus* RAGH. 16,20. वियुत *vermindert, wovon abgezogen worden ist* SÛRJAS. 2,58. *nicht in Conjunction stehend mit* — (im comp. vorangehend) VARÂH. BṚH. S. 100,2. Dieses zu युत und संयुत *verbunden* im Gegensatz stehende वियुत könnte eben so gut zu 2. यु gezogen werden. — 3) *ablösen von, bringen um* (instr.): नू चिद्ध्यो नः सख्या वियोषत् ṚV. 4,16,21. मा नो वि यौष्टं सख्या 8,75,1. मा नो वि यौः सख्या विद्धि तस्य नः 2,32,2. माकिर्न एना सख्या वि यौषुः 10,23,7. In sämmtlichen Stellen könnte सख्या mit den Comm. als acc. pl. gefasst werden, jedoch spricht तस्य 2,32,2 für sg. के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिः 5,2,5. वि तं युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकाभिरूतिभिः 1,39,8. — 4) *scheiden, auseinanderbringen*: को दंपती वि यूयोत् ṚV. 10,95,12. *spreiten, zerstreuen*: यथा दात्यनुपूर्वं वियूय (vgl. P. 6,4,58) 10,131,2. न विषूचं वियुयात्प्रस्तरम् TS. 2,6,5,4. *öffnen*: वि कोशं मध्यमं युव ṚV. 9,108,9.

4. यु (von 1. या) adj. *fahrend*: न योरुपब्दिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन। यदग्ने यासि दूत्यम् ṚV. 1,74,7. nach SÂJ. *flüchtig* oder *in's Unglück rennend*: स्वैः ष एवै रिरिषीष्ट युर्जनः 8,18,13, wo wir दुयुर्जनः vermuthen nach 14 und 15. Etwa so v. a. *Zugthier*: द्वा यू ÇAT. BR. 3,7,4,10 entsprechend dem अस्थूरि.

युक्त 1) partic. adj. s. u. 1. युज्. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Raivata HARIV. 433. eines der 7 Weisen unter Manu Bhautja 492. — 3) f. आ *eine best. Pflanze*, vulgo एलानी RATNAM. im ÇKDR.; vgl. युक्तरसा. — 4) n. *a) Gespann* ÇAT. BR. 6,7,4,8. 12,4,1,2. — *b) a measure of four cubits* WILSON nach MED.; fehlerhaft für युत.

युक्तकारिन् (युक्त + का°) adj. *Angemessenes thuend, auf passende Weise zu Werke gehend* KÂM. NÎTIS. 4,21. NÂGÂN. 12,14.

युक्तकृत् adj. dass. BHÂG. P. 3,12,51.

युक्तग्रावन् (युक्त + ग्रा°) adj. *der die* Soma-*Steine zur Hand genommen —, in Thätigkeit gesetzt hat* ṚV. 2,12,6. 3,4,9. 5,37,2. AV. 9,6, 27. TS. 5,3,6,1.

युक्तत्व (von युक्त) n. 1) *das Verwendetsein*: पात्राणाम् KÂTJ. ÇR. 25,13, 45. *das Beschäftigtsein* 4,9,9. 12,1,9. — 2) *Angemessenheit*: अ° VEDÂNTAS. (Allah.) No. 103.

युक्तदण्ड (युक्त + द°) adj. *Strafe anwendend; gerecht strafend* R. 3,70, 12. KÂM. NÎTIS. 14,12. 16. Spr. 474. Davon nom. abstr. °ता RAGH. 4,8.

युक्तमनस् (युक्त + म°) adj. *angespannten Geistes, aufmerksam* ÇAT. BR. 11,5,3,1.

युक्तरथ (युक्त + रथ) 1) m. Bez. *eines reinigenden Klystiers* SUÇR. 2, 198,4. seine Zusammensetzung 227,16. angeblich so genannt, weil es noch zulässig ist, wenn der *Wagen* schon *bespannt* oder das Reitthier gesattelt ist 228,20. — 2) n. Bez. *eines Wunderelixirs* SUÇR. 2,162,16. 18. 163,3.

युक्तरसा (युक्त + रस) f. *eine best. Pflanze*, vulgo एलानी AK. 2,4,5, 5; vgl. युक्ता.

युक्तरूप (युक्त + रूप) adj. *idoneus, geeignet, angemessen, entsprechend, passend;* mit loc. und gen. MBh. 2,2001. 3,15700. 5,909. 6,2565. 5761. Hariv. 15717. R. 5,36,2. Çâk. 12. 49. 55,2. Comm. zu Ṛv. Prât. 4,18. अ° MBh. 4,381. Kumâras. 5,69. युक्तरूपम् adv. MBh. 3,4026.

युक्तवत् adj. *das Zeitwort* युज् *enthaltend* Ait. Br. 4,29. Çat. Br. 7,5,1,33.

युक्तसेन (युक्त + सेना) adj. *dessen Heer zum Ausmarsch bereit ist* Suçr. 1,122,3. Davon adj. °सेनीय *über einen solchen handelnd* 2.

युक्तायस् (युक्त + अ°) n. *a sort of wooden spade or shovel* Wilson nach Çabdârthak.

युक्तारोहिन् (युक्त + आ°) adj. P. 6,2,81.

युक्तार्थ (युक्त + अर्थ) adj. *sinnreich, sinnvoll, vernünftig:* वचन R. Gorr. 2,86,21. 5,81,2. °योग 2,78,18.

युक्ताश्व (युक्त + अश्व) adj. *geschirrte Rosse habend:* प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वम् so v. a. *in geladenem Wagen* Ṛv. 5,41,5.

युक्ति (von 1. युज्) f. 1) *das Einspannen, Answerksetzen* (Gegens. विमुक्ति) Ait. Br. 6,23. Pañkav. Br. 11,1,6. युक्तिं कर् mit loc. eines nom. act. *Anstalten treffen* R. 6,82,37. ध्यानयुक्तिं समाश्रिताः = ध्यानं समा° Verz. d. Oxf. H. 52,b,1. *Anwendung, Gebrauch, Praxis* Suçr. 1, 26,6. 151,20. एवं मल्लो ऽर्थदो ऽप्येकः किं पुनर्युक्तिसंयुतः Kathâs. 17,122. fg. 9,81. 17,121. सर्वौषधियुक्तिज्ञ 41,11. 35,82. fg. 90. fg. *Mittel,* auch *Zaubermittel, ein fein ausgedachtes Mittel, Kunstgriff, Kniff* Kuvalaj. 150,a. अत्यन्तचञ्चलस्येह पारतस्य निबन्धने। कामं विज्ञायते युक्तिर्न स्त्रीचित्तस्य का च न ॥ Spr. 3416. देहान्तरावेशे Kathâs. 45,79. 31,50. Râga-Tar. 3,68. युक्तिं द्वीपान्तराक्रान्त्यै तत्पामन्तर्व्यचिन्तयत् 30. तत्स प्रङ्गभुग्नो देशान्निर्वास्यैताचिराय्यया। तां पुत्र चिन्तयेर्युक्तिं त्वम् Kathâs. 39,56. तेनोपदिष्टया युक्त्या — स चकारात्मनः सद्यो रूपस्य परिवर्तनम् 12,50. युक्तिबलात् 12,59. 31,93. 96,49. 16,1. 29,149. 171. 30,130. 40,47. 43, 141. 57,140. 65,192. 108,170. युक्तिं कर् *ein Mittel erfinden, eine List anwenden* 15,82. 18,243. 56,365. 60,98. 124,39 (wo wohl काम् st. किम् zu lesen ist). तथापि तावद्युक्तिं ते करिष्ये *ein Mittel angeben* 72,333. 123,44. °युक्त्या *vermittelst, vermöge* 30,127. 37,241. 43,253. 45,290. Pañkat. 183,22. कालयुक्त्या ह्यरिर्मित्रं जायते न च सर्वदा Kathâs. 33,129. °युक्तितस् dass. 45,57. 60. 127. °युक्तिभिः dass. 19,81. Râga-Tar. 5,165. im comp. ohne Flexionszeichen: यत्नयुक्तिपरिभ्रान्तौ Kathâs. 43,34. युक्त्या *auf eine feine, schlaue, versteckte Weise, durch —, mit List, vermittelst einer List, unter irgend einem Vorwande* Spr. 1189. Kathâs. 4,120. 5,64. 7,67. 10,51. 105. 142. 11,10. 12,3. 13, 85. 94. 15,119. 18,160. 238. 19,43. 21,52. 24,86. 25,204. 27,38. 28, 134. 30,99. 118. 32,24. 33. 161. 188. 33,112. 175. 34,185. 209. 38, 129. 39,32. 39. 232. 40,67. 107. 49,31. 64. 50,18. 52,357. 53,25. 56, 257. 313. 358. 400. 60,66. 64,103. 65,228. 82,36. 86,26. Râga-Tar. 4, 261. 293. 5,90. 6,86. 139. Dṛshṭântaç. 31 in Haeb. Anth. 221. युक्तितस् dass. Kathâs. 5,109. 33,214. 66,44. युक्तिभिस् dass. 38,37. am Anf. eines comp. ohne Flexionszeichen: युक्त्युपालब्ध 17,32. 56,243. — 2) *das Zutreffen, Passen, Angemessenheit, Richtigkeit:* उत्तरोत्तरयुक्तौ च (उत्तरोत्तरयुक्तीनां ed. Bomb.) वक्ता वाचस्पतिर्यथा R. 2,1,13. यत्र खल्वियं वाचो युक्तिः so v. a. *ein treffendes Wort* Mâlat. 3,11. वाचो युक्तिपटुः AK. 3,1, 35. H. 346. नीति°, द्वंद्व°, नगरी° u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 342,b,21. fgg. जीवन्मुक्ति° Sarvadarçanas. 97,20. भेदस्यायुक्तिः 62,21. युक्त्या *in angemessener Weise, in richtigem Maasse, wie es sich gehört:* एतानि युक्त्या सेवेत प्रसङ्गो ह्यत्र दोषवान् Spr. 1766. Kâm. Nîtis. 1,49. Suçr. 1, 242,19. 2,149,4. समाहितश्चरेद्युक्त्या Spr. 5058. Suçr. 1,102,8. 2,120,10. 275,4. गतासोर्दाहयित्वा मे देहं युक्त्या Kathâs. 93,25. ववौ युक्त्या सुप्रियात्मा सुखं शिवः (अनिलः) R. 2,91,24 (100,21 Gorr.). तदयं युक्त्या मुने देवासुराहवः Kathâs. 48,14. युक्तितस् dass. MBh. 5,6090. Suçr. 1,24,3. 2,131,15. 341,5. — 3) *Argument, Beweisgrund; Argumentation, ratiocinatio* Kap. 1,60. Jâgñ. 2,92. 212. Suçr. 1,11,19. 2,556,4. fgg. Varâh. Bṛh. 4,22. LA. (III) 90,1. °वाक्य Çañk. bei Wind. 94. °कथन Spr. 246. बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः 685. वचनं धर्मयुक्तिसमन्वितम् Pañkat. III, 163. Bhâg. P. 9,8,21. VP. bei Muir, ST. 1,147. Nîlak. 53. 161. Vedântas. (Allah.) No. 90. Schol. zu Kap. 1,4. 36. 123. 131. zu Gaim. 1,1,3. zu Bṛh. Âr. Up. S. 204. zu Kâtj. Çr. 498,12. zu P. 8,2,94. Sarvadarçanas. 26,4. 123, 19. सद्युक्ति Spr. 886. सुयुक्तयः Verz. d. Oxf. H. 244,b, No. 609. In der Dramatik *eine verständige Betrachtung, Erwägung der Umstände:* संप्रधारणमर्थानां युक्तिः Daçar. 1,26. Sâh. D. 343. युक्तिरर्थावधारणम् 501. 471. = बीजानुकूलसंघट्टनप्रयोजनविचारः Pratâpar. 21,a,4. — 4) *Grund, Motiv:* युक्त्या कया Bhâg. P. 3,31,15. Mârk. P. 99,24. — 5) *Summe* Sûrjas. 7,14. — 9) *Alliage, Legirung* Varâh. Bṛh. 8,15. — 7) *Verbindung von Worten, Satz* Nir. 1,15. — 8) in der Astr. *Conjunction* Weber, Gjot. 34. — Unter den Çabdâlamkâra Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. — Nach den indischen Lexicographen hat युक्ति die Bedd. योग oder योजन (AK. 3,4,2,23. Trik. 3,3,179. H. an. 2,189. Med. t. 47) und न्याय (Trik. H. an. Med.). — Vgl. अर्थ° (auch MBh. 12,5056. Spr. 3592. 4451), ऋत°, गन्ध°, निर्युक्तिक, मल्लयुक्ति, यथा°, स्व°.

युक्तिकर (यु° + 1. कर) adj. *passend, angemessen* oder *begründet:* वाक्यानि R. 2,109,23. युक्तिरेव करः कारणं येषां तानि Schol.

युक्तिकल्पतरु (यु° + क°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 342, a, No. 800.

युक्तिज्ञ (यु° + ज्ञ) adj. 1) *sich auf Mischungen verstehend,* wohl = गन्धयुक्तिज्ञ Varâh. Bṛh. S. 19,12. — 2) *die rechten Mittel kennend* Kâm. Nîtis. 10,6.

युक्तिभाषा (यु° + भा°) f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 515.

युक्तिमत् (von युक्ति) adj. 1) *verbunden, verknüpft:* समसंघात° (शब्द) R. Gorr. 2,100,24. समो लयसमन्वितः Schol. 91,27. — 2) *geschickt,* mit infin.: वक्तुम् Kathâs. 62,34. — 3) *mit Argumenten versehen, begründet;* davon nom. abstr. युक्तिमत्त्व Bhâg. P. 11,22,25.

युक्तियुक्त (यु° + युक्त) adj. 1) *erfahren:* अ° (वैद्य) Suçr. 1,94,16. — 2) *passend, angemessen* oder *begründet:* वचन Spr. 2491. fg.

युक्तिशास्त्र (यु° + शास्त्र) n. *die Lehre von dem was sich schickt, — passt* MBh. 13,5103.

युक्तिस्नेहप्रपूरणी f. Titel einer Schrift Hall 173.

युग (von 1. युज्) gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1,160. 1) n. m. *Joch* AK. 3,4, 2,25 (m.). H. 756. an. 2,43. Med. g. 17 (m.). युगादीनां च वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः AK. 2,9,64. H. 1261. Ṛv. 2,39,4. मा युगं वि शारि 3,53, 17. 1,115,2. 184,3. 8,80,7. 10,60,8. 101,3. युगानि परस्तात्कृषमाणा अवस्तात् TBr. 1,5,1,3. AV. 4,1,40. Çat. Br. 3,5,1,24. 34. Kauç. 20,37.

76. युगेन (= योगेन = युगपद् Comm.) TBR. 3,7,10,1. भग्नयुगे M. 8,291. °भङ्ग KATHÂS. 60,12. PAÑKAT. ed. orn. 4,13. अन्धेनेव (so die ed. Bomb., विधात्रा NILAK.) युगं (द्वापराख्यं NILAK.) नद्धं विपर्यस्तम् MBH. 2,1932. 3, 14909. पार्थच्छिन्नयुगा कृपाः 4,1707. 5,7214. 6,3879. °मध्ये, °संनद्धेषु, °पालीषु 7,3597.8783. fg. HARIV. 2656. 12538. R. 3,34,32. 6,18,54. JÂGN. 2,299. VARÂH. BRH. S. 11,37. 46,9. KATHÂS. 97,6. ÇIÇ. 3,68. रथयुगः BHÂG. P. 5,21,15. °व्यायतबाहु RAGH. 3,34. °दीर्घैर्दोर्भिः 10,87. °बाहुभ्यः KUMÂRAS. 2,18. — 2) n. *Paar* AK. 2,5,38. 3,4,2,25. TRIK. 2,5,38. H. 1424. H. an. MED. HALÂJ. 4,15. वस्त्र° ÂÇV. GRHJ. 3,8,1. ÇÂÑKH. GRHJ. 3,1. MBH. 3,2632. AK. 2,6,3,14. H. 668. VARÂH. BRH. S. 48,72. KATHÂS. 24,124. KULL. zu M. 7,126. Schol. zu P. 8,4,13. स्तन° ÇÂK. 18. Spr. 1233. खञ्जन° 2518. AK. 1,1,2,20. 2,1,18. VARÂH. BRH. S. 47,11. 51,43. 52,5. 54,61. 68,44. KATHÂS. 26,285. ÇIÇ. 9,72. RÂGA-TAR. 1,209. DHÛRTAS. 83,9. Am Ende eines adj. comp. f. आ KATHÂS. 66,157. PRAB. 67,2. In der Stelle चतुर्हस्तं धनुर्दण्डो नाडिकायुगमेव च MÂRK. P. 49,39 könnte man auch नाडिका यु° trennen und beide Worte als Synonyme von चतुर्हस्त fassen; vgl. 7). — 3) n. *Doppel-*Çloka, *zwei* Çloka, *durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, RÂGA-TAR. S. 3. 4. 6. 14. — 4) n. *Geschlecht* (von Menschen, daher gewöhnlich mit मानुष, मनुष्य u. a. verbunden, γένος ἀνθρώπων), sowohl *Generation*, als *der durch Abstammung zusammengehörige Stamm:* त्वं विश्वे (ad sensum) मानुषा युगेन्द्रं हवन्ते तविषं यतस्रुचः RV. 8,46,12. प्रमिनती मनुष्या युगानि 1,92,11. 103,4. पुत्र चरन्नजरो मानुषा युगा 144,4. 2,2,2. विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः 5,52,4. 6,16,23. 8,51,9. 9,12,7. 10,140,6. पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः 5,73,3. 7,9,4. 10,27,19. युगे युगे 1,139,8. 3,26,3. 6,8,5. 15,8. 36,5. 10,94,12. M. 10,42. BHAG. 4,8. पर RV. 1,166,13. उत्तर 3,33,8. 10,72,1. उपर 7,87,4. देवानां पूर्व्ये युगे 10,72,1. सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगम् *das erste Geschlecht* 9. दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान्दशमे युगे। अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः *in der zehnten Generation* entweder von einer wunderbaren Langlebigkeit oder von einer, sonst unbekannten Genealogie zu verstehen, 1,158,6. त्रियुग n. *eine Periode von drei Generationen:* या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा RV. 10,97,1. NIR. 9,28. आ सप्तमाद्युगात् M. 10,64. JÂGN. 1,96. चतुर्विंशे युगे HARIV. 2323. सहस्रयुगपर्यये MBH. 2,72. प्रवर्तयन्युगमन्युगात्ते 5,1873. सुबहूनि युगानि 14,2776. युगशतपरिवर्तान् ÇÂK. 193. युगपर्ययागते काले Spr. 3619. पूर्वयुगे HARIV. 1013. प्राजापत्ये (so die ed. Bomb.) MBH. 12,4176. ब्रह्म°, क्षत्रस्य *Zeitalter der* Br., *der* Ksh. HARIV. 11808. वैकुण्ठत्वं च देवेषु कृष्णत्वं मानुषे युगे (मानुषेषु च die neuere Ausg.) so v. a. *unter den Menschen* 2379. पुरुष° m. *Generation* MAHOPAN. in Ind. St. 2,8, N. 2. — 5) n. *eine Periode von fünf Jahren* (पञ्चके युगे PAÑKAV. BR. 17,13,17), insbes. *ein Lustrum im 60jährigen Jupitercyklus:* संवत्सराः पञ्च युगम् MBH. 2,455. SUÇR. 1,19,3. 19. WEBER, GJOT. 23. 26. 88. 93. Nax. 2,354. VP. 224. ऋतवो वत्सरास्तथा। क्षणा लवा मुहूर्ताश्च निमेषा युगपर्ययाः॥ MBH. 13,627. VARÂH. BRH. S. 2, S. 4. 8,21. 26,31. 33. 35. 37. fgg. — 6) n. *Weltperiode, Weltalter, Cyklus*, deren vier (nämlich Krta oder Satja, Tretâ, Dvâpara und Kali) ein Weltleben bilden; s. ROTH, Ueber den Mythus von den Menschengeschlechtern, S. 24. fgg. AK. 3,4,2,25. 14,71. H. an. MED. शतं ते ऽयुतं हायनान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः AV. 8,2,21. M. 1,68. 85. 9,301. JÂGN. 3,173. MBH. 6,387. fgg. HARIV. 515. fg. 12322. SÛRJAS. 1,8. 9. 17. 18. 20. 22. fg. 29. 33. fg. 37. 46. 56. 3,9. 13,18. VP. 23. BHÂG. P. 1,6,31. 3,11,20. 22. 22,36. चतुर्युग n. *die vier Weltalter* gaṇa पात्रादि zu P. 2,4,17, Vârtt. 4. VOP. 6,53. AK. 3,6,1,3. M. 1,71. MBH. 12,11227. HARIV. 516. SÛRJAS. 1,15. fg. Verz. d. Oxf. H. 21,b, N. 2. 44,b, 25. BHÂG. P. 3,11,18. कृतं युगम् M. 1,69. 81. 9,302. MBH. 3,11234. fgg. 12831. HARIV. 511. 11304. SÛRJAS. 1,23. VARÂH. BRH. S. 4,26. प्रथम BHÂG. P. 6,10,16. आदि° RÂGA-TAR. 1,341. त्रेतायुगे युगे R. 7,76,36. द्वापरं युगम् M. 9,302. द्वापरे युगपर्यये HARIV. 11316. कलौ युगे 11321. M. 1,86. कष्टं युगम् VET. in LA. (III) 30,2. °सहस्र NIR. 14,4 = BHAG. 8,17. देवानाम् M. 1,71. दैविक 72. 79. दैव AK. 1,1,2,21. H. 160. दिव्य ebend. MBH. 12,7575. AK. 1,1,2,22. — 7) n. als Längenmaass = *vier* Hasta H. an. (wo °चतुष्के st. चतुर्थे zu lesen ist) und MED.; vgl. oben u. 2) am Ende. — 8) n. Bez. *der Zahl vier* ÇRUT. 35. 42. SÛRJAS. 8,3. *der Zahl zwölf* Ind. St. 8,166. — 9) n. Bez. *eines best. Standes —, einer best. Configuration des Mondes* VARÂH. BRH. S. 4,12. fg. — 10) n. Bez. *einer best.* Nâbhasa-*Constellation* (von der Klasse Sâṁkhjajoga), *wenn nämlich alle Planeten in zwei Häusern stehen*, VARÂH. BRH. 12,10. 19. — 11) *eine best. Arzeneipflanze*, = वृद्धि H. an. MED. — Vgl. अनुयुगम्, ईषायुग (unter ईषा), उरु°, कलि°, गो°, चतुर्युग (चतुर्युगी MBH. 1,7343 fehlerhaft für चतुर्युङ्गी, wie die ed. Bomb. liest), त्रि° (adj. auch BHÂG. P. 3,16,22. 8,17,25), त्रेता° (unter त्रेता), देव° (auch NIR. 12,41), धर्म°, पञ्च°, मनु°, महा°, सत्य°.

युगकीलक (युग + की°) m. *Pflock am Joche* AK. 2,9,14. H. 757. HALÂJ. 2,420.

युगक्षय (युग + 2. क्षय) m. *Ende eines* Juga, *Weltende* R. 3,30,37. Verz. d. Oxf. H. 117,a, 4. BHÂG. P. 8,24,31.

युगंधर (युगम्, acc. von युग, + धर) 1) adj. (f. आ) *das Joch tragend* (?) MBH. 13,3833. सत्यादियुगं धारयन्ति ताः NILAK. — 2) m. n. *Deichsel* AK. 3,6,4,35. 2,8,2,25. H. 756. HALÂJ. 2,292. सह° adj. MBH. 6,1956. सयुगबन्धुर ed. Bomb. — 3) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. GORR. 1,31,8. — 4) m. N. pr. P. 4,2,130. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 4,12. VARÂH. BRH. S. 32,19. VP. 187, N.; vgl. P. 4,1,173, Sch. sg. N. pr. eines Fürsten HARIV. 9207. 1935 (wo nach सात्यकिः in der älteren Ausg. ausgefallen ist: युयुधानस्य भूमिस्तस्याभवत्सुतः। भूमेर्युगंधरः पुत्र इति वंशः समाप्यते॥). VP. 435. BHÂG. P. 9,24,14. eines Berges P. 3,2,46, Sch. ÇABDAR. im ÇKDR. BURNOUF in Lot. de la b. l. 842. युगंधरे दधि प्राश्य MBH. 3,10521. 8,2062. eines Waldes PAÑKAR. 1,10, 48. — Vgl. यौगंधर, यौगंधरक, यौगंधरायण, यौगंधरि.

युगप (युग + 2. प) m. N. pr. eines Gandharva MBH. 1,4812. HARIV. 14157.

युगपत्त्र (युग + पत्त्र *Blatt*) m. *Bauhinia variegata* H. 1152. °पत्त्रक m. dass. AK. 2,4,2,3. °पत्त्रिका f. *Dalbergia Sissoo Roxb.* TRIK. 2,4,22. — Vgl. युग्मपत्त्र.

युँगपद्, nach Andern युगपँद् (युग + 2. पद्) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. *gleichzeitig, zugleich* (urspr. *in demselben Joch stehend, neben einander*); Gegens. क्रमशस्, पृथक्. AK. 3,5,22. युगपदुत्पन्न NIR. 1,2. °पद्भाव KÂTJ. ÇR. 1,5,1. 7,1. 2,4,25. 5,19. 3,6,17. °पत्कर्मन् LÂTJ. 1,

9,1. °पत्प्राप्ति Âçv. Grhj. 4,4,5. युगपत्तु प्रलीयन्ते यदा तस्मिन्महात्मनि M. 1,54. Bhag. 11,12. MBh. 3,11956. Hariv. 11765. 11768. R. 2,72,41. R. Gorr. 2,68,29. 4,21,4. 5,25,56. 6,94,23. Kan. 2,2,6. Sâṁkhjak. 30. Çâk. 77. ad 69,2. Ragh. 4,15. 5,68. Kumâras. 2,18. Çiç. 9,41. Varâh. Brh. S. 11,37. 40,4. 88,37. 95,43. Kathâs. 21,43. 117. 26,278. 34,256. 42,70. Bhâg. P. 2,4,9. 3,6,2. 11,24. 4,10,8. Ind. St. 8,311,1 v. u. Schol. zu Gaim. 1,1,15. zu Naish. 22,46. चक्रेण युगपत् = सचक्रम् Schol. zu P. 2,1,6. Vop. 6,61. अ° Sâṁkhjak. 18. — Vgl. यौगपद्य.

युगपार्श्वग (युग-पार्श्व + 1. ग) adj. *zur Seite des Joches gehend* (von einem jungen Stiere) AK. 2,9,63. H. 1260. °पार्श्वक v. l.

युगपुराण (युग + पु°) n. Titel eines Abschnittes in der Gargasaṁhitâ Ind. St. 9,173.

1. युगमात्र (युग + मात्रा) n. *die Länge eines Joches:* युगमात्रोदिते सूर्ये MBh. 3,16723. = हस्तचतुष्क Nilak. °दर्शिन् Vjutp. 197.

2. युगमात्रं (wie eben) adj. (f. ई) *Joch-gross* Çat. Br. 3,5,1,34. 7,3,1,27. Kâtj. Çr. 5,3,33. 17,3,14.

युगल n. 1) *Paar* AK. 2,5,38. Trik. 2,5,38. H. 1423. Halâj. 4,15. नयन° Spr. 1233. स्तनचक्रवाक° 1970. Varâh. Brh. S. 69,10. 13. 24. Kathâs. 3,27. 11,51. Bhâg. P. 4,26,20. 5,2,13. Mârk. P. 63,63. Kaurap. 3. वस्त्र° Pańkat. 29,16. 184,16. 226,18. Auch m. Suçr. 1,22,14. Spr. 999. युगली भू *mit einem Andern bei Seite gehen* Verz. d. Oxf. H. 61,b, No. 108, Z. 9. Am Ende eines adj. comp. f. आ Pańkat. 226,19. — 2) *Doppelgebet*, Bez. *eines best. Gebetes an* Lakshmî *und* Nârâjaṇa Pâdmottarakh. 25 im ÇKDr. Hierher wohl °भक्ताः als Bez. einer Unterabtheilung der Kaitanja Vaishṇava Wilson, Sel. Works 1,169.

युगलक (von युगल) n. 1) *Paar:* चरणाम्बुज° Kathâs. 43,266. — 2) *Doppel-*Çloka, *zwei* Çloka, *durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Schol. zu Kâvjâd. 1,13. Râǵa-Tar. S. 2. 22. 135. 212.

युगलाख्य (युगल + आख्या) m. *eine best. Pflanze*, = वर्वूर Râǵan. im ÇKDr. युगलाक्ष u. d. letzten Worte nach derselben Aut.

युगलाय् (von युगल) *ein Paar darstellen:* पाशयुगलायित *ein Paar Schlingen darstellend* Spr. 999, v. l.; s. Th. 3, S. 367.

युगवरत्र oder °त्रा (युग + व°) gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45. — Vgl. यौगवरत्र.

युगव्या, युगव्यायतबाहु d. i. युग-व्यायत-बाहु erklärt der Comm. zu Ragh. ed. Calc. 3,54 durch युगव्यावत् (!) अर्गलावत् लम्बौ बाहू यस्य सः.

युगशर (?) Kâth. 12,10 in Ind. 3,464,11.

युगांशक (युग *Lustrum* + 1. अंशक *Theil*) m. *Jahr* Trik. 1,1,109. H. ç. 24. युगांसक Hâr. 28.

युगादि (युग + आ°) m. *der Anfang eines* Juga, *Weltanfang* Verz. d. Oxf. H. 87,a,43. °कृत् Bez. Çiva's Çiv.

युगादिजिन m. *der erste* (आदि) Ǵina *des* Juga: श्री° Bez. Ṛshabha's Çatr. S. 18.

युगादीश m. *der erste* (आदि) *Herr* (ईश) *des* Juga, Bez. Ṛshabha's ebend.

युगाद्या (युग + आ°) f. *der erste Tag eines* Juga Colebr. Misc. Ess. I, 186. Wilson, Sel. Works 2,207. fg. 210. Verz. d. Oxf. H. 87,a,16.

युगाध्यक्ष (युग + अ°) m. *Aufseher über ein* Juga, Beiw. Praǵâpati's Weber, Ǵjot. 20. Çiva's Çiv.

युगान्त (युग + अन्त) m. 1) *Ende des Joches:* सयुगान्तकूबर R. 5,42,16. — 2) *Meridian:* युगान्तमधिरूढः सविता so v. a. *es ist Mittagszeit* Çâk. 57,2, v. l. nach einigen Erklärern ist hier युग = प्रहर, nach andern = हस्तचतुष्टय; vgl. युगान्तर 2). — 3) *Ende einer Generation* MBh. 5, 1873. — 4) *Ende einer Weltperiode, Weltende* H. 161. Halâj. 1,117. Hariv. 3662. 5003. 11322. R. 2,61,21. 4,8,2. 60,16. Ragh. 13,6. Spr. 517. Bhâg. P. 2,7,12. 38. 3,33,4. 5,18,6. Verz. d. Oxf. H. 87,a,43. °रवि R. 4,14,28. युगान्ताग्नि MBh. 1,5475. R. 3,30,35. Spr. 2355. युगान्तार्णव Bhâg. P. 5,18,28. °कार Varâh. Brh. S. 11,15.

युगान्तक m. = युगान्त 4) Verz. d. Oxf. H. 52,a,24. 42.

युगान्तर (युग + अ°) n. 1) *eine Art Joch, ein besonderes Joch* H. 757. — 2) *die zweite Hälfte des durch den Meridian durchschnittenen Bogens, den die Sonne am Himmel beschreibt:* युगान्तरमारूढः सविता so v. a. *es ist Mittag vorbei* Çâk. 57,2; vgl. युगान्त 2). — 3) *eine andere —, eine folgende Generation* Spr. 1581.

युगाय् (von युग), °यते *lang wie ein* Juga —, *wie eine Ewigkeit erscheinen:* त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् Bhâg. P. 10,31,15.

युगिन् in वस्त्र° (von वस्त्रयुग) adj. *mit einem Kleider-Paare versehen* P. 8,4,13, Sch.

युगेश (युग + ईश) m. *der Beherrscher eines Lustrum* Varâh. Brh. S. 8,23.

युगोरस्य (युग + उ°) m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,49.

युग्मं (von 1. युज्) Uṇâdis. 1,145. 1) adj. (f. आ) *paarig, geradzahlig* Kâtj. Çr. 16,7,24. Âçv. Grhj. 1,14,4. 15,7. 2,5,13. fg. Gobh. 4,3,34. 5,17. RV. Prât. 1,3. 2,7. 5,10. 16,38. M. 3,48. Jâǵn. 1,79. 227. Suçr. 1,321,14. Ind. St. 8,313. 345. Varâh. Brh. S. 78,23. 85,2. Mârk. P. 30,7. 31,37. 34,80. fg. Kull. zu M. 3,277. — 2) n. Siddh. K. 249,a, 13. a) *Paar* AK. 2,5,38. 3,4,22,214. Trik. 2,5,38. H. 1424. Halâj. 4, 13. वस्त्र° Çâṅkh. Grhj. 5,2. Jâǵn. 1,291. Kathâs. 24,113. 43,75. fg. पाडुकोपानहौ युग्मानि R. 2,91,69 (100,70 Gorr.). रजनी° Suçr. 2,340,7. स्तन° Spr. 505. नयनखञ्जन° 564. Çrutas. 2,30. 34. fgg. 38. 11,8. Varâh. Brh. S. 51,9. 40. 54,60. 70,9. 105,1. Kathâs. 6,40. 20,27. Pańkar. 1,14,57. °चारिणो: क्रौञ्चयोः *paarweise* Uttararâm. 27,13 (36,4). °प्रक्र so v. a. प्रक्र° Suçr. 2,311,18. सा युग्मं प्रसूयते *Zwillinge* 1,325,12. युग्मापत्या *eine Mutter von Zwillingen* Kathâs. 21,48. Am Ende eines adj. comp. f. आ Çrut. 8. Ṛt. 4,14. Kaurap. 46. — b) *die Zwillinge im Thierkreise* Ind. St. 2,259. — c) *Doppel-*Çloka, *zwei* Çloka, *durch welche ein und derselbe Satz durchgeht*, Colebr. Misc. Ess. 2,71. Râǵa-Tar. S. 14. 151. 154. fg. 195. 203. 222. 226. 249. — d) *Vereinigung —, Zusammenfluss zweier Flüsse* (= संगम Comm.). R. 2,71,5. — e) häufig fehlerhaft für युग्य, z. B. M. 8,293 ed. Lois. MBh. 3,14922. R. 2,89,18 (die Bomb. Ausgg. haben die richtige Lesart). — Vgl. नृ°.

युग्मक 1) adj. = युग्म 1) Ind. St. 8,313. — 2) n. a) = युग्म 2) a) Vet. in LA. (III) 13,14. am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 25,226. — b) = युग्म 2) c) Sâh. D. 558. Schol. zu Kâvjâd. 1,13. Râǵa-Tar. S. 112.

युग्मज (युग्म + 1. ज) m. du. *Zwillinge* Trik. 3,3,302.

युग्मधर्मन् (यु° + ध°) adj. Çatr. 3,5.

युग्मन् adj. = युग्म 1): स्तोमाः Çat. Br. 9,3,3,4.

युग्मँत् adj. dass. TS. 5,4,8,5. TBR. 2,7,18,4. ÇAT. BR. 9,3,3,5. PAÑKAV. BR. 16,14,6. 19,8,5.

युग्मपत्त्र m. = युगपत्त्र *Bauhinia variegata* RATNAM. 157.

युग्मपत्त्रिका f. = युगपत्त्रिका *Dalbergia Sissoo Roxb.* ÇABDAR. im ÇKDR.

युग्मपर्ण (यु° + पर्ण) m. *Bauhinia variegata* und *Alstonia scholaris* RÂGAN. im ÇKDR.

युग्मफला (यु° + फल) f. N. verschiedener Pflanzen, = इन्द्रचिर्भिटी und वृश्चिकाली RÂGAN. im ÇKDR. = गन्धिका RATNAM. ebend.

युग्मफलोत्तम (युग्म - फल - उ°) m. *Asclepias rosea* RATNAM. bei WILSON.

युग्मविपुला (यु° + वि°) f. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,345.

युग्मिन् (von युग्म) adj. ÇATR. 3,4.

युँग्य (von युग) gaṇa गवादि zu P. 5,1,2. = युगस्य वोढा P. 4,4,76. AK. 2,9,64. H. 1261. युग्यँ = युगमर्हति gaṇa दण्डादि zu P. 5,1,66. युँग्य (angeblich partic. fut. pass. von 1. युज्) = पत्त्र P. 3,1,121. VOP. 26,20. AK. 2,8,2,26. H. 759. HALÂJ. 2,294. n. 1) *Wagen* M. 8,293 fg. विमुक्तयुग्यकवच MBH. 10,129. R. GORR. 1,71,3. 2,73,6. RÂGA-TAR. 5,33. — 2) *Jochthier* JÂGN. 2,298. अश्व° MBH. 1,3292. KÂM. NÎTIS. 15,23. RAGH. 5, 49. 12,84. यानयुग्यम् *Wagen und Pferde* MBH. 3,2262. 14922. R. 1,69, 3 (यानं युग्मन् ed. Bomb.). 2,89,18. यानं युग्मम् (collect.) dass. MBH. 4, 535. R. GORR. 2,97,23. युग्यमजाविकम् MBH. 13,2793. Hier und da fälschlich युग्म geschrieben. — 3) जमदग्नेर्व्रतं युग्यम् (v. l. युज्यम्) N. eines Sâman Ind. St. 3,217,*a*. — Vgl. दक्षिणा°, सव्या°.

युग्यवाह (यु° + वाह) m. *Wagenlenker* RÂGA-TAR. 6,264. 7,482.

युङ्, युँङ्गति DHÂTUP. 5,50 (वर्जने).

युङ्ग s. अयुङ्ग.

युङ्गिन् m. Bez. *einer best. Mischlingskaste:* गङ्गापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेषधारिणः। बभूव वेषधारी च पुत्रो युङ्गी प्रकीर्तितः॥ BRAHMAV. P. im ÇKDR. योगिन् st. dessen Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,7.

युछ्, युच्छँति (युँच्छति प्रमादे DHÂTUP. 7,35) *weichen, sich wegmachen von* (abl.): न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवः RV. 5,54,13. इतो युच्छन्त्यामुरः 8,39,2. — Vgl. 3. यु.

— प्र *abwesend sein* (मनसा *mit der Aufmerksamkeit*): sodann auch ohne diesen Zusatz *gleichgiltig —, achtlos sein:* या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः RV. 10,65,5. वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे 1,25,6. कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी VÂLAKH. 4,7. — Vgl. अप्रयुच्छत्.

1. युज्, युनक्ति, युङ्क्ते DHÂTUP. 29,7 (योगे). अनुयुञ्जसे HARIV. 3037. युञ्जते 3. sg. ÇVETÂÇV. UP. 2,6. MBH. 13,750. अयुञ्जम् 5,7291. युञ्जत = अयुङ्क्त 1,7982. ved. युजे, युनजते, योज, योजम्, योजते und युयोजते (RV. 8,59,7) 3. sg.; युयोज, युयुजे, युयुज्रे; अयुजत्, अयुजि, अयुक्षत्, युजत, अयुक्षत 3. pl.; योक्ष्ये: युक्ष्यते, अयोजि; युक्त्वा, युक्त्वाय VS. 11,3; योक्तुम्, युजे infin. RV. 8,41,6. 1) *schirren, anspannen;* Ross und Wagen: युज्यते रथः RV. 4, 15,1. युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ् 5,40,4. 56,6. कमच्छा युञ्जाथे रथम् 74,3. यामेषु यद्ध युञ्जते शुभे 1,87,3. (उषाः) गोभिररुणेभिर्युजाना *fahrend mit* 5,80,3. 2,18,3. 3,26,4. 7,16,2. 23,3. आस्थाद्रथं स्वधया युज्यमानम् 78,4. AV. 19,13,1. VS. 4,33. 35,2. कदा इन्द्रो युयोजते RV. 8,59,7. योक्त्रेण योग्यं युञ्जन्ति ÇAT. BR. 1,9,2,33. अयोक्त्रो युञ्जन्ति ÇÂÑKH. GṚHJ. 1, 15,8. युक्त्वा हयान् MBH. 1,192. 7948 (wo mit der ed. Bomb. अयुञ्जन् zu lesen ist). Spr. 2631. युज्यन्तां स्यन्दनेषु तुरंगाः PRAB. 78,14. योक्ष्यन्ति धुरि धेनुकाः MBH. 3,13035. (सत्समागमः) दुःखानां धुरि युज्यते so v. a. *wird an die Spitze gestellt* Spr. 3265. युक्त्वा रथवरम् HARIV. 4461. वाजिभिः R. GORR. 2,38,10. fg. युज्यतां युग्यम् 1,71,3. R. SCHL. 2,70,12. 3,39,4. MBH. 3,11761. युक्तँ *angeschirrt, angespannt* RV. 1,116,18. रथे युक्तास आशवः 118,4. 5,27,2. एतशो धूर्षु युक्तः 7,63,2. 4,48,4. Wagen 69,2. AV. 13,3,9. MBH. 3,2791. R. 2,46,27. R. GORR. 2,38,12. अश्वैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने BHAG. 1,14. MBH. 3,11921. HARIV. 2459. R. 2,39,13. R. GORR. 1,17,3. वाजिरथान्युक्तान् R. SCHL. 2,92,31. रथेन खरयुक्तेन 2,69,15. 18. वाजिनः MBH. 3,15672. भानुः सकृद्युक्ततुरंगः ÇÂK. 101. इन्द्रियाणि Spr. 5099. त्रियुक्त *mit Dreien bespannt* KÂTJ. ÇR. 15,1,22. 22,4,15. चतुर्युक्त MBH. 5, 3045. — 2) *anspannen* in verschiedenen Uebertragungen so v. a. *in Thätigkeit setzen, in Gebrauch nehmen, zurüsten, verrichten* u. dgl.: अद्रिर्दक्षिणा युज्यते वाजयन्ती RV. 5,1,3. die Soma-Steine (vgl. 10,94,6. 7) 40,8. 43,4. 3,41,2. 57,4. 7,42,1. LÂTJ. 1,10,1. den Mörser RV. 1, 28,5. पात्राणि ÇAT. BR. 4,4,1.17. धिया युयुज्र इन्दवः RV. 1,46,8. वयमु त्वा रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि 6,51,3. VS. 11,3. AIT. BR. 6, 23. युञ्जते मन उत युञ्जते धियः RV. 5,81,1. 7,27,1. VS. 11,1. fgg. (1,3 = ÇVETÂÇV. UP. 2,3 mit Varianten). इन्द्रियाणि मनो युङ्क्ते सदश्वानिव सारथिः। इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः क्षेत्रज्ञे युज्यते सदा॥ MBH. 14,1426. मनो दुष्टम् — बुद्ध्या युञ्जीत BHÂG. P. 3,28,7. ब्रह्म RV. 10,13,1. नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः 51,4. 27,4. उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहिम् 8,50,12. युज्यन्ते यस्यामृत्विजः AV. 12,1,38. TS. 3,1,10,2. यज्ञम् ÇAT. BR. 1,9,2,32. तेन (यजुषा) यज्ञमयायुजत्। युञ्जानः स यजुर्वेद इति शास्त्रविनिश्चयः Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,15. वाचम् LÂTJ. 1,8,9. मा नो ऽतो ऽन्यत्पितरो युङ्ध्वम् (sc. वासः) ÂÇV. ÇR. 2,7,6. चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति, प्राणः युक्तः KENOP. 1. युज्यतां महती सेना *werde gerüstet* R. 2,79,9 (86,13 GORR.). 92,30 (101,33 GORR.). MÂRK. P. 125,4. तासामसुरसेनानां युज्यतीनाम् HARIV. 8065. अकालयुक्तसैन्य Spr. 6; vgl. युक्तसेन. आशिषो युयुजुः — आदिराजाय so v. a. *sprachen Segenswünsche* BHÂG. P. 4,19,41. 9,11,29. युञ्जानः परमाशिषः 5,13. नमो ऽयुञ्महि साक्षिणे *brachten unsere Verehrung dar* 4, 30,26. प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते *wird gebraucht, — angewandt* BHAG. 17,26. आदानमप्रियकरं दानं च प्रियकारकम्। अभीप्सितानामर्थानां काले युक्तं प्रशस्यते॥ *angewandt* M. 7,204. तं मामेवंविधम् — समर्थमरिनिग्रहे। कस्माद्युनक्ति (so die ed. Bomb.) सारथ्ये *anstellen bei* MBH. 8,1365. (तान्) युयोज स यथायोगमधिकारेषु 2,1289. कार्ये महति युञ्जानः 12,3498. योग्यैश्चामात्यान्कार्येषु युञ्जीत KATHÂS. 34,194. तं प्रजासर्गरक्षायाम् — युयोज युयुजे ऽन्यांश्च स वै सर्वप्रजापतीन् BHÂG. P. 4,30,51. धातुर्न्दिग्विजये ऽयुङ्क्त 10,72,12. वानरो ऽयं नरश्रेष्ठ युज्यतां सेतुकर्मणि R. 5,94,15. Spr. 3307. महति कर्मणि युज्यमानः *beschäftigt mit* BHÂG. P. 6,3,25. pass. *sich rüsten zu* (dat.): युद्धाय युज्यस्व BHAG. 2,38. योगाय 50. क्रूराय कर्मणे युक्तः *gerüstet zu* MBH. 7,881. यात्रायुक्त SUÇR. 1,122,5. युक्त *an's Werk gesetzt, angestellt, beschäftigt, obliegend, sich befleissigend, bedacht auf* (die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend) RV. 10,27,9. यथा युक्तो जातवेदो न रिष्याः 51,7. KÂTJ. ÇR. 3,4,22. P. 6,2,66. (चराः) ये युक्ता द्रुपदे मया MBH. 5,7549. अयुक्तचार R. 3,37,7. 10. अश्वानां वाहने युक्तः MBH. 3,2635. हयेषु 4,315. अग्निषु R. GORR. 2,109, 8. क्रियासु Spr. 763. आचारे M. 1,108. स्वाध्याये, दैवे कर्मणि 3,75. 127. लोकस्याप्यायने 213. 4,35. 6,8. 7,125. 9,324. 326. MBH. 3,1786. पौरा-

णामहिते R. 1,39,22. 77,10. R. Gorr. 2,100,3. 3,69,8. 6,106,3. R. ed. Bomb. 6,87,22. Spr. 4491. Bhâg. P. 1,19,17. 8,10,1. व्यसनेष्वयुक्तः Spr. 460, v. l. मङ्गलाचार° M. 4,145. fg. 9,259. तपो° MBh. 1,7626. 5,6016. परहितव्यापारयुक्तात्मन् Spr. 2004. ध्यानयुक्तेन मनसा Verz. d. Oxf. H. 53,a,12. *geübt, geschickt, erfahren* R. 5,33,7. धर्मार्थयोर्ज्ञाने MBh. 5,1104. श्रारोहे विनये चैव युक्तो वारणवाजिनाम् R. 2,1,20. कोषसंग्रहणे, बलपरिग्रहे R. Gorr. 1,7,7. 10. श्रयुक्तबुद्धिर्गुणदोषदर्शने 3,37,23. श्र° (= श्रविवेकिन् Comm.) Bhâg. P. 10,73,11. — 3) *auflegen* Geschosse (auf den Bogen): युयोज बाणान् MBh. 1,7025. श्रयुञ्जमेव चैवाहं तदस्त्रं भृगुनन्दने 5,7291. मा युङ्क्ष्व दिव्यान्यस्त्राणि 3,12309. 5,7265. *befestigen:* दिव्यं चेदं किरीटं मे स्वयमिन्द्रो युयोज ह 3,12278. श्राभरणानि Spr. 3307. वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु *fügen auf* Bhâg. P. 6,8,8. शिरसि कपालानि *setzen auf* Lâṭj. 8,8,18. योनौ रेतो युनक्ति *fügen in, thun in* Çat. Br. 7,5,1,33. त्वां हृदि युञ्जन् *in's Herz schliessend* Bhâg. P. 3,24,34. med. und pass. *sich hängen an* (eig. und übertr.): युञ्जानाश्च विलम्बिरे (so die neuere Ausg.) | कण्ठेषु Hariv. 11767. युज्येतत्र न पण्डितः Spr. 100. — 4) eine Zuneigung u. s. w. Jmd (loc.) *zuwenden:* मयि यो यस्तव स्नेहो रोहसेने स युज्यताम् Mṛkkh. 155,17. युज्यमानया भक्त्या भगवति Bhâg. P. 3,25,19. श्रात्मानम्, मनः, मानसम्, चेतः, चित्तम्, चित्ताम् *den Geist, den Sinn, die Gedanken auf einen Punkt richten;* act. und med. Maitrjup. 6,3. Bhag. 6,15. 10. 28. 9,34. Bhâg. P. 2,1,19. 2,7. 4,1,26. die Ergänzung im loc. 3,9,23. 24,43. 27,26. 4,28,38. 6,2,40. 7,5,41. 9,6,51. 54. Ohne श्रात्मानम् u. s. w. *sich vertiefen;* med. MBh. 13,750. Mârk. P. 43,40. युञ्जान MBh. 14,562 (in beiden Ausgg. fälschlich भुञ्जान). Bhâshâp. 64. act. MBh. 14,546. Bhâg. P. 7,1,25. Mârk. P. 111,2. योक्तुं समुपचक्रमे MBh. 12, 12580. mit beigefügtem योगम् dass.; act. Bhag. 6,12. Mârk. P. 39,27. med. 28. युज्यते (समाधौ) Dhâtup. 26,68. Siddh. K. zu P. 7,1,71. युज्यते ब्रह्मचारी योगम् P. 3,1,87, Vârtt. 5, Sch. युक्त *gesammelt, aufmerksam, vertieft, ganz bei der Sache seiend:* यो मे गिरस्तुविजातस्य पूर्वीर्युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति (sc. मनसा Sâj.) Ṛv. 5,27,3. यथा वा युक्तमात्मानं मन्येत तथा युक्तो ऽधीयीत स्वाध्यायम् Âçv. Gṛhj. 3,2,2. Çvetâçv. Up. 2,2. Taitt. Up. 1,11,4. Muṇḍ. Up. 3,2,5. Ṛv. Prât. 14,28. M. 2,223. 243. 4,95. 100. 6,31. 7,142. 206. 9,312. 11,259. Bhag. 2,61. 6,8. 14. 8,14. MBh. 1,2339. 12,4142. 14,563. Hariv. 5236. fg. R. Gorr. 2,8,39. 3,72,7. 7,106,16. Spr. 3488. 4093. 4378. 4620. 5010. 5261. Bhâshâp. 64. सु° Maitrjup. 4,4. श्र° Bhag. 18,28. यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च *in den versenkt* Çvetâçv. Up. 4,15. शत्रुसेविनि मित्रे च युक्ततरो भवेत् *gar sehr auf seiner Hut seiend* M. 7,186. युक्ततम Bhag. 6,47. — 5) *verbinden, zusammenbringen, aneinanderfügen; anreihen* Ṛv. 1,165,5. श्रग्निं युनज्मि शवसा घृतेन VS. 18, 51. स्तोमम् Lâṭj. 1,12,2. 2,5,20. Çat. Br. 14,8,14,2 (Kaush. Up. 2,6). Maitrjup. 6,21 (med.). नूनं भूतानि भगवान्युनक्ति वियुनक्ति च Bhâg. P. 10,82,42. स हि प्रत्ययार्थमात्मना युनक्ति Kâç. zu P. 1,2,51. श्रश्वपादेन — हिरन्मायोजि *wurde zusammengeführt mit* Râga-Tar. 3,366. pass. *sich verbinden mit:* स तया कुन्तिभोजस्य दुहित्रा कुरुनन्दनः ॥ युयुजे *verband sich ehelich* MBh. 1,4420. fg. मन्त्रिभिर्युयुजे नीतिविशारदैः *er umgab sich mit* Ragh. 8,17. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *verbinden* so v. a. *versehen, beschenken mit, Jmd einer Sache theilhaftig machen:* साम्नमानार्थसंभोगैर्युनक्ति MBh. 2,474. R. 1,9,68 (67 Gorr.). तत्रेमं तर्जनैर्घोरैः पुनः सान्त्वैश्च योदय 3,62,33. यमं युनज्मि कालेन Bhaṭṭ. 6,37. श्राशीभिर्युञ्ज्यतातुलाम् (so die ed. Bomb.) MBh. 1,7982. श्रात्मानं श्रेयसा योदये 3,2489. 7,696. ये ऽनागसौ वयमयुंक्महि किल्विषेण Bhâg. P. 3,16,25. न मां समयभेदेन योक्तुमर्हसि Hariv. 10963. R. Gorr. 2,30,34. 35,34. मां दुःखैर्योक्तुमिच्छसि Spr. 4524. Kumâras. 6,79. pass. *einer Sache* (instr.) *theilhaftig werden:* वेदपुण्येन युज्यते M. 2,78. फलेन 7,128. 144. MBh. 3,2629. 10862. कालधर्मणा R. Gorr. 1,43,27. Spr. 1601. 3477, v. l. 3798. 4025. 4433. 4840. 4914. 5098. Çâk. 64,16. Ragh. 3,65. Kumâras. 4,44. Kathâs. 22,92. 30,34. Bhâg. P. 1,11,39. 3,7,5. mit dopp. instr. *durch Jmd einer Sache theilhaftig werden* MBh. 3,258. Bhâg. P. 1,11,24. statt des einfachen instr. der Sache auch der instr. mit सह MBh. 13,7101. युक्त *verbunden, vereinigt, hinzugefügt, an einander gereiht, regelmässig auf einander folgend* Varâh. Bṛh. S. 77,36. Bhâg. P. 3,26,51. 4,1,48. विशो न युक्ता उषसो यतन्ते Ṛv. 7,79,2. 1,23,15. Çâṅkh. Çr. 13,19,17. युक्तम् adv. *in Schaaren* Çat. Br. 12,4,1,3. युक्त *verbunden —, versehen mit, im Besitz von* (instr. oder im comp. vorangehend) Ṛv. Prât. 1,19. महतैनसा M. 2,221. 6,70. 9,169. 11,53. MBh. 1,7982. 3,1807. 2076. 2802. 12,3496. सिसृतया so v. a. *zu schaffen beabsichtigend* Hariv. 534. Bhag. 8,10. R. 1,1,3. 9. 20. 4,7. 7,18. 52,11. 53,7. 55,19. Ragh. 7,1. Spr. 790. Sûrjas. 1,48. fg. Varâh. Bṛh. S. 8,21. 15,19. 65,11. 77,6. 22. Kathâs. 14,61. 18,229. 23,1. Bhâg. P. 1,2,15. 9,16. AK. 3,1,27. Vop. 3,143. हिन्नेव युक्ता कदली गजेन *in Berührung gekommen mit* R. 3,53, 61. फल° *verbunden mit* Kâtj. Çr. 1,1,2. AV. Prât. 3,89. 4,3. P. 2,3, 4. 8. 19. M. 9,310. 12,4. Bhag. 2,50. MBh. 1,7345. 3,2677. R. 2,26,25. धर्मयुक्त (वाक्य) 39,17. 54,19. 55,9. Megh. 25. Spr. 2734. 3198. 3287, v. l. Sâṁkhjak. 2. Sûrjas. 2,63. Varâh. Bṛh. S. 16,27. 17,10. 43,46. 50,8. 53,97. 55,20. 56,21. 80,15. 103,11. Kathâs. 5,129. 35,124. AK. 1,1, 3,5. 2,8,2,86. H. 527. LA. (III) 4,6. 35,17. 55,13. विंशतिश्चतुर्युक्ता *vierundzwanzig* Varâh. Bṛh. S. 21,30. 23,7. 48,47. त्वेमयुक्तम् adv. (s. auch bes.) R. 1,13,10 nach dem Comm. hierher zu ziehen (त्वेमो विघ्यपराधराहित्यं यद्वा त्वेमो विघ्नराहित्यम्). तथा युक्तम् *auf diese Weise verbunden* Ṛv. Prât. 2,15. तथा युक्तः *in solchem Zustande befindlich* MBh. 3, 2958. *so verfahrend* Spr. 4715. *verbunden mit* so v. a. *bezüglich auf:* गाथा यज्ञदानयुक्ताः Kâtj. Çr. 20,2,7. 8. शान्ति° Kauç. 9. जातकर्माणि पुंवद्विधानयुक्तानि MBh. 5,7407. तवादर्शनयुक्तेन शोकेन R. 5,32,37. Kâm. Nîtis. 14,12. युज् pass. *in Conjunction treten mit* (instr.): यदहः पुंसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युज्येत Pâr. Gṛhj. 1,14. ज्येष्ठाद्यानि नवर्त्ताण्युडुपतिनातीत्य युज्यन्ते Varâh. Bṛh. S. 4,7. उत्तरा फल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते R. 5,73,15. यदा पुंसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युक्तः स्यात् Âçv. Gṛhj. 1,14,2. Weber, Gjot. 70. Varâh. Bṛh. S. 98,12. 104,56. पुष्ययुक्ते निशाकरे 48, 45. 69,3. 98,16. श्रद्य बार्हस्पतः श्रीमान्युक्तः पुष्येण (so die ed. Bomb.; किं नु बार्हस्पतो योगो युक्तः पुष्येण Gorr.) R. 2,26,9 (11 Gorr.). नक्षत्रेण युक्तः कालः P. 4,2,3. युक्तः कालेन यश्च न so v. a. *wer nicht die rechte Zeit benutzt* Spr. 4631. कालयुक्तं वाक्यम् *zeitgemäss* R. 1,32,1. देशकालार्थयुक्त Bhâg. P. 1,15,27. कार्येण महता युक्तः so v. a. *beschäftigt mit, begriffen in* MBh. 5,5427. (न) स्वभावमतिवर्तन्ते योनियुक्ताः शरीरिणः *gebunden an, abhängig von* Spr. 4309. — 6) *mit sich verbinden;* mit acc.: (मरुतः) उभे युजन्त (= योजयन्ति Sâj.) रोदसी Ṛv. 6,66,6. 8,20,4.

(शशी) रोहिणीं यदि युनक्ति *in Conjunction treten mit* Varâh. Bṛh. S. 24, 28. 47, 18. माघशुक्लाह्निको युङ्क्ते श्रविष्ठायां च वार्षिकीम् (?) Weber, Ǵjot. 113. so v. a. *theilhaftig werden:* न नु तमो न गुणांश्च युङ्क्ते Bhâg. P. 7, 9, 32. — 7) *Jmd* (loc. gen.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen, zukommen lassen, verleihen:* अनागस्यघं युञ्जन् Bhâg. P. 1,17,14. येषु — शिश्नादण्डं न युञ्जते 4,26,21. शुभाशुभे नृणां युङ्क्ते Mârk. P. 51,11. यद्युज्यते देहात्मजादिषु नृभिः Bhâg. P. 8,9,29. शेषमात्मनि युञ्जीत *sich zu Theil werden lassen, selbst geniessen* M. 6,12. — 8) *sich vergegenwärtigen, — in's Gedächtniss zurückrufen:* तं मुहूर्तं क्षणं वेलां दिवसं युयोज (= अनुचिन्तितवती Nîlak.) MBh. 3, 16753. — 9) *auftragen, befehlen, injungere:* आस्थाय तत्तद्यदयुङ्क्त नाथः Bhâg. P. 5, 1, 15. — 10) pass. *passen, sich schicken, gemäss sein, sich ziemen, zukommen, recht sein:* युज्यते *so ist es recht* Çâk. 88, 10. Kathâs. 11, 29. युज्यति Hariv. 7064. न शापस्तत्र युज्यते R. 1,21,7. Spr. 3307. Kathâs. 24,203. Râǵa-Tar. 4,101. Hit. 83,19. Bhâg. P. 4,19,27. Sarvadarçanas. 81,20. 115,1. 121, 2. 161,6 (so v. a. *logisch richtig sein* in Sarvadarçanas.). स स्वामी युज्यते भुवि *der eignet sich zum Herrn der Erde* Spr. 2264. हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते *ist es nicht ganz in der Ordnung, dass das, was das Feuer vertritt, brennt?* 3579. यद्येन युज्यते लोके *was zu einander passt* 2392. नह्यस्मिन्युज्यते कर्म किंचिदा मौञ्जिबन्धनात् *schickt sich für ihn, kommt ihm zu* M. 2, 171. MBh. 3, 16700 (युज्यति). शब्दो महाराज इति — तस्मिन्युयुजे ऽर्भके ऽपि Ragh. 18,41. Hit. 16,12. महतामास्पदे नीचः कदापि नहि युज्यते Spr. 2136. तदेतन्मे न युज्यते Kathâs. 30,9. LA. (III) 37,8. कथं भगवतः — युज्येरन्निर्गुणस्य गुणाः क्रियाः Bhâg. P. 3,7,2. स्नुषा मे युज्यते कथम् *wie käme mir zu?* so v. a. *ich kann nicht haben* 9,23,36. Pańkat. 40,24. एवं नीचजने ऽपि युज्यति गृहं प्राप्ते सतां सर्वदा Spr. 580. अथ वा युज्यते द्वाभ्यामप्येतत् Pańkat. 113, 10. तन्नात्र युज्यते स्थातुम् Mṛkkh. 35,21. Pańkat. 57,3. व्यसने महति प्राप्ते स्थिरैः स्थातुं न युज्यते Mahân. 255. प्रतिकर्तुं प्रकृष्टस्य नापकृष्टेन युज्यते R. 4,17,47. तं च दातुं न युज्येते Kathâs. 57,157. तथापि युज्यते नैव दातुम् *er kann nicht gegeben werden* 159. 12,166. 45,196. नैतद्युज्यते सहसैव पितृपर्यायागतं वनं त्यक्तुम् Pańkat. 21,4. 61,4. 96,4. नैतद्युज्यते ते कर्तुम् 214,5. तन्न त्वयैकाकिन्यास्य भूपते रक्तभोजनं कर्तुं युज्यते 61,22. युक्त *passend, angemessen, sich schickend, sich ziemend, recht, richtig* AK. 2,8,1,24. 3,4, 14,80. 83. 23,144. Trik. 3,1,7 (= परिमित). H. 743. Halâj. 4,61. 5,94. M. 8,34. युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ Bhag. 6,17. MBh. 1,5943. 6153. 3,16720. 5,1295. Hariv. 4011. R. 2,80,15. 3,24,1. 67,24. Suçr. 1,124,1. Mâlav. 49. 34,3. Vikr. 12,6. 87,6. Spr. 976. 1643, v. l. 1964. 3546. Kathâs. 25,164. 51, 207. Râǵa-Tar. 4, 412. 6, 208. Bhâg. P. 3, 5, 2. 24, 23. 33, 24. 4, 27, 12. Mârk. P. 85,76. Pańkat. 69,10. Hit. 18,3. LA. (III) 34,3. 36,11. इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा Verz. d. Oxf. H. 181,*a*,24. 30. अ° Spr. 3546. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 252. Sarvadarçanas. 29, 2. 34,22. 79,16. सु° R. 2,60,23. 82,28. 5,29,4. युक्तम् adv. *auf passende Weise* Spr. 3915. द्विजकुलनिलयं नाथ युक्तं त्यजामि so v. a. *es ist angemessen, dass ich verlasse* 4540. न युक्तं वसत *es ist nicht angemessen, dass ihr wohnt* Hariv. 6017. युक्तमांसल *gehörig fleischig* Varâh. Bṛh. S. 70,9. युक्तशीतोष्ण *nicht zu kalt und nicht zu heiss* R. 2,44,9. युक्ते च दैवे युध्येत *günstig* M. 7,197. युक्ते मुहूर्ते R. 1,73,8 (75,9 Gorr.). 5,73,14. मुहूर्तेन सुयुक्तेन 72,20. *passend u. s. w. für;* mit gen.: अनुरूपो हि युक्तश्च त्वं ममाहं तवापि च MBh. 3, 16702. 14, 2308. R. 3, 52, 40. 5,24,6. Mâlav. 69, 1. Vṛddha-Kâṇ. 15,7. Râǵa-Tar. 4,62. Prab. 21,14. ममात्रावस्थानमयुक्तम् Hit. 30,17. mit loc.: युक्तमेतत्त्वयि MBh. 2,4. 5,6089. R. 2,90,20 (99,33 Gorr.). 101,11. युष्माभिर्दर्शने युक्तम् so v. a. *für euch sehenswerth* Hariv. 6009. मल्लं राजा मल्लयामास यथा युक्तं रक्षणे वै प्रजानाम् MBh. 5,7461. युक्तं (अयुक्तं) यत् *es ist passend (unpassend) dass* R. 4,16,49. 6,105,11. Kathâs. 14,3. 32,72. Pańkat. 170,8. युक्त und अयुक्त mit einem infin.: युक्तमितो ऽन्यतः प्रयातुम् Spr. 2369. Mudrâr. 103,5. Kathâs. 32,48. Hit. 41,1. Prab. 55,12. पिशुनवचनैर्दुःखं नेतुं न युक्तमिमं जनम् Spr. 585. Mudrâr. 14,4. Ratnâv. 46,8. Kathâs. 28,104. न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम् Çâk. 56,9. Prab. 13,14. वराहमिहिरस्य न युक्तमेतत्कर्तुम् Varâh. Bṛh. S. 47, 2. Bhaṭṭ. 5,86. अयुक्तं निधने कामं पुत्रस्य यतितुं मया R. 6,69,17. न युक्तं भवताहमशुचि दृष्ट्वा प्रतिशापं दातुम् MBh. 1,781. युक्तं तस्याप्रमेयस्य वीर्यसत्त्ववतो मया । समाश्वासयितुं भार्याम् 3,2678. 14,838. 1610. युक्तं हि यशसा क्षत्रं स्वर्गं प्राप्तुमसंशयम् 26. तस्मात्प्रतिक्रिया युक्ता भीष्मे कारयितुं तव 5,6094. तस्मात्प्रतिक्रिया कर्तुं युक्ता तस्मै त्वयानघ 7022. 7057. दैवोद्यानानि — युक्तान्यासेवितुं त्वया R. 3,52,39. Kathâs. 22,169. न युक्तं भवताहमनृतेनोपचरितुम् MBh. 1,769; vgl. Hoefer, Vom Infinitiv S. 87. 121 und Zeitschr. f. d. W. d. Spr. 2,182. fgg. — 11) युञ्जान (Spr. 4350) und युक्त (R. 6,109,3) *dem es wohlgeht, sich in guten Verhältnissen befindend.* — 12) युक्त in der Gramm. *primitiv* (Gegens. *abgeleitet*) P. 1, 2,51. — युञ्जान s. auch bes. Vgl. दैवयुक्त, प्रातर्युक्त.

— caus. योजयति, °ते (aus metrischen Rücksichten), अयूयुजत् 1) *schirren, anspannen* Kauç. 14. 15. योजयध्वं रथान् MBh. 1, 7947. रथान्योजयत 7948. 4,1025. R. 1,69,5. 2,39,10. 12. 70,29. स्यन्दनं तैर्हयोत्तमैः । योजयित्वा 46,26. श्यामतुरंगयोजितं रथम् Bhâg. P. 1,16,12. अश्वान्योजयित्वा MBh. 3,2290. 2788. fg. रथे 2790. 13036. 4,1017. R. 2, 57, 3 (2 Gorr.). 7,46,2. Varâh. Bṛh. S. 61,9. Bhâg. P. 5,21,15. अयूयुजन्नुष्ट्रखराश्वतरांश्च नागान्हयांश्च R. 2,82,31 (89,13 Gorr.). — 2) *ein Heer rüsten:* वरूथिनीम् MBh. 4,985. R. 1,51,21. षडङ्गिनीम् R. Gorr. 1,52,21. सैन्यम् 78,5. *Netze, Schlingen stellen, auswerfen:* जालं ते योजयामासुः MBh. 13,2654. पाशो योजितः Hit. 21,10, v. l. — 3) *gebrauchen, anwenden, verrichten:* बहुधा ह्याशिषस्तस्य योजिताः so v. a. *dargebracht, gesprochen* MBh. 7,718. किमाश्रयो मे स्तव एष योज्यताम् Bhâg. P. 4,15,22. ब्रह्मदण्डमयूयुजन् । राज्ञि 13,22. छन्दांस्ययातयामानि योजितानि धृतव्रतैः *angewandt* 27. सह गोपीभिर्योजयन्मधुराः कथाः *Worte wechselnd, sich unterhaltend* Hariv. 5743. परस्य पत्न्या पुरुषः संभाषां योजयन्रहः M. 8, 354. गुणवद्भिः सदा नरैः । स कथां योजयामास मैत्रीं संगतमेव च *pflegte* R. Gorr. 2,1,6. *unternehmen, beginnen:* मत्तोन्मत्त°योजितो व्यवहारः Jâǵń. 2,32. *zu Ende bringen:* अर्धनिष्पन्नं तद्धूर्यदयोजयत् Râǵa-Tar. 5, 403. — 4) *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (dat.) *antreiben:* प्रबोधोत्पत्तये शमदमादीन्योजयामः Prab. 18, 10. पापान्निवारयते योजयते हिताय Spr. 1771. *Jmd verhelfen zu* (loc.): परे तत्त्वे Sarvadarçanas. 88, 10. *Jmd einsetzen, anstellen bei, beauftragen mit* (loc.): अहं दण्डधरो राजा प्रजानामिह योजितः Bhâg. P. 4, 21, 21. भक्ष्यभोज्याधिकारेषु दुःशासनमयोजयत् MBh. 2, 1290. अत्र कर्मणि 5,7016. Kâm. Nîtis. 19,8. Bhâg. P. 5,5,15. Mârk. P.

95,18. कुटुम्बभारोद्वहने Kathâs. 22,160. यौवराज्ये Râǵa-Tar. 5,129. Mârk. P. 118,21. स्वे स्वे विषये 50,35. fg. सर्गयोजित Bhâg. P. 3,13,17. — 5) *auflegen* Âçv. Grhj. 4,3,1. योजयस्व धनुःश्रेष्ठे शरम् R. 1,75,29. ततो ऽक्रमानुपूर्व्येण दिव्यान्यस्त्राण्ययोजयम् MBh. 3,12232. 12313. 5,7202. Hariv. 16079. fg. किमर्थमस्त्रं रक्षस्सु न योजयसि *richten auf* R. 5,36,48. 68,18. *anfügen, befestigen:* अयोजयम्। वीणासु तन्त्रीः Kathâs. 26,168. त्रुटितं पयोधरतटे हारं पुनर्योजय Sâh. D. 42,21. यद्वाचि तत्त्वं गुणकर्मदामभिः सुदुस्तरैर्वत्स वयं योजिताः Bhâg. P. 5,1,14. नक्षत्राणि कालायन ईश्वरयोजितानि 22,11. *hinstellen:* पदातींश्च महीपालः पुरो ऽनीकस्य योजयेत् Spr. 4498. *hineinthun, versetzen in:* योजयेद्दीर्घं यन्त्रे Sûrjas. 13,20. कर्माणि कार्यमाणो ऽहं नानायोनिषु योजितः Bhâg. P. 7,13,23. वायुं वायौ क्षितौ कायं तेजस्तेजस्ययूयुजत् 4,23,15. दुःखे महति तत्र त्वां योजयामि R. Gorr. 2,38,7. Bhâg. P. 1,18,50. 3,25,10. सुकुले योजयेत्कन्यां पुत्रं विद्यासु योजयेत्। व्यसने योजयेच्छत्रुम् Spr. 5235. H. 16. Bâlab. 3. *anfügen:* उदर्कान् Kauç. 8. *hinzufügen* P. 8,1,73, Sch. — 6) मनः, आत्मानम् *den Geist richten auf, sich vertiefen in* (loc.) Hariv. 14555. Bhâg. P. 4,31,3. Mârk. P. 48,4. आत्मानं योज्य *sich sammelnd, sich zusammennehmend* MBh. 6,5816. — 7) *verbinden, vereinigen, zusammenfügen, zusammenbringen* Varâh. Brh. S. 54,114. 55,19. Râǵa-Tar. 5,104. Pańkat. 244,5 (in der Ausg. von Bühler besser यावज्जीवं संचारयति). न चेदिदं द्वंद्वमयोजयिष्यत् Kumâras. 7,66 (= Ragh. 7,14). अनया यदि मित्रं न योजयेयमहम् Kathâs. 22,83 Prab. 41,14. तेन योजितसंबन्धम् Kumâras. 6, 50. मोदकान् — फलाकारान्सुयोजितान् R. Gorr. 1,9,37. शत्रुणा योजयेच्छत्रुम् Spr. 2941. रत्नानि शास्त्राणि च Varâh. Brh. S. 104,1. तेनेयं योजिता वृत्तिः *verfasst* Roth, Zur L. u. G. d. W. 60. so v. a. *in Ordnung bringen* Spr. 2512. *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen, ausstatten, theilhaftig machen, beschenken:* (धनुः) योजयामास शरेण R. Gorr. 1,77, 32. योजयामास नवया मौर्व्या गाण्डीवम् MBh. 4,1910. R. 1,49,11. विषघ्नैरगदैश्चास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत् M. 7,218. द्वंद्वैरयोजयच्चेमाः सुखदुःखादिभिः प्रजाः 1,26. तपसा योज्य देहम् MBh. 1,3582. 3,8425. रिपुं प्राणैः 6477. अभिषेकेण गोविन्दम् Hariv. 4022. R. 2,61,20. R. Gorr. 1,32,9. 2,26,35. 35,50. 3,2,8. 17,26. 5,2,42. 6,98,26. 7,20,25. Spr. 442. 1607. 5235. Ragh. 10,57. 12,40. Mâlav. 34. Râǵa-Tar. 1,281. Mârk. P. 113, 7. Sâh. D. 289. Daçak. in Benf. Chr. 183,12. Pańkat. ed. orn. 2,5. (तम्) योजयामास बाहुभ्यां पशुं रशनया यथा so v. a. *umfangen, umschlingen* MBh. 4,771. योजयन्तं च वाक्यमात्रेण भामिनीम् so v. a. *nur Worte mit ihr wechselnd* Hariv. 7392. योजित *versehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend) Varâh. Brh. S. 2,20. Râǵa-Tar. 3,163 (st. des verb. fin.). Bhâg. P. 10,79,17 (desgl.). मणिरिव कृत्रिमरागयोजितः Spr. 1920. MBh. 5,532 (पीडित die ed. Bomb.). Hariv. 4652. — 8) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen:* कालं जगति योजयन् Hariv. 2586. राजसु योजितांहसाम् Bhâg. P. 1,8,37. — 9) mit dem instr. eines Sternbildes *die Conjunction desselben mit dem Monde angeben können* P. 3,1,26, Vârtt. 7. — 10) med. *geringachten* Vop. in Dhâtup. 33,36.

— desid. युयुक्षति 1) *Jmd* (acc.) *anzustellen —, an ein Geschäft zu setzen Willens sein:* कर्म चेच्छामि वै कर्तुं तस्य यो मां युयुक्षति MBh. 4, 248. 251. — 2) *aufzulegen* (Pfeile auf den Bogen) *Willens sein:* बाणाविमौ — कस्मै युयुक्षसि Bhâg. P. 5,2,8. — 3) med. *sich zu vertiefen gesonnen sein* Bhatt. 3,41.

— अधि *auflegen, aufladen* Bhâg. P. 10,71,16.

— अनु med. P. 1,3,64, Vârtt. 1) *wieder einholen, — an sich ziehen* Ait. Br. 4,26. Çat. Br. 5,4,2,3. — 2) *Jmd* (acc.) *befragen, fragen nach* (acc.) M. 8,79. 259. MBh. 4,26. 105. 12,1932. 1934 (mit dopp. acc.). 10995. 14,145. Hariv. 3057. R. Gorr. 2,110,4. Ragh. 5,18. 11,62. Çiç. 13,68. Daçak. 58,15. 82,5. Prab. 111,13. P. 8,2,94, Sch. — 3) *eine Lehre ertheilen* Âçv. Çr. 8,14,1. अनुयोक्तुं जगाद Râǵa-Tar. 6,61. अनुयुक्त MBh. 13,1588 nach Nîlak. = भृतकाध्येता *von einem bezahlten Lehrer unterrichtet werdend.* — 4) *sich bedanken:* ते चान्वयुञ्जत (= आशिषो युयुजुः Comm.) Bhâg. P. 10,7,16. — 5) *sich Jmd* (acc.) *anschliessen, in Jmdes Dienste treten* Spr. 4350. — 6) अनुयुक्ता हि साचिव्ये Spr. 3472 fehlerhaft für अनि° हि सा°, धुरि चानुयुज्यमानः Spr. 280 fehlerhaft für धुरि च नियु°. — Vgl. अनुयोक्तार् fgg. — caus. 1) *auflegen* (ein Geschoss) R. 5,68,11. — 2) *anfügen, anreihen* Kauç. 44. 53. 106. 136. — desid. *zu fragen nach* (acc.) *Willens sein:* धर्माननुयुयुक्षतः MBh. 12,1957.

— अभ्यनु *befragen:* °युज्य MBh. 12,5667.

— पर्यनु dass.: °युक्त Kathâs. 27,162.

— समनु 1) *fragen nach:* °युज्य Verz. d. Oxf. H. 170,b,39. — 2) *Jmd* (acc.) *anweisen, Jmd einen Befehl ertheilen:* न च प्रेषयिता कश्चित्प्रेष्यैः समनुयुज्यते R. 5,1,68. — Vgl. समनुयोज्य.

— अप med. *sich lösen von* (abl.) Çat. Br. 5,5,2,4.

— अभि med. P. 1,3,64, Vârtt. 1) med. *sich den Wagen anspannen für, zu* (acc.): यां गतिमभियुङ्क्ते तां गतिं गत्वान्ततो विमुञ्चते Çat. Br. 1,8, 2,27. — 2) act. *wiederholt —, doppelt anspannen* Çat. Br. 9,4,2,11. — 3) med. *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (dat.) *auffordern:* यश्च त्वाभियुञ्जीत युद्धाय R. 7,61,9. — 4) *Jmd* (acc.) *angreifen;* med. MBh. 5,1975. 1982. 12,3502. R. 6,2,2. Kâm. Nîtis. 8,79. act. Varâh. Jogaj. 3,1. °युज्य Hariv. 12151. Daçak. in Benf. Chr. 200,23. °योक्तुम् Kâm. Nîtis. 15,61. Kathâs. 18,86. 25,277. 38,9. 49,86. pass. Kâm. Nîtis. 8,39 (wo mit dem Comm. तथान्या याभि° zu lesen ist). 9,76. Kathâs. 15,97. Prab. 9,3. °युक्त *angegriffen* AK. 3,4,14,86. H. an. 4,95. Med. t. 182. R. 2,10,27 (= कृतपराभव Comm.). 5,80,9. 6,11,13. Spr. 191. 207, v. l. 1273, v. l. 1330. 1949. 3548. Kathâs. 15,11. 34,212. Prab. 8,10. 84,1. °योज्य (s. auch bes.) *anzugreifen* Varâh. Brh. S. 5,84. Jogaj. 3,1. आधिव्याधिजदुःखेन कदाचिन्नाभियुज्यते *wird nicht heimgesucht* Mârk. P. 137,3. — 5) *anklagen,* mit dem acc. der Person und der Sache: यत्परैरभियुज्यते M. 8,183. Spr. 3386. °युक्त *angeklagt, verklagt* Jâǵn. 2,9. 28. 100. Mrkkh. 143,8. — 6) *Etwas fordern, begehren, Ansprüche auf Etwas machen:* अभियुक्त = प्रार्थित Trik. 3,3,170. Hariv. 12190 (अनिर्मुक्त die neuere Ausg.). — 7) act. *Jmd* (acc.) *an Etwas* (loc.) *stellen, mit Etwas beauftragen:* सर्वांस्तानभ्ययुञ्जंस्ते तत्राग्निचयकर्मणि MBh. 14,2637. — 8) act. *sich an Etwas* (acc.) *machen, an Etwas gehen:* कर्म समाम्नायाम्नातमभियुञ्जन् (= अनुतिष्ठन् Comm.) Bhâg. P. 5,4,8. औपकुर्वाणककर्माण्यनभियुक्तानि (= अनादृतानि Comm.) 9,6. med. *sich anschicken,* mit inf. Daçak. in Benf. Chr. 190,2. *behandeln* (ärztlich) *mit* (instr.): औषधैः Suçr. 1,94,16. — 9) med. *seine Thätigkeit entfalten, wirksam sein:* वायुर्यत्राभियुज्यते (= शब्दमभिव्यक्तं करोति Comm.) Çvetâçv. Up. 2,6. — 10) °युक्त *ganz bei*

einer Sache seiend, hingegeben; = तत्पर H. an. 4,95. Med. t. 182. Bhag. 9,22. R. 5,9,19. इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा Uttarar. 56,15 (73,8). Bhâg. P. 1,19,24. कोष्ठागारे ऽभियुक्तः स्यात् *bedacht auf* Kâm. Nîtis. 5,77. आनृशंस्याभियुक्त MBh. 13,285. अर्थपतिसेवाभियुक्त Daçak. in Benf. Chr. 190,5. — 11) °युक्त *bewandert in* (loc.), *eine Sache verstehend, ein Sachkenner:* कुहकादिषु प्रयोगेषु Kathâs. 32,126. अभियुक्तैरङ्गीकृतः (so ist zu lesen) Mallin. zu Kumâras. 3,44. Sâh. D. 84,10. Vedântas. (Allah.) No. 124. Kâç. zu P. 3,3,122. Sâj. zu Çat. Br. 2,6,2,7. 5,2,1,8. Sarvadarçanas. 147, 2. fg. 157,17. 175,12. — 12) °युक्ताः Bez. der den Vaiçja entsprechenden Bewohner von Kuçadvîpa Bhâg. P. 5,20,16. — Vgl. अभियुग्वन् fgg. — caus. *Jmd* oder *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen, einer Sache theilhaftig machen:* दिष्टान्तेन MBh. 7,2577. Pańkar. 3,9,10. Prab. 109,15. Pańkat. 163,15.

— प्रत्यभि *einen Gegenangriff auf Jmd* (acc.) *machen:* तं प्रत्यभियुक्तवान् Kathâs. 107,99. *angreifen:* परैः प्रत्यभियुक्तानाम् Prab. 86,18, v. l. — Vgl. प्रत्यभियोग. — caus. *eine Gegenklage gegen Jmd* (acc.) *vorbringen* Jâǵn. 2,9.

— आ 1) *anschirren* Ṛv. 3,50,2 (act.). वातान्ह्यश्वान्धुर्यायुयुञ्जे 5,58,7. 10,44,7. आयुञ्जन् MBh. 1,7948 fehlerhaft für अयुञ्जन्, wie die ed. Bomb. hat. — 2) med. *anlegen, befestigen:* अलंकारमायुञ्जाते Çâk. Ch. 80,2. — 3) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *zu Theil werden lassen:* तद्भवान् — मय्यायुङ्क्तामनुग्रहम् Bhâg. P. 3,14,10. — Vgl. आयुक्त fg. (*ganz bei einer Sache seiend* Taitt. Up. 1,11,4). — caus. 1) *fügen —, thun auf* (loc.) Pańkar. 3,2,17. मालाः — आयोजिताः शिरसि Ṛt. 2,21. *befestigen an* (loc.) Bhâg. P. 5,23,3. — 2) *zusammenfügen, bilden:* कुसुमायोजितकार्मुकः Kumâras. 4,24.

— उपा act. *anschirren* Ṛv. 3,35,2.

— समुपा, °युक्त *versehen mit, erfüllt von:* ऋषिभिः समुपायुक्तं तीरम् MBh. 3,10099.

— व्या *sich trennen, auseinandergehen:* °युज्य Mârk. P. 32,20.

— समा 1) *schirren, rüsten, zurechtmachen:* व्रजान्स्वान्स्वान्समायुज्य ययू रूढपरिच्छदाः Bhâg. P. 10,11,29. नावं समायुङ्क्ताम् R. 7,47,1. — 2) *Jmd Etwas auftragen, anvertrauen:* ये ऽर्थाः स्त्रीषु समायुक्ताः Spr. 4896. — 3) (feindlich) *zusammenstossen mit* (acc.): यथा नायं समायुज्याद्धार्तराष्ट्रान् (so die ed. Bomb.) MBh. 4,1603. — 4) *verbinden —, zusammenbringen mit* (instr.): धूम्राक्षेण समायुक्तः (feindlich) *zusammengestossen mit* R. 6,18,20. अग्निना *in Berührung gekommen mit* MBh. 15,1072. *verbunden —, versehen —, ausgerüstet —, ausgestattet mit* (instr. oder im comp. vorangehend) 3,3017. Hariv. 10197. R. 5,93,8. Spr. 2822. Sûrjas. 13,17. Varâh. Bṛh. S. 79,15. M. 12,28. Bhag. 15,14. MBh. 3,2783. 13,5232. Hariv. 4595. R. 1,62,18. 2,91,22 (100,19 Gorr.). 3,27,17. 42,18. 5,14,31. 6,93,23. Mṛkkh. 34,16. Spr. 4622. 4782. Varâh. Bṛh. S. 54,121. Mârk. P. 32,35. Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,37. Pańkar. 1,7,2. 65. — Vgl. समायोग. — caus. *versehen mit:* न तद्धनुर्मन्दबलेन शक्यं मौर्व्या समायोजयितुम् MBh. 1,7200.

— अभिसमा, °युक्त *verbunden —, versehen mit* (instr.): अकीर्त्या MBh. 12,3478.

— उद् med. P. 1,3,64, Vârtt. Vop. 23,51. 1) *sich rüsten, Anstalten treffen* Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,1. रन्तुम् Daçak. 32,15. उद्युक्त *gerüstet, schlagfertig, zur That bereit, an's Werk gehend, mit allem Eifer sich an Etwas machend* MBh. 7,4268. R. 1,1,45. 4,12,7. उद्युक्तो विद्यात्तमधिगच्छति Spr. 1093. Kâm. Nîtis. 8,50. 13,59. 15,60. 18,43. Varâh. Bṛh. S. 4,24. 15,20. Kathâs. 45,35. 134. Râǵa-Tar. 5,331. Mârk. P. 99,12. Bhaṭṭ. 5,16. अग्निप्रवेशाय Kathâs. 101,352. दानाध्ययनयज्ञेषु Mârk. P. 50,75. इषस्त्वं प्रति MBh. 1,5231. विग्रहयोग्युक्त Râǵa-Tar. 2,19. 3,1. Spr. 2573. AK. 3,1,9. — 2) *sich auf und davon machen:* स ह तत एव शर्यात उद्युयुजे Çat. Br. 4,1,5,7. तदहरेव पौर्णमासेन हविषेष्ट्वोद्युञ्जीरन् Lâṭj. 10,16,6. 7. यथो हस्ती हस्तिन्याः पदेन पदमुद्युजे etwa so v. a. *auf Schritt und Tritt nacheilt* AV. 6,70,2; die Stelle ist demnach u. पद 8) zu streichen und u. 1) zu stellen. — Vgl. उद्योग fg. — caus. *aufregen, anfeuern, zur That antreiben:* युद्धाय Hariv. 5133. R. 5,48,13. MBh. 3,1367. 5,70. Hariv. 6579. R. 6,27,22. 31,22. आखण्डलोद्योजिताकाण्डचण्डाम्बुवाहाः *erregt, zusammengetrieben* Prab. 81,8.

— समुद् caus. *anfeuern:* समराय Prab. 85,18. Mâlav. 9,17.

— उप med. P. 1,3,64. Vop. 23,51. ausnahmsweise auch act. 1) *anschirren* Ṛv. 1,39,6. 140,4. गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः 151,4. उप नूनं युयुजे वृषणा हरी 8,4,11. 10,102,7 (act.). AV. 4,23,3. *dazu schirren* Çat. Br. 5,1,4,11. — 2) *sich anschliessen:* महोभिरेताँ उप युज्महे Ṛv. 1,165,5. — 3) *sich an Etwas* (loc.) *machen, sich kümmern um:* नासंपृष्टो ह्युपयुङ्क्ते (व्युपयुङ्क्ते v. l.) परार्थे Spr. 3995. — 4) *sich an Jmd anschliessen, in Jmdes Dienste treten:* न वै प्राज्ञा गतश्रीकं भर्तारमुपयुञ्जते Spr. 4350. — 5) *sich aneignen, für sich nehmen:* तस्यादित्यो भामुपयुज्य भाति MBh. 13,7375. चौरैर्हृतं धनम् M. 8,40. *annehmen* Hariv. 14546. — 6) *verwenden, anwenden, gebrauchen:* अहीनसूक्तान्युपयुञ्जाना यन्ति Ait. Br. 6,21. den Soma Çat. Br. 14,3,2,30. (धनम्) उपयोक्तुं द्विजाग्र्येभ्यः (so die ed. Bomb.) हव्यवाहे च MBh. 2,1223. 14,2068. पणबन्धमुखान्गुणानजः षडुपायुङ्क्त Ragh. 8,21. Bhâg. P. 7,13,8. प्रेष्यभावेन नामेयं देवीशब्दक्षमा सती। स्नानीयवस्त्रक्रियया पत्त्रोर्णं वोपयुज्यते॥ Mâlav. 87. *geniessen* (auch von Speisen), *verzehren:* पञ्चागमुपयुञ्जानाः Hariv. 2872. राज्यमुपयुज्यताम् Mṛkkh. 175,8. दारादीनुपयुङ्क्ते Bhâg. P. 5,26,9. 10,70,13. अन्नम् u. s. w. Âçv. Gṛhj. 4,7,27. Lâṭj. 1,6,3. MBh. 1,709. 715. 734. 3637. 6862. 3,57. 10064. 14860 (गोरसानुपभोगांश्च). 15364. 13,236. Hariv. 1198. 3794. R. Gorr. 2,56,30. 95,15. Suçr. 1,20,6. 113,9. 128,5. 2,75,2. Megh. 13. फलान्युपायुङ्क्त स दण्डनीतेः Ragh. 18,45. Kathâs. 37,93. 95. 39,13. 40,50. Daçak. in Benf. Chr. 199,17. fg. Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,25. 313,*a*,12. Bhâg. P. 1,15,11. 5,16,24. 20,22. 24,16. 6,2,19. Bhaṭṭ. 8,39. उपयोक्ष्यति (उपभोक्ष्यति ed. Bomb.) MBh. 1,6221. 3,12140. न चोपयुङ्क्ते (अग्निः) तद्दारु *verzehrt* Spr. 3384. विरहाग्न्युपयुक्तदेहा Bhâg. P. 10,29,35. 9,2,14. क्रमेणास्योपयुञ्जन्ति रूपमायुस्तथैव च MBh. 11,173. उपयुक्तोदका प्रपा *verbraucht* R. Gorr. 2,125,12. — 7) pass. *zur Anwendung kommen, tauglich —, nützlich —, erforderlich sein, sich eignen, am Platze sein* MBh. 3,12739. उभयमेव तत्रोपयुज्यते फलं धर्मस्यैवेतरस्य च 5,1598. नोपयुज्यति कर्माणि Hariv. 11823. R. 5,73,22. इयं नृपाणामुल्लासे ह्रासे वा देशकालयोः। — कथा युक्तोपयुज्यते Râǵa-Tar. 1,21. यदि प्राण्युपकाराय देहो ऽयं नोपयुज्यते Spr. 2365. मुक्तारत्नस्य शाणाश्मघर्षणं नोपयुज्यते 3331. 3034. शरदभ्रस्य शुभ्रत्वं वद कुत्रोपयुज्यते 1915. 1962. मांसास्थिक्लेशसंघो हि क्वोपयुज्यत एष ते Kathâs. 41,43. कर्मसूपयुज्यते Prab. 110,10.

SÂH. D. 85, 2. PAÑKAT. 155, 8. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 112. KULL. zu M. 10, 5. P. 3, 1, 56, Sch. तस्येयमुपयुज्यते *eignet sich für ihn, ist für ihn bestimmt* BHÂG. P. 9, 23, 37. अनुपयुज्यमान *zu Nichts nützend* UTTARAR. 73, 16 (95, 1). उपयुक्त *zur Anwendung kommend, nöthig, erforderlich, am Platze seiend:* यद्यद्वस्तूपयुक्तं च तस्याः KATHÂS. 36, 65. 38, 71. 61, 11. 123, 31. RÂGA-TAR. 4, 525. प्रयाणेषु 588. प्रभुकार्योपयुक्तासु KATHÂS. 53, 140. 22, 38. PRAB. 110, 6. 9. सवर्णसंज्ञोपयुक्ताः स्थानप्रयत्नाः P. 1, 1, 9, Sch. PAÑKAR. 1, 11, 4. 2, 28. परार्थानुपयुक्तेन राज्येन KATHÂS. 72, 173. MADHUS. in Ind. St. 1, 16, 10. किमुपयुक्तो ऽयमेतावद्वर्तनं गृह्णात्यथानुपयुक्तो वा so v. a. *es verdienend* HIT. 98, 14. अनुपयुक्तमिवात्मानं समर्थये *unwürdig* ÇÂK. 97, 3. — Vgl. उपयोक्तव्य (*zu geniessen*) fgg. — caus. 1) *berühren, zusammenstossen mit* (acc.) BHÂG. P. 5, 16, 25. — 2) *anwenden* SUÇR. 1, 113, 10. — desid. s. उपयुयुत्.

— व्युप = उप 3) Spr. 3995, v. l.

— समुप *geniessen, verzehren:* पर्णं समुपयुक्तवान् MBH. 3, 1538. — caus. dass.: बलिषड्भागमुद्धृत्य बलिं समुपयोजयेत् (यः) MBH. 12, 5233.

— नि gewöhnlich med. 1) *anbinden, fesseln an* (loc.), bes. das Opferthier an den Pfosten: पाशे स बद्धो डुरिते नि युज्यताम् AV. 2, 12, 2. VS. 6, 9. ÇÂÑKH. ÇR. 4, 14, 7. ÇAT. BR. 3, 7, 3, 3. 9, 1, 22. परिधौ पशुं नियुञ्जन्ति ÂÇV. ÇR. 9, 2, 4. पशुं बद्ध्वा यूपे रशनायां वा नियुनक्ति GRHJ. 4, 8, 15. AIT. BR. 7, 16 (निनियोज perf.). षट्शतानि नियुज्यन्ते पशूनां मध्यमे ऽहनि Cit. bei GAUḌAP. zu SÂÑKHJAK. 2. MBH. 14, 2635. R. 1, 13, 31. रजकेनासौ (गर्दभः) शस्यक्षेत्रमध्ये नियुक्तः HIT. 81, 13. समुद्रो ऽयं नियुज्यताम् R. 5, 92, 17. धुरि *an die Deichsel spannen:* वहन्तं किं तुदसि मां नियुज्य धुरि मा R. SCHL. 2, 36, 14. so v. a. *vorn an stellen* 5, 2, 3. so v. a. *die schwerste Arbeit aufbürden* Spr. 280, v. l. *verbinden, zusammenfügen:* कपोतो (*eine best. Stellung der Hände*) भीतौ u. s. w. नियुज्यते (vgl. मुष्टिं, अञ्जलिं बन्ध्) Cit. bei ÇAÑK. zu ÇÂK. 78, 9. — 2) *an Jmd binden* so v. a. *von Jmd abhängig machen:* तं गृणाते नि युंग्धि AV. 8, 3, 11 (v. l. ṚV.). बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ÂÇV. GRHJ. 1, 21, 7. आत्मन्येव श्रियम् ÇAT. BR. 5, 5, 3, 6. भृशं नियुक्तास्तस्यां हि मदनेन *an sie gekettet* R. 5, 20, 6. — 3) den Blick, den Geist, die Gedanken *richten auf* (loc. dat.): नियुक्ता यत्र वा दृष्टिः MBH. 1, 7694. तस्य विनाशाय शीघ्रं राज्ञा मनो नियुङ्क्ते KULL. zu M. 7, 12. आत्मा सुखे नियोक्तव्यः Spr. 2723. *stellen an* (loc.): गुरुस्थाने न मां वीर नियोक्तुं त्वमर्हसि MBH. 3, 1858. *bringen auf:* कथमिमां पितृपैतामहे मार्गे नियोक्तुमहमुत्सहे 1, 6156. *Jmd anhalten —, anweisen zu, anstellen bei, zu, betrauen —, beauftragen mit:* चातुर्वर्ण्यं च लोके ऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति R. 1, 1, 92. MBH. 5, 1561. ÇÂK. 9, 13. हिते Spr. 2174. यं तु कर्मणि यस्मिन्स न्ययुङ्क्त प्रथमं प्रभुः M. 1, 28. आकरकर्मान्ते 7, 62. कार्यदर्शने 8, 9 (act.). कृत्ये MBH. 2, 1228. कार्ये गुरुणि KUMÂRAS. 3, 13. क्षेमतुरंगरक्षणे RAGH. 3, 38. वाणिज्यव्यवहारेषु KATHÂS. 43, 70. लेखस्य लेखने 267. 71, 82. BHÂG. P. 10, 73, 24. HIT. 41, 22. 62, 20. 90, 18. प्राणेषु च धनेषु च Spr. 2560. नियुक्तेयं वनवासे R. 2, 37, 16. कार्येषु M. 9, 231. MBH. 4, 131. अश्वेषु 317. R. 2, 66, 7 (68, 17 GORR.). 4, 9, 7. P. 6, 2, 75. ÇÂK. 13, 23. RAGH. 5, 29. 6, 26. 31. द्वारे PAÑKAR. 1, 7, 76. MÂLAV. 11. Spr. 1583. 2572. 3472 (Conj.). KATHÂS. 14, 35. P. 4, 4, 70, Sch. BHÂG. P. 5, 21, 16. 8, 14, 1. HIT. 91, 11, v. l. 97, 17. BHAṬṬ. 3, 5. स पुत्रमेकं राज्याय पालयेति नियुज्य R. 1, 55, 11 (स पुत्रमेकं राज्याय नियुज्य परिपालने GORR. 56, 11). दुहितरमतिथिसत्काराय नियुज्य ÇÂK. 7, 15. शुश्रूषायै मम KATHÂS. 1, 40. पित्रा नियुक्तो वनवासाय R. 4, 4, 5. BHÂG. P. 5, 21, 17. राज्ञां संमाननार्थं च पौराणां च तेन न्ययुज्यत KATHÂS. 14, 34. सो ऽपि नियुक्तवान्। गूढमन्तःपुरे तत्र निशि नारीमन्वेक्षितुम् 3, 70. 34, 68. राज्यभारनियुक्त *betraut —, beauftragt mit* R. 1, 27, 18. 5, 70, 9. Spr. 884. वृषभ एष राज्ञा पिङ्गलकेनारण्यरक्षार्थं सेनापतिर्नियुक्तः *als Heerführer eingesetzt* HIT. 58, 17. एतस्यात्मजौ — वर्षपती नियुज्य BHÂG. P. 5, 20, 31. प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति *anhalten, dazu treiben* BHAG. 18, 59. MBH. 3, 2758. 5, 6084 (act.). HARIV. 11161 (act.). R. 1, 54, 16 (55, 16 GORR.). R. GORR. 2, 20, 12. 5, 78, 23. Spr. 4014. नियुज्यताम् HIT. 88, 17. नियुज्यमान Spr. 3544. MBH. 1, 6943. नियोक्तव्य 4862. 5, 6084. M. 9, 64. JÂǴÑ. 2, 3. नियुक्त *angehalten, angewiesen, angestellt, beauftragt, aufgefordert* M. 3, 173. 5, 27. 35. 9, 58. fgg. 63. 144. 167. R. 1, 14, 35 (31 GORR.). 2, 54, 15 (17 GORR.). 90, 12. 101, 7. 105, 36. fg. (114, 24. fg. GORR.). 107, 6. 7. RAGH. 16, 38. KATHÂS. 14, 54. 18, 276. 20, 88. 24, 222. 28, 93. BHÂG. P. 2, 6, 31. 5, 10, 4. BRAHMA-P. in LA. (III) 57, 16. अनियुक्त M. 9, 143. 147. JÂǴÑ. 3, 288. HARIV. 7338. R. GORR. 2, 62, 2. 95, 16. KATHÂS. 60, 112. नियुक्त m. *ein Angestellter, Beamter* Spr. 1009. — 4) *Jmd zur Rechenschaft ziehen:* न स राज्ञा नियोक्तव्यो न निक्षेप्तुश्च बन्धुभिः M. 8, 186. — 5) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *aufladen, auftragen:* गुरुकार्याणि सर्वाणि नियुज्य कुशिकात्मजे R. 1, 24, 22. भवद्भिर्यन्नियुज्यते BHÂG. P. 10, 41, 48. — 6) *verwenden:* गाथाम् PÂR. GRHJ. 1, 15. GOBH. 1, 4, 34. वासः 3, 1, 9. — 7) नियुक्त *bestimmt, vorgeschrieben:* पाठीनरोहितावाद्यौ नियुक्तौ हव्यकव्ययोः M. 5, 16. नियुक्तम् adv. *durchaus, auf jeden Fall, nothwendig* ṚV. PRÂT. 3, 12. 11, 23. P. 4, 4, 66. — 8) कृतत्रेतानियुक्तानि HARIV. 523 fehlerhaft für कृतत्रेतादियुक्तानि, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नियुक्ति, नियोक्तर् fgg. — caus. 1) *anspannen:* वृषभौ धुरि नियोज्य HIT. 46, 13. *anbinden, befestigen:* स्वकण्ठे पाशं नियोज्य PAÑKAT. 135, 4. रत्नं चामीकरनियोजितम् *gefasst in* Spr. 5020. — 2) *hinstellen, aufstellen:* पाशास्तत्र नियोजिताः HIT. 21, 10. शनैश्चरो ग्रहाणां च मध्ये पित्रा नियोजितः MÂRK. P. 78, 33. *legen —, auftragen auf* Verz. d. Oxf. H. 103, b, 8. *hinbringen zu:* केशेष्वाकृष्य तां रण्डां पाखण्डेषु नियोजय PRAB. 41, 17. *richten auf:* ब्रह्मनियोजितात्मन् KUMÂRAS. 3, 15. *Jmd versetzen —, bringen in, zu:* दास्ये MBH. 1, 1237. कृच्छ्रे R. GORR. 2, 10, 12. दुःखे 78, 3. दुःखमार्गे Spr. 253. संदेहे PAÑKAT. 8, 21. *anhalten —, zwingen zu:* क्लिशेषु M. 9, 324. धर्मे MBH. 1, 6191. विनये KÂM. NÎTIS. 1, 64. कर्मणि घोरे BHAG. 3, 1. अकृत्येषु Spr. 2689. an ein Amt, eine Beschäftigung *stellen*, in eine Würde *einsetzen:* स्वपदे KATHÂS. 22, 58. अस्मिन्विषये PRAB. 37, 8. कच्चिन्मुख्याश्च मुख्येषु (sc. कार्येषु) मध्यमेषु च मध्यमाः। जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्तात नियोजिताः॥ R. GORR. 2, 109, 20. यौवराज्ये R. SCHL. 2, 26, 23. मन्त्रित्वे KATHÂS. 6, 70. 25, 276. MÂRK. P. 78, 31. SARVADARÇANAS. 86, 9. PAÑKAT. 24, 5. कृत्यार्थे HARIV. 2098. तव कौतुकप्रतिकर्मणि KATHÂS. 45, 295. ग्राम्यधर्मेषु PAÑKAT. 31, 6 (27, 15 ed orn.). अर्थस्य संग्रहे व्यये च M. 9, 11. रत्नानां चान्ववेक्षणे। दक्षिणानां च वै दाने MBH. 2, 1292. अलिपङ्क्तिरनेकशस्त्वया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता KUMÂRAS. 4, 15. R. 2, 36, 4. प्राज्ञे, मूर्खे नियोज्यमाने Spr. 1887. fg. तद्बलानि सारमादयः सेनापतयो नियोज्यन्ताम् HIT. 102, 2. *Jmd anweisen —, antreiben zu, auffordern* (dat.): वनवासाय R. GORR. 2, 17, 20. रावणोच्छित्तये KATHÂS. 15, 82. खर्जूरानयनं प्रति 61, 32. अपत्यार्थम् M. 9, 68. R. 1, 38, 10. दिव्यार्थे PAÑKAT. 97, 1. अहमेव त्वया तत्र

किमर्थं न नियोजितः R. 4,16,47. Bhag. 3,36. MBh. 4,102. Hariv. 9695. R. Gorr. 2,16,11. 3,33,2. 5,28,10. 56,30. Mârk. P. 51,26. fg. Kusum. 23,8. — 3) *hingeben:* वित्तं सुपात्रे यो नियोजयेत् Spr. 1862. यदि स्वयमेवात्मानं वधाय नियोजयति Pańkat. 70,3. *übertragen:* उत्तमाधममध्यानि बुद्ध्वा कार्याणि पार्थिवः। उत्तमाधममध्येषु पुरुषेषु नियोजयेत्॥ Mâtsja-P. 89 im ÇKDr. u. मध्य adj. — 4) *anwenden, in's Werk setzen:* पूर्वं दैवं (sc. कार्यं) नियोजयेत् M. 3,204. बुद्धिम् *den Verstand anwenden* Spr. 179. — 5) *Jmd mit Etwas* (instr.) *versehen, einer Sache theilhaftig machen:* स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति Kumâras. 4,42. शासनशतेन Pańkat. 4,25. अभ्यागतक्रियया 117,12. शपथैः so v. a. *beschwören* Varâh. Bṛh. S. 88, 41. देशत्यागेन *belegen —, bestrafen mit* (unter नियोजयितव्य ungenau übersetzt) Pańkat. 261,6.

— अनुनि so v. a. नि 2), mit loc. oder dat.: ब्रह्मण्येव तत्रमनुनियुनक्ति Ait. Br. 2,33. Pańkav. Br. 18,1,14. 19,16,6. Kâth. 29,9.

— उपनि med. *ketten an* (loc.) Kâth. 29,9.

— विनि med. P. 1,3,64, Vârtt. selten act. 1) *lösen, abtrennen:* रूथेषु विनियुक्तेषु *vom Wagen abgelöst* MBh. 1,5491. pass. *auseinander fallen:* (गात्राणि, देहानि) कालेन विनियुज्यन्ते 11,91. — 2) *abschiessen:* विनियोक्ष्याम्यहं (विनिर्योक्ष्यामि Schl.) बाणान्बाणाजिह्मगान्मर्मसु R. ed. Bomb. 2,23,37. *richten auf:* प्रत्येकं विनियुक्तात्मा Kumâras. 2,31. — 3) *Jmd stellen an, anweisen zu, bestimmen zu, anstellen, beauftragen:* शेषां सेनां गुहाद्वारि विनियुज्य Hariv. 8054. रक्षार्थं यज्ञवाटस्य पाण्डवान्विनियुज्य 8053. 7048. कार्ये त्वां विनियोक्ष्यामि MBh. 1,4152. कार्ये ऽत्र विनियुज्यताम् R. 5,2,6. विनियुञ्जीत राज्ये त्वाम् MBh. 9,233. R. 4,9,4. अग्रे 7,92, 2. विनियुङ्क्ते भोगभुक्तये पुंसः Sarvadarçanas. 88,16. यथा सम्राडेवाधिकृतान्विनियुङ्क्ते Praçnop. 3,4. विनियुङ्क्ष्व माम् MBh. 14,1650. R. 2,59,20. 4,63,23. 7,13,3. सख्ये च विनियुज्यताम् *er werde in die Freundschaft eingesetzt* so v. a. *er werde zum Freunde gemacht* Hariv. 4034. — 4) *Etwas anwenden, verwenden, gebrauchen* Uttarar. 109,14 (148,10). Kathâs. 22,29. 53,97. 90,23. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 271 (अविनियुक्तत्व). 303. zu Khând. Up. S. 51. Kull. zu M. 8,30. 212. 11,25. Sarvadarçanas. 124, 17. किंचिद्विनियुज्य च *Etwas davon geniessend* Dhûrtas. 95,9; eben so und zwar mit kleiner Schrift als scenische Bemerkung ist zu lesen 90, 10. — Vgl. विनियोग fg. — caus. 1) *Jmd an Etwas stellen, anweisen zu, beauftragen mit:* विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः Jâǵń. 1,270. तेषामुत्पादनार्थाय मया त्वं विनियोजितः Hariv. 3003. अस्त्रेषु 9393. विनियोगे ऽस्मिन् R. 3,60,38. यो यत्र कुशलः कार्ये तं तत्र विनियोजयेत् Spr. 2556. Kâm. Nîtis. 5,76. नरं पशुत्वे विनियोजितम् *zum Opferthier erkoren* R. Gorr. 1,63,7. गुह्यकाधिपतित्वे Mârk. P. 108,20. मयात्र विनियोजितः 132,37. R. 4,20,11. — 2) *Jmd Etwas übertragen:* सर्वमेतत्तु भृत्येषु विनियोजयेत् M. 7,226. — 3) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *anbieten, darreichen* Pańkar. 3,7,25. — 4) *anwenden, gebrauchen* Çvetâçv. Up. 5, 5. 6,4. Suçr. 1,58,12. — 5) *verrichten:* कालासेवाकर्म Pańkar. 3,7,19.

— संनि 1) *bringen —, versetzen in:* ततो मां विषमे क्वापि व्यसने संनियोक्ष्यति Mârk. P. 99,20. — 2) *Jmd anweisen:* तदर्थं संनियोक्ष्यामि सर्वानेव दिवौकसः MBh. 1,2500. — Vgl. संनियोग. — caus. 1) *bringen auf, in, versetzen in:* तदेनं तनयं मार्गे प्रवृत्तः संनियोजय Mârk. P. 26,27. किमर्थं दिव्यमात्मानं मानुष्ये संन्ययोजयत् Hariv. 2140. — 2) *stellen an, anweisen zu, betrauen mit, beauftragen:* साचिव्ये संनियोजितः Spr. 2548. राज्ञो तु प्रतिपूज्यार्थं तनयं संन्ययोजयत् MBh. 2,1291. R. Gorr. 1,39,23. क्षीरसंभावनार्थाय कृत्तिकाः संन्ययोजयत् R. Schl. 1,38,23. वसिष्ठं संन्ययोजयत्। स्वदारेषु (sc. अपत्यार्थम्) MBh. 1,6912. तत्र ताः संनियोजय Brahma-P. in LA. (III) 50,22. MBh. 4,462. — 3) *zuweisen, bestimmen:* शुभाशुभं समभ्येति विधिना संनियोजितम् Spr. 10.

— निस्, partic. निर्युक्त Hariv. 3438. 4645. 11785. 12538; statt dessen die neuere Ausg. निर्मुक्त. st. सारनिर्युक्तं 4330 hat die neuere Ausg. साधुनिर्व्यूढं und st. चारुनिर्युक्तो 4655 चारुभिर्युक्तो. 4328 liest die neuere Ausg. दृढनिर्युक्त st. °संयुक्त der älteren. — Vgl. निर्योग.

— विनिस् *abschiessen:* विनिर्योक्ष्याम्यहं (विनियोक्ष्यामि ed. Bomb.) बाणान्बाणाजिह्मगान्मर्मसु R. 2,23,37. wohl nur Druckfehler.

— प्र med., ausnahmsweise auch act. P. 1,3,64. Vop. 23,51. 1) *anschirren, anspannen:* पृषतीः ṚV. 1,85,5. 5,52,8. wohl auch 10,33,1. प्रयुञ्जती दिव एति 5,47,1. यानेन गोभिः श्वेतैः प्रयुक्तेन R. 1,17,14. गोप्रयुक्तदान so v. a. गोप्रयुक्तयानदान MBh. 13,3534. प्रयुक्तेन्द्रियवाजिन् Brahma-P. in LA. (III) 52,12. — 2) *in Bewegung setzen, werfen, schleudern, abschiessen:* नैतानि (अस्त्राणि) निरधिष्ठाने प्रयुज्यन्ते MBh. 3,12309. 12017 (act.). 5,7173. 7291 (act. und med.). Ragh. 7,58. Kathâs. 39,58. 50,65. Bhâg. P. 3,19,22. न सन्नवाहाय — प्रायुङ्क्त भूयः स गदाम् 6,11,12. परमास्त्रं प्रयुक्तम् MBh. 1,211.5,7282. Spr. 4945. Ragh. 2,34. 12,99. Mârk. P. 134,44. सुप्रयुक्तशर H. 772. असिः — ईशप्रयुक्तः *geschwungen* Bhâg. P. 6,8,24. अक्षान्प्रयोक्तुम् *die Würfel werfen* MBh. 4,224. मरुत्प्रयुक्ता वाललता: *bewegt* Ragh. 2,10. शापः प्रयुक्तो ऽयं मयि त्वया *geschleudert* MBh. 1,6734. स्थाने रोषः प्रयुक्तः *ausgelassen* 6845. उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनः *richten auf* ṚV. 1,48,4. ज्ञातोपायप्रयुक्तधी Râǵa-Tar. 4,525. Worte u. s. w. *richten an, vorbringen, hersagen, aussprechen:* देवतायां स्तुतिं प्रयुङ्क्ते Nir. 7,1. प्रायुञ्जत तदाशिषः R. 1,13,38 (35 Gorr.). रामलक्ष्मणसीतानाम् 2,32,11 (act.). 55,7. रामाय R. Gorr. 2,32,10. 4,8,57 (act.). Ragh. 5,35. 11,5. 15,8. Bhâg. P. 4,9,59. 7,10,33. 9,3,19. P. 8,2,83, Sch. प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनम् Ragh. 2,70. M. 5,152. मङ्गलानि R. 3,6,12. मा च शास्त्रानुगां वाचं प्रयुञ्जीत कदा च न R. Gorr. 2,79,11. वाचा स्वरसंपत्प्रयुक्तया 4,63,11. Kâm. Nîtis. 17,15. Bhâg. P. 6,10,28. Bhaṭṭ. 8,39. द्वेषप्रयुक्तं वचः Kathâs. 34,195. प्रीतिवाक्यानि हृद्यानि प्रयुज्य मुनये Hariv. 7233. R. 3,38,27. गिरं नस्त्वत्प्रबोधप्रयुक्ताम् Ragh. 5,74. तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः *ausgesprochen* Praçnop. 5,6. गौः सम्यक्प्रयुक्ता, दुष्प्रयुक्ता Spr. 4034. Sâh. D. 1,18. मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह *ein unvollständiger oder ein nach Betonung oder Laut falsch hergesagter Spruch* Çikshâ 52. सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म 17. एवं वर्णाः प्रयोक्तव्या नाव्यक्ता न च पीडिताः 21. Schol. zu Ǵaim. 1,1,5. प्रयुञ्जीथा ऋज्वयन्साम किंचन Kathâs. 6,54. किं ब्रवीषीति यन्नाख्ये विना पात्रं प्रयुज्यते *gesprochen wird* Cit. beim Schol. zu Çâk. 31,7. — 3) *Jmd antreiben, anweisen, heissen* Bhaṭṭ. 8,96. भर्त्रा ध्रुवदर्शनाय प्रयुज्यमाना Kumâras. 7,85. Kathâs. 33,95. गर्भस्योत्पादने मम 26,191. Hariv. 10314. अत्र प्रयुज्यते सर्गे प्रकृतिरनेन Wilson, Sâṁkhjak. S. 183. Bhaṭṭ. 3,54. अरण्ययाने सुकरे पिता मा प्रायुङ्क्त राज्ये बत दुष्करे त्वाम् 51. प्रयुज्यमान als Erkl. von प्रयोज्य (*der angewiesen wird* neben प्रयोजक *der da anweist;* unter d. Ww. unrichtig erklärt) Z. d. d. m. G. 7,168, N. 1. अथ केन प्रयुक्तो ऽयं

पापं चरति पूरुषः Bhag. 3,36. अगुरू° Gobh. 3,1,17. R. 3,51,27. 4,8, 23. 57,14. Kâm. Nîtis. 6,12. Ragh. 7,22. 12,46. Kumâras. 1,21. Kathâs. 3,41. 13,141. 17,50. Râǵa-Tar. 4,116. Bhâg. P. 3,2,30. 9,7,2. Hit. 112, 10. Daçak. in Benf. Chr. 192,20. Bhaṭṭ. 6,133. मारुतिं दूतं प्रायुङ्क्त *erkor* Mâruti *zum Boten* 88. Kumâras. 3,6. — 4) *stellen an* (loc.), *setzen* Bhâg. P. 5,23,6. अत्रात्मगतमित्येतत्कविना प्राकप्रयुक्तम् Schol. zu Çâk. 13,8. समास उपसर्जनसंज्ञकं पूर्वं प्रयोक्तव्यम् Schol. zu P. 2,2,30. Vop. 3,1. 8,1. *legen auf:* तस्यार्धास्त्रं धनुषि प्रयुञ्जतः Bhâg. P. 4,11,3. — 5) *Jmd hinführen zu, auf, bringen in* (acc.): प्रयुज्यमाने मयि तां शुद्धां भागवतीं तनूम् Bhâg. P. 1,6,29. गतिमएवीम् 3,25,36. एवं मनः (acc.) कर्म (nom.) वशं प्रयुङ्क्ते 5,5,6. — 6) *verbinden mit:* प्रमंदा मर्त्यान्प्र युनक्ति धीरः AV. 19,56,1. — 7) *in Thätigkeit setzen, anwenden, gebrauchen; anstellen, vollziehen; feiern* (ein Opfer u. s. w.): एते देवास्त्रिः संवत्सरस्य प्रयुज्यन्ते TBr. 1,6,2,2. शर्कर्रीं ह्यो यज्ञे प्रयोक्तासि TS. 2,6,2,3. 2,6,5. सर्वेभ्यः कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते 4,11,2. 5,2,1. पात्राणि (यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति act. P. 1,3,64. 8,1,15, Sch.; प्रयुनक्ति स्रुवम् Vop. 23,51.) 6,5, 11,1. यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुङ्क्ते *aus dem Opfer nimmt er was er zum Opfer verwendet* TBr. 3,2,5,6. 3,9,12. 7,4,1. चातुर्मास्यानि Âçv. Çr. 2,15,1. 9,2,3. Çat. Br. 1,8,3,27. 6,6,1,15. Kauç. 7.8. Lâṭj. 6,2,9. 15. 19. प्रयुक्तानां पुनरप्रयोगमेके Kauç. 63. एष एतेषां पशूनां प्रयुक्ततमो यद्दश्वः *am meisten gebraucht* Ait. Br. 2,8. गोदानार्थं (°र्थे ed. Bomb.) प्रयुञ्जीत रोहिणीम् MBh. 13,3669. वाहिनीम् Ragh. 11,5. Bhâg. P. 1,10,32. आसनम्, यानम्, संधिम्, विग्रहम्, द्वैधम्, संश्रयम् M. 7,161. 8,130. साम, दानम्, भेदम्, दण्डम् Jâǵn. 1,345. 355. MBh. 4,690. 5,301. R. Gorr. 2,6,25. 89,1. Kathâs. 34,200. नीतिम् 5,44. 16,55. 46,133. विद्याम् *einen Zauberspruch* 33,99. 42,35. 46,111. fg. 120,56. Bhâg. P. 9,24,32. मायाम् 4,10,29. M. 7,104. R. 6,7,8. कुशस्त्रम् Suçr. 1,94,15. 134,15. Hariv. 8437. Çrut. 6. 23. Spr. 1522. 4932. Kathâs. 30,99 (act.). Bhâg. P. 4,18,3. Mârk. P. 41, 12 (act.). Schol. zu Kap. 1,62. अथेत्ययं शब्दो ऽधिकारार्थः प्रयुज्यते Sarvadarçanas. 135,9. 13. गुणातिस्त्ववपूर्वो न प्रयुज्यत एव *ist nicht im Gebrauch* Pat. zu P. 1,3,51. सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते Bhag. 17, 26. क्रियाः सम्यक्प्रयुक्ताः *vollzogen* Praçnop. 5,6. अर्चां प्रयुञ्ज्महे (so ed. Bomb.) MBh. 2,1384. 5,7466. गुरुपूजाम् 3,1835. 13,4901. Varâh. Bṛh. S. 43, 11. 48,73. नमस्कारम् MBh. 3,2206. सत्क्रियाम् Kumâras. 5,32. 39. 6,52. परिचर्याः Bhâg. P. 4,8,58. अग्निशुश्रूषाम् M. 2,248. यज्ञम् 5,152. आह्वानम् MBh. 13,3670. प्रयुक्तपाणिग्रहणोपचारौ Ragh. 7,86. मणिः प्रयुक्तसंस्कारः 3,18. शान्तिम् Varâh. Bṛh. S. 46,3. 17. 48,82. अग्निहोत्रम् Hariv. 15373. कर्माभिचारिकम् Râǵa-Tar. 6,121. नीराजनाविधीन् Ragh. 17,12. आर्द्रातवारोपणम् 7,25. बलिम् Varâh. Bṛh. S. 59,11. प्रयुक्तं राक्षसैः सह । वैरम् *begonnen, unternommen* R. 3,67,12. Prab. 55,11. न खलु मया प्रयुक्तमिदम् *nicht ich habe es ja angestellt* Mâlav. 19. अधिक्षेपापमानादेः प्रयुक्तस्य परेण *zugefügt* Sâh. D. 95. क्रौर्यं मे त्वयि प्रयुक्तम् Çâk. 107,1. सुप्रयुक्तस्य दम्भस्य *wohl ausgeführt* Spr. 3271. *aufführen* (ein Schauspiel u. s. w.): मृच्छकटिकं नाम प्रकरणं प्रयोक्तुम् Mṛkkh. 1,11. *bewirken, hervorbringen* Sarvadarçanas. 126,15. 127,1. 132,22. प्रयुञ्जन्भयमिन्द्रयोषिताम् Bhâg. P. 8,15,23. ये प्रचलैर्विलोचनैस्तवाक्षिसादृश्यमिव प्रयुञ्जते Kumâras. 5,35. आरोहणार्थं नवयौवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम् 1,39. *handeln, verfahren:* अथ माठव्यं प्रति (माठव्ये v. l.) भवता किमेवं प्रयुक्तम् Çâk. 95,13. — 8) *ausleihen, borgen (zum Vortheil anwenden)* M. 8, 49. 146. Jâǵn. 2,44. अप्रयुज्यमान (das folgende प्रयोजनत्यक्त als Glosse zu streichen) Pańkat. ed. orn. 3,17. — 9) pass. *entsprechen, am Platze sein:* तादृग्भार्यायां मृतायामुत्सवः कर्तुं प्रयुज्यते Pańkat. 224,24. तदेवाप्रयुक्तम् ed. orn. 60,4. नीतिविधिप्रयुक्ता (सिद्धिः) Spr. 145. अनुष्ठितं प्रयुज्यतां सिद्धये so v. a. *führe zum Ziele* Mâlav. 45,10. — Vgl. प्रयुक्ति, प्रयुज्, प्रयोक्तर् fgg., प्रयोगिन्, प्रयोग्य fgg., प्रयोज्य. — caus. 1) *werfen, schleudern, abschiessen:* अस्त्रम् MBh. 3,11988. मयि 5,7171. 7292. आशिषः *Segenswünsche hersagen* R. Gorr. 2,17,13. पितुः पुत्राय यद्द्वेषो मरणाय प्रयोजितः *ausgelassen* Bhâg. P. 7,4,46. मनः *den Geist auf einen Punkt richten* Çvetâçv. Up. 2,10. — 2) *Jmd antreiben, anweisen, absenden* Bhâg. P. 5,5,17. Saddh. P. 4,18,a. अरण्ये *in den Wald weisen* VP. bei Muir, ST. 1,147,4. *Jmd an ein Geschäft stellen:* मा स्म लुब्धांश्च मूर्खांश्च कामार्थेषु प्रयूयुजः MBh. 12,2722. — 3) *anwenden, gebrauchen* MBh. 18, 116. Suçr. 2,363,20. Çrut. 14. Kâm. Nîtis. 7,54. 17,60. 19,35. Sâh. D. 295. 432. Verz. d. Oxf. H. 103,b,25. Saddh. P. 4,18,a. Sarvadarçanas. 100,17. *üben, erweisen:* आनृशंस्यम् M. 3,112. भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः Bhâg. P. 1,2,7. 3,32,23. नाज्ञातबलवीर्येषु पुमान्किंचित्प्रयोजयेत् Spr. 1522. *unternehmen, beginnen:* अनुतिष्ठेत्समारब्धमनारब्धं प्रयोजयेत् Kâm. Nîtis. 11,57. वृद्धिम् *Zinsen nehmen* M. 10,117. प्रयोगम् *Geld auf Zinsen geben* Saddh. P. 4,35,b. 36,a. *aufführen, darstellen* Hariv. 8456. fg. एक एक सूत्रधारः सर्वं प्रयोजयति Sâh. D. 129,17. 165,12. *darstellen lassen von* (instr.) Uttarar. 86,18 (111,7). — 4) *bezwecken* P. 6, 3,62, Sch. — 5) *zur Anwendung kommen* gaṇa 1. तुभादि zu P. 8,4,39. — 6) *Jmd* (dat.) *Etwas* (acc.) *übertragen:* साम्नैवार्थं ततो लिप्सेत्कर्म चास्मै प्रयोजयेत् MBh. 3,1256. — desid. *anzuwenden Willens sein:* शब्दान्प्रयुयुक्षमाणः Pat. in Mahâbh. S. 52.

— अतिप्र *abschliessen von* (instr.): यथा यूयमन्या वै अन्यामति मा प्रयुक्त TS. 4,3,11,4. सर्वेणैवैनमिन्द्रियेणाति प्रयुङ्क्ते 7,2,3,4.

— अनुप्र med. 1) *hinten anfügen, anfügen nach* (abl.) P. 3,1,40. 1,3, 63, Sch. Vop. 8,56. — 2) *verfolgen, einholen:* पश्चादनुप्रयुङ्क्ते तम् AV. 11, 2,13. TBr. 1,8,1,1. 3,9,2,1. Çat. Br. 13,1,4,1. 2,5,1. *sich anschliessen, nachfolgen:* भगो अनुप्रयुङ्क्तामिन्द्र एतु पुरोगवः AV. 12,1,40. — Vgl. अनुप्रयोग.

— अभिप्र med. *anfassen, angreifen, bemeistern:* देवास्तृतीयसवनात्प्रातःसवनमभिप्रायुञ्जत Çâńkh. Br. 14,5. (असुरान्) देवाश्चातुर्मास्यैरभिप्रायुञ्जत TBr. 1,5,6,3. आकूत्या हि पुरुषो यज्ञमभिप्रयुङ्क्ते TS. 6,1,2,2.

— प्रतिप्र 1) act. *anfügen statt eines andern, substituiren* Pańkav. Br. 7,10,8. — 2) med. *abtragen* (eine Schuld): ऋणं प्रतिप्रयुञ्जानः MBh. 9,282. ऋणं तत्प्रतियुञ्जानः ed. Bomb.

— विप्र *trennen von* (instr.) so v. a. *berauben:* तं प्राणैर्विप्रयुज्य MBh. 1,6735. pass. *getrennt werden von* (instr.) R. 2,53,20 (22 Gorr.). विप्रयुक्त *nicht in Conjunction stehend mit* Varâh. Bṛh. S. 47,17 (v. l. विप्रमुक्त). *getrennt* MBh. 3,2647. रामेण R. 1,22,8. 4,19,19. Varâh. Bṛh. S. 104,42. अबला° Megh. 2. बन्धन° *frei von* Mṛkkh. 143,5. मणि° *ohne — seiend* Varâh. Bṛh. S. 81,36. सर्वतः *entblösst von Allem* MBh. 1,3631. आकरैर्विप्रयुक्तार्थाः *keine Reichthümer aus Minen beziehend* Hariv. 2873 (आकारै° die neuere Ausg.; Nilak. hat सुकरैर्वि° gelesen:

सुकरैर्यथोचितैः करप्रदैः विशेषेण प्रयुक्तार्थाः) Hariv. 2873. अनविप्रयुक्ताः (falsche Lesart) Praçnop. 5,6 wird erklärt: न विप्रयुक्ता अविप्रयुक्ता नाविप्रयुक्ता अनविप्रयुक्ताः. — Vgl. विप्रयोग. — caus. *trennen von* (instr.), *berauben:* पुत्रेणेष्टेन कौसल्या यया ते विप्रयोजिता R. Gorr. 2,76,15. पतिं प्राणैर्विप्रयोज्य 75,3. *befreien von:* रामेण — त्रिःसप्तकृत्वो ऽहं क्षत्रियैर्विप्रयोजिता Hariv. 2946.

— संप्र 1) *anschirren, bespannen:* हरिसंप्रयुक्तं महेन्द्रवाहम् MBh. 3,11903. रथं संप्रयुक्तम् R. 2,46,33. = सम्यगानीय दर्शितम् *vorgeführt* Comm. — 2) pass. *verbunden werden, sich verbinden:* चेति समुच्चयार्थ उभाभ्यां संप्रयुज्यते Nir. 1,4. 11. 12. 5,16. *hinzugefügt werden, sich* (äusserlich) *anschliessen:* वाह्यात्रमिव पश्यामि माधुर्यं संप्रयुज्यते Hariv. 7093. *sich fleischlich vermischen mit:* सा संप्रायुज्यत मन्त्रिणा Râga-Tar. 3,497. संप्रयुक्त *verbunden, vermischt:* संप्रयुक्तैर्वरौषधैः Mârk. P. 51,44. कृत्या *verbunden —, vereinigt mit* MBh. 1,4474. ऊष्मणा R̥V. Prât. 1,12. द्राक्षाभयां माक्षिकसंप्रयुक्ताम् Suçr. 1,246,9. गजाभ्यां संप्रयुक्ताभ्याम् *feindlich an einander gekommen* MBh. 7,5694. पत्तिभिः संप्रयुक्ताः *in Berührung gekommen mit* M. 11,179. संप्रयुक्तो दिष्टे *gebunden an, abhängig von* MBh. 7,1047. मृगयासंप्रयुक्त *beschäftigt mit* Kâm. Nîtis. 18,62. — 3) *Jmd mit Etwas* (instr.) *verbinden so v.a. veranlassen zu:* उपचारैरशुचिभिः संप्रयुज्य च तापसान् R. 3,1,22. pass. *theilhaftig werden, sich schuldig machen* Jâǵn. 3,129. तेनैव कर्मणा संप्रयुज्यते Spr. 4070. — 4) *Jmd antreiben:* ऐरावणमधिष्ठातुं प्रवरं संप्रयुक्तवान् (स नियुक्तवान् die neuere Ausg.) Hariv. 8873. श्येना यथैवामिषसंप्रयुक्ताः MBh. 3,15692. — 5) *in Thätigkeit setzen, freien Lauf lassen:* असंप्रयुञ्जतः (= नियच्छतः Comm.) प्राणान् Bhâg. P. 11,26,23. — 6) *ausführen, vortragen* (einen Gesang) Verz. d. Oxf. H. 199,*b*, No. 472. — 7) संप्रयुक्त *der seine ganze Aufmerksamkeit auf einen Gegenstand gerichtet hat* MBh. 14,551. — Vgl. संप्रयोग. — caus. 1) *ausrüsten, fertig machen:* रथम् Hariv. 9284. — 2) *vereinigen, verbinden* MBh. 3,1153. नानेकादिनिर्वर्त्यकथया संप्रयोजितः *verbunden mit* Sâh. D. 278. — 3) *vorbringen:* सम्यक्ते पृच्छैषा संप्रयोजिता MBh. 18,155. — 4) *anwenden, gebrauchen* Sâh. D. 432.

— प्रति 1) *befestigen:* उभे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त R̥V. 10,101,10. — 2) *abtragen* (eine Schuld): ऋणं तत्प्रतियुञ्जानः MBh. 9,282 nach der Lesart der ed. Bomb., ऋणं प्रतिप्रयुञ्जानः ed. Calc. — Vgl. प्रतियोग. — caus. *auflegen* (den Pfeil auf den Bogen) MBh. 8,4051. — Vgl. प्रतियोजयितव्य.

— वि 1) *ablösen:* येषां चतुर्थं वियुनक्ति वाचम् AV. 8,9,3. *trennen:* तांश्च वियुनङ्क्ति (!) Bhâg. P. 10,39,19. नूनं भूतानि भगवान्युनक्ति वियुनक्ति च 82,42. संयुज्यन्ते वियुज्यन्ते तथा कालेन देहिनः Spr. 4787. वियुक्त *getrennt* M. 7,214. Kumâras. 5,26. Megh. 99. Bhâg. P. 3,5,47. Mârk. P. 125,24. Çuk. in LA. (III) 33,9. वियुक्तौ *uneins* M. 9,102. अवियुक्त *nicht getrennt* Kâm. Nîtis. 13,69. 83. Ragh. 13,31. pass. *getrennt werden von* (instr.): स वै केनचिदर्थेन तया मन्दो व्ययुज्यत MBh. 3,2646. R. Gorr. 2,38,4. Spr. 4810. Kâm. Nîtis. 12,49. Mârk. P. 21,102. Bhâg. P. 5,8,3. सा नलेन सह वियुज्यताम् Comm. zu Nalod. 3,5. act. med. *befreien von, bringen um* (instr., selten abl.): बद्धान्वियुङ्क्ष्व मगधाह्वयकर्मपाशात् Bhâg. P. 10,70,29. सो ऽहमेनम् — वियुनज्मि देहात् MBh. 3,10924. तं प्राणैर्वियुञ्ज्यात् Suçr. 1,94,19. 116,11. pass.: को ऽद्यैव मया वियुज्यतां तवासुहृत्प्राणयशःसुहृज्जनैः R. 2,23,41 (20,45 Gorr.). *verlustig gehen, kommen um* (instr.): न च प्राणैर्वियुज्यते 1,32,19. 6,36,68. Spr. 306. Kathâs. 31,64. 33,73. Bhâg. P. 1,13,19. Mârk. P. 16,79. व्रतेन M. 5,91. अर्थधर्माभ्याम्, आत्मना 7,46. R. 5,76,22. Çâk. 150. Spr. 4025. Râga-Tar. 4,479. 6,148. act. in derselben Bed.: उभावपि प्राणैः वियोक्ष्यावः R. Gorr. 2,66,37. शरीरेण वियुज्य *sich vom Körper befreit habend* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 279. वियुक्त *getrennt von* (instr. oder im comp. vorangehend), *ermangelnd, frei von, —los:* वियुक्ता पतिना तेन R. 1,2,15. 2,27,22. Ragh. 13,63. Vikr. 78,19. fg. Kathâs. 45,358. Bhâg. P. 9,10,11. तद्वियुक्ताः Kathâs. 10,197. (नगरीम्) वियुक्तां पुरुषेन्द्रेण R. Gorr. 2,124,25. 5,74,37. Varâh. Bṛh. S. 53,37. यानं वाहवियुक्तम् 46,60. 77,28. 81,3. — 2) med. und pass. *sich lösen, erschlaffen, nachlassen, weichen:* तच्चापि चित्तवडिशं शनकैर्वियुङ्क्ते Bhâg. P. 3,28,34. आत्मनियमाः सहयमाः पुरुषपरिचर्यादय एकैकशः कतिपयेनाहर्गणेन वियुज्यमानाः किल सर्व एवोदवसन् 5,8,5. शनैर्वियुज्यते संध्या R. 1,35,16. — 3) in der Stelle व्रतस्था च शरीरं त्वं यदि नाम वियोक्ष्यसि MBh. 5,7362 fehlerhaft für विमोक्ष्यसि, wie die ed. Bomb. liest und wie schon Benfey vermuthet hat. — Vgl. वियोग. — caus. 1) *trennen* MBh. 3,1153. Kathâs. 69,129. Pańkat. 42,22. वियोजिता । मात्रा भ्रातृभिरन्यैश्च *getrennt von* Mârk. P. 70,6. भ्रातृमातृवियोजिता 5. *Jmd befreien von* (abl.): तथारण्यधर्माद्वियोज्य ग्राम्यधर्मेषु नियोजितः Pańkat. 31,6 (27,15 ed. orn.). *Jmd bringen um* (instr.): वसिष्ठं यः पुत्रैरिष्टैर्व्ययोजयत् MBh. 1,2923. R. 2,33,19. R. Gorr. 2,34,12. शरीरेण Hariv. 2335. जीवितेन R. Gorr. 2,22,4. प्राणैः MBh. 8,4178 (med.). R. Gorr. 1,33,17. 3,56,48. Pańkat. 90,6. असुभिः Daçak. in Benf. Chr. 196,12. fg. मया नैव पत्रैः शाखा वियोजिता Mṛkkh. 63,23. R. 6,94,13. संमानेन Pańkat. 30,10. Ragh. 9,66. नृपमात्रवियोजित MBh. 3,2851. — 2) *rauben:* ब्राह्मणस्यातिथेश्चैव स्वार्थं प्राणान्वियोजयन् MBh. 1,6225.

— सम् act. 1) *verbinden, in Zusammenhang bringen; zusammenbringen, vereinigen:* व्रजे गावो न संयुजे R̥V. 8,41,6. TS. 2,5,2,5. द्वौ द्वौ कामौ Çat. Br. 9,3,2,6. Çâṅkh. Çr. 1,16,7. Lâṭj. 2,9,12. 10,2,10. 6,9. छन्दसी Pańkav. Br. 4,4,2. संयुज्यन्ते वियुज्यन्ते तथा कालेन देहिनः Spr. 4787. pass. mit रत्या *sich fleischlich verbinden* Praçnop. 1,13. स्त्रीपुमांसौ यदा ग्राम्यधर्मतया संयुज्येयाताम् Çaṅk. zu Khând. Up. S. 18. संयुक्त *zusammengefügt:* दृढ° Hariv. 4528. °मात्यानि R. 5,14,52. *verbunden* im Gegens. zu वियुक्त *getrennt* M. 7,214. Kathâs. 25,222. von *unmittelbar auf einander folgenden* Consonanten P. 6,3,59, Sch. Çrut. 2. Verz. d. Oxf. H. 181,*b*, No. 413. वेदये न च संयुक्तान् (= इन्द्रियसंयुक्तान् Comm.) शब्दस्पर्शरसानहम् *alle insgesammt* d. i. *ich kann weder hören, noch fühlen, noch schmecken* R. 2,64,67. संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तम् d. i. *sowohl vergänglich als auch unvergänglich* Çvetâçv. Up. 1,8. सुसंयुक्ताः *gut verbunden* d. i. *in richtigem Zahlenverhältnisse zu einander stehend* R. 2,70,22. संयुक्त = संबन्धिन् *verwandt* Pâr. Gṛhj. 3,10. Kauç. 92. *Etwas mit Etwas* (instr.) *verbinden;* pass. *sich verbinden mit:* नान्योऽन्येन मध्यमाः स्पर्शाः संयुज्यन्ते न लकारेण रेफः R̥V. Prât. 12,2. यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्येत यथाविधि *sich ehelich verbinden* M. 9,22. pass. *zusammenkommen mit —, zusammentreffen mit:* रघुनाथो ऽप्यगस्त्येन — संयुयुजे शरत्काल इवेन्दुना Ragh. 15,54. act. *Jmd mit Etwas versehen, ausrüsten mit, theilhaftig werden lassen;* pass. *theilhaftig werden:* स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु Çvetâçv. Up. 3,4 = 4,1. यौवराज्येन संयोक्तुम् R. 1,1,21 (24 Gorr.).

समयुज्यत तीव्रेण क्रमेण MBh. 1,6289. देहस्य कालपर्यायधर्मणा 3,15974. जीवेन R. 7,76,15. संयोक्ष्यसे स्वेन वपुर्महिम्ना Ragh. 5,55. भृत्यविचारज्ञो भृत्यैः संयुज्यते नृपः Spr. 1976, v. l. संयुक्त *verbunden —, versehen —, ausgestattet mit* (instr. oder im comp. vorangehend): अक्षमाला वसिष्ठेन संयुक्ता *ehelich verbunden mit* M. 9,23. दध्ना तु मधु संयुक्तम् H. 833. वधूनाटकसंघैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम् *angefüllt mit* R. 1,5,18. Bhaṭṭ. 8,30. अन्धो ऽन्धैरिव संयुक्तः R. 4,17,7. आचारेण M. 1,109. MBh. 3,16868. धर्माधर्मेण Hariv. 2507. लाघवेन सुसंयुक्तः R. 6,18,47. स्नेहसंयुक्तं भक्ष्यम् M. 5,24. रथो मातलिसंयुक्तः MBh. 3,1715. सर्वाभरण° 1,5975. R. 2,52,5. 80,19. Suçr. 1,120,7. Varâh. Bṛh. S. 21,31. 56,30. Kathâs. 4,47. 13,142. 21,39. Bhâg. P. 9,1,33. 18,6. LA. (III) 38,7. 54,2. H. 832. फल° Kâtj. Çr. 1,5,16. ब्रह्मस्तेय° M. 2,116. उपपातक° 11,108. 257. प्रीति° 9,168. 12,27. 29. शारीरं धनसंयुक्तं दण्डम् 9,236. गीतैश्च स्तुतिसंयुक्तैः MBh. 1,7718. धर्म° 3,16762. 13,335. R. 1,4,5. 5,4. 2,36,15. 56,13,e. 91,3. 3,62,15. 24. 4,17,50. Spr. 5380. H. 433. Pañkat. 185,11. *verbunden mit* so v. a. *in Verbindung —, in Beziehung stehend zu, betreffend:* अक्षोम° Kâtj. Çr. 1,3,36. (नामधेयम्) वैश्यस्य धनसंयुक्तम् M. 2,31. fg. तदावायति° (संधि) 7,163. स्तुतयश्चेन्द्रसंयुक्ताः MBh. 3,12000. 5,7308. सुरासुर° (युद्ध) so v. a. *der Kampf der Götter mit den* Asura Hariv. 2507. Sâh. D. 11,2. — 2) *sich verbünden:* अहं च त्वं च वृत्रहन्सं युज्याव सनिभ्य आ ṚV. 8,51,11. — 3) *stecken —, versetzen in* (loc.): यत्र यत्रैव संयुक्तो धात्रा गर्भे पुनः पुनः MBh. 12,8198. *richten auf:* चित्तमेकत्र संयुञ्ज्याद्रूपे भगवतो मुनिः Bhâg. P. 3,28,20. — Vgl. संयुक्त u. s. w., त्रिसंयुक्त. — caus. 1) *schirren, bespannen, anspannen:* रथम् R. 3,39,5. गन्धर्वैः MBh. 3,11762. स्यन्दनान् Bhâg. P. 11,6,39. अश्वान् Kathâs. 56,372. बलीवर्दयुगम् 20,27. — 2) *ausrüsten:* सेनाम् MBh. 4,1008. — 3) *befestigen an* (loc.): ज्यामिमां चापि गाण्डीवे समयोजयत् MBh. 3,12067. यथा मेढीस्तम्भ आक्रमणपशवः संयोजिताः Bhâg. P. 5,23,2. *hinzufügen zu* (loc.) Sûrjas. 2,33. *heften —, richten auf* (loc.): संयोज्य तस्मिन्दृष्टिम् MBh. 13,700. संयोज्यात्मानमात्मनि Bhâg. P. 4,23,13. 1,13,52. इन्द्रियाण्यसंयोज्य *die Sinne nicht richtend* (auf die Aussenwelt) Maitrjup. 6,21. v. l. इन्द्रियाणि संयोज्य *die Sinne bändigend.* अस्त्रम् *ein Geschoss auflegen, abschiessen* MBh. 3,816. संयोजित = उपाहित AK. 3,2,41. H. 1485. — 4) *Jmd anstellen* (an ein Amt) MBh. 4,31. — 5) *verbinden, zusammenfügen, zusammenbringen, zusammenführen:* संयोजितकरयुगल Pañkat. 230,19. भिन्नं संयोजयामास Bhâg. P. 3,6,3. दंपती ad Megh. 113. Bhâg. P. 10,82,43. *verbinden, zusammenbringen mit* (instr.) MBh. 13,2302. संयोजयाशु त्वं भार्यया हि द्विजोत्तमम् Mârk. P. 69,65. Kathâs. 73,332. *versehen —, beschenken mit, theilhaftig machen, ausstatten:* धनुरादाय शरेण समयोजयत् Hariv. 12257. लाञ्छनन्विषेण Kâm. Nîtis. 7,52. Varâh. Bṛh. S. 81,36. यजमानं फलेन Jâgñ. 3,121. fg. MBh. 1,4951. 6474. 3,8434 (med.). Ragh. 16,86. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 84. Kathâs. 51,18. Râga-Tar. 4,46. Bhâg. P. 4,27,8. Pañkat. 30,12. 244,5. Sâj. zu ṚV. 1,100,6. — 6) *Etwas* (acc.) *Jmd* (gen.) *übergeben, einhändigen* R. 2,115,18. Pañkat. ed. orn. 26,20 (besser wäre निजाङ्गाभरणैर्वस्त्रैश्च). — 7) *veranstalten:* स विप्रो वैष्णवं सत्त्रं पुत्रार्थं समयोजयत् Hariv. 13393. वृषाणां जातदर्पाणां युद्धानि समयोजयत् 4079. *thun, vollbringen* Bhâg. P. 3,21,23. — 8) med. *sich vertiefen* MBh. 5,7260.

— अनुसम्, partic. °युक्त am Ende eines comp. *begleitet von* Mârk. P. 20,11, wo °संयुक्तं च oder °संयुक्ता च° zu lesen ist.

— अभिसम्, partic. °युक्त *versehen —, behaftet mit* (instr.): अनयेन R. 5,24,28. — caus. *verbinden —, in Verbindung bringen mit* (instr.) Hariv. 16314.

— उपसम् vgl. उपसंयोग. — caus. *Jmd* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *versehen:* आसनेन MBh. 13,5870.

— प्रतिसम्, partic. °युक्त *mit einem Andern verbunden, an etwas Anderes gebunden:* जीव MBh. 12,7973 nach der Lesart der ed. Bomb.; vgl. u. मिश्रय् mit प्रतिसम्.

— विसम्, partic. °युक्त *getrennt von, ermangelnd, entbehrend, sich fernhaltend von* so v. a. *nicht beobachtend, vernachlässigend:* एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया M. 2,80.

2. युज् (= 1. युज्) P. 3,2,59. 61. Decl. 7,1,71. Vop. 3,133. fg. 1) adj. subst. *verbunden, zusammengespannt, das an demselben Wagen mitziehende Thier; Genosse, Verbündeter* ṚV. 1,7,5. इन्द्र स्तोमेमिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् 10,9. युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रः 33,10. वयं जयेम त्वया युजा वृतम् 102,4. 129,4. युजेव वाजिना du. 2,24,12. यं यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः 25,1. 4,28,1. 2. 32,6. राया युजा सधमादः 7,43,5 (vgl. 5,20,1). 95,4. ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा हवामहे 8,17,3. 51,6. ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा 72,2. 9,7,3. 10,33,9. 89,8. AV. 4,23,5. 6,54,1. 2. TS. 7,5,19,1. VS 23,27. मनश्च ह वै वाक्च युजौ देवेभ्यो यज्ञं वहतः Çat. Br. 1,4,4,1. 8,3,27. Shaḍv. Br. 3,7. Nasalirte Formen (nach den Grammatikern sollen alle starken Casus des nicht componirten युज् nasalirt sein): इमं तं पश्य वृषभस्य युञ्जम् ṚV. 10,102,9. हरी ते युञ्जा पृषती अभूताम् 1,162,21. — अविद्यया युक् *versehen —, behaftet mit* Bhâg. P. 11,11,7. युग्भियः *Furcht erregend* Bhaṭṭ. 6,118. Häufig am Ende eines comp. *bespannt mit:* हरियुजं रथम् MBh. 3,12023. Hariv. 8879. हर्यश्व° MBh. 3,16510. हरिसहस्र° Ragh. 12,103. हयोत्तम° MBh. 5,3341. दिव्याश्व° 7130. 14,2612. श्वेत° 8,1751. *verbunden —, versehen mit:* प्रीति° Hariv. 14410. Çatr. 1,298. पुण्याः कामयुजो (*Wünsche gewährend*) ऽद्रयः Hariv. 11449 (सर्वकामयुतास्त्रयः die neuere Ausg.). अग्नि° 15502. व्रीडा° R. 4,10,31. Varâh. Bṛh. S. 51,34. 76,7. योग° Bhâg. P. 3,33,13. जन्मर्क्षश्रोणयोग° 7,14,23. ऋद्धि°, मति° Pañkar. 3,2,7. त्रिगुणात्म° 7,6. 15,12. क्रिया° H. 565. वृष्टि° 1107. समकालयुजः = ये समकालमेव युज्यन्ते Bhâg. P. 5,23,1. उग्र° 3,21,45 nach dem Comm. = उग्रा युक् योगो यस्य, es könnte aber उग्र auch als nom. abstr. gefasst werden. — 2) adj. *paarig, geradzahlig* (अ° *nicht paarig*) Lâṭj. 6,5,16. 27. ṚV. Prât. 13,16. M. 3,277. MBh. 3,1358. Ind. St. 8,307. 309. 312. 337. 339. Varâh. Bṛh. 1,7. Mârk. P. 30,14. — 3) *Paar, Zweizahl* Çabdar. im ÇKDr. तरुणीकुच° Pañkar. 3,12,14. 2,18. *die Zwillinge im Thierkreise* Ind. St. 2,259. युजौ *die beiden* Açvin Trik. 1,1,65. — Vgl. अ°, अरुण°, अश्वि°, अश्व°, ऋत°, चतुर्युज् (auch MBh. 1,7343, wo mit der ed. Bomb. °युजौ st. °युगौ zu lesen ist, दुर्युज्, धर्म°, नित्य°, पुं°, प्रातर्युज् (hier auch mit act. Bed.), ब्रह्म°, भ°, मनो°, मित्र°, युवा°, रतो°, रथ°, वचो°, स°, सु°, स्व°.

युज = 2. युज् 2) in अयुजाक्षर Pâr. Gṛhj. 1,17.

युज्य (von 1. युज्) 1) adj. *a) verbunden, verbündet; verwandt* ṚV. 1,

145,4. भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः 165,7. यो मे राजन्युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयमाह 2,28,10. 6,3,8. सत्तामहि युज्येभिर्नु देवैः 7,39,6. 10,99,4. AV. 5,11,9. — b) *angemessen, passend, geeignet; gleichartig, zusammengehörig:* सखा RV. 1,22,19. शर्वः 52,7. 156,2. 6, 21,7. पयः 52,10. यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति 7,22,2. 9,88,1. रयिः 7,36,7. 37,5. 8,4,12. 46,19. VS. 19,3. — 2) n. *Bund; Zusammengehörigkeit, Verwandtschaft:* यूयं न अभि क्षमधं युज्याय देवाः RV. 2,28,3. युज्य, सखित्व, भ्रात्र 4,25,2. 7,19,9. 8,4,15. तुविद्युम्नस्य युज्या (d. i. युज्यया) वृणीमहे 79,2. 9,66,18. — 3) जमदग्नेर्नत युज्यम् (v. l. für युग्यम्) N. eines Sâman Ind. St. 3,217,a.

युञ्ज् s. u. 2. युज् 1).

युञ्जक (von 1. युज्) adj. *vollziehend, übend:* ध्यान° Verz. d. Oxf. H. 53,a,9.

युञ्जन्द् N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,44. पु° v. l.

युञ्जवत् m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 130,12 fehlerhaft für मु°.

युञ्जान 1) partic. adj. s. u. 1. युज्. — 2) m. a) *Wagenlenker.* — b) *ein Brahmane* (विप्र) Med. n. 111. eher *ein im* Joga *befindlicher Brahmane,* wie Wilson angiebt.

यौञ्जानक adj. *das Wort* युञ्जान *enthaltend* gaṇa गोषदादि zu P. 5,2,62.

1. युत् (von 3. यु) adj. *fernhaltend, abwendend;* s. द्वेषो°.

2. युत्, यौतते = ज्युत् *glänzen* Dhâtup. 2,30.

1. युत 1) partic. adj. von 2. यु; s. das. — 2) n. *ein best. Längenmaass: vier Handlängen* (हस्त) Med. t. 48.

2. युत partic. adj. von 3. यु; s. das.

1. युतक (von 1. युत) 1) adj. = युक्त *verbunden* H. an. 3,85. fg. Med. k. 142. fg. — 2) n. a) *eine Art Gewand* (वस्त्रभेद) Trik. 3,3,18. *eine Art Frauengewand* (स्त्रीवस्त्रभेद) H. an. *Saum eines Gewandes* (पटाञ्चल) ebend. *Saum eines Frauengewandes* (नारीवस्त्राञ्चल) Med. — b) = चलनाग्र H. an. Med. = शूर्पाग्र Nânârtharatnam. im ÇKDr. — c) = संशय *Zweifel* Trik. H. an. Med. = संश्रय *Zuflucht* Nânârtharatnam. — d) = युग, युग्म *Paar* H. an. Med. — e) = मैत्रीकरण *das Sichbefreunden* Çabdar. im ÇKDr.

2. युतक (von 2. युत) n. = यौतक Trik. 3,3,18. H. an. 3,85. Med. k. 142. fg.

युतद्वेषस् (2. युत + द्वे°) adj. *von Feinden befreit* RV. 1,53,4.

युति (von 2. यु) f. 1) *das Zusammentreffen, Zusammenkommen* Sûrjas. 3,41. 6,15. 21. सुहृद्युति *mit Freunden* Varâh. Bṛh. S. 71,10. 95,42. 99,7. — 2) *das Versehenwerden mit* (instr. oder im comp. vorangehend), *das in-den-Besitz-Gelangen von:* धनैः Varâh. Bṛh. S. 71,7. रत्न° 12. — 3) *Summe* Sûrjas. 3,8. 20. 4,20. 10,6. 8. — Vgl. गन्ध°, ग्रह°, यूति.

युत्कार (2. युध् + कार) adj. *kämpfend* RV. 10,103,2.

युद्ध (partic. praet. pass. von 1. युध्) 1) adj. *bekämpft* R. 5,78,10. — 2) n. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,2,72. H. 796. Halâj. 2,298. RV. 10,54, 2. नारावकस्य युद्धमस्ति TBr. 1,5,9,1. देवा वा असुरैर्युद्धमुपप्रायन् Ait. Br. 3,39. उतेव युद्धेनोतेव मायया 6,36. Çat. Br. 13,1,5,6. Kâtj. Çr. 20, 2,8. Kaush. Up. 3,1. M. 7,190. 198. fg. R. 2,75,25. Varâh. Bṛh. S. 4,12. क्षत्रियाणां स्वधर्माचरणं युद्धम् Madhus. in Ind. St. 1,22,1. युद्धे विनाशो भवति कदाचिदुभयोरपि Spr. 2495. सुतुमुल MBh. 1,1176. युद्धे पराङ्मुखैः 3,1759. युद्धानिवर्तिन् H. 795. युद्धं शिक्षेत कुक्कुटात् Spr. 2494. युद्धे शूरं जानीयात् 352. यत्रायुद्धे ध्रुवो मृत्युर्युद्धे जीवितसंशयः। तमेव कालं युद्धस्य प्रवदन्ति मनीषिणः॥ 2295. °काले 2493. न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः R. 1,22,2. Pańkat. 87,15. येन युद्धं तव क्षमम् R. 4,9,40. चिरकालस्थितं क्षोत्स्युद्धं मे राघवेण 6,34,22. तयोर्बभूव युद्धं तुमुलम् Ragh. 3,57. त्वं युद्धायाभिनिर्याहि रामस्य R. 6,27,19. युद्धाय निरगाद्द्विषाम् Kathâs. 54,217. अत्र युद्धं मया दत्तं रावणस्य पुनः पुनः। पश्यताण्डनखैर्घोरम् R. 3, 72,20. प्रदद्यान्मे यो ऽस्य युद्धम् 4,9,49. 38. 40. दानवैः सार्कं प्राप्तयुद्धेन वज्रिणा Kathâs. 17,18. अ° MBh. 5,7469. सुयुद्धमेव तत्रापि समाचरेत् M. 7,176. मन्मथ° R. 1,37,7. कुड्° Spr. 939. वृत्तयुद्धा (भू) Kathâs. 60,57. °शक्ति Verz. d. Oxf. H. 24,b,32. fg. In der Astr. *Planetenkampf, Opposition* Sûrjas. 7,1. 19. fg. Varâh. Bṛh. S. 17,1. fgg. 18,8. 47,1. — Vgl. कूट°, ग्रह°, द्वंद्व°, प्रति°, बाहु° (auch MBh. 3,11973), मित्र°, मुष्टि°, रथ°, वाद°.

युद्धक n. = युद्ध Kathâs. 49,71.

युद्धकाण्ड (युद्ध + का°) n. *das Buch von der Schlacht,* Titel des 6ten Buches in Vâlmîki's Râmâjaṇa und im Adhjâtmarâmâjaṇa R. Gorr. 1,4,95. Verz. d. Oxf. H. 29,b,18.

युद्धकारिन् (युद्ध + का°) adj. *kämpfend;* davon nom. abstr. °कारित्व Spr. 4585.

युद्धकीर्ति (युद्ध + की°) m. N. pr. eines Schülers Çam̃karâkârja's Verz. d. Oxf. H. 248,a,2.

युद्धजयार्णव (युद्ध-जय + अर्णव) m. Titel eines Abschnittes im Ǵjotiḥçâstra Verz. d. Oxf. H. 7,a,3 v. u. 292,a,1 v. u.

युद्धजयोपाय (युद्ध-जय + उ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 910.

युद्धद्यूत s. u. द्यूत.

युद्धपुरी (युद्ध + पु°) f. N. pr. einer *Stadt:* °माहात्म्य Mack. Coll. 1,81.

युद्धभू (युद्ध + 2. भू°) f. *Kampfplatz* Kathâs. 48,1.

युद्धभूमि (युद्ध + भू°) f. dass. MBh. 8,763. 2899. Hariv. 13817. Kâm. Nîtis. 18,33. Kathâs. 25,125. 43,122.

युद्धमय (von युद्ध) adj. *aus dem Kampf hervorgegangen, darauf beruhend:* दर्प MBh. 5,7090.

युद्धमुष्टि (युद्ध + मु°) f. N. pr. eines Sohnes des Ugrasena VP. 436.

युद्धमेदिनी (युद्ध + मे°) f. *Kampfplatz* Hariv. 13669 = R. 6,19,16.

1. युद्धरङ्ग (युद्ध + रङ्ग) m. *Kampfbühne, Kampfplatz* MBh. 7,3590. Hariv. 5583. 16023.

2. युद्धरङ्ग (wie eben) adj. *dessen Bühne die Schlacht ist;* m. Bein. Kârttikeja's Çabdak. im ÇKDr.

युद्धवत् adj. von युद्ध gaṇa बलादि zu P. 5,2,136.

युद्धवस्तु (युद्ध + वस्तु) n. *Kriegsgeräthe* Kâm. Nîtis. 19,34.

युद्धवीर (युद्ध + वीर) m. *ein Held in der Schlacht,* neben दानवीर, धर्म° und दया° Verz. d. Oxf. H. 166,b,28. fg. Sâh. D. 89,3. 12. *Heroismus* als रस 233.

युद्धशालिन् (युद्ध + शा°) adj. *tapfer* R. 5,85,25.

युद्धसार (युद्ध + सार) m. *Pferd* Çabdak. im ÇKDr.

युद्धाचार्य (युद्ध + आ°) m. *Fechtlehrer* M. 3,162.

युद्धाग्नि (युद्ध + अ°) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âñgirasa Ind. St. 3,208,b. — Vgl. रणाग्नि; für यौधाज्य müsste aber eine Form युधाग्नि angenommen werden.

युद्धाधन् (युद्ध + आ°) adj. *sich in die Schlacht begebend, sich in einen Kampf einlassend:* युद्धाधानो न शस्यन्ते राजानो ह्यकृतश्रमाः Kathâs. 27,146.

युद्धिन् adj. von युद्ध gaṇa बलादि zu P. 5,2,136.

युद्धोन्मत्त (युद्ध + उ°) 1) adj. *kampfberauscht.* — 2) m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,14. Bhaṭṭ. 15,75.

युद्धोपकरण (युद्ध + उ°) n. *Kriegsgeräthe* Nir. 9,11.

युद्भू (2. युध् + 2. भू) f. *Kampfplatz* H. an. 2,45.

1. युध्, युध्यते Dhâtup. 26,64. युध्यति (गतिकर्मन्) Naigh. 2,14. युध्यै, युध्यमानः अयोधीत्, अयुद्ध, योत्सि 2. sg., योधत्, (अभि)योधानि, युत्स्महि; युयोध, युयुधे; योत्स्यामि (vgl. Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10), योत्स्ये; in der nachvedischen Sprache act. nur aus metrischen Rücksichten; *kämpfen, bekämpfen* (mit acc.); zuweilen *im Kampfe überwinden:* इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्च ṚV. 1,32,13. 63,7. 132,4. यं युध्यमाना अवसे हवन्ते 2,12,9. युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै 4,18,2. विश्वे यदेना त्वा देवासो इन्द्र युयुधुः 4,30,3. 6,25,5. दश राजानः सुदासं न युयुधुः 7,83,7. 8,2,12. युध्येतासौ 85,14. 9,70,10. मा युत्स्महि मनसा दैव्येन AV. 7,52,2. 12,1,41. Ait. Br. 6,15. Çat. Br. 2,6,4,2. यज्ञक्रेतोदं वै पुरं युध्यन्ति 3,4,4,21. 22. 11,1,6,10. Kâṭh. 29,5. प्रतीपमन्य ऊर्मिर्युध्यति ved. Cit. P. 3,1,85, Kâr., Sch. — med. ohne Ergänzung M. 4,167. 7,89. fg. 92. 197. 200. Bhag. 1,23. 11,34. नाहं योत्स्ये युध्यमाने त्वयि MBh. 1,177. 7096. 5,7140. 7204. Hariv. 10506. 10572. 10652. R. 3,57,12. Spr. 2290. 3471. 3552, v. l. 4786. Kathâs. 13,7. Bhâg. P. 6,12,23. Pañkat 56,8. Bhaṭṭ. 5,101. 15,34. fg. act. M. 7,192. MBh. 1,2387 (युध्यतोः zu lesen). 7119. 2,616. 905. 3,797. 4,1020. 5,7077. Hariv. 16023. R. 4,10,35. 17,19. Spr. 3552. 4360. Mârk. P. 82,52. युध्यते pass. impers. Spr. 4786, v. l. युयुधाते परस्परम् R. 3,56,35. युयुधुश्च परस्परम् Bhâg. P. 3,17,14. वृथाकुलसमाचारैर्न युध्यन्ते नृपात्मजाः MBh. 1, 5411. 5590. 3, 624. 5, 7041. 7075. 7127. Hariv. 5093. R. 1,22,5. दैवेन 2,22,21. Bhâg. P. 8, 10, 28. 30. Mârk. P. 82,40. fgg. योत्स्यन्ति युधि विक्रम्य शत्रुभिस्तव MBh. 3, 15172. 5,7235. Bhâg. P. 8,10,27. Mârk. P. 82,47. शत्रुभिः सह योत्स्यते MBh. 5, 5796. Hariv. 10480. 13175. R. Gorr. 1,73,17. 4, 16, 39. Kathâs. 48, 12. समं निर्ऋतिनायुद्ध 50,37. युध्यतः सह देवैस्ते अभं भवतु मङ्गलम् MBh. 1,1372. भीष्मेण सह मा योत्सीः 5,7114. 7138. 7305. Mârk. P. 82, 45. वयं योत्स्यामहे परान् MBh. 1, 7085. 3, 12131. 15175. 5, 2489. 6, 5035. Hariv. 8145. 13174. R. 5,48,16. 6,18,21. Ragh. 12,50. Kâm. Nîtis. 13,73. fgg. Kathâs. 48,7. कथं न युध्येयमहं कुरून् MBh. 4,1255. समस्तैर्न हि शक्यो वै योद्धुं रामः R. 4,8,10. युद्ध *bekämpft* 5,78,10. Mit loc. *kämpfen für* oder *um:* पुरू यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन् ṚV. 5, 33, 4. त्वां चेष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन् 6,26,2.

— caus. act. P. 1,3,86. Vop. 22, 2. 1) *in Kampf verwickeln, zum Kampfe führen, kämpfen lassen:* त्वमेतान्रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ṚV. 1,33,7. स योधय च क्षयया च जनान् 3,46,2. यद्योधया महतो मन्यमानान् 7,98,4. संहतान्योधयेदल्पान् M. 7,191. 193. सूदेन तं मल्लं योधयामास MBh. 4,343. योध्यते स विराटेन सिंहैः 366. 562. पुरीम् *kämpfen lassen* so v. a. *vertheidigen* 3,639. — 2) *bekämpfen, glücklich bekämpfen:* एकः शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्धरः Spr. 529. MBh. 7,194. 1,3190 (med.). 4980. 7103. 8276. 2,1016. मा यूयुधो भारत पाण्डवेयान् 2120. 3,12162. 8,4010. Hariv. 8483. R. 1,45,45. 5,37,17. 6,18,21. Kathâs. 12,21. 13,29. 20,91. 47,73. Pañkar. 4,6,8. Bhaṭṭ. 16,28.

— desid. act. (in der klass. Sprache nur aus metrischen Rücksichten) und med. *zu bekämpfen Willens sein, sich zur Wehr setzen, bekämpfen wollen* ṚV. 1,33,6. युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः 5,32,5. 10,48,10. य इमां प्रतीचीमाहुतिममित्रो नो युयुत्सति AV. 11,20,26. किमर्थं न युयुत्ससे MBh. 4,1252. Bhaṭṭ. 15,73. 16,35. P. 8,4,55, Sch. मत्स्यानां च युयुत्सताम् MBh. 4,1478. 7,8287. R. 5,82,14. Varâh. Bṛh. S. 47,25. Bhâg. P. 6,12,7. त्वं युयुत्ससे यो ऽर्जुनेन MBh. 8,1797. Kathâs. 42,45. ये युयुत्सन्ति पाण्डवैः MBh. 5,2069. युयुत्समानाः कौन्तेयान् 597. 7,4320. 10,640.

— caus. vom desid. *Jmd kampflustig machen:* सैन्यं समस्तमयुयुत्सयत् Bhaṭṭ. 17,50.

— intens. vgl. यवीयुध्.

— अनु *Jmd* (acc.) *im Kampfe beistehen* MBh. 6,5045 (अनुयास्यामि ed. Bomb.). 5,2489 ist को नु युध्येत zu schreiben.

— अभि *bekämpfen, besiegen; erkämpfen:* सोम नो रायो भागमभि युध्य ṚV. 1,91,23. द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम् 121,8. यदा सहस्रमभि षीमयोधीः 4,38,8. 6,31,3. पर्णीर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः 39,2. गाः 60,2. 7,98, 4. 10,8,8. 120,3. योद्धासि क्रत्वा शवसोत दंसना विश्वा जाताभि मज्मना 8, 77,4. *kämpfen:* अभ्ययुध्यत Hariv. 13480. अभियुध्यद्विर्विपैः Bhâg. P. 10, 46,9. अमुनाभ्ययुध्यत् 83,10.

— आ *bekämpfen:* यः क्रुद्धमायोत्स्यसि MBh. 3, 15645. st. तत्रायुधाना Hariv. 7959 liest die neuere Ausg. तत्र प्रधाना. — Vgl. आयुध, आयोधन. — caus. *bekämpfen* Shaḍv. Br. 4,4. न रथिनः पादचारमायोधयन्ति Uttarar. 98,10. fg. (130,4. 5). आयोधित MBh. 3,15054.

— प्रा *kämpfen:* अपरान्तैः प्रायुध्यन्त Çiç. 18,32.

— उद् *streitig* oder *zornig sich gegen Jmd setzen, auffahren:* (प्रजाः) अस्मा उदेवायोधंस्तासां मन्यूनत्राप्रणात् Pañkav. Br. 7,5,2. uneig. vom *wallenden* Wasser u. s. w.: उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून् AV. 12,3,39.

— नि *kämpfen:* ये च केचिन्नियोत्स्यन्ति समाजेषु नियोधकाः MBh. 4,34. नियुध्यतोरेवामभेन्द्रनक्रयोः Bhâg. P. 8,2,28. ताभ्यां सह नियोत्स्येते तौ Hariv. 4212. द्वंद्वयुद्धेन च मया साकमेव नियुध्यते Kathâs. 38,132. — Vgl. नियुत्सा, नियुद्ध (auch Kâm. Nîtis. 18,32. Varâh. Bṛh. S. 15,23. Kathâs. 49,25), नियोद्धर् fg.

— प्र *den Kampf beginnen, angreifen, kämpfen:* शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः ṚV. 5,59,5. तथा प्रयुध्यमानेषु पाण्डवेयेषु MBh. 7,6615. सेनाग्रादभिनिष्पत्य प्रायुध्यंस्तत्र मानवाः 6,2434. यत्र प्रायुध्यंस्ते (प्रायुद्धंस्ते die ältere, अयुध्यंस्ते die neuere Ausg.) Hariv. 10467. तयोः प्रयुध्यतोः संख्ये 5031. R. 7,28,48. यम् — प्रायुध्यन्त MBh. 11,606. प्रायुध्यन्कालम् Hariv. 10487. प्रयुद्ध *im Kampfe begriffen, kämpfend* MBh. 6,1668. Hariv. 7542. 10928. सह सोमेन 13181. R. 4,15,26. 7,27,23. 28,36. fg. Kathâs. 47,55. 50,31. n. *Kampf, Schlacht* 72,403. 101,180. — Vgl. प्रयुध्. — caus. 1) *den Kampf eröffnen lassen:* आदित्यं वौशनसं वावस्थाय प्रयोधयेत् *in der Aufstellung des* Âditja *oder des* Uçanas *beginne er die Schlacht* Âçv. Gṛhj. 3,12,16. — 2) *angreifen, bekämpfen:* प्रायोधयमहं रिपुम् Hariv. 1108. — desid. *kämpfen wollen:* यः पाण्डवाभ्यां प्रयुयुत्ससे त्वम् MBh. 3, 15646. योधानां प्रयुयुत्सताम् 6,676. Vgl. प्रयुत्सु.

— संप्र *den Kampf beginnen, kämpfen:* °युध्येते HARIV. 10468. बाहुभ्यां संप्रयुध्यस्व यदि योद्धुं त्वमागतः R. 6,65,31. प्रूरयोः संप्रयुध्यतोः 87,6. संप्रयुद्ध *im Kampfe begriffen, kämpfend* MBH. 7,4066. 5357. HARIV. 13674. R. 6,91,3.

— प्रति *bekämpfen, siegreich bekämpfen, es mit Jmd im Kampfe aufnehmen, kämpfen:* मां प्रतियुध्यसे MBH. 1,7102. 3,1995. HARIV. 4550. R. 3,51,16. 6,13,21. कथं भीष्ममहं संख्ये — इषुभिः प्रतियोत्स्यामि BHAG. 2,4. MBH. 1,5411. 2,2547. 4,1552. R. 1,70,28. 4,15,11. 7,19,23. °योद्धुम् MBH. 4,1241. HARIV. 8270. प्रतियोद्धुं न शक्यो हि मानुषैरिह संयुगे MBH. 13,6900. प्रतियुद्ध *bekämpft* R. 5,46,14. प्रत्ययुध्यन् MBH. 1,7093. 3,15171. R. GORR. 1,23,26. 4,17,19. °युध्य R. GORR. 2,119,17. °योद्धुम् MBH. 14,2507. — Vgl. प्रतियोद्धर् fgg. — caus. *bekämpfen, siegreich bekämpfen, es mit Jmd im Kampfe aufnehmen:* को वा दुर्योधनं शक्तः प्रतियोधयितुं रणे MBH. 1,7116. VARÂH. BṚH. S. 43,1.

— सम् *zusammen kämpfen, kämpfen mit, bekämpfen:* संयुध्यतोर्द्विरदयोः BHÂG. P. 10,72,37. धरेण समयुध्यत (सह युध्यत die neuere Ausg.) | सार्धं सर्वेण सैन्येन HARIV. 13177. fg. R. 6,18,12. समयुध्यन्त पाण्डवम् MBH. 1,5477. तेन चाहं न शक्तो ऽस्मि संयोद्धुम् R. 1,22,22. — caus. 1) *zusammen in's Gefecht bringen:* यद्वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः ṚV. 1,80,13. — 2) *bekämpfen:* MBH. 1,7098. 4,561. 1875. 6,2311. — desid. *zu kämpfen Willens sein:* संयुयुत्सति MBH. 8,382.

— प्रतिसम् *einem Angriff gemeinschaftlich widerstehen:* प्रतिसंयुयुधुः BHÂG. P. 8,10,4.

2. युध् (= 1. युध्) 1) nom. ag. *Kämpfer:* युधां श्रेष्ठः MBH. 1,7105. 2,1231. 4,597. युधां वरः HARIV. 5583. 10947. — 2) f. *Kampf, Schlacht* AK. 2,8,2,74. H. 796. HALÂJ. 2,298. युधा युधमुप घेदेषि ṚV. 1,53,7. 59,1. 5,25,6. 6,46,11. न शत्रुरन्तं विविदद्युधा ते 7,21,6. युत्सु पृतनासु 82,4. ऋते स विन्दते युधः 8,27,17. 10,103,2. 3. AV. 1,24,1. 4,24,7. ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् 6,66,1. 103,3. 10,10,24. ÇAT. BR. 5,2,4,16. युधां पते AV. 7,81,3. MBH. 2,1168. 1198. 5,3131. BHÂG. P. 6,12,23. युधि MBH. 1,1171. 3,1748. BHAG. 1,4. R. 2,51,10. 86,8. RAGH. 3,21. Spr. 2825. 3166. VARÂH. BṚH. S. 19,3. युधि श्रेष्ठः MBH. 5,7389. 14,2463. युधम् KATHÂS. 48,26. im comp. PAÑKAR. 3,2,5. — Vgl. अमित्रा°, आयुर्युध्, गोषु°, पुरो°, वृषा°.

युधांश्रौष्टि m. N. pr. eines Mannes AIT. BR. 8,21.

युधाजि vgl. युद्धाजि und यौधाजय.

युधाजित् (युधा, instr. von 2. युध्, + जित्) 1) adj. *durch Kampf siegend* PAÑKAV. BR. 7,5,14. MBH. 3,12705. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kroshṭu von einer Mâdrî HARIV. 1907. 2041. eines Fürsten der Kekaja und mütterlichen Oheims von Bharata R. 1,73,1. 2 (75,1 GORR.). 2,70,28. 72,6. 7,100,1. RAGH. 15,87. eines Sohnes Vṛshṇi's VP. 424. BHÂG. P. 9,24,11. Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,34. Königs von Uggajinî 81,*b*,8.

युधाजीव (युद्धाजीव?) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,208,*b*.

युधान (von 1. युध्) UṆÂDIS. 2,90. m. *Feind* UGGVAL.

युधामन्यु (युधा, instr. von 2. युध्, + म°) m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Pâṇḍava BHAG. 1,6. MBH. 5,2263. 18,27. BHÂG. P. 10,82,25.

युधासुर (युद्धासुर?) m. Bein. eines Fürsten Nanda Z. f. d. K. d. M. 3,168.

युधि, nur im dat. युधये als infin. zu 1. युध्, ṚV. 5,30,9. 10,27,2. 38,3. 84,4. 113,3. — Vgl. दृशये, महये u. s. w. und युधिंगम.

युधिक (von 1. युध्) adj. *kämpfend, streitend* ÇKDR. wohl eine falsche Form.

युधिंगम (युधिम्, acc. von युधि, + गम) adj. *in den Streit ziehend* AV. 20,128,11.

युधिष्ठिर (युधि, loc. von 2. युध्, + स्थिर) m. N. pr. P. 8,3,95. gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. Schol. zu 6,3,9. pl. *die Nachkommen des* Judh. P. 2,4,66, Sch. 1) des ältesten im Ehebette Pâṇḍu's und der Kuntî und zwar vom Gotte Dharma erzeugten Sohnes TRIK. 2,8,14. H. 707. MBH. 1,2443. fg. 3814. HARIV. 1933. 4055. BHAG. 1,16. LALIT. ed. Calc. 24,8. VP. 437. 459. अतीवापि युधिष्ठिरेण सहसा प्राप्तो ह्यनर्थः कथम् Spr. 1824. द्वितीययुधिष्ठिर इव प्रजाः पालयामास KSHITÎÇ. 26,19. °राजसूय 42,3. आसन्मघासु मुनयः शासति पृथ्वीं युधिष्ठिरे नृपतौ। षड्द्विकपञ्चद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च ॥ VARÂH. BṚH. S. 13,3 = RÂGA-TAR. 1,56. — 2) eines Sohnes des Kṛshṇa HARIV. 9196. — 3) zweier Fürsten von Kâçmîra RÂGA-TAR. 1,352 (auch अन्ध° genannt). 3,379. — 4) eines Töpfers PAÑKAT. 217,20. Spr. 3341. — 5) eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 778. — Vgl. यौधिष्ठिर, यौधिष्ठिरि.

युधेन्य (von 1. युध्) adj. *zu bekämpfen* ṚV. 10,120,5.

युध्म (wie eben) UṆÂDIS. 1,144. adj. *streitbar, Kämpfer;* = योद्धर् Schol. zu UṆ. 1,143. ṚV. 1,55,2. 5. 2,21,3. 3,46,1. सं यद्विशो ऽववृत्रन्त युध्माः 4,24,4. स युध्मः सत्वा 6,18,2. 8,1,7. 81,8. m. = शर *Pfeil* UGGVAL. *Schlacht; Bogen* MED. m. 24. = शेषसंग्राम und शरभ UṆÂDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. im ÇKDR.

युध्य (wie eben) adj. *zu bekämpfen;* s. अ°.

युध्यामधि m. N. pr. eines Mannes (nach SÂJ.) ṚV. 7,18,24.

युध्वन् (von 1. युध्) adj. *streitbar, Kämpfer:* युध्वा सं कृष्णब्जिगेथ ṚV. 9,66,16. 88,5. राज्ञो 10,75,4. — Vgl. राज°, सह°.

युन्थ्, युन्थति v. l. für पुन्थ् DHÂTUP. 3,7.

युप्, युप्यति DHÂTUP. 26,124 (विमोहने; nach den Erklärern व्याकुलीकरणे, एकीकरणे, समीकरणे). 1) *verwischen* (*Erhabenheiten und Vertiefungen ausgleichen*); *glätten, schlichten:* याभ्यां रन्ध्रं युपितमत्तरिन्ते AV. 4,25,2. — 2) *verwischen* so v. a. *zerstören, verwirren:* अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम ṚV. 7,89,5. — 3) nach SÂJ. *verwischt —, unsichtbar sein:* युयोप नाभिरुपरस्यायोः ṚV. 1,104,4.

— caus. *verwischen,* die Spur: मृत्योः पदं योपयन्तः ṚV. 10,18,2. KAUÇ. 71. 86. यज्ञं यूपेनायोपयन् AIT. BR. 2,1. TS. 6,3,4,7. 5,3,1. ÇAT. BR. 1,6,2,1. दिशः KÂṬH. 26,6.

— intens. योयुप्यते *glatt streichen, schlichten:* प्रस्तरम् TS. 2,6,5,5. 6. ÇAT. BR. 1,8,3,18. वेदिम् TS. 2,6,4,4.

— आ caus. *turbare:* नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ṚV. 10,134,7.

— सम् caus. *verwischen, glätten:* संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा ṚV. 10,165,5.

युयु m. *Pferd* HALÂJ. 2,281 wohl fehlerhaft für ययु, wie AUFRECHT vermuthet.

युयुकखुर m. = क्षुद्रव्याघ्र ÇABDAK. im ÇKDR. *Hyäne* WILSON.

युयुज्ञानसप्ति (यु° von 1. युज् + स°) adj. *mit Rossen fahrend* ṚV. 6,62,4.

युयुत्सा (vom desid. von 1. युध्) f. *Kampflust, Streitlust:* युयुत्सया MBh. 1,283. 644. 2,898. 3,12078. 16480. 5,7099. 7,1550. Hariv. 2450. R. 1,32,3.

युयुत्सु (wie eben) 1) adj. *kampflustig, zu kämpfen verlangend mit* (सार्धम् u. s. w. oder blosser instr.) Bhag. 1,1. MBh. 1,7090. 8202. 3,12230. 5,7132. 7552. Hariv. 5584. 9292. R. Gorr. 1,77,15. 4,9,49. 5,37,43. 40,15. 6,18,18. 90,8. Ragh. 11,70. Varâh. Bṛh. S. 47,25. Kathâs. 60, 201. 115,25. Bhâg. P. 3,17,20. 9,6,15. — 2) m. N. pr. eines der vielen Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2446. 2448. 2728. 4521. 5449. 11, 315. 13,7715. Bhâg. P. 1,10,9. 13,3.

युयुधन् (von 1. युध्) m. N. pr. eines Fürsten von Mithilâ Bhâg. P. 9,13,25.

युयुधान (wie eben) Uṇâdis. 2,91. m. N. pr. eines Sohnes des Satjaka Trik. 1,1,35. Bhag. 1,4. MBh. 2,129. 3,611. 2009. 11,315. 13,7715. Hariv. 1935. 5085. 6633. 9206. VP. 435. Bhâg. P. 1,7,50. 3,1,31. 9,24,13. *ein* Kshatrija und Bein. Indra's Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

युयुधि (wie eben) adj. *streitbar* ṚV. 1,85,8. 115,4. यू° 149,4.

युयुवि s. यूयुवि.

युव Pronominalstamm s. u. 1. यु.

युवक m. = युवन् *Jüngling* ÇKDr. — Vgl. भूति°.

युवखलति (युवन् + ख°) adj. *als junger Mann schon kahlköpfig* P. 2, 1,67. f. ई *als junges Mädchen schon kahlköpfig* Schol.

युवगण्ड (युवन् + ग°) m. *Ausschlag auf dem Gesicht junger Leute* Trik. 2,6,17.

युवजरती (युवन् + ज°) f. *als junge Frau schon alt erscheinend* P. 2, 1,67. nach dem Schol. auch m. युवजरत् *als Jüngling schon alt erscheinend.*

युवजानि (युवन् + जानि = जाया) adj. *ein junges Weib habend* P. 5,4, 134, Sch. ṚV. 8,2,19.

युवति (fem. zu युवन्) 1) adj. f. und subst. *jung, Jungfrau, junges Weib* P. 4,1,77. AK. 2,6,1,8. H. 511. Halâj. 2,327. ṚV. 1,118,5. तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मृज्यमानाः परि यन्त्यापः 2,35,4. 4,18,8. न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः 3,54,14. 5,2,1. 2. मर्यं इव युवतिभिः समर्षति 9,86,16. 10,30,5. AV. 14,2,61. Çat. Br. 13,1,9,6. 4,2,8. TBr. 3,1,1,9. 2,4. Âçv. Gṛhj. 4,6,4. 11. M. 2,212. 216. 11,36. Spr. 2639. 2696. 4624. Megh. 34. 80. Çâk. 93. Varâh. Bṛh. S. 33,18. 51,18. 52,6. 70,10. 74,20. 95,21. 104,27. °जन Spr. 1891. Am Ende eines adj. comp. im fem. als Stellvertreter von युवन् *Jüngling:* सबालवृद्धयुवतिः पुरी *mit Knaben, Greisen und Jünglingen* Hariv. 4934 (सबालवृद्धा सा चैव पुरी die neuere Ausg.). In comp. mit einem Gattungsnamen P. 2,1,65. इभ° *ein junges Elephantenweibchen* Sch. युवति heisst Ushas ṚV. 1,113,7. 123,2. 10. die Finger 95,2. 2,35,11. du. Nacht und Morgen, Himmel und Erde 1, 62,8. 185,5. AV. 10,7,6. 19,49,1. ṚV. 10,3,7. 18,10. Zu der Stelle न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम् ṚV. 10,178,3. Nir. 10,29 wird युवा zu vergleichen sein. — युवती = युवति Siddh. K. zu P. 4,1,77. H. 511, Sch. MBh. 3,1661. 4,1075. R. 6,99,12. Spr. 4. 1494. 3642. Varâh. Bṛh. S. 75,4. Hit. 42,2. °जन MBh. 14,2685. Pañkat. 158,3. *die Jungfrau im Thierkreise* Ind. St. 2,260. Vgl. वार°, सुर°. — 2) f. *Gelbwurz* Çabdak. im ÇKDr.

युवतीष्टा (युवति + 1. इष्ट) f. *gelber Jasmin* (स्वर्णयूथिका) Râgan. im ÇKDr.

युवत् abl. du. der 2ten Person; s. u. 1. यु 1).

युवद्देवत्य (von युवत् + देवता) adj. *euch beide zur Gottheit habend* Çat. Br. 8,2,1,12.

युवद्रिक् (von युव) adj. *nach euch beiden gerichtet* ṚV. 4,43,4.

युवधित (युव + धित) adj. *von euch beiden gesetzt, — geordnet* ṚV. 6,67,9.

युवन् (von 2. यु; vgl. आ जाया युवते पतिम् ṚV. 1,105,2) Uṇâdis. 1, 156. युवा, यूनम्, यूने u. s. w. P. 6,4,133. Vop. 3,117. das न geht nie in ण über 30. 6,9 Anf. 1) adj. *jung*, m. *Jüngling, ein junger Mann* AK. 2,6,1,42. H. 339. Med. n. 111 (= तरुण, श्रेष्ठ, निसर्गबलशालिन्). Halâj. 2,348. युवाना पितरा पुनरक्त ṚV. 1,20,4. 63,3. 112,21. 144,4. युवा गणः 87,4. 5,61,13. युवाकुमारः 1,155,6. 2,4,5. 35,4. 5,60,5. 74,5. VS. 22,22. AV. 7,2,1. 9,4,24. 10,8,44. कन्याइ युवानं विन्दते पतिम् 11,5,18. Çat. Br. 7,2,1,15. Âçv. Gṛhj. 1,23,2. 2,7,11. Kauç. 9. यूना (du.) ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतुः ṚV. 9,68,5. युवन् heissen Indra, Agni, Marut und andere Götter 2,20,3. 3,32,7. 46,1. 5,1,1. 6,5,1. 62,4. 7, 67,10. — 1,165,2. 186,1. 3,31,7. 5,57,8. 7,20,1. युवन्, स्थविर M. 2, 120. 216. युवस्थविरबालाः MBh. 3,2522. 15595. R. 2,84,8. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,112. Ragh. 3,70. 6,81. Ṛt. 6,20. Spr. 1392. 1968. 3375. Varâh. Bṛh. S. 76,3. 12. Kathâs. 3,64. 18,110. 365. Bhâg. P. 4,29,72. युवा पुरुषः Vet. in LA. (III) 1^9,6. von Thieren Kâtj. Çr. 4,9,13. 25, 12,9. MBh. 1,5570. 13,3518. H. 1276. चातक° Spr. 661. 2956. f. यूनी Vop. 4,27. Çabdar. im ÇKDr. Vgl. पुनर्युवन्, यविष्ठ, यवीयंस्, युवति. — 2) m. in der Gramm. *ein jüngerer Nachkomme eines Mannes bei Lebzeiten eines älteren* P. 1,2,65. 2,4,58. 4,1,90. 94. 163; vgl. u. गोत्र 1) *b*). — 3) m. Bez. *des 9ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,31. Weber, Gjot. 98. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*, No. 782.

युवन m. *der Mond* H. ç. 12 wohl fehlerhaft.

युवनाश्व m. N. pr. verschiedener Männer, unter andern des Vaters von Mândhâtar, Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,9. MBh. 1,226. 3, 10427. 13517. 7,2274. 12,975. 5924. 8599. 13,5663. Hariv. 670. 711. R. 1,70,24. fg. (72,22 Gorr.). 2,110,13 (116,31. 119,13 Gorr.). 7,67,5. VP. 361. fg. 369. Bhâg. P. 9,6,20. 25. Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,11. 76,*b*,12.

युवनाश्वज m. *Sohn des* Juv. = मान्धातर् H. 700. — Vgl. यौवनाश्व, यौवनाश्वि.

युवन्त् adj. = युवन् *jugendlich:* युवद्भ्यः ṚV. 10,39,8.

युवन्यु (von युवन्) adj. *jugendlich sich gebärdend:* एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूंर्युवन्यूंरुदश्याः ṚV. 5,42,15.

युवपलित (युवन् + प°) adj. *als junger Mann schon grauhaarig* P. 2, 1,67. f. आ *als junge Frau schon grauh.* Schol.

युवप्रत्यय (युवन् + प्र°) m. *ein Suffix, welches sogenannte* Juvan-*Patronymica bildet*, Schol. zu P. 2,4,59. fgg.

युवमारिन् (युवन् + मा°) adj. *als Jüngling —, in der Jugend sterbend:* अ° Ait. Br. 8,25.

युवयु (von युव) adj. *nach euch beiden verlangend* ṚV. 4,41,8. 6,63,3. 7,70,7. — Vgl. युवायु.

युवराज (युवन् + राज = राजन्) m. *Kronprinz und Mitregent* AK. 1, 1,7,12. H. 332. R. 2,63,13. R. Gorr. 2,1,27. 41. Ragh. 3,35. Kâm. Nîtis.

17,25. fg. Varâh. Bṛh. S. 30,19. 34,10. 20. 36,1. 43,62. 49,2. 5. 53,7. fgg. 73,4. Kathâs. 22,52. Pańkat. 156,16. Colebr. Misc. Ess. II, 286. Journ. of the Am. Or. S. 6,500. 517. Bein. **Maitreja's**, des zukünftigen **Buddha**, Trik. 1,1,24.

युवराजत्व (von युवराजन्) n. *die Würde eines Kronprinzen und Mitregenten* R. Gorr. 2,7,8. Kathâs. 44,26. Râǵa-Tar. 3,102.

युवराजन् m. = युवराज Hariv. 5247.

युवराज्य n. nom. abstr. von युवराज und = युवराजत्व Kathâs. 52,366. Pańkat. 130,18. Ragh. 3 in der Unterschr. — Vgl. यौवराज्य.

युववलिन (युवन् + व°) adj. *schon als Jüngling Runzeln habend* P. 2,1,67. f. आ *schon als junge Frau* R. h. Schol.

युवशं (von युवन्) adj. *jugendlich* ṚV. 1,161,3. 7. 8,35,5.

युवा f. heisst ein Pfeil **Agni's**: या त इषुर्युवा नाम तया नो मृड TS.5,5,9,1.

युवाकु (von युव) adj. *euch beiden angehörig, — ergeben*: दस्रा युवाकवः सुताः ṚV. 1,3,3. 120,3. अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातम् 3,58,9. धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे 7,60,3. 67,4. गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः 68,1. 7. Eigenthümlich ist der Gebrauch dieses adj. ohne Casuszeichen: युवाकु शचीनां युवाकु (statt gen.) सुमतीनाम् ṚV. 1,17,4. इन्द्रीयन्मित्रधितये युवाकु (statt dat.) 120, 9. ähnlich mag auch 7,60,3 ursprünglich युवाकु als n. pl. zu धामानि gestanden haben.

युवादत्त (युव + दत्त) adj. *euch beiden gegeben* ṚV. 8,26,12.

युवानीत (युव + नीत) adj. *euch beiden gebracht* ṚV. 8,26,12.

युवाम N. pr. einer Stadt Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 46.

युवायु (von युव) adj. *nach euch beiden verlangend*: सोमाः ṚV. 1,135,6. — Vgl. युवयु.

युवायुज् (युव + 2. युज्) adj. *für euch beide* oder *durch euch beide geschirrt* ṚV. 1,119,5.

युवावत् (von युव) adj. *euch beiden zugehörig* ṚV. 3,62,1.

युवीभू (युवन् + 1. भू) *jung werden*: °भूत Kathâs. 97,41.

युष्टग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Râǵa-Tar. 3,8.

युष्म, युष्मत् s. u. 1. यु 2).

युष्मदीय (von युष्मत्) adj. *euer* P. 4,3,1. 7,2,98. Kathâs. 7,15. 24,115.

युष्मद्विध (युष्मत् + विधा) adj. *einer von eures Gleichen* Bhâg. P. 3,18,10. 10,45,47.

युष्मयन्त् (von युष्म) adj. *euch suchend*: गिरः ṚV. 2,39,7.

युष्माक (wie eben) adj. *euer*: युष्माकाभिरूतिभिः ṚV. 1,39,8. 166,14. — Vgl. युष्माकम् unter 1. यु 2).

युष्मादत्त (युष्म + दत्त) adj. *euch gegeben* ṚV. 5,54,13. 8,47,6.

युष्मादृश् (युष्म + दृश्) adj. *einer von eures Gleichen* Kathâs. 28,94. Dhûrtas. in LA. 76,4.

युष्मादृश adj. dass. Kathâs. 21,138. 35,76. 109,75.

युष्मानीत (युष्म + नीत) adj. *von euch geleitet* ṚV. 2,27,11.

युष्मावत् (von युष्म) adj. *euch gehörig* ṚV. 2,29,4.

युष्मेषित (युष्म + इ°) adj. *von euch gesandt* ṚV. 1,39,8.

युष्मोत (युष्म + ऊत) adj. *von euch geschützt, — geliebt* ṚV. 7,58,4.

यू m. (nach dem Schol.) = यूष *Brühe* H. 404. — Vgl. यूस्.

यूक m. und यूका f. (dieses häufiger) Uṇâdis. 3,47. *Laus* H. 1208. 1336. M. 1,40. 45. Suçr. 1,116,20. 2,158,8. Çârṅg. Saṁh. 1,7,10. Kathâs. 60,127. Spr. 301. Bhâg. P. 5,26,17. Pańkat. 60,24. Vedântas. (Allah.) No. 71. यूकाभयेन नहि केशविमोक्षणं स्यात् Çṛṅgârat. bei Uǵǵval. यूकालिक्षम् Uǵǵval. als Längenmaass Varâh. Bṛh. S. 58,2. Mârk. P. 49,37. Hiouen-thsang 1,60.

यूकदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Râǵa-Tar. 3,11.

यूकर gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

यूति (von 2. यु) f. nom. act. P. 3,3,97. Vop. 26,185. *Verbindung, Vereinigung*: वह्निर्यूति adj. so v. a. *vor die Thür gesetzt* Bhaṭṭ. 7,69. — Vgl. गोयूति, युति.

यूथ (wie eben) Uṇâdis. 2,12. 1) m. n. (in der älteren Sprache nur n.) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,*a*,7. *Schaar, Heerde* Nir. 4, AK. 2,5,41. H. 1412. an. 2,219. Med. th. 11. Halâj. 4,1. ṚV. 1,10,2. गवाम् 81,7. 3,55,17. 4,2,18. पशुमत् 38,5. इळा यूथस्य माता स्मद्नदीभिः 5,41,19. 6,19,3. 29,5. सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे 7,60,3. उक्तेव यूथा पर्यन्नरावीत् 9,71,9. AV. 5,20,3. TS. 5,7,2,1. Âçv. Gṛhj. 4,8,3. विषाणिनाम् R. 3,31,32. Çâk. 102. Vikr. 110. Varâh. Bṛh. S. 46,55. 61,6. 17. 65,5. रुद्राणाम् Bhâg. P. 3,12,16. महारथानां यूथस्य पतिः Kathâs. 47,23. Bhâg. P. 8,10,19. यूथपाः सयूथाः R. 2,93,1 (102,1 Gorr.). सुस्थयूथा सेना 6,23,31. स्वयूथस्य विमाननम् Kâm. Nîtis. 15,26. Bhâg. P. 8,2,23. यूथस्वाम्बा (यूथस्वाख्या die neuere Ausg.) als Bein. der **Durgâ** Hariv. 10241. वानरा यूथचारिणः Kathâs. 60,206. हस्ति° MBh. 3,2537. कुञ्जर°, मृग° R. 2,54,39 (40 Gorr.). 95,18. 97,9. R. Gorr. 2,106,3. Çâk. 32. Hit. 82,12. 16. वराह° Ragh. 2,17. Ṛt. 1,17. वानर° Pańkat. 10,6. 93,1. मेष° 253,13. वृक° Bhâg. P. 4,29,54. नैगम° R. 2,106,33. *Menge* überh.: रथ° Hariv. 5591. मांस° 13264. शङ्ख° Ragh. 13,13. दोर्दण्ड° Bhâg. P. 7,8,31. Vgl. निर्यूथ, यथायूथम्. — 2) यूथी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. *eine Jasminart*, = प्रहसन्ती Trik. 2,4,23. = पुष्पभेद Med. = मागधी, पुष्पविशेष und कुरण्टक H. an. = यूथिका Çabdar. im ÇKDr.; vgl. पीतयूथी, स्वर्ण° und यूथिका.

यूथक am Ende eines adj. comp. = यूथ 1): गन्धर्वगीतिवादित्रयूथकैः Bhâg. P. 12,8,22. = गायकादिसमुदायैः Comm.

यूथग (यूथ + 1. ग) m. N. einer Götter*schaar* unter **Manu Kâkshusha** Mârk. P. 76,51.

यूथता f. nom. abstr. von यूथ 1) Kauç. 24. AV. Pariç. 18.

यूथनाथ (यूथ + नाथ) m. *Beschützer —, Haupt einer Schaar, — einer Heerde* AK. 2,8,2,3. H. 1220. Hit. 83,1. करि° R. 4,22,38. रिपु° Bhâg. P. 3,3,1. असुर° 8,17,16.

यूथप (यूथ + 2. प) m. *Hüter —, Haupt einer Schaar, — Heerde* (insbes. eines Elephanten*trupps*) AK. 2,8,2,3. R. 1,16,26 (20,18. fg. Gorr.). करेणव इवारण्ये स्थानप्रच्युतयूथपाः 2,65,20. यूथपाः सयूथाः 93,1 (102,1 Gorr.). 4,1,9. 3,18. 5,18,13. Bhâg. P. 8,12,27. अन्वधावत दुर्मर्षो मृगेन्द्र इव यूथपम् 9,15,28. पृषती हतयूथपा MBh. 7,27. यूथपाधिप Bhâg. P. 3,18,12. मृग° MBh. 1,5569. R. 3,74,19. करि° 1,16,27. 6,2,24. कुञ्जर° 2,86,22. 97,6. Vikr. 109. Bhâg. P. 8,2,19. Pańkat. 253,16. Hit. 82,15, v. l. नर° MBh. 6,5524. रथ° 4,971. 1111. दैत्यानां रथयूथपः Hariv. 12999. Bhâg. P. 1,15,15. 3,1,38. महारथ°, अतिरथ° Kathâs. 47,26. सुर° Bhâg. P. 6,4,39. असुर° 8,12.33. 7,7,4. अमरदानव° 2,7,13. दैत्येन्द्र° 7,10,46. यूथप° R. 4,39,32. रथयूथप° MBh. 1,5272. रथयूथपयूथानां

यूथपो ऽयं नरर्षभः 3,5783. अधिरथयूथप° Bhâg. P. 3,4,28. करियूथप° R. 4,13,4. — Vgl. प्रति°.

यूथपति (यूथ + प°) m. *Herr —, Haupt einer Schaar, — Heerde* (insbes. eines Elephanten*trupps*) H. 1220. करेणूनामिवाक्रन्दो बद्धे यूथपतौ वने R. Gorr. 2,39,36. Spr. 2857. Hit. 82,12. Bhâg. P. 2,7,15. 6,11,8. 8,2,27. वीर° 5,2,18. सुरललनाललाम° 16,16. स्वःस्त्री° 12,8,22.

यूथपरिभ्रष्ट (यूथ + प°) adj. *aus der Heerde verlaufen:* °भ्रष्टा मृगी R. 5,26,9. — Vgl. यूथभ्रष्ट, यूथच्युत.

यूथपशु (यूथ + पशु) m. Bez. *einer best. Abgabe* (कार) P. 6,3,10, Sch.

यूथपाल (यूथ + पाल) m. = यूथप R. 4,28,30. वानर° 1,16,33 (20,22 Gorr.).

यूथभ्रष्ट adj. = यूथपरिभ्रष्ट Trik. 3,3,362. MBh. 3,2424. Bhâg. P. 4,28,46.

यूथमुख्य (यूथ + मु°) m. *Haupt einer Schaar:* यदूनाम् Hariv. 4204.

यूथर adj. von यूथ gaṇa अश्मादि zu P. 4,2,80.

यूथशस् (von यूथ) adv. *schaarenweise, heerdenweise* MBh. 3,2409. Bhâg. P. 4,10,26. 10,75,10.

यूथच्युत (यूथ + च्युत) adj. = यूथपरिभ्रष्ट R. 2,85,19.

यूथाग्रणी (यूथ + अ°) m. *Haupt einer Schaar:* वीर° Bhâg. P. 9,22,19.

यूथिका (von यूथ) f. *Jasminum auriculatum* AK. 2,4,2,52. Trik. 3,3,105. 221. H. 1148. Med. k. 143. Halâj. 2,50. Vikr. 109. Ṛt. 2,25. Megh. 27. Spr. 821. Ghaṭ. 19. Bhâg. P. 10,30,8. Pańkar. 1,3,59 (neben मागधी). *Kugelamaranth* Med. *Clypea hernandifolia W. et A.* Râǵan. im ÇKDr.

यूथीकर् (यूथ + 1. कर्) *zu einer Heerde machen, in eine Heerde vereinigen:* °कृत्य स्ववत्सकान् Bhâg. P. 10,12,3.

यूथ्य (von यूथ) adj. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54 (यूथ्य nach 6,1,213). *zur Heerde gehörig:* वृषन् Ṛv. 9,15,4. अश्वानामिव यूथ्याम् Vâlakh. 8,4. सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचा Ṛv. 10,23,4. यूथ्य am Ende eines comp. *zur Schaar —, zur Heerde von — gehörig* gaṇa वर्ग्यादि zu P. 6,2,131. श्वयूथ्याः so v. a. *ein Rudel Hunde* MBh. 8,4604. मृत्राधान्स्यात्स्वयूथ्येषु *gegen die Seinigen* 12,4360. — Vgl. स°.

यून्, यूनी s. u. युवन्.

यून (von 2. यु) n. *Band, Schnur* Kâtj. Çr. 1,3,14. 15. 21. 5,8,29.

यूनर्वन् in der Stelle: मा मा यूनर्वा काःसीदित्याह साम वै यूनर्वा Pańkav. Br. 6,4,8. Lâṭj. 1,7,5.

यूनि (von 2. यु) f. *Verbindung, Vereinigung* ÇKDr. nach Siddh. K.

यूप (von युप्) Uṇâdis. 3,27. m. AK. 3,6,2,19 (3,6,4,35 ist wohl यूष die richtige Lesart). 1) *geschlichteter Pfosten, Säule*, namentlich *der Pfosten, an welchen das Opferthier gebunden wird*, H. 824. दुर्यो न यूपः Ṛv. 1,51,14. सना यूपेव जरणा शयाना *truncus* 4,33,3. शुनश्चिच्छेपं निदितं सहस्राद्यूपादमुञ्चः 5,2,7. VS. 19,17. AV. 9,6,22. यूपो यस्यां निमीयते 12,1,38. 13,1,47. Çat. Br. 3,5,3,4. 6,2,5. 12. 4,1. 11,7,2,1. fgg. 4,1. Pańkav. Br. 9,10,2. TS. 6,3,4,1. 7,2,1,3. Kauç. 93. 125. Kâtj. Çr. 7,1,34. MBh. 3,10295. fg. 7,2266. 3947. fgg. 12,968. R. 1,13,33. 62,19. 2,50,8. 61,17. Suçr. 1,110,16. Ragh. 1,44. Varâh. Bṛh. S. 70,10. 97,11. Bhâg. P. 4,19,19. एकयूपे TS. 5,5,2,1. Kâtj. Çr. 8,8,27. त्रि° 15,10,8. यूपैकादशिनी Çâṅkh. Br. 10,2. Çat. Br. 3,7,1,22. Kâtj. Çr. 8,8,6. MBh. 3,10668. einundzwanzig Çat. Br. 13,4,4,5. R. 1,13,27. अष्टास्रि 28. MBh. 3,10665. चित्य° Gobh. 3,3,27. Âçv. Gṛhj. 3,6,8. उभयतोयूपम् Kâtj. Çr. 9,11,1. °च्छेदन 7,1,34. °खण्ड AK. 3,4,25,169. यूपाग्र 2,7,18. H. 825. यूपदारु P. 6,2,43, Sch. °संस्कार Ind. St. 1,73. °लक्षण Titel eines Pariç. des Kâtjâjana Verz. d. Oxf. H. 386,*b*, No. 510. नाना° Çâṅkh. Çr. 6,9,3. 5. सयूपक AK. 3,6,2,19. अयूपक Âçv. Çr. 9,2,3. अयूप Kâtj. Çr. 22,7,3. यूप = जयस्तम्भ Uṇâdik. im ÇKDr. यूपावट s. u. अवट, यूपशकल u. शकल. Vgl. अश्व°, स्थूर°. — 2) Bez. *einer best. Constellation von der Gattung* Âkṛtijoga, *wenn nämlich alle Planeten in den Häusern 1, 2, 3 und 4 stehen*, Varâh. Bṛh. 12,7. 15.

यूपकटक (यूप + क°) m. als Erklärung von चषाल AK. 2,7,18. H. 825.

यूपकर्णा (यूप + कर्णा) m. *die mit* Ghṛta *bestrichene Stelle eines Opferpfostens* H. 825.

यूपकेतु (यूप + केतु) m. Bein. des Bhûriçravas MBh. 6,3252. 7,1118; vgl. 3947. fgg.

यूपद्रु (यूप + 4. द्रु) m. *Acacia Catechu Willd.* Trik. 2,4,15.

यूपद्रुम (यूप + द्रुम) m. dass. Çabdar. im ÇKDr. = रक्तखदिर Râǵan. ebend.

यूपध्वज (यूप + ध्वज) adj. *den Opferpfosten zur Fahne habend*, Beiw. der personif. Opfer Hariv. 9671.

यूपलक्ष्य (यूप + ल°) m. *Vogel* Çabdam. im ÇKDr.

यूपवत् (von यूप) adj. *mit einem Opferpfosten versehen, wobei ein O. sich befindet:* क्रियाविधि Ragh. 11,37.

यूपवाह् (यूप + वाह्) adj. *den Pfosten herbeiführend* Ṛv. 1,162,6.

यूपव्रस्क (यूप + व्र°) adj. *den Pfosten behauend* ebend.

यूपाक्ष (यूप + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6,33,9. यूपाख्य 5,41,2. 29.

यूपाख्य (यूप + आख्या) m. s. u. यूपाक्ष.

यूपाहुति (यूप + आ°) f. *Opfer bei Errichtung des Opferpfostens* Kâtj. Çr. 6,1,4. 10,10. 8,8,9.

यूपीय (von यूप) adj. *zu einem Pfosten geeignet* gaṇa अपूपादि zu P. 5,1,4.

यूप्य (wie eben) adj. dass. ebend. P. 5,1,67, Sch. Çâṅkh. Br. 10,2.

यूयम् s. u. 1. यु 2).

यूयुधि s. युयुधि.

यूयुवि (यु° Padap., von 3. यु) adj. *beseitigend:* आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युयोतु यूयुविः Ṛv. 5,50,3.

यूष्, यूषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17,29. — Vgl. जूष्.

यूष 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. AK. 3,6,4,35. Siddh. K. 249,*b*,6. *Fleischbrühe, Brühe* überh., *jus* H. 404. Çâṅkh. Çr. 4,18,13. Gobh. 4,1,7. Kauç. 64. TBr. Comm. II, 668. Suçr. 1,161,19. 231,17. 241,3. 2,26,15. धान्य 34,4. निम्ब° 48,9. 64,2. 366,7. वानरकृतपञ्च° Kathâs. 63,106. मुद्ग°, करेणुक° Lalit. ed. Calc. 331, N. 1. medicinische Vorschriften darüber Çârṅg. Saṁh. 2,2,103. सप्तमुष्टिक 104. 3,1,18. Vgl. यूषन्, यूस्. — 2) m. *der indische Maulbeerbaum* Çabdar. im ÇKDr.

यूषन् Nebenform von यूष in den schwachen Casus P. 6,1,63. Vop. 3,39. पात्राणि यूष्ण आसेचनानि Ṛv. 1,162,13. VS. 25,9. TS. 6,3,11,1. 4.

यूस् = यूष 1) H. 404. रसो वा एष पशूनां यद्यूः TS. 6,3,11,1. 4. Der Comm. zu H. führt den nom. यूस् auf यू zurück.

येन (instr. von 1. य) rel. adv. und conj. 1) *nach welcher Richtung, wohin:* मुखानि चाप्यवर्तन्त येन याता तिलोत्तमा MBh. 1,7707. R. 2,33,16. 22. 6,16,19. गच्छ त्वं भो पुरुष येन काङ्क्षसि Saddh. P. 4,17,*a*. — 2)

wo: उपाद्रवयेन वै वनम् MBh. 3,15772. 15748. 14,2510. R. 2,75,8. येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत् Saddh. P. 4,17,*a*. येनाग्निस्तेन गतः P. 2,1, 14, Sch. अगमतुर्येन तां गङ्गाम् so v. a. येन सा गङ्गा R. 2,52,10. — 3) *auf welche Weise:* येन — तेन Pâr. Grhj. 2,2. M. 4,178. *wie in Bezug auf,* mit acc.: येनेशं हरिरीशस्तं तेन Vop. 5, 7. — 4) *woher, warum, weswegen, wodurch, in Folge wessen:* शृणु मे मघवन्येन न दृश्यते महीक्षितः MBh. 3,2123. शृणुत येन जानामि मैथिलीम् R. 4,59,3. किं तन्न येनासि ममानुकम्प्या Ragh. 14,74. Kathâs. 16,64. 18,179.236. — 5) *dass, quod:* किं जातमधुना येन यूयं यूयं वयं वयम् Spr. 2498. न त्वया तत्कृतं कर्म येनाहं विजितः पुरा MBh. 3,3051. — 6) *weil, da* H. 1537, Sch. आर्ये त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः RV. 3,62,1. R. 4,19, 18. Spr. 1148. 1212. 1258. 1392. 1516. 2978. 4266. 4455. Çâk. 25,1. 14. Çrut. 1. Kathâs. 18,204. 36,121. Prab. 72,9. Mârk. P. 18,25. LA. (III) 29,3. 57,14. — 7) *auf dass, damit:* तज्जीवन्ती स्वहस्तेन तुभ्यं गुणवते गृहम्। ददामि सर्वं येन स्यां न पुनर्दुःखभागिनी ॥ Kathâs. 18,271. 32,312. तदेनं मायावचनैर्विश्वास्याहं छात्रतां व्रजामि येन विश्वस्तो भवति Pañkat. 33,7. शीघ्रमानीयतां तुरभाण्डं येन पौरकर्मकरणाय गच्छामि 40,15. 84,17. 206,8. — 8) *ut, dass* (einem *so, talis* entsprechend): स त्वमातिष्ठ योगं तं येन शीघ्रा कृपा मम। भवेयुः so v. a. *gieb dir Mühe, dass* MBh. 3,2639. उपायो ऽयं मया दृष्टो निरपायो नरेश्वर। येन दोषो न भविता तव 2178. तथा यतिष्ये येन mit potent. Mârk. P. 43,67. तत्तथा कुरु येन mit potent. Kathâs. 3,18. 12,100. 17,54. mit praes. 32,124. 61,267. मम चैतावाँछोभविरहो येन स्वहस्तस्थमपि सुवर्णकङ्कणं यस्मै कस्मैचिद्दातुमिच्छामि Hit. 11,5.

येमन n. = जेमन H. 424, Sch.

येयजामहे m. so heisst *der Spruch* ये यजामहे, auf welchen die Jâgjâ folgt, VS. 19,24. Çâñkh. Br. 3,5. Çr. 1,1,39. fg. 2,2. 19. 20. 3,16,15. MBh. 3,12483.

येवाष m. N. *eines schädlichen kleinen Thieres, Insects* oder dergl. AV. 5,23,7. 8. Dafür यवाष in der Stelle: तौ वृषश्च यवाषश्चाभवतां तस्मात्तौ वर्षेषु शुष्यतो ऽद्भिर्हि हतौ Kâth. 30,1. यवाष steht auch im gaṇa 1. कुमुदादि und im gaṇa प्रेक्षादि zu P. 4,2,80.

येष्, येषति *wallen, sprudeln:* उखा येषन्ती RV. 3,53,22. चरु AV. 4,7, 4. येष्, येषते v. l. für पेष् (प्रयत्ने) Dhâtup. 16,14. — Vgl. यस्.

— निस् *herausquellen, ausschwitzen:* अथो खलु य एव लोहितो यो वाव्रश्चनान्निर्येषति तस्य नाश्यम् TS. 2,5,1,4. — Vgl. निर्यास.

येष्टिह adj. als Beiwort von मुहूर्त Kaush. Up. 1,3. 4.

येष्ठ (von 1. या mit dem suff. des superl.) adj. *am meisten —, am schnellsten gehend* oder *fahrend* RV. 5,41,3. 74,8. यामं येष्ठाः 7,56,6.

योक् indecl. neben ज्योक् gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. = ज्योक् Pâr. Grhj. 2,1 (ज्योक् st. dessen in Z. d. d. m. G. 7,533,2).

योक्तृ (von 1. युज्) nom. ag. *Anschirrer, Anspanner, Wagenlenker* MBh. 8,4901. *der anschirrt* oder *in Thätigkeit setzt* VS. 30,14.

योक्तव्य (wie eben) adj. 1) *in's Werk zu setzen, anzuwenden, woran man zu gehen hat:* स्तोम TS. 3,1,10,2. तेषु दण्डः MBh. 5,2883. योग Bhag. 6,23. — 2) *anzustellen* (an ein Geschäft): कर्मणि MBh. 1,6509. — 3) *zu versehen —, auszustatten mit, theilhaftig zu machen;* mit instr. der Ergänzung: इष्टकाचयैः पुरी Hariv. 5263. ईप्सितेनाभिलाषेण MBh. 5, 3758. — 4) *zu sammeln, auf einen Punkt zu richten:* योक्तव्यो ऽऽत्मा कथं शक्त्या वेद्यं वै काङ्क्षता परम् MBh. 12,8915.

योक्त्र (wie eben) n. P. 3,2,182. Vop. 26,68. *Strick, Seil, Gurt* AK. 2, 9,13. H. 893. Halâj. 2,420. RV. 3,33,13. 5,33,2. समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि AV. 3,30,6. 7,78,1. TS. 1,6,4,3. TBr. 3,3,3,3. Çat. Br. 1,3,1, 13. मौञ्ज 6,4,3,7. Kâtj. Çr. 2,7,1. 3,8,2. 7,4,6. 8,1,7. 16,3,6. Kauç. 33. 76. M. 8,292. काञ्चनरश्मियोक्त्राः (कृपाः) MBh. 4,1663. 5,3014. 6,2293. 3968. 7,4389. Hariv. 9285. 9319. R. 1,45,19. 20. *das Band* am Besen (वेद) Âçv. Çr. 1,11,3. 8. Çâñkh. Çr. 1,15,11. भुज° *die umschlingenden Arme* als *Schlinge* gedacht (vgl. बाहुपाश u. पाश) MBh. 7,5922. दश° *mit zehn Gurten versehen* (*von den Fingern umspannt*) RV. 10,49,7 und nach dieser Stelle Naigh. 2,5 योक्त्र als Bez. der *Finger.*

योक्त्रक n. = योक्त्र Varâh. Brh. 27,28.

योक्त्रय् (von योक्त्र), °यति *umbinden, umschlingen:* (तम्) योक्त्रयामास बाहुभ्यां पशुं रशनया यथा MBh. 3,446. 4,771 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 1,6038.

योग (von 1. युज्) 1) m., ausnahmsweise n. MBh. 13,1132. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 17,49. P. 2,2,8, Vârtt. 1. Çâk. 42. *a) das Anschirren:* वाजिनो रासभस्य RV. 1,34,9. एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् *in einer und derselben Fahrt* 7,67,8. योगो योग इति क्रुद्धाः सारथीनभ्यचोदयन् *angespannt! angespannt!* MBh. 5,5958. — *b) Gespann:* न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो भवन्ति Çat. Br. 14,7,1,11. रथयोगविद् MBh. 3,12086. सीर° Kauç. 27. षड्योग, अष्टायोग (AV. Prât. 3,2) *Sechs-, Achtgespann* AV. 6,91,1. सीरं षड्योगम् Kâtj. Çr. 5,11,12. Vgl. द्वियोग. — *c) das Rüsten* (eines Heeres): एते हि योगाः सेनायाः प्रशस्ताः परबाधने MBh. 12,3693. सेना° 3691.2,2466. बलानाम् R. 2,82,29 (89,11 Gorr.). योगमाज्ञापयामासुर्युद्धाय च विनिर्ययुः MBh. 8, 10. योग = संनहन, संनाह AK. 3,4,3,23. Trik. 3,3,66. fg. Med. g. 18. fg. — *d) das Auflegen* (eines Pfeils): योगमस्त्राणि गच्छन्ति (so die ed. Bomb.) MBh. 6,5202. अस्त्र° 4,47. — *e) das Anstellen, Inswerksetzen, Ausführen, Anwendung, Gebrauch:* ऋतस्य RV. 3,27,11. 10,30,11. ग्राव्णाम् 35, 9. छन्दसाम् 10,114,9. वाचः TS. 2,5,3,1. यो वै यज्ञं योग आगते युनक्ति 1,6,8,4 (vgl. AV. 19,13,1). एतैरुपाययोगैः M. 9,10. कर्मणाम् (Gegens. संन्यास) Bhag. 5,1. बुद्धि° 2,49. वञ्चना° MBh. 4,1560. 1563. माया° R. 1,31,8. Bhâg. P. 2,9,26. अष्टश्च स्वरयोगो मे R. 2,69,20. विश्वास° 5,90, 10. क्रिया° (s. auch bes.) Bhâg. P. 1,5,34. 3,21,7. स्नेहदाक्षिण्ययोः Vikr. 23. Ragh. 10,87. Kir. 5,52. Râǵa-Tar. 2,171. महत्तमानामभिधानयोगः Bhâg. P. 1,18,18. समाधि° 3,5,46. 8,21. वितान° 2,1,37. भोग° Râǵa-Tar. 1,65. 278. 3,298. 4,371. Pañkar. 3,1,6. *Anwendung eines Medicaments, Mittel, Kur* Suçr. 1,147,12. 161,14. 185,19. 2,33,6. 49,17. 69,4. वाजीकर 153, 16. 338,19. Çârñg. Samh. 3,2,17. योग = प्रयोग Med. = औषध Trik. = भेषज Med. — *f) Mittel* überh., *schlaues Mittel, Kniff:* तस्या योगमविन्दतः MBh. 1,5152. नहि योगं प्रपश्यामि येन मुच्येयमापदः 6127. प्रच्छन्नो वा प्रकाशो वा योगो यो ऽरिं प्रबाधते 2,1953. योगेन *unter Anwendung eines Mittels, auf eine schlaue Weise* 3,10777. 7,677. सुज्ञाता योगेन मृदूभवन्ति न तु नीचाः Spr. 49. बहुभिर्योगैः MBh. 13,2655. Hariv. 4147. 4151. R. 2,73,15. R. Gorr. 1,52,16. 2,78,18. Ragh. 9,23. Bhâg. P. 3, 14,45. दृष्ट्वा संज्ञपनं योगं पशूनां स पतिर्मखे 4,5,24. श्रेयःप्रसिद्धये 18,3. 7,

7,21. *ein übernatürliches Mittel, Zauber:* योगेन बहुधात्मानं कृत्वा MBH. 1,916. तं योगं मम चक्षुषो ऽप्युपदिश Spr. 1212. KATHÂS. 1,50. 8,34. प्राकारभञ्जनान्योगांस्तथा निगडभञ्जनान् 12,42. 63. योगमन्यदेहप्रवेशकम् 45, 78. 13,20. 16,10. 17,104. 32,37. 143. 33,104. 171. 37,27. 45,57. 60. 72, 380. RÂGA-TAR. 1,199. 2,105. so v. a. *Betrug:* योगाधमनविक्रीत, योगदानप्रतिग्रह M. 8,165. योगनन्द (Gegens. सत्यनन्द) *der falsche* Nanda KATHÂS. 4,103. 111. योग = उपाय AK. TRIK. MED. = कार्मण H. an. 2, 44. MED. — *g) Gelegenheit:* कथंचिदेव भवति कार्ये योगः सुदुर्लभः KÂM. NÎTIS. 11,72. पुण्यानुष्ठानयोगेषु MÂRK. P. 51,59. — *h) Unternehmen, Werk, Geschäft, That:* क्रतूपत्तिं क्षितयो योगे ṚV. 4,24,4. 1,5,3. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे 30,7. अग्नेः 2,8,1. AV. 10,5,1. TS. 1,5, 3,3. 5,5,3,2. — *i) das Erwerben, Gewinnen* (neben क्षेम *Besitz;* vgl. योगक्षेम) ṚV. 7,54,3. 86,8. 10,89,10. VS. 30,14. AV. 19,8,2. योगे ऽन्यासां प्रजानां मनः क्षेमे ऽन्यासाम् TS. 5,2,1,7. KAUÇ. 56. MBH. 13,3081 (die ed. Bomb. क्षेमश्च st. क्षेमं च der ed. Calc.). = अपूर्वलाभ, अलब्धलाभ, अपूर्वार्थसंप्राप्ति TRIK. H. an. MED. — *k) Verbindung, Vereinigung, das Zusammentreffen, Berührung:* विधाय योगं पार्थेन संशप्तकगणैः सह MBH. 7,793. HARIV. 5429. श्रवणाङ्गुष्ठ° MAITRJUP. 6,22. 36. R. 5,35,25. RAGH. 3,26. 6,65. KUMÂRAS. 5,67. ÇÂK. 42. Spr. 2054, v. l. 4373. 4810. AK. 3, 4,22 (28),1. VARÂH. BṚH. S. 54,18. 79,19. 27. 88,14. 95,21. 104,24. KATHÂS. 17,122. 31,58. SÂH. D. 50,1. BHÂG. P. 5,5,6. MÂRK. P. 16,6. WEBER, RÂMAT. UP. 291. BHÂSHÂP. 56. NÎLAK. 35. बन्धो ऽत्र दुःखयोग एव 66. KAP. 1, 19. Schol. zu P. 8,1,24. 4,40. VOP. 2,25. यदा न सौमित्रिरियाय योगम् *sich einigen, nachgeben, sich fügen* R. 6,112,110. *Verbindung verschiedener Stoffe, Mischung, Gemisch* AK. 2,7,22. VARÂH. BṚH. S. 54,121. 55,30. 57,8. 76,9. 77,19. 25. विषयोगास्तथा सर्वे विदिताः शत्रुनाशनाः MBH. 2, 257. R. 5,14,44. bei den Gaina *Berührung mit der Aussenwelt* SARVADARÇANAS. 36,17. fgg. 37,10. 20. 38,22. im SÂMKHJA einer der zehn मूलिकार्थ TATTVAS. 43. *Verbindung mit* (instr.) so v. a. *das Theilhaftwerden:* जगत्ययशसा योगं जनयेत् HARIV. 7266. अनर्थ° PRAB. 74,11. अधर्मप्रभवं चैव दुःखयोगं शरीरिणाम् M. 6,64. न नूनं तपसो वास्ति फलयोगः श्रुतस्य वा so v. a. *hat keine Früchte getragen* R. 2,63,39. योग = संगति AK. TRIK. H. an. MED. — *l)* in der Astr. *Conjunction:* नक्षत्र° (s. auch bes.) LÂṬJ. 8,1,5. SÛRJAS. 7,11. 14,15. 17. VARÂH. BṚH. S. 24,5. 9. 11. 29. 25,4. 26,12. 27,1. 2. 107,3. MBH. 1,7333. 3,15959. 5,125. 13,1732. 3278. HARIV. 2476. R. GORR. 2,12,3. 26,11. 5,35,23. 6,112,59. P. 3,1,26, Vârtt. 7. ÇÂK. 181. VIKR. 38,12. RAGH. 1,46. KUMÂRAS. 7,6. Spr. 4377. BHÂG. P. 3,18,27. 7,14,23. — *m) Summation, Summe* COLEBR. Alg. 5. SÛRJAS. 4,10. fg. 20. 7,4. 9,10. गणितस्याथ योगस्य चक्रे संवत्सरं प्रभुः HARIV. 272. तत्कथं मृगशावाक्ष्या गुणयोगो दुनोति माम् so v. a. *alle Vorzüge* Spr. 2370. — *n) Zusammenstellung, Reihenfolge, Anordnung:* एतेषामह्नां योगविशेषान्वक्ष्यामः ÂÇV. ÇR. 11,1,1. अह्नोर्योग ÇÂÑKH. ÇR. 13,24, 20. स्तोम° LÂṬJ. 2,1,1. 9,7. हवन° KAUÇ. 6. ऋचाम् (oder zu *e*) KÂTH. 31,13. — *o) Zusammenhang, Beziehung, Relation:* मानयोगांश्च जानीयात्तुलायोगांश्च सर्वशः M. 9,330. द्रव्याणां स्थानयोगाः *die respectiven Standorte* 332. स्त्रीधर्मयोगम् (= धर्मोपायम् KULL.) 1,114. तत्र स्थानानि भूतानां योगांश्चैव पृथग्विधान्व्यधत्त शतशो ब्रह्मा HARIV. 11805. हृदयं ह्येव जानाति प्रीतियोगं परस्परम् R. GORR. 1,78,15. KAP. 1,31. P. 1,2,54. पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह (vgl. पुंयोग) AK. 3,6,5,37. दिव्य° adj. MBH. 3,4065. नव° *neunfach* 10666. योगात् am Ende eines comp. *vermittelst, in Folge von, gemäss* KÂTJ. ÇR. 1,2,16. 4,17. आनुपूर्व्य° 5,10. गुण° 13. फल° 6,9. कर्म° 12. वेद° 8,29. 4,4,2. 12,1,8. 22,2,14. 15. 25,4,42. ÇVETÂÇV. UP. 4,1. ṚV. PRÂT. 13,4. M. 1,41. R. 1,60,20 (62,20 GORR.). ÇÂK. 47. KAP. 1,12. fg. 3,52. SÂMKHJAK. 42. RAGH. 7,3. 13,29. KUMÂRAS. 7,55. KÂM. NÎTIS. 3,39. Spr. 1562. 4273. VARÂH. BṚH. S. 75,2. KATHÂS. 18,274. RÂGA-TAR. 6,48. NAISH. 22,46. SÂH. D. 7,1. AK. 2,10,24. °योगतस् dass. RAGH. 17, 78. KATHÂS. 46,236. 59,38. BHÂG. P. 1,9,27. 3,5,34. °योगेन dass. M. 9, 298. R. 5,81,40. SÛRJAS. 13,16. VARÂH. BṚH. S. 26,2. Spr. 2036. BHÂG. P. 3,5,32. 16,30. 24,17. — *p)* in der Astr. *Constellation* VARÂH. BṚH. S. 40,1. 14. 78,25. BṚH. 5,13. *Constellationen mit dem Monde* heissen चान्द्रयोगाः 13 passim; *Constellationen ohne den Mond* heissen खयोगाः oder नाभसयोगाः und werden eingetheilt in आकृतियोगाः, संख्यायोगाः, आश्रययोगाः (आश्रययोगाः) und दलयोगाः 12 passim; ausserdem werden noch aufgeführt द्विग्रहयोगाः 14 passim. Auf einem andern Princip beruht die Eintheilung in राजयोगाः, प्रव्रज्यायोगाः, क्लीबयोगाः u. s. w. 4,13. 6,12. 7,8. 15,4. 25,12. *sechszehn Constellationen* Ind. St. 2, 265. fgg. — *q)* in der Astr. Bez. *einer best. Zeiteintheilung;* es werden 27 (आनन्दादि) und auch 28 (विष्कम्भादि) solcher Joga mit Namen aufgeführt COLEBR. Misc. Ess. II, 363. SÛRJAS. 2,65 (vgl. die Note dazu S. 432). VARÂH. BṚH. S. 103,13 (नन्दादि Schol. st. आनन्दादि). — *r) Etymologie, Ableitung der Bedeutung eines Wortes aus seiner Wurzel, die aus der Etymologie sich ergebende Bedeutung eines Wortes* (Gegens. रूढि) SÂJ. zu ṚV. I, S. 72,16. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 4,14,31. 15,1,1. भवति हि निष्पन्ने ऽभिव्याहारे योगपरीष्टिः NIR. 1,14. PRATÂPAR. 9,a,3. 4. H. 2. — *s) Abhängigkeit eines Wortes von einem andern, Rection, Construction:* शास्त्रकृतो योगः शब्दानाम् (nach DURGA *Zusammensetzung, Bau;* es wäre auch die vorangehende Bed. möglich) NIR. 1,2. दूरस्थानामपि पदानामेकीकरणं योगः SUÇR. 2,557,4. कृद्योगा षष्ठी *ein von einem* Kṛdanta *abhängiger Genetiv* P. 2,2,8, Vârtt. 1. — *t)* in der Gramm. *Regel* (urspr. *ein abgeschlossener Satz*) P. 1,3,11, Vârtt. 1. PAT. zu P. 1,1,62. KÂÇ. zu P. 8,4,39. SIDDH. K. zu P. 7,2,63. इति योगो विभज्यते Schol. zu P. 1,3,46. पृथग्योगकरण Schol. zu VS. PRÂT. 3,101. 4,116. 131. 167; vgl. योगविभाग. योग = सूत्र TRIK. — *u) das Passen zu einander, Angemessenheit:* द्वयोर्योगं न पश्यामि तपसो रक्षणस्य च MBH. 5,5433. न योगो ऽस्ति विषस्य रुधिरस्य च R. 5,85,23. नह्येताभ्याम् — अस्मदादेः सहाध्ययनयोगो ऽस्ति UTTARAR. 27,2. 3 (35,12. fg.). अन्यतर° KAP. 1,76. 120. अ° *logische Unmöglichkeit:* उत्तरस्य कार्यस्यायोगः Schol. zu KAP. 1,39. नाशायोग 5. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 84. SARVADARÇANAS. 141,15. fg. 143,17. 150,14 fgg. 180,5. योगतस् *wie es sich gebührt, auf die richtige Weise* M. 6,9. योगेन dass. R. 5,90,31. अयोगेन Spr. 3811. योग = युक्ति AK. TRIK. H. an. MED. — *v) Anspannung der Kräfte, Bemühung, Fleiss, Eifer, Aufmerksamkeit:* अस्त्रे च परमं योगम् (आतिष्ठत्) MBH. 1,5230. 5244. इन्द्रियाणां जये योगमातिष्ठेद्दिवानिशम् M. 7,44. स त्वमातिष्ठ योगं तं येन शीघ्रा कृपा मम। भवेयुः MBH. 3,2639. परया श्रद्धयोपेतो योगेन परमेण 1, 5245. विद्या योगेन रक्ष्यते Spr. 3134. 4994. R. 5,18,18. समाध्यनुबद्ध° BHÂG. P. 3,16,26. कामधुकसत्र योगतः R. 1,55,1. सर्वान्संसाधयेदर्थानक्षि-

एवन्योगतस्तनुम् M. 2,100. — w) पूर्णेन योगेन oder जलपूर्णेन योगेन so v. a. *zum Ueberfliessen, aus vollem Herzen, aus unwiderstehlichem Drange* Hariv. 5425. 5196. fehlerhaft जयपूर्वेण st. जल° 5429. — x) *Sammlung —, Concentration der Geistesthätigkeit, feste Richtung der Erkenntniss auf einen Punkt, Meditation, Contemplation; die zur Kunstfertigkeit erhobene Contemplation; die systematische Begründung derselben, der* **Joga** *als ein best. philosophisches System* (als Gründer desselben gilt später Patańgali); = ध्यान AK. Trik. H. an. Med. अप्राप्तार्थस्य प्राप्तये पर्यनुयोगो योगः Sarvadarçanas. 15,11. Taitt. Up. 2,4. Taitt. Âr. 8, 4. सूक्ष्मतां चान्ववेक्षेत योगेन परमात्मनः। देहेषु च समुत्पत्तिमुत्तमेषधमेषु च ॥ M. 6,65. इदं ध्यानमिदं योगम् MBh. 13,1132. अष्टयोगा 17,49. Hariv. 5006. तपोयोगबलेन R. 1,3,6. °प्रसृतेन चेतसा R. Gorr. 1,15,24. किमात्मयोगेन निवर्तितेन 4,29,24. Ragh. 1,8. 18,32. Spr. 737. Varâh. Brh. S. 69,38. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः Jogas. 1,2. Sarvadarçanas. 160,7. fgg. Kaṇ. 5,2,16. यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह। बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ॥ तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्। Kaṭhop. 6,10. fg. एवं प्राणमथोंकारं यस्मात्सर्वमनेकधा। युनक्ति युञ्जते वापि तस्माद्योग इति स्मृतः ॥ Maitrjup. 6,25. Çvetâçv. Up. 2,11. MBh. 1,48. युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये Bhag. 6,12. समत्वं योग उच्यते 2,48. योगान्तरायाः Prab. 61,17. योगोपसर्गाः 88,13. मोक्षोपायो योगो ज्ञानश्रद्धानचरणात्मकः H. 77. योगारूढ Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 10, 143. Bhâg. P. 3,18, 15. सांख्यं योगमभ्यस्येत् Nir. 14,6. Çvetâçv. Up. 6,13. Bhag. 2,39. MBh. 12,7157. 11037. fg. 14,546. fgg. Lalit. ed. Calc. 179,5. Lot. de la b. l. 4. Bhâg. P. 2,1,6. Eine verkehrte Auffassung des Wortes, nämlich als *Verbindung der Einzelseele mit Gott* oder *der Allseele* findet man z. B. bei den Pâçupata: चित्तद्वारेणात्मेश्वरसंबन्धो योगः Sarvadarçanas. 77, 14. न पद्मासनतो योगो न नासाग्रनिरीक्षणम्। ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगं योगविशारदाः ॥ Kulârṇavat. in Verz. d. Oxf. H. 92,a,7.8. Bei den Pańkarâtra ist योग *Andacht, andächtiges Suchen Gottes:* योगो नाम देवतानुसंधानम् Sarvadarçanas. 55,22.18. प्राणायामः प्रत्याहारो ध्यानं धारणा तर्कः समाधिः षडङ्ग इत्युच्यते योगः Maitrjup. 6,18. Amṛtan.-Up. in Ind. St. 9,25. अष्टाङ्ग° Verz. d. Oxf. H. 8,a,36. H. 83. आरम्भश्च घटश्चैव तथा परिचयो ऽपि च। निष्पत्तिः सर्वयोगेषु योगावस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ Verz. d. Oxf. H. 235,b,24. fg. Auch *eine einzelne Handlung, welche dem* **Joga** *förderlich ist,* wird als **Joga** bezeichnet: सा च तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानात्मिका क्रिया योगसाधनत्वाद्योग इति Sarvadarçanas. 172,5. 6. Hierher wohl योग = वपुःस्थैर्य Med. — y) der personif. **Joga** ist ein Sohn **Dharma**'s von der **Krijâ** Bhâg. P. 4,1,51. — z) *ein Anhänger des* **Joga**-*Systems* MBh. 3,12741. 12,11038. fg. 11550. Schol. zu Kap. 5,57. Verz. d. B. H. No. 616. — aa) *der das Vertrauen missbraucht, Verräther* Trik. H. an. Med. — bb) *Späher* Trik. — cc) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 238,b,30. 239,a,24. —2) f. आ a) Bein. der **Pîvarî**, einer Tochter der Manen **Barhishad**, Hariv. 977. 1244. — b) Bez. einer **Çakti** Weber, Râmat. Up. 326. Pańkar. 3,20,30. — Vgl. अप्सु°, अश्व°, इन्द्र°, कथा° (vgl. noch उपविष्टः सभामध्ये कथायोगेन MBh. 3,16658. कथायोगेन बुध्येत वाग्मित्वं सत्यवादित्वम् Kâm. Nîtis. 4, 36), कर्म° (auch in den Nachträgen; कर्मयोगात् und कर्मयोगतम् *in Folge vorangegangener Handlungen, — des Schicksals* Kathâs. 43,193. 181), काल° (*Zeitpunkt* Kathâs. 41,14. कालयोगेन bedeutet *nach einiger Zeit, einige Zeit darauf;* vgl. MBh. 12,4290. R. 1,34,41. कालपर्याययोगेन dass. 7,65,17), क्रम° (अनेन क्रमयोगेन auch MBh. 3,8848), क्रिया°, तन्त्र°, चूर्ण°, ज्ञान° (auch Bhag. 3,3), दण्ड°, दुर्योग (*Vergehen* Uttarar. 109,3 = 147,14 der neueren Ausg.), दैव° (°योगात् Spr. 2366. °योगतम् Kathâs. 39,5. Râga-Tar. 6,15. °योगेन Bhâg. P. 3,20,14), द्योग, ध्यान° (auch Jâǵn. 3,64. MBh. 3,16726), नक्षत्र°, निद्रा° (auch Hariv. 523), पूर्ण°, पथ्ययोग, पृश्नि°, प्राचीन°, बहिर्योग (auch Vop. 3,9), ब्रह्म°, भक्ति° (auch Bhâg. P. 1,2,7. 20. 2,2,14. 3,25,44. 32,23), भद्र°, मन्त्र°, मिथ्या°, यथायोगम्, विधियोग, सोम°, स्थाने°, हरि°.

योगक (von योग) m. Bein. des **Agni** als *Hochzeitsfeuers* Gṛhjasaṁgr. 1,5.

योगकला (योग + क°) f. = योगपट्ट Bhâg. P. 4,6,39.

योगकन्या (योग + क°) f. ein N. der zur Göttin erhobenen Tochter der **Jaçodâ**, die **Kaṁsa** in der Meinung, dass sie ein Kind der **Devakî** sei, um's Leben gebracht hatte, Hariv. 3351. 9071.

योगकरण्डक (योग + क°) 1) m. N. pr. eines Ministers des **Brahmadatta** Kathâs. 19,80. — 2) f. °ण्डिका N. pr. einer **Pravrâǵikâ** Kathâs. 13,88.

योगकुण्डलिनी (योग + कु°) f. Titel einer **Upanishad** Ind. St. 3,325.

योगक्षेम (योग + क्षेम) m. *Besitz des Erworbenen, Erhaltung des Vermögens; Vermögen, Subsistenz; Sicherheit, Wohlfahrt* VS. 22,22. योगक्षेमं व आदायाहं भूयासमुत्तमः ṚV. 10,166,5. Ait. Br. 8,6. TBr. 3,3,8,4. Çat. Br. 11,5,6,4. 12,1,1,10. 13,1,8,3. Shaḍv. Br. 2,8.9. Kauç. 114. प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते Kaṭhop. 2,2. Taitt. Up. 3,10,2. M. 7,127. 8, 230. 9,219. Jâǵn. 1,100. Dhûrtas. 103,9. Bhag. 9,22. MBh. 1,2608. 3,16851. 5,4209. 12,2688. 5327. 13,3146. R. 2,48,17. 53,3. 76,8. 112,21. R. Gorr. 2,45,20. 123,20. 124,12. Spr. 4900. Kâm. Nîtis. 2,2. Kathâs. 34, 200. 49,78. Bhâg. P. 1,6,7. Verz. d. Oxf. H. 70,b,12. Verz. d. B. H. No. 1022. °कर MBh. 1,3341. R. 2,113,12. Gorr. 127,7. °वह Schol. 115, 14. °समर्पितृ MBh. 13,1921. अ° Çat. Br. 11,4,8,2. Ait. Br. 1,14. Wird gewöhnlich erklärt als *Erwerb und Erhaltung des Besitzes,* was aber das m. sg. und pl. nicht bedeuten kann und dieses erscheint doch auch in der späteren Sprache, z. B. MBh. 12,518 (योगः क्षेमश्च ed. Bomb.). 2808. °क्षेमाः 2677. 13,3144. Das n. sg. und das m. du. müssen entschieden als **Dvaṁdva** gefasst werden, bedeuten aber auch geradezu *Wohlfahrt;* das n. Spr. 4352. 4421 (v. l. masc.). Varâh. Bṛh. S. 8,11. योगक्षेमौ Râǵa-Tar. 6,210. समानयोगक्षेम am Ende eines adj. comp. so v. a. *gleichen Werth mit — habend, Nichts mehr seiend als:* ज्ञानाभावसमानयोगक्षेमत्वात् Sarvadarçanas. 47,13. आभाससमानयोगक्षेमत्वात् 128,12. निर्योगक्षेम adj. *sich nicht um Erwerb und Besitz kümmernd* Bhag. 2,45.

योगगति f. *der ursprüngliche Zustand:* पावकः पवमानश्च शुचिरित्यग्नयः पुरा। वसिष्ठशापादुत्पन्नाः पुनर्योगगतिं (= अग्नित्वं Comm.) गताः ॥ Bhâg. P. 4,24,4.

योगचक्षुस् adj. *bei dem die Meditation das Auge vertritt,* Beiw. **Brahman**'s Mârk. P. 97,9.

योगचर m. Bein. **Hanumant**'s Trik. 2,8,6.

योगचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Hall 17.

योगचिन्तामणि m. desgl. Hall 12. 17. Verz. d. B. H. No. 648.

योगचूर्ण n. *magisches Pulver* (चूर्ण) Daçak. 71, 2.

योगज 1) adj. *durch Meditation —, durch* Joga *hervorgerufen* Bhâshâp. 62. — 2) n. *Agallochum* Bhâvapr. im ÇKDr.

योगतत्त्व n. *das Wesen des* Joga Ind. St. 2, 1. Titel einer Upanishad 49. fg. °प्रकाश und °प्रकाशक Titel einer Schrift Hall 18.

योगतन्त्र n. Joga-*Lehre, ein über den* Joga *handelndes Buch* Hariv. 12439. Bhâg. P. 9, 21, 26. Bez. einer Klasse von Schriften bei den Buddhisten Burn. Intr. 1, 557. 638. Schiefner, Lebensb. 244 (14).

योगतरंग m. Titel einer Schrift Hall 12.

योगतल्प n. Joga-*Lager* so v. a. योगनिद्रा Bhâg. P. 2, 10, 13.

योगतारका f. *der Hauptstern eines* Nakshatra Sûrjas. 8, 19. Varâh. Brh. S. 24, 34.

योगतारा f. dass. Sûrjas. 8, 16. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 323.

योगतारावली (योग + ता°) f. Titel einer Schrift Hall 18. 119.

योगत्व n. *das* Joga-*Sein* Sarvadarçanas. 163, 9. 164, 4. fg.

योगदीपिका f. Titel einer Schrift Hall 18.

योगदेव m. N. pr. eines Gaina-Autors Sarvadarçanas. 31, 15.

योगधर्मिन् adj. *der Meditation —, dem* Joga *huldigend* MBh. 17, 49. Hariv. 6463. R. 7, 23, 1, 43. Bhâg. P. 3, 16, 1.

योगनन्द m. *der falsche* Nanda (gegenüber सत्यनन्द) Kathâs. 4, 103. 111 u. s. w. fälschlich योगानन्द Hall in der Einl. zu Vâsavad. 55.

योगनाथ m. *Herr des* Joga, Beiw. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 89, *a*, 3. Datta's Bhâg. P. 6, 8, 14.

योगनाविक m. *ein best. Fisch,* = गर्गाट Hâr. 186.

योगनिद्रा f. *halb Contemplation, halb Schlaf; ein Zustand zwischen Schlaf und Wachen, leichter Schlaf;* insbes. Vishṇu's *Schlaf am Ende eines* Juga (auch personificirt) Spr. 808. 5080. सेवेत साधौं सुखयोगनिद्राम् Kâm. Nîtis. 15, 44. Ragh. 10, 14. Pańkat. 27, 5. 29, 24. 125, 25. MBh. 1, 1218. Ragh. 13, 6 (Sâh. D. 340, 21). VP. 498. 500. 502. Bhâg. P. 1, 3, 2. 3, 9, 21. 11, 31. 10, 2, 15. Mârk. P. 81, 49. 52. Verz. d. Oxf. H. 16, *b*, N. 4. — Vgl. निद्रायोग und विष्णुं निद्रामयं योगं प्रविष्टम् Hariv. 2834.

योगनिद्रालु m. Bein. Vishṇu's H. ç. 67, wo fälschlich योगि° gelesen wird.

योगनिलय m. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

योगंधर (योगम्, acc. von योग, + धर) m. 1) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Spruches* R. 1, 30, 6. — 2) N. pr. eines Ministers des Çatânika Kathâs. 9, 14. 43. des Piṇḍola Schiefner, Lebensb. 276 (46). — Vgl. यौगंधरायण.

योगपट्ट und °पट्टक n. *das bei der Contemplation um Rücken und Knie geschlungene Tuch* Pâdma-P., Kârttikam. 2 im ÇKDr.

योगपति m. *Herr des* Joga, Bein. Vishṇu's Pańkar. 4, 3, 18.

योगपत्नी f. *Gattin des* Joga, Bein. der Pîvarî, die auch Jogâ und Jogamâtar genannt wird, Hariv. 977. 1244. an der ersten Stelle योगिपत्नी die neuere Ausg.

योगपथ m. *der zum* Joga *führende Weg* Bhâg. P. 1, 6, 36. 4, 4, 24. 6, 35. 11, 20, 24.

योगपद n. *der Zustand der Contemplation* Dhjânabindûp. in Ind. St. 2, 4.

योगपदक n. Bez. *eines best. bei der Contemplation umgeworfenen Gewandes* ÇKDr. nach Siddhântaç. in Vîramitrodaja. Wohl fehlerhaft für °पट्टक.

योगपातञ्जल m. *ein Anhänger des* Patańgali *als* Joga-*Lehrers* Madhus. in Ind. St. 1, 23, 20.

योगपारंग m. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

योगपीठ n. Bez. *einer best. Art zu sitzen bei der Contemplation* Pańkar. 3, 2, 27. Kâlikâ-P. 56 im ÇKDr.

योगबीज n. Titel einer Schrift Hall 14. 18.

योगभावना f. *composition by the sum of the products* Colebr. Alg. 171.

योगभाष्य n. Titel eines *Commentars* des Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 247, *b*, 4.

योगभास्कर Titel einer Schrift Hall 18.

योगमणिप्रभा f. Titel eines Commentars zu den Jogasûtra Hall 12.

योगमय (von योग) adj. (f. ई) *aus der Contemplation —, aus dem* Joga *hervorgegangen:* °ज्ञान (so die neuere Ausg.) Hariv. 11604. पादुके Bhâg. P. 4, 15, 18. Vishṇu Pańkar. 4, 3, 20. धर्मो बुद्धियोगमयः (d. i. बुद्धिमयो योगमयश्च) MBh. 3, 13773.

योगमल्लिमन् m. Titel einer Schrift Hall 15.

योगमातर् f. *Mutter des* Joga Mârk. P. 23, 65. Verz. d. Oxf. H. 89, *b*, 14. Bein. der Pîvarî Hariv. 977. 1244 (an der ersten Stelle योगिमातर् die neuere Ausg.).

योगमाया f. *die* Mâjâ *des* Joga Bhâg. P. 3, 13, 44. 5, 4, 3. 6, 18, 60. 10, 3, 48.

योगमार्तण्ड m. Titel einer Schrift Hall 119.

योगमाला f. *ein Kranz von Kuren* Verz. d. B. H. No. 947. *Zauberkranz*, Titel eines Werkes über *Zauberei* 905.

योगमुक्तावली f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 21.

योगमूर्तिधर m. pl. Bez. einer Klasse von Manen (*den* Joga *als Gestalt tragend*) Mârk. P. 97, 10.

योगयाज्ञवल्क्य n. Titel einer Schrift Hall 18. Verz. d. B. H. No. 648.

योगयात्रा f. 1) *der Gang zur Versenkung des Geistes, — zum* Joga Spr. 2310. — 2) Titel einer Schrift des Varâhamihira Ind. St. 10, 161. fgg.

योगयुक्त adj. *in tiefes Nachdenken versunken, dem* Joga *obliegend* Spr. 1273.

योगयोगिन् adj. dass. MBh. 12, 9106.

योगरङ्ग m. = नारङ्ग *Orangenbaum* Râgan. im ÇKDr. — Vgl. योगारङ्ग.

योगरत्न n. 1) *Zauberjuwel* Verz. d. B. H. No. 905. — 2) Titel eines medic. Werkes (*ein Juwel von Arzneimitteln*) Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 22.

योगरत्नमाला f. Titel eines Werkes über *Zauber* Verz. d. Oxf. H. 322, *a*, No. 764.

योगरत्नसमुच्चय f. Titel eines *medic.* Werkes Verz. d. Oxf. H. 316, *b*, 22. 358, *a*, 12.

योगरत्नाकर m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 974.

योगरत्नावली f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 5.

योगरथ m. *der* Joga *als Wagen* Bhâg. P. 8, 5, 29.

योगरसायन n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 125, *a*, 37.

योगरहस्य n. desgl. Hall 17.

योगराज m. 1) *ein Fürst unter den Arzneimitteln*, Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Bhâvapr. im ÇKDr. — 2) *ein Fürst —, ein*

Meister im Joga Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,21.

योगराजोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 390,*b*, No. 35.

योगरूढ adj. von Wörtern, *die neben ihrer etymologischen weiteren Bedeutung noch eine engere haben*, z. B. पङ्कज *im Schlamme gewachsen* und speciell *Lotusblume* Comm. zu Bhâshâp. S. 83. Davon nom abstr. °ता f. Comm. zu Sâṁkhjapr. S. 8,4.

योगरोचना f. Bez. *einer best. Zaubersalbe* Mṛkkh. 47,22.

योगवत् (von योग) adj. 1) *verbunden, vereinigt* Mârk. P. 23,31. — 2) *dem* Joga *obliegend* Hariv. 3056. 11351.

योगवर्त्तिका f. *ein magisches Licht, Zauberlaterne* Daçak. 71,3.

योगवह adj. *vermittelnd, fördernd:* कार्य° MBh. 5,2617. सर्व° 8,1415.

योगवाचस्पत्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 178,*a*,34.

योगवार्त्तिक n. Titel eines Commentars, = पातञ्जलभाष्यवार्त्तिक Hall 10. Verz. d. Oxf. H. 232,*a*, No. 562. Colebr. Misc. Ess. I, 231. 235. 335.

योगवासिष्ठ n. Titel eines Werkes, = वासिष्ठरामायण Verz. d. Oxf. H. 353,*b*, No. 840. d. Tüb. H. 23. Colebr. Misc. Ess. I, 327. II, 102 (hier fälschlich °वसिष्ठ geschrieben). Hall 121. °शास्त्र Ind. St. 1, 468. °तात्पर्यप्रकाश Hall 121. संक्षेप° Verz. d. B. H. No. 643. °सार 640. fg. Verz. d. Oxf. H. 232, *b*, No. 563. 233,*a*, No. 564. Hall 122. °सारविवृति Verz. d. B. No. 640. Hall 122. °सारचन्द्रिका, °सारसंग्रह ebend. Davon योगवासिष्ठीय adj. *zu jenem Werke gehörig* Verz. d. B. H. No. 642.

योगवाह 1) m. Bez. *der secundären Laute* Visargantja, Gihvâmûlija, Upadhmântja und Nâsikja VS. Prât. 8,23. Der Schol. zu Pratiǵnâs. 22 und Râmaçarman zu VS. Prât. haben अ°; vgl. auch Mahâbh. S. 166. — 2) f. ई *a) Alkali* H. 945. — *b) Honig* (vgl. u. योगवाहिन् 2.) Mad. in Nigh. Pr. — *c) Quecksilber* Wilson und ÇKDr.

योगवाहिन् 1) adj. *a)* व्यवायि च विकाशि स्यात्सूक्ष्मं छेदि मदावहम्। आग्नेयं जीवितहरं योगवाहि स्मृतं (°वाह्यमतं v. l.) विषम्॥ Çârṅg. Saṁh. 1,4,22. — *b)* vielleicht *Ränke schmiedend:* कुकृत्यं योगवाहित्वं वैधुर्यं द्रोहवृत्तिता Râǵa-Tar. 4, 671. — 2) n. *Menstruum:* नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु Suçr. 1, 185, 20.

योगविद् adj. 1) *die rechten Mittel —, die rechte Weise kennend, wissend, was sich schickt, — sich gebührt* Hariv. 4022. 12485. R. 5, 33, 7. Suçr. 2, 349, 1. Ragh. 15, 95. Râǵa-Tar. 2, 91. Bhâg. P. 9, 19, 10. — 2) *mit dem* Joga *vertraut* MBh. 12, 13080. 14, 554. Verz. d. Oxf. H. 235, *b*, 12. Bhâg. P. 4, 1, 33. Sarvadarçanas. 177, 15. unter den Beiww. Çiva's Çiv.

योगविभाग m. *Spaltung einer Regel, indem man aus dem, was zu einander gehört und in einer Regel gesagt werden könnte, zwei Regeln macht*, Schol. zu P. 6, 2, 59. Bhâmaha zu Varar. 3, 49. — Vgl. पृथग्योगकरण.

योगवृत्तिसंग्रह m. Titel einer Schrift Hall 11.

योगशत n. Titel eines *medic.* Werkes Verz. d. B. H. No. 959. fgg. Verz. d. Oxf. H. 316,*b*, No. 752. 404,*b*, No. 35.

योगशतकाख्यान n. Titel einer Schrift Hall 19.

योगशब्द m. 1) *das Wort* योग Sarvadarçanas. 160,19. — 2) *ein Wort, dessen Bedeutung sich aus der Etymologie von selbst ergiebt*, Kâç. zu P. 1,2,53.

योगशरीरिन् (योग + शरीर) adj. *dessen Leib* Joga *ist* MBh. 2, 340.

योगशायिन् adj. *halb schlafend, halb in Gedanken versunken* Râǵa-Tar. 5,100. — Vgl. योगनिद्रा.

योगशास्त्र n. Joga-*Lehre* (unter andern die des Patańǵali) Jâǵn. 3, 110. MBh. 14, 546. 549. Verz. d. B. H. 14, 5. Verz. d. Oxf. H. 17, *a*, 4 v. u. 71,*a*,35. 89,*a*,1. 237,*a*, No. 568. 302,*b*,6. Pańkar. 1,10,4. 2,8,32. Madhus. in Ind. St. 1,22,18. Sarvadarçanas. 154,2. fgg. °सूत्रपाठ Hall 18.

योगशिक्षा f. Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. I, 95. Ind. St. 1, 249. 251. 302. 2,47. wohl fehlerhaft für योगशिखा.

योगशिखा f. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325. Hall 18. Verz. d. Oxf. H. 349,*b*,20. — Vgl. योगशिक्षा.

यौगस् (von 1. युज्) Uṇâdis. 4,215. n. = समाधि und काल Uǵǵval.

योगसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 958. Hall 17.

योगसमाधि m. *die dem* Joga *eigenthümliche Versenkung des Geistes* Ragh. 8,24.

योगसार 1) *ein Universalheilmittel* Gâruḍa-P. 173 im ÇKDr. — 2) Titel eines Werkes über Joga Hall 18. 19. 200. Verz. d. Oxf. H. 183, *b*,36. °संग्रह 232,*a*, No. 562. Hall 12. °समुच्चय 17.

योगसिद्ध 1) adj. *durch* Joga *im Zustande der Vollkommenheit seiend* Bhâg. P. 9,12,6. जीव (bei den Ǵaina) Colebr. Misc. Ess. I, 381. — 2) f. आ N. pr. einer Schwester Vâkaspati's VP. 120.

योगसिद्धान्तचन्द्रिका f. Titel eines Werkes Hall 11.

योगसिद्धिप्रक्रिया f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 110,*b*,8.

योगसिद्धिमत् (von योग + सिद्धि) adj. *in der Zauberkunst erfahren* Kathâs. 4,99.

योगसुधानिधि m. Titel eines Werkes Ind. St. 2,252.

योगसूत्र n. das dem Patańǵali zugeschriebene Sûtra *über* Joga Hall 7. 9. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. 247,*a*,19. °भाष्य 270,*b*,34. °व्याख्यान 237,*b*, No. 569. °गूढार्थद्योतिका Hall 11. °वृत्ति 10. योगसूत्रार्थचन्द्रिका 11.

योगहृदय n. Titel einer Schrift Hall 18.

योगाग्निमय (von योग + अग्नि) adj. *durch's Feuer des* Joga *hindurchgegangen* Çvetâçv. Up. 2,12.

योगाङ्ग (योग + अङ्ग) n. *ein Bestandtheil des* Joga, deren acht und auch sechs angenommen werden: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान und समाधि Jogas. 2, 28. fg. Sarvadarçanas. 178,8. Verz. d. Oxf. H. 233,2. fgg. आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा। ध्यानं समाधिरेतानि योगाङ्गानि भवन्ति षट्॥ 236,*a*, No. 567. योगाङ्गासनानि 94,*b*,8.

1. योगाचार (योग + आ°) m. 1) *die Observanz des* Joga Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,2. — 2) Titel einer Schrift über den Joga Mallin. zu Kumâras. 3,47.

2. योगाचार (wie eben) m. pl. N. einer best. buddhistischen Schule, sg. *ein Anhänger dieser Schule* Colebr. Misc. Ess. I, 391. Burn. Intr. 1, 445. fgg. 510. Lot. de la b. l. 513. Madhus. in Ind. St. 1,13,19. Vedântas. Comm. S. 95,10. Sarvadarçanas. 9,2. 15,15. fg. 24,11. योगाचार्यभूमिशास्त्र (wohl योगाचार° zu lesen) Hiouen-thsang I, 269. fehlerhaft योगाचार्य LIA. II, 460. Z. f. d. K. d. M. 4,493.

योगाचार्य (योग + आ°) m. 1) *ein Lehrer der Zauberkunst* Mṛkkh. 47,21. — 2) *ein Lehrer des* Joga MBh. 1,2607. Hariv. 951. fg. 980. Bhâg. P. 9,12,3.

— 3) fehlerhaft für योगाचार; s. u. 2. योगाचार.

योगाञ्जन (योग + अ°) n. 1) *Heilsalbe* Suçr. 2,326,8. — 2) *der* Joga *als Salbe* Prab. 53,9.

योगात्मन् (योग + आ°) adj. *dessen Wesen der* Joga *ist, dem* Joga *obliegend* MBh. 6,2944. 13,352. Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,41.

योगानन्द (योग + आ°) m. *die Wonne des* Joga Verz. d. Oxf. H. 222, *b*,34. 42. fehlerhaft für योगनन्द Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 55.

योगानुशासन (योग + अ°) n. Joga-*Lehre* Madhus. in Ind. St. 1,22,18. fg. Patańǵali's *Lehrbuch* Verz. d. Oxf. H. 108,*a*, No. 168. °सूत्र Hall 9. °सूत्रवृत्ति 11.

योगान्त (योग + अन्त) Bez. *einer der sieben Theile, in welche nach* Parâçara *die Bahn Mercur's getheilt wird,* Varâh. Bṛh. S. 7,8. योगान्तिका f. (sc. गति) dass., umfasst Mûla und die beiden Ashâḍhâ 11.

योगापत्ति (योग + आ°) f. *Modification des Gebrauchs, — der Anwendung* Âçv. Çr. 1,1,1.

योगाम्बर (योग + अ°) m. N. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works 1,24.

योगाय् (von योग), °यते *zum* Joga *werden:* भोगो (so ist zu lesen) योगायते Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,21.

योगायन (?) Ind. St. 3,261.

योगारङ्ग m. = योगरङ्ग Râǵan. im ÇKDr.

योगासन (योग + 1. आ°) n. *eine dem* Joga *entsprechende Art zu sitzen* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,30. Verz. d. B. H. No. 616. Bhaṭṭ. 7,77. Kull. zu M. 6,49. ध्यानयोगासने ब्रह्मासनम् AK. 2,7,39. H. 838.

योगि, gen. pl. योगीनाम् aus metrischen Rücksichten st. योगिनाम् MBh. 13,916. Mârk. P. 111,2. Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 567 (hier hätte auch योगिनाम् gepasst).

योगित (von योग) adj. *toll (bezaubert):* आ AK. 2,10,22. H. 222. योगोन्मादित st. dessen Med. k.44. रोगित H.1280. रोगोन्मादित H. an. 3,5.

योगिता (von योगिन्) f. am Ende eines comp. *das Zusammenhängen mit, das in-Beziehung-Stehen zu* Bhâshâp. 23.

योगित्व (von योगिन्) n. 1) am Ende eines comp. dass. Sâh. D. 70,9. 96, 16. — 2) *der Zustand eines* Jogin Mârk. P. 18,8. 42,17.

योगिदण्ड (योगिन् + दण्ड) m. *eine best. Rohrart,* = वेत्र Râǵan. im ÇKDr.

योगिन् (von योग) P. 3,2,142 (von 1. युज्). 1) adj. am Ende eines comp. *in Conjunction stehend mit:* चन्द्र° Mârk. P. 75,55. सोम° 63. *verbunden mit:* त्रिवार्क मल्लयोगिनम् 64. स्वादु° so v. a. *süss* MBh. 3,12845. *zusammenhängend mit, in Beziehung stehend zu:* पुरुष° Kâty. Çr. 1,7, 21. Schol. zu 9,13,23. कर्मणा कालयोगिना MBh. 3,11244. Hariv. 12439. 12443. Bhâshâp. 27. Kusum. 14,6. 46,18. — 2) adj. *dem* Joga *obliegend,* m. *ein* Jogin H. 76, Sch. Wilson, Sel. Works 1,205. fgg. Maitrjup. 6, 10. Bhag. 3,3. 6,10. Dhjânabindûp. in Ind. St. 2,2. 4. Jogaç. ebend. 48. Amṛtan. Up. ebend. 9,34. Nṛs. Up. ebend. 109. 122. Weber, Râmat. Up. 286. 359. 362. Suçr. 1,9,12. Lalit. ed. Calc. 212,7. Lot. de la b. l. 4. Spr. 1435. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः 2042. 2257. Vet. in LA. (III) 24,19. 2,3. Spr. 4679. Ragh. 6,38. 8,17. 10,24. Kathâs. 1,55. 25,82. Râǵa-Tar. 1,357. 6,110. VP. 155. 652. Bhâg. P. 1,5,23. 9,29. 19,37. 3,16,19. 8,21,1. Mârk. P. 39,1. Verz. d. Oxf. H. 95,*a*,11. Sarvadarçanas. 45,11. 95,4. fgg. 166,1. 169,8. 177,3. 178,19. fgg. Bez. Jâǵnavalkja's Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,2. Arǵuna's H. ç. 137. Vishṇu's MBh. 13,901. Çiva's H. ç. 45. eines Buddha 79. योगिनी Spr. 3740. Mârk. P. 23,65. 52,31. Prab. 31,6. Bez. der Durgâ H. ç. 51. — 3) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,7. युङ्गिन् v. l. — 4) f. °नी *a) ein best. mit Zauberkraft ausgestattetes weibliches Wesen, Fee, Hexe* (im Gefolge Çiva's und der Durgâ) Hariv. 10002. Wilson, Sel. Works 1,255. 257. 2,33. fg. 39. Kathâs. 37,109. 150. 155. 191. 48,122. 124. 56,107. 75,173. fg. 108,25. 33. 123,212. Râǵa-Tar. 2,100. fgg. Vet. in LA. (III) 10,20. Verz. d. B. H. No. 910. 1313 (64 an der Zahl). Verz. d. Oxf. H. 70,*a*,37. 88,*a*,17. 89,*b*,13. 91,*b*,25. 94,*a*,16. 109,*a*,40. Pańkar. 4,3,74. — *b)* Bez. *einer best.* Çakti bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 89,*a*,17. — *c)* bei den Buddhisten *ein Frauenzimmer, welches die von Jmd verehrte Göttin darstellt,* Burn. Intr. 538. — Vgl. काल°, कु°, नक्षत्र° (auch Hariv. 2587), मध्य°, महा° (in der 1ten Bed. auch MBh. 9,2297. 15,752. Bhâg. P. 1,4,4. 8,9), योग°, स्थाने°.

योगिनीजालशम्बर n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108,*b*,30. 109,*a*,18.

योगिनीज्ञानार्णव m. Titel einer Schrift ebend. 95,*b*,6.

योगिनीतन्त्र n. Titel eines Tantra ebend. 95,*b*,6. 97,*a*, No. 151. 100, *b*, No. 156. 279,*a*,23.

योगिनीपुर n. N. pr. einer *Stadt* ebend. 340,*a*,4.

योगिनीभैरव n. Titel eines Tantra ebend. 108,*b*,33. 109,*a*,22.

योगिनीहृदय n. Titel einer Schrift ebend. 95,*b*,6. 6. 104,*a*,18. 108, *a*,32. 341,*a*,38.

योगिपत्नी f. *Gattin der* Jogin Hariv. 977, v. l. für योगपत्नी.

योगिमातृ f. *Mutter der* Jogin Hariv. 977, v. l. für योगमातृ.

योगिराज् m. *ein Fürst unter den* Jogin Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,12.

योगीन्द्र m. dass. Weber, Râmat. Up. 359. 361. Kathâs. 45,80. Pańkar. 1,1,9. 66. Pańkat. 240,12. Bez. Jâǵnavalkja's Jâǵn. 1,2.

योगीय् (von योग), °यते *für* Joga *halten* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 567.

योगीश m. *ein Fürst* (ईश) *unter den* Jogin Mârk. P. 17,24. Verz. d. Oxf. H. 92,*a*,12. Bez. Jâǵnavalkja's H. 851, Sch.

योगीश्वर 1) m. *ein Fürst* (ईश्वर) *unter den* Jogin Spr. 397. 2046. Kâm. Nîtis. 14,63. Mârk. P. 17,25. 96,28. 109,65. Verz. d. Oxf. H. 89, *b*,7. Bez. Jâǵnavalkja's Jâǵn. 1,1. Ind. St. 1,58. Verz. d. Oxf. H. 263, *b*, No. 635. — 2) f. ई N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,35.

योगेन्द्र (योग + इन्द्र) m. *ein Meister im* Joga Wilson, Sel. Works 1,163.

योगेश (योग + ईश) m. 1) dass. Bhâg. P. 4,19,6. 6,18,60. 8,3,27. Bez. Jâǵnavalkja's H. 851. — 2) Bez. der Stadt Brahman's Çabdârthak. bei Wilson.

योगेश्वर (योग + ई°) 1) m. *a) ein Meister im* Joga Bhag. 18,75. MBh. 13,920. Hariv. 13209. Spr. 397, v. l. Bhâg. P. 1,1,23. 8,14. 43. 18,14. 2,2,10. 23. 8,20. 3,3,23. 16,36. 32,12. 4,7,38. 5,4,3. 10,9. 21. 9,2,32. Mârk. P. 97,8. Pańkar. 4,3,38. Pańkat. 34,23 (ed. orn. 31,1). Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,1 v. u. ein Vetâla als *Meister in der Zauberei* so angeredet Kathâs. 83,35. wohl Bez. Jâǵnavalkja's Verz. d. Tüb. H. 13. — *b)* N. pr. α) eines Sohnes des Devahotra Bhâg. P. 8,13,33. — β)

eines Brahmarâkshasa Kathâs. 12, 49. 32, 25. 33, 96. — 2) f. ई a) *eine Meisterin im* Joga Kathâs. 65, 218. — b) *eine Fee* Kathâs. 31, 16. Râǵa-Tar. 1, 333. 2, 108. — c) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, b, 4. einer Vidjâdharî Kathâs. 18, 231. 378. — d) *eine best. Pflanze*, = वन्ध्याकर्कोटकी Bhâvapr. im ÇKDr. — Vgl. महायोगेश्वर.

योगेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, a, 10.

योगेश्वरत्व (von योगेश्वर) n. *Meisterschaft im* Joga MBh. 1, 510. Bhâg. P. 9, 15, 19.

योगेष्ट (योग + 1. इष्ट) n. *Zinn* AK. 2, 9, 106. *Blei* H. 1041.

योगैश्वर्य n. = योगेश्वरत्व Bhâg. P. 5, 5, 35. 16, 14. 9, 8, 17.

योगोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 76, a, 13.

योग्य (von योग) 1) adj. P. 5, 1, 102. Schol. zu P. 3, 1, 121 (von 1. युज्). a) *zum Zug tauglich*; m. *Zugthier* AV. 8, 9, 7. Çat. Br. 1, 3, 2, 13. 3, 5, 2, 24. 9, 4, 2, 10. 4, 12. — b) *zu einer best. Kur gehörig* Çârng. Samh. 1, 1, 27. — c) *brauchbar, angemessen, entsprechend, zukommend, geeignet, passend, zu Gute kommend; geschickt, fähig*; von Personen und Sachen; = पात्र AK. 3, 4, 25, 181. = योगार्ह, उपायिन् (fälschlich उपाय Med.), शक्त, प्रवीण H. an. 2, 378. Med. j. 48. — Kâtj. Çr. 22, 4, 11. Jâǵń. 2, 235. Kap. 3, 2, 18. Gaim. 1, 22. °भूमिषु MBh. 4, 125. Kathâs. 27, 145. R. Gorr. 2, 3, 37. 5, 56, 83. Ragh. 6, 29. Ṛt. 6, 6. ad Çâk. 54. Spr. 272. 1169. 3805. Kathâs. 5, 116. 16, 40. 22, 111. 31, 71. 34, 194. 49, 194. Sâh. D. 721. Râǵa-Tar. 1, 236. 4, 242. 253. 5, 249 (योग्य Tr., योग्य ed. Calc.). Verz. d. Oxf. H. 311, a, 37. VP. bei Muir, ST. I, 63. Bhâg. P. 7, 13, 23 (योगैः ed. Burn., योग्यैः ed. Bomb.). 11, 20, 24. Mârk. P. 100, 17 (zu lesen °दोषदीनयो°). 109, 24. 113, 9. Pańkat. 19. 20. Z. d. d. m. G. 14, 373, 6. Kusum. 25, 5. 7. die Ergänzung α) im gen.: त्वमेव योग्या मम Hariv. 10001. न चासौ रक्षसां योग्यः so v. a. *gewachsen* R. 1, 22, 7. नेदानीं गुह (so die ed. Bomb.) योग्योऽयं वासो मे सज्जने वने 2, 52, 61. Çâk. 187. Varâh. Bṛh. S. 9, 7. Râǵa-Tar. 5, 33. Pańkat. 185, 19. Vet. in LA. (III) 9, 11. 28, 4. नृपस्य Schol. zu P. 2, 1, 6. Vop. 6, 61. नेयं वनस्य योग्या R. 2, 38, 4. अपत्नीको नरो भूप न योग्यो निजकर्मणाम् Mârk. P. 71, 10. — β) im loc.: तत्र त्वं योग्यो न युद्धेषु MBh. 7, 5787. कर्मणि 8, 1663. शक्रस्य सारथ्ये 1668. R. Gorr. 1, 23, 7. 3, 40, 5. 5, 85, 17. 7, 59, 2, 21. Suçr. 1, 29, 1. Râǵa-Tar. 6, 181. Sarvadarçanas. 101, 2. — γ) im dat.: तत्साधनाय Kathâs. 46, 197. — δ) im comp. vorangehend: राज° Jâǵń. 2, 261. MBh. 3, 15577. Varâh. Bṛh. S. 77, 5. Kathâs. 21, 78. Râǵa-Tar. 2, 151. Pańkat. 215, 11. Vet. in LA. (III) 12, 20. 29, 14. Z. d. d. m. G. 14, 373, 7. इन्द्रिय° Wilson, Sâmkhjak. S. 27. कारालंकारयोग्यौ ते स्तनौ चेमौ MBh. 4, 392. Hariv. 4370. तपो° R. 3, 3, 15. तत्काल° Spr. 3270. सभा° (वाच्) 4124. षण्डता° AK. 2, 9, 62. राज्य° Râǵa-Tar. 4, 714. Mârk. P. 16, 88. Vop. 8, 97. Sarvadarçanas. 85, 19. fg. इज्याकर्म° Mârk. P. 70, 23. दारक्रिया° Ragh. 5, 40. Pańkat. 188, 20. Hit. 72, 8. Kathâs. 20, 23. सुरतसंभोग° 45, 334. Prab. 110, 5. निशातिवाह्य° Kathâs. 18, 106. उत्थान° Çâk. 38. Kâm. Nîtis. 15, 50. 16, 10. देवोपस्थान° Mâlav. 65, 16. प्रत्यक्षदर्शन° Schol. zu Naish. 22, 48. सलिलाञ्जलिदान° Spr. 205. Pańkat. 252, 20. न खलु वयममुष्य दानयोग्याः *verdienend gegeben zu werden* Sâh. D. 49, 21. Ausnahmsweise in comp. mit dem, was *geeignet* u. s. w. macht, Daçak. 62, 11. — ε) im infin.: (इमे शूराः) योग्या रक्षोगणैर्योद्धुम् R. 1, 22, 4. उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुं पृथिवीमिमाम् 4, 2, 11. 35, 18. भृत्यजनान्दासांस्त्वं गृहे वारयन्भृशम्। योग्यस्ताडयितुं क्रोधात् *dazu bist du gut, stets bei der Hand* MBh. 7, 5790. त्वया लोकाः स्रष्टुं (durch den infin. pass. zu übersetzen) योग्यो न मानुषः R. 7, 20, 8. यादृशेनेह रूपेण योग्यं दातुं धृतेन वै। तादृशं खलु ते दत्तम् MBh. 14, 1612. fg. P. 6, 1, 81, Sch. — 2) m. *das Sternbild* Pushja Med. — 3) f. आ a) oxyt. *Veranstaltung*, *Werk:* ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व ṚV. 3, 6, 6. यद्योग्या अश्नवैथ ऋषीणाम् 7, 70, 4. स विश्वाहा सुमनो योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम् 10, 53, 11. — b) *praktische Uebung, Praxis* Suçr. 1, 28, 20. 29, 1. 10. °सूत्रीयो ऽध्यायः 28, 19. *Ausübung, exercitatio:* प्रणिधान° Ragh. 8, 19. मान° Kâvjâd. 2, 243. insbes. *Leibesübung, Gymnastik, kriegerische Uebung* Trik. 3, 2, 20. 3, 442. H. 788. H. an. Med. Halâj. 2, 315. ग्रामाद्यो हि जीर्यन्ते योग्ययैव दिवानिशम् Kâm. Nîtis. 14, 27. नियुद्धे, जवे, योग्यासु MBh. 1, 4986. महावीर्यौ कृतयोग्यौ 5350. योग्यां चक्रे धनुषा 5235. अस्त्र° R. 2, 1, 9. कृत्स्यश्चास्त्रादियोग्याभिः Kathâs. 94, 41. °रथ H. 752. Halâj. 2, 290. — c) N. pr. der Gattin des Sonnengottes H. an. Med. — 4) n. a) *eine best. Pflanze*, = ऋद्धि AK. 2, 4, 2, 31. H. an. Med. *Sandel* Çabdârthak. bei Wilson. — b) *Vehikel* Çabdârthak. — c) *Kuchen* Çabdârthak. — d) *Milch* H. ç. 98. — Vgl. यथायोग्यम् (auch MBh. 13, 4710).

योग्यता (von योग्य) f. *Angemessenheit, das Geeignetsein, Befähigung* Trik. 3, 3, 322. न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः R. 1, 22, 2 (23, 2 Gorr.). Jogas. 2, 53. Kathâs. 46, 104. 74, 265. Râǵa-Tar. 2, 39. 60. 3, 147. 5, 253. 6, 362. Spr. 2178. 2887. Bhâg. P. 3, 31, 45. fg. Mârk. P. 113, 9. Tattvas. 50. Schol. zu Kâtj. Çr. S. 22, 4. Bhâshâp. 81. Sâh. D. 6. 27, 8. Halâj. 2, 109. Vop. 25, 17. Pańkat. 241, 6. Schol. zu Kap. 1, 102. zu P. 2, 1, 6. Kusum. 26, 9. °वाद m. Titel einer Schrift Hall 57.

योग्यत्व (wie eben) n. dass. Jogas. 2, 41. Vedântas. (Allah.) No. 59. Schol. zu Kâtj. Çr. S. 22, 9. Vop. 6, 58, Anf.

योजक (von 1. युज्) nom. ag. 1) *Anschirrer, Anspanner:* वाजि° MBh. 4, 320. रथ° 9, 819. Bhâg. P. 12, 11, 48. — 2) *Veranstalter, Ausführer:* युद्ध° so v. a. *kampflustig* MBh. 5, 2114. = युद्धोद्योगिन् Nîlak.

योजन (wie eben) n. AK. 3, 6, 2, 30. 1) n. *das Anschirren, Anspannen:* लाङ्गल° Pâr. Gṛhj. 2, 13. रथे योजनमूर्जितानाम् Hariv. 8395. — 2) n. *Gespann, Gefährt, Geschirr:* अरेणु ṚV. 6, 62, 6. उतो न्वस्य यन्महदश्वावद्योजनं बृहत्। दामा रथस्य ददृशे 8, 61, 6. दशयोजन (daher = अङ्गुलि Naigh. 2, 5) 10, 94, 7. — 3) n. *Fahrt* so v. a. *Wegstrecke, welche in einer Anspannung durchlaufen wird, Station;* weiterhin *ein best. Wegemaass von vier* Kroça (etwa *zwei geogr. Meilen;* nach anderen Rechnungen eine kleinere Strecke, z. B. 2½ *engl. Meilen*, Useful Tables 122), Warren, Kala Sank. 394. Trik. 2, 1, 17. 2, 4. 3, 3, 254. H. 888. an. 3, 402. Med. n. 111. fg. Hâr. 197. Hiouen-thsang 1, 59 (= 8 Kroça). 60. Lalit. ed. Calc. 170, 5. Mârk. P. 49, 40 (= 4 Gavjûti d. i. 8 Kroça). यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ṚV. 2, 16, 3. 1, 123, 8. 10, 86, 20. परावतो न योजनानि ममिरे 78, 7. अमिता योजनानि AV. 4, 26, 1. त्रिंशदस्या जघनं योजनानि *ihr pudendum ist dreissig Meilen lang* TBr. 2, 4, 2, 7. योजनान्न परम् VS. Prât. 1, 24. M. 11, 75. योजनं वाधनो व्रजेत् 132. MBh. 1, 1114. आयोजनसुगन्धि 6965. 3, 2812. R. 1, 5, 7. 2, 92, 10. 98, 30. Spr. 461. 1440. 2534. Ind. St. 8, 432. Sûrjas. 1, 59. 65. 4, 1. 12, 60. 63. 65. 80. 83. Varâh. Bṛh. S. 21, 35. 23, 4. 30, 32.

Kathâs. 18,102. Pańkat. 226,9. Vet. in LA. (III) 4,1. masc. Dhjânabindûp. in Ind. St. 2,1. त्रियोजनम्, पञ्चयोजनम् u. s. w. *eine Strecke von drei, fünf* u. s. w. Jogana AV. 6,131,3. R. 1,1,63. 2,91,29. षष्टियोजनी *eine Strecke von sechzig* Jog. Kathâs. 18,349. 94,14. Râga-Tar. 3,395. 5,103. Am Ende eines adj. f. आ MBh. 2,312. 3,10535. R. Gorr. 2,28,18. 3,39,32. 47,13. 5,6,18. 20. fg. 56,21. fg. Varâh. Bṛh. S. 30,33. — तद्वार्यं वो मरुतो मह्वित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम् *Fahrt* so v. a. *Bahn* ṚV. 5,54,5. अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः 1,92,3 (vgl. 30,18). 191,10. vielleicht auch 88,5, wo Sâj. das Wort durch स्तोत्र erklärt. *Drei Bahnen* oder *Stationen* ähnlich zu verstehen wie die *drei Fusstapfen* Vishṇu's: त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् 35,8. 164,9. — 4) n. (bisweilen auch आ f.) *Anordnung, Zurüstung; Veranstaltung:* इमा जुषस्व योजनेन्द्र या ते अमन्महि ṚV. 8,79,3. विदाना अस्य योजनम् 9,7,1. मिमीते अस्य योजना 102,3. पात्र° Kâtj. Çr. 9,2,1. 14,2. 26,2,18. स्तोम° Schol. zu Lâṭj. 2,5,23. अग्नि° Kâtj. Çr. 18,6,16. शस्त्रनागादि° *das Zurüsten, Zurechtmachen* Sâh. D. 171. आहार° *Speisebereitung* MBh. 12,2187. भूषणयोजन und शेखरापीडयोजना (v. l. °योजन beim Schol. zu Bhâg. P. 10,45,36) unter den 64 Kalâ Verz. d. Oxf. H. 217,a,6. 5. शिलाप्रासाद° *das Aufbauen, Erbauen* Râga-Tar. 4,190. *das Herstellen, in-Ordnung-Bringen:* इदानीं कथायोजनाय व्याख्याकृदात्मनः श्लोकचतुष्टयमवतारयति Verz. d. Oxf. H. 142,b,27. Râga-Tar. 1,10. यैर्मण्डलस्य क्रियते दूरोत्सन्नस्य योजनम् 187. एवं कृतं ततस्तेन नष्टार्थस्य योजनम् 6,353. काव्यांशस्य च योजना Kathâs. 1,11. — 5) n. *das Anweisen, Antreiben:* प्रोत्साहनं स्यादुत्साहगिरा कस्यापि योजनम् Sâh. D. 491. — 6) f. आ *Vereinigung, Verbindung:* एकपञ्चाशता Sâh. D. 112,16. तन्मात्राहंकार° Kull. zu M. 1,16. — 7) f. आ *Construction* (in gramm. Sinne) Wilson, Sâṁkhjak. S. 107. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 61. Nîlak. zu Hariv. 6373. Schol. zu Maitrjup. 1,4. — 8) n. *Sammlung —, Concentration der Geistesthätigkeit, feste Richtung der Erkenntniss auf einen Punkt* Çvetâçv. Up. 1,18. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,32. = योग (das aber hier auch schlechtweg *Verbindung* bedeuten kann) Trik. 3,3,254. H. an. Med. — 9) n. *die Weltseele* (परमात्मन्) H. an. Med. — Vgl. अग्नियोजन, बहुयोजना, भिन्नयोजनी.

योजनगन्ध 1) adj. *dessen Geruch sich ein* Jogana *weit verbreitet.* — 2) f. आ a) *Moschus* Trik. 3,3,222. H. an. 5,22. fg. Med. dh. 48. — b) Bein. α) der Satjavatî, der Mutter Vjâsa's, Trik. H. 848. H. an. Med. MBh. 1,2412. — β) der Sîtâ Trik. H. an. Med.

योजनगन्धिका f. Bein. der Satjavatî Trik. 2,8,11.

योजनपर्णी (यो° + पर्णा) f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb., indischer Krapp* Ratnam. im ÇKDr.

योजनवल्लिका f. dass. Râgan. im ÇKDr. °वल्ली AK. 2,4,2,9.

योजनिक am Ende eines adj. comp. nach einem Zahlwort *so und so viel* Jogana *lang, — messend* R. 5,6,19. 20. 56,20. fgg. f. आ 19. — योजनिका in पद° ist das f. zu योजनक von योजन.

योजनीय (von 1. युज्) adj. 1) *anzuwenden:* मृदुपरुषगुणौ योजनीयौ स्वकाले Spr. 1314. Verz. d. Oxf. H. 264,b,31. — 2) *zu verbinden mit* (instr.): इदमिदमिति सम्यक्कर्मणा योजनीयम् so v. a. *in's Werk zu setzen* Kâm. Nîtis. 13,95. — 3) *grammatisch zu verbinden, zu construiren* Schol. zu Maitrjup. 1,4.

योजन्य (von योजन) am Ende eines adj. comp.: षष्टि° *sechzig* Jogana *entfernt* Kathâs. 28,188.

योजयितर् (vom caus. von 1. युज्) nom. ag. *Fasser* (eines Edelsteins) Spr. 595.

योजयितव्य (wie eben) adj. 1) *zu gebrauchen, auszuwählen* Varâh. Bṛh. S. 48,17. — 2) *auszustatten, zu versehen mit* (instr.) Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 56.

योजितर् (von 1. युज्) nom. ag. *Vereiniger, Verbinder, Zusammenfüger:* चरणपाद° Varâh. Bṛh. S. 51,12.

योज्य (wie eben) adj. 1) *zu richten auf:* बुद्धिर्व्यसनेषु योज्या Spr. 2382. — 2) *anzustellen, angestellt zu werden verdienend* (an ein Amt u. s. w.): भृत्यानुत्तमपदयोज्यान् Pańkat. 16,20. *anzuhalten zu:* धर्म° R. Gorr. 2,114,17. — 3) *anzuwenden, in Anwendung zu bringen* Jâǵn. 1,366. Spr. 644. Varâh. Bṛh. S. 59,14. 84,2. 88,10. 98,8. Pańkar. 3,13,7. Sâh. D. 294. 298. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 326. Sarvadarçanas. 35,14. 42,13. H. 12. Schol. zu Kap. 1,18. आशीरन्या न ते योज्या so v. a. *herzusagen* Çâk. 187, v. l. — 4) *hinzuzufügen zu* (loc.) Sûrjas. 2,32. 5,17. 10,7. Kâm. Nîtis. 8,38. 19,23. — 5) *zu versehen mit* (instr.), *theilhaftig zu machen* MBh. 15,197. R. 2,46,23 (44,23 Gorr.). Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 56. — 6) *auf den die Geistesthätigkeit fest zu richten ist, der Gegenstand des* Joga MBh. 13,1153. = योगे ब्रह्मणि प्रविलापनीयः Nîlak.

योटक m. *Constellation:* विवाहे राशियोटकग्रहयोटकनक्षत्रयोटकगणयोटकयोनियोटकवर्गयोटकभेदेन पञ्चविधो योटकः ÇKDr. nach der Çrîpatisaṁhitâ. — Vgl. योट्.

योतु m. = परिमाण Uṇâdik. im ÇKDr.

योत्त्र (von 2. यु) n. P. 3,2,182. Vop. 26,68. *Strick, Seil* AK. 2,9,13. H. 893. R. Gorr. 2,45,29.

योत्त्रप्रमाद m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 107,b, No. 166.

योद्धर् (von 1. युध्) m. *Kämpfer, Streiter, Kriegsmann, Soldat* AK. 2,8,2,29. H. 763. P. 4,2,56. तयोरन्यतरेणाहं योद्धा स्याम् so v. a. *ich möchte kämpfen* R. 1,22,25. योद्धा यस्य धनंजयः *für den — kämpft* MBh. 3,1918. 2451. Hariv. 14453. राजानमयोद्धारम् Spr. 1270. सार्थवाह° Mâlav. 68,9. Râga-Tar. 1,61. राज्ञः Pańkat. 47,15. 218,7.

योद्धव्य (wie eben) adj. *zu bekämpfen* MBh. 5,7567. 12,3541. n. impers. *zu kämpfen, pugnandum:* कैर्मया सह योद्धव्यम् Bhag. 1,22. MBh. 1,5429. 3,17278. 4,1487. 1584. 14,326. 328. R. Gorr. 2,95,21. 5,41,5. 82,21. Kathâs. 22,41. 46,202. Pańkat. 48,1. Hit. 105,19. योद्धव्ये (उत्सृज्य ed. Bomb.) *wo es zu kämpfen gilt* (*galt*) MBh. 6,1546.

योध (wie eben) m. n. (!) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. *Krieger, Streiter, Kriegsmann, Soldat* AK. 2,8,2,29. H. 763. ṚV. 1,143,5. 3,39,4. न त्वा योधो मन्यमानो युयोध 6,25,5. वर्मण्वन्तो न योधाः 10,78,3. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. M. 7,97. fg. MBh. 1,6687. 3,15753. 4,1161. 8,2557 (wo mit der ed. Bomb. योधव्रतस° zu lesen ist). R. 1,5,20. 6,20. 2,41,18. 81,12. 82,24. fg. (89,6 fg. Gorr.). R. Gorr. 2,100,56. 5,48,15. 6,107,7. Spr. 2120. 4527. Varâh. Bṛh. S. 15,19. 39,2. 51,21. Kathâs. 12,22. Râga-Tar. 6,250. Prab. 87,9. Pańkat. 175,7. Verz. d. Oxf. H. 190,b,16. °संराव AK. 2,8,2,76. रथ° *zu Wagen* MBh. 6,5506. रथाश्वयोधाः *zu Wagen, zu*

Ross Bhâg. P. 9, 10, 20. वसन्त° *der Frühling als Kriegsmann* Ṛt. 6,1. योध vom Wagen Ṛv. 6,26,4. वृषो योधः *ein zum Kampf abgerichteter* oder *geeigneter Stier* Varâh. Bṛh. S. 48,44. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3,11279. 9,1795. R. Gorr. 2,91,16. 5,15,20. 6,1,46. Vgl. पुरो°, बाहु°. — 2) m. *Kampf* in दुर्योध und मिथोयोध. — 3) *ein best. Metrum*, 4 Mal ‒◡◡‒‒◡‒ Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 6).

योधक (wie eben) m. = योध 1) MBh. 5,913. 13,1586. R. Gorr. 2,32,24.

योधन (wie eben) n. *Kampf* Bhâg. P. 8,15,7. Mârk. P. 135,17. चित्र° MBh. 4,1365. कूट° Kâm. Nîtis. 18,58. — Vgl. दुर्योधन.

योधनपुरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,9.

योधनीपुर n. N. pr. einer *Stadt* ebend. 66,*b*,41. 67,*a*, N. 4. Vgl. Tchen-tchou-koue und Tchen-wang-koue *royaume du maître (roi) des combats* Hiouen-thsang 1,377.

योधागार (योध + आ°) m. *Wohnhaus der Kriegsleute, Kaserne* MBh. 12,2649.

योधिक s. यौधिक.

योधिन् (von 1. युध्) adj. am Ende eines comp. *kämpfend, streitend:* दिव्यास्त्र° Hariv. 12951. Kathâs. 120,57. MBh. 3,11756. R. 1,16,22 (20,13 Gorr.). 2,64,39. माया° MBh. 2,575. सन्मार्ग° *auf ehrliche Weise* Ragh. 17,69. त्यक्तजीवित° MBh. 3,2120. तीक्ष्ण° 5,7383. काल° Spr. 6. व्यूढाग्र° Kathâs. 48,19. कृप° *zu Ross* MBh. 6,5505. गज° 5,5959. 6,2279. Hariv. 13514. *bekämpfend, Bekämpfer:* दानव° R. Gorr. 2,88,25. — Vgl. अग्र°, आगत°, कूट°, गरुड्योधिन्, चित्र°, द्वंद्व°, बाहु°.

योधिवन (योधिन् + वन) n. N. pr. einer Oertlichkeit R. 2,68,17.

योधीयंस् (compar. zu योध) adj. *streitbarer* Ṛv. 1,173,5.

योधेय m. 1) = योध *Krieger, Streiter* ÇKDr. und Wilson. — 2) pl. N. pr. eines Geschlechts Hariv. 1678 nach der Lesart der neueren Ausg., यौधेय die ältere; vgl. योध्य.

योध्य (von 1. युध्) 1) adj. *zu bekämpfen* Ṛv. 9,9,7. MBh. 5,2209. 6,30. 12,3541. Vgl. अ° (adj. auch Hariv. 3065). — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 3,15244.

योनल m. = यवनाल H. 1178.

योनि (von 2. यु) Uṇâdis. 4,51. m. und f. (dieses in der alten Sprache selten; aus metrischen Rücksichten bisweilen auch योनी) Trik. 3,5,16. Siddh. K. 247,*b*,1. 1) *Schooss; Geburtsort, Mutterleib, vulva* Nir. 2,8.19. AK. 2,6,2,27. Trik. 3,3,255. H. 609. an. 2,280. Med. n. 16. Halâj. 2, 359. 5,76. Ṛv. 1,164,32. fg. 2,9,3. अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः 3,29,10. वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव 5,78,5. युवा ह यच्छुवत्याः नेति योनिषु 10,40,11. 63,15. 162,4. AV. 1,11,3. 5. 3,23,2. 5. गर्भमा धेहि योन्याम् 5,25,8. योन्या इव प्रच्युतो गर्भः 6,121,4. VS. 8,29. योनिं प्रविशादिन्द्रियम् 19,76. Ait. Br. 1,3. मध्ये योनिर्धृता 3,35. 5,15. TS. 6,1,2,6. यथा योनौ रेतः सिञ्चेत् Çat. Br. 1,7,2,14. 6,4,4,19. संभूतिं तस्य तां विद्याद्यद्योनावभिजायते M. 2,147. विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् 9,34. fg. 37. बीजाद्योनिर्गरीयसी 52. 56. Suçr. 1,290,15. 2,93,17. 396,2. fgg. Bhâg. P. 4,6,42. योनिः प्रक्लिद्यते स्त्रियाः MBh. 13,2227. Spr. 5268. 5276 परयोनावभिगमनम् Varâh. Bṛh. S. 46,56. परयोनिषु गच्छतो मैथुनम् 86,66. अक्षत° adj. f. M. 9,176. 10,5. योनिर्यथा न दुष्येत कर्ताहं ते सुमध्यमे Bhâg. P. 9,24,33. गोः R. 1,55,3. सयोनिप्राणिन् *ein weibliches Wesen* AK. 3,6,1,2. °चिकित्सा Verz. d. B. H. No. 949. °दोषचिकित्सा 972. °व्यापद् Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,16. — 2) *Heimath, Haus; Lager, Nest, Stall* u. s. w.: जायेव योनौ Ṛv. 1,66,5. 2,38,8. सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ 3,29,8. समानं योनिमनु संचरन्ती 3,33,3. जायेदस्तं मघवन्त्सेदु (सा Padap.) योनिः 53,4. 4,16,10. आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः 5,67,2. 9,71,6. 82,1. समाने योनौ सहशेय्याय 10,10,7. यमस्य 123,6. मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे 125,7. AV. 13,1,17. अप्सुयोनिर्वा अग्निः स्वामेवैनं योनिं गमयति TS. 5,2,2,4. 3,2,6,3. Çat. Br. 13,2,3,10. ततो गच्छेत राजेन्द्र भीमायाः स्थानमुत्तमम्। तत्र स्नात्वा तु योन्यां वै MBh. 3,5026. — 3) *Stätte des Entstehens* oder *des Bleibens*, daher *Ursprung, Quelle*, (zum Empfang zubereiteter) *Raum, Behälter, Sitz* u. s. w.; = प्रकृति AK. 3,4,14,75. = उत्पत्तिस्थान Trik. = कारण H. 1513. H. an. = आकर Med. रात्र्युषसे योनिमारैक् *hat Platz gemacht* Ṛv. 1,113,1. 124,8. योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि 104,1. समाने योना मिथुना समोकसा 144,4. 2,3,11. 3,1,7. 5,7. ऋतस्य 63,13. 18. 4,1,12. 5,21,4. 9,8,3. VS. 2,6. अयं योनिश्चकृमा यं वयं ते Ṛv. 4,3,2. 6,15,16. 7,3,5. 8,29,2. अयोहत 9,1,2. मृन्मय VS. 11,59. 12,61. die *Stätten* des Feuers: नि षदा योनिषु त्रिषु Ṛv. 2,36,4. सतश्च योनिमसतश्च वि वः VS. 13,3. इयं वा अस्य सर्वस्य योनिः, सोमं योनौ सादयति Çat. Br. 4,1,2,9. 10,6,4,1. सैषा त्रयस्य योनिर्यद्ब्रह्म 14,4,2,23. Çvetâçv. Up. 4,11. 5,2. die Ṛk ist Yoni d. h. *Ausgangspunkt, Grundform* des Sâman Ait. Br. 3,35. Çâṅkh. Br. 24,6. 8. Çr. 7,21,2. 5. वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते, इन्धन° Çvetâçv. Up. 1,13. अग्नेर्योनिरिवारणिः Bhâg. P. 3,27,23. M. 9,321. Spr. 1668. एष योनिः सर्वस्य Mâṇḍ. Up. 6. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,126. ब्रह्मक्षत्रस्य वै योनिर्वंशः *ein Geschlecht, aus dem Brahmanen und Krieger hervorgegangen sind*, Bhâg. P. 9,22,43. त्रसानां त्रिविधा योनिरण्डस्वेदजरायुजाः MBh. 6,164. H. 1357. मनःशृङ्गारसंकल्पात्मनो योनिः (कामस्य) 229. तेजसां योनिम् Mârk. P. 105,25. 99,33. दिव्याभरणयोनयः Hariv. 6005. सर्व° Ragh. 10,21. अशनेरमृतस्य चोभयोर्वशिनश्चाम्बुधराश्च योनयः Kumâras. 4,43. धर्मस्य M. 2,25. देवेन ज्ञानयोनिना MBh. 5,3761. विग्रहयोनयः Kâm. Nîtis. 10,5. शब्दयोनिर्धातुः AK. 3,4,14,68. Am Ende eines adj. comp. *entstanden —, hervorgegangen aus* H. 6. Ṛv. Prât. 2,11. 11,2. Bhag. 5,22. 7,6. MBh. 15,235. Ragh. 6,8. Kumâras. 6,39. Vikr. 28. Verz. d. Oxf. H. 179,*a*, No. 410. — 4) *Geburtsstätte* so v. a. *Familie, Geschlecht, Stamm, die durch die Geburt bestimmte Daseinsform* (als Mensch, Brahmane u. s. w., Thier u. s. w.): शीलवृत्ते समाज्ञाय विद्यां योनिं च कर्म च MBh. 13,2406. विद्यायोनिसंबन्ध P. 6,3,23. असंबन्धा च योनितः M. 2,129. स्त्रियाः संग्रहणं प्राह तद्विगाख्यातयोनितः Varâh. Bṛh. S. 86,70. 96,8. (न) स्वभावमतिवर्तन्ते योनियुक्ताः शरीरिणः Spr. 4309. योनीनामधमा वयम् R. 7,59,1,21. क्रययोनिज so v. a. *Race* MBh. 5,5253. यां यां योनिं तु जीवो ऽयं येन येनेह कर्मणा। क्रमशो याति लोके ऽस्मिन् M. 12,53. 74. 6,63. बह्वीस्तु संविशन्योनीर्जायमानः पुनः पुनः MBh. 13,1923. शुभकृत् शुभयोनीषु पापकृत्पापयोनिषु (प्रजायते) 3,13872. Bhâg. P. 3,14,42. यस्य सत्त्वस्य या योनिस्तस्यां तत्परिमृग्यते so v. a. *unter seines Gleichen* R. 5,14,62. स्वां योनिमासाद्य 7,18,20. कलुषयोनिज M. 10,57. fg. विहीन° MBh. 3,15674. खल° Bhâg. P. 8,23,7. चण्डालपुक्कशानां योनिमृच्छति M. 12,55. वैश्ययोनौ जाता Mârk. P. 115,20. ब्रह्मक्षत्रियविड्योनि adj. so v. a. *zur Kaste der Brahmanen, Krieger oder*

Vaiçja *gehörig* M. 2, 80. 8, 62. 9, 229. दास° adj. 8, 415. शृगालयोनिं प्राप्नोति 5, 164. 9, 30. Ind. St. 1, 265. PAÑKAT. 188, 5. 6. — 5) als Synonym von भग (das missverstanden wurde) *der Regent des* Nakshatra Pûrvaphalgunî VARÂH. BṚH. S. 98, 4; vgl. योनिदेवता. — 6) *Wasser* NAIGH. 1, 12. H. an. — 7) mystische Bez. *des Diphthongen* ए WEBER, RÂMAT. UP. 318. Ind. St. 2, 316. — Vgl. अ°, अग्नि°, अत्य°, अब्ज°, अम्भोज°, अश्म°, एक°, कर्ण°, कुम्भ°, कृत°, कृष्ण°, घृत°, चित्त°, जगद्योनि, जीव°, तिर्यग्योन, तिर्यग्योनि, दुर्योनि, देव°, धूम° (vgl. धूमोत्थयोनि R. GORR. 2, 102, 11), नेत्र°, पद्म°, पाप°, पुरा°, प्रति°, प्राण°, ब्रह्म° (*von* Brahman *stammend* auch MBH. 3, 16187. R. 1, 34, 1), भूत° (auch MUṆḌ. UP. 1, 1, 6), मनो°, मह्य°, वस्त्र°, वि°, शत°, स°, संकल्प°, संकीर्ण°, सत्य°, सादृग्योनि, स्व°.

योनिकुण्ड n. Bez. *einer best. mystischen Figur* Verz. d. Oxf. H. 96, *b*, 13.

योनिग्रन्थ m. = छन्दस् COLEBR. Misc. Ess. I, 308.

योनिज (योनि + 1. ज) adj. *aus einem Mutterleibe hervorgegangen*, im Gegens. zu अयोनिज (s. auch bes.) KAṆ. 4, 2, 5. MBH. 2, 296. R. 3, 4, 23. KATHÂS. 27, 71. 34, 41. fg. 81. अधम° *von der niedrigsten Herkunft* M. 9, 23.

योनित्व (von योनि) n. *das Ursprungsein, Quellesein* NṚS. TÂP. UP. 2, 6 in Ind. St. 9, 162. यज्ञाङ्ग° KUMÂRAS. 1, 17. Am Ende eines comp. *das Entstandensein aus, das Gegründetsein auf:* धान्य° (eigentlich nom. abstr. vom adj. comp. धान्ययोनि) SUÇR. 1, 192, 18. 236, 15. 286, 1. शस्त्र° SARVADARÇANAS. 60, 13.

योनिदेवता f. *das* Nakshatra Pûrvaphâlgunî H. 111; vgl. योनि 5).

योनिद्वार n. 1) *Muttermund* SUÇR. 1, 278, 8. — 2) N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBH. 3, 8073.

योनिन् = योनि am Ende eines adj. comp.: अव्यक्तयोनिनः MBH. 13, 1125. शब्दयोनिनम् (°योनिजम् die neuere Ausg.) HARIV. 2481. — Vgl. नीच°.

योनिनासा f. *the upper part of the vulva, or the union of the labiae* WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

योनिभ्रंश m. *Vorfall der Gebärmutter* SUÇR. 1, 278, 13.

यौनिमत् (von योनि) adj. *mit seinem Mutterschooss* u. s. w. *verbunden* TBR. 1, 1, 2, 7. 3, 9, 21, 2. KÂṬH. 26, 3.

योनिमुक्त adj. *von der Wiedergeburt befreit* ÇVETÂÇV. UP. 1, 7.

योनिमुख n. *Muttermund* SUÇR. 1, 277, 20. 278, 2. 6.

योनिमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* ÇKDR. nach der ÇÂKTÂNANDATARAṄGIṆÎ.

योनिरञ्जन n. *the menstrual excretion* WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

योनिरोग m. *Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile* SUÇR. 1, 175, 7. 290, 15. 2, 296, 5. Verz. d. B. H. No. 963.

योनिलिङ्ग n. *the clitoris* WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

योनिवेश in der Stelle: क्षत्रिया योनिवेशाश्च MBH. 6, 374. st. dessen क्षत्रियोपनिवेशाश्च ed. Bomb.; noch andere Lesarten verzeichnet in VP. 194. fg., N. 152.

योनिसंवृत्ति f. *contraction or closure of the vagina* WILSON.

योनिसंकर m. *fleischliche Vermischung zwischen verschiedenen Kasten, Missheirath* M. 10, 60. R. 1, 6, 17 (21 GORR.).

योनिसंभव und अ° adj. = योनिज und अयोनिज Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, 14.

योन्यै (von योनि) adj. *einen Schooss —, einen Behälter bildend* ṚV. 8, 45, 30.

योन्यर्शस् (योनि + अ°) n. *eine best. Krankheit der weiblichen Geschlechtstheile*, = कन्द TRIK. 2, 6, 14.

योपन (von युप्) s. जन° (wo *störend* st. *hemmend* zu lesen ist), जीवित°, पद° (wo zu verbessern ist 1) *womit man die Fussspur verwischt*. — 2) *das Verwischen der Fussspur* oder *ein dazu dienendes Werkzeug*).

यौषणा (wohl von 2. यु wie युवन्) f. *Mädchen, junges Weib, Gattin* ṚV. 3, 52, 3. 56, 5. 62, 8. 7, 95, 3. 8, 8, 10. सरंजारो न योषणाम् 9, 101, 14. 10, 39, 7. 14. 40, 6. योषणे दिव्ये *Morgen und Nacht* 7, 2, 6. 10, 110, 6. अप्या 11, 2. सयोषणा BHÂG. P. 3, 12, 14. ṚV. 8, 46, 30, nach SÂJ. ebenfalls *Mädchen*, könnte es *Stute* bedeuten. parox.: दाना मित्रं न योषणा 5, 52, 14 (nach SÂJ. so v. a. स्तुति).

यौषन् f. dass.; pl. ṚV. 4, 5, 5. so heissen *die Finger* 9, 1, 7. 6, 5. 56, 3. 68, 7. त्रितस्य 32, 2. 38, 2.

योषा (योषा UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3, 62) f. dass. NIR. 3, 4. AK. 2, 6, 1, 2. H. 504. HALÂJ. 2, 326. ṚV. 1, 48, 5. 92, 11. कुयवस्य 104, 3. विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम् 117, 20. नि ते नंसै पीप्यानेव योषा 3, 33, 10. 38, 8. 48, 2. मर्यो न योषामभिमन्यमानः 4, 20, 5. आचरन्ती समनेव योषा 6, 75, 4. 7, 69, 4. Morgenröthe 1, 123, 9. सूर्यस्य 75, 5. उपो रुरुचे युवतिर्न योषा 77, 1. पित्र्यावती 9, 46, 2. अप्या 10, 10, 4. 27, 12. 123, 5. योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्वियाय AV. 12, 3, 29. 14, 1, 56. 2, 37. VS. 22, 22. वृषा वा ऋषभो योषा सुब्रह्मण्या AIT. BR. 6, 3. TBR. 3, 3, 2, 2. ÇAT. BR. 1, 2, 5, 15. 16. 7, 2, 12. 3, 8, 5, 6. 7, 1, 1, 44. *equa* (nach SÂJ.) ṚV. 1, 56, 1. die mittlere VÂK (nach SÂJ.) 101, 7. — JÂǴN. 2, 293. MBH. 1, 7285. fg. 6, 560. बालेव योषा R. 5, 28, 2. VARÂH. BṚH. S. 12, 8. 19, 16. 74, 2. BṚH. 18, 16. KATHÂS. 47, 106. ÇIÇ. 4, 42. BHÂG. P. 3, 25, 30. 4, 17, 19. ब्रह्मविट्क्षत्रशूद्रयोषाः JÂǴN. 3, 268. MBH. 11, 441. शैलूष इव योषां त्वमन्यस्मै दातुमर्हसि R. GORR. 2, 30, 8. दारुमयी *eine hölzerne Gliederpuppe* MBH. 2, 1139. 5, 951. 1446. BHÂG. P. 1, 6, 7. — Vgl. गर्भ°, देव°.

योषित् UṆÂDIS. 1, 99. f. dass. AK. 2, 6, 1, 2. 3, 4, 14, 76. H. 504. HALÂJ. 2, 326. गच्छं जारो न योषितम् ṚV. 9, 38, 4. यथाङ्गं वर्धतां शेपस्तेन योषितमिज्जहि AV. 6, 101, 1. 11, 1, 4. übertragen auf *weibliche* Sachen 1, 17, 1. 6, 122, 5. 11, 1, 17. 27. — ÇAT. BR. 1, 4, 5, 14. 8, 1, 7. 3, 2, 1, 40. योषित्काम 4, 3. 9, 2, 30. 13, 1, 9, 6. — M. 2, 132. 4, 213. 5, 90. 153. 8, 404. 9, 10. 24. 56. 77. 85. 11, 174. 188. परस्य 4, 133. 12, 60. पर° 9, 41. गुरु° 2, 210. MBH. 1, 7690. 3, 2124. 2467. R. 1, 9, 7. SUÇR. 2, 344, 1. VIKR. 40. ÇÂK. 68, 13, v. l. ṚT. 1, 9. MEGH. 38. 40. Spr. 194. किं न कुर्वन्ति योषितः 615. 1583. बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता 4624. KATHÂS. 3, 55. 18, 357. VARÂH. BṚH. S. 16, 34 (विधव°). 33, 26. 70, 6. 11. 18. 104, 24. WEBER, RÂMAT. UP. 356. केनापि योषिन्मोहाय निर्मिता BRAHMA-P. in LA. (III) 56, 22. *Weibchen* (eines Vogels) AK. 2, 5, 25. H. 1331. योषितो मनवः *weibliche Zaubersprüche* Verz. d. Oxf. H. 97, *b*, N. 2. — Vgl. कुल°, द्यु°, पण्य°, वार°.

योषिता f. dass. UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 1, 99. AK. 2, 6, 1, 2. TRIK. 2, 6, 1. H. 504, Sch. MUṆḌ. UP. 2, 1, 5.

योषित्वा absol. eines denom. von योषा oder योषित् in der Stelle: योषित्वा माययात्मानम् BHÂG. P. 10, 6, 4. = वेषतो वरां नारीमिव आत्मानं विधाय Comm.

योषिन्मय (von योषित्) adj. (f. ई) *als Weib geformt, ein Weib darstellend:* माया BHÂG. P. 3, 31, 37. 6, 2, 37.

यौस् indecl. *Heil, Wohl* in der Verbindung शं योः und शं च योश्च. धत्तं यजमानाय शं योः RV. 1,93,7. 8,60,15. यच्छ 4,12,5. भव 1,189,2. 3,17,3. अस्तु 5,47,7. शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे 1,106,5. (आपः) शं योरभि स्रवन्तु नः 10,9,4. अथा नः शं योररपो दधात 15,4. 37,11. शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः 7,35,1. वृष्टी शं योराप उस्रि भेषजम् 5,53,14. ईळे तोकाय तनयाय शं योः 5,69,3. रथेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् 7,69,5. शं योर्ब्रूहि ÇAT. BR. 1,9,1,18. शं योरभिस्रवन्ताय (vgl. oben RV. 10,9,4) MBH. 13,901 (शंयोर्यज्ञसाद्गुण्यकर्त्र्या देवतायाः NILAK.). यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता RV. 1,114,2. ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि 2,33,13. शं च योश्च मयो दधे 8,39,4.

योह्नल m. N. pr. eines Mannes PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 57,23; vgl. याह्नालेय SAMSK. K. 185,b,2.

यौकारीय adj. von यूकार gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

यौक्तस्रुच (von युक्त + स्रुच्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,230. LÂṬJ. 6,11,4.

यौक्ताश्व (von युक्ताश्व) n. desgl. Ind. St. 3,230. PAÑKAV. BR. 11,8,7. LÂṬJ. 6,11,4. 5. यौक्ताश्वाद्य n. und यौक्ताश्वोत्तर n. desgl. Ind. St. 3,230.

यौक्तिक (von युक्ति) 1) adj. *zutreffend, richtig;* s. अ°. — 2) m. *der Gefährte eines Fürsten, der diesen durch Scherze und Spässe aufheitert,* = नर्मसचिव ÇABDAR. im ÇKDR.

यौग m. *ein Anhänger der Joga-Lehre* H. 862.

यौगक adj. von योग ÇKDR. nach SIDDH. K. — Vgl. यौगिक.

यौगंधर und यौगंधरक *zu Jugamdhara in Beziehung stehend* P. 4,2,130.

यौगंधरायण (von युगंधर und योगंधर) m. patron. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 59,17 (योगंधरायण). Minister Udajana's MṚKKH. 67,20. KATHÂS. 9,43. 11,2. 15,61.

यौगंधरायणीय adj. *zu Jaugamdharâjaṇa in Beziehung stehend, ihm eigen* KATHÂS. 17,163.

यौगंधरि m. *ein Fürst der Jugamdhara* P. 4,1,173, Sch.

यौगपद n. = यौगपद्य BHÂG. P. 4,4,20.

यौगपद्य (von युगपद्) n. *Gleichzeitigkeit* ÇÂÑKH. ÇR. 13,14,2. GAIM. 1,9.15. P. 2,1,6. VOP. 6,58, Anf. KÂM. NÎTIS. 14,66. SÂH. D. 245,4. 7. PRATÂPAR. 100,a,7. SARVADARÇANAS. 12,12. 62,7. यौगपद्येन instr. = युगपद् MBH. 1,7858. 2,995. 3,12142. 15574. 14,148. अ° KAṆ. 3,2,3. 8,1,11. BHÂSHÂP. 84.

यौगवरत्र n. = युगवरत्राणां समूहः gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45.

यौगिक adj. (f. ई) = योगाय प्रभवति P. 5,1,102. 1) *zur Kur gehörig* SUÇR. 2,16,19. अ° 18. — 2) *zur Anwendung kommend:* अ° KÂM. NÎTIS. 13,86. — 3) *der Etymologie genau entsprechend, aus der Etymologie von selbst sich ergebend, die der Etymologie genau entsprechende Bedeutung habend* AK. 2,10,47. H. 1. 18. Schol. zu H. 76. PRATÂPAR. 9,a,5. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 189,14. 596,10. 708,12. SARVADARÇANAS. 172,17. Verz. d. Oxf. H. 177,a,36. 210,b,4 v. u. यौगिकरूढ heisst ein Wort, *welches eine etymologisch klare, daneben aber auch eine aus der Etymologie sich nicht ergebende Bedeutung hat,* BHÂSHÂP. S. 84. यौगिकत्व n. nom. abstr. Schol. zu H. 87 u. s. w. — 4) *zum Joga in Beziehung stehend, aus ihm hervorgegangen:* ज्ञान PAÑKAR. 1,1,48. 2,7,53.

यौजनशतिक (von योजन + शत) adj. 1) *der hundert Jogana geht* P. 5,1,74, Vârtt. 1. — 2) *zu dem man aus einer Entfernung von hundert* Jogana *kommt* P. 5,1,74, Vârtt. 2.

यौजनिक (von योजन) adj. *ein Jogana gehend* P. 5,1,74.

यौट्, यौटति (संबन्धे) DHÂTUP. 9,2. — Vgl. योटक.

यौड्, यौडति v. l. für यौट् DHÂTUP. 9,2.

यौतक (von 2. युतक) adj. *eigenthümlich Jmd gehörend* MBH. 13,3595 (= 3520). n. *Privatvermögen, Privatbesitz,* insbes. *die Mitgift der Frau* AK. 2,8,1,28. TRIK. 3,3,142. H. 520. an. 3,85. M. 9,131 (= MBH. 13,2472). न चादद्या कनिष्ठेभ्यो ज्येष्ठः कुर्वीत यौतकम् 214 (= MBH. 13,5122). गृह्णन्तैत्रैश्च यौतकैः JÂGN. 2,149. न तत्र संविभज्यन्ते स्वकर्मभिः परस्परम्। यदेव यस्य यौतकं तदेव तत्र सो ऽश्नुते MBH. 12,12090. RÂGA-TAR. 6,103. — Vgl. यौतुक.

यौतकि m. patron. gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80. f. यौतक्या ebend.

यौतव n. = पौतव AK. 2,9,85. H. 883, v. l.

यौतुक n. = यौतक TRIK. 3,3,38. MBH. 13,2472 (die ed. Bomb. यौतक) = M. 9,131 (यौतक). PAÑKAR. 1,4,49.

यौथिक (von यूथ) adj. *zu einer Schaar —, zu einer Heerde gehörig;* m. *Gefährte, Kamerad* BHÂG. P. 5,8,6.

यौथ्य adj. von यूथ gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

यौध (von योध) adj. *kriegerisch:* व्रातीनानां यौधानां पुत्राः LÂṬJ. 8,5,1.

यौधाजय n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,230,b. AIT. BR. 3,17. PAÑKAV. BR. 7,5,12. LÂṬJ. 6,11,4. 7,8,5. आदारात्तं यौ° Ind. St. 3,204,b. इन्द्रस्य यौ° 208,b. — Vgl. महा° und युद्धाजि.

यौधिक (von योध) adj. als Bez. *einer best. Art zu fechten* HARIV. 15980. योधिक die neuere Ausg.

यौधिष्ठिर 1) adj. (f. ई) *zu Judhishṭhira in Beziehung stehend, ihm gehörig* u. s. w.: बल, सैन्य MBH. 1,302. 520. 3,15854. 5,575. श्री 5,4715. 15,469. शोक 4,569. SÂH. D. 147,15. RÂGA-TAR. 1,120. 2,144. — 2) m. patron. MBH. 6,1732. 7,3640 (यौधिष्ठिराः स्थिताः st. यौधिष्ठिरादयः ed. Bomb.). f. ई HARIV. 9196.

यौधिष्ठिरि m. patron. von युधिष्ठिर gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. MBH. 7,4061.

यौधेय (wohl von योध) m. pl. N. pr. eines Kriegerstammes P. 4,1,178. 5,3,117. Ind. St. 1,50. MBH. 2,1870. 7,768. 6950. HARIV. 1678 (यो° die neuere Ausg.). VARÂH. BṚH. S. 4,25. 5,40. 67. 75. 14,28. 16,22. 17,19. MÂRK. P. 58,47. Z. f. d. K. d. M. 4,171. 174. fg. LIA. I, 644. II, 792. sg. *ein Fürst der Jaudheja,* f. ई P. a. a. O. ein Sohn Judhishṭhira's heisst Jaudheja MBH. 1,3828. nach SIDDH. K. im ÇKDR. ist यौधेय m. = योद्धर् *Kämpfer.*

यौधेयक = यौधेय VARÂH. BṚH. S. 9,11. 11,59.

1. यौन (von योनि) adj. 1) *auf Heirath beruhend, durch Heirath entstanden, — verwandt;* n. *eheliche Verbindung, Heirath, Verwandtschaft durch Heirath:* संबन्ध, संबन्धक M. 2,40. 3,157. MBH. 1,4032. Spr. 4923. MBH. 9,3358. 12,3144. संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन्। याजनाध्यापनाद्यौनान्न तु यानासनाशनात्॥ M. 11,180. यौनैः श्रौतैश्च मौखैश्च शुद्धानाम् HARIV. 6997. BHÂG. P. 10,61,25. 68,25. 82,30. — 2) am Ende eines comp. *hervorgegangen aus:* अग्नि° neben अब्योनि und पर्वतयोनि MBH. 13,4867.

2. यौन m. pl. N. pr. eines Volkes, wohl = यवन und auch daraus

entstanden, MBh. 12,7560.

यौप (von यूप) adj. (f. ई) *zum Opferpfosten in Beziehung stehend* Bṛh. Dev. in Ind. St. 1, 111.

यौप्यै (wie eben) adj. gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

यौयुधानि m. patron. von युयुधान MBh. 16,247.

1. यौवत (von युवति) n. *eine Schaar junger Mädchen* oder *Frauen* P. 4,2,38 (oxyt.). Siddh. K. zu P. 4,2,38 (proparox.). AK. 2,6,1,22. H. 1415, v. l. Gir. 10,15.

2. यौवत n. = यौतव Bhar. zu AK. 2,9,85.

यौवतेय (von युवति) m. *der Sohn einer jungen Frau* Vop. 7,1. 5.

यौवनै (von युवन्) m. (!) n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) n. *Jugendalter, Jugendkraft, Jugendblüthe* P. 5,1,130. Vop. 7,19. AK. 2,6,1,40. H. 339. यौवने (यौ वने die Hdschrr.) जीवानुपपृच्छती जरा AV. 18,4,50. कौमारं यौवनं जरा Bhag. 2,13. MBh. 5,7421. R. 1,9,7. 39,18. 4,63,14. Suçr. 1,129,4. 5 (vom 30ten bis zum 40ten Jahre). 343,1. शैशव, यौवन, वार्द्धक Ragh. 1,8. 3,32. Vikr. 26. Kâm. Nîtis. 14,58. Spr. 685. 815. कौमार, यौवन, स्थाविर 1774. बाल्य, यौवन 1969. 2577. 2637. 3435. 4178 (यौवने काले v. l.). Varâh. Bṛh. S. 74,18. 78,13. 96,1. 7. यौवनारूढा Kathâs. 18,261. 277. Bhâg. P. 9,22,13. Pańkat. 128,2. Hit. 10,19. 28,14. चञ्चल LA. (III) 16,15. 32,9. दिनैः कतिपयैः संस्थम् 35,22. Sarvadarçanas. 145,14. °स्थ MBh. 3,16641. Spr. 4924. Kathâs. 43,151. Pańkat. 183,25. pl.: यौवनानि मक्षयसि त्रिगुषामिव दुन्दुभिः Kauç. 46. Megh. 26. Spr. 194. 2897. यौवनं नवं चन्द्रमसः Hariv. 4078. am Ende eines adj. comp. f. आ: प्राप्तयौवना MBh. 3,2111. Kathâs. 73,423. संप्राप्त° MBh. 1,3207. 5,7411. रूढ° Pańkar. 3,7,37. नव° Ragh. 9,7. Ṛt. 4,12. Verz. d. Oxf. H. 25,a,10. Spr. 1960. प्रत्यग्र° Kathâs. 27,201. गत° Spr. 975. Prab. 16,3. संपूर्ण° Kathâs. 47,110. स्थिर° Hariv. 6977. Vikr. 109. Pańkar. 1,10,89. Mṛkkh. 18,19. स° Ṛt. 1,7. Sâh. D. 100. Râga-Tar. 3,433. आपूर्णोदकयौवना वसुमती Varâh. Bṛh. S. 27,8. — 2) n. *eine Schaar junger Leute*, insbes. *Mädchen* zu P. 4,2,38. H. 1415. — 3) n. Bez. *des dritten Grades in den Mysterien der* Çâkta Verz. d. Oxf. H. 91,b,41. — Vgl. नित्य°.

यौवनक n. = यौवन 1) gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133. Vârtt. zu P. 6,4,151.

यौवनकण्टक m. n. = यौवनपिडका Çabdam. im ÇKDr.

यौवनपिडका f. *Jugendausschlag, das Erscheinen von Eruptionen im Gesicht junger Leute* Suçr. 1,292,11; vgl. 295,19.

यौवनमत्त 1) adj. *vor Jugend ausgelassen.* — 2) f. आ *ein best. Metrum, 4 Mal* ‒◡◡‒‒, ‒‒‒‒‒‒‒‒‒◡◡‒‒ Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XI, 16).

यौवनलक्षण *ein Zeichen der Jugend:* 1) *Anmuth.* — 2) *der weibliche Busen* H. an. 6,4. Med. ṇ. 118.

यौवनवत् (von यौवन) adj. *in der Jugendblüthe stehend;* f. Vet. in LA. (III) 19,1. Hit. 28,4. रूपयौवनवती *in Schönheit und Jugend prangend* 115,5, v. l. Kathâs. 35,126.

यौवनाश्व (von युवनाश्व) m. patron. des Mândhâtar Trik. 2,8,3. Ṛv. Anukr. Âçv. Çr. 12,12. Maitrjup. 1,4. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56, 9. MBh. 2,1929. 3,10423. 7,2272. 2279. 12,974. 13,860. 3689. Verz. d. B. H. No. 434. 1127. Bhâg. P. 9,6,34. 37. patron. eines Grosssohnes des Mândhâtar 7,1. nach dem Schol. zu P. 6,2,107 parox. und in यौवन + अश्व zu zerlegen.

यौवनाश्वक m. patron. des Mândhâtar Gaṭâdh. im ÇKDr.

यौवनाश्वि m. desgl. MBh. 2,649. R. Gorr. 2,116,32.

यौवनिक m. (!) = यौवन 1) H. 339, Sch.

यौवनिन् (von यौवन) adj. *im Jugendalter stehend* Hariv. 14594. Mârk. P. 65,9. 75,27.

यौवनोद्भेद (यौवन + उ°) m. *Geschlechtsliebe; der Liebesgott* H. ç. 77.

यौवराजिक adj. (f. आ und ई) von युवराज gaṇa काश्यादि zu P. 4,2,116.

यौवराज्य (von युवराज) n. *die Würde eines Thronerben und Mitregenten* MBh. 3,16912. 5,4182. R. 1,1,21. 2,26,3. 35,32. 52,32. 64,60. Vikr. 161. Kathâs. 10,212. 22,25. 30,57. Râga-Tar. 5,22. 129. Daçak. in Benf. Chr. 197,15. Prab. 97,9. am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 26,94.

यौषिण्य n. *Weiblichkeit* Bhâg. P. 5,1,29. — Vgl. योषन् u. s. w.

यौष्माकै (von युष्मत्) adj. *eurig* P. 4,3,1. 2. Vop. 7,22. Kathâs. 112,205.

यौष्माकीण (wie eben) adj. dass. P. 4,3,1. 2. Vop. 7,22. Durga zu Nir. 5,4.

र

र 1) m. = तीक्ष्ण und दहन (पावक) H. an. 1, 11. Med. r. 1. *love, desire; speed* Wilson nach Ekâksharak. — 2) f. *a)* रा = विभ्रम und दान Ekâksharak. im ÇKDr. = काञ्चन Çabdar. ebend. — *b)* f. री = गति Çabdar. im ÇKDr. — 3) n. = तेजस् *Glanz:* रं (so ist zu lesen) तेजः सवितुर्यच्च दलितं यच्चयाधुना । रंदलेति च ते नाम द्वापरान्ते भविष्यति ॥ Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 25.

रंसु (von रन्, रण्, रंऽसु Padap.; auf रम् zurückgeführt Nir. 6, 17) adj. *erfreulich, ergötzlich;* adv.: स चित्रेण चिकिते रंसु भासा R̥V. 2, 4, 5. = रमणीयेषु Sâj. Zur Bildung des Wortes vgl. दंसु und धेनु (von दह्) *brennend* R̥V. 2, 4, 4. 10, 115, 4; vgl. R̥V. Prât. 4, 41.

रंसुजिह्व (रंसु + जिह्वा) adj. *der eine angenehme Zunge (Stimme) hat* (vgl. R̥V. 5, 26, 1. 6, 16, 2); von Agni: होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः R̥V. 4, 1, 8. = रमणीयशोभनज्वालोपेत Sâj.

रंह्, रंहति (गतौ) Dhâtup. 17, 83. Naigh. 2, 14. Nir. 9, 11. कम्मतिः सुराष्ट्रेषु रंहतिः प्राच्यमध्यमेषु गमिमेव त्वार्याः प्रयुञ्जते Pat. in Mahâbh. S. 62. *rinnen machen;* med. *rinnen, rennen:* त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्धधानाँ अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् R̥V. 5, 32, 2. स रंहत उरुगायस्य जूतिम् 9, 97, 9. (धारा) रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव (धावति) 100, 4. 110, 3. अरंहत पद्याभिः ककुद्मान् 10, 102, 7. act. in der Bed. des med.: न ररंहाश्वकुञ्जरम् Bhaṭṭ. 14, 98.

— caus. = simpl.: वाते अद्रिं रंहयन्तः R̥V. 1, 85, 5. तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवः 8, 19, 6. 10, 113, 6. वातस्य रंहितस्यामृतस्य योनिः Kauç. 49. रंहयति (v. l. वंहयति) *sprechen* oder *leuchten* Dhâtup. 33, 123.

— intens. partic. रारहाणा *eilend, eilig* R̥V. 1, 134, 1. अश्वासो न रथ्यो रारहाणाः 148, 3. तदन्ववैदिन्द्रो रारहाणा आसाम् 10, 139, 4.

रंह = रंहस् in वातरंह.

रंहस् (von रंह्) Uṇâdis. 4, 213. n. *Schnelle, Geschwindigkeit* AK. 1, 1, 1, 59. H. 494. Halâj. 2, 288. (देवगन्धर्ववाहाः) न क्षीयन्ते च रंहसः MBh. 1, 6484. नावमारुह्य रंहसा Râga-Tar. 5, 84. Bhâg. P. 5, 14, 29 (nach dem Comm. adj. = शीघ्र). 7, 8, 33. असङ्गरंहसा 4, 5, 5 असह्य° 19, 27. अतिरभसतर° 5, 17, 9. वज्र° 6, 11, 21. मारुतस्य Ragh. 2, 34. मनसा कार्यसिद्धौ त्वराद्विगुणरंहसा Kumâras. 2, 63. काल° Bhâg. P. 4, 27, 3. कालेनाव्यक्तरंहसा 1, 4, 16. 5, 23, 2. कालेन गभीररंहसा 1, 5, 18. तार्क्ष्यमारुत° MBh. 1, 5886. गरुडानिल° 7, 1605. R. 5, 1, 32. मनोमारुत° MBh. 1, 897. 3, 12027. मनो° Hariv. 8895. मनसा समरंहसः Kumâras. 6, 36. so v. a. *impetus, Heftigkeit, Feuer:* वासुदेवाङ्घ्र्यनुध्यानपरिबृंहितरंहसा । भक्त्या Bhâg. P. 1, 15, 29. ज्ञानविराग° 4, 22, 26. अन्योऽन्यसंदर्शनहर्ष° 10, 82, 14. so v. a. सूक्ष्म (nach dem Comm.) 4, 24, 28. als Beiw. Çiva's (*die personificirte Geschwindigkeit*) MBh. 14, 195. 212. Vishṇu's Hariv. 14141. — Vgl. अति°, वात°.

रंहस am Ende eines adj. comp. = रंहस् : तुरगैर्मनोमारुतरंहसैः Hariv. 6198.

रंहि (von रंह्) f. 1) *das Rinnen, der rinnende Strom:* पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या R̥V. 9, 2, 1. 6, 8. 106, 13. पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः 86, 47. — 2) *das Rennen, Jagen, Eile, Flug* Nir. 10, 29. विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या R̥V. 10, 96, 4. 95, 3. 178, 3. यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम् AV. 18, 2, 9. पूष्णो रंह्यै VS. 6, 18. Çat. Br. 3, 8, 2, 22.

रक्, राकयति (आस्वादने) Dhâtup. 33, 63. राकयति मोदकं बालकः Durgâd. im ÇKDr. — Vgl. रग्, रघ्, लक्, लग्.

रक gaṇa शण्डिकादि zu P. 4, 3, 92. m. *the sun gem; crystal; a hard shower* Wilson nach Çabdârthak.

रकसा f. *eine Gattung des leichteren Aussatzes* (क्षुद्रकुष्ठ), auch zu den क्षुद्ररोग gezählt, Suçr. 1, 268, 4. 269, 13. 292, 10. 294, 18. Çârṅg. Saṁh. 1, 7, 65.

रकार m. *der Laut* र R. 3, 43, 35. Verz. d. Oxf. H. 99, *a*, 16.

रक्क m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 5, 423. 6, 170. 197. 204. 233. 324. °जया Bez. einer von ihm errichteten Bildsäule der Çrî 5, 425. An zwei Stellen bei Troyer रक्त gedruckt.

रक्त (partic. von रञ्ज्) 1) adj. *a) gefärbt* AK. 3, 4, 14, 82. 6, 3, 45. H. an. 2, 189. Med. t. 48. धूम° Çat. Br. 6, 3, 1, 26. वासस् Âçv. Gṛhj. 1, 19, 11. Çâṅkh. Gṛhj. 1, 11. M. 10, 87. 12, 66. लाक्षा° Kauç. 76. °कुम्भ 84. °पायस Shaḍv. Br. 5, 2. तेन रक्तम् P. 4, 2, 1. — *b) roth* AK. 1, 1, 4, 24. H. 1395. 49. H. an. Med. Halâj. 4, 48. 2, 282. 3, 58. °कृष्ण Çâṅkh. Gṛhj. 1, 12. कूटानि धातुरक्तानि MBh. 1, 1172. °श्मश्रुशिरोरुह 5929. अशोक इव रक्तः 5, 7154. कुरु-

वक्ता: R. 3,79,36. °माल्यानुलेपन 1,62,19. 2,69,15. Verz. d. B. H. No. 1209. °वस्त्रपरिधान 144, 4. °वासस् adj. M. 8,256. MÂRK. P. 34, 54. नेत्रे र-क्तान्ते R. 3,52,34. 55,11. MBH. 1,7705. 3,2966. R. 4,40,39. 5,12,34. काले रक्तदिवाकरे HARIV. 4462. बालातपरक्तसानु RAGH. 6,60. VIKR. 136. SUÇR. 1,115,7. 253,11. 2,290,3. 297,16. ṚT. 6,19. MEGH. 37. Spr. 4925. VARÂH. BṚH. S. 3,26. 34. 8,3. 34,9. BHÂG. P. 3,15,28. 28,21. MÂRK. P. 109,65. fünf (sieben) Körpertheile müssen roth sein: रक्ता पञ्चसु रक्तेषु MBH. 4, 253. रक्ता च (so die ed. Bomb.) पञ्चसु 5,3939. सप्तसु रक्त: VARÂH. BṚH. S. 68,84. नेत्रान्तपदकरतालवधरोष्ठजिह्वा रक्ता नखाश्च खलु सुखावहानि 87. *roth* und zugleich *zugethan, liebend, verliebt* Spr. 231. 2579. 2581. 3650. आरक्त (s. auch bes.) *röthlich* KATHÂS. 21,8. PAÑKAT. 64,15. — c) *nasalirt* ṚV. PRÂT. 1,7. 19. 6,6. 11,6. 18. 13,6. 14, 9. 20. 22. 24. — d) *lieblich, reizend* (von der Stimme, Sprache): रक्तान्तरपद (वचस्) R. 3,5,2. केक-या मदरक्तया Spr. 232. तौ चापि मधुरं रक्तम् — अगायताम् R. 1,4,29. सु-रक्ता मधुरा वाणी 2,71,24. RAGH. 16,64. Vgl. रक्तकण्ठ fg. — e) *aufgeregt, mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd hängend, zugethan, liebend, verliebt;* = अनुरक्त H. an. MED. न च रक्तो विरावयेत् M. 4,64. मद° (हंस) Spr. 4683. स्वभाव° *von Natur leidenschaftlich* BHÂG. P. 1,5,15. देवास्त-पसि रक्ता हि सुखे रक्ता महासुरा: । देवा: सत्ये रता: HARIV. 8769. काम° *hängend an* Spr. 3788. 3803. विरक्तो रक्तवत् BHÂG. P. 7,14, 5. रक्त-विरक्त unter den Beiww. Çiva's MBH. 12,10374. पौरजानपदांश्च रक्तान् R. 2,112,11. Spr. 2002. 4882 KATHÂS. 11,16. RÂGA-TAR. 3,3. रक्तरो हि तस्या: परिजन: DAÇAK. in BENF. Chr. 190,19. रक्ते विरक्ते मध्यस्थे स्वामिनि Spr. 4224. रक्तेयं मम कामिनी 2534. सा चान्यमिच्छति जनं स जनो ऽन्यरक्त: 2461, v. l. 1549. 5313. DAÇ. 2,21. VARÂH. BṚH. S. 78,2. KATHÂS. 24,56. जीवलोको यदा सर्वो रक्तो रामगुणैरयम् *entzückt von* R. GORR. 2,9,41. *zugethan, verliebt* und zugleich *roth* Spr. 231. 2579. 2581. 3650. — f) = क्रीडारत *an Spielen seine Freude habend* DHAR. im ÇKDR. — 2) m. a) *Safflor* (कुसुम्भ). — b) *Barringtonia acutangula* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) f. आ a) *Lack* (लाक्षा) RÂGAN. im ÇKDR. SUÇR. 2,275, 8. 276,1. — b) *Abrus precatorius.* — c) *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा). — d) = उष्ट्रकाण्डी RÂGAN. — e) Bez. einer der sieben Zungen des Feuers H. 1099, Sch. HALÂJ. 1,68. — 4) n. a) *Blut* AK. 2,6,2,15. 3,4,11,67. H. 621. H. an. MED. HALÂJ. 3,10. M. 4,132. चतार (so die neuere Ausg.) च भृशं रक्तम् HARIV. 8898. रञ्जितास्तेजसा त्वाप: शरीरस्थेन देहिनाम् । अव्यापन्ना: प्र-सन्नेन रक्तमित्यभिधीयते ॥ SUÇR. 1, 43, 15. 127,3. 253, 6. 2, 474, 8. रक्तं सर्वशरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमम् ÇÂRÑG. SAṀH. 1,6,7. VARÂH. BṚH. S. 3,25. 10,20. 12,6. 30,27. RÂGA-TAR. 5,325. BHÂG. P. 6,12,26. 9,2,7. PRAB. 81, 11. PAÑKAT. 60,25. — b) *Kupfer* H. 1039. MED. HÂR. 111. — c) *Saffran* AK. 2,6,3,26. H. 645. H. an. MED. — d) *die Frucht der Flacourtia cataphracta Roxb.* H. an. MED. HÂR. 102. — e) *Mennig.* — f) *Zinnober.* — g) = पद्मक n. RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. जीव°, नाग°, पीत°, पुष्प°, पूय°, श्वेत°.

रक्तक (von रक्त) 1) adj. *roth* VARÂH. BṚH. S. 8,46. — b) *mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd hängend* MED. k. 144. — c) *angenehm unterhaltend* (विनोदिन्) ÇABDAR. im ÇKDR. — d) *blutig:* मेह ÇÂRÑG. SAṀH. 1, 7,43. — 2) m. a) *ein rothes Kleid* MED. — b) Bez. verschiedener *roth blühender Pflanzen: Pentapetes phoenicea* AK. 2,4,2,53. MED. *Kugelamaranth* MED. = रक्तशिग्रु und रक्तैरण्ड RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकङ्गु m. *Panicum italicum* NIGH. PR.

रक्तकण्ट m. *eine Species von Celastrus* NIGH. PR.

रक्तकण्ठ adj. (f. ई) *eine reizende Stimme habend:* °खग BHÂG. P. 4, 6,29. कृत्तवध: 10,33,9. m. = कोकिल (Comm.) 4,6,12.

रक्तकण्ठिन् adj. dass.: गायका: MBH. 7,2913. R. 7,37,3.

रक्तकदम्ब m. *roth blühender* Kadamba VIKR. 124.

रक्तकदली f. *eine Species von Musa* NIGH. PR.

रक्तकन्द m. 1) *Koralle* H. 1066. — 2) Bez. *zweier Knollengewächse:* रक्तालु und राजपलाण्डु RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकन्दल m. *Koralle* TRIK. 2,9,30.

रक्तकमल n. *eine rothe Lotusblüthe* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकम्बल n. dass. PÂDMOTTARAKH. 13 im ÇKDR.

रक्तकरवीर m. *roth blühender Oleander, Nerium odorum rubro-simplex* RÂGAN. in NIGH. PR. °क ÇKDR. nach derselben Aut.

रक्तकाञ्चन m. *Bauhinia variegata* RATNAM. 157.

रक्तकाण्डा f. *eine roth blühende* Punarnavâ RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकाष्ठ n. *Caesalpina Sappan Lin.* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकुमुद n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* GAṬÂDH. im ÇKDR.

रक्तकृमिजा f. *Lack* NIGH. PR.

रक्तकेशर m. 1) *Rottleria tinctoria Roxb.* RATNAM. im ÇKDR. — 2) *der Korallenbaum* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तकैरव n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* RATNAM. 150.

रक्तकोकनद n. *eine rothe Lotusblüthe* GAṬÂDH. im ÇKDR.

रक्तखदिर m. *roth blühender* Khadira RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तखाडव m. *eine ausländische Dattelart* NIGH. PR.

रक्तगन्धक n. *Myrrhe* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तगर्भा f. *Lawsonia alba, die Hennapflanze* NIGH. PR.

रक्तगुल्म m. *eine best. Form der* Gulma *genannten Krankheit* GARUḌA-P. 196 im ÇKDR. °गुल्मिनी adj. f. *daran leidend* SUÇR. 2,452,8.

रक्तगैरिक n. *eine Art Ocker* (सुवर्णगैरिक) NIGH. PR.

रक्तग्रन्थि m. *eine Mimosenart* NIGH. PR.

रक्तग्रीव m. 1) *eine Taubenart* NIGH. PR. — 2) *ein* Râkshasa H. ç. 37.

रक्तघ्न 1) adj. *dem Blut entgegenwirkend.* — 2) m. *Andersonia Rohitaka Roxb.* GAṬÂDH. im ÇKDR. — 3) f. ई *eine Art* Dûrvâ-*Gras* ÇABDAK. im ÇKDR.

रक्तचन्दन n. *rother Sandel* und *Caesalpina Sappan* AK. 2,6,3,33. 9, 111. H. 642. RATNAM. 142. JÂGÑ. 1,296. R. 2,33,9. 91,56. 5,3,29. 6,82, 61. SUÇR. 2,420,13. 433,15. MṚKKH. 137,18.

रक्तचित्रक m. *ein best. Strauch,* = कालमूल RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तचिल्लिका f. *eine Art Chenopodium* (*Spinat*) NIGH. PR.

रक्तचूर्ण n. *Mennig* HÂR. 44.

रक्तच्छर्दि f. *Blutspeien* ÇÂRÑG. SAṀH. 3,3,22.

रक्तज (रक्त + 1. ज) adj. *aus dem Blute stammend* WISE 197. SUÇR. 1,281,20.

रक्तजन्तुक m. *eine Art Schnecke* (भूनाग) RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तजिह्व 1) adj. *rothzüngig.* — 2) m. *Löwe* H. ç. 183. ÇABDAM. im ÇKDR.

रक्ततर (von रक्त) n. = रक्तगैरिक NIGH. PR.

रक्तता (von रक्त) f. 1) *Röthe* MBH. 3,11247. — 2) *die Natur des Bluts:* (रसः) रञ्जितः पाचितस्तत्र पित्तेनायाति रक्तताम् ÇÂRÑG. SAṂH. 1,6,6. — Vgl. अति° unter अतिरक्त.

रक्ततुण्ड m. *Papagei* H. 1335.

रक्ततुण्डक m. *eine Art Schnecke* (भूनाग) RÂGAN. im ÇKDR.

रक्ततृणा f. *eine best. Grasart* (गोमूत्रिका) RÂGAN. im ÇKDR.

रक्ततेजस् n. *Fleisch* H. 622.

रक्तत्रिवृत् f. *eine roth blühende* Trivṛt RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तत्व (von रक्त) n. *Röthe:* कमलानाम् Spr. 2578.

रक्तदन्तिका f. *die Rothzähnige*, Bein. der Durgâ MÂRK. P. 91,40. °दन्ती WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

रक्तदला f. N. zweier Pflanzen: चिविल्लिका und नलिका RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तदूषण adj. *dem Blut entgegenwirkend* SUÇR. 1,177,5.

रक्तदृश् m. *Taube* (*rothäugig*) ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

रक्तधातु m. 1) *Röthel, rubrica* TRIK. 2,3,6. — 2) *Kupfer* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तनयन 1) adj. *rothäugig.* — 2) m. *Perdix rufa* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

रक्तनाडी f. *eine vom Blut herrührende Zahnfistel* ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,76.

रक्तनाल 1) = जीवन्ती. — 2) *eine Lotusart* NIGH. PR.

रक्तनासिक m. *Eule* (*einen rothen Schnabel habend*) ÇABDAR. im ÇKDR.

रक्तनेत्र adj. *rothäugig* SUÇR. 1,120,4. PAÑKAT. 83,3. Davon nom. abstr. °ता f. SUÇR. 1,366,1. °त्व n. ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,73.

रक्तप 1) adj. *Blut trinkend.* — 2) m. *ein* Râkshasa H. an. 3, 445. MED. p. 22. — 2) f. आ a) *Blutegel* AK. 1,2,3,22. H. an. MED. — b) *eine* Ḍâkinî MED.

रक्तपक्ष m. Bein. Garuḍa's (*rothe Flügel habend*) ÇABDÂRTHAK. bei WILS.

रक्तपट adj. *ein rothes Gewand tragend; m. eine Art Bettler* (= सांख्यभिक्षु Comm.) VARÂH. in Ind. St. 2,287. रक्तपटीकृत *in einen solchen Bettler verwandelt* Spr. 3305, v. l.

रक्तपत्त्रा *Boerhavia erecta rosea* NIGH. PR.

रक्तपत्त्राङ्ग n. *eine Art rothen Sandels* RATNAM. 143.

रक्तपत्त्रिका f. N. zweier Pflanzen: नाकुली und रक्तपुनर्नवा RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपदी f. *eine best. Pflanze* GAṬÂDH. im ÇKDR.

रक्तपद्म n. *eine rothe Lotusblüthe* VARÂH. BṚH. S. 46,87.

रक्तपर्णा = रक्तपुनर्नवा NIGH. PR.

रक्तपल्लव m. *Jonesia Asoca Roxb.* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपाकी f. *die Eierpflanze* (बृहती) RATNAM. 12.

रक्तपाता f. *Blutegel* ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. रक्तपा unter रक्तप.

रक्तपाद 1) adj. *rothfüssig;* m. *ein Vogel mit rothen Füssen* MBH. 5, 4858. JÂGÑ. 1,175. R. 7,6,57. *Papagei* H. 1335, v. l. — 2) m. *Elephant* und *Wagen* (स्यन्दन) H. an. 4,140. — 3) f. ई *Mimosa pudica* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपायिन् 1) adj. *Blut trinkend.* — 2) m. *Wanze* RÂGAN. bei WILSON. — 3) f. °नी *Blutegel* RÂGAN. bei WILSON und im ÇKDR.

रक्तपारद n. *Zinnober* TRIK. 2,9,35. HÂR. 155. m. GAṬÂDH. im ÇKDR.

रक्तपिटिका f. *eine rothe* oder *Blutbeule* ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,63.

रक्तपिण्ड m. *Hibiscus rosa sinensis* TRIK. 2,4,25. n. *die Blüthe* ÇABDAR. im ÇKDR. Nach WILSON noch: *a spontaneous discharge of blood from the nose and mouth; a red pimple or boil; a climbing plant* (*Ventilago madraspatana*).

रक्तपिण्डक m. = रक्तालु RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपित्त n. *Blutsturz* (einer Störung des *Bluts* durch die *Galle* zugeschrieben) WISE 272. SUÇR. 2,470,4. ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,13. ऊर्ध्वग SUÇR. 1,173,4. 2,369,17. 437,3. °कर 1,192,10. Verz. d. B. H. No. 955–967. 975. 977. 996. Verz. d. Oxf. H. 306,*b*,19. 312,*b*,17. 316,*a*,7 v. u. 337,*a*,25 v. u. °कास 305,*b*,23.

रक्तपित्तहा (रक्तपित्त + हा) f. *eine Art* Dûrvâ-*Gras* ÇABDAK. im ÇKDR. — Vgl. रक्तघ्नी unter रक्तघ्न.

रक्तपित्तिन् (von रक्तपित्त) adj. *zum Blutsturz geneigt, daran leidend* SUÇR. 1,34,20. रक्तपित्ती पिबेद्यश्च शोणितं स विनश्यति 111,8. 121,14. 2,140,6.

रक्तपुच्छक adj. (f. °पुच्छिका) *rothschwänzig; f. eine Art Eidechse* H. 1299.

रक्तपुनर्नवा f. *eine roth blühende* Punarnavâ RÂGAN. im ÇKDR.

1. रक्तपुष्प n. *eine rothe Blume* VET. in LA. (III) 10,20.

2. रक्तपुष्प 1) adj. *rothe Blüthen habend* VARÂH. BṚH. S. 15,14. — 2) m. N. verschiedener Pflanzen: *Bauhinia variegata purpurascens* RATNAM. 157. = करवीर GAṬÂDH. im ÇKDR. = रोहित ÇABDAM. ebend. = दाडिम und बक RATNAM. ebend. = बन्धूक und पुंनाग RÂGAN. ebend. — 3) f. आ *Bombax heptaphyllum* GAṬÂDH. im ÇKDR. — 4) f. ई N. verschiedener Pflanzen: *Grislea tomentosa* RATNAM. 164. = पाटलि GAṬÂDH. im ÇKDR. = जवा, आवर्तकी, नागदमनी, करुणी und उष्ट्रकाण्डी RÂGAN. ebend.

रक्तपुष्पक 1) m. N. verschiedener Pflanzen: = पलाश und रोहितक GAṬÂDH. im ÇKDR. = पर्पट und शाल्मलि RÂGAN. ebend. — 2) f. °पुष्पिका *Mimosa pudica* ÇABDAK. im ÇKDR. = रक्तपुनर्नवा und भूपाटलि RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपूय N. einer Hölle Verz. d. Oxf. H. 16,*b*,25.

रक्तपूरक n. *die getrocknete Schale der Mangostane* RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तपैत्त adj. von रक्तपित्त: विधान SUÇR. 2,474,8.

रक्तपैत्तिक adj. desgl.: रोग SUÇR. 1,179,8.

रक्तप्रदर m. *Mutterblutfluss* ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,101.

रक्तप्रसव m. N. zweier Pflanzen: रक्तकरवीर und रक्ताम्लान RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तफल 1) adj. *rothe Früchte habend* VARÂH. BṚH. S. 15,14. — 2) m. *der indische Feigenbaum* GAṬÂDH. im ÇKDR. — 3) f. आ *Momordica monadelpha Roxb.* AK. 2,4,5,4. H. 1185. = स्वर्णवल्ली RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तफेनज m. *Lunge* H. 605.

रक्तबिन्दु m. 1) *a red spot forming a flaw in a gem* WILSON nach ÇABDÂRTHAK. — 2) *Blutstropfen* MÂRK. P. 88,40. 53.

रक्तबीज m. 1) *Granatbaum* RÂGAN. im ÇKDR. — 2) N. pr. eines Asura MÂRK. P. 88,39. fgg.

रक्तबीजका f. *eine best. Pflanze,* = तरटी RÂGAN. im ÇKDR.

रक्तभव n. *Fleisch* H. 622.

रक्तभाव adj. (f. आ) *verliebt* HARIV. 8394.

रक्तमञ्जर m. *Barringtonia acutangula* TRIK. 2,4,17.

रक्तमण्डल 1) adj. *eine rothe Scheibe habend* (vom Monde) und zugleich *ergebene Unterthanen habend* Spr. 3650. — 2) m. *eine rothge-*

ringelte —, rothgefleckte Schlangenart Suçr. 2,265,11. — 3) f. आ *ein best. giftiges Thier* Suçr. 2,289,21. — 4) n. *eine rothe Lotusblüthe* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तमण्डलता f. *durch das Blut hervorgebrachte Erscheinung rother Flecken am Körper* Çârṅg. Saṁh. 1,7,73.

रक्तमत्त adj. *bluttrunken*, vom Blutegel Vâgbh. 26,39. 45.

रक्तमत्स्य m. *ein best. rother Fisch* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तमस्तक 1) adj. *rothköpfig*. — 2) *eine Reiherart, Ardea sibirica* H. ç. 193.

रक्तमाद्री f. *eine best. Frauenkrankheit*; s. u. बाधक 2).

रक्तमुख adj. *eine rothe Schnauze habend*; m. N. pr. eines Affen Pañkat. 205,6.

रक्तमूत्रता (von रक्त + मूत्र) f. *Blutharnen* Çârṅg. Saṁh. 1,7,73.

रक्तमूलक m. *eine Art Senf* (देवसर्षप) Râǵan. im ÇKDr.

रक्तमूला f. *Mimosa pudica* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तमेह m. *Blutharnen* Çârṅg. Saṁh. 1,7,43. — Vgl. शोणितमेह.

रक्तमोक्षण s. u. मोक्षण 2) *d*).

रक्तयष्टि f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* Ǵaṭâdh. im ÇKDr. °का f. dass. Ratnam. 28. Râǵan. im ÇKDr.

रक्तयावनाल m. = तुवरयावनाल Râǵan. im ÇKDr.

रक्तर् (von रञ्, रज्) nom. ag. *Färber* H. an. 2,281. Med. n. 115 (wo रक्तरि का° zu lesen ist). Die richtige Form wäre रङ्कर्.

रक्तराजि 1) m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,287,16. °राजी f. dass. 258,4. 289,21. — 2) *eine best. Augenkrankheit* Suçr. 2,357,6. — 3) °राजी f. = आक्षाळीव *Lepidium sativum, Kresse* Nigh. Pr.

रक्तरेणु m. 1) *Mennig*. — 2) *eine Knospe der Butea frondosa* H. an. 4,86. Med. n. 106. — 3) *Rottleria tinctoria Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. — 4) *a sort of cloth*. — 5) *an angry man* Wilson nach Çabdârthak.

रक्तरेणुका f. *eine Knospe der Butea frondosa* Çabdam. im ÇKDr.

रक्तरैवतक n. *ein best. Fruchtbaum*, = मक्तापारेवत Râǵan. im ÇKDr.

रक्तलशुन m. *Knoblauch* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तला f. = काकतुण्डी Râǵan. im ÇKDr.

रक्तलोचन 1) adj. *rothäugig*. — 2) m. *Taube* H. 1339.

रक्तवटी f. *Blattern* Trik. 2,6,15.

रक्तवरटी f. dass. Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

रक्तवर्ग m. 1) *Lack*. — 2) N. verschiedener Pflanzen: *Granatbaum; Butea frondosa; Pentapetes phoenicea; zwei Arten Gelbwurz* (निशाद्वय); *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.; Safflor* Râǵan. im ÇKDr.

1. रक्तवर्ण m. *die rothe Farbe* oder *die Farbe des Blutes* Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 6.

2. रक्तवर्ण 1) adj. *rothfarbig* Suçr. 1,199,7. °मणि Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,37. — 2) m. *Coccinelle* (इन्द्रगोप) Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. *Gold* H. ç. 162.

रक्तवर्धन 1) adj. *Blut vermehrend*. — 2) m. *Solanum Melongena* Çabdak. im ÇKDr.

रक्तवर्षाभू f. = रक्तपुनर्नवा Râǵan. im ÇKDr.

रक्तवसन adj. *roth gekleidet*; m. *ein Brahmane im 4ten Stadium als frommer Bettler* H. 809.

रक्तवात m. *eine best. Krankheit* Garuḍa-P. 193 im ÇKDr.

रक्तवालुक n. *Mennig* Trik. 2,9,33. Hâr. 44. f. आ dass. Çabdar. im ÇKDr.

रक्तवासिन् adj. *in ein rothes Gewand gehüllt* R. 2,69,16.

रक्तविद्रधि m. *Blutgeschwür* Suçr. 1,280,14. 281,18. 2,124,17.

रक्तवृन्त m. *ein best. Baum* Suçr. 1,223,12.

रक्तवृन्ता f. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdak. im ÇKDr.

रक्तशालि m. *rother Reis, Oryza sativa* H. 1169. Halâj. 2,425. Suçr. 1,73,4. Varâh. Bṛh. S. 29,2.

रक्तशासन n. *Mennig* Hâr. 175.

रक्तशिग्रु m. *roth blühender Çigru* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तशीर्षक m. 1) *eine Reiherart* Nigh. Pr.; vgl. रक्तमस्तक. — 2) *Pinus longifolia* (oder *ihr Harz*) Ratnam. 41.

रक्तशुक्रता (von रक्त + शुक्र) f. *blutige Beschaffenheit des Samens* Suçr. 1,366,8.

रक्तशृङ्गिक n. *Gift* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तश्याम adj. *dunkelroth* H. 1398. Halâj. 4,52. Varâh. in Ind. St. 2,286.

रक्तष्ठीवनता f. *Blutspeien* Çârṅg. Saṁh. 1,7,63.

रक्तष्ठीवी f. dass. Verz. d. Oxf. H. 319, *a*, 7. *b*, No. 758.

रक्तसंकोच m. *Safflor* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तसंकोचक n. *eine rothe Lotusblüthe* Çabdârthak. bei Wilson.

रक्तसंज्ञ (रक्त + संज्ञा) n. *Saffran* Trik. 2,6,35.

रक्तसंदंशिका f. *Blutegel* Râǵan. in Nigh. Pr.

रक्तसंध्यक n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* AK. 1,2,3,35. H. 1164.

रक्तसरोरुह n. *eine rothe Lotusblüthe* AK. 1,2,3,40. H. 1162.

रक्तसर्षप m. *Sinapis ramosa Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तसहा f. *rother Kugelamaranth* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तसार 1) adj. *bei dem das Blut vorwaltet, von sanguinischem Temperament* Varâh. Bṛh. S. 68,97. — 2) m. *eine best. Pflanze* Suçr. 2,69, 21. = अम्लवेतस und रक्तखदिर Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. *rother Sandel* und *Caesalpina Sappan Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तसूर्याय् (von रक्त + सूर्य), °यते *eine rothe Sonne darstellen, ihr gleichen* Hariv. 4749.

रक्तसौगन्धिक n. *eine rothe Lotusblüthe* (रक्तकह्लार) Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

1. रक्तस्राव m. *Fliessen von Blut* Varâh. Bṛh. S. 87,35.

2. रक्तस्राव m. *eine Art Sauerampfer* Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

रक्तहंसा f. Bez. einer Râgiṇî Wilson und ÇKDr. angeblich nach Halâj.

रक्ताकार (रक्त + आ°) m. *Koralle* Râǵan. im ÇKDr.

रक्ताक्त (रक्त + अक्त) n. *rother Sandel* oder *Caesalpina Sappan* Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

रक्ताल (रक्त + 3. अल) 1) adj. *rothäugig* H. an. 3,741. R. 2,77,26. 88, 14. 3,55,4. 5,45,5. Verz. d. Oxf. H. 10,*b*, N. 6. Bhâg. P. 4,14,44. Çuk. in LA. (III) 34,17. = क्रूर *furchtbar, Grausen erregend* H. an. Med. sh. 44. — 2) m. *a*) *Büffel* H. 1283. H. an. Med. Hâr. 80. Halâj. 2,72. — *b*) *Perdix rufa*. — *c*) *Taube* H. an. Med. — *d*) *der indische Kranich* Râǵan. im ÇKDr. — *e*) N. pr. eines Zauberers Burn. Intr. 172. Schiefner, Lebensb. 260 (30). — *f*) N. pr. eines Ministers eines Eulenkönigs Kathâs. 62,102. Pañkat. 173,20. — 3) n. N. des 58ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8,51.

रक्तालि m. = रक्ताल 3) Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 7. रक्तालिन् Aufrecht.

रक्ताङ्क (रक्त + अङ्क) m. *Koralle* H. 1066.

रक्ताङ्ग (रक्त + 3. अङ्ग) 1) m. *a*) *ein best. Vogel* R. 4,50,13. — *b*) *Wanze* Râǵan. im ÇKDr. — *c*) *eine best. Pflanze*, = काम्पिल्ल, कम्पिल्ल AK. 2,4,5,12. Med. g. 45. fg. Ratnam. 163. — *d*) *der Planet Mars* Trik. 3, 3,68. H. an. 3,130. Med. Ind. St. 2,261. — *e*) *Sonnen-* oder *Mondscheibe* (मण्डल) Çabdar. im ÇKDr. — *f*) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2159. — 2) f. *a*) *eine best. Pflanze*, = जीवन्ती Med. (ohne Angabe der Form). रक्ताङ्गा H. an. रक्ताङ्गी Wilson und ÇKDr. रक्ताङ्गी *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* Bhâvapr. im ÇKDr. — *b*) ई *Koralle* H 1066, v. l. — 3) n. *a*) *Koralle* H. an. Med. — *b*) *Saffran* Med. — *c*) *eine best. Pflanze*, = कम्पिल्ल H. an.

रक्तातिसार (रक्त + अ°) m. *blutiger Durchfall* Çârṅg. Saṁh. 2, 1, 9. Verz. d. B. H. No. 949. रक्तातीसार Wilson.

रक्ताधरा (रक्त + अधर) f. *eine* Kiṁnarî (nach Wilson) Daçak. 171,13.

रक्ताधार (रक्त *Blut* + आधार) m. *die Haut* Râǵan. im ÇKDr.

रक्ताधिमन्थ (रक्त + अ°) m. *inflammation of the eyes, ophthalmia with sponginess of the vessels so as to discharge blood on being touched* Wilson; vgl. Suçr. 2,314,2. fgg.

रक्तापह (रक्त + अ°) n. *Myrrhe* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तापामार्ग (रक्त + अ°) m. *roth blühender* Apâmârga Râǵan. im ÇKDr.

रक्ताभ (रक्त + आभा) adj. *ein röthliches Aussehen habend* R. 2,60,18.

रक्ताभिष्यन्द (रक्त + अ°) m. *von Blut herrührende Ophthalmie* Suçr. 2,326,15.

रक्तामिषाद (रक्त-आमिष + अद) adj. *Blut und Fleisch essend:* अस्त्र R. 1,29,17.

1. रक्ताम्बर (रक्त + अ°) n. *ein rothes Gewand:* °धर MBh. 2,221. R. 3,55,5. 13.

2. रक्ताम्बर (wie eben) adj. *in ein rothes Gewand gehüllt;* f. आ N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 8. रक्ताम्बरत्व n. *das Tragen eines rothen Gewandes* (bei den buddh. Mönchen) Sarvadarçanas. 24,16.

रक्ताम्बुरुह n. *eine rothe Lotusblüthe* R. 7,8,9.

रक्ताम्र (रक्त + आम्र) m. *eine best. Pflanze*, = कोशाम्र Râǵan. im ÇKDr.

रक्तारुण (रक्त + अ°) adj. (f. आ) *blutroth* Kathâs. 21,14.

रक्तार्बुद (रक्त + अ°) m. *Blutgeschwulst* Malamâsat. im ÇKDr. — Vgl. शोणितार्बुद unter अर्बुद 4).

रक्तार्मन् (रक्त + अ°) n. *eine best. Augenkrankheit* Mâdhavakara im ÇKDr.; vgl. लोहितार्मन् unter अर्मन्.

रक्तार्शस् (रक्त + अ°) n. *eine Form der Hämorrhoiden* Bhâvapr. im ÇKDr.

रक्तालु (रक्त + आलु) m. *Dioscorea purpurea* Râǵan. im ÇKDr. °क m. dass. Suçr. 1,225,3.

रक्ताशय (रक्त + आ°) m. *viscus in which the blood is contained or secreted, viz. the heart, the liver, and the spleen* Wilson.

रक्ताशोक m. *roth blühender* Açoka Megh. 76. Spr. 2580. Varâh. Bṛh. S. 29,2. 43,42. Kathâs. 71,248.

रक्ति (von रञ्ज्) f. 1) *Reiz, Lieblichkeit;* s. रक्तिमत्. — 2) *das Hängen an, Zugethansein* Çabdârthak. bei Wilson. राज्ञादिषु Schol. zu Çâṇḍ. 50. — 3) = रक्तिका Colebr. Alg. 2.

रक्तिका (von रक्ति oder रक्त) f. *Abrus precatorius* Ratnam. 33. *das Korn* als Gewicht = $^1/_6$, $^1/_7$ oder $^2/_{15}$ Mâshaka Çârṅg. Saṁh. 1,1,15. 6,11. Colebr. Alg. 2. das wirkliche Gewicht desselben wird nach Durchschnitten auf 1,6 bis 1,8 Gran Troy-Gewicht bestimmt, J. As. S. Lond. N. S. 2,153. Schol. zu Kâtj. Çr. 4,4,28. 15,6,30. 20,1,6. Prâjaçkittend. 7, *a*, 4. Burn. Intr. 597. Weber, Kṛshṇaǵ. 307.

रक्तिमन् (von रक्त) m. *Röthe* Kuvalaj. 117, *b*, 5. 138, *b*, 2. Schol. zu Naish. 22,52. Sarvadarçanas. 25,12.

रक्तिमत् (von रक्ति) adj. *reizend, lieblich:* गीत Kathâs. 86,7.

रक्तेक्षु (रक्त + इक्षु) m. *rothes Zuckerrohr* Râǵan. im ÇKDr.

रक्तैरण्ड (रक्त + ए°) m. *rother Ricinus* Bhâvapr. und Râǵan. im ÇKDr.

रक्तैर्वारु (रक्त + ए°) m. *eine Gurkenart*, = इन्द्रवारुणी Râǵan. im ÇKDr.

रक्तोत्क्लिष्ट (रक्त + उ°) m. *eine best. Augenkrankheit* Çârṅg. Saṁh. 1,7,87.

रक्तोत्पल (रक्त + उ°) 1) m. *Bombax heptaphyllum* Râǵan. im ÇKDr. — 2) n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* AK. 1,2,3,41. Trik. 1,2,33. H. 1163. Ratnam. 150. R. 4,44,89. Varâh. Bṛh. S. 29,9. रक्तोत्पलाभ adj. *die Farbe der Nymphaea rubra habend* Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

रक्तोपल (रक्त + उ°) n. *Röthel, rubrica* Hâr. 155.

1. रक्ष्, रक्षति (पालने) Dhâtup. 17,6. ररक्ष, रक्षिषत्, अरक्षीत्, अरक्षात् (in der späteren Sprache), रक्षिष्यति; in der älteren Sprache, desgleichen in der späteren, aber hier nur aus metrischen Rücksichten, auch med.; partic. रक्षित; *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, in Acht nehmen, erhalten, erretten, servare:* स नो रक्षिषद्दुरितात् Ṛv. 7,12,2. 15,3. 13. नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम् 1,34,8. 41,1. व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः 62,10. अमृतत्वम् 96,6. असुर्यम् 2,27,4. भुवनानि 1,160,2. यं सुगोपा रक्षसि 2,23,5. शतं मा पुर आयसीररक्षन् 4,27,1. AV. 11,5,8. 12,1,18. Çat. Br. 2,1,4,15. अश्वम् 13,7,6,3. सोमम् Kâtj. Çr. 8,9,25. मातेव पुत्रान्रक्षस्व Praçnop. 2,13. तेन तेन (शरीरेण) स रक्ष्यते Çvetâçv. Up. 5,10. त्वया राजन्गुपिता रक्षमाणाः entweder passivisch oder Fehler für रक्ष्यमाणाः AV. 18,4,70. — (राज्ञा) रक्षता प्रजाः M. 7,36. 8,307. 10,118. fg. 11,23. Spr. 1830. 3204. 4926. Varâh. Bṛh. S. 27, 8. प्रजा रक्षस्व R. 7,59,1,13. भार्यायां रक्ष्यमाणायां प्रजा भवति रक्षिता। प्रजायां रक्ष्यमाणायामात्मा भवति रक्षितः॥ MBh. 3,529. रुद्रा अश्विनौ समरुद्गणौ। रक्षन्तु त्वाम् 2356. 1,6153. 3,2519. 2711. मा रक्षीः 10562. अरक्षीद्यः सर्वदास्मान् Bhaṭṭ. 3,13. 9,79. 15,87. MBh. 3,11814. 5,5431. 7230. 7234. R. 1,32,6. 2,51,6. 8. 86,7 (94,8 Gorr.). 112,27. R. Gorr. 2,30,33. 3,51,37. यो हनिष्यति वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षति च द्विजम् Çâk. 155. Ragh. 2, 50. तं रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि Spr. 2720. यथा शक्तिमतो पतिम्। रक्ष प्रज्ञया पूर्वममुं रक्षाम्यहं तथा Kathâs. 13,163. रक्षाम्यहं शरीरं ते तत्सुखं स्वपिहि 18,115. 62,82. Bhâg. P. 1,16,22. 18,43. 10,73,21. रात्रौ निशि रक्षन्विनिर्ययौ *Wache haltend* Kathâs. 88,14. रक्षते दानवान् MBh. 1,3196. 6309. 3,10570. 11816. 4,1292. 5,7068. 7256. 7484. Hariv. 10011. R. 1,61,18. 5,36,18. Kathâs. 26,145. Mârk. P. 52,20. रक्षेत्कन्यां पिता विन्नां पतिः पुत्रास्तु वार्द्धके। अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित्स्त्रियाः॥ Spr. 4928. 1774. 4183. M. 9,6. 9. MBh. 13,2221 (wo रक्ष्यन्ते mit der ed. Bomb. zu lesen ist). पशून् *das Vieh hüten* M. 9,328. MBh. 1,698 (med.). 699. 718. R. Gorr. 2,32,41. चौरादिभ्यः प्रजा नृपः रक्षन् Bhâg. P. 4,14, 17. Spr. 4943. MBh. 4,2104. R. 1,48,21. Vet. in LA. (III) 10,2. रक्ष

लोकांश्च देवांश्च शक्रं च महतो भयात् MBh. 3,8762. Bhaṭṭ. 3,16. किल्विषात् R. 2,106,28 (113,22 Gorr.). विघ्नतः Ragh. 11, 24. व्यसनतः Bhâg. P. 1,13,32. सर्वतो रक्षते यो माम् Hariv. 7115. Bhâg. P. 8,22,35. परद्रव्यान्मनो रक्ष परदारात् Hariv. 14687. एवमात्मा बन्धेश्च रक्ष्यते Mârk. P. 93,17. वसुधाम्, क्षितिम्, क्ष्माम् *das Land —, das Reich beschützen* so v. a. *regiren* MBh. 3, 2238. Râga-Tar. 1,99. 192. 3,97. 6,190. राष्ट्रम् Spr. 4803. ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षतीति Çâk. 13. सृजति, रक्षति, संहरति Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,98. रक्षन्ती जीवितं पितुः MBh. 1,6186. R. 6, 3,1. रक्षस्व जीवितम् 16,69. अपि पुत्रकलत्रैर्वा प्राणान्रक्षेत पण्डितः Spr. 149. 1319. कराभ्यामक्षिणी रक्षन् Râga-Tar. 3,408. नागानां चापि यज्ञो ऽयं रक्ष्यते हि महर्षिभिः R. Gorr. 1,41,12. Bhaṭṭ. 2,27. आपदर्थे धनं रक्षेत् Spr. 355. लब्धं रक्षेदवेक्षया 234. 233. राज्यम् R. 2,23,29. 31,20 (med.). 73,12. 112,11. यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति Spr. 4803. 2719. Kaurap. 35. रक्षेद्विवरमात्मनः Spr. 1369. सेवधिस्ते ऽस्मि रक्ष माम् M. 2,114. MBh. 1,5573. Râga-Tar. 2,97. शेषं कस्यापि रक्षसि Spr. 2384. सुनिहितमपि चार्थं दैवतै रक्ष्यमाणम् 5010. 5254. रहस्यं चिररक्षितम् *bewahrt* Kathâs. 45,50. भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु *verwahre* Çâk. 90,2. अपि रक्ष्यते भवता रहस्यनिक्षेपः Vikr. 18,6. एतावुरणकौ — न्यासौ रक्षस्व Bhâg. P. 9,14,21. Râga-Tar. 5,220. कुलं मानं च रक्षता Mṛkkh. 174,18. धर्मं स्वं रक्षमाणेन MBh. 3,8886. धर्मो वा यदि रक्ष्यते R. 5,84,15. Bhâg. P. 3,16,18. स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च। स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति ॥ M. 9,7. शीलमेवैकं रक्ष Kathâs. 13,135. स्वाकारं रक्षन् Pañkat. 23,11. तस्याबन्ध्यप्रसादत्वं रक्षतः पितृमन्त्रिणः Râga-Tar. 1,78. अर्धयुतो अनिमिषं रक्षमाणः *sorgfältig achtend auf* ṚV. 7,61, 3. 9,87,2. 1,146,4. व्रतानि 6,8,2. 8,56,13. सखा सख्युर्निमिषि (mit loc.) रक्षमाणाः 1,72,5. तद्व्रतिम् — पुण्यतीर्थगमनाय रक्ष मे so v. a. *sichre mir* Ragh. 11,87. रक्षन्ति भावि कल्याणं भाग्यान्येव Kathâs. 20,19. रक्षन्तस्तपसि बलं च लोकपालाः Kir. 5,50. *in Acht nehmen* so v. a. *nicht antasten:* या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति VS. 19,10. *sich hüten vor, verhüten:* तल्लिनेत्रस्य लङ्घनम्। एकस्य रक्षेः Kathâs. 20,65. मृत्युः शक्यो न रक्षितुम् 72,333. पिशुनप्रेरणा प्रभोः रक्षितुं यदि पार्यते Spr. 4183. med. *sich hüten* d. h. *sich flüchten:* उद्प्रुतो न वयो रक्षमाणाः ṚV. 10,68, 1. vielleicht *verstecken:* रक्षते शिरः 9,68,4. — partic. रक्षित (वर्तमाने) Kâr. zu P. 3,2,188. = त्रात u. s. w. AK. 3,2,55. H. 1497. *geschützt, bewacht, bewahrt, erhalten;* von Personen M. 11,23. MBh. 3,529. Spr. 2009. रक्षितं व्यसनेभ्यश्च मित्रम् 583. *gehütet:* स्त्री M. 9,15. Spr. 3303. धुर्यरक्षिता श्रीः Kathâs. 18,137. उर्वी Ragh. 2,66. कन्यान्तःपुरे रक्षापुरुषरक्षिते Pañkat. 44,12. दैवरक्षित (Gegens. दैवहत) Spr. 208. लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः। रक्षितं वर्धयेत् 233. fgg. तान् (प्राणान्) निघ्नता किं न हतं रक्षता किं न रक्षितम् 1319. तिलगुल्मं सदा सिञ्चेद्यावत्पुष्पेद्धि रक्षितः *gehütet, gepflegt* Hariv. 7874. *verwahrt* Vet. in LA. (III) 14,3. Hit. 86,18. गोरक्षित *aufbewahrt für* P. 2,1,36. रक्षितम् adv. *wohl verwahrt* Kathâs. 53,64. धर्म *beobachtet, aufrechterhalten* Spr. 4247. Mârk. P. 72,2. 4. अरक्षित *ungehütet* M. 9,12. Spr. 5285. अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम् 208. मन्त्र *nicht geheim gehalten* 199. सुरक्षित *wohl gehütet, gut bewacht* M. 9,12. Kathâs. 30,113. वेश्मन् MBh. 3,2144. 2155. सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति 208. न्यासमिव राज्यं सुरक्षितम् Râga-Tar. 2,159. मन्त्रं सुरक्षितम्। कुर्यात् *er stelle die Berathung sehr geheim an* Spr. 4692. Vgl. देवरक्षित, बुद्ध°, महा°, मैत्रेय°.

— caus. रक्षयति, अररक्षत् P. 7,4,93, Sch. *schützen:* को ऽस्मानत्र वने रक्षयिष्यति Pañkat. 70,13. *bewahren:* स्वाकारं रक्षयेद्यस्तु स भृत्यो ऽर्हो महीभुजाम् Spr. 1367.

— desid. रिरक्षिषति *zu beschützen beabsichtigen vor* (abl.): रिरक्षिषन्तः MBh. 5,2368. 6,3760 (रिर° zu lesen). 4695.

— intens.: रक्षो णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः *der fleissig gehütet —, beobachtet wird* ṚV. 4,3,14. *fleissig hütend* Sâj.

— अधि *bewachen, behüten:* त्रैलोक्यं यो ऽधिरक्षति Hariv. 15811. besser यो हि रक्षति die neuere Ausg.

— अनु *hütend nachgehen* Çâñkh. Çr. 16,10,11. के पृष्ठतो ऽन्वरक्षन्त (पृष्ठतश्चाप्यभवन् ed. Bomb.) MBh. 7,7330. *behüten, beschützen;* med. R. 6,103,2.

— अभि *bewahren, behüten, beschützen* ṚV. 1,136,5. 163,5. 4,53,5. यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथ 8,47,1. 9,114,3. 10,86,4. 157,4. AV. 10,6, 12. 7,23. 12,3,11. पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् 2,13,1. 3,12,8. Çat. Br. 2,3,4,40. Âçv. Çr. 2,5,2.12. Kauç. 135. Khând. Up. 4,17,10. भीष्ममेवाभिरक्षन्तु Bhag. 1,11. दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति Spr. 4162. 4920. MBh. 4,1535. 5,711. 6,543. Hariv. 2471. 7115. R. 2,25,3. fgg. धात्री स्वपुत्रवत्स्कन्दं मूलकृत्स्नाभ्यरक्षत MBh. 3,14365. 6,544. 13, 2265. उपर्यन्तःपुरे सा (कन्यका) च रक्षमित्यभिरक्ष्यते Kathâs. 3,58. 78, 131. बलं भीष्माभिरक्षितम् so v. a. *befehligt* Bhag. 1,10. MBh. 4,425. R. 2,2,4. 25,6. 52,77. R. Gorr. 1,35,30. 2,27,24. 5,43,4. 73,34. अधर्मात्त्वभिरक्ष माम् MBh. 7,2081. एवं बहुभ्यः शत्रुभ्यः प्रजयात्माभिरक्षितः Kathâs. 33,130. Bhâg. P. 1,18,24. ताभ्यः स्त्रियो ऽभिरक्ष्याः Varâh. Bṛh. S. 78,10. येन वीरः कुरुक्षेत्रमभ्यरक्षत् MBh. 4,161. यः कृत्स्नामटवीमेतां पर्यटन्स्थो ऽभिरक्षति Kathâs. 29,135. 115,10. स्वगृहं तं कालं सो ऽभ्यरक्षत MBh. 13,2306. Hariv. 8999. वसुंधराम् — बाहुवीर्याभिरक्षिताम् R. 2,88,18. ऋष्यमूकः — शिशुनागाभिरक्षितः 3,76,28. Kathâs. 39,28. सहमिन्द्रो ऽभिरक्षतु Suçr. 1,17,5. प्राणा यन्मे ऽभिरक्षिताः Bhâg. P. 9,5,17. ये ऽभ्यरक्षन्पुरातनीं तस्य देवस्य सृष्टिम् MBh. 13,1375. यो यज्ञ इवार्थमभिरक्षति Bhâg. P. 5,26,36. एष कल्पतरुः कस्य कृते ऽमोघो ऽभिरक्ष्यते *gehegt —, gepflegt werden* Kathâs. 90,21. यथा बोजाङ्कुरः सूक्ष्मः परिपुष्टो ऽभिरक्षितः Spr. 2316. आकारमभिरक्षेत *bewahre* MBh. 1,5616. 2,2183. आकारमभिरक्षन्ती प्रतिज्ञां धर्मसंहिताम् 4,472. व्रतानि *beobachten* ṚV. 4,53,4. 7,83,9. 9,73,3. — Vgl. अभिरक्षितृ.

— अव scheinbar in der Stelle: रमन्ते चोपहासेन पुरुषाः पुरुषैः सह। अन्योऽन्यमवरक्षन्तो देशे देशे समैथुनाः ॥ MBh. 8,2115, wo aber wohl अवक्षरन्तो *begiessend, besudelnd* (mit Samen) zu lesen ist. Der bei der Umstellung erscheinende seltene Fuss — ◡ ◡ — — mag zur Erhaltung des einfachen Schreibfehlers beigetragen haben.

— आ *behüten, beschützen, bewahren, bewachen:* आ मा मित्रावरुणेह रक्षतम् ṚV. 7,50,1. दाराणि यत्नैरारक्षितानि MBh. 13,186. भरतारक्षितं पुत्रराज्यम् R. 2,52,58. — Vgl. आरक्ष fgg.

— उप s. उपरक्षण; प्रति, °रक्षति Vop. 8,73.

— परि *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, in Acht nehmen, erhalten, erretten, servare:* अंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयम् ṚV. 5,44, 7. त्रिषप्तसुभ्ये इमं मे परि रक्षत AV. 8,2,20. परिरक्षेदिमाः प्रजाः (राजा) M.

7,142. MBH. 3,528. 15708. R. GORR. 2,50,5. तां कन्यां वासुकिः पर्यरक्षत MBH. 1,1642. 1940. 2948. 3,14366. 7,3661. HARIV. 9085. 9690. परिरक्ष्यमाण BHÂG. P. 5,9,21. परिरक्षित 24,28. 9,9,40. MBH. 5,6035. योषितः परिरक्षितुम् *hüten* M. 9,10. अयानं ते पर्जन्यः परिरक्षतु SUÇR. 1,17, 2. तदिदं परिरक्ष वपुः KUMÂRAS. 4,44. आत्मानं परिरक्षस्व MBH. 1,6195. शक्यस्तेनानुमानेन परो ऽपि परिरक्षितुम् *erhalten —, gerettet werden* Spr. 2129. परिरक्ष अस्मदीयप्राणान् PAÑKAT. ed. orn. 38,12. आत्मानं परिरक्षस्व पुरीं चेमां सराक्षसाम् R. 5,88,24. 23,17. सीता च परिरक्षिता *gerettet* 56,144. MṚKKH. 110.17. अयोध्यां परिरक्षति so v. a. *beherrscht* R. GORR. 2,109,49. HARIV. 733. 3714. Spr. 5063. BHÂG. P. 5,4,17. मद्भुजपरिरक्षिते ऽस्मिन्वने PAÑKAT. 30,24. 215,7. नक्षेष राघवस्यार्थे जीवितं परिरक्षति *schont* R. 6,4,27. न स्म पश्यामहे कंचिद्यः प्राणान्परिरक्षति MBH. 6,4062. *schonen, vor Berührung behüten* SUÇR. 1,98,16. शिष्टं मांसम् — काकेभ्यः पर्यरक्षत *aufbewahren* R. 2,96,38 (105,37 GORR.). एष चूडामणिर्दिव्यो मया सुपरिरक्षितः 5,37,7. ये विप्राः — ब्राह्मीं वाचं परिरक्षन्ति MBH. 13,4886. स्वधर्मं परिरक्षता *treu bewahrend* R. 4,24,10. 5,51, 13. प्रतिज्ञाम् R. GORR. 2,50,8. लोकयात्रामिमां कृत्स्नां परिरक्ष आसते so v. a. *bedacht auf* HARIV. 6811. *vermeiden* SUÇR. 2,15,12. med. mit gen. *Jmd vermeiden, machen, dass man nicht mit Jmd zusammenkommt* R. 5,73,20. — Vgl. परिरक्षक fgg.

— संपरि *beschützen:* लोकान्संपरिरक्षितुम् R. 7,104,3.

— प्र *bewahren, schützen vor* (abl.), *erretten von:* कर्कटेन द्वितीयेन सर्पात्पान्थः प्ररक्षितः Spr. 147. BÜHLER's Ausg. des PAÑKAT. liest जीवितं परिरक्षितम् st. सर्पात्पान्थः प्र°. — Vgl. प्ररक्ष fg.

— प्रति 1) *behüten, beschützen:* यदि प्रूरस्तथा त्नेमे (त्नेमं ed. Bomb.) प्रतिरक्षेत्त्वया भये MBH. 12,3596. विश्वा आशाः प्रतिं रक्षन्त्येके AV. 10,8, 36. सत्यां (so die ed. Bomb.) प्रतिज्ञां तां पार्थेन प्रतिरक्षता *treu haltend* MBH. 8,3542. — 2) *fürchten, sich retten vor:* प्रतिरक्षन्नसुर्यम् VS. 8,24.

— वि *behüten, beschützen, bewahren:* सर्वं भूतम् AV. 10,6,18. 13,2,41. राज्ञो राष्ट्रं वि रक्षति 11,5,17. अन्योऽन्यं समुपाश्रित्य विरक्षन्ति रणाजिरे (न त्यक्ष्यन्ति रणाजिरम् ed. Bomb.) MBH. 7,4410. द्रोणं च के व्यरक्षत 7329.

— सम् *bewachen, bewahren, beschützen, hüten, behüten, erhalten, erretten, servare:* संरक्षतो मुनिगणानिघ्नतो राक्षसान्मम R. 3,10,25. 7,108, 27. Spr. 1828. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*, N. 3. संरक्ष्यमाणो राज्ञा M. 7,136. MBH. 7,230. 6059. R. 5,19,33. KATHÂS. 20,87. RÂGA-TAR. 3,39. संरक्षित HARIV. 9072. MṚKKH. 105,13. 110,15. RAGH. 4,35. 13,65. KATHÂS. 9,80. संरक्षेत्सर्वतश्चैनं पिता पुत्रमिवौरसम् M. 7,135. पित्रा संरक्षितं शक्रात् BHATT. 8,8. केदारान् — मृगवराहादिभ्यः संरक्षमाणमङ्गिरःप्रवरसुतम् BHÂG. P. 5,9,14. प्राणैः संरक्षितैः सर्वं यतो भवति रक्षितम् Spr. 3163. कटकं संरक्ष्य RÂGA-TAR. 5,218. अनिद्र एव षड्रात्रं स संरक्षन्मुनेः क्रतुम् R. GORR. 1,33,6. मधुवनं संरक्ष त्वम् 5,63,27. धर्मं संरक्षते दण्डस्तथैवार्थं जनाधिप। कामं संरक्षते दण्डः MBH. 12,426. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् Spr. 5030. संरक्षेन्मध्वबीजम् KÂM. NÎTIS. 11,53. मन्त्रं संरक्षेत् 64. दंपत्योः संरक्षतोर्गोरवम् *bewahren* Spr. 530. आत्मनश्च परेषां च वृत्तिं संरक्ष *sichre* MBH. 13, 3080. *aufbewahren, verwahren:* तद्दानवशरीरं ते संरक्ष्य स्थापितं मया KATHÂS. 43,50. — Vgl. संरक्षण fgg.

2. रक्ष् (= 1. रक्ष्) adj. am Ende eines comp. *bewachend, hütend* u. s. w. VOP. 3,136. — Vgl. गो°.

3. रक्ष् (eigentlich = रिश्, रिष्) *beschädigen, verletzen:* मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् AV. 5,7,1. — Davon रक्षस्.

रक्ष (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. (f. ई) *Wächter, Hüter:* नृपस्य रक्षान्परिक्रामि (रक्षां v. l.) MṚKKH. 55,23. 58,18 (s. d. Anmm.). am Ende eines comp. *bewachend, beschützend, hütend, erhaltend:* नृप° (भृत्य) Spr. 783, v. l. प्रतिहाररक्षी *Thorwächterin* RAGH. 6,20. नदीरक्ष R. 2,84,7. गजपाद° MBH. 4,2092. जगद्रक्ष HARIV. 13686. तेषां धर्मैकरक्षाणाम् *bewahrend, beobachtend* R. 2,73,19. Vgl. क्षेत्र°, गो°, चक्र°, तुरग°, पाद°, पुर°, पृष्ठ°, लोक°, सेना°, सोम°. — 2) रक्षा *a) Schutz, Erhaltung, Bewahrung* H. an. 2,569. MED. sh. 23. NIR. 5,23. स्याद्राज्ञो (नामधेयं) रक्षासमन्वितम् M. 2,32. 4,153. MBH. 3,12772. ÇÂK. 47. नियुक्तो रक्षाविधौ KATHÂS. 34,72. BHÂG. P. 2,3,8. 10,82,6. कृतरक्ष *dem Schutz gewährt ist* SUÇR. 1,17,21. यदशक्यरक्षम् RAGH. 2,40. das obj. im gen. MBH. 3,2624. रक्षां करोतु सततं वृद्धबालस्य सर्वशः 5, 5429. R. 3,14,21. RAGH. 2,8. MEGH. 44. BHÂG. P. 1,8,13. MÂRK. P. 96, 43. PAÑKAR. 1,3,15. fg. PAÑKAT. 51,14. 157,7. रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः M. 7,3. जगतः BHÂG. P. 4,8,7. मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता KUMÂRAS. 2,28. सृष्टिरक्षाविनाशनैः (so ist zu lesen) HARIV. 14932. BHÂG. P. 12,7,9. 14. गोविप्रसुरसाधूनां छन्दसाम् — धर्मस्यार्थस्य चैव 8,24,5. वनस्य R. 5,60,20. यज्ञस्य 1,20,4. अन्नस्य SUÇR. 1,10,10. das obj. im comp. vorangehend (Accent eines solchen comp. gaṇa घोषादि zu P. 6,2,85): भृत्य° BHÂG. P. 9,4,48. KATHÂS. 10,164. 23,2. RÂGA-TAR. 2,108. BHÂG. P. 3,13,12. प्रजासर्ग° 4,30,51. लोक° MBH. 1,1153. तपोवनसत्त्व° ÇÂK. 17,20. आवास° PAÑKAT. 184,8. गृह° HIT. 50,6. शरीर° RAGH. 2,4. देह° LA. (III) 91,6. क्षिति° ÇÂK. 179. समयसेतु° BHÂG. P. 5,4,5. सक्तु° HIT. 115, 1, v. l. पक्वशालिवनस्फीति° RÂGA-TAR. 3,22. जीवित° MBH. 12,4274. औचित्यान्वय° KATHÂS. 1,11. शीत° *Schutz vor der Kälte* PAÑKAT. 93,7. क्रिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षाम् BHÂG. P. 6,8,10. पथ° (am Ende eines adj. comp., f. आ) *Schutz auf der Reise* KATHÂS. 43,258. Vgl. नगर°. — *b) Wache* (concret): नृपस्य रक्षां परिक्रामि MṚKKH. 55,23, v. l. विधाय रक्षाम् KÂM. NÎTIS. 15,44. Vgl. अङ्ग°. — *c) was zum Schutze dient, eine zum Schutz einer Person vorgenommene Handlung; Amulet, mystische Zeichen:* कृत्वा रक्षां निरामयाम् R. 1,62,18. कृत्वा मनोमयीं रक्षाम् AMṚTAN. UP. in Ind. St. 9,30. यशोदारोहिणीभ्यां ताः समं बालस्य सर्वतः। रक्षां विदधिरे सम्यग्गोपुच्छभ्रमणादिभिः॥ गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्। रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः॥ BHÂG. P. 10,6,19. fg. SUÇR. 1,16,12. 15. 71,13. °विधान 2,16,11. सर्वरक्षासमन्वित WEBER, KṚSHṆAǴ. 269. 283. ओषधीं चापि सिद्धार्थां विशल्यकरणीं तथा। चकार रक्षां कौसल्या मन्त्रैरभिजजाप च॥ R. 2,25,36. °बन्ध Verz. d. B. H. 136,*a*,132. (Verz. d. Oxf. H. 35,*a*,13). VP. 506. रक्षाश्च चैव गृहे लेख्याः MÂRK. P. 51,37. — *d) Schutzgottheit;* vgl. पद्म°, महा°. — *e) Asche* (als *Schutzmittel*) H. 828. H. an. HALÂJ. 1,69. ÇABDAR. im ÇKDR. Verz. d. Oxf. H. 184,*a*,31.

रक्षईश (1. रक्षस् + ईश) m. Bein. Râvaṇa's H. 706.

रक्षक (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. *Wächter, Hüter* KATHÂS. 43,32. fg. 46,144. 208. 63,146. अधुनाहं ते सर्वच्छिद्रेषु रक्षकः 66,126. PAÑKAR. 1,7,58. PAÑKAT. 8,25. HIT. 42,5. बालानाम् PAÑKAR. 4,8,62. HIT. 128,9. गवादिरक्षकाः KATHÂS. 30,95. लोक° HARIV. 14940. कीचकवन° KATHÂS. 46, 106. शस्य° HIT. 81,15. रक्षिका *Wächterin, Hüterin* KATHÂS. 74,167. अन्तःपुर° 105,14. अमृतस्य यत्। रक्षकं चक्रायत्नम् 29,47. Vgl. अङ्ग°,

गो°, धन°, पशु°, भूमि°, मार्ग°, रात्रि°. — 2) रक्षिका f. = रक्षा 2) c): अनेन विधिना यस्तु रक्षिकाबन्धमाचरेत्। स सर्वदोषरहितः सुखं संवत्सरं वसेत्॥ HARIBHAKTIVILÂSA 51 im ÇKDR.

रक्षकाम्बा (रक्षक + अ°) f. N. pr. eines Frauenzimmers HALL 203.

रक्षण (von 1. रक्ष्) 1) nom. ag. *Beschützer, Hüter:* Vishṇu MBH. 13, 7048. — 2) f. आ *das Beschützen, Hüten:* प्रीयसे रक्षणाभिः ÇÂK. 105, v. l. आत्म° PAÑKAR. 1,14,107. — 3) f. ई *Zügel* VAIG. bei MALLIN. zu ÇIÇ. 5,56. — 4) n. proparox. *das Bewachen, Schützen, Behüten, Bewahren, Schutz:* रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभिः ṚV. 4,3,14. sg. M. 8,39. 305. 10,80. 11,235. JÂGÑ. 3,297. MBH. 5,5433. R. 2,30,28. ÇÂK. 105. Spr. 1828. BHÂG. P. 5,24,3. PAÑKAR. 1,2,34. HIT. 114,7. प्रजानाम् M. 1,89. R. GORR. 2,43,28. RAGH. 1,24. Spr. 1830. दुर्बलानाम् M. 8,172. आर्यवृत्तानाम् 9,253. भार्यायाः MBH. 1,1870. 6150. R. 2,46,9. त्रैलोक्यस्य R. 1,1,5. RAGH. 11,5. ÇÂK. 27,5. PAÑKAR. 1,7,72. HIT. 15,13. पशूनाम् *das Hüten des Viehes* M. 1,90. 8,410. 9,326. योषिताम् 16. कुमाराणाम् 7,152. स्वस्थस्य SUÇR. 1,3,6. 122,4. वाजिनाम् *Pflege der Pferde* VARÂH. BṚH. S. 86,33. das obj. im loc.: वशापुत्रासु चैवं स्याद्रक्षणं निष्कुलासु च। पतिव्रतासु च स्त्रीषु M. 8,28. im comp. vorangehend: अखिललोक° BHÂG. P. 4,20,13. कुल° R. 2,68,22. वर्णाश्रम° RAGH. 14,67. LA. (III) 88,9. व्याधित° SUÇR. 1,124,4. गोविप्र° BHÂG. P. 7,11,24. क्षेमतुरंग° RAGH. 3,38. जीवित° KATHÂS. 61,75. — उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् Spr. 499. एतदेव हि पाण्डित्यं यत्स्वल्पाद्भूरिरक्षणम् 1503. मान° R. 6,100,13. *eine prophylaktische Cerimonie* MÂRK. P. 51,38. — Vgl. अग्नि°, अङ्ग°, गर्भ°, पाद°, पृष्ठ°.

रक्षणारक m. *Harnverhaltung* ÇABDAR. im ÇKDR. रक्षणीरक v. l.

रक्षणि (von 1. रक्ष्) f. *eine best. Pflanze,* = त्रायमाणा RÂGAN. im ÇKDR.

रक्षणीय (wie eben) adj. *zu beschützen, zu behüten:* भर्तव्या रक्षणीया च पत्नी हि पतिना सदा MBH. 3,2734. HARIV. 10951. MÂLAV. 53,13. Spr. 2420. KATHÂS. 18,337. 28,134. HIT. 107,9. रक्षणीया विशेषेण परदारा महीभृताम् R. 3,56,14. न यस्य वध्यो न च रक्षणीयः BHÂG. P. 8,5,22. PAÑKAT. 85,7. 211,20. पुत्रो ऽयं भवता नकुलाद्रक्षणीयः 238,18. इदं राष्ट्रम् KATHÂS. 12,39. तेजस् RAGH. 14,61. कन्या PAÑKAT. 34,23. रक्षणीयान्नरेन्द्राणाम् — कोशलान् *verdienend beherrscht zu werden* R. 2,50,10. *zu vermeiden, wovor man sich zu hüten hat:* स्त्रीवैरम् KATHÂS. 15,134. तैलबिन्दुनिपातश्च रक्षणीयस्त्वया 27,44.

रक्षणीरक s. रक्षणारक.

रक्षपाल m. *Hüter, Wächter* PAÑKAT. 217,4. 232,2. °क m. dass. WEBER, KṚSHṆAG. 269.

रक्षपुरुष PAÑKAT. ed. orn. 4,18 fehlerhaft für रक्षापुरुष.

रक्षभगवती f. = प्रज्ञापारमिता BURN. Intr. 51. 462. fg. रक्षा भ° Lot. de la b. l. 533.

1. रक्षस् (von 1. रक्ष्) adj. *hütend* in पथि°.

2. रक्षस् (von 3. रक्ष्) n. *Beschädigung:* मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावताम् ṚV. 7,104,23. मा नो रक्ष आ वेशीन्मा यातुमावताम् 8,49,20. — 2) concret *Beschädiger,* Bez. *nächtlicher Unholde, welche das Opfer stören und den Frommen schädigen,* NIR. 4,18. gaṇa भीमादि zu P. 3,4,74. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 4,188. AK. 1,1,1,6. 56. H. 187. HALÂJ. 1,73. 5,4. coll. ṚV. 1,21,5. 133,5. शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे 5,2,9. 6,18,10. 7,104,1. 4. 13. 22. AV. 4,17,5. 7,70,2. 8,2,12. उन्मत्तं रक्षसस्परि 6,111,3. आत्मा रक्षः संसृजतात् AIT. BR. 2,7. plur. ṚV. 7,15,10. 38,7. VS. 2,23. 29. इदमहं रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि 5,22. AV. 1,35,2. 2,4,4. 12,1,50. 14,2,24. न यज्ञे रक्षसां कीर्तयेत्कानि रक्षांस्यृतेरक्षा वै यज्ञः AIT. BR. 2,7. तद्यद्रक्षांस्तस्माद्रक्षांसि (vgl. R. 7,4,13) ÇAT. BR. 1,1,1,16. 6,1,11. 8,1,16. नाष्ट्रा रक्षांसि 1,1,21. 2,1,6 (so in Buch 1—5, in den späteren रक्षांसि नाष्ट्राः). ÂÇV. GṚHJ. 3,4,1. असुररक्षांसि SHAḌV. BR. 1,2. TS. 2,4,1,1. 6,3,2,2. 6,2,1. ÇAT. BR. 13,4,2,10. रक्षोजनाः GOBH. 1,4,18. रक्षोदेवत्य KAUÇ. 4. रक्षोविद्या ÇÂÑKH. ÇR. 16,2,19. रक्षांसि M. 1,43. 3,170. 204. 230. 238. 4,199. 7,23. 38. 12,44. BHAG. 11,36. R. 1,9,49. SUÇR. 1,71,2. 117, 9. ÇÂK. 28,13. यक्षरक्षःपिशाचाः M. 1,37. 11,95. गन्धर्वोरगरक्षसाम् 3,196. वित्तेशो यक्षरक्षसाम् BHAG. 10,23. 17,4. MBH. 3,13484. 8,2104. R. 1,1,42. 55,17. SUÇR. 1,114,8. VARÂH. BṚH. S. 13,11. 46,14. 92. 51,6. 68,108. रक्षोगणाः R. 4,40,37. रक्षोराव VET. in LA. (III) 4,9. Kinder der Khasâ HARIV. 234. sg. von einem einzelnen Râkshasa: ऋषिं वै रक्षो ऽग्रहीत् PAÑKAV. BR. 15,5,20. MBH. 1,5993. 7632. R. 1,1,45. VIKR. 54,5. KATHÂS. 18,282. रक्षोभूत 25,274. एतच्छ्रुत्वा गतो रक्षः प्रहृष्टश्च महाबलः R. 7,23, 1,55. दीर्घजिह्वी वा इदं रक्षो यज्ञहा यज्ञानवलिहत्यचरत् PAÑKAV. BR. 13, 6,9. रक्षस् = निर्ऋति WEBER, RÂMAT. UP. 302. 305. दुर्नृप° *ein* Rakshas *von einem boshaften Könige* RÂGA-TAR. 5,416. Nach gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117 sind die Rakshas ein आयुधजीविसंघ. — Vgl. अ°, पुरुष°, ब्रह्म°, महा°, वि°, सह°, राक्षस.

3. रक्षस् (wie eben) m. *Beschädiger,* Bez. *der* Rakshas, *nächtlicher Unholde:* विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ṚV. 4,4,1. 5,42,10. 2,23,14. बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः 3,15,1. 7,1,3. 19. यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह 104,16. 8,23,14. 49,10. 19. रुजा दृळ्हा चिद्रक्षसः सदांसि 9,91,4. AV. 2,3,6. 4,19,3. 14,2,7. — Vgl. राक्षस.

रक्षस्त्व (von 2. oder 3. रक्षस्) n. *Schadenfreude* oder *dämonische Natur:* यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः ṚV. 8,18,13.

रक्षस्य adj. *anti-rakschasisch:* तनू P. 4,4,121. TS. 2,3,12,1. nach dem Schol. zu P. 4,4,128 मत्वर्थे.

रक्षस्विन् adj. *unhold, rakschasisch* ṚV. 1,12,5. 36,20. दुःशंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् 7,94,12. 8,22,18. 47,12. 49,8. 20. वि मृधो जहि रक्षस्विनीः AV. 6,2,2. 7,114,2.

रक्षःसभम् (2. रक्षस् + सभा) n. *eine Menge von* Râkshasa AK. 3,6,2,27.

1. रक्षा (von 1. रक्ष्) f. s. u. रक्ष.

2. रक्षा f. = राक्षा, लाक्षा *Lack* MED. sh. 23.

रक्षाकरण्डक (1. र° + क°) n. *ein Amulet in Form eines Körbchens* ÇÂK. 105,12 (im Prâkrit).

रक्षागृह (1. र° + गृह) n. *das Gemach einer Wöchnerin* (*Schutzgemach* gegen Unholde u. s. w.) RAGH. 10,69.

रक्षाधिकृत (1. रक्षा + अ°) adj. *mit dem Schutz* (des Landes, des Ortes) *betraut:* भृत्याः Spr. 4943. m. *Polizeibeamter* M. 9,272.

रक्षाधिपति (1. रक्षा + अ°) m. *Polizeidirector* ÇÂNTIK. 24.

रक्षापति (1. र° + प°) m. dass. VARÂH. BṚH. 18,17.

रक्षापत्त्र (1. र° + पत्त्र) m. *eine Art Birke,* = भूर्ज RÂGAN. im ÇKDR.

रक्षापुरुष (1. र° + पु°) m. *Wächter, Hüter* PAÑKAT. 8,24. 44,12. 192, 12. fälschlich रक्षपु° ed. orn. 4,18.

रक्षापेक्षक m. *a doorkeeper or porter; a guard of the women's apart*

ments; a catamite; an actor, a mime Wilson nach Çabdârthak.

रक्षाप्रदीप (1. र° + प्र°) m. *eine zum Schutz gegen Unholde brennende Lampe* Kathâs. 28,4.

रक्षाभूषण (1. र° + भू°) n. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienender Schmuck* Suçr. 1,54,13.

रक्षाभ्यधिकृत adj. subst. = रक्षाधिकृत MBh. 12,3273.

रक्षामङ्गल (1. र° + म°) n. *eine zum Schutz gegen Unholde u. s. w. vorgenommene Cerimonie* Suçr. 1,368,2.

रक्षामणि (1. र° + म°) m. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Juwel* Weber, Kṛshṇaǵ. 269. fg. जगद्रक्षामणेः प्रभोः *eines Fürsten, der als ein solches Juwel die Erde hütet,* Kathâs. 78,46.

रक्षामल्ल (1. र° + म°) m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II, 274. fg.

रक्षामहौषधि (1. र° + म°) f. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Wunderkraut* Kathâs. 108,47.

रक्षारत्न (1. र° + रत्न) n. *ein zum Schutz gegen Unholde u. s. w. dienendes Juwel* Kathâs. 94,112. Râǵa-Tar. 4,584.

रक्षारत्नप्रदीप (1. र° + र°) m. *eine vor Unholden u. s. w. schützende Lampe, die mit ihren Edelsteinen leuchtet,* Kathâs. 32,89.

रक्षावत् (von 1. रक्षा) adj. *des Schutzes geniessend, geschützt:* आसीद्रक्षावती तस्य भुजेन भूमिः Ragh. 18,47. Prab. 2,13.

रक्षासर्षप (1. र° + स°) m. *vor Unholden u. s. w. schützender Senf* Râǵa-Tar. 3,338. °शर्षप beide Ausgg.

रक्षि (von 1. रक्ष्) adj. am Ende eines comp. im Veda *hütend, schützend* P. 3,2,27. — Vgl. पथि°, पशु°, सोम°.

रक्षिक (von रक्षा) m. *Wächter, Hüter:* °बल Daçak. 75,2. °पुरुष 92,12.

रक्षित 1) partic. adj. s. u. 1. रक्ष्. — 2) m. N. pr. a) eines Lehrers der Medicin Suçr. 1,1,8. — b) eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 40. Verz. d. Oxf. H. 161,a,14. 162,b,22. Siddh. K. zu P. 2,2,14. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras MBh. 1,2558.

रक्षितक (von रक्षित) 1) in दार° adj. *auf den Schutz der Frau* oder *Frauen bezüglich* Verz. d. Oxf. H. 216,a,2. — 2) f. रक्षितिका N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 112,116.

रक्षितृ (von 1. रक्ष्) nom. ag. *Hüter, Beschützer, Wächter* AK. 3,4,13,55. RV. 1,89,1. 5. 2,39,6. अदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता 6,7,7. श्वानौ 10,14,11. 67,6. सोमस्य 85,5. AV. 3,27,1. 12,3,55. 19,15,3. Çat. Br. 13,4,2,5. Spr. 1372. MBh. 3,1809. 2075. 2444. 11468. 4,2104. R. 1,1,15. 7,8. Kâm. Nîtis. 7,4. Çâk. 63,16. 111. Ragh. 1,27. 3,20. 51. Pańkat. I, 391. Kathâs. 46,158. Uttarar. 30,1 (39,11). Râǵa-Tar. 1,182. Bhâg. P. 4,21,21. 7,2,38. Mârk. P. 69,28. दुःखिभ्यः R. Gorr. 2,31,14. अ° Spr. 656. 3066. M. 8,309. R. 1,61,7. प्रजाः 2,75,23. रक्षित्री Râǵa-Tar. 3,108. 6,193. रक्षिता als fut. 3. sg. Bhâg. P. 4,9,51. 2. sg. 22.

रक्षितवत् (von रक्षित) adj. *den Begriff* रक्ष् *enthaltend* Âçv. Çr. 2,10,5.

रक्षितव्य (von 1. रक्ष्) adj. *zu hüten, zu schützen, zu bewahren* MBh. 1,4884. 7,5869. Spr. 3724. 4938. अस्मादेकाद्बहवो रक्षितव्या नैको बहुभ्यो गौतमि रक्षितव्यः MBh. 13,30. Vieh M. 9,328. प्राणाः R. 5,80,14. सुवर्णभाण्डम् Mṛkkh. 26,9. *wovor man sich hüten muss,* zur Erklärung von रक्षस् Nir. 4,18.

रक्षिन् (wie eben) nom. ag. *Hüter, Beschützer, Bewacher, Wächter* Âçv. Çr. 10,6,7. Kâtj. Çr. 20,2,11. MBh. 1,4309. fg. 3,2992. 11425. 4,110. 6,724. 9,1632. 13,7719. R. 2,79,13. 5,49,14. 33. Mṛkkh. 26,7. 47,23. Çâk. 73,1. Ragh. 3,39. 15,62. Kâm. Nîtis. 14,37. Kathâs. 3,69. 5,66. 16,17. 19. 23,82 (सु°). 33,57. 75,26. Râǵa-Tar. 4,527. 545. 579. रक्षिवर्ग m. *Leibwache* AK. 2,8,1,6. H. 722. Halâj. 2,278. In comp. mit dem obj.: अमृत° MBh. 1,1426. नर्तनागार° 4,788. रथ° 2069. त्रिलोक° Vikr. 5. तत्स्थान° Kathâs. 13,24. 25,249. गज° 43,35. अन्तःपुर° 5,60. Pańkat. ed. orn. 53,16. गोत्र° Râǵa-Tar. 1,92. मात्रोश्चारित्ररक्षित्वात् (so ist zu lesen) 6,166. in comp. mit dem im abl. gedachten Begriffe: गायत्री सर्वरक्षिणी (der Comm. fasst सर्व als Object) R. 7,109,8. रिपु° Kathâs. 29,107. स्वकार्यभ्रंश° 15,12. व्यसन° 33,63. *vermeidend, sich scheuend vor:* वैर° 39,238. — Vgl. आकाश°, कोश°, द्वार°, नगर°, नगरी°, पशु°, पुर°.

रक्षोगणभोजन m. N. einer Hölle, *in der man den* Rakshas *zur Speise dient,* Bhâg. P. 5,26,7.

रक्षोघ्न (2. रक्षस् + घ्न) 1) adj. (f. ई) Rakshas *zurückschlagend* oder *tödtend:* सूक्त Kauç. 126. धूप Suçr. 1,16,9. 172,21. 180,13. Râma Weber, Râmat. Up. 296. ओषधी R. Gorr. 2,25,20. मन्त्रचक्र Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,113. Lampe Colebr. Misc. Ess. I, 191. मन्त्र Madhus. zu Bhag. 11,36 im ÇKDr. Kathâs. 20,138. subst. mit Ergänzung von मन्त्र in रक्षोघ्नजापिन् 62,97. — 2) m. a) *Semecarpus Anacardium* Trik. 2,4,13. — b) *weisser Senf* Ratnam. 150. — 3) f. ई *Acorus calamus* Ratnam. 24. — 4) n. a) *saurer Reisschleim* Trik. 2,9,10. H. 416. — b) *Asa foetida* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. राक्षोघ्न.

रक्षोजननी f. *Nacht* (Rakshas *erzeugend*) Trik. 1,1,104.

रक्षोऽधिदेवता f. *die an der Spitze der* Rakshas *stehende Göttin* Kathâs. 25,100.

रक्षोभाष् s. u. 2. भाष्.

रक्षोमुख m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

रक्षोयुज् adj. *Gefährte des* Rakshas RV. 6,62,8.

रक्षोवाह m. pl. N. pr. eines Volksstammes MBh. 7,2436.

रक्षोविक्षोभिणी f. N. pr. einer Göttin (*die* Rakshas *in Aufregung versetzend*) Verz. d. Oxf. H. 19,a,29.

रक्षोहण adj. = रक्षोहन् gaṇa गोषदादि zu P. 5,2,62. Davon रैक्षोहणक adj. *das Wort* रक्षोहण (रक्षोहन्) *enthaltend* ebend.

रक्षोहत्य n. *das Schlagen der* Rakshas RV. 6,45,18.

रक्षोहन् 1) adj. *die* Rakshas *schlagend* RV. 2,23,3. 7,8,6. 73,4. 9,1,2. 37,3. 10,87,1. 97,6. 103,4. VS. 5,24. fg. Çat. Br. 1,6,1,11. 7,4,1,37. — 2) m. a) angeblich N. pr. des Liedverfassers von RV. 10,162. — b) *Bdellion* Râǵan. im ÇKDr.

रक्ष्ण (von 1. रक्ष्) m. *Schutz* P. 3,3,90. Vop. 26,180. AK. 3,3,8. H. 1523.

रक्ष्य (wie eben) adj. *zu hüten, zu schützen, zu bewahren, in Acht zu nehmen:* रक्ष्योऽहं पुत्रवत्त्वया MBh. 3,1863. 14,490. R. 2,96,51. R. Gorr. 1,63,21. 79,13. 4,17,38. 5,23,5. Çâk. 155. Kâm. Nîtis. 15,17. Spr. 907, v. l. 1314. Kathâs. 15,112. 62,82 (अ°). Râǵa-Tar. 4,358. Bhâg. P. 10,48,29. Mârk. P. 69,35. fg. 132,31. आत्मा हि सर्वदा रक्ष्यो दारैरपि धनै-

रपि Spr. 4293. त्रैलोक्यजीवितेनापि यो रक्ष्यः Râǵa-Tar. 3,43. आत्मा च रक्ष्यः सततं भोजनादिषु MBh. 15,187. स्त्रियः zu hüten Jâǵn. 1,181. Spr. 502. Varâh. Bṛh. S. 78,11. सदा स्वेभ्यः परेभ्यश्च रक्ष्यो राजाभिरत्निभिः Kâm. Nîtis. 7,29. सूक्ष्मेभ्यो ऽपि प्रसङ्गेभ्यः स्त्रियो रक्ष्या विशेषतः Spr. 5283. स्यात्मवधात् zu hüten vor, abzuhalten von Kathâs. 5,74. धर्मव्यतिक्रमात् 113,14. भृत्यैः रक्ष्य उपस्करः in Acht zu nehmen Jâǵn. 2,193. ब्रह्मस्वम् MBh. 13,4842. अस्थीनि zu hüten, zu bewachen Kathâs. 64,79. शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षम् Ragh. 2,40. 56. स गुणास्तेन गुणवता रक्ष्यः संवर्धनीयश्च Spr. 614. यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः Ragh. 3,48. समय MBh. 1,5527. vor dem oder wovor man sich hüten muss, zu vermeiden Kathâs. 28,185. लोक 34,236. लोकतो ऽपि हि ते रक्ष्यः परिवादः R. 2,36, 30. स्कन्धावारस्य मृत्यवः Kâm. Nîtis. 16,39. अन्योऽन्यवियोगिता Kathâs. 15,94. 32,96. 56,115. Râǵa-Tar. 4,345. रक्ष्यतम vor Allem zu hüten: सत्यं तु मे रक्ष्यतमं न राज्यम् MBh. 3,10285. R. Gorr. 2,52,6. M. 8,359. रक्ष्य Mṛkkh. 58,18 fehlerhaft für रक्त, wie schon Stenzler bemerkt hat. — Vgl. गो°, दू°.

रख्, रंखति (गतौ) Dhâtup. 5,22. — Vgl. रङ्ख्, रिख्, रिङ्ख्.

रग्, रगति (शङ्कायाम्) Dhâtup. 19,23. अरगीत् P. 7,2,5, Schol. — रग्, रागयति (आस्वादने) = रक् Dhâtup. 33,63, v. l.

रघ्, राघयति (आस्वादने) = रक् Dhâtup. 33,63, v. l.

रघट s. u. रघु.

रघु (von रंह्) 1) adj. a) rennend, dahinschiessend; m. Renner: अत्यो न वाजी रघुरज्यमानः ṚV. 5,30,14. 4,5,13. des Indra 10,49,2. fem. 1,52,5. 4,41,9. अश्वे रघ्वी 6,63,9. — श्येन 5,45,9; auch AV. 8,7,24, wo रघटो steht, wäre रघवौ (= श्येनाः) ganz passend. compar. रघीयंस् TS. 7,4,9, 1. — b) leicht, wandelbar: क्रतु ṚV. 8,33,17. — Vgl. मदेरघु und लघु. — 2) m. N. pr. a) eines alten Königs und Vorfahren Râma's, dessen Genealogie verschieden angegeben wird; im Hariv. erscheinen sogar zwei Raghu unter den Voreltern Râma's. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,30. Hariv. 819. fgg. R. 1,70,38 (72,27 Gorr.). 2,110,28 (119,25 Gorr.). (दिलीपः) अवेक्ष्य धातोर्गमनार्थम् (vgl. रङ्घ्) अर्थविच्चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम् Ragh. 3,21. Uttarar. 74,11 (96,3). VP. 383. 416 (ein Sohn Jadu's). Râǵa-Tar. 1,191. Kshitîç. 58,12. °विलास Verz. d. Oxf. H. 13,a,41. °चरित 42. pl. रघवः die Nachkommen Raghu's Ragh. 1,9. 15,7. Râǵa-Tar. 1,191. Râma führt die Beinamen रघूत्तम R. 1,65,5. 3,50,6. रघुप्रवर 49,57. रघुवर R. im ÇKDr. रघूद्वह Çabdar. im ÇKDr. Ragh. ed. Calc. 12,69. °नायक Verz. d. Oxf. H. 136,b, No. 262. Vgl. राघव. — b) eines Sohnes des Çâkjamuni, = राहुल Ind. St. 3,149. — c) eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124,b,12. — 3) m. so v. a. रघुवंश 2) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,156; vgl. रघुकार.

रघुकार m. der Verfasser des Raghuvamça, Bein. Kâlidâsa's Trik. 2,7,26.

रघुज adj. vom Renner stammend ṚV. 9,86,1.

रघुटिप्पणी f. ein Commentar zum Raghuvamça Verz. d. B. H. No. 508.

रघुदेव 1) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 244. °भट्टाचार्य oder °न्यायालंकारभट्टाचार्य 245,b, No. 617. 525,c. Verz. d. B. H. No. 685. Hall 30. 40. fgg. 51. fg. 59. 61. 68. 80. — 2) f. ई Titel eines von Raghudeva verfassten Commentars Hall 30. Mack. Coll. I, 18.

रघुद्रु adj. rasch —, wie ein Renner laufend ṚV. 1,140,4. 5,6,2. 8,1, 9. 10,61,16.

रघुनन्दन m. 1) Raghu's Nachkomme, Bein. Râma's Çabdar. im ÇKDr. R. 1,52,12. 56,12. 61,11. Weber, Râmat. Up. 300. — 2) N. pr. eines neueren Autors, des Verfassers der 28 Tattvâni, Wilson, Sel. Works 2,60. Gild. Bibl. 465. fgg. °भट्टाचार्य Verz. d. B. H. No. 1403. °दीक्षित Hall 4. रघुनन्दनाचार्यशिरोमणि Colebr. Misc. Ess. II, 45.

रघुनाथ m. 1) Bein. Râma's Çabdar. im ÇKDr. Ragh. 15,54. Verz. d. Oxf. H. 13,b,2. 4. 14,a,11. Weber, Râmat. Up. 362. Wilson, Sel. Works 1,99. रघुनाथाभ्युदय m. Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 533. — 2) N. pr. verschiedener Männer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 3. Wilson, Sel. Works 1,56. 59. 135. Verz. d. B. H. No. 118. 722. 823. Verz. d. Tüb. H. 13. Verz. d. Oxf. H. 148,a, No. 318. 292,a, 52. 525,c. Hall 50. 152. °चक्रवर्तिन् Colebr. Misc. Ess. II, 37. °तर्कवागीशभट्टाचार्य Hall 7. °दास Wilson, Sel. Works 1,156. 158. fg. 167. Verz. d. Tüb. H. 13. °दीक्षित Verz. d. Oxf. H. 150,a, No. 319. °भट्ट Hall 158. 175. fg. 179. Wilson, Sel. Works 1,158. fg. °भट्टाचार्य Verz. d. B. H. No. 650. °भट्टाचार्यतार्किकशिरोमणि Hall 82. °भट्टाचार्यशिरोमणि 80. Verz. d. Oxf. H. 241,a, No. 587. °शिरोमणिभट्टाचार्य Hall 31. 66. 72. °सरस्वती 203. अनन्तानन्दरघुनाथयति 134.

रघुपति m. 1) Bein. Râma's Ragh. 12,104. Megh. 12. Kathâs. 72,92. Bhâg. P. 9,10,20. 11. 20. Ind. St. 8,423,4. Verz. d. Oxf. H. 132,b,10. 139,a, No. 276. 181,b,8. — 2) N. pr. des Vaters des Lexicographen Gaṭâdhara Verz. d. Oxf. H. 189,b, No. 434. °भट्टाचार्य Hall 40. रघुपत्युपाध्याय Verz. d. Tüb. H. 13.

रघुपत्मजंहस् (रघु-पत्मन् + जं°) adj. leichtbeschwingt: वेनं दुषद्वो रघुपत्मजंहाः ṚV. 6,3,5.

रघुपत्वन् adj. schnell fliegend: सप्तयः ṚV. 1,85,6. देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति 10,6,4.

रघुमन्यु adj. raschen Eifers voll ṚV. 1,122,1.

रघुयत् (partic. von रघुय् und dieses von रघु) adj. rasch dahineilend ṚV. 4,5,9. रघूयते dat. TBr. 3,7,13,4.

रघुया (von रघु) adv. rasch, leichthin: वयो न पप्तू रघुया परिज्मन् ṚV. 2,28,4.

रघुयामन् adj. rasch fahrend ṚV. 9,39,4.

रघुराम m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 52,10 u. s. w.

रघुवंश m. 1) Raghu's Stamm R. Gorr. Einl. 2. 2,104,20 (95,19 Schl.). — 2) Titel des bekannten von Kâlidâsa verfassten, Raghu's Stamm verherrlichenden Kunstgedichts. °संजीवनी Titel von Mallinâthas Commentar zum Raghuvamça Verz. d. Oxf. H. 113,a,26. 126,a,5.

रघुवर्तनि adj. leicht hinrollend, von einem Wagen ṚV. 8,9,8. übertragen auf ein Ross 9,81,2.

रघुवीर m. 1) Bein. Râma's Weber, Râmat. Up. 296. — 2) N. pr. eines Autors, = रघुदेव Verz. d. B. H. No. 685.

रघुष्यद् (रघु + स्यद्) adj. eilig ṚV. 1,64,7. 85,6. 140,4. 3,26,2. 4,5,9. 5,25,6. 73,5. 8,34,17. AV. 3,7,1. 13,3,16. रघुस्यद् (sic) = लघुस्यद् Kâç. zu P. 8,2,18, Vârtt. 2.

रघुस्यद् s. u. रघुष्यद्.

रघूयत् s. u. रघुयत्.

रङ्क m. *Hungerleider, Bettler*; adj. = कृपण, मन्द (मन्ह H. an.) H. an. 2,14. Med. k. 30. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,40. Gegens. राजन् Spr. 718. 2582. Vṛddha-Kâṇ. 10,5. कङ्क° so v. a. *ein ausgehungerter Reiher* Prab. 87,12. प्रेत° Mâlatim. 78,17. — Vgl. जल°, मत्स्य°, मीन°, रण°, राध°.

रङ्कु m. 1) *eine Art Antilope* AK. 2,5,10. H. 1293. Halâj. 2,75. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit P. 4,2,100. gaṇa कच्छादि zu 4,2,133. — Vgl. जल°, राध°, राङ्कव.

रङ्कुमालिन् m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 69,89.

रङ्कर s. रत्कार.

रङ्गु N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,18. wohl fehlerhaft für वङ्गु.

रङ्ख्, रङ्खति (गतौ) Dhâtup. 5,23. — Vgl. रख्.

रङ्ग्, रङ्गति (गतौ) Dhâtup. 5,36.

रङ्ग (von रञ्ज्) 1) m. a) *Farbe* Trik. 3,3,67. H. an. 2,45. fg. Med. g. 19. न भाति वाससि क्लिष्टे रङ्गयोग इवाहितः Suçr. 2,157,8. वासो यथा रङ्गवशं प्रयाति MBh. 5,1269. — b) *nasale Färbung eines Vocals* Çikshâ 26. 30; vgl. Ind. St. 4,269. 362 und रक्त. — c) *Theater, Schaubühne, Schauplatz, Arena* P. 6,4,27, Sch. H. 282. Halâj. 1,97. = नृत्ययुद्धवोः (ist wohl नृत्यभू und युद्ध) H. an. = नृत्ये रणक्षितौ Med. = नृत्य, रण, खल Trik. — MBh. 1,152. 4415. 4417. 5347. 3,2193. 2198. 4,341. 345. 6,3528. 7,3932. Hariv. 4211. 4532. यथाचार्योपदेशेन रङ्गशोभी भवेन्नरः Bhar. Nâṭjaç. 34, 82. रङ्गाद्बहिस्तु नेपथ्यम् Bhar. beim Schol. zu Çâk. 3,6. °प्रवेश Mṛkkh. 17,11. 82,23. Kathâs. 49,14. Râǵa-Tar. 1,223. रङ्गविघ्नोपशान्ति Sâh. D. 281. Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,22. 41. मल्ल° Bhâg. P. 10,36,24. 42,33. °पीठ Daçak. 77,11. शैलूषस्येव मे राज्यरङ्गे ऽस्मिन्वल्गतश्चिरम् Râǵa-Tar. 2, 156. तारुण्यकेलारति° Çaur. 34. *Theater* so v. a. *die Zuschauer* Sâṁkhjak. 59. अहो रागबद्धचित्तवृत्तिरालिखित इव सर्वतो रङ्गः Çâk. 4,12. fg. रङ्गं प्रसाद्य मधुरैः श्लोकैः Daçar. 3,4 = Sâh. D. 284. °प्रसादन (°प्रसाधन gedr.) Pratâpar. 25,*a*,9. — d) *Borax*. — e) *der aus der Acacia Catechu gewonnene Catechu-Extract* Râǵan. im ÇKDr. — f) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,353. 396. fgg. — 2) n. (m. n. Med.) = वङ्ग *Zinn* AK. 2, 9,106. Trik. 2,9,34. 3,3,61. 67. H. 1042. H. an. Med. — Vgl. अनङ्ग°, केलि°, दीर्घरङ्गा, दग्धरङ्गा, नटरङ्ग, नी°, पट्ट°, पत्त°, पूर्व°, मत्स्य° (unter °रङ्क), युद्ध°, रण°, राज°, श्री°, स°, सु°.

रङ्गकार (रङ्ग + 1. कार) m. *Färber*: रजकं रङ्गकारम् Bhâg. P. 10,41, 32. °क dass. Hariv. 4470.

रङ्गकाष्ठ n. *Caesalpina Sappan Lin.* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. पट्टरङ्ग.

रङ्गक्षेत्र n. N. pr. einer Oertlichkeit Hall 203.

रङ्गचर m. *Schauspieler, Gladiator* u. s. w. Varâh. Bṛh. 19,6.

रङ्गज (रङ्ग + 1. ज) n. *Mennig* Ratnam. im ÇKDr.

रङ्गजीवक m. 1) *Färber*. — 2) *Schauspieler* Çabdar. bei Wilson.

रङ्गण n.: गोपीनां चैव रङ्गणम् (v. l. für रक्षणम्) vielleicht *das Tanzen* (von रङ्ग) Pañkar. 1,7,72.

रङ्गद (रङ्ग + 1. द) 1) m. a) *Borax*. — b) *der aus der Acacia Catechu gewonnene Catechu-Extract*. — 2) f. आ *ein best. weisser Farbestoff*, = स्फटी, दग्धरङ्गा Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गदत्त (wohl n.) Titel eines Schauspiels Sâh. D. 191,12.

रङ्गदायक n. *eine best. Erdart*, = कङ्कुष्ठ Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गदृढा f. = दग्धरङ्गा Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गद्वार f. *die Thür —, der Eingang zu einem Theater, — zu einer Schaubühne* Hariv. 9116. Bhâg. P. 10,36,25.

रङ्गद्वार n. *der Prolog in einem Schauspiel* Sâh. D. 279. 128,16. fgg.

रङ्गनाथ 1) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. I, 334. 337. II, 324. 396. 421. 452. 454. Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255. 136,*a*, No. 262. 151,*a*,27. Hall 31. 56. 180. eines Scholiasten des Sûrjasiddhânta. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,41 (रङ्गनाथ).

रङ्गपताका f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. 118,5.

रङ्गपत्री f. *die Indigopflanze* Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गपुष्पी f. desgl. ebend.

रङ्गबीज n. *Silber* Trik. 2,9,32. Çabdar. im ÇKDr.

रङ्गभूति f. *die Vollmondsnacht im Monat* Âçvina Çabdar. im ÇKDr.

रङ्गभूमि f. *Schauplatz, Kampfplatz* Çabdar. im ÇKDr. MBh. 1,5327. Pañkat. 35,3.

रङ्गमङ्गल n. *eine Feierlichkeit auf der Bühne* Sâh. D. 138,9.

रङ्गमण्डप *Schauspielhaus* Kathâs. 71,75. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,24.

रङ्गमल्ल 1) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 873. — 2) f. ई *die indische Laute* Çabdar. im ÇKDr.

रङ्गमाणिक्य n. = माणिक्य *Rubin* Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गमातर् f. 1) *Lack* H. 685. an. 4,124. Med. t. 216. Hâr. 219. — 2) *Kupplerin* Med. — 3) = त्रुटि H. an.

रङ्गमातृका f. *Lack* Trik. 2,6,36.

रङ्गराज m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 130,*a*,13. eines Gelehrten, der auch °दीक्षित, रङ्गराजाध्वरिन्, रङ्गराजाध्वरिवर, रङ्गराजाध्वरीन्द्र genannt wird, 113,*b*,37. 213,*a*, No. 505. Colebr. Misc. Ess. I,337. Verz. d. B. H. No. 632. Hall 114. 153. 192. 194. °स्तव m. Titel einer Schrift 19.

रङ्गलासिनी f. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdak. im ÇKDr.

रङ्गवती (f. von रङ्गवत् und dieses von रङ्ग) f. N. pr. einer Frau, die ihren Gatten Rantideva umbrachte, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

रङ्गवल्लिका f. Bez. *einer best. beim Opfer gebrauchten Pflanze* Sañsk. K. 19,*a*,1. 5. Prajogar. 2,*b*,3. रङ्गवल्ली f. dass. Weber, Kṛshṇaǵ. 279.

रङ्गवस्तु n. *Farbestoff* Pañkar. 1,7,38.

रङ्गवाट *ein eingehegter Schauplatz für Kämpfe, Spiele, Tänze* MBh. 3,803. Hariv. 4534. 9113.

रङ्गवाराङ्गना f. *eine Bajadere* Spr. 1233.

रङ्गविद्याधर m. *ein Meister in der Schauspielkunst* Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,36. 39.

रङ्गशाला f. *Schauspielhaus, Tanzsaal* Çabdar. im ÇKDr.

रङ्गाङ्गण (रङ्ग + अ°) n. *Schauplatz, Arena* MBh. 1,5352.

रङ्गाङ्गा (रङ्ग + 3. अङ्ग) f. *ein best. weisser Stoff*, = स्फटी Râǵan. im ÇKDr.

रङ्गाजीव (रङ्ग + आ°) m. 1) *Maler* AK. 2,10,7. H. 921. Halâj. 2,436. — 2) *Schauspieler* H. 328.

रङ्गारि (रङ्ग + अरि) m. *wohlriechender Oleander* Ratnam. im ÇKDr.

रङ्गावतरण (रङ्ग + अ°) n. *das Betreten der Bühne, die Beschäftigung*

eines Schauspielers MBh. 12,10795. Kull. zu M. 4,215.

रङ्गावतारक (रङ्ग + अ°) m. *Schauspieler* H. 328. M. 4, 215.

रङ्गावतारिन् m. dass. Gaṭâdh. im ÇKDr. Jâǵn. 1,161. 2,70.

रङ्गिन् (von रङ्ग) 1) adj. *a) hängend —, Genuss findend an:* तुरंगगति° Çatr. 1,165. — *b) die Bühne betretend:* नटयोरिव रङ्गिणोः Bhâg. P. 10, 72, 35. — 2) f. °णी *Asparagus racemosus Willd.* Gaṭâdh. im ÇKDr. = कैवर्तिका Râǵan. ebend.

रङ्गेश (रङ्ग + ईश) m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 130, *a*, No. 235.

रङ्गेश्वरी (रङ्ग + ई°) f. wohl N. pr. oder Bein. der Gamahlin Rañgeça's ebend.

रङ्गेष्टालुक n. *eine Art Zwiebel* Trik. 2,4,34 (रङ्गेष्टा° gedr.). im Index रङ्गेष्टालु, रङ्गेष्टालुक.

रङ्गोजि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 177, *a*, No. 402. रङ्गोजीभट्ट Hall 78. fg. fälschlich रङ्गोजिभट्ट Verz. d. B. H. No. 764.

रङ्गोपजीविन् (रङ्ग + उ°) m. *Schauspieler* R. Gorr. 2,90,15. Verz. d. Oxf. H. 120, *b*, 5.

रङ्गोपजीव्य (रङ्ग + उ°) m. dass. Varâh. Bṛh. S. 9, 43.

रङ्घ्, रङ्घते (गतौ) Dhâtup. 4,33. act. *eilen, rennen:* द्वारं ररङ्घतुर्याम्यम् Bhaṭṭ. 14,15. auf diese Wurzel spielt Kâlidâsa an in der Stelle: (दिलीपः) अवेक्ष्य धातोर्गमनार्थमर्थविच्चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम् Ragh. 3, 21. Vgl. रंह्. — caus. रङ्घयति *sprechen* oder *leuchten* Dhâtup. 33,120.

रङ्घनाथ s. u. रङ्गनाथ 2).

रङ्हस् n. = रंहस् *Eile* Bhar. im Dvirûpak. ÇKDr. Sûrjaç. 71 in Haeb. Anth. 211, wo रङ्हः st. रंहः zu lesen ist; vgl. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,213.

रच् *verfertigen:* रचिष्यति (करिष्यति die neuere Ausg.) Hariv. 6373. — रचयति (प्रतियत्ने, v. l. प्रयत्ने und कृत्याम्) Dhâtup. 35,12. 1) *verfertigen, bilden, errichten, bereiten, zurechtmachen, hervorbringen, zu Stande bringen, bewirken:* शाकरचित *verfertigt aus* Varâh. Bṛh. S. 79,13. 14. 17. 39. मायाविकल्परचितैः स्यन्दनैः Ragh. 13,75. रचितवलयैः Spr. 490. नगरं मायारचितम् Kathâs. 3,78. योगी स्वाश्रमं रचयित्वा प्रतिवसति स्म Z. d. d. m. G. 14,573,19. यावत्ते रचयामि चित्रामहम् Kathâs. 53,157. तत्र तत्र च दृश्यन्ते रचिताः काष्ठराशयः R. 3,16,8. मत्त एवाविदूरे च शयनं रचयात्मनः R. Gorr. 2,53,5. Gît. 5,10. सेतवः — भगवद्रचिताः Bhâg. P. 3,21,54. 23,21. पञ्चभूतरचिते शरीरे 31,14. धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा AK. 2,7,23. काचस्फटिकयोः खण्डैः — रचितं व्याघ्रालंकरणम् Kathâs. 24,184. रचयामास स्वोत्तरीयेण पाशम् 90,73. रक्तपुष्पैर्मण्डलं रचयित्वा (v. l. für कृत्वा) Vet. in LA. (III) 10,20. स (व्यञ्जकः) चतुर्विध आहार्यो रचितो भूषणादिना । वचसा वाचिको ऽङ्गैनाङ्गिकः सत्त्वेन सात्त्विकः ॥ H. 283. (मेघः) विद्युत्प्रभारचितपीतपटोत्तरीयः Mṛkkh. 76,8. Bhâg. P. 3,28,32. 30,9. 4,7,39. 12,15. 16,19. 5,1,38. 11,12. 6,16,41. 8,5,44. 9,8,25. 9,47. Nîlak. 158. पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः Spr. 1168. भ्रूभङ्गे रचिते 2083. Prab. 12,1. अङ्कपाली रचय 40, 11. मयायं रचितो ऽञ्जलिः R. 2,13,12. 62,7. Kathâs. 26,287. 27,49. 53, 153. Bhâg. P. 4,20,21. 6,3,30. रचितातिथ्य Kathâs. 28,84. 33,87. 44, 27. रचितोत्सव 25,170. रचितमङ्गल 20,27. 26,271. 43,235. रचितस्वागत 79. रचितानति 18,347. रचयन्त्यां गतागतम् 3,66. रचितध्यान 24,144. रचयन्त्यस्य सपर्याम् Bhâg. P. 3,2,2. 15,47. माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं ताराम्बुधेरीहते Spr. 2920. त्वया रचितपूर्वं (v. l. für चरितपूर्वं) नीवारबलिम् *dargebracht* Çâk. 96. रचयति विघातम् Varâh. Bṛh. S. 52,5. चिन्ताम्, चिन्ताः *sich Sorgen machen* Prab. 90,20. 43,13. रचितार्थ = कृतार्थ *der sein Ziel erreicht hat* Kathâs. 67,112. *verfassen:* पदानि रचयन्ती Çâk. 63. पञ्च तन्त्राण्येतानि रचयित्वा Pańkat. 5,11. Varâh. Bṛh. S. 21,2. Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 30. मन्दं मन्दं रचयति पदम् *erdenkt einen Vers* und zugleich *bereitet sich eine Stellung* Spr. 1215. रचितं मृषा *ausgedacht, erfunden* Kathâs. 49,140. *machen zu:* रचितश्च राजा। यदैव सुग्रीवकपिः परेण Bhaṭṭ. 12,37. — 2) *anbringen, thun an, in* (loc.): शतधा रचिताः शूरैः शतघ्न्यो रत्नसां गणैः R. 5,72,9. त्वया रचितस्तिलको वक्त्रे 36,34. रचितं त्वया स्वयमङ्गेषु ममेदं कुसुमप्रसाधनम् Kumâras. 4,18. रचयति चिकुरे कुरुबककुसुमम् Gît. 7,23. अङ्केषु रचयति चन्दनालेपनानि Sâh. D. 71,2. न वा मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे (auf einem Gemälde) Çâk. 145. रचयिष्यामि तनुं विभावसौ Kumâras. 4,34. पाशो ऽत्र त्वया मे रच्यताम् *befestige* Kathâs. 13,98. ततो वर्णाः पञ्च (ह्रस्वाः) रचिताः *angebracht* Çrut. (Br.) 40. रचितधी *dessen Gedanken gerichtet sind auf* (loc.) Bhâg. P. 4,7,29. 6,16,39. — 3) रचित *versehen mit* (instr. oder im comp. vorangehend): सप्तप्राकाररचिता (पुरी) Hariv. 10010. अरुन्धनत्र° 13896. रत्नच्छायारचितवलिभिः (v. l. für खचित) Megh. 36. कुर्म्यस्थलानि ज्योतिष्छायाकुसुमरचितानि 67. (क्रीडाशैलः) रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः (रचित = खचित Comm.) 75. ताम्बूलीनां दलैस्तत्र रचितापानभूमयः Ragh. 4,42. मार्गेण भङ्गिरचितस्फटिकेन 13,69. सुगन्धिपुष्परचिते समे देशे Suçr. 1,241,8. विशेषोपक्षासरचितपद Bhar. Nâṭjaç. 18,95. — 4) mit caus. Bed. *bewirken, dass Jmd Etwas thut, bringen zu;* mit dopp. acc.: ममैतस्मिन्दृष्टे हृदयमवधानं रचयति Uttarar. 97,9 (127,14). — 5) in der Stelle इतस्ततस्तान् (वाजिनः) रचयन्द्रोणाश्चरति वेगितः MBh. 7,3096 so v. a. *tummelnd*, also = चारयन् (चरयन् wäre eine ungewöhnliche Form), welches nicht zum Metrum passt.

— आ caus. 1) *bereiten:* मधुपर्कमारचय्य Itih. bei Sâj. zu Ṛv. 1,125,1. *verfassen* Madhus. in Ind. St. 1,16,1 v. u. — 2) *sich aufsetzen:* आरचितमुण्डमाल Daçak. in Benf. Chr. 183,6. — 3) *versehen mit:* इत्यारचय्य वपुरर्णशतार्धकेन Pańkar. 3,1,24. आरचय्य भुवि गोमयाम्भसा स्थण्डिलम् 6,2.

— उप caus. *bilden, hervorbringen:* मनोरथोपरचितप्रासादवापीतटक्रीडाकाननकेलिकौतुकजुषाम् Spr. 1307. स्व आत्मन्युपरचितस्थिरजङ्गमालयाय Bhâg. P. 12,12,67.

— वि caus. 1) *verfertigen, bilden:* नार्वं विरचये (zugleich *verfassen*) रम्यां तरणाय गुणैर्युताम् Verz. d. Oxf. H. 100, *b*, No. 155. *errichten* (eine Statue) Râǵa-Tar. 1,175 (विरचय्य mit der ed. Calc. zu lesen). 4, 512. 6, 306. पाशं विरचयामास लतया *verfertigte aus* Kathâs. 80, 42. 95, 31. 104,71. क्षितिविरचितशय्य *zurechtgemacht* Kumâras. 7,94. *vollbringen:* (नानायागेषु) विरचिताङ्गक्रियेषु Bhâg. P. 5,7,6. दीर्घा वन्दनमालिका विरचिता दृष्ट्यैव नेन्दीवरैः *gebildet, hervorgebracht, bewirkt* Spr. 1168. ad Çâk. 193 (ऋतुविरचित° zu lesen). Kir. 5,31. Bhâg. P. 1,3,30. 3,15,42. 31,48. 4,1,55. 5,3,6. 20,41. 8,12,10. 9,19,27. *verfassen:* श्लोका विरच्यन्ते Kuvalaj. 3, *a*. Varâh. Bṛh. S. 56,31. Gît. 4,10 (zugleich *verrichten*). Madhus. in Ind. St. 1,16,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 138, *b*, No. 273. व्यरीरचत् 200, *a*, 13. व्यरचि Inschr. in Journn. of the Am. Or. S. 7,13, Çl. 50. Pańkat. 103,4. LA. (III) 12,13. LA. (I) 67,12. 68,16. *erfinden, er-*

sinnen: इति विरचितवाग्भिर्बन्दिपुत्रैः (könnte einfach auch bedeuten *diese Worte gesprochen habend*) RAGH. 5,75. विरचितपदं गेयम् MEGH. 84. 101. MÂLAV. 77. एवं विरचितोक्तिश्च धूर्ते KATHÂS. 24,74. वचो विरचितम् 43, 206. तेन मया तस्योपरि वधोपाय एष विरचितः PAÑKAT. 86,18. — 2) *anlegen, thun an, in:* कुशलविरचितानुकूलवेषः RAGH. 5,76. नवामेकामेकावलिमपि मयि त्वं विरचयेः Spr. 2792. मुक्ताजालं चिरविरचितम् MEGH. 94. फणासु विरचिता महामणयः BHÂG. P. 5,24,31. यस्मिन्निदं विरचितं व्योम्नीव जलदावलिः 9,18,49. शिरोविरचिताञ्जलि KATHÂS. 19,87. — 3) विरचित *versehen mit* (instr.) MEGH. 19. 61.

रचन (von रच्) 1) n. *das Ordnen, Anordnen, Einrichten, Vorbereiten, Composition:* माया त्रूपशरीरवेषरचने MṚKKH. 50,17. कुर्वे पुस्तकवरस्य रम्यरचनम् Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,9. अष्टपदीप्रबन्ध° 129,*b*,1. Gewöhnlich f. आ *Ordnung, Anordnung, Einrichtung, Vorbereitung, Betreibung, Bewerkstelligung; Erzeugniss, Werk, eine literärische Composition:* व्यूहस्य MBH. 8,2132. व्यूहरचनां विधाय PAÑKAT. 9,23. यथेयमावयोः शैले संग्रामरचना कृता HARIV. 3451. स्तोकाप्याकल्पंरचना SÂH. D. 138. भूषाणामर्धरचना 149. नाभ्यस्ता कषायवस्त्ररचना so v. a. *die Kleider sind noch nicht oft getragen worden* MṚKKH. 114,5. संक्षिप्ता वस्तुरचना *eine gedrängte Anordnung* SÂH. D. 422. संगीतरचनायां कृतायाम् MÂLAV. 19,1. विक्लितदुर्गरचन adj. PAÑKAT. 148,7. शराणां पत्त्ररचना *das Einsetzen der Federn in die Pfeile* HÂR. 116. भ्रुकुटि° *das Runzeln der Brauen* Spr. 752. MEGH. 51. इष्टार्थस्य *Anordnung* BHAR. NÂṬJAÇ. 19,48. DAÇAK. 1,49. SÂH. D. 407. प्रगुण° DAÇAK. 1,4. अर्थ° *das Betreiben seiner Sache, Verfolgung seines Ziels, Bemühung* BHÂG. P. 3,9,10. 23,8. मृत्कुम्भवालुकारन्ध्रपिधान° SÂH. D. 64,11. आरेभिरे समवसरणास्य रचनाम् so v. a. *begannen das Werk* ÇATR. 1,174. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 214. भव्यानां प्रभसिद्ध्युपायरचनाचिन्तां विधत्ते विधिः so v. a. *das Ausfindigmachen, Erdenken* KATHÂS. 43,256. अनिन्द्यपदप्रमाणवाक्यप्रपञ्च° Verz. d. Oxf. H. 187,*b*,33. महती निवासरचना so v. a. *ein grosses Gebäude* MṚKKH. 52,4. पानभूमिरचनाः *künstlich hergestellte Trinkplätze* RAGH. 19,11. प्रतिकृतिरचनाः *Bildnisse* 18,52. अनेकविधपट° PAÑKAT. 132,24. कनक° *Goldsachen* KATHÂS. 46,283. गीति° *Gesangstück* RÂGA-TAR. 5,380. वचन° *geschickte Reden, Beredtsamkeit* PAÑKAT. 68,5. 161,2. भवदुःखभार° *Gebilde* Spr. 664. जैमिनिकोषसूत्र° *Composition* Verz. d. Oxf. H. 167,*a*,33. अयभिदो रचनानुवादः *Werk, That* BHÂG. P. 3,15,23. 25,26. अनङ्ग° LA. 83,4. सन्मङ्गलोपचाराणां सैवादिरचनाभवत् RAGH. 10,78. रचनानिर्विशेषम् RÂGA-TAR. 3,95. सत्वररचनम् adv. *schnell, eiligst* GIT. 5,14. रचनाः *künstliche Gebilde* GAIM. 1,24. नातिलघुविपुलरचनाभिः *eine literärische Composition* VARÂH. BṚH. S. 1,2. उदात्तरचनान्वित so v. a. *Stil* SÂH. D. 189,5. Nach den Lexicographen ist रचना = परिस्पन्द AK. 2,6,3,38. = प्रतियत्न TRIK. 2,6,41. = ग्रन्थन, गुम्फ u. s. w. H. 633. HALÂJ. 4,45. = व्यूह H. 747. HALÂJ. 5,9. = निवेश, स्थिति H. 1499. = पाश, भार, उच्चय, हस्त, पक्ष u. s. w. in comp. mit einem Worte, das *Haupthaar* bedeutet, H. 568. Vgl. कूटरचना (auch KATHÂS. 57,115), केश° (auch P. 2,3,44, Sch.), दृत्त°, धूर्त°, पत्त°. — 2) f. आ personif. als Gattin Tvashṭar's BHÂG. P. 6,6,42.

रचयितर् (wie eben) nom. ag. *Verfasser:* अस्य त्रूपकस्य Verz. d. Oxf. H. 142,*a*, No. 290.

रचित 1) partic. adj. s. u. रच्. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

रचितत्व (von रचित) n. *das Verfasstsein* SARVADARÇANAS. 129,6.

रचितव्य HARIV. 8234 fehlerhaft für रक्षितव्य, wie die neuere Ausg. liest.

रञ्, रञ्ज् *a*) रँजति, रँजते (रागे) DHÂTUP. 23,30. P. 6,4,26. VOP. 8,133. अनुरञ्जन्ति R. 7,99,11 aus metrischen Rücksichten. — *b*) रँज्यति, रँज्यते (रागे) DHÂTUP. 26,58. P. 3,1,90. VOP. 24,9. — ररञ्जतुस् und ररञ्जतुस् VOP. 8,133. erhält keinen Bindevocal KÂr. 2 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. रक्त्वा und रंक्त्वा P. 6,4,32. — 1) रज्यति und °ते *sich färben, sich röthen, roth sein:* रज्यति (und °ते) वस्त्रं स्वयमेव P. 3,1,90, Sch. अरज्यत etwa *färbte sich* AV. 15,8,1. अरज्यत् ÇIÇ. 9,7. तवाधरो रज्यति NAISH. 3,120. रज्यत् 7,60. 22,52. 55. नेत्रे स्वयं रज्यतः UTTARAR. 102,18 (138,2). चक्षुषी तव रज्येते Spr. 4036. — 2) रज्यति und °ते *in Aufregung gerathen, aus seiner Gemüthsruhe kommen, sich hinreissen lassen, entzückt sein von, seine Freude haben an* (instr.) NAISH. 7,60 (act.). कृतविघ्नो ऽपि बलिना व्यक्तं रागेण रज्यते Spr. 2961. बलप्राणेन शूराणाम् — अरज्यत जनः सर्वः MBH. 4,355. रज्यन्ते न कथाभिः Spr. 5035. अन्योऽन्यमथ रज्यन्ते सर्वे MBH. 14,1059. याभिर्वियुक्ता रज्येयं नाह्नमेकमपि क्षणम् *froh werden*, — *sein* KATHÂS. 45,358. वक्ति रज्यदरज्यद्वा कार्याकार्ये (acc. du.) सतां मनः 112,88. ÇIÇ. 9,7. Gewöhnlich mit einem loc. verbunden in der Bed. *Gefallen finden an, sich hingezogen fühlen zu, sich verlieben in:* रञ्जनीयेषु रज्यति कोपनीयेषु कुप्यति NILAK. 16. आर्यकर्मणि रज्यन्ते Spr. 3725. को हि रज्येद्रसान्तरे KATHÂS. 18,346. क्षणान्तयिणि सापाये भोगे रज्यन्ति नोत्तमाः DṚSHṬÂNTAÇ. 59 in HAEB. Anth. S. 222. न कामे ऽपि वेश्या रज्यति KATHÂS. 38,39. आढ्ये कल्पतराविव नित्यं रज्यन्ति जननिवहाः Spr. 3259. सज्जने रज्यते जनः 1205. 701. तेषु रज्येथाः MBH. 12,5908. रामे रज्जतु (lies रज्यतु) मे मनः Verz. d. Oxf. H. 166,*b*,17. KATHÂS. 43,165. तस्यामार्यपुत्रश्च रज्यति 31,83. संनिकृष्टे निकृष्टे च कष्टं रज्यन्ति कुस्त्रियः 64,124. निर्गुणानपि न द्वेष्टि न रज्यति गुणिष्वपि SÂH. D. 111. स्त्रियो वा केषु रज्यन्ते विरज्यन्ते च ताः पुनः MBH. 13,2234. Spr. 967. — 3) रँजति = गतिकर्मन् NAIGH. 2,14. — रक्त partic. s. bes.

— caus. 1) *färben, röthen:* इदं रँजनि रजय किलासं पलितं च यत् AV. 1,23,1. अहं कंसस्य वासांसि रञ्जयामि HARIV. 4472. P. 6,4,24, Vârtt. 3, Sch. चरणौ रञ्जयत्यस्याश्चूडामणिमरीचिभिः KUMÂRAS. 6,81. 7,19. रञ्जयन्दिशः MBH. 12,9998. ad ÇÂK. 78. GIT. 10,6. BHÂG. P. 8,8,8. नृपस्तद्वनं महत्। तेजसा रञ्जयामास संध्याभ्रमिव भास्करः MBH. 1,6772. स्वतेजसा रञ्जयते जगत् so v. a. *erhellt, erleuchtet* 14,1101. श्वेतातपत्रशशिनोपरि रज्यमानः (= शोभातिशयं नीयमानः Comm.) BHÂG. P. 4,7,21. रञ्जित *gefärbt, geröthet* H. an. 2,189. MED. t. 48. वाससी शुक्ले महारजनरञ्जिते MBH. 8,2528. SUÇR. 1,14,1. 43,14. ṚT. 1,5, v. l. 6,13. KATHÂS. 37,25. 71,213. 124,22. Spr. 3445. PAÑKAT. 132,24. Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,18. जगामास्तं दिनकरः संध्यारागेण रञ्जितः HARIV. 4839. MBH. 8,2170. क्रोधरञ्जितलोचन HARIV. 13770. R. 6,20,28. द्वारो मणिमयाश्चैव तपनीयेन रञ्जिताः 93,6. RAGH. 3,64. VIKR. 60. VARÂH. BṚH. S. 24,14. BṚH. 12,17. KATHÂS. 40,3. 56,322. PAÑKAR. 4,1,34. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 18. वनं राकेशकररञ्जितम् *erleuchtet, erhellt* BHÂG. P. 10,29,21. तेजसा चैव रञ्जितः R. 5,87,11. यथा कर्मफलैर्देही रञ्जितस्तमसा वृतः। विवर्णो वर्णमाश्रित्य देहेषु परिवर्तते MBH. 12,9999. सुरञ्जित *geschickt gefärbt*

Kathâs. 24, 184. समरञ्जित *gleich gefärbt* Hariv. 11960. 11997. 12180. — 2) *zur Freude stimmen, erfreuen, beglücken, entzücken, zufriedenstellen:* रञ्जयेन्मन: Bhar. Nâṭjaç. 19, 52. Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, 6. Pañkat. 31, 22. चित्तं मयि रञ्जयन् Bhâg. P. 11, 13, 12. रञ्जयतीमानि भूतानि Maitrjup. 6, 7. MBh. 7, 2187. रञ्जयिष्यति यल्लोकमयमात्मविचेष्टितैः Bhâg. P. 4, 16, 15. जगत्ति Verz. d. Oxf. H. 256, *b*, 19. प्रजाः M. 7, 19. MBh. 3, 2234. R. Gorr. 1, 19, 28. 53, 7 (52, 7 Schl.). Spr. 1829. Kathâs. 51, 19. Gît. 10, 5. Râǵa-Tar. 2, 11. Bhâg. P. 1, 12, 4. Mârk. P. 120, 1. राष्ट्रं च रञ्जयामास वृत्तेन MBh. 1, 4009. पौरजानपदांश्च रक्तान्रञ्जयितुम् R. 2, 112, 11 (122, 11 Gorr.). Daçak. 2, 21. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति Spr. 39. Kathâs. 6, 54. 12, 77. 13, 117. 14, 59. 39, 243. 47, 106. 50, 162. Râǵa-Tar. 5, 418. Pañkat. 44, 20. प्रजा रञ्जयते MBh. 1, 6264. 13, 7700. बलं संभाषासंप्रदानेन रञ्जयस्व R. 7, 64, 5. कलिङ्गसेनया प्रीत्या रञ्ज्यमानः स तस्थिवान् Kathâs. 34, 167. रञ्जित *erfreut, beglückt, zufriedengestellt* Sâv. 5, 40 (चरन्ति ताः st. च रञ्जिताः MBh. 3, 16788). R. Gorr. 2, 1, 33. 4, 28, 9. 7, 109, 14. अरञ्जितश्च बालो ऽपि दोषमुत्पादयेद्ध्रुवम् *wenn er nicht befriedigt wird* Kathâs. 14, 36. 19, 78. 37, 25. 52, 2. Râǵa-Tar. 3, 145. 5, 437. Verz. d. Oxf. H. 120, *a*, 31. Pañkat. 113, 24. सुरञ्जित Kathâs. 45, 337. — 3) रञ्जयति und रञ्जयति unter den अर्चतिकर्माणः Naigh. 3, 14. — 4) रजयति मृगान् = रमयति मृगान् P. 6, 4, 24, Vârtt. 3. Vop. 8, 133. 18, 22.

— intens. रारजीति *in freudiger Aufregung —, ausgelassen sein:* प्राङ्के शिशानो अर्षति । अन्तरिक्षेण रारजत् ṚV. 9, 5, 2.

— अनु 1) *sich entsprechend färben, — röthen:* अन्वरज्यदतुषारकरः Çiç. 9, 7. संध्यानुरक्ते नभसि Varâh. Bṛh. S. 24, 18. — 2) *sich hinreissen lassen, entzückt sein, Gefallen finden:* तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च Bhag. 11, 36. सर्वलोको ऽनुरज्येत कथं त्वनेन कर्मणा R. 2, 58, 28. Spr. 972. नैर्गुण्यान्नानुरज्यते (स्त्रीः) 3421, v. l. अन्वरज्यत् Çiç. 9, 7. नानुरज्जन्न (lies नानुरज्यन्न) चास्ते Râǵa-Tar. ed. Calc. 3, 146. *sich hingezogen fühlen zu Jmd, Jmd treu anhängen, Jmd lieben;* mit acc. der Person: अनुरज्यन्ति R. 7, 99, 11. अनुरज्यन्ति तं प्रजाः Spr. 3814. MBh. 12, 3496. नानुरज्यन्ते तं प्रजाः 14, 71. 74. R. 3, 55, 15. 4, 54, 10. 6, 10, 22. समस्थमनुरज्यन्ते विषमस्थं त्यजन्ति च (स्त्रियः) R. ed. Bomb. 3, 13, 5. mit loc. der Person: अशुद्धप्रकृतौ राज्ञि जनता नानुरज्यते Pañkat. I, 335. भ्रातुर्मृतस्य भार्यायां यो ऽनुरज्येत कामतः M. 3, 173. वेश्यासु Kathâs. 57, 53. अनुरक्त *a) geliebt:* अनुरक्तः प्रजाभिश्च प्रजाश्चाप्यनुरञ्जयन् R. 2, 1, 10. प्रियया Bhâg. P. 3, 23, 38. — *b) treu anhängend, zugethan, ergeben, liebend* M. 7, 64. 209. MBh. 3, 2275. 2730. 2907. 12, 4262. R. 1, 7, 2. 2, 27, 22 (°चेतस्). 31, 16. 4, 9, 98. अनुरक्ता वयं गुणैः *in Folge von* 6, 104, 29. भार्यासु नानुरक्तासु (च विरक्तासु v. l.) Spr. 2134, v. l. 1634. 2209. 3543. Kâm. Nîtis. 1, 24. 5, 46. 8, 74. Vikr. 59, 21. Kathâs. 12, 38. Daçak. 93, 18. Râǵa-Tar. 3, 465. 4, 373. 473. Bhâg. P. 1, 5, 29. 16, 33. 3, 4, 10. 4, 9, 66. 20, 15. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. *Jmd zugethan, hängend an;* mit acc. der Person MBh. 3, 2343. R. 2, 21, 16. 45, 1. 46, 5. 22. रामं कैर्गुणैरनुरक्तासि 3, 55, 20. Mṛkkh. 14, 4. Çâk. 146. mit loc. der Person MBh. 2, 1259. R. 2, 40, 4 (स्वनुरक्त). 70, 6. Spr. 5151. Bhâg. P. 1, 18, 22. किमनुरक्तो विरक्तो वापि मयि स्वामी Hit. 53, 18. त्वयि गाढमनुरक्ता सा *stark verliebt* Vet. in LA. (III) 9, 16. mit loc. der Sache *Gefallen findend an:* येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा Spr. 4897. die Ergänzung im comp. vorangehend: मुनिहिंसानुरक्तानाम् R. 3, 28, 20. रागानुरक्तचित्त so v. a. *unter dem Einfluss stehend von* Spr. 3961. संजीवककवचनानुरक्त Pañkat. 32, 9. प्रियानुरक्तं चेतः *an der Geliebten hängend* Kathâs. 9, 50. 18, 237. भृत्यानुरक्त Bhâg. P. 4, 9, 18. — 3) अनुरक्त *daran hängend, — befestigt:* रज्जवः Schol. zu Kâtj. Çr. 16, 5, 2. — Vgl. अनुरक्ति, अनुराग. — caus. 1) *entsprechend färben, — röthen:* तेजसास्यानुरञ्जितम् R. Gorr. 1, 39, 20. Hariv. 3624. Varâh. Bṛh. S. 44, 25. Gît. 2, 3. Râǵa-Tar. 4, 196. Bhâg. P. 10, 42, 5. *gefärbt* so v. a. *verklärt, gehoben:* अनुकम्पानुरञ्जितविशदरुचिरशिशिरस्मितावलोक 6, 9, 40. — 2) *für sich gewinnen, an sich* (acc.) *ziehen, — fesseln;* mit acc.: धर्मेण च प्रजाः सर्वा यथावदनुरञ्जयन् MBh. 1, 3504. R. 1, 7, 16 (17 Gorr.). 2, 1, 10. 107, 15. 4, 7, 10. Kâm. Nîtis. 8, 69. fg. तं स्वागतेनान्वरञ्जयत् Kathâs. 22, 86. तस्यास्य हृदयं मादृशी कानुरञ्जयेत् 46, 179. 50, 160. 56, 2. 98, 48. Daçak. 63, 17. 87, 7. अनुरज्य Kathâs. 40, 73. अनुरज्य (!) 124, 193. MBh. 2, 1014. पित्रापरञ्जितास्तस्य प्रजास्तेनानुरञ्जिताः Hariv. 321. R. Gorr. 2, 2, 26. 14, 9. 33, 13. Kathâs. 55, 101. छात्त्रगुणानुरञ्जितमनस् Pañkat. 34, 25 (ed. orn. 31, 3). 49, 2. — Vgl. अनुरञ्जक fg.

— अप 1) *sich entfärben:* श्वासापरक्ताधर *entfärbt, bleich* (unter अपरक्त fälschlich in अप + रक्त zerlegt) Çâk. 133. — 2) *abwendig werden:* नूनं मित्राणि ते रक्तः साधूपचरितान्यपि। स्वदोषादपरज्यन्ते MBh. 13, 5889. अपरक्त *abgeneigt:* मनुजानामपचारादपरक्ता देवताः Varâh. Bṛh. S. 46, 3. — Vgl. अपराग. — caus. *sich abgeneigt machen, Jmdes Liebe verscherzen;* mit acc. der Person: पित्रापरञ्जितास्तस्य प्रजास्तेनानुरञ्जिताः Hariv. 321.

— अभि 1) *entzückt sein, grosse Freude haben an:* (न) कथाभिरभिरज्यते Spr. 4428. अभिरक्त *ergeben, zugethan* MBh. 4, 16. *hängend an:* धर्माभिरक्त R. 7, 10, 32. — 2) अभिरक्त *entzückend, reizend:* (गीतम्) संरक्तमभिरक्तं च परया स्वरसंपदा R. Gorr. 1, 3, 61. — caus. *färben:* पद्मरेणवभिरञ्जित R. 4, 50, 12. तेजोभिरभिरञ्जितम् 1, 38, 21.

— समभि *roth erscheinen, funkeln:* को ऽयं नेत्रैः समभिरज्यते MBh. 12, 12592.

— उद् intens. *in Aufregung gerathen:* यस्मान्मे मन उद्दिव रारजीति AV. 6, 71, 2.

— उप 1) *sich färben, — röthen:* उपरक्त *gefärbt, geröthet:* कोपोपरक्तानि मुखानि Sâh. D. 337, 7. श्वासोपरक्ताधर schlechte v. l. für श्वासापरक्ताधर Çâk. 133. हविस् Çat. Br. 11, 4, 4, 5. — 2) *verfinsternd über Etwas* (loc.) *sich legen:* मनसि — तमश्चन्द्रमसीविदमुपरज्यावभासते Bhâg. P. 4, 29, 69. उपरक्त *verfinstert* (von Sonne und Mond) AK. 1, 1, 3, 10. H. an. 4, 100. fg. Med. t. 190. R. 1, 55, 9 (56, 9 Gorr.). 2, 34, 3. 4, 14, 3. Varâh. Bṛh. S. 5, 28. m. Bez. Râhu's H. an. — 3) उपरक्त *gefärbt* so v. a. *stehend unter dem Einflusse von* (instr. oder im comp. vorangehend): रजसा Bhâg. P. 3, 8, 33. अविद्याकामकर्मभिरुपरक्तमनसा 5, 14, 5. विषयोपरक्त 11, 5. Sarvadarçanas. 162, 4. 7. 8. — 4) उपरक्त *niedergedrückt, niedergebeugt* AK. 3, 1, 43. Trik. 3, 3, 150. H. 381. H. an. Med. — Vgl. उपराग. — caus. 1) *färben:* काचस्फटिकखण्डा हि नानारागोपरञ्जिताः Kathâs. 24, 178. अरुणाकिञ्जल्कोपरञ्जित Bhâg. P. 5, 17, 1. — 2) *afficiren, Einfluss üben auf* (acc.) Sarvadarçanas. 162, 16. उपरञ्जित *unter den Einfluss von — gebracht, unter dem Einfluss von — stehend* Gauḍap. zu Sâñkhjak. 40. — Vgl. उपरञ्जक fg.

— प्रति caus. *entsprechend färben, — röthen:* सूर्यांशुप्रतिरञ्जित MBH. 1,1412. ततो ऽस्तमगमत्सूर्यः संध्यया प्रतिरञ्जितः R. 6,14,24.

— वि 1) *sich entfärben, seine ursprüngliche Farbe verlieren:* चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् (vgl. SUÇR. 2,246,2) KÂM. NÎTIS. 7,12. केशा अपि विरज्यन्ते निःस्नेहाः Spr. 2983. act. VARÂH. BṚH. S. 78,19. विरक्तसंध्याकपिश RAGH. 13,64. — 2) *gleichgiltig werden, das Interesse für Personen und Sachen aufgeben, erkalten:* विरज्यते MBH. 3,13891. BHÂG. P. 3,13, 49. 30,4. 7,6,13. 11,34. विरज्य Spr. 1060, v. l. Schol. zu BHÂG. P. 1,4, 12. विरज्यन्ते मित्राणि SHAḌV. BR. 5,6. सेवकाः Spr. 2983. तदा चिरानुरक्तो ऽपि विरज्यते जनः 4805. तस्मादस्माद्विरज्येत ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 323. ततः कन्या विरज्यताम् MBH. 1,7411. विरज्यन्ति न मित्रेभ्यः 12, 6285. संसारे विरज्य KULL. zu M. 4,149. KAP. 3,66. स्त्रियो वा केषु रज्यन्ते विरज्यन्ते च ताः पुनः MBH. 13,2234. 2608. तस्यां स राजा विरज्येत् KATHÂS. 32,32. 37,144. 38,40. 39,202. श्रीर्न हृष्यति लङ्कायां विरज्यन्ति समृद्धयः BHAṬṬ. 18,22. विरक्त *a) gleichgiltig geworden* d. i. *kein Interesse mehr für Personen oder Sachen habend, erkaltet, abhold* MBH. 12,10374. KAP. 2,2. 4,23. KATHÂS. 28,18. BHÂG. P. 1,13,24. 3,16,7. 32,30. 7,14,5. 9,6, 53. रक्ताद्वृत्तिं समीहेत विरक्तस्य विवर्जयेत् KÂM. NÎTIS. 5,46. 8,74. रक्ते विरक्ते मध्यस्थे स्वामिनि Spr. 4224. सैवामृतलता रक्ता विरक्ता विषवल्लरी (sc. स्त्री) 1549. 1634. 2134. °प्रकृति 3158. 4629. KATHÂS. 33,185. 37,213. PAṄKAT. 60,5. HIT. 27,17. Verz. d. Oxf. H. 216,*a*,5. °भाव Spr. 3415. PAṄKAT. 33,16. °हृदय KATHÂS. 5,105. 36,126. अ° *ergeben, geneigt* Spr. 5352. एतस्माद्विरक्तः ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 13. मयि सा विरक्ता Spr. 2461. परदारेषु 5018. HIT. 53,19. KATHÂS. 3,45. भोगसंपदि 17,92. जीवितं प्रति 6,78. दानादान° Spr. 2045. कथा° HIT. 27,16. — *b) gleichgiltig geworden* d. i. *kein Interesse mehr erregend, für den man erkaltet ist:* विरक्ता TRIK. 2,6,4. RÂǴA-TAR. 2,155. — Vgl. विरक्ति, विराग. — caus. 1) *färben* so v. a. *fleckig machen:* तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरञ्जयेत् SUÇR. 1,315,10. — 2) *machen, dass Jmd gleichgiltig wird, — erkaltet:* युवतयः क्षणमात्राद्विरञ्जिताः so v. a. *alsbald erkaltend* Spr. 3642.

— सम् 1) *sich färben, sich röthen:* चिताधूमेन नीलेन संरज्यन्ते च पादपाः MBH. 12,5777. पुरा संरज्यते संध्या 1,6028. 6443. संरक्त *geröthet:* कोपसंरक्तनयन 1701. 5,273. 7066. R. 1,59,15. fg. 2,35,2. R. GORR. 1, 4,99. 3,22,20. 35,18. 51,24. 55,12. 56,39. 4,9,1. 5,2,21. 85,1. 7,8,2. Verz. d. Oxf. H. 256,*b*,40. — 2) संरक्त *entzückend, reizend;* vom Gesange R. GORR. 1,3,61. संरक्ततरमत्यर्थं मधुरं तावगायताम् R. SCHL. 1,4, 17. *hinreissend* (im Gesange): संरक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किंनरीभिः MEGH. 57; vgl. रक्त, रक्तकण्ठ. — caus. 1) *färben, röthen:* धातुसंरञ्जितशिल HARIV. 11860. — 2) *erfreuen, beglücken:* संरञ्जयन्प्रजाः BHÂG. P. 4,22,55.

— अनुसम्, भर्तारमनुसंरक्ता *ergeben, zugethan* R. 1,17,16 (17,5 GORR.).

— अभिसम्, partic. praet. pass. *hängend an, ergeben:* कामभोगाभिसंरक्तो मैथुनायोपचक्रमे R. 7,26,41.

रजँ gaṇa पचादि P. 3,1,134. m. 1) = रजस् *a) Staub* MED. ǵ. 13. AǴAJAK. bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 4,216. ÇABDAR. im ÇKDR. Hierher wird gezogen अर्थाः पादरजोपमाः Spr. 217, wo aber रजोपम eine auch sonst vorkommende Contraction von रजउपम ist. — *b) Blüthenstaub* MED. AǴAJAK. und ÇABDAR. कुङ्कुमरजन्यासाय PRASAṄGÂBH. 15, *a.* dagegen ist in पद्मपुष्परजोन्मिश्र R. 3,79,29 eine unregelmässige Contraction anzunehmen. — *c) Menstrualblut* MED. AǴAJAK. ÇABDAR. auch n. nach ÇABDAR. — *d) Leidenschaft* MED. AǴAJAK. ÇABDAR. — 2) N. pr. *a)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9,2575. — *b)* eines Fürsten, eines Sohnes des Viraǵa, VP. 165. — Vgl. अग्नि°, नी°, भृङ्ग°, वि°, स°.

रजउद्वास adj. (f. आ) = मलोद्वासस् KAUÇ. 35.

रजःपुत्र m. *ein Sohn der Leidenschaft, der Lust* so v. a. *ein sonst ganz unbekannter Mann* Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,36. 45. Wohl mit beabsichtigtem Anklange an राजपुत्र; vgl. रजस्तोक.

रँजक (von रञ्) m. 1) *Wäscher* (der sich auch mit dem *Färben* der Kleider beschäftigt) P. 3,1,145, Vârtt. 6,4,24, Vârtt. 5. VOP. 26,38. UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,32. AK. 2,10,10. TRIK. 2,10,4. H. 914. an. 3,86. HALÂJ. 2,438. रजकं रङ्गकारकम् HARIV. 4470. fgg. BHÂG. P. 10,41,32. PAṄKAT. 62,24. यो न जानाति निर्हर्तुं वस्त्राणां रजको मलम्। रक्तानां वा शोधयितुं यथा नास्ति तथैव सः॥ MBH. 12,3404. रजकेन यथा शुक्लं वस्त्रं भवति वारिणा MATSJA-P. 179,31 (nach AUFRECHT). JÂǴṄ. 1,164 (neben चैलधाव). R. 2,83,15 (90,15 GORR.). VARÂH. BṚH. S. 10,5. 15,22. 87,17. 41. नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति Spr. 666. को दाता रजको दद्याति वसनं प्रातर्गृहीत्वा निशि 5015. SÂH. D. 35,11. VOP. 5,32. रजकस्य गर्दभः KATHÂS. 63,132. fg. PAṄKAT. 214,25. HIT. 50,1. 17. 81,12. fg. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,29. 281,*b*,28. 282,*b*,48. रजकतन्तुवायम् P. 2,4,10, Sch. eine verachtete Klasse von Menschen COLEBR. Misc. Ess. II, 184. fg. तीवर्या धीवरात्पुत्रो बभूव रजकः स्मृतः Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,12. रजकी *Wäscherin* (nach PAT. zu P. 3,1,145 *die Frau eines Wäschers*) P. 3,1,145, Vârtt. VOP. 26,38. SÂH. D. 61,3. रजक्यां तीवराच्चैव कपालीति बभूव ह Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,12. Bez. *eines Frauenzimmers am 3ten Tage der Menses* VET. in LA. (III) 8,11. unter den 8 Akula bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,36. रँजिका *Wäscherin* PAT. zu P. 3,1,145. VARÂH. BṚH. S. 78,9. — 2) *Papagei* (शुक) H. an. st. dessen *clothes* (d. i. अंशुक) WILSON nach derselben Aut. und ÇKDR. nach VIÇVA. — 3) angeblich N. pr. eines Fürsten VP. 466, N. 5 und darnach LIA. I, Anh. XXXIII; fehlerhaft für राजक.

रजतँ (von रञ् = 5. अर्ज् wie अर्जुन und रजस्) UṆÂDIS. 3,111. 1) adj. *weisslich, silberfarbig* (AK. 3,4,11,82. H. an. 3,287. MED. t. 143); *silbern:* अग्नेर्भुज्युमायवे रजतं हरयाणे। रथं युक्तमसनाम सुषामणि ṚV. 8, 25,22. (पुरम्) रजतामन्तरिक्षमकुर्वत AIT. BR. 1,23. VS. 23,37. रजतं हिरण्यम् *weissliches Gold* d. h. *Silber* TS. 1,5,1,2. ÇAT. BR. 12,4,4,7. 13, 4,2,10. 14,1,3,14. KÂṬH. 10,4. सुवर्णरजतौ रुक्मौ ÇAT. BR. 12,8,3,11. TBR. 1,5,10,1. 7. 8,9,1. पात्र 2,2,9,7. 3,9,6,5. निष्क PAṄKAV. BR. 17, 1,14. ÂÇV. ÇR. 2,3,15. KHÂND. UP. 3,19,1. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. zu belegen nur das n. *a) Silber* AK. 2,9,97. H. 1043. H. an. MED. HALÂJ. 2,17. 5,5. AV. 5,28,1. 13,4,51. AIT. BR. 7,12. KÂTJ. ÇR. 10,2,37. 26,2.20. KAUÇ. 16. KHÂND. UP. 4,17,7. SHAḌV. BR. 6,6. M. 8,321. 11,57. 167. R. 1,53,11. सुवर्णरजतैः 2,32,14. 94,5. SUÇR. 1,5,2. VARÂH. BṚH. S. 64,1. KIR. 5,41. NAISH. 22,52. Verz. d. Oxf. H. 282,*a*,28. — *b) Gold* H. 1043. AK. 3,4,11,82 soll KSHÎRASVÂMIN nach AUFRECHT हेम्नि st. हारे lesen. — *c) Perlenschmuck* AK. 3,4,11,82.

H. an. Med. Halâj. 5,5. — d) *Blut.* — e) *Elfenbein.* — f) *ein best. Berg* (als neutr.! vgl. रजतकूट u. s. w.). — g) *ein best. See* (als neutr.!) H. an. — h) *Sternbild* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. महा°.

रजतकूट N. pr. einer *Kuppe* im Malaja-Gebirge Kathâs. 68,68.

रजतदंष्ट्र (र° + दंष्ट्रा) m. N. pr. eines Sohnes des Vagradamshtra, eines Fürsten der Vidjâdhara, Kathâs. 65,73.

रजतद्युति m. Bein. Hanumant's Çabdar. im ÇKDr.

रजतनाभ m. N. pr. eines mythologischen Wesens Hariv. 382. 385. वत्सनाभ an der ersten Stelle die neuere Ausg. — Vgl. रजतनाभि.

रजतनाभि 1) adj. *einen weisslichen Nabel habend* VS. 29,59. — 2) m. N. pr. eines Abkömmlings des Kubera AV. 8,10,25; vgl. रजतनाभ.

रजतपर्वत m. *ein Berg von Silber:* अंशुमान्नाम R. 4,40,45. °दान Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,23. N. pr. eines best. *Berges* (aber nicht des Kailâsa) Hariv. 9736.

रजतपात्र n. *Silbergefäss* AV. 8,10,23. Râǵa-Tar. 5,482.

रजतप्रस्थ m. Bein. des Kailâsa Trik. 2,3,1.

रजतभाजन n. *Silbergefäss* Suçr. 1,170,4.

रजतमय (von रजत) adj. (f. ई) *silbern* Varâh. Bṛh. S. 60,5. 81,26. Kathâs. 73,119. Schol. zu Naish. 22,53.

रजतवाह् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁsk. K. 184, *a*, 4.

रजताकर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,8.

रजताद्रि (रजत + अद्रि) m. *der Berg von Silber*, Bein. des Kailâsa H. 1028. Spr. 681.

रंजन (von रञ्ज्) Uṇâdis. 2,79. P. 6,4,24, Vârtt. 5. 1) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kauṇeja TS. 2,3,8,1. Pañkav. Br. 13,4,11. Vgl. राजनि. — 2) *Strahl* Çâñkh. Br. 7,4. — 3) n. *Safflor* Uǵǵval.; vgl. महा° (महारजनरञ्जित MBh. 8,2528).

रजनक m. N. pr. = रजन Ind. St. 3,460.

रजनि (Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,103) und रजनी (gaṇa गौरादि zu P. 4, 1,41) f. desselben Ursprungs wie रजस्. 1) *Nacht*, रजनि (überall nur aus metrischen Rücksichten gebraucht) AK. 3,5,6. Spr. 2294. 3178. Gît. 8,2. Kathâs. 18,145. 42,225. 47,96. Abhinanda bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,103. रजनी AK. 1,1,3,4. Trik. 3,3,257. H. 142. 144. an. 3,403. Med. n. 114. Halâj. 1,106. fg. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,103. AV. 1, 23,1. Jâǵñ. 1,248. MBh. 3,2721. 14765. 16821. R. 1,9,51. 13,36. 2,34, 33. 48,26. 63,3. 85,14. Suçr. 1,242,10. Çâk. 46,8. Mâlav. 84. Ragh. 9, 37. Kumâras. 4,11. Spr. 3317. 4184. Varâh. Bṛh. S. 38,5. 7. Kathâs. 4, 9. 18,213. Bhâg. P. 5,14,9. Pañkat. 128,11. 248,5. Hit. 9,5. Vet. in LA. (III) 3,21. Naish. 22,49. °केलि Verz. d. B. H. No. 540. रजनी unter den Beinn. der Durgâ Hariv. 3277. — 2) रजनी *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 44,9. = जनी, जतूका, जतुकृत् AK. 2,4,5,19. Med. *Curcuma longa* (wie alle Wörter mit der Bed. *Nacht*) Trik. H. an. Med. Viçva a. a. O. Ratnam. 58. Suçr. 1,42,2. 2,24,2. 62,11. 419,1. Naish. 22,49. °द्वय und रजन्यौ *Curcuma longa* und *aromatica* (= हरिद्रा und दारुहरिद्रा) Suçr. 1,133,7. 2,284,21. 357,1. रजनी *die Indigopflanze* H. an. Med. Viçva. Die Bedd. *Weintraube* bei Viçva und *Lack* in H. an. beruhen wohl auf einer Verwechselung von द्राक्षा mit लाक्षा und von जतु, जतुक (= लाक्षा) mit जतूका. — 3) रजनी N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,20,10. रजनी im Index zu VP. und रजानी im Text 183 fehlerhaft für राजनी. — Vgl. नवरजनी.

रजनिकर m. *der Nachtmacher, der Mond* Halâj. 1,43.

रजनिचर m. *Nachtwandler* d. i. *ein* Râkshasa MBh. 7,2607. R. 5, 76,23. Bhaṭṭ. 12,86.

रजनिंमन्य adj. *für Nacht geltend, — angesehen:* दिवस Bhaṭṭ. 7,13.

रजनी s. u. रजनि.

रजनीकर m. *der Nachtmacher, der Mond* H. 105, Sch. Çabdar. im ÇKDr. Gît. 7,22. 12,22. Bhâg. P. 4,28,34. °नाथ schlechte v. l. für रजनीचरनाथ Spr. 2583.

रजनीगन्ध m. *Polianthes tuberosa* Wilson; f. आ *eine best. Pflanze mit weisser Blüthe* ÇKDr.

रजनीचयनाथ schlechte v. l. für रजनीचरनाथ (s. u. रजनीचर) Spr. 2583.

रजनीचर adj. *in der Nacht wandelnd*, Beiw. des Mondes Hariv. 11802. °नाथ *der Schutzherr der Nachtwandler* oder *der Oberste der Nachtwandler* als Bez. *des Mondes* Spr. 2583. रजनीचर m. *ein* Râkshasa Çabdar. im ÇKDr. R. 3,31,4. 38. 53,61. 6,28,12. 30,4. 7,5,4. Nach Wilson und ÇKDr. auch *Nachtwächter* und *Dieb*.

रजनीजल n. *Schnee, Reif* Hâr. 67.

रजनीपति m. *der Herr —, der Gatte der Nacht, der Mond* Kathâs. 25,140.

रजनीमुख m. *Eintritt der Nacht, Abend* AK. 1,1,3,6. H. 144, v. l. Halâj. 1,109. Râǵa-Tar. 4,433.

रजनीय (von रञ्ज्) adj. *woran man seine Freude hat, entzückend:* °कर्मन् MBh. 2,2088. महनीय° ed. Bomb. — Vgl. रञ्जनीय.

रजनीरमण m. *der Gatte der Nacht, der Mond* Kathâs. 106,50.

रजनीहासा f. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdar. im ÇKDr.

रजयित्री (vom caus. von रञ्ज्) f. *Färberin* VS. 30,12.

रजःशय adj. (f. आ) so v. a. रजसि (= रजते) शेते Mah. *silbern* VS. 5,8. Sâj. zu Ait. Br. 1,23 citirt dafür रजाशय, wie auch अयाशय und हराशय; vgl. Ind. St. 10,364.

रजःशुद्धि f. *richtige Beschaffenheit der menses;* so heisst ein Kapitel im Çârîra Suçr. 1,9,7; vgl. 313,16.

रजस् (von रञ्ज् = 5. अर्ज् wie अर्जुन und रजत) 1) n. Uṇâdis. 4,216. P. 6, 4,24, Vârtt. 5. Vop. 26,68. a) *Dunstkreis, Luftkreis*, sofern darin *Nebel, Wolken* u. a. sich bewegen; pl. *die Lüfte;* jenseits ist *der Lichtraum des Himmels* (रोचना दिवः), wie αἰθήρ jenseits des ἀήρ. ṚV. 1,56,5. दिवो रज उपरमस्तभायः 62,5. पतत्रवती: श्येनो न भीतो अतरो रजांसि 32,14. न ते विव्यङ्महिमानं रजांसि 7,21,6. आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत् 87,2. रजः सूर्यो न रश्मिभिः (आपृणाति) 1,84,1. अस्य 124,5. अयं दिव इयर्ति विश्वमा रजः 9,68,9. 7,66,15. यो वां रजांस्यश्विना रथो वियाति रोदसी 8,62,13. क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय 1,168,6. 187,4. रजसो विमानं रथम् 2,40,3. य ईं राजानावृतुथा विदधद्रजसो (eher abl. als gen., wie Sâj. erklärt) मित्रो वरुणश्चिकेतत् 6,62,9. याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे AV. 4,25,2. यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः ṚV. 10,121,5. अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयो ऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि 6,69,5. असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते 10,82,4. AV. 7,25,1. 41,1. 10,3,9. 13, 2,8. 43. VS. 13,44. Shaḍv. Br. 1,2. Çat. Br. 14,8,15,4. TS. 3,5,4,2. —

Im Besondern α) *eines der Weltgebiete:* दिवो वा पार्थिवादधि। मक्लो वा रजसः RV. 1,6,10. 149,4. दिवि त्नयंत्ता रजसः पृथिव्याम् 7,64,1. पार्थिवम्, रजः, दिवः सदांसि VS. 34,32. दिवो रजसः पृथिव्याः Vâlakh. 9,3. या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य RV. 5,69,4. 54,4. 6,7,7. पार्थिवानि, रजांसि 31,2. पार्थिवान्युरु रजो अन्तरित्तम् 61,11. वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा 10,32,2. 149,2. AV. 13,1,7. 4,1,4. — β) *irdischer und himmlischer Dunstkreis;* in manchen der folgenden Stellen kann aber पार्थिव als subst. gefasst werden: *Erdenraum;* vgl. die Stellen unter α). आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि RV. 1,81,5. 90,7. 9,72,8. न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवम् 8,77,5. 1,154,1. 6,49,3. ये पार्थिवे रजस्या निषत्ताः 10,15,2. आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा 4,53,3. ऋभवो वाजमरुहन्दिवो रजः 1,110,6. — γ) drei *Dunstkreise:* अन्तरित्तम्, त्री रजांसि, त्रीणि रोचना RV. 4,53,5. je drei रोचना, द्यावः, रजांसि 5,69,1. AV. 13,3,21. तृतीये रजसि RV. 10,45,3. 123,8. 9,74,6. AV. 13,1,11. sechs RV. 1,164,6. — δ) du. *die untere und die obere Region* (über der Erde) Naigh. 3,30. RV. 1,160,4. विवर्तयन्ती रजसी समन्ते 7,80,1. उभे ते विद्म रजसी 99,1. मक्ली अपारे रजसी विवेविदत् 9,68,3. अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः 6,9,1. दूतो देवानां रजसी समीयसे 15,9. 4,42,3. 6. उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या समैरत् 56,3. — ε) *die obere und untere Grenze des Dunstkreises* (पार und बुध्न): (त्वमेतान्) अयोधयो रजस इन्द्र पारे RV. 1,33,7. त्नयन्तमस्य रजसः पराके 7,100,5. यो अस्य पारे रजसो विवेष 10,27,7. दूरे पारे रजसो रोचनाकरम् 49,6. या सिस्रतू रजसः पारे अध्वनः Vâlakh. 11,2. अयो वृत्री रजसो बुध्नमाशयत् RV. 1,52,6. तं देवा बुध्ने रजसः सुदंससं दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे 2,2,3. 4,1,11. 17,14. अन्तौ 5,47,3. पूर्वे अर्धे 1,92,7. 124,5. — ζ) रजसस्पतिः RV. 7,35,5 nach Sâj. Indra. — b) *Dust, Nebel; Düsterkeit, Dunkel* (vgl. ἀήρ); = रात्रि Naigh. 1,7. आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च RV. 1,35,2. 4. ज्राकृष्णं सुगेभिर्नक्तमूरुव्रू रजोभिः *im Dunkel* 116,20. 6,62,6. रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः 2. रजस्तमो मोप गाः AV. 8,2,1. पारयामि त्वा रजस उद्वा मृत्योरपीपरम् 9. केतुमानुद्यन्सहमानो रजांसि विश्वा आदित्य प्रवतो वि भासि 13,2,28. सूर्यस्य चत्नू रजसैत्यावृतम् RV. 1,164,14. सूर्यो न चत्नू रजसो विसर्जने 5,59,3. पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि 10,111,4. तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि *vom Dunst zum Licht* 53,6. धूमेनाग्नी रजसा च मध्यमः Nir. 12,26. — c) *Dunst, Staub* (AK. 2,8,2,66. 3,4,2,22. H. 970. Med. s. 30. fg. Halâj. 2,288); *Unreinigkeit, kleine Partikeln irgend eines Stoffes:* कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः RV. 8,43,6. यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वन् AV. 12,1,51. अश्व इव रजो डुधुवे वि तां जनान् 57. 10,1,32. रजः स्पर्शे मेध्यम् M. 5,133. 11,110. पार्थिवं रजः MBh. 1,6021. R. 1,28,14. 2,33,19. प्रशशाम मक्लीरजः 40,33. 72,31. 3,76,33. 4,39,9. रजोधूमाकुला दिशः Suçr. 1,22,2. 118,5. रजःकणा Ragh. 1,85. Varâh. Bṛh. S. 3,9. 38. 9,41. 16,40. 30,2. धूताधरजस् adj. Kathâs. 18,113. 244. Prab. 77,9. Bhâg. P. 3,17,5. 4,5,7. रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैः Ragh. 1,42. 4,29. 6,33. 12,82. Çâk. 8. Spr. 2700. 2816. Pankar. 1,14,100. अयो° Kauç. 8. मलयज° Spr. 3268. *Staubkörnchen:* जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचत्नते ॥ M. 8,132. Jâgn. 1,361. Varâh. Bṛh. S. 58,1. 2. Ind. St. 8,436. यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि Bhâg. P. 2,7,40. 8,23,19. Vgl. लोह°. — d) *Blüthenstaub* Med. सुमनो° AK. 2,4,2,17. पद्मपुष्प° R. 3,79,29. Megh. 34. 66. Çâk. 86. 131. Vikr. 26. Mâlav. 44. Bhâg. P. 4,24,22. अजात° adj. Spr. 135. — e) *das Staubige* d. i. *das aufgerissene und bebaute Land:* उजन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरू रजांसि पयसा मयोभुवः RV. 1,166,3. घृतैर्गव्यूतिमुत्ततं मधा रजांसि 3,62,16. परि अयांसि भरते रजांसि *sie fährt über die Flächen, die Felder* 10,75,7. — f) *die menses* (eig. *Unreinigkeit*) Nir. 4,19. AK. 2,6,1,21. 3,4,30,233. H. 536. Med. अरजोवित्ता कुमारी Kauç. 37. Gṛhjasaṁgr. 2,31. Suçr. 1,30,16. रसादेव स्त्रिया रक्तं रजःसंज्ञं प्रवर्तते 43,16. 44,18. रजसाभिप्लुतां नारीम् M. 4,41. रजसा समभिप्लुताम् 42. रजस्युपरते 5,66. 108. रजसाभिपरिप्लुता MBh. 3,523. असंप्राप्तरजा गौरी प्राप्ते रजसि रोहिणी Spr. 282. 2907. Varâh. Bṛh. S. 74,9. अजात° adj. Spr. 135. अदृष्ट° Halâj. 2,329. — g) in der Philosophie *die mittlere der drei Qualitäten* (सत्त्व, रजस् oder तेजस् und तमस्), *die den Geist verdüsternde Leidenschaft* (wobei an रज्, रञ्ज्, राग angeknüpft wird) AK. 1,1,4,7. 3,4,30,233. Med. Maitrjup. 5,2. M. 12,24. रागद्वेषौ रजः स्मृतम् 26. यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः। तद्रजो ऽप्रतिघं विद्यात् 28. तमसो लत्तणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते। सत्त्वस्य लत्तणं धर्मः 38. काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः 3,37. Sâmkhjak. 13. 54. Madhus. in Ind. St. 1,23,17. Suçr. 1,81,7. 2,537,18. Varâh. Bṛh. S. 66,9. Bṛh. 2,7. Weber, Râmat. Up. 289. 324. Bhâg. P. 3,8,13. रजोऽधिक *in dem das* Ragas *vorherrscht* Varâh. Bṛh. S. 69,8. *Leidenschaft* überh. MBh. 3,1086. शान्त° adj. Bhag. 6,27. रजोविरिक्तमनाः शशास Ragh. 14,85. अन्तर्गतमपास्तं मे रजसो ऽपि परं तमः Kumâras. 6,60. Kathâs. 20,128. Bhâg. P. 3,15,20. रोषरजोभिः (zugleich *Staub*) Spr. 2816. — h) *Zinn* H. ç. 159 (kein Fehler st. रङ्ग, da dieses im Text sich findet). — i) = ज्योतिस्, उदक, लोक, अहन् Nir. 4,19. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha VP. 83. — Vgl. अ°, दत्त°, नी°, परो°, पाद°, पुष्प°, भृङ्ग°, मक्ली°, वि°, स°, राजस.

रजस (von रजस्) adj. *trübe, dunkel:* नियान AV. 8,2,10. etwa *unrein, schmutzig* 11,2,25. — Am Ende eines adj. comp. = रजस् in अप्राप्तरजसा *die menses noch nicht habend* Gṛhjasaṁgr. 2,28.

रजसानु m. 1) *Wolke.* — 2) *Geist, Herz* (चित्त) Uṇâdik. im ÇKDr.

रजस्क am Ende eines adj. comp. von रजस् in नी° und वि°.

रजस्तमस्क adj. *von den Qualitäten* रजस् *und* तमस् *beherrscht:* असुराः Bhâg. P. 7,1,11.

रजस्तमोमय adj. *die Natur der Qualitäten* रजस् *und* तमस् *habend* Mârk. P. 68,28. 41.

रजस्तुर adj. *durch den Dunstkreis kommend, die Lüfte durcheilend* RV. 1,64,12. 6,2,2. 66,7. 9,48,4. 108,7.

रजस्तोक m. n. *das Kind* (तोक) *der Leidenschaft* d. i. *die Habsucht* Bhâg. P. 12,8,16. 25. — Vgl. रजःपुत्र.

रजस्य् (von रजस्), रजस्यति *zu Staub werden, zerstieben* Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

रजस्य (wie eben) adj. *dunstig* oder *staubig* VS. 16,45.

रजस्वल (wie eben) P. 5,2,112. Vop. 7,32. 1) adj. (f. आ) a) *bestäubt, mit Staub erfüllt* MBh. 7,1454. 8896. 9,1370. Bhâg. P. 7,13,12. रजस्वलात 5,13,4. 14,9. — b) f. *die menses habend, eine Frau während der menses* Vop. 7,33. AK. 2,6,1,20. H. 534. Med. l. 162. Halâj. 2,333. Gobh. 3,5,3. Çâṅkh. Gṛhj. 2,12. 6,1. M. 3,239. 5,66. Jâgn. 3,229. MBh.

2,2228. 4,1566. 12,1575. Suçr. 1,290,13. 2,147,12. 537,18. Ragh. 11, 60. Spr. 3051 (so v. a. *mannbar*). Kathâs. 75,113. Verz. d. Oxf. H. 33, *b*,16. 39,*b*,44. 85,*b*,33. °गमन 87,*b*,24. 283,*a*,3. 5. 6. 294,*b*,16. 311,*a*, 35. Vet. in LA. (III) 8,9. — *c*) *von der Qualität* Ragas *erfüllt, voller Leidenschaft* M. 6,77. चित्त Bhâg. P. 11,19,26. अतिरजस्वलमति 5,14,9. — *d*) als Erklärung von रजिष्ठ Nir. 8,19 nach Durga so v. a. उदकवत्. — 2) m. *Büffel* Trik. 2,5,4. H. 1282. Med.

रजस्विन् (wie eben) adj. *voller Blüthenstaub* und zugleich *von der Qualität* Ragas *erfüllt:* संसारसरोज Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 282.

रजःस्पृश् adj. *den Staub —, die Erde berührend:* न तावन्मानुषी येन पादौ नास्या रजःस्पृशौ Kathâs. 28,61.

रजाशय s. रजःशय.

1. रजि m. 1) N. pr. eines von Indra bezwungenen Dämons oder Fürsten: त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन्षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन् RV. 6, 26,6. nach Sâj. N. eines Mädchens oder so v. a. *Reich*. Vgl. die Vermuthung zu AV. 20,128,13. N. pr. eines Sohnes des Âju (MBh. 1,3150 nach der Lesart der ed. Bomb., राजि ed. Calc.). Hariv. 1476. VP. 406, 411. fg. Bhâg. P. 9,17,1. 12. fg. Verz. d. Oxf. H. 40, *a*, 33 und N. 3. — 2) unbekannt ist die Bed. des Wortes in folgender Stelle: उभा रजी न केशिना पतिर्दन् RV. 10,105,2. nach Sâj. *Himmel und Erde* oder *Sonne und Mond*.

2. रजि f. etwa *Richtung* (vgl. ऋजु): रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोस्तूतूर्षति पर्यग्रं दुवस्युः RV. 10,100,12.

रजिष्ठ s. u. ऋजु.

रजीकर् (रजस् + 1. कर्) *in Staub verwandeln* Vop. 7,84.

रजीयंस् s. u. ऋजु.

रजेषित (रजःऽइषित Padap.) adj.: अश्वेषितं रजेषितं शुनेषितं प्राज्म तदिदं नु तत् RV. 8,46,28. nach Sâj. रजस् = उष्ट्र oder गर्दभ und इषित = प्रापित.

रजोगात्र (रजस् + गात्र) m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha Mârk. P. 52,26.

रजोगुणमय adj. *die Qualität* Ragas *habend* Mârk. P. 68,24.

रजोग्रहि (रजस् + ग्र°) adj. Vop. 26,48.

रजोदर्शन n. *die Erscheinung der ersten menses* (रजस्) Sâmsk. K. 1,*a*.

रजोबल n. *Finsterniss* Trik. 1,2,1. H. ç. 19. Vielleicht richtiger रजोवल. — Vgl. रजस्वल.

रजोमेघ m. *Staubwolke* MBh. 9,1243. R. 1,28,14.

रजोरस m. *Finsterniss* Çabdar. im ÇKDr.

रजोवल s. रजोबल.

रजोहर m. *Wäscher* Çabdam. im ÇKDr.

रजोहरणधारिन् (?) m. = व्रतिन् Halâj. 2,189.

रज्जव्य (von रज्जु) n. *Seilzeug* Çat. Br. 6,7,1,28. Kâtj. Çr. 17,2,9. 26,2,7.

रज्जु (vielleicht von सर्ज्; vgl. स्रज्) Uṇâdis. 1,16. f. P. 4,1,66, Vârtt. Vop. 4,29. Siddh. K. 248,*b*,11. in comp. auch m. (कर्कटरज्ज्वा und °रज्जुना; vgl. Daçak. 71,2; रज्जुनि vermuthet AV. 20,133,3) ebend.; in der älteren Sprache auch रज्जू; acc. रज्ज्वम् ved., gen. रज्ज्वाम् (M. 11,168) und रज्ज्वोस् (P. 6,2,9, Sch.). 1) *Strick, Seil* AK. 2,10,27. H. 928. Med. ç. 14. Halâj. 2,442. या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य RV. 1,162,8. AV. 6, 121,2. 3,11,8. वरुण्या Çat. Br. 1,3,1,14. या रज्जुं (रज्जूं v. l.) सृजति TS. 2,5,1,7. Çat. Br. 10,2,3,8. 11,3,1,1. 14,1,3,11. रज्जू प्रवयति Çâṅkh. Çr. 17,3,7. दृवती die Schlange AV. 4,3,2. 19,47,8. Çat. Br. 4, 4,5,3. मौञ्जी 6,7,1,15. Kâtj. Çr. 16,5,2. कुश° Âçv. Gṛhj. 4,8,15. स्नाव° Kauç. 15. दर्भ° 39. °धान 44. °संदान Çat. Br. 14,3,1,22. अरज्जुबद्ध Kâtj. Çr. 7,6,14. अपसलवि सृष्ट्या रज्ज्वा परितत्य 21,3,22. रज्जूता 15,7,1. — M. 8,319. 11,168. ताड्याः स्यू रज्ज्वा वेणुदलेन वा 8,299. 9,230. रज्जुमास्थास्ये so v. a. *ich werde mich erhängen* MBh. 3,2163. R. 2,74,29. 78,7. 5,56, 132. Suçr. 1,25,10. 65,15. 161,21. त्रप्य° Mṛkkh. 84,14. सुवर्ण° 86,8. Spr. 1957. 2569. 3342. 3856. 4469. प्रेम रज्जुदृढबन्धनमुक्तम् (so ist zu trennen) 4607. Varâh. Bṛh. S. 43,58. 66. 95,40. °जालक 51,14. बबन्धुस्तं °बन्धेन Kathâs. 18,300. 305. 43,36. 64,100. °पेटा 107. °पीठिका 75,121. °पत्त्र 43,25. Bhâg. P. 1,7,34. त्रिकाण्डी Vop. 6,55. Pańkat. 76, 17. 135,3. Vet. in LA. (III) 8,13. Vedântas. (Allah.) No. 91. °च्छिद् P. 3, 2,61, Sch. °वर्तन 8,3,89, Sch. रज्जूद्धृतमुदकम् Uggval. zu Uṇâdis. 1,16. काष्ठ° *ein Strick zum Zusammenbinden der Holzscheite* R. 1,4,20. Am Ende eines adj. comp. im f. °रज्जुका Kathâs. 75,119. — 2) in der Med. *Sehnen, die von der Wirbelsäule ausgehen,* Suçr. 1,337,12. 338,15. Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,2 v. u. — 3) *Flechte* (वेणी) Med. — 4) Bez. *einer best. Constellation* Varâh. Bṛh. 12,2.11. — Vgl. पशु°, पाद°, पाश°, पूति°, वल्ली°, वात°.

रज्जुकण्ठ m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. — Vgl. राज्जुकण्ठिन्.

रज्जुदाल m. *ein best. Baum* Çat. Br. 13,4,4,6. — Vgl. राज्जुदाल.

रज्जुदालक m. *das wilde Huhn* Jâǵń. 1,174.

रज्जुभार m. N. pr. eines Lehrers gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. — Vgl. राज्जुभारिन्.

रज्जुवाल m. = रज्जुदालक M. 5,12.

रज्जुशारद् adj. *so eben vom Stricke kommend, so eben geschöpft:* Wasser P. 6,2,9, Sch.

रज्जुसर्ज m. *Seiler* VS. 30,7.

रञ्ज् s. निरञ्जन und vgl. लाञ्छ्.

रञ्ज् s. रज्.

रञ्ज s. जलरञ्ज.

रञ्जक (vom caus. von रञ्ज्) 1) adj. = रञ्जन H. an. 3,403. *a*) *färbend* Çârṅg. Saṁh. 1,5,10. Vâgbh. 12,13. Schol. zu Kap. 1,19. Nâgeça in Mahâbh. S. 10. m. *Färber* M. 4,216. रञ्जकी f. *Färberin* unter den 8 Akula bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,36. — *b*) *angenehm erregend, entzückend, erfreuend* Verz. d. Oxf. H. 138,*b*, No. 273. 199,*b*, No. 472. 200, *b*, No. 476. 211, *b*, No. 499 (f. रञ्जिका). — 2) m. *eine best. Pflanze*, = कम्पिल्लक. — 3) n. *Mennig* Râǵan. im ÇKDr.

रञ्जन (wie eben) 1) adj. = रञ्जक H. an. 3,403. = रागजनन Med. n. 113. *a*) *färbend:* °द्रव्य Mallin. zu Kumâras. 1,32. °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 152,5. — *b*) *angenehm erregend, entzückend, erfreuend:* हृदय° Gît. 10,7. Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,21. 200,*a*,5 v. u. जन° 199, *b*, No. 472. Gît. 1,19. जनरञ्जनी f. Bez. einer best. Gebetsformel Pańkar. 3,15,32. — 2) m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) Roxb. Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) wohl so v. a. *freundliche Begrüssung* Burn. Intr. 402, N. 2.

— b) Bez. verschiedener Pflanzen: *die Indigopflanze* AK. 2,4,2,13. *Nyctanthes arbor tristis* Çabdak. im ÇKDr. *Gelbwurz* Râǵan. im ÇKDr. *ein best. wohlriechender Stoff* ebend. ÇKDr. und Wilson lassen das Wort nach Med. noch andere Pflanzen bezeichnen, die aber in der gedr. Med. unter रञ्जिनी, in H. an. unter राञ्जिनी verzeichnet werden. — 4) n. a) *das Färben* Vâgbh. 12,13. केश° Verz. d. Oxf. H. 122,b,24. *Farbe:* नानारञ्जनरक्ता: MBh. 12,3689. हरिद्रारसरञ्जनस्य सौन्दर्यम् Spr. 5036. — b) *das Nasaliren:* उपधा° Çit. beim Schol. zu VS. Prât. 3,135. — c) *das Entzücken, Erfreuen, Beglücken, Zufriedenstellen* MBh. 12,1998. 2057. Hariv. 3069. R. 1,3,37 (33 Gorr.). Spr. 1215. Ragh. 4,12. 6,21. Râǵa-Tar. 3,102. 5,436. Mallin. zu Kumâras. 4,9. Verz. d. Oxf. H. 138, b, No. 273. Mârk. P. 27,4. — d) *rother Sandel* AK. 2,6,2,33. H 642. H. an. Med. — Vgl. केश° (s. auch oben u. 4) a), नखरञ्जनी, नेत्ररञ्जन, पाक°, मनो°, योनि°, रसिकरञ्जनी, स्त्रोरञ्जन.

रञ्जनक m. *ein best. Baum,* = कट्फल Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. पट्ट°.

रञ्जनद्रु m. *ein best. Baum,* = अच्छुक (?), vulgo आचगाछ ÇKDr.

रञ्जनीय (vom caus. von रञ्ज् und von रञ्जन nom. act.) adj. 1) *gut zu stimmen, zu erfreuen, zufriedenzustellen* Kathâs. 14,57. 35,43. — 2) *woran man seine Freude hat:* रञ्जनीयेषु रज्यति कोपनीयेषु कुप्यति Nilak. 16. Sarvadarçanas. 177,4. — Vgl. रजनीय.

रञ्जिनी f. Bez. verschiedener Pflanzen: *die Indigopflanze; Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* und = मुण्डारोचनिका Med. n. 113. Wilson und ÇKDr. nach derselben Aut. रञ्जनी, H. an. राञ्जिनी.

रट्, रटति (परिभाषणे, Vop. वाचि) Dhâtup. 9,10. *heulen, brüllen, schreien, krächzen, laut wehklagen:* पपात राक्षसो भूमौ रराट च भयंकरम् Bhaṭṭ. 14, 81. Verz. d. Oxf. H. 257,a,16. करटा (= उष्ट्रा:) रेटु: Bhaṭṭ. 14,5. घोराश्चाराटिषु: शिवा: 15,27. रटन्तो वायसा: Mṛkkh. 157,10. करट त्वं रट Spr. 2813. रटन्त: करटा: कटु Kâçikh. 68 53 (nach Aufrecht). रटन्ति मर्त्यसंघा: Varâh. Bṛh. S. 19,7. Kathâs. 18,109. vom Laute eines fallenden Beils: °पटुरटद्घोरधार: (nach einem Schol. पटुर -अट°) कुठार: Prab. 5,10. vom Laut einer Glocke: पटु रटति घण्टा Mâlatîm. 74,20. *rauschen, rauschend reden:* माघे मासि रटन्त्याप: किंचिदभ्युदिते रवौ। ब्रह्मघ्नमपि चाण्डालं कं पतन्तं पुनीमहे ॥ Wilson, Sel. Works 2,183. *laut verkünden:* रटन्तीह पुराणानि Weber, Kṛshṇaǵ. 221. *zujauchzen,* mit acc.: जनगणारटितैस्तज्जये: Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 30. रटित n. *Geschrei:* रटितैश्च कर्करेटा: Râǵa-Tar. 2,168. चातकचातक किं वृथातिरटितै: Spr. 3503. = कुहरित H. an. 4,104. — रटन्ती s. bes. Vgl. रठ्.

— caus. रटयति dass. Kâç. zu Dhâtup. 35,65.

— intens. *schreien, krächzen:* क्रौञ्चीं भयार्तामिव राररटन्तीम् R. Gorr. 2,77,32. करटो रारटीत्येष: Kâçikh. 56,26 (nach Aufrecht).

— आ *schreien, kreischen* Kathâs. 23,36. 70,94. Bhaṭṭ. 3,38, v. l. — Vgl. आरटि.

— परि vgl. परिराटक fg.

रटन (von रट्) n. *Beifallsruf:* विटाश्चाश्लीलरटनैर्वाहलभ्यं तस्य लेभिरे Râǵa-Tar. 6,158.

रटन्ती f. Bez. *des 14ten Tages in der dunkelen Hälfte des Monats* Mâgha, so genannt nach den bei diesem Feste gesprochenen Worten: माघे मासि रटन्त्याप: (s. oben u. रट्), Wilson, Sel. Works 2,183. fg. Jama in Tithjâdit., Matsjasûkta 55, Bṛhannîlatantra 1, Kâlikâ-P. und Kṛtjatattvârṇava im ÇKDr.

रट्टा f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 4,152.

रठ्, रठति (परिभाषणे) Dhâtup. 9,50. — Vgl. रट्.

रड्डु 1) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,281. 299. 345. 348. — 2) f. आ N. pr. einer Fürstin ebend. 8,3342. 3402. 3472. 3483. 3500.

रण् s. रन्.

रण (von रन्) Vârtt. 3 zu P. 3,3,58. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. 1) m. *Behagen, Ergötzen, Lust, Freudigkeit* ṚV. 1,116,21. मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय 3,47,1. अयं रणाय ते सुत: 8,17,12. असूत पृश्निर्महते रणाय मरुतामनीकम् 1,168,9. 3,34,4. अयं श्रेयो चिकितुषे रणाय 6,41,4. 7,20,5. 8,85,16. ता नं ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे 10,9,1. रणं कृधि रणाकृत् 112,10. VS. 14,3. दीर्घायुत्वाय बृहते रणाय AV. 2,4,1. 5,4. pl. ṚV. 6,27,1 (= स्तोतार: Sâj.). — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,14. Siddh. K. 249,a,5. (*Kampflust*) *Kampf* Naigh. 2,17. Nir. 4,8. 10,47. AK. 2,8,2,73. Trik. 3,3,137. H. 796. an. 2,151. Med. ṇ. 25. Halâj. 2,298. ṚV. 1,119,3. प्रापश्यद्वीरो अभि पौंस्यं रणम् 10,113,4. अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं रणाय 1,61,6. 9. धनंजयो रणे रणे 74,3. 6,16,15. AV. 5,2,4 (मदे मदे ṚV.). ṚV. 6,67,11. रणाय दस्युहत्याय 10,95,7. 8,33,9. त्वया वयं शाशद्महे रणेषु 10,120,5. रण: प्रववृते तत्र भीम: प्लवगरक्षसाम् Ragh. 12,72. Varâh. Bṛh. S. 46, 19. वचोज्जीवितयोरासीत्पुरोनि:सरणे रण: Spr. 4348. देवासुरो नाम रण: Bhâg. P. 8,10,5. Râǵa-Tar. 4,703. द्विषत्सैन्यैरथ प्रववृते रण: 6,243. क्व च शस्त्रं क्व च रणम् R. 3,13,24. रणे M. 7,90. 98. 9,323. MBh. 1,1181. 2,1375. 3,11964. 7,5916. R. 1,1,46. कथं तेषां मया रणे। स्थातव्यम् 22, 14. Spr. 2826. AK. 2,8,2,45. 64. 71. Pańkat. 218,16. Halâj. 5,32. रणस्य च पश्चिमे भागे 41. रणेन R. 5,89,14. रणाय समाहूत: Kathâs. 10,24. मृगयत्रणाम् Bhâg. P. 3,17,20. °विशारद MBh. 3,2485. °समुद्यमे Bhag. 1, 22. रणोद्योग Varâh. Bṛh. S. 46,25. रणागम 8,17. °संरम्भ Râǵa-Tar. 5, 334. °शिरसि Çâk. 157. 185. Spr. 1314. रणाग्र Kathâs. 47,78. °गोचर *im Kampfe begriffen, kämpfend* Mârk. P. 134,54. °स्थ MBh. 3,10270. रणैषिन् Verz. d. Oxf. H. 117,a,37. °मार्गकोविद *in den verschiedenen Arten des Kampfes erfahren* Bhâg. P. 3,17,30. वर्णा° Varâh. Bṛh. S. 47, 11. रति° Gît. 7,19. सिंहासन° *Kampf um* R. 5,89,13. — 3) m. *Laut, Ton* AK. 3,3,8. 3,4,12,51. Trik. H. 1400. H. an. Med. — 4) m. = कोण H. an. Med. *the quill or bow of a lute, etc.* Wilson. — 5) m. *Gang* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. धी°, बृहद्रण, महा°, मही°, सुते°.

रणक (von रन् oder रण) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9,12,14.

रणकर्मन् n. *Kampf* R. 3,60,38. 4,14,19. 7,23,32. 29,33. 36. Mârk. P. 113,37.

रणकाम्य्, °म्यति *Kampf wünschen* Bhaṭṭ. 5,44. 18,24.

रणकारिन् adj. *Kampf verursachend* Varâh. Bṛh. S. 3,35.

रणकृत् adj. 1) *Freude machend* ṚV. 10,112,10. — 2) *kämpfend, Kämpfer:* रणे रणकृतां वर: MBh. 2,1375. 7,5916.

रणक्षिति f. *Kampfstätte, Schlachtfeld* MBh. 6,2390. Hariv. 5598. Ragh. 7,46.

रणक्षेत्र n. dass. MBh. 5,7106.

रणक्षोणि f. dass. Prab. 3,5. °क्षौणि v. l.

रणांजय (रणम्, acc. von रण, + जय) m. N. pr. eines Fürsten VP. 463. Bhâg. P. 9,12,13.

रणतूर्य n. *Kriegstrommel* Trik. 1,1,122.

रणत्कार m. *Geklingel, Gerassel:* कङ्कण° Prab. 40,6. Mâlatîm. 15,14. 74,22. 86,15. *Gesumme* (der Bienen) Râga-Tar. 3,405. — Vgl. रन् und रणरण *Mücke.*

रणदर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148,*a*,7.

रणदुन्दुभि m. *Kriegstrommel* Spr. 1130.

रणदुर्गाधारणयन्त्र n. Bez. *eines best. Amulets* Verz. d. Oxf. H. 96,*b*,9.

रणपुरस्वामिन् m. Bez. einer best. Statue des Sonnengottes Râga-Tar. 3,462.

रणप्रिय 1) adj. *kampflustig* Kâm. Nîtis. 17,33. — 2) m. *Falke.* — 3) n. *die wohlriechende Wurzel von Andropogon muricatus Retz.* Râgan. im ÇKDr.

रणभट m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 121,276.

रणभू f. *Kampfplatz, Schlachtfeld* Bhâg. P. 3,1,37. 4,10,19. Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,4.

रणभूमि f. dass. MBh. 14,2360. Ragh. 10,45.

रणमत्त 1) adj. *rasend im Kampfe.* — 2) m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDr.

रणमुख n. 1) *der Mund des Kampfes* (und zugleich *Vordertreffen*): हुत्वा रणमुखे प्राणान् MBh. 13,4841. — 2) *Vordertreffen* Bhâg. P. 8,10,23.

रणमुष्टि m. *eine best. Pflanze,* = विषमुष्टि Râgan. im ÇKDr.

रणरङ्क m. *die Gegend zwischen den Fangzähnen eines Elephanten* Hâr. 204.

रणरङ्ग m. *Schlachtbühne, Schlachtplatz, Kampffeld:* °नटो नृत्यन्निव Râga-Tar. 8,348. °दुर्मद Bhâg. P. 6,11,8. °मल्ल = भोजराज, भोजपति Colebr. Misc. Ess. I,235. vielleicht ist so zu lesen auch in der Inschr. ebend. II, 143. fgg.

रणरण 1) m. *Mücke* Trik. 2,5,36. Vgl. रन्, रणत्कार. — 2) n. *Sehnsucht* Trik. 1,1,130.

रणरणक 1) m. n. *Sehnsucht, sehnsüchtige Gedanken um einen geliebten Gegenstand* H. 314. Halâj. 4,57. उत्कण्ठा संतापो रणरणको जागरस्तनोस्तनुता। फलमिदमहो मयाप्तं सुखाय मृगलोचनां दृष्ट्वा ॥ Sarasvatîk. 3,7 (nach Aufrecht). Mâlatîm. 24,19. Uttarar. 19,2 (25,11). — 2) *der Liebesgott* Trik. 1,1,39.

रणलक्ष्मी f. *Kriegsglück, Schlachtgöttin* Kathâs. 48,99.

रणवङ्कमल्ल Colebr. Misc. Ess. II, 143. fgg. vielleicht fehlerhaft für रणरङ्गमल्ल; s. u. रणरङ्ग.

रणवन्य m. N. pr. eines Fürsten Mârk. P. 101,6.

रणवृत्ति adj. *dessen Handwerk der Kampf ist:* पार्थिवाः Hariv. 5648.

रणशिक्षा f. *Kriegskunst* MBh. 1,5238.

रणशूर m. *Kriegsheld* R. 5,45,10.

रणसंकुल n. *Schlachtgetümmel* AK. 2,8,2,75. H. 799. an. 3,654. Med. l. 98.

रणसत्त्र n. *die als Opferhandlung gedachte Schlacht* MBh. 3,15313.

रणस्तम्भ m. 1) *Kriegsdenkmal.* — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,10. VP. 186, N. 11.

रणस्थान n. *Kampfstätte, Kampfplatz* MBh. 6,2523.

रणस्वामिन् m. *eine Statue des Çiva, als Herrn der Schlacht,* Râga-Tar. 3,454. 457. 5,394.

रणाग्नि (रण + अ°) m. *die als Feuer gedachte Schlacht:* हुत्वा शरीरं क्रव्याद्भ्यो रणाग्नौ MBh. 13,4840.

रणाङ्ग (रण + 3. अङ्ग) n. *ein Werkzeug der Schlacht, Schwert* u. s. w. Bhatt. 14,98.

रणाङ्गन (रण + अ°) n. *Kampfplatz, Schlachtfeld* MBh. 6,2797. 7,6242 (ed. Calc. रणाङ्गण). Râga-Tar. 1,63. 5,333.

रणाजि (रण + आ°) m. N. pr. eines Sâdhja Hariv. 13601. — Vgl. युद्धाजि.

रणाजिर (रण + अ°) n. *Kampfplatz, Schlachtfeld* MBh. 1,530. 1184. 5,718. 5843. 14,2398. 15,810. R. 3,35,96. 5,79,14. 83,10. 7,32,48. Spr. 5079. Kathâs. 50,8. 103,7. Bhâg. P. 4,10,20. 9,15,32.

रणातोद्य (रण + आ°) n. *Schlachttrommel* Kathâs. 47,44.

रणादित्य (रण + आ°) m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râga-Tar. 3,386. 431. 434. 473. eines andern Mannes 7,232. 234.

रणान्तकृत् (रण + अ°) adj. *dem Kampfe ein Ende machend,* Beiw. Vishnu's R. 6,102,16.

रणारम्भा (रण + आरम्भ) f. N. pr. der Gattin Raṇâditja's Râga-Tar. 3,391. 431. 454. °स्वामिदेव Bez. einer von ihr errichteten Statue 460, wo wohl °देवो zu lesen ist.

रणालंकरण (रण + अ°) m. *Reiher* (कङ्क) Râgan. im ÇKDr.

रणावनि (रण + अ°) f. *Schlachtfeld* Hariv. 5583.

रणाश्व (रण + अश्व) m. N. pr. eines Fürsten VP. 362, N. 18.

रणितर् (von रन्) nom. ag. *sich ergötzend:* सुतेषु RV. 8,85,19.

रणेचर (रणे, loc. von रण, + चर) adj. *auf dem Schlachtfelde wandelnd,* von Vishṇu Pañkar. 4,3,99.

रणेश (रण + ईश) m. = रणस्वामिन् Râga-Tar. 3,463.

रणेश्वर (रण + ई°) m. desgl. ebend. 3,453. 457. 6,71.

रणेस्वच्छ m. *Hahn* H. ç. 190. Wenn die Form richtig sein sollte, in रणे, loc. von रण, + स्वच्छ zu zerlegen.

रणोत्कट (रण + उ°) 1) adj. *rasend im Kampfe* R. 3,32,36. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2570. eines Daitja Hariv. 12936.

रण्ड 1) adj. = अर्धचर्मावच्छिन्नावयव und = धूर्त Uṇâdivr. im Saṁkshiptas. ÇKDr. fehlerhaft für वण्ड *verkrüppelt, verstümmelt:* आचरन्परशाखोक्तं शाखारण्डः स उच्यते so v. a. *ein Verräther an seiner Çâkhâ* Vasishṭha im Comm. zu Pâr. Gṛhj. bei Müller, SL. 51. Häufiger ist das f. रण्डा als verächtliche Bez. eines Weibes, etwa so v. a. *Vettel* Prab. 41,17 (Schol. 1: रण्डा = नियामकशून्य, Schol. 2: रण्डेत्यधिक्षेपोक्तिः). 57,8 (Schol. 1: रण्डा भर्तृहीना निरन्तरसुरतहीनाः, Schol. 2: रण्डा विधवाः). Râga-Tar. 6,260. Pañkat. I, 437. तिष्ठते रण्डा विकर्मस्थेभ्यः (vgl. P. 1,4,34) स्वहृदयं व्यनक्तीत्यर्थः Saṁkshiptas. im ÇKDr. पापरण्डे voc. Mahâvîrak. 65,15. Nach Trik. 3,3,116. H. an. 2,127. Med. ḍ. 23 und Uggval. zu Uṇâdis. 1,113 bedeutet रण्डा *Wittwe;* diese Bed. kann das Wort in बालरण्डा (*junge Wittwe*) Verz. d. Oxf. H. 235,*a*, 32 haben. रण्डा Med. ḍ. 24 fehlerhaft für वण्डा (वण्डा). — 2) f. आ *a*) *Salvinia cucullata Roxb.* AK. 2,4,3,6. Trik. 3,3,116. H. an. 2,127.

Med. ḍ. 23. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,113. — b) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 154, a. — Vgl. जलरण्ड, त्रपारण्डा, रुण्ड.

रण्डक m. *ein unfruchtbarer Baum* Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. वण्ड.

रण्डाश्रमिन् (रण्ड + आश्रम) adj. *nach dem 48sten Jahre sein Weib verlierend:* चत्वारिंशद्वत्सराणां साष्टानां च परे यदि। स्त्रिया वियुज्यते कश्चित्स तु रण्डाश्रमी मतः॥ Bhavishja-P. im Udvâhat. ÇKDr.

1. रण्य (von रन्) 1) adj. *ergötzlich, erfreulich:* इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ṚV. 9,96,9. प्रजापतिः पृथिवीं रण्यां नः कृणोतु AV. 12,1,43. — b) *kampflüchtig:* उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृता ṚV. 8,66,1. — 2) n. a) *Ergötzlichkeit, Freude:* प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते ṚV. 3,55,7. — b) *Kampf:* मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे ṚV. 1,85,10. यस्य शश्वत्पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्थ 10,112,5.

2. रण्य n. von unermittelter Bedeutung und Herkunft: यानि ते ऽन्तः शिक्यान्याबेधुः रण्याय कम् AV. 9,3,6.

रण्यजित् adj. *im Kampfe siegend* ṚV. 9,59,1.

रण्यवाच् adj. *erfreulich redend* ṚV. 3,55,7.

रण्व् *ergötzen* nur in der Stelle: बृहस्पतिस्त्वा सुम्ने रण्वतु TS. 1,2, 3,1. = रमयतु Comm., रम्णातु st. dessen VS. रण्व्, रण्वति (गतौ) Dhâtup. 15,87. — Vgl. रणिवत्.

रण्व (von रन्) adj. (f. आ) *behaglich, erfreulich, lieblich; fröhlich, lustig:* पुष्टि ṚV. 1,65,5. 2,4,4. 6. 24,11. ओक 1,66,3. निषत्तो रण्वो दुरोणे 69,4. रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः 1,144,7. 10,64,11. 3,26,1. सदा रण्वः पितुमतीव संसत् 4,1,8. 7,5. 37,1. 5,7,2. रण्वः पुरीव जूर्यः 6,2, 7. 3, 3. 29,1. 7,54,3. नरो न रण्वाः सवने मदन्तः 59,7. 10,11,5. 33,6. 64,10. आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त 115,4.

रण्वन् in der Stelle: अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषा चिदर्ध्यम् ṚV. 5,44,10. रमणीयाभिश्चित्तिभिः Sâj.

रण्वसंदृश् adj. *lieblich anzuschauen* ṚV. 3,61,5. 6,16,37. 7,1,21.

रणिवत् adj. in der Stelle: उषासानक्ता वय्येव रणिवते ṚV. 2, 3, 6. nach Sâj. शब्दिते, स्तुते oder परस्परं गच्छन्त्यौ.

रत (von रम्) 1) partic. adj. s. u. रम्. — 2) f. आ N. pr. der Mutter des Tages MBh. 1,2584. — 3) n. a) *Liebeslust, Liebesgenuss, coitus* AK. 2,7,56. 3,4,18,124. Trik. 2,7,31. H. 272. 536. Med. t. 50. बाह्यमाभ्यन्तरं चेति द्विविधं रतमुच्यते। तत्राद्यं चुम्बनाश्लेषनखदन्तक्षतादिकम्। द्वितीयं सुरतं सात्तान्नानाकारेण कल्पितम्। Vâtsjâjana bei Mallin. zu Kir. 9,47. Verz. d. Oxf. H. 215,b,26. चित्ररतानि 29. रतारम्भावसानिकम् und °विशेषाः 31. रतोपरमसंसुप्त R. 5,14,11. Megh. 87. अन्वभूत्परिजनाङ्गनारतम् Ragh. 19, 23. 25. 27. Spr. 1885. 2092, v. l. 3359. Varâh. Bṛh. S. 19,5 (pl.). रतान्त Kathâs. 19,30. विपरीत Râǵa-Tar. 5,372. Kaurap. 12. Vet. 11,9. °कूजित Trik. 3,2,14. H. 1408. Halâj. 2,414. Vgl. सु°. — b) *die Schamtheile,* = गुह्य Med.

रतकील (रत *coitus* + कील) m. *Hund* H. 1280.

रतगुरु (रत *coitus* + गुरु *Lehrer*) m. *Gatte* Trik. 2,6,10.

रतज्वर (रत *coitus* + ज्वर) m. *Krähe* Trik. 2,5,19.

रततालिन् m. *Wollüstling* Çabdam. im ÇKDr.

रतताली f. *Kupplerin* Trik. 2,6,6.

रतनाराच m. H. an. 5,11 in den drei letzten Bedd. von रतनारीच; st. स्त्रीणां वशीकृतौ ist wohl स्त्रीणां च शीत्कृतौ zu lesen.

रतनारीच m. 1) *Wollüstling* Çabdam. im ÇKDr. — 2) *Hund* Trik. 3, 3,78. Med. k. 21. — 3) *der Liebesgott* Med. — 4) *sonus, quem mulier in coitu edit,* Trik. Med. — Vgl. रतनाराच.

रतनिधि (रत *coitus* + नि°) m. *Bachstelze* Trik. 2,5,16.

रतबन्ध m. *coitus* H. an. 2,355.

रतर्द्धिक (रत + ऋद्धि) n. 1) *Tag.* — 2) *ein Bad zum Vergnügen.* — 3) *eine Gruppe von acht glückbringenden Dingen* H. an. 4,28. Med. k. 209.

रतवत् (von रम्) adj. *eine Bildung aus der Wurzel* रम् *enthaltend:* यद्रतवद्यत्पर्यस्तवत् Ait. Br. 5,1 bezieht sich auf die Worte नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत् ṚV. 7,32,10. Das Brâhmaṇa und Sâj. ziehen पर्यास zu 2. अस्, wir stellen es zu 1. अस्.

रतव्रण (रत *coitus* + व्रण *Wunde*) m. *Hund* Trik. 2,10,6. H. 1280.

रतशायिन् (रत *coitus* + शा°) m. dass. H. 1280.

रतहिण्डक m. *Weiberverführer* Trik. 2,10,8. H. an. 5,10. Med. g. 58.

रतान्दुक (रत *coitus* + अन्दुक?) m. *Hund* H. 1280.

रतान्धी f. *Nebel* Trik. 1,1,88.

रतामर्द (रत + आ°) m. *Hund* Çabdam. im ÇKDr. रतामर्ध Wilson nach ders. Aut.

रताम्बुक (?) n. du. *die beiden Vertiefungen unmittelbar über den Hüften* H. ç. 126.

रतायनी (रत + अयन) f. *Hure* Çabdam. im ÇKDr.

रतार्थिन् (रत + अ°) adj. *geil, brünstig* Halâj. 2,330.

रति (von रम्) f. 1) *Rast, Ruhe:* इह रतिरिह रमध्वम् VS. 8,51. Çâṅkh. Gṛhj. 4,9. — 2) *Lust, Behagen, Gefallen an* (loc.); = राग H. an. 2,190. Med. t. 49. रतिर्मनोऽनुकूले ऽर्थे मनसः प्रवणायितम् Sâh. D. 207. 206. H. 72. 295. Halâj. 1,91. Kathop. 1,28. Maitrjup. 3,5. 5,1. M. 1,25. उत्तमा 9,28. एष स्त्रीपुंसयोरुक्तो धर्मो वो रतिसंहितः 103. MBh. 14,389. Hariv. 6733 (wo die neuere Ausg. तेषां रतिविनाशनम् liest). R. 2,49,15 (46,17 Gorr.). 94, 26. 95, 5. R. Gorr. 1,9,29. 2,28,27. fg. 4,44,105. करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरम् Çâk. 22. 34. Spr. 4469. 4854. मूर्तिमत्यौ रतिनिर्वृती इव Kathâs. 16,123. Bhâg. P. 1,8,42. तत्र वासे MBh. 1,6130. राज्ये 9,1792. Vikr. 105. Spr. 688. 755. सुभृत्येषु 859. 1322. 2279. स्वयोषिति 2773. 4275. श्रीशे भक्तिरती 5094. Varâh. Bṛh. S. 69, 25. Kathâs. 2,9. Bhâg. P. 1,2,8. 5,26. 9,35. 2,2,34. 4,22,25. fg. Mârk. P. 70,19. Vṛddha-Kâṇ. 6,14. त्यक्तधर्मरति adj. R. 2,75,37. भव° Spr. 571. Bhâg. P. 1,9,36. 3,5,11. 8,10. 28,3. तामुपाश्रय रतिं चन्द्रार्धचूडामणौ Spr. 2256. रतिमाप्स्यसि ते वयि (so die neuere Ausg.) Hariv. 3173. स्वेषु दारेषु रतिं नोपलभे R. 5,22,30. न रतिं लेभे Kathâs. 33,65. 38,92. रतिं स्वकेषु दारेषु नाधिगच्छामि R. 3,53,33. रतिं न विन्दते रामस्त्वामपश्यन् 5,32,38. Hariv. 9217. न शय्यासनभोगेषु रतिं विन्दति कर्हिचित् MBh. 3,2107. Mârk. P. 20,21. पापे रतिं मा कृथाः *finde keinen Gefallen an* Spr. 1051. 1995. 3085. को न कुर्यात्कथारतिम् Bhâg. P. 1,2,15. रतिं बध्नाति यत्र च Spr. 4825, v. l. यथा नृपतिसौख्येषु बबन्ध न रतिं क्वचित् Kathâs. 3,29. 57,103. Mârk. P. 62,9. आत्म° adj. *seine Lust habend —, Gefallen findend an* Khând. Up. 7,25,2. Muṇḍ. Up. 3,1,4. Bhag. 3, 17. अध्यात्म° adj. M. 6,49. भार्या° adj. Jâǵn. 1,121. धर्म° adj. Ragh. 1,23. समानयोनि° adj. Spr. 631. वनशैलगोकुल° adj. Varâh. Bṛh. 18, 2. कलह° adj. Sâh. D. 79. स्वात्मव्रति adj. Bhâg. P. 3,4,16. — 3) insbes.

Wollust, Liebeslust, Liebesgenuss, coitus H. 537. H. an. Med. Halâj. 2, 414. 5,42. ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते Praçnop. 1,13. ग्रानन्दं रतिं प्रजातिम् Kaush. Up. 1,7. M. 3,45. 11,5. MBh. 13,2229. R. 5,14,26. Daçar. 1,30. Vikr. 85. पण्यस्त्री° Megh. 26. Spr. 20. °शक्ति 2077. 2959. 3459. 4862. Çiç. 4,66. Varâh. Brh. S. 74,18. °भोग 104,29. Râga-Tar. 3,508. 5,383. Bhâg. P. 4,6,25. 5,11,10. 7,12,26. 9,14,19. तदीयतां मे रतिदक्षिणा Pańkat. 226,1. या न वेत्ति सदा पुंसां चतुराणां रतिक्रमम् Vet. in LA. (III) 16,20. °लम्पट Verz. d. B. H. No. 1006. °ज्ञ Spr. 853. — 4) *die Schamtheile* Med. — 5) elliptisch für रतिगृह *Lusthaus* Varâh. Brh. S. 53,9. — 6) die personif. *Liebeslust* als Gemahlin Kâma's H. 229. H. an. Med. Halâj. 1,34. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,35. MBh. 1,2597. Hariv. 4600. 9533. 12482. R. 3,52,27. Kumâras. 2,64. Ragh. 6,2. 7,15. Kathâs. 16, 75. 18,27. 21,32. 22,3. 104. Prab. 6,3. Pańkar. 1,10,92. Weber, Râmat. Up. 303. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*,2. 101,*b*,7. रती MBh. 3,2665. Hariv. 10064 (die neuere Ausg. रतिः सुता). R. 3,4,9. 5,18,26. Mârk. P. 21,16. — 7) Bez. der *6ten* Kalâ *des Mondes* Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,25. — 8) N. pr. einer Apsaras MBh. 13,1425. — 9) N. pr. der Gattin Vibhu's und Mutter Pṛthushena's Bhâg. P. 5,15,5. — 10) Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches R. 1,30,7 (31,8 Gorr.). — 11) mystische Bez. *des Buchstabens* न Weber, Râmat. Up. 318. 320. — 12) *ein best. Metrum, 4 Mal* — ◡ Colebr. Misc. Ess. II, 158 (II, 2). — Vgl. 3. ग्र° (*Trauer* auch MBh. 15,897), निर्माण°, भू°, लीला°.

रतिकर adj. (f. ई) 1) *Lust —, Freude bereitend* R. 1,19,16 (27 Gorr.). R. Gorr. 1,75,29. 2,1,4. Bhâg. P. 3,23,45. Bez. eines Samâdhi Vjutp. 17. — 2) *der Liebe pflegend* (= कामिन् Comm.) Varâh. Brh. S. 16,8.

रतिकान्ततर्कवागीश m. N. pr. eines Commentators des Mugdhabodha Colebr. Misc. Ess. II,46.

रतिकुहर n. *pudendum muliebre* Trik. 2,6,22.

रतिक्रिया f. *Beischlaf* Trik. 3,2,19. Kâm. Nitis. 2,25.

रतिगुण m. N. pr. eines Devagandharva MBh. 1,2555.

रतिगृह n. 1) *Lusthaus* Varâh. Brh. S. 53,16. — 2) *pudendum muliebre* Trik. 2,6,21.

रतिचरणसमन्तस्वर m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva Vjutp. 88.

रतिजनक m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,33.

रतिजह m. Bez. eines Samâdhi Vjutp. 18.

रतिदेव Sâv. 2,17 fehlerhaft für रन्तिदेव.

रतिनाग m. *quidam coeundi modus:* पीडयेद्रूरुयुग्मेन कामुकं कामिनी यदा। रतिनागः समाख्यातः कामिनीनां मनोरमः॥ Ratim. im ÇKDr. — Vgl. रतिपाश.

रतिपति m. *der Gatte der* Rati, *der Liebesgott* AK. 1,1,1,21. H. 229, Sch. Halâj. 1,32. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,33. Gît. 5,7. Çiç. 9,66. Bhâg. P. 10,29,46.

रतिपाश m. *quidam coeundi modus:* पीडयेद्रूरुयुग्मेन कामुको यदि सुन्दरीम्। रतिपाशस्तथा (wohl तदा zu lesen) ख्यातः कामिनीनां सुखावहः॥ Smaradîpikâ im ÇKDr. — Vgl. रतिनाग.

रतिप्रपूर्ण m. N. eines Kalpa (*einer Weltperiode*) Lot. de la b. l. 94.

रतिप्रिय 1) m. *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. ग्रा ein Name der Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,13. रविप्रिया v. l.

रतिभवन n. *Lusthaus* Varâh. Brh. S. 53,14.

रतिमञ्जरी f. Titel eines im ÇKDr. öfters citirten Werkes über *Erotik.*

रतिमदा f. *eine* Apsaras Trik. 1,1,64.

रतिमत् (von रति) adj. *lustig, froh, seine Lust habend an:* सर्वत्र Kathâs. 122,34.

रतिमन्दिर n. 1) *Lustgemach, Liebesgemach* Pańkar. 1,7,61. Rasam. im ÇKDr. — 2) *pudendum muliebre* Gaṭâdh. im ÇKDr.

रतिमित्र m. *quidam coeundi modus:* पातयेद्रूरुयुग्मे च कामुकं यदि कामुकी। रतिमित्रस्तदा ख्यातः कामिनीनां सुखावहः॥ Ratim. im ÇKDr.

रतिरमण m. *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* Trik. 1,1,39.

1. रतिरस m. *Liebesgenuss:* °ग्लानि Spr. 2629.

2. रतिरस adj. *wie Liebesgenuss schmeckend, süss wie Liebesgenuss:* मधु Megh. 67, wo मधु रति° getrennt zu lesen ist.

रतिरहस्य n. *die Geheimnisse des Liebesgenusses,* Titel eines Werkes über *Erotik* Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,37. 126,*a*,17. von Kakkvoka 218,*a*,10.

रतिलक्ष n. *Beischlaf* Hâr. 50.

रतिलोल m. N. pr. eines Dämons Lalit. ed. Calc. 394,1.

रतिवर m. 1) *der Geliebte der* Rati, *der Liebesgott* H. 229, Sch. — 2) *ein der* Rati *gewährtes Gnadengeschenk:* °दान Verz. d. Oxf. H. 75,*b*,21.

रतिवर्धन adj. *die Liebeslust befriedigend* (eig. *mehrend*): स एको ऽब्दपूगांस्तासां बह्वीनां रतिवर्धनः Bhâg. P. 9,19,6.

रतिवल्ली f. *die als Liane gedachte Liebeslust* Kathâs. 14,27.

रतिशूर m. *ein Held im Liebesgenuss, ein Mann von ausserordentlicher Zeugungskraft* Pańkar. 1,14,81. 88.

रतिसंयोग m. *coitus* R. 2,71,22.

रतिसत्वरा f. *Trigonella corniculata* Çabdak. im ÇKDr.

रतिसर्वस्व n. *der Inbegriff der Liebeslust,* Titel eines Werkes über *Erotik* Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,17.

रतिसुन्दर m. *quidam coeundi modus:* नारीपदद्वयं कामी धारयेद्धृदये यदि। धृतकण्ठो रमेत्कामी बन्धः स्याद्रतिसुन्दरः॥ Ratim. und Smaradîpikâ im ÇKDr.

रतिसेन (र° + सेना) m. N. pr. eines Fürsten der Kola Râga-Tar. 3,432.

रतू Uṇâdis. 1,94. f. *der Götterfluss* Uǵǵval. auch *eine wahre Rede* Schol. zu Uṇ. 1,92.

रतोत्सव (रत + उ°) m. *ein Fest des Liebesgenusses* Çâk. 147.

रतोद्वह (रत + उ°) m. *der indische Kuckuck* Çabdam. im ÇKDr. रथोद्वह H. ç. 188.

रत्न (रत्न Uṇâdis. 3,14. wohl von रा wie रयि) 1) n. Trik. 3,5,7. Siddh. K. 249,*a*,9. m. MBh. 3,13182. *a*) *Gabe; Habe, Besitz, Gut* ṚV. 1,20,7. 35,8. स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना। ग्रच्छा गच्छत्यस्तृतः 41,6. 125,1. 140,11. 141,10. 2,38,1. वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे 3,2,11. 3,1. कृधि रत्नं धनानाम् 18,5. 26,3. प्रजावत् 8,6. 54,3. दधाति रत्नं विधते 4,12,3. दमे दमे सप्त रत्ना दधानः 5,1,5. ग्रा नो रत्नानि बिभ्रत 5,75,3. 8,56,7. AV. 5,1,7. 7,14,4. Çat. Br. 5,3,1,1. — *b*) *Kleinod, Juwel, Edelstein, Perle* AK. 2,9,94. Trik. 2,9,27. H. 1063. an. 2,280. Med. n. 17. Halâj. 2,21. 409. 5,64. M. 7,203. 218. 8,100. 323. 11,4. 12,61. MBh. 1,7630.

7692. 3,2493. 12083. समुद्रमिव रत्नाढ्यम् R. 1,3,7. ग्रारोहमिव रत्नानाम् 5,14. 53,21. 3,49,21. 37. SUÇR. 1, 6, 15. 15, 6. 21, 17. 107, 7. 119, 2. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् KUMÂRAS. 5,45. ad ÇÂK. 62. RAGH. 1, 16. MEGH. 15. 36. ÇÂK. 27. VIKR. 144. Spr. 2585. fg. 2693. 3302. VARÂH. BṚH. S. 12,1. KATHÂS. 18,72. VET. in LA. (III) 1,17. 2,8. रत्नानां शोधनमारणाम् Verz. d. B. H. No. 958. °धेनु 468. Verz. d. Oxf. H. 35,a,33. 43,a,19. °शैलदान 41,a,23. रत्नाचलदान 35,b,30. Verz. d. B. H. No. 468. °परीक्षा MACK. Coll. I, 132 (als Titel eines Werkes). Verz. d. Oxf. H. 86, a, 15. रत्नान्योक्तयः 123,a,23. केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् Spr. 1904. 3023. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि ग्रापः ग्रन्नं सुभाषितम् । मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ 4571. रत्नत्रय n. bei den Gaina ist सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान und सम्यक्चारित्र SARVADARÇANAS. 31, 13. fgg. रत्नं हि भगवन्नेतद्रत्नभागी च पार्थिवः । तस्मान्मे शबलां देहि R. 1,53,9. विद्या° *das Juwel Gelehrsamkeit* Spr. 985. त्वं चापि रत्नं नारीणाम् MBH. 3,2101. स्त्री° *eine Perle von Weib* R. 3,55,13. 5,22,11. Spr. 3031. fg. VIKR. 110. VARÂH. BṚH. S. 74,17. 78,13. PANḰAT. 40,24. योषिद्रत्न MBH. 3,2467. BHÂG. P. 4,10,2. कन्या° MBH. 3,2079. KATHÂS. 18,74. MÂRK. P. 21,80. पुं° Spr. 2706. पुत्र° KATHÂS. 9, 68. गज°, ग्रश्व° UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3, 14. ग्रश्वरत्नौ MBH. 3, 13182. धनूरत्नम् R. 1,33,7. विमान° RAGH. 12,104. ग्रजिन° 4,65. पोत° VARÂH. BṚH. S. 48,12. DAÇAK. in BENF. Chr. 189,2. 191,16. BURN. Intr. 67. रत्न = स्वजातिश्रेष्ठ AK. 3, 4, 18, 129. H. an. MED. Wie मणि bezeichnet auch रत्न *den Magnet* Schol. zu KAP. 1,97. Am Ende eines adj. comp. f. ग्रा MBH. 1,7346. 5,3037. 9,1787. 1795. 15,589. RAGH. 4,65. BHÂG. P. 3,23,32. — c) verkürzt für रत्नहविस् ÇAT. BR. 5, 3, 2, 1. — 2) m. N. pr. eines Mannes RÂǴA-TAR. 4,710. भट्ट° Verz. d. B. H. No. 258. — Vgl. ध्रुवरत्ना, बुधरत्न, मणि°, मदन°, मुक्ता°, मौक्तिक°, वाज°, सद्रत्न, सु°.

रत्नक (von रत्न) m. N. pr. eines Mannes BURN. Intr. 178.

रत्नकन्दल m. *Koralle* ÇABDAR. im ÇKDR.

रत्नकर m. Bein. Kubera's H. 189.

रत्नकरण्डक Titel eines buddh. Werkes VJUTP. 43.

रत्नकलश m. N. pr. eines Mannes RÂǴA-TAR. 7, 600.

रत्नकला f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 318,a,9.

रत्नकीर्ति m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 5,17.

रत्नकूट 1) m. N. pr. eines *Berges* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) n. N. pr. einer Insel KATHÂS. 26, 3. 36, 9. — 3) m. N. pr. eines Bodhisattva VJUTP. 21. °सूत्र Titel eines buddh. Sûtra BURN. Intr. 562. HIOUEN-THSANG I,388. VJUTP. 41.

रत्नकेतु m. N. pr. eines Buddha BURN. Intr. 530. eines Bodhisattva VJUTP. 21. der gemeinschaftliche Name von 2000 künftigen Buddha Lot. de la b. l. 135. °राज 134.

रत्नकोटि Bez. eines Samâdhi VJUTP. 17.

रत्नकोश (°कोष) m. Titel verschiedener Werke COLEBR. Misc. Ess. II, 20. 59. Verz. d. Oxf. H. 113,b,4. 182,b,44. 245,a, No. 613. 279,a,24. 292,b,1. 333,b, No. 785. 352,a, No. 834. Verz. d. B. H. No. 1176. HALL 81. 202. °वादरहस्य 81. °कारिकाविचार Verz. d. Oxf. H. 245,a, No. 613. — Vgl. नाटक°.

रत्नतेत्रकूटसंदर्शन m. N. pr. eines Bodhisattva LALIT. ed. Calc. 364,1. रत्नछत्रकूट° Fouc.

रत्नखानि f. *eine Fundgrube für Edelsteine* ÇATR. 10, 112.

रत्नगर्भ 1) adj. *Edelsteine bergend, mit Edelsteinen besetzt:* °गृह MBH. 3,2669. वासांसि R. 4,44,98. — 2) m. a) *das Meer* RÂǴAN. im ÇKDR. — b) Bein. Kubera's TRIK. 1, 1, 78. H. ç. 39. — c) N. pr. α) eines Bodhisattva LALIT. ed. Calc. 368,6. WILSON, Sel. Works II, 13. — β) eines Commentators des Vishṇupurâṇa WILSON in VP. LXXIV. Verz. d. Oxf. H. 63, a, No. 111. Verz. d. B. H. No. 487. — 3) f. ग्रा *die Erde* TRIK. 2,1,2. H. 937. HALÂJ. 2,2.

रत्नग्रीवतीर्थ n. N. pr. eines Wallfahrtsortes Verz. d. Oxf. H. 13,b,12.

रत्नचन्द्र m. N. pr. 1) eines eine *Edelstein*grube hütenden Gottes ÇATR. 10,124. — 2) eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 2. — 3) eines Sohnes des Bimbisâra, SCHIEFNER, Lebensb. 254 (24).

रत्नचन्द्रामति m. N. pr. eines Mannes KATHÂS. 72,93.

रत्नचूड m. N. pr. eines Bodhisattva VJUTP. 21. eines mythischen Fürsten WILSON, Sel. Works II, 16. रत्नचूडोपाख्यान I, 283. रत्नचूडमुनि ebend.

रत्नचूडापरिपृच्छा f. Titel eines Werkes BURN. Intr. 561.

रत्नचूर s. u. रत्नचूड.

रत्नच्छत्त्र n. *ein Sonnenschirm aus Edelsteinen* PANḰAR. 1,11,31.

रत्नच्छत्त्रकूटसंदर्शन m. N. pr. eines Bodhisattva LALIT. 280. रत्नतेत्रकूट° ed. Calc.

रत्नच्छत्त्राभ्युद्गतावभास m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 367,13.

रत्नतेजोऽभ्युद्गतराज m. desgl. Lot. de la b. l. 276.

रत्नत्रयपरीक्षा f. Titel einer Abhandlung HALL 115.

रत्नदत्त m. N. pr. verschiedener Personen Lot. de la b. l. 2. 303. KATHÂS. 27,16. 57,6. 88,5. 123,165. Verz. d. Oxf. H. 152,b,39. 153,a,14.

रत्नदर्पण m. 1) *ein aus Edelsteinen bestehender Spiegel* PANḰAR. 1,7, 48. 12,19. — 2) Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 209,a, No. 490.

रत्नदीप m. *eine Lampe, in der Edelsteine die Stelle des Feuers vertreten,* Spr. 165. 5320. KATHÂS. 101,42. BHÂG. P. 10,81,31.

रत्नदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 941.

रत्नद्रुम wohl *Koralle* (vgl. रत्नवृक्ष); davon adj. °मय *aus Korallen bestehend* MBH. 3,12198, wo mit der ed. Bomb. °मयैश्चित्रैः zu lesen ist.

रत्नद्वीप *die Insel der Edelsteine* oder *Perlen*, Bez. einer best. *Insel* HARIV. 5238. RÂǴA-TAR. 4,462. TANTRAS. im ÇKDR.; vgl. *Île des joyaux* Lot. de la b. l. 115. — Vgl. मणिद्वीप.

रत्नधर m. N. pr. des Vaters eines Ǵagaddhara Verz. d. Oxf. H. 136, a, No. 259. Verz. d. B. H. No. 554. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 46.

रत्नधा adj. *Gaben —, Güter verschaffend, — spendend* ṚV. 1, 1, 1. 15,3. स्तोम 20,1. 164,49. 2,1,7. 4,34,6. 35,7. 5,8,3. कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा ग्रसि 7,16,6. 10,35,7. AV. 7, 14, 1. ÇAT. BR. 14,9,4,28.

रत्नधेय n. *das Güterspenden* ṚV. 4,13,1. 34,1. 4. 35,1. 2. 5,42,7. 10,78,8.

रत्नध्वज m. N. pr. eines Bodhisattva VJUTP. 21.

रत्ननदी f. N. pr. eines *Flusses* KATHÂS. 123,228.

रत्ननाभ adj. *im Nabel einen Edelstein habend*, unter den Beiww. Vishṇu's MBH. 13,7034.

रत्ननिधि m. 1) *eine Fundgrube für Edelsteine* oder *Perlen*, als Bez.

des Meeres und des **Meru** MBh. 1,2329. unter den Beiww. **Vishṇu's** Pańkar. 4,3,95. — 2) *Bachstelze* ÇKDr. nach Trik. 2,5,16, wo aber रतनिधिः zu lesen ist.

रत्नपर्वत m. *ein Berg, der Edelsteine birgt*, R. 4,43,40. 44,85. Bez. des **Meru** Hariv. 2905.

रत्नपाणि m. N. pr. eines **Bôdhisattva** Burn. Intr. 117. Lot. de la b. l. 2. eines Grammatikers Verz. d. B. H. N. 762. Verz. d. Pet. H. No. 91.

रत्नपाल m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 275,*b*, No. 653.

रत्नपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 24,82. 123,204.

रत्नप्रकाश m. Titel eines Wörterbuchs Mallin. zu Çiç. 12,16.

रत्नप्रदीप m. = रत्नदीप Megh. 69. Bhâg. P. 3,33,17. Pańkar. 1,7,48. 3,15,5. am Ende eines adj. comp. °क Kathâs. 73,338.

रत्नप्रभ 1) m. *a*) N. einer Klasse von Göttern Lot. de la b. l. 2. — *b*) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 46,31. — 2) f. आ *a*) Bez. *der Erde* Ind. St. 10,312. — *b*) Name einer Hölle bei den **Ǵaina** H. 1360. — *c*) N. pr. verschiedener Personen Râǵa-Tar. 3,379. Hit. 110,17. Kathâs. 35, 120. fgg. 65,216. einer **Nâgî** 55,146. 151. — *d*) Name des 7ten **Lambaka** im Kathâs., so benannt nach einer Fürstin, deren Geschichte 35, 120. fgg. erzählt wird, 1,6.

रत्नबाहु m. Bein. **Vishṇu's** H. ç. 71.

र॒त्नभाज् adj. 1) *Gaben austheilend* R̥V. 7,81,4. — 2) *im Besitze von Kleinodien seiend* R. 3,49,42.

रत्नमञ्जरी f. N. pr. einer **Vidhjâdharî** Hit. 63,19.

रत्नमति m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 12.

रत्नमय (von रत्न) adj. (f. ई) *aus Edelsteinen gebildet, daraus bestehend, damit reichlich versehen* R. 4,33,5. Spr. 2211. Kathâs. 45,136. H. 61. पूजा Râǵa-Tar. 1,148. — Vgl. सर्व°.

रत्नमाला f. 1) *ein Halsband aus Juwelen, Perlenschmuck* Pańkar. 1, 4,51. 11,35. Pańkat. 255,19. 25. — 2) vollständiger und abgekürzter Titel verschiedener Werke Colebr. Misc. Ess. II, 47. 323. 363. Med. Anh. 3. Verz. d. Tüb. H. 17. Ind. St. 5,297. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,44. 196,*a*,22. 279,*a*,24. 285,*a*,34. 292,*b*,1. 336,*a*, No. 790. = न्याय° 220, *b*, No. 327. — Vgl. अधिकरण°, अभिधान°, ज्योतिष° (unter ज्योतिष), न्याय°, पर्याय°, प्रमाण°, मणि°, योग°.

रत्नमालावत् (von रत्नमाला) 1) adj. *mit einem Perlenschmuck versehen.* — 2) f. °वती f. N. pr. eines Wesens im Gefolge der **Râdhâ** Pańkar. 2,4,43.

रत्नमालिका f. demin. von रत्नमाला; s. कुल°.

रत्नमालिन् adj. *mit einem Halsband aus Juwelen geschmückt* Weber, Râmat. Up. 294.

रत्नमुकुट m. N. pr. eines **Bodhisattva** Vjutp. 21.

रत्नमुख्य n. *Diamant* H. 1065.

रत्नमुद्रा f. Bez. eines **Samâdhi** Vjutp. 16.

रत्नमुद्राहस्त m. N. pr. eines **Bodhisattva** Vjutp. 21.

रत्नमेघसूत्र n. Titel eines buddh. **Sûtra** Hiouen-thsang I, 456.

रत्नयष्टि m. N. pr. eines **Buddha** Lalit. ed. Calc. 366,10.

रत्नयुग्मतीर्थ n. N. pr. eines **Tîrtha** Verz. d. Oxf. H. 73,*b*,30.

रत्नरक्षित m. N. pr. eines der beiden Uebersetzer des **Karaṇḍavjûha** in's Tibetische Burn. Intr. 230.

रत्नराज् m. *Rubin* Râǵan. im ÇKDr.

रत्नराजि f. *Perlenschnur* Râǵa-Tar. 3,432.

रत्नराशि m. 1) *ein Haufen Edelsteine* MBh. 3,2548. Çâk. 27,5. — 2) *das Meer* H. 1074, Sch.

रत्नरेखा f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 66,137.

रत्नलिङ्गेश्वर m. bei den Buddhisten **Svajambhû** in seiner sichtbaren Form Wilson, Sel. Works 2,15.

र॒त्नवत् (von रत्न) 1) adj. *a*) *von Gaben begleitet* R̥V. 3,28,5. — *b*) *reich an Edelsteinen* oder *Perlen, damit verziert* MBh. 6,2078. 8,3135. 14,2558. R. 4,40,33. 43,9. 5,50,10. Ragh. 6,4. Pańkar. 1,3,38. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,7. — 3) f. °वती *a*) *die Erde* Çabdam. im ÇKDr. — *b*) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Daçak. 158,4. fgg. Kathâs. 88,6. — Vgl. रत्नावती.

रत्नवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,40. 128. 162. errichtet eine nach ihm रत्नवर्धनेश benannte Statue des **Çiva** 162.

रत्नवर्मन् m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 57,55.

रत्नवर्ष m. N. pr. eines Fürsten der **Jaksha** Kathâs. 26,213.

रत्नवर्षुक n. Bez. *des Juwelen regnenden* mythischen Wagens **Pushpaka** Çabdar. im ÇKDr.

रत्नविशुद्ध m. N. einer Welt Lot. de la b. l. 146.

रत्नशास्त्र n. Titel eines Werkes des **Agastja** Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,11.

रत्नशिखर m. N. pr. eines **Bodhisattva** Vjutp. 21.

रत्नशिखिन् m. N. pr. eines **Buddha** Vjutp. 3. Lalit. ed. Calc. 201,9.

रत्नशेखर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 397,*a*,3.

रत्नसंग्रह m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,25.

रत्नसंघात m. *eine Menge von Juwelen;* davon °मय adj. (f. ई) *aus einer Menge von Juwelen gebildet, — bestehend* MBh. 1,7692.

रत्नसमुद्गल Bez. eines **Samâdhi** Vjutp. 23.

रत्नसंभव m. 1) N. pr. eines **Dhjânibuddha** Burn. Intr. 117. Wilson, Sel. Works 2,12. 14. 35. Schiefner, Lebensb. 244 (14). eines **Buddha** Burn. Intr. 533. eines **Bodhisattva** Lalit. ed. Calc. 366,10. — 2) N. pr. des Gebietes, in dem der **Buddha Çaçiketu** erscheinen wird, Lot. de la b. l. 92.

रत्नसागर m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,26.

रत्नसानु m. Bein. des Berges **Meru** AK. 1,1,1,45. H. 1032. Halâj. 1,136.

रत्नसू adj. *Edelsteine erzeugend:* मेदिनी Ragh. 1,65. Râǵa-Tar. 1,43. 3,300. subst. f. *die Erde* H. 937.

रत्नसूति f. *die Erde* Râǵa-Tar. 3,108.

रत्नसेन m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 8.

रत्नस्वामिन् N. eines von **Ratna** errichteten Heiligthums Râǵa-Tar. 4,710.

रत्नहविस् n. Bez. einer Opferhandlung im **Râǵasûja**, betreffend diejenigen Personen, welche als *kostbare Besitzthümer* eines Fürsten gelten, Kâtj. Çr. 15,3,1.

रत्नाकर (रत्न + आ°) m. 1) *eine Fundgrube für Juwelen* Bhâg. P. 7, 4,17. Pańkar. 1,10,47. 2,2,53. नानारत्नाकरवती (मेदिनी) Varâh. Bṛh.

S. 48,24. — 2) *das Meer* AK. 1,2,3,2. H. 1074. HALÂJ. 3,30. Spr. 2584. 3573. 3763. 4534. KATHÂS. 59,59. 86,82. NÂGÂN. 26,17. कारुण्य° HIT. 27,6. am Ende eines adj. comp. f. आ Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 20. — 3) N. pr. eines Buddha BURN. Intr. 102. HIOUEN-THSANG I, 385. eines Bodhisattva SCHIEFNER, Lebensb. 268 (38). eines Dichters und verschiedener anderer Personen RÂǴA-TAR. 5, 34. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 21. 100, *a*, 42. 285, *a*, No. 665. fgg. Lot. de la b. l. 2. 303. HIOUEN-THSANG I, 385. 388. — 4) N. pr. eines Rosses, eines Sohnes des Uk̈kaiḥçravas, KATHÂS. 123,11. — 5) Titel verschiedener Werke Verz. d. Oxf. H. 113, *b*, 5. 126, *a*, 17. 273, *a*, No. 646. fg. *b*, 43. 279, *a*, 26. 288, *b*, No. 688. 292, *b*, 2. 295, *a*, No. 713. Verz. d. B. H. No. 941. 1403. HALL 174. des Kejadeva NIGH. PR. Vgl. कृत्य°, परिशिष्टसिद्धान्त° (unter परिशिष्ट), प्रस्ताव°, योग°, शुद्धि°, संगीत°, स्मृति°. — 6) N. pr. einer Stadt (wohl n. in dieser Bed.) KATHÂS. 59,59. 66,136.

रत्नाकरनिघण्ट m. Titel eines *Wörterbuchs* Ind. St. 8,351.

रत्नाङ्क (रत्न + अङ्क) m. N. pr. des Wagens von Vishṇu ÇABDAR. im ÇKDR.

रत्नाङ्गुरीयक (रत्न + अ°) n. *ein Fingerring mit Edelsteinen* PAÑKAR. 1,11,10. रत्नाङ्गुलीयक KATHÂS. 18,361.

रत्नादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* RÂǴA-TAR. 8,2434.

रत्नाद्रि m. N. pr. eines mythischen *Berges* WEBER, RÂMAT. UP. 277. 324.

रत्नाधिपति (रत्न + अ°) m. 1) *Oberherr der Kostbarkeiten.* — 2) N. pr. eines Fürsten KATHÂS. 36,10.

रत्नापुर n. N. pr. einer *Stadt* RÂǴA-TAR. 8,2435.

रत्नार्चिस् (रत्न + अ°) m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 364,1.

रत्नावती (von रत्न) f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 152, *b*, 40. — Vgl. रत्नवत्.

रत्नावभास (रत्न + अ°) m. N. eines Kalpa Lot. de la b. l. 92. 124.

रत्नावली (रत्न + आ°) f. 1) *Perlenschnur* MṚḰH. 55,1. 12. 14. KATHÂS. 50,138. HIT. 29,11. — 2) Bez. einer best. rhetorischen Figur: क्रमिकं प्रकृतार्थानां न्यासं रत्नावलीं विदुः; Beispiel: चतुरास्यः पतिर्लक्ष्म्याः सर्वज्ञस्त्वं महीपते *du bist*, o Fürst, Brahman, Vishṇu, Çiva KUVALAJ. 138, *a*. — 3) N. pr. verschiedener Frauenzimmer KATHÂS. 77,22. RÂǴA-TAR. 3,476. Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 5. SCHIEFNER, Lebensb. 275 (45). — 4) Titel verschiedener Werke, unter andern auch des bekannten Schauspiels, Ind. St. 8,196. Verz. d. Oxf. H. 144, *b*, No. 303. 203, *a*, No. 484. 208, *b*, 38. — 95, *b*, 7. 211, *b*, No. 499. 279, *a*, 27. 292, *b*, 2. Ind. St. 2, 252. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 46. — Vgl. धातु°, प्रशस्ति°, प्रसङ्ग°, भक्ति°, भगवद्भक्ति°, योग°, शब्द°.

रत्नावलीनिबन्ध m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 274, *a*, No. 649.

रत्नासन (रत्न + आ°) n. *ein mit Juwelen verzierter Thronsessel* WEBER, RÂMAT. UP. 321. 323.

रत्नि (verstümmelt aus अरत्नि) UṆÂDIS. 4,2. m. f. 1) *Ellbogen* ÂÇV. ÇR. 6,5,4. — 2) *Elle* H. 599. HALÂJ. 2,381. UǴǴVAL. SHAḌV. BR. 4,4. अष्ट° adj. MBH. 8,3623.

रत्निन् (von रत्न) adj. 1) *Gaben habend, — empfangend:* वाचं वाचं जरितू रत्निनीं कृतम् ṚV. 1,182,4. स्यामास्य रत्निनो विभागे 7,40,1. — 2) Bez. *derjenigen Personen, in deren Wohnung von Fürsten das* Ratnahavis *dargebracht wird*, nämlich: Brâhmaṇa, Râǵanja, Mahishî, Parivṛktî, Senânî, Sûta, Grâmaṇî, Kshattar, Saṁgrahîtar, Bhâgadugha und Akshâvâpa TBR. 1,7,3,1. ÇAT. BR. 5,3,1,12. Davon nom. abstr. रत्नित्व n. TBR. ebend.

रत्निपृष्ठक (र° + पृष्ठ) n. *Ellbogen* H. ç. 122.

रत्नेन्द्र (रत्न + इन्द्र) m. *ein Fürst unter den Edelsteinen, ein überaus kostbarer Edelstein* PAÑKAR. 1,4,56. °सार 7,54. 11,13. 2,4,37.

रत्नेश्वर (रत्न + ई°) 1) m. N. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 209, *a*, No. 490. 378, *a*, No. 376. 382, *a*, No. 450. — 2) n. N. eines Liṅga Verz. d. B. H. 146, *b* (67). °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 3.

रत्नोत्तमा f. N. pr. einer Tantra-Gottheit VJUTP. 105.

रत्नोद्भव (रत्न + उ°) m. N. pr. eines buddh. Heiligen WILSON, Sel. Works 2, 36.

रत्नोल्का f. N. pr. einer Tantra-Gottheit VJUTP. 105.

रत्यङ्ग (रति + 3. अङ्ग) n. *pudendum muliebre* ÇABDAR. im ÇKDR.

1. रथ (von अर्) NIR. 9,11 (von रंह्). UṆÂDIS. 2,2 (von रम्). 1) m. *a*) *Wagen*, namentlich *der zweirädrige Streitwagen* (auch *Fahrzeug der Götter*) AK. 2,8,2,1. 19. 21. fg. H. 751. an. 2,220. MED. th. 12. HALÂJ. 2,289. VIÇVA bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,2. तन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम् ṚV. 1,20,3. रथो न सस्निरभि वक्षि वाजम् 3,15,5. वसुमन्त् 4,4,10. सुवृत् 36,2. ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् 16,20. 43,2. 5. आग्न रथं तिष्ठ 5,1,11. रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखम् 63,5. 6,47,27. 7,32,10. मनोजवस् 68,3. स्वधया युज्यमानः 78,4. ययौ वो दूरादनसा रथेन 3,33,9. 8,80,7. AIT. BR. 4,6. 7, 12. AV. 5,14,5. 10,1,8. ÇAT. BR. 5,1,4,7. 5,10. 4,3,3. ÇÂÑKH. ÇR. 12, 14,2. M. 8,209. 295. 342. 9,280. MBH. 3,2114. 2294. 2790 (mit vier Pferden bespannt). औपवाह्य R. 2,39,10. 46,25. SUÇR. 1,104,6. 107,9. RAGH. 1,5. VET. in LA. (III) 30,14. रथच्छिद्र BṚHADD. in Ind. St. 1,118. रथानि (युगानि ed. Bomb.) MBH. 6,1894. अश्व°, गर्दभ° *mit Rossen —, Eseln bespannter Wagen* AIT. BR. 4,9. KÂTJ. ÇR. 15,1,22. अश्वतरी° 22, 2,25. ḰHÂND. UP. 4,2,1. *Vehikel* überh.: रत्नोरथारूढ KATHÂS. 18,388. पक्षिराजरथो हरिः 47,48. Am Ende eines adj. comp. f. आ AK. 2,8,2,48. H. 748. — *b*) *Wagenfahrer* (vom *Gespann* und *Lenker*): सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम् ṚV. 5,63,7. एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरर्षति । गच्छन्वाजं सहस्रिणम् 9,38,1. परि यत्कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा 94,3. 3,49,4. — *c*) *Kämpfer, Kriegsheld* MBH. 2,622. 3,15608. 15697. 5,5792. KATHÂS. 48,48. °वर MBH. 5,5793. रथोदार 5852. 5883. °सत्तम 4,1058. °पुंगव 1091. °यूथप 1111. HARIV. 12999. KATHÂS. 48,47. BHÂG. P. 3,1,38. रथ, अति°, अर्ध° MBH. 5,5850. 5899. अष्टगुणसंमित 5853. रथातिरथसंख्यायां योऽग्रणीः 2,2665. अर्ध°, पूर्ण°, द्विगुण, त्रिगुण u. s. w. KATHÂS. 47,13. fgg. — *d*) *Körper* TRIK. 3,3,199. H. an. VIÇVA a. a. O. — *e*) *Fuss* H. an. VIÇVA. — *f*) *Glied, Theil* MED. — *g*) *Calamus Rotang* AK. 2,4,2,10. H. 1137. H. an. MED. VIÇVA. *Dalbergia ougeinensis Roxb.* RÂǴAN. im ÇKDR. — *h*) = पौरुष TRIK. 3,3,199. — 2) f. ई *ein kleiner Wagen* TRIK. 2,8,49. — Vgl. अरथ, अति°, अनु°, अश्वरथा, कीर्तिरथ, कृत्ति°, क्रम°, क्रीडा°, गी°, चन्द्र°, चित्र°, जङ्घा°, ज्योतो°, त्वेष°, दश°, दशपूर्व°, दृढ°, देव°, पत्त्र°, पद्रथ, पद्म°, पादरथी, पुरूरथ, पुरो°, पुष्प°, पुष्य°, प्ररथम्, प्रतिरथ, प्रिय°, बृहद्रथ, बहु°, ब्रह्म°, भगी°, भद्र°, भण्डो°, भानु°, भाव्य°, भीम°, मनुष्य°, मनो°, मयू-

र°, मरुद्रथ, मक्ता°, मीन°, यम°, योग°, प्रचद्रथ, स°, सिंक्°, सु°, कंस°.

2. रथ (von रम्) m. *Behagen, Ergötzen, Lust* in मनोरथ und 2. रथजित्.

रथक m. *ein best. Theil des Hauses* (मन्दिरावयवविशेष) nach ÇKDR. in der Stelle: अष्टकांशेन गर्भस्य रथकानां तु निर्गमः। परिधेर्गुणभागेन रथकांस्तत्र कल्पयेत् ॥ तत्तृतीयेन वा कुर्याद्रथकानां तु निर्गमम्। रामत्रयं स्थापनीयं रथकत्रितये सदा ॥ ÇRÎHARIBHAKTIVILÂSA 20.

रथकट्या f. *eine Menge von Wagen* P. 4,2,51.

रथकड्या f. dass. VOP. 7,35. AK. 2,8,2,23. H. 1422.

रथकर m. = रथकार ÇABDAR. im ÇKDR.

रथकल्पक m. *Zurüster von Wagen, Wagenmeister* MBH. 7,4337.

रथकाम्य्, °काम्यति *nach dem Wagen verlangen, angespannt sein wollen:* अश्वः KÂṬH. 7,5.

रथकाय (collect. von रथ) m. *die Abtheilung der Wagen* (in einem Heere), *die Wagen* HIOUEN-THSANG I, 82.

रथकार m. *Wagner, Zimmermann* AK. 2,10,9. H. 917, Sch. H. an. 4,276. MED. r. 293. HALÂJ. 2,432. AV. 3,5,6. VS. 16,17. 30,6. TBR. 1,1,4,8. ÇAT. BR. 13,4,2,17. KÂTJ. ÇR. 1,1,9. 20,2,16. PAṄKAT. 43,1. 185,10. 228,8. HIT. 86,4. Im System der Sohn eines Mâhishja von einer Karaṇî JÂGṄ. 1,95. AK. 2,10,4. H. an. MED. — Vgl. राथकारिक, राथकार्य.

रथकारक m. = रथकार H. 899.

रथकारत्व n. *das Handwerk des Wagners, — Zimmermanns* PAṄKAT. 228,12.

रथकुटुम्बिक m. *Wagenlenker* H. 760.

रथकुटुम्बिन् m. dass. AK. 2,8,2,28.

रथकूबर s. u. कूबर.

रथकृत् m. 1) *Wagner, Zimmermann* H. 917. KÂTJ. ÇR. 4,7,7. 9,5. im System der Sohn eines Mâhishja und einer Karaṇî H. 895. — 2) N. pr. eines Jaksha VP. 233.

रथकेतु m. *Wagenbanner* R. 6,86,37.

रथक्रान्त m. Bez. *eines best. Tactes* (neben अश्वक्रान्त, विष्णु°, सूर्य° und विधु°) SAṂGÎTARATNÂKARA im ÇKDR.

रथक्रीत adj. *um den Preis eines Wagens erkauft* AV. 11,6,23.

रथक्षय adj. *im Wagen verweilend:* कदा भुवन्रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः so v. a. *wann werden die Priester es dahin bringen wie Fürsten im Wagen zu fahren?* ṚV. 6,35,1.

रथगणक adj. viell. *der das Amt hat die Wagen zu überzählen* gaṇa उद्गात्रादि zu P. 5,1,129. mit einem im gen. gedachten Worte comp. gaṇa याजकादि zu P. 2,2,9. Accent eines solchen comp. gaṇa याजकादि zu P. 6,2,151. — Vgl. राथगणक und पत्तिगणक.

रथगर्भक m. *ein Miniaturwagen* d. i. *Sänfte* H. 753. — Vgl. रथार्भक.

रथगुप्ति f. *eine am Wagen zum Schutz desselben angebrachte Vorrichtung* AK. 2,8,2,25. H. 758.

रथगृत्स m. *ein gewandter Wagenlenker, Leibkutscher* AIT. BR. 3,48. VS. 15,15.

रथगोपन n. = रथगुप्ति HALÂJ. 2,294.

रथग्रन्थि m. *Wagenknopf* HARIV. 15200.

रथचक्र n. *Wagenrad* AIT. BR. 3,43. TBR. 1,1,6,8. ÇAT. BR. 2,3,3,12. 5,1,5,2. 11,8,1,11. KAUÇ. 14. 15. MBH. 3,12093. 12169. 6,1894 (रथचक्राणि ed. Bomb. st. °चक्राश्च der ed. Calc.). R. 4,60,9. KÂM. NÎTIS. 8,2. VARÂH. BṚH. S. 43,46. °चित् *in Form eines Wagenrades geschichtet* ÇAT. BR. 6,7,2,8. TS. 5,4,11,2.

रथचरण m. 1) *Wagenfuss* d. i. *Wagenrad* BHÂG. P. 1,9,37. 5,1,31. 8,6.16,2. Vgl. रथपाद. — 2) *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) ÇABDAR. im ÇKDR.

रथचर्या f. (häufig im pl.) *das Fahren zu Wagen* MBH. 1,5340. 6,2077. 9,470. 13,5101. R. 1,19,19 (रथचर्यासु zu lesen). 2,52,47 (51,13 GORR.).

रथचर्षण *ein best. Theil des Wagens, Behälter* oder dgl.: यो हृ वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे। ततः पिबतमश्विना ṚV. 8,5,19. nach SÂJ. *auf einer sichtbaren Stelle in der Mitte des Wagens.*

रथचर्षणि adj. so v. a. रथगमन nach DURGA zu NIR. 5,12 in dem Citat: धानाः सोमानामिन्द्राद्धि च पिब च। बब्धां ते हरी धाना उप ऋजीषं जिघ्रताम्। आ रथचर्षणे सिञ्चस्व. Es steht Nichts im Wege die Form als loc. von रथचर्षण anzusehen.

रथचित्रा f. N. pr. eines Flusses MBH. 6,334 (VP. 183).

रथजङ्घा f. *ein best. Theil des Wagens, Hintertheil* LÂṬJ. 1,9,26.

1. रथजित् (1. रथ + जित्) adj. *Wagen gewinnend* ṚV. 9,78,4.

2. रथजित् (2. रथ + जित्) adj. *Zuneigung gewinnend, liebreizend:* अप्सरसः AV. 6,130,1. — Vgl. राथजितेय.

रथजूति adj. *rasch zu Wagen fahrend* oder m. N. pr. AV. 19,44,3.

रथज्ञान n. *die Kenntniss des Wagenlenkens* KATHÂS. 56,371. — Vgl. रथविज्ञान.

रथज्ञानिन् adj. *mit der Kunst des Wagenlenkens vertraut* KATHÂS. 56,368.

रथतुर् adj. *den Wagen befördernd:* शुभे कं यान्ति रथतूर्भिरश्वैः ṚV. 1,88,2. ते नो ऽवन्तु रथतूर्मनीषाम् 10,77,8, wo der nom. sg. mit ते zu verbinden ist; vgl. u. रथयु und ते हयोत्तमाः। समुत्पेतुरथाकाशं रथिनं मोहयन्निव MBH. 3,2794.

रथदारु n. *zum Bau von Wagen sich eignendes Holz* P. 6,2,43, Sch.

रथद्रु m. *Dalbergia ougeinensis Roxb.* AK. 2,4,2,7.

रथद्रुम m. dass. H. 1142.

रथधुर् f. *Wagendeichsel* MBH. 1,5367.

रथनाभि f. *Nabe am Wagen* VS. 34,5. ÇAT. BR. 14,5,5,5.

रथनीड s. u. नीड 3).

रथनेमि s. u. नेमि.

रथंतर (रथम्, acc. von रथ, + तर) P. 3,2,46, Sch. VOP. 24,60 (m.). 1) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,231, *a*. ṚV. 1,164,25. 10,187,1. AV. 8,10,3. 11,3,16. VS. 10,10. 11,8. TBR. 2,1,5,7. 7,1,1. AIT. BR. 8,1. ÇAT. BR. 1,7,2,17. 8,1,19. ÇÂÑKH. ÇR. 10,9,20. 11,12,2. ḰHÂND. UP. 2,12,1.2. KAUSH. UP. 1,5. ḰÛLIKOP. in Ind. St. 9,14. MBH. 2,447. 3,14162. 5,1711. 12,1633. 10118. 13,875. 986. 4896. 7369. 14,311. HARIV. 16306. gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. VP. 42. MÂRK. P. 48,31. VÂJU-P. bei MUIR, ST. 4,317, N. 281. Verz. d. Oxf. H. 56,*b*,30. °पृष्ठ ÇÂÑKH. ÇR. 7,20,8. 10,2,1. 11,30. °सामन् 13,29,14. PAṄKAV. BR. 8,8,12. — 2) m. das Rathaṃtara als eine Form Agni's und zwar als Sohnes des Tapas gefasst MBH. 3,14174. — 3) f. ई N. pr. einer Gattin Taṃsu's MBH. 1,3707. — Vgl. अद्रो° (auch AV. PRÂT. 2,51) und राथंतर.

रथपथ m. *Bahn des Wagens* LÂṬJ. 3,10,11. auch in einer übertra-

genen Bed. (प्रतिकृतौ संज्ञायाम्) gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

रथपर्याय m. *Calamus Rotang* (*ein Synonym von* रथ) Çabdak. im ÇKDr.

रथपाद् m. *Wagenfuss* d. i. *Wagenrad* H. 755. — Vgl. रथचरण.

रथप्रा 1) adj. nach Sâj. *den Wagen füllend* ṚV. 6,49,4. 8,63,10. — 2) f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 73,*a*, No. 129. *b*, 3. 4; vgl. रथप्सा, रथस्पा.

रथप्रोत adj. *in den Wagen fest gefügt*, Personification in einer formelhaften Aufzählung VS. 15,17.

रथप्रोष्ठ m. N. pr.; pl. ṚV. 10,60,5. — Vgl. राथप्रोष्ठ.

रथप्सा f. N. pr. eines Flusses Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. रथप्रा, रथस्था, रथस्पा.

रथबन्ध m. *Fesselung —, Festhaltung des Wagens, Wagenfessel* MBh. 8,2583.

रथमहोत्सव m. *ein grosses Wagenfest, die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Verz. d. B. H. No. 1181. — Vgl. रथोत्सव.

रथमुख n. *Vordertheil des Wagens* AV. 8,8,23. TS. 3,4,8,2. 5,4,9,3. — Vgl. रथशिरस्.

रथया (von रथ) f. *Lust nach Wagen* ṚV. 8,46,10. — Vgl. रथयु.

रथयात्रा f. *die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Wilson, Sel. Works 1,128. 155. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,5. *b*,14. 17. 62,*b*,12. 85, *a*,14. रथयात्रोत्सव Verz. d. B. H. 136,*a* (129).

रथयान n. *das Fahren zu Wagen* AV. 4,34,4. R. Gorr. 2,34,13.

रथयावन् adj. *zu Wagen fahrend* ṚV. 8,38,2.

रथयु (von रथ) adj. *nach Wagen begehrend* Nir. 6,31. ṚV. 1,51,14. in den folgenden Stellen ist der nom. sg. mit einem nom. und acc. pl. zu verbinden (vgl. u. रथतुर्): उशतीर्द्वारो देवं रथं रथयुर्धारयध्वम् 10,70,5. स्वाध्योऽ वि दुरो देवयन्तो ऽशिश्रयू रथयुर्देवताता 7,2,5. — Vgl. रथया.

रथयुज् 1) adj. *den Wagen schirrend, an den Wagen geschirrt* ṚV. 1, 139,4. हर्यः 8,33,14. वायु 10,64,7. — 2) m. *Wagenlenker* Ragh. 9,25.

रथयुद्ध n. *ein Kampf zu Wagen* MBh. 1,551.

रथयोग s. u. योग 1) *b*).

रथराज m. N. pr. eines Ahnen Çâkjamuni's LIA. II, Anh. 2.

रथर्य् (von रथ), °र्यति *im Wagen fahren* Naigh. 2,14. 4,3. Nir. 6, 29. एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति ṚV. 9,3,5. यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि 10,37,3. 8,90,2.

रथर्वी adj. oder subst. f. Bez. einer Schlange: पैद्वो रथर्व्याः शिरः सं बिभेद पृदाक्वाः AV. 10,4,5.

रथवंश m. *eine Menge von Wagen* MBh. 3,15720. 4,1153. 1648.

रथवत् (von रथ) adj. 1) *von Wagen begleitet, Wagen habend* ṚV. 1, 122,11. राधस् 5,57,7. 7,27,5. 76,5. — 2) *das Wort* रथ *enthaltend* Ait. Br. 4,29.

रथवर्त्मन् n. P. 6,2,151, Sch. *Weg für Wagen, Fahrstrasse* R. 2,42, 12. Ragh. 4,82.

रथवाह् 1) adj. (f. ई) *einen Wagen ziehend*: अश्वा Çat. Br. 5,5,4,35. Kâtj. Çr. 15,10,20. — 2) m. *a*) *Wagenpferd, ein an einen Wagen gespanntes Pferd* MBh. 4,2043. 7,1012. — *b*) *Wagenlenker* Kathâs. 56, 394. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,16.

रथवाहक m. *Wagenlenker* MBh. 3,2890.

रथवाहन 1) m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,7012. — 2) n. proparox. *ein bewegliches Gestell, auf welches der Wagen gesetzt wird, Untersatz* (vgl. βωμός bei Homer) ṚV. 6,75,8. VS. 12,71. AV. 3,17,2. TBr. 1,7, 9,6. Kâth. 21,10. Çat. Br. 5,4,3,23. fg. Mah. zu VS. 10,25. die Schreibung °वाहण Kâtj. Çr. 15,6,27. 30. VS. Prât. 3,85. Mah. zu VS. 10, 21. °वाह्य TS. 1,8,10,1. TBr. 1,8,4,3. Kâth. 15,9. TS. Comm. II, 193.

रथविज्ञान n. *die Kenntniss des Wagenlenkens* Kathâs. 56,355. 394. — Vgl. रथज्ञान.

रथविद्या f. dass. Kathâs. 56,357.

रथविमोचन n. *das Abschirren vom Wagen;* davon adj. °विमोचनीय *darauf bezüglich* TBr. 1,3,6,6. 7,9,5.

रथवीति m. N. pr. eines Mannes ṚV. 5,61,18. fg.

रथवीथी f. *Weg für Wagen, Fahrstrasse* Bhâg. P. 4,15,20.

रथव्रज m. = रथवंश AK. 2,8,2,23. MBh. 4,1056. 6,5441.

रथव्रात m. dass. MBh. 4,1070. 5,5960.

रथशक्ति f. *der Fahnenstock auf einem Streitwagen* Hariv. 9363.

रथशाला f. *Wagenschuppen* MBh. 2,2694. 3,2883. 12,10453.

रथशिक्षा f. *die Theorie des Wagenlenkens* R. Gorr. 1,80,28.

रथशिरस् n. so v. a. रथमुख Kâtj. Çr. 18,5,17. 20. Lâtj. 2,8,1.

रथशीर्ष n. dass. Çat. Br. 9,4,1,13.

रथश्रेणि f. *Wagenreihe* Çat. Br. 10,6,1,7.

रथसङ्ग m. *feindliches Zusammentreffen von Wagen* ṚV. 9,53,2.

रथसप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Âçvina Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,48. Wilson, Sel. Works 2,196.

रथसूत्र n. *eine Vorschrift über Wagenbau* MBh. 2,255. Schol. zu Kâtj. Çr. 16,9. 10 und Anm.

रथस्थ 1) adj. s. u. स्थ. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 1,6455; vgl. रथप्सा, रथस्पा.

रथस्पति (रथःऽपति Padap.) m. *der Genius des Behagens, des Ergötzens* (oder *des Streitwagens*): एष ते देव नेता रथस्पतिः (= सर्वस्य पालकः Sâj.) शं रयिः ṚV. 5,50,5. ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगः 10,64,10. विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः । ऋभुर्वाजः 93,7. Gebildet wie वनस्पति u. s. w., wo die Endung अस् dem Ohr als gen. erscheint.

रथस्पा s. u. रथस्या.

रथस्पृश् adj. *den Wagen berührend* (und dadurch scheu geworden): अश्वाः ṚV. 10,95,8.

रथस्या f. N. pr. eines Flusses gaṇa पारस्करादि zu P. 6,1,157. Da das Wort ein eingeschobenes स enthalten soll, so wird wohl रथस्पा die richtige Lesart sein; vgl. रथप्रा, रथप्सा, रथस्था.

1. रथस्वन m. *Wagengerassel;* am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 56,391.

2. रथस्वन adj. wohl so v. a. स्वनद्रथ; personificirt in der formelhaften Aufzählung VS. 15,16. N. pr. eines Jaksha Bhâg. P. 12,11,35.

1. रथाक्ष (रथ + 2. अक्ष) m. *Wagenachse* TS. 6,6,4,1. Kâth. 29,8. Çâṅkh. Gṛhj. 1,15. MBh. 7,6090. als Längenmaass (= 104 Aṅgula nach dem Schol. zu Kâtj. Çr.): °मात्र Kâtj. Çr. 8,8,6. °मात्रैरिषुभिः MBh. 7,6829. R. 3,67,18.

2. रथाक्ष (रथ + 3. अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge

Skanda's MBh. 9,2565.

रथाग्र MBh. 5,1832 fehlerhaft für रथाग्र्य *der beste Kämpfer*, wie die ed. Bomb. liest.

रथाङ्का f. v. l. für रथाह्वा Varâh. Bṛh. S. 16,16.

रथाङ्ग (रथ + 3. अङ्ग) 1) n. a) *Wagentheil* H. 758. Halâj. 2,293 (m.). Âçv. Gṛhj. 2,6,7. Çâñkh. Gṛhj. 1,15. MBh. 1,6488. 14,2447. — b) *Wagenrad* AK. 2,8,2,24. Trik. 3,3,68. H. 755. an. 3,130. fg. Med. g. 46. Halâj. 2,292. Çâk. 98,22. °नेमयः 169. Vikr. 100. °ध्वनि Ragh. 7,38. Sâh. D. 18,2. — c) *Discus*, insbes. der Kṛshṇa's oder Vishṇu's MBh. 6,2594. Hariv. 7329. Bhâg. P. 2,2,8. 3,19,7. 9,4,50. 10,38,36. 66,21. °पाणि Bein. Kṛshṇa's oder Vishṇu's Halâj. 1,22. Hariv. 8434. Çiç. 1,21. Bhâg. P. 1,3,38. 11,2,39. — d) *die Scheibe eines Töpfers* MBh. 7,5940. चक्रं तु die ed. Bomb. st. रथाङ्गं der ed. Calc. — 2) m. *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) Trik. H. 1330, Sch. H. an. Med. Halâj. 2,80. Vikr. 100. — 3) f. आ v. l. für रथाह्वा Varâh. Bṛh. S. 16,16. — 4) f. ई *eine best. Pflanze*, = ऋद्धि Râǵan. im ÇKDr.

रथाङ्गतुल्याह्वयन m. *der mit dem Wagenrade gleichen Namen tragende Vogel* d. i. *Anas Casarca Gm.* (चक्रवाक) Hariv. 8794.

रथाङ्गनामक m. dass. AK. 2,5,22.

रथाङ्गनामन् m. dass. Ragh. 3,24. 13,31. Kumâras. 3,37. Mâlav. 84. Kathâs. 104,112, wo रथाङ्गनाम्नो zu lesen ist.

रथाङ्गसंज्ञ (र° + संज्ञा) m. dass. R. Gorr. 2,111,49.

रथाङ्गसाह्व m. dass. MBh. 3,11113.

रथाङ्गाह्व (रथाङ्ग + आह्वा) m. dass. H. 1330. R. 2,103,42.

रथाङ्गाह्वय m. dass. AK. 2,5,22.

रथाङ्गाह्वयन adj. *nach dem Rade benannt:* द्विजाः = चक्रवाकाः R. 2,95,11 (104,11 Gorr.).

रथानीक (रथ + अ°) n. *ein Heer von Streitwagen* Draup. 7,21 (यथानीकं MBh. 3,15715). 6,1760.

रथान्तर m. N. pr. eines Lehrers (fehlerhaft für रथीतर) VP. 277, N. 7. Nach Agni-P. im ÇKDr. Bez. eines Kalpa.

रथाभ्र (रथ + अभ्र) m. *Calamus Rotang* Çabdar. im ÇKDr. °पुष्प m. dass. AK. 2,4,2,10.

रथारथि (von रथ + रथ) adv. *Wagen gegen Wagen* MBh. 4,1056. — Vgl. कचाकचि, केशाकेशि, नखानखि u. s. w. und P. 5,4,127.

रथारोह (रथ + आ°) 1) adj. subst. *zu Wagen sitzend, ein Kämpfer zu Wagen* MBh. 6,1897. — 2) m. *das Besteigen des Wagens* Çâk. 96,3, v. l. für रथारोहण.

रथारोहिन् = रथारोह 1) H. 761.

रथार्भक (रथ + अ°) m. *ein kleiner Wagen* Wilson. — Vgl. रथगर्भक.

रथावट m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1493.

रथावर्त (रथ + आ°) m. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8001.

1. रथाश्व (रथ + अश्व) m. *Wagenpferd* Kathâs. 113,53.

2. रथाश्व (wie eben) n. sg. *Wagen und Pferd* M. 7,96. °दान Verz. d. Oxf. H. 35,b,8.

रथासह (रथ + सह) adj. *dem Wagen gewachsen, ihn zu ziehen tüchtig* ṚV. 8,26,20.

रथाह्न्य und रथाह्न (रथ + अ°) *Tagereise zu Wagen* Lâṭj. 1,11,12. Kâtj. Çr. 25,14,15. रथाह्न्य n. dass. Çat. Br. 12,2,2,12.

रथाह्वा (रथ + आ°) f. N. pr. eines Flusses Varâh. Bṛh. S. 16,16. v. l. रथाङ्का und रथाङ्गा.

रथिक (von रथ) adj. (f. ई) und subst. *zu Wagen fahrend, Besitzer eines Wagens* gaṇa पर्यादि zu P. 4,4,10. AK. 2,8,2,44. H. 761. Varâh. Bṛh. S. 15,11. 86,73. P. 1,3,25, Vârtt. 1, Schol. रथिकाश्वारोहम् P. 2,4,2, Sch.

रथित (wie eben) adj. *in den Besitz eines Wagens gelangt* Maitrjup. 4,4.

रथिन् (wie eben) 1) adj. a) *einen Wagen besitzend, im Wagen fahrend; Besitzer eines Wagens, Kämpfer zu Wagen* AK. 2,8,2,28. 44. H. 761 (bis). Halâj. 2,235. ṚV. 5,83,3. अस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु 6,47,31. अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा 8,4,9. 10,40,5. 51,6. 1,122,8. AV. 4,34,4. 7,62,1. 73,1. ये रथिनो ये अरथाः 11,10,24. VS. 16,26. अतिथि TS. 5,2,2,3. Çat. Br. 8,7,2,7 (superl.). Kaṭhop. 3,3. MBh. 1,4084. 2,2079. 3,724. fg. 2794. 15598. 4,674. 1639. 8,1620. fg. 16,210. Hariv. 1954. 9733. Spr. 2587. R. 2,46,27. 63,19. R. Gorr. 2,73,17. 3,49,18. 5,83,2. (वदेत्) आयुष्मान्रथिनं सूतः Bharata beim Schol. zu Çâk. 5,2. Kâm. Nîtis. 8,2. Ragh. 7,34. 49. 15,8. Vikr. 100. Uttarar. 98,10 (130,4). Bhâg. P. 1,15,17. 3,1,30. नारथी रथिनः सखा Spr. 1560. — b) *aus —, in Wagen bestehend:* सेना MBh. 5,5703. इषः *Wagenlasten bildend* oder *auf Wagen gefahren* ṚV. 1,9,8. — c) *zum Wagen gehörig, — geübt:* Rosse ṚV. 6,27,8. 9,97,50. — 2) रथिनी f. *eine Menge von Wagen* gaṇa खलादि zu P. 4,2,51, Vârtt.

रथिन (wie eben) adj. *einen Wagen besitzend* u. s. w. Vop. 7,32. fg. AK. 2,8,2,44, v. l.

रथिर (wie eben) adj. *einen Wagen besitzend, im Wagen fahrend* (P. 5,2,109, Vârtt. 3. Vop. 7,32. fg. AK. 2,8,2,44. H. 761); auch so v. a. *eilig:* अनु देवान्रथिरो यासि साधन् ṚV. 3,1,17. 26,1. 31,20. 7,7,4. die Açvin 69,5. स्वर्षः सिषासन्रथिरो गविष्टिषु 9,76,2. 97,46. अद्रयः 10,76,7. अध्वर्यवः 9,97,37. क्रतुः Vâlakh. 2,8.

रथिराय (von रथिर), partic. रथिरायत् *herbeieilend:* रथिरायतामुशती पुरंधिरस्मद्र्यगा दावने वसूनाम् ṚV. 9,93,4.

रथी (von रथ) P. 5,2,109, Vârtt. 2. adj. subst. acc. रथ्यम्, pl. रथ्यः; nach VS. Prât. 3,110 Dehnung des इ von रथिन् vor त und न; vgl. P. 8,2,17, Vârtt. 1. 1) *zu Wagen fahrend, Wagenlenker, Kämpfer zu Wagen* ṚV. 1,25,3. 2,39,2. 3,3,6. 5,87,8. 7,39,1. 8,25,2. परि णो वृणजन्नघा दुर्गाणि रथ्यो यथा 47,5. 64,1. 84,1. सूनुरश्वं रथीरिव 9,64,10. रथीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ 10,102,2. कारीणां रथ्यं विव्रतानाम् 23,1. 78,5. 130,7. 4,56,4. नकिष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे 1,84,6. superl. 1,22,2. 6,56,2. 3. (इन्द्रः) रथीतमो रथीनाम् 8,45,7. TS. 4,7,15,3. — 2) *Lenker, Leiter* überh.; *Herr, Gebieter:* यज्ञानाम् ṚV. 8,44,27. 10,92,1. अध्वराणाम् 1,44,2. 6,7,2. 8,11,2. Ait. Br. 2,34. रायः ṚV. 2,24,15. 5,54,13. 7,5,5. वाजानाम् 6,5,3. अद्भुतस्य 1,77,3. दूतस्य 9,16,2. यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनाम् 6,51,6. ऋतस्य 9. 55,1. 7,66,12. 8,19,35. — 3) *Wagenlasten bildend* oder *auf Wagen gefahren:* रयि ṚV. 6,49,15. वाजाः 1,121,14. इषो रथीः (vgl. 1,9,8) 3,30,11. — 4) *zum Wagen gehörig:* अश्वासः ṚV. 1,148,3. 8,92,7.

रथीकर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122,a,4.

रथीतर 1) compar. zu रथी; s. das. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Bṛhadd. 1,5. 3,8. Verz. d. Oxf. H. 54,b,28. 36. 55,a,2. Bhâg. P. 9,6,1. 2. pl. *seine Nachkommen* 3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,18. 60,36. — Vgl. राथीतर.

रथीनर m. N. pr. VP. 359 fehlerhaft für रथीतर.

रथीय् (von रथ), partic. praes. *fahrend:* रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः *als wollte es mitfahren fliegt das Kraut dahin* ṚV. 1,166,5.

रथीवृत adj. *vom Fahrenden erwählt:* रथो न यो रथीवृतो घृणीवान्चेतति त्मना etwa *Lieblingswagen* ṚV. 10,176,3.

रथेचित्र adj. *auf dem Wagen prangend;* personif. VS. 15,16.

रथेश (रथ + ईश) m. *Besitzer eines Wagens, Kämpfer zu Wagen* Ragh. 7,34.

रथेशुभ् s. u. शुभ्.

रथेषा (रथ + ईषा) f. *Wagendeichsel* MBh. 5,7214 (wo रथेषा st. रथेषां der ed. Bomb. und रथे सा der ed. Calc. zu lesen ist, wie schon Benfey gesehen hat). 6,1761. 2170. 7,8781. Hariv. 6682 (रथेशा ed. Calc.).

रथेषु (रथ + इषु) m. Bez. *einer Art von Pfeilen* Hariv. 7490. 8149. vielleicht so v. a. रथाक्षमात्र; s. u. रथाक्ष.

रथेष्ठा adj. *auf dem Wagen stehend* (स्था), *zu Wagen fahrend, Kämpfer zu Wagen* ṚV. 1,173,4. 5. 2,17,3. 6,21,1. 22,5. आ रथे हिरण्यये रथेष्ठाः 29,1. 8,4,13. वर्हन्तु त्वा रथेष्ठामा हरयो रथयुजः 33,14. 9,97,49. VS. 22,32.

रथोढ, रथोळ्ह (रथ + ऊढ) adj. *auf einem Wagen gefahren* ṚV. 10,148,3.

रथोत्सव (रथ + उ°) m. *Wagenfest, die feierliche Procession eines Idols zu Wagen* Verz. d. Oxf. H. 77,a,12. — Vgl. रथमहोत्सव.

रथोद्धत (रथ + उ°) 1) adj. *stolz auf seinen Wagen* (mit Anspielung auf 2) a) Varâh. Bṛh. S. 104,31. — 2) f. आ a) *ein best. Metrum, 4 Mal* —◡—◡◡◡—◡—◡— Çrut. 25. Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 8). Ind. St. 8,375. — b) Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 874.

रथोद्वह् s. u. रतोद्वह्.

रथोपस्थ (रथ + उ°) m. *Schooss (Fond) des Wagens* AV. 8,3,23. Ait. Br. 8,10 (= रथोर्ध्वभाग Sâj.). Çat. Br. 2,3,2,12. Lâṭj. 1,9,25. Bhag. 1, 47. MBh. 1,179. 193. 3,843 (= रथनीड 844). 2870. 2884. 2890. 4,1106. 1401. 2006. 5,7219. R. 2,40,16 (39,20 Gorr.). 6,68,19.

रथोरग (रथ + उ°) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,362; vgl. VP. (II) 2,175.

रथोष्मा (रथ + उष्मन् oder ऊ°) f. N. pr. eines Flusses Hariv. 9507.

रथौघ (रथ + ओघ) m. *eine Menge von Wagen* Varâh. Bṛh. S. 68,95.

रथौजस् (रथ + ओ°) adj. *Wagen-mächtig;* personif. VS. 15,15.

रथ्य (von रथ) 1) adj. a) parox. *zum Wagen gehörig, an den Wagen gewöhnt* u. s. w.; m. *Wagenpferd (am Streitwagen)* P. 4,3,121. 4,76. AK. 2,8,2,14. H. 1234. an. 2,379. Med. j. 50. सप्ति ṚV. 2,31,7. अत्य 4,4. 4,41,10. 5,41,3. 9,36,1. चक्र 4,1,3. 10,10,7. 89,2. 1,53,9. 180,4. Çat. Br. 5,4,2,16. आणि ṚV. 1,35,6. आजि *Wagenrennen* 9,91,1. धावन्त्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः *Wagenpferde* Çâk. 8. रथ्यनागाश्वचरित Verz. d. Oxf. H. 47,b,16. Nach H. an. ist रथ्य m. auch = रथांस (d. i. रथांश) *Theil eines Wagens.* — b) perisp. dass.: अश्वाः R. 6,37,3. 9,86,2. der acc. sg. रथ्यम् z. B. 6,46,2 kann hierher oder zu रथी gezogen werden. — c) viell. *an den Landstrassen* (रथ्या) *seine Freude habend:* रथ्यविरथ्य als Beiw. Çiva's neben चतुष्पथरत MBh. 12,10389. Nîlak.: रथः तद्भावो विरथः तङ्भयार्ह्हाय रथ्यविरथ्याय. — 2) f. आ a) parox. *Fahrstrasse* P. 5,1,6, Vârtt. AK. 2,2,2. H. 981. H. an. (= प्रतोली, पथ und चत्वर). Med. (= विशिखा und वर्तनी). Hâr. 122. Halâj. 2,134. Gobh. 1, 2,36. Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. Kauç. 141. Jâǵn. 1,196. MBh. 1,5605. 13,4993. 16,37. व्रज° Hariv. 4079. घोष° 4425. R. 2,6,11 (5,11 Gorr.). 33,4. R. Gorr. 2,39,13. 5,15,9. 13. 49,16. 6,11,38. Ragh. 15,38. °पङ्क्तिषु Spr. 920. रथ्यालि 1004. 2045. 2152. रथ्यान्तः 2588. Varâh. Bṛh. S. 28,5. 53, 77. Kathâs. 20,126. 65,132. Râǵa-Tar. 2,29. 5,74. 241. Bhâg. P. 1,11, 15. 4,9,57. 21,2. 25,16. Mârk. P. 35,13. 20. 24. am Ende eines adj. comp. f. आ R. Gorr. 2,4,18. 73,31. 4,41,52. Kathâs. 44,74. — b) oxyt. *eine Menge von Wagen* P. 4,2,50. AK. 2,8,2,23. H. 1422. H. an. Med. — 3) n. a) parox. *Wagenzeug, Wagengeschirr, Rad* u. s. w.: ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतमादिशे ṚV. 9,21,6. 2,4,6. Lâṭj. 2,8,2. 20. = रथाङ्ग Comm. — b) perisp. etwa *das Wagenrennen, Wagenkampf;* viell. auch *Fuhrwerk:* प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः ṚV. 7,95,1. एषैष्या चिद्रथ्या जयेम 10,102,11. — Vgl. अनुरथ्या, परिरथ्य, महारथ्या, राथ्य.

रथ्यचर्या R. 1,19,19 fehlerhaft für रथचर्या.

रद्, रदति (विलेखने) Dhâtup. 3,16; रराद; रदितं partic. 1) *kratzen, ritzen; hacken, nagen* Nir. 2,26. यत्रा वो दिद्युद्रदति ṚV. 1,166,6. आमादो गृध्राः कुणपे रदन्ताम् AV. 11,10,8. Suçr. 2,263,8. — 2) (eine Bahn) *schürfen, — vorzeichnen, — öffnen:* पथः ṚV. 2,30,2. 5,80,3. 7,87,1. अर्धनः 60,4. गातुम् 47,4. — 3) *in eine Bahn leiten:* सिन्धून् ṚV. 10,89, 7. 3,33,6. 7,49,1. — 4) *Jmd Etwas zuleiten, zuführen* ṚV. 1,116,7. वाजं विप्राय 117,11. पुरूणि 169,8. रदा पूषेव नः सनिम् 6,61,6. 9,93,4. अन्नाद्यम् Pañkav. Br. 16,6,6. TBr. 2,3,9,9. रदिते अर्बुदे तवं etwa *auf deine Vorbereitung hin* AV. 11,9,7.

— प्र *einritzen, schürfen:* प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः ṚV. 4,19,2. पन्थाम् 5,10,1. 10,75,2.

— वि *zertrennen:* गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चा ṚV. 1,61,12. *eröffnen* oder *zuführen:* वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्तु 7,62,3.

रद (von रद्) 1) adj. *aufritzend, nagend an:* नीरदैः प्रियरह्मीनाह्नदयावनीरदैः Ghaṭ. 1. — 2) m. a) *Zahn* AK. 2,6,2,42. H. 583. 296. an. 2, 233. Med. d. 14. Halâj. 2,372. °खण्डन Gît. 10,3. Varâh. Bṛh. S. 51,42. Bṛh. 17,9. *Fangzahn eines Elephanten* Nalod. 2,8. Varâh. Bṛh. S. 94,11. 13. °कोश 81,21. — b) Bez. *der Zahl zweiunddreissig* Weber, Nax. 2,382. — c) nom. act. *das Kratzen, Ritzen* u. s. w. H. an. Med. — Vgl. चक्र°, जिह्वा°, द्वि°, रसना°, वज्र°.

रदच्छद m. *Lippe (Zahndecke)* H. 581. — Vgl. दन्तच्छद, दशनच्छद, रदनच्छद.

रदन (von रद्) m. *Zahn* AK. 2,6,2,42. H. 584. Halâj. 2,372. Suçr. 1, 259,5. *Fangzahn eines Elephanten* Hariv. 7542 (pl. st. du.). Ragh. 4,59.

रदनच्छद m. *Lippe* AK. 2,6,2,41. MBh. 3,11522. 6,1798. R. 5,25,15 (वदनच्छद gedr.). Spr. 3562. Kathâs. 4,7.

रदनिका (von रदन) f. N. pr. eines Frauenzimmers Mṛkkh. 6,15.

रदनिन् (von रदन) m. *Elephant* Râǵan. im ÇKDr.

रदावसु (रदऽवसु Padap.) adj. *Güter eröffnend, — zuführend* ṚV. 7,32,18.

रदिन् (von रद्) m. *Elephant* HALÂJ. 2,59.

रद्द m. Bez. *des 11ten* Joga Ind. St. 2,271.

रद्धर् (von रध्) nom. ag. *Bezwinger, Unterdrücker, Peiniger, Quäler:* लङ्कानिवासिनाम् BHAṬṬ. 9,29.

रध्य्, रध्यति (दार्ढ्ये) GAṆARATNAM. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

रध्, रन्ध्, रध्यति (हिंसासंराद्धयोः) DHÂTUP. 26,84. ररन्ध, ररन्धिम P. 7,1,61. fg. ररन्धिम und रेध्म, अरन्धत् VOP. 11,4. ved. रारधुर्, रधम्, रधाम, रन्धि, रन्धीस्; रद्धा und रन्धिता P. 7,2,45. VOP. 8,46. 11,4. partic. रद्ध. 1) *in die Gewalt kommen, Jmd* (dat.) *unterthan —, dienstbar werden* NIR. 6,34. 10,40. द्विषंश्च मह्यं रध्यतु मा चाहं द्विषते रधम् AV. 17,1,6. ṚV. 1,50,13. 10,128,5. शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे 7,18,18. VS. 10,28. भ्रातृव्येभ्यो रध्यामो यन्मिथो विप्रिया स्मः TS. 6,2,2,1. रद्धं वृत्रम् *unterworfen* ṚV. 10,113,8. — 2) *in die Gewalt geben:* मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीररावणे ṚV. 7,31,5. 1,174,2. 4,16,13. अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि 22,9. — 3) *in seine Gewalt bringen, bezwingen, unterdrücken, peinigen, quälen:* अन्तं रधितुमारेभे BHAṬṬ. 9,29.

— caus. रन्धयति P. 7,1,61. रन्धयस्व, रीरधत्; 1) *in die Gewalt geben, dahingeben, dienstbar machen:* मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः ṚV. 1,25,2. 50,13. बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् 51,8. 9. 130,8. 132,4. 2,11,19. मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः 32,2. 3,16,5. 8,49,8. नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम् 10,87,8. 28,9. पृथुश्रवसे रीरधा सुवृक्तिम् 30,1. AV. 6,6,1. 54,3. 12,1,14. ब्रह्मद्विषो मघवन्रन्धयस्व ṚV. 3,30,16. — 2) *quälen, peinigen:* भरतं शोकसंतप्तं भूयः शोकैररन्धयत् R. 2,81,3; vgl. रून्धय u. 2. रुध् caus. — 3) *zu Nichte machen:* कर्माशयान्रन्धय BHÂG. P. 5,18,8. विज्ञानदृग्वीर्यसुरन्धिताशय 2,2,19. योगरन्धितकर्मन् 8,3,27. ज्ञानाग्निना रन्धितकर्मकल्मषाः 21,2. — 4) *kochen, Speisen zubereiten:* रन्धित ÇKDR.

— intens. *in die Gewalt geben:* दिवोऽई स्मे रीरत्त मरुतः सहस्रिणीम् ṚV. 5,54,13. एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः 6,25,9. *überlassen, lassen* in der Stelle रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि so v. a. *lass uns die Sonne schauen* 10,59,5; so nach NIR. 10,40, aber wegen des loc. besser auf 1. रन् zurückzuführen.

— उप caus. *quälen, peinigen:* (तम्) यमानुचराः कुम्भीपाके तप्ततैल उपरन्धयन्ति BHÂG. P. 5,26,13. यस्त्विह वा उग्रः पशून्पक्षिणो वा प्राणतो (partic. nach dem Comm.) उपरन्धयति ebend.

— नि caus. *in die Gewalt geben* ṚV. 7,19,2.

— परि caus. *zu Nichte machen:* परिरन्धितकषायाशय BHÂG. P. 5,1,23.

रध्र (von रध् = अर्ध्, im Zend aredra) adj. nach SÂJ. so v. a. समृद्ध oder राधक, आराधक *begütert* oder *derjenige, welcher es* (den Göttern) *recht macht, rechtschaffen; der sich in Gunst zu setzen weiss:* यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य ṚV. 2,12,6. 10,24,3. रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ 2, 30,6. यया रध्रं पारयथात्यंहः 34,15. इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त 7,56,20. — Vgl. अरध्र, wo hiernach zu vermuthen wäre *nicht in rechter Verfassung sich befindend* oder *nicht genehm.*

रध्रचोद adj. etwa *den Rechtschaffenen fördernd:* Indra ṚV. 2,21,4.

रध्रचोदन adj. dass.: Indra ṚV. 6,44,10. 8,69,3. 10,38,5.

रध्रतुर (तुर von 1. तुर्) adj. etwa so v. a. रध्रचोद. अरधस्य रध्रतुरो बभूव ṚV. 6,18,4. nach SÂJ. °तुर *Ueberwinder der zu Unterwerfenden* (रध्र von रध्, रन्ध्).

1. रन् (रण्), रणति (शब्दे) DHÂTUP. 13,2. रणान्, रणन्त, रण्यति; ररण (ररण Padap.); रणिष्टन, अराणिषुस्. 1) *sich gütlich thun, sich behagen lassen, sich vergnügen an* oder *bei;* mit loc., selten acc.: तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ṚV. 1,83,6. बध्नस्य शासने रणन्ति 3,7,5. सुते रणा 5,51, 8. 8,12,17. 18. 13,9. शास्त्रे 33,16. यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति 16,2. नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन 2,36,3. रणन्गावो न यवसे 5,53,16. 10,25,1. 1, 38,2. यदातिथ्ये रणान्नृभ्यः सुसन्तः 4,33,7. 8,81,20. 82,20. सोमो देवेषु रण्यति 9,107,18. तवाहं सोम रारण सख्ये 19. कृते चिदत्र मरुतो रणन्त 7, 57,5. यत्रा रणन्ति धीतयः 9,111,2. नाहं रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते *es ist mir nicht wohl ohne* 10,86,12. कस्य ब्रह्माणि रण्यथः 5,74,3. यो कृव्या मर्तेषु रण्यति 18,1. — 2) *ergötzen:* इन्द्रं कृविष्मतीर्विशो अराणिषुः ṚV. 8,13,16. — 3) *klingen, tönen:* रणाद्भिः स्वरैः ÇIÇ. 1,10. रणत्स्वाभरणातोद्येषु KATHÂS. 74,235. रणन्मणिमेखल Spr. 2833. 691. 2207. Z. d. d. m. G. 14,569,15. रणत्काञ्चननूपुर BHÂG. P. 3,17,21. रणद्वेणु 2,29. रणित a) adj. *klingend, tönend:* चरणरणितमणिनूपुरा GÎT. 2,16. 11,1. KATHÂS. 25,150. 26,212. VET. in LA. 21,1. रणितं = रणो ऽस्य संजातः gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. — b) n. *Geklinge, Getön:* वलय° Spr. 23. काञ्चीमणि° 2934. नूकपालतालरणितैः PRAB. 3,13. वेणु° RÂGA-TAR. 2,167. BHÂG. P. 10,21,11. *Gesumme:* भ्राम्यद्भृङ्गी° GÎT. 2,20. मधुपावली° PRAB. 79,15. — रन् 3) ist wohl eine besondere Wurzel, da die Bedeutungen sich nicht vermitteln lassen.

— caus. रणयति, °ते, अरीरणत् und अररणत् PAT. in SIDDH. K. zu P. 7,4,3. VOP. 18,3. ved. रारणत् (ररणत् Padap.), अरारणुस्, रारन्धि, रारन्तु, रराणत 2. pl. ṚV. 1,171,1. 1) *sich gütlich thun, sich ergötzen an, gern sein bei, sich's wohl sein lassen bei* (loc.): यः सोम सख्ये तव रारणत् ṚV. 1,91,14. 147,1. सुतेषु 10,5. 8,32,6. उक्थेषु रणया इह 34,11. 3,41,4. सोम रारन्धि नो हृदि *sei gern in uns* 1,91,13. 3,42,8. अरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य 10,88,2. भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ 6,1,4. 8,4, 21. 3,57,2. 4,7,7. सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे 6,28,1. TS. 2,4,5,1. — 2) *Jmd ergötzen mit* oder *bei:* (वयमु त्वा) उक्थेषु रणयामसि ṚV. 8,87,12. 1,100,7. ते स्याम ये रणयन्त सोमैः 10,148,3. hierher auch 59,5; vgl. oben u. रध् intens. — 3) *ertönen lassen:* वीणां रणयन् BHÂG. P. 1,6,38. — 4) रणयति (गतौ) DHÂTUP. 19,33. 56.

— नि in der Stelle: याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथः ṚV. 1,112,18. scheint verdorben zu sein, auch die Betonung weicht ab.

— वि caus. *ertönen lassen:* वेणुं विरणयन् BHÂG. P. 10,18,8. 19,15.

2. रन् in der Stelle: युवं ह्यास्तं महो रन् ṚV. 1,120,7 nach SÂJ. partic. praes. von रा und zwar sg. st. du., also so v. a. दातारौ.

रन्तृ (von रम्) nom. ag. *Verweiler, der gern bleibt:* भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्ता ṚV. 9,92,3. könnte auch auf 1. रन् zurückgeführt werden.

रन्तव्य (wie eben) adj. *mit dem man der Liebe pflegen soll:* रन्तेव हि रन्तव्या विरक्तभावा तु हातव्या Spr. 5313.

1. रन्ति (von 1. रन्) m. vielleicht *Kämpfer* (vgl. रण *Kampf*): अष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च (= रममाणाः SÂJ.) ṚV. 7,18,10. स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् 9,102,5.

2. रन्ति (von रम्) 1) f. a) *das gern-Verweilen:* तेषां सहानां मयि रन्तिरस्तु AV. 3,10,6. इह रन्तिः VS. 22,19 (st. dessen रतिः 8,51). TS. 4,4,

12,4.5. — b) als Schmeichelname der Kuh (in einer häufigen Formel) etwa so v. a. *Ergötzen* (weshalb es auch zu 1. रन् gezogen werden könnte): रन्तिरसि रमतिरसि सूनर्यसि TS. 1,6,3,1 (vgl. रन्ती सूनरी SV. II,8,1,14,1). VS. 8,43. PAÑKAV. BR. 20,15,15. — 2) m. N. pr. VOP. 26, 43. eines Lexicographen, = रन्तिदेव MALLIN. zu ÇIÇ. 1,20. Schol. zu VÂSAVAD. 19.

रन्तिदेव (2. र° + देव) m. 1) Bein. Vishṇu's TRIK. 1,1,31. H. ç. 70. MED. v. 63. — 2) N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Saṁkṛti, MED. MBH. 1,224. 2099. 3,4096. 13809. 16674. 7,2356. fgg. 12,1013. fgg. 8591. 10753. 13,3351. 5544. 14,2787. MEGH. 46. VP. 450. BHÂG. P. 1, 12,24. 2,7,44. 9,21,2. 10,72,21. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 53. Verfasser von Mantra bei den Çâkta Verz. d. Oxf. H. 101,a,35. — 3) N. pr. eines Lexicographen, = रन्ति MED. Anh. 1. Verz. d. Oxf. H. 182,b,44.

रन्तिनार m. N. pr. eines Fürsten VP. 447. Varianten: रन्तिभार, अन्तिनार, मतिनार.

रन्तिभार m. = रन्तिनार BHÂG. P. 9,20,6.

रन्तु f. 1) *Weg*. — 2) *Fluss* MED. t. 50 (रन्तुः st. रन्तं zu lesen).

रन्त्य (von 1. रन्) adj. *belustigend, behaglich*: कास्ते मदं इन्द्र रन्त्यो भूत् RV. 10,29,3. इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् AV. 6,33,1. वसन्त इन्नु रन्त्यः SV. NAIGHA 4,2.

रन्दला f. Bein. der Saṁǵṇâ, der Gattin des Sonnengottes, Verz. d. Oxf. H. 74,a,26.

रन्ध् s. रध्.

रन्धक (vom caus. von रन्ध्) nom. ag. P. 7,1,61, Sch.

रन्धन (wie eben) 1) nom. ag. *Vernichter*: अभद्र° BHÂG. P. 4,30,28. — 2) n. nom. act. P. 7,1,61, Sch. a) *das Vernichten*: अविद्याग्रन्थि° BHÂG. P. 5,19,20. — b) *das Kochen, Zubereiten von Speisen*: रन्धनाय स्थाली P. 2,1,36, Sch. °कर्मन् Verz. d. Oxf. H. 85,b,31.

रन्धनाय् (von रन्धन), रन्धनायति = caus. von रन्ध् *in die Gewalt geben* RV. 1,53,10.

रन्धस् oder रन्धस m. N. pr. eines Mannes aus dem Geschlecht der Andhaka; vgl. रान्धस.

रन्धि (von रन्ध्) f. 1) *Unterwerfung* RV. 7,18,18. — 2) *das Garwerden*: तण्डुलगर्भ° BHÂG. P. 5,10,23.

रन्ध्र (wohl von रद्) n. SIDDH. K. 249,b,1. im BHÂG. P. bisweilen auch m. 1) *Oeffnung, Spalte, Höhlung* AK. 1,2,1,2. 3,4,24,150. H. 1363. an. 2,422. MED. r. 79. HALÂJ. 3,2. 5,49. उशना यत्परावतं उक्ष्णो रन्ध्रमयातन। द्यौर्न चक्रदद्भिया etwa *Ohrhöhle* oder *Luftröhre des Ochsen*, auf einen Mythus oder eine Oertlichkeit bezüglich, RV. 8,7,26 (= मध्य SÂJ.). उक्ष्णोरन्ध्र PAÑKAV. BR. 13,9,13 ist N. pr. — वृक्षस्य MBH. 3, 15995. भुवः RAGH. 15,82. शैल° 10,36. KATHÂS. 19,112. 53,110. MEGH. 58. नाभि° RAGH. 18,19. अङ्गुलि° 6,19. मृत्कुम्भवालुकारन्ध्रपिधान SÂH. D. 64,11. नखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैः केसरिणाम् KUMÂRAS. 1,5. वल्मीक° BHÂG. P. 9,3,3. जालामुख° 10,41,22. जाल° 60,4.5. सुषुम्णा° Verz. d. Oxf. H. 104,b,33. श्रोत्र° MEGH. 43. वक्त्र° RAGH. 9,63. नेत्र° BHÂG. P. 10,32,8. शिरोभिस्तिमयः सरन्ध्रैरूर्ध्वं वितन्वन्ति जलप्रवाहान् RAGH. 13, 10. RÂǴA-TAR. 2,86. त्वक्साररन्ध्रपरिपूरणलब्धगीति ÇIÇ. 4,61. वेणु° PAÑKAR. 3,5,16. रन्ध्रान्वेषी BHÂG. P. 10,21,5. विवेश तेनैव पथा लब्धरन्ध्रो हृदि स्मरः KATHÂS. 3,59. सुसूक्ष्मेणापि रन्ध्रेण प्रविशत्यन्तरं रिपुः Spr. 3285. Es werden zehn *Oeffnungen* am menschlichen Leibe angenommen: je zwei an Nase, Augen und Ohren, dann Harnröhre, After, Mund und eine vermeintliche am Schädel (s. ब्रह्मरन्ध्र) ÇÂRṄG. SAṀH. 1,5,20. 3,8,7. Verz. d. Oxf. H. 311,a,3 v. u. गलरन्ध्र *Luftröhre* NILAK. zu MBH. 12,10262. Wohl = योनि in der Stelle व्यसनमनेकरन्ध्रम् (नानागर्भवासरूपम् Comm.) BHÂG. P. 3,31,21. — 2) Bez. *eines best. Theils am Kopfe des Pferdes* (vgl. उपरन्ध्र) VARÂH. BṚH. S. 66,4. — 3) *Fehler, Mangel* H. an. MED. प्रकाशरन्ध्राणि रत्नानि शास्त्राणि च VARÂH. BṚH. S. 104,1. *Blösse, Schwäche*: स्वरन्ध्रगोप्तृ JÂǴN. 1,310. MBH. 1,4573. 6,4949. 13, 132.15,210. प्रकृत्ति च रन्ध्रेषु R. 5,90,11. Spr. 1751. 4391. 4818. BHAR. NÂṬJAÇ. 34,67. fg. MṚKKH. 125,18. KÂM. NÎTIS. 13,95. 15,15. °गुप्ति 29. 19,29. RAGH. 12,11. 15,17. 17,61. VARÂH. BṚH. S. 16,39. 69,21. ÇAṀK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 84. RÂǴA-TAR. 4,519. तं कृत्तं रन्ध्रं प्रतीक्षते BHÂG. P. 10,61,20. PAÑKAT. 182,2. रन्ध्रोपनिपातिनो ऽनर्थाः (vgl. छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति Spr. 533. 2334) *das Unglück trifft immer die schwache Stelle, das Unglück kommt nie allein* ÇÂK. 81,8. — 4) Bez. *des 8ten astrologischen Hauses* VARÂH. BṚH. 6,7.11. 9,6. 25,6. — Vgl. कर्ण° (auch KÂM. NÎTIS. 15,45. KATHÂS. 29,146), नगरन्ध्रकर, नी° (adv. *ununterbrochen* UTTARAR. 105,10 = 143,2 der neueren Ausg.), प्राण°, बहुरन्ध्रिका, ब्रह्मरन्ध्र (auch PRAB. 1,10), भीरु°, मही°, मानरन्ध्रा und छिद्र.

रन्ध्रकाएट m. *eine best. Pflanze*, = जालवर्वूरक RÂǴAN. im ÇKDR.

रन्ध्रबभ्रु m. *Ratte* TRIK. 2,5,10. HÂR. 217.

रन्ध्रवंश m. *hohler Bambus* RÂǴAN. im ÇKDR.

रन्ध्रागत (रन्ध्र + आ°) n. Bez. *eines best. Uebels der Pferde*, viell. *der Dampf* MBH. 12,10262. = अश्वगलरन्ध्रगतं मांसखण्डम् NILAK.

रप्, रपति (व्यक्तायां वाचि) DHÂTUP. 11,7. *schwatzen* (leichthin oder unbedacht), *flüstern*: उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारपत् RV. 1,119,9. रपत्कविः 174,7. ऋता वदन्तो अनृतं रपेम 10,10,4. काममूता बह्वेई तद्रपामि 11. रपद्गन्धर्वीरप्या च योषणा 11,2. — Vgl. लप्.

— intens.: स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः RV. 6,3,6.

— आ *zuflüstern, ansagen*: ऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती VS. 22,2.

— परि s. परिराप्.

— प्र *schwatzen*: नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन् RV. 10,61,18.

— प्रति *zuflüstern*: उत मे ऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम् RV. 5,61,9.

रपस् n. *Gebrechen, körperlicher Schaden, Verletzung*: नी रपांसि मृक्षतम् RV. 1,34,11. अपभर्ता रपसो दैव्यस्य 2,33,7. तनूनाम् 7,34,13. 10, 97,10. AV. 5,40,10. 6,91,1. मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः RV. 7,50,1. 8,18,8.16. नमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विह्रुतं पुनः 20,26. 56,21. 10,59,8. 137,2.3. VS. 35,11. nach SÂJ. so v. a. Rakshas RV. 1,69,8. 6,31,3. — Vgl. अ°.

रप्श् nur mit प्र und वि. — प्र med. *hinausreichen*: प्र तुविद्युम्नस्य दिवो रप्शे महिमा पृथिव्याः RV. 6,18,12. der gebräuchliche Ausdruck ist प्र रिरिचे und könnte auch hier gestanden haben.

— वि med. *zum Ueberschwang* oder *zum Platzen voll sein, strotzen*: दृतिर्मधुनो वि रप्शते RV. 4,45,1. 10,113,2. मघवानो वि रप्शन्ते AV.

20,128,5. *übergenug haben an* (instr.): वि यो ररप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृक्षो न पक्वः ṚV. 4,20,5. — Vgl. विरप्श, विरप्शिन्.

रप्शदूधन् (रप्शत्, partic. praes. von रप्श्, + उ°) adj. *ein strotzendes Euter habend* ṚV. 2,34,5.

रप्सु so v. a. रूप nach MAHIDH. zu VS. 33,19; vgl. प्सुः, अप्सः, बप्सः NAIGH. 3,7.

रप्सुदा du.: गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा ṚV. 8,61,12. SÂJ. und MAHIDH. haben werthlose Erklärungen. — Vgl. लप्सुद.

रफ्, रफति (गतौ, nach VOP. auch हिंसायाम्) DHÂTUP. 11,19. रफ् (ऋफ्), ऋफति (हिंसायाम्) 28,30. (श्लाघयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु) 23, v. l. रफितै etwa *herabgekommen, elend* ṚV. 10,117,2. — Vgl. रम्फ्, रेफ.

रब्धर् m. und रब्ध्री f. nom. ag. von रभ् MAHIDH. zu VS. 21,46.

रभ्, रम्भ्, रभते (राभस्ये) DHÂTUP. 23,5. P. 7,1,63. VOP. 11,4. °रभति (meist aus metrischen Rücksichten); °रेभे; °अरब्ध; °रप्स्यते (vgl. KÂR. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10); °रब्धुम्; *fassen:* उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व AV. 11,1,14. *umfassen:* रम्भन्त (!) इव बाहुभिः BHÂG. P. 10,73,6. अरभत् *begann* HARIV. 8106 fehlerhaft für आरभत्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. लभ् und ग्रभ्.

— caus. रम्भयति P. 7,1,63. अररम्भत् VOP. 18,1.

— desid. रिप्सते P. 7,4,54. VOP. 19,9.12.

— अभि *umfassen, umarmen:* अभिरेभिरे BHÂG. P. 10,17,4. 21,6. 82,15. — caus. 1) dass.: अभिरम्भित BHÂG. P. 10,58,7. — 2) *Jmd Etwas zu Theil werden lassen, versetzen in;* mit dopp. acc.: कश्मलं महदभिरम्भितः BHÂG. P. 5,8,12.

— आ 1) *erfassen, anfassen; sich festhalten an, sich klammern, sich stützen auf:* ये त्वारभ्य चरामसि ṚV. 1,57,4. पर्णा मृगस्य पतोरिवारभे 182,7. सिचम् 3,53,2. आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भ 8,45,20. 9,73,1. 10,8,3. सखित्वम् 133,6. 155,3. जिह्वया 87,2. समिधा 8. AV. 1,7,6. 5,8,9. हस्तौ 8,1,8. शत्रून् 10,3,1. या रसस्य हरणाय जातमारेभे 1,28,3. 6,76,2. VS. 4,9. ÇAT. BR. 6,2,2,21. 39. ÂÇV. GṚHJ. 2,6,1. अग्निरारब्धः *Feuer, das gefangen hat* AV. 5,18,4. ÇAT. BR. 6,2,1,20. *sich an Jmd machen, sich mit Jmd messen:* पारगामिनमारभेत् MBH. 13,2127. जम्बुमालिनमारब्धो हनूमानपि so v. a. *kämpfte mit* R. 6,18,10. — 2) *Fuss fassen, betreten; erreichen:* धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् ṚV. 9,73,3. मूर्धानं रायः 1,24,5. दिव इव सानु 10,62,9. आरभमाणा भुवनानि विश्वा 125,8. — 3) *sich an Etwas machen, unternehmen, anfangen, beginnen, incipere* VS. 4,6. TBR. 3,3,3,3. AIT. BR. 2,6. 4,10. आरम्भणीयेन संवत्सरमारभन्ते 12. 6,7.15. TS. 1,6,8,1. 6,4,2,1. ÇAT. BR. 1,7,4,20. 3,2,1,37. 7,4,5. 6,2,2,18. वाचा ह्यारभन्ते यच्चदारभन्ते 12,2,4,1. आरभ्य कर्माणि ÇVETÂÇV. UP. 6,4. आरभेत ततः कार्यम् M. 9,299. fg. MBH. 3,13900. 5,5973. R. 1,12,37. 2,30,42. 5,33,30. ÇÂK. 44,5. Spr. 3715. 5367. BHÂG. P. 3,20,9. 4,29,58. 60. 5,4,13. 7,7,47. आरेभिरे पुत्रीयामिष्टिम् RAGH. 10,4. आरभन्ते ऽल्पमेवाज्ञाः Spr. 381. 476. 3538. परार्थे यत्नमारभ्य MBH. 3,2175. आम्रकलिकाभङ्गम् ÇÂK. 78,16. चरणसंस्कारम् MÂLAV. 33,12. धर्म्यां हिंसाम् KÂM. NÎTIS. 6,5. वैरम् Spr. 2948. आहवम् KATHÂS. 25,124. गुलिकाक्रीडाम् 42,8. अर्थान् BHÂG. P. 4,18,5. व्रतम् 6,19,2. सत्त्रम् 9,13,1. 3. मारब्धा बलिविग्रहम् BHAṬṬ. 5,38. क्रूरम् 17,33. अब्धिम् — आरेभिरे so v. a. *sie begannen das Meer zu quirlen* BHÂG. P. 8,7,2. आरभते ohne obj. im Gegens. zu आस्ते BHAG. 3,7. act.: कार्यदर्शनमारभेत् M. 8,23. पापोदयफलं विद्वान्यो नारभति वर्धते MBH. 5,1480. कर्माण्यक्रमयारभम् 13,3943. नारम्भानारभेत्क्वचित् BHÂG. P. 7,13,8. वेदादिमारभेत् *den Veda beginnen* nämlich *zu lesen* ÂÇV. GṚHJ. 3,5,12. आरब्धवान्क्रियाम् HARIV. 6495. मोहादारभ्यते कर्म BHAG. 18,25. MBH. 1,3982. 3,1416. तीव्रं चारप्स्यते तपः 15,992. सम्यगारभ्यमाणं हि कार्यम् Spr. 5189. अथेदमारभ्यते मित्रभेदो नाम प्रथमं तन्त्रम् *beginnt* PAÑKAT. 6,1. इत्ययमतिदेश आरभ्यते KÂÇ. zu P. 1,1,56. यथा कार्यं तथारभ्यताम् impers. HIT. 39,8. *beginnen zu* mit infin. P. 3,4,65. आमन्त्रयितुमारेभे R. 2,113,18. R. GORR. 1,40,23. 2,109,14. 3,52,12. RAGH. 8,45. KATHÂS. 22,224. 26,237. 34,71. BHÂG. P. 4,27,15. DAÇAK. in BENF. Chr. 182,2. BHAṬṬ. 9,29. 15,78. act. HARIV. 8106 (आरभत् die neuere Ausg. st. अरभत् der älteren). R. 5,68,39. भोक्तुमारब्धवानन्नम् R. SCHL. 1,65,5. 3,51,36. PAÑKAT. 64,5. कुम्भकर्णेन पेष्टुमारम्भि (impers.) BHAṬṬ. 15,58. मुग्धतयैव नेतुमखिलः कालः किमारभ्यते Spr. 2215. absol. आरभ्य *von — an;* mit abl. VOP. 5,21. स्वपितुर्वधात् । आरभ्य KATHÂS. 10,177. KÂÇ. zu P. 4,1,163. RÂGA-TAR. 1,53. 138. BHÂG. P. 5,1,26. 7,3. PAÑKAT. 49,1. HIT. 111,18. आरभ्य सप्तमान्मासात् (bei BURN. zu lesen °मासाल्ल°) BHÂG. P. 3,31,10. 7,1,17. mit acc.: सूर्योदयमारभ्य *von Sonnenaufgang an* SARVADARÇANAS. 175,2. प्रतिपद्दिनमारभ्य BHÂG. P. 8,16,48. पातालतलमारभ्य 11,3,10. Verz. d. Oxf. H. 102, *a*, No. 158. इत्येतमकारमारभ्य VOP. 7,113. अद्यारभ्य *von heute an* HIT. 42,2. 91,21. 126,16. कुट कौटिल्य इत्यारभ्य P. 1,2,1, Sch. partic. आरब्ध *a) woran man sich gemacht hat, unternommen, angefangen, begonnen:* °यज्ञ AIT. BR. 1,1. चिरारब्धमिदं चापि सागरस्यापि मन्थनम् MBH. 1,1141. यथेदं व्रतमारब्धं मया 3,2210. 16718. R. 2,22,24. 36,14. 63,28. 73,21. KÂM. NÎTIS. 11,57. रहसि — आरब्धा वा तदाश्रयणी कथा VIKR. 51. KATHÂS. 14,17. 18,359. 22,234. 26,57. 32,41. RÂGA-TAR. 5,165. BHÂG. P. 1,6,29. वार्त्तायां लुप्यमानायामारब्धायां पुनः पुनः 3,30,12. 4,11,8. 15,11. 18,5. आरब्धानेव बुभुजे भोगान् 21,11. 5,1,16. 19,19. °कामिजनवृत्त DAÇAK. in BENF. Chr. 183,6. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 144. क्रियाभिः सम्यगारब्धा व्रणाः so v. a. *zu curiren begonnen* SUÇR. 1,104,11. येन न — आरब्धा मार्गितुं सीता R. 4,55,6. को ऽयं कर्तुमिहारब्धो मन्त्रिणाप्यनयस्त्वया KATHÂS. 41,16. तेन विहारः कारयितुमारब्धः HIT. 49,10. केनापि देवायतनं कर्तुमारब्धम् PAÑKAT. 10,4. एकस्मिन्दिवसे राजहस्तान्मर्कटेन फलं गृहीत्वा भक्षयितुमारब्धम् (impers.) VET. in LA. (III) 2,7. 8. तस्या बालकेन गृहे रोदितुमारब्धम् 14,8. 21,18. — *b) seinen Anfang nehmend, beginnend:* कूले तूत्तर आरब्धः (सागरस्य सीमन्तः) R. 5,95,41. निशावसान आरब्धो लोककल्पो ऽनुवर्तते BHÂG. P. 3,11,23. यत आरब्ध एष नरलोकसार्थः 5,14,38. — *c)* = आरब्धवन्त्, mit acc.: स्वमेव कर्म चारब्धौ HARIV. 5310. mit infin.: ते मन्त्रयितुमारब्धाः *sie fingen an zu* MBH. 1,1108. सर्वां महीं जेतुमारब्धौ 7660. 3,2619. R. 3,25,16. 5,56,86. MÂRK. P. 106,57. PAÑKAT. 10,9. 35,11. 62,23. 69,7. mit loc.: आरब्ध उग्रतपसि BHÂG. P. 4,23,4. — 4) *machen, bilden, zusammenfügen:* तृणैरारभ्यते रज्जुः Spr. 1957, v. l. भूतैः पञ्चभिरारब्धे देहे BHÂG. P. 3,31,30. अविद्याकामकर्मभिः । आरब्धः (कायः) 4,20,5. भूतैः पञ्चभिरारब्धैः (= देहाद्याकारेण परिणतैः) 11,15. योगमाययारब्धपारमेष्ठ्यमहोदयम् (आरब्ध = आविष्कृत Comm.) 3,16,15. — Vgl. आरम्भ fgg., आरम्भणीय, आरम्भिन्, अनारभ्य. — caus. *anfangen, beginnen:* आरम्भि-

तत्कार्येषु Verz. d. Oxf. H. 249,*b*,9. — desid. आरिप्सते P. 8,4,55, Sch.; vgl. आरिप्सु. — intens. *sich festhalten, befestigt sein, hängen:* रेषामंसेषु रम्भिणीव रारभे ṚV. 1,168,3.

— अन्वा *von hinten anfassen, — berühren, sich an* oder *zu Jmd halten, sich von Jmd nachziehen lassen:* विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम् so v. a. *stellet euch auf meine Seite* AV. 2,12,5. 6,48,1. 122,2. 12,3,20. इन्द्रम् 2,47. fg. अन्वारेभिरे वयं उत्तरावत् 3,47. देवतां एवान्वारभ्य सुवर्गं लोकमेति TS. 2,2,5,5. 6,3,9,4. Çat. Br. 3,4,1,6. 6,2,2. ऋत्विजो यजमानो ऽन्वारभते 4,2,5,4. 13,2,3,1. अंसे ऽध्वर्युमन्वारभेत Âçv. Çr. 1,3,25. होतृचमसम् Çâṅkh. Çr. 7,5,10. यदि मां संस्पृशेद्रामः सकृदन्वारभेत वा । धनं वा यौवराज्यं वा (sc. लभेत) जीवेयमिति मे मतिः ॥ R. 2,64,60. अन्वारब्ध mit pass. Bed. Kâtj. Çr. 8,1,2. 8,28. Âçv. Gṛhj. 3,5,10. mit act. Bed.: अन्वारब्धे यजमाने पत्न्यां च Lâtj. 1,3,1. Ait. Br. 8,10. एनमन्वारब्धमग्निं तिष्ठन्तम् Çat. Br. 9,3,4,15. 13,2,2,1. Kâtj. Çr. 4,2,23. 8,16. Vgl. अन्वारम्भ fgg. — caus. *von hinten anfassen lassen, nach Jmd* (loc.) *stellen:* ब्रह्मन्नेव तत्रमन्वारम्भयति TS. 2,6,2,5.

— व्यन्वा (*nach verschiedenen Seiten*) *berühren:* तेनो स उभौ व्यन्वारभमाण एतीमं चामुं च लोकम् Ait. Br. 6,8.

— समन्वा *sich anfassen* (von Mehreren gesagt), *Etwas gemeinschaftlich anfassen* Ait. Br. 5,22. औदुम्बरीम् 24. Çat. Br. 4,6,9,8. 12,8,1, 20. अध्वर्युमुखाः समन्वारब्धाः सर्पन्ति Âçv. Çr. 8,13,23. तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च Çat. Br. 14,7,2,3. °रब्ध *sich haltend an* Âçv. Gṛhj. 1,7,3. 8,9. 14,3. 20,2.

— अभ्या *anfassen, berühren, beschreiten; sich an Etwas machen, anfangen:* तदेव सप्तमेन पदेनाभ्यारभ्य वसन्ति Ait. Br. 5,10. अवरेणैव तदह्ना परमहरारभन्ते 6,5. तान्येव तदभिमृशन्तो यन्त्यभ्यारभमाणाः 20. Çat. Br. 13,4,1,2. 3. सेतुमभ्यारभत् *er begann zu bauen* MBh. 3,10724. — Vgl. अभ्यारम्भ.

— समुपा *anfangen, beginnen:* विग्रहः समुपारब्धो नहि शाम्यत्यविग्रहात् MBh. 5,3083.

— प्रा 1) *anfassen:* तां पूषः शुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ṚV. 6,57,5. — 2) *anfangen, unternehmen, beginnen:* शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः Bhag. 18,15. प्रारभेत हि विग्रहम् Spr. 3694. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः 1913. तया प्रारम्भि (impers.) यत् Gît. 12,12. निर्गन्तुं प्रारेभे तद्गृहात् Kathâs. 7,46. 11,63. 13,127. 18,106. 333. 37,13. 124. 42,104. निन्ये शिरः । हर्तुं प्रारब्धवानस्मि 6,156. प्रारब्ध 1) mit pass. Bed.: °कर्मन् Nîlak. 30. Kâm. Nîtis. 11,37. Ragh. 14,7. प्रारब्धस्यान्तगमनम् Spr. 97. प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति 1913. 5293. Mârk. P. 133,21. Pańkat. 200,21. ed. orn. 55,23. Vet. in LA. (III) 12,16. तीराब्धिः प्रारब्धो मथितुं सुरैः Kathâs. 22,186. — 2) mit act. Bed.: प्रारब्धा पुरतो यथा मनसिजस्याज्ञा तथा वर्तितुम् Spr. 3244. Râǵa-Tar. 5,349. — Vgl. प्रारब्धि fgg. — desid. partic. प्रारिप्सित *was man zu beginnen beabsichtigt* Sâh. D. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 91. Saṁsk. K. 22,*b*,7. Sarvadarçanas. 137,13. fg.

— प्रत्या s. प्रत्यारम्भ.

— व्या, °रब्ध *von verschiedenen Seiten erfasst, — festgehalten:* यदुचैव होत्रं क्रियते यजुषाध्वर्यवं साम्नोद्गीथं व्यारब्धा त्रयी विद्या भवति Ait. Br. 5,33.

— समा *sich an Etwas machen, anfangen, unternehmen, beginnen* TS. 1,1,12,1. ते नात्मना कर्म समारभन्ते MBh. 3,10260. R. Gorr. 2,116,4. 5,43,11. Mṛkkh. 48,7. Bhâg. P. 4,3,3. Pańkar. 1,1,11. Verz. d. Oxf. H. 2,*b*,4. Bhatt. 12,45. ततः कर्म समारभेत् M. 7,59. तेषां नियहनिर्वासान्विविधांस्ते समारभन् MBh. 1,2238. शक्यमर्थं समारभ 3,10728. 13,3942. R. 7,70,8. आख्यातुं तत्समारेभे R. Schl. 1,45,13. Bhâg. P. 10,89,5. Pańkar. 1,2,54. अहं त्विमं जलनिधिं समारप्स्याम्युपायतः *ich will mich an ihn machen* so v. a. *ich will ihm beizukommen suchen* (= आराधयिष्यामि Nîlak.) MBh. 3,16298. समारभ्य mit vorangehendem acc. *von — an* Verz. d. Oxf. H. 102,*b*, No. 158. समारब्ध *angefangen, unternommen, begonnen:* कर्मन् MBh. 13,343. प्रसादय सुतार्थं मे समारब्धम् R. 1,18,3. असमीक्ष्य समारब्धम् 2,58,26. अनुतिष्ठेत्समारब्धम् Kâm. Nîtis. 11,57. नीतयः Ragh. 12,69. °नवोटजानि (आश्रममण्डलानि) *zu bauen angefangen* 13,22. जिज्ञासा Hit. 20,13. ed. Johns. 1512. समारब्धतर Nidânas. 4,8 in Ind. St. 10,93. मम चैतत्समारब्धं पर्व *begonnen, eingetreten* R. 3,42,14. ततो ऽहं हिमवत्पृष्ठे समारब्धो महाव्रतम् *ich begann* MBh. 2,428. दग्धुं समारब्धाः *sie fingen an Feuer anzulegen* 1,3823. — Vgl. समारभ्य, समारम्भ.

— अनुसमा *sich an Jmd* (acc.) *hängen, — reihen* TS. 2,4,2,1. TBr. 3,3,2,8. — caus. med. *sich* (loc.) *Jmd* (acc.) *anreihen:* ता इन्द्रे आत्मन्ननु समारम्भयत TS. 2,4,2,2.

— उपसमा med. *sich in eine Reihe stellen* Kauç. 139.

— परि *umfangen, umfassen, umarmen:* परिरेभिरे पतिम् Bhâg. P. 1,11,33. दोर्भ्याम् 4,9,43. 10,38,36. °रप्स्यते (so ist zu lesen) 20. Sarvadarçanas. 124,11. °रभ्य MBh. 1,5258. 6288. 4,514. 813. 6,5824. R. 2,96,23 (105, 22 Gorr.). R. Gorr. 2,39,4. 52,9. 53,41. 5,14,26. Ragh. 11,92. Kumâras. 5,3. Gît. 1,39. 48. 2,13. Çiç. 9,72. Kathâs. 25,66. 257. 70,83. Bhâg. P. 10,71, 27. Mârk. P. 12,11. Prab. 113,14. Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483. नागभोगेन महता परिरभ्य महीमिमाम् MBh. 3,13558. 13,6865. °रब्धुम् R. 4,22,19. Vikr. 147. Ragh. 13,22 (s. d. Corigg.). Bhâg. P. 10,89,5. °रब्ध mit pass. Bed. Bhâg. P. 4,27,3. 10,90,7. mit act. Bed. R. 2,96,23 (vgl. 105,22 Gorr.). Vgl. परिरम्भ fgg. — caus. dass.: °रम्भित Verz. d. Oxf. H. 68,*b*,33. Bhâg. P. 1,17,8. 6,1,61. गोविन्द° so v. a. *ganz von ihm in Beschlag genommen* 7,4,38. — desid. *zu umfangen im Begriff stehen:* परिरिप्समान Ragh. 13,32, v. l. परीरिप्सते Prab. 71,10.

— संपरि *zusammen umfangen, — umfassen:* परस्परं संपरिरभ्य बाहुभिः R. 6,74,42.

— सम् 1) *anfassen, packen; zugreifen; sich gegenseitig fassen* (zum Tanz, Kampf u. s. w.): समिषा रभेमहि *habhaft werden* ṚV. 1,53,4. 5. 8,32,9. तत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व AV. 2,6,4. VS. 27,5. तमग्रुवः केशिनीः सं हि रेभिरे ṚV. 1,140,8. 10,53,8. संरभ्या धीरा स्वसृभिरनर्तिषुः 94,4. *über einen Frass herfallen* AV. 11,10,8. अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व *ziehe an dich* 19,3,2. 1,3. TS. 4,4,2,2. 5,3,11,3. तं देवा हस्तान्संरभ्यैच्छन् *sich an den Händen haltend* 6,2,4,2. Çat. Br. 2,5,4,8. यदा वै द्वौ संरभेते अथ तौ वीर्यं कुरुतः *wenn zwei sich packen* 14,1,1,3. 9,4,19. योक्त्रे भृत्याः संरभन्ते *zerren sich um* Kauç. 76. संरब्ध *Hand in Hand, eng verbunden mit:* ताभिः संरब्धमन्वविन्दन् AV. 13,1,4. Lâtj. 10,9,5. Khând.

Up. 1,12,4. MBh. 3,2545. — 2) med. pass. *in Eifer —, in Aufregung gerathen (innerlich erfasst werden)*: संरम्भमाणा (v. l. संरब्धमान) MBh. 5, 37. संरभ्य Bhâg. P. 4,27,22. संरब्ध *in Eifer gerathen, angeregt*: रमणीयान्बकुविधान्पादपान्कुसुमोत्कटान्। सीतावचनसंरब्ध आनयामास लक्ष्मणः॥ R. 2,55,30. 4,50,2. *aufgeregt, aufgebracht, wüthend*; von Menschen und Thieren MBh. 1,389. 6005 (वारणो). 3,15693. 4,592. 5,7182. 7276. 7,363 (wo mit der ed. Bomb. संरब्धा zu lesen ist). 3168. 13,4831. Hariv. 312. 3052. Ragh. 16,16 (सिंह). Daçak. 1,43. Bhâg. P. 3,18,18. 6,12,4. 8,11,2. 21,18. कौरवान्प्रति MBh. 4,887. 1790. 7,7117. R. Gorr. 2,21,1. 6,4,30. संरब्धतर 5,63,8. सुसंरब्ध MBh. 3,3032. 5,7182. R. 3, 26,11. 4,8,38. Spr. 5274. Pañkat. 238,24. संरब्धमनस् Bhâg. P. 8,10,6. वैरसंरब्धया धिया 10,74,46. वाच् *zornig* Daçak. 1,37. Sâh. D. 374. संरब्धपरुषाक्षर R. 3,54,1. संरब्धतरमत्यर्थं वाक्यम् 1,54,18 (53,16 Schl.). — 3) संरब्ध *verstärkt, vermehrt, gesteigert*: °मान (= संवृद्धदर्प Nilak.) MBh. 5,37, v. l. कवचोत्सेधसंरब्धकण्ठायास Râga-Tar. 5,344. — 4) *schwellend, geschwollen*: °नेत्र R. Gorr. 2,76,32. व्रण Suçr. 2,6,11. मांस° 313,12. — 5) संरब्धौ Hariv. 9120 fehlerhaft für संरूढौ, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. संरम्भ.

— अनुसम् *anfassen, sich halten an*: इन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् Rv. 10,103,6. *sich gegenseitig halten*: अन्वारभेथामनुसंरभेथाम् *fasset euch und haltet einander* (an den Händen) AV. 6,122,3.

— अभिसम् 1) *anfassen, festhalten*: दश स्वसारः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते Rv. 3,29,13. पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभेमहि 10,134,7. — 2) अभिसंरब्ध *in Eifer gerathen, aufgeregt, aufgebracht, wüthend*: समुद्रमभिसंरब्धा (°संरम्भात् die neuere Ausg.) मज्जीमः Hariv. 12170. R. 6,3,17. MBh. 4,1047. अन्योऽन्यमभिसंरब्धौ 752. R. 6,76,32. — Vgl. अभिसंरम्भ.

— प्रति 1) *Jmd packen, angreifen*: यो यः स्म समरे पार्थं प्रतिसंरभते (°संचरते ed. Bomb.) MBh. 7,3169. प्रतिसंरब्धाः *einander haltend* (an den Händen) 3764. — 2) प्रतिसंरब्ध *aufgeregt, wüthend* MBh. 5,5606. R. 4,31,10; vgl. u. सम् 3).

रभ (von रभ्) m. N. pr. eines Affen R. 4,33,14.

रभस् (wie eben) n. *Ungestüm, Gewalt*: शिशुरादत्त सं रभः Rv. 1,145,3. रभसा *mit Ungestüm* MBh. 7,7701 (ed. Bomb. तरसा). Bhâg. P. 4,28,2. प्रतिवृद्धः so v. a. *unsanft* Itih. bei Sâj. zu Rv. 1,125,1. परिवत्स्य *leidenschaftlich* Mârk. P. 72,19. दृष्टदच्छदः *vor Wuth* Bhâg. P. 7,2,30.

रभस (von रभस्) Unâdis. 3,117. 1) adj. (f. आ) a) *wild, ungestüm*; überh. *gewaltig* Naigh. 3,3. Bhar. zu AK. 3,6,2,21. von den Commentatoren gewöhnlich durch वेगवत्, बलवत्, सोद्यम u. s. w. erklärt. तन्नु वोचाम रभसाय जन्मने (मरुताम्) Rv. 1,166,1. 5,54,3. सुतासः *stark, scharf* 1, 82,6. 9,73,6. अधैनं वृको रभसासो अद्य: 10,95,14. VS. 21,38. Rv. 3,31, 12. 6,61,1. बाल्ये ऽपि रभसः सदा *wild, ungestüm* MBh. 5,2027. 6,2846. 3857. 13,2154. तं रणे रभसम् 7,4033. संग्राम° 6,3450. खाकार° Bhâg. P. 3,17,11. अभिघातरभसस्य मक्षिषस्य *mit Ungestüm verlangend nach* Ragh. 9,61. अम्भोबिन्दुग्रहरभसांश्चातकान् Megh. 22. रभसया दिगन्तदिदृक्षया Kir. 5,1. खलीकार Spr. 2994. °स्वनैः Bhâg. P. 12,4,12. अतिरभसतररंहस् 5,17,9. — b) *von lebhafter, stechender Farbe*: दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि Rv. 3,1,8. वर्तस्सु रुक्मा रभसासो अञ्जयः 1,166,10. आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते 9,96,1. रभसं दृशानम् (अग्निम्) 2,10,4. — 2) m. a) nom. abstr. AK. 3,6,2,21. *Ungestüm, Gewaltigkeit, Heftigkeit*; = वेग und हर्ष Trik. 3,3,449. H. an. 3,753. Med. s. 30. Vaiç. bei Mallin. zu Kir. 5,1. = गमकारित्व Trik. 3,2,18. = औत्सुक्य Kaliñga im ÇKDr. रभसाच्चापलात्तथा MBh. 6,5850. Git. 5,6. Bhâg. P. 3,15,28. रभसात् *mit Ungestüm, in aller Eile, in Hast, schnell* Spr. 1140. 2522. 5419. Kathâs. 32,93. 38,6. 72. 46,12. 48,85. 92,63. Râga-Tar. 1,371. Mârk. P. 69,52. रभसेन dass. Spr. 315 (v. l. रभसात्). 1015. विभूतिं रभसावाप्ताम् 3834. रभसोत्थिता Çiç. 9,72. Daçak. in Benf. Chr. 194,8. अतिरभसकृतानां कर्मणाम् Spr. 843. रभसाश्लेष 524. रभसाकर्षण Kathâs. 18,406. कालः करालरभसः Bhâg. P. 5,8,25. (तम्) औवीर्द्धरभसाभजत् Râga-Tar. 3,126. मृगमदसौरभ° *Gewaltigkeit, Heftigkeit* Git. 1,29. रति° 2,11. Bhâg. P. 5,9,19. 14,11. 7,9,15. त्वदभिसरणरभसेन *aus heftigem Verlangen nach* Git. 6,3. स° adj. *ungestüm, leidenschaftlich*: तां कण्ठे सरभसो ऽग्रहीत् Kathâs. 101,335. °मनस् 17,171. सरभसेक्षणो Bhâg. P. 3,30,20. सरभससुरतायास Spr. 229. सरभसम् adv. *mit Ungestüm, in aller Hast, plötzlich, stracks* Mṛkkh. 67,24. Spr. 589. Uttarar. 106,12 (144,11). Kathâs. 9, 90. Bhâg. P. 5,26,27. Vet. in LA. (III) 20,13. सह्रासरभसव्यासक्तकण्ठग्रहम् Spr. 530. Nach Aruṇa im ÇKDr. ist रभस auch = पौर्वापर्यविचार (eher hätte man पौर्वापर्याविचार erwartet). — b) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1,30,4 (31,5 Gorr.). — c) N. pr. α) eines Dânava Hariv. 12937. नभस Langl., रश्मिस die neuere Ausg. — β) eines Fürsten, eines Sohnes des Rambha, Bhâg. P. 9, 17,10. — γ) eines Lexicographen Colebr. Misc. Ess. II,53. 59. Verz. d. Oxf. H. 182,b,44. °कोष 162,b,22; vgl. u. केसर 7) und रभसपाल. — δ) eines Râkshasa R. 5,80,1. — ε) eines Affen (vgl. रभ) R. 4,39,7. — 3) f. आ = रभस 2) a) Trik. 3,5,18. — Vgl. गो° und राभस्य.

रभसपाल m. N. pr. eines Lexicographen Med. Anh. 2; vgl. रभस 2) c) γ).

रभसान adj. etwa so v. a. रभस 1) b): (अग्निः) ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत् Rv. 6,3,8.

रभस्वत् (von रभस्) adj. *ungestüm*: अस्मात्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः Rv. 1,9,6. अग्निरग्नी रभस्वद्भी रभस्वाँ एह गम्याः 10,3,7.

रभि f. *ein best. Theil des Wagens* (etwa *Zugscheit*): हिरण्ययी वां रभिरीषा अक्षो हिरण्ययः Rv. 8,5,29.

रभिनेय (!) m. patron.; pl. Saṁsk. K. 185,b,4.

रभिष्ठ (von रभ् mit dem suff. des superl.) adj. *überaus ungestüm*: पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः Rv. 5,58,5. *überaus stark*: रशना VS. 21,46.

रभीयंस् (von रभ् mit dem suff. des compar.) adj. dass. VS. 21,46. Âçv. Çr. 3,4,14. 6,10 Comm. Çâñkh. Çr. 6,1,12. — Vgl. रभ्यंस्.

रभेणक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2149.

रभ्यंस् adj. = रभीयंस्. पातं च सह्यसो युवं च रभ्यसो नः Rv. 1,120,4.

रभोदा (रभस् + 2. दा) adj. *ungestüme Kraft verleihend* Rv. 6,22,5.

रम्, रमते (क्रीडायाम्) Dhâtup. 20,23. रमति (in transit. Bed. und aus metrischen Rücksichten); उपरम्येताम् Hariv. 15233. ved. रम्णाति; °रराम, रेमे; °अरंसीत्, अरंस्त P. 7,2,73. Vop. 8,71. रंस्यते, रंस्यति Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. रत्वा (रत्वा Kathâs. 64,46), °रत्य und °रम्य P. 6,4,37. fg.; रन्तुम्, °रमितुम् (MBh. 1,4183); रत. 1) act. *zum Still-*

stehen bringen, festmachen Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Nir. 10,9. 32. धुनिमेतोरारम्णात् ṚV. 2,15,5. 12,2. 5,32,1. सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णात् 10,149,1. बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रम्णातु VS. 4,21. देवं त्वष्टर्वसु रम 6,7. — 2) act. med. *Jmd* (acc.) *ergötzen* MBh. 3,1820 (रमत्येनं ed. Bomb., रमयन्तीव Indr. 5,4). रमते तत्र वै देवो रममाणो गिरेः सुताम् Hariv. 1576. तस्य कलत्रं रन्तुं समीहते *futuere* Çuk. in LA. (III) 37,3. — 3) med. *stillstehen, ruhen; bleiben, gern bleiben bei* (loc.): अरंस्त पर्वतश्चित्सरिष्यन् ṚV. 2,11,7. आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः 3,56,4. 8,90,4. 10,111,9. नो अस्मिन्रमते जने 145,4. AV. 1,17,3. 5,22,9. मयि वो रमतां मनः 7,12,4. 60,1. 115,4. 8,1,1. कथं वातो नेलयति कथं न रमते मनः 10,7,37. रमध्वं मे वचसे *haltet still meiner Rede* ṚV. 3,33,5. VS. 3,21. 5,17. 8,51. 13,35. Ait. Br. 2,8. न ह वै गायत्री क्षमा रमते 3,39. TS. 3,4,3,5. 5,2,8,3. Çat. Br. 6,2,1,12. 14. 7,4,1,16. जरत्कृते पशवो न रमन्ते Pañkav. Br. 17,7,2. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः Spr. 4772. Varâh. Bṛh. S. 56,8. रमन्ते तत्र संपदः Spr. 175. अभितो रम्यताम् (impers.) M. 3,251. — 4) med. (act. nur aus metrischen Rücksichten) *stehen bleiben bei* so v. a. *sich genügen lassen an; sich ergötzen —, Gefallen finden an; a)* mit loc.: वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ṚV. 10,34,13. ईश्वरो ह्यस्य वित्ते देवा अरन्तोः Ait. Br. 3,48. Weber, Râmat. Up. 286. स्व एव धामन्रममाणम् Bhâg. P. 2,9,16. 4,14. स्व एव लोके रमतो महामुनेः 4,4,19. 5,19,5. न चैकस्मिन्रमत्येताः पुरुषे MBh. 13,2400. स्वेषु दारेषु रम्यताम् (impers.) R. 5,23,5. गीते वा रमते Çat. Br. 6,1,1,15. न तेषु (भोगेषु) रमते बुधः Bhag. 5,22. 18,36. नाधर्मे रंस्यते मनः MBh. 1,4756. 13,580. R. 2,55,27. रमते चक्षुस्तवास्मिन्गिरिकन्दरे 96,5. 3,53,20. Suçr. 1,112,18. Spr. 856. 2903. 2972. 3179. 5195. Varâh. Bṛh. S. 53,95. Kathâs. 21,80. 47,99. 104,55. Bhâg. P. 2,1,7. 9,2. 9,9,44. 20,12. Mârk. P. 62,21. वरयान्यं पतिं यत्र मनस्ते रमते 125,32. Prab. 107,18. Bhaṭṭ. 1,2. देवत्रा रेमे Vop. 7,98. यत्र वास्य रमेन्मनः M. 2,223. 4,175, v. l. Spr. 903. Bhâg. P. 5,14,32. विप्रयूनि स्वेनैव धनव्ययेन रममाणाया Daçak. in Benf. Chr. 181,5. विटेषु रमते (या नारी) Vet. in LA. (III) 20,12. रत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache ganz ergeben, als gewohnter Beschäftigung obliegend:* प्राणे Çat. Br. 14,8,13,3. संभूत्याम् 7,2,13. प्रियहिते M. 2,235. 11,78. Bhag. 12,4. MBh. 3,16621. R. 1,7,4. 2,54,22. 58,28. 3,53,12. 4,16,12. Spr. 4839. Brahma-P. in LA. (III) 48,15. तेषां (स्रोतसां) चावरणे M. 3,163. पतिशुश्रूषणे R. 1,1,88. 2,24,27. Varâh. Bṛh. S. 45,15. वाजिनां रक्षणे 86,33. तद्विपक्षस्तुतौ Râǵa-Tar. 3,503. Pañkar. 1,7,87. वचने MBh. 3,2222. व्याकरणे 13,4303. तपसि R. 1,9,3. 2,100,14. 4,9,70. श्रेयसि Bhaṭṭ. 1,25. यत्र तत्राश्रमे Spr. 1225. तथाप्यस्मिन्घोरे पथि बत रता नात्मनि रताः 3035. परपुंसि रता Jâǵñ. 2,280. मिथ्याप्रव्रजिते R. 5,24,5. गुरुजने Spr. 1027. स्वात्मन् (loc.) Bhâg. P. 3,14,27. पुंसि 25,15. स्त्रीषु Vet. in LA. (III) 30,9. परेशे रतमानसा: Verz. d. Oxf. H. 9,a,3 v. u. Die Ergänzung mit रत componirt: वेदवादरत Bhag. 2,42. प्रजानुग्रह° R. 1,1,5. 2,24,20. हिंसा° Spr. 3439. Ragh. 9,4. Spr. 807. 1313. 2899. Varâh. Bṛh. S. 15,4. 10. 15. 16,19. 39. कृषि° (= कृषीवल) 33,2. 68,71. Bhâg. P. 1,5,13. Brahma-P. in LA. (III) 54,16. Pañkat. 27,9. 203,2. Hit. 19,2. धातुवाद° = कारंधमिन् Trik. 3,3,235. भार्या पररताम् so v. a. *mit Andern buhlend* Spr. 2899. वैश्यरतः क्षत्रियः wohl so v. a. *auf Kosten der Vaiçja lebend, diese ausbeutend* Verz. d. Oxf. H. 154,b,10. — *b)* mit instr.: रममाणः स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा Khând. Up. 8,12,3. कथाभिः MBh. 3,58 (सह ist adv.). यथालब्धोपपन्नार्थैः 12,3876. R. 2,36,19. भोगैः 7,59,2. पौराङ्गनानां लोचनैः Megh. 28. Kathâs. 44,53. Bhâg. P. 3,31,32. 9,18,39. Bhaṭṭ. 6,67. चित्रास्वादकथैर्भृत्यैरनायासितकार्मुकैः । ये रमन्ते नृपास्तेषां रमन्ते रिपवः श्रिया ॥ Spr. 912. R. 2,36,4. Mârk. P. 23,78. रमन्ते पयोषिता so v. a. *pflegen der Liebe mit* Spr. 764. रमन्ते मातृभिः सुताः MBh. 6,68. Kathâs. 56,292. Vop. 5,30. Brahma-P. in LA. (III) 55,11. सा च ग्रामसौख्येन (so ist zu lesen) दण्डनायकेन तत्पुत्रेण च समं रमते Hit. 66,7. मा रंस्था जीवितेन नः so v. a. *spiele nicht mit unserem Leben* Bhaṭṭ. 6,15. स्वकर्मणैव रतः *Gefallen findend an, zufrieden mit* Pañkat. 228,10. — *c)* mit infin.: वदते नहि वस्तुं मे स्वर्गेऽपि रमते मनः R. Gorr. 2,21,15. — *d)* mit सह, सार्धम्, साकम् *sich mit Jmd vergnügen* und insbes. *mit Jmd der Liebe pflegen;* med. MBh. 3,2253. 2640. R. 2,27,3. 31,27. 94,18. R. Gorr. 2,27,13. त्वमार्य सह वैदेह्या वनवासेऽपि रंस्यसे 31,21. Kathâs. 18,405. Bhâg. P. 9,1,25. Mârk. P. 20,6. 61,55. MBh. 1,3907. 3,2233. 13,1466. Kathâs. 37,105. 42,159. 45,342. Brahma-P. in LA. (III) 54,9. Pañkar. 1,10,37. Hit. 63,22. 86,10. 110,18. ed. Johns. 1394. Sâj. zu ṚV. 1,125,1. रमन्ते चोपहासेन पुरुषाः पुरुषैः सह *treiben Unzucht mit einander* MBh. 8,2115. act. R. Gorr. 1,65,12. 3,61,34. 38. रन्तुम् R. Schl. 2,96,9. 7,31,9. रन्त्वा Kathâs. 64,46. रमस्व सहितो मया MBh. 13,1465. — *e)* ohne weiteren Beisatz *vergnügt sein, sich ergötzen:* एकाकी न रमते Çat. Br. 14,4,2,4. Khând. Up. 8,12,5. Maitrjup. 2,6. MBh. 1,981. 3905. 8061. 3,1795. 4,264. 403. R. 2,55,31. 91,74. 3,73,17. 7,108,29. Ragh. 9,71. 14,30. मम मनो रमते Vikr. 70,21. न विना परिवादेन रमते दुर्जनो जनः Spr. 1458. 2883, v. l. Kathâs. 34,164. 52,64. Prab. 90,13. Bhâg. P. 3,23,44. 4,27,1. 9,19,6. तुष्यन्ति च रमन्ति च Bhag. 10,9. MBh. 12,7755. 13,1276. रमामि कथयन्त्यास्ते दृढम् R. 3,5,3. 15,28. Mârk. P. 51,99. Weber, Râmat. Up. 354. रम्यताम् impers. MBh. 1,7649. Vikr. 19,1. Spr. 4341. रन्तुम् Mârk. P. 20,7. Çuk. in LA. (III) 33,3. रत *vergnügt, froh* Bhâg. P. 3,23,40. 10,47,8. Häufig in Verbindung mit einem loc. des Ortes: रममाणः पुरे रम्ये MBh. 1,6412. 3,1877. 13,1427. 3861. Hariv. 1576. R. 2,34,50. 54,25. 56,11. 60,9. 94,11. Ragh. 8,94. Gît. 7,22. यत्र रमाम्यहम् MBh. 1,6449. R. 3,79,45. Bhâg. P. 5,13,18. रतवानस्मि R. 2,94,16. रन्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु Ragh. 6,64. *sich ergötzen* so v. a. *der Liebe pflegen:* दंपत्योः रममाणयोः Bhâg. P. 3,23,46. एता हि रममाणास्तु वञ्चयन्तीह मानवान् MBh. 13,2236. रममाणे चक्रवाकयुगे Mârk. P. 62,10. मृगा रमन्ते *begatten sich* P. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. ततो निवेश्य बद्धां तां रन्तुमाश्लिष्यति स्म सः Kathâs. 58,96. बलात्कारेण Daçak. 32,15. पुंसः स्त्रियाश्च रतयोः Bhâg. P. 10,60,38. — Vgl. रत, रन्तव्य, देवरत, निर्माणरत, महीरत, सुरत.

— caus. रमयति und रामयति Vop. 18,23. अरीरमत्, रमयामक: ved. P. 3,1,42. 1) *zum Stillstehen bringen:* अपः ṚV. 5,31,8. 1,165,2. त्वं सूरो हरितो रामयो नॄन् 120,13. 5,52,13. अरं रमदन्तमानं चिदेतोः 2,38,3. रथम् 7,32,10. 56,19. श्येनमायिनम् TS. 2,4,7,1. पशून् 6,3,6,2. प्रजाम् Kâtj. Çr. 4,14,23. Pañkav. Br. 6,7,18. — 2) रमयति *ergötzen, durch Befriedigung der Liebeslust ergötzen* MBh. 1,3905. 6064. 6071. 2,133. 305. 3,1859. 4,25. 12,8812. 14,2642. 15,541. Hariv. 9904. R. 2,48,11

(45,12 Gorr.). रामो रमयतां श्रेष्ठः 53,1. 61,1. 5,74,15. R. Gorr. 1,1,22. 78,13. 53,1. 3,3,20. 15,18. Megh. 110. Spr. 1157. 3194. 3770. Varâh. Bṛh. S. 19,5. 76,3. Kathâs. 1,66. Gît. 1,44. 2,8. 11. Bhâg. P. 1,6,39. 3,2,29. 3,21. 4,7,21. 27,1. 5,18,16. 9,14,24. 24,63. 10,29,42. Brahma-P. in LA. (III) 54,14. Kusum. 1,10. med. MBh. 4,55. Hariv. 8342. Bhâg. P. 4,25,38. रमां रमयन्निन्द्रियाणि रमयते *ergötzt seine Sinne* 5,18,16. रमित MBh. 13,580 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Gît. 7,12. — 3) मृगान्रमयति *die Gazellen sich begatten lassen* so v. a. *melden, dass die Gazellen sich begatten*, P. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. Vop. 18,22. — 4) *sich ergötzen*: पिबन्ति रमयन्ति च MBh. 3,11371. Hariv. 3739. Spr. 1917.

— desid. s. रिरंसा, रिरंसु.

— intens. रंरम्यते, रंरमीति P. 7,4,85. Vop. 2,31. das ved. रारन्धि wird auch hierher gezogen P. 6,4,103, Sch.; vgl. u. रध् und रन्.

— अति *höchst entzückt sein*: °रमते v. l. für अभिरमते Spr. 635. st. °रत R. 1,70,31 lesen die ed. Bomb. und auch Schl. 2,110,18 richtig अभिरत.

— अनु 1) act. *inne halten*: आह्वावे Çâñkh. Çr. 17,17,12. — 2) med. *seine Freude an Etwas haben* Spr. 2883, v. l. अनुरत *Gefallen findend an* (loc. oder im comp. vorangehend): तत्रधर्मेष्वनुरतः R. 3,4,6. कृत्यावेतालादिषु कर्मसु विद्यासु चानुरतः Varâh. Bṛh. S. 69,37. धर्मानुरत 15,10. समाज्ञानुरत Bhaṭṭ. 8,39. लीलावतारानुरत Bhâg. P. 1,2,34. *verliebt* 10, 33,26. — Vgl. अनुरति.

— अप, partic. अपरत 1) *sich nicht aufhaltend*: अपरता अस्मादोषधयः Nir. 9,8. — 2) *ruhend, feiernd, sich jeglicher Thätigkeit enthaltend* Bhâg. P. 10,21,10.

— अभि 1) med. *sich aufhalten*: यत्राभिरंस्यमाना भवन्ति Âçv. Gṛhj. 4, 6,16. *ruhen* Çâñkh. Gṛhj. 4,2. अभि भो रम्यताम् M. 3,251, v. l. अभिरम्यतामिति वदेद्ब्रूयुस्ते ऽभिरताः स्म ह Jâgn. 1,251. *möget ihr befriedigt sein* und *wir sind befriedigt* Stenzler. — 2) *sich ergötzen, Gefallen finden an*: अगम्येष्वभिरंस्यन्ते Hariv. 11321. विद्यासु विद्वानिव सो ऽभिरेमे पत्नीषु Bhaṭṭ. 1,9. कथाभिरभिरम्य R. 1,25,20 (26,21 Gorr.). अभिरंस्ये ऽहं त्वयैव सह 2,27,18. Mṛkkh. 83,11. माद्यन्ति मोदते ऽभिरमते प्रस्तौति Spr. 635. 2976. त्रिदिवगताभिरमन्ति मानवेन्द्राः MBh. 3,1878. अभिरम्य तया तस्यां शिलायाम् R. 2,96,21 (105,20 Gorr.). 3,19,19. अभिरत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache ganz ergeben, — als gewohnter Beschäftigung obliegend*: स्वे स्वे कर्मणि Bhag. 18,45. तपसि MBh. 1,674. धर्मपत्नीमभिरतां त्वयि 4681. 5,6078. 13,5299. पापेषु Hariv. 4846. कृष्याम् 11306. सत्पथे R. 2,36,29. 56,15. 3,15,40. 71,13. Kâm. Nîtis. 6,8. Bhâg. P. 3,32,17. 4,20,28. 9,6,48. 10,60,34. राजधर्माभिरत Hariv. 3107. 5643. Spr. 4230. Varâh. Bṛh. S. 15,5. 7. 21. Bhâg. P. 3,8,7. 25,34. 32,41. 5,19,1. Mârk. P. 51,118. Verz. d. Oxf. H. 54,b,21. मांसक्लेतोरभिरता विहारार्थे च R. 3,49,39. त्रिशङ्कुरिह तिष्ठतु। दक्षिणस्यामभिरतो दिशि R. Gorr. 1,62,32. 2,119,19 (110,19 Schl.). — 3) किंनराभिरतानि Mârk. P. 61,21 fehlerhaft für किंनराभिरुतानि. — Vgl. अभिरति, अभिराम. — caus. *ergötzen*: भार्येव चाभिरमयति (विद्या) Spr. 2174. कथाभिरनुकूलाभी राजानं चाभ्यरामयत् (चाभ्यरोचयत् ed. Bomb.) MBh. 13,476. त्वयाभिरमिताः Bhâg. P. 10,29,36.

— अव *aufhören, nachlassen;* nur im partic. mit der Negation zu belegen; vgl. अनवरत und füge noch hinzu Spr. 429. Varâh. Bṛh. S. 38, 5. Kathâs. 20,34. 22,259. Dhûrtas. in LA. 67,7. Bhâg. P. 5,1,23. 24, 29. Vedântas. (Allah.) No. 122. — Vgl. अवरति.

— उपाव *sich behaglich finden*: अश्वः प्रस्तरेण संमृज्यमान उपावरमते Pañkav. Br. 6,7,18.

— आ act. P. 1,3,83. Vop. 22,1. 1) *einhalten* (zu reden): आरमाच्छावाक Ait. Br. 6,30. Lâṭj. 1,11,26. आरमेदा संप्रैषात् Âçv. Çr. 2,16,2. Schol. zu Kâtj. Çr. 5,5,18. विरामो ऽस्त्विति चारमेत् M. 2,73. *abstehen*: आरम्यताम् (impers.) MBh. 1,4181. आरत *aufgehört*: °निःस्वन Kir. 5,6. अनारत (s. auch bes.) adj. und °तम् adv. *unaufhörlich, ohne Unterlass* AK. 3,5,11. MBh. 12,12417. Spr. 3844. Kathâs. 38,82. Râǵa-Tar. 4,169. Pañkar. 3,15,4. Verz. d. Oxf. H. 117,b,6. — 2) *sich ergötzen, Gefallen finden an*: सत्यधर्मार्थवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्सदा (चैव रमेत्सदा v. l.) M. 4,175. आरमन्तं परं स्मरे Bhaṭṭ. 8,52. नृपारमल्लोकलोचन Spr. 2745. नृपतिडुक्त्रिारमेयम् (so ist zu schreiben) *sich geschlechtlich ergötzen* Daçak. 93,3. ताभिश्च समं युगपदारमत् Kathâs. 44,50. आरेमुरिव पुलिनानि Bhaṭṭ. 3,38. — Vgl. आरति, आरमण, आराम.

— उपा 1) *ruhen, ausruhen*: उपारम MBh. 1,6035. °रम्य 6818. उपारत *ruhend, sich jeglicher Thätigkeit enthaltend* Bhâg. P. 3,22,1. उपारतधीस्तस्मिन् *dessen Geist ruht, — fest gerichtet ist auf* 6,2,42. *zur Ruhe kommen, aufhören, nachlassen*: उपारतपांसुवर्षवेग 10,7,25. वातवर्षमुपारतम् 25,25. — 2) *abstehen von* (abl.): तपसो ऽप्याडुपारम R. Gorr. 1,67,11. योगात् Kumâras. 3,58. विग्रहात् Bhâg. P. 8,11,44. उपारमध्वं संग्रामात् MBh. 6,5744. 7270. अखिलकामुकेभ्यः Bhâg. P. 11,28,23. तेषां दानप्रवृत्तेरनुपारतानाम् Ragh. 16,3. योगाडुपारतम् Bhâg. P. 8,12,44. स्थानत्रयात् so v. a. *frei von* 1,18,26. उपारम *stehe ab davon* MBh. 13, 1893. तस्मादेवंगते त्वच (so die ed. Bomb.) उपारमितुमर्हसि 1,4183.

— व्युपा act. *abstehen von Etwas, ablassen* Hariv. 5118.

— समा dass.: ते ह समारताः *sie liessen davon ab* Khând. Up. 1,10,11.

— उद् act. *einhalten* (zu reden) Çat. Br. 7,4,1,39.

— उप act. und med. in intransit., act. in transit. Bed. P. 1,3,84. fg. Vop. 22,1. 1) *stillhalten* (im Lauf), *am Orte bleiben* TBr. 2,1,2,1. TS. 7,1,19,1. उपात्र खलु रमत Çat. Br. 11,4,1,3. 5,1,6. Çâñkh. Çr. 16,22, 21. Nir. 2,21. — 2) *zur Ruhe kommen, aufhören thätig zu sein, sich dem Quietismus ergeben*: यत्रोपरमते चित्तम् Bhag. 6,20. उपरमति, °ते विष्णुः Vop. 22,1. इत्थं मुनिस्तूपरमेत् Bhâg. P. 2,2,19. 5,6,6. 20,2. 9,20, 33. उपरत *zur Ruhe gekommen* Sâñkhjak. 66. Bhâg. P. 1,11,35. 3,1,38 (उपरतारि). Vop. 2,19. Prab. 37,6. निन्दाप्रशंसोपरत so v. a. *gleichgiltig gegen* MBh. 5,1403. *zur Ruhe gekommen* so v. a. *gestorben* Çâñkh. Gṛhj. 4,7. Hariv. 5179. R. Gorr. 2,88,19. 4,8,34. 5,22,13. Bhâg. P. 1,13,32. 4,14,39. 28,45. 5,9,8. 9,6,11. 17,14. 20,23. Pañkat. 93,18. 98,3. *ruhig* so v. a. *geduldig* Çat. Br. 14,7,2,28. — 3) *innehalten* (mit Rede, Handlung u. s. w.), *aufhören* Çat. Br. 14,6,1,12. 2,14. उपरमन्ति घोषं घोषकृतः Çâñkh. Çr. 17,17,7. 12,13,4. अक्रोरात्रमुपरम्य प्राध्ययनम् Gṛhj. 4, 6. एतावडुक्त्वोपरराम Bhâg. P. 1,6,26. 9,43. विनद्य सुमहानादं अमेणोपरताः स्त्रियः R. 2,51,13. 86,14. Bhâg. P. 7,5,33. LA. (III) 87,13. मृगशशकादीन्व्यापादयन्नोपरराम Pañkat. 53,19. ते नोपरेमुः *sie liessen nicht nach* Hariv. 8433. 15546. उपरमस्व MBh. 13,1471. Bhaṭṭ. 8,55. कृत-

कलाशब्दः — उपरराम MBH. 1,2174. 3,853. 7,3633. वागुपारमत् KATHÂS. 2,70. 16,120. उपरतेषु शब्देषु ÂÇV. GṚHJ. 4,6,7. MBH. 1,119. 2,2276. R. 2,3,5. 91,28 (100,25 GORR.). ततो युद्धमुपारमत् MBH. 5,7162. यावद्धक्रमुपरमति, °ते P. 1,3,85, Sch. उपरत *aufgehört, verschwunden, nicht mehr da seiend:* उपरतशोणिता GOBH. 2,5,6. PÂR. GṚHJ. 2,11. M. 5,66. R. 6,21,2. Spr. 593. उपरतं बाल्यम् 1966. SÂH. D. 63,15. BHÂG. P. 1,3,34. 3,21,21. 4,7,26. 5,5,28. 6,6. 10,15. 6,9,35. अनुपरत *unaufhörlich* ÇAT. BR. 1,3,2,6. BHÂG. P. 5,17,3.7. — 4) *abstehen von, entsagen;* mit abl.: युद्धादुपारमन् MBH. 7,3633. HARIV. 15233. तद्भक्षणात् ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 52. BHÂG. P. 1,13,2. संसृतेः 15,33. 4,28,42. 5,1,22. BHAṬṬ. 8,54. 9,51. विस्मयान्नोपरेमिरे R. 7,97,23. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 319. BHÂG. P. 5,5,14. अशक्यारम्भादुपरम्य DAÇAK. in BENF. Chr. 181,12. रणादुपरतम् BHAG. 2,35. स्वव्यापाराद्वदनात् ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 315. अस्माल्लोकादुपरते मयि BHÂG. P. 3,4,30. विलापोपरतं रामम् R. 2,53,29. निर्घोषोपरत 51,13. — 5) *abwarten:* हवींषि अप्यमाणान्युपरमति ÇAT. BR. 2,2,1,2. 3,8,2,29. — 6) *beruhigen:* देवदत्तमुपरमति = उपरमयति P. 1,3,84, Sch. — Vgl. उपरम fg., उपराम. — caus. °रमयति *zur Ruhe bringen, beruhigen* NIR. 2,18. P. 1,3,84, Sch.

— व्युप *verschiedentlich pausiren:* °रमम् absol. ÂÇV. ÇR. 7,11,20. *zur Ruhe gelangen, aufhören:* इन्द्रियाणां व्युपरमे मनो व्युपरतं यदि MBH. 12,9897. निःस्वनः — व्युपारमत् 14,1945. व्युपारमन्त युद्धानि HARIV. 5102. व्युपरतसकलज्ञान MṚKKH. 1,2. *abstehen von* (abl.): योधा व्युपारमन्युद्धात् MBH. 7,5745. व्युपरम्य ततो युद्धात् 6,5718. — Vgl. व्युपरम.

— नि 1) med. *sich zur Ruhe begeben, aufhören:* आग्नावर्यन्तो नि विषे रमधम् AV. 5,13,5. न्यग्निना हृत्सु कामा अरंसत (अरंसत ṚV.) 14,2,5. — 2) निरत *sich genügen lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache oder einer Person ganz ergeben, sich gern mit Etwas beschäftigend, treu an Etwas hängend;* die Ergänzung im loc.: स्वधर्मे MBH. 3,15604. 15640. धनुर्वेदे च वेदे च 13,91. R. 1,19,19. निदेशे पितुः 4,14,18. 5,77,13. विद्याधातुवणिक्क्रियासु VARÂH. BṚH. S. 69,20. UTTARAR. 43,7 (57,5). im instr.: वन्येन फलमूलेन R. 7,94,20 (निरत = निरताहार = नियताहार Comm.). im comp. vorangehend: स्वदार° M. 3,45. R. 1,6,12. स्वकर्म° 14. 2,80,1. BHAG. 18,45. अहिंसा° MBH. 3,2248. तपःस्वाध्याय° R. 1,1,1. प्राणिनिपात° 59,21. धर्म° 2,61,23. प्रतिज्ञा° 3,48,18. MṚKKH. 70,19. तोयक्रीडा° MEGH. 34. Spr. 229. 1326. 2080. 2925. 4653. VṚDDHA-KÂṆ. 11,12. VARÂH. BṚH. S. 68,72. 103,9. KATHÂS. 27,208. BHÂG. P. 3,23,7. PRAB. 20,14. तदेकनिरत *ganz an ihm hängend* KATHÂS. 23,93. SÂH. D. 73. — Vgl. निरति, 2. निरमण, निरामिन्. — caus. 1) *aufhalten, festhalten, hemmen:* मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् ṚV. 7,32,1. 2,18,3. 4,17,14. 5,53,9. 10,160,1. नि रामय ज्ञरितः सोम इन्द्रम् 42,1. दामनि 1,56,3. नि रामय मय्येव तन्वं मम NIR. 10,18. — 2) *geschlechtlich ergötzen:* सुरतोत्सुकाम्। रामां निरमयन् BHÂG. P. 3,23,44.

— परि act. P. 1,3,83. VOP. 22,1. *Gefallen finden an, erfreut sein über* (abl.): त्वणां पर्यरमत्तस्य दर्शनात् BHAṬṬ. 8,53. — caus. *geschlechtlich ergötzen:* °रमिता KHANDOM. 25.

— प्र caus. *in einen angenehmen Zustand versetzen:* रात्रिः प्ररमयति भूतानि नक्तंचारीणि NIR. 2,18.

— प्रति, °रत *Gefallen findend an* (loc.), *gern obliegend:* रामो हि सर्वलोकस्य हिते प्रतिरतः सदा R. 6,104,37.

— वि act. P. 1,3,83. VOP. 22,1. ausnahmsweise und namentlich aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *einhalten* (zu reden u. s. w.), *pausiren, aufhören* ÇÂṄKH. ÇR. 5,19,16. LÂṬJ. 1,3,6. KAUÇ. 141. विरमेत्पक्षिणीं रात्रिम् M. 4,97. एतावदुक्त्वा वचनं विरराम स पार्थिवः MBH. 1,8112. 2,1401. 3,16721. 4,60. 12,6238. R. 1,21,20. 50,24. 59,22. 2,12,27. 44,24. 105,39. 7,108,7. ÇÂK. 15,3. 67,5. 107,8. KATHÂS. 1,62. 18,316. 28,125. RÂGA-TAR. 6,24. BHÂG. P. 3,9,26. 4,4,1. विरम्य KATHÂS. 22,59. एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे RAGH. 2,51. KATHÂS. 14,88. 15,95. 16,119. 17,31. RÂGA-TAR. 3,319. 4,97. 256. इत्युक्त्वा विरतं (impers.) वाचा KATHÂS. 23,75. 52,65. पावकश्च तदा दावं ददाह समृगपक्षिणम्। अहानि पञ्च चैकं च विरराम सुतर्पितः॥ MBH. 1,8475. क्रीडित्वा विरतं रात्री R. 5,14,7. पीत्वा मधूनि विरतं तं ददर्श 9. यावदसौ न कथंचित्प्रलपन्विरमति PAṄKAT. 93,16. स यावद्रूर्ध्वः पराविध्यति तावति स्वयमेव व्यरमत TS. 2,4,12,1. ÇAT. BR. 6,7,3,9. तदपि न वराको विरमति *lässt nicht nach* Spr. 429. प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः 1913. 1966. BHÂG. P. 4,20,26. PAṄKAR. 1,2,7. विरमस्व MBH. 13,1496. HARIV. 6240. विरम्य KATHÂS. 72,320. विरमेद्दग्धयोनिरिवानलः *erlöschen* BHÂG. P. 7,12,31. विरराम so v. a. *er entsagte allem Andern* 4,28,40. सत्त्वं ते विरमतु MBH. 1,2135. 2138. Spr. 2691. 2706. 5173. रात्रिरेव व्यरंसीत् *ging zu Ende* UTTARAR. 12,13 (17,6). विरमत्समाधि BHÂG. P. 7,9,33. 12,10. 10,73,15. VOP. 25,27. विरमन्ति न ज्वलितुमोषधयः KIR. 5,24. कोलाहलो विरमते BHÂG. P. 3,15,18. 4,19,35. किमय शब्दो विरतः R. 2,71,26. 86,14. R. GORR. 2,74,13. MṚKKH. 44,16. ÇÂK. 90. RAGH. 4,78. 8,54. 65. ÇIÇ. 9,12. SÂH. D. 23. वर्षमविरतं पततु *unaufhörlich, ununterbrochen* MṚKKH. 75,6. VARÂH. BṚH. S. 19,5. RÂGA-TAR. 6,317. BHÂG. P. 3,30,8. 31,43. 4,31,20. MÂRK. P. 51,36. 116,35. — 2) *abstehen von, entsagen, aufgeben;* mit abl. P. 1,4,24, Vârtt. त्रात्यभावाद्विरमेयुः KÂTJ. ÇR. 22,4,27. MBH. 3,14250. HARIV. 5635. 11268. R. GORR. 2,60,23. RAGH. 8,22. Spr. 571. 2585. 2833. 2866. VIKR. 39. KATHÂS. 43,29. 45,96. 411. 49,52. 95 (निर्बन्धप्रार्थनातः). RÂGA-TAR. 1,210. 2,51. 4,631. BHÂG. P. 6,1,63. 16,59. 7,9,49. MÂRK. P. 76,45. PAṄKAR. 1,2,46. PAṄKAT. 161,1. 213,2. BHAṬṬ. 3,21. 8,53. med. BHÂG. P. 1,11,34. 2,2,16. MÂRK. P. 113,29. अविरतो दुश्चरितात् KAṬHOP. 2,24. KÂTJ. ÇR. 22,4,23. विरतः पापात् MBH. 5,1382. R. 1,6,14. 5,16,21. RAGH. 14,71. KATHÂS. 41,54. ÇATR. 10,144. BHÂG. P. 8,16,2. VOP. 5,20. परापवादविरत R. 1,7,6. RÂGA-TAR. 1,133 (wo mit der ed. Calc. °हिंसाविरतः zu lesen ist). जलमयाद्यर्थबोधनादभिधायां विरतायां तटाद्यर्थबोधनाच्च लक्षणायां विरतायाम् so v. a. *aufgehört hat zu* SÂH. D. 19,9. तटाद्यर्थबोधनविरताया लक्षणायाः 119,2. Statt abl. ausnahmsweise loc.: (कलेवरे) रमन्ति मूढा विरमन्ति पण्डिताः VP. beim Schol. zu PRAB. 96, Çl. 30. विलापे विरतम् R. GORR. 2,53,31. — 3) विरम्यतां भवान् MÂLAV. 24,11 fehlerhaft; WEBER vermuthet तावत् st. भवान्. — Vgl. विरति u. s. w. — caus. 1) *zur Ruhe bringen:* °रामयति NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,93. विरमितधर्मप्रतिपत्त BHÂG. P. 5,1,29. — 2) *zu Ende bringen:* रजनीं तदानीम्। कथाप्रकारैर्बहुभिर्महात्मा विरामयामास R. 7,66,17.

— प्रवि *abstehen von, unterlassen;* mit abl.: ततोऽग्रहारहरणादेव

प्रविरतो ऽभवत् RÂGA-TAR. 4,638.

— सम् *sich ergötzen, Gefallen finden an* (loc.): संरंसीष्ठाः सुरमुनिकृते वर्त्मनि BHAṬṬ. 19,30. संरमस्व मया साकम् *sich fleischlich ergötzen* BHÂG. P. 9,14,19. 21.

रमं (von रम्) 1) adj. *ergötzend, erfreuend* gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1, 140. गुह्यकाधिप° KIR. 5,20. Vgl. मनो°. — 2) m. *a) Geliebter, Gatte.* — *b) der Liebesgott.* — *c) rothblühender* Açoka H. an. 2,333. MED. m. 25. — 3) f. आ *a)* ein N. der Lakshmî, *der Glücksgöttin;* auch in appellat. Bed. *Glück, Reichthum* AK. 1,1,1,23. TRIK. 1,1,41. H. 226. H. an. MED. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,23. Spr. 920. 4817. 5403. WEBER, RÂMAT. UP. 296. 307. fgg. 312. 328. BHÂG. P. 3,9,23. 4,25,28. 5,18,16. fg. 7,9,26. 8,5,5. 8,8. 23. 9,20,8. VOP. 5, 7. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,30. = शोभा *Pracht, Schönheit* RÂGAN. im ÇKDR. — *b)* Bez. *des 11ten Tages in der dunklen Hälfte des* Kârttika Verz. d. B. H. 341,3. — *c)* N. pr. einer Tochter Çaçidhvaga's und Gattin Kalki's KALKI-P. 25 im ÇKDR. — *d)* schlechte Variante von रामा COLEBR. und LOIS. zu AK. 2,6,1,4. — रमकर्षित PADMA-P. 16,144 fehlerhaft für रोमकर्षित; in Betreff von PAÑKAT. I, 369 s. Spr. 4700.

रमक (wie eben) UṆÂDIS. 2,33. adj. = विलासिन् *sich ergötzend, spielend, scherzend* UGGVAL.

रमट s. रमठ.

रमठ 1) m. pl. N. pr. eines Volkes im Westen VARÂH. BṚH. S. 14,21. 16,21. MBH. 3,1991 (रमट ed. Calc., रामठ ed. Bomb.). 12,2430. — 2) n. = रामठ *Asa foetida* UṆÂDIK. im ÇKDR.

रमठध्वनि m. *Asa foetida* ÇABDAK. im ÇKDR.

रमण (von रम्) 1) adj. (f. ई) *ergötzend, erfreuend* gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. BHÂG. P. 4,6,11. 5,7,11. 8,8,7. 10,21,5. Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. 129,*a*,30. BHAṬṬ. 6,72. — 2) m. *a) Geliebter, Gatte* H. 517. 8. an. 3,220. MED. ṇ. 73. HALÂJ. 2,342. MBH. 12,6516. R. GORR. 2,30, 15. 5,13,44. MEGH. 38. 85. VIKR. 89. RAGH. 14,27. KUMÂRAS. 4,21. Spr. 902. 1555. 1896. 2162. 2254. 2667. 3161. 4729. ÇṚṄGÂRARAS. 3 bei HAEB. 513. ÇIÇ. 9,60. GÎT. 3,10. 10,9. BHÂG. P. 4,6,11. PAÑKAR. 4,3,129. H. 701. क्षपा° *der Gatte der Nacht, der Mond* RÂGA-TAR. 3,269. — *b) der Liebesgott* MED. — *c) Esel* H. an. — *d) Testikel* ÇABDAK. im ÇKDR. — *e) ein best. Baum,* = महारिष्ट RÂGAN. im ÇKDR. — *f)* N. pr. α) einer mythischen Person, eines Sohnes der Manoharâ, MBH. 1,2586. HARIV. 155. — β) Bein. Aruṇa's, des Wagenlenkers der Sonne, TRIK. 1,1,102. — γ) eines Mannes PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 56,12. — δ) pl. eines Volkes (vgl. रमठ) MBH. 6,374 (VP. 194). — 3) f. आ *a) ein junges reizendes Weib* Schol. zu AK. 2,6,1,4. — *b) ein best. Metrum, 4 Mal* ◡◡— COLEBR. Misc. Ess. II, 158 (III, 4). — *c)* N. der Dâkshâjaṇî in Râmatîrtha Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,16. — 4) f. ई *a) ein junges reizendes Weib, Geliebte, Gattin* AK. 2,6,1,4. H. 505. MED. HALÂJ. 2,327. R. 3, 43,35. Spr. 531. KATHÂS. 52,214. RÂGA-TAR. 6,301. भोगः को रमणीं विना PRASAÑGÂBH. 7,*b*,2. BHÂG. P. 10,14,31. NALOD. 2,14. KUVALAJ. 167,*a*. — *b) Aloe indica Royle,* = बाला ÇABDAK. im ÇKDR. — *c) ein best. Metrum, 4 Mal* ◡◡—◡◡— Ind. St. 8,366. *4 Mal* ◡◡— COLEBR. Misc. Ess. II, 158 (III, 4). — *d)* N. pr. eines weiblichen Schlangendämons RÂGA-TAR. 1,263. रमणयक्ष्वी 265. — 5) n. *a) sinnliches Vergnügen, Beischlaf, Begattung* ÇABDAR. im ÇKDR. NIR. 6,17. रमणायोपेयते न धर्माय 12,13. Verz. d. Oxf. H. 24,*b*,47. मृग° P. 6,4,24, Vârtt. 3. 3,1,26, Vârtt. 4, Sch. VOP. 8,133. — *b) das Ergötzen, Erfreuen:* लोक° BHÂG. P. 10,2,13. *das Ergötzen durch Befriedigung der Sinneslust;* mit acc. des Mannes ÇUK. in LA. (III) 36,4. — *c) Hinterbacke, Schamgegend* (जघन) H. an. — *d) die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* H. an. MED. — *e)* N. pr. eines Waldes HARIV. 8955. — Vgl. उषा°, पर°, रजनी°, रति°, रसिक°, राका°.

रमणक 1) n. N. eines Varsha MBH. 6,288. BHÂG. P. 5,20,9 (als m. N. pr. des Regenten dieses Varsha, eines Sohnes des Jagńabâhu). m. N. pr. eines Dvîpa 19,30. 10,16,63. 17,1. VP. 175, N. 3. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vîtihotra BHÂG. P. 5,20,31.

रमणीय् (von रमणी), °यते *Jmdes* (gen.) *Geliebte —, Gattin darstellen:* तव सदा रमणीयते श्रीः SÂH. D. 271,21.

रमणीय (von रम्) adj. *vergnüglich, ergötzlich, anmuthig, schön* H. 1445, Sch. NIR. 1,20. 7,15. 9,27. 10,47. °चरण (Gegens. कपूय) KHÂND. UP. 5,7,10. न्यग्रोध MBH. 1,5896. वन 3,2236. राष्ट्र 4,10. R. 1,2,6. 2, 30,44. 55,30. 56,9. 80,15. VIKR. 37,10.65,18. दिवसाः परिणामरमणीयाः ÇÂK. 3. वपुस् 57. अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्ति 176. 11,19, v. l. 12,1. 13, 10. 99,13. Spr. 361. 2629. 3179. 3576. कथा KATHÂS. 40,115. BHÂG. P. 4,8,46. MÂRK. P. 23,96. SÂH. D. 66,1. अ° PAÑKAT. 123,20. अति° Spr. 3409. PRAB. 52,15. — Vgl. रम्य.

रमणीयक n. *Anmuth, Schönheit* ÇÂK. 11,19, v. l. fehlerhaft für रामणीयक.

रमणीयता (von रमणीय) f. dass. Spr. 24. UTTARAR. 70,3 (90,3). सर्वावस्थाविशेषेषु माधुर्यं रमणीयता SÂH. D. 132.

रमणीयत्व (wie eben) n. dass. R. 7,2,11. ÇÂK. 80,7. SÂH. D. 479.

रमण्य UṆÂDIS. 3,101. wohl = रमणीय.

1. रमति (von रम्) f. *Ort des angenehmen Aufenthalts:* मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु AV. 6,73,2. TBR. 3,7,2,1.

2. रमति (wie eben) UṆÂDIS. 4,63. 1) *gern bleibend, anhänglich;* von der Kuh, *die sich nicht verläuft:* पदज्ञा स्थ रमतयः AV. 7,75,2. TS. 1, 6,2,1. 7,1,12,1. — 2) m. *a) Liebhaber.* — *b) Himmel* MED. t. 144. — *c) Krähe* ÇABDAR. im ÇKDR. — *d) Zeit.* — *e) der Liebesgott* UGGVAL.

रमाकान्त m. *der Geliebte der* Ramâ d. i. Vishṇu PAÑKAT. 46,8.

रमाधव m. *der Gatte der* Ramâ d. i. Vishṇu GAGADÎÇA im ÇKDR.

रमाधिप m. *der Gebieter der* Ramâ d. i. Vishṇu Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,13.

रमानाथ m. 1) *der Gebieter der* Ramâ d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa MBH. 2,2292. — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 536. eines Commentators des Amarakoça WILSON in der Einl. zur 1ten Ausg. des Wörterbuchs S. XXV.

रमापति m. *der Gatte der* Ramâ d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa KATHÂS. 71,200. BHÂG. P. 8,17,7. 10,59,44. PAÑKAR. 4,1,8. VOP. 26,130.

रमाप्रिय n. *Lotus* (*der* Ramâ *lieb*) ÇABDAK. im ÇKDR.

रमावेष्ट m. *Terpentin* RÂGAN. im ÇKDR.

रमाश्रय m. *die Zuflucht der* Ramâ d. i. Vishṇu BHÂG. P. 1,12,23.

रमितंगम m. N. pr. P. 3,2,47, Sch.

रमेश m. *der Gebieter der* Ramâ d. i. Vishṇu oder Kṛshṇa Praçnottaram. in Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 111, Çl. 32. Çatr. 13,2.

रमेश्वर m. dass. Kâçikh., Hariharastotra nach ÇKDr.

रम्फ्, रम्फति (गतौ, nach Vop. auch हिंसायाम्) Dhâtup. 11,20. रम्फ् (ऋम्फ्), ऋम्फति (हिंसायाम्) 28,30. P. 7,1,59, Vârtt. — Vgl. रफ्, रिम्फ्.

1. रम्ब्, रम्बते (*schlaff*) *herabhängen:* न सेशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्या३ कपृत् Ṛv. 10,86,16. — Vgl. लम्ब्.

— अव dass.: अनस्थ ऊरुरवरम्बमाणः Ṛv. 8,1,34.

— आ s. आरम्बण.

2. रम्ब्, रम्बते (शब्दे) Dhâtup. 10,14. (गतौ) 15,87.

1. रम्भ् s. रभ्.

2. रम्भ्, रम्भते (शब्दे) Dhâtup. 10,24. *brüllen:* रम्भमाणा Bhâg. P. 10, 36,2. — Vgl. लम्भ्.

— उप *mit Schall erfüllen, erschallen lassen:* हर्षयन्यर्हि वेणुरवेण जातहर्ष उपरम्भति विश्वम् Bhâg. P. 10,35,12.

1. रम्भ (von 1. रम्भ्) 1) m. *a) Stab, Stütze* Naigh. 3,29. Nir. 3,21. H. an. 2,311. Med. bh. 7 (= वेणु *Bambusrohr*). Halâj. 4,41. आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते Ṛv. 8,45,20. — *b)* N. des 5ten Kalpa (*Weltperiode*) Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,42. — *c)* N. pr. α) eines Sohnes des Âju Hariv. 1476. VP. 406. 412. Bhâg. P. 9,17,1. 10. — β) eines Sohnes des Viviṃçati Bhâg. P. 9,2,25. — γ) eines Fürsten von Vagarâtra Kathâs. 44,56. 82. fgg. — δ) des Vaters des Asura Mahisha und Bruders des Karambha, Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,11. — ε) eines Affen Med. (wo वानरान्तर st. वारणान्तर zu lesen ist). R. 4,39,20. 37. 5,1,39. 73,44. 6,22,3. — 2) f. आ *a) Musa sapientum, Pisang* AK. 2,4,4,1. Trik. 3,3,156. 289. H. 1136. H. an. Med. Hâr. 105. Halâj. 2,37. Bala beim Schol. zu Naish. 2,37. Kathâs. 32,105. Bhâg. P. 3,14,9. 8,2,13. 9,11,28. 10,54,57. 60,24. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,24. Pańkar. 1,7,34. °फल Dhûrtas. in LA. 79,16. °स्तम्भनिभं तथोरुयुगलम् Sâh. D. 155,12 (= Ratnâv. 67,7, wo रम्भागर्भनिभं gelesen wird). Çrut. 44. Naish. 2, 37. रम्भातरुपीवरोरु 22,43. विधृतरम्भमूरुद्वयम् Gît. 10,15. रम्भोरु adj. f. Vop. 4,30 (vgl. P. 4,1,69). Çiç. 8,19. °रु voc. R. Gorr. 1,66,7. 3,61,43. Ragh. 6,35. Çâk. Ch. 56,1. Vikr. 39. Mâlav. 45. Bhâg. P. 3,20,34. कन्यां रम्भोरुम् MBh. 1,2401. रम्भोरु रूपम् Kâvjâd. 2,337. Vgl. कनक°. — *b) eine Art Reis* Bala a. a. O. — *c) ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑ — — — — Colebr. Misc. Ess. II,159 (III,12). — *d)* N. der Dâkshâjaṇî im Malaja-Gebirge Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,35. = गौरी Çabdar. im ÇKDr. — *e)* N. pr. einer Apsaras, der Gattin Nalakûbara's, die Râvaṇa entführte, Trik. 3,3,289. Vjâḍi zu H. 183. H. an. Med. Halâj. 1,88. Bala a. a. O. MBh. 1,2558. 4818. 3,16152. 5,3975. 13,191. Hariv. 7226. 8451. 8694. fgg. 11250. 12472. 12691. 14163. R. 1,63,28 (65, 33 Gorr.). R. Gorr. 2,100,15. 6,92,71. R. ed. Bomb. 6,60,11. 7,26,14. fgg. Vikr. 87,10. fgg. Spr. 424. Kathâs. 17,20. fgg. 28,55. fgg. 101,374. Mârk. P. 106,59 (रम्भा चा° zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 228,*b*, No. 559. Brahma-P. in LA. (III) 50,17. Naish. 2,37. — *f) Hure* Dhar. im ÇKDr.

2. रम्भ (von 2. रम्भ्) 1) adj. *brüllend* in गो°. — 2) f. आ *Gebrüll* H. 1406.

रम्भक m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 181.

रम्भातृतीया f. Bez. *eines best. 3ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,*a*,25.

रम्भाभिसार m. *der Angriff auf* Rambhâ, Titel eines Schauspiels Hariv. 8694.

रम्भाल Suçr. 2,14,2 vielleicht fehlerhaft für रसाल.

रम्भाव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,23. 284,*b*,6.

रम्भिन् (von 1. रम्भ) 1) adj. *einen Stock tragend* d. i. *Greis* (*Thürhüter* nach Sâj.): रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्ययम् Ṛv. 2,15,9. — 2) f. रम्भिणी wohl *ein best. Geräthe* oder *Schmuck:* एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे Ṛv. 1,168,3.

रम्य (von रम्) Vop. 26,12. 1) adj. *ergötzlich, angenehm, anmuthig, schön* AK. 3,4,18,104. H. 1445. an. 2,379. Med. j. 49. तनू Çat. Br. 7, 4,1,16. 8,7,4,8. M. 7,69. MBh. 3,1756. 2486. 2508. 2511. 2534. 2660. 15572. 4,11. 12,4662. 13390. R. 1,1,31. 5,12. 19. 9,54. 2,32,3. 43,11. 46,1. 3,48,7. Suçr. 1,241,7. Ṛt. 1,1. 6,2. 33. Ragh. 11,93. Megh. 79. Çâk. 13. 19. 86. 132. Vikr. 73. Spr. 1494, v. l. 1970. 2589. fg. 2832. 3246. fg. 3318. 3980. 3991. 4930. fg. Varâh. Bṛh. S. 48,8. 15. 104,63. Kir. 5, 11. Kathâs. 1,23. 18,64. 352. 25,140. 28,64. Râga-Tar. 1,4. 3,175. Bhâg. P. 1,16,35. 3,33,18. Mârk. P. 21,2. Brahma-P. in LA. (III) 52,3. Daçak. in Benf. Chr. 182,22. Pańkat. 74,21. Vet. in LA. (III) 1,13. 5,6. अ° Mâlav. 10. सु° R. 2,54,41. रम्य = बलकर Gaṭâdh. im ÇKDr. Vgl. रमणीय. — 2) m. *a) Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* H. an. Med. = बकवृत्त Çabdać. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Âgnîdhra VP. 162. fg. — 3) f. आ *a) Nacht* Naigh. 1,7, v. l. H. an. (hier fälschlich n.). Med. Vgl. राम्या. — *b) Hibiscus mutabilis* Râgan. im ÇKDr. — *c)* Bez. der weiblichen Personification einer best. musikalischen Weise As. Res. 9,451. — *d)* N. pr. einer Tochter Meru's und Gattin Ramja's Bhâg. P. 5,2,22. — 4) n. *a) die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* Med. — *b) der männliche Same* Gaṭâdh. im ÇKDr.

रम्यक (von रम्य) 1) m. *Melia sempervirens* Râgan. in Nigh. Pr. n. *die Wurzel von Trichosanthes dioeca Roxb.* Trik. 2,4,22. — Suçr. 1,144,17. 158,11. 2,35,13. — 2) Bez. einer der acht Vollkommenheiten im Sâṃkhja, f. (sc. सिद्धि) Tattvas. 41. n. Gauḍap. zu Sâṃkhjak. 51. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Âgnîdhra Bhâg. P. 5,2,19. n. N. eines nach ihm benannten Varsha 20. 16,8. 18,24. VP. 168. Mârk. P. 60, 11. Çatr. 1,293. Schol. zu H. 946. fg. (947 fälschlich रम्यङ्क). N. pr. eines Waldes Pańkar. 1,10,44.

रम्यग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* MBh. 2,1118 nach der Lesart der ed. Bomb., मुञ्जग्राम ed. Calc.

रम्यता (von रम्य) f. *Anmuth, Schönheit* Pratâpar. 86,*a*,2.

रम्यत्व (wie eben) n. dass. R. 4,44,111. 7,2,10.

रम्यपुष्प m. *Bombax heptaphyllum* Râgan. im ÇKDr.

रम्यफल m. *eine best. Pflanze,* = कारस्कर Râgan. im ÇKDr.

रम्यश्री m. Bein. Vishṇu's Pańkar. 4,3,30.

रम्यादि m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,14.

रम्र m. 1) = अरुण (vgl. रमण). — 2) = शोभा Uṇâdik. im ÇKDr.

रय्, रयते (गतौ) Dhâtup. 14,10.

रय (von री) m. 1) *Strömung, Strom* H. 1087. Halâj. 3,47. Râga-Tar. 1,40. नदी° sg. und pl. MBh. 2,681. R. 2,64,69. Spr. 2142. अम्बु° R.

2,63,43. अम्भसाम् AK. 3,4,24,28. निम्नगा° 24, 235. जाम्बूनदप्रतिकृतरयं तोयम् Megh. 20. *schnelle Bewegung, Geschwindigkeit* AK. 1,1,1, 59. H. 494. Halâj. 2,288. कृपं गतरयम् Spr. 2899. रथेन — अनुद्धातरयेण Ragh. ed. Calc. 2,72. रथचरणपरिभ्रमण° Bhâg. P. 5,8,6. आशुरयोत्सुकाम्यह् 13,3. Pankar. 3,14,19. रयात् *eiligst, stracks* Çatr. 14,130. रयेण dass. Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,5. *Lauf* in übertr. Bed. संवत्सर° Bhâg. P. 4,29,18. आशुरयः प्रज्वारः 23. *heftiger Drang, Heftigkeit, Innigkeit:* विषयविष° 5,3,14. रोष° Spr. 4074. भक्तिरनुदिनमेधमानरया Bhâg. P. 5, 7,7. — 2) N. pr. eines Sohnes des Purûravas Bhâg. P. 9,15,1. 2. eines andern Fürsten Verz. d. Oxf. H. 280,*b*,5. — Vgl. पयो°, भूत°.

रयक m. s. रवक.

रयप्रश्नसूत्रसिद्धान्त (so im Ind., राय° im Text) Titel einer Schrift Wilson, Sel. Works 1,282.

रयस् vgl. अमूर्त°.

रयि (von रा) m., selten f.; die gewöhnlichen Formen sind रयिस्, रयिम्, रयीणाम्, ein Mal रयिभिस्; man findet aber auch रय्या RV. 10, 19,7. VS. 12,7. AV. 3,14,1. रय्यै (VS. Prât. 4,150) VS. 9,22. 14,22. रय्याम् TS. 7,1,2,2. *Habe, Besitz,* auch wohl *Werthgegenstand, Kleinod:* पितृवित्त RV. 1,73,1. वसुमन्त् 159,4. बहुल 3,1,19. वीरवन्त् 2,11,13. सर्ववीर 30,11. प्रजावन्त् 4,51,10. गोमन्त् 5,4,11. युक्ताश्व 41,5. अश्विन् 8,6,9. पोषं रयीणाम् 2,21,6. तस्मिन्नयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान् 4,2,7. 34,10. इह प्रजामिह रयिं रराणाः 36,9. 6,6,7. रयिपती रयीणाम् 31,1. सुवीरं रयिं गृणते रिरीहि 65,6. रयिं रास्व सुवीर्यम् 8,23,12. एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया 9,29,6. रयिभिः समोकसः 1,64,10. Khând. Up. 5,16,1. *Stoff* Praçnop. 1,4. 9. Als fem. RV. 1,66,1. 68,7. 4,34,2. एनी 5,33,6. 10,19,3. 167,1. AV. 1,15,2. 6,33,3. 7,80,2. VS. 27,6. Çat. Br. 9,2,2,32. 10,6,1,5. Çânkh. Çr. 18,15,4. — Personificirt: अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति RV. 9,101,7. एतु पूषा रयिर्भगः स्वस्ति सर्वधातमः 8,31,11; vgl. 10,66,10. रयेराङ्गिरसस्य प्रस्तोभः N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*a*. — Vgl. बृहद्रयि.

रयिक्क m. N. pr. = रैक्क Ind. St. 1,261. fg.

रयिद adj. *Besitz gebend:* युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणाम् RV. 3,54,16.

रयिंतम (superl. zu einem nicht vorhandenen रयिन् von रयि) adj. *überaus viel besitzend:* यो रयिवो रयिंतमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः RV. 6, 44,1. Zur Form des Wortes vgl. P. 8,2,17.

रयिपति m. *Herr des Besitzes:* अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् RV. 1,60,4. 72,1. 2,9,4. रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु 40,6. 6,31,1. 9,97,24.

रयिमन्त् (von रयि) adj. P. 6,1,37, Vârtt. 2. 1) *mit Besitz verbunden; wohlhabend, reich:* यशस् RV. 10,36,10. अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ 74,1. Agni VS. 12,59. Kâtj. Çr. 4,14,23. Çat. Br. 7,2,2,11. 10,6,1,5. 14,1,3,22. Khând. Up. 5,16,1. — 2) *das Wort* रयि *enthaltend* Çat. Br. 13,4,2,13.

रयिवन्त् (wie eben) adj. *reich* RV. 6,5,7. 44,1. 68,5. — Vgl. रेवन्त्.

रयिविद् adj. *Habe findend, — besitzend* RV. 2,1,3. पतिंश्चिकित्वांत्रयिविद्रयीणाम् 3,7,3.

रयिवृध् adj. *am Besitz sich erfreuend* RV. 7,91,3. VS. Prât. 3,136.

रयिषाच् (रयि + साच्) adj. *Besitzes theilhaft:* नासत्या रयिषाचः स्याम RV. 1,180,9.

रयिषाह् (रयि + साह्) adj. *über Besitz gebietend* RV. 1,58,3. 9,68,8.

रयिष्ठ n. N. verschiedener Sâman Pankav. Br. 14,11,30. fg. Lâtj. 7,5,13. Ind. St. 3,231,*a*. इन्द्रस्य रयिष्ठम् 208,*a*. गोतमस्य रयिष्ठम् 215,*b*.

रयिष्ठा (रयि + स्था) adj. (*im Besitz befindlich*) *begütert, ein reicher Besitzer:* आ नो गोष्ठे रयिष्ठां स्थापयाति AV. 7,39,1. सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् 40,2. तत्र रयिष्ठामनु सं भरैतम् TBr. 1,4,4,10. TS. 3,4,2,2. Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,99,1.

रयिस्थान adj. dass.: रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि RV. 6,47,6.

रयीयन्त् (partic. eines denom. von रयि) adj. *Besitz wünschend* RV. 3,62,2.

रयीषिन् adj. scheint eine falsche Form zu sein SV. I,5,2,1,5. *Schätze begehrend* Benfey.

रय्यावट् m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,325. Wohl identisch mit रयावट्.

रराट 1) n. parox. = ललाट *Vorderkopf, Stirn* VS. 5,21. 24,1. स रराटादुदमृष्ट *er wischte sich* (den Schweiss) *von der Stirne* TBr. 2,1,2,1. Kâth. 14,6. Pâr. Grhj. 3,6. f. रराटी dass. Bhâg. P. 2,1,28. — 2) f. रराटी *Gewinde von Gras, welches am östlichen Eingange des Schuppens für die sogenannten* Havirdhâna *angebracht wird,* Ait. Br. 1,29. Çat. Br. 3,5,3,9. 24. Kâtj. Çr. 9,3,19. Âçv. Çr. 4,9,4. 13,4.

रराट्य 1) adj. *zur Stirn in Beziehung stehend:* तनू Pâr. Grhj. 3,13. — 2) f. रराट्या *a*) = रराटी 2) Kâtj. Çr. 8,3,26. 4,18. Lâtj. 1,9,9. Çânkh. Br. 9,3. — *b*) *Horizont* Çânkh. Br. 18,4.

रराव्न् (von रा) adj. *spendend, freigebig:* युवो रराव्ना परि सख्यमासते RV. 10,40,7. न्यरातीं रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीरितो युच्छन्त्वामुरः 8,39,2.

रर्फ्, रर्फति (गतौ) Dhâtup. 11,18, v. l.

रलमानाथ m. N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 536.

रला f. *ein best. Vogel* Varâh. Brh. S. 86,37. = कलहकारिका 88,6.

रल्लक m. AK. 3,6,2,17. 1) *ein wollenes Tuch, eine wollene Decke* AK. 2,6,3,18. H. 670. an. 3,87. Halâj. 2,396. Vaig. bei Mallin. zu Çiç. 4, 61. Çârng. Sanh. 3,2,15. — 2) *eine Hirschart* H. an. Vaig. a. a. O. Mukuta zu AK. nach ÇKDr. पद्मल° Çiç. 4,61. — 3) *die Augenwimpern* Subhûti zu AK. ÇKDr.

रव (von रु) m. P. 3,3,22. *Gebrüll, Gedröhne, Geschrei, Gesumme, Gesang; Laut, Ton* überh. AK. 1,1,6,1. 3,4,13,51. H. 1400. Halâj. 1, 138. fg. वृषभस्येव ते रवः RV. 1,94,10. 3,31,6. 7,79,4. AV. 5,13,3. वलं रवेण दरयः RV. 1,62,4. 71,2. 4,50,1. 10,67,6. यद्दक्रन्दीरेषु बह्वता रवेणेन्द्रे शुष्मं दधात 7,33,4. 9,72,3. 10,94,12. *Donner:* चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवम् 5,63,3. — शान्तरवाः पत्तिमृगसंघाः Varâh. Brh. S. 21,16. परुष° adj. 53,106. कृशतनु° adj. 63,2. सिंह° Spr. 1672. MBh. 3,11333. सिंहनाद° 7,466. राक्षसः — व्यनदद्भैरवं रवम् 1,6002. 3,11334. R. 7,7,16. Râga-Tar. 5,408. रवाः । आर्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः Spr. 4007. हाहा° Kathâs. 56,127. कोकरवैः रवैरन्यैश्च पक्षिणाम् MBh. 13,1816. चारुरवं क्रौञ्चम् R. 1,2,32. कोकिल° Çâk. 52,11. केकिक्रीडाकलकल° Spr. 421. 2640. मधुलिहाम् Ragh. 9,32. Kathâs. 69,95. गीत° Varâh. Brh. S. 44, 7. 46,62. वैतालिक° Kathâs. 44,185. पाणिपाद° Hariv. 13240. महामेघ° MBh. 1,1130. 7934. 3,1716. Mrkkh. 83,2. शरव्याः R. 4,27,12. Bhâg. P. 6,9,23. बाणशङ्ख° MBh. 7,466. R. 7,7,16. शङ्खतूर्य° Hariv. 9024. Va-

râh. Brh. S. 43,24. 97,9. पटह° Halâj. 5,55. भेरी° Râǵa-Tar. 1,368. 4,537. 5,346. 3,400. AK. 3,4,25,170. घण्टा° Pańkat. 229,15. कलवीणा° Kathâs. 14,90. 17,107. Pańkat. 81,20. विभूषणा° R. 4,13,21. 1,9, 17. नूपुर° Spr. 573, v. l. शार्ङ्गचाप° R. 7,7,16. Ragh. 9,54. भिद्यमानात्पराद्बिन्दोरव्यक्तात्मा रवो ऽभवत् Verz. d. Oxf. H. 104,b,14. Am Ende eines adj. comp. f. श्रा MBh. 9,581. Mâlat. 79,19. Kathâs. 90,42. Bhâg. P. 10,77,12. — Vgl. कटु°, कण्ठी°, कल°, घण्टा°, चण्ड°, जन°, तुवी°, नी°, भीमवेग°, मघ°, मदनकाकु°, मह्वा° (adj. auch MBh. 3,12278. Bhâg. P. 8,10,23), मेघ°, लोक°, वीणा°, शार्ङ्ग°.

रवक m. Bez. *eines* Dharana-*Gewichts von Perlen, wenn deren 30 auf ein* Dharana *gehen*, Varâh. Brh. S. 81,17. रयक, रविक v. l.

रवणाँ (von रु) Uṇâdis. 2,74. 1) adj. nom. ag. P. 3,2,148, Sch. *brüllend, schreiend, singend* u. s. w.; = शब्दन AK. 3,1,38. H. 348. Çabdar. im ÇKDr. क्रोशनानां कुलानि Bhatt. 7,14. = तीक्ष्ण, भण्डक (*jesting, a jester* Wilson), चञ्चल Çabdar. a. a. O. — 2) m. a) *Kameel* H. 1254. Halâj. 2, 125. Çiç. 12,9. — b) *der indische Kuckuck* Uǵǵval. zu Uṇâdis.; hier könnte रवण aber auch als adj. zu कोकिल gefasst werden. — c) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. eines Nâgarâǵa Vjutp. 85; vgl. रावण. — 3) n. *Messing* H. 1049.

रवणाक *ein Seihgefäss mit einer Röhre* Vjutp. 209.

रवथँ (von रु) Uṇâdis. 3,113. m. 1) = रव Ṛv. 1,100,13. बृहस्पतेः 9,80,1. Çat. Br. 1,1,4,14. ऋषभस्य Lâtj. 5,1,13. — 2) *der indische Kuckuck* Uǵǵval.

रवस् s. पुरू°, बृहद्रवस्.

रविँ m. 1) *eine best. Form der Sonne* (vgl. Ind. St. 10,164. 192. fgg.); *Sonne* überh.; *der Sonnengott* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,138. AK. 1,1,2,32. 3,4,14,73. 25,169. Trik. 1,1,98. H. 95. Halâj. 1,38. 5,34. 53. Weber, Ǵjot. 34. fg. 76. 91. 101. Nax. 2,287. M. 1,23. 4,75. MBh. 3,2132. 12184. R. 1,55,2. 2,63,14. 6,4,36. 38. Ṛt. 1,13. 17. Ragh. 1,18. 9,25. Çâk. 37. 102. Spr. 2591. Varâh. Brh. S. 58,46. VP. bei Muir, ST. 1,61. Bhâg. P. 9,24,31. Mârk. P. 77,1. LA. (III) 92,16. Verz. d. Oxf. H. 46, a,46. Pańkat. 189,23. °चार Verz. d. B. H. No. 878. °ग्रह Verz. d. Oxf. H. 86,a,46. °ग्रहण 327,a, No. 773. unter den 12 Âditja Hariv. 11549. Weber, Râmat. Up. 304. 313. रवौ so v. a. रविदिने *an einem Sonntage* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,508, ult. — 2) *Berg* Halâj. 5,53. — 3) N. pr. eines Sauvîraka MBh. 3,15598. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra 9,1404.

रविकर m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 197, a, No. 457.

रविकान्त m. *eine Art Krystall*, = सूर्यकान्त Râǵan. im ÇKDr.

रविगुप्त m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124, b, 14. Vjutp. 91. Spr. I, ix.

रविचक्र n. *eine best. astrol. Figur: die Sonne als Mann, auf dessen Glieder Sterne aufgetragen werden*, Gâruḍa-P. 60 im ÇKDr.

रविज m. *Kind der Sonne:* 1) Bez. bestimmter Ketu Varâh. Brh. S. 11,10. — 2) *der Planet Saturn* Varâh. Brh. S. 5,61. 10,20. 17,6. 103, 1. 39. Brh. 4,8. 9,1. — °गर्वपरिहार Verz. d. Oxf. H. 79,a,4.

रवितनय m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varâh. Brh. S. 34,12. Brh. 13,8. 23,17.

रवितर् (von रु) nom. ag. *Schreier* Ait. Br. 2,7.

रवितीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,32. 67,a,8.

रविदत्त m. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 154,a,27. eines Dichters 124,b,14.

रविदिन n. *Sonntag* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,542.

रविदीप्त adj. als Auguralausdruck *von der Sonne beschienen, der Sonne zugekehrt* Varâh. Brh. S. 53,106.

रविदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. B. H. No. 580.

रविनन्दन m. *Sohn der Sonne:* 1) Manu Vaivasvata Bhâg. P. 9,1, 19. — 2) der Affe Sugrîva Trik. 2,8,7.

रविन्द n. = अरविन्द *Lotusblüthe* Dhar. im ÇKDr.

रविपत्त्र m. *ein best. Strauch*, = आदित्यपत्त्र Râǵan. im ÇKDr.

रविपुत्र m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Varâh. Brh. S. 47,13.

रविपुला (र *Creticus* + वि°) f. *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 158.

रविप्रिय 1) m. N. verschiedener Pflanzen: = लकुच Çabdam. im ÇKDr. = आदित्यपत्त्र und रक्तकरवीर Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. आ N. der Dâkshâjaṇî in Gañgâdvâra Verz. d. Oxf. H. 39,b,13. रतिप्रिया v. l. — 3) n. a) *eine rothe Lotusblüthe.* — b) *Kupfer* Râǵan. im ÇKDr.

रविबिम्ब n. *Sonnenscheibe* Varâh. Brh. S. 3,20.

रविमण्डल n. dass. Bhâg. P. 1,4,15.

रविरत्न n. = रविकान्त Râǵa-Tar. 6,294.

रविरत्नक n. *Rubin* Râǵan. im ÇKDr.

रविलोचन adj. *sonnenäugig*, Beiw. Vishṇu's und Çiva's ÇKDr. u. Çiv.

रविलोह n. *Kupfer* Râǵan. im ÇKDr.

रविवार m. *Sonntag* Wilson, Sel. Works 2,199.

रविवासर m. n. dass. Verz. d. Oxf. H. 70,b,13.

रविसंक्रान्ति f. *der Eintritt der Sonne in ein Zeichen des Thierkreises* Mârk. P. 31,21.

रविसंज्ञक (von रवि + संज्ञा) n. *Kupfer* Çabdak. im ÇKDr.

रविसारथि m. *der Wagenlenker der Sonne*, Aruṇa H. 102, Sch.

रविसुत m. *Sohn der Sonne:* 1) *der Planet Saturn* Varâh. Brh. S. 13, 31. 23,10. Brh. 22,6. — 2) der Affe Sugrîva Ragh. 12,104.

रविसुन्दररस m. Bez. *eines best. Elixirs* Verz. d. B. H. No. 993.

रविसूनु m. *der Sohn der Sonne, der Planet Saturn* Navagrahastotra im ÇKDr.

रवीन्द्र, रवीन्द्रौ Hariv. 4946 schlechte Lesart für सुरेन्द्रौ, wie die neuere Ausg. liest.

रवीषु m. *der Liebesgott* Trik. 1,1,38. वरीषु ÇKDr. und Wilson wie der gedr. Text, vgl. jedoch die Corr.

रशनँसंमित (रशन = रशना + सं°) adj. *so lang wie das Seil* (am Jûpa) TS. 6,6,4,1.

1. रशनाँ (wohl desselben Ursprungs wie रश्मि) f. Uṇâdis. 2,75. *Strick, Riemen; Zügel, Gurt; Gürtel;* insbes. *Frauengürtel* (AK. 2,6,3,10. H. 664. Halâj. 2,405). वि मच्छ्रथाय रशनामिवागः Ṛv. 2,28,5. 10,53,7. VS. 21,46. 22,2. 28,33. TS. 1,6,4,3 (*Bauchgurt des Rosses* nach dem Comm.). या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य Ṛv. 1,162,8. 163,2. 5. 4,1,9. 10, 18,14. विषूचो अश्वान्युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् 79,7. 9, 87,1. AV. 7,78,1. 10,9,2. Beim Thieropfer werden zwei *Seile* ge-

braucht, das eine als *Gurt* um den Pfeiler gelegt, am andern das Thier gebunden. TS. 6,6,4,3. ÇAT. BR. 3,6,2,10. 7,1,25. ÂÇV. GṚHJ. 4,8,15. KÂTJ. ÇR. 6,3,15. 27. मुञ्जकाशताम्बल्यो रशनाः GOBH. 2,10,7. LÂTJ. 8, 11,23. (तम्) योक्त्रयामास बाहुभ्यां पशुं रशनया यथा MBH. 3,446. 4,771. R. 7,23,1,40. BHÂG. P. 1,7,33. 56. 5,9,15. हिरण्यरशन (अश्व) 4,19,19. तदिदं कालरशनं जनाः पश्यन्ति सूरयः *an die Zeit gebunden* 8,11,8. सुतकलत्रधनाप्तगेहदेहादिमोहरशना 10,48,27. — विप्रस्य रशना मौञ्जी MBH. 13,1611. VARÂH. BṚH. S. 43,42. PAÑKAR. 3,11,20. MÂRK. P. 68,18. °दामभूषित (जघन) MBH. 3,1826. R. GORR. 2,8,42. MBH. 11,693. R. 2,32,7. 5, 13,35. RAGH. 7,10. 8,57. 19,27. MEGH. 36. MÂLAV. 41,13. GÎT. 10,6. BHÂG. P. 5,2,6. Bildlich von den *Fingern* NAIGH. 2,5. NIR. 3,14. 8,19. 20. तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् ṚV. 10,4,6. das Meer als *Gürtel* der Erde gedacht: समुद्ररशना चोर्वी HARIV. 12902. ÇÂK. 68, v. l. Spr. 4666. VARÂH. BṚH. S. 12,17. 43,32. क्षुभितविहगश्रेणिरशना (नदी) VIKR. 115. स्फुरिततडिद्रशनैरम्बुवाहैः VARÂH. BṚH. S. 24,13. — हिरण्यरशन (°रसन ed. BURN.) BHÂG. P. 4,7,20 wohl fehlerhaft für °वसन. Das Wort wird häufig fälschlich रसना geschrieben; die Bomb. Ausgg. des MBH. (mit Ausnahme von 11,693), R. und BHÂG. P. aber haben regelmässig श. — Vgl. नीरसन (lies नीरशन) und वात°.

2. रशना f. *Zunge* ÇABDAR. im ÇKDR. falsche Schreibart für रसना.

रशनाकलाप m. *ein aus mehreren Schnüren gedrehter Frauengürtel* MṚKKH. 11,16. RAGH. 16,65. VARAH. BṚH. S. 70,4. ṚT. 3,20. am Ende eines adj. comp. f. आ 3.

रशनाकृत (1. रशना + आ°) adj. *mit dem Zügel hergelenkt* KAUÇ. 127. WEBER, Omina 397.

रशनागुण m. *Gürtelschnur:* रशनागुणास्पद *der Sitz der Gürtelschnur, Taille* KUMÂRAS. 5,10.

रशनाय् (von 1. रशना), partic. med. *dem Zügel folgend* (?): येदं पूर्वागत्ररशनायमाना AV. 14,2,74.

रशनोपमा (1. रशना + उ°) f. *Gürtelgleichniss: ein Gleichniss, in welchem mit dem, was zuerst verglichen wurde, ein Anderes verglichen wird, mit diesem ein drittes und so fort,* SÂH. D. 664. Beispiel Spr. 899.

रश्मन् m. = रश्मि 1); nur instr. रश्मा in der Stelle: सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्ठा जनान् ṚV. 6,67,1.

रश्मि (wohl desselben Ursprungs wie 1. रशना) UṆÂDIS. 4,46. m. (f. KHÂND. UP. 8,6,2). 1) *Strang, Riemen; Leitseil, Zügel; Messschnur* AK. 3,4, 23,140. 31,239. TRIK. 2,8,46 (= प्रतोद *Stachelstock*). H. 1252. an. 2, 334. MED. m. 25. HALÂJ. 2,287. 420. UGGVAL. (= रज्जु). ṚV. 1,28,4. अस्मद्र्यक्पभ्युचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः 4,22,8. परि यो रश्मिना दिवो ऽन्तान्ममे पृथिव्याः 8,25,18. ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना 1, 123,13. 5,7,3. 1,141,11. 5,33,3. 6,29,2. मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः 75,6. सृजन्ति रश्मिमोजसा 8,7,8. 10,130,7. वि ते मुञ्चामि रशनां वि रश्मीन् TS. 1,6,4,3. TBR. 1,2,4,2. अन्तरो रश्मी रथस्य AIT. BR. 2,37. 4, 19. संशितो रश्मिना रथः संशितो रश्मिना हयः VS. 23,14. ÇAT. BR. 2,3, 2,7. 13,3,2,5. ÂÇV. GṚHJ. 2,6,4. पञ्च° *fünfsträngig*, vom Wagen des Soma-Pûshan ṚV. 2,40,3. अरश्मिक adj. *ohne Zügel* ÂÇV. GṚHJ. 2,6, 4. — मुक्तरश्मिरिव धनः *Strick* R. 4,16,2. प्रतोदं रश्मींश्चा *Zügel* M. 5, 99. योक्त्ररश्म्योः 8,292. MBH. 6,3968. हयान्येमे च रश्मिभिः 3,1732. (अश्वान्) रश्मिभिश्च समुद्यम्य 2793. स यन्तेत्युच्यते सद्भिर्न यो रश्मिषु लम्बते Spr. 2453. संयच्छ वाजिनां रश्मीन् R. 2,40,22. रश्मिविवादाय RAGH. 2, 28. अश्वं रथरश्मिसंयुतम् 3,42. मुक्तेषु रश्मिषु ÇÂK. 8. °संयमन 5,12. चलद्रश्मि (कुमारथि) BRAHMA-P. in LA. (III) 52,13. एक° (रथ) BHÂG. P. 4, 26,2. नेत्राभ्यां नेत्रयोरस्या रश्मिं संयोज्य रश्मिभिः MBH. 13,2302. आत्मनो रश्मीन् AMṚTAN. UP. in Ind. St. 9,25. Bez. der *Finger* (wie रशना): प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूम ṚV. 9,97,23. — 2) *Strahl* AK. 3,4,16, 92. 23,140. H. 99. H. an. MED. HALÂJ. 1,38. 65. कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ṚV. 1,35,7. 4,52,7. सूर्यस्य 1,135,9. 4,14,2. वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः 7,36,1. उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता 77,3. सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः 8,43,32. AV. 2,32,1. 12,1,15. रश्मिभिर्मण्डलं पश्चि ÇAT. BR. 9,2,3,14. 10,5,4,1. TBR. 3,1,1,1. KHÂND. UP. 8,6,2. 5. AV. PARIÇ. in Ind. St. 10, 318. सूर्यरश्मयः M. 5,133. अष्टौ मासान्यथादित्यस्तोयं हरति रश्मिभिः Spr. 3640. R. 2,34,8. मन्दरश्मिरभूत्सूर्यः 62,19. SUÇR. 1,20,14. चन्द्रस्य R. 2,44,10. LA. (III) 88,4. PAÑKAT. 162,11. दीपस्य R. 2,64,68. ज्योतिषाम् ÇÂK. 165. VARÂH. BṚH. S. 12,15. 13,9. 47,20. 56,4. NAISH. 22,56. sieben ṚV. 1,105,9. 2,5,2. AV. 7,107,1. Agni wird angeredet: क्रीळन्नो रश्म आ भुवः ṚV. 5,19,5. die Sonne: स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिः VS. 2,26 (nach MAHÎDH. wäre derjenige der sieben *Strahlen* gemeint, der die Sonnenscheibe selbst ist; vgl. zur Stelle TS. 3,2,10,2). नृपः प्रदीप्तरश्मिः *Glanz* KÂM. NÎTIS. 5,92. — 3) angeblich so v. a. अन्न VS. 15,6; vgl. ÇAT. BR. 8,5,3,3. — 4) = पक्ष्म MED., = पक्ष्मन् WILSON und ÇKDR. nach derselben Aut. — Vgl. इष्ट°, उष्ण°, ऋजु°, तिग्म°, तुहिन°, पृथु°, प्राचीन°, वि°, वृष°, शीत°, सप्त°, सु°, स्यूम°.

रश्मिकलाप m. *ein aus 54* (nach Andern *56* H. 661, Sch.) *Schnüren bestehender Perlenschmuck* H. 659. VARÂH. BṚH. S. 81,32.

1. रश्मिकेतु m. Bez. *eines best. Kometen* VARÂH. BṚH. S. 11,40.

2. रश्मिकेतु adj. *Strahlen im Banner führend;* m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,80,2. 6,18,13. 69,13.

रश्मिक्रीड m. N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,11.

रश्मिन् am Ende eines adj. comp. st. des einfachen रश्मि *Zügel:* धृतहयरश्मिनि BHÂG. P. 1,9,39.

रश्मिपति m. *eine best. Pflanze,* = रविपत्त्र RÂGAN. im ÇKDR.

रश्मिपवित्र adj. *durch Strahlen gereinigt* TBR. 3,7,4,1.

रश्मिप्रभास m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 89. fg.

रश्मिमण्डल n. *Strahlenkranz* AV. PARIÇ. in Ind. St. 10,318.

रश्मिमन्त् (von रश्मि) 1) adj. *strahlig,* Beiw. der Sonne R. 5,41,20. R. ed. Bomb. 6,106,6. — 2) m. *a) die Sonne* MBH. 3,14326. R. 5,12,42. — *b)* N. pr. eines Mannes KATHÂS. 59,98. fgg. — Vgl. रश्मिवन्त्.

रश्मिमय (wie eben) adj. *aus Strahlen gebildet, — bestehend:* इषून् BHÂG. P. 4,15,18. बुद्धि° *durch die Strahlen des Verstandes leuchtend* R. 5,82,2.

रश्मिमालिन् adj. *strahlenbekränzt* R. 4,58,5. स्वतेजो° 5,41,20.

रश्मिमुच् m. *der Strahlenentsender, die Sonne* MBH. 7,6639.

रश्मिराज m. N. pr. eines Mannes LALIT. ed. Calc. 202,3.

रश्मिवन्त् (von रश्मि) 1) adj. *strahlig* TBR. 2,8,2,1. NIR. 12,32. रश्मिवतामिवादित्यः MBH. 5,5289. अरश्मिवन्तमादित्यं रश्मिवन्तं च पावकम्। यः पश्येत् Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,29. AV. PARIÇ. in Ind. St. 10,318. अव-

गत° so v. a. अवगतरश्मि adj. ebend. रश्मीवती (VS. Prât. 3, 96) VS. 15,63. — 2) m. *die Sonne* MBh. 3, 8270. 4, 550. 6,792 (an den beiden letzten Stellen रश्मिमत् ed. Bomb.). Hariv. 3579. R. 4,8, 2. — Vgl. रश्मिमत्.

रश्मिशतसहस्रपरिपूर्णध्वज m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 164.

रश्मिस m. N. pr. eines Dânava Hariv. 12937 nach der Lesart der neueren Ausg., रभस die ältere Ausg., नभस Langl.

रश्मीवत् s. u. रश्मिवत् 1).

1. रस्, रसति (शब्दे) Dhâtup. 17,63. Nir. 9,11. 11,25. Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्); ररास, अरासीत्; hier und da auch med. *brüllen, wiehern, heulen, schreien, dröhnen, ertönen:* अथ यद्रसदिव च रासभो ऽभवत् Çat. Br. 6,1,1,11. 3,1,28. रासभारावसदृशं ररास च ननाद च MBh. 2,1494. रेसुश्चारोषिताः सिंहा सजला इव तोयदाः Hariv. 3936. 5332. महागजा रेसुः MBh. 7,9419. Hariv. 4671. गोमायुसारङ्गगणाः — भीममरासिषुः Bhatt. 3,26. क्रोष्टुवत्सतः 6,5. ररास राक्षसो हर्षात्सतडित्तोयदो यथा R. 7, 7,28. 32,43. Bhatt. 14,9. क्रोडदासी ररास च 55. हनूमानरासीच्च भयंकरम् 15,122. रसमानमारस Çiç. 6,75. Nalod. 1,22. ताररवे कोकिले रसति Çiç. 6,70. (पर्वतोत्तमः) ररास सिंहाभिहतो महामत्त इव द्विपः R. 5,4, 8. 54,11. रुद्रः — करीव वन्यः परुषं ररास Ragh. 16,78. (तेन नादेन) ररास गगनं कृत्स्नमुत्पातजलदैरिव MBh. 1, 8289. रेसतू रोदसी गाढम् 3, 14602. Hariv. 2393. 9020. Mṛkkh. 85,16. उच्चै रसतां पयोमुचाम् Ṛt. 2, 10. रसदब्द AK. 3,4,24,148. ररास च मही भृशम् MBh. 3,14340. 6,5701. 8,1707. रसते व्यथते भूमिः कम्पतीव च सर्वशः 6, 5204. भूसमं रसते यदाम्बुदः Varâh. Bṛh. S. 28,18. शङ्खराट् — ररास R. 7,7,10. रसत्तूर्य Kathâs. 88,26. रसतु रशना Gît. 10,6. रसतो गाण्डिवस्य MBh. 7,108. हक्कलितरसत्खड्गलता Kathâs. 108,106. रसित adj. *unarticulirte Laute von sich gebend* Gît. 7,17. n. *Gebrüll, Geschrei, Getön* H. an. 3,288. Med. t. 144. वनहरिरसितैः Râga-Tar. 2,168. रणाडुन्दुभेः Spr. 1130. *Donner* AK. 1, 1,2,10. H. 1406. H. an. Med. Kâvjâd. 3,35. नवघन° Spr. 3042. Râga-Tar. 4,300. Ghaṭ. 14. — Vgl. रास्.

— intens. *laut schreien:* उच्चै रारस्यमानां ताम् (सीताम्) Bhatt. 5,96.

— अनु *mit Geschrei u. s. w. begleiten, einen Laut erwiedern;* mit acc.: मयूरै रुद्धोवैरनुरसितस्य पुष्करस्य Mâlav. 20, v. l. अनुरसित n. *Wiederhall* Uttarar. 33,20 (45,2) = Mâlatîm. 145,15.

— अभि *zuwiehern,* mit acc. Kâtj. Çr. 20,3,4.

— आ *brüllen, schreien:* मृगकुलमारसत् Nalod. 3,14. द्विषतां च पङ्क्तिमारसमानाम् 1,11. आरसित adj. *schreiend:* सारस Mâlav. 41. n. *Gebrüll, Geheul:* सिंहारसितनिर्घोष Hariv. 5550. शृगालारसितशब्द 5663.

— वि *schreien* Hariv. 5540. Bhatt. 15,42.

2. रस्, रसति, रस्यति und रसयति (आस्वादनस्नेहनयोः Dhâtup. 35,77) *schmecken:* रसतो रसना रसान् MBh. 12,10504. न रस्यति 11383. रसयति Çat. Br. 14,7,1,25 (रसयते Bṛh. Âr. Up. 4,3,25). 2,18. Maitrjup. 6,7. कथामृतम् Kathâs. 9, Einl. रसितवती मद्यम् Çiç. 10,27. *schmecken* so v. a. *empfinden:* रस्यत इति रसः Sâh. D. 6,22. रस्यमानता 24,2. — रसति MBh. 14,571 fehlerhaft für रसवे, wie die ed. Bomb. liest. रसयति ist wohl als denom. von रस, रसति und रस्यति aber als spätere Bildungen aufzufassen.

— desid. *zu schmecken verlangen:* रिरसयिषति भूयः शष्पम् Çiç. 11,11.

रस (vgl. 2. रस्) 1) m. parox. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *Saft, aus Pflanzen* und insbes. *Früchten gewonnener wohlschmeckender Saft;* bildlich *das Beste, Feinste, Kräftigste, flos; Flüssigkeit* überh., Naigh. 1,12. 2,7. Nir. 2,20. 12,1. AK. 3,4,30,229. H. 404 (= यूष *Brühe;* vgl. मांस°). H. an. 2,587. Med. s. 8. Halâj. 5,75. Vaig. bei Mallin. zu Çiç. 13,48. वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वादू रसो मधुपेयो वराय Ṛv. 6,44, 21. मधो रसः 5,43,4. 1,187,4. 5. सोमं इन्द्रियो रसः 8,3,20. 9,23,5. 47, 3. तं सोमे रसमा दधुः 113, 3. 5. मद्य 65,15. 74,9. गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि Vâlakh. 1,2. 5,3. यो अन्तरिक्षमापृणाद्रसेन AV. 4,35, 3. यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस्तनूनाम् Ṛv. 7, 104,10. 1,23,23. 37,5. 71,5. (आपः) यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः 10,9,2. यो रसस्य हरणाय जातमारेभे AV. 1,28,3. अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः 2,4,5. 26,4. 5. 3,13,5. ओषधीनाम् 31,10. 4,4,5. 5, 13,2. 3. Ait. Br. 3,27. 7,31. 8,7. 20. TS. 2,1,3,1. TBr. 1,3,10,8. यज्ञस्य Çat. Br. 1,6,2,1. 2,4,3,1. आपो वा ओषधीनां रसः 3,6,1,7. रसो वृत्राद्विवाहृतात् 14,6,9,21. पयसः Kâtj. Çr. 25,11,21. Nir. 3,16. 7,10. 11. Suçr. 1,210,10. 212,20. 213,15. इक्षुकाण्ड° R. 2,91,15. वनस्पतेरपक्वानि फलानि प्रचिनोति यः। स नाप्नोति रसं तेभ्यः Spr. 2714. fg. चूतस्यापि प्रसन्नरसं फलम् 3562. 3453. अरविन्दमकरन्द° Bhâg. P. 5,1,5. 6,3,28. नारिकेल° Râga-Tar. 4,155. कुसुमस्य, अधरस्य Çâk. 72. Varâh. Bṛh. S. 48,7. हरिद्रा° Spr. 5036. चन्दन° R. 5,5,12. अलक्त°, अलक्तक°, लाक्षा° 2,60,18 (16 Gorr.). Çiç. 9,46. Ṛt. 1,5. Çâk. 80. Varâh. Bṛh. S. 43, 48. Kathâs. 9,47. H. 686. मधु नवमनास्वादितरसम् Spr. 94. धातु° Kumâras. 1,7. ताम्रधातु° Râga-Tar. 4,614. ताम्बूलनिष्ठीवन° Kathâs. 70, 5. शृङ्गमांस° 39,20. गवां रसः (vgl. गोरस) *Milch* MBh. 13,3535. गोशकृद्रस M. 11,91. विषस्येव रसं हि पीत्वा *Gifttrank* MBh. 3,1371. विष° Spr. 518. रसान्भौमान् R. 2,63,14. रसं भौमम् R. Gorr. 2,65,13. आदत्ते हि रसं (रसान् ed. Calc.) रविः Ragh. 1,18. 4,66. वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः *Fruchtsäfte* u. s. w. M. 2,177. 7,131. 9,329. 10,86. 94. 12,62. Jâgn. 3,36. 215. MBh. 13,353. 2772. 14,2683. Varâh. Bṛh. S. 41,4. 48,41. Bhâg. P. 5,16,18. 20. 21. Mârk. P. 120,17. °धेनु Verz. d. Oxf. H. 35,b,41. 59,a,22. Blut रसमिश्र genossen Kauç. 11. 22. fg. विस्मृतभोजनरस so v. a. *Essen und Trinken* Z. d. d. m. G. 14,569,19. रसेनान्नेन पेयेन लेह्यचोष्येण R. 1,52,24. रसैरन्नेन पानेन चोष्यलेह्येन R. Gorr. 1,53,23. आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः। क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्॥ Spr. 337. एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसः। अपामोषधयो रस ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसो वाच ऋग्रस ऋचः साम रसः साम्न उद्गीथो रसः Khând. Up. 1,1,2. अवबोध° Bhâg. P. 3,9,2. 4,13,8. — α) poetische Bez. des *Wassers* Trik. 3,3,448. H. an. Med. रसं सर्वसमुद्राणाम् R. 4,27,3. अन्यसरितामपि रसं समुद्रगाः प्रापयन्त्युदधिम् Spr. 4581. 5028. Megh. 29. उपायरससंसिक्ता नीतिमहावल्ली Kathâs. 33,85. घन° Spr. 4064. — β) *Saft des Zuckerrohrs* Suçr. 2,149, 5. 224,20. 241,9. — γ) *Myrrhe* AK. 2,9,105. H. 1063, Sch. H. an. Med. Ratnam. 42; vgl. गन्धरस. — δ) *Samenfeuchtigkeit* AK. 3,4,30,229. H. an. Med. Halâj. 5,75. Vaig. a. a. O. Ṛv. 1,105,2. — ε) *Chylus* (aus Speise entstehend und durch die Galle in Blut umgewandelt) AK. 3, 4,11,67. Trik. H. 619. fg. H. an. Med. Halâj. 5,71. 75. Vaig. a. a. O. (wo धातो st. धाये zu lesen ist). Wise 49. Çârṅg. Saṁh. 1,6,4. 6. Suçr. 1,96,

13. Nir. 14, 6. — ζ) *Milch* H. ç. 98 (wohl fälschlich neutr.). — η) *geschmolzene Butter* Halâj. 5, 75. — ϑ) *Mixtur* Verz. d. B. H. No. 963. *Lebenselixir, Zaubertrank;* = अमृत Vaiç. a. a. O.: क्षीरोदमथनं कृत्वा रसं प्राप्स्याम तत्र वै R. 1,45,18. 33 (46,22. 26 Gorr.). कूप° Bhâg. P. 7, 10,58. रसकूपामृत 59. सिद्धामृत° 61. Râga-Tar. 1,110. — ι) *Gifttrank* AK. 3,4,30,229. H. 1195. H. an. Med. Halâj. 3,24. 5,75. Vaiç. Daçak. 185,3. रसार्पण Râga-Tar. 6,72. °दान 322. 8,448. — κ) *Quecksilber* AK. 2,9,100. Trik. H. 1050. H. an. Med. Halâj. 5,75. Vaiç. (wo, wie schon Stenzler gesehen, पारदे zu lesen ist). Sarvadarçanas. 97,13. fgg. mystisch als *Quintessenz* des menschlichen Körpers betrachtet 99,11. रसस्य परब्रह्मणा साम्यम् 103,9. als Çiva's *Same* gedacht 98,18. — λ) *Mineral* oder *ein metallisches Salz;* aufgezählt in Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761; vgl. उप°, महा°. = हेमन् *Gold* Vaiç. a. a. O.; vgl. 2. रसित. — *b*) *Geschmack* (als Haupteigenschaft des *Flüssigen*) AK. 1,1,4,16. 3,4,30,229 (गुण). Trik. H. 1389. H. an. Med. Halâj. 5,75. Vaiç. a. a. O. सर्वेषां रसानां जिह्वैकायनम् Çat. Br. 14,5,4,11. 6,2,3. 8,8. 7,1,25. रसनग्राह्यो गुणो रसः Tarkas. 13. Bhâg. P. 2,2,29. त्यजेच्च पृथिवी गन्धमापश्च रसमात्मनः MBh. 1,4161. आपो रसगुणाः M. 1,78. 5,128. 12,98. वेदये न शब्दस्पर्शरसान् R. 2,64,67. Ragh. 3,4. ख्यातः सर्वरसानां हि लवणो रस उत्तमः Spr. 804. नानास्वादु° adj. R. 1,53,4 (54,4 Gorr.). तद्रस adj. Spr. 3522. अभिमतरसा Megh. 50. निरुपम° adj. Spr. 728. अन्नं चोरुरसम् Bhâg. P. 3,3,28. Die Bedd. *Geschmack* und *schmeckender Stoff* oder *Saft* werden häufig nicht auseinandergehalten, Suçr. 1,147. fgg. 150,12. fgg. आहारः षड्रसेष्वायत्तो रसाः पुनर्द्रव्याश्रयाः 4,14. षड्रस 43, 3. MBh. 1,6658. 3,138. 9,2354. R. 1,52,23 (53,22 Gorr.). R. Gorr. 1, 54,4. Kathâs. 45,230. 82,19. Die sechs Hauptarten des *Geschmacks* sind: मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त und कषाय MBh. 12,6851. fg. Suçr. 1,153,17. fgg. 75,5. fgg. Davon giebt es 63 mögliche Verbindungen 2, 545,9. fgg. कषायो मधुरस्तिक्तः कट्वम्ल (also mit Weglassung von लवण) इति नैकधा। भौतिकानां विकारेण रस एको विभिद्यते॥ Bhâg. P. 3,26, 42. Pañkat. 61,11. रसतम् *dem Geschmacke nach* MBh. 13,5681. 5686. — α) Bez. *der Zahl sechs* Çrut. 29. 39. Varâh. Bṛh. S. 98,1. Ind. St. 8, 167. — β) *Geschmack* so v. a. *Geschmacksorgan, Zunge* Bhâg. P. 4,29, 11, 8,20,27. — γ) *Geschmack —, Genuss an, Neigung zu, Verlangen nach, Liebe zu* und *das, worauf der Geschmack, die Neigung, das Verlangen gerichtet sind, Alles was Genuss gewährt und reizt;* = राग AK. 3,4,30,229. H. an. (wo fälschlich रोग gedruckt ist). Med. Halâj. 5,75. हिरण्यं रसेन दृष्टम् Paramahaṁsopan. in Verz. d. Tüb. H. 7,29. fgg. अनेन नूनं वेदानां कृतमाहरणं रसात् MBh. 12,13516. Spr. 1836. 2921. Kathâs. 3,37. 94,12. रसादृते Vikr. 40. अतिरसतस् Kathâs. 47,120. नीरसायां रसं बालो बालिकायां विकल्पयेत् *vermuthet Liebe bei* Spr. 2635. °खण्डन Ragh. 9,35. Megh. 29. कारपुटीभितान्नशाके ऽपि वा। बालावक्त्रसरोजिनीमधुनि वा यस्याविशेषो रसः॥ Spr. 4265. इष्टे वस्तुन्युपचितरसाः Megh. 111. Uttarar. 19,5 (26,2). गन्धर्वदत्ताया यत्रोपरि महान्रसः Kathâs. 106,18. परानुग्रह° Spr. 2845. गीतरसादिव Kathâs. 12,19. 44, 185. मृगयारसात्, °रसेन 6,93. 21,16. 30. 32,106. 35,37. °रसमनुभूय Vet. in LA. (III) 5,2. हरार्चनरसात् Kathâs. 86,137. तत्सेवारससंप्राप्त 27, 136. 10,2. 22,151. स्त्रीमात्ररसात् 86,169. 67,11. Gît. 1,36. Râga-Tar. 3,118. Dhûrtas. in LA. 74,16. रसिकं रसेन कुर्याद्वशे *durch das, woran er hängt,* Spr. 2197. प्रणयस्य रसं दृष्ट्वा *Genuss* Hariv. 7111. परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः Spr. 4513. क्रीडारसं निर्विशतीव बाल्ये Kumâras. 1,29. विषयजरसाः *die aus der Sinnenwelt hervorgehenden Genüsse* Spr. 3035. दिवसाः संभृतरसाः 421. विविधविषयरसस्पर्श Prab. 2, 10. भवरसास्वादन Spr. 23. भवरसे वैराग्यमाधीयताम् 1412. गन्नबन्धरसासक्त Kathâs. 12,6. संगम° Çântiç. in Çatakâv. 39. साहसैकान्तरसानुवर्तिन् Spr. 1490. शृङ्गारैकरसः स्वयं नु मदनः *nur an — Geschmack findend* Vikr. 9. Kumâras. 5,82. Kathâs. 21,3. तदा चतुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः *gleichen Genuss gewährend* Ragh. 4,18. तत्किं शास्त्रकथारसेन Dhûrtas. in LA. 83,15. कथां रसस्फीताम् Spr. 730. In den folgenden Beispielen hat das Wort sowohl die Bed. *Genuss, Reiz* als auch *Saft:* लावण्यरसनिर्झरिणी (उर्वशी) Kathâs. 17,7. प्रेमरसासारवर्षिणा चतुषा 11,49. किं वा काव्यरसः स्वादुः किं वा स्वादीयसी सुधा Spr. 3868. सुभाषितरसास्वाद 3274. — δ) der *Geschmack* eines Kunstwerks ist sein *Charakter*, sein *Grundton*, seine *Grundstimmung;* es werden acht, neun und auch zehn Rasa angenommen: शृङ्गार, वीर, बीभत्स, रौद्र, हास्य, भयानक, करुण, अद्भुत, शान्त und वात्सल्य (bei neun fällt das letzte fort, bei acht die beiden letzten). AK. 1,1,7,17. 3,4,30,229. H. 295. 304. 327. Gauḍa beim Schol. zu H. 294. H. an. Med. Halâj. 1, 90. 92. 5,75. Daçar. 1,11. 3,27. 29. fg. 4,1. Sâh. D. 45. fg. 60. 209. fgg. 247. 577. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,50. fg. 87,*a*,14. 211,*b*, No. 499. 214,*a*, 21. fgg. 265,*b*,25. R. 1,4,7 (3,46 Gorr.). Pañkat. V,44. Vikr. 36. Bhâg. P. 10,70,19. यथारसम् Mâlav. 20,20. Auch vom *Grundton* im Charakter eines Menschen: शान्त Râga-Tar. 1,23. करुण° Uttarar. 37,7 (50 7). 107,17 (146,1). हास्यरसाधिदेवता: Mallin. zu Kumâras. 7,95. fünf Rasa (oder Rati) *Gemüthsstimmungen* (शान्ति, दास्य, साख्य, वात्सल्य und माधुर्य) bilden die fünf Stufen in der Bhakti der Vaishṇava Wilson, Sel. Works 1,163. — *c*) *ein Metrum von 4 Mal 70 Silben* Ind. St. 8,107. 111. — *d*) = शब्द (!) Vaiç. a. a. O. — 2) f. रसा *a*) *Feuchtigkeit:* सिन्धुर्न वा रसया सिञ्चदश्वान् ṚV. 4,43,6. रसा दधीत वृषभम् 8,61,13. — *b*) N. pr. eines Flusses: याभी रसां क्षोदसोद्नः पिपिन्वथुः ṚV. 1,112,12. मा वो रसानितभा कुभा नि रीरमत् 5,53,9. 10,75,6. — *c*) *ein mythischer Strom, der die Erde und Luft umfliesst,* Nir. 11,25. = अन्तरिक्षनदी Comm. परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ṚV. 9,41,6. कथं रसाया अतरः पयांसि 10,108,1. 2. यस्य समुद्रं रसया सहाहुः 121,4. सिषक्तु माता मही रसा नः 5,41,15. — *d*) *die Unterwelt* (vgl. रसातल): रसां विविशतुस्तूर्णमुदकपूर्वे (so die ed. Bomb.) महोदधौ MBh. 12,13479. 13503. fg. 13511 (रसानामालय). Bhâg. P. 3,13,17. 30. 42. 4, 7,46. 5,18,39. 25,13. 6,11,22. 8,16,27. 21,25. 9,20,31. 10,6,12 (pl.). 47,15. 70,44. — *e*) *die Erde, Land* AK. 2,1,2. Trik. 3,3,448. H. 937. H. an. Med. Halâj. 2,1. Spr. 2642. Nalod. 2,10. — *f*) *Zunge* Trik. H. ç. 122. H. an. Med. — *g*) N. verschiedener Pflanzen: *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2,4,3,3. H. an. Med. *Boswellia thurifera Roxb.* AK. 2,4,4,11. Trik. H. an. Med. *Panicum italicum Lin.* H. an. Med. *Weinstock* und = काकोली Çabdar. im ÇKDr. — 3) n. *a*) *Myrrhe* Râgan. im ÇKDr.; vgl. oben u. 1) *a*) γ). — *b*) *Milch;* s. oben u. 1) *a*) ζ). — *c*) *Geschmack* Varâh. Bṛh. S. 51,31. in diesem wahrscheinlich unächten Kapi-

tel sind Verstösse gegen das Genus nicht selten. — *d)* in der Stelle रसानि तान्युदकानीति Nir. 11,25 ist wohl रसानितभा कुभा नीति (Ṛv. 5,53, 9) zu lesen. — Vgl. अ°, अनु°, अन्न°, अमृत° (m. auch R. 2,30,15. R. Gorr. 1,15,11. Spr. 2840. Kathâs. 22,201. adj. *wie Nectar schmeckend* Pańkat. 248,12), अयो°, इनु° (in der 1sten Bed. auch Bhâg. P. 5,16,14), उप°, एक° (adj. *nur einen Geschmack habend* Ragh. 10,17. अनुकूलता *nur an Einem Geschmack findend, nur Einem geltend* Uttarar. 79,6 = 102,3 der neueren Ausg.; so v. a. स्थिर nach dem Comm.; vgl. auch oben 1) *b)* γ), कनक°, काम°, तुद्र°, गङ्गाधर° (lies *Mixtur* st. *Recept*), गर्भ°, गो°, ज्योती° (Comm. zu R. 2,94,6: ज्योतिर्नक्षत्रं रसः पादपरसः), तोय°, द्रवरसा, नीरस (könnte Pańkat. IV,62 auch *keine Zuneigung habend* bedeuten), पञ्चरसा, पिष्ट°, पुष्प°, प्रणिपात°, बक्क°, ब्रह्म° (ब्रह्मरसासव *der Nectar des* Brahman Bhâg. P. 4,4,15), भक्ति° (auch Kathâs. 25,230), भूरि°, मधु°, मक्हा° (auch *Wohlgeschmack* R. 3,62,37), मांस°, मूर्ध°, मृगरसा, मोचरस, यत्न°, रत्नो°, रति°, वि°, विष°, स°, सर्व°, सिद्ध°, सु°, सुधा°, स्व°.

रसक (von रस) m. *Brühe, Fleischbrühe* H. 413. तन्मांसैः साधयामास रसकोत्तमम् Kathâs. 39,9.12. neutr. 16. — Vgl. त्रि°.

रसकर्पूर n. *Quecksilbersublimat* Bhâvapr. im ÇKDr.

रसकर्मन् n. *Behandlung des Quecksilbers, ein mit dem Q. vorgenommener Process* Sarvadarçanas. 100,7. Verz. d. B. H. No. 906.

रसकल्पना f. dass. Verz. d. B. H. 284,4.

रसकल्याणिनीव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34, *a*,30. 41,*a*,3.

रसकुल्या f. N. pr. eines *Flusses* in Kuçadvîpa Bhâg. P. 5,20,16.

रसकेतु m. N. pr. eines Prinzen Çṛṅgabh. 4.

रसकेसर n. *Kampher* Hâr. 104.

रसकोमल n. *ein best. Mineral* (मक्हारस) Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

रसक्रिया f. *Anwendung von Bähmitteln* Suçr. 2,124,14.18. 241,20. 330,13. 331,6.7. 334,2.

रसगन्ध *Myrrhe*, m. Trik. 2,9,36. n. Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. गन्धरस.

रसगन्धक m. 1) dass. Çabdak. im ÇKDr. — 2) *Schwefel* Râǵan. im ÇKDr.

रसगर्भ n. 1) *ein Collyrium aus dem Safte der Curcuma xanthorrhiza* AK. 2,9,102. H. 1053. — 2) *Mennig* Râǵan. im ÇKDr.

रसग्रह adj. 1) *den Geschmack empfindend*; m. *das Organ des Geschmacks* Bhâg. P. 3,26,41. — 2) *Sinn habend für das, was wahren Genuss gewährt*, Bhâg. P. 1,5,19.

रसग्राहक adj. *den Geschmack empfindend* Tarkas. 7.

रसघन adj. *ganz aus Saft bestehend* Çat. Br. 14,7,1,13.

रसघ्न m. *Borax* Râǵan. im ÇKDr.

रसचन्द्रिका f. Titel von Çamkara's Commentar zum Abhiǵńânaçakuntala Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254.

रसचिन्तामणि m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसज 1) adj. *a) in Flüssigkeiten entstehend* H. 1356. M. 11,143. — *b) vom Chylus herrührend* Wise 196. — 2) m. *Zucker* Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. *Blut* (*aus Chylus entstanden*) Çabdak. im ÇKDr.

रसज्ञ 1) adj. (f. आ) *wissend wie Etwas schmeckt* (eig. und übertr.), *erkennend welchen wahren Genuss Etwas gewährt; mit Etwas vertraut:* पयसाम् Ragh. 2,36. फलस्य Mâlav. 59. ऐश्वर्यस्य R. 2,33,7. भगवतः कथायाः Bhâg. P. 3,15,48. सांसारिकेषु सुखेषु Uttarar. 34,10 (45,12). फलमूल° R. 4,37,25. सुखैश्वर्य° 2,33,8. शोक° 3,35,66. अनुराग° Kathâs. 28,75. ohne Ergänzung Spr. 3055. Bhâg. P. 1,1,19. 3,20,6. 4,31,21. 6,3,28. Çiva Çiv. — 2) f. आ *Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. H. 585. Halâj. 2,366. Spr. 4897. — 3) n. dass. Bhâg. P. 4,25,49.

रसज्ञता (von रसज्ञ) f. *die Kenntniss des Geschmacks einer Sache, das Vertrautsein mit Etwas:* तथाच गतवानस्मि प्रलापानां रसज्ञताम् Kathâs. 5,102. मालवस्त्रीविलासानां यास्यामो ऽत्र रसज्ञताम् 24,86. यावकस्मात्पुष्पेषुशराघातरसज्ञताम् 7,16. यथा विन्ध्याटवी प्राप सा संबाधरसज्ञताम् 13,45. Ragh. 3,26. विक्रमैकरसज्ञता Kâm. Nîtis. 11,32.

रसज्ञान n. *die Kenntniss der Geschmäcke*, ein Kapitel der Medicin Suçr. 1,8,20; vgl. 153,12.

रसज्येष्ठ m. *der süsse Geschmack* H. 1388.

रसतन्मात्र n. *der Urstoff des Geschmacks* Tattvas. 12. — Vgl. रसमात्र.

रसतम (von रस) m. *der Saft aller Säfte, die Quintessenz aller Quintessenzen* Çat. Br. 9,1,2,36. Khând. Up. 1,1,3.

रसतरंगिणी f. Titel zweier Werke Verz. d. Oxf. H. 213,*a*, No. 506 (Verz. d. B. H. No. 824). Gild. Bibl. 268.

रसता f. nom. abstr. von रस 1) *b)* δ) Sâh. D. 33. 240.

रसतेजस् n. *Blut* H. 621.

रसत्व n. nom. abstr. von रस 1) *a)* ε): कथं रसत्वं (so die ed. Bomb.) व्रजति शोणितत्वं कथं पुनः (भुक्तमन्नम्) MBh. 14,571.

रसद 1) adj. *Säfte von sich gebend, Harz ausschwitzend:* नगाः Nalod. 3,14. — 2) m. *Arzt* (*Säfte —, Mixturen reichend*) MBh. 12,4453.

रसदर्पण m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसदालिका f. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रकेतु) Râǵan. im ÇKDr.

रसदीपिका f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,24.

रसद्राविन् m. *eine Citronenart*, = मधुरजम्बीर Râǵan. im ÇKDr.

रसधातु m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr.

1. रसन (von 1. रस्) n. *das Brüllen, Schreien, Dröhnen* u. s. w. Trik. 3,3,255. H. an. 3,402. Med. n. 112. क्षितेः *das Dröhnen der Erde* Varâh. Bṛh. S. 46,88. मण्डूकानाम् *das Quaken der Frösche* 28,4.

2. रसन (von रसय्) 1) m. *das Phlegma* (कफ), sofern es in der Zunge den *Geschmack* bewirkt, Çârṅg. Saṁh. 1,5,11. Wise 46. — 2) f. आ *a) Zunge* AK. 2,6,2,42. Trik. 3,3,255. 5,21. H. 585. an. 3,402. Med. n. 112. Halâj. 2,366. Maitrjup. 6,20. MBh. 14,1111. Suçr. 2,402,10. Kathâs. 14,90. 50,5. प्रसार्य रसनां मयि 69,25. Bhâg. P. 9,4,19. Bhâshâp. 100. Sarvadarçanas. 148,7. °मल Hâr. 195. — *b)* N. zweier Pflanzen, = रास्ना Trik. 3,3,255. H. an. Med. = गन्धभद्रा Çabdak. im ÇKDr. — 3) n. *das Schmecken, Geschmack; Geschmacksorgan* Trik. 3,3,255. 5,21. H. an. Med. Jâǵń. 3,77. Bhag. 15,9. MBh. 12,6835. 8983. Suçr. 1,243, 7.8. रसनेन्द्रिय 30,73. Mârk. P. 39,57. इन्द्रियं रसग्राहकं रसनं जिह्वाग्रवर्ति Tarkas. 7.13. Sâṁkhjak. 26. Bhâshâp. 39. Bhâg. P. 2,2,29. 3,26, 13.48. 8,7,26. 11,8,20. fg. *das Empfinden, Fühlen* Sâh. D. 244. 271. 24, 11. 70,8. — Vgl. रशना.

रसनाथ m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr.

रसनायक m. Bein. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. रसराज, रसेन्द्र, रसेश्वर.

रसनारद (र° *Zunge* + रद) m. *Vogel* H. ç. 186.

रसनालिह् m. *Hund* (*mit der Zunge leckend*) Trik. 2,10,5. H. 1280.

रसनीय (von रसय्) adj. *was geschmeckt wird* MBh. 12,13757.

रसनेत्रिका f. *Realgar, rother Arsenik* H. 1060.

रसत्तमँ = रसतम und nasalirt um einen Anklang an रथंतर zu gewinnen, Çat. Br. 9,1,2,36.

रसपद्धति f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 970.

रसपाकज m. *Zucker* Râǵan. im ÇKDr.

रसपाचक m. *Koch* MBh. 4,1371.

रसपारिजात Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 968.

रसपुष्प n. *ein best. Quecksilberpräparat* Wilson.

रसप्रदीप m. 1) Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,36. Hall 18. — 2) Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. B. H. No. 823.

रसप्रबन्ध m. *ein dichterisches Product*, insbes. *ein Drama; am Ende* eines adj. comp. f. श्रा Vikr. 3,7.

रसफल m. *Cocosnussbaum* Çabdar. im ÇKDr.

रसबन्धन n. wohl *ein best. Theil der Eingeweide* R. 5,25,46.

रसभव n. *Blut* (*aus Chylus entstehend*) H. 621.

रसभेद m. MBh. 5,1705 nach Nilak. *ein best. Quecksilberpräparat* (रसभेदः पारदगुटिकाविशेषश्चित्तामणिसंज्ञश्चिन्तितवस्तुप्रदः).

रसभोजन adj. *von Flüssigkeiten sich nährend* Varâh. Bṛh. S. 68,109.

रसमञ्जरी f. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Colebr. Misc. Ess. II, 95. Verz. d. B. H. No. 597. fgg. 1383. Verz. d. Oxf. H. 213,*b*, No. 507. °प्रकाश 508.

रसमय (von रस) adj. (f. ई) 1) *aus Saft —, Flüssigkeit gebildet, — bestehend:* पृथग्रसमयं पयः *Milch aus je einem besondern Saft gebildet* Bhâg. P. 4,18,25. क्रीडारसमयस्य शैशवाम्बुधेः *aus dem Wasser «Spiel» bestehend* Kathâs. 28,99. — 2) *aus Quecksilber* (*Quintessenz*) *bestehend:* तनु Sarvadarçanas. 99, 6. — 3) *dessen Wesen Geschmack ist:* ग्रम्भस् Bhâg. P. 3,5,34. — 4) *geschmackvoll, voller Reize:* गिर् Verz. d. Oxf. H. 147,*b*, No. 315. मार्कण्डेयपुराण Mârk. P. 137,7.

रसमल *der Unrath des Körpers* Kap. 2,28. — Vgl. रसमूला.

रसमहार्णव m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. 246,*a*, No. 619.

रसमातृका f. *Zunge* (*Mutter des Geschmacks*) H. ç. 121.

रसमात्र n. = रसतन्मात्र Bhâg. P. 3,26,41. 44.

रसमूला f. *ein* Prâkrit-*Metrum von 4 Mal 24 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 157 (III, 51). im Text रसमल, im Index wie bei uns.

रसय् s. u. 2. रस्.

रसयति (von रसय्) f. *das Schmecken* Bṛh. Âr. Up. 4,3,25. रसात् st. रसयतेः Çat. Br. 14,7,1,25.

रसयामल n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 316,*b*, 23.

रसयितॄ (von रसय्) nom. ag. *Schmecker* Çat. Br. 14, 7, 1, 25. 2,18. Maitrjup. 6,7. 11.

रसयितव्य (wie eben) adj. *schmeckbar, was geschmeckt wird* Praçnop. 4,8.

रसयोग m. pl. *künstlich gemischte —, präparirte Säfte* MBh. 13,5681.

रसरत्न n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 971.

रसरत्नदीपिका f. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 213,*b*,8.

रसरत्नप्रदीप m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 972. 941. Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,36.

रसरत्नहार m. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 44.

रसरत्नाकर m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,18. eines medicinischen Verz. d. B. H. No. 963.

रसरत्नावली f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसरहस्य n. desgl. ebend.

रसराज m. 1) *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr. Sarvadarçanas. 102, 7. Verz. d. Oxf. H. 320,*a*,33. — 2) = रसाञ्जन Râǵan. im ÇKDr.

रसराजलक्ष्मी f. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रसराजशंकर m. desgl. Verz. d. B. H. No. 965.

रसराजहंस m. desgl. ebend. No. 941.

रसलेह् m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr.

रसवत्ता (von रसवत्) f. *Saftigkeit, Schmackhaftigkeit, die Eigenschaft des Geschmackvollen* Sâh. D. 6,10. Vâsavad. 7,3.

रसँवत् (von रस) 1) adj. P. 5,2,95. *saftig, schmackhaft, kräftig:* पयस् R̥V. 5,44,13. तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् (सोमः) 6,47,1. AV. 18,4,23. Çat. Br. 1,9,2,7. 3,9,4,5. सस्यानि MBh. 1,2808. 4338. फलानि 4339. 4,932. R. 7,84,7. Hariv. 3709. 12667. R. 6,112,83. Kâm. Nitis. 11,73. Spr. 3079, v. l. Mârk. P. 61, 32. 120,16. मधु R. 5, 60, 9. Ragh. 8, 67. भक्ष्यैर्भोज्यैश्च पेयैश्च रसवद्भिः MBh. 1,8068. पान 7,4345. तोय 14,1622. R. 3,22,24. Ragh. 11,11. स्वादिष्ठं मधुनो घृताच्च रसवच्चत्प्रस्रवत्यक्षरम् Spr. 5374. यद्देवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् 2381. als Eigenschaft eines Oels Suçr. 1, 184, 4. चमस *mit Saft gefüllt* Kauç. 20. नेत्र *die gehörige Feuchtigkeit habend* MBh. 5,2823. रसवती मुदा *überfliessend vor Freude* Pańkar. 1,14,69. Bein. des Agni TS. 2,2,4,4. *mit Reizen versehen, reizend, geschmackvoll:* कामाः Hariv. 12664. शब्दार्थौ Sâh. D. 4, 7. पद्य 6, 9. ग्रलंकार 753. Uttarar. 86,15 (111,3). — 2) f. वती *a*) *Küche* AK. 2, 9,27. H. 998. Halâj. 2,140. — *b*) Titel eines erotischen Gedichts Verz. d. B. H. No. 596. einer Ergänzung zum Saṁkshiptasâra Verz. d. Oxf. H. 174,*b*,6.

रसवह् adj. *Saft führend* Suçr. 1,324,3. 6.

रसविक्रयिन् m. *Verkäufer von Säften, — Flüssigkeiten* Varâh. Bṛh. S. 10,8. इत्यादि° M. 3,159.

रसविद् adj. *den Geschmack kennend, — empfindend, einen feinen Geschmack* (in übertr. Bed.) *habend* Bhâg. P. 4,29,11. 1,18,14.

रसशास्त्र n. *Alchemie* Sarvadarçanas. 100,11.

रसशुक्र s. u. शुक्र.

रसशोधन 1) m. *Borax* H. 944. — 2) n. *das Reinigen des Quecksilbers* Verz. d. Oxf. H. 321, No. 761.

रससंग्रहसिद्धान्त m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 969.

रससागर m. Titel 1) eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761. — 2) eines rhetorischen ebend. 327, *b*.

रससार Titel eines Commentars HALL 67.

रससिद्ध adj. *der durch Quecksilber Vollkommenheit erlangt hat, mit der Alchemie vertraut* RÂǴA-TAR. 4, 246. SARVADARÇANAS. 98, 14. in dieser Bed. und zugleich *mit den poetischen* Rasa *vertraut* Spr. 940.

रससिद्धान्तसागर m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 320, *b*, 2 v. u.

रससिद्धि f. *durch Quecksilber erlangte Vollkommenheit, das Vertrautsein mit der Alchemie* RÂǴA-TAR. 4, 363.

रससिन्धु Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रससुधाकर m. Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 327, *b*.

रससुधाम्भोधि m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रसस्थान n. *Mennig* ÇABDAK. im ÇKDR.

रसहृदय n. Titel eines alchemistischen Werkes SARVADARÇANAS. 98, 11. fg. 100, 20.

रसाकर (रस + आ°) m. Titel eines rhetorischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 126, *a*, 18.

रसाखन (रसा + खन) m. *Hahn* (*in der Erde scharrend*) ÇABDAK. im ÇKDR.

रसाग्रज n. = रसाञ्जन RÂǴAN. im ÇKDR.

रसाञ्जन (रस + 2. अञ्जन) n. *Kupfervitriol* (vielleicht auch *andere Salze*) und *ein daraus unter Zusatz von Curcuma bereitetes Kollyrium* AK. 2, 9, 102. SUÇR. 1, 46, 13. 52, 21. 59, 13. 376, 9. 2, 13, 9. 62, 8. 224, 20. 326, 7. 333, 19. 353, 4. 368, 1.

रसाढ्य (रस + आ°) 1) adj. *saftreich.* — 2) m. *Spondias mangifera* RÂǴAN. im ÇKDR.

रसातल (र° + तल) n. 1) *Unterwelt, Hölle* AK. 1, 2, 1, 1. H. 1363. 1525. HALÂJ. 3, 1. MBH. 12, 13506. रसातलतलं गतः 13, 328. R. 1, 1, 64 (67 GORR.). 40, 13. R. GORR. 1, 4, 142. 3, 31, 25. 5, 54, 19. 78, 9. RAGH. 12, 70. 13, 3. KUMÂRAS. 6, 68. Spr. 965. 1240. 4255. KATHÂS. 22, 253. LA. (III) 90, 6. RÂǴA-TAR. 3, 55. 4, 302. BHÂG. P. 1, 3, 7. 3, 18, 1. MÂRK. P. 71, 15. 106, 46. चतुर्थ KATHÂS. 45, 282. पञ्चम 325. मेदिनीं सरसातलाम् 99, 41. N. einer der 7 *Unterwelten*: रसातलं नाम सप्तमं पृथिवीतलम् MBH. 5, 3602. fgg. ÂRUN. UP. in Ind. St. 2, 178. BHÂG. P. 2, 5, 41. 5, 24, 7. 30. VP. 204, N. 1. Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 46. PAÑKAR. 2, 2, 45. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 70. Vgl. क्रीडा° und पाताल. — 2) Bez. *des 4ten astrologischen Hauses* VARÂH. BRH. 25, 8. 10.

रसात्मक (von रस + आत्मन्) 1) adj. *dessen Wesen Saft, Flüssigkeit, Nectar ist*: उडुपति KUMÂRAS. 5, 22. — 2) *dessen Wesen Geschmack ist*: अम्भस् BHÂG. P. 2, 5, 28; vgl. रसना रसैकात्मिका Verz. d. Oxf. H. 101, *a*, 6. — 3) *dessen Wesen Schmackhaftigkeit ist, geschmackvoll*: वाक्यं रसात्मकं काव्यम् SÂH. D. 3.

रसादान (रस + 1. आदान) n. *das Ansichziehen der Flüssigkeiten, das Austrocknen, Ausdörren* H. 394.

रसाधार (रस + आ°) m. *die Sonne* (*Behälter der Flüssigkeiten*) ÇABDAR. im ÇKDR.

रसाधिक (रस + अ°) 1) adj. *geschmackvoll* oder *reich an Genüssen*: भवनेषु रसाधिकेषु ÇÂK. 179. — 2) m. *Borax* RÂǴAN. im ÇKDR. — 3) f. आ *eine best. Pflanze*, = काकोलीद्राक्षा ebend.

रसाधिपत्य (रसा + आ°) n. *die Herrschaft über die Unterwelt* BHÂG. P. 6, 11, 25. 10, 16, 37. 11, 14, 14.

रसाध्यक्ष (रस + अ°) m. *ein Aufseher über die Säfte, — Flüssigkeiten* Schol. zu R. bei GORR. VII, S. 341.

रसान्तर (रस + अ°) n. 1) *ein anderer Geschmack, ein anderer Genuss*: लब्धदिव्यरसास्वादः को हि रज्येद्रसान्तरे KATHÂS. 18, 346. — 2) *eine verschiedene Gemüthsstimmung, Wechsel der Stimmung* KUMÂRAS. 7, 91. SÂH. D. 220.

रसापायिन् m. *Hund* (*mit der Zunge trinkend*) H. ç. 180.

रसाभास (रस + आ°) m. *der blosse Schein einer Gemüthsstimmung, die Uebertragung einer Gemüthsstimmung auf nicht-fühlende Wesen; das Erscheinenlassen einer Gemüthsstimmung an unpassender Stelle* Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, No. 499. SÂH. D. 7, 13; vgl. 247. fg.

रसाभिव्यञ्जिका f. Titel eines Commentars HALL 102.

रसामृत n. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 311, *b*, 37.

रसामृतसिन्धु Titel eines Werkes, = भक्ति° HALL 144. WILSON, Sel. Works 1, 167.

रसाम्भोधि (रस + अ°) m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

रसाम्भोनिधि (रस + अ°) m. desgl. Verz. d. B. H. No. 940.

रसाम्ल (रस + अम्ल) 1) m. *eine Art Sauerampfer*, = अम्लवेतस RÂǴAN. im ÇKDR. — 2) n. *Fruchtessig, eine saure Brühe* (insbes. aus der Tamarindenfrucht); = वृक्षाम्ल RÂǴAN. = चुक्र BHÂVAPR. im ÇKDR.

रसायक m. *eine best. Grasart* ÇABDAK. im ÇKDR.

रसायन (रस + अ°) 1) m. *a*) *eine best. gegen Würmer angewandte Arzenei*, = विडङ्ग MED. n. 202. विहंगम *Vogel* st. विडङ्ग H. an. 4, 187. — *b*) *ein Alchemist* WILSON. — *c*) Bein. Garuḍa's H. an. MED. — 2) f. ई *a*) *Kanal der Flüssigkeiten* (im Körper) SUÇR. 2, 81, 3. — *b*) N. verschiedener Pflanzen: गुडूची, काकमाची, महाकरञ्ज, गोरक्तदुग्धा, मांसच्छदा RÂǴAN. im ÇKDR. — 3) n. *eine Klasse von Mitteln, die den Organismus kräftigen, erneuern und langes Leben verleihen sollen*, z. B. Soma; *Alterativum, Elixir, Lebenselixir* H. an. MED. WISE 155. SUÇR. 2, 157. fgg. 1, 103, 1. 119, 11. रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा 159, 3. 213, 3. रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् ÇÂRÑG. SAṂH. 1, 4, 13. Verz. d. Oxf. H. 309, *a*, 23. fgg. 316, *b*, 19. 337, *b*, 3. Verz. d. B. H. No. 929 (S. 278, Çl. 48). 958. 966. °तन्त्र heisst der betreffende *Abschnitt* in der Medicin SUÇR. 1, 2, 2. 17. — MBH. 1, 6658. HARIV. 9220. R. 5, 75, 12. Spr. 2950. fg. 4932. VARÂH. BRH. S. 16, 20. 34. 76, 1. KATHÂS. 40, 52. 72. सिद्ध° adj. 41, 11. 33. 70, 43. BHÂG. P. 5, 24, 13. MÂRK. P. 40, 3. Verz. d. Oxf. H. 26, *b*, 12. WILSON, SÂÑKHJAK. S. 11. SARVADARÇANAS. 98, 5. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 110, 19. 111, 18. हरभक्तिरसायनं पीत्वा MBH. 13, 775. कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि UTTARAR. 17, 12 (24, 2). परमकर्णरसायनानि Verz. d. Oxf. H. 215, *a*, No. 514. कर्णरसायनीकृत 146, *b*, 4. मित्रं प्रीतिरसायनं नयनयोः Spr. 2200. vom *ersten befruchtenden Regen* in Beginn der Regenzeit: अष्टमासधृतं गर्भं भास्करस्य गभस्तिभिः। रसं सर्वद्रुमाणां द्यौः प्रसूते रसायनम् ॥ R. 4, 27, 3. Richtet sich hier und da (vgl. प्रधान) nach dem Geschlecht des Nomens, auf welches es be-

zogen wird: कृत्स्नकर्णरसायनाः कथाः Bhâg. P. 3,25,25. स्वकीर्तिर्न परासूनां कीर्णाकर्णरसायना Spr. 2411. Nach den Lexicographen ausserdem: *Buttermilch* H. 409. *Gift* Med. = कटि (*langer Pfeffer?*) Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. ताम्र°, भक्ति°, भगवद्भक्ति°, योग°.

रसायनफला f. *Terminalia Chebula* oder *citrina* Trik. 2,4,15.

रसायनश्रेष्ठ m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr.

रसाय्य (von रसाय्, einem denomin. von रस) adj. *saftig, schmackhaft:* रसाय्यः पयसा पिन्वमानः (सोमः) Ṛv. 9,97,14.

रसार्णव (रस + अ°) m. Titel eines alchemistischen Werkes Sarvadarçanas. 97,16. 100,12. 102,9. Verz. d. B. H. No. 941. 967.

रसाल (von रस) 1) m. a) Bez. verschiedener Pflanzen: *der Mangobaum* AK. 2,4,2,14. Trik. 3,3,406. H. an. 3,679. Med. l. 126. Spr. 2782. 3529. Git. 1,47. 4,22. Pańkar. 1,10,51. Verz. d. Oxf. H. 17,b, No. 63, Çl. 5. 72,a,20. 257,a,N. 3. *Zuckerrohr* AK. 2,4,5,29. Trik. H. 1194. H. an. Med. *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रक) Râǵan. im ÇKDr. *Brodfruchtbaum* Çabdar. im ÇKDr. *Weizen* und *eine Grasart* (कुन्दरतृण; कुन्दुर ist *Maus, Ratze;* vgl. b). — b) *eine Mausart* Verz. d. Oxf. H. 309, a,20. — 2) f. आ a) *gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* AK. 2,9,44. H. 403. H. an. (hier fehlerhaft मुर्विका st. मार्जिता). Med. Hâr. 194. 227. क्रदाः पूर्णा रसालाया दध्नः श्वेतस्य चापरे R. Gorr. 2,100,67. रसालापूपकांश्चित्रान् MBh. 13,2771. statt तथा रसालाश्च बक्रप्रकाराः पपुः Hariv. 8447 liest die neuere Ausg. तथारनालांश्च बक्रप्रकारान्पपुः. — b) *Zunge* H. an. Med. Hâr. 227. — c) Dûrvâ-*Gras* H. an. Med. Suçr. 1,233,9. Vâgbh. 6,35. *Desmodium gangeticum* Dec. H. an. Med. *Weinstock* Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. ई *eine Art Zuckerrohr* (पुण्ड्रक) Râǵan. im ÇKDr. — 4) n. *Weihrauch* und *Myrrhe* H. an. Med. R. 6,96,3. — Vgl. बद्ध°.

रसालंकार m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसालय (रस + आ°) m. 1) *ein Sitz der Reize, — alles dessen was entzückt* Verz. d. Oxf. H. 72,a,20. — 2) pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,42.

रसालसा f. *ein Flüssigkeit führendes Gefäss des Körpers, Ader* u. s. w. Çabdak. im ÇKDr.

रसालिका f. *Hemionitis cordifolia* Roxb. Çabdak. im ÇKDr.

रसावतार m. Titel eines medicinischen Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रसाश (रस + आश) m. *der Genuss von Flüssigkeiten:* अ° Kauç. 141.

रसाशिन् (रस + आ°) adj. *Flüssigkeiten geniessend:* त्रिरात्रमरसाशी स्नातकव्रतं चरति Kauç. 42. 57. 82; vgl. 78. 139.

रसाशिर् (रस + आ°) adj. *mit Saft (Milch* nach Sâj.) *gemischt* Ṛv. 3,48,1.

रसाश्वासा f. *eine best. Schlingpflanze* (पलाशी) Râǵan. im ÇKDr.

रसास्वाद (रस + आ°) m. *das Schlürfen von Saft; das Gefühl des Genusses* Vedântas. (Allah.) No. 135. 139.

रसास्वादिन् (रस + आ°) adj. *Saft kostend;* m. *Biene* Çabdam. im ÇKDr.

रसाह्व (रस + आह्वा) m. *das Harz der Pinus longifolia* Ratnam. im ÇKDr.

रसिक (von रस) 1) adj. f. आ = सरस Med. k. 144. a) *Geschmack —, Gefallen an —, Sinn —, das richtige Verständniss für Etwas habend; versessen auf;* die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: अहो नवनवाश्चर्यनिर्माणे रसिको विधिः Kathâs. 106,104. प्रवास° Spr. 254. आमोदमात्र° 1690. पञ्चातपत्र° 1693. 2543. स्पर्श° 3179. अनुचितसमारम्भ° 3755. Mâlatim. 102,8. ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः Kathâs. 20,46. 27,56. 51,227. 71,18. fg. Sâh. D. 45,10. Râǵa-Tar. 3,110 (wo तेन्नस्विमैत्रीरसिकः zu schreiben ist). 6,183. Hit. 103,3. Verz. d. Oxf. H. 13,b,42. 14,a, No. 57. नाट्य° *sich verstehend auf* 201,b, No. 483. काव्य° Çrut. 43. Ohne Ergänzung *einen richtigen Geschmack habend, Sinn für das Schöne habend:* नट Pat. zu P. 5,2,95. Git. 6,9. Kathâs. 8,10. Bhâg. P. 1,1,3. *eine besondere Leidenschaft —, ein Steckenpferd habend:* रसिकं रसेन कुर्याद्वशे Spr. 2197. रसिकाभार्य *ein leidenschaftliches Weib zur Frau habend* Vop. 6,14. रसिकागोपिकानन्ददायक Pańkar. 4,8,39 aus metrischen Rücksichten st. रसिकगो°. — b) *geschmackvoll:* भारती Spr. 2658. — 2) m. a) *Ardea sibirica* (सारस) Râǵan. im ÇKDr. — b) *Pferd.* — c) *Elephant* Sârasvata im ÇKDr. — 3) f. आ a) *Zuckerrohrsaft.* — b) *gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* Med. — c) *Zunge* H. ç. 121. Viçva im ÇKDr. — d) *Gürtel* (vgl. रशना) Viçva ebend. — Vgl. काम°, माया°, शीत°.

रसिकता (von रसिक) f. *Geschmack an, Sinn für* (loc.): वने Spr. 411. गुणे 4262.

रसिकरञ्जनी (र° + र°) f. Titel eines Commentars Hall 118.

रसिकरमण (र° + र°) n. Titel eines Gedichts Verz. d. Oxf. H. 148, a, No. 318.

रसिकेश्वर (wohl रसिका *ein leidenschaftliches Weib* + ई°) m. Beiw. Kṛshṇa's Brahmavaiv. P. 32 im ÇKDr.

1. रसित von 1. रस् s. das.

2. रसित (von रस) adj. *mit Gold* u. s. w. *überzogen, — ausgelegt* Trik. 3,3,181. H. an. 3,288. Med. t. 144.

1. रसितर् (von 1. रस्) nom. ag. *Brüller, Toser:* रसितारमुच्चैः पतिमापगानाम् Sâh. D. 68,4.

2. रसितर् nom. ag. = रसयितर् *Schmecker* MBh. 12,13757.

रसिन् (von रस) adj. 1) *saftig, kräftig:* सोम Ṛv. 8,1,26. 3,1. 9,113, 5. VS. 19,35. — 2) *einen richtigen Geschmack habend, Sinn für das Schöne habend* Nalod. 2,39.

रसुन m. = रसोन = लशुन Çabdak. im ÇKDr.

रसेन्द्र (रस + इन्द्र) m. *Quecksilber* Râǵan. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 320,a,26. Sarvadarçanas. 102,6.

रसेन्द्रकल्पद्रुम m. Titel eines insbes. über *Quecksilber* handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 321,b, No. 763. Verz. d. B. H. No. 966.

रसेन्द्रचिन्तामणि m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 321,b, No. 762. 311,b,37. Verz. d. B. H. No. 967.

रसेश्वर m. = रसेन्द्र *Quecksilber:* °दर्शन *die Lehre der Alchemisten* Sarvadarçanas. 97. fgg. °सिद्धान्त m. Titel eines dieser Lehre huldigenden Werkes 98,21. fg. 101,9.

रसोत्तम (रस + उ°) 1) m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) Lin. Râǵan. im ÇKDr. — 2) n. (!) *Milch* (*die schönste Flüssigkeit*) H. ç. 98.

रसोदधि (रस + उ°) m. Titel eines rhetorischen, über die Rasa handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 143, a, No. 292.

रसोद्भव (रस + उ°) n. *Perle* H. 1068. — Vgl. रसोपल.

रसोन m. = रसुन *Allium ascalonicum, Schalottenzwiebel* H. 1186. Hâr. 223. Suçr. 1,219,10. °क m. dass. AK. 2,4,5,14. Trik. 2,4,35. 3,3,236.

रसोपल (रस + उ°) n. *Perle* Trik. 2,9,33. — Vgl. रसोद्भव.

रसोल्लास (रस + उ°) m. 1) Bez. einer der acht Vollkommenheiten: *das spontane Erscheinen der Säfte im Körper* VP. (II) 1,91. रसस्य स्वत एवान्तरुल्लासः स्यात्कृते युगे। रसोल्लासाख्या सा सिद्धिस्तया हन्ति क्षुधं नरः॥ Comm. ebend. Wilson, Hall und Muir (ST. 1,22) nehmen die Form रसोल्लासा an. — 2) *das Erwachen des Verlangens nach:* प्राणसमासमागमरसोल्लासैः Gît. 1,36. Comm.: तया समागमस्य रसादुत्पन्नैरुल्लासैः, oder — रसादुल्लासो हर्षो येषां तैः। °रसोल्लासिन् adj. *ein Erwachen des Verlangens nach — empfindend* Verz. d. Oxf. H. 209, *b*, No. 492.

1. रसौकस् (रसा + ओ°) n. pl. *die Wohnungen der Unterwelt* Bhâg. P. 5,20,45. 9,20,31.

2. रसौकस् (wie eben) adj. *die Unterwelt bewohnend*, m. *Bewohner der Unt.* Bhâg. P. 3,18,3. 11.

रस्न Uṇâdis. 3,12. 1) *Ding, Gegenstand* Uǵǵval. — 2) f. आ = रसना *Zunge* H. ç. 121.

रस्य (von रसय् und रस) 1) adj. *schmeckbar* MBh. 14,1398. *schmackhaft* Bhag. 17,8. — 2) f. आ N. zweier Pflanzen: = रास्ना und पाठा Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. *Blut* (*aus Chylus entstanden*) Çabdak. im ÇKDr.

रह्, रहति und रहयति *verlassen, aufgeben* Dhâtup. 17,82. 32,83. 35,6. रहति मुखं दीनः und रहयति शोकं धीरः Durgâd. im ÇKDr. रहित *verlassen, einsam;* von einem Orte MBh. 6,5824. वन R. 3,52,53. 66,2. रहिते *an einem einsamen Orte, im Geheimen* MBh. 1,3407. 5,7249. 7445. R. 3,52,6. 21. 54,23. 59,7. 4,9,70. रहितेषु (Gegens. आकुलेषु) dass. 3,43,34. रहित *verlassen —, getrennt —, frei von, ohne — seiend, — los;* die Ergänzung im instr. Vop. 5,10. रहिता भर्तृभिः साध्व्यो न क्रुध्यन्ति कदा च न Spr. 2593. रहिते भिक्षुकैर्ग्रामे Jâǵń. 3,59. MBh. 3,2673. R. 1,70,35. 2,27,20. 41,18. 42,25. 47,17. 3,52,5. 4,40,67. Spr. 2021. रहिता सत्कविना कीदृशी वाग्विदग्धता 2817. Bhâg. P. 1,16,31. 3,9,33. 7,1,37. Prab. 43,11. Halâj. 2,331. im comp. vorangehend: लयविक्षेपरहितं मनः Maitrjup. 6,34. स्वरूप° MBh. 12,4270. सद्वृत्त° R. Gorr. 1,6,13. Suçr. 1,230,5. Çrut. 18. Spr. 157, v. l. 568. 729. 1138. 2356. 4733. Varâh. Bṛh. S. 43,59. 54,6. 68,4. 56. 115. 70,2. 103,10. Kathâs. 4,45. Râǵa-Tar. 3,186. Dhûrtas. in LA. 70,10. Bhâg. P. 10,38,11. Vedântas. (Allah.) No. 123. Sâh. D. 2,80. Hit. 30,2. Bhaṭṭ. 2,14. 10,58. H. 2. 1120. *verlassen, aufgegeben, fehlend, nicht da seiend* am Anf. eines adj. comp.: रहितासुर (आसुर = असुरभाव) Bhâg. P. 7,4,33. °रत्नचयान् — शिलोच्चयान् Kir. 5,10.

— वि *verlassen:* नोत्सहे त्वां विरहितुं शून्ये ऽहम् R. 3,51,17. न विरहयेदाचार्यम् Çâṅkh. Gṛhj. 4,11. (रविः) विरहयन्मलयाद्रिम् Ragh. ed. Calc. 9,26. त्वां विरहय्य Bhâg. P. 6,11,25. त्वराविरहितासना *eiligst den Sitz verlassend* Çiç. 9,75. विरहित = विनाकृत Trik. 3,1,19. Hâr. 206. *getrennt, allein stehend* R. 3,59,3. अविरहितौ दंपती भूयास्ताम् *ungetrennt* Vikr. 86,11. *getrennt —, frei von, ohne — seiend, — los;* die Ergänzung im instr. MBh. 3,2355. R. Gorr. 2,35,31. fg. 3,52,7. Suçr. 1,229,14. Vikr. 114. अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः Spr. 1019. 2021, v. l. धर्मव्रतैः Varâh. Bṛh. S. 15,23. Kir. 5,6. Bhâg. P. 4,12,6. अविरहितमनेकेनाङ्कभाजा फलेन Kir. 5,52. im gen.: न तदस्ति विना (überflüssig) देव यत्ते विरहितं हरे Hariv. 14966. im comp. vorangehend: श्रद्धा° (यज्ञ) Bhag. 17,13. Sâṅkhjak. 72. Spr. 1091. 1138, v. l. Varâh. Bṛh. S. 68,2. — Vgl. विरह.

रह m. = रहस् Comm. zu AK. 2,8,1,22. रहस्स्वभावाः *im Geheimen* Bhâg. P. 10,55,40.

रहण (von रह्) n. *Trennung* Nalod. 2,14.

रहंपाति m. Hariv. 1658 fehlerhaft für अहंपाति; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart.

1. रहस् n. = रंहस् *Schnelle, Geschwindigkeit:* स्वरहसास्खलता Bhâg. P. 2,7,40.

2. रहस् (von रह्) Uṇâdis. 4,214. n. *Einsamkeit, ein einsamer Ort:* रहो (v. l. für स्थानं) नास्ति Spr. 3308. Varâh. Bṛh. S. 76,2. Bhâg. P. 7,9,46 (= विविक्तवास Comm.). *Geheimniss:* त्वं प्रथमा रहःसखी Ragh. 8,57. स्वात्म° Bhâg. P. 3,4,18. कथ्यतां न रहो यदि 9,9,19. पित्रानुवर्णितरहाः (adj.) 3,15,46. रहःशुचि *der sich seines geheimen Auftrags erledigt hat* Kathâs. 101,358. = विविक्त AK. 2,8,1,22. = गुह्य Trik. 3,3,449. H. an. 2,588. Med. s. 30. वीकाशः स्फुटरहसोः Halâj. 5,51. = तत्त्व (d. i. रहस्य) H. an. Med. = रत, रति *Beischlaf* Trik. H. 537. H. an. Med. Halâj. 2,414. Gewöhnlich wird रहस् als adv. gebraucht in der Bed. *an einsamem Orte, im Geheimen, heimlich* (Gegens. प्रकाशम्) AK. 2,8,1,23. 3,4,25,185. H. 741. Halâj. 4,23. M. 3,34. 6,59. 8,354. 363. 9,172. Jâǵń. 2,168. MBh. 3,1800. 2757. 2866. 5,7430. R. 1,2,37. 77,13. R. Gorr. 1,2,35. fg. Çâk. 119. fg. Varâh. Bṛh. S. 74,16. 19. Kathâs. 12,91. 28,161. 37,151. 42,159. 46,225. Râǵa-Tar. 3,501. 4,223. 525. 6,169. 321. Spr. 3833. 4184. Bhâg. P. 1,11,40. 3,4,12. 19. 28. 30,9. 4,25,28. 7,12,9. 9,14,13. 18,17. Mârk. P. 16,16. Pańkat. 192,23. सुरहःस्थान adj. *an einem ganz einsamen Orte gelegen* Pańkar. 1,6,13. रहसि loc. = रहस् Nir. 4,18. Bhag. 6,10. MBh. 5,5971. R. 1,9,9 (6 Gorr.). 3,64,9. Ragh. 3,3. Çâk. 79,15. Vikr. 51. Varâh. Bṛh. S. 12,6. Kathâs. 3,61. 17,98. 18,232. 20,1. 33,41. Bhâg. P. 1,17,6. 2,9,21. 3,14,30. 6,17,8. 9,6,51. 18,31. Brahma-P. in LA. (III) 54,13. Daçak. in Benf. Chr. 181,23. Pańkat. 253,25. Hit. 63,22. सुरहसि Pańkar. 1,10,38. रहस्सु dass. Hariv. 8357. R. 6,101,27.

रहस = रहस् in अनु°, अव°, तप्त°.

रहसनन्दिन् m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 45. रहसा° im Index.

रहसू (ohne Trennung im Padap.) adj. nach Sâj. *heimlich gebärend:* आरे मत्कर्त रहसूरिवागः ṚV. 2,29,1.

रहस्कर adj. *Jmdes* (gen.) *geheimen Auftrag ausführend* Bhâg. P. 10,47,28.

रहस्य (von रहस्) gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. 1) adj. *geheim;* n. *Geheimniss, geheime Lehre, Mysterium* AK. 2,8,1,23. 3,4,24,156. H. 742. an. 3,502. Med. j. 101. Halâj. 1,9. 4,23. रोमाणि (so v. a. *die an den geheimen Stellen befindlichen*) M. 4,144. एनसाम् 11,247. Verz. d. Oxf. H. 283, *a*, 9. व्रत Jâǵń. 3,301. वृत्त R. 1,2,36. स्तुति 62,26. कन्दर 2,96,3 (105,3 Gorr.). रहस्यालोचनं मन्त्रः H. 741. रहस्याख्यायिन् (प्रणिधि) M. 7,223. MBh. 3,16893. 4,95. इदमन्यच्च देवर्षे रहस्यं सर्वयोषिताम् *ein*

alle Weiber betreffendes Geheimniss 13, 2227. DAÇAR. 1, 59. KÂM. NÎTIS. 5, 36. ÇÂK. 22. Spr. 636. 1550. 3019. 4168. KATHÂS. 21, 32. 27, 159. 45, 48. PAÑKAT. 43, 12. HIT. 56, 19. LA. 20, 19. °धारिन् *im Besitz eines Geheimnisses seiend, in ein Geheimniss eingeweiht* KATHÂS. 13, 22. 58, 123. °संरक्षण PAÑKAT. 129, 2. °भेद Spr. 2592. KÂM. NÎTIS. 14, 56. °भेदन KATHÂS. 37, 230. कुरहस्यसहाय 32, 140. वेदं सकल्पं सरहस्यम् (so v. a. Upanishad) M. 2, 140. 165. 11, 262. 12, 107. ÇÂÑKH. GṚHJ. 2, 11. BHAG. 4, 3. अस्त्राणि सप्रयोगरहस्यानि MBH. 1, 5131. 13, 345. HARIV. 14074. R. 1, 55, 16 (56, 16 GORR.). Ind. St. 1, 20. 61. 106. 2, 22. 3, 276. 8, 151. 9, 159. VARÂH. BṚH. S. 26, 10. 46, 99. UTTARAR. 7, 9 (11, 4). WEBER, RÂMAT. UP. 320. Verz. d. B. H. No. 484. 944. BURN. Intr. 207. BHÂG. P. 1, 6, 37. 7, 44. 3, 1, 31. MÂRK. P. 63, 29. HIT. 37, 3. SARVADARÇANAS. 171, 12. रहस्यम् adv. *im Geheimen* MBH. 4, 2327. Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 35. Accent eines auf रहस्य ausgehenden comp. gaṇa वर्ग्यादि zu P. 6, 2, 131. — 2) f. आ *a*) N. pr. eines Flusses H. an. MED. MBH. 6, 326 (VP. 182). — *b*) N. zweier Pflanzen: रास्ना und पाठा RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. देव°, भागवतलीला°, भाट्ट°, मन्त्र°, महावाक्य° (u. d. W.), योग°, रति°.

रहस्यत्रयसार Titel eines Werkes HALL 112.

रहस्यु (von रहस्) m. N. pr. eines Mannes PAÑKAV. BR. 14, 4, 7.

रहःस्थ (रहस् + स्थ) adj. f. आ *an einem einsamen Orte —, bei Seite stehend, allein seiend* KATHÂS. 12, 154. PAÑKAT. 45, 24. euphem. so v. a. *im Liebesgenuss begriffen* VARÂH. BṚH. S. 78, 14. KATHÂS. 28, 145.

रहाट m. 1) *a*) *counsellor, a minister.* — 2) *a ghost, a spirit.* — 3) *spring* WILSON nach ÇABDÂRTHAK. In den beiden ersten Bedd. würde रहो ऽट am Platz sein.

रहाय् (denom. von रहस्), रहायते gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12.

रहीकार् und रहीभू (रहस् + 1. कर् und 1. भू) VOP. 7, 84. दृष्ट्वा दयितया सार्कं रहीभूतं दशाननम् *an einen einsamen Ort zurückgezogen, abseits gegangen* BHAṬṬ. 8, 55.

रहूगण m. pl. N. pr. eines zu den Âñgirasa gezählten Geschlechts ṚV. 1, 78, 5. ÂÇV. ÇR. 12, 11. SAÑSK. K. 186, *a*, 9. sg. N. pr. des Liedverfassers von ṚV. 9, 37. fg. सिन्धुसौवीरपति BHÂG. P. 5, 10, 1. 2.

रहोगत (रहस् + गत) adj. *an einem einsamen Orte —, allein seiend* M. 7, 147. MBH. 3, 2089. KÂM. NÎTIS. 7, 52. BHÂG. P. 1, 11, 34. *geheim:* भृगोर्भार्या रहोगता MBH. 1, 886.

1. रा, राति (दाने) DHÂTUP. 24, 49. राते TS. रास्व VS. PRÂT. 4, 144. ररते 3. sg. रराथाम्, ररास्व, ररीधम् ṚV. 5, 83, 7. रिरीहि; perf. ररे, रराथे, ररिमे, ररिवंस्, रराणा; रासीय; रातवे; रात; von der Form रास् रासन्, रासत् NAIGH. 3, 20. रासते, अरासत; *verleihen, gewähren, überlassen; übergeben, geben:* वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् ṚV. 3, 14, 5. पिबा सोमं ररिमा ते मदाय 32, 2. रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे 2, 11, 14. ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानाम् 7, 39, 6. 40, 6. 59, 5. स्तुवते रासि वाजान् 93, 6. न पापत्वाय रासीय 32, 18. इमं यज्ञं देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः 3, 1, 22. 4, 2, 20. 8, 19, 26. रास्व सुम्नमस्मे 1, 114, 9. 117, 24. 166, 3. प्रजां देवि ररास्व नः AV. 7, 20, 2. 68, 1. 12, 1, 44. न यो ररे आर्यं नाम दस्यवे ṚV. 10, 119, 3. VS. 4, 16. राति राका TS. 3, 4, 9, 1. रिरीहि ṚV. 6, 39, 5. सुवीरं रयिं गृणते रिरीहि 65, 6. 9, 11, 9. ज्योक् सूर्यं दृशये रिरीहि 91, 6. दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि 10, 98, 10. 169, 3. Hierher ziehen wir auch: स नो बोधि पुरोळाशं रराणः पिबा तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र *lass uns den Kuchen, du aber trinke den Soma* (nach SÂJ. *beachte erfreut den Kuchen*) 6, 23, 7. — AIT. BR. 7, 17. ÇAT. BR. 1, 9, 1, 19. 3, 9, 4, 4. KAUÇ. 71. 106. ÇÂÑKH. ÇR. 7, 18, 9. तेषां रासीश कामान् BHÂG. P. 3, 21, 14. यच्छोकशास्त्रोपनतं न राति न तदिच्छति 4, 27, 25. 5, 18, 21. न राति रोगिणो ऽपथ्यं वाञ्छतो ऽपि भिषक्तमः 6, 9, 49. 11, 22. 7, 10, 4. 6. 8, 3, 19. PAÑKAR. 2, 3, 38. को भिक्षां रास्यति, राति VOP. 25, 5. WEBER, RÂMAT. UP. 286. राता BHÂG. P. 10, 14, 35. रातवे ऽन्नं क्षुधार्दितानाम् 4, 17, 11. इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि सन्तु ṚV. 1, 131, 1. 162, 11. 7, 67, 7. 8, 5, 14. 32, 21. 10, 116, 7. TS. 3, 5, 8, 1. HARIV. 1472. BHÂG. P. 1, 12, 16. 9, 16, 32. Vgl. अस्मद्रात, कीर्ति°, कृति°, जय°, देव°, ब्रह्म°, भगवद्रात, वसु°, विष्णु°.

— व्यति, °राति SIDDH. K. 163, *a*, 13. व्यत्यरे P. 6, 4, 64, Sch.

— सम् *verleihen, gewähren:* उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् ṚV. 8, 32, 8. 6, 70, 6. VS. 17, 1. 19, 81. तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु *Antheil lassend* ṚV. 10, 15, 8. विष्णुः प्रजया संरराणो द्रविणं दधातु *Habe sammt Kindern* AV. 7, 17, 4. VS. 8, 17. Unrichtige Nachbildungen solcher Stellen scheinen zu sein AV. 2, 34, 3. 4. (संविदानः v. l. der TS.). VS. 8, 36. 32, 5. Einmal der imper. सं रिरीहि ṚV. 6, 46, 8.

2. रा (= 1. रा) nom. ag. am Ende eines comp. *verleihend, gewährend* BHÂG. P. 5, 7, 13.

3. रा (रै), रायति (शब्दे) DHÂTUP. 22, 13. *bellen:* रायतः शुनः ṚV. 1, 182, 4. स्तेनं राय *anbellen* 7, 55, 3.

— अभि *anbellen:* द्विपन्तम् TAITT. ÂR. 4, 30, 1.

4. रा f. s. u. र 2).

राउल m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 964.

राका f. UṆÂDIS. 3, 40. Schol. zu P. 7, 3, 44. 4, 13. 1) *die Genie des wirklichen Vollmondstages* (neben Anumati *der Genie des vorangehenden Tages;* s. Näheres Z. d. d. m. G. 9, LVII. Ind. St. 5, 229. WEBER, GJOT. 60. fgg.*)); *Vollmondstag, Vollmond* NAIGH. 5, 5. NIR. 11, 30. AK. 1, 1, 2, 8. TRIK. 3, 3, 39. H. 149. an. 2, 14. fg. MED. k. 31. HALÂJ. 1, 112. VIÇVA bei UǴǴVAL. ṚV. 2, 32, 4. 5, 42, 12. AIT. BR. 3, 37. 47. 7, 11. TS. 1, 8, 8, 1. 3, 4, 9, 1. 6. TBR. 1, 7, 2, 1. ÇAT. BR. 9, 5, 1, 38. SHAḌV. BR. 4, 6. KÂṬH. 12, 8. ÇÂÑKH. ÇR. 1, 15, 3. MBH. 8, 1486. WEBER, KṚSHṆAǴ. 250. 268. VP. 225. मघाराकासमागमे BHÂG. P. 7, 14, 22. 15, 54. °यज्ञ PAÑKAV. BR. 16, 13, 1, Sch. eine Tochter des Añgiras (vgl. रागा) und der Smṛti VP. 83. MÂRK. P. 52, 21. des Añgiras und der Çraddhâ BHÂG. P. 4, 1, 34. Gattin Dhâtar's und Mutter Prâtar's 6, 18, 3. Die Brâhmaṇa und Comm. führen das Wort auf 1. रा zurück. — 2) N. pr. einer Râkshasî, der Mutter Khara's und der Çûrpaṇakhâ MBH. 3, 15893. 15896. einer Tochter des Sumâlin R. 7, 5, 40. — 3) N. pr. eines Flusses H. an. MED. VIÇVA a. a. O. BHÂG. P. 5, 20, 10. — 4) *Krätze* TRIK. H. an. MED. VIÇVA. — 5) *ein eben mannbar gewordenes Mädchen* TRIK. H. 536. H. an. MED. HÂR. 130. HALÂJ. 2, 333. VIÇVA.

राकाचन्द्र m. *Vollmond* KATHÂS. 101, 368. 113, 25.

राकानिशा f. *Vollmondsnacht* KATHÂS. 75, 129.

---

*) 59, 13 ist, wie WEBER später erkannt hat, विवक्षिते न zu trennen; demnach sind 62, 4 die Worte «bei Somakâra und» zu streichen.

राकापति m. *Vollmond* Bhâg. P. 4,12,19. 8,22,12.

राकारमण m. dass. Kathâs. 43,204.

राकाविभावरी f. *Vollmondsnacht:* °जानि m. *Vollmond* Sâh. D. 323,19.

राकाशशाङ्क m. *Vollmond* Kathâs. 119,192.

राकाशशिन् m. dass. Spr. 2477.

राकिणी f. N. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,3; vgl. लाकिनी 25. 35. वाकिनी 5 und डाकिनी.

राकेन्दीवरबन्धु (राका + इ°) m. *Vollmond* Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,7.

राकेश (राका + ईश) m. dass. Bhâg. P. 10,29,21. unter den Beinn. Çiva's Çiv.

रैाक्य adj. *aus* Raka *stammend* gaṇa शणिडकादि zu P. 4,3,92.

राक्षस (von 2. रक्षस्) 1) adj. (f. ई) *den* Rakshas *eigen, rakschasisch:* वाच् Ait. Br. 2,7. विवाह (धर्म, विधि) Âçv. Gṛhj. 1,6,8. M. 3,21. 23. fg. 26. 33. Mârk. P. 113,23. 134,27. fg. मन्त्र Kâtj. Çr. 1,10,14. विधि M. 5,31. प्रकृति Bhag. 9,12. अस्त्र Hariv. 10616. R. Gorr. 1,30,17. रूप 3, 48,11. कायलक्षण Suçr. 1,336,2. सेना, बल R. 3,30,45. 7,23,3,45. पुरी 5,9,31. माया 7,15,30. योनि Kathâs. 42,206. शील 66,16. कर्मन् Vet. in LA. (III) 14,12. रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत राक्षसी कीर्तिता हि सा M. 3,280. — 2) m. *a*) = 2. रक्षस् 2) = 3. रक्षस् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. AK. 1,1,1,55. H. 187. Med. s. 31. Halâj. 1,73. 87. Kauç. 106. Maitrjup. 1, 4. MBh. 1,5927. R. 1,1,40. 45. Suçr. 1,16,16. 112,3. Ragh. 12,68. Varâh. Bṛh. S. 16,37. Kathâs. 18,280. fg. Weber, Râmat. Up. 286. 355. Lot. de la b. l. 8. Pańkat. 182,22. Vet. in LA. (III) 31,11. fgg. im नक्षत्रचक्र neben देव und मानुष Verz. d. Oxf. H. 96,*a*. रक्षाम इति यैरुक्तं राक्षसास्ते भवन्तु वः R. 7,4,13. VP. 41. °राज्य R. 5,80,16. राक्षसेन्द्र Trik. 2,8,5. MBh. 1,5979. R. 3,55,35. राक्षसेश H. 706, Sch. राक्षसेश्वर MBh. 1,5962. R. 7,15,30. entstehen aus Brahman's Füssen Hariv. 11794. Kinder Pulastja's MBh. 1,2571. VP. 5, N. 13. der Khasâ Hariv. 11552. VP. 150. der Surasâ Bhâg. P. in VP. 149, N. 15. Am Ende eines adj. comp. f. आ R. 3,41,8. 5,26,37. 34,3. 80,16. 28. fg. 88,24. ई (fehlerhaft) 26,39. राक्ष° so v. a. *ein Teufel von König* Râǵa-Tar. 5,277. Nach gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117 ist राक्षस *ein Fürst der* Rakshas; nach H. 91 bilden die Râkshasa bei den Ǵaina eine Unterabtheilung der Vjantara. — *b*) Bez. *des 30ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — *c*) m. *one of the astronomical* Jogas *or divisions of the moon's path* As. Res. 9,336. — *d*) N. pr. eines Ministers Nanda's Mudrâr. 34,2. fgg. 153,5. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,14. — 3) m. n. Bez. *des 49ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,45. 47. Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,5. — 4) f. ई *a*) *ein weibliches* Rakshas Trik. 3,3,247. H. an. 3, 753. MBh. 1,5940. 3,2519. R. 1,1,44. 3,30. 28,7. 2,74,8. 3,23,12. 62, 34. 4,41,38. 5,27,9. 6,108,35. Mṛkkh. 121,1. Ragh. 12,61. Kathâs. 29, 128. fgg. Wilson, Sel. Works 2,231. fgg. Insel der Râkshasî Lot. de la b. l. 428. राक्षसालय = लङ्का Sûrjas. 1,62. राक्षनि° *die Nacht als nächtliche Unholdin* Kathâs. 98,1. राक्षसी auch Bez. *einer best. Unholdin*, welche in einer der 4 Ecken eines Hauses sich aufhält, Varâh. Bṛh. S. 53,83. — *b*) *Nacht* H. ç. 18; vgl. oben unter 1) am Ende und सायाह्नत्रिमुहूर्तः स्यात् श्राद्धं तत्र न कारयेत् । राक्षसी नाम सा वेला गर्हिता सर्वकर्मसु ॥ Tithjâdit. im ÇKDr. — *c*) *eine Art Parfum* (चण्डा) AK. 2,4, 4,16. Med. — *d*) *Spitzzahn, Fangzahn* H. an. — Vgl. अपेतराक्षसी, अप्रेत°, जल°, प्रेत°, ब्रह्मराक्षस, भृगु°, मानुष°.

राक्षसकाव्य n. Titel eines *Gedichts* Verz. d. B. H. No. 580.

राक्षसग्रह m. *der Dämon der* Râkshasa, Bez. *eines best. Krankheitsgeistes* MBh. 3,14504.

राक्षसता f. *der Zustand eines* Râkshasa R. Gorr. 1,28,8. 4,3,14.

राक्षसत्व n. dass. R. 1,27,11. Kathâs. 25,256. 272.

राक्षसीकरण m. *das Verwandeln in einen* Râkshasa Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

राक्षसीभू *in einen* Râkshasa *verwandelt werden:* °भूत Kathâs. 11,55.

राक्षा f. = लाक्षा *Lack* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,62. AK. 2,6,3,26. H. 685.

राक्षोघ्न adj. (f. ई) = रक्षोघ्न P. 5,4,36, Vârtt. 5. *vom Schläger des* Rakshas *handelnd:* गायत्री Ait. Br. 1,16. 19. TS. 5,1,10,2. Çat. Br. 3,4,1,16. 7,4,1,33. अगस्त्यस्य राक्षोघ्नम् N. eines Sâman Ind. St. 3,200,*a*. अग्ने रा° desgl. 201,*a*. वामदेवस्यैतत्पञ्चदशं राक्षोघ्नं सामिधेन्यो भवन्ति Kâṭh. 10,5. सूक्त Weber, Kṛshṇaǵ. 303. राक्षोघ्नानि (sc. सूक्तानि) Verz. d. Oxf. H. 398,*a*,1 v. u.

राक्षोऽसुर adj. (f. ई) *zu den* Rakshas *und den* Asura *in Beziehung stehend, über diese handelnd, sie betreffend:* ग्रन्थ u. s. w. gaṇa देवासुरादि zu P. 4,3,88, Vârtt. वैर gaṇa देवासुरादि zu P. 4,3,125, Vârtt. *die Worte* रक्षोऽसुर *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61.

राख्, राखति (शोषणालमर्थयोः) Dhâtup. 5,8. — Vgl. लाख्.

रैाग und रागै (von रञ्ज्, रज्ञ्) 1) m. P. 6,4,27. 1,216. 159, Sch. Vop. 8,133. 26,174. am Ende eines adj. comp. f. आ Spr. 3180. Ragh. 17, 44. Ṛt. 5,11. Çâk. 175. Varâh. Bṛh. S. 78,15. Kathâs. 21,76. 38,121. Pańkat. 203,5. ई gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. *a*) *das Färben:* मूर्धज° Varâh. Bṛh. S. 77,1. चरणं निर्मितरागम् Kumâras. 4,19. Bez. *eines best. Processes, dem das Quecksilber unterworfen wird*, Verz. d. Oxf. H. 320, *a*,14. Sarvadarçanas. 100,6. — *b*) *Farbe* Trik. 3,3,68. H. an. 2,46. Med. g. 20. Hariv. 4472. R. Gorr. 1,76,4. Suçr. 2,317,14. fg. 318,5. Ragh. 2,15. 5,72. 7,7. 10,19. 16,59. Kumâras. 3,30. Ṛt. 1,5. 6,5. Megh. 33. 103. Çâk. 20. 175. ad 14. Spr. 1920. Varâh. Bṛh. S. 12,19. 77,36. Kathâs. 23,78. 24,178. Mârk. P. 51,36. *Farbe* und zugleich *Leidenschaft* Spr. 3810. — *c*) *Röthe* AK. 1,1,4,25. Trik. रोष° MBh. 3,15639. Suçr. 1,34,16. 37,2. 38,14. रसो रागमुपैति *wird roth* 43,13. 69,16. 2,304,7. Spr. 622. 2673. 3555. 4933. Kumâras. 5,11. Vikr. 26. *Röthe* und zugleich *Leidenschaft, Zuneigung* Spr. 472. 2831. 3180. 3807. Pańkat. 203,5. Naish. 22,55. — *d*) *Nasalirung* ṚV. Prât. 11,19. 14,24. विषमरागता 4. — *e*) *Reiz, Lieblichkeit* (der Stimme, des Gesanges): गीत° Çâk. 5. 4,11. अहो रागपरिवाहिनी गीतिः 59,11. सुरागस्वरेण Pańkat. 213,1. उपनीतरागत्वम् (वाचः) H. 66. — *f*) *eine musikalische Weise*, deren 6 angenommen werden (Bhairava, Kauçika, Hindola, Dîpaka, Çrîrâga und Megha, oder Çrîrâga, Vasanta, Pańkama, Bhairava, Megha und Naṭanârâjaṇa, oder Mâlava, Mallâra, Çrîrâga, Vasanta, Hillola und Karṇâṭa); sie werden personificirt und jedem werden 5 oder 6 Râgiṇî und 8 Söhne zugetheilt, ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 199,*b*, No. 471. 200,*a*, 4 v. u. *b*, 14. fg. 201,*b*, No. 481. Verz. d. B. H. No. 1384. Râǵa-Tar. 5,362. Pańkar. 1,11,3. Pańkat. 248,6.

Çuk. in LA. (III) 33, 5. ग्रामरागाः सप्त Mârk. P. 23, 51. Pañkar. 3, 5, 36. रागाः (so Bühler st. वर्णाः) षड्विंशतिः Pañkat. V, 44 (55 Bühler). Nach H. an. und Med. *eine musikalische Note* (गान्धारादि). — *g) Leidenschaft, heftiges Verlangen nach Etwas, Sympathie, Zuneigung, Liebe, Freude an;* = क्लेशादि (s. weiter unten) Trik. H. an. Med. = अनुराग H. 296. H. an. Med. = रस AK. 3, 4, 30, 229. Halâj. 5, 75. = मात्सर्य, मत्सर Trik. H. an. Med. = गृध्नुता Trik. 1, 1, 131. Gegens. विराग, वैराग्य Kap. 2, 9. Sâñkhjak. 45. Bhâg. P. 1, 9, 26. अपराग Spr. 4934. Kâm. Nîtis. 12, 8. द्वेष M. 6, 60. 12, 26. Bhag. 3, 34. Çâṇḍ. 6. Spr. 4603. Râga-Tar. 1, 7. 3, 329. Bhâg. P. 5, 14, 27. H. 73. Sarvadarçanas. 115, 11. 167, 13. 15. अविद्यतास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः Mallin. zu Çiç. 4, 55. रागद्वेषौ Spr. 1314. — Muṇḍ. Up. 1, 2, 9. Maitrjup. 3, 5. Jâgñ. 2, 4. कामरागविवर्जित Bhag. 7, 11. Hariv. 4474. Kap. 3, 30. 4, 9. 25. 27. Kaṇ. 6, 2, 10. Çâṇḍ. 57. Ragh. 16, 60. 17, 44. Ṛt. 5, 11. 6, 23. Spr. 2594. fgg. 2717. 2881. 3729. 3961. 4452. 5110. Varâh. Bṛh. S. 78, 15. 106, 5. Kathâs. 21, 76. 27, 22. 37, 28. 38, 121. Râga-Tar. 1, 271. चेष्टा रागानुगाः 3, 513. 518. 4, 26. fg. 5, 369. 6, 74. 83. 297. 333. Bhâg. P. 5, 18, 14. Prab. 13, 10. Pañkat. 29, 17. Daçak. in Benf. Chr. 197, 5. राग, काम, इच्छा, तृष्णा Spr. 2596. स्नेहरागापनयन Kâm. Nîtis. 17, 8. रागान्ध Maitrjup. 4, 2. Spr. 778. Râga-Tar. 1, 255. 5, 386. °प्रवृत्तीत 4, 676. लीला° AK. 3, 4, 15, 90. गण्डस्थलस्थमदवारिषु बद्धरागमत्तभ्रमद्भ्रमरः Spr. 812. संत्रीवकनिबद्ध° Pañkat. 58, 13. तथा तथास्य वै द्यूते रागो भूयो ऽभिवर्धते MBh. 3, 2285. गुणेषु Spr. 859. सुखे Bhâg. P. 6, 17, 22. नैषधे MBh. 3, 2213. 14125. Mârk. P. 62, 14. तद्रागात् R. 2, 60, 19. 5, 51, 10. युद्धरागात् Hariv. 5056. स्वदेशरागेण Spr. 2448. विषयोपभोगरागात् Kâm. Nîtis. 7, 35. दर्शनाभ्यासमंवृद्धचक्षूराग *Augenlust* Râga-Tar. 5, 382. °प्राप्तिः प्रयोगस्य (*increase of the interest of the performance* Ball.) Sâh. D. 407. Kumâras. 7, 91. *Leidenschaft, Zuneigung* und zugleich *Farbe, Röthe* Spr. 472. 2831. 3807. 3810. — *h) Fürst, König* H. an. Med. — *i) die Sonne; der Mond* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. आ *a) Eleusine coracana Pers.* Râgan. bei Wilson. — *b)* N. pr. der 2ten Tochter des Aṅgiras (vgl. राका) MBh. 3, 14125. — Vgl. अङ्गराग (auch Prab. 49, 1), गुण° (auch Kathâs. 12, 25), चित्त°, तरु°, नि°, नीली°, पद्म°, पिक°, पीत°, पुष्प°, भक्ति°, मञ्जिष्ठा°, मणि°, मद°, मुख°, वीत°, स°, संध्या°, हरिद्रा°.

रागखाडव s. u. रागषाडव.

रागखाण्डव n. *eine Art Zuckerwerk* MBh. 7, 2267. पिप्पलीशुण्ठीयुक्तो मुद्गयूषः खाण्डवः स एव शर्करायुक्तो रागखाण्डव (रागः खा° gedr.) Nîlak. zu MBh. 14, 2684, wo der Text खाण्डवराग hat; vgl. रागषाडव.

रागखाण्डविक m. *ein Verfertiger von solchem Zuckerwerk* MBh. 15, 19.

रागचूर्ण m. 1) *Acacia Catechu Willd.* H. an. 4, 86. Med. ṇ. 106. — 2) *ein rothes Pulver, mit dem man sich beim Feste* Holâkâ *bestreut*, Çabdar. im ÇKDr.; in dieser Bed. hätte man neutr. erwartet. — 3) *Lack* (लाक्षारस) Râgan. im ÇKDr. — 4) *der Liebesgott* H. an. Med.

रागच्छन्न m. *der Liebesgott* (कामदेव) Çabdar. im ÇKDr. Bein. Râma's Wilson.

रागद 1) m. *eine best. Staude*, = तैरणी Râgan. im ÇKDr. — 2) f. आ *Krystall (verschiedene Farben erzeugend)* Çabdârthak. bei Wilson.

रागदालि m. *Linsen* (मसूर) Râgan. im ÇKDr.

रागदृश् v. l. für रागयुज् ÇKDr.

रागद्रव्य n. *Farbestoff* P. 4, 2, 1, Sch.

रागपट् *eine Art Edelstein* Weber, Kṛshṇag. 275, N. 2. fehlerhaft für राजपट्.

रागपुष्प 1) m. *Pentapetes phoenicea* und *rother Kugelamaranth.* — 2) f. ई *die chinesische Rose* Râgan. im ÇKDr.

रागप्रसव m. *Pentapetes phoenicea* und *rother Kugelamaranth* Râgan. im ÇKDr.

रागबन्ध m. *Aeusserung der Zuneigung, Zuneigung* Ragh. 18, 51. Mâlav. 29 (= Vikramak. 21).

रागभञ्जन m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 37, 207.

रागमञ्जरिका f. demin. von रागमञ्जरी Daçak. in Benf. Chr. 194, 21.

रागमञ्जरी f. N. pr. eines Frauenzimmers Daçak. in Benf. Chr. 190, 7. fgg.

रागमय (von राग) adj. *roth* und zugleich *verliebt* Kâvjâd. 2, 75.

रागमाला f. *der Kranz der musikalischen* Râga, *ein Kapitel über d. m.* R. Verz. d. Oxf. H. 86, *a*, 36. Titel eines Werkes über diesen Gegenstand 201, *b*, No. 481. fg. 374, *a*, No. 301.

रागयुज् m. *Rubin* Râgan. im ÇKDr. रागदृश् v. l.

रागरज्जु m. *der Liebesgott* Trik. 1, 1, 38. H. ç. 77.

रागलता f. Rati, *die Gattin des Liebesgottes*, Trik. 1, 1, 39. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190, *b*, 35.

रागलेखा f. *Farbenstrich* Mâlav. 46.

रागवत् (von राग) adj. *roth* Gît. 3, 14.

रागविबोध m. Titel eines Werkes über *die musikalischen* Râga Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, No. 475.

रागवृन्त m. *der Liebesgott* Çabdam. im ÇKDr.

रागषाडव m. *ein Zuckerwerk aus Granatäpfeln und Weintrauben mit einer Brühe von Phaseolus Mungo* Râgav. im ÇKDr. Suçr. 1, 231, 18. 233, 8. 240, 17. 241, 4. °षाडव R. 5, 14, 44. Nach Andern *halbreife Mangofrüchte in Syrup eingemacht mit Ingwer, Kardamomen, Butter u. s. w.* Nigh Pr., wo °खाडव gedruckt ist; vgl. die richtige Form रागखाण्डव.

रागसूत्र n. = पट्टसूत्र und तुलासूत्र *ein seidener Faden* und *der Strick an einer Wage* H. an. 4, 276. Med. r. 294.

रागाङ्गी f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* Râgan. im ÇKDr.

रागाढ्या f. dass. ebend.

रागानुगाविवृति f. Titel eines Buches Verz. d. Tüb. H. 17.

रागारु adj. *der in Bezug auf eine Gabe Hoffnungen erweckt, sie aber nicht erfüllt*, Çabdam. im ÇKDr. रागार्द्द Wilson.

रागार्णव m. Titel eines über *die musikalischen* Râga handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201, *a*, No. 479.

रागाशनि m. *ein* Buddha Trik. 1, 1, 8.

रागिता (von रागिन्) f. *das Verlangen nach* (loc. oder im comp. vorangehend): सत्यप्यर्थे निराशत्वमसत्यपि च रागिता Kâm. Nîtis. 14, 45. गाढालिङ्गन° Kathâs. 86, 116.

रागिन् (von रञ्, रञ्ज् und राग) 1) adj. P. 3, 2, 142. 6, 4, 24, Vârtt. 4. *a) gefärbt* Trik. 3, 3, 256. नील्यादि° AK. 3, 4, 14, 82. रागिन् *farbig* heisst die Amaurosis (तिमिर), wenn sie die zweite Membran des Auges afficirt, अरागिन् in der ersten Suçr. 2, 343, 5. 6. 341, 15. — *b) färbend* H.

an. 2,281. Med. n. 115 (wo रक्तारि का° zu lesen ist). — c) *roth* Spr. 2597. Kathâs. 21,9. *roth* und zugleich *verliebt:* संध्येव रागिणी वेश्या न चिरं पुत्रि दीप्यते 12,93. संध्यावत्तणरागिण्यः स्त्रियः 37,143. 52,285. — d) *von Leidenschaften ergriffen, in der Gewalt der Liebe stehend, verliebt, mit Leidenschaft an Etwas* oder *Jmd* (loc. oder im comp. vorangehend) *hängend, grossen Geschmack an Etwas findend* Trik. H. an. Med. Bhag. 18,27. Hariv. 11946. Spr. 2352. 2414. 2717. 2881. 3268. 3842. 4500. Gît. 9,10. Kathâs. 11,24. 37,85. 147. 52,402. Râga-Tar. 4,396. 5, 231. 6,154. 163. Pańkar. 1,4,16. Daçak. in Benf. Chr. 180,23. Gaudap. zu Sâṁkhjak. 12. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,10. Sâh. D. 26,4. Vet. in LA. (III) 20,5. अ° Spr. 1538. अद्वेष° M. 2,1. गुणे रागी Spr. 4527. राज्ञे Râga-Tar. 4,660. त्वय्यस्या हृदयं रागि Mârk. P. 21,41. यदु° Çiç. 9,38. Kathâs. 22,17. तद्गुणरागि मनः Bhâg. P. 6,1,19. कलवीणारवरागिणी श्रुतिः Kathâs. 14,90. तवाङ्घ्रिपङ्कजरजोरागिणीं भक्तिम् Pańkar. 4,4,3. — e) *ergötzend, erfreuend:* अन्यत्र चतूरागिण्यः Mâlatim. 19,11. — 2) m. *eine best. Kornart,* = बकुलरक्तशाण Râgan. im ÇKDr. — 3) f. रागिणी a) *eine Modification der* Râga *genannten Weisen, dreissig oder sechsunddreissig an der Zahl* d. i. *fünf oder sechs auf jeden* Râga; personif. sind sie *die Gemahlinnen der* Râga, As. Res. 3,73. Verz. d. Oxf. H. 200, *b*,15. 201,*b*, No. 481. Pańkar. 1,11,3. Çuk. in LA. (III) 33,5. — b) N. pr. der ältesten Tochter der Menakâ Vâmana-P. 48 im ÇKDr. — c) *eine Form der* Lakshmî ÇKDr. nach einem Purâṇa. — Vgl. पांसुरागिणी.

राघ्, रांघते (सामर्थ्ये) Dhâtup. 4,38. — Vgl. लाघ्.

राघव m. 1) *ein Nachkomme* Raghu's H. an. 3,709. fg. (lies रघुज st. मघुज). Med. v. 49. patron. Aga's Ragh. 8,16. Daçaratha's R. 2,63,41. 64,1. Râma's 1,1,52. 3,22. 2,110,28 (119,25 Gorr.). 3,48,8. Ragh. 12, 32. 44. Weber, Râmat. Up. 298. 327. fg. राघवौ Bez. Râma's und Lakshmaṇa's R. 5,63,28. 6,110,17. fg. Ragh. 12, 53. pl. R. 2,64,24. 66, 6. राघवसिंह Bez. Râma's R. 1,3,24. — 2) N. pr. eines neueren Fürsten Kshitîç. 23,1. fgg. des Verfassers der Hastaratnâvalî Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483. der Gaṇeçastuti 358,*a*, No. 853. °पञ्चाननभट्टाचार्य Hall 48. — 3) N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 85. — 4) *Meer* H. an. Med. (wo अब्धौ zu lesen ist). — 5) *ein best. grosser Fisch* diess.

राघवचैतन्य m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,15.

राघवदेव m. N. pr. eines Dichters ebend. 124,*b*,16. des Vaters von Dâmodara und Grossvaters des Çârṅgadhara 122,*b*,6. Verfassers des Laghukintana Hall 185.

राघवपाण्डवीय n. Titel eines künstlichen Gedichts, welches als Geschichte sowohl der Râghava als auch der Pâṇḍava gedeutet werden kann, Colebr. Misc. Ess. II, 98. Ind. St. 3,481. Verz. d. Oxf. H. 121,*a*, No. 212. Verz. d. B. H. No. 531.

राघवभट्ट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,8. 279,*a*,28. 292,*b*,3. 341,*a*,38. Hall 26.

राघवविलास m. Titel eines Werkes Sâh. D. 208,14.

राघवानन्द m. N. pr. eines Schülers des Harinanda Wilson, Sel. Works 1,47. eines Autors Sâh. D. 277,19. Hall 188. des Verfassers der Njâjâvalîdîdhiti Colebr. Misc. Ess. I, 300. eines Commentars zum Mânavadharmaçâstra Gild. Bibl. 430. °मुनि Hall 105. °सरस्वती 6. 91. 107. 182.

राघवाभ्युदय m. Râma's *Aufschwung,* Titel eines Schauspiels, Sâh. D. 187,16.

राघवायण n. *die Geschichte* Râma's, = रामायण Agni-P. im ÇKDr.

राघवीय n. *das von* Râghava *verfasste Werk* Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,18.

राघवेन्द्र m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. 385,*a*, No. 484. Hall 99. Verz. d. B. H. 159,4. °यति No. 684.

राघवेश्वर N. eines nach Râghava benannten Liṅga des Çiva Kshitîç. 26,11.

राङ्कल m. *Dorn* Hâr. 91.

राङ्कवं adj. 1) *der* Raṅku *genannten Antilope gehörig:* वदनै राङ्कवैः *mit* Raṅku-*Gesichtern* MBh. 9,2475. *aus dem Haare des* Raṅku *verfertigt, wollen;* m. *eine wollene Decke* AK. 2,6,3,13. H. 669. fg. MBh. 2, 1847. 12,6387. राङ्कवाणां च संचयान् R. 4,50,34. (शय्याः) राङ्कवाजिनसंस्पर्शाः R. Gorr. 2,30,14. °कूटशायिन् MBh. 3,14749. राङ्कवाजिनशायिन् 5,3141. पर्यङ्के राङ्कवास्तृते R. Gorr. 2,13,6. राङ्कवास्तरण 32,8. 62,19. 3,49,15. R. ed. Bomb. 6,113,12. MBh. 1,131. 4459. — 3) *aus* Raṅku *stammend* (aber nicht von Menschen) P. 4,2,100. gaṇa कच्छादि zu 133.

राङ्कवक adj. *aus* Raṅku *stammend* (von Menschen) P. 4,2,100. gaṇa कच्छादि zu 134.

राङ्कवायणं adj. (f. ई) *aus* Raṅku *stammend* (aber nicht von Menschen) P. 4,2,100.

राङ्ग् Dhûrtas. in LA. 67,2 vielleicht fehlerhaft für वाङ्ग्.

राङ्गण n. *eine best. Blume,* vulgo रङ्गन् ÇKDr. nach dem Dravjaguṇa.

राचित m. patron. von रचित gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

राचितायनं m. patron. von राचित v. l. im gaṇa हरितादि zu P. 4,1,100.

1. राज्, राजति, °ते (दीप्तौ) Dhâtup. 19,74. ved. auch राष्टि, अराट्; रराज, रराजतुम् und रेजतुम्, रराजे und रेजे, रराजिथ und रेजिथ P. 6,4, 125. Vop. 8,127. (वि) अराजिषुम्; in der älteren Sprache nur act.; राजसे infin. RV. 8,86,10. 9,86,36. 1) *walten, herrschen; Fürst —, König —,* überh. *der Erste sein;* mit gen. *gebieten über;* mit acc. *regieren, lenken* Naigh. 2,21. समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित् RV. 1,188, 1. देवेषु 8,49,15. 19,22. त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः 3,56,8. स्वेन दक्षेण राजथः 4,56,6. 8,15,3. अग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा (Agni heisst oft राजन्) 3,2,4. उषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि 8,19,31. एते सदसि राजतः AV. 7,54,1. दिवश्च ग्मश्च RV. 1,25,20. वार्यस्य 36,12. 45,4. य एको वस्वो वरुणो न राजति 143,4. 144,6. 3,62,17. कृष्टेः 4,42,1. 53,4. 6,70,2. सुतस्य कलशस्य 10,167,1. — 2) *sich auszeichnen, ein Ansehen haben, besonders in die Augen fallen, prangen, glänzen; erscheinen wie;* act.: (तिस्रो जिह्वाः) तासां या मध्ये राजति सा वशा दुष्प्रतिग्रहा AV. 10, 10,28. प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूरः RV. 1,104,4. मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळग्निः (Accent missverständlich) 6,12,1. आदित्यतेजःप्रतिमानतेजा भीष्मो यथा राजसि सुव्रतस्त्वम् MBh. 1,2109. नहि राजत्ययोध्येयं सासारेवार्जुनो त्तपा R. 2,114,14. R. Gorr. 2,53,36. रामलक्ष्मणयोर्मध्ये सीता राजति ते स्नुषा। विष्णुवासवयोर्मध्ये पद्मा श्रीरिव रूपिणी ॥ 60,13. शिलाः शैलस्य राजन्ति — बहुधा बहुभिर्वर्णैः 103,20. Varâh. Bṛh. S. 13, 1. Gît. 5,12. यस्य राजन्ति वलिविभङ्गाः Vâsavad. 3. Sâh. D. 49,1. सुसू-

त्मेणोत्तरीयेण मेघवर्णेन राजता MBH. 3,1831. 4,190. राजन्तीम् — नलिनीमिव सर्वतः R. 2,95,4. राजत्कुण्डलमाला 3,42,43. (गिरिम्) राजन्तमुच्छ्रितैः शृङ्गैः 4,41,40. शङ्खचक्रगदापद्मराजद्भुजचतुष्टय PAṄKAR. 3,11,21. 12,12. 15,4. PRAB. 81,4. रराज कुन्त्या माद्र्या च पाण्डुः सह वने चरन्। करेण्वोरिव मध्यस्थः श्रीमान्पौरंदरो गजः ॥ MBH. 1,4477. 2,695. 5,7. HARIV. 3968. R. 1,1,32. रराज सुभृशं यज्ञः कल्पवृक्षैरिवोच्छ्रितैः R. GORR. 1,13,27. न रराज शशी चापि 2,40,16. 5,5,26. RAGH. 3,7. 6,6. रणाजिरैः — रराज मृत्योरिव पानभूमिः 7,46. 12,100. KUMĀRAS. 1,38. KATHĀS. 18,404. 27,13. BHĀG. P. 8,15,9. BHAṬṬ. 9,61. तानि ग्रस्तान्यनीकानि रेजुरर्जुनमार्गणैः। शैलं प्रति बलाभ्राणि व्यात्तानीवार्करश्मिभिः ॥ MBH. 4,1703. 1705. R. GORR. 2,60,16. 31,18. 6,70,11. RAGH. 10,60. 11,7. KATHĀS. 22,3. BHĀG. P. 4,10,19. 8,10,15. BHAṬṬ. 2,2. 14,7. med.: तत्र स्म राजते भैमी सर्वाभरणभूषिता। सखीमध्ये ऽनवद्याङ्गी विद्युत्सौदामनी यथा ॥ MBH. 3,2083. एषा गङ्गा सप्तविधा राजते 10821. उपगीयमाना भ्रमरै राजन्ते वनराजयः 11606. R. 2,66,22. माल्यापणेषु राजन्ते नाद्य पण्यानि वै तथा 71,37. 76,9. R. GORR. 2,107,14. MṚKKH. 1,7. VIKR. 160. सतो ऽपि हि न राजन्ते दरिद्रस्येतरे गुणाः Spr. 3120. मुक्ताकारतया *in der Gestalt von* 3132. 3842. प्रतिशशी च यदा दिवि राजते VARĀH. BṚH. S. 28,11. KATHĀS. 27,136. कंसवत्क्वापि राजते 47,111. नृत्तेन काचिद्राजते 113. WEBER, RĀMAT. UP. 286. राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सतां गणे। यावद्भागवतं नैव श्रूयते BHĀG. P. 12,13,14. MĀRK. P. 31,65. PRAB. 41,10. तोयदेषु यथा — राजमाना शतह्रदा MBH. 6,4542. सूक्ष्मवस्त्रधरं रेजे जघनम् 3,1827. KUMĀRAS. 6,49. गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता। शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव ॥ Spr. 865. 2211. सुप्तप्रबुद्धमिव तद्रेजे राजगृहं ततः KATHĀS. 14,21. 21,14. 27,8. 39,160. RĀGA-TAR. 4,514. BHĀG. P. 3,19,3. 8,15,35. — partic. राजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) *sich auszeichnend, prangend, glänzend, verschönert:* वक्षोराजितकौस्तुभ HARIV. 15778. (धनुः) विचित्रवर्णविचलद्विजयन्तीव राजितः KATHĀS. 81,35. विहंगमैः। गुञ्जद्भिरित एह्येति वदद्भिरिव राजितम् (वनम्) 71,195. BHĀG. P. 4,6,18. KĀVJĀD. 3,10. BHAṬṬ. 17,101. बाणैः — गार्ध्रराजितैः (vgl. u. गार्ध्रवाजित, auch in den Nachträgen) MBH. 3,12230. कङ्क° (कङ्कवाजित die neuere Ausg.) HARIV. 9318. KIR. 5,9. रत्न° KATHĀS. 12,154. हारकेयूर° 26,232. 33,211. 43,9. विकीर्णकूलद्रुमराजितासु नदीषु MBH. 13,522. (सरः) जलोर्मिरवराजितम् ÇATR. 1,60. उल्लसन्मत्तकोकिलारावराजिते मधूत्सवे KATHĀS. 35,5.

— caus. *walten, herrschen:* अधिराजो राजसु राजयातै (°ति TS.) AV. 6,98,1.

— अति *hinfahren über:* सद्यो यः स्यन्द्रो विषितो धवीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् ṚV. 6,12,5.

— अनु *nachahmen:* उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति ṚV. 2,43,1. सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् 9,96,18.

— अभि med. *prangen:* एतस्योरसि सुव्यक्तं श्रीवत्समभिराजते MBH. 3,10960.

— उप an zwei verdorbenen Stellen, nämlich MBH. 9,3608 und PAṄKAT. V, 12; an der ersten Stelle ist mit der ed. Bomb. zu lesen: न विमतिं काचिद्दत्त्वा तु पराजितः, an der zweiten mit BÜHLER: आ जन्मनः स्मरोत्पत्तौ मानसेनोपराजितम्.

— निस् caus. 1) *prangend machen, erglänzen lassen:* अस्पृष्टचरणा न्यस्य चूडामणिमरीचिभिः। नीराजयन्ति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम् ॥ PRAB. 23,6. 7. अमरचयचमूचक्रचूडामणिश्रेणिनीराजितोपान्तपादद्वयाम्भोज 81,3. 2,3. दिव्यास्त्रस्फुरदुग्रदीधितिशिखानीराजितज्यं धनुः UTTARAR. 111,14 (150,12). — 2) *die* नीराजन *genannte Cerimonie vollziehen an* (acc.): नीराजयित्वा सैन्यानि प्रयाति विजिगीषवः (पृथिवीक्षितः) HARIV. 3840. राज्ञा नीराजितः VARĀH. BṚH. S. 44,22. नीराजितहयद्विप KĀM. NĪTIS. 4,66.

— परि *nach allen Seiten hin Glanz verbreiten:* प्रभया परिराजन्तम् (मृगम्) R. 3,49,3. वृताः सुहृद्भिः परिरेजुरोजसा यथा सदस्यैरिह धिष्ण्यवह्नयो ऽध्वरे R. 2,112,33. सर्वतो हनुमानेकः संपतन्परिराजते। हुताशन इवाकाशे ज्वालामालापरिष्कृतः ॥ 5,52,7.

— प्रति *in seinem Glanze erscheinen wie* (इव): अनूपोपवनैः कान्तैः कान्ता जनमनोरमा। सतारका द्यौरिव सा द्वारका प्रत्यराजत ॥ HARIV. 6545.

— वि 1) = simpl. 1): बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ ṚV. 5,55,2. 1,188,4. 3,10,7. स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि 10,140,4. वीरस्य 159,6. देवानाम् AV. 1,10,1. 19,42,4. वि ते मदा अराजिषुः *bemeisterten dich* 8,14,10. मन्द्रानो अस्य बर्हिषो वि राजसि 13,4. 15,5. धियो विश्वा वि राजति 1,3,12. पृत्सु जयन्नु महिमा वि राजसि *bemeistern* 5,8,5. विश्वं भुवनम् 63,7. रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति 9,71,7. 10,170,1. त्रिंशद्धाम 189,3. वि पर्वतेषु राजथ 8,7,1. अग्निः प्रियेषु धामसु सम्राडेको वि राजति VS. 12,117. AV. 2,36,3. 3,4,1. उग्रो विराजन्नप वृङ्क्ष्व शत्रून् 12,6. 11,1,22. 5,16. 14,1,64. यो वाव सर्वासु दिक्षु विराजति स एव विराजति ÇAT. BR. 8,5,2,5. लोके AIT. BR. 1,5. पवमानो (सोमः, der auch राजन् ist) वि राजति ṚV. 9,5,1. रयिर्वि राजति द्युमान् 3. 61,18. — 2) = simpl. 2); act.: विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन KHĀND. UP. 2,16,2. व्यराजन्त्क्षाखिनस्तत्र सूर्याग्निप्रतिरञ्जिताः MBH. 1,1412. विराजति यथा सोमो मेघैर्मुक्तः 3,8106. 8148. एषा भागीरथी — वातेरिता पताकेव विराजति नभस्तले 8646. R. 2,97,19. R. GORR. 2,103,6. 106,16. 3,32,31. हृष्यावुपचितौ वृत्तौ संहतौ तौ (पयोधरौ) विराजतः 52,25. 4,44,56. 5,67,13. R. ed. Bomb. 4,40,55. Spr. 2277. शीलं शौचं क्षान्तिर्दाक्षिण्यं मधुरता कुले जन्म। न विराजन्ति हि सर्वे वित्तविहीनस्य पुरुषस्य ॥ 2992. ÇIÇ. 9,62. मृदुकुञ्चितदीर्घेण कुसुमोत्करधारिणा। केशहस्तेन ललना जगामाथ विराजती ॥ MBH. 3,1822. 2437. 12068. सोमे मन्दरश्मौ विराजति HARIV. 4356. सूर्ये विराजति 4897. R. 5,11,1. 45,2. 6,84,27. करकमलविराजत्स्वायुधा PAṄKAR. 3,8,2. BHAṬṬ. 6,143. सह सीतया। विरराज महाबाहुश्चित्रयेव निशाकरः R. 3,23,11. RAGH. 2,20. 15,10. RĀGA-TAR. 6,279. कृष्णयानुगतौ तत्र नवौरौ तौ विरेजतुः MBH. 1,7125. R. 1,19,12. 2,104,30. 3,56,32. KATHĀS. 18,6. 19,68. 34,32. BHAṬṬ. 11,21. — med.: अनुसंवत्सरं जाता अपि ते कुरुसत्तमाः। पाण्डुपुत्रा व्यराजन्त पञ्च संवत्सरा इव ॥ *erschienen wie* MBH. 1,4856. एतस्मात्कारणात् — हरिश्चन्द्रो विराजते। तेभ्यो राजसहस्रेभ्यः *überragen* 2,496. विमानस्थो विराजते 3,8138. एष तस्याश्रमः पुण्यो य एषो ऽग्रे विराजते 10510. चन्द्रविस्पर्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे 4,189. 238. 1043. यशसा 13,1707. गुणाः 5898. R. 1,13,29. 2,65,17. 80,21. 94,6. R. GORR. 2,8,43. 26,12. 59,17. 3,52,30. 4,2,15. 6,92,83. KĀM. NĪTIS. 8,2. 87. Spr. 1271. 3347. 4165. 4409. (वाक्) प्रिया वा मधुरा वा तु स्वाम्येवैव विराजते so v. a. *am Platze sein* 4600. 5195. KIR. 5,16. KATHĀS. 25,173. RĀGA-TAR. 4,401. BHĀG. P. 2,9,12. 3,13,39. 9,5,8. Verz. d. Oxf. H. 148,b,8. नागाश्च भूरिमदराजिविराजमानाः Spr. 2916. RĀGA-TAR. 6,317. BHĀG. P. 8,15,5. PRAB. 21,18. सौभाग्यचिह्नमिव मूर्ध्नि पदं विरेजे Spr. 3248.

RÂGA-TAR. 4,195. 5,449. BHÂG. P. 4,15,13. — partic. विराजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) = राजित : तोरणेन विराजितं रङ्गम् MBH. 3,2193. सुवर्णशृङ्गैस्तु विराजितानां गवाम् 13,2952. HARIV. 2422. 6880. 11790. R. 2,100,21 (108,20 GORR.). 5,13,29. VARÂH. BṚH. S. 12,2. शीलेन विराजितवपुर्गुणः KATHÂS. 20,117. 22,251. 25,15. BHÂG. P. 3,23, 15. 8,18,3. Verz. d. Oxf. H. 151, a,7. PAÑKAR. 1,6,15. 7,29. गृहं क्रीडारतिविराजितम् MBH. 4,741. 7,1567. युद्धं सिंहनादविराजितम् 7063. 12,12316. HARIV. 11861. R. 5,13,11. KIR. 5,4. KATHÂS. 106,46. ज्ञानेन विज्ञानविराजितेन BHÂG. P. 5,5,13. PAÑKAR. 1,3,77. fg. 4,57. ÇATR. 1,296. — Vgl. विराज्. — caus. *prangen machen, mit Glanz erfüllen, Glanz verleihen, erhellen;* mit acc.: (गोकुलम्) विराजयति तं देशम् MBH. 13, 2699. विराजयन्राजसुतो राजमार्गम् R. 2,26,2. R. GORR. 2,38,17. 3,75,55. भूतानि सर्वाणि विराजयन्तम् (शीतांशुम्) 5,11,4. BHÂG. P. 5,20,13. व्यराजयत वैदेही वेश्म तत्सुविभूषिता। उद्यतो ऽंशुमतः काले खं प्रभेव विवस्वतः ॥ R. 2,39,18.

— अतिवि (अति वि) *in hohem Grade prangen, — glänzen;* med. MBH. 3,2700. 11844. 11860. 11863. HARIV. 7078. R. GORR. 2,2,22. KÂM. NÎTIS. 3,14.

— अधिवि *vorherrschen, sich auszeichnen vor* (acc.): मुहूको व्यधि श्रिया विराजतः ṚV. 1,188,6. अधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति 9,75,3.

— अनुवि *nachlenken:* अनु प्रयाणमुषसो वि राजति *der Bahn der Morgenröthe zieht er nach* ṚV. 5,81,2.

— अभिवि 1) als Umschreibung von वि + राज् NIR. 11,27 wohl *regieren.* — 2) *prangen, einen Glanz um sich verbreiten;* med.: (नारायणस्थानम्) भासयन्सर्वभूतानि सुश्रियाभिविराजते MBH. 3,11861. 7,3945. न तत्र सूर्यस्तपति न सोमो ऽभिविराजते 12,13362. HARIV. 6413. R. 2,26, 10. BHÂG. P. 8,3,5. partic. °राजित (könnte auch caus. sein) *prangend, in vollem Glanze stehend:* दिव्यपुष्पोपहारैश्च सर्वतो ऽभिविराजितम् (आश्रमम्) MBH. 3,11042. 12,1546.

— संवि *prangen:* अर्जुनस्तु रणे राजन्योधयन्संव्यराजत MBH. 6,5472.

— सम् *walten über:* सम्राजन्तमध्वराणाम् ṚV. 1,27,1. संराजितुम् P. 8, 3,25, Sch. — Vgl. सम्राज्.

2. राज् (= 1. राज्), nom. राट् P. 3,2,61. 8,2,36. VOP. 3,77. fg. 134. 1) m. *Fürst, König* AK. 2,8,1,1. H. 689. HALÂJ. 2,266. am Ende eines comp.: अमर° MBH. 4,1573. विदर्भ° 3,2524. दैत्य° BHÂG. P. 3,17,23. मतङ्ग° MBH. 1,5885. सर्व° 2,530. वादि° PAÑKAR. 3,14,75. शङ्ख° so v. a. *die Muschel der Muscheln* MBH. 7,4170. 4172. — 2) m. N. eines Ekâha KÂTJ. ÇR. 22,10,7. ÂÇV. ÇR. 9,8,21. PAÑKAV. BR. 19,1,1. LÂṬJ. 9,4,1. MAÇAKA 5,1. — 3) m. *ein Metrum von 4 Mal 22 Silben* Ind. St. 8,107. 111. — 4) f. N. einer Göttin: इन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी राट् ṚV. 5,46,8. NIR. 12,46. nach SÂJ. = राजमाना. Ausserdem in den Formeln: इयं ते राट् (= राज्य MAH.) VS. 9,22. 18,28. मूर्धासि राट् (= राजमाना MAH.) 14,21. राडसि TBR. 3,11,1,10. — Vgl. अङ्ग°, अधि°, अप्र°, अरण्य°, इन्दु°, उडु°, एक°, क्रतु°, गिरि°, गृध्र°, जन°, ज्येष्ठ°, तृण°, देव°, धर्म°, नाग° (auch MBH. 1,1125), परेत°, पर्वत°, भूत°, मनु°, मृग°, यज्ञ°, यम°, वने°, विश्व°, स्व°.

राज m. am Ende eines comp. = राजन् *Fürst, König, der Erste unter seines Gleichen* P. 5,4,91. VOP. 6,37. विदर्भ° MBH. 3,2332. 2433. 2694. शाल्व° 5,7017. केकय° R. 1,73,2. 77,17. चेदि° ÇIÇ. 20,6. राजस° R. 6,36,6. नरराजसराजयोः RÂGA-TAR. 3,74. गन्धर्व° VIKR. 11,13. वानर° R. 1,1,60. कपोत° HIT. 9,15. शुक° ÇUK. in LA. (III) 36,10. गिरि° MBH. 3,2441. व्यूह° so v. a. *die beste der Schlachtordnungen* 6,3062. Am Ende eines adj. comp. f. आ P. 4,1,28, Sch. — Vgl. अक्ष°, अद्रि°, अधि°, अमर°, आदि°, क्षत्र°, गृह°, घट°, तरु°, तृण°, देव°, द्वि°, द्विज°, धर्म°, नक्षत्र°, नद°, नाग°, पर्वत°, पशु°, पितृ°, पुरुष°, पृथ्वी°, प्रति°, प्रेत°, बल°, बाल°, बुद्ध°, बृहद्राज, ब्रह्म°, भुजग°, भृङ्ग°, मणि°, मत्स्य°, मदन°, मनुष्य°, मन्त्र°, मर्म°, महा°, मीन°, मृग°, मेघ°, यम°, यशो°, युव°, योग°, राज°, विघ्न°, शैल°, सर्प°, सिन्धु°, सुख°, सुर° u. s. w.

राजऋषि m. = राजर्षि BHÂG. P. 8,24,10.

1. राजक (von राजन्) m. 1) *regulus:* चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ṚV. 8,21,18. HARIV. 15181. 15185. 16099. Aus metrischen Rücksichten auch schlechtweg für राजन् *Fürst, König* gebraucht: अखिलराजकपूजिताङ्घ्रि KATHÂS. 18,405. विद्याधर° 116,91. BHÂG. P. 12, 1,3. AK. 3,6,3,27. Häufig am Ende eines adj. comp. (= राजन्): षोडश° MBH. 1,332. KÂM. NÎTIS. 8,22. मानिताखिल° KATHÂS. 44,133. 171. स° MBH. 9,1184. 14,2248. Spr. 519. KATHÂS. 12,185. 33,74. 56,131. Vgl. अ°, धातु°, भृङ्ग°, महा°. — 2) N. pr. verschiedener Männer LALIT. ed. Calc. 295,5. RÂGA-TAR. 7,26. 8,2842. 2846.

2. राजक (wie eben) n. *eine Menge von Fürsten, — Königen* P. 4,2, 39. VOP. 7,19. AK. 2,8,1,3. H. 1417. KIR. 2,47. MÂRK. P. 109,6. KÂVJÂD. 3,25. BHAṬṬ. 2,52.

राजकथा (1. राजन् + कथा) f. *Geschichte der Fürsten, — Könige* RÂGA-TAR. 1,11. 14.

राजकदम्ब m. angeblich = कदम्ब H. 1138, Sch. nach GAṬÂDH. im ÇKDR. *eine* Kadamba-*Art.*

राजकन्दर्प m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,b,38.

राजकन्यका f. *Fürstentochter, Prinzessin* KATHÂS. 25,2. 28,111. 36, 20. RÂGA-TAR. 2,148.

राजकन्या f. dass. R. 1,77,29. 5,31,7. KATHÂS. 7,74. 16,19. 24,81. 30, 36. 31,8. BHÂG. P. 9,6,43. गन्धर्वयक्षसुरकिंनर° KAURAP. 45.

राजकर m. *der dem König darzubringende Tribut* WILSON.

राजकर्कटी f. *eine Gurkenart,* = चीनाकर्कटी RÂGAN. im ÇKDR.

राजकर्ण m. WEBER, Nax. 2,391. nach COLEBROOKE Misc. Ess. II, 322 Tafel *Elephantenzahn.*

राजकर्तर् m. *Königsmacher;* pl. *diejenigen Personen, welche den König auf den Thron setzen* (nach SÂJ. Vater, Brüder u. s. w.), AIT. BR. 8,17. R. 2,79,1. auch 67,1 ist mit der ed. Bomb. so zu lesen st. राज्य° bei SCHL. — Vgl. राजकृत्.

राजकर्मन् n. 1) *ein dem Fürsten zu leistender Dienst* M. 7,125. किं गजेन प्रभिन्नेन राजकर्माण्यकुर्वता Spr. 673. — 2) Soma-*Handlung* KAUÇ. 3.

राजकलश m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 7,20. fgg.

राजकला f. *der 16te Theil der Mondscheibe, Mondsichel* SÂH. D. 18,21.

राजकलि s. u. 1. कलि 1) e).

राजकशेरु m. (wenigstens nicht n.) *Cyperus rotundus* HÂR. 183. n. *die Wurzel von Cyperus pertenuis Roxb.* AK. 3,4,25,190.

राजकार्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* MBH. 4,2263. KATHÂS. 18,81. R. 1,7,2. HIT. 87,17.

राजकिनेय m. metron. von राजकी Vop. 7,7.

राजकीय (von राजक) adj. *fürstlich, königlich* P. 4,2,140. °सरस् Kathâs. 62,228. पुरुष Sâh. D. 13,12. °नामन् Vet. in LA. (III) 10,18. काश्मीरदेशीयराजकीय (so ist zu lesen) इतिहासः Râǵa-Tar. ed. Calc. auf dem Titelbl. राजकीय m. so v. a. राजकीयः पुरुषः *Diener eines Fürsten* Vet. in LA. (III) 20,21 (wo राजकीय भ° zu lesen ist). 25,21.

राजकुमार und राजकुमार m. *Prinz* P. 6,2,59. Sâh. D. 14,7. fgg. Vet. in LA. (III) 5,15. Lot. de la b. l. 107. 109. 113.

राजकुमारिका f. *Prinzessin* Kathâs. 28,43.

राजकुल n. 1) *ein fürstliches Geschlecht, die Familie eines Fürsten:* अस्य राजकुलस्य जीवितम् R. 2,87,9. °प्रजाता 5,11,21. Bhâg. P. 1,16,22. 4,21,36. 5,14,16. Prab. 99,5. pl. so v. a. *Fürsten* Spr. 1362. 3795. Vṛddha-Ḱâṇ. 14,12. °विवाद Shaḍv. Br. in Ind. St. 39,3 v. u. राजकुलानुमतव्य Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,16. — 2) *der Palast eines Fürsten* (wo auch Recht gesprochen wird) Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,40,1 v. u. MBh. 4,93. 3,7426. R. 2,65,5. R. Gorr. 2,4,21. Spr. 4801. Kathâs. 4,102. 9,84. 12,53. 14,46. 25,155. 30,114. 31,74. 41,5. 43,139. 49,129. Çaṁk. zu Ḱhând. Up. S. 53. Daçak. in Benf. Chr. 183,18. Pańkat. 29,24. 40,13. 96,20. 100,22. Hit. 88,18. Vet. in LA. (III) 22,7.

राजकुलभट्ट m. wohl *ein im fürstlichen Palast angestellter Doctor* Râǵa-Tar. 6,246. 249.

राजकुलवत् scheinbar R. 2,67,30, wo aber राजाकुलवतां mit der ed. Bomb. (nach dem Comm. राजा कुल°) zu lesen ist.

राजकुष्माण्ड m. *Solanum Melongena* Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

राजकृत् m. so v. a. राजकर्तर् AV. 3,5,7. Çat. Br. 3,4,1,7. 13,2,2,18.

राजकृत adj. *vom König gemacht* AV. 10,1,3.

राजकृत्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* Kathâs. 35,26. Pańkat. 30,11.

राजकृत्वन् P. 3,2,95. = राजकर्तर्, mit acc. Bhaṭṭ. 6,130.

राजकोशातक n. *eine best. Frucht* Varâh. Bṛh. S. 54,121.

राजक्रय m. Soma-*Kauf* Âçv. Çr. 4,2,18. 8,13. Lâṭj. 9,9,5.

राजक्रयणी f. so v. a. सोमक्रयणी Lâṭj. 5,5,7.

राजक्रिया f. *das Geschäft eines Fürsten* Pańkat. 63,25.

राजक्षवक m. *eine Art Senf* Suçr. 1,222,17. Vâgbh. 6,73. fg.

राजखर्जूरी f. *eine Art Dattelbaum* (नृपप्रिया) Râǵan. im ÇKDr.

राजगवी f. *Bos grunniens* Nigh. Pr. nach dem Schol. zu Taitt. Âr. 6,1,8. 12,1 hellfarbig an Schnauze und Hintertheil, sonst schwarz.

राजगिरि m. 1) *Königsberg*, N. pr. einer Oertlichkeit Daçak. 32,11. — 2) *eine best. Gemüsepflanze*, = राजाद्रि Râǵan. im ÇKDr.

राजगुरु m. *Rathgeber* —, *Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,4,12. 69,1.

राजगृह n. 1) *die Wohnung eines Königs, Palast* Kathâs. 12,54. 14,21. 18,326. 20,47. 30,111. 36,44. Kaurap. 31. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,29. 342,*b*,22. — 2) N. pr. der Hauptstadt von Magadha LIA. I,135. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. MBh. 1,7476. 2,832. 3,8082. Hariv. 4953. 5132. R. 2,67,6. 68,2. 6. 70,1. R. Gorr. 1,4,36. 79,35. 43. 2,70,6. Lalit. ed. Calc. 20,6. 297,6. 298,2. 306,3. 309,3. Burn. Intr. 100. Kathâs. 3,7. 112,112. Çatr. 10,321. Wilson, Sel. Works 1,291. 293. 295. 299. 303. neun Jogana von Pâṭaliputra entfernt Ind. St. 10,312. °माहात्म्य Mack. Coll. 1,81. Verz. d. Pet. H. No. 41. राजगृहं (wohl ein davon abgeleitetes adj.) वनम् Vâju-P. in der Einl. zu Vâsavad. 13.

राजगृहक adj. von राजगृह 2) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजगेह n. = राजगृह 1) Pańkat. 2,6,22.

राजग्रीव m. *ein best. Fisch* Trik. 1,2,17.

राजघ P. 3,2,55, Vârtt. Naish. 1,10 nach dem Comm. entweder राज्ञः प्रत्यर्थिनो हतवान् oder राजश्रेष्ठ; nach Trik. 3,1,14 = तीक्ष्ण.

राजचिह्नक n. *die Geschlechtstheile* (उपस्थ) Çabdaḱ. im ÇKDr.

राजजक्ष्मन् m. fehlerhafte Schreibart für राजयक्ष्मन् Bhar. zu AK. 2,6,2,2 (ÇKDr.).

राजजम्बू f. *eine Art* Ǵambû und *eine Art Dattelbaum* (पिण्डखर्जूर) H. an. 4,212. Med. b. 15. — Vikr. 90.

राजत (von रजत) 1) adj. (f. ई) *silbern* P. 4,3,154. Âçv. Çr. 9,4,13. Kâtj. Çr. 19,4,10. 20,2,6. Lâṭj. 9,2,13. M. 3,202. 5,112. 8,136. fg. 220. Jâǵń. 1,182. MBh. 1,7215. 5,7101. 6,1806. 7,1030. 1034. 3638. Hariv. 3931. R. 1,13,18 (10 Gorr.). 3,21,14. 17 (धातवः). 4,40,46. 5,12,20. Suçr. 1,99,5. 170,9. 240,9. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23. Râǵa-Tar. 4,198. 205. Spr. 5322. Mârk. P. 31,64. Weber, Kṛshṇaǵ. 273. 278. fg. राजतान्वित *mit Silber ausgelegt* M. 3,202. हैमराजतसंकीर्ण *mit Gold und Silber ausgelegt* R. 4,33,25. — 2) n. *Silber* Schol. zu Kâtj. Çr. 51,21. हैमराजतचित्राभ्याम् R. 3,49,1.

राजतनय 1) m. *Fürstensohn, Prinz* Kathâs. 28,150. — 2) f. आ *Fürstentochter, Prinzessin* Kathâs. 10,120. 16,24.

राजतरंगिणी f. *Strom* d. i. *fortlaufende Geschichte der Könige*, Titel verschiedener *Chroniken* von Kâçmîra Râǵa-Tar. 1,24. Gild. Bibl. 241. fgg. LIA. I, 473. fgg. II, 18. fgg. Verz. d. Oxf. H. 147.

राजतरु m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* und *Pterospermum acerifolium Willd.* Râǵan. im ÇKDr. — Suçr. 2,522,18.

राजतरुणी f. *Kugelamaranth* Râǵan. im ÇKDr.

राजता (von राजन्) f. *Königthum, königliche Würde* R. 2,79,7. Kâm. Nîtis. 19,16. Spr. 2290. Kathâs. 36,68. 42,45. अ° *Königlosigkeit* Ait. Br. 1,14.

राजताल 1) m. *Betelnussbaum* Trik. 2,4,40. Çabdar. im ÇKDr. °ताली f. dass. Ragh. 4,56. — 2) m. Bez. *eines best. Tuctes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,11.

राजतिमिष m. *Cucumis sativus Lin.* Hâr. 181. — Vgl. राजतेमिष.

राजतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Wilson, Sel. Works II, 19. fg.

राजतुङ्ग m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,358.

राजतेमिष m. = राजतिमिष Trik. 2,4,36.

राजत्व n. = राजता Hariv. 7316. R. 2,72,51. R. Gorr. 1,1,38. Kathâs. 20,191. 22,211. 30,62. 52,372. Râǵa-Tar. 4,177. विद्याधर° Kathâs. 26,242. सर्वसत्त्वानाम् MBh. 13,1134.

राजदण्ड m. *königliche Gewalt, eine vom König verhängte Strafe:* ततो न्यूनतरस्यास्य नापराधो न पातकम् । न चास्य राजदण्डो ऽपि प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ इति प्रायश्चित्ततत्त्वधृताङ्गिरोवचनम् ÇKDr. °भयाकुल Râǵa-Tar. 5,240. = शास्ति Schol. zu Uṇ. 4,181.

राजदत्ता f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 36,48.

राजदन्त m. 1) *Hauptzahn, Vorderzahn* P. 2,2,31. राजदन्तास्तु चत्वारो दशनानां पुरः स्थिताः Trik. 2,6,29 (s. die Corrigg.). चत्वारो राजदन्ताः स्युः

संमुखीना रदास्तु ये Bâla beim Schol. zu Naish. 7,46. मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रातत्पार्श्वयोर्द्वयोः Vaiǵ. beim Schol. zu H. 584. राजदन्तौ तु मध्यस्थावुपरिश्रेणिकौ क्वचित् H. 584. *vier Zähne* gemeint Naish. 7,46. — 2) N. pr. eines Mannes; s. राजदन्ति.

राजदन्ति m. patron. von राजदन्त P. 4,1,160, Sch.

राजदर्शन n. *das Zugesichtkommen eines Fürsten, Audienz bei einem Fürsten:* मां राजदर्शनं कारय so v. a. *führe mich zum Fürsten* Hit. 98,8. 9. Titel eines künstlichen Gedichts Verz. d. Oxf. H. 211,*b*,6.

राजदार m. pl. *eine Gemahlin* und *die Gemahlinnen des Königs* R. 2,89,15.

राजदुहितर् f. *Fürstentochter, Prinzessin* P. 6,3,70, Vârtt. 10. Kathâs. 10,96. Pańkat. ed. orn. 50,1. Davon °दुहितृमय adj. (f. ई): सर्वा दिशो °मयीरपश्यत् so v. a. *überall glaubte er die Prinzessin zu sehen* ebend. 3.

राजदूर्वा f. *eine lange Art von* Dûrvâ-*Gras* Prajogar. 93,*b*,5.

राजदृषद् f. P. 6,1,223, Sch. wohl Bez. *des grösseren unteren Mühlsteins.*

राजदेव m. N. pr. eines Lexicographen (= भोजराजदेव nach Aufrecht) Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,44.

राजद्रुम m. wohl = राजवृक्ष Suçr. 2,258,17. 521,14.

राजद्वार् f. *das Thor eines fürstlichen Palastes* Hit. 98,7.

राजद्वार n. dass. Hariv. 3284. Spr. 458. Mârk. P. 126,18 (°द्वारम् acc. könnte auch zu °द्वार् gehören). Hit. 88,18, v. l.

राजद्वारिक m. *Thürsteher an einem fürstlichen Palaste* Spr. 2553.

राजधत्तूर m. *eine Art Stechapfel* Râǵan. im ÇKDr. u. महाशठ; °क m. nach ders. Aut. in der alphabetischen Ordnung.

राजधर्म m. *die Pflicht eines Fürsten; pl. die für einen Fürsten geltenden Bestimmungen* M. 7,1. 9,324. R. 2,26,4. 102,1. MBh. 12,2089. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,4. 13,*a*,30. 85,*b*,42. 268,*b*,5. राजधर्मानुशासन n. Titel des 1ten Abschnittes im 12ten Buche des MBh. °कौस्तुभ bildet einen Theil des Smṛtikaustubha Verz. d. Oxf. H. 272, *b*, No. 645.

राजधर्मन् m. N. pr. eines Reihers, eines Sohnes des Kaçjapa, MBh. 12,6337. fgg. — Vgl. धर्मराज् 3).

राजधानक n. = राजधानी Çabdar. im ÇKDr.

राजधानी f. *die Residenz eines Fürsten* H. 973. Halâj. 2,131. MBh. 3,15887. 4,147. fg. 7,2972 (यमस्य). R. 1,4,24 (3,65 Gorr.). 9,66. 2,46, 4. 52,50. 88,19. 4,41,66. 6,16,105. 107,16. Ragh. 2,70. 5,40. Çâk. 112, 19. Megh. 25. Kathâs. 15,63. 25,269. 32,121. 34,14. Râǵa-Tar. 4,24. 70. 5,256. 6,125. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,3. Prab. 25,7. कुल° Ragh. 16,36.

राजधान्य n. *Panicum frumentaceum Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. *eine Reisart* (Râǵan. ebend. u. d. W. राजान्न). Varâh. Bṛh. S. 15,12.

राजधामन् n. *Palast —, Residenz eines Fürsten* Râǵa-Tar. 5,483. कुरु° (kann in कुरुराज + धामन् mit dem Comm. zerlegt werden) Bhâg. P. 10,71,33.

राजधीर m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 49,3.

राजधुर् (राजन् + धुर्) m. *das Joch, an dem ein Fürst zu ziehen hat, die Last der Regierung* P. 5,4,74, Sch. °धुरा f. Vop. 6,73.

राजधुस्तूरक m. *eine Dattelart* Râǵan. im ÇKDr.

राजधूर्त m. dass. ebend.

1. राजन् (von 1. राज्) Uṇâdis. 1,156. m. 1) *König, Fürst* AK. 2,8,1,1. 3,4,18,114. Trik. 2,8,1. H. 689. an. 2,280. fg. (= पार्थिव und प्रभु). Med. n. 115 (= नृपति und प्रभु). Halâj. 2,266. उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिः ṚV. 1,40,8. 126,1. वस्त्वः 2,14,11. कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानम् 3,43,5. अध्वरस्य 4,3,1. 50,7. ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथः 5,54,7. ब्रह्मणो देवकृतस्य 7,97,3. राज्ञामुत्तमं मानवानाम् AV. 4,22,5. राजा राष्ट्रं वि रंजति 11,5,17. अयं विशां विश्पतिरस्तु राजा 4,22,3. ओषधीनां राजा वनस्पतिः 8,7,16. पूर्वो राज्ञो ऽभिवदति Çat. Br. 3,3,4,14. यस्यै विशो राजा भवति 5,4,2,3. वैश्यो राज्ञे बलिं हरेत् 11,2,6,14. कौरव्य 12,9,3,3. ऐक्ष्वाक Çâṅkh. Çr. 15,17,1. Âçv. Gṛhj. 3,12,1. Kauç. 15. M. 1,114. 4,33 (राजतस्). 110. राजानः क्षत्रियाश्च 12,46. MBh. 3,2072. भव राजा कुरुषु 9,1891. R. 1,1,33. Çâk. 27,18. 31,3. राजेन्द्र Ragh. 1, 12. पृथुं वैन्यं प्रजा दृष्ट्वा रक्ताः स्मेति यदब्रुवन्। ततो राजेति नामास्य अनुरागादजायत ॥ MBh. 7,2396. 12,1032. VP. 101. fg. तथैव सो ऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात् ॥ Ragh. 4,12. in etym. Zusammenhang mit रञ्ज् gebracht Çâk. 111. 64,21. Unter den Göttern führen als *Herrscher* je in ihrem Gebiet den *Königs*namen: Varuṇa und die übrigen Âditja ṚV. 1,24,7. 4,1,2. 5,85,3. 7,64,1. AV. 3,3,3. Çat. Br. 2,2,3,1. ṚV. 1, 20,5. 41,3. 3,56,7. 62,6. 7,66,11. AV. 3,12,4. Kauç. 71. Indra H. an. Med. ṚV. 1,178,2. 5,40,4. 6,36,4. 7,27,3. 8,53,3. 59,1. TS. 5,5,11,1. Agni ṚV. 5,4,1. 6,1,13. 8,5. 8,43,24. 10,87,3. Jama 10,14,1. 7. AV. 6,116,1. 8,10,23. 18,3,69. TS. 5,5,11,1. Çat. Br. 2,3,3,1. Soma d. i. *Mond* (AK. 3,4,18,114. Trik. 1,1,85. 3,3,256. H. 105. H. an. Med. Hâr. 13. Halâj. 1,42) und Soma ṚV. 1,23,14. 6,75,18. VS. 6,26. AV. 2,36, 3. 5,21,11. 6,104,3. 8,7,20. 14,1,49. Kauç. 128. सोमो राजा चन्द्रमाः Çat. Br. 10,4,2,1. 1,6,4,5. 14. 14,5,1,3. TS. 2,3,5,1. राज्ञ राजानं त्सरति चरन्तम् Kauç. 100. सोमाय राज्ञे M. 9,129. राजन् *Mond* und zugleich *König* Kâvjâd. 2,311. fg. 322. Auch der Soma-*Saft* und die *Pflanze* werden geradezu *König* genannt: राजानमुपावहरेयुः Ait. Br. 1,14. तान्ह राजा मदयां चकार 6,1. 7,32. सोमस्य राज्ञो भक्षयन्ति Çat. Br. 1,1,2, 7. 3,3,2,1. 4,3,11. राजानं क्रेष्यन् 4,5,1,2. यदि राजोपदस्येत् 2,2,5. Am Ende eines comp. steht in der Regel राज, jedoch findet man nicht selten auch राजन्, z. B. विदर्भ° MBh. 3,2124. काशि° 5,6040. केकय° R. 1, 12,23. त्रिदशाधि° 6,36,78. श्वापद° Pańkat. 63,20; vgl. धर्म°, नाग°, प्रति°, फल°, मनुष्य°, यम°, युव°, सिन्धु°, सोम°, स्व°. Am Ende eines adj. comp. f. राजन् oder राज्ञी P. 4,1,28, Sch. — 2) = राजन्य *ein Mann aus der Kriegerkaste* AK. 3,4,18,114. H. 863. H. an. Med. राजविशः Âçv. Çr. 1,3,3. Khând. Up. 8,14,1. ब्राह्मण, राजन्, वैश्य, शूद्र M. 2,32. 36. fg. 44. 46. 3,13. — 3) *ein* Jaksha Trik. 3,3,256. H. 194. H. an. Med. wohl aus राजराज als Bein. Kubera's geschlossen. — 4) N. pr. eines der 18 Diener des Sonnengottes und zwar einer Form Guha's Vjâḍi beim Schol. zu H. 103.

2. राजन् (wie eben) *Lenkung, regimen:* अहं भुवं यजमानस्य राजनि *ich bin unter der Leitung* d. h. *ich folge dem Willen des Frommen* ṚV. 10,49,4.

राजन (von राजन्) 1) adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend, aber nicht zur Kriegerkaste gehörig* Siddh. K. zu P. 4,1,137. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses MBh. 6,329 (VP. II,148). — 3) n. oxyt. N. eines Sâman

Ind. St. 3,231,*a*. TS. 7,5,8,3. Lâṭj. 1,6,35. 3,12,7. Çâṅkh. Çr. 16,14,8. Khând. Up. 2,20,1. 2. Bhâg. P. 11,27,31. इन्द्रस्य राजनरौहिणो, रौहिणे- रेकर्षे राजनम् Ind. St. 3,208,*b*.

राजनय m. *Staatsklugheit, Politik* R. 6,11,10. — Vgl. राजनीति.

राजनापित m. *ein fürstlicher Bartscheerer* und *ein Bartscheerer ersten Ranges* P. 6,2,63, Sch. (Accent des Wortes).

राजनामन् m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. राजपटोलक.

राजनि m. patron. von रजन Taitt. Âr. 5,4,12. Pańkav. Br. 14,3,17. 23,16,11.

राजनिघण्टु m. Titel eines medicinischen Wörterbuchs von Hara-haripaṇḍita (Harasiṁha-Kâçmîrapaṇḍita ÇKDr. VII, Einl.) Nigh. Pr. Verz. d. Oxf. H. 286,*a*,8. im ÇKDr. stets in der Form राज- निर्घण्ट citirt; राजनिघण्ट Colebr. Misc. Ess. II,20. — Vgl. निघण्टुराज.

राजनिवेशन n. *der Palast eines Fürsten* R. 2,51,13. 78,18. R. Gorr. 2,4,12. 12,24.

राजनीति f. *Staatsklugheit, Politik* MBh. 15,978. Kathâs. 34,189. 42, 93. षड्विधा Bhâg. P. 10,45,34. Pańkat. 188,4. Verz. d. B. H. No. 495. 1018. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,44. 86,*a*,6. 123,*a*,24. 125,*a*,38. °शास्त्र 131, *b*, No. 238.

राजनील m. *Smaragd* Çabdar. im ÇKDr.

राजन्य (von राजन्) Çânt. 4,8. 1) adj. *fürstlich, königlich;* m. *ein Angehöriger fürstlichen Stammes, Adelicher,* älteste Bez. *der zweiten Kaste* P. 4,1,137. AK. 2,8,1,1. H. 863. Halâj. 2,266. बाहू राजन्यः कृतः R̥V. 10,90,12. ब्राह्मणा एव पतिर्न राजन्योऽ न वैश्यः AV. 5,17,9. 18,2. 6,38, 4. 10,10,18. 12,4,32. fg. 15,8,1. 19,32,8. VS. 22,22. 30,5. Ait. Br. 3, 48. 7,19. 31. 8,6. TS. 2,4,13,1. 5,4,4. 10,1. 5,1,10,3. TBr. 1,7,2,6. क्षत्रं राजन्यः Çat. Br. 5,1,1,11. 5,28. 4,1,17. 4,9. 13,4,2,5. राजन्या विशः 17. राजन्या अनुचर्यः 5,2,6. Kâtj. Çr. 4,9,2. 5. 16,1,17. 22,10,7. Âçv. Çr. 2, 1,3. 4,15,5. M. 2,49. 190. 3,110. 4,84. 10,12. 22. 95. 11,83. 87. 93. 127. Jâǵn. 1,92. P. 6,2,34. MBh. 1,1811. 5,7249. 13,1611. 1905. भोज° 14,2581. R. 2,82,31 (89,13 Gorr.). Ragh. 3,48. 4,87. 7,32. Megh. 49. Varâh. Bṛh. S. 4,24. 80,11. Uttarar. 112,17 (152,4). Bhâg. P. 1,7,48. 8,43. 4,28,29. राजन्या f. MBh. 5,4497. Hariv. 8309. m. pl. Bez. eines best. *kriegerischen* Stammes (vgl. राजपुत्र) Varâh. Bṛh. S. 14,28. Mârk. P. 58,47. Nach Uṇâdis. 3,100 राजन्य, nach Uǵǵval. mit dieser Betonung Bein. Agni's. — 2) m. *eine Art Dattelbaum* (क्षीरिका) Râǵan. im ÇKDr.

राजन्यक 1) adj. *von Kriegern bewohnt* P. 4,2,53. — 2) n. *eine Schaar von Kriegern* P. 4,2,39. 6,4,151, Vârtt. AK. 2,8,1,4. H. 1417. Ragh. 7,53. Daçak. 57,12.

राजन्यत्व (von राजन्य) n. *das Kriegersein, das zur-Kriegerkaste-Gehören* Sâj. zu R̥V. 1,125,1.

राजन्यबन्धु m. *Fürstengenosse* (gewöhnlich geringschätzig gebraucht) Çat. Br. 1,1,4,12. 2,4,2. 8,1,4,10. 10,5,2,10. 11,6,2,5. 14,9,1,5. Lâṭj. 8,2,10. = राजन्य, क्षत्रिय M. 2,65.

राजन्यवत् adj. *mit einem Fürstlichen verbunden* TS. 5,1,10,3.

राजन्वत् adj. *von einem guten Fürsten beherrscht* P. 8,2,14. AK. 2, 1,13. Ragh. 6,22. Kâvjâd. 3,6. — Vgl. राजवत्.

राजपटोल 1) m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Ratnam. im ÇKDr. °क m. dass. Hâr. 105. — 2) f. ई = मधुरपटोली (fehlt in den Wörterbüchern) Râǵan. im ÇKDr.

राजपट्ट m. *eine Art Edelstein, ein Diamant von geringerer Güte* Trik. 2,9,30. H. 1066. Vjutp. 137. Uttarar. 97,16 (129,1). Mâlatîm. 150,7.

राजपट्टिका f. = चातकपक्षिन् ÇKDr. angeblich nach Hâr.; vgl. राज- भट्टिका.

राजपति m. *Fürstenherr* Çat. Br. 11,4,3,9. Kâtj. Çr. 5,13,1.

राजपत्नी f. *Gemahlin eines Fürsten* R. 2,104,2. Varâh. Bṛh. S. 5,76. Spr. 4935.

राजपथ m. *Hauptstrasse* Hariv. 6541. R. Gorr. 2,4,18. 5,10,14. Ragh. 14,30. 16,12. Kumâras. 7,63. Râǵa-Tar. 1,201. Bhâg. P. 10,42,1. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 1,77,7 (78,6 Gorr.). R. Gorr. 2,6,2. Nach gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100 प्रतिकृतौ संज्ञायाम्.

राजपथाय् (von राजपथ), °यते *eine Hauptstrasse darstellen* Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,15.

राजपद्धति f. *Hauptstrasse:* इयं सा मोक्षमार्गाणामजिह्मा राजपद्धतिः Sarvadarçanas. 147,8.

राजपर्णी f. *Paederia foetida Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

राजपलाण्डु m. *eine best. Art Zwiebel* ebend.

राजपाल m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II,280. Reinaud, Mém. sur l'Inde 263 (राज्यपाल v. l.). eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,5.

राजपितर् m. *Königsvater* Ait. Br. 8,12. 17.

राजपीलु m. *ein best. Baum,* = महापीलु Râǵan. im ÇKDr.

राजपुत्र 1) m. *a) Königssohn, Prinz;* f. ई *Königstochter, Prinzessin:* कस्य नरा राजपुत्रेव सवनाव गच्छथः R̥V. 10,40,3. Ait. Br. 7,17. Çat. Br. 13,4,2,5. 5,2,5. Âçv. Çr. 10,8,11. Pańkav. Br. 19,1,4. TBr. 3,8, 5,1. Kâṭh. 14,8. 28,1. Lâṭj. 9,10,1. Praçnop. 6,1. राजानो राजपुत्राश्च MBh. 3,2125. 2767. 2876. 4,92. R. 1,4,3. 58,15. 2,26,4. 27,3. Mâlav. 70,23. Kathâs. 28,111. fgg. Râǵa-Tar. 2,144. Hit. 7,21. 44,7. 45,1. °पुत्री P. 6,3,70, Vârtt. 10. MBh. 3,2443. 15602. 4,75. R. 1,72,12. 2, 38,6. R. Gorr. 2,26,4. 4,42,12. Bhar. Nâṭjaç. 34,22. Kathâs. 7,104. 11,54. 16,21. 18,165. 388. 33,7. Verz. d. Oxf. H. 216,*b*,39. Pańkat. 44, 21. — *b) ein* Radschput, im System eine Mischlingskaste: der Sohn eines Vaiçja von einer Ambashṭhâ (Parâçara im ÇKDr. Colebr. Misc. Ess. II,180) oder eines Kshatrija von einer Karaṇî (Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,10) Kathâs. 24,90. 115. 38,74. 74,59. 111,29. Râǵa-Tar. 7,234. Hit. 39,18. Vet. in LA. (III) 23,17. f. ई Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,10. — *c) der Planet Mercur (Sohn des Mondes)* Trik. 1,1,93. Çabdar. im ÇKDr. — *d) eine Mangoart* (महाराजचूत) Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. ई *a) Königstochter* und *ein Frauenzimmer aus der Kaste der* Radshput; s. u. 1) *a) b)*. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: = कटुतुम्बी und जाती Râǵan. im ÇKDr = मालती Gaṭâdh. im ÇKDr. — *c) eine Art Parfum* (रेणुका) Râǵan. im ÇKDr. — *d) eine Art Metall* (राजरीति) ebend. — *e) Moschusratte* ebend.

राजपुत्रक (von राजपुत्र) n. *eine Menge von Königssöhnen* P. 4,2,39. H. 1417.

राजपुत्रा f. *Mutter von Königen* (*Könige zu Söhnen habend*) RV. 2,27,7.

राजपुत्रिका f. 1) *Königstochter, Prinzessin* Hariv. 1356. — 2) *ein best. Vogel* (शरारि) Gaṭâdh. im ÇKDr.

राजपुत्रीय Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,28.

राजपुर n. *Königsstadt*, N. pr. einer *Stadt* LIA. I, 562. MBh. 7,119. 12,110. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 23. Hiouen-thang I, 188. °पुरी f. desgl. Râga-Tar. 6,286. 348. fg. 7,1153. 1155. 8,1168. 1272.

राजपुरुष m. *Diener —, Beamter eines Fürsten* P. 6,1,223, Sch. Nir. 2,3. Verz. d. Oxf. H. 177, *b*, 3. MBh. 1,4314. Mṛkkh. 154,11. fg. Çâk. 17,6. Spr. 3229. Varâh. Bṛh. S. 53, 8. 14. 95, 20. Kathâs. 9,84. 24,62. Râga-Tar. 3, 156. 5,435. 467. 6, 98. Bhâg. P. 5,26,16. 22. Pańkat. 40, 21. 97,24. Hit. 63,8. Vet. in LA. (III) 22,7. Z. d. d. m. G. 14,572,8.

राजपुष्प 1) m. *Mesua Roxburghii Wight*. Çabdak. im ÇKDr. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = करुणी Râgan. im ÇKDr.

राजपूग m. *eine Art Betelpalme* Bhâg. P. 4,6,17.

राजपूरुष m. = राजपुरुष Kathâs. 24,52.

राजपौरुषिक (wohl von राजपौरुष्य) adj. *im Dienste eines Fürsten stehend* MBh. 13,6028.

राजपौरुष्य n. nom. abstr. von राजपुरुष gaṇa अनुशतिकादि zu P. 7,3,20.

राजप्रकृति f. *Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,88,3.

राजप्रत्येनस् m. Accent des Wortes P. 6,2,60.

राजप्रिय 1) m. = राजपलाण्डु Râgan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = करुणी Râgan.

राजप्रेष्य 1) m. *Diener eines Fürsten* MBh. 3,2882. 12,2359 nach der Lesart der ed. Bomb. (ग्रामप्रेष्य ed. Calc.). — 2) n. *Fürstendienst* (die richtigere Form wäre °प्रैष्य) MBh. 12,2358.

राजफणिञ्जक m. *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDr.

1. राजफल n. *die Frucht von Trichosanthes dioeca Roxb.* Trik. 2,4,22.

2. राजफल 1) m. *ein best. Baum*, = राजादनी Râgan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lin.* (जम्बू) Râgan. im ÇKDr.

राजबदर 1) m. *eine Art Judendorn* Râgan. im ÇKDr. — 2) n. स्याद्राजबदरं रक्तमेलके लवणे ऽपि च Med. r. 307. *a plant* (*a sort of Justicia*); *salt* Wilson nach ders. Aut.; vgl. मेलकलवण, welches *eine Art Salz* bezeichnet.

राजबला f. *Paederia foetida Lin.* AK. 2,4,5,18. — Vgl. भद्रबला.

राजबलेन्द्रकेतु m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 532.

राजबान्धव m. f. (ई) *Verwandter* (*Verwandte*) *des Fürsten* Âçv. Gṛhj. 2,3,3 (des Königs Varuṇa). Çâṅkh. Gṛhj. 4,18. Pâr. Gṛhj. 2,4. Râga-Tar. 6,252 (°भान्धव: Tr.).

राजबीजिन् adj. *von fürstlicher Abstammung* AK. 2,7,2. H. 713. Râga-Tar. 4,353. 6,98. 8,2801. 2954.

राजब्राह्मण und राजब्राह्मण m. P. 6,2,59.

राजभट m. *Söldling eines Fürsten, Soldat* R. 1,54,3 (55,3 Gorr.). 8. Kathâs. 90,117. Daçak. 25,3. Bhâg. P. 3,30,21. 5,26,27. — Vgl. राजभृत.

राजभट्टिका f. *ein best. Wasservogel* Hâr. 84.

राजभद्रक m. *Costus speciosus* oder *arabicus* und *Azadirachta indica Juss.* Râgan. im ÇKDr. Die richtige Lesart soll nach ÇKDr. पारिभद्रक sein.

राजभय n. *Gefahr von Seiten eines Fürsten* Varâh. Bṛh. S. 53,102. 95, 19. *Furcht vor einem Fürsten* Pańkat. 218,5.

राजभवन n. *der Palast eines Fürsten* R. 1,20,7. R. Gorr. 2,3,8. Kathâs. 14,20. 18,120. 26,111. 42,128. Râga-Tar. 4,13. Bhâg. P. 9,10,45.

राजभूय n. = राजता Çabdârthak. bei Wilson.

राजभृत् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत (राजन् + भृत) m. = राजभट MBh. 13,4276. R. Gorr. 1,55,8. Varâh. Bṛh. S. 10,18. राजभृत auch adj. von राजभृत् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत्य m. *Diener eines Fürsten* R. Gorr. 1,55,6. Râga-Tar. 6,101.

राजभोगीन adj. *einem Fürsten zum Genuss gereichend*, — *heilsam* P. 5,1,9, Vârtt. 3.

राजभोग्य 1) m. *Buchanania latifolia*. — 2) n. *Muskatnuss* Çabdak. im ÇKDr. — Im Pâli ist राजभोग्ग *Minister* oder *hoher Beamter*.

राजभोजन adj. *von Fürsten genossen*: शालय: P. 6,2,150, Sch.

राजभ्रातृ m. *Königsbruder* Ait. Br. 1,13. Çat. Br. 5,4,4,6. Kâtj. Çr. 15,7,12. Pańkav. Br. 19,1,4.

राजमणि m. *eine Art Edelstein* Varâh. Bṛh. S. 80,4.

राजमण्डूक m. *eine grosse Froschart* Râgan. im ÇKDr.

राजमन्दिर n. 1) *der Palast eines Fürsten* Kâm. Nitis. 16,5. Kathâs. 15,122. 18,399. 26,43. 32,182. 43,9. 47. 55,100. Râga-Tar. 6,9. 212. — 2) N. pr. der Hauptstadt der Kaliṅga LIA. I, 563, N.

राजमल्ल m. *ein fürstlicher Ringer* Trik. 3,2,17.

राजमल्लि N. pr. einer Stadt Ind. St. 2,245.

राजमहेन्द्रतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,34.

राजमातृ f. *des Königs Mutter* Spr. 2607.

राजमात्र n. *Jeder der auf den Namen* राजन् *Anspruch hat* Çâṅkh. Br. 27,6. Çr. 17,5,3. 4. 15,3.

राजमानत्व n. nom. abstr. von राजमान (s. 1. राज्) *prangend, glänzend* Vedântas. (Allah.) No. 72.

राजमानुष m. *ein königlicher Beamter* Jâgń. 2,242.

राजमार्ग m. 1) *Hauptstrasse* M. 9,282. MBh. 3,3015. 4,2183. 14,2049. Hariv. 4467. 5779. R. 1,5,8. 2,26,2. 33,8. 41,14. 43,13. 57,16. 70,26. R. Gorr. 1,79,38. 2,1,37. 4,16. 74,13. 3,29,2. 4,33,10. 5,10,20. 52,12. 6,9,24. Spr. 4416. Mṛkkh. 26,7. Ragh. 6,10. 7,4. Kâm. Nitis. 7,39. Bhâg. P. 1,11,25. Mârk. P. 16,20. 26. Pańkar. 1,4,58. Pańkat. 129,16. Vet. in LA. (III) 19,5. *die grosse Strasse* in übertr. Bed. Sarvadarçanas. 111, 21. — 2) *der Fürsten Art und Weise*, — *Verfahren* so v. a. *Kampf*: °विशारद Hariv. 15989.

राजमार्तण्ड Titel eines astr. Werkes und eines Commentars zu Patańgali's Jogasûtra Colebr. Misc. Ess. I, 235. II, 463. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. 279,*a*,28. 292, *b*, 3. 316, *a*,12. 336, *a*, No. 790. Verz. d. B. H. No. 1176. Hall 10. Weber, Kṛshṇag. 233. 295. — Vgl. बृहद्राजमार्तण्ड.

राजमाष m. *Dolichos Catjang* Trik. 2,9,5. Hâr. 182. MBh. 13,3282 (fälschlich °मास ed. Calc.). Çârṅg. Saṁh. 3,9,7. Vâgbh. 6,19. Mârk. P. 32,11.

राजमाष्य adj. *zum Anbau von* राजमाष *geeignet, damit bestanden* (ein Feld) P. 5,1,20, Vârtt. 1, Sch.

राजमास MBh. 13,3282 fehlerhaft für राजमाष.

राजमुद्ग m. *eine Bohnenart* H. 1174.

राजमुनि m. = राजर्षि Çâk. 47.

राजमृगाङ्क 1) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Verz. d. B. H. No. 997. — 2) Titel eines astr. Werkes Verz. d. B. H. 113,*b*,39.

राजयक्ष्म, später °यक्ष्मन् m. *eine best. lebensgefährliche Krankheit; bei Spätern Lungenschwindsucht* (ein Wortspiel leitet die Benennung vom *Mond* ab) H. 463. Halâj. 2,447. Ṛv. 1,161,1. AV. 11,3,39. 12,5, 22. TS. 2,3,5,2. Kauç. 13. Kâth. 11,3. 27,3. राजश्चन्द्रमसो यस्माद्भूदेष किलामयः। तस्मात्तं राजयक्ष्मेति केचिदाहुर्मनीषिणः॥ Suçr. 2,445,7.20. 506,21. Hariv. 1358. 1360. Çiç. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 305,*b*,33. 306,*b*, 24. 312,*b*,22. 316,*a*, No. 751. 357,*a*, No. 849. fg. Verz. d. B. H. No. 955. 967. 975. fgg. राजयक्ष्मनामन् m. Bez. eines best. allegorisch-mythischen Wesens, dem auf dem Baugrund eines Hauses eine best. Stelle zugewiesen wird, Varâh. Bṛh. S. 53,47.

राजयक्ष्मिन् adj. *die Schwindsucht habend* Suçr. 2,75,4.

राजयज्ञ m. *Königsopfer* Kâtj. Çr. 20,1,1.22,10,29.11,15. Mâlav. 70,23.

राजयान n. *ein fürstliches Vehikel, Palanquin* Bhâg. P. 5,10,15.

राजयुध्वन् m. *Bekämpfer eines Fürsten* P. 3,2,95.

राजयोग m. 1) *eine Constellation, unter welcher Fürsten geboren werden*, Varâh. Bṛh. S. 2, S. 6. Bṛh. 11 (passim). Ind. St. 2,275. Verz. d. B. H. No. 878. — 2) Bez. *einer best. Stufe der Meditation* (योग) Verz. d. Oxf. H. 224,*b*,9. 233. fgg., No. 566; vgl. Aufrecht in der Note auf S. 235,*a*. — Was bedeutet aber das Wort in Verbindung mit मन्त्रयोग und लययोग Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,18?

राजयोषित् f. *die Gemahlin eines Fürsten* R. 2,89,14. 104,3.

राजरङ्ग n. *Silber* Çabdar. im ÇKDr.

राजरथ m. *ein fürstlicher Wagen* MBh. 2,2064.

राजराज् m. *Oberfürst:* वैन्य Bhâg. P. 4,18,29. वन्यानां मृगाणाम् wird der in den Wald ziehende Râma R. 2,107,17 (115,17 Gorr.). Bez. *des Mondes* Hariv. 1331.

राजराज m. 1) *Oberkönig, Oberfürst* H. an. 4,57. Med. ǵ. 36. R. 2,92,14. पृथिव्यां राजराजो ऽस्मि सम्राट्सर्वमहीक्षिताम् R. Gorr. 2,9,13. जयदेवकवि° Gît. 11,21. Bez. Kubera's AK. 1,1,1,64. H. an. Med. Halâj. 1,79. MBh. 3,15891. Hariv. 2468. R. 2,95,4 (104,4 Gorr.). 6,4,29. Megh. 3. Kir. 5,51. Daçak. 133,12. Bhâg. P. 4,12,8. Mârk. P. 126,9. *des Mondes* H. ç. 10. H. an. Med. Statt राजराजविमर्दनम् R. 1,74,17 liest die ed. Bomb. besser राजा राजवि°. — 2) N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 7,186. 8,1993.

राजराजता f. *die Würde eines Oberkönigs* Kathâs. 14,31.

राजराजत्व n. dass.: कुबेरस्य MBh. 3,15888.

राजराज्य n. *die Herrschaft über alle Fürsten* Hariv. 1331. 4033.

राजरामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,21.

राजरीति f. *eine Art Glockengut* Râǵan. im ÇKDr.

राजर्षि (राजन् + ऋषि) m. *ein* Ṛshi *fürstlicher Abkunft* (wie Manu, Purûravas, Viçvâmitra u. s. w.) Trik. 2,7,17. 8,20. H. 712. Âçv. Çr. 1,3,4. Kâtj. Çr. 20,3,2. 8. M. 9,67. Bhag. 4,2. 9,33. MBh. 1,7661. 3,1748. 1841. 5,6037. R. 1,4,10. 6,2. 8,26. 52,22. 57,5. 61,12. 2,21,46. 49,15. 94,19. 107,14. 4,20,7. Suçr. 1,16,20. Çâk. 71. 104,18. Lalit. ed. Calc. 313,12. VP. 284. Bhâg. P. 3,13,3. 4,27,20. 9,6,19. Mârk. P. 19, 37. Pañkat. 76,9. °लोक R. Gorr. 1,59,2.

राजर्षिन् m. = राजर्षि, gen. pl. राजर्षिणाम् (aus metrischen Rücksichten) Hariv. 11326.

राजलक्षण n. *ein fürstliches Abzeichen, ein Merkmal, dessen Besitz einen künftigen Fürsten anzeigt*, Daçak. 10,1.

1. राजलक्ष्मन् n. *ein königliches Abzeichen:* अ° adj. Spr. 539.

2. राजलक्ष्मन् m. Bein. Judhishṭhira's Dhanañǵaja im ÇKDr.

राजलक्ष्मी f. 1) *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Ragh. 2, 7. Vikr. 160. Râǵa-Tar. 6,86. Bhâg. P. 4,8,70. Vgl. राजश्री. — 2) N. pr. einer Prinzessin Râǵa-Tar. 8,3481.

राजलिङ्ग n. *ein königliches Abzeichen* AK. 3,4,16,94. Trik. 3,3,204.

राजलीलानामन् n. pl. Titel einer Sammlung von *Beinamen* Kṛshṇa's, *die auf seine Belustigungen als König Bezug haben*, Hall 146.

राजलोक m. *eine Gesellschaft von Fürsten* MBh. 2,479. Kathâs. 14, 59. 18,26. 42,195 (hier fälschlich राज्य°). Mârk. P. 109,11.

राजवंश m. *ein fürstliches Geschlecht* R. Gorr. 2,7,21. Kathâs. 42,55. Verz. d. B. H. 128,*a*,18. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,23. 25. 352,*b*,2. राजवंशावली *Genealogie der Fürsten* (von Videha und Ajodhjâ) Mack. Coll. I,98.

राजवंश्य adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend* AK. 2,7,2. H. 713.

राजवत् (von राजन्) adv. = राजेव Suçr. 1,244,1. = राजनीव R. 2,58, 17. Spr. 2607.

राजवदन m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2799 u. s. w.

राजवध m. *Königswaffe* AV. 6,13,1.

राजवत् (von राजन्) 1) adj. *einen Fürsten habend, reich an Fürsten* P. 8,2,14, Sch. AK. 2,1,13. सभा MBh. 5,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. 82. — 3) f. °वती N. pr. der Gattin des Gandharva Devaprabha Kathâs. 36,114. — Vgl. राजन्वत्.

राजवन्दिन् (°बन्दिन्?) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 53,38.

राजवर्चस (राजन् + वर्चस्) n. *königliche Würde* P. 5,4,78, Vârtt. Vop. 6,78.

राजवर्त्मन् n. *Hauptstrasse* H. 987.

राजवर्धन m. N. pr. Hiouen-thsang I, 247 fehlerhaft für राज्यवर्धन.

राजवल्लभ m. 1) *Liebling eines Fürsten* Mârk. P. 49,49. Davon nom. abstr. °ता f.: °तामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* Pañkar. 4,6,17. — 2) Bez. verschiedener Pflanzen: = राजबदर, राजादनी und राजाम्र Râǵan. im ÇKDr. — 3) Bez. *einer Art von Räucherwerk* Verz. d. B. H. No. 967. — 4) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 336,*a*, No. 790. der 2te Çloka lautet nach ÇKDr.: श्रीनारायणदासेन कविराजेन धीमता। प्रतिसंस्क्रियते द्रव्यगुणो ऽयं राजवल्लभः॥

राजवल्ली f. *Momordica Charantia Lin.* Ratnam. im ÇKDr.

राजवसति f. *das Leben am Hofe eines Fürsten* MBh. 4,92. स राजवसतिं वसेत् 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, wo eben so zu lesen ist.

राजवाधव्य m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,13. vielleicht fehlerhaft für राजबान्धव्य (von °बान्धव).

राजवार्त्तिक n. Titel einer Schrift über Sâmkhja Colebr. Misc. Ess. I, 234. Hall 8. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 570. — Vgl. भोज°.

राजवाह m. *Pferd* Çabdak. im ÇKDr.

राजवाहन m. N. pr. eines Sohnes des Königs Râǵahamsa Daçak.

9,19. fgg.

राजवाह्य m. *ein königlicher Elephant* Trik. 2,8,35. H. 1222. Halâj. 2,69.

राजवि (राजन् + वि) m. *der blaue Holzheher* Çabdârthak. bei Wilson.

राजविद्या f. *Fürstenlehre, Staatslehre* Kâm. Nîtis. 1,7. 8.

राजविनोदताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,12.

राजविहार m. *ein königliches Kloster* Râga-Tar. 4,200.

राजवीथी f. *Hauptstrasse* Ragh. 18,38.

राजवृक्ष m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* AK. 2,4,2,4. H. an. 4,321. fg. Med. sh. 56. *Buchanania latifolia Roxb.* H. an. Med. *Euphorbia Tirucalli* Çabdak. im ÇKDr. — Suçr. 1,133,4. 2,25,9. 66,16. 367,6. 415,12.

राजवृत्त n. *das Verfahren —, der Beruf eines Fürsten* R. 2,21,7. R. Gorr. 2,111,1. 4,16,25. fg. Spr. 1659.

राजवेश्मन् n. *der Palast eines Fürsten* MBh. 3,2660. R. 2,34,19. 57,17. 91,33. R. Gorr. 1,21,5. 70,2. 2,4,14. Kathâs. 18,24. 42,184. 43,12. 124,74.

राजवेष m. *eine fürstliche Kleidung* Ragh. 19,30.

राजशण m. = पट् Çabdam. im ÇKDr. vulgo पाट् (*Corchorus olitorius Lin.*) ÇKDr. °शन Wilson nach ders. Aut.

राजशफर m. *ein best. Fisch,* = इल्लिश Hâr. 189.

राजशय्या f. *ein königliches Ruhebett* H. 716.

राजशाक m. *eine best. Gemüsepflanze,* = वास्तूक Râgan. im ÇKDr.

राजशाकनिका f. desgl., = राजगिरि Râgan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

राजशाकिनी f. dass. ebend.

राजशासन n. *ein königlicher Befehl* M. 10,55.

राजशास्त्र n. *Fürstenlehre, Staatslehre* MBh. 12,12211.

राजशूक m. *eine Papageienart,* = प्राज्ञ Râgan. im ÇKDr.

राजशृङ्ग 1) m. *ein best. Fisch, Macropteronatus Magur* (मद्गुर) *Ham.* H. 1347. — 2) n. *ein fürstlicher Sonnenschirm mit goldenem Griffe* Trik. 2,8,32.

राजशेखर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,16. 140,*a*, No. 282. fg. 140,*b*, No. 284. 146,*b*, No. 313. 182,*b*,45. 209,*a*,11. 254,*b*, 36. 255,*a*,39. 258,*a*,4. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

राजशैल m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 55,7.

राजश्यामलोपासक m. pl. N. einer Secte Verz. d. Oxf. H. 250,*a*,14.

राजश्यामाक m. *eine best. Körnerfrucht* Mârk. P. 32,9.

राजश्री f. *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Hariv. 4344. 4952. R. 2,81,6. R. Gorr. 2,25,38. 96,10. Râga-Tar. 1,281. 5,19. 449. 466. 6,279. — 4,144 ist nicht, wie Troyer annimmt, ein Dichter dieses Namens gemeint, sondern वाक्पतिराज als Beiwort von भवभूति aufzufassen.

राजस 1) adj. (f. ई) *der Qualität* रजस् *angehörig, zu ihr in Beziehung stehend* Maitrjup. 3,5. 5,2. M. 12,32. 36. 40. 45. fgg. Bhag. 7,12. 14,18. 17,2. Spr. 4770. Sâṁkhjak. 45. Suçr. 1,130,4. 192,6. Tattvas. 20. Bhâg. P. 3,29,9. Mârk. P. 40,7. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, N. 1. 56,*b*,10. 80,*a*,25. 81,*a*,1 v. u. Wilson, Sel. Works 1,12. fg. 252. Sarvadarçanas. 154,22. — 2) f. ई Bein. der Durgâ Çabdar. im ÇKDr.

राजसंसद् m. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* Kathâs. 13,168.

राजसत्त्र n. *Königsopfer, ein von einem Fürsten veranstaltetes Opfer* Kathâs. 33,54.

राजसत्व n. nom. abstr. von राजस 1) Ragh. 11,90.

राजसदन n. *ein fürstlicher Palast* AK. 2,2,9.

राजसद्मन् n. dass. Kathâs. 43,13. 101,116.

राजसभा f. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* AK. 3,6,9. Vet. in LA. (III) 2,3.

राजसर्प m. *eine Schlangenart* H. 1304. Halâj. 3,21. — Vgl. राजाहि.

राजसर्षप m. *schwarzer Senf, Sinapis ramosa Roxb.* H. 418. Hâr. 181. Halâj. 2,426. Ratnam. 114. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 3 Likshâ = $^1/_3$ Gaurasarshapa M. 8,133. Jâǵń. 1,361. fg.

राजसाड् N. pr. eines Landes Kshitîç. 52,17.

राजसात् (von राजन्) adv.: संपद्यते *fällt dem Fürsten zu* Vop. 7,85.

राजसायुज्य n. *Königthum* Çabdârthak. nach Wilson.

राजसारस m. *Pfau* Çabdam. im ÇKDr.

राजसिंह m. 1) *ein Löwe von Fürst, ein ausgezeichneter König* MBh. 5,7229. 7297. 7418. R. 1,12,22. fg. (21. fg. Gorr.). Spr. 2262. — 2) N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 13. Hall 71.

राजसिक adj. = राजस 1) Pańkar. 1,1,55.

राजसुख n. *die Freude —, das Glück eines Fürsten* Kaurap. 26.

राजसुत 1) m. *Königssohn, Prinz* R. 2,26,2. 72,42. 100,38. R. Gorr. 2,98,24. Ragh. 3,38. Kathâs. 74,123. — 2) f. आ *Königstochter, Prinzessin* Ragh. 6,26. Kathâs. 7,71. 16,17. 24,78. 28,107.

राजसुन्दरगणि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 186,*a*,5.

राजसू (राजन् + सू) adj. *zum König machend* VS. 10,1. 6.

राजसूनु m. *Königssohn, Prinz* R. 1,27,16 (28,15 Gorr.). Kathâs. 34, 217. 39,160. Mârk. P. 21,11.

राजसूय m. (sc. क्रतु, यज्ञ) und n. (AK. 3,6,2,31) Bez. *der religiösen Feier der Königsweihe* P. 3,1,114. Vop. 26,11. येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट्॥ AK. 2,8,1,3. H. 691. Halâj. 2,267. राजसूयो नृपाध्वरः Trik. 2,7,5. AV. 4,8,1. 11,7,7. TS. 5,6, 2,1. TBr. 2,7,4,1. 6,1. Ait. Br. 7,15. Âçv. Çr. 9,3,1. 4,1. राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति Çat. Br. 5,1,1,12. 2,2,9. Kâtj. Çr. 14,1,7. Kauç. 92. MBh. 3,1728. 2445. Hariv. 1333. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,41. Bhâg. P. 1, 9,41. Mârk. P. 7,39. Sarvadarçanas. 122,9. 10. P. 2,4,4, Sch. °याजिन् Çat. Br. 5,5,1,2. 2,5. राजसूयेष्टि MBh. 2,514. राजसूयारम्भपर्वन् heissen die Adhjâja 12—18 im 2ten Buche des MBh. राजसूयो मन्त्रः *ein beim* Râgasûja *herzusagender Spruch* P. 4,3,66, Vârtt. 2, Sch. Nach Çabdârthak. bei Wilson bedeutet das Wort noch: *Lotus; eine Art Reis; Berg.*

राजसूयिक adj. (f. ई) *zum* Râgasûja *in Beziehung stehend, davon handelnd* u. s. w. Schol. zu Kâtj. Çr. 18,5,3. 15. दक्षिणा P. 5,1,95, Sch. Mârk. P. 7,25. 36. 39. पर्वन् MBh. 1,318. so heissen die Adhjâja 32—34 im 2ten Buche des MBh.

राजसेवक m. *Diener eines Fürsten* Spr. 3183, v. l. Kathâs. 20,166. 111,24. Bhâg. P. 7,5,15. *ein* Radschput Pańkat. 217,25.

राजसेवा f. *Fürstendienst* Çâṇḍ. 51. Spr. 2609. °सेवोपजीविन् Kathâs. 73,257.

राजसेविन् m. *Fürstendiener* Spr. 2947. 4939.

राजस्कन्ध m. *Ross* Trik. 2,8,41.

राजस्तम्ब m. N. pr. eines Mannes; s. राजस्तम्बायन und °स्तम्बि.

राजस्तम्बायन m. patron. ÇAT. BR. 10,4,2,1. proparox. 6,3,9.

राजस्तम्बि m. desgl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,33.

राजस्त्री f. *Gattin eines Fürsten* R. 2,57,21.

राजस्थलक adj. von राजस्थली gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्थली f. N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्व n. *Eigenthum eines Fürsten* M. 8,149.

राजस्वर्ण m. *eine Art Stechapfel*, = राजधुस्तूरक RÂGAN. im ÇKDR.

राजस्वामिन् m. *Fürstenherr*, als Beiw. Vishṇu's RÂGA-TAR. 8,1824.

राजहंस m. 1) *Flamingo* AK. 2,5,24. H. 1326. HALÂJ. 2,97. = कलहंस und कादम्ब H. an. 4,331, MED. s. 61. — HARIV. 12670. R. 4,40,47. RAGH. 5,75. KUMÂRAS. 1,34. ṚT. 3,21. MEGH. 11. VIKR. 93. Spr. 626. KATHÂS. 39,160. 42,224. 50,6. BHÂG. P. 3,28,27. 4,7,21. 5,17,13. PAÑKAR. 1,7,30. HIT. 79,7. Verz. d. Oxf. H. 132,b, No. 243. am Ende eines adj. comp. f. आ (v. l. fehlerhaft ई) Spr. 573. °हंसी *Flamingoweibchen* RAGH. 6,26. VIKR. 19. KATHÂS. 69,7. 112,96. KAURAP. 5. 25. — 2) *ein ausgezeichneter Fürst* TRIK. 3,3,448. H. an. MED. — 3) N. pr. eines Fürsten von Magadha DAÇAK. 2,7. eines Autors Verz. d. B. H. No. 941. eines Dieners KATHÂS. 6,124.

राजहर्म्य n. *der Palast eines Fürsten* KÂM. NÎTIS. 16,6.

राजहर्षण n. *die Blüthe von Tabernaemontana coronaria R. Br.* (तगरपुष्प) RÂGAN. im ÇKDR. *Stadt* WILSON nach ÇABDÂRTHAK. (eine Verwechselung von तगर und नगर).

राजहस्तिन् m. *ein stattlicher Elephant* P. 6,2,63, Sch. HÂR. 49.

राजहार m. *Bringer des* Soma KÂTH. 34,3.

राजहासक m. *ein best. Fisch, Cyprinus Catla* (कातल) *Ham.* ÇABDAR. im ÇKDR.

राजाङ्गण (राजन् + अ°) n. *der Hofraum in einem fürstlichen Palaste* KATHÂS. 35,41. 47.

राजातन m. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 2,78. *Buchanania latifolia Roxb.* ÇABDAM. im ÇKDR. Viçva bei UGGVAL. *Butea frondosa Roxb.* und *Mimusops Kauki* VIÇVA. — Vgl. राजादन.

राजात्मकस्तव m. Bez. *eines best. Lobspruches auf* Râma WEBER, RÂMAT. UP. 363.

राजात्यावर्तक m. = राजावर्त RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजादन m. *Buchanania latifolia* (n. *die Nuss*) AK. 2,4,2,15. H. 1142. an. 4,188. MED. n. 203. *Mimusops Kauki* oder *hexandra* (n. *die Frucht*) AK. 2,4,2,26. *Butea frondosa* MED. RATNAM. 44. = त्रिपत्रक H. an. — SUÇR. 1,157,1. 211,19. 228,15. 2,15,7. 79,1. 131,12. 490, 5. VÂGBH. 6, 120. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 176,17. राजादनफल oder राजादनफल (vgl. die Ausleger zu AK. 2,4,2,26) n. ÇÂNT. 3,12, Sch. राजादनी f. *ein best. Baum*, = कपीष्ट, नीपबीज u. s. w. RÂGAN. im ÇKDR. ÇATR. 1,270. 279.

राजाद्रि m. *eine best. Gemüsepflanze*, = राजगिरि RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजाधिकारिन् m. *Richter* KATHÂS. 60,222.

राजाधिकृत m. dass. VARÂH. BṚH. S. 10,16. KATHÂS. 60,228.

राजाधिदेय HARIV. 2032 fehlerhaft für राजाधिदेव.

राजाधिदेव 1) m. Bein. Çûra's HARIV. 2032. fg. (राजाधिदेय ed. Calc.). 5085. 6628. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Çûra's HARIV. 1928. VP. 437. BHÂG. P. 9,24,30. 38.

राजाधिराज m. *Oberkönig* TAITT. ÂR. 1,31,6.

राजाधिष्ठान s. u. अधिष्ठान 1).

राजाध्वन् (राजन् + अ°) m. *Hauptstrasse* RÂGA-TAR. 1,370.

राजान्, °नति denom. von राजन् SIDDH. K. zu P. 6,4,15.

राजानक (राजन् + अ°) m. *regulus, kleiner Prinz* RÂGA-TAR. 6,261. 8, 2969. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 16. °राम Verz. d. Oxf. H. 239,a,12.

राजानुजीविन् m. *ein Diener des Fürsten* MATSJA-P. im ÇKDR.

राजान्न (राजन् + अन्न) n. 1) *von einem Fürsten* oder *Krieger empfangene Speise* M. 4,218. °प्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 59,b,38. — 2) *eine Art Reis (Fürstenspeise), der in* Andhra *gebaut wird*, RÂGAN. im ÇKDR.

राजान्यत्व (राजन् + अ°, nom. abstr. von अन्य) n. *Thronwechsel* VARÂH. BṚH. S. 3,18.

राजाभिषेक m. *Königsweihe* Verz. d. Oxf. H. 332,b,12. 335,b,19. °पद्धति f. Titel einer Abhandlung über diesen Gegenstand MACK. Coll. I,34.

राजाम्र m. *eine Art* Âmra RÂGAN. im ÇKDR.

राजाम्ल m. = अम्लवेतस RÂGAN. im ÇKDR.

राजाय् (von राजन्), °यते P. 1,4,15, Sch. 8,2,2, Sch. *sich wie ein König gebahren, sich dafür halten* Spr. 894.

राजार्क m. = अर्क *Calotropis gigantea* RÂGAN. im ÇKDR.

राजार्ह (राजन् + अर्ह) 1) adj. *einem Fürsten zukommend, ihm gebührend, seiner würdig* MED. h. 23. R. 3,49,42. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lam.* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) n. *a) Agallochum* AK. 2,6,3,28. H. 640. MED. — *b) eine Reisart*, = राजान्न RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजार्हण (राजन् + अ°) n. *ein fürstliches Ehrengeschenk* R. GORR. 2,72,20.

राजालाबू f. *eine Gurkenart* MADANAVINODA im ÇKDR.

राजालुक m. *ein best. Knollengewächs*, = महाकन्द HÂR. 101.

राजावर्त m. *eine Art Diamant* H. 1066. राजावर्तोपलश्याम KATHÂS. 73, 339. unter den रस aufgeführt Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761.

राजावलि und °ली f. *Königsreihe*, Titel einer *Fürstenchronik* Verz. d. Oxf. H. 147,a,36. Verz. d. B. H. No. 566. °पाटक Titel einer anderen *Chronik* RÂGA-TAR. ed. Calc. auf dem Titelbl., °पताका (welches AUFRECHT in °पताका verbessert) Verz. d. Oxf. H. 147,a,37.

राजाश्व m. *ein starker Hengst* AV. 6,102,2. P. 8,2,2, Sch.

राजासन n. *Königssitz, Thron* MBH. 4,2266. HARIV. 4344. R. 2,91,37 (100,36 GORR.). R. GORR. 2,4,23.

राजासन्दी f. *ein Schemel, auf den der* Soma *gesetzt wird*, VS. 19,16. ÇAT. BR. 3,3,4,26. 14,1,3,8. KÂTJ. ÇR. 26,2,17.

राजासलखण m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,29,2. nach HALL verderbt aus राजसलक्षण.

राजाहि m. *eine Art Schlange* (अहि) TRIK. 1,2,3. — Vgl. राजसर्प.

1. राजि m. N. pr. eines Sohnes des Âju MBH. 1,3150. रजि ed. Bomb.

2. राजि (UṆÂDIS. 4,124) und राजी (UGGVAL.) f. VOP. 4,17. SIDDH. K. 248,a,2. 1) *Streifen* (पङ्क्ति, रेखा) AK. 2,4,1,4. H. 1423. an. 2,174. MED. g. 14. HALÂJ. 4,36. भस्म°, उदक° ÂÇV. ÇR. 3,10,15. ÇAT. BR. 14,5,2,3. KÂTJ. ÇR. 25,3,7. LÂTJ. 8,8,33. श्वेतलोहित° MBH. 7,1009. 9,2609. नील° VARÂH. BṚH. S. 64,1. SUÇR. 1,113,5. 269,8. 286,6. 2,247,9. 258,12. 261,16. 263,14. 264,7. KÂM. NÎTIS. 7,19. अनाविष्कृतदान° (द्विपेन्द्र) RAGH.

2,7. Spr. 2916. Vikr. 78. R. 5,13,39. कुन्तलराजय: Dhûrtas. in LA. 80, 14. आविष्कृतवर्कराजि adv. Spr. 2543. प्राणि° (प्राणिवाजि ed. Bomb.) MBh. 7,510. Pankar. 1,7,30. राजीव° Spr. 2629. Çiç. 4,9. खड्ग° Verz. d. Oxf. H. 117,a,38. मुक्ता° Pankar. 1,3,78. उत्पद्मराजीनि विलोचनानि Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211. धूम° Hariv. 12807. धान्त° Spr. 4871. मेघ° R. 2,93,11 (102,12 Gorr.). R. Gorr. 2,64,19. 5,5,31. Mâlav. 56. नीलपयोद° Kumâras. 7, 39. घन° R. 7,4,23. in Schlangennamen: अङ्गुल°, बिन्दु° Suçr. 2,265,16. स्निग्ध° 266,2.4. राजितम् *in langen Reihen* Varâh. Brh. S. 12,2. Vgl. तिरश्चि°, तीर्थ°, नील°, रक्त°, रत्न°, रोम°, वन°. Wohl wie ऋजु von रज् = 4. अर्ज्. — 2) ई = राजिका *schwarzer Senf* Râgan. im ÇKDr. — 3) राज्याम् Kathâs. 41, 58 fehlerhaft für राज्ञ्याम्.

राजिक 1) adj. von राजन् in षोडश° *von sechszehn Königen handelnd* MBh. 7,2451; vgl. die Unterschriften in den Adhjâja 55—71 desselben Buches. — 2) m. *a)* = नरेन्द्र (nicht *König*) Trik. 3,3,359. — *b)* N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,b,23. — 3) f. आ *a) Streifen* (पङ्क्ति, रेखा), = राजि H. an. 3,88. Med. k. 145. — *b) Feld* H. an. Med. — *c) schwarzer Senf, Sinapis ramosa Roxb.* (vgl. राजसर्षप) AK. 2,9,19. Trik. 3,3,413. H. 418. H. an. Med. Halâj. 2, 426. Ratnam. 114. Suçr. 1,217, 5. Pankat. 184, 18. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 6 Marîki = $1/3$ Sarshapa Çârṅg. Saṁh. 1,1,14. — *d)* N. *eines zu den* क्षुद्ररोग *gezählten Ausschlages* Çârṅg. Saṁh. 1,7,65. — Vgl. धर्मराजिका.

राजिकाफल m. *weisser Senf, Sinapis glauca Roxb.* Râgan. im ÇKDr.

राजिचित्र adj. *buntgestreift*, Bez. einer Art Schlange Suçr. 2,265,16.

राजिनी s. रञ्जिनी.

राजिफला f. *eine Gurkenart (mit gestreiften Früchten)*, = चीनाकर्कटी Râgan. im ÇKDr.

राजिमत् (von 2. राजि) adj. *gestreift* Suçr. 2,343,11. Hariv. 10291 (राजयन्ति st. राजिमन्ति die neuere Ausg.; vgl. R. 5,28,13. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211). Bez. einer Gattung von Schlangen Suçr. 2,264,8. 265, 3. 16. 266,4. 267,5. रोमाञ्चोद्गतराजिमत् Hariv. 2902. — Vgl. राजीमत्.

राजिल (wie eben) adj. *gestreift;* m. Bez. *einer Gattung von Schlangen* AK. 1,2,1,6. H. 1305. Halâj. 3 21. Suçr. 2, 266, 3. Ragh. 11, 27. Kathâs. 22,202.

राजी s. u. 2. राजि.

राजीक m. pl. N. pr. eines Volkes R. 4,44,13, v. l.; s. S. 526.

राजीकृत (2. राजि + कृत) adj. *gestreift, Streifen bildend* R. 5,28,13; vgl. Hariv. 10291. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211.

राजीफल m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râgan. im ÇKDr.

राजीमत् adj. = राजिमत् *gestreift* Suçr. 2, 429, 12. Schlangen Verz. d. Oxf. H. 309,a,12.

राजीय्, °यति denomin. von राजन् Schol. zu P. 1,4,15. 8,2,2. Vop. 21,3.

राजीव (von राजी) P. 5, 2, 109, Sch. 1) adj. (f. आ) *gestreift:* °पृश्नि (nach dem Schol. *lotusfarbige Flecken habend*) Kâtj. Çr. 22,9,13. राजीवा आनयन्ति तांश्चिवोदाणा: Pankav. Br. 21,14,8. nach Agaja im ÇKDr. = राजोपजीविन् (also von राजन् abgeleitet) *von einem Fürsten seinen Lebensunterhalt habend.* — 2) m. *a) ein best. Fisch* AK. 1,2,2,19. Trik. 3,3,420. H. an. 3,710. Med. v. 48. Halâj. 3,37. M. 5,16. Jâgn. 1,178. Suçr. 1,206, 6. 18. *sein Laich ist giftig* 2,257,17. — *b) eine Antilopenart* Trik. H. an. Med. — *c) Elephant* Trik. 2,8,33. — 3) n. *eine blaue Lotusblüthe* AK. 1,2,2,40. H. 1161. H. an. Med. Halâj. 3,58. gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Jâgn. 3,317. Kumâras. 3,45. Spr. 2629. Çiç. 4,9. °नेत्र adj. so v. a. *blauäugig* MBh. 5,3253. °लोचन adj. (f. आ) 3,1754. 5,7399. 13,102. Hariv. 11071. R. 2,72,7. 95,2. 3,68,22. °शुभलोचन 5,31,30.

राजीविनी f. *Nelumbium speciosum* (die Pflanze, die Blüthe ist राजीव), *eine Gruppe von Nel. spec.* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

राजेन्द्र (राजन् + इन्द्र) m. 1) *ein ausgezeichneter Fürst, Oberkönig, Kaiser* MBh. 5,5948. 5952. 7052. 7118. 7294. R. Gorr. 2,110,21. (मण्डलेश्वरात्) तस्माद्दशगुणो राजा राजेन्द्र: परिकीर्तित: Brahmavaiv.-P. im ÇKDr. Vgl. auch u. इन्द्र 1) *b)*. — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 150,b,34. eines Sohnes des Kâçînâtha 261,a,13.

राजेन्द्रगिरि m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,239.

राजेय adj. von Ragi *abstammend:* क्षत्र Hariv. 1477.

राजेयु m. N. pr. v. l. für कृतेयु VP. 447, N. 7.

राजेश्वर (राजन् + ई°) m. *Oberkönig*, N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,223.

राजेष्ट (राजन् + 1. इष्ट) 1) m. = राजपलाण्डु Râgan. im ÇKDr. u. d. l. W. — 2) n. *eine Art Reis*, = राजान्न Râgan. im ÇKDr. u. d. l. W.

राजोद्दालनसंज्ञक m. *eine best. Pflanze*, = भूताङ्कुश Râgan. im ÇKDr.

राजोपकरण (राजन् + उप°) n. pl. *die Insignien eines Fürsten* Varâh. Brh. S. 3,18. Kathâs. 43,47. — Vgl. राज्योपकरण.

राजोपसेवा f. *Königsdienst* M. 3,64.

राजोपसेविन् m. *ein königlicher Diener* Varâh. Brh. S. 39,3.

राज्जुकण्ठिन् m. pl. *die Schule des* Raggukaṇṭha gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्जुदाल adj. von रज्जुदाल TBr. 3,8,19,1. 20,1. Çat. Br. 13,4,4,5. Kâtj. Çr. 20,4,17.

राज्जुभारिन् m. pl. *die Schule des* Raggubhâra gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्ञी (von राजन्) f. 1) *Königin, Fürstin* Vop. 4,12. Med. ṇ. 2. VS. 14, 13. 15,10. TBr. 2,2,6,2. 3,11,2,1. Ait. Br. 5,23. MBh. 3,2682. 5,7027. 7451. Ragh. 1,57. 76. Kathâs. 13,64. 18,87. Râga-Tar. 5, 225. Varâh. Brh. S. 5,86. °पद *die Würde —, die Stellung einer Königin* 70,10. Vgl. मरुत्°, सर्प°. — 2) Bez. *der nach Westen gerichteten Seite des Gehäuses der Weltseele* Khând. Up. 3,15,2. — 3) ein N. der Gemahlin des Sonnengottes Med. Mâtsja-P. 11 im ÇKDr.; vgl. VP. 266, N. 1. — 4) *gelbrothes Messing* H. 1048.

राज्य (wie eben) 1) adj. *zur Herrschaft berufen, königlich* TBr. 1,4, 2,4. — 2) n. (auch राज्य und राज्य AV.) *Herrschaft, Königthum; Reich* (vgl. राष्ट्र) gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128. gaṇa ब्राह्मणादि zu 124 (vgl. Siddh. K. 92,a). Vop. 7,19. AK. 3,4,12,81. त्वां विशो वृणतां राज्याय AV. 3,4,2. यासां सोम: परि राज्यं बभूव 12,3,31. पश्च राज्यानि वीरुधाम् 11,6,15. यमस्य राज्ये 18,4,31. स राज्ञो राज्यमनु मन्यतामिदम् 4,8, 1. TBr. 1,4,2,4. TS. 2,1,2,4. 6,6,5. 7,5,8,3. Çat. Br. 2,2,2,1. 4,3,6. नहि ब्राह्मणो राज्यायालम् 5,1,1,12. अवरं राज्यं परं साम्राज्यम् 13.3,2,12.

त्मेणोत्तरीयेण मेघवर्णेन राजता MBh. 3,1831. 4,190. राजन्तीम् — नलिनीमिव सर्वतः R. 2,95,4. राजत्कुण्डलमाला 3,42,43. (गिरिम्) राजन्तमुच्छ्रितैः शृङ्गैः 4,41,40. शङ्खचक्रगदापद्मराजद्भुजचतुष्टय Pańkar. 3,11,21. 12, 12. 15,4. Prab. 81,4. रराज कुन्त्या माद्र्या च पाण्डुः सह वने चरन्। करेण्वोरिव मध्यस्थः श्रीमान्पौरंदरो गजः॥ MBh. 1,4477. 2,695. 5,7. Hariv. 3968. R. 1,1,32. रराज सुभृशं यज्ञः कल्पवृक्षैरिवोच्छ्रितैः R. Gorr. 1,13, 27. न रराज शशी चापि 2,40,16. 5,5,26. Ragh. 3,7. 6,6. रणाजितिः — रराज मृत्योरिव पानभूमिः 7,46. 12,100. Kumâras. 1,38. Kathâs. 18,404. 27,13. Bhâg. P. 8,15,9. Bhaṭṭ. 9,61. तानि ग्रस्तान्यनीकानि रेजुरर्जुनमार्गणैः। शैलं प्रति बलाग्राणि व्याप्तानीवार्करश्मिभिः॥ MBh. 4,1703. 1705. R. Gorr. 2,60,16. 31,18. 6,70,11. Ragh. 10,60. 11,7. Kathâs. 22, 3. Bhâg. P. 4,10,19. 8,10,15. Bhaṭṭ. 2,2. 14,7. med.: तत्र स्म राजते भैमी सर्वाभरणभूषिता। सखीमध्ये ऽनवद्याङ्गी विद्युत्सौदामनी यथा॥ MBh. 3,2083. एषा गङ्गा सप्तविधा राजते 10821. उपगीयमाना भ्रमरै राजन्ते वनराजयः 11606. R. 2,66,22. माल्यापणेषु राजन्ते नाद्य पण्यानि वै तथा 71,37. 76,9. R. Gorr. 2,107,14. Mṛčch. 1,7. Vikr. 160. सतो ऽपि हि न राजन्ते दरिद्रस्येतरे गुणाः Spr. 3120. मुक्ताकारतया *in der Gestalt von* 3152. 3842. प्रतिशशी च यदा दिवि राजते Varâh. Bṛh. S. 28,11. Kathâs. 27,136. हंसवत्क्वापि राजते 47,111. नृत्तेन काचिद्राजते 113. Weber, Râmat. Up. 286. राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सतां गणे। यावद्भागवतं नैव श्रूयते Bhâg. P. 12,13,14. Mârk. P. 31,65. Prab. 41,10. तोयदेषु यथा — राजमाना शतह्रदा MBh. 6,4542. सूक्ष्मवस्त्रधरं रेजे जघनम् 3, 1827. Kumâras. 6,49. गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता। शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव॥ Spr. 865. 2211. सुप्तप्रबुद्धमिव तद्रेजे राजगृहं ततः Kathâs. 14,21. 21,14. 27,8. 39,160. Râǵa-Tar. 4,514. Bhâg. P. 3,19,3. 8,15,35. — partic. राजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) *sich auszeichnend, prangend, glänzend, verschönert:* वक्षोराजितकौस्तुभ Hariv. 15778. (ध्वजः) विचित्रवर्णविचलद्भिर्जयन्तीव राजितः Kathâs. 81,35. विहंगमैः। गुञ्जद्भिरित एह्यीति वदद्भिरिव राजितम् (वनम्) 71,195. Bhâg. P. 4,6,18. Kâvjâd. 3,10. Bhaṭṭ. 17,101. बाणैः — गार्ध्रराजितैः (vgl. u. गार्ध्रवाजित, auch in den Nachträgen) MBh. 3,12230. कङ्क° (कङ्कतेजित die neuere Ansg.) Hariv. 9318. Kir. 5,9. रत्न° Kathâs. 12,154. हारकेयूर° 26,232. 33,211. 43,9. विकीर्णकूलद्रुमराजितासु नदीषु MBh. 13,522. (सरः) जलोर्मिरवराजितम् Çatr. 1,60. उच्छ्वसन्मत्तकोकिलारावराजिते मधूत्सवे Kathâs. 35,5.

— caus. *walten, herrschen:* अधिराजो राजसु राजयातै (°ति TS.) AV. 6,98,1.

— अति *hinfahren über:* सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धर्वीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् ṚV. 6,12,5.

— अनु *nachahmen:* उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति ṚV. 2,43,1. सोमौ विराजमनु राजति ष्टुप् 9,96,18.

— अभि med. *prangen:* एतस्योरसि सुव्यक्तं श्रीवत्समभिराजते MBh. 3,10960.

— उप an zwei verdorbenen Stellen, nämlich MBh. 9,3608 und Pańkat. V, 12; an der ersten Stelle ist mit der ed. Bomb. zu lesen: न विमतिं काचिद्भजित्वा तु पराजितः, an der zweiten mit Bühler: आ जन्मनः स्मरोत्पत्तौ मानसेनोपराजितम्.

— निस् caus. 1) *prangend machen, erglänzen lassen:* अस्पृष्टचरणा स्यस्य चूडामणिमरीचिभिः। नीराजयन्ति भूपालाः पादपीठान्तभूतलम्॥ Prab. 23,6. 7. अमरचयचमूचक्रचूडामणिश्रेणिनीराजितोपान्तपादद्वयाम्भोज 81,3. 2,3. दिव्यास्त्रस्फुरदग्र्यदीधितिशिखानीराजितज्यं धनुः Uttarar. 111,14 (150,12). — 2) *die* नीराजन *genannte Cerimonie vollziehen an* (acc.): नीराजयित्वा सैन्यानि प्रयान्ति विजिगीषवः (पृथिवीक्षितः) Hariv. 3840. राजा नीराजितः Varâh. Bṛh. S. 44,22. नीराजितहयद्विप Kâm. Nîtis. 4,66.

— परि *nach allen Seiten hin Glanz verbreiten:* प्रभया परिराजन्तम् (मृगम्) R. 3,49,8. वृताः सुहृद्भिः परिरेजुरोजसा यथा सदस्यैर्विधिभिस्त्रयो ऽग्नयः 2,112,33. सर्वतो हनुमानेकः संपतन्परिराजते। हुताशन इवाकाशे ज्वालामालापरिष्कृतः॥ 5,52,7.

— प्रति *in seinem Glanze erscheinen wie* (इव): अनूपोपवनैः कान्तैः कान्ता जनमनोरमा। सतारका द्यौरिव सा द्वारका प्रत्यराजत॥ Hariv. 6545.

— वि 1) = simpl. 1): बृहन्मंहान्त उर्विया वि राजथ ṚV. 5,55,2. 1, 188,4. 3,10,7. स दर्शतस्य वर्पुषो वि राजसि 10,140,4. वीरस्य 159,6. देवानाम् AV. 1,10,1. 19,42,4. वि ते मदा अराजिषुः *bemeisterten dich* 8, 14,10. मन्द्रानो अस्य बर्हिषो वि राजसि 13,4. 15,5. धियो विश्वा वि राजति 1,3,12. पुत्रायज्ञा सहसा वि राजसि *bemeistern* 5,8,5. विश्वं भुवनम् 63,7. रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति 9,71,7. 10,170,1. त्रिंशद्धाम 189, 3. वि पर्वतेषु राजथ 8,7,1. अग्निः प्रियेषु धामसु सम्राडेको वि राजति VS. 12, 117. AV. 2,36,3. 3,4,1. उग्रो विराजन्नप वृङ्क्ष्व शत्रून् 12,6. 11,1,22. 5,16. 14,1,64. यो वाव सर्वासु दिक्षु विराजति स एव विराजति Çat. Br. 8,5,1, 5. लोके Ait. Br. 1,5. पवमानो (सोमः, der auch राजन् ist) वि राजति ṚV. 9,5,1. रयिर्विराजति द्युमान् 3.61,18. — 2) = simpl. 2); act.: विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन Khând. Up. 2,16,2. व्यराजन्हुताशनस्तत्र सूर्याग्निप्रतिरञ्जिताः MBh. 1,1412. विराजति यथा सोमो मेघैर्मुक्तः 3,8106. 8148. एषा भागीरथी — वातेरिता पताकेव विराजति नभस्तले 8646. R. 2,97, 19. R. Gorr. 2,103,6. 106,16. 3,32,31. हृद्यावुपचितौ वृत्तौ संहतौ तौ (पयोधरौ) विराजतः 52,25. 4,44,56. 5,67,13. R. ed. Bomb. 4,40,55. Spr. 2277. शीलं शौचं क्षान्तिर्दाक्षिण्यं मधुरता कुले जन्म। न विराजन्ति हि सर्वे वित्तहीनस्य पुरुषस्य॥ 2992. Çiç. 9,62. मृदुकुञ्चितदीर्घेण कुसुमोत्करधारिणा। केशहस्तेन ललना जगामाथ विराजती॥ MBh. 3,1822. 2437. 12068. सोमे मन्दरश्मौ विराजति Hariv. 4356. सूर्ये विराजति 4897. R. 5, 11,1. 45,2. 6,84,27. करकमलविराजत्स्वायुधा Pańkar. 3,8,2. Bhaṭṭ. 6, 143. सह सीतया। विरराज महाबाहुश्चित्रयेव निशाकरः R. 3,23,11. Ragh. 2,20. 15,10. Râǵa-Tar. 6,279. कृष्णयानुगतौ तत्र नृवीरौ तौ विरेजतुः MBh. 1,7125. R. 1,19,12. 2,104,30. 3,56,32. Kathâs. 18,6. 19,68. 34,32. Bhaṭṭ. 11,21. — med.: अनुसंवत्सरं जाता अपि ते कुरुसत्तमाः। पाण्डुपुत्रा व्यराजन्त पञ्च संवत्सरा इव॥ *erschienen wie* MBh. 1,4856. एतस्मात्कारणात् — हरिश्चन्द्रो विराजते। तेभ्यो राजसहस्रेभ्यः *überragen* 2,496. विमानस्थो विराजते 3,8138. एष तस्याश्रमः पुण्यो य एषो ऽग्रे विराजते 10510. चन्द्रविस्पर्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे 4,189. 238. 1043. यशसा 13,1707. गुणाः 5898. R. 1,13,29. 2,65,17. 80,21. 94,6. R. Gorr. 2,8,43. 26,12. 59,17. 3,52,30. 4,2,15. 6,92,83. Kâm. Nîtis. 8,2. 87. Spr. 1271. 3347. 4165. 4409. (वाक्) प्रिया वा मधुरा वा तु स्वाम्येव विराजते so v. a. *am Platze sein* 4600. 5195. Kir. 5,16. Kathâs. 25,173. Râǵa-Tar. 4,401. Bhâg. P. 2,9,12. 3,13,39. 9,5,8. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*,8. नागाश्च भूरिमदराजिविराजमानाः Spr. 2916. Râǵa-Tar. 6,317. Bhâg. P. 8,15,5. Prab. 21,18. सौभाग्यचिह्नमिव मूर्ध्नि पदं विरेजे Spr. 3248.

Râǵa-Tar. 4,195. 5,449. Bhâg. P. 4,15,13. — partic. विराजित (könnte auch zum caus. gezogen werden) = राजित : तोरणेन विराजितं रङ्गम् MBh. 3,2193. सुवर्णशृङ्गैस्तु विराजितानां गवाम् 13,2952. Hariv. 2422. 6880. 11790. R. 2,100,21 (108,20 Gorr.). 5,13,29. Varâh. Bṛh. S. 12,2. शीलेन विराजितवपुर्गुणाः Kathâs. 20,117. 22,251. 25,15. Bhâg. P. 3,23, 15. 8,18,3. Verz. d. Oxf. H. 151, a, 7. Pańkar. 1,6,15. 7,29. गृहं क्रीडारतिविराजितम् MBh. 4,741. 7,1567. युद्धं सिंहनादविराजितम् 7063. 12,12316. Hariv. 11861. R. 5,13,11. Kir. 5,4. Kathâs. 106,46. ज्ञानेन विज्ञानविराजितेन Bhâg. P. 5,5,13. Pańkar. 1,3,77. fg. 4,57. Çatr. 1,296. — Vgl. विराज्. — caus. *prangen machen, mit Glanz erfüllen, Glanz verleihen, erhellen;* mit acc.: (गोकुलम्) विराजयति तं देशम् MBh. 13, 2699. विराजयन्राजसुतो राजमार्गम् R. 2,26,2. R. Gorr. 2,38,17. 3,75,55. भूतानि सर्वाणि विराजयन्तम् (शीतांशुम्) 5,11,4. Bhâg. P. 5,20,13. व्यराजयत वैदेही वेश्म तत्सुविभूषिता। उद्यतो ऽंशुमतः काले खं प्रभेव विवस्वतः ॥ R. 2,39,18.

— अतिवि (अति वि) *in hohem Grade prangen, — glänzen;* med. MBh. 3,2700. 11844. 11860. 11863. Hariv. 7078. R. Gorr. 2,2,22. Kâm. Nîtis. 3,14.

— अधिवि *vorherrschen, sich auszeichnen vor* (acc.): सुरुक्मे ह्यधि श्रिया विराजतः ṚV. 1,188,6. अधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति 9,75,3.

— अनुवि *nachlenken:* अनु प्रयाणमुषसो वि राजति *der Bahn der Morgenröthe zieht er nach* ṚV. 5,81,2.

— अभिवि 1) als Umschreibung von वि + राज् Nir. 11,27 wohl *regieren.* — 2) *prangen, einen Glanz um sich verbreiten;* med.: (नारायणस्थानम्) भासयन्सर्वभूतानि सुश्रियाभिविराजते MBh. 3,11861. 7,3945. न तत्र सूर्यस्तपति न सोमो ऽभिविराजते 12,13362. Hariv. 6413. R. 2,26, 10. Bhâg. P. 8,3,5. partic. °राजित (könnte auch caus. sein) *prangend, in vollem Glanze stehend:* दिव्यपुष्पोपहारैश्च सर्वतो ऽभिविराजितम् (आश्रमम्) MBh. 3,11042. 12,1546.

— संवि *prangen:* अर्जुनस्तु रणे राजन्योधयन्संव्यराजत MBh. 6,5472.

— सम् *walten über:* सम्राजन्तमध्वराणाम् ṚV. 1,27,1. संराजितुम् P. 8, 3,25, Sch. — Vgl. सम्राज्.

2. राज् (= 1. राज्), nom. राट् P. 3,2,61. 8,2,36. Vop. 3,77. fg. 134. 1) m. *Fürst, König* AK. 2,8,1,1. H. 689. Halâj. 2,266. am Ende eines comp.: अमर° MBh. 4,1573. विदर्भ° 3,2524. दैत्य° Bhâg. P. 3,17,23. मतङ्ग° MBh. 1,5885. सर्व° 2,530. वादि° Pańkar. 3,14,75. शङ्ख° so v. a. *die Muschel der Muscheln* MBh. 7,4170. 4172. — 2) m. N. eines Ekâha Kâtj. Çr. 22,10,7. Âçv. Çr. 9,8,21. Pańkav. Br. 19,1,1. Lâtj. 9,4,1. Maçaka 5,1. — 3) m. *ein Metrum von 4 Mal 22 Silben* Ind. St. 8,107. 111. — 4) f. N. einer Göttin: इन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी राट् ṚV. 5,46,8. Nir. 12,46. nach Sâj. = राजमाना. Ausserdem in den Formeln: इयं ते राट् (= राज्ञ Mah.) VS. 9,22. 18,28. मूर्धासि राट् (= राजमाना Mah.) 14,21. राडसि TBr. 3,11,1,10. — Vgl. अङ्ग°, अधि°, अग्र°, अरण्य°, इन्दु°, उडु°, एक°, क्रतु°, गिरि°, गृध्र°, जन°, ज्येष्ठ°, तृण°, देव°, धर्म°, नाग° (auch MBh. 1,1125), परेत°, पर्वत°, भूत°, मनु°, मृग°, यक्ष°, यम°, वने°, विश्व°, स्व°.

राज m. am Ende eines comp. = राजन् *Fürst, König, der Erste unter seines Gleichen* P. 5,4,91. Vop. 6,37. विदर्भ° MBh. 3,2332. 2433. 2694. शाल्व° 5,7017. केकय° R. 1,73,2. 77,17. चेदि° Çiç. 20,6. राक्षस° R. 6,36,6. नरराक्षसराजयोः Râǵa-Tar. 3,74. गन्धर्व° Vikr. 11,13. वानर° R. 1,1,60. कपोत° Hit. 9,15. शुक° Çuk. in LA. (III) 36,10. गिरि° MBh. 3,2441. व्यूह° so v. a. *die beste der Schlachtordnungen* 6,3062. Am Ende eines adj. comp. f. आ P. 4,1,28, Sch. — Vgl. अनन्त°, अद्रि°, अधि°, अमर°, आदि°, ऋक्ष°, गृह°, घट°, तरु°, तृण°, देव°, द्वि°, द्विज°, धर्म°, नक्षत्र°, नद°, नाग°, पर्वत°, पशु°, पितृ°, पुरुष°, पृथ्वी°, प्रति°, प्रेत°, प्लव°, बाल°, बुद्ध°, बृहद्राज, ब्रह्म°, भुजग°, भृङ्ग°, मणि°, मत्स्य°, मदन°, मनुष्य°, मल्ल°, मर्म°, महा°, मीन°, मृग°, मेघ°, यम°, यशो°, युव°, योग°, राज°, विघ्न°, शैल°, सर्प°, सिन्धु°, सुख°, सुर° u. s. w.

राजऋषि m. = राजर्षि Bhâg. P. 8,24,10.

1. राजक (von राजन्) m. 1) *regulus:* चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ṚV. 8,21,18. Hariv. 15181. 15185. 16099. Aus metrischen Rücksichten auch schlechtweg für राजन् *Fürst, König* gebraucht: अखिलराजकपूजिताङ्घ्रि Kathâs. 18,405. विद्याधर° 116,91. Bhâg. P. 12, 1,3. AK. 3,6,3,27. Häufig am Ende eines adj. comp. (= राजन्): षोडश° MBh. 1,332. Kâm. Nîtis. 8,22. मानिताखिल° Kathâs. 44,133. 171. स° MBh. 9,1184. 14,2248. Spr. 519. Kathâs. 12,185. 33,74. 56,131. Vgl. अ°, धातु°, भृङ्ग°, महा°. — 2) N. pr. verschiedener Männer Lalit. ed. Calc. 295,5. Râǵa-Tar. 7,26. 8,2842. 2846.

2. राजक (wie eben) n. *eine Menge von Fürsten, — Königen* P. 4,2, 39. Vop. 7,19. AK. 2,8,1,3. H. 1417. Kir. 2,47. Mârk. P. 109,6. Kâvjâd. 3,25. Bhaṭṭ. 2,52.

राजकथा (1. राजन् + क°) f. *Geschichte der Fürsten, — Könige* Râǵa-Tar. 1,11. 14.

राजकदम्ब m. angeblich = कदम्ब H. 1138, Sch. nach Gaṭâdh. im ÇKDr. *eine* Kadamba-*Art.*

राजकन्दर्प m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,b,38.

राजकन्यका f. *Fürstentochter, Prinzessin* Kathâs. 25,2. 28,111. 36, 20. Râǵa-Tar. 2,148.

राजकन्या f. dass. R. 1,77,29. 5,31,7. Kathâs. 7,74. 16,19. 24,81. 30, 36. 31,8. Bhâg. P. 9,6,43. गन्धर्वयक्षसुरकिंनर° Kaurap. 45.

राजकर m. *der dem König darzubringende Tribut* Wilson.

राजकर्कटी f. *eine Gurkenart,* = चीनाकर्कटी Râǵan. im ÇKDr.

राजकर्ण m. Weber, Nax. 2,391. nach Colebrooke Misc. Ess. II, 322 Tafel *Elephantenzahn.*

राजकर्तृ m. *Königsmacher;* pl. *diejenigen Personen, welche den König auf den Thron setzen* (nach Sâj. Vater, Brüder u. s. w.), Ait. Br. 8,17. R. 2,79,1. auch 67,1 ist mit der ed. Bomb. so zu lesen st. राज्य° bei Schl. — Vgl. राजकृत्.

राजकर्मन् n. 1) *ein dem Fürsten zu leistender Dienst* M. 7,125. किं गजेन प्रभिन्नेन राजकर्माण्यकुर्वता Spr. 673. — 2) Soma-*Handlung* Kauç. 3.

राजकलश m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,20. fgg.

राजकला f. *der 16te Theil der Mondscheibe, Mondsichel* Sâh. D. 18,21.

राजकलि s. u. 1. कलि 1) *e).*

राजकशेरु m. (wenigstens nicht n.) *Cyperus rotundus* Hâr. 183. n. *die Wurzel von Cyperus pertenuis Roxb.* AK. 3,4,25,190.

राजकार्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* MBh. 4,2263. Kathâs. 18,81. R. 1,7,2. Hit. 87,17.

राजकिनेय m. metron. von राजकी Vop. 7,7.

राजकीय (von राजक) adj. *fürstlich, königlich* P. 4,2,140. °सरस् Kathâs. 62,228. पुरुष Sâh. D. 13,12. °नामन् Vet. in LA. (III) 10,18. काश्मीरदेशीयराजकीय (so ist zu lesen) इतिहासः Râga-Tar. ed. Calc. auf dem Titelbl. राजकीय m. so v. a. राजकीयः पुरुषः *Diener eines Fürsten* Vet. in LA. (III) 20,21 (wo राजकीय भ° zu lesen ist). 25,21.

राजकुमार und राजकुमारी m. *Prinz* P. 6,2,59. Sâh. D. 14,7. fgg. Vet. in LA. (III) 5,15. Lot. de la b. l. 107. 109. 113.

राजकुमारिका f. *Prinzessin* Kathâs. 28,43.

राजकुल n. 1) *ein fürstliches Geschlecht, die Familie eines Fürsten:* अस्य राजकुलस्य जीवितम् R. 2,87,9. °प्रज्ञाता 5,11,21. Bhâg. P. 1,16, 22. 4,21,36. 5,14,16. Prab. 99,5. pl. so v. a. *Fürsten* Spr. 1362. 3795. Vrddha-Kân. 14,12. °विवाद Shadv. Br. in Ind. St. 39,3 v. u. राजकुलानुमत्तव्य Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,16. — 2) *der Palast eines Fürsten* (wo auch Recht gesprochen wird) Shadv. Br. in Ind. St. 1,40,1 v. u. MBh. 4,93. 5,7426. R. 2,65,5. R. Gorr. 2,4,21. Spr. 4801. Kathâs. 4,102. 9,84. 12,53. 14,46. 25,155. 30,114. 31,74. 41,5. 43,139. 49,129. Çank. zu Khând. Up. S. 53. Daçak. in Benf. Chr. 183,18. Pankat. 29,24. 40,13. 96,20. 100,22. Hit. 88,18. Vet. in LA. (III) 22,7.

राजकुलभट्ट m. wohl *ein im fürstlichen Palast angestellter Doctor* Râga-Tar. 6,246. 249.

राजकुलवत् scheinbar R. 2,67,30, wo aber राजाकुलवतीं mit der ed. Bomb. (nach dem Comm. राजा कुल°) zu lesen ist.

राजकुष्माण्ड m. *Solanum Melongena* Gatâdh. im ÇKDr.

राजकृत् m. so v. a. राजकर्तृ AV. 3,5,7. Çat. Br. 3,4,1,7. 13,2,2,18.

राजकृत adj. *vom König gemacht* AV. 10,1,3.

राजकृत्य n. *eine Obliegenheit des Fürsten, Staatsgeschäft* Kathâs. 35, 26. Pankat. 30,11.

राजकृत्वन् P. 3,2,95. = राजकर्तृ, mit acc. Bhatt. 6,130.

राजकोशातक n. *eine best. Frucht* Varâh. Brh. S. 54,121.

राजक्रय m. Soma-*Kauf* Âçv. Çr. 4,2,18. 8,13. Lâtj. 9,9,5.

राजक्रयणी f. so v. a. सोमक्रयणी Lâtj. 5,5,7.

राजक्रिया f. *das Geschäft eines Fürsten* Pankat. 63,25.

राजक्षवक m. *eine Art Senf* Suçr. 1,222,17. Vâgbh. 6,73. fg.

राजखर्जूरी f. *eine Art Dattelbaum* (नृपप्रिया) Râgan. im ÇKDr.

राजगवी f. *Bos grunniens* Nigh. Pr. nach dem Schol. zu Taitt. Âr. 6,1,8. 12,1 hellfarbig an Schnauze und Hintertheil, sonst schwarz.

राजगिरि m. 1) *Königsberg*, N. pr. einer Oertlichkeit Daçak. 32,11. — 2) *eine best. Gemüsepflanze*, = राजाद्रि Râgan. im ÇKDr.

राजगुरु m. *Rathgeber —, Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,4,12. 69,1.

राजगृह n. 1) *die Wohnung eines Königs, Palast* Kathâs. 12,54. 14, 21. 18,326. 20,47. 30,111. 36,44. Kaurap. 31. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,29. 342,*b*,22. — 2) N. pr. der Hauptstadt von Magadha LIA. I,135. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. MBh. 1,7476. 2,832. 3,8082. Hariv. 4953. 5132. R. 2,67,6. 68,2. 6. 70,1. R. Gorr. 1,4,36. 79,35. 43. 2,70,6. Lalit. ed. Calc. 20,6. 297,6. 298,2. 306,3. 309,3. Burn. Intr. 100. Kathâs. 3,7. 112,112. Çatr. 10,321. Wilson, Sel. Works 1,291. 293. 295. 299. 303. neun Jogana von Pâtaliputra entfernt Ind. St. 10,312. °माहात्म्य Mack. Coll. 1,81. Verz. d. Pet. H. No. 41. राजगृहं (wohl ein davon abgeleitetes adj.) वनम् Vâju-P. in der Einl. zu Vâsavad. 13.

राजगृहक adj. von राजगृह 2) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजगेह n. = राजगृह 1) Pankat. 2,6,22.

राजग्रीव m. *ein best. Fisch* Trik. 1,2,17.

राजघ P. 3,2,55, Vârtt. Naish. 1,10 nach dem Comm. entweder राज्ञः प्रत्यर्थिनो हतवान् oder राजश्रेष्ठ; nach Trik. 3,1,14 = तीक्ष्ण.

राजचिह्नक n. *die Geschlechtstheile* (उपस्थ) Çabdak. im ÇKDr.

राजजक्ष्मन् m. fehlerhafte Schreibart für राजयक्ष्मन् Bhar. zu AK. 2, 6,2,2 (ÇKDr.).

राजजम्बू f. *eine Art* Gambû und *eine Art Dattelbaum* (पिण्डखर्जूर) H. an. 4,212. Med. b. 15. — Vikr. 90.

राजत (von रजत) 1) adj. (f. ई) *silbern* P. 4,3,154. Âçv. Çr. 9,4,13. Kâtj. Çr. 19,4,10. 20,2,6. Lâtj. 9,2,13. M. 3,202. 5,112. 8,136. fg. 220. Jâgn. 1,182. MBh. 1,7215. 5,7101. 6,1806. 7,1030. 1034. 3638. Hariv. 3931. R. 1,13,18 (10 Gorr.). 3,21,14. 17 (धातवः). 4,40,46. 5, 12,20. Suçr. 1,99,5. 170,9. 240,9. Çank. zu Brh. Âr. Up. S. 23. Râga-Tar. 4,198. 205. Spr. 5322. Mârk. P. 31,64. Weber, Krshnag. 273. 278. fg. राजतान्वित *mit Silber ausgelegt* M. 3,202. हैमराजतसंकीर्ण *mit Gold und Silber ausgelegt* R. 4,33,25. — 2) n. *Silber* Schol. zu Kâtj. Çr. 51, 21. हेमराजतचित्राभ्याम् R. 3,49,1.

राजतनय 1) m. *Fürstensohn, Prinz* Kathâs. 28,150. — 2) f. आ *Fürstentochter, Prinzessin* Kathâs. 10,120. 16,24.

राजतरंगिणी f. *Strom* d. i. *fortlaufende Geschichte der Könige*, Titel verschiedener *Chroniken* von Kâçmîra Râga-Tar. 1,24. Gild. Bibl. 241. fgg. LIA. I, 473. fgg. II, 18. fgg. Verz. d. Oxf. H. 147.

राजतरु m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* und *Pterospermum acerifolium Willd.* Râgan. im ÇKDr. — Suçr. 2,522,18.

राजतरुणी f. *Kugelamaranth* Râgan. im ÇKDr.

राजता (von राजन्) f. *Königthum, königliche Würde* R. 2,79,7. Kâm. Nîtis. 19,16. Spr. 2290. Kathâs. 36,68. 42,45. अ° *Königlosigkeit* Ait. Br. 1,14.

राजताल 1) m. *Betelnussbaum* Trik. 2,4,40. Çabdar. im ÇKDr. °ताली f. dass. Ragh. 4,56. — 2) m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,11.

राजतिमिष m. *Cucumis sativus Lin.* Hâr. 181. — Vgl. राजतेमिष.

राजतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Wilson, Sel. Works II, 19. fg.

राजतुङ्ग m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 7,358.

राजतेमिष m. = राजतिमिष Trik. 2,4,36.

राजत्व n. = राजता Hariv. 7316. R. 2,72,51. R. Gorr. 1,1,38. Kathâs. 20,191. 22,211. 30,62. 52,372. Râga-Tar. 4,177. विद्याधर° Kathâs. 26,242. सर्वसत्त्वानाम् MBh. 13,1134.

राजदण्ड m. *königliche Gewalt, eine vom König verhängte Strafe:* ततो न्यूनतरस्यास्य नापराधो न पातकम्। न चास्य राजदण्डो ऽपि प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ इति प्रायश्चित्ततत्त्वधृताङ्गिरोवचनम् ÇKDr. °भयाकुल Râga-Tar. 5,240. = शास्ति Schol. zu Uṇ. 4,181.

राजदत्ता f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 36,48.

राजदन्त m. 1) *Hauptzahn, Vorderzahn* P. 2,2,31. राजदन्तास्तु चत्वारो दशनानां पुरः स्थिताः Trik. 2,6,29 (s. die Corrigg.). चत्वारो राजदन्ताः स्युः

संमुखीना रदास्तु ये Bâla beim Schol. zu Naish. 7,46. मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रास्तत्पार्श्वयोर्द्वयोः Vaig. beim Schol. zu H. 584. राजदन्तौ तु मध्यस्थावुपरिश्रेणिकौ क्वचित् H. 584. *vier Zähne* gemeint Naish. 7,46. — 2) N. pr. eines Mannes; s. राजदन्ति.

राजदन्ति m. patron. von राजदन्त P. 4,1,160, Sch.

राजदर्शन n. *das Zugesichtkommen eines Fürsten, Audienz bei einem Fürsten:* मां राजदर्शनं कारय so v. a. *führe mich zum Fürsten* Hit. 98,8. 9. Titel eines künstlichen Gedichts Verz. d. Oxf. H. 211,*b*,6.

राजदार m. pl. *eine Gemahlin* und *die Gemahlinnen des Königs* R. 2,89,15.

राजदुहितर् f. *Fürstentochter, Prinzessin* P. 6,3,70, Vârtt. 10. Kathâs. 10,96. Pańkat. ed. orn. 50,1. Davon °दुहितृमय adj. (f. ई): सर्वा दिशो °मयीरपश्यत् so v. a. *überall glaubte er die Prinzessin zu sehen* ebend. 3.

राजदूर्वा f. *eine lange Art von* Dûrvâ-*Gras* Prajogar. 93,*b*,5.

राजदृषद् f. P. 6,1,223, Sch. wohl Bez. *des grösseren unteren Mühlsteins.*

राजदेव m. N. pr. eines Lexicographen (= भोजराजदेव nach Aufrecht) Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,44.

राजद्रुम m. wohl = राजवृक्ष Suçr. 2,258,17. 521,14.

राजद्वार् f. *das Thor eines fürstlichen Palastes* Hit. 98,7.

राजद्वार n. dass. Hariv. 3284. Spr. 458. Mârk. P. 126,18 (°द्वारम् acc. könnte auch zu °द्वार् gehören). Hit. 88,18, v. l.

राजद्वारिक m. *Thürsteher an einem fürstlichen Palaste* Spr. 2553.

राजधत्तूर m. *eine Art Stechapfel* Râǵan. im ÇKDr. u. महाशठ; °क m. nach ders. Aut. in der alphabetischen Ordnung.

राजधर्म m. *die Pflicht eines Fürsten;* pl. *die für einen Fürsten geltenden Bestimmungen* M. 7,1. 9,324. R. 2,26,4. 102,1. MBh. 12,2089. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,4. 13,*a*,30. 85,*b*,42. 268,*b*,5. राजधर्मानुशासन n. Titel des 1ten Abschnittes im 12ten Buche des MBh. °कौस्तुभ bildet einen Theil des Smṛtikaustubha Verz. d. Oxf. H. 272, *b*, No. 645.

राजधर्मन् m. N. pr. eines Reihers, eines Sohnes des Kaçjapa, MBh. 12,6337. fgg. — Vgl. धर्मराज् 3).

राजधानक n. = राजधानी Çabdar. im ÇKDr.

राजधानी f. *die Residenz eines Fürsten* H. 973. Halâj. 2,131. MBh. 3,15887. 4,147. fg. 7,2972 (यमस्य). R. 1,4,24 (3,65 Gorr.). 9,66. 2,46, 4. 52,50. 88,19. 4,41,66. 6,16,105. 107,16. Ragh. 2,70. 5,40. Çâk. 112, 19. Megh. 25. Kathâs. 15,63. 25,269. 32,121. 34,14. Râǵa-Tar. 4,24. 70. 5,256. 6,125. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,3. Prab. 25,7. कुल° Ragh. 16,36.

राजधान्य n. *Panicum frumentaceum Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. *eine Reisart* (Râǵan. ebend. u. d. W. राजान्न). Varâh. Bṛh. S. 15,12.

राजधामन् n. *Palast —, Residenz eines Fürsten* Râǵa-Tar. 5,483. कुरु° (kann in कुरुराज + धामन् mit dem Comm. zerlegt werden) Bhâg. P. 10,71,33.

राजधीर m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 49,3.

राजधुर् (राजन् + धुर्) m. *das Joch, an dem ein Fürst zu ziehen hat, die Last der Regierung* P. 5,4,74, Sch. °धुरा f. Vop. 6,73.

राजधुस्तूरक m. *eine Dattelart* Râǵan. im ÇKDr.

राजधूर्त m. dass. ebend.

1. राजन् (von 1. राज्) Uṇâdis. 1,156. m. 1) *König, Fürst* AK. 2,8,1,1. 3,4,18,114. Trik. 2,8,1. H. 689. an. 2,280. fg. (= पार्थिव und प्रभु). Med. n. 115 (= नृपति und प्रभु). Halâj. 2,266. उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिः ṚV. 1,40,8. 126,1. वस्त्रैः 2,14,11. कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानम् 3,43,5. अधरस्य 4,3,1. 50,7. ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथः 5,54,7. ब्रह्मणो देवकृतस्य 7,97,3. राज्ञामुत्तमं मानवानाम् AV. 4,22,5. राजा राष्ट्रं वि रक्षति 11,5,17. अयं विशां विश्पतिरस्तु राजा 4,22,3. ओषधीनां राजा वनस्पतिः 8,7,16. पूर्वो राज्ञो ऽभिवदति Çat. Br. 3,3,4,14. यस्यै विशो राजा भवति 5,4,2,3. वैश्यो राज्ञे बलिं हरेत् 11,2,6,14. कौरव्य 12,9,3,3. ऐक्ष्वाक Çâṅkh. Çr. 15,17,1. Âçv. Gṛhj. 3,12,1. Kauç. 15. M. 1,114. 4,33 (राजतस्). 110. राजानः क्षत्रियाश्च 12,46. MBh. 3,2072. भव राजा कुरुषु 9,1891. R. 1,1,33. Çâk. 27,18. 31,3. राजेन्दु Ragh. 1, 12. पृथुं वैन्यं प्रजा दृष्ट्वा रक्ताः स्मेति यदब्रुवन्। ततो राजेति नामास्य अनुरागादजायत ॥ MBh. 7,2396. 12,1032. VP. 101. fg. तथैव सो ऽभूदन्वर्थो राजा प्रकृतिरञ्जनात् ॥ Ragh. 4,12. in etym. Zusammenhang mit रञ्ज् gebracht Çâk. 111. 64,21. Unter den Göttern führen als *Herrscher* je in ihrem Gebiet den *Königs*namen: Varuṇa und die übrigen Âditja ṚV. 1,24,7. 4,1,2. 5,85,3. 7,64,1. AV. 3,3,3. Çat. Br. 2,2,3,1. ṚV. 1, 20,5. 41,3. 3,56,7. 62,6 7,66,11. AV. 3,12,4. Kauç. 71. Indra H. an. Med. ṚV. 1,178,2. 5,40,4. 6,36,4. 7,27,3. 8,53,3. 59,1. TS. 5,5,11,1. Agni ṚV. 5,4,1. 6,1,13. 8,5. 8,43,24. 10,87,3. Jama 10,14,1. 7. AV. 6,116,1. 8,10,23. 18,3,69. TS. 5,5,11,1. Çat. Br. 2,3,2,1. Soma d. i. *Mond* (AK. 3,4,18,114. Trik. 1,1,85. 3,3,256. H. 105. H. an. Med. Hâr. 13. Halâj. 1,42) und Soma ṚV. 1,23,14. 6,75,18. VS. 6,26. AV. 2,36, 3. 5,21,11. 6,104,3. 8,7,20. 14,1,49. Kauç. 128. सोमो राजा चन्द्रमाः Çat. Br. 10,4,2,1. 1,6,4,5. 14. 14,5,1,3. TS. 2,3,5,1. राज्ञः राजानं तस्करति चरन्तम् Kauç. 100. सोमाय राज्ञे M. 9,129. राजन् *Mond* und zugleich *König* Kâvjâd. 2,311. fg. 322. Auch der Soma-*Saft* und die *Pflanze* werden geradezu *König* genannt: राजानमुपावहरेयुः Ait. Br. 1,14. तान्ह राजा मदयां चकार 6,1. 7,32. सोमस्य राज्ञो भक्षयन्ति Çat. Br. 1,1,3, 7. 3,3,3,1. 4,3,11. राजानं क्रेष्यन् 4,5,1,2. यदि राजोपदस्येत् 2,2,5. Am Ende eines comp. steht in der Regel राज, jedoch findet man nicht selten auch राजन्, z. B. विदर्भ° MBh. 3,2124. काशि° 5,6040. केकय° R. 1, 12,23. त्रिदशारि° 6,36,78. श्वापद° Pańkat. 63,20; vgl. धर्म°, नाग°, प्रति°, फल°, मनुष्य°, यम°, युव°, सिन्धु°, सोम°, स्व°. Am Ende eines adj. comp. f. राजन् oder राज्ञी P. 4,1,28, Sch. — 2) = राजन्य *ein Mann aus der Kriegerkaste* AK. 3,4,18,114. H. 863. H. an. Med. राजविशः Âçv. Çr. 1,3,3. Khând. Up. 8,14,1. ब्राह्मण, राजन्, वैश्य, शूद्र M. 2,32. 36. fg. 44. 46. 3,13. — 3) *ein* Jaksha Trik. 3,3,256. H. 194. H. an. Med. wohl aus राजराज als Bein. Kubera's geschlossen. — 4) N. pr. eines der 18 Diener des Sonnengottes und zwar einer Form Guha's Vjâḍi beim Schol. zu H. 103.

2. राजन् (wie eben) *Lenkung, regimen:* अहं भुवं यजमानस्य राजनि *ich bin unter der Leitung* d. h. *ich folge dem Willen des Frommen* ṚV. 10,49,4.

राजन (von राजन्) 1) adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend, aber nicht zur Kriegerkaste gehörig* Siddh. K. zu P. 4,1,137. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses MBh. 6,329 (VP. II,148). — 3) n. oxyt. N. eines Sâman

Ind. St. 3,231,*a*. TS. 7,5,8,3. Lâṭj. 1,6,35. 3,12,7. Çâṅkh. Çr. 16,14,8. Khând. Up. 2,20,1. 2. Bhâg. P. 11,27,31. इन्द्रस्य राजनरौहिणे, रौहिणेरेकर्षे राजनम् Ind. St. 3,208,*b*.

राजनय m. *Staatsklugheit, Politik* R. 6,11,10. — Vgl. राजनीति.

राजनापित m. *ein fürstlicher Bartscheerer* und *ein Bartscheerer ersten Ranges* P. 6,2,63, Sch. (Accent des Wortes).

राजनामन् m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. राजपटोलक.

राजनि m. patron. von रजन Taitt. Âr. 5,4,12. Pañkav. Br. 14,3,17. 23,16,11.

राजनिघण्टु m. Titel eines medicinischen Wörterbuchs von Harariharipaṇḍita (Harasiṁha-Kâçmîrapaṇḍita ÇKDr. VII, Einl.) Nigh. Pr. Verz. d. Oxf. H. 286,*a*,8. im ÇKDr. stets in der Form राजनिर्घण्ट citirt; राजनिघण्ट Colebr. Misc. Ess. II,20. — Vgl. निघण्टुराज.

राजनिवेशन n. *der Palast eines Fürsten* R. 2,51,13. 78,18. R. Gorr. 2,4,12. 12,24.

राजनीति f. *Staatsklugheit, Politik* MBh. 15,978. Kathâs. 34,189. 42,93. षड्विधा Bhâg. P. 10,45,34. Pañkat. 188,4. Verz. d. B. H. No. 495. 1018. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,44. 86,*a*,6. 123,*a*,24. 125,*a*,38. °शास्त्र 131,*b*, No. 238.

राजनील m. *Smaragd* Çabdar. im ÇKDr.

राजन्य (von राजन्) Çânt. 4,8. 1) adj. *fürstlich, königlich;* m. *ein Angehöriger fürstlichen Stammes, Adelicher,* älteste Bez. *der zweiten Kaste* P. 4,1,137. AK. 2,8,1,1. H. 863. Halâj. 2,266. बाहू राजन्यः कृतः Ṛv. 10,90,12. ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्योऽ न वैश्यः AV. 5,17,9. 18,2. 6,38,4. 10,10,18. 12,4,32. fg. 15,8,1. 19,32,8. VS. 22,22. 30,5. Ait. Br. 3,48. 7,19. 31. 8,6. TS. 2,4,13,1. 5,4,4. 10,1. 5,1,10,3. TBr. 1,7,2,6. क्षत्रं राजन्यः Çat. Br. 5,1,1,11. 5,28. 4,1,17. 4,9. 13,4,2,5. राजन्या विशः 17. राजन्या अनुचर्यः 5,2,6. Kâtj. Çr. 4,9,2. 5. 16,1,17. 22,10,7. Âçv. Çr. 2,1,3. 4,15,5. M. 2,49. 190. 3,110. 4,84. 10,12. 22. 95. 11,83. 87. 93. 127. Jâǵń. 1,92. P. 6,2,34. MBh. 1,1811. 5,7249. 13,1611. 1905. भोज° 14,2581. R. 2,82,31 (89,13 Gorr.). Ragh. 3,48. 4,87. 7,32. Megh. 49. Varâh. Bṛh. S. 4,24. 80,11. Uttarar. 112,17 (152,4). Bhâg. P. 1,7,48. 8,43. 4,28,29. राजन्या f. MBh. 5,4497. Hariv. 8309. m. pl. Bez. eines best. *kriegerischen* Stammes (vgl. राजपुत्र) Varâh. Bṛh. S. 14,28. Mârk. P. 58,47. Nach Uṇâdis. 3,100 राजन्य, nach Uǵǵval. mit dieser Betonung Bein. Agni's. — 2) m. *eine Art Dattelbaum* (क्षीरिका) Râǵan. im ÇKDr.

राजन्यक 1) adj. *von Kriegern bewohnt* P. 4,2,53. — 2) n. *eine Schaar von Kriegern* P. 4,2,39. 6,4,151, Vârtt. AK. 2,8,1,4. H. 1417. Ragh. 7,53. Daçak. 57,12.

राजन्यत्व (von राजन्य) n. *das Kriegersein, das zur-Kriegerkaste-Gehören* Sâj. zu Ṛv. 1,125,1.

राजन्यबन्धु m. *Fürstengenosse* (gewöhnlich geringschätzig gebraucht) Çat. Br. 1,1,4,12. 2,4,2. 8,1,4,10. 10,5,2,10. 11,6,2,5. 14,9,1,5. Lâṭj. 8,2,10. = राजन्य, क्षत्रिय M. 2,65.

राजन्यवत् adj. *mit einem Fürstlichen verbunden* TS. 5,1,10,3.

राजन्वत् adj. *von einem guten Fürsten beherrscht* P. 8,2,14. AK. 2,1,13. Ragh. 6,22. Kâvjâd. 3,6. — Vgl. राजवत्.

राजपटोल 1) m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Ratnam. im ÇKDr. °क m. dass. Hâr. 105. — 2) f. ई = मधुरपटोली (fehlt in den Wörterbüchern) Râǵan. im ÇKDr.

राजपट्ट m. *eine Art Edelstein, ein Diamant von geringerer Güte* Trik. 2,9,30. H. 1066. Vjutp. 137. Uttarar. 97,16 (129,1). Mâlatîm. 150,7.

राजपट्टिका f. = चातकपक्षिन् ÇKDr. angeblich nach Hâr.; vgl. राजभट्टिका.

राजपति m. *Fürstenherr* Çat. Br. 11,4,3,9. Kâtj. Çr. 5,13,1.

राजपत्नी f. *Gemahlin eines Fürsten* R. 2,104,2. Varâh. Bṛh. S. 5,76. Spr. 4935.

राजपथ m. *Hauptstrasse* Hariv. 6541. R. Gorr. 2,4,18. 5,10,14. Ragh. 14,30. 16,12. Kumâras. 7,63. Râǵa-Tar. 1,201. Bhâg. P. 10,42,1. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 1,77,7 (78,6 Gorr.). R. Gorr. 2,6,2. Nach gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100 प्रतिकृतौ संज्ञायाम्.

राजपथाय् (von राजपथ), °यते *eine Hauptstrasse darstellen* Verz. d. Oxf. H. 235,*a*,15.

राजपद्धति f. *Hauptstrasse:* इयं सा मोक्षमार्गाणामजिह्मा राजपद्धतिः Sarvadarçanas. 147,8.

राजपर्णी f. *Paederia foetida Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

राजपलाण्डु m. *eine best. Art Zwiebel* ebend.

राजपाल m. N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II,280. Reinaud, Mém. sur l'Inde 263 (राज्यपाल v. l.). eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,5.

राजपितृ m. *Königsvater* Ait. Br. 8,12. 17.

राजपीलु m. *ein best. Baum,* = महापीलु Râǵan. im ÇKDr.

राजपुत्र 1) m. *a*) *Königssohn, Prinz;* f. ई *Königstochter, Prinzessin:* कस्य नरा राजपुत्रेव सवनाव गच्छथः Ṛv. 10,40,3. Ait. Br. 7,17. Çat. Br. 13,4,2,5. 5,2,5. Âçv. Çr. 10,8,11. Pañkav. Br. 19,1,4. TBr. 3,8,5,1. Kâṭh. 14,8. 28,1. Lâṭj. 9,10,1. Praçnop. 6,1. राजानो राजपुत्राश्च MBh. 3,2125. 2767. 2876. 4,92. R. 1,4,3. 58,15. 2,26,4. 27,3. Mâlav. 70,23. Kathâs. 28,111. fgg. Râǵa-Tar. 2,144. Hit. 7,21. 44,7. 45,1. °पुत्री P. 6,3,70, Vârtt. 10. MBh. 3,2443. 15602. 4,75. R. 1,72,12. 2,38,6. R. Gorr. 2,26,4. 4,42,12. Bhar. Nâṭjaç. 34,22. Kathâs. 7,104. 11,54. 16,21. 18,165. 388. 33,7. Verz. d. Oxf. H. 216,*b*,39. Pañkat. 44,21. — *b*) *ein* Radschput, im System eine Mischlingskaste: der Sohn eines Vaiçja von einer Ambashṭhâ (Parâçara im ÇKDr. Colebr. Misc. Ess. II,180) oder eines Kshatrija von einer Karaṇî (Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,10) Kathâs. 24,90. 115. 38,74. 74,59. 111,29. Râǵa-Tar. 7,234. Hit. 39,18. Vet. in LA. (III) 23,17. f. ई Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,10. — *c*) *der Planet Mercur* (*Sohn des Mondes*) Trik. 1,1,93. Çabdar. im ÇKDr. — *d*) *eine Mangoart* (महाराजचूत) Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. ई *a*) *Königstochter* und *ein Frauenzimmer aus der Kaste der* Radshput; s. u. 1) *a*) *b*). — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen: = कटुतुम्बी und जाती Râǵan. im ÇKDr = मालती Ǵaṭâdh. im ÇKDr. — *c*) *eine Art Parfum* (रेणुका) Râǵan. im ÇKDr. — *d*) *eine Art Metall* (राजरीति) ebend. — *e*) *Moschusratte* ebend.

राजपुत्रक (von राजपुत्र) n. *eine Menge von Königssöhnen* P. 4,2,39. H. 1417.

राजपुत्रा f. *Mutter von Königen* (*Könige zu Söhnen habend*) RV. 2,27,7.

राजपुत्रिका f. 1) *Königstochter, Prinzessin* Hariv. 1356. — 2) *ein best. Vogel* (शराटि) Gaṭâdh. im ÇKDr.

राजपुत्रीय Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,28.

राजपुर n. *Königsstadt*, N. pr. einer *Stadt* LIA. I, 562. MBh. 7,119. 12,110. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,23. Hiouen-thang I, 188. °पुरी f. desgl. Râǵa-Tar. 6,286. 348. fg. 7,1153. 1155. 8,1168. 1272.

राजपुरुष m. *Diener —, Beamter eines Fürsten* P. 6,1,223, Sch. Nir. 2,3. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,3. MBh. 1,4314. Mṛkkh. 154,11. fg. Çâk. 17,6. Spr. 3229. Varâh. Bṛh. S. 53,8. 14. 95,20. Kathâs. 9,84. 24,62. Râǵa-Tar. 3,156. 5,435. 467. 6,98. Bhâg. P. 5,26,16. 22. Pańkat. 40, 21. 97,24. Hit. 63,8. Vet. in LA. (III) 22,7. Z. d. d. m. G. 14,572,8.

राजपुष्प 1) m. *Mesua Roxburghii Wight.* Çabdak. im ÇKDr. — 2) f. ई *eine best. Pflanze*, = करुणी Râǵan. im ÇKDr.

राजपूग m. *eine Art Betelpalme* Bhâg. P. 4,6,17.

राजपूरुष m. = राजपुरुष Kathâs. 24,52.

राजपौरुषिक (wohl von राजपौरुष्य) adj. *im Dienste eines Fürsten stehend* MBh. 13,6028.

राजपौरुष्य n. nom. abstr. von राजपुरुष gaṇa अनुशतिकादि zu P. 7,3,20.

राजप्रकृति f. *Minister eines Fürsten* R. Gorr. 2,88,3.

राजप्रत्येनस् m. Accent des Wortes P. 6,2,60.

राजप्रिय 1) m. = राजपलाण्डु Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = करुणी Râǵan.

राजप्रेष्य 1) m. *Diener eines Fürsten* MBh. 3,2882. 12,2359 nach der Lesart der ed. Bomb. (ग्रामप्रेष्य ed. Calc.). — 2) n. *Fürstendienst* (die richtigere Form wäre °प्रैष्य) MBh. 12,2358.

राजफणिज्झक m. *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDr.

1. राजफल n. *die Frucht von Trichosanthes dioeca Roxb.* Trik. 2,4,22.

2. राजफल 1) m. *ein best. Baum*, = राजादनी Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lin.* (जम्बू) Râǵan. im ÇKDr.

राजबदर 1) m. *eine Art Judendorn* Râǵan. im ÇKDr. — 2) n. स्याद्राजबदरं रक्तमेलके लवणे ऽपि च Med. r. 307. *a plant* (*a sort of Justicia*); *salt* Wilson nach ders. Aut.; vgl. मेलकलवण, welches *eine Art Salz* bezeichnet.

राजबला f. *Paederia foetida Lin.* AK. 2,4,5,18. — Vgl. भद्रबला.

राजबलेन्द्रकेतु m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 532.

राजबान्धव m. f. (ई) *Verwandter* (*Verwandte*) *des Fürsten* Âçv. Gṛhj. 2,3,3 (des Königs Varuṇa). Çâṅkh. Gṛhj. 4,18. Pâr. Gṛhj. 2,4. Râǵa-Tar. 6,252 (°भान्धवः Tr.).

राजबीजिन् adj. *von fürstlicher Abstammung* AK. 2,7,2. H. 713. Râǵa-Tar. 4,353. 6,98. 8,2801. 2954.

राजब्राह्मण und राजब्राह्मणी m. P. 6,2,59.

राजभट m. *Söldling eines Fürsten, Soldat* R. 1,54,3 (55,3 Gorr.). 8. Kathâs. 90,117. Daçak. 25,3. Bhâg. P. 3,30,21. 5,26,27. — Vgl. राजभृत.

राजभट्टिका f. *ein best. Wasservogel* Hâr. 84.

राजभद्रक m. *Costus speciosus* oder *arabicus* und *Azadirachta indica Juss.* Râǵan. im ÇKDr. Die richtige Lesart soll nach ÇKDr. पारिभद्रक sein.

राजभय n. *Gefahr von Seiten eines Fürsten* Varâh. Bṛh. S. 53,102. 95, 19. *Furcht vor einem Fürsten* Pańkat. 218,5.

राजभवन n. *der Palast eines Fürsten* R. 1,20,7. R. Gorr. 2,3,8. Kathâs. 14,20. 18,120. 26,111. 42,128. Râǵa-Tar. 4,13. Bhâg. P. 9,10,45.

राजभूय n. = राजता Çabdârthak. bei Wilson.

राजभृत् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत (राजन् + भृत) m. = राजभट MBh. 13,4276. R. Gorr. 1,55,8. Varâh. Bṛh. S. 10,18. राजभृत auch adj. von राजभृत् gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75.

राजभृत्य m. *Diener eines Fürsten* R. Gorr. 1,55,6. Râǵa-Tar. 6,101.

राजभोगीन adj. *einem Fürsten zum Genuss gereichend, — heilsam* P. 5,1,9, Vârtt. 3.

राजभोग्य 1) m. *Buchanania latifolia.* — 2) n. *Muskatnuss* Çabdak. im ÇKDr. — Im Pâli ist राजभोग्ग *Minister* oder *hoher Beamter.*

राजभोज्ञ adj. *von Fürsten genossen:* शालयः P. 6,2,150, Sch.

राजभ्रातर् m. *Königsbruder* Ait. Br. 1,13. Çat. Br. 5,4,4,6. Kâtj. Çr. 15,7,12. Pańkav. Br. 19,1,4.

राजमणि m. *eine Art Edelstein* Varâh. Bṛh. S. 80,4.

राजमण्डूक m. *eine grosse Froschart* Râǵan. im ÇKDr.

राजमन्दिर n. 1) *der Palast eines Fürsten* Kâm. Nîtis. 16,5. Kathâs. 15,122. 18,399. 26,43. 32,182. 43,9. 47. 55,100. Râǵa-Tar. 6,9. 212. — 2) N. pr. der Hauptstadt der Kaliṅga LIA. I, 563, N.

राजमल्ल m. *ein fürstlicher Ringer* Trik. 3,2,17.

राजमल्लि N. pr. einer Stadt Ind. St. 2,245.

राजमहेन्द्रतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,34.

राजमातर् f. *des Königs Mutter* Spr. 2607.

राजमात्र n. *Jeder der auf den Namen* राजन् *Anspruch hat* Çâṅkh. Br. 27,6. Çr. 17,5,3. 4. 15,3.

राजमानत्व n. nom. abstr. von राजमान (s. 1. राज्) *prangend, glänzend* Vedântas. (Allah.) No. 72.

राजमानुष m. *ein königlicher Beamter* Jâǵn. 2,242.

राजमार्ग m. 1) *Hauptstrasse* M. 9,282. MBh. 3,3015. 4,2183. 14,2049. Hariv. 4467. 5779. R. 1,5,8. 2,26,2. 33,8. 41,14. 43,13. 57,16. 70,26. R. Gorr. 1,79,38. 2,1,37. 4,16. 74,13. 3,29,2. 4,33,10. 5,10,20. 52,12. 6,9,24. Spr. 4416. Mṛkkh. 26,7. Ragh. 6,10. 7,4. Kâm. Nîtis. 7,39. Bhâg. P. 1,11,25. Mârk. P. 16,20. 26. Pańkar. 1,4,58. Pańkat. 129,16. Vet. in LA. (III) 19,5. *die grosse Strasse* in übertr. Bed. Sarvadarçanas. 111, 21. — 2) *der Fürsten Art und Weise, — Verfahren* so v. a. *Kampf:* °विशारद Hariv. 15989.

राजमार्तण्ड Titel eines astr. Werkes und eines Commentars zu Patañǵali's Jogasûtra Colebr. Misc. Ess. I, 235. II, 463. Verz. d. Oxf. H. 229,*a*, No. 561. 279,*a*,28. 292,*b*,3. 316,*a*,12. 336,*a*, No. 790. Verz. d. B. H. No. 1176. Hall 10. Weber, Kṛshṇaǵ. 233. 295. — Vgl. बृहद्राजमार्तण्ड.

राजमाष m. *Dolichos Catjang* Trik. 2,9,5. Hâr. 182. MBh. 13,3282 (fälschlich °मास ed. Calc.). Çârṅg. Saṁh. 3,9,7. Vâgbh. 6,19. Mârk. P. 32,11.

राजमाष्य adj. *zum Anbau von* राजमाष *geeignet, damit bestanden* (ein Feld) P. 5,1,20, Vârtt. 1, Sch.

राजमास MBh. 13,3282 fehlerhaft für राजमाष.

राजमुद्र m. *eine Bohnenart* H. 1174.

राजमुनि m. = राजर्षि Çâk. 47.

राजमृगाङ्क 1) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Verz. d. B. H. No. 997. — 2) Titel eines astr. Werkes Verz. d. B. H. 113,*b*,39.

राजयक्ष्मँ, später °यक्ष्मन् m. *eine best. lebensgefährliche Krankheit;* bei Spätern *Lungenschwindsucht* (ein Wortspiel leitet die Benennung vom *Mond* ab) H. 463. Halâj. 2,447. Ṛv. 1,161,1. AV. 11,3,39. 12,5, 22. TS. 2,3,5,2. Kauç. 13. Kâth. 11,3. 27,3. राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलामयः । तस्मात्तं राजयक्ष्मेति केचिदाहुर्मनीषिणः ॥ Suçr. 2,445,7. 20. 506,21. Hariv. 1358. 1360. Çiç. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 305,*b*,33. 306,*b*, 24. 312,*b*,22. 316,*a*, No. 751. 357,*a*, No. 849. fg. Verz. d. B. H. No. 955. 967. 975. fgg. राजयक्ष्मनामन् m. Bez. eines best. allegorisch-mythischen Wesens, dem auf dem Baugrund eines Hauses eine best. Stelle zugewiesen wird, Varâh. Bṛh. S. 53,47.

राजयक्ष्मिन् adj. *die Schwindsucht habend* Suçr. 2,75,4.

राजयज्ञ m. *Königsopfer* Kâtj. Çr. 20,1,1. 22,10,29. 11,15. Mâlav. 70,23.

राजयान n. *ein fürstliches Vehikel, Palanquin* Bhâg. P. 5,10,15.

राजयुधन् m. *Bekämpfer eines Fürsten* P. 3,2,95.

राजयोग m. 1) *eine Constellation, unter welcher Fürsten geboren werden,* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 6. Bṛh. 11 (passim). Ind. St. 2,275. Verz. d. B. H. No. 878. — 2) Bez. *einer best. Stufe der Meditation* (योग) Verz. d. Oxf. H. 224,*b*,9. 233. fgg., No. 566; vgl. Aufrecht in der Note auf S. 235,*a*. — Was bedeutet aber das Wort in Verbindung mit मन्त्रयोग und लययोग Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,18?

राजयोषित् f. *die Gemahlin eines Fürsten* R. 2,89,14. 104,3.

राजरङ्ग n. *Silber* Çabdar. im ÇKDr.

राजरथ m. *ein fürstlicher Wagen* MBh. 2,2064.

राजराज् m. *Oberfürst:* वैन्य Bhâg. P. 4,18,29. वन्यानां मृगाणाम् wird der in den Wald ziehende Râma R. 2,107,17 (115,17 Gorr.). Bez. *des Mondes* Hariv. 1331.

राजराज m. 1) *Oberkönig, Oberfürst* H. an. 4,57. Med. ǵ. 36. R. 2,92,14. पृथिव्यां राजराजो ऽस्मि सम्राट्सर्वमहीक्षिताम् R. Gorr. 2,9,13. जयदेवकवि° Gît. 11,21. Bez. Kubera's AK. 1,1,1,64. H. an. Med. Halâj. 1,79. MBh. 3,15891. Hariv. 2468. R. 2,95,4 (104,4 Gorr.). 6,4,29. Megh. 3. Kir. 5,51. Daçak. 133,12. Bhâg. P. 4,12,8. Mârk. P. 126,9. *des Mondes* H. ç. 10. H. an. Med. Statt राजराजविमर्दनम् R. 1,74,17 liest die ed. Bomb. besser राज्ञा राजवि°. — 2) N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 7,186. 8,1993.

राजराजता f. *die Würde eines Oberkönigs* Kathâs. 14,31.

राजराजत्व n. dass.: कुबेरस्य MBh. 3,15888.

राजराज्य n. *die Herrschaft über alle Fürsten* Hariv. 1331. 4033.

राजरामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,21.

राजरीति f. *eine Art Glockengut* Râǵan. im ÇKDr.

राजर्षि (राजन् + ऋषि) m. *ein* Ṛshi *fürstlicher Abkunft* (wie Manu, Purûravas, Viçvâmitra u. s. w.) Trik. 2,7,17. 8,20. H. 712. Âçv. Çr. 1,3,4. Kâtj. Çr. 20,3,2. 8. M. 9,67. Bhag. 4,2. 9,33. MBh. 1,7661. 3,1748. 1841. 5,6037. R. 1,4,10. 6,2. 8,26. 52,22. 57,5. 61,12. 2,21,46. 49,15. 94,19. 107,14. 4,20,7. Suçr. 1,16,20. Çâk. 71. 104,18. Lalit. ed. Calc. 313,12. VP. 284. Bhâg. P. 3,13,3. 4,27,20. 9,6,19. Mârk. P. 19, 37. Pañkat. 76,9. °लोक R. Gorr. 1,59,2.

राजर्षिन् m. = राजर्षि, gen. pl. राजर्षिणाम् (aus metrischen Rücksichten) Hariv. 11326.

राजलक्षण n. *ein fürstliches Abzeichen, ein Merkmal, dessen Besitz einen künftigen Fürsten anzeigt,* Daçak. 10,1.

1. राजलक्ष्मन् n. *ein königliches Abzeichen:* अ° adj. Spr. 539.

2 राजलक्ष्मन् m. Bein. Judhishṭhira's Dhanañǵaja im ÇKDr.

राजलक्ष्मी f. 1) *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* Ragh. 2, 7. Vikr. 160. Râǵa-Tar. 6,86. Bhâg. P. 4,8,70. Vgl. राजश्री. — 2) N. pr. einer Prinzessin Râǵa-Tar. 8,3481.

राजलिङ्ग n. *ein königliches Abzeichen* AK. 3,4,16,94. Trik. 3,3,204.

राजलीलानामन् n. pl. Titel einer Sammlung von *Beinamen* Kṛshṇa's, *die auf seine Belustigungen als König Bezug haben,* Hall 146.

राजलोक m. *eine Gesellschaft von Fürsten* MBh. 2,479. Kathâs. 14, 59. 18,26. 42,195 (hier fälschlich राज्य°). Mârk. P. 109,11.

राजवंश m. *ein fürstliches Geschlecht* R. Gorr. 2,7,21. Kathâs. 42,55. Verz. d. B. H. 128,*a*,18. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,23. 25. 352,*b*,2. राजवंशावली *Genealogie der Fürsten* (von Videha und Ajodhjâ) Mack. Coll. I,98.

राजवंश्य adj. *aus fürstlichem Geschlecht stammend* AK. 2,7,2. H. 713.

राजवत् (von राजन्) adv. = राजेव Suçr. 1,244,1. = राजनीव R. 2,58, 17. Spr. 2607.

राजवदन m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2799 u. s. w.

राजवधँ m. *Königswaffe* AV. 6,13,1.

राजवत्त् (von राजन्) 1) adj. *einen Fürsten habend, reich an Fürsten* P. 8,2,14, Sch. AK. 2,1,13. सभा MBh. 5,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Djutimant VP. 82. — 3) f. °वती N. pr. der Gattin des Gandharva Devaprabha Kathâs. 36,114. — Vgl. राजन्वत्.

राजवन्दिन् (°बन्दिन्?) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 53,38.

राजवर्चसँ (राजन् + वर्चस्) n. *königliche Würde* P. 5,4,78, Vârtt. Vop. 6,78.

राजवर्त्मन् n. *Hauptstrasse* H. 987.

राजवर्धन m. N. pr. Hiouen-thsang I, 247 fehlerhaft für राज्यवर्धन.

राजवल्लभ m. 1) *Liebling eines Fürsten* Mârk. P. 49,49. Davon nom. abstr. °ता f.: °तामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* Pañkar. 4,6,17. — 2) Bez. verschiedener Pflanzen: = राजबदर, राजादनी und राजाम्र Râǵan. im ÇKDr. — 3) Bez. *einer Art von Räucherwerk* Verz. d. B. H. No. 967. — 4) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 336,*a*, No. 790. der 2te Çloka lautet nach ÇKDr.: श्रीनारायणदासेन कविराजेन धीमता । प्रतिसंस्क्रियते द्रव्यगुणो ऽयं राजवल्लभः ॥

राजवल्ली f. *Momordica Charantia Lin.* Ratnam. im ÇKDr.

राजवसति f. *das Leben am Hofe eines Fürsten* MBh. 4,92. स राजवसतिं वसेत् 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, wo eben so zu lesen ist.

राजवाधव्य m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,13. vielleicht fehlerhaft für राजबान्धव्य (von °बान्धव).

राजवार्त्तिक n. Titel einer Schrift über Sâm̃khja Colebr. Misc. Ess. I, 234. Hall 8. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 570. — Vgl. भोज°.

राजवाह m. *Pferd* Çabdaḱ. im ÇKDr.

राजवाहन m. N. pr. eines Sohnes des Königs Râǵahamsa Daçak.

9,19. fgg.

राजवाह्य m. *ein königlicher Elephant* TRIK. 2,8,35. H. 1222. HALÂJ. 2,69.

राजवि (राजन् + वि) m. *der blaue Holzheher* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

राजविद्या f. *Fürstenlehre, Staatslehre* KÂM. NÎTIS. 1,7.8.

राजविनोदताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,12.

राजविहार m. *ein königliches Kloster* RÂGA-TAR. 4,200.

राजवीथी f. *Hauptstrasse* RAGH. 18,38.

राजवृक्ष m. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* AK. 2,4,2,4. H. an. 4,321. fg. MED. sh. 56. *Buchanania latifolia Roxb.* H. an. MED. *Euphorbia Tirucalli* ÇABDAK. im ÇKDR. — SUÇR. 1,133,4. 2,25,9. 66,16. 367,6. 415,12.

राजवृत्त n. *das Verfahren —, der Beruf eines Fürsten* R. 2,21,7. R. GORR. 2,111,1. 4,16,25. fg. Spr. 1659.

राजवेश्मन् n. *der Palast eines Fürsten* MBH. 3,2660. R. 2,34,19. 57,17. 91,33. R. GORR. 1,21,5. 70,2. 2,4,14. KATHÂS. 18,24. 42,184. 43,12. 124,74.

राजवेष m. *eine fürstliche Kleidung* RAGH. 19,30.

राजशण m. = पट्ट ÇABDAM. im ÇKDR. vulgo पाट (*Corchorus olitorius Lin.*) ÇKDR. °शन WILSON nach ders. Aut.

राजशफर m. *ein best. Fisch*, = इल्लिश HÂR. 189.

राजशय्या f. *ein königliches Ruhebett* H. 716.

राजशाक m. *eine best. Gemüsepflanze*, = वास्तूक RÂGAN. im ÇKDR.

राजशाकनिका f. desgl., = राजगिरि RÂGAN. im ÇKDR. u. d. letzten Worte.

राजशाकिनी f. dass. ebend.

राजशासन n. *ein königlicher Befehl* M. 10,55.

राजशास्त्र n. *Fürstenlehre, Staatslehre* MBH. 12,12211.

राजशुक m. *eine Papageienart*, = प्राज्ञ RÂGAN. im ÇKDR.

राजशृङ्ग 1) m. *ein best. Fisch, Macropteronatus Magur* (मद्गुर) *Ham.* H. 1347. — 2) n. *ein fürstlicher Sonnenschirm mit goldenem Griffe* TRIK. 2,8,32.

राजशेखर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,16. 140,*a*, No. 282. fg. 140,*b*, No. 284. 146,*b*, No. 313. 182,*b*,45. 209,*a*,11. 254,*b*,36. 255,*a*,39. 258,*a*,4. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 20.

राजशैल m. N. pr. eines *Berges* MÂRK. P. 55,7.

राजश्यामलोपासक m. pl. N. einer Secte Verz. d. Oxf. H. 250,*a*,14.

राजश्यामाक m. *eine best. Körnerfrucht* MÂRK. P. 32,9.

राजश्री f. *der Glanz —, die Herrlichkeit eines Fürsten* HARIV. 4344. 4952. R. 2,81,6. R. GORR. 2,25,38. 96,10. RÂGA-TAR. 1,281. 5,19. 449. 466. 6,279. — 4,144 ist nicht, wie TROYER annimmt, ein Dichter dieses Namens gemeint, sondern वाक्पतिराज als Beiwort von श्रीभवभूति aufzufassen.

राजस 1) adj. (f. ई) *der Qualität* रजस् *angehörig, zu ihr in Beziehung stehend* MAITRJUP. 3,5. 5,2. M. 12,32. 36. 40. 45. fgg. BHAG. 7,12. 14,18. 17,2. Spr. 4770. SÂṄKHJAK. 45. SUÇR. 1,130,4. 192,6. TATTVAS. 20. BHÂG. P. 3,29,9. MÂRK. P. 40,7. Verz. d. Oxf. H. 14,*a*, N. 1. 56,*b*,10. 80,*a*,25. 81,*a*,1 v. u. WILSON, Sel. Works 1,12. fg. 252. SARVADARÇANAS. 154,22. — 2) f. ई Bein. der Durgâ ÇABDAR. im ÇKDR.

राजसंसद् m. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* KATHÂS. 13,168.

राजसत्र n. *Königsopfer, ein von einem Fürsten veranstaltetes Opfer* KATHÂS. 33,54.

राजसत्व n. nom. abstr. von राजस 1) RAGH. 11,90.

राजसदन n. *ein fürstlicher Palast* AK. 2,2,9.

राजसद्मन् n. dass. KATHÂS. 43,13. 101,116.

राजसभा f. *eine vom König abgehaltene Gerichtssitzung* AK. 3,6,9. VET. in LA. (III) 2,3.

राजसर्प m. *eine Schlangenart* H. 1304. HALÂJ. 3,21. — Vgl. राजाहि.

राजसर्षप m. *schwarzer Senf, Sinapis ramosa Roxb.* H. 418. HÂR. 181. HALÂJ. 2,426. RATNAM. 114. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 3 Likshâ = $^1/_3$ Gaurasarshapa M. 8,133. JÂGN. 1,361. fg.

राजसाह्व N. pr. eines Landes KSHITÎÇ. 52,17.

राजसात् (von राजन्) adv.: संपद्यते *fällt dem Fürsten zu* VOP. 7,85.

राजसायुज्य n. *Königthum* ÇABDÂRTHAK. nach WILSON.

राजसारस m. *Pfau* ÇABDAM. im ÇKDR.

राजसिंह m. 1) *ein Löwe von Fürst, ein ausgezeichneter König* MBH. 5,7229. 7297. 7418. R. 1,12,22. fg. (21. fg. GORR.). Spr. 2262. — 2) N. pr. zweier Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,5, Çl. 13. HALL 71.

राजसिक adj. = राजस 1) PAÑKAR. 1,1,55.

राजसुख n. *die Freude —, das Glück eines Fürsten* KAURAP. 26.

राजसुत 1) m. *Königssohn, Prinz* R. 2,26,2. 72,42. 100,38. R. GORR. 2,98,24. RAGH. 3,38. KATHÂS. 74,123. — 2) f. आ *Königstochter, Prinzessin* RAGH. 6,26. KATHÂS. 7,71. 16,17. 24,78. 28,107.

राजसुन्दरगणि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 186,*a*,5.

राजसू (राजन् + सू) adj. *zum König machend* VS. 10,1. 6.

राजसूनु m. *Königssohn, Prinz* R. 1,27,16 (28,15 GORR.). KATHÂS. 34,217. 39,160. MÂRK. P. 21,11.

राजसूय m. (sc. क्रतु, यज्ञ) und n. (AK. 3,6,2,31) Bez. *der religiösen Feier der Königsweihe* P. 3,1,114. VOP. 26,11. येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः। शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राट्॥ AK. 2,8,1,3. H. 691. HALÂJ. 2,267. राजसूयो नृपाध्वरः TRIK. 2,7,5. AV. 4,8,1. 11,7,7. TS. 5,6,2,1. TBR. 2,7,4,1. 6,1. AIT. BR. 7,15. ÂÇV. ÇR. 9,3,1. 4,1. राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति ÇAT. BR. 5,1,1,12. 2,3,9. KÂTJ. ÇR. 14,1,7. KAUÇ. 92. MBH. 3,1728. 2445. HARIV. 1333. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,41. BHÂG. P. 1,9,41. MÂRK. P. 7,39. SARVADARÇANAS. 122,9. 10. P. 2,4,4, Sch. °याजिन् ÇAT. BR. 5,5,1,2. 2,5. राजसूयेष्टि MBH. 2,514. राजसूयारम्भपर्वन् heissen die Adhjâja 12—18 im 2ten Buche des MBH. राजसूयो मन्त्रः *ein beim* Râgasûja *herzusagender Spruch* P. 4,3,66, Vârtt. 2, Sch. Nach ÇABDÂRTHAK. bei WILSON bedeutet das Wort noch: *Lotus; eine Art Reis; Berg.*

राजसूयिक adj. (f. ई) *zum* Râgasûja *in Beziehung stehend, davon handelnd* u. s. w. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 18,5,3. 15. दक्षिणा P. 5,1,95, Sch. MÂRK. P. 7,25. 36. 39. पर्वन् MBH. 1,318. so heissen die Adhjâja 32—34 im 2ten Buche des MBH.

राजसेवक m. *Diener eines Fürsten* Spr. 3183, v. l. KATHÂS. 20,166. 111,24. BHÂG. P. 7,5,15. *ein* Radschput PAÑKAT. 217,25.

राजसेवा f. *Fürstendienst* ÇÂṆD. 51. Spr. 2609. °सेवोपजीविन् KATHÂS. 73,257.

राजसेविन् m. *Fürstendiener* Spr. 2947. 4939.

राजस्कन्ध m. *Ross* TRIK. 2,8,41.

राजस्तम्ब m. N. pr. eines Mannes; s. राजस्तम्बायन und °स्तम्बि.

राजस्तम्बायन m. patron. ÇAT. BR. 10,4,2,1. proparox. 6,3,9.

राजस्तम्बि m. desgl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,33.

राजस्त्री f. *Gattin eines Fürsten* R. 2,57,21.

राजस्थलक adj. von राजस्थली gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्थली f. N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

राजस्व n. *Eigenthum eines Fürsten* M. 8,149.

राजस्वर्ण m. *eine Art Stechapfel*, = राजधुस्तूरक RÂGAN. im ÇKDR.

राजस्वामिन् m. *Fürstenherr*, als Beiw. Vishṇu's RÂGA-TAR. 8,1824.

राजहंस m. 1) *Flamingo* AK. 2,5,24. H. 1326. HALÂJ. 2,97. = कलहंस und कादम्ब H. an. 4,331. MED. s. 61. — HARIV. 12670. R. 4,40,47. RAGH. 5,75. KUMÂRAS. 1,34. ṚT. 3,21. MEGH. 11. VIKR. 93. Spr. 626. KATHÂS. 39,160. 42,224. 50,6. BHÂG. P. 3,28,27. 4,7,21. 5,17,13. PANKAR. 1,7,30. HIT. 79,7. Verz. d. Oxf. H. 132,b, No. 243. am Ende eines adj. comp. f. आ (v. l. fehlerhaft ई) Spr. 573. °हंसी *Flamingoweibchen* RAGH. 6,26. VIKR. 19. KATHÂS. 69,7. 112,96. KAURAP. 5. 25. — 2) *ein ausgezeichneter Fürst* TRIK. 3,3,448. H. an. MED. — 3) N. pr. eines Fürsten von Magadha DAÇAK. 2,7. eines Autors Verz. d. B. H. No. 941. eines Dieners KATHÂS. 6,124.

राजहर्म्य n. *der Palast eines Fürsten* KÂM. NÎTIS. 16,6.

राजहर्षण n. *die Blüthe von Tabernaemontana coronaria R. Br.* (तगरपुष्प) RÂGAN. im ÇKDR. *Stadt* WILSON nach ÇABDÂRTHAK. (eine Verwechselung von तगर und नगर).

राजहस्तिन् m. *ein stattlicher Elephant* P. 6,2,63, Sch. HÂR. 49.

राजहार m. *Bringer des* Soma KÂTH. 34,3.

राजहासक m. *ein best. Fisch, Cyprinus Catla* (कातल) *Ham.* ÇABDAR. im ÇKDR.

राजाङ्गण (राजन् + अ°) n. *der Hofraum in einem fürstlichen Palaste* KATHÂS. 35,41. 47.

राजातन m. UĠĠVAL. zu UṆÂDIS. 2,78. *Buchanania latifolia Roxb.* ÇABDAM. im ÇKDR. VIÇVA bei UĠĠVAL. *Butea frondosa Roxb.* und *Mimusops Kauki* VIÇVA. — Vgl. राजादन.

राजात्मकस्तव m. Bez. *eines best. Lobspruches auf* Râma WEBER, RÂMAT. UP. 363.

राजात्यावर्तक m. = राजावर्त RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजादन m. *Buchanania latifolia* (n. *die Nuss*) AK. 2,4,2,15. H. 1142. an. 4,188. MED. n. 203. *Mimusops Kauki* oder *hexandra* (n. *die Frucht*) AK. 2,4,2,26. *Butea frondosa* MED. RATNAM. 44. = त्रिपत्रक H. an. — SUÇR. 1,137,1. 211,19. 228,15. 2,15,7. 79,1. 131,12. 490,5. VÂGBH. 6, 120. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 176,17. राजादनफल oder राजादनफल (vgl. die Ausleger zu AK. 2,4,2,26) n. ÇÂNT. 3,12, Sch. राजादनी f. *ein best. Baum*, = कपीष्ट, नीपबीज u. s. w. RÂGAN. im ÇKDR. ÇATR. 1,270. 279.

राजाद्रि m. *eine best. Gemüsepflanze*, = राजगिरि RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजाधिकारिन् m. *Richter* KATHÂS. 60,222.

राजाधिकृत m. dass. VARÂH. BṚH. S. 10,16. KATHÂS. 60,228.

राजाधिदेय HARIV. 2032 fehlerhaft für राजाधिदेव.

राजाधिदेव 1) m. Bein. Çûra's HARIV. 2032. fg. (राजाधिदेय ed. Calc.). 5085. 6628. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Çûra's HARIV. 1928. VP. 437. BHÂG. P. 9,24,30. 38.

राजाधिराज m. *Oberkönig* TAITT. ÂR. 1,31,6.

राजाधिष्ठान s. u. अधिष्ठान 1).

राजाधन् (राजन् + अ°) m. *Hauptstrasse* RÂGA-TAR. 1,370.

राजान्, °नति denom. von राजन् SIDDH. K. zu P. 6,4,15.

राजानक (राजन् + अ°) m. *regulus, kleiner Prinz* RÂGA-TAR. 6,261. 8, 2969. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 16. °राम Verz. d. Oxf. H. 239,a,12.

राजानुजीविन् m. *ein Diener des Fürsten* MATSJA-P. im ÇKDR.

राजान्न (राजन् + अन्न) n. 1) *von einem Fürsten* oder *Krieger empfangene Speise* M. 4,218. °प्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 59,b,38. — 2) *eine Art Reis* (*Fürstenspeise*), *der in* Andhra *gebaut wird*, RÂGAN. im ÇKDR.

राजान्यत्व (राजन् + अ°, nom. abstr. von अन्य) n. *Thronwechsel* VARÂH. BṚH. S. 3,18.

राजाभिषेक m. *Königsweihe* Verz. d. Oxf. H. 332,b,12. 335,b,19. °पद्धति f. Titel einer Abhandlung über diesen Gegenstand MACK. Coll. I,34.

राजाम्र m. *eine Art* Âmra RÂGAN. im ÇKDR.

राजाम्ल m. = अम्लवेतस RÂGAN. im ÇKDR.

राजाय् (von राजन्), °यते P. 1,4,15, Sch. 8,2,2, Sch. *sich wie ein König gebahren, sich dafür halten* Spr. 894.

राजार्क m. = अर्क *Calotropis gigantea* RÂGAN. im ÇKDR.

राजार्ह (राजन् + अर्ह) 1) adj. *einem Fürsten zukommend, ihm gebührend, seiner würdig* MED. h. 23. R. 3,49,42. — 2) f. आ *Eugenia Jambolana Lam.* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) n. a) *Agallochum* AK. 2,6,3,28. H. 640. MED. — b) *eine Reisart*, = राजान्न RÂGAN. im ÇKDR. u. d. l. W.

राजार्हण (राजन् + अ°) n. *ein fürstliches Ehrengeschenk* R. GORR. 2,72,20.

राजालाबू f. *eine Gurkenart* MADANAVINODA im ÇKDR.

राजालुक m. *ein best. Knollengewächs*, = महाकन्द HÂR. 101.

राजावर्त m. *eine Art Diamant* H. 1066. राजावर्तोपलश्याम KATHÂS. 73, 339. unter den रस aufgeführt Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761.

राजावलि und °ली f. *Königsreihe*, Titel einer *Fürstenchronik* Verz. d. Oxf. H. 147,a,36. Verz. d. B. H. No. 566. °पाटक Titel einer anderen *Chronik* RÂGA-TAR. ed. Calc. auf dem Titelbl., °पताका (welches AUFRECHT in °पताका verbessert) Verz. d. Oxf. H. 147,a,37.

राजाश्व m. *ein starker Hengst* AV. 6,102,2. P. 8,2,2, Sch.

राजासन n. *Königssitz, Thron* MBH. 4,2266. HARIV. 4344. R. 2,91,37 (100,36 GORR.). R. GORR. 2,4,23.

राजासन्दी f. *ein Schemel, auf den der* Soma *gesetzt wird*, VS. 19,16. ÇAT. BR. 3,3,4,26. 14,1,3,8. KÂTJ. ÇR. 26,2,17.

राजासलक्षण m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,29,2. nach HALL verderbt aus राजसलक्षण.

राजाहि m. *eine Art Schlange* (अहि) TRIK. 1,2,3. — Vgl. राजसर्प.

1. राजि m. N. pr. eines Sohnes des Âju MBH. 1,3150. रजि ed. Bomb.

2. राजि (UṆÂDIS. 4,124) und राजी (UĠĠVAL.) f. VOP. 4,17. SIDDH. K. 248,a,2. 1) *Streifen* (पङ्क्ति, रेखा) AK. 2,4,1,4. H. 1423. an. 2,174. MED. ǵ. 14. HALÂJ. 4,36. भस्म°, उदक° ÂÇV. ÇR. 3,10,15. ÇAT. BR. 14,5,2,3. KÂTJ. ÇR. 25,3,7. LÂTJ. 8,8,33. श्वेतलोहित° MBH. 7,1009. 9,2609. नील° VARÂH. BṚH. S. 64,1. SUÇR. 1,113,5. 269,8. 286,6. 2,247,9. 258,12. 261,16. 263,14. 264,7. KÂM. NÎTIS. 7,19. अनाविष्कृतदान° (द्विपेन्द्र) RAGH.

2,7. Spr. 2916. Vikr. 78. R. 5,13,39. कुन्तलराजयः Dhûrtas. in LA. 80, 14. आविष्कृतवर्क्ऱराजि adv. Spr. 2543. प्राणि° (प्राणिवाजि ed. Bomb.) MBh. 7,510. Pańkar. 1,7,30. राजीव° Spr. 2629. Çiç. 4,9. खड्ग° Verz. d. Oxf. H. 117,a,38. मुक्ता° Pańkar. 1,3,78. उत्पद्मराजीनि विलोचनानि Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211. धूम° Hariv. 12807. धान्त° Spr. 4871. मेघ° R. 2,93,11 (102,12 Gorr.). R. Gorr. 2,64,19. 5,5,31. Mâlav. 56. नीलपयोद° Kumâras. 7,39. घन° R. 7,4,23. in Schlangennamen: अङ्गुल°, बिन्दु° Suçr. 2,265,16. स्निग्ध° 266,2.4. राजितम् *in langen Reihen* Varâh. Brh. S. 12,2. Vgl. तिरश्चि°, तीर्थ°, नील°, रक्त°, रत्न°, रोम°, वन°. Wohl wie रूजु von रज् = 4. अर्ज्. — 2) ई = राजिका *schwarzer Senf* Râǵan. im ÇKDr. — 3) राज्याम् Kathâs. 41,58 fehlerhaft für राज्याम्.

राजिक 1) adj. von राजन् in षोडश° *von sechszehn Königen handelnd* MBh. 7,2451; vgl. die Unterschriften in den Adhjâja 55—71 desselben Buches. — 2) m. *a)* = नरेन्द्र (nicht *König*) Trik. 3,3,359. — *b)* N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,b,23. — 3) f. आ *a) Streifen* (पङ्क्ति, रेखा), = राजि H. an. 3,88. Med. k. 145. — *b) Feld* H. an. Med. — *c) schwarzer Senf, Sinapis ramosa Roxb.* (vgl. राजसर्षप) AK. 2,9,19. Trik. 3,3,413. H. 418. H. an. Med. Halâj. 2,426. Ratnam. 114. Suçr. 1,217, 5. Pańkat. 184,18. *ein Korn dieser Senfart* als Gewicht = 6 Mariki = 1/3 Sarshapa Çârṅg. Saṁh. 1,1,14. — *d)* N. *eines zu den* क्षुद्ररोग *gezählten Ausschlages* Çârṅg. Saṁh. 1,7,65. — Vgl. धर्मराजिका.

राजिकाफल m. *weisser Senf, Sinapis glauca Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

राजिचित्र adj. *buntgestreift*, Bez. einer Art Schlange Suçr. 2,265,16.

राजिनी s. रञ्जिनी.

राजिफला f. *eine Gurkenart* (*mit gestreiften Früchten*), = चीनाकर्कटी Râǵan. im ÇKDr.

राजिमत् (von 2. राजि) adj. *gestreift* Suçr. 2,343,11. Hariv. 10291 (राजीयन्ति st. राजिमन्ति die neuere Ausg.; vgl. R. 5,28,13. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211). Bez. einer Gattung von Schlangen Suçr. 2,264,8. 265, 3. 16. 266,4. 267,5. रोमाञ्चोद्गतराजिमत्त Hariv. 2902. — Vgl. राजीमत्.

राजिल (wie eben) adj. *gestreift;* m. Bez. *einer Gattung von Schlangen* AK. 1,2,1,6. H. 1305. Halâj. 3 21. Suçr. 2,266,3. Ragh. 11,27. Kathâs. 22,202.

राजी s. u. 2. राजि.

राजीक m. pl. N. pr. eines Volkes R. 4,44,13, v. l.; s. S. 526.

राजीकृत (2. राजि + कृत) adj. *gestreift, Streifen bildend* R. 5,28,13; vgl. Hariv. 10291. Ragh. 13,25. Kathâs. 10,211.

राजीफल m. *Trichosanthes dioeca Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

राजीमत् adj. = राजिमत् *gestreift* Suçr. 2,429,12. Schlangen Verz. d. Oxf. H. 309,a,12.

राजीय्, °यति denomin. von राजन् Schol. zu P. 1,4,15. 8,2,2. Vop. 21,3.

राजीव (von राजी) P. 5,2,109, Sch. 1) adj. (f. आ) *gestreift:* °पृश्नि (nach dem Schol. *lotusfarbige Flecken habend*) Kâtj. Çr. 22,9,13. राजीवा आनयन्ति तांश्चैवोद्गाणः Pańkav. Br. 21,14,8. nach Aǵaja im ÇKDr. = राजोपजीविन् (also von राजन् abgeleitet) *von einem Fürsten seinen Lebensunterhalt habend.* — 2) m. *a) ein best. Fisch* AK. 1,2,3,19. Trik. 3,3,420. H. an. 3,710. Med. v. 48. Halâj. 3,37. M. 5,16. Jâǵn. 1,178. Suçr. 1,206,6. 18. sein Laich ist giftig 2,257,17. — *b) eine Antilopenart* Trik. H. an. Med. — *c) Elephant* Trik. 2,8,33. — 3) n. *eine blaue Lotusblüthe* AK. 1,2,3,40. H. 1161. H. an. Med. Halâj. 3,58. gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. Jâǵn. 3,317. Kumâras. 3,45. Spr. 2629. Çiç. 4,9. °नेत्र adj. so v. a. *blauäugig* MBh. 5,3253. °लोचन adj. (f. आ) 3,1754. 5,7399. 13,102. Hariv. 11071. R. 2,72,7. 95,2. 3,68,22. °शुभलोचन 5,31,30.

राजीविनी f. *Nelumbium speciosum* (die Pflanze, die Blüthe ist राजीव), *eine Gruppe von Nel. spec.* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

राजेन्द्र (राजन् + इन्द्र) m. 1) *ein ausgezeichneter Fürst, Oberkönig, Kaiser* MBh. 5,5948. 5952. 7052. 7118. 7294. R. Gorr. 2,110,21. (मण्डलेश्वरात्) तस्माद्दशगुणो राजा राजेन्द्रः परिकीर्तितः Brahmavaiv.-P. im ÇKDr. Vgl. auch u. इन्द्र 1) *b)*. — 2) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 150,b,31. eines Sohnes des Kâçînâtha 261,a,13.

राजेन्द्रगिरि m. N. pr. eines Mannes Wilson, Sel. Works 1,239.

राजेय adj. *von* Raǵi *abstammend:* क्षत्र Hariv. 1477.

राजेयु m. N. pr. v. l. für कृतेयु VP. 447, N. 7.

राजेश्वर (राजन् + ई°) m. *Oberkönig*, N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,223.

राजेष्ट (राजन् + 1. इष्ट) 1) m. = राजपलाण्डु Râǵan. im ÇKDr. u. d. l. W. — 2) n. *eine Art Reis*, = राजान्न Râǵan. im ÇKDr. u. d. l. W.

राजेोद्वासनसंज्ञक m. *eine best. Pflanze*, = भूताङ्कुश Râǵan. im ÇKDr.

राजोपकरण (राजन् + उप°) n. pl. *die Insignien eines Fürsten* Varâh. Brh. S. 3,18. Kathâs. 43,47. — Vgl. राज्योपकरण.

राजोपसेवा f. *Königsdienst* M. 3,64.

राजोपसेविन् m. *ein königlicher Diener* Varâh. Brh. S. 39,3.

राज्जुकण्ठिन् m. pl. *die Schule des* Raǵǵukaṇṭha gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्जुदाल adj. von रज्जुदाल TBr. 3,8,19,1. 20,1. Çat. Br. 13,4,4,5. Kâtj. Çr. 20,4,17.

राज्जुभारिन् m. pl. *die Schule des* Raǵǵubhâra gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106.

राज्ञी (von राजन्) f. 1) *Königin, Fürstin* Vop. 4,12. Med. ṅ. 2. VS. 14, 13. 15,10. TBr. 2,2,6,2. 3,11,3,1. Ait. Br. 5,23. MBh. 3,2682. 5,7027. 7451. Ragh. 1,57. 76. Kathâs. 13,64. 18,87. Râǵa-Tar. 5,225. Varâh. Brh. S. 5,86. °पद *die Würde —, die Stellung einer Königin* 70,10. Vgl. मक्षा°, सर्प°. — 2) Bez. *der nach Westen gerichteten Seite des Gehäuses der Weltseele* Khând. Up. 3,15,2. — 3) ein N. der Gemahlin des Sonnengottes Med. Mâtsja-P. 11 im ÇKDr.; vgl. VP. 266, N. 1. — 4) *gelbrothes Messing* H. 1048.

राज्य (wie eben) 1) adj. *zur Herrschaft berufen, königlich* TBr. 1,4, 2,4. — 2) n. (auch राज्य und राज्य AV.) *Herrschaft, Königthum; Reich* (vgl. राष्ट्र) gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128. gaṇa ब्राह्मणादि zu 124 (vgl. Siddh. K. 92,a). Vop. 7,19. AK. 3,4,14,81. त्वां विशो वृणतां राज्याय AV. 3,4,2. यासां सोमः परि राज्यं बभूव 12,3,31. यस्य राज्यानि वीरुधाम् 11,6,15. यमस्य राज्ये 18,4,31. स राज्ञो राज्यमनु मन्यतामिदम् 4,8, 1. TBr. 1,4,2,4. TS. 2,1,3,4. 6,6,5. 7,5,8,3. Çat. Br. 2,2,3,1. 4,4,6. नहि ब्राह्मणो राज्यायालम् 5,1,1,12. अवरं राज्यं परं साम्राज्यम् 13. 3,3,12.

नेमो राज्यमादत्त 11, 4, 3, 3. Ait. Br. 7, 23. 8, 6. 12. ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यं राज्यमाधिपत्यम् Khând. Up. 5,2,6. Gegens. आकिंचन्य Spr. 3676. fg. 582. पप्रच्छ कुशलं राज्ये राज्याश्रममुनिम् (d. i. राजानम्) Ragh. 1,58. Varâh. Bṛh. S. 48,47. 49,7. 68,6. °सुख 70,12. 74,1. 77,4. देवेषु *über* MBh. 1,4160. त्रिषु लोकेषु 5910. पृथुस्तु विनयाद्राज्यं प्राप्तवान् M. 7,42. R. 1,1,86. राज्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे Spr. 4621. Ragh. 4,1. °लाभ Verz. d. Oxf. H. 334,*a*,17. °त्याग 78,*b*,23. एतदर्थं हि राज्यानि प्रशासति नराधिपाः R. 2, 52,24. 4,8,35. M. 9,66. Hariv. 5243. क्रमप्राप्तं पितुः स्वं यो राज्यं समनुशास्ति ह MBh. 3,2449. राज्यं रक्षितुम् R. 2,73,12. °रक्षा Spr. 1206. राज्यं गृहाण भरत पितृपैतामहम् R. 2,79,5. बद्ध° Râǵa-Tar. 5,282. नन्दिग्रामे ऽकरोद्राज्यम् so v. a. *regierte* R. 1, 1, 38. त्रिंशद्वर्षसहस्राणि राज्यं कृत्वा 42,27. 7,59,19. Kathâs. 30,39. 62,167. Mârk. P. 18,2. 114,18. fg. 133, 5. त्रिंशद्वर्षसहस्राणि राजा राज्यमकारयत् R. 1,43,9. 51,20. राज्यमुपासित्वा 1,93. राज्यं सुगन्धा विदधे स्वयम् Râǵa-Tar. 5,242. पुत्रे राज्यं समासृज्य M. 9,323. राज्ये सुतं कृत्वा Mârk. P. 109,37. पुत्रमेकं राज्याय पालयेति नियुज्य R. 1,55,11. राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम् 3,23. 1,68. सो ऽचिराद्भ्रश्यते राज्यात् M. 7,111. भ्रंशयिष्यामि तं राज्यात् MBh. 3, 2253. राज्याच्च्युतः R. 2,97,23. प्रच्युता राज्यात् 3, 53, 22. राज्यात्स्वादवरोपितः 4,8,20. राज्याद्विवासितम् 2,84,4. °विभव Kathâs. 18,405. °विभूतयः Bhâg. P. 6,15,22. एतत्प्रदास्यामि राज्यार्धं ते Kathâs. 29, 164. 175. 18, 402. मत्त्वमूल Spr. 4692. निहतकण्टक Pańkat. 202, 19. °भेदकर Spr. 2230. राज्याभिषेक Verz. d. B. H. No. 897. राज्याभिषेकदीधिति Verz. d. Oxf. H. 272, *b*, No. 643. राज्याभिषिक्त Weber, Râmat. Up. 320. सप्ताङ्ग M. 9,294. 296. Kâm. Nîtis. 4,1. राज्याङ्ग AK. 2,8,1,18. H. 714. शोच्यं राज्यमराजकम् (v. l. राष्ट्रमराजकम्) Spr. 269. स्वानि राज्यानि मुख्यानि ऋद्धानि R. 7, 39, 7. राज्यमेकश्चकारोच्चैः Spr. 1196. 2951, v. l. °राज्य *Herrschaft des*, *ein von — beherrschtes Reich* P. 6,2,130. ब्राह्मण°, क्षत्रिय° Sch. रघुराज्याभिषेक Ragh. 3 in der Unterschr. भरतारक्षितं स्फीतं पुत्रराज्यम् R. 2, 52, 58. न शूद्रराज्ये निवसेन्नाधार्मिकजनावृते M. 4,61. सुर° *Herrschaft über* R. 4, 7,3. त्रैलोक्य° Bhag. 1,35. पृथ्वी° Kathâs. 18,178. काशि° R. 7,59,19. अटवीराज्ये ऽभिषेक्तुम् Hit. 41,1. सकलविहंगराज्याभिषेक Pańkat. 158, 18. अराज्या मे प्रभा मूढा भवित्री Hariv. 1630. — Vgl. नर°, पृथिवी°, महा°, यम°, युव°, वेद°, समर्थ°, स्व°.

1. राज्यकर (राज्य + 1. कर) adj. *regierend* MBh. 1,1722.

2. राज्यकर (राज्य + 4. कर) m. *der Tribut eines tributären Fürsten* Kshitîç. 7,3.

राज्यकर्तर् R. 2,67,1 fehlerhaft für राजकर्तर्, wie die ed. Bomb. liest.

राज्यकृत् adj. *regierend* Spr. 2343 (Conj.).

राज्यतन्त्र n. sg. und pl. *Regierungssystem*, *Regierung* R. 2,112,25. R. Gorr. 2,7,19. Râǵa-Tar. 4,719. Mârk. P. 28,2.

राज्यदेवी f. N. pr. der Mutter Bâṇa's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. राष्ट्रदेवी v. l. 50.

राज्यद्रव्य n. *ein zur Herrschaft*, insbes. *zur Königsweihe erforderlicher Gegenstand;* davon adj. °मय *dazu gehörend* R. 2, 22,28.

राज्यधर m. *Regent*, N. pr. eines Mannes Kathâs. 43,23. 59.

राज्यपाल m. N. pr. eines Fürsten Reinaud, Mém. sur l'Inde 263. राजपाल v. l.

राज्यलक्ष्मी f. *Glanz der Regierung* R. Gorr. 2,91,6. — Vgl. राजलक्ष्मी.

राज्यलीलाय् (von राज्य + लीला) *König spielen;* davon °लीलायित n. *Königsspiel:* तत्रापि देवैकाकी करोम्यहम् । राज्यलीलायितं राज्यधरो नाम विधेर्वशात् ॥ Kathâs. 43,59.

राज्यलोक Kathâs. 42,195 fehlerhaft für राजलोक.

राज्यवर्धन m. N. pr. zweier Fürsten: 1) eines Sohnes des Dama VP. 353. Bhâg. P. 9,2,29. Mârk. P. 109,4. fgg. — 2) eines Sohnes des Pratâpaçîla oder Prabhâkaravardhana Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. 51. Journ. of the Am. Or. S. 6,529,2. 3. Hiouen-thsang I, 247 (hier fälschlich राज°).

राज्यश्री f. N. pr. einer Tochter Pratâpaçîla's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 51. fg.

राज्यसेन m. N. pr. eines Fürsten von Nandîpura Verz. d. Oxf. H. 153,*b*,32.

राज्यस्थ adj. *regierend*, *die Herrschaft führend* Hariv. 5243 (राज्ये स्थिते नृपे die neuere Ausg.). R. 1,39,20. 2,53,18. Mârk. P. 7,31.

राज्यस्थायिन् adj. dass. Pańkar. 4, 3, 135.

राज्यस्थिति f. *Regierung* Râǵa-Tar. 1,361.

राज्योपकरण n. pl. *Reichsinsignien* MBh. 9, 3494. — Vgl. राजोपकरण.

राटि (von रट्) f. *Schlacht*, *Kampf* H. 798. m. = शरारि ÇKDr. nach AK. 2,5,25; hier ist aber आटि gemeint.

राटिका (vielleicht von रट्) f. s. मृग° (etwa *die Gazellen zum Schreien veranlassend*).

राठु m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,21.

राडि m. = शरारि ÇKDr. nach AK. 2,5,25; hier ist aber आडि gemeint.

राढा f. 1) *Schönheit*, *Pracht* Trik. 3,3,118. H. 1512. an. 2,131. Med. ḍh. 3. Halâj. 2,410. — 2) N. pr. einer Landschaft im westlichen Bengalen und der Hauptstadt darin; = सुह्म H. an. Med. = देश Trik. — As. Res. 5,56. 64. fg. Kathâs. 74,29. Z. d. d. m. G. 3,163. राढाभिधानो जनपदः Prab. 68,16. गौडं राष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढा पुरी 22, 13. दक्षिण° 20,5. 23,11. °पुर Verz. d. Oxf. H. 261,*a*,5. रारा Colebr. Misc. Ess. II, 188. fg. दक्षिणरारा 189. es kommt auch die Form राठ vor, z. B. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,22. Colebr. Misc. Ess. II, 179; vgl. u. 2. अजय 2) *c*) und गोमुख 8) *b*).

राढीय adj. von राढा 2) Schol. zu Prab. 22,13. Wilson, Sel. Works I, 156. रारीय Colebr. Misc. Ess. II, 189.

राण n. 1) *Blatt*. — 2) *Pfauenschweif* Çabdârthak. bei Wilson.

राणक 1) Titel eines Commentars zum Tantravârttika Hall 170. 183. 207. Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,29. — 2) f. राणिका *Zügel* Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 5,56.

राणाद्य m. Bein. Dâmodara's Verz. d. B. H. No. 934.

राणायनि m. patron. von रण gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. राणायनीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Lâṭj. 6, 9, 16. राणायिनीपुत्र Nidânas. 9, 1 in Ind. St. 1,45. राणायनीसूत्र in einem SV. Gâna (Tüb. Hdschr.).

राणायनीय m. pl. *die Schule des* Râṇâjana Ind. St. 1,43. 47. 53. 61. 63. 3,273. fg. Colebr. Misc. Ess. I, 18. 326. n. sg. *das* Sûtra *des* Râṇâjana Ind. St. 1,50. m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,6. रायाणनीय v. l.

राणायनीयि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,11.

राणिं m. patron. von रण gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59.

राणिग m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 349,*b*,13. 20.

राण्ड्य adj. so lesen alle von uns und A. Weber verglichenen Hdschrr. in der Stelle: सुते सोमे सुतपाः शंतमानि राण्ड्या क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः ṚV. 6,23,6. Müller und Aufrecht haben रांद्या, Sâj. erklärt das Wort durch रमणीय.

रात 1) partic. adj. s. u. 1. रा. — 2) m. N. pr. eines Lehres Ind. St. 8,406. fgg.

रातमनस् adj. *bereitwillig:* रातमनसो हविर्गृह्णानि Çat. Br. 1,1,2,12. त्र्यशनाय 3,6,4,7. आलम्भाय 7,3,5.6. ते रातमनसो ऽलं दानाय भवन्ति 4,3,4,14.

रातहविस् adj. = रातहव्य 1) *a*): धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम् ṚV. 2,34,8.

रातहव्य 1) adj. *a*) *der die Opfergabe* (den Göttern) *willig überlässt, ein freigebiger Opferer* ṚV. 1,31,13. 54,7. हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ 118,11. 153,3. 2,25,1. 4,44,3. कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः 5,53,12. 7,19,6. 8,92,13. Häufig नमसा रातहव्यः 5,43,14. 6,11,4; vgl. AV. 3,3,1. — *b*) *derjenige welchem die Opfergabe überlassen wird,* — *gehört* ṚV. 7,35,1. Çâṅkh. Çr. 3,6,3. नमसा रा° ṚV. 4,7,7. 5,43,6. 6,69,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja, Verfassers von ṚV. 5,65. 66 (vgl. Vers 3).

राति (von रा) P. 3,3,96 (angeblich nur im ṚV. oxytonirt); f. auch राती gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. 1) adj. *bereitwillig, günstig; zu geben willig* (Gegens. अराति) ṚV. 1,29,4. AV. 11,8,21. भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम् ṚV. 10,66,10. सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः AV. 1,26,2. धाता रातिः सवितेदं जुषन्ताम् 3,8,2. 7,17,4. VS. 22,13. पीवा यं रातिं मन्येत तस्मा एनां प्रयच्छेत्तद्धि मित्रस्य रूपम् Ait. Br. 8,8. Çat. Br. 14,6,9,34. — 2) f. *Verleihung, Gunst, Gnadenbezeugung; Gabe, Opfergabe* ṚV. 1,60,1. सुमति, राति 89,2. 10,143,4. वाजिन्वती रातिः 1,117, 1. 122,7. 132,2. गृभीता 162,2. ये स्तोतृभ्यो रातिमुपसृजन्ति सूरयः 2,1, 16. भगस्य 3,62,11. य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्याय 4,5,2. 34,10. स्यामहं ते सदमिद्राती 6,50,9. 7,1,20. 25,4. आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ 37,8. AV. 6,39,2. प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ṚV. 6,63,4. 7,25,3. 8,9,16. इयं त इन्द्र गिर्वणो रातिः क्षरति सुन्वतः 8,13,4. पारावतस्य रातिषु द्रवच्चक्रेष्वाशुषु 34,18. अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद्ददुषो रातिम् 68,5. उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठात् 10,95,17. AV. 19,3,4. VS. 38,13. Çat. Br. 14,2,2,26. Çâṅkh. Çr. 9,6,6. इन्द्रस्य रातिः N. eines Sâman Ind. St. 3,208,*b*. — Vgl. अ°, अनर्श°, अलर्षि°, चित्र°, पिशङ्ग°, पूष°, ब्रह्म°, मंहिष्ठ°, विसृष्ट°, स°, सु°.

रातिषाच् (रा° + साच्) adj. *Gunst verleihend, über Gaben verfügend, freigebig;* auch Bez. von *spendenden Genien:* त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्चिरे ṚV. 2,1,13. ता नो रासन्रातिषाचो वसूनि 7,34,22. 23. 35,11. भगं धातं रातिषाचं पुरंधिम् 36,8. रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः 38,5. मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद्रातिषाचश्च रासन् 40,6. 10,65,14. तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये 6,49,14. अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः AV. 18,3,20. Çâṅkh. Çr. 8,21,21. — Vgl. स्मद्रातिषाच्.

राहुल m. N. pr. eines Sohnes des Çuddhodana VP. 463. — Vgl. राहुल.

रात्र n. = रात्री *Nacht;* selbständig nur in der Stelle त्रीणि रात्राणि MBh. 13,6230 und bei der künstlichen Erklärung von पञ्चरात्र Pañkar. 1,1,44: रात्रं च ज्ञानवचनं ज्ञानं पञ्चविधं स्मृतम्। तेनेदं पञ्चरात्रं च प्रवदन्ति मनीषिणः॥ Am Ende eines comp. ist रात्र der regelmässige Vertreter von रात्री P. 5,4,87. Vop. 6,46. 51. 57. जघन्यरात्रे *am Ende der Nacht* MBh. 3,10795. 14750. वर्षारात्र (so v. a. वर्षकाले Comm.) उपागते R. 7,64,10. 4,26,24. वर्षारात्र m. Vop. 6,46. 51. द्वादशरात्रे MBh. 1,6614. अष्टाविंशतिरात्रं (acc.) वा मासं वा 4,1173. त्रिरात्रम् acc. *drei Tage hindurch* 14,2195. Pañkat. 8,19. त्रिरात्राणि MBh. 3,4060. दशरात्रेण *zehn Nächte hindurch* R. 1,21,18. कतिपयरात्रम् acc. *einige Nächte hindurch* Çâk. 28,14. पञ्चदशरात्रः P. 3,3,137, Sch. ततो नाज्ञायत तदा दिवारात्रं तथा दिशः *nicht Tag noch Nacht* MBh. 3,816. दिवारात्रम् adv. *am Tage und in der Nacht* M. 5,80. MBh. 3,2647. 12540. 16,38. R. 1,58,12. Nach P. ist ein auf रात्र ausgehendes comp. stets masc., nach Andern aber nur dann, wenn kein Zahlwort vorhergeht, P. 2,4,29. Siddh. K. zu d. St. AK. 3,6,2,12. 3,25. — Vgl. अति°, अनुरात्रम्, अपररात्र, अर्ध°, अहो°, गण°, चिर°, पुण्य°, पूर्व°, प्रतिरात्रम्, प्रथमरात्र, ब्रह्म°, मध्य°, मध्यम°, महा°, सर्व°, एक°, द्वि° u. s. w.

रात्रक 1) adj. f. रात्रिका *a*) *nächtlich* Râǵa-Tar. 5,482, wo °ता रात्रिका श्रीः zu trennen ist. पञ्चरात्रक *fünf Nächte* (*Tage*) *während* Pañkat. ed. orn. 4,17. — *b*) *ein Jahr lang im Hause einer Buhldirne wohnend* H. an. 3,87. fg. Med. k. 145. — 2) n. = 2. पञ्चरात्र 3) H. an. Med. *ein Zeitraum von fünf Nächten* Wilson.

रात्रि s. u. रात्री.

रात्रिक adj. am Ende eines comp. nach einem Zahlwort *so und so viele Nächte* (*Tage*) *verweilend:* नगरे पञ्चरात्रिका ग्रामे चैकरात्रिकाः MBh. 12,7005. ग्रामैकरात्रिकः 14,1284 könnte eine unregelmässige Contraction von ग्राम (d. i. ग्रामे) एक° sein. Auch *für so und so viele Nächte* (*Tage*) *ausreichend;* vgl. एक°. द्वै° *in zwei Nächten* (*Tagen*) *vollbracht* u. s. w. P. 5,1,87, Sch. — Vgl. पञ्च°.

रात्रिकर m. *der Nachtmacher* d. i. *der Mond* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 7.

रात्रिचर = रात्रिंचर P. 6,3,72, Sch. Vop. 26,31. m. *Nachtwandler* d. i. 1) *Dieb* H. ç. 93. — 2) *Nachtwächter* Wilson. — 3) *ein* Râkshasa AK. 1,1,1,55. H. 187. f. ई Bhaṭṭ. 2,23.

रात्रिचर्या f. 1) *das Umherstreichen in der Nacht:* बहिर्गेहम् MBh. 8, 2099. — 2) *eine bei Nacht vor sich gehende Verrichtung* Kathâs. 20, 161. 71,282. fg. 94,72.

रात्रिज 1) adj. *zur Nacht erscheinend.* — 2) n. *Stern* Çabdârthak. bei Wilson.

रात्रिजल n. *Nebel* Çabdam. (Çabdar. bei Wilson) im ÇKDr.

1. रात्रिजागर m. *Nachtwachen* Spr. 688.

2. रात्रिजागर 1) adj. *in der Nacht wachend.* — 2) m. *Hund* H. 1279.

रात्रिजागरद 1) adj. *Nachtwachen verursachend.* — 2) m. *Mosquito* Râǵan. im ÇKDr.

रात्रिंचर = रात्रिचर P. 6,3,72, Sch. Vop. 26,31. m. *ein* Râkshasa AK. 1,1,1,55. H. 187. R. 7,5,16.

रात्रितरा (von रात्रि mit dem suff. des compar.) f. *tiefe Nacht:* °तरायाम् P. 6,3,17, Sch.

रात्रितिथि f. *eine lunare Nacht* Ind. St. 10,297.

रात्रिदिवम् Kathâs. 76,26 wohl fehlerhaft für रात्रिंदिवम्.

रात्रिनाशन m. *Vernichter der Nacht* d. i. *die Sonne* H. ç. 7.

रात्रिंदिवँ *Tag und Nacht* P. 5,4,77. समरात्रिंदिवे काले AK. 1,1,3,4. व्यस्तरात्रिंदिवस्य ते Kumâras. 2,8. °विभागेषु Ragh. 17,49. एकैकेन रात्रिंदिवेन Ind. St. 10,274. रात्रिंदिवानि 9,463. 10,263. fg. °दिवम् adv. *bei Tag und bei Nacht* P. 5,4,77, Sch. R. 1,44,2. Kâm. Nîtis. 16,9. Spr. 2037. °दिवा dass. 4733.

रात्रिपदविचार m. Titel eines Werkes Hall 47.

रात्रिपरिशिष्ट n. = रात्रिसूक्त Ind. St. 2,193. 206.

रात्रिपर्याय m. *die drei Kehrsätze in der Recitation der* Atirâtra-*Nacht* Çâṅkh. Br. 17,8. Çr. 6,13,5. 7,26,13. 9,7,1. Lâṭy. 3,4,7. 5,11,3.

रात्रिपुष्प n. *die Blume der Nacht* d. i. *eine in der Nacht sich öffnende Lotusblüthe* Râǵan. im ÇKDr.

रात्रिपूजा f. *nächtliche Verehrung einer Gottheit* Wilson, Sel. Works 1,148.

रात्रिबल adj. *in der Nacht seine Kraft offenbarend;* m. *ein* Râkshasa H. ç. 37. — Vgl. संध्याबल.

रात्रिभोजन n. *das Essen zur Nachtzeit:* °निषेध m. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works 1,282.

रात्रिमट (रात्रिम्, acc. von रात्रि, + अट) m. = रात्र्यट Vop. 26,31. m. *Nachtwandler, ein* Râkshasa Trik. 1,1,74.

रात्रिमणि m. *das Juwel der Nacht* d. i. *der Mond* Hâr. 13.

रात्रिमारण n. *ein Mord in der Nacht, ein an einem Schlafenden verübter Mord* Trik. 2,8,59.

रात्रिंमन्य adj. *für Nacht geltend, — angesehen werdend:* अहः P. 6,3,72, Sch.

रात्रिरक्षक m. *Nachtwächter* Kathâs. 88,13.

रात्रिराग m. *die Farbe der Nacht* d. i. *Dunkel, Finsterniss* H. ç. 19 (zu lesen °रागो).

रात्रिलग्ननिरूपण n. Titel einer dem Kâlidâsa zugeschriebenen Abhandlung, citirt im ÇKDr. u. पुनर्वसु.

रात्रिवासस् n. 1) *Nachtgewand* Tantrasâra und Lakshmîkaritra im ÇKDr. — 2) *das Kleid der Nacht* d. i. *Dunkel, Finsterniss* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिविगम m. *Ausgang der Nacht, Tagesanbruch* Çabdam. im ÇKDr.

रात्रिविश्लेषगामिन् 1) adj. *zur Nacht der Trennung entgegengehend.* — 2) m. *Anas Casarca Gm.* (s. चक्रवाक) Râǵan. im ÇKDr.

रात्रिविद् m. *Kenner der Nacht* d. i. *Hahn* Çabdar. im ÇKDr.

रात्रिवेदिन् m. dass. Trik. 2,5,18.

रात्रिषामँन् und °सामन् n. *ein zur* Atirâtra-*Nacht gehöriges* Sâman Çat. Br. 11,5,5,6. 7. Pańkav. Br. 9,2,20. Lâṭy. 9,7,10.

रात्रिसत्त्र n. *Nachtfeier* Kâty. Çr. 24,1,1. Çâṅkh. Çr. 13,14,9. Lâṭy. 8,2,16.

रात्रिसामन् s. रात्रिषामन्.

रात्रिसूक्त n. Bez. der nach Ṛv. 10,127 eingeschalteten *Hymne an die Nacht* Ind. St. 7,419. Verz. d. Oxf. H. 268,*a*,26. 33. 298,*b*, No. 725 (रात्री°). 398,*a*, No. 144.

रात्रिहास m. *weisser Lotus* (*in der Nacht lachend* d. i. *sich öffnend*) Çabdar. im ÇKDr.

रात्रिहिण्डक m. *ein Wächter im Gynaeceum* Çabdar. im ÇKDr.

रात्री (P. 4,1,31. AV. Prât. 3,8. H. 141, Sch. रात्री Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,67) und später रात्रि Uṇâdis. 4,67. f. 1) *Nacht* (vgl. राम *dunkelfarbig, schwarz*) Naigh. 1,7. Nir. 2,18. AK. 1,1,3,4. 3,4,14,69. Trik. 1,1,105. H. 141. Halâj. 1,108. fg. personif. Naigh. 5,3. Nir. 9,28. Ṛv. 10,127,1. रात्रीं जगतो निवेशनीम् 1,35,1. रात्र्या अन्धः 94,7. रात्र्यं तमो अदधुः 10,68,11. रात्र्युषसे योनिमारिक् 1,113,1. रात्रीमुभयतः परीयसे 5,81,4. अच्छत्सा रात्री परितक्म्या या 5,30,14. रात्रीभिः, अक्तुभिः 10,10,9. VS. 3,10. AV. 5,5,1. यत्रं ब्राह्मणो रात्रिं वसति पापया 17,18. अमावास्या 1,16,1. पौर्णमासी TS. 2,5,6,4. Gobh. 4,5,22. नमो रात्र्या नमो दिवा AV. 11,2,16. Ait. Br. 3,44. 4,5. सोमस्य वै राज्ञो ऽर्धमासस्य रात्रयः पत्नय आसन् TS. 2,5,6,4. Çat. Br. 2,3,4,23. त्रिंशन्मासस्य रात्रयः 9,1,1,43. 10,4,3,12. संवत्सरतमीं रात्रिम् so v. a. *heute über ein Jahr* 11,5,1,11. 14,9,1,19. रात्र्याम् Âçv. Gṛhj. 1,17,13. 4,4,14. रात्री Lâṭy. 2,5,24. 3,1,26. पुरा रात्रेः 10,15,7. °शेष Âçv. Gṛhj. 3,7,1. °देवत 2,4,12. रात्र्यां रात्र्यां व्यतीतायाम् Spr. 4944. R. 1,58,9. Varâh. Bṛh. S. 78,11. रात्रिः स्वप्नाय भूतानाम् M. 1,65. पश्चिमां रात्रिम् 4,97. 5,81. MBh. 3,3009. गता भगवती रात्रिः R. 1,45,6. नीला रात्रिम् Megh. 33, v. l. 39. 87. रात्र्या M. 5,64. 6,69. रात्री gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. M. 3,280. 4,50. MBh. 3,16834. Megh. 86. Varâh. Bṛh. S. 8,18. 21,8. 32,25. Kathâs. 18,322. Vet. in LA. (III) 3,18. 8,18. रात्र्यह्नी M. 1,66. fg. R. 1, 63,25. Spr. 2767. Selten am Ende eines comp. (s. रात्र): पञ्चाशद्रात्रिकर्शितौ (पञ्चाशद्रात्रक° ed. Bomb.) MBh. 13,2796. वर्षरात्रिनिवासन (वर्षारात्रि° Gorr., वर्षरात्र° ed. Bomb.) R. 1,3,24. रात्रि als einer der vier Körper Brahman's VP. 40. रात्रि mit dem patron. भारद्वाजी als Verfasserin von Ṛv. 10,127. — 2) abgekürzte Bez. *a*) für अतिरात्र Çat. Br. 5,1,3,2. 5,3,3. — *b*) für रात्रिपर्याय Çat. Br. 13,5,3,10. Pańkav. Br. 20,1,1. Ait. Br. 4,5. 6. Çâṅkh. Çr. 7,14,8. — *c*) für रात्रिसामन् Lâṭy. 6,10,11. — 3) रात्रि wie alle Wörter für *Nacht* = हरिद्रा Ratnam. 58. MBh. 13,6243. Suçr. 2,66,7. 323,18. — 4) रात्रीः MBh. 14, 2668 fehlerhaft für पात्रीः, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अन्ध°, काल°, भीम° (unter भीमरथ), मोह°, यक्ष°, शिव°, शेष°.

रात्रीण nach einem Zahlwort *in so und so vielen Nächten vollbracht* u. s. w. P. 5,1,87. एक° Lâṭy. 8,4,3. द्वि° 11.

रात्रीदैवोदास n. N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*a*. रात्रोक्थदैवोदास v. l.

रात्रीसूक्त s. रात्रिसूक्त.

रात्रोक्थदैवोदास s. रात्रीदैवोदास.

रात्र्यट = रात्रिमट Vop. 26,31. m. *ein* Râkshasa Çabdârthak. bei Wilson.

रात्र्यन्ध adj. *nachtblind* Suçr. 2,339,7. Pańkat. 167,21. — Vgl. नक्तान्ध.

रात्र्यन्धता f. *Nachtblindheit* Gâruḍa-P. 189 im ÇKDr.

रात्र्याकूपार n. N. eines Sâman Ind. St. 3,204,*a*.

रात्र्यान्ध्य n. = रात्र्यन्धता Çârṅg. Saṁh. 1,7,94. — Vgl. नक्तान्ध्य.

राथकारिकी adj. (f. ई) von रथकार gaṇa कुमुदादि 2. zu P. 4,2,80.

राथकार्य m. patron. von रथकार gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

रैथगणक n. *die Beschäftigung —, das Amt des* रथगणक gaṇa उद्गा-

त्रादि zu P. 5,1,129.

राथजितेयँ metron. (f. ई) Ableitung von रथजित्; so heissen Apsaras AV. 6,130,1.

राथंतर 1) adj. (f. ई) von रथंतर gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. Indra TS. 2,3,7,2. 7,2,8,2. TBr. 1,1,8,1. VS. 29,60. Ait. Br. 4,10. 29. 5,30. 8,1. Çat. Br. 1,7,2,17. 5,5,3,4. Pañkav. Br. 10,2,5. — 2) m. patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. f. ई N. pr. einer Lehrerin Bṛhadd. 5,28 in Ind. St. 1,105.

राथंतरायण m. patron. von राथंतर gaṇa हरितादि zu P. 4,1,100.

राथप्रोष्ठ m. patron. des Asamâti Müller in Journ. R. As. S. II, 432. fgg. (1866). Ind. St. 10,33,1.

राथीतर m. patron. von रथीतर gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. des Satjavakas Taitt. Up. 1,9,1. राथीतरीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,32.

राथीतरायण m. patron. von राथीतर gaṇa हरितादि zu P. 4,1,100.

1. राथ्य ṚV. 1,157,6. adj. Dehnung für रथ्य nach Padap. und ṚV. Prât. 9,27.

2. राथ्य (von रथ) adj. *zum Wagen tauglich:* वृषन् VS. 23,13.

राद्ध s. राध्.

राद्धान्त m. = सिद्धान्त *Schlusssatz, conclusio, ein bewiesener Satz* AK. 1,1,4,13. H. 242. Halâj. 1,10. Sarvadarçanas. 126,13. 127,13. fg. Bhâg. P. 12,11,1. Pañkar. 1,2,54.

राद्धान्तित (von राद्धान्त) adj. *als Schlusssatz sich ergebend, logisch bewiesen* Schol. zu Pañkav. Br. 18,7,1.

राद्धि (von राध्) f. P. 3,3,94, Vârtt. 1, Sch. Vop. 26,190. *richtiges Zutreffen, Gelingen, Glück:* राद्धिः समृद्धिर्व्यृद्धिः AV. 10,2,10. 11,7,22. TBr. 1,2,6,7. Çat. Br. 4,6,9,11. 8,6,3,2. Lâṭj. 3,11,3. 4,1,6. 2,10. Âçv. Çr. 12,10.

राध् (vgl. अर्ध्), राधति, राधत्, राधाम; राध्नोति (संसिद्धौ) Dhâtup. 27, 16. राध्यति (वृद्धौ, nach Andern संसिद्धौ) 27,71 und राध्यते in intransit. Bed.; रराध, रराधतुम् und रेधतुम्, रराधिथ und रेधिथ (die contrahirten Formen nur in der Bed. von हिंसा) P. 6,4,123. Vop. 8,52. 11,3. अरात्सीत्, अरात्स्म, अरात्सुम्; रात्स्यति, राद्धा Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Schol. zu P. 7,2,62. राध्यासम्; (वि)राधिषि, अराधि; partic. राद्ध. 1) *gerathen, gelingen:* तन्मे राध्यताम् VS. 1,5. TS. 1,5,10,3. तदशकं तन्मे ऽराधि VS. 2,28. *fertig werden:* ओदनो राध्यमानः AV. 11,3, 11. *sich passend fügen:* पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां च 12,1,2. *Jmd* (dat.) *zu Theil werden:* अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते। एतद्वै मुखतो ऽन्नं राद्धम्। मुखतो ऽस्मा अन्नं राध्यते Taitt. Up. 3,10,1. राद्ध *zu Stande gekommen:* पूर्तेन u. s. w. राद्धं निःश्रेयसं पुंसाम् Bhâg. P. 3,9,41. कर्मन् 4,29,62. *fertig,* = सिद्ध, पक्व Trik. 2,7,11. H. 412. ब्रह्मौदन Kâtj. Çr. 4,8,9. *vollendet, vollkommen geworden:* योगराद्धेन चक्षुषा Bhâg. P. 3,11,17. *zu Theil geworden, zugefallen:* इन्द्रपद 8,3,13. अस्मद्राद्धवरो ऽसुरः 3,18,23. राद्धमेतत्त्वयि 23,10. नयनमूलं राद्धः so v. a. *zu Gesicht gekommen* 15,46. — 2) *Gelingen haben, den Zweck erreichen, zurecht kommen, Glück haben mit* (instr.): यः प्रथमो दक्षिणया रराध ṚV. 10,107,6. VS. 22,4. AV. 5, 6,5. कृष्या 11,3,41. यज्ञेन Ait. Br. 2,24. 3,15. प्रथमेन स्तोमेन राद्ध्वा TBr. 3,9,9,1. अरात्सुरिमे यजमानाः TS. 7,4,8,3. 5,4,1. Çat. Br. 1,9,1,12. 3,1,3,5. 6,2,24. 4,5,8,11. यो वै पुत्राणां राध्यते 6,1,2,13. Âçv. Gṛhj. 4, 4,2. भवता राधसा राद्धम् (impers.) Bhâg. P. 4,24,33. राद्ध *derjenige dem es gelungen ist, glücklich:* सर्वे हि पुण्या राद्धाः TBr. 2,1,3,6. स यो मनुष्याणां राद्धः समृद्धो भवति Çat. Br. 14,7,1,32. Kauç. 56. — 3) *reif werden für Etwas* so v. a. *theilhaftig werden, gelangen in, nach;* mit dat. und loc.: नरकाय राध्यति Âpastamba bei Müller, SL. 105. राध्यते विद्युति मानवान्भवति nach Taitt. Up. 3,10,6. — 4) *Jmd* (dat.) *günstig sein, sich für Jmd interessiren* P. 1,4,39. Vop. 5,15. देवदत्ताय राध्यति = पृष्टः सन्देवदत्तस्य शुभाशुभं पर्यालोचयति P., Sch. — 5) *richtig* oder *glücklich durchführen, zu Stande bringen, fertig machen, zurecht machen;* mit acc.: कथा राधाम स्तोमं मित्रस्य ṚV. 1,41,7. उपस्तुतिम् 8,59,13. को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ 10,63,6. मखस्य शिरः VS. 37,3. ऋद्धिम् Ait. Br. 5,25. कामम् Çat. Br. 1,3,5,10. 9,1,4. 8,6,3,1. पर्व ते राध्यासम् *richtig treffen* TS. 1,1,2,1. — 6) *Jmd zurecht bringen* so v. a. *gewinnen, befriedigen:* का राधद्धोत्राश्विना वाम् ṚV. 1,120,1. अराधि होता 10,53,2. 1, 70,8. देवान् Ait. Br. 1,1. — 7) *beschädigen* (हिंसायाम्, वधे) P. 6,4,123. Vop. 8,52. वानरा भूधरान्रेधुः Bhaṭṭ. 14,19. = उन्मूलितवन्तः *entwurzelten* Comm.

— caus. राधयति 1) *zu Stande —, zu Wege bringen:* तास्ते समृद्धीरिह राधयामि AV. 11,1,10. तस्योत्थानं देवता राधयन्ति (so liest die ed. Bomb. st. धारयन्ति der ed. Calc.) MBh. 5,1086. पुष्कलावर्धयर्मावप्यरीरधत् Daçak. 113,14. — 2) *befriedigen:* तं दक्षिणाभी राधयेत् TS. 5,6,9, 3. 2,6,8,3. यस्तयोरन्यं राधयत्यन्यं न TBr. 2,1,2,9.

— अनु *glücklich fertig werden mit* (gen.): अन्वेषामरात्स्म TBr. 1,5, 2,8; auch AV. 5,6,5 ist wohl अनु st. नु zu lesen. अनुराद्ध *zu Theil geworden, zugefallen:* विद्यां पृथग्धारणायानुराद्धाम् Bhâg. P. 7,8,46. — Vgl. अनुराध, अनूराध.

— अप 1) *fehlen, verfehlen* (z. B. das Ziel) AV. 2,35,2. काष्ठाम् Ait. Br. 4,9. सुवर्गं लोकम् TBr. 3,9,2,3. अपाराधमिति मन्यमानः *ich habe gefehlt* (*ein Unrecht begangen* Comm.) 1,6,3,4. इयति नापरात्स्यामि TS. 6,4,11, 3. Çat. Br. 4,6,3,2. 5,3,5,29. 11,1,4,4. तथा नस्त्वं गौतम मापराधाः *mögest du uns nicht fehlen, — entstehen* (*dich nicht verfehlen gegen* Comm.) 14,9,1,11. अपराध्नुयाद्धविषा प्रजानां प्रजननम् *mittelst des* TBr. 3,2,10,3. AV. 5,6,7. एतद्वा अनपराद्धं नक्षत्रं यत्सूर्यः Çat. Br. 2,1,2,19. निमित्तादपराद्धेषुः *dessen Pfeil das Ziel verfehlt hat* Çiç. 2,27; vgl. अपराद्धपृषत्क, अपराद्धेषु. — 2) *Schuld haben —, tragen, — sein an* (loc.), *sich Etwas zu Schulden (haben) kommen lassen, sich vergehen gegen Etwas* (loc.) oder *Jmd* (gen.), *Etwas verbrochen haben gegen Jmd* (gen.): एवं स्त्री नापराध्नोति नर एवापराध्यति MBh. 12,9518. नापराध्यामि 13, 2169. 3,11761. R. Gorr. 2,38,47. 66,49. न कश्चिन्नापराध्यति 5,64,6. ed. Bomb. 6,115,41. Kathâs. 27,68. Mârk. P. 17,8. दैवमपराध्यति R. Gorr. 2,117,20. नापराध्यामहे यथा 7,102,4. स्वामी तत्रापराध्नुयात् Bṛhaspati in Vivâdak. 49,2 v. u. दैवं तत्रापराध्यति R. 6,101,9. कार्यकारणकर्तृत्वे न कश्चिदपराध्यति 98,34. यौवनमत्रापराध्यति न चारित्र्यम् Mṛkkh. 145, 21. तेषपराध्यति चतुर्षु कस्तत्र सिंहनिर्माणे Kathâs. 96,46. कस्माद्धर्मे ऽपराध्नुयुः MBh. 4,1611. 12,2715. शय्यासने च मे राजन्नापराध्येत कश्च न 3,17005. वाचं नास्यापराध्नुयाम् 1,1885. 3,11415. 4,1479. नहि मे ऽन्यो ऽपराध्यति *es hat mir ja kein Anderer Etwas zu Leide gethan* 1,4322. 5988.

12,5182. न ते ऽक्रमपराध्यामि कर्मणा मनसापि वा। वाचा वा R. Gorr. 2,30, 9.3,56,21.7,36,28. Spr. 1965. को वा कस्यापराध्यते Mârk. P. 118,17. नापराध्यामि किंचित् *ich lasse mir Nichts zu Schulden kommen* MBh. 1,667.3, 14058.14,2405. नैषा किं चापराध्यति *was hat sie verbrochen?* Kathâs. 21, 80. काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्ग्रहीषु शालिषु 75,191. बौद्धैः किमपराध्यते (pass. impers.) Prab. 20,18. कच्चिन्मया नापराद्धमज्ञानाद्येन u. s. w. R. 2, 18,11. Kathâs. 14,74. व्यक्तं तत्र त्वयापराद्धं येनास्म्यभिकृतः MBh. 1,666. देव्या नैवापराद्धं ते Kathâs. 17,48. किमु तस्य मया बाल्यादपराद्धं महोपतेः MBh. 3,2962. R. Gorr. 2,15,15. 38,48. Vikr. 5,8. Kathâs. 37,18. अज्ञानतापराद्धं यन्मया ते 94,75. किमपराद्धं कारणत्वेन so v. a. *was ist daran auszusetzen, dass es Ursache ist?* Sarvadarçanas. 133,2. अपराद्धं न मे *ich habe Nichts verbrochen* Mârk. P. 61,50. न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु so v. a. *die Hitze greift die jungen Mädchen nicht in so reizender Weise an* Çâk. 57. अपराद्ध *der sich Etwas hat zu Schulden kommen lassen, schuldig, der sich vergangen hat an Jmd* (gen., selten loc.) R. Gorr. 2,119,26. Kâm. Nîtis. 17,50. Ragh. 8,47. 9,79. Mâlav. 39, 17 (अनपराद्ध). Kathâs. 17,49. Hit. ed. Johns. 1430. अस्यापराद्धाः MBh. 3,15705. 14,2406. Çâk. 110,16. Kathâs. 45,255. Mârk. P. 132,5. अवध्या यादवानां हि स्वपराद्धा अपि (स्वापराधे ऽपि हि die neuere Ausg.) Hariv. 7492. भवति — अपराद्धो ऽस्मि Mṛkkh. 24,12. — Vgl. अपराध, अपराधिन्, अनपराद्धम्. — caus. s. अपराधय.

— अभि, partic. °राद्ध *befriedigt, gewonnen:* देवता Çiç. 1,71. — caus. *zufriedenstellen, befriedigen* Çat. Br. 2,2,4,5. 6. Shaḍv. Br. 2,10. तमुत्तमेन शौचेन कर्मणा चाभिराधय MBh. 12,3909. कथं देवं प्रकारैरभिराध्यते R. 2,30,33. fg. — Vgl. अभिराधन in den Nachträgen. — desid. des caus. *befriedigen wollen:* अभिरिराधयिषति Çat. Br. 2,3,4,6.

— अव *missrathen:* यथैव षळ्वराध्नोति स रिक्तः Ait. Br. 3,7. *einen Fehler machen* AV. 5,6,6.

— आ caus. 1) *befriedigen, zufriedenstellen, sich geneigt machen, zu gewinnen suchen, Jmd dienen;* mit acc. der Person Nir. 5,17. M. 10, 121. fg. MBh. 1,569. 4371. 6368. 3,7097. 11939 (आराधितश्च ते d. i. त्वया). 4,262. 326. 5,4483. 7395. 8,1592. 13,620. 1000. R. 1,17,31. 2, 107,4 (115,4 Gorr.). R. Gorr. 1,40,6. 2,3,40. 25,13. Ragh. 1,77. 81. 10, 86. 18,23. Megh. 46. Çâk. 4,12. Vikr. 35,4. Spr. 39. 383. 2413. 2487. 3717. Kathâs. 7,105. 11,36. 16,43. 18,110. 315. 19,4. 21,33. 26,214. 27,105. 142. 31,11. 38,34. 42,56. 44,140. 49,234. 52,165. Prab. 99,8. Bhâg. P. 2,2,32. 3,1,28. 4,20. 9,12. 15,14. 17,30. 30,6. 4,11,11. 24, 55. 5,2,2. 18,19. 20,32. 9,15,17. Weber, Râmat. Up. 327. 337. Mârk. P. 18,12. 56,11. Brahma-P. in LA. (III) 48,17. Pañkar. 1,2,6. 2,6,31. Pañkat. 125,12. 203,3. Vedântas. (Allah.) No. 2. परेषां चेतांसि Spr. 1726. न तु प्रतिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् 1876. 2661. स्वाराधित 2977. — 2) *Etwas gewinnen, theilhaftig werden:* आराधयति धर्मज्ञः परलोकं जितेन्द्रियः R. 2,60,6. — 3) आराध्यते Daçak. 88,18 (Benf. Chr. 197,16) wohl fehlerhaft für आरभ्यते. — Vgl. आराधन fgg., दुराराध्य. — desid. आरिरात्सति P. 7,4,54, Vârtt., Sch. — desid. vom caus. s. आरिराधयिषु.

— उपा caus. *Jmd* (acc.) *dienen* M. 10,121.

— समा caus. = आ 1) MBh. 3,10344 (med.). Bhâg. P. 8,19,19. 10, 48,11. Mârk. P. 74,52. Pañkar. 4,2,5. — Vgl. समाराधन.

— उप caus. s. उपराधय.

— प्र s. प्राराधम्. — caus. s. प्रराध्य.

— प्रति s. प्रतिराध. — caus. *Jmd* (acc.) *entgegen wirken* Ait. Br. 6, 33. — desid. प्रतिरित्सति P. 7,4,54, Vârtt., Sch.

— वि 1) *um Etwas* (instr.) *kommen:* सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि AV. 1,1,4. मा प्रजया प्रतिगृह्य वि राधिषि 3,29,8. तेनाहं सत्येन मा विराधिषि ब्रह्मणा Khând. Up. 3,11,2. — 2) *Jmd zu nahe treten, ein Leid anthun:* क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः Spr. 2111. — Vgl. विराध. — caus. *uneins werden:* नह्येकस्मादन्नाद्विराधयन्ति (= विभिद्यन्ते Comm.) Pañkav. Br. 15,12,7. अविराधयन्ती *nicht uneins werdend mit* (पत्या) AV. 2,36,4 (unter अविराधयन्त् anders aufgefasst).

— सम्, partic. संराद्ध *zu Theil geworden* Bhâg. P. 8,13,20. — caus. 1) *eins werden über, sich einigen auf* (loc.) TS. 2,1,9,4. Kâṭh. 25,3. Pañkav. Br. 9,1,34. संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः *einträchtig* AV. 3,30,5. — 2) *befriedigen, zufriedenstellen;* mit acc. der Person Bhâg. P. 3,5,4.

— अभिसम् s. अभिसंराधन in den Nachträgen.

राध 1) m. oder n. (von राध्) so v. a. राधस्. राधानां पते (Indra) ṚV. 1,30,5. 3,51,10; vgl. राधस्पति. Auch wohl in: इन्द्रेण राधेन सह पुष्ट्या न आगहि Kauç. 106. — 2) m. (von राधा) *a*) Bez. *eines best. Monats,* = वैशाख AK. 1,1,3,16. H. 153. an. 2,246. Med. dh. 13. Râǵa-Tar. 8,2782. — *b*) Mannsname Burn. Intr. 377, N. 4. राधो गौतमः N. pr. zweier Lehrer Ind. St. 4,373. fg. — 3) f. आ Vop. 26,191. *α*) N. *eines* Nakshatra, = विशाखा AK. 1,1,2,23. H. 113. H. an. Med. ein späterer, aus अनुराधा gebildeter Name. — *b*) *Blitz* H. an. Med. — *c*) Bez. *einer best. Stellung beim Bogenschiessen* H. an. Med.; vgl. राधाभेदिन्, राधावेधिन्. — *d*) = समृद्धि Schol. zu Naish. 3,50; vgl. राधावन्त्. — *e*) Bez. zweier Pflanzen: *Myrobalanenbaum* und *Clitoria Ternatea Lin.* H. an. Med. — *f*) N. pr. α) der Gattin Adhiratha's und Pflegemutter Karṇa's MBh. 1,2775. 4403. 3,17154. fgg. °सुत d. i. Karṇa 1,7115. 8,4351. °तनय H. 711. — β) einer Hirtin, die als Geliebte Kṛshṇa's später göttlich verehrt wurde, H. an. Med. Gît. 1,1. Pañkar. 1,1,75. 2,3,18. fgg. 36. Verz. d. Oxf. H. 21,*b*,4. 22,*b*,38. 23,*a*,27. *b*,10. 24,*b*, 4. 25,*a*,30. 26,*b*,36. 48. fg. 27,*a*,3. 10. 20. fg. 27. 33. 40. 44. fg. 39,*b*,14 (mit Dâkshâjaṇî identificirt). 68,*b*,25. fgg. 145,*a*,38. fg. Pañkat. 45,2. Colebr. Misc. Ess. I, 197. Wilson, Sel. Works I, 12 u. s. w. II, 66. 70. fgg. 94. 100. Burnouf in Bhâg. P. I, cvi. fgg. Hall 146. 152. °मन्त्र Verz. d. B. H. No. 1164. °कान्त m. Bein. Kṛshṇa's Brahmavaiv. P., Brahmakh. 17 im ÇKDr. °रमण m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 618. Wilson, Sel. Works I, 159 (vgl. 169). राधेश und राधेश्वर desgl. Pañkar. 1,5,13. राधोपासक Verz. d. B. H. 160. — γ) einer Sclavin Lalit. ed. Calc. 332, 12. Schiefner, Lebensb. 277 (47). — Vgl. अर्यमराध.

राधगुप्त (राधा + गुप्त; vgl. P. 6,3,63) m. N. pr. eines Ministers des Açoka Burn. Intr. 360. 399. 421. 427. Schiefner, Lebensb. 310 (80).

राधन (von राध्) n. = साधन, प्राप्ति, तोष H. an. 3,404. = साधन, प्राप्ति Med. n. 114. °द्रव्य als Erkl. von पाचल H. an. 3,662. fg. Med. l. 108. राधना f. = भाषण Med. n. 114.

राधरङ्क m. = सीर, सीरक und घनोपल Med. k. 210. *a plough; thin rain; hail* Wilson. — Vgl. das folg. Wort.

राधरङ्कु m. = सार, शीकार und जलदोपल H. an. 4,29.

राँधस् (von राध्) n. (*das womit man Andere günstig stimmt, befriedigt*) 1) *Erweisung des Wohlwollens, Wohlthat, Liebesgabe;* überh. *Geschenk, Gabe* NAIGH. 2,10. NIR. 4,4. चित्रं राधः häufig, z. B. ṚV. 1,17,7. 5,13,6. अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् 2,13,13. दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु 22,3. आ नो भजस्व राधसि 4,32,21. उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः 5,38,1. गव्य, अश्व्य 52,17. रथवत् 7,77, 5. स नो राधांस्या भर 15,11. मंहो राये राधसो यद्ददन्नः 28,5. 8,79,2. इन्द्रो भवं मघवा राधसो महः 9,81, 3. 10,159, 5. AV. 5,11,11. 19,7,3. 20,135,9. ÇAT. BR. 3,7,4,11. — 2) *Wohlthätigkeit, Freigebigkeit* ṚV. 3,51,12. 4,24, 1. 6,10,5. चोद राधो मघोनाम् 7,96,2. न ते वर्तास्ति राधसः । यद्दित्ससि स्तुतो मघम् 8,14,4. 24,22. 46,11. 10,7,2. AV. 7,46,2. — 3) im BHÂG. P., wo das Wort wieder künstlich von den Todten auferweckt wird, können folgende Bedd. angenommen werden: *das Gelingen, Zustandekommen:* लोककल्पस्य राधसे 4,24,18. अवाप्त° adj. *dem es gelungen ist, der sein Ziel erreicht hat* 7,57. अल्प° adj. *dem wenig gelingt* so v. a. *unglücklich* 10,53,23. *das Streben, Ringen nach:* अनन्य° *nach nichts Anderem strebend* 9,21,17. न्यस्ताखिल° 10,65,6. *Macht* 2,4,14. 4,24, 33. अमोघ° 7,3,22. इन्द्रिय° 4,31,11. — Vgl. अ°, अनवभ्र°, अश्व°, घृणि°, चित्र°, तुवि°, पङ्क्ति°, विश्व°, वीति°, सत्य°, सु°, स्पार्ह°.

राधस्पति (राध + पति; vgl. रयस्पति) m. *Herr der Gaben:* त्वं हि रा-धस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः ṚV. 8,50,14.

राधाकृष्ण m. N. pr. des Verfassers der Dhâturatnâvali COLEBR. Misc. Ess. I, 47.

राधाजन्माष्टमी f. Bez. *eines best. 8ten Tages, des Geburtstages der* Râdhâ, Verz. d. Oxf. H. 14,*b*,28. — Vgl. कृष्णजन्माष्टमी.

राधातन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 141,*b*,45.

राधादामोदर m. N. pr. eines Mannes HALL 103.

राधानगरी f. N. pr. einer *Stadt* in der Nähe von Uģģajinî REINAUD, Mém. sur l'Inde 115.

राधानुराधीय adj. *zu den* Nakshatra Râdhâ und Anurâdhâ *in Beziehung stehend:* रात्रि, अग्न °यम् P. 4,2,6, Sch.

राधाभेदिन् m. Bein. Arģuna's BHÛRIPR. im ÇKDR. — Vgl. राधावेधिन् und राध 3) *c*).

राधामाधव m. N. pr. eines Autors WILSON, Sel. Works I, 168.

राधामोहनशर्मन् m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 263,*b*, No. 635.

राधारससुधानिधि m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 131,*b*, No. 239. राधासुधानिधि WILSON, Sel. Works I, 177.

राधावत् (von राधा) adj. *reich* NALOD. 3,50.

राधावल्लभ m. 1) *der Geliebte der* Râdhâ, Bez. Kṛshṇa's WILSON, Sel. Works I, 177. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 289,*b*, No. 694. 290,*a*,10. 291,*a*, No. 705. °राय KSHITÎÇ. 44,12.

राधाविनोद m. Titel eines Gedichts Verz. d. B. H. No. 577. — Vgl. राधिकाविनोद.

राधावेधिन् m. Bein. Arģuna's H. 709. — Vgl. राधाभेदिन्.

राधासुधानिधि m. s. u. राधारससुधानिधि.

राधि und राँधी f. gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. — Vgl. कृष्टराधि.

राधिक 1) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Ģajasena BHÂG. P. 9,22,10. — 2) f. आ Hypokoristikon von राध 3) *f*) β) GÎT. 1, 37. PAÑKAR. 1, 1, 2. Verz. d. Oxf. H. 20,*b*, 22. 25,*a*,2. 27,*a*,42. WEBER, KṚSHṆAÉ. 322.

राधिकाविनोद m. = राधाविनोद Verz. d. B. H. No. 577.

राधेय (von राधा) m. metron. Karṇa's TRIK. 2,8,18. 3,3,124. H. 711, Sch. MBH. 1, 5221. 7051. 7095. 3,14822. 4,1300. 6,5826. 8,4355. R. 7, 6,35. RÂGA-TAR. 5,379.

राँधोगूर्त adj. *durch Wohlthun angenehm, — beliebt* VS. 6,34.

राधोदेय n. *Erweisung von Gunst, das Geben von Geschenken* ṚV. 4, 51,3. 8,4,4.

राँध्य (von राध्) adj. 1) *durchzuführen, was man recht machen soll:* स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता ṚV. 1,156,1. बहुकथा ङायन्ते राध्यानि 4,11,3. — 2) *zu gewinnen, zu befriedigen:* तद्वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ṚV. 1,116,11. बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या 2,24, 10. एवा ते राध्यं मनः 8,81,28. सर्वे राध्याः स्थ *zu verehren* AIT. BR. 7,18. — Vgl. यात्राध्य.

राधेवाक m. patron. SAṂSK. K. 184,*b*,4. wohl eine falsche Form.

रान्ध्य s. राण्ड्य.

रान्धर्स m. patron. (aus dem Geschlecht der Andhaka) P. 4,1,144, Sch.

राप्य partic. fut. pass. von रप् P. 3,1,126. VOP. 26,12.

राभस्य (von रभस) n. UÉÉVAL. zu UṆÂDIS. 3,117. als Bed. von रभ् DHÂTUP. 23,5.

1. रामँ (wohl desselben Ursprungs wie रात्री) 1) adj. (f. आ) *dunkelfarbig, schwarz* NIR. 12,13. AK. 3,4,23,143. H. 1397. an. 2,334. MED. m. 26. fg. HALÂJ. 4,49. रामे कृष्णे असिक्नि च AV. 1,23,1. Schaf 12,2,19. नास्य राम (= रमणीयः पुत्रः Comm.) उच्छिष्टं पिबेत् TAITT. ÂR. 5,8,13. रामा *eine Dunkle* d. i. *ein Weib gemeiner Herkunft:* नाग्निं चित्वा रामामुपेयात् TS. 5,6,8,3. TAITT. ÂR. 5,8,13. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 18,6,27. Auch die Bedeutung 2. राम 2) *c*) α) wäre indessen hier möglich. Nach AK. H. an. und MED. auch *weiss.* — 2) m. *a*) *eine Hirschart* AK. 2,5, 11. TRIK. 3,3,302. H. an. MED. — *b*) *Pferd* MED. — *c*) N. pr. eines Mannes ṚV. 10,93,14. mit dem patron. Mârgaveja AIT. BR. 7,27. 34. Aupatasvini ÇAT. BR. 4,6,1,7. Ģâmadagnja, Verfassers von ṚV. 10,110. Im Epos und später erscheinen *drei* Râma (daher राम als Bez. *der Zahl drei* VARÂH. BṚH. S. 8,20), von denen die beiden ersten für Incarnationen Vishṇu's gelten: α) mit dem patron. Ģâmadagnja oder Bhârgava, ein Sohn der Reṇukâ, auch परशुराम genannt, TRIK. 3,3,302. H. 848. H. an. MED. (wo रैणुकेय st. वैणुकेय zu lesen ist). रामः शस्त्रभृतामहम् (vgl. HARIV. 5869) sagt Kṛshṇa BHAG. 10,31. MBH. 1,272. 2612. 3,8658. 8,1584. 12,1715. fgg. 12948. HARIV. 2313. fgg. 5869. fg. रामरामविवाद R. 1,3,11 (5 GORR.). 74,22. fg. 76,1. R. GORR. 1,77,23. 37. RAGH. 11,68. — β) mit dem patron. Râghava oder Dâçarathi TRIK. 2,8,3. 3,3,302. H. 703. H. an. MED. MBH. 3,11197. 15933. 12, 12949. HARIV. 822. 2324. fgg. 3065. fgg. 5871. 7373. R. 1,1,10. 17. 20. रामरामविवाद 3,11 (5 GORR.). रमयत्येव स गुणैरुदारैस्तैरिमाः प्रजाः । यस्माद्‌तो राम इति नामैतत्तस्य विश्रुतम् ॥ R. GORR. 1,1,22. 6,102. RAGH. 11,68. VARÂH. BṚH. S. 58,30. VP. 384. BHÂG. P. 9,10. fgg. Spr. 2630. रामो हेममृगं न वेत्ति 2631. रमन्ते योगिनो ऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ WEBER, RÂMAT. UP. 286. — γ) = Balarâma, Halâjudha, ein älterer Bruder Kṛshṇa's AK. 1,1,1,18. 3,4,22,143. H. 224. H. an. MED. HALÂJ. 1, 29. BHÂG. P. 1,11,17. 10,1, 8. WEBER, KṚSHṆAǴ. 268. 281. 284. 289. erscheint bei den Ǵaina unter den 9 *weissen* (s. oben u. 1) Bala's H. 698. — Râma unter den sieben Weisen eines Manu HARIV. 453. MÂRK. P. 80, 4. Râma ist ein auch später häufig vorkommender Name: so heisst z. B. ein Sohn Târâvaloka's und einer Mâdrî und Zwillingsbruder Lakshmaṇa's KATHÂS. 113,32. verschiedene Lehrer, Autoren u. s. w. BURN. Intr. 567 (neben भद्रत्त°). COLEBR. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. B. H. No. 109. 833. Ind. St. 8,389. HALL 84. 119. Verz. d. Oxf. H. 126,b, No. 220. 129,b, No. 234. 148, a, 9. 151, b, No. 321. fgg. 335, b, No. 788. 341,b, N. 358,a, No. 853. 386, a, No. 505. ein Fürst von Mallapura 148,b, 15. 18. von Çṛṅgavera 165,a,7. 178,a,16. — RÂǴA-TAR. 8,785. KSHITÎÇ. 10, 7. fgg. — d) Bein. Varuṇa's MED. — e) pl. N. pr. eines Volkes VP. 177. — 3) f. आ a) *ein Weib niedriger Herkunft;* s. u. 1). — b) = हिङ्गु *Asa foetida* H. an. MED. = हिङ्गुल *Mennig* ÇABDAR. im ÇKDR. — 4) f. ई *Dunkel, Nacht:* उषा न रामीररुणैरपोर्णुते ṚV. 2,34,11. — 5) n. a) *Dunkel:* अग्नी रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ṚV. 10,3,3. — b) = वास्तुक (*Chenopodium album*) und कुष्ठ (in welcher Bed.?) H. an. MED. = तमालपत्त्र RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. अधो°, परशु°, बल°, भद्रत्त°, मणि°, मनसा°.

2\. राम (von रम्) 1) nom. act. *Lust, Freude:* स्वकुटुम्ब° adj. BHÂG. P. 7,6,14. — 2) oxyt. nom. ag. gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1,140. a) adj. (f. आ) *erfreuend, entzückend, lieblich, reizend* AK. 3,4,22,143. H. an. 2,334. MED. m. 26. fg. रामस्य लोकरामस्य R. 1,19,20. भावेन रामा MBH. 1,1812. R. 2,44,24. KATHÂS. 65,27. मृगी MÂRK. P. 65,22. रामाद्रामं ज़गद्भूरामे राज्यं प्रशामति *lieblicher als lieblich* MBH. 7,2246. BHAṬṬ. 10,2. NALOD. 1,5. — b) m. *Liebhaber* VARÂH. BṚH. S. 19,5. — c) f. आ α) *eine Schöne, ein junges reizendes Weib, Geliebte, Frau* AK. 2,6,1,4. TRIK. 2,6,1. H. 505. H. an. MED. HALÂJ. 2,326. KATHOP. 1,25. MBH. 1,3039. R. 5, 11,20. RAGH. 5,49. 12,23. 16,15. VIKR. 114. Spr. 24. 691. 1456. 2629. 2631. 4817. 4931. 5274. VARÂH. BṚH. S. 19,5. GÎT. 1,44. KATHÂS. 18,12. 56,425. RÂǴA-TAR. 1,370. अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा Verz. d. Oxf. H. 39,b,36. BHÂG. P. 3,23,40. 44. 4,26,14. 28,59. PAṄKAR. 2,3, 32. 4,5. 48. DHÛRTAS. 87,15. — β) Bez. verschiedener Pflanzen: = श्वेतकण्टकारी, गन्धकन्या, आरामशीतला, अशोक RÂǴAN. im ÇKDR. — γ) *ein best. Pigment* (गोरोचना) RÂǴAN. — δ) *Röthel, rubrica* ÇABDAK. im ÇKDR. — ε) *Fluss* MED. auch in H. an. ist wohl हिङ्गु नदीस्त्रियोः zu lesen. — ζ) *ein best. Metrum:* ⏑—⏑——⏑⏑—⏑——, ⏑—⏑——⏑⏑—⏑——; ———⏑—⏑⏑—⏑——, ———⏑———⏑⏑—⏑—— Journ. of the Am. Or. S. 6, 514. — η) N. pr. einer Apsaras VJÂḌI beim Schol. zu H. 183. einer Tochter Kumbhâṇḍa's HARIV. 9973. 11026. fg. der Mutter des 9ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. — Vgl. मु°.

रामक 1) nom. ag. vom caus. von रम् P. 7,3,34. = रमक VOP. 7,22. — 2) m. N. pr. eines Berges MBH. 2,1172.

रामकण्ठ m. N. pr. eines Autors SARVADARÇANAS. 87,14.

रामकरी f. Bez. einer Râgiṇî WILSON und ÇKDR. angeblich nach HALÂJ.; रामकिरी und रामकीरी ÇKDR. unter राग.

रामकर्पूर *ein best. wohlriechendes Gras,* = नर H. an. 2,434. MED. r. 53. m. WILSON nach ÇABDAR., °क m. ÇKDR. nach derselben Aut.

रामकल्पद्रुम m. Titel eines Werkes HALL 183.

रामकवच n. Râma's *Zauberspruch* Verz. d. Oxf. H. 14, a, 16. 99, a, No. 153.

रामकान्त m. 1) *eine Art Zuckerrohr* RÂǴAN. im ÇKDR. unter रामशर. — 2) N. pr. eines Scholiasten COLEBR. MISC. Ess. II,47.

रामकिरी und रामकीरी f. s. u. रामकरी.

रामकुतूहल n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 198, b, No. 467. — Vgl. रामकौतुक.

रामकुमार m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 260, a, No. 627. °मिश्र HALL 100. 168.

रामकृष्ण m. N. pr. verschiedener Männer COLEBR. Misc. Ess. I, 230. 234. II, 453. Ind. St. 1,27. 59. 3,250. Verz. d. B. H. No. 166. 267. 330. 630. 673. 965. 1019. Verz. d. Oxf. H. 141,a,20. 223,a, No. 541. fg. 277,a, No. 654. 289,b, No. 694. 291,a, No. 705. 321,b, No. 763. 394,a, No. 103. HALL 25. 27. 98. 181. °तीर्थ GILD. Bibl. 421. fg. °दीक्षित HALL 100. COLEBR. Misc. Ess. I, 336. °देव II, 454. °पण्डित HALL 105. °भट्ट 173. fgg. 181. 183. Verz. d. B. H. No. 140. 966. 1223. °भट्टाचार्य HALL 8. °भट्टाचार्यचक्रवर्तिन् 66. °राय KSHITÎÇ. 33,5. 45,1. रामकृष्णाचार्य Verz. d. B. H. No. 540. रामकृष्णाध्वरिन् HALL 100. रामकृष्णानन्दतीर्थ 136. 189.

रामकृष्णकाव्य n. oder रामकृष्णविलोमकाव्य n. Titel *eines künstlichen, von vorn und hinten zu lesenden,* Râma *und* Kṛshṇa *besingenden Gedichtes* Verz. d. Oxf. H. 132, a, No. 240. HAEB. Anthol. 463. fgg.

रामकृष्णपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 338, a, 16.

रामकेली f. Bez. einer Râgiṇî ÇKDR. u. राग. — Vgl. रामकरी.

रामकेशवतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, b, 42.

रामकौतुक n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1170. — Vgl. रामकुतूहल.

रामक्षेत्र n. N. pr. einer Gegend PRÂJAÇKITTEND. 12, a, 2.

रामगङ्गा f. N. pr. eines Flusses LIA. I,56. II,524.

रामगायत्री f. Bez. einer best. Hymne auf Râma WEBER, RÂMAT. UP. 313.

रामगिरि m. N. pr. eines *Berges* MEGH. 1. 99. VP. 180, N. 3. Vgl. WEBER, KṚSHṆAǴ. 330, N. 1.

रामगीतगोविन्द Titel eines Gedichts MACK. Coll. I,103.

रामगीता f. (sc. उपनिषद्) sg. und pl. Titel eines Abschnittes im Adhjâtmarâmâjaṇa Verz. d. B. H. No. 464. Verz. d. Oxf. H. 29,b, 23. 299, b, No. 731. Verz. d. Pet. H. 11. WEBER, RÂMAT. UP. 283. fg. 341. 349.

रामगोविन्दतीर्थ m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 237, b, No. 569. HALL 7. 11. 109. 143.

रामग्राम m. N. pr. eines Reiches HIOUEN-THSANG I, 325. BURN. Intr. 372.

रामचक्र s. रामाचक्र.

रामचन्द्र 1) Bez. Râma's, des göttlich verehrten Sohnes des Daçaratha, WEBER, RÂMAT. UP. 338. 344. fg. 354. 359. 362. Verz. d. Oxf. H. 14, a, 14. 26. 29, a, 1. 94, a, 36. fg. 129, a, 20. COLEBR. Misc. Ess. I, 197. WILSON, Sel. Works I, 46. 54. 102. — 2) N. pr. verschiedener späterer Fürsten, Autoren, Lehrer u. s. w. VP. 477. BURNOUF in der Einl. zu BHÂG. P. I, CI. Inschr. in Journ. of the Am. OR. S. 7,5, Çl. 5. 8. 7,28,14.

Kshitîç. 7, 13 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 37, b, No. 92. 38, b, 3. 119, b, No. 206. 130, b, 40. 150, b, 35. 161, a, No. 353. b, 20. 280, b, 11. 321, b, No. 762. 341, b, N. 350, b, No. 824. 356, a, No. 845. b, 9. Verz. d. B. H. No. 577. Colebr. Misc. Ess. II, 10. fgg. 47. 379. Ind. St. 1, 467. Hall 183. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 16. °कविराज Wilson, Sel. Works I, 168. °गुरु Verz. d. B. H. No. 967. °दास Verz. d. Tüb. H. 13. °परमहंस Hall 14. °भट्ट 48. 174. Verz. d. B. H. No. 1169. °भारत्याचार्य Wilson, Sel. Works I, 201. °शर्मन् Verz. d. B. H. No. 653. °सरस्वती 727. Hall 104. 117. 153. fg. 203. रामचन्द्राचार्य 187. Verz. d. B. H. No. 734. Colebr. Misc. Ess. II, 41. रामचन्द्रेन्द्रसरस्वती Hall 121.

रामचन्द्रचम्पू f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 211, b, No. 499.

रामचन्द्रचरित्रसार n. desgl. ebend. 121, b, No. 213.

रामचन्द्रस्तवराज m. Titel eines Abschnittes der Sanatkumâra-saṁhitâ ebend. 106, b, No. 161.

रामचन्द्राश्रम 1) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 173, a, No. 386. — 2) n. N. pr. eines Tîrtha ebend. 77, b, 34.

रामचन्द्रोदय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 201, a, No. 480.

रामचर m. = बलराम H. an. 2, 443.

रामचरण m. N. pr. eines Scholiasten des Sâhitjadarpaṇa Verz. d. Oxf. H. 214, b, No. 511.

रामचरित n. Râma's (des Sohnes des Daçaratha) *Thaten* Verz. d. Oxf. H. 13, a, 45. 27, a, 18. Verz. d. B. H. No. 826. Ind. St. 1, 246.

रामचक्कर्दनक m. *eine best. Pflanze* Bhâvapr. im ÇKDr. रामाचक्कर्दनक v. l.

रामज m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5, 29.

रामजीवन m. N. pr. eines Sohnes des Rudrarâja Kshitîç. 33, 4.

रामठ Uṇâdis. 1, 103. 1) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2, 1194. 3, 1991 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 8, 3652 (माठर ed. Bomb.). Varâh. Bṛh. S. 10, 5. LIA. I, 569. fg. 856. II, 191. — 2) m. n. *Asa foetida* AK. 2, 9, 40. 3, 4, 1, 9. H. 422. Halâj. 2, 462. Suçr. 2, 246, 12. 498, 9. — 3) m. *Alangium hexapetalum* Ratnam. im ÇKDr. — 4) f. ई = नाडीहिङ्गु Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. रमठ.

रामण (vom caus. von रम्) 1) m. N. zweier Pflanzen: *Diospyros embryopteris Pers.* und = गिरिनिम्ब Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. आ N. pr. einer Apsaras R. 2, 91, 45. वामना ed. Bomb.

रामणि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 38.

रामणीयक (von रमणीय) 1) n. *Lieblichkeit, Schönheit* P. 5, 1, 132, Sch. Çâk. Ch. 120, 8. Mâlatîm. 14, 1. Kir. 1, 39. Nâgân. 5, 12. angeblich auch adj. = रमणीय Comm. zu AK. 3, 2, 2. — 2) N. pr. eines Dvîpa MBh. 1, 1303.

रामतरुणी f. *eine best. Blume*, = तरुणीपुष्प Râǵan. im ÇKDr.

रामतर्कवागीश m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 175, a, 31. 176, b, 1. Muir, ST. II, 56. 64. fg.

रामतापनीय n. Titel der bekannten, 1864 von A. Weber herausgegebenen Upanishad. रामतापनी Ind. St. 3, 326, 1. 2.

रामतीर्थ 1) n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8051. 8159. 9, 2835. Hariv. 9520. R. 6, 109, 49. Verz. d. Oxf. H. 39, b, 17. 67, b, 13. Verz. d. B. H. 143, 2. — 2) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. I, 335. 337. Ind. St. 1, 470. 9, 13. 157. Verz. d. Oxf. H. 38, a, N. Verz. d. B. H. No. 616. Hall 91. 99. 110. 189. °यति 101.

रामत्व n. *das* Râma-*Sein* Hariv. 7373. R. 6, 81, 21. Sâh. D. 114, 6.

रामदत्त m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292, b, 4.

रामदास m. N. pr. verschiedener Personen Verz. d. B. H. No. 1355. Verz. d. Oxf. H. 141, a, 8. Colebr. Misc. Ess. II, 45.

रामदूत 1) m. Râma's *Bote*, Bein. Hanumant's Trik. 2, 8, 7. — 2) f. ई *eine Art Basilienkraut* Çabdak. im ÇKDr.

रामदेव m. 1) Bez. Râma's, des Sohnes des Daçaratha, Weber, Râmat. Up. 279. — 2) N. pr. verschiedener Männer Râǵa-Tar. 5, 238. 240. 6, 91. 7, 676. Verz. d. Oxf. H. 126, b, 1. 150, b, 35. 260, b, No. 629. 261, b, 3. 318, a, 25. 341, b, N. 365, a, No. 72. 378, a, No. 376. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. °मिश्र Colebr. Misc. Ess. II, 49. Hall 83.

रामद्वादशी f. Bez. *des 12ten Tages in der — Hälfte des Monats* Ǵjaishṭha Verz. d. Oxf. H. 58, a, 30.

रामधर m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

रामन् in मयूर° Hariv. 13994 fehlerhaft für रोमन्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. सु°.

रामनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 122, a, 20.

रामनवमी f. Bez. *des 9ten Tages in der lichten Hälfte des* Kaitra, *des Geburtstages* Râmakandra's, Verz. d. Oxf. H. 285, a, 14. 287, a, 10. Weber, Râmat. Up. 281. 359. fg. Kṛshṇaǵ. 304. 310. °निर्णय m. Titel einer Schrift Hall 151.

रामनाथ m. 1) Bez. des göttlich verehrten Râma, des Sohnes des Daçaratha, Wilson, Sel. Works I, 39. Verz. d. Oxf. H. 258, a, 22. — 2) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 125, b, No. 218. 280, a, N. 1. Hall 111.

रामनामव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 285, a, 14.

रामनारायण m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 48. Verz. d. Oxf. H. 530, a. °जीव N. pr. eines Fürsten 92, a, 37.

रामनृपति m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. B. H. No. 833.

रामन्यायालंकार m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II, 47.

रामपण्डित m. N. pr. eines *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 295, b, No. 717.

रामपाल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 1087.

रामपुर n. N. pr. eines Dorfes (ग्राम); s. u. मह्वानन्द 2) c).

रामपूग m. *Areca triandra Roxb.* Trik. 2, 4, 41.

रामपूजाशरणि f. Titel eines Werkes, = रामपद्धति Verz. d. B. H. No. 1324. Weber, Râmat. Up. 277. 282. 301. fgg.

रामपूर्वतापनीय n. *der erste Theil des* Râmatâpanîja Verz. d. Oxf. H. 394, b, 20. — Vgl. रामोत्तरतापनीय.

रामप्रकाश m. Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 261, a, 28.

रामप्रसादतर्कवागीश m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II, 46.

रामप्रसादतर्कालंकार m. desgl. ebend. 57.

रामबाण m. Râma's *Pfeil:* 1) Bez. *einer Art Zuckerrohr* Râǵan. im ÇKDr. u. रामशर. — 2) Bez. *eines best. medicinischen Präparats* Rasendrakintâmaṇi im ÇKDr.

रामभक्त m. 1) *ein Verehrer* Râma's Weber, Râmat. Up. 362. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 100, a, 4 v. u.

रामभट्ट m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 127, b, No. 229. Hall 26. 175. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 22.

रामभद्र m. 1) Bez. Râma's, des Sohnes des Daçaratha, H. 703, Sch. Çabdar. im ÇKDr. Uttarar. 29, 1 (38, 9). Kathâs. 34, 236. 51, 58. 103, 239. 105, 70. Verz. d. Oxf. H. 12, b, 29. 138, a, No. 270. Weber, Râmat. Up. 296. 338. 356. Comm. zu Çând. 55. — 2) N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. II, 46. Verz. d. B. H. 166. 533 (रामभद्राम्बा). Verz. d. Oxf. H. 295, b, No. 716. Hall 139. °भट्ट 69. °भट्टाचार्य 84. 201. °यति 100. °सरस्वती 107. °सार्वभौमभट्टाचार्य 67. 80. रामभद्राश्रम 158. Verz. d. Oxf. H. 183, a, 25.

राममन्त्र m. *ein an* Râma *gerichteter Spruch* Weber, Râmat. Up. 332. 355. fg. 362. Verz. d. Oxf. H. 93, b, 7. 99, a, No. 153 (neutr.!). °पटल n. Titel einer *Sammlung solcher Sprüche* 299, b, No. 732.

राममिश्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122, a, 8.

राममोहन m. desgl. Ind. St. 1, 473, N.

रामयन्त्र n. Bez. *eines best. Diagramms* Weber, Râmat. Up. 316. fg.

रामरहस्य n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 326, 1.

रामराज m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 316, b, 23. Bei Weber, Kṛshṇag. 218, N. ist कामराज st. रामराज zu lesen.

रामराम m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 177, b, No. 403.

रामरुद्रभट्ट m. N. pr. eines Autors Hall 41. f. ई Titel der von ihm verfassten Schrift ebend.

रामल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 217.

रामलवण n. *eine Art Salz* (रोमक) Ratnam. im ÇKDr.

रामलिङ्गकृति m. N. pr. eines Autors Colebr. Misc. Ess. I, 263.

रामलेखा f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 7, 256.

रामवर्धन m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6, 126.

रामवर्मन् m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 29, b, No. 73.

रामवल्लभ n. *Cassia-Rinde* (त्वच) Râǵan. im ÇKDr.

रामवाजपेयिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, a, 30. 341, a, 39. रामवाजपेय Verz. d. B. H. No. 1086.

रामविलास m. Titel eines Gedichts Verz. d. Oxf. H. 214, b, No. 511. °काव्य n. Titel eines andern *Gedichts* 132, a, No. 241.

रामवीणा f. Bez. *einer Art Laute* Çabdar. im ÇKDr.

रामव्याकरण n. Titel einer *Grammatik* des Vopadeva Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. Oxf. H. 161, b, 17.

रामव्रतिन् (von राम + व्रत) m. pl. N. pr. einer Secte Vjutp. 91.

रामशर m. *eine Art Zuckerrohr* Râǵan. im ÇKDr.

रामशर्मन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 176, a, No. 399. 198, a, No. 465. Ind. St. 10, 433. 435. fg.

रामशीतला f. = आरामशीतला Râǵan. im ÇKDr.

रामश्रीपाद m. N. pr. eines Lehrers Hall 108.

रामषडक्षरमन्त्रराज m. Bez. *eines best. sechssilbigen an* Râma *gerichteten Spruches* Verz. d. Oxf. H. 99, a, No. 153.

रामसंयमिन् m. N. pr. eines Autors Hall 110.

रामसख m. Râma's *Freund*, Bez. Sugrîva's Çabdar. im ÇKDr.

रामसरस् n. N. pr. eines heiligen *Sees* Verz. d. Oxf. H. 46, b, N. — Vgl. रामह्रद.

रामसहस्रनामस्तोत्र n. *Preis der tausend Namen* Râma's, Titel eines Abschnittes im Brahmajâmalatantra, Verz. d. Oxf. H. 98, b, No. 152.

रामसाहि m. N. pr. eines *Fürsten* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 5, Çl. 11.

रामसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. der Oxf. H. 285, b, 3. °देव 209, a, No. 490. Verz. d. B. H. No. 545.

रामसूक्त n. Bez. einer best. *Hymne* Verz. d. Tüb. H. 17.

रामसेतु m. Râma's *Brücke*, N. pr. eines Ortes Verz. d. Oxf. H. 257, b, 40.

रामसेनक m. *Gentiana Cherayta Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

रामसेवक m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 178, a, No. 404.

रामस्तुति f. Titel eines Werkes Hall 94.

रामस्तोत्र n. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 826.

रामस्वामिन् m. N. einer Bildsäule des Râma Râǵa-Tar. 4, 275. 327. 334. fg.

रामहृदय n. Râma's *Herz*, Bez. eines Abschnitts im Adhjâtmarâmâjaṇa, Verz. d. Oxf. H. 29, b, 21. Weber, Râmat. Up. 283. 287. 341. 359.

रामह्रद m. Râma's *See*, N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3, 7355. 13, 1733. Hariv. 9520. deren fünf MBh. 3, 5096. fg. 9, 3032. 12, 1705. Bhâg. P. 10, 82, 10. ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्रे पञ्चरामह्रदान्तरम् H. 950.

रामाचक्र n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88, a, 34. रामचक्र im Ind.

रामाचार्य m. N. pr. verschiedener *Lehrer* Verz. d. Oxf. H. 38, b, N. 3. 161, a, No. 355. Verz. d. B. H. No. 738. Hall 113. 188.

रामाच्छर्दनक s. रामच्छर्दनक.

रामाण्डार m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, a, 30. fg. Hall 192.

रामात्मैक्यप्रकाशिका f. Titel einer Abhandlung über *die Identität* Râma's *und der Weltseele* Hall 136.

रामादेवी f. N. pr. der Mutter Ǵajadeva's Gît. 12, 30.

रामानन्द (राम + आ°) m. N. pr. verschiedener Personen Colebr. Misc. Ess. II, 46. 57. Wilson, Sel. Works I, 17 u. s. w. II, 72. Ind. St. 1, 466. Weber, Râmat. Up. 282. 284. Verz. d. B. H. No. 400. 489. fgg. Verz. d. Oxf. H. 72, a, 44. 175, a, 30. 302, a, No. 736. Hall 93. 130. °तीर्थ 89. °यति 107. °सरस्वती 89. 107. 127. 139. 202. °स्वामिन् Verfasser des Vaidjabhûshana Nigh. Pr. Einl. °राज Verz. d. Tüb. Hdschr. 13.

रामानुज (राम + अ°) m. N. pr. eines berühmten Vedânta-Philosophen und Vaishṇava Wilson, Sel. Works I, 34. fgg. Verz. d. Tüb. H. 13. Hall 92. 95. 112. 116. 118. 172. 203. Weber, Râmat. Up. 281. fg. 284. Sarvadarçanas. 45, 21. 51, 19. 56, 10. 61, 9. Verz. d. Oxf. H. 220, a, No. 527. 221, b, No. 536. 243, b, No. 604. 299, b, No. 732. 300, a, No. 733. wohl adj. *zu* Râmânuǵa *in Beziehung stehend* 285, b, No. 669.

रामानुष्टुभ् f. Bez. *eines best. an* Râma *gerichteten Spruches* Weber, Râmat. Up. 313.

रामाभिनन्द m. Titel eines Schauspiels Sâh. D. 138, 1.

रामाभ्युदय m. desgl. ebend. 171, 4.

रामायण 1) adj. (f. ई) Râma *betreffend:* (वाल्मीकेः) रामायणीं कथाम् Spr. 3885. Verz. d. Oxf. H. 120, a, 27. n. *ein oder das die Schicksale* Râma's *besingendes Epos* Trik. 3, 2, 14. MBh. 3, 11177. Hariv. 8672. 16232. °गान Verz. d. Oxf. H. 13, b, 34. °महानदी R. Einl. ein Âkhjâna 1, 1, 95. R. Gorr. 1, 1, 105. प्राचेतसोपज्ञ Ragh. 15, 63. °कथा Uttarar. 86, 3 (110,

9). Râǵa-Tar. 1,166. °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,11. सारं रामायणास्य — ऋषिणा चाग्निवेशेन गीतम् 121,*b*,No.213. Vgl. अद्भुत°, अध्यात्म°, बाल°, महा°. — 2) f. ई oxyt. *Enkelin der* oder *des Schwarzen* (राम) AV. 6,83,3; vgl. रामायणिनेयी.

रामायणीय adj. *zum* Râmâjaṇa *in Beziehung stehend* Verz. d. Oxf. H. 121,*a*, No. 213.

रामार्चनचन्द्रिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,8. 279,*a*, 31. fg. 292,*b*,5. Verz. d. Tüb. H. 17.

रामार्य m. N. pr. eines Lehrers Hall 180.

रामालिङ्गनकाम adj. *nach der Umarmung einer Schönen sich sehnend;* m. Bez. des *rothblühenden Kugelamaranths* Râǵan. im ÇKDr.

रामावत्तनोपम adj. *den Brüsten einer Schönen gleichend* (die sich nicht trennen); m. Bez. der *Anas Casarca Gm.* Râǵan. im ÇKDr. रामवत्तनोपम gedr.

रामाश्रम m. N. pr. eines Gelehrten Colebr. Misc. Ess. II,56. fg. Wilson in der Einl. zur 1ten Ausg. d. Wört. XXIII. fg. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 93. 173,*a*, No. 386.

रामाश्वमेध m. Râma's *Rossopfer*, Titel eines Abschnitts im Padmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 84,*a*, No. 142. रामाश्वमेधिक adj. *auf* Râma's *Rossopfer bezüglich* 13,*b*,35.

रामि m. patron. von राम gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,12.

रामिन् nom. ag. von रम् in der Bed. *geschlechtlich ergötzend* in स्त्रण°.

रामिल (von रम्) m. 1) *Geliebter, Gatte.* — 2) *der Liebesgott* H. an. 3, 680. Med. l. 127. — 3) N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,18. 22. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 15. 20.

रामुष N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 2,55.

रामेन्द्रयति m. N. pr. eines Autors Hall 98.

रामेन्द्रवन m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,4 v. u. Verz. d. B. H. No. 489.

रामेश (राम + ईश) 1) m. N. pr. eines Mannes: °भट्ट Hall 175. — 2) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 64,*a*,9. Wilson, Sel. Works I, 223.

रामेश्वर (राम + ई°) 1) m. N. pr. verschiedener Personen Dhûrtas. 67,9. Hall 181. Verz. d. Oxf. H. 136,*a*, No. 259. 140,*a*, No. 281. 192, *b*, No. 438. 198,*b*, No. 467. 278,*b*, N. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46. भट्ट° Verz. d. B. H. No. 138. 823. °भट्ट 1223. 1233. Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, 35. 277,*a*, No. 654. 321,*a*, No. 761. Hall 13. 175. fg. 178. °भट्टारक Sarvadarçanas. 100, 8. °राय Kshitîç. 23,1.3. °शर्मन् Verz. d. Oxf. H. 192,*b*, No. 437. — 2) n. N. eines Liṅga Weber, Râmat. Up. 280. Verz. d. B. H. No. 1242. °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 64,*b*,2. N. pr. eines heiligen Badeplatzes 84,*a*,4. 248,*a*,5. °तीर्थ 66,*a*,42. *b*,31. 38. 77,*b*,20; vgl. LIA. I, 56. 157.

रामेषु (राम + इषु) m. Râma's *Pfeil:* 1) Bez. *einer Art Zuckerrohr* Râǵan. im ÇKDr. u. रामशर. — 2) m. N. pr. eines Mannes Daçak. 148,15.

रामोत्तरतापनीय n. *der zweite Theil des* Râmatâpanîja Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,21. — Vgl. रामपूर्वतापनीय.

रामोद m N. pr. eines Mannes gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. Davon patron. रामोदायन ebend.

रामोपनिषद् f. N. einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 390,*b*, No. 35.

रामोपाध्याय (राम + उ°) m. N. pr. eines *Lehrers* Schol. in der Einl. zu Kaurap.

रामोपासक (राम + उ°) m. *ein Anbeter* Râma's (Sohnes des Daçaratha) Verz. d. B. H. 160.

राम्भ (von रम्भ) m. *Bambusstock* AK. 2,7,45. H. 815.

राम्या (vgl. रात्री und 1. राम) f. *Nacht* Naigh. 1,17. ṚV. 2,2,8. 3,34, 3. या भानुना रुशता राम्यास्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदक्तून् 6,65,1. तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम् 7,9,2. AV. 19,49,7.

राय m. am Anfange und am Ende von Personennamen = राजन् *Fürst;* vgl. आनन्द°, कल्याण°, खाना°, गोविन्द°, बुक्क°, माणिक्य°, मूकल°, यातल°, यादव°. Nach Wilson in VP. 398, N. 1 ist राय im Bhâg. P. ein Sohn des Purûravas; die gedruckten Ausgg. (9,15,1) haben aber रय. Im Index des Verz. d. Oxf. H. wird राय als ein Sohn Viçokadeva's aufgeführt, der Text 280,*b*,5 hat aber रय.

रायण n. = पीडा ÇKDr. nach einer Hdschr. der Çabdar.

रायणेन्द्रसरस्वती m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 366,*a*, No. 94.

रायभाटी f. *Strömung eines Flusses* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. रय.

रायमुकुट oder vollständiger °मणि m. N. pr. eines Erklärers des Amarakoça Colebr. Misc. Ess. II, 18. 54. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*, 20. Verfassers eines juridischen Werkes 292,*b*,6.

रायराघव m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483.

रायस्काम (रायस्, gen. von रै + काम) adj. *besitzlustig, reich zu werden wünschend* ṚV. 1,78,2. 7,32,2. 42,6.

रायस्पोष (रायस् + पोष) 1) m. *Vermehrung des Reichthums, Zunahme des Wohlstandes* VS. Prât. 2,42. 3,24. AV. Prât. 2,80. gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80; vgl. u. पोष 1). — 2) adj. *Reichthümer vermehrend:* Kṛshṇa MBh. 13,7368.

रायस्पोषक adj. von रायस्पोष 1) gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80.

रायस्पोषदा adj. *Wachsthum des Besitzes schenkend*, dat. °दे VS. 5,1. 6,32. VS. Prât. 5,6.

रायस्पोषदावन् adj. dass. TS. 6,2,1,3.

रायस्पोषवनि adj. *wachsenden Reichthum verschaffend* VS.5,12.27.6,3.

रायाणीय m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,7. राणायनीय v. l.

रायान (sic) m. N. pr. eines Hirten Verz. d. Oxf. H. 25,*a*,8. 10. 14. 18 (रायन). N. 1.

रायोवाज (रायस्, gen. von रै + वाज) m. N. pr. eines Mannes Pańkav. Br. 8,1,4. 13,4,17. Davon रायोवाजीय n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 231,*a*. Pańkav. Br. 13,4,16. 18. 24,1,7. Lâṭj. 7,2,1. 10,2,13.

रारा und **रारीय** s. u. राढा und राढीय.

राल m. = अराल *das Harz der Shorea robusta* H. 647. रालक dass. Varâh. Bṛh. S. 41,2.

रालकार्य m. *Shorea robusta* Râǵan. im ÇKDr.

राव (von रु) m. *Gebrüll, Geschrei, Getöse, Gesumme, Schall, Laut* H. 1400, Sch. Çabdar. im ÇKDr. eines Stiers Pańkat. 9,12. गर्दभ° Varâh. Bṛh. S. 53,108. 90,10. रत्नसां रवतां रावः R. 7,7,41. Kathâs. 11,71.

Weber, Râmat. Up. 297. Vet. in LA. (III) 4,9. अविरतजनरावम् adv. Varâh. Brh. S. 43,59. जलचर° MBh. 1,1222. 13,742. Hit. 111,20, v. l. मुरजवाद्य° Mâlav. 21. भैरव° adj. (अनिल) Varâh. Brh. S. 30,6. रुवत्ति रावान्मधुरान्षड्जा: MBh. 1,2855. रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् *Gesang* Gît. 11,4. महा° *lautes Gebrüll* Hit. 92,18. adj. (f. आ) *laut schreiend* (नारायणी) Mârk. P. 91,18. — Vgl. चारुरावा, दीर्घराव, मेघ° und रव.

रावण 1) adj. (vom caus. von रु) *schreien* —, *wehklagen machend:* सर्वलोकानाम् R. 3,36,25. लोक° MBh. 3,11212. Hariv. 14518. R. 1,14, 37 (19 Gorr.). R. Gorr. 1,23,19. 3,36,3. 6,22,7. 7,16,38. Bhâg. P. 9, 10,26. शत्रु° Kâm. Nîtis. 11,18. त्रैलोक्य° Hariv. 2338 (die ältere Ausg. त्रैलोक्यद्रावण). Bhâg. P. 9,10,15. Ueberall zur Erklärung des Eigennamens रावण gebraucht. — 2) m. *a*) oxyt. patron. von रवण gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — *b*) N. pr. des zehnköpfigen Fürsten der Râkshasa, jüngeren Bruders des Kubera und Beherrschers von Lañkâ, der von Râma besiegt wird, Trik. 2,8,5. H. 706. MBh. 3,15881. fgg. रावयामास लोकान्यस्मात्तस्माद्रावण उच्यते (vgl. u. 1.) 15928. Hariv. 2337. fgg. 5871. 7373. 8694. 8696 (an den beiden letzten Stellen liest die ed. Calc. falschlich वारण). 10409. R. 1,1,47. fg. 71. 79. 14,13. fgg. 22,17. 3,23,38. 6,95,3. Ragh. 12,52. Burn. Intr. 514. Râǵa-Tar. 3,446. fg. VP. 385. 417. Bhâg. P. 4,1,37. 7,1,43. Spr. 54. शुष्कताल्वोष्ठजिह्वादिच्युतं जग्राह रावण: 1534. रामपत्नीं वनस्थां य: स्वनिवृत्त्यर्थमाददे । स रावण इति ख्यातो यद्वा रावाच्च रावण: ॥ Weber, Râmat. Up. 297. gräbt die Worte Pâṇini's, Kâtjâjana's und Patañǵali's in Stein Ind. St. 5, 161. Verfasser eines Commentars zum Sâmaveda 10,176. zum Ṛgveda Hall 119. Verfasser der Arkakikitsâ Verz. d. B. H. No. 943. — *c*) N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra (neben Indraǵit und Vibhîshaṇa) Râǵa-Tar. 1,193. fg. 196; vgl. LIA. I, 475, N. 4. — 3) n. Bez. eines Muhûrta (neben विभीषण) Verz. d. B. H. No. 912.

रावणगङ्गा f. N. pr. eines nach dem Râkshasa Râvaṇa benannten Flusses auf Lañkâ Gâruḍa-P. 70 im ÇKDr.

रावणहस्त *ein best. Saiteninstrument* H. 286, Sch.

रावणह्रद m. Râvaṇa's *See*, N. pr. eines Sees, aus dem die Çatadru entspringt, LIA. I, 34. 45. Burn. Intr. 171, N. 1.

रावणारि m. Râvaṇa's *Feind*, Bein. Râma's, Gaṭâdh. im ÇKDr.

रावणि m. patron. von रावण gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59 und तौल्वल्यादि zu 61. Bez. Indraǵit's, des ältesten Sohnes des Râkshasa Râvaṇa, H. 706. MBh. 3,16449. 7,4065. 5888. R. 6,67,1. 7,28,22. Verfasser eines Bâlatantra Verz. d. B. H. No. 958. pl. *die Söhne* Râvaṇa's Bhaṭṭ. 15,79.

रावन् (von 1. रा) adj. *spendend* VS. 6,30 (ग्रावन् TS.). — Vgl. अ°, पुरु°.

राविन् (von रु) adj. *brüllend, tosend, schreiend:* जलदा घोरा राविण: MBh. 3,12885. मधुररावीणो जलदा: Varâh. Brh. S. 32,21. मेघदुन्दुभिराविणी (गो) *wie* R. 1,54,7. धाङ्क्ष° Schol. zu P. 3,2,79. 6,2,80. आकार°, ओकार° *den Laut* आ, ओ *in seinem Schrei hören lassend* Varâh. Brh. S. 88,33. — Vgl. क्रूर°, बृहद्राविन्, मित°, वक्र°.

रविट N. pr. eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,4.

राश्, राशते (शब्दे) v. l. für राम् Dhâtup. 16,25. उलूकाश्चाप्यराशन्त MBh. 7,6658. अदृश्यन्त ed. Bomb.; die richtige Lesart wird wohl अवाशन्त oder अरासन्त sein.

राशभ Mârk. P. 48,26 fehlerhafte Schreibart für रासभ.

राशि Uṇâdis. 4,132. m. Siddh. K. 249,*b*,3 v. u. m. f. (das f. nicht zu belegen) Trik. 3,5,17. 1) *Haufe, Menge, Masse, Schaar, Gruppe, Quantität, Zahl* AK. 2,5,42. 3,4,28,216. H. 1411. an. 2,552. Med. ç. 11. Halâj. 4,1. Colebr. Alg. 17. 131. mit कृत u. s. w. componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् Ṛv. 4,20,8. 6,55,3. von Getraide AV. 6,142,3. Kauç. 61. वल्मीक° 21. ओदनस्य R. 1,53,3. 2,32,26. काष्ठ° 3,16,8. Varâh. Brh. S. 33,5. Bhâg. P. 5,10,10. भस्म° Suçr. 1,101,19. भस्मराशीकृत R. 1,41,30. तूल° Çik. 10. तिल° Pańkat. 121,11. द्रव्य° 203,7. गोनाम् Ṛv. 9,87,9. पैत्र्य (nach Çaṅk. राशि = गणित) Khând. Up. 7,1,2.4. एकश्चैव मतो राशिर्वृक्षय: पाण्डवास्तथा Hariv. 22. यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महदद्भुतम् । राशिवर्धनमात्रं स नैव स्त्री न पुन: पुमान् ॥ Spr. 4859. नरराशय: R. Gorr. 2,20,38. पन्नग° Hariv. 10199. Ragh. 15,15. Weber, Ǵjot. 47. 109. मल्ल° Müller, SL. 121. वर्ण° Ṛv. Prât. Einl. Sarvadarçanas. 124,14. सप्तदशक MBh. 3,13917. Hariv. 2181. Ind. St. 8,326. मूल° *Grundzahl* 329. बद्ध° und लघु° adjj. Colebr. Alg. 35. °भागानुबन्ध, °भागापवाह 15. °व्यवहार 103. तेजसां राशिं गगनस्थं दिवाकरम् Mârk. P. 104,17. MBh. 3,9900. प्रभानामप्रभानां च द्वे राशी 18,93. अखिलसत्त्व° Bhâg. P. 3,21,13. अर्थ° Sâh. D. 145,4. यशो° Ragh. 4,80. Vikr. 11,17. Spr. 3671. पुण्य° Râǵa-Tar. 5,115. Pańkar. 1, 7,6. पाप° Weber, Râmat. Up. 356. Vgl. अग्नि° (auch Pańkar. 1,3,19), अनन्त°, तेज°, जल° (auch Kir. 5,19), तेजो° (auch Bhag. 11,17), पुण्य°, ब्रह्म° (von einer Person gesagt MBh. 5,7215), लवणाम्बु°, वारि°. — 2) als Maass so v. a. Droṇa Çârṅg. Saṁh. 1,1,21. — 3) (*Sterngruppe*) *ein Zodiakalbild, ein Zwölftel der Ekliptik, ein astrologisches Haus* AK. 1,1,2,29. 3,4,28,216. H. 116. H. an. Med. Weber, Ǵjot. 21. 106. MBh. 3,13099. Varâh. Brh. S. 5,10. 9,37. 28,1. 19. 40,3. 8. 41,1. 42,2. 98, 17. 100,2. 103,7. 104,29. राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसंप्रत्यया: d. i. *die Wörter* राशि, क्षेत्र, गृह, ऋक्ष, भ *und* भवन *sind gleichbedeutend* Brh. 1,4 (vgl. Z. f. d. K. d. M. 4,343). 5,1. fgg. 17,2. 24,8. Bhâg. P. 5,21,3. 4. 22,1. 2. 5. 12,2,24. Mârk. P. 58,76. Weber, Râmat. Up. 313. fg. Ind. St. 2,278. fgg. Kusum. 22,19. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,42. 86,*b*,3. 5. 93,*b*, 25. 333,*a*,16. 336,*b*, No. 792. 337,*a*,3. राश्यधिप *der Regent eines astrol. Hauses* 86,*b*,3. राशिप dass. Varâh. Brh. 1,12. °प्रविभाग *Vertheilung der 12 Zodiakalbilder* (unter die 28 Nakshatra), Titel des 102ten Adhj. in Varâh. Brh. S. °भेद *Theil eines Zodiakalbildes, — eines astrol. Hauses* Varâh. Brh. S. 69,3. राश्यंश = नवांश Brh. 1,2. Vgl. जन्म°, पुं°, ब्रह्म°. — 4) N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9,8,22. Çâṅkh. Çr. 14,39,1.

राशिक am Ende eines comp. nach einem Zahlwort *aus so und so vielen Quantitäten, Zahlen bestehend* Colebr. Alg. 35.

राशिचक्र n. 1) *der Zodiakus* As. Res. 2,291. — 2) Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,33. 93,*a*,31. 95,*b*,43.

राशित्रय n. *Regel de Tri* Ind. St. 10,264.

राशिस्थ adj. *in Haufen stehend, aufgehäuft* Kathâs. 39,116. 119.

राशीकर् (राशि + कर्) *auf einen Haufen bringen, zusammenhäufen:* °कुरुष्व तिलान् Kathâs. 39,122. °कृत 124. R. 2,96,34. भस्मराशीकृत

in einen Haufen Asche verwandelt R. 1,41,30. Gorr. 43,12.

राशीकरण n. *das Zusammenhäufen* P. 3,3,41, Sch.

राशीकरणभाष्य n. Titel eines Werkes der Pâçupata Sarvadarçanas. in Verz. d. Oxf. H. 247,*a*,36. Hall 163. राशीकरभाष्य die gedr. Ausg. 78,19. fg.

राशिभू (राशि + 1. भू) *sich anhäufen:* °भूतधन *der Schätze angehäuft hat* Spr. 1140. °भूतः प्रतिदिशमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः Megh. 59. प्रेमराशीभवन्ति *werden zu einer Fülle von Zuneigung* 111.

राष्ट्र (von 1. राज्; राष्ट्र Uggval. zu Unâdis. 4,158) 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,13. das m. nur durch MBh. 13,3050 zu belegen. *Reich, Herrschaft; Gebiet, Land; Unterthanen, Volk* AK. 3,4,25,184. 186. H. 947. an. 2,449. Med. r. 79. ममं द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य RV. 4,42,1. 10,109,3. 124,4. राज्ञो राष्ट्राणाम् 7,34,11. 84,2. मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् 10,173,1. नास्माद्राष्ट्रं भ्रंशते TS. 5,7,4,4. सं मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत् AV. 10,3,12. 13,1,35. 12,1,8. VS. 9,23. 20,8. तस्य हैकादशानि राष्ट्रमिव प्रजा बभूव *seine Nachkommenschaft war ein ganzes Volk* Ait. Br. 5,30. तत्रं हि राष्ट्रम् 7,22. 31. 8,7. 9. तस्मात्, बलात्, राष्ट्रात्, विशः 24. TS. 3,4,8,1. 3. राष्ट्रम्, विशः *Land, Leute* 1,6,10,3. 3,5,2,3. 5,7,4,4. यं मृधो ऽभिप्रवेपैरन्राष्ट्राणि वाभिसमीयुः *in sein Land einfallen* TBr. 1,2,1,13. Çat. Br. 2,4,4,5. 6,1,2,25. 11,2,7,17. 4,3,3. 20. तत्र एव हि राष्ट्रं प्रतितिष्ठति 12,8,3,20. यदिदं सृञ्जयेषु राष्ट्रं तत्त्वयि दधामि 9,3,2. — दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सचराचरम् M. 7,29. कोशराष्ट्रे 65. 143. तं राष्ट्राद्विवासयेत् 8,219. अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, अर्थ, दण्ड 7,157. स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं कोशदण्डौ सुहृत्तथा। सप्त प्रकृतयो ह्येताः 9,294. AK. 2,8,1,17. H. 714. स्व° M. 7,32. 111. MBh. 1,6109. 3,2729. पुराणि सराष्ट्राणि 2742. R. 1,1,90. 3,3. 7,14. fg. 8,24. 9,21. राष्ट्रमराजकम् Spr. 2328. पर°, स्व° 41. कुरुजाङ्गलानि राष्ट्राणि 612. Varâh. Brh. S. 19,19. 33,11. 20. 36,3. 46,3. °भय *dem Reiche drohende Gefahr* 39. 60. तस्य प्रक्षुभ्यते राष्ट्रम् M. 9,254. तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति 10,61. राष्ट्राभिवृद्धि 7,109. °विवृद्धि Varâh. Brh. S. 44,21. °कर्षण M. 7,112. राष्ट्रस्य संग्रहः 113. fg. MBh. 12,3261. fg. सुसंगृहीत° M. 7,113. स्वराष्ट्रपरिपालन Jâgn. 1,341. °गुप्ति MBh. 12,3261. fg. °भङ्ग Dhûrtas. 76,18. °विप्लव Spr. 458, v. l. °कारणीय Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,30. क्षुधा राष्ट्रमचिरेणैव सीदति M. 7,134. स राजापि समान्त्रिकः। सराष्ट्रश्चापि विदधे शंकराराधनव्रतम्॥ Kathâs. 21,142. Am Ende eines adj. comp. f. आ Hariv. 4017. 6544. R. 2,34,41. 62,42. 110,37 (119,34). R. Gorr. 2,35,47. 46,13. Vgl. घृत°, पांसु°, महा°, यम°, सु°. — 2) m. n. *Calamität, Elend, Noth* AK. 3,4,25,186. H. an. Med. — 3) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Kâçi Bhâg. P. 9,17,4.

राष्ट्रक 1) am Ende eines adj. comp. = राष्ट्र *Reich* u. s. w.: राज्यं चेदं सराष्ट्रकम् MBh. 1,5209. — 2) adj. *im Reiche —, im Lande wohnend:* जना नागरराष्ट्रकाः Bhâg. P. 10,43,20. — 3) f. राष्ट्रिका *eine Art Solanum,* = बृहती AK. 2,4,3,12. Ratnam. 12. — Vgl. राष्ट्रिक.

राष्ट्रकाम adj. *nach dem Reich verlangend* TS. 3,4,8,1.

राष्ट्रकूट m. pl. N. pr. eines Volksstammes Z. f. d. K. d. M. 3,168.

राष्ट्रगोप m. *Hüter des Reiches* Ait. Br. 8,25.

राष्ट्रतन्त्र n. *Regierungssystem, Regierung* R. 3,61,28. — Vgl. राज्यतन्त्र.

राष्ट्रदा adj. *Herrschaft gebend* VS. 10,2.

राष्ट्रदिप्सु adj. *Land* oder *Leute beschädigen wollend, — bedrohend* AV. 10,3,16.

राष्ट्रदेवी f. N. pr. der Gattin Kitrabhânu's Hall in der Einl. zu Vâsavad. 50.

राष्ट्रपत adj. von राष्ट्रपति gaṇa अश्वपत्यादि zu P. 4,1,84.

राष्ट्रपति m. *Herr des Reiches, König* gaṇa अश्वपत्यादि zu P. 4,1,84. Çat. Br. 11,4,3,14. MBh. 3,935. 4,216.

राष्ट्रपाल 1) m. *a*) *Hüter des Reiches, Herrscher, König:* तद्राष्ट्रपाल (d. i. तद्राष्ट्र + पाल) Bhâg. P. 10,86,16. — *b*) N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 138, N. 2. Schiefner, Lebensb. 269 (39). eines Sohnes des Ugrasena Hariv. 2028. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,23. °परिपृच्छा Titel eines Werkes Vjutp. 41. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Ugrasena's Hariv. 2029. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,41.

राष्ट्रपालिका = राष्ट्रपाली (s. u. राष्ट्रपाल) Bhâg. P. 9,24,24.

राष्ट्रभृत् 1) adj. *die Herrschaft pflegend, — erhaltend:* ये देवा राष्ट्रभृतो ऽभितो यन्ति सूर्यम् AV. 13,1,35. तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति *unterthan* 10,8,15. Wasser (bei der Königssalbung) Ait. Br. 8,7. Kâth. 37,10. 11. 21,12. — 2) f. N. einer Apsaras AV. 6,118,1. Taitt. Âr. 2,4. Davon — 3) m. Bez. von *Würfeln* AV. 7,109,6. — 4) Bez. *gewisser Sprüche* (VS. 18,38) und *Opferungen* TS. 3,4,6,2. 5,4,9,3. 7,4,4. Çat. Br. 9,4,1,1. Kâtj. Çr. 18,5,16. Pâr. Grhj. 1,5. — 5) m. N. pr. eines Sohnes des Bharata Bhâg. P. 5,7,3.

राष्ट्रभृति f. *Aufrechthaltung der Herrschaft:* राष्ट्रभृत्यै (d. i. °भृत्यै) चास्मिन्राष्ट्रं दधाति TS. 5,7,4,4.

राष्ट्रभृत्य n. dass. AV. 19,37,3.

राष्ट्रवर्धन 1) adj. *das Reich wachsen machend, — in die Höhe bringend* R. 1,5,11. 2,36,20. — 2) m. N. pr. eines Ministers Daçaratha's und Râma's R. 7,59,3,26. Weber, Râmat. Up. 302. 305.

राष्ट्रवासिन् m. *Bewohner eines Reiches, Unterthan* Trik. 3,2,16.

राष्ट्रान्तपाल m. *Hüter der Grenzen des Reiches* Kâm. Nîtis. 15,21.

राष्ट्रि f. = राष्ट्री *Herrscherin:* अन्नस्य राष्ट्रिरसि Gobh. 4,10,10.

राष्ट्रिक m. 1) *Bewohner eines Reiches, Unterthan* M. 10,61. — 2) *Beherrscher eines Reiches* Hariv. 10894. — Vgl. राष्ट्रक.

राष्ट्रिन् adj. *Inhaber eines Reiches* Çat. Br. 13,1,6,3. 2,9,6.

राष्ट्रिय (von राष्ट्र) 1) adj. *im Reich geboren, zum Reich gehörig* P. 4,2,93. Schol. zu P. 4,3,25. अन्य° (von अन्यराष्ट्र) Kâth. 37,11. — 2) m. *Schwager des Königs* in der Bühnensprache AK. 1,1,7,14. H. 333. Kât. zu Çâk. 73,1. Mrkkh. 66,23. 154,11. 175,5. °श्याल dass. 138,18. रट्ठिअ im Prâkrit Çâk. 79,2. — Vgl. राष्ट्रीय.

1. राष्ट्री m. Naigh. 2,22. वायुर्न राष्ट्र्यत्यैत्यक्तून् RV. 6,4,5. = राज्यवत् Sâj.; ein Thema राष्ट्रिन् anzunehmen erlaubt die Betonung nicht.

2. राष्ट्री (von 1. राज्) nom. ag. f. *Lenkerin, Herrscherin, Führerin* Naigh. 2,22. (वाक्) राष्ट्री देवानाम् RV. 8,89,10. अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् 10,125,3. इयं पित्रे राष्ट्र्येत्यग्रे Ait. Br. 1,19; vgl. AV. 4,1,2. Çâṅkh. Çr. 5,9,10. nach Sâj. die Vâk.

राष्ट्रीय (von राष्ट्र) 1) adj. am Ende eines comp. *zu dem und dem Reich gehörig:* स्वराष्ट्रीयजनाः Kull. zu M. 7,111. अन्य° Çat. Br. 5,3,4,9. — 2) m. *Schwager des Königs* H. 333, v. l. MBh. 12,3205. 3269. — Vgl.

राष्ट्रिय.

1. रास्, रासते (शब्दे) Dhâtup. 16,25. *heulen, schreien:* आर्ततरं ररासे (पयोदः) Spr. 1603. चिकी कुचीति रासन्ते सारिका वेश्मसु स्थिताः R. 6,11, 42. act.: काका गोमायवो गृध्रा रासन्ति च सुभैरवम् 36. सारसानां च रासताम् 3,76,14. काक काकेति रासन्तम् (वाशन्तम् ed. Bomb.) MBh. 8,1941. सारस्य इव रासत्यः (वाशत्यः ed. Bomb.) 11,532. — Vgl. 1. रस्.

— intens. *laut schreien, — wehklagen:* इमे ते भ्रातरः — रारास्यमानास्तिष्ठन्ति (वावाश्यमानाम् ed. Bomb.) MBh. 12,389.

— परि *mit Geschrei begleiten:* नदन्तं पाञ्चजन्यम् — समन्तात्पर्यरासन्त (पर्यवाशन्त ed. Bomb.) रासभाः MBh. 16,49.

2. रास् *verleihen* u. s. w. s. u. 1. रा.

रास m. 1) *ein best. Hirtenspiel, ein Tanz, den* Kṛshṇa *mit seinen Hirtinnen aufführte*, Trik. 3,3,449. H. an. 2,589. Med. s. 10. Hâr. 176. Hariv. 8412. Gît. 1,43. 48. VP. 533. fg. Bhâg. P. 2,7,33. 3,2,14. अलब्धरासाः कल्याण्यः 10,47,38. Pañkar. 1,12,55. 62. 2,3,36. 39. 3,12,2. Verz. d. Oxf. H. 75,*b*,28. 128,*b*,21. 145,*b*, No. 306. °क्रीडा 26,*b*,47. 27,*a*,11. Bhâg. P. 10,33,2. Pañkar. 2,3,66. °महोत्सव 1,10,67. 11,1. रासोत्सव Bhâg. P. 10,33,3. °गोष्ठी 16. 47,44. Pañkar. 3,12,3. °प्रणेतर् Hariv. 8406. रासेश्वर Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,39. रासेश्वरी Pañkar. 1,12,61. 2,3,65. 4,48. 5,30 (राशे° gedr.). राधा रासेश्वरी रासवासिनी (= रासमण्डलवासिनी), रसिकेश्वरी Brahmavaiv. P. 17 im ÇKDr. रसाधिष्ठात्री Pañkar. 2,3,65. °यात्रा Wilson, Sel. Works I,128. 130. Vâmakeçvaratantra 54 und Utkalakalikâ im ÇKDr. °मण्डल Kṛshṇa's *Spielplatz* Bhâg. P. 10,33,6. Pañkar. 1,7,60. 2,3,21. 66. 5,18. Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,39. *b*,4. 24,*b*,45. रासोद्भवा Pañkar. 2,4,49. — 2) *Spiel* überh. Bhâg. P. 3,9,14. 5,2,12. 8,19.13,17. — 3) *Geschrei von verschiedenen Seiten* (कोलाहल) und *Laut, Ton* überh. (ध्वान) H. an. Med. — 4) = भाषाशृङ्खलक Trik. H. an. Med.; nach ÇKDr. enthält das zusammengesetzte Wort zwei Bedeutungen; *Rede* und *Fessel* Wilson. — दूरासद Uttarar. 44,5 (neuere Ausg.) zerlegt Benfey in दूरास + द und jenes in दुस् + रास *disagreeable speech;* es ist aber mit der älteren Ausg. 33,11 दुरासद zu lesen.

रासक m. n. *einer Art von Schauspielen* Sâh. D. 548. Schol. zu Daçar. 1,8; vgl. Einl. S. 6. 7. und नाट्य°.

1. रासन (von रसना *Zunge*) adj. *zur Zunge in Beziehung stehend, schmeckbar:* रस P. 4,2,92, Sch.

2. रासन fehlerhaft oder v. l. für वाशन in घोर°.

रासभ (von 1. रस्) Uṇâdis. 3,125. m. *Esel, Eselhengst* Naigh. 1,15. AK. 2,9,78. H. 1256. Halâj. 2,125. कदा योगो वाजिनो रासभस्य der Açvin ṚV. 1,34,9. 116,2. 8,74,7. विमोचनं वाजिनो रासभस्य des Indra 3,53,5. उपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य 1,162,21. TBr. 5,1,5,7. Çâṅkh. Br. 18,1. Çat. Br. 6,1,1,11. 3,1,23. 2,3. 4,1,3. Kâtj. Çr. 16,2,4. Pâr. Gṛhj. 3,15. रासभाराव MBh. 1,4508. रासभारूणा 7,1001. 14,2239. 15,210. (तम्) पर्यरासन्त (पर्यवाशन्त ed. Bomb.) रासभाः 16,49. °युक्तो रथः R. Gorr. 2,71,15. 19. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,27. Suçr. 1,135,9. यः स्पृशेद्रासभम् — सचैलं स्नानमुद्दिष्टं तस्य पापप्रशान्तये Spr. 2457. Bhâg. P. 3,17,12. Mârk. P. 48,26 (राशभ). Weber, Kṛshṇaǵ. 284,3. रासभी f. *Eselin* Çabdar. im ÇKDr. MBh. 13,1879. fg. Pañkat. 215,9. — Vgl. ऋषभ, करभ, कलभ, गर्दभ, लुषभ, वृषभ, शरभ, शलभ.

रासभसेन m. N. pr. eines Fürsten LIA. II,760.

रासायन adj. von रसायन Suçr. 2,157,7.

रासिन् Fehler oder v. l. für वाशिन् in घोर°.

रासेरस (रासे, loc. von रास, + रस) m. रासेरसो रससिद्धवलौ शृङ्गारहासयोः। षष्ठीजागरके रसगोष्ठ्याम् H. an. 4,332. रासेरसस्तु गोष्ठ्यां स्याद्धासशृङ्गारयोरपि ॥ रससिद्धिरसावासषष्ठीजागरके ऽपि च। Med. s. 60. fg. = उत्सव Çabdar. im ÇKDr. = परिहास Gaṭâdh. im ÇKDr.

रास्ना (रास्ना Uṇâdis. 3,15) f. 1) *Gurt* (vgl. रशना, रश्मि) VS. 1,30. 11,59. 38,1. Çat. Br. 6,2,2,25. 5,2,11. 13. — 2) Bez. zweier Pflanzen; = रसन Trik. 3,3,255. *a) Mimosa octandra Roxb.*, ein dorniger Schlingstrauch AK. 2,4,5,5. H. an. 2,281. Med. n. 17. — *b) die Ichneumonpflanze* AK. 2,4,4,2. H. an. Med. Ratnam. 49. Suçr. 1,131,14. 146,3. 2,38,8. 93,20. 130,3. 416,8. Çârṅg. Saṁh. 2,2,81. रास्ना 57. fg.

रास्नाका f. *Bändchen:* तस्मादियमत्तरा कृनू रास्नाकेव Kâṭh. 25,9.

रास्नावं (von रास्ना) adj. *mit einem Gurt versehen:* रास्नावमैन्द्रवायवपात्रम् Çat. Br. 4,1,5,19. Kâtj. Çr. 9,2,5.

रास्पिनं adj. nach Comm. *rauschend, geräuschvoll* Nir. 6,21. प्र वो नर्पातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः ṚV. 1,122,4.

रास्पिरं adj.: मातुष्पदे परमे शुक्र आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन् ṚV. 5,43,14. nach Sâj. die Stotârah Hotar u. s. w.

रास्य in गो° adj. Beiw. Kṛshṇa's Pañkar. 4,8,16.

राहतति m. patron. gaṇa पैलादि zu P. 2,4,59.

राहवि m. patron. von राहु ebend.

राहित्य (von रहित) n. am Ende eines comp. *das ohne-Etwas-Sein, Nichthaben* Sâh. D. 243,6. 282,18. Sarvadarçanas. 144,22.

राहिल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,1306.

राहु (wohl von रभ्) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,1. *der Ergreifer* (vgl. ग्रह), Bez. des Dämons, der Sonne und Mond *packt* und dadurch die Verfinsterung derselben bewirkt; er ist nach dem Epos ein Sohn Viprakitti's (Viprakit's) und der Siṁhikâ. Bei der Quirlung des Oceans mischte er sich unter die Götter, trank von dem Unsterblichkeitstrank, ward aber von Sonne und Mond dem Vishṇu verrathen, der ihm dafür den Kopf abschlug. Der unsterblich gewordene Kopf rächt sich nun an Sonne und Mond, indem er sie zu Zeiten verschlingt. Râhu wird auch zu den Planeten gezählt. Ueber das Verhältniss des Mythus zu der wissenschaftlichen Theorie von den Eklipsen wird Varâh. Bṛh. S. 5, 1. fgg. gehandelt; vgl. Siddhântaçir., Golâdhj. 8, 9. fg. und den Commentar dazu. Als Ursache der Finsternisse ist Râhu — *der Drachenkopf, der aufsteigende Knoten des Mondes* oder, was dasselbe ist, *die Abweichung in Breite* (विक्षेप) *der Mondbahn von der Ekliptik;* vgl. Sûrjas. 2, 6. Varâh. Bṛh. S. 5,5. Auch die *Eklipse* selbst (z. B. 20,6. 34,15) und namentlich *der Moment des Eintritts der Finsterniss* (z. B. 103,1) wird durch Râhu bezeichnet. AK. 1,1,2,28. 3,4,20,233. Trik. 1,1,94. H. 121. 220. Halâj. 1,49. AV. 19,9,10. राहु राजानं त्सरति स्वर्त्तम् Kauç. 100. °चार AV. Pariç. in Ind. St. 1,87. MBh. 1,1161. fgg. 1266. fgg. 2539. 3,13477. Hariv. 216. 12188. fg. 12464. fg. 12503. fg. 13226. 14291. VP. 140. 148. 240. Bhâg. P. 5,23,7. 6,6,35. 18,12. शतशीर्ष Hariv. 13052. fg. 13188.

13657. राहुकेतू यथाकाशे उदितौ जगतः क्षये MBh. 8,4464. राहोश्च सूतके (vgl. राहुसूतक) M. 4,110. चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य Khând. Up. 8,13. R. 5,6,27. स्थितमिव राहुमुखे शशाङ्कबिम्बम् Mṛkkh. 67,25. प्रविश्य वदनं राहोः MBh. 12,10448. °ग्रस्ते दिवाकरे 3,7062. पौर्णमासीमिव निशां राहुग्रस्तनिशाकराम् 2667. R. 5,21,14. Mṛkkh. 148,16. Spr. 990. 3227. AK. 1,1,2,9. वर्धमानः प्रजाचन्द्रः (*der Mond der Unterthanen* d. i. *der Fürst*) — ग्रस्तो नियतिराहुणा (so v. a. *starb*) Râga-Tar. 6,292. राहुश्चार्कमुपाग्रसत् MBh. 2,2693. राहुः शशिकलामिव (गृह्णाति) Kathâs. 18, 169. °घात AV. Pariç. in Ind. St. 10,319. स बभूव यथा राहुः समीपे चन्द्रसूर्ययोः R. 6,79,45. ग्रर्क राहुरुपैति MBh. 6,78. राहुश्छादयति चन्द्रादित्यौ 488. पर्वणीव सुसंक्रुद्धो राहुः पूर्णं निशाकरम् (पीडयति) 5130. तान्प्रति (*gegen die andern Planeten*) राहुर्न वैरायते Spr. 3159. विधुपरिध्वंसे च राहुग्रहः 3713. Weber, Râmat. Up. 286. °दर्शन *Eklipse* Varâh. Bṛh. S. 3,11. °गत *verfinstert* 5,67. सराहोः शशिसूर्ययोः so v. a. *verfinstert* Bhâg. P. 3,17,8. Regent von Südwesten Varâh. Laghuǵ. 2,1. °पूजा Verz. d. B. H. No. 1264. °रिष्टशान्ति Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,44. °मतस्य निबर्हणम् 251,*a*,35. ध्रुव°, पर्व° Ind. St. 10,315. fg. तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् Varâh. Bṛh. S. 3,7. 11,22. Viele Asura Râhu Burn. Lot. de la b. l. 3. Nach Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. soll nach ÇKDr. राहु (von रह् abgeleitet) = त्याग sein.

राहुग्रसन n. *das von* Râhu *kommende Verschlingen* d. i. *Verfinstern der Sonne* oder *des Mondes* Dṛshṭântaç. 79 in Haeb. Anth. 224.

राहुग्रहण n. *das von* Râhu *kommende Ergreifen* d. i. *Verfinstern der Sonne* oder *des Mondes* R. Gorr. 2,33,16.

राहुग्रास m. *Sonnen-* oder *Mondfinsterniss* H. 125.

राहुग्राह m. dass. H. 125, v. l.

राहुच्छत्त्र n. *frischer Ingwer* Râǵan. im ÇKDr.

राहुभेदिन् m. *Spalter* Râhu's, Bez. Vishṇu's Ǵaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,12.

राहुमूर्धभिद् m. *der* Râhu *den Kopf spaltete*, Bez. Vishṇu's Trik. 1,1,31.

राहुमूर्धहर m. *Köpfer* Râhu's, Bez. Vishṇu's H. 221, Sch.

राहुरत्न n. Râhu's *Juwel*, Bez. *einer Art von Edelstein*, = गोमेद Râǵan. im ÇKDr.

राहुल m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,23. Sohnes des Çâkjamuni Lalit. ed. Calc. 2,1. Burn. Intr. 446. 535 (°भद्र). Lot. de la b. l. 2. 130. 164. Schiefner, Lebensb. 245 (15; hier °भद्र). 283 (53). eines Sohnes des Çuddhodana VP. 463, N. 20 (v. l. für रातुल). eines Ministers Hiouen-thsang I,45. fg. °सू Râhula's *Vater* d. i. Çâkjamuni H. 237.

राहुलक m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,23.

राहुलत (?) m. N. pr. eines buddhistischen Patriarchen LIA. II, Anh. vi.

राहुसंस्पर्श m. *eine Berührung mit* Râhu so v. a. *eine Sonnen-* oder *Mondfinsterniss* Halâj. 1,41.

राहुसूतक n. Râhu's *Geburt* so v. a. Râhu's *Erscheinen*, *eine Sonnen-* oder *Mondfinsterniss* Jâǵń. 1,146; vgl. राहोश्च सूतके M. 4,110.

राहूगणि (von रहूगण) m. patron. Gotama's Ṛv. Anukr. Çat. Br. 1, 4,1,10. 18. 11,4,1,20. Âçv. Çr. 12,11. राहूगणाः pl. zu राहूगणय gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

राहूगणय m. patron. von रहूगण gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. fehlerhaft राहुकन्य Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,20.

राहूच्छिष्ट n. *Allium ascalonicum*, *Schalottenzwiebel* (*von* Râhu *liegen gelassen* d. i. *verschmäht*) Trik. 2,4,35.

राहूत्सृष्ट n. dass. Hâr. 223.

1. रि, री, रियति (गतौ) Dhâtup. 28,111. रिणाति Naigh. 2,14 (गतौ). Dhâtup. 31,30 (गतिरेषणयोः); रिणीते, रिणाते 3. pl.; रीयते (स्रवणे) Dhâtup. 26,29. रियतुम् P. 8,2,78, Vârtt. 1, Schol. partic. रीण. 1) *freilassen*, *freimachen*; *laufen lassen*: ग्रपः Ṛv. 1,56,6. 2,22,4. 8,7,28. 32,2. 9,109,22. 138,1. त्वं वृतौ ग्ररिणा इन्द्र सिन्धून् 4,19,5. 42,7. 2,12,3. 15, 6. सूर्यम् 4,30,6. — 2) *losmachen*, *ablösen*, *abtrennen*: यया धिया गामरिणीत चर्मणः Ṛv. 3,60,2. रिणाति (= पृथक्करोति Durga) पद्यः सुधितेव बर्हणा 1,166,6. Fraglich bleibt: वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहदरिणादेकः स्वपस्यया कविः 3,3,11. = प्राप्नोत् TS. Comm. — 3) *entlassen* so v. a. *verleihen*: त्वमिन्द्र शर्म रिणाः AV. 20,135,11. — 4) med. *in Stücke gehen*, *sich auflösen*; *in's Fliessen gerathen*: तोदन्ते ग्रापो रिणाते वनानि Ṛv. 5,58,6. रीयते घृतम् 1,135,7. ग्रश्मन्वती रीयते सं रभधम् 10,53,8. partic. रीण *in Fluss gerathen*, *fliessend* AK. 3,2,42. H. 1496. Vgl. ली.

— caus. रेपयति P. 7,3,36. 86. Vop. 18,8.

— ग्रनु *nachfliessen*: वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् Ṛv. 1,85,3. ग्रहिं बुध्न्यमनुरीयमाणाः VS. 10,19.

— ग्रा 1) *laufen lassen*: ग्रा रिणाति बर्हिषि प्रियं गिरा Ṛv. 9,71,6. — 2) *laufen*: ग्रास्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवः 10,40,9. एहु निम्नं न रीयते 1,30,2.

— नि 1) *auflösen*, *trennen*, *zerstören*: नि रिणाति शत्रून् Ṛv. 1,61, 13. 10,116,3. 120,1. स्थिरा चिदन्ना 1,127,4. पुरूणि दस्मो नि रिणाति जम्भैः 148,4. विषम् AV. 5,13,1. ग्रसुर्य१ वर्णं नि रिणीते ग्रस्य तम् Ṛv. 9,71,2. नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः etwa *zerreissen* 5,56,4. — 2) *sich frei machen*, *entrinnen*: निरिणानो वि धावति Ṛv. 9,14,4. उषा कृष्णेव नि रिणीते ग्रप्सः etwa *freimachen* so v. a. *enthüllen* 1,124, 7. 5,80,6.

— निस् 1) *ablösen*: निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः Ṛv. 1,161,7. — 2) *anlocken* oder *verführen*: लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति Ṛv. 1,179,4.

— प्र *abtrennen*, *austreiben*: यद्वस्य शवसा प्रारिणा ग्रसुम् Ṛv. 2, 22,4. Dunkel ist: शुचिः प्म यस्मा ग्रत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते 5,7,8.

— वि *zertrennen*: ग्रहिं वज्रेण वि रिणा ग्रपर्वन् Ṛv. 4,19,3.

— सम् *zusammenfügen*, *herstellen*, *einrichten*: सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः Ṛv. 1,117,4. 11. ग्रामम् 19. भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति 5,31,11. Kâtj. Çr. 22,6,11. Lâṭj. 8,8,11. ग्रापस्त्वा समरिणन् *Wasser hat dich zusammengespült* VS. 6,18.

2. रि = रै am Ende eines adj. comp.; vgl. ग्रतिरि, बृहद्रि und P. 1, 1,48. 2,47.

3. रि als Bez. *der zweiten Note* eine Abkürzung von ऋषभ Verz. d. Oxf. H. 200,*b*,8.

रिःफ (aus ῥιφή) n. Bez. *des 12ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 1,15. 20,3. 10. 23,6. Ind. St. 2,254. 276. 281. — Vgl. रिष्फ.

रिंकणास् bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,198 fehlerhaft für रेक्णास्, wie auch Aufrecht annimmt.

रिक्त s. u. रिच्.

रिक्तक adj. *leer* AK. 3,2,6. H. 1446. पुमान् *ein Mann ohne Gepäck* M. 8,404.

रिक्तकुम्भं n. *Leertöpfigkeit* vielleicht so v. a. *hohler Schall, leeres Geschwätz*: सर्वाणि रिक्तकुम्भान्यारात्तात्सवितः सुव AV. 19,8,4.

रिक्तकृत् adj. *leer machend, eine Leere bewirkend* Varâh. Bṛh. S. 45,3.

रिंक्तगुरु und रिक्तंगुरु P. 6,2,42.

रिक्तता f. *Leere*: कोशादृते न तत्रान्यो दधौ कश्च न रिक्तताम् *kein Anderer als die Schatzkammer erfuhr eine Leere* so v. a. *Jedermann hatte vollauf, nur der Schatz ward leer* Kathâs. 23,81.

रिक्तपाणि adj. *leere Hände habend* d. i. *kein Geschenk bringend*: रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं ब्राह्मणं स्त्रियम् MBh. 7,7886. Spr. 2632. fg. अरित्तपाणी im Prâkrit Mâlav. 45,15. — Vgl. रिक्तहस्त.

रिक्तहस्त adj. *leere Hände habend* so v. a. *kein Geschenk mitbringend* Kathâs. 80,25. *kein Geschenk erhalten habend* Spr. 4214. — Vgl. रिक्तपाणि.

रिक्तार्क m. *ein auf einen* रिक्ता *genannten Tag fallender Sonntag* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,27.

रिक्तीकृ *forträumen, fortschaffen*: °कृतहृदय Pańkat. 89,2. Comm. zu Bhaṭṭ. 6,36.

रिक्थं (von रिच्) Uṇâdis. 2,7. n. Siddh. K. 249,*a*,6. *Nachlass, Erbe* Naigh. 2,10. Nir. 3,5. AK. 2,9,90. H. 191. fg. Halâj. 5,58. न जामये तान्वो रिक्थमारैक् Ṛv. 3,31,2. अधीयत देवराता रिक्थयोरुभयोर्ऋषिः *eines doppelten Erbes* Ait. Br. 7,18. M. 8,27. 9,104. 132. 141. 144. 152. 162. 165 (पितृ°). 184. 190. 192. Jâǵń. 2,117. Çâk. 91,2. Bhâg. P. 5,7,8. °विभाग Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,19. *Vermögen, Besitz* überh. M. 8,30. Bhâg. P. 8,22,29. Häufig ऋक्थ geschrieben. — Vgl. गोत्र°.

रिक्थग्राह adj. *erbend*, m. *Erbe* Jâǵń. 2,51.

रिक्थभागिन् dass. M. 9,188.

रिक्थभाज् dass. M. 9,155. Schol. zu Çâṅkh. Gṛhj. 4,16,1.

रिक्थहर dass. M. 9,185.

रिक्थहार dass. Bhâg. P. 4,27,10. 8,22,9 (bei Burnouf fälschlich रिक्तहार).

रिक्थहारिन् dass. Mit. im ÇKDr.

रिक्थाद (रिक्थ + आद) dass.; m. so v. a. *Sohn* Bhâg. P. 2,9,40. 5,20,20.

रिक्थिन् (von रिक्थ) adj. *erbend*, m. *Erbe* Jâǵń. 2,29. 45. 127. Dâjabh. 125,3 v. u. — Vgl. एक°.

रिक्थीय (wie oben) adj. अ° *keinen Anspruch auf das Erbe habend* M. 9,147.

रिंक्वन् m. = स्तेन Naigh. 3,24.

रिता = लिता H. 1208.

रिख् = लिख्; vgl. रेखा, ἐρείκω, ἐρέχθω. रिख्, रेंखति (गतौ) Vop. in Dhâtup. 5,33; vgl. रिङ्ख्.

— आ *anritzen, aufreissen*: आ रिंख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे Ṛv. 6,53,7.

रिङ्ख्, रिंङ्खति (गतौ, सर्पणे) Vop. in Dhâtup. 5,33. *kriechen* (von Kindern gebraucht, die noch nicht zu gehen verstehen): रिङ्खता (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 2,7,27. *kriechen* so v. a. *langsam von Statten gehen*: निकटस्थवितीर्णभूरिमोदस्फुटरिङ्खत्पटुयुक्तिमान्विवादः Verz. d. Oxf. H. 258,*a*,19. रिंख्यते Durgâd. im ÇKDr. — Vgl. रिङ्ग्.

रिङ्खण (von रिङ्ख्) n. *das Kriechen der Kinder* H. 1322 (= स्खलन). मुक्ताथ रिङ्खणविधिं पादचङ्क्रमणक्षमः। कुमारः पञ्चवर्षीयः कलाभ्यासं विधास्यति ॥ Çatr. 14,137. — Vgl. रिङ्गण.

रिङ्खा (wie eben) f. 1) Bez. *eines best. Ganges der Pferde*. — 2) *das Tanzen*. — 3) *Carpopogon pruriens Roxb.* Med. kh. 5. — Wilson, der das f. eben so wenig wie ÇKDr. kennt, giebt dem m. nach Çabdârthak. die Bedd.: *disappointing, deceiving; a horse's hoof; one of a horse's paces; dancing;* ausserdem ohne Angabe einer Aut. *sliding, slipping.*

रिङ्ग्, रिंङ्गति (गतौ) Dhâtup. 5,47. *kriechen* (von Kindern gebraucht, die noch nicht zu gehen verstehen), *sich mit Mühe fortbewegen* Bhâg. P. 2,7,27. कलिङ्गा रिङ्गति Verz. d. Oxf. H. 246,*a*, No. 619. जानुभ्यां सह पाणिभ्यां रिङ्गमाणौ विजह्रतुः Bhâg. P. 10,8,21. Verz. d. Oxf. H. 242, *a*, No. 593. fgg. रिङ्गमाणगति Pańkar. 4,8,12. रिङ्गद्वल्गुतरंग Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 2. रिङ्ग्यते Durgâd. im ÇKDr. रिङ्गित n. *das Wogen*: तरंग° Khandom. 22. — Vgl. रिङ्ख्.

— caus. *kriechen lassen* Bhâg. P. 10,30,16.

रिङ्गण (von रिङ्ग्) n. = रिङ्खण AK. 1,1,2,36.

रिङ्गि (wie eben) f. *Gang, Bewegung* Bhâg. P. 5,7,13.

रिङ्गिन् (wie eben) adj. *kriechend* (von kleinen Kindern gesagt) Hariv. 3436.

रिच्, रिणक्ति, रिङ्क्ते (विरेचने) Dhâtup. 29,4. रिच्यात् Çâṅkh. Br. 27,1. अरैक् (अरिक्); रेंचति (वियोजनसंपर्चनयोः) Dhâtup. 34,10. रिरेच, रिरिच्याम्, रिरिचे, रिरिक्वंस्; रिरिचानं, अरिरेचीत्, अरिक्ति, रिक्त, रिक्थास्, अरेचि; रेक्ष्यति, रेक्ता (vgl. Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10); रिंच्यते und रिच्यंते; *räumen, leeren; freilassen, überlassen, preisgeben; hinterlassen*: योनिम् Ṛv. 1,113,1. सदनानि 2. पन्थाम् 16. 2,13,5. 7,71, 1. 1,124,8. रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषाम् 2,15,8. रिक्थम् 3,31,2. अपो रिरेच सखिभिर्निकामैः 4,16,6. 28,5. जायेव पत्य तन्वं रिरिच्याम् 10,10,7. हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धून् 8,89,12. स भूयसा कनीयो नारिरेचीत् *hingeben, feil haben* (vgl. *licet*) 4,24,9. आदित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् etwa *hinter sich lassen* so v. a. *auf das Gekochte folgt das Gebackene, eine Darbringung drängt die andere* 5. AV. 5,1,3. स रिरिचानो ऽमन्यत निर्वीर्यः शिथिलः TS. 7,1,8,1. TBr. 1,1,10,1. Çat. Br. 3,8,1,2. 9,1,2. 4,4,4,7. ध्रुवां वै रिच्यमानां यज्ञो ऽनु रिच्यते TS. 1,7,5, 1. रिच्यंत इव वा एष यः सोमेन यजते Çat. Br. 12,8,2,1. Ait. Br. 3,7. Kâṭh. 28,1. रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् *preisgebend* Ṛv. 4,24,3. 1,72,5. रिणच्मि जलधेस्तोयम् *ich schaffe das Wasser aus dem Meere fort, ich entleere das Meer* Bhaṭṭ. 6,36. pass. *kommen um* (instr.), *verlustig gehen, befreit werden von*: यत्किंचिद्रोमिति ब्रूयात्तेन रिच्येत वै पुमान् Bhâg. P. 8,19,41. आविर्भूते शशिनि तमसा रिच्यमानेव रात्रिः Vikr. 8. *zu Nichte —, zu Schanden werden*: तस्य पुरुषार्थो न रिच्यते R. 5,1,17. partic. रिंक्त und रिक्तं P. 6,1,208. 1) adj. *leer* Med. t. 50. Halâj. 4,92. Ait. Br. 3,7. Bhâg. P. 8,19,40. उखा Kâtj. Çr. 17,1,20. Çat. Br. 7,1, 2,40. भाण्ड M. 8,405. Varâh. Bṛh. S. 51,28. Pańkat. 96,18. सुवर्णग्रन्थि 134,12. घट Z. f. d. K. d. M. 3,389. कुम्भ 4,347. ह्रद Spr. 400. 1905.

भूतल 2783. प्रकोष्ठ MEGH. 2. मध्यरिक्तौ यदा करौ so v. a. *hohl* Verz. d. Oxf. H. 202,*b*,18. °मति so v. a. *an Nichts denkend* BHÂG. P. 4,22,39. धनरिक्ते कुले *besitzlos* MBH. 13,6696. रत्नोरिक्तमनस् RAGH. 14,85. पानीयरिक्तोदर Spr. 3503. KATHÂS. 16,83. BHÂG. P. 1,15,21. दानरिक्तेन साम्ना *von keinem Geschenk begleitet* KÂM. NÎTIS. 17,62. *leer* so v. a. *arm, Nichts besitzend* MBH. 1,3289. BHÂG. P. 9,10,23. *'arm* und zugleich *leer'* MEGH. 20. so v. a. *eitel, hohl, werthlos:* रिक्तं त आभिद्रूप्यम् P. 8,1,8, Sch. अरिक्त *nicht leer* KÂTJ. ÇR. 5,6,31. तूष्णी BHÂG. P. 8,15,6. *nicht mit leerer Hand* ÇÂÑKH. GṚHJ. 3,5. *im Ueberfluss vorhanden:* अरिक्ताखिलसंपद्: BHÂG. P. 4,22,11. — 2) Bez. *einer der vier ominösen Bachstelzen* VARÂH. BṚH. S. 48,3. — 3) Bez. *bestimmter lunarer Tage* (des 4ten, 9ten und 14ten) VARÂH. BṚH. S. 98,13. रिक्ता (sc. तिथि) 99,2. 100,2. रिक्तायां नवम्यां तिथौ KULL. zu M. 11,182; vgl. रिक्तार्क. — 4) n. *Wald (Einöde)* TRIK. 3,3,180. MED. — Nach dem Schol. zu P. 6,1,208 soll रिक्त संज्ञायाम् paroxytonirt sein.

— caus. रेचयति (वियोजनसंपर्चनयोः) DHÂTUP. 34,10. *leer machen:* कोष्ठागाराणि DAÇAK. 187,5. *entlassen* (den Athem): मारुतम् PAÑKAR. 3,2, 26. mit Ergänzung von मारुतम् u. s. w. dass. AMṚTAN. UP. in Ind. St. 9, 31. Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,40. *verlassen, aufgeben:* रेचितपुष्पवृत्ताः (द्विरेफाः) RAGH. 6,7. रेचित *gehöhlt* Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanz* (vgl. अर्धरेचित, उत्तानरेचित) Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,24. — Vgl. रेचक, रेचन.

— अति med. pass. *hinter sich lassen, hinausreichen über, überragen; übrigbleiben, überschüssig sein:* यस्य दिवमति मह्ना पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम् ṚV. 6,21,2. न त्वामिन्द्राति रिच्यते (der Soma) *geht nicht über deine Kraft, deine Capacität* 8,81,22. 14. 10,90,5. मा त्वा सदस्या अतिरिक्षत ÇAT. BR. 4,3,4,18. AV. 8,9,26. AIT. BR. 7,26. ÇAT. BR. 3,1,1,3. 3,1,13. सोमो ऽत्यरेचि *blieb übrig* 4,5,3,11. ÇVETÂÇV. UP. 2,6. ततो या वागत्यरिच्यत NIR. 13,9. न वा आत्माङ्गान्यतिरिच्यते नात्मानमङ्गान्यतिरिच्यन्ते so v. a. *Leib und Glieder fallen zusammen, der Leib ist nicht ohne die Glieder* u. s. w. ÇAT. BR. 12,2,3,6. छन्दांसामति त्रीण्यरिच्यन्त । न त्रीण्युदभवन् *drei Metren waren zu lang, drei reichten nicht zu* (an Zahl der Silben) TBR. 1,5,12,1. वि वा एतस्य यज्ञ ऋध्यते यस्य हविरतिरिच्यते TS. 3,4,1,1. नातिरिच्यन्ते यथा *auf dass es nicht mehr sei* RÂGA-TAR. 4,347. न किंचिदतिरिच्यते *waltet vor* M. 9,296.12, 25. दैवमत्रातिरिच्यते Spr. 30. स्वभाव एवात्रातिरिच्यते 1404. आकिंचन्यं च राज्यं च तुलया समतोलयम् । अत्यरिच्यत दारिद्र्यं राज्यादपि गुणाधिकम् ॥ *wog schwerer* Spr. 3676. R. GORR. 2,61,10. KÂM. NÎTIS. 5,48. विक्रमसामर्थ्यादतिरिच्यन्तं मां शतेन *um hundert Mal überlegener an* R. 5,56,24. संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते *ist ärger als der Tod* BHAG. 2,34. R. 4,15,3. Spr. 1028. पुत्रगात्रस्य संस्पर्शश्चन्दनादतिरिच्यते *ist besser als* 578. VARÂH. BṚH. S. 48,84. श्वपचो ऽपि कुलज्ञानी ब्राह्मणादतिरिच्यते Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,26. MBH. 3,175. mit acc. *übertreffen:* यः पुनः प्रतिमानेन त्रीँल्लोकानतिरिच्यते 5,2489. देवान्मनुष्यान्गन्धर्वानत्यरिच्यन्त दक्षिणाः so v. a. *die Opfergeschenke übertrafen die der Götter* u. s. w. 12,916. दशैव तु सदाचार्यः श्रोत्रियानतिरिच्यते 4004. Spr. 1119. 3804. तेजसा यशसा वीर्यादत्यरिच्यत पावकम् (वीर्यवान् ed. Bomb.) R. 1,16,14. ननु शब्दो ऽतिरिच्यतां प्रमाणम् KUSUM. 36,8. partic. अतिरिक्त 1) *überschüssig, übermässig, zu gross, zu viel* (Gegens. ऊन und हीन) AK. 3,2,25. H. 1449. क्रतुं नो ब्रूत यतमो ऽतिरिक्तः AV. 8,9,17. AIT. BR. 1,17. ऊनातिरिक्त 5,4. KÂTJ. ÇR. 8,6,24. ÇAT. BR. 3,9,2,15. 13, 8,1,15. अतिरिक्ताङ्ग SHAḌV. BR. 6,11. M. 3,242. 4,141. JÂGÑ. 1,222. 3, 211. क्रिया हीनातिरिक्ता वा SUÇR. 1,127,20. KÂM. NÎTIS. 7,19. BHÂSHÂP. 19. हीनातिरिक्तकाले *zu früh oder zu spät* VARÂH. BṚH. S. 46,52. एकया विराजमतिरिक्तः *um eine übersteigend* PAÑKAV. BR. 16,3,7. *einen Ueberschuss von* (geht im comp. voran) *habend, zu viel von Etwas habend:* पूगफलातिरिक्त (ताम्बूल) VARÂH. BṚH. S. 77,36. वातकफातिरिक्ता (स्त्री) 78,17. लभ्यं किं चातिरिक्तं *noch darüber, noch mehr* MṚKKH. 178,3. सर्वातिरिक्तसारेण *Alle übertreffend* RAGH. 1,14. — 2) *verschieden von* (abl. oder im comp. vorangehend) SÂH. D. 31,5. MADHUS. in Ind. St. 1,13,23. उत्तमर्णाय धनातिरिक्तं देयं वृद्धिः P. 5,1,47, Schol. 8,1,41, Schol. विज्ञानातिरिक्तावस्तु Schol. zu KAP. 1,41. NÎLAK. 60. SARVADARÇANAS. 46,7. 91, 22. 116,20. 133,5. 10. 12. 14. 16. 140,16. 141,1. नेश्वरस्यातिरिक्तशरीरसिद्धिः *es lässt sich nicht behaupten, dass* Îçvara *einen besondern Leib habe,* NÎLAK. 111. — Vgl. अतिरेक. — caus. *überschüssig machen, zu viel thun:* सोमं मातिरीरिचः ÇAT. BR. 4,4,2,7. अति ह रेचयेद्यदन्यः प्रस्तुयात् 6,9,17. 6,2,2,28. इदं वा अत्यरीरिचन्निदमूनमक्रन् 11,2,3,7. 9. 13,1,3,2. 14,9,4,24. AIT. BR. 5,24. TS. 2,5,11,4. 6,6,11,5. अति तद्यज्ञस्य रेचयेत् TBR. 3,2,2,4.

— अत्यति pass. *bedeutend überragen, — mehr sein:* ध्रियमाणः कपोतस्तु मांसेनात्यतिरिच्यते *wiegt bedeutend mehr als das Fleisch* MBH. 3,10588.

— व्यति pass. 1) *hinausreichen über, überragen, vorzüglicher sein, übertreffen;* mit abl. und acc.: समस्यानां च सीमानां न लक्ष्मीर्व्यतिरिच्यते HARIV. 3576. स्तुतिभ्यो व्यतिरिच्यन्ते दूरेण चरितानि ते RAGH. 10,31. उपाध्यायान्दश पिता तथैव व्यतिरिच्यते Spr. 1119. व्यतिरिक्त *überschüssig, übermässig* MBH. 14,1062. fg. उद्रेक° 1062. वत्साग्निकार्यव्यतिरिक्तमन्यत् *übrig geblieben von* v. l. beim Schol. zu RAGH. ed. Calc. 2,66. — 2) *sich trennen von:* (सोमसुतः) यदार्काद्व्यतिरिच्येत BHÂG. P. 5, 22,13. *sich unterscheiden von:* न मत्तो व्यतिरिच्यते ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 142. BHÂG. P. 6,16,56. कृत्स्नं विकारजातं सच्चरजस्तमांसि न व्यतिरिच्यन्ते *halten sich innerhalb. fallen zusammen mit* SUÇR. 1,90,6. 7. व्यतिरिक्त *unterschieden, verschieden, ein anderer als* HARIV. 11799 (NÎLAK. liest व्यतिषिक्त, welches er durch मिश्रित erklärt). BHÂG. P. 4, 9,15. 5,11,6. 18,5. 10,47,32. देहाद्यतिरिक्तमूर्तिः PRAB. 27,3. BHÂG. P. 4,7,31. 7,3,32. 12,5,3. M. 8,152. शरीरादिव्यतिरिक्तः पुमान् *Seele ist etwas Anderes als der Leib* u. s. w. KAP. 1,140. KUMÂRAS. 1,31. 5,22. Schol. zu P. 2,3,50. 3,4,77. ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 139. BHÂG. P. 4, 22,21. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 12. SARVADARÇANAS. 48,1. 49,8. 52,9. 141, 8. 10. शरीराव्यतिरिक्त KATHÂS. 33,70. अत्यन्ताभावव्यतिरिक्तत्वे सति SARVADARÇANAS. 111,20. साधनाश्रयाव्यतिरिक्तत्वे सति 113,11. दोषव्यतिरिक्तज्ञान *frei von* 113,14. — Vgl. व्यतिरेक.

— अनु med. *nach Jmd sich entleeren:* ध्रुवां वै रिच्यमानां यज्ञो ऽनु रिच्यते यज्ञं यजमानः TS. 1,7,5,1.

— अभि med. pass. *zu Gunsten Jmds* (acc.) *übrigbleiben, Jmd zu Gute kommen:* होतारं वा अभ्यतिरिच्यते यदतिरिच्यते TS. 7,1,5,6. 2,3,6,1.

अप्रियं भ्रातृव्यमभ्यतिरिच्येत TBr. 1,2,5,3. 4,5,1. Çat. Br. 1,9,1,18. यजमानस्य अ्रियम् 3,9,3,34. 11,1,2,5. Kâṭh. 26,4. Kâtj. Çr. 25,13,17.

— आ überlassen: स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिणङ्मर्त्याय स्तवान् Ṛv. 2,19,5. AV. 18,3,41. — Vgl. आरेक. — caus. 1) den Athem entlassen: आरेच्य Verz. d. Oxf. H. 234,b,35. — 2) आरेचित in Verbindung mit भ्रू so v. a. verzogen (= एकैकशो निवर्तिता Mallin.) Kumâras. 3,5. Mâlatîm. 68,9. Daçak. 78,2.

— उद् med. pass. hinausreichen über, hervorragen, vorzüglicher sein als: उत्सक्थ्यादिरिचे कृष्टिषु शवः Ṛv. 1,102,7. उदिन्न्वस्य रिच्यते ऽंशः 7,32,12. ममैवोद्रिच्यते जन्म — तव जन्मनः MBh. 1,3070. उत्तरोत्तरमेतेभ्यो वर्षमुद्रिच्यते गुणैः 6,234. उद्रिक्त hinausreichend über (acc.): शिखरैः खमिवोद्रिक्तैः R. Gorr. 2,103,4. überschüssig, übermässig, im Uebermaass vorhanden, überflüssig, übrig TS. 7,3,20,1. Âçv. Çr. 2,7,21. MBh. 14,1064. fg. Suçr. 1,81,6. 2,375,18. °मन्मथा Kathâs. 94,52. Mârk. P. 48,5. °रसान्गुडादीन् Kull. zu M. 2,177. Daçak. 132,1. अनुद्रिक्तावनूनौ Mârk. P. 46,5. अनुद्रिक्त (पुर = शरीर) nirgends ein Uebermaass zeigend MBh. 14,987. तमसोद्रिक्तः im Uebermaass versehen mit Mârk. P. 17,10. रजसोद्रिक्ताः VP. bei Muir, ST. I, 22. बलोद्रिक्त überlegen an, reichlicher versehen mit MBh. 1,5543. सत्त्वोद्रिक्त im Uebermaass versehen mit Râga-Tar. 3,343. VP. bei Muir, ST. I,22. Mârk. P. 17,6.43,48. सत्त्वोद्रिक्तचित्त Pańkar. 1,6,12. तद्ध्यानोद्रिक्तया भक्त्या gesteigert durch Bhâg. P. 1,15,47. उद्रिक्तचेतस् hochsinnig Kathâs. 32,73. उद्रिक्तचित्त hochmüthig 91,55. उद्रिक्त dass. MBh. 5,7044. Spr. 3246, v. l. — Vgl. उद्रेक. — caus. steigern: अधिकोद्रेचिताभिख्यम् adv. Râga-Tar. 5,365. — Vgl. उद्रेचक.

— समुद्, partic. समुद्रिक्त im Uebermaass versehen mit (instr.) VP. bei Muir, ST. I, 22.

— नि s. निरेक.

— प्र med. pass. hinausreichen, hervorragen über: दिवश्चित्ते प्र रिरिचे महित्वम् Ṛv. 1,59,5. 61,9. 109,6. 164,25. त्वं तान्सं च प्रति चासि मज्मनाग्ने प्र च देव रिच्यसे 2,1,15. 22,2. 3,6,2. प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः 46,3. 6,24,3. 30,1. 7,42,3. प्र हि रिरिक्ष ओजसा दिवो अन्तेभ्यस्परि 8,77,5. 10,32,5. TS. 7,3,20,1. — Vgl. प्ररिक्वन्, प्ररेक fg. — caus. übriglassen: पिबो नारिरेचीत्किं चन प्र Ṛv. 6,20,4. lassen: प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत् 10,13,4.

— वि med. pass. 1) hinausreichen: अतश्चिदस्य महिमा वि रेचि Ṛv. 4,16,5. — 2) Durchfall bekommen: यः सोमं पीत्वा छर्दयेत विरिच्येत वा Lâṭj. 8,10,9. विरिक्त der seinen Leib entleert hat M. 5,144. Suçr. 2,326,20. — Vgl. विरेक. — caus. leeren, leer machen: कोशमस्य विरेचय MBh. 12,3920. laxiren, ausputzen Suçr. 1,44,13. 150,19. 2,174,13. शिरः 16. विरेच्य als Erkl. von निर्यात्य von sich gegeben habend Nîlak. zu Hariv. 4013. — Vgl. विरेचक fg.

रिञ्ज्, रिञ्जते (भर्जने) Vop. in Dhâtup. 6,19.

रिटि vgl. u. भृङ्गि°. Wilson nach Çabdârthak.: the crackling or roaring of flame; a musical instrument; black salt.

रिणीनगर n. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 114,a, No. 177.

रिण्व्, रिण्वति (गतौ) Dhâtup. 15,86.

रित् adj. etwa entrinnend (von 1. रि; nach Sâj. = गन्त्री): यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः Ṛv. 6,57,4.

रिद्ध adj. reif (Korn) H. 1183. — Vgl. ऋद्ध.

रिधम m. 1) Frühling. — 2) Liebe Viçva im ÇKDr.

1. रिप् (= लिप्) 1) schmieren, kleben: यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति Ṛv. 1,162,8. — 2) anschmieren so v. a. betriegen: कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि Ṛv. 5,85,8.

— अपि, partic. °रिप्त verklebt so v. a. erblindet: युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तम् Ṛv. 1,118,7. युवं कण्वाय नासत्यापिरिप्ताय कर्म्ये। शश्वदूतीर्दशस्यथः 8,5,23.

2. रिप् (= 1. रिप्) f. 1) Betrug, Kniff; concret Betrieger: मा नो गुह्या रिप आयोरहन्दभन् Ṛv. 2,32,2. न दभन्ति तं रिपः 7,32,12. अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः 60,9. ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे 104,18. Vgl. पतिरिप्, welches demnach den Gatten täuschend bedeutet. — 2) nach Naigh. 1,1 (रिपः) und Comm. so v. a. Erde: पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य Ṛv. 3,5,5. ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः 10,79,3.

रिपु (von 1. रिप्) Uṇâdis. 1,27. 1) adj. betrüglich, verrätherisch; m. Betrieger, Schelm; später Widersacher, Feind Naigh. 3,24 (= स्तेन). AK. 2,8,1,10. H. 728. Halâj. 2,300. Ṛv. 1,36,16. दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः 147,3. 148,5. 2,23,16. पार्शा रिपवे विचृत्ताः 27,16. 34,9. मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम falscher Freund 4,3,13. स्तेना अदृश्रन्रिपवो जनासः 5,3,11. नेत्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा 79,9. 7,104,10. 6,51,7. 13. दुरन्येतू रिपवे मर्त्याय 7,65,3. 8,11,4. 22,14. 23,15. 10,185,2. AV. 19,49,9. न कूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानो रणे रिपून् Feinde M. 7,90. 98. 171. 183. 186. 200. °निपातिन् MBh. 3,2492. 12,4275. °सूदन R. 1,52,8. Suçr. 1,108,10. बलवति रिपौ वा सुहृदि वा Spr. 309. लोभान्न चान्यो ऽस्ति रिपुः पृथिव्याम् 1137. बलेन किं यश्च रिपून्न बाधते 1301. न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद्रिपुः। कारणादेव जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा॥ 1344. °रक्त 2634. आत्मैव ह्यात्मनो मित्रमात्मैव रिपुरात्मनः 3703. भुजोच्छिन्नरिपु Ragh. 2,23. °भय Gefahr von Seiten des Feindes Varâh. Bṛh. S. 53,86. 119. °बल ein feindliches Heer 74,3. °घ्न 79,12. °हन् (°हणा MBh. 10,620) 101,13. 104,23. °वशत्व 79,24. °नागकुलान्तक Râga-Tar. 1,89. शक्र° MBh. 3,11912. क्रौञ्च° Spr. 64; vgl. H. 10 (wo die v. l. रिपु st. अरि hat) und मदन°, मधु°. In der Astrol. ein feindlicher Planet Varâh. Bṛh. S. 69,6. — 2) m. Bez. des 6ten astrologischen Hauses: रिपुगते गुरौ Varâh. Bṛh. S. 104,28. Bṛh. 7,14. 9,4. Laghuǵ. 1,15. °भवन n. dass. Varâh. Bṛh. S. 104,15. °भाव m. dass. Verz. d. B. H. No. 878. °स्थान n. dass. Verz. d. Oxf. H. 330,a,2 v. u. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi Hariv. 68. fg. VP. 98. des Jadu Bhâg. P. 9,23,20.

रिपुघातिन् 1) adj. den Feind schlagend. — 2) f. °घातिनी eine best. Schlingpflanze Çabdak. im ÇKDr. Abrus precatorius Wilson.

रिपुंजय 1) adj. den Feind besiegend: बहूनां चैव सत्त्वानां समवायो रिपुंजयः Spr. 4623. आख्यान Bhâg. P. 6,13,23. — 2) m. N. pr. verschiedener Fürsten, = दिवोदास Verz. d. Oxf. H. 70,a,21. ein Sohn Çlishṭi's Hariv. 68. VP. 98. Suvîra's Bhâg. P. 9,21,29. Viçvaǵit's und letzter Fürst der Bârhadratha 22,47. VP. 465.

रिपुता f. das Feindsein: रिपुतामुपैति wird zum Feinde Spr. 383.

रिपुमल्ल m. N. pr. eines Fürsten Çatr. 1,222. 2,660.

रिपुराक्षस m. N. pr. eines Elephanten Kathâs. 121,276.

रिप्र (von 1. रिप्) Uṇâdis. 5,55 (कुत्सिते). 1) n. *Schmutz, Unreinigkeit,* auch uneigentlich: गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा Ṛv. 9,78,1. विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति (आपः) 10,17,10. AV. 10,5,24. 12,2,11. 13. रिप्रान्निर्मुक्तेषि शमलाच्च वाचः 3,5. 16,1,10. 18,3,17. = पाप Nir. 4,21. Vgl. अ°. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi Hariv. 68. विप्र v. l.

रिप्रवाह् adj. *das Unreine entführend* Ṛv. 10,16,9.

रिप्सु adj. vom desid. von रभ् Vop. 26,190.

रिफ्, रिफति (कथनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु, v. l. कत्थन st. कथन) Dhâtup. 28,23. क्रोशार्थे Sâj. zu Ait. Br. 5,4. रेफित्वा P. 1,2,23, Sch. Vop. 26,206. 1) *knurren:* यत्र विजायते यमिन्यपर्तुः सा पशून्क्षिणाति रिफती रुशती *sie schädigt das Vieh knurrend, mürrisch* AV. 3,28,1. — 2) रिफ्यते *geschnarrt werden, die Aussprache des r haben* oder *bekommen:* विसर्जनीयो नत्पत्तरेऽपयो (ऽनत्प° die gedr. Ausg.) रिफ्यते Âçv. Çr. 1,5,10. partic. रिफित *geschnarrt, als r ausgesprochen* Çâṅkh. Çr. 1,2,9. 10. VS. 1,33. 160. 4,18. 192. अ° *nicht geschnarrt* (Visarga nach अ, आ) 7,6. Ṛv. Prât. 1,17. 2,9. 4,14. Aehnlich विरिफित *der r-Aussprache verlustig:* आग्निं नः स्ववृक्तिभिरिति चतुर्थस्याह्न आज्यं भवति वैमदं विरिफितं विरिफितस्य ऋषेश्चतुर्थे ऽहनि चतुर्थस्याह्नो रूपम् Ait. Br. 5,4. nach Sâj. so v. a. *sehr mühsam* (mit dem Njûṅkha) *ausgesprochen;* die Bez. bezieht sich aber in Wirklichkeit darauf, dass in dem betreffenden Liede des Vimada Ṛv. 10,21,1. fgg. der Refrain वि वो मदे gesprochen wird, während व; nach वि sonst als रिफित betrachtet wird, wie die Regel des Ṛv. Prât. 1,23 (vgl. auch den Comm.) es ausspricht. — Vgl. रेफ und रिम्फ्.

— अव, अवरिफन्ता इवोत्तरवेदिं परीयाताम् Kâṭh. 27,8.

— आ *schnarchen:* आरेफन्तः शयीरन् Çâṅkh. Br. 17,9.

रिभ् (P. 7,2,18, Sch.), रेभति (रेभृ शब्दे Dhâtup. 10,22) Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्); रिरेभ; *knarren, knistern; murmeln* (von Fliessendem); *plaudern, schwatzen; laut reden, jubeln, bejauchzen* (mit acc.): तस्मादोषधयो ऽनभ्यक्ता रेभन्ति *deshalb knarrt das Holz* (am Wagen), *wenn es nicht geschmiert ist,* TS. 7,1,1,3. अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा vom *knisternden* Feuer Ṛv. 8,44,20. 10,3,6. सोमः पवित्रमत्येति रेभन् 9,96,6. 17. 97,7. 47. पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः 57. 106,14. अश्लीलस्य श्रोत्रियस्य मुखं व्येव ज्ञायते तृप्तमिव रेभतीव *sein Gesicht sieht vergnügt aus und er scheint zu plaudern* Ait. Br. 1,25. रेभन्तो वै देवाश्च ऋषयश्च स्वर्गं लोकमायन् *schwatzend, laut mit einander redend* 6,32. श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् Ṛv. 1,120,6. 7,18,22. उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः 76,7. 8,37,7. 10,61,24. 92,15. — स स्तोमिन्वायं रेभति (?) Ṛv. 1,105,9.

— अभि *anknurren, anbellen:* मामङ्ग सारमेयो ऽयमभिरेभति Bhâg. P. 1,14,12. अभिरौति ed. Bomb.

— वि, °रिब्ध (स्वरे) P. 7,2,18. Vop. 26,111. °रिभित und °रेभित in anderer Bed. P., Schol.

रिभ्वन् m. = स्तेन Naigh. 3,24. — Vgl. रिह्वन्.

रिमेद m. = अरिमेद Râǵan. im ÇKDr.

रिम्फ्, रिम्फति (हिंसायाम्) Dhâtup. 28,30, v. l. रिम्पति und रिफति Vop. 13,4.

रिम्य n. *der Thierkreis* Wilson.

रिम्ब्, रिम्बति v. l. für रिण्व् Dhâtup. 15,88.

रिरंसा (vom desid. von रम्) f. *das Verlangen sich zu ergötzen,* insbes. *geschlechtlich, Geilheit* Bhâg. P. 9,14,20. Nalod. 1,41. अनिलः। परिक्रामन्वने वृक्षानुपैतीव रिरंसया MBh. 1,2859. Kathâs. 58,95. 64,106. Râǵa-Tar. 3,503. Daçak. 152,2. अति° Bhâg. P. 3,23,11.

रिरंसु (wie eben) adj. *das Verlangen habend sich zu ergötzen,* insbes. *geschlechtlich, geil:* भवानेषु कुशलो वयं चापि रिरंसवः Hariv. 6727. Bhâg. P. 7,1,10. Suçr. 2,153,13. 447,16. Spr. 3881.

रिरक्षा f. ungrammatische Form für रिरक्षिषा; in comp. mit dem obj. Bhâg. P. 4,15,6. 10,63,20. 90,49. — Vgl. रिरक्षु.

रिरक्षिषा (vom desid. von 1. रक्ष्) f. *das Verlangen zu bewachen, zu hüten, zu bewahren, zu schützen, aufrechtzuerhalten:* जगद्रिरक्षिषया Bhâg. P. 5,15,5.

रिरक्षिषु (wie eben) adj. *das Verlangen habend zu bewachen, zu hüten, zu bewahren, zu schützen, aufrechtzuerhalten* MBh. 8,3022. Bhâg. P. 3, 22,5. 10,3,21. प्रजाः 4,17,35.

रिरक्षु adj. dass.: पशून्कृपया रिरक्षुः Bhâg. P. 2,7,32. — Vgl. रिरक्षा.

रिरमयिषु (vom desid. des caus. von रम्) adj. *das Verlangen habend zu ergötzen,* insbes. *geschlechtlich;* mit acc. Mah. St. 22 bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,99.

रिरिक्षु (vom desid. von 1. रिष्) adj. *versehren wollend* Ṛv. 1,189,6.

रिरी f. *gelbes Messing* H. 1048. — Vgl. रीरी, रीति.

रिल्हण m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,938. 1055. 8,1007. 1059. 1268. 1406. 1626. 1838. 1986. 2098 u. s. w. Oefters auch रिह्लण gedruckt.

रिवक s. रवक.

रिश् und लिश्, रिशति (हिंसायाम् Dhâtup. 28,126) und लिशति (गतौ Dhâtup. 28,127), लिशते; लिश्यति (अल्पीभावे) Dhâtup. 26,70. लिलिशे; अलेशिषि; रेक्ष्यति und लेक्ष्यति, रेष्टा und लेष्टा, लेष्टुम् P. 8,2,36. Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. *rupfen; abreissen;* daher *abweiden,* ἐρέπτομαι: सूयवसं रिशन्तीः Ṛv. 6,28,7. रिष्ट *gezerrt, aus der Lage gebracht, zerrissen:* ततो रिष्टं रुतं भिषगिच्छति Ṛv. 9,112,1. रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मतिः *ein Bruch am Wagen* 1,131,7. यत्ते रिष्टं यत्ते द्युत्तमस्ति पेष्ट्रं त आत्मनि *wenn dir ein Knochen im Leibe verrenkt oder gebrochen ist* AV. 4,12,2. Die beiden ersten Stellen liessen sich auch zu रिष् ziehen.

— आ *abweiden:* उस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् Ṛv. 10,169,1. यद्ग्रामोषधीनां परिंशमारिशामहे 1,187,8. ततो न मनुष्या आयुर्न पशव आलिलिशिरे Çat. Br. 2,4,2,2.

— वि med. *sich ausrecken, aus der Lage gezerrt werden, brechen* (am Körper), *zerrissen werden:* यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टम् AV. 7,57,1. 6,53,3. अनु माष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् VS. 2,24. 23,14. सप्तदशेन ह्रियमाणो व्यलेशिषि। भिषज्यत मेति TBr. 1,5,11,2. यद्वै यज्ञस्य क्रूरं यद्विलिष्टं तदन्वाहरति TS. 1,7,2,1. 2,6,5,6. यद्वा अनीशानो भारमादत्ते वि वै स लिशते *der geht aus den Fugen, bricht zusammen* 6,2,5,1. युक्ताः तणुते वा वि वा लिशते Çat. Br. 4,4,2,13. 6,4,2,1. ब्रह्मा विलिष्टं संदधाति *er richtet ein, was aus den Fugen ist,* Kâtj. Çr. 25,14,36. यज्ञस्य विरिष्टं संधाति Khând. Up. 4,17,4.

रिशा (von रिश्) f. *die Rupfende, Zerrende:* अन्तःपात्रे रेरिहतीं रि-

शाम् AV. 11,9,15.

रिशादस् adj. von unbekannter Bed.; im Padap. nicht zerlegt, von den Commentatoren erklärt durch रेशयदारिन् *den Verletzer zerreissend* oder nach der v. l. °दाशिन् (von 1. दश् 4.) Nir. 6,14. zerlegt in रिश und अदस् (von अद्), रिशा und दस्, रिशद् und असू u. s. w. Sâj. zu den Stellen und Mahîdh. zu VS. 3,44. Bez. namentlich der Marut und anderer Götter ṚV. 1,26,4. 39,4. 64,5. 77,4. 186,8. 5,60,7. 61,16. 64,1. 66,1. 67,2. 71,1. 7,59,9. 66,7. 8,8,17. 27,4. 10. 30,2. 72,5. रिशादसो न मर्या अभिद्यवः 10,77,3. श्येनासो न स्वयशसो रिशादसः 5. (सोमः) सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः 9,69,10. VS. 3,44. 33,72.

रिश्य m. = ऋश्य Trik. 2,5,6.

1. रिष्, रेषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17,43. रिष्यति (हिंसायाम्) 26, 120, v. l. und रिष्यते; रिषत्, रिषाम, रिषाथन, रिषन्, रेषत्; रेषिता und रेष्टा P. 7,2,48. Vop. 8,79. रिष्टे (vgl. अ°). 1) *versehrt werden, Schaden nehmen; versagen, misslingen, zu Schanden werden:* न रिष्येत्त्वावतः सखा ṚV. 1,91,8. सख्ये मा रिषामा वयं तव 94,1. 162,21. यथा युक्तो न रिष्याः 10,51,7. नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषत् 7,20,6. 33,4. न रिष्यति सवनम् 5,44,9. पूषाचक्रं न रिष्यति 6,54,3. 8,92,13. 10,48,5. AV. 2, 15,1. 11,1,25. 13,2,37. मा सु भित्था मा सु रिषः VS. 11,68. Ait. Br. 1,13. Çat. Br. 6,1,1,1. 6,2,8. 9,3,4,13. 14,6,9,28. Bṛh. Âr. Up. 3,9, 26. यथैकपादव्रजन्रथो वैकेन चक्रेण वर्तमानो रिष्यत्येवमस्य यज्ञो रिष्यति Khând. Up. 4,16,3. यद्वै यज्ञस्य रिष्टं यदशान्तम् Çat. Br. 12,4,1,5. Çâṅkh. Gṛhj. 3,7. Kauç. 125. रिषे infin. ṚV. 5,41,16. 7,34,17. पाहि मर्त्ये रिषः 1,41,2. 98,2. 2,26,4. 6,63,2. 2,35,6. पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि (VS. Prât. 3,27) VS. 3,48. Liesse sich meistens auch concret fassen. In der nachvedischen Literatur erscheint das med. रिष्यते, im Bhâg. P. aber auch रिष्यति. तेन (मार्गेण) गच्छन्न रिष्यते M. 4,178. MBh. 13,7162. fg. तस्येहार्थो न रिष्यते 5,1770. लोके बुद्धिप्रकाशेन लोकमार्गो न रिष्यते 12, 12474. तस्यायुर्न रिष्यते 13,4992. 5024. fg. किं वा न रिष्यते कामो धर्मो वार्थेन संयुतः Bhâg. P. 4,8,64. न रिष्यते जातु समुद्यमः क्वचित् 8,12,46. संकल्पस्त्वयि भूतानां कृतः किल न रिष्यति 4,27,24. 7,3,38. चतुर्यस्य न रिष्यति 8,1,11. 16,12. 10,84,32. — 2) *beschädigen:* पाहि रीषत (über die Dehnung s. ṚV. Prât. 9,24. 25. 29. AV. Prât. 4,86) उत वा जिघांसतः ṚV. 1,36,14. 189,5. 2,30,9. 5,3,12. 7,15,13. प्रति ष्म रिषतो दह 1,12,5. 8,44,11. या मा न रिष्येत् 48,10. येन जायां न रिष्यति AV. 14, 1,30. रेष्टारं रेष्टुम् Bhaṭṭ. 9,31. Hierher zieht Benfey MBh. 3,13111, wo aber gelesen wird कल्किश्चरिष्यति महीम्. — 3) रिष्ट n. = अरिष्ट (urspr. *das Unfehlbare*) *Unheil, Unglück:* तत्र हि रिष्टानामशेषाणां समाश्रयः Mârk. P. 50,89. राहुरिष्टशान्ति, केतुरिष्टशान्ति Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,44. रिष्टाध्याय (die lithogr. Ausg. अरिष्टा°) 328,*b*, No. 779. *ungünstiges Vorzeichen* Suçr. 1,102,19. = अशुभ AK. 3,4,9,38. Med. t. 26. Halâj. 5, 18. = अभाव AK. Med. = पाप Halâj. = क्षेम AK. H. an. 2,97. = शुभ H. an. अरिष्ट *unheilvoll* auch Bhâg. P. 1,14,5.

— caus. रेषयति, रीरिषत्, रीरिषत, रि° und रीरिषीष्ट ṚV. Prât. 9, 25. 27. fg. *versehren, Schaden thun, beschädigen, versagen —, fehlen machen:* न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति ṚV. 1,148, 5. 3,53,20. 7,46,3. मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः 89,5. मा नः प्रजां रीरिषत् TBr. 3,1,1,3. मा रीरिषो मामहिताहितेन (so die ed. Bomb.) MBh. 7,9469. स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट ṚV. 6,51,7. स्वैः ष एवै रिरिषीष्ट युर्जनः *sich Schaden thun* 8,18,13. 1,114,7. 8. VS. 16,15. अमूंस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान् AV. 11,1,20. मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः *bringt uns nicht, mittendrinn, um Erreichung unserer (vollen) Lebenszeit* ṚV. 1,89,9. रीरिषीष्ट mit der intransitiven Bed. *misslingen, zu Schanden werden* in der Stelle: (मम) मा रीरिषीष्ट निगमस्य गिरां विसर्गः Bhâg. P. 3,9,24.

— desid. *beschädigen wollen:* प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनाति ṚV. 7, 36,4. यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः 8,18,13. — Vgl. रिरिक्षु.

— अनु *nach einem (acc.) Andern versehrt werden, — Schaden nehmen:* यज्ञं रिष्यन्तं यजमानो ऽनुरिष्यति Khând. Up. 4,16,3.

— अभि *misslingen:* (ओदनः) यो लोकानां विधृतिर्नाभिरेषात् AV. 4,35,1.

— आ caus. *schädigen:* मान्तरां भुजमा रीरिषो नः ṚV. 1,104,6.

2. रिष् (= 1. रिष्) f. *Schaden* oder concret *Beschädiger* s. u. 1. रिष् 1).

रिष (von रिष्) adj. in नघा°.

रिषण्य्, रिषण्यति P. 7,4,36. = रिष् *fehlen, versagen, unzuverlässig werden, fallere:* अदेवेन मनसा यो रिषण्यति शासामुग्रो मन्यमानो जिघांसति ṚV. 2,23,12. अधी कृधी वमिन्द्र मा रिषण्यः *lass es nicht fehlen* 2,11, 1. अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यः 7,9,5. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत *machet keinen Fehler* 8,1,1. 20,1. पिबा पिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यः 10,22,15. Hiernach ist unter अरिषण्य und अरिषण्यत् zu verbessern: *nicht fehlend, sicher, zuverlässig.*

रिषण्यु adj. *unzuverlässig, trügerisch* ṚV. 1,148,5.

रिषि m. = ऋषि Comm. zu AK. 2,7,42.

रिषीक, रिषीकाणामयनम् als Beiw. Çiva's Hariv. 7425. रिषीणामयनम् die neuere Ausg.; रिषीकारणां (sic) हिंस्राणां कालादीनाम् Nilak.

रिष्ट 1) adj. und n. s. u. रिश्, 1. रिष्, अरिष्ट und महा°. — 2) m. a) = 2. रिष्टि *Schwert* H. an. 2,97. Med. t. 26. — *b) Sapindus detergens Roxb.* (फेनिल) Med. — *c)* N. pr. eines Fürsten MBh. 2,326. eines Daitja Hariv. 3112. eines Sohnes eines Manu Mârk. P. 111,4. — 3) f. आ N. pr. der Mutter der Apsaras Mârk. P. 104,7.

रिष्टक m. *Sapindus detergens Roxb.* Çabdar. im ÇKDr.

रिष्टताति adj. = क्षेमंकर H. 489. Halâj. 2,185.

1. रिष्टि (von 1. रिष्) f. *Schaden; das Fehlschlagen;* = अशुभ Med. t. 26. नास्तिर्न रिष्टिः TBr. 2,1,11,1. यज्ञस्य Ait. Br. 5,33. तस्य ह न काचन रिष्टिर्भवति *dem misslingt Nichts* 7,20. Çat. Br. 12,4,1,3. 4,6. यद्वा रिष्टिसूचकाः Saṁskârat. im ÇKDr. u. विलग्न. इषु° *Fehlgehen des Pfeils* als N. eines Sâman Kâtj. Çr. 22,10,23. अरिष्टामय *eine nicht durch äussere Verletzung entstandene Krankheit* 20,3,16.

2. रिष्टि m. = ऋष्टि *Schwert* AK. 2,8,2,57. H. 782. Med. t. 26. Halâj. 2,317. = शस्त्रभेद Çabdar. im ÇKDr.

रिष्टीय् (von रिष्ट), °यति = रिषण्य् P. 7,4,36, Sch.

रिष्फ n. = रिःफ Ind. St. 2,276. 281.

रिष्य m. = ऋष्य, ऋश्य Çabdar. im ÇKDr.

*रिष्यमूक m. = ऋष्यमूक Varâh. Bṛh. S. 14,13.

रिंह्र (von रिह्) Uṇâdis. 1,153. adj. = हिंस्र Uǵǵval.

रिह्, रिहन्ति (अर्चतिकर्मन्) Naigh. 3,14. 19. रेळिह, रिहते 3. pl., रिहाणा (रिहाणा VS. 2,16); *lecken, belecken; liebkosen:* उत नो ई मतयो ऽश्वयोगाः

शिश्रुं न गावस्तरुणं रिहन्ति RV. 1,186,7. 146,2. 2,35,13. गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे 3,33,1. 41,5. 55,13. 8,20,21. क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते 9,86,43. 46. 97,57. 100,1. 7. रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः 10,79,3. 114,4. शिश्रुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति 123,1. तयोरिद्घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः *ablecken* 1,22,14. AV. 5,1,4. Schol. zu Pañkav. Br. 6,5,14.

रिह्, रेहति (वधे) Kavikalpadruma im ÇKDr. — Vgl. अरीळ्ह und लिह्.

— intens. *wiederholt belecken, küssen*: रेरिह्त्, रेरिह्यते, रेरिहाणा RV. 3,55,14. 1,140,9. 4,38,6. 6,27,7. रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन् 10,4,4. नाना रेरिह्वती रुधः समञ्जन् 45,4. अन्तःपात्रे रेरिहतीं रिशाम् AV. 11,9,15. पर्जन्यो रेरिह्यमाणो वीरुधः समनक्ति Çat. Br. 6,7,3,2. — Vgl. रेरिहाण.

— आ *belecken (benagen)*: योनिं यो अन्तरारेळ्हि RV. 10,162,4. — Vgl. आरेहण.

— परि dass.: अधीवासं परि मातू रिहन्नह RV. 1,140,9.

— प्रति dass.: तं गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति AV. 7,73,3.

— सम् *gemeinsam belecken*: वत्समिव मातरा संरिहाणे RV. 3,33,3.

रिहम् adv. *wenig* Naigh. 3,2, v. l.

रिहायस् m. = स्तेन Naigh. 3,24.

रिह्णा s. रिल्हणा.

रिह्वन् m. = रिहायस् Naigh. 3,24, v. l. — Vgl. रिभ्वन्.

1. री Verbalwurzel s. u. 1. रि.

2. री = रै in ऋधद्री.

3. री f. s. u. रु 2) *b*).

रीज्या f. = घृणा Vâkasp. im ÇKDr. = लज्जा Kaliñga ebend. — Vgl. रीढा.

रीठा f. und रीठाकरञ्ज m. *eine Karañga-Species* Râǵan. im ÇKDr.

रीढक m. *Rückgrat* H. 601.

रीढा f. *Geringachtung* AK. 1,1,7,23. H. 1479. Halâj. 4,30. तपस्विरीढाकारी Parçvanâthak. 5,67. सरीढं पुनराह Kâçikh. 76,49 (beide Stellen bei Aufrecht, Halâj, Ind.). — Vgl. अवलीढा.

रीति (von 1. री) f. 1) *Strom; Lauf, Strich, Linie*: महीव रीतिः शवसासरत्पृथक् RV. 2,24,14. वातेवाजुर्या नद्येव रीतिरक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक् 39,5. तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यम् 5,48,4. दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् 6,13,1. 9,108,10. रीतीर्निर्वर्तयामास काञ्चनाञ्जनराजतीः *Ströme* —, *Striche von Gold u. s. w.* Hariv. 3931 = 5527. कनकरीतिभिः 8361. रीतीभूत *in einer Reihe stehend* Pâr. Gṛhj. 3,10. दक्षिणोत्तररीति Schol. zu Kâtj. Çr. 916,1 v. u. = स्यन्द AK. 3,4,14,71. Med. t. 50 (hier fälschlich स्पन्द gedr.). = स्रवण H. an. 2,190. = सीमन् *Grenze* H. an. — 2) (*Lauf der Dinge*), *Art, Weise*; = प्रचार AK. Med. = रूप, लक्षण u. s. w. H. 1376. = गति H. an. सर्वत्रैषा विहिता रीतिः Spr. 3589. इति रीतिः पुरातनी Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,23. निशान्तान्निष्टचक्राह्वरीतिवद्यो रसक्रमः Kathâs. 14,62. अनया रीत्या *auf diese Weise* Vet. in LA. (III) 2,6. अस्मदुक्तया रीत्या Sarvadarçanas. 102,20. उक्तरीत्या Schol. zu P. 1,1,69. zu Kap. 1,71. 153. पूर्वोक्तरीत्या Nilak. 169. वक्ष्यमाणरीत्या Sâh. D. 23,13. — 3) *Stil, Diction* H. an. Sâh. D. 5. 624. fgg. 4,14. 6,13. fg. Pratâpar. 11,*a*,9. 67,*a*,9. Verz. d. Oxf. H. 199,*a*,4. 206,*b* und 207,*a*, No. 487. 208,*a*, No. 489. 210,*a*,1. Es werden *drei, vier* und auch *sechs Stile* angenommen: वैदर्भी, गौडी und पाञ्चाली; dieselben und लाटिका; die vorhergehenden vier und überdies आवन्तिका und मागधी. — 4) *Glockengut, gelbes Messing* AK. 2,9,97. Trik. 3,3,180. H. 1048. H. an. Med. Halâj. 2,15. Kathâs. 24,178. 193. Râǵa-Tar. 4,203. 6,172. 4te Râǵa-Tar. 12. *Eisenrost* Trik. H. an. Med. = दग्धस्वर्णादिमल Dhar. im ÇKDr.; vgl. ब्रह्म°, रिरी, रीरी, रैत्य.

रीतिक 1) n. *Vitriol als Kollyrium* Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. आ = रीति *Glockengut, gelbes Messing* Varâh. Bṛh. S. 57,8. *Vitriol als Kollyrium* Çabdar. im ÇKDr.

रीतिपुष्प n. *Vitriol als Kollyrium* AK. 2,9,103. H. 1054.

रीत्यप् adj. *Wasser strömend*: वृष्टिद्यावा रीत्यापा Mitra und Varuṇa RV. 5,68,5. Çat. Br. 1,9,1,6. (इन्दवः) वृष्टिद्यावो रीत्यापः (voc.) RV. 9,106,9.

रीर m. Bein. Çiva's Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,6.

रीरी f. = रिरी, रीति *Glockengut, gelbes Messing* H. 1048.

रीव्, रीवति und °ते (आदानसंवरणयोः) Dhâtup. 21,15, v. l. — Vgl. चीव्.

1. रु, रौति Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). Dhâtup. 24,24 (शब्दे) und रवीति P. 7,3,95. Vop. 9,53. ved. रुवति, रुवत् 3. sg.; partic. रुवत् (रुवत् MBh. 1,6293), रवमाण (R. 7,34,23), रवाण (Âçv. Çr. 2,18,10); रुराव, रुरुविव Vop. 9,53. रुरुविरे; अरावीत्, अराविषुम्, अरवन्त; रविष्यति und रविता Kâr. 1 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. auch रोता Vop. 9,53. *brüllen, heulen, laut schreien, toben, quaken, summen, dröhnen*: रुवद्धः RV. 1,173,3. 10,94,6. रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया 9,70,7. 71,9. 5,42,14. मा राविष्ट नेद्दस्तोके तनये रविता रवत् Ait. Br. 2,7. ते क्रोत्थाप्यमाना रुरुविरे 7,27. TBr. 1,5,2,9. Çat. Br. 2,5,3,18. Kâṭh. 30,1. Pañkav. Br. 7,5,11. Lâṭj. 5,1,14. श्वक्रोष्टे च रुवति M. 4,115. रासभारावसदृशं रुराव च ननाद च MBh. 1,4508. गोमायुरेष सेनाया रुवन्मध्ये प्रधावति 4,1463. अशिवं चारुवञ्छिवाः Kathâs. 116,3. Bhaṭṭ. 12,72. 14,21. तद्रक्षः — रवन्तं भैरवं रवम् MBh. 1,6293. रुवतश्च महारवान् (राक्षसाः) 3,11716. R. 4,9,64. 7,7,41. 34,23. उद्गायति रौति नृत्यति Bhâg. P. 7,7,34. इत्यरौत्सीन्नः 4,13,40. Bhaṭṭ. 3,17. न खल्वहमिदं शून्ये रौमि किं न शृणोषि मे MBh. 1,3022. शिखी रौति त्रिमात्रम् Çikshâ 49. रौति कुक्कुटः Varâh. Bṛh. S. 63,1. 86,62. 88,34. 89,4. 90,13 (रुवन्ती). 91,1. 95,16. 20. 96,5. fgg. एते रुवन्ति मधुरं सारसा जलचारिणः MBh. 1,5898. मण्डूकेषु रुवत्सु 12,5400. रुवन्ति रावान्मधुरान्षट्पदाः 1,2855. कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम् (मशकः, खलः) Spr. 1884. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, das Geschrei richten gegen*: पुंस्कोकिलरुताः (नद्यः) MBh. 3,1535. सर्वपक्षिरुतं वनम् Hariv. 3543. R. 3,7,3. 4,41,11. विहंगमृगरुता (संध्या) Varâh. Bṛh. S. 30,7. 34,8. 39,1. 86,72. Kâm. Nîtis. 16,25.

रुत n. *Gebrüll, Geschrei, Gesang* (der Vögel) u. s. w. AK. 1,1,6,4. H. 1407. रुते जुहोति Kâtj. Çr. 5,6,38. गोमायुरुतानि Spr. 1844. कुब्जा रुतैर्गृहमनादयत् R. 2,78,12. Suçr. 2,281,19. वसन्ते शीतभीतेन कोकिलेन वने रुतम्। अन्तर्जलगताः पद्माः श्रोतुकामा इवोत्थिताः ॥ Spr. 2739. पुंस्कोकिलानाम् Çâk. 131. परपुष्ट° MBh. 4,386. R. Gorr. 2,56,13. °विहंगसारसाः 3,22,23. द्विजानाम् 2,98,16. Brahma-P. in LA. (III) 51,15. हंस° Suçr. 1,107,11. Ṛt. 1,5. Varâh. Bṛh. S. 3,39. 47,28. 86,6. 41. fg. 88,10. 26. 34. 37. 89,15. Verz. d. B. H. H. No. 896. fg. रुतानि षट्पदानाम् Bhaṭṭ. 2,10. Çiç. 9,34. रुतज्ञः सर्वसत्त्वानाम् so v. a. *die Sprache aller Thiere kennend* MBh. 12,4269. 13,5204. Hariv. 1234. R. 2,35,17. हस्तिरुताभिज्ञ Kathâs. 13,17. रुतज्ञा अपि पक्षिणाम् 101,49. विद्यां च

तुभ्यं दास्यामि सर्वभूतरुतानि ते । ययाभिव्यक्तिमेष्यन्ति Mârk. P. 64, 3. सर्वजन्तूनां रुतवेत्ता Verz. d. Oxf. H. 40,a,26. 230,a,9. रुतज्ञ *Augur* Varâh. Bṛh. S. 96,1. Zu पर्जन्यनादरुतया Bhâg. P. 4,30,7 ergänzt der Comm. वाचा und erklärt रुत durch *Klang*. — Vgl. गरुडरुत, गोरुत, तुवीरवत्, रव, राव u. s. w.

— caus. रावयति, अरीरवत् P. 7,4,80, Sch. *brüllen lassen, zum Schreien bringen* Âçv. Çr. 2,18,12. रावयामास लोकान्यत्तस्माद्रावण उच्यते MBh. 3,15928. यस्माल्लोकत्रयं चैतद्रावितं भयमागतम् । तस्मात्त्वं रावणो नाम नाम्ना राजन्भविष्यसि ॥ R. 7,16,37. शङ्खरावित n. *Laut, Schall* 7,12. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen*: शान्तपत्तिमृगराविता दिशः Varâh. Bṛh. S. 24,12. die Form अरूरुवन् (वयांसि) Bhâg. P. 10,70,2 in der Bed. des intens.

— desid. रुरूषति P. 7,2,12, Sch.

— desid. vom caus. रिरावयिषति P. 7,4,80, Sch.

— intens. रोरवीति P. 7,3,94, Sch. रोरुह्वि Comm. zu Âçv. Çr. 2,18,12. रोरुवत् partic.; रोरूयते, रोरूयति *heftig brüllen, — schreien, — tosen, — dröhnen*: वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् ṚV. 1,140,6. 3,55,17. 4,58,3. 5,30,11. 7,101,1. 10,8,2. 28,2. 75,3. TBr. 3,1,1,8. रोरुवाण 10. अरोरवीद्वृष्णो अस्य वज्रः ṚV. 2,11,10. वृषा वध्र्ये रोरवीत् 8,6,40. ein Fluss 6,61,8. Soma 9,65,19. 74,5. AV. 11,10,26. रोरवीति च वानरः MBh. 4,1633. रोरवीषि करुणं बत चक्रवाकि Bhâg. P. 10,90,16. सो ऽहं शरणमभ्येमि रोरवीमि च दुःखिता MBh. 1,7806. 2,2308. रोरूयते श्वा Varâh. Bṛh. S. 89,8. रोरूयते पुत्रवधाभितप्ता MBh. 11,616. Bhâg. P. 9,6,31. स जनमेजयस्य भ्रातृभिरभिहतो रोरूयमाणो मातुः समीपमुपागच्छत् MBh. 1,663. fg. 6112. 7752. 8446. 2,2361. Hariv. 5781. Varâh. Bṛh. S. 19,19. Verz. d. Oxf. H. 97,a, No. 151. पुष्पाण्योषधयश्च रोरूयन्ति सहस्रशः MBh. 9,2914. Bhâg. P. 3,31,24. किमेवं भृशदुःखितौ रोरूयेताम् (रोरुध्येयाम् v. l.) MBh. 1,6182.

— अनु *Jmdes* (acc.) *Geschrei u. s. w. nachahmen*: चकोरक्रौञ्चचक्राह्वभारद्वाजांश्च बर्हिणः । अनुरौति स्म Bhâg. P. 10,15,13. *Jmdes* (acc.) *Geschrei u. s. w. erwiedern* Varâh. Bṛh. S. 90,7. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: मधुकरानुरुत (उपवन) 24,1.

— अभि *anbrüllen, anheulen, anschreien*: अभि रुव AV. 5,20,3. शिवैषोद्यन्तमादित्यमभिरौति Bhâg. P. 1,14,12. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: सारसाभिरुता (नदी) MBh. 3,1535. 11595. 14861. 7,6670. Hariv. 12671. R. 2,49,11. R. Gorr. 2,46,12. 96,6. 3,21,13. 6,15,11. 12. Mârk. P. 61,21 (wo किंनराभिरुतानि zu lesen ist). शार्दूलशब्दाभिरुत Hariv. 3391. मयूरकेकाभिरुत Bhâg. P. 4,6,12. भेरीमृदङ्गाभिरुत R. 5,12,23. अभिरुत n. *Geschrei, Gesang*: भैरवाभिरुते युद्धे R. 6,70,29. कोकिलाभिरुत 1,9,15 (17 Schl.).

— आ *her —, hinbrüllen, — dröhnen* ṚV. 1,10,4. *anbrüllen*: तस्करानारुवत्यः (गावः) Varâh. Bṛh. S. 92,1. *aufschreien*: वीरो राघवावारुताम् Bhaṭṭ. 17,24. आरवेत् Saddh. P. 4,15,b. आरुत n. *Geschrei*: बहुपत्तिमृगारुतैः R. Gorr. 2,62,14. 5,9,59. — Vgl. आरव, आराव, आराविन्. — intens.: आ रोदसी वृषभो रोरवीति ṚV. 6,73,1. 10,8,1.

— उप s. उपरव, उपराव.

— प्रति *Jmdes* (acc.) *Geschrei erwiedern*: °रौति Varâh. Bṛh. S. 88,37. अन्यप्रतिरुता (शिवा) 90,7. — Vgl. प्रतिरव.

— वि *heulen, laut schreien* u. s. w.: घोराङ्कृत्वा नादान्विरुवन्ति MBh. 3,16823. दक्षिणा च विरौति शिवा Kathâs. 124,108. तारस्वरेण विरोतुमारब्धवान् (शृगालः) Pañkat. 64,4. उच्चैर्विरुवन्मृगः Varâh. Bṛh. S. 30,3. बलिभुग्विरौति 47,28. 53,106. 86,35. 95,27. Mṛkkh. 144,2. Vikr. 102. Kathâs. 62,74. विरौमि भृशदुःखिता MBh. 3,336. 4,770. विरुवन्तो महारावम् 7,1323. Ṛt. 6,26. Spr. 3813. Bhaṭṭ. 5,54. विरौमि शून्ये 18,29. विरवेत् Saddh. P. 4,15,b. कर्णे कलं ननु विरौति शनैर्विचित्रम् (मशकः, खलः) *summen* Spr. 1884, v. l. न स (मणिः) विरौति *klingt* 595. जीर्णत्वाद्गृहस्य विरौति कपाटः *knarrt* Mṛkkh. 48,16. *anschreien, anrufen*: विरुराव च लक्ष्मणम् Bhaṭṭ. 14,62. शान्तः (शकुनः) पञ्चमदीप्तेन विरुतः Varâh. Bṛh. S. 86,71. दक्षिणादिकस्थैर्विरुता संध्या 30,5. *mit Geschrei u. s. w. erfüllen, ertönen machen*: द्विरेफपुंस्कोकिलादिभिश्चान्यैः । विरुते । वनोपकण्ठे 48,7. मयूरविरुतानि (अरण्यानि) R. 3,12,15. अरिभिर्विरुतया वनमालया Bhâg. P. 3,15,40. विरुत n. *Geheul, Geschrei, Gesumme* u. s. w.: गोमायु° M. 4,115. R. 2,35,18. बर्हिणाम् Hariv. 4583. R. Gorr. 2,43,34. हंसविरुतैः Ṛt. 3,8. पुंस्कोकिलस्य 6,33. Ragh. 9,42. Çâk. 85. आ मरणादपि विरुतं कुर्वाणाः (काकाः) स्पर्धया सह मयूरैः Spr. 363. मधुप° *Gesumme* 1719. Kumâras. 4,15. झिल्लिका विरुतैर्दीर्घं रुदन्तीव समन्ततः *Gezirpe* R. 2,96,11 (105,10 Gorr.). विरुतैर्मरुताम् *Geheul der Winde* Nalod. 3,45. जलप्रपातविरुतैः *Getöse* R. 3,58,40. — caus. *laut schreien*: न च रक्तो विरावयेत् M. 4,64. *mit Geschrei erfüllen, ertönen machen*: जयशब्दविराविताशम् adv. Varâh. Bṛh. S. 19,17.

— सम् *gemeinschaftlich schreien*: समरौदितरो जनः Bhaṭṭ. 17,71.

2. रु (= 1. रु) m. *Laut* Ekâksharak. im ÇKDr. *fear, alarm; war, battle* Wilson nach Çabdârthak.

3. रु, रवते (गतिरेषणयोः, वधे गत्याम्, रोषण st. रेषण, भाषणे) Dhâtup. 22,63. रुरुविषे, अरविष्ट, अरोष्ट Vop. 8,118. zu belegen nur रुधि AV. 19,29,3 (nach Hdschrr.), राविषम् und partic. रुतं; *zerschlagen, zerschmettern*: शिरो न्वस्य राविषम् ṚV. 10,86,5. भिषजो रुतस्य चित् 39,3. रुतं भिषगिच्छति 9,112,1. AV. 5,5,6. VS. 16,49. Hierher ziehen wir auch अरुणात् (vielleicht nur Fehler für अरुणात्) in der Stelle: तत्पूषा प्राश्य दतो ऽरुणात्तस्मात्पूषा प्रपिष्टभागो ऽदन्तको हि *zerschlug die Zähne* TS. 2,6,8,5. Vgl. अरुतहनु.

— intens.: रोरुवद्वना ṚV. 1,54,1. 5.

4. रु (= 3. रु) m. *cutting, dividing* Wilson nach Çabdârthak.

रुंश्, रुंशति und रुंशयति (भाषायाम्) Dhâtup. 33,115. Vgl. रुश्, रुष्.

रुक adj. *freigebig* Çabdam. im ÇKDr.

रुक्काम (2. रुच् + काम) adj. *nach Glanz begierig* TS. 2,2,3,3. Kâṭh. 13,8. 34,9.

रुक्प्रतिक्रिया (2. रुज् + प्र°) f. *Behandlung einer Krankheit, ärztliche Praxis* AK. 2,6,2,1. H. 473.

रुक्म (von 1. रुच्) Uṇâdis. 1,145. 1) m. *Schmuck von Gold* (vielleicht auch *von Edelsteinen*); in den Brâhmaṇa *Goldscheibe, Goldplättchen zum Anhängen*: वक्षस्सु रुक्माः ṚV. 1,166,10. गणं पिष्टं रुक्मेभिरञ्जिभिः 5,56,1. वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु 8,20,11. श्रिये रुक्मो न रोचते 4,10,5. 5,53,4. वि भ्राजन्ते रुक्मेषा । दिवि रुक्म इवोपरि 61,12. 6,51,1. 7,57,3. दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति *die Sonne als goldene Scheibe* 63,4. 10,45,8 1,88 2. द्यावा क्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति 96,5. रुक्मं न

दर्शतं निवातम् 117, 5. VS. 13,40. TS. 2,3,2,3. 5,1,10,3. TBr. 1,8,2,3. 9,1. तदस्मै रुक्मं कृत्वा प्रत्यमुञ्चत् 2,2,10,3. Çat. Br. 3,5,1,20. 5,2,1, 21. शतवितृण्ण 4,1,13. 6,7,1,1. fgg. °पुरुष Ishṭakâ 1,2,30. 10,4,3,13. सुवर्णरजतौ रुक्मौ 12,8,3,11. Kâṭh. 11,1. 4. Kâtj. Çr. 15,8,24. 16,5,1. 19,4,10. °ललाटो ऽश्वः 22,2,11. Âçv. Çr. 9,4,16. neutr. AV. 9,5,25. fg. vielleicht aus dem späteren Gebrauch fehlerhaft in den Text gebracht. — 2) n. Siddh. K, 249,a,13. Gold Naigh. 1,12. AK. 2,9,96. Trik. 3,3, 302. H. 1043. an. 2, 335. Med. m. 28. Halâj. 2,18. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,145. Ratnam. 87. °स्तेय M. 11,57. MBh. 2,1256. रुक्मस्य च गर्भयोषा (गङ्गा) so v. a. Gold in sich bergend (u. गर्भयोषा falsch aufgefasst) 13,1846. 14,1686. Hariv. 5807. 6580. R. 2,70,20. Bhâg. P. 3, 14,24. °पुङ्खैः शरैः MBh. 1,4563. R. 6,34,24. °सार Suçr. 1,328,18. °वर्ण Muṇḍ. Up. 3,1,3 = Maitrjup. 6,18. रुक्माभ M. 12,122. °तुल्याभ Kâm. Nitis. 14,51. °संनिभा Hariv. 6717. Eisen (लोह) Trik. H. an. Med. und Viçva. — 3) m. wie alle Wörter für Gold Bez. der Mesua Roxburghii Wight. (vgl. AK. 2,4,2,45) und des Stechapfels (vgl. AK. 2,4,2,58) ÇKDr. — 4) m. N. pr. eines Sohnes des Ruḱaka Bhâg. P. 9,23,33. — Vgl. अधि°, पृथु°, सु°.

रुक्मकवच m. N. pr. eines Enkels des Uçanas Hariv. 1977. fgg. VP. 420.

रुक्मकारक m. Goldarbeiter AK. 2,10,8.

रुक्मकेश m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10,52,22.

रुक्मत् (von 2. रुच्) adj. glänzend, Bein. Agni's TS. 2,2,2,3.—Vgl. वि°.

रुक्मपाश m. die Schnur, an welcher die goldenen Anhängsel getragen werden, Çat. Br. 6,7,1,7. 27. 3,8. 7,2,1,15. Kâtj. Çr. 17,2,4.

रुक्मपुर n. Goldstadt, Bez. der von Garuḍa bewohnten Stadt, Pańkat. 84,7.

रुक्मप्रस्तरण adj. einen mit Goldschmuck verzierten Ueberwurf habend AV. 14,2,30.

रुक्मबाहु m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10,52,22.

रुक्ममय (von रुक्म) adj. aus Gold verfertigt, golden Hariv. 7903. रूप्यरुक्ममयाणि silbern und golden MBh. 13,3247. 3508.

रुक्ममालिन् m. N. pr. eines Sohnes des Bhîshmaka Bhâg. P. 10,52,22.

1. रुक्मरथ m. ein goldener Wagen, der Wagen Rukmaratha's d. i. Droṇa's MBh. 7,279.

2. रुक्मरथ adj. einen goldenen Wagen habend; m. Bein. Droṇa's MBh. 1,6994. 4,1824. 5,784. 7,253. 256. N. pr. eines Sohnes des Çalja 1811. 1816. des Mahant Hariv. 1078. fg. des Bhîshmaka Bhâg. P. 10, 52,22. pl.: एते रुक्मरथा नाम राजपुत्राः MBh. 7,4310.

रुक्मवक्षस् adj. dessen Brust mit Goldbehängen geschmückt ist: die Marut RV. 2,34,2. 8. 5,55,1. 57,5. 8,20,22. 10,78,2. AV. 6,22,2.

रुक्मवत् (von रुक्म) 1) adj. mit Gold geschmückt. — 2) m. N. pr. = रुक्मिन् Hariv. 5948. — 3) f. °वती a) ein best. Metrum, 4 Mal —◡◡ — — — ◡◡ — — Colebr. Misc. Ess. II, 159 (V,6). Ind. St. 8,369. — b) N. pr. einer Enkelin Rukmin's und Gattin Aniruddha's Hariv. 6717, wo mit der neueren Ausg. श्रीमतीं st. रुक्मिणीं zu lesen ist.

रुक्मवाहन adj. einen goldenen Wagen habend; m. Bein. Droṇa's MBh. 7,8943. — Vgl. 2. रुक्मरथ.

रुक्माङ्गद adj. ein goldenes Geschmeide am Oberarm tragend; m. N. pr. verschiedener Fürsten MBh. 1,6994. Verz. d. Oxf. H. 83,b,24. 153, b,38. Hit. 39,4.

रुक्मि m. N. pr. = रुक्मिन्, रुक्मिम् aus metrischen Rücksichten st. रुक्मिणम् Hariv. 8100. 8111.

रुक्मिन् (von रुक्म) 1) adj. Goldschmuck tragend, damit verziert: रथ RV. 1,66,6. Rosse 9,15,5. Çat. Br. 13,5,4,2. Ait. Br. 8,21. — 2) m. a) N. pr. des ältesten Sohnes des Bhîshmaka und Gegners Kṛshṇa's, der seine Schwester Rukmiṇî geraubt hatte; wird von Baladeva getödtet. MBh. 1,2698. 2,1166. 1351. 5,79. 5351. Hariv. 4965. 5016. 5090. fgg. 5496. 5805. 6592. fgg. 6661. fgg. 6707. fgg. 8019. 8069. 9134. Kâm. Nitis. 11,23. 14,51. VP. 573. fg. 580. Bhâg. P. 2,7,34. 10,52,22. 61,19. रुक्मिशासन unter den Beinamen Vishṇu's Pańkar. 4,3,137. Baladeva führt die Beinn.: रुक्मिदर्प Çabdar. bei Wilson, रुक्मिदारिन् Trik. 1,1,36. रुक्मिभिद् H. 224. रुक्मिदारण (so ist zu lesen) H. 224, Sch. — b) N. pr. eines Gebirges H. 947, Sch. — 3) f. रुक्मिणी a) N. pr. einer Tochter Bhîshmaka's, die Kṛshṇa mit Gewalt entführte und ehelichte; sie ist die Mutter Pradjumna's und wird später mit Lakshmî identificirt (vgl. Ǵaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 109,b,24). MBh. 1,2790. 2,57. 3,575. 708 (रुक्मिणीनन्दन). 5,1881. 3976. 5360. 13, 508. 620. Hariv. 5095. 5805. fgg. 6091. fgg. 6187. 6580. fgg. 6694. 6759. 7351. 7726. fgg. 8977. 9038. 9135. 9179. fg. 9209. fgg. 9458. fgg. Mâlav. 77. Çiç. 2,38. VP. 573. fg. 613. Bhâg. P. 3,1,28. 10,52,22. Weber, Râmat. Up. 340. Verz. d. Oxf. H. 14,a,19. 27,a,32. fg. Pańkar. 3,7,30. 4, 1,43 (रुक्मिणीश). Bez. der Dâkshâjaṇî in Dvâravatî Verz. d. Oxf. H. 39,b,14. °तीर्थ 66,b,42. °हृद 73,a,17. °व्रत n. Bez. einer best. Begehung, so heisst nach ÇKDr. ein Abschnitt im Kalki-P. — b) einer Tochter des Çreshṭhin Suloḱana Z. d. d. m. G. 14,569,7.

रुक्मेषु (रुक्म Gold + इषु Pfeil) m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 1980. fg. VP. 420. Bhâg. P. 9,23,33.

1. रुक्त (von 1. रुच्) adj. glänzend, strahlend: वृषा रुक्त ओषधीषु नूनोत् RV. 6,3,7.

2. रुक्त adj. rauh u. s. w. s. रूक्ष.

रुक्म Râǵa-Tar. 5,433 fehlerhaft für रूक्ष.

रुक्सद्मन् (2. रुज् + स°) n. Koth, Excremente Çabdârthak. bei Wilson.

रुगन्वित (2. रुज् + अ°) adj. von Schmerz begleitet, schmerzhaft Suçr. 1,120,10. 2,433,2.

रुग्ण (रुग्न) s. u. 1. रुज्.

रुग्दाह (2. रुज् + दाह) m. eine Art Fieber Verz. d. Oxf. H. 319,b, No. 758. 318,b,1 v. u.

रुग्भेषज (2. रुज् + भे°) n. Arzneimittel, Heilkraut Varâh. Bṛh. S. 19,1.

रुग्विनिश्चय m. Titel eines medic. Werkes Verz. d. Oxf. H. 312,a, No. 745. 357,b, No. 851. Verz. d. B. H. No. 941.

रुच्चत् adj. das Wort रुच् enthaltend Çat. Br. 9,4,2,12. fg.

1. रुच्, रोचते Naigh. 1,16 (ज्वलतिकर्मन्). Dhâtup. 18,5 (दीप्तौ und अभिप्रीतौ). ved. रुचानै; रुरुचे, रुरुचान, रुरुच्वांस्; रुरुचुस् und रुरुच्याम् ved. in transit. (caus.) Bed.; अरुचत् und अरोचिष्ट P. 1,3,91. अरोचि; रोचिष्यते; रुचिषीय; aus metrischen Rücksichten hier und da auch act.; रुचित्वा und रोचित्वा P. 1,2,26. रोचितुम्; der Auslaut der Wurzel geht

nie in क über P. 7, 3, 59, Vârtt. 1 (vgl. jedoch अवरोकिन्, आरोक, विरोक). 1) med. *scheinen, leuchten, hell sein* (von Sonne, Feuer, Sternen u. s. w.): रोचन्ते रोचना दिवि ṚV. 1, 6, 1. यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते 43, 5. रोचत द्यौः 4, 1, 17. अग्निः श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके 4, 10, 5. 7, 3, 9. अग्निर्वनेषु रोचते 8, 43, 8. 3, 2, 3. उषसः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः 4, 51, 9. रुचे जनन्त सूर्यम् *zum Scheinen* 9, 23, 2. केनाह्नेरकरोद्रुचे AV. 10, 2, 16. यमेरान्यद्रोचते कृष्णमन्यत् ṚV. 3, 55, 11. स्वर्णा वस्तोरुषसामरोचि 7, 10, 2. 77, 2. रथः पविभी रुचानः 69, 1. दिवि तारो न रोचते Vâlakh. 7, 2. 8, 5. VS. 8, 49. AV. 5, 20, 6. 17, 1, 21. Çat. Br. 11, 3, 3, 7. सूरो न रुरुक्वान् ṚV. 1, 149, 3. रुरुचे साधिकं सुभ्रूरापतन्ती नभस्तलात्। सौदामनीव विभ्रष्टा द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ॥ MBh. 1, 6613. रोचमानो महाराज विष्णुलोकं च गच्छति 3, 7043. सा दीप्तशस्त्रप्रवरा दैत्यानां रुरुचे (शुशुभे die neuere Ausg.) चमूः Hariv. 2659. R. 5, 10, 2. Bhâg. P. 11, 2, 27. रुचित *glänzend, blank*: कार्षापण P. 1, 2, 21, Sch. यथा न्वेव रुचितः स्यात्तथा धवितव्यः (घर्मः) *leuchtend d. h. von der Gluth bestrahlt* Çat. Br. 14, 1, 3, 33. Kâty. Çr. 26, 4, 4. Çâṅkh. Çr. 5, 9, 29. — 2) act. *scheinen —, leuchten lassen*: महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ṚV. 4, 16, 4. भद्रा ज्ञेषु सुरुचो रुरुच्याः 6, 35, 4. रथस्य भानुं रुरुचुः 6, 62, 2. — 3) *leuchten* so v. a. *in vollem Glanz erscheinen, prangen*: अग्नौ रश्मिना प्रतिहितो भूयिष्ठं रोचते Çat. Br. 13, 2, 3, 9. येनेदमद्य रोचते को अस्मिन्वर्णमा भरत् *die Farbe, die es schmückt*, AV. 11, 8, 16. यो ऽग्निं चित्वा न रोचते TS. 5, 3, 10, 3. Kâṭh. 9, 16. प्राणेन रोचते Çat. Br. 7, 5, 2, 12. स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्। तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ M. 3, 62. 61. नृत्तेन राजते काचित्काचिद्गीतेन रोचते। वीणादिवादनज्ञानेनान्या कान्ता च रोचते ॥ Kathâs. 47, 113. स कृताशोष्मणाक्रान्तः प्रदीप इव नारुचत् Râga-Tar. 4, 374. शक्रं रोचमानं स्वया श्रिया Bhâg. P. 6, 10, 18. त्वमया रोचते लक्ष्मीर्भ्राज्ञी सौरी यथा प्रभा 9, 15, 40. न तवैतर्हि रोचते गृहेषु गृहसंपदः 4, 26, 14. विज्ञानं चास्य रोचते M. 4, 20. कच्चिद्रोचेज्जनपदे कच्चिद्राष्ट्रे च मे यशः MBh. 12, 3350. — 4) *schön —, gut erscheinen, gefallen*; mit dat. (P. 1, 4, 33. Vop. 5, 15) und gen.; med.: यद्रोचेत विप्रेभ्यः M. 3, 231. MBh. 1, 4243. रोचतां गमनं मह्यं तवापि *mir und dir* 14, 392. R. 2, 46, 10. Çâk. 24, 6. 71, 15. Mâlav. 12, 6. Kâm. Nîtis. 8, 3. Spr. 683. Kathâs. 19, 45. 24, 141. Râga-Tar. 6, 51. 65. वासो मम न रोचते MBh. 1, 3327. 7441. 7550. 2, 2681. 3, 16687. 4, 13. 5, 7415. 13, 770. 14, 1881 (wo mit der ed. Bomb. मे st. मां zu lesen ist). R. 1, 9, 33. 68, 16. 2, 21, 2. 29, 15. 30, 42. 46, 24. 82, 19. 3, 13, 11. 4, 18, 14. Spr. 1147. 2526. Bhâg. P. 3, 24, 31. 4, 30, 37. 8, 6, 31. Mârk. P. 48, 40. Pañkat. 189, 22. 190, 2. नरेन्द्रस्य तद्रुरुचे वचः Hariv. 5156. रिपोर्लक्ष्मीर्मा ते रोचिष्ट MBh. 2, 1962. किमर्थं ते — नैतद्रोचिष्यते वचः R. 5, 92, 18. act.: तदङ्गदस्यापि रुरोच वाक्यम् 4, 53, 26. एकान्तेन हि सर्वेषां न शक्यं तात रोचितुम् *Allen gefallen* MBh. 12, 3353. mit einem infin.: रामाय यौवराज्यं मे दातुमत्रैव रोचते R. Gorr. 2, 2, 4. Häufig ohne Hinzufügung der Person: अन्यन्न रोचते MBh. 1, 647. 5582. R. 3, 21, 7. Varâh. Bṛh. S. 104, 3. कुरुष यद्रोचते *was (dir) gefällt* Pañkat. 70, 10. यदि रोचते R. 2, 21, 21. Bhâg. P. 9, 20, 14. Mârk. P. 16, 75. Pañkar. 1, 9, 4. रोचमान *gefallend, erwünscht* Bhaṭṭ. 8, 73. अ° Spr. 2310. रोचमानमिवातिथिम् *wie einen lieben Gast* MBh. 7, 32. रुचितं Uṇâdis. 4, 185. dass.: पित्र्ये स्वदितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु सुश्रुतम्। संपन्नमित्यभ्युदये दैवे रुचितमित्यपि ॥ M. 3, 254. रुचितं यदि ते MBh. 3, 16828. Hariv. 10217. MBh. 5, 462. 13, 774. 1476. R. Gorr. 1, 74, 6. 2, 30, 36. 6, 93, 13. Râga-Tar. 6, 66. यदस्य रुचितं कर्तुम् MBh. 1, 7952. उभयतो रुचिते *wenn es beiderseits gefällt* Çâṅkh. Gṛhj. 1, 6. *lecker* Uggval. zu Uṇâdis. 4, 185. — 5) *Gefallen finden*: न रोचे MBh. 1, 7444. mit acc.: समुदाचारसंयुक्तमिदं वाक्यमरोचताम् R. 5, 92, 15. mit dat.: रुरुचुः सर्वे वासाय so v. a. *verlangen nach* Hariv. 5384.

— caus. रोचयति, °ते, अरूरुचत्; 1) *scheinen —, leuchten lassen*: कृण्वन्नुषसमर्चयः सूर्यं कृण्वन्न रोचयः ṚV. 3, 44, 2. 8, 3, 6. 29, 10. 9, 37, 4. 63, 7. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रियः 83, 3. 49, 5. — 2) *beleuchten, erhellen*: स रोचयज्जनुषा रोदसी उभे ṚV. 3, 2, 2. 6, 39, 4. 9, 9, 3. Bhâg. P. 2, 5, 11. 8, 2, 2. 11, 26. स्वयं लोकं रोचयस्व यावत्तमिच्छसि Çat. Br. 13, 2, 3, 11. — 3) *gefallen —, angenehm machen*: ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय AV. 14, 1, 31. श्रेष्ठी पात्रे रोचयत्येव यं कामयेत तम् Ait. Br. 3, 30. तस्मै हिमाद्रिः प्रयतां तनूजां यतात्मने रोचयितुं यतस्व Kumâras. 3, 16. न त्वरोचयतात्मानम् Bhaṭṭ. 8, 64. — 4) *bewirken, dass Jmd* (acc.) *Gefallen findet, — Verlangen fühlt nach* (dat.): स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकोरम् Gît. 10, 2. — 5) (*sich Etwas schön —, gut erscheinen lassen*) *Gefallen finden an, belieben, gutheissen, für gut finden, erwählen*; med. P. 1, 3, 89. Vop. 23, 58. mit acc.: अतो भक्ष्यं न रोचये MBh. 1, 5578. न ते वाचं रोचयते 14, 240. R. 2, 82, 14. 3, 61, 30. अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व 15, 46. यदि त्वात्यन्तिकं वासं रोचयेत गुरोः कुले M. 2, 243. R. 2, 54, 24 (26 Gorr.). न विग्रहं रोचयते बलस्थैः Spr. 5261. mit infin.: न त्वं रोचयसे नेतुं मामितः R. Gorr. 2, 29, 22. Mârk. P. 8, 215. Häufiger act.: गमनमरोचयन् MBh. 1, 3822. R. 1, 36, 3 (37, 3 Gorr.). कृष्णस्य दर्शनं शक्रो रोचयामास Hariv. 3960. स साधु कौन्तेय इतो वासमर्जुन रोचय MBh. 4, 8. 15, 580. Hariv. 6416. R. 2, 56, 13, *f.* 3, 2, 1. स रोचयामास परैश्च बन्धं प्रसह्य रक्षोभिरवग्रहं च 5, 44, 18. वरणं रोचयन्ति मे 7, 17, 10. पुनर्युद्धमरोचयन् MBh. 9, 1351. नहि पापमपापात्मा रोचयिष्यति पाण्डवः 1, 5741. अरोचयन्सुरा धर्मं धर्मं तत्पजिरे ऽसुराः 3, 8492. Spr. 4351. Bhâg. P. 5, 13, 17. 14, 30. तेषां किंचित्स्म रोचय MBh. 4, 10. R. 3, 21, 8. पितरं रोचयामास दशरथं नृपम् *er erwählte sich zum Vater* R. 1, 15, 2 (1 Gorr.). राजानं रोचयामासुरंशुमन्तम् 43, 1 (44, 1 Gorr.). *beabsichtigen, im Sinne haben*: रोचयन्गणश्रेष्ठं देवानामामितौजसाम् Hariv. 245. 253. Verz. d. Oxf. H. 54, *b*, 12. pass. *gefallen, erwünscht sein*: तस्माद्वो रोच्यतां मह्यो रामं प्रति R. 5, 77, 6. — 6) = simpl. *gefallen*: नैतद्रोचयते मह्यम् R. Gorr. 2, 117, 10.

— अति 1) med. *durchleuchten, hinleuchten über* Nir. 3, 11. ṚV. 1, 94, 7. 10, 51, 3. तिरो धन्वाति रोचते 187, 2. AV. 13, 1, 36. Ait. Br. 4, 18. सर्वाः प्रजाः Çat. Br. 7, 4, 1, 10. 14, 5, 1, 9. त्रीनत्यरोचे — लोकान् Bhâg. P. 1, 16, 34. — 2) med. act. *heller leuchten als, überstrahlen*; mit acc.. अत्यरोचश्च — भास्करं स्वेन तेजसा MBh. 3, 486. स ब्रह्मवर्चसेन सभां ब्रह्मर्षिगणसंजुष्टामत्यरोचत Bhâg. P. 8, 18, 18. अत्यरोचत (so die ed. Bomb.) तान्सर्वान्धृष्टद्युम्नः समागतान् MBh. 7, 1028. यथा मां नातिरोचन्ति (नातिवो° ed. Bomb., = न निन्दन्ति Comm.) Bhâg. P. 3, 14, 21. — caus. 1) *unangenehm empfinden*: स्त्रीत्वं नैवातिरोचयन् v. l. der ed. Bomb. für नैव तिरोदधन् der ed. Calc. MBh. 5, 7427. — 2) कर्मणा *Etwas in's Werk zu setzen suchen*: मनसा चिन्तयन्पापं कर्मणा नातिरोचयन् (नाभिरोचयेत् ed. Calc.)। न प्राप्नोति तस्य फलम् MBh. 5, 3314 nach der Lesart der ed. Bomb.

— अनु caus. *Gefallen finden an, für gut finden, erwählen:* स विचिन्त्य महातेजा वनमेवान्वरोचयत् MBh. 3,12679.

— अभि 1) med. *leuchten, in vollem Glanze erscheinen, prangen:* श्रियाभिरुरुचे रामः R. 6,86,25. धर्मो ऽभिरोचते यस्माद्धर्मराजस्ततः स्मृतः Mārk. P. 108,16. — 2) *gefallen:* यदभिरोचते भवते Vikr. 21,11. अभिरुचित *gefallend, erwünscht, genehm:* साध्वं तु स्त्रीसहस्रं वै — न ते ऽभिरुचितम् R. 6,95,18. यदभिरुचितं भवते Vikr. 21,11, v. l. यदभिरुचितं तन्मे कृत्वा प्रिये सुखमास्यताम् Spr. 585. जलक्रीडाभिरुचितं वाराहं वृषम् *Gefallen findend an* (vgl. Hariv. 12355) MBh. 3,15829. जलक्रीडायामभिरुचितं प्रीतिर्यस्य Nīlak. Vgl. यथाभिरुचित und अभिरुचि. — caus. 1) act. *bewirken, dass Jmd Gefallen findet, angenehm unterhalten;* mit acc. der Person: कथाभिरनुकूलाभी राजानं चाभ्यरोचयत् (चाभ्यरामयत् ed. Calc.) MBh. 13,476 nach der Lesart der ed. Bomb. — 2) *Gefallen finden an, belieben, für gut finden, gern haben;* med.: जीर्णस्यास्य शरीरस्य विश्रान्तिमभिरोचये R. 2,2,6. न स्वर्गमप्यभिरोचये 30,27. यन्मे मात्रा कृतं पापं नाहं तदभिरोचये R. Gorr. 2,88,14. 3,42,18. 5,51,6. प्रयाणम् 73,14. नाभिरोचयसे नेतुं त्वं मां केनैव हेतुना *warum willst du nicht?* R. Schl. 2,29,19. act.: तदहरेवाशु प्रस्थानमभ्यरोचयत् Hariv. 5713. R. 7,26,59. कथं विनिर्जितां सीतामस्माभिः सो ऽभिरोचयेत् 5,59,3. mit dat.: गमनायाभिरोचय *entschliesse dich zu* 1,37,2 (36,2 Schl.). मनसा चिन्तयन्पापं कर्मणा नाभिरोचयेत् (नातिरोचयन् ed. Bomb.) so v. a. *nicht in's Werk zu setzen sucht* MBh. 5,3314.

— अव med. *herabglänzen* AV. 3,7,3. — Vgl. अवरोकिन्.

— आ med. *herglänzen:* दिवश्चिदा ते रुचयन्त (vgl. गृभय्, कृपय्) रोकाः ṚV. 3,6,7. Vgl. आरोक, आरोचन. — caus. med. *Gefallen finden an, billigen, gutheissen:* तव सर्वमभिप्रायमविज्ञाय — वासं नारोचये ऽरण्ये R. 2,30,28. wohl fehlerhaft für न रोचये, wie die ed. Bomb. liest.

— उद् med. *erglänzen* AV. 13,3,23.

— उप med. *strahlend nahen:* (उषाः) उपो रुरुचे युवतिर्न योषा ṚV. 7,77,1.

— निस् act. *durch Glanz vertreiben:* निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यः (अक्रिम्) ṚV. 8,3,20.

— परि med. *ringsum leuchten:* °रोचमान Bhāg. P. 3,21,22.

— प्र med. 1) *hervorleuchten:* प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः ṚV. 1,121,6. 3,29,14. प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् 61,5. — 2) *einleuchten, gefallen:* किं प्ररोचते Çat. Br. 1,6,2,3. 4. 3,2,2,8. यथा तदृषिभ्यो यज्ञः प्रारोचत 11,2,2,7. — caus. 1) *erleuchten, erhellen:* प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत् ṚV. 1,143,2. 9,75,4. प्रारूरुचद्रोदसी 85,12. *leuchten lassen:* प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नाम् 3,34,4. — 2) *scheinbar —, stattlich —, gefällig machen:* सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव संदृशि AV. 12,1,18. य एभ्यो यज्ञं प्रारोचयत् Çat. Br. 1,6,2,5. 3,9,2,28. TS. 2,5,11,7. Ait. Br. 3,9. *empfehlen, anpreisen:* विधिविहितमर्थवादप्ररोचितं मन्त्रेण स्मृतमभ्युदयकारि भवति Cit. bei Sāj. zu Baudh. bei Müller, SL. 170. — 3) *Gefallen finden an* (acc.), *gut befinden:* त्वया तु डुष्करः कस्मादिह वासः प्ररोचितः MBh. 3,1574. — Vgl. प्ररोचन.

— संप्र med. *gefallen, gut scheinen:* अन्यं वरं वृणुध्वं वै यादृशं संप्ररोचते MBh. 8,1400.

— प्रति, प्रत्यरोचत MBh. 7,1028 fehlerhaft für अत्यरोचत, wie die ed. Bomb. liest. — caus. act. *Gefallen finden an* (acc.), *belieben, beschliessen:* प्रस्थानम् MBh. 3,11546.

— वि 1) *scheinen, erglänzen, glänzen, hell sein; erscheinen, sichtbar werden, — sein; einen Glanz um sich verbreiten* in übertr. Bed., *ansehnlich werden, ein Ansehen haben, prangen;* med. ṚV. 1,95,2. अग्ने बृहद्वि रोचसे। त्वं घृतेभिराहुतः 2,7,4. 3,29,6. 5,44,2. 7,3,6. 8,4. वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचानाः 56,13. वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः 10,43,9. असावादित्यो न व्यरोचत *die Sonne schien nicht* TS. 2,1,2,4. Çat. Br. 5,3,2,2. यस्येदं प्रदिशि यद्विरोचते *erscheint, sichtbar ist* AV. 4,23,7. 28,1. 13,1,55. यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचते *kein Ansehen gewinnt* TS. 2,1,2,8. — शुक्रः प्रौष्ठपदे पूर्वे समारुह्य विरोचते MBh. 6,82. तद्वनं बलमेघेन शरधारेण संवृतम्। व्यरोचत 1,2844. प्रवृद्धजनसस्या च सर्वदैव व्यरोचत (भूमिः) 3719. संसृष्टं ब्रह्मणा क्षत्रं भूय एव व्यरोचत 3,967. व्यरोचत यथा पूर्वं मान्धाता 1754. वपुस्तस्या व्यरोचत 2704. 4,1792. 5,953. 13,4809. 14,2062. 2111. Hariv. 4314. Spr. 1282. 3457. R. 1,31,24. 44,18. 27. 2,1,22. 98,31 (107,20 Gorr.). R. Gorr. 2,67,24. 3,9,35. 7,37,23. Ragh. 9,51. 17,14. 18,50. Bhāg. P. 1,9,3. 19,30. 2,2,11. 5,7,7. 10,82,8. Mārk. P. 123,19. व्यरोचिष्ट च राक्षसः Bhaṭṭ. 15,56. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत *überstrahlte* MBh. 7,1028. act.: पारिजातवनानीव व्यरोचन्रुधिरोक्षिताः *erschienen wie* MBh. 7,8551. Der Grammatik gemäss ist der aor. act. व्यरुचत् Ragh. 6,5. Kathās. 66,192. Bhaṭṭ. 8,66. — 2) act. *scheinen lassen, erhellen:* वि रुरुचुः ṚV. 4,7,1. 10,122,5. — 3) med. *einleuchten, gefallen:* एतद्विभीषणेनोक्तम् — राघवस्य व्यरोचत R. 5,92,11. — Vgl. विरोक u. s. w. — caus. 1) *scheinen lassen, erhellen:* ज्योतींषि ṚV. 9,36,3. उषसः 86,21. व्यरूरुचद्दिवो रोचना 85,9. प्रभया विरोचयन्तीं भवनम् Bhāg. P. 10,2,20. — 2) *Gefallen finden an:* युद्धमेव व्यरोचयम् R. 5,56,128. स्त्रीधर्मं सा व्यरोचयत् so v. a. *wurde geil* Hariv. 4583.

— अतिवि med. mit zum Ueberfluss wiederholten अति *überstrahlen:* अति सर्वाण्यनीकानि पिता ते ऽतिव्यरोचत MBh. 6,1669. ऽभिव्यरोचत ed. Bomb.; vgl. सर्वाण्यति च सैन्यानि भारद्वाजो व्यरोचत 7,1028.

— अभिवि med. *glänzen, strahlen;* s. u. अतिवि.

— सम् med. *gleichzeitig —, in die Wette scheinen:* यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ṚV. 8,9,18. 9,2,6. VS. 37,14. fg. Çat. Br. 14,1,4,4. *glänzen, strahlen* Bhāg. P. 3,13,30. — caus. act. *Gefallen finden an* (acc.), *belieben, für gut befinden, beschliessen:* संन्यासम् MBh. 1,627. तत्र निवासम् Hariv. 365. प्रस्थानम् R. 4,38,7. 5,59,7. *erwählen:* यत्पुत्रमात्मपितरं समरोचयत्सः *dessen Sohn er zu seinem Vater auserkor* Verz. d. Oxf. H. 255,a,5.

2. रुच् (= 1. रुच्) f. 1) *Helle, Licht, Glanz* AK. 1,1,2,35. H. 100. an. 1,7. Med. k. 9. Halāj. 1,38. 65. ṚV. 4,56,1. प्रत्नवद्रोचया रुचः 9,9,8. दविद्युतत्या रुचा 64,28. 96,24. अया रुचा हरिण्या पुनानः 111,1. 10,188,3. VS. 12,16. 13,22. fg. 39. TS. 2,1,2,1. भास्कर° Çiç. 9,23. Ragh. 9,6. शशि° Megh. 45. Spr. 899. 2815. फणामणिसहस्ररुचाम् Çiç. 9,25. Kir. 5,43. Bhāg. P. 3,18,2. 4,12,35. 30,4. 11,2,27. पटु° Siddh. K. zu P. 6,3,116. रुचे infin. s. u. 1. रुच् 1). — 2) *Ansehen, Pracht* H. an. Med. स नः सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ṚV. 9,105,5. 10,106,4. रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु u. s. w. VS. 18,48. Ait. Br. 1,21. Çat. Br. 5,3,10,3. 9,4,

2,12. fg. Kâṭh. 8,9. भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोद्गमेन ad Çâk. 14. Varâh. Bṛh. S. 12,4. Spr. 2522 (zugleich *Gefallen*). कृतरुचश्च जाम्बूनदैः *schön gemacht* Çiç. 4,66. — 3) *Farbe:* भृङ्गरुचस्तवालकान् Ragh. 8,52. ताम्ररुचा करेण Kumâras. 3,65. Mâlav. 47. Kir. 5,45. Varâh. Bṛh. S. 24, 18. शक्रकार्मुक° 44,25. स्मितपाटलाधर° Spr. 546. नीलोत्पलदल° Prab. 112,10. Bhâg. P. 4,7,33. घन° 5,3. — 4) *Aussehen;* am Ende eines adj. comp.: सर्वे जनाः सुररुचः Bhâg. P. 10,75,24. Kâvjâd. 2,71. — 5) *Gefallen an, Gutfinden, Verlangen nach* H. an. Med. अग्निमिच्छ रुचा त्वम् VS. 11,19. नानाबुद्धिरुचो लोके मनुष्यान् MBh. 13,5907. Spr. 2522 (zugleich *Pracht*). — Vgl. अ°, अकृत्त°, अशीत° तनू°, तिग्म°, दिवो°, निमेष°, नी°, पुरु°, पुत्र°, पुरो°, यथारुचम्, सुरुच्.

रुचे (von 1. रुच्) adj. *licht* VS. 31,20. fg.

रुचक (wie eben) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,37. 1) n. *eine der fünf Arten von Knochen des menschlichen Leibes: die Zähne* Suçr. 1,302,4. 339, 14. 16. H. an. 3,89. m. Med. k. 146. अधरौष्ठ° und ओष्ठ° dass.: दृष्टाधरौष्ठरुचक adj. R. 4,33,40. उपाकर्मोष्ठरुचक adj. von Vishṇu in der Gestalt eines Ebers Hariv. 2233. 12366. Nilak. erklärt ओष्ठरुचक durch ओष्ठस्य भूषणम्. — 2) n. *ein best. Goldschmuck,* = निष्क H. an. Med. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 29. Sarvadarçanas. 151,12. *Halsschmuck* (nach dem Comm.) Daçak. 91,1 (त्रुचक gedr.). *Ring* (nach dem Comm.) in der Stelle मुचुटी मूले रुचकभूषणा Vâgbh. 25,4. *Pferdeschmuck,* n. H. an. masc. Med. — 3) *ein best. Glück bringender Stoff,* n. = मङ्गलद्रव्य H. an., m. = माङ्गल्यद्रव्य Med. रुचकम् Suçr. 2,388,17. रुचका रोचनास्तथा (रुचकं रोचनास्तथा ed. Bomb.; *Citrone* nach Nilak.) MBh. 7,2931. रोचना रुचकश्चैव Hariv. 9584. रुचका रोचनाश्चैव R. Gorr. 2,12,8. रुचकेन च भूषितम् Bhâg. P. 3,23,32. — 4) m. Bez. *einer viereckigen Säule:* समचतुरस्रो (sc. स्तम्भः) रुचकः Varâh. Bṛh. S. 53,28. — 5) m. Bez. *eines der fünf Wundermenschen, welche unter best. Constellationen geboren werden,* Varâh. Bṛh. S. 69,2. 7. 28. 30. 37. — 6) n. Bez. *eines Gebäudes, das von drei Seiten Terrassen hat und nur von der Nordseite geschlossen ist,* Varâh. Bṛh. S. 53,35. — 7) N. pr. *a*) eines Berges VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27. Çatr. 1,343. — *b*) eines Sohnes des Uçanas Bhâg. P. 9,23,33. — Die Lexicographen geben noch folgende Bedd.: *Citrone,* m. AK. 2,4,2,59. Med. *Ricinus communis,* m. AK. 2,4,2,31. n. H. an.; m. *Taube* Med.; n. *Kranz* H. an. Med.; = सौवर्चल *Sochalsalz* und *Nitron, Alkali* AK. 2,9,43. 110. H. 943. H. an. Med. (= सौवर्चल und सर्जिकाक्षार). Hâr. 155. 75 (= लवण). Halâj. 2,462; = रोचना und विडङ्ग H. an.; = प्रोत्कट H. an.; = उत्कट Med.; = स्वाद्यरस (?) Çabdar. im ÇKDr.; *a sort of temple* (s. u. 6.) Wilson nach ders. Aut.; vgl. Colebr. und Lois. zu AK. 2,2,10. Nach Wilson ohne Angabe einer Aut. noch adj. *agreeable, pleasing; sharp, acrid; tonic, stomachic* (n. *a stomachic*).

रुचा (wie eben) f. *Gefallen, Gutfinden:* तद्वै तस्मै न रुचामभ्युपैति *das gefällt ihm nicht* MBh. 3,252. = दीप्ति, शोभा, इच्छा, शारिकाप्रभवाच् Çabdar. im ÇKDr.

रुचि (wie eben) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,119. 1) f. Siddh. K. 247,*b*,1 v. u. *a*) *Licht, Glanz* AK. 1,1,2,35. 3,4,5,30. H. 99. an. 2,59. Med. k. 8. Halâj. 1,38. Vaiǵ. beim Schol. zu Kir. 10,62 (lies कान्तिरुचोर्भासि). AV. 13,2,30. 17,1,21. रुचिरग्नौ यथा Hariv. 7088. गौर्याः Râǵa-Tar. 1,29. Prab. 15,7. (राज्ञः पुत्राः) रुच्या प्रोष्ठपदोपमाः R. 1,19,9. — *b*) *Pracht, Schönheit* H. an. Med. Vaiǵ. वदनन° Ragh. 5,67. ad Çâk. 19. — *c*) *Farbe:* भ्रमरपक्षरुचौ सुदीर्घे केशे Mṛkkh. 149,15. Megh. 15. असितोत्पलस्य Spr. 3825. 3937. Varâh. Laghuǵ. 1,6 in Ind. St. 2,278. Çiç. 9,19. Gît. 7,24. Bhâshâp. 1. — *d*) *Gefallen —, Geschmack an, Lust; Appetit* AK. 3,4,5,30. H. 393. H. ç. 103. H. an. Med. Halâj. 4,25. Vaiǵ. तस्मिन्म इन्द्रो रुचिमा दधातु AV. 3,15,16. स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः 12,1,25. श्रद्धा च रुचिश्च 13,4,23. P. 1,4,33. Vop. 5,15. यद्यत्र न रुचिः काचित् MBh. 5,3601. न व्यञ्जने रुचिर्यस्य Spr. 3363. Râǵa-Tar. 5,1. Bhâg. P. 1,5,25. 12,3,27. Mârk. P. 1,33. Pańkar. 1,8,27. 30. Sarvadarçanas. 31, 19. तस्मिँल्लब्धरुचिः adj. Bhâg. P. 1,5,27. श्राद्धे प्रति Jâǵń. 1,218. प्रवास° *Lust, Gefallen an* Spr. 2956. वसुदेवकथा° Bhâg. P. 1,2,16. 4, 22,23. स्वस्वभोज्य° 10,13,10. Sarvadarçanas. 118,12. भक्तारुचि *Widerwille gegen Speisen* Suçr. 1,62,3. mit infin. Ragh. 6,35. तान्यृष्यशृङ्गस्य महारसानि भृशं सुरूपाणि रुचिं ददुर्हि so v. a. *gefielen ihm* MBh. 3,10041. तस्याः — न स क्षितीशो रुचये बभूव so v. a. *gefiel ihr nicht* Ragh. 6,44. रुचिमावहते सतां क्रियायै *macht Lust zu* Vikr. 48. रुच्या *nach Gefallen, nach Belieben, nach Wunsch* Jâǵń. 2,96. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*,6 v. u. यः कश्चिद्द्वौ निखातः स्वरुच्या तु परस्परम् Jâǵń. 2,84. Kull. zu M. 3, 222. Häufig am Ende eines adj. comp.: सत्यधर्म° *Gefallen findend an* R. 3,46,4. अधर्म° MBh. 1,4341. 3,487. 8489. Bhâg. P. 11,7,5. दण्ड° MBh. 3,13043. Pańkat. 91,18. प्रतिग्रह° M. 4,190. Jâǵń. 1,112. MBh. 14,2781. 15,198. Hariv. 3108. 4848. 12355. R. 2,1,13. 5,3,72. 30,3. Spr. 772. 954. 1069. 1555. 3159. Mâlatîm. 84,14. Varâh. Bṛh. S. 2,9. 12,11. 17,3. 19,5. मांस° *begierig nach* Hit. 19,19. भिन्नरुचिर्हि लोकः so v. a. *Jeder hat seinen eigenen Geschmack* Ragh. 6,30. Mâlav. 4. अनन्य° *für nichts Anderes Sinn habend* 54. निषिद्धैकरुचि H. 859. स्व° adj. *seiner Lust fröhnend* Mârk. P. 65,5. — *e*) Bez. *einer Art von Umarmung:* तल्लक्षणं यथा। नायिकाया नायकस्य संमुखे जान्वोरुपर्युपविश्य वक्षसि वक्षो दत्त्वा यदवस्थानम्। इति कामशास्त्रम्। ÇKDr. — *f*) *eine Art gelbes Pigment,* = गोरोचना Râǵan. im ÇKDr. — *g*) N. pr. α) einer Apsaras MBh. 13,1424. — β) der Gattin Devaçarman's MBh. 13, 2263. fgg. — 2) m. N. pr. *a*) eines Praǵâpati, Gatten der Âkûti und Vaters Jaǵńa's oder Sujaǵńa's (einer Manifestation Vishṇu's) und des Manu Raukja VP. 49, N. 2. 54. Bhâg. P. 1,3,12. 2,7,2. 3,12,55. 21,5. 4,1. 2. fgg. Verz. d. Oxf. H. 48,*a*,16. Mârk. P. 50,16. 95,1. fgg. — *b*) eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,251 (ऋषिर्वक्रः st. रुचिर्वक्रः ed. Bomb.). — *c*) eines Fürsten VP. 462, N. 11. — 3) adj. = रुचिर *gefällig, reizend:* देश R. 3,21,7. — Vgl. अ°, उष्ण°, दृढ°, धर्म°, निर्वाण°, पीयूष°, प्रदान°, भक्त°, भद्र°, भा°, यज्ञ°, यथा° (auch Jâǵń. 2,55. Kull. zu M. 3,222), वर°, वसु°, विश्व°, सु°.

रुचिकर 1) adj. *Lust machend, das Verlangen erregend* Kir. 10,62. *Appetit erregend* Suçr. 1,185,13. 209,10. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 212,*b*, No. 502. Hall 206.

रुचित 1) partic. adj. s. u. 1. रुच्. — 2) f. आ *ein best. Metrum* Wilson; fehlerhaft für रुचिरा.

रुचितवत् adj. *den Begriff des* रुचित (*die Wurzel* रुच्) *enthaltend* Ait. Br. 1,21.

रुचिता am Ende eines comp. *das Gefallenfinden an:* आरम्भरुचिता (eig. nom. abstr. von आरम्भरुचि adj.) *die Lust Vieles zu unternehmen* M. 12,32. समान° (nom. abstr. von समानरुचि adj. *an Gleichem Gefallen findend) gleicher Geschmack* RÂGA-TAR. 1,310. संविभाग° SUÇR. 1,312,18. अधर्मे रुचिता MBH. 13,5628 fehlerhaft für अधर्मरुचिता, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. रुचित्व.

रुचित्व n. = रुचिता am Ende eines comp.: हिंसा° nom. abstr. von हिंसारुचि adj. *Gefallen findend an* R. 5,29,25.

रुचिदत्त m. N. pr. eines Commentators Verz. d. Oxf. H. 243,*a*, No. 601. 531,*c*. Verz. d. B. H. No. 678. HALL 83. °मिश्र 30.

रुचिदेव m. N. pr. eines Mannes KATHÂS. 110,123.

रुचिधामन् n. *die Stätte des Lichtes* d. i. *die Sonne* ÇIÇ. 9,13.

रुचिनाथ m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 823.

रुचिपति m. N. pr. eines Commentators des Anarghjarâghava Verz. d. Oxf. H. 137,*b*, No. 267.

रुचिपर्वन् m. N. pr. eines Mannes MBH. 7,1177.

रुचिप्रद adj. *Appetit machend* SUÇR. 1,177,8. 178,11. 198,8. 199,3.

रुचिप्रभ m. N. pr. eines Daitja MBH. 12,8264.

रुचिफल n. *eine best. Frucht,* = अमृताह्व RÂGAN. im ÇKDR.

रुचिभर्तर् m. *der Herr des Lichtes* d. i. *die Sonne* und zugleich *der Herr der Lust* d. i. *Gatte* ÇIÇ. 9,17.

रुचिर (von 1. रुच्) UṆÂDIS. 1,52. 1) adj. (f. आ) *a) hell, glänzend, prächtig, schön* AK. 3,2,1. H. 1444. HALÂJ. 4,4. °प्रभ R. 7,22,7. धात्रिष्णु रुचिरं च VARÂH. BṚH. S. 81,28. 84,2. दशन 105,10. कनकरुचिरश्री VIKR. 76. Spr. 739. कनकस्तम्भ° (रङ्ग) MBH. 3,2193. रुचिरं चैव चिन्तयेत् AMṚTAN. UP. in Ind. St. 9,26. महार्घरत्नरुचिरं गृहम् KATHÂS. 35,38. KAURAP. 15. मुनिसत्तम BRAHMA-P. in LA. (III) 51,10. MÂRK. P. 63,58. रथ MBH. 1,4098. आनन 3,2187. अपाङ्ग 2269. मृगद्विजाः 12042. 16969. वस्त्र 4,2117. HARIV. 6926. 8707. अम्बु 9462. R. 1,5,13 (11 GORR.). 64,6. 2,52,6. 91,52. 96,18. R. GORR. 2,32,18. 100,51. 3,6,4. 21,9. 49,33. 52,16. 24. 4,13,5. KÂM. NÎTIS. 7,49. RAGH. 9,67. 14,48. Spr. 999. 3288. 3659. VARÂH. BṚH. S. 6,13. 12,1. 43,25. 44,24. 47,7. 56,27. 63,2. 3. 68,2. 69,10. 70,7. 104,21. कथा KATHÂS. 55,239. 59,179. स्मित BHÂG. P. 1,15,18. 16,36. 19,28. गिर् 3,15,11. 23,36. 25,35. 4,24,41. 27,2. 5,2,5. 8. 11. 17,13. 18,16. 24,10. 6,10,31. 7,6,11. 9,13. 9,1,24. PAÑKAR. 1,11,4. KAURAP. 24. विवृति Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,8 v. u. सु° MBH. 5, 1794. R. 1,63,2 (65,2 GORR.). 2,72,19. — *b) gefallend, genehm, zusagend, ansprechend* MBH. 5,3582. पथ्यस्य नास्ति रुचिरं तत्र न तस्य स्पृहा मनोज्ञे ऽपि Spr. 2391. RÂGA-TAR. 2,40. PAÑKAR. 1,11,12. त्वमात्मरुचिरं समाचर PAÑKAT. 170,6. *appetitlich* ÇÂRÑG. SAÑH. 1,2,4. *lecker* UṆÂDIK. im ÇKDR. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Senaǵit HARIV. 1058. fg.; vgl. रुचिराश्व. — 3) f. आ *a) ein best. gelbes Pigment,* = गोरोचना RÂGAN. im ÇKDR. — *b)* N. zweier Metra: α) *4 Mal 50 Moren* COLEBR. Misc. Ess. II,157 (III,43). — β) *4 Mal* ⏑—⏑—,⏑⏑⏑⏑—⏑—⏑— COLEBR. Misc. Ess. II,161 (VIII,2). Ind. St. 8,384. — *c)* N. pr. eines Flusses R. 4,40,20. — 4) n. *a) Safran.* — 2) *Rettig.* — 3) *Gewürznelken* RÂGAN. im ÇKDR.

रुचिरकेतु m. N. pr. eines Bodhisattva BURN. Intr. 530. 533.

रुचिरदेव m. N. pr. eines Prinzen KATHÂS. 67,6. fgg.

रुचिरधी m. N. pr. eines Fürsten VP. 450.

रुचिरप्रभासंभव m. N. pr. eines Schlangendämons VJUTP. 89.

रुचिरश्रीगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva DAÇABHÛM. 2.

रुचिराञ्जन m. = शोभाञ्जन *Hyperanthera Moringa* RÂGAN. im ÇKDR.

रुचिराश्व m. N. pr. eines Sohnes des Senaǵit VP. 452. BHÂG. P. 9, 21,23. fg. — Vgl. रुचिर 2).

रुचिरासुत m. metron. Pâlakâpja's TRIK. 2,7,22.

रुचिरुचि, रुचिरुचे रोचनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,231,*b*.

रुचिवह adj. *Licht bringend* P. 6,3,121, Vârtt.

रुचिष्य (von 1. रुच्) UṆÂDIS. 4,178. adj. 1) *gefallend, genehm, erwünscht* UǴǴVAL. न पृथ्वीं कामये कृत्स्नां संतुष्टा ऽस्मि पदैस्त्रिभिः । एष एव रुचिष्यो मे वरः HARIV. 14265. — 2) *Appetit machend* SUÇR. 1,224,16. 231, 19. *lecker* UṆÂDIK. im ÇKDR.

रुचिस्थ adj. SUÇR. 1,219,15 fehlerhaft für रुचिष्य *Appetit machend.*

रुची f. = रुचि EKÂRTHASAÑGRAHA im ÇKDR.

रुच्य (von 1. रुच्) 1) adj. P. 3,1,114. VOP. 26,20. *a) gefallend, prächtig, schön* P., Sch. AK. 3,2,2. H. 1444. — *b) Appetit machend* SUÇR. 1, 178,7. 180,4. 210,12. 226,15. VÂGBH. 6,114. BHÂVAPR.; s. u. कुण्डलिन् 3) *b*). — 2) m. *a) Geliebter, Gatte* H. 517. HALÂJ. 2,342. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Strychnos potatorum Lin.* (s. कतक) und *Reis* RÂǴAN. im ÇKDR. *Aegle Marmelos Corr.* H. 815, Schol.; vgl. रौच्य = बैल्व. — 3) n. = सौवर्चल RÂǴAN. im ÇKDR.

रुच्यकन्द m. *Arum campanulatum Roxb.* RÂǴAN. im ÇKDR.

रुच्यवाहन HARIV. LANGL. I,41 fehlerhaft für हव्यवाहन.

1. रुज्, रुजति (भङ्गे) DHÂTUP. 28,123. रुजाना: NAIGH. 4,3. रुरोज; ved. रोक् 2. sg.; रोजयति (vgl. Kâr. 2 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10); hier und da auch med.; partic. रुग्ण (hier und da fehlerhaft रुग्न); *erbrechen, zerbrechen, zertrümmern:* अद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण ṚV. 1,71,2. ऊर्वम् 3,32,16. 4,2,15. 4,11. गोत्रा 16,8. कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति 18,6. 6,6,3. पुरः 16,39. 18,10. रुज यस्त्वा पृतन्यति 9,53,3. 91,4. 10,89,6. 7. रुग्णमद्रेः 3,31,6. AV. 16,1,2. अरुजंश्च प्राग्वंशम् HARIV. 12231. नदी कूलानि रुजति P. 2,3,54, Sch. रुरुजुर्यज्ञपात्राणि BHÂG. P. 4,5,15. शिरोमणिम् — गदया रुरोज ह 10,77,3. BHAṬṬ. 14,78. श्येनौ यथा पक्षिपूगान्रुजन्तौ (*zerpflückend*) माद्रीपुत्रौ शेषयेतां न शत्रून् MBH. 5,660. रुग्ण *zerbrochen* VOP. 26,88. fg. AK. 3,2,40. H. 1483. वात° (वनस्पति) MBH. 3, 678. RAGH. 9,63. KATHÂS. 5,101. 95,75. BHÂG. P. 2,7,25. BHAṬṬ. 4,42. शैल° *zerschmettert* RAGH. 12,73. R. 2,114,6 (wo die ed. Bomb. रुग्णगजवाजिरथध्वजं liest). असिशक्तिगदारुग्णाः (असुराः) MBH. 1,1170. रुग्णा मेघाः (वायुना) 12,12408. आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा (भेस् von भिद्, nicht von भी, wie MAHIDH. annimmt) रोङ्मो च नः किं चनाममत् *mache Keinem Wunden noch Gebreste* VS. 16,47. *Jmd* (acc.) *Schmerzen bereiten:* रुजन्ति हि शरीराणि रोगाः शारीरमानसाः । सायका इव तीक्ष्णाग्राः Spr. 4945. रोगो रुज्यते येन जन्तुः MBH. 7,2118. यदि सत्यं मृद्नन्त्येव (तवाङ्गानि) किमकाण्डे रुजन्ति माम् Spr. 4112. KATHÂS. 62,233. mit dem gen. des obj. bei unpersönlicher Ausdrucksweise P. 2,3,54. चौरस्य रुजति रोगः Sch. falsch angewandt in der Stelle: रावणस्येह रोजयन्ति कपयः *die Affen werden* Râvaṇa *Pein verursachen* BHAṬṬ. 8,120. शो-

कारुग्णा *vor Kummer gebrochen* R. 2,102,9. — Vgl. रोग und अरुग्णा.

— caus. रोजयति (हिंसायाम्) DHÂTUP. 33,129. *schlagen:* ताभ्यां (बाहुभ्यां) वनस्पतीन्रुजत् BHÂG. P. 10,67,23.

— desid. s. रुरुक्षणि.

— अव *abbrechen:* अवरुज्य गुल्मान् MBH. 1,5884. वज्रेणेवावरुग्णानां नगानाम् HARIV. 3565. statt अवरुग्णम् MBH. 7,1345 liest die ed. Bomb. richtiger अवस्थानम्.

— आ *erbrechen, zerbrechen, abbrechen, ausbrechen, zerhauen:* दृळ्हा चिदारुजे वसु RV. 4,31,2. पुरः 32,10. 8,62,18. 10,84,1. वलम् AV. 4,24,2. प्रवृद्धमारुज्य महीप्ररोहम् MBH. 1,7178. 3,423. 11508. 5,3002. 7,1123. 12,12408 (वृत्तेण रुजता ed. Bomb.). आरुग्णानिकविटप VARÂH. BṚH. S. 19,20. आरुजन्पर्वताग्राणि HARIV. 6961. शृङ्गम् R. 5,95,25. fg. अन्येरारुजन्दंष्ट्राम् MBH. 5,4503. पक्षतुण्डनखैः — गात्राण्यारुजता *zerfleischend* R. 3,72,20. स्तनानारुज्य कररैर्भृशार्ताः पर्यदेवयन् HARIV. 5694. आरुजंस्त्रिदशान्दैत्यः सिन्धुवेगो नगानिव 13279. धर्म एतानारुजति यथा नद्यनुकूलजान् (sc. वृक्षान्) MBH. 5,3433. शल्यश्चान्तर्यथारुग्णे 7,1631. मम प्राणानारुजन्ति (बाणाः) 6,5629. शोकः प्राणानारुजतीव मे। नदीतीररुहान्वृक्षान्वारिवेगो महानिव॥ R. GORR. 2,66,62. केशानारुज्य *sich die Haare ausraufend* HARIV. 4832. med.: स वृक्षः क्रोधेनारुजते द्रुमान् 4297. 4282. विषाणं गौरिव मदात्स्वयमारुजते ऽऽत्मनः MBH. 2,2113. — Vgl. आरुज् fgg., आरोग.

— समा *zerbrechen, abbrechen:* वृक्षं समारुज्य MBH. 4,1082.

— उद् med. *sich von einem Schlage erholen* (wenn die Lesung richtig ist): यं वै मुक्तं घ्नन्ति न स पुनरुद्रुजते SHAḌV. BR. 3,1. = उत्तिष्ठेत् Comm. — Vgl. कूलमुद्रुज.

— समुप oder समुपा *einhauen auf, hart bedrängen:* देवो महं (als belebtes Wesen gedacht) समुपारुजत् HARIV. 12221.

— परि *rings aufbrechen* AV. 16,1,2.

— प्र *zerbrechen:* पुरः RV. 1,51,5. वृक्षं 102,4. 5,2,10. आरुजन्प्ररुजन्भञ्जन्विघ्नन्विद्रावयन्नपि MBH. 7,1123. वनस्पतीन् BHÂG. P. 8,2,19. — Vgl. प्ररुज.

— वि *zerbrechen, zerschmettern, zerreissen:* वि वृत्रस्य समया पाष्या रुजः RV. 1,56,6. 3,30,16. वि रुज वीड्वङ्गः 4,3,14. 6,22,6. रुजद्रुग्णं वि वलस्य सानुम् 39,2. वि वृत्रं पर्वशो रुजन् 8,6,13. पर्वतं गिरिम् 53,5. 10,87,25. 152,3. वलम् AIT. BR. 6,24. AV. 9,8,13. पर्ष्टीषि 18. श्रोणी ÇAT. BR. 4,5,2,3. आण्डम् 11,1,6,2. KÂTJ. ÇR. 22,3,22. तस्य शक्तिं सहसा विरुज्य MBH. 8,4223. धर्मारण्यं विरुजति गजः ÇÂK. 32, v. l. विरुजन्द्रुमान् VARÂH. BṚH. S. 32,9. विरुग्ण BHAṬṬ. 5,25. 12,75.

— सम् *zerbrechen:* सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् RV. 10,49,6. अश्मसंरुग्णाभीमास्य *zerschmettert* RÂGA-TAR. 4,478.

2. रुज् (= 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend, zerschmetternd:* परवीर° MBH. 5,2993. — 2) f. *Schmerz, Krankheit* AK. 2,6,2,2. 3,4,1,10. 26,199. H. 462. HALÂJ. 2,445. ब्राह्मणस्य रुजः कृत्या M. 11,67. घोरा रुजस्तीव्राः HARIV. 10856. fg. SUÇR. 1,58,15. 70,1. 165,4. 2,2,1. 5,1. KATHÂS. 27,186. BHÂG. P. 1,14,44. VARÂH. BṚH. S. 71,3. 81,30. रुग्भय 24,36. 45,9. 53,60. RAGH. 19,52. रुजमादधाति विपुलाम् ÇRUT. (BR.) 5. शान्त्यै रुजाम् Spr. 775. यदीमामपनेष्यति। रुजम् KATHÂS. 29,164. नृणां पुरुरुजां रुज आशु हन्ति BHÂG. P. 2,7,21. रुजां निदानवित् (भिषक्) 6,1,8. मानसी *Seelenschmerz* VIKR. 30. अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन् ad ÇÂK. 54. दृग्रुज् *Augenschmerzen, Augenkrankheit* AK. 3,4,5,29. VARÂH. BṚH. S. 104,5. अक्षि° 51,11. 104,16. गुह्य° 5,86. हृद्रुज् *Seelenschmerz* BHÂG. P. 4,6,47. मनसिज° *Liebesschmerz* VIKR. 51. उद्दीपितस्मर° BHÂG. P. 2,7,33. गण्डस्वेदापनयनरुजा MEGH. 27 wohl fehlerhaft für °रुचा *aus Verlangen, in Folge des eifrigen Bemühens.* — Vgl. अ°, अक्षणी°, नी°, नेत्र°, पार्श्व°, महा°, मानस°, मुख°, शिरो°.

1. रुज (von 1. रुज्) 1) adj. *zerbrechend* in वलंरुज. — 2) f. आ VOP. 26,192. a) *Bruch* (भङ्ग) TRIK. 3,3,87. H. an. 2,74. MED. ǵ. 14. — b) *Schmerz* AK. 2,6,2,2. TRIK. H. 462. 60. H. an. MED. HALÂJ. 2,445. निपातात्तव शस्त्राणां शरीरे याभवद्रुजा MBH. 8,1609. रुजाः R. 3,43,27. रुजाश्च घोराः 63,19. ललाटे च रुजा जज्ञे 29,15. शिरसः MBH. 3,16816. SUÇR. 1,3,20. 121,10. 2,346,8. 439,17. हृदयप्रमाथिनी MÂLAV. 37. निरगादरिवर्गस्य हृदयात्तु रुजाज्वरः KATHÂS. 18,83. am Ende eines adj. comp.: उग्र° SUÇR. 2,4,18. मन्दरुजा 308,19. — c) = कुष्ठ *Costus speciosus* oder *arabicus* RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. अरुज, नीरुज, महारुज, शिरोरुजा, सरुज.

2. रुज m. von unbekannter Bedeutung in der Stelle: रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टाम् AV. 16,3,2.

रुजस्कर (रुजस्, acc. pl. von 2. रुज् + 1. कर) adj. *Schmerzen bereitend* MBH. 3,14144.

1. रुजा *Bruch; Schmerz* s. u. 1. रुज.

2. रुजा f. in der Anrede an den Pfeil (इषु) VS. 10,8.

3. रुजा f. *Schafmutter* H. 1277.

रुजाकर (1. रुजा + 1. कर) 1) adj. (f. ई) *Schmerzen bereitend* Spr. 4865. — 2) m. *Krankheit* H. 312. — 3) n. *die Frucht der Averrhoa Carambola Lin.* ÇABDÂK. im ÇKDR.

रुजापह (1. रुजा + अप°) adj. *Schmerzen vertreibend* SUÇR. 1,165,8.

रुजावत् (von 1. रुजा) adj. *schmerzhaft* SUÇR. 2,5,16. 308,11.

रुजाविन् (wie eben) ved. adj. P. 5,2,122, Vârtt. 1. wohl *schmerzhaft.*

रुजासह m. *ein best. Fruchtbaum,* = धन्वन RÂGAN. im ÇKDR.

रुट्, रोटते (प्रतिघाते, दीप्तौ) DHÂTUP. 18,7. रोटयति (रोषे) v. l. für रुष् 32,131. (भाषार्थ, भासार्थ) 33,110.

रुठ्, रोठति (उपघाते) DHÂTUP. 9,51. रोठते (प्रतिघाते) 18,9, v. l. *quälen, peinigen:* रोठमानस्य वैदेहीं मांसार्थे वायसस्य R. 5,66,30; vgl. काकेनालोड्यमानां ताम् 2,105,39 (काकेनारोध्यमानां ताम् 96,40 SCHL.).

रुणास्करा f. *eine Kuh, die sich leicht melken lässt,* ÇABDÂK. im ÇKDR.

रुणा f. N. pr. eines in die Sarasvatî sich ergiessenden Flusses MBH. 3,7022.

रुण्ट्, रुण्टति (स्तेये) DHÂTUP. 9,41.

रुण्ठ्, रुण्ठति (गतौ) DHÂTUP. 9,61. (आलस्ये, प्रतिघाते, खोटे) 58, v. l. (स्तेये) 41, v. l.

रुण्ड्, रुण्डति (स्तेये) DHÂTUP. 9,41, v. l.

रुण्ड adj. *verstümmelt;* m. *ein verstümmelter Mensch, ein blosser Rumpf* (कबन्ध) H. 565. HÂR. 137 (neutr.). HALÂJ. 3,8. पृष्टः स रुण्डः पुरुषो ऽभ्यधात्। निकृत्तहस्तचरणो नद्यां क्षिप्तो ऽस्मि शत्रुभिः॥ KATHÂS. 65,11. तद्भार्या तेन रुण्डेन रेमे 15. 41. तां सरुण्डाम् 40. तां पृष्ठारूढरुण्डकाम् 32. वेष्टद्भिरवभूरिरुण्डनिकरैः UTTARAR. 93,12 (121,6).

रुण्डिका f. 1) *Schlachtfeld.* — 2) *Liebesbotin.* — 3) *Thürschwelle* MED.

k. 147. — 4) = विभूति ÇABDAR. im ÇKDR.

रुण्य m. N. pr. eines Mannes MÂRK. P. 76,24.

1. रुद्, रोदिति (अश्रुविमोचने) DHÂTUP. 24,59. P. 7,2,76. VOP. 9,26. ved. auch रुदैति; रोदिष्यति und रोत्स्यति (ÇAT. BR.); अरोदीत् und अरोदत् P. 7,3,98. fg. VOP. 8,34. 9,27. 1) *jammern, heulen, weinen:* त्वमेतान्रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ṚV. 1,33,7. रुदत्यः पुरुषे हते AV. 11,9,14. 14,2,60. TS. 1,5,1,1. TBR. 2,2,9,4. ÇAT. BR. 9,1,1,6. ṢAḌV. BR. 5,7. 10. ÂÇV. GṚHJ. 1,6,8. GOBH. 3,3,22. रोदिमि u. s. w. MBH. 3,331. 2375. R. 5,34,21. ṚT. 6,26. VIKR. 83,12. Spr. 28. KATHÂS. 11,63. BHÂG. P. 1,7,47. MÂRK. P. 52,4. PAÑKAT. 51,11. 98,15. HIT. 99,4. VET. in LA. (III) 25,20. रुदन्त्यश्रुमुखा गावः, दैवतानि रुदन्तीव BHÂG. P. 1,14,19. किच्छिका विरुतैर्दीर्घं रुदन्तीव R. 2,96,11. Spr. 575. रुदिमः HARIV. 10282. रुदन्तं प्ररुदन्ति Spr. 5396. R. 1,46,20. 2,64,59. 5,60,17. RAGH. 8,84. वाक्यान्रुदतः BHÂG. P. 1,14,13. रुदती ÂÇV. GṚHJ. 1,8,4. M. 3,33. MBH. 3,2107. 2374. 2376. 2424. 2687. 5,5986. 6000. 7025. R. 1,54,2. 7 (mit der ed. Bomb. रुदती zu lesen). 4,18,4. 19,6. MEGH. 110. ÇIÇ. 9,34. KATHÂS. 13,130. 25,141. 29,90. 31,8. VET. in LA. (III) 17,19. 24,20. रुदन्ती MBH. 3,2686. R. 2, 40,29. 3,51,42. 5,26,42. ÇÂK. 54,15 (!). KATHÂS. 25,139. HIT. 99,3 (रुदती ed. JOHNS. 2090). रोदन्ती HARIV. 11035. रुरुदिव P. 6,4,101, Sch. KATHÂS. 11,59. मा पिता रुद (क्रन्द् MBH. 1,6201 ed. Calc., aber रुद ed. Bomb.) BRÂHMAṆ. 3,22. अरुदत् RAGH. 13,59. धाराश्रुणा KATHÂS. 30,27. मा रुदः R. 1,46,20. मा रोदीः MBH. 3,593. R. GORR. 1,47,20 (रोधीः gedr.). MÂRK. P. 52,5. BHÂG. P. 1,7,47. अरोदीत् BHAṬṬ. 15,71. 17,48. अरोदत् ebend. अरौदिषीत् BHÂG. P. 10,62,35. रुरोद MBH. 3,2352. 2685. R. 1,2,14. MÂRK. P. 52,5. PAÑKAT. 50,10. रुरुदुः MBH. 2,2616. R. 2,41,7. 57,31. 81,8. रोदिष्यसि Spr. 28. रुदित्वा P. 1,2,8. VOP. 19,16. 26,207. MBH. 3,2750. R. 2,72,26. ÇÂK. 53,22. BHAṬṬ. 3,50. रोदित्वा MBH. 13,5410. रोदितुम् ÇÂK. 126, v. l. KATHÂS. 11,63. 13,127. 129. VET. in LA. (III) 14,8. 21, 18. med.: रुदते MBH. 13,748. HARIV. 11072 (S. 792). रुदामहे 4817. रुदेत Spr. 5492. देवी रोदताम् MBH. 5,7095. रोदमान N. (BRUCE) 11,4. रुदमान MÂRK. P. 25,10. रुरुदे R. 2,52,19. pass. impers.: किमेवं रुद्यते भवता PAÑKAT. 98,13. रुद्यमाने *wenn geweint wird* M. 4,108. रुद्यमान MÂRK. 51,80 fehlerhaft für रुदमान. रुदित n. *das Jammern, Heulen, Weinen* AK. 1,1,7,35. 3,4,16,93. H. 1402. HALÂJ. 3,17. HARIV. 4817. किं ते विलपितैरेवं कृपणं रुदितेन च R. 2,44,2. 105,35 (विलापरुदिते ed. Bomb.). R. GORR. 2,66,14. °शब्द 4,20,21. SUÇR. 1,108,17. RAGH. 14, 69. fg. MEGH. 82. Spr. 3991. VARÂH. BṚH. S. 46,25. 49. 51,29. 68,73. 86, 21. 97,6. बालानां रुदितं बलम् BRAHMAVAIV. P. im ÇKDR. (u. बल). KATHÂS. 47,47. DAÇAK. in BENF. Chr. 184,10. pl. R. 5,26,39. Spr. 186. SÂH. D. 103. अरण्य° n. sg. und pl. *ein Weinen in den Wald hinein* so v. a. — *vor tauben Ohren* Spr. 2770. 98. — 2) *bejammern, beweinen:* मा त्वाघरुदो रुदन् AV. 8,1,19. जीवं रुदन्ति ṚV. 10,40,10. ÇAT. BR. 12,4, 1,4. 3,8. 5,1,17. 14,4,2,19. यथेयं स्त्री पौत्रमघं न रोदात् PÂR. GṚHJ. 1,5. Einschiebsel nach ÂÇV. GṚHJ. 1,13. माहं पुत्र्यमघं रुदम् KAUSH. UP. 2,8; vgl. न पुत्ररोदं रोदिति, मा पुत्ररोदं रुदम् KHÂND. UP. 3,15,2. तं रुदन्ति MBH. 5,1547. मा मृतं रुदती भव R. 2,74,2. 6,82,11. BHAṬṬ. 5,5. रुदित *von Thränen benetzt* MBH. 13,1577; vgl. u. अव.

— caus. रोदयति *jammern —, heulen —, weinen machen:* पणिम् ṚV. 10,67,6. अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन् 99,5. ÇAT. BR. 11,6,3,7. 14,6,9,5. KHÂND. UP. 3,16,3. MBH. 13,748. KUMÂRAS. 5,56. UTTARAR. 66,3 (85,3).

— desid. रुरुदिषति P. 1,2,8. VOP. 19,16. — Vgl. रुरुदिषु.

— intens. *heftig jammern* u. s. w.: रोरुद्येयाम् MBH. 1,6182 (nach der Lesart der ed. Bomb.). रोरुद्यमान BRÂHMAṆ. 1,4 (रोरूयमाण MBH. 1,6112). BHAṬṬ. 3,29. रोरुदती MBH. 3,11092 (S. 572). HARIV. 4818. — Vgl. रोरुदा.

— अनु 1) *hinterdrein weinen* NALOD. 3,32. — 2) *weinen um, über;* mit acc. ad ÇÂK. 135. — 3) *Jmd* (acc.) *nachjammern, in Jmdes Jammern einstimmen:* अलिपङ्क्तिः — विरुतैः करुणास्वनैरियं गुरुशोकामनुरोदतीव(!) माम् KUMÂRAS. 4,15. — *flere* R. 2,55,21 ed. Seramp. nach WESTERGAARD und BOPP.

— अभि *jammernd einen Laut ausstossen:* भृङ्गराजाभिरुदिताः — मधुरस्वराः R. 3,79,13. — Vgl. अभिरोरुद.

— अव *Thränen fallen lassen auf:* अवरुदित *worauf Thränen gefallen sind* MBH. 13,4367.

— उपा *bejammern, beweinen;* mit acc. BHAṬṬ. 2,4.

— प्र *zu jammern —, zu heulen —, zu weinen anfangen; laut jammern, heulen* ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,15,2. श्वानः प्ररुदन्त इव VARÂH. BṚH. S. 46, 68. प्ररुदन्तम् R. GORR. 1,47,20. रुदन्तमन्यः प्ररुदन्नुपैति 5,60,17. प्ररुरोद MBH. 1,5218. 6199. 3,2724. 2919. 2947. R. 5,36,25. KATHÂS. 97,43. प्रारुदन् BHAṬṬ. 17,71. प्रारोदीत् KATHÂS. 61,22. प्ररुद्य 97,33. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*, N. 3. न गर्भस्थः प्ररोदिति SUÇR. 1,319,20. जगाम मातुः प्ररुदन्सकाशम् *weinend* BHÂG. P. 4,8,14. प्ररुदती MBH. 2,2626. KATHÂS. 13,128. प्ररुदन्ती BHÂG. P. 9,10,24. अथाकस्मात्प्रववृते तया साध्या प्ररोदितुम् KATHÂS. 10,36. रुदन्तं प्ररुदन्ति so v. a. *weinen mit dem Weinenden* Spr. 5396. प्ररुदित *der angefangen hat zu weinen* d. i. *weinend* MBH. 1,6200. R. GORR. 1,17,11 (22 SCHL.). 2,83,18. 123,5. 6. 7,49,5. VIKR. 153. KATHÂS. 72,8. 101,209.

— वि *laut jammern, — heulen, — weinen:* शैलूषीव विरोदिषि MBH. 4,494. BHÂG. P. 1,18,40. व्यरुदन्देवलिङ्गानि 3,17,13. विरुदित n. *lautes Jammern, — Weinen* UTTARAR. 56,18 (73,11).

2. रुद् (= 1. रुद्) adj. *jammernd, heulend, weinend;* s. अघ°, भव°.

रुदथ (von 1. रुद्) UṆ. 3,114. m. *Kind* Comm.; *Hund* (कुक्कुर) UṆÂDIK. im ÇKDR. H. an. 3,319 (अनु). *Hahn* (कुक्कुट) ebend. — Vgl. रुवथ.

रुदन (wie eben) n. *das Jammern, Weinen* HARIV. 7583. st. des grammatischen रोदन wegen des näheren Anklangs an रुद्र gebraucht.

रुदन्तिका und रुदन्ती f. *die Weinende,* Bez. *eines best. kleinen Strauches, der Saft träufelt,* = अमृतस्रवा RÂGAV. im ÇKDR.

रुद्ध 1) adj. partic. s. u. 2. रुध्. — 2) N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251,*b*,15.

रुद्धक n. *Citrone* NÎLAK. zu HARIV. 8443. vielleicht fehlerhaft für रुचक.

रुद्धमूत्र adj. *an Harnverhaltung leidend* SUÇR. 1,120,10.

रुद्र UṆÂDIS. 2,22. 1) adj. nach den Comm. von रु oder रुद् mit oder ohne र (= रा) u. s. w. *heulend, heulen machend, mit Gebrüll laufend, schrecklich;* oder *Uebel vertreibend, zu preisen* u. s. w. Nach unserer Ansicht hängt das Wort wurzelhaft zusammen nicht bloss mit रोदसी, das die Comm. selbst als fem. zu रुद्र kennen, sondern auch mit रोद-

सी du. Schon deshalb sind jene Ableitungen unbrauchbar; die wirkliche Bedeutung, für welche ausserdem nur in रुद्रवर्तनि einiger Anhalt liegt, ist noch zu ermitteln. Auch an einen Zusammenhang mit रुधिर liesse sich denken. Agni ṚV. 1,27,10. 3,2,5. राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं रोदस्योः 4,3,1. AV. 7,87,1. die Açvin ṚV. 1,158,1. 2,41,7. 5,73,8. 75,3. 8,22,14. 26,5. Indra 13,20. 61,3. Mitra-Varuṇa 5,70, 2. 3. रुद्रासं एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः 9,73,7. = स्तोतर् Naigh. 3,16. = विपुल u. s. w. Halâj. 4,14. angeblich *furchtbar, schrecklich* (= क्रूर Comm.) in der Stelle: सकलभूपालकुलप्रलयकालाग्निरुद्रेण चेदिपतिना Prab. 4,12.; vgl. jedoch कालाग्निरुद्र. — 2) m. *a)* N. des Beherrschers der Marut, des *Sturmgottes;* vgl. die Lieder ṚV. 2,33. 7,46. 6,49,10. Rudra wirft mit seinem Bogen tödtliche Geschosse auf die Erde, verleiht aber auch Heilmittel und hat eine besondere Gewalt über das Vieh. Schon in den Brâhmaṇa wird Rudra zuweilen als eine Form des Agni aufgefasst; in der Folge wird Çiva mit ihm identificirt. Naigh. 5,4. Nir. 10,5. 11,14. AK. 1,1,1,30. H. 195. Halâj. 1,100. 5,2. परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः ṚV. 6,28,7. अहं रुद्राय धनुरा तनोमि 10,125,6. भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि 2,33,4. 5,42,11. आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे 10,64, 8. AV. 1,19,3. 6,20,2. 32,2. 59,3. यां ते रुद्र इषुमास्यत् 90,1. 11,2,7. 17. VS. 3,57. fg. 4,20. 5,11. 9,39. मीढ्वस् ṚV. 1,122,1. 5,41,2. त्वयद्वीर 10,92,9. स्थिरधन्वन् 7,46,1. भवारुद्रौ AV. 11,2,14. सोमारुद्रौ ṚV. 6, 74,1; vgl. P. 6,2,142. TBr. 1,6,1,2. 2,1,1,3. रुद्रो वा एषः। यदग्निः 2, 1. TS. 6,3,5,1. Çat. Br. 5,2,4,13. 6,1,3,10. 9,1,1,1. पशूनां पती रुद्रो ऽग्निः 1,7,3,8. सो ऽयं शतशीर्षा रुद्रः सहस्राक्षः शतेषुधिरधिज्यधन्वा प्रतिहितायी भीषयमाणो ऽतिष्ठत् 9,1,1,6. अभिमानुको रुद्रः पशून्स्यात् 2, 6,2,6. पशुपति 5,3,3,6. 12,7,3,20. 13,3,4,3. Pańkav. Br. 7,9,18. Âçv. Gṛhj. 4,8,9. 24. Khând. Up. 3,7,1. fgg. 16,3. 4. विद्रुपाक्ष MBh. 1,569. अथैतान्पातयिष्यामि रुद्रः पशुगणानिव 7,755. 787. 12,2792. fgg. 14,192. ततो ऽसृजत्पुनर्ब्रह्मा रुद्रं रोषात्मसंभवम् Hariv. 43. Mârk. P. 50,6. Etymologie des Namens Hariv. 7583. VP. 58. Bhâg. P. 3,12,10. Mârk. P. 52,5. — रुद्रमग्निमयं विद्यात् Hariv. 10666. R. 1,36,20. 44,10. 2,31,29. 3,70,2. 4,5,30. 44,52. अमरेश 6,35,3. Kumâras. 3,76. Ragh. 2,54. 11, 47. VP. 51. Spr. 1994. Pańkat. Pr. 1. रुद्रायतन Varâh. Bṛh. S. 46,6. 10. 53,48. Verz. d. Oxf. H. 50,*a*,37. 53,*b*,43. fgg. 58,*a*,18. *b*,16. fgg. 80,*a*, 25. Lalit. ed. Calc. 313,8. कुम्भाण्डाधिपति 148,16. Rudra als eine der acht Formen Çiva's VP. 58. ज्येष्ठ° Râǵa-Tar. 1,124. 4,190. रुद्रस्य जराबोधीयम्, ऋषभः, रैवतः (रैवत्यः), वैराजः, शाक्वरः Namen von Sâman Ind. St. 3,231, *b*. — *b)* pl. Rudra's heisst *eine bes. Schaar von Winden*, oder *die* Marut, *Söhne* Rudra's. AK. 1,1,1,5. ṚV. 1,39,4. 2,34,9. 3,32,2. रुद्रस्य मरुतः 5,59,8. सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु 60,2. युवा पिता स्वपा रुद्र एषाम् 5. 6,66,11. 8,13,28. Die Götterschaaren theilen sich in Âditja, Vasu und Rudra; häufig werden nur die zwei letzten genannt, ṚV. 1,45,1. Indra mit den Vasu, Varuṇa mit den Âditja, Rudra mit den Rudra 7,35,6. 10,66,3. 125,1. 150,1. 2,31, 1. 3,20,5. Vâlakh. 6,3. ṚV. 8,90,15. AV. 6,68,1. 8,8,12. 10,7,22. 11, 6,13. VS. 11,54. fg. In bestimmten Zahlen gedacht: *eilf, dreiunddreissig:* त्रिंशत्त्रयश्च गणिनो रुजन्तो दिवं रुद्राः पृथिवीं च सचन्ते। एकादशासो अप्सुषदः सुतं सोमं जुषन्ताम् TS. 1,4,11,1. 3,4,9,7. Çat. Br. 4,5,7,2. 6,1, 2,7. TS. 4,5,1,2. आहुतिभागा वा अन्ये रुद्रा हविर्भागा अन्ये 5,5,9,3. 2,6. TBr. 1,5,11,3. 2,1,10,1. Ait. Br. 8,12. Çat. Br. 11,6,3,7. रुद्रास्त्वेन्द्रराजानो भक्षयन्तु Çâńkh. Çr. 4,21,11; vgl. Âçv. Gṛhj. 1,24,16. वसून्वदन्ति तु पितॄन्रुद्रांश्चैव पितामहान्। प्रपितामहांस्तथादित्यान् M. 3,284. 11,221. MBh. 3,1840. 2356. Hariv. 441. Kumâras. 2,26. Varâh. Bṛh. S. 46,31. 48,26. 56. धर्मस्य वसवः पुत्रा रुद्राश्चामिततेजसः MBh. 12,7540. Kinder Kaçjapa's Hariv. 11849. der Surabhi 12477. VP. 150, N. 19. रुद्राश्च सर्वे ऽरुणधूम्रकायाः श्वेतैर्वृषैर्गोपतिभिर्वहद्भिः Hariv. 13149. रुद्रेण महिता रुद्रा दहन्त इव तेजसा। संनद्धाश्चारुमुकुटाः प्रांसवः पर्वता इव ॥ 16273. रुद्रान् (यजेत्) वीर्यकामः Bhâg. P. 2,3,3. रुद्राणां रुद्रसृष्टानां समन्ताद्ग्रसतां जगत् 3,12,16. रुद्रैरिव यमो राजा मरुद्भिरिव वासवः (वृतः) MBh. 3,14782. रुद्राणां शंकरश्चास्मि sagt Kṛshṇa Bhag. 10,23. शतमेतत्समाम्नातं शतरुद्रे महात्मनाम् MBh. 13,7092. Hariv. 168. VP. 121. सत्रूपासूत भूतस्य भार्या रुद्रांश्च कोटिशः Bhâg. P. 6,6,17. रुद्रैकादशक Vop. 5,34. MBh. 3,10668. Hariv. 9497. VP. 58. die stark variirenden Namen der eilf Rudra aufgeführt MBh. 1,2565. fgg. 4825. fg. 13,7090. fg. Hariv. 165. fgg. 11531. fg. VP. 121. Bhâg. P. 6,6,17. fg. Weber, Râmat. Up. 304. 312. fg. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,22. fgg. 190,*a*,36. fgg. रुद्राणामष्टमो रुद्रः ist Vishṇu R. 6,102,19. — *c)* Bez. *der Zahl eilf* Varâh. Bṛh. S. 8,20. 98,1. Bṛh. 7,1. sg. so v. a. *der eilfte* Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 159. 320,*a*,12. — *d)* pl. abgekürzte Bez. *der an* Rudra *gerichteten Sprüche* Pâr. Gṛhj. 3,8.9; vgl. रुद्रजप u. s. w. — *e)* mystische Bez. *des Buchstabens* ए Weber, Râmat. Up. 317. fgg. — *f)* N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 54,86. Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254. 296,*a*, No. 719. fgg. 318,*a*,44. Ind. St. 1,472, N. 1. Verz. d. Tüb. H. 13. Râǵa-Tar. 8,475. eines Lexicographen Med. Anh. 2. Verz. d. Oxf. H. 126,*a*, 19. 196,*a*,22. Bein. eines Fürsten Pradjota Schiefner, Lebensb. 269 (39). — *g) Calotropis gigantea* Râǵan. im ÇKDr. — *h)* N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Hariv. Langl. II, 311, fehlerhaft für रुरु, wie beide Ausgg. des Textes lesen. — 3) f. आ N. pr. *a)* einer Gattin Vasudeva's Vâju-P. in VP. 439, N. 2. — *b)* einer Tochter Raudrâçva's Hariv. 1661. 1663. भद्रा die neuere Ausg. und Langlois. — *c)* = रुद्रजटा Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten W. — 4) f. ई *eine Art Laute* (vgl. रुद्रवीणा) Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. प्रताप°, महा°, मालव°, मेधा°, मत्तरुद्रदत्त.

रुद्रक m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 306,6. fgg. Foucaux 376. Burn. Intr. 154, N. 1. 386, N. 3. Hiouen-thsang I, 367. Schiefner, Lebensb. 263 (13). 293 (63). v. l. उद्रक.

रुद्रकलश n. Rudra's *Topf*, Bez. eines best. beim Planetenopfer gebrauchten *Topfes* Verz. d. B. H. No. 1253. fg.

रुद्रकवीन्द्र m. = रुद्रभट्ट Hall 26.

रुद्रकाटि Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,4 fehlerhaft für रुद्रकोटि.

रुद्रकाली f. *eine Form der* Durgâ VP. 66.

रुद्रकोटि f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,5060. 6047. °माहात्म्य Mack. Coll. I, 81. — Vgl. रुद्रकाटि.

रुद्रकोष m. Rudra's *Wörterbuch* Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,4 v. u.

रुद्रगण m. Rudra's *Schaar* d. i. *die* Rudra's Varâh. Bṛh. S. 48,71.

रुद्रगर्भ m. Rudra's *Spross*, Bein. Agni's MBh. 2,1148.

रुद्रगीत n. *das Lied von* Rudra Bhâg. P. 4,30,1. 10. रुद्रगीता f. sg. Weber, Râmat. Up. 332. pl. Verz. d. Oxf. H. 58, *b*, 17. Verz. d. B. H. No. 485.

रुद्रचण्डिक Bez. eines best. Spruches Verz. d. Oxf. H. 90, *a*, 15.

रुद्रचण्डी f. *eine Form der* Durgâ; Bez. eines Abschnittes im Rudrajâmala Gild. Bibl. 503.

रुद्रचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Hall 185.

रुद्रच्छत्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 148, *a*, 4.

रुद्रज m. *Quecksilber* (Çiva's *Same*) Râǵan. im ÇKDr. neutr. Wilson nach ders. Aut.

रुद्रजटा f. Rudra's *Flechte*, Bez. einer best. Schlingpflanze Râǵan. im ÇKDr.

रुद्रजप m. Bez. *best. an* Rudra *gerichteter Gebete* Weber in der Einl. zu VS. VIII. Varâh. Bṛh. S. 46,31. Verz. d. B. H. No. 1279. Verz. d. Oxf. H. 296, *b*, No. 723. Ind. St. 9,59.

रुद्रजपन n. *das leise Hersagen des* Rudraǵapa Verz. d. B. H. No. 1253.

रुद्रजापक adj. *der den* Rudraǵapa *leise hersagt* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,121.

रुद्रजापिन् adj. dass. Jâǵn. 3,304. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,121.

रुद्रजाप्य n. Bez. *best. an* Rudra *gerichteter Gebete* Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 33. 296, *b*, No. 724. Ind. St. 1,471.

रुद्रट m. N. pr. = रुद्रभट्ट und auch daraus entstanden Verz. d. Oxf. H. 209, *b*, No. 491. 210, *a*, No. 495. 211, *b*, No. 499. Sâh. D. 165,2. 254,11.

रुद्रतनय m. Rudra's *Sohn*, Bez. 1) des 3ten schwarzen Vâsudeva bei den Ǵaina H. 695. — 2) der *Strafe* MBh. 12, 4430. des *Schwertes* H. ç. 144.

रुद्रत्व n. *das* Rudra-*Sein* Kâthaka in Nir. 10, 5. Maitrjup. 6, 26. Mârk. P. 46, 15. Ind. St. 3,453. 5,54.

रुद्रदत्त 1) m. N. pr. eines Autors Hall 192. °वृत्ति Verz. d. Oxf. H. 279, *a*, 32. — 2) Titel eines medic. Werkes Verz. d. B. H. No. 973.

रुद्रदामन् m. N. pr. eines Fürsten Z. f. d. K. d. M. 4,152. fgg.

रुद्रदेव m. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 141, *a*, No. 288. 144, *b*, No. 301. Hall 180. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Çl. 3. LIA. II, 952.

रुद्रधर m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279, *a*, 33. 292, *b*, 6.

रुद्रन्यायवाचस्पतिभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 246, *a*, No. 618. Abgekürzt wird er auch रुद्रभट्टाचार्य und न्यायवाचस्पति genannt.

रुद्रपण्डित m. N. pr. eines *Gelehrten*, = रुद्रसूरि Verz. d. B. H. 211, N. 2.

रुद्रपत्नी f. 1) Rudra's *Gattin* Uṇâdik. im ÇKDr. — 2) *Linum usitatissimum* Ratnam. im ÇKDr.

रुद्रपद्धति f. Titel eines Werkes des Paraçurâma Verz. d. Oxf. H. 278, *b*, 22. Verz. d. B. H. No. 1283. 1288.

रुद्रपाल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7, 144. fgg. 166. fgg. 8, 1151.

रुद्रपुत्र m. Rudra's *Sohn*, patron. des 12ten Manu Mârk. P. 94,22; vgl. VP. 268 und रुद्रसावर्णि.

रुद्रपुर n. N. pr. eines Staates Wilson, Sel. Works I, 24.

रुद्रपूजन n. Rudra's *Verehrung*, Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1280.

रुद्रपूजा f. desgl. ebend. 1281.

रुद्रप्रताप m. N. pr. eines Fürsten, = प्रतापरुद्र Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 8.

रुद्रप्रयाग m. Bez. des *Zusammenflusses* der Mandâkinî mit der Gañgâ LIA. I, 50. Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 35.

रुद्रप्रिया f. Rudra's *Geliebte*, Bez. *der Terminalia Chebula* Çabdar. im ÇKDr.

रुद्रभट्ट m. N. pr. eines Mannes, = रुद्रकवीन्द्र Hall 26. Verfassers des Çṛñgâratilaka Pratâpar. 2, *b*, 3. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 23. 209, *b*, No. 491. 212, *a*, No. 500. रुद्रभट्टाचार्य = रुद्रन्यायवाचस्पतिभट्टाचार्य Hall 34. 49. 58. 66. 74. 84. 184. — Vgl. रुद्रट.

रुद्रभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 131, *b*, 8.

रुद्रभू f. Rudra's *Stätte* d. i. *eine Leichenstätte* Çabdârthak. bei Wilson.

रुद्रभूति m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Drâhjâjaṇi Ind. St. 4, 372.

रुद्रभैरवी f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 16. °पूजापत्त्र 96, *a*, 7.

रुद्रमय adj. Rudra's *Wesen habend*: रुद्रं विष्णुः प्रविष्टस्तु तथा रुद्रमयो भवेत् Hariv. 10664.

रुद्रमहादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 157, *b*, No. 339.

रुद्रयज्ञ m. *ein dem* Rudra *geltendes Opfer* Kathâs. 45, 18. 27.

रुद्रयामल n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88, *a*, No. 145. 90, *b*, No. 146. 95, *b*, 9. 101, *b*, 45. 104, *a*, 19. 108, *a*, 32. 109, *a*, 1. 28. 110, *b*, 8. 252, *a*, 13. 279, *a*, 34. 299, *a*, No. 729. *b*, 1. Verz. d. B. H. No. 1176. 1311. 1327. fgg. 1335. Verz. d. Pet. H. No. 46. Gild. Bibl. 503.

रुद्रराय m. N. pr. eines *Fürsten* Kshitîç. 26, 10. fgg.

रुद्रराशि m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 31.

रुद्ररोदन n. Rudra's *Thränen* d. i. *Gold* Bhâg. P. 8,24,48. यद्रोदीत्तदुस्य रुद्रत्वं यदश्रीयत तद्रजतं हिरण्यमभवदिति श्रुतेः Comm.

रुद्ररोमन् f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2625.

रुद्रलता f. = रुद्रजटा Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

रुद्रलोक m. Rudra's *Welt* Hariv. 7991. VP. 213, N. 3. — Vgl. रुद्रस्वर्ग.

रुद्रवट N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 4092. Verz. d. Oxf. H. 53, *b*, 18.

रुद्रवद्गण adj. *die aus* Rudra's *bestehende Schaar um sich sammelnd*: Soma TS. 3, 2, 5, 2.

रुद्रवत् adj. Rudra oder *die* Rudra *mit sich habend*: Indra Ait. Br. 2, 20. VS. 6, 32. 38, 8. Agni Kâṭh. 10, 6. TS. 2, 2, 5, 3. Pańkav. Br. 21, 14, 13. Kâtj. Çr. 22, 3, 14.

रुद्रवर्तनि adj. als Beiwort der Açvin RV. 8, 22, 1. 14. 10, 39, 11. VS. 19, 82.

रुद्रविंशति f. Bez. *der letzten 20 Jahre im 60jährigen Jupitercyclus* ÇKDr.

रुद्रविधान n. Titel einer Schrift Ind. St. 1, 469. Verz. d. B. H. No. 1278. °पद्धति 1284.

रुद्रवीणा f. Bez. *einer best. Laute* Sañgîtanârâjaṇa im ÇKDr.

रुद्रव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 12, *b*, 18.

रुद्रशर्मन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 14, 37.

रुद्रसंप्रदायिन् m. pl. N. einer Secte Wilson, Sel. Works I, 119.

रुद्रसरस् n. N. pr. eines *Sees* Verz. d. Oxf. H. 70, *b*, 39.

रुद्रसर्ग m. *die von* Rudra *ausgehende Schöpfung* Varâha-P. im ÇKDr. *die Schöpfung der* Rudra (obj.) Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,18. fgg.; vgl. VP. 38, N. 13. — Vgl. रुद्रसृष्टि.

रुद्रसामन् n. Bez. eines best. Sâman Sańsk. K. 67,*b*,10. 70,*a*,9.

रुद्रसावर्णि m. Bez. des 12ten Manu Bhâg. P. 8,13,28. — Vgl. रुद्रपुत्र.

रुद्रसावर्णिक adj. *dem* Rudrasâvarṇi *gehörig, unter ihm stehend:* मन्वन्तर Mârk. P. 100,38.

रुद्रसिंह m. N. pr. verschiedener Männer LIA. II, 757, N. Verz. d. B. H. 153, N.

रुद्रसुन्दरी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10.

रुद्रसू f. *eine Mutter von eilf Kindern* Çabdar. im ÇKDr.

रुद्रसूक्त n. Bez. einer best. *Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398, *a*, No. 144. Verz. d. B. H. No. 1285. Sańsk. K. 70,*a*,9. pl. 67,*b*,9.

रुद्रसूरि m. N. pr. eines Autors, = रुद्रपण्डित Verz. d. B. H. No. 728.

रुद्रसृष्टि f. *die Schöpfung* Rudra's *oder der* Rudra (obj.) Verz. d. B. H. 128,*a* (10). — Vgl. रुद्रसर्ग.

रुद्रसेन m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7009.

रुद्रसोम m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 64,110.

रुद्रस्कन्द m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 379,*b*, No. 398. 380,*a*, No. 403.

रुद्रस्वर्ग m. Rudra's *Himmel* Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,17. — Vgl. रुद्रलोक.

रुद्रस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,12.

रुद्रहिमालय m. N. pr. eines Gipfels des Himâlaja LIA. I, 49, N. 1.

रुद्रहूति adj. nach Mahîdh. *die Anrufung der Lobsänger habend:* स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये VS. 38,16.

रुद्रहृदय n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3,325.

रुद्राक्रीड m. Rudra's *Spielplatz* d. i. *eine Leichenstätte* Trik. 2,8,61. Bhaṭṭ. 17,69.

रुद्राक्ष 1) m. *Elaeocarpus Ganitrus Roxb.* Çabdar. im ÇKDr. n. *die Beere,* die zu Rosenkränzen verwandt wird, Râgan. im ÇKDr. Wilson, Sel. Works I, 224. 236. 262. II, 217. Verz. d. Oxf. H. 64,*a*,2. रुद्राक्ष so v. a. रुद्राक्षमाला *Rosenkranz* Râga-Tar. 2,127. 170. °धारण Verz. d. B. H. No. 1301. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,8. 9. °माहात्म्य 94,*b*,1. Verz. d. Pet. H. No. 43. °माला Weber, Kṛshṇag. 341. °मालिका Verz. d. B. H. No. 1288. — 2) N. einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

रुद्राचार्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,18.

रुद्राणी f. Rudra's *Gattin* P. 4,1,49. Vop. 4, 23. AK. 1,1,1,32. H. 203. Halâj. 1,15. Çâñkh. Çr. 4,19,5. Colebr. Misc. Ess. I, 179. MBh. 5, 3969. 13, 3992. 4004. Hariv. 9532. 10275. Bhâg. P. 3,12,13. 6,17,26. 12,10,3. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,4. Weber, Kṛshṇag. 291. Bez. *eines 11-jährigen nicht menstruirenden Mädchens, welches bei der* Durgâ-*Feier diese Göttin darstellt,* Annadâkalpa im ÇKDr. u. कुमारी.

रुद्राध्याय m. Bez. *bestimmter an* Rudra *gerichteter Gebete* Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 32. Ind. St. 1, 383. Verz. d. B. H. No. 143. रुद्राध्यायिन् adj. *diese Gebete hersagend* 1283. Ind. St. 2,23.

रुद्रायण m. N. pr. eines Fürsten von Roruka Burn. Intr. 145. 340. Schiefner, Lebensb. 274 (44).

रुद्रारि m. Rudra's *Feind* oder adj. Rudra *zum Feinde habend;* m. Bez. *des Liebesgottes* Çabdârthak. bei Wilson.

रुद्रावर्त N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8015.

रुद्रावसृष्ट adj. *von* Rudra *abgeschossen* TS. 3,5,6,2.

रुद्रावास m. Rudra's *Wohnstätte* d. i. Kâçi (Benares) Çabdârthak. bei Wilson.

रुद्रिय 1) adj. *dem* Rudra oder *den* Rudra's *gehörig* u. s. w. (zugleich mit Beziehung auf die appellative Bed.): स्तोम ṚV. 2,11,3 (nach Sâj. so v. a. सुखसाधनभूत, स्तोतृकृत; eher *von den* Rudra's *kommend*). मक्षिव 7,40,5. रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे 10,64,8. (मरुतः) आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जभ्रिरे 1,72,4. 3,26,5. 8,20,3. in Stellen wie 1,38,7. 2,34,10. 5,57,7. 7,55,22, wo das Wort am Ende eines Pâda steht, ist der Vocal इ wohl nur metrische Einschiebung (व्यवाय) und wäre folgerichtiger रुद्र zu schreiben. Dieses ist ganz entschieden der Fall in folgenden Stellen: आदित्या वसवो रुद्रियासः 6,62,8. 10,48,11. sg. m., nach Sâj. coll. *die Schaar der* Marut, ist wohl zu erklären wie eben. Çat. Br. 1,7,3,21. 4,9.16. एष वै रुद्रियो ऽग्निः 12,5,1,6. तनू Çâñkh. Çr. 3,6,3. — 2) n. Rudra's *Macht* Çat. Br. 1,7,3,21. उभयी रुद्रियात्प्रमुञ्चति 2,6,2,2.18. so v. a. सुख Sâj. zu ṚV. 2,11,3. — Vgl. शत°.

रुद्रैकादशिनी f. *die eilf* Rudra-*Hymnen* Jâǵn. 3,309. Verz. d. B. H. No. 1284. Ind. St. 2, 23.

रुद्रोपनिषद् f. Titel zweier Upanishad Ind. St. 2,15. 22. 53. 9,107. Verz. d. Oxf. H. 394,*b*,22.

रुद्रोपस्थ m. Rudra's *Glied*, Bez. eines best. Berges Hariv. 12854.

1. रुध्, रोधति so v. a. रुह्. Hierher ziehen wir यद्रोधति क्षमि *was auf dem Boden sprosst* ṚV. 8,43,6. indem wir eine Störung der Versabtheilung hier und in v. 7 annehmen, dessen letzter Pâda mit v. 8 zu verbinden ist. Sâj. erklärt निरुणद्धि und denkt einen acc. hinzu. — Vgl. रोध in न्यग्रोध.

— अव s. 1. अवरोध und 1. अवरोधन.

— उद् s. उद्रोधन.

— प्र s. प्ररोधन.

— वि *sprossen, wachsen:* वि यो वीरुत्सु रोधन्महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः ṚV. 1,67,9. — Vgl. वीरुध्.

2. रुध्, रुणद्धि, रुन्द्धे (आवरणे) Dhâtup. 29,1. ved. partic. रुधत्तम्, episch रुन्धति, रुन्धते, रुन्धेय, रुन्धेत, रोधति; अरुधत् und अरौत्सीत् Vop. 14,1. ved. अरौत्, रुध्मस्, (अप) अरोधम्, अरुत्स्महि, अरौत्सि; रुरोध, रुरुधे; रोत्स्यति, रोद्धा Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. pass. reflex. अरुद्ध P. 3,1,64. Vop. 24,11. रोद्धुम् (रोधितुम् MBh. 2,926), रुद्ध्वा, °रुध्य; 1) *zurückhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen:* न रुणद्धि यातम् Varâh. Bṛh. S. 78,8. इदं रुणद्धि मां पद्मम् Vikr. 103. प्रयातां किंचिदन्तरम्। दण्डाधिपो रुणद्धि स्म तृतीयस्ताम् Kathâs. 4,38.48,62.73,292. यद्यपि चञ्चलम्। मनो रुणध्मि तदपि 56,114. रुन्धन्ति Hariv. 11935. रुन्धान MBh. 7,3534. Bhâg. P. 3,13,31. अरुणत् Çiç. 9,82. तौ (यन्तौ) रुरोध स सायकैः R. 1,28,22. 3,34,10. Ragh. 7,32. 12,80. 15,17. Kathâs. 10,187. 13,118. रुरुधुः MBh. 1,8074. दण्डेन रुरुधुः प्रजाः 12,6149. Hariv. 7513. Kathâs. 25,249. अरौत्सीत् MBh. 8,244. अरुधत् Çiç. 9,72. रुद्ध्वा Mâlav. 52,6. रोद्धुम् R. 2,111,17. 3,5,20. Spr. 2920.

Kathâs. 62,224. नगरं प्रविशन् भ्रान्तः समं सैन्यैररुध्यत Râǵa-Tar. 5,451. Kathâs. 18,392. रुद्ध Gobh. 2,3,9. R. 1,28,23. 7,36,42. Vikr. 121. Spr. 4818. Kathâs. 42,46. 45,246 (रुद्धाः zu lesen). व्यूहप्रवेशतः 48,29. Râǵa-Tar. 3,19. 51. 4,248. 6,44. ज्ञाल्हदपुः 49. Vet. in LA. (III) 17,22, v. l. रणेऽरुद्धः Hariv. 9199 nach der Lesart der neueren Ausg. मैथुनरुद्धस्य पाण्डोः *im Beischlaf gehemmt, dem der Beischlaf gewehrt war* Bhâg. P. 9, 22, 26. (निम्नान्) गिरीनरौत्सीत् Bhaṭṭ. 15,80. नदीं शुक्तिमतीं गिरिः। अरौत्सीत् MBh. 1,2367. Hariv. 11207. R. 7,32,15. 18. Bhâg. P. 9,15,20. *zurückstossen* Bhaṭṭ. 8,80. अस्त्रे रुद्धे MBh. 5,7205. R. 3,35,48. शक्यते नैव रोद्धुं च कथमप्यधुना मया (प्रवहणम्) *ich kann das Schiff nicht zurückhalten* Kathâs. 26,14. यानपात्रमकस्माद्भवद्रुद्धं व्यासक्तमिव केनचित् 18,294. 298. 303. धारयामास जीवितम्। हृदि प्रविष्टया रुद्धं तत्प्रत्यागमवाञ्छया 230. *zurückhalten, festhalten, vor einem Falle bewahren:* आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि Megh. 10. करेण रुद्धो ऽपि हि केशपाशः Ragh. 7,6. करुद्धनीवि (वसन) Çiç. 9,75. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren:* प्राणम् AV. 11, 3, 55. ओषधिरुद्धवीर्य Ragh. 2, 32. Bhâg. P. 3, 8,11. 4,22,39. रुन्धन्नपि धिया शुचः 9,11,16. रुणद्ध्यर्वागमम् Varâh. Bṛh. S. 53,62. रुद्धगिर् Bhâg. P. 10,82,14. 60,23. Spr. 2083. रोद्धुं क्षमितम् 2084. रुद्धतटाभिमुख्य (d. i. रुद्ध + तटा°, nicht रुद्ध - तट + आ°) 2586. भवतामननुज्ञातं (subj.) रुणद्धि मम विक्रमम् R. 5,58,7. अरुद्ध च पराक्रमम् Bhaṭṭ. 15,63. रुद्धालोके नरपतिपथे Megh. 38. रुद्धा दृष्टिः Daçak. 73, 5. निद्रां नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम् Megh. 88. रुद्धापाङ्गप्रसर 93. प्राणापानगती रुद्ध्वा Bhag. 4,29. वियति वक्तुं नक्षत्राणां गतीरपि Prab. 54,13. दिव्यानां च गती रोद्धुम् Kathâs. 33,188. रुरुधुस्तस्य प्रवेशम् 18, 107. 46,201. क्षितिभृद्रुद्धनिर्गम Râǵa-Tar. 2,38. रुद्धप्रवाहा वितस्ता 4, 703. डरुतिपाको दक्षिणाभिश्च रुद्धः Varâh. Bṛh. S. 46,17. रणरेणवो रुरुधिरे रुधिरेण सुरद्विषाम् *der Staub wurde gebunden* Ragh. 9,21. किं रुद्धं ते मयाशनम् *habe ich dir das Essen versagt?* Kathâs. 27,35. भूमावरुन्धती ख्याता रुन्धत्यपि सतीधुरम् (so ist zu schreiben) *die oberste Stelle der tugendhaften Frauen* (anderen Frauen) *versagend* d. i. *selbst an der Spitze der tugendhaften Frauen stehend* 80. मन्त्रा रुद्धाः *gehemmt, nicht wirkend* Sarvadarçanas. 171,10. — 3) *zurückhalten* so v. a. *bei sich behalten:* आरे अभूद्विषमरौत् AV. 10, 4, 26. so v. a. *sparen, kargen mit* (acc.): त्वं त्रिगिष्ठ न धना रुरोधिथ ṚV. 1, 102, 10. तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि 10,34,12. यो देवकामो न धना रुणद्धि 42,9. — 4) *einschliessen, einsperren in* (loc.): विमाने तां रुरोध R. 7,24,2. रुरुधुस्तं महीपालं पुरे Mârk. P. 122,14. रावणान्तःपुरे रुद्धा R. 4,58,25. 6,10,11. M. 9,12. Bhâg. P. 1,8,23. 4,28,60. 7,1,27. मनः — हृदि रुन्ध्याच्छनैः 15,33. गर्तरुद्ध इवोरगः R. 4,34,2. आत्मरुद्धानि (ओषधिबीजानि) Bhâg. P. 4,17,24. mit doppeltem acc.: रुरोध गोकुलं गोपी Vop. 5,6. einen Weg *versperren:* रुद्ध्वा रथमार्गम् R. 3,56,8. Megh. 100. रुणध्मि सवितुर्मार्गम् Bhaṭṭ. 6,35. einen Feind, einen Ort *einschliessen, belagern, besetzen:* एकं रुद्ध्वा स्थिताः सन्तो रुद्धाः स्मो ऽन्येन शत्रुणा Kathâs. 49,70. अरुणद्यवनः साकेतम्, अरुणद्यवनो माध्यमिकान् Pat. in Ind. St. 5,151. लङ्काया उत्तरं द्वारम् R. 6,16,25. रुरोध च गृहं तस्य Kathâs. 17,81. 43,104. 88,26. fg. 112,163. यत्संप्रति गृहमपि मे बलवत्तरेण मकरेण रुद्धम् *besetzt* Pañkat. 227,21. अरुन्धत्तां पुरीम् MBh. 3,638. 15237. R. Gorr. 1,68,19. 21. 6,16,55 (med.). Varâh. Bṛh. S. 7,19. Bhâg. P. 3,3,10. 4,28,2. 8,15,23 (med.). Bhaṭṭ. 15,10. पुरं चारुध्यतारिणा Mârk. P. 37,18. Bhaṭṭ. 14,29. Kathâs. 51, 105. Bhâg. P. 9,10,17. *verschliessen:* नगरद्वारम् R. 4,9,66. Râǵa-Tar. 5,431. रुद्धा गुहाः किम् Spr. 4053. (वायुः) रुरोध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि वासवः R. 7,35,50. 58. — 5) *verhüllen, verdecken:* अर्कं रुन्ध्याः शरैः R. 3, 55,10. 4,27, 9. 37,29. Ragh. 14,82. Kathâs. 108,7. Râǵa-Tar. 3, 60. शरैरन्तरितं रुरुन्धतुः (sic) R. 6,90,17. Mṛkkh. 76,6. Râǵa-Tar. 2,139. भूतं (*ein Wesen*) रुन्धानं रोदसी शरीरेण Varâh. Bṛh. S. 53,2. द्यां (खं die neuere Ausg.) भुवं चैव रुन्धेय (रुन्धेयम् ed. Calc.) Hariv. 305. वस्त्रान्तररुद्धवक्त्राः Mṛkkh. 159,18. घनतिमिररुद्धे च नयने Spr. 1615. शोकोद्भववाष्परुद्धदृशः Varâh. Bṛh. S. 3,14. Kathâs. 14,24. Spr. 2277. Bhâg. P. 1,15,30. 4,30,44. मेघरुद्ध MBh. 5,7195. चरणार्धरुद्धवसुध so v. a. *mit dem halben Fusse den Erdboden berührend* Spr. 1246. रुद्ध = संवीत, आवृत AK. 3,2,40. H. 1476. — 6) *verstopfen, erfüllen, anfüllen:* अश्रुभिः कण्ठदेशम् Kathâs. 17,81. मुखं बाष्पो रुणद्धि मे R. 4,60,1. हस्तरुद्धमुखाः 52,25. 53,1. आज्यधूमोद्भवो गन्धो (आज्यधूमो भवेद्गन्धो ed. Calc., आज्यधूमोद्भवोद्गन्धो ed. Bomb.) रुणद्धीव तपोवनम् MBh. 13,6482. वेश्मानि धूमरुद्धानि 14,1741. रुद्धवसुधान्नोच्छ्वासनिर्वासस्य Râǵa-Tar. 1,115. ज्वालारुद्धमिवोरगम् R. 4,33,41. ग्रासरुद्धवदन (वाजिन्) Varâh. Bṛh. S. 93,7. — 7) *peinigen, hart mitnehmen:* मर्म मे निशितः शरः। रुणद्धि (= पीडयति Comm.) मृदु सोत्सेधं तीरमम्बुरयो यथा॥ R. 2,63,43. — 8) रुद्ध = अवरुद्ध *erhalten* Bhâg. P. 2,7,21.

— caus. 1) *zurückhalten, aufhalten:* कौरवान्द्रवतो ह्येष कर्णो रोधयते MBh. 8,2903. — 2) *Jmd durch Jmd einsperren lassen,* mit dopp. acc.: रोधयामासुरिष्टं तां सुगोप्यमपि Pañkar. 1,14,105. *belagern lassen durch* (instr.): लङ्कां रोधयामास वानरैः Ragh. 12,71. — 3) *Macht ausüben auf, fesseln;* mit acc.: न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म एव च Bhâg. P. 11, 12,1. — 4) *quälen, peinigen:* मैथिलीं हरता तेन मां च रोधयता भृशम् R. 4,5,22. in dieser Bed. auch रुन्धयति in der Verbindung: शोको मां रुन्धयत्ययम् MBh. 3,999. 12,191. 733; vgl. रध् caus. 2).

— अनु 1) *versperren:* शिलाभिः u. s. w.: ये मार्गमनुरुन्धन्ति MBh. 13, 1649. *einschliessen, umzingeln:* रुद्रानुचरैर्महो महान् — अन्वरुध्यत Bhâg. P. 4,5,13. *fesseln, in seine Gewalt bringen, beherrschen:* यावन्मनो रजसा पूरुषस्य सत्त्वेन वा तमसा वानुरुद्धम् 5,11,4. तपोवनमनुरुन्धन्ति Çâk. 18,10, v. l. für तपोवनमुपरुन्धन्ति *in Verwirrung bringen.* — 2) pass. oder Klasse 4. *sich einschliessen in, sich hängen an* (acc.): सोमधीरनु रुध्यसे ṚV. 8,43,9; vgl. P. 6,1,134, Sch. — 3) *kleben an* (acc.): अनुरुन्ध्यादघं त्र्यहम् so v. a. *während dreier Tage wird er der Sünde nicht los* M. 5,63. so v. a. *Jmd auf dem Fusse folgen:* अयमनुरुध्यमानस्तापसीभ्यामबालसत्त्वो बालः Çâk. Ch. 151, 2 (अनुबध्यमानः die andere Rec.). पुमांसमनुरुध्य जाता so v. a. *unmittelbar nach* P. 3,2,100, Sch. *an Jmd* oder *Etwas hängen, Jmd zugethan sein, einer Sache sich hingeben, obliegen, sich angelegen sein lassen;* med. und act.: एके तमनुरुन्धाना ज्ञातयः पर्युपासत Bhâg. P. 10,2,4. नानुरुन्धन्ति श्रोतृचित्तानुवर्तनम् Râǵa-Tar. 3,95. मानुषं लोकमासाद्य तज्जातिमनुरुन्धतः (कृष्णस्य) Bhâg. P. 10, 7,3. सर्गादि यो ऽस्यानुरुणद्धि 4,17,33. gewöhnlich अनुरुध्यसे (कामे Dhâtup. 26,65) und °सि in dieser Bed.: यद्ब्रमन्यापि — रानमेवानुरुध्यसे MBh. 3,16194. नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये 12,9349. 15,966. स-

मस्थमनुरुध्यन्ते विषमस्थं त्यजन्ति (योषितः) R. 3,19,6. भर्तारमनुरुध्यन्तः क्लिश्यन्ते वीरपत्नयः MBh. 4,492. गतश्रीकान् — पार्थान्नानुरोद्धुं त्वमर्हसि 3,15632. अनुरुद्धः (तनुरुद्ध beide Ausgg.) शिबी राज्ञा मिथ्योपचरितो मया *dem ich zugethan bin* 5,1308. इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धाम् *seine Zuneigung zu erkennen gebend* Uttarar. 55, 3 (71, 1). यद्यदालम्बसे काम तत्तदेवानुरुध्यसे *daran hängst du* Spr. 3594. धर्मम्, ज्ञानम्, काममनुरुध्यते Nir. 14,6. MBh. 5,4156. Spr. 4275. दोषम् MBh. 3,13891. सुखप्रिये 5,950. धर्म्यमुपभोगम् 12,6676 (अनुरुध्ये st. अनुरुन्ध्ये ed. Bomb.). शौचम् 8390. निजप्रतिज्ञामनुरुध्यमाना महोद्यमाः कर्म समारभन्ते *haltend an* Spr. 216. धर्ममेवानुरुध्यति MBh. 3,2169. अर्थम् 12678. सुखप्रिये 5, 648 (कामात् st. कामान् ed. Bomb.). काममनुरुन्ध्यता (lies °रुध्यता) Mârk. P. 75,16. आश्रमे वासमनुरुध्य *Gefallen findend an* R. 7,48,5. — 4) *gutheissen, billigen;* med.: इमाममूलां गोविन्दराजोक्तिं नानुरुन्ध्महे Kull. zu M. 4,7. 11,180. श्रुतवानस्मि यत्कर्म कृतवानसि भार्गव। अनुरुध्यामहे ब्रह्मन्पितुराणृण्यमास्थितम् (आस्थितः ed. Bomb.) ॥ *wir billigen es, dass du* R. 1,76,2. यज्ञैर्विचित्रैर्यजतो भवाय ते राजन्स्वदेशाननुरोद्धुमर्हसि Bhâg. P. 4,14,21. — 5) *sich richten nach, Rücksicht nehmen auf:* मनो ऽनुरुन्धती भर्तुः MBh. 13,4497. लोकगाथामनुरुन्धानः Sarvadarçanas. 2,1. नानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मीम् Bhaṭṭ. 16,23. हन्त तिर्यञ्चो ऽपि परिचयमनुरुध्यन्ते Uttarar. 51,8 (66,8). अनुरुध्यस्व भगवतो वसिष्ठस्यादेशम् 75,12 (97,7). शक्तिर्गुणाश्रया तत्र प्रधानमनुरुध्यते Verz. d. Oxf. H. 162,*b*, N. 7. स्वामनुरुध्य बुद्धिम् 198,*b*, No. 467. न चास्या हृदयमननुरुध्य स्वेच्छया नर्म कुर्यात् Kâmaç. bei Mallin. zu Kumâras. 7, 94. नायं पापो मया कृष्ण युक्तः स्यादनुरोधितुम्। प्राणेन *er verdient nicht, dass ich in Bezug auf sein Leben Rücksicht auf ihn nehme* MBh. 2,926. स्वर्गार्थमनुरुद्धः so v. a. *den Himmel im Auge habend* Spr. 4673, v. l. — Vgl. अनुरुद्ध fg., अनुरोध fgg.

— अप *abhalten, abwehren; verstossen, ausschliessen,* namentlich von Herrschaft oder Besitz *vertreiben:* अपं जायामरोधम् RV. 10,34,2. 3. अतिथिम् Ait. Br. 5,30. अन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् AV. 3,3,4. 12,3,43. अपेमं जीवा अरुधन्गृहेभ्यः 18,2,27. राष्ट्रात् Ait. Br. 8,10. Çat. Br. 12, 9, 3,1. TS. 2,2,8,5. 3,4,1. यो ऽवगतः सो ऽपरुध्यतां यो ऽपरुद्धः सो ऽवगच्छतु 6,6,5,3. Kâṭh. 27,5. सिन्धुक्षिद्राजर्षिर्योगपरुद्धश्चरन् Pañkav. Br. 12, 12,6. 15,3,25. 18,5,5. Kâtj. Çr. 19,1,3. 22,9,16. अपरुद्ध Kâm. Nitis. 13,73 fehlerhaft für उपरुद्ध (vgl. 67). Vgl. अपरोद्धर्, अपरोध. — desid. अपरुरुत्स्यमान *den man abschaffen will* Kâṭh. 37,11.

— व्यप intens. *Jmd verstossen, der Herrschaft berauben* R. ed. Bomb. 2,58,20; vgl. u. अव intens.

— अभि 1) *abwehren, abhalten* MBh. 8,4308. — 2) *in Verwirrung bringen:* सैनिकास्तपोवनमभिरुन्धन्ति Çâk. Ch. 24,10. 33,3. उपरुन्धन्ति die andere Recension.

— अव 1) *Jmd abhalten, zurückhalten:* न शशाकोत्तरैर्वाक्यैरवरोद्धुं समुद्यतम् R. 3,1,33. मा गा इत्यवरुद्धा Çâk. 35. Sâh. D. 48,8. *versperren, hemmen:* स्रोतसां वर्त्मान्यवरुध्यन्ते गर्भेण Suçr. 1,328,8. *festhalten, einschliessen* (nach dem Comm.): अवं श्मशा रुधद्वाः RV. 10,105,1. *absondern, zurückstellen, einsperren; beseitigen:* गवां सहस्रम् Çat. Br. 11,6, 3,1. 14,6,1,2. उद्गातारम् 13,2,3,2. सप्त भ्रातृव्यान् 14,5,1,6,1,2. Çâñkh. Br. 12,8. Shaḍv. Br. 4,2. अवारोधि गौर्देवदत्तेन *wurde eingesperrt,* अवारुद्ध गौः स्वयमेव *sperrte sich selbst ein* P. 3,1,64, Sch. mit doppeltem acc. P. 1,4,51. अवरुणद्धि गां व्रजम् Schol. शोकं चित्तमवारुधत् *er schloss seinen Kummer in's Herz ein* Bhaṭṭ. 6,9. gewöhnlicher mit acc. und loc.: आत्मानमात्मन्यवरुध्य Bhâg. P. 2,2,16. ईश्वरः सद्यो हृद्यवरुध्यते ऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिः 1,1,2. तिर्यङ्मनुष्यविबुधादिषु — अवरुद्धदेहः 3, 9,19. अवरुद्धासु दासीषु *eingeschlossen* Jâçn. 2,290. अन्नाविकाः *eingehegt* M. 8,236. महिमा तस्य वृद्धवन्धया अवरुद्ध इवाभवत् *gleichsam eingesperrt* Râga-Tar. 6,286. तामवरुद्धत्वमनैषीत् so v. a. *sperrte sie in seinen Harem ein* (vgl. अवरोध) 4,677. भवानीनाथैः स्त्रीगणार्बुदसहस्रैरवरुध्यमानः (= सर्वतः सेव्यमानः Comm.) *umlagert, umgeben* Bhâg. P. 5, 17,16. *belagern:* पुरमवारुणत् Daçak. 93,20. काञ्च्या गाढतरावरुद्धवसनप्रान्ता *zugezogen, zusammengebunden* Spr. 630. med. *bei sich behalten, zurückhalten* so v. a. *nicht gewähren:* अयं प्रवर्तितो धर्मस्तुलां धारयता त्वया। स्वर्गद्वारं च वृत्तिं च भूतानामवरोत्स्यते ॥ MBh. 12,9396. *in sich schliessen, enthalten* Bhâg. P. 8,12,11. अवरुध् = अपरुध् *verstossen, ausschliessen, vertreiben:* यस्य चार्थे ऽवरुध्यसे R. 2,30,9. राष्ट्रात् Kauç. 16. Çâñkh. Çr. 14,50,8. पाञ्चालस्य वने वसतो वरुद्धस्य (d. i. ऽवरुद्धस्य, wie schon Weber vermuthet hat) Kâṭh. Anukr. in Ind. St. 3, 460. अवरुद्धो ऽचरत्पार्थो वर्षाणि त्रिदशानि च MBh. 4,2011. अवरुद्ध *bedeckt, verhüllt:* निगदितन्त्रैर्जलधरजालैश्छन्नमवरुद्धं छन्नमथ वाक्यः। यदि विपदेवं भवति सुभिक्षम् Varâh. Bṛh. S. 24, 20. अवरुद्धश्चरन् *unerkannt, incognito* Daçak. 101,15. — 2) act. *verleihen, verschaffen (für Jmd abfordern):* सा मे ऽमुष्मादिदमवरुन्ध्यात् (v. l. अवरुन्द्धाम् *erlange für mich*) Kaush. Up. 2,3. med. *erhalten, erlangen, erreichen (für sich absondern, als sein Theil verwahren):* अपरिमितं लोकमव रुन्धे AV. 9, 5,22. 6,9. 40. पथो देवयानान् 15,11,3. अमृतस्य भक्षम् 13,2,15. तेन वै स देवताश्चेन्द्रियं चावारुन्ध TS. 2,5,3,2. सर्वत एवैनमवरुध्य चिनुते 5,7,10, 2. प्रजामवरुन्धीमहि 7,2,6,1. Ait. Br. 1,6. 12. 2,17. 3,2. कामम् Kâṭh. 33,1. Çat. Br. 4,6,9,20. अन्नम् 5,2,3,3. 10,6,5,8. सर्वं ह्येवास्य तदाप्तमवरुद्धमभिजितम् 11,2,3,1. 12,7,2,7. 14,4,3,31 (अवारुन्धत् Bṛh. Âr. Up. 1,5,21). Shaḍv. Br. 3,7. Khând. Up. 2,15,2. Bhâg. P. 2,7,21 (wo die ed. Bomb. अमृतायुरवावरुन्ध आयुश्च liest; das erste अव erklärt der Comm. अवसनं पूर्वं दैत्यैः). 3,25,27. 4,13,9 (अवरुन्धानः = आप्नुवन्, जानन् Comm.). 5,1,15. 2,21. 4,4. 14,1. 22. 33 (der Comm. ergänzt सुखदुःखादि, Burnouf übersetzt अवरुन्धान durch *s'arrêtant*). 39 (अवरुन्धते st. अवरुन्द्धे). 10,68,28. 11,12,2. act.: परां काष्ठामचिरादवरोत्स्यसि 3, 33,10. सर्वे कामा अवरुद्धाः स्युः Çaṅk. zu Khând. Up. S. 16. Bhâg. P. 3, 23,7. 10,15,22. Mârk. P. 49,58 (?). — 3) *an Jmd hängen, Jmd zugethan sein* (vgl. अनु): पृथुमेवावरुन्धती Bhâg. P. 4,15,5. — Vgl. 2. अवरोध fg., 2. अवरोधन. — caus. वेगावरोधित wohl *verstopft* Suçr. 2,239, 3. — desid. med. अवरुरुत्सते *zu erlangen wünschen, einzuholen suchen* TS. 1,5,1,1. TBr. 1,3,3,1. 2,1,1,1. Ait. Br. 1,12. अमृतत्वम् Çat. Br. 10,4,3,6. Kâṭh. 12,5. पशून् Âçv. Çr. 11,2,18. Bhâg. P. 3,9,18. 9, 13,10. act. 4,8,30. — intens. *aus der Herrschaft vertreiben, der Herrschaft berauben:* अतिक्रान्तवया राज्ञा मा स्मैनमवरोरुधः (स्मैनं व्यपरोरुधः ed. Bomb.) । कौमारराज्ये जीवस्व तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् ॥ R. 2,58,20.

— पर्यव s. पर्यवरोध.

— प्रत्यव 1) *hemmen, unterdrücken:* प्रत्यवरुद्धभोजन Bhâg. P. 1,10,

1. = संकुचितभोग oder प्राप्तभोग Comm. — 2) *wiedererlangen:* स्मृतिं प्रत्यवरुध्य Bhâg. P. 2,2,1. — Vgl. प्रत्यवरोधन.

— समव 1) *einsperren, einschliessen:* कोशकारो यथात्मानं कीटः समवरुन्धति (= °रुणद्धि) MBh. 12,11266. pass. *enthalten sein:* एकस्मिन्यज्ञक्रतौ समवरुध्यन्ते Pañkav. Br. 16,15,9. 19,9,5. — 2) *erlangen, erhalten:* °रुद्ध Bhâg. P. 10,87,14. — 3) pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* समवरुध्यते im Gegens. zu युज्यते Hariv. 11778 nach der Lesart der neueren Ausg. (Nilak. macht auf die überschüssige Silbe aufmerksam).

— आ 1) *einschliessen, einsperren:* वत्सानारुध्य शाद्वले Bhâg. P. 10,13,7. *umzingeln, belagern:* तेषु तेष्ववकाशेषु शीघ्रमारुध्यतां पुरी Hariv. 5013. — 2) *abwehren, verscheuchen:* बन्धुता शुचमारुणत् Bhatt. 17,49. — 3) *festhalten, herholen, beitreiben:* आरुन्धानो गव्या समत्सु RV. 4,38,4. आ रुन्धां सर्वतो वायुः AV. 3,20,10. वायवारुन्धि नो मृगान् Kauç. 127. एतम् Çat. Br. 3,9,2,13. 15. 24. — 4) med. *sich enthüllen, sich entwickeln* (?): चक्षुरारुन्धते, श्रोत्रमा°, प्राण आ° Kaush. Up. 2,2. आरुन्द्धे v. l. — Vgl. आरोधन. — caus. 1) *versperren:* पद्मामारोधयन्मार्गम् MBh. 1,4188. *belagern:* नगर्याः पश्चिमं द्वारं शीघ्रमारोधयन्तु Hariv. 5015. — 2) *belästigen:* काकेनारोध्यमाना R. 2,96,40; vgl. u. रुह्.

— समा *versperren:* तस्य मार्गं समारुध्य R. 7,32,42.

— उद् *hinaustreiben, verdrängen aus:* मेधावी राजा सर्वेभ्यो मात्तेभ्य उदरौत्सीत् Çat. Br. 14,7,1,41.

— उप 1) *einsperren, einschliessen, eintreiben:* वडवा उपरुन्धन्ति मिथुनत्वाय TBr. 3,8,22,3. Çat. Br. 13,2,2,2. पशून् 3,7,3,4. गाः Khând. Up. 4,6,1. अत्राश्चैवोपरोत्स्यन्ते पयसो ऽर्थे युगक्षये Hariv. 11158. उपरोधम् absol. in Verbindung mit einem loc. oder instr. P. 3,4,49. व्रजेोपरोधं गाः स्थापयति, व्रज उपरोधम् und व्रजेनोपरोधम् Schol. उपरुद्ध *ein Gefangener* Ragh. 18,17. einen Feind, eine Stadt *einschliessen, umzingeln, belagern:* उपरुध्यारिमासीत M. 7,195. उपरुद्ध (बल) Kâm. Nitis. 13,67. 73 (hier अपरुद्ध gedruckt). बलैः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरम् Mudrâr. 41,15. Pañkat. ed. orn. 55,16. यवनोपरुद्धायतन Bhâg. P. 4,28,13. अभ्यन्तरं विशितुः प्रमदोपरुद्धं (°रुद्धो?) लोकस्य *eingeschlossen, umringt* Kathâs. 34,259. — 2) *zurückhalten, behalten, nicht aus den Händen geben:* संभूय वणिजां पण्यमनर्घेणोपरुन्धताम्। विक्रीणतां वा विहितो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ Jâgñ. 2,250. — 3) *belästigen, plagen, beunruhigen, behelligen:* मा मोपरोत्सीः Kathop. 1,21. उपरुन्धन्ति राजानो भूतानि विजयार्थिनः MBh. 12,3584. Ragh. 4,83. उपरोधति R. 7,74,6. उपरुन्धानाः (उपरुद्धानाम् die neuere Ausg., = अपराधवताम् Nilak.) Hariv. 6058. एवं बहुभिर्वाक्यैरुपरुन्ध्य R. 7,73,19. परदारान् — नोपरोद्धुमिहार्हसि 5,47,16. Ragh. 5,22. Mârk. P. 19,5. उपरुध्यमान Bhâg. P. 5,14,5. बाष्पवेगोपरुद्धात्मन् R. Gorr. 2,58,25. बलीयसा 3,43,4. Bhâg. P. 4,28,15. 24. 5,26,16. प्राणानुपरुणत्सि मे so v. a. *bedrohen, in Gefahr bringen* R. 2,75,41. R. Gorr. 2,65,41. 79,26. उपरुध्यन्ति मे प्राणाः 3,73,14. पौरा अस्मदन्वेषिणस्तपोवनमुपरुन्धन्ति *bringen in Verwirrung* Çâk. 18,10. 24,8. — 4) *Jmd aufhalten, zurückhalten:* मा गा इत्युपरुद्धा v. l. für अवरुद्धा Çâk. 35. *Etwas hemmen, unterbrechen, stören:* प्रवृत्तं नोपरुन्धेत शनैरग्निमिवेन्धयेत् MBh. 12,7817. शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते M. 4,348. Daçak. in Benf. Chr. 182,17. कृत्यमारब्धं किं न पूर्वमुपारुधः R. 2,36,14. उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम् Çâk. 57,13. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पं कुरु 90. बाष्पोपरुद्धया वाचा R. Gorr. 2,60,4. — 5) *verhüllen, verdecken:* रेणुः — उपरुरोध सूर्यम् Ragh. 7,36. उपरुद्धा च जगती तमसेव समावृताम् R. 2,69,11. — 6) = अपरुध् *verstossen, von der Regierung ausschliessen:* सगरो ज्येष्ठं पुत्रमुपारुधत् R. 2,34,16. रामः किमकरोत्पापं येनैवमुपरुध्यते 36,26. — Vgl. उपरोध fgg. — caus. *verkürzen, verringern, Einbusse erleiden lassen:* धर्मार्थविद्याकालाननुपरोधयन्कामसूत्रं तदङ्गविद्याश्च पुरुषो ऽधीयीत Verz. d. Oxf. H. 216,b,29.

— प्रत्युप *verstopfen:* प्रत्युपरुद्धकण्ठो न किंचिदूचे ऽश्रुपरिप्लुताक्षः Bhâg. P. 11,29,35.

— समुप *hemmen, unterbrechen, stören:* शीघ्रं हि कुर्वतः कर्म धर्मः समुपरुध्यते MBh. 13,2148.

— नि 1) *zurückhalten, festhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen:* श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासो अग्मन् RV. 1,122,7. स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः 7,6,5. दस्युभिर्निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम् MBh. 4,199. एतांश्चापि निरोत्स्यामि वेलेव मकरालयम् 5,2281. 7,5335. Hariv. 5810. Çâk. 16,16. निवेष्टुकामं न्यरौत्सीत् Verz. d. Oxf. H. 259,a,20. त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः Spr. 3020. सज्जमानमकार्येषु निरुन्ध्युर्मन्त्रिणो नृपम् 3116. निरुद्धा मक्षिकाभिः Varâh. Brh. S. 92,2. Kathâs. 4,36. 42,127. Râga-Tar. 1,322. किं धर्मेण निरुध्यसे 4,32. Mârk. P. 102,3. Bhatt. 16,20. वेगादरुं प्रविसृतं पवनं निरुन्ध्याम् so v. a. *einholen* Mrkkh. 10,20. स्रोतः *hemmen* Suçr. 1,102,2. 262,8. निरुद्धालेपनसंज्ञस्तेनास्रावसंनिरोधः *den Ausfluss hemmend* 64,13. पक्ष्मप्रान्तव्रजपुटनिरुद्धेन बाष्पेण Spr. 1720. mit Ergänzung von रथम् so v. a. *lenken* Çâk. 169. *abhalten, abwehren:* निरुन्धानो अमतिं गोभिः RV. 1,53,4. वृत्रा 8,2. Ait. Br. 1,10. 3,36. स्नावादुदकात् Çat. Br. 13,4,2,17. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren:* न्यरुन्धन्नुद्गलद्बाष्पम् Bhâg. P. 1,10,14. 11,33. 3,23,50. अन्तरिते गतिर्येषां दर्शनं च न्यरुध्यत (so ist zu lesen) MBh. 4,1053. Hariv. 11770. 11781. निद्रामौद्ध्यं निरुन्धानः Spr. 1756. ऐहिकामुष्मिकान्कामान्निरुध्य Mârk. P. 39,23. निरुद्धा वासनाः केन Râga-Tar. 3,424. Sarvadarçanas. 164,5. Bhatt. 3,39. तदा या निरुणद्धि यात्राम् Varâh. Brh. S. 89,14. 86,56. — 3) *einschliessen, einsperren:* अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः RV. 1,32,11. निरुद्धश्चिन्मात्कृषस्तर्ष्यावान् 10,28,10. याचितां निरुन्धानः *einschliessend, nicht herausgebend* AV. 12,4,36. 5,17,12. Çat. Br. 3,7,2,8. विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेश्मनि M. 11,176. Kathâs. 34,184. गिरिव्रजे निरुद्धानां राज्ञां कृत्स्नेन मोक्षणम् MBh. 1,409. R. 5,16,51. निरुद्धतोय (मकरालय) 93,11. Bhâg. P. 5,26,34. मनो हृदि निरुध्य Bhag. 8,12. einen Weg *versperren:* निरुन्धानाः सतां मार्गम् Kâm. Nitis. 4,12. मार्गं निरोद्धुम् Mrkkh. 85,23. न्यरुन्धंश्चास्य पन्थानम् Bhatt. 17,49. einen Ort *einschliessen, belagern:* निरुरुधुः — बलैर्नृपमन्दिरम् Râga-Tar. 1,368. राजधानीं निरुद्धवान् 6,125. Bhâg. P. 9,6,16. 10,50,4. 76,9. *verschliessen, schliessen:* निरुद्धे नन्दिना द्वारे Kathâs. 1,46. 50,188. निरुद्धवातायनमन्दिर Rt. 5,2. श्रोत्रे निरुद्धे मया Spr. 996. die Sinne, das Herz (gegen die Aussenwelt) *verschliessen:* निरुध्य चेन्द्रियग्रामम् MBh. 3,13633. निरुद्धचेतसो ऽक्षाणि निरुद्धान्यखिलान्यपि Spr. 1604. मनो निरुन्ध्यात् 2867. द्वारं निरुध्यामुम् Bhâg. P. 4,8,80. निरुद्धकरणाशय 1,13,53. यदा चित्तं

निरुध्यते Sarvadarçanas. 177,12. 164,4. fgg. Bhag. 6,20. — 4) *verhüllen, verdecken:* निरुद्धं गगनं सर्वं व्यभ्रं मेघैः समन्ततः MBh. 13,2069. Hariv. 8782. R. 5,8,24. Suçr. 1,23,2. Varâh. Brh. S. 24,15. 28,6. 47, 26. Râǵa-Tar. 1,369. Bhâg. P. 2,9,37. Bhatt. 7,70. — 5) *erfüllen, anfüllen:* बाष्पनिरुद्धकण्ठी R. Gorr. 2,123,24. Bhâg. P. 6,14,50. धूपगन्धनिरुद्ध (स्थान) MBh. 14,1921. खगपदन्ततैः पर्णैर्निरुद्धं नीलकोमलैः (वनम्) R. Gorr. 2,98,5. वाजिशालाः — निरुद्धा महिषैरिव Râǵa-Tar. 4, 165. Bhâg. P. 3,17,17. — 6) *unterdrücken* so v. a. *verschwinden machen* Çiç. 4,55. युगे युगे भवन्त्येते सर्वे दत्तादयो नृपाः। पुनश्चैव निरुध्यन्ते *und verschwinden wieder* Hariv. 112 = VP. bei Muir, ST. I, 27, N. 45. ग्रहो राजन्निरुद्धास्ते कालेन हृदि ये कृताः Bhâg. P. 9,3,32. — 7) निरुद्ध so v. a. ग्रपरुद्ध *verstossen* Pańkav. Br. 9,1,9. Kâth. 13,5. — 8) निरुध्य MBh. 3,962 fehlerhaft für निरुध्य (wie schon Westergaard vermuthet hatte), निरुध्यतु 13,4530 fehlerhaft für विरुध्यतु; die Bomb. Ausg. hat an beiden Stellen die richtige Lesart. निरुध्यत्पदम् Râǵa-Tar. 2,165 wird wohl auch unrichtig sein. — Vgl. निरुद्ध fg., निरोद्धव्य fgg. — caus. 1) *einschliessen:* वायुं निरोधयेत् Verz. d. Oxf. H. 234,*a*,31. 33. — 2) *verschliessen lassen:* द्वारान् (!) Râǵa-Tar. 5,428.

— उपनि *einsperren, einschliessen, eintreiben:* पशून् Çat. Br. 3,7,3,3.

— संनि 1) *zurückhalten, festhalten:* °रुद्ध MBh. 3,1613. 6,1964 (स निरुद्धेषु ed. Bomb.). 7,933. 4433. स्वकर्मभिर्मानवं संनिरुद्धम् 13,2956 = 3,12728, wo fälschlich स्वकर्मभिर्दानवसंनिरुद्धे gelesen wird. — 2) *hemmen, unterdrücken, aufheben:* श्रुतिश्च संनिरुध्यते पुरा तवेह MBh. 12,12082. कामक्रोधस्य लोभस्य (मोहस्य die ältere Ausg.) संनिरुद्धस्य मेधया Hariv. 11696. यद्यपि न संनिरुध्यते दुःखम् Wilson, Sâmkhjak. S. 10. प्राणायामैः संनिरुद्धषड्वर्गः Bhâg. P. 4,23,8. प्राणापानौ संनिरुध्यात् 7, 15, 32. — 3) *einschliessen, gefangen halten* Çvetâçv. Up. 4, 9. Hariv. 10230. Bhâg. P. 9,15,22. Verz. d. Oxf. H. 236,*a*,2. ग्रग्निहोत्रं संनिरुद्धाग्नि so v. a. *zusammengeschürt* R. 7,24,10. 36,5. (vor der Aussenwelt) *verschliessen:* संनिरुध्येन्द्रियग्रामम् Spr. 5161. पञ्चेन्द्रियस्य ग्रामस्य नवद्वारस्य — संनिरुद्धस्य Hariv. 11696. — 4) *erfüllen, anfüllen, voll machen:* देहेन तस्य महतस्य — संनिरुद्धो महार्णवः स शैलेनेव लक्ष्यते Hariv. 4733. रोमभिः संनिरुद्धाङ्गम् MBh. 12,87. — Vgl. संनिरुद्धगुद, °रोद्धव्य, °रोध.

— परि 1) *einschliessen:* इयमेवैनमर्चिर्भ्यां परिरोधमानयति TBr. 3,9, 17,3. — 2) *Jmd zurückhalten* Spr. 971. — 3) *anfüllen:* बाष्पपरिरुद्धात R. Gorr. 2,16,38. 7,24,26. — Vgl. परिरोध.

— प्र 1) *Jmd zurückhalten:* माता मे प्ररुणद्धि (संरुणद्धि Sâv. 5,82) माम् MBh. 3,16830. — 2) *hemmen, sperren:* ग्रतीर्थेन त्वा ग्रयमधर्युराक्रुतीः प्रारौत्सीत् Çat. Br. 11,4,2,14. प्राणान् 12,4,3,6. Pańkav. Br. 13,4,11.

— संप्र pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* °रुध्यते im Gegens. zu युज्यते Hariv. 11778. समवरुध्यते die neuere Ausg.

— प्रति 1) *abhalten, zurückhalten, hemmend entgegentreten, sich widersetzen:* तं यः प्रतिरुन्धेच्छः स प्रतिरुन्धेत्तस्मान्न प्रत्यरौत्सि Ait. Br. 6,34. TS. 6,4,2,2. प्रतिरुध्य गुरुम् M. 11,88. MBh. 5,7144. ग्रन्योऽन्यं प्रत्यरुन्धताम् Bhâg. P. 10,44,4. प्रतिरुद्धव R. 4,60,3. दैवं पुरुषकारेण प्रतिरोद्धुम् R. Gorr. 2,20,9. ग्रप्रतिरुद्धेन प्रज्ञानेन *ungehemmt* Bhâg. P. 2,9,24. ग्रप्रतिरुद्धचक्र 4,16,27. यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः *unterbrochen, gestört* M. 11,11. — 2) *einschliessen, einsperren:* नगरे प्रतिरुद्धः MBh. 5,1214. भ्रातरं पूर्वजं हि यः। ग्रश्मभिः प्रत्यरौत्सीत् — बिले R. 4,55,3. *absperren:* प्रतिरुध्य रणाजिरम् MBh. 5,7320. die Sinne u. s. w. (gegen die Aussenwelt): प्रतिरुध्येन्द्रियाणि 823. प्रतिरुद्धेन्द्रियप्राणमनोबुद्धि Bhâg. P. 1,18,26. — 3) *verhüllen, verdecken:* ते दिशो विदिशः सर्वे प्रतिरुध्य प्रहारिणः MBh. 3,12114. Hariv. 13611. — Vgl. प्रतिरोद्धर् fgg.

— वि 1) med. *Widerstand finden:* पुरस्ताद्यवानां सवित्रा विरुन्धते। सवित्रैव विरुध्य ब्रह्मणा यवानादधते *durch S. finden sie Widerstand vor dem Getraide, durch das Br. nehmen sie es in Besitz* TBr. 1,8,4,1. — 2) विरुध्यते und °ति *a) streiten, in Feindschaft leben, Feindschaft beginnen, kämpfen mit* (instr., instr. mit सह, gen., loc., acc. mit प्रति): नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये MBh. 12,9349. यद्याकस्माद्विरुध्यते 6275. Spr. 3276. ग्रन्योऽन्यं विरुध्यते (विक्रुध्यन्ते ed. Bomb.) MBh. 1,1357. व्यरुध्यन्त परस्परम् Vâju-P. bei Muir, ST. I, 31, N. 56. ब्राह्मणैश्च विरुध्यते MBh. 5,1063. Hariv. 7313. Spr. 2836. 4288. 4922. Bhâg. P. 10,1,68. Mârk. P. 27,10. बन्धुभिश्च विरुध्यतु (निरु° ed. Calc.) MBh. 13,4530. 4572. 4577. R. 7,61,8. चाषस्य काकेन विरुध्यतः Varâh. Brh. S. 88,24. मृत्युर्धुवस्ते ऽद्य मया विरुध्य R. 3,44,31. त्वया सह विरुध्यन्ते MBh. 2,227. तत्कथं सह पित्राहं विरुध्येयम् R. Gorr. 2,23,17. fg. तत्त्वमं न विरोद्धुं ते सह तेन 4,14,19. न च ते ऽहं विरुध्यामि कस्मान्मां हतवानसि 16,19. यस्मिन्विरुध्य दशकंधर ग्रार्तिमार्छत् Bhâg. P. 2,7, 23. इन्द्रेण — ग्रस्मान्प्रति (so trennen wir) विरुध्यता R. 5,41,8. *bekämpfen:* ब्रह्म (acc.) क्षत्रं (nom.) यत्र विरुध्यतीह MBh. 12,2782. विरुद्ध *im Streite liegend, in Feindschaft lebend, feindselig gestimmt, verfeindet* R. 2,1,13. 4,55,9. Kâm. Nîtis. 15,55. Spr. 123 (zugleich *eingeschlossen*). 253. Varâh. Brh. S. 95,46. 97,12. Kathâs. 39,229. 45,306. निहत्याहं विरुद्धानां रक्षिता नमतां पुनः 46,158. 74,101. Râǵa-Tar. 5,452. Hit. ed. Johns. 2126. परस्परेणाविरुद्धाः R. 1,7,8 (11 Gorr.). राघवेण विरुद्धस्य तव 3,41,31. 4,57,18. 5,48,13. Spr. 1679. मद्बलेन विरुद्धाय *dem, der sich meiner Macht widersetzt,* R. 2,23,25. तपश्चराणां मृदुसौम्यशीलिनां सदा विरुद्धं त्वहि रावणम् 5,89,33. ग्रविरुद्धस्ततस्तस्य क्षणेन समपद्यत MBh. 12,4271. Kathâs. 60,142. परस्पराविरुद्धाः Ragh. 10,81. राजविरुद्धानाम् Spr. 4871. Râǵa-Tar. 4,165. von Planeten Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,1 v. u. *feindselig* so v. a. *unerwünscht, widerwärtig, gehässig* u. s. w.: लक्षण R. 5,27,32. चेष्टित Kathâs. 74,161. °शंसन = गालि H. 272. विरुद्धमकरोन्मयि Kathâs. 20,129. 5,4. 44,123. मा स्याद्राजकुले किंचिद्विरुद्धम् 49,132. ग्र° 71,210. विरुद्धमिदं त्वयानुष्ठितं यन्मह्यं प्रदाय कन्यान्यस्मै प्रदत्तेति Pańkat. 130,1. 59,25. यदि त्वां प्रति विरुद्धमाचरामि 213, 20. ग्रन्यथा विरुद्धं ते फलिष्यति (ग्रन्यथा ते विरुद्धं फलं भविष्यति v. l.) Hit. 58,18. विरुद्धधी *Feindseliges im Sinne habend, schadenfroh* Râǵa-Tar. 1,303. ग्रस्मद्विरुद्धं कुरुते Kathâs. 45,167. परविरुद्धेषु नोत्सहन्ते महाशयाः 17,149. कर्म लोकविरुद्धम् R. 3,35,4. — *b) in Widerspruch stehen mit Etwas, einen Widerspruch bilden:* एतद्विरुध्यते MBh. 13,5595. Çańk. zu Brh. Âr. Up. S. 39. 94. Nîlak. 157. Muir, ST. 4,221. न च केन च धर्मेण (so die ed. Bomb., Nîlak. erwähnt aber auch die Lesart der ed. Calc.) विरुध्यन्ते प्रजा इमाः MBh. 8,2074 (vgl. R. 4,17, 33). सेयं भगवतो माया यन्नयेन विरुध्यते Bhâg. P. 3,7,9. यत्स्ववाचो वि-

रुध्येत 10,77,30. विरुद्ध *in Widerspruch stehend, einen Widerspruch enthaltend, widerstreitend, widersprechend, entgegengesetzt, logisch einander ausschliessend* (die Ergänzung im gen., instr. oder im comp. vorangehend) Kâty. Çr. 5,11,25. किमिदं वर्तसे भद्रे विरुद्धं यौवनस्य ते R. 7,17,4. विरुद्धं धर्मकीर्तिभ्याम् R. Gorr. 2,58,29. तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् M. 8,46. धर्म° R. 4,17,33. 5,47,17. 48,4. धर्मविरुद्ध Bhag. 7,11. परस्परविरुद्धानाम् M. 7,152. विरुद्धं बहु भाषते Jâǵñ. 2,14. Kap. 1,23. Mṛkkh. 13,12. Çâk. 177. नियच्छत्तद्विरुद्धः *ist das Entgegengesetzte davon* AK. 3,3,13. Çiç. 9,62. Spr. 1927. Kathâs. 28,183. Sâh. D. 205. 574. 214,2. Prab. 20,17. 52,14. Sarvadarçanas. 12,2. 3. 22,12. 26,2. 44,12. 45,2. 49,17. 50,6. 9. 11. 18. 61,11. 130,15. 163,19. Pańkat. 131,11. 199,4. Trik. 3,3,463. Schol. zu P. 1,3,50. 2,4.13. Siddh. K. zu P. 3,1,96. Bhâg. P. 4,9,16. 6,4,32. 10,88,2. Vedântas. (Allah.) No. 99. Schol. zu Kap. 1,155. Nîlak. 4. Verz. d. Oxf. H. 241,*b*,13. Verz. d. B. H. No. 973. विरुद्धोक्ति = विप्रलाप H. 276. हेत्वाभास Tattvas. 41. Bhâshâp. 70. 73. Sarvadarçanas. 119,16. विरुद्धत्व 45,20. विरुद्धता 166,14. — 3) विरुद्ध *dem Gesetze* u. s. w. *widersprechend, verboten, unerlaubt:* कर्मन् M. 4,15. Maitrjup. 6,34. Jâǵñ. 1,129. MBh. 3,9995. R. 2,58,26. — 4) विरुद्ध *misslich, bedenklich, gefährlich:* कार्य R. 5,77,19. ब्राह्मणत्वं ते विरुद्धमिह दृश्यते MBh. 13,1920. — An den Schluss stellen wir diejenigen Bedeutungen, die der Wurzel eigentlich in Verbindung mit andern Präpositionen zukommen: 5) *festhalten:* बाहुदण्डविरुद्ध R. 4,10,21. — 6) *hemmen, unterdrücken:* स्वरश्च व्यरुध्यत *die Stimme versagte ihm* R. 2,36,10. येन — अम्बरे गतिः। सिद्धादीनां विरुद्धाभूत् Kathâs. 45,85. अविरुद्ध *ungehemmt* Vikr. 49,11. — 7) *einschliessen:* विरुद्ध *eingeschlossen* Spr. 123 (zugleich *feindselig gestimmt*). *belagern:* व्यरुन्धन् (अरुन्धन् ed. Bomb.) मिथिलाम् R. 1,66,21. *verschliessen, zuhalten:* घ्राणं करेण विरुणद्धि (च रु° v. l.) Ṛt. 6,26. — Vgl. विरोद्धव्य u. s. w., मनोविरुद्ध, वाचाविरुद्ध. — caus. 1) *verfeinden, entzweien:* कथंचनायं तत्रापि पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह । विरोधयेत् MBh. 11,705. संधेयानपि संधत्स्व विरोध्यांश्च विरोधय 12,2050. विरोधयामास मिथो विष्णुं शंकरमेव च R. Gorr. 1,77,18. यदन्योऽन्येन ते पुत्रा विरोध्यन्ते कथंचन MBh. 3,360. — 2) *gegen Jmd feindlich auftreten, befeinden, bekämpfen:* तं विरोध्य R. 3,62,9. प्रधानसभिको माथुरो मया विरोधितः Mṛkkh. 35,20. न विश्वसेत्पूर्वविरोधितस्य शत्रोश्च मित्रत्वमुपागतस्य Spr. 1463. mit gen.: कुलस्यास्य यद्विरोधयसे भृशम् Hariv. 4194. — 3) *Etwas bestreiten, Einwendungen machen gegen:* ज्ञानीयादागमान्सर्वान्याह्यं च न विरोधयेत् MBh. 10,180. अविरोधित so v. a. *nicht ungern gesehen* Çiç. 10,69. भूता ह्यर्था विनश्यन्ति देशकालविरोधिताः। विक्लवं दूतमासाद्य so v. a. *weil Ort und Zeit ihnen ungünstig sind* Spr. 4671. — desid. *Feindschaft zu beginnen trachten:* विरुरुत्सति MBh. 5,3265.

— प्रतिवि scheinbar R. 5,41,8, wo aber अस्मान्प्रति विरुध्यता zu trennen ist.

— सम् 1) *aufhalten, zurückhalten:* स चेत्तु पथि संरुद्धः पशुभिर्वा रथेन वा M. 8,295. माता मे संरुणद्धि माम् Sâv. 5,82. ततः प्रवेशे संरुद्धो (so die neuere Ausg.) रक्षिभिः Hariv. 9120. Râǵa-Tar. 5,453. भ्रातुर्वचनसंरुद्धः R. 4,34,2. बाष्पसंरुद्धा *durch Thränen gehindert* 2,24,1. तृणामिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि *festhalten, fesseln* Spr. 82. सत्यपाशेन संरुद्धः स्ने-

हस्तस्य न लुप्यते R. Gorr. 2,50,18. यो मोचयति संरुद्धमिदं प्रवहणं मम Kathâs. 18,296. *in feindlicher Absicht Jmd festhalten, angreifen:* तं संरुरोध योद्धारं संगरे Râǵa-Tar. 1,61. अज्ञाविके तु संरुद्धे वृकैः M. 8,235. *zurückhalten, abwehren:* °निस्त्रिंशान् — चर्मणा संरुरोध MBh. 7,559. विंशत्या सायकैः — पुनश्चैव शतेनास्य संरुरोध महारथम् 7708. *verhalten, vorenthalten, versagen:* संरुद्धप्रजनन Nir. 5,2. कच्चिन्न — आश्रितानां मनुष्याणां वृत्तिं त्वं संरुणत्सि वै MBh. 2,226. संरुद्धचेष्ट *gehemmt* Ragh. 2,43. — 2) *eintreiben, einschliessen, einsperren, absperren, gefangen halten* Çat. Br. 1,2,4,11. fgg. Nir. 6,16. राज्ञो मागधसंरुद्धान्मोक्षयिष्यति MBh. 13,6839. संरुद्धा गिरिकन्दरे Hariv. 6940. R. 4,9,23. सीतां संरुन्धता बलात् 6,94,23. गर्दभं प्राप्य संरुध्य दोग्धुमारेभिरे यावत् Kathâs. 63,188. केदारखण्डे निःसरमाणमुदकमवारणीयं संरोद्धुम् MBh. 1,693. संरुद्धा नगरी *eingeschlossen, belagert* R. 6,17,2. संरुद्धनासाग्रो वामपाणिना *zugehalten* Kathâs. 82,30. समरुद्धेव विक्रमः *schloss sich gleichsam ein* Bhaṭṭ. 6,34. eine Stadt *einschliessen, belagern* Hariv. 4973. R. 6,17,2. Râǵa-Tar. 1,59. Bhâg. P. 10,50,5. einen Weg *versperren:* मार्गं संरुध्य MBh. 3,2541. कदलीखण्डसंरुद्धनलिनीपुलिन *eingeschlossen von* Bhâg. P. 4,6,21. मनः संरुध्य *verschliessen* MBh. 3,13633. धैर्यसंरुद्धमानस R. Gorr. 2,30,26. — 3) *verhüllen, bedecken:* मेघैश्च गगनं नीलैः संरुद्धमभवद्घनैः MBh. 13,6870. दिवाकरः संरुद्धः R. 3,33,12. — 4) *verstopfen* Kathâs. 53,110. कफसंरुद्धनाडि Bhâg. P. 3,30,17. बाष्पसंरुद्धकण्ठ R. 4,15,30. अश्रुसंरुद्धनयना *angefüllt mit* 19,30. 5,33,16. — Vgl. संरोध. — caus. *absperren lassen:* पालीभिरम्भः संरोध्य Râǵa-Tar. 5,106.

— अतिसम्, प्रहर्षेणातिसंरुद्धा so v. a. *vor Freude überfliessend* R. 6,98,11.

— अभिसम् 1) *hindrängen zu, halten bei:* तानाग्नीध्रमभिसंरुरुधुः Çat. Br. 3,6,1,28. — 2) *zurückhalten, abhalten:* तं तु द्वारस्थाः (so die ed. Bomb.) — न शेकुरभिसंरोद्धुम् R. 2,14,42. — 3) *verhüllen, verdecken:* अन्योऽन्यमभिसंरुद्धाः प्रकाशं न चकाशिरे R. 6,31,38.

— उपसम् *hindrängen zu, halten bei* Çat. Br. 1,2,4,11. fg.

— प्रतिसम् *in sich einschliessen, einziehen:* प्रतिसंरुद्धविक्रम Bhâg. P. 3,11,27.

3. रुध् (= 2. रुध्) adj. *zurückhaltend, hemmend:* कर° Megh. 40.

रुध (von 2. रुध्) adj. dass. in अगोरुध.

रुधिक्रा (रुधिऽक्रा Padap.) m. N. pr. eines von Indra besiegten Dämons ṚV. 2,14,5.

रुधिर Uṇâdis. 1,52. 1) adj. *roth, blutig:* क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि AV. 5,29,10. — 2) m. *a*) *der blutrothe Planet* d. i. *Mars* H. an. 3,597. Med. r. 208. Spr. 2649. Varâh. Bṛh. 2,13. 4,18. 22,6. — *b*) *ein best. Edelstein;* s. रुधिराख्य. — 3) n. AK. 3,6,2,22. *a*) *Blut* AK. 2,6,2,15. H. 621. H. an. Med. Halâj. 3,10. 5,44. Çat. Br. 14,6,9,31 (proparox.). यदा गवां स्तनेषु रुधिरं स्रवति Shaḍv. Br. 6,9. रुधिरे च स्रुते M. 4,122. वमन्तो रुधिरं बहु MBh. 1,1170. फेनिल 5936. °लालस 12,4273. °ताम्राक्ष R. 2,50,4. रुधिरेणावसिक्ताङ्गः 64,26. MBh. 1,7730. °चर्चितसर्वाङ्गी Vet. in LA. (III) 21,14. Suçr. 1,5,2. 46,20. 118,13. 259,8. Varâh. Bṛh. S. 3,24. 30. 28,12. 47,16. °बिन्दु Pańkat. 123,14. °वर्ष Shaḍv. Br. 6,8. Varâh. Bṛh. S. 21,26. °सार *bei dem das Blut vorwaltet* Varâh. Lagh. 2,14. plur. Spr. 756. Pańkat. 171,11. am Ende

eines adj. comp. f. ञ्रा MBh. 7,4645. Varâh. Bṛh. S. 27,5. Kathâs. 26, 144. रुधिराध्याय Titel eines Abschnitts im Kâlikâ-P. Verz. d. Oxf. H. 78,*a*, No. 122. — *b*) *Saffran* Trik. 3,3,367. H. an. Med. Hâr. 260. — *c*) N. pr. einer Stadt Hariv. 9823; vgl. शोणितपुर.

रुधिराक्त s. रुधिराख्य.

रुधिराख्य adj. *blutbenannt*, subst. Bez. *eines best. Edelsteins* Varâh. Bṛh. S. 80,4. Gâruḍa-P. 181 im ÇKDr. Ratnaparîkshâ 35. रुधिराक्त Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,14.

रुधिरानन n. Bez. *einer der fünf rückläufigen Bewegungen des Mars* Varâh. Bṛh. S. 6,4.

रुधिरान्ध N. einer Hölle VP. 207. 209. so in beiden Ausgg., obgleich gesagt wird, dass der Name *whose wells are of blood* bedeute; dieses wäre aber रुधिरान्धु.

रुधिरामय m. = रक्तपित्त *Blutsturz* Suçr. 2,473,4.

रुधिराशन adj. *von Blut sich nährend*, Beiw. der Râkshasa R. 1, 32,20. von Pfeilen R. Gorr. 2,20,41.

रुधिरोद्गारिन् adj. *Blut ausspeiend;* m. Bez. *des 57sten Jahres im 60jährigen Jupitercyklus* Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,7. — Vgl. उद्गारिन् in den Nachträgen.

1. रुप्, रुप्यति (विमोहने) Dhâtup. 26,125. *Reissen* (im Leibe) *haben:* तासां ज्ञग्धा रुप्यत्त्येत् TBr. 2,1,1,2. तस्य विषस्य न कश्चनाम्रात् य ञ्राम्रात्सो ऽरुप्यत् Kâth. 25,4. — Vgl. लुप्, *rumpere.*

— caus. रोपयामि, ञ्ररूरुपत् 1) *Reissen verursachen:* (विष) नामीमदो नारूरुपः AV. 4,6,3. ज्ञत्तिवांसं न रूरुपः (so zu vermuthen) 7,3. 5. 6; vgl. AV. Prât. 4,86. — 2) *abbrechen:* यज्ज्यायो ऽवच्छेद्रोपयेत्तप्यज्ञस्यं TS. 2, 6,8.4. मा रूरुपाम यज्ञस्यं TBr. 3,7,5,6. — Vgl. 1. रोपण.

2. रुप् nach dem Comm. so v. a. *Erde:* ञ्रग्रे रुप ञ्रारुपितं ज्ञबारु RV. 4,5,7. पाति प्रियं रुपो ञ्रग्रं पदं वेः 8. पञ्च पदानि रुपो ञ्रन्वरोहम् 10,13,3.

रुपेटि f. *Nebel, Dampf* Çabdârthak. bei Wilson.

रुम 1) m. parox. N. pr. eines Mannes RV. 8,4,2. — 2) f. ञ्रा N. pr. *a*) einer Salzgrube H. 941. an. 2,335. Med. m. 27. Halâj. 2,14. LIA. I, 249, N. 3. °भव adj. *dort gewonnen* (= रौमक) H. 942. — *b*) einer Frau des Affen Sugrîva H. an. Med. R. 4,17,28. 33,37. 43. 35,5. 55,14.

रुमणवत् P. 8,2,12. m. N. pr. 1) eines Mannes: ज्येष्ठो ज्ञामदग्न्यो रुमणवान्नाम नामतः MBh. 3,11080 (S. 572). eines Sohnes Supratîka's Kathâs. 9,44. 10,213. 12,37. 14,34. 15,4. 34,114. सरुमणवत्क adj. 14,58. 15,109 (wo सरु° zu verbinden ist). 21,3. — *b*) eines Berges P. 8,2,12, Sch.

रुम्र Uṇâdis. 2,14. adj. = ञ्ररुण und शोभन Uǵǵval.

रुरु Uṇâdis. 4,103. m. 1) *eine Hirschart* AK. 2,5,10. Trik. 3,3,368. H. 1293. an. 2,449. Med. r. 80. Halâj. 2,75. VS. 24,27. 39. MBh. 2, 2520. 3,1961. 2402. 15629. 5,2314. 7,3792. 8,3337. 12,7978. Spr. 3775. R. 2,93,2. R. Gorr. 2,114,33. Suçr. 1,204,10. 21. Ragh. 9,51. 72. Varâh. Bṛh. S. 48,76. 86,38. 48. Bhâg. P. 3,10,20. 4,6,20. °रक्त Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,4. °नखधारिन् (Kṛshṇa) Pañkar. 4,8,35. रुरुपृषतम् P. 2,4,12, Vârtt. 1, Sch. Çâkjamuni als रुरु Vjâḍi zu H. 233. रुरु am Ende eines comp. nach dem verglichenen Wesen gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — 2) *ein best. reissendes Thier*, eine zur Erkl. von रौरव wohl nur erfundene Bed. Bhâg. P. 5,26,11. fg. *Hund* H. ç. 180. — 3) *ein best. Fruchtbaum* gaṇa प्लक्षादि zu P. 4,3,164. — 4) N. pr. *a*) eines Sohnes des Ṛshi Pramati und der Ghṛtâkî (einer Apsaras) MBh. 1,871. fg. 940. fgg. 13,2004. Kathâs. 14,76. 28,88. eines unter den Viçve Devâs aufgeführten göttlichen Wesens, welches den Beinamen ऋषिपुत्र führt, Hariv. 11543. eines der 7 Weisen unter Manu Sâvarṇi, mit dem patron. Kâçjapa, 454. — *b*) eines von der Durgâ getödteten Dânava Trik. H. an. Med. Kathâs. 26, 144. 53,171. 78,90. 109,101. Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,13. — *c*) einer Form Bhairava's Verz. d. Oxf. H. 25,*b*, N. 5. 250,*a*,18. — Vgl. महा°, रौरव, रौरवक.

रुरुक m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 759. fg. VP. 373. — Vgl. रौरुकि.

रुरुक्षणि (vom desid. von 1. रुज्) adj. *zu zerstören fähig:* शतं पुरो रु° RV. 9,48,2.

रुरुदिषु (vom desid. von 1. रुद्) adj. *zu weinen im Begriff stehend, weinerlich gestimmt* Weber, Râmat. Up. 336. Bhaṭṭ. 7,99.

रुरुभैरव s. u. रुरु 4) *c*).

रुरुमुण्ड m. N. pr. eines Berges, v. l. für उरुमुण्ड Burn. Intr. 378, N. 3.

रुरुशीर्षन् adj. *das Haupt vom* रुरु *genannten Hirsche* (d. h. *eine Hornspitze*) *habend*, von einem Pfeile RV. 6,75,15.

रुवण्य् (von einem nicht vorhandenen रुवण, nom. act. von रु), °यति *grobe* oder *kreischende Töne von sich geben:* उप भूष ज्ञरितर्मा रुवण्यः ञ्रावया वाचं कुविदङ्ग वेदत् RV. 8,85,12.

रुवण्यु (von रुवण्य्) adj. *kreischend:* ञ्रा वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे RV. 1,122,5.

रुवथ (von रु) Uṇâdis. 3,116. m. 1) *das Brüllen des Stieres* Kâth. 36, 9. — 2) *Hund* Uǵǵval.

रुवु m. *Ricinus communis* (एरण्ड) Ratnam. 3. Çârṅg. Saṁh. 1,4,18. = रक्तैरण्ड Râǵan. im ÇKDr.

रुवुक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDr. = रक्तैरण्ड Râǵan. ebend. — Vgl. उरुवूक, रुचक, रुवूक, रूवुक.

रुवूक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDr. auch रुवूकु (!) ebend.

रुष् s. 1. रुष् und 1. रुशत्.

रुशङ्गु m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 345,*a*,32. नृषङ्गु v. l. — Vgl. रुशद्गु.

रुशत्पशु adj. *weisses Vieh —, weisse Heerden habend* RV. 5,75,9.

रुशदूर्मि adj. *weisswogig, lichtwogig* RV. 1,58,4.

रुशद्गु 1) adj. *weisse Rinder habend* RV. 5,64,7. — 2) m. N. pr. eines Mannes; so ist nämlich wohl für रुशङ्गु, रुषङ्गु, रुषद्गु, उषङ्गु, उषद्गु, ऋषद्गु, ऋष्यङ्गु, नृषङ्गु zu lesen.

रुशद्रथ 1) adj. *einen lichtfarbigen Wagen habend.* — 2) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9,23,3.

रुशद्वत्स adj. *weisskalbig* RV. 1,113,2.

रुशना f. N. pr. einer der Gattinnen Rudra's: धीर्धृती रुशना u. s. w. Bhâg. P. 3,12,13. धीर्वृत्तिरुशना ed. Bomb., was richtiger ist, da nur 11 Namen erwartet werden.

1. रुशत् adj. (pflegt als partic. von रुच् betrachtet zu werden) *licht, lichtfarbig, hell, weiss* (vgl. λευκός), Gegens. कृष्ण, श्याव. कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिः RV. 1,62,8. 113,2. 4,7,9. ञ्रर्चि 1,48,13. 92,5. भानु 2.

युवं श्यावाय रुशतीमदत्तम् *dem Schwarzen eine Weisse* 117,8. पयः 62,9. 4,3,9. 6,72,4. 8,82,13. पात्रः 3,29,3. 4,11,1. 51,9. रुशद्वत्सानः 5,15. वासः 7,77,2. अग्नि 6,1,3. 6,1. ऊर्मयः 64,1. गावः 3. उत्तराः 8,1,33. वत्स 61, 5. ऊधस् 10,31,11. तनू 85,30. 10,75,7.

2. रुशत् s. u. 1. रुष्.

रुशम 1) m. proparox. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,3,13. 4,2. VÂLAKH. 3,9. pl. रुशमाः ṚV. 5,30,12. 15. AV. 20,127,1. — 2) f. आ N. pr. Ruçamâ wettet mit Indra, wer schneller die Erde (भूमि) umlaufe; Indra umkreist die Erde, Ruçamâ das Land Kurukshetra und gewinnt, PAṄKAV. BR. 25,13,3.

रुशेकु m. N. pr. eines Fürsten BHÂG. P. 9,23,30. Andere Bücher lesen रुषद्रु, उषद्रु, ऋषद्रु u. s. w.

1. रुष्, रुश्, रुशति (हिंसायाम्) DHÂTUP. 28,126. रुशत् und रुषत्; रोषति (हिंसायाम्) DHÂTUP. 17,42. रुष्यति (रोषे, v. l. हिंसायाम्) 26, 120. रुष् erhält keinen Bindevocal KÂR. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. अरुषत्; रोष्टा und रोषिता P. 7,2,48. VOP. 8,79. partic. रुष्ट und रुषित P. 7,2,28. VOP. 26,113. 1) *unwirsch —, missmuthig —, widerwärtig sein, zürnen:* छिन्दन्निव वषट्कुर्वद्रुषन्निव (°द्रूषन्निव die Ausg., पेषयन् Comm.) ब्रुक्रुयात् ÂÇV. ÇR. 9,7,12. सा पशून्क्षिणाति रिफती रुशती AV. 3,28,1. या समा रुशत्येति *das Jahr, das sich übel anlässt*, KAUÇ. 102. न या रोषति न ग्रभत् AIT. BR. 4,10. रणे यस्य च रुष्यामि मुहूर्तं स न जीवति R. 3,35,27. 7,59,3,21. इन्द्रेण रुष्यता 4,43,20. रुष्यन्ती 5,36,39. अरुष्यत्रुष्यमाणस्य (क्रुश्यमानस्य die eine, क्रुष्यमाणस्य die andere Ausg. des MBH.) सुकृतं नाम विन्दति। दुष्कृतं चात्मनो मर्षी रुष्यत्येवापमार्ष्टि वै ॥ Spr. 3586. ततोऽरुष्यत् BHAṬṬ. 17,40. मा कर्मणा मनसा वापि वाचा भर्तुर्भविष्यं रुषती HARIV. 7796. मा रुषः MBH. 7,2054. BHAṬṬ. 15,16. 52. रुष्य absol. R. 2,98,12. partic. रुष्ट (Gegens. तुष्ट) *ergrimmt, aufgebracht, erzürnt, zornig* KÂR. zu P. 3,2,188. HARIV. 8121. R. 3,30,37. Spr. 622. क्वचिद्रुष्टः क्वचित्तुष्टो रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे 773. 4851. RÂǴA-TAR. 6,342. BHÂG. P. 4,28,19. 9,10,21. 10,51,12. MÂRK. P. 91,27. PAṄKAR. 2,8,22. PAṄKAT. 223,9. KULL. zu M. 9,313. BHAṬṬ. 8,113. 9,20. पुत्रस्य मातापितरौ यस्य रुष्टावुभावपि *zürnend auf* MBH. 13,5457. राज्ञा त्वयि रुष्टः KULL. zu M. 8,193. मनोऽतिरुष्टम् BHÂG. P. 4,19,34. रुषित = रुष्ट KÂR. zu P. 3,2,188. M. 9,83. MBH. 5,2178. 7297. HARIV. 250. 4305. 7047. 8009. R. 2,97,17. R. GORR. 1,57,6. 2,20,3. 36,22. 3,53,42. 71,7. 4,32, 22. BHÂG. P. 10,41,34. BHAṬṬ. 5,56. 9,20. एवं स रुषितस्तेन (संरु° ed. Bomb.) MBH. 7,6993. VARÂH. BṚH. S. 21,24. मातृगुप्तं प्रति न नो रोषेण रुषितं (beide Ausgg. fälschlich दू°) मनः RÂǴA-TAR. 3,282. — 2) *Etwas übel aufnehmen:* सो अस्य कामं विधतो न रोषति ṚV. 8,88,4. — 3) *missfallen, zum Ueberdruss sein:* न दाना अस्य रोषति *der Schmaus ist ihm nicht zuwider* ṚV. 8,4,8. इदमहं रुशन्तं ग्राभं तनूदूषिमपोहामि AV. 14, 1,38. पाशीः *missfällig* (den Menschen) 4,16,6. अपजीत्कृष्णा रुशती पुनानो या लोहिनी तां ते अग्नौ जुहोमि *die widerliche schwarze* 12,3,54. रुषती (वाच्) *missliebig, verletzend* MBH. 5,2744. v. l. für उषती Spr. 1554. 4380. 4698. रुशती 1554, v. l. H. 273. BHÂG. P. 6,10,28. जिह्वा *eine verletzende Zunge* 4,4,17. आपः *missliebig, gefährlich* 9,9,24. — रुषित TRIK. 3,1,27 fehlerhaft für दूषित.

— caus. रोषयति (रोषे) DHÂTUP. 32,131. *Jmd unmuthig machen, erzürnen, aufbringen:* रोषयन्निव माम् R. 5,36,36. रोषये त्वां न भीषये 6,13,23. रोषित MBH. 1,5885. 7,3983. 8,3191. HARIV. 11260. R. GORR. 1,62,6. 2,20,2 (23,2 SCHL.). 4,5,16. RAGH. 9,54. 11,71. ÇIÇ. 9,18. किं रोषितस्तातो रुद्रशर्मा त्वया मयि KATHÂS. 14,50. DAÇAK. 71,8. PAṄKAT. 163,4.

— अभि, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht* MBH. 8,1747.

— आ, caus. partic. °रोषित dass.: सिंहाः HARIV. 3936.

— संप्र, partic. °रुष्ट dass. MBH. 12,4868.

— वि *heftig zürnen auf* (gen.): अकारणार्थेन विरुष्यमाणा (विक्रु° die neuere Ausg.) प्रेष्याज्ञनस्य HARIV. 7043. विरुष्ट *heftig zürnend, sehr aufgebracht* KAURAP. 40.

— सम्, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht:* तेन MBH. 7,6993 nach der Lesart der ed. Bomb. — caus. *Jmd erzürnen, in Zorn versetzen:* संरोष्यमाणा Spr. 4509. — संरोषयेत् SUÇR. 2,334,12 und संरोषित 13 gehört zu दूष्.

2. रुष् (= 1. रुष्) f. (nom. रुट्) SIDDH. K. 247,b,15. *Ingrimm, Zorn, Wuth* AK. 1,1,2,26. H. 299. विमुञ्च मानिनि रुषम् Spr. 1965. रुषा MBH. 1,575. 3,2399. R. 4,5,29. VIKR. 80. RAGH. 5,21. Spr. 2237. 3736. KATHÂS. 12,95. 43,107. 45,238. RÂǴA-TAR. 1,319. 6,253. SÂH. D. 103. BHÂG. P. 1,18,30. 3,1,11. 4,1,65. 4,26. 18,1. MÂRK. P. 18,36. VOP. 5,18. रुषोक्तौ AK. 3,5,18. अतिरुषा MBH. 4,459. रुषां फलम् Spr. 901. RÂǴA-TAR. 3,284. भयरुषोः RAGH. 9,49. ईर्ष्यारुषाम् KATHÂS. 21,9. am Ende eines adj. comp.: प्रद्वेषनिर्बन्धरुषो हि सन्तः RAGH. 16,80. देव्य उज्झितरुषः 19,20. सरुषि नृपे Spr. 3196. — Vgl. अ°, अति°, अप°.

रुषङ्गु m. N. pr. eines Brahmanen MBH. 9,2270. fgg. — Vgl. रुशङ्गु.

रुषद्रु m. N. pr. eines Fürsten VP. 420. — Vgl. रुशद्रु.

रुषा f. = 2. रुष् H. 299.

रुष्ट 1) partic. adj. s. u. 1. रुष् 1). — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,b,34.

रुष्टि gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. Davon adj. °मत् ebend.

रुष्य gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. Davon adj. °मत् ebend.

1. रुह्, रोहति (बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च) DHÂTUP. 20,29. रुरोह, रुरोहिथ; अरुहत् und अरुक्षत् (ved. und episch P. 3,1,59), रुह्येयम्, आरुह्येथास् (MBH. 3,12776), अध्यारुक्षामहि (MBH. 9,277), आरुक्षस्व (HARIV. 6306), रुक्षाणि; रोक्ष्यति und रोढा KÂR. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. आरोक्ष्यै MBH. 13,539; रूढ्वा, रोढुम्, रोहितुम् ep., रोहिष्यै ved. P. 3,4,10. रूढ; med. aus metrischen Rücksichten. 1) *ersteigen, erklimmen:* द्यामिव रोहति ṚV. 8,41,8. 61,4. 1,110,6. दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्याः 6,71,5. रुहो रुरोह रोहितः AV. 13,3,26. VS. 12,103. AIT. BR. 1,5. यूपम् ÇAT. BR. 5,1,5,2. वृत्तम् 9,3,2,6. ÂÇV. ÇR. 11,3,7. रूढपरिच्छदाः so v. a. *aufgeladen* BHÂG. P. 10,11,29. *erklimmen* so v. a. *erreichen:* कामम् ÇAT. BR. 2,1,2,7. मनो रुहाणाः etwa *ihren Willen erreichend* ṚV. 1,32,8. — 2) (in die Höhe) *wachsen:* वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः ṚV. 6,7,6. 10,16,13. यथा बीजमुर्वरायां रोहति AV. 10,6,33. 8,7,17. त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्स्वर्गानरुहत् 12,3,42. ÇAT. BR. 14,6,9,33. यथा सस्यानि रोहन्ति प्रकीर्णानि महीतले MBH. 13,3149. छिन्नो हि रोहति तरुः Spr. 925. 3808. ततः सस्यानि नारुहन् MBH. 1,6623. रोहते — वनं परशुना हतम् Spr. 2647. रोहते सस्यम् VARÂH. BṚH. S. 54,95. न चापि सर्वबीजानि सम्यग्रोहन्ति MBH. 3,12855. 5,386. पयोधरे बीजमुप्तं न रोहेत् 13,

4314. Spr. 2469. 4378. Bhâg. P. 6,16,39. हस्तौ रुरुहतुः Bhâg. P. 2,10, 24. पादौ रुरुहाते 25. भृगोः श्मश्रूणि रोहतु 4,6,51. रूढ ऽयमशुभावहः — विषद्रुमः Râǵa-Tar. 4,26. Kâm. Nîtis. 13,13. रूढशाद्वल (अरण्य) Hariv. 3643. रूढतृणाङ्कुरेषु (हर्म्येषु) Ragh. 16,18. रूढस्कन्धो महाद्रुमः R. 2,105, 6. रूढरागप्रवाल (मनसिजतरु) Mâlav. 59. केसरैरर्धरूढैः Megh. 21. अरूढमूलत्व Mâlav. 8. रूढश्मश्रु R. 7,23,1,13. — 3) *verwachsen, heilen:* चर्मणा चर्म रोहतु, मांसं मांसेन रो° AV. 4,12,4. व्रणाश्चास्य चिरेण रोहन्ति Suçr. 1,37,6. Spr. 2647 (med.). Kathâs. 28,160. 179. रूढव्रण R. 6, 105,15. Suçr. 1,37,6. 60,18. 88,15. fg. 18. Ragh. 13,73. Kathâs. 10,197. 65,15. 101,348. Râǵa-Tar. 4,281. H. 465. Vgl. दूरूढ. — 4) *wachsen* so v. a. *sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen:* रोहन्ति हा धिकप्रत्यूहाः Râǵa-Tar. 1,158. कश्चिन्मतिविपर्यासप्रकारो हृदि रोहति 3,42. 4,236. कामधियस्त्वयि रचिता न परम रोहन्ति Bhâg. P. 6,16,39. तत्तदा वाक्यं न रोहति so v. a. *trägt keine Frucht, ist unnütz* MBh. 12,11944. आर्तिं मे हृदये रूढाम् 6,581. Spr. 2358. Râǵa-Tar. 3,48. Bhâg. P. 1,8,48. 9,9,47. °यौवन *bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat* 10,55,9. Pankar. 3,7,37. Kathâs. 27,187. संश्रयदोषरूढ *hervorgegangen aus* Ragh. 6,41. 1,31. रूढश्च कृतमूलश्च शेषं स्थास्यति ते सुतः *gewachsen* so v. a. *sich Anhang verschafft habend* R. 2,9,27. रूढसौहृद *bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat* Vikr. 10. योगिनो रूढयोगाः Bhâg. P. 3,21,13. ऋषयो रूढमन्यवः 4,14,34. 5,12,6. 8,22,6. 10,47,59. fg. 55,40. रूढ = ज्ञात Med. dh. 3. — 5) रूढ *gewachsen* so v. a. *verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig;* = प्रसिद्ध Med. तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवम् Spr. 4112. ततात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः Ragh. 2,53. Sâh. D. 13,3. Daçak. 82,3. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,17. Gaudap. zu Sâṁkhjak. 61. Schol. zu Bhaṭṭ. 5,18. सुरूढे कार्ये Varâh. Bṛh. S. 2,3. अरूढ *unbekannt, unerhört* (und nicht रूढ oder आरूढ) ist wohl anzunehmen Kathâs. 61, 251. Râǵa-Tar. 4,124. 5,173. — 6) रूढ *überliefert, allgemein bekannt* von Wörtern, *deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine specielle, von der Etymologie unabhängige* (nach indischer Anschauung) *Bedeutung habend* H. 1. व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः 2. यत्रावयवशक्तिनैरपेक्षेण (d. i. °क्ष्येण) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढं यथा गोपदघटादिपदम् Comm. zu Bhâshâp. S. 83. Schol. zu P. 2,2,26. अमनुष्यशब्दो रक्षःपिशाचादिषु रूढः 4,23. 3,1,129. 4,3,99. 5, 1,48. 59. 3,27. 6,2,8. Siddh. K. zu P. 6,3,34. Vop. 7,14. नाम रूढमपि च व्युत्पादि Çiç. 10,23. °नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210,*b*,4 v. u.; vgl. योगरूढ und यौगिकरूढ unter यौगिक. — MBh. 1,5337 ist nicht रुह्यन्ते, wie Johnson und nach ihm Benfey annehmen, sondern उह्यन्ते gemeint. Vgl. 1. रुध्.

— caus. रोहयति und später रोपयति P. 7,3,43. Vop. 18,13. 1) *in die Höhe bringen, aufsteigen machen:* ये सूर्यमैरोहयन्दिवि R̥V. 10,62,3. 65,11. AV. 13,1,13. TBr. 1,2,4,1. चतुष्पञ्चाशतं हस्तान्रोपयित्वा महाशिलाम् *aufführen* Râǵa-Tar. 4,199. — 2) *legen auf, bringen in, stecken an, in:* फलवन्तश्च ये वृक्षाः समूलविटपास्तथा । रोपयित्वा बृहन्नौषु R. Gorr. 1,9,8. तामरोपयत् । गुरुनासां मुखे तस्याः Kathâs. 61,16. चापरोपितशर Spr. 2289. मुकुटे रोपितः काचश्चरणाभरणे मणिः *gefasst in* 2206. अद्भितारोपितमार्गण *gerichtet auf* Ragh. 9,22. राजवेश्मनि ते सुभ्रु रोहितम् *deine Versetzung in* MBh. 4,271. ते सुगृध्रुहे तु d. i. ते सुभ्रु गृहे तु ed. Bomb. *übergeben, übertragen:* गुणावत्सुतरोपितश्रियः — दिलीपवंशजाः Ragh. 8,11. — 3) *pflanzen, säen:* तस्माद्वृक्षांश्च रोपयेत् MBh. 13,2995. 6072. R. 2,80,7 (87,8 Gorr.). Spr. 2349. Varâh. Bṛh. S. 55,8. fg. 20. Râǵa-Tar. 2,15. 130. शाखा एव रोपिता वृक्षतां यान्ति *in die Erde gesteckt* Kull. zu M. 1,46. आरामांश्च रोपयेत् MBh. 13,3002. प्रयन्ति सर्वबीजानि रोप्यमाणानि चैव ह 3,13116. bildlich: उच्चखान — बद्धमूलां तणाह्लक्ष्मीं प्रभुं दीर्घामरोपयत् Râǵa-Tar. 5,149. तदेष शन्तनोर्वंशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्यां रोपितो मया Hariv. 3007. — 4) *wachsen —, verwachsen machen, heilen lassen, heilen* (trans.): रोहयेदम् (sc. अस्थि च्छिन्नम्) AV. 4, 12,1. व्रणान्रोपयेत् Suçr. 2,10,11. 4. Kathâs. 28,163. 169. fg. 177. fg.

— desid. रुरुक्षति; Bhâg. P. 4,8,67 ist प्रेम्णारुरुक्षन्तं (desid. von आ - रुह्) zu schreiben.

— अति 1) *hinaussteigen über:* अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् R̥V. 9,17,5. — 2) *grösser wachsen:* यदन्नेनातिरोहति R̥V. 10,90,2 = Çvetâçv. Up. 3,15 = Tattvas. 20 (v. l. अन्येन). — 3) अतिरूढत्व *allgemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit* Râǵa-Tar. 6,272.

— व्यति *erlangen, theilhaftig werden;* mit acc.: तदा देही देहमन्यं व्यतिरोहति कालतः MBh. 3,13929. statt dessen तदा देहैर्देहवन्तो व्यतिरोहन्ति नान्यथा 6,184. — caus. *vertreiben, der Herrschaft berauben:* तत्राचक्षमहं दोषान्यैर्भवान्व्यतिरोपितः MBh. 3,601.

— अधि 1) *ersteigen, besteigen:* गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा R̥V. 1,56,2. नावम् 8,42,3. स्थूणाम् AV. 3,12,6. द्याम् 13,3,26. स्वौ रुहाणा अधि नाकमुत्तमम् VS. 11,22. स मायमधि रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः AV. 10,6,31. 11,1,13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुहत् R. 2,64,48. Çâk. 98, 14. गिरिमधिरोढुम् MBh. 3,9982. R. Gorr. 1,45,5. 5,54,9. Çiç. 9,1. Vikr. 14. हेमकूटशिखरे 6,15. क्रव्यादान् Jâǵn. 1,272. अधिरोहन्ति यं नित्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3,14506. हयान् 7,8917. R. 5,73,28. Spr. 4001. Kathâs. 12,135. 13,28. वेदीम् MBh. 3,11019 (S. 570, med.). 11021 (ebend., act.). तरुम् R. 3,76,28. चिताम् Hariv. 771 (med.). विमानम्, रथम् MBh. 3,4095. 14943 (med.). R. 2,83,2. 7,75,8 (med.). Kathâs. 45, 364. Bhâg. P. 4,12,27. Mârk. P. 125,16. Bhaṭṭ. 5,108. पर्यङ्कम् MBh. 5, 1188. आसनम् R. 1,70,9 (med.). शयनम् 2,42,29. *besteigen* (zur Begattung): पुत्रो मातरं स्वसारं चाधिरोहति Ait. Br. 7,13. *treten auf:* केशादीन्नाधिरोहेत् Kull. zu M. 4,78. Suçr. 1,110,17 (zugleich *besteigen*). पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति — रेणुः *sich setzen auf* Spr. 1762. अधिरोहार्य पादाभ्यां पादुके *tritt mit den Füssen in die Schuhe* R. 2,112,21. fg. *sich in die Luft erheben, aufsteigen:* रथाङ्गाह्वयना द्विजाः । अधिरोहन्ति 95,11. Bhâg. P. 3,23,20. अधिरूढ *erstiegen —, bestiegen habend, sitzend auf:* गिरिशृङ्गाधि° Râǵa-Tar. 5,217. युगान्तम्, गगनान्तरम् Çâk. 57,2 v. l. वटवृक्षाधि° Vet. in LA. (III) 21,11. रथाधिरूढ Çâk. 97,1. Ragh. 12,104. लघुकाष्ठाधि° Pankat. 76,18. अङ्गदं चाधिरूढः R. 5,73,27. Vop. 26,129. तुरगाधि° Ragh. 7,34. द्विजस्कन्धाधि° R. 2,45,21 (43,22 Gorr.). Bhâg. P. 2,7, 16. Sarvadarçanas. 153,11. रक्षोऽधि° Kathâs. 18,382. अधिरूढे गजारोहे *hinaufgestiegen* R. 3,57,23. °गोवाटा Kathâs. 20,145. अवरुह्याधिरूढः Râǵa-Tar. 6,52. Pankat. 128,19. पर्वतस्याधिरूढं स्थलम् *oben gelegen* P. 5,2,34, Sch. — 2) *erklimmen* so v. a. *erreichen, gelangen zu:* पदमधि-

रोहमज्ञसा पदं परम् Bhâg. P. 4,3,21. परस्परतुलामधिरोहतां द्वे *erlangen gegenseitige Aehnlichkeit* Ragh. 5,68. प्रतिज्ञामध्यरोहत so v. a. *gelangte zu dem, was er gelobt hatte, löste sein Wort* R. 7,67,8. अधिरूढ *a*) mit pass. Bed.: पद् Bhâg. P. 4,12,42. °समाधियोग 3,28,38. — *b*) mit act. Bed.: निशामधिरूढयोर्यूनोः Spr. 916. योगाधि° Ragh. 13,52. — Vgl. अधिरोहणी, धाराधिरूढ. — caus. 1) *besteigen machen, hinaufgehen lassen, setzen auf:* नाके ऽधि रोहयैनम् VS. 12,63. नाकमधि रोहयेमम् AV. 1,9,2. 18,3,4. मर्य इव योषामधि रोहयैनाम् 14,2,37. नावं चाप्यधिरोहिताः MBh. 13,4390. यद्येष प्रासादमधिरोप्यते. Kathâs. 20,170. तामङ्कम् 1,22. शरीरं तुलाम् 7,95. रथे 56,336. वाहने 26,123. 52,328. शूले 88,42. स्कन्धे 26,241. Râga-Tar. 4,259. नाभ्यां स्थितं (अनिलं) हृदि Bhâg. P. 2,2,20. विमानाधिरोपित Kathâs. 47,39. शूलाधि° 18,148. यत्तस्कन्धाधि° 73,248. शुद्धान्तकान्तानां मूर्धानमधिरोपिता so v. a. *an die Spitze von — gestellt* Râga-Tar. 6,74. — 2) *hineinstecken, einsäen:* अधिरोप्य Varâh. Bṛh. S. 55,23. *anlegen, anthun:* अधिरोप्यार्य पादाभ्यामिमे गृह्णीष्व पादुके R. Gorr. 2,123,20. fg. *einsetzen in:* पित्र्ये राज्ये Kathâs. 70,21. *versetzen in:* वसतौ पुराणशोभामधिरोपितायाम् Ragh. 16,42. *schliessen in:* निज़मनसि सदा यैर्वीतरागो ऽध्यरोपि Çatr. 14,328. — 3) *spannen:* कार्मुकम् Ragh. 11,81. — 4) *übergeben, übertragen:* विनयेष्वधिरोप्य शासनम् — अखिलदेशराज्ञसु Kathâs. 20,225. *beilegen, ertheilen:* उदारक इति प्रीतलोकाधिरोपितनामा Daçak. 72,4.5. — Vgl. अधिरोपण.

— अन्वधि *nach Jmd hinaufsteigen* Lâṭj. 3,18,8.

— उपाधि *zu Jmd hinaufsteigen* Çat. Br. 3,2,1,8. 6,8,1,7.

— समधि 1) *besteigen, hinaufsteigen* Ait. Br. 4,20. Hariv. 6533 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) *auf Etwas —, hinter Etwas kommen, sich überzeugen von:* तव धैर्यं च वीर्यं च सर्वे समधिरूढाः स्म MBh. 5,2283.

— अनु 1) *besteigen:* पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहम् ṚV. 10,13,3. — 2) med. *erwachsen:* वया इवानु रोहते ṚV. 2,5,4. 8,13,6.

— व्यप caus. 1) *ablegen, ausziehen:* अधिरोप्य पादुके व्यपरोप्य च R. Gorr. 2,123,21. — 2) *Jmd um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* राज्यात् MBh. 3,10246. जीवितात् 1579. प्राणैः 14,2160.

— अपि *verwachsen, zuwachsen:* पृथिव्यै खातमपि रोहति TS. 2,5,1,3.

— समपि dass.: समस्थ्यपि रोहतु AV. 4,12,5.

— अभि *hinsteigen zu, besteigen* Çat. Br. 12,2,3,10. अभीमहं स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः ṚV. 5,7,5. हिमवतः शृङ्गम् R. 1,44,5. Vikr. 14, v. l. प्रासादहर्म्याणि विमानशिखराणि च R. 2,33,3. रथम् MBh. 5,7233. यानपात्रम् Kathâs. 25,40. ये च मामभिरोहेयुः *hinaufsteigen zu* Hariv. 12031.

— समभि *zusammen hinaufsteigen, besteigen* Hariv. 6533 (समधिरोहत die neuere Ausg.). शृङ्गाणि 12795. — caus. *aufladen:* भाण्डं समभिरोप्यताम् Hariv. 3522.

— अव *hinabsteigen; beschreiten, betreten:* अवरोहन्नवीसम् ṚV. 5,78,4. Çat. Br. 5,1,5,4. चर्माणि Kâtj. Çr. 14,5,15. Âçv. Gṛhj. 2,6,12. कूपम् 3,9,6. पन्थानम् Çr. 2,5,6. यौ व्याघ्रावरूढौ जिघत्सतः *herbeigekommen* AV. 6,140,1. — यानानामनस्थश्चैवेनमवरुह्याभिवादयेत् M. 2,202. महेन्द्रवाहात् (vgl. P. 5,4,45, wo gesagt wird, dass statt der Endung des abl. hier nicht तस् stehen könne) MBh. 3,11906. 11922. 6,2221. 9,3468. fg. 3470 (med.). प्रासादात् Hariv. 11022 (S. 790). R. 2,7,11 (med.). वृक्षाग्रात् 98,27. R. Gorr. 1,79,28. 4,49,25 (med.). 5,74,14. Ragh. 1,54. 4,80. Çâk. 167. Kathâs. 17,116. 21,71. 42,11. Bhâg. P. 4,6,25. 9,42. 5,10,16. Pañkar. 1, 4,62. Bhaṭṭ. 8,104. अवरुह्याधिरूढः in einen Brunnen Râga-Tar. 6,52. अवरुह्य च ते भूमिम् R. 4,49,26. अवरूढश्च विपद्वारो ममात्मनः so v. a. *abgenommen, abgeladen* Kathâs. 27,98. ऐश्वर्यात् *hinabsteigen von der Herrschaft* so v. a. *darum kommen* Bhâg. P. 4,14,16. Vgl. अवरोह fgg. — caus. 1) *hinabsteigen —, betreten lassen* Kauç. 61. 80. °रोप्य Gobh. 2, 4,6. अवरोहयध्वम् *lasset sie absteigen* MBh. 3,15609. तामवारोपयत्पत्नीं रथात् Ragh. 1,54 (अवारोहयत् ed. Calc.). Hariv. 9721. *aussteigen lassen* (aus einem Schiffe) R. 2,89,19. *herabnehmen:* वृक्षाग्राद्धनूंषि MBh. 4, 1318. गाण्डीवम् (vom Wagen) 9,3468. स्कन्धाच्छिबिकाम् R. 4,24,31. Bhâg. P. 8,6,39. — 2) *pflanzen:* अवरोप्य वृक्षम् MBh. 1,7063; vgl. अवरोपण. — 3) *Jmd entsetzen, bringen um:* राज्यादवरोपितः MBh. 4, 2101. R. 4,8,20. Mârk. P. 8,212. 9,6. — 4) *herabsetzen, vermindern:* पादशस्त्ववरोपितः (धर्मः) M. 1,82. MBh. 12,8501. — 5) *herunterbringen, zu Nichte machen:* राष्ट्राणि Bhâg. P. 1,16,23. त्वदवरोपितकर्तृवादाः 8,22,19.

— अध्यव *herabtreten auf:* हिरण्यम् TBr. 1,3,7,7.

— अन्वव *nach Jmd betreten:* नास्य देवा न गन्धर्वाः u. s. w. पदमन्ववरोहन्ति प्राप्तस्य परमां गतिम् MBh. 12,8453.

— अभ्यव *herabtreten auf* Çat. Br. 5,2,1,20. fg. हुताशनः। श्वेताभ्रमिव प्रासादं ज्वलन्नभ्यवरूढवान् R. 5,52,15.

— उपाव *herabsteigen auf, zu* (acc.), *heraustreten aus* (abl.): उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वम् TBr. 2,5,8,8. सोमं राजन्विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह VS. 6,26. TS. 7,3,10,1. Pañkav. Br. 18,10,10. Çat. Br. 5,2,2,19. 10, 3,3,5. — caus. *heraustreten lassen aus* (abl.), technischer Ausdruck für das *Wiederhervorholen* des durch eine symbolische Handlung in den Reibhölzern u. s. w. geborgenen Feuers, Çâñkh. Çr. 2,17,8. Gṛhj. 5,1. Kauç. 40. Ind. St. 9,311. — Vgl. u. समा.

— प्रत्यव 1) *wieder heruntersteigen zu* (acc.), *herabsteigen auf* Ait. Br. 4,21. Çat. Br. 5,1,5,6. 7,3,6. स्वर्गाल्लोकात् 12,4,2,6. इमं लोकम् TBr. 1,8,8,5. मनुष्यरथेनैव दैवरथं प्रत्यवरोहति 1,6,8. प्रत्यवरोह जातवेदः (vgl. u. उपाव) Âçv. Çr. 3,10,8. TS. 1,7,6,2. 5,6,9,1. — 2) *vor Jmd* (acc.) *ehrerbietig absteigen* (vom Sitz, Wagen): यथा श्रेयस्यायति पापीयान्प्रत्यवरोहेत् Çat. Br. 4,1,3,9. संवत्सरं न कं चन प्रत्यवरोहेत् TS. 5,5,4,3. तत्रियं विशः Çat. Br. 3,9,3,7. रथात् MBh. 8,3302. — 3) *die* Pratjavarohaṇa *genannte Feier begehen*, beziehungsweise *das Lager aus der Bettstelle wieder auf den Erdboden verlegen* (vgl. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. S. 69) Çâñkh. Gṛhj. 4,17. — Vgl. प्रत्यवरूढि, प्रत्यवरोह fgg. — caus. *Jmd herabbringen von, Jmd* (acc.) *um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* दर्पात् MBh. 8,2769. मानात् 12,4159. श्रिया 4,536.

— अभिप्रत्यव *herabsteigen auf:* उदुम्बरशाखाम् Ait. Br. 8,9.

— व्यव *besteigen:* शयनम् MBh. 13,1458 (med.). — caus. *Jmd entsetzen:* कालेन बलिरिन्द्रः कृतः कालेन व्यवरोपितः Verz. d. Oxf. H. 216, *b*,6. *Jmd um Etwas* (abl.) *bringen:* स्थानात् Spr. 4920. भोजनात् MBh. 5,3688.

— आ 1) *besteigen, ersteigen; sich erheben zu, einsteigen in; sich aufschwingen —, sich setzen auf;* mit acc. und loc.: सानोः सानुम् ṚV. 1,10,2. रथम् 34,5. गर्तम् 5,62,8. नावम् 7,88,3. नाकम् 3,2,12. स्वर्गं लोकमारुहेयम् ved. Cit. P. 3,1,86, Sch. आ यद्वामान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम्

4314. Spr. 2469. 4378. Bhâg. P. 6,16,39. हस्तौ रुरुहतुः Bhâg. P. 2,10, 24. पादौ रुरुहाते 25. भृगोः श्मश्रूणि रोहन्तु 4,6,51. रूढो ऽयमशुभावहः — विषद्रुमः Râǵa-Tar. 4,26. Kâm. Nîtis. 13,13. रूढशाद्वल (अरण्य) Hariv. 3643. रूढतृणाङ्कुरेषु (हर्म्येषु) Ragh. 16,18. रूढस्कन्धो महाद्रुमः R. 2,105, 6. रूढरागप्रवाल (मनसिजतरु) Mâlav. 59. केसरैरर्धरूढैः Megh. 21. अरूढमूलत्व Mâlav. 8. रूढश्मश्रु R. 7,23,1,13. — 3) *verwachsen, heilen:* चर्मणा चर्म रोहतु, मांसं मांसेन रो° AV. 4,12,4. व्रणाश्चास्य चिरेण रोहन्ति Suçr. 1,37,6. Spr. 2647 (med.). Kathâs. 28,160. 179. रूढव्रण R. 6, 105,15. Suçr. 1,37,6. 60,18. 88,15. fg. 18. Ragh. 13,73. Kathâs. 10,197. 65,15. 101,348. Râǵa-Tar. 4,281. H. 465. Vgl. दूरूढ. — 4) *wachsen* so v. a. *sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen:* रोहन्ति हा धिकप्रत्यूहाः Râǵa-Tar. 1,158. कश्चिन्मतिविपर्यासप्रकारो हृदि रोहति 3,42. 4,236. कामधियस्त्वयि रचिता न परम रोहन्ति Bhâg. P. 6,16,39. तत्तदा वाक्यं न रोहति so v. a. *trägt keine Frucht, ist unnütz* MBh. 12,11944. आर्ति मे हृदये रूढाम् 6,581. Spr. 2358. Râǵa-Tar. 3,48. Bhâg. P. 1,8,48. 9,9,47. °यौवन *bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat* 10,55,9. Pańkar. 3,7,37. Kathâs. 27,187. संश्रयदोषरूढ *hervorgegangen aus* Ragh. 6,41. 1,31. रूढश्च कृतमूलश्च शेषं स्थास्यति ते सुतः *gewachsen* so v. a. *sich Anhang verschafft habend* R. 2,9,27. रूढसौहृद *bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat* Vikr. 10. योगिनो रूढयोगाः Bhâg. P. 3,21,13. ऋषयो रूढमन्यवः 4,14,34. 5,12,6. 8,22,6. 10,47,59. fg. 55,40. रूढ = जात Med. ḍh. 3. — 5) रूढ *gewachsen* so v. a. *verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig;* = प्रसिद्ध Med. तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवम् Spr. 4112. क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः Ragh. 2,53. Sâh. D. 13,3. Daçak. 82,3. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,17. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 61. Schol. zu Bhaṭṭ. 5,18. सुरूढे होरार्थे Varâh. Bṛh. S. 2,3. अरूढ *unbekannt, unerhört* (und nicht रूढ oder आरूढ) ist wohl anzunehmen Kathâs. 61, 251. Râǵa-Tar. 4,124. 5,173. — 6) रूढ *überliefert, allgemein bekannt* von Wörtern, *deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine specielle, von der Etymologie unabhängige* (nach indischer Anschauung) *Bedeutung habend* H. 1. व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः 2. यत्रावयवशक्तिनैरपेक्षेण (d. i. °क्ष्येण) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढं यथा गोपदघटादिपदम् Comm. zu Bhâshâp. S. 83. Schol. zu P. 2,2,26. अमनुष्यशब्दो रक्षःपिशाचादिषु रूढः 4,23. 3,1,129. 4,3,99. 5, 1,48. 59. 3,27. 6,2,8. Siddh. K. zu P. 6,3,34. Vop. 7,14. नाम रूढमपि च व्युत्पादि Çiç. 10,23. °नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210,*b*,4 v. u.; vgl. योगरूढ und यौगिकरूढ unter यौगिक. — MBh. 1,5337 ist nicht रूह्यन्ते, wie Johnson und nach ihm Benfey annehmen, sondern उह्यन्ते gemeint. Vgl. 1. रुध्.

— ... रोहयति und später रोपयति P. 7,3,43. Vop. 18,13. 1) *in* ... *aufsteigen machen:* ये सूर्यमारोहयन्दिवि ṚV. 10,62,3. ... TBr. 1,2,4,1. चतुष्पञ्चाशतं हस्तान्रोपयित्वा महा- ... ǵa-Tar. 4,199. — 2) *legen auf, bringen in, stecken* ... वृक्षाः समूलविटपास्तथा । रोपयित्वा बृहन्नीषु R. ... न् । गुरूनासां मुखे तस्याः Kathâs. 61,16. चापरो- ... रोपितः काचश्चरणाभरणे मणिः *gefasst in* 2206. ... *chtet auf* Ragh. 9,22. राजवेश्मनि ते सुध्रु रोहितम् *deine Versetzung in* MBh. 4,271. ते सुगृध्रुहे तु d. i. ते सुध्रु गृहे तु ed. Bomb. *übergeben, übertragen:* गुणवत्सुतरोपितश्रियः — दिलीपवंशजाः Ragh. 8,11. — 3) *pflanzen, säen:* तस्माद्वृक्षांश्च रोपयेत् MBh. 13,2995. 6072. R. 2,80,7 (87,8 Gorr.). Spr. 2349. Varâh. Bṛh. S. 55,8. fg. 20. Râǵa-Tar. 2,15. 130. शाखा एव रोपिता वृक्षतां यान्ति *in die Erde gesteckt* Kull. zu M. 1,46. आरामांश्च रोपयेत् MBh. 13,3002. प्रयान्ति सर्वबीजानि रोप्यमाणानि चैव ह 3,13116. bildlich: उच्चखान — बद्धमूलां क्षणाच्छलक्ष्मीं शुचं दीर्घामरोपयत् Râǵa-Tar. 5,149. तदेष शन्तनोर्वंशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्यां रोपितो मया Hariv. 3007. — 4) *wachsen —, verwachsen machen, heilen lassen, heilen* (trans.): रोहयेदम् (sc. अस्थि छिन्नम्) AV. 4, 12,1. व्रणात्रोपयेत् Suçr. 2,10,11. 4. Kathâs. 28,163. 169. fg. 177. fg.

— desid. रुरुक्षति; Bhâg. P. 4,8,67 ist प्रेम्णारुरुक्षत्तं (desid. von आ-रुह्) zu schreiben.

— अति 1) *hinaussteigen über:* अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् ṚV. 9,17,5. — 2) *grösser wachsen:* यदन्नेनातिरोहति ṚV. 10,90,2 = Çvetâçv. Up. 3,15 = Tattvas. 20 (v. l. अन्येन). — 3) अतिरूढत्व *allgemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit* Râǵa-Tar. 6,272.

— व्यति *erlangen, theilhaftig werden;* mit acc.: तदा देहो देहमन्यं व्यतिरोहति कालतः MBh. 3,13929. statt dessen तदा देहैर्देहवन्तो व्यतिरोहन्ति नान्यथा 6,184. — caus. *vertreiben, der Herrschaft berauben:* तत्राचक्षमहं दोषान्यैर्भवान्व्यतिरोपितः MBh. 3,601.

— अधि 1) *ersteigen, besteigen:* गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ṚV. 1,56,2. नावम् 8,42,3. स्थूणाम् AV. 3,12,6. द्याम् 13,3,26. स्वौ रुहाणा अधि नाकमुत्तमम् VS. 11,22. स मायमधि रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः AV. 10,6,31. 11,1,13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुहत् R. 2,64,48. Çâk. 98, 14. गिरिमधिरोढुम् MBh. 3,9982. R. Gorr. 1,45,5. 5,54,9. Çiç. 9,1. Vikr. 14. हेमकूटशिखरे 6,15. क्रव्यादान् Jâǵń. 1,272. अधिरोहन्ति यं नित्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3,14506. हयान् 7,8917. R. 5,73,28. Spr. 4001. Kathâs. 12,135. 13,28. वेदीम् MBh. 3,11019 (S. 570, med.). 11021 (ebend., act.). तरुम् R. 3,76,28. चिताम् Hariv. 771 (med.). विमानम्, रथम् MBh. 3,4095. 14943 (med.). R. 2,83,2. 7,75,8 (med.). Kathâs. 45, 364. Bhâg. P. 4,12,27. Mârk. P. 125,16. Bhaṭṭ. 5,108. पर्यङ्कम् MBh. 5, 1188. आसनम् R. 1,70,9 (med.). शयनम् 2,42,29. *besteigen* (zur Begattung): पुत्रो मातरं स्वसारं चाधिरोहति Ait. Br. 7,13. *treten auf:* केशादीन्नाधिरोहेत् Kull. zu M. 4,78. Suçr. 1,110,17 (zugleich *besteigen*). पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति — रेणुः *sich setzen auf* Spr. 1762. अधिरोहाय पादाभ्यां पादुके *tritt mit den Füssen in die Schuhe* R. 2,112,21. fg. *sich in die Luft erheben, aufsteigen:* रथाङ्गाह्वयना द्विजाः । अधिरोहन्ति 95,11. Bhâg. P. 3,23,20. अधिरूढ *erstiegen —, bestiegen habend, sitzend auf:* गिरिशृङ्गाधि° Râǵa-Tar. 5,217. युगान्तम्, गगनान्तरम् Çâk. 57,2 v. l. वटवृक्षाधि° Vet. in LA. (III) 21,11. रथाधिरूढ Çâk. 97,1. Ragh. 12,104. लघुकाष्ठाधि° Pańkat. 76,18. अङ्गदं चाधिरूढः R. 5,73,27. Vop. 26,129. तुरगाधि° Ragh. 7,34. द्विजस्कन्धाधि° R. 2,45,21 (43,22 Gorr.). Bhâg. P. 2,7, 16. Sarvadarçanas. 153,11. रत्नोऽधि° Kathâs. 18,382. अधिरूढे गजारोहे *hinaufgestiegen* R. 3,57,23. °गोवाटा Kathâs. 20,145. अवरुह्याधिरूढः Râǵa-Tar. 6,52. Pańkat. 128,19. पर्वतस्याधिरूढं स्थलम् *oben gelegen* P. 5,2,34, Sch. — 2) *erklimmen* so v. a. *erreichen, gelangen zu:* एषामधि-

रोढुमञ्जसा पदं परम् Bhâg. P. 4,3,21. परस्परतुलामधिरोढतां द्वे *erlangen gegenseitige Aehnlichkeit* Ragh. 5,68. प्रतिज्ञामध्यरोहत so v. a. *gelangte zu dem, was er gelobt hatte, löste sein Wort* R. 7,67,8. अधिरूढ a) mit pass. Bed.: पद Bhâg. P. 4,12,42. °समाधियोग 3,28,38. — b) mit act. Bed.: निशामधिरूढयोर्यूनोः Spr. 916. योगाधि° Ragh. 13,52. — Vgl. अधिरोहण, धाराधिरूढ. — caus. 1) *besteigen machen, hinaufgehen lassen, setzen auf:* नाके ऽधि रोहयैनम् VS. 12,63. नाकमधि रोहयेमम् AV. 4,9,2. 18,3,4. मर्य इव योषामधि रोहयैनाम् 14,2,37. नावं चाप्यधिरोहिताः MBh. 13,4390. यद्येष प्रासादमधिरोप्यते. Kathâs. 20,170. तामङ्कम् 1,22. शरीरं तुलाम् 7,95. रथे 56,336. वाहने 26,123. 52,328. शूले 88,42. स्कन्धे 26,241. Râǵa-Tar. 4,259. नाभ्यां स्थितं (अनिलं) हृदि Bhâg. P. 2,2,20. विमानाधिरोपित Kathâs. 47,39. शूलाधि° 18,148. पत्तस्कन्धाधि° 73,248. शुद्धान्तकान्तानां मूर्धानमधिरोपिता so v. a. *an die Spitze von — gestellt* Râǵa-Tar. 6,74. — 2) *hineinstecken, einsäen:* अधिरोप्य Varâh. Bṛh. S. 55,23. *anlegen, anthun:* अधिरोप्यार्य पादाभ्यामिमे गृह्णीष्व पादुके R. Gorr. 2,123,20. fg. *einsetzen in:* पित्र्ये राज्ये Kathâs. 70,21. *versetzen in:* वसतौ पुराणशोभामधिरोपितायाम् Ragh. 16,42. *schliessen in:* निजमनसि सदा यैर्वीतरागो ऽध्यरोपि Çatr. 14,328. — 3) *spannen:* कार्मुकम् Ragh. 11,81. — 4) *übergeben, übertragen:* विनम्रेष्वधिरोप्य शासनम् — अखिलदेशराज्ञसु Kathâs. 20,225. *beilegen, ertheilen:* उदारक इति प्रीतलोकाधिरोपितनामा Daçak. 72,4.5. — Vgl. अधिरोपण.

— अन्वधि *nach Jmd hinaufsteigen* Lâṭj. 3,18,8.

— उपाधि *zu Jmd hinaufsteigen* Çat. Br. 3,2,1,8. 6,8,1,7.

— समधि 1) *besteigen, hinaufsteigen* Ait. Br. 4,20. Hariv. 6533 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) *auf Etwas —, hinter Etwas kommen, sich überzeugen von:* तव धैर्यं च वीर्यं च सर्वे समधिरूढाः स्म MBh. 5,2283.

— अनु 1) *besteigen:* पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहम् ṚV. 10,13,3. — 2) med. *erwachsen:* वया इवानु रोहते ṚV. 2,5,4. 8,13,6.

— व्यप caus. 1) *ablegen, ausziehen:* अधिरोप्य पादुके व्यपरोप्य च R. Gorr. 2,123,21. — 2) *Jmd um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* राज्यात् MBh. 3,10246. जीवितात् 1579. प्राणैः 14,2160.

— अपि *verwachsen, zuwachsen:* पृथिव्यै क्षतमपि रोहति TS. 2,5,1,3.

— समपि dass.: समस्थ्यपि रोहतु AV. 4,12,5.

— अभि *hinsteigen zu, besteigen* Çat. Br. 12,2,3,10. अभीमहं स्वर्ज्योत्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः ṚV. 5,7,5. हिमवतः शृङ्गम् R. 1,44,5. Vikr. 14, v. l. प्रासादहर्म्याणि विमानशिखराणि च R. 2,33,3. रथम् MBh. 5,7233. यानपात्रम् Kathâs. 25,40. ये च मामभिरोहेयुः *hinaufsteigen zu* Hariv. 12031.

— समभि *zusammen hinaufsteigen, besteigen* Hariv. 6533 (समधिरोहत die neuere Ausg.). शृङ्गाणि 12795. — caus. *aufladen:* भाण्डं समभिरोप्यताम् Hariv. 3522.

— अव *hinabsteigen; beschreiten, betreten:* अवरोहन्तवीसम् ṚV. 5,78,4. Çat. Br. 5,1,5,4. चर्मणि Kâtj. Çr. 14,5,15. Âçv. Gṛhj. 2,6,12. कूपम् 3,9,6. पन्थानम् Çr. 2,5,6. यो व्याघ्रावरूढो निर्घतसतः *herbeigekommen* AV. 6,140,1. — यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत् M. 2,202. मत्केन्द्रवाहात् (vgl. P. 5,4,45, wo gesagt wird, dass statt der Endung des abl. hier nicht तस् stehen könne) MBh. 3,11906. 11922. 6,2221. 9,3468. fg. 3470 (med.). प्रासादात् Hariv. 11022 (S. 790). R. 2,7,11 (med.). वृक्षाग्रात् 98,27. R. Gorr. 1,79,28. 4,49,25 (med.). 5,74,14. Ragh. 1,54. 4,80. Çâk. 167. Kathâs. 17,116. 21,71. 42,11. Bhâg. P. 4,6,25. 9,42. 5,10,16. Pańkar. 1,4,62. Bhaṭṭ. 8,104. अवरुह्याधिरूढः in einen Brunnen Râǵa-Tar. 6,52. अवरुह्य च ते भूमिम् R. 4,49,26. अवरूढश्च विपद्वारो ममात्मनः so v. a. *abgenommen, abgeladen* Kathâs. 27,98. ऐश्वर्यात् *hinabsteigen von der Herrschaft* so v. a. *darum kommen* Bhâg. P. 4,14,16. Vgl. अवरोह fgg. — caus. 1) *hinabsteigen —, betreten lassen* Kauç. 61. 80. °रोप्य Gobh. 2,4,6. अवरोहयध्वम् *lasset sie absteigen* MBh. 3,15609. तामवारोपयत्पत्नीं रथात् Ragh. 1,54 (अवारोहयत् ed. Calc.). Hariv. 9721. *aussteigen lassen* (aus einem Schiffe) R. 2,89,19. *herabnehmen:* वृक्षाग्राद्धनूंषि MBh. 4,1318. गाण्डीवम् (vom Wagen) 9,3468. स्कन्धाच्छिबिकाम् R. 4,24,31. Bhâg. P. 8,6,39. — 2) *pflanzen:* अवरोप्य वृक्षम् MBh. 1,7063; vgl. अवरोपण. — 3) *Jmd entsetzen, bringen um:* राज्यादवरोपितः MBh. 4,2101. R. 4,8,20. Mârk. P. 8,212. 9,6. — 4) *herabsetzen, vermindern:* पादशस्त्ववरोपितः (धर्मः) M. 1,82. MBh. 12,8501. — 5) *herunterbringen, zu Nichte machen:* राष्ट्राणि Bhâg. P. 1,16,23. बदवरोपितकर्तृवादाः 8,22,19.

— अध्यव *herabtreten auf:* हिरण्यम् TBr. 1,3,7,7.

— अन्वव *nach Jmd betreten:* नास्य देवा न गन्धर्वाः u. s. w. पदमन्ववरोहन्ति प्राप्तस्य परमां गतिम् MBh. 12,8453.

— अभ्यव *herabtreten auf* Çat. Br. 5,2,1,20. fg. हुताशनः । श्वेताभ्रमिव प्रासादं ज्वलन्नभ्यवरूढवान् R. 5,52,15.

— उपाव *herabsteigen auf, zu* (acc.), *heraustreten aus* (abl.): उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वम् TBr. 2,5,8,8. सोमं राजन्विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह VS. 6,26. TS. 7,3,10,1. Pańkav. Br. 18,10,10. Çat. Br. 5,2,2,19. 10,3,2,5. — caus. *heraustreten lassen aus* (abl.), technischer Ausdruck für das *Wiederhervorholen* des durch eine symbolische Handlung in den Reibhölzern u. s. w. geborgenen Feuers, Çâṅkh. Çr. 2,17,8. Gṛhj. 5,1. Kauç. 40. Ind. St. 9,311. — Vgl. u. समा.

— प्रत्यव 1) *wieder heruntersteigen zu* (acc.), *herabsteigen auf* Ait. Br. 4,21. Çat. Br. 5,1,1,5. 6,7,3,6. स्वर्गाल्लोकात् 12,4,2,6. इमं लोकम् TBr. 1,8,8,5. मनुष्यरथेनैव दैवरथं प्रत्यवरोहति 1,6,8. प्रत्यवरोह जातवेदः (vgl. u. उपाव) Âçv. Çr. 3,10,8. TS. 1,7,6,2. 5,6,9,1. — 2) *vor Jmd* (acc.) *ehrerbietig absteigen* (vom Sitz, Wagen): यथा श्रेयस्यायति पापीयान्प्रत्यवरोहेत् Çat. Br. 4,1,3,9. संवत्सरं न कं चन प्रत्यवरोहेत् TS. 5,5,4,3. तत्त्रियं विशः Çat. Br. 3,9,3,7. रथात् MBh. 8,3302. — 3) *die* Pratjavarohaṇa *genannte Feier begehen,* beziehungsweise *das Lager aus der Bettstelle wieder auf den Erdboden verlegen* (vgl. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. S. 69) Çâṅkh. Gṛhj. 4,17. — Vgl. प्रत्यवरूढि, प्रत्यवरोह fgg. — caus. *Jmd herabbringen von, Jmd* (acc.) *um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* दर्पात् MBh. 8,2769. मानात् 12,4159. श्रिया 4,536.

— अभिप्रत्यव *herabsteigen auf:* उदुम्बरशाखाम् Ait. Br. 8,9.

— व्यव *besteigen:* शयनम् MBh. 13,1458 (med.). — caus. *Jmd entsetzen:* कालेन बलिरिन्द्रः कृतः कालेन व्यवरोपितः Verz. d. Oxf. H. 216,b,6. *Jmd um Etwas* (abl.) *bringen:* स्थानात् Spr. 4920. भोजनात् MBh. 5,3688.

— आ 1) *besteigen, ersteigen; sich erheben zu, einsteigen in; sich aufschwingen —, sich setzen auf;* mit acc. und loc.: सानोः सानुम् ṚV. 1,10,2. रथम् 34,5. गर्तम् 5,62,8. नावम् 7,88,3. नाकम् 3,2,12. स्वर्गं लोकमारुहेयम् ved. Cit. P. 3,1,86, Sch. आ यदश्वान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम्

मस्थमनुरुध्यन्ते विषमस्थं त्यजन्ति (योषितः) R. 3,19,6. भर्तारमनुरुध्यन्तः क्लिश्यन्ते वीरपत्नयः MBh. 4,492. गतश्रीकान् — पार्थान्नानुरोद्धुं त्वमर्हसि 3,15632. अनुरुद्धः (तनुरुद्ध beide Ausgg.) शिबो राज्ञा मिथ्योपचरितो मया *dem ich zugethan bin* 5,1308. इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धाम् *seine Zuneigung zu erkennen gebend* Uttarar. 55,3 (71,1). यच्चद्रालम्बसे काम तत्तदेवानुरुध्यसे *daran hängst du* Spr. 3594. धर्मम्, ज्ञानम्, काममनुरुध्यते Nir. 14,6. MBh. 5,4156. Spr. 4275. दोषम् MBh. 3,13891. सुखप्रिये 5,950. धर्म्यमुपभोगम् 12,6676 (अनुरुध्ये st. अनुरुन्ध्ये ed. Bomb.). शौचम् 8390. निजप्रतिज्ञामनुरुध्यमाना मद्व्यग्रमाः कर्म समारभन्ते *haltend an* Spr. 216. धर्ममेवानुरुध्यति MBh. 3,2169. अर्थम् 12678. सुखप्रिये 5, 648 (कामात् st. कामान् ed. Bomb.). काममनुरुन्ध्यता (lies °रुध्यता) Mârk. P. 75,16. आश्रमे वासमनुरुध्य *Gefallen findend an* R. 7,48,5. — 4) *gutheissen, billigen;* med.: इमाममूलां गोविन्दराजोक्तिं नानुरुन्ध्महे Kull. zu M. 4,7. 11,180. अतवानस्मि यत्कर्म कृतवानसि भार्गव। अनुरुध्यामहे ब्रह्मन्पितुरानृण्यमास्थितम् (आस्थितः ed. Bomb.) ॥ *wir billigen es, dass du* R. 1,76,2. यन्नौर्विचित्रैर्यजतो भवाय ते राजन्स्वदेशाननुरोद्धुमर्हसि Bhâg. P. 4,14,21. — 5) *sich richten nach, Rücksicht nehmen auf:* मनो ऽनुरुन्धती भर्तुः MBh. 13,4497. लोकगाथामनुरुन्धानः Sarvadarçanas. 2,1. नानुरोत्स्ये जगल्लक्ष्मीम् Bhatt. 16,23. हन्त तिर्यञ्चो ऽपि परिचयमनुरुध्यन्ते Uttarar. 51,8 (66,8). अनुरुध्यस्व भगवतो वसिष्ठस्यादेशम् 75,12 (97,7). शक्तिर्गुणाश्रया तत्र प्रधानमनुरुध्यते Verz. d. Oxf. H. 162,*b*, N. 7. स्वामनुरुध्य बुद्धिम् 198,*b*, No. 467. न चास्या हृदयमननुरुध्य स्वेच्छया नर्म कुर्यात् Kâmaç. bei Mallin. zu Kumâras. 7,94. नायं पापो मया कृष्ण युक्तः स्यादनुरोधितुम्। प्राणेन *er verdient nicht, dass ich in Bezug auf sein Leben Rücksicht auf ihn nehme* MBh. 2,926. स्वर्गार्थमनुरुद्धः so v. a. *den Himmel im Auge habend* Spr. 4673, v. l. — Vgl. अनुरुद्ध fg., अनुरोध fgg.

— अप *abhalten, abwehren; verstossen, ausschliessen*, namentlich von Herrschaft oder Besitz *vertreiben:* अपं जायामरोधम् RV. 10,34,2. 3. अतिथिम् Ait. Br. 5,30. अन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् AV. 3,3,4. 12,3,43. अपेमं जीवा अरुधन्गृहेभ्यः 18,2,27. राष्ट्रात् Ait. Br. 8,10. Çat. Br. 12,9, 3,1. TS. 2,2,8,5. 3,1,1. यो ऽवंगतः सो ऽपरुध्यतां यो ऽपरुद्धः सो ऽवगच्छतु 6,6,5,3. Kâth. 27,5. सिन्धुक्षिद्राजर्षिर्योगपरुद्धश्चरन् Pañkav. Br. 12, 12,6. 15,3,25. 18,5,5. Kâtj. Çr. 19,1,3. 22,9,16. अपरुद्ध Kâm. Nîtis. 13,73 fehlerhaft für उपरुद्ध (vgl. 67). Vgl. अपरोद्धर्, अपरोध. — desid. अपरुरुत्स्यमान *den man abschaffen will* Kâth. 37,11.

— व्यप intens. *Jmd verstossen, der Herrschaft berauben* R. ed. Bomb. 2,58,20; vgl. u. अव intens.

— अभि 1) *abwehren, abhalten* MBh. 8,4308. — 2) *in Verwirrung bringen:* सैनिकास्तपोवनमभिरुन्धन्ति Çâk. Ch. 24,10. 33,3. उपरुन्धन्ति die andere Recension.

— अव 1) *Jmd abhalten, zurückhalten:* न शशाकोत्तरैर्वाक्यैरवरोद्धुं समुद्यतम् R. 3,1,33. मा गा इत्यवरुद्धा Çâk. 35. Sâh. D. 48,8. *versperren, hemmen:* स्रोतसां वर्त्मान्यवरुध्यन्ते गर्भेण Suçr. 1,328,8. *festhalten, einschliessen* (nach dem Comm.): अवं स्मशा रुधद्वाः RV. 10,105,1. *absondern, zurückstellen, einsperren; beseitigen:* गवां सहस्रम् Çat. Br. 11,6, 3,1. 14,6,1,2. उद्गातारम् 13,2,3,2. सप्त भ्रातृव्यान् 14,5,3,1. 6,1,2. Çâñkh. Br. 12,8. Shadv. Br. 4,2. अवारोधि गौर्देवदत्तेन *wurde eingesperrt*, अवारुद्ध गौः स्वयमेव *sperrte sich selbst ein* P. 3,1,64, Sch. mit doppeltem acc. P. 1,4,51. अवरुणद्धि गां व्रजम् Schol. शोकं चित्तमवारुधत् *er schloss seinen Kummer in's Herz ein* Bhatt. 6,9. gewöhnlicher mit acc. und loc.: आत्मानमात्मन्यवरुध्य Bhâg. P. 2,2,16. ईश्वरः सद्यो हृद्यवरुध्यते ऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिः 1,1,2. तिर्यङ्मनुष्यविबुधादिषु — अवरुद्धदेहः 3, 9,19. अवरुद्धासु दासीषु *eingeschlossen* Jâgn. 2,290. अन्तराविकाः *eingehegt* M. 8,236. महिमा तस्य वृद्धबन्धवया अवरुद्ध इवाभवत् *gleichsam eingesperrt* Râga-Tar. 6,286. तामवरुद्धत्वमनैषीत् so v. a. *sperrte sie in seinen Harem ein* (vgl. अवरोध) 4,677. भवानीनाथैः स्त्रीगणार्बुदसहस्त्रैरवरुध्यमानः (= सर्वतः सेव्यमानः Comm.) *umlagert, umgeben* Bhâg. P. 5, 17,16. *belagern:* पुरमवारुणत् Daçak. 93,20. काञ्च्या गाढतरावरुद्धवसनप्रान्ता *zugezogen, zusammengebunden* Spr. 630. med. *bei sich behalten, zurückhalten* so v. a. *nicht gewähren:* अयं प्रवर्तितो धर्मस्तुलां धारयता त्वया। स्वर्गद्वारं च वृत्तिं च भूतानामवरोत्स्यते ॥ MBh. 12,9396. *in sich schliessen, enthalten* Bhâg. P. 8,12,11. अवरुध् = अपरुध् *verstossen, ausschliessen, vertreiben:* यस्य चार्थे ऽवरुध्यसे R. 2,30,9. राष्ट्रात् Kauç. 16. Çâñkh. Çr. 14,50,8. पाञ्चालस्य वने वसतो वरुद्धस्य (d. i. ऽवरुद्धस्य, wie schon Weber vermuthet hat) Kâth. Anukr. in Ind. St. 3, 460. अवरुद्धो ऽचरत्पार्थो वर्षाणि त्रिंशानि च MBh. 4,2011. अवरुद्ध *bedeckt, verhüllt:* निगदितन्नैर्जलधरजालैस्त्र्यहमवरुद्धं द्व्यहमथ वाह्नः। यदि वियदेवं भवति सुभिक्षम् Varâh. Brh. S. 24,20. अवरुद्धश्चरन् *unerkannt, incognito* Daçak. 101,15. — 2) act. *verleihen, verschaffen* (*für Jmd abfordern*): सा मे ऽमुष्मादिदमवरुन्ध्यात् (v. l. अवरुन्द्धाम् *erlange für mich*) Kaush. Up. 2,3. med. *erhalten, erlangen, erreichen* (*für sich absondern, als sein Theil verwahren*): अपरिमितं लोकमवं रुन्धे AV. 9, 5,22. 6,9.40. पथो देवयानान् 15,11,3. अमृतस्य भक्षम् 13,2,15. तेन वै स देवताश्चेन्द्रियं चावारुन्ध TS. 2,5,3,2. सर्वतं एवैनमवरुध्य चिनुते 5,7,10, 2. प्रजामवरुन्धीमहि 7,2,6,1. Ait. Br. 1,6. 12. 2,17. 3,2. कामम् Kâth. 33,1. Çat. Br. 4,6,9,20. अन्नम् 5,2,2,3. 10,6,5,8. सर्वं ह्येवास्य तदात्मवरुद्धमभिजितम् 11,2,3,1. 12,7,2,7. 14,4,3,31 (अवारुन्धत् Brh. Âr. Up. 1,5,21). Shadv. Br. 3,7. Khând. Up. 2,15,2. Bhâg. P. 2,7,21 (wo die ed. Bomb. अमृतायुरवावरुन्ध आयुश्च liest; das erste अव erklärt der Comm. अवसन्नं पूर्वं दैत्यैः). 3,25,27. 4,13,9 (अवरुन्धानः = आप्नुवन्, जानन् Comm.). 5,1,15. 2,21. 4,4. 14,1. 22. 33 (der Comm. ergänzt सुखदुःखादि, Burnouf übersetzt अवरुन्धान durch *s'arrêtant*). 39 (अवरुन्धते st. अवरुन्द्धे). 10,68,28. 11,12,2. act.: परां काष्ठामचिरादवरोत्स्यसि 3, 33,10. सर्वे कामा अवरुद्धाः स्युः Çañk. zu Khând. Up. S. 16. Bhâg. P. 3, 23,7. 10,15,22. Mârk. P. 49,58 (?). — 3) *an Jmd hängen, Jmd zugethan sein* (vgl. अनु): पृथुमेवावरुन्धती Bhâg. P. 4,15,5. — Vgl. 2. अवरोध fg., 2. अवरोधन. — caus. वेगावरोधित wohl *verstopft* Suçr. 2,239, 3. — desid. med. अवरुरुत्सते *zu erlangen wünschen, einzuholen suchen* TS. 1,5,1,1. TBr. 1,3,3,1. 2,1,2,1. Ait. Br. 1,12. अमृतत्वम् Çat. Br. 10,4,3,6. Kâth. 12,5. पशून् Âçv. Çr. 11,2,18. Bhâg. P. 3,9,18. 9, 13,10. act. 4,8,30. — intens. *aus der Herrschaft vertreiben, der Herrschaft berauben:* अतिक्रान्तवया राज्ञा मा स्मैनमवरोरुधः (स्मैनं व्यपरोरुधः ed. Bomb.)। कौमारराज्ये जीवस्व तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् ॥ R. 2,58,20.

— पर्यव s. पर्यवरोध.

— प्रत्यव 1) *hemmen, unterdrücken:* प्रत्यवरुद्धभोजन Bhâg. P. 1,10,

1. = संकुचितभोग oder प्राप्तभोग Comm. — 2) *wiedererlangen:* स्मृतिं प्रत्यवरुध्य Bhâg. P. 2,2,1. — Vgl. प्रत्यवरोधन.

— समव 1) *einsperren, einschliessen:* कोशकारो यथात्मानं कीटः समवरुन्धति (= °रुणद्धि) MBh. 12,11266. pass. *enthalten sein:* एकस्मिन्यज्ञक्रतौ समवरुध्यते Pańkav. Br. 16,15,9. 19,9,5. — 2) *erlangen, erhalten:* °रुद्ध Bhâg. P. 10,87,14. — 3) pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* समवरुध्यते im Gegens. zu युज्यते Hariv. 11778 nach der Lesart der neueren Ausg. (Nilak. macht auf die überschüssige Silbe aufmerksam).

— आ 1) *einschliessen, einsperren:* वत्सानारुध्य शाद्वले Bhâg. P. 10, 13,7. *umzingeln, belagern:* तेषु तेष्ववकाशेषु शीघ्रमारुध्यतां पुरी Hariv. 5013. — 2) *abwehren, verscheuchen:* बन्धुता शुचमारुणत् Bhaṭṭ. 17,49. — 3) *festhalten, herholen, beitreiben:* आरुन्धानो गव्यां समत्सु ṚV. 4,38, 4. आ रुन्धां सर्वतो वायुः AV. 3,20,10. वायवारुन्धि नो मृगान् Kauç. 127. रसम् Çat. Br. 3,9,2,13. 15. 24. — 4) med. *sich enthüllen, sich entwickeln* (?): चक्षुरारुन्धते, श्रोत्रमा°, प्राणा आ° Kaush. Up. 2,2. आरुन्द्धे v. l. — Vgl. आरोधन. — caus. 1) *versperren:* पद्मामारोधयन्मार्गम् MBh. 1,4188. *belagern:* नगर्याः पश्चिमं द्वारं शीघ्रमारोधयन्तु Hariv. 5015. — 2) *belästigen:* काकेनारोध्यमाना R. 2,96,40; vgl. u. रुह्.

— समा *versperren:* तस्य मार्गं समारुध्य R. 7,32,42.

— उद् *hinaustreiben, verdrängen aus:* मेधावी राज्ञा सर्वेभ्यो मात्येभ्य उदरौत्सीत् Çat. Br. 14,7,1,41.

— उप 1) *einsperren, einschliessen, eintreiben:* वडवा उपरुन्धन्ति मिथुनत्वाय TBr. 3,8,22,3. Çat. Br. 13,2,2,2. पशून् 3,7,3,4. गाः Khând. Up. 4,6, 1. अन्नाश्चैवोपरोत्स्यन्ते पयसो ऽर्थे युगक्षये Hariv. 11158. उपरोधम् absol. in Verbindung mit einem loc. oder instr. P. 3,4,49. व्रजोपरोधं गाः स्थापयति, व्रज उपरोधम् und व्रजेनोपरोधम् Schol. उपरुद्ध *ein Gefangener* Ragh. 18,17. einen Feind, eine Stadt *einschliessen, umzingeln, belagern:* उपरुध्यारिमासीत M. 7,195. उपरुद्ध (बल) Kâm. Nîtis. 13,67. 73 (hier अपरुद्ध gedruckt). बलैः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरम् Mudrâr. 41,15. Pańkat. ed. orn. 55,16. यवनेोपरुद्धायतन Bhâg. P. 4,28,13. अभ्यन्तरं विशितुः प्रमदोपरुद्धं (°रुद्धो?) लोकस्य *eingeschlossen, umringt* Kathâs. 34, 259. — 2) *zurückhalten, behalten, nicht aus den Händen geben:* संभूय वणिजां पण्यमनर्घेणोपरुन्धताम्। विक्रीणतां वा विहितो दण्ड उत्तमसाहसः॥ Jâǵń. 2,250. — 3) *belästigen, plagen, beunruhigen, behelligen:* मा मोपरोत्सीः Kaṭhop. 1,21. उपरुन्धन्ति राजानो भूतानि विजयार्थिनः MBh. 12,3584. Ragh. 4,83. उपरोधति R. 7,74,6. उपरुन्धानाः (उपरुद्धानाम् die neuere Ausg., = अपराधवताम् Nilak.) Hariv. 6058. एवं वक्रभिर्वाक्यैरुपरुध्य R. 7,73,19. परदारान् — नोपरोद्धुमिहार्हसि 5,47, 16. Ragh. 5,22. Mârk. P. 19,5. उपरुध्यमान Bhâg. P. 5,14,5. बाष्पवेगोपरुद्धात्मन् R. Gorr. 2,58,25. बलीयसा 3,45,4. Bhâg. P. 4,28,15. 24. 5,26,16. प्राणानुपरुणत्सि मे so v. a. *bedrohen, in Gefahr bringen* R. 2,75,41. R. Gorr. 2,65,41. 79,26. उपरुध्यन्ति मे प्राणाः 3,73, 14. पौरा अस्मदन्वेषिणास्तपोवनमुपरुन्धन्ति *bringen in Verwirrung* Çâk. 18,10. 24,8. — 4) *Jmd aufhalten, zurückhalten:* मा गा इत्युपरुद्धा v. l. für अवरुद्धा Çâk. 35. *Etwas hemmen, unterbrechen, stören:* प्रवृत्तं नोपरुन्धेत शनैरग्निमिवेन्धयेत् MBh. 12,7817. शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते M. 4,348. Daçak. in Benf. Chr. 182,17. कृत्यमारब्धं किं न पूर्वमुपारुधः R. 2,36,14. उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम् Çâk. 57,13. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पं कुरु 90. बाष्पोपरुद्धया वाचा R. Gorr. 2,60,4. — 5) *verhüllen, verdecken:* रेणुः — उपरुरोध सूर्यम् Ragh. 7,36. उपरुद्धा च जगतीं तमसेव समावृताम् R. 2,69,11. — 6) = अपरुध् *verstossen, von der Regierung ausschliessen:* सगरो ज्येष्ठं पुत्रमुपारुधत् R. 2,34,16. रामः किमकरोत्पापं येनैवमुपरुध्यते 36,26. — Vgl. उपरोध fgg. — caus. *verkürzen, verringern, Einbusse erleiden lassen:* धर्मार्थविद्याकालाननुपरोधयन्काममूत्रं तदङ्गविद्याश्च पुरुषो ऽधीयीत Verz. d. Oxf. H. 216,*b*,29.

— प्रत्युप *verstopfen:* प्रत्युपरुद्धकण्ठो न किंचिदूचे ऽश्रुपरिप्लुताक्षः Bhâg. P. 11,29,35.

— समुप *hemmen, unterbrechen, stören:* शीघ्रं हि कुर्वतः कर्म धर्मः समुपरुध्यते MBh. 13,2148.

— नि 1) *zurückhalten, festhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen:* ऋतस्य प्रियस्य दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासो अग्मन् ṚV. 1,122,7. स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः 7,6,5. दस्युभिर्निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम् MBh. 4,199. एतांश्चापि निरोत्स्यामि वेलेव मकरालयम् 5,2281. 7,5335. Hariv. 5810. Çâk. 16,16. निवेष्टुकामं न्यरौत्सीत् Verz. d. Oxf. H. 259,*a*,20. त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं क्षमः Spr. 3020. सज्जमानमकार्येषु निरुन्ध्युर्मन्त्रिणो नृपम् 3116. निरुद्धा मक्षिकाभिः Varâh. Bṛh. S. 92,2. Kathâs. 4,36. 42,127. Râǵa-Tar. 1,322. किं धर्मेण निरुध्यसे 4,32. Mârk. P. 102,3. Bhaṭṭ. 16,20. वेगादङ्गं प्रविसृतं पवनं निरुन्ध्याम् so v. a. *einholen* Mṛkkh. 10,20. स्रोतः *hemmen* Suçr. 1,102,2. 262,8. निरुद्धालेपनसंज्ञस्तेनास्रावसंनिरोधः *den Ausfluss hemmend* 64,13. पद्मप्रान्तग्रन्थपुटनिरुद्धेन बाष्पेण Spr. 1720. mit Ergänzung von रश्मम् so v. a. *lenken* Çâk. 169. *abhalten, abwehren:* निरुन्धानो अमतिं गोभिः ṚV. 1,53,4. वृत्रा 8,2. Ait. Br. 1,10. 3,36. स्नावादुदकात् Çat. Br. 13,4,2,17. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren:* न्यरुन्धनुद्गलद्बाष्पम् Bhâg. P. 1,10,14. 11,33. 3,23,50. अन्तरिते गतिर्येषां दर्शनं च न्यरुध्यत (so ist zu lesen) MBh. 4,1053. Hariv. 11770. 11781. निद्रानौघ्यं निरुन्धानः Spr. 1756. ऐहिकामुष्मिकान्कामान्निरुध्य Mârk. P. 39,23. निरुद्धा वासनाः केन Râǵa-Tar. 3,424. Sarvadarçanas. 164,5. Bhaṭṭ. 3,39. तदा स्वा निरुणद्धि यात्राम् Varâh. Bṛh. S. 89,14. 86,56. — 3) *einschliessen, einsperren:* अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः ṚV. 1,32,11. निरुद्धश्चिन्मह्रिषस्तर्ष्यावान् 10,28,10. याचितो निरुन्धानः *einschliessend, nicht herausgebend* AV. 12,4,36. 5,17,12. Çat. Br. 3,7,2,8. विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेश्मनि M. 11,176. Kathâs. 34,184. गिरिव्रजे निरुद्धानां राज्ञां कृष्णेन मोक्षणम् MBh. 1,409. R. 5,16,51. निरुद्धतोय (मकरालय) 93,11. Bhâg. P. 5,26,34. मनो हृदि निरुध्य Bhag. 8,12. einen Weg *versperren:* निरुन्धानाः सतां मार्गम् Kâm. Nîtis. 4,12. मार्गं निरोद्धुम् Mṛkkh. 85,23. न्यरुन्धंश्चास्य पन्थानम् Bhaṭṭ. 17,49. einen Ort *einschliessen, belagern:* निरुरुधुः — बलैर्नृपमन्दिरम् Râǵa-Tar. 1,368. राजधानीं निरुद्धवान् 6,125. Bhâg. P. 9,6,16. 10,50,4. 76,9. *verschliessen, schliessen:* निरुद्धे नन्दिना द्वारे Kathâs. 1,46. 50,188. निरुद्धवातायनमन्दिर Ṛt. 5,2. श्रोत्रे निरुद्धे मया Spr. 996. die Sinne, das Herz (gegen die Aussenwelt) *verschliessen:* निरुध्य चेन्द्रियग्रामम् MBh. 3,13633. निरुद्धचेतसो ऽङ्गानि निरुद्धान्यखिलान्यपि Spr. 1604. मनो निरुन्ध्यात् 2867. द्वारं निरुध्यामुम् Bhâg. P. 4,8,80. निरुद्धकरणाशय 1,13,53. यदा चित्तं

निरुध्यते Sarvadarçanas. 177, 12. 164, 4. fgg. Bhag. 6, 20. — 4) *verhüllen, verdecken:* निरुद्धं गगनं सर्वं व्यभ्रं मेघैः समन्ततः MBh. 13, 2069. Hariv. 8782. R. 5,8,24. Suçr. 1,23,2. Varâh. Bṛh. S. 24,15. 28,6. 47, 26. Râǵa-Tar. 1,369. Bhâg. P. 2,9,37. Bhaṭṭ. 7,70. — 5) *erfüllen, anfüllen:* बाष्पनिरुद्धकण्ठी R. Gorr. 2,123,24. Bhâg. P. 6,14,50. धूपगन्धनिरुद्ध (स्थान) MBh. 14,1921. खगपदन्ततैः पर्णैर्निरुद्धं नीलकोमलैः (वनम्) R. Gorr. 2,98,5. वाजिशालाः — निरुद्धा महिषैरिव Râǵa-Tar. 4, 165. Bhâg. P. 3,17,17. — 6) *unterdrücken* so v. a. *verschwinden machen* Çiç. 4, 55. युगे युगे भवन्त्येते सर्वे दृताद्यो नृपाः। पुनश्चैव निरुध्यन्ते *und verschwinden wieder* Hariv. 112 = VP. bei Muir, ST. I, 27, N. 45. अहो रात्रान्निरुद्धास्ते कालेन हृदि ये कृताः Bhâg. P. 9, 3, 32. — 7) निरुद्ध so v. a. अपरुद्ध *verstossen* Pañkav. Br. 9,1,9. Kâṭh. 13,5. — 8) निरुध्य MBh. 3,962 fehlerhaft für निरूप्य (wie schon Westergaard vermuthet hatte), निरुध्यतु 13,4530 fehlerhaft für विरुध्यतु; die Bomb. Ausg. hat an beiden Stellen die richtige Lesart. निरुध्यत्पदम् Râǵa-Tar. 2,165 wird wohl auch unrichtig sein. — Vgl. निरुद्ध fg., निरोद्धव्य fgg. — caus. 1) *einschliessen:* वायुं निरोधयेत् Verz. d. Oxf. H. 234,a,31. 33. — 2) *verschliessen lassen:* द्वारान् (!) Râǵa-Tar. 5,428.

— उपनि *einsperren, einschliessen, eintreiben:* पशून् Çat. Br. 3,7,3,3.

— संनि 1) *zurückhalten, festhalten:* °रुद्ध MBh. 3,1613. 6,1964 (स निरुद्धेषु ed. Bomb.). 7,933. 4433. स्वकर्मभिर्मानवं संनिरुद्धम् 13,2956 = 3,12728, wo fälschlich स्वकर्मभिर्दानवसंनिरुद्धे gelesen wird. — 2) *hemmen, unterdrücken, aufheben:* श्रुतिश्च संनिरुध्यते पुरा तवेह MBh. 12,12082. कामक्रोधस्य लोभस्य (मोहस्य die ältere Ausg.) संनिरुद्धस्य मेधया Hariv. 11696. यद्यपि न संनिरुध्यते दुःखम् Wilson, Sâṁkhjak. S. 10. प्राणायामैः संनिरुद्धषड्वर्गः Bhâg. P. 4,23,8. प्राणापानौ संनिरुध्यात् 7, 15, 32. — 3) *einschliessen, gefangen halten* Çvetâçv. Up. 4, 9. Hariv. 10230. Bhâg. P. 9,15,22. Verz. d. Oxf. H. 256,a,2. अग्निहोत्रं संनिरुद्धाग्नि so v. a. *zusammengeschürt* R. 7,24,10. 36,5. (vor der Aussenwelt) *verschliessen:* संनिरुध्येन्द्रियग्रामम् Spr. 5161. पञ्चेन्द्रियस्य ग्रामस्य नवद्वारस्य — संनिरुद्धस्य Hariv. 11696. — 4) *erfüllen, anfüllen, voll machen:* देहेन तस्य मल्लस्य — संनिरुद्धो महारङ्गः स शैलेनेव लक्ष्यते Hariv. 4733. रोमभिः संनिरुद्धाङ्गम् MBh. 12, 87. — Vgl. संनिरुद्धगुद, °रोद्धव्य, °रोध.

— परि 1) *einschliessen:* इयमेवैनमर्चिभ्यां परिरोधमानयति TBr. 3, 9, 17,3. — 2) *Jmd zurückhalten* Spr. 971. — 3) *anfüllen:* बाष्पपरिरुद्धान्त R. Gorr. 2,16,38. 7,24,26. — Vgl. परिरोध.

— प्र 1) *Jmd zurückhalten:* माता मे प्ररुणाद्धि (संरुणाद्धि Sâv. 5, 82) माम् MBh. 3,16830. — 2) *hemmen, sperren:* अतीर्थेन त्वा अयमधर्युराहुतीः प्रारौत्सीत् Çat. Br. 11,4,2,14. प्राणान् 12,4,3,6. Pañkav. Br. 13,4,11.

— संप्र pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen:* °रुध्यते im Gegens. zu युज्यते Hariv. 11778. समवरुध्यते die neuere Ausg.

— प्रति 1) *abhalten, zurückhalten, hemmend entgegentreten, sich widersetzen:* तं यः प्रतिरुन्धेद्यशः स प्रतिरुन्धेत्तस्मान्न प्रत्यरौत्सि Ait. Br. 6,34. TS. 6,4,2,2. प्रतिरुध्य गुरुम् M. 11, 88. MBh. 5,7144. अन्योऽन्यं प्रत्यरुन्धताम् Bhâg. P. 10,44,4. प्रतिरुद्धवत् R. 4,60,3. दैवं पुरुषकारेण प्रतिरोद्धुम् R. Gorr. 2,20,9. अप्रतिरुद्धेन प्रज्ञानेन *ungehemmt* Bhâg. P. 2,9,24. अप्रतिरुद्धचक्र 4,16,27. यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः *unterbrochen, gestört* M. 11,11. — 2) *einschliessen, einsperren:* नगरे प्रतिरुद्धः MBh. 5,1214. भ्रातरं पूर्वजं हि यः। अश्मभिः प्रत्यरौत्सीत् — बिले R. 4,55,3. *absperren:* प्रतिरुध्य रणाजिरम् MBh. 5,7320. die Sinne u. s. w. (gegen die Aussenwelt): प्रतिरुध्येन्द्रियाणि 823. प्रतिरुद्धेन्द्रियप्राणमनोबुद्धि Bhâg. P. 1,18,26. — 3) *verhüllen, verdecken:* ते दिशो विदिशः सर्वे प्रतिरुध्य प्रहारिणः MBh. 3,12114. Hariv. 13611. — Vgl. प्रतिरोद्धर् fgg.

— वि 1) med. *Widerstand finden:* पुरस्ताद्यवानां सवित्रा विरुन्धते। सवित्रैव विरुध्य ब्रह्मणा यवानादधते *durch S. finden sie Widerstand vor dem Getraide, durch das Br. nehmen sie es in Besitz* TBr. 1,8,4,1. — 2) विरुध्यते und °ति a) *streiten, in Feindschaft leben, Feindschaft beginnen, kämpfen mit* (instr., instr. mit सह, gen., loc., acc. mit प्रति): नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये MBh. 12,9349. यच्चाकस्माद्विरुध्यते 6275. Spr. 3276. अन्योऽन्यं विरुध्यन्त (विक्रुध्यन्त ed. Bomb.) MBh. 1,1357. व्यरुध्यन्त परस्परम् Vâju-P. bei Muir, ST. I, 31, N. 56. ब्राह्मणैश्च विरुध्यते MBh. 5,1063. Hariv. 7313. Spr. 2836. 4288. 4922. Bhâg. P. 10,1,68. Mârk. P. 27,10. बन्धुभिश्च विरुध्यतु (निरु° ed. Calc.) MBh. 13,4530. 4572. 4577. R. 7,61,8. चाषस्य काकेन विरुध्यतः Varâh. Bṛh. S. 88,24. मृत्युर्ध्रुवस्ते ऽद्य मया विरुध्य R. 3,44,31. त्वया सह विरुध्यन्ते MBh. 2,227. तत्कथं सह पित्राहं विरुध्येयम् R. Gorr. 2,23,17. fg. तत्क्षमं न विरोद्धुं ते सह तेन 4,14,19. न च ते ऽहं विरुध्यामि कस्मान्मां हतवानसि 16,19. यस्मिन्विरुध्य दशकंधर आर्तिमार्च्छत् Bhâg. P. 2,7, 23. इन्द्रेण — अस्मान्प्रति (so trennen wir) विरुध्यता R. 5,41,8. *bekämpfen:* ब्रह्म (acc.) क्षत्रं (nom.) यत्र विरुध्यतीह MBh. 12,2782. विरुद्ध *im Streite liegend, in Feindschaft lebend, feindselig gestimmt, verfeindet* R. 2,1,13. 4,55,9. Kâm. Nîtis. 15,55. Spr. 123 (zugleich *eingeschlossen*). 253. Varâh. Bṛh. S. 95,46. 97,12. Kathâs. 39,229. 45,306. निहत्याहं विरुद्धानां रक्षिता नमतां पुनः 46,158. 74,101. Râǵa-Tar. 5,452. Hit. ed. Johns. 2126. परस्परेणाविरुद्धाः R. 1,7,8 (11 Gorr.). राघवेण विरुद्धस्य तव 3,41,31. 4,57,18. 5,48,13. Spr. 1679. मद्बलेन विरुद्धाय *dem, der sich meiner Macht widersetzt,* R. 2,23,25. तपश्चराणां मृदुसौम्यशीलिनां सदा विरुद्धं ब्रूहि रावणम् 5,89,33. अविरुद्धस्ततस्तस्य तपोन समपद्यत MBh. 12,4271. Kathâs. 60,142. परस्पराविरुद्धाः Ragh. 10,81. राजविरुद्धानाम् Spr. 4871. Râǵa-Tar. 4,165. von Planeten Verz. d. Oxf. H. 86,a,1 v. u. *feindselig* so v. a. *unerwünscht, widerwärtig, gehässig* u. s. w.: लक्षण R. 5,27,32. चेष्टित Kathâs. 74,161. °शंसन = गालि H. 272. विरुद्धमकरोन्मयि Kathâs. 20,129. 5,4. 44,123. मा स्याद्राजकुले किंचिद्विरुद्धम् 49,132. अ° 71,210. विरुद्धमिदं त्वयानुष्ठितं यन्मह्यं प्रदाय कन्यान्यस्मै प्रदत्तेति Pañkat. 130,1. 59,25. यदि त्वां प्रति विरुद्धमाचरामि 213,20. अन्यथा विरुद्धं ते फलिष्यति (अन्यथा ते विरुद्धं फलं भविष्यति v. l.) Hit. 38,18. विरुद्धधी *Feindseliges im Sinne habend, schadenfroh* Râǵa-Tar. 1,303. अस्मद्विरुद्धं कुरुते Kathâs. 45,167. परविरुद्धेषु नोत्सहन्ते महाशयाः 17,149. कर्म लोकविरुद्धम् R. 3,35,4. — b) *in Widerspruch stehen mit Etwas, einen Widerspruch bilden:* एतद्विरुध्यते MBh. 13,5595. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. 94. Nîlak. 157. Muir, ST. 4,221. न च केन च धर्मेण (so die ed. Bomb., Nîlak. erwähnt aber auch die Lesart der ed. Calc.) विरुध्यन्ते प्रजा इमाः MBh. 8,2074 (vgl. R. 4,17, 33). सेयं भगवतो माया यन्नयेन विरुध्यते Bhâg. P. 3,7,9. यत्स्ववाचो वि-

रुध्येत 10,77,30. विरुद्ध *in Widerspruch stehend, einen Widerspruch enthaltend, widerstreitend, widersprechend, entgegengesetzt, logisch einander ausschliessend* (die Ergänzung im gen., instr. oder im comp. vorangehend) KÂTJ. ÇR. 5,11,25. किमिदं वर्तसे भद्रे विरुद्धं यौवनस्य ते R. 7,17,4. विरुद्धं धर्मकीर्तिभ्याम् R. GORR. 2,58,29. तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् M. 8,46. धर्म° R. 4,17,33. 5,47,17. 48,4. धर्माविरुद्ध BHAG. 7,11. परस्परविरुद्धानाम् M. 7,152. विरुद्धं बहु भाषते JÂGN. 2,14. KAP. 1,23. MṚKKH. 13,12. ÇÂK. 177. निग्रहस्तद्विरुद्धः *ist das Entgegengesetzte davon* AK. 3,3,13. ÇIÇ. 9,62. Spr. 1927. KATHÂS. 28,183. SÂH. D. 205. 574. 214,2. PRAB. 20,17. 52,14. SARVADARÇANAS. 12,2. 3. 22,12. 26,2. 44,12. 45,2. 49,17. 50,6. 9. 11. 18. 61,11. 130,15. 163,19. PAÑKAT. 131,11. 199,4. TRIK. 3,3,463. Schol. zu P. 1,3,50. 2,4.13. SIDDH. K. zu P. 3,1,96. BHÂG. P. 4,9,16. 6,4,32. 10,88,2. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 99. Schol. zu KAP. 1,155. NÎLAK. 4. Verz. d. Oxf. H. 241, *b*,13. Verz. d. B. H. No. 973. विरुद्धोक्ति = विप्रलाप H. 276. हेत्वाभास TATTVAS. 41. BHÂSHÂP. 70. 73. SARVADARÇANAS. 119,16. विरुद्धत्व 45,20. विरुद्धता 166,14. — 3) विरुद्ध *dem Gesetze* u. s. w. *widersprechend, verboten, unerlaubt:* कर्मन् M. 4,15. MAITRJUP. 6,34. JÂGÑ. 1,129. MBH. 3,9995. R. 2,58,26. — 4) विरुद्ध *misslich, bedenklich, gefährlich:* कार्य R. 5,77,19. ब्राह्मणत्वं ते विरुद्धमिह दृश्यते MBH. 13,1920. — An den Schluss stellen wir diejenigen Bedeutungen, die der Wurzel eigentlich in Verbindung mit andern Präpositionen zukommen: 5) *festhalten:* बाहुदण्डविरुद्ध R. 4,10,21. — 6) *hemmen, unterdrücken:* स्वरश्च व्यरुध्यत *die Stimme versagte ihm* R. 2,36,10. येन — अम्बरे गतिः । सिद्धादीनां विरुद्धाभूत् KATHÂS. 45,85. अविरुद्ध *ungehemmt* VIKR. 49,11. — 7) *einschliessen:* विरुद्ध *eingeschlossen* Spr. 123 (zugleich *feindselig gestimmt*). *belagern:* व्यरुन्धन् (अरुन्धन् ed. Bomb.) मिथिलाम् R. 1,66,21. *verschliessen, zuhalten:* प्राणं करेण विरुणद्धि (च रु° v. l.) ṚT. 6,26. — Vgl. विरोद्धव्य u. s. w., मनोविरुद्ध, वाचाविरुद्ध. — caus. 1) *verfeinden, entzweien:* कथंचनायं तत्रापि पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह । विरोधयेत् MBH. 11,705. संधेयानपि संधत्स्व विरोध्यांश्च विरोधय 12,2050. विरोधयामास मिथो विष्णुं शंकरमेव च R. GORR. 1,77,18. यदन्योऽन्येन ते पुत्रा विरोध्यन्ते कथंचन MBH. 3,360. — 2) *gegen Jmd feindlich auftreten, befeinden, bekämpfen:* तं विरोध्य R. 3,62,9. प्रधानसभिको माथुरो मया विरोधितः MṚKKH. 35, 20. न विश्वसेत्पूर्वविरोधितस्य शत्रोश्च मित्रत्वमुपागतस्य Spr. 1463. mit gen.: कुलस्यास्य यद्विरोधयसे भृशम् HARIV. 4194. — 3) *Etwas bestreiten, Einwendungen machen gegen:* ज्ञानीयादागमान्सर्वान्ग्राह्यं च न विरोधयेत् MBH. 10,180. अविरोधित so v. a. *nicht ungern gesehen* ÇIÇ. 10,69. भूता ह्यर्था विनश्यन्ति देशकालविरोधिताः । विक्लवं दूतमासाद्य so v. a. *weil Ort und Zeit ihnen ungünstig sind* Spr. 4671. — desid. *Feindschaft zu beginnen trachten:* विरुरुत्सति MBH. 5,3265.

— प्रतिवि scheinbar R. 5,41,8, wo aber अस्मान्प्रति विरुध्यता zu trennen ist.

— सम् 1) *aufhalten, zurückhalten:* स चेत्तु पथि संरुद्धः पशुभिर्वा रथेन वा M. 8,295. माता मे संरुणद्धि माम् SÂV. 5,82. ततः प्रवेशे संरुद्धौ (so die neuere Ausg.) रक्षिभिः HARIV. 9120. RÂGA-TAR. 5,453. भ्रातुर्वचनसंरुद्धः R. 4,34,2. बाष्पसंरुद्धा *durch Thränen gehindert* 2,24,1. तृणामिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि *festhalten, fesseln* Spr. 82. सत्यपाशेन संरुद्धः स्नेहस्तस्य न लुप्यते R. GORR. 2,50,18. यो मोचयति संरुद्धमिदं प्रवहणं मम KATHÂS. 18,296. *in feindlicher Absicht Jmd festhalten, angreifen:* तं संरुरोध योद्धारं संगरे RÂGA-TAR. 1,61. अज्ञाविके तु संरुद्धे वृकैः M. 8, 235. *zurückhalten, abwehren:* °निस्त्रिंशान् — चर्मणा संरुरोध MBH. 7, 559. विंशत्या सायकैः — पुनश्चैव शतेनास्य संरुरोध महारथम् 7708. *verhalten, vorenthalten, versagen:* संरुद्धप्रजनन NIR. 5,2. कच्चिन्न — ग्राम्याणां मनुष्याणां वृत्तिं त्वं संरुणत्सि वै MBH. 2,226. संरुद्धचेष्ट *gehemmt* RAGH. 2,43. — 2) *eintreiben, einschliessen, einsperren, absperren, gefangen halten* ÇAT. BR. 1,2,4,11. fgg. NIR. 6,16. राज्ञो मागधसंरुद्धान्मोक्षयिष्यति MBH. 13,6839. संरुद्धा गिरिकन्दरे HARIV. 6940. R. 4,9,23. सीतां संरुन्धता बलात् 6,94,23. गर्दभं प्राप्य संरुध्य दोग्धुमारेभिरे यावत् KATHÂS. 63,188. केदारखण्डे निःसरमाणमुदकमवारणीयं संरोद्धुम् MBH. 1,693. संरुद्धा नगरी *eingeschlossen, belagert* R. 6,17,2. संरुद्धनासाग्रो वामपाणिना *zugehalten* KATHÂS. 82,30. समरुद्धेव विक्रमः *schloss sich gleichsam ein* BHAṬṬ. 6,34. eine Stadt *einschliessen, belagern* HARIV. 4973. R. 6,17,2. RÂGA-TAR. 1,59. BHÂG. P. 10,50,5. einen Weg *versperren:* मार्गं संरुध्य MBH. 3,2541. कदलीखण्डसंरुद्धनलिनीपुलिन *eingeschlossen von* BHÂG. P. 4,6,21. मनः संरुध्य *verschliessen* MBH. 3,13633. धैर्यसंरुद्धमानस R. GORR. 2,30,26. — 3) *verhüllen, bedecken:* मेघैश्च गगनं नीलैः संरुद्धमभवद्घनैः MBH. 13,6870. दिवाकरः संरुद्धः R. 3,33,12. — 4) *verstopfen* KATHÂS. 53,110. कफसंरुद्धनाडि BHÂG. P. 3,30,17. बाष्पसंरुद्धकण्ठ R. 4, 15,30. अश्रुसंरुद्धनयना *angefüllt mit* 19,30. 5,33,16. — Vgl. संरोध. — caus. *absperren lassen:* पालीभिरम्भः संरोध्य RÂGA-TAR. 5,106.

— अतिसम्, प्रहर्षेणातिसंरुद्धा so v. a. *vor Freude überfliessend* R. 6,98,11.

— अभिसम् 1) *hindrängen zu, halten bei:* तानाग्नीध्रमभिसंरुरुधुः ÇAT. BR. 3,6,1,28. — 2) *zurückhalten, abhalten:* तं तु द्वारस्थाः (so die ed. Bomb.) — न शेकुरभिसंरोद्धुम् R. 2,14,42. — 3) *verhüllen, verdecken:* अन्योऽन्यमभिसंरुद्धाः ग्रहाश्च न चकाशिरे R. 6,31,38.

— उपसम् *hindrängen zu, halten bei* ÇAT. BR. 1,2,4,11. fg.

— प्रतिसम् *in sich einschliessen, einziehen:* प्रतिसंरुद्धविक्रम BHÂG. P. 3,11,27.

3. रुध् (= 2. रुध्) adj. *zurückhaltend, hemmend:* कर° MEGH. 40.

रुध (von 2. रुध्) adj. dass. in अगोरुध.

रुधिक्रा (रुधिऽक्रा Padap.) m. N. pr. eines von Indra besiegten Dämons ṚV. 2,14,5.

रुधिर UṆÂDIS. 1,52. 1) adj. *roth, blutig:* क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि AV. 5,29,10. — 2) m. *a*) *der blutrothe Planet* d. i. *Mars* H. an. 3,597. MED. r. 208. Spr. 2649. VARÂH. BṚH. 2,13. 4,18. 22,6. — *b*) *ein best. Edelstein;* s. रुधिराख्य. — 3) n. AK. 3,6,3,22. *a*) *Blut* AK. 2,6,2,15. H. 621. H. an. MED. HALÂJ. 3,10. 5,44. ÇAT. BR. 14,6,9,31 (proparox.). यदा गवां स्तनेषु रुधिरं स्रवति SHAḌV. BR. 6,9. रुधिरे च स्रुते M. 4,122. वमन्तो रुधिरं बहु MBH. 1,1170. फेनिल 5936. °लालस 12, 4273. °ताम्राक्ष R. 2,50,4. रुधिरेणावसिक्ताङ्गः 64,26. MBH. 1,7730. °चर्चितसर्वाङ्गी VET. in LA. (III) 21,14. SUÇR. 1,5,2. 46,20. 118,13. 259,8. VARÂH. BṚH. S. 3,24. 30. 28,12. 47,16. °बिन्दु PAÑKAT. 123,14. °वर्ष SHAḌV. BR. 6,8. VARÂH. BṚH. S. 21,26. °सार *bei dem das Blut vorwaltet* VARÂH. LAGH. 2,14. plur. Spr. 756. PAÑKAT. 171,11. am Ende

eines adj. comp. f. आ MBh. 7,4645. Varâh. Bṛh. S. 27,5. Kathâs. 26, 144. रुधिराध्याय Titel eines Abschnitts im Kâlikâ-P. Verz. d. Oxf. H. 78, *a*, No. 122. — *b*) *Saffran* Trik. 3,3,367. H. an. Med. Hâr. 260. — *c*) N. pr. einer Stadt Hariv. 9823; vgl. शोणितपुर.

रुधिराक्त s. रुधिराख्य.

रुधिराख्य adj. *blutbenannt*, subst. Bez. *eines best. Edelsteins* Varâh. Bṛh. S. 80,4. Gâruḍa-P. 181 im ÇKDr. Ratnaparîkshâ 35. रुधिराक्त Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,14.

रुधिरानन n. Bez. *einer der fünf rückläufigen Bewegungen des Mars* Varâh. Bṛh. S. 6,4.

रुधिरान्ध N. einer Hölle VP. 207. 209. so in beiden Ausgg., obgleich gesagt wird, dass der Name *whose wells are of blood* bedeute; dieses wäre aber रुधिरान्धु.

रुधिरामय m. = रक्तपित्त *Blutsturz* Suçr. 2,473,4.

रुधिराशन adj. *von Blut sich nährend*, Beiw. der Râkshasa R. 1, 32,20. von Pfeilen R. Gorr. 2,20,41.

रुधिरोद्गारिन् adj. *Blut ausspeiend;* m. Bez. *des 57sten Jahres im 60jährigen Jupitercyklus* Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,7. — Vgl. उद्गारिन् in den Nachträgen.

1. रुप्, रुप्यति (विमोहने) Dhâtup. 26,125. *Reissen* (im Leibe) *haben:* तासां त्रगधा रुप्यन्त्यैत् TBr. 2,1,1,2. तस्य विषस्य न कश्चनाश्नात् य आश्नात्सो ऽरुप्यत् Kâṭh. 25,4. — Vgl. लुप्, *rumpere.*

— caus. रोपयामि, अरूरुपत् 1) *Reissen verursachen:* (विष) नामीमदो नारूरुपः AV. 4,6,3. व्रतिवांसं न रूरुपः (so zu vermuthen) 7,3. 5. 6; vgl. AV. Prât. 4,86. — 2) *abbrechen:* यद्व्यायौ ऽवच्छेद्रोपयेत्तद्यज्ञस्यं TS. 2, 6,8.4. मा रूरुपाम यज्ञस्यं TBr. 3,7,5,6. — Vgl. 1. रोपण.

2. रुप् nach dem Comm. so v. a. *Erde:* अग्रे रुप आरुपितं ज्ञबारु RV. 4,5,7. पाति प्रियं रुपो अग्रं पदं वेः 8. पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहम् 10,13,3.

रुभेटि f. *Nebel, Dampf* Çabdârthak. bei Wilson.

रुम 1) m. parox. N. pr. eines Mannes Ṛv. 8,4,2. — 2) f. आ N. pr. *a*) einer Salzgrube H. 941. an. 2,335. Med. m. 27. Halâj. 2,14. LIA. I, 249, N. 3. °भव adj. *dort gewonnen* (= रौमक) H. 942. — *b*) einer Frau des Affen Sugrîva H. an. Med. R. 4,17,28. 33,37. 43. 35,5. 55,14.

रुमण्वत् P. 8,2,12. m. N. pr. 1) eines Mannes: ज्येष्ठो ज्ञामदग्न्यो रुमण्वान्नाम नामतः MBh. 3,11080 (S. 572). eines Sohnes Supratîka's Kathâs. 9,44. 10,213. 12,37. 14,34. 15,4. 34,114. सरुमण्वत्क adj. 14,58. 15,109 (wo सरु° zu verbinden ist). 21,3. — *b*) eines Berges P. 8,2,12, Sch.

रुम्र Uṇâdis. 2,14. adj. = अरुण und शोभन Uggval.

रुरु Uṇâdis. 4,103. m. 1) *eine Hirschart* AK. 2,5,10. Trik. 3,3,368. H. 1293. an. 2,449. Med. r. 80. Halâj. 2,75. VS. 24,27. 39. MBh. 2, 2520. 3,1961. 2402. 15629. 5,2314. 7,3792. 8,3337. 12,7978. Spr. 3775. R. 2,93,2. R. Gorr. 2,114,33. Suçr. 1,204,10. 21. Ragh. 9,51. 72. Varâh. Bṛh. S. 48,76. 86,38. 48. Bhâg. P. 3,10,20. 4,6,20. °रक्त Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,4. °नावधारिन् (Kṛshṇa) Pańkar. 4,8,35. रुरुपृषतम् P. 2,4,12, Vârtt. 1, Sch. Çâkjamuni als रुरु Vjâḍi zu H. 233. रुरु am Ende eines comp. nach dem verglichenen Wesen gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — 2) *ein best. reissendes Thier*, eine zur Erkl. von रौरव wohl nur erfundene Bed. Bhâg. P. 5,26,11. fg. *Hund* H. ç. 180. — 3) *ein best. Fruchtbaum* gaṇa प्लक्षादि zu P. 4,3,164. — 4) N. pr. *a*) eines Sohnes des Ṛshi Pramati und der Ghṛtâkî (einer Apsaras) MBh. 1,871. fg. 940. fgg. 13,2004. Kathâs. 14,76. 28,88. eines unter den Viçve Devâs aufgeführten göttlichen Wesens, welches den Beinamen ऋषिपुत्र führt, Hariv. 11543. eines der 7 Weisen unter Manu Sâvarṇi, mit dem patron. Kâçjapa, 454. — *b*) eines von der Durgâ getödteten Dânava Trik. H. an. Med. Kathâs. 26, 144. 53,171. 78,90. 109,101. Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,13. — *c*) einer Form Bhairava's Verz. d. Oxf. H. 25,*b*, N. 5. 250,*a*,18. — Vgl. महा°, रौरव, रौरवक.

रुरुक m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 739. fg. VP. 373. — Vgl. रौरुकि.

रुरुत्तणि (vom desid. von 1. रुज्) adj. *zu zerstören fähig:* शतं पुरो रु° Ṛv. 9,48,2.

रुरुदिषु (vom desid. von 1. रुद्) adj. *zu weinen im Begriff stehend, weinerlich gestimmt* Weber, Râmat. Up. 336. Bhaṭṭ. 7,99.

रुरुभैरव s. u. रुरु 4) *c*).

रुरुमुण्ड m. N. pr. eines Berges, v. l. für उरुमुण्ड Burn. Intr. 378, N. 3.

रुरुशीर्षन् adj. *das Haupt vom* रुरु *genannten Hirsche* (d. h. *eine Hornspitze*) *habend*, von einem Pfeile Ṛv. 6,75,15.

रुवण्य् (von einem nicht vorhandenen रुवण, nom. act. von रु), °यति *grobe* oder *kreischende Töne von sich geben:* उप भूष जरितर्मा रुवण्यः ग्रावाणा वाचं कुविदङ्ग वेदत् Ṛv. 8,85,12.

रुवण्यु (von रुवण्य्) adj. *kreischend:* आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे Ṛv. 1,122,5.

रुवथ (von रु) Uṇâdis. 3,116. m. 1) *das Brüllen des Stieres* Kâṭh. 36, 9. — 2) *Hund* Uggval.

रुवु m. *Ricinus communis* (एरण्ड) Ratnam. 3. Çârṅg. Saṁh. 1,4,18. = रक्तैरण्ड Râǵan. im ÇKDr.

रुवुक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDr. = रक्तैरण्ड Râǵan. ebend. — Vgl. उरुवूक, रुचक, रुवूक, रुवुक.

रुवूक m. *Ricinus communis* Ratnam. im ÇKDr. auch रुवूकु (!) ebend.

रुश् s. 1. रुष् und 1. रुशत्.

रुशङ्गु m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 345,*a*,32. नृषङ्गु v. l. — Vgl. रुशद्गु.

रुशत्पशु adj. *weisses Vieh —, weisse Heerden habend* Ṛv. 5,75,9.

रुशदूर्मि adj. *weisswogig, lichtwogig* Ṛv. 1,58,4.

रुशद्गु 1) adj. *weisse Rinder habend* Ṛv. 5,64,7. — 2) m. N. pr. eines Mannes; so ist nämlich wohl für रुशङ्गु, रुषङ्गु, रुषद्गु, उषङ्गु, उषद्गु, ऋषद्गु, ऋष्यङ्गु, नृषङ्गु zu lesen.

रुशद्रथ 1) adj. *einen lichtfarbigen Wagen habend.* — 2) m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9,23,3.

रुशद्वत्स adj. *weisskalbig* Ṛv. 1,113,2.

रुशना f. N. pr. einer der Gattinnen Rudra's: धीर्धृती रुशना u. s. w. Bhâg. P. 3,12,13. धीर्वृत्तिरुशना ed. Bomb., was richtiger ist, da nur 11 Namen erwartet werden.

1. रुशत् adj. (pflegt als partic. von रुच् betrachtet zu werden) *licht, lichtfarbig, hell, weiss* (vgl. λευκός), Gegens. कृष्ण, श्याव. कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिः Ṛv. 1,62,8. 113,2. 4,7,9. अर्चिः 1,48,13. 92,5. भानु 2.

युवं श्यावाय रुशतीमदत्तम् *dem Schwarzen eine Weisse* 117,8. पयः 62,9. 4,3,9. 6,72,4. 8,82,13. पाजः 3,29,3. 4,11,1. 51,9. रुशद्वसानः 5,15. वासः 7,77,2. अग्नि 6,1,3. 6,1. ऊर्मयः 64,1. गावः 3. उस्राः 8,1,33. वत्स 61, 5. ऊधस् 10,31,11. तनू 85,30. 10,75,7.

2. रुशत् s. u. 1. रुष्.

रुशम 1) m. proparox. N. pr. eines Mannes RV. 8,3,13. 4,2. Vâlakh. 3,9. pl. रुशमाः RV. 5,30,12. 15. AV. 20,127,1. — 2) f. आ N. pr. Ruçamâ wettet mit Indra, wer schneller die Erde (भूमि) umlaufe; Indra umkreist die Erde, Ruçamâ das Land Kurukshetra und gewinnt, Pañkav. Br. 25,13,3.

रुशेकु m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 9,23,30. Andere Bücher lesen रुषद्गु, उषद्गु, ऋषद्गु u. s. w.

1. रुष्, रुश्, रुशति (हिंसायाम्) Dhâtup. 28,126. रुशत् und रुषत्; रोषति (हिंसायाम्) Dhâtup. 17,42. रुष्यति (रोषे, v. l. हिंसायाम्) 26, 120. रुष् erhält keinen Bindevocal Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. अरुषत्; रोष्टा und रोषिता P. 7,2,48. Vop. 8,79. partic. रुष्ट und रुषित P. 7,2,28. Vop. 26,113. 1) *unwirsch —, missmuthig —, widerwärtig sein, zürnen:* छिन्दन्निव वषट्कुर्याद्रुषन्निव (°दूषन्निव die Ausg., पेषयन् Comm.) जुहुयात् Âçv. Çr. 9,7,12. सा पयून्हिनणाति रिफती रुशती AV. 3,28,1. या समा रुशत्येति *das Jahr, das sich übel anlässt*, Kauç. 102. न यो रोषति न अभत् Ait. Br. 4,10. यो यस्य च रुष्यामि मुहूर्तं स न जीवति R. 3,35,27. 7,59,2,21. इन्द्रेण रुष्यता 4,43,20. रुष्यन्ती 5,36,39. अरुष्यन्नुष्यमाणस्य (क्रुश्यमानस्य die eine, क्रुष्यमाणस्य die andere Ausg. des MBh.) सुकृतं नाम विन्दति। दुष्कृतं चात्मनो मर्षी रुष्यत्येवापमार्ष्टि वै ॥ Spr. 3586. ततो ऽरुष्यत् Bhatt. 17,40. मा कर्मणा मनसा वापि वाचा भर्तुर्भविं रुषती Hariv. 7796. मा रुषः MBh. 7,2054. Bhatt. 15,16. 52. रुष्य absol. R. 2,98,12. partic. रुष्ट (Gegens. तुष्ट) *ergrimmt, aufgebracht, erzürnt, zornig* Kâr. zu P. 3,2,188. Hariv. 8121. R. 3,30,37. Spr. 622. क्वचिद्रुष्टः क्वचित्तुष्टो रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे 773. 4851. Râga-Tar. 6,342. Bhâg. P. 4,28,19. 9,10,21. 10,51,12. Mârk. P. 91,27. Pañkar. 2,8,22. Pañkat. 223,9. Kull. zu M. 9,313. Bhatt. 8,113. 9,20. पुत्रस्य मातापितरौ यस्य रुष्टावुभावपि *zürnend auf* MBh. 13,5457. राज्ञा त्वयि रुष्टः Kull. zu M. 8,193. मनो ऽतिरुष्टम् Bhâg. P. 4,19,34. रुषित = रुष्ट Kâr. zu P. 3,2,188. M. 9,83. MBh. 5,2178. 7297. Hariv. 250. 4305. 7047. 8009. R. 2,97,17. R. Gorr. 1,57,6. 2,20,3. 36,22. 3,53,42. 71,7. 4,32, 22. Bhâg. P. 10,41,34. Bhatt. 5,56. 9,20. एवं स रुषितस्तेन (संरु° ed. Bomb.) MBh. 7,6993. Varâh. Brh. S. 21,24. मातृगुप्तं प्रति न नो रोषेण रुषितं (beide Ausgg. fälschlich त्रू°) मनः Râga-Tar. 3,282. — 2) *Etwas übel aufnehmen:* सो अस्य कामं विधतो न रोषति RV. 8,88,4. — 3) *missfallen, zum Ueberdruss sein:* न दानो अस्य रोषति *der Schmaus ist ihm nicht zuwider* RV. 8,4,8. इदमहं रुशन्तं ग्राभं तनूदूषिमपोहामि AV. 14, 1,38. पाशीः *missfällig* (den Menschen) 4,16,6. अपेतेत्कृत्ना रुशन्तीं पुनानो या लोहिनी तां ते अग्नौ जुहोमि *die widerliche schwarze* 12,3,54. रुषती (वाच्) *missliebig, verletzend* MBh. 5,2744. v. l. für उषती Spr. 1554. 4380. 4698. रुशती 1554, v. l. H. 273. Bhâg. P. 6,10,28. जिह्वा *eine verletzende Zunge* 4,4,17. आपः *missliebig, gefährlich* 9,9,24. — रुषित Trik. 3,1,27 fehlerhaft für त्रूषित.

— caus. रोषयति (रोषे) Dhâtup. 32,131. *Jmd unmuthig machen, erzürnen, aufbringen:* रोषयन्निव माम् R. 5,36,36. रोषये त्वां न भीषये 6,13,23. रोषित MBh. 1,5885. 7,3983. 8,3191. Hariv. 11260. R. Gorr. 1,62,6. 2,20,2 (23,2 Schl.). 4,5,16. Ragh. 9,54. 11,71. Çiç. 9,18. किं रोषितस्ताता रुद्रशर्मा त्वया मयि Kathâs. 14,50. Daçak. 71,8. Pañkat. 163,4.

— अभि, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht* MBh. 8,1747.

— आ, caus. partic. °रोषित dass.: सिंहाः Hariv. 3936.

— संप्र, partic. °रुष्ट dass. MBh. 12,4868.

— वि *heftig zürnen auf* (gen.): अकारणार्थेन विरुष्यमाणा (विक्रु° die neuere Ausg.) प्रेष्याजनस्य Hariv. 7043. विरुष्ट *heftig zürnend, sehr aufgebracht* Kaurap. 40.

— सम्, partic. °रुषित *ergrimmt, aufgebracht:* तेन MBh. 7,6993 nach der Lesart der ed. Bomb. — caus. *Jmd erzürnen, in Zorn versetzen:* संरोष्यमाणा Spr. 4309. — संरोषयेत् Suçr. 2,334,12 und संरोषित 13 gehört zu त्रूष्.

2. रुष् (= 1. रुष्) f. (nom. रुट्) Siddh. K. 247,b,15. *Ingrimm, Zorn, Wuth* AK. 1,1,2,26. H. 299. विमुञ्च मानिनि रुषम् Spr. 1965. रुषा MBh. 1,575. 3,2399. R. 4,5,29. Vikr. 80. Ragh. 5,21. Spr. 2237. 3736. Kathâs. 12,95. 43,107. 45,238. Râga-Tar. 1,319. 6,253. Sâh. D. 103. Bhâg. P. 1,18,30. 3,1,11. 4,1,65. 4,26. 18,1. Mârk. P. 18,36. Vop. 5,18. रुषोक्तौ AK. 3,5,18. अतिरुषा MBh. 4,459. रुषां फलम् Spr. 901. Râga-Tar. 3,284. भयरुषोः Ragh. 9,49. ईर्ष्यारुषाम् Kathâs. 21,9. am Ende eines adj. comp.: प्रद्वेषनिर्बन्धरुषो हि सन्तः Ragh. 16,80. देव्य उडिक्तरुषः 19,20. सरुषि नृपे Spr. 3196. — Vgl. अ°, अति°, अप°.

रुषङ्गु m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 9,2270. fgg. — Vgl. रुशङ्गु.

रुषद्रु m. N. pr. eines Fürsten VP. 420. — Vgl. रुशद्रु.

रुषा f. = 2. रुष् H. 299.

रुष्ट 1) partic. adj. s. u. 1. रुष् 1). — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,b,34.

रुष्टि gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. Davon adj. °मत् ebend.

रुष्य gaṇa मधादि zu P. 4,2,86. Davon adj. °मत् ebend.

1. रुह्, रोहति (बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च) Dhâtup. 20,29. रुरोह, रुरोहिथ; अरुक्षत् und अरुहत् (ved. und episch P. 3,1,59), रुह्येयम्, आरुहेथास् (MBh. 3,12776), अध्यारुहेमहि (MBh. 9,277), आरुहस्व (Hariv. 6306), रुहाणा; रोत्स्यति und रोढा Kâr. 6 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. आरोहिष्ये MBh. 13,539; रूढ्वा, रोढुम्, रोहितुम् ep., रोहिष्ये ved. P. 3,4,10. रूढ; med. aus metrischen Rücksichten. 1) *ersteigen, erklimmen:* द्यामिव रोहति RV. 8,41,8. 61,4. 1,110,6. दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्याः 6,71,5. रुहो रुरोह रोहितः AV. 13,3,26. VS. 12,103. Ait. Br. 1,5. यूपम् Çat. Br. 5,1,5,2. वृक्षम् 9,3,2,6. Âçv. Çr. 11,3,7. रूढपरिच्छदाः so v. a. *aufgeladen* Bhâg. P. 10,11,29. *erklimmen* so v. a. *erreichen:* कामम् Çat. Br. 2,1,2,7. मनो रुहाणाः etwa *ihren Willen erreichend* RV. 1,32,8. — 2) (in die Höhe) *wachsen:* वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः RV. 6,7,6. 10,16,13. यथा बीजमुर्वरायां रोहति AV. 10,6,33. 8,7,17. त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्स्वर्गानरुहत् 12,3,42. Çat. Br. 14,6,9,33. यथा सस्यानि रोहन्ति प्रकीर्णानि महीतले MBh. 13,3149. छिन्नो हि रोहति तरुः Spr. 925. 3808. ततः सस्यानि नारुहन् MBh. 1,6623. रोहते — वनं परशुना हतम् Spr. 2647. रोहते सस्यम् Varâh. Brh. S. 54,95. न चापि सर्वबीजानि सम्प्ररोहन्ति MBh. 3,12855. 5,386. पयोधरे बीजमुप्तं न रोहेत् 13,

4314. Spr. 2469. 4378. Bhâg. P. 6,16,39. हस्तौ रुरुहतुः Bhâg. P. 2,10, 24. पादौ रुरुहाते 25. भृगोः श्मश्रूणि रोहन्तु 4,6,51. रूढो ऽयमशुभावहः — विषद्रुमः Râǵa-Tar. 4,26. Kâm. Nîtis. 13,13. रूढशाद्वल (अरण्य) Hariv. 3643. रूढतृणाङ्कुरेषु (हर्म्येषु) Ragh. 16,18. रूढस्कन्धो महाद्रुमः R. 2,105, 6. रूढरागप्रवाल (मनसिज्ञतरु) Mâlav. 59. केसरै रर्धरूढैः Megh. 21. अरूढमूलत्व Mâlav. 8. रूढश्मश्रु R. 7,23,1,13. — 3) *verwachsen, heilen:* चर्मणा चर्म रोहतु, मांसं मांसेन रो॰ AV. 4,12,4. व्रणाश्चास्य चिरेण रोहन्ति Suçr. 1,37,6. Spr. 2647 (med.). Kathâs. 28,160. 179. रूढव्रण R. 6, 105,15. Suçr. 1,37,6. 60,18. 88,15. fg. 18. Ragh. 13,73. Kathâs. 10,197. 65,15. 101,348. Râǵa-Tar. 4,281. H. 465. Vgl. दूरूढ. — 4) *wachsen so v. a. sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen:* रोहन्ति हा धिकप्रत्यूहाः Râǵa-Tar. 1,158. कश्चिन्मतिविपर्यासप्रकारो हृदि रोहति 3,42. 4,236. कामधिपस्त्वयि रचिता न परम रोहन्ति Bhâg. P. 6,16,39. तत्तदा वाक्यं न रोहति so v. a. *trägt keine Frucht, ist unnütz* MBh. 12,11944. आर्तिं मे हृदये रूढाम् 6,581. Spr. 2358. Râǵa-Tar. 3,48. Bhâg. P. 1,8,48. 9,9,47. °यौवन *bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat* 10,55,9. Pańkar. 3,7,37. Kathâs. 27,187. संश्रयदोषरूढ *hervorgegangen aus* Ragh. 6,41. 1,31. रूढश्च कृतमूलश्च शेषं स्थास्यति ते सुतः *gewachsen so v. a. sich Anhang verschafft habend* R. 2,9,27. रूढसौहृद *bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat* Vikr. 10. योगिनो रूढयोगाः Bhâg. P. 3,21,13. ऋषयो रूढमन्यवः 4,14,34. 5,12,6. 8,22,6. 10,47,59. fg. 55,40. रूढ = ज्ञात Med. dh. 3. — 5) रूढ *gewachsen so v. a. verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig;* = प्रसिद्ध Med. तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवम् Spr. 4112. ततात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः Ragh. 2,53. Sâh. D. 13,3. Daçak. 82,3. Verz. d. Oxf. H. 177,b,17. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 61. Schol. zu Bhaṭṭ. 5,18. सुरूढ केशार्थे Varâh. Bṛh. S. 2,3. अरूढ *unbekannt, unerhört* (und nicht रूढ oder आरूढ) ist wohl anzunehmen Kathâs. 61, 251. Râǵa-Tar. 4,124. 5,173. — 6) रूढ *überliefert, allgemein bekannt* von Wörtern, *deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine specielle, von der Etymologie unabhängige* (nach indischer Anschauung) *Bedeutung habend* H. 1. व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः 2. यत्रावयवशक्तिनैरपेक्षेण (d. i. °क्ष्येण) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढं यथा गोपदघटादिपदम् Comm. zu Bhâshâp. S. 83. Schol. zu P. 2,2,26. अमनुष्यशब्दो रक्षःपिशाचादिषु रूढः 4,23. 3,1,129. 4,3,99. 5, 1,48. 59. 3,27. 6,2,8. Siddh. K. zu P. 6,3,34. Vop. 7,14. नाम रूढमपि च व्युदपादि Çiç. 10,23. °नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210,b,4 v. u.; vgl. योगरूढ und यौगिकरूढ unter यौगिक. — MBh. 1,5337 ist nicht रुह्यन्ते, wie Johnson und nach ihm Benfey annehmen, sondern उह्यन्ते gemeint. Vgl. 1. रुध्.

— caus. रोहयति und später रोपयति P. 7,3,43. Vop. 18,13. 1) *in die Höhe bringen, aufsteigen machen:* ये सूर्यमरोहयन्दिवि ṚV. 10,62,3. 65,11. AV. 13,1,13. TBr. 1,2,4,1. चतुष्पञ्चाशतं हस्तान्रोपयित्वा महाशिलाम् *aufführen* Râǵa-Tar. 4,199. — 2) *legen auf, bringen in, stecken an, in:* फलवन्तश्च ये वृक्षाः समूलविटपास्तथा। रोपयित्वा बृहन्नौषु R. Gorr. 1,9,8. तामरोपयत्। गुरूणासौ मुखे तस्याः Kathâs. 61,16. चापरोपितशर Spr. 2289. मुकुटे रोपितः काचश्चरणाभरणे मणिः *gefasst in* 2206. अहितरोपितमार्गण *gerichtet auf* Ragh. 9,22. राजवेश्मनि ते सुधु रोहितम् *deine Versetzung in* MBh. 4,271. ते सुगृधुहे तु d. i. ते सुधु गृहे तु ed. Bomb. *übergeben, übertragen:* गुणावत्सुतरोपितश्रियः — दिलीपवंशजाः Ragh. 8,11. — 3) *pflanzen, säen:* तस्माद्वृक्षांश्च रोपयेत् MBh. 13,2995. 6072. R. 2,80,7 (87,8 Gorr.). Spr. 2349. Varâh. Bṛh. S. 55,8. fg. 20. Râǵa-Tar. 2,15. 130. शाखा एव रोपिता वृक्षतां यान्ति *in die Erde gesteckt* Kull. zu M. 1,46. आरामांश्च रोपयेत् MBh. 13,3002. प्रयत्ति सर्वबीजानि रोप्यमाणानि चैव ह 3,13116. bildlich: उद्यान — बद्धमूलां तथाछान्नामीं प्रभुं दीर्घामरोपयत् Râǵa-Tar. 5,149. तदेष शत्रुर्नोर्वशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्यां रोपितो मया Hariv. 3007. — 4) *wachsen —, verwachsen machen, heilen lassen, heilen* (trans.): रोहयेदम् (sc. अस्थि छिन्नम्) AV. 4, 12,1. व्रणान्रोपयेत् Suçr. 2,10,11. 4. Kathâs. 28,163. 169. fg. 177. fg.

— desid. रुरुक्षति; Bhâg. P. 4,8,67 ist प्रेम्णारुरुक्षन्तं (desid. von आ - रुह्) zu schreiben.

— अति 1) *hinaussteigen über:* अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् ṚV. 9,17,5. — 2) *grösser wachsen:* यदन्नेनातिरोहति ṚV. 10,90,2 = Çvetâçv. Up. 3,15 = Tattvas. 20 (v. l. अन्येन). — 3) अतिरूढत्व *allgemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit* Râǵa-Tar. 6,272.

— व्यति *erlangen, theilhaftig werden;* mit acc.: तदा देवो देहमन्यं व्यतिरोहति कालतः MBh. 3,13929. statt dessen तदा देहैर्देहवन्तो व्यतिरोहन्ति नान्यथा 6,184. — caus. *vertreiben, der Herrschaft berauben:* तत्राचलमहं दोषान्यैर्भवान्व्यतिरोपितः MBh. 3,601.

— अधि 1) *ersteigen, besteigen:* गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ṚV. 1,56,2. नावम् 8,42,3. स्थूणाम् AV. 3,12,6. द्याम् 13,3,26. स्वैः रुहाणा अधि नाकमुत्तमम् VS. 11,22. स मायमधि रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः AV. 10,6,31. 11,1,13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुहत् R. 2,64,48. Çâk. 98, 14. गिरिमधिरोहितुम् MBh. 3,9982. R. Gorr. 1,45,5. 5,54,9. Çiç. 9,1. Vikr. 14. हेमकूटशिखरे 6,15. क्रव्यादान् Jâǵn. 1,272. अधिरोहन्ति यं नित्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3,14506. हयान् 7,8917. R. 5,73,28. Spr. 4001. Kathâs. 12,135. 13,28. वेदीम् MBh. 3,11019 (S. 570, med.). 11021 (ebend., act.). तरुम् R. 3,76,28. चिताम् Hariv. 771 (med.). विमानम्, रथम् MBh. 3,4095. 14943 (med.). R. 2,83,2. 7,75,8 (med.). Kathâs. 45, 364. Bhâg. P. 4,12,27. Mârk. P. 125,16. Bhaṭṭ. 5,108. पर्यङ्कम् MBh. 5, 1188. आसनम् R. 1,70,9 (med.). शयनम् 2,42,29. *besteigen* (zur Begattung): पुत्रो मातरं स्वसारं चाधिरोहति Ait. Br. 7,13. *treten auf:* केशादीन्नाधिरोहेत् Kull. zu M. 4,78. Suçr. 1,110,17 (zugleich *besteigen*). पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति — रेणुः *sich setzen auf* Spr. 1762. अधिरोहणार्थं पादाभ्यां पादुके *tritt mit den Füssen in die Schuhe* R. 2,112,21. fg. *sich in die Luft erheben, aufsteigen:* रथाङ्गाह्वयना द्विजाः। अधिरोहन्ति 95,11. Bhâg. P. 3,23,20. अधिरूढ *erstiegen —, bestiegen habend, sitzend auf:* गिरिशृङ्गाधि° Râǵa-Tar. 5,217. युगान्तम्, गगनान्तरम् Çâk. 57,2 v. l. वटवृक्षाधि° Vet. in LA. (III) 21,11. रथाधिरूढ Çâk. 97,1. Ragh. 12,104. लघुकाष्ठाधि° Pańkat. 76,18. अङ्कं चाधिरूढः R. 5,73,27. Vop. 26,129. तुरगाधि° Ragh. 7,34. द्विपस्कन्धाधि° R. 2,45,21 (43,22 Gorr.). Bhâg. P. 2,7, 16. Sarvadarçanas. 153,11. रक्षोऽधि° Kathâs. 18,382. अधिरूढे गजारोहे *hinaufgestiegen* R. 3,57,23. °गोवाट Kathâs. 20,145. अवरुह्याधिरूढः Râǵa-Tar. 6,52. Pańkat. 128,19. पर्वतस्याधिरूढं स्थलम् *oben gelegen* P. 5,2,34, Sch. — 2) *erklimmen so v. a. erreichen, gelangen zu:* एषामधि-

रोढुमञ्जसा पदं परम् Bhâg. P. 4,3,21. परस्परतुलामधिरोहतां द्वे *erlangen gegenseitige Aehnlichkeit* Ragh. 5,68. प्रतिज्ञामध्यरोहत so v. a. *gelangte zu dem, was er gelobt hatte, löste sein Wort* R. 7,67,8. अधिरूढ *a*) mit pass. Bed.: पद् Bhâg. P. 4,12,42. °समाधियोग 3,28,38. — *b*) mit act. Bed.: निशामधिरूढयोर्यूनोः Spr. 916. योगाधि° Ragh. 13,52. — Vgl. अधिरोहण, धाराधिरूढ. — caus. 1) *besteigen machen, hinaufgehen lassen, setzen auf:* नाके ऽधि रोहयैनम् VS. 12,63. नाकमधि रोहयेमम् AV. 1,9,2. 18,3,4. मर्य इव योषामधि रोहयैनाम् 14,2,37. नावं चाप्यधिरोहिताः MBh. 13,4390. यद्येष प्रासादमधिरोप्यते. Kathâs. 20,170. तामङ्कम् 1,22. शरीरं तुलाम् 7,95. रथे 56,336. वाहने 26,123. 52,328. शूले 88,42. स्कन्धे 26,241. Râga-Tar. 4,259. नाभ्यां स्थितं (अनिलं) हृदि Bhâg. P. 2,2,20. विमानाधिरोपित Kathâs. 47,39. शूलाधि° 18,148. यत्तस्कन्धाधि° 73,248. प्रद्वान्तकान्तानां मूर्धानमधिरोपिता so v. a. *an die Spitze von — gestellt* Râga-Tar. 6,74. — 2) *hineinstecken, einsäen:* अधिरोप्य Varâh. Bṛh. S. 55,23. *anlegen, anthun:* अधिरोप्यार्य पादाभ्यामिमे गृह्णीष्व पादुके R. Gorr. 2,123,20. fg. *einsetzen in:* पित्र्ये राज्ये Kathâs. 70,21. *versetzen in:* वसतौ पुराणशोभामधिरोपितायाम् Ragh. 16,42. *schliessen in:* निजमनसि सदा यैर्वीतरागो ऽध्यरोपि Çatr. 14,328. — 3) *spannen:* कार्मुकम् Ragh. 11,81. — 4) *übergeben, übertragen:* विनम्रेष्वधिरोप्य शासनम् — अखिलदेशराज्ञसु Kathâs. 20,225. *beilegen, ertheilen:* उदारक इति प्रीतलोकाधिरोपितनामा Daçak. 72,4.5. — Vgl. अधिरोपण.

— अन्वधि *nach Jmd hinaufsteigen* Lâṭj. 3,18,8.

— उपाधि *zu Jmd hinaufsteigen* Çat. Br. 3,2,1,8. 6,8,1,7.

— समधि 1) *besteigen, hinaufsteigen* Ait. Br. 4,20. Hariv. 6533 nach der Lesart der neueren Ausg. — 2) *auf Etwas —, hinter Etwas kommen, sich überzeugen von:* तव धैर्यं च वीर्यं च सर्वे समधिरूढाः स्म MBh. 5,2283.

— अनु 1) *besteigen:* पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहम् RV. 10,13,3. — 2) med. *erwachsen:* वया इवानु रोहते RV. 2,5,4. 8,13,6.

— व्यप caus. 1) *ablegen, ausziehen:* अधिरोप्य पादुके व्यपरोप्य च R. Gorr. 2,123,21. — 2) *Jmd um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* राज्यात् MBh. 3,10246. जीवितात् 1579. प्राणैः 14,2160.

— अपि *verwachsen, zuwachsen:* पृथिव्यै खातमपि रोहति TS. 2,5,1,3.

— समपि dass.: समस्थ्यपि रोहतु AV. 4,12,5.

— अभि *hinsteigen zu, besteigen* Çat. Br. 12,2,3,10. अभीमहं स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः RV. 5,7,5. हिमवतः शृङ्गम् R. 1,44,5. Vikr. 14, v. l. प्रासादहर्म्याणि विमानशिखराणि च R. 2,33,3. रथम् MBh. 5,7233. यानपात्रम् Kathâs. 25,40. ये च मामभिरोहेयुः *hinaufsteigen zu* Hariv. 12031.

— समभि *zusammen hinaufsteigen, besteigen* Hariv. 6533 (समधिरोहन्त die neuere Ausg.). शृङ्गाणि 12795. — caus. *aufladen:* भाण्डं समभिरोप्यताम् Hariv. 3522.

— अव *hinabsteigen; beschreiten, betreten:* अवरोहन्नवीसम् RV. 5,78,4. Çat. Br. 5,1,5,4. चर्माणि Kâtj. Çr. 14,5,15. Âçv. Gṛhj. 2,6,12. कूपम् 3,9,6. पन्थानम् Çr. 2,5,6. यो व्याघ्रावरूढो जिघत्सतः *herbeigekommen* AV. 6,140,1. — यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत् M. 2,202. महेन्द्रवाहात् (vgl. P. 5,4,45, wo gesagt wird, dass statt der Endung des abl. hier nicht तस् stehen könne) MBh. 3,11906. 11922. 6,2221. 9,3468. fg. 3470 (med.). प्रासादात् Hariv. 11022 (S. 790). R. 2,7,11 (med.). वृक्षाग्रात् 98,27. R. Gorr. 1,79,28. 4,49,25 (med.). 5,74,14. Ragh. 1,54. 4,80. Çâk. 167. Kathâs. 17,116. 21,71. 42,11. Bhâg. P. 4,6,25. 9,42. 5,10,16. Pańkar. 1,4,62. Bhaṭṭ. 8,104. अवरुह्याधिरूढ: *in einen Brunnen* Râga-Tar. 6,52. अवरुह्य च ते भूमिम् R. 4,49,26. अवरूढश्च विपद्वारो ममात्मनः so v. a. *abgenommen, abgeladen* Kathâs. 27,98. ऐश्वर्यात् *hinabsteigen von der Herrschaft* so v. a. *darum kommen* Bhâg. P. 4,14,16. Vgl. अवरोह fgg. — caus. 1) *hinabsteigen —, betreten lassen* Kauç. 61. 80. °रोप्य Gobh. 2,4,6. अवरोहयधम् *lasset sie absteigen* MBh. 3,15609. तामवारोपयत्पत्नीं रथात् Ragh. 1,54 (अवारोहयत् ed. Calc.). Hariv. 9721. *aussteigen lassen* (aus einem Schiffe) R. 2,89,19. *herabnehmen:* वृक्षाग्राद्धनूंषि MBh. 4,1318. गाण्डीवम् (vom Wagen) 9,3468. स्कन्धाच्छिबिकाम् R. 4,24,31. Bhâg. P. 8,6,39. — 2) *pflanzen:* अवरोप्य वृक्षम् MBh. 1,7063; vgl. अवरोपण. — 3) *Jmd entsetzen, bringen um:* राज्यादवरोपितः MBh. 4,2101. R. 4,8,20. Mârk. P. 8,212. 9,6. — 4) *herabsetzen, vermindern:* पादशस्त्ववरोपितः (धर्मः) M. 1,82. MBh. 12,8501. — 5) *herunterbringen, zu Nichte machen:* राष्ट्राणि Bhâg. P. 1,16,23. त्वदवरोपितकर्तृवादाः 8,22,19.

— अध्यव *herabtreten auf:* हिरण्यम् TBr. 1,3,7,7.

— अन्वव *nach Jmd betreten:* नास्य देवा न गन्धर्वाः u. s. w. पदमन्ववरोहन्ति प्राप्तस्य परमां गतिम् MBh. 12,8453.

— अभ्यव *herabtreten auf* Çat. Br. 5,2,1,20. fg. हुताशनः। श्वेताभ्रमिव प्रासादं ज्वलन्नभ्यवरूढवान् R. 5,52,15.

— उपाव *herabsteigen auf, zu* (acc.), *heraustreten aus* (abl.): उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वम् TBr. 2,5,8,8. सोमं राजन्विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह VS. 6,26. TS. 7,3,10,1. Pańkav. Br. 18,10,10. Çat. Br. 5,2,2,19. 10,3,3,5. — caus. *heraustreten lassen aus* (abl.), technischer Ausdruck für das *Wiederhervorholen* des durch eine symbolische Handlung in den Reibhölzern u. s. w. geborgenen Feuers, Çâṅkh. Çr. 2,17,8. Gṛhj. 5,1. Kauç. 40. Ind. St. 9,311. — Vgl. u. समा.

— प्रत्यव 1) *wieder heruntersteigen zu* (acc.), *herabsteigen auf* Ait. Br. 4,21. Çat. Br. 5,1,1,5. 6,7,3,6. स्वर्गाल्लोकात् 12,4,2,6. इमं लोकम् TBr. 1,8,8,5. मनुष्यरथेनैव दैवरथं प्रत्यवरोहति 1,6,8. प्रत्यवरोह जातवेदः (vgl. u. उपाव) Âçv. Çr. 3,10,8. TS. 1,7,6,2. 5,6,9,1. — 2) *vor Jmd* (acc.) *ehrerbietig absteigen* (vom Sitz, Wagen): यथा श्रेयस्यायति पापीयान्प्रत्यवरोहेत् Çat. Br. 4,1,3,9. संवत्सरं न कं चन प्रत्यवरोहेत् TS. 5,5,4,3. क्षत्रियं विशः Çat. Br. 3,9,3,7. रथात् MBh. 8,3302. — 3) *die Pratjavarohaṇa genannte Feier begehen,* beziehungsweise *das Lager aus der Bettstelle wieder auf den Erdboden verlegen* (vgl. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. S. 69) Çâṅkh. Gṛhj. 4,17. — Vgl. प्रत्यवरूढि, प्रत्यवरोह fgg. — caus. *Jmd herabbringen von, Jmd* (acc.) *um Etwas* (abl. instr.) *bringen:* दर्पात् MBh. 8,2769. मानात् 12,4159. श्रिया 4,536.

— अभिप्रत्यव *herabsteigen auf:* उडुम्बरशाखाम् Ait. Br. 8,9.

— व्यव *besteigen:* शयनम् MBh. 13,1458 (med.). — caus. *Jmd entsetzen:* कालेन बलिरिन्द्रः कृतः कालेन व्यवरोपितः Verz. d. Oxf. H. 216, b,6. *Jmd um Etwas* (abl.) *bringen:* स्थानात् Spr. 4920. भोजनात् MBh. 5,3688.

— आ 1) *besteigen, ersteigen; sich erheben zu, einsteigen in; sich aufschwingen —, sich setzen auf;* mit acc. und loc.: सानोः सानुम् RV. 1,10,2. रथम् 34,5. गर्तम् 5,62,8. नावम् 7,88,3. नाकम् 3,2,12. स्वर्गं लोकमारुहेयम् ved. Cit. P. 3,1,86, Sch. आ यद्यान्वर्नन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम्

ṚV. 8,1,31. आ सोमो अस्माँ अरुहत् *ist bei uns eingekehrt* 48,11. 89,5. 9,40,2. 63,22. योनिम् AV. 3,20,1. सा भूमिमा रुरोहिथ वध्रं श्राता वधूरिव 4,20,3. आ रोह तमसो ज्योतिः 8,1,8. दिवि घोष आरुहत् ṚV. 7,83,3. त्वे अमृर्यमारुहत् 5,10,2. रथे 8,22,9. यो अश्वत्थः शमीगर्भ आरुरोह त्वे सचा TBr. 1,2,1,8. पशुम् Çat. Br. 7,3,2,17. तुलाम् 11,2,7,33. आ रोहतायुर्जरसं वृणाना: ṚV. 10,18,7. उखामर्चिः Çat. Br. 6,6,2,8. *beschreiten:* अग्निम् 7,3,2,17. 5,2,40. 9,2,1,2. bei der Begattung Kauç. 89. — यामारुरोह so v. a. *starb* Râǵa-Tar. 3,385. स्वर्लोकमारोहयन् Bhâg. P. 4,12,31. आरोहन् (!) 11,17,30. गिरिमारुह्य MBh. 3,11949. Hariv. 5493 (pass.). 7612. Vop. 5,21. महदेश्म MBh. 3,2868. प्रासादान् R. 2,33,4. प्राकारम् Bhatt. 8,56. आरुरुक्षे परं पदम् Bhâg. P. 4,21,7. अचलम् MBh. 9,3044. R. 6,14,17. Spr. 1740. कीटो ऽपि — आरोहति सतां शिरः Spr. 689. रथम् MBh. 3,1724. 1727. 1729. 5,7125. R. 2,40,11. 13. 3,48,6. 7,46,23. Kâm. Nîtis. 7,30. Çâk. 95,11. 96,2. Prab. 79,2. Vet. in LA. (III) 31,13. आरोहमाणा रथम् MBh. 1,5734. 3,1728. 1731. 8,2964. Hariv. 6306. R. 7,46,22. Bhâg. P. 8,11,16. 10,47,65. आरुह्यतामयं रथः R. 3,48,5. यो न यानं न पर्यङ्कं न पीठं न गजं रथम्। आरोहेत् MBh. 4,96. विचारदोलाम् Kathâs. 9,87. 101,188. आसनम् Spr. 5395. Bhâg. P. 4,8,11. नावम् R. 1,26,3 (27,3 Gorr.). 2,52,8. 69. 89,14. 21. Spr. 3537. Kathâs. 26,7. Râǵa-Tar. 5,84. Bhâg. P. 8,24,42. हयान् R. 2,68,10. 97,20. Varâh. Bṛh. S. 44,22. 93,13. Kathâs. 13,9. 18,18. 26,86. Çuk. in LA. (III) 35,15. खगाधिपम् Bhâg. P. 8,4,26. आरोक्ष्ये कथं त्वम् MBh. 13,539. 5,3854. आरोहति शनैर्भृत्या धुन्वन्तमपि पार्थिवम् Spr. 749. गावश्चारुरुक्षवृषान् *besprangen* Hariv. 8290. यत्रारोहन्ति जेतारो वहन्ति च पराजिताः (ein Spiel) *in dem die Sieger reiten und die Besiegten tragen (geritten werden)* Bhâg. P. 10,18,21. आरुह्येमां मम श्रोणीं नेष्यामि त्वां विहायसा MBh. 1,5966. उङ्गम् Kathâs. 18,310. स्कन्धम् 165. 349. अङ्कम् Spr. 2855. शाखाम् R. Einl. अग्निमारोक्ष्यते so v. a. *wird den Scheiterhaufen besteigen* R. 6,72,57. वेदीम् MBh. 3,11018 (S. 570). Kathâs. 16,79. नेत्रमारुह्य मालम् Megh. 16. Çâk. 62,15. आरुरोहोत्तरं गिरिं Kathâs. 25,26. तत्रारोहेत MBh. 3,8002. वनेषु 2545. Varâh. Bṛh. S. 79,6. रथादिषु Bhatt. 14,8. क्षिप्रमारुह्यताम् impers. (sc. रथे) R. 2,46,24. शय्यासनयोः Mârk. P. 34,85. नावि MBh. 3,12776. करेणुकायाम् Kathâs. 13,21. fg. विहगे 12,147. 152. स्कन्धे 18,156. 380. आरोहति न यः स्वस्य वंशस्याग्रे धनी यथा Spr. 679. आरूढ *a)* in pass. Bed.: आरूढो वृक्षो भवता P. 3,4,72, Sch. (वारणीः) महामात्रैरारूढैः *geritten von* Hariv. 5469. MBh. 4,1031. °नृपस्थान *bestiegen* Bhâg. P. 4,14,4. impers.: आरूढं भवता P. 3,4,72, Sch. — *b)* in act. Bed.: दूरमारूढः सविता Çâk. 57,2, v. l. आरूढच्युत *gestiegen und wieder gefallen* Bhâg. P. 11,7,74. शमीमश्वत्थ आरूढः AV. 6,11,1. व्योम Kathâs. 48,84. युगान्तरमारूढः सविता Çâk. 57,2. अद्रीन् Ragh. 6,77. Megh. 18. वृक्षम् P. 3,4,72, Sch. काको वृक्षाग्रमारूढः Hit. 38,11. अश्वम्, वृक्षम्, हस्तिनम्, नावम्, खरम्, उष्ट्रम् M. 4,120. रथम् R. 2,40,17. हयम् 1,19,23. चिताम् Kathâs. 27,98. अम्बरोत्सङ्गम् 22,10. ब्रह्मणः पन्थानमारूढाः *sich erhoben habend auf, betreten habend* Maitrjup. 6,29. पवनपदवीम् Megh. 8. यौवनपदवीम् Pańkat. 87,14. उत्पथम् R. 3,45,6. तरौ Kathâs. 29,129. सिंहासने 18,53. मठोपरि 24,218. स्वरारूढः Bhatt. 7,81. प्रासादारूढ Hit. 4,6. रथारूढ Çâk. 97,1, v. l. Vikr. 5,4. Kathâs. 18,388. Vet. in LA. (III) 30,17. Râǵa-Tar. 5,218. हयारूढ *reitend auf, sitzend auf* Spr. 4885. Varâh. Bṛh. S. 58,56. fg. Kathâs. 12,157. 18,384. Râǵa-Tar. 4,277. Mârk. P. 78,24. Pańkat. 43,5. 44,23. 46,6. Verz. d. B. H. No. 936. स्कन्धारूढ Kathâs. 18,157. लतारूढ (विहंग) Bhâg. P. 5,2,4. स्थलारूढ *auf dem Erdboden stehend* (d. i. *nicht zu Wagen seiend*) M. 7,91. सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि *gesetzt auf* Bhag. 18,61. चक्रारूढ Pańkat. 163,2. हस्तारूढ *auf der Hand liegend* Hariv. 12181. दोलारूढ *auf einer Schaukel sitzend, sich schaukelnd* Pańkat. 256,16. so v. a. *schwankend, in Zweifel seiend* Kathâs. 32,9. 57,102. 67,30. दोलारूढ इवाभवत् 83,31. 119,90. आरूढ ohne Ergänzung *reitend:* स्वारूढैः (सारू° die neuere Ausg.) सादिभिः Hariv. 5470. *eingestiegen* (in ein Schiff) R. 2,89,17. *aufgesteckt, oben aufgesetzt:* आरूढप्रोच्छ्रितच्छत्त्र (कुञ्जर) Kathâs. 19,63. mit einem loc. so v. a. *enthalten in, liegend in:* प्रजासु वा एष (अग्निः) एतर्ह्यारूढः TS. 5,1,5,5. प्रमातर्यनारूढो ऽनधिगत इति यावत् Schol. zu Kap. 1,88. रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव च Weber, Râmat. Up. 289. — *c)* n. *das Bespringen:* गवारूढेषु (गवारोहेषु die neuere Ausg.) Hariv. 4104. — 2) *anwachsen:* नासिकां छित्त्वा भार्यायास्तामरोपयत्। गुरूणां मुखे तस्या न च तत्रारुरोह सा॥ Kathâs. 61,16. — 3) eine Bogensehne *steigt, wenn das unbefestigte Ende derselben mit der oberen Spitze des aufrecht stehenden Bogens verbunden wird:* आरोहद्गुणनम्रेण धनुषा Kathâs. 27,8; vgl. weiter unten u. caus. 3). — 4) *aufsteigen* so v. a. *hervorgehen, entstehen, sich entwickeln:* आरोहद्गुणनम्रेण वपुषा Kathâs. 27,8. या प्रजा पूर्वमारूढा मानसी Hariv. 11845. इत्यारूढबहुप्रतर्कमपरिच्छेदाकुलं मे मनः Çâk. 106. आरूढरूषा — अनेन Kumâras. 7,67. आरूढवेग (शर्व) Kathâs. 20,81. यौवनारूढगर्व Spr. 2597. तदागमारूढगुरुप्रहर्ष Ragh. 5,61. Nîlak. 48. 51. 56. — 5) *an Etwas gehen, zu machen beginnen; sich begeben in, gerathen in, erreichen, gelangen zu:* अनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि ṚV. 1,51,12. न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति। संशयं पुनरारुह्य यदि जीवति पश्यति॥ *sich in Gefahr begeben* Spr. 1483. आरोहसि किमर्थं त्वमीदृशान्प्राणसंशयान् Kathâs. 26,128. 18,373. श्रीरारोहति संदेहम् *geräth in Gefahr* Spr. 3422. न दर्पमारोहति 4353. आरुरोह कुमुदाकरोपमाम् *bekam Aehnlichkeit mit* d. i. *wurde ähnlich* Ragh. 19,34. तव तुलां यदारोहति दन्तवाससा Kumâras. 5,34. आरुरोह प्रतिज्ञां स सर्पसत्त्राय so v. a. *er gelobte* MBh. 1,2045. R. 7,17,17. आरूढ *a)* in pass. Bed.: °समाधियोग Bhâg. P. 3,8,21. नित्यारूढसमाधित्वात् 33,27. — *b)* in act. Bed.: पदम् *der sein Ziel erreicht hat* Bhâg. P. 3,32,25. संशयम् *in Gefahr gerathen* Çâk. 92,6. उपायान्तरमपि हृदयमारूढम् so v. a. *ist mir eingefallen* Prab. 37,4. उदयम् *aufgegangen* (vom Monde) und zugleich *zur Höhe gelangt* (von einem Fürsten) Spr. 3650. नवयौवनम् Kathâs. 25,199. यौवनारूढा 18,261. 52,94. योगारूढ Bhag. 6,4. Bhâg. P. 3,18,15. मानारूढ 4,26,8. स्वगोचरारूढ Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 256. 282. मनोरथारूढ *seinen Wünschen —, seiner Phantasie nachhängend* (zugleich wohl *in dem Wagen des Herzens fahrend*) Kathâs. 10,202. — 6) न त्वारोहयामि R. Gorr. 2,68,36 fehlerhaft für नान्वारोहयामि. — Vgl. आरुह्य fg., आरूढि, आरोहण fg., आरोह fgg. — caus. 1) *aufsteigen machen, besteigen lassen, setzen auf; beschreiten lassen;* mit dopp. acc. oder mit acc. und loc.: सूर्यं दिव्यारोहयः ṚV. 1,51,4. 4,13,2. तीर्थेनाश्वम् Kâtj. Çr. 17,3,23. चर्म 15,5,25. अश्मानम् Âçv. Gṛhj. 1,7,7. 4,6,8. नावम् Kauç. 71. अश्वम् 17. हृदि-

रारोप्य *aufschlagen* Kâtj. Çr. 8,6,10. — आरोपित *aufsteigen gemacht* Kathâs. 20,171. Bhâg. P. 5,26,28. स्वर्गम् MBh. 13,324. प्रासादतलम् 3, 2583. रथम्, यानम्, विमानम् 15749. 15789. 5, 5955 (med.). R. 1, 61, 22. 2,36,24. R. Gorr. 1,75,30. 3,55,33. 6,22,20. Bhâg. P. 3,23,37. 9,23, 35. याने Suçr. 1,98,3. रथे Vet. in LA. (III) 31,14. mit Ergänzung von रथम् oder रथे MBh. 3,2290. 2793. R. Gorr. 2,39,21. नावम् R. Schl. 2,52, 69. नावि Bhâg. P. 1,3,15. mit Ergänzung von नावम् oder नावि R. 2,52,9. शयनम् M. 3,17. शय्याम् Kathâs. 17,87. शय्यायाम् Pańkat. 38,22. चिताम् R. 2,64,55. 3,73,36. fg. स्कन्धम् Pańkat. 169,25. Sarvadarçanas. 153,10. स्कन्धे Kathâs. 18,380. हयपृष्ठम् Vet. in LA. (III) 11,18. गर्दभम् 22,16. वृषेन्द्रम् Bhâg. P. 4,4,5. अङ्कम् MBh. 3,1776. 5,6042. Kumâras. 1,37 (आरोपिता zu lesen). Ragh. 3,26. अङ्के R. 2,72,4. 101,2. वक्षसि Spr. 1750. शूलान् Jâǵn. 2,273. शूलायाम् Kathâs. 20,18. Pańkat. 41,15. Mârk. P. 14,75. उत्सङ्गे शिर आरोप्य *legen auf* MBh. 3,16810. अङ्के शीर्षमारोप्य बालिनः R. 4,20,20. 24,32. मञ्जूषामारोप्य मठिकोपरि *stellen auf* Kathâs. 15,49. *laden auf:* गजेष्वारोपितः कोशः Kâm. Nîtis. 19,16. R. Gorr. 2,39,20. पुत्रे कुटुम्बचिन्ताभारम् Kull. zu M. 4,257. आरोपित *aufgeladen, darauf gelegt* Halâj. 4,62. Kâç. zu P. 8,4,8. Kathâs. 37,155. Spr. 3059. तुलाम् *auf die Wagschale stellen* so v. a. *in Gefahr bringen* 3916. पत्त्रम् so v. a. *Etwas zu Papier bringen, niederschreiben* Çâk. 81, 2. मनोविषयम् so v. a. *Jmd in sein Herz schliessen* Kumâras. 6,17. med. *sich besteigen lassen* P. 1,3,67, Sch. — 2) *pflanzen* Kathâs. 61,34. Mârk. P. 68,49. — 3) einen Bogen *mit der Sehne beziehen* MBh. 1,7032 (wo das pass. आरोप्यमाणः nicht richtig sein kann; Nîlak. erklärt die Form durch सज्जीकर्तुमिच्छन्). 7048. 16,230. Hariv. 4506. R. 1,33,10. 67,16. fg. 3,4,28. 45. 4,8,30 (med.). Kumâras. 3,35. Çâk. 94,2. Kathâs. 112,54. Uttarar. 91,10 (118,1). Gît. 3,12. Mârk. P. 132,17. Bhaṭṭ. 14,8. Verz. d. Oxf. H. 137,*b*, No. 267. eine Bogensehne *aufrichten* so v. a *das unbefestigte Ende derselben mit der oberen Spitze des aufrecht stehenden Bogens verbinden:* कोदण्डे नमत्यारोपितं गुणम् Kathâs. 120,62. 113,34. आरोपितभ्रू *bogenförmig zusammengezogen* Bhâg. P. 4,3,18. 9,10,4. — 4) *steigen lassen* so v. a. *befördern, an einen hohen Platz stellen* Ragh. 15,91. राज्ये *in die Herrschaft einsetzen* Kathâs. 30,59. — 5) *legen —, stecken —, thun in:* बीजानि — तस्यामारोहयेन्नात्रि MBh. 3,12777. तास्वप्सु बीजं शक्तिरूपमारोपितवान् Kull. zu M. 1,8. तिमिमत्स्यान्गजांश्चैव नीडानारोपयन्ति ते *in ihr Lager* R. 4,43,16. तानग्नीनारोप्य चात्मनि (vgl. u. समा im caus.) Jâǵn. 3,56. Bhâg. P. 5,5,28. तस्मिन्निदं सर्वं शरीरमारोप्य (symbolisch) Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. मया हि तत्र चैरा सकलेव शौर्यवीर्यबलसंपदारोपिता VP. bei Muir, ST. I,85. आत्मप्रतिकृतिं तस्मिन्धन्न आरोपयिष्यति *anbringen* MBh. 5,2222. *richten auf:* यस्मिन्नेवाधिकं चक्षुरारोपयति (आरोहयति v. l.) Spr. 2424. — 6) *hervorgehen lassen, bewirken, hervorrufen:* मनसि संदेहमारोपयति Prab. 84,8. आरोपितमैत्रीं तां स्वभर्तरि Mârk. P. 72,13. आरोपितगुण *der Vorzüge an den Tag gelegt hat* Kathâs. 113,34. 120,62. न्यायारोपितविक्रम Spr. 5381; in der Ausg. von Bühler wird न्यायारोपितविक्रमाण्यपि नृणां gelesen und der Herausgeber übersetzt *from whom powerful assistance might be justly be expected;* genauer *denen mit Recht — beigelegt wird* (vgl. 7). — 7) *beilegen, zuschreiben, übertragen auf* (loc.) Sâh. D. 280,1. Bhâg. P. 1,3,31. 2,10,45. Pratâpar. 80,*a*,1. 5. Vedântas. (Allah.) No. 80. H. 70. Verz. d. Oxf. H. 29,*a*,18. 42. *b*,10. Mallin. zu Kir. 1,1. Comm. zu R. bei Muir, ST. IV,392. Sarvadarçanas. 110,10. 18. Schol. zu Kap. 1,59. Kusum. 14, 15. छाया हि भूमेः शशिनो मलत्वेनारोपिता शुद्धिमतः प्रजाभिः so v. a. *den Schatten der Erde haben die Menschen fälschlicher Weise zu einem Schmutzflecken des reinen Mondes gemacht* Ragh. 14,40. die ungrammatische Form आरुपित Bhâg. P. 10,87,25. — 8) = simpl. *besteigen:* पर्वतस्यापरं पार्श्वं क्षिप्रमारोहयत्त्वमी Hariv. 5495. रथमारोहयत्वायुष्मान् Çâk. Ch. 145,3. आरोहतु die andere Rec. — 9) आरोहयामास in der Stelle: शीघ्रमारोहयामास दानवैर्द्वारकां पुरीम् Hariv. 6933 fehlerhaft für आरोधयामास *liess belagern;* सर्वमाहारयामास die neuere Ausg. — Vgl. आरोप fgg. — desid. *zu ersteigen —, zu besteigen wünschen:* द्यामारुरुक्षतः Ṛv. 8,14,14. दिवम् Bhâg. P. 8,11,5. गिरिम् 5,14,18. रथम् 10,53, 56. अङ्कम् 4,8,9. 67. हस्तियन्ता गजस्येव शिर एवारुरुक्षति MBh. 12, 2024. आरुरुक्षत्युपानद्भिः शिरो मुकुटसेवितम् Bhâg. P. 10,68,24. Vgl. आरुरुक्षु.

— अत्या *über seine Grenzen hinaus steigen:* नात्यारोहति जातोर्मिर्महौघः स्वनवानपि R. 4,17,22. अत्यारूढ *die Grenzen überschreitend, übermässig:* अत्यारूढो हि नारीणामकालज्ञो मनोभवः Ragh. 12,33. मया तस्य दुरात्मनः। अत्यारूढं रिपोः सोढम् so v. a. *gar zu viel von ihm ertragen* 10,43.

— अध्या 1) *besteigen, ersteigen:* आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथमरुहत् Ṛv. 9,75,1. दिवं पृथिव्या अध्या रुहाम VS. 8,52. वसुधा विष्णुपदं द्वितीयमध्यारुरोहेव रजश्छलेन Ragh. 16,28. शिखराग्रम् R. 5,74,12. 6, 14,3 (med.). 15. 18 (med.). वृक्षान् MBh. 4,271. वध्यशिलाम् Kathâs. 22, 222. सरस्तीरम् 56,209. अभ्रंलिहान्सौधान् Râǵa-Tar. 3,359. रथम् MBh. 1,6395. R. 2,92,31 (101, 34 Gorr.). 7,22,3 (med.). वारणम् Daçak. 74, 18. जघनम् R. 7,26,24. मार्गम् *betreten* MBh. 9,277. रथाङ्गाह्वयना द्विजाः। अध्यारोहन्ति *erheben sich in die Lüfte* R. Gorr. 2,104,11. अध्यारूढ = समारूढ H. an. 4,73. Med. ḍh. 11. — 2) *über das gewöhnliche Maass gehen:* अध्यारूढ = अभ्यधिक H. an. Med. — caus. 1) *besteigen lassen*, mit dopp. acc.: प्लवम् R. 2,55,16. — 2) *Jmd zu Etwas befördern, an Etwas stellen:* अमात्यपदेऽध्यारोपितस्त्वम् Pańkat. 24,9. — 3) *voraussetzen bei, fälschlich übertragen auf* (loc.) Bhâg. P. 5,10,6. 13,25. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 166. 200. 211. zu Khând. Up. S. 7. — 4) *übertreiben* P. 2,1,33, Sch. — अध्यारोप.

— अन्वा *nach* oder *bei Jmd aufsteigen; ersteigen, beschreiten:* यज्ञं यन्तं मनसान्वारोहामि *ich fahre im Geiste mit dem Opfer hin* AV. 6,122, 4. TS. 5,4,10,2. अग्निं यज्ञान्वारोहेत् 6,8,1. एष वै देवयानः पन्थास्तमेवान्वारोहम् 7,2,1,4. क्रतून् Çat. Br. 13,3,2,1. — अन्वारोहच्च सुग्रीवः sc. गिरिम् *er bestieg nach ihm den Berg* R. 6,14,11. अन्वारूढाश्च तत्पुत्रास्तत्र (d. i. गिरौ) ताम् Kathâs. 29,130. अन्वारुरोह चाप्येनम् sc. रथम् MBh. 2,36. 5,3345. 7,2991. R. Gorr. 2,13,26. तं चिताग्निगतम् — अन्वारुरुहुः पत्न्यश्चतस्रः MBh. 16,200. या त्वां चितां समारूढं न त्वारोहयति (lies नान्वारो°) R. Gorr. 2,68,36. शारीर आत्मा प्राज्ञेनात्मनान्वारूढः *enthält in sich* Çat. Br. 14,7,1,42. Vgl. अन्वारोहण. — caus. *wieder hinaufbringen:* ताम् (प्रतिमाम्) — अन्वारोहयिता पुनः Çatr. 14,231. रुद्रं गृहानन्वारोहयेत् *bringt in sein Haus* TS. 3,4,10,4. — des. *nach Jmd Etwas zu erklimmen wünschen* Bhâg. P. 4,12,42.

— उपान्वा *nach Jmd Etwas besteigen und neben ihm Platz nehmen:* रथम् MBh. 5,4745.

— समन्वा *nach Jmd Etwas besteigen:* तत्रैनं चिताग्निस्थं माद्री समन्वारुरोह sc. चिताम् MBh. 1,3818.

— अभ्या *ersteigen, besteigen; sich emporschwingen —, sich hinaufsetzen zu, beschreiten:* नाकम् AV. 3,29,3. सुवर्गं लोकम् TBr. 1,8,8,5. 5,1,3. ein Schiff Çat. Br. 4,2,5,10. अभि वा एषो ऽग्नी आरोहति य एनावुपतिष्ठते TS. 1,5,9,5. शरीरं संस्कृत्याभ्यारोहति 5,6,6,4. साक्षाद्वा एष देवानभ्यारोहति य एषां यज्ञमभ्यारोहति यथा खलु वै श्रेयानभ्यारूढः कामयते तथा करोति *geradezu zu den Göttern erhebt sich, wer zu ihrem Opfer sich erhebt, so wie ein angesehener Hochstehender nur zu wünschen hat, so thut er,* TS. 2,5,5,5. 7,4,5,1. क्षत्रम् Çat. Br. 2,4,3,7. 3,3, 4,9. अभि ह वै श्रेयांसं रोहति नैनं पापीयानभ्यारोहति *erhebt sich über ihn* 12,2,3,10. — Vgl. अनभ्यारूढ, अभ्यारोह fgg.

— अवा caus. *herabbringen von* (abl.): रथस्थां प्रतिमां भर्तुरवारोहयिता गिरेः Çatr. 14,229.

— उदा *sich erheben zu:* पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारुहम् VS. 17,67. AV. 18,1,61.

— उपा 1) *hinaufsteigen zu Jmd* Âçv. Gṛhj. 3,12,12. MBh. 2,37. 939. *besteigen:* गिरिपृष्ठम् Spr. 833, v. l. MBh. 1,1107. शमीम् 4,170. प्रासादाग्रमुपारूढा R. Gorr. 2,6,1. महारथमुपारुहत् 7,12,20. यानान्युपारूढाः 6,111,16. नावमुपारुहन् 7,46,33. स्थलीमुपारूढा (उपारुह्य ed. Bomb. 3, 13,22) पर्वतस्याविदूरतः। तत्र पञ्चवटी नाम *gelegen auf* 3,19,23. न संतानः प्रमाणपदवीमुपारोढुमर्हति so v. a. *darf nicht als wirklicher Beweis gelten* Sarvadarçanas. 26,6. — 2) *herankommen, sich nähern* MBh. 7,5738. उपारूढो मध्याह्नः *Mittag ist da* Mâlav. 24,2. *kommen —, gelangen zu:* स्थलमुपारुह्य पर्वतस्याविदूरतः R. ed. Bomb. 3,13,22. उपारूढः सामग्र्यमिव चन्द्रमाः Ragh. 17,30. — Vgl. उपारुह्. — caus. *zu sich heraufsteigen lassen auf* (acc. oder loc.): तावुपारोप्य स्यन्दनम् MBh. 10, 654. रथे 5,4726.

— समुपा *besteigen:* विमानम् MBh. 3,15436. वृषभं समुपारूढा देवी पार्वती R. 5,35,26.

— पर्या *heraufsteigen aus:* (सूर्यम्) आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि RV. 10,37,8.

— प्रा *hinaufsteigen zu, besteigen:* त्रिविष्टपम् MBh. 3,10594. पादैर्हयान् 7,9041.

— प्रत्या caus. *wieder hinaufsteigen lassen, — hinaufbefördern:* प्रत्यारोपय रथोपरि राजपुत्रम् Uttarar. 100,9 (133,4). R. 4,58,39.

— समा 1) *hinaufsteigen zu, auf, besteigen, beschreiten:* स्वर्गम् MBh. 5,4078. सुरपुरीम् Spr. 2462 (med.). नभः Kathâs. 35,158. गिरिपृष्ठम् Spr. 833. गिरिम् R. 5,74,1. उष्ट्रयानम्, खरयानम् M. 11,201. रथम्, विमानम् MBh. 3,1729. 2791. 12027. 5,7339. Hariv. 13133. R. 1,1,85. 5,43,15. Kathâs. 43,41. नावम् Ait. Br. 6,21. Kathâs. 18,293. सिंहासनम् 52. शयने Pañkat. 186,23. वाजिनम् Kathâs. 18,118. Râǵa-Tar. 4,268. Bhâg. P. 9,6,15. मत्पृष्ठम् Pañkat. 115,3. तत्पृष्ठोपरि 198,10. तच्चक्रम् — तन्मस्तकाद्ब्राह्मणशिरसि समारुरोह 242,10. 14. प्रियस्याङ्कं R. 2,96,16. हुताशनम् so v. a. चिताम् Spr. 4741. इमाँल्लोकान् Çat. Br. 1,9,3,10. 2,1, 2,3. einen Pfad TS. 2,5,6,2. देवा गार्हपत्यं चित्वा समारोहन् Çat. Br. 7,2,1,1. 8,2,1,1. 9,2,3,13. वितर्कपदवीम् Prab. 116,9. समारूढ *a)* in pass. Bed.: मातङ्गाः समारूढाः कुशलैर्हस्तिसादिभिः *geritten von* MBh. 4, 1038. शतं सहस्राण्यश्वानां समारूढानि धन्विभिः R. 2,83,5. °करेणुका Kathâs. 18,87. 52,345. — *b)* in act. Bed.: सुरलोकम् R. 1,36,22. समारूढा (sc. खम्) भूतासनविमानका: Kathâs. 46,31. एकवृत्त (°त्ता die Ausgg.) समारूढा विहंगमाः Vṛddha-Kâṇ. 10,15. रथम् Mârk. P. 132,42. अश्वम् R. Gorr. 2,90,5. Mârk. P. 21,50. Kathâs. 18,101. दारुमये गरुडे Pañkat. 48,10. पत्नीस्कन्धे Mârk. P. 16,28. तस्योपरि Pañkat. 115,4. खट्वाम् Spr. 4890. सिंहासनम् Kathâs. 9,18. चिताम् R. Gorr. 2,68,36. उत्पथम् *auf Abwege gerathen* R. Schl. 2,78,4. *hineingegangen in, aufgenommen in:* समारूढेषु चारणीनाशे *wenn die Reibhölzer verloren gehen, nachdem die Feuer in sie aufgenommen sind,* Âçv. Çr. 3,12,30. Kâtj. Çr. 5,2,19. 6, 10,12. — 2) *zuwachsen, zuheilen:* °रूढ Hariv. 11076. *gewachsen* nach Nîlak. — 3) *losgehen auf Jmd* oder *Etwas* MBh. 7,5084. धन्नमस्य समारुह्य (समासाद्य ed. Bomb.) तस्थौ भीमो महीतले 5768. — 4) *an Etwas gehen, antreten:* उग्रं तपः MBh. 13,7608. नभसा तुलां समारुरोह so v. a. *bekam Aehnlichkeit mit* Ragh. 8,15. चक्रवर्द्धिं समारूढः *eingegangen auf* M. 8,156. प्रज्ञया वाचम्, चक्षुः, श्रोत्रम्, जिह्वाम्, हस्तौ, शरीरम्, उपस्थम्, पादौ, मनः समारुह्य *an die Rede, das Auge* u. s. w. *mittelst des Verstandes gehend* so v. a. *in Thätigkeit setzend* Kaush. Up. 3,5. — Vgl. समारोह, समारोहण. — caus. 1) *hinaufsteigen —, besteigen lassen:* पितृयाणैः सं व आ रोहयामि AV. 18,4,1. अमुमेवैनं लोकं समारोहयति TS. 6, 6,1,1. दिशः Çat. Br. 5,4,1,3. स्वर्गं समारोपितः Spr. 2462. वैनतेये Pañkat. 44,16. पृष्ठे 52,2. अङ्कम् Bhâg. P. 4,4,26. शूले Mṛkkh. 170,22. Râǵa-Tar. 2,79. *aufladen, auflegen* MBh. 9,1349. R. Gorr. 1,34,16. 71,2. 6, 19,49. Kathâs. 43,234. रुक्तं दिवि *aufgehen lassen* Mârk. P. 75,61. fg. वेदीम् *aufführen* Kathâs. 45,312. *in die Höhe heben, aufheben* MBh. 4, 802. bildlich so v. a. *befördern, an einen hohen Platz stellen* Ragh. ed. Calc. 15,91. — 2) *setzen in:* पीठिकाम् Kathâs. 75,119. *versetzen in, unter:* सर्वे जीवितसंशयं वयममी वाचा समारोपिताः Veṇîs. in Sâh. D. 160,8. तं पुत्रिणाम् — समारोपयदग्रसंख्याम् Ragh. 18,29. das Feuer *versetzen in* (loc. oder acc.), vom symbolischen Auffangen desselben in einen andern Gegenstand durch Wärmen der Hände, Hölzer u. s. w.: अरण्योः, आत्मन्, आत्मनि TS. 3,4,10,4. 5. Çat. Br. 4,6,8,3. 12,4,3,10. 41. 13,6,2,20. M. 6,25. 38. Bhâg. P. 7,12,24. अरणी वोल्मुकं वा Ait. Br. 7,7. auch ohne Bez. des Ortes Kâtj. Çr. 5,3,1. 7,1,36. 25,3,9. Âçv. Çr. 3,10,4. °रोप्य Lâtj. 3,4,6. Çâñkh. Çr. 16,16,2. Kauç. 40. med. *sich aufnehmen lassen:* गृहपतिरेव प्रथमः समारोहयते Çat. Br. 4,6,8,13. Kâtj. Çr. 12,2,8. — 3) einen Bogen *mit der Sehne beziehen:* समारोपितकार्मुक R. 6,66,7. Bhâg. P. 1,17,4; vgl. u. आ caus. 3). — 4) *Jmd* (loc.) *Etwas übergeben, übertragen:* पुत्रे राज्यं समारोप्य Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 95. समारोप्य वचो मयि MBh. 12,1418; vgl. वाक्यानि — एकस्मिन्ब्राह्मणे निवेश्य 15,311. *beilegen, zuschreiben, übertragen auf* Bhâg. P. 5,5,30. Sarvadarçanas. 173,2. 3. — 5) *an den Tag legen:* समारोपितशौच MBh. 13,5362. समारोपितविक्रम R. 6,69,21. — Vgl. समारोपण.

— अनुसमा *aufsteigen nach:* उद्यन्तमादित्यमग्निरनुसमारोहति TBr. 2,1,2,10.

— अभिसमा (zu einem Opfer in den heiligen Raum) *schreiten:* ते प्रा-

यणीयमभिसमरोहन् TBr. 1,5,9,3. प्रायणीयाख्यकर्माभिलक्ष्य देवयजनं प्रविष्टाः Comm.

— उप 1) *verwachsen, vernarben:* व्रणाः Suçr. 2,13,15. 58,14. उपरूढव्रणा 63,13. — 2) *kommen —, übergehen in:* पूर्वस्मादवस्थान्तरमुपरूढा तत्रभवती so v. a. *sie hat sich verändert* Mâlav. 31,13. — 3) उपरूढ *haftend —, befindlich an* (loc.) Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 30 (°ढं zu lesen). — caus. *verwachsen —, vernarben lassen* Suçr. 2,106,7.

— नि, partic. निरूढ *gewachsen:* महाकदम्बः सुपार्श्वनिरूढः Bhâg. P. 5,16,23.25. °मूल 3,30,7. *fest wurzelnd:* ममता 2,4,2 (विरूढा ed. Bomb.). 4,27,10. so v. a. रूढ *aus der Etymologie nicht erklärlich* Sarvadarçanas. 172,21. — caus. *verpflanzen, versetzen nach* (loc.), Menschen Râǵa-Tar. 1,345.

— निस् s. नीरोह.

— प्र 1) *hervorwachsen, treiben, sprossen:* काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती VS. 13,20. ते सुवर्गं लोकमा प्रारोहन् TBr. 1,1,2,5. मूलात् Çat. Br. 14, 6,9,33. पलाशानि 9,2,15. Khând. Up. 5,2,3. व्रीहयः शालयो मुद्गास्तिला माषास्तथा यवाः। यथाबीजं प्ररोहन्ति M. 9,39. क्वचित्सस्यं (so die ed. Bomb.) प्ररोहति MBh. 12,2691. 13,7141. न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति Spr. 1416. यदा प्रसृष्टा ओषध्यो न प्ररोहन्ति ताः पुनः Mârk. P. 49,73. उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति Spr. 130. M. 9,54. MBh. 12,6896 (med.) Kull. zu M. 2,112. मत्तबीजम् Spr. 2113. तुषेणापि परित्यक्ता न प्ररोहन्ति तण्डुलाः 3084. नह्यनुप्तं प्ररोहति MBh. 13,7608. प्ररूढशालि Ṛt. 5,1. लतास्तमालस्य नवप्ररूढाः R. 5,11,17. नाभिप्ररूढाम्बुरुह Ragh. 13,6. प्ररूढबीजा मही Varâh. Bṛh. S. 53,98. प्ररूढकेशश्मश्रुनखरोमोपचित *lang gewachsen* Pańkat. 182,10. स्फीतसस्यप्ररूढानि (so die neuere Ausg.) वनानि *bewachsen mit* Hariv. 3729. प्ररूढ = बद्धमूल Med. ḍh. 8. — 2) *wachsen* so v. a. *gedeihen, zunehmen, stärker werden:* नहि दुर्बलदग्धानां कुले किंचित्प्ररोहति Spr. 2176. गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्या च सुसमृद्धया। कुलानि न प्ररोहन्ति यानि हीनानि वृत्ततः॥ MBh. 5,1290. गुरुहाहप्ररोहत्सुकृतात्यय Râǵa-Tar. 4,123. प्ररूढ *weit verbreitet, gewachsen* so v. a. *gross —, stark geworden:* भुवि व्यसनिताख्यातिः प्ररूढा ते लतेव या Kathâs. 11,23. प्ररूढे संसर्गे मणिभुजगयोर्जन्मजनिते Spr. 288. °स्मरयौवना Sâh. D. 100. °भाव Bhâg. P. 4,13,1. तृषः Râǵa-Tar. 3,284. °किरणे हि चन्द्रे नक्षत्राणामल्पता भवति Schol. zu Naish. 22,54. = वृद्ध H. an. 3,189. = जठर d. i. जरठ *alt* ebend. und Med. a. a. O. — 3) *hervorgehen, entstehen:* यस्यायमङ्गात्प्ररूढः Çâk. 178. यथा प्ररूढो घर्मान्ते देहेत्कान्तं हुताशनः Hariv. 13551. स्त्रियः प्ररूढगर्भाः so v. a. *schwanger* R. 1,15,26 (24 Gorr.). स्वेदबिन्दु° 3,76,19. Bhâg. P. 4,11,30. — 4) *verwachsen, vernarben:* न प्ररोहति (v. l. für संरोहति) वाक्क्षतम् Spr. 2647. क्षतप्ररूढामिव बाणरेखाम् R. 5,11,24. — Vgl. प्ररुह्, प्ररूढि, प्ररोह fgg. — caus. 1) *pflanzen:* °रोपित Spr. 2350. 3976. bildlich: अत्युदात्तगुणेष्वेषा कृतपुण्यैः प्ररोपिता। शतशाखी भवत्येव यावन्मात्रापि सत्क्रिया॥ *gepflanzt auf* so v. a. *ihnen erwiesen* 3423. — 2) *stecken — befestigen an, in:* यष्टिं प्ररोपयेच्चक्रे Varâh. Bṛh. S. 43,29.

— अनुप्र *nachwachsen* Çat. Br. 7,4,2,13.

— अभिप्र *sprossen* Suçr. 2,360,15.

— प्रति 1) *wieder sprossen, — treiben:* छिन्नस्य यदि वृक्षस्य न मूलं प्रतिरोहति MBh. 12,6896. — 2) *nachahmen:* गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः Bhâg. P. 10,30,3. — caus. 1) *je an seine Stelle pflanzen* Varâh. Bṛh. S. 55,6. — 2) *wieder pflanzen, wieder einsetzen:* कलमा उत्खातप्रतिरोपिताः Ragh. 4,37. उत्खातान्प्रतिरोपयन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440. शत्रूनुद्धृत्य प्रतिरोपयन् Ragh. 17,42.

— वि 1) *auswachsen, austreiben, sprossen:* वनस्पते शतवल्शो वि रोह Ṛv. 3,8,11. AV. 6,30,2. Ṛv. 6,24,3. वि चारुहन्वीरुधः 10,40,9. एवा मयि प्रजा पशवो ऽन्नमन्नं वि रोहतु AV. 10,6,33. VS. 5,43. 12,100. 13,21. यूपः TBr. 1,4,7,1. व्यस्यामोषधयो रोहन्ति TS. 3,4,3,3. von der *Erection* AV. 4,4,3. विरूढ *ausgewachsen, gewachsen, gekeimt* H. an. 3, 190. Med. ḍh. 9. Kâtj. Çr. 15,9,28. fg. Çâṅkh. Çr. 13,4,1. Çat. Br. 7,2, 4,27. अश्वत्थं सुविरूढमूलम् Bhag. 15,3. °तृणाङ्कुरासु (गण्डदेहलीषु) Mṛkkh. 6,19. Ragh. 2,26. उटजद्वारविरूढं नीवारबलिम् Çâk. 96. सलिलादिव रूढं कंजम् Bhâg. P. 3,8,17. सर्वबीजविरूढेव यथा सीता *mit aufgegangenem Samen aller Art bestanden* MBh. 7,3945. — 2) *hervorgehen, entstehen:* विरूढ = जात H. an. Med. °बोध Bhâg. P. 3,8,22. स्वेदकणिका 10,43,16. — 3) *besteigen:* सुविरूढानां हस्त्यारोहैर्विशारदैः नागानाम् *gut geritten von* MBh. 7,3105. — Vgl. विरूढक, विरोह, विरोहण. — caus. 1) *wachsen machen* Ṛv. 8,80,5. *pflanzen:* विरोप्यन्तां गुल्मिनः R. 7,54,11. — 2) *verwachsen —, vernarben machen:* विरोपितव्रणा Daçak. 86,2.3. — 3) *entsetzen, vertreiben aus:* पुत्रं राज्याच्चापि व्यरोपयत् MBh. 5,5049. — Vgl. विरोपण.

— सम् 1) *wachsen:* प्रेमद्रुमाः संरुरुहुः प्रियाणाम् Bhaṭṭ. 11,5. हर्म्याग्रसंरूढतृणाङ्कुरेषु Ragh. 6,47. संरूढ = अङ्कुरित H. an. 3,191. Med. ḍh. 10. — 2) *zusammenwachsen, verwachsen, vernarben:* तस्माद्विधृता अधानो ऽभूवन् पन्थानः समरुहन् TS. 2,5,11,2. संरुरुहुर्व्रणाः R. ed. Bomb. 6,50,39. Suçr. 1,67,11. 83,15. न संरोहति वाक्क्षतम् (वाक्कृतम् fälschlich bei Kull. zu M. 7,52) Spr. 2647. संरूढव्रणा R. 3,73,6. 6,71,25. संरूढशरविक्षत (fälschlich संरूढं Arǵ. 11,1) MBh. 3,12274. — 3) *hervorbrechen, zum Vorschein kommen:* संरोहत्पुलका Sâh. D. 243,11. मिथः संरूढरागयोः 214. षष्टिवर्षगते काले यद्दोषो ऽभून्ममानघ। स संरूढो ऽसकृत् Hariv. 2127. — 4) संरूढ *fest wurzelnd, — haftend:* तन्नो मनसि संरूढं करिष्यामः so v. a. *das werden wir dem Gemüth fest einprägen* MBh. 12,12366. = प्रौढ H. an. Med. — caus. 1) *wachsen machen:* वंशं कुरोर्वंशदवाग्निनिर्हृतं संरोहयित्वा Bhâg. P. 1,10,2. *pflanzen, einsetzen:* संरोपितान्पालयन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440, v. l. *säen:* संरोपिते ऽप्यात्मनि धर्मपत्नी त्यक्ता मया *obgleich ich mich gesäet hatte* (sc. in ihrem Mutterleibe) so v. a. *ein Kind mit ihr gezeugt hatte* Çâk. 151. — 2) *zusammenwachsen —, vernarben lassen* Suçr. 1,60,5.

— उपसम् *verwachsen, vernarben:* व्रणाच्चिरादुपसंरोहति Suçr. 1,18, 3.4. — Vgl. उपसंरोह.

2\. रुह् (= 1. रुह्) f. *das in-die-Höhe-Gehen; Wuchs, Trieb, Spross:* शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः Ṛv. 10,97,2. रुहो रुरोह रोहितः AV. 13,1,4. यास्ते रुहः प्ररुहो यास्त आरुहो याभिरापृणासि दिवम् 9. 26. 3,26. Çâṅkh. Çr. 5,10,32. Am Ende eines comp. *hervorschiessend, wachsend;* s. अम्भो°, क्षिति°, कन्दोरुहोम, जल°, तनु°, पङ्क°, पर्ण°, पर्व°, भू°, भूमी°, मही°.

रुह (von 1. रुह्) 1) adj. (f. आ) am Ende eines comp. *wachsend, gewachsen, entstanden* H. 6. बीजकाण्डरुहाणि M. 1,48. गिरिसानु° MBh.

7,5643. मेरुरुह° Hariv. 9003. जनस्थानरुहद्रुमाः R. 3,52,10. पम्पातीर° 79, 32. 4,2,5. MBh. 3,12361. Megh. 30. यन्नाभिसिन्धु° Bhâg. P. 4,9,14. गिरिरात्मरुहैः (आत्मगतैः ed. Bomb.) फुल्लैः कर्णिकारैरिवावृतः *auf ihm wachsend* MBh. 11,566. Vgl. अङ्ग°, अम्बु°, अम्भो°, उरसि°, कर°, क्षिति°, गात्र°, गृहे°, जगती°, जल°, जले°, तनु°, तनू°, तीर°, धरणी°, नलिनी°, नीर°, पङ्क°, पङ्के°, पाणि°, पृथिवी°, बीज°, भू°, भूमी°, मधु°, मही°, शिरो°, सरो°. — 2) f. आ *Panicum Dactylon* AK. 2,4,5,24. H. 1193. Hâr. 93. = महासमङ्गा Râǵan. im ÇKDr.; vgl. अग्नि°, अग्र°, काक्ष°, कच्छ°, काण्ड°, काण्डे°, कृष्ण°, क्षेत्र°, तरु°, पादप°, फले°, बहु°.

रुहक n. *Loch, Oeffnung* (छिद्र) Çabdaḱ. im ÇKDr.

रुहिरुहिका f. = उत्कण्ठा ÇKDr. nach einem Purâṇa; vgl. रणरणक.

रुह्वन् (von 1. रुह्) Uṇâdis. 4,113. m. *Baum, Pflanze* Uǵǵval.

1. रूक्ष (von रूष्) 1) adj. (f. आ) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,66 (von रुह् abgeleitet und रुक्ष geschrieben). *rauh —, trocken anzufühlen; dürr, mager, aridus, saftlos* (Gegens. चिक्कण, स्निग्ध, प्रक्लिन्न, आपीन, अन्नाद) AK. 3,4,29,227. H. an. 2,570. Med. sh. 23. Çat. Br. 4,6,9,18. Çâñkh. Br. 10,1. Pańkav. Br. 5,8,1. तं रूक्षं नाजानात्स चाङ्काभि चाङ्क 24,13,2. unter den verschiedenen स्पर्श MBh. 12,6856. 14,1416. रूक्षं (vgl. रूषित unter रूष्) स्यन्दनरेणुभिः R. 6,95,26. Kathâs. 19,21. लोध्रकषाय° (कपोल) Kumâras. 7,17. Haare MBh. 1,5932. Varâh. Bṛh. S. 69,38. Bhaṭṭ. 2,30. Ragh. 7,67 (रथतुरगरजोभिः). Handfläche Varâh. Bṛh. S. 68,40. Lippen 52. Bäume 29,14. 51,3. 54,49. 105. अरणी, भूमि Spr. 2812. भूमि, भू, क्षिति R. Gorr. 2,125,12. Suçr. 1,135,8. Kâm. Nîtis. 4,53. Mârk. P. 32,19. Wolken Varâh. Bṛh. S. 21,21. 24,21. ओषधयो निदाघे निःसारा रूक्षा अतिमात्रं लघ्व्यो भवन्ति Suçr. 1,20,16. नेत्र 2,348,19. Varâh. Bṛh. S. 61,2. पिङ्गरूक्षाक्ष Mârk. P. 8,82. सेकै रूक्षैः स्निग्धैश्च Suçr. 2,349,1. देह 553,14. °स्नानाङ्ग 38,4. कृशो रूक्षो ऽल्पाशी 76,19. °दुर्बल 137,17. 177,6. 179,17. 180,16. 21. 210,3. 396,3. Mârk. P. 8,81. 121. क्षुत्क्षामरूक्ष्म (!) Râǵa-Tar. 5,433. von Speisen Suçr. 2,26,14. Kathâs. 14,39. *frei von Fett:* Arzenei u. s. w. Suçr. 2,180,12. भेषज 355,3. 325, 5. 191,8. Çârṅg. Saṁh. 3,8,37. उत्सादन Suçr. 2,45,11. vom Geschmack (*trocken auf der Zunge*) Bhag. 17,9. MBh. 1,716. Suçr. 1,70,11. 154,7. 190,14. Verz. d. Oxf. H. 237, *a*, No. 568. *rauh* von Winden MBh. 3, 12438. 4,1288. 16,2. R. 6,29,11. Varâh. Bṛh. S. 5,94. 30,6. पश्चिमे रूक्षे घर्ममासे Hariv. 3545. vom Geruch MBh. 12,6848. 14,1409. von Lichterscheinungen, die das Auge *unsanft* berühren, AV. Pariç. in Ind. St. 10,318. °वर्णा जलदाः MBh. 4,1289. 16,5. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 32. 9, 44. 11,12. 32. 39. 34,5. 23. 47,7. 8. 27. 69,33. Ind. St. 2,258. *rauh* von der Stimme, von Worten; *das Ohr —, das Gemüth unangenehm berührend* AK. H. 269. H. an. Med. ध्वाङ्क्षस्य वाक् MBh. 1,647. °स्वर (विहंगम) R. Gorr. 2,125,4. Mṛḱḱh. 143,13. Varâh. Bṛh. S. 68,95. रुदित 73. °वाशिन् (so ist zu lesen) Kâm. Nîtis. 16,26. गोमायु (wegen seiner Stimme) R. 3,64,4. शिलासु रूक्षं पतन्ति धाराः Mṛḱḱh. 92,14. पराजितान्पाण्डवेयांस्तु वाचो रौद्रा रूक्षा भाषते धार्तराष्ट्रः MBh. 5,859. 871. 14, 159. Hariv. 11094 (S. 792). R. 4,31,8. 6,101,6. Spr. 618. 1649. 4380. 4698. 4906. Bhâg. P. 6,10,28. आतेपरूक्षाक्षरमुखरमुख Spr. 1434. Râǵa-Tar. 3,87. यस्त्वां रूक्षाण्यश्रावयत् MBh. 3,993. 6,5830. R. Gorr. 2,61, 29. °निष्ठुरवाद Suçr. 1,105,8. °वादिन् R. 5,48,6. रूक्षाभिभाषिन् Hariv. 7916. Râǵa-Tar. 2,25. उपचार R. 3,1,21. अभिनिवेश Ragh. 14,43. रूक्षं च मुकुरीक्षते *unfreundlich, unwirsch* Kâm. Nîtis. 5,42. von Personen Spr. 2635. Çâk. 191. Gegens. अनुनीत Vikr. 61. रोष° Daçak. 2,9. गृहं धनविहीनस्य so v. a. *unheimlich* Spr. 805. Uttarar. 32,6 (42,8). Häufig fälschlich रुक्ष geschrieben, die Bomb. Ausgg. haben regelmässig die Länge. — Vgl. लूक्ष. — 2) m. *eine best. Grasart*, = वरक. — 3) f. आ *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

2. रूक्ष m. *Baum* H. 1114. wohl eine falsche Zurückübersetzung des prâkr. रुक्ख = वृक्ष.

रूक्षगन्धक m. *Bdellion* Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षण (von रूक्षय्) 1) adj. *mager machend* Çârṅg. Saṁh. 3,2,4. — 2) n. *das Magermachen, Behandlung mit Mitteln, die das Fett mindern:* अतिस्निग्धस्य रूक्षणम् Suçr. 2,180,21. Çârṅg. Saṁh. 3,1,29.

रूक्षणात्मिका f. *eine best. Körnerfrucht*, = लङ्का Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षता (von 1. रूक्ष) f. *Dürre, Trockenheit, Magerkeit:* मूर्धजानाम् Spr. 4462. श्लेष्मक्षये रूक्षता Suçr. 1,48,19. इन्द्रियाणाम् 2,237,9. अ° Çat. Br. 13,8,3,18. Pańkav. Br. 20,13,4. *rauhes —, unfreundliches Wesen:* जन्तोर्निरुपभोगस्य दृश्यते भुवि रूक्षता Spr. 934.

रूक्षत्व (wie eben) n. *Rauhheit, Trockenheit, ausdörrende Natur:* औष्ण्याद्रूक्षत्वाच्च (अग्नेः) Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 130.

रूक्षदर्भ m. *eine Art Gras*, = हरिदर्भ, हरिद्गर्भ Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षपत्त्र m. *Trophis aspera*, = शाखोट Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षपेषम् adv. in Verbindung mit पिष् *trocken* d. i. *ohne Zusatz von Fett* oder *Flüssigkeit zermalmen* P. 3,4,35.

रूक्षप्रिय m. = ऋषभौषध Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षय् (von रूक्ष), रूक्षयति (पारुष्ये) Dhâtup. 35,56. 1) *dünn —, mager machen:* तान्येनं रूक्षाणि रूक्षयन्ति Çat. Br. 4,6,9,18. — 2) *besudeln, beschmieren:* नरक्तक्षतजरूक्षित Varâh. Bṛh. S. 104,16. — Vgl. अरूक्षित.

— वि *bestreichen:* गोमयेन बहुशो विरूक्षितं बीजम् Varâh. Bṛh. S. 55,19.

रूक्षस्वादुफल m. *ein best. Fruchtbaum*, = धन्वन Râǵan. im ÇKDr.

रूक्षीकर् *rauh —, trocken anzufühlen machen:* पांसुरूक्षीकृताङ्ग so v. a. *mit Staub bedeckt* Mṛḱḱh. 157,8.

रूखर m. pl. N. einer Çiva'itischen Secte Wilson, Sel. Works I, 32. 236.

रूचक s. रुचक.

रूढ s. u. 1. रुह्.

रूढपर्याय adj. *in wachsenden Kehrsätzen sich bewegend* Lâṭj. 6,7,7.

रूढवंश adj. *hohen Geschlechts* Daçar. 2,1.

रूढि (von 1. रुह्) f. 1) *das Steigen* (eig. und übertr.): रूढिमेति *kommt hoch zu stehen* Râǵa-Tar. 1,284. 6,266. — 2) *Wachsthum:* दृढां रूढिं नेतुम् *zu festem Wachsthum verhelfen* Spr. 1094. — 3) *Ueberlieferung, hergebrachter Brauch:* कवि° H. 5. रूढिः परंपरायाता येयमस्मद्गृहे स्थिता Râǵa-Tar. 4,271. — 4) *eine überlieferte, nicht unmittelbar aus der Etymologie sich ergebende Bedeutung eines Wortes* Sâh. D. 13. 13,7. 213,11. अभिधा द्विविधा रूढिपूर्विका योगपूर्विका च Pratâpar. 9,*a*,2. Schol. zu Kâtj. Çr. 4,14,31. zu P. 3,3,20. zu Bhâshâp. S. 83. Kâç. zu P. 1,2, 55. 6,1,102. Verz. d. Oxf. H. 188,*b*,27. 246,*a*, No. 619. Sarvadarçanas. 172,8. fgg. °शब्द Bhar. Nâṭjaç. 18,14. Schol. zu AV. Prât. 4,16. zu P. 2,1,66. °शब्दता Râǵa-Tar. 3,76.

रूप Uṇâdis. 3,28. 1) n. Siddh. K. 249,a,11. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा; ई Pañkar. 2,6,23 wohl fehlerhaft. a) *äussere Erscheinung*, sowohl *Farbe* (namentlich pl.) als *Gestalt*, *Form* AK. 1,1,4,16. 3,38. Trik. 3,3,278. H. 1376. an. 2,298. fg. Med. p. 9. fg. Halâj. 5,79. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,28. रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं१ परि स्वाम् RV. 3,53,8. 6,47,18. घोषा इन्द्रस्य प्रपिवरे न रूपम् 10,168,4. नभो न रूपमरुषं वसानाः 7,97,6. रूपा हरिता 10,96,3. कृष्णा, अर्जुना 21,3. विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि AV. 6,20,3. विश्वा रूपाण्याविशन् RV. 7,55,1. 8,15,13. 5,81,2. 10,136,4. 139,3. 169,3. पिता यत्सीमभि रूपैरवासयत् 1,160,2. श्रा नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिः 5,43,10. रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा 10,110,9. 184,1. दिवि रूपमासजत् *hat dem Himmel seine Farbe gegeben* 124,7. त्वष्टा रूपेव तक्ष्या 8,91,8. त्वष्टा रूपाणामीशे TBr. 1,4,7,1. AV. 1,22,3. नाम रूपं च 11,7,1. Bhâg. P. 1,5,14. 8,38. रूप, नामन्, कर्मन् Çat. Br. 14,4,4,1. 11,2,3,3. हे रूपे कृणुते रोचमानः AV. 13,2,28. उच्चरश्मीना तनोषि विश्वा रूपाणि पुष्यसि 10. वहसि विश्वा रूपाणि बिभ्रतम् 14,2,30. उपबर्हणीं ददाति रूपाणामवरुद्ध्यै *Farben* TBr. 1,1,6,10. ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति *Spukgestalten* VS. 2,30. *Traumgestalten* Çat. Br. 14,7,1,14. चत्वारि चतुष्पो रूपाणि हे शुक्ले हे कृष्णे *Farben* TS. 5,3,1,4. आत्मरूपे 6,1,6,1. ज्योतिः पश्यति रूपाणि रूपं च बहुधा स्मृतम्। ह्रस्वो दीर्घस्तथा स्थूलश्चतुरस्रो ऽनुवृत्तवान् (णुवृत्तवान् ed. Bomb.)॥ शुक्लः कृष्णस्तथा रक्तो नीलः पीतो ऽरुणस्तथा। कठिनश्चिक्कणः श्लक्ष्णः पिच्छिलो मृदुदारुणः॥ एवं षोडशविस्तारो ज्योतीरूपगुणः स्मृतः। MBh. 12,6853. fgg. M. 1,77. 12,98. Verz. d. Oxf. H. 104,b,30. 225,a, No. 549. 226,a, No. 554. Râǵa-Tar. 5,375. Bhâg. P. 2,2,29. Bhâshâp. 2. 99. einer der fünf Skandha bei den Buddhisten Burn. Intr. 511. H. 233, Sch. धूम्र° *Farbe* MBh. 7,9621 = 13,7510. नररूपेण *in der Gestalt eines Mannes* M. 7,8. R. 3,52,14. Spr. 2525. 3271. Bhâg. P. 1,7,45. अर्थमनर्थरूपेण सा ददर्श R. Gorr. 2,8,33. नैता (स्त्रियः) रूपं परीक्षन्ते *das Aeussere eines Menschen* Spr. 1647. °विपर्यय M. 11,48. तस्य दृष्टस्य तद्रूपं तिग्मप्रमत्तरधीयत MBh. 3,2619. 2621. 2804. रूपेण विकृतः R. 1,1,54. नक्तीदृशं तापसानां रूपं भवति कर्हिचित् 9,45. 56,17. 2,42,12. Çâk. 115. Vikr. 9. ममेदमिति यो ब्रूयात्सो ऽनुयोज्यो यथाविधि। संवाद्य रूपसंख्यादीन्स्वामी तद्द्रव्यमर्हति॥ *das Aussehen eines Gegenstandes* M. 8,31. fg. देशस्य R. 2,93,6. रूपं कर् *eine Gestalt annehmen*, *sich verwandeln in*, mit eigenthümlicher Construction in der älteren Sprache: अश्वः श्वेतो रूपं कृत्वा *sich in ein weisses Ross verwandelnd* Ait. Br. 6,35. आखू रूपं कृत्वा TBr. 1,1,3,3. TS. 5,2,6,5. 6,1,3,1. आश्वं रूपं कृत्वा Nir. 12,10. मृगविहंगानां कस्य रूपं करोम्यहम् R. 5,35,29. स्त्रीरूपमद्भुतं कृत्वा MBh. 1,1156. Kathâs. 13,143. 39,175. नलरूपमकारि तैः 56,269. स हि रूपाणि कुरुते विविधानि MBh. 13,2270. कृत्वा रूपाण्यनेकशः R. 1,28,18. रूपं बहुरूपं कृत्वा 64,7. 8. 5,31,28. MBh. 3,2557. आत्मनः परमं रूपं चाकरोन्मन्मथाकृति Brahma-P. in LA. (III) 53,22. स्वं चैव रूपं कुर्वन्तु *die eigene Gestalt annehmen* MBh. 3,2211. 2839. अस्यैव सर्वे रूपं भवाम *seine Gestalt annehmen* Çat. Br. 14,4,3,32. भीमरूपं समास्थितः R. 5,50,18. रूपं शूर्पणखा नाम्ना सदृशं प्रत्यपद्यत Ragh. 12,38. रूपमन्यत्स शिश्रिये Kathâs. 18,243. *Lautform*, *Form* eines Wortes: स्वं रूपं शब्दस्य P. 1,1,68. सर्वादीनि शब्दरूपाणि Schol. zu P. 1,1,27. देवेति रूपान्तरं बोध्यम् Siddh. K. zu P. 1,2,6. किमो रूपम् Vop. 25,5. Am Ende eines adj. comp. यज्ञाय धृतरूपाय *der eine Gestalt angenommen hatte* Bhâg. P. 3,19,3. *ein — Aeusseres habend*, *die Gestalt von — habend*, *in der Gestalt von — auftretend*, *das Aussehen von — habend*, *dem ähnlich* H. 1462. मनोज्ञरूपा *ein angenehmes Aeusseres habend* R. 1,9,52. समन्त° Çâk. 190. अनाचार° *von ungewöhnlichem Aussehen* Kauç. 117. वेश्या मुनिरूपाः *Buhldirnen in der Gestalt von* Muni R. 1,8,23. मातृरूपे ममामित्रे voc. 2,74,7. पद्मारूपा श्रीः MBh. 3,14404. ब्राह्मणीरूपा Kathâs. 16,10. Râǵa-Tar. 1,35. Bhâg. P. 1,19,14. 5,26,20. Pañkat. 238,23. तं ह त्रीन्गिरिरूपानविज्ञातानिव दर्शयां चकार *er zeigte ihm drei unbekannte bergähnliche Gegenstände* TBr. 3,10,11,4. प्लवरूपमपि किंचित् *etwas flossähnliches* Âçv. Gṛhj. 1,12,6. Kauç. 53. नदी° 71. अग्नि° R. 1,65,15. अनल°, केतु° Varâh. Bṛh. S. 11,3. अशोक° *die Farbe des* Açoka *habend* 37,2. 54,110. स एव शब्दस्तद्रूपो वाससां निष्यतामिव *ein Laut, ähnlich dem von Kleidern, die gewaschen werden*, MBh. 7,8531. मृगतृष्णि° Bhâg. P. 7,9,25. दारूपा धारूपाश्च धातवः *Wurzeln von der Lautform* दा *und* धा Schol. zu P. 1,1,20. अरूपो निपातः *ein aus einem blossen Vocal bestehender* Nip. zu 14. तस्याज्ञा हिंसाविरतिरूपा *ein in der Form von — auftretender Befehl* so v. a. *der Befehl, der darin bestand, dass man* — Râǵa-Tar. 3,80. मायया नामरूपया *erscheinend als* Bhâg. P. 8,14,10. अस्य स्फुरणास्य फलं प्रियालिङ्गनरूपम् *bestehend in* Schol. zu Çâk. 15. राज्ञो ऽभिलाषरूपेयं प्रथमकामावस्था zu 22. 26. 81,4. वधदण्डं ताडनाख्यङ्गच्छेदरूपम् Kull. zu M. 8,129. सीमारूपेषु ग्रामसंधिषु zu 261. मुनेरपत्यं शकुन्तलारूपम् so v. a. *nämlich —*, *das ist* Çak. Schol. zu Çâk. 41. Häufig in Zusammensetzung mit einem adj. oder partic., wobei nicht selten रूप als ganz überflüssig erscheint: घोर° *ein imposantes Aussehen habend* M. 7,121. आर्य° 10,57. क्रुद्धो ऽप्यक्रुद्धरूपः MBh. 1,5596. उन्मत्तरूपा 3,2514. प्रेत° Hariv. 4549. विरूपरूप MBh. 1,5931. Mârk. P. 69,30. आकारादीन्दीर्घरूपान् = दीर्घान् RV. Prât. Einl. शान्त° Spr. 1114. तन्त्ररूपा (वाच्) 4698. वाचः पथ्यरूपाः MBh. 2,2196. fg. सत्य° (वाक्य) R. 2,57,21. घोररूपाणि निमित्तानि Bhâg. P. 1,14,2. अश्रद्धान° MBh. 13,1130. परमार्त° 2,2250. प्रहृष्ट° 3,15654. हृष्ट° 5,7519. त्रस्तरूपं तु विज्ञाय जगत्सर्वम् R. 1,23,5. अदृष्टरूपा (लता) *bisher unbekannt* 2,55,29. संपन्न° *lecker* 5,14,45. निखातरूपां गणेशप्रतिमाम् Kathâs. 71,60. नान्यदन्येन संसृष्टरूपं (संसृष्टं रूपं ed. Lois.) विक्रयमर्हति M. 8,203. रागादिना स्थापितरूपम् (स्थगितरूपम् bei Lois.) Kull. zu M. 8,203. विमृष्ट° Burn. Intr. 49. कान्त° ad Çâk. 19. शक्य° (so ist zu lesen und demnach zu übersetzen) Spr. 4908. अगम्यरूपा पृथिवी MBh. 9,722. सकरुणा हि गुरवो गर्भरूपेषु (= बालकेषु Comm.) Uttarar. 124, 8 (168, 3). आनन्द° so v. a. *von Wonne erfüllt* Praçnop. 2,10. Nach P. 5,3,66 (vgl. jedoch Vârtt.) und Vop. 7,50 soll रूप als tonloses Suffix den vorangehenden Begriff lobend hervorheben: पटु° *recht geschickt*, पचतिरूपम् *er kocht gut*, वैयाकरणरूपः *ein ordentlicher Grammatiker* Schol.; vgl. P. 8,1,57. Verhalten eines fem. vor einem solchen रूप P. 6,3,35. 43. fgg. Vop. 7,49. — b) *Bild*, *Bildniss*: न चोदके निरीक्षेत स्वं रूपम् M. 4,38. लिखितं पटे। रूपं सुन्दरसेनस्य Kathâs. 101,101. स्थापयेद्दश रूपाणि Weber, Kṛshṇaǵ. 284. — c) *eine schöne Gestalt*, *Schönheit* Trik. H. an. Med. Viçva a. a. O. नभो न रूपं जरिमा मिनाति RV. 1,71,10. 2,13,3. 9,65,18. पशूनाम् (nach

Comm.) VS. 39,4. TS. 7,8,25,1. ÇAT. BR. 9,4,1,4. योषिति रूपं दधाति 13,1,9,6. ÂÇV. GṚHJ. 1,5,3. °सत्त्वगुणोपेत M. 3,40. वर्णरूपोपसंपन्न 4,68. °द्रव्यविहीन 141. °गुणान्विता 7,77. वयोरूपसमन्वित 8,182. JÂǴN. 1,290. MBH. 3,2081. °संपन्ना 2084. R. 1,4,27. MBH. 3,2124. 2357. 5,7010. R. 1,6,13. ÇÂK. 13,10. 42. रूपं जरा हन्ति Spr. 2636. °यौवनसंपन्न 2637. रूपाभिजनसंपन्न 2638. अप्रतिम 2639. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् 2797. VARÂH. BṚH. S. 78,13. 105,5. रूपोपेत 15,26. कुलरूपानुरूपा भार्या KATHÂS. 11,6. °यौवनगर्विता BRAHMA-P. in LA. (III) 50,4. °समन्वित WEBER, KṚSHṆAǴ. 274. रूपाढ्या VET. in LA. (III) 1,14. परमाद्भुतरूपा KATHÂS. 18,85. — d) *Naturerscheinung, Erscheinung, Symptom* VARÂH. BṚH. S. 3,9. 5,16. 21,35. 37. 32,8. 12. 20. 43,27. SUÇR. 2,55,21. Verz. d. Oxf. H. 305,*b*,17. 312,*a*, No. 745. *Anzeichen:* ज्ञयस्यैतद्भाविनो रूपमाहुः MBH. 12,3760. fg. *Abzeichen, charakteristisches Zeichen, Eigenthümlichkeit, Repräsentation, Symbol* BHÂG. P. 3,7,29. दीक्षायै रूपं शष्पाणि VS. 19,13. 31. अश्वरथः क्षत्रस्य रूपम् AIT. BR. 4,9. यत्सुरा भवति क्षत्ररूपं तत् 8,8.1. 2. 2,23. 3,29. 32. 4,26. 5,1. 4. TBR. 2,1,4,9. सर्वासां देवतानाम् TS. 3,5,9,1. ÇAT. BR. 1,5,3,12. 6,3,41. 13,1,5,1. इष्टि° 1,6,2,12. KÂTJ. ÇR. 14,7,3. यद्दृष्ट ओषधय उच्यन्ते प्राणिनश्च पृथिव्यां तदश्विनो रूपम् so v. a. *das ist die Sache der* Açvin NIR. 6,36. बोधश्चावगतिश्चैव स्मृतिर्विज्ञानमेव च। इत्येतानीह रूपाणि तस्य रूपस्य भास्वतः॥ *Erscheinungsform* MÂRK. P. 101,19. पञ्च रूपाणि राजानो धारयन्त्यमितौजसः। अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य यमस्य वरुणस्य च॥ *Natur* Spr. 4486. यावदहमेतच्छब्दरूपं ज्ञातुमागच्छामि PAṄKAT. 21,25. देशं रूपं च कालं च *Umstände* M. 8,45. सोमो रूपविशेषैरोषधिश्चन्द्रमा वा NIR. 11,5. °संपन्न *modificirt* 1,15. वृत्त्या लक्षणरूपया BHÂG. P. 3,26,14. रूपैः सप्तभिः *auf sieben Arten* KAP. 3,73. SÂṂKHJAK. 63. 65. रूपभेदात् *je nach der Art, wie es sich äussert*, WEBER, KṚSHṆAǴ. 223. अरिष्टरूपाणि *Arten* SUÇR. 1,119,7. बहूनि विघ्नरूपाणि करिष्यन्ति च राक्षसाः R. 6,82,57. यावत्तु निर्यतस्तस्य रजोरूपमदृश्यत so v. a. *eine Spur von Staub* R. SCHL. 2,42,1. — e) *ein einzelnes Stück, Exemplar:* सार्धास्तिस्रो गुञ्जाः सप्ततिमूल्यं धृतं रूपम् von einer Perle VARÂH. BṚH. S. 81,11. daher Bez. *der Zahl Eins* SIDDHÂNTAÇIR. GAṆIT. BHAGRAHAJUTJADH. 4. WEBER, ǴJOT. 77. fg. Ind. St. 8,444. fgg. Verz. d. Oxf. H. 188,*b*,13. sg. *the arithmetical unit*, pl. *integer number* COLEBR. Alg. 17. 149. *absolute number* 139. °विभाग 6. 10. °भागानुबन्ध, °भागापवाह 15. — f) *eine best. Münze*, wohl *eine Rupie*, = नाणक H. an. VIÇVA a. a. O. st. dessen fälschlich मानक TRIK., नालीक MED. — VARÂH. BṚH. S. 81,14. P. 1,4,52, Vârtt. 4, Sch. रूपार्धक *eine halbe Rupie* H. an. 2,39. MED. g. 13. — g) in der Dramatik *eine in der Katastase* (गर्भ) *angestellte Betrachtung* BHAR. NÂṬJAÇ. 19,83. DAÇAR. 1,36. SÂH. D. 365. 367. PRATÂPAR. 21,*b*,8. — h) *Schaustück, Schauspiel* TRIK. H. an. MED. DAÇAR. 1,7. — Die Lexicographen kennen noch folgende Bedd. — i) *Vieh, Viehheerde* TRIK. H. an. MED. VIÇVA. = मृग HALÂJ. 5,30. — k) = शब्द *Laut, Wort* TRIK. H. an. VIÇVA. — l) *ein* Çloka H. an. MED. — m) = ग्रन्थावृत्ति TRIK. H. an. MED. *acquiring familiarity with any book or authority by frequent perusal, learning by heart or rote* WILSON; eher *Citat.* — 2) m. N. pr. eines Mannes WILSON, Sel. Works I,154. 157. fg. 167. fg. Verz. d. Oxf. H. 145,*a*, No. 305. 532,*b*. — 3) f. आ N. pr. eines Flusses VP. 185, N. 80. — 4) m. oder n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,12. रूम v. l. — Vgl. अ°, अति°, अनेक°, अन्य°, असार°, एवं°, काम°, किं°, कु°, ज्ञात°, तथा°, तप्त°, त्रि°, दश°, देश°, नष्ट°, नाना°, नी°, नैक°, पञ्च°, पर°, पिशङ्ग°, पुं°, पुरु° (auch BHÂG. P. 4,24,61), पुरुष°, पूर्व°, पृथग्रूप, प्रति°, प्राप्त°, प्रिय°, बहु°, बाल°, बहुरूप, भद्ररूपा, भारूप, भाव°, भूत°, महा°, युक्त°, वि°, विश्व°, स°, सु°, स्व°.

रूपक (von रूप und रूपय्) 1) adj. a) *in* (angenommener) *Gestalt erscheinend:* अन्वतीरप्सरसो रूपका उत AV. 11,9,15. — b) *bildlich bezeichnend* SÂH. D. 308,3. 5. — 2) m. *eine best. Münze*, wohl *eine Rupie* VARÂH. BṚH. S. 81,12. fgg. PAṄKAT. 127,8. 252,13. P. 5,1,48, Sch. RÂǴA-TAR. 6,52. 60. 66. सुवर्ण° 45. स्वर्ण° KATHÂS. 78,13. das Geschlecht nur aus einer Stelle in VARÂH. BṚH. S. zu ersehen. Nach JUKTIKALPATARU im ÇKDR. ist रूपक n. als Gewicht = 3 गुञ्जा. — 3) f. रूपिका *Schwalbenwurz, Asclepias lactifera Lin.* RATNAM. im ÇKDR. SUÇR. 1,159,15. 2,64,3. 102,17. रूपिकायाः पयः 282,10. — 4) n. a) am Ende eines adj. comp. = रूप 1) a): गिरिं (so die ed. Bomb.) प्रत्यूहद्रूपकम् *bildend* MBH. 3,9981. समाधिस्तु तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् *bestehend in* H. 85; vgl. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,38. दन्तालाञ्चितरूपका (sic) = दन्तालाञ्चिता R. 5,13,11. मणिविद्रुमवैदूर्यजालान्तरित° MÂRK. P. 23,103. — b) *Figur, Bildniss:* तेषां पुरुषरूपकमिव कृत्वा *eine menschenähnliche Figur* AIT. BR. 7,2. चित्रे किमालिखामीह रूपकम् KATHÂS. 55,43. ईदृगालिख्य चित्रे मे देहि रूपकम् 67. — c) *Erscheinungsform, Art:* द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मज्योतिषो रूपके MAITRJUP. 6,36. — d) *Metapher, Tropus* H. an. 3,90. MED. k. 148. KÂVJÂD. 2,66. fgg. SÂH. D. 669. 676. fgg. 105,13. 299,18. 308,2.7. KUVALAJ. 14. fg. PRATÂPAR. 78,*b*. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,13. 208,*b*,15. 211,*b*,9. श्लिष्ट° MALLIN. zu ÇIÇ. 9,36. — e) *Schaustück* H. an. MED. DAÇAR. 1,7. SÂH. D. 273. Verz. d. Oxf. H. 142,*a*, No. 290. — f) = मूर्त (मूर्त्ति?) MED. = धूर्त H. an. — Vgl. तप्त°, दश°, पुरुष°, प्रति°, बहु° (f. °रूपिका MBH. 1,6077), महा°, वि°, सु°.

रूपकताल m. Bez. *eines best. Tactes* GÎT. S. 26.

रूपकर्तर् m. *Bildner von Gestalten*, Beiw. Viçvakarṭ's R. 5,22,13.

रूपकार m. *Bildhauer* KATHÂS. 37,9. 123,140.

रूपकृ॑त् 1) adj. *Gestalten bildend:* Tvashṭar TS. 6,1,8,5. 3,6,2. ÇAT. BR. 11,4,3,17. KÂTJ. ÇR. 5,13,1. — 2) m. *Bildhauer* KATHÂS. 37,8.

रूपगोस्वामिन् m. N. pr. eines Autors, = रूप Verz. d. Oxf. H. 175,*a*,37.

रूपग्रह 1) adj. *Gestalten —, Farben wahrnehmend.* — 2) m. *Auge* H. ç. 119.

रूपचिन्तामणि m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255.

रूपजीव R. 2,36,3 und DAÇAK. in BENF. Chr. 195,5 fehlerhaft für रूपाजीव.

रूपज्ञ adj. *Gestalten —, Farben erkennend, — unterscheidend:* अ° ÇAT. BR. 14,7,2,2.

रूपण (von रूपय्) n. 1) *bildliche Bezeichnung* SÂH. D. 672. 675. 308,6. 11. *Bildlichkeit* VJUTP. 176. — 2) *Untersuchung, Prüfung* SÂH. D. 59.

रूपतत्त्व n. *Natur, Wesen* H. 1376.

रूप॑तम adj. *farbigst* ÇAT. BR. 3,3,4,23. 4,5,8,2.

रूपता am Ende eines comp.: ब्रह्म° nom. abstr. von ब्रह्मरूप adj. *im* Brahman *aufgehend* NÎLAK. 33. दुःख°, आनन्द° nom. abstr. von दुःखरूप, आनन्दरूप *in Leid —, in Wonne bestehend* 34.

रूपत्व n. nom. abstr. von रूप 1) a) SARVADARÇANAS. 48,18. 106,19. fg.

रूपधर 1) adj. am Ende eines comp. *eine — Gestalt —, die Gestalt von —, die Farbe von — habend:* दिव्य° Vet. in LA. 27,17. गो° Ragh. 2,3. कनक° Varâh. Brh. S. 30,25; vgl. u. 1. कामरूप. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 51,120.

रूपधातु s. u. धातु 6).

रूपधारिन् adj. 1) *eine Gestalt tragend:* कामतो रूपधारित्वम् *ein Wechsel der Gestalt nach Belieben* Kâm. Nîtis. 17,53. — 2) *mit Schönheit ausgestattet* Vâmana-P. 16 im ÇKDr.

रूपधृत् adj. am Ende eines comp. *die Gestalt von — tragend:* कपि° Kathâs. 37,141. द्विज°40,20. विविध° *verschiedene Gestalten habend* 54,17.

रूपधेय n. P. 5,4,36, Vârtt. 2. *Gestalt und Farbe* (पशवः) त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेद AV. 2,26,1. — Vgl. नामधेय.

रूपनयन m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 316,*b*, N. 2.

रूपनारायण m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 273,*b*,43. 279,*a*, 35. 341,*b*, N. 532,*b*.

रूपनाशन m. *Eule* Çabdar. im ÇKDr.

रूपप m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,50.

रूपपति m. *Herr der Bildungen:* Tvashṭar Çat. Br. 11,4,3,17. Kâtj. Çr. 5,13,1.

रूपपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 342,*a*,15.

रूपभेद 1) m. *Verschiedenheit der Erscheinungsform* Weber, Kṛshṇaǵ. 223. — 2) n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,10.

रूपमञ्जरी f. 1) N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 153,*b*, 11. — 2) Titel eines medic. Werkes ebend. 406,*b*, No. 35.

रूपमाला f. Titel einer Grammatik Colebr. Misc. Ess. II, 48. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,23.

रूपमाली (!) f. ein best. Metrum: *4 Mal* — — — — — — — — — — Colebr. Misc. Ess. II, 159 (IV, 10, wo 3 *m* st. *rm* zu lesen ist).

रूपय् (von रूप), रूपयति Dhâtup. 35,79 (रूपक्रियायाम्), P. 3,1,25. 1) *Gestalt verleihen, zur Anschauung bringen:* तत्र रूप्यन्त एभिर्विषयाः Sarvadarçanas. 20,11. fg. रूपित 93,16. Prab. 27,12. कैलासो रूपितश्चापि मायया यदुनन्दनैः auf dem Theater Hariv. 8695. बहुरूपरूपित *in vielfacher Form erscheinend* Bhâg. P. 5,18,31. 11,28,17. *vorgestellt, eingebildet* Sâh. D. 669. In der Bühnensprache bedeutet रूपय् *Etwas darstellen, durch Gebärden Etwas zu erkennen geben:* संस्पर्शम् Çâk. 32,15. यथोक्तम् 37,12. पुष्पोच्चयम् 45,3. गतिभङ्गम् 54,6. विस्मयम् 72,8. 11,18, v. l. 50,15, v. l. Vikr. 6,6. 12,16. fg. 47,13. Mâlav. 29,13. 68,5. — 2) *betrachten, beschauen;* = रूपं पश्यति P. 3,1,25, Sch. Vop. 21,17. — 3) med. wohl *sich zur Anschauung bringen, erscheinen* Vop. 22,2.

— नि 1) in der Bühnensprache *Etwas darstellen, durch Gebärden Etwas zu erkennen geben:* रथवेगम् Çâk. 5,16. 7,22. वृक्षसेचनम् 9,11. भ्रमरबाधाम् 11,18. 32,5. संस्पर्शम् 15, v. l. शृङ्गारलज्जाम् 14,3. यथोक्तम् 37,12, v. l. स्खलितम् 45,2. 50,15. 61,17. Vikr. 29,8. Prab. 79,4. — 2) *erblicken, wahrnehmen* Hariv. 15564. Spr. 1884. Daçak. 93,4. Bhâg. P. 6,4,29. Bhaṭṭ. 17,65. *sich eines Dinges vergewissern:* प्रत्यक्षेण निरूपिते स्याएवोदो Çaṅk. zu Brh. Âr. Up. S. 8. *ausfindig machen:* यावदुपायो ऽत्र निरूप्यते Kathâs. 122,60. तत्तत्र प्रतीकारो निरूप्यताम् 62,9. — 3) *genau hinsehen, betrachten, untersuchen, erwägen, erforschen, prüfen, wissenschaftlich betrachten, — untersuchen, erörtern:* अग्रतः Mṛḱḱh. 137,20. Çâk. 9,1. 88,4. Paṅḱat. ed. orn. 30,1. Z. d. d. m. G. 14,569,19. Vikr. 39,5. 78,11. Kathâs. 5,18. 28,86. 29,24. 182. 32,28. Prab. 44,9. Hit. 10,3. 17. 20,15. 26,11 (सुनिरूपित). 38,11. 42,4. 68,14. 91,1 (सुनिरूपित). 98,15 (सुनिरूपित). 99,1. Mṛḱḱh. 121,4. Uttarar. 30,8 (39,18). Bhaṭṭ. 12,54. Med. Anh. 5 (सुनिरूप्य). Spr. 962. 1955 (सुनिरूपित). Suçr. 1,31,5. Tarkas. 51. Pratâpar. 21,*b*,7. Sâh. D. 2. 6,21. Çaṅk. zu Brh. Âr. Up. S. 66. zu Ḱhând. Up. S. 42. Bhâg. P. 1,4,31. 7,7,46. Madhus. in Ind. St. 1,20,5. Bhâshâp. 124. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,44. Sarvadarçanas. 36, 15. fg. 74,10. 84,13. fg. 90,18. 174,11. Kusum. 3,2. — 4) *festsetzen, bestimmen, definiren* Paṅḱat. 158,18. 171,10. Mârk. P. 18,7. Bhâg. P. 1, 5,22. 3,11,12. 18. 4,30,22. 5,12,8. 6,16,14. 7,5,13. Bhâshâp. 107. Sarvadarçanas. 55,13. 77,13. 145,9. Çaṅk. zu Brh. Âr. Up. S. 271. — 5) *einsetzen, erwählen, bestimmen zu:* संजीवकस्य रत्नापुरूषान्निरूप्य Paṅḱat. 8,24. 161,10. शृगालं रत्नपालम् 217,4. Bhâg. P. 1,8,34. 4,14,10. मया निरूपितस्तुभ्यं पतिः 27,28. यद्देवेन वाराणसी नाम नगरी राजधानी निरूपिता Prab. 25,7. निरूपितो बालक एव योगिनां शुश्रूषणे Bhâg. P. 1, 5,23. केदारकर्मणि 5,9,12. 10,75,7. त्वयात्मनो ऽर्धे निरूपिताहम् 4,3, 14. जगत्त्राणाखलप्रक्षापये 9,5,9. Paṅḱat. 174,20. 184,8. तस्य च प्रतिवीरतयास्माभिर्भवान्निरूपितः Prab. 72,8. तदत्राटवीराज्ये ऽभिषेक्तुं भवान्सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः Hit. 41,2. — 6) *richten* (ein Geschoss), *abschiessen:* (°बाह्लीकाद्यैः) अस्त्राणि निरूपितानि Bhâg. P. 1,15,16. — 7) निरूप्यते Bhâg. P. 4,1,61 fehlerhaft für निरू°; desgleichen निरूप्य M. 6,38 (die v. l. hat die richtige Form). Bhâg. P. 1,15,39. 8,16,51. 9,23, 9 fehlerhaft für निरूप्य. — Vgl. निरूपण fgg.

— प्र *darlegen, auseinandersetzen, erklären* Sarvadarçanas. 31,14. 33,13.

— वि s. विरूपय्.

रूपरत्नाकर m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,45.

रूपलता f. N. pr. einer Prinzessin Kathâs. 51,120.

रूपवत् (von रूप) 1) adj. gaṇa रसादि zu P. 5,2,95. *a) Gestalt* oder *Farbe habend* Bhâg. P. 2,5,27. fg. 6,44. *schön geformt* oder *schönfarbig:* भूषणानि MBh. 3,11912. *verkörpert, leibhaftig:* मारुत R. 5,13,8. संपद् Kathâs. 18,288. प्रमोद 25,221. अर्थसिद्धि 39,244. am Ende eines adj. comp. *die Gestalt von — habend, in der Gestalt von — erscheinend:* हंसकोकिल° MBh. 13,2280. मत्स्य° Mârk. P. 59,26. — *b) eine schöne Gestalt habend, schön;* von Personen Nir. 5,13. MBh. 3,1811. 2072. 2084. Spr. 507. 1561. Varâh. Brh. S. 8,8. 58,45. 68,99. Kathâs. 31,55 (रूपवत्तम). Hit. 115,5 (अधिक°). Vet. in LA. (III) 29,13. कवचं स्पर्शरूपवदुत्तमम् *schön anzufühlen und von schönem Aussehen* MBh. 3,12067. — 2) f. °वती N. pr. *a)* verschiedener Frauenzimmer Kathâs. 69,163. 123,166. Burn. Intr. 138, N. 2. — *b)* eines Flusses Bhâg. P. 5,20,22.

रूपवासिक m. pl. v. l. für रूपवाह्लिक VP. 187, N. 32.

रूपवाह्लिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,351 (VP. 187).

रूपशस् (von रूप) adj. *je nach der besonderen Bildung:* विकृतानि रूपशः RV. 1,164,15. Kauç. 114. 128.

रूपशालिन् adj. *mit Schönheit ausgestattet, schön;* von einem Mädchen Kathâs. 37,150. 43,69. 61,142. Mârk. P. 75,27.

रूपशिखा f. N. pr. der Tochter des Râkshasa Agniçikha Kathâs.

39,85. fgg.

रूपसमृद्ध adj. 1) *von vollkommen passender Form* Ait. Br. 1,4. 13.16. 25. — 2) *vollkommen schön* Çat. Br. 13,4,1,15. TS. 7,1,6,6.

रूपसमृद्धि f. *eine entsprechende Form* Sâj. zu Ait. Br. 1,4.

रूपसंपद् f. *Schönheit der Form, Schönheit* MBh. 1,5912. 6008. 7694.

रूपसिद्धि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 54,17.

रूपसेन m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 42,199. eines Fürsten LA. (III) 15,16.

रूपस्थ adj. *eine Gestalt habend:* देवता Weber, Râmat. Up. 288,1.

रूपस्विन् (von रूप nach falscher Analogie gebildet) adj. *schön:* रूपस्विन्याः पुत्रो यूथे च रूपस्वितमः Pâr. Gṛhj. 3,9.

रूपाजीव (रूप + आ°) adj. (f. आ) *aus der Schönheit ein Gewerbe machend, von der Prostitution lebend:* स्त्रियः Kâm. Nitis. 7,45. जन Daçak. 85,5 (fälschlich रूपज़ीव Benf. Chr. 195, 5) f. *Hure* AK. 2,6,1,19. H. 533. Halâj. 2,335. R. 2,36,3 nach der Lesart der ed. Bomb. (रूपज़ीव Schl.).

रूपावचर m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Buddhisten Vjutp. 160. Lalit. ed. Calc. 33,4. 113,17. 268,9. 314,4. Burnouf in Lot. de la b. l. 353. — Vgl. कामावचर, ध्यानावचर.

रूपाश्रय m. *ein Behälter von Schönheit* oder adj. *überaus schön:* रथ Bhâg. P. 4,15,17.

रूपास्त्र m. *der Liebesgott (dessen Geschoss die Schönheit ist* Trik. 1,1,38.

रूपिक *gemünztes Gold* oder *Silber:* °व्यवहार Vjutp. 193.

रूपिणिका (demin. von रूपिणी) f. N. pr. einer Buhldirne Kathâs. 12,78.

रूपिन् (von रूप) 1) adj. *a) eine Gestalt habend, körperhaft* Kan. 4,1, 11. अ° 12. Bhâg. P. 3,24,31. *verkörpert, leibhaftig* MBh. 3,16626. 16645. 14,229. R. 1,1,6. 5,9,20 (wo समृद्धिमिव zu lesen ist). 47,26 (रूपिणीम् wohl zu lesen). Kathâs. 2,51. 26,47. 211. 42,39. Bhâg. P. 2,9,13. 3,15, 21. 9,10,13. 10,24,36. am Ende eines comp. *die Gestalt —, das Aussehen von — habend:* पत्ति° Bṛhadd. 4,18. बहुविधमेघ° MBh. 1,1183. प्रकवायस° 13,2280. Hariv. 12340. R. 1,58,11. आर्य° 2,92,25. मृग° 3, 49,21. 47. कालपाशेन सीताविग्रहरूपिणा 5,47,35. जघनं स्वर्गरूपिणाम् 7, 26,24. Varâh. Bṛh. S. 33,26. Kathâs. 16,11. 20,178. 33,202. Bhâg. P. 1,15,5. 3,31,36. 7,1,40. 8,21,11. Mârk. P. 58,3. Brahma-P. in LA. (III) 58,5. Pańkat. 55,21. 235,10. बहु° *vielgestaltig* Bhâg. P. 4,17,3. — *b) eine schöne Gestalt habend, schön;* von Personen Çat. Br. 13,1,9,6. उर्वशी वै रूपिण्यप्सरसाम् Pat. zu P. 5,2,95. R. 1,4,11. AK. 3,4,1,16. Mârk. P. 98,3. Vet. in LA. (III) 31,5. — *c)* am Ende eines comp. *den Charakter von — habend, gekennzeichnet —, sich äussernd als* Sâh. D. 70. बुद्धिर्विज्ञानरूपिणी Bhâg. P. 2,10,32. गुणाः साधनरूपिणः Vedântas. (Allah.) No. 148. — 2) m. N. pr eines Sohnes des Âgamîḍha MBh. 1,3722. 3724. — Vgl. अ°, ग्रन्थ°, तथा°, देव°, ब्रह्म°, स्व°.

रूपेन्द्रिय n. *das Gestalt und Farbe wahrnehmende Organ, das Auge* Suçr. 1,313,4.

रूपेश्वर 1) m. N. pr. eines Gottes Verz. d. Oxf. H. 148,b,26. — 2) f. ई N. pr. einer Göttin Devî-P. im ÇKDr.

रूपोपजीवन n. *das Gewinnen des Lebensunterhalts durch seine schöne Körperform, das Auftreten in nackter oder leicht verhüllter Gestalt als Broderwerb* MBh. 12,10795. जलमंडपिकेति दाक्षिणात्येषु प्रसिद्धं यत्र सूक्ष्मवस्त्रं व्यवधाय चर्ममयैराकारै राजामात्यादीनां चर्या प्रदर्श्यते Nilak.

रूपोपजीविन् adj. *durch seine schöne Körperform den Lebensunterhalt gewinnend* Varâh. Bṛh. S. 5,74.

रूप्य (von रूप und रूपय्) 1) adj. *a) eine schöne Gestalt —, ein schönes Aussehen habend* P. 5,2,120. AK. 3,4,21,162. Trik. 3,3,318. H. an. 2,380. Med. j. 50. — *b) einen Stempel tragend, geprägt* P. 5,2,120; vgl. 3) *b*). — *c) was bildlich bezeichnet wird* Sâh. D. 308,3. 5. — *d)* am Ende eines comp. = तस्मादगतः P. 4,3,81. *ehemals im Besitz von — gewesen* 5,3,54. Vop. 7,67. ein fem. behält davor seinen Charakter 6,11. Siddh. K. zu P. 5,3,54. Ableitungen von Wörtern, die auf रूप्य ausgehen, P. 4,2,106. 104, Vârtt. 9. — 2) m. N. pr. *a)* eines Mannes gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. — *b)* eines Berges Çatr. 1,294. — 3) n. *a) Silber* AK. 2,9,91. 97. Trik. 2,9,32. 3,3,319. H. 1043. H. ç. 161. H. an. Med. Halâj. 1,81. 2,17. M. 4,230. 5,113. 8,131. Jâgn. 1,363 (°माष). सुवर्णस्य मलं रूप्यं रूप्यस्यापि मलं त्रपु MBh. 5,1526. R. 3,49,35. 4,16,24. Suçr. 1,227,21. 369,5. 2,264,9. Varâh. Bṛh. S. 51,17. 72,3. 86,80. 95,15. Prab. 112,5. Bhâg. P. 8,12,33. Weber, Kṛshṇaǵ. 278. 283. Pańkat. 241,17. Schol. zu Kâtj. Çr. 1,3,12. Verz. d. Oxf. H. 320,b, No. 760. °रत्नपरीक्षा unter den 64 Kalâ 217,a,12. — *b) gestempeltes* oder *geprägtes Gold* oder *Silber* AK. 2,9,92. Trik. 3,3,319. H. 1046. H. an. Med.; vgl. 1) *b*). — Vgl. रौप्य.

रूप्यक in सुवर्ण° adj. *gold- und silberreich* R. 4,40,33.

रूप्यमय adj. (f. ई) *silbern, silberhaltig:* भूमि Pańkat. 241,16. 18.

रूप्याचल (रूप्य + अ°) m. *Silberberg*, Bez. des Kailâsa LA. (III) 86, 7. — Vgl. रजताद्रि.

रूप्याध्यक्ष m. *Münzmeister* AK. 2,8,1,7. H. 723.

रूम N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,12. रूप v. l.

रूर adj. *hitzig* (Fieber): तक्मन् AV. 1,25,4. 5,22,10. 13. 7,116,1.

रूवुक m. *Ricinus communis* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. रुवुक u. s. w.

रूष्, रूषति (भूषायाम्) Dhâtup. 17,27. रूषित *bestäubt, bestreut* (mit Pulver), *beschmiert:* शेते पांसुषु रूषितः MBh. 9,30. पांसुरूषितगात्र 6, 4978. R. Gorr. 2,67,24. 3,35,63. 4,19,32. चन्दन° MBh. 1,4949. 2,825. 3,1824. 5,2327. 7,4571. 8,3138. Hariv. 12306. 16179. R. 2,42,15. 91, 56 (100,54 Gorr.). 5,3,29. 45,7. 6,93,12. Spr. 4409. पङ्करेणु° Bhâg. P. 8,2,23. कुङ्कुम° 10,60,23. कुङ्कुमपङ्क° 82,15. मृगमदरुचि° Gît. 7,24. नखराग° Ragh. 19,8. हरिद्रतैल° Bhâg. P. 10,5,7. शरा रुधिररूषिताः R. 3,31,18. मांसशोणित° 5,79,6. कुङ्कुमेन तृणारूषितेन so v. a. *klebend an* Bhâg. P. 10,21,17. रूषित = गुण्डित AK. 3,2,38. H. 1483. Halâj. 4,83. = करम्बित, खचित Trik. 3,1,27 (fälschlich रुषित gedr.). रूषित Prab. 27,12, v. l. wird vom Comm. durch नष्ट erklärt. रूषित Râga-Tar. 3,282 fehlerhaft für रुषित. — Vgl. रेणुरूषित und रूत. — caus. रूषयति (विस्फुरणे) Dhâtup. 35,84, p. — Vgl. लूष्.

— सम् caus. *bestreuen:* संरोषयेत्तु नयनं भिषक्चूर्णैस्तु लावणैः Suçr. 2, 334,12. संरोषित 13. Man hätte an beiden Stellen संरू° erwartet.

रूषक m. *Gendarussa vulgaris Nees.* Gaṭâdh. im ÇKDr.

रूषण (von रूष्) n. *das Bestreuen:* पुष्परेणुरूषणं तनौ विचित्रम् Khandom. 132.

रे interj. bei der Anrede H. 1537. रे मनुष्या वदत Spr. 711. रे जागत

जना: 881. 2071. 2640. 2642. KATHÂS. 44,139. 63,123. PRAB. 7,2. HIT. 10,19. 81,21. इत्यकात्मन रे वद KATHÂS. 40,6. अा: पाप वञ्चितो ऽसि रे PRAB. 58,3. MÂRK. P. 26,35. रे किमीदृक्त्वं संज्ञात: कथ्यताम् KATHÂS. 32, 156. PRAB. 13,2. ohne voc. und ohne Aufforderung Spr. 3082 (vgl. jedoch die v. l.). रे रे कोकिल 2640. 2643. VRDDHA-KÂṆ. 17,20. रे रे मूर्खा यूयम् PAÑKAT. 254,12.

रेउड् N. pr. eines Dorfes KSHITIÇ. 23,7. 26,20.

रेक्, रेकते (शङ्कायाम्) DHÂTUP. 4,6.

रेक m. 1) *Besorgniss, Furcht* H. an. 2,15. MED. k. 31. ÇKDR. und WILSON angeblich nach H. auch रेका; es ist aber 1375 अारेक gemeint. — 2) *Ausleerung* (von रिच्) H. an. MED. — 3) *ein Mann niedrigen Standes* H. an. MED. — 4) *Frosch* (vgl. भेक) TRIK. 1,2,26.

रेकु (von रिच्) adj. *leer, öde:* पद् ṚV. 4,5,12. 10,108,7.

रेक्णस् (wie eben) UṆÂDIS. 4,198 (vgl. AUFRECHT zu d. St.). n. *ererbter Besitz; Eigenthum, Habe; Werthgegenstand* NAIGH. 2,10. ṚV. 1,31, 14. 121,5. 158,1. निर्णिजा रेक्णसा प्रावृत: 162,2. तद्रेक्णो अप्रमृष्यमृतिश्चने दात्रं दाशुषे दा: 6,20,7. परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो: 7,4,7. 40,2. नित्य 8,4,18. ददो रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु 46,15. 10,132,3.

रेक्णस्वत् adj. *reich* NIR. 11,46. स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ṚV. 10,63,16.

रेख (von रिख्) 1) m. *a)* = रेखा 1): अल्पेन्दु° KAURAP. 7 in HAEB. Anth. 228. — *b)* N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 2) f. रेखा gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. VOP. 26,191. *a)* (*ein geritzter*) *Streifen, Linie* H. an. 2,24. GṚHJASAṀGR. 1,52. fg. JÂGÑ. 2,100. °मात्रमपि तुन्नादा मनोर्वर्त्मन: परम्। न व्यतीयु: प्रजास्तस्य RAGH. 1,17. 5,44. 6,55. व्यक्तोर्धरेखा भृकुटी: 7,55. KUMÂRAS. 7,18. ÇÂK. 14. °न्यास Spr. 1797. तस्य गणनासु वित्तं दत्ता रेखापि मार्जयति 5300. रेखा: कुर्वन् KATHÂS. 30, 107. WEBER, RÂMAT. UP. 313. RÂGA-TAR. 5,101. Verz. d. Oxf. H. 74,b,21. 23. fg. HALÂJ. 2,386. VARÂH. BṚH. S. 3,32. 4,15. 34,22. 53,42. 55.100. 67,7. auf der Handfläche 68,43. fgg. 75. fgg. 69,22. 70,12. fgg. ऊर्धरेखनलो (ऊर्धरेखा° ed. Bomb.) पादो MBH. 5,2331. RAGH. 4,88. विधात्रा रचिता रेखा ललाटे ऽक्षरमालिका Spr. 2810. त्रिरेखा ग्रीवा AK. 2,6,2, 39. H. 586. °त्रयाङ्किता ग्रीवा HALÂJ. 2,362. हस्त° *Linie auf der Handfläche* KULL. zu M. 9,258. भाल° KAURAP. 7 in HAEB. Anth. 228. केश° VARÂH. BṚH. S. 58,13 अञ्जन° RÂGA-TAR. 1,208. संध्याभ्र° Spr. 3180, v. l. भस्म° TRIK. 2,7,15. जल° *ein Streifen Wasser* Spr. 2245. *ein in Wasser gezogener Strich* 4065. (vgl. जले रेखा PAÑKAR. 1,14,83). निकषे हेमरेखेव RAGH. 17,46. R. 5,11,24. चन्द्र° MÂRK. P. 88,15. R. 5,11,24. 18,3. 20, 3. धूम° 11,24. बाण° *eine von einem Pfeil herrührende lange Wunde* ebend. मृति° *eine den Tod anzeigende Linie* DAÇAK. 7,13. प्रथमैकरेखा so v. a. *das Beste und Einzige in seiner Art:* तां क्षितितले वरकामिनीनां सर्वाङ्गसुन्दरतया प्रथमैकरेखाम् KAURAP. 20. — *b) Zeichnung* ÇÂK. 141. fg. KATHÂS. 122,27. खड्गरेखां लिलेख Spr. 2697. — *c) der erste Meridian* SÛRJAS. 1,61. — *d)* = अाभोग H. an. *fulness, satisfaction* WILSON. — *e)* = छद्मन् *Betrug, Verstellung.* — *f) ein Bischen* H. an. — Vgl. काम°, पत्त्र°, पद्म°, बिन्दु°, ब्रह्म°, मदन°, मध्य°, मेघ°, रत्न°, समरेख und लेख.

रेखक s. बिन्दु°.

रेखांश m. *Längengrad* MOLESW.

रेखागणित n. *Geometrie* MOLESW. Verz. d. Oxf. H. 340,b, No. 797.

रेखान्तर n. *geographische Länge* MOLESW.

रेखाय् (von रेखा), रेखायते (श्लाघसादनयो:) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

रेखायनि m. patron.; pl. SAṀSK. K. 184,a,5.

रेखिन् (von रेखा) adj. *Linien* (auf der Handfläche) *habend:* वक्ररेखा° VARÂH. BṚH. S. 68,50.

रेच (von रिच्) 1) m. im Joga *Entleerung der Brust, das Ausstossen des Athems* Verz. d. Oxf. H. 234,b,39. 237,a, No. 568. AMṚTAN. UP. in Ind. St. 9,27,3. — 2) f. ई Bez. zweier Pflanzen, = काम्पिल्लक und अङ्कोठ RÂGAN. im ÇKDR.

रेचक (wie eben) 1) adj. *a) die Brust entleerend.* — *b) den Unterleib entleerend, abführend.* — 2) m. *a) das Ausschnaufen* (bei Hunden): प्रावृट्काले ऽवग्रहे ऽम्भो ऽवगाह्य प्रत्यावृत्तो (so ist nach KERN zu lesen) रेचकैश्चाप्यभीक्ष्णम् VARÂH. BṚH. S. 89,7. im Joga *das Ausstossen des Athems* JÂGÑ. bei KULL. zu M. 6,70. DHJÂNABINDÛP. in Ind. St. 2,3. AMṚTAN. UP. ebend. 9,26 (wohl रेचकश्चैव zu lesen). 27. Comm. zu JOGAS. 1,34. Verz. d. Oxf. H. 108,a,1. 234,b,33. Verz. d. B. H. No. 643. VP. 653, N. 10. BHÂG. P. 3,28,9. 4,24,50. 7,15,32. PAÑKAR. 3,2,25. fg. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 131. SARVADARÇANAS. 174,16. 18. — *b) Spritze* BHÂG. P. 10,90,9. 10. — *c)* Bez. verschiedener *abführender* Stoffe: *Salpeter* TRIK. 2,9,36. *Croton Jamalgota Hamilt.* und = तिलकवृक्ष RÂGAN. im ÇKDR. — *d)* pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6,2097. अारोचक ed. Bomb. — *e)* N. pr. eines Mannes VIKR. 76,1. fgg. रेधक v. l. — Vgl. वात°.

रेचन (wie eben) 1) adj. *abführend* SUÇR. 1,162,5. — 2) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: = त्रिवृत् (त्रिवृता) und दन्ती H. an. 3,404. MED. n. 16. = गुन्द्रा und रोचनका (d. i. रोचनिका) H. an. = काम्पिल्ल ÇABDAR. im ÇKDR. = कालाञ्जनी RÂGAN. ebend. — 3) n. *a) das Leermachen, Schmälern:* कोशदण्डाभ्याम् KÂM. NÎTIS. 8,58. = कोशदण्डतनूकरण Comm. — *b) das Entleeren der Brust, das Ausstossen des Athems* Comm. zu JOGAS. 1,34. — *c) Entleerung des Unterleibes* TRIK. 2,6,16. SUÇR. 1, 8,20. SARVADARÇANAS. 106,22. Comm. zu KAṆ. 1,1,7. — Vgl. बीज°.

रेचनक m. = काम्पिल्लक RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. ताल°.

रेचित n. Bez. *eines best. Ganges der Pferde* AK. 2,8,2,16. H. 1248. — Vgl. रेज्.

रेच्य m. = रेच ÂHNIKÂKÂRAT. im ÇKDR. wohl fehlerhaft.

1. रेज्, रेजति, °ते NAIGH. 2,14 (गतिकर्मन्). 3,29. DHÂTUP. 6,23 (दीप्तौ). 1) act. *hüpfen —, beben machen:* यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ ṚV. 5,59, 4. को वो ऽन्तर्मरुत रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया 1,168,5. य इषत्रान्मन्म रेजति 129,6. — 2) med. *hüpfen, beben, zittern, zucken:* येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वां इव विश्पति:। भिया यामेषु रेजते ṚV. 1,37,8. 31,3. 80,14. 2, 11,9. 6,30,5. तवं त्विषो जनिमन्रेजत द्यौ रेजद्भूमिर्भियसा स्वस्य मन्यो: 4,17,2 (hier wird übrigens, da das act. von रेज् sonst transit. Bed. hat, richtiger एजद्भूमि: zu verstehen sein). कृष्टय: 8,92,3. AV. 1,32,3. von den Flammen ṚV. 1,143,3. अग्निर्जिह्वे जुह्वाई रेजमान: 3,31,3. 10,6, 5. अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते 5,44,9. मनसा रेजमाने 10,121,6. — Vgl. एज्.

— caus. *erzittern —, beben machen:* स्वनो न वो ऽमवान्रेजयद्वृषा ṚV. 5,87,5. 7,57,1. स ऊर्वस्य रेजयत्यपावृतिम् 8,55,3. 10,61,16.

— प्र *erbeben:* स्वनान्मरुतामरेजन्त प्र मानुषाः ṚV. 1,38,10. — caus. *beben machen:* द्यामेमेन रेजयत्प्र भूमे ṚV. 4,22,3.

— सम् *zittern:* वज्रात्प्रच्यवमानादिमे लोकाः संरेजन्ते Çat. Br. 3,6,1,13. 9,1,18.

2. रेज् (= 1. रेज्) nom. ag. (nom. रेट्) P. 3,2,75, Schol. Vop. 26,69. m. *Feuer* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. 2. रेष्.

रेट्, रेटति (परिभाषणे, याचे वाचि Vop.) Dhâtup. 21,4.

रेड्, रेळते so v. a. क्रुध्यति nach Naigh. 2,12. wohl verwandt mit रिष्; zu belegen nur das partic. praes. mit अ priv., etwa so v. a. *non fallens:* अरेळता (= अनादरमकुर्वता Comm.) मनसा तच्छकेयम् TS. 1,6,3,2. Kâṭh. 32,2.

रेणु (रेणु Uṇâdis. 3,28) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. m. f. Siddh. K. 251,a,13. f. 248,b,11. zu belegen nur m. 1) m. *Staub, Staubkorn* AK. 2,8,2,66. H. 970. an. 2,152. Med. ṇ. 25. Halâj. 2,288. शफच्युत ṚV. 1,33,14. इयर्ति रेणुम् 56,4. 4,17,13. 42,5. 38,6. अधि भुवोः किरते रेणुमृञ्जन् 7. नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत 10,72,6. 168,1. यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् AV. 10,1,13. जलसंसिक्त R. 1,5,8 (जलसंशान्त Gorr. 4). 2,93,14. धातुज 3,79,31. Çâk. 86. तुरगखुरहत 31. Vikr. 4. वातोद्धत Ṛt. 1,10. Spr. 3395. रेणूत्पात Varâh. Bṛh. S. 27,5. 30,31. 46,86. Bhâg. P. 4,5,7. वसुधा° MBh. 1,6022. सैन्य° R. 2,97,3. भस्म° Kathâs. 18,248. पुष्कमृक्षेप° Râga-Tar. 3,401. भूरेणवः Dhûrtas. in LA. 74,2. भौमान्रेणून्स विममे Bhâg. P. 8,5,6. सिकतारेणवो यद्वत्संख्यया परिवर्जिताः Pañkat. II,62. *ein Staubkorn* als Maass = sieben परमाणुरजांसि Lalit. ed. Calc. 169,21. कौसुम *Blüthenstaub* AK. 3,4,2,22. पद्म° MBh. 12,4283. R. 4,50,12. Çâk. 171. Bhâg. P. 8,2,23. fg. — 2) m. Bez. *eines best. medicinischen Stoffes* (der auch in der Parfümerie verwandt wird); = रेणुका Suçr. 2,207,2. Varâh. Bṛh. S. 77,5. = पर्पट, पर्पटक H. an. Med.; vgl. हरेणु. — 3) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vaiçvâmitra, Verfassers von ṚV. 9,70 und 10,89. Ait. Br. 7,17. Âçv. Çr. 12,14. Çâṅkh. Çr. 15,26,1. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,21 (sg. und pl.). aus Ikshvâku's Geschlecht Hariv. 1453. eines Sohnes des Vikukshi R. Gorr. 2,119,9. — Lalit. ed. Calc. 201,3. pl. Hariv. 1466. Hierher oder zu 4) VP. 400. Bhâg. P. 9,15,12. — 4) f. N. pr. einer Gattin Viçvâmitra's Hariv. 1461. 1769. — 5) Hâr. 108 fehlerhaft für वेणु. — Vgl. त्रस°, नाग°, नी°, पुष्प° (auch Hariv. 5772), बृहद्रेणु, भद्र°, मधु°.

रेणुक (von रेणु) 1) m. *a)* N. pr. eines Jaksha (nach Nîlak.) MBh. 1,1488. eines mythischen Elephanten 13,6156. fgg. — *b)* Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,6. — 2) f. आ *a) ein best. Arzeneistoff* (wohlriechend, in Körnern wie Pfeffer) AK. 2,4,2,8. H. an. 3,91. Med. k. 148. Ratnam. 129. — *b)* N. pr. einer Tochter des oder der Reṇu, Gattin Ǵamadagni's und Mutter Paraçurâma's H. an. Med. MBh. 3,11072 (S. 572). 5,3972. 13,4607. Hariv. 1453. fg. 1769 (wo die neuere Ausg. रेणुका st. रेणुमान् liest). R. 1,51,11 (52,11 Gorr.). 2,21,33. Spr. 3165. VP. 400. fg. Bhâg. P. 9,15,12. 16,2.13. Verz. d. Oxf. H. 26,a,24. रेणुकायास्तीर्थम् MBh. 3,5024. °तीर्थ 7030. °सुत 8658. H. 848. Bhâg. P. 1,9,6. Vgl. रैणुकेय. — *c)* Titel einer von Harihara verfassten Kârikâ (vgl. रेणुकारिका) Verz. d. B. H. No.266.

रेणुककाट adj. nach dem Comm. *Staub durchfurchend* oder — *aufwirbelnd* (zu TBr.): न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते ṚV. 6,28,1. अपार्वाणां रेणुककाटं नुदन्ताम् VS. 28,13.

रेणुकाचार्य m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292,b,6. Hall 192.

रेणुकारिका f. Titel einer Kârikâ Verz. d. Oxf. H. 279,a,35. — Vgl. रेणुक 2) c).

रेणुत्व n. *das Staub-Sein:* पङ्को ऽपि रेणुत्वमियाय *wurde zu Staub* Ragh. 16,30.

रेणुदीक्षित m. N. pr. eines Autors Weber, Lit. 137.

रेणुप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 5,4751. वेणुप ed. Bomb.

रेणुपालक m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,31.

रेणुमन्त् m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra von der Reṇu Hariv. 1461. 1769 (hier रेणुका die neuere Ausg.).

रेणुरूषित 1) adj. *bestäubt.* — 2) m. *Esel* Trik. 2,9,26.

रेणुवास 1) adj. *in Staub (Blüthenstaub) gehüllt.* — 2) m. *Biene* Trik. 2,5,36.

रेणुशस् (von रेणु) adv. *zu —, in Staub:* कर् *in Staub verwandeln* Râga-Tar. 4,327.

रेणुसार m. *Kampher* Trik. 2,6,39. °क m. dass. Çabdar. im ÇKDr.

रेत = रेतस् *der männliche Same* Viçvapr. in Verz. d. Oxf. H. 188,b,21.

रेतःकुल्या f. *ein Bach von männlichem Samen* (in einer Hölle) Bhâg. P. 5,26,26.

रेतज 1) adj. *aus dem eigenen Samen erzeugt, leiblich:* पुत्र MBh. 13,2625. fg. — 2) f. आ *Sand* Bhâvapr. im ÇKDr.

रेतन n. = रेतस् *der männliche Same* Çabdak. im ÇKDr.

रेतस् (von 1. रि) Uṇâdis. 4,201. n. 1) *Guss, Strom* Naigh. 1,12. यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ṚV. 5,83,4. (रोदसी) अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितम् 6,70,2. 7,33,7. अपाम् 8,44,16. दिवो रेतसा सचते पयोवृधा 9,74,1. 1,100,3. प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति 8,6,30. पयः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः 3,31,10. चतुर्धा रेतो अभवद्वशायाः AV. 10,10,29. कद्विष्णवे रेतो ब्रवः *Libation* ṚV. 4,3,7. दिवो न यस्य रेतसो शोचींष्यर्चयः 5,17,3. मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् *erster Erguss* 10,129,4. — 2) *Samenerguss, Same* (AK. 2,6,2,13. H. 629. Med. s. 32. Halâj. 3,16): वृष्णो अश्वस्य ṚV. 1,164,34. अन्यस्मिन्यूथे नि दधाति रेतः 3,55,17. 5,83,1. प्रजावत् 7,67,6. 9,86,28. रेतो जहतुः 10,61,6. क्ष्मया रेतो संजग्मानो नि षिञ्चत् 7. 64,14. 94,5. VS. 19,76. प्रिय AV. 2,28,5. प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतः 34,2. 5,28,6. बिभ्रती दुग्धमृषभस्य रेतः 14,2,14. VS. 8,14. Ait. Br. 2,38. रेतसा व्यृध्येत TS. 5,6,8,4. सा रेतो ऽधत्त *empfing* 6,5,6,1. तस्य रेतः परापतत् TBr. 1,1,3,8. उत्तानायां स्त्रियां पुमान्रेतः सिञ्चति Kâṭh. 20,6. Çat. Br. 1,4,5,3. अयोनौ रेतः सिक्तम् 7,2,14. रेतः प्रचस्कन्द 4,3. योनौ रेतः प्रतिष्ठितम् 9,2,11. रक्षांसि रेत आदधति *nehmen weg* 3,2,1,40. Pañkav. Br. 8,7,9. Kauç. 22. न रेतः स्कन्दयेत्क्वचित् M. 2,180. 9,20. रेतः सिक्त्वा स्वयोनिषु 11,170. 173. रेतसः सेकः 120. रेतःसेक 58. रेतः सिषिचतुः कुम्भे Bhâg. P. 6,18,5. तस्य रेतः प्रचस्कन्द, स्कन्नमात्र MBh. 1,2380. परिस्कन्न 2381. अग्नि° R. Gorr. 1,39,16. तस्यामाधत्त रेतः Bhâg. P. 3,23,47. 5,49. 13,37. 8,5,33. यस्त्विह वै सवर्णां भार्यां द्विजो रेतः पाययति काममोहितः 5,26,26. भुक्त्वा रेतोविण्मूत्रम् M. 4,222. Verz. d. Oxf. H. 282,a,1. रेतसि दरिद्रः Varâh. Bṛh. S. 68,16. क्षीण° Suçr. 1,2,19. 260,2. रेतसो ऽन्ते *nach der Samenergiessung* Mârk. P. 78,24. 108,11. — 3) *Same* so

v. a. *Nachkommenschaft, Generation* ÇAT. BR. 3,2,1,31. त्रीणि वाव रेता॑-सि पिता॑ पुत्रः पौत्रः॑ TS. 5,6,8,4. — 4) *Quecksilber* (Çiva's *Same*) MED. — Vgl. अ°, ऊर्ध्व°, कुम्भ°, द्वि°, पर्जन्य°, बक्र°, भूरि°, मक्रा°, वसु°, वह्नि°, विश्व°, स°, सक्स्त्र°, सु°, सुवर्ण°, हिरण्य°.

रेतस am Ende eines comp. = रेतस् in अग्नि°, कपोत°.

रेतस्य adj. *Samen führend* AIT. BR. 1,20. ऋच् heisst der erste Vers des Bahishpavamâna Stotra SHADV. BR. 2,1. LÂṬJ. 1,12,8. 6,3,4.

रेतस्वत् adj. *samenreich, befruchtend*, Bein. Agni's ÇÂÑKH. ÇR. 2,3,17.

रेतस्विन् adj. *samenreich* (Gegens. अरेतस्, सिक्तरेतस्) TS. 5,5,4,2. 7,5,12,2.

रेतःसिच् adj. *Samen ergiessend:* आण्डौ ÇAT. BR. 7,4,2,24. Bez. best. Ishṭakâ 10,4,3,14. 5,5,10. 7,4,2,22. fgg. TS. 5,6,8,4. KÂTJ. ÇR. 17, 4,22. 6,3. 8,2. 10,17.

रेतःसिच्य n. *Samenergiessung* ÇÂÑKH. BR. 10,3.

रेतिन् adj. *samenreich* oder *besamend:* वृषभ ṚV. 10,40,11.

रेतोधस् s. 1. रेतोधा.

1. रेतोधा॑ adj. *besamend, befruchtend:* वृषभ ṚV. 3,56,3. 7,101,6. Soma 9,86,39. Agni TBR. 2,1,2,11. ṚV. 10,129,5 (pl. °धाः). शेपो गर्भस्य रेतोधाः AV. 5,25,1. VS. 8,10. 23,20. TS. 5,2,6,4. TBR. 2,7,4,1. KÂTJ. ÇR. 23,3,1. रेतोधाः (von रेतोधा oder °धस्) MBH. 3,11022 (S. 570). रेतोधाः पुत्र उन्नयति (नयति) नरदेव यमक्षयात् 1,3103 = HARIV. 1725 = BHÂG. P. 9,20,22. m. *Vater* H. ç. 116.

2. रेतोधा f. *das Besamen* KAUÇ. 24.

रेतोधेय n. dass. ÇÂÑKH. BR. 10,3. PAÑKAV. BR. 8,7,12. 12,10,11.

रेतोमार्ग m. *Samenweg* SUÇR. 2,419,8.

रेत्य n. = रीति *Glockengut* NILAK. zu AK. 2,9,97. ÇKDR. — Vgl. रैत्य.

रेत्र n. = रेतस्, पीयूष, पटवास, सूतक ÇKDR. nach MED.; *semen virile; quicksilver; nectar or ambrosia; perfumed or aromatic powder, pulvilio* WILSON nach H. an.; die gedruckten Ausgaben geben diese Bedd. (वेतस् st. रेतस् und सूत्रक st. सूतक MED.) dem Worte वेत्र.

रेधक m. N. pr. eines Mannes VIKR. 76,1, v. l. für रेचक.

रेप्, रेपते (गतौ, nach Andern auch शब्दे) DHÂTUP. 10,10.

रेप adj. *verächtlich* H. 1442, Sch. an. 2,299. MED. p. 10. *grausam* H. an. MED. — Vgl. रेपस्, रेफ.

रेपस् (von रिप्) UṆÂDIS. 4,189. n. *Fleck, Schmutz:* न घस्मानंस्तन्वीई रेप आ धुः ṚV. 4,6,6. adj. = अधम, क्रूर, कृपण MED. s. 32. — Vgl. अ°, रेप, रेफ, रेफस्.

रेफ॑ (von रिफ्) UṆÂDIS. 5,54. 1) m. SIDDH. K. 250,*a*,3. *a) der Schnarrlaut, das* र VS. PRÂT. 1,40. P. 3,3,108, Vârtt. 4. AK. 3,4,20,135. TRIK. 3,3,280. H. an. 2,302. MED. ph. 2. ÂÇV. ÇR. 1,2,18. ṚV. PRÂT. 1, 10. °संधि 4,9. VS. PRÂT. 3,38. 57. 80. 140. 4,2. 34. fg. 98. 145. 7,9. AV. PRÂT. 1,28. 37. 58 u. s. w. TAITT. PRÂT. 1,8. 2,5. 8. P. 4,4,128, Vârtt. 2. VOP. 2,51. WEBER, RÂMAT. UP. 289. 314. RÂGA-TAR. 6,39. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,3. समस्तरेफान् (= शब्दान् Comm.) BHÂG. P. 8,20,25. — *b) Creticus* (—◡—) PIÑGALA in Ind. St. 8,210. — *c)* = राग ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) adj. *verächtlich* UṆÂDIS. AK. 3,2,3. 3,4,20,135. TRIK. H. 1442. H. an. MED. — Vgl. चित्र°, द्वि°.

रेफवत् adj. *den Schnarrlaut enthaltend* so v. a. ऋ ṚV. PRÂT. 14,9. अ° *kein r enthaltend* 4,16.

रेफविपुला f. = रविपुला Ind. St. 8,342.

रेफस् adj. = अधम u. s. w. HALÂJ. 2,182. ÇABDAR. im ÇKDR. = क्रूर, दुष्ट, कृपण ÇABDAR. — Vgl. रेपस्.

रेफिन् (von रेफ) adj. *den Schnarrlaut —, ein* र *enthaltend, die Natur des* र *habend* ÂÇV. ÇR. 1,5,11. ऊष्मा रेफी पञ्चमो (d. i. Visarga) नामिपूर्वः ṚV. PRÂT. 1,20. 4,9. fg.

रेभ्, रेभते (शब्दे) DHÂTUP. 10,22. — Vgl. रिभ्.

रेभ॑ (von रिभ्) 1) adj. *knisternd, knasternd, plätschernd, laut tönend;* m. *Rufer, Recitator, Declamator* NAIGH. 3,16. (सोमः) रेभो यदुच्यते वने ṚV. 9,66,9. वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातोः 1,113, 17. अग्ने रेभो न जरत ऋषूणाम् 127,10. अनु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः 163, 12. स (अग्निः) ई रेभो न प्रति वस्त उस्राः 6,3,6. यन्मधु चक्रन्दो भनंति रेभ इष्टौ 11,3. रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः 7,63,3. समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये 8,86,11. 9,7,6. 71,7. तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते 10,71,3. 87,12. यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः 13. AV. 20,127,4. fgg. *Schwätzer, Plauderer* VS. 30,6. — 2) m. N. pr. eines Schützlings der Açvin, welchen sie aus Wasser und Gefangenschaft retten; mit dem patron. Kâçjapa Liedverfasser von ṚV. 8,86. — ṚV. 1,112,5. 116,24. 117,4. 118,6. 119, 6. 10,39,9. pl. ÂÇV. ÇR. 12,14. — Vgl. रैभ्य.

रेभण (wie eben) n. *das Brüllen der Kühe* TRIK. 2,9,21.

रेभसूनु m. Rebha's *Sohn;* zwei Liedverfasser von ṚV. 9,99 und 100.

रेभिल m. N. pr. eines Mannes MṚKKH. 44,6. 67,10. °क 43,14.

रेमि ved. adj. von रम् P. 3,2,171, Vârtt. 2, Sch.

रेरिवन् adj. in der Stelle: अहं वृक्षस्य रेरिवा TAITT. UP. 1,10,1. = प्रेरयितर् ÇAÑK.

रेरिह॑ (vom intens. von रिह्) adj. *beständig leckend* AV. 8,6,6.

रेरिहाण (wie eben) m. 1) ein Name Çiva's TRIK. 1,1,44. H. ç. 46 (fälschlich रेरहाण). an. 4,87. MED. ṇ. 107. HÂR. 8. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,3. — 2) *Dieb* ÇABDAR. im ÇKDR. — 3) = अम्बर MED. = वर H. an. = असुर ÇKDR. und WILSON nach MED. — Vgl. लेलिहान.

रेव्, रेवते (प्लवगतौ) DHÂTUP. 14,39.

रेव 1) m. N. pr. eines Sohnes des Ânarta und Vaters des Raivata HARIV. 643. fg.; vgl. रेवत. — 2) f. आ *a)* N. pr. eines Flusses, die Narmadâ, AK. 1,2,3,31. TRIK. 1,2,31. H. 1083. an. 2,535 (zu lesen नील्यां मे°). MED. v. 21. HALÂJ. 3,52. MEGH. 19. RAGH. 6,43. 16,31. Spr. 1807. VARÂH. BṚH. S. 12,6. KATHÂS. 19,98. DAÇAK. 197,12. SÂH. D. 5,3. BHÂG. P. 5,19,18. 9,15,20. 10,79,21. HIT. 111,15, v. l. Verz. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 1. 66,*b*,2. 149,*b*,6. °माहात्म्य 64,*b*, No. 114. fgg. °खण्ड 84,*b*, 6. 24. °तीर्थ 73,*b*,24. °कावेरीसंगम 65,*b*,33. °सागरसंगम 67,*b*,14. कुब्जारेवासंगम 65,*b*,42. वागुरेवासंगम 66,*a*,2. °संगम 149,*a*,16. — *b) die Indigopflanze.* — *c)* Bein. der Rati, der Gattin des Liebesgottes, H. an. MED.; vgl. रेवति. — 3) n. Name verschiedener Sâman Ind. St. 3,231,*b*.

रेवट 1) m. *a) Eber.* — *b) Bambusrohr* (वेणु, *Staub* d. i. रेणु WILSON). — *c) Wirbelwind.* — *d) Giftarzt* AGAJAPÂLA im ÇKDR. — *e) oil of the morunga tree.* — *f) a plantain, the fruit* WILSON. — 2) n. *eine Muschel mit von rechts nach links gehenden Windungen* AGAJAPÂLA im ÇKDR.

रेवण m. N. pr. eines Mannes HALL 166.

रेवत m. 1) *Citronenbaum* (जम्बीर) GAṬÂDH. im ÇKDR. *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* ÇABDAR. im ÇKDR. — SUÇR. 2,39,3. 63,18. — 2) N. pr. verschiedener Männer BURN. Intr. 396, N. 2. Lot. de la b. l. 1. eines Sohnes des Andhaka HARIV. 5248. fg. (रैवत die neuere Ausg.). des Ânarta (vgl. रेव) BHÂG. P. 9,3,27. des Vaters der Revatî und Schwiegervaters des Balarâma ÇKDR. nach dem MBH. — 3) N. pr. eines Varsha (?) MBH. 6,426. — Vgl. रैवत.

रेवतक 1) m. N. pr. eines Mannes BURN. Intr. 396. — 2) n. *eine best. Pflanze*, = पारेवत n. RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. रैवतक.

रेवति f. 1) Bein. der Rati, der Gattin des Liebesgottes, TRIK. 3,3, 179. Vgl. रेव 2) c). — 2) = रेवती N. pr. der Gattin Balarâma's HARIV. 8383. 8386.

रेवतिपुत्र (रेवती + पुत्र) m. *der Sohn der* Revatî P. 6,3,63, Sch.

रेवन्त् (aus रयिवन्त् contrah.) 1) adj. P. 6,1,37, Vârtt. 2. 176, Vârtt. 1. 8,2,15, Vârtt. 1. a) *besitzend, wohlhabend, reich*: मक्षू रायो रेवतस्कृधी नः ṚV. 10,22,15. न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते 4,25,7. 8,21,14. रेवाँ अदाशुरिः 45,15. 1,120,12. 6,44,11. स मर्तो अग्ने रेवानमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् 7,1,23. 42,4. 8,2,11. रेवाँ इद्रेवतः स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः 13. मद आ सोम मन्ये रेवाँ इव *ich komme in der Trunkenheit mir als reicher Mann vor* 48,6. 10,116,2. 1,4,2. विश्पति 27,12. 18,2. स रेवान्याति प्रथमो रथेन 2,27,12. AV. 20,128,4. 8. 9. Mitra-Varuṇa ṚV. 8,47,9. 10,36,3. रेवद्वयाक्र सचनो रथो वाम् *reiches Gut* 1,116,18. रेवद्वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा मायाभिरितऊति माहिनम् 151,9. 8. पथ्या: AV. 3,4,6. — b) *reich in der Erscheinung* d. h. *prangend, prunkend, prächtig* (diese Bed. scheint wegen des adv. angenommen werden zu müssen, das mit verbis des Glänzens verbunden wird): die Morgenröthe ṚV. 3,61,6. 4,51,4. person. Nacht (als gestirnt) AV. 19,47,4. Vṛshâkapâjî ṚV. 10,86,13. वासौ रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि 6,1,11. Kräuter AV. 6,21,3. गङ्गा MBH. 13,1853. adv. ṚV. 1,79,5. 95,11. उषो रेवदस्मे व्युच्छ 92,14. 124,9. 10. अग्ने द्युमद्दुत रेवद्दिदीहि 2,9,6. 2,6. 35,4. 3,7,10. अग्नेन्धिष्टं भारता रेवदग्निम् 23,2. स रेवच्छोच 10,69,3. — 2) f. रेवती a) pl. *die Reichen, die Prangenden* als Bez. *der Kühe* (vgl. die Comm.; रेवती = स्त्रीगवी AGAJAPÂLA im ÇKDR.): रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ṚV. 1,30,13. जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः 158,2. रेवती रमध्वमस्मिन्योनौ VS. 3,21. 6,8. — b) pl. *Gewässer*: आपो रेवतीः शृणुता हवं मे ṚV. 10,30,8. पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम् 180,1. सं रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताम् VS. 1,21. ऐतु वरुणो रेवतीभिः ÂÇV. GṚHJ. 2,9,4. KÂTJ. ÇR. 25,5,28. KAUÇ. 103. — c) N. eines Nakshatra (vgl. Journ. of the Am. Or. S. 6,343); pl. ṚV. 10,19,1. AV. 9,7,3. तस्मै ते द्यावापृथिवी रेवतीभिः (nach dem Comm. zu TBR. zu d) gehörig) कामं दुहाथामिह शक्वरीभिः 13,1,5. VARÂH. BṚH. S. 105,2. MÂRK. P. 33, 16. sg. (auch so v. a. *Tag der* Revatî) gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41 (oxyt.). H. 115. an. 3,288. MED. t. 145. AV. 19,7,5. TS. 4,4,10,3. ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,26. 3,11. PÂR. GṚHJ. 3,9. MBH. 5,2926. 6,419. 13,3284. 4268. VARÂH. BṚH. S. 7,6. 9,35. 10,18. 102,6. MÂRK. P. 58,53. 75,20. रेवत्यन्त 21. fg. 54. 62. fg. im comp. VARÂH. BṚH. S. 98,17. 102,6. रेवत्यन्ते MÂRK. P. 75, 2. 18. fg. Vgl. WEBER, Nax. passim. — d) pl. Bez. *der nach dem Anfangsworte benannten Verse* ṚV. 1,30,13, *aus welchen das* Raivata Sâman *gebildet wird*, Ind. St. 3,231,b. VS. 23,35. TS. 2,2,8,6. TBR. 1,5,2,5. PAÑKAV. BR. 13,7,2. 9,4. 14. 10,4. LÂṬJ. 2,9,5. 7,4,1. 10,13,12. KHÂND. UP. 2,18,1.2 (रेवत्यः st. रेवत्यं zu lesen). MBH. 13,6242 ist wie 6236 mit der ed. Bomb. रेवतीं zu lesen. — e) N. *der Unholdin einer best. Krankheit* HARIV. 3290. 9542. 10241. MBH. 3,14482. SUÇR. 2,388,8. 389, 3. 5. ÇÂRÑG. SAṂH. 1,7,109. Verz. d. Oxf. H. 307,b,28. wird mit Durgâ und auch Aditi (MBH.) identificirt; vgl. noch KATHÂS. 53,172. H. ç. 50. = मातृभिद् H. an. MED. — f) N. pr. der Gattin Mitra's BHÂG. P. 6,18, 5. — g) N. pr. einer Tochter des Lichtglanzes (कान्ति) des Nakshatra Revatî und Mutter des Manu Raivata MÂRK. P. 75,25. fgg. — h) N. pr. der Gemahlin Balarâma's, Tochter Kakudmin's, der das patron. Raivata führt, TRIK. 3,3,179. H. an. MED. HARIV. 648. fgg. 1953. 8311. fgg. 8387. MEGH. 50. VP. 337. 439. BHÂG. P. 9,3,29. 10,52,15. — i) N. pr. einer Gattin Amṛtodana's SCHIEFNER, Lebensb. 237 (7). — Nach P. 4,3,34, Vârtt. 1 ist रेवती so v. a. *eine unter dem* Nakshatra Revatî *Geborene*. — 3) n. रेवद्याज्ञतुरम् N. eines Sâman Ind. St. 3,231,b. — Vgl. अणुरेवती.

रेवतीभव m. *der Planet Saturn* H. 120.

रेवतीरमण m. *der Gatte der* Revatî d. i. Balarâma AK. 1,1,1,18. HALÂJ. 1,29. unter den Namen Vishṇu's PAÑKAR. 4,3,129.

रेवतीश m. *der Gatte der* Revatî d. i. Balarâma H. 224.

रेवतीसुत m. *ein Sohn der* (Unholdin) Revatî, unter den Namen Skanda's MBH. 3,14633.

रेवत्य ved. adj. von रेवती (प्रशस्ये) P. 4,4,122. यद्वो रेवती रेवत्यम् Schol.

रेवन्त m. N. pr. eines Sohnes des Sonnengottes und Hauptes der Guhjaka H. 103. VARÂH. BṚH. S. 58,56. MÂRK. P. 78, 24. 31. 108, 11. 20. VP. 266, N. 1. °मनुसू f. *die Mutter des* Manu Revanta (s. रैवत), Bein. der Saṃģñâ, einer Gemahlin des Sonnengottes, TRIK. 1,1,100.

रेवन्तोत्तर Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 113,b,40. fg.

रेवोत्तरस् (रेवा + उ°) m. N. pr. eines Mannes ÇAT. BR. 12,8,1,17. 9,3,1.

रेशयदारिन् (v. l. °दाशिन्) zur Erkl. von रिशादस् NIR. 6,14. रेशय = हिंसन्त् Comm.

रेशी f. Bez. *des Wassers* TS. 3,3,3,1. KÂṬH. 30,6. त्रेशी VS.

1. रेष्, रेषते (अव्यक्ते शब्दे) DHÂTUP. 16,19. वृकशब्दे *Geheul des Wolfes* SIDDH. K. 120,b,1 v. u. घोटककर्तृशब्दे *Gewieher des Pferdes* DURGÂD. bei WEST. — Vgl. क्रेष्.

2. रेष् subst. in der Stelle: रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणातु VS. 6,18. = रिष्टा MAHÎDH. liesse sich zu रिष् ziehen etwa in der Bed. von लेश. TS. hat d. v. l. श्रीः. Möglich wäre auch 2. रेड्.

रेष (von रिष्) m. *das Schadennehmen* ÇAÑK. zu KHÂND. UP. S. 287. 290.

1. रेषण (wie eben) 1) adj. *versehrend* ṚV. 1,148,5. — 2) n. *Schaden, das Fehlschlagen* NIR. 10,45. DHÂTUP. 22,63. 31,30. — Vgl. पुरुष°.

2. रेषण n. *das Geheul des Wolfes* H. 1407. — Vgl. 1. रेष्.

रेषा f. dass. H. 1407.

रेषिन् (von रिष्) nom. ag.; s. पुरुष°.

रेष्टर् (wie eben) nom. ag. *Beschädiger, Versehrer* BHAṬṬ. 9,31.

रेष्मच्छिन्न (रेष्मन् + छिन्न) adj. *vom Sturm abgerissen*: रेष्मच्छिन्नं यथा तृणम् (so st. तृणम zu lesen) AV. 6,102,2. — Vgl. रेष्ममथित.

रेष्मन् (von रिष् = रिश्) m. *Wirbelwind* (*Weltuntergang* Comm.); *Sturmwolke:* वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरौ AV. 15, 2, 1. VS. 23, 2.

रेष्ममथित adj. = रेष्मच्छिन्न Kauç. 35.

रेष्म्य adj. *im Sturm* oder *in der Sturmwolke befindlich:* नमो वात्याय च रेष्म्याय VS. 16, 39.

रेव्हत् (रेव्हत्?) gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12.

रेव्हाय्, रेव्हायते denom. von रेव्हत् gaṇa भृशादि zu P. 3, 1, 12.

रै (= रयि) Uṇâdis. 2, 66. m., selten f. राम्, रायौ, रायै, रायैस्, pl. रायस्, acc. रायस् und रायैस्, रायाम्, राभ्याम्, राभिस् VS. Prât. 2, 42. fg. P. 7, 2, 85. Vop. 3, 70. *Besitz, Habe, Gut; Kostbarkeit* AK. 2, 9, 91. 3, 4, 15, 88. 25, 167. H. 191. 1043. an. 1, 11. Med. r. 1. Halâj. 1, 80. 2, 18. Dhar. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2, 66. Ṛv. 1, 31, 10. राये च नः स्वपत्या इषे धाः 54, 11. मा रायो राजन्सुयमादव स्थाम् 2, 27, 17. राय आ सुवा वसूनि 3, 56, 6. 4, 2, 9. 11. 20. रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः 17, 11. प्र यंसि रायः 5, 36, 4. रायः स्याम पतयः 49, 4. रायो धारा वसो राशिः 6, 55, 3. तयेस्त रायः 7, 20, 6. रायस्कामः 9. 9, 108, 13. 10, 42, 9. स्वपत्य 2, 9, 5. नृतम 3, 19, 3. पुरुस्पृह् 4, 8, 7. नित्य 41, 10. पार्थिव, दिव्य 5, 68, 3. बृहत् 6, 19, 13. पुरुवीर, पुरुत्तु 22, 3. परम 7, 60, 11. पाञ्चजन्य 72, 5. अश्वावत् 100, 2. रायो बृहतीः Vâlakh. 4, 10. चित्रा राम् Ṛv. 10, 111, 7. TBr. 1, 2, 1, 21. सं ऊर्मिरे पथ्याइ रायो अस्मिन्त्समुद्रे न सिन्धवः Ṛv. 6, 19, 5. ममैष राय उप तिष्ठतामिह *er gehöre zu meinem Eigenthum* AV. 18, 2, 37. Çâṅkh. Çr. 9, 28, 2. अस्मात्रायो मघवानः सचन्ताम् 4, 9, 1. Lâṭj. 3, 6, 3. रायः पशवो गृहाः Bhâg. P. 3, 23, 39. 6, 15, 21. 7, 7, 39. 10, 49, 23. नष्टरायः (adj. gen. sg.) तपस्विनः 11, 23, 13. रै als indecl. im gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. — Vgl. अतिरै.

रैकरोति *zum Besitz machen* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2, 66.

रैक्व m. N. pr. eines Mannes Khând. Up. 4, 1, 3. 5. 8. 2, 2. 4. — Vgl. रयिक्व.

रैक्वपर्ण m. pl. N. pr. einer Oertlichkeit Khând. Up. 4, 2, 5.

रैख m. patron. von रेख gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

रैणव 1) m. patron. von रेणु Âçv. Çr. 12, 14. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 231, b. वैणव v. l.

रैणुकेय (von रेणुका) m. metron. Paraçurâma's H. 848, Sch. (रे°). Med. m. 26 (वैणु°).

रैतस (von रेतस्) adj. *seminalis* Çat. Br. 14, 3, 3, 2.

रैतिक (von रीति) adj. *messingen* Suçr. 1, 99, 5.

रैत्य (wie eben) adj. dass. M. 5, 114.

रैभ (von रेभ) 1) m. patron. Verz. d. Oxf. H. 343, a, 32. — 2) f. ई (sc. ऋच्) parox. Bez. bestimmter Verse im Ritual Ṛv. 10, 85, 6. TS. 7, 5, 11, 2. so heissen die drei Verse AV. 20, 127, 4—6, die das Wort रेभ mehrmals enthalten, Ait. Br. 6, 32.

रैभ्य m. patron. von रेभ gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Çat. Br. 14, 5, 5, 20. 7, 3, 26 (mit wechselnder Accentuation). Âçv. Çr. 12, 14. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 30. 60, 3 v. u. 62, 29 (sg. und pl.). MBh. 2, 111. 3, 10700. 10703. fgg. 12, 1771. 7592. 12758. 13, 1763. 7663. Hariv. 6601. 9570. Verz. d. Oxf. H. 18, b, 16. 19, a, 42. 37, b, 30. 39, b, 31. 336, b, 1 (ein Astronom). 345, a, 30. Verz. d. B. H. 125, 2 v. u. ein Sohn Sumati's und Vater Dushjanta's Bhâg. P. 9, 20, 7. nach Nîlak. ein देवतागणविशेष wie das vorangehende Pâriplava Hariv. 432.

रैय् (von रै), रैयति *Reichthümer wünschen* P. 6, 1, 79, Sch.

रैवत 1) adj. a) (von रेवत्) oxyt. *aus wohlhabendem Hause stammend, reich:* वरा इवेद्रैवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे Ṛv. 5, 60, 4. — b) *zum* Manu Raivata *in Beziehung stehend:* अन्तर, मन्वन्तर Raivata's Manvantara Bhâg. P. 8, 5, 1. Mârk. P. 100, 36. — c) oxyt. *zum* Sâman Raivata *gehörig* u. s. w.: Indra TS. 2, 3, 7, 3. Savitar VS. 29, 60. ऋषभ Pańkav. Br. 13, 10, 10. Lâṭj. 6, 10, 2. 7, 1, 1. — 2) m. a) oxyt. *Wolke* Naigh. 1, 10. — b) *eine* (imaginäre) *Art von* Soma Suçr. 2, 164, 18. *ein best. Knollengewächs,* = सुवर्णालु Trik. 3, 3, 181. Med. t. 145. = सुवर्ण und अलु H. an. 3, 289. — c) Bez. *des Dämons einer best. Kinderkrankheit:* अदितिं रेवतीं प्राङ्कुर्यक्तस्तस्यास्तु रैवतः। सो ऽपि बालान्महाघोरो बाधते वै महाग्रहः॥ MBh. 3, 14482. fg. — d) N. einer der 11 Rudra Hariv. 166. VP. 121. Bhâg. P. 6, 6, 17. Verz. d. Oxf. H. 82, b, 26. — e) Bein. Çiva's Trik. 1, 1, 45. 3, 3, 181. H. an. Med. — f) N. des 5ten Manu M. 1, 62. Hariv. 409. 434. VP. 262. fg. Bhâg. P. 5, 1, 28. 8, 5, 2. Mârk. P. 53, 7. 75, 1. fgg. 68. — g) N. pr. eines Daitja Dhar. im ÇKDr. — h) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2, 145 (पर्वत ed. Bomb.). eines Brahmarshi Lalit. ed. Calc. 295, 3. eines Fürsten MBh. 5, 3788. 13, 5665 (रैवते रन्ति° st. रैवतेन रन्ति° ed. Bomb.). Hariv. 5250 (patron. von रेवत; die neuere Ausg. liest auch 5248. fg. रैवत). patron. Kakudmin's, Beherrschers von Ânarta, Kuçasthalî 644. fgg. 6265. VP. 355. fgg. Bhâg. P. 10, 52, 15. eines Sohnes des Amṛtodana von der Revatî Schiefner, Lebensb. 237 (7). 266 (36). Lot. de la b. l. 126. — i) N. pr. eines Gebirges bei Kuçasthalî (= जयन्त, उज्जयन्त) Trik. 3, 3, 181. H. an. Med. MBh. 1, 7936. 2, 614. Hariv. 5249. 6265. VP. 180, N. 3. Mârk. P. 57, 14. Çatr. 1, 352. रैवताद्रि 10, 148. रैवताचल 149. °गिरि Verz. d. Oxf. H. 149, a, 20. = 3) f. ई MBh. 13, 6236. 6242 (रेवती ed. Calc.) nach Nîlak. = रैवत n.; eher als adj. mit इष्टि (= पवित्रेष्टि nach Nîlak.) zu verbinden. — 4) n. N. eines Sâman (aus Ṛv. 1, 30, 13) Ind. St. 3, 232, a. VS. 10, 14. 13, 58. Çâṅkh. Br. 23, 4. Çr. 10, 7, 1. 8, 14. Lâṭj. 3, 12, 6. Kaush. Up. 1, 5. Auch रैवत (v. l. रैवत्य) ऋषभः als Name eines Sâman, = रुद्रस्य (vgl. oben u. 2, d) e) ऋषभः Ind. St. 3, 232, a.

रैवतक (von रैवत) gaṇa अरीहणादि zu P. 4, 2, 80. 1) m. a) N. pr. eines Gebirges, = रैवत H. 1031. MBh. 1, 7892. 6, 418. 14, 1754. Hariv. 5250. 6412. 8952. 9601. Bhâg. P. 5, 19, 16. 10, 67, 8. Mârk. P. 75, 23. pl. *die Bewohner dieses Gebirges* Varâh. Bṛh. S. 14, 19. 16, 31. — b) N. pr. eines Thürstehers Çâk. 23, 1. — 2) n. *eine best. Pflanze,* = पारेवत (vgl. रेवतक) Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. कौलि°.

रैवतमदनिका f. Titel einer Goshṭhî (*einer Art Schauspiel*) Sâh. D. 201, 17.

रैवतिक m. metron. von रेवती P. 4, 1, 146. 3, 131. Vop. 7, 1. 9. Gâbâlop. in Ind. St. 2, 77, 1.

रैवतिकीय adj. von रैवतिक P. 4, 3, 131.

रैवत्य 1) adj.: रैवत्य (v. l. रैवत) ऋषभः N. eines Sâman Ind. St. 3, 232, a. — 2) n. oxyt. (von रेवत्) *Reichthum:* रैवत्येव महसा चारव: स्थन Ṛv. 10, 94, 10.

रैशायन m. patron.; pl. Saṅsk. K. 185, b, 3.

1. रोक (von 1. रुच्) 1) m. a) *Licht, Helle* Trik. 3, 3, 39. H. an. 2, 15.

fg. Med. k. 32. Vaiǵ. und Viçva bei Mallin. zu Çiç. 5, 54. दिवश्छिद्रा ते रुचयन्त रोकाः ṚV. 3,6,7. — b) = क्रयभिद् Med. k. *buying with ready money* Wilson. — 2) n. a) *Loch, Höhle* AK. 1,2,1,2. Trik. H. 1364. H. an. Med. Halâj. 3,2. Vaiǵ. und Viçva a. a. O. Ist etwa hierher zu ziehen die Stelle beim Schol. zu Çâk. 20,9: ग्रीष्मे न पथ्यं कटु तिक्तमुष्णम् । ताराम्बु रोकयं (रोकं wurde in's Versmaass passen) श्रमणं व्यवायः ॥? — b) *Boot, Schiff* H. an. Med. — c) = चर H. an. = चल Med. *moving, shaking* Wilson. — e) = कृपणभेद H. an.

2. रोक m. oder रोकस् n. (wie eben) *Lichterscheinung:* अध स्मैषु रोदसी स्वशोचिरामवत्सु तस्थौ न रोकः ṚV. 6,66,6.

रोग (von 1. रुज्) m. 1) *Gebrechen, Krankheit* P. 3,3,16. AK. 2,6,2,2. H. 462. Med. g. 21. Halâj. 2,445. AV. 1,2,4. तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् 2,3,3. विहाय रोगं तन्वः स्वायाः 3,28,5. 6,44,1. 120,3. शीर्षण्य 9,8,1. 21. fg. Khând. Up. 7,26,2. M. 8,108. संतापयन्ति कमपथ्यभुजं न रोगाः Spr. 1195. 2644. रोगार्दित 2645. प्राणान्तिक 2467. रोगानीकराज् Suçr. 2,399,16. रोगराडोगसंघातो ज्वर इत्युपदिश्यते 427,15. 1,5,9.35, 7.36,4. Varâh. Bṛh. S. 6,2. 7,3. °द *verursachend* 43,27. °प्रद 89,8. °भय 3, 26. 5, 92. 8, 34. 46, 39. 79, 36. °क्षय 12,18. 104, 9. °नाश 7. °निग्रहण Suçr. 1,195,2. °लक्षण Verz. d. B. H. No. 973. °विनिश्चय 954. रोगायतन M. 6,77. °वैरूप्य *in Folge von Krankheit* Kathâs. 12,71. °परिमाणानि Weber, Nax. 2, 393. °गणना Verz. d. Oxf. H. 315, *a*, No. 748. °ज्ञान 323,*a*,24. रोगोपशम 30. °प्रश्न 334,*a*,1 v. u. रोगानुत्पादनीय 303, *b*,35. °निवृत्ति Madhus. in Ind. St. 1,21,10. रोगाडुन्मुक्तः Halâj. 2,225. रोगोन्मादित von einem *tollen* Hunde H. an. 3,5. क्षुद्रोग *Krankheit vor Hunger* Pańkat. 70,13. प्रजारोगा (so ist zu schreiben) नियोगिनः so v. a. *eine Plage für die Unterthanen* Râǵa-Tar. 6,136. दीर्घ° adj. Spr. 4628. विमुक्तरोगा Mârk. P. 64,1. *die Krankheit als Genius* Varâh. Bṛh. S. 53, 45. 63. Vgl. अरोग (adj. auch Jâǵń. 1,208. Varâh. Bṛh. S. 103,9.), कृमि°, क्षय° (auch Râǵa-Tar. 5, 442), क्षुद्र°, तृषा°, नी°, नीली°, नेत्र°, पाण्डु°, पाप°, बाल°, महा°, मुख°, वि°, स°, हृद्रोग u. s. w. — 2) *Costus speciosus* oder *arabicus* Med.

रोगघ्न adj. (f. ई) *Krankheit vertreibend* Suçr. 1,167,7. n. *Arzenei* ÇKDr. nach dem Vaidjaka.

रोगनाशन adj. *Krankheit vertreibend* AV. 6,44,2.

रोगभाज् adj. *krank, kränklich* Spr. 181. Varâh. Bṛh. S. 101,4.

रोगभू f. *eine Stätte für Krankheiten* so v. a. *der Körper* Çabdaḱ. im ÇKDr.

रोगमुक्त adj. *von einer Krankheit befreit, genesen:* °स्नान Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,18.

रोगमुरारि m. Titel eines medic. Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

रोगराज m. *der Fürst unter den Krankheiten* d. i. *Lungenschwindsucht* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. रोगराज् und रोगानीकराज् oben u. रोग 1).

रोगशान्तक m. *Arzt* Çabdaḱ. im ÇKDr.

रोगशिला f. *Realgar, rother Arsenik* Râǵan. im ÇKDr.

रोगशिल्पिन् m. *eine best. Pflanze*, vulgo शरालु Gaṭâdh. im ÇKDr. *Cassia fistula* Wilson.

रोगश्रेष्ठ m. *die beste* (d. i. *schlimmste*) *der Krankheiten* so v. a. *Fieber* Râǵan. im ÇKDr.

रोगहर adj. *Krankheit vertreibend* Suçr. 1,191,3.4. Varâh. Bṛh. S. 79,11. n. *Arzenei* Çabdaḱ. im ÇKDr.

रोगहारिन् adj. *Krankheit vertreibend;* m. *Arzt* AK. 2,6,2,8. H. 472.

रोगहृत् adj. dass.; m. *Arzt* Râǵa-Tar. 6,68.

रोगित (von रोग) adj. *mit einer Krankheit behaftet* gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. H. 459, Sch. Varâh. Bṛh. S. 45,13. *toll* (von einem Hunde) H. 1280. Halâj. 2,127.

रोगितरु m. *der Baum der Kranken*, Bez. des Açoka Râǵan. im ÇKDr.

रोगिन् (von रोग) adj. *krank, kränklich* M. 2,138. 3,8. 114. 9,82. 230. Jâǵń. 1,117. 209. 2,98. Hariv. 7672. Spr. 2226. 2645. fg. 4325. 4664. Varâh. Bṛh. 20,9. 21,8. Kathâs. 66,41. Râǵa-Tar. 3,461. 4,212. Bhâg. P. 1,14,41. 6,9,49. Mârk. P. 34,76. Sâh. D. 2,9. मन्द° *selten krank* MBh. 3,12639. दीर्घ° *lange kränkelnd, siech* Spr. 4628, v. l. — Vgl. अ° (auch Spr. 3275. Jâǵń. 1,53. अरोगित्व 265), क्षय°, पाण्डु°, पाप° (auch MBh. 14,1010), महा°, वक्त्र°.

रोगिवल्लभ n. *Arzenei* Çabdaḱ. im ÇKDr.

रोग्य partic. fut. pass. von 1. रुज् Vop. 26,8. *Krankheit erzeugend, ungesund* (von रोग), = अपथ्य, अहित Çabdaḱ. im ÇKDr.

रोच (von 1. रुच्) 1) adj. *leuchtend* AV. 17,1,21. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Vjutp. 91. Schiefner, Lebensb. 232 (2). — Vgl. गो°.

रोचक (wie eben) 1) adj. = रोचन Med. n. 116. fg. *Appetit machend* Suçr. 1,200,13. अ° *den Appetit benehmend* Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,12. — 2) m. a) *Appetit, Hunger* H. 393. — b) *eine den Durst* (*den Appetit*) *reizende Speise*, = अवदंश Râǵan. im ÇKDr. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: *Musa sapientum* Çabdar. im ÇKDr. *eine Zwiebelart* (राजपलाण्डु) Râǵan. ebend. = ग्रन्थिपर्णभेद Bhâvapr. im ÇKDr. — d) *ein Verfertiger von unächten Schmucksachen* R. 2,83,14. = काचकुप्यादिकर्तर् Kataka. — Vgl. अ°, कण्डाल°.

रोचकिन् (von रोचक) adj. *Lust —, Verlangen habend:* अ° Râǵa-Tar. 2,59. — Vgl. अ°.

रोचन (von रुच्) 1) adj. gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134 (proparox.). = रोचक Med. n. 116. fg. a) *licht, hell, blank, leuchtend* H. 445. AV. 4, 10,2. 6. 14,1,38. सवितर् TBr. 3,10,1,2. लोक Çat. Br. 7,1,1,24. Çâṅkh. Br. 20,1. यो (अपामञ्जलिः) रोचनस्तमिह गृह्णामि Gobh. 3,4,11. Pâr. Gṛhj. 2,6. खद्योत इव रोचनौ MBh. 8,1959. महादेव Hariv. 7424 (= चिन्मय Nilak.). — b) *Gefallen erweckend, gefallend, lieblich* Bhaṭṭ. 6,73. Bhâg. P. 1,10,11. 10,61,25 (f. आ). कर्ण° 73,14. — c) *Appetit machend* Suçr. 1,156, 6. 11. 188,13. 192,13. 217,16. 219,1 (f. ई). — 2) m. a) *eine Varietät der Baumwollenstaude* (कूटशाल्मलि) AK. 2,4,2,27. Trik. 3,3,256. H. an. 3,405. Med. nach Râǵan. im ÇKDr. auch = श्वेतशिग्रु, पलाण्डु, आरग्वध, करञ्ज, अङ्कोठ und दाडिम. — b) Bez. eines best. Krankheitsdämons (ग्रह) Hariv. 9560. — c) N. einer der fünf Pfeile des Liebesgottes (*der Gefallen Erweckende*) Verz. d. Oxf. H. 184,*b*, No. 419. — d) N. pr. eines Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇâ Bhâg. P. 4,1,7. — e) N. Indra's unter Manu Svârokisha Bhâg. P. 8,1,20. — f) N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,13. — 3) f. रोचना Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,78. a) *Lichthimmel*; s. u. 5) a) am Ende. — b) *ein schönes Weib* H. an. Med. — c) *ein best. gelbes Pigment*, = गोरोचना Trik. 2,9,22. 3,3,256. H. an. Med. P. 4,2,2. M. 8,234. Jâǵń. 1,278. MBh. 2,893. 5,1542. 13,5874.

6009. 6243. HARIV. 9384. SUÇR. 2, 13, 2. 66, 4. 110, 16. 152, 19. 333, 14. °चूर्ण 523, 13. गोपित्ततो रोचना Spr. 739. RAGH. 17, 24. KUMÂRAS. 7, 32. PAÑKAR. 3, 9, 14. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 3. 242, *a*, No. 593—595. रोचनाभ Ind. St. 8, 277. °वर्णा 275. plur. MBH. 7, 2931 (रोचनास्तथा ed. Bomb. st. राचनीस्तथा der ed. Calc.). R. GORR. 2, 12, 8. — *d*) *eine rothe Lotusblüthe* H. an. MED. — *e*) = mahr. काळीसांवरी *dunkler* Çâlmali BHÂVAPR. in NIGH. PR. — *f*) = वंशरोचना Tabâschîr RÂGAN. in NIGH. PR. — *g*) N. pr. einer Gattin Vasudeva's BHÂG. P. 9, 24, 44. 48. — 4) f. ई *a*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Convolvulus Turpethum R. Br.* AK. 2, 4, 3, 27. MED. = काम्पिल्ल AK. 2, 4, 5, 12. MED. = दन्ती MED. = ग्रामलकी RÂGAN. im ÇKDR. — H. an. 3, 403. — *b*) *Realgar, rother Arsenik* H. 1060. — *c*) *ein best. gelbes Pigment* (= रोचना) RÂGAN. im ÇKDR. Spr. 739, v. l. — 3) n. *a*) *Licht, Glanz; Lichtraum des Himmels:* ग्रत्तर्मह्नो ग्रंसि रोचनेनं ṚV. 10, 4, 2. 88, 5. सं दिव्येनं दीदिहि रोचनेनं AV. 2, 6, 1. चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि *Lichter so v. a. Gestirne* 19, 7, 1. ग्रसौ वा ग्रादित्यो दिव्यं रोचनम् ÇAT. BR. 6, 2, 1, 26. LÂṬJ. 1, 6, 26. KAUÇ. 5. तृतीये पृष्ठे ग्रधि रोचने दिवः ṚV. 9, 86, 27. 1, 6, 1. 49, 1. 155, 3. ग्रन्तरित्ने, दिवो रोचने 3, 6, 8. रोचने परस्तात्सूर्यस्य 22, 3. सूर्यस्य 1, 14, 9. नाकस्य 19, 6. विश्वमा भाति रोचनम् 3, 44, 4. इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च 8, 14, 9. 7. दिवो रोचना परिभ्वासम् 1, 146, 1. 81, 5. 93, 5. 6, 7, 7. दिवो विश्वानि रोचना 8, 5, 8. 9, 85, 9. 10, 4, 2. 49, 6. 89, 1. AV. 7, 73, 4. 13, 1, 39. तारका वितता रोचने दिवि TBR. 3, 12, 8, 1. VS. 13, 8. drei solche *Lichthimmel* ṚV. 1, 102, 8. 149, 4. ग्रादित्यास्त्री रोचना दिव्या धारयन्त 2, 27, 9. 3, 56, 8. 4, 53, 5. 5, 69, 1. 81, 4. 6, 44, 23. 9, 17, 5. ÇAT. BR. 8, 6, 3, 19. auch fem.: एतु तिस्रो ऽति रोचनाः AV. 6, 75, 3. TBR. 3, 3, 11, 3. — *b*) *das Erregen des Verlangens nach* (geht im comp. voran) BHÂG. P. 11, 11, 23. — *c*) देवानां रोचनम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 219, *b*. — Vgl. गोरोचना, पुष्परोचन, भक्त°, योगरोचना, वंश°, सु°, रौचनिक.

रोचनक 1) m. *Citronenbaum* RÂGAN. im ÇKDR. — 2) f. रोचनिका *a*) *eine best. Pflanze*, = गुण्डरोचनी RATNAM. 163. = काम्पिल्लिका HÂR. 135. रोचनका (sic) = रेचनी H. an. 3, 404. — *b*) = वंशरोचना Tabâschîr RÂGAN. im ÇKDR.

रोचनफल 1) m. *Citronenbaum.* — 2) f. ग्रा *eine best. Gurkenart*, = चिर्भिटा RÂGAN. im ÇKDR.

रोचनस्था adj. *im Lichtraum des Himmels befindlich* ṚV. 3, 2, 14. 6, 6, 2.

रोचनाकर gaṇa सात्तादादि zu P. 1, 4, 74.

रोचनामुख m. N. pr. eines Daitja MBH. 5, 3685.

रोचनावत् (°नवत् Padap.) adj. *licht, hell* AV. 13, 3, 10; vgl. TBR. 2, 7, 15, 3.

रोचमान 1) partic. adj. s. u. 1. रुच्. — 2) m. *a*) *ein Haarwirbel am Halse eines Pferdes* TRIK. 2, 8, 44. VAIG. bei MALLIN. zu ÇIÇ. 5, 4. KATHÂS. 74, 78. ÇIÇ. 5, 4. — *b*) N. pr. eines Fürsten MBH. 1, 2654. 6990. 2, 516. 1027. 1066. — 3) f. ग्रा N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2647.

रोचस् s. स्व°.

रोचि *Licht, Strahl:* स्वरोचिभिर्यथा सूर्यो भासयन्सकला दिशः MÂRK. P. 63, 6. 7. vielleicht fehlerhaft für स्वरोचिर्भिः. रोचिभिः (= विषयवासनाज्वालाभिः NÎLAK.) HARIV. 11935 Lesart der neueren Ausg. st. रोपिभिः der älteren.

रोचिन् (von 1. रुच्) *hell, licht;* s. मित°.

रोचिष (von रोचिस्) m. N. pr. eines Sohnes des Vibhâvasu von der Ushas BHÂG. P. 6, 6, 16. der acc. रोचिषम् könnte übrigens auch auf ein m. रोचिस् zurückgeführt werden.

रोचिष्णु (von रुच्) adj. P. 3, 2, 136. VOP. 26, 142. 1) *leuchtend, schmuck, blühend* AK. 2, 6, 3, 2. H. 445. VS. 12, 57. ÂÇV. GṚHJ. 1, 7, 6. ÇAT. BR. 14, 5, 1, 9. PÂR. GṚHJ. 1, 6. रोचिष्णूरस्क zur Erkl. von रुक्मवत्तस् NIR. 3, 15. ज्योतिस् MBH. 12, 8515. Çiva ÇIV. मणि BHÂG. P. 5, 24, 31. श्यामलाम्बर° KATHÂS. 94, 9. — 2) *Appetit machend* SUÇR. 1, 190, 18.

रोचिष्मत् (von रोचिस्) 1) adj. *leuchtend:* ग्रग्नि HARIV. 10488. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Svârokisha BHÂG. P. 8, 1, 19.

रोचिस् (von 1. रुच्) n. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 2, 112 (parox.). *Licht, Glanz* AK. 1, 1, 2, 36. H. 99. HALÂJ. 1, 38. ṚV. 5, 26, 1. RÂGA-TAR. 1, 1. BHÂG. P. 3, 12, 32. 28, 23. 4, 1, 5. 2, 5. 5, 2. शरत्पद्मपलाश° 24, 52. 5, 20, 13. 10, 59, 7. ईषत्स्मितरोचिषा (°शोचिषा ed. Bomb.) गिरा *Anmuth* 2, 9, 18. — Vgl. ग्रचिर°, स्व°.

रोची f. *Hingcha repens Roxb.* ÇABDAR. im ÇKDR. VJUTP. 142.

रोच्य partic. fut. pass. von 1. रुच् P. 7, 3, 66.

रोट s. पूग°.

रोटकव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 7 v. u.

रोटिका f. *eine Art Gebäck* Verz. d. Oxf. H. 153, *b*, N. 1. रोटिका, यव°, माष°, चणक° BHÂVAPR. im ÇKDR.

रोड्, रोडति (उन्मादे) DHÂTUP. 9, 73. (ग्रनादरे) 72, v. l. — Vgl. लोड्, रौड्, रौट्.

रोड 1) adj. *gesättigt, befriedigt* (तृप्त). — 2) m. *das Zerstampfen* (तोद) MED. ḍ. 24.

रोढर् nom. ag. von 1. रुह् MED. k. 149.

रोणीक N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. रोणीकीय P. 4, 2, 141, Vârtt. 1, Sch.

रोद (von रुद्) m. *Klageton, das Winseln:* यदीमे केशिनो जना गृहे ते समनर्तिषू रोदेन कृण्वतोऽघम् AV. 14, 2, 59. 60. ग्रघ 8, 6, 26. पुत्ररोदं रुद् *seine Kinder beweinen* KHÂND. UP. 3, 15, 2.

रोदन (wie eben) 1) n. *a*) *das Weinen* AK. 3, 4, 18, 126. H. an. 3, 405. MED. n. 117. R. 3, 59, 1. SUÇR. 1, 316, 5. बालानां रोदनं बलम् Spr. 1192. KATHÂS. 73, 225. 124, 138. BHÂG. P. 6, 14, 48. VET. in LA. (III) 25, 2. 17. 28, 16. °वत् BHÂG. P. 3, 17, 10. pl. SUÇR. 1, 373, 10. zu den Kinderkrankheiten gezählt ÇÂRṄG. SAṀH. 1, 7, 108. — *b*) *Thränen* AK. 2, 6, 2, 44. H. 307. H. an. MED. HALÂJ. 2, 364. — 2) f. ई *Alhagi Maurorum Tournef.* AK. 2, 4, 3, 10. — Vgl. रुद्ररोदन.

रोदस् = रोदसी 1): gen. du. रोदसोः ṚV. 9, 22, 5. die indischen Lexicographen führen auch रोदसी auf रोदस् n. zurück: रोद इव तु रोदसी H. an. 3, 753. रोदश्च रोदसोति च MED. s. 32. HALÂJ. 1, 121. Am Anfange eines comp.: रोदःकुहर NALOD. 3, 32.

रोदसिप्रा (für रोदसी-प्रा) adj. *welterfüllend* ṚV. 10, 88, 5. 10.

रोदसी f. 1) du. रोदसी *die obere und untere Welt, Himmel und Erde.* Die urspr. Bed. ist noch zu ermitteln. NIR. 6, 1 stellt das Wort als von रुध् abgeleitet mit रोधस् zusammen: (die Wesen) *in sich enthaltend;* diese Ableitung ist unzulässig schon wegen des Zusammenhanges zwi-

schen रुद्र und रोदसी 2), wenn anders die beiden रोदसी 1) und 2) zusammengehören. Naigh. 3, 30. Nir. 10, 4. 11, 50. AK. 3,4,30,231 (रोदस्यौ = रोदसी). H. 939. 1526. an. 3,753. Med. s. 32. Halâj. 1,121. निरंव्रताँ अधमो रोदस्योः ṚV. 1,33,5. नमो दिवे बृहते रोदसीभ्याम् 136,6. अनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे 2,1,15. 11,9. 3,2,2. अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते 3,2. समैरयं रोदसी धारयं च 4,42,3. वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु 5,53,6. कवन्धं प्र संसर्ज रोदसी अन्तरित्तम् 85,3. 6,8,3. 30,1. 70,2. 3. 6. राज्यं रोदस्योः 7,6,2. 72,3. रोदसीमे 90,3 (vgl. VS. Prât. 4,85. Kâç. zu P. 1,1,11). 8,61,13. 10,80,1. 2. AV. 1,32,3. 4,1,4. आ यां रोहन्ति रोदसी 14,4. यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात् 16,5. यावद्रोदसी विबबाधे अग्निः 8,9,6. सुमेके ṚV. 3,15,5. अद्रुहा 56,1. देवी 4,55,6. 6,44,5. देवपुत्रे 17,7. उर्वी 67,5. उरूची 11,4. न ज्ञातमष्ट रोदसी (als sg. behandelt) 8,59,5. In der nachvedischen Sprache रोदसी als nom. und acc. MBh. 1,3550. 5,2769. 7350. Vikr. 1. Varâh. Bṛh. S. 53,2. Kathâs. 2,15. Sâh. D. 7,10. Bhâg. P. 1,7,30. 14,17. लोकमातरौ 2,3,5. 4,14,5. 17,16. 6,9,14. 9,20,32. रोदस्योः 8,21,27. — 2) sg. रोदसी nach Nir. 11,49. 12,46 Rudra's *Gattin*, nach den Comm. auch *Gattin der* Marut, *Blitz*: (रथम्) आ यस्मिंतस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी ṚV. 5,56,8. 6,66,6. 10,92,11. जोषद्यदीमसुर्या सचध्यै विषितस्तुका रोदसी नृमणाः 1,165,5. so auch ebend. 4, obwohl als du. behandelt; ursprünglich wohl रोदसीम्. Eben so finden sich Stellen, wo irrig रोदसी betont ist, daher im Padap. Dual angenommen wird, z. B. आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ṚV. 5,46,8. 61,12. 7,34,22. auch wohl 40,2.

रोदस्त्व n. ein zur Etymologie von रोदसी gebildetes Wort: यदरोदीत्तदनयो रोदस्त्वम् TBr. 2,2,9,4.

रोदितव्य (von रुद्) partic. fut. pass. impers. *zu weinen*: अतो न रोदितव्यम् Spr. 3036. ते Mârk. P. 109,18. अनया 28. Vet. in LA. (III) 21, 17. न रोदितव्यं पश्यामि भवतामात्मनस्तथा *ich sehe keine Veranlassung zum Weinen für* Mârk. P. 22,28. रोदितव्ये प्रहर्षितान् *wo man weinen sollte* MBh. 7,726. रोदितव्ये ध्रुवे (रोदितव्यं क्रुदे die neuere Ausg.) मग्नाः Hariv. 4793.

रोद्धर् (von 2. रुध्) nom. ag. *Einschliesser, Belagerer*: द्विषाम् Ragh. 17,52.

रोद्धव्य (wie eben) adj. *zu verschliessen*: द्वारमेषां न रोद्धव्यमिह प्रविशताम् Kathâs. 36,4.

1. रोध (von 1. रुध्) m. vielleicht in रोधावरोध *Bewegung auf und ab* Kauç. 98. — Vgl. न्यग्रोध.

2. रोध (von 2. रुध्) m. 1) *das Zurückhalten, Festhalten*: पाणिरोधम् — कामिनः स्म कुरुते Çiç. 10,69. रोधमुक्तं प्रवत्स्यणाम् so v. a. *frei geworden* Kathâs. 18,304. — 2) *Einsperrung*: रावणान्तःपुरे R. 5,66,3. गवाम् Mârk. P. 13,1. महारोधाद्विनिर्मुक्तः R. 7,36,6. *Einschliessung, Belagerung* (einer Stadt) MBh. 3,781. 12,2184. Hariv. 5010. 5265 (am Ende eines adj. comp. f. आ). Ragh. 11,52. Varâh. Bṛh. S. 12,19. 34,10. 20. 91,2. 3. 95,8. Mârk. P. 122,15. Pańkat. ed. orn. 55,18. *Versperrung* MBh. 5, 2225. मार्ग° Suçr. 1,253,7. उपल° *durch Steine* Kir. 5,15. — 3) *Verwehrung, Hemmung, Unterdrückung*: चेष्टाभोजनवाग्रोध Jâǵń. 2,220. प्रवेशरोधकृत् Kathâs. 10,41. दृष्टिरोधकर Spr. 3582. वृत्ति° Kusum. 22,17. स्मृति° Çâk. 191. ज्ञान° Bhâg. P. 4,22,31. श्वास° 10,3,34. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*, No. 475, Z. 10. Sarvadarçanas. 89,13. = निरोध und नाश Trik. 3,3,219. — 4) *das Befehden*: जामदग्न्यस्य लोकानां रोधः R. Gorr. 1,4,27. = अभ्यागम H. an. 4,214. — 5) *Damm, Ufer*: नर्मदा रोधवद्रुद्धा R. 7,32,18. जलरोधेषु Suçr. 1,106,15. रोधस्थ Râǵa-Tar. 4,249 könnte auch रोधःस्थ sein. — 6) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 7) N. einer Hölle VP. 207. fg. — Vgl. प्राण° (v. l. für प्राणबाध *Lebensgefahr* Spr. 3136).

रोधक (wie eben) adj. *einsperrend, einschliessend, belagernd*: पयोधररोधकमुरसि दुकूलम् Gît. 12,4. पुर° Ind. St. 10,198. — Vgl. अश्व°.

रोधकृत् (2. रोध + कृत्) m. Bez. *des 45sten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,43. fg.

रोधचक्र (2. रोध + चक्र) adj. als Bez. von Flüssen Naigh. 1,13. etwa *am Ufer Wirbel* (s. चक्र 12.) *bildend*: समुद्रं न स्रवतो रोधचक्राः ṚV. 1,190,7. अत्रा मही रोधचक्रे वावृधेते AV. 5,1,5. — Vgl. रोधवक्रा, रोधोवप्र.

रोधन (von 2. रुध्) 1) m. *der Planet Merkur* Trik. 1,1,93. — 2) रोधनी f. = रोधस्. विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यम् ṚV. 2,13,10. — 3) n. proparox. *a) das Aufhalten, Zurückhalten, das Hemmen, Unterdrücken*: अम्बुगर्तयोः (subj. gen.) Bhâg. P. 3,30,28. चतुर्हृदय° Vâgbh. 7,22. कुर्वन्तो दृष्टिरोधनम् R. 6,90,25. श्वासप्रश्वास° H. 83. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,33. 266,*a*,9. 270,*a*,2. — *b) das Einsperren, Einschliessen, Verschluss* Bhâg. P. 10,13,32. रोधना गोः ṚV. 1,121,7. समरस्य Bhar. Nâṭjaç. 18,19.

रोधवक्रा f. = रोधोवक्रा Bhar. zu AK. ÇKDr.

रोधस् (von 2. रुध्) n. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,188. *Erdaufwurf, Damm, Wall, Schutzwehr; Hügel, hohes Ufer*: रिणग्रोधांसि (रुजद्रोधांसि TS.) कृत्रिमाण्येषाम् ṚV. 2,15,8. उप स्तभायदुपमिन्न रोधः 4,5,1. विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्ऋष्वाज्जनिमन्नेजत क्षाः 4,22,4. 10,48,2. so v. a. कूल *hohes Ufer* Nir. 6,1. AK. 1,2,3,7. H. 1077. Halâj. 3,45. MBh. 7,504 (wo mit der ed. Bomb. °रोधसम् zu lesen ist). 1403. 6186. R. 4,53,15. Ragh. 5,42. 8,33. 9,14. 16,54. Megh. 42. Vikr. 8. Mâlav. 71,2. 76 (वप्ररोधोवृतैः zu schreiben). Kathâs. 42,224. 114,42. Râǵa-Tar. 3,328. Sâh. D. 5,3. Bhâg. P. 3,22,27. 5,16,21. 8,10,5. 10,15,9. Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,27. in Verbindung mit कूल MBh. 3,11887. 15,248. von der *abschüssigen Wand* eines Brunnens Bhâg. P. 9,19,4. पर्वत° *Bergwand* Hariv. 11911. 12044. R. 7,79, 17. ohne पर्वत dass.: रोधस्सु विषमेषु च MBh. 1,5888. 8314. *Wand* einer dicken Wolke Kathâs. 33,110. Bez. *der weiblichen Hüften* Bhâg. P. 3,20,29; vgl. तट. — du. रोधसी (neben रोदसी) so v. a. द्यावापृथिव्यौ Naigh. 3,30.

रोधस्वत् (von रोधस्) 1) adj. Bez. von Flüssen Naigh. 1,13. nach Sâj. *mit hohen Ufern versehen*: मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु। यातेमखिद्रयामभिः ṚV. 1,38,11. — 2) f. °वती N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,19,18.

रोधिन् (von 2. रुध्) 1) adj. *a) zurückhaltend, aufhaltend*: हस्त° Ragh. 19,27. मूत्र° Suçr. 1,257,19. Kathâs. 13,118. कर्णशिरीष° Çâk. 29. — *b) versperrend*: उरुद्वार° Ragh. 1,50. गलरोधिनो ऽङ्कुरान् Suçr. 1,306,19. — *c) verwehrend, hemmend, hindernd, störend*: व्रतं व्यापाररोधि मदनस्य Çâk. 26. मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना तमसा 135. प्रवेश° Kathâs. 73,131. भेरीरवैः पौराशीर्घोषरोधिभिः so v. a. *übertönend* Râǵa-Tar. 5,346. — *d) erfüllend*: रामकोदण्डरवस्याम्बररोधिनः Kathâs. 102, 51. — 2) *eine best. Pflanze*: रोधिचक्रदपुटे Pańkar. 3,14,57. ob etwa रोध°

zu lesen ist? — Vgl. अग्ररोधिनी, मार्गरोधिन्.

रोधोवक्रा (रोधस् + व°) f. *Fluss* Trik. 1,2,29. H. 1079. — Vgl. रोधचक्र, रोधवक्रा, रोधोवप्र.

रोधोवती (von रोधस्) f. *Fluss* Râǵan. im ÇKDr.

रोधोवप्र m. *ein reissender Fluss* Halâj. 3,44.

रोध्य (von 2. रुध्) adj. *zurückzuhalten:* अ° Pańkar. 4,3,14.

रोध्र 1) m. *Symplocos racemosa Roxb.*, ein Baum mit gelber Blüthe; aus seiner Rinde wird das *rothe* (vgl. रुधिर, रोहित) Pulver bereitet, das beim Feste Holâkâ gestreut wird, Trik. 3,3,368. H. 1159. an. 2, 450. Med. r. 81. Suçr. 1,38,8. 60,4. 134,1. 138,8. 141,9. 15. 157,18. Megh. 66, v. l. Ragh. 2,29. 3,2. Varâh. Bṛh. S. 16,30. 51,15. 77,29. 86,80. Vgl. लोध्र. — 2) *Sünde*, m. Trik. n. H. an. Med. — 3) n. *Beleidigung* H. an. Med.

रोध्रपुष्प m. 1) *Bassia latifolia* (मधूक) Râǵan. im ÇKDr. — 2) *eine zu den Ringschlangen gezählte Schlangenart* Suçr. 2,265,12.

रोध्रपुष्पक m. 1) *eine unter den* शालि *aufgeführte Körnerfrucht* Suçr. 1,195,7. — 2) = रोध्रपुष्प 2) Suçr. 2,266,6.

रोध्रपुष्पिणी f. *Grislea tomentosa Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

रोध्रशूक m. *eine Reisgattung, deren Aehren die Farbe der* Rodhra-*Blüthen haben,* Nigh. Pr.

1. रोप (von रुप्) n. *Loch, Höhle* H. 1364. an. 2,299, wo रन्ध्रे st. रोध्रे zu lesen ist.

2. रोप (vom caus. von रुह्) m. 1) = रोपण Trik. 3,3,279. H. an. 2, 299. Med. p. 10. *das Pflanzen:* वृक्षाणाम् MBh. 13,2993. — 2) *Pfeil* AK. 2,8,2,55. Trik. H. 778. H. an. Med. Halâj. 2,311.

रोपक (wie eben) nom. ag. *Pflanzer:* वृक्ष° R. Gorr. 2,87,2. — m. *a weight of metal or a coin, the seventieth part of a* Suvarṇa Wilson; vgl. रूप 1) *f*) und रूपक 2).

1. रोपण (von 1. रुप्) 1) adj. *Leibschneiden verursachend:* ये अङ्गानि मदयन्ति यत्स्मासो रोपणास्तव AV. 9,8,19. — 2) n. = विमोहन oder उपद्रव TBr. Comm. 3,476,9.

2. रोपण (vom caus. von 1. रुह्) 1) adj. (f. ई) *a*) *aufsetzend, ansetzend:* नासिका° Kathâs. 61,14; vgl. 16. — *b*) *verwachsen machend, heilend* (Wunden) Suçr. 1,31,14. व्रण° 34,6. 133,16. 156,15. 2,349,21. चतुष्प्रकारो गण्डूषः स्निग्धः शमनशोधनौ । रोपणश्च Verz. d. Oxf. H. 304,*b*, 41. fg. रोपणी वर्तिः, रसक्रिया 311,*b*,24. चूर्ण 25. — 2) n. *a*) *das Aufrichten, Aufstellen:* नल° Kṛshisaṁgr. 15,16. मेधि° 16,17. — *b*) *das Heilenmachen, Mittel zum Zuheilen* Suçr. 1,38,10. 48,7. 63,19. 133, 14. 2,9,16. 10,13. 20,14. 17. Kann hier und da auch als adj. gefasst werden. — *c*) *das Pflanzen, Anpflanzen, Versetzen von Pflanzen:* स्थले कमलरोपणम् Spr. 209. वृक्ष° Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,24. 86,*b*,18. 87,*a*,35. धान्य° 86,*b*,26. Kṛshisaṁgr. 12,7. 11. 13,11. 15. 20.

रोपणाका f. *ein best. Vogel*, nach Sâj. *Drossel* (शारिका): शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ṚV. 1,50,12. AV. 1,22,4.

रोपणीय (vom caus. von 1. रुह् und von रोपण) adj. 1) *aufzurichten* Kṛshisaṁgr. 16,18. — 2) *zu pflanzen, anzupflanzen* Varâh. Bṛh. S. 55, 3. 5. — 3) *zum Zuheilen tauglich* Suçr. 2,10,11.

रोपयितर् (vom caus. von 1. रुह्) nom. ag. 1) *Aufsetzer, Aufleger:* न तेषां तत्र माल्यानां कश्चिद्रोपयिता नरः R. 3,76,16. न तानि कश्चिन्माल्यानि तत्रारोपयिता नरः ed. Bomb. 73,22. — 2) *Pflanzer, Anpflanzer:* वृक्ष° Kull. zu M. 3,163.

रोपि (von 1. रुप्) f. *reissender Schmerz:* तक्मन्: AV. 5,30,16. fraglich 11,2,3.

रोपिन् (vom caus. von 1. रुह्) adj. *pflanzend, anpflanzend:* वृक्ष° MBh. 13,2995. पश्चाद्रोपी नरकं न याति Cit. bei Kull. zu M. 3,163.

रोपुषी f. = रोपि: विषस्य ṚV. 1,191,13.

रोप्य (vom caus. von 1. रुह्) adj. *zu pflanzen, anzupflanzen:* वृक्षाः MBh. 13,3000. रोप्यातिरोप्याः (व्रीहयः) (*Reis*) *der gesäet und später wieder verpflanzt wird* Suçr. 1,196,14; vgl. LIA. I,246.

1. रोम = रोमन् am Ende eines adj. comp.: अजातरोम MBh. 3,10053. अरोम 1,8010 (f. आ). Varâh. Bṛh. S. 70,3. सरोम 21. — Vgl. दीर्घ°.

2. रोम 1) m. *Loch, Höhle* Çabdârthak. bei Wilson; vgl. 1. रोप. — 2) n. *Wasser* Çabdak. im ÇKDr.

3. रोम *Rom* Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,1 v. u. — Vgl. बृहद्रोम und 2. रोमक.

1. रोमक am Ende eines adj. comp. = रोमन्. पाटल° (तुरग) R. 5,12,35.

2. रोमक 1) m. *a*) N. pr. eines उदीच्यग्राम gaṇa पलद्यादि zu P. 4, 2,110. कृशाश्वादि zu 80. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1837. *die Römer, Bewohner des Römerreiches* Varâh. Bṛh. S. 16,6. sg. *Rom* Siddhântaçir. Golâdhj. Bhuvanak. (III) 28. Verz. d. B. H. No. 939. 1240. Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,34. Reinaud, Mém. sur l'Inde 341. fg. — *b*) *der Römer*, Bez. eines best. Astronomen Verz. d. B. H. No. 835. 881. 939. Verz. d. Oxf. H. 333,*a*,9. Ind. St. 2,247. fg. °तान्त्रिक 274. — 2) n. *a*) *salzhaltige Erde und das aus ihr gezogene Salz*, = पांसुलवण Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,157,8. 226,12. 227,2. — *b*) *eine Art Magnet* (अयस्कान्तभेद) Râǵan. im ÇKDr.

रोमकन्द (1. रोमन् + कन्द) m. *ein best. Knollengewächs*, = पिण्डालु Râǵan. im ÇKDr.

रोमकपत्तन n. *die Stadt Rom* Verz. d. Oxf. H. 325,*b*,N. 1. 340,*a*,7. Siddhântaçir. Golâdhj. Bhuvanak. (III) 17.

रोमकर्णक (1. रोमन् + कर्ण) m. *Hase* Çabdârthak. bei Wilson.

रोमकसिद्धान्त m. N. eines der fünf Haupt-Siddhânta zu Varâhamihira's Zeit: पौलिशरोमकवासिष्ठसौरपैतामहेषु पञ्चस्वेतेषु सिद्धान्तेषु Varâh. Bṛh. S. S. 4, Z. 1. 2. Colebr. Misc. Ess. II, 386. 388. 411. 476. Reinaud, Mém. sur l'Inde 332. Ueber ein späteres Machwerk unter demselben Namen s. Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 47. fg. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*, No. 796.

रोमकाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* der Astronomie Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,3; vgl. 2. रोमक 2).

रोमकायण m. N. pr. eines Autors Bṛhadd. 3,10 in Ind. St. 1,105.

रोमकूप (1. रोमन् + कूप) m. n. *Haargrübchen, Pore der Haut* MBh. 3,12968. भवतां रोमकूपाणि (so die ed. Bomb.) प्रहृष्टान्युपलक्षये so v. a. *ich bemerke, dass eure Härchen am Körper sich sträuben*, 4,1464. 6, 5213. 12,10308. 13,1380. 4127. 14,1738. Hariv. 14270. R. 1,55,3 (56, 3 Gorr.). 56,18 (57,17 Gorr.). Mârk. P. 82,23. Pańkar. 2,2,96. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,30. Suçr. 1,64,6. 116,2. 295,6. 365,2. 2,138,13. वर्त्म° 1,36,6. स्तब्धरोमकूपता 49,1. — Vgl. लोमकूप.

रोमकेसर n. *der als Fliegenwedel gebrauchte Schweif des Bos grunniens* ÇKDr. u. Wilson angeblich nach Trik.; hier heisst es aber 2,8,31: चामरं रोमगुत्सं च केशरं चावचूलकम्.

रोमगर्त m. = रोमकूप. °गर्तेषु सूकरस्य Bhâg. P. 3,13,33.

रोमगुच्छ m. = रोमगुत्स H. 717. Hâr. 172.

रोमगुत्स (1. रोमन् + गु°) n. *der als Fliegenwedel gebrauchte Schweif des Bos grunniens* Trik. 2,8,31.

रोमण्वन्त् (von 1. रोमन्) adj. *behaart, haarig* ṚV. 9,112,4. — Vgl. रोमवन्त्.

रोमत्यज् adj. *das Haar verlierend*, von einem Pferde Varâh. Bṛh. S. 93,11.

1. रोमन् n. Uṇâdis. 4,150. = लोमन् Kâç. zu P. 8,2,18. *Haar am Körper der Menschen und Thiere* (in der Regel mit Ausschluss der langen Kopf- und Barthaare, der Mähne und des Schweifes) AK. 2,6,2,50. 3,12. H. 619. 630. Halâj. 2,369. 394. रोमाण्यवयां ṚV. 1,135,6. 9,62,8. 75,4. 97,11. Çâṅkh. Çr. 4,14,4. 18,24,19. Gṛhj. 1,24. Ait. Br. 2,9. Khând. Up. 8, 13,1. रोमाणि रहस्यानि M. 4,144. 221. पशुरोमाणि 5,38. (ऋषेः) नाग्निर्दहति रोमापि 8,116. ततो रोमाणि मे ऽहृषन् MBh. 2,1925. मयूरसमरोमभिः। हयैः 3,12065. दीर्घरोमधर R. Gorr. 2,28,24. 3,49,3. 4. 74,15. Suçr. 1,5,1. 17,9. 2,13,10. fgg. Ragh. 1,83. Spr. 1035. Varâh. Bṛh. S. 57,7. 61,11. 67,6. 68,4. 69,13. 70,2. Bhâg. P. 2,6,4. 3,13,34. 22,29. 5,26,14. 8,7,28. केशवालरोमाणि (वाजिनः) Cit. beim Schol. zu Çâk. 6,5. रोमोत्पाटन Verz. d. B. H. No. 958. हृष्टरोमन् adj. Trik. 3,1,21. R. Gorr. 1,22,1. 52,1. Bhâg. P. 4,24,22 (von Pflanzen). Vet. in LA. (III) 3,22. हृष्टरोमणी Varâh. Bṛh. S. 92,3. प्रहृष्टरोमन् adj. R. 3,65,19. Bhâg. P. 3,13,5. संहृष्टरोमाङ्ग R. 3,55,5. सुवर्णरोमयूथ Pañkat. 35,1. *Gefieder* der Vögel R. 4,59,19. रोमा पृथिव्याः ṚV. 1,65,8. — Vgl. ऊर्ध्व°, दीर्घ°, नेत्र°, पृथु° (*breithaarig* d. i. *schuppig* von Fischen), बभ्रु°, मयूर°, महा°, स्वर्ण°, ह्रस्व°.

2. रोमन् m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,363 (VP. 192). ed. Bomb. liest: वनायवो दशापार्श्वा रोमाणः. — Vgl. 2. रोमक 1) *a*).

रोमन्थ m. AK. 3,6,2,19. *das Wiederkäuen:* उद्गीर्णस्य वा ग्रवगीर्णस्य वा मन्थो रोमन्थः Pat. zu P. 3,1,15. रोमन्थं वर्तयू P. 3,1,15. Ragh. 1, 52. मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु Çâk. 39. गो° Varâh. Bṛh. S. 48,11. Çiç. 5, 62. TBr. Comm. 1,193,12. *das Kauen des Betels damit verglichen* Râga-Tar. 5,364. *Wiederkäuen so v. a. oftmaliges Wiederholen:* स्वविक्रमकथास्तोत्र° 351. Nach den Erklärern zu P. 3,1,15 soll कीटो रोमन्थं वर्तयति bedeuten ग्रपानप्रदेशान्निःसृतं द्रव्यम् (= रोमन्थम्) ग्रभ्राति oder वर्तुलं करोति *seinen Unrath verzehren* oder *Kügelchen daraus drehen.*

रोमन्थाय्, °यते *wiederkäuen* P. 3,1,15. Vop. 21,12.

रोमपाद m. N. pr. zweier Fürsten VP. 442. 445. Bhâg. P. 9,23,7. 10. — Vgl. लोमपाद.

रोमपुलक m. = पुलक 1) *b*) = रोमहर्ष Bhâg. P. 5,17,2. Kaurap. 35.

रोमफला f. = रोमशफल Nigh. Pr.

रोमबद्ध adj. *aus Haar gewebt* Jâgn. 2,180. v. l. रोमबन्ध m. *Haargewebe.*

रोमभूमि f. *die Stätte der Haare* d. i. *die Haut* Râgan. im ÇKDr.

रोममूर्धन् adj. *Härchen auf dem Kopfe habend, auf dem Kopfe behaart;* von Insecten Suçr. 2,310,5.

रोमरतासार m. *Bauch* H. ç. 125. scheint fehlerhaft zu sein.

रोमराजि und °राजी f. *Haarreihe, Haarlinie, Haarstreifen:* pl. bei einer Gazelle R. 3,49,33. sg. am Leibe des Menschen, insbes. des Weibes oberhalb des Nabels, ein Zeichen der Pubertät, Suçr. 1,44,18. 321,18. 356,16. 2,90,4. R. 3,52,32 (wo रोमराज्या zu schreiben ist). 5,21,19. Kumâras. 1,38. Ṛt. 2,26. Kaurap. 1. Pañkar. 3,5,12. 23. रोमराजिपथ so v. a. *Taille* Çiç. 9,22.

रोमलता f. *die Haarlinie oberhalb des Nabels* (beim Weibe) H. 606.

रोमलतिका f. dass. Sâh. D. 40,5.

रोमवन्त् (von 1. रोमन्) adj. *behaart* Suçr. 2,13,12. चतुर्थर्थेषु gaṇa मधादि zu P. 4,2,86 (vgl. 67—70). — Vgl. मृदु° und रोमण्वन्त्.

रोमवाहिन् adj. *Haar abschneidend, haarscharf;* von einem Messer Vâgbh. 26,1.

रोमविकार m. *Veränderung in der Lage der Härchen am Körper, das Sträuben der Härchen* H. 305. Halâj. 3,29.

रोमविक्रिया f. dass. Sâh. D. 167. Pratâpar. 50,*b*,7. Kumâras. 5,10.

रोमविध्वंस m. *Laus* Wilson.

रोमविवर n. = रोमकूप Bhâg. P. 10,14,11.

रोमवेध m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 941.

रोमश (von 1. रोमन्) 1) adj. (f. ग्रा) *stark behaart* (am Körper), *haarig* gaṇa लोमादि zu P. 5,2,100. Vop. 7,32. fg. सर्वाहमस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका ṚV. 1,126,7. ऊर्ध्वः 8,31,9. 80,6. Çâṅkh. Br. 14,3. M. 3,7. MBh. 2,1850. Suçr. 1,159,19. 2,293,4. 510,5. Varâh. Bṛh. S. 68, 35. 59. 70,17. ग्र° 68,32. 70,5. 8. पृष्ठे च रोमशं चर्म (मार्जारस्य) Kathâs. 65,162. हरिणाजिन 167. खररोमत्वच् (सूकर) Bhâg. P. 3,13,27. von Pflanzen Suçr. 2,171,8. महा° *sehr stark behaart* 1,124,12. — 2) m. *a*) *Widder, Schaf* Trik. 2,9,23. H. 1276. Hâr. 80. — *b*) *Eber* — *c*) *ein best. Knollengewächs* (पिण्डालु) und = कुम्भी Râgan. im ÇKDr. — *d*) = डुण्डुल Hâr. 136. — *e*) N. pr. eines Ṛshi Bhâg. P. 6,15,14. eines Astronomen Verz. d. B. H. No. 862. Ind. St. 2,247; vgl. 2. रोमक 1) *b*). — 3) f. ग्रा *a*) *Cucumis utilissimus Roxb.* Trik. 2,4,36. = दुग्धावृत्त Râgan. im ÇKDr. — *b*) N. pr. der angeblichen Liedverfasserin von ṚV. 1,126,7; vgl. oben u. 1) und Bṛhadd. 2,17 in Ind. St. 1,114. — 4) n. so v. a. *pudenda* ṚV. 10,86,16. — Vgl. लोमश.

रोमशफल m. *eine best. Pflanze,* = डिण्डिश Râgan. im ÇKDr.

रोमशुक n. *ein best. Parfum,* = स्थौणेयक Bhâvapr. im ÇKDr.

रोमहर्ष m. *das Sträuben der Härchen des Körpers, Rieseln der Haut* (vor Kälte, Furcht, Freude, Geilheit) Halâj. 3,29. Bhag. 1,29. MBh. 4, 1240. 2249. 13,934. R. 7,26,30. 36,24. Suçr. 1,252,15. 256,1. 267,17. Râga-Tar. 3,41. Bhâg. P. 11,14,23.

रोमहर्षण 1) adj. *Haarsträuben verursachend* d. i. *Grauen* oder *grosse Freude erregend* Bhag. 18,74. MBh. 1,312. Hariv. 3107. R. 1,30,17. 62,16. 2,42,20. 112,1. 3,32,3. 6,102,17. Bhâg. P. 8,10,5. 9,6,17. — 2) m. *a*) *Terminalia Bellerica*, deren Nüsse als (*Grauen erregende*) Würfel gebraucht werden, H. an. 5,16. Med. ṇ. 116. — *b*) Bein. Sûta's, des Erzählers der Purâṇa, Med. VP. 283. Muir, ST. III, 21. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*, No. 43. 82,*a*, No. 138. Bhâg. P. 10,78,22. Verz. d. B. H. 13, 6 (°नन्दन). Bhâg. P. I, Einl. xxxvii. fg. auch der Vater Sûta's so genannt Bhâg. P. 1,4,22; vgl रोमहर्षणि. — 3) n. = रोमहर्ष H. 305. H.

an. Med. — Vgl. लोमहर्षण.

रोमहर्षणि Verz. d. Oxf. H. 9, *b*, 26. 59, *a*, 36 und °हर्षिणि 9, *b*, 13 fehlerhaft für रोमहर्षण.

रोमहर्षित (von रोमहर्ष) adj. *bei dem die Härchen am Körper sich sträuben* Padma-P. 16, 144. so ist wohl st. रमहर्षित zu lesen; aber dann muss auch सर्वदा st. सर्वत्र gelesen werden, da सर्वत्र रोमहर्षिता: das Versmaass stören würde.

रोमाञ्च् (von रोमाञ्च), °ञ्चति *ein Rieseln der Haut empfinden* Gît. 4, 19.

रोमाञ्च m. = रोमहर्ष AK. 1, 1, 2, 35. H. 305. Halâj. 3, 29. gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. हर्षाद्भुतभयादिभ्यो रोमाञ्चो रोमविक्रिया Sâh. D. 167. Pratâpar. 50, *b*, 7. रोमाञ्चोद्गतमानस Hariv. 9432. Suçr. 2, 288, 20. Ragh. 6, 81. तनू रोमाञ्चमालम्बते Spr. 2083. तनोति रोमाञ्चम् (हैमनः पवनः) *bewirkt ein Rieseln der Haut* 2990. Varâh. Bṛh. S. 90, 10. Daçak. 4, 5. 43. रोमाञ्चेनेव कीलितः Kathâs. 10, 207. गाढरोमाञ्चचर्चिता 14, 28. बिभर्ति — गात्रे रोमाञ्चकञ्चुकम् 90, 165. Spr. 3274. उदञ्चद्रोमाञ्च Sâh. D. 63, 15. Brahma-P. in LA. (III) 58, 5. °वीचि Kaurap. 44. Prab. 57, 6. सरोमाञ्चम् adv. 58, 7. सरोमाञ्चा Kathâs. 100, 9.

रोमाञ्चकिन् m. N. pr. eines Schlangendämons Vjâḍi beim Schol. zu H. 1311.

रोमाञ्चिका f. *eine best. Pflanze*, = रुदन्ती Râǵan. im ÇKDr.

रोमाञ्चित (von रोमाञ्च) adj. *emporgerichtete Härchen habend, ein Rieseln empfindend* gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. Trik. 3, 1, 21. Hariv. 8735. Mṛkkh. 91, 17. Spr. 962. Uttarar. 63, 6 (81, 4). Râǵa-Tar. 1, 302. 4, 297. Mârk. P. 100, 20. Pańkat. 128, 21. ऊर्ध्वरोमाञ्चिततनु R. 6, 37, 28.

रोमान्त m. *die Haarseite* d. i. *die obere Seite der Hand* Âçv. Gṛhj. 1, 7, 5.

रोमाली f. *Härchenreihe* (oberhalb des Nabels; vgl. रोमराजि); = वयःसंधि wohl *Pubertät* Çabdam. im ÇKDr.

रोमालु m. *ein best. Knollengewächs*, = पिण्डालु Râǵan. im ÇKDr.

रोमालुविटपिन् m. *eine best. Pflanze*, = कुम्भी Râǵan. im ÇKDr.

रोमावली f. *Härchenreihe* (oberhalb des Nabels) H. 606. Spr. 472. 2878. Dhûrtas. in LA. 83, 8. — Vgl. रोमराजि.

रोमाश्रयफला f. *ein best. Strauch*, = किङ्किरिष्टा Râǵan. im ÇKDr.

रोमोद्गति f. = रोमहर्ष Veṇîsaṃh. Einl. in Verz. d. Oxf. H. 145, *b*, No. 306.

रोमोद्गम f. dass. H. 306. an. 5, 16. Halâj. 3, 29. Kumâras. 7, 77. Pańkat. 3, 5, 24. am Ende eines adj. comp. f. आ Spr. 830. LA. 11, 12. 83, 2. व्यक्तरोमोद्गमत्व n. Mâlav. 59.

रोमोद्भेद m. dass. Trik. 1, 1, 131. Prab. 11, 16.

रोरवण (vom intens. von 1. रु) n. *heftiges Brüllen* Nir. 13, 7.

रोरुक N. pr. eines Landes oder einer Stadt Burn. Intr. 145. 340. Schiefner, Lebensb. 235 (5). 274 (44).

रोरुदा (vom intens. von रुद्) f. *heftiges Weinen*; davon adj. °वत् *heftig weinend* Bhaṭṭ. 3, 32.

रोरूय nom. ag. vom intens. von 1. रु Vop. 26, 29.

रोल 1) m. *a) Flacourtia cataphracta Roxb.* Çabdak. im ÇKDr. — *b) frischer Ingwer* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) f. आ *ein best. Metrum*, = लोला Colebr. Misc. Ess. II, 90. 92. 156 (III, 10).

रोलदेव m. N. pr. eines Malers Kathâs. 55, 37.

रोलम्ब m. *Biene* Trik. 2, 5, 35. H. 1212. Spr. 2668. Sâh. D. 77, 1. 79, 13. Pańkar. 3, 5, 8. Daçak. 2, 10.

रोलिचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 280, *b*, 10.

रोशंसा f. *wish, desire* Wilson nach Çabdârthak. रोसंसा in der zweiten Ausg., aber vor रोष stehend, also wohl nur Drückfehler. Beide Formen sind offenbar falsch.

रोष् (nom. रोट्) nom. ag. von 1. रुष् P. 3, 2, 75, Sch. Vop. 26, 69. nach Durgâd. im ÇKDr. = हिंस्र, वधक.

रोष (von 1. रुष्) m. *Zorn, Wuth* AK. 1, 1, 2, 26. H. 299. Halâj. 2, 207. MBh. 1, 6030. R. 2, 78, 24. Vikr. 144. Spr. 1965. 2109. Râǵa-Tar. 3, 282. Bhâg. P. 4, 6, 46. LA. (III) 90, 3. Pratâpar. 50, *b*, 7. Pańkat. 174, 25. ईर्ष्यारोषौ R. 2, 27, 8. प्रच्छाद्य रागरोषौ Spr. 1314. तीव्ररोषसमाविष्टा MBh. 3, 2397. रोषेण महताविष्टः R. 2, 74, 1. R. Gorr. 1, 68, 20. °परीत R. Schl. 2, 96, 50. रोषाकुलितेन चेतसा Hariv. 7039. °ताम्राक्ष MBh. 3, 3046. R. 2, 78, 16. रोषात्प्रस्फुरमाणोष्ठी R. Gorr. 2, 30, 1. °वृत्त Daçak. 2, 9. °दृष्टि Bhâg. P. 2, 7, 7. °विभ्रम 9, 10, 13. °भाषण Daçak. 1, 41. रोषोक्ति H. 1542. रोषमाहारयत्तीव्रम् R. 1, 60, 19. रोषं कर्तुम् MBh. 12, 12769. रोषं समुत्थं शमयन् Bhâg. P. 3, 17, 29. जात° adj. R. 1, 1, 4. मा रोषं कुरु तां प्रति 2, 112, 27. MBh. 1, 1267. तत्र° *Zorn gegen* R. 1, 75, 6. Hariv. 7041. Râǵa-Tar. 6, 110. Am Ende eines adj. comp. f. आ Schol. zu Kâvjâd. 2, 154. — Vgl. दीर्घ°, वि°, स°.

रोषण (wie eben) 1) adj. *zornig, leicht in Wuth gerathend* P. 3, 2, 151, Sch. H. 391. an. 3, 221. Med. ṇ. 73. fg. Halâj. 2, 206. MBh. 3, 10331. 5, 2035. R. 6, 2, 31. Mârk. P. 112, 15. सर्वभूतानाम् *gegen alle Wesen* MBh. 13, 7417. क्षत्रिय° *aufgebracht gegen* Hariv. 5304. अ° MBh. 5, 1403. 9, 3363. 12, 12770. अति° 13868 (°रोषण voc. ed. Bomb.). 14, 2891. — 2) m. *a) Probirstein.* — *b) Quecksilber* H. an. Med. — *c) salzhaltiger Boden* H. an. — *d) Grewia asiatica* Ratnâv. in Nigh. Pr. — Vgl. चण्डमहारोषणतन्त्र, सु°.

रोषणता (von रोषण) f. *Geneigtheit zum Zorn, Leidenschaftlichkeit* Çâk. 93.

रोषमय (wie eben) adj. *aus Zorn —, aus Wuth hervorgegangen*: सुक्रुद्धः सर्पपतयस्तीव्रं रोषमयं विषम् Hariv. 2484. तमस् Bhâg. P. 9, 8, 12.

रोषाक्षेप m. in der Rhetorik *eine durch Zorn an den Tag gelegte Erklärung, dass man mit Etwas nicht einverstanden sei*, Kâvjâd. 2, 154. Beispiel Spr. 4590.

रोषावरोह m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe gegen die Asura Kathâs. 48, 17.

रोषिन् (von 1. रुष्) adj. *zornig, wüthend* Hariv. 11935. रोचिभिः (= विषयवासनाज्वालाभिः Nilak.) st. रोषिभिः die neuere Ausg.

रोष्टर् (wie eben) nom. ag. dass. Bhaṭṭ. 9, 31.

रोह (von 1. रुह्) gaṇa ज्वलादि zu P. 3, 1, 140 (oxyt.). 1) adj. *hinaufsteigend*: °शिखिन् Spr. 2486. *reitend auf*: हस्त्यश्व° R. 2, 91, 58 (हस्त्यश्वारोह ed. Bomb.). Kathâs. 10, 118. — 2) m. *a)* parox. *Erhebung, Höhe; das Aufsteigen* z. B. von einer kleineren Zahl zu einer grösseren; Gegens. प्रत्यवरोह. रोहान्रुरुहुः AV. 4, 14, 1. 13, 1, 13. VS. 13, 51. TS. 5, 5, 2, 7. TBr. 1, 1, 2, 2. स्वर्गस्य लोकस्य Ait. Br. 3, 19. Çat. Br. 6, 7, 2, 4. 8, 3, 4, 9. Pańkav. Br. 7, 7, 6. पर्याय° Lâṭj. 6, 6, 5. 10, 20, 16. Çâṅkh. Çr. 15, 2, 15. 4, 3. एषां लोकानां रोहेण सवनानां रोह आम्नातो रोहात्प्रत्यव-

रोहश्चिकीर्षितः Nir. 7,23. — b) *das Aufgehen* (eines Samenkorns), *Wachsen:* न तस्य बीजं रोहति रोहकाले MBh. 5,386. बीजं चैकं रोहसहस्रमेति *geht tausendfältig auf* 12,4389. — c) *Spross, Schoss* H. 1118. — Vgl. दू°, भस्मरोहा, मांसरोही unter मांसरोहिणी.

रोहक (wie eben) nom. ag. = रोढर् (वोढर् ÇKDr.) Med. k. 149. 1) *Reiter* MBh. 8,1486. Vgl. कटि°. — 2) *wachsend;* s. ग्राव°. — 3) m. Bez. *einer Art von Gespenstern* Med.

रोहग m. N. pr. eines Berges Wilson nach Gaṭâdh., रोहण ÇKDr. nach ders. Aut.

रोहण (von 1. रुह्) 1) m. N. pr. eines Berges, der Adamspik auf Ceylon Gaṭâdh. im ÇKDr. Râǵa-Tar. 3,72. रोहणं सूक्तिरत्नानां वन्दे वृन्दं विपश्चिताम् Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,22. गुरुं वन्दे जगद्वन्द्यं गुणरत्नैकरोहणम् (so ist zu lesen) 187,*b*, No. 428, Çl. 4. Çatr. 10,167. fg. °पर्वत 136. रोहणाचललाभे रत्नसंपद् इव (संपन्नाः) Sarvadarçanas. 92,6. — 2) f. ई *Mittel zum Verheilen* AV. 4,12,1. — 3) n. a) *Mittel zum Ersteigen:* दिवः RV. 1,52,9. — b) *das Besteigen, Betreten, Reiten, Sitzen, Stehen auf:* खरोष्ट्रयानहस्त्यश्वनौवृक्षगिरिरोहणे Jâǵn. 1,151. — c) *das Anlegen, Befestigen:* ज्या° *der Sehne* Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 213, Çl. 3. — d) *das Verwachsen, Heilen:* क्षत° MBh. 13,5189. — e) *das Hervorgehen, Entstehen:* गुणरत्नरोहणभुवः Sâh. D. 221,1. — f) *der männliche Same* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. दू°, पाद°.

रोहणद्रुम m. *Sandelbaum* H. 641. Halâj. 2,389. — Vgl. रौहिण.

रोहन्त m. und रोहन्ती f. (von 1. रुह्) Uṇâdis. 3,127. m. *ein best. Baum* Uǵǵval. *Baum* überh. Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. f. ई *eine best. Schlingpflanze* Uṇâdik. im ÇKDr. *Schlingpflanze* überh. Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ebend.

रोहस् (wie eben) n. *Erhebung, Höhe:* दिवः RV. 6,71,6. Çâṅkh. Çr. 8,25,13.

रोहसेन m. N. pr. eines Mannes Mṛkkh. 22,24. 150,6. 166,4.

रोहाय्, °यते denom. von रोहन्त्, partic. praes. von 1. रुह्, gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12.

रोहि Uṇâdis. 4,118. m. *eine Art Gazelle* (vgl. रोही, रोहित्): महारोहीन् R. ed. Bomb. 3,68,32. रोहिमांस 33 (R. Gorr. 73,39). R. Gorr. 5,36,35. = व्रतिन् Uǵǵval. *Same* und *Baum* Uṇâdik. im ÇKDr.

रोहिण Uṇâdis. 2,55. 1) adj. *unter dem Sternbilde* Rohiṇî *geboren* P. 4,3,37, Sch. unter den Beiww. Vishṇu's Hariv. 14120. — 2) m. a) N. pr. eines Mannes gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. pl. *seine Nachkommen* Âçv. Çr. 12,14. — b) Bez. *verschiedener Pflanzen:* = भूतृण, वट und रोहितक Râǵan. im ÇKDr. — Mâlatim. 78,13. 132,16. — 3) n. Bez. *des 9ten* Muhûrta *des Tages* Uṇâdik. im ÇKDr. — Vgl. रौहिण.

रोहिणि f. = रोहिणी als N. eines Nakshatra Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 107,4.

रोहिणिका (von रोहिणी) f. 1) *ein roth aussehendes Frauenzimmer* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) *Halsentzündung* (vgl. रोहिणी) Çârṅg. Saṁh. 1,7, 79. — Vgl. कटु°.

रोहिणित्व n. ved. = रोहिणीत्व P. 6,3,64, Sch. TBr. 1,1,10,6.

रोहिणिनन्दन m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. Balarâma MBh. 7,8222 (रौ° ed. Calc.).

रोहिणिपुत्र m. *der Sohn der* Rohiṇî als N. pr. P. 6,3,63.

रोहिणिषेण und °सेन (रोहिणी als N. eines Nakshatra + सेना) m. N. pr. P. 8,3,100, Sch. — Vgl. रोहिणीषेण.

रोहिणी s. u. रोहित und रोहिन्.

रोहिणीकान्त m. *der Geliebte der* Rohiṇî, Bein. *des Mondes* Weber, Kṛshṇaǵ. 296.

रोहिणीचन्द्रव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,7.

रोहिणीचन्द्रशयन n. desgl. ebend. 40,*b*,40.

रोहिणीतनय m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. Balarâma Weber, Râmat. Up. 340.

रोहिणीतपस् Titel einer Schrift, Wilson, Sel. Works I, 283.

रोहिणीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,10.

रोहिणीत्व n. nom. abstr. von रोहिणी (als N. eines Nakshatra) P. 6,3,64, Sch. Çat. Br. 2,1,2,6.

रोहिणीपति m. *der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Trik. 1,1,86. H. 104.

रोहिणीप्रिय m. *der Geliebte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Ind. St. 2,261.

रोहिणीभव m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. *der Planet Mercur* Ind. St. 2,261.

रोहिणीयोग m. *die Conjunction des Mondes mit dem* Nakshatra Rohiṇî Varâh. Bṛh. S. 25,1. vollständiger चन्द्र° Vikr. 38,12.

रोहिणीरमण m. 1) *der Gatte der Kuh* d. i. *der Stier* Râǵan. im ÇKDr. — 2) *der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Gît. 3,10.

रोहिणीवल्लभ m. *der Geliebte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* Halâj. 1,42.

रोहिणीव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,23. Weber, Kṛshṇaǵ. 234.

रोहिणीश m. *der Herr —, der Gatte der* Rohiṇî d. i. *der Mond* H. 104, Sch. Hâr. 13.

रोहिणीषेण m. N. pr. gaṇa सुषामादि zu P. 8,3,98. — Vgl. रोहिणिषेण.

रोहिणीसुत m. *der Sohn der* Rohiṇî d. i. *der Planet Mercur* H. 117.

रोहिणेय Trik. 3,3.319 fehlerhaft für रौहिणेय.

रोहिण्यष्टमी f. *der achte Tag in der schwarzen Hälfte des* Bhâdra, *wenn der Mond in Conjunction mit dem* Nakshatra Rohiṇî *steht,* ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,44.

रोहित् Uṇâdis. 1,99. 1) f. a) *eine rothe Stute* RV. 1,14,12. 100,16. 5,56,5. 7,42,2. — b) *das Weibchen einer Gazelle* Med. t. 147. Uǵǵval. VS. 24,30. 37. TS. 6,1,6,5. तामृश्यो भूत्वा रोहितं भूतामभ्यैत् (nach Sâj. so v. a. ऋतुमतीम्) Ait. Br. 3,33. AV. 4,4,7. रोहिद्भूता Bhâg. P. 3,31, 36. Mahimn. 22 bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,48. 99. — c) pl. Bez. *der Flüsse* Naigh. 1,13. — d) pl. Bez. *der Finger* Naigh. 2,5. — e) *eine best. Schlingpflanze* Med. Uǵǵval. — 2) m. a) *Sonne* Med. — b) *ein best. Fisch,* = रोहित. — 3) adj. *roth* Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. — Vgl. रोहिदश्व und रोहित.

रोहित Uṇâdis. 3,94. 1) adj. f. रोहिता (nicht zu belegen) und रोहिणी *roth, röthlich* P. 4,1,39. Vop. 4,27. AK. 1,1,4,24. Trik. 3,3,136. fg. H. 1395. an. 3,221. fg. Med. n. 74. प्रष्टि RV. 1,39,6. 8,7,28. अत्य 4,2,3. गो AV. 1,22,1. 3. वर्णा 2. 5,23,4. 6,83,2. 12,1,11. 18,4,24. चर्मन् 14,2,23. Kâtj. Çr. 4,8,3. VS. 16,19. 19,83. 24,2. 5. रोहितत्रूपं पशवो भूयिष्ठाः Kâṭh. 24,2. Ait. Br. 3,34. पिपीलिकाः Kauç. 116. Çâṅkh. Çr.

4,14,13. Khând. Up. 3,1,4. 6,4,1. Kûlikop. in Ind. St. 9,15. Varâh. Bṛh. S. 48,44. So wird auch ein Metrum genannt: रोहितं वै नामैतच्छन्दो यत्पारुच्छेपम् Ait. Br. 5,10. सर्व° Çat. Br. 3,5,1,23. — 2) m. a) *ein rothes Ross, Fuchs:* Agni's Naigh. 1,15. Çat. Br. 6,6,3,4. रोहितेन त्वाग्निर्देवतां गमयतु TS. 1,6,4,3. ṚV. 1,94,10. 134,9. 2,10,2. 3,6,6. 4,6,9. 5,61,9. 8,3,22. Pañkav. Br. 14,3,12. Bildlich von *der Sonne* in den Liedern AV. 13,1,1. fgg.; vgl. Kauç. 24. Daher auch Bez. *dieser Lieder* AV. 19,23,23. Kauç. 99. — b) *eine best. Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1294. an. 3,289. Med. t. 146. Varâh. Bṛh. S. 86,26. Uttarar. 91,1 (117,4). lebt am Wasser Suçr. 1,204,10. — c) *ein best. Fisch, Cyprinus Rohita Ham.* AK. 1,2,3,19. Trik. 1,2,16. H. 1346. H. an. Med. Hâr. 188. Halâj. 3,37. M. 5,16. Jâgñ. 1,177. ग्रदद्रोहितान्मत्स्यान्ब्राह्मणेभ्यः (Nîlak.: रोहितान् लोहितभूप्रदेशान् पद्मरागखनिमतो वा मत्स्यान् देशविशेषान्) MBh. 7,2284 = 12,984. R. 3,76,9. Suçr. 1,206,5. 11. Vâgbh. 6,68. ग्रगाधजलसंचारी न गर्वं याति रोहितः Spr. 19. °मत्स्य Varâh. Bṛh. S. 54,15. — d) *ein best. Baum, Andersonia Rohitaka Roxb.* H. an. Med. Suçr. 2,342,2. °वृत्त Varâh. Bṛh. S. 54,72. — e) *ein bes. Perlenschmuck* (हारभेद) H. an. — f) *eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* Varâh. Bṛh. S. 28,16. रोहितेन्द्रधनूंषि M. 1,38. Mârk. P. 48,35; vgl. 4) a). — g) N. pr. α) eines Sohnes des Hariçkandra Ait. Br. 7,14. Çâñkh. Çr. 15,18,8. Hariv. 756. Bhâg. P. 9,7,8. fgg. °गणाः Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,3; vgl. रोहिताश्व. — β) eines Manu Hariv. 469. — γ) eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9184. रोहित ed. Calc. — δ) eines Sohnes des Vapushmant, Fürsten von Çâlmala, Mârk. P. 53,27. — ε) pl. Bez. einer Klasse von Gandharva R. 4,41,60. — ζ) pl. Bez. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu Mârk. P. 94,23. — η) eines Flusses Schiefner, Lebensb. 237 (7). — 3) f. रोहिणी a) proparox. *eine röthliche Kuh* (im Veda vielleicht auch *eine röthliche Stute*) ṚV. 8,82,13. 90,13 (wo wir रोहिण्याः vermuthen). AV. 13,1,22. fg. Çat. Br. 2,1,2,6. 4,5,8,2. TS. 6,1,6,2. Kâtj. Çr. 13,4,15. MBh. 3,13260. 13,3669. 3705. 3716. 3720. 4919. *Kuh* überh. AK. 2,9,67. Trik. 2,9,16. H. 1265. an. 3,221. Med. ṇ. 74. Halâj. 2,113. In der Mythologie eine Tochter der Surabhi und Mutter des *Rindes* MBh. 1,2631. fg. R. 3,20,28. fg. Vâju-P. in VP. 150, N. 19. Mutter der Kâmadhenu Kâlikâ-P. im ÇKDr. — b) proparox. im AV., sonst oxyt. N. eines Nakshatra (und *des damit verbundenen lunaren Tages*); personif. eine Tochter Daksha's und die bevorzugte Gattin des Mondes, gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. Trik. 3,3,136. fg. H. 109. die *Rothe* benannt nach der Farbe des Hauptsternes, des Aldebaran, Journ. of the Am. Or. S. 6,329. AV. 19,7,2. Çat. Br. 2,1,2,6. 7. 11,1,1,7. TS. 2,3,5,1. TBr. 1,1,2,2. 10,6. 2,7,9,4. Ait. Br. 3,33. Âçv. Çr. 2,1,10. Gṛhj. 2,10,3. Weber, Nax. passim; MBh. 1,5767. 2,2019. 3,2676. 16171. 4,258. 9,2015. fgg. 13,3257. Hariv. 3284. 7734. 7955. 12454. 12483. R. 1,1,27. 2,114,3 (125,3 Gorr.). 3,3,11. 55,22. 4,19,30. 5,17,36. 21,9. 31,5. 6,72,43. 59. Çâk. 181. Varâh. Bṛh. S. 6,9. 10. 10,4. 11,54. 12,21. 15,2. 24,12. 28. 31. 36. 26,12. 47,6. 100,1. 102,1. 103,1. Mârk. P. 33,9. 58,10. Vet. in LA. (III) 13,11. Weber, Kṛshṇag. 225. pl. Varâh. Bṛh. S. 8,19. 26,11. 54,123. 98,6. In der Figur des Sternbildes sieht der Inder einen *Karren* Colebr. Misc. Ess. II, 331. रोहिण्याः शकटम् Spr. 2367. Sûrjas. 8,13. रोहिणीशकट Spr. 2649. Varâh. Bṛh. S. 24,30. Pañkat. 50,20. Kuvalaj. 169,b. einen *Tempel* Journ. of the Am. Or. S. 6,329. einen *Fisch* (शकुल) Kâlidâsa im Râtrilagnanirûpaṇa nach ÇKDr. — c) *Blitz* Med. — d) *ein junges Mädchen, das eben die Regeln bekommen hat,* Spr. 282. Gṛhjasaṁgr. 2,28. *ein neunjähriges Mädchen* 29. — e) *Halsentzündung in verschiedenen Formen* H. 467. H. an. Med. Wise 310. Suçr. 1,32,1. 92,13. 306,14. 20. 2,130,14. Çârñg. Saṁh. 1,7,79. — f) Bez. verschiedener Pflanzen: *eine best. Gemüsepflanze* Suçr. 1,74,8. 141,14. 137,16. 2,11,21. = कटुरोहिणी H. an. = कटुंभरा (?) Med. vulgo काएटाशिरीष Ratnam. 162. = सोमवल्क H. an. Med. = काश्मरी, हरीतकी und मञ्जिष्ठा Râgan. im ÇKDr. = कपिलवर्णा वर्तुलाकारा विरेचने प्रशस्ता हरीतकी Râgav. ebend. रोहिणीतरु Kathâs. 59,37. Könnte in dieser Bed. auch als f. von रोहिन् gefasst werden; vgl. ग्रशोक°, कटु°, कटुक°, कन्द°, पीत°, भद्र°, मांस°. — g) N. pr. α) einer Gattin Vasudeva's und Mutter Balarâma's MBh. 1,7308. Hariv. 1947. 1952. 3165. 3305. fgg. 3371. fgg. VP. 498. Bhâg. P. 9,24,44. fg. Weber, Kṛshṇag. 281. 283. fgg. 289. fgg. — β) einer Gattin Kṛshṇa's Hariv. 6701. VP. 578. — γ) der Gattin Mahâdeva's VP. 59. Mârk. P. 52,10. — δ) einer Tochter Hiraṇjakaçipu's MBh. 3,14194. — ε) einer der 16 Vidjâdevî H. 239. — h) adj. oxyt. *unter dem* Nakshatra Rohiṇî *geboren* P. 4,3,34, Vârtt. 1. — 4) n. a) *eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* AK. 1,1,2,12. H. 179. an. 3,289. Med. t. 146. Halâj. 1,57. Varâh. Bṛh. S. 47,20; vgl. 2) f). — b) *Blut.* — c) *Saffran* Med. — Vgl. कर्कन्धु°, धूम्र°, लोहित, रुधिर und रोहित.

रोहितक 1) m. a) N. eines Baumes, *Andersonia Rohitaka Roxb.* AK. 2,4,2,29. Ratnam. 153. Kâtj. Çr. 6,1,9, v. l. Suçr. 2,72,16. — b) pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 3,15256. — c) N. pr. eines Flusses Schiefner, Lebensb. 265 (35). — d) N. eines Stûpa Hiouen-thsang I, 140. hier könnte der Name auch लोहितक lauten. — 2) f. रोहितिका *ein roth aussehendes Frauenzimmer* Gaṭâdh. im ÇKDr. — Vgl. रोहीतक.

रोहितकारण्य n. Rohitaka-*Wald*, N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 5,599.

रोहितकूल N. pr. einer Oertlichkeit Pañkav. Br. 14,3,12.

रोहितकूलीय n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 14,3,11. 15,11,6. Lâṭj. 6,11,4. इन्द्रस्य रोहितकूलीयम् Ind. St. 3,208,b. उत्तरं रो°, रोहितकूलीयाद्य n. und रोहितकूलीयोत्तर n. 232,a.

रोहितगिरि m. N. pr. eines *Gebirges;* davon °गिरीय m. pl. *die Bewohner dieses Gebirges* P. 4,3,91, Sch.

रोहितपुर n. N. der von Rohitaka, dem Sohne Hariçkandra's, gegründeten *Stadt* Hariv. 756.

रोहितवत् adj. *ein rothes Ross habend* Lâṭj. 1,4,4.

रोहितवस्तु N. pr. einer Oertlichkeit Lalit. 380.

रोहिताक्ष adj. *rothäugig* R. 5,14,4.

रोहिताञ्जि adj. *rothscheckig* VS. 29,59.

रोहितायन m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,10. wohl fehlerhaft für रौ° oder रौहिणायनाः.

रोहिताश्व 1) adj. *rothe Rosse habend.* — 2) m. a) *der Gott des Feuers,*

Feuer AK. 1,1,1,50. H. 1099. Med. v. 63. Halâj. 1,64. — b) N. pr. eines Sohnes des Hariçkandra Med. VP. 373; vgl. रोहित 2) g) α). — Vgl. रोहिदश्व.

रोहितास्य Mârk. P. 8,58 wohl fehlerhaft für रोहिताश्व 2) b).

रोहितेय m. = रोहितक 1) a) Ratnak. bei Bhar. zu AK. ÇKDr.

रोहितैत adj. *rothbunt* TS. 7,3,17,1. — Vgl. लोहितैत.

रोहिदश्व adj. *mit rothen Stuten fahrend:* Agni ṚV. 1,45,2. 4,1,8. 8,43,16. 10,7,4 (wo voc. zu vermuthen ist). 98,9. VS. 11,72. — Vgl. रौहिदश्व.

रोहिन् (von 1. रुह्) 1) adj. *aufgehend* Nir. 6,17. *in die Höhe geschossen, lang:* नैव ह्रस्वा न महती न कृशा नापि रोहिणी (नातिरो° ed. Bomb., = नातिरक्ता Nilak.) MBh. 2,2173. *wachsend:* अकृष्ट° Ragh. 14,77. नगेन्द्रवन° R. 5,5,20. *wachsend* so v. a. *an Zahl zunehmend* Ind. St. 8,107. 113. fg. — 2) m. N. verschiedener Bäume: *Andersonia Rohitaka Roxb.* AK. 2,4,2,29. H. an. 2,282. Med. n. 118. *der indische Feigenbaum* (वट) und *Ficus religiosa* H. an. Med. — 3) f. hierher vielleicht die u. रोहित 3) f) verzeichneten Pflanzennamen. — Vgl. आगत°, निपत्यरोहिणी (wohl *fallend und wieder steigend* als N. einer Pflanze).

रोहिष् f. = रोहित् 1) b) Abhinanda bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,48. = रौहिष Colebr. und Lois. zu AK. 2,5,10; vgl. रौहिष्.

रोहिष m. 1) *eine best. Grasart* H. 1191, v. l. H. an. 3,742 (= कत्तृण). Suçr. 2,207, 6. 379,12. = पूतीका: Schol. zu Kâtj. Çr. 1087, 5. — — 2) *ein best. Fisch.* — 3) *eine Gazellenart* H. an. — Vgl. रौहिष und दीर्घरोहिषक.

रोहिष्यै ved. infin. von 1. रुह् *zum Wachsthum* P. 3,4,10. TS. 1,3,10,2. ist dat. eines nom. act. रोहिषी oder रोहिषि; vgl. अव्यथिष्यै.

रोही f. 1) = रोहित् *das Weibchen einer Gazelle* MBh. 3,16172. रौही (= हरिणी Nilak.) ed. Bomb.; vgl. रोहि. — 2) N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184).

रोहीतक 1) m. = रोहितक *Andersonia Rohitaka Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 54,68. 79. 84. — 2) n. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 2,1186. nach Nilak. N. pr. eines Berges. N. pr. eines festen Platzes an der Grenze von Multan: قلعة روهيتك بالقرب من حدود المولتان Albyrouny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 370. — Vgl. रौहीत, रौहीतक.

रौक्म (von रुक्म) adj. (f. ई) *golden, mit Gold verziert* M. 4,36. MBh. 5,3045. 7,76. 13,6361. 14,2093. Hariv. 7893. R. 5,14,42. 7,16,2. Râǵa-Tar. 8,3469. Bhâg. P. 4,9,61. 10,1,30.

रौक्मिणेय m. metron. von रुक्मिणी gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. Bez. Pradjumna's MBh. 1,6997. 7914. 2,129. 5,1881. 7,4260. 13,616. 7407. 16,157. Hariv. 6718.

रौक्षक m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 61,4.

रौक्षायण m. desgl.; pl. ebend. 60,33.

रौक्ष्य (von रूक्ष) n. *Dürre, Trockenheit, Magerkeit* Jâǵn. 3,76. Suçr. 1,20,18. 117,20. 148,19. 154,12. 14. 2,14,10. *Rauhheit, Härte* in übertr. Bed.: विप्रस्य MBh. 13,1625 (रौक्ष्म ed. Calc.). प्रतिषेध° Ragh. 5,58. भर्तृनिदेश° 14,58. रौक्ष्य: bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,66 wohl fehlerhaft für रूक्ष्य: nom. pl. fem.

रौचनिक adj. (f. ई) *mit* Rokanâ *gefärbt, die Farbe der* R. *habend* P. 4,2,2. रुच् Kir. 5,45.

रौच्य 1) m. a) *ein Stab aus* Bilva-*Holz* H. 815 (nach dem Comm. von रुच्य = बिल्व). — b) patron. (von रुचि) des 13ten Manu Hariv. 410. 490. VP. 269. Mârk. P. 53, 8 (pl.!). 94,27. 97,20. 98,7. des 9ten VP. 268, N. 1. — 2) adj. von 1) b): मन्वन्तर Mârk. P. 100,39.

रौट्, रौटति = रोड् Vop. in Dhâtup. 9,72.

रौड्, रौडति (अनादरे) Dhâtup. 9,72.

रौढीय (wohl von रूढि) m. pl. N. einer grammatischen Schule: पाणिनीय° Siddh. K. 235,b,1 v. u. — Vgl. घृत°.

रौद्र und रौद्र (VS. Çat. Br.) 1) adj. (f. आ und ई) *dem* oder *den* Rudra *gehörig* u. s. w., Rudra-*ähnlich, ungestüm, wild, furchtbar* AK. 1,1,2,20. = भीष्म (भीषण) und तीव्र H. an. 2,450. Med. r. 81. Agni ṚV. 10,3,1. die Açvin (heissen auch रुद्र) 61,15. ब्रह्मन् 1. अनीक VS. 5,34. TS. 2,1,2,2. Çat. Br. 5,2,4,11. पशव: 6,3,2,7. कर्मन् 9,1,1,15. 42. ऋच् Çâṅkh. Çr. 14,57,13. Kâtj. Çr. 5,10,2. अस्त्र *von* Rudra *kommend* MBh. 3,11985. 12238. 12240. R. 1,56,6 (57,5 Gorr.). Kathâs. 50,56. चक्षुस् MBh. 4,472. R. 1,25,12. मातर: MBh. 9,2654. बलि Rudra *geltend* R. 2,56,27. सूक्त *an* R. *gerichtet* Sâj. zu ṚV. 1,114,6. नदी *nach* R. *benannt* Verz. d. Oxf. H. 65,a,2. शक्ति 25,a, N. 5. 81,a,41. 104,b,12. 184,a,9. अरण्यराज् *furchtbar* MBh. 3,2420. शूर्पणखा 15900. 16139. 5,1495. 12,10308. 14,210. R. 1,14,33. 35,18. 2,25,15. 3,50,28. 73,1. 36. 4,5,20. 6,8,16. 108,35. Spr. 168. Kathâs. 18,96. 61,59. Mârk. P. 45,19. Pańkar. 1,14,29. Pańkat. 216,9. कर्मन् MBh. 10,305. 13,3067. Spr. 2769. Pańkat. III, 141. MBh. 3,14271. fg. 14275. क्षत्रियधर्म 4,1850. संध्या 5,326. नदी 7,502. Hariv. 9336. यातना MBh. 13,6675. रूप R. 1,56,17. R. Gorr. 1,3,28. बुद्धि 3,13,20. श्मशान Spr. 805. रण Varâh. Bṛh. S. 46,19. 23. Pańkar. 1,6,60. Verz. d. Oxf. H. 76,b, No. 124. Prab. 74,5. कालस्य गति: Bhâg. P. 1,14,3. °दंष्ट्र 6,9,16. Sâh. D. 76,2. मुहूर्त Weber, Ǵjot. 27. MBh. 1,6028. 3,14268. Verz. d. B. H. No. 912. तारा so v. a. *Unglück verheissend, — bringend* R. 3,35,52. Varâh. Bṛh. S. 86,16. als रस in poetischen Compositionen AK. 1,1,2,17. H. 294. H. an. Med. Halâj. 1,92. R. 1,4,7 (3,46 Gorr.). Sâh. D. 232. Pratâpar. 10,a,8. 59,a,9. 60,a,5. Verz. d. Oxf. H. 123,a,24. रौद्रम् adv. *auf eine furchtbare Weise:* अतीव हसते रौद्रम् MBh. 13,749. — 2) m. patron. *ein Sprössling* Rudra's MBh. 1,5431. 3,14632. — 3) m. *Verehrer des* Rudra Verz. d. Oxf. H. 248,a,7. Wilson, Sel. Works I, 17. — 4) adj. in Verbindung mit गण oder subst. m. pl. Bez. *best. böser Geister* Hariv. 12869. Verz. d. Oxf. H. 59,a,4. H. 1362, Sch. — 5) *Hitze*, m. Med. n. Halâj. 1,40. रौद्रेणाकुलित: Hit. 115,1, v. l. — 6) m. *die kalte Jahreszeit* H. 156. — 7) m. ein N. Jama's Dhar. im ÇKDr. — 8) m. Bez. *des 54ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,48. fg. Verz. d. Oxf. H. 332,b,6. — 9) m. Bez. *eines best.* Ketu Varâh. Bṛh. S. 11,32. — 10) n. Bez. *des unter* Rudra *stehenden* Nakshatra Ârdrâ Weber, Ǵjot. 34. Nax. 1,309. Varâh. Bṛh. S. 4,7. 7,3. 10,5. 15,4. 23,9. 102,2. रौद्रर्क्ष n. dass. 101,3. Sûrjas. 9,14. रौद्री f. dass. H. 110. m. (wohl fehlerhaft) Mârk. P. 58,15. — 11) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 14,2476. — 12) f. ई a) ein N. der Gaurî H. an. Med. — b) *eine best. Pflanze*, = रुद्रजटा Râǵan. im ÇKDr. — c) Titel eines von Rudrabhaṭṭâkârja

verfassten Commentars HALL 74. — 13) n. a) *wildes —, furchtbares Wesen* SUÇR. 1,336,1. इत्याक्रन्दन्सरौद्रः KATHÂS. 56,27. — b) N. eines Liñga Verz. d. Oxf. H. 44,a,6 v. u. — c) N. eines Sâman Ind. St. 3,231,b. KHÂND. UP. 2,24,7. — Vgl. महा° (adj. auch MBH. 12,4273. KATHÂS. 25, 238), सोमा°.

रौद्रक = रुद्रेण कृतम् (संज्ञायाम्) gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

1. रौद्रकर्मन् n. *eine Furchtbares bezweckende Zauberhandlung* Verz. d. Oxf. H. 97,b,27.

2. रौद्रकर्मन् 1) adj. *Furchtbares vollbringend* MBH. 10,305. R. 3,57, 32. 5,23,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBH. 1, 2739. 4551. — Vgl. प्रति°.

रौद्रकर्मिन् adj. = 2. रौद्रकर्मन् 1) MBH. 1,2545. 3,14486.

रौद्रता f. *wildes —, furchtbares Wesen, Furchtbarkeit* R. 3,13,4. 7, 62,3. MÂLATÎM. 77,7.

रौद्रपाद scheint N. eines Nakshatra zu sein, = रौद्र = आर्द्रा KṚSHISAÑGR. 12,17.

रौद्रमनस् adj. *wilden Sinnes:* सुरां पीत्वा रौद्रमनाः ÇAT. BR. 12,7,3,20.

रौद्राग्न adj. *zu* Rudra *und* Agni *in Beziehung stehend* ÂÇV. ÇR. 2,17,18.

रौद्राणी in °स्तोत्र Verz. d. Oxf. H. 89,b,17 wohl fehlerhaft für रुद्राणी.

रौद्रायण m. patron. von रुद्र; pl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,5.

रौद्राश्व m. N. pr. eines Sohnes oder entfernteren Nachkommen Pûru's MBH. 1,3695. 3698. HARIV. 1658. VP. 447. BHÂG. P. 9,20,3. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. B. H. 122,12. 126,3.

रौद्रि m. patron. von रुद्र HARIV. 7219.

रौद्रीभाव m. Rudra's (Çiva's) *Charakter* MBH. 3,15824.

रौधि m. patron. von रोध gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

रौधादिक adj. *zu der mit* रुध् *beginnenden Klasse von Wurzeln* d. i. *zur 7ten Klasse gehörig* P. 8,2,56, Sch.

रौधिर (von रुधिर) adj. *aus Blut bestehend:* ह्रद MBH. 1,273. 3,10204. *von Blut stammend* SUÇR. 1,10,21.

रौप्य (von रूप्य) 1) adj. *silbern* JÂǴN. 1,204. MBH. 8,1407. R. GORR. 2,13,22. 4,25,32. 5,13,12. SUÇR. 2,136,15. BHÂG. P. 4,25,14. WEBER, KṚSHṆAǴ. 278. NAISH. 22,53. — 2) f. आ N. pr. einer Oertlichkeit MBH. 3,10519. — 3) n. *Silber* RÂǴAN. im ÇKDR. GÂRUḌA-P. 188 ebend. WEBER, KṚSHṆAǴ. 283. Verz. d. Oxf. H. 35,b,31. Verz. d. B. H. No. 994. — Unbestimmt ob adj. *silbern* oder n. *Silber:* °माषक M. 8,135. R. 3,48,12. ÇIÇ. 4,67. KATHÂS. 18,47.

रौप्यमय (von रौप्य) adj. (f. ई) *silbern* HARIV. 7882. RÂǴA-TAR. 5,46. WEBER, KṚSHṆAǴ. 299. रौप्यरुक्ममयानि MBH. 13,3247. रौप्यायसह्रिरण्मयैः BHÂG. P. 8,2,2.

रौप्यायण m. patron.; pl. SAṀSK. K. 185,b,5.

रौप्यायणि m. patron. von रूप्य gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

रौम 1) m. N. pr. eines Mannes RÂǴA-TAR. 3,54. — 2) n. *eine Art Salz,* = रौमक RÂMÂÇRAMA zu AK. 2,9,42 nach ÇKDR.

रौमक 1) adj. oxyt. von रोमक (einem उदीच्यग्राम) gaṇa पलद्यादि zu P. 4,2,110. *römisch, von den Bewohnern des Römerreichs gesprochen* COLEBR. Misc. Ess. I,315. *vom Astronomen* Romaka *herrührend:* गणित Verz. d. B. H. No. 939. — 2) n. (von रुमा) *eine Art Salz* AK. 2,9, 42. H. 942. MED. k. 152 (wo वसुकं रौ° zu lesen ist). °लवण RATNAM. im ÇKDR.

रौमकीय adj. von रोमक gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

रौमण्य adj. von रोमन् gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

रौमशीय adj. von रोमश gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

रौमहर्षणक adj. (f. °णिका) *von* Romaharshaṇa *verfasst* BHÂG. P. I, Einl. XXXVIII.

रौमहर्षणि (von रोमहर्षण) m. patron. Sûta's BHÂG. P. 1,2,1. Verz. d. Oxf. H. 12,a,8. fehlerhaft रो° 9,b,26. 59,a,36. रोमहर्षिणि 9,b,13.

रौमायण adj. von रोमन् gaṇa पक्षादि zu P. 4,2,80.

रौम्य m. pl. Bez. best. böser Geister im Dienste Çiva's MBH. 12,10308.

रौरव 1) adj. a) *von der* रुरु *genannten Hirschart stammend* ÂÇV. GṚHJ. 1,19,10. KAUÇ. 57. GOBH. 2,10,6. M. 2,41. 3,269. JÂǴN. 1,258. MBH. 1,7124. 13,4246. RAGH. 3,31. UTTARAR. 82,8 (105,11). BHÂG. P. 1, 18,27. — b) *furchtbar* TRIK. 3,3,420. H. an. 3,710. MED. v. 49. ÇABDAR. im ÇKDR. *unstät* und *betrügerisch* ÇABDAR. — 2) m. a) N. einer Hölle AK. 1,2,2,1. TRIK. H. an. MED. M. 4,88. JÂǴN. 3,222. MBH. 13,4825. R. 7,21,15. BURN. Intr. 201. VP. 207. BHÂG. P. 3,30,29. 5,26,7. 10. fg. Verz. d. Oxf. H. 49,b,12. MÂRK. P. 8,218. 10,80. fgg. 15,32. zeugt Duḥkha mit Vedanâ 50,31. — b) N. des 5ten Kalpa; s. u. कल्प 2) d). — 3) n. a) oxyt. *die Frucht von* रुरु gaṇa प्लक्षादि zu P. 4,3,118. — b) N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,231,b. AIT. BR. 3,17. PAÑḰAV. BR. 7,5,7. 12,4,23. LÂṬJ. 7,2,1. अग्ने रौरवम् Ind. St. 3,201,a. — Vgl. महा° (in der ersten Bed. auch MÂRK. P. 8,218).

रौरवक = रुरुणा कृतम् (संज्ञायाम्) gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

रौरुकिन् m. pl. *die Schule des* Ruruka: रौरुकिब्राह्मण GOBH. 3,2,5. LÂṬJ. 2,3,1. रौरुकिशाखा Schol. zu PAÑḰAV. BR. 1,4,1.

रौशर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 314,b, No. 746.

रौहिक adj. = रुह इव gaṇa अङ्गुल्यादि zu P. 5,3,108.

रौहिण 1) adj. *unter dem* Nakshatra Rohiṇî *geboren* P. 4,3,37, Sch. — 2) m. a) *Sandelbaum* TRIK. 2,6,39. HÂR. 183. UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,55. MBH. 1,1381 (nach NÎLAK. = वट *der indische Feigenbaum*). HARIV. 9002. — b) (sc. पुरोडाश) Bez. *best. Opferfladen beim* Pravargja ÇAT. BR. 14,1,2,17. 3,1. 20. 2,2,1. 2,41. KÂTJ. ÇR. 2,3,8. 4,6,14. 26,1, 20. 4,6. LÂṬJ. 1,6,35. — c) Bez. eines Agni ÇAT. BR. 2,1,2,13. — d) N. pr. eines von Indra besiegten Dämons ṚV. 1,103,2. 2,12,12. AV. 20,128,13. Daher so v. a. मेघ *Wolke* NAIGH. 1,10. — e) N. pr. eines Mannes ÂÇV. ÇR. 12,14. mit dem patron. वासिष्ठ TAITT. ÂR. 1,12,5. — f) pl. N. einer grammatischen Schule: पाणिनीयरौहिणाः P. 6,2, 36, Sch. — 3) n. a) Bez. *des 9ten* Muhûrta *des Tages* ÇRÂDDHAT. im ÇKDR. — b) इन्द्रस्य राजनरौहिणे und धातू रौहिणम् Namen von Sâman Ind. St. 3,208,b. — Vgl. महा° und रौहिणा.

रौहिणक n. Name eines Sâman LÂṬJ. 1,6,35.

रौहिणायन (von रोहिण) m. patron. gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. des Prijavrata ÇAT. BR. 10,3,5,14. 14,5,5,20. 7,3,25. VS. App. LVI, 12. pl. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,22.

रौहिणि m. patron.: रौहिणोरैकर्षे राजनम् N. eines Sâman Ind. St. 3,208,b.

रौहिणिनन्दन MBH. 7,8222 fehlerhaft für रौ°, wie die ed. Bomb. liest.

रौहिणेय 1) m. metron. von रोहिणी gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. *a) Kalb (der Kuh)* TRIK. 3,3,319 (fälschlich रो° gedr.). H. an. 4,229. MED. j. 126. — *b)* Bez. Balarâma's AK. 1,1,1,19. TRIK. H. 224. H. an. MED. HALÂJ. 1,29. MBH. 1,7148. 5,4. 7,8220. HARIV. 3374. PAÑKAR. 4,3, 128. — *c) der Planet Mercur* AK. 1,1,2,27. TRIK. 3,3,219. 319. H. 117, Sch. H. an. MED. HALÂJ. 1,46. — 2) n. *Smaragd* RÂGAN. im ÇKDR.

रौहिणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,17.

रौहिण्य m. patron.; pl. SAṂSK. K. 186,*a*,9.

रौहित 1) adj. *a) vom Thiere* oder *Fische* रोहित *stammend* SUÇR. 2, 2,339,11. — *b) zum* Manu Rohita *in Beziehung stehend:* अन्तर HARIV. 468. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa HARIV. 9184. रोहित die neuere Ausg. und LANGLOIS.

रौहितक adj. *aus dem Holze der Andersonia Rohitaka gemacht* KÂTJ. ÇR. 6,1,9.

रौहित्यायनि m. patron. SAṂSK. K. 184,*a*,10.

रौहिदश्व m. patron. des Vasumanas ṚV. ANUKR.

रौहिष् m. = रौहिष *eine Hirschart:* स एव रौहिषां मध्ये चरति Cit. aus BHAVABH. bei BHAR. zu AK. ÇKDR. — Vgl. रोहिष्.

रौहिष UṆÂDIS. 1,48. 1) m. *a) eine Hirschart* AK. 2,5,10. H. 1294. MED. sh. 44. SAṂSÂRÂV. bei UǴǴVAL. — *b) ein best. Fisch,* = रोहित AǴAJAP. im ÇKDR. — 2) f. ई *a) das Weibchen von der Hirschart* रौहिष. — *b) Schlingpflanze* (लता) UǴǴVAL. = दूर्वा UṆÂDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. ÇKDR. — 3) n. *eine best. Grasart,* = कत्तृण AK. 2,4,5,32. H. 1191. H. an. MED. SAṂSÂRÂV. a. a. O. — Vgl. रोहिष.

रौही f. *das Weibchen einer best. Hirschart* MBH. 3,16172 (nach der Lesart der ed. Bomb.). MÂRK. P. 74,11.14. — Vgl. रोहि und रोही.

रौहीत N. pr. eines Landes: °देश RÂǴA-TAR. 4,12. — Vgl. रोहीतक.

रौहीतक 1) adj. *a) von der Andersonia Rohitaka stammend, aus ihr gemacht* gaṇa रजतादि zu P. 4,3,154. KÂTJ. ÇR. 6,1,9, v. l. इध्म Schol. zu 1,3,18. — *b) aus der Gegend* Rohîta *stammend* RÂǴA-TAR. 4,11. — 2) m. = रोहीतक *Andersonia Rohitaka* MBH. 3,12361.

रौक्ष्य adj. von रौक्ष gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

ल

ल m. 1) ein N. Indra's Trik. 1,1,57. Med. l. 1. — 2) *cutting* Wilson nach Çabdar.

लक्, लाकयति (आस्वादने) Dhâtup. 33,63, v. l.

लक n. 1) *the forehead.* — 2) *the ear or spike of wild rice* Çabdârthak. bei Wilson.

लकच m. = लकुच Çabdar. im ÇKDr.

लकार m. 1) *der Buchstab* ल AV. Prât. 1,5. 39. 46 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 97, *a. b.* अनुकूलां विमलाङ्गीं कुलजां कुशलां सुशीलसंपन्नाम्। पञ्चलकारां भार्यां पुरुषः पुण्योदयाल्लभते ॥ Prasaṅgâbh. 13, *b.* — 2) *der gemeinschaftliche Name für alle Tempora und Modi* (vgl. P. 3,4,77), *verbum finitum* Verz. d. Oxf. H. 177, *a*, N. 1. °विशेषार्थनिरूपण 177, *a*, 26. लकारार्थप्रक्रिया 163, *a*, No. 358. 164, *b*, No. 363. 165, *b*, No. 367. Verz. d. B. H. No. 736. °वाद Hall 59.

लकुच m. *Artocarpus Lacucha Roxb.*, ein Baum, der zähen Milchsaft reichlich enthält; n. *die Frucht* AK. 2,4,2,41. MBh. 1,7585. 3,11568. Hariv. 12678. Suçr. 1, 59, 6. 74, 15. 157, 5. 210, 17. Vâgbh. 6, 141. Varâh. Bṛh. S. 55, 4. 10. Verz. d. Oxf. H. 72, *a*, 23.

लकुट m. = लगुड *Knüttel* Schol. zu Kâtj. Çr. 666, 6.

लकुटिन् adj. *mit einem Knüttel versehen* R. 7,23,2,36. Mârk. P. 8, 122. 169.

लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लकुलिन् m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53, *b*, 32.

लकुल्य adj. von लकुल gaṇa बलादि zu P. 4,2,80.

लक्कक m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,434. 453. 457.

लक्त s. गृध्र°.

लक्तक m. 1) *Lappen, Läppchen,* = नक्तक AK. 2, 6, 3, 16. Suçr. 1, 36, 5. 2, 181, 13. — 2) = अलक्तक Çabdar. im ÇKDr. scheinbar R. Gorr. 2,60,16 und Kathâs. 3,71, wo aber प्रकृत्याल° und वासस्यलक्तककम् zu lesen ist.

लक्तकर्मन् m. *eine Abart des* Lodhra (रक्तत्वग्लोध्र) Çabdak. im ÇKDr.

लक्खनचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7, 1174.

लक्ष्, लक्षते *bemerken, wahrnehmen:* स्वभर्तुरवमायमलक्षमाणो Bhâg. P. 3,16,12. *betrachten:* सर्वश्च तत्र तामेव कन्यां ज्ञातामलक्षत। दिवाप्यकाण्डप्रतिपच्चन्द्रलेखामिवोदिताम् Kathâs. 34,47. — Vgl. लक्षय्, worauf diese secundäre Wurzel zurückzuführen ist.

लक्ष (von लग्; vgl. लक्ष्मन्, लक्ष्मी) 1) *ein ausgesetzter (angehefteter) Preis:* श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाद्त् (= लक्ष्यम् Sâj.) ṚV. 2, 12, 4. लब्ध° adj. *der den Preis —, den Sieg davongetragen hat; bewährt, erprobt:* असकृल्लब्धलक्षास्ते (मल्लाः) रङ्गे MBh. 4, 341. Hariv. 5122. Kathâs. 62, 9. नागा रणे MBh. 7, 4325. सचिवाः M. 7, 54. — 2) *Zeichen, Mal:* अङ्कैर्लक्षैश्च ताः सर्वा (गाः) लक्षयामास MBh. 3, 14852. नखरक्षत° Kaurap. 15. — 3) n. *Ziel, Zielpunkt* AK. 2, 8, 2, 54. Trik. 3, 3, 440. H. 777. an. 2, 570. Med. sh. 23. Spr. 1910. दृष्टलक्षभिदः (°लक्ष्य° ed. Calc.) Ragh. 1, 61. चरस्थिरेषु लक्षेषु बाणसिद्धिः Kâm. Nitis. 14, 25 (लक्ष्येषु 27). सिद्धलक्षेण बाणेन Kathâs. 112, 56. आकाशे लक्षं बद्धा *sein Ziel auf den Luftraum richtend* so v. a. *ohne bestimmtes Ziel in's Blaue sehend* Çâk. 31, 7, v. l. आकाशबद्धलक्ष Vikr. 54, 4. °भूता vielleicht so v. a. *von Allen gesucht* Verz. d. Oxf. H. 217, *a*, 26. स्थूल° adj. *grosse Ziele verfolgend* Jâǵń. 1, 308. nach den Erklärern *freigebig* oder *kenntnissreich;* v. l. °लक्ष्य; vgl. स्थूललक्षिता, स्थूललक्ष्य. — 4) *hunderttausend*, nach den Lexicographen f. und n.; zu belegen nur n. und m. AK. 3, 6, 2, 24. Trik. 3, 3, 440. 5, 20. H. 873. H. an. Med. Siddh. K. 250, *b*, 10. एकोनत्रिंशल्लक्षाणि Jâǵń. 3, 101. लक्षान्तरे ऽर्कः Spr. 835. 1626. 1666. 1910. लक्षेण 1626. Varâh. Bṛh. S. 77, 17. 80, 12. Kathâs. 8, 15. 53, 10. Pańkat. 255, 23. Hit. 115, 4. कृतं लक्षं रथानाम् Hariv. 15909. Spr. 1363. Kathâs. 43, 109. 44, 131. 46, 244. 115, 9. Râǵa-Tar. 4, 243. 415. fg. 5, 137. 143. Bhâg. P. 5, 21, 7. 6, 17, 2. Mârk. P. 54, 8. सुवर्णस्य Kathâs. 5, 113. ब्रह्माण्डलक्षैः Spr. 4000. Gît. 3, 16. Kathâs. 8, 2. 34, 67. Râǵa-Tar. 3, 357. 4, 494. Kaurap. 43. Ind. St. 3, 251. सुवर्ण° Kathâs. 12, 9. 21, 87. 35, 25. लक्षं नरद्विपान् MBh. 8, 3665. लक्षैः सुन्दरमन्दिरैः Pańkar. 1, 11, 16. 2, 2, 89. द्वात्रिंशल्लक्षयोजनायाम Bhâg. P. 5, 20, 24. दशलक्षं सुवर्णम् Pańkar. 1, 4, 51. लक्षस्वर्णम् 11, 26. लक्ष्मीं च निश्चलां लक्षपौरुषीम् 8, 32. °श्लोकमिदं शास्त्रम् 2, 1, 20. लक्षलक्षैः 1, 7, 34. शतलक्षम् 2, 2, 29. °पूजनोद्यापनविधि Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 33. °पूजामाहात्म्य 30, *a*, 11. Verz. d. B. H. No. 466. त्रयो

लक्षा: Jâán. 3,102. लक्षश्चैको ऽपि Ind. St. 9,35. कन्यां सलक्षाम् Pańkat. V,84. — 5) *Schein, Verstellung* (व्याज) Trik. 3,3,440. H. 378. H. an. Med. लक्षसुप्त *sich schlafend stellend* Mṛkkh. 48,25, v. l. — Vgl. परो°, रति°, वि° und लक्ष्य.

लक्षक 1) adj. (von लक्षय्) *indirect bezeichnend* (*nicht benennend*), *elliptisch —, metonymisch ausdrückend:* अभिधादित्रयोपाधिवैशिष्ट्यात्त्रिविधो मतः। शब्दो ऽपि वाचकस्तद्वल्लक्षको व्यञ्जकस्तथा॥ Sâh. D. 31. Verz. d. Oxf. H. 246, *a*, No. 619. — 2) m. N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 8, 913. 2178. — 3) n. = लक्ष *hunderttausend:* पदातीनां त्रिलक्षकम् Pańkar. 1,4,51. 2,4,33.

लक्षण (von लक्षय्, Uṇâdis. 3, 7. 1) m. *a*) = लक्ष्मण *Ardea sibirica* Çabdar. im ÇKDr. — *b*) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 3,383. = लक्ष्मण (Râma's Bruder) H. an. 3,223. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,7. Hariv. 2331. 2333 (die neuere Ausg. richtig लक्ष्मण). — 2) f. आ *a*) *Ziel:* सिद्धिं पश्यति लक्षणाम् Hariv. 11841. — *b*) *eine indirecte Bezeichnung, eine elliptische, metonymische Ausdrucksweise* Sâh. D. 11. 13. 252. 269. Bhâshâp. 81. Vedântas. (Allah.) No. 102. fgg. Schol. zu Kâtj. Çr. 17,3. 621,23. 730,4. चमसशब्देन लक्षणया तत्स्था आप उच्यन्ते 740,13. 763,9. Sarvadarçanas. 50,10.13. 172,7. fgg. 173,2. fgg. Kusum. 20,4. Weber, Râmat. Up. 337. Schol. zu P. 4,3,70. Siddh. K. zu 69. Vgl. अजहल्लक्षणा, उपादान°, जहल्लक्षणा, ज्ञान°, भाग°, लक्षणा°, सामान्य°. — *c*) = लक्ष्मणा *das Weibchen der Ardea sibirica* Med. ṇ. 76. Suçr. 1,317,11. *das Weibchen der Gans* Schol. zu Uṇ. 3,7. — *d*) N. pr. einer Apsaras Vjâḍi beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,4818. Hariv. 12472. 14163 (लक्ष्मणा ed. Calc.). — 3) n.; am Ende eines adj. comp. f. आ Âçv. Çr. 2,14,18. Kâtj. Çr. 16,4,6. MBh. 13,3443. 14,1190. fgg. Ragh. 19,55. Kathâs. 5,31. Bhâg. P. 2,4,22. 6,19,6 u. s. w. ई Verz. d. Oxf. H. 220, *a*, No. 527. *a*) *Merkmal, Zeichen, Charakter, Attribut* (häufig sg. in collect. Bed., z. B. M. 6,44. 8,261. Varâh. Bṛh. S. 56,31. 61,1. 65,1. 68,108. 78,18. 79,1. 84,2); daher *Marke, Strich* (अङ्क), bes. *die auf der Opferstätte gezogenen Linien, Stichwort* u. s. w.; = चिह्न AK. 1,1,2,18. Trik. 3,3,258. H. 106. an. 3,222 (wo लक्षणं st. लवणं zu lesen ist). Med. Halâj. 1,45. Viçva a. a. O. Nir. 1,1. इष्टकाः पृथग्लक्षणाः Kâtj. Çr. 16,4,6. 8,3. Gobh. 1,1,10. कृत° 2,1,3. 3,6. 4,2, 1.3. एतदादहनस्य लक्षणं श्मशानस्य Âçv. Gṛhj. 4,1,15. Kauç. 80. 137. तत्र° Çâñkh. Çr. 1,16,6. पुरस्ताल्लक्षणा, उपरिष्टाल्लक्षणा Çat. Br. 1,7,2, 18. fg. देवतालक्षणा याज्यानुवाक्याः *die J. und A. haben die Götternamen* (*ihre Stellung am Anfange oder am Ende*) *zum Merkmal* Âçv. Çr. 2,14,18. fg. द्रव्य° Kaṇ. 1,1,15. निन्द्यैर्लक्षणैर्युक्ताः M. 11,53. बीजलक्षणालक्षित 9,35. MBh. 3,2680. नृपलक्षणान्वित R. 1,4,31. न च मां रक्षसे वीर किमिदं शूरलक्षणम् R. 5,36,18. Megh. 78. Çâk. 71,12. 102,17. कार्यसिद्धेः Ragh. 10,6. 19,47. अनारम्भो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम् Spr. 97. 481. 2935. Kathâs. 34,71. 61,38. Râǵa-Tar. 1,189. 2,146. Bhâg. P. 5,20,38. शुभ° adj. R. 1,1,13. 2,21,39. 24,36. 52,1. Kathâs. 23,54. 45,348. कल्याण° 29,161. पुण्य° Kumâras. 5,73. रथं च कपिलक्षणम् MBh. 1,2277. पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा AK. 2,6,1,15. H. 532. पुरुष° MBh. 5,7527. स्त्रीणाम् 7528. लक्षणं लक्षणेनैव वदनं वदनेन च *Geschlechtstheile* 13,2303. शरा बर्हिणलक्षणाः *gekennzeichnet* so v. a. *versehen mit* R. 3, 26,22. 6,80,30. अशनीश्च मेघबर्हिणलक्षणाः MBh. 3,1791. भुजदण्डयुग्मं गाण्डीवलक्षणम् Bhâg. P. 1,15,13. तुल्याभिजनलक्षणा R. 5,19,32. *ein glückliches Merkmal, günstiges Zeichen* Âçv. Gṛhj. 1,5,3.4. Çâñkh. Gṛhj. 1,5. M. 3,4. 4,68. 158. 7,77. MBh. 1,5905. 4,70 (sg. st. pl.). R. 1,1,27. Râǵa-Tar. 3,485. AK. 3,4,14,84. Brahma-P. in LA. (III) 50,6. Daçak. in Benf. Chr. 197,11.13. द्वात्रिंशल्लक्षणोपेत Hit. 99,7. ad Vet. 3,16 (LA. III). Lot. de la b. l. 616. °भ्रष्ट *seiner guten Zeichen verlustig gegangen, in's Unglück gerathen, unglücklich* Jâán. 3,217. विगत° dass. Kathâs. 25,142. कृत° dass. Mârk. P. 50,95. *Symptom einer Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 312, *a*, No. 745. सृष्टिः संक्षेपलक्षणा *durch Kürze sich kennzeichnend, in aller Kürze angegeben* M. 1,41. चोदनालक्षणो ऽर्थो धर्मः Gaim. 1,1,2. — *b*) *nähere Bestimmung, Definition* M. 1,112. fg. 8,406. ṚV. Prât. 13,12. Suçr. 1,2,3. 2,17,10. सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्। एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥ Spr. 4828. Sâh. D. 3,4.17. fg. Schol. zu Çâk. 60,11. Sarvadarçanas. 5,7.46,19. 60,15. 78,20. 104,9. fgg. तत्र (in Kaṇâda's System) उद्देशो लक्षणं परीक्षा चेति त्रिविधास्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिः 21. 105,17. 106,1. fgg. — *c*) *Bezeichnung* so v. a. *Name* Trik. 1,1,117. 3,3,258. H. an. Med. Viçva bei Uǵǵval. पयोस्तिष्ठति लक्षणम्। लोके धाता विधाता च MBh. 1,2614. त्रयं ब्रह्म ऋग्यजुःसामलक्षणम् M. 1,23. ककुत्स्थ इत्याहितलक्षणो ऽभूत् Ragh. 6, 71. Megh. 25. निमेषलक्षणामत्यल्पकालम् Schol. zu Naish. 22,41. — *d*) *Erscheinungsform, Art, Species* H. 1376. दश लक्षणानि धर्मस्य M. 6,93. दशकं धर्मलक्षणम् 92. 94. दशलक्षणयुक्त 12,4. संधिर्द्विलक्षणः 7,163. 12,31. fgg. कर्मणा अग्निहोत्रादिलक्षणेन so v. a. *erscheinend als* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 303. Bhâg. P. 5,15,6. भक्तिर्नवलक्षणा *sich auf neunfache Weise äussernd* 7,5,24. — *e*) *Ziel, Richtung, Hindeutung auf* P. 1,4,84. 90. 2,1,14. 3,3,8. AK. 3,4,32 (28),6. इग्लक्षणे गुणवृद्धी so v. a. *betreffend, sich beziehend auf* P. 1,1,5, Sch. मनुष्यलक्षणे लुवर्थे 1,2,52, Vârtt. 3, Sch. Schol. zu AV. Prât. 4,122. पुराणं दशलक्षणम् so v. a. *behandelt Zehnerlei* Bhâg. P. 2,9,43. द्वादशलक्षणी मीमांसा Verz. d. Oxf. H. 220, *a*, No. 527. वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः *nur diese betreffend* P. 1,2,65. तत्सकलं धर्मलक्षणम् so v. a. *fällt unter den Begriff des Rechts* Jâán. 1,6. — *f*) *Wirkung, Einfluss:* प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् P. 1,1,62. Vop. 3,45. नायं स्वरः प्रत्ययलक्षणेन भवति P. 6,1,197, Sch. — *g*) *Veranlassung, Gelegenheit:* सर्वथा सर्वभूतानां नास्ति मृत्युरलक्षणः। तव त्वयं रणे मैथिलीकृतलक्षणः॥ R. 6,95,19. यात्रा° Spr 4231. पुनरपीममर्थं लब्धलक्षणो यथोपपन्नैरुपायैः साधयिष्यति Daçak. 135,4. — Vgl. अ° (n. *Mangel an Kennzeichen, — an einem Kriterium* Pat. bei Gold. Mân. 50. adj. *ohne schöne Zeichen, hässlich* Kathâs. 40,29), उत्तर°, कृत° (*gekennzeichnet* R. 3,36,9. *glückliche —, gute Zeichen an sich tragend* MBh. 2,1350. R. Gorr. 2,7,4. *betreffend, sich beziehend auf:* आयुधानां पुराणानामादानकृतलक्षणा मतिः Hariv. 5031. कथाः शुभाः। चक्रतुर्वेदसंबद्धास्तच्छेषकृतलक्षणाः MBh. 13,1781. *veranlasst* R. 6, 95,9), दशलक्षणी, देहलक्षण, निर्लक्षण, पक्ष°, प्रति°, प्रमाण°, राज°, वि°, सु°.

लक्षणक am Ende eines adj. comp. (f. °णिका) = लक्षण *Merkmal:* पूर्वोक्तलक्षणिका Ind. St. 8,299,6.7. — Vgl. दश°.

लक्षणज्ञ adj. *die Zeichen* (*am Körper*) *zu deuten verstehend* R. Gorr.

2,29,8. Varâh. Bṛh. S. 68,89. 114. नर° 116. तच्छलक्षणज्ञ *seine guten Merkmale erkennend* Bhâg. P. 1,19,28.

लक्षणत्व n. *das eine-Definition-Sein:* काव्य° Sâh. D. 5,8.

लक्षणलक्षणा f. Bez. *einer best. elliptischen* oder *metonymischen Ausdrucksweise* Sâh. D. 15. Sarvadarçanas. 173,5.

लक्षणवत् adj. 1) *gekennzeichnet:* षड्भिर्लक्षणवानेतैः (so die ed. Bomb.) MBh. 12,9077. *mit guten Zeichen versehen* R. Gorr. 2,118,5. — 2) त्रिंशल्लक्षणवत् *dreissig Erscheinungsformen habend:* धर्म Bhâg. P. 7,11,12.

लक्षणवादरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 61.

लक्षणसंग्रह m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 341,*a*,39.

लक्षणसंनिपात m. *Brandmarkung* R. 5,48,6 (52,15 ed. Bomb.).

लक्षणसमुच्चय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,36. 336, *a*, No. 790.

लक्षणिन् adj. = लक्षणज्ञ R. Gorr. 2,29,9.

लक्षणीय (von लक्ष्) adj. 1) *sichtbar* oder *zu vermuthen, anzunehmen* Ragh. 11,63. — 2) *was elliptisch, metonymisch ausgedrückt wird* Kusum. 32,8.

लक्षणोरु (लक्षणा + ऊरु) adj. f. °रू P. 4,1,70. — Vgl. लक्ष्मणोरु.

लक्षण्य (von लक्षण) adj. 1) *als Merkmal dienend:* वृक्ष Pâr. Gṛhj. 3, 15. — 2) *mit guten Zeichen versehen* Jâǵn. 1,52. 80. MBh. 13,2509. 5599. R. 2,109,5. सर्वलक्षण° Pańkar. 4,3,42. st. अलक्षण्यं (दिवाकरम्) *kein rechtes Aussehen habend* MBh. 6,5209 liest die ed. Bomb. अलक्ष्माणाम्.

लक्षदत्त m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 53,8. fgg.

लक्षपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 53,9.

लक्ष् (von लक्ष), लक्षयति, °ते Dhâtup. 32,5 (दर्शनाङ्कयोः). 33,23 (आलोचने). 1) *bezeichnen, kennzeichnen:* अङ्कैर्लक्षैश्च ताः सर्वा (गाः) लक्षयामास MBh. 3,14852. लक्षित *bezeichnet, gekennzeichnet, erkennbar an:* सर्वलक्षणलक्षित 1,5434. R. 1,45,41. 7,37,2,24. Mârk. P. 34,77. 66,25. शुभलक्षणलक्षित R. Gorr. 2,26,18. राजलक्षणलक्षित 3,36,6. राजतैर्धातुभिश्चित्रैर्देशे देशे च लक्षितः (गिरिः) 21,14. वक्षसि लक्षितं श्रिया Bhâg. P. 2,9,15. सर्वप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता M. 9,35. R. 5,86,5. उन्मेषनिमेषाभ्याम् Bhâg. P. 9,13,11. तया (अशनायया) लक्षितेन मृत्युना Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 42. अलक्षित Çat. Br. 3,3,1,16. Kâtj. Çr. 7,6,14. — 2) *näher bezeichnen, definiren* Nilak. 46. Schol. zu Kap. 1,101. — 3) *mittelbar bezeichnen, — ausdrücken:* अत्र गोशब्दः — वाहीकार्थं लक्षयति Sâh. D. 15,7. 107,19. fgg. Vedântas. (Allah.) No. 104. तेनार्थेनार्थान्तरं लक्ष्यते Sarvadarçanas. 173,1. 172,11. प्रजापतिर्हि — अग्न्या लक्ष्यते Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. वषट्शब्देनात्र वौषट्शब्दो लक्ष्यते Kâç. zu P. 1,2,35. Schol. zu P. 4,3,80. गोसहचारिणो गुणा जाड्यमान्द्यादयो लक्ष्यन्ते *sind gemeint* Sâh. D. 14,16. यस्य कस्यचिदर्थस्य लक्षितत्वे Vedântas. (Allah.) No. 105. — 4) *auf ein Ziel richten:* शरास्तीव्राः पतिष्यन्ति रामलक्ष्मणलक्षिताः R. 5,23,20. — 5) *bezeichnen als, nennen:* कालस्यानुगतिर्या तु लक्ष्यते ऽण्वी बृहत्यपि Bhâg. P. 2,8,13. सा लक्ष्यतां (लक्षिता Br.) प्रभावती Çrut. 35. — 6) *bezeichnen als* so v. a. *halten —, ansehen für:* तुल्यं हि लक्षये ज्ञानं बाहुकस्य नलस्य च MBh. 3,2800. न ते ऽस्त्यविदितं किंचिदिति त्वां लक्षयाम्यहम् 10575. तस्य वाक्यस्य पर्यायं पर्याप्तमिव लक्षये Hariv. 9652. अन्यत्र क्षेत्रज्ञः पुत्रो लक्ष्यते MBh. 13,2629. fgg. जडान्धबधिरोन्मत्तमूकाकृतिः — लक्षितः पथि बालानाम् Bhâg. P. 4,13,10. — 7) *sein Augenmerk richten auf, beachten, untersuchen:* अश्वं लक्षयित्वाज्ञायत Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 24. zu Khând. Up. S. 88 (wo अभि ल° d. i. अभि = ल° zu lesen ist). चरितान्यस्य लक्षय MBh. 3,2922. Kâm. Nîtis. 7,15. करौ विमृदितव्रीहेर्लक्षयित्वा Jâǵn. 2,103. एवमन्ये ऽपि भेदाः — न पृथग्लक्षिताः Sâh. D. 211,7. Z. d. d. m. G. 7,311, N. 4. Verz. d. Oxf. H. 181,*a*,36. सुलक्षित M. 8,403. — 8) (an bestimmten *Zeichen*) *erkennen:* गतिचेष्टाविकारैश्च रूपतो भाषितैस्तथा। लक्षयस्व तयोर्भावं दुष्टादुष्टम् R. 4,1,28. एभिर्लक्षणैर्लक्षयेथाः — भवनम् Megh. 78. इङ्गितैर्लक्षयामास नेयं सीतेति निश्चितम् R. 5,14,38. लक्षये ऽस्वस्थमात्मानं भवत्या लक्षणैरहम् Bhâg. P. 8,16,10. न चोभावप्यलक्ष्येताम् Bhaṭṭ. 17,106. लक्ष्यते ज्ञायते ऽनेनेति लक्षणम् Schol. zu Ǵaim. 1,1,2. एवं प्राग्देहजं कर्म लक्ष्यते चित्तवृत्तिभिः Bhâg. P. 4,29,63. 1,8,19. Vikr. 53. अनेन वपुषा बाला पिप्लुनानेन सूचिता। लक्षितेयं मया देवी निभृता ऽग्निरिवोष्मणा MBh. 3,2702. Spr. 1824. Bhâg. P. 2,2,35. 3,27,13. 4,22,2. — 9) *bemerken, wahrnehmen, erblicken;* act. Maitrjup. 6,10. M. 12,27. MBh. 4,82. R. 2,63,45. 6,92,24. Çâk. 140. Kâm. Nîtis. 4,37. Spr. 3891. Kathâs. 10,168. Râǵa-Tar. 4,497. 6,59. Daçak. in Benf. Chr. 184,9. 186,15. Bhâg. P. 4,8,27. med. MBh. 1,5924. 3,2205. R. Gorr. 2,60,8. 5,31,7. Çâk. 69,8. Bhâg. P. 4,22,9. 10,41,3. जाग्रद्भिरपि चास्माभिः शक्या लक्षयितुं न ते Kathâs. 112,149. तां लक्षयित्वा MBh. 3,2395. न हस्ती चाग्रतः प्रयाणे लक्ष्यते R. 2,26,16. यादृशं लक्ष्यते रूपम् 93,6. लक्ष्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु 4,29,12. 40,43. Suçr. 1,243,4. Ragh. 9,72. Çâk. 38. Râǵa-Tar. 3,378. Bhâg. P. 1,18,43. 4,17,32. 21,26. Hit. 20,14. योगप्रभावो न च लक्ष्यते ते Ragh. 16,7. भगवतो गृहेषु गृहमेधिनाम् — न लक्ष्यते ह्यवस्थानमपि Bhâg. P. 1,19,39. 3,26,14. R. 2,26,18. 35,34. 60,8. 3,68,50. Varâh. Bṛh. S. 86,7. Kathâs. 47,54. Mârk. P. 16,37. Hit. 25,10. यदा विनाशकालो वै लक्ष्यते दैवनिर्मितः *erblickt wird* so v. a. *erscheint, sich einstellt* Spr. 4808. लक्षित *bemerkt, erblickt, wahrgenommen, gesehen* MBh. 3,2155. 2699. 2935. Ragh. 7,41. Çâk. 98,15. Spr. 2103. Kathâs. 45,259. Bhâg. P. 4,25,13. Pańkat. 225,25. Sâh. D. 38,19. साधु लक्षितमयमागतः Mṛkkh. 117,25. अलक्षित *unbemerkt* MBh. 1,5879. 3,2158. R. 4,40,37. Ragh. 2,27. Çâk. 90. Kâm. Nîtis. 12,43. Kathâs. 7,83. 13,87. 16,57. 18,157. Râǵa-Tar. 6,48. 270. Daçak. in Benf. Chr. 186,12. स्वलक्षित *durchaus nicht bemerkt* Bhâg. P. 2,5,20. अलक्षितम् adv. Kathâs. 28,105. 34,46. mit folgendem यद् *sehen, dass:* जनास्त्वलक्षयन्यत्स स्वयं पीठमवातरत् Râǵa-Tar. 3,458. sehr häufig mit einem zweiten appositionellem acc. (nom. bei pass. Constr.) construirt: तं तदैकाग्रमनसं कृष्णः पार्थमलक्षयत् MBh. 1,7920. 13,2765. R. Gorr. 2,6,14. 3,1,1. 2. 4,33,29. Mâlav. 29,1. Kumâras. 3,51. भवत्यनपगान्सर्वांस्तान्गुणाँल्लक्षयामहे MBh. 12,8029. R. 1,9,44 (43 Gorr.). Çâk. 16,20. Bhâg. P. 1,14,13. 17,36. 6,14,21. लक्षयित्वा चात्मानं तेजोहीनम् MBh. 1,8142. 4,1056. 13,475. R. 7,28,1. Pańkat. 33,5 (29,7 ed. orn.). ताँल्लक्ष्य (= लक्षयित्वा) वित्रस्तान् R. 7,15,1. स दक्षिणं तूणमुखेन वामं व्यापारयन्हस्तमलक्ष्यताजौ Ragh. 7,54. 9,43. Spr. 1639. 1842. Çâk. 169. Râǵa-Tar. 1,167. 3,523. लक्षिताहं त्वया तत्र वायसेन प्रकोपिता R. 5,36,41. 47,23. Spr. 3807. Kathâs. 42,208. 49,45. mit इव nach dem appositionellen acc. (nom. bei pass. Constr.): अस्वस्थामिव चात्मानं लक्षये MBh. 3,16750. नातिस्वस्थेव लक्ष्यते *aussehen, zu sein scheinen* 2110. 16721. 8,1813. R. 2,91,43. 93,

16. 5,4,13. 5,28. 54,12. RAGH. 3,2. 8,57. 11,59. 17,15. KUMÂRAS. 2,20. 7,42. ÇÂK. 69,3. VIKR. 8. VARÂH. BṚH. S. 9,36. 27,4. ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 283. BHÂG. P. 5,25,2. PAÑKAR. 4,3,200. PAÑKAT. 231,25. HIT. 69, 4, v. l. PRAB. 33,10. SARVADARÇANAS. 16,21. स (ग्रीष्मः) च वृन्दावनगुणैर्वसन्त इव लक्षितः BHÂG. P. 10,18,3. अयं रथनिर्घोषो नैषधस्येव लक्ष्यते so v. a. *dieses Wagengerassel hört sich wie das des* Nala *an* MBH. 3,2888. — लक्ष्यते MBH. 5,7042 fehlerhaft für लप्स्यते (so die ed. Bomb.), लक्ष्यतां R. 5,82,19 fehlerhaft für भक्ष्यतां, अलक्ष्य PAÑKAR. 4,2,25 fehlerhaft für आलक्ष्य.

— अति, अनतिलक्षित: KÂM. NITIS. 12,9 fehlerhaft für अनभि° *unbemerkt, ungesehen.*

— अभि 1) *bezeichnen, bestimmen:* रामानलव्योमनृपैः शककाले ऽभिलक्षिते Verz. d. Oxf. H. 188,*b*,13. अभिलक्षितो वरो रुद्रः so v. a. *ausersehen zu* MBH. 12,13223. — 2) *sein Augenmerk richten auf, im Auge haben:* प्रायणीयाख्यकर्माभिलक्ष्य देवयजनं प्रविष्टाः Comm. zu TBR. 1,5,9, 3. — 3) *berichten, kundthun:* भरद्वाजाभिगमनम् u. s. w. तेषां तत्रस्थैरभिलक्षितम् R. 2,57,2. — 4) *erblicken, gewahr werden:* पार्षतश्च महायुद्धे विमुखो ऽप्याभिलक्ष्यते so v. a. *scheint zu sein* MBH. 8,1045. HARIV. 3675. त्रिदशगणैरभिलक्षितप्रभावः *erblickt, gesehen* HARIV. 13051. अनभिलक्षित *unbemerkt, ungesehen* MBH. 1,5822. नाभिलक्षित dass. JÂGÑ. 3,59.

— आ *erblicken, gewahr werden, sehen;* med. MBH. 4,1568. °लक्ष्य 1,787. 2,2403. 3,12215. R. GORR. 2,71,3. 3,1,4. 4,10,8. 5,29,17. 7,34, 15. RÂGA-TAR. 4,422. 5,365. BHÂG. P. 1,7,32. 12,34. 6,9,4. 10,16,13. PAÑKAR. 4,2,30 (fälschlich अलक्ष्य gedr.). PAÑKAT. ed. orn. 53,16. एतदालक्ष्यते राम मधूकानां महद्वनम् R. 3,19,22. BHÂG. P. 10,39,36. आलक्षित 1,4,6. R. GORR. 2,5,13. आलक्षये भवतीमन्तराधिम् BHÂG. P. 1,16,20. नातिपर्याप्तमालक्ष्य मत्कुक्षेरद्य भोजनम् RAGH. 15,18. BHÂG. P. 3,23,49. 4,7,22. 23,21. 6,12,30. 7,8,2. 8,12,37. SARVADARÇANAS. 56,10. शोच्या च प्रियदर्शना च मदनक्लिष्टेयमालक्ष्यते *erscheint* ÇÂK. 58. 133. 69,2, v. l. प्रागेवालक्षितं स्वरम् *vernommen, gehört* R. 7,35,43. शत्रुरालक्षितो MBH. 7,6262 fehlerhaft für शत्रुश्चालक्षितो d. i. अल°, wie die ed. Bomb liest. — Vgl. आलक्ष्य.

— उपा *erblicken, gewahr werden:* तमुपालक्ष्य BHÂG. P. 9,3,5. अन्तर्वत्नीमुपालक्ष्य देवीम् 14,40.

— समा dass.: नैषादिं श्वा समालक्ष्य भषंस्तस्थौ तदन्तिके MBH. 1,5249. वितथांस्तान्समालक्ष्य पतितांश्च महीतले 8,1062. HARIV. 6427. 13262. R. 4,18,25. 38,12. 7,14,20. दैवं समालक्ष्य *auf das Schicksal sehend* so v. a. *auf die Erfüllung des Schicksals wartend* MBH. 13,313.

— उप 1) *bezeichnen, kennzeichnen:* °लक्षित *bezeichnet, gekennzeichnet, erkennbar an* JÂGÑ. 1,30. 2,151. KÂM. NITIS. 7,47. KATHÂS. 10,131. 31, 41. 56,338. ÇAṂK. zu KHÂND. UP. S. 29. RÂGA-TAR. 4,417. BHÂG. P. 3,11,32. 4,29,20. 5,3,3. 7,7. 22,2. 7,9,36. 11,5,27. MÂRK. P. 74,58. 97,20. WEBER, RÂMAT. UP. 332. Schol. zu P. 1,4,84. 2,1,16. KUSUM. 58,16. fg. KULL. zu M. 2,170. 3,45. 9,35. Schol. zu NAISH. 22,42. अङ्गाश्चम्पोपलक्षिताः (वङ्गाः) so v. a. *mit Einschluss von* Kampâ H. 957. — 2) *näher bestimmen, definiren;* act. Schol. zu ṚV. PRÂT. 3,1. °लक्षित BHÂG. P. 3,26,17. — 3) *uneigentlich bezeichnen, — ausdrücken:* उमाशब्दो ब्रह्मविद्यामुपलक्षयति SÂJ. bei MUIR, ST. 4,358. नक्षत्रशब्देन ज्योतिःशास्त्रमुपलक्ष्यते KULL. zu M. 3,162. SÂH. D. 153,8. SARVADARÇANAS. 87,9. सा (शाल्मली) द्वीपहूतये (dat.) उपलक्ष्यते so v. a. *dient metonymisch als Name des* Dvîpa BHÂG. P. 5,20,8. अनुपलक्षितवचोऽभिधीयमाना *benannt mit einem Namen, neben dem noch kein anderer uneigentlicher besteht,* 17,1. — 4) *sein Augenmerk richten auf, beachten;* act. MBH. 12,4370. 13,6606. KÂM. NITIS. 16,40. शतशो ऽप्युपलक्षये HARIV. 12351. पाणिनीयादिशब्दस्मृतीरुपलक्ष्य Verz. d. Oxf. H. 176,*b*,26. तत्सर्वमुपलक्षितम् 266,*a*,17. — 5) *betrachten als, halten für:* एतत्कृत्यतमं राज्ञो नित्यमेवोपलक्षयेत् MBH. 13,2087. पुरंदरपुराद्धीदं विशिष्टमुपलक्षये 3,12188. लोकप्रवादः सत्यो ऽयं पण्डितैरुपलक्षितः R. 5,26,6. — 6) *erblicken, bemerken, wahrnehmen, sehen;* act. R. 5,27,31. 6,88,9. SUÇR. 1,21,6. 153,7. MṚKKH. 14,19. VARÂH. BṚH. S. 86,10. med. MBH. 3,16775. 16888. R. 2,58,25 (27 GORR.). 27. 59,17 (15 GORR.). 4,8,7. 12,41. 58,8. 5,56,67. BHÂG. P. 10,62,15. °लक्ष्य ÂÇV. ÇR. 1,12,31. ÇÂÑKH. ÇR. 1,16,9. MBH. 12,8092. बुभुक्षितानां दीनानां नातृप्तिरुपलक्ष्यते R. GORR. 1,13,12. KATHÂS. 46,45. BHÂG. P. 3,26, 49. SARVADARÇANAS. 93,15. प्रत्यक्षेण MÂRK. P. 21,74. 113,11. °लक्षित MBH. 3,2186. R. 4,51,26. 7,37,5,29. KÂM. NITIS. 16,14. KATHÂS. 31,48. BHÂG. P. 3,30,30. HIT. ed. JOHNS. 1815. VET. in LA. (III) 10,14. प्रत्यक्षम् R. 4,46,18. सम्यगुपलक्षितं (so mit der v. l. zu lesen) भवत्या ÇÂK. 15,15. DHÛRTAS. 83,6. PAÑKAT. 50,14. नोपलक्षित BHÂG. P. 5,18,30. अनुपलक्षित R. 1,2,13. 6,1,6. KÂM. NITIS. 17,17. KATHÂS. 95,47. BHÂG. P. 4,13,47. DAÇAK. 78,1. KULL. zu M. 7,147. SARVADARÇANAS. 93,9. — भवतां रोमकूपाणि प्रहृष्टान्युपलक्षये MBH. 4,1464. R. 2,52,21. 71,34. हतत्विषमिवात्मानमपि चाद्योपलक्षये R. GORR. 2,71,22. सुखासीनं ततस्तं तु विश्रान्तमुपलक्ष्य च MBH. 1,6. 7843. BHÂG. P. 3,18,6. 4,9,2. ÇATR. 10, 133. DAÇAK. 63,17. स गिरिरन्य एवोपलक्ष्यते HARIV. 3937. 11593 (उपलभ्यते die neuere Ausg.). R. GORR. 2,73,22. MÂRK. P. 66,15. HIT. ed. JOHNS. 2410. अयमुपजातक्रोध इवोपलक्ष्यते PRAB. 6,6. न भारती मे ऽङ्ग मृषोपलक्ष्यते BHÂG. P. 2,6,33. देवराजो ऽपि मया नित्यमत्रोपलक्षितः। विचलन्प्रथमोत्पाते हयानाम् MBH. 3,12030. HARIV. 9718. R. 4,5,20. VIKR. 78,20. fg. KATHÂS. 32,66. लेख्यानीवोपलक्षिताः BHÂG. P. 10,39,36. इतरवदिहोपलक्षितः 5,3,9. प्रविष्टो ऽनुपलक्षितः R. 5,12,1. ज्यायांसं च कोशिं च भरतो चोपलक्ष्यते *es hat den Anschein, als wenn* 2,61,11. *vernehmen, hören:* आभाषितं किंचिदिवोपलक्ष्य HARIV. 8409. उपलक्षितम् (so ist zu lesen) MÂLAV. 67,17. *wahrnehmen* so v. a. *empfinden:* यस्माद्दुःखमुपलक्ष्यते (v. l. für उपलभ्यते) Spr. 1491. — Vgl. उपलक्षक fgg.

— अभ्युप *erblicken, wahrnehmen:* (निमित्तानि) सुरर्षिसिद्धाभ्युपलक्षितानि R. 5,28,11.

— समुप 1) *sein Augenmerk richten auf, beobachten:* निमित्तानि समुपलक्षयेत् KÂM. NITIS. 16,35. — 2) *erblicken, wahrnehmen:* उत्क्रस्योत्क्रस्य नेहात्तमहं समुपलक्षये MBH. 2,1557. येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समुपलक्ष्यते 1,281.

— संप्रति *erblicken, wahrnehmen:* अस्वामिकस्य स्वामित्वं यस्मिन्संप्रतिलक्ष्यते (so die ed. Bomb.) MBH. 13,2633.

— वि 1) *kennzeichnen:* °लक्षित *gekennzeichnet, erkennbar an* BHÂG. P. 1,8,39. 3,21,20. 5,18,18. 10,38,25. — 2) *erblicken, wahrnehmen:* नातिदूरे च नगरं वनादस्माद्विलक्षये (अस्माद्धि ल° MBH. 1,5924) HIḌ. 1, 51. विलक्ष्य दैत्यम् BHÂG. P. 3,18,21. 10,7,24. अविलक्षित 5,6,6. तस्मिं-

छब्धपदं चित्तं सर्वावयवसंस्थितम्। विलक्ष्य 3,28,20. 7,3,16. 9,14,44. — 3) (*das Ziel aus dem Auge verlieren*) *verwirrt werden:* विलक्षयंस्तु (v. l. विलक्षणास्तु und वलक्षस्तत्र) MBH. 3,382. विलक्ष्य PANKAT. 235,25. विलक्षित *bestürzt* MBH. 1,7055. *verlegen* KATHÂS. 13,174. 17,32. 124,149. विलक्षितस्मित (= सलज्जहास्य Schol.) GIT. 2,19. *ungehalten:* निर्व्यापारविलक्षितानि सान्त्वय बलानि UTTARAR. 109,17 (148,13).

— सम् 1) *kennzeichnen:* °लक्षित *gekennzeichnet, erkennbar an* PANKAR. 3,5,15. 7,7. — 2) *erblicken, wahrnehmen, erfahren:* रिरंसां तस्य संलक्ष्य RÂGA-TAR. 3,503. संलक्ष्यते फलत एव तव प्रसादः 252. क्षेमः संलक्ष्यते क्वापि विशुद्धिः श्यामिकापि वा RAGH. 1,10. SÂH. D. 102,5. संलक्षितस्तु सूक्ष्मो ऽर्थ आकारेणेङ्गितेन वा 748. संलक्षित GIT. 3,16. असंलक्षित KATHÂS. 78,132. शूलैरिव शिरो विद्धमिदं संलक्षयाम्यहम् MBH. 3,16751. तां तर्ज्यमानां संलक्ष्य दशग्रीवेण R. 5,24,10. वेगावतरणादाश्चर्यदर्शनः संलक्ष्यते मनुष्यलोकः *erscheint* ÇÂK. 99,7. शीर्यमाणाः संलक्ष्यते न RAGH. 16,62. VIKR. 137. विद्धेव पुष्पचापेन लक्षणां समलक्ष्यत KATHÂS. 14,29. SUÇR. 1,308,9. RAGH. 8,42. BHÂG. P. 3,15,21. PANKAT. ed. orn. 53,20. *vernehmen, hören:* तं च शब्दमसह्यं वै तस्याः संलक्ष्य MBH.7,5226. — Vgl. संलक्षण, संलक्ष्य.

लक्षहोम (लक्ष *hunderttausend* + होम) m. Bez. *eines best. Opfers an die Planeten* GRHJASAMGR. 1,8. Verz. d. Oxf. H. 35,*a*,19. 42,*b*,20. 83,*a*,21. लघु° Verz. d. B. H. 91,4. बृहल्लक्ष° 5. लक्षहोमपद्धति No. 1251. — Vgl. कोटिहोम.

लक्षाक्षपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 340,*a*,4.

लक्षितव्य (von लक्ष्) adj. *zu definiren* SÂH. D. 35,21. 269,15.

लक्षिन् (von लक्ष) adj. *mit Gutes verheissenden Merkmalen versehen* R. 7,25,17. — Vgl. स्थूल°.

लक्षीकर् (लक्ष + 1. कर्), °करोति, °कुरुते *zum Ziele machen, zielen auf* KUMÂRAS. 3,47. ÇÂK. 104,21. DHÛRTAS. 83,11. — Vgl. लक्ष्यीकर्.

लक्षीभू (लक्ष + 1. भू) *zum Ziele werden:* °भूत KULL. zu M. 11,73. बाणलक्ष्यीभूत ebend.

लक्ष्म = लक्ष्मन् am Ende eines adj. comp.: देवलक्ष्मं TS. 2,5,11,1.

लक्ष्मक m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 8,1384. 1541. 1632 u. s. w.

लक्ष्मण (von लक्ष्मन्) 1) adj. gaṇa पामादि zu P. 5,2,100 (falschlich von लक्ष्मी abgel.). *mit Mälern —, mit Kennzeichen versehen* TS. 7,1,6,3. *mit glücklichen Zeichen versehen, glücklich;* = लक्ष्मीवत्, श्रीमत् u. s. w. AK. 3,1,14. TRIK. 3,3,137. H. 357. an. 3,223. MED. ṇ. 76. fg. — 2) m. *a*) *Ardea sibirica* H. 1328. — *b*) N. pr. eines Vâsishṭha gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,123. eines Sohnes des Daçaratha und jüngeren Bruders des Râma TRIK. 2,8,5. 3,3,137. H. 704. H. an. MED. R. 1,1,25. RAGH. 11,91. 12,9. 14,44. ÇIÇ. 9,31 (zugleich instr. von लक्ष्मन्). KATHÂS. 113,32. RÂGA-TAR. 4,274. VP. 384. BHÂG. P. 5,19,1. WEBER, RÂMAT. UP. 297 (wo das Metrum keine Form लक्ष्माण erfordert). राघवे सहलक्ष्मणे R. 3,52,2. am Ende eines adj. comp. f. आ 6,19,53. — N. pr. verschiedener anderer Personen PANKAT. 99,19. Journ. of the Am. Or. S. 6,517,*e*. Verz. d. Oxf. H. 1,*b*. 2,*a*. 104,*a*, No. 160. 134,*b*, No. 250. 251,*b*,44. Verz. d. B. H. No. 938. 1170. HALL 77. — 3) f. आ *a*) *das Weibchen der Ardea sibirica* AK. 2,5,25. TRIK. 3,3,137. H. 1329. H. an. MED. HÂR. 185. HALÂJ. 2,89. ARG. 9,21 (सारसाः st. लक्ष्मणाः MBH. 3,12182). *eine weibliche Gans* UGGVAL. zu UNÂDIS. 3,7. — *b*) Bez. verschiedener Pflanzen, = ओषधि, °भेद H. an. MED. = पृश्निपर्णी Schol. zu KÂTJ. ÇR. 1074,8. = पुत्रकन्दा BHÂVAPR. im ÇKDR. = श्वेतकण्टकारी RÂGAN. ebend. — SUÇR. 1,369,11. 2,387,17. — *c*) N. pr. α) einer Gattin Krshṇa's HARIV. 6702. 8985. 9179. 9189. VP. 578. BHÂG. P. 10,58,57. — β) einer Tochter Durjodhana's, die Sâmba, ein Sohn Krshṇa's, entführte BHÂG. P. 10,68,1. — γ) einer Apsaras HARIV. 12472. 14163. लक्षणा die neuere Ausg. wie auch MBH. — δ) der Mutter des 8ten Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. — 4) n. *a*) = लक्षण *Mal, Zeichen* ÇABDAR. im ÇKDR. लक्ष्मणं (wohl nur fehlerhaft für लक्षणं) तु महत्त्वस्य प्रतिज्ञापरिपालनम् R. 6,85,9. am Ende eines adj. comp. शश° (शशलक्षणा ed. Bomb.) als Bez. *des Mondes* MBH. 3,16198. श्रीवत्स° (°लक्षणा die neuere Ausg.) HARIV. 3325. शरा बार्हिणलक्ष्मणाः (wohl fehlerhaft für °लक्षणाः) R. 3,8,4. Sicher scheint die Lesart श्री° *durch* Çrî *gekennzeichnet* BHÂG. P. 2,2,10 zu stehen; hier kann aber लक्ष्मण mit dem Comm. als adj. gefasst werden. — *b*) = लक्षणा *Name* UGGVAL. und BHAR. zu AK. ÇKDR.

लक्ष्मणकवच n. Titel einer Hymne zum Lobe Lakshmaṇa's Verz. d. Oxf. H. 107,*a*, No. 165.

लक्ष्मणकुण्डक n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 84,*a*,4.5.

लक्ष्मणखण्डप्रशस्ति f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,38.

लक्ष्मणचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten HALL 185.

लक्ष्मणदेव m. N. pr. eines Mannes HALL 23. 67. 77. Verz. d. B. H. No. 681.

लक्ष्मणप्रसू f. Lakshmaṇa's *Mutter*, Bez. der Sumitrâ, einer der vier Frauen Daçaratha's, ÇABDAR. im ÇKDR.

लक्ष्मणभट्ट m. N. pr. zweier Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 201,*a*, No. 480. WILSON, Sel. Works I,120.

लक्ष्मणराजदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Journ. of the Am. Or. S. 6,518,6.

लक्ष्मणसेन m. N. pr. und Bein. verschiedener Personen Z. f. d. K. d. M. 1,227. Schol. zu GIT. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,25. 154,*a*,43. °देव Verz. d. Tüb. H. 13.

लक्ष्मणस्वामिन् m. N. einer Bildsäule des Lakshmaṇa RÂGA-TAR. 4,276.

लक्ष्मणाचार्य m. N. pr. eines Mannes WILSON, Sel. Works I,28. Verz. d. Oxf. H. 341,*a*,40.

लक्ष्मणोरु (लक्ष्मणा + ऊरु) adj. f. °रू VOP. 4,30. — Vgl. लक्षणोरु.

लक्ष्मण्य m. N. pr., nach SÂJ. *Sohn des* Lakshmaṇa ṚV. 5,33,10.

लक्ष्मन् (von लग् wie लक्ष und लक्ष्मी) n. 1) *Mal, Merkmal, Marke, Zeichen* (sg. bisweilen in collectiver Bedeutung, daher so v. a. *Definition*) AK. 1,1,2,18. 3,4,14,79. 18,127. H. 106. an. 2,282. MED. n. 119. HALÂJ. 1,45. 5,69. AV. 1,23,4. 6,141,2. 3. 12,4,6. कृष्ण TS. 7,4,19,2. ÇAT. BR. 1,7,2,18. 8,4,4,11. 5,4,3. SUÇR. 2,264,12. VARÂH. BRH. S. 43,58. 67. 51,44. 52,10. 54,48. BRH. 18,4. Spr. 2662. हिमांशोः ÇÂK. 19. ÇIÇ. 9,31. उत्तमो लोकपालो ऽयमिति लक्ष्म प्रशस्तिषु। यः प्राप्तवान् RÂGA-TAR. 1,346. पुंलक्ष्म (vom Folgenden zu trennen) 2,104. BHÂG. P. 3,16,21. 5,18,23. Ind. St. 8,296. 300. 351. अमीषां स्पष्टत्वाल्लक्ष्म नोच्यते SÂH. D. 551. इति कथितं संग्रहाद्व्यस्य लक्ष्म SARVADARÇANAS. 53,21. Am Ende eines adj. comp.: देव° TS. 5,2,8,3. पुरस्ताल्लक्ष्मन् 2,6,2,3. 4. Ind. St. 8,300. KUMÂRAS. 7,43. RAGH. 19,30. RÂGA-TAR. 1,2. अ° (Lesart der ed. Bomb.) so v. a. *kein Ansehen habend:* दिवाकर MBH. 6,5209. Vgl. क-

म्य°, मृगराज°, राज°. — 2) = प्रधान *das Haupt, der Vorzüglichste* AK. 3,4,18,127. H. an. Med.

लक्ष्मवीथी Hariv. 4635 fehlerhaft für लक्ष्य°, wie die neuere Ausg. liest.

लक्ष्मि = लक्ष्मी *Glück*, aus metrischen Rücksichten gebraucht in °वर्धन R. 1,19,20. R. Gorr. 2,18,51. 6,71,10. 82,31. 7,46,13. °संपन्न R. Schl. 1,19,21.

लक्ष्मी (von लग् wie लक्ष und लक्ष्मन्) Uṇâdis. 3,160. f. nom. लक्ष्मीस् Vop. 3,80. hier und da auch लक्ष्मी H. 226, Randgl., Rakshita bei Uǵǵval. zu Uṇâdis., TS. TBr. Verz. d. Oxf. H. 97, *a*, No. 151, 1 v. u. acc. लक्ष्म्यम् AV. Am Ende eines adj. comp. erhält sich das ई auch im masc. P. 1,2,48, Sch. °लक्ष्मि neutr. R. Gorr. 2,33,22. 1) *Merkmal, Zeichen* Nir. 4,10. भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ṚV. 10,71,2. — 2) mit oder ohne पापी *ein schlimmes Zeichen, bevorstehendes Unglück, Unglück* AV. 1,18,1. 7,115,1—3. विषम° *fortuna adversa* Varâh. Bṛh. S. 81,27. — 3) *ein gutes Zeichen* (in der älteren Sprache gewöhnlich mit पुण्या verbunden), *gute Anwartschaft, ein bevorstehendes Glück, Glück* AK. 2,8,2,50. Trik. 3,3,303. H. 357. an. 2,336. Med. m. 28. AV. 11,7,17. 12,5,6. Çat. Br. 8,4,4,8.11. पुण्यामेव लक्ष्मीं संभावयति Ait. Br. 2,40. साक्षी वा एषा लक्ष्मी यद्गुन्नतो लक्ष्मियैव पशूनवरुन्धे TS. 2,1,5,2. श्री und लक्ष्मी VS. 31,22. ज्येष्ठलक्ष्मी TBr. 2,1,2,2; die mythol. Erklärung s. im Comm. zu d. St. und vgl. ज्येष्ठ 3) *g*). समया रूपिणी लक्ष्मीः कमेकं संश्रिता नरम् R. 1,1,6. नह्येनं क्वास्यते लक्ष्मीर्दुर्लभा या गतायुषाम् R. ed. Bomb. 6,46,39. शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं मार्गति वासहेतोः Spr. 460. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः 471. अनुत्सेको लक्ष्म्याम् 1859. लक्ष्मीरुत्साहसंपन्नात् — नापैति 2650. जनपदैर्लक्ष्मीः समालम्ब्यताम् 4721. 4946. Varâh. Bṛh. S. 71,5. 84,2. 93,13. Kathâs. 18,204. 406. संगमो लक्ष्मीविनययोरिव 25,171. लक्ष्मीस्तेषां सदा स्थिरा Weber, Kṛshṇaǵ. 231. लक्ष्म्या विपर्यये R. 2,22,29. °विवर्त Dhûrtas. 74,16. वीतव्यसनम् u. s. w. प्रविशन्ति सदा लक्ष्म्यः Spr. 2882. नृपति° *das Glück eines Fürsten* Varâh. Bṛh. S. 4,20. कलत्रवत्तमात्मानमवरोधे महत्यपि। तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः॥ *die gute Genie eines Fürsten* Ragh. 1,32. 12,26. या लक्ष्मीर्नालुलिप्ताङ्गी वैरिशोणितकुङ्कुमैः Spr. 2478. जितेन्द्रियस्य नृपतेः — भवन्ति ज्वलिता लक्ष्म्यः कीर्तयश्च नभःस्पृशः 4076. 4791. साम्राज्यलक्ष्मीलीलाम्बुज Kathâs. 23,69. Râǵa-Tar. 3,175. लक्ष्मीश्चन्द्रगुप्ते निवेशिता so v. a. *die königliche Würde* Kathâs. 5,123. नमया रोचते लक्ष्मीर्ब्राह्मी *die Herrlichkeit der Brahmanen* Bhâg. P. 9,15,40. *Reichthum:* लक्ष्म्या परमया युतः (कुबेरः) MBh. 3,12004. तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्संरुणाद्धि Spr. 82. लक्ष्म्या परिपूर्णः 2652. लक्ष्मीं कृतार्थिसात्कृतस्ताम् Râǵa-Tar. 5,18. — 4) *Schönheit, Anmuth, Pracht* H. 1512. H. an. Med. Halâj. 5,27. शिरसः Hariv. 4788. देहस्य R. 4,16,4. MBh. 3,2410. मुखस्य Spr. 1693. स्वप्रभा° R. 2,94,21 (103,21 Gorr.). चन्द्रे 3,70,5. 5,1,21. मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति Çâk. 19. Kumâras. 3,49. Vikr. 23. जलद° Spr. 1427. लावण्य° Kathâs. 43,114. Kir. 5,39. Râǵa-Tar. 1,104. 3,361. am Ende eines adj. comp. Kir. 5,52. Bhâg. P. 2,2,10. — 5) personif. als *Göttin des Glückes und der Schönheit* (oft neben श्री) Hariv. 1337. लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय ist Durgâ 3279. 6613. 9498. 14027. R. 3,52,26. Kumâras. 1,44. Spr. 2164. 2651. गुणिनं जनमालोक्य — लक्ष्मीः कुरङ्गीव दूरं दूरं पलायते 4020. पाटलिपुत्रं क्षेत्रं लक्ष्मीसरस्वत्योः Kathâs. 3,78. लक्ष्मीः सा (कन्या) ह्यागतेह नः 33,8. गृहे लक्ष्म्यो मान्या सततमबला मानविभवैः Varâh. Bṛh. S. 74,4. पतिर्लक्ष्म्याः so v. a. *ein Liebling der Glücksgöttin* 61,18. als Gattin der Sonne (neben श्री) Purushasûkta in Ind. St. 9,9. als Gattin Pragâpati's (neben श्री) Mahânâr. Up. ebend. 2,82. entsteht bei der Quirlung des Meeres MBh. 1,1155. जलधिसुतया लक्ष्म्या Dhûrtas. 77,5. Gattin Dharma's und Mutter Kâma's MBh. 1,2578. Hariv. 11525. 11535. 12452. 12482. VP. 54. 119, N. 12. Mârk. P. 50,20. Schwester (Mutter nach VP. 82) Dhâtar's und Vidhâtar's MBh. 1,2615. Gattin Nârâjaṇa's oder Vishṇu's AK. 1,1,1,22. Trik. 1,1,41. 3,3,303. H. 226. H. an. Med. Hâr. 224. Halâj. 1,31. MBh. 1,7352. Hariv. 12308. R. 5,25,26. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,98. 103 (neben श्री). VP. 60. 82. Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,24. Gattin Dattâtreja's Mârk. P. 18,39. fgg. = सीता Çabdar. im ÇKDr. — N. der Dâkshâjaṇî in Bharatâçrama Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,26. eine Manifestation der Prakṛti 23,*a*,27. °कवच 26,*a*,19. 94,*a*,33. °मन्त्रः 93,*b*,5. °यन्त्र 94,*b*,10. 96,*b*,1. लक्ष्म्या धारणायन्त्रम् 3. 4. — 6) Bez. verschiedener *glückbringender* Pflanzen: = ऋद्धि AK. 2,4,3,31. Med. = वृद्धि Med. = प्रियङ्गु H. an. = फलिनी Med. = स्थलपद्मिनी, हरिद्रा und शमी Râǵan. im ÇKDr. — Suçr. 1,71,16. — 7) Bez. der 11ten Kalâ des Mondes Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,26. — 8) N. zweier Metra: α) *4 Mal* — — ⏑ — ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ — — — — Ind. St. 8,385. — β) *4 Mal* — — — — ⏑ ⏑ — — — — ⏑ — ⏑ ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. II, 161. (IX,8). — 9) *die Gattin eines Helden* (वीरयोषित्) Çabdar. im ÇKDr. — 10) = द्रव्य und मुक्ता Râǵan. im ÇKDr. — 11) ein Frauenname Çuk. in LA. (III) 37,3. Hall 183. — Vgl. अ° (f. *Unglück* auch R. 3,72,25. Suçr. 1,180,12. Spr. 4869. adj. *unschön:* अलक्ष्मीणि वेश्मानि R. Gorr. 2,33,22; in den Nachträgen ist die Stelle Spr. 3585 zu streichen), अति°, जय°, महा°, यज्ञुर्लक्ष्मी, राज° (unter 1) noch hinzuzufügen *die gute Genie eines Fürsten* und Vet. in LA. (III) 25,16), राज्य°.

लक्ष्मीक am Ende eines adj. comp. von लक्ष्मी *Glück, Reichthum* gaṇa उरःप्रभृति zu P. 5,4,151. पुण्य° Çat. Br. 8,4,4,11. 5,4,3. गत° R. Gorr. 1,60,17. पूर्ण° Kathâs. 20,181. अलक्ष्मीकतम *der allerunglücklichste* Spr. 3585. पुत्रसंक्रान्त° *dessen königliche Würde auf den Sohn übergegangen ist* Uttarar. 10,17 (14,15).

लक्ष्मीकान्त m. *der Geliebte der* Lakshmî d. i. Vishṇu Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,36 Ǵanmâshṭamîvratakathâ im ÇKDr.

लक्ष्मीकुलतन्त्र n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,19. 30.

लक्ष्मीकुलार्णव m. desgl. Hall 197.

लक्ष्मीगृह n. *die Wohnstätte der* Lakshmî, Bez. *der rothen Lotusblüthe* Trik. 1,2,34.

लक्ष्मीचरित्र n. Titel eines Werkes ÇKDr. u. रात्रिवासस्.

लक्ष्मीजनार्दन n. Lakshmî und Ǵanârdana; in einem Çâlagrâma: एकद्वारे चतुश्चक्रं नवीननीरदोपमम् । लक्ष्मीजनार्दनं ज्ञेयं रहितं वनमालया ॥ Brahmavaiv. P., Prakṛtikh. im ÇKDr.

लक्ष्मीताल m. 1) *eine Palmenart,* = श्रीताल Râǵan. im ÇKDr. — 2) Bez. *eines best. Tactes* Saṁgîtaratnâk. im ÇKDr.

लक्ष्मीत्व n. *das* Lakshmî-*Sein:* सीतायाः Schol. zu R. ed. Bomb. 6,17,35.

लक्ष्मीदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 126, *b*, No. 221. eines Erklärers des Bhâskara Colebr. Misc. Ess. II, 220. 224 u. s. w.

लक्ष्मीदेवी f. N. pr. einer gelehrten Frau Hall 175. Verz. d. Oxf. H. 262, *b*, No. 632.

लक्ष्मीधर 1) m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 63, 7. Râga-Tar. 7, 1209. fgg. Hall 134. Verz. d. B. H. No. 118. 166. 243. 246. 751. 1234. Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 1. 122, *b*, 6. 124, *b*, 25. fg. 130, *b*, No. 320. 160, *a*, No. 352. 161, *b*, No. 356. 200, *b*, No. 476. 209, *a*, 12. fg. 273, *b*, 44. 279, *a*, 37. 283, *a*, 31. Verz. d. Tüb. H. 13. Muir, ST. II, 54. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 8. 48. 50. °भट्ट Verz. d. Oxf. H. 292, *b*, 7. °सूरि Verz. d. B. H. No. 45. 1176. °कवि Hall 102. °दीक्षित 156. लक्ष्मीधराचार्य 134. 187. — 2) (wohl n.) ein best. Metrum: *4 Mal* —◡———◡———◡——◡— Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII, 12).

लक्ष्मीनाथ m. *Schutzherr der* Lakshmî als Bein. Vishṇu's H. 214, Sch. Bhâg. P. 6, 9, 32. Verz. d. Oxf. H. 14, *b*, 38.

लक्ष्मीनारायण 1) m. du. und n. sg. Lakshmî *und* Nârâjaṇa Verz. d. Oxf. H. 103, *a*, 35. Colebr. Misc. Ess. I, 198. Wilson, Sel. Works I, 38. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, 4. °माहात्म्य 13, *b*, 48. 14, *a*, 1. °संवाद Mack. Coll. I, 53. in einem Çâlagrâma Wilson, Sel. Works I, 50. Colebr. Misc. Ess. I, 156. एकद्वारे चतुश्चक्रं वनमालाविभूषितम् । नवीननीरदाकारं लक्ष्मीनारायणाभिधम् ॥ Brahmavaiv. P. im ÇKDr. — 2) °यति m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 620. Hall. 205.

लक्ष्मीनिवास m. *die Wohnstätte der Glücksgöttin* Verz. d. Oxf. H. 263, *a*, 4. लक्ष्मीनिवासाभिधान Titel einer Schrift Hall in der Einl. zu Vâsavad. 44.

लक्ष्मीनृसिंह 1) n. Lakshmî *und der Mannlöwe;* in einem Çâlagrâma: द्विचक्रं विस्तृतास्यं च वनमालासमन्वितम् । लक्ष्मीनृसिंहं विज्ञेयं गृहिणां च सुखप्रदम् ॥ Brahmavaiv. P. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 100, *a*, 43.

लक्ष्मीपति m. *der Gatte —, Herr des Glücks:* 1) Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1, 1, 1, 23. H. an. 4, 124. Med. t. 217. Vṛddha-Kân. 10, 17. — 2) *Fürst, König* Med. Verz. d. Oxf. H. 118, *a*, No. 194. — 3) *Betelpalme.* — 4) *Gewürznelkenbaum* H. an. Viçva im ÇKDr.

लक्ष्मीपुत्र m. *der* Lakshmî *Sohn:* 1) Bein. Kâma's Trik. 3, 3, 369. H. an. 4, 277. Med. r. 295. — 2) *Pferd* Trik. H. ç. 178. H. an. Med. Vaig. bei Mallin. zu Çiç. 15, 111; vgl. ebend. im Text श्रात्मजाः श्रियः als Bez. von *Pferden.* — 3) Bez. Kuça's und Lava's, der Söhne Râma's Çabdar. im ÇKDr.

लक्ष्मीपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 155, *b*, 5.

लक्ष्मीपुष्प m. *Rubin* H. 1064.

लक्ष्मीपूजा f. *Verehrung der* Lakshmî, Bez. eines Festes am 15ten Tage in der dunklen Hälfte des Âçvina As. Res. III, 263 nach Haughton.

लक्ष्मीफल m. *Aegle Marmelos Corr.* (बिल्व) Râgan. im ÇKDr.

लक्ष्मीयजुस् n. Bez. *eines best. Spruches* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 78. 104. — Vgl. यजुर्लक्ष्मी.

लक्ष्मीरमण m. *der Gatte der* Lakshmî d. i. Vishṇu Spr. 2162. Verz. d. Oxf. H. 160, *b*, 12. 177, *a*, 7.

लक्ष्मीवत् (von लक्ष्मी) 1) adj. Vop. 7, 28. *a*) *glücklich, mit Glücksgütern ausgestattet* AK. 3, 1, 14. H. 357. MBh. 18, 72. R. 4, 29, 22. 6, 15, 28. Spr. 4947. Mârk. P. 18, 51. — *b*) *schön,* von Personen Hariv. 4479. R. 1, 1, 13 (15 Gorr.). Suçr. 1, 334, 3. Varâh. Bṛh. S. 104, 36 (mit Anspielung auf das Metrum लक्ष्मी). गिरि Hariv. 8949. 12841. R. 4, 44, 119. — 2) m. *Artocarpus integrifolia Lin.* Çabdam. im ÇKDr. ein anderer Baum, = श्वेतरोहित Râgan. ebend.

लक्ष्मीवर्मदेव m. N. pr. eines *Fürsten* Colebr. Misc. Ess. II, 299. fgg. Journ. of the Am. Or. S. 7, 35. fg.

लक्ष्मीवल्लभ m. N. pr. eines Autors Hall 165.

लक्ष्मीवसति f. *die Wohnstätte der* Lakshmî, Beiw. der Blüthe von Nelumbium speciosum Spr. 3848.

लक्ष्मीवेष्ट m. = श्रीवेष्ट *Terpentin* Râgan. im ÇKDr.

लक्ष्मीश m. 1) *der Herr der* Lakshmî d. i. Vishṇu Vop. 25, 10. — 2) *der Mangobaum* Çabdârthak. bei Wilson.

लक्ष्मीसख m. *ein Freund —, ein Liebling —, ein Bevorzugter der Glücksgöttin* Râga-Tar. 2, 139.

लक्ष्मीसमाह्वया f. Bein. der Sîtâ (*den Namen* Lakshmî *führend*) Çabdar. im ÇKDr.

लक्ष्मीसहज m. *der Mond* (*der zugleich mit der* Lakshmî *Entstandene*) Çabdar. im ÇKDr.

लक्ष्मीसूक्त n. Bez. *einer best. Hymne auf* Lakshmî Verz. d. Oxf. H. 298, *b*, No. 725.

लक्ष्मीसेन m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 66, 173. fgg.

लक्ष्मीस्तोत्र n. *Preis der* Lakshmî Wilson, Sel. Works I, 322. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 13. 94, *a*, 33. Bez. einer best., dem Agastja zugeschriebenen Hymne 132, *b*, No. 242.

लक्ष्म्याराम m. *der Garten der* Lakshmî, Bez. eines best. Waldes Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. 2. पुण्यपाल.

लक्ष्य (von लक्ष्) 1) adj. *a*) *zu definiren* H. 1525. Schol. zu Kap. 1, 92. — *b*) *was angedeutet —, mittelbar bezeichnet* oder *ausgedrückt wird:* अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यङ्ग्यश्चेति त्रिधा मतः Sâh. D. 10. fg. Vedântas. (Allah.) No. 96. 99. अत्यन्तदुःखसंक्लिष्टरूपे रामे धर्मिणि लक्ष्ये Sâh. D. 16, 9. — *c*) *zu halten für, anzusehen als:* उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः Spr. 481. — *d*) *worauf man sein Augenmerk richtet, was man im Auge hat* AK. 3, 4, 2, 26. 6, 3, 25. P. 1, 1, 57, Sch. *worauf man sein Augenmerk zu richten hat, zu beobachten* Varâh. Bṛh. S. 68, 89. 101. Kathâs. 32, 31. — *e*) *zu erkennen, erkennbar an* (instr. oder im comp. vorangehend) Megh. 73. Ragh. 7, 57. 4, 5. Kumâras. 5, 74. Vikr. 37. Dhûrtas. 70, 11. सुख° *leicht zu erkennen* Hariv. 3828. — *f*) *sichtbar, wahrnehmbar* MBh. 13, 2631. Kumâras. 5, 81. Çâk. 142, v. l. Mâlav. 31. Sâh. D. 228. 254. अर्ध° Daçak. 91, 1. अ° (s. auch bes.) *unsichtbar* R. 6, 20, 12. Çâk. 37. 175. Kathâs. 18, 92. Bhâg. P. 1, 8, 18. 19, 25. 8, 10, 51. लक्ष्यालक्ष्य *sichtbar und nicht sichtbar* so v. a. *kaum sichtbar* MBh. 1, 8457. R. 5, 9, 33. Mâlatîm. 78, 4. Sâh. D. 334. — 2) m. लक्ष्य und अलक्ष्य Bezz. *bestimmter über Waffen gesprochener Zaubersprüche* R. 1, 30, 5. — 3) n. *a*) = लक्ष *ein ausgesetzter Preis:* लक्ष्याभिहरण *das Davontragen des Preises* MBh. 1, 4979. इह चेल्लभ्यते लक्ष्यं कृत्स्नाल्लोक्यामहे परान् *wenn wir hier den Preis davontragen* so v. a. *wenn wir hier Erfolg ha-*

ben 7,7662. लब्ध° = लब्धलक्ष R. Gorr. 2,65,9. 3,40,8. 10. 4,14,15. 6,36,60. Kâm. Nîtis. 19,32. — *b*) = लक्ष *Ziel* AK. 2,8,2,54. H. 777. Med. j. 52. Halâj. 2,313. लक्ष्याच्युतसायक: AK. 2,8,2,36. H. 772. Halâj. 2,316. Muṇḍ. Up. 2,2,3.4. Maitrjup. 6,24. लक्ष्यं (लक्ष्य: MBh. 12,1244) शस्त्रभृतां वा स्यात् M. 11,73. लक्ष्यं भित्त्वा MBh. 1,388. वेद्धुं लक्ष्यम् 5286. Ind. St. 1,302, N. P. 2,3,7, Sch. लक्ष्यं पातयितुम् MBh. 1,7200. लक्ष्यमुद्दिश्य राक्षसान् R. 3,26,20. दृष्टलक्ष्यभिद: शरा: Ragh. ed. Calc. 1,62. Çâk. 38. Megh. 72. °भूत Bhâg. P. 5,26,24. 7,15,42. °सिद्धि Kâm. Nîtis. 7,36. चलेषु यत्र लक्ष्येषु बाणसिद्धिश्च जायते 14,27. एषां परिदेवितानाम् Mâlav. 45. नेत्रशतैक° Ragh. 6,11. P. 3,2,114, Sch. एकसंघात° adj. VP. bei Muir, ST. 4,34. लक्ष्यं बन्ध् *sein Ziel richten auf:* कृतबद्धलक्ष्य Kumâras. 3,64. मयि (so auch in der älteren Ausg. zu lesen) बद्धलक्ष्य: Uttarar. 95,9 (124,8). आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा *sein Ziel auf den Luftraum richtend* so v. a. *ohne bestimmtes Ziel in's Blaue sehend* Çâk. 31,7, v. l. Mudrâr. 6,19. 31,3. 62,5. — *c*) = लक्ष *hunderttausend* Râga-Tar. 1,86. 104. — *d*) = लक्ष *Schein, Verstellung* AK. 1,1,7,33. Med. रोमाञ्चलक्ष्येण Ragh. 6,81. सुप्तलक्ष्येण Kâm. Nîtis. 5,45. लक्ष्यसुप्त so v. a. *sich schlafend stellend* Mṛkkh. 48,20. 25. Daçak. 135,1. — *e*) *Merkmal* Ind. St. 8,303,16 fehlerhaft für लक्ष्मन्. — *f*) vielleicht *Beispiel* Sâh. D. 123. Verz. d. Oxf. H. 181,*a*, No. 412, Z. 6. — Vgl. अ°, अभिलक्ष्यम्, दुर्लक्ष्य, निर्लक्ष्य, यूप°, सल्लक्ष्य, स्थूल° und लक्ष.

लक्ष्यज्ञत्व n. *Kenntniss des Zieles* oder — *von Beispielen* Verz. d. Oxf. H. 207,*a*, N. 3.

लक्ष्यता (von लक्ष्य) f. 1) *das Sichtbarsein:* °तां नी *sichtbar machen, zeigen* Spr. 1408. — 2) *das Zielsein:* °तां या *zum Ziel werden* Kathâs. 19,99.

लक्ष्यत्व n. 1) nom. abstr. von लक्ष्य 1) *b*) Sarvadarçanas. 157,10. — 2) *das Zielsein:* गत: पञ्चेषुलक्ष्यत्वम् Spr. 866.

लक्ष्यवीथी f. *die* (überall) *sichtbare Strasse* Hariv. 4635 nach Nîlak. so v. a. ब्रह्मलोकमार्ग, देवयान.

लक्ष्यहन् 1) adj. *das Ziel treffend.* — 2) m. *Pfeil* H. ç. 141.

लक्ष्यीकर् = लक्षीकर् Ragh. 9,57. बाणलक्ष्यीचकार 67. लक्ष्मीकरोनि fehlerhaft für लक्ष्यी° Çâk. 104,21, v. l.

लक्ष्योभू s. u. लक्षीभू.

लख्, लँखति (गतौ) Dhâtup. 5,24. — Vgl. लङ्ख्, लिङ्ख्.

लखिमादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 296,*a*, No. 718. vgl. लषमादेवी (gespr. लखमा°) in einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,7. eine Corruption von लक्ष्मीदेवी.

लग्, लँगति Nir. 6,26. Dhâtup. 19,24 (सङ्गे). लग्यति (आश्लेषे) Nir. 4,10. zu belegen nur लगति. 1) *sich heften an:* नहि ज्ञलोकसामङ्गे ज्ञलौका लगति Dhûrtas. 93,7. कश्चित्तस्य ग्रीवायां लगति Pankat. 245,7. कर्णे लगति (खल:, भुजंग:) Spr. 306, v. l. सर्वारम्भैर्लगत जगतामन्तरात्मन्यनन्ते 734. पादयोर्लगित्वा *sich an seine Füsse schmiegend* so v. a. *sich ihm zu Füssen werfend* Z. d. d. m. G. 14,571,2. मदनसायका: — राज्ञस्तस्याल गन्हृदि so v. a. *drangen in sein Herz* Kathâs. 51,122. छन्दसां मञ्जरी कान्ता सभ्यकण्ठे लगिष्यति Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 468. उच्चरेखा यत्र लगति *sich heften an* so v. a. *berühren, schneiden* Comm. zu Golâdhj. Sphuṭagativ. 13. विदितेङ्गिते हि पुर एव जने सपदीरिता: खलु लगन्ति गिर: *haften* Çiç. 9,69. — 2) *sich heften an* so v. a. *sich unmittelbar anschliessen, unmittelbar folgen:* विवादो ऽत्रालगत्तयो: *es entspann sich ein Streit darüber* Kathâs. 77,12. प्रभाते ऽहं ग्रामान्तरं यास्यामि। तत्र कतिचिद्दिनानि लगिष्यन्ति so v. a. *darüber werden einige Tage hingehen* Pankat. 185,19. — partic. 1) लग्न *a*) adj. α) = सक्त *hängen geblieben, festsitzend, hängend —, sich anschmiegend an, steckend an, auf, in* P. 7,2,18. Vop. 26,111. Trik. 3,3,257 (fälschlich शक्त). H. an. 2,282. Med. n. 18. कथं चास्य शिरो लग्नम् MBh. 9,2254. मन्दोदरस्य तल्लग्नं जङ्घायाम् 2257. fg. लग्नै: शङ्कनखैर्गात्रे (so die ed. Bomb.) 13,2660. लग्नगर्भा विमुच्येत 12,13126 = Hariv. 14383 (प्रमुच्येत). कण्ठे लग्ना *am Halse hängend* (eine Geliebte) Kathâs. 12,88. 37,227. कण्ठलग्ना Megh. 110. Kathâs. 50,98. Spr. 2131. कण्ठलग्नेन कारेण Kathâs. 28,125. वसुधाधिपम्। पुच्छे लग्नम् Mârk. P. 74,14. शिक्यायाम् Verz. d. Oxf. H. 156, *a*, 1. अङ्गदकोटिलग्नं प्रालम्बम् Ragh. 6,14. Hit. 35,12. Verz. d. Oxf. H. 62,*a*, 13. Kathâs. 25,106. स्कन्धौलग्नकुङ्कुमकेसरान् Ragh. 4,67. लग्नपङ्क Kumâras. 7,49. Kathâs. 37,44. Mṛkkh. 86,21. इन्दुलग्नोर्मिकस्ता Megh. 51. मया तव हस्ताग्रलग्नया *an deiner Handspitze hängend* so v. a. *mit dir verheirathet* Pankat. 119,6. अलीकलग्ना: (अलका:, खला:; अलीक *Stirn* und *Falschheit*) Spr. 4139. लग्नकच = जटा AK. 3,4,9,40. प्रतिमुकुललग्नमधुप Prab. 79,15. Mâlav. 40. Kumâras. 3,30. 7,16. कुटिलनखाग्रलग्नमुक्त Ragh. 9,65. नागदत्तलग्न (फलक) Daçak. 91,16. अङ्के Kathâs. 37,225. Râga-Tar. 5,410. नखपदं लग्नं स्तनतटे Spr. 3744. कस्मिन्संग्रामे प्रहारो ऽयं ते ललाटे लग्न: Pankat. 218,10. Râga-Tar. 6,358. सर्वाङ्गलग्नाम्बर Spr. 24. मृताङ्ग° so v. a. *die am Todten hängenden Kleider* Jâgn. 2,303. चन्द्रकान्त्याङ्गलग्नया Kathâs. 3,62. गवाक्षजालाग्रलग्नपद्मलसलोचना: 18,14. नवे भाजने लग्न: संस्कार: Spr. 2398. तरुस्कन्धलग्नैकदन्त Çâk. 32. दशनशिखरे धरणी तव लग्ना Gît. 1,17. पद्मिनीं दन्तलग्नाम् Kumâras. 3,76. ललाटलग्नैस्तैरिषुभि: Bhâg. P. 4,10,9. Kathâs. 82,41. 45. कायलग्नं मागकम् 39,70. कूप° *im Brunnen steckend* Bhâg. P. 9,18,21. उद्यार° Lalit. bei Burn. Intr. 504, N. 3. पाद° *im Fusse steckend* (कण्टक) Spr. 483. *an Jmdes Füsse geschmiegt* so v. a. *zu Jmdes Füssen liegend* Kathâs. 14,66. 39,198. 227. 52,80. 67,93. चरण° dass. Dhûrtas. 92,2. हृदये शरं लग्नम् *steckend in* Mârk. P. 134,51. मनोभवत्वव्येव सखो हृदयलग्नया। तया *an's Herz geklammert* Kathâs. 17,73. परस्य हृदये लग्नम् (काव्यम्, काण्डम्) *in's Herz gedrungen* Verz. d. Oxf. H. 120,*a*, 18. fg. मन्त्रालग्न इवार्णव: *angeschmiegt an, sich berührend mit* Ragh. 4,53. प्रान्तलग्नो दवाग्नि: Ṛt. 1,25. गात्रलग्न (वह्नि) Spr. 161. रेखाभिर्भूलग्नाभि: Varâh. Bṛh. S. 68,78. Verz. d. Oxf. H. 202,*a*, 43. Sâh. D. 278. पृष्ठे लग्ना: *sich an den Rücken schmiegend* so v. a. *auf dem Fusse folgend* Z. d. d. m. G. 14,572,9. पृष्ठतो लग्न: Vet. in LA. (III) 20,10. अस्य पृष्ठलग्नानाम् Pankat. 125,11. 106,13. नयनं यत्र लग्नम् *geheftet auf* Bhâg. P. 11,30,3. यस्मिन्मनो दृगपि नो न वियाति लग्नम् 5,2,16. मानसं तस्यां लग्नसमाधि Gît. 3,15. Mṛkkh. 1,4. मार्गे so v. d. *auf dem Wege bleibend, den Weg verfolgend* Vet. in LA. (III) 17,20. *sich berührend mit* so v. a. *schneidend* (von Linien): तुङ्गार्धरेखा यत्र लग्ना (प्रतिमण्डले) Golâdhj. Sphuṭagativ. 13. तिर्यग्रेखा यत्र कक्षायां लग्ना Comm. zu Golâdhj. Grahanav. 13. — β) *sich anschliessend, unmittelbar folgend:* तच्छ्रुतं यद्द्वादशवार्षिकावृष्टि: संपद्यते लग्ना Pankat. 50,18. द्वयोरपि विनिपात: संपद्यते लग्नम्

(लग्नः?) 92, 6. तत्र कानिचिद्दाहमाणि लग्नानि so v. a. *darüber gingen mehrere Tage hin* Vet. in LA. (III) 19, 1. — γ) *im Zusammenhange mit Etwas stehend:* अलग्न (अलगल der Text) Çat. Br. 3, 2, 4, 11. किमस्य वणिजो भक्तव्ययेन शाकसूपादिना परिव्ययेन लग्नम् so v. a. *wie viele Unkosten fallen auf?* Kull. zu M. 7, 127. — δ) *im Begriff stehend*, mit infin. Pañkat. 244, 6. — ε) *toll, wüthend* (von einem Elephanten) Halâj. 2, 65. — 2) m. *ein Sänger, dessen Amt es ist, den Fürsten am Morgen aus dem Schlaf zu wecken*, Trik. 2, 8, 56. — 3) n. *der Punkt, in dem sich zwei Linien berühren (schneiden)*, insbes. *der Punkt, in dem der Horizont und die Bahn der Sonne oder der Planeten zusammentreffen, der Aufgangspunkt der Sonne und der Planeten* (= राशीनामुदयः AK. 1, 1, 2, 29. Trik. H. 116. H. an. Med.); in der Astrol. *Horoscop* und auch *das ganze 1te Haus* Sûrjas. 3, 47. Varâh. Bṛh. S. 2, 3. 28, 1. 34, 9. 45, 16. 60, 20. 78, 25. 94, 10. 96, 7. fgg. 98, 17. fg. 103, 13. Bṛh. 1, 9. 16. 3, 6. 4, 7. fgg. Ind. St. 2, 274. fg. 281. Verz. d. B. H. No. 845. 862. Verz. d. Oxf. H. 330, b, 39. 331, a, 4. 332, b, 5. Mârk. P. 109, 38. fg. शस्तलग्ने 123, 3. °स्थित Varâh. Bṛh. S. 104, 61. °संस्थ Bṛh. 12, 4. °ग 22, 2. °गत 25, 4. °प 22, 5. °पति 8, 19. लग्नेश Ind. St. 2, 269. fgg. लग्नासवः Sûrjas. 3, 46. लग्नान्तरप्राणाः 9, 5. लग्नान्तरासवः 10, 2. मीनलग्ने R. 1, 19, 8. कर्कटे लग्ने वाक्पतानिन्दुना सह । प्रोच्यमाने 2. Später *ein von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichneter Zeitpunkt* (m. im Kathâs.): लग्ने च परिकल्पिते Kathâs. 15, 127. लग्नं विनिश्चित्य 16, 62. 46, 9. 50, 130. 80, 16. 104, 68. °निर्णय Verz. d. Oxf. H. 93, a, 36. लग्नं ज्ञातुम् Râga-Tar. 3, 337. लग्नमुक्ता 348. 351. Hit. 97, 13. लग्नश्च संप्राप्तः Kathâs. 123, 216. प्रस्थान° 12, 13. 54, 148. नास्ति लग्नः संवत्सरे ऽत्र वः 149. उक्तो लग्नश्च दूरे यत् 33, 83. दूरलग्नप्रदान 31, 79. 32, 17. उद्वाहलग्नं निश्चेतुम् 15. पप्रच्छ लग्नं विवाहे राजदत्ताया गणकानात्मनस्तथा 36, 52. त्वं कन्यका च चिरभाविविवाहलग्ना 32, 192. प्रस्थिते लग्नचिन्ता Spr. 2989. Auch mit Beifügung von शुभ u. s. w.: लग्नो वां शोभनो राजन्नस्ति मासेष्वितस्त्रिषु Kathâs. 36, 53. 52, 141. 54, 149. निर्णीय शुभलग्नम् Hit. 94, 9. Vet. in LA. (III) 16, 11. लग्नो ऽनुकूलो ऽस्ति राज्ञो मासेषु षट्स्वितः Kathâs. 32, 6. लग्नः कलिङ्गसेनाया देवस्य च शुभावहः । विवाहमङ्गलायेह किं नाद्यैव विलोक्यते ॥ 3. शुभफलदमपृच्छल्लग्नम् 34, 247. कुलग्नेनागता गेहाद्दिवा-हस्तेन दूरतः 32, 95. सुलग्ने ऽस्या यथाविधि । कार्यः पाणिग्रहः 31, 70. so v. a. *der entscheidende Augenblick, Entscheidung:* लग्ने ऽप्युपस्थिते 79, 40. लग्नो ह्येष मयार्जितः *ich habe die Entscheidung herbeigeführt, durch mich ist die Sache zu Stande gekommen* 43. — Vgl. भूलग्ना, भूरि°, मधुलग्न, मध्य°. — 2) लगित P. 7, 2, 18, Sch. गृध्रो महामत्वो दुर्गाभ्यन्तरं लगितः (v. l. चलितः, प्रचलितः) vielleicht *schlüpfte in* Hit. 129, 14.

— caus. लागयति (आस्वादने, v. l. आसादने) Dhâtup. 33, 63. — Vgl. रक्, लक्.

— अनु *sich heften an, unmittelbar folgen:* शब्दानुलग्न *dem Laute nachgehend* Vet. in LA. (III) 25, 6.

— अव, partic. अवलग्न *herabhängend, hängend an:* तां स्तिमितवस्त्रमिवावलग्नाम् Kaurap. 23 in Haeb. Anth. S. 231. स्कन्धावलग्नोद्धृतपद्मिनीक (द्विप) Ragh. 16, 68. कण्ठावलग्ना Kathâs. 50, 140. हस्तावलग्न Spr. 786. Vgl. अवलग्न (in der Bed. *Taille* auch Pañkar. 3, 5, 23). — caus. अवलगयति *anheften, anknüpfen* Schol. zu Kâtj. Çr. 5, 10, 21. Hierher wohl (nicht zum simpl.) अवलगित (s. u. d. W. in den Nachträgen und füge noch hinzu Bhar. Nâtjaç. 18, 107. Daçar. 3, 13) urspr. *Anhängsel.*

— आ *sich anheften an, sich anschmiegen:* आलगतु Kâtjâd. 3, 50. पटालग्ने पत्यौ *wenn sich der Gatte an's Gewand schmiegt* Spr. 1675. — caus. आलगयति *anheften, anknüpfen* Schol. zu Kâtj. Çr. 5, 10, 21.

— समा, partic. °लग्न *zusammengefügt, einander auf den Leib gerückt:* केशाकेशि समालग्ना न शेकुश्चेष्टितुं नराः MBh. 9, 1230.

— परि, im Prâkrit partic. परिलग्ग *hängen geblieben:* कुरवअसाहापरिलग्गं च वक्कलं Çâk. 18, 20.

— वि *sich anhängen an:* तस्याः पुच्छे विलगिष्यामि Verz. d. Oxf. H. 156, a, 5. तस्याः पुच्छे विलग्य 155, b, 44. — partic. विलग्न 1) adj. a) = लग्न Trik. 3, 3, 258. H. an. 3, 415. Med. n. 133. *hängen —, stecken geblieben, festsitzend, hängend an, steckend auf:* रथे विलग्नाविव चन्द्रसूर्यौ MBh. 4, 1690. विलग्नश्चाभवत्तस्मिँल्लतासंतानसंकुले (सलिलाशये) 11, 135. दंष्ट्राविलग्नांस्त्रीन्पिण्डान् 12, 13412. Bhâg. P. 3, 13, 30 (निमग्नां ed. Bomb.). केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु Bhag. 11, 27. पुच्छे Verz. d. Oxf. H. 155, b, 42. तरौ Varâh. Bṛh. S. 43, 20. लतागुल्म° Kathâs. 77, 29. प्रियतममंशुके विलग्नम् *sich klammernd an* Çiç. 9, 84. वटप्ररोहमासाद्य तत्रैव विलग्नः Pañkat. 259, 2. अम्बर° *hängend an* Çiç. 9, 20. आकुटिलपक्ष्म° (बाष्प) Çâk. 184. Ragh. 9, 68. रथकारशरीरे पादौ विलग्नः *blieb hängen, stiess an* Pañkat. 186, 9. तीरविलग्ना (नौ) so v. a. *gelandet* Kathâs. 101, 191. पुरो विलग्नैर्हरदृष्टिपातैः *geheftet* Kumâras. 7, 50. गोभिस्तृणविलग्नाभिः so v. a. *auf dem Grase liegend* Hariv. 3388. केशिवक्त्र° (बाहु) *ruhend auf* 4313. *herabhängend:* स्तनद्वय R. Gorr. 2, 8, 41. क्रौञ्ची wohl so v. a. *im Käfig hängend* R. Schl. 2, 78, 26. — b) *vergangen, verflossen:* तया सह त्वद्यैव कलहायतो ममेयती वेला विलग्ना Pañkat. 207, 22. — c) *dünn, schmal* (von der Taille; vgl. 2, b) विलग्नमध्या MBh. 1, 6426. 3, 10054. वेदिविलग्नमध्या 4, 1195. Kumâras. 1, 39. — 2) n. a) = लग्न *Aufgang eines Gestirns, Horoscop* u. s. w. Varâh. Bṛh. S. S. 6, Z. 5. Bṛh. 4, 12. 15. 19. 5, 10. fg. 6, 2. शुभराशिविलग्ने Dîpikâ im ÇKDr. गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहा रिष्टसूचकाः। गोचरे स्वराश्यपेक्षया यदा कदापि। विलग्ने जन्मलग्ने। इति संस्कारतत्त्वम् ÇKDr. — b) *Taille* (wo Ober- und Unterkörper *sich berühren;* vgl. अवलग्न 1, c) Trik. H. 607. H. an. Med. (m. n.). Halâj. 2, 362. — विलगित (उपताप) wird P. 6, 4, 24, Vârtt. 1 auf लङ्ग् zurückgeführt.

— सम्, partic. संलग्न *stecken geblieben, steckend in:* रजस्तमसि संलग्नं (संमग्नं ed. Bomb.) पङ्के द्विपमिवावशम् MBh. 12, 11157. *in unmittelbare Berührung gekommen, handgemein geworden:* तयोः संलग्नयोर्युद्धे 13278. *sich berührend mit:* कनिष्ठा पार्श्वसंलग्ना Verz. d. Oxf. H. 202, b, 22. = संहित Schol. zu RV. Prât. 5, 22. रोधसि तद्द्वीपसंलग्ने so v. a. *am Ufer dieser Insel* Kathâs. 123, 111. रत्नभूधरसंलग्नरत्नासन so v. a. *herkommend aus* Pañkar. 4, 6, 10. — caus. संलागयति *fest legen auf* (loc.) Schol. zu Kâtj. Çr. 17, 5, 23.

लगड adj. *hübsch, schön* Trik. 3, 1, 13. — Vgl. लडह.

लगत und लगध m. N. pr. eines Astronomen, des Verfassers des Gjotisha, Weber, Gjot. 8. 9. 109. 112.

लगनीय partic. fut. pass. von लग्. मम पादे ऽन्येन तस्यापरेण लगनीयमेव *an meinen Fuss soll sich ein Anderer und an dessen Fuss wieder*

ein Anderer hängen Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,5.

लगालिका f. *ein best. Metrum, 4 Mal* ⏑–⏑– Colebr. Misc. Ess. II, 158 (IV, 3). — Vgl. नगानिका, नगानी, नगालिका.

लगुड m. AK. 3,6,2,18. *Knüttel* 3,4,11,44. H. 785. Halâj. 4,41. M. 8,315. MBh. 7,1317. 8,747. Hariv. 12205. Kâm. Nîtis. 5,81. Varâh. Bṛh. 25,6. Spr. 5399. Kathâs. 20,125. 37,126. 53,15. 17. Râga-Tar. 6,23. Pańkat. 37,5. 40,21. 174,24. Hit. 23,6. 12. 101,7. 12. 115,6. 7. am Ende eines adj. f. आ Kathâs. 72,207. — Vgl. लकुट.

लग्न s. u. लग् und 1. लज्.

लग्नक m. *Bürge* (*der da haftet*) AK. 2,10,44. Trik. 2,10,17. H. 882. Hâr. 157. Halâj. 2,225.

लग्नकाल m. *der von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichnete Zeitpunkt* Kathâs. 71,166.

लग्नग्रह् adj. *fest auf Etwas bestehend, zudringlich* (*an die Kehle pakkend* Brockh.) Kathâs. 28,170; vgl. बद्धग्रह् 49,16.

लग्नचन्द्रिका f. Titel eines astr. Werkes Ind. St. 1,467,1.

लग्नदिन n. *der von den Astrologen zu einem Unternehmen als günstig bezeichnete Tag* Kathâs. 103,187.

लग्नदिवस m. dass. Kathâs. 73,36. 84,27.

लग्नदेवी f. N. einer fabelhaften Kuh aus Stein Çatr. 14,296.

लग्नवेला f. = लग्नकाल Kathâs. 21,222. Hit. 41,13.

लग्नसमय m. dass. Pańkat. 129,16.

लग्नाह् m. = लग्नदिन Kathâs. 103,170.

लग्निका f. fehlerhafte Variante für नग्निका (s. u. नग्नक) Comm. zu AK. 2,6,1,8.

लघट् Uṇâdis. 1,134. m. *Wind* Uǵǵval. auch लघटि nach dem Pârâjaṇa ebend.

लघन्ती f. N. pr. eines Flusses MBh. 2,375. लङ्घती ed. Bomb.

लघय् (denom. von लघु), °यति P. 1,1,57, Sch. *erleichtern, vermindern, schwächen, lindern:* नितान्तगुर्वी धुरम् Ragh. 3,35. शरदम्बुदसंहतिम् Kir. 5,4. पृथून् (Pflanzen und Fürsten) Spr. 440. Bhaṭṭ. 10,39. व्यथाम् Ragh. 11,62. मनसिज्रुजम् Vikr. 51.

लघिमन् (von लघु) m. gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. Vop. 7,61. 1) *Leichtigkeit* MBh. 13,1015 (महिमा st. लघिमा ed. Bomb.). लघिम्नोत्पत्य Bhâg. P. 10,44,34. Mârk. P. 99,54 (लघिमगुणा° zu lesen). समभ्रुते मे लघिमानमात्मा Ragh. 13,37. *die übernatürliche Kraft sich nach Belieben leicht zu machen* H. 202. Mârk. P. 40,29. Pańkar. 1,1,49. 2,8,2. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,14. 184,*a*,13. 231,*b*,8. Vet. in LA. (III) 3,12. — 2) *Leichtsinn* Bhaṭṭ. 3,7. — 3) *geringes Ansehen, die Jmd zu Theil werdende Geringachtung:* यः (राङ्कः) सकललघिमभाजनमुदरं न बिभर्ति डुष्पूरम् Çârṅg. Paddh. Manasvipraçaṁsâ 7.

लघिष्ठ und लघीयंस् s. u. लघु.

लघु (aus älterem रघु) Uṇâdis. 1,30. 1) adj. (f. लघ्वी und लघु), compar. लघीयंस् (selten लघुतर), superl. लघिष्ठ Vop. 7,53. *a*) *rasch, schnell, behende:* नर M. 7,193. पत्त्रिन् R. 2,96,45 (105,44 Gorr.). °लहरि Spr. 814. °गति Megh. 16. लघूत्थान Kâm. Nîtis. 11,63. लघुसमुत्थान 4,70. शरं च हस्तादादाय ततो लघुपराक्रमः R. ed. Gorr. 1,77,38. °परिक्रम Kâm. Nîtis. 12,25. लघुगुरुद्रुतप्लुतलक्षणानि (von Tacten) Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,14. Bez. eines best. Fluges der Vögel Pańkat. II, 57. Bez. der Nakshatra Hasta, Açvinî und Pushja (vgl. क्षिप्र in den Nachträgen) Varâh. Bṛh. S. 98,9. Weber, Nax. 2,385, N. 4. लघु adv. = शीघ्रम्, द्रुतम् AK. 1,1,1,60. Trik. 3,3,73. H. 1470. an. 2,55. Med. gh. 5. Halâj. 4,12. R. 2,46,21 (44,21 Gorr.). 58,23. 7,95,5. Kathâs. 27,156. 29,136. 37,224. 121,110. 122,24. 124,10. Mârk. P. 109,57. 134,55. लघूत्थित Kâm. Nîtis. 18,66. लघुद्राविन् *schnell (leicht) in Fluss gerathend* (Quecksilber) Sarvadarçanas. 99,18. — *b*) *leicht* d. i. *nicht schwer* H. an. Med. गुरुर्भारो लघुर्भव AV. 9,3,24. पर्णाल्लघीयसी भव 10,1,29. MBh. 3,2615. 10943. 12,6856. R. Gorr. 2,31,25. 4,9,95. Suçr. 1,20,16. 116,16. Ragh. 9,62. Megh. 20 (zugleich *gering geachtet*). Vṛddha-Kân. 15,19. Varâh. Bṛh. S. 81,5. 6. Râga-Tar. 3,128. Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,44. Bhâg. P. 2,10,23. 8,12,23. Pańkat. 76,17. fg. 253,13. °कोष्ठ adj. *einen leichten Unterleib —, nicht viel im Magen habend* Kâm. Nîtis. 7,36. *leicht zu verdauen, nicht schwer im Magen liegend* Suçr. 1,149,16. 18. उदक 172, 4. *leicht* so v. a. *sich leicht fühlend, keine Last empfindend* Hariv. 10644. fg. वपुस् Çâk. 38. मार्गपरिश्रमादलघुशरीरा Mâlav. 65,15. लघूत्तरात्मना Kathâs. 67,108. *leicht* so v. a. *ohne Gefolge:* लघुर्भव महाराज लघुः स्वैरं गमिष्यसि MBh. 3,8449. *leicht zu vollbringen* 5,739. धर्म Spr. 580. *leicht von Statten gehend:* संहारविक्षेपलघुक्रियेण हस्तेन Ragh. 5,45. so v. a. *leicht articulirt* (neben मध्यम und गुरु von der Aussprache des व) Ind. St. 10,438. *leicht* so v. a. *leicht machend:* सत्त्व Sâṁkhjak. 13. — *c*) *prosodisch kurz* Ṛv. Prât. 2,14. 17,22. 18,20. 33. AV. Prât. 1,51. Taitt. Prât. 2,10. P. 1,4,10. 7,3,86. Çânt. 2,19. 21. 3,14. Ind. St. 8,84. 89. 211. 426. 453. 467. Çrut. 9. fgg. 22. Varâh. Bṛh. S. 104,58 (zugleich *unansehnlich*). Mârk. P. 39,15. अ° Çrut. 44. लघीयंस् Ṛv. Prât. 18,20. *kurz der Zeit nach,* von einer Unterdrückung des Athems: लघुमध्योत्तरीयाख्यः प्राणायामस्त्रिधोदितः Mârk. P. 39,13. लघुर्द्वादशमात्रस्तु 14. — *d*) *klein, kurz, winzig, gering, unbedeutend* (Gegens. महन्त्, बृहन्त्, विपुल) H. 1427. H. an. Med. यानानि R. 2,92,33 (101,36 Gorr.) गोष्पद 6,69,16. समुद्रान्परिखालघून् Kathâs. 52,7. Ragh. 12,66. लघुश्मवती Suçr. 1,135,7. सैन्य Kathâs. 122,95. °द्रोणा: Hit. 84,3. °मात्र Âçv. Çr. 8,14,4. सामन् Çat. Br. 12,2,2,10. Lâṭj. 6,10,20. Gobh. 3,3,28. नातिलघुविपुलरचनाभिः Varâh. Bṛh. S. 1,2. Bṛh. 28 (26),7. Bhâg. P. 3,16,14. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*, No. 403. 252,*b*, No. 626. Sarvadarçanas. 90,19. °प्रमाण Varâh. Bṛh. S. 70,14. सर्षप Spr. 113. दर्पणे करिणः 3733. शशक Pańkat. 55,11. 87,8. °द्वार 170,24. °विवर 25. भोजनम् *schmale Kost* Spr. 2064. लघु भुक्तवन्तम् Suçr. 1,15,6. अलघूर्मिभिः Çiç. 9,38. 78. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 40. छाया, मैत्री Spr. 382. भावाः Kathâs. 25,42. कर्मन् MBh. 3,10485. कर्तव्यानि Pańkat. 202,5. °रागवशीकृत Kathâs. 37,28. पापानि, प्रायश्चित्तानि Bhâg. P. 6,2,16. चतुष्प्रकाराः Pańkat. 172,4. तृण Spr. 82. *klein, schwach, elend, unbedeutend, unansehnlich, gering geachtet,* von Personen M. 7,209. MBh. 3, 11308. R. 6,16,29. 85,8. 101,16. Megh. 20. Spr. 113. 440. 1129. 1461. 3490. 3794. 3936. 4074. 4142 (Gegens. साधु). 5385, v. l. Varâh. Bṛh. S. 104,58. Prab. 31,14. Pańkat. 68,6. °संदेशपदा सरस्वती *wenig* Ragh. 8,76. अलघुसंचारा गतिः Mṛkkh. 110,4 (vgl. die Adnn.). बलैरलघुद्विपैः Râga-Tar. 4,513. °सिराल Varâh. Bṛh. S. 68,8. लघु मन् *gering achten*

Çák. 160. Spr. 1738. लघीयंस् MBh. 2,2211. 3,10622. जन्मिन्, तृण Spr. 2927. लघुतर Pańkat. 53,9. 16. बंहीयसीं लघिष्ठां वा गिरं निर्मान्ति वाग्मिनः *lang oder kurz* Cit. bei Kull. zu M. 5,64. लघिष्ठ = अल्प und भेलक H. an. 3,177. = अत्यल्प und भेल Med. ṭh. 16. — e) *jünger:* भवदीयलघुभ्रातरौ Pańkat. 220,3. तस्माल्लघुः Verz. d. B. H. No. 881; vgl. Ind. St. 2,417. — f) *leise:* °पदन्यास Kathâs. 112,152. अलघु *laut:* गीत Bhâg. P. 10,35,10. — g) *angenehm, ansprechend;* = इष्ट, चारु, मनोज्ञ AK. 3,4,1,29. H. an. 2,55. Med. gh. 5. °वासस् M. 2,70. लघु यासां दर्शनं वाक्च लघ्वी MBh. 5,904. Ragh. 11,12. 80. आभरण *hübsch, schön* Mâlav. 82. — 2) f. लघु *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21. Trik. H. an. Med. Ratnam. 123. — 3) f. लघ्वी a) *ein leichter Wagen* Trik. 2,8,49. H. an. 2,536. Med. v. 23. Hâr. 162. — b) *Trigonella corniculata Lin.* Râǵan. im ÇKDr. — 4) n. a) *ein best. Zeitmaass,* = 15 Kâshṭhâ = 1/15 Nâḍikâ Bhâg. P. 3,11,7. 8. VP. 22, N. 3. — b) *Agallochum, eine best. Species von Ag.* (अगुरु, कृष्णागुरु) Trik. H. ç. 129. Med. Ratnam. 133. *die Wurzel von Andropogon muricatus* (vgl. लघुलय) Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. परि°.

लघुकङ्कोल m. *Pimenta acris* oder *eine ähnliche Myrtacee* Hṛdajadîpa in Nigh. Pr.

लघुकण्टका f. *Mimosa pudica* Vaidjabh. in Nigh. Pr.

लघुकर्कन्धु m. f. *eine kleine Art Zizyphus* Madanav. in Nigh. Pr.

लघुकर्णी f. *eine best. Pflanze,* = mahr. मोरवेल Râǵan. in Nigh. Pr.

लघुकाय 1) adj. *einen leichten Körper habend.* — 2) m. *Ziege* Trik. 2,9,25.

लघुकाश्मर्य m. *ein best. Baum,* = कट्फल Râǵan. im ÇKDr.

लघुकौमुदी f. *die kurze* Kaumudî, Titel einer Abkürzung der Siddhântakaumudî, Gild. Bibl. 381.

लघुक्रम adj. *einen raschen Schritt habend, rasch an Etwas gehend, eilend:* पक्वतालानि सहितौ पातयाव लघुक्रमौ Hariv. 3709. विवृते गर्ते निपपात लघुक्रमः Mârk. P. 21,9. °क्रमम् adv. *raschen Schrittes, schnell* Kathâs. 6,134.

लघुखट्टिका f. *Sessel, Lehnstuhl* Hâr. 209.

लघुखर्तर N. pr. eines Geschlechts Wilson, Sel. Works I, 338. — Vgl. खरतरगच्छ.

लघुगङ्गाधर m. N. *eines medic. Pulvers gegen Durchfall* Çârṅg. Saṁh. 2,6,21.

लघुगर्ग m. *ein best. Fisch* Trik. 1,2,20. Hâr. 190.

लघुगोधूम m. *eine kleine Weizenart* Râǵan. in Nigh. Pr.

लघुग्रहमञ्जरि f. Titel eines astrol. Werkes Mack. Coll. I, 130.

लघुचन्द्रिका f. Titel eines Commentars Hall 137.

लघुचित्त adj. (f. आ) *leichtsinnig, flatterhaft:* स्त्रियः MBh. 13,2202. °ता f. *Leichtsinn, Flatterhaftigkeit* R. 4,1,22.

लघुचिन्तन n. Titel eines Werkes Hall 185.

लघुचिन्तामणिरस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 993.

लघुचिर्भिटा f. *Koloquinthe* Râǵan. im ÇKDr.

लघुचेतस् adj. *kleinen Geistes, niedern Sinnes* (Gegens. उदारचरित) Spr. 203.

लघुच्छदा f. *eine Spargelart* Dravjar. in Nigh. Pr.

लघुच्छेद्य adj. *leicht auszurotten,* — *zu vernichten* Pańkat. III, 69. wohl fehlerhaft für लघूच्छेद्य.

लघुजङ्गल m. *ein best. Vogel,* = लावक Trik. 2,5,31.

लघुजातक n. Titel eines von Varâhamihira verfassten *kürzeren* Werkes über die *Nativitäten* Verz. d. B. H. No. 838. fgg. Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,17. — Vgl. बृहज्जातक.

लघुजातिविवेक m. *der kurze* Ǵâtiviveka, Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 278,*a*,36.

लघुता (von लघु) f. 1) *Behendigkeit, Geschicklichkeit* MBh. 7,4654. fg. वाहनाम् Mârk. P. 19,15. — 2) *Leichtigkeit* Suçr. 1,43,20. 149,1. 17. 313,4. Ṛt. 3,4. शरीर° Verz. d. Oxf. H. 237,*a*, No. 568. — 3) *prosodische Kürze* Varâh. Bṛh. S. 104,57. Ind. St. 8,223. — 4) *Kleinheit, Kürze, Geringigkeit, Unbedeutendheit:* कश्मलं लघुतां याति MBh. 13,7145. दिनानि लघुतां ययुः *wurden kurz* Râǵa-Tar. 3,170. — 5) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit* R. 2,27,2. — 6) *geringes Ansehen, Mangel an Würde, Erniedrigung* R. 5,70,9. Spr. 1079. 2505. 4508. 4911. Çiç. 9,56. Varâh. Bṛh. S. 104,57. Bhâg. P. 5,1,20.

लघुत्व (wie eben) n. 1) *Behendigkeit, Geschicklichkeit:* विमोक्षादानसंधाने MBh. 1,5245. — 2) *Leichtigkeit* Çvetâçv. Up. 2,13. Suçr. 1,20,18. 118,2. 170,1. 184,20. लघुत्वादुत्स्वप्नायते *weil er sich leicht fühlt* Mṛkkh. 49,10. — 3) *prosodische Kürze* Ind. St. 8,223. — 4) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit* MBh. 13,6884. — 5) *Mangel an Würde, geringes Ansehen, Erniedrigung* R. 3,35,23. 6,36,95. Spr. 1031. Vṛddha-Kâṇ. 15,14. Praçnottaram. 18 in Monatsber. der Berl. Ak. 1868, S. 110. Çârṅg. Paddh. Prakîrṇakhj. 17.

लघुदन्ती f. *eine kleinere Art Croton* Bhâvapr. in Nigh. Pr.

लघुदीपिका f. Titel eines Commentars Colebr. Misc. Ess. I, 76.

लघुदुन्दुभि m. *eine kleine Trommel* (डगड) Çabdar. im ÇKDr.

लघुद्राक्षा f. *eine kleine Traube ohne Kerne, Kischmisch* (काकलीद्राक्षा) Râǵan. im ÇKDr.

लघुद्वारवती f. *die jüngere* Dvâravatî oder *der jüngere Theil der Stadt* Dv. Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,21. — Vgl. मूलद्वारवती.

लघुनाभमण्डल n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 93,*b*,44.

लघुनामन् n. *Agallochum* (अगुरु) Çabdaḱ. im ÇKDr.

लघुनारदीय n. *das kürzere* Nâradîja Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,13. — Vgl. बृहन्नारदीय.

लघुन्यायसुधा f. Titel eines Commentars Hall 97.

लघुन्यास m. Titel einer grammatischen Schrift Verz. d. Oxf. H. 185,*b*,38.

लघुपञ्चमूल n. Râǵan. in Nigh. Pr.; s. u. पञ्चमूल 1).

लघुपण्डित m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 110,*b*,9.

लघुपतनक m. N. pr. einer Krähe (*schnell fliegend*) Pańkat. 104,13. Hit. 9,6. — Vgl. लघुपातिन्.

लघुपत्त्रक m. = रोचनी Çabdaḱ. im ÇKDr.

लघुपत्त्रफला f. = लघुडुम्बरिका Râǵan. im ÇKDr. u. d. l. W.

लघुपत्त्री f. *eine best. Pflanze,* = अश्वत्थी Râǵan. im ÇKDr.

लघुपद्धति f. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,17.

लघुपराशर m. *der kürzere* Parâçara (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,25. — Vgl. बृहत्पराशर.

लघुपरिभाषावृत्ति f. Titel eines *kurzen Commentars* zu den grammatischen Paribhâshâ Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुपर्णी f. = लघुकर्णी Madanav. in Nigh. Pr.

1. लघुपाक m. *Verdaulichkeit* Çârṅg. Saṁh. 1,4,12.

2. लघुपाक adj. *leicht verdaulich* Suçr. 1,195,9. 196,17. Çârṅg. Saṁh. 1,1,37.

लघुपाकिन् adj. dass. Suçr. 1,188,20. 196,8.

लघुपातिन् adj. *schnell fliegend;* m. N. pr. einer Krähe Kathâs. 61,58. — Vgl. लघुपतनक.

लघुपिच्छिल m. *Cordia Myxa Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

लघुपुलस्त्य m. *der kurze* Pulastja (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Ind. St. 1,235.

लघुपुष्प m. *eine Art* Kadamba (भूमिकदम्ब) Râǵan. im ÇKDr.

लघुप्रयत्न adj. *mit geringer Articulation ausgesprochen:* °तर compar. P. 8,3,18.

लघुबदर 1) m. *eine Art Judendorn.* — 2) f. ई desgl. (= भूबदरी) Râǵan. im ÇKDr.

लघुबुद्धपुराण n. Titel einer Abkürzung des Lalitavistara Mack. Coll. I, 50.

लघुबोध m. Titel einer (*leichtverständlichen*) Grammatik Verz. d. B. H. No. 778. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 48.

लघुब्रह्मवैवर्त n. *ein abgekürztes* Brahmavaivarta Verz. d. Oxf. H. 278,*b*,46.

लघुब्राह्मी f. *eine best. Pflanze,* = ब्रलोद्भवा Râǵan. im ÇKDr.

लघुभव m. *Erniedrigung* Spr. 1859, v. l.

लघुभागवत n. *das abgekürzte* Bhâgavata Wilson, Sel. Works I, 167.

लघुभाव m. *Leichtigkeit* Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,45.

लघुभुज् adj. *wenig essend* Varâh. Bṛh. 17,1.

लघुभूषणकान्ति f. Titel eines Commentars Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुमञ्जूषा f. desgl. Hall 115.

लघुमन्थ m. = तुद्राग्निमन्थ *Premna spinosa* Râǵan. im ÇKDr.

लघुमांस 1) m. *Rebhuhn* Trik. 2,5,26. — 2) f. ई *eine Art Valeriana* (गन्धमांसी) Râǵan. im ÇKDr.

लघुमानस Titel eines astr. Werkes Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,41.

1. लघुमूल n. *in algebra, the least root with reference to the additive quantities,* Wilson; *the lesser root of an equation* Haught.

2. लघुमूल adj. *unbedeutende Wurzeln habend* so v. a. *am Anfange unbedeutend* (Gegens. महोदय, महाफल): ग्रर्थ Spr. 3893. MBh. 2,164. R. Gorr. 2,109,14.

लघुमूलक n. *Radies* Bhâvapr. in Nigh. Pr.

लघुयम m. *der kurze* Jama (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,33.

लघुलय n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* AK. 2,4,5,30.

लघुललितविस्तर *ein Auszug aus dem* Lalitavistara Verz. d. Oxf. H. 84,*b*,2. 372,*b*, No. 266.

लघुवसिष्ठसिद्धान्त oder लघुवा° m. Titel einer *Abkürzung des* Vas. Colebr. Misc. Ess. II, 377. 379. 392.

लघुवाक्यवृत्ति f. Titel eines Werkes Hall 107. °प्रकाशिका ebend.

लघुवार्त्तिक n. Bez. der letzten acht Bücher im Tantravârttika Hall 170. Titel eines Werkes des Kumârila 184. °टीका ebend. Mack. Coll. I, 12.

लघुवासिष्ठसिद्धान्त s. u. लघुवसिष्ठ°.

1. लघुविक्रम m. *ein rascher Schritt* R. 7,101,3 (nach dem Comm. adj., indem er योधाः ergänzt).

2. लघुविक्रम adj. *einen raschen Schritt habend, behend auf den Füssen, eilend* Hariv. 3747. R. 1,26,11 (27,10 Gorr.). 42,5. 12 (43,12 Gorr.). 3,26,19. 40,29. 68,30. 7,21,1. 82,20; vgl. ग्राशुविक्रम MBh. 8,1910. त्वरितविक्रम R. Gorr. 1,43,5. 7,107,8.

लघुविष्णु m. *der kurze* Vishṇu (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,1.

1. लघुवृत्ति f. *ein kurzer Commentar*, Titel eines best. Commentars Colebr. Misc. Ess. II, 44. लघुवृत्त्यवचूरिका Verz. d. B. H. No. 767.

2. लघुवृत्ति adj. *dessen Art und Weise zu sein eine leichte ist, was leicht ist* ṚV. Prât. 18,33.

लघुवेधिन् adj. *geschickt treffend* MBh. 7,4561.

लघुवैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा f. Titel einer *Abkürzung der* Vaijâk. Colebr. Misc. Ess. II, 42.

लघुशब्दरत्न n. Titel einer *Abkürzung des* Çabdaratna Colebr. Misc. Ess. II, 13. 41. Verz. d. B. H. No. 750.

लघुशब्देन्दुशेखर m. Titel eines Commentars zur Siddhântakaumudî, einer *Abkürzung des* Çabdend. Verz. d. Oxf. H. 164,*b*. 165,*a*. Colebr. Misc. Ess. II, 13. 41.

लघुशान्तिपुराण n. Titel einer *Abkürzung des* Çântip. Verz. d. Oxf. H. 372,*b*, No. 266.

लघुशिखरताल m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,10.

लघुशिवपुराण n. *das abgekürzte* Çivap. Verz. d. Oxf. H. 75,*a*, No. 127.

लघुशौनकी f. *die kürzere* Çaun., Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 1247. — Vgl. वृद्धशौनकी.

लघुसंग्रह m. Titel eines Werkes Mack. Coll. I, 159.

लघुसंग्रहणीसूत्र n. desgl. Wilson, Sel. Works I, 282.

लघुसत्त्व adj. *einen schwachen Charakter habend* Varâh. Bṛh. S. 15, 18. °ता f. *Schwäche des Charakters* MBh. 3,15111. R. 7,22,10.

लघुसदाफला f. = लघूडुम्बरिका Râǵan. im ÇKDr.

लघुसप्ततिका f. *eine Abkürzung der* Saptatikâ: °स्तव Verz. d. B. H. No. 1338.

लघुसांख्यवृत्ति f. = लघुसांख्यसूत्रवृत्ति Titel einer *Abkürzung des* Sâṁkhjapravakanabhâshja Hall 2. Verz. d. Oxf. H. 238,*a*, No. 574.

लघुसार adj. *winzig, unbedeutend, werthlos:* तृणमिव लघुसारे सर्वसंसारसौख्ये Journ. of the Am. Or. S. 7,44.

लघुसिद्धान्तकौमुदी f. = लघुकौमुदी Verz. d. B. H. No. 754.

लघुसिद्धान्तचन्द्रिका f. Titel eines Commentars Hall 178.

लघुसुदर्शन n. *ein best. med. Pulver* Verz. d. B. H. No. 982.

लघुस्थानता f. Burn. Lot. de la b. l. 426,2 wohl fehlerhaft für लघूत्थानता (beide Formen auch Vjutp. 144) *rasches an's-Werk Gehen,* wie die v. l. hat; vgl. लघूत्थान Kâm. Nîtis. 11,63. लघुसमुत्थान 4,70. लघूत्थित 18,66.

लघुस्पद् = रघुस्पद् Kâç. zu P. 8,2,18, Vârtt. 2.

लघुहस्त adj. *Geschicklichkeit in den Händen besitzend*, von guten Bogenschützen, Schreibern u. s. w. gesagt, H. 772. Halâj. 2,316. MBh. 7,4741. Suçr. 1,123,16. Kathâs. 42,133. Bhâg. P. 6,10,25. Spr. 3090. 4747. लघुचित्रहस्त MBh. 3,15709.

लघुहस्तता f. *Geschicklichkeit in den Händen* MBh. 5,2356. Ragh. 9,63.

लघुहस्तत्व n. dass. Kathâs. 11,70.

लघुहस्तवन्त् adj. = लघुहस्त Hariv. 7524 (wo mit der neueren Ausg. °हस्तवान् zu lesen ist). Bhâg. P. 8,11,21.

लघुहारीत m. *der kurze* Hârîta (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. B. H. No. 1166. Kull. zu M. 2,246.

लघुहेमदुग्धा f. = लघूदुम्बरिका Râǵan, im ÇKDr.

लघूकर् (लघु + 1. कर्), °कृत *leichter gemacht* Med. t. 204. *kürzer gemacht* und zugleich *um das Ansehen gebracht* Spr. 3870.

लघूकरण n. *das Vermindern, Verringern:* पञ्चमल° Sarvadarçanas. 75,18.

लघूक्ति f. *eine kurze Ausdrucksweise* Cit. bei Kull. zu M. 5,64.

लघूदुम्बरिका f. *Ficus oppositifolia* Râǵan. im ÇKDr.

लघूय् (von लघु), लघूयँति *geringschätzen* Çat. Br. 6,7,3,13. 9,1,2,6.

लघ्वञ्जीर n. *eine geringere Feige* Râǵan. und Râǵav. im ÇKDr. u. अञ्जीर.

लघ्वत्रि m. *der kurze* Atri (als Verfasser eines Gesetzbuchs) Verz. d. B. H. No. 940. — Vgl. बृहदत्रि.

लघ्वग्न्युदुम्बराह्वा f. = लघूदुम्बरिका Râǵan. im ÇKDr. u. d. l. W.

लघ्वार्यसिद्धान्त m. *ein abgekürzter* Ârjas. Colebr. Misc. Ess. II,467.

लघ्वाशिन् adj. *wenig essend* Bhag. 18,52. MBh. 12,8920.

लघ्वाहार adj. dass. MBh. 3,10845. 13985. Mârk. P. 40,15. Verz. d. Oxf. H. 30,b,31.

लङ्क 1) m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. °शान्तमुखाः *die Nachkommen* Laṅka's und Çântamukha's gaṇa तिककितवादि zu 2,4,68. — 2) लङ्का f. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,40. gaṇa वाकिनादि zu P. 4,1,158. AK. 3,6,1,7. a) N. der Hauptstadt von Ceylon und Bez. der ganzen Insel, die das Epos von Râkshasa unter ihrem Fürsten Râvaṇa bewohnt sein lässt, Trik. 3,3,40. H. an. 2,16. Med. k. 32. Viçva bei Uǵǵval. MBh. 3,15874. 16252. 16323. fgg. R. 1,1,71. 3,53,35. 6,13,22. 95,12. LIA. I, 200, N. 3. Hiouen-thsang II,144. Varâh. Bṛh. S. 14,11. Golâdhj. Bhuvanak. 17. 26 (°देश). Ragh. 12,61. 63. 66. Kathâs. 51,62. Râǵa-Tar. 1,298. 3,75. Weber, Râmat. Up. 299. Bhâg. P. 5,19, 30. Mârk. P. 58,20. Verz. d. Oxf. H. 13,a,49. 29,b,18 (°काण्ड). LA. (III) 4, 5 Anm. °पुरी AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). Burn. Intr. 514. °नगरी Gaṇitâdhj. Kâlamânâdh. 15. लङ्कोदय *Sonnenaufgang in* Laṅkâ Sûrjas. 13,14. Golâdhj. Madhjagativ. 20. Kern in der Vorrede zu Varâh. Bṛh. S. 53. °नाथ Verz. d. B. H. No. 943. Ragh. 15,103. °पति H. 706, Sch. लङ्काधिप Verz. d. Oxf. H. 339,b,25. लङ्काधिपति R. 3,57,34. Ragh. 6,62. लङ्काधिराज Râǵa-Tar. 3,73. लङ्केन्द्र 4,502. लङ्केश Trik. 2,8,5. H. 699. 706. Hariv. 1876. Ragh. 12,84. लङ्केश्वर R. 6,36,76. Ragh. 6,40. 13,78. Spr. 1185. 2630. लङ्कारि *der Feind von* L. d. i. Râma 3523. °दाहिन् *der Verbrenner von* L. d. i. Hanumant Çabdar. im ÇKDr. — b) = रावणाकृद LIA. I,34. — c) *eine* Çâkinî H. an. Med. Viçva. — d) *ein liederliches Weib* diess. — e) *Zweig* diess. und Trik. — f) *eine best. Körnerfrucht* (= करालत्रिपुटा u. s. w.) Râǵan. im ÇKDr. = लङ्कापिका Ratnâk. in Nigh. Pr.

लङ्कटङ्कटा f. N. pr. einer Tochter der Saṁdhjâ, Gattin Vidjutkeça's und Mutter Sukeça's R. 7,4,23.

लङ्कापिका, लङ्कायिका und लङ्कारिका f. = लङ्कोपिका Çabdar. im ÇKDr.

लङ्कावतार oder vollständiger सद्धर्म° Titel eines buddh. Sûtra Burn. Intr. 6. 8. 68. 109. 438. 514. 542. Hiouen-thsang II, 144. Wilson, Sel. Works II,21.

लङ्केशवनारिकेतु m. Bein. Arǵuna's MBh. 4,1294. Nîlak.: लङ्केशस्य रावणस्य वनं तस्यारिर्नाशको हनूमान् स केतुर्ध्वजो यस्य स ल°.

लङ्कोपिका f. *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21.

लङ्कोयिका f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

लङ्ख्, लँङ्खति (गतौ) Dhâtup. 5,23.

लङ्ग्, लँङ्गति Nir. 6,26. (गतौ, गतौ खञ्जे Vop.) Dhâtup. 5,37. विलङ्गित. उपतापे aber विलगित P. 6,4,24, Vârtt. 1. विलङ्गयन् Pańkat. I,369 fehlerhaft für विलङ्घयन्; vgl. Spr. 4700.

लङ्ग 1) adj. als Erkl. von खोर *lahm* Schol. zu Kâtj. Çr. 22,3,19. — 2) m. a) = सङ्ग (vgl. लग्). — b) = षिङ्ग H. an. 2,47. Med. g. 21. — H. an. 2,423 wird टार durch लङ्ग (रङ्ग Med.) umschrieben.

लँङ्गक m. = वल्लभ Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,37.

लङ्गल 1) n. = लाङ्गल *Pflug* Kâṭh. 29,4. — 2) लङ्गल oder लाङ्गल N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang II, 177. 412. Vie de Hiouen-thsang 208.

लङ्गिम oder लङ्गिमन् Khandom. 109. Dhûrtas. in LA. 67,17. लङ्गिममय 83,1.

लङ्गूल n. = लाङ्गूल Uṇâdik. im ÇKDr.

लङ्घ्, लँङ्घति, °ते Dhâtup. 4,34 (गतौ, भोजननिवृत्तौ). 5,55 (शोषणे, गतौ). 1) *springen auf:* अन्ये चालङ्घिषुः शैलान् Bhaṭṭ. 15,32. — 2) *fasten.* — 3) *abzehren:* यं व्याधिरतिदीप्ताङ्गं कदाचित्तु न लङ्घति Halâj. im ÇKDr.

— caus. लङ्घँयति Dhâtup. 33,87. 121 (भाषार्थ, भासार्थ). aus metrischen Rücksichten hier und da auch med. 1) *springen über, überschreiten, hinübergehen über;* mit acc.: वत्सतन्त्रीम् M. 4,38. लङ्घयित्वा प्रयाहि माम् MBh. 3,11173. fg. सागरः प्लवगेन्द्रेण क्रमेणैकेन लङ्घितः 11178. प्राकारम् 4,811. 13,1575. सरितः 7381. Hariv. 3747. 4282. वेलां न लङ्घयति *das Meer* R. Gorr. 2,11,5. 4,63,16. 5,1,19. 28. 2,43. 3,7. 6,3. 55. 16. 7,27,1. Megh. 55. Ragh. 4,52. Spr. 1239. 1519. Varâh. Bṛh. S. 53, 108. Râǵa-Tar. 3,325. 4,566. Mârk. P. 35,30. 50,88. 51,90. कल्पान्तवातसंक्षोभलङ्घिताशेषभूभृतः (उदधेः) Prab. 5,1. 92,15. Verz. d. Oxf. H. 33,a,4. 6. अध्वानम् *einen Weg zurücklegen* Ragh. 1,47. मर्यादाम् *die Grenze überschreiten* MBh. 12,3565. Hariv. 14324. R. 7,36,32. Spr. 4201. Bhâg. P. 1,18,37. स्थितिम् Kathâs. 45,91. R. Gorr. 2,121,17. — 2) *besteigen, hinüberfahren über, von oben berühren:* दुर्गालङ्घितविग्रह (उमावल्लभ) Sâh. D. 18,20. हस्त इव भूतिमलिनो यथा यथा लङ्घयति — दर्पणम् Spr. 5397. कनाग्रिलङ्घिततरु Ragh. 11,92. निवासश्चैष मे ऽश्वत्थो देवैरपि न लङ्घ्यते so v. a. *wird betreten* Kathâs. 94,71. यावद्रूपं कटिति न जरया लङ्घ्यते (v. l. für लुप्यते) प्रेयसीनाम् Spr. 2601. Prab. 1,10. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* संविदम् Jâǵn. 2,187. निदेशम् Ragh. 9,9. आदेशम् Kathâs. 33,45. आज्ञाम् 51,43. Râǵa-Tar. 4,312. मन्त्रिमन्त्रम्

Kathâs. 58, 53. वचः 49, 16. गुरुवाक्यम् Spr. 4090. शास्त्राणि Mârk. P. 30, 88. — 4) *hinüberkommen über, entgehen:* नियतिः केन लङ्घ्यते Spr. 2011. प्राक्तनं केन लङ्घ्यते 2169. भाग्यं न लङ्घयति को ऽपि विधिप्रणीतम् 3653. दैवलिखितं भोगम् Kathâs. 40, 31. शिरसि लिखितम् Spr. 4147. प्रजापतिवरम् so v. a. *hintertreiben, vereiteln, hemmen* R. 7, 23, 5, 58. दैवी च सिद्धिरपि लङ्घयितुं न शक्या Mṛkkh. 98, 13. Spr. 1900. — 5) *sich über Jmd hinwegsetzen* so v. a. *gegen Jmdes Willen handeln, sich vergehen gegen Jmd, beleidigen, verletzen* M. 5, 151. 8, 371. MBh. 1, 1445 (लम्बयित्वा ed. Bomb.). Hariv. 571 (तर्जिता st. लङ्घिता die neuere Ausg.). Spr. 5397. रजसा अलङ्घितात्मा *der sich nicht in der Leidenschaft vergessen hat* Kathâs. 20, 128. रविणा लङ्घितो मासः Weber, Gjot. 101. — 6) *Jmd übertreffen:* गुणैरौदार्यशौर्याद्यैर्मघवानमलङ्घयत् Râǵa-Tar. 4, 217. *Etwas übertreffen, verdunkeln:* धर्षणामर्षितो रामो धैर्यं रोषेण लङ्घयन् R. 6, 90, 12. (यशः) जगत्प्रकाशं तदशेषमिज्यया भवद्गुरुर्लङ्घयितुं ममोद्यतः Ragh. 3, 48. — 7) *Jmd fasten* (Essenszeiten *übergehen*) *lassen* Suçr. 2, 407, 12. 462, 11. सुलङ्घित *den man hat richtig fasten lassen* 407, 17. — Vgl. लङ्घन fgg.

— desid. vom caus. *zu überschreiten gedenken:* मेरुं लिलङ्घयिषति Cit. im Comm. zu Kâvjâd. 2, 350.

— अति caus. *übertreten, verletzen:* आज्ञाम् Kathâs. 18, 37. Prab. 7, 16 (अभिलङ्घ्य v. l.). — Vgl. अतिलङ्घन, अतिलङ्घिन्.

— अभि caus. 1) *springen über, überschreiten:* अग्निम् M. 4, 54. Jâǵn. 1, 137. मर्यादाम् MBh. 12, 5455. — 2) *übertreten, verletzen:* धर्मम् MBh. 12, 5319. आज्ञाम् Prab. 7, 16. — 3) *sich vergehen gegen Jmd:* ब्राह्मणम् MBh. 12, 3565. — Vgl. अभिलङ्घन.

— अव caus. *hinwegkommen über* (eine Zeit), *verbringen:* अवहेलावलङ्घिते। ग्रीष्मे Kathâs. 78, 22. सर्वकालमवलङ्घ्य so v. a. *keine Zeit eingehalten habend* Ghaṭ. 7.

— उद् caus. 1) *überschreiten, hinübergehen über, passiren:* कावेरीम् Kathâs. 19, 95. पर्वतम् 39, 143. 43, 137. 202. अटवीम् 100, 11. 103, 1. 109, 41. 44. 116, 14. Râǵa-Tar. 3, 221. भित्तिम् Verz. d. Oxf. H. 128, b, 12. आकाशमपारम् 148, a, No. 318, Z. 8. देशान् Kathâs. 25, 38. 67, 106. 25, 10. Râǵa-Tar. 4, 146. अध्वानम् *einen Weg zurücklegen* Megh. 46. Kathâs. 86, 55. 111, 42. über eine Zeit *hinwegkommen*, eine Zeit *zubringen, verleben* 67, 106. 72, 407. — 2) *sich schwingen auf, zu sitzen kommen auf:* उडुपेन शंभोरलङ्घ्यमुल्लङ्घितमुत्तमाङ्गम् Spr. 4023. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* स्वकं धर्मम् Mârk. P. 28, 34. 132, 12. Daçak. in Benf. Chr. 181, 4. आज्ञावचनम् Kathâs. 39, 99. आज्ञाम् Râǵa-Tar. 3, 80. 4, 218. 378. 5, 395. Mârk. P. 114, 21. समयम् Kathâs. 108, 183. नीतिम् 190. सत्यामिमां गिरम् 84, 51. शासनम् 56, 162. Bhâg. P. 5, 26, 6. 12, 1, 9. शास्त्रम् 6, 1, 67. सत्पथम् *den Weg der Guten verlassen* 6, 7, 2. — 4) *hinüberkommen über, entgehen:* को हि स्वशिरसम्प्ह्णायां विधेश्चोल्लङ्घयेद्गतिम् Kathâs. 52, 211. प्राक्तनम् Pańkar. 1, 3, 10. — 5) *sich vergehen gegen Jmd, beleidigen* Daçak. in Benf. Chr. 191, 20. fg. Comm. zu Vâsavad. 7, 1. — Vgl. उल्लङ्घन fg.

— समुद् caus. *übertreten, verletzen, vernachlässigen:* सदाचारम् Mârk. P. 34, 7. नित्यनैमित्तिकीः क्रियाः 8.

— परि caus. *abspringen von, verlassen* (einen Weg): नीतिमार्गम् Spr. 2718. — Vgl. परिलङ्घन.

— प्रति caus. 1) *sich schwingen —, sich setzen auf:* आसनादीनि संवीक्ष्य प्रतिलङ्घ्य च यत्नतः Sarvadarçanas. 39, 10. — 2) *übertreten, verletzen:* धर्मम् MBh. 12, 9576.

— वि *springen:* साकं भेकैर्विलङ्घन्तः Bhâg. P. 10, 12, 10. इतस्ततो विलङ्घद्भिर्गोवत्सैः 46, 10. — अविलंघसे Verz. d. Oxf. H. 76, b, N. 2 wohl fehlerhaft für अविलम्बितम्. — caus. 1) *springen über, überschreiten, hinübergehen über, passiren:* प्राकारम् Kathâs. 75, 120. पयोनिधिम् 69, 182. विन्ध्यम् Ragh. 16, 32. Râǵa-Tar. 6, 2. Bhâg. P. 11, 4, 10. Pańkar. 1, 7, 12. अध्वानम् *einen Weg zurücklegen* Ragh. 5, 42. गव्यूतिम् Râǵa-Tar. 2, 163. eine Zeit *überspringen, nicht einhalten:* समयम् Kumâras. 3, 25. विलङ्घयित्वा so v. a. *gewartet habend* MBh. 12, 4792. — 2) *sich erheben zu, gen:* नभः Spr. 1756. Kir. 5, 1. विलङ्घिताकाश (हिमाचल) Râǵa-Tar. 3, 225. — 3) *übertreten, verletzen, zuwiderhandeln:* आज्ञाम् Kathâs. 18, 33. Ragh. 9, 74. — 4) *hinüberkommen über* so v. a. *überwinden:* आपदम् Kathâs. 18, 309. दैवम् Spr. 471, v. l. so v. a. *vereiteln:* विलङ्घिताधोरणतीव्रयत्नाः सेनागजेन्द्राः Ragh. 5, 48. — 5) *übergehen, bei Seite lassen, aufgeben:* अन्यरमान् Ragh. 3, 4. लज्जाम् Kathâs. 32, 196. — 6) *übertreffen:* कर्णोत्पलं प्रायस्तव दृष्टा विलङ्घ्यते Kâvjâd. 2, 224. — 7) *sich vergehen gegen Jmd, beleidigen* Spr. 4700. — 8) *fasten lassen* Suçr. 2, 486, 12. — Vgl. विलङ्घन fgg.

— अतिवि caus. *vorübergehen bei Jmd, Jmd bei Seite lassen, nicht einkehren bei* Bhâg. P. 10, 31, 16.

— संवि caus. *bei Seite liegen lassen, vernachlässigen, unterlassen:* विधिम् Pańkar. 3, 7, 19.

— सम्, संलङ्घिता रात्रिः *vorübergegangen* Lâṭj. 6, 6, 15.

लङ्घक (von लङ्घ्) nom. ag. *Beleidiger* Varâh. Bṛh. 14, 4. = गुरुवचनातिक्रामिन् Comm.

लङ्घती f. N. pr. eines Flusses MBh. 2, 375 nach der Lesart der ed. Bomb., लघन्ती ed. Calc.

लङ्घन (von लङ्घ्) n. 1) *das Springen, Hinüberspringen —, Hinübersetzen über, Ueberschreiten* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) Pâr. Gṛhj. 2, 7. R. Gorr. 1, 80, 29. Suçr. 1, 79, 18. 262, 5. Bhâg. P. 10, 18, 12. सागरस्य R. Gorr. 1, 3, 21 (26 Schl.). विन्ध्यपर्वत° 4, 70. 4, 1, 2. 58, 36. 62, 3. 63, 27. योजनानां सहस्रस्य 5, 1, 64. 2, 41. 6, 100, 7. Verz. d. Oxf. H. 85, b, 5. 24. 344, a, 13. Spr. 2460. 3392. Kathâs. 109, 45. Râǵa-Tar. 3, 68. 6, 226. Daçak. in Benf. Chr. 183, 1. Sâh. D. 26, 13. 16. मर्यादा° Kathâs. 50, 74. दीर्घाध्व° *das Zurücklegen eines langen Weges* Râǵa-Tar. 6, 47. शीघ्रलङ्घन adj. *schnell fliegend* (eine Wolke) Ghaṭ. 8. Bez. *eines best. Ganges der Pferde, Courbette* H. 1248. Gauḍap. zu Sâṅkhjak. 17. *das Sicherheben zu, gen:* नभो° Ragh. 16, 33. उच्चैःपद° Kumâras. 5, 64. *das Bespringen:* वडवालङ्घनमनिलस्य Daçak. in Benf. Chr. 182, 11. = प्लवन und क्रमण H. an. 3, 406. Med. n. 118. als Bed. von अति AK. 3, 4, 32 (28), 3. — 2) *Einnahme, Eroberung:* दुर्गस्य Spr. 3800. *Besiegung:* अरि° Mârk. P. 134, 20. — 3) *das Uebertreten* (eines Gebots u. s. w.) Kap. 4, 15. Sarvadarçanas. 117, 6. शासन° Râǵa-Tar. 2, 47. समयस्य *das Versäumen* R. Gorr. 1, 4, 66. — 4) *das Verschmähen:* प्रणिपात° Vikr. 36, 4. Mâlav. 58. — 5) *ein Vergehen gegen Jmd, Beleidi-*

gung MBh. 12,119. Kathâs. 20,65. 22,138. Spr. 4647 (zugleich *Fasten*). भर्तुः पूर्वस्य *eine dem ersten, verstorbenen Gatten angethane Beleidigung* so v. a. *Wiederverheirathnng* MBh. 1,6178 (vgl. M. 5,151). ग्रातप° *ein von der Hitze angethanes Leid* Çâk. 31,8. Auch लङ्घना in dieser Bed. Mârk. P. 135,22. 33. 36. — 6) *das Fasten* Trik. 2,7,10. H. 473. an. 3, 406. 5,12. Med. ǵ. 37. n. 118. Halâj. Hâr. 203. Suçr. 1,245,17. 21. 2, 44,6. 407,6. 19 (ग्रति°). Spr. 4647 (zugleich *Beleidigung*). Mit. III, 43, *a*, 11. Verz. d. B. H. 290,21. — Vgl. डुर्लङ्घन, मृत्यु°.

लङ्घनीय (wie eben) adj. 1) *worüber man hinübersetzen kann* oder *muss, zu überschreiten, zu passiren:* ग्रटवी Kathâs. 100,10. *erreichbar, einholbar:* ग्रात्मोद्धतैरपि रजोभिरलङ्घनीया (स्वेषामपि प्रसरतां रजसामल° v. l.) रथ्याः Çâk. 8. — 2) *zu übertreten:* ग्राज्ञा Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,16. नियोग 138,*a*,5. — 3) *dem man zu nahe treten darf, gegen den man sich vergehen darf* Spr. 4811.

लङ्घनीयता f. nom. abstr. von लङ्घनीय 1) und 3) Spr. 1040 (ग्र°).

लङ्घनीयत्व n. nom. abstr. von लङ्घनीय 3) Râǵa-Tar. 6,2 (ग्र°).

लङ्घ्य (von लङ्घ्) adj. 1) *zu überspringen, — überschreiten, — passiren* Megh. 55. वह्नि Spr. 169. 2482. गिरि Kathâs. 18,355. नदी 350. 110,13. ग्रकृच्छ्रलङ्घ्याः पन्थानः *ohne Beschwerde zurückzulegen* Râǵa-Tar. 3,224. 4,287. 332. *erreichbar* 3,324. Kathâs. 61,90. — 2) *zu übertreten:* ग्राज्ञा Kathâs. 120,31. वचम् Râǵa-Tar. 4,235. शासन Bhâg. P. 4,4,14. — 3) *zu vernachlässigen* Pańkat. 4,3,21. — 4) *dem man zu nahe treten kann, antastbar* MBh. 12,2007. Kumâras. 7,48. Spr. 2482. 4023. ग्रलङ्घ्यवीर्य Bhâg. P. 9,10,22. — 5) *den man fasten lassen muss* Suçr. 2,407,13. — Vgl. डुर्लङ्घ्य.

लक्, लंक्कति (लतणे) Dhâtup. 7,26. — Vgl. लाञ्क्.

1. लज्, लजते (व्रीडायाम्) Dhâtup. 28,10. *sich schämen:* लेजिरे ऽन्ये पराजिताः Bhaṭṭ. 14,105. लग्न *sich schämend, beschämt* Schol. zu P. 7, 2,14. 8,2,29 (von लज्ज्). 45. H. an. 2,282. Med. n. 18. — Vgl. लज्ज्.

2. लज्, लजति (भर्त्सने, v. l. भर्जने) Dhâtup. 7 64. — Vgl. 1. लञ्ज्.

3. लज्, लजयति (प्रकाशने) Dhâtup. 35,66. — Vgl. 2. लञ्ज्.

लज्ज्, लज्जते (व्रीडायाम्) Dhâtup. 28,10. लज्जतेर्वा स्याद्गुप्साकर्मणः Nir. 4,10. auch act. aus metrischen Rücksichten; *sich schämen:* ग्रलज्जिष्ट Bhaṭṭ. 15,33. किं किं न लज्जाथ Hariv. 8124. नाद्य कालस्ते लज्जितुम् R. Gorr. 2,57,28. लज्जमान R. Schl. 2,37,11. MBh. 1,5947. Râǵa-Tar. 3,234. लज्जते स्म कचैर्विना Kathâs. 61,180. स्नुषा ग्रश्वुराल्लज्जमाना *sich schämend vor* Ait. Br. 3,22. वृद्धाया धर्मशीलाया मातुर्नार्हसि लज्जितुम् R. Gorr. 2,120,6. यथा वीरभटाद्यास्ते स्वदृत्तेन ललज्जिरे (so ist zu lesen) Kathâs. 44,165. कथमहो मोहान्न लज्जामहे Spr. 2626. लज्जन्ते बान्धवास्तेन 2654. 2742. मोक्तितश्चासि धर्मज्ञैः पाण्डवैर्न च लज्जसे MBh. 3,15213. यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं (so ist wohl zu lesen) यन्न लज्जति चाचरन् *eine Handlung, von der man wünscht, dass sie von Jedermann gekannt werde* (d. i. *die man nicht geheim zu halten braucht*) *und deren man sich nicht zu schämen braucht, wenn man sie begeht*, M. 12,37. मक्ारथानतिब्रुवन्मूढ न लज्जसे कथम् MBh. 3,15640. R. 2,12,52. Spr. 672. Pańkat. 119,6. यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति (warum nicht लज्जते?) M. 12,35. मक्ाघोराणि कर्माणि कृत्वा लज्जन्ति वै न च MBh. 3, 13837. ईदृशं गर्हितं कर्म कथं कृत्वा न लज्जसे R. 3,59,7. 5,56,82. Kathâs. 20,13. Hit. 92,3. ग्रतिशरठेन मक्र्षिणा सक् रन्तुं लज्जमानया Sâj. zu ṚV. 1,125,1. लज्जित (लग्न s. u. 1. लज्) 1) adj. *a) sich schämend, beschämt* AK. 3,2,41. Trik. 3,3,257. H. 1484. an. 2,282. Med. n. 18. Ragh. 12,75. Kathâs. 13,156. Pańkat. 1,10,33. 14,102. Sâh. D. 72. दिष्ट्या न लज्जिता देवी सपत्न्या सखितुल्यया Kathâs. 18,20. भग्नाभिनय° 45,256. — *b) verschämt, verlegen d. i. von Scham —, Verlegenheit begleitet:* क्ास Spr. 2081. क्सित Gît. 7,17. — 2) n. *Scham, Schamgefühl:* विगलित° Gît. 1,31. सलज्जिता Pańkat. 1,14,106. सलज्जितस्नेक्करुणाम् Uttarar. 117, 1 (158,7). — Vgl. 1. लज्.

— caus. लज्जयति *Jmd sich* (acc.) *schämen machen, Jmdes Schamgefühl erwecken* Ragh. 19,14. Veṇîs. in Sâh. D. 147,4. Râǵa-Tar. 4,668. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 30.

— ग्रधि, partic. °लज्जित *sich schämend, beschämt* in der Stelle: °द्रौपदीदर्शनादधिलज्जितायाः प्रकृतेः bei Wilson, Sâṁkhjak. S. 174. vielleicht fehlerhaft für ग्रति°.

— वि *sich schämen:* विलज्जते यो भार्येति वा वोढुम् Bhâg. P. 4,8,18. विलज्जमान Hid. 2,23 (लज्जमानेव ललना MBh. 1,5947). MBh. 3,2217. Ragh. 14,27. Bhâg. P. 2,5,13. 7,47. विलज्जती 1,11,33. प्रष्टुं विलज्जती 11,1, 15. विलज्जित *sich schämend, beschämt* Kathâs. 24,197. 36,34. 55,10. Bhâg. P. 6,12,6. पादस्पर्श° 9,5,2. Kumâras. 1,14. Kathâs. 124,141.

— सम् *sich schämen, verlegen sein:* संलज्जमाना R. 2,55,16.

लज्ज m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Vop. 7,14. vielleicht fehlerhaft für लक्ष्म.

लज्जका f. *der wilde Baumwollenbaum, Gossypium* Ratnâk. in Nigh. Pr.

लज्जरी f. *eine weisse Sinnpflanze* Râǵan. in Nigh. Pr. — Vgl. लज्जिरी.

लज्जा (von लज्ज्) f. 1) *Scham, Schamgefühl* AK. 1,1,7,23. H. 311. Halâj. 2,412. लज्जया R. 2,98,19. Çâk. 15,3. Spr. 2265. Kathâs. 18,103. Pańkat. 84,10. °विनम्राननाः Varâh. Bṛh. S. 78,12. गुणौघाननी Spr. 2655. लज्जा तिरश्चां यदि चेतसि स्यात् 2656. fgg. 2679. Râǵa-Tar. 5, 324. लज्जावृत MBh. 3,1852. लज्जाकौतुकयोः संमर्दः Kathâs. 3,66. किं न कैरव लज्जा ते कुर्वतः कोशसंवृतिम् Spr. 1879. युवां मे का लज्जा *warum sollte ich mich euer schämen* Kathâs. 2,53. शृङ्गारलज्जां निरूपयति Çâk. 14,3. एषैव मक्ती लज्जा सदाचारस्य भूपतेः। यदकालभवो मृत्युस्तस्य संस्पृशति प्रजाः॥ Râǵa-Tar. 4,84. कस्मान्न लज्जामवक्न् Spr. 3506. लज्जावक् Râǵa-Tar. 6,177. लज्जोद्वक्न 5,384. ग्रलज्जाकर Spr. 2707. लज्जाकृति *Scham heuchelnd* 688. लज्जोज्झिकता Râǵa-Tar. 6,322. ग्रपकृष्य लज्जाम् MBh. 3, 2726. विक्षाय लज्जाम् Ragh. 2,40. व्यस्मरल्लज्जाम् Râǵa-Tar. 2,22. am Ende eines adj. comp. (f. ग्रा): मुक्त° R. 2,36,13. Kumâras. 3,7. त्यक्त° Bhâg. P. 5,26,23. क्ात° 8,7,33. प्राग्लज्जा Râǵa-Tar. 4,37. ग्रलज्ज *schamlos* MBh. 13,518. सलज्ज *verschämt, Schamgefühl besitzend* R. 1,34,23. Spr. 277. Kathâs. 13,51. 21,69. 45,263. Daçak. 64,2. Pańkat. 45,8. सलज्जम् adv. Çâk. 38,4. Vikr. 22,12. Dhûrtas. 72,15. Daçak. 73,12. Die *Scham* personificirt als Gattin Dharma's MBh. 1,2579. Hariv. 12452. VP. 54. Mârk. P. 50,21. Mutter Vinaja's 27. Vgl. निर्लज्ज. — 2) = लज्जालु 2) Râǵan. im ÇKDr.

लज्जाय् (von लज्जा), davon partic. लज्जायित *verschämt, verlegen:* ईक्षण Bhâg. P. 10,22,23.

लज्जालु (wie eben) 1) adj. *schamhaft.* — 2) m. f. *Mimosa pudica* Râ-

ǴAN. im ÇKDR. ÇÂRṄG. SAṀH. 2,2,41.

लज्जावत् (wie eben) adj. *verschämt, verlegen* MBH. 3,2152. RAGH. 7, 22. KATHÂS. 90,54. SÂH. D. 99. Davon nom. abstr. लज्जावत्त्व n. 41,2.

लज्जाशील adj. *schamhaft, verlegen* AK. 3,1,28. H. 390.

लज्जिरी f. = लज्जालु 2) RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. लज्जारी.

लज्या f. = लज्जा 1) ÇABDAR. im ÇKDR.

लञ्कन *Eleusine coracana* (eine Körnerfrucht) RÂǴAN. in NIGH. PR.

लञ्चा f. *Geschenk* H. 737. HALÂJ. 2,279.

1. लज्, लँज्जति (भर्त्सने, v. l. भर्जने) DHÂTUP. 7,65. — Vgl. 2. लज्.

2. लज्, लज्जयति (हिंसाबलादानानिकेतनेषु) DHÂTUP. 32,30, v. l. (भाषार्थ, v. l. भासार्थ) 33,111. लञ्जयति und लञ्जापयति (प्रकाशने) 35,66, v. l. — Vgl. 3. लज् und लुञ्ज्.

लञ्ज 1) m. *a)* = पद् H. an. 2,75. — *b)* = कच्छ H. an. HÂR. 255. — *c)* = पुच्छ GAṬÂDH. im ÇKDR. — *d)* = पङ्गु HÂR. — 2) f. आ *a) an adulteress.* — *b) sleep.* — *c) a current.* — *d)* Lakshmî WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

लञ्जिका f. *Hure* TRIK. 2,6,5. H. 533.

लट्, लँटति (बाल्ये, nach Andern auch परिभाषणे) DHÂTUP. 9,11. — Vgl. रट्.

लट m. = प्रमादवचन und दोष VIÇVA im ÇKDR. *Dieb* DHAR. bei WILSON. — Vgl. लट्व्.

लँटक m. = दुर्जन UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,32. — Vgl. लट्, लड्डु.

लटकन m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 309,*b*,4.

लटकामिश्र m. N. pr. eines Mannes HALL XVIII (nach dem Index).

लटपर्णा n. = त्वच RÂǴAN. im ÇKDR. *gröberer Zimmt* DHANV. in NIGH. PR.

लट्ट m. = दुर्जन ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. लटक, लड्डु.

लट्व्, लट्वति (प्रमादवचने) GAṆARATNAM. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1, 27. — Vgl. लट.

लँट्व UṆÂDIS. 1,151. 1) m. *a) Pferd.* — *b)* = ज्ञातिविशेष, vulg. नेठुवा (*a dancing boy* nach HAUGHT.). — *c) ein best.* Râga UṆÂDIK. im ÇKDR. — 2) f. आ AK. 3,6,1,10. = तुलिका UǴǴVAL. angeblich nach HÂR.; st. dessen तूलिका VJÂḌI und RABHASA ebend. *a) ein best. Vogel* TRIK. 3,3, 421. H. an. 2,536. MED. v. 22. HÂR. 256. VIÇVA bei UǴǴVAL. VÂGBH. 6, 48. PRÂJAÇKITTEND. 52,*b*,2. = ग्रामचटक RÂJAM. (nach AUFRECHT). — *b) Safflor* H. 1159. H. an. — *c) eine* Karañǵa-*Art* MED. VIÇVA. *die Frucht einer* Karañǵa-*Art* TRIK. *Frucht* überh. MED. und VIÇVA. — *d)* = वाद्य VIÇVA; so auch MED., wo aber nach den Corr. वद्य (d. i. ऽवद्य) zu lesen ist; = अवद्य TRIK. — *e)* = द्यूत *Würfelspiel* VJÂḌI und RABHASA bei UǴǴVAL. — *f)* = शिनी (!) HÂR.; st. dessen शिली UǴǴVAL. nach ders. Aut. — *g)* = भ्रमरक, vulg. भोडरी BHARATA zu AK. nach ÇKDR.

लट्वाका f. = लट्व *ein best. Vogel* MBH. 12,6720 nach der Lesart der ed. Bomb., लड्वाका ed. Calc.

लड्, लँडति (विलासे) DHÂTUP. 9,76. लडयति (जिह्वोन्मथने, v. l. जिह्वोन्मथनयोः, जिह्वोन्माथनयोः) 19,53. लडयति und लाडयति (उपक्षेपे) 35,81, v. l. लाडँयति (उपसेवायाम्) 32,7. लाडयते (ईप्सायाम्) 33,15, v. l. लडित = ललित VJUTP. 158. 165. — Vgl. लल्.

लडक m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6,2083. धेनुक ed. Bomb.

लडर्थवाद m. Titel einer Schrift *über die Bedeutung des Praesens* (लट्) HALL 59.

लडह 1) adj. *hübsch, schön* TRIK. 3,1,13. GAUḌA beim Schol. zu H. 1445. Vgl. लगड. — 2) m. N. pr. eines Volkes VARÂH. BṚH. S. 14,22. लहर v. l.

लड्डु m. = दुर्जन ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. लटक, लट्ट.

लड्डु *eine Art Gebäck* R. in LA. (III) 59,3. *It is made of coarsely ground gram or other pulse, or of corn-flour, mixed up with sugar and spices, and fried in ghee or oil. It is distinguished into several varieties.* MOLESW. u. लाडू.

लड्डुक m. n. dass. H. ç. 96 (hier fälschlich लडक). ÇABDAK. und RÂǴAV. im ÇKDR. VJUTP. 134. VET. in LA. (III) 9,11. 13. सावित्रे लड्डुकान्दद्यात् MATSJA-P. 255,20. लड्डुकानि तिलानां च BRAHMAVAIV.-P. 3,8,53. मिष्टान्नं लड्डुकफलम् 2,61,73. लड्डुकैः फेनिकाभिश्च KÂÇIKH. 4,95. Vgl. GILDEMEISTER in LA. (III) S. 257.

लड्वा f. N. pr. eines Frauenzimmers RÂǴA-TAR. 7,406.

लड्वाका s. लट्वाका.

लण्ड्, लण्डँयति (उत्क्षेपणे) DHÂTUP. 32,9. (भाषार्थ) 33,125. — Vgl. ओलण्ड्.

लण्ड n. *Unrath des Körpers, Excremente* ÇKDR. mit folgendem Beleg (BHÂG. P. 10,37,8): समेधमानेन स कृष्णबाहुना निरुद्धवायुश्चरणांश्च विक्षिपन्। प्रस्विन्नगात्रः परिवृत्तलोचनः पपात लण्डं विसृजन्क्षितौ व्यसुः॥ लेण्ड ed. Bomb.

लण्ड्र *London:* °ज *aus London gebürtig* MERUTANTRA 23 im ÇKDR.

लता f. 1) *Schlinggewächs* AK. 2,4,1,9. 11. H. 1117. an. 2,191. MED. t. 51. HALÂJ. 2,25. BALA bei MALLIN. zu NAISH. 1,85. वृत्तगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारास्तृणजातयः MBH. 6,171. 13,2992. वनस्पत्योषधिलतास्त्वक्सारा वीरुधो द्रुमाः BHÂG. P. 3,10,18. गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् M. 11,142. तृणगुल्मलतानाम् 12,58. लता वल्लीश्च गुल्मांश्च R. 2, 80,6. लतावितानगुल्मान् R. GORR. 2,87,9. 3,21,13. VARÂH. BṚH. S. 29, 14. 48,5. 55,18. 85,1. MBH. 1,6005. न लता वर्धते जातु महाद्रुममनाश्रिता 5,1396. R. 1,9,12. 51,23. 2,52,95. °प्रतानोद्ग्रथितैः केशैः RAGH. 2, 8. 10. 3,7. VIKR. 13. सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलार्थिना Spr. 2305. VARÂH. BṚH. S. 46,95. KATHÂS. 18,277. 22,103. BRAHMA-P. in LA. (III) 49,12. उद्यान°, वन° ÇÂK. 16. अमृत° (Gegens. विषवल्लरी) Spr. 1549. am Ende eines adj. comp. (f. आ): शस्त्रौषधिद्रुमलता (vom folgenden मधुरा zu trennen nach KERN) मही VARÂH. BṚH. S. 53,88. श्री° RÂǴA-TAR. 6,233. Mit einer *Liane* werden verglichen: *a)* die Brauen: भ्रू° KUMÂRAS. 2,64. MEGH. 48. ÇÂK. 63. Spr. 472. 665. VARÂH. BṚH. S. 12,9. DAÇAK. 78,2. Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,21. — *b)* die Arme: भुज° MEGH. 95. RAGH. 9,46. बबन्धास्य कण्ठे भुजलताम्रजम् KATHÂS. 18,369. 20,222. बाहु° RÂǴA-TAR. 5,27. — *c)* die Klinge eines Schwertes: खड्ग° KATHÂS. 19,104. 44,147. 50,5. — *d)* die Locken: अलक° Spr. 3610. — *e)* der schlanke Körper eines Weibes: स्विन्नगात्रलता BRAHMA-P. in LA. (III) 57,20. — *f)* der Blitz: तडिल्लता ṚT. 2,20. KIR. 10,19. विद्युल्लता KATHÂS. 25,41. 34,223. — 2) = शाखा *Ranke* AK. 2,4,1,11. H. 1119. H. an. MED. (°शाखयोः st. °शाकयोः zu lesen). BALA. चूत° Spr. 3981. — 3) Bez. verschiedener Pflanzen: *Panicum italicum* AK. 2,4,2,36. H. an. MED. BALA; *Trigonella corniculata* AK. 2,4,4,21. TRIK. 3,3,181. H.

an. Med. *Cardiospermum Halicacabum* AK. 2,4,5,15. H. an. Med. *Gaertnera racemosa* (vgl. माधवीलता) H. 1147. H. an. Med. Halâj. 2,53. Bala; = कस्तूरिका, कस्तूरी (vgl. लताकस्तूरिका) Trik. H. an. Med. *Panicum Dactylon* H. an. Med. = कैवर्तिका und सारिवा Râgan. im ÇKDr. — 4) *Riemen an einer Peitsche, Geissel* Suçr. 1,25,10. 65,14. 102,1. 358,8. रात्र्यो लताभिर्न संभवन्ति *es entstehen keine Striemen durch Geisselhiebe* 2,261,16. वेत्र° (eines Thürstehers) Pañkat. 16,1. पेश्यस्तल्लताः (d. i. मांसलताः) *Fleischstreifen, Muskeln* H. 623. — 5) *Perlenschnur* H. 660. Varâh. Bṛh. S. 81,31. 34. मुक्ताकार° Spr. 2207. — 6) *ein schlankes Weib, Weib* überh.; = योषित् Bala a. a. O. Naish. 1,85. नग्नां परलतां पश्यन् Tantras. Çjâmâs. im ÇKDr. °साधन Mâjâtantra 12 ebend. — 7) *ein best. Metrum, 4 Mal* ◡◡◡◡◡◡ — — —, ◡ — — — — — ◡ — Colebr. Misc. Ess. II, 162 (XIII, 2). — 8) N. pr. *a*) einer Apsaras MBh. 1,7858. 2,394. — *b*) einer Tochter Meru's und Gattin Ilâvṛta's Bhâg. P. 5,2,22. — Vgl. कर्ण°, कल्प°, नाग°, फणि°, भू°, मधु°, मल्ली°, मांस°, माधवी°, मुक्ता°, रोम°, सूर्य°, सोम° u. s. w.

लताकर m. *eine best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,22.

लताकरञ्ज m. *Guilandina Bonduc* Râgan. im ÇKDr.

लताकस्तूरिका und लताकस्तूरी f. *eine best. aromatische Arzeneipflanze* Râgav. im ÇKDr. Dravjar. und Bhâvapr. in Nigh. Pr. Suçr. 1,215,12.

लतागृह m. n. *eine aus Lianen gebildete Laube* MBh. 1,7589. R. 5, 14,65. 16,28. 37,42. Ragh. 19,23. Kumâras. 3,41. Kathâs. 14,69. 53, 120. 117,28. am Ende eines adj. comp. f. स्रा Kir. 5,5.

लताङ्गी f. = कर्कटशृङ्गी Râgan. in Nigh. Pr.

लताजिह्व m. *Schlange* (*deren Zunge eine Liane ist*) Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. लतारसन.

लतातरु m. Bez. verschiedener *Bäume: Shorea robusta* Trik. 2,4,21. *Borassus flabelliformis* und *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDr.

लताद्रुम m. *Shorea robusta* Ratnam. im ÇKDr. nach unserer Hdschr. 211 दीर्घ°.

लतानन m. *eine best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,25.

लतान्त n. *Blume* Çabdârthak. bei Wilson.

लतापनस m. *Wassermelone* Trik. 2,4,37.

लतापर्णा 1) m. unter den Namen Vishṇu's H. ç. 64. — 2) f. ई *Curculigo orchioides* und *Trigonella foenum graecum* Dhanv. in Nigh. Pr.

लतापृक्का f. = पृक्का *Trigonella corniculata* Çabdar. im ÇKDr.

लताप्रतानिनी nach ÇKDr. und Wilson ein Wort; vgl. jedoch u. प्रतानिन्.

लताफल n. *die Frucht der Trichosanthes dioeca Roxb.* Brahmavaiv. P. Kṛshṇaǵanmakh. 102 im ÇKDr.

लताभद्रा f. *Paederia foetida* Çabdam. im ÇKDr.

लताभवन n. = लतागृह; s. श्रप° in den Nachträgen.

लतामणि m. *Koralle* Trik. 2,9,30.

लतामण्डप m. = लतागृह Çâk. 32,19. ed. Ch. 65,9. Spr. 393.

लतामरुत् f. *Trigonella corniculata* Çabdar. im ÇKDr.

लतामाधवी = माधवीलता = माधवी = लता *Gaertnera racemosa* Çabdar. im ÇKDr. Çâk. 58.

लतामृग m. *Affe* Wilson. — Vgl. शाखामृग.

लताम्बुज n. *Flaschengurke* Hâr. 202.

लतायष्टि f. *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* Çabdam. im ÇKDr.

लतायावक n. *Schoss, junger Trieb* (प्रवाल) Hâr. 91. fälschlich *Koralle* Wilson nach ders. Aut.

लतारसन m. *Schlange* Hâr. 15. — Vgl. लताजिह्व.

लतार्क m. *eine grüne Zwiebel* AK. 2,4,5,13.

लतालक m. *Elephant* Trik. 2,8,34.

लतालय m. *eine aus Schlingpflanzen gebildete Wohnung* (einer Eule) Kathâs. 33,109.

लतालिङ्ग (?) in लतालिङ्गोद्भवं मण्डलम् Verz. d. B. H. 274,*a*,3.

लतावलय = लतागृह Çâk. 41,18. Davon °वत् *mit solchen Lauben versehen* 32,14.

लतावृत्त m. *Cocosnussbaum* Dhanv. in Nigh. Pr. *Shorea robusta* Dravjar. ebend.

लतावेष्ट m. 1) N. pr. eines Berges Hariv. 8950. 10319. Vgl. लतावेष्टित. — 2) *quidam coeundi modus:* बाहुभ्यां पादयुग्माभ्यां वेष्टयित्वा स्त्रियं रमेत् । लघु लिङ्गताडनं (vielleicht सलिङ्ग° st. लघु लि° zu lesen) योनौ लतावेष्टो ऽयमुच्यते ॥ Ratim. im ÇKDr.

लतावेष्टन n. *Umarmung* Çabdârthak. bei Wilson.

लतावेष्टित m. = लतावेष्ट 1) Hariv. 8953.

लतावेष्टितक n. *eine Art Umarmung* Çabdam. im ÇKDr.

लताशङ्कुतरु m. *Shorea robusta* Nigh. Pr. nach Trik. 2,4,21, wo aber mit dieser Verbindung लतातरु und शङ्कुतरु gemeint sind.

लताशङ्ख m. *Shorea robusta* Çabdar. im ÇKDr. eine falsche Form; vgl. लतातरु und शङ्कुतरु.

लतिका (von लता) f. 1) *eine kleine Liane:* प्रेम° Kâvjapr. 144,12. बाहु° Spr. 751. 3053. Verz. d. Oxf. H. 201,*b*, No. 483, Z. 4. श्रङ्ग° vom *schlanken Körper* eines Mädchens Uttarar. 56,6 (72,12). ञ्रलतिका adj. f. *keine Lianen habend* Kâm. Nîtis. 19,10. — 2) *Perlenschnur:* ग्रीवाभरण° Spr. 2792. — Vgl. श्रमृत°, कर्ण°, कल्प°, रोम°, श्रवण°.

लतु m. N. pr. eines Mannes Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,78. — Vgl. लातव्य.

लतोद्गम m. als Erkl. von श्रवरोह Trik. 3,3,455. H. an. 4,335. Med. h. 27. Halâj. 2,29.

लत्तिका Uṇâdis. 3,147. *eine Eidechsenart* Uǵǵval. — Vgl. श्रव°, गो°.

लद्नी f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,26.

लद्ध (?) m. *ein best. Thier* Verz. d. B. H. No. 897.

लद्धनदेव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,11.

1. लप्, लपति (व्यक्तायां वाचि) Dhâtup. 11,8. ललाप, लपिष्यति; aus metrischen Rücksichten auch med. *schwatzen:* सर्वत्र सर्वे लपतु MBh. 13,4517. लपन्तः कोकिलाः Hariv. 7673 (vgl. 8369). *flüstern:* लपितुं किमपि श्रुतिमूले Gît. 1,41. तदा ललाप ज्ञानं च निर्मलम् Pañkar. 2,2,29. *wehklagen* Nalod. 3,27. लपित *gesprochen* AK. 3,2,57. n. *Geschwätz, Gesumme* 1,1,5,1. H. ç. 81. ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशका इव AV. 4,36,9. — Vgl. श्रलपत् (verbessere *nicht irre redend*), रप्.

— caus. लापयति, aor. श्रलीलपत् und श्रललापत् Vop. 18,3. *zum Reden veranlassen:* श्रनेनैव मुखेनालापयिष्यथाः (श्रा° nach Çank., Khand.

Up. 4,2,5. — Vgl. caus. von ली.

— intens. लालपीति P. 7,3,94, Sch. *sinnlos herausschwatzen* AV. 6,111,1. सुरां पीत्वा सह लालपत स्रासते Kâth. 12,12. *wehklagen, jammern:* लालप्यते R. 5,15,35. MBh. 5,748. लालप्यमान 1,3603. 4168. 6557. 7,115. 8,4620. R. 2,75,45. R. Gorr. 2,78,23. 108,16. 6,82,123. Mârk. P. 74,36. एवं लालप्यतस्तस्य MBh. 1,968. 13,470. लालप्यैवं सकरुणम् 3,10200. *wiederholt anreden:* लालप्यमानमेकैकं ब्रहितां च पुनः पुनः 1,8449.

— ग्रनु s. ग्रनुलाप.

— ग्रप *abläugnen, läugnen:* संश्रुत्य च तपस्विभ्यः सत्त्रे वै यज्ञदक्षिणाम्। तां चापलपताम् (imper.) R. 2,75,24. शतमपलपति P. 1,3,44, Sch. Kull. zu M. 8,139. तदनुभवसिद्धमपलपता गजनिमीलिकैव Sâh. D. 124, 5. 6. राजदेयमपलपितम् *unterschlagen* Kull. zu M. 8,400. — Vgl. ग्रपलाप fg. und caus. von ली.

— ग्रभि *schwatzen —, sprechen über* Ait. Br. 6,33. Çâṅkh. Br. 30,5. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. — Vgl. ग्रभिलाप, ग्रभीलापलप्, निरभिलप्य.

— ग्रा *anreden, sich unterhalten mit:* ग्रहं त्वारण्ये कथमेकमेका त्वामालपेयं निरता स्वधर्मे MBh. 3,15604. Spr. 1749. Mârk. P. 35,31. मङ्गूषास्था भियान्योऽन्यस्पर्शं लब्धापि नालपन् Kathâs. 4,63. एवं तयोरालपतोः 37,177. एवमन्योऽन्यमालप्य 66,38. युष्माभिः सममालप्य कथं नु कितवैरहम्। सहालपिष्यामि पुनः 121,105. ग्रालिः सहालपन् Râga-Tar. 3,210. *sprechen, reden:* ग्रालपन्तः सुमधुरं धार्तराष्ट्राः (d. i. हंसाः) Hariv. 8608. ग्रालपन्ती (so ist zu lesen) Kathâs. 47,112. उच्छिष्टो नालपेत्किंचित् Mârk. P. 34,30. न भूय ग्रालपेत् Saddh. P. 4,16,*a.* वचांसि — ग्रालपन् — तानि तानि ताः *zu ihnen* Nalod. 2,12. तत्र यो ऽन्यत्कर्मणः साधु मन्येन्मोघं (so die ed. Bomb.) तस्यालपितं दुर्बलस्य *eine Unterredung mit dem* MBh. 5,816. — Vgl. ग्रालपन, ग्रालप्ति, ग्रालाप, ग्रालापिन्. — caus. *sich mit Jmd* (acc.) *in eine Unterhaltung einlassen* Spr. 312. 2221. Pañkat. 207,13. 242,13. *zu Jmd* (acc.) *sprechen* Bhâg. P. 10,90,24. — Vgl. ग्रालापन (auch in den Nachträgen).

— समा *sich unterhalten mit* (acc.) Sâh. D. 207,5.

— उद् caus. *Jmd* (acc.) *liebkosen* Çâk. Ch. 154,8 (उपलालयन् die andere Recension). Mârk. P. 27,1. 76,3. 7. — Vgl. उल्लाप, उल्लापन (in den Nachträgen, wo zu verbessern ist: *das Liebkosen*), उल्लापिन् fg. und caus. von ली.

— प्र (*unbedacht*) *herausreden, schwatzen, faseln* TBr. 2,2,10,3. लघुत्वात्प्रलपाम्यहं MBh. 13,6884. लोकेनेति निरर्गलं प्रलपता Spr. 2053. उन्मत्तात्प्रलपतः 3534. Çâk. 23,14. Kathâs. 94,104. Prab. 50,5. Kuvalaj. 140,*a.* Dhûrtas. 81,3. *schwatzen so v. a. sich unterhalten* Bhâg. P. 10,32,1. *eine Rede vorbringen, sprechen* Bhag. 5,9. MBh. 14,35. न तत्र प्रलपेत्प्राज्ञो बधिरेष्विव गायनः Spr. 4775. यावदसौ न कथंचित्प्रलपन्विरमति Pañkat. 93,16. 94,12. *ausrufen:* शिव शिव शिवेति प्रलपतः Spr. 309. *wehklagen* Pañkat. 75,25. *wehklagend Etwas sprechen, — erzählen:* ग्रार्ताहं प्रलपामीदम् MBh. 3,1203. वधमप्रतिरूपम् R. 2,64,1. *wehklagend anrufen:* प्रलपन्तीं स्म पाण्डवान् MBh. 2,2339. प्रलपित *wehklagend gesprochen:* वचो वैदेहीति (oder वै देहीति) प्रतिपदमुदश्रु प्रलपितम् Sâh. D. 114,4. n. *Geschwätz, Gerede:* सुप्तप्रलपितानि Kâm. Nitis. 11,65. किं वृथा प्रलपितेन Pañkat. 146,1. किं बहुना प्रलपितेन 162,7. *Wehklage:* ग्राक्रन्दः प्रलपितं शुचा Sâh. D. 472. Pañkat. 224,16. — Vgl. उन्मत्तप्रलपित, प्रलपन, प्रलाप, प्रलापिन्. — caus. *zum Sprechen veranlassen:* तथापि स्नेहः प्रलापयति Mṛkkh. 86,14. — Vgl. प्रलापन.

— विप्र 1) *sich ausführlich aussprechen:* विप्रलप्त *Auseinandersetzung, Erörterung:* न चेन्मोघं विप्रलप्तं ममेदम् MBh. 12,1038. 1040. — 2) *wehklagen, jammern:* इति विप्रलपन् (इत्येवं विलपन् ed. Bomb.) MBh. 7,2527. 14,2022. — Vgl. विप्रलाप.

— वि *unverständliche —, klägliche Töne ausstossen, jammern* AV. 1,7,3. उतेवं मत्तो विलपन्नपायति 6,20,1. MBh. 1,5902. 3,1203 (विलपिष्यामि). 2269. 2360. 2371. 2381. 2412. 2422. 2500. 4,1115 (विलपिष्यतः partic. fut.). Hariv. 4839 (विलपती). R. 1,1,52. 2,21,1. 26,19. 30,22. 39,3. 47,12. 75,17. 76,5. 4,24,40 (विलपती). Suçr. 1,118,16. fg. 2,384, 12. Ragh. 8,43. Kumâras. 4,4. Spr. 1807. Kathâs. 16,51. Gît. 3,6. Mârk. P. 14,64. 22,24. 61,73. Pañkat. 28,18. 29,15. 35,13. Hit. 20,13. 42,16. 123,20. Bhaṭṭ. 6,11. विलप्तुम् R. 4,20,2. विलपामहे R. ed. Bomb. 6,95, 26. विलपमान MBh. 3,2867. R. 2,13,10. 75,18. 44. विलप्यन्त् *wehklagend* MBh. 7,2681. *wehklagend sprechen*, mit acc.: विललापेदम् MBh. 2,2343. एवमादीनि 2574. विलपति प्रियां प्रति *wehklagt über* Ragh. 8,69. *bewehklagen:* सुतम् R. 1,1,33 (35 Gorr.). 2,48,26. Râga-Tar. 6,206. विलपित n. *Klage, Jammer* Nir. 3,2. MBh. 3,2436. R. 2,39,40 (38,50 Gorr.). 44,2. 77,19. R. Gorr. 2,79,35. 4,61,27. 7,24,23. — 2) *vielfach sprechen:* एवं तेषां विलपतां विप्राणां विविधा गिरः MBh. 1,7049. विलेपुः कोकिलाः — मधुराणि विचित्राणि Hariv. 8369 (vgl. 7673). — Vgl. विलाप. — caus. *Jmd* (acc.) *wehklagen —, jammern machen* P. 1,4,52, Vârtt. 3, Sch. AV. 1,7,2. 6. *viel reden lassen*, med. Bhaṭṭ. 8,83.

— प्रवि s. प्रविलापिन्.

— सम् 1) *sich unterhalten* Daçak. 59,5. — 2) *benennen:* सकल इति संलप्यते Sarvadarçanas. 83,17. — caus. *Jmd anreden:* संलापितानां मधुरैर्वचोभिः Spr. 3077. — Vgl. संलाप fgg.

2. लप् (= 1. लप्) nom. ag. in ग्रभीलापलप्.

लपन (von 1. लप्) n. *Mund* AK. 2,6,2,40. H. 572. Halâj. 2,363. — Vgl. वक्त्र und वदन.

लपित (wie eben) 1) adj. und n. s. u. 1. लप्. — 2) f. ग्रा N. pr. einer Çârṅgikâ (*eines best. Vogels*), mit der Mandapâla sich begattete, MBh. 1,8347. fgg.

लपेटिका f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8157.

लपेत m. N. des Dämons einer best. Kinderkrankheit Pâr. Gṛhj. 1,16.

लप्सिका Bez. *eines best. Gerichts:* समितां सर्पिषा भृष्टां शर्करां पयसि क्षिपेत्। तस्मिन्घनीकृते न्यस्येल्लवङ्गमरिचादिकम्॥ सिद्धैषा लप्सिका ख्याता Bhâvapr. im ÇKDr. — Vgl. लापशी und लाफशी bei Molesw.

लप्सुद n. = कूर्च *Bocksbart* Schol. zu Kâtj. Çr. 16,1,38.

लप्सुदिन् adj. *bärtig*, vom Bock TS. 5,6,16,1. Çat. Br. 6,2,2,6. 15. Kâtj. Çr. 16,1,38.

लप्स्यन n. der Form und dem Zusammenhange nach ein nom. act., interpolirt und gewiss unrichtig Nir. 4,10.

लबॅ m. *Wachtel* VS. 24,24. °सूक्त *Wachtellied* heisst nach einer Legende das Lied ṚV. 10,119. Nir. 7,2. Daher Aindra Laba als Liedverfasser genannt ṚV. Anukr. लव *Perdix chinensis* Râgan. im ÇKDr. — Vgl. लाब.

लब्ध s. u. लभ् und vgl. यथालब्ध. लब्धा adj. f. Bez. einer best. Heroine Gaṭâdh. im ÇKDr.

लब्धक (von लब्ध) adj. *bekommen, erlangt;* s. दुःखलब्धिका.

लब्धदत्त m. N. pr. eines Mannes, *der wieder fortgab was er erhielt,* Kathâs. 53,8. fgg.

लब्धनामन् adj. *einen Namen erlangt habend, in gutem Rufe stehend, berühmt:* कृत्तिनः Kâm. Nîtis. 16,8.

लब्धनाश m. *der Verlust des Gewonnenen* Spr. 3760.

लब्धप्रणाश m. dass., Titel des 4ten Buches im Pańkatantra.

लब्धर् (von लभ्) nom. ag. *Bekommer, Erhalter, Erlanger, Gewinner* Kaṭhop. 2,7. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 190. राज्य° Mârk. P. 118,37. घनगणं लब्धा fut.) P. 4,4,84.

लब्धलक्त 1) adj. s. u. लक्त 1). — 2) m. N. pr. eines Mannes MBh. 7,7012.

लब्धवर 1) adj. *der seinen Wunsch erlangt hat, dem ein besonderer Vorzug in Folge einer Bitte und in Berücksichtigung seiner Verdienste von einer höheren Macht in Gnaden ertheilt worden ist* MBh. 1,7646. — 2) m. N. pr. eines Tanzlehrers Kathâs. 52,265. fgg.

लब्धवर्ण adj. (*der die Buchstaben erlernt hat;* vgl. грамотный, грамотѣй) *unterrichtet, gelehrt* AK. 2,7,5. H. 341. Halâj. 2,177. Ragh. 11,2. सुभाषित° Pârçvanâthak. 5,47 (nach Aufrecht).

लब्धव्य (von लभ्) adj. *zu bekommen, zu erhalten, zu erlangen* H. an. 2,381. Med. j. 52. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 190. 260. एवं न शक्यते लब्धुमलब्धव्यम् MBh. 5,3900.

लब्धशब्द adj. = लब्धनामन् R. 2,63,10.

लब्धि (von लभ्) f. 1) *Erlangung* (das obj. im gen. oder im comp. vorangehend) Halâj. 5,58. Jâǵn. 1,351. Varâh. Bṛh. S. 50,17. fg. (pl.). 71,11. fg. 85,6. 87,5. 7. 8. 10. 11. 14. fgg. 20. 22. fgg. 26. 104,20. Kathâs. 17,55. Bhâg. P. 2,7,13. 7,7,40. 10,38,15. 60,20. ब्राह्मणप्राण° *Gewinnung, Erhaltung* Râǵa-Tar. 3,86. Ohne obj. *Gewinn* (beim Verkauf) Varâh. Bṛh. S. 42,5. 6. 50,18. — 2) *Quotient* Colebr. Alg. 8.

लब्धिम adj. *gewonnen, erhalten* Bhaṭṭ. 7,65.

लभ् (= älterem रभ्), लँभते (प्राप्तौ) Dhâtup. 23,6. लेभे, लप्स्यते, लब्धा (vgl. Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10), अलब्ध P. 8,2,40, Sch. pass. aor. अलाभि und अलम्भि (mit praepp. nur अलम्भि) P. 7,1,69. Vop. 24,7. लब्धा, लब्धुम्; aus metrischen Rücksichten auch act., z. B. लभति Maitrjup. 6,22 (in ungebundener Rede). लभामि MBh. 3,12894. Hariv. 9972. लभेत् MBh. 1,3689. 3,4086. 13,360. Hariv. 10041. Mârk. P. 43,20. लभेयम् MBh. 1,6385. 3,12018. लभतु 5,7057. अलभत् 1,5115. 3,1796. अलभन् 10496. ललाभ Verz. d. Oxf. H. 25,*b*, 13. fg. लप्स्यामि MBh. 3,14797. लप्स्यन्ति Hariv. 11857. लभिष्यसि Pańkar. 1,13,34. st. des ungrammatischen अलम्भत्त MBh. 3,8505. आलम्भत्त 14,2644 und आलम्भत्ताम् 285 liest die ed. Bomb. richtig अलभत्त u. s. w.; 2,1365 haben beide Ausgg. प्रलम्भत्ते. 1) *erwischen, fassen; antreffen, finden:* नमुचिमसुरं नालभत TBr. 1,7,1,6. दूर इव पशुं लभते Ait. Br. 3,24. न यच्छूद्रेष्वलप्सत 7,17. Kauç. 89. वशे Çat. Br. 1,9,2,35. Lâṭj. 4,3,17. सा रात्री रात्रिभिर्लब्धा Kathâs. 5,66. 18,242. 33,117. घर्मलब्ध *von Gluth ergriffen* Megh. 62, v. l. अपि त्वां न लभेत्कर्ण राज्यलम्भोपपादनम् *sich bemeistern* MBh. 5,4814. मित्रं ध्रुवम् M. 7,208. यज्ञियं पशुम् R. 1,61,14 (63,16 Gorr.). मनुजपतिसुतां हृतं लभधम् 4,41,79. यदा तु प्रतिषेद्धारं पापो न लभते क्वचित् Spr. 4583. Kathâs. 12,108. 18,227. 30,102. Mârk. P. 74,31. Hit. 58,4. Z. d. d. m. G. 14,573,10. अज्ञया कूपलब्धया Bhâg. P. 9,19,11. Spr. 783. न दृष्टो लभ्यते कश्चित्सर्वः शोकपरायणः *wird gefunden, — angetroffen* R. 2,41,14. Kathâs. 24,232. 79,29. न चैनं कश्चिदारूढं (आरोढुं v. l.) लभते राजसत्तमम् MBh. 1,1756. निधिम् *einen Schatz finden* Jâǵn. 2,84. fg. Kathâs. 33,154. अस्थिकं श्वा लब्धा Spr. 3335. धनगुप्तगृहं पुच्छन्कृच्छ्रेण लब्धास्तमिते सूर्ये प्रविष्टः Pańkat. 137,25. नाम्भो ऽत्र लभते क्वापि Râǵa-Tar. 4,294. 5,108. Kathâs. 23,41. मार्गम् *einen Weg finden* Kumâras. 3,49. अवकाशम् *Platz —, einen freien Spielraum —, Gelegenheit finden, sich Eingang verschaffen, am Platze sein* Maitrjup. 6,22. वाचो वाच्यविवेकविज्ञावधियामीदृग्विधा मादृशां लप्स्यन्ते क्व किलावकाशम् Verz. d. Oxf. H. 120,*a*, 33. fg. andere Beispiele s. u. अवकाश 2). अन्तरम् dass.: लब्धान्तर adj. *der eine Gelegenheit gefunden hat;* davon °त्व n. Çâk. Ch. 58,9. इत्यादि मन्त्रिणां वाक्यं न लेभे तस्य चान्तरम् so v. a. *machte keinen Eindruck auf ihn* Kathâs. 40,55. लब्धावसर *Gelegenheit gefunden habend* Kaush. Up. Einl. 1,15. 2,13. पदम् *Platz finden* eig. und übertr. so v. a. *sich Eingang verschaffen* Çâk. 138. Ragh. 9,42. 8,90. Bhâg. P. 3,28,20. अलब्धनिद्राक्षण *keine Zeit zum Schlafe findend* 5,14,21. कात्यायनस्यापं लब्धः कालः प्रकाशने so v. a. *der Zeitpunkt ist da* Kathâs. 5,90. लब्धतीर्थ so v. a. *die Gelegenheit habend* Bhâg. P. 3,19,4. — 2) *erhalten, bekommen, in den Besitz von Etwas gelangen, theilhaftig werden* (pass. *zu Theil werden*), *wiedererlangen:* यज्ञे लप्स्यमानो भवति *er wird beim Opfer Etwas bekommen* d. h. *einen Gewinn davon haben* Ait. Br. 1,13. धनम् Çat. Br. 13,5,4,15. 2,4,2,4. Kaṭhop. 1,27. M. 4,156. R. 3,76,30. Spr. 1288. fg. 3605. Vikr. 42. अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः Spr. 233. fg. मासे मासे च लेभे स तस्मात्स्वर्णशतं नृपात् Kathâs. 35,33. तेभ्यो लब्धेन भैक्षेण M. 11,123. देशानलब्धाँल्लिप्सेत लब्धांश्च परिपालयेत् 9,251. 8,147. 201. fg. अमू अल्पक्रीतं दासद्वयं लब्धम् Prab. 61,2. लेभे स्वकं वपुः MBh. 3,2997. लक्ष्मीम् Kathâs. 18,204. Râǵa-Tar. 5,136. श्रियम् Çâk. 62. लब्धास्त्र MBh. 3,1727. आभरणमिदं कुतो लब्धम् Vet. in LA. (III) 10,14. लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् Spr. 2661. रसं ह्येवायं लब्धानन्दी भवति Taitt. Up. 2,7. स्वर्गम् MBh. 13,361. R. 1,43,5 (44,5 Gorr.). Mṛkkh. 158,1. लोकाञ्छुभान् MBh. 1,6839. 15,339. यज्ञभागम् 5,550. कृत्स्नमंशम् M. 8,207. वेतनम् 216. चत्वारि लेभे मुखानि Bhâg. P. 3,8,16. मेदिनीम् MBh. 3,2677. राज्यम् 16779. कामम् R. 1,10,10. 2,43,3. Megh. 6. Weber, Râmat. Up. 328. सर्वाभिप्रायकृतान् MBh. 5,7400. पुत्रम् Ait. Br. 7,13. Khând. Up. 4,4,2. MBh. 1,6385. 13,658. R. 1,15,14. 23,15. Râǵa-Tar. 1,107. Mârk. P. 52,27. सुतांश्च लप्सीष्टाइ धनं च तात P. 8,2,104, Sch. तमलभन्त पतिम् Ragh. 9,22. दुहिता याचिता लब्धा च Vet. in LA. (III) 16,11. गर्भम् MBh. 5,7398. 3,10496. वृत्तिम् Hariv. 11857. जीवम् 9972. जन्म Kir. 5,43. आयुः M. 4,156. आयुः शताब्दम् Mṛkkh. 1,18. ईप्सितां गतिम् Hariv. 7986. लब्धास्पद Spr. 2660. फलम् M. 9,49. 51. 54. MBh. 3,142. R. 1,62,27. Megh. 25. 35. यशः MBh. 3,8505. Bhag. 11,33. Spr. 2364. ज्ञानम् Bhag. 4,39. Bhâg. P. 4,16,25. बुद्धिम्, चेतः MBh. 3,2381. संज्ञाम् 5,7180. R. 2,34,21. चेतनाम् Pańkat. 35,11. शरणम् R. 2,96,48. मर्त्यशब्दम् 1,63,17 (65,20 Gorr.). Kathâs. 17,45. लब्धप्रथमादिसंज्ञ P. 1,4,102, Sch. सुखम् Khând. Up. 7,22. R. 2,

24,32. MEGH. 95. Spr. 3033. शर्म MBH. 3,1799. R. 3,59,22. BHÂG. P. 3, 5,39. रतिम् KATHÂS. 38,92. मुद्म् MBH. 3,1876. 3006. 5,7546. MÂRK. P. 16,86. प्रकर्षम् R. GORR. 2,121,1. 4,7,24. नेत्रनिर्वाणम् ÇÂK. 33; 1. धृतिम् KATHÂS. 18,315. लब्धदिव्यरसास्वाद 346. शान्तिमात्मनः R. 1,64,16. शमम् 2,85,19. केवलत्वम् MAITRJUP. 6,21. स्वातन्त्र्यम् 22. पुरुषत्वम् MBH. 5, 7382. Spr. 4171. BHÂG. P. 5,24,1. ब्राह्मण्यम् R. 1,65,25. यौवराज्यम् R. GORR. 2,12,27. स्वास्थ्यम् ÇÂK. 58,5. वाल्लभ्यम् RÂGA-TAR. 6,158. मानम् R. 2,109,3. द्युतिं सैंहीम् Spr. 2822. प्रतिष्ठाम् 3965. विश्रान्तिम् VIKR. 20. विश्रम्भम् R. 2,60,7. वृद्धिम् ṚT. 1,25. प्रभावम् KATHÂS. 19,11. सुप्रथाम् Spr. 5226. प्रवेशम् MEGH. 41. PANKAT. 31,9. खड्गधारापरिष्वङ्गम् Spr. 2486. शिरःकृत्तनविधिम् 4147. सख्यम् R. 4,7,4. सेवाम् RÂGA-TAR. 5,154. लब्धयुष्मत्प्रसाद BHÂG. P. 3,15,7. अनुज्ञाम् MBH. 3,14797. AK. 2,7,10. दुःखम् R. 2,74,25. Spr. 267. 3262. क्लेशम् 2062. मृत्युम् R. 3,49,54. MÂRK. P. 43,20. शापम् 74,42. ज्ञनान्तिरस्क्रियाम् Spr. 169. असंमानम्, विडम्बनम् 163. वञ्चनाम् R. 2,34,37. पापम् 75,38. निद्राम् R. 2,51,9. 86,10 (94, 11 GORR.). Spr. 4521. VET. in LA. (III) 20,5. स्पर्शम्, संस्पर्शम् *eine Berührung erfahren, berührt werden* RÂGA-TAR. 4,22. KATHÂS. 4,63. 37,17. कर्पूरः पावकस्पृष्टः सौरभं लभतेतराम् Spr. 3329. अलभततरां निर्वृतिम् KATHÂS. 26,283. लब्ध = प्राप्त AK. 3,2,54. TRIK. 3,3,148. H. 1490. — 3) mit einem infin. P. 3,4,65. *zu — bekommen:* द्रष्टुम् MBH. 4,95. Spr. 5131 (vgl. न तमिह दर्शनाय लभते KHÂND. UP. 8,3,1). भोक्तुम् P. 3,4,65, Sch. प्रवेष्टुं लभते *es gelingt ihm einzutreten* HARIV. 8249. न चैनं कश्चिदारोढुं (v. l. für आरूढं) लभते राजसत्तमम् so v. a. *es gelingt Niemand zu sehen, wie der König hinaufsteigt* MBH. 1,1756. मर्तुमपि न लभ्यते *es ist Einem nicht ein Mal zu sterben vergönnt* KATHÂS. 96,22. नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके वैद्याधरे so v. a. *es kann —, es darf kein Unrecht verübt werden* 106,156. RÂGA-TAR. 3,142. यष्टुं ततो नालभत द्विजान् *er fand keinen Brahmanen zum Opfern* MÂRK. P. 133,21. — 4) *besitzen, haben:* अपत्योत्पादनाय सामर्थ्यमलभमानः SÂJ. zu ṚV. 1,125,1. लभन्ते नात्मलाभं रश्मयश्चन्द्रसूर्ययोः MÂRK. P. 60,8. अन्वयमलभमानः *keinen logischen Zusammenhang habend* SÂH. D. 12,2. 15,6. — 5) *wahrnehmen, erkennen:* तदभिज्ञानलब्धा KATHÂS. 39,107. *herausbringen, hinter Etwas kommen:* सत्यमलभमानः KULL. zu M. 8,109. pass. *sich ergeben, sich herausstellen, zu Tage treten* SARVADARÇANAS. 125,9. fgg. 131,1. 159,10. SÂH. D. 4,8. als Resultat einer Rechnung WEBER, GJOT. 83. भ्रमणं रेचनम् u. s. w. गमनादेव लभ्यते so v. a. *fällt unter den Begriff von* BHÂSHÂP. 6.

— caus. लम्भयति P. 7,1,64. aor. अललम्भत् VOP. 18,1. 1) *bewirken, dass Jmd Etwas erlangt, bekommt, theilhaftig wird;* mit dopp. acc.: आसनम् HARIV. 14547. पुत्रं क्ष्माम् RAGH. 18,8. KATHÂS. 30,104. शरीरं वासुदेवस्य रामस्य च महात्मनः संस्कारं लम्भयामास MBH. 1,624. MÂRK. P. 22,46. सत्कारं लम्भयामास सखायं पूजयन्पितुः MBH. 3,16068. HARIV. 4901. विदूषकं संज्ञां लम्भयति *giebt* Vid. *ein Zeichen* VIKR. 47,12. लम्भयन्नपरान्पुण्यम् ÇATR. 14,78. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 254. देहभेदं च लम्भितः MBH. 2,1529. स्त्रीभावं चापि लम्भिता HARIV. 9929. 10065. सोऽयं मृत्युं मर्त्येन लम्भितः R. 6,94,17. तेन पित्रा बालोऽपि स विद्याः स्नेहेन लम्भितः KATHÂS. 65,74. लम्भितलोभ GIT. 2,4. statt des acc. auch instr. der Sache: सितं सितिम्ना सुतरां मुनेर्वपुः — लम्भयन् ÇIÇ. 1,25. — 2) *bekommen, erhalten:* स्वभार्यां कुले महति लम्भिताम् (= परिणीताम् Comm.) BHÂG. P. 6,1,65. — 3) *herausbringen, hinter Etwas kommen:* असाक्षिकेषु त्वर्थेषु मिथो विवदमानयोः । अविन्दंस्तत्त्वतः सत्यं शपथेनापि लम्भयेत् ॥ M. 8,109.

— desid. लिप्सते (लीप्सते TBR.) P. 7,4,54. 8,4,55. VOP. 19,9. 12. hier und da auch act. aus metrischen Rücksichten; *zu ergreifen —, zu erwischen —, zu bekommen —, zu erlangen —, zu erhalten —, zu gewinnen suchen:* हृतं निपाने (so die ed. Bomb.) लिप्सन्तौ व्याघ्रवत्तावतिष्ठताम् MBH. 7,3792. 15,225. BHAṬṬ. 7,88. भर्गस्य TBR. 1,6,10,5. ÇÂṄKH. ÇR. 8,8,9. कृव्यम् GOBH. 1,9,14. LÂṬJ. 5,3,9. भिक्षाम् M. 6,50. अलब्धं चैव लिप्सेत Spr. 233. यो ऽदत्तादायिनो हस्ताल्लिप्सेत ब्राह्मणो धनम् M. 8,340. लिप्सन्तः सर्ववस्तूनि BHÂG. P. 8,8,35. HIT. II, 8 (wohl fehlerhaft). काम्यां वृत्तिं लिप्समानः MBH. 12,9431. देशानलब्धांल्लिप्सेत लब्धांश्च परिपालयेत् M. 9,251. सामैवार्थे ततो लिप्सेत् MBH. 3,1256. अज्ञातलिप्सं (adv., °प्सां ed. Bomb.) लिप्सेत 12,9987. 13,1617 (act.). 14, 882. R. GORR. 1,32,9. 2,26,37. KÂM. NÎTIS. 11,32. अन्तरम् MBH. 5,1637. 2645. तस्मात्स्नेहं न लिप्सेत मित्रेभ्यो धनसंचयात् Spr. 5012. गुणाधिकान्मुदं लिप्सेदनुक्रोशं गुणाधमात् BHÂG. P. 4,8,34. लिप्स्यमान P. 3,3,7. लिप्सित R. 4,1,30. — Vgl. लिप्सा fg. und लीप्सितव्य.

— अनु (*von hinten*) *erwischen, haschen:* धावन्तम् ÇAT. BR. 3,2,1,36. 4,5,10,7. KÂTJ. ÇR. 25,12,24. — desid. ÇAT. BR. ebend. KÂTJ. ÇR. 25,12,23.

— अभि 1) *anfassen, berühren:* भागवताङ्घ्रिरेणुम् BHÂG. P. 2,3,23. — 2) *bekommen, erhalten, erlangen, theilhaftig werden:* देवांस्त्रिदिवं चाभिलेभिरे MBH. 12,1186. अम्बरम् *ein Kleid* VARÂH. BṚH. S. 71,13. सर्वं स्वार्थम् BHÂG. P. 11,5,36. अत्रमानादीनि ज्ञनात् 5,14,36. मानम् 9, 10,7. यं रुक्मिणी भगवतो ऽभिलेभे sc. als Sohn 3,1,28. — desid. *zu erhaschen —, zu bekommen wünschen:* वासस्तदभिलिप्सन्ती (das der Wind davongetragen hatte) MBH. 1,2940. वृत्त्यर्थमभिलिप्सन्तः VÂJU-P. bei MUIR, ST. I, 30, N. 55.

— आ 1) *erwischen, erfassen; anfassen, berühren* ṚV. 10,87,7. इध्ममर्चिरालभेत TBR. 2,1,10,1. पाणिभ्याम् AIT. BR. 8,6. वेदशिरसा नाभिदेशमालभेत ÂÇV. ÇR. 1,11,2. GṚHJ. 1,13,7. KÂTJ. ÇR. 1,10,14. 2,3,1. PÂR. GṚHJ. 2,2. ललाटम् KAUÇ. 90. M. 4,117. गाम् 5,87 (= MÂRK. P. 35,29). 11,202. नामृतस्य हि पापीयान्भार्यामालभ्य जीवति MBH. 4,516. 1313. अनालब्धं जृम्भति गाण्डिवम् 5,1909. 2929. R. GORR. 1,42,21. VARÂH. BṚH. S. 24,8. गावश्चालेभिरे (pass.) भटैः BHAṬṬ. 14,91. Bemerkenswerth sind folgende Schwurformeln: सत्येनायुधमालभे MBH. 3,15197. R. 2, 98,6. 3,33,3. 26. आयुधं तेन सत्येन पादौ चैवालभे तव 2,18,19. सत्येनालभ्य पादौ ते 29,24. तथा मूर्धानमालभे MBH. 5,5991. सत्येनात्मानमालभे 3,16847. 5,5992. 14,2373. तेनाहं विप्र सत्येन स्वयमात्मानमालभे 13, 156. सत्यमात्मानमालभे 15,112. — 2) das Opferthier *fassen und anbinden*, daher euphemistisch für *schlachten, opfern:* यच्चिषु यूपेष्वालभेत TBR. 1,8,6,1. नास्मानालप्स्यध्वे AIT. BR. 2,3. 6. 8. 4,22. तमेतमभिषेचनीयं पुरुषं पशुमालेभे 7,15. TS. 5,4,12,2. प्रातर्वै पशूनालभन्ते ÇAT. BR. 3, 7,2,4. 1,1,4,15. fg. वशामालभ्य संज्ञपयन्ति 4,5,2,1. 11,8,3,5. अश्वमेधम् 2,5,4. 13,7,1,9. KÂTJ. ÇR. 21,2,4. ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभेत Cit. bei NÎLAK. zu MBH. 2,865. गर्दभं पशुमालभ्य JÂGN. 3,280. MBH. 7,2372. 12,9428. 14,285 (अलभन्त ed. Bomb. auch an erster Stelle). 2644 (अलभन्त ed. Bomb.). MṚKKH. 161,12. BHÂG. P. 5,9,13. 11,10,28. 21,30. — 3) *anfan-*

gen, unternehmen (vgl. रभ् mit आ): व्रतम् TS. 1,6,7,2. 10,3. अर्धर्चम् 2,5,7,4. — 4) *Jmd gewinnen:* एवं सामभिरालब्धः (= उक्तः oder हृदि स्पृष्टः Comm.) Bhâg. P. 10,57,40. — 5) *erlangen, theilhaftig werden:* न चैवालभते त्राणमभिपन्ना बलीयसा MBh. 4,701. कान्तिम् Megh. 15. तस्य विश्रम्भमालभ्य Kâm. Nitis. 9,63. — 6) आललम्भे Râǵa-Tar. 2,112 fehlerhaft für आललम्बे. — Vgl. आलब्धि fgg. und आलम्भ fgg. — caus. 1) आलम्भयति *anfassen —, berühren lassen* Kauç. 52. 58. 72. Kâtj. Çr. 7, 5,3. 8,15. — 2) *beginnen lassen:* व्रतम् TBr. 2,2,2,2. — desid. आलिप्सते Schol. zu P. 7,4,54. 8,4,55. 1) *berühren wollen* Kâtj. Çr. 8,2,7. — 2) *anbinden* — d. h. *schlachten wollen* Çat. Br. 6,2,1,5. 7,5,2,4.

— अन्वा 1) (*von hinten*) *erfassen, in die Hand nehmen, berühren:* इष्मीन् RV. 10,130,7. अंसम् Gobh. 2,10,26. Kauç. 69. 80. MBh. 5,1195. Hariv. 8207. — 2) *sich halten an:* सत्यम् Çat. Br. 9,5,1,13. — Vgl. अन्वालम्भन.

— उपा 1) *berühren* Çat. Br. 1,9,2,21. — 2) *hinzu binden* d. i. — *schlachten;* s. उपालम्भ्य. — 3) *tadeln, Vorwürfe machen;* mit acc. der Person Khând. Up. 2,22,3. 4. Nir. 1,14. MBh. 1,4330. 2,1337. 3,16832. 4,485. 659. 675. 7,2536 (act.). R. Gorr. 2,61,27. 116,11. Mṛkkh. 83, 14. fg. 91,20. Ragh. 7,41. Kumâras. 5,58. Çâk. 59,15. 85,7. ad 54. Vikr. 63,12. Spr. 3670. Çiç. 9,60. Kathâs. 17,32. 64,12. 18. Bhâg. P. 5,8,19. 7,4,45. Prab. 103,19. Bhaṭṭ. 3,30. 6,125. — 4) उपाल° fehlerhaft für उपल° MBh. 7,3070. Çâk. Ch. 14,13. Bhâg. P. 5,10,1. Verz. d. Oxf. H. 264,*a*,29. an den drei ersten Stellen hat die v. l. das Richtige. — Vgl. उपालभ्य fgg. — caus. *Jmd tadeln, Jmd Vorwürfe machen* Pańkat. 134,24.

— प्रत्या *von der anderen Seite her fassen:* अङ्कुशेन Âçv. Çr. 1,7,5. पराञ्चमावृत्तं संपिंष्यात्प्रत्यालभमानम् *ohne dass er seiner Seits fassen —, sich zur Wehr setzen kann* Çat. Br. 1,6,3,33.

— समा 1) *anfassen, berühren:* उत्तरामुत्तरां शाखां समालम्भं रोहेत् Çat. Br. 9,3,3,6. Jâǵń. 3,13. पाणिना MBh. 4,1421. R. 1,29,25. 41,23. R. Gorr. 1,13,33. 30,24. 2,86,9. — 2) *salben* R. 2,25,35. प्राणान् d. i. *Mund und Nase* Suçr. 1,16,12. Mṛkkh. 47,23. Kathâs. 37,13. 15. 99, 10. Naish. 22,56. Bhaṭṭ. 14,92. समालब्ध = विच्छिन्न Trik. 3,3,262. H. an. 3,416. Med. n. 132. — Vgl. समालम्भ fgg.

— उद् Mṛkkh. ed. Calc. 342,17. fg., wo aber mit der neueren Ausg. मे वयस्यो लभ्यं st. च यस्योल्लभ्यं zu lesen ist.

— उप 1) *erwischen, habhaft werden, finden, bekommen, erhalten, wiedererlangen, theilhaftig werden* (pass. *zu Theil werden*) Kâtj. Çr. 25, 9,2. 12,25. R. 3,46,14. MBh. 1,1046 (act.). 1853. 3,2597. R. 3,74,29. उपलब्धं हि मित्रं मे 4,9,101. 40,71. Vikr. 65,19. Daçak. 73,10. 80,17. नावमिव मामुपलभ्य 88,5. 6. Saddh. P. 4,14,*a*. गर्भानुपलेभिरे *empfingen* R. 1,15,25 (23 Gorr.). M. 11,17. MBh. 13,307. नालभ्यं चोपलभ्येत नृणाम् 7601. 14,448. Hariv. 6507 (दुर्गकर्माणि संस्कारानुपकल्प्य die neuere Ausg.). अनर्थम् R. 3,42,47. अन्यतमं रसमुपलभते *nimmt einen Geschmack an* Suçr. 1,169,11. Mṛkkh. 1,16. Ragh. 8,81. 10,2. 18,21. Râǵa-Tar. 5,297. Bhâg. P. 1,16,34. 3,16,6. 33,37. 5,2,15. 3,4. प्रकृत्वम् Hariv. 607. स्मृतिम् MBh. 1,3994. Çâk. 108,7. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,35. संज्ञाम् MBh. 1,216. R. 2,62,3. 3,25,9. सुखम् Spr. 3322. 4073. Kumâras. 4,42. शान्तिम् MBh. 1,6526. 16,276. निर्वृतिम् Râǵa-Tar. 1,65. स्वेषु दारेषु रतिम् R. 5,22,30. Vikr. 67,4. निद्राम् 29. बालस्पर्शम् Çâk. 103,19. — 2) *wahrnehmen:* प्रत्यक्षतः P. 6,3,80, Sch. साक्षादनुपलभ्यमानावग्निपिशाचौ कपोतवाताभ्यामनुमीयेते ebend. अग्निरात्रोपदेशात्प्रतीयते ऽत्राग्निरिति। प्रत्यासीदता धूमदर्शनेनानुमीयते। प्रत्यासन्नेन च प्रत्यक्षत उपलभ्यते Comm. zu Njâjas. 1,1,3. Ǵaim. 1,1,9. Tattvas. 18. Nilak. 137. Kumârila bei Müller, SL. 510. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 27. 300. Verz. d. Oxf. H. 256,*b*,8. 264,*a*,29 (उपाल° fälschlich gedruckt). Bhâshâp. 61. Gauḍap. zu Sâṅkhjak. 6. Schol. zu Kap. 1,109. 114. 157. Sarvadarçanas. 7,13. 21. 21,19. तमालश्यामलत्वेनोपलभ्यमानं तमः *wahrgenommen werdend als* 110,17. 144,4. MBh. 1,8276. नलं च हृतसर्वस्वमुपलभ्य 3,2274. 2396. 4,771. 7,3070 (उपलप्स्यति ed. Bomb.). Hariv. 11593. R. 2,65,13. 3,60,13. 5,14,59. 51,15. नोपलेभे तदात्मानम् 7,88,12. Vikr. 57,11. न सुखं दुःखमेवास्ति यस्मात्तदुपलभ्यते Spr. 1491. 5328. Bhâg. P. 1,8,8. 9, 9. 16,19. 2,7,12. 10,9. 3,17,27. 20,31. 27,10. 28,36. 4,6,40. 28,46. 29, 64. 5,2,3. 3,7. 9,18. 10,1 (उपलब्धः ed. Bomb.). 15,6. 24,5. 20. 7,9,34. 9,14,40. Mârk. P. 37,34. Sâh. D. 10,3. Pańkat. 53,3. Kâç. zu P. 1,2, 54. Kull. zu M. 8,69. Schol. zu Çâk. 13,12. — 3) *erfahren, in Erfahrung bringen, kennen lernen, erkennen, sich Gewissheit verschaffen über* M. 7,57. MBh. 2,2615. 4,898. Hariv. 4609. R. 1,68,11. 3,34,17. 39,2. 60, 14. 4,47,17. 58,11. 39. 5,1,82. 38,17. 71,4. 7,33,23. Ragh. 12,60. Çâk. 11,16. Mâlav. 44,3. 41. 64. Varâh. Bṛh. 2,3. Kathâs. 33,93. 65,225. 73,357. Râǵa-Tar. 3,500. 4,430. Bhâg. P. 4,6,3. 5,1,9. Daçak. 59,5. 69,10. Pańkat. 172,21. Bhaṭṭ. 3,27. अनुपलभ्यात्मानमननुविद्य Khând. Up. 8,8,4. Kathop. 6,12. fg. Maitrjup. 4,4. 6,8. *erkennen, einsehen, wissen* MBh. 2,709. मनसो दुःखमूलं तु स्नेह इत्युपलभ्यते 3,73. सव्यदक्षिणयोर्यत्र विशेषो नोपलभ्यते Spr. 3220. चतुर्थं नोपलभ्यते *kennt man nicht* 871. 3067. Kathâs. 6,128. विनाशस्तव रामेण संयुगे नोपलभ्यते so v. a. *ist unbegreiflich* R. 6,95,7. — 4) pass. mit act. Bedeutung: नोपलभ्यति मूढात्मा प्रत्यक्षं ब्रह्म शाश्वतम् *nimmt wahr* Hariv. 11600 (मूढानां die neuere Ausg., also hier wirkliches pass.). स हि स्थानानि सर्वाणि कार्त्स्न्येन कपिपुंगवः। नरमांसाशिनां लोके नैपुण्येनोपलभ्यते॥ *kennt* R. 3,75,70. — 5) उपलब्ध R. 2,40,45 fehlerhaft für उपा° *getadelt*, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. उपलब्धव्य fgg., उपलभ्य fgg. — caus. 1) *bewirken, dass Jmd etwas erhält, zukommen lassen:* बुभुजे च श्रियं स्वृद्धां द्विजदेवोपलम्भिताम् Bhâg. P. 8,15,36. — 2) *Jmd Etwas erfahren —, erkennen lassen* P. 1,4,52, Vârtt. 2, Schol. — 3) *bewirken, dass Jmd oder Etwas erkannt wird, erkennbar machen* Bhâg. P. 4,1,25. — desid. etwa *eingreifen wollen in:* अन्नाणां गणामुपलिप्समानाः AV. 6, 118,1, wo die Lesart zweifelhaft ist; die Hdschrr. scheinen गत्तुम् oder गत्रम् zu schreiben, während TBr. 3,7,12,3 वग्रमुपनिघ्नमानाः gelesen wird. — Vgl. उपलिप्सा fg.

— प्रत्युप *wiedererlangen, wiederbekommen* Vikr. 133. Bhâg. P. 5,20, 35. 8,11,1.

— समुप 1) *erlangen, bekommen* MBh. 9,2086. R. 5,24,9. 7,88,23 (act.). — 2) *erfahren, kennen lernen* Varâh. Bṛh. S. 88,10.

— परि *erlangen, bekommen* Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,6.

— प्र, प्रालम्भि, प्रलम्भम् P. 7,1,69, Sch. Vop. 24,7. 1) *ergreifen, packen, sich Jmds bemeistern* MBh. 5,1551. काममन्युभ्यां प्रलब्धः 4320.

An beiden Stellen vielleicht auch in der Bed. 3). — 2) *erlangen, bekommen* KATHÂS. 21,133. — 3) *Jmd hintergehen, anführen, foppen, zum Narren halten* MBH. 2,1365 (प्रलम्भत्ते beide Ausgg., = अवलम्बत्ते NILAK.). 3,2612. 11,122. BHÂG. P. 3,17,27. 29. 18,13. 4,7,13. 10,22,21. 34,13. 11,1,16. — Vgl. प्रलब्धव्य, प्रलम्भ fg. — caus. *Jmd anführen, foppen, zum Narren halten* BHÂG. P. 9,3,20. 10,60,49.

— विप्र 1) *Jmd anführen, hintergehen, verhöhnen, zum Narren halten* MBH. 5,7431. ÇÂK. 70,22. UTTARAR. 114,15. fg. (155,10). KATHÂS. 4,61. 12,190. 25,203. 45,273. 71,170. BHÂG. P. 1,18,48. 4,15,24. 25,62. 5,10,6. 8,21,34. MÂRK. P. 24,27. DAÇAR. 2,25. 4,62. PRATÂPAR. 5,*b*,6. SÂH. D. 112. 118. VET. in LA. (III) 20,16. HIT. 92,6. 120,18. AK. 3,1,41. H. 442. HALÂJ. 2,223. त्वयोदितं व्यक्तमविप्रलब्धम् *ohne Trug* BHÂG. P. 5,10,10. das Gesetz *verhöhnen* so v. a. *ohne alle Rücksicht verletzen:* स वै धर्मो विप्रलब्धः सभायां पापात्मभिः MBH. 3,223. — 2) *wiedererlangen, wiederbekommen* MBH. 14,1732 nach der Lesart der ed. Bomb., प्रविल° ed. Calc.; die richtige Lesart wird प्रतिल° sein. — Vgl. विप्रलम्भ. — caus. *verhöhnen* so v. a. *rücksichtslos verletzen:* आज्ञाम् *einen Befehl* BHÂG. P. 6,3,8.

— प्रति 1) *wiedererlangen, wiederbekommen:* भर्तारम् MBH. 3,16809. HARIV. 9985. R. 3,8,25. 4,25,39. BHÂG. P. 4,9,51. MÂRK. P. 24,43. चक्षूंषि MBH. 1,6827. 7882. R. 4,61,13. ब्राह्मण्यम् (so die neuere Ausg.) HARIV. 1019 (act.). दर्शनम् so v. a. *wiedersehen* MBH. 15,939. संज्ञाम् 1,6773. 6,2835. 4574. 7,4071. 8,531. 14,2013. R. 2,39,9 (38,9 GORR.). R. GORR. 2,9,37. 35,2. 58,1. 5,30,15. MÂLAV. 68,19. चेतनाम् MBH. 3,712. R. 6,8,7. प्रतिलब्धेन्द्रियप्राण BHÂG. P. 10,16,55. प्रतिलब्धवाच् 6,16,33. प्रतिलब्धश्रयश्री 8,17,13. — 2) *erlangen, bekommen, theilhaftig werden:* पत्नीम् BHÂG. P. 3,13,2. वरं श्रेष्ठम् MBH. 12,4180. SADDH. P. 4,7,*a*. *b*. 26,*a*. BHÂG. P. 3,31,39. कामम् 8,21. 5,13,12. मनोरथम् 14,36. बोधम् 3,5,45. क्वौ भगवति प्रतिलब्धभावः 28,34. 16,7. मानम् so v. a. *stolz werden* 2,14. 5,13,10. pass. *zu Theil werden, sich darbieten:* रन्ध्रम् ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 84. — 3) *seinen Theil bekommen* so v. a. *bestraft werden* MBH. 1,3490. — 4) *erfahren:* इन्द्रात्प्रवृत्तिम् R. 3,63,29. प्रतिलभ्य च धर्मात्मा शिष्यं धर्मपरायणम् *nachdem er in Erfahrung gebracht hatte, dass* MBH. 13,2341. — 5) *erwarten, abwarten:* प्रतिलभ्यतां शरत् R. 4,26,25. — Vgl. प्रतिलभ्य fgg.

— वि 1) *auseinandernehmen* KÂTJ. ÇR. 10,8,5. *wegziehen* (den Dünger aus dem Stalle) KṚSHIS. 7,26. — 2) *verleihen, verschaffen:* पौरपुरन्ध्रीणां विलब्धघनपनोत्सवः KATHÂS. 55,100. — 3) *abtreten, überlassen:* विलब्ध इव चक्राङ्कैस्तस्य तीर्णानी शैस्तदा। — करुणाक्रन्दितध्वनिः KATHÂS. 87,19. ग्रहमत्र प्रभुर्यूयं करदाश्च कुटुम्बिनः। विक्रमादित्यदेवेन विलब्धाः शासनेन मे॥ 124,77. मण्डलानि विलभ्यन्ते यैः RÂGA-TAR. 3,243. 5,265. इति ज्ञात्वा स्वामिभोगादिकं ग्रह्रीष्यथ विलप्स्यथ च so v. a. *einhändigen* (*levy* HALL) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,548,10. — Vgl. विलम्भ. — caus. *Jmd Etwas zu Theil werden lassen*, mit dopp. acc. KATHÂS. 121,167. — desid. *auseinandernehmen —, vertheilen wollen* ÇAT. BR. 2,6,2,16. 4,4,2,9.

— प्रवि *wiedererlangen, wiederbekommen* MBH. 14,1732. विप्रल° ed. Bomb.; die richtige Lesart wird प्रतिल° sein.

— सम् 1) *sich gegenseitig fassen* TBR. 1,7,1,6. — 2) *erlangen, bekommen, theilhaftig werden:* मातुलुङ्गं कुत इदं संलब्धं भवताम् KATHÂS. 53,40. यया (भक्त्या) संलभ्यते रतिः BHÂG. P. 7,7,33. — desid. s. संलिप्सु.

लभ m. nom. act. von लभ् in ईषल्लभ (s. u. ईषत्) und दुर्लभ. — Vgl. लम्भ.

लभन (von लभ्) n. 1) *das Finden, Antreffen, Habhaftwerden:* आत्म° BHÂG. P. 10,60,57. — 2) *Empfängniss:* अमायां लभनस्य को ऽर्थः im Comm. zu GAIM. 1,3,31. BALLANTYNE übersetzt: *what is the meaning of this about intercourse on days of fasting?*, oder nach einer anderen Lesart (offenbar उमायां लशुनस्य) *what is the meaning of garlic as regards the goddess* UMÂ? — Statt मृत्तिकालभनात् MBH. 3,8223, wo man übrigens eher आलभन vermuthen würde, liest die ed. Bomb. मृत्युकालभयात्. — Vgl. लम्भन.

लभस UṆÂDIS. 3,117. m. = वाजिबन्धन *Pferdesessel* UĠĠVAL. = धन *Reichthum* und याचक *Bittsteller* Comm. zu UṆ. 3,116.

लभ्य (von लभ्) adj. P. 3,1,98, Sch. 1) *zu finden, anzutreffen:* वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यः KAṬHOP. 1,22. नक्षत्रेण चन्द्रो ऽर्तैः सुर्लभ्यः PAT. zu P. 7,4,77. मृणालसूत्रान्तरमप्यलभ्यम् KUMÂRAS. 1,40. — 2) *wer* oder *was in Jmdes Besitz gelangen kann* oder *soll, erreichbar, erlangbar, erhaltbar;* = लब्धव्य H. an. 2,381. MED. j. 52. नास्मि लभ्या विराटेन न चान्येन कदा च न MBH. 4,273. 3,16186. मयि प्रीति तु यद्धर्म्यं नालभ्यं विद्यते तव 15508. 5,1685. 13,28. P. 5,1,93. MṚKKH. 178,3. RAGH. 1,3. 4,88. KUMÂRAS. 5,18. Spr. 1286. 1930. 2364. 2460. 2618. 2958. 3014. 3606. 3844. 4551. KATHÂS. 35,19. BHÂG. P. 3,9,12. 7,6,25. MÂRK. P. 72,21. PAÑKAT. ed. orn. 3,15. HIT. 25,18. — 3) *zu fassen, zu erkennen, zu verstehen, verständlich:* सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् MUṆḌ. UP. 3,1,5. 2,3 (= KAṬHOP. 2,23). पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया BHAG. 8,22. BHÂG. P. 4,24,54. PAÑKAR. 4,8,37. गङ्गातटे घोष इति प्रतिपादनादलभ्यस्य शीतत्वपावनत्वातिशयस्य SÂH. D. 11,8. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 111. KUSUM. 57,10. Verz. d. Oxf. H. 162,*a*, N. 1. Schol. zu NAISH. 22,55. — 4) *entsprechend, angemessen, passend* AK. 2,8,1,24. TRIK. 3,3,320. H. 743. H. an. MED. RAGH. 10,42. KUMÂRAS. 5,43. आघ्रज्ञनलभ्ये त्रपिपिणाकागृहे KATHÂS. 12,84. स्ववृत्तिलभ्यानां दीनाराणाम् 78,16. RÂGA-TAR. 1,284. mit einem infin.: क्षान्तः शत्रुर्न कौन्तेय लभ्यः पीडयितुं रणे so v. a. *darf nicht* MBH. 2,921; vgl. u. लभ् 3). — 5) mit der Bed. des caus. *auszustatten —, zu versehen mit:* (पुत्राः) वृत्त्या (भृत्या ed. Bomb.) लभ्याः MBH. 13,5081.

लम् (= älterem रम्) *sich ergötzen* (geschlechtlich): निगृहीतेन्द्रियो भूत्वा नाप्सरोभिर्ललाम (= रराम NILAK.) HARIV. 12072.

लमक UṆÂDIS. 2,33. m. 1) = तीर्थशोधक UĠĠVAL.; vgl. रमक. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69 und gaṇa नडादि zu 4,1,99. उपकाः *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि; उपकलमकाः *die Nachkommen* Upaka's und Lamaka's gaṇa तिककितवादि zu P. 2,4,68. — Vgl. लामकायन.

लम्ब m. pl. Bez. einer best. Klasse von Menschen RÂGA-TAR. 8,1105.

लम्पक m. pl. N. einer Secte bei den Gaina WILSON, Sel. Works I,341.

लम्पट adj. (f. आ) *gierig, lüstern* H. ç. 102. HALÂJ. 2,198. JÂDAVA bei MALLIN. zu ÇIÇ. 4,6. HÂR. 192 (लिम्पट nach den Corrigg.). Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,548,8. BHÂG. P. 5,2,14. 7,15,40. 12,3,21.

पुरू° 7,15,70. अ° 3,14,48. 22,2. 10,86,13. 11,20,15. नाति° 10,81,38. die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend: स्त्रीषु Kathâs. 47, 101. स्त्री° 102. परस्त्री° Brahmavaiv. P. 2,55,30 (nach Aufrecht). भोगलम्पटा (जिह्वा) Kathâs. 30,117. प्रफुल्लमल्लीमधु° Sâh. D. 300,21. अखिलकाम° Bhâg. P. 5,18,21. 19,14. तद्गन्धासव° 10,59,40. Pañkar. 3, 5,28. कारटिकोटिविपाटन° Pârçvanâthak. 4,189 (nach Aufr.). विषयरसास्वाद° Sarvadarçanas. 101,3. Pañkat. 253,18. रति° *geil* Verz. d. B. H. No. 1006. Davon nom. abstr. °त्व n.: भवरसास्वादने Spr. 23.

लम्पा f. N. pr. einer Stadt Kathâs. 67,36. 45. eines Reiches Hiouen-thsang I, 95.

लम्पाक 1) adj. = लम्पट H. an. 3,91. Med. k. 149. — 2) m. N. pr. eines Volkes, = मुरण्ड H. 960. H. an. Med. MBh. 7,4847. Mârk. P. 57,40. Reinaud, Mém. sur l'Inde 353. LIA. I, 29, N. 1. 422.

लम्पापटह m. *eine Art Trommel*, = प्रतिपत्तिपटह Hâr. 72. = ट्टरी H. an. 3,559. Med. r. 160.

लम्फ m. *Sprung* ÇKDr. Auch उल्लम्फन und प्रलम्फन n. ebend. — Vgl. कम्प.

1. लम्ब् (= älterem 1. रम्ब्), लँम्बते (विस्रंसने) Dhâtup. 10,15. Nir. 6,26. ललम्बे, लम्बिष्यते, लम्बितुम्, लम्बित; aus metrischen Rücksichten auch act. 1) *herabhängen, hängen an*: प्रतर्षं वैव तिष्ठेल्लम्बेत वा Çat. Br. 11,1,6,32. युवानं निकृत्ते (so die ed. Bomb.) वीरं लम्बमानम् MBh. 6, 1879. 8,55. 11,136. R. 6,84,24. fg. 7,34,17. Kathâs. 40,102. Pañkat. V,36. अवाक्शिरास्तु यो लम्बेत् MBh. 13,354. Spr. 4953. ऋषयो ऽत्र (शाखायां) लम्बन्ते MBh. 1,1386. 1385 (act.). 12,6597. R. 3,39,30. प्रपाते त्वं लम्बमानः MBh. 2,2187. वृक्षाश्च लम्बन्ति (न भान्ति MBh. 3,15683) तथैव भग्नाः Draup. 6,18. शमीवृक्षस्य लम्बमानशिखायाम् Pañkat. 94,1. द्रोणप्रमाणानि लम्बमानानि — मधूनि मधुकरिभिः संभृतानि नगे नगे R. 2, 56,8 (11 Gorr.). R. Gorr. 5,74,7. अभिन्नं लम्बते तु यत् (नेत्रम्) Suçr. 2, 21,2. श्वयथुर्मुष्कवल्लम्बते गले 1,289,7. Pañkat. 136,1. Hit. 49,14. लम्बन्तं वृषणम् Bhâg. P. 9,19,10. लम्बता कण्ठचर्मणा Hariv. 4103. लम्बमानाङ्घ्रि Râga-Tar. 1,80. वानरस्य लम्बमानं लाङ्गूलम् Pañkat. 259,7. लम्बमाना कण्ठभूषा H. 657. स लम्बमानः कृष्णस्य भुजाग्रे सघनो गिरिः Hariv. 3944. R. Gorr. 1,60,3. Kathâs. 40,90. 65,207. 75,51. 55. Râga-Tar. 7, 1247. लम्बित *herabhängend, hängend*: बालशयन Pañkar. 3,14,12. लम्बितोष्ठ MBh. 13,1201. लम्बितास्या R. 5,25,34. Verz. d. Oxf. H. 202, b,8. 15. बडिशो ऽयं त्वया ग्रस्तः कालसूत्रेण लम्बितः *hängend an* MBh. 3, 11495. कण्ठ° (यज्ञसूत्र) AK. 2,7,49. H. 845. — 2) *herabsinken, sich senken*: तेन लम्बामहे गर्ते MBh. 1,1038. 1034. 1833. 3,8553. गर्तमेतमनुप्राप्ता लम्बामः 8555. लम्बमानमिवाम्बुदम् Hariv. 3581. Megh. 42. किमलम्बत (तमः) Çiç. 9,20. लम्बते च दिवाकरः MBh. 7,5872. R. Gorr. 1, 67,27 (65,34 Schl.). लम्बमाने दिवाकरे 34,28 (33,20 Schl.). 2,54,8. 3, 15,5. शिरो मे लम्बते MBh. 6,5723. शिरसा लम्बता 5722. लम्बित *gesenkt, hinabgeglitten, abgefallen*: त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने Gît. 12,19. — 3) *sich hängen an* so v. a. *sich klammern —, sich halten an*: पार्श्वतः पृष्ठतश्चापि लम्बमानास्तदुन्मुखाः R. 2,40,21. शूरबाहुषु लोको ऽयं लम्बते पुत्रवत्सदा MBh. 12,3680. Kâm. Nîtis. 15, 59. यो रश्मिषु लम्बते so v. a. *der die Zügel schiessen lässt* Spr. 2453. लम्बित *sich klammernd an, sich haltend an, gestützt auf*: करेण वातायनलम्बितेन Ragh. 13,21. अन्योऽन्यलम्बितकरौ ततस्तौ हरिराक्षसौ so v. a. *Hand in Hand* R. 7,34,43. कलकङ्कणलम्बितचन्दन *hängen geblieben* Verz. d. Oxf. H. 133, a, No. 244. — 4) *zurückbleiben, nachbleiben* (im Raume), *sich langsamer bewegen* Sûrjas. 1,25. — 5) *nachbleiben* (in der Zeit), *zögern, säumen* MBh. 5,120. लम्बित = विलम्बित *langsam, gemessen* (von einem Tacte) Bhâguri beim Schol. zu H. 292.

— caus. 1) *herabhängen lassen, herablassen*: चर्मपेटा गवाक्षेण रज्ज्वा तत्र हि लम्ब्यते Kathâs. 64,100. *aufhängen*: चित्रपटं तत्र भित्तावलम्बयत् (so ist zu lesen, wie schon das Metrum zeigt) 122,62. — 2) *sich anklammern lassen*: को लम्बयेदाहरणाय हस्तम् so v. a. *die Hand anlegen* Ragh. 6,75. — 3) wohl *demüthigen* MBh. 1,1445, wo die ed. Bomb. लम्बयित्वा st. लङ्घयित्वा liest.

— अव 1) *herabhängen*: य एष स्तन इवावलम्बते Taitt. Up. 1,6,1. स्तनवदवलम्बते यः कण्ठे ऽजानां मणिः स विज्ञेयः Varâh. Bṛh. S. 65,3. पराग्वलम्बमानकुटिलजटिलकपिशकेशभूरिभार Bhâg. P. 5,5,31. अवलम्बित *herabhängend, hängend an*: शाखायां मृतकमवलम्बितमास्ते Vet. in LA. (III) 4,2. 12,12. Spr. 2774. Çâk. 144. Pañkat. 116,23. 128,9. — 2) *herabsinken, sich senken*: के भवन्तो ऽवलम्बन्ते गर्ते ऽस्मिन्नधोमुखाः MBh. 1,1035. 1834. सूर्ये ऽवलम्बति 4,1040. अवलम्बित *der sich herabgelassen —, niedergesetzt hat* Hit. 13,10. — 3) *sich klammern —, sich halten an, sich stützen auf*; mit acc.: सखीमवलम्ब्य स्थिता Çâk. 78,8. उर्वशी राजानमवलम्बते Vikr. 10,8. Çiç. 9,39. Ragh. 3,25. दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः Çâk. 21,1. शाखां वटतरोः Kathâs. 26,17. 52,327. मम पटमवलम्ब्य Spr. 1427. Bhâg. P. 5,14,40. 23,3. अवलम्बमान *anhängend* Suçr. 2,373,17. अवलम्बित *gestützt auf* AK. 3,4, 13,106. चित्रलेखाहस्तावलम्बिता Vikr. 7,5. st. des acc. auch loc.: भूतं हित्वा च भाव्यर्थे यो ऽवलम्बेत (ऽवलम्बेत्स ed. Bomb.) MBh. 1,8443. auch instr.: ननु — नात्मना नावलम्बे *ich finde ja meine Stütze in mir selbst* Megh. 108. — 4) *fassen, anfassen, packen*: हस्ते ऽवलम्ब्य तम् Kathâs. 121,173. 63,113. हस्तेनावलम्ब्योर्वशीम् Vikr. 49,11. अवलम्ब्यतां पुत्रः Çâk. 108,19. अवलम्ब्यापराः कण्ठे हरिम् Hariv. 8326. Mṛkkh. 119,14. Kathâs. 37,217. अवलम्बित *gefasst* Suçr. 2,336,5. — 5) *halten* (damit Jmd oder Etwas nicht falle, sinke) Çâk. 86,21. हस्तेन तस्थाववलम्ब्य वासः Ragh. 7,9. Kumâras. 3,55. 6,68. 7,58. Mâlav. 47,8. Kathâs. 18,298. uneig.: अमी गुणाः — हृदयं न त्ववलम्बितुं क्षमाः Ragh. 8,59. Mâlav. 31,2, v. l. अवलम्बित *daran gehalten, darauf gelegt* Suçr. 1,60,11. — 6) *zu Etwas greifen, sich hingeben*: मायाम् Bhâg. P. 3,31,13. व्यथाम् Bhaṭṭ. 7,71. आशाम् Kathâs. 81,57. प्राणांस्त्वत्प्राप्त्याशावलम्बितान् 106,144. त्वया राजत्वमवलम्ब्यताम् so v. a. *werde König* R. 2,72,51. मानुष्यत्वमवलम्ब्य LA. (III) 87,14. धैर्यम् Spr. 3655. Vikr. 34,4. Hit. 13,19. धैर्यमेकं सहायम् Kathâs. 49,253. धृतिम् 25,298. स्वातन्त्र्यम् Çâk. 70,14. दाक्षिण्यम् Mâlav. 23,22. नैर्घृण्यम् 69,10. माध्यस्थ्यम् Kumâras. 1,53. नैराश्यम् Spr. 1057. साहसम् Z. d. d. m. G. 14,571,17. *theilhaftig werden*: शौक्ल्यम् Varâh. Bṛh. S. 4,3. अवालम्बिष्यत चक्रत्वं कथं नु पुण्यपुण्यताम् (so ist zu lesen) Râga-Tar. 3,65. *obliegen*: स्वानधिकारान्प्रभावैरवलम्ब्य Kumâras. 2,18. — 7) *nach einer best. Weltgegend greifen* so v. a. *eine best. Richtung einschlagen*: प्रातिष्ठत ततः प्रातरवलम्ब्योत्तरां दिशम् Kathâs. 37,33. 52. — 8) *abhän-*

gen —, abhängig sein von, beruhen auf, in nächster Beziehung stehen zu: सर्वो ऽयं जनस्त्वामवलम्बते Bhaṭṭ. 18,41. व्यवहारो ऽयं चारुदत्तमवलम्बते Mṛkkh. 142,17. सो ऽयं क इति बुद्धिस्तु साजात्यमवलम्बते Bhāshāp. 166. Müller, SL. 197. — 9) *zurückbleiben, nachbleiben:* पृष्ठे ऽवलम्बितः Golādhj. Grahaṇav. 27. — 10) *zögern, säumen* R. Gorr. 2,121,6. अवलम्बित H. 1478 fehlerhaft für अविल°, wie die v. l. hat. — Vgl. अवलम्ब fgg. — caus. 1) *herabhängen lassen, herablassen:* दासीभिः पेटां रज्ज्वावलम्बिताम् Kathās. 64,104. *aufhängen:* तं च कलशं नागदत्ते ऽवलम्ब्य Pañkat. 252,10. वृक्षाग्रसङ्गिना पाशेनात्मानमवलम्बयम् Kathās. 96,16. — 2) *ergreifen:* हस्तम् Mālav. 42,6. — 3) *stützen, halten, vor einem Fall bewahren:* शक्यमिदानीं जीवितमवलम्बयितुम् (अवलम्बितुम् v. l.) Mālav. 31,2. — 4) *aufladen, aufbürden:* सचिवावलम्बितधुरं नराधिपम् Ragh. 9,69.

— समव *fassen, anfassen:* बाहुभ्यामत्र समवलम्बत MBh. 3,10988. उत्स्तनीं समवलम्ब्य या रतिः so v. a. *in seine Arme schliessend* Varāh. Bṛh. S. 74,18. fg.

— आ 1) *herabhängen, hängen:* मुखालम्बितहेमसूत्र Vikr. 140. — 2) *sich klammern —, sich hängen an, sich stützen auf:* अशोकस्य विपुलां शाखामालम्ब्य R. 5,26,10. Kathās. 65,203. fg. कृष्णभुजंगपुच्छम् Verz. d. Oxf. H. 128,b,12. Kathās. 65,189. Pañkat. 128,19. यद्यदालम्बसे काम Spr. 3594. auch mit loc.: आलम्बस्व रामसु *halte dich an* R. 5,35,23. — 3) *ergreifen, fassen, packen:* पाणिम् MBh. 9,3540. अग्राणि शैलानां शिखराणि महान्त्यपि R. 4,8,5. तं पाणावालम्ब्य Kathās. 45,412. पाणिनावलम्ब्य भूपालम् Rāǵa-Tar. 4,433. केशान् 5,432. अम्बु Ghaṭ. 22. धनुः Bhaṭṭ. 6,35. महास्त्राणि 14,95. so v. a. *einnehmen, erobern:* रावणपुरीमालम्बिष्यन्ति R. 5,72,19. तस्य कविता मच्चित्तमालम्बते so v. a. *gefangen halten* Dhūrtas. 67,4. — 4) *halten, stützen:* ता आलम्बमिष्टकामिष्टकामुपदध्यात् Kāṭh. 22,8. R. 2,103,23 (111,29 Gorr.). अधिहस्ति यात्तमाधोरणालम्बितम् Ragh. 18,38. पतितां किं नाम नालम्बसे Sāh. D. 116,3. — 5) *zu Etwas greifen, sich anlegen, an Etwas gehen, sich hingeben:* काषायमालम्बताम् *zu einem rothen Gewande greifen* so v. a. *ein solches Gewand anlegen* Spr. 3661. भूमिकामाललम्बे (so ist zu lesen) काम् Rāǵa-Tar. 2,112. तनू रोमाञ्चमालम्बते so v. a. *die Haut am Körper fängt an zu rieseln* Spr. 2083. रामस्य सदृशं व्यक्तं स्वरमालम्ब्य *seine Stimme annehmend* R. 3,50,22. 64,5. 9. 66,12. आलम्ब्यतामिति वरो (d. i. स्वयंवरो) यस्ते राजसु रोचते Mārk. P. 124,22. कुमुदव्रतम् Kathās. 72,287. चकोरव्रतम् 76,11. अपत्याशां सखीमिव। आलम्ब्य (eig. *sich klammernd an*) 34,39. ध्यानम् *sich hingeben* MBh. 12,6810. यथा यथा हि सद्वृत्तमालम्बन्तीतरे जनाः 10890. धैर्यमालम्ब्य 5,7139. R. Gorr. 2,26,25. Kathās. 37,42. Pañkat. 21,8. धीरत्वम् Kathās. 31,85. धृतिम् 22,100. हार्दं सौहृदम् R. 4,4,15. शौर्यम् 6,16,72. तदलं शोकमालम्ब्य क्रोधमालम्ब 5,71,11. क्रोधं च नालम्बसे Weber, Vaǵras. 255. सत्त्वमालम्ब्य R. 6,99,56. Bhāg. P. 8,11,18. औदास्यम् Spr. 1337. न कथंचिद्गृहे स्थैर्यमालम्बते Pañkat. 225,23. स्थैर्यं मयालम्बितम् Spr. 1749. तद्वरं सत्यमालम्बितम् Pañkat. ed. orn. 56,16. आलम्बितप्रार्थन Vikr. 38. तूष्णीमालम्बसे चेत् so v. a. *wenn du dich dem Schweigen hingiebst* (तूष्णीम् = निवृत्तिम्, निर्व्यापारत्वम् Comm.) Prab. 98,1. — 6) nach einer best. Weltgegend *greifen* so v. a. eine best. Richtung *einschlagen:* दक्षिणां दिशमालम्ब्य स प्रतस्थे Kathās. 25,5. 75,49. — 7) *abhängen von, beruhen auf* (acc.) Sāh. D. 63. — Vgl. आलम्ब u. s. w. — caus. *sich anklammern lassen:* आलम्बितकर *der die Hand angelegt hat* Vikr. 125.

— अध्या *einholen, erreichen:* अथ खलु भगवंस्ते पुरुषाः सर्व एव जवेन प्रधावितास्तं दरिद्रपुरुषमध्यालम्बेयुः (अध्यालभेयुः?) Saddh. P. 4,15,a.

— अपा s. अपालम्ब.

— व्या *säumen, zögern* Megh. 46.

— समा 1) *sich klammern an:* समाललम्बे ध्वजम् MBh. 6,4187. so v. a. *zu Jmd halten* Rāǵa-Tar. 1,283. *sich stützen auf, sich verlassen auf:* भवत्स्नेहम् Kathās. 18,373. *sich halten an* so v. a. *Rücksicht nehmen auf:* नानाशास्त्रम् Verz. d. Oxf. H. 176,a,34. — 2) *ergreifen, fassen, pakken* Kumāras. 5,84. कन्यां कण्ठे Kathās. 73,211. — 3) *zu Etwas greifen, sich hingeben:* स्वरम् *eine Stimme annehmen* R. 3,66,26. तेजः क्षात्रम् R. Gorr. 2,20,8. धैर्यम् 5,16,5. 7,23,1,18. विश्वासम् Mṛkkh. 55,19. विनयम् Spr. 3168. साहसम् 4445. समाललम्बे (pass.) रिपुमित्रकल्पैः पद्मैः प्रहासः कुमुदैर्विषादः Bhaṭṭ. 11,1. — 4) *theilhaftig werden:* जनपदैः लक्ष्मीः समालम्ब्यताम् Spr. 4721. v. l. जनपदे लक्ष्मीः समालम्बताम् *sich niederlassen auf.* — caus. *hängen* (trans.) *an:* तं धनुषि समालम्ब्य Pañkat. 144,23.

— उद् *hängen,* उल्लम्बित *hängend:* पादेनैकेन गगने द्वितीयेन च भूतले। तिष्ठाम्युल्लम्बितः Mṛkkh. 33,20. — caus. *aufhängen, aufknüpfen:* राजद्वारि स चौरिकाम् — उदलम्बयत् Kathās. 51,130. 55,37. 42. 71,81. उल्लम्ब्य तैरो क्षिप्रं वधकैरवशो हतः 64,53. 25,181. 75,48. 77,64.

— समुद् *hängen:* समुल्लम्बित *hängend* Mṛkkh. 34,2.

— परि *zurückbleiben, sich langsamer bewegen* Sūrjas. 3,9. *verbleiben an einem Orte:* सकृत्कृतापराधस्य तत्रैव विलम्बतः MBh. 12,5157. *ausbleiben, nicht kommen:* सप्तेमे वसवः प्राप्ताः स एक परिलम्बते Hariv. 3008. — परिलम्ब्य Gīt. 11,25 fehlerhaft für परिरभ्य *umarmend,* wie die v. l. hat.

— प्र *herabhängen* Suçr. 1,289,3. प्रलम्बित *herabhängend* Kathās. 62,145. — Vgl. प्रलम्ब fgg.

— अभिप्र, partic. °लम्बित *herabhängend* Saddh. P. 4,12,a.

— प्रति caus. *aufhängen, aufknüpfen* Pañkat. 98,4, v. l.

— वि 1) *auf beiden Seiten hängen an* (acc.): वीव वा अन्तरात्मा पक्षौ लम्बते Pañkav. Br. 14,9,20. *herabhängen, hängen an* (loc.): भ्रमत्सु युधि नागेषु मनुष्या विललम्बिरे MBh. 7,3204. 4595. R. 5,55,22. 61,2. Pañkar. 3,5,11. विलम्बन्त्यः (लताः) Hariv. 12013. विलम्बित *herabhängend* 4731. स्तनान्तर° Ragh. 10,63. — 2) *sich senken, sich neigen:* दिवाकरे विलम्बमाने ऽस्तमुपेत्य पर्वतम् MBh. 7,1969. — 3) *hängen bleiben* so v. a. *langsam von der Stelle kommen, längere Zeit verweilen bei, säumen, zögern* MBh. 8,4158. fg. एकैकस्मिन्राशौ त्रिंशत्त्रिंशन्मासान्विलम्बमानः Bhāg. P. 5,22,16. एकेन सकलत्रेण नेमं नेह विलम्बितुम् R. 3,1,31. 2,19,11. किमर्थं त्वं विलम्बसे *was zögerst du?* 1,75,16. 4,5,11. R. Schl. 2,77,22. Kām. Nītis. 12,20. Kumāras. 7,13. इति यावत्स नृपतिर्विचिकित्सन्विलम्बते Kathās. 45,103. न विलम्बेत शौचार्थम् Mārk. P. 34,112. नायं कालो विलम्बितुम् MBh. 3,2823. R. 5,95,6. मा विलम्बस्व 7,23,1,55. Mārk. P. 15,67. मा विलम्बत Hariv. 15505. Mārk. P. 18,34. मा विलम्ब Pañkat. 107,25 fehlerhaft für माविलम्बम्. किमर्थं हि वि-

लम्ब्यते R. 1,73,15. पततु ब्रह्मदण्डो ऽसौ किमद्यापि विलम्बते Râǵa-Tar. 4,651. पथि शिखरिणां मूले मूले विलम्ब्य *verweilend* 2,164. तथां विलम्ब्य Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,19. विलम्ब्य शशको ऽभ्यगात् *säumend, zögernd, langsam* Kathâs. 60, 98. Çâk. 18,21. कुतस्त्वं विलम्ब्यागतो ऽसि *so spät* Hit. 68,4. अविलम्ब्य *ohne Verzug* Kathâs. 56,110 (सावि° zu schreiben). 112,168. चिरं तु भवता कालं व्याक्षेपेण विलम्बितम् (कालो und विलम्बितः die neuere Ausg.) Hariv. 4455. लज्जया मया विलम्बितम् Pańkat. 84,10. क्व रामः शयितो रात्रौ क्व स्थितः क्व विलम्बितः *wo hat er verweilt?* R. Gorr. 2,93,13. अनुप्रकृतविलम्बित *aus — säumend, zögernd* Bhâg. P. 4,20,20. एवमेवास्मिन्नतर्णाये ऽविलम्बितेन भवितव्यम् *du darfst nicht säumen* Mâlav. 53,13. विलम्बितफलैः *verzögert* Ragh. 1,33. विलम्बितवत्सेशपाणिग्रहमहोत्सवा Kathâs. 33,2. 68,9. *langsam, gemessen* (Gegens. द्रुत) AK. 1,1,7,9. H. 292. Ṛv. Prât. 13, 18. Pat. zu P. 1,4,109 (in der ed. Calc.). Daçak. 144,15. °गति (zugleich mit Anspielung auf das Metrum dieses Namens) Varâh. Bṛh. S. 104,16. अ° Kâtj. Çr. 10,1,8.10. विलम्बितम् adv. Varâh. Bṛh. S. 43,61. Kathâs. 40,2. अविलम्बितम् *ohne Verzug, schnell, rasch* Suçr. 1,13,5. Spr. 745. Kâm. Nîtis. 6,10. Vikr. 79,13. Kathâs. 26,46. 46,226. Bhâg. P. 8,6,21. विलम्बित n. *Verzug:* किं विलम्बितेन Pańkat. 208,9. अलं मे चिरं विलम्बितेन Saddh. P. 4,13,*a*. — 4) विलम्बित *in nächster Beziehung stehend zu:* कर्माणि निर्वाणविलम्बितानि Bhâg. P. 1,16,24. — Vgl. विलम्ब u. s. w. und द्रुतविलम्बित. — caus. 1) *hängen auf:* भिक्षापात्रं नागदन्ते विलम्बयित्वा (eine falsche Form) Pańkat. 116,19. — 2) *Jmd verweilen machen, aufhalten:* तं दास्यस्तावद्वलम्बयन् । आहारैर्विविधैर्यावत्तृतीयः प्रहरो ऽत्यगात् ॥ Kathâs. 124,187. — 3) *versäumen, unnütz verstreichen lassen:* चिरं तु भवता कालो व्याक्षेपेण विलम्बितः Hariv. 4455 nach der Lesart der neueren Ausg. — 4) *säumen, zögern:* शीघ्रकृत्येषु कार्येषु विलम्बयते यो नरः Spr. 2986. अविलम्बयन् Jâǵn. 1,89. R. 2,107,16.

— प्रवि *vorhängen:* अतिप्रविलम्बितशिरस् *zu sehr vorhängend* Suçr. 2,239,5. Vgl. प्रविलम्बिन्. — caus. *aufhängen, aufknüpfen:* तं पापबुद्धिं शमीशाखायां प्रविलम्ब्य (प्रतिलम्ब्य v. l.) Pańkat. 98,4.

2. लम्ब्, लॅम्बते (शब्दे) Dhâtup. 10,15. — Vgl. 2. रम्ब् und लम्भ्.

लम्ब (von 1. लम्ब्) 1) adj. (f. आ) *herabhängend, hängend an, herabhängend bis, lang herabhängend:* रज्जु° Kathâs. 75,156. °मेखला MBh. 9,2652. स्रग्दामलम्बाभरणा Hariv. 3755. तोयलम्ब इवाम्बुदः ebend. 2440. पद्मस्तबकलम्बेण कर्णेण 3970. लम्बाभरणा R. 7,7,28. Kathâs. 29,52. Râǵa-Tar. 5,342. Ragh. 6,60. स्रजा विशालवक्षःस्थललम्बया 84. °शाटपटावृत Spr. 1210. °शीर्ष Suçr. 2,55,19. °चूडक Nir. 1,14. °केश Gṛhjasaṁgr. 1,89. °केसर Hariv. 2425. 12975. °सट (so die neuere Ausg.) 4298. °शिख 2298. 14305. लम्बालक Daçak. 4,59. Megh. 82. अलकमागण्डलम्बम् 88. Ragh. 6,23. °स्फिच्, °जठर MBh. 1,5929. चललम्बस्तनोदर R. 5,10,18. Hariv. 3563. °स्तनी Suçr. 1,371,18. Kathâs. 20,109. लम्बोदरपयोधरा R. 5,17,26. Kathâs. 116,29. लम्बैर्वृषणैः Varâh. Bṛh. S. 61,16. °बाहु MBh. 6,2610. Hariv. 15836. Varâh. Bṛh. S. 69,13. आजानुलम्बबाहु 58,45. °हस्त R. 7,23,5,9. कर्णौ Varâh. Bṛh. S. 62,1. नातिपृथू न लम्बे ध्रुवौ 70,8. लम्बमाली Hariv. 3653 fehlerhaft für लम्बमानौ, wie die neuere Ausg. liest. — 2) m. a) *eine Senkrechte* Colebr. Alg. 58. अन्तर्लम्ब, बहिर्लम्ब, सम°, आयतसम° ebend. — b) *Complement der Breite* Sûrjas. 3,14. Golâdhj. Tripraçnav. 7. 34. Gaṇitâdhj. Tripraçnâdhj. 12. °रेखा dass. Golâdhj. Jantrâdhj. 27. लम्बज्या oder लम्बज्यका *der Sinus desselben* Sûrjas. 1,60. 3,14. Gaṇitâdhj. Tripraçnâdhj. 14. °गुण dass. Golâdhj. Madhjagativ. 25. — c) Bez. *eines best. Wurfes* oder *Zuges in einem best. Spiele* Çabdam. im ÇKDr. — d) N. pr. α) eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,19. — β) eines Daitja Hariv. 2440. 2651. = प्रलम्ब 3113. fg. — e) = नर्तक, अङ्ग und कान्त Uṇâdivṛ. im Samkshiptas. ÇKDr. — f) *Geschenk* ÇKDr. und Wilson nach H. 737, wo aber die richtige Lesart लञ्चा, die schlechtere लम्बा ist. — 3) f. आ a) *eine Art Gurke* Med. b. 6. Suçr. 2,116,19. 391,13. — b) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2636. eine Form der Durgâ Hariv. 10722. 10806. fgg. = दुर्गा, गौरी Trik. 1,1,52. Med. ein Name der Lakshmî Med. N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's (Manu's) Hariv. 145. 148. 12449. 12480. VP. 119. Bhâg. P. 6,6,4.5. N. pr. einer Râkshasî Lot. de la b. l. 240. — लम्बाविश्ववयसौ mit doppelter Betonung gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6,2,140.

लम्बक (wie eben) 1) m. a) *eine Senkrechte* Wilson. — b) *Complement der Breite* Golâdhj. Tripraçnav. 33. — c) *ein best. Geräthe* Vjutp. 209. — d) N. des 15ten astr. Joga Journ. of the Am. Or. S. 6,432. लम्बुक As. Res. 9,366. — e) Bez. der grösseren Abschnitte (achtzehn an der Zahl) im Kathâsaritsâgara Kathâs. 1,4. fgg. — अलंकार° 61,24 fehlerhaft für °लम्भक. — 2) f. लम्बिका *das Zäpfchen im Halse* H. 585.

लम्बकर्ण 1) adj. (f. आ und ई) *lang herabhängende Ohren habend* MBh. 9,2653. R. 5,17,24. — 2) m. a) *Ziegenbock, Ziege* Trik. 2,9,24. 3,3,138. H. an. 4,87. Med. ṇ. 107. — b) *Elephant* Çabdar. im ÇKDr. — c) *Falke* Râǵan. im ÇKDr. — d) *ein* Râkshasa Çabdar. im ÇKDr. — e) *Alangium hexapetalum* H. an. Med. — f) N. pr. α) eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210. — β) eines Esels Pańkat. 214,21. — γ) eines Hasen Pańkat. 161,2.

लम्बकेशक m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,19.

लम्बजिह्व adj. *die Zunge hängen lassend;* m. N. pr. eines Râkshasa Kathâs. 25,196.

लम्बदन्ता f. *eine best. Pflanze,* = सैंहली Râǵan. im ÇKDr.

लम्बन (von 1. लम्ब्) 1) nom. ag. *herabhängend,* unter den Beiww. Çiva's (neben लम्बितोष्ठ) MBh. 13,1201. लम्बन्ते ऽस्मिन्ननेकानि तरौ फलानीव ब्रह्माण्डानि Nîlak., also *herabhängen lassend.* — 2) m. *Phlegma, Schleim* (कफ) Çabdak. im ÇKDr. — 3) n. a) *Franse* Vjutp. 136. — b) *ein lang herabhängender Halsschmuck* AK. 2,6,3,5. — c) *Parallaxe in Länge* Comm. zu Sûrjas. 5,1. Golâdhj. Grahaṇav. 17. 19. 23. स्फुटलम्बनलिप्तिकाः *die Minuten, welche sie beträgt,* 24. °कलाः dass. 27. °विधि *die Regel für die Berechnung derselben* Sphuṭagativ. 38. — d) Bez. *einer best. Kampfart* Hariv. 15979 nach der Lesart der neueren Ausg. (लवण ed. Calc.). — e) N. pr. eines Varsha in Kuçadvîpa Mârk. P. 53,25. — Vgl. अन्त°, दृग्लम्बन.

लम्बपयोधरा adj. f. *hängende Brüste habend* MBh. 9,2653. N. einer der Mütter im Gefolge Skanda's 2639.

लम्बबीजा f. = लम्बदन्ता Râǵan. im ÇKDr.

लम्बर् s. u. आडम्बर 1) in den Nachträgen.

लम्बात m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,19.

लम्बिकाकोकिला f. N. pr. einer Gottheit Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 4.

लम्बिन् (von 1. लम्ब्) 1) adj. *herabhängend, hängend an, herabhängend bis zu* AK. 2,6,3,37. H. 652. श्रवलम्बिनीर्जटा: कपोलदेशे KUMÂRAS. 5,47. तरुशाखाग्र° KATHÂS. 63,205. 207. RAGH. 5,67. श्रोणिलम्बिपुरुषात्तमेखला 11,17. 13,33. 16,43. श्रापार्ष्णि° MÂLAV. 85. श्रनतिलम्बिदुकूल 82. पूर्वार्ध° *geneigt, gesenkt mit* MEGH. 52. श्रलम्बि LA. 20,20 ist nicht, wie LASSEN und nach ihm BENFEY annehmen, श्र + लम्बिन्, sondern 3.sg. aor. impers.: *wenn Schweisstropfen sich anhängen*. Vgl. 1. श्रालम्बिन्. — 2) f. लम्बिनी N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9,2636.

लम्बुक m. 1) N. pr. eines Schlangendämons VJUTP. 85. — 2) s. u. लम्बक 1) *d*).

लम्बुषा f. *ein Perlenschmuck aus sieben Schnüren* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

लम्बोदर 1) adj. (f. ई) *einen Hängebauch habend* MBH. 9,2653. KATHÂS. 70,102. 125. VJUTP. 206. = श्राघून H. an. 4,277. = उद्धान TRIK. 3,3,368. MED. r. 294. — 2) m. *a*) Bein. Gaṇeça's AK. 1,1,1,34. TRIK. H. 207. H. an. MED. HALÂJ. 1,18. KATHÂS. 50,178. 55,162. Verz. d. B. H. 117,6. Verz. d. Oxf. H. 27, *a*, 37. 40. 148, *a*, No. 318, Z. 3. PAÑKAR. 1, 7, 86. 93. — *b*) N. pr. eines Fürsten VP. 472. BHÂG. P. 12,1,22. — *c*) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,18. — 3) f. ई N. einer Unholdin SUÇR. 2,388,6.

लम्बोष्ठ 1) adj. *der die Unterlippe hängen lässt* ÇIKSHÂ 19 in Ind. St. 4,268. — 2) m. *Kameel* RÂGAN. im ÇKDR. लम्बौष्ठ TRIK. 2,9,23.

लम्भ्, लम्भते (शब्दे) VOP. in DHÂTUP. 10,24. — Vgl. 2. रम्भ्.

लम्भ (von 1. लभ्) 1) m. *a*) *das Finden, Wiederfinden*: वैदेही° R. 5, 3,59. — *b*) *Erlangung, Wiedererlangung*: पत्र° R. 4,63,15. उत्तरोत्तरदेह GAUḌAP. zu SÂṀKHJAK. 52. स्मृति° KHÂND. UP. 7,26,2. राज्य° MBH. 1,362. 5714. 5,4814. ईप्सितलम्भानाम् VIKR. 49,11. परदुर्ग° *Einnahme einer feindlichen Festung* VARÂH. BṚH. S. S. 6, Z. 8. — 2) f. श्रा *Hecke, Einfriedigung* HÂR. 174. — Vgl. लाभ.

लम्भक (wie eben) nom. ag. P. 7,1,64, Sch. 1) *Finder*: श्रलंकार° (°लम्बक gedr.) KATHÂS. 61,24. — 2) वर्ष° vielleicht *ein* Varsha *abgrenzend* (vgl. वर्षपर्वत und लम्भा unter लम्भ) MBH. 6,455.

लम्भन (wie eben) n. 1) *das Erlangen, Bekommen, Wiedererlangen* H. 1520. श्रगस्त्यादस्त्रलम्भनम् R. GORR. 1,3,12. राज्य° MBH. 9,3262. Vgl. गर्भ°. — 2) (vom caus.) *das Verschaffen*: सिद्धि° DAÇAK. 61,4.

लम्भनीय (wie eben) adj. *zu erlangen* KAṬHOP. 1,25.

लम्भम् (wie eben) absol., = लाभम् P. 7,1,69. VOP. 24,7.

लम्भुक (wie eben) adj. *der Etwas zu erhalten —, zu bekommen pflegt*, mit acc. KHÂND. UP. 5,2,2.

लय्, लयते (गतौ) = रय् VOP. in DHÂTUP. 14,10.

लय (von ली) 1) m. VOP. 26,171. *a*) *das Sichanheften, Ankleben*; = श्लेष TRIK. 3,3,319. fg. = संश्लेषण H. an. 2,381. = संश्लेष MED. j. 51. संप्रति प्रेषिता दूती तस्मिन्नेव लयं गता so v. a. *ist bei ihm hängen geblieben* SPR. 2407. — *b*) *das Sichducken, Niederhocken*: लयमास्थाय (लयम् = श्रङ्गसंकोचम् NILAK.) MBH. 7,5767 nach der Lesart der ed. Bomb. — *c*) *das Verschwinden —, Eingehen in; Untergang*; = प्रलय ÇABDAR. im ÇKDR. = विनाश MED. st. dessen fälschlich विलास (daher die Bed. *sport, pastime* bei WILSON) H. an. प्रधाने लय: SARVADARÇANAS. 179,22. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 87. प्रकृति° SÂṀKHJAK. 45. नाश: कारणलय: KAP. 1,122. लयं या, गम् u. s. w. *verschwinden —, eingehen —, aufgehen in*: प्रेतात्ते दृष्टमस्माभिस्तत्राश्चर्यं प्रविश्य यत्। स्तम्भस्थपुत्रिकास्वत्तर्नर्तको लयमागता: ॥ KATHÂS. 123,133. तस्मिन्नेव (sc. ब्रह्मणि) लयं यान्ति बुद्बुदा: सागरे यथा KÛLIKOP. in Ind. St. 9,20. Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,40. MṚKKH. 1,4. BHÂG. P. 7,1,19. MÂRK. P. 40,27. fg. तत: समस्ता देव्य: — लयम्। तस्या देव्यास्तनौ (so zu lesen mit DEVÎM. 10,4) जग्मु: 90,4. शान्तिकं पौष्टिकं चैव तथा चैवाभिचारिकम्। ऋगादिषु लयं ब्रह्मन् त्रितयं त्रिषयागमत्॥ 102,11. ध्यान° GÎT. 4,8. KHANDOM. 118. योगीनां युञ्जतां चेतसां लयम् MÂRK. P. 111,2. लयं संगता: so v. a. *versteckten sich* R. 7,23,3, 54. शक्रादिष्वपि लोकेषु वर्तमानौ लयालयौ। श्रूयेते *Untergang, Tod* R. 3,71,10. प्रभवलयप्ररोपप्लुत PRAB. 97,18. रजो°, तमो° adj. BHÂG. P. 11,25,22. प्रकृतीनां लयानां च सा गतिस्त्वम् MBH. 13,1100. शर्व: प्रभवो लय: VOP. 5,1. विश्वोद्भवस्थितिलयेषु BHÂG. P. 3,9,14. 4,7,39. जगत्स्थानलयोदयेषु 30,23. जगदुत्पत्तिस्थितिलयनिमित्त 6,9,41. जगदुद्भवविभवलय° SARVADARÇANAS. 49,20. कल्पलयो BHÂG. P. 12,4,1. नैमित्तिक (vgl. प्रलय) 8,24,7. प्राकृतिक 12,4,21. PAÑKAR. 1,14,17. लयार्क *die Sonne beim Untergang der Welt* BHÂG. P. 10,77,35. श्रहंकार° BÂLAB. 10. बुद्धि° ÇÂND. 96. स्थूलसूक्ष्मप्रपञ्च° VEDÂNTAS. (Allah.) No. 27. लयं या *untergehen, zu Grunde gehen, zu Nichte werden* SPR. 1843. KATHÂS. 22,28. BHÂG. P. 3,32,4. MÂRK. P. 99,35. VṚDDHA-KÂṆ. 11,2. — *d*) *Rast, Ruhe*: श्रलय *rastlos* ÇIÇ. 4,57 (u. 2. श्रलय nicht genau wiedergegeben). BHÂG. P. 8,3,17. — *e*) *geistige Trägheit*: लयविक्षेपरहितं मन: कृत्वा MAITRJUP. 6,34. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 135. लयस्तावद्खण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा 136. — *f*) *Tempo* (deren drei angenommen werden: द्रुत, मध्य und विलम्बित) AK. 1,1,7,3. 9. TRIK. H. 292. 1410. H. an. MED. HALÂJ. 1,94. PAÑKAT. V,43. NÂGÂN. 8,7. DAÇAR. 1,9. PRATÂPAR. 19,*b*, 8. ÇIKSHÂ 32 in Ind. St. 4,270. MBH. 2,132 (लये स्थाने ed. Bomb.). HARIV. 8691. R. 1,2,21. 4,6,29. 2,91,27. 7,71,15. MÂLAV. 19,11. 29. MÂRK. P. 23,53. 59. SÂH. D. 543. सलयैरिव पाणिभि: RAGH. 9,45. — *g*) *ein best. Ackerwerkzeug*, etwa *Egge* oder *Hacke* VS. 18,7. — 2) n. = लघुलय *die Wurzel von Andropogon muricatus* Comm. zu AK. 2,4,5,30. — 3) adj. *den Geist träge machend* BHÂG. P. 11,25,15. = श्रावरणात्मक Comm. — Vgl. द्वि°, नभो°, भूति°, मनो°.

लयन (wie eben) n. 1) *Rast, Ruhe* MALLIN. zu ÇIÇ. 4,57. — 2) *Ruhestätte* PRAB. 48,16. = गृह nach dem einen, = श्रासन nach dem andern Comm. *Stätte* VJUTP. 55. HAMS 130. — Vgl. गुणालयनी.

लयपुत्री f. *Tänzerin, Schauspielerin* TRIK. 1,1,125.

लययोग m. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,18 neben मन्त्रयोग und राजयोग.

लयारम्भ m. *Tänzer, Schauspieler* TRIK. 1,1,124.

लयालम्ब m. dass. ÇABDAR. im ÇKDR.

लरमानाथ m. N. pr. eines Autors, = रलमानाथ, रमानाथ Verz. d. B. H. No. 536.

लर्ब्, लर्बति (गतौ) DHÂTUP. 11,37.

लल्, ललति (ईप्सायाम्) DHÂTUP. 9,77 (vgl. लड् विलासे 76) und ललते: *tändeln, scherzen, spielen, sich frei gehen lassen*: गायन्ती च ललन्ती च MBH. 1,3208. यथासुखं यथोत्साहं ललन्तु त्वयि पुत्रवत् 13,3029. (कदा)

अभ्युपैष्यति धर्मज्ञः स वत्स इव मां ललन् R. Gorr. 2,42,15. गजकलभा इव ललामः Mṛkkh. 70,20. ललद्गुणाकारबृहत्तरंग (लोलद्गु° Çiç. 3,72) Sâh. D. 68,4. ललस्व मयि विश्रब्धा हृष्टमाज्ञापयस्व च। मत्प्रसादाल्ल-लत्याद्य ललन्तु तव बान्धवाः॥ R. 5,22,24. ललमाना वराङ्गनाः 1,9,18 (19 Schl.). MBh. 1,3364. शिशुर्यथा पितुरङ्के सुसुखं वर्तते नग। तथा त-वाङ्के ललितं शैलराज मया प्रभो॥ 3,1741. — ललित adj. und subst. s. besonders.

— caus. लालयति (*tändeln lassen*) *liebkosen, zärtlich sein gegen Jmd, schmeicheln, hätscheln, verwöhnen, hegen und pflegen,* лелѣять (लड्, लाडयति उपसेवायाम् Dhâtup. 32,7. लल्, ललयति, लालयते ईप्सायाम् 33, 14); mit acc. MBh. 7,525. 1261. R. 2,43,15. ये नः सदा लालयति पिता पु-त्रानिवौरसान् 47,6. Spr. 2003. तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु ला-लयेत् 2664. fg. Varâh. Bṛh. 17,10. Khandom. 59. Bhâg. P. 4,8,9. 28,9. 6,1,23 (लालयान). 14,38. 10,7,18. लालयेः स्वजनान्भोगै रत्नैश्च स्वयम-र्जितैः Hariv. 9063. लाल्यमानं जनै रेवम् Bhâg. P. 4,9,53. Çatr. 14,133. ललयित्वा wohl fehlerhaft für लाल° Pańkat. 229,22. लालितः सततं गृहे MBh. 2,1797. 2409. 5,3136. 7,2503. 4340. 12,387. 5563. 14,1840. Hariv. 4797. R. 2,77,14 (84,12 Gorr.). R. Gorr. 1,17,6. 2,62,8. 14. 80,8. 107,12. 4,15,33. 21,34. 5,1,61. Kâm. Nîtis. 3,39. Spr. 150. 1098. 1530. 2666. 4030. 5123. Râǵa-Tar. 2,8. 5,341. 6,77. Bhâg. P. 4,9,60. 26,20. 10,45,4. Mârk. P. 109,29. Verz. d. Oxf. H. 188,*a*,5. Pańkat. 87, 11. 188,19. अरण्यबीजाञ्जलिदानलालिता करिणाः Kumâras. 5,15. इदं शरीरं पितृभ्यां लालितं बाल्ये Kathâs. 97,46. केशसंभोगलालिताः पारि-जातस्य मञ्जर्यः Sâh. D. 315,16. पुत्रस्य मुखं लालयन्ती so v. a. *streichelnd* Bhâg. P. 10,7,36. रमालालितपादपल्लव 15,19. कौमोदकीं लालयन् (vielleicht *spielen lassend* so v. a. *schwingend*) Hariv. 8511. रोलम्बलालित-सुरद्रुम *geliebkost* d. i. *zärtlich umschwärmt* Pańkar. 3,5,8. कपर्दिकां नदीं दिव्यजलकल्लोललालिताम् *von den Wellen geliebkost* Çatr. 1,52. अनुकूलदैवलालितो वत्सराजगृहप्रवेशः so v. a. *begünstigt* Sâh. D. 130, 7. 140,7.

— उपा caus. *hätscheln;* s. उपालाल्य.

— उद् s. उल्लाल. — caus. *liebkosen:* उल्लालयित्वा (!) Pańkat. ed. Bühl. II,40,22. *jumping up* Bühler.

— उप caus. °लालयति *liebkosen, zärtlich sein gegen Jmd* (acc.) Çâk. 104,5. Mâlav. 29,1. Bhâg. P. 5,4,4. 8,10. उपलालित 3,33,19. 10,5,27. 15,46. यैर्वस्त्रमाल्याभरणानुलेपनैः अभोजनं (= शरीरं) स्वात्मतयोपला-लितम् 3,14,27. °करकमलकुड्मलोपलालितचरणारविन्दयुगल 6,16,25. — Vgl. उपलालन.

— सम् caus. °लालयति dass. Bhâg. P. 3,24,24. 28,23. 10,13,23.

ललज्जिह्व (ललत्, partic. praes. von लल्, + जिह्वा) 1) adj. (f. आ) *dessen Zunge spielt* d. i. *hinundhergeht, züngelnd* Kathâs. 106,127. Prab. 65,12. Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,21 (falschlich ललजि°). = हिंस्र Med. b. 16. Vgl. ललन 3) *b*) und 4). — 2) m. *a*) *Hund.* — *b*) *Kameel* Med.

ललदम्बु (ललत् + अम्बु) m. *eine best. Pflanze,* = लिम्पाक Gaṭâdh. im ÇKDr.

ललन (von लल्) 1) adj. *spielend, schillernd,* von Licht und Farben: र-त्नप्रदीपा आभान्ति ललना रत्नसंयुताः Bhâg. P. 3,33,17. 4,9,62. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: = वाल, साल und प्रियाल Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. आ *a*) *ein tändelndes Weib, Weib* überh., *Gattin* AK. 2,6,1,3. Trik. 3,3,258. H. 505. an. 3,407. Med. n. 119. Halâj. 2,327. MBh. 1,5947. 3, 1822. R. 3,15,15. Spr. 1388. 2087, v. l. 3401. 3842. Praçnottaram. 7 und 12 in Monatsb. d. Berl. Ak. 1868, S. 99. 109. Kathâs. 37,243. 80, 38. Gît. 3,16. Râǵa-Tar. 1,370. 2,1. 4,266. 6,143. Bhâg. P. 3,14,49. 15,17. 22,18. 23,39. 4,25,27. 26,16. 5,2,17. 16,16. 9,14,17. 10,16,36. 55,26. Mârk. P. 123,23. Pańkar. 4,8,114. Prab. 19,12. Verz. d. Oxf. H. 187,*b*, No. 428, Z. 18. — *b*) *Zunge* Trik. H. an. Med.; vgl. ललज्जिह्व und जिह्वाललन u. 4). — *c*) N. verschiedener Metra: α) *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑— —, —⏑⏑—⏑⏑— Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,24). Ind. St. 8,383. — β) *4 Mal* —⏑⏑— —, ⏑⏑⏑⏑⏑⏑— Ind. St. 8,419. — γ) *eine best. Art von* Gâthâ Ind. St. 8,417. — *d*) N. eines best. mythischen Wesens R. 3, 20,32. अनला ed. Bomb. und MBh. — 4) n. *Spiel, Tändelei* H. 556. *das Spielen* der Zunge so v. a. *das Hinundhergehen* derselben: जिह्वा-ललनभीषणा Mârk. P. 87,7; vgl. ललज्जिह्व und ललना *Zunge.*

ललनाप्रिय 1) adj. *Weibern lieb.* — 2) m. *Nauclea Cadamba* (कदम्ब) *Roxb.* — 3) n. = ह्रीवेर Râǵan. im ÇKDr.

ललनिका (demin. von ललना) f. *Weibchen, ein armes Weibchen* Kâvjâd. 3,50.

ललन्तिका (von ललन्ती, partic. praes. f. von लल्) f. *ein lang herabhängender* (*spielender, bummelnder*) *Halsschmuck* AK. 2,6,3,5. H. 657.

ललल्ल onomatop. vom Laute eines *Lallenden:* ललल्लेति किमप्यस्फुटं ब्रुवन् Kathâs. 13,109.

ललाट (= älterem रराट) n. *Stirn* Çânt. 3,3. Siddh. K. 249,*a*,3. AK. 2,6,2,43. H. 573. Halâj. 2,370. 376. AV. 9,7,1. 10,2,8. Çat. Br. 3,7, 4,8. Kâtj. Çr. 6,4,2. Lâṭj. 8,8,20. Çâṅkh. Çr. 2,12,2. Gṛhj. 2,1,10. Gobh. 3,6,3. Kauç. 26.38. 45.76.81.90. M. 2,46. 9,240. Jâǵń. 2,13. MBh. 3,2787. Hariv. 12718. 12782. 14277. R. 2,96,18. Suçr. 1,116,20. 118,3. 337,6. Vikr. 73,8. Varâh. Bṛh. S. 50,11. 51,10. 58,5. 6. Çiç. 4,28. Râǵa-Tar. 3,365. Bhâg. P. 4,10,9. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,28. Vet. in LA. (III) 13,14. °देश Spr. 4954. °तट Râǵa-Tar. 6,109. °पट्ट Halâj. 2,386. Spr. 2662. Pârçvanâthak. 4,50. °पट्टिका 5,32 (nach Aufrecht). अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटे ऽर्थिजनस्य जाग्रतीम् Naish. 1,15. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः Spr. 1688. 2810. 3227. 5392. °लेखा न पुनः प्रयाति 4948. am Ende eines adj. comp. (f. आ): सु° R. 1,1,12. महा° 3,55,4. पृथुकर्ण° 5,17,26. विषम° Varâh. Bṛh. S. 68,70. निम्न° 72. उच्च° Trik. 2,6,2. eines Elephanten AK. 2,8,2,6. Halâj. 2, 63. Varâh. Bṛh. S. 67,7. eines Pferdes 66,3. 4. 93,3. einer Kuh Ragh. 1,83. °पट्ट beim Bock Pańkat. 35,2. ललाटे *a fronte, vorn* TBr. 3,8,22, 1. Çâṅkh. Çr. 16,3,29. — Vgl. प्र°.

ललाटक 1) n. *eine schöne Stirn* Çabdar. im ÇKDr. *Stirn* überh. Dhanańǵaja ebend. — 2) f. ललाटिका *Stirnschmuck* P. 4,3,65. AK. 2,6,3, 4. H. 655. *ein mit Sandel auf die Stirn aufgetragenes Mal* Trik. 2,6,40. Halâj. 2,386. °चन्दन Kumâras. 5,55.

ललाटंतप adj. *die Stirn brennend,* Beiw. einer glühenden Sonne P. 3,2,36. Vop. 26,55. Ragh. 13,41. Uttarar. 113,10 (153,5). Mâlatîm. 12,8.

ललाटपुर n. N. pr. einer *Stadt* P. 5,4,74, Sch.

ललाटाक्ष adj. (f. ई) *auf der Stirn ein Auge habend* MBh. 2,1837. 3,

16137. Çiva 1628. Hariv. 14872.

ललाटिका s. u. ललाटक.

ललाटिकाय्, °यते *ein Stirnzeichen darstellen:* ललाटिकायमान Verz. d. Oxf. H. 141, *b*, No. 289, Z. 15. fg.

ललाटूल adj. *eine hohe* oder *schöne Stirn habend* gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

ललाट्य adj. = रराट्य Schol. zu P. 4,3,65. 5,1,6.

ललाम 1) adj. (f. ललामी) *mit einer Blässe (Stirnfleck) versehen*, vom Vieh AV. 15,1,1. TS. 2,1,2,1. 4,1. 7,3, 12, 1. Kâtj. Çr. 20,1,33. ललामैर्हरिभिः MBh. 7,962. धूम्र° TS. 2,1,10,1. कृष्ण° Kâṭh. 13,5. Ueberh. *mit einem (hellen) Fleck versehen:* कृष्णाँल्ललामांश्चामरान् शुक्लांश्चान्याञ्छशिप्रभान् (es ist der *Schweif*, nicht das *Thier* selbst gemeint) MBh. 2, 1861. तमस् 12, 13192 (= चिन्तामणिरत्नवद्दावद्रूप Nilak.). — 2) m. n. *Schmuck (Stirnschmuck), Zierde:* सुदर्शनं वै देवतानां ललामम् MBh. 5, 1882. Hariv. 16065. Bhâg. P. 3,14,49. 22,18. 5,3,3. 6,6. unbestimmt ob ललाम oder ललामन्: ज्याह प्रथमं रामो ललामप्रतिमं (ल° = ध्वज Nilak.) कृलम् Hariv. 5037. आश्रमललामभूता Çâk. 25,4. Kathâs. 101,61. Daçak. 68,2. Bhâg. P. 3,16,9. 5,16,16. Çiç. 4,28. Vgl. u. 4). — 3) f. ई *a)* Bez. einer Unholdin AV. 1,18,1. — *b) ein best. Ohrenschmuck* Çabdam. im ÇKDr. — 4) n. *Blässe, Stirnfleck* AK. 3, 4, 23, 145 (अश्वभूषा; अश्वललाटे ऽन्यवर्णाचिह्नम्, गवादीनां ललाटचित्रम् d. i. °चिह्नम् Bhar. nach ÇKDr.). *Mal, Sectenzeichen* (पुण्ड्र) AK. H. an. 3,406. Med. m. 51. Halâj. 5,69. *Zeichen* (चिह्न, लक्ष्मन्, लाञ्छन) H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, 7. *Banner, Flagge* (ध्वज, केतु, पताका) AK. H. an. Med. Vjutp. 159. *Schmuck* (भूषा) H. an. Med. Halâj. Vjutp. *eine Zierde unter seines Gleichen, der Beste in seiner Art* (प्रधान, प्राधान्य) AK. H. an. Med. = प्रभाव H. an. Med. Halâj. = रम्य H. an. Med. *Schweif* AK. H. an. Med. Halâj. *Horn; Pferd* H. an. Med. Halâj. — Vgl. लालामिक.

ललामक n. *ein auf der Stirn liegender Blumenkranz* AK. 2,6,3,37. H. 652. Halâj. 2,398.

ललामगु m. scherzhafte Bez. des *penis* VS. 23,29.

ललामन् n. = ललाम *Schmuck, Zierde:* कन्या° Ragh. 5,64. nach H. an. 3, 406 (wo ललामवल्ललामाश्वे zu lesen ist) und Med. n. 203 *Mal, Sectenzeichen; Zeichen* (vgl. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, 7); *Banner, Flagge; Schmuck; eine Zierde unter seines Gleichen;* = प्रभाव; *Schweif; Horn; Pferd;* nach H. an. auch = रम्य; = मुख Mahîdh. zu VS. 23,29.

ललामवत्त् adj. *mit einer Blässe versehen:* चतुर्होतृ° (ऋषभ) Ind. St. 4,397.

ललित (von लल्) 1) adj. *a) naiv, arglos, einfältig:* औदासीन्य R. 4, 33,39. धीरललित (u. d. W. ungenau wiedergegeben) *klug, aber dabei von einer liebenswürdigen Einfalt* Bhar. Nâtjaç. 34, 4. 5. Daçar. 2,2. 3. Sâh. 65. 68. 539. ललित 36, 2. Daçar. 2, 40. — *b) anmuthig, lieblich, schön, hübsch;* = ललित (sic) H. an. 3, 290. Med. t. 147. von Frauen und Männern R. 1,64,8. 7,37,1,27. Ragh. 6,37. 8,66. 19,39. Megh. 33. 65. Spr. 3401. Râga-Tar. 5,449. अप्सरस् Çâk. 41, v. l. मातर्ललिते wird die Sarasvatî angeredet Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173, Çl. 3. कामिन् Mâlav. 52. वपुस् Kumâras. 3,75. ललिताङ्गुलितर्जनैः 6,45. मृणालनाललिलतभुजा Kathâs. 4,6. ललिताकृति Râga-Tar. 4,17. 266. कुण्डल R. 5,13,66. विवाहकौतुक Ragh. 8,1. कुसुम 9,70. Sâh. D. 66,14. Gît. 1,27. धामन् 5,5. Pańkar. 1,10,50. 7,35. प्रकृतपामनङ्गस्य Mṛkkh. 82,20. °वज्ञन Dhûrtas. 91,14. ललिताङ्गहार Kumâras. 7,91. गति Bhâg. P. 1,9, 40. 10,47,52. Mârk. P. 61,38. अलिकुलकोकिलललिते सुरभिसमये Sâh. D. 21,1. Gesang Mṛkkh. 44,15. °रसकथा Spr. 4897. ललितार्थबन्ध Vikr. 32. ललितालापा Çrut. 39. Kathâs. 23,94. Mârk. P. 65,7. स्मित Bhâg. P. 5,25,5. वाच् 3,23,50. Mârk. P. 87,24. Vet. in LA. (III) 30,5. Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 95, Z. 13. 193, *a*, 14. 213, *a*, No. 505. विज्ञान Mâlav. 34. ललिताभिनय Bhar. Nâtjaç. 18,55. Vikr. 36. Mâlav. 67. ललितललित *überaus lieblich* Uttarar. 10,8 (14,6). Pańkar. 3,13,18. ललितम् adv. Hariv. 8389. Mṛkkh. 44, 9. Ṛt. 3,1. Bhâg. P. 4, 25, 25. 44. 6,7, 5. 10,34,21. Mârk. P. 90,26. Kâvjâd. 3,150. कविता नातिललिता Verz. d. Oxf. H. 145, *a*, 33. — *c) erwünscht, beliebt, genehm;* = ईप्सित H. an. Med. मृत्योराघातललितमायोधनं महत् MBh. 7,6179. परगृह° Mṛkkh. 70, 17. गाथा आत्मनो ललिताः Bhâg. P. 10, 80, 27. — *d)* = चलित Viçva und Çabdar. im ÇKDr. — 2) m. *a)* Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202, *a*, 32. — *b)* N. *eines best. musik.* Râga Saṅgîtadâm. im ÇKDr. — 3) f. आ *a) Moschus* Râgan. im ÇKDr. — *b)* Bez. einer best. Göttin Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 11. einer Form der Durgâ 39, *a*, 32. *b*, 7. ललितोपाख्यान 30, *a*, 12. कुमारीललितासाधन 88, *a*, 16. N. pr. einer Hirtin, die mit der Durgâ und mit der Râdhikâ identificirt wird, ÇKDr. nach Bhaktirasâmṛtasindhu und Padma-P., Pâtâlakh., Râsalîlâ. — *c)* N. pr. eines Flusses Kâlikâ-P. 81 im ÇKDr. — *d)* Bez. verschiedener Metra: α) *50 + 52 Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 154, *b*, 14. — β) *4 Mal* ◡◡◡◡◡◡ — — — — — ◡ — ebend. 160 (VII, 8). — γ) *4 Mal* — — ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ — ◡ ◡ — ebend. (VII, 20). Ind. St. 8,383. — δ) *4 Mal* — ◡ ◡ — ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ — ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ — ebend. 392. — ε) *4 Mal* — ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ — ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ — Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XVII, 2). — ζ) *2 Mal* — ◡ — ◡ ◡ ◡ — ◡ —, ◡ ◡ — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ — ◡ — ebend. 165 (VI, 14). — 4) n. *a) eine natürliche, ungesuchte Handlung* (wie die eines Kindes): भीरुरपि प्रशास्त्यधि रिपूंश्च वीरललितैः Varâh. Bṛh. S. 104, 41. = चरित Comm. — *b) liebenswürdige Einfalt, Naivetät, Anmuth, Liebreiz* (beim Weibe) AK. 1,1,7,31. H. 508. H. an. und Med. (an beiden Orten ist हाव st. हार zu lesen). Halâj. 1,89. शृङ्गाराकारचेष्टात्वं सहजं ललितं मृदु Daçar. 2,13. वाग्वेषयोर्मधुरता तद्वच्छृङ्गारचेष्टितं ललितम् Sâh. D. 95. 89. सुकुमाराङ्गविन्यासो मसृणो ललितं भवेत् Daçar. 2,39. 30. Sâh. D. 144. सकलाङ्गसमीचीनभूषणविन्यासो ललितम् Rasatar. 6,14 (nach Aufrecht). उपदिशति कामिनीनां यौवनमद एव ललितानि Spr. 3036. R. 1, 9,16. R. Gorr. 1,9,39. Verz. d. Oxf. H. 256, *a*, 16. — *c)* N. zweier Metra: α) *4 Mal* ◡◡◡◡◡◡◡◡◡ — — ◡ ◡ — Ind. St. 8,354. fg. — β) *4 Mal* ◡◡◡◡ ◡◡ — — — — — ◡ — ebend. 383. — *d)* N. pr. einer Stadt (vgl. ललितपुर) Râga-Tar. 4, 187. — Vgl. कुमारललिता, ज्येष्ठ°, दुर्ललित, धीर°, प्रवर°, मदनललिता, शार्दूलललित, सु°.

ललितक n. N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8012 nach der Lesart der ed. Bomb.; ललितिक ed. Calc. — Vgl. ललीतिका.

ललितचैत्य m. N. eines best. Kaitja Wilson, Sel. Works II, 22.

ललिततात m. Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, *a*, 13.

ललितपद् 1) adj. (f. आ) *aus lieblichen Worten bestehend:* गिर् Varâh. Bṛh. S. 104, 29 (mit Anspielung auf das Metrum gleiches Namens). —

2) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑⏑⏑–– Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,23). Ind. St. 8,382.

ललितपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works II,25.29; vgl. ललित 4) *d*).

ललितपुराण n. = ललितविस्तरपुराण Colebr. Misc. Ess. II,190.

ललितमाधव n. Titel eines Schauspiels von Rûpa Verz. d. Tüb. H. 24. fälschlich ललिता° Wilson, Sel. Works I,167.

ललितलोचन 1) adj. (f. श्रा) *schönäugig* MBh. 13,2350. Râǵa-Tar. 5, 359. 6,77. — 2) f. श्रा N. pr. der Tochter eines Vidjâdhara Vâmadatta Kathâs. 68,69. 69,1. fgg. 103,244.

ललितविस्तर m. oder vollständiger °पुराण n. Titel eines *ausführlichen* Sûtra, das *die ungekünstelten, naiven Handlungen* Çâkjamuni's erzählt, Burn. Intr. 56. 68. fg. सुललितविस्तर Lalit. ed. Calc. 8,5. — Vgl. लघु°.

ललितव्यूह m. 1) Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) bei den Buddhisten Lalit. ed. Calc. 361,12. — 2) N. pr. eines Devaputra ebend. 248,12. 265,14. — 3) N. pr. eines Bodhisattva ebend. 363,4.

ललितातन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,10.

ललितातृतीया f. Bez. *eines best. 3ten Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,*a*,27. fg.

ललितादित्य m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râǵa-Tar. 4,43. 126. 134. fg. 138. 393. 5,69. °पुर n. N. pr. einer von ihm gegründeten *Stadt* 6,219. 224.

ललितापीड m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râǵa-Tar. 4,659. 675. fg.

ललितामाधव s. ललितमाधव.

ललितार्चनचन्द्रिका f. Titel eines Werkes über *die Verehrung der* Lalitâ Mack. Coll. I,138.

ललिताव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,39; vgl. दशरथ° 25. fg. उपाङ्ग° 36.

ललिताषष्ठी f. Bez. *eines best. sechsten Tages:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,*a*,40. fg.

ललितासप्तमी f. Bez. *des siebenten Tages in der lichten Hälfte des* Bhâdra ÇKDr. nach dem Bhavishja-P.

ललितिक s. ललितक.

ललित्थ m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 7,692. 768. 3255. sg. Bez. *des Fürsten dieses Volkes* 1610.

ललीतिका f. N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,8142 (der ganze Çloka fehlt in der ed. Bomb.). — Vgl. ललितक.

लल्यान N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 6,183.

लल्ल 1) m. N. pr. eines Astronomen Golâdhj. Bhuvanak. 53. Tripraçnav. 31. fgg. Ganitâdhj. Spashtâdhj. 40. Colebr. Misc. Ess. II,332. 358. fgg. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*, No. 782. 336,*a*, No. 790. eines Juristen 279,*a*,37. 283,*a*,34. 286,*a*,8. eines Ministers (लोकमन्त्रिन्) Râǵa-Tar. 8,1834. 1845. 1901. — 2) f. श्रा N. pr. einer Buhldirne Râǵa-Tar. 6,74. 77.

लल्लवाराहसुत m. *der Sohn* Lalla's *und* Vârâha's (Varâhamihira's?), angebliches N. pr. des Verfassers des Nakshatrasamukkaja Verz. d. Oxf. H. 333,*b*, No. 785.

लल्लिय m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,154. 232.

लल्लुजीलाल m. N. pr. eines Autors Ind. St. I,471.

लव (von लू) 1) m. *a*) *das Schneiden* (von Korn) P. 3,3,28, Sch. AK. 3,3,24. Trik. 3,3,420. H. 1521. an. 2,535. Med. v. 22. *das Abschneiden, Abpflücken* (von Blumen) Nalod. 2,30. कुसुमलवच्छुरित so v. a. *gepflückte Blumen* Daçak. 90,9. — *b*) *Schur, Wolle* (nach Kull.) M. 8,151. *Haar* (einer Kuh) Ragh. 15,32. — *c*) *Abschnitt, Stück, eine Partikel von, ein Minimum, ein Bischen* (nach Râǵan. im ÇKDr. auch n.) AK. 3,2,11. Trik. H. 1427. H. an. Med. Halâj. 4,3. Çat. Br. 11,2,3,19. कच्चिल्लवं च मुष्टिं च परराष्ट्रे परंतप। अविहाय महाराज निहंसि समरे रिपून्॥ MBh. 2,198. कुशमुष्टिमुपादाय लवं चैव तु R. 7,66,6. श्रामिष° *Fleischstück* Vikr. 125. धृतजरत्कन्थालव Spr. 2588. तिति° 1802. मृत्तिका° Ragh. 3,3, v. l. beim Schol. in der ed. Calc. तृण° Spr. 965. कुशलाञ्शमीलवैः। अभिषिक्तस्य MBh. 3,16078. 14,2805. जल° *Tropfen* Megh. 21. 71. 91. Ragh. 16,66. Spr. 2543. Râǵa-Tar. 3,266. स्वेद° Ragh. 6, 57 (am Ende eines adj. comp. f. श्रा). 8,50. 13,20. अश्रु° 15,97. अमृत° Kir. 5,44. स्फारनीहार° Râǵa-Tar. 3,168. असृग्लव Bhâg. P. 7,8,30. मधु° 9,25. 5,14,22. धन° Spr. 1429. स्वल्पवित्त° Râǵa-Tar. 4,628. लक्ष्मी° Spr. 967. धूर्तेपलक्ष्मी° Git. 11,22. ज्ञान° Spr. 39. सुख° Varâh. Brh. S. 74,3. Spr. 3265, v. l. अपराध° Vikr. 118. श्रेयो° Râǵa-Tar. 3, 35. Pańkat. 3,2,29. काम° Bhâg. P. 3,21,14. 4,29,25. 54. प्रेम° 3,16, 7. 10,61,4. भावानां लवैः Daçak. 2,47. श्राशीर्भिर्ललंलवात्मभिः Bhâg. P. 3,13,48. लालित्य° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 6. Sâh. D. 40,11. मधुलवलेश Spr. 3520. लवम् adv. *ein wenig:* लवमपि लवङ्गे न रमते Sarasvatik. 1 (nach Aufrecht). — *d*) *ein best. Zeittheil* (= $^1/_{4000}$ Muhûrta nach Parâçara bei Utpala zu Varâh. Brh. S. 2; nach Andern $^1/_{5400}$, $^1/_{20250}$ Muh.); häufig personif. Trik. H. 136. H. an. Med. Weber, Ǵjot. 41. fgg. 90. fg. 105. Nax. 2,287. Ind. St. 9,461. 464. fgg. MBh. 1,1292. 6443. 13,627. 776. 7385. Hariv. 9529. 14079. Varâh. Brh. S. 48,59. Bhâg. P. 1,18,13. 3,11,6. 7. 4,30,34. 7,3,31. Mârk. P. 99,50. VP. 22, N. 3. Hiouen-thsang I,61. — *e*) bei den Astronomen = अंश, भाग *Grad* Golâdhj. Tripraçnav. 32. fgg. Ganitâdhj. Bhagrahajutjadhj. 7. Tripraçnâdhj. 32. — *f*) *Zähler eines Bruchs* Colebr. Alg. 13. — *g*) = विनाश *Untergang* Med. = विलास *Ausgelassenheit* u. s. w. H. an. und Viçva im ÇKDr. — *h*) N. pr. α) eines Sohnes des Râma und der Sîtâ (neben कुश) Trik. 2,8,4. H. 704. H. an. Med. Ragh. 15,32. Verz. d. B. H. 115 (XLIV). Uttarar. 66,8 (85,8). VP. 385. 386, N. 17. Bhâg. P. 9,11,11; vgl. कुशीलव 3). — β) eines Fürsten von Kâçmîra, Vaters des Kuça, Râǵa-Tar. 1,18. 84. — 2) n. *a*) *Muskatnuss* Çabdak. im ÇKDr. — *b*) = लवङ्ग *Gewürznelke.* — *c*) *die Wurzel von Andropogon muricatus* Râǵan. im ÇKDr.

लवक 1) proparox. nom. ag. von लू (समभिहारे) P. 3,1,149 nebst Vârtt. Vop. 26,41. — 2) Bez. *eines best. Stoffes* in सलवक Pańkat. 3,1,19.

लवङ्ग m. *Gewürznelkenbaum;* n. *Gewürznelke* Uǵǵval. zu Unâdis. 1, 119. AK. 2,6,3,27. H. 646. R. 5,74,5. Varâh. Brh. S. 27,4. Kathâs. 111,15. Pańkat. 1,10,50. °पुष्प Ragh. 6,57. °लता Git. 1,27. Suçr. 1, 215,6. 243,19. 2,137,10. لونك Albyrouny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 343.

लवङ्गक 1) n. *Gewürznelke* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) f. लवङ्गिका N. pr. eines Frauenzimmers HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 37.

लवङ्गकलिका f. *Gewürznelke* RÂGAN. im ÇKDR.

लवट m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 5,176. 204.

लवण 1) n. AK. 3,6,2,23. SIDDH. K. 249, *a*, 5. *Salz* (insbes. *Seesalz*) AK. 2,9,41. H. 941. MED. n. 75. AV. 7,76,1. ÂÇV. ÇR. 2,16,24. KHÂND. UP. 4,17,7. 6,13,1. M. 6,12. 8,327. 10,86. 92. 94. 12,63. HARIV. 15655. R. 3,76,24. 5,14,45. VARÂH. BṚH. S. 15,9. 25. 16,7. 28, 4. 41,6. KATHÂS. 61, 39. fgg. PAÑKAT. 184, 9. Verz. d. B. H. No. 953. °धेनु Verz. d. Oxf. H. 35,*a*,30. 32. 59,*a*,25. °पर्वत 35,*b*,26. लवणाचल 41,*a*,22. verschiedene Arten von *Salz* SUÇR. 1,226,11. काण्ड° 2,36,16. लवणानुरस 1, 34,11. तीक्ष्ण° 12. सपञ्चलवणः क्षारः 2,126,6. Accent eines auf लवण ausgehenden Wortes P. 6,2,4. गो° *so viel Salz als man der Kuh reicht* Schol. — 2) adj. (f. आ) *salzig, gesalzen* P. 4,4,24. gaṇa अर्शआदि zu 5,2,127. AK. 1,1,4,18. H. 1388. MED. HÂR. 181 (wo लावण्य st. ल्यावण्य zu lesen ist). HALÂJ. 5,75. ÇAT. BR. 14,5,4,12. LÂṬJ. 1,1,12. KHÂND. UP. 6,13,2. MBH. 14,1411. SUÇR. 1,79,8. 155,4. 156,1. 157,9. 2,546,2. fgg. Spr. 804. 2360. VARÂH. BṚH. S. 54,122. 76,12. BṚH. 2,14. BHÂG. P. 3, 31,7. MÂRK. P. 34,28. Verz. d. Oxf. H. 237,*a*, No. 568, Z. 12. अलवणाशिन् ÂÇV. GṚHJ. 1,8,10.22,19.4,4,16. GOBH. 2,3,13. लवणं कृत्वा und लवणंकृत्य gaṇa साक्षादादि zu P. 1,4,74. — 3) m. *a*) Bez. einer best. Hölle VP. 207. fg. — *b*) N. pr. α) eines Râkshasa oder Daitja H. an. 3,222. MED. MBH. 1,1305. 13,861. HARIV. 2342. 3063. fgg. 5151. fgg. R. GORR. 1,23,23. 7,61,17. 67,13. RAGH. 15,2. 5. UTTARAR. 131,11 (176, 8). VP. 385. BHÂG. P. 9,11,14. — β) eines Fürsten aus Hariçkandra's Geschlecht Verz. d. B. H. 192,10. Verz. d. Oxf. H. 354,*b*,3. — γ) eines Sohnes des Râma: लवणाङ्कुशौ (sonst कुशलवौ) ÇATR. 9,533. — δ) eines Flusses MED. — *c*) = बल und अस्थिभेद (?) H. an. — 4) f. आ *a*) = त्विष् *Glanz, Schönheit* (vgl. लावण्य) H. an. st. dessen fehlerhaft द्विष् MED. — *b*) *eine best. Pflanze*, = महाज्योतिष्मती RÂGAN. im ÇKDR. — *c*) N. pr. eines Flusses MED. MÂLATIM. 144,12. — 5) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. N. pr. verschiedener Flüsse LIA. I, 78. 84. 103. — 6) n. HARIV. 15979 fehlerhaft für लम्बन (*eine best. Art zu kämpfen*), wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. अक्षार°, अक्षारालवणाशिन्, काल°, तत्काल°, त्रि°, त्रिकूट°, पञ्च°, बङ्क°, भास्कर°, राम°, पचलवण, भिन्दि°, लावण.

लवणकिंशुका f. *eine best. Pflanze*, = महाज्योतिष्मती RÂGAN. im ÇKDR.

लवणक्षार m. *eine Art Salz*, = लोणार RÂGAN. im ÇKDR.

लवणखानि f. *Salzgrube* H. 941.

लवणजल adj. *salziges Wasser habend*: सागर MBH. 1,1186. m. *Salzmeer, das Meer, Ocean*: लवणजलोद्भव *im Meer entstehend*; m. *Muschel* 7,1676.

लवणजलधि m. *Salzmeer, das Meer, Ocean* BHÂG. P. 5,17,9.

लवणजलनिधि m. dass. R. 5,31,62.

लवणता f. *Salzigkeit* SUÇR. 1,149,10.

लवणतृण n. *eine Art Gras*, = अम्लकाण्ड RÂGAN. im ÇKDR.

लवणतोय adj. *salziges Wasser habend*; m. *Salzmeer, das Meer, Ocean* R. 5,7,21. 44.

लवणत्व n. *Salzigkeit* MBH. 6,3643.

लवणपाटलिका f. *Salzbeutel* VJUTP. 209.

लवणपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 154,*b*,10.

लवणमद m. = लवणक्षार RÂGAN. im ÇKDR.

लवणमन्त्र m. *ein von einer Salzdarbringung begleitetes Gebet* Verz. d. Oxf. H. 98,*b*,10. 106,*a*,36.

लवणमेह m. *salzige Harnruhr*; davon adj. °मेहिन् *daran leidend* SUÇR. 2,78,2.

लवणय् (von लवण), लवणयति *salzen* P. 3,1,21.

लवणवारि adj. und m. = लवणतोय H. 1075.

लवणसमुद्र m. dass. TRIK. 2,1,5. Ind. St. 10,269.

लवणस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*b*,11.

लवणस्य् (von लवण), °स्यति *nach Salz verlangen* P. 7,1,51.

लवणाकर m. 1) *Salzgrube* HALÂJ. 2,14. — 2) *Fundgrube —, Fülle von Anmuth* DAÇAR. 4,32.

लवणान्तक m. *der Tödter des* Râkshasa Lavaṇa, Bein. Çatrughna's RAGH. 15,40. PAÑKAR. 4,3,118.

लवणाब्धि m. *das Salzmeer* MÂRK. P. 54,7. °ज n. *Seesalz* RÂGAN. im ÇKDR.

लवणाम्बुराशि m. *das Meer, Ocean* RAGH. 13,15. VIKR. 18.

लवणाम्भस् m. dass. MBH. 1,619. 1131. 1168. 3,12787. 16239. HARIV. 4914. R. 3,28,2. 72,26. 4,58,36. 5,2,41. 54,8. 6,3,7. 7,23,2,40. RAGH. 12,70. 17,54.

लवणासुर n. *ein best. Salz*, = लोणार RÂGAN. im ÇKDR.

लवणार्णव m. = लवणाम्भस् R. 1,1,70. RÂGA-TAR. 3,478. BHÂG. P. 5,17,8.

लवणालय m. dass. R. 4,41,34.

लवणाश्व m. N. pr. eines Brahmanen MBH. 3,986.

लवणिमन् m. nom. abstr. von लवण gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. *Anmuth* H. an. 6,4.

लवणीय्, °यति denom. von लवण P. 7,1,51, Sch.

लवणोत्तम n. *Flusssalz* HALÂJ. 2,459. RATNAM. 85. SUÇR. 2,510,10.

लवणोत्थ n. *ein best. Salz*, = लोणार RÂGAN. im ÇKDR.

लवणोत्स n. N. pr. einer Stadt RÂGA-TAR. 1,331. 6,46. 57. 7,763. — Vgl. लोचनोत्स.

लवणोद m. *das Meer mit salzigem Wasser, Ocean* AK. 1,2,2,2. Verz. d. Oxf. H. 33,*a*,12. Ind. St. 10,283. 314.

1. लवणोदक n. *Salzwasser* HALÂJ. 2,167.

2. लवणोदक adj. *salziges Wasser habend*, vom Meere MBH. 3,13677. 13,2136. 7219. m. *das Meer* VJUTP. 103.

लवणोदधि m. *Salzmeer, Ocean* R. 5,74,16. BHÂG. P. 5,20,2. MÂRK. P. 56,15.

लवन (von लू) 1) nom. ag. *der da schneidet* (Korn u. s. w.) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134 (hier fälschlich लवण). VOP. 26,29. — 2) f. ई ein best. Fruchtbaum: *Anona reticulata* ÇABDAK. im ÇKDR. — 3) n. *a*) nom. act. AV. PRÂT. 3,40, Sch. P. 1,3,14, Sch. *das Schneiden* (des Kornes), *Mähen* AK. 3,3,24. H. 1521. NIR. 2,2. KṚSHISAÑGR. 16,5. KÂTJ. ÇR. 1, 7,9.10. °कर्तृ KULL. zu M. 7,110. — *b*) *Werkzeug zum Schneiden*: दर्भ° KAUÇ. 8.

लवनीय (wie eben) adj. = लव्य Comm. zu Bhaṭṭ. 8,129.

लवन्य m. Bez. einer best. Klasse von Menschen Rāǵa-Tar. 7,1241. fgg. (लावन्य 1242). 8,1129. 1133. 3385.

लवय्, लवयति = लवमाचष्टे P. 1,1,58, Vārtt. 2, Sch.

लवराज m. N. pr. eines Brahmanen Rāǵa-Tar. 8,1347.

लवली f. 1) *Averrhoa acida Lin.* Rāǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,214,1. Varāh. Bṛh. S. 27,4. Verz. d. Oxf. H. 72,a,26 (vgl. Ind. St. 8,351, N. 11). °फल Trik. 3,3,166. Ind. St. 8,350. fg. °फलपाण्डुर Vikr. 146. — 2) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VII, 3). Ind. St. 8,349. fgg.

लववत् (von लव) adj. *nur einen Augenblick während:* संयोग Spr. 2351 (Conj.).

लवशस् (wie eben) adv. 1) *in kleine Stücke:* छेदयेत् M. 9,292. कृतः MBh. 1,3211. — 2) *nach Augenblicken, auf Augenblicke:* त्रुटिशो लवशश्चापि गण्यते कालनिश्चयः MBh. 5,3782. लवशः क्षणशश्चापि न च तुष्टः सुयोधनः 2842.

लवाक m. *ein Werkzeug zum Schneiden* Uṇādik. im ÇKDr. *das Schneiden* (छेदन) Uṇādivṛ. im Saṁkshiptas. ÇKDr. fehlerhaft für लवाणक.

लवाणक (von लू) Uṇādis. 3,83. m. *ein Werkzeug zum Schneiden, Sichel* Uǵǵval.

लवि (wie eben) m. dass. Uǵǵval. zu Uṇādis. 4,138.

लवित्र (wie eben) n. dass. P. 3,2,184. Vop. 26,169. AK. 2,9,13. H. 892. Halāj. 2,422.

लवेरणि m. N. pr. eines Mannes; pl. Saṁsk. K. 184,a,10. wohl fehlerhaft für ला°.

लव्य partic. fut. pass. von लू P. 6,1,80, Sch. *abzuhauen, niederzuhauen:* वन Bhaṭṭ. 8,129. — Vgl. एक° und लाव्य.

लश्, लाशयति (शिल्पयोगे) Dhātup. 36,55, v. l. für लस्.

लशुन Uṇādis. 3,57. n. (und selten m.) *Lauch, Knoblauch* AK. 2,4,5, 14. Trik. 3,3,221. H. 1186. M. 5,5. 19. 9,39. Jāǵn. 1,176. MBh. 8,2034. 13,4363. Suçr. 1,145,6. 157,10. 217,6. 376,7. 2,168,15. 328,20. 357,2. 364,17. 366,9. 496,6. Vāgbh. 6,10. Çārṅg. Saṁh. 3,8,17. Spr. 4479. Rāǵa-Tar. 1,344. Mārk. P. 32,12. लशुनादिभक्षणप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 281,b,45. fg. लशुनादिघ्राण Prājaçkittend. 3,a,6. 4,a,6. Hier und da लसुन geschrieben.

1. लष्, लषति, °ते und लष्यति, °ते Dhātup. 21,23 (कान्तौ). P. 3,1,70. Vop. 8,67. 128. Nir. 4,10 (प्रेप्सायाम्). *begehren, Verlangen haben nach* (acc.): गाश्चारयन्तावविदूर ओदनं रामाच्युतौ वो लषतो बुभुक्षितौ Bhāg. P. 10,23,7.

— अप s. अपलाषिका fgg.

— अभि *nach Etwas* oder *Jmd begehren, Verlangen haben nach,* mit acc.: अभिलषेत् u. s. w. MBh. 1,6580. Hariv. 2465. Suçr. 1,375,10. Vikr. 13, 20. 107. Kathās. 106,102. Bhāg. P. 4,28,9. Mārk. P. 61,73. 66,17. Sāh. D. 28,8. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 16. Pańkat. 91,17. 190,3. Hit. 69,5. Vet. in LA. (III) 2,22. ad 19,10. med. (aus metrischen Rücksichten) अभिलषते MBh. 13,4390. Mārk. P. 63,57. अभिलष्यन्ती Bhaṭṭ. 4,22. अभिललाष Kathās. 12,107. अभिलेषुः Ragh. 19,12. अभिलषिष्यसि Hariv. 7012. mit infin.: सेवितुं साक्षात्तदेवाभिललाष सा Kathās. 22,11. अभिलषित (hier und da falschlich अभिलसित geschrieben) *begehrt, gewünscht;* n. *das Begehrte, Gewünschte, Wunsch* MBh. 3,16703. 9,2810. Hariv. 6595. R. 1,20,18 (21,17 Gorr.). Spr. 634. 1726. 5089. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 33. Mārk. P. 100,14. Pańkat. 38,17. 41,1. Hit. 44,8. 84,18. 133,9. Dhūrtas. in LA. 78,17. चिरमभिलषितविलास Gīt. 11,24. चिराभिलषित MBh. 3,1851. Mārk. P. 22, 48. मनोऽभिलषित MBh. 3,15309. Mārk. P. 61,58. Vāju-P. bei Muir, ST. I, 29. Hit. 133,9, v. l. यत्तेऽभिलषितं प्राप्तुं फलं तस्मात् MBh. 1,1778. गन्तुं तवाभिलषितामगामुन्नायिनीमहम् *nach* Uǵǵ., *wohin du zu gehen beabsichtigtest,* Kathās. 71,263. यथाभिलषित (s. auch bes.) Mārk. P. 64, 14. Pańkat. 15,24. — Vgl. अभिलाष fgg.

— समभि *begehren nach:* °लषत् Hariv. 11267.

— आ dass.: परस्परं चालषते निरन्ध[।]: Bhāg. P. 5,13,6.

— परि dass.: न परिलषन्ति केचिदपवर्गमपि Bhāg. P. 10,87,21.

2. लष्, लाषयति (शिल्पयोगे) Dhātup. 35,56 v. l. für लस्.

लषण nom. ag. von 1. लष् P. 3,2,150.

लषणावती f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,37. b, 5. °देश 352,b,20.

लषमण (= लखमण = लक्ष्मण) m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,544,2.

लषमादेवी (= लखमा° = लक्ष्मी°) f. N. pr. einer *Fürstin* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,7.

लष्व Uṇādis. 1,153. m. *Tänzer* Uǵǵval.

1. लस्, लसति (श्लेषणक्रीडनयोः) Dhātup. 17,64. 1) *strahlen, glänzen, prangen;* partic. लसत् *strahlend* u. s. w.: कौस्तुभ MBh. 3,15533. द्युति Kathās. 116,33. अन्तर्हासलसत्कपोलफलका Spr. 1235. दामोदरोपरिलसच्चिवलीलता: 1310. Çatr. 14,25. Gīt. 10,7. Rāǵa-Tar. 3,171. Einschiebung nach 4,426. Çatr. 4,3. Bhāg. P. 1,9,30. 11,20. 19,6. 2,2,9. 3,21. 9,12. 3,21,20. 23,33. 28,14. 4,8,49. 9,54. 24,47. 6,1,34. 4,37. 8,2,14. 6,4. 9,17, v. l. 12,18. 15,9. 10,13,5. 11,27,38. Pańkar. 3,5,14. 7,14. 10,16. 18. 12,11. 14,2. Naish. 22,53. Khandom. 83. 132. Verz. d. Oxf. H. 121,b, No. 214. 248,a,26. 249,b,15. 260,b, No. 629. Nalod. 1,34. 2,38. लसमान 1,46. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen:* लसद्गर्भदेवी Kathās. 23,53. सच्चरितावलोकनलसद्विद्वेष 24,227. लसत्तृष्ण 26,165. लसन्मदविलासा 52,306. दिव्यान्योऽन्यवपुर्विलोकनलसद्गाढानुरागौ 407. लसद्बाष्पपूर 59,85. 91,21. — 3) *erschallen, ertönen:* लसन्नादैः — बलैः Kathās. 18,2. 119. 25,136. 97,14. 102,112. Khandom. 103. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben:* लसाति 3. sg. praes. Khandom. 79. — Vgl. दुर्ललित.

— caus. लासयति (शिल्पयोगे, v. l. शिल्पोपयोगे) Dhātup. 33,55. 1) *tanzen:* गायन्त्यो वादयन्त्यश्च लासयन्त्यस्तथैव च R. 7,2,11. वादयन्ति तदा शान्ति (wohl तथा गान्ति = गायन्ति zu lesen) लासयन्त्यपरे तथा 2, 69,4. Comm.: शान्तिं तस्य खेदशान्तिमुद्दिश्य लासयन्ति नर्तयन्ति वेश्याः ॥ शान्तिं लोलयन्तीति पाठे तस्य शान्तिं तूष्णीमवस्थानं चालयन्ति ॥ — 2) *tanzen lassen, — lehren* Vikr. 23.

— अनु s. अनुलासक, अनुलासिन्.

— अभि hier und da fehlerhaft für अभि-लष्.

— उद् 1) *erglänzen, strahlen, prangen;* partic. praes. उल्लसत् *erglänzend* u. s. w. Bhāg. P. 1,3,4. 9,24. 17,44. 3,28,16. 4,24,49. 8,10,

53. 12,20. 18,2. 10,6,5. 50,54. 60,9. Pankar. 3,5,29. 10,18. 15,3. उल्ला-समान dass. Çiç. 20,56. उल्लसित *glänzend, strahlend* Pankar. 3,2,12. Verz. d. Oxf. H. 242,*a*, No. 593—595. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen:* उल्लसद्विस्मयोत्सुकमसाकृस Kathâs. 22,108. Râga-Tar. 2,103. Bhâg. P. 2,2,12. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 214. गर्वोपलोल्लसितवक्त्रि Çiç. 4,58. उल्लसितविभ्रम Sâh. D. 54,8. — 3) *ertönen, erschallen:* उल्लसद्गीत Kathâs. 17,107. 35,5. 103,196. Râga-Tar. 3,2. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben, ausgelassen sein:* उल्ललास Khandom. 110. उल्लसत् Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,42. प्रेमोल्लसन्मानसा Spr. 1235. Khandom. 133. उल्लसित *in freudig erregter Stimmung seiend* Kathâs. 54,36. उल्लसितम् adv. *in freudiger Aufregung* Hit. 21,15, v. l. — 5) *sich hinundherbewegen:* उल्लसत्कुसुम Bhatt. 9,86. मदोल्लसद्भ्रू Çrut. 33. Bhâg. P. 3,28,30. उल्लसल्लोचन Spr. 546. उल्लसितैकभ्रूलत Çâk. 63, v. l. Dhûrtas. 9,14. Pankar. 3,11,4. — Vgl. उल्लास. — caus. 1) *erglänzen —, strahlen machen:* चलत्कुण्डलोल्लासितोत्फुल्लगण्ड Pankar. 3,10,18. Prab. 81,13. — 2) *erscheinen lassen, bewirken:* कामम् Sâh. D. 305,16. मुद्रामुद्राराम् Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,38. — 3) *ertönen —, erschallen lassen:* प्रियकथाम् Sâh. D. 40,12. — 4) *freudig erregen, in eine frohe Laune versetzen:* उल्लास्य मधुरैर्वाक्यैस्तम् Çatr. 14,146. उल्लासित *freudig erregt* Hit. 21,15 (vgl. den Comm.). — 5) *tanzen lassen, in Bewegung versetzen:* उल्लासयत्यः श्लथबन्धनानि गात्राणि Rt. 6,8. उल्लास्यमानाः पताकाः Kathâs. 6,165. 34,121. Verz. d. Oxf. H. 145, *a*,27. उल्लासितभ्रूवल्लीक Gît. 2,21. Râga-Tar. 4,642. Spr. 1547. ततः स्वशिरश्छेतुमुल्लासितः (so ist wohl zu lesen st. उल्लसितः) खड्गः शूद्रकेनापि Hit. ed. Johns. 2111 (उन्नामितः ed. Schl.). — Vgl. उल्लासन.

— प्रोद्, partic. प्रोल्लसत् 1) *erglänzend* Çiç. 2,19. — 2) *ertönend, erschallend* Kathâs. 103,158. — 3) *sich hinundherbewegend* Kathâs. 25, 12. — caus. *freudig erregen:* प्रोल्लासिताशय Kathâs. 110,106.

— समुद् 1) *erglänzen:* समुल्लसत्या भासा Çiç. 8,65. समुल्लसित *strahlend* Gît. 11,28. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen* Kir. 5,41. आपत्सु वैराणि समुल्लसन्ति Spr. 781. — Vgl. समुल्लास.

— परि *ringsumher strahlen:* परिलसत् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 20.

— वि 1) *glänzen, strahlen:* विलसति, °ललास Bhatt. 10,68. विलसत् Spr. 2396. Kathâs. 35,18. Bhâg. P. 1,9,34. 3,20,29. 23,9. 28,21. 4,8,50. 26,23. 30,6. 5,3,3. 11,14,40. Pankar. 3,5,30. Prab. 49,2. Verz. d. Oxf. H. 152,*a*, N. 2. विलसित *glänzend, strahlend* Bhâg. P. 5,25,5. Pankar. 3,7,31. — 2) *erscheinen, zum Vorschein kommen, entstehen, sich zeigen:* विलसत् Çiç. 9,87. Kathâs. 2,81. 18,389. 35,117. 44,180. 113,100. Khandom. 8. Bhâg. P. 4,30,23. Verz. d. Oxf. H. 156,*b*, No. 332. विलसित *zum Vorschein gekommen* Bhâg. P. 1,2,31. 5,4,4. 18,16. n. *das Erscheinen, zum-Vorschein-Kommen:* विद्या° Verz. d. Oxf. H. 80, *b*,37. — 3) *ertönen, erschallen:* विलसन्मेघशब्द Kathâs. 13,16. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,4. — 4) *spielen, sich vergnügen, sich der Freude hingeben, ausgelassen sein:* विलसति Gît. 1,38. 7,13. इह विलस 11,14. Vâsavad. 7,3. व्यलसन्नमरंमन्या भूर्लोके ऽस्मिन्नराधिपाः Kathâs. 97,15. Çatr. 1,280. विललास Khandom. 141. पर्यङ्के तया सह विललास Hit. 42,9. R. Gorr. 1,45,28. Hariv. 15789 (°राशिं विक्रमाल्लोकमण्डनम् die neuere Ausg.). Kathâs. 51,189. येनाहंकारयुक्तेन चिरं विलसितं पुरा Spr. 2296. विलसित n. *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit, lustiges —, ausgelassenes Treiben; Treiben* überh. Ragh. 18,51. 19,40. Kathâs. 22,11. Gît. 5,8. Mâlatîm. 171,9. Prab. 112,7. विधि° Spr. 2078. Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,8. दुर्बुद्धिविलसितं नरपशूनाम् Prab. 29,9. — 5) *sich hinundherbewegen:* विलसत् Megh. 48. Ragh. 13,76. Spr. 188. Kathâs. 71,2. Kaurap. 44. Bhâg. P. 10,71,33. विलसित *sich hinundherbewegend* 5,9, 19. n. *das Hinundherbewegen* Spr. 771. Häufig von der *zuckenden Bewegung* des Blitzes: विलसत्सौदामनी Spr. 2072. Prab. 79,13. विलसित n. *das Zucken* (des Blitzes) Spr. 294. 421. Vikr. 137. Kir. 5,46. Praçnottaram. 23 in Monatsber. d. Berl. Ak. d. Ww. 1868, S. 100. Kâvjâd. 2,232. Khandom. 103. — Vgl. ऋषभगजविलसित, गजतुरंग°, दुर्विलसित, भ्रमर°, विलास u. s. w.

— प्रवि 1) *stark strahlen, — glänzen* Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,42. Bhâg. P. 8,8,45. — 2) *stark hervorbrechen, in hohem Maasse erscheinen:* प्रविलसदनुराग Cit. beim Schol. zu Gît. 7,2. Verz. d. Oxf. H. 129,*a*, 5 v. u.

2. लस् (= 1. लस्) adj. *strahlend, glänzend:* अ° Çiç. 9,39.

लस (von 1. लस्) 1) adj. *sich hinundherbewegend;* s. अ°. — 2) f. आ *Gelbwurz* (गन्धपलाशिका) Hâr. 93.

लसक adj. = लासक Med. k. 149. fg.

लसिका f. *Speichel* Çabdak. im ÇKDr.

लसीका f. dass. Vâgbh. 12,2. Nach ÇKDr. = इक्षुरस *Zuckerrohrsaft* oder वस्त्रांसमध्यगरस *Lymphe;* nach Vjutp. 101 *Eiter.*

लसोफरङ्ग N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,43.

लस्तक m. *die Mitte des Bogens* AK. 2,8,2,53. H. 775.

लस्तकिन् m. *Bogen* Çabdam. im ÇKDr.

लस्पूजनी f. *eine grobe Nadel* Çat. Br. 3,5,2,25. 6,1,25. Kâtj. Çr. 8,4,21.

लहका f. gana क्षिपकादि zu P. 7,3,45, Vârtt. 6.

लहड N. pr. eines Volkes Varâh. Brh. S. 14,22. v. l. लउह und लहर.

लहर m. N. pr. 1) eines Volkes Varâh. Brh. S. 14,22, v. l. für लहड. — 2) einer Provinz in Kâçmîra, das jetzige Lahal, Râga-Tar. 5, 51. 8,916.

लहरि und लहरी f. *Welle, Woge* H. 1076. Halâj. 3,31. Çabdar. im ÇKDr. Spr. 814. 2297. 2586. Kathâs. 28,99. 57,75. Râga-Tar. 4,541. Pankar. 3,12,4. — Vgl. आनन्द°, गङ्गा°.

लहिक m. Hypokoristikon von लहोड P. 5,3,83, Vârtt. 8, Schol. — Vgl. कहिक.

लहोड m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,83, Vârtt. 8, Schol. — Vgl. कहोड.

लह्य m. N. pr. eines Mannes gana शिवादि zu P. 4,1,112. Çank. zu Brh. Âr. Up. 3,3,1. pl. *seine Nachkommen* gana यस्कादि zu P. 2,4,63. — Vgl. लाह्य, लाह्यायनि.

1. ला, लाति (आदाने, v. l. दाने) Dhâtup. 24,50. *ergreifen, mit sich —, zu sich nehmen:* लाति Sâh. D. 11,12. ललुः खड्गान् Bhatt. 14,92. तां (शक्तिं) चालासीद्विपद्गताम् 15,53. लात्वा Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,43. 156, *a*,27. Z. d. d. m. G. 14,572,6. Çatr. 14,149. 166.

2. ला (= 1. ला) f. *das Nehmen; das Geben* Med. l. 1.

लाकिनी f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,*b*,25. 35. — Vgl. राकिणी, वाकिनी.

लाकुच adj. von लकुच Vâgbh. 7, 34.

लाकुचि m. patron. von लकुच; pl. Saṁsk. K. 184, a, 8.

लाकुटिक s. लालाटिक.

लाक्त adj. Ind. St 1, 110, 7 nach Kuhn fehlerhaft für लाक्ष्म *an die* Lakshmî *gerichtet.*

लाक्तकी f. Bein. der Sîtâ: लक्तश: कमलादास्यो यस्याः स लाक्तकी मता Pâdmottarakh. 55 im ÇKDr.

लाक्षण (von लक्षण) adj. *der sich auf die charakteristischen Merkmale eines Dinges versteht:* षडेव स्वरितज्ञातानि लाक्षणाः प्रतिज्ञानते Schol. in der Einl. zu AV. Prât. 3, 55.

लाक्षणि m. patron. von लक्षण P. 4, 1, 153.

लाक्षणिक (von लक्षण und लक्षणा) adj. (f. ई) 1) *sich auf die Zeichen verstehend; m. Zeichendeuter* P. 4, 2, 60, Vârtt. 7. R. 6, 23, 4. कन्या° 17. — 2) *uneigentlich gemeint, nicht direct unter Etwas verstanden, eine übertragene Bedeutung habend* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 117. Schol. zu Kâtj. Çr. 4, 4 v. u. 32, 7 v. u. Schol. zu P. 7, 1, 100. 3, 51. Verz. d. Oxf. H. 210, b, 2 v. u. Davon nom. abstr. °त्व n. Sarvadarçanas. 50, 14. Schol. zu P. 6, 4, 57. 7, 3, 113.

लाक्षण्य (von लक्षण) 1) adj. *sich auf die Zeichen verstehend, dieselben deutend* R. 2, 29, 9. लक्षणिन् ed. Bomb. — 2) m. patron. P. 4, 1, 152.

लाक्षा Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3, 62. f. AK. 3, 6, 1, 10. 1) *eine best. Pflanze* AV. 5, 5, 7 (voc.). — 2) *Lack* (sowohl *die von der Schildlaus kommende rothe Farbe* als auch *das rothe brennbare Harz eines best. Baumes*) Ainslie I, 188. AK. 2, 6, 3, 26. Trik. 2, 6, 36. H. 685. Hâr. 219. 259. Halâj. 2, 400. 5, 37. °रक्त Kauç. 76. 28. 38. M. 10, 89. 92. Jâǵn. 3, 37. MBh. 1, 5724. Suçr. 1, 142, 20. °चूर्ण 46, 16. हिङ्गुलाक्ते निर्यासो 145, 12. 2, 25, 1. 126, 9. 357, 2. 367, 12. Spr. 2662. 3044. 4955. Kir. 5, 23. Varâh. Bṛh. S. 10, 11. 11, 11. 57, 5. 61, 15. 68, 40. 77, 9. Sâh. D. 71, 3. Verz. d. Oxf. H. 105, b, 28. Sarvadarçanas. 25, 15. °रस Suçr. 1, 315, 9. Çâk. 80. Ṛt. 1, 5. 6, 13. Varâh. Bṛh. S. 43, 48. 78, 19. Kathâs. 9, 47. 30, 46. Sarvadarçanas. 25, 11. °भवन (vgl. जतुगृह) Bhâg. P. 3, 1, 6. °गृह Veṇîsaṁh. im Comm. zu Daçar. 4, 68. — Vgl. राक्षा.

लाक्षातरु m. *Butea frondosa* Çabdam. im ÇKDr.

लाक्षाप्रसाद m. = लाक्षाप्रसादन Râǵan. im ÇKDr.

लाक्षाप्रसादन m. *eine Art* Lodhra AK. 2, 4, 2, 21.

लाक्षावृक्ष m. *Butea frondosa* Hâr. 107. = कोशाम्र Râǵan. im ÇKDr.

लाक्षिक (von लाक्षा) adj. (f. ई) *mit Lack gefärbt* P. 4, 2, 2. Schol. zu 4, 1, 15. वस्त्र Bhaṭṭ. 5, 62.

लाक्षेय m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184, a, 7.

लाक्ष्म s. u. लाक्त.

लाक्ष्मण 1) adj. von लक्ष्मण 3) b) Vâgbh. 6, 95. — 2) m. patron. von लक्ष्मण Saṁsk. K. 184, b, 1.

लाक्ष्मणि m. patron. von लक्ष्मण; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 18.

लाक्ष्मणेय m. patron. von लक्ष्मणा, wenn ein Vâsishṭha gemeint ist, gaṇa शुभ्रादि zu P. 4, 1, 123.

लाक्ष्यिक adj. (f. ई) = लक्ष्यमधीते वेद वा P. 4, 2, 60, Vârtt. 7.

लाख्, लाखति (शोषणालमर्थयोः) Dhâtup. 5, 9. — Vgl. राख्.

लागुडिक könnte *mit einem Knüttel* (लगुड) *bewaffnet* bedeuten, was aber Pañkat. 230, 19 nicht passt; wohl fehlerhaft für लालाटिक.

लाघ्, लाघते (सामर्थ्ये) Dhâtup. 4, 39. — Vgl. राघ् und उल्लाघय् in den Nachträgen.

लाघरकोलस m. Bez. *einer best. Form der Gelbsucht* Suçr. 2, 466, 16. 467, 8. लाघरको ऽलसाख्य: gedruckt.

लाघव (von लघु) n. gaṇa पृथ्वादि zu P. 5, 1, 122. Schol. zu 131. 1) *Schnelligkeit, Geschwindigkeit* MBh. 5, 7207. R. 4, 42, 4 (लाघवं च zu lesen). गति° Mallin. zu Kumâras. 1, 15. — 2) *Geschicklichkeit, Gewandtheit* MBh. 1, 4106. 4117. 5224. 5337. 4, 1887. 5, 5964. 6, 2466. 7, 4654. fg. 4658. 4660. R. 3, 33, 17. 6, 18, 47. 36, 59. 78. Kathâs. 48, 39. Mârk. P. 124, 7. 127, 21. हस्त° MBh. 3, 759. 764. 6, 2743. R. 6, 36, 55. Pañkat. 218, 16. पाणि° Hariv. 9332. अस्त्र° MBh. 1, 5364. 5, 5490. — 3) *Leichtigkeit; Gefühl der Leichtigkeit, Erleichterung* Jâǵn. 3, 76. Tattvas. 25. Suçr. 1, 34, 15. 46, 5. 148, 19. 151, 15. 2, 47, 8. 429, 9. यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनसः स्याद्लाघवम् *keine Erleichterung des Herzens* M. 11, 233. विनाशितेषु दुर्गेषु भवेद्वै कर्मलाघवम् *Erleichterung des Geschäfts* R. 5, 50, 4. — 4) *Leichtsinn, Uebereilung, Unüberlegtheit:* अज्ञानाल्लाघवेन वा R. Gorr. 2, 15, 11. तिर्यक्° *Unzuverlässigkeit der thierischen Natur* Kathâs. 27, 176. — 5) *Geringheit, Wenigkeit, Unbedeutendheit:* आहार° Mârk. P. 41, 17. बुद्धि° R. 2, 58, 26 (29 Gorr.). Mâlav. 14, 23. सत्त्व° R. 4, 6, 6. — 6) *Kürze einer Silbe* Ind. St. 8, 216 (= Çrut. Br. 4). — 7) *Kürze im Ausdruck, Sparsamkeit in Worten, Concision* Ind. St. 8, 372. Kâç. zu P. 8, 3, 55. Müller, SL. 170. Schol. zu Kâtj. Çr. 9, 5, 8. 9. 17, 8, 14. zu Ǵaim. 1, 1, 9. zu Kap. 1, 65. 146. Nîlak. 39. Kusum. 11, 8. Sarvadarçanas. 113, 22. — 8) *geringes Ansehen, Schmälerung des Ansehens, Mangel an Würde* Spr. 1407. 1896. 2229. 5202. Râǵa-Tar. 2, 171. 4, 38 (am Ende eines adj. comp. f. आ). 6, 5. लाघवं या Bhag. 2, 35. लाघवमास्थिताः MBh. 1, 7041. लाघवं समुपागम्य Hariv. 10578. लाघवं प्राप्नोति Spr. 225. न नेया भवता राजन्वयमात्मा च लाघवम् Râǵa-Tar. 3, 245. कन्या हि तत्र न प्रेष्या भवेदेवं हि लाघवम् Kathâs. 12, 3. 13, 5. एषा कुर्यात्कस्य न लाघवम् 87, 37. लघवकारि चात्मनः Spr. 3431. 4675. कुरुते ऽस्मिन्नमोघे ऽपि निर्वाणालातलाघवम् *so geringschätzig behandeln wie* Kumâras. 2, 33. — Vgl. गुरु° (in der 2ten Bed. auch Bhâg. P. 6, 1, 8), अह्न°, लघुता und लघुत्व.

लाघवायन m. N. pr. eines Autors: °सूत्र Ind. St. 1, 470.

लाघविक (von लाघव) adj. *sich kurz fassend* Schol. zu Kâtj. Çr. 24, 3, 21.

लाङ्काकायनि m. metron. von लङ्का gaṇa वाकिनादि zu P. 4, 1, 158.

लाङ्कायन m. patron. von लङ्क gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99.

लाङ्गल (लाङ्गल) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1, 108) 1) n. a) *Pflug* Nir. 6, 26. AK. 2, 9, 13. H. 890. an. 3, 681. Med. l. 127. fg. Halâj. 2, 420. ṚV. 4, 57, 4. AV. 2, 8, 4. VS. 12, 71. TS. 6, 6, 7, 4. Kâtj. Çr. 22, 3, 48. Kauç. 20. 93. 106. °योजन Pâr. Gṛhj. 2, 13. MBh. 3, 332. 15289. 5, 4427. 9, 3348. 12, 5656. Hariv. 4438. R. 1, 66, 14. R. Gorr. 2, 76, 24. 3, 4, 12. 7, 7, 47. Varâh. Bṛh. S. 33, 9. 46, 63. Bṛh. 27, 5. नाल° Verz. d. Oxf. H. 82, a, No. 138, Z. 7. Bhâg. P. 10, 68, 41. कर्षन्तो लाङ्गलैः MBh. 3, 13825. पृथिवीं लाङ्गलेनेह भित्त्वा 1248. सौवर्णलाङ्गलाग्रैर्विलिखति वसुधामर्कमूलस्य हेतोः als Absurdität Spr. 3311. लाङ्गलोल्लिखितावनि Kathâs. 33, 31. लाङ्गलापकर्षिन् (गवेन्द्र) Spr. 870. लाङ्गलस्य गतिः R. 4, 60, 13. °दण्ड AK. 2, 9, 14. — b) Bez. *einer best. Gestalt des Mondes* Varâh. Bṛh. S. 4, 9. — c) Bez. *eines*

pflugähnlichen Stückes an einem Hause (गृहदारु). — d) Weinpalme (ताल). — e) eine best. Blume H. an. Med. — f) das männliche Glied (wohl nur fehlerhaft für लाङ्गूल) Trik. 2,6,23. — 2) m. a) eine Art Reis (शालि) Vâgbh. 6,3. — b) pl. N. einer Schule Ind. St. 1,47. 61. 3,273. fg. Verz. d. Oxf. H. 55,b,18. nach P. 6,4,144, Vârtt. 1 von लाङ्गलिन्. — c) pl. N. pr. eines Volkes, v. l. für झाङ्गल VP. II, 176, N.; vgl. Hiouen-thsang II, 177. 412. Vie de Hiouen-thsang 208 und लङ्गल. — d) N. pr. eines Sohnes des Çuddhoda und Enkels des Çâkja Bhâg. P. 9,12,13; vgl. राङ्गल. — 3) f. ई a) Bez. verschiedener Pflanzen: Jussiaea repens Lin. AK. 2,4,3,29. H. an. Med. Hemionitis cordifolia Ratnam. 10. = रास्ना 49. Rubia Munjista und Hedysarum lagopodioides Dhanv. in Nigh. Pr. — Pañkat. 1,10,51. °कल्क Suçr. 1,370,11. 2,49,12. 150,21. Nach den Erklärern zu AK. 2,4,5,34 auch = लाङ्गलिन् Cocosnussbaum. — b) N. pr. eines Flusses MBh. 2,374. — Vgl. ग्रास्य°, डुष्ट°, मुख°.

लाङ्गलक 1) am Ende eines adj. comp. = लाङ्गल Pflug; s. पञ्च°. — 2) adj. Bez. eines pflugähnlichen chirurgischen Schnittes: द्वाभ्यां समाभ्यां पार्श्वाभ्यां छेदो लाङ्गलको मतः । ह्रस्वमेकतरं यत्र सो ऽर्धलाङ्गलकः स्मृतः Suçr. 2,59,4. — 3) f. लाङ्गलिका = लाङ्गली Jussiaea repens Lin. Çabdar. im ÇKDr. — 4) f. लाङ्गलिकी f. dass. Ratnam. 38. Suçr. 1,33,8. 146,4. 157,11. 2,62,3. 117,15.

लाङ्गलग्रह m. Pflüger, Landmann P. 3,2,9, Vârtt. 1.

लाङ्गलचक्र n. Bez. eines best. pflugähnlichen Diagramms Gjotistattva im ÇKDr.

लाङ्गलध्वज adj. einen Pflug im Banner habend; m. Bein. Balarâma's MBh. 5,44. Râga-Tar. 1,61.

लाङ्गलपद्धति f. der Weg des Pfluges d. i. Furche AK. 2,9,14. Halâj. 2,421.

लाङ्गलाख्य adj. nach dem Pfluge benannt; subst. Bez. der Jussiaea repens Lin. Suçr. 2,109,1.

लाङ्गलायन m. patron. von लाङ्गल Ait. Br. 5,3. pl. N. einer Schule, = लाङ्गल Müller, SL. 373.

लाङ्गलाह्वया f. = लाङ्गलाख्य Suçr. 1,132,14. 2,25,15. 522,4.

लाङ्गलि m. patron. von लाङ्गल, N. pr. eines Lehrers VP. 282. Verz. d. Oxf. H. 55,b,6. 16.

लाङ्गलिक 1) m. Bez. eines best. vegetabilischen Giftes H. 1199. — 2) f. ई Methonica superba Lam. AK. 2,4,4,6. — लाङ्गलिका s. u. लाङ्गलक.

लाङ्गलिन् 1) adj. mit einem Pfluge versehen: फालकुद्दाल° (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) R. 2,32,28. — 2) m. a) Bein. Baladeva's H. an. 3,408. Med. n. 204. MBh. 1,8015. 9,2156. Hariv. 2069. Megh. 50. Verz. d. Oxf. H. 97,b,5. — b) N. pr. eines Lehrers P. 6,4,144, Vârtt. 1. Verz. d. Oxf. H. 53,a,40. 55,b,18. — c) Cocosnussbaum AK. 2,4,5,34. H. 1151. H. an. Med.

लाँङ्गलीषा und लाङ्गॅ° (लाङ्गल + ईषा) f. Deichsel am Pfluge gaṇa शकन्ध्वादि zu P. 6,1,94, Vârtt. 2. Vop. 2,13. Comm. zu Çânt. 3,17.

लाङ्गुल n. = लाङ्गूल 1) Schweif, Schwanz Sâras. zu AK. 2,8,2,18. Med. l. 127 (लाङ्गूल ÇKDr. nach ders. Aut.). Spr. 756. Hit. 76,6 (ed. Johns. लाङ्गूल). ग्र° Bhâg. P. 6,9,21. लाङ्गुलेगृह्य (absol.) v. l. im gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. — 2) das männliche Glied H. ç. 126. Med. — Vgl. गो°.

लाङ्गुलिका f. Uraria lagopodioides Dec. Râgan. in Nigh. Pr. Vgl. देव°.

लाङ्गुलिनी f. N. pr. eines Flusses VP. 185, N. 80. — Vgl. लाङ्गूलिनी.

लाङ्गूल Uggval. zu Uṇâdis. 4,90. 1) n. a) Schweif, Schwanz Nir. 6,26. AK. 2,8,2,18. H. 1244. an. 3,680. Halâj. 2,286. 3,23. 5,69. Çâṅkh. Çr. 17,5,10. MBh. 4,1438. 13,5998. R. 5,16,22. 49,3. Suçr. 2,281,14. Varâh. Bṛh. S. 11,47. 62,1. 72,1. Bhâg. P. 5,23,5. Mârk. P. 83,21. Pañkat. 259,7. °चालन MBh. 5,2651. Spr. 2663. लाङ्गूलानि विचिक्षिपुः R. 6,69,22. °विक्षेप Kumâras. 1,13. लाङ्गूलमुद्यम्य Bhâg. P. 4,16,28. उच्छ्रित° R. 5,55,27. कुञ्चितायतदीर्घ ebend. समुद्धत° Hit. ed. Johns. 1614. समाविध्यत लाङ्गूलम् R. 5,3,1. 5,25. 38,37. लाङ्गूलगृह्य (absol.) gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72. — b) das männliche Glied H. ç. 126. H. an. — c) Kornkammer Comm. zu Uṇ. 4,92; fehlerhaft, wie aus Uṇâdis. 4,90 zu ersehen ist. — 2) f. ई Uraria lagopodioides Dec., eine glückbringende Pflanze, Suçr. 1,71,11. — Vgl. गो° (unter गोलाङ्गुल, eine Affenart Mâlatîm. 152,10), प्रुनो° und लाङ्गुल.

लाङ्गूलिका f. Hemionitis cordifolia Roxb. Râgan. im ÇKDr.

लाङ्गूलिन् 1) adj. geschwänzt. — 2) m. a) Affe Çabdar. im ÇKDr. — b) eine best. Heilpflanze (ऋषभौषध) Râgan. im ÇKDr. — 3) f. °लिनी N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,29; vgl. लाङ्गुलिनी.

लाज्, लाँजते (भर्त्सने, भर्त्सने) Dhâtup. 7,66. Nir. 6,9. — Vgl. लज्, लञ्ज्, लाञ्ज्.

लाजँ (vielleicht von भ्रज्ज्, भर्ज्) 1) m. pl. Trik. 3,5,6. Siddh. K. 249,b, 12. geröstetes Korn Nir. 6,9. AK. 2,9,47. Trik. 2,9,15. 3,3,147. H. 401. an. 2,75. Med. ǵ. 14. fg. Halâj. 2,430. VS. 19,13. 81. 21,42. Çat. Br. 12,8,2,7. 10. 9,1,2. 13,2,1,5. Âçv. Gṛhj. 1,7,8. 15. Kauç. 29. Kâtj. Çr. 20,4,32. Pâr. Gṛhj. 1,6.7. MBh. 1,5415. 3,15326. 16078. 5,7477. 6,5764. 7,2776. 13,2447. 4737. 15,432. Hariv. 9076. R. 1,53,2 (54,2 Gorr.). 73,21. 2,43,13. 91,54 (100,52 Gorr.). 6,96,16. 97,19. Vâgbh. 6,37. Suçr. 1,236,5. °मण्ड 229,6. लाजाञ्जनचूर्ण 2,473,7. °वर्षा 296,16. 299,5. पुष्पलाजाग्र्यलंकृत 1,71,8. Kâm. Nîtis. 7,52. Ragh. 2,10. 4,27. Kumâras. 7,69. 80. fg. Varâh. Bṛh. S. 43,36. 48,19. 35. 87,14. Kathâs. 34,257. 50, 138. 140. 103,192. fg. 195. Râga-Tar. 1,370. 2,119. Bhâg. P. 4,9,57. 21, 2. 5,9,16. 8,21,6. Pañkat. 3,13,12. Auch f. लाजा Med. R. 4,25,26. शर्करालाजामधुके: Suçr. 2,97,7. लाजैर्वा तण्डुलैर्भृष्टैर्लाजामण्डः प्रकीर्तितः Çârṅg. Saṃh. 2,2,119. Varâh. Bṛh. S. 43,60. Pañkat. 158,3. Nach H. an. und Med. soll m. sg. = घार्द्रतण्डुल, nach Hâr. 149 = खाजिक, उशुष sein. — 2) n. die Wurzel von Andropogon muricatus H. an. Med.

लाँजि m. nach Mahîdh. eine Menge gerösteter Körner VS. 23,8. nach Comm. zu TBr. 3,9,4,8 voc. von लाजिन् = लाजोपलक्षित; vgl. VS. Prât. 2,20. 50.

लाजी f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,35. — Vgl. इन्द्रलाजी.

लाञ्छ्, लाँञ्छति (लक्षणे) Dhâtup. 7,27. लाञ्छित gekennzeichnet, markirt, versehen mit (instr. oder im comp. vorangehend) Verz. d. Oxf. H. 222,b,18. Sarvadarçanas. 64,19. शिलास्तम्भं चक्रेणोपरि लाञ्छितम् Kathâs. 12,174. विद्याधरमहाचक्रवर्तिलक्षण° 43,212. 113,26. Ragh. 10, 61. Vikr. 53. श्रीशब्द° Râga-Tar. 3,353. वक्षस्तनखलाञ्छितम् 4,663. Prab. 21,16. 81,15. Bhâg. P. 10,16,63. Pañkat. 3,13,24. ग्रग्रपद° TBr.

Comm. I,37,10. — Vgl. लक्त, लक्तय्.

लाञ्छन (= लक्षण und wohl auch daraus entstanden) 1) n. a) *Zeichen, Abzeichen, Mal* Nir. 4,10. AK. 1,1,2,18. 3,4,18,118. H. 106. an. 3,407. Med. n. 119. Halâj. 1,27. 44. fg. 2,283. 5,34. Bhâg. P. 3,28,21. Schol. zu Kâtj. Çr. 20,1,33. im Monde Kumâras. 7,35. eines Fürsten Kathâs. 23,70. Bhâg. P. 1,17,1. 29. 9,24,58. 10,68,27. eines Gottes Verz. d. Oxf. H. 183,b,1 v. u. *Feldzeichen* Ragh. 3,53. *Schandfleck* Spr. 225. 420. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) *gekennzeichnet durch* so v. a. *versehen mit:* किरीट° (शिरस्) Hariv. 4370. Ragh. 6,18. 16,84. Kathâs. 15,92. स्वनाम° so v. a. *benannt nach* 52,215. श्रीकण्ठपद° Uttarar. 1,10 (2,4). — 2) *Name, Benennung* H. an. Med. — Vgl. पद्म°, मृग°, शश°.

लाञ्ज्, लाञ्जते = लाज् Dhâtup. 7,67.

लाट (nach Lassen aus राष्ट्र) 1) m. pl. N. pr. eines Volkes und des von ihm bewohnten Gebietes, das Λαρικη des Ptolemaeus Trik. 3,3,102. H. an. 2,97. Med. ṭ. 26. LIA. I,108, N. 2. MBh. 13,2158. Varâh. Bṛh. S. 69, 11. Verz. d. Oxf. H. 338,b,26. Verz. d. B. H. No. 595. °देश Kathâs. 78,119. 47, 106. °विषय 74,138. Râǵa-Tar. 6,300 (wo wohl °शौडीडुसंश्रय: zu lesen ist). Çatr. 14,166. °मालवलक्ष्मीलतापरशु Hall in der Einl. zu Vâsavad. 51. लाटान्वय Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,507, Çl. 31. °जन Sâh. D. 260,14. °नारी Kathâs. 19,104. °रामका: Verz. d. Oxf. H. 217,b, N. °भाषा 323,b,34. Sarvadarçanas. 178,12. लाटेश्वर Daçak. 24,5. — 2) adj. (f. ई) *zu* Lâṭa *in Beziehung stehend:* नरेश्वर Râǵa-Tar. 1,300 (नाट beide Ausgg.). 4,209. स्त्रिय: Verz. d. Oxf. H. 217,b,19. रीति Sâh. D. 629. भाषा Kâvjâd. 1,35. m. *ein Fürst der* Lâṭa Kathâs. 122,3. — 3) m. *Kleid, Gewand* (वस्त्र, अंशुक) Trik. H. an. Med. *abgetragene Schmucksachen u. s. w.* (जीर्णभूषणादि) Çabdar. im ÇKDr.

लाटक adj. (f. लाटिका) *zu den* Lâṭa *in Beziehung stehend, bei ihnen gebräuchlich:* रीति Sâh. D. 625.

लाटाचार्य m. *der Lehrer der* Lâta, N. pr. eines Astronomen Kern in der Einl. zu Varâh. Bṛh. S. 53. Weber, Ǵjot. 9. 10. لاٹ Albyrouny bei Reinaud, Mém. sur l'Inde 331. fälschlich लाढाचार्य Colebr. Misc. Ess. II, 409.

लाटानुप्रास m. *die Alliteration der* Lâṭa, in der Rhet. *Wiederholung desselben Wortes in derselben Bedeutung aber in anderer Verbindung* Sâh. D. 638. 584. 238,18. Pratâpar. 72,b,9. Verz. d. Oxf. H. 210,a, N.

लाटायन Colebr. Misc. Ess. I, 100 fehlerhaft für लाट्यायन.

लाटीय adj. = लाटक: रीति Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489, Z. 22.

लाट्य्, लाट्यति (जीवने, nach Andern दीप्तौ पूर्वभावे धौर्त्ये स्वप्ने च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लाट्यायन m. N. pr. des Verfassers eines Sûtra Weber, Lit. 73. fgg. Müller, SL. 181. 199. 210. Ind. St. 1,18. 43. 48. fgg. 5,437. fgg. 446. fg. Verz. d. B. H. 71, Z. 4 v. u. No. 309. fg. 312. 327. Verz. d. Oxf. H. 279,a,38. 378,b, No. 384. 379,a,1. 383,b, No. 467. 393,a, No. 84.

लाड्, लाडयति (आक्षेपे, क्षेपे Kavikalp. im ÇKDr.) Dhâtup. 35,81, v. l.

लाड m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,226. eines fürstlichen Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,b,7.

लाडखान m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 218,b,4.

लाडन 1) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 180,b,34. °मल्ल desgl. Verz. d. B. H. 173,22. — 2) n. s. u. लालन 3).

लाडम m. N. pr. eines Mannes Hall 28.

लाडि m. patron. gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80. f. लाड्या ebend.

लाढाचार्य s. u. लाटाचार्य.

लाण्ठनी (!) f. = कुलटा H. ç. 111.

लातव्य m. patron. von लतु Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,78. Shaḍv. Br. 4,7 (लालव्य Sâj. zu Pañkav. Br. 8,6,8). N. pr. eines Kämmerers Vikr. 77, 10. 78,9. 85,15.

लाति könnte nom. act. von ला sein in देव°.

लात्त m. mystische Bez. *des Buchstabens* व Weber, Râmat. Up. 317. fg.

लान्तकज m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Ǵaina H. 93.

लान्द्र gaṇa यावादि zu P. 5,4,29. Davon adj. लान्द्रक ebend.

लाप m. nom. act. von लप्; s. सल्लाप.

लापय् caus. von लप् und ली.

लापिका s. अन्तर्ला° und बहिर्ला°.

लापिन् (von लप्) adj. 1) *sprechend, sagend, verkündend:* शुचि° Hariv. 8637. प्रोषिताह्नदयशोक° Ghaṭ. 11. — 2) *jammernd, wehklagend* Mârk. P. 8,171.

लाप्य partic. fut. pass. von लप् P. 3,1,126. Vârtt. 3 zu 124. Vop. 26,12.

लाब m. = लब *eine Art Wachtel, Perdix chinensis* AK. 2,5,25. यदुत्तरं बर्हिणलाबयोर्भवेत् R. 3,53,58. Suçr. 1,73,7. 200,20. 2,59,13. 364,2. 412,3. 441,15. 480,2. Auch लाबा f. Râǵan. im ÇKDr. Fast überall लाव geschrieben.

लाबक m. dass. Trik. 2,5,31. 3,3,73. H. an. 3,137. Med. gh. 10. Suçr. 2,232,20. Verz. d. B. H. No. 897. °युद्ध Verz. d. Oxf. H. 217,a, 13. लाबकीयूष Suçr. 2,459,8. Ueberall लावक geschrieben.

लाबाक्ष m. *eine Art Reis* (*Wachtelauge*) Siddh. in Nigh. Pr. °क Suçr. 1,196,2. mit व gedr.

लाबु und लाबू = अ° Çabdar. im ÇKDr. mit व gedr.

लाबुकायन m. N. pr. eines in Ǵaimini's Sûtra genannten Philosophen Colebr. Misc. Ess. I, 296. wohl fehlerhaft für लामकायन.

लाबुकी (लावुकी gedr.) f. *eine Art Laute* Hâr. 211; vgl. अलाबुवीणा unter अलाबु 1).

लाभ्, लाभयति (प्रेरणे) Dhâtup. 35,81.

लाभ (von लभ्) m. 1) *das Finden, Antreffen* M. 10,115. पुंस: Spr. 5309. विदेशे बन्धुलाभ: Kathâs. 25,70. — 2) *das Bekommen, Kriegen, Erlangung; Gewinn, Vortheil* AK. 2,9,80. H. 869. धर्म° Kâtj. Çr. 4,3,19. °काम 7,3. M. 6,57. fg. हिरण्यभूमि° Jâǵñ. 1,351. अर्थ° R. 2,40,9. 106, 4. अस्त्र° R. Gorr. 1,4,19. स्त्रीरत्न° Ragh. 7,31. परितोष° 11,92. शुद्धि° 12,10. अनिष्टादिष्टलाभे Spr. 104. भुवस्तस्या: 193. स्थान° 2922. अमात्य°, धन° 4613. Varâh. Bṛh. S. 50,17. 52,3. 53,75. 87,8. Râǵa-Tar. 2,142. 3,364. Bhâg. P. 3,6,37. 5,17,3. Hit. 47,12. 57,20. Daçak. 77,16. निद्रा° Pañkat. 202,10. लाभमिवेष्टमाप्य R. Gorr. 2,2,36. यदृच्छालाभसंतुष्ट Pañkar. 4,8,52. इमं लब्धवाँल्लाभम् MBh. 1,6474. कच्चिदभ्यागता दूराद्वणिजो लाभकारणात् 2,249. 3,2531. 4,488. 13,1640. P. 5,1,47. Jâǵñ. 1,275. 2,195. Ragh. 8,92. Spr. 62. 735. 1672. 2299. 5055 (Gegens. व्यय). Varâh. Bṛh. S. 42,3. 4. 7. 51,23. 72,6. Kathâs. 32,138. Bhâg. P. 1,2,9. 10. Mârk. P. 33,12. द्विगुणा° Pañkat. 88,8. अल्प° Dhûrtas. 76,

19. SARVADARÇANAS. 74,13. 16. 75,2. 6. धर्मे स्थितिः परो लाभः R. GORR. 2,18,47. 4,4,12. वर्तते चोत्तमां वृत्तिं लक्ष्मणो ऽस्मिन्सदानघ। दयावान्सर्वभूतेषु लाभस्तस्य महात्मनः॥ *sein Vortheil* so v. a. *seine grösste Freude* R. SCHL. 2,44,5. लाभालाभौ *Gewinn und Verlust* JÂGN. 2,259. BHAG. 2,38. R. 2,22,22. लाभालाभं च पण्यानाम् M. 9,331. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): पुत्रलाभा (= लब्धपुत्रा NILAK.) च सा पत्नी न तुतोष MBH. 1,4197; wir vermuthen, dass °लाभाच्च zu lesen sei. — 3) *Einnahme* so v. a. *Eroberung:* पुराणाम् VARÂH. BṚH. S. 7,19. 30,23. दुर्ग° HARIV. 6192. — 4) *Auffassung, Erkenntniss* ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 111. SÂH. D. 6,7. BHÂG. P. 1,11,4. 5,6,20. 9,10. 18,20. 6,9,21. 7,9,11. KUSUM. 57, 11. — 5) Bez. *des 11ten astr. Hauses* (vgl. आय) VARÂH. BṚH. S. 40,6. 78,25. 98,17. 104,24. 31. BṚH. 1,12. 9,5. 11,17. Ind. St. 2,176. °स्थान Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,34. — Vgl. अ°, दुर्लभ, पुनर्लाभ (auch R. 5,19, 22), भूमि°, भोग°, मित्र°, यथालाभम्.

लाभक (von लाभ) m. *Gewinn, Vortheil* VARÂH. BṚH. S. 42,12. fg.

लाभम् absol. von लभ्, = लम्भम् P. 7,1,69. VOP. 24,7.

लाभलिप्सा f. *Gewinnsucht* Spr. 5311.

लाभवत् (von लाभ) adj. *einen Gewinn habend, im Gewinn seiend* Spr. 4697. परिशुद्धेव लाभवान् KATHÂS. 5,98. am Ende eines comp.: भूरिहस्त्यश्वग्राम° *in den Besitz von — gekommen* 74,259.

लाभिन् (von लभ्) adj. *findend, bekommend:* स्वसत्वस्य परीत्तात्तपालाभिनः RÂGA-TAR. 5,131.

लाभ्य n. angeblich = लाभ ÇABDAR. im ÇKDR.

लामकायन m. patron. von लमक gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Lehrers LÂṬJ. NIDÂNAS. und DRÂHJ. (s. Ind. St. 4,384). संवर्गजित् Ind. St. 4,373. लामकायनाः = लमकाः gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69.

लामकायनि m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 59,10.

लामकायनिन् m. pl. *die Schule des* Lâmakâjana Ind. St. 1,45. fg.

लामगायनि m. = लामकायनि Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,17, wo die Hdschrr. लोमगायिनि lesen.

लामज्जक n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* AK. 2,4,5,30. RATNAM. 120. SUÇR. 1,146,5. 2,101,2. 297,10.

लाँय von unbekannter Bed. in der Stelle: अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् ṚV. 10,42,1. Könnte als absol. von ली gefasst werden, etwa *sich duckend.*

लायक nom. ag. von ली AV. PRÂT. 3,40, Sch.

लाल m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. B. H. No. 881 (vgl. Ind. St. 2,245. 417). — Vgl. नन्द°.

लालक (vom caus. von लल्) adj. (f. लालिका) *liebkosend, schmeichelnd* NALOD. 2,28.

लालचन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,45.

लालन (vom caus. von लल्) 1) adj. *liebkosend, hätschelnd.* — 2) m. Bez. *eines best. giftigen mausartigen Thieres* SUÇR. 2,281,14. Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,18. — 3) n. *das Liebkosen, Hätscheln, Hegen und Pflegen:* सुतस्य Spr. 1260. लालने (v. l. लाडने) बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः। तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत्॥ 2664. (तृणाकुणकस्य) पोषणापालनलालनप्रीणानानुध्यानेन BHÂG. P. 5,8,5. 6. 25. अण्डस्थफणि° RÂGA-TAR. 5,290.

लालनीय (wie eben) adj. *zu liebkosen, zu hätscheln, zu hegen und zu pflegen* HARIV. 7203. 7246. R. GORR. 2,38,7. 4,14,23. KATHÂS. 121,264.

लालय् caus. von लल् und ली.

लालयितव्य adj. = लालनीय MBH. 13,2488. HARIV. 11264.

लालवत् (von लाला) adj. *den Speichel triefen lassend:* अति° SUÇR. 2,281,14.

लालव्य s. u. तालव्य.

लालस 1) adj. (f. आ) *heisses Verlangen tragend —, begierig nach* H. ç. 102. an. 3,754. HALÂJ. 2,198. JÂDAVA bei MALLIN. zu ÇIÇ. 4,6. सर्वे लालसभूताः स्म तस्माद्यास्यामहे सह MBH. 3,10854. BHÂG. P. 4,20,27. विषयेषु 24,66. 10,51,51. अ° MBH. 12,8467. überaus häufig in comp. mit der Ergänzung: पुत्रदर्शन° MBH. 1,4743. 3,1817. 2484. 2524. 13,4036. R. 1,9,58 (56 GORR.). 2,92,9. R. GORR. 2,13,21. 26,5. 30,24. 5,16,50. 29,6. SUÇR. 1,192,4. KUMÂRAS. 7,56. KATHÂS. 52,357. BHÂG. P. 1,11,3. उत्सव° HARIV. 3788. पतिलालसा MBH. 3,2532. रुधिर° 12,4273. सर्व° 13,1164. पुत्र° R. 2,74,9. काम° R. GORR. 2,18,5. ÇRUT. 34. 36. ÇIÇ. 4,6. Spr. 685. 1170. GÎT. 1,37. KATHÂS. 15,126. 52,270. RÂGA-TAR. 4,242. 6,213. SÂH. D. 55,13. BHÂG. P. 3,23,46. 4,7,44. 5,14,42. PAÑKAT. 81,21. *Gefallen findend an, ganz hingegeben:* शोक° *sich der Trauer ganz ergebend* MBH. 1,504. 12,1127. R. 2,21,20. 57,30. 87,8 (85,8 GORR.). R. GORR. 2,61,1. 79,36. 112,18. 4,18,19. 19,6. 6,8,27. मृगव्यसन° BHÂG. P. 4,26,4. मण्डूकगति° PAÑKAR. 4,8,95. davon nom. abstr. °ता f.: °विलासलालसतया तासाम् Verz. d. Oxf. H. 110,*a*, No. 173, Çl. 2. — 2) m. und f. (आ) *heisses Verlangen* (तृष्णातिरेक, औत्सुक्य, याच्ञा, प्रार्थन) AK. 1,1,2,28. 3,4,20,231. H. 541. H. an. MED. s. 33. HALÂJ. 2,343. लोला यौवनलालसा: Spr. 2072. लालसा P. 7,1,51, Vârtt. 2. — 3) f. आ ein best. Metrum: *4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑–⏑––, ⏑–⏑––⏑– Ind. St. 8,397. — MBH. 10,84 ist mit der ed. Bomb. नालसः st. लालसः zu lesen; 7,3383 hat die ed. Bomb. प्रचीनूं जटिलाननान् (vgl. u. जटिल in den Nachträgen).

लालसिंह m. N. pr. eines Astronomen COLEBR. Misc. Ess. II,409. — Vgl. लल्ल.

लाला f. *Speichel* AK. 2,6,2,18. H. 633. VÂGBH. 6,141. SUÇR. 2,129, 19. 257,8. 15. °क्लिन्न Spr. 728. 3179. 5321. ṚT. 1,21. VARÂH. BṚH. S. 90,6. KATHÂS. 87,44. अश्व° 102,153. SÂH. D. 180. °पूर्णार्णव BHÂG. P. 5, 26,23. कोशकारकस्य JÂGN. 3,147. — Vgl. अश्व°.

लालाट (von ललाट) adj. *auf der Stirn befindlich:* नेत्र PRAB. 1,12.

लालाटि m. patron.; pl. SAṀSK. K. 184,*a*,8.

लालाटिक 1) adj. *an der Stirn befindlich* Schol. zu KÂTJ. ÇR. 688,12. — 2) *auf die Stirn* (des Herrn) *schauend;* m. *ein aufmerksamer Diener* P. 4,4,46. AK. 3,4,1,17. H. an. 4,29. fg. MED. k. 210 (wo भाल st. भाव zu lesen ist). so ist wohl zu lesen st. लागुडिक PAÑKAT. ed. Kos. 230,19 und st. लाकुटिक ed. BÜHLER 41,2 v. u. — 3) adj. *zu einem Geschäft untauglich (sich auf die Stirn des Herrn verlassend)* AK. H. an. MED. — 4) m. *eine Art Umarmung* H. an. MED.

लालाटी f. = ललाट *Stirn* SUÇR. 1,361,8. 2,120,12.

लालाभक्ष m. N. einer Hölle, in der ein Missethäter *Speichel* als *Speise* geniesst, VP. 207. fg. BHÂG. P. 5,26,7 (vgl. 23).

लालामिक adj. (f. ई) = ललामं गृह्णाति P. 4,4,40.

लालामेह m. *Absonderung schleimigen Harnes* ÇÂRÑG. SAṀH. 1,7,43.

लालाय् (von लाला), °यते *den Speichel triefen lassen:* वक्त्रं लालायते Spr. 831. लालायित *Geifer entlassend:* फणिन् ÇKDR. (इत्यनन्तदेवोक्त-गणेशलिखितपाणिनिव्याकरणीयमहाभाष्यम्).

लालाविष adj. *dessen Speichel Gift ist*, von giftigen Insecten H. 1313.

लालास्रव m. = लालास्राव *Spinne* H. 1210, Sch. (°श्रव).

लालास्राव m. 1) *Speichelfluss* SUÇR. 1,102,2. 2,278,14. — 2) *Spinne* (*Speichel fliessen lassend*) H. 1210.

लालास्राविन् adj. *mit Speichelfluss verbunden, solchen bewirkend* SUÇR. 1,303,21. 304,15.

लालिक m. *Büffel* H. 1283. — Vgl. लाविक.

लालित s. u. dem caus. von लल्; davon °क m. *Günstling, Liebling* RÂGA-TAR. 5,228 (hier vielleicht N. pr.). 6,152. 166. 264.

लालित्य (von ललित) n. *Anmuth* SÂH. D. 129. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234, Z. 13. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 6.

लालील m. als Name Agni's TAITT. ÂR. 10,1,7.

लाल्य adj. = लालनीय Spr. 2985 (Conj.).

1. लाव (von लू) adj. (f. ई) *schneidend, abschneidend, pflückend:* कुशसूचि° RAGH. 13,43. कुसुमलावी f. *Blumenleserin* Spr. 1575. शत्रु° *Feinde zerhauend, — tödtend* BHAṬṬ. 6,87. — Vgl. काण्ड°, पुष्प°.

2. लाव s. लाब.

1. लावक (von लू) nom. ag. *Abschneider, Mäher* P. 6,1,78, Sch. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 170. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 132,14. MÂRK. P. 46,16.

2. लावक s. लाबक.

लावण (von लवण) adj. *salzig, gesalzen* H. 411. HÂR. 181 (त्यावण gedr.). HARIV. 2980. SUÇR. 2,334,12.

लावणिक (wie eben) 1) adj. (f. ई) Schol. zu P. 4,4,15. 7,3,50. *a) mit Salz zubereitet, gesalzen;* s. उद°, दक°. — *b) mit Salz handelnd*, m. *Salzhändler* P. 4,4,52. — 2) n. *Salzgefäss* ÇKDR. und WILSON.

लावण्य (wie eben) n. gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. 1) *Salzigkeit* Spr. 1780 (zugleich in der Bed. 2). — 2) *Anmuth, Schönheit:* मुक्ताफलेषु च्छायायास्तरलत्वमिवान्तरा । प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते ॥ UGGVALANÎLAMAṆI im ÇKDR. ÇÂK. 141. KUMÂRAS. 7,18. Spr. 505. 863. 1631. 1780. 1970. 2667. fg. 3294. 3664. 3728. VARÂH. BṚH. S. 105,8. KATHÂS. 14,68. 17,7. 27,65. 38,30. °लक्ष्मी 43,114. ḰAURAP. 32. PRAB. 101,12. SÂH. D. 52,12. HIT. 63,15. VET. in LA. (III) 19,3. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 24. लोचन° KATHÂS. 28,20. इन्दोः 17,109. Spr. 3825. स्वर° SUÇR. 1,180,11. पुस्तकस्य RÂGA-TAR. 3,261. Am Ende eines adj. comp. f. आ ÇÂK. 110. KATHÂS. 54,238. 50,182.

लावण्यमञ्जरी f. N. pr. eines Frauenzimmers KATHÂS. 69,160.

लावण्यमय (von लावण्य) adj. (f. ई) *anmuthig, schön* KUMÂRAS. 1,25.

लावण्यवत् (wie eben) 1) adj. dass. — 2) f. °वती ein Frauenname KATHÂS. 87, *i*. 98,7. Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,30. HIT. 39,19.

लावण्यार्जित (लावण्य + अ°) adj. *durch Anmuth erlangt*, Bez. *desjenigen unantastbaren Besitzes einer Frau* (स्त्रीधन), *den sie als Hochzeitsgeschenk von ihren Schwiegereltern erhielt:* प्रीत्या दत्तं तु यत्किंचिच्छ्वश्र्वा वा श्वशुरेण वा । पादवन्दनिकं यत्तल्लावण्यार्जितमुच्यते ॥ VIVÂDAḰ. 138,14. fg.

लावात्त, °क s. u. लाबात्त.

लावाणक m. 1) N. pr. einer an Magadha grenzenden Oertlichkeit KATHÂS. 15,119. 19,118. 44,45. 166. 170 (an den drei letzten Stellen fälschlich लावानक gedr.). — 2) N. des 3ten Lambaka im Kathâsaritsâgara KATHÂS. 1,4. 20 in der Unterschr.

लावानक s. u. लावाणक 1).

लाविक m. = लालिक ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

लाविन् (von लू) adj. *abschneidend, pflückend* in पुष्प°.

लावु, लावू und लावुकी s. लाबु u. s. w.

लावेरणि m. patron. gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. लावेरिणि (!) PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 56,8. — Vgl. लवेरणि.

लावेरणीय adj. von लावेरणि gaṇa गहादि zu P. 4,2,138.

लावेरिणि s. u. लावेरणि.

लाव्य (von लू) adj. *was durchaus geschnitten werden muss* Schol. zu P. 3,1,125. 6,1,80. — Vgl. लव्य.

लाषुक (von 1. लष्) adj. *begehrlich, habsüchtig* P. 3,2,154. VOP. 26,146.

लास m. 1) (von 1. लस्) *das Springen, Hüpfen, Sichhinundherbewegen:* मदनजनितलासैः — दृष्टिपातैः ṚT. 6,30. मदजनितविलासैः v. l. *Tanz, Frauentanz* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) *Fleischbrühe, Brühe* (यूष) ÇABDAḰ. im ÇKDR.

लासक (von 1. लस्) 1) adj. *a)* = लसक MED. k. 149. fg. — *b) hinundherbewegend:* (नभस्वान्) कुसुमभरनतानां लासकः पादपानाम् ṚT. 2,27. — 2) m. *a) Tänzer* H. an. 3,91. MED. neben नर्तक unter den Beinamen Çiva's R. 7,23,4,47. — *b) Pfau* H. an. MED. — *c)* N. pr. eines *Tänzers* KATHÂS. 74,36. — *d)* = वेष्ट DHAR. im ÇKDR. — 3) f. लासिका *a) Tänzerin* AK. 1,1,7,8. H. an. 3,56. MED. k. 107. KATHÂS. 57,75. — *b) eine Art Schauspiel*, v. l. für विलासिका SÂH. D. 205,7. — 4) f. लासकी *Tänzerin* ÇKDR. und WILSON. — 5) n. = अट्टक *Thurm* HÂR. 159. — Vgl. कविलासिका, तर्कुलासक.

लासन (wie eben) n. *das Hinundherbewegen, Schwingen:* तोमराङ्कुशलासनैः MBH. 7,5923 nach der Lesart der ed. Bomb., °पाशनैः ed. Calc.

लासवती (von लास) f. N. pr. eines Frauenzimmers KATHÂS. 74,38. fgg.

लासिन् (von 1. लस्) adj. *sich hinundherbewegend, tanzend;* s. रङ्गलासिनी.

लास्फोटनी f. = आस्फोटनी RÂJAM. zu AK. 2,10,34 nach ÇKDR.

लास्य (von लस्) 1) n. *Tanz, Tanz mit Begleitung von Instrumentalmusik und Gesang* AK. 1,1,7,10. H. 280 (vgl. Comm.). MED. j. 32. fg. HALÂJ. 1,93. MBH. 1,3905. 2,349. 7,2860. 15,426. RÂGA-TAR. 4,422. MÂRK. P. 129,9. BHAR. NÂṬJAÇ. 18,117. DAÇAR. 1,4. लास्याङ्गानि दश 3,46. fgg. SÂH. D. 433. Verz. d. Oxf. H. 187,*b*, No. 428, Z. 24. 200,*a*,7. 9. 203,*a*, No. 484, Z. 12. 256,*a*,16. अलास्याः क्रीडामयूराः RAGH. 16,14. विलोलदोर्वल्लरीललित° PAṄḰAR. 3,5,21. लता° KATHÂS. 35,5. ḰHANDOM. 76. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,26 (Ind. St. 8,351, N. 11). — 2) m. *Tänzer* ÇABDAR. im ÇKDR. °पाठिनाम् MÂRK. P. 68,26. लास्या f. *Tänzerin* ÇABDAR. im ÇKDR.

लास्यक n. = लास्य 1) ÇABDAR. im ÇKDR.

लाहरिमह्ल m. N. pr. eines Feldherrn KSHITÎÇ. 32,20. fgg.

लाह्य m. patron. von लह्य gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. 3,3,1.

लौह्यायनि (von लाह्य) m. patron. des Bhugju ÇAT. BR. 14,6,3,1. 2.

so ist wohl auch Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59, 13 st. नह्मायनि zu lesen.

लि m. *weariness, fatigue; loss, destruction; end, term; equality, sameness; a bracelet* Wilson nach Çabdârthak.

लिकावन्ध Verz. d. B. H. No. 845 ohne Zweifel fehlerhaft.

लिकुच 1) m. = लकुच AK. 2,4,2,41. Daçak. 180,5. — 2) n. = चुक्र Râgan. im ÇKDr.

लिक्का f. = लिक्षा Çabdar. im ÇKDr.

लिक्षा f. AK. 3,6,1,10. *Niss, das Ei einer Laus* Uggval. zu Unâdis. 3,66. H. 1208. als Maass = 8 Trasarenu M. 8,133. Jâgñ. 1,361 (*Mohnkorn* Stenzler). सप्त गोरश्मोस्यैकं लिक्षारजः। सप्त लिक्षाः सर्षपः Lalit. ed. Calc. 170,1.2. लिक्ष (so) = 8 वालाग्र Varâh. Bṛh. S. 58,2. यूकालिक्षम् *Läuse und Nisse* Uggval. zu Unâdis. 3,47.

लिक्षिका f. dass. Çabdar. im ÇKDr. u. लिक्षा.

लिख् (= älterem रिख्), लिखति (अक्षरविन्यासे) Dhâtup. 28,72. लिखते, लिलेख, अलेखीत्, लिखिष्यति (Hariv. 9983), लिखितुम् (विलेखितुम् P. 3,4,13, Sch.), लिखित्वा (nur dieses zu belegen) und लेखित्वा P. 1,2, 26. Vop. 26,207. लिख्य Weber, Râmat. Up. 308. fg. pass. लिख्यते, अलेखि, लिखित. 1) *ritzen, aufreissen, furchen, kratzen* AV. 12,3,22. 20, 132,8. द्यां मा लेखीः VS. 5,43. TS. 6,3,3,3. इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत् स दिवमलिखत् सो ऽर्यम्णः पन्था अभवत् TBr. 1,7,6,6. नखैर्लिखितो दशनैर्दशन्तः R. 5,61,20. ततो वाली विषाणाग्रैर्लिखितो दनुसूनुना 4, 9, 76. मार्जारा भृशमवनिं नखैर्लिखन्तः Varâh. Bṛh. S. 28,5. गां खुराग्रैस्तथा — लिखन्तः प्रययुस्तदा (हयाः) MBh. 12,1918. पद्भ्यां मही लिखति R. 6,2,17. लिखन्नास्ते भूमिम् Spr. 2669. Bhâg. P. 3,23,50. 10,29,29. Sâh. D. 60,2. मूर्ध्ना दिवमिवालिखत् Bhaṭṭ. 15,22. mit der Lanzette *ritzen* Suçr. 2,7, 10. तुण्डेन लिखेच्चेद्रा स्वपिच्छानि *picken* Varâh. Bṛh. S. 95,31. काकश्च तस्योपरि चञ्च्वा किमपि लिखतु Hit. 43,15. — 2) *durch Ritzen u. s. w. Etwas hervorbringen, eine Linie ziehen, einritzen, einkratzen, reissen, zeichnen, schreiben, niederschreiben, malen:* यत्सीमन्तं कङ्कतस्ते लिलेख TBr. 2,7,17,3. Çat. Br. 2,6,1,12. 7,2,2,1. Kâtj. Çr. 5,3,25. 4,9. बाह्वोः प्रापणान्ते लिखति *macht einen Strich* 17,4,10. लेखाम् Çâñkh. Gṛhj. 1,7. Kauç. 76. अपसव्यलिखिता रेखा Varâh. Bṛh. S. 53,104. वर्त्म — लिखेच्छस्त्रेण पत्त्रैर्वा Suçr. 2,332,4.11. वर्त्म दुर्लिखितम् 16. साक्षिपाश्च स्वहस्तेन पितृनामपूर्वकम्। अत्राहममुकः साक्षी लिखेयुरिति समाः॥ *schreiben* Jâgñ. 2,87. fg. MBh. 1,78. fg. देवदूतस्य वचनं लिखित्वा *niederschreiben* Hariv. 5996. Mṛkkh. 140,23. वर्णोर्मी कल्पलताग्रकेषु — त्वच्चरितं लिखन्ति Çâk. 164. इत्येतदमात्येन लिखितम् 90,20. सौभाग्याक्षरपङ्क्तिरेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयम् Spr. 472. 2991 यद्या यल्लिख्यते किंचित्सत्यं संपद्यते हि तत् Kathâs. 3,50. (कथाम्) तामात्मशोणितैः — लिलेख 8,3. राज्ञो लेखं स्वहस्तलिखितम् 43,263.269. Râga-Tar. 2,6. 3,251. 522 (zu schreiben ध्यावालि°). 4,389. 5,396. fgg. Naish. 22,54. Dhûrtas. 90,17. Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,18. Mârk. P. 37,22. 97,35. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 34. Hit. Pr. 8. Çuk. in LA. (III) 34,4. तस्मिंश्च (पुस्तके) लिखितमस्ति *steht geschrieben* Pañkat. 127,9. Sarvadarçanas. 73,13. तल्लिख्यतामद्यतनो दिवसः *werde aufgeschrieben* Pañkat. 5,6. अहस्सु गण्यमानेषु क्षीयमाणे तथायुषि। जीविते लिख्यमाने च किमुत्थाय न धावसि॥ *da das Leben verzeichnet ist* so v. a. *da die Lebensdauer genau bestimmt ist* MBh. 12,12052. मूषकं हस्ते गृहीत्वा संपुटे च तम्। लिखितवास्य so v. a. *ihm gut geschrieben habend* Kathâs. 6,39. लेखा हि काललिखिता सर्वथा दुरतिक्रमा Hariv. 11109. यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः Spr. 1688. 2386. 3227. 4147. 5392. Kathâs. 40,31. Râga-Tar. 2,89. Pañkar. 1,3,13. निजपुरुषहृल्लिखितेनात्मनि पुरुषरूपेण so v. a. *in's Herz eingegraben* Bhâg. P. 5,7,7. सा लिखितेवास्ति मे हृदि Sâh. D. 69,14. लिखितपाठक *Geschriebenes hersagend d. i. ablesend* Çikshâ 32 in Ind. St. 4,270. गुरुमुखादेवाध्येतव्यं न तु लिखितपाठः कर्तव्यः Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,30. fg. Sarvadarçanas. 123,13. 124,18. उपरिलिखित-ग्राम *oben geschrieben, — erwähnt* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,7. द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ *gezeichnet* Megh. 78. Golâdhj. Sphuṭag. 32. Spr. 1797. पाणौ खड्गरेखां लिलेख 2697. पत्त्रे सीमां लिखेत् Kull. zu M. 8,255. यो मां भक्त्या लिखेत्कुड्ये *malt* MBh. 2,731. 733. मत्सादृश्यं लिखन्ती Megh. 83. Çâk. 86,17. Gît. 7,22. अलिखत्स महादेवीम् Kathâs. 5,29. 31,18. fg. 44,52. 51,124. 126. 55,75. 77. Weber, Kṛshṇag. 230. 268. 273. 283. fg. 289. fg. 299. 307. Râmat. Up. 307. 309. fg. Sâh. D. 56,14. Dhûrtas. 73,13. लिखितानलनिश्चल Kumâras. 6,48. लिखितेव *wie gemalt* so v. a. *unbeweglich* Kathâs. 17,27. 65,38. चित्रलिखित इव तस्थौ Z. d. d. m. G. 14,573,24. Hit. 42,9. लिखित n. (लिखिता f. H. 484, Sch.) *Schrift, Schriftstück, ein geschriebenes Document* AK. 2,8,1, 16. नह्यलमतिनिपुणो ऽपि पुरुषो नियतिलिखिते लेखामतिक्रमितुम् Daçak. 83,7. 8. Jâgñ. 2,20. 22. °स्थितये Râga-Tar. 3,385. 4,138. °दूषक 6,29. अन्योऽन्यलिखितं हस्ते गृहीत्वा Kathâs. 24,174. विद्यते चावयोरत्र स्वहस्तलिखितं मिथः 189. — 3) *glätten, poliren* Mârk. P. 106,50. 52. 60. 64. 107,1. 9. — 4) *coire* MBh. 13,2456 nach Nîlak., was schwerlich richtig ist.

— caus. 1) लेखयति *a) einritzen —, reissen —, schreiben —, aufschreiben lassen:* लेखे Çâñkh. Çr. 17,10,7. बलाच्चापि यल्लेखितम् *was man hat schreiben lassen* M. 8,168. Jâgñ. 2,7. यो हरिवंशं लेखयति Hariv. 6. शासनम् Kathâs. 124,62. Râga-Tar. 3,190. Weber, Kṛshṇag. 283. लेखयां चक्रतुर्द्रव्यम् *liessen verzeichnen, aufschreiben* R. Gorr. 2,2,6. *malen lassen* Kathâs. 55,70. — *b)* = simpl. *ritzen* Suçr. 2,334,4. *schreiben* Jâgñ. 2,86. चित्रमप्यथ लेखिताः (प्रतिमाः) *gemalt* Weber, Kṛshṇag. 283. — 2) लिखापयति *schreiben lassen* Verz. d. B. H. No. 53, Z. 4.

— desid. लिलिखिषति und लिलेखिषति P. 1,2,26. Vop. 19,16.

— अप *abschaben:* मलम् AV. 14,2,68.

— अभि *einritzen, reissen, zeichnen, schreiben, malen* Pañkar. 3,13, 20. Varâh. Bṛh. S. 48,29. धात्राभिलिखितान्याहुः सर्वभूतानि कर्मणा MBh. 11,174. Jâgñ. 2,93. Mṛkkh. 140,18. Vikr. 25,17. Kathâs. 17,124. 42,90. 55,37. 101,121. Vâsavad. 239,2. Dhûrtas. 91,5. अभिलिखित *gemalt* Hariv. 9991. Uttarar. 6,9 (9,13). — caus. *verzeichnen —, schreiben lassen* Jâgñ. 1,318. *malen lassen* Kathâs. 51,127. 55,76. अभिलेखित n. *ein schriftliches Document* Jâgñ. 2,149.

— अव *anritzen, wund machen* Suçr. 1,33,18. 2,65,16. तारेण 336,7. — Vgl. अवलेख fg.

— आ 1) *anritzen, mit einem Riss bezeichnen* Çat. Br. 7,4,1,43. 8, 7,2,17. स्रुच्यालिखित 10,2,1,8. Lâṭj. 10,15,17. Kauç. 137. *ritzen, kratzen* Sâh. D. 103,22. शृङ्गाभ्यामालिखन्दर्पाद्द्वारं द्विरदो यथा R. 4,9,62. आलिखन्त इवाकाशम् so v. a. *gleichsam an das Himmelszelt streifend* MBh.

4,1233. HARIV. 8971. R. 6,79,40. विन्ध्यमालिखत्तमिवाम्बरम् 7,31,15. ग्रालिख्य वितिपति *kratzend, scharrend* P. 6,1,142, Sch. — 2) *einritzen, reissen, zeichnen, aufschreiben, malen*: (रेखा) पादालिखिता VARÂH. BṚH. S. 53,103. मण्डलमालिख्य 48,24. GOLÂDHJ. GRAHAṆAV. 17. WEBER, RÂMAT. UP. 307. fg. DAÇAK. 92,2. PAṄKAR. 3,15,30. Schol. zu ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,25. ग्रालिखितमिव मतौ VARÂH. BṚH. S. S. 6, Z. 11. चित्रे ऽपि चालिखत्यस्मान् (विलि° MBH. 3,16670) SÂV. 2,13. प्रतिमाः MBH. 6,76. HARIV. 9983. R. 1,5,12 (14 GORR.). RAGH. 19,19. MEGH. 103. MÂLAV. 23. KATHÂS. 51,132. fgg. 55,43. fg. 46. 67. fgg. ग्रालिखित इव (unbeweglich) *wie gemalt* ÇÂK. 4,11. fg. तस्थावालिखितो यथा KATHÂS. 45,264. — Vgl. ग्रालिखत्, ग्रालेखन, ग्रालेख्य (auch MEGH. 70), न्यालिखित. — caus. *malen lassen* KATHÂS. 55,68. fg.

— व्या 1) *ritzen, streifen an*: खं व्यालिखन्निव विभाति स मन्दराद्रिः KIR. 5,30. — 2) *schreiben* Verz. d. Oxf. H. 172,*b*,22.

— समा *reissen, zeichnen*: प्रकान्सनत्त्रगणान्समालिखेत् VARÂH. BṚH. S. 24,6. KATHÂS. 37,9. *schreiben*: वर्णान् SARVADARÇANAS. 170,16. Verz. d. Oxf. H. 90,*a*,22. 98,*a*,2. WEBER, RÂMAT. UP. 310.

— उद् 1) *aufritzen, furchen, eine Linie ziehen* ÇAT. BR. 2,1,1,2. 4, 2,13. वेद्याम् KÂTJ. ÇR. 2,6,26. भूमौ 7,3,32. SUÇR. 1,6,16. medic. *ritzen* 2,334,20. VÂGBH. 8,15. चरणेनोल्लिखन्मक्रीम् *kratzend* MBH. 3,374. खुरेणावनिमुल्लिखन् BHÂG. P. 10,36,9. लाङ्गलोल्लिखितावनि KATHÂS. 33,31. वज्रोल्लिखितपीनांस *aufgerissen, aufgeschlitzt* R. 5,14,16. उल्लिखन्तौ सुतीक्ष्णाभिर्दंष्ट्राभिरितरेतरम् 6,32,33. वल्मीकशिखराणि शृङ्गाग्रघट्टनैरुल्लिखन् PAṄKAT. ed. orn. 5,3. शृङ्गाभ्यां तदुदरमुल्लिख्य PAṄKAT. 91,5. विषाणोल्लिखितस्कन्ध *geritzt, gerieben* Spr. 932. मन्दैश्चञ्चुप्रहारैः शिर उल्लिखिष्यामि (wohl so zu lesen st. उल्लिखयिष्यामि; °लिखामि die Hamb. Hdschrr.) *picken auf* PAṄKAT. 146,13. एष घोरो ग्रहः स्वातिमुल्लिखन्खे गभस्तिभिः *ritzend* so v. a. *sich reibend an, berührend* HARIV. 4257. खमिवोल्लिखन् *am Himmelszelt sich gleichsam reibend* d. i. *bis dahin reichend* R. 6,15,25. MBH. 3,2453 (wo खमुल्लि° st. समु° mit N. 12,39 zu lesen ist). शैलमुल्लिखत्तमिवाम्बरम् R. 4,43,38. 5,3,36. 7,18. 17,22. गगनतलमिवोल्लिखत्तम् VARÂH. BṚH. S. 12,6. उल्लिखित n. *Furche, Streifen*: विषाणोल्लिखिताङ्कित MBH. 6,2569. 4852. लाङ्गलोल्लिखित n. HARIV. 5778. — 2) *einritzen*: लेखाम् GOBH. 1,1,9. ÂÇV. GṚHJ. 1,3,1. ÇÂ. 2,6,9. VARÂH. BṚH. S. 53,102. लक्षणम् SHAḌV. BR. 5,2. — 3) *ausschnitzeln, meisseln* KUMÂRAS. 5,58. स (चित्रकृत्) स्तम्भं वीक्ष्य सुश्लक्ष्णं तत्र गौरीं समालिखत्। रूपकारो ऽपि शस्त्रेण क्रोडयैवोल्लिलेख ताम्॥ KATHÂS. 37,9. 12. उल्लिखित = उत्कीर्ण H. an. 4,100. MED. t. 188. — 4) *zu einem Bilde gestalten* so v. a. *zur Anschauung bringen*: तत्स्यात्प्रवृत्तिज्ञानं (*Erkenntniss der Aussenwelt*) यन्नीलादिकमुल्लिखेत् SARVADARÇANAS. 19,10. ग्रनुल्लिखित 105,9. fg. — 5) *glatt machen, schleifen, poliren*: संस्कारोल्लिखितो मक्रामणिः ÇÂK. 133. RAGH. 6,32. उल्लिखित = तनूकृत H. an. MED. — 6) *durchziehen, durchflechten*: मत्स्योल्लिखितमूर्धन HARIV. 12086. — 7) ein musikalisches Instrument *schlagen*: वाणम् LÂṬJ. 4,1,8. 10. — 8) *aufreissen* so v. a. *aufstören*: कफम् SUÇR. 2,480,10. — Vgl. उल्लेख fgg. — caus. = simpl. 8): धातून्मूलान्वा देहस्य त्रिशोष्योल्लेखयेच्च यत्। लेखनं तच्चथा नीरं नीरमुष्णं वचा यवः ÇÂRṄG. SAṂH. 1,4,10.

— प्रोद् *ritzen, Striche ziehen in*: प्रोल्लिखन्ती धरित्रीम् Spr. 1427. *einritzen*: लक्षणम् GṚHJASAṄGR. 1,48. 51.

— समुद् 1) *rings umfurchen und ausheben, ausstechen*: पदम् ÇAT. BR. 3,3,1,6. *ritzen, furchen*: तुषारसंघातशिलाः खुराग्रैः समुल्लिखन् — ककुद्मान् KUMÂRAS. 1,57. उत्तरद्वारम् — समुल्लिखदिवाम्बरम् *das Himmelszelt gleichsam ritzend, sich daran reibend, es berührend* R. 5,9,25. — 2) *aufschreiben, niederschreiben, aufführen* (in einem Buche): ग्रलौकिकवादमरः स्वकोषे न यानि नामानि समुल्लिलेख॥ TRIK. 1,1,2. — समुल्लिखद्भिः MBH. 3,2453 fehlerhaft für खमुल्लि°.

— उप *umreissen, umgrenzen*: वेदीं लक्षणेनोपलिख्य MBH. 12,1454. — Vgl. उपलेख.

— निस् *ätzen, wund machen* SUÇR. 1,56,16. 2,7,11. 344,4. — Vgl. निर्लेखन.

— विनिस् *schröpfen* SUÇR. 2,359,6.

— परि *rings umreissen, mit einer Furche —, mit einem Striche umziehen* TS. 5,1,2,4. ÇAT. BR. 3,3,1,5. ग्रवटम् 6,1,3. 5,1,26. 4,8. ग्रस्य पदम् 6,3,2,23. KÂTJ. ÇR. 6,2,8. गार्हपत्यस्य परिलिखति *zieht einen Kreis um* 16,7,29. KAUÇ. 25. fg. परिलिखितं रक्षः *in einen Kreis eingeschlossen* TS. 1,2,5,1. *rings bekratzen, — glatt machen*: पर्वतानानयन्ति स्म नखैः परिलिखन्ति च R. 5,95,23. — Vgl. परिलेख fg. und परिलिखन n. *das Glattmachen, Poliren* MÂRK. P. 106,65.

— प्र 1) *ritzen, Striche ziehen in*: न चैव प्रलिखेद्भूमिम् M. 4,55. — 2) med. *sich kämmen* (Comm. *zeichnen*): या प्रलिखते तस्यै खलतिरपमारी जायते TS. 2,5,1,7. act.: कङ्कतैः PÂR. GṚHJ. 2,14. absol. KAUÇ. 76.

— प्रति *zurückschreiben, in einem Schreiben antworten*: इदमिदानीमनेन प्रतिलिखितम् MÂLAV. 8,16.

— वि, ved. infin. विलिखस् (ईश्वरो विलिखः) P. 3,4,13, Sch. 1) *ritzen, zerkratzen, aufreissen, wund machen* LÂṬJ. 5,1,2. 7,10. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 217,22. लाङ्गलाग्रैर्विलिखति वसुधाम् Spr. 3311. वेदिप्रान्तात्खुरविलिखितात् ad ÇÂK. 78. पादेन हैमं विलिलेख पीठम् RAGH. 6,15. विलिखत्तं वसुंधराम् MBH. 3,375. चरणैः 11953. R. GORR. 2,80,15. 7,9,17. SUÇR. 1,105,13. 2,144,21. KUMÂRAS. 2,23. VARÂH. BṚH. S. 51,13. निर्भिन्दन्तौ च गात्राणि विलिखन्तौ च सायकैः HARIV. 13285. SUÇR. 1,60,13. नखविलिखितशरीरावयवा PAṄKAT. 46,2. शृङ्गैर्गगनं विलिखन्निव *den Himmel gleichsam ritzend, sich an ihm reibend* d. i. *ihn berührend, bis dahin reichend* HARIV. 12842. शृङ्गैर्विलिखत्तमिवाम्बरम् R. 4,41,40. यद्यु ग्रस्य हृदयं व्येव लिखेत् so v. a. *wenn es ihm ärgerlich ist* ÇAT. BR. 12,4,2,1. 4,2. — 2) *einritzen, reissen, zeichnen, schreiben, aufschreiben, malen*: कक्षाख्यवृत्तं विलिख्य GOLÂDHJ. SPHUṬAG. 10. 12. WEBER, RÂMAT. UP. 308. 310. fg. PAṄKAR. 3,12,3. 15,28. 4,5,38. Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,24. 32. fg. 258,*a*,8. 263,*b*, No. 635. SARVADARÇANAS. 170,18. चित्रे ऽपि विलिखत्यस्मान् MBH. 3,16670. GÎT. 4,6. BHÂG. P. 10,62,21. — Vgl. विलिखन, विलेख fgg., ग्रविलिख. — caus. *einritzen —, schreiben lassen*: विलेखयेत् WEBER, KṚSHṆAǴ. 270. विलिखापयेत् 283.

— सम् 1) *aufritzen, schröpfen* SUÇR. 2,123,11. — 2) *einritzen, schreiben* WEBER, RÂMAT. UP. 310. PAṄKAR. 3,15,29. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,31. — 3) ein musikalisches Instrument *schlagen*: वाणम् LÂṬJ. 4,1,9; vgl. unter उद् 7). — 4) संलिखित ein Spielausdruck: ग्रतीर्षं त्वा संलिखितमजैषमुत संरुधम् AV. 7,50,5.

लिखे (von लिख्) nom. ag. P. 3,1,135.

लिखन (wie eben) n. 1) *das Ritzen, Kratzen:* क्षितिलिख° *das Kratzen in der Erde mit den Nägeln* Spr. 4462. नलग्रन्थीनां तनूलिखनम् Sâh. D. 123,5; vgl. 103,22. — 2) *das Einritzen, Schreiben* ÇKDr. nach Sâras. zu AK. 2,8,1,16. प्रसिद्धमन्त्र° Mârk. P. 51,22. Saṁsk. K. 33,a,6. Pañkar. 1,13,14. Verz. d. Oxf. H. 43,b,2. वेदान्तेष्वित्यादिश्लोकलिखनं दृश्यते Sâh. D. 129,7. 8. Brahmavaiv. P. Çrîkṛshṇaǵanmakh. 15 nach ÇKDr. — Vgl. चित्र° und लेखन.

लिखिखिल (?) m. *Pfau* H. ç. 187.

लिखित 1) adj. und n. s. u. लिख्. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi, der auch als Verfasser eines Gesetzbuches fast immer in Verbindung mit Çaṅkha genannt wird, MBh. 2,292. 13,3320. 6263. Colebr. Misc. Ess. I, 314. Ind. St. 1,20. 232. 234. 240. 467. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 34,a,10. 266,b,10. 270,b,50. 279,a,38. b,12. 356,a,31. Gild. Bibl. 432. Nach MBh. 12, 668. fgg. wurden dem Likhita, weil er in der Einsiedelei seines Bruders Çaṁkha ohne dessen Erlaubniss Früchte gebrochen und gegessen hatte, vom Könige Sudjumna beide Hände abgehauen. Daher ist शङ्खलिखित so v. a. *ein strenge Gerechtigkeit übender Fürst* 4252. शङ्खलिखिता वृत्तिः so v. a. *das Ueben strenger Gerechtigkeit* 4756. शङ्खलिखितप्रिय *ein Freund strenger Gerechtigkeit* 4808.

लिख्य m. *Niss, das Ei einer Laus* Çârṅg. Saṁh. 1,7,10. लिख्या f. dass.; als Maass: जालान्तरगते भानौ यच्चाणुर्दृश्यते (sic) रजः । तैश्चतुर्भिर्भवेल्लिख्या लिख्याषड्भिश्च सर्षपः ॥ Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. लिक्षा.

लिङ्ग्, लिङ्गति (गतौ) Dhâtup. 5,34. — Vgl. लख्, लङ्ग्.

लिगु Uṇâdis. 1,37. n. = चित्त Vararuki bei Uǵǵval. m. = मूर्ख Schol. zu Uṇ. 1,36. = भूप्रदेश und मृग Nânârtharatnam. im ÇKDr. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99 und गर्गादि zu 105. — Vgl. निगु und अलिगु.

लिङ् Bez. *der Personalendungen des Potentialis und Precativs* P. 3,4,102. 7,2,79 u. s. w. लिङर्थवाद m. Titel einer grammatischen Abhandlung Hall 60.

लिङ्कवाराहतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,a,2.

लिङ्ग्, लिङ्गति (गतौ) Dhâtup. 5,48. आलिङ्गति, °ते und आलिङ्गयति s. u. आलिङ्ग्. MBh. 12,6089 erscheint लिङ्ग in der Bed. von आलिङ्ग *umfassend.* — Vgl. लिङ्गय्.

लिङ्ग (wohl von लग् wie लक्ष, लक्ष्मन्, लक्ष्मी) n. am Ende eines adj. comp. f. आ Nir. 2,8. MBh. 3,13059. 7,2141. Pat. bei Gold. Mân. 156. aber विष्णुलिङ्गी (s. d.). 1) *Kennzeichen, Abzeichen, Merkmal, das Charakteristische,* τεκμήριον; daher *Stichwort* und dergl. AK. 3,4,3,26. Trik. 3,3,69. H. an. 2,47. Med. g. 21. Verz. d. Oxf. H. 184,b,6. 312,a, No. 745, Z. 17. Maitrjup. 6,10. 31. Çvetâçv. Up. 6,9. बाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमन्तर्गतं नृणाम् M. 8,25. 252. fg. (*Grenzzeichen*). Bhag. 14,21. येन लिङ्गेन यो देशो युक्तः समुपलक्ष्यते । तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाहुर्मनीषिणः ॥ MBh. 1,281. 2,2646. 3,2927. Hariv. 4942. देवानां यानि लिङ्गानि MBh. 3,2204. देवलिङ्गानि R. 3,63,21. राजलिङ्गानि MBh. 1,2878. Bhâg. P. 1,16,4. ऋतुलिङ्गानि M. 1,30. MBh. 1,39. लिङ्गैर्मुदः संवृतविक्रियास्ते Ragh. 7,27. दोहदलिङ्गदर्शिन् 14,71. न लिङ्गं धर्मकारणम् Spr. 1225. विराग° Râǵa-Tar. 3,500. Bhâg. P. 2,5,20. Mârk. P. 15,45. Sâh. D. 17,11. इङ्गिताकारलिङ्गाभ्याम् Spr. 4934. Kaṇ. 1,2,17. Tattvas. 22. लिङ्गदर्शने ज्ञायमानं ज्ञानम् 48. Tarkas. 37. Sâṁkhjak. 5. Suçr. 1,95,9. 127,16. स्व° 2,307,1. वायुलिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं चाग्नेये मन्त्रे Nir. 1,17. °ज्ञ ebend. Âçv. Çr. 1,5,33. 5,1,7. 4,3. विश्व° *das Kennwort* विश्व *enthaltend* Nir. 12,40. अ° ebend. Kauç. 1. 28. Schol. zu Kâtj. Çr. 24,4. 10. 23. °वाक्ययोर्विरोधे लिङ्गं बलवत् 26,13. 14. अलिङ्गग्रहणे गौः सर्वत्र *wenn keine specielle Bestimmung gegeben ist* Kâtj. Çr. 15,2,13. तल्लिङ्ग adj. Suçr. 1,310,7. Sâh. D. 299. Das einfache लिङ्गानाम् st. des adj. तल्लिङ्गानाम् Kâtj. Çr. 22,3,19. इन्द्रलिङ्गा मन्त्राः so v. a. *an* Indra *gerichtet* Varâh. Bṛh. S. 60,11. मन्त्रैस्तैल्लिङ्गैः 46,16. तत्सलिङ्गाभिराशीर्भिः *an ihn gerichtet* MBh. 7,2141. so v. a. *Andeutung:* श्रुतिलिङ्गवाक्यादि° Sarvadarçanas. 122,7. 13. fg. 159,14. — 2) *ein angemaasstes, Einem nicht zukommendes Abzeichen, ein angenommenes äusseres Zeichen, durch welches man Andere zu täuschen beabsichtigt:* न शक्यमिह प्रद्वेण लिङ्गमाश्रित्य वर्तितुम् MBh. 13,449; vgl. छद्मना कृतलिङ्गस्थः R. 6,82,84. छद्मलिङ्गप्रविष्टानां पाण्डवानाम् MBh. 4,1000. लिङ्गान्तरे वर्तमानाः (दस्यवः) 12,2439 und लिङ्गवृत्ति. — 3) *Beweismittel,* τεκμήριον; = साधन, व्याप्य Trik. 3,2,11. Halâj. 5,86. = अनुमान H. an. Med. Kaṇ. 2,1,14. 18. वेदलिङ्गात् *weil es aus dem* Veda *folgt* 4,2,11. 9,2,4. Ǵaim. 1,3,23. Kâtj. Çr. 1,8,37. 9,4,26. Kâm. Nîtis. 1,29. fg. Kull. zu M. 3,152. Schol. zu P. 4,1,15. 6,3,35, Vârtt. 4. Sarvadarçanas. 73,6. — 4) *Geschlechtszeichen, Geschlechtsglied* AK. 3,4,3,26. 14,75. Trik. 2,6,23. 3,3,69. H. 610. H. an. Med. M. 5,136. Jâǵn. 2,226. 3,233. Hariv. 7593. Varâh. Bṛh. S. 68,7. 86. Bhâg. P. 3,31,3. Verz. d. B. H. No. 975. Mârk. P. 39,30. प्रवृद्ध° Suçr. 2,396,3. तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्बभूव Nir. 2,8. — 5) *das grammatische Geschlecht* Trik. 3,3,69. VS. Prât. 4, 170. P. 2,3,46. 4,26. AK. 3,6,8,42. H. 19. °विपर्यय Weber, Râmat. Up. 336. Verz. d. Oxf. H. 191,b,28. 192,a,40. b, No. 437. — 6) *das göttlich verehrte Geschlechtsglied* Çiva's (Rudra's), Çiva *in der Form eines Phallus* Trik. 3,3,69. H. an. Med. MBh. 10,780. 782. 13,818. fgg. 7511. fgg. लिङ्गाध्यक्ष 1191. ऊर्ध्व° 12,1669. 13,1160. R. 7,31,42. fg. Spr. 3063. Varâh. Bṛh. S. 46,8. 57,4. 58,53. 55. 59,7. 60,5. Kathâs. 51,98. 69,155. Râǵa-Tar. 1,194. 2,130. 3,439. fg. Verz. d. B. H. No. 1309. Verz. d. Oxf. H. 8,a. 44,b,5. 17. fg. 21. 32. fg. 42,a,11. 43,a,1. 45,a,27. fg. 54,a,15. 63,b,30. 75,b,14. fg. 76,a,6. 12. 85,b,3. 8. Muir, ST. 4,325. fgg. LA. (III) 87,3. Wilson, Sel. Works I, 223. fg. Burn. Intr. 538. Sarvadarçanas. 102,12. शिव° Varâh. Bṛh. S. 50,2. Kathâs. 59,81. 69,153. Râǵa-Tar. 2,128. 3,114. अर्चा° 2,161. Kathâs. 51,95. सहस्रलिङ्गी f. *tausend* Liṅga Râǵa-Tar. 2,129. — 7) *Götterbild* Varâh. Bṛh. S. in der Unterschr. nach 46,17. — 8) *der feine Körper* (vgl. लिङ्गदेह, लिङ्गशरीर, सूक्ष्मशरीर), *das Urbild des groben, sichtbaren Körpers, das durch den Tod nicht vernichtet wird,* Kap. 3,9. 16. Sâṁkhjak. 20. 41. fg. 52. 55. Bâlab. 12. Vedântas. (Allah.) No. 39. Nîlak. 36.63. Bhâg. P. 3,19,28. 4,12,18. 20,12. 29,83. 9,19,28. — 9) = प्रातिपदिक *Nominalthema* Durgad. zu Vop. 1,12 (abgekürzt लि bei Vop.). Vgl. Ernst Kuhn, Kaccâjanappakaraṇae Specimen S. 20. — 10) = लिङ्गपुराण Bhâg. P. 12,13,6. Verz. d. Oxf. H. 65,a,40. fg. 79,b, No. 136, Z. 1 v. u. — 11) = व्यक्तं सांख्योदितम् Trik. 3,3,69. = सांख्योक्तप्रकृति H. an. Med. = प्रधान

Liñga-P. bei Muir, ST. 4,325. °मात्र = बुद्धि Jogas. 2,19. अ° = अव्यक्त ebend. Kap. 1,125 erklärt der Comm.: लिङ्गं स्वकारणे लयं गच्छतीति, 137.: लयं गच्छतीति लिङ्गं कार्यम्; vgl. Gaudap. zu Sâñkhjak. 10. 40. — Vgl. अ° (adj. keine Merkmale habend Bhâg. P. 1,6,26. अलिङ्गत्व n. das Fehlen aller Kennzeichen MBh. 12,7431), अविङ्ग, कु°, त्रि°, त्रिलिङ्गी, देवलिङ्ग, निर्लिङ्ग, पुं°, प्रतिलिङ्गम्, बाणलिङ्ग, भिन्न°, भू°, यथालिङ्गम्, योनिलिङ्ग, रात्र°, विष्णुलिङ्गी, सीमलिङ्ग, सीमा°, स्त्री°.

लिङ्गक 1) am Ende eines adj. comp. a) = लिङ्ग 1): तल्लिङ्गक Wilson, Sâñkhjak. S. 23. Sarvadarçanas. 8, 18. fg. — b) = लिङ्ग 5): भेद्य° AK. 3, 4, 25, 190. — 2) m. *Feronia elephantum Corr.* (*Erectionen bewirkend;* vgl. लिङ्गवर्धन) Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 195,b, No. 453, Z. 3 v. u. — Vgl. कु°, त्रि°.

लिङ्गज्ञा f. *eine best. Pflanze,* = लिङ्गिनी Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

लिङ्गतोभद्र (लिङ्गतस्, adv. von लिङ्ग, + भद्र) n. Bez. *eines best. Zauberkreises* Verz. d. Oxf. H. 284,a,31. Verz. d. B. H. No. 922.

लिङ्गत्व (von लिङ्ग) n. nom. abstr. von लिङ्ग 1) Bhâg. P. 3,26,33.

लिङ्गदेह m. n. = लिङ्ग 8) Bâlab. 16. Verz. d. B. H. No. 1365.

लिङ्गद्वादशव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 44,b,35.

लिङ्गधर adj. *Abzeichen tragend:* मिथ्या° *falsche Abzeichen tragend, nicht das seiend, was der Schein besagt* Verz. d. Oxf. H. 58,b,34. धर्मात्परिच्युतो रामो धर्मलिङ्गधरश्च सन् R. 4,16,20. सुहृल्लिङ्गधर *den blossen Anschein eines Freundes habend* Bhâg. P. 7,5,38.

लिङ्गधारण n. *das Ansichtragen der Abzeichen* (an denen man erkannt wird) MBh. 3,2214.

लिङ्गधारिणी f. Bez. der Dâkshâjaṇî in Naimisha Verz. d. Oxf. H. 39,a,32.

लिङ्गनाश m. 1) *das Verschwinden —, Zugrundegehen der charakteristischen Merkmale:* वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते नैव च लिङ्गनाशः Çvetâçv. Up. 1,13. = सूक्ष्मदेहस्य विनाशः Çañk. — 2) *eine best. Augenkrankheit, die in der Linse ihren Sitz hat,* Wise 294. Suçr. 2,316,14.18. 343,9. Çârñg. Saṁh. 1,7,93. Verz. d. Oxf. H. 308,a,32. fg.

लिङ्गपीठ n. *Piedestal eines* Liñga Râǵa-Tar. 2,126.

लिङ्गपुराण n. Titel eines Purâṇa Wilson in VP. XLII. fgg. Verz. d. Oxf. H. 44,a, No. 101. 101,b,46. 279,a,39. 341,a,40.

लिङ्गप्रतिष्ठाविधि m. *Regeln über die Errichtung eines* Liñga Verz. d. Oxf. H. 45,a,28. बौधायनोक्त Verz. d. B. H. No. 150. — Vgl. लिङ्गार्चाप्रतिष्ठाविधि.

लिङ्गमाहात्म्य n. *die Majestät der* Liñga, Titel eines Abschnittes in verschiedenen Purâṇa Verz. d. Oxf. H. 44,a,32. 45,a,27. fg. 75,b,15. Mack. Coll. I, 81.

लिङ्गमूर्ति adj. *die Form des Phallus habend:* Çiva Verz. d. Oxf. H. 74,a,2.

लिङ्गय् (von लिङ्ग), °यति (चित्रीकरणे) Dhâtup. 33,65. ein Wort *nach den verschiedenen Geschlechtern moviren:* लिङ्गयति शब्दं स्त्रीनपुंसकैः शाब्दिकः । चित्रं करोतीत्यर्थः Durgâd. im ÇKDr. — Vgl. लिङ्ग् und आलिङ्ग्.

— उद् *aus Merkmalen erschliessen:* उल्लिङ्गितशात्रवेङ्गित Kir. 14,2.

लिङ्गलेप m. Bez. *einer best. Krankheit* Verz. d. B. H. No. 965.

लिङ्गवन्त् (von लिङ्ग) adj. 1) *Merkmale besitzend* Bhâg. P. 7,2,24. — 2) *verschiedene Geschlechter habend* Maitrjup. 6,5. — 3) *mit einem* Liñga *versehen,* Bez. einer best. Çiva'itischen Secte, Wilson, Sel. Works I, 224. 230. 332.

लिङ्गवर्धन 1) adj. *Erectionen bewirkend.* — 2) m. *Feronia elephantum Corr.* Çabdak. in Verz. d. Oxf. H. 195,b,3 v. u.

लिङ्गवर्धिन् 1) adj. *Erectionen bewirkend.* — 2) f. *Achyranthes aspera* Çabdak. im ÇKDr.

लिङ्गविशेषविधि m. *Regeln über die verschiedenen grammatischen Geschlechter,* Titel einer dem Vararuḱi zugeschriebenen Abhandlung, Verz. d. Oxf. H. 167,a, No. 371.

लिङ्गवृत्ति adj. *den Lebensunterhalt durch falsche äussere Abzeichen gewinnend, heuchlerisch* AK. 2,7,53. H. 856. Halâj. 2,250.

लिङ्गशरीर n. = लिङ्गदेह Colebr. Misc. Ess. I, 245. 372. 418. Vedântas. (Allah.) No. 44.

लिङ्गशास्त्र n. *ein Lehrbuch über das grammatische Geschlecht* Med. Anh. 5.

लिङ्गसंभूता f. *eine best. Pflanze,* = लिङ्गज्ञा, लिङ्गिनी Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

लिङ्गस्थ M. 8,65 nach Kull. = ब्रह्मचारिन्.

लिङ्गह्नी f. = मूर्वा Ratnam. 32.

लिङ्गाग्र n. *glans penis* Trik. 3,3,135.

लिङ्गानुशासन n. *die Lehre vom grammatischen Geschlecht* H. 19. Verz. d. Oxf. H. 182,b,4 v. u.

लिङ्गार्चनतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 101,b,46; vgl. u. मुखवाद्य 2).

लिङ्गार्चाप्रतिष्ठाविधि m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 151. — Vgl. लिङ्गप्रतिष्ठाविधि.

लिङ्गालिका f. *eine Mausart* Hâr. 217.

लिङ्गिन् 1) adj. *mit einem Merkmale versehen, Träger eines Merkmals, derjenige, welchen das Kennwort bezeichnet,* Kauç. 25. Sâñkhjak. 5. MBh. 12,11353. Comm. zu Njâjas. 1,5. Sâh. D. 122,11. am Ende eines comp. *die Merkmale —, das Charakteristische von — besitzend:* कालमायांश° Bhâg. P. 3,5,37. मार्जार° M. 4,197. उन्मत्त° *das Ansehen eines Verrückten habend* Bhâg. P. 6,15,11. — 2) adj. *falsche —, ihm nicht zukommende Abzeichen tragend, Heuchler* Sâh. D. 46,1. am Ende eines comp. *nur den Schein von — habend, Jmd spielend:* शूद्रान्द्विजलिङ्गिनः M. 9, 224. अनार्यानार्यलिङ्गिनः 260. तपस्वि° Kâm. Nîtis. 12,26. ज्ञानि° Kathâs. 19,83. व्रति° Râǵa-Tar. 4,518. सुर° Bhâg. P. 3,15,33. राजन्या ब्रह्मलिङ्गिनः 10,72,17. — 3) adj. *mit Recht seine Abzeichen tragend, dessen äussere Erscheinung mit dem inneren Wesen übereinstimmt;* m. *ein Brahmane in einem best. Lebensstadium,* insbes. *ein Asket* Halâj. 2,189. अलिङ्गी लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति । स लिङ्गिनां हरत्येनः M. 4,200. 8,407. MBh. 12,2335 (सर्वलिङ्ग° ed. Bomb.). 2441. 13,1531. fg. Spr. 3306 (स्त्रीलिङ्गिविप्रबालेषु Bühler). वर्णिनां लिङ्गिनां चैव 303. Kâm. Nîtis. 2,33. 12,36. Bharata bei Çañk. zu Çâk. 52,3. Daçak. 2,62. f. लिङ्गिनी 27. 59. Sâh. D. 173,16. Pratâpar. 6,a,7. Suçr. 2,148,7. — 4) adj.

mit einem Liñga *versehen;* m. pl. N. einer Çiva'itischen Secte Colebr. Misc. Ess. I, 198. — 5) adj. *mit einem feinen Körper versehen* Bhâg. P. 4,29,65. — 6) adj. Beiw. Parameçvara's *als Trägers des* लिङ्ग = प्रधान Liñga-P. bei Muir, St. 4,325. — 7) adj. *das worin sich Etwas auflöst*, subst. *die Ursache* Schol. zu Kap. 1,137; vgl. u. लिङ्ग 11). — 8) m. *Elephant* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 9) f. *eine best. Pflanze*, = पञ्चगुरिया im Hindi Râgan. im ÇKDr.

लिङ्गोपहितलैङ्गिकभाननिरासरहस्य n. Titel einer Abhandlung Hall 53.

लिङ्गोपहितलैङ्गिकभानविचार m. desgl. ebend. 52.

लिच्छवि N. pr. eines fürstlichen Geschlechts LIA. I, 138, N. 1. 820. fg. II, 80. 960. Burn. Intr. 530. Lalit. 137. 424. Hiouen-thsang I, 396. Wilson, Sel. Works II, 344. Schiefner, Lebensb. 233 (3). 268 (38). — Vgl. निच्छवि, निच्छिवि.

लिट्य्, लिट्यति (अल्पकुत्सनयोः, अल्पीभावे कुत्सायां च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लिन्दु Khând. Up. 8,14 nach Çaṁk. = पिच्छल d. i. पिच्छिल *schleimig, schlüpfrig.*

लिप् (= älterem रिप्), लिम्पति, °ते (उपदेहे, लेपे Vop.) Dhâtup. 28, 139. P. 7,1,59. लिलेप, लेप्स्यति Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. aor. अलिपत्, अलिपत und अलिप्त P. 3,1,53. fg. Vop. 8,91. 13,1. 1) *Etwas* (acc.) *mit Etwas* (instr.) *beschmieren, bestreichen; besudeln, verunreinigen:* ता (ओषधीः) जाताः पितरो विषेणालिम्पन् TBr. 2,1,1,1. सर्पिषा Kauç. 25. Kâṭh. 25,4. Çâñkh. Çr. 7,8,12. Br. 13,9. चन्दनैः Jâǵñ. 3,53. Spr. 1778. 2670. Bhâg. P. 10,29,7. तिप्रमङ्गानि लिम्पस्व पायसेन MBh. 13,7425. Bhaṭṭ. 19,11. लिलेप 14,94. Hariv. 7041. अलिपत् Kathâs. 24,93. 41,50. तच्चूर्णं तस्य दुर्बुद्धेरोष्ठौ श्मश्रूणि चालिपत् 61,43. चन्दनेनालेपि Schol. zu Naish. 22,56. न मां कर्माणि लिम्पन्ति Bhag. 4,14. न कर्मणा लिप्यते पापकेन TBr. 3,12,9,8. Çat. Br. 14,7,2, 28. Khând. Up. 5,10,10. Kaṭhop. 5,11. Nir. 12,3. M. 1,104. 3,71. 4,201. 9,243. 10,104. fg. Bhag. 5,10. 13,31. MBh. 12,11667. fg. (लिप्यति). Spr. 522. 2069. Kâm. Nîtis. 6,5. Bhâg. P. 4,26,7. 6,13,9. बुद्धिर्यस्य न लिप्यते Bhag. 18,17. वामदेवो न लिप्तवान् *verunreinigte sich nicht* M. 10,106. st. des acc. ausnahmsweise loc.: तेन लिम्पन्त्य आननकुचेषु Bhâg. P. 10,21,17. लिप्त *beschmiert, bestrichen; besudelt, verunreinigt* AK. 3,2,39. H. 1483. an. 2,191. Med. t. 52. आज्य° Çat. Br. 1,3,1,24. Kâtj. Çr. 4,4,10. 10,8,12. M. 4,56. MBh. 8,2059. R. 2,9,43 (8,48 Gorr.). 78,6. 5,10,20. 19,16. Varâh. Bṛh. S. 55,7. 59,12. 71,2. Kathâs. 4,48. 69. 9,48. 12,169. 18,244. Râǵa-Tar. 4,195. Bhâg. P. 6,1,61. 10,65,30. 75,15. Hit. 21,14. Vet. in LA. (III) 4,7. Sâh. D. 16,5. Verz. d. Oxf. H. 152, *a*, N. 3. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (Pfeil u. s. w.) H. an. Med. लिप्तवासित angeblich mit Umstellung der Worte gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. गन्धैस्त्वं लिप्तवासिता Bhaṭṭ. 5,90. — 2) *Etwas* (acc.) *an Etwas* (loc.) *schmieren, anheften;* pass. *kleben, heften an:* न कर्म लिप्यते नरे Îçop. 2. यः कपाले रसो लिप्त आसीत् Çat. Br. 6,1,2,12. 2,2. ततेन लिप्ताभिशापमपमार्ष्टुम् Bhâg. P. 10,83,9. — 3) *anflammen, entzünden:* तस्यालिपत शोकाग्निः स्वान्तं काष्ठमिव ज्वलन् । अलिप्तेवानिलः शीतो वने तम् Bhaṭṭ. 6,22. — 4) लिप्त *gegessen* AK. 3,2,60. H. an. Med. — Vgl. तामलिप्त, ताम्रलिप्त, निर्लिप्त (*unbefleckt* Pañkar. 1,3,80. 5,6. 7,41. 84. 8,11. 2,1, 19. 27. 3,51. 4,6. 7,41. अति° 1,1,4).

— caus. लेपयति 1) *Etwas mit Etwas beschmieren, salben* Suçr. 2,28, 11. Verz. d. Oxf. H. 98, *a*, 30. जात्येन च सुवर्णेन सुनिष्टप्तेन — लेपयिष्यामि ते स्थगु so v. a. *überziehen, verdecken* R. 2,9,40. — 2) *Etwas an Etwas schmieren:* स्कन्धे च लेपयेद्भस्म Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 21.

— अनु *einsalben*, med. *sich salben:* नलदेन Âçv. Çr. 6,10,3. Gṛhj. 3, 8,11. अङ्क्ष्वानुलिम्पस्व Pâr. Gṛhj. 2,14. Kauç. 26. 80. स्नापयित्वानुलिप्य च Kathâs. 92,39. Weber, Kṛshṇaǵ. 290. कुङ्कुमादिक्रमेणाङ्गमनुलिम्पन्ति Schol. zu Naish. 22,56. वपुरन्वलिप्त — न वधूः Çiç. 9,51. प्रियङ्गुचन्दनाभ्यां च बिल्वेन तगरेण च । पृथगेवानुलिम्पेत MBh. 13,5042. act. mit med. Bed.: न चानुलिम्पेदस्नात्वा 5006. अनुलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt, überzogen mit:* रुधिरेणानुलिप्ताङ्गाः MBh. 1,1172. मलपङ्कानुलिप्ताङ्गो 3,2667. परार्ध्येन चन्दनेन 6,4425. Hariv. 3630. 3887. Suçr. 2,286,15. तिमिरेणानुलिप्तेव तदा सा नगरी बभौ R. 2,48,27. R. Gorr. 2,13,7. 4,27,7. 29,15. 5,14,5. 18. 45,4. Mṛkkh. 157,10. Kâm. Nîtis. 7,49. Çiç. 9,15. Spr. 2478. Kathâs. 40,2. Bhâg. P. 7,13,41. Mârk. P. 50,80. 61,16. 74,9. मांसेनानुलिप्तं शरीरम् Maitrjup. 3,4. प्रभानुलिप्त Ragh. 10,10. हरिभिरचिरभासां तेजसा चानुलिप्तैः Çâk. 166. स्नातानुलिप्त *gebadet und gesalbt* Kauç. 83. Suçr. 1,113,6. Daçak. 65,16. Hit. 42,1. Vgl. अनुलेप fgg. — caus. *einsalben* Hariv. 14839. Suçr. 1,34,5. Weber, Kṛshṇaǵ. 288. fg. Daçak. 92,20.

— अभि *bestreichen:* मृदा TS. 5,7,10,2. Kauç. 69. — caus. dass. MBh. 13,7427.

— अव 1) *bestreichen, beschmieren* Çâñkh. Çr. 7,8,12. Br. 13,9. Suçr. 2,36,11. fg.; med. *sich bestreichen* (loc. st. acc.): °भुजरजतस्तम्भेषगुरुचन्दनकुङ्कुमपङ्कानुलेपेनावलिम्पमानाः Bhâg. P. 5,25,5. अवलिप्त *bestrichen* MBh. 1,6391. Suçr. 2,50,1. चन्दनावलिप्त Vet. in LA. (III) 8, 2. 5. *überzogen, belegt* (die Zunge) Suçr. 1,115,2. etwa *besudelt, unrein* oder auch *blind* wie अपिरिप्त (= सगर्व Mahîdh.) VS. 24,3. कृतव्यधनी त्यवलिप्तं कृत्यया विध्यति (vgl. AV. 5,14,9) Kauç. 39. — 2) अवलिप्त *hochmüthig, stolz* M. 4,79. MBh. 1,2487. 6153. 6161. 2,1437. 1554. 3, 11811. 13674. 5,1495. Hariv. 10333. R. Gorr. 2,9,21. 3,1,19. 35,72. 5,9,56. 6,16,64. 7,17,21. Spr. 873. 2347 (मनस्). 2798. Varâh. Bṛh. S. 16,13. Râǵa-Tar. 4,66. Bhâg. P. 10,25,6. अनवलिप्त Hariv. 4243. — Vgl. अवलेप fg.

— आ *bestreichen, beschmieren, salben:* गोमयेन Çat. Br. 12,4,4,1. Kauç. 26. Hariv. 3525. Suçr. 1,64,5. 2,8,6. Uttarar. 61,3 (79,1). आलिपत् Kathâs. 63,15. Bhaṭṭ. 15,109. मुखमालिप्य MBh. 2,2624. 2637. Kathâs. 45,50. Bhâg. P. 8,16,26 (*sich bestreichend*). Pañkat. 171,11. आलिप्त Mṛkkh. 91,10. Kathâs. 56,323. Bhâg. P. 10,84,45. *aufschmieren, auftragen:* आलिप्यते चन्दनमङ्गनाभिः Ṛt. 6,12, v. l. — Vgl. आलेप fg. — caus. *bestreichen, beschmieren, salben:* आलिम्पयति Kauç. 47. 61. आलेपयति Suçr. 1,55,7. 2,47,8. — Vgl. आलिम्पन.

— समा med. *sich salben:* समालिपत Bhaṭṭ. 17,5. — caus. *salben* Sâh. D. 109,7.

— उप 1) *bestreichen, beschmieren, salben; verunreinigen:* स्थण्डिलं गोमयेन Âçv. Gṛhj. 1,3,1. Çâñkh. Çr. 18,24,28. Gṛhj. 1,7. Gobh. 2,1, 11. 3,7,3. 11. Varâh. Bṛh. S. 60,7. Pañkar. 3,9,3. 15,25. चन्दनेनाङ्गमु-

पलिप्य MBh. 7,2922. विम्बं मृदयोपलिप्तम् Çvetâçv. Up. 2,14. पांसूपलिप्तसर्वाङ्ग MBh. 2,2625. Hariv. 4102. Suçr. 1,29,7. Varâh. Bṛh. S. 45,6. Mârk. P. 51,92. Schol. zu Naish. 22,52. यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते॥ Bhag. 13,32. MBh. 12,11669. — 2) *sich anhängen an, überziehen* Suçr. 1,262,7. तेषां विघ्याद्रसं स्वादुं यो वक्त्रमुपलिम्पति Vâgbh. 10,2. — Vgl. उपलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen, salben* M. 3,206. R. 2,100,33 (108,31 Gorr.).

— पर्युप *beschmieren, bestreichen* Gobh. 1,5,15.

— नि 1) *anschmieren*, med. *sich anschmieren* Çat. Br. 1,8,1,14. fg. Çâṅkh. Çr. 1,10,2. 2,9,12. Gṛhj. 6,6. — 2) *verschwinden machen*, med. *verschwinden, unsichtbar werden:* (वज्रेण) तेनाहममूं सेनां नि लिम्पामि AV. 11,10,13. नि केतवो जनानां न्य१दृष्टा अलिप्सत Ṛv. 1,191,4. — Vgl. निलिम्प.

— परि *bestreichen, umschmieren* Çat. Br. 14,9,3,1. Kauç. 72. MBh. 12,7717. Suçr. 1,161,21.

— प्र 1) *beschmieren, bestreichen, beflecken;* med. *sich beschmieren* u. s. w.: कृत्ययेव त्वद्विषेणेव त्वत्प्रलिलिपुः Çat. Br. 2,4,3,2. 12. Kâtj. Çr. 15,6,8. यवचूर्णैः Çâṅkh. Çr. 4,15,31. अनुलेपनेन पाणी Âçv. Gṛhj. 3,8,11. Kauç. 21. 26. 30. 58. Suçr. 1,481,4. Bhâg. P. 10,75,15. med. Kâtj. Çr. 15,6,8. दिव्याः सर्पाः प्रलिम्पन्ताम् Çâṅkh. Gṛhj. 4,15. — 2) प्रलिप्त *klebend —, haftend an* (loc.) MBh. 13,7443; vgl. 7425. — Vgl. प्रलेप fgg. — caus. *beschmieren, bestreichen* MBh. 12,2642. Varâh. Bṛh. S. 55,5. 24; auch u. कुण्डलिन् 3) *b)*.

— वि 1) *beschmieren, bestreichen, überziehen, salben* Çat. Br. 9,3,1,17. अगदैः Suçr. 2,259,5. मुखं विलिप्यमानम् 503,2. Kathâs. 37,6. 7. 13. 16. Bhâg. P. 10,5,14 (Weber, Kṛshṇaǵ. 304). 29,2. 75,14. 80,21. Pańkar. 3,15,26. Vet. in LA. (III) 7,17. Bhaṭṭ. 3,20. 6,21. 15,6. विलिप्त *beschmiert, bestrichen, gesalbt* H. an. 2,191. Med. t. 52. Jâǵn. 1,277. MBh. 12,6382. Hariv. 8265. 8425. Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,9. Hit. 128,12. — 2) *schmieren —, streichen auf:* चिताभस्मरजः — विलिप्यते मौलिभिरम्बरौकसाम् so v. a. *wird von den Himmelsbewohnern auf die Köpfe gestreut* Kumâras. 5,79. — Vgl. विलेप fgg. — caus. विलिम्पित *beschmiert, bestrichen* Çabdar. im ÇKDr. u. लिप्त.

— सम् *bestreichen, beschmieren* Çat. Br. 6,5,2,4. Kâtj. Çr. 16,3,28. Weber, Kṛshṇaǵ. 271. खड्गा रुधिरसंलिप्ताः Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,24. — caus. dass. MBh. 1,4950.

लिपि (von लिप्) f. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,119. P. 3,2,21. 1) *das Bestreichen* u. s. w.; s. लिपिकर. — 2) *das Schreiben, Schrift, Art und Weise zu schreiben* AK. 2,8,1,16. H. 484. Halâj. 4,43. यवनानाम् P. 4,1,49, Vârtt. 3. °ज्ञ Kâm. Nîtis. 18,37. लिपेर्यथावद्ग्रहणम् Ragh. 3,28. 18,45. क्रमेण शिक्षितश्चाहं लिपिं गणितमेव च Kathâs. 6,32. Varâh. Bṛh. 14,5. 18,2. Gît. 8,4. °ज्ञान Daçak. 60,12. Sâh. D. 268,14. Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,4. 339,*a*,2 v. u. Pańkar. 3,4,13. 6,21 (अष्टादशलिपिना). 7,20. अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटे ऽर्थिजनस्य जाग्रतीम् Naish. 1,15. Schol. zu 22,54. Lalit. ed. Calc. 142,11. 143,5. 16. fgg. °शास्त्र 2. °संख्या = ग्रन्थ *eine umfangreiche Schrift* Halâj. 5,58. विंशतिसंख्याया ज्ञापकलिपित्वम् R. Gorr. I, cxxxi. — Vgl. अङ्ग°, पुष्प°, प्रति°, भूत°, मध्याक्षरविस्तर° u. s. w.

लिपिकर P. 3,2,21. m. 1) *Tüncher* R. Gorr. 1,12,6. — 2) *Schreiber, Abschreiber* H. 484. Halâj. 2,431. Vâsavad. 239,1. MBh. I, S. 407 und II, S. 85 am Schluss.

लिपिका f. = लिपि *Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिपिकार m. = लिपिकर *Schreiber, Abschreiber* AK. 2,8,1,15.

लिपिन्यास m. *das Schreiben* Kathâs. 40,22.

लिपिफलक n. *Schreibtafel* Lalit. ed. Calc. 143,14.

लिपिशाला f. *Schreibstube* (wo die Kinder schreiben lernen) Lalit. ed. Calc. 141,9. 142,3. 4. 15.

लिपी f. = लिपि *das Schreiben, Schrift* Çabdar. im ÇKDr.

लिप्त partic. s. u. लिप्. लिप्ता s. bes.

लिप्तक (von लिप्त) adj. *mit Gift bestrichen, vergiftet* (ein Pfeil) AK. 2,8,2,56. H. 779. — लिप्तिका s. bes.

लिप्ता (= griech. λεπτή) f. *Minute, der 60te Theil eines Grades* Colebr. Misc. Ess. II, 358. 527. fg. Ind. St. 2,254. Weber, Ǵjot. 106. Nax. I, 310. Verz. d. B. H. No. 836. Golâdhj. Madhjagativ. 21. Gaṇitâdhj. Bhagrahajutj. 3. am Ende eines adj. comp.: पञ्चवर्गलिप्ते बुधे *wenn Mercur 25 Minuten* (in dem Sternbilde steht) Varâh. Bṛh. 7,6. Dieses Wort (von ली in der Bed. श्लेषणे abgeleitet) ist vielleicht Uṇâdis. 5,55 gemeint; aber Uǵǵval. nimmt लिप्तम् = श्लिष्टम् an.

लिप्तिका f. dass. Gaṇitâdhj. Bhagrahaj. 3. नति° Golâdhj. Grahaṇav. 19. लम्बन° 24. Weber, Nax. I, 310. Satkṛtjamuktâvalî im ÇKDr.

लिप्तीकर *auf Minuten* (लिप्ता) *reduciren:* °कृत्वा (!) Varâh. Bṛh. 7,10.

लिप्सा (vom desid. von लभ्) f. *der Wunsch habhaft zu werden, — zu erhalten, Verlangen nach* AK. 1,1,2,27. 3,4,18,109. H. 430. Halâj. 2,209. 5,57. P. 3,3,6. 1,3,25, Vârtt. 2. Vop. 23,12. das obj. im loc.: लिप्सां चक्रे प्रसेनात्तु मणिरत्ने स्यमन्तके Hariv. 2056. im comp. vorangehend: मृग° MBh. 1,3373. अर्थोपभोग° 3,97. अर्थ° 1313. 5,1417. धर्म° 4,924. R. Gorr. 2,18,44. Kâm. Nîtis. 13,57. Spr. 311. 5169. Kathâs. 13,90. 33,111. 51,135. Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,23. Sarvadarçanas. 64,7. am Ende eines adj. comp.: अभोगलिप्स = अभोगलिप्सु (welches nicht zum Metrum gepasst hätte) Kathâs. 7,110. — Vgl. लाभ°.

लिप्सितव्य (wie eben) adj. *was zu erhalten man wünschen muss, zu wünschen:* सकृत्सतां संगतं लिप्सितव्यम् MBh. 5,314.

लिप्सु (wie eben) adj. *habhaft zu werden —, zu erlangen wünschend, ein Begehren habend, verlangend, wünschend* H. 429. Halâj. 2,208. ohne Ergänzung Bhâg. P. 8,16,12. das obj. im acc.: कंचिदेवार्थम् MBh. 12,2610. पुत्रम् Hariv. 6430. कन्याललाम Ragh. 5,64. अनन्तानि सुखानि 18,25. उदरभरणमात्रम् Spr. 304. Kathâs. 24,119. Verz. d. Oxf. H. 10,*b*, N. 5. im comp. vorangehend: धन° MBh. 1,1985. 2855. 3,11811. 7,1992. Hariv. 3739. Bhâg. P. 2,7,22. 10,86,3. Pańkar. 3,13,21. Pańkat. 5,4.

लिप्सुता (von लिप्सु) f. *das Verlangen nach:* परदारपरद्रोहपरद्रव्यैक° Verz. d. Oxf. H. 68,*a*, No. 119, Z. 13. fg.

लिप्स्य (vom desid. von लभ्) adj. *was man zu erhalten —, zu haben wünscht* Vop. 25,6.

लिबि (लिवि) f. = लिपि P. 3,2,21. *das Schreiben, Schrift* AK. 2,8,1,16. H. 484. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,119.

लिबिकर (लिवि°) m. = लिपिकर P. 3,2,21. *Schreiber, Abschreiber*

H. 484, Sch.

लिविंकर (लिविं°) m. = लिपिकर *Schreiber, Abschreiber* ÇKDr. nach Bhânudîkshita zu AK. 2,8,2,15.

लिवी (लिवी) f. = लिपी Çabdar. im ÇKDr.

लिबुजा f. *Schlinggewächs, Liane* Nir. 6,28. 11,34. अन्या वां परि ष्वजाते लिबुंजेव वृतम् RV. 10,10,13. fg. AV. 6,8,1. Kauç. 35. Pañkav. Br. 12,13,11.

लिम्पं nom. ag. von लिप् P. 3,1,138. Vop. 26,35. m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210.

लिम्पट adj. *den Mädchen nachgehend* Hâr. 192 (s. Corrigg.). — Vgl. लम्पट.

लिम्पाक 1) m. *Esel*. — 2) m. *Citronenbaum* Çabdar. im ÇKDr. = निम्बूवृक्षविशेष, n. *die Frucht* Râgav. im ÇKDr.

लिम्पि f. = लिपि *Schrift* Pañkar. 3,13,25.

लिम्बभट्ट m. N. pr. eines Mannes Hall 136.

1. लिश् s. u. रिश्.

2. लिश् (= 1. लिश्) nom. ag.; nom. लिट् P. 8,2,36, Sch.

लिश (von 1. लिश्) nom. ag.; s. कु°.

लिंघ m. = लघ *Tänzer* Comm. zu Uṇ. 1,152.

1. लिह् (= älterem रिह्), लेंढि und लींढे (आस्वादने) Dhâtup. 24,6. (वि)लिह्ति Suçr. 2,533,3. लिह्येत् (MBh. Varâh. Bṛh. S.) neben लिह्यात्; लिलेह; लेट्यति und लेढा Kâr. 6 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Schol. zu P. 8,2,32. 40. fg. अलिक्षत und अलीढ P. 7,3,73. Schol. zu 3,1,45. 8,2,40. Vop. 8,130. लीढ्वा, लेढुम्; लीढ P. 8,3,13, Sch. *lecken, belecken, leckend geniessen* (leicht zergehende oder dickflüssige Körper): जिह्वया लिह्ती मुखम् R. Gorr. 2,66,28. अस्थि निर्दशनः श्वेव जिह्वया लेढि केवलम् Spr. 1652. उत्तरोष्ठम् Suçr. 1,118,20. दीर्घजिह्वी वै देवानां हव्यमलेट् ved. Cit. beim Schol. zu P. 4,1,59 (vgl. Ait. Br. 2,22). आ च लिह्याद्धविः Spr. 4814, v. l. एवमेव नरव्याघ्रः परलीढं (परिलीढं ed. Schl.) न मन्यते R. ed. Bomb. 2,61,16. मधुसर्पिषी Suçr. 1,101,18. 116,18. 194,18. 2,436,16. MBh. 3,12388 (लिहान). Spr. 3866. Varâh. Bṛh. S. 5,45. 51,31. 76,6. 89,1. 17. Kir. 5,38. Kathâs. 22,199. 25,106. 94,119 (wo जिह्वया सृक्किणी zu lesen ist). Bhâg. P. 6,9,15. 8,15,26. 10,13,24. Verz. d. Oxf. H. 130, *b*,17. Bhaṭṭ. 18,7. त्वं तुरं जिह्वया लेक्षि als Bezeichnung unbesonnener Vermessenheit R. 3,53,50. नो मे ऽनिमिषो लेढि (=नान्यसति Comm.) हेतिः Bhâg. P. 3,25,38. Die Form लिह्ति in folgendem von Âtreja bei West. angeführten Citat: सृक्किण्योर्लिह्ति च जिह्वया कदाचित्. — अङ्गे ऽघ लेह्यते MBh. 13,3872 fehlerhaft für अङ्गेषालद्यते, wie die ed. Bomb. liest.

— caus. लेहयति *lecken lassen* Suçr. 1,159,13. 369,4.

— intens. *beständig lecken, züngeln, züngeln nach:* लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः Bhag. 11,30. (द्वीपी) लेलिह्यमानस्तृषितः MBh. 12,4265. जिह्वाभिर्यो विश्ववक्त्रं लेलिह्यते सूर्यप्रख्यम् 12706. सृक्किणी लेलिहन्मुहुः 3,10397. Hariv. 14582. सृक्किणी लेलिहानस्य MBh. 5,2047. लेलिहज्जिह्वया (लेलिहन् जि° ed. Bomb.) वक्त्रम् 3,10394. लेलिहद्वक्त्रं (°द्वक्त्रो beide Ausgg.) व्याघ्रः 12,4273. लेलिहानैर्महानागैः 3,12240. Hariv. 5032. R. 6,92,49. Bhâg. P. 4,24,66. लेलिह्यद्भिश्च पन्नगैः Hariv. 2462. लेलिहान von Çiva MBh. 14,198. लेलिहान vom *züngelnden* Feuer Gṛhjasaṅgr. 1,25. त्रासयंश्चायमायाति (अग्निः) लेलिहानो महोरगान् MBh. 1,8368. 8408. लेलिह्यमानं सैन्येषु प्रवृद्धमिव पावकम् 6,4899. (शक्तिम्) ज्वलन्तीमग्निवत्संख्ये लेलिहानां समन्ततः 5,7271. बाणो लेलिहानः R. 6,79,70. — Vgl. लेलिह, लेलिहान.

— अव *belecken, lecken an, mit Maul* oder *Schnabel berühren* Ait. Br. 2,22. Kâṭh. 29,1. Pañkav. Br. 13,6,9. Âçv. Çr. 3,14,11. आवलिह्याद्धविः Spr. 4814. MBh. 1,667 (med.). 669. पुरा न सोमो ऽधरगो ऽवलिह्यते शुना 3,15687. 13,2286 (अवलिह्येत्). Varâh. Bṛh. S. 89,17 (°लिह्येत्). आवलीढं हविः MBh. 3,16543. 8,2059. 13,1575. Mârk. P. 34,56. महिमामृतरसमयुद्रविप्रुषा सकृदवलीढया Bhâg. P. 6,9,38. पतत्त्रिणावलीढम् M. 4,208. भ्रमरावलीढयोः पङ्कजकोशयोः Ragh. ed. Calc. 3,8. कीटमुखावलीढ Mṛkkh. 6,20. ज्वालावलीढवदन Hariv. 10200. Kir. 13,11. Prab. 3,8. Kathâs. 25,238 (wo स्फुरद्दीपावलीढे — महौरिद्रनिशानकचरीमुखे zu lesen ist). विद्युच्चक्रावलीढाङ्ग *bestrichen von, längs der Oberfläche berührt* R. 3,43,3. करजाग्रावलीढं तु पङ्कजम् Hariv. 7050. *auf der Zunge schmelzen lassen* Suçr. 2,341,4. दर्भार्धावलीढैः *halb verzehrt* Çâk. 7. Scheinbar findet sich अवलीढ auch Kathâs. 26,142, wo aber statt खचद्रत्नावलीढतमालं (verstösst auch gegen das Metrum) wohl zu lesen ist खचद्रत्नावलीलीढमालं. Was bedeutet aber अवलीढ Suçr. 1,125,7? Vgl. अवलेह fg. — intens. *beständig lecken, züngeln:* ज्वलन इवावलेलिहत् (चक्रम्) MBh. 1,1181.

— आ *belecken, lecken an*. स्वजिह्वया। आलिहन्सृक्किणी Bhâg. P. 10,66,33. नहि सिंहः परालीढमामिषं भोक्तुमिच्छति। नृसिंहो भरतालीढं रामो राज्यं न भोक्ष्यते॥ R. Gorr. 2,62,25. नालीढं नापरिक्षितम् MBh. 13,5044 nach der von Nîlak. erwähnten Lesart (आलीढा erklärt durch रजस्वली). मायाविभिरनालीढम् (भागम्) — निशाचरैः Ragh. 10,46. सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः 2,37. आलीढ = अशित Med. ḍh. 7. मणिः शाणालीढः so v. a. *geschliffen, polirt* Spr. 2087, v. l. Vgl. आलीढ. — intens. *stark belecken, züngeln nach:* उग्रदावानलस्तद्वनमालेलिहानः सह तेन ददाह Bhâg. P. 5,6,9.

— प्रत्या, partic. °लीढ = अशित Med. ḍh. 12. — Vgl. प्रत्यालीढ.

— उद्, partic. उल्लीढ *geschliffen, polirt:* मणिः शाणोल्लीढः Spr. 2087.

— नि॒स् *nippen* Çat. Br. 2,3,1,21. Kâtj. Çr. 4,14,27. Çâṅkh. Çr. 2,9,18.

— परि *belecken:* वक्त्रं जिह्वया R. 5,79,12. सृक्किणी Jâgn. 2,13. Pañkat. 262,20. °लीढ R. 2,61,16 (परलीढ ed. Bomb.). Spr. 3683. Vgl. परिलेहिन्. — intens. *beständig lecken:* सृक्किणी परिलेलिहन् MBh. 5, 5594. 6,2701. Pañkat. 55,7 (46,6 ed. orn.). 85,3. लेलिहान Bhâg. P. 10,16,25.

— प्र *auflecken, auf der Zunge zergehen lassen* Suçr. 2,450,1. — Vgl. प्रलेह fg.

— प्रति caus. *lecken lassen an*, mit dopp. acc. Çat. Br. 14,4,3,4.

— वि *belecken, lecken an:* सृक्किणी MBh. 6,2840. 7,7262. Suçr. 2, 533,3. Bhâg. P. 7,8,30. *auflecken, auf der Zunge zergehen lassen* Suçr. 2,504,5 (med.). 506,20. — intens. *beständig belecken, züngeln nach:* विलेलिहन् MBh. 12,8075. (वनधूमकेतुः) विलेलिहानः स्थिरजङ्गमान् Bhâg. P. 10,19,7.

— सम् *belecken, lecken an* Kâṭh. 30,1. R. 5,25,15. 7,23,19. Bhaṭṭ. 13,42. सृक्किणी संलिहन् MBh. 9,3100. संलिहान 3,10653. 12,4943. so

v. a. *geniessen:* देवतातिविशेषेण यात्रां प्राणस्य संलिह् 12049.

— परिसम् *belecken, lecken an:* सृक्किणी परिसंलिहन् MBh. 3,11500. 11502. 4,692. 5,5627. 6,1918. 5037. 5593. 7,6272. 9,744.

2. लिह् (= लिह्) nom. ag. (nom. लिट्) *leckend* Schol. zu P. 1,2,46. Vop. 3,98. am Ende eines comp. Schol. zu P. 8,2,32. 4,42. H. 7. पद्माम्भोजमकरन्द° Bhâg. P. 1,16,6. नयनयोरीहालिहो यातारः *ableckend* so v. a. *ablesend* Sâh. D. 45,8. — Vgl. गुड°, जिह्वा°, दाम°, पुष्प°, मधु° (Bhâg. P. 6,3,33 nicht *Biene*, sondern adj. *Honig leckend, — kostend*), रसना°.

लिह् (von 1. लिह्) nom. ag. dass.; s. अभ्रंलिह्, गो°.

1. ली, लिनाति (श्लेषणे) Dhâtup. 31,31. लिनाति (= प्राप्नोति) बाला लावण्यम् Durgâd. im ÇKDr. und bei West. लिनाति जलधौ नदी so v. a. *ergiesst sich in* Durgâd. im ÇKDr. लाययति (द्रवीकरणे) Dhâtup. 34,6. Zu belegen nur लीयते (श्लेषणे) Dhâtup. 26,30. 1) *sich schmiegen an, sich andrücken:* हाहाकृतं भृशं त्रस्तं लीयमानं परस्परम् (सैन्यम्) MBh. 8,4162. लीयते विभक्ती als etym. Erklärung von लिबुजा Nir. 6,28. स्वान्तःकरणकारिणीं संयमालानलीनम् *liegend an* Spr. 401. लीनविद्याधरोरगः (गिरेस्तटः) R. 6,83,26. नेन्द्रियार्थेषु लीयते *hängt nicht an* Halâj. 261 nach West. लीन *ganz hingegeben einer Sache* (loc.): तस्यां संहितायां लीना बाधव्यशाण्डिला: Verz. d. Oxf. H. 58,b,38. तद्व्रह्मध्यान° Z. d. d. m. G. 14,570,11. तन्त्र° Sarvadarçanas. 166,1. — 2) *stecken bleiben, stocken:* लीयते गर्भः *bleibt stecken* sc. im Mutterleibe Suçr. 1,377,1. कालः सूक्ष्मामपि कलां न लीयते 18,20. दोषो लीनो मार्गेषु तिष्ठति 81,17. 246, 12. 377,10. 2,183,13. Vâgbh. 8,28. दन्तलीने हनू *worin die Zähne stecken* Mahîdh. zu VS. 11,78. — 3) *sich niedersetzen, sich setzen auf* (von Vögeln und Insecten, gleichsam *sich anheften*): लीयमान इवाण्डजः MBh. 10,39. Kumâras. 7,21. यथान्धकारे खद्योतं लीयमानं ततस्ततः MBh. 14,485. तस्य धाङ्क्षः शिरसि लीयते (impers.) Bhatt. 18,13. लीन *sitzend auf, in:* सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा Çâk. 144. न पङ्कजं तद्दलीनषट्पदम् Spr. 1381. Kir. 5,26. *sich legen* (auf's Lager): गृहे शयनमेकं निशायां यत्र लीयते MBh. 12,11987. — 4) *sich ducken, kauern, sich verstecken, hineinschlüpfen in; verschwinden:* शशैर्लीनम् Spr. 2237. घननिचुललीनजलचरसितखगाः Varâh. Bṛh. S. 48,12. कुञ्जलीनान्सिंहान् Ragh. 9,64. Spr. 830. MBh. 1,4310. 4314. R. 2,114,4 (125,4 Gorr.). 3, 1,23. 50,7. 68,8. 5,13,42. 20,21. 30,13. 56,75. खट्वाधस्तले निभृतं लीनः Pańkat. 187,5. मातुः शय्यान्तरे Kâm. Nitis. 7,51. Kumâras. 1,12. Git. 2, 1. Bhatt. 2,48. चित्रभित्तिरितो रात्रौ पुमान् — निर्गत्यैवोपभुङ्क्ते मां प्रातश्चात्रैव लीयते Kathâs. 66,48. शीघ्रं पिबेतद्रक्तं मे यावद्भूमौ न लीयते 72, 135. Sâh. D. 7,9. R. 6,16,9. त्रिलोक्यां लीयमानायां संवर्ताम्भसि Bhâg. P. 8,24,33. 10,43,6. कुमुदमपि गते ऽस्तं लीयते चन्द्रबिम्बे हसितमिव वधूनां प्रोषितेषु प्रियेषु Rt. 3,25. उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः Spr. 450. प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते *verschwindet in, geht auf in* R. Gorr. 1,1,106. Jâǵń. 3,180. Spr. 1412, v. l. 2163. Prab. 107,18. Tattvas. 27. लीना ब्रह्मणि Çvetâçv. Up. 1,7. MBh. 14,532. 614. Kûlikop. in Ind. St. 9,20. Gaudap. zu Sâṁkhjak. 61. Bhâg. P. 1,6,18. 15,31. 3,10,7. 27,14. 6,1,2. Vedântas. (Allah.) No. 149. Sarvadarçanas. 90,1. Git. 4,2. लीनवस्तु Kap. 1,92. लीन *steckend in, verborgen in:* सौदामिनीव जलदोदरसंधिलीना Mṛkkh. 15,1. शमीमिवाभ्यन्तरलीनपावकाम् Ragh. 3,9. Spr. 1736. 2072. व्यक्ता नोक्ताश्च ये ह्यर्था लीना ये चाप्यनिर्मलाः *versteckt* (*nicht klar ausgesprochen*) Suçr. 2,556,15. Bhar. Nâṭjaç. 19,29. 32 (Sâh. D. 302). अन्तर्लीन *hineingeschlüpft, drinnen steckend:* अन्तर्लीनभुजंगमं गृहमिव Spr. 118. दुःखाग्नि Uttarar. 42,12 (56,10). Pańkat. 109,20. सर्पश्चिरं वल्मीकद्वारान्तर्लीनः 175,24. अपूर्वशर्वरीशान्तर्लीनभानुश्रियं दधे Râǵa-Tar. 3,387. अन्तर्लीनम् adv. *innerlich:* विहस्य Pańkat. 185,3. 191, 3. ed. orn. 18,21. 41,22. लीन n. *das Aufgehen —, Verschwinden in* Pańkar. 1,1,46. — गृध्राणि लीयन्ते MBh. 6,5203 fehlerhaft für गृध्रा निली°, wie die ed. Bomb. liest; लीन fehlerhaft für नील MBh. 14,2693 (ed. Bomb. नील). R. Gorr. 2,8,43. Prab. 109,1 (v. l. नील). — Vgl. तामसलीन.

— caus. लापयते P. 1,3,70 (संमाननशालीनीकरणे: प्रलम्भने च). 6,1, 48, Vârtt. (प्रलम्भनशालीनीकरणयोः). Vop. 12,1. 23,53 (पूजाभिभवे). जटाभिर्लापयते = पूजामधिगच्छति P. 1,3,70, Sch. = प्रलभते P. 6,1,48, Vârtt., Sch. Warum nicht zu लप्?

— अनु *nach Etwas verschwinden:* शब्दं ग्रसति भूतादिर्नभस्तमनुलीयते Bhâg. P. 12,4,16.

— अप caus. med. *Jmd demüthigen* oder *anführen, hintergehen* Bhatt. 8,44. Gehört wohl eher zu लप्.

— अभि 1) *sich schmiegen an:* भीष्ममेवाभिलीयन्त (एवाभ्यलीयन्त ed Bomb.) MBh. 6,3128. कपिलाशावस्य क्रोडमभ्यलीयत Daçak. 11,1. अभिलीन *angeschmiegt:* पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः Megh. 37. Pańkar. 3,9,15. — 2) *sich setzen auf, in* (von Vögeln und Insecten): विहंगमाभिलीनाश्च लताः *auf denen Vögel sitzen* Hariv. 12012. भ्रमराभिलीनयोः पङ्कजकोशयोः Ragh. 3,8.

— अव 1) *stocken:* दोषाः स्रोतस्स्ववलीयमाना घनीभावमापन्नाः Suçr. 2, 195,10. — 2) *sich niedersetzen* (von Vögeln): विहगादिभिरवलीनैः Varâh. Bṛh. S. 53,114. — 3) *sich ducken:* कार्मुकचापच्युतैर्बाणैर्वध्यमानास्तु सोमकाः। अवालीयन्त राजेन्द्र वेदनार्ता भृशार्दिताः॥ MBh. 8,939. लज्जया त्ववलीयन्ती स्वेषु गात्रेषु मैथिली *versteckt sich in ihren Gliedern* R. 6, 99,43. अवलीन *der sich geduckt —, versteckt hat:* शिंशपावृते (हनूमान्) R. 5,25,13. उदयावलीन von der Sonne Nalod. 2,46.

— व्यव *sich ducken, kauern:* श्रुत्वा गाण्डीवनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः। सर्वसैन्यानि भीतानि व्यवलीयन्त MBh. 6,3130 = Hariv. 13483.

— समव *aufgehen —, verschwinden in:* न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव समवलीयन्ते विमुक्तश्च विमुच्यत इत्येवमादिश्रुतेः Vedântas. (Allah.) No. 150.

— आ 1) *sich anschmiegen:* (कोकिला) स्थिता चूते मृतेवालीय Kathâs. 111,22. सार्धं कदम्बमालीना मेघकाले Hariv. 5424. आलीनचन्दनौ। स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ Ragh. 4,51. — 2) *sich setzen auf, in* (von Insecten): आलीनभ्रमरौ पद्मौ Kathâs. 85,26. — 3) *sich ducken, kauern, sich verstecken:* मुहुरुत्पतते बाला मुहुः पतति विह्वला। मुहुरालीयते भीता MBh. 3,2375. अस्ताद्रिकन्दरालीने लज्जयेवांशुमालिनि *versteckt* Kathâs. 18,103. बकालीन *wie ein Reiher kauernd, — sich versteckt haltend* MBh. 12,5309. आलीननरवारणा (अयोध्या) *in der Menschen und Elephanten sich versteckt halten* R. 2,114,2. आ समन्तात्लीनानि श्लिष्टानि लग्नानि नराणां वारणानि कवाटानि यस्याम् Comm. — Vgl. आलय und भावालीना.

— प्रत्या *sich hängen an* (acc.): तमेतस्मिन्क्षुधे मृत्युः प्रत्यालिल्ये

Ind. St. 2,315,9.

— उद् caus. उल्लापयते in der Verbindung बालम् = वञ्चयति (बालमुल्लापयति in anderer Bed.), in der Verb. श्येनो वर्त्तिकामुल्ला° = न्यग्भावयति P. 1,3,70, Sch. 6,1,48, Vârtt., Sch. Vop. 23,53. Warum nicht zu लप्.

— उप *sich anschmiegen an* (acc.): यथा सर्वाणि भूतानि मृत्योर्भीतानि मारिष । धर्ममेवोपलीयन्ते कर्मवन्ति हि यानि च ॥ तथा कर्णं महेष्वासं पुत्रास्तव नराधिप । उपालीयन्त संत्रासात्पाण्डवस्य महात्मनः ॥ MBh. 8, 4171. fg. 4170.

— नि 1) *ankleben, sich anheften:* निलीना मक्षिका मूर्ध्नि Varâh. Bṛh. S. 95,58. 43,63. सरोजेषु निलीनभृङ्गैः Bhaṭṭ. 2,5. पूर्वमेव हि जन्तूनां यो ऽधिवासो निलीयते Râga-Tar. 3,426. मधु भवननिलीनम् Varâh. Bṛh. S. 95,58. ब्रह्मज्ञाने निलीनाः so v. a. *ganz vertieft in* Spr. 1313, v. l. für विलीनाः. — 2) *sich niedersetzen* (von Vögeln): ध्वजेषु च निलीयन्ते वायसाः MBh. 4,1462. नीचैर्गृध्रा निलीयन्ते (so die ed. Bomb.) भारतानां चमूं प्रति 6,5203. निलिल्ये मूर्ध्नि गृध्रो ऽस्य Bhaṭṭ. 14,76. Hariv. 5828. श्येनादयो यस्य निलीयेयुः शिरस्यथ Mârk. P. 51,69. काकः कपोतो गृध्रो वा निलीयेद्यस्य मूर्धनि Verz. d. Oxf. H. 51, *a*, 33. — 3) *sich verstecken, sich verschlüpfen, verschwinden, unsichtbar werden;* in der älteren Sprache folgende Formen: निलीयमान, निलयते (= निरयते von अय् Siddh. K. zu P. 8,2,19), न्यलयत und निलायत (im Padap. ohne Avagraha), निलिल्ये, निलयां चक्रे, न्यलेष्ट, निलायम्, निलीन. योइ ऽभिर्यतो निलयते AV. 11,2,13. उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः 4,16,3. स्नुषा श्वशुराल्लज्जमाना निलीयमानैति Ait. Br. 3,22. स निलायत सो ऽपः प्राविशत् TS. 2,6,6,1. देवेभ्यो नि° *vor den Göttern* 5,1,1,4. 2,2. देवेभ्यो ऽनिलायत 4,3. देवेभ्यो निलायत 4,3,6. 6,2,4,2. TBr. 1,1,3,3. 2,1,5. 4,3,3. सा भीषा निलिल्ये Çat. Br. 1,2,3,1. 6,4,1. 4,1,3,1. 13,1,4,3. Kâth. 25,1. 7. निलीयते MBh. 1,4980. Spr. 2710. मातुः *vor der Mutter* P. 1,4,28, Sch. निलीयमाना वृत्तेषु Bhâg. P. 8,12,26. निलिल्ये MBh. 3,10560. 12,10685. Hariv. 8715. 8718. निलिल्यिरे MBh. 3,10975. Bhâg. P. 3,17,22. निलिल्युः MBh. 3,11109. 12091. R. 2,97,4 (106,2 Gorr.). Bhâg. P. 3,13,33. 4,14,3. तदा निलिल्युर्दिशि दिशि 16,23. गुहास्वन्ये न्यलेषत Bhaṭṭ. 15,32. निलीय Hariv. 8730. R. 6,9,6. Git. 2,11. Prab. 100,17. निलीन MBh. 1,7157. 7,5767. R. 1,35,15. Prab. 88,14. Bhâg. P. 8,15,33. निलीन mit pass. Bed.: अरण्यानि — यथानिलयमायद्भिर्निलीनानि मृगद्विजैः *Wälder, in denen sich Thiere und Vögel verkrochen hatten,* R. 2,46,3. — Vgl. निलय fg. und निलायन in den Nachträgen.

— अपनि *sich verstecken, verschwinden:* शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम् ṚV. 10,84,7. देवा अपन्यलयन्त Çat. Br. 4,1,3,1.

— अभिनि s. °लीयमानक.

— संनि 1) *sich niedersetzen* (von Vögeln): उपरिष्टाच्च वृक्षस्य बलाका संन्यलीयत MBh. 3,13654. — 2) *sich verstecken, verschwinden:* यां यां दिशमवेक्षन्त । तस्यां तस्यां भयत्रस्ता राक्षसाः संनिलिल्यिरे R. 6,72,25.

— प्र, °लीय und लाय Vop. 12,1. 26,212. *sich verstecken:* प्रलायम् mit इ und चर् *sich versteckt halten* Çat. Br. 7,2,1,9. TBr. 2,2,8,5. Kâth. 29,8. *sich auflösen; aufgehen in* (auch vom Sterben), *verschwinden:* प्रेव वै रेतो लीयते प्रेव वपा लीयते Ait. Br. 2,14. Çat. Br. 14,2,2,54. अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ Bhag. 8,18. M. 1,54. तास्वेव भूतमात्रासु प्रलीयन्ते 12,17. Kûlikop. in Ind. St. 9,20. सह मेघेन तडित्प्रलीयते Spr. 2970. एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते 3822 (vgl. Bhâg. P. 10,49,21). तस्मान्निवर्ततां तेजस्त्वय्येव प्रलीयताम् MBh. 7,2059. प्रलीयते चोद्भवति 12,7084. 13,3232. 14,614. 692. 705. Hariv. 518. 10550. Suçr. 1,377,10. Kumâras. 2,10. Tattvas. 27. Bhâg. P. 10,14,25. Pañkar. 2,1,31. Kull. zu M. 1,52. प्रलीन *verschwunden, dahin gegangen* (auch von Gestorbenen), *aufgegangen in* Bhag. 14,15. MBh. 14,690. 695. 698. 702. 704. उद्यानानि प्रलीनविहगानि R. 2,59,12. Suçr. 1,347,19. Spr. 3839. Çântiç. in Çatakâv. 40. Kathâs. 94,66. °मुक्त Râga-Tar. 1,1. Pañkar. 2,1,21. 30. Sarvadarçanas. 179,21. प्रलीनोडुपे निशि Bhâg. P. 9,2,6. °शाख *verloren gegangen* Müller, SL. 104. प्रलीना (= स्वस्वव्यापाररहिताः Sâj.) न्योकस इव शेरे *aufgelöst, hingegossen* Ait. Br. 5,28. — Vgl. प्रलय, प्रलयन, प्रलीनता unter प्रलीन.

— विप्र, partic. °लीन *auseinandergeflogen* (von einem geschlagenen Heere) MBh. 7,746.

— संप्र *verschwinden, aufgehen —, untergehen in:* अव्यक्तं पुरुषे ब्रह्मन्निष्क्रिये संप्रलीयते MBh. 12,12895. Bhâg. P. 11,24,25. कार्याब्धौ Spr. 1478. °लीन *verschwunden, aufgegangen in:* °महोरग (गिरि) R. 5,4,12. एवं धर्मान्राजधर्मेषु सर्वान्सर्वावस्थं संप्रलीनान्निबोध *aufgegangen in* so v. a. *enthalten in* MBh. 12,2380.

— प्रति 1) *sich klammern an:* प्रतिलीन आसीत so v. a. *unverrückt* Çâñkh. Gṛhj. 3,1. — 2) *verschwinden:* स्वप्नवत्प्रत्यलीयत Bhâg. P. 9,21,17.

— वि, °लेता und लाता, °लीय und °लाय P. 6,1,51, Sch. 1) *sich schmiegen —, sich heften an:* तत्र केचिन्नरा भीता व्यलीयन्त महीतले so v. a. *duckten sich auf den Erdboden* MBh. 10,410. पतत्पतंगप्रतिमस्तपोनिधिः पुरो ऽस्य यावन्न भुवि व्यलीयत Çiç. 1,12. तदङ्के विलीनमितलोचनाः *geheftet auf* Pañkar. 3,7,33. तमोभिश्छायाविलीनैः *geheftet an* Ragh. 13,56. ब्रह्मज्ञाने विलीनाः *vertieft in* Spr. 1313. — 2) *sich setzen* (von Vögeln): शाखाविलीनानां पक्षिणाम् *sitzend auf* Kathâs. 26,28. — 3) *stocken:* विलीनान्तरम् Spr. 1163. — 4) *sich verstecken, sich verschlüpfen:* विलीयमानैर्विहगैः Spr. 2839. Kathâs. 26,34. विलीन *versteckt* Bhâg. P. 7,2,56. विलीयन्ते यं दृष्ट्वा शत्रवः Halâj. 188 bei West. विलिल्युः Akh. 6,13 (निलिल्युः MBh. 3,12091). *verschwinden, zu Nichte werden:* यस्मिन्धर्मो विराजेत तं राजानं प्रचक्षते । यस्मिन्विलीयते धर्मस्तं देवा वृषलं विदुः MBh. 12,3376. Bhâg. P. 1,18,45. Spr. 450, v. l. न कथंचिद्विलीयन्ते विद्वद्भिश्चिन्तिता नयाः 1955. विलीयेन्दुः 2840. विलीयन्ते तदा क्लेशाः Bhâg. P. 3,7,13. Weber, Râmat. Up. 355. fg. Gegens. जायते Bhâg. P. 10,24,13. 6,1,55. Pañkar. 4,3,208. विलीन *verschwunden, zu Nichte geworden, hingegangen* Maitrjup. 6,24. Ṛt. 4,1. Varâh. Bṛh. S. 4,17. Prab. 98,13. Pañkar. 1,14,22. 3,1,20. °पल्लव Kathâs. 22,5. अविलीना वत्सरसहस्राणि भूयाः so v. a. *lebe* Uttarar. 124, 12 (168,7). — 5) *zergehen, sich auflösen, schmelzen:* हिमम् Hariv. 6245. तुहिनेन विलीयता Mârk. P. 61,19. स्थालीपाको वि लीयते AV. 20,134,3. 4. आज्यम् Kauç. 2. Suçr. 1,99,6. विलीयमानैवानन्दात् Daçak. 2,17. विलीन *zergangen, aufgelöst, geschmolzen* AK. 3,2,49. Trik. 3,3,160. H. 1487. an. 3,415. Halâj. 2,121. Khând. Up. 6,13,1. Suçr. 2,348,4. Spr. 830.

KATHÂS. 35,84. 87. MÂRK. P. 61,28. स्वयंविलीन TS. Comm. 2,109,6. — Vgl. विलय fg. — caus. 1) *verschwinden machen, aufgehen lassen in* (loc.), *zu Nichte machen:* सर्वं चिदात्मनि विलापयेत् Verz. d. Oxf. H. 226, *b*, 3. 6. विलापिता (als Erkl. von निर्यापिता:) देहधर्मा: Comm. zu BHÂG. P. 3,21, 17. विलापित PRAB. 116,8. — 2) *schmelzen* (trans.): विलापयत्याज्यम् TBR. Comm. 1,66,16. KAUÇ. 126. विलाप्यमान SUÇR. 2,363,3. विलापित 362,10. विलापयति, विलाययति, विलालयति oder विलीनयति घृतम् P. 7,3,39, Sch. जतु विलाययति ebend. लोहं विलापयति SIDDH. K. 153, *a*,13. VOP. 18,15. 23,53.

— अनुवि *sich auflösen in* (acc.): यथा सैन्धवखिल्य उदके प्रास्त उदकमेवानुविलीयेत ÇAT. BR. 14,5,4,12.

— अभिवि caus. *schmelzen lassen:* °लाप्य SUÇR. 2,88,3.

— प्रवि *verschwinden, zu Nichte werden:* कर्म समग्रं प्रविलीयते BHAG. 4,23. एन: MBH. 1,2319. 6462. पापम् — यथा लवणमम्भोभिराप्लुतं प्रविलीयते 13,7590. 14,1105. HARIV. 12246. SUÇR. 1,318,4. VARÂH. BRH. S. 34,3. Verz. d. Oxf. H. 224,*a*,1. इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामा: MUND. UP. 3,2,2. MBH. 5,3839. Vgl. प्रविलय. — caus. °लापयति 1) *verschwinden —, aufgehen lassen in* (loc.) BHÂG. P. 1,13,52. Verz. d. Oxf. H. 226,*b*, 4. 5. — 2) *auflösen, schmelzen* SUÇR. 1,20,9. 14. 2,368,12.

— सम् *sich anschmiegen:* अन्योऽन्यं समलीयन्त पलायनपरायणा: MBH. 7,934. मृडराङ्गै: कृशो भूत्वा शनै: संलीयते रिपु: Spr. 4746. गात्रं संलीय *an den Leib sich schmiegend* 3528. श्रवणौ शिरोधरायां संलीने HARIV. 4787. संलीनकर्णा PAÑKAT. 163,6. *hineingehen in:* यथा राजन्हस्तिपदे पदानि संलीयन्ते सर्वसत्त्वोद्भवानि MBH. 12,2380. नष्टमात्मनि संलीनं नाधिजग्मुर्हुताशनम् 13,4036. *sich verstecken, sich versteckt halten:* संलीनमपि दुर्गेषु निन्यतुर्यमसादनम् 1,7671. संलीना मृगपक्षिण: R. GORR. 1, 36,15. निलयसंलीनैर्मृगपक्षिभि: 2,44,3. 3,29,12. *sich ducken, kauern, sich zusammenziehen:* संलीय तस्मिन्निषसाद वृक्षे R. 5,19,34. संलीयमान von einem geschlagenen Heere MBH. 7,8146. संलीन *geduckt, gekauert, zusammengezogen* SUÇR. 2,384,4. MBH. 3,8705. संलीनो रथोपस्थ उपाविशत् 4,1457. 7,5794. 10,448. संलीना स्वेषु गात्रेषु SÂH. D. 116. शैलपृष्ठार्धसंलीन उरग: HARIV. 4677. संलीनमानस (संदीन° die neuere Ausg.) so v. a. *kleinmüthig* HARIV. 5690. — Vgl. संलय.

2. ली f. = श्लेषण (vgl. 1. ली) und चपल (vgl. 3. ली) MED. l. 1.

3. ली nur intens. लेलायति (दीप्तौ) SIDDH. K. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. लेलायति ÇAT. BR. 14; लेलायन्ती, लेलयतस् gen., अलेलायत्, अलेलेत्, अलेलीयत; *schwanken, schaukeln, zittern:* पृथिव्यलेलायद्यथा पुष्करपर्णमेवम् ÇAT. BR. 2,1,1,8. TS. 5,6,4,2. KÂTH. 8,2. 22,9. ÇAT. BR. 11,4,3,1. वायोर्लेलयत इवेवोपग्रण्वन्ति 8,3,8. 14,7,1,7. यदा लेलायते ह्यर्चि: समिद्धे हव्यवाहने MUND. UP. 1,2,2. नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहि: ÇVETÂÇV. UP. 3,18. लेलायमाना Bez. einer der sieben Zungen des Agni MUND. UP. 1,2,4. GRHJAS. 1,14. — Vgl. लेलया.

लीका f. Bez. best. böser Geister MÂRK. P. 51,109. fgg.

लीक्षा f. = लिक्षा ÇABDAR. im ÇKDR.

लीक्षा f. dass. ebend.

लीन s. u. 1. ली; davon 1) लीनता f. *a) das sich Anschmiegen an:* लीनता हरिपादाब्जे मुक्तिरित्यभिधीयते PAÑKAR. 2,7,2. — *b) das Versteckt-sein:* पर्णाभ्यन्तरलीनतां विजहति स्कन्धोदयात्पादपा: ÇÂK. 167. — 2) लीनत्व n. *das Stecken in Etwas, Verstecktsein* SUÇR. 2,405,2.

लीप्सितव्य (vom desid. von लभ्) adj. *begehrenswerth* AIT. BR. 2,3.

लीला f. 1) *Spiel, Scherz, Belustigung;* = क्रीडा, विलास AK. 3,4, 26,201. H. 555. an. 2,508. MED. l. 46. क्रीडन्ति लीलाम् HARIV. 4339. °विधान 15787. लीला विदधत: BHÂG. P. 1,1,18. लीला: कुरु HARIV. 2463. सहजां लीलां धारयन् 2985. लीलाढ्यो नारद: MBH. 13,252. BHAR. NÂṬJAÇ. 34,82. Spr. 685. 3318. fg. RAGH. 16,71. ÇIÇ. 8,24. BHÂG. P. 10,11, 32. Verz. d. Oxf. H. 127,*a*, No. 223. स्त्रीभिर्लीलेव प्रोच्यते लीला PRASAÑGÂBH. 14,*b*. शिशुलीलां तत: कुर्वन् HARIV. 3407. 3650. बाल° BHÂG. P. 3,2,2. बाललीलाधर SUÇR. 2,394,11. बिभ्रतीं चाम्बिकालीलाम् (जाह्नवीम्) KATHÂS. 93,78. कृष्ण° Spr. 4897. वृद्धो ऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम् 4056. कन्दुक° *Ballspiel* KUMÂRAS. 5,19. BHÂG. P. 5,9,19. 8,12, 18. 22. हिन्दोल° Spr. 3053. द्यूत° KATHÂS. 62,164. पानादि° 18,27. 17,1. 38,33. 56,210. 75,115. 108,123. मृगया° (so zu verbinden) 42,6. संभोग° 93,46. तन्मुखाब्जालि° 74,240. सदुद्भवस्थाननिरोध° BHÂG. P. 2,4,12. SARVADARÇANAS. 49,20. लीलया नि:शङ्कितया PAÑKAT. 161,15. लीलया *zur Belustigung, um sich zu belustigen* Spr. 566. KATHÂS. 44,40. SARVADARÇANAS. 55,7. BHÂG. P. 1,1,17. 3,7,2. 10,11. आत्मलीलया dass. 1, 10,24. स्वलीलया dass. 7,8,40. 10,8,52. स्वलीलावशात् SARVADARÇANAS. 54,18. am Anf. eines comp. लीला so v. a. लीलया *zur Belustigung:* °विग्रहग्रहणा 129,2. 13. जलद° *das Spiel der Wolken* Journ. of the Am. Or. S. 7,44. पल्लव° Spr. 680. Insbes. *die in der Nachahmung des Geliebten bestehende Belustigung eines Mädchens:* प्रियानुकरणं लीला मधुराङ्गविचेष्टितै: DAÇAR. 2,35. 4,64. SÂH. D. 136. 50,15. 54,2. PRATÂPAR. 55,*b*. AK. 1,1,7,32. 3,4,26,201. H. 507. H. an. MED. HALÂJ. 1,89. GÎT. 6,5. — 2) *blosses Spiel, blosse Belustigung* so v. a. *eine ohne alle Anstrengung von der Hand gehende Handlung:* निखिलवारिधिपान° RÂGA-TAR. 4,717. हरेर्धृतक्रोडतनो: स्वमायया निशम्य गोरुद्धरणं रसातलात्। लीलाम् BHÂG. P. 3,20,8. लीलया so v. a. *ohne alle Anstrengung, mit der grössten Leichtigkeit* MBH. 13,855. HARIV. 2330. R. 1,67,15. 3,31, 30. 4,9,92. KATHÂS. 47,84. VṚDDHA-KÂṆ. 15,19. BHÂG. P. 3,2,30. 13,46. 19,9. 11. MÂRK. P. 21,83. 82,49. PAÑKAT. 48,20. 211,12. ed. orn. 56,3. HIT. 81,18; vgl. लीलामात्रेण PAÑKAR. 1,9,22. अप्रयत्नेनैव लीलान्यायेन ÇAṀK. bei WIND. Sankara 112. Am Anf. eines comp. लीला = लीलया *ohne Anstrengung:* °साध्य KATHÂS. 123,161. °दग्ध Spr. 919. °गोवर्धनधर PAÑKAR. 4,3,134. — 3) *blosses Spiel* so v. a. *blosses Aussehen, Schein:* स प्रविश्य ददर्शात्र चित्रालोकनलीलया। स्थितं कनकवर्षं तं नृपं चित्रकरो रह:॥ so v. a. *er betrachtete den Fürsten als wenn er ein Bild ansähe* KATHÂS. 55,39. तस्मिंश्चितानले — न्यपतच्छीतलह्रदलीलया *als wenn es ein kühler Teich wäre* 53,160. गजलीलया so v. a. *nach Art eines Elephanten, wie ein Elephant* BHÂG. P. 3,13,32. गजेन्द्रलील *einen Elephanten darstellend, einem El. gleichend* 26. 9,10,6. Auch in comp. mit dem, was den Schein bewirkt: शैलप्राकारलीलया RÂGA-TAR. 1,31. लावण्यलीलाजल (सरस्) Spr. 1970. गोत्रलीलातपत्र BHÂG. P. 3,2,33. — 4) *beabsichtigter Schein, Verstellung:* °नटन *ein Tanzen, durch welches man Jmd zu täuschen beabsichtigt,* Spr. 2396. °मन्दं प्रस्थितम् *erkünstelt langsam* 2081. अवज्ञया न दातव्यं कस्यचिल्लीलयापि वा so v. a. *im Spotte, zum blossen Scheine* 4436, v. l. — 5) *Anmuth, Liebreiz* KUMÂRAS.

1,34. Ragh. 6,1. लीलावधूतैश्चामरैः Megh. 36. Kathâs. 56,250. Kaurap. 34. Prab. 40,4. °खेल Ragh. 4,22. °विलसितैः Spr. 771. °स्मित Ragh. 5,70. Râǵa-Tar. 4,302. °हसित Bhâg. P. 2,2,12. °गति Ragh. 7,7 (= Kumâras. 7,58). लीलावलोकन Bhâg. P. 3,20,30. 8,8,7. °वलयरणित Spr. 23. — 6) *ein best. Metrum: 4 Mal* —◡◡—◡◡—◡◡—◡◡—◡◡— Colebr. Misc. Ess. II,162 (XI,6). — Das Wort wird gewöhnlich als eine Corruption von क्रीडा betrachtet, könnte aber vielleicht mit 3. ली in Verbindung stehen. — Vgl. अन्त°, अव°, आदि°, तुरगलीलक, भागवतलीलारहस्य, मध्य°, महालीलसरस्वती, राजलीलानामन्, सलील.

लीलाकमल n. *eine zum Spielen dienende Lotusblüthe* Kumâras. 6,84. Megh. 66.

लीलाकर m. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,409. fg. — Vgl. मत्तमातङ्ग°.

लीलाकलह m. *ein scherzhafter —, nicht ernstlich gemeinter Streit* Spr. 3178.

लीलाखेल 1) adj. *anmuthig sich wiegend* Ragh. 4,22. — 2) n. *ein best. Metrum: 4 Mal* — — — — — — — — — — — — — — — — Colebr. Misc. Ess. II,161 (X,6); लील° gedr., man könnte auch लीलाखेला vermuthen.

लीलागार n. *Lusthaus* Ragh. 8,94.

लीलागृह n. dass. Kathâs. 1,66.

लीलागेह n. dass.: अम्बु° Kathâs. 114,51.

लीलाङ्ग adj. als Beiw. eines Stiers MBh. 13,3778 fehlerhaft für नीलाङ्ग. Nilak.: लीलाङ्ग = विलसिताङ्ग.

लीलाचल m. N. pr. eines Gebietes, = लीलाद्रि = पुरुषोत्तम (?) Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,13. — Vgl. लीलापर्वत und नीलाचल.

लीलातनु f. *eine zum blossen Vergnügen angenommene Form, Scheinform* Bhâg. P. 7,7,34.

लीलातामरस n. = लीलाकमल Spr. 2662. 2671.

लीलाद्रि m. = लीलाचल Verz. d. Oxf. H. 77,*b*,13.

लीलापद्म n. = लीलाकमल Sâh. D. 21,5. Kâvjâd. 2,261.

लीलापर्वत m. N. pr. eines *Berges* Kathâs. 48,51. — Vgl. लीलाचल.

लीलाब्ज n. = लीलाकमल Kuvalaj. 166,*a*,3.

लीलाभरण n. *Scheinschmuck*, z. B. ein Armband aus Lotusfasern Çâk. Ch. 60,7.

लीलामधुकर m. Titel eines Schauspiels Sâh. D. 192,4.

लीलामनुष्य m. *dem Schein nach Mensch, nicht in Wirklichkeit Mensch:* विष्णु Bhâg. P. 10,45,45.

लीलामय (von लीला) adj. *in Spielen —, Belustigungen bestehend, davon handelnd:* रासकुञ्जादिलीलामयगीतानि Verz. d. Oxf. H. 128,*b*,21.

लीलामानुषविग्रह adj. *der nur zu seiner Belustigung* oder *zum Schein einen menschlichen Körper hat*, unter den Beiww. Kṛshṇa's Pańkar. 4,1,17.

लीलाम्बुज n. = लीलाकमल Kathâs. 23,69. 25,223.

लीलाय् (von लीला), °यति, °यते *spielen, sich belustigen:* °यन्त्यः कुलं घ्नन्ति (योषितः) Spr. 2672. Hariv. 8331. °यमान 10597. R. 3,43,19. लीलायित n. *Spiel, Belustigung* Git. 12,28. Râǵa-Tar. 1,208. — Vgl. राज्य°.

लीलायुध m. pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 5,592. wohl fehlerhaft für नीलायुध, wie die ed. Bomb. liest.

लीलारति f. *Belustigung:* काकेषु *mit Krähen* Spr. 926.

लीलारविन्द n. = लीलाकमल Ragh. 6,13. Kathâs. 28,53.

लीलावज्र n. *ein wie ein Donnerkeil aussehendes Werkzeug* Kathâs. 35,42.

लीलावतार m. *das Erscheinen* Vishṇu's *auf Erden zu seiner eigenen Belustigung* Bhâg. P. 1,2,34. 2,6,45. 8,24,29.

लीलावत् (von लीला) 1) adj. *anmuthig, reizend:* भारती Verz. d. Oxf. H. 142,*a*,10. Colebr. Alg. 1. — 2) f. °वती *a*) *eine anmuthige Schöne* H. 507, Sch. Spr. 2673. 3168. Colebr. Alg. 5. 127. — *b*) Bein. der Durgâ Verz. d. Oxf. H. 92,*b*, No. 148, Z. 5. — *c*) N. pr. der Gattin des Asura Maja Kathâs. 45,137. — *d*) N. pr. einer Gemahlin Avikshita's Mârk. P. 123,17. — *e*) N. pr. einer Kaufmannstochter Hit. 28,2. — *f*) *ein best. Versmaass* Colebr. Misc. Ess. II,157 (III,35). — *g*) Titel eines Abschnittes des Siddhântaçiromaṇi Gild. Bibl. 505. fgg. Hall 120. Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,18. Verz. d. B. H. No. 828. fgg. 831. °टीका 868. Ind. St. 2,253. — *h*) Titel eines medic. Werkes Verz. d. Oxf. H. 404,*b*, No. 35. — *i*) = न्याय°: °प्रकाश Titel eines Commentars zu diesem Werke Verz. d. B. H. No. 687. fgg. — Vgl. न्याय°, रूप°.

लीलावापी f. *Lustteich* Kathâs. 9,46.

* लीलावेश्मन् n. *Lusthaus* Râǵa-Tar. 1,328.

लीलाशुक m. *Vergnügungspapagei*, Bein. des Dichters Bilvamaṅgala Verz. d. Oxf. H. 128,*a*, No. 230.

लीलास्वात्मप्रिय m. N. pr. eines Autors von Mantra bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,14.

लीलोद्यान n. *Lustgarten* Trik. 2,4,1. Kathâs. 71,72. 109,41. 114,55.

लीलोपवती (!) f. *ein best. Metrum: 4 Mal* — — — —, — — — — — — — — — — Colebr. Misc. Ess. II,161 (IX,18).

1. लुक् *zusammentreffen mit* (समम्, सह): देवैः सर्वैः समं यत्र लुकिष्यसि महेश्वर, इह मे प्रीतिरतुला लुकितस्य सुरैः सह Verz. d. Oxf. H. 66, *a*, N. 1 zur Erklärung von लुकेश्वर.

2. लुक् in der Gramm. *Abfall, Schwund* VS. Prât. 3,12. P. 1,1,61. 2, 49. 4,1,22. 7,3,89. 4,82. Vop. 3,54. 91. 169. 6,3 u. s. w. *abgefallen, geschwunden* VS. Prât. 1,114, v. l. Wird Gaṇaratnamah. 2,85 auf लुञ्च् (लुच्यते ऽपनीयत इति लुक्) zurückgeführt, was wohl richtig ist, obgleich लुक् (loc. लुकि, gen. du. लुकोस्), nicht लुच्, das Thema ist.

लुकेश्वर n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*b*,19. °तीर्थ 66, *a*,31. — Vgl. unter 1. लुक् und लुठनेश्वरतीर्थ, लुठेश्वर.

लुगि in महालुगिपद्धति.

लुङ्ग = मातुलुङ्ग *Citrone* Siddh. und Hrd. in Nigh. Pr.

लुञ्च्, लुँचति (अपनयने) Dhâtup. 7,5. लुञ्चित्वा und लुचित्वा P. 1,2,24. Vop. 26,205. *raufen, ausraufen, rupfen, berupfen:* लुलुञ्चुश्च तदा केशान् *sie rauften sich das Haar* MBh. 9,1635. R. 6,37,50. Müller, SL. 83. Bhaṭṭ. 3,22. 14,59. 15,3 (अलुञ्चिषुः). लुञ्चितकेशाः von den Ǵaina gesagt Colebr. Misc. Ess. I, 381. लुञ्चितमूर्धजाः und लुञ्चिताः desgl. Sarvadarçanas. 44,3. 5. श्मश्रूणि । भृगोर्लुलुञ्चे Bhâg. P. 4,5,19. किञ्चिल्लुञ्चितपत्र Kathâs. 62,70. तित्तिरिं लुञ्चितम् Suçr. 2,435,14. अलुञ्चीत्कर्णनासिकम् *ausreissen, abreissen* Bhaṭṭ. 15,57. *enthülsen:* तिलानुल्लोदकेन संमर्द्य लुञ्चित्वा (v. l. विलुण्ठ्य) Pańkat. 121,13. तिला लुञ्चिताः (v. l. लुण्ठिताः) 17. 19. fg. 22. 24. Spr. 1516. मृष्टलुञ्चित (mit Verstellung der Worte) gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. Statt किंचिन्मुञ्चन्तः Suçr. 1,105,

13 ist wohl किंचिल्लुञ्चन्तः *an Etwas zupfend* zu lesen.

— अव *abreissen, ausreissen:* अवलुच्य जटामेकां जुहावाग्नौ MBh. 3, 10760. fg. Mârk. P. 5, 3. — Vgl. अवलुञ्चन.

— आ *ausraufen, rupfen an:* कर्णौ केशांश्च Suçr. 1, 118, 20. — Vgl. आलुञ्चन.

— उद् *ausrupfen, berupfen:* उल्लुञ्चितपक्ष्म Kathâs. 62, 71. — Vgl. उल्लुञ्चन.

— वि *ausraufen:* मूर्धजान् Bhaṭṭ. 18, 38.

लुञ्च (von लुञ्च्) nom. ag.: अ° vielleicht *der Einen nicht rupft und zupft* Bhar. Nâṭjaç. 34, 102. — Vgl. कु°.

लुञ्चक (wie eben) 1) nom. ag. *Raufer, Zauser;* s. केश°. — 2) m. wohl *eine best. Körnerfrucht* Suçr. 2, 72, 19 (es könnte aber auch अलु° oder आलु° gemeint sein).

लुञ्चन (wie eben) n. *das Ausraufen:* केश° Daçak. 68, 13. — Vgl. लुण्ठन 2).

लुञ्ज्, लुञ्जयति (हिंसाबलादाननिकेतनेषु, v. l. दान st. आदान) Dhâtup. 32, 31, v. l. (भाषार्थ oder भासार्थ) 33, 85.

लुट्, लोटते (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. (प्रतिघाते, दीप्तिप्रतिहत्योः) Dhâtup. 18, 8. लोटति (विलोडने, विलोटने, विलोटविलोडयोः) 9, 27. लुट्यति (विलोडने) 26, 113. *sich wälzen:* लुट्यन्सशोको भुवि Bhaṭṭ. 3, 32. 18, 11. लुटन्त् wohl fehlerhaft für लुठन्त् *umherliegend:* सर्वत्रैव लुटत्सुरत्ननिचये: Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 7, Çl. 20. — caus. लोटयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhâtup. 33, 81. aor. अलूलुटत् und अलुलोटत् Njâsa in Siddh. K. zu P. 7, 4, 3.

1. लुठ्, लुठति (संश्लेषणे, लोठे) Dhâtup. 28, 87. अलुठत् und अलोठिष्ट P. 1, 3, 91. 1) *sich wälzen:* त्वं पादान्ते लुठसि Spr. 752. लुठति धरणिशयने Gît. 5, 5. 7, 34. Verz. d. Oxf. H. 77, *a*, 13. लुठन् 145, *a*, 25. Kathâs. 71, 55. 84, 14. 89, 34. 95, 25. पङ्के लुठन्तमुरगम् Râga-Tar. 4, 600. Çatr. 14, 252. Kull. zu M. 6, 22. अलुठन् Râga-Tar. 7, 1067. लुलोठ Kathâs. 7, 66. 61, 212. 71, 54. Hit. 123, 18. 128, 13. लुठमानः स गच्छति Mârk. P. 12, 6. लुलुठे Bhaṭṭ. 14, 54. अलोठिष्ट 15, 56. लुठित *sich wälzend:* चकार मृतमात्मानं निश्चेष्टं लुठिताङ्गकम् Kathâs. 58, 29. भूमौ लुठिताः Pañkat. ed. orn. 57, 20. von einem Pferde AK. 2, 8, 2, 18. n. *das Sichwälzen* (eines Pferdes) H. 1245. *sich wälzen* von einem Flusse: अलकनन्दा लुठन्ती भारतमभि वर्षम् Bhâg. P. 5, 17, 9. *sich hinundherbewegen, rollen:* जलकणाः Spr. 3490. निरन्तरलुठद्बाष्प 4051. शिरांसि लुठन्ति Mahânâṭ. 592 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 151, *a*, 21). लुठल्लोलालकैः *flatternd* Spr. 3235. हारो ऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले 3350. मणिर्लुठति पादेषु 2086. लिङ्गपीठलुठत्स्नानकुम्भ Râga-Tar. 2, 126. लुठदश्मन् 5, 92. शाखिनो ऽलुठन् (= पतिताः Comm.) Bhaṭṭ. 15, 25. अलोठिषत वातेन प्रकीर्णाः स्तवकोच्चयाः 8, 66. शिलाकलापो लुठितः किमञ्जनगिरेरयम् Kathâs. 102, 77. — 2) *berühren:* मां विषाणाग्रेण लुठति (= संघट्टयति) Bhâg. P. 5, 8, 18. *in Aufregung versetzen:* मर्माणि लुठन्ति (= लोठयन्ति, क्षोभयन्ति Comm.) हृदयं मम 1, 15, 18. — लोठते (गतिकर्मन्) Naigh. 2, 14. लुठ्, लोठति (उपघाते) Dhâtup. 9, 52. लुठ्, लोठते (प्रतिघाते) 18, 9.

— caus. अलूलुठत् und अलुलोठत् Siddh. K. zu P. 7, 4, 3. Vop. 18, 3. *wälzen, hinundherrollen:* लाङ्गूलैर्लोठयां चक्रुः (व्यापादितवन्तः, ताडितवन्तः Comm.) Bhaṭṭ. 14, 26.

— desid. *im Begriff sein —, nahe daran sein zu rollen:* अश्मा लुलुठिषते P. 3, 1, 7, Vârtt. 1, Schol.

— उद् *sich krampfhaft bewegen:* उल्लुठति Spr. 1971.

— निस् *herabrollen:* शैलनिर्लुठिताः शिलाः Râga-Tar. 5, 88. — caus. *herabwälzen:* शतमन्यद्गजेन्द्राणां निरलोठयत् Râga-Tar. 1, 303.

— परिनिस् *herabrollen:* तस्य विन्ध्यतटव्यूढवक्षसः परिनिर्लुठत्। सशब्दमभिषेकाम्बु रेवास्रोत इवाबभौ ॥ Râga-Tar. 3, 240.

— परि *hinundherrollen:* पर्यलुठन्नितस्ततः — नरशिरःकपालानि Daçak. 151, 5.

— प्र *sich wälzen:* क्षितौ तस्य प्रलुठतः Pañkat. 254, 22. प्रलुठित *sich wälzend* Bhaṭṭ. 5, 108. प्रलोठित (vgl. P. 1, 2, 21) *der sich zu wälzen angefangen hat* 7, 104.

— वि 1) *sich wälzen, sich hinundherbewegen, hinundherzucken:* आसान्मुञ्चति भूतले विलुठति Sâh. D. 57, 4. स्वपीठलुठन्मूर्धन् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 519, Çl. 26. विलुठतो वह्निकणस्य Spr. 4159. — 2) *in Bewegung bringen, in Aufregung versetzen:* विलुठितमाभीरवारनारीभिः Verz. d. Oxf. H. 226, *b*, No. 555, Çl. 1.

2. लुठ्, लोठयति (चौर्ये) Vop. in Dhâtup. 32, 27. *plündern:* मठिका लोठ्यमाना Râga-Tar. 4, 71. — Vgl. लुण्ट्, लुण्ठ्, लुण्ड्.

— निस् *plündern, rauben, stehlen:* निर्लोठ्य मठिकाम् Kathâs. 76, 30. परकाव्येन कवयः परद्रव्येण चेश्वराः। निर्लोठितेन स्वकृतिं पुष्णन्त्यद्यतने क्षणे ॥ Spr. 4504.

लुठन (von 1. लुठ्) n. *das Sichwälzen* Trik. 2, 8, 46. Spr. 4675.

लुठनेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha, = लुठेश्वर, लुकेश्वर Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 15.

लुठेश्वर n. = लुठनेश्वरतीर्थ Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 16.

लुड्, लोडति (विलोडने, मन्थे) Dhâtup. 9, 27, v. l. लुडति (संश्लेषणे, श्लेषे, संवृतौ) 28, 87, v. l. — Vgl. लुल् und 2. लुट्.

— caus. लोडयति *rühren, aufrühren, in Bewegung —, in Unruhe versetzen:* सारमुद्धर्तुमेते कलशिमुदधिगुर्वीं वल्लवा लोडयन्ति Çiç. 11, 8. मृगयूथलोडिता (सरित्) R. 2, 95, 18 (104, 19 Gorr.). वातलोडिता जलराशयः 5, 74, 31. लोड्यमानं पाण्डवानां महार्णवम् MBh. 9, 700. अनीकं लोडयन् 7, 1804. 3367. 6, 5197. 8, 2389. तद्वनम् — लोडयामास दुष्यन्तः सूदयन्विविधान्मृगान् 1, 2833. 2838. R. 5, 60, 7.

— आ caus. *rühren, umherbewegen, umrühren, mengen, hineinrühren:* मन्थं वा प्रसव्यमालोड्य Âçv. Gṛhj. 3, 10, 11. पिष्टमालोड्य तोयेन Schol. zu Kâtj. Çr. 150, 16. 510, 4. Âçv. Gṛhj. 1, 24, 15. Çârṅg. Saṁh. 2, 6, 1. Suçr. 1, 32, 18. 158, 10. 2, 110, 13. 131, 15. विषमालोड्य पास्यामि MBh. 4, 689. R. 2, 48, 24. R. Gorr. 2, 45, 30. गजालोडिततोय *umgerührt, aufgerührt* Suçr. 2, 173, 20. मत्स्यजीविभिर्जालैस्तज्जलाशयमालोड्य (so die v. l.) Pañkat. 78, 14. आलोडित = मथित Med. t. 142. *in Unordnung bringen, verwirren, in Unruhe versetzen:* आलोडितान्घटान् R. 5, 14, 51. व्यूहेष्वालोड्यमानेषु पाण्डवानाम् MBh. 7, 5096. महतीं सेनामालोड्य 5823. वनेचरस्य किमिदं कामेनालोड्यते मनः 1, 7921. काकेनालोडितां ताम् (सीताम्) R. Gorr. 2, 105, 39. *durchwühlen* (ein Buch), *sich vertraut machen mit:* आलोड्य सर्वशास्त्राणि पुराणानि Prasaṅgâbh. 13, *a*. Sarvadarçanas. 1, 9. भरतादिमतं सर्वमालोड्यातिप्रयत्नतः Verz. d. Oxf. H. 200, *b*, No. 476. — Vgl. आलोडन.

— व्या caus.: °लोडित = मथित H. an. 3, 285. st. व्यालोडयत् ist

Hariv. 9091, wie schon das Versmaass zeigt, mit der neueren Ausg. व्यलोडयत् zu lesen.

— समा caus. *zusammenrühren, umrühren, hineinrühren* Suçr. 2,350, 16. तदेकध्यं समालोड्य 65,6. पिष्टं समालोड्य तोयेन सह MBh. 13,706. विषमेतत्समालोड्य (°नोड्य ed. Calc.) कुम्भेन 3,11477. *verwirren, in Unordnung bringen:* सेनाम् MBh. 8,891. *durchwühlen* (ein Buch), *sich vertraut machen mit:* भाष्यकारमतं सम्यक् – समालोड्य Verz. d. Oxf. H. 2, *b*,4. Hierher wohl auch die uns nicht vorliegende Stelle Kâçikh. 10,48 (*to reflect* Benfey).

— निस् caus. *gründlich durchwühlen, genau durchforschen:* अनिर्लोडितकार्य Çiç. 2,27.

— परि caus. *verwirren, in Unordnung bringen:* वनानि परिलोडयन् MBh. 2,389.

— विप्र caus. *verwühlen, in Unordnung bringen:* नलिनी द्विरदेनेव समन्ताद्विप्रलोडिता MBh. 7,6624. st. dessen प्रतिलोडिता (प्रविलोडिता?) 4999.

— प्रति caus. s. u. विप्र.

— वि caus. *verrühren, umrühren, aufrühren* Suçr. 2,227,13. Schol. zu Kâtj. Çr. 509,23. विलोड्यमाने तस्मिंस्तु जलाशये MBh. 12,4901. Hariv. 16095. R. 3,15,6. 21,12. 5,55,2. Râǵa-Tar. 8,2845. *hinundherbewegen:* परं नयन्तीह विलोड्यमानं यथा प्लवं वायुरिवार्णवस्थम् MBh. 12,7515. *umstürzen:* पादाङ्गुष्ठेन शकटं क्रीडमानो व्यलोडयत् (so die neuere Ausg.) Hariv. 9091. 3412. *verwühlen, verwirren, in Unordnung bringen, in Aufregung versetzen:* (नलिनीः) विलोड्यमानाः पश्यैमाः करिभिः MBh. 3, 11604. सैन्यम् – यथा मृगगणान्सिंहः – व्यलोडयत् 7,3756. 8,840. Hariv. 6957. धन्विनः 9340. MBh. 12,7511. Ragh. ed. Calc. 7,56. — Vgl. विलोडन.

— अतिवि caus. *umstürzen, verwüsten:* यद्गुसदनमुपेन्द्रपालितं त्रिदिवमिवामररक्षितम्। प्रसभमतिविलोड्य को व्रजेत् u. s. w. MBh. 8,1740.

— सम् caus. *hinundherbewegen:* शिरश्च राजसिंहस्य पादेन समलोडयत् MBh. 9,3314. *in Unordnung —, in Verwirrung bringen:* एवं संलोडयामास गरुडस्त्रिदिवालयम् 1,1477. यत्र संलोडिता लुब्धैः प्रायशो धर्मसेतवः 12,10595. तेन संलोड्यमानं तु पाण्डूनां तद्बलं महत् 6,4292. 7,5174. 6690. 6692. 7287. 9,797. pass. *zu Schanden werden:* अश्वमेधसहस्रस्य फलं संलोड्यते Spr. 271, v. l. Th. III, S. 359. — Vgl. संलोडन.

लुण्ट्, लुँण्टति (स्तेये) Dhâtup. 9,42. लुण्टयति (स्तेये, अवज्ञाचौर्ये Vop.) 32,27. *enthülsen:* तिला लुण्टिताः (schlechte v. l. für लुञ्चिताः) Pańkat. 121,17. 19. fg. 22. 24. II, 68. — Vgl. लुण्ठ्.

— निस् *plündern;* s. u. लुण्ठ् mit निस्.

— वि *enthülsen:* तिलान्विलुण्ट्य Pańkat. 121,13, schlechte v. l. für लुञ्चिता.

लुण्टक m. 1) *eine best. Gemüsepflanze*, vulgo नट्या Çabdak. im ÇKDr. — 2) N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,32.

लुण्टा f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDr.

लुँण्टाक (von लुण्ट्) nom. ag. (f. ई) P. 3,2,155. Vop. 26,147. m. *Krähe* Trik. 2,5,20.

लुण्ठ्, लुँण्ठति (स्तेये) Dhâtup. 9,42, v. l. (आलस्ये प्रतिघाते च, खोटे st. प्रतिघाते Vop.) 58. (गतौ) 62. *aufrühren* (vgl. लुड्): लुण्ठिता क्रीडता तेन नर्मदा Hariv. 1870. *in Bewegung —, in Aufregung versetzen:* पीडिताः पुनरन्योऽन्यं लुण्ठन्तो रणमूर्धनि MBh. 6,1882. — caus. 1) *rauben, stehlen, plündern:* द्विषां लुण्ठयता यशः Râǵa-Tar. 4,120. लुण्ठयामासतुः कृत्स्नं पुरम् Kathâs. 114,119. Die folgenden Formen könnten auch zum simpl. gehören: ज्ञातिभिर्लुण्ठ्यते नैव विद्यारत्नं महाधनम् Spr. 985, v. l. im Kâvjakalâpa. लुण्ठित *geraubt, gestohlen* Kathâs. 25,251. Spr. 5227. Râǵa-Tar. 5,231. 427. असामान्यतद्रूपलोभलुण्ठितलज्जा Kathâs. 28,81. *geplündert:* देशो मे लुण्ठितो ऽनेन 66,123. Râǵa-Tar. 5,438. 345. — 2) *enthülsen* (vgl. लुञ्च्, लुण्ट्): तिलान् Pańkat. 121,11.

— अव s. अवलुण्ठन.

— उद् s. उल्लुण्ठा.

— निस् *stehlen, plündern:* निर्लुण्ठिततुरंगासिकोश Râǵa-Tar. 8,1897. विटनिर्लुण्ठ्यमान (पार्थिव) 6,153. निर्लुण्ठ्य° ed. Calc. — Vgl. निर्लुण्ठन.

— वि 1) *rauben, stehlen:* तरुणीर्विलुण्ठितुम् Kuvalaj. 190,*a*. विलुण्ठिष्यति Spr. 2588. *plündern:* सा भूमिर्व्यलुण्ठ्यत Kathâs. 20,29. विलुण्ठित 21,113. 24,84. — 2) विलुण्ठित = विलुठित *sich wälzend* Râǵa-Tar. 8,2247. — Vgl. विलुण्ठन.

लुण्ठक (von लुण्ठ्) nom. ag. *Plünderer:* ग्राम° Padma-P., Pâtâlakh. im ÇKDr.

लुण्ठन (wie eben) n. 1) *das Plündern:* ग्राम° Kull. zu M. 9,274. — 2) fehlerhaft für लुञ्चन Schol. zu Çâk. 39. — 3) = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDr.

लुण्ठनदी f. N. pr. eines *Flusses* Hariv. 9515. कुण्ठनदी die neuere Ausg.

लुण्ठा f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDr.

लुण्ठाक m. *Krähe* ÇKDr. und Wilson nach Trik.; die gedr. Ausg. liest लुण्टाक.

लुण्ठि (von लुण्ठ्) f. *Plünderung:* कश्मीरेषु व्यधुर्लुण्ठिम् Râǵa-Tar. 6,288. लुण्ठिं चकाराट्टालिकापणे 8,1992. — Vgl. लुण्डीकार.

लुण्ठी f. = लुठन v. l. in Çabdar. ÇKDr.

लुण्ड्, लुँण्डति (स्तेये) Dhâtup. 9,42, v. l. लुण्डयति dass. 32,27, v. l.

लुण्डिका f. 1) *Ballen:* मेषलोमलुण्डिकया घृष्ट्वा Bhaishaǵjaratnâv. im ÇKDr. Vgl. लुण्डीकृत. — 2) = लुण्डी *regelrechtes —, gebührendes Benehmen* Hâr. 215.

लुण्डी f. = लुण्डिका 2) Trik. 2,8,30. = निगम 3,3,298.

लुण्डीकार *zusammenballen:* करतललुण्डीकृतं पटमाकृष्य Mṛkkh. 34, 11. *ragged* Wilson in der Uebers. und nach ihm Benfey. — Vgl. लुण्डिका 1).

लुन्थ्, लुँन्थति (हिंसासंक्लेशनयोः, v. l. °क्लेशनयोः) Dhâtup. 3,8.

1. लुप् (= älterem रुप्), लुम्पति, °ते Dhâtup. 28,137 (छेदने). P. 7,1, 59. लुलोप; erhält keinen Bindevocal Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2, 10. लुप्त्वा, लोप्तुम्, लुप्यते, लुप्त. 1) *zerbrechen:* लुलुपुश्च पात्राणि Hariv. 12230. अरुणंश्च प्राग्वंशं लुलुपुश्च (so die neuere Ausg.) 12231. *beschädigen:* विद्धाल्पलुप्तानि (चामराणि) न शोभनानि Varâh. Bṛh. S. 72,2. — 2) *Jmd packen, über Jmd herfallen:* लोकान्विश्वासयित्वैव ततो लुम्पेद्यथा वृकः Spr. 3389. नीचः श्लाघ्यपदं प्राप्य स्वामिनं लोप्तुमिच्छति 1628. — 3) *rauben, plündern:* दस्यून् – लुम्पतः Bhâg. P. 7,8,11. लोकस्य वसु लुम्पताम् (gen. pl. partic.) 4,14,39. अन्यलुप्तं स्वर्णम् Kathâs. 72,267. बध्नन्ति घ्नन्ति लुम्पन्ति दृप्तं राजकुलानि (subj.) वै Bhâg. P. 10,41,36. (बाले) अनाथे सर्वतो लुप्ते *um Alles gebracht* MBh. 1,6157. आदिलुप्त *des Anfangs*

—, *des Anlauts verlustig gegangen* Nir. 10,34. ग्रर्थ° Kauç. 63. Çāṅkh. Çr. 14,40,26. 2,14,7. व्रतलुप्त *gekommen um* MBh. 13,1547. 4397. लुप्त n. *geraubtes —, gestohlenes Gut* Çabdar. im ÇKDr. — 4) *unterdrücken, beseitigen, verschwinden machen:* लुँप्यते und लुप्यँते *unterdrückt werden, verschwinden, verlorengehen, abfallen, ausfallen* (von Worten, Silben, Buchstaben): नवाहं लुम्पेत् Weber, Nax. 2,285. ह्रस्वम् लुम्पति Ṛv. Prât. 14, 13. 15. 19. fg. Kâr. zu P. 6,1,144. उदात्तस्तावत्सर्वान्स्वराँल्लुम्पति Schol. zu Ṛv. Prât. 3,6. वृद्धिं लुम्पति यद्द्रव्यम् Çārṅg. Saṃh. 1,4,21. ग्रस्मत्संवत्सरं लुप्त्वा स्वं तमाविष्करिष्यति Çatr. 14,103. इदं मृजत्यवति लुम्पति Bhāg. P. 7,3,27. 11,6,8. सृजस्यथो लुम्पसि पासि विश्वम् 10,48,21. ग्रङ्गुलिस्वेदेन मे लुप्यन्ते ऽक्षराणि Vikr. 27,2. यावत् — रूपं कठिति न जरया लुप्यते प्रेयसीनाम् Spr. 2601. ज्यायसि च्छन्दसि लुप्येयुरक्षराणि Lāṭy. 3,7,7. यद्र्धर्चाल्लुप्येत TS. 3,2,9,5. Çāṅkh. Çr. 13,1,8. Lāṭy. 7,11, 6. पुनरुक्तानि लुप्यन्ते पदानि Çākala in Ind. St. 4,278. Ṛv. Prât. 4, 9. 12. 26. VS. Prât. 4,34. Taitt. Prât. 1,10. Schol. zu AV. Prât. 4,16. 60. 64. fg. zu P. 1,2,64. तस्य भागो न लुप्यते M. 9,211. ग्रायुषो ऽतिप्रवृद्धस्य भार्यार्थे ऽधर्मलुप्यत MBh. 1,980. वार्त्तायां लुप्यमानायामारब्धायां पुनः पुनः Bhāg. P. 3,30,12. सत्यपाशेन संरुद्धः स्नेहस्तस्य न लुप्यते (*reisst nicht*) R. Gorr. 2,50,18. स्मृतिर्मे देवि लुप्यते 66,58. व्रतमस्य न लुप्यते M. 2,189. कृत्वा मम परित्राणं तव धर्मो न लुप्यते MBh. 1,7803. 13,2543. Hariv. 5979. Mārk. P. 20,55. 134,22. 135,26. लुप्त *unterdrückt, verschwunden, zu Nichte geworden, verlorengegangen, abgefallen:* लुप्तजप Âçv. Çr. 2,19,3. लुप्तवर्णपदं ग्रस्तम् AK. 1,1,5,20. H. 266. Halāy. 1,142. Mārk. P. 132,4. Sâh. D. 219,17. Schol. zu P. 1,1,62. Vop. 1,13. 3,16. नो लुप्तं सखि चन्दनं स्तनतटे Spr. 622. Kathās. 86,116. धर्मलुप्ताम्बुसंपद् 87,31. 90,165. प्रकृति MBh. 5,797. °स्मृति 14,37. °धर्मक्रिया M. 8,226. Bhag. 1,42. R. 5,31,14. Ragh. 3,40. 14,36. 49. 56. Varâh. Bṛh. 15,2. Râga-Tar. 1,358. 6,124. 298. 8,1816. Çatr. 14,158. Bhāg. P. 3,15,9. 4, 2,13. Mārk. P. 39,59. भवेद्लुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः Ragh. 2,55. Bhāg. P. 3, 23,38. ग्रलुप्तधर्म MBh. 16,204. Kathās. 74,124. 78,7. 84,58. Schol. zu Kap. 1,19. शशलुप्तँ n. wohl *das Verschwinden nach Hasenart* P. 6,2, 145, Sch. — 5) लुँप्यति (विमोहने) Dhâtup. 26,126. erhält den Bindevocal Siddh. K. zu P. 7,2,10. लुप्यमान *sich verwirrend* Maitrjup. 3,2. 6,30; vgl. लुभ्. — Vgl. ग्रनर्थलुप्त, इन्द्रलुप्त.

— caus. लोपयति, aor. ग्रलूलुपत् und ग्रलुलोपत् Siddh. K. zu P. 7,4, 3. Vop. 18,3. 1) *Etwas unterlassen, versäumen; zuwiderhandeln, verletzen;* mit acc. der Sache: कुतो दायाँल्लोपयेद्ब्राह्मणानाम् (दायाल्लो° ed. Calc.) MBh. 5,714. प्रत्युत्थानं च कृष्णस्य — न लोपयति 7,2822. यथावयो हि राज्यानि प्राप्नुवन्ति नृपक्षये। इक्ष्वाकुकुलनाथे ऽस्मिंस्तल्लोपयितुमिच्छसि (तं लो° ed. Bomb., der Comm. ergänzt ग्राचारम्) R. 2,35,9. विक्रीतमाहितं क्रीतं यत्पित्रा जीवता मम। न तल्लोपयितुं शक्यं मया 111, 28. धर्मम् M. 8,16. MBh. 12,3378. सत्यम् Spr. 4434. — 2) *Jmd um Etwas bringen, von Etwas abbringen:* सत्याद्गुरुमलोपयन् Ragh. 12,9.

— intens. लोलुप्यते (भावगर्हायाम्) P. 3,1,24. *Jmd verwirren:* न त्वा कामा बहवो लोलुपन्तः Kaṭhop. 2,4.

— ग्रप 1) *ausraufen, abtrennen:* तृणानि Çat. Br. 2,4,1,9. तस्माद्वि-वास्तमो ऽपालुम्पन् Kâṭh. 12,13. — 2) pass. *abfallen* Ait. Br. 3,19. ये गर्भा ग्रवपद्यन्ते जगद्यच्चापलुप्यते *fällt* AV. 5,17,7. — Vgl. ग्रपलुप्.

— ग्रभि *rauben, plündern:* चौराणामभिलुम्पताम् Bhâg. P. 4,14,38.

— ग्रव 1) *abtrennen, abstreifen* TS. 3,2,2,1. Taitt. Âr. 10,31. ग्रवलुप्तजरायु Shaḍv. Br. 1,3. 2,2. — 2) *Jmd packen, über Jmd herfallen:* वृकवच्चावलुम्पेत Spr. 2695. द्वेष्टारमवलुम्पेच्चथा वृकः 3615. 478. वृकावलुप्तँ n. *das Packen nach Wolfsart* P. 6,2,145, Sch. — 3) *entreissen:* ग्रन्योऽन्यस्यावलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम्। राजन्या भरतश्रेष्ठ भोक्तुकामा वसुंधराम्॥ MBh. 6,381. — 4) *unterdrücken, verschwinden machen:* सृजतीदमव्ययो य एव रक्षत्यवलुम्पते च यः Bhâg. P. 7,2,39. ये बुद्ध्या क्रोधमुत्थितम्। प्रदीप्तमवलुम्पन्ति दीप्तमग्निमिवाम्भसा॥ Spr. 1311. — Vgl. ग्रवलुम्पन, ग्रवलोप fg.

— ग्रन्वव pass. *nach Jmd abfallen* Pañkav. Br. 6,3,12.

— ग्रा 1) *ausraufen:* वालान् Çat. Br. 3,4,1,17. तृणानि Kâty. Çr. 25, 1,18. — 2) *abtrennen* Ait. Br. 1,17. — 3) *herabfallen lassen* (in Theilen): यथाद्यमालुम्पेत्स्रुचो ग्रग्नये AV. 12,4,34. — 4) pass. *eine Störung erleiden, unterbrochen werden:* ग्रत्रैस्तावन्मुञ्च रूपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे Megh. 103.

— व्या *zu Nichte machen:* ग्रङ्गग्लानिम् Megh. 71. pass. *verschwinden, zu Nichte werden* LA. 20,20.

— उद् *herausgreifen, herausfischen* (z. B. aus einer Brühe): घृताद्दुलुप्तम् AV. 5,28,14. Suçr. 1,230,13. 17. Kauç. 19. 72. उल्लोपम् absol. 43. — Vgl. उल्लोप्य.

— समुद् *aufgreifen, wegnehmen, to pick up:* प्रस्तरौ Çat. Br. 2,5,2, 42. 6,1,45. समुल्लुप्य यज्ञमन्यत्कर्तुं दध्रिरे 9,5,1,19. Kâty. Çr. 8,2,11.

— नि *rauben:* निलोपं (absol.) हरति Vjutp. 127. निलोपहारक ebend.

— परि 1) *wegnehmen* Ait. Br. 6,14. *entfernen, zu Nichte machen:* दीपिकालोकपरिलुप्यमानतिमिरभार Daçak. 72,12. fg. pass. *wegfallen* Ṛv. Prât. 2,4. — 2) *beseitigen:* ग्राचार्यशास्त्रम् — ग्रस्माकमपरिलुप्तं यथा स्यात् Schol. zu Ṛv. Prât. 1,16. — Vgl. परिलोप.

— विपरि, partic. °लुप्त *aufgehoben, zu Nichte gemacht* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 213. — Vgl. विपरिलोप.

— प्र 1) *ausraufen:* दर्भान्कोचित्प्रलुम्पन्ति हस्तैः Hariv. 12228. — 2) *rauben:* ब्राह्मणस्य प्रशान्तस्य हविर्धाङ्क्षैः प्रलुप्यते Spr. 1998. क्रव्याद्भिरङ्गलतिका नियतं प्रलुप्ता (विलुप्ता ed. Cow.) Uttarar. 56,6. महामोहप्रलुप्तस्मृति Spr. 3719. प्रलुप्ताः पितृपिण्डकाः *gekommen um* Mârk. P. 31, 1. — Vgl. प्रलोप.

— विप्र 1) *entreissen, rauben:* उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं यदन्नमुपनीयते। तद्विप्रलुम्पन्त्यसुराः सहसा M. 3,225. MBh. 13,4292. विप्रलुप्तं च वो राज्यं नृशंसेन 5,2834. — 2) *heimsuchen:* प्रजा यस्य — ग्रनर्थैर्विप्रलुप्यन्ते MBh. 12,5242. — 3) *stören, unterbrechen:* तपः — तद्विप्रलुप्तम् Bhâg. P. 7,8,43.

— संप्र *rauben* oder *schänden:* कुमार्यः संप्रलुप्यन्ते MBh. 12,3401.

— वि 1) *zerreissen, zerpflücken, abreissen:* शकुन्तनिवहैर्विघ्निलुप्तच्छदः (तरुः) Spr. 922. मार्जार इव दुर्वृत्तस्तमेव (हस्तम्) हि विलुम्पति 1166. *ausreissen:* मूढस्याङ्गे ऽङ्गे लोम लोम मे। नखैर्व्यलुम्पन्दन्तैश्च Kathâs. 37,127. विलुम्पन्तश्च केशांश्च मज्जाश्च बहुधा MBh. 7,3586. वपाम् 1976. — 2) *entreissen, wegnehmen, fortnehmen, rauben:* यजमानस्य रेतः Ait. Br. 6,9. दूर्शम् Kauç. 85. परस्परं विलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम् MBh. 12,4489. रक्षांसि हि विलुम्पन्ति श्राद्धमारक्षवर्जितम् M. 3,204. Spr. 478, v. l. Bhâg. P. 5,13,10. 14,2. यासां बलिः — हंसैश्च सारसगणैश्च

विलुप्तपूर्वः Mṛkkh. 6,18. तस्करविलुप्तवित्ताः Varâh. Bṛh. S. 3,14. क्रव्यादिरङ्गलतिका नियतं विलुप्ता Uttarar. ed. Cow. 72,12 (प्रलुप्ता die ältere Ausg.). *plündern:* पुरीम् Bhâg. P. 4,27,14. सार्थम् 5,13,2. 26,27. 7,7,6. राष्ट्रं सुरक्षितं तात शत्रुभिर्न विलुप्यते MBh. 2,161. Varâh. Bṛh. S. 71,8. — 3) *zerstören, zu Grunde richten, zu Nichte machen:* यो रक्तिभ्यः संप्रदाय राजा राष्ट्रं विलुम्पति MBh. 13,3084. यज्ञवाटं विलुलुपुः Hariv. 8010. पशुपक्षिमनुष्याद्यैः पत्रपुष्पफलान्वितम्। वृक्षं विलुप्यमानं दृष्ट्वा Mârk. P. 43,53. संरक्षामि विलुम्पामि MBh. 12,8130. 14,2699. विलुम्पन्विमृशन्गृह्णन् Bhâg. P. 2,9,26. Naish. 22,54. कामक्रोधौ शरीरस्थौ प्रज्ञानं तौ विलुम्पतः Spr. 3999. 2872. सतां मार्गान् MBh. 12,5895. विलुप्य शासनान्यन्यानि Çatr. 14,282. 191. तस्य यज्ञो हि रक्षोभिस्तदा विलुलुपे किल R. 1,20,3 (21,2 Gorr.). med. und pass. *zerfallen, zu Grunde gehen, zu Nichte werden, verschwinden, fehlen, nicht da sein:* विलुम्पतामघम् Kauç. 85. माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय Khând. Up. 3,16,2. वि तथा छन्दांसि लुप्येरन् Ait. Br. 6,2. स्मृतिर्मम विलुप्यते R. 2,64,63. वदनं कान्तमार्तायाः वैदेह्या न विलुप्यते R. Gorr. 2,60,15. कपित्वे च नास्य प्रज्ञा विलुप्यते Kathâs. 37,111. 68,45. धर्मो वि° Mârk. P. 77,18. Weber, Nax. 2,286. विलुप्त *zu Grunde gegangen u. s. w.* MBh. 1,6251. Ragh. 9,82. 15,2. 16,59. 19,32. Kumâras. 4,2. Gaunarda bei Mallin. zu Kumâras. 7,95. Kathâs. 90,175. 101,387. 106,146. Sâh. D. 306,1. अविलुप्त Kathâs. 65,35. Râǵa-Tar. 5,5. Bhâg. P. 3,7,5. — Vgl. विलोप fgg. — caus. *es fehlen lassen an* (acc.), *vorenthalten, entziehen:* काले स्थाने च पात्रे च नहि वृत्तिं विलोपयेत् (राजा) Kâm. Nîtis. 5,65. *verschwinden —, zu Nichte machen, unterdrücken:* तेन (वातेन) तत्र प्रदीपः स दीप्यमानो विलोपितः so v. a. *ausgelöscht* MBh. 1,5233. न च धर्मं विलोपये 12,5627. धर्मार्थं च विलोपिते 1,7752.

— प्रवि, partic. °लुप्त *verschwunden, entfernt, zu Nichte geworden* Kumâras. 5,8. Kathâs. 103,206. — caus. *aufgeben, fahren lassen:* प्राक्कर्म प्रविलोप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरे श्लिष्यताम् Spr. 3836.

— सम् *zupfen, zerren; wegreissen:* सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि AV. 10,1,30. Kâṭh. 21,7. योनिमनुपरामृश्य संलुप्याच्छिनत् Çat. Br. 5,5,5,6. — caus. *zerstören, zu Grunde richten:* समलूलुपन् MBh. 8,1423.

2. लुप् (= 1. लुप्) *Abfall, Ausfall, Schwund* (eines Lautes u. s. w.) P. 1,1,61. 2,51. 4,2,4. 3,166. 5,2,105. 3,98. AK. 3,6,6,41. Çânt. 2,16. Vop. 1,13. 2,16. 49. 3,41. 116. 165. so v. a. लुप्त *abgefallen* VS. Prât. 1,114.

लुप्तविसर्गता f. *das Fehlen des Visarga* Sâh. D. 575.

लुप्तोपम adj. *wobei das tertium comparationis fehlt* Nir. 3,18. Çaṅk. zu Khând. Up. S. 61.

लुप्तोपमा f. *ein unvollständiges —, elliptisches Gleichniss* Pratâpar. 75, b,5. Kuvalaj. 7,a; vgl. Sâh. D. 651. fgg.

लुब्ध 1) adj. s. u. लुभ्. — 2) m. *Jäger* H. an. 2,247. Med. dh. 14. MBh. 16,126. R. 2,99,2. P. 5,4,126 (AK. 2,10,24).

लुब्धक (von लुब्ध) m. 1) *Jäger* AK. 2,10,21. H. 927. Halâj. 2,441. MBh. 1,554. 3,2395. 5,1637. 16,110. 126. Kâm. Nîtis. 16,7. Spr. 2234. 2998. Kathâs. 8,24. fg. 33,112. Râǵa-Tar. 5,345. Bhâg. P. 4,29,53. 7,2,50. Pańkat. 104,15. 106,6. 7. Hit. 14,12. — 2) *der Stern Sirius* (vgl. मृगव्याध) Gaṇitâdhj. Bhagrahaj. 7. 8. Comm. zu Sûrjas. 8,10. fgg. Colebr. Misc. Ess. II, 352. 464. त्रिशङ्कुः किं न नीतो द्यां विश्वामित्रेण लुब्धकः Kathâs. 28,88. — 3) *bildliche Bez. des Afters* Bhâg. P. 4,25,53. 29,15. — Vgl. आर्द्रा°.

लुब्धता (von लुब्ध) f. *Habgier* Spr. 3824.

लुब्धत्व (wie eben) n. dass. Râǵa-Tar. 4,628. *heisses Verlangen nach:* तत्सिद्धि° Kathâs. 20,106.

लुभ्, लुभति (विमोहने) Dhâtup. 28,22. लुभ्यति (गार्ध्ये) 26,128. 1) लुभ्यति *irre werden, in Unordnung gerathen:* नास्य देवरथो लुभ्यति Ait. Br. 2,37. वायव्यमस्य लुब्धं शंसेदृचं वा पदं वातीयात्तेनैव तल्लुब्धम् 3,3. Nir. 4,14. 6,3. Nach P. 7,2,54 und Vop. 26,102 lautet der absol. von लुभ् in der Bed. विमोहन लुभित्वा und लोभित्वा, das partic. लुभित. — 2) लुभ्यति, लुलुभे; लोभिता und लोब्धा P. 7,2,48. Vop. 8,79. 11,5. लुभित्वा, लोभित्वा und लुब्ध्वा, लुब्ध P. 7,2,54. Vop. 26,102. *ein (heftiges) Verlangen empfinden (aus der geordneten Ruhe kommen):* स्मितशोभितेन मुखेन चेतो लुलुभे देवहूत्याः Bhâg. P. 3,22,21. die Ergänzung im loc.: न लुभ्यति तृणेष्वपि MBh. 13,3024. देवा अपि च लुभ्यन्ति बयि Kathâs. 32,96. 33,160. पाण्डवार्थे हि लुभ्यन्तः *sich interessirend für die Sache der* Pâṇḍava MBh. 5,4389. im dat.: रामो लुलुभे मृगाय Spr. 283. लुब्ध *ein Verlangen empfindend; gierig, habsüchtig* AK. 3,1,22. H. 429. an. 2,247. Med. dh. 14. Halâj. 2,208. Daçak. 89,5. M. 4,87. 7,30. Bhag. 18,27. R. 2,66,6. 73,11. Daçar. 2,8. Spr. 2017. 2674. fgg. 4628. 4956. fg. Varâh. Bṛh. S. 101,9. अ° M. 8,63. 77. R. 1,6,6. अति° Pańkat. I, 1 (Hit. II, 1). या लुब्धा धनकाङ्क्षया R. Gorr. 2,34,10. ब्राह्मणत्वे लुब्धः MBh. 1,3062. लुब्धो यशसि न त्वर्थे Kathâs. 55,30. मधु° R. 5,62,5. गन्ध° Spr. 820. धन° 1291. 1937. Varâh. Bṛh. S. 101,12. गुणालुब्धाः संपदः Spr. 3226. 3768. नृप° Kathâs. 17,138. 30,15. Râǵa-Tar. 4,677. Daçak. 77,1. 6. Bhâg. P. 4,9,12. 29,53. Hit. 10,2. 34,18. Vet. in LA. (III) 5,7. बन्धु° so v. a. *an den Verwandten hängend* R. 2,115,6. — 3) *locken, an sich ziehen:* नूनं स कालो मृगवेषधारी मां लुलुभे R. 5,28,10. — Vgl. अलुभ्यत् und लुब्ध.

— caus. लोभयति 1) *in Unordnung bringen:* प्राणान् Çat. Br. 4,1,2, 8. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, anlocken, an sich ziehen:* रूपयौवनमाधुर्यचेष्टितस्मितभाषितैः। लोभयित्वा वरारोहे तपसस्तं निवर्तय॥ MBh. 1,2920. लोभयामास या चेतो मृगभूतस्य तस्य वै 3,9997. R. 1,8,23 (24 Gorr.). 9,4. 64,8. 65,10. R. Gorr. 1,65,16. लोभयिष्यन्ति काकुत्स्थमटव्यश्चित्रकाननाः 2,45,15. 3,15,15. 49,36. 50,6. नाहं लोभयितुं शक्या ऐश्वर्येण धनेन वा 5,23,12. Kathâs. 11,24. 45,90. 72,228. Pańkat. 256,1. Bhatt. 5,48. लोभ्यमाननयनः श्लथांशुकैर्मेखलागुणपदैर्नितम्बिभिः (योषिताम्) Ragh. 19,26. सुखलेशेन लोभितः Spr. 3984. Bhâg. P. 10,15,26. med.: यन्मां लोभयसे रम्भे R. 1,64,12 (66,15 Gorr.). लोभयान Hariv. 3740. लोभितवती MBh. 1,4884.

— intens. *ein heftiges Verlangen haben nach* (loc.): लोलुभ्यमानास्ते ऽर्थेषु Kâm. Nîtis. 7,1.

— अनु caus. *ein Verlangen haben nach:* पश्यन्नलाकुलं चित्रं नरः को नानुलोभयेत् R. 3,49,38.

— अभि caus. *anlocken:* बल्वलाकुर्वता गेयमभिलोभयतेव, वज्रमभिलोभयति Pańkav. Br. 7,7,11.

— अव s. अनवलोभन.

— आ *in Unordnung gerathen:* प्राणा आलुभ्येत् Çat. Br. 10,3,1,7. 8. — desid. vom caus. *in Unordnung bringen —, stören wollen:* ये न ए-तदतिक्रामाद्य आलुलोभयिषात् Ait. Br. 1,24.

— उप caus. *Jmdes Verlangen erregen, locken, verführen:* प्रज्ञाम् Pâr. Gṛhj. 1,12. अर्थलेशोपलोभित Kâm. Nîtis. 10,24.

— परि dass.: कथमिह मां परिलोभसे (aus metrischen Rücksichten st. परिलोभयसि) धनेन Mṛkkh. 127,16. — caus. dass. R. 5,31,29. Kâm. Nîtis. 17,22.

— प्र 1) med. *irre gehen, sich vergehen* (in geschlechtlicher Beziehung): यन्मे माता प्रलुलुभे विचरन्त्यपतिव्रता M. 9,20. त्रिस्तनी कुब्जेन सह प्रलुब्धा so v. a. *fasste eine unerlaubte Neigung zu* Pañkat. 262,8. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, verführen:* यद्वयं संशितात्मानं प्रलोब्धुं त्वामिहागताः MBh. 1,7863. प्रलुब्ध *verleitet, verführt, fortgerissen* 7,6506. — Vgl. प्रलोभ. — caus. *Jmdes Verlangen erregen, locken, heranlocken, zu verführen suchen* MBh. 1,2919.7400. 7630. 3,10044. 16011. R. Gorr. 1,65,4. 3,44,16. 47,15. 64,21. 4,61,8. 6,103,9. Ragh. 6,58. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 116. Bhâg. P. 3,30,37. 7,2,50. fg. 9,55. 10,2. Mârk. P. 31,50. med. MBh. 3,10071. Hariv. 9224. कुमारं बालक्रीडनकैः प्रलोभ्य so v. a. *des Knaben Aufmerksamkeit ablenkend* Suçr. 1,54,15. वनितादिज्ञनालापैघतितरामतिप्रलोभितकर्णाः *in hohem Grade herangezogen zu* Bhâg. P. 4,29,54. — Vgl. प्रलोभक fgg.

— उपप्र s. उपप्रलोभन.

— विप्र caus. med. *locken, zu verführen suchen* MBh. 12,7280.

— संप्र caus. dass. MBh. 13,2410.

— प्रति caus. 1) *irremachen, bethören* Nir. 9,33. चित्तम् ṚV. 10,103, 12. — 2) *an sich locken, heranlocken:* कयाभिः प्रतिलोभ्यते MBh. 12,4125. फलेन Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 118.

— वि *in Verwirrung —, in Unordnung gerathen:* विलुभिता केशाः P. 7,2,54, Sch. विलुभितं वातैः केसरम् Bhaṭṭ. 9,40. विलुभितप्लव 5,52. — caus. 1) *irre führen* Daçak. 3,15. — 2) *Jmdes Verlangen erregen, locken, zu verführen suchen* MBh. 3,15638. 12,4125. R. Gorr. 1,66,9. Vikr. 8,16. Kâm. Nîtis. 1,43. 7,52. 15,53. 18,60. Ragh. 19,10. 35. Kumâras. 4,20. Spr. 5634. Kathâs. 91,31. — 3) *zerstreuen, angenehm unterhalten:* स्वं चित्तम् R. 2,94,1 (103,1 Gorr.). क्वोपविष्टः — लतासु दृष्टिं विलोभयामि (v. l. विनोदयामि) *ergötzen an* Çâk. 81,17.

— सम् *in Verwirrung gerathen:* नेद्बर्हिश्च प्रस्तरश्च संलुभ्यातः Çat. Br. 3,4,1,18. — caus. 1) *verwirren, untereinanderbringen* (= एकत्रकरण Comm.): कुशान् Lâṭj. 2,11,2. — 2) *verwischen:* पदानि AV. 6, 28,1. संयोपयन्तः ṚV. — 3) *locken, heranlocken, zu verführen suchen* R. Gorr. 1,4,53. MBh. 13,2302.

लुम्ब्, लुम्बति (अर्दने) Dhâtup. 11,37. लुम्बयति (अर्दने, v. l. अदर्शने) 32,113.

लुम्बिका f. *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 87.

लुम्बिनी f. N. pr. einer Fürstin und eines nach ihr benannten Haines Lalit. ed. Calc. 89,13. 90,7. 12. 104,14. 289,10. 317,9 (लुम्बिनि aus metrischen Rücksichten). Burn. Intr. 382. Schiefner, Lebensb. 233 (3). Davon adj. लुम्बिनीय Lalit. ed. Calc. 92,13.

लुल्, लोलति (विलोडने, विलोटने) Dhâtup. 9,27, v. l. *sich hinundherbewegen:* लोलद्दल Çiç. 3,72. लोलत्काराङ्गुलि Pañkar. 3,3,16. लुलित 1) *sich hinundherbewegend, bewegt, flatternd, wogend* H. 1480. Halâj. 4, 61. अम्भस् (Gegens. प्रसन्न) MBh. 12,7442. अम्भः — नीलुलितम् Ragh. 16,34. 59. लुलिताकुलकेशान्त R. 7,26,42. Ṛt. 4,14. लुलितालककेशान्ता Kathâs. 74,242. 103,209. °लुलिताङ्कुश 104,102. शिरो लुलितकुण्डलम् 47,70. स्तनौ न लुलितौ Spr. 962. Uttarar. 103,12 (140,3). वनं लुलितपल्लवम् Bhaṭṭ. 9,56. °पतत्रिमाल 10,14. सुलुलितचलतुम् Suçr. 2,383, 2. तत्वज्ञानामृताम्भःप्लवलुलितधियाम् Spr. 3081. मनस् *in Unruhe versetzt* R. 2,42,29. 75,44. R. Gorr. 2,79,34. n. *Bewegung:* अलसलुलितमुग्धानि — अङ्गकानि Uttarar. 11,11 (13,15). — 2) *berührt, woran Etwas streift:* कचलुलितश्रमवारि (= विकीर्ण Comm.) Bhâg. P. 1,9,34. अनतिलुलित Çâk. 61, v. l. — 3) (*aus seiner Ruhe gekommen, in Unordnung gerathen; vgl.* चल्) *mitgenommen, Schaden genommen habend, beschädigt, gelitten:* बले भृशलुलिते MBh. 7,1452. 6725. सुलुलिते सैन्ये 8,2457. शोकाश्रुलुलितानना R. 2,65,18. शरीरलुलिता शय्या Çâk. 74. लुलितस्रगाकुल Ragh. 19,25. लुलिताङ्गराग (v. l. गलिताङ्गराग) Ragh. ed. Calc. 16,58. यथा नगेन्द्रो लुलितो (= उन्मूलित Comm.) नभस्वता Bhâg. P. 3,19,26. अस्तकामिलुलितात् (= खण्डित Comm.) — विमानात् 4,9,10. त्वद्वरंहोलुलितग्राम्यपाश (= छिन्न Comm.) 6,11,21. 7,9,23 (= विधस्त Comm.). लुलितमकरन्दो मधुकरैः (पुष्पाणामञ्जलिः) Veṇîsaṁh. in Verz. d. Oxf. H. 143,*b*, No. 306, Z. 3. Vet. in LA. 20,20. — Vgl. लोल und लुड्.

— caus. 1) *in Bewegung versetzen:* मन्ये सालवनं रम्यं लोलयन्ति प्लवंगमाः R. 6,111,24. अनिलेन लोलितलताङ्गुलये — शाखिने Çiç. 9,4. — 2) *in Verwirrung bringen, zu Schanden machen:* शास्त्रिम् R. 2,69,4, v. l.; vgl. u. 1) लस् caus. 1).

— अभि, partic. °लुलित *berührt, woran Etwas streift* Çâk. 61.

— आ, आलुलित (d. i. आ + लुलित) *leise bewegt:* पादाङ्गुष्ठालुलितकुसुमे कुट्टिमे Spr. 2780.

— उद् vgl. उल्लोल.

— वि, partic. °लुलित 1) *hinundherbewegt:* अतिपरुषपवनविलुलितदीपशिखाचञ्चला लक्ष्मीः Spr. 3484. — 2) *herabgestürzt:* पुष्पचिह्नाविलुलिताः पुष्पवृष्टीः Bhâg. P. 5,2,9. विलुलितमतिपूरैर्बाष्पम् Uttarar. 53,8 (68,12). — 3) *auseinandergegangen, auseinandergefallen, in Unordnung —, in Verwirrung gebracht:* दुःशासनविलुलिता वेणीः Veṇîsaṁh. in Sâh. D. 162,5. विलुलितालक Ṛt. 4,16. Spr. 391. Gît. 7,13. Bhâg. P. 8,7,17. विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्धजाः Gît. 12,13. Bhâg. P. 10,47, 12. Bhaṭṭ. 8,131. uneig.: तस्मिन्विलुलिते सैन्ये MBh. 7,5311. 9,529. 841. एवं विलुलिते लोके Hariv. 11171. तथा विलुलिते धर्मे 11181. — caus. *hinundherbewegen:* विलोलितदृश् Mârk. P. 77,3. 6. *nach allen Seiten auseinanderwerfen:* यथा ह्यकस्माद्भवति भूमौ पांसुर्विलोलितः (= शिलायां शिलया पिष्टः Nîlak.) । तथैवेह भवेद्धर्मः सूक्ष्मः सूक्ष्मतरस्तथा ॥ MBh. 12,4887. fg.

— सम्, partic. संलुलित 1) *in Berührung gekommen mit:* सिन्दूरसंलुलितमौक्तिकहार Kaurap. 16. = लिप्त *beschmiert* Comm. — 2) *verwirrt, in Unordnung gebracht:* असंलुलितकेश Vjutp. 12. संलुलितेन्द्रिय R. 2,71,29.

लुलाप m. *Büffel* AK. 2,5,4. °कान्ता f. *Büffelkuh* Râǵan. im ÇKDr. —

Vgl. लुलाप.

लुलापकन्द m. = महिषकन्द Râǵan. im ÇKDr.

लुलाप m. *Büffel* H. 1282. Halâj. 2,72. खुरविधुतधरित्रीचित्रकायो लुलाप: RM. bei Aufrecht, Halâj. Ind.

लुश m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Dhânâka, Liedverfassers von ṚV. 10,35. fg. ṚV. Prât. 2,31. Pańkav. Br. 9,2,22.

लुशाकपि m. N. pr. eines Mannes Pańkav. Br. 17,4,3; vgl. Kâth. 30, 2 in Ind. St. 3,371,1. 2.

लुष्, लोषति (स्तेये) Vop. in Dhâtup. 9,42. — Vgl. लूष्.

लुषभ Uṇâdis. 3,124. m. *ein brünstiger Elephant* Uǵǵval.

लुह्, लोहति (गार्ध्ये) Vop. in Dhâtup. 26,128. — Vgl. लुभ्.

1. लू, लुनाति, लुनीते (छेदने) Dhâtup. 31,13. Schol. zu P. 6,4,112. fg. 7,3,80. लुनोति; लुलाव Vop. 25,25. लुलविथ Schol. zu P. 6,1,196. 4, 126. 7,2,61. लुलुवतुम् zu 6,4,77. लुलुविढ्वे und लुलुविध्वे zu 8,3,79. अलावीत् zu 7,2,1. लाविष्टाम् und लाविष्टाम् zu 6,1,187. अलविधम् und अलविढ्वम् zu 8,2,25. 3,79. reflex. अलावि und अलविष्ट zu 3,1,62. लविष्यति zu 7,2,10. Vop. 25,25. लविषीधम् und लविषीढ्वम् Schol. zu P. 8,3,79. लवितुम्; लूवा und लून zu 7,2,11. 61. 8,2,44. Vop. 26,88. fg. 1) *schneiden* (Gras, Getraide u. s. w.), *abschneiden:* अयुंङ्गान्मुष्टींर्लुनीति TBr. 3,2,2,6. लुनन्त: Çat. Br. 1,6,1,3. दात्रेण P. 1,3,67, Sch. उपमूललूनं बर्हि: Kauç. 1. 61. Gobh. 1,5,19. धान्यानामिव लूनानाम् MBh. 6, 4684. R. 3,16,8. Kathâs. 71,267. लूनकेदार Kull. zu M. 3,100. Schol. zu P. 3,1,62. 6,1,195. लूनपुनर्जातकेशादि Kusum. 17,9. Sarvadarçanas. 128,20. कुञ्चितलूनकच Varâh. Bṛh. 27 (25),4. प्रसुप्तस्य सिंहस्य पक्ष्माणि मुखाल्लुनासि MBh. 3,15644. लूनपक्ष इव द्विज: R. 1,55,10 (56,10 Gorr.). 2,64,4. 4,9,25. Spr. 1524. कण्टकैर्लूनपक्षो मधुप: 822. लूनबाहु Kathâs. 27,143. लूलाव च करं तस्य 52,121. 18,339. Ragh. 12,43. Râǵa-Tar. 4,299. 304. Bhaṭṭ. 9,80. Kaurap. 49. लुनीहि नन्दनम् *haue nieder* Çiç. 1,51. Bhaṭṭ. 9,23. स्वकृस्तलून: पुष्पोच्चय: *gepflückt* Kumâras. 3,61. किसलयमलूनं करुहै: Spr. 94. केसराग्रं लूनम् (मूषिकेण) *abgenagt* Hit. 58,3. लूनमांस: षडङ्घ्रिभि: *zerstochen* Râǵa-Tar. 3,408. पत्त्रिणा शरासनज्यामलुनात् *zerschnitt* Ragh. 3,59. परबाणलूना: पृषत्का: 7,42. वियोगासिलूनस्य मनसो नास्ति भेषजम् Spr. 47. व्याघ्राणां भल्ललूनदंष्ट्राभि: *ausgehauen* Kathâs. 42,4. (इन्द्रियाणि माम्) बह्व्य: सपत्न्य इव गेहपतिं लुनन्ति *zerreissen* Bhâg. P. 7,9,40 = 11,9,27. लून = छिन्न u. s. w. AK. 3,2,53. H. 1489. Halâj. 2,422. — 2) *zerschneiden* so v. a. *zu Nichte machen:* अलक्ष्मीम् Spr. 4869. कौलीनम् Râǵa-Tar. 6,138. लोकानलावीद्विजितांश्च तस्य Bhaṭṭ. 2,53. लूनदुष्कृत Râǵa-Tar. 3,476.

— caus. लावयति, अलीलवत्, अलीलवत Schol. zu P. 7,4,1. 80. 93. fg. *schneiden lassen:* लावयति दात्रं स्वयमेव 1,3,67, Schol.

— desid. लुलूषति P. 7,4,79, Schol. — desid. vom caus. लिलावयिषति P. 7,4,80, Schol.

— intens. लोलूयते P. 7,4,82, Sch. absol. लोलूयम् und लोलूयम् 6,1, 194, Sch. *vollkommen abschneiden:* क्लेन पक्षौ लोलूयं चक्रे क्रव्यात्पतत्रिण: Bhaṭṭ. 5,107. — desid. vom intens. लोलूयिषते P. 6,1,9, Sch.

— व्यति med. *sich gegenseitig schneiden* P. 1,3,14, Sch. act., wenn इतरेतर, अन्योऽन्य oder परस्पर beigefügt wird, 16, Sch. Vop. 23,55. fg.

— अभि s. अभिलाव.

— आ *abschneiden, abpflücken:* अमरवधूहस्तसदयालूनपल्लवा: (नन्दनद्रुमा:) Kumâras. 2,41. — Vgl. आलव.

— न्या s. u. व्या.

— व्या *abschneiden:* व्यालूनमूर्धन् Hariv. 9539. न्यालून° die neuere Ausg.

— उद् *schneiden* (Gras, Getraide): सकृदुल्लून Çâṅkh. Çr. 4,4,4. — Vgl. उल्लू.

— निस् *zerhauen:* असिनिर्लूनचर्मन् Kathâs. 50,18. *abhauen:* एकैकभल्लनिर्लूनकंधरा: 48,60. 18,201. निर्लूनै: क्रूरमूर्धभि: 50,7. कुलिशनिर्लूनपक्षभ्रष्ट इवाचल: 68,22.

— प्र s. प्रलव fgg.

— विप्र *abschneiden, abpflücken:* किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद्विप्रलूनम् Sâh. D. 74,7.

— वि, प्रवद्धविलून (f. ई und आ) P. 4,1,52, Vârtt. 3.

2. लू (= 1. लू) nom. ag., लुवौ, लुवस् P. 6,4,83, Sch. aber सकृल्ल्वौ, सकृल्ल्वस् ebend. — Vgl. एक°.

लून (= रून) adj. अ° *nicht dürr, nicht rauh* TS. 2,5,11,3. 5,5,10,6. यज्ञस्यालूनताल्लूनत्वाय TBr. 1,1,6,6. — Vgl. अ°.

लूता f. 1) *Spinne* AK. 2,5,13. H. 21. 1210. an. 2,192. Med. t. 52. Halâj. 2,101. M. 12,57. Suçr. 2,257,15. यस्माल्लूनं तृणं प्राप्ता मुने: प्रस्वेदबिन्दव: । तस्माल्लूतेति भाष्यन्ते संख्यया ताश्च षोडश ॥ 296,9. Varâh. Bṛh. S. 46,79. Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,13. Vedântas. (Allah.) No. 40. — 2) *Ameise* H. an. Med. — 3) *eine best. Hautkrankheit* H. an. Med. Verz. d. B. H. No. 963. Râǵa-Tar. 4,524. 527. 6,187. लूतामय 185. 4,523. — 4) parox. von unbekannter Bed. in der Stelle: प्राणाभ्यं एव सृष्टाभ्य इमां लूतामवरुन्धते TS. 7,5,9,1. — Vgl. अभि°.

लूतामर्कटक m. 1) *Affe.* — 2) *arabischer Jasmin* (नवमालिका). — 3) = पुत्री, wohl *Puppe* H. an. 6,2.

लूतारि m. *der Spinnen Feind, Bez. eines best. Strauchs,* = दुग्धफेनी Râǵan. im ÇKDr.

लूतिका (von लूता) f. *Spinne* Çabdar. im ÇKDr.

लून 1) adj. s. u. 1. लू. — 2) n. = लूम *Schwanz* Halâj. 2,286; vgl. लूनविष.

लूनक (von लून) 1) adj. = भिन्न H. an. 3,92. = भेदित Med. k. 150. — 2) m. *Vieh* H. an. Med.; vgl. gaṇa यावादि zu P. 5,4,29.

लूनयवम् adv. *nachdem die Gerste geschnitten worden ist* gaṇa तिष्ठद्गु zu P. 2,1,17. — Vgl. लूयमानयवम्.

लूनविष adj. *im Schwanze das Gift habend:* वृश्चिकादय: H. 1312.

लूनि f. nom. act. von 1. लू P. 8,2,44, Vârtt. 1. Vop. 26,184. *das Schneiden, Abschneiden* 11,3. लूनि = व्रीहि (?) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,105.

लूनी nom. ag. von लूनीय् P. 6,1,112, Sch. Vop. 3,61.

लूनीय् denom. von लून ebend.

लूम n. *Schwanz, Schweif* AK. 2,8,2,18. — Vgl. लून 2).

लूयमानयवम् adv. *wann die Gerste geschnitten wird* gaṇa तिष्ठद्गु zu P. 2,1,17. — Vgl. लूनयवम्.

लूष्, लूषयति (भूषायाम्) Dhâtup. 17,26. लूषयति (हिंसायाम्) 32,70. (स्तेये) Vop. zu 32,27. — Vgl. रूष्, लुष्.

लूष s. अर्क°.

लूह und लूहमुदत्त m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 421. 180. Nach Vjutp. 74 bedeutet लूह *schlecht.*

लैंक m. in einer Formel, angeblich N. eines Âditja: लेकः सलेकः सुलेकः TS. 1,5,2,3. — Vgl. लेख 1) *b*).

लेकुचिक m. N. pr. eines Mannes Burn. Intr. 140, N. 5.

लेख (von लिख्; vgl. रेख) 1) m. *a*) *Schreiben, Brief* (sg. und pl.) Trik. 2,8,28. H. an. 2,25. Med. kh. 4. Hâr. 54. Hariv. 5971. Kâm. Nitis. 9, 68. Kumâras. 1,7. Mâlav. 70,14. 16. 74,9. Varâh. Bṛh. S. 87,8. Kathâs. 5,65. 69. 39,186. 42,92. 108. fg. 43,263. 267. 269. 44,127. 158. 161. 56, 89. Râǵa-Tar. 3,206. 208. 235. 367. fg. 371. 4,504. Hit. 120,10. Verz. d. Oxf. H. 334,*b*,9 (Verz. d. B. H. No. 880). कूट° *ein untergeschobenes —, verfälschtes Schreiben* Kathâs. 124,198. — *b*) pl. Bez. einer Klasse von Göttern MBh. 13,1371 (nach der Lesart der ed. Bomb., लोकाः ed. Calc.). Hariv. 14269. unter Manu Kâkshusha 437. VP. 263. Mârk. P. 76,52. *ein Gott* überh. AK. 1,1,1,3. Trik. 3,3,52. H. 88. H. an. Med. Halâj. 1,4; vgl. लेखर्षभ und लेक. — *c*) N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 2) f. लेखा (vgl. रेखा) Vop. 26,191. *a*) *Riss, Strich, Linie, Streifen, Furche, Reihe* AK. 2,4,1,4. Trik. 3,3,52. H. 1423. H. an. (wo राज्यां st. ज्यायां zu lesen ist). Med. Halâj. 2,387. Çat. Br. 6,3,1,25. 7, 2,1,18. 10,2,1,6. स्फ्येन लेखामुल्लिखेत् Âçv. Çr. 2,6,9. Gṛhj. 1,3,1. Kâtj. Çr. 2,6,27. 4,1,11. Kauç. 76. Suçr. 1,114,3. अधस्तादन्तयोर्यस्य लेखाः स्युः 125,1. 3. Kâm. Nitis. 7,20. Varâh. Bṛh. S. 82,4. लेखा हि काललिखिता सर्वथा दुरतिक्रमा Hariv. 11109. नन्वलमतिनिपुणोऽपि पुरुषो नियतिलिखितं (°लिखितां?) लेखामतिक्रमितुम् Daçak. 83,7. 8. वल्कलशिखानिस्यन्दलेखाः Çâk. 14, v. l. अभिनवमदलेखा auf der Backe eines Elephanten Spr. 82. मेघ° MBh. 4,498. Kumâras. 7,16. Pańkat. 203,5. भ्रुवोर्लेखा Varâh. Bṛh. S. 58,12. Kumâras. 1,48. Râǵa-Tar. 4,642. तडिल्लेखा R. 5,75,14. Spr. 2256. विद्युल्लेखा Mṛkkh. 1,7. Vikr. 76. ज्योतिर्लेखा Megh. 45. जाह्नवीफेन° Hit. Pr. 1. अङ्ग° Râǵa-Tar. 1,373. चतुर्लेख adj. (= ललाटे चतुर्लेखायुक्त Comm.) R. ed. Bomb. 5,35,18 (32,13 Gorr.). — *b*) *die schwache Sichel* (des Mondes): चान्द्रमसीव लेखा Kumâras. 1, 25. 2,34. इन्दु° Kir. 5,44. चन्द्र° (s. auch bes.) MBh. 3,1831. प्रतिपच्चन्द्रलेखा Kathâs. 4,29. शशाङ्क° Çâk. 35,21. — *c*) *Saum:* तटलेखास्थितमात्मसैन्यचक्रम् Kâm. Nitis. 7,34. *Saum des Himmels, Horizont:* लेखास्थेऽर्के Varâh. Bṛh. 11,14. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,6 (?). — *d*) *das Zeichnen, Malen;* = लिपि H. an. Med. आलेख्य°, अक्षरस्य Halâj. 4,43. *Zeichnung* Çâk. 141, v. l. *Bild, Figur:* मृग° im Monde Ragh. 8,42. सव्यपाद° *Abdruck* Kir. 5,40. कमलाकपोलमकरीलेखाङ्कितोरःस्थल Spr. 1326, v. l. — *e*) गण्ड° so v. a. गण्डभाग, गण्डस्थली *Backengegend* Ragh. 7,24. 10,12. Kumâras. 7,82. Kir. 16,2. — *f*) = शिखा und चूडाग्र Trik. 3, 3,52. — Vgl. अनङ्गलेखा, इन्दु°, क्रम°, चन्द्रलेख, चित्रलेखा, त्र्यलेख, देवलेखा, पत्त्र° (in der ersten Bed. auch Kumâras. 3,38), पद्म°, ब्रह्मलेख, मकरीलेखा, मद°, मदन°, मन्मथलेख, मृगलेखा, यशो°, राग°, राम°, शशि°, हृल्लेख.

लेखक (wie eben) 1) nom. ag. *Schreiber, Abschreiber, Secretär* AK. 2, 8,1,15. Trik. 1,1,72. 2,8,26. H. 186. 483. Halâj. 2,431. Jâǵń. 2,88. MBh. 1,70. 77. fgg. 2,206. वेदानाम् 13,1644. 15,417. Hariv. 16189. Spr. 2991. 3090. 3209. 4747. Varâh. Bṛh. S. 5,74. 10,10. 34,14. Râǵa-Tar. 6,13. 40. Pańkat. 237,1. राज° Pattrakaumudî im ÇKDr. अधिकरण° Râǵa-Tar. 6,38. कायस्थं कूटलेखकम् Kathâs. 42,111. कूटराजाज्ञालेखक Kull. zu M. 9,232. — 2) *das Niederschreiben:* इति बहुविधं लेखकं कृत्वा Mṛkkh. 167,20. — Vgl. काष्ठ°, चित्र°, दैव°, नख°.

लेखकमुक्तामणि m. Titel einer Unterweisung für *Schreiber* Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 799.

लेखन (von लिख्) 1) adj. (f. ई) *aufritzend, wundmachend, scarificirend; aufstörend, reizend, stimulans, in Fluss bringend* Suçr. 1,27,18. 31,15. 152,8. 173,8. 182,4. 184,17. 204,15. 2,349,12. 19. धातून्मूलान्वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्। लेखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा यवः॥ Çârng. Saṁh. 1,4,10. Vâgbh. 6,11. 38. °वस्ति *eine best. Art von Klystier* Suçr. 1,53,2. 2,225,18. Çârng. Saṁh. 3,6,18. — 2) m. *Saccharum spontaneum Lin.* (zu *Schreibstiften* gebraucht) Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. ई *a*) *Löffel;* s. घृत°. — *b*) *Schreibstift, Schreibrohr, Schreibpinsel* Trik. 2,8,28. Hâr. 212. MBh. 1,78. लेखनि aus metrischen Rücksichten (s. u. मुद्रालिपि); am Ende eines adj. comp.: पुरुषः प्रगृहीतलेखनिः Varâh. Bṛh. 27 (25),17. — 4) n. *a*) *das Wundmachen* Suçr. 1,26, 14. 2,3,16. 7,9. = छेद Trik. 3,3,257. H. an. 3,408. = छर्दन (fehlerhaft für छेदन) Med. n. 120. — *b*) *das Anstreifen, Berühren* von Himmelskörpern beim Planetenkampfe AV. Par. in Ind. St. 10,318. 320. — *c*) *das Niederschreiben, Abschreiben* H. an. Med. MBh. 1,74. Kathâs. 43,267. Pańkat. 237,1. पत्त्रलेखनद्रव्य Verz. d. Oxf. H. 94,*b*,15. — *d*) *ein Werkzeug zum Furchen* Kauç. 137. — *e*) = भूर्ज *eine Art Birke,* auf deren Rinde *geschrieben* wird, Trik. H. an. Med.

लेखनि s. u. लेखन 3) *b*).

लेखनिक (von लेखन) 1) adj. *der einen Andern für sich ein Document unterschreiben lässt.* — 2) m. *ein Ueberbringer eines Briefes, Briefträger* H. an. 4,30. fg. Med. k. 211.

लेखनिका (f. zu लेखनक und dieses von लेखन) s. चित्र°.

लेखनीय (von लेखन und लिख्) adj. 1) *als scarificans dienend:* पुटपाक Suçr. 2,349,11. — 2) *zu zeichnen, zu malen* Weber, Kṛshnaǵ. 282.

लेखपत्त्र n. *Brief* Mâlatim. 172,7.

लेखपत्त्रिका f. dass. Kathâs. 124,56.

लेखप्रतिलेखलिपि f. Bez. *einer best. Art zu schreiben* Lalit. ed. Calc. 144,7.

लेखर्षभ (लेख + ऋषभ) m. Bein. Indra's AK. 1,1,1,37.

लेखसंदेशहारिन् adj. *einen brieflichen Auftrag überbringend* Kathâs. 102,130.

लेखहार m. *ein Ueberbringer eines Briefes, Briefträger* Siddh. K. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 15,3. Kathâs. 5,65. 39,186. 101,349. fg. 123,333.

लेखहारक m. dass. Siddh. K. im ÇKDr. Kathâs. 39,190. 42,91. fg. 101,351. 354. Râǵa-Tar. 6,319.

लेखहारिन् adj. *einen Brief überbringend:* दूतानां संगुप्तार्थलेखहारित्वादिना परराष्ट्रप्रस्थापनम् Kull. zu M. 7,153.

लेखाधिकारिन् m. *der Secretär eines Fürsten* Râǵa-Tar. 3,206.

लेखाभ्र m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,123 (लेखाभ्रू v. l.). pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu 2,4,69.

लेखाभ्रू f. N. pr. eines Frauenzimmers v. l. im gaṇa शिवादि zu P. 4,

1,123. लेखाभ्रुमन्य *geltend für* — Schol. zu P. 6,3,68.

लेखाय्, लेखायँति (विलासे स्खलने च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लेखार्ह m. = श्रीताल *eine Palmenart* (auf deren Blättern *geschrieben* wird) Râǵan. im ÇKDr. लेखार्ह्य in der alphabetischen Ordnung, लेखार्ह unter श्रीताल. — Vgl. लेख्यपत्त्र.

लेखिन् (von लिख्) 1) adj. *ritzend, streifend an, berührend:* गिरेर्मौल्यवतः — अम्बरलेखि शृङ्गम् Ragh. 13,26. — 2) f. ई *Löffel:* घृत° H. 836, Sch.; vgl. लेखन 3) *a)*.

लेख्य्, लेख्यँति = लेखाय् gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लेख्य (von लिख्) 1) adj. *a) scarificandus* Suçr. 1,14,19. 92,13. 2,331,15. — *b) zu schreiben, niederzuschreiben* Jâǵń. 2,6. Mârk. P. 51,37. — *c) zu malen* Jâǵń. 1,297. — *d) mit Farben dargestellt, gemalt:* प्रतिमा Bhâg. P. 11,27,12. °पत्त्र Spr. 1234. °रूप dass. Weber, Kṛshṇaǵ. 277. — *e) zu rechnen —, zu zählen zu* (loc.): कमलेख्यं करोषि त्वम् — उन्मादिष्णुषु Spr. 3867. — 2) n. *a) das Schreiben, die Kunst des Schreibens:* चकार यत्नम् — लेख्यादिषु तथा शिल्पेषु MBh. 5,7409. R. Gorr. 1,80,2. 29. Varâh. Bṛh. S. 15,12. 16,18. 19,10. *das Abschreiben:* ग्रन्थस्य यत्प्रचरतो ऽस्य विनाशमेति लेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण 106,5. — *b) das Zeichnen, Malen* Varâh. Bṛh. 18,2. — *c) Schriftstück, Brief* H. an. 2,25. Med. kh. 4. Kâm. Nîtis. 12,47. °संस्थापन Sâh. D. 156. *ein schriftliches Document* Jâǵń. 1,317. 2,84. Spr. 2946 (wohl nicht *Bild*). तदर्थं च स्वहस्तेन शिवं लेख्यमकारयत् Kathâs. 24,173. Verz. d. Oxf. H. 263, *a*,17. *Inschrift:* चिरं तिष्ठति मेदिन्यां शैले लेख्यमिवार्पितम् MBh. 13, 6330. — *d) ein gemaltes Bild:* लेख्यानीवोपलक्षिताः Bhâg. P. 10,39,36. — Vgl. क्रय°, दुर्लेख्य.

लेख्यगत adj. *gemalt* MBh. 13,2309. Hariv. 9987.

लेख्यचूर्णिका f. *Pinsel zum Schreiben* oder *Malen* Çabdar. im ÇKDr.

लेख्यपत्त्र m. *Weinpalme* Bhâvapr. im ÇKDr. °क m. dass. Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. लेखार्ह.

लेख्यमय adj. *gemalt* Comm. zu Bhâg. P. 10,39,36.

लेख्यस्थान n. *Schreibstube* Trik. 2,8,29.

लेट m. Bez. *einer best. Mischlingskaste;* s. u. कोल 1) *h*), गङ्गपुत्र 2) und उग्र. — Vgl. उप°.

लेट्य्, लेट्यँति (दीप्तिपूर्वभावस्वप्नधौर्त्येषु) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. — Vgl. लोट्य्.

लेण्ड n. *Unrath des Körpers, Excremente:* लेण्डं विसृजन् (so ist zu lesen; vgl. u. लण्ड) Bhâg. P. 10,37,8. उत्ससर्ज बृहल्लेण्डं मूत्रं च भयमाप ह Brahmavaiv. P., Çrîkṛshṇaǵanmakh., Dhenukâsurav. 22 im ÇKDr. गज° Suçr. 2,67,4. अश्व° Schol. zu Kâtj. Çr. 16,4,8. — Vgl. लण्ड (wohl fehlerhaft).

लेत m. n. *Thränen* Trik. 2,6,30. — Vgl. लोत.

लेदरी f. N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 1,87.

लेप्, लेंपते (गतौ, सेवने) Dhâtup. 10,11.

लेप (von लिप्) m. = लेपन, प्रलेपन Trik. 3,3,279. H. an. 2,299. Med. p. 11. 1) *das Anstreichen, Bestreichen* Vop. in Dhâtup. 28,139. Jâǵń. 1,188. Mârk. P. 35,16. कामं सुरसलेपेन कान्तिं वहति काञ्चनम् Spr. 3223. — 2) *was aufgestrichen wird, Salbe, Teig, Tünche;* = सुधा AK. 3,4,18,104. H. an. Viçva im ÇKDr. Suçr. 1,65,8. fgg. 132,2. 2,4,19. Çârṅg. Saṁh. 1,1,36. 2,1,21. 5,3. 3,11,1. 5. अनुकूल° Hariv. 8436. Bhâg. P. 7,12,12. सर्पिस्तैलवसाभिश्च लाक्षया चाप्यनल्पया। मृत्तिकां मिश्रयित्वा तं लेपं कुड्येषु दापय ॥ MBh. 1,5724. के ऽमी पञ्च नराः — लेपनिर्मिताः Çatr. 1,282. पङ्क° Spr. 117. मृल्लेप Râǵa-Tar. 3,397. fg. 401. मृत्तिकालेपवत् (so ist zu lesen) Sarvadarçanas. 40,13. 19. — 3) *Unreinigkeit, Schmutz* (auch *moralischer*), namentlich *Fett, das an Gefässen, Händen u. s. w. hängen bleibt:* लेपान्परिमृज्य Âçv. Çr. 8,14,14. आज्य° Kaush. Up. 2,3. 4. Çâṅkh. Çr. 7,5,11. Gṛhj. 1,16,21. स° Kâtj. Çr. 7,5,17. सर्व° 26,6,15. Schol. 257,2. पिष्ट° *Mehlfleck, was von Mehl* oder *Teig hängen blieb* Kâtj. Çr. 3,7,19. Schol. 204,17. 284,21. 285,3. Kauç. 18. गन्धो लेपश्च M. 4,111. 5,126. Jâǵń. 1,17. अमृतश्च्योतल्लेप Kathâs. 22,199. हविर्लेप Sâj. zu Ṛv. 1,52,5. उच्छिष्टलेपाः Bhâg. P. 1,5,25. °भागिनः M. 3,216. °भाजः Matsja-P. bei Kull. zu M. 5,60. Mârk. P. 31,1. 2. °संबन्धिन् 4. रुधिर° *Blutfleck* MBh. 12,4813. न मे स्वभावेषु भवन्ति लेपास्तोयस्य बिन्दोरिव पुष्करेषु ॥ 14,791. अ° (आकाश) 12,7977. अनघस्त्वं जगन्नाथ न लेपस्तव विद्यते Mârk. P. 18,29. पापपुण्यालेपलक्षणा जीवन्मुक्तिः *kein Rest von* Madhus. in Ind. St. 1,20,14. — 4) *Speise* AK. 2,9,56. Trik. H. an. Med. — Vgl. निर्लेप, पाद°, पिण्ड°, पिण्डी°, मुख°, लिङ्ग°, वज्र°.

1. लेपक am Ende eines adj. comp. von लेप; s. अ°.

2. लेपक (von लिप्) nom. ag. *Bossirer* AK. 2,10,6. Trik. 2,10,2. H. 922, Sch. Halâj. 2,436.

लेपकर m. *Maurer, Tüncher* R. 1,12,7. R. Gorr. 2,90,19.

लेपकामिनी f. = अञ्जनी Hâr. 161. — Vgl. लेप्यनारी, लेप्ययोषित्.

लेपन (von लिप्) 1) m. *Olibanum, ostindischer Weihrauch* (तुरुष्क) Râǵan. im ÇKDr. — 2) n. *a) das Anstreichen, Bestreichen, Aufstreichen* Âçv. Gṛhj. 2,3,3. Jâǵń. 1,188. चन्दनैः Kathâs. 101,127. पाषाणे गन्धलेपनम् Spr. 4397. सुगन्धादि° Vet. in LA. (III) 8,22. भस्म° Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,4. Spr. 4855. कस्तूरी° Schol. zu Naish. 22,56. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): गोशकृत्कृतलेपना MBh. 13,6792. — *b) das womit Etwas bestrichen wird, Salbe, Teig, Tünche* Çârṅg. Saṁh. 3,11,1. सुधामृत्तिक° MBh. 5,7477. पाण्डुमृत्तिक° adj. R. 2,91,41. सुधापाण्डरलेपना adj. Hariv. 8959. मांसशोणित° adj. vom Körper M. 6,76 (= MBh. 12, 12463). MBh. 3,13452. 11,107. — *c) Fleisch* H. ç. 127. पलल kann nicht vermuthet werden, da dieses im Text steht. — Vgl. भूमि°.

लेपिन् (von लिप् und लेप) 1) adj. am Ende eines comp. *a) beschmierend —, überziehend mit:* चूर्ण° H. an. 4,311. Med. ç. 33. — *b) beschmiert —, überzogen mit:* प्रभा° so v. a. *glänzend, strahlend* Ragh. 13,54. Vikr. 125. — 2) m. = लेपक *Bossirer* Çabdar. im ÇKDr.

लेप्य (von लिप्) 1) adj. *a) bossirt:* प्रतिमा Bhâg. P. 11,27,12. — *b) zu verunreinigen, zu beflecken* Maitrjup. 2,7. — 2) n. *das Bossiren* AK. 2,10,29. H. 922. Halâj. 2,436.

लेप्यकृत् m. *Bossirer* H. 922.

लेप्यनारी f. wohl *eine bossirte weibliche Figur* Med. n. 27. — Vgl. लेप्ययोषित्, लेप्यस्त्री, लेपकामिनी.

लेप्यमय (von लेप्य) adj. (f. ई) *bossirt* H. 1014. Halâj. 2,338.

लेप्ययोषित् f. = लेप्यनारी H. an. 3,355.

लेप्यस्त्री f. *ein parfümirtes Weib* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. लेप्यना-

री, लेप्ययोषित्.

लेय (aus λέων) m. *der Löwe im Thierkreise* Varâh. Brh. 1,8.

लेलया (vom intens. von 2. ली), davon ein gleichlautender instr. als adv. *schwank, in unruhiger Bewegung:* बद्धलेव पृथिवी लेलयेवासरि-तम् लेलयेवासी द्यौः Çat. Br. 2,2,1,16. लेलयेव हि यूः 3,8,3,20.

लेलाय् s. u. 2. ली.

लेलिह (vom intens. von 1. लिह्) 1) adj. Bez. *gewisser parasitischer Würmer* (कृमि) Çârṅg. Saṁh. 1,7,10. — 2) m. *Schlange* MBh. 1,1318. Bhâg. P. 6,12,27. 10,17,12. — 3) f. ग्रा Bez. *einer best. Fingerstellung* (मुद्रा) Tantrasâra im ÇKDr. u. लेलिहाना.

लेलिहान 1) adj. s. u. dem intens. von लिह्. — 2) m. *a) Schlange* H. 1304. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 1 v. u. (?). — *b)* Bein. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. ग्रा Bez. *einer best. Fingerstellung* (मुद्रा) Tantrasâra im ÇKDr.; vgl. लेलिहा.

लेल्य nom. ag. vom intens. von 1. ली Vop. 26,29.

लेवार् m. N. pr. eines Agrahâra Râǵa-Tar. 1,87.

लेश (von लिश् = रिश्) m. 1) *Partikel, Minimum, ein Bischen* AK. 3,2,11. Trik. 3,2,8. H. 1427. Halâj. 4,3.5,7. Siddh. K. zu P. 5,4,136. लेशेन वचनम् *kaum hörbare Aussprache* RV. Prât. 14,5. Taitt. Prât. 10,21. सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्याः Khând. Up. 2,22,5. यकारवकार-योर्लेशः Taitt. Prât. 1,10. लेशवृत्तिः (derselben Laute) AV. Prât. 2,24. सर्व-स्मात्सुकृतदुष्कृताद्धितरतो लेशान् Spr. 5227. एष ते राजधर्माणां लेशः स-मनुवर्णितः MBh. 12,2115. एतद्धि लेशमात्रं वः समाख्यातम् 3,12674. एतद्धि लेशमात्रेण कथितं ते मया 13,5529. Hariv. 9787. दृष्टां तदुपकारस्य लेश-तो येन निष्कृतिम् *in ganz geringem Maasse* Kathâs. 121,224. तत्रापि प्रमादं लेशतो दर्शयामः Verz. d. Oxf. H. 163, *b*, N. 2. लेशोक्त *ganz kurz gesagt, nur angedeutet* Suçr. 2,536,16. लेशादृष्टि Kusum. 46,20. लेशानुब-न्ध Ind. St. 10,315. Sehr häufig am Ende eines comp.: दण्ड° *eine ganz geringe Strafe* M. 8,51. तदवयव° Spr. 193. ग्रर्थ° Kâm. Nîtis. 10,24. धन° Kathâs. 36,75. ग्रयुतभाग° Bhâg. P. 8,24,49. ग्रदणासूक्ष्मतेजोलेशैः Schol. zu Naish. 22,49. तमो° Sarvadarçanas. 164,18. fg. 178,15. ऐश्वर्य° 91,10. धर्म° MBh. 3,1268. वाच्य° 12,5406. पुण्य° Bhâg. P. 3,1,9. 10,48, 6 (am Ende eines adj. comp. f. ग्रा). सुख° 5,5,16. 6,9,38. Spr. 3282. 3984. हास्य° Bhar. Nâtjaç. 18,113. काम° Bhâg. P. 5,18,16. विश्वास° Spr. 5102. दर्प° Kathâs. 46,20. ग्रपराध° 105,8. भक्ति° Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 10. सरस्वती° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 6. सं-स्कारलेशतस् Kap. 3,83. स्वेदलेशाः *Schweisstropfen* Çâk. 37. ग्रश्रुलेशाः Megh. 105. Bhâg. P. 6,16,32. ग्रमवारिलेशाः Kumâras. 3,38. प्रालेय° *Hagel* Spr. 1914. zum Ueberfluss mit लव verbunden: मधुलव° 3520. ग्रन्न° als Unterschrift eines von Speisen handelnden Abschnittes Vâgbh. 6 so v. a. *Einiges über Speisen.* — 2) *ein best. kleiner Zeittheil,* = 2 Kalâ H. 136. — 3) Bez. *eines best. Gesanges* Hariv. 8464, wo mit der neueren Ausg. लेशाभिधानां zu lesen ist. — 4) Bez. zweier Redefiguren: *a) Anwendung der Vergleichung statt des directen Ausspruches:* स लेशो भण्यते वाक्यं यत्सादृश्यपुरःसरम् Sâh. D. 467. 434. Beispiel aus Venîsaṁh.: हते जरति गाङ्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । या श्लाघा पाण्डुपुत्रा-णां सैवास्माकं भविष्यति ॥ ebend. Hierher wohl Verz. d. Oxf. H. 208, *b*, 19. — *b) Darstellung als Nachtheil, was sonst als Vorzug gilt, und umgekehrt:* लेशः स्याद्दोषगुणयोर्गुणदोषत्वकल्पनम् Kuvalaj. 135, *b* (162, *a*). Beispiel Spr. 3381. — 5) N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Suhotra, VP. 406.

लेश्या f. *Licht* Ind. St. 10,281. 282 (hier लेश्य). 311; vgl. 261.

लेष्टव्य partic. fut. pass. von लिश् P. 8,2,36, Sch.

लेष्टु (von लिश् = रिश्) m. *Erdkloss, Erdscholle* AK. 2,9,12. H. 970. सीता° MBh. 13,2135 (°नेष्टु ed. Bomb.). लेपणीयैश्च लेष्टुभिः (लेपणीयै-स्तथाश्मभिः die neuere Ausg.) Hariv. 2429. — Vgl. नेष्टु und लोष्ट.

लेष्टुघ्न m. *Egge* oder *ein anderes Werkzeug zum Zerschlagen der Erdschollen* Çabdar. im ÇKDr.

लेष्टुभेदन m. dass. Bhar. zu AK. 2,9,12 nach ÇKDr.

लेसक m. *ein Reiter auf einem Elephanten* Çabdam. im ÇKDr.

लेह (von 1. लिह्) P. 3,1,141. gaṇa पचादि zu 134. 1) nom. ag. *Lecker, Schlürfer:* मधुनो लेहः so v. a. मधुलिह् *Biene* Bhaṭṭ. 6,82. — 2) m. *Leckmittel, Latwerge, Electuarium* Suçr. 1,162,6. 168,9. 2,81, 13. Verz. d. Oxf. H. 319, *a*, No. 756. *Speise* AK. 2,9,56, v. l. (für लेप) und H. 423. — 3) m. Bez. *einer der zehn Weisen, auf welche eine Eklipse erfolgen kann,* Varâh. Brh. S. 5,43.45. = 4) लेहम् in तीरले-हम् absol. Kauç. 30. — 5) f. ई *eine best. Krankheit des Ohrläppchens* Çârṅg. Saṁh. 1,7,82.

लेहन (wie eben) n. *das Lecken* H. 424. मधु° Sarvadarçanas. 38,3.

लेहिन् (wie eben) nom. ag. *Lecker, leckend;* s. मधु°.

लेहिन m. *Borax* ÇKDr. angeblich nach H.

लेह्य (von 1. लिह्) 1) adj. *woran man leckt, was man leckend geniesst:* यत्तु जिह्वायां निक्षिप्य रसास्वादेन निगीर्यते द्रवीभूतं गुडादि त-ल्लेह्यम् Schol. zu Bhag. 15,14. भक्ष्य, भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य MBh. 1,4997. 6659. 13,5871. R. 1,52,24 (53,23 Gorr.). 2,50,25 (47,14 Gorr.). 91,19 (100,17 Gorr.). 5,14,43. Suçr. 1,160,12. 244,17. Ragh. 5,73. Kathâs. 45, 230. Pańkat. 61,13. — 2) n. = ग्रमृत *Nectar* Çabdam. im ÇKDr.

लैख m. patron. von लेख gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

लैखाभ्रेय patron. von लेखाभ्र und metron. von लेखाभ्रू (vgl. P. 6,4,147) gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123 nebst v. l.

लैगवायन m. patron. von लिगु gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

लैगव्य m. desgl. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. f. लैगव्यायनी gaṇa लोहितादि zu 18.

लैङ्ग (von लिङ्ग) 1) n. Titel eines Purâṇa und eines Upapurâṇa Madhus. in Ind. St. 1,18,10. 19. VP. 284. Bhâg. P. 12,7,23. Mârk. P. S. 659, Çl. 3. Comm. zu Çvetâçv. Up. S. 259. 268. Verz. d. Oxf. H. 8, *a*, 2. 59, *a*, 39. 65, *a*, 40. °पुराण 104, *a*, 20. 270, *b*, 35. Vgl. लिङ्गपुराण. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = लिङ्गिनी Râǵan. im ÇKDr.

लैङ्गिक (wie eben) 1) adj. *auf einem beweisenden Merkmale beruhend* Kaṇ. 9,2,1. 10,1,3. fehlerhaft लैङ्गीक Z. d. d. m. G. 7,306. — 2) m. *Bildhauer* Schol. zu Kap. 1,121; vgl. Wilson, Sâṁkhjak. S. 39. — Vgl. लिङ्गोपहित°.

लैण्, लैणति (गतिप्रेरणाश्लेषणेषु) Dhâtup. 13,15, v. l.

लो 1) nom. ag. von लवय्; nom. लौस् P. 1,1,58, Vârtt. 2, Sch. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 3,10.

लोक्, लोकते (दर्शने) Dhâtup. 4,2. *erblicken, gewahr werden:* तं भैरवो

ऽलोकत Verz. d. Oxf. H. 237,a,2. — Wohl eine auf रुच्, रोक zurückgehende secundäre Wurzel.

— caus. लोकयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhâtup. 33,103. 1) *schauen, anschauen, betrachten* Sâj. zu Çat. Br. 14,6,9,11. मुखान्यन्ये परस्परमलोकयन् LA. (III) 90,15. — 2) *erblicken, gewahr werden:* अन्तिकगतमपि मामियमलोकयतीव हन्त दृष्टापि Sâh. D. 60,16. गिरिदुर्गाण्यलोकयत् R. 2,36,25. *erkennen, inne werden:* जगतां कर्ताहमिति लोकय Liñga-P. bei Muir, ST. IV, 325,10 v. u.

— अभि caus. *betrachten, mustern:* वसुधामभिलोकयन् von einer Höhe R. 6,2,7.

— अव 1) *sehen, die Fähigkeit des Sehens besitzen:* नोलूको ऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् Spr. 1688. — 2) *hinschauen, hinsehen:* विघगवलोकते तन्वी Sâh. D. 57,19. यावद्दूर्धमवलोकते Hit. 85,15. — caus. 1) *aufschauen, hinschauen, hinsehen:* व्यजृम्भत महासिंहो मह्यिषाश्चावलोकयन् MBh. 3,11110 (vgl. R. 2,97,6). आसीच्च जाग्रदेवात्र स रात्रावलोकयन् Kathâs. 18,329. पुरस्कृत्य बलं राजा योधयेदवलोकयन् Spr. 1796. Çâk. 33,1. आकर्ण्यावलोक्य च 6,13. 45,20. 92,12. 99,13, v. l. 100,23. 101,20. Prab. 47,3. परिक्रम्यावलोक्य च Çâk. 8,16. 22. 20,15. 31,6. 32,19. 46,8. 61,1. Dhûrtas. 78,14. प्रकाशं निर्गतस्तावदवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्या इति Çâk. 46,7. नेपथ्याभिमुखम् 3,6. Vikr. 3,6. Dhûrtas. 68,5. Prab. 47,1. पुरः Çâk. 44,18, v. l. 63,15, v. l. Dhûrtas. 77,16. ऊर्ध्वम् 73,17. Mṛkkh. 76,2. पार्श्वम् Çâk. 103,9. सर्वतः 41,18. समन्तात् 7,23. 77,5. 94,5, v. l. R. 3,18,21. 35,77. Dhûrtas. 71,8. अग्रतः 74,8. 82,3. पश्चादनवलोकयन् *sich nicht umsehend* MBh. 12,261. पृष्ठतो नावलोकयन् dass. R. 3,30,30. 4,9,12. अवलोकित n. *das Hinschauen, Hinsehen:* सिंहानां परिवृत्यावलोकितम् Ragh. 4,72. न तिर्यगवलोकितं भवति ad Çâk. 69,2. — 2) *hinsehen nach, sehen auf, ansehen, anblicken, beschauen, betrachten;* mit acc.: संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् Bhag. 6,13. Mârk. P. 39,31. अवलोकयमानौ तु सुमन्त्रो यत्र तां दिशम् R. 2,52,93 (30 Gorr.). चक्षुषा चावलोकय (माम्) MBh. 7,98. R. Gorr. 2,11,31. अमर्षाश्रयया दृष्ट्या वसुधाम् 50,2. 6,99,5. राजानं मृगं चावलोक्य Çâk. 5,2. 8,12, v. l. 10,23. परस्परमवलोकयतः 17,4. 33,10. 105,17. 18,21. 23,5. 32,13. 37,4. 38,16. 77,11. 80,7. 98,22. 101,10. 108,19, v. l. 109,9. Çiç. 9,84. वेलावनानि जलधेरवलोकयितुं ययौ Kathâs. 22,177. Mârk. P. 61,22. Weber, Kṛshṇaǵ. 278. Hit. 27,18. 89,3. दमनकमार्गम् Pańkat. ed. orn. 19,23. Vet. in LA. (III) 11,6. मदीयं प्रयोगम् Mâlav. 23,20. मम बलानि तावदवलोकयतु मन्त्री *mustern* Hit. 94,8. तदहं वृतिद्वारस्थः क्षेत्रपालमवलोकयामि *hinsehen nach* so v. a. *achten auf* Pańkat. 249,4. निमित्तानि Varâh. Bṛh. S. 53,105. 68,1. 95,17. रूपमञ्जरीयोग्यं वरमवलोकयत *sehet euch um nach* Z. d. d. m. G. 14,573,7. षाड्गुण्यगुणदोषांश्च नित्यं बुद्ध्यावलोकयेत् MBh. 12,2062. Varâh. Bṛh. S. 24,3. 54,99. मुनिमतानि 68,117. 106,2. Bṛh. 4,12. In der Astrol. *anblicken* vom *adspectus* planetarum Varâh. Bṛh. 2,13. 6,6. 19,4. 23,9. पाणिग्रहणकाले त्वं सूर्यभौमशनैश्चरैः । शुक्रवाचस्पतिभ्यां च तव भार्यावलोकिता ॥ Mârk. P. 71,26. सुरपतिगुरुणावलोकिते Varâh. Bṛh. S. 5,62. धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि देवैश्चाप्यवलोकिता । यत् u. s. w. *von den Göttern* (gnädig) *angeblickt* Mârk. P. 16,65. निधिनावलोकितः 68,16. 25. — 3) *erblicken, gewahr werden:* नैवावलोकयामास राक्षसं भुङ्क्ष एव सः MBh. 1,6281. 13,2752 (नावलोकयत् mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 2,55,25. 3,39,11. 16. 24. Ragh. 8,37. 73. 11,67. 19,53. Kumâras. 3,50. Çâk. 99,16, v. l. 103,10. 109,2. Vikr. 21,3. Spr. 5322. प्रथममुनिकथितमवितथमवलोक्य ग्रन्थविस्तरस्यार्थम् Varâh. Bṛh. S. 1,2. 32,5. 45,14. Kathâs. 2,82. Prab. 111,7. Bhâg. P. 3,4,3. Mârk. P. 35,34. Pańkat. 36,20. 46,21. 55,10. 76,24. 93,5. Hit. 9,7. 10,1. 14,9. 22. 18,12. 22,2. 23,6. 27,1. 29,12. 35,4. 38,12. 43,21. 45,7. 120,16. 123,17. Vet. in LA. (III) 7,21. 8,13. 9,13. Z. d. d. m. G. 14,574,18. — Vgl. अवलोक fgg.

— समव caus. 1) *hinschauen, sich umsehen:* यथोपदिष्टेन पथा गच्छन्समवलोकयन् R. 3,17,3. *hinsehen nach, beschauen, betrachten, mustern:* सर्वा दिशः 4,1,3. योधान् Spr. 1796, v. l. — 2) *erblicken, gewahr werden* R. 4,60,18. Çâk. 13. Kathâs. 45,366. Z. d. d. m. G. 14,573,23.

— आ 1) *hinsehen nach, schauen auf:* तन्मार्गमालोकते Sâh. D. 57,4. राजा चक्रवाकमालोकते Hit. 89,3, v. l. आलोकितुम् Kathâs. 15,137. — 2) *erblicken:* आलुलोके Verz. d. Oxf. H. 225,b,24. Bhaṭṭ. 2,24. — caus. 1) *sehen, vor Augen haben:* मामनालोक्य न स्नाति Prab. 43,10. वणिगालोक्य निन्ने हृदि सोत्साहं परिचितग्रहीतारम् so v. a. *denkend an* Spr. 1937. *hinsehen, hinschauen:* आलोकयन्ती ददृशे प्रासादाद्द्रुपदात्मजाम् MBh. 4,250. तदेक्ष्यवलोकय स्वयम् Kathâs. 45,209. सुलक्षणा सा वा न वेत्यालोक्यताम् 15,68. Sarvadarçanas. 39,5. *anblicken, ansehen, betrachten, beschauen* MBh. 3,2301. 4,470. Hariv. 9011 (आलोकयान). Mṛkkh. 75,3. Ragh. 14,29. Çâk. 38,16, v. l. 105,17, v. l. Vikr. 81. आलोकितः कुरवकः कुरुते विकाशम् ad Kumâras. 3,26. Spr. 1769. तृणमिव जगज्जालमालोकयामः 1966. 2537. Kathâs. 18,125. 383. 46,89. Bhâg. P. 1,7,52. Weber, Kṛshṇaǵ. 278. Hit. 35,5. Dhûrtas. 92,17. यथावदालोकितमार्गचारिन् Kâm. Nîtis. 15,59. श्रीकण्ठो मामुपेत्य त्वामालोकयति *schaut* (gnädig) *auf dich* Vop. 3,143. खड्गम् — प्राकिणोत्सारथेः कायमालोक्य so v. a. *zielend auf* Hariv. 15248. *untersuchen, prüfen, studiren:* पङ्कवावासम् R. 4,43,21. सारापराधौ M. 8,126. तन्त्राण्यनेकानि Verz. d. Oxf. H. 99,a, No. 154. मतानि तेषाम् 175,b,9. 181,a, No. 412, Z. 6. Varâh. Bṛh. S. 1,5. धिया 51,1. बुद्ध्या Kâm. Nîtis. 1,17. In der Astrol. *ansehen* vom *adspectus* planetarum Varâh. Bṛh. 4,2. 23,1. 7. आलोकित n. *Blick* Mâlatîm. 16,8. — 2) *erblicken, gewahr werden, erfahren, erkennen* Maitrjup. 6,28. Draup. 1,15. MBh. 2,1817. 3,11024. 5,7521. 6,5824. 14,582. R. 2,34,4. 47,16. 53,9. 96,42. R. Gorr. 1,57,23. 3,51,43. 4,19,1. 43,54. 44,122. 59,18. 5,13,28. 34,20. 6,14,5. Kâm. Nîtis. 15,52. Ragh. 6,2. 12,84. 16,83. Kumâras. 7,22. Spr. 1690. 1816. 3010. Çiç. 9,84. Kathâs. 3,76. 4,45. 65. सर्वमालोक्य चञ्चलम् 5,126. 10,157. 12,38. 70. 131. 13,130. 15,116. 20,25. 21,86. 25,292. 26,106. 28,101. 32,80. 156. 39,239. 42,74. Râǵa-Tar. 1,37. 298. 3,61. 4,163. 409. Bhâg. P. 8,8,35. Mârk. P. 66,12. 68,7. 109,32. 110,19. Prab. 68,15. Pańkat. 76,23. Hit. 17,15. 23,7. 10. 39,20. 42,9. 110,18, v. l. Z. d. d. m. G. 14,573,26. Dhûrtas. 83,3. यस्य वा दृष्टिमण्डले भिन्नविकृतानि रूपाण्यालोक्यन्ते Suçr. 1,118,10. fg. कतमो ऽयं सानुमानालोक्यते Çâk. 99,16. शोच्या च प्रियदर्शना चेयमालोक्यते 58, v. l. वृतान्तरालोकितया ज्योत्स्नया MBh. 3,16854. तद्वदालोकितस्वप्ना *die denselben Traum gehabt hatte* Kathâs. 52,391. — आलोक्य Pańkat. 78,14 fehlerhaft für आलोड्य. — Vgl. आलोक fgg.

— समा caus. 1) *hinschauen* R. 5,55,17. *hinschauen auf, — nach, anblicken, anschauen* MBh. 2,775. सर्वा दिशः 3,16850. R. 3,79,1. *vor Augen haben, in Betracht ziehen* MBh. 8,2153. Hariv. 6338. Sâh. D. 45,19. Mârk. P. 66,28. 133,7. समालोक्य मतान्येषाम् Verz. d. Oxf. H. 189,*b*,10. स्वमानसे समालोक्य (°लोच्य?) Pańkar. 1,6,3. समालोक्य v. l. für समालोच्य 12,3. — 2) *erblicken, gewahr werden* Spr. 4922. MBh. 7,864. R. 2,93,21. R. Gorr. 2,41,23. Bhâg. P. 8,19,8. Mârk. P. 78,25. Pańkat. 3,13 (ed. orn. 1,8). *erkennen als:* सकलार्थशास्त्रसारं समालोक्य विष्णुशर्मेदम् Pańkat. Pr. 3 (ed. orn. 1). — Vgl. समालोक fgg.

— उद् caus. *hinaufblicken zu:* भगवन्तमभिमुखमुल्लोकयमानाः Saddh. P. 4,3,*b*.

— परि caus. *sich umsehen, umherschauen* R. 5,10,6. *rings beschauen:* स तथा तु जनस्थानं सर्वतः परिलोकयन् 3,68,1.

— वि *anblicken, ansehen:* °लोकितुम् Bhâg. P. 4,20,21. *prüfen, studiren:* अनेकानागमग्रन्थान्विलोकितुम् Verz. d. Oxf. H. 100,*b*,5. — caus. 1) *hinschauen, hinsehen* Gobh. 1,2,17. R. 2,33,3. 97,6 (Gorr. 106,4; vgl. MBh. 3,11110). R. Gorr. 2,108,23. 5,8,22. 13,20. Spr. 2663. Ragh. 6,59. Çâk. 9,4. 11,19, v. l. 32,20. 33,4. 41,18, v. l. 44,18. 49,4. 50,3. 72,11. 75,3. 99,13. 105,12. Vikr. 12,20. Mâlav. 50,14. Kathâs. 37,157. Kaurap. 35. Prab. 6,1. 31,18. उद्गाढकोपकुटिलं च तया व्यलोकि 67,9. Bhâg. P. 8,8,19. Pańkat. 235,24. fg. विलोकित n. *Blick* Çâk. 36. Kumâras. 4,23. Sâh. D. 42,16. — 2) *hinsehen nach, ansehen, anblicken, beschauen, betrachten:* दिशो दश Hariv. 12568. R. 5,56,52. Spr. 2015. Verz. d. Oxf. H. 171,*a*,3. गगणाङ्गं गतां नदीम् R. 1,44,19. Ragh. 14,44. 19,40. Kumâras. 5,25. Spr. 2022. Çâk. 13,10. 15,12. 17,13. 22,10. 24,15. 27,16. 44,1. 50,13. 57,21. 64,3, v. l. 83,23. 98,22, v. l. 103,3. 106,15. 96. Vikr. 40,1. 18. Spr. 236. Varâh. Bṛh. S. 89,8. Kir. 5,17. Uttarar. 35,20 (47,14). Kathâs. 17,88. 25,230. 28,179. 34,164. 35,138. Râga-Tar. 1,373. 4,598. Bhâg. P. 2,9,7. 3,20,45. 4,20,22. 5,25,4. 5. 8,7,4. 8,28. 9,16,3. Pańkat. 64,16. Hit. 21,20. 27,18, v. l. Vet. in LA. (III) 13,5. 11,6. 7. *sein Augenmerk richten auf, beobachten, prüfen* Kâm. Nitis. 16,40. मनीषया निर्मलया विलोकितं फलाय कर्म 15,58. *studiren* Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. *sehen auf* so v. a. *Rücksicht nehmen auf:* न खलु प्रयोजनं कारणं वा विलोक्य माया प्रवर्तते Prab. 15,11. — 3) *erblicken, gewahr werden* MBh. 8,3817. Hariv. 14608. R. 3,56,53. 4,1,6. 5,6,24. 13,26. 14,50. Ragh. 2,11. 11,17. Kumâras. 5,70. Ṛt. 1,9. Vikr. 8,17. Spr. 728. 811. 2543. 3010. Varâh. Bṛh. S. 29,1. 45,15. Kathâs. 5,8. 10,161. 216. 12,114. 17,145. 18,104. 245. 303. 19,24. 20,12. 24,110. 26,190. 28,190. 29,174. 30,84. 31,47. 32,32. 52. 64. 77. 33,213. 37,14. 40,29. 59. 42,18. 47,90. 48,133. 49,206. Râga-Tar. 3,115. 118. 4,17. 19. 5,196. 6,250. Bhâg. P. 1,7,18. 11,32. 14,24. 3,10,5. 12,29. 19,7. 17. 22,17. 26,5. 9,1,16. 16,4. Mârk. P. 23,94. Pańkar. 1,7,63. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,22. Trik. 1,1,2. Pańkat. 36,19. 46,7. Hit. 89,15, v. l. 127,7. Vet. in LA. (III) 8,6. pass. so v. a. *sichtbar sein:* लग्नः कलिङ्गसेनाया देवस्य च प्रभावकः। विवाहमङ्गलायैकः किं नाद्यैव विलोक्यते ॥ Kathâs. 32,3. Kaurap. 32. — 4) *hinübersehen über* (acc.): वृतिं तत्र प्रकुर्वीत यामुष्ट्रो न विलोकयेत् M. 8,239. — Vgl. विलोक fgg.

— प्रवि caus. 1) *hinschauen, hinblicken:* सर्वतः R. 1,9,59 (57 Gorr.). *betrachten, beschauen* Kathâs. 40,85. 46,46. 71,101. *beobachten* (astronomisch): छायाद्वयम् Golâdhj. Praçnâdhj. 47. *in Gedanken betrachten, erwägen* Kathâs. 120,86. — 2) *erblicken, gewahr werden, sehen* Kathâs. 52,7. 101,76. 108,120.

— सम् *zusammen blicken:* ते एते ज्योतिषी उभयतः संलोकेते *blicken einander an* Ait. Br. 4,15.

लोक m. Trik. 3,5,3. am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 15,60. Spr. 4097. Varâh. Bṛh. S. 8,30. In den ältesten Texten finden wir regelmässig die Verbindung उ लोक, sogar am Anfange eines Pâda (ṚV. 3,2,9. 37,11. 5,4,11. 9,2,8). Im ṚV. erscheint das einfache लोक nur 8,89,12. 9,113,7. 9. 10,14,9. 85,20. 90,14. VS. 11,22 wird missverständlich उ in सु verändert, obgleich diese Sammlung vereinzelt (12,35. 18,52. 58) auch उ erhalten hat. Dieser Umstand führt auf die Vermuthung, dass उलोक die ältere Form des Wortes gewesen, लोक also durch Abfall des Anlauts entstanden sei. Vgl. Ind. St. 1,351. Müller, Transl. I, lxxiv. उलोक weist auf उरोक, das auf उरु, वरु (vgl. उरु, वर, वरिमन्) zurückgeführt werden kann. Wer es vorzieht उरोक von रुच् abzuleiten, könnte उ als Rest der Präposition अव (vgl. अवकाश) betrachten. 1) *freier Raum, das Freie; Raum* überh., *Ort, Platz, Stelle:* देहि लोकम् *mache Platz* ṚV. 8,89,12. सीद होतः स्व उ लोके 3,29,8. 10,13,2. उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि 3,37,11. 2,9. सुरभा उ लोके 5,1,6. अस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् 10,14,9. VS. 2,30. पितृषदन 5,26. 6,6. देवं सोमैष ते लोकः 8,26. लोकं पृण छिद्रं पृण 12,54. 19,54. 35,1. 2. 6. प्रजां च लोकं चाप्नोति so v. a. *freies Gebiet, freie Bewegung* AV. 4,11,9. 6,123,2. 12,2,1. 14,2,13. 18,2,25. अत्रादधुर्यजमानाय लोकम् 4,7. मधुमत् 9,1,23. ये पृथिव्यां पुण्या लोकाः 15,13,1. TS. 5,7,5,3. Ait. Br. 3,18. 1,24. Pańkav. Br. 17,13,1. Çat. Br. 6,2,2,28. यावन्तं लोकं जयति *Strecke, Gebiet* 11,8,3,5. 13,2,7,13. 14,6,9,11. fgg. (vgl. Bṛh. Âr. Up. 3,9,10. fgg.). 9,4,3. आत्मा सर्वेषां भूतानां लोकः 4,4,29. जगतीनां लोके त्रिष्टुभः *statt der* G. Shadv. Br. 3,7. *Zwischenraum* Kauç. 86. लोको ऽयम् *diese Stätte, dieses Land, das von uns bewohnte Land* AK. 2,1,6. Besonders in der Verbindung लोकं कर् oder उरुं लोकं कर् *Raum —, Luft —, Freiheit schaffen:* उरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ṚV. 7,33,5. 1,93,6. 2,30,6. 4,17,7. 5,4,11. यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकम् 10,30,7. 104,10. VS. 11,22. 23,43. AV. 6,121,4. 9,2,11. 11,1,31. Âçv. Çr. 4,13,5. ज्योतिर्यदह्ने अकृणोदु लोकम् *machte Platz* ṚV. 9,92,5. ähnlich उरुं नो लोकमनु नेषि 6,47,8. AV. 18,2,20. — 2) *der grosse Raum, die Welt; Weltraum, jede imaginäre Welt* AK. 3,4,4,2. H. 1365. an. 2,16. Med. k. 33. Halâj. 1,133. VS. 32,11. fg. AV. 8,9,1. 15. 11,5,7. 8,10. सूर्यः सद्यः सर्वा लोकान्पर्येति रक्षन् 4,38,5. 10,9,10. 10,33. दिव्याः, पार्थिवाः 9,5,14. सूर्यवन्तः 18. TBr. 3,12,8,2. नापुत्रस्य लोको ऽस्ति *für den Sohnlosen ist die Welt nicht da* Ait. Br. 7,13. कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रः *Kinderwelt* AV. 12,3,47. *Welt* im ausgezeichneten Sinne: *Himmel, Stelle im Himmel* Çat. Br. 2,6,4,7. 10,5,4,16. 11,2,7,19. न कृतघ्नस्य लोको ऽस्ति Weber, Kṛshnag. 225. लोकेभ्यः परिकृन्तति M. 4,219. लोकाञ्जयति 9,137. *Welten* von verschiedener Art und Zahl Çat. Br. 14,6,6,1. 7,4,36. fgg. 9,4,18. Çâṅkh. Br. 20,1. Kâṭh. 26,4. M. 4,181. fgg. पुष्कलाः 8,81. आत्म-

प्रभाः MBh. 3,2227. तेजोमयाः 5,2454. M. 6,39. कामगमाः MBh. 3,12034. काँल्लोकांस्त्वं गमिष्यसि R. 2,74,9. त्रयः AV. 10,6,31. 12,3,20. Ait. Br. 1,5. Çat. Br. 13,1,7,3. 14,4,3,24. M. 2,230. 232. 11,261. 12,97. MBh. 1,5910. 7642. 3,10660. 13,312. R. 1,6,2. 2,96,45. 6,102,23. Spr. 1512. Varâh. Bṛh. S. 6,6. 26,4. °त्रयी Spr. 1079. उभौ लोकौ *Erde und Himmel* TBr. 3,1,2,5. MBh. 12,366. Mârk. P. 22,36. P. 1,3,54, Schol. °द्वय Kâm. Nîtis. 7,55. 10,24. Râǵa-Tar. 5,184. सप्त इमे लोकाः Muṇḍ. Up. 2, 1,8. MBh. 3,175. 13,5288. 5292. Ragh. 10,22. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,11. 57,*a*,3 v. u. (daher Bez. *der Zahl sieben* Ind. St. 8,386. 395). अयम् AV. 5,30,17. 8,8,8. 12,5,38. 19,54,5. VS. 19,46. Çat. Br. 13,5,1,2. 2,11, 2. M. 10,128. लोके ऽस्मिन् 7,3. 8,343. 9,24. 12,53. MBh. 3,2637. 2904. 2982. R. 1,1,2. 92. Spr. 5188. इमं लोकम्, मध्यमम्, ब्रह्मलोकम् M. 2,233. इहैवास्ते तु सा लोके 3,141. 10,158. 12,102. लोके so v. a. इह लोके *hier auf Erden* 1,11. 84. 4,157. 5,50. MBh. 1,6122. 3,2776. 2980. Spr. 1539. 3626. 4374. 4759. 5346 (Gegens. परत्र). Dhûrtas. 96,7. लोके कृत्स्ने *auf der ganzen Erde* MBh. 3,2119. ततो दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सचराचरम्। अन्तरिक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्च पीडयेत् ॥ *die ganze Erde* M. 7,29. लोकं प्रजहाति *er verlässt die Erde* Varâh. Bṛh. S. 69,36. इमे लोकाः Ait. Br. 3,15. असौ *jene Welt* AV. 12,5,38. 57. VS. 17,2. TS. 1,5,9,4. Ait. Br. 5,28. 8,2. Çat. Br. 1,2,5,17. 14,9,1,2. M. 10,128. पर AV. 6,117,3. Çat. Br. 14,6,7,2. M. 11,26. AK. 3,4,32 (28), 16. उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते। पुण्यः क्षेम्यश्च काम्यश्च स परो लोक उच्यते ॥ MBh. 12,7010. पराँल्लोकान् Weber, Râmat. Up. 342. तृतीय AV. 6,117,3. तृतीये वा इतो लोके पितरः TBr. 1,3,10,5. परम AV. 19,54,5. Ait. Br. 1,21. 2,24. प्राचि AV. 4,34,2. ज्योतिष्मन्त् 9,5,6. पुण्य 16. 19,54,5. VS. 20,25. पितृयान AV. 5,18,13. 6,117,3. देवयान ebend. नारक 12,4,36. स्वर्गे लोके Kathop. 1,12. Çat. Br. 14,7,2,11. M. 3,140. 8,103. सोमसूर्यस्तृचरित Weber, Ǵyot. 110. जीवानाम् AV. 2,9,1. अमृतस्य 8,1,1. सुकृताम् und सुकृतस्य s. u. d. Ww. यमस्य AV. 6,118,2. पितृणाम् 3,29, 4. 12,2,9. 45. भद्रस्य 6,26,1. क्रूरकृताम् TBr. 1,4,6,5. पुण्यकृताम् (so ist zu lesen) MBh. 3,12025. अप्सरसाम्, वैश्वदेवस्य, अपाम् M. 4,183. ब्रह्मघ्नः, स्त्रीबालघातिनः, मित्रद्रुहः, कृतघ्नस्य 8,89. सप्तानां मरुतां लोकान्वसूनां च MBh. 13,5315. गच्छ लोकान्महेन्द्रस्य R. 4,21,27. राजर्षि° 1,57,5. पितृ° Khând. Up. 8,2,1. मातृ° 2. भ्रातृ° 3. स्वसृ° 4. सखि° 5. गन्धमाल्य° 6. अन्नपान° 7. गीतवादित्र° 8. स्त्री° 9. भर्तृ° M. 5,165. 9,29. उर्वशी° (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 9,14,44. 47. निरय° R. Gorr. 2, 15,23. — 3) pl. und sg. *die Leute, die Menschen, das Volk* (auch im Gegens. zum Fürsten) AK. H. 501. H. an. Med. Halâj. 2,129. लोकानां हितकाम्यया M. 12,117. लोकेषु यशः प्राप MBh. 3,2081. लोकेष्वप्रतिमो भुवि 2086. 13,6804. 15,900. Hariv. 4005. R. 1,2,39. R. Gorr. 2,108, 29. Spr. 311. 560. 1276. 1936. 2071. 2621. 4582. Kathâs. 12,177. fg. Râǵa-Tar. 1,352. Bhâg. P. 3,14,11. Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,23. 25. Pańkat. 246,2. Vet. in LA. (III) 1,3. सर्वे MBh. 15,871. R. 3,54,7. Spr. 3127. 4582. Pańkat. 256,25. सर्वलोकेषु R. 1,59,20. बहवः Spr. 4583. सर्वे पुरनिवासिनो राजसंनिधिलोकाश्च Pańkat. 26,20. लोकाः स्त्रीषु रताः so v. a. *die Männer* Vet. in LA. (III) 30,9. गृहलोकाः Hit. 88,18. sg. Çat. Br. 11,5,7,1. Nir. 7,4. प्रिया भवन्ति लोकस्य M. 8,42. 353. 9,324. 11, 84. R. 1,1,87. 3,1. 9. Sâmkhjak. 58. Çâk. 77. 192. ad 25,7. Spr. 1443. 2316, v. l. 2331. 2602. 2684. 3734. 4958. Ragh. 6,30. Kathâs. 10,113. 21,116. 29,179. 34,143. Râǵa-Tar. 5,263. Daçak. 66,3. Bhâg. P. 5,24, 3. Pańkat. 48,25. सर्वस्य लोकस्य Ragh. 4,8. Spr. 5207. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 45. fg. सर्वलोकः *Jedermann* MBh. 1,8051. Spr. 3580. Varâh. Bṛh. S. 4,8. Pańkat. 228,2. नगरलोकः Kathâs. 18,122. तीक्ष्णलोकः Tîkshṇa's *Leute* Râǵa-Tar. 8,1743. लोकतो ऽपि हि ते रहस्यः परिवादः R. 2,36,30. पृष्टाश्च लोकतो बुद्धा Kathâs. 43,139. सकललोकनन्दन Varâh. Bṛh. S. 8,47. लोकहेतोः Çâk. 104. कृपणलोकमत Spr. 1012. 2680. लोकवदश्राम्यत् Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 55. — 4) *Gemeinschaft, Gesellschaft:* सतां लोकात् — भ्रश्यत् R. 2,75,34. नर° so v. a. *die Menschen* R. Gorr. 2,1,42. Ragh. 6,1. राक्षस° R. 3,41,3. राज° Ragh. 5,64. नरदेव° 6,8. क्षितिपाल° 7,3. नरवीर° Spr. 2476. पौर° Kathâs. 4,35. 12,185. नाग° 22,203. वणिग्लोक 29,107. ज्ञातिलोकतस् Varâh. Bṛh. S. 52,8. Pańkat. ed. orn. 58,13. Vet. in LA. (III) 9,18. कुटुम्ब° 21,18. नृतिर्यक्सुरलोकभाषा H. 59. Im Bengalischen ist लोक geradezu zum Pluralsuffix geworden. — 5) *das gemeine Leben*, oft im Gegens. zur *Wissenschaft*, insbes. *der heiligen*, zum Veda. Nir. 1,2. लोकतस् so v. a. *wie üblich* Çâṅkh. Gṛhj. 4,19. M. 7,43. Varâh. Bṛh. S. 86,10. Bṛh. 2,3. लोके Sarvadarçanas. 92,14. °मतनिबर्हणा Verz. d. Oxf. H. 251,*a*,3. लोके वेदे च प्रथितः Bhag. 15,18. विरुद्धो लोकवेदयोः MBh. 1,7258. लोकवेदविरुद्ध 7245. 6246. लोकवेदविरोधक 7257. °विरोधात् Nîlak. 164. एष धर्मः स्त्रिया नित्यो वेदे लोके श्रुतः स्मृतः Spr. 3004. लोकपूत neben वेदपूत Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,116. लोके वेदे च कुशलः so v. a. *in weltlichen Angelegenheiten* Kâm. Nîtis. 6,1. लोकवेदपथानुग Bhâg. P. 3,3,19. लोकशास्त्राभ्याम् 7,13,45. शास्त्रेषु लोकेषु च यत्प्रसिद्धम् Verz. d. Oxf. H. 195,*a*,6. °विद्याविरुद्ध 207,*a*,16. लोके im Gegens. zu काव्यनाट्ययोः H. 326. लोके *im gemeinen Leben* so v. a. *in der Sprache des Volkes*, im Gegens. zu वेदे, छन्दसि Schol. zu P. 3,1,42. 4,1,30. 3,22. 6,1,181. 3,1,118, Vârtt. — Vgl. अ° (अलोकान् neben लोकान् Bhâg. P. 3,5,8 erklärt der Comm. durch लोकालोकपर्वताद्बहिर्भागान्; vgl. auch 5,20,36), अङ्ग°, अन्तरिक्ष°, अमर°, अहर्लोक, इन्द्र°, उरु°, चन्द्रलोक, जन°, जीव°, तपो°, तल°, त्रि°, देव°, द्यौर्लोक, नर°, नृ°, पति°, पर°, पाप°, पितृ°, पुण्य°, पृथिवि°, पृथिवी°, प्रेत°, ब्रध्न°, ब्रह्म°, भू°, भूमि°, भूर्लोक, मध्य°, मध्यम°, मनुज°, मनुष्य°, मरुल्लोक, मर्त्य°, मृत्यु°, यथालोकम्, यम°, वि°, स°, समान°, स्वर्लोक, स्वर्ग°.

लोककण्टक m. *ein Dorn für die Menschen, ein schädlicher Mensch* M. 9,260. MBh. 3,8777. R. 1,14,31.

लोककर्तर् m. *Schöpfer der Welt:* Brahman R. 1,2,26 (25 Gorr.). 14,12. Verz. d. Oxf. H. 47,*a*, No. 103, Z. 5. Vishṇu MBh. 3,13556. 13558. Çiva 13,1193.

लोककल्प 1) adj. *a) weltähnlich, in der Gestalt der Welt auftretend* Bhâg. P. 12,4,19. — *b) von den Menschen angesehen —, gehalten für* Bhâg. P. 10,63,36. — 2) m. *Weltperiode* Bhâg. P. 3,11,23.

लोककान्त 1) adj. *von Jedermann gern gesehen, Jedermann gefallend* MBh. 3,2666. R. 3,49,7. — 2) f. आ *ein best. Heilkraut*, = ऋद्धि Râǵan. im ÇKDr.

लोककार m. = लोककर्तर् Çiv.

लोककृत् 1) adj. *Raum schaffend, Luft machend, befreiend:* अयं सि-

न्धुभ्यो अभवदु लोककृत् RV. 9,86,21. अभीके चिदु लोककृत् 10,133,1. AV. 18,3,25. TS. 1,1,12,1. TBr. 3,7,7,10. Âçv. Çr. 4,13,5. — 2) m. = लोककर्तर् MBh. 3,2165. 13,1103. R. 1,43,26. Mârk. P. 47,2. Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Z. 9.

लोककृत्नु adj. = लोककृत् 1): उ लो° RV. 9,2,8.

लोकक्षित् adj. *den Himmel bewohnend* Khând. Up. 2,24,5. 9. 14.

लोकगति f. *das Thun und Treiben der Menschen* Hariv. 7092. R. 7,26,58.

लोकगाथा f. *ein im Munde des Volkes lebender Vers* Sarvadarçanas. 2,1.

लोकगुरु m. *Lehrer der Welt, — des Volkes* R. 2,101,26 (110,21 Gorr.). Bhâg. P. 4,2,7. 19,39. 20,17. 6,17,6. 7,4,29. सर्व° 4,19,3.

लोकचक्षुस् n. 1) pl. *die Augen der Menschen* Spr. 1608. — 2) *das Auge der Welt, die Sonne* Çabdam. im ÇKDr. m. nach Wilson und ÇKDr.

लोकचर adj. *die Welten durchwandernd:* नारद MBh. 2,269.

लोकचारित्र n. *der Hergang in der Welt* R. ed. Bomb. 1,9,10. लोकवृत्तान्त ed. Schl.

लोकचारिन् adj. = लोकचर: Çiva MBh. 13,1188.

लोकजननी f. *die Mutter der Welt*, Bein. der Lakshmî Verz. d. Oxf. H. 183,b,3 v. u.

लोकजित् 1) adj. a) *Gebiet gewinnend* Çat. Br. 14,4,1,33. — b) *den Himmel gewinnend* M. 4,8 (superl.). लोकजितं स्वर्गम् so v. a. स्वर्गलोकजितम् AV. 4,34,8. — 2) m. Bein. eines Buddha AK. 1,1,1,8. H. 235.

लोकज्ञ adj. *die Welt —, die Menschen kennend* Spr. 4713. Davon °ता f. *Weltkenntniss, Menschenkenntniss* ebend.

लोकज्येष्ठ adj. *der vorzüglichste unter den Menschen*, Beiw. Buddha's Vjutp. 1. Hiouen-thsang II, 157.

लोकतत्त्व n. *Kenntniss der Welt, Menschenkenntniss* R. 5,48,8.

लोकतन्त्र s. u. तन्त्र 1) d).

लोकता f. in तल्लोकता, nom. abstr. von तल्लोक adj. *im Besitz seiner Welt seiend* Bhâg. P. 4,24,7. MBh. 7,6519 ist st. गन्तास्मि लोकताम् mit der ed. Bomb. गन्ता सलोकताम् zu lesen.

लोकतुषार m. *Kampher* Râgan. im ÇKDr.

लोकदम्भक adj. *die Leute betrügend* Spr. 4249.

लोकद्वार n. *das Thor zum Himmel* Khând. Up. 2,24,4. 8,6,5. Davon °द्वारीय n. N. eines Sâman (vgl. Khând. Up. 2,24,4) Schol. zu Kâtj. Çr. 9,1,10. 8,16. 10,1,2.

लोकधातर् m. *Schöpfer der Welt:* Çiva MBh. 13,1161.

लोकधातु m. Bez. *eines best. Theiles der Welt* bei den Buddhisten Vjutp. 8. 81. Wilson, Sel. Works II, 29. 32. fg. लोकधात्वंश als Bed. von वर्ष AK. 3,4,29,226. — Vgl. सह°.

लोकनाथ m. 1) *Herr der Welten:* Brahman Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 38,b, No. 95, Z. 16. ब्रह्माद्यः Bhâg. P. 8,21,5. सुरेश्वराः 9,18,13. Vishṇu oder Kṛshṇa H. ç. 71 (falschlich लोकनाभ). MBh. 2,9. 16,137. Bhâg. P. 2,7,15 (अखिल°). Çiva Çiv. Kumâras. 5,77 (nach der Lesart im ÇKDr. स लोकनाथः st. त्रिलोकनाथः). die Sonne Verz. d. Oxf. H. 32,a,27. — 2) *Beschützer des Volks* als Beiw. eines Fürsten R. 2,24,19. 42,18. 100,15. 110,2. R. Gorr. 2,1,42. 21,14. 81,2. 7,83,11. Râga-Tar. 2,26. Bhâg. P. 3,15,4. — 3) *ein* Buddha H. ç. 80. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,14. Râga-Tar. 1,138. Wilson, Sel. Works II, 16. 18. 27. — 4) N. pr. des Verfassers der Padamañgarî Colebr. Misc. Ess. II, 57. °चक्रवर्तिन् N. pr. eines Commentators des Râmâjaṇa Ind. St. 1,468.

लोकनाथरस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 963.

लोकनिन्दित adj. *von Jedermann getadelt* Sarvadarçanas. 78,13. fg.

लोकनेतर् m. *Führer der Welten:* Çiva Çiv.

लोकप m. *Hüter einer best. Welt:* लोकपा ब्रह्मणो ये MBh. 1,3651. *Welthüter*, deren acht Bhâg. P. 3,23,39.

लोकपक्ति s. u. पक्ति 5) und Ind. St. 10,41. 120.

लोकपति m. 1) *der Herr der Welt:* Brahman Varâh. Bṛh. S. 74,4. Vishṇu Bhâg. P. 2,4,20. — 2) *Gebieter über das Volk, Fürst* R. 5,93,23. Bhâg. P. 1,17,41.

लोकपथ m. *ein allgemeiner Weg, die gewöhnliche Art und Weise* MBh. 13,4898.

लोकपद्धति f. *ein allgemeiner Weg* Sarvadarçanas. 93,21.

लोकपाल m. 1) *Welthüter*, deren bei Manu und später vier oder acht angenommen werden, je nachdem vier oder acht Weltgegenden gezählt werden, LIA. I, 771. fg. Çat. Br. 14,7,2,24. Ait. Up. 1,3. 3,1. Kaush. Up. 3,8. Verz. d. B. H. No. 1252. fg. M. 5,96. 8,23. 9,315. MBh. 1,7854. 8176. 2,446. 3,1710. fg. 1714. 2127. 2132. 2139. 2164. 2171. 2180. 2182. 12024. 16179. R. 1,5,20. 19,26. 72,7. 2,23,22. 91,13. R. Gorr. 1,70,4. 3,54,11. 6,72,41. Ragh. 17,78. Varâh. Bṛh. S. 43,57. 46,10. 48,26. Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,94. Nṛs. Tâp. Up. ebend. 9,107. Weber, Râmat. Up. 326. 351. VP. 153. 169. 226. Bhâg. P. 1,11,27. 3,6,12. fgg. 4,17,11. Pañkat. 38,13. Çiva Çiv. — 2) *Hüter des Volkes, Fürst* H. 690, Sch. Halâj. 2,266. Ragh. 2,75. Râga-Tar. 1,346. नर° Ragh. 6,1. — 3) N. pr. eines Fürsten Colebr. Misc. Ess. II, 280. — 4) *das Hüten des Volkes* R. Gorr. 1,70,4.

लोकपालक m. 1) = लोकपाल 1) Bhâg. P. 5,18,26. — 2) = लोकपाल 2) Bhâg. P. 4,18,7.

लोकपालता f. nom. abstr. von लोकपाल 1) Mârk. P. 108,18.

लोकपालत्व n. dass. Hariv. 605. R. 7,3,15.

लोकपितामह und सर्व° s. u. पितामह 1) b) und füge Bhâg. P. 3,10,1 hinzu.

लोकपुण्य N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 4,193.

लोकपुरुष m. *die personificirte Welt* H. 94, Sch.

लोकपूजित 1) adj. *allgemein geehrt.* — 2) m. N. pr. eines Mannes Lalit. ed. Calc. 202,10.

लोकप्रकाशक n. Titel einer Compilation des Kshemendra Verz. d. B. H. No. 804.

लोकप्रकाशन m. *Erleuchter der Welt, die Sonne* H. ç. 9.

लोकप्रत्यय m. *allgemeine Geltung, Landläufigkeit* Kâtj. Çr. 13,1,9.

लोकप्रदीप m. *Leuchte der Welt*, N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 102.

लोकप्रवाद m. *ein allgemein gebrauchter —, landläufiger Ausspruch, — Spruch* R. 3,22,32. 59,15. 5,26,6. Hit. 11,6.

लोकप्रसिद्धि f. *allgemeine Geltung:* °प्रसिद्ध्या *nach der herrschenden Gewohnheit* Varâh. Bṛh. S. 95,1.

लोकबन्धु m. *der allgemeine Freund*, Bez. *der Sonne* H. ç. 6. Çiva's Çiv.

लोकबान्धव m. *der allgemeine Freund*, Bez. *der Sonne* Verz. d. Oxf.

H. 184,b,12. Gaṭâdh. im ÇKDr.

लोकबाह्य adj. *aus der menschlichen Gesellschaft ausgestossen* Gaṭâdh. im ÇKDr.

लोकबिन्दुसार n. Name des letzten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften bei den Gaina H. 248.

लोकभर्तर् m. *Erhalter —, Ernährer des Volkes* R. 2,35,28. 5,36,57.

लोकभाज् adj. *Raum einnehmend* Çat. Br. 7,2,1,8. 5,1,28.

लोकभावन adj. s. u. 1. भावन 1) b) und füge noch Bhâg. P. 3,14,40. 8,9,27 hinzu.

लोकभाविन् adj. = लोकभावन *die Menschen fördernd, den Menschen Heil bringend* R. 4,44,47.

लोकमय (von लोक) adj. (f. ई) 1) *räumig* Çat. Br. 8,5,2,9. — 2) *die Welten in sich enthaltend* Hariv. 2156. 2798. Bhâg. P. 2,5,41.

लोकमातर् f. *Mutter der Welt* Sâh. D. 241 (pl.). रोदसी लोकमातरौ Bhâg. P. 2,3,5. Lakshmi 6,19,6. AK. 1,1,1,23.

लोकमार्ग m. *der allgemeine Weg, die herkömmliche Art und Weise* Pankat. ed. orn. 3,16.

लोकंपृण P. 6,3,70, Vârtt. 4. 1) adj. (f. आ) *die Welt erfüllend, überallhin dringend:* लोकंपृणैः परिमलैः परिपूरितस्य काश्मीरजस्य Bhâminîvilâsa 1,69 nach Aufrecht (Halâj. Ind. u. कटु). — 2) f. आ a) sc. इष्टका Bez. *der gewöhnlichen zum Bau des Feueraltars dienenden Backsteine, die mit dem allgemeinen Spruche* लोकं पृण VS. 12,54 *aufgesetzt werden*, während diejenigen, die einen eigenen Spruch haben, यजुष्मत्यः heissen, Çat. Br. 6,1,2,25. 2,3,6. 7,1,1,83. 10,4,2,18. 3,8. TS. 5,2,3, 6. — b) sc. ऋच् *der Spruch* लोकं पृण u. s. w. (VS. 12,54) Çat. Br. 9,1, 2,19. 10,5,2,15. TS. 5,5,6,2. Kâtj. Çr. 17,1,17. 6,5. 7,21.

लोकयात्रा f. *das gewöhnliche Thun und Treiben, Handel und Wandel* M. 9,25. 27. MBh. 1,49. 69. 3,11296. 12,3475. 13,582. 2199. Hariv. 6811 (कोकयात्रा ed. Calc.). R. 2,109,27. R. Gorr. 2,118,27. Kâm. Nîtis. 4,20. Mâlav. 68,17. Spr. 2310, v. l. 4661. Kâvjâd. 1, 3. Kathâs. 6, 52. 56. 60. Bhâg. P. 3,9,20. 5,6,12. 20,41. सकललोकयात्रास्तमियात् Sarvadarçanas. 26,16. तावेतौ तर्कनिर्णयौ लोकयात्रां वहतः Comm. zu Njâjas. 1,1,1 (S. 6, Z. 2). so v. a. *das tägliche Brod, Lebensunterhalt* Spr. 2679.

लोकयात्रिक adj. Med. j. 85 als Erklärung von देवयु.

लोकरक्ष m. *Hüter des Volkes, Fürst:* लोकरक्षाधिराज R. 6,86,25.

लोकरव m. *das Gerede der Welt* Spr. 1556.

लोकलेख m. *ein gewöhnlicher Brief, Alltagsbrief* Verz. d. B. H. No. 804.

लोकलोचन n. 1) *das Auge der Welt, die Sonne* Çabdar. im ÇKDr. (m. nach ÇKDr. und Wilson). Bhâg. P. 3,2,11. — 2) pl. *die Augen der Menschen* Kathâs. 18,92. Spr. 2745.

लोकवचन n. *das Gerede der Leute* Pankat. 185,15.

लोकवत् (von लोक) adj. *die Welten enthaltend* Maitrjup. 6,5.6.

लोकवर्तन n. *das Verfahren der Menschen, die Art und Weise sich zu benehmen:* इत्थं प्रज्ञैव नामेह प्रधानं लोकवर्तनम् Kathâs. 64,42.

लोकवाद m. *das Gerede der Welt* AK. 3,4,18,119. MBh. 5,1086. R. Gorr. 2,20,6. 25,5. Ragh. 14,61. Kathâs. 86,13. Mârk. P. 50,96. 58, 65. fg. Daçak. 69,11.

लोकवार्त्ता f. *Gerücht* Verz. d. Oxf. H. 259,a,5.

लोकविक्रुष्ट adj. *worüber Jedermann aufschreit* M. 4,176.

लोकविज्ञात adj. *allgemein bekannt* Pat. in Ind. St. 5,151.

लोकविद् adj. *die Welt kennend*, Beiw. eines Buddha Vjutp. 1.

लोकविद्विष्ट adj. *allgemein verhasst* M. 2,57. Jâgn. 1,156. R. 2,23,11.

लोकविधि m. 1) *Gründer der Welt* MBh. 12,13606. — 2) *die in der Welt geltende Ordnung* Bhâg. P. 7,2,37.

लोकविनायक m. pl. N. *einer best. Klasse von Krankheitsdämonen* Vahni-P. im ÇKDr.

लोकविन्द adj. *Raum —, Freiheit schaffend, — gewinnend* Pankav. Br. 11,5,25.

लोकविश्रुत adj. *allgemein bekannt* M. 3,195. R. 1,5,6. 2,21,28. 98, 26. 110,22. R. Gorr. 2,54,22.

लोकविसर्ग m. *die Aufhebung der Welt:* °कृत् MBh. 12,13606.

लोलविस्तार m. *allgemeine Verbreitung* Kull. zu M. 7,33.

लोकवीर m. pl. *sämmtliche Helden der Erde* Bhâg. P. 9,10,6.

लोकवृत्त n. *die allgemeine Sitte* M. 4,11. Çâk. 65,17, v. l. Kusum. 53,6.7.

लोकवृत्तान्त m. *der Hergang in der Welt* R. 1,8,14. Çâk. 65,17.

1. लोकव्यवहार m. dass. Kull. zu M. 9,27.

2. लोकव्यवहार adj. *allgemein gebraucht, gang und gäbe* P. 1,2,53, Schol.; vgl. M. 8,131.

लोकव्रत n. 1) *die allgemein verbreitete Weise, — Art und Weise zu leben:* चरत्यलोकव्रतम् Bhâg. P. 8,3,7. अलोकव्रतं ब्रह्मचर्यादि Comm. — 2) Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3,232,a.

लोकश्रुति f. *allgemeines Bekanntsein, allgemeine Verbreitung* R. Gorr. 1,2,45.

लोकसंव्यवहार m. *Verkehr mit der Welt, Handel und Wandel* M. 8, 131. Mârk. P. 44,26.

लोकसंसृति f. *der Hergang in der Welt, Schicksal:* जीवलोकस्य लोकसंसृतीः Bhâg. P. 3,29,3.

लोकसंकर m. *eine Verwirrung —, ein Durcheinander in Bezug auf die Menschen, das Spielen einer falschen Rolle* R. 2,109,6.

लोकसंक्षय m. *der Untergang der Welt* MBh. 5,7208.

लोकसंग्रह m. 1) *die aus dem Verkehr mit Menschen gewonnene Erfahrung* Verz. d. Oxf. H. 265,a,16. Verz. d. B. H. No. 804. — 2) *das Gewinnen der Menschen* Bhâg. P. 10,78,31. 80,30.

लोकसनि adj. *Raum —, Freiheit schaffend* VS. 19,48.

लोकसाक्षिक adj. *von der Welt —, von Andern bezeugt* und °कम् adv. *vor Zeugen* MBh. 1,37. 3,1207. 12,7903. 13,2233. R. 3,14,17.

लोकसाक्षिन् 1) m. *der Zeuge der Welt, der Zeuge von Allem:* पावक R. 6,101,28. ब्रह्मन् Verz. d. Oxf. H. 47,a, No. 103, Z. 10. fg. — 2) adj. = लोकसाक्षिक : ततो ऽन्तरीक्षे वागासीत्सुस्वरा लोकसाक्षिणी (°साक्षिकी?) Hariv. 5116.

लोकसात् (von लोक) adv. in Verbindung mit कर् *zum Gemeingut machen* Kathâs. 90,30 (fälschlich लोक-सात्कृत getrennt).

लोकसाधक adj. *Welten bildend, — schaffend:* ब्रह्माविष्णुमहेशाख्या यस्यांशा लोकसाधकाः Verz. d. Oxf. H. 9,a, No. 47, Z. 5.

लोकसामन् n. N. eines Sâman Lâtj. 1,5,10.

लोकसिद्ध adj. *gewöhnlich, gemein* Sarvadarçanas. 3,14.

लोकसीमातिवर्तिन् adj. *die Grenzen des Alltäglichen überschreitend, ungewöhnlich, übernatürlich* Sâh. D. 76,4. — Vgl. लोकातिग, लोकातिशय.

लोकसुन्दर 1) adj. (f. ई) *allgemein für schön geltend* R. 3,40,20. — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,17.

लोकस्थल n. *ein Fall des gemeinen Lebens* Kusum. 33,8.

लोकस्थिति f. *ein allgemein geltendes Gesetz* Spr. 1125, v. l. 3892. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 260.

लोकस्पृत् adj. = लोकसनि TS. 7,5,24,1. — Vgl. लोकस्मृत्.

लोकस्मृत् Maitrjup. 6,35, v. l. für लोकस्पृत् der TS. = पृथिवीलोकस्य स्मर्ता Comm.

लोकहास्य adj. *ein Gegenstand des allgemeinen Spottes seiend;* davon nom. abstr. °ता Kathâs. 61,6.

लोकहित n. *das Heil der Welt* Bhâg. P. 2,1,1.

लोकाकाश m. *der Weltraum* Sarvadarçanas. 35,20; vgl. Colebr. Misc. Ess. I, 386.

लोकाक्षि m. N. pr. eines Lehrers Colebr. Misc. Ess. I, 17. 144. Ind. St. 1,233. VP. 282. Kull. zu M. 3,160. Verz. d. Oxf. H. 32,a,37. 35,b, 5. लोकाक्षिन् 8. — Vgl. लौकाक्ष, लौकाक्षि, लौगाक्षि (die richtige Form).

लोकाचार m. *das gewöhnliche Thun und Treiben, Herkommen, die allgemeine Sitte* Spr. 152. 3711. Kull. zu M. 9,25.

लोकातिग adj. = लोकसीमातिवर्तिन् Sâh. D. 237.

लोकातिशय adj. dass. Sâh. D. 752.

लोकात्मन् m. *die Seele der Welt:* विष्णु R. 1,45,31.

लोकादि m. *der Anfang der Welt* so v. a. *der Schöpfer der Welt* MBh. 7,2863.

लोकाधिप m. *Oberherr der Welt* so v. a. *ein Gott* Açokâvad. 30.

लोकाधिपति m. *der Oberherr der Welt* Kaush. Up. 3,8. Weber, Râmat. Up. 305.

लोकानुग्रह m. *das Heil der Welt, — des Volkes* Çâk. 64,21. °कर्तृ Spr. 2681. fg. उभयलोकानुग्रह Çâk. 193.

लोकानुराग m. *die Liebe der Menschen, die allgemeine Liebe* Spr. 3038.

लोकान्तर n. *die andere Welt, das Jenseits:* °सुख Ragh. 1,69. Râga-Tar. 3,473. लोकान्तरादिवायातं मेने धर्मं तदा जनः 1,330. Ragh. 6,45. लोकान्तरं गम् oder या *sich in's Jenseits begeben, sterben* R. 2,103,12 (111,17 Gorr.). Kathâs. 21,110. Spr. 5417. Bhâg. P. 4,28,18.

लोकान्तरिक adj. (f. आ) *zwischen den Welten wohnend, — gelegen* Vjutp. 81. Burn. Intr. 81, N. 3. Lot. de la b. l. 832. fgg.

लोकापवाद m. *der Tadel der Welt, eine üble Nachrede* MBh. 7,5109. Ragh. 14,40. Spr. 2773. Praçnottaram. 26 in Monatsber. der Berliner Ak. d. Ww. 1868, S. 111. Râga-Tar. 1,266. Verz. d. Oxf. H. 138,a,6.7.

लोकाभिलषित 1) adj. *allgemein begehrt, — geliebt.* — 2) m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,21 (°लाषित gedr.). °लाषिन् Vjutp. 3.

लोकाभ्युदय m. *das Heil der Welt* Ragh. 3,14.

लोकायत adj. *materialistisch;* in Verbindung mit शास्त्र, मत, तन्त्र, oder n. (AK. 3,6,3,32) mit Ergänzung dieser Worte *der Materialismus, die Lehre des* Kârvâka gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. Trik. 3,3, 171. Vie de Hiouen-thsang 223. Prab. 27,18. 87,16. Sarvadarçanas. 2, 4. अत एवार्थकामानुगैर्लोकैरायतं विस्तृतं लोकायतमित्यन्वर्थमस्य नामधेयम् Ârjavidjâsudh. प्रायेणैव हि मीमांसा लोके लोकायतीकृता Kumârila bei Muir, ST. III, 209. m. *ein Materialist* Lot. de la b. l. 280. Nîlak. zu Hariv. 14068. Im Pâli soll लोकायत *eine erfundene Geschichte, Roman* bedeuten; vgl. Burnouf in Lot. de la b. l. 409 und लोकायतिक.

लोकायतन m. nach Colebr. so v. a. लोकायतिक Colebr. Misc. Ess. I, 404. wohl fehlerhaft für लोकायत.

लोकायतिक m. *ein Materialist* H. 863, Sch. Colebr. Misc. Ess. I, 402. fgg. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. zu Praçnop. S. 232. bei Wind. Sancara 94,1. Verz. d. Oxf. H. 216,a, 3 v. u. Eine andere Bed. wird vielleicht das Wort MBh. 1,2889 (= Hariv. 14068) und Lot. de la b. l. 168 (vgl. 409) haben. Nîlak. zu MBh. 1,2889 erklärt लोकायतिकमुख्यैः durch: लोक एवायतन्ते ते लोकायतिकाः । तेषु लोकरञ्जनपरेषु मुख्यैः; zu Hariv. 14068 durch शास्त्रविद्भिः; vgl. लोकायत am Ende und लौकायतिक.

लोकायन als Beiw. von Nârâjaṇa wohl *zu dem die Welt hinstrebt, in dem die Welt aufgeht* Hariv. 8819. 12608.

लोकालोक 1) n. sg. und m. du. *die Welt und die Nichtwelt:* °विनाश MBh. 9,2741. लोकालोकान्तकरणा 13,816. लोकालोकान्तरेषु 802. Mârk. P. 45,58 (wo wohl इदं st. इमं zu lesen ist). 54,2. लोकालोकयोरन्तराले Bhâg. P. 5,20,34. — 2) m. Bez. *des mythischen Gebirges, das die Welt von der Nichtwelt trennt, des Walles am Ende der Welt, der von der einen Seite hell, von der anderen dunkel ist,* AK. 2,3,2. H. 1031. Sûrjas. 13,16. Ragh. 1,68. Râga-Tar. 1,137. VP. 202. 226. Bhâg. P. 5,20, 34. 36. 38. 10,89,48. Verz. d. Oxf. H. 48,a, 1 v. u. b,7. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 371. Sâj. zu Çat. Br. S. 1132.

लोकावेक्षणा n. *die Sorge um das Volk* Spr. 2858.

लोकिन् (von लोक) adj. *eine Welt besitzend,* pl. *die Bewohner der Welten* Muṇḍ. Up. 2,2,2. *die beste Welt besitzend* (Comm.) Çat. Br. 11, 8,4,5. Khând. Up. 2,17,2.

लोकेश m. 1) *Herr der Welt* Kaush. Up. 3,8. M. 5,97. R. 7,23,1,39. Bhâg. P. 3,6,20. 22. pl. 6,7,35. 8,9,4. 22,34. Pañkar. 3,11,24. Bein. Brahman's AK. 1,1,1,11. H. 213. — 2) N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,14. Burn. Intr. 537. Wilson, Sel. Works II, 27. — 3) *Quecksilber* Râgan. im ÇKDr.

लोकेश्वर m. 1) *Herr der Welt* Çat. Br. 14,7,2,24. MBh. 8,1485. R. 4,10,13. Wilson, Sel. Works II, 23. fgg. — 2) N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,15. Wilson, Sel. Works II, 17. fgg. °राज Burn. Intr. 100.

लोकेश्वरात्मजा f. Lokesvara's *Tochter,* N. pr. einer buddh. Göttin Trik. 1,1,18.

लोकेष्टि f. N. einer best. Ishṭi Âçv. Çr. 2,10,19.

लोकैकबन्धु m. *der einzige Freund der Welt,* Beiw. Gotama's und Çâkjamuni's Wilson, Sel. Works II, 9.

लोकैषणा f. *das Verlangen nach dem Himmel* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,149.

लोकोक्ति f. *ein landläufiger Ausspruch, Sprüchwort* Spr. 4258.

लोकोत्तर adj. (f. आ) *über das Alltägliche hinausgehend, ungewöhnlich, ausserordentlich* (Gegens. लौकिक, सार्वलौकिक): धर्म Kathâs. 27,21. Wassiljew 140. हित Râga-Tar. 1,158. स्वामिन् 4,333. कुल 426. किं न लोकोत्तरमभूद्भूपतेश्चक्रवर्मणः 5,390. विद्या Verz. d. Oxf. H. 154,b,N.

1. मास Ind. St. 10, 298. m. *ein aussergewöhnlicher Mensch* so v. a. *ein Fürst* Spr. 2705.

लोकोत्तरपरिवर्त Titel eines buddh. Sûtra Vjutp. 4.

लोकोत्तरवादिन् m. pl. Bez. einer buddh. Secte (wohl *die etwas Ungewöhnliches annehmen; ceux qui se prétendent supérieurs au monde* Burnouf) Vjutp. 210. Burn. Intr. 446. 452. Lot. de la b. l. 358. Hiouen-thsang I, 37. Vie de Hiouen-thsang 69. Wassiljew 227. 229. 234.

लोकोद्धार n. N. pr. eines Tîrtha: लोका यत्रोद्धृताः पूर्वं विष्णुना प्रभविष्णुना ॥ लोकोद्धारं समासाद्य तीर्थं त्रैलोक्यपूजितम् । स्नात्वा तीर्थवरे राजन् लोकानुद्धरते स्वकान् ॥ MBh. 3, 6014. fg.

लोक्य (von लोक) 1) adj. *a) Gebiet —, freie Stellung gewährend* Âçv. Gṛhj. 4, 8, 35. — *b) über die ganze Welt verbreitet:* तेजस् MBh. 13, 1971 nach der Lesart der ed. Bomb. (लौक्य ed. Calc.). — *c) die Gewinnung des Himmels bezweckend:* आशिस् Bhâg. P. 3, 14, 36. — *d) statthaft, ordentlich; üblich* Ait. Br. 2, 9. Çat. Br. 9, 5, 2, 16. लोक्या शतायुता 10, 2, 6, 7. स्वप्यात् — लोक्यं ह 5, 2, 12. 11, 3, 3, 7. पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः *ordentlich, richtig, wirklich* 14, 4, 3, 26. यज्वानः पुत्रिणो लोक्याः (= पुण्यलोकार्हाः Nilak.) कृतकृत्यास्तनुत्यजः MBh. 7, 696. युद्ध 12, 1983. *gewöhnlich, tagtäglich:* कर्मन् MBh. 5, 4103 nach der Lesart der ed. Bomb. (लौक्य ed. Calc.). — 2) n. *freie Stellung:* स्पृहयन्त्यु हास्मै तथा पुष्यति लोक्यमन्वेवाप्नोति Çat. Br. 2, 2, 3, 5. — Vgl. अ° (गति MBh. 12, 1993).

लोक्यता f. nach dem Comm. *das Erlangen der besseren Welt* Çat. Br. 10, 3, 3, 13. — Vgl. अ°.

लोग m. *Erdkloss, Scholle:* इमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम् Ṛv. 10, 18, 13. अद्रिं लोगेन व्यभेदम् 28, 9. Çâṅkh. Br. 9, 3. Çr. 5, 13, 3. लोगेष्टका *ein aus einem Erdkloss bestehender Backstein* Çat. Br. 7, 3, 1, 13. 8, 3, 1, 11. 10, 4, 3, 14. Ist vielleicht auf 1. रुज् zurückzuführen.

लोगाक्ष (लोग + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Mannes; s. लौगाक्षि, लोष्टाक्ष.

लोच्, लोचते (दर्शने) Dhâtup. 6, 3. Verwandt mit रुच् und लोक्.

— caus. लोचयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhâtup. 33, 104.

— आ *eine Betrachtung anstellen:* स च भग्नो मनसेदमालुलोचे *stellte im Geiste folgende Betrachtung an* Verz. d. Oxf. H. 258, *b*, 23. — caus. 1) *vor Augen führen, sehen machen:* स्वरूपमालोचयते च रूपं परम् MBh. 12, 7416. — 2) *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, erwägen, eine Betrachtung anstellen:* इति यदि शतकृत्वस्तत्त्वमालोचयामः Çântiç. in Çatakâv. S. 29. Comm. zu Kâtj. Çr. 85, 3 v. u. 86, 1. आलोचयन्तो विस्तारमम्भसां दक्षिणोदधेः Bhaṭṭ. 7, 40. मनसा त्रयीमालोचितवान् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 49. आलोच्य गिरिमुख्यं तं मागधं तीर्णमेव च । माधवाः — परां मुदमवाप्नुवन् ॥ MBh. 2, 617. आलोच्य ताम्रलिप्तां तां द्रुताम् Kathâs. 13, 70. 18, 47. अनालोच्य प्रेम्णः परिणतिम् Spr. 98. 787. Hit. 119, 20. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 52. Sâh. D. 73, 11. Mârk. P. 44, 23. परस्परमालोच्य प्रत्यूचुस्ते न किं च न R. 3, 1, 8. Kathâs. 6, 133. श्रुत्वा च सम्यगालोच्य Mârk. P. 44, 21. fg. आलोच्याज्ञापय 69, 54. तैः सहालोच्य यत्कार्यम् 135, 28. Pañkat. 1, 2, 13. 15, 30. Hit. 92, 21, v. l. एवमालोच्य *diese Betrachtung angestellt habend* Kathâs. 56, 369. इत्यालोच्य 5, 64. 16, 56. 18, 167. 190. 252. 333. 19, 23. 21, 81. 119. 22, 84. 26, 34. 114. 27, 70. 160. 28, 89. 135. 183. 29, 99. 30, 6. 32, 137. 36, 97. 37, 16. 39, 50. 206. 41, 25. 49, 80. Spr. 661. Vṛddha-Kâṇ. 10, 17. Mârk. P. 44, 23. Hit. 9, 8, v. l. 14, 17. 17, 17. 18, 16. 47, 19. 91, 19. 113, 14. मयैतदालोचितमस्ति यत् u. s. w. 114, 16. आलोचितशेषकार्य Kathâs. 15, 114. पान्थेनालोचितम् impers. Hit. 10, 10. 30, 17. 80, 20. 110, 10. अनालोचितकृतवध *ohne Ueberlegung* Pañkat. 239, 4. अनालोचितचेष्टित Spr. 3417. आलोचनीय Vedântas. (Allah.) No. 4. — Vgl. आलोचक fg.

— अन्वा caus. *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, in Erwägung ziehen:* त्रयीविहितं सृष्टिक्रमं मनसा अन्वालोचयत् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 49.

— अवा *eine Betrachtung anstellen:* इत्थं नृपः पूर्वमवालुलोचे Bhaṭṭ. 1, 23.

— पर्या caus. *sich Etwas vor Augen halten, dem Geiste vorführen, in Erwägung ziehen, eine Betrachtung anstellen:* पृष्टः सन्देवदत्तस्य शुभाशुभं पर्यालोचयति P. 1, 4, 39, Sch. Vop. 5, 15. तेमंकराणि कार्याणि Bhaṭṭ. 6, 105. निगमाख्यांश्च ग्रन्थान् Kull. zu M. 4, 19. Kathâs. 52, 281 (ohne obj.). स्वमनसा पर्यालोचितवान् Pañkat. ed. orn. 56, 11. Sâj. zu Ait. Br. 5, 32. एतत्पर्यालोच्य Vet. in LA. (III) 27, 17. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, No. 393. fg. Kull. zu M. 2, 8. 9, 299. पर्यालोचित ders. zu 8, 77. — Vgl. पर्यालोचन.

— समा caus. dass.: अमूं वृत्तिं समालोच्य Uǵǵval. in der Einl. zu Uṇâdis. Çl. 7. तत्तत्सर्वम् Pañkar. 1, 1, 17. शम्भुना 12, 3. सुरैः सार्धम् 14, 43. इति Hit. 113, 14, v. l.

— उद् s. उल्लोच.

— निस् caus. *in Erwägung ziehen, eine Betrachtung anstellen:* निर्लोच्य Kathâs. 121, 180.

लोच n. *Thränen* Ǵaṭâdh. im ÇKDr. — Vgl. लोत.

लोचक 1) adj. *unvernünftig, dumm;* = निर्बुद्धि H. an. 3, 92. fg. Med. k. 150. fg. statt dessen निर्मिति Trik. 3, 3, 40. — 2) m. *a) ein dunkles Kleid.* — *b) Augenstern* Trik. H. an. Med. — *c) Lampenruss* Trik. 2, 6, 43. H. an. Med. — *d) Fleischklumpen.* — *e) ein best. Stirnschmuck bei den Frauen.* — *f) ein best. Ohrschmuck.* — *g) Bogensehne* (मौर्व्या st. मूर्व्या in Med. zu lesen). — *h) Musa sapientum* H. an. Med. — *i) schlaffe Haut* H. an. *schlaffe Augenlider* Med. — *k) eine abgestreifte Schlangenhaut* Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. लोचिका *ein best. Gebäck* Pâkarâǵeçvara im ÇKDr.

लोचन (von लोच्) 1) adj. *erhellend, erleuchtend:* ज्योतिर्लोकस्य लोचनम् (= प्रकाशकम् Comm.) Bhâg. P. 3, 5, 33. — 2) m. N. pr. eines Autors Wilson, Sel. Works I, 168. — 3) f. आ N. pr. einer buddh. Göttin Trik. 1, 1, 19. Wilson, Sel. Works II, 12. 27. 35. fg. — 4) f. ई *eine best. Pflanze,* = महाश्रावणिका Râǵan. im ÇKDr. — 5) n. *a) Auge* AK. 2, 6, 2, 44. Trik. 2, 6, 29. H. 575. Halâj. 2, 364. MBh. 3, 2912. Suçr. 1, 115, 7. 120, 20. Ragh. 2, 19. 3, 41. Megh. 16. 28. 50. 101. 109. Çâk. 36, v. l. Varâh. Bṛh. S. 58, 42. 68, 65. लोचनानन्द (so ist zu lesen) Kathâs. 12, 24. °विज्ञान Sarvadarçanas. 29, 6. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): ईषन्मीलित° Vet. in LA. (III) 10, 9. भाषमाणे — न्यस्तलोचनः Râǵa-Tar. 3, 502. ततस्तनः प्रेषितवामलोचना Çâk. 23. स्तब्ध° MBh. 3, 2214. ध्यानस्तिमित° Ragh. 1, 73. उपान्तसंमीलित° 3, 26. संरक्त° R. 1, 59, 15. क्रोधान्ध° Vet. in LA. (III) 15, 3. मदविह्वल° Bhâg. P. 3, 20, 29. सु° MBh. 3, 2147. पृथु° 2424. आयत° 2217. R. 2, 25, 24. मण्डल° Varâh. Bṛh. S. 68, 65. चारु° MBh. 1, 5960. Brahma-P. in LA. (III) 51, 8. वाम° MBh. 3, 2690. Spr.

1520. राजीव° MBH. 3,1754. 5,7399. कमल° R. 1,9,69. उत्पल° Spr. 635. अश्रु° MBH. 4,485. मदविभ्रम° VARĀH. BṚH. S. 58,36. सर्वस्य लोचनं शास्त्रम् Spr. 111. विद्या परं लोचनम् 2797, v. l. — b) Titel eines Werkes; s. लोचनकार. — Vgl. चारु°, चित्रलोचना, त्रिलोचन, भाल°, मेष°, लोक°, हरि°.

लोचनकार m. *der Verfasser des* Lokana SĀH. D. 22,15. 97,14. Verz. d. B. H. No. 823.

लोचनपथ m. *der Bereich der Augen*: न याति °पथं कान्ता Spr. 1246.

लोचनहित 1) adj. *den Augen zuträglich.* — 2) f. आ *blauer Vitriol* (als Kollyrium gebraucht) RĀGAN. im ÇKDR.

लोचनामय m. *Augenkrankheit* TRIK. 2,6,16.

लोचनोद्धारक N. pr. eines Grâma RĀGA-TAR. 8,1429.

लोचनोत्स N. pr. einer Oertlichkeit RĀGA-TAR. 4,672. — Vgl. लवणोत्स.

लोचमर्कट m. = लोचमस्तक SVĀMIN zu AK. 2,4,2,30 nach ÇKDR.

लोचमस्तक m. *Hahnenkamm, Celosia cristata* AK. 2,4,2,30.

लोट्, लौटति (उन्मादे) VOP. in DHĀTUP. 9,74. — Vgl. लोड्, लौड्.

लोट 1) s. उप°. — 2) f. आ *Sauerampfer* RĀGAN. in NIGH. PR.

लोटन n. nom. act. als v. l. von लोडन DHĀTUP. 2,4.

लोटिका f. = लोटा *Sauerampfer* DHANV. in NIGH. PR.

लोटुल m. = अभिलोटक UṆĀDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. ÇKDR.

लोट्य्, लोट्यति (धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने, nach Andern दीप्तौ) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लोठ m. nom. act. von लुठ् VOP. in DHĀTUP. 28,87.

लोठन m. N. pr. eines Mannes RĀGA-TAR. 8,376. 422. 435. 1798 u. s. w.

लोड्, लौडति (उन्मादे) DHĀTUP. 9,74.

लोडन n. nom. act. als Erkl. von बाध् DHĀTUP. 2,4.

लोड्य s. अङ्क°, अङ्ग°, ग°, गा°, गि°.

लोणतृण n. = लवणतृण RĀGAN. im ÇKDR.

लोणा (d. i. लवणा) f. *eine Art Sauerampfer*, = चुक्राम्लिका RĀGAN. im ÇKDR.

लोणाम्ला (d. i. लवण + अम्ला) f. desgl. ebend.

लोणार m. *eine Art Salz* ebend. — Vgl. लवणारुज.

लोणिका f. = लोणाम्ला DHANV. in NIGH. PR. *Portulacca oleracea* BHĀVAPR. ebend. SUÇR. 1,222,11. — Vgl. अम्ल°.

लोणितक m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,27.

लोणी (d. i. लवणी) s. अम्ल°.

लोत UṆĀDIS. 3,86. 1) m. P. 7,2,9, Schol. a) *Thränen* UGGVAL. H. ç. 88; vgl. लेत, लोत्र. — b) *Zeichen* UGGVAL. — 2) n. = लोप्त्र *Beute, geraubtes Gut* GAṬĀDH. im ÇKDR.

लोत्र n. 1) = लोप्त्र *Beute, geraubtes Gut* UGGVAL. zu UṆĀDIS. 4,172. ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) *Thränen* (vgl. लोत) UṆĀDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. ÇKDR.

लोदी N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 218,*b*,1.

लोध 1) ṚV. 3,53,23 nach NIR. 4,12 so v. a. लुब्ध *verwirrt, confus*, was in den Zusammenhang schwerlich passt. Vielleicht *roth* und als m. Bez. *eines best. Thieres*; vgl. अधीलोधकर्णी TS. 5,6,16,1 und लोहाकर्णा. — 2) m. = लोध्र RATNAM. im ÇKDR.

लोध्र (= रोध्र) m. *Symplocos racemosa Roxb.* AK. 2,4,2,13. H. 1139. an. 2,450. RATNAM. 151. MBH. 1,7586. 2,801. 805. 3,2404. HARIV. 12678. R. 2,94,8 (103,8 GORR.). 3,17,11. 4,44,16. 49,23. SUÇR. 1,132,1. 2, 342,3. MEGH. 66. RAGH. ed. Calc. 2,29. 3,2. ÇIÇ. 9,46. लोध्रासव SUÇR. 1, 238,14. °कल्क KUMĀRAS. 7,9. °कषाय 17. — Vgl. पट्टि°, पट्टिका°, महा°.

लोध्रक m. dass.: °वृत्त RĀGAN. im ÇKDR. — Vgl. पट्टि°.

लोप (von 1. लुप्) 1) m. a) *Abtrennung, Wegfall*, gramm. *Abfall* (eines Lautes, eines Suffixes); *Mangel, Verlust, Unterbrechung, Störung, das zu-Nichte-Werden*: आदि°, अन्त°, उपधा°, वर्ण°, द्विवर्ण° NIR. 2,1. KĀTJ. ÇR. 19,7,6. ṚV. PRĀT. 4,7. VS. PRĀT. 1,141 u. s. w. AV. PRĀT. 1,67 u. s. w. TAITT. PRĀT. 2,5. P. 1,1,60 u. s. w. VOP. 2,5 u. s. w. अर्थ° *das Fehlen* KĀTJ. ÇR. 4,3,22. ÇĀÑKH. ÇR. 3,19,2. प्रजा° RAGH. 1,68. कार्य° KUSUM. 51,9. धर्म° SĀH. D. 652. जीवन° Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,22. °वचन LĀṬJ. 4,4,4. गुण° ÇĀÑKH. ÇR. 3,20,16. भक्ति° LĀṬJ. 6,1,14. व्यवहारस्य MBH. 12,4417. यज्ञादिक्रियाणाम् PAÑKAT. ed. orn. 57,2. स्मृतेः MĀRK. P. 39,52. विघ्नलोप *allgemeine Störung* MBH. 12,461. 2550. अर्थ° *Verlust* MBH. 3,17241. स्मृति° 12,10140. ÇĀK. 191, v. l. MĀRK. P. 10,40. क्रिया° *Unterlassung, Verletzung* M. 3,63. 9,180. 10,43. MĀRK. P. 62, 24. BRAHMA-P. in LA. (III) 55,16. धर्म° MBH. 1,1884. 1886. fg. 7773. 6, 5829. R. GORR. 2,20,6. 30. 4,13,38. 5,14,56. RAGH. 1,76. धर्मक्रिया° KĀM. NĪTIS. 14,44. यज्ञक्रिया° KATHĀS. 82,9. व्रत° JĀGÑ. 3,236. M. 11, 203. PRĀJAÇKITTEND. 15,*b*,6. श्रौतस्मार्तकर्म° 4. विधि° MBH. 3,17105. व्यवहार° *Unterbrechung, Störung* 12,2627. भवसंभवलोपहेतु *Untergang* BHĀG. P. 7,9,42. — b) *das Entwenden*: न्यास° MBH. 13,4517. — 2) f. आ = लोपामुद्रा GAṬĀDH. im ÇKDR. — Vgl. अलोपाङ्ग, विघ्न°.

लोपक (wie eben) adj. *unterbrechend, zu Nichte machend*: विधि° MBH. 1,7772. — धारलोपक n. wohl Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,29.

लोपन (wie eben) n. *das Verletzen*: व्रत° M. 11,61. JĀGÑ. 3,238.

लोपाक m. *eine Art Schakal* TRIK. 2,5,7. H. 1291. SUÇR. 1,203,1. 2, 61,20. 151,12. VĀGBH. 6,50. — Vgl. लोपाश.

लोपापक m. desgl. ÇABDAM. im ÇKDR. लोपापिका f. *das Weibchen davon* ebend. — Vgl. लोपाश.

लोपामुद्रा f. N. pr. einer angeblichen Gattin Agastja's AK. 1,1,2, 22. TRIK. 1,1,90. H. 123. ṚV. 1,179,4 (als Verfasserin dieses Verses betrachtet; vgl. MAHĪDH. zu VS. 17,11). MBH. 3,8563. fgg. 10092. 4,654. HARIV. 1590. 1748. 7737. UTTARAR. 36,3 (48,1). DAÇAK. 117,2. Verz. d. Oxf. H. 69,*a*,17. °पति *der Gatte der* Lop. d. i. Agastja HALĀJ. 2,258. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,3. °सहचर *a*,1.

लोपाश m. *Schakal, Fuchs* (ἀλώπηξ) oder *ein ähnliches Thier*: लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चमत्साः ṚV. 10,28,4. VS. 24,36. — Vgl. लोपाक, लोमाश.

लोपाशक 1) m. N. pr. eines Mannes, der Unrath verzehrte, SCHIEFNER, Lebensb. 294 (64). लोपासक gedr. — 2) f. लोपाशिका a) *das Weibchen eines Schakals* HĀR. 172. — b) *Fuchs* HĀR. 193 (लोपासिका gedr.).

लोपिन् (von लुप् und लोप) adj. 1) *Einbusse bewirkend, beeinträchtigend*: धर्मार्थ° MBH. 5,1960. 4318. वासवधैर्य° RAGH. 5,5. — 2) *einem Ausfall unterworfen, einen Ausfall erleidend* P. 2,4,62, Vârtt. 7, Sch. *mit einem Ausfall von — versehen*: मध्यमपदलोपी समासः Comm. zu AMAR. 6.

लोप्तृ (von लुप्) nom. ag. *Unterbrecher, Beeinträchtiger*: धर्मस्य

MBh. 7,8240.

लोप्त्र (wie eben) n. *geraubtes* oder *gestohlenes Gut, Beute* AK. **2**,10, 26. H. 383. Hâr. 158. Halâj. 2,184. Jâǵn. **2**,266. MBh. **1**,4308. fg. **16**,225.

1. लोप्य (wie eben) adj. *abzuwerfen, wegzulassen* (in gramm. Sinne) Vop. 7,55. 82. 88. 9,32. 46. Verz. d. Oxf. H. 169,*a*,6.

2. लोप्य (von den Comm. mit उलप, उलुप zusammengestellt) adj. etwa *unter Buschwerk befindlich* VS. 16,45. अ° ebend. Ind. St. **2**,42.

लोभ (von लुभ्) m. 1) *Gier, Habsucht:* मत्सर इति लोभनाम Nir. 2,5. H. 430. Maitrjup. 3,5. M. 2,178. 3,51. 179. 7,49. 8,118. 120. 213. 219. u. s. w. MBh. 3,12039. 15707. R. **2**,58,24. **3**,49,10. Suçr. **1**,12,19. 94, 14. Tattvas. 20. Jogas. 2,34. Spr. 1137. 1263. 2685. fgg. 4960. AK. **2**, 7,52. Kathâs. 18,306. Bhâg. P. **1**,15,37. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,24. Hit. 10,10. 32,5. Sarvadarçanas. 37,2. जङ्गम° Dhûrtas. 70,3. Personificirt ein Kind der Pushti VP. 55. Mârk. P. 50,26. des Dambha und der Mâjâ Bhâg. P. **4**, 8, 3. — 2) *Verlangen nach* (gen. loc. oder im comp. vorangehend): कृपणज्ञानस्य MBh. 3,2835. कङ्कणस्य Hit. I,4. वने, फलेषु R. **4**,16,24. Kathâs. 121,101 (स° adj.). अपत्य° M. 5,161. राज्य° R. **2**, 72,14. गीत° Spr. 2998. आननस्पर्श° Megh. 101. Çâk. 15,16. Vet. in LA. (III) 20,19. रूप° Kathâs. 33,185. प्रतिपन्नार्थलोभतः 18,305. Hit. 10,4. — Vgl. अ°, अति°, धन°, निर्लोभ.

लोभन (vom caus. von लुभ्) 1) adj. *verlockend, reizend.* — 2) n. *a) das Locken, Verlocken, der Versuch Jmd zu verführen* R. **2**,64,1. R. Gorr. **1**,4,52. नानार्थलोभनैः Kâm. Nîtis. 12,16. — *b) Gold* H. ç. 161.

लोभनीय (wie eben) adj. *verlockend, reizend:* °तमाकृति MBh. **1**,3866. Indr. 5,14 (दर्शनीयतमाकृति MBh. 3,1830). रूप MBh. 13,2308. Çâk. 20. Mârk. P. 17,2. लोभनीया हि मे दृष्टम् (मृगः) R. 3,49,31. आकृति° *verlockend —, reizend durch* Ragh. 6,58. Çâk. 147. पिशिताशन° *verlockend —, reizend für* Sâh. D. 197,10. लोचन° Bhaṭṭ. 2,13.

लोभायन m. patron.; pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,9. Vielleicht fehlerhaft für लौमायन.

लोभिन् (von लोभ und लुभ्) adj. 1) *gierig, habsüchtig* Trik. **3**,3,347. Râǵa-Tar. 6,66. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,34. *gierig nach:* धन° Verz. d. Oxf. H. 28,*a*, No. 71, Çl. 1. स्त्री° Bhâg. P. **9**,11,9. — 2) *verlockend, reizend:* रूपवल्लिपतचेष्टितैः। स्त्रियः पुरुषलोभिन्यः R. **4**,44,107.

लोभ्य 1) adj. = लोभनीय. — 2) m. *Phaseolus Mungo* H. 1172.

लोम am Ende einiger comp. = लोमन् P. 5,4,75. **4**,1,85, Vârtt. 8. Vop. 6,24. 76. अन्नलोमैः TS. **5**,1,**6**,2. Nach Gaṭâdh. im ÇKDr. soll लोम n. *Schweif* bedeuten. — Vgl. अन्नलोमी, अतिलोम, अनु°, अन्तर्लोम, अव°, उडुलोमाः (unter उडुलोमन्), गोलोमी, निर्लोम, पाण्डुलोमा, प्रतिलोम, बहिर्लोम, व्याघ्र°, सु°.

लोमक gaṇa पक्षादि und कृशाश्वादि zu P. **4**,2,80 und gaṇa तिकादि zu **4**,1,154. = लोमन् in अ°, प्रति°, मृडु°.

लोमकर्णी f. *eine best. Pflanze,* = मांसच्छदा Râǵan. im ÇKDr.

लोमकर्ण m. *Hase* H. 1296. — Vgl. रोमकर्णक.

लोमकागृह n. N. pr. P. 6,3,63, Sch.

लोमकिन् (von लोमक = लोमन्) m. *Vogel* H. ç. 186.

लोमकीट m. *Laus* Kâlak. 3,153.

लोमकूप m. *Haargrübchen, Pore der Haut* Verz. d. Oxf. H. 311,*a*,1 v. u. Pańkar. **2**,2,35. 95. — Vgl. रोमकूप.

लोमगर्त m. dass. Çat. Br. **10**,4,**4**,2. **12**,3,**2**,5. — Vgl. रोमगर्त.

लोमघ्न n. *krankhaftes Ausfallen der Haare* Bhâvapr. im ÇKDr.

लोमधि m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. **12**,1,25.

लोमन् (= älterem रोमन्) n. Uṇâdis. 4,150. Kâç. zu P. **8**,2,18. *Haar am Körper der Menschen und Thiere* (in der Regel mit Ausschluss der langen Kopf- und Barthaare, der Mähne und des Schweifes; nach H. 1244 aber auch *Schweif*) AK. **2**,6,**2**,50. H. 630. ṚV. **1**,163,5. 6. AV. **4**, 12,5. 9,6,2. VS. 19,81. आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम 92. 20,13. Kâṭh. 27,2. Ait. Br. 2,11. 14. 6,29. TS. **5**,1,**2**,6. **6**,2. TBr. **1**,3,**10**,7. त्रेधाविहितं हि शिरः। लोम चक्षुरीरस्थि 2,**6**,3. Âçv. Çr. 2,7,6. लोमतस्त् TS. 5,1,**4**,3. **6**,1,**9**,3. अश्वस्य लोमनी TBr. 3,9,**23**,1. Çat. Br. **1**,1,**4**,2. सिंह°, वृक°, **5**,5,**4**,18. नासिकयोः, कर्णयोः **12**,9,**1**,5. Kauç. 13. 26. 60. केशलोमानि Muṇḍ. Up. **1**,1,7. केशश्मश्रुलोमवपन Kâtj. Çr. **22**,6,13. Âçv. Gṛhj. **1**,18, 6.**4**,6,4. MBh. 8,644. तनुलोमकेशदशना M. 3,10. नखलोमानि 4,69. श्मश्रुलोमनखानि 6,6. नखलोम्नां परिष्कारः Dhûrtas. 94,14. Spr. 1035, v. l. Kathâs. 37,127. Pańkar. **1**,6,7. लोम्नां विवरेषु 2,2,39. अक्षि° AK. **3**,4, **18**,123. अज्ञाविलोमपवित्र Kâtj. Çr. **19**,2,10. मेषादि° AK. **3**,4,**13**,52. Spr. 650. Râǵa-Tar. 6,364. Varâh. Bṛh. S. 26,8. उत्तर° Ait. Br. 8, 6. अन्तर्लोमन् *die Haare nach innen gekehrt habend* Kauç. 81. अजातलोम्नी *die noch keine pubes hat* Gobh. 3,1,4. भरद्वाजस्य लोम N. eines Sâman Ind. St. 3,227,*a*. Pańkav. Br. **13**,11,11. — Vgl. असि°, दृढ°.

लोमन m. n. v. l. im gaṇa अर्धर्चादि zu P. **2**,4,31.

लोमपाद m. N. pr. eines Fürsten der Aṅga MBh. 3, 9993. fgg. **12**, 8609. R. **1**,8,11. fgg. °पुर f. = चम्पा H. 977. — Vgl. रोमपाद.

लोमप्रवाहिन् adj. = लोमवाहिन्. शरं °वाहिनम् (so die ed. Bomb. st. °वाहितम् der ed. Calc.) MBh. 6,1919.

लोमफल n. *die Frucht der Dillenia indica* Râǵan. im ÇKDr.

लोममणि m. *ein Amulet aus Haaren* Kauç. 13.

लोमयूक m. *Laus* Kâlak. 3,34.

लोमवत् adj. = रोमवत् *behaart* TS. **7**,5,**12**,2. AV. **20**,133,6. Çat. Br. **10**,1,**4**,11.

लोमवाहन scheinbar MBh. 6,2829, wo aber mit der ed. Bomb. °वाहिनम् zu lesen ist.

लोमवाहिन् adj. = रोमवाहिन् *haarscharf;* von Pfeilen MBh. 4,1330. 2026. 5,7192. 6,1975. 2829 (ed. Bomb. °वाहिनम् st. वाहनम् der ed. Calc.). 9,1430. — Vgl. लोमप्रवाहिन्, लोमहारिन्.

लोमविवर n. = रोमविवर *Haargrübchen, Pore der Haut* Pańkar. **2**,3,41.

लोमविष adj. *dessen Gift in den Haaren steckt:* व्याघ्रादयः H. 1313.

लोमवेताल m. Bez. eines best. Dämons Hariv. 9562. fälschlich लोमवेताल Vjâḍi beim Schol. zu H. 210.

लोमश (von लोमन्) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31 (लोमन v. l.). 1) adj. (f. आ) *a) behaart* (am Körper), *stark behaart, haarig* gaṇa लोमादि zu P. 5,2,100. Vop. 7,32. fg. H. an. 3,725. Med. ç. 26. fg. TS. 5, 1,**8**,4. 6,2,**11**,3. TBr. **1**,6,**4**,4. Çat. Br. **11**,4,**1**,6. धान्यं कृत्वा तु पुरुषो लोमशः संप्रजायते MBh. 13,5518. Varâh. Bṛh. 17,11. Kathâs. 64, 23. fg. Pańkar. **1**,6,59. Ind. St. **8**,108. fg. कदाचिद्दृत्तुरो मूर्खः कदाचि-

लोमशो मुखी Sâmudraka im ÇKDr. अलोमशे ब्रह्मे R. 6,23,11. नातिलोमशा MBh. 2,2178. *Thierhaare enthaltend:* विष्ठा 5,5445. *in wolligen Thieren* (Schafen u. s. w.) *bestehend:* ततो मे श्रियमावह लोमशां पशुभिः सह Taitt. Up. 1,4,2. — b) *bewachsen mit Gras* u. s. w. Kâth. 22,13. Lâṭj. 1,1,14. Gobh. 4,7,1. Schol. zu Kâtj. Çr. 7,2,15. — 2) m. a) *Widder, Schaf* Trik. 3,3,431. H. an. Med. — b) N. pr. eines Ṛshi Med. MBh. 1,437. fg. 3,1171. 1879. fgg. 11,775. 12,1594. 13,3383. Hariv. 9569. Pańkar. 1,4,84. Verz. d. Oxf. H. 18,b,18. 19,b,3. 34,a,11. Verz. d. B. H. No. 457. — c) N. pr. einer Katze MBh. 12,4934. — 3) f. आ a) *Fuchs* (शृगाली) und *Aeffin* (मर्कटिका) H. an. — b) *Eisenvitriol* (काशीश) H. an. Med. — c) Bez. verschiedener Pflanzen: *Nardostachys Jatamansi* (जटामांसी) *Dec.* AK. 2,4,4,22. H. an. Med. Ratnam. 70. *Leea hirta Banks, Carpopogon pruriens* und = महामेदा H. an. Med. *Sida cordifolia* und *rhombifolia* (अतिबला) H. an. = वचा Med. *Cucumis utilissimus Roxb.*, = गन्धमांसी und शणपुष्पी Râǵan. im ÇKDr. — d) N. pr. einer Çâkinî H. an. Med. — 4) n. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,108. fg. — Vgl. तत°, पाण्डुलोमशा, हंसलोमश und रोमश.

लोमशकर्णा m. *ein best. Höhlen bewohnendes Thier* Suçr. 1,203,1.

लोमशकाण्डा f. *Cucumis utilissimus Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

लोमशपर्णिनी f. *Glycine debilis Lin.* Çabdak. im ÇKDr.

लोमशपुष्पक m. *Acacia Sirissa* (शिरीष) *Hamilt.* Râǵan. im ÇKDr.

लोमशमार्जार m. *Zibethkatze* Râǵan. im ÇKDr.

लोमशवक्षण adj. (f. आ) *am Leibe behaart* AV. 5,5,7.

लोमशसक्थ und °सक्थि adj. *an den Hinterfüssen stark behaart* (*einen haarigen Schwanz habend* Mahîdh.): °सक्थौ VS. 24,1. °सक्थ्यौ Çat. Br. 13,2,2,8; vgl. P. 6,2,199.

लोमशातन n. *ein Mittel zum Entfernen der Haare am Körper* Verz. d. Oxf. H. 322,b,26. fälschlich लोमसातन ÇKDr. nach Gâruḍa-P. 185.

लोमश्य (von लोमश) n. *Rauhheit* (असौकुमार्य Comm.), Bez. *einer best. fehlerhaften Aussprache der Sibilanten* ṚV. Prât. 14,6.

लोमसंहर्षण adj. *Haarsträuben verursachend:* संप्रहार MBh. 3,16374. — Vgl. लोमहर्षण.

लोमसातन s. u. लोमशातन.

लोमसार m. *Smaragd* Çabdar. bei Wilson.

लोमसिका f. fehlerhaft für लोपाशिका oder लोमाशिका Verz. d. B. H. No. 897.

लोमहर्ष m. 1) = रोमहर्ष *das Sträuben der Härchen des Körpers, Rieseln der Haut* AK. 3,4,1,18. MBh. 7,5014. 8,2927. — 2) N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,13.

लोमहर्षण 1) adj. (f. आ) *Haarsträuben verursachend* d. i. *Grauen* — oder *grosse Freude erregend* MBh. 1,345. 486. 2,1063. 3,11955. 12143. 5,7268. 7,5012. 14,1808. 1853. Hariv. 14567. R. Gorr. 1,31,19. 3,30,2. 51,31. 5,27,6. 6,69,27. 7,28,30. सर्वभूत° Uttarar. 32,16 (42,18). — 2) m. Bein. Sûta's, Schulers des Vjâsa, MBh. 1,2. 1026. VP. 276. Verz. d. Oxf. H. 54,b,4. 82,a, No. 138. der Vater Sûta's so genannt 11,b, No. 50-55. — 3) n. *das Sträuben der Härchen des Körpers, Rieseln der Haut* AK. 1,1,2,35. — Vgl. रोमहर्षण.

लोमहर्षणक, f. °णिका (संहिता) Verz. d. Oxf. H. 56,a,5 fehlerhaft für लौम°.

लोमहर्षिन् adj. = लोमहर्षण R. 4,40,67.

लोमहारिन् adj. = लोमवाहिन् MBh. 1,5630. लोमवाहिन् von Nilak. erwähnte v. l.

लोमहृत् 1) adj. *die Härchen am Körper entfernend.* — 2) m. *Auripigment* H. 1059.

लोमायणि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,37. wohl fehlerhaft.

लोमालिका f. *Fuchs* Trik. 2,5,8.

लोमाश m. *Schakal* oder *Fuchs* Varâh. Bṛh. S. 86,22. Könnte der Etymologie nach *Haarfresser* (vgl. विष्ठा लोमशा MBh. 5,5445) bedeuten; wahrscheinlicher aber ein verdorbenes लोपाश.

लोमाशिका f. *das Weibchen des Schakals* oder *Fuchses* Varâh. Bṛh. S. 88,2 (लोमासिका alle Hdschrr.). 90,2. — Vgl. लोमसिका, लोपाशिका, लोमाश.

लोराय्, लोरायति (विलोचने) Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

लोल (von लुल्) 1) adj. (f. आ) a) *sich hinundherbewegend, unruhig, unstät; unbeständig* AK. 3,2,24. 3,4,26,207. H. 1455. an. 2,508. Med. l. 47. Halâj. 4,10. Suçr. 2,533,11 (अति°). शाद्वल Hariv. 3585. Râǵa-Tar. 3,225. Khandom. 68. खड्गलता: Kathâs. 50,5. आतपत्र Bhâg. P. 3,15,38. उदकलोलविहंगम Ragh. 9,36. 16,54. शैवाललोला मीना: 61. महोर्मि R. 5,9,13. लोलैर्लोचनतारिभि: Spr. 2692. रक्तांशुकं पवनलोलदशम् Mṛkkh. 10,9. दोलान्दोलनलोलकङ्कणा Prab. 40,6. Sâh. D. 55,20. विद्युच्चपललोला जिह्वा MBh. 3,10394. Kathâs. 25,106. चामरलोलहस्ता Hariv. 14652. Spr. 751. Mâlav. 73. Mâlatîm. 21,8. लुठल्लोलालकै: Spr. 3235. Râǵa-Tar. 1,81. मदलोलान् Hariv. 4553. 14831. सर्वतश्चतुर्वने लोलमपातयत् R. 4,7,11. 5,25,45. 6,95,25. 7,34,35. Çâk. 23, v. l. Spr. 236. 630, v. l. Varâh. Bṛh. S. 70,19. Kathâs. 22,2. 35,11. 50,132. Bhâg. P. 4,3,7. 8,12,20. Mârk. P. 112,7. कटाक्ष Spr. 2640. अपाङ्ग Megh. 28. श्रोत्रपुट Spr. 2691. °कर्णो so v. a. *Jedermann das Ohr leihend* Râǵa-Tar. 6,193. कल्लोललोलां गतिम् Spr. 571. जलबिन्दु MBh. 12,7140. 14,1378. मानुष्यं जलबिन्दुलोलचपलम् Spr. 217. राजश्री MBh. 12,8146. Kumâras. 1,44. Ragh. 6,41. श्रियो दोलालोला: Spr. 3035. संपच्च विद्युदिव लोला Kathâs. 22,28. Khandom. 69. आयु: कल्लोललोलम् Spr. 376. Bhâg. P. 4,23,27. स्वभाव R. 4,52,10. यौवनलालसा: Spr. 2072. हरिणकानां जीवितमतिलोलम् Çâk. 10. राज्ञ: स्वभावलोलस्य Râǵa-Tar. 5,376. Mârk. P. 51,118. स्त्रिय: Kathâs. 64,149. अ° von Çiva MBh. 13,1224. अलोलकीर्ति Râǵa-Tar. 2,64. — b) *Begehren empfindend, begehrend, verlangend —, lüstern nach* AK. 3,4,26,207. H. ç. 103. H. an. Med. Halâj. 2,198. मनस् Kumâras. 3,7. Spr. 135. Verz. d. Oxf. H. 26,b,9. कथयितुम् Megh. 101. तस्यार्कस्य मनो लोलं यदासीत्काशीदर्शने Verz. d. Oxf. H. 70,b,9. स्त्री° 59,a,5. Varâh. Bṛh. 17,3. 18,10. 24,11. अन्योऽन्यलोलानि विलोचनानि Kumâras. 7,75 (= Ragh. 7,20). तदधरामिष° Spr. 2877. 71. 3081. क्रीडा° Megh. 62 (unter आलोल zu streichen). Khandom. 54. केलिसुलोलम् (v. l. केलिषु लोलम्) Gît. 5,11. — 2) m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 74,18. 20. 38. — 3) f. आ a) *Zunge* Trik. 3,3,406. H. 585. H. an. Med. — b) *Blitz* Spr. 3035, v. l. — c) *die unstäte Göttin des Glückes,* Lakshmî Trik. H. an. Med. Pańkar. 2,3,25. 5,24. N. der Dâkshâjaṇî in Utpalâvartaka Verz. d. Oxf. H. 39,b,25. — d) N. pr. der Mutter des Daitja Madhu R. 7,61,3. — e) N. zweier

Metra: α) *4 Mal 24 Moren* (vgl. रोला) Colebr. Misc. Ess. II, 156 (III, 10. — β) *4 Mal* – – – ⏑ ⏑ – –, – – – ⏑ ⏑ – – (vgl. अलोला) Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 5). Khandom. 69. — Vgl. आ°, उल्लोल, कल्लोल, चाटु°, प्र°, मल्ल°, रति°, लौल्य.

लोलघट (?) *Wind* H. ç. 170.

लोलता (von लोल) f. *Lüsternheit* Suçr. 1,192,8. 331,19. *Verlangen:* रम्यवस्तुसमालोके लोलता स्यात्कुतूहलम् Sâh. D. 150.

लोलत्व (wie eben) n. *Beweglichkeit, Unbeständigkeit:* शतह्रदानाम् Spr. 5054.

लोलन m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,50.

लोललोल (लोल + लोल) adj. *in steter Beweglichkeit seiend:* अपाङ्ग Spr. 4568.

लोलाक्षिका f. *ein Weib mit beweglichen Augen* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*, 4.5.

लोलार्क (लोल + अर्क) m. *eine Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*, 5.10. fg. Vâmana-P. im ÇKDr.

लोलिका f. *Oxalis pusilla Roxb.* Gatâdh. im ÇKDr.

लोलिम्बराज m. N. pr. des Verfassers des Vaidjagîvana Verz. d. Pet. H. No. 107. Verz. d. Oxf. H. 317,*a*, No. 754. लोलिम्म° Verz. d. B. H. No. 976.

लोलुप (wohl aus लोलुभ entstanden) 1) adj. (f. आ) *Begierden habend, begehrlich, gierig nach* AK. 3,1,22. H. 430. Halâj. 2,198. Ragh. 19,24. Spr. 2753. Kathâs. 52,372. Bhâg. P. 3,19,13. 21,55. 32,40. 8,8,29. 12,1,27. Mârk. P. 16,41. अति° Bhâg. P. 3,20,23. अ° (s. auch bes.) Jâgn. 3,59. MBh. 1,1970. 5,2446. Suçr. 1,333,21. Bhâg. P. 7,11,28. In comp. mit der Ergänzung: अशन° Suçr. 2,518,8. मधु° Ragh. 9,33. अभोग° 11,87. ग्राम्यधनमोक्ष° 19,41. स्त्रीधन° Spr. 3745. 4728. Çiç. 1,40. 2,17. 7,49. Kathâs. 19,41. 27,19. 40,51. 63,135. Bhâg. P. 5,14,6. Çatr. 10,78. Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,11. Schol. zu Kâtj. Çr. 20,1,39. — 2) f. आ *Begierde, Verlangen:* अत्र MBh. 1,6730. st. नास्ति (नासि ed. Bomb.) लोलुपः 12,12308 ist wohl auch नास्ति लोलुपा zu lesen. — Vgl. अ°, गन्ध°, प्र°, मधु°.

लोलुपता (von लोलुप) f. *Begierde, Gier nach* Bhâg. P. 3,20,23. अर्थ° Spr. 3594. परपिण्ड° 2796. Bhâg. P. 12,6,65. Pańkat. ed. orn. 31,6.

लोलुपत्व (wie eben) n. dass. Schol. zu Bhag. 16,2. स्त्री° Suçr. 1,336, 4. अ° Çvetâçv. Up. 2,13.

लोलुभ (vom intens. von लुभ्) adj. (f. आ) = लोलुप AK. 3,1,22. H. 430. Halâj. 2,198. स्पर्श° Kathâs. 17,35. 20,105. परस्त्री° 101,368. 117,46.

लोलुव (vom intens. von 1. लू) nom. ag. Schol. zu P. 1,1,4. 2,4,74. Vop. 26,29.

लोलूय (wie eben) 1) nom. ag. Vop. 26,29. — 2) f. आ nom. act. P. 3,3,102, Sch.

लोलोर n. N. pr. einer Stadt Râǵa-Tar. 1,86.

लोछाट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 212,*a*, No. 500. 286, *a*, No. 670.

लोशशरायणि (!) m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1403.

लोष्ट्, लोष्टते (संघाते) Dhâtup. 8,5. *aufhäufen:* लोष्टते धान्यं लोकः Durgâd. im ÇKDr.

लोष्ट Uṇâdis. 3,92. 1) m. n. (n. Siddh. K. 249,*a*,3) = लोग *Erdkloss, Lehmklumpen* AK. 2,9,12. H. 970. Halâj. 2,421. TS. 5,2,5,6. Çat. Br. 3,2,2,20. 4,1,5,2. अश्मानमृत्वा लोष्टो विध्वंसते 14,4,1,8. Kâth. 23,6. Kâtj. Çr. 20,3,7. सीता° Gobh. 4,9,13. Kauç. 16. 47. 75. 77. आकृति° etwa *geformte, feste Erdbrocken* 8. 21. 25. fg. 37. 60. 69. तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्टपत्त्रतृणादिना M. 4,49. °मर्दिन् 71. 11,263. MBh. 13,6715. काष्ठलोष्टसधर्मिन् R. 4,60,24. 5,36,35. Suçr. 1,105,13. 118,18. 2,133, 4. 270,2. Mârk. 48,7. °गुटिका 79,20. Spr. 2238. Uttarar. 90,19 (117, 3). Varâh. Brh. S. 2,19. 30,6. 79,22. 94,3. 97,7. Râǵa-Tar. 3,398. मृल्लोष्ट M. 4,70. Verz. d. Oxf. H. 282,*a*,2. विश्वं येनेदं लोष्टवत्स्मृतम् (लोष्ठवत् ed. Bomb.) Bhâg. P. 9,4,17. मणौ वा लोष्टे वा Spr. 309. परद्रव्येषु लोष्टवत् (यः पश्यति) 2173. समलोष्टकाञ्चन adj. *dem ein Erdkloss und Gold gleich viel gilt* Ragh. 8,21. Mârk. P. 41,24 (लोष्टु gedr.) = 2) *ein best. als Marke verwendeter Gegenstand* Utpala zu Varâh. Brh. S. 77, 21. fgg. zu Varâh. Brh. 12,19. — 3) n. *Eisenrost* Râǵan. im ÇKDr. — 4) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1306.

लोष्टक 1) m. = लोष्ट 1) Halâj. 2,421. Mârk. 34,3. 47,3. पांसुलोष्टकैः Spr. 3008. तेनाश्नी लोष्टकः कृतः so v. a. *zusammengehauen* Râǵa-Tar. 8,3013. Am Ende eines adj. comp.: अलोष्टका (अलोष्ठका ed. Bomb.) MBh. 12,3702. — 2) = लोष्ट 2) Utpala a. a. O. — 3) m. N. pr. verschiedener Männer Râǵa-Tar. 7,295. 8,203. 3097. 3408.

लोष्टघ्न m. *ein Werkzeug zum Zerschlagen der Erdklösse* Bhar. zu AK. 2,9,12 nach ÇKDr.

लोष्टधर m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1078. लोष्ठ° gedr.

लोष्टन् = लोष्ट 1): लोष्टभिस् MBh. 3,2559.

लोष्टभेदन = लोष्टघ्न, m. AK. 2,9,12. H. 893. n. Halâj. 2,421.

लोष्टमय (von लोष्ट) adj. *aus Lehm gemacht, irden* M. 8,289.

लोष्टवत् (wie eben) adj. *mit Erdbröckchen vermengt* Suçr. 1,243,1.

लोष्टश m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,1104.

लोष्टाक्ष m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184,*b*,2 (लोष्ठाक्ष gedr.). — Vgl. लोगाक्ष.

लोष्टु m. = लोष्ट 1) H. 970. — Vgl. लेष्टु.

लोष्टु vielleicht nur fehlerhafte Schreibart für लोष्ट, z. B. Suçr. 1, 171,6. 258,8. 2,489,9. Spr. 2173, v. l. Mârk. P. 41,24.

लोष्ठ und लोष्ठक wohl nur fehlerhafte Schreibart für लोष्ट, लोष्टक.

लोस्तानो N. pr.: लोस्तान्या (लोस्तोन्या ed. Calc.) स्तूपकार्यकृत् Râǵa-Tar. 3,10.

लोह 1) adj. *röthlich:* अज Çâṅkh. Çr. 14,13,1. 15,15,2. छागेन सर्वलोहेनानन्त्यम् Paithînasi bei Kull. zu M. 3,272. वराह MBh. 1,5369 nach der Lesart der ed. Bomb. (लौह ed. Calc.). Vgl. लोहित. — *b*) *kupfern* (Comm.): क्षुर Çat. Br. 2,6,4,5. *eisern* Kauç. 25. — 2) m. n. (n. AK. 3,6,3,23) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *röthliches Metall, Kupfer* (nach den meisten Comm. der älteren Schriften); später *Eisen* und *Metall* überh. (acht लोहानि *Metalle* aufgezählt beim Schol. zu H. 1039) Naigh. 1,2. AK. 2,9,98. H. 1037. 1039. an. 2,601. Med. h. 8. Halâj. 2, 16. 21. 5,71. Çat. Br. 13,2,2,18. श्यामं च मे लोहं च मे *dunkles und rothes Metall, Eisen und Kupfer* VS. 18,13. अयोलोहहिरण्यानि Kauç. 46. Lâtj. 2,8,4. सुवर्ण, रजत, त्रपु, सीस, लोह Khând. Up. 4,17,7. 6,1,5 (*Gold* nach Çaṅk.). अश्मनो लोहमुत्थितम् M. 9,321 (= MBh. 5,482. 12, 2010). 329. MBh. 14,505. Spr. 2771. 3952. Bhâg. P. 2,6,5. 24. 3,28,10. °परीक्षा Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,15. लोहोपलोहशोधनमारण Verz. d. B.

H. 290,20. No. 969. °तुर Kâtj. Çr. 5,2,17. Çâñkh. Gṛhj. 1,28. Pâr. Gṛhj. 2,1. °कंटक Schol. zu Kâtj. Çr. 417,20. °कील 336,6. 366,16. °पट्टिका 356,6. 363,7. Kauç. 16. °भाण्ड Varâh. Bṛh. S. 42,11. °नाडी Suçr. 2,325,21. °खड्ग Weber, Kṛshṇaǵ. 269. °शृङ्खल Mârk. P. 125,13. °प्रतिमा AK. 2,10,35. Suçr. 1,35,13. fg. 96,12. 111,10. 228,3. Râǵa-Tar. 4,298. Bhâg. P. 4,11,17. Verz. d. Oxf. H. 320,b,10 v. u. Pañkat. 99,25. 100,23. Spr. 1042. 4267. °गन्धि Suçr. 1,103,9. 2,18,12. Varâh. Bṛh. S. 54,8. 39. Çârñg. Saṁh. 1,7,71. *Eisen* so v. a. *ein aus Eisen gemachter Gegenstand* Varâh. Bṛh. S. 28,5. 41,6. 50,26 (= 54,117). ताम्रलोहैः परिवृता निधयो ये so v. a. *in kupfernen und eisernen Behältern* MBh. 2,2091. मीनस्तु सामिषं लोहमास्वादयति मृत्यवे so v. a. *eiserner Haken* Spr. 1221. — 3) m. a) *die röthliche Ziege* (vgl. लोहाज): खड्गलोहामिषम् M. 3,272. Jâǵñ. 1,259. — b) wohl *ein best. Vogel:* हंसकुक्कुटलोहानां शिञ्जित चरितं नृपः Mârk. P. 27,17. — c) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1033. LIA. II, 135, N. 1. — d) N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. — 4) n. *Agallochum* AK. 2,6,3,28. H. 640. H. an. Med. — Vgl. अ°, कान्त° (auch Varâh. Bṛh. S. 41,7), तीक्ष्ण°, त्रि°, नील°, पीत°, महा°, मुण्ड°, रवि°, सार°.

लोहक = लोह in अष्ट°, इन्दु°, त्रि°, पञ्च°.

लोहकण्टक m. *Vanguiera spinosa Roxb.* Çabdać. im ÇKDr.

लोहकान्त m. *Magnet* Râǵan. im ÇKDr.

लोहकार m. *Grobschmied* H. 920. Halâj. 2,433. Vjutp. 96. R. Gorr. 2,90,23. Spr. 1138. 2432. f. ई Beiw. der Tantra-Göttin Atibalâ Kâlać. 3,132.

लोहकारक m. dass. AK. 2,10,7.

लोहकिट्ट n. *Eisenfeil* oder *Eisenrost* Trik. 3,3,180. Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 2,469,6. 10.

लोहगिरि m. N. pr. eines *Berges* Verz. d. Oxf. H. 107,a, No. 163.

लोहघातक m. *Grobschmied* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,62.

लोहचारिणी f. N. pr. eines Flusses, v. l. für लोहतारणी, °तारिणी VP. 182, N. 18.

लोहचूर्ण n. *Eisenrost* Râǵan. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 76,3. 77,2.

लोहज n. 1) *Messing* H. 1049. — 2) *Eisenrost* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. लौहज.

लोहजङ्घ m. 1) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1804. — 2) N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 12,84. fgg.

लोहजाल n. *ein eisernes Netz, Panzerhemd:* (रथम्) लोहजालैश्च संछन्नम् Hariv. 6882. स° (गजेन्द्र) Kâm. Nîtis. 19,61.

लोहजित् m. *Diamant* Çabdârthak. bei Wilson.

लोहतारणी f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,326 nach der Lesart der ed. Bomb., °तारिणी ed. Calc.; vgl. VP. 182 und लोहचारिणी.

लोहदारक m. N. pr. einer Hölle M. 4,90. — Vgl. लौहचारक.

लोहद्राविन् 1) adj. *Kupfer u. s. w. zum Schmelzen bringend.* — 2) m. *Borax* Râǵan. im ÇKDr.; vgl. द्रावकर und लोहश्लेषण.

लोहनगर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 27,188.

लोहनाल m. *ein eiserner Pfeil* Trik. 2,8,53. H. ç. 142.

लोहपाश m. *eine eiserne Kette* Hariv. 4753.

लोहपुर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,31.

लोहपृष्ठ m. *Reiher* AK. 2,5,16. H. 1334.

लोहमँय (von लोह) adj. (f. ई) *kupfern* oder *eisern* Çat. Br. 13,2,2,16. 18. 10,3. Khând. Up. 6,1,5. Suçr. 1,96,12. Kathâs. 36,148. 73,131. Bhâg. P. 5,26,20. सर्व° Pañkat. 122,10. अन्य° *aus anderem Metall bestehend* Halâj. 1,131.

लोहमारक 1) adj. *Metall calcinirend.* — 2) m. *Achyranthes triandra Roxb.* (eine Gemüsepflanze) Trik. 2,4,32.

लोहमुक्तिका f. *eine rothe Perle* Vjutp. 138.

लोहमेखल 1) adj. *einen metallenen Gürtel tragend.* — 2) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2636. 2639.

लोहयष्टी f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 149,b,12.

लोहर N. pr. eines Gebietes Râǵa-Tar. 4,177. 6,176. 8,1834.

लोहरजस् n. *Eisenfeil* oder *Eisenrost* Vjutp. 188. Suçr. 1,52,21. 2,68,1.

लोहल 1) adj. *lispelnd, undeutlich redend* AK. 3,1,37. H. 349. an. 3, 681. Med. l. 128. Halâj. 2,232. — 2) m. = शृङ्खलाधार्य H. an. = शृङ्खलाचार्य Med. *the principal ring of a chain* Wilson.

लोहलिङ्ग n. *Blutgeschwür* Vjutp. 220.

लोहवत् (von लोह) adj.: आ° *in's Röthliche spielend* Âçv. Gṛhj. 4,8,6.

लोहवर n. *das edelste Metall, Gold* Trik. 2,9,31.

लोहवाल m. *eine Art Reis* Vâgbh. 6,2.

लोहशङ्कु m. N. einer Hölle M. 4,90. Jâǵñ. 3,222. — Vgl. लौहशङ्कु.

लोहश्लेषण 1) adj. *Metalle verbindend.* — 2) m. *Borax* H. 944; vgl. लोहद्राविन्.

लोहसंकर n. *blauer Stahl* Râǵan. im ÇKDr.

लोहाकर N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 372,b, No. 267.

लोहाकर्ण (लोह + कर्ण) adj. (f. ई) *rothohrig* Kâtj. Çr. 22,11,29. — Vgl. लोध 1).

लोहाचल m. N. pr. eines *Berges:* °माहात्म्य Titel einer Schrift Mack. Coll. I, 82.

लोहाज (लोह + अज) m. *die röthliche Ziege:* °वक्त्र m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2577.

लोहाण्ड (लोह + अण्ड oder आण्ड) adj. f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41.

लोहाभिसार m. Bez. *einer best. kriegerischen Cerimonie, welche am 10ten Tage nach dem* Nîrâǵana *stattfindet,* H. 789. = लोहाभिहार Bharata zu AK. 2,8,2,62 nach ÇKDr.

लोहाभिहार m. = नीराजना AK. 2,8,2,62.

लोहायसँ n. *irgend ein mit Kupfer versetztes Metall* (nach den Comm. *Kupfer*) Çat. Br. 5,4,1,1. नैतद्यो न हिरण्यं यल्लोहायसम् 2. Kâtj. Çr. 15,5,22. कार्ष्णायस, लोहायस TBr. 3,12,6,5. — Vgl. लौहायस.

लोहार्गल n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60,b,14. 61,b,5. 14.

लोहि n. *eine Art Borax* (श्वेतटङ्कण) ÇKDr. nach einer Hdschr. des Râǵan.

लोहिका (von लोह) f. *ein eiserner Topf* Trik. 2,9,8. Hâr. 202.

लोहित् (von लोहित), °तति *roth werden, sich röthen* Vop. 21,9.

लौहित (= älterem रोहित) Uṇâdis. 3,94. 1) adj. f. लोहिता (Suçr. 1,135,1) und लौहिनी Vop. 4,27. a) *röthlich, roth* AK. 1,1,4,24. Trik. 3,3,180. H. 1395. an. 3,290. fg. (wo wohl वर्णभेदे st. बलभेदे zu lesen ist, welches Wilson durch *a form of array* wiedergiebt). Med. t. 148. Halâj. 4,48. Viçva bei Uǵǵval. AV. 6,127,1. 14,2,48. 15,1,7. 8. निर्याम TS. 2,5,1,4. लोहिनी AV. 7,74,1. 10,2,11. त्वच् 13,3,21. तनू 54. मृत्ति-

का Ait. Br. 3,34. Çat. Br. 3,5,1,23. 14,5,2,3. Kir. 16,53. — Çat. Br. 5,4,1,2. 5,4,1. 6,6,2,11. °पिण्ड 14,6,11,3. °रस 13,4,1,10. °सूत्र Kauç. 85. अन्न 19. 35. 39. अश्वत्थ 48. लोहितोष्णीष Âçv. Çr. 9,7,4. Gṛhj. 2,9,7. रोमन् Çāṅkh. Gṛhj. 1,24. °पांसु Gobh. 4,2,7. ṚV. Prât. 17,9. M. 5,6. घना: MBh. 3,14269. लोहितादित्य R. 3,49,4. Hariv. 12794. भूमि Suçr. 1,135,1. लाला Ṛt. 1,5. Varâh. Bṛh. S. 21,15. 65,2. Ind. St. 8, 273. कर्मन् Bhâg. P. 4,29,27. 5,19,19. Verz. d. Oxf. H. 175,*b*, No. 398. भास्कर: सर्वलोहित: R. 4,60,17. अति° Kumâras. 3,29. Çâk. 119. अतिमात्र° 29. मृदु° Maitrjup. 6,30. — *b) kupfern, metallen* · पात्र Kauç. 29. स्वधिति AV. 6,141,2. Gobh. 3,6,6. — 2) m. *a) eine best. Krankheit der Augenlider* Çārṅg. Saṁh. 1,7,87. — *b) ein best. Edelstein* (nicht *Rubin*) Spr. 2693. — *c) eine Reisart* Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,228,10. — *d) Linsen* Çabdak. im ÇKDr. — *e) Dioscorea purpurea* Râǵan. im ÇKDr. — *f) ein best. Fisch, Cyprinus Rohita Ham.* — *g) eine best. Hirschart* Trik. Çabdar. im ÇKDr. — *h) Schlange* Dhar. im ÇKDr. — *i) der Planet Mars* H. an. Med. Viçva a. a. O. Varâh. Bṛh. S. 6,8. Ind. St. 2,261. — *k)* N. pr. α) eines Nâga MBh. 2,360. — β) pl. einer Klasse von Göttern unter dem 12ten Manu VP. 268. = सुरान्तर Dhar. im ÇKDr. — γ) eines Mannes P. 4,1,18. °स्मृति Mack. Coll. I,19. pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,11. Hariv. 1465 (st. लोहिता यामद्रूताद्य liest die neuere Ausg. लोहितायनपूताद्य, 1771 lesen beide Ausgg. लौहित्या:). — δ) *eines Flusses* (der Brahmaputra) H. an. Med. Viçva a. a. O. MBh. 13,7647. — ε) eines Meeres: लोहितस्योदधे: कन्या क्रूरा लोहितभोजना MBh. 3,14366. 14494. रक्तजलं घोरं लोहितं नाम सागरम् । गत्वा R. 4,40,39; vgl. लोहितोदा वरुणालय: MBh. 3,14269. — ζ) eines Sees: लोहिते (लोहितो die neuere Ausg.) ह्रदे Hariv. 9791; vgl. 9145 und LIA. I,155, N. — η) eines Landes MBh. 2,1025. — 3) f. लोहिता *a)* Bez. einer der sieben Zungen des Agni Gṛhjasaṁgr. 1,14. — *b)* Bez. zweier Pflanzen: = वराहक्रान्ता und रक्तपुनर्नवा Râǵan. im ÇKDr. — 4) f. लोहिनी *eine Frau von röthlicher Hautfarbe* Halâj. 4, 53. Ǵaṭâdh. im ÇKDr. — 5) n. *a) Kupfer, Metall* AV. 11,3,7. — *b) Blut* (auch m. nach gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 251,*a*,2 v.u.). AK. 2,6,2,15. H. 621. H. an. Med. Viçva a. a. O. AV. 9,7,17. 10,9,18. 11,5,25. VS. 39,9. 10. TS. 2,1,7,2. 4,1,1. यो लोहितं करवत् *wer Blut vergiesst* 6,10,2. TBr. 3,2,9,2. Ait. Br. 2,14. लोहितं दुहीत Çat. Br. 12, 4,2,1. 14,6,2,13. Kauç. 11. 13. 36. Khând. Up. 6,5,2. M. 4,56. 8,284. MBh. 3,14366. R. 4,44,65. 5,14,18. Suçr. 1,121,13. Bhâg. P. 3,26,59. 67. Vet. in LA. (III) 4,7. सलोहिता दिशश्चासन् so v. a. *blutroth gefärbt* MBh. 3, 11399. — *c) Schlacht* H. an. — *d) Safran; rother Sandel;* = गोशीर्ष (*eine Art Sandelholz*) H. an. Med. Viçva a. a. O. = पत्तङ्ग, हरिचन्दन und तृणकुङ्कुम Râǵan. im ÇKDr. — *e) eine best. unvollkommene Form eines Regenbogens* Trik. — Vgl. अ°, आ° (auch Ṛt. 1,21), कृष्ण°, धूम्र°, नील° (adj. auch R. 2,96,30), बहल्लोहित, वि°, सु°, लोहित्य, लौहित्य.

लोहितक (von लोहित) 1) adj. (f. लोहितिका und लोहिनिका P. 5, 4,30, Vârtt.). 1) *röthlich, roth* P. 5,4,31. fg. (*vorübergehend roth* und *roth gefärbt*). MBh. 2,355 (= Hariv. 12658). °ध्वज 5,2240. 7,1105. Hariv. 11817. R. 5,55,15. Suçr. 1,114,14 (लोहितिका). कोपेन P. 5,4,31, Sch. पट, शाटी 32, Sch. — 2) m. *a) Rubin* P. 5,4,30. AK. 2,9,93. H. 1064. — *b) eine Reisart* Suçr. 1,195,5. 11. — *c) der Planet Mars* Çabdam. im ÇKDr. — *d)* N. eines Stûpa Hiouen-thsang I,140. — 3) f. लोहितिका *a) ein best. Blutgefäss* Suçr. 1,55,1. 3. — *b) eine best. Pflanze* Suçr. 2, 78,18. — 4) n. *Glockengut* Râǵan. im ÇKDr.

लोहितकल्माष adj. *roth gesprenkelt* P. 6,2,3, Sch.

लोहितकूट N. pr. einer Oertlichkeit Hariv. 9145; vgl. 9791.

लोहितकृष्ण adj. *röthlichschwarz:* °वर्णा (अजा) Çvetâçv. Up. 4,5. लोहितशुक्लकृष्णा v. l.

लोहितक्षय m. *Blutverlust* Suçr. 1,348,20.

लोहितक्षयक adj. *Blutverlust erleidend* Çārṅg. Saṁh. 1,7,102.

लोहितक्षीर adj. *rothe* oder *blutige Milch gebend* AV. 19,9,8.

लोहितगङ्ग N. pr. einer Oertlichkeit: मध्ये लोहितगङ्गस्य (सिन्धो: प्रदेशविशेषस्य Nilak.) Hariv. 6874. लोहितगङ्गम् adv. *da wo die* Gaṅgâ *roth erscheint* P. 2,1,21, Schol.

लोहितगङ्गक N. pr. einer Oertlichkeit LIA. I,555, N.

लोहितग्रीव adj. *rothnackig*, Bein. Agni's Mârk. P. 99,59.

लोहितचन्दन n. *Safran* AK. 2,6,3,26. H. 644. Halâj. 2,388. Hariv. 7041.

लोहितजह्नु m. N. pr. eines Mannes; pl. Âçv. Çr. 12,14.

लोहितत्व (von लोहित) n. *Röthe* Med. j. 101.

लोहितध्वज 1) adj. *eine rothe Fahne habend;* vgl. लोहितकध्वज MBh. 5,2240. 7,1105. — 2) m. pl. Bez. einer best. Körperschaft (पूग) P. 5, 3,112, Sch.; vgl. लौहितध्वज्य.

लोहितपाददेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,13.

लोहितपित्तिन् adj. *zum Blutsturz geneigt, daran leidend* Suçr. 2,471, 10. — Vgl. रक्तपित्तिन्.

लोहितपुर N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,24. fg.

लोहितपुष्प adj. *rothblumig* Çat. Br. 4,5,10,2.

लोहितपुष्पक 1) adj. dass. — 2) m. *Granatbaum* Bhâvapr. im ÇKDr.

लोहितमुक्ति *eine rothe Perle* Lot. de la b. l. 320 fehlerhaft für °मुक्ता.

लोहितमृत्तिका f. *Röthel, rubrica* Ratnam. im ÇKDr.

लोहितवत् (von लोहित) adj. *Blut enthaltend* TS. 7,5,12,2.

लोहितवासस् adj. *ein rothes* (oder *blutiges*) *Gewand habend* AV. 1,17, 1. Kâtj. Çr. 22,3,15.

लोहितशतपत्त्र n. *eine rothe Lotusblüthe* Bhâg. P. 5,24,10.

लोहितशबल adj. *rothscheckig* P. 2,1,69, Schol.

लोहितसारङ्ग adj. dass. Çat. Br. 3,3,1,23. Kâtj. Çr. 7,9,21.

1. लोहिताक्ष (लोहित + 1. अक्ष) m. *ein rother Würfel* (neben कृष्णाक्ष) MBh. 4,24.

2. लोहिताक्ष (लोहित + 3. अक्ष) 1) adj. (f. ई) *rothäugig* Vjutp. 205. Çat. Br. 14,9,4,15. Çvetâçv. Up. 4,4. M. 7,25. MBh. 1,2177. 5963. 7,8963. — 2) m. *a) eine Schlangenart* Suçr. 2,265,7. — *b) der indische Kuckuck* Çabdak. im ÇKDr. — *c)* Bein. Vishṇu's H. ç. 74. Çabdam. im ÇKDr. — *d)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2526. — *e)* N. pr. eines Mannes; pl. Âçv. Çr. 12,14. — 3) f. ई N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2640. 2642. — 4) n. *ein Theil des Armes und des Schenkels am Anschluss derselben an den Rumpf*, und f. (sc. सिरा) *ein an dieser Stelle liegendes Blutgefäss* Suçr. 1,345,9. 16. 346,12. 348, 20. 356,10. — Vgl. रोहिताक्ष.

लोहितागिरि (लोहित + गिरि) m. N. pr. eines *Berges* gaṇa किंशुलुकादि zu P. 6,3,117.

लोहिताङ्ग m. 1) *der Planet Mars* AK. 1,1,2,27. H. 116. HALÂJ. 1,46. MBH. 6,86. 7,8877. 9,3113. HARIV. 12794. R. 2,41,10. 3,31,5. 5,18,7. 53,2. VIKR. 142. MÂRK. P. 52,11. — 2) *eine best. Pflanze*, = कम्पिल्लक RÂGAN. im ÇKDR.

लोहितानन 1) adj. *rothmäulig*. — 2) m. *Ichneumon* RÂGAN. im ÇKDR.

लोहितामुखी (लोहित + मुख) f. N. pr. einer Keule R. GORR. 1,30,9.

लोहिताय् (von लोहित), °यति, °यते *roth werden, sich röthen* P. 3, 1,13. VOP. 21,9. आदित्ये लोहितायति (beim Untergange) MBH. 1,1173. 5,3012. 6,3269. 3450. 7,6100. HARIV. 5825. तेन (अम्बरेण) अधुना नूनमलोहिताथि NAISH. 22,49.

लोहितायन m. patron.; pl. SAÑSKH. K. 184, *a*, 3. लोहितायनपूताश्च HARIV. 1465 nach der Lesart der neueren Ausg. st. लोहिता यामहूताश्च der älteren Ausg. Wohl fehlerhaft für लौ°.

लोहितायनि f. patron.: लोहितस्योदधेः कन्या धात्री स्कन्दस्य सा स्मृता। लोहितायनिरित्येवं कदम्बे सा हि पूज्यते॥ MBH. 3,14494. Man hätte लौ° erwartet; die Endung इ st. ई aus metrischen Rücksichten.

लोहितायस् n. *Kupfer* TRIK. 2,9,32.

लोहितायस 1) adj. *aus röthlichem Metall gemacht* TBR. 1,5,6,5. — 2) n. (संज्ञायाम्) wohl *Kupfer* P. 5,4,94, Sch. VOP. 6,45. — Vgl. लोहायस.

लोहितार्ण m. N. pr. eines Sohnes des Ghṛtapṛshṭha BHÂG. P. 5,20,21.

लोहितार्द्र adj. *feucht von Blut, von Blut triefend*: शर MBH. 7,4900; vgl. रुधिरार्द्र R. 6,92,59.

लोहितार्मन् n. *eine best. Krankheit des Weissen im Auge: Auswüchse von rother Farbe* SUÇR. 2,310,4.

लोहितावभास adj. *röthlich* SUÇR. 1,61,13.

लोहिताशोक m. *rothblühender* Açoka KATHÂS. 104,91.

लोहिताश्व adj. *rothe Rosse habend, mit rothen Rossen fahrend* MBH. 4,1738 (लौ° ed. Calc.). Çiva ÇIV.

लोहितास्य adj. *einen rothen, blutigen Mund habend* AV. 8,6,12.

लोहिताहि m. *eine rothe Schlange* VS. 24,31.

लोहितिमन् (von लोहित) m. *Röthe* ÇÂÑKH. BR. 18,11. GOBH. 2,8,1. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 4,14,6.

लोहितीभू (लोहित + 1. भू), °भवति *roth werden, sich röthen* VOP. 21,9.

लोहितैत adj. = रोहितैत *rothbunt* P. 6,2,3, Sch.

लोहितोत्पल n. *die Blüthe der Nymphaea rubra* BHÂG. P. 3,23,48.

लोहितोद P. 6,3,57, Vârtt., Sch. 1) adj. (f. आ) *rothes Wasser* oder *Blut statt Wassers habend* MBH. 3,14269. R. 4,44,65. — 2) m. Bez. *einer best. Hölle* JÂGN. 3,223.

लोहितोर्णी adj. (f. ई) *rothwollig* VS. 24,4.

लोहित्य 1) m. *a*) *eine Art Reis* H. an. 3,502. — *b*) N. pr. eines Mannes H. an. HARIV. 12833 nach der Lesart der neueren Ausg.; लौ° ed. Calc. — *c*) N. pr. eines Flusses (der Brahmaputra) H. an. v. l. für लौहित्य VARÂH. BṚH. S. 14,6. 16,16. — *d*) N. pr. eines Dorfes (nach dem Comm.) R. 2,71,15 (73,13 GORR.). — 2) f. आ N. pr. *a*) eines göttlichen Wesens: लोहित्या जनमाता HARIV. 9534 nach der Lesart der neueren Ausg. st. लोहित्यायनमाता der älteren. — *b*) eines Flusses MBH. 6,343 (VP. 184). — Vgl. लौहित्य und लोहित.

लोहित्यायनमातर् f. N. pr. eines göttlichen Wesens HARIV. 9534. लोहित्या जनमाता die neuere Ausg.

लोहिनिका s. u. लोहितक; लोहिनी u. लोहित.

लोहिनीका (von लोहिनी) f. *rothe Gluth* TBR. 2,1,10,2.

लोहिन्य m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 58,12 wohl fehlerhaft für लौहित्य.

लोहोत्तम n. *das beste Metall, Gold* H. 1044.

लौकाक्ष (von लौकाक्षि) m. pl. N. einer Schule: कौथुमलौकाक्षाः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. — Die richtige Form wäre लौगाक्ष.

लौकायतिक (von लोकायत) adj. subst. *ein Anhänger der Lehre des* Kârvâka, *ein Materialist* gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. H. 863. R. GORR. 2,109,29. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 53. UTPALA zu VARÂH. BṚH. S. 1,7. — Vgl. लोकायतिक.

लौकिक (von लोक) adj. (f. ई) *das gemeine Leben betreffend, ihm angehörig, darin vorkommend, gemein, gewöhnlich, alltäglich* (Gegens. वैदिक, आर्ष, शास्त्रीय) P. 5,1,44. VS. PRÂT. 1, 2. अग्नि KÂTJ. ÇR. 1,1,14. 3,27. 4,3,7. KAUÇ. 55. JÂGN. 3,2. M. 3,282. ज्ञान 2,117. प्रेतकृत्या 3,127. यात्रा (vgl. लोकयात्रा) 11,184. दिवि देवा मुमुदिरे भूतसंघाश्च लौकिकाः MBH. 1,937. 12,3889. 12018. HARIV. 500. 2840. सलिल R. 1,42,18. समयाचार 2,1,16. 4,17,4. गिर् *die gewöhnlich gesprochene Rede* KÂM. NÎTIS. 3,22. KUMÂRAS. 7,88. कर्मन् PÂR. GṚHJ. 2,17. Spr. 4961. श्रुति 3039. प्रवाद 5133. प्रव्रजित TATTVAS. 47. प्रसिद्धि NÎLAK. 164. 173. Ind. St. 1, 17,2. 8,286. fgg. 10,298. PRAB. 110,11. ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 8. 118. H. 1074. वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च TARKAS. 51. शब्द RÂGA-TAR. 1,52. BHÂG. P. 5,14,18. 10,24,7. MÂRK. P. 118,19. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, 10. 197, *b*, No. 460, Çl. 4. Schol. zu P. 2,1,3. 4,2,39. SIDDH. K. zu 112. VOP. 26,220. KULL. zu M. 1,21. SÂH. D. 37. Comm. zu GAIM. 1,3,26. SARVADARÇANAS. 24,20. 135,15. प्रियतद्धिता दाक्षिणात्या यथा लोकवेदयोरिति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुञ्जते PAT. in MAHÂBH. ed. BALL. 54. लौकिकेष्वप्येतत् *in der gewöhnlichen Rede* NIR. 1,16. अ° (s. auch bes.) *ungewöhnlich, ausserordentlich* VIKR. 19,6. SÂH. D. 37. 297, 5. 22. BHÂG. P. 10,23,38. KUSUM. 4,1 v. u. BHÂSHÂP. 62. Schol. zu P. 2, 1,3. m. pl. *gewöhnliche —, alltägliche Menschen* (im Gegens. zu Gelehrten, Eingeweihten) ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 117. 318. Z. d. d. m. G. 7,312, N. SARVADARÇANAS. 38,7. *mit der Welt vertraute Männer* H. 947, SCHOL. UTTARAR. 5,8 (8,2). *Menschen* überh. MBH. 13,5849. n. sg. *was in der Welt vorgeht, die Gesetze der Welt, allgemeine Sitte*: वनौकसो ऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् ÇÂK. 55,19. MÂRK. P. 95,23. कुलटानां न सत्यं च न च धर्मो भयं दया। न लौकिकं न लज्जा स्यात् PAÑKAR. 1,14, 84. त्यक्त° *der die gewöhnlichen Beschäftigungen aufgegeben hat* BHÂG. P. 10,47,9. Am Ende eines comp. *zu der Welt — gehörig*: ब्रह्म° JÂGN. 3,194. MBH. 13,7124; vgl. जीव°, मानुष°.

लौकिकत्व (von लौकिक) n. *Gewöhnlichkeit, Alltäglichkeit* SÂH. D. 48.

लौकिकविषयविचार m. *Betrachtung der alltäglichen Gegenstände*, Titel einer Abhandlung Verz. d. Oxf. H. 245,*a*, No. 614.

लौक्य (von लोक) 1) adj. *zur Welt gehörig, was in der Welt ist* AV. 11,7,3. 15,6,6. *über die ganze Welt verbreitet*: तेजस् MBH. 13,1971. *gewöhnlich, tagtäglich*: कर्मन् 5,4103; die ed. Bomb. des MBH. an beiden Stellen लोक्य. — 2) m. N. pr. eines Mannes ÇÂÑKH. ÇR. 15,1,12.

लौगाक्षि (von लोगाक्ष) m. patron.; N. pr. eines alten Lehrers und Verfassers eines Gesetzbuches Kâty. Çr. 1, 6, 24. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 28. Ind. St. 1, 70. 80. 3, 452. 457. Verz. d. Oxf. H. 266, *b*, 5. 6. 268, *b*, 18. 270, *b*, 36. 279, *a*, 39. 310, *a*, 30. 356, *a*, 25. Verz. d. B. H. No. 1166. 1168. Saṁsk. K. 184, *a*, 4. Bhâg. P. 12, 6, 79. Hall 25. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59, 38. 60, 1 v. u. °भास्कर Bhâskara *aus* Laugâkshi's *Geschlecht*, N. pr. eines neueren Autors Hall 25. fg. 78. 81. 186. Nîlak. 9. — Vgl. लौकाक्षि.

लौठरथ m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8, 2253.

लौड्, लौडति (उन्मादे) Dhâtup. 9, 74, v. l. — Vgl. लोड्, लोट्.

लौप्स n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 232, *a*.

1. लौम adj. von लोमन् gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75; vgl. P. 6, 4, 144.

2. लौम adj. von लोमन् gaṇa शर्करादि zu P. 5, 3, 107; vgl. P. 6, 4, 144.

लौमकायन adj. von लोमक gaṇa पक्षादि zu P. 4, 2, 80.

लौमकायनि m. patron. von लोमक gaṇa तिकादि zu P. 4, 1, 154.

लौमकीय adj. von लोमक gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4, 2, 80.

लौमन्य adj. von लोमन् gaṇa संकाशादि zu P. 4, 2, 80. — Vgl. रौमण्य.

लौमशीय adj. von लोमश gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4, 2, 80.

लौमहर्षणक adj. *von* Lomaharshaṇa *verfasst:* लौमहर्षणिका संहिता Burnouf in der Einl. zu Bhâg. P. I, xxxviii. लोम° Verz. d. Oxf. H. 56, *a*, 5.

लौमहर्षणि m. patron. von लोमहर्षण MBh. 1, 5.

लौमायन 1) adj. von लोमन् gaṇa पक्षादि zu P. 4, 2, 80. Vgl. रौमायण. — 2) pl., pl. zu लौमायन्य gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98.

लौमायन्य m. patron. von लोमन् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4, 1, 98.

लौमि m. patron. von लोमन् gaṇa बाह्वादि zu P. 4, 1, 96.

लौलाह N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 7, 1253.

लौल्य (von लोल) n. 1) *Unruhe* Suçr. 1, 273, 9. *Unbeständigkeit:* धर्मलौल्येन संयुताः Hariv. 11311. वर्णा लौ° die neuere Ausg.; धर्मलोपेन Nîlak., aber die Erklärung धर्मफलस्पृहया führt wieder auf die Lesart धर्मलौल्येन. — 2) *Lüsternheit, Gier, Verlangen* Suçr. 2, 261, 2. Kâm. Nîtis. 5, 14. Ragh. 16, 76. Spr. 54. 2553. 2565. Verz. d. Oxf. H. 58, *b*, 40. Mallin. zu Kumâras. 6, 30. लौल्ये स्थिता ब्राह्मणाः Vet. in LA. (III) 30, 8. लौल्यमेत्य — नर्तकीषु Ragh. 19, 19. स्पप्रनिवृत्त° adj. 7, 58. 18, 30. रक्तास्वादन° Pańkat. 35, 6 (31, 10 ed. orn.). स्त्री° adj. Bhar. Nâṭjaç. 34, 92. इन्द्रिय° Bhâg. P. 7, 15, 19. Halâj. 2, 244. मनो° so v. a. *Laune* Hit. 87, 1. अ° *das Fehlen aller Begierde, — alles Verlangens in den Besitz von Etwas zu gelangen* MBh. 3, 13506. 12, 11625. adj. *frei von aller Begierde:* कर्मन् 1, 1506. — Vgl. अति°, जिह्वा°.

लौल्यता f. = लौल्य 2): इन्द्रिय° Bhâg. P. 7, 15, 38.

लौल्यवन्त् (von लौल्य) adj. *gierig, habsüchtig:* अति° Kathâs. 22, 200.

लौश (von लुश) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 232, *b*. द्वितीयं लौशम् und लौशाद्य n. desgl. ebend.

लौह (von लोह) 1) adj. (f. ई) *a*) *kupfern, metallen* gaṇa राजतादि zu P. 4, 3, 154. Kâty. Çr. 7, 4, 34. 20, 7, 1. लौह, अयस 4. तुर Âçv. Gṛhj. 1, 17, 9. पिण्ड Jâǵń. 2, 105. भाजन MBh. 3, 1129. 15, 728. आभरणं R. Gorr. 1, 60, 12. Suçr. 1, 23, 20. 65, 15. कुम्भ 2, 12, 9. नाडी 121, 9. पात्र Varâh. Bṛh. S. 77, 2. प्रतिमा Bhâg. P. 11, 27, 12. Weber, Kṛshṇaǵ. 273 (fälschlich लोकी die Hdschr.). निगड Mârk. P. 14, 60. तुला Kathâs. 60, 248. — *b*) *von der rothen Ziege kommend:* आमिष Mârk. P. 32, 7. — *c*) = लोह *roth:* कालशाकं च लौहं (लौहं काञ्चनवृत्तं पुष्पादिशाकम् Nîlak.: wir verbessern लोहच्छा° und verbinden लौहः mit छागः) चाप्यानन्त्यं छाग उच्यते MBh. 13, 4249. अजेन (आजेन ed. Bomb.) वापि लौहेन 4252. वराहस्य लौहस्य (लोहस्य ed. Bomb.) 1, 5369. — 2) f. आ *Kessel, ein metallener Kochtopf* Çabdaḱ. im ÇKDr. — 3) n. = लोह *Metall* AK. 2, 9, 99. Spr. 1263, v. l. 2771, v. l. Verz. d. B. H. No. 974. *Eisen* AK. 3, 4, 12, 56. Bhaṭṭ. 15, 54. — Vgl. त्रि°.

लौहकार m. = लोहकार Spr. 1138.

लौहचारक m. N. einer Hölle ÇKDr. nach den Purâṇa; vgl. लोहदारक.

लौहज n. = लोहज *Eisenrost* Ratnam. im ÇKDr.

लौहप्रदीप m. Titel einer über *Metalle* handelnden Schrift Verz. d. B. H. No. 974.

लौहभाण्ड n. *ein metallener Mörser* Çabdaḱ. im ÇKDr.

लौहभू f. *Kessel, ein metallener Kochtopf* Çabdaḱ. im ÇKDr.

लौहमल n. *Eisenrost* Râǵan. im ÇKDr.

लौहशङ्कु m. = लोहशङ्कु ÇKDr. nach den Purâṇa.

लौहशास्त्र n. *ein über Metalle handelndes Lehrbuch* Verz. d. B. H. No. 974.

लौहाचार्य m. *ein Lehrer der Metallkunde* ebend.

लौहात्मन् m. = लौहभू Çabdaḱ. im ÇKDr.

लौहायन m. patron. von लोह gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99.

लौहायस (von लोहायस) adj. *metallen* Âçv. Gṛhj. 4, 3, 19. *von Metall und Eisen* Stenzler.

लौहि m. N. pr. eines Sohnes des Ashṭaka Hariv. 1473. 1776.

लौहित (von लोहित) m. Çiva's *Dreizack* Çabdârthak. bei Wilson.

लौहितध्वज्य m. *ein Angehöriger der* Lohitadhvaǵa P. 5, 3, 112, Sch.

लौहिताश्व s. लोहिताश्व.

लौहितीक (von लोहित) adj. *in's Röthliche schimmernd* P. 5, 3, 110. स्फटिक Schol.

लौहित्य (von लोहित) 1) m. *a*) patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. लौहित्याः Hariv. 1771 (st. dessen लोहिताः 1465). — *b*) N. pr. eines Flusses (der Brahmaputra) Med. j. 101. MBh. 2, 374. Hariv. 12830. R. 4, 40, 26. Ragh. 4, 81. Varâh. Bṛh. S. 14, 6. 16, 16. Mârk. P. 58, 13. — *c*) N. pr. eines Meeres MBh. 1, 630. 2, 1100. 17, 33. Hariv. 12833. = सागर Çabdam. im ÇKDr. — *d*) N. pr. eines Berges MBh. 2, 1864 (nach Nîlak.). Çatr. 1, 352. — *e*) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3, 8144. 13, 1732. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 44. In dieser Bed. eher n. — 3) n. *Röthe* Med. विगतलौहित्ये सवितरि (vgl. u. लोहिताय्) Suçr. 2, 160, 11. Sâh. D. 215, 16. fg. 297, 2. Schol. zu Kap. 1, 59. — Vgl. लोहित्य.

लौहित्यायनी f. zum patron. m. लौहित्य P. 4, 1, 18.

लौहेष (लौह + ईषा) adj. *eine metallene Deichsel habend:* रथ P. 6, 3, 39, Sch.

ल्पी, ल्पिनाति (श्लेषणे) Dhâtup. 31, 31, v. l. für ली.

ल्यी, ल्यिनाति (श्लेषणे) Dhâtup. 31, 31, v. l. für ली.

ल्वी, ल्विनाति und ल्वीनाति (गतौ) Dhâtup. 31, 32, v. l. für व्ली, प्ली.

व *)

1. व 1) m. = वरुण Trik. 1,1,75. H. an. 1,14. Med. v. 1. Verz. d. Oxf. H. 189,*a*, No. 431. *Wind* Med. und Verz. d. Oxf. H. a. a. O. = सान्त्वन Med. = बाहु, मन्त्रण, कल्याण, बलवत्, वसति und वरुणालय Çabdar. im ÇKDr. = शार्दूल, वस्त्र, शालूक und वन्दन Nânaikâksharak. im ÇKDr. — 2) f. आ *going; hurting, injury; an arrow; weaving; a weaver* (f.!) Wilson nach Çabdar. — 3) n. = प्रचेतस् Med. = वरुणबीज ÇKDr. nach einem Tantra.

2. व indecl. = इव H. an. 1,14. Med. v. 1. Ragh. ed. Calc. 4,42 (bei Stenzler च st. व). MBh. 12,6597 wird मणीवोष्ट्रस्य in मणी व उ°, मणी वा उ°, aber auch in मणी इव उ° aufgelöst; vgl. zu P. 1,1,11. Megh. 81 ist वा anzunehmen.

वंश॑ 1) m. Siddh. K. 249,*b*,1 v. u. *a*) *Rohr*, besonders *des Bambus* (AK. 2,4,5,26. 3,4,11,45. 28,216. Trik. 2,4,38. H. 1153. an. 2,554. Med. ç. 12. Hâr. 176. 270. Halâj. 2,49; nach Râgan. im ÇKDr. auch *Zuckerrohr* und *Shorea robusta*); *die Sparren und Latten eines Hauses, die auf den Balken aufliegen;* insbes. *die in der Längenrichtung des Daches laufenden, welche die Orientirung des Hauses anzeigen* (vgl. प्राचीनवंश u. s. w.). Nir. 5,5. इन्द्रमुद्वंशमिव येमिरे ṚV. 1,10,1. AV. 3,12,6. 9,3,4. यथा शालायै पक्षसी मध्यमं वंशमभिसमायच्छति TBr. 1,2,2,1. Çat. Br. 9, 1,2,25. Âçv. Gṛhj. 2,8,13. 9,1. Çâñkh. Çr. 17,10,9. Kauç. 36. 41. 74. 93. 135. Ait. Up. in Ind. St. 1,391. उदीचीन° Çat. Br. 3,1,1,7. उदग्वंश Kâtj. Çr. 4,7,9. — घनमिन्दीवरश्यामं वंशं कनकभूषणम् MBh. 3,1721. वंशैश्च यामुनैः R. 2,55,8. शुष्कैर्वंशैः 14. Ṛt. 1,25. R. Gorr. 2,55,7. अनतिप्रौढवंशप्रकाश Megh. 77. Suçr. 1,110,8. 187,1. 2,26,18. 331,6. °करीर 1,224,4. Vâgbh. 6,100. Varâh. Bṛh. S. 44,4. °पात्री Schol. zu Kâtj. Çr. 609,2. जर्जर° Pańkat. 117,6. 7. Hit. 27,15. 32,9. वक्रवंशस्य सरलत्वम् Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,22. वंशो नाम स्थूणासु निक्षिप्तस्तिर्यग्वेणुः Comm. zu Bhâg. P. 11,8,32. *Querbalken, Querstrich, Diagonale* (= कोणात्कोणागतानि सूत्राणि Comm.) Varâh. Bṛh. S. 33,57. 65. *Bambus* und zugleich *Stamm, Geschlecht* Spr. 679. 2397. 2429. — *b*) *Rohrpfeife, Flöte* H. 287. Dhar. im ÇKDr. Mṛkkh. 49,2. Ragh. 2,12. Râga-Tar. 5,362. — *c*) *Rückgrat* Trik. 3,3,432. H. an. Med. Halâj. 5,17. चारुवंशः कूर्मः Varâh. Bṛh. S. 64,1. 3. चापसमानवंशाः Elephanten 67,1. 6. Bhâg. P. 11,8, 32. — *d*) *Röhrknochen:* अष्टवंशवत् R. 5,32,14. वंशशब्देन दैर्घ्यं विवक्षितम् बाहू च नलकावूरू जङ्घे चेत्यष्ट वंशकाः । नलकावङ्गुल्याविति (!) तीर्थः Comm. in der ed. Bomb. zu 5,35,19. — *e*) *der höhere mittlere Theil eines Schwertes* (खड्गमध्योच्चभाग Comm.) Varâh. Bṛh. S. 50,3. 4. — *f*) *ein best. Längenmaass,* = 10 Hasta Lilâv. 1,6. — *g*) *Stammbaum* (nach der Aehnlichkeit der sich aneinander fügenden Glieder eines Rohres); *Stamm, Geschlecht* AK. 2,7,1. 3,4,28,216. H. 503. H. an. Med. Hâr. 270. Halâj. 2,241. Çat. Br. 10,6,5,9. 14,9,3,14. Ind. St. 4,374. पितृ°, मातृ° Çâñkh. Gṛhj. 4,10. विवृद्ध्यर्थं स्ववंशस्य M. 9,128. MBh. 3,1856. fg. 1859. गोप्ता निषधवंशस्य 2478. उभौ वंशौ (d. i. des Vaters und der Mutter) Spr. 5089. R. 1,1,10. 92. 5,3. Ragh. 1,2. 2,33. वंशस्य कर्ता 64. 12,88. Megh. 6. Çâk. 12. 7,4. 91,13. शशिनस्तुल्यवंशः Spr. 1992. 2694. स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् 3107. Varâh. Bṛh. S. 68,3. 78,10. सद्वंशजात Kathâs. 21,98. Bhâg. P. 3,7,25. 10,26. 9, 22,43. Dhûrtas. 67,3. °हीन Hit. 10,20. Madhus. in Ind. St. 1,18,6. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,15. H. 252. *Geschlecht, Stamm* und zugleich *Bambus* Spr. 679. 2397. 2429. वंश ist nicht nur *Geschlechtsregister* (अभिजनप्रतिबन्ध Kâç. zu P. 4,1,163), sondern auch *Lehrerliste* · वंशो द्विधा । विद्यावंशो जन्मवंशश्च Schol. zu P. 2,1,19. — *h*) *Sohn:* नृगस्य वंशः सुमतिः Bhâg. P. 9,2,17. — *i*) *eine Menge gleichartiger Dinge* Trik. H. an. Med. रथ° (s. bes.), स्यन्दन° Ragh. 7,36. नक्षत्र° Hariv. 10258 (pl.). R. Gorr. 1,62,22 (vgl. नक्षत्रगण 23). तीर्थ° MBh. 1,347. — *k*) *Tabaschir* Wilson nach Çabdar. — *l*) Bein. Vishṇu's (!) H. ç. 75. — 2) f. आ N. pr. einer Apsaras, einer Tochter der Prâdhâ, MBh. 1,2553. — 3) f. ई *a*) *Flöte* AK. 1,1,7,4. Çabdar. im ÇKDr. Pańkar. 4,6,5. °रव Gît. 9, 11. — *b*) *Blutgefäss* H. ç. 128 (fehlerhaft तंशी). — *c*) *ein best. Gewicht,* = 4 Karsha Râgan. im ÇKDr. — *d*) *Tabaschir* Wilson nach Çabdar. — Vgl. अ°, आदि°, इन्द्रवंशा, उद्वंश, कर्ण°, कुरुवंशा, नालवंश, नासा°, परि°, पृष्ठ°, प्राग्वंश, प्राचीन°, रघु°, रथ°, राज°, स°, सोम°, हरि°, वांशिक.

*) Was unter व nicht gefunden wird, suche man unter ब.

वंशऋषि m. *ein in einem* Vamça-Brâhmaṇa (*Lehrerverzeichniss*) *genannter* Ṛshi Çaṅk. in der Einl. zu Bṛh. Âr. Up.

वंशक (von वंश) 1) m. = ह्रस्वो वंशः (संज्ञायाम्) P. 5,3,87, Sch. *a) eine Art Zuckerrohr* Ratnam. im ÇKDr. Suçr. 1,186,14. 20. — *b) ein Röhrknochen;* s. u. वंश 1) *d).* — *c) ein best. Fisch* Çabdam. im ÇKDr. — *d)* N. pr. eines Fürsten VP. 467, N. 14 (Vansaka gedr.). — 2) f. वंशिका *a) Flöte* Çabdar. im ÇKDr. — *b) Agallochum* H. 640. — 3) n. *Agallochum* Hâr. 104.

वंशकठिन m. *Bambusdickicht* P. 4,4,72, Sch. वंशा वेणवः कठिना यस्मिन्देशे स वंशकठिनः Siddh. K. — Vgl. वांशकठिनिक.

वंशकफ wohl m. *in der Luft umherfliegende Pflanzenfäden* Hâr. 23 (nach ÇKDr. und Wilson n.).

वंशकर 1) adj. subst. *ein Geschlecht fortpflanzend, Stammhalter* MBh. 1,2758. R. 1,8,1. 39,8. Ragh. 18, 30. पौरवाणाम् MBh. 1,2801. कुरु° 13,1339. — 2) m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 7. — 3) f. श्रा N. pr. eines auf dem Mahendra entspringenden Flusses Mârk. P. 57,29; vgl. वंशधारा.

वंशकर्पूररोचना f. = वंशरोचना Râǵan. im ÇKDr.

वंशकर्मन् n. *Bearbeitung von Bambus, Korbmacherei u.s.w.:* °कर्मकृत् R. 2,80,3 (87,3 Gorr.). वंशचर्मकृतः ed. Bomb. st. वंशकर्मकृतः, welches der Comm. in वंशकृतः und चर्मकृतः zerlegt.

वंशकृत् 1) = वंशकर्मकृत् R. ed. Bomb. 2,80,3. — 2) *Begründer eines Geschlechts* Bhâg. P. 9,2,33; vgl. वंशकर 1).

वंशक्रमागत adj. *ererbt:* मित्र Spr. 583. Kâm. Nîtis. 7,31. — Vgl. वंशागत.

वंशक्षीरी f. *Tabaschir* H. 1154. Râǵan. im ÇKDr.

वंशगुल्म N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,8151.

वंशचिन्तक m. *Genealog* Hariv. 812.

वंशच्छेत्तर् m. *derjenige, welcher ein Geschlecht abschneidet, mit welchem ein Geschlecht ausstirbt,* Varâh. Bṛh. 23,6.

वंशज 1) adj. *a) aus Bambus gemacht:* पात्र Weber, Kṛshṇaǵ. 278. — *b) aus einer — Familie stammend, im Geschlechte — geboren, zur Familie — gehörend;* die Ergänzung im comp. vorangehend oder im loc. H. 713. स्व° Râǵa-Tar. 6,230. असामान्य° 3, 117. राघव° R. 2, 90, 20. Ragh. 1, 31. Varâh. Bṛh. 11, 13. Verz. d. Oxf. H. 19, *b*, 3. *zum selben Geschlecht gehörend:* तदारभ्य नृपः काश्यां वंशजः को ऽपि नाभवत् 122, *a*, 6. 7. — 2) m. = वेणुयव Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. श्रा *Tabaschir* Çabdar. im ÇKDr. — 4) n. dass. Suçr. 2,329,18. Vâgbh. 6,15.

वंशतण्डुल m. = वेणुयव Râǵan. im ÇKDr.

वंशदला f. *eine best. Grasart,* = वंशपत्री Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

वंशधर adj. subst. *ein Geschlecht erhaltend, Stammhalter* MBh. 2,1160. R. Gorr. 1,40,12. Kathâs. 9,66. 35,104. Bhâg. P. 1,12,12. 8,23,5. वंशराज्यधर Kathâs. 66,172. यद्वंशधराः so v. a. *wessen Nachkommen* Bhâg. P. 4,28,31. 12,7,16.

वंशधारा f. N. pr. eines auf dem Mahendra entspringenden Flusses VP. 185, N. 80. — Vgl. वंशकरा.

वंशधारिन् adj. = वंशधर Pańkar. 4,8,29.

वंशनर्तिन् m. *Gaukler* VS. 30,21.

वंशनाडिका f. *eine Röhre aus Bambus* Kathâs. 29,145. °नाडी f. dass. 146.

वंशनाथ m. *Stammhalter:* पार्थिव° so v. a. *fürstlicher Sprössling* R. 4, 29, 26.

वंशनालिका f. *Pfeife, Flöte* Çabdar. im ÇKDr.

वंशनेत्र n. = इक्षुमूल Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. इक्षुनेत्र.

1. वंशपत्त्र n. 1) *Bambus-Blatt* Varâh. Bṛh. S. 50,7. 83,1. — 2) = वंशपत्त्रपतित n. Colebr. Misc. Ess. II,162 (XII,3).

2. वंशपत्त्र 1) m. = नल *Rohrschilf.* — 2) f. ई *a) eine best. Grasart* (वंशदला, जीर्णपत्त्रिका). — *b)* = नाडीहिङ्गु Râǵan. im ÇKDr.

वंशपत्त्रक 1) m. *a) Rohrschilf* (नल); *eine Art Zuckerrohr* (श्वेतेक्षु) Râǵan. im ÇKDr. — *b) ein best. kleiner Fisch* Çabdam. im ÇKDr. — 2) n. *Auripigment* H. 1058.

वंशपत्त्रपतित adj. *auf ein Bambus-Blatt gefallen* und als n. N. eines Metrums: *4 Mal* —⏑⏑—⏑—⏑⏑⏑—, ⏑⏑⏑⏑⏑⏑— Varâh. Bṛh. S. 104, 40. Ind. St. 8,394. Colebr. Misc. II,162 (XII,3).

वंशपीत m. *eine Art Bdellium* (कणगुग्गुलु) Râǵan. im ÇKDr.

वंशपुष्पा f. *eine best. Schlingpflanze,* = सहदेवी Râǵan. im ÇKDr.

वंशपूरक n. = इक्षुमूल Râǵan. im ÇKDr.

वंशब्राह्मण n. *ein chronologisches Verzeichniss alter Lehrer* Ind. St. 4,371. fgg. Verz. d. Oxf. H. 382,*a*, No. 451. 264,*b*,26. 270,*b*,39.

वंशभार m. *eine Tracht Bambus* P. 5,1,50. — Vgl. वांशभारिक.

वंशभृत् m. *Stammhalter:* शितावन्धकवृष्णीनां वंशे वंशभृतां वरः MBh. 2,1322. भरत° Kathâs. 30,41.

वंशभोज्य adj. *dessen Genuss sich im Geschlecht forterbt:* राज्य MBh. 3,3038.

वंशमय (von वंश) adj. (f. ई) *aus Bambus gemacht* Schol. zu Kâtj. Çr. 4,6,17. Nilak. zu Hariv. 11192. वंशमृन्मयपात्र Weber, Kṛshṇaǵ. 279.

वंशमूलक n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBh. 3,6011. fg.

वंशराज m. 1) *ein hohes Bambusrohr:* केतुना वंशराजेन (वंशजातेन die neuere Ausg.) Hariv. 2459. — 2) N. pr. eines *Fürsten:* °कुल Lalit. ed. Calc. 22,18. 23,1.

वंशरोचना f. *Tabaschir* AK. 2,9,110. H. 1154. Vjutp. 135.

वंशलोचना f. dass. Çabdar. bei Wilson.

वंशवर्धन adj. *ein Geschlecht mehrend, — fortpflanzend* Vikr. 87,20. राघव° R. 2,23,42. रघु° 46,33. 95,19 (104,20 Gorr.). 112,30.

वंशवर्धिन् adj. dass.: मम त्वं वंशवर्धिनी MBh. 3,1859. Uttarar. 126, 7 (170,7).

वंशविस्तर m. *vollständige Genealogie* VP. bei Muir, ST. 4,217.

वंशशर्करा f. *Tabaschir* Râǵan. im ÇKDr.

वंशशलाका f. *ein Wirbel aus Rohr* H. 291.

वंशस्तनित n. v. l. für वंशस्थबिल Khandom. 40.

वंशस्थ n. oder °स्था f. (?) *ein best. Metrum,* = वंशस्थबिल Ind. St. 8, 372. 378. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,1). Çrut. (Br.) 33.

वंशस्थबिल n. *die in einem Bambusrohr befindliche Höhlung* und zugleich N. eines Metrums: *4 Mal* ⏑—⏑——⏑⏑—⏑—⏑— Khandom. 40. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,1). Çrut. 33.

वंशस्थिति f. *der Bestand eines Geschlechts* Ragh. 18,30. Vikr. 153.

वंशागत adj. *ererbt:* रिपु Kâm. Nîtis. 8,66. — Vgl. वंशक्रमागत.

वंशाग्र n. *die Spitze eines Bambusrohrs:* °नृत्यादिदुर्घटव्यापार Sâh. in Ind. St. 2,86. = वंशाङ्कुर Râgan. im ÇKDr.

वंशाङ्कुर m. *Rohrschössling* Halâj. 5,42.

वंशानुकीर्तन n. *Verkündigung des Geschlechts, Genealogie* Verz. d. B. H. 128,*a*. राज°, यदु° ebend.

वंशानुक्रम m. *Reihenfolge im Geschlecht, Genealogie* Ragh. 18 in der Unterschr.

वंशानुग adj. 1) *am höheren mittleren Theil eines Schwertes sich hinziehend, — sich befindend* Varâh. Bṛh. S. 50,3. — 2) *von Geschlecht zu Geschlecht übergehend:* श्रिय: Spr. 2512.

वंशानुचरित n. sg. und pl. *die Geschichte der verschiedenen Geschlechter* als eines der fünf Lakshaṇa eines Purâṇa VP. bei Muir, ST. 4, 217. Bhâg. P. 9,1,4 (वंश्यानु° ed. Bomb.). Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,1 v. u. 8,*a*,15. Ind. St. 1,18,6.

वंशानुवंशचरित n. *die Geschichte der älteren und neueren Geschlechter* als eines der fünf Lakshaṇa eines Purâṇa H. 252.

वंशावती f. N. pr. gaṇa शरादि zu P. 6,3,120.

वंशाह्व m. = वेणुयव Râgan. im ÇKDr. unter d. l. W.

वंशिक (von वंश) n. *Agallochum* AK. 2,6,3,28. — वंशिका s. u. वंशक.

वंशिन् in स्व° *zu Jmds Geschlecht gehörig:* धन्या: खलु भवन्ति (die Opfer) ये द्विजातीनां स्ववंशिन: (स्ववंशजा: die neuere Ausg.) Hariv. 9669.

वंशिवाद्य n. *Flöte* Tithjâdit. (s. u. कच्छक) wohl nur fehlerhaft für वंशी°.

वंशीधर 1) adj. *eine Flöte haltend:* Kṛshṇa Pańkar. 1,3,18. 12,28. — 2) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. B. H. No. 638. Hall 8.

वंशीय (von वंश) adj. *zu Jmds Geschlecht gehörig:* (पार्थिवा:) वंशीया: सोमसूर्ययो: Bhâg. P. 12,2,25.

वंशीवदन m. N. pr. eines Scholiasten Colebr. Misc. Ess. II,46.

वंश्य (von वंश) adj. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. 1) *zum Hauptbalken gehend, an den Hauptbalken sich ansetzend;* m. *Verbindungsstück, Querbalken* oder *-leisten* Bhâg. P. 11,8,32. वंशो नाम स्थूणासु निहितस्तिर्यग्वेणु: । वंश्यास्तस्मिन्नुभयतो निहिता वेणव: Comm. — 2) *an das Rückgrat sich ansetzend;* subst. *ein Arm- oder Beinknochen* Bhâg. P. 11,8,32. — 3) *zur Familie gehörig,* m. *Familienglied, ein Vorfahr* oder *Nachkomme* Trik. 2,7,1. H. 713. M. 1,61. 105. 3,37. Jâgń. 1,60. 318. R. Gorr. 2,66,21. P. 4,1,163. Ragh. 1,66. 15,35. H. 559. Râga-Tar. 1,190. 2,151. Bhâg. P. 1,12,18. 9,20,1. 21,21. वंश्यानुचरित 3,7,25. 9,1,4 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 12,7,9. 16. तद्वंश्य *aus dessen Familie stammend* M. 7,202. स्व° MBh. 13,4370. Râga-Tar. 3,331. पर° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,545, Çl. 7. विशाल° Kâm. Nitis. 1,2. शुद्ध° Ragh. 1,69. विशुद्ध° Râga-Tar. 5,335. महा° 337. भूपाल° 6,366. पितृ°, पति°, मातृ° Spr. 4537. अभिषिक्तवंश्या: क्षत्रिया राजन्या: P. 6,2,34, Sch. ब्रह्म° Bhâg. P. 9,20,1. ऐल° MBh. 2, 569. R. 1,35,20. Râga-Tar. 5,127. Accent eines auf वंश्य ausgehenden comp. gaṇa वर्ग्यादि zu P. 6,2,131. *zu derselben Lehrerliste gehörig* P. 2,1,19. — 4) *einem Geschlecht eigenthümlich:* गुणा: Ragh. 18,48. — 5) fehlerhaft für वश्य Kâm. Nitis. 4,65. — Vgl. राज°.

वंसग m. eine Bez. des *Stiers:* वृषा यूथेव वंसग: कृष्टीरियर्ति ṚV. 1, 7,8. शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग: 55,1. 58,4. 5,36,1. तिग्मशृङ्ग 6,16,39. 8,33,2. 10,102,7. 106,5. 144,3. AV. 18,3,36.

1. वक् = वच्. Davon विवक्मि (s. u. वच्), वक्मन्, वक्य.

2. वक् = वञ्च् *rollen, volvi:* वद्वावक्रे रथ्योइ न धेना: ṚV. 7,21,3. वङ्क्, वङ्कते Dhâtup. 4,14 (कौटिल्ये). 21 (गतौ).

वकल m. *die innere Baumrinde, Bast:* वकलमन्तरमा ददे TBr. 3,7, 4,2. यस्य वृक्षस्य प्रसव्या वकला: स यूप्य: *linksläufig* Çâṅkh. Br. 10,2. पर्ण° *Bast des* Palâça (sonst पर्णवल्क) Schol. zu Kâtj. Çr. 305,7. — Vgl. वल्क, वल्कल.

वकमुल्लाण N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,4 v. u.

वकुश m. Bez. *eines best. im Laub der Bäume wohnenden Thieres* (पर्णमृग) Suçr. 1,202,17.

वक्क्, वक्कते (गतौ) Dhâtup. 4,27, v. l.

वक्कलिन् (aus वल्कलिन्) m. N. pr. eines Ṛshi Burn. Intr. 267.

वंक्कस s. वक्कस.

वक्कुल m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 126. Burn. Intr. 391. fg., wo aber die Hdschr. वत्कुल liest. वक्कुल Lot. de la b. l. 2.

वक्तर् (von वच्) nom. ag. AK. 3,1,35 (= वावदूक). H. 346 (= वदावद). Med. t. 53 (= वाग्मिन् und पण्डित). *sprechend, aussagend; Sprecher, Verkünder:* असंत: ṚV. 7,104,8. नकिर्वक्ता न दादिति *Niemand darf sagen, er solle nicht geben,* 8,32,15. 9,75,2. इति ब्रवीति वक्तरी (°रि Padap.) रराण: 10,61,12. AV. 2,1,4. Çat. Br. 14,7,1,26. Taitt. Âr. 7,11. Taitt. Up. 1,1. Kaush. Up. 3,8. Maitrjup. 6,11 (auch अ°). ṚV. Prât. 13,1. M. 11,35. किं करिष्यन्ति वक्तार: श्रोता यत्र न विद्यते Spr. 666. दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् 2014. 3679. Sâh. D. 27. Bhâshâp. 83. दिनु शान्तासु वक्तारो मधुरम् (शकुना:) Suçr. 1,107,15. पुरा किल वेदमधीत्याध्येतारस्त्वरितं वक्तारो भवन्ति so v. a. *Lehrer, Meister* Sarvadarçanas. 137,8. 9. एवं° *so sprechend* Kathâs. 83,31. स्फुट° Spr. 1625. वेदानाम् *Verkünder* MBh. 13,1339. Kathop. 1,22. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 2 v. u. 101,14. Sarvadarçanas. 158,17. 160,3. हितस्य R. 4,29,28. अप्रियस्यापि वचस: Spr. 175. 3283. प्रियम् 2319. धर्मम् Bhâg. P. 6,17,6. उत्तरोत्तर° MBh. 2,139. पथ्यहित° R. 3,44,2. प्रिय° 5,37,2. आशु ग्रन्थार्थवक्ता Spr. 4589. पुराणसंहिता° Verz. d. Oxf. H. 9,*b*,12. तद्वक्तार् M. 12,115. Bhâg. P. 2,9,7. *Redner* so v. a. *ein beredter Mann* MBh. 2, 138. 1908. 3,1811. 15711. R. 3,75,41. Mṛkkh. 137,23. Spr. 954. 2447. Varâh. Bṛh. 17,9. सर्वेषु कार्येषु R. 1,70,16. उत्तरोत्तरयुक्तौ 2,1,3 (°युक्तीनां st. °युक्तौ च ed. Bomb.). विग्रह्य वक्ता *ein guter Kampfredner* Suçr. 1,333,12. — Vgl. अति°, प्रिय°, ब्रह्म°.

वक्तव्य (wie eben) adj. 1) *zu sprechen, zu sagen, zu verkünden* H. an. 3,504 (= वचोऽर्ह). Med. j. 103 (= वचनार्ह). °प्रशंस Nir. 11,31. Çat. Br. 14,7,1,26. Praçnop. 4,8 (*was gesprochen wird*). सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्या: Khând. Up. 2,22,5. तस्मात्सत्यं हि वक्तव्यम् M. 8,83. 104. MBh. 3,2733. R. Gorr. 1,74,4. त्वयि 3,35,26. 5,56,5. Çâk. 67,5. Varâh. Bṛh. S. 1,8. 5,91. 24,4. 54,52. 65. 79. एषाम् Kathâs. 32,57. 40, 7. 121,177 (अ°). Râga-Tar. 4,223. Bhâg. P. 3,6,12. Mârk. P. 23,84. 69, 50. तस्य दोषो न वक्तव्य: so v. a. *vorzuwerfen* Spr. 1854, v. l. तत्संज्ञं वक्तव्यं वर्षम् *zu benennen* Varâh. Bṛh. S. 8,1. वाचं सवक्तव्याम् *die Rede mit dem was gesagt wird* Bhâg. P. 7,12,26. चरित्रे वक्तुवक्तव्ये *worüber*

sich viel sagen lässt Râǵa-Tar. 5,67. impers.: सर्वैरपि च वक्तव्यं न प्राज्ञायत पाण्डवाः MBh. 4,87. M. 8,13. R. ed. Bomb. 3,40,9. Sâh. D. 2,8. यामीति वक्तव्ये कः परिश्रमः *welche Mühe ist es zu sagen «ich gehe»?* Hariv. 4813. साधु भूपेति वक्तव्ये – साध्वत्तिन्निति वदन् *anstatt* साधु भूप *zu sagen* Râǵa-Tar. 5,17. नायं वक्तव्यस्य कालः *Zeit zu reden* Pańkat. 194,23. — 2) *anzureden, zu dem man sprechen soll* (mit acc. der Sache): वक्तव्याश्चापि राजानः सर्वे – युधिष्ठिरस्याश्वमेधो भवद्भिरनुभूयताम् MBh. 14,2217. Hariv. 11301. R. 2,27,10. 52,33 (49,34 Gorr.). 58,19. 3,44,9. Mṛkkh. 55,12. Çâk. 55,10. Kathâs. 12,96. Pańkat. 193,14. अत्यल्पमप्यप्रियं वाक्यं न वक्तव्यो R. Gorr. 2,23,14. 13. 5,56,5. माता च मम कौसल्या कुशलं चाभिवादनम्। अप्रमादं च वक्तव्या R. ed. Schl. 2,58,14. Varâh. Bṛh. S. 44,7. Bhaṭṭ. 7,19. — 3) *tadelnswerth, übelberüchtigt;* = गर्ह्य, कुत्सित AK. 3,4,24,161. H. an. (lies गर्ह्य st. गृह्य). Med. M. 8, 66. आ केशाग्रान्नखाग्राच्च वक्तव्यो (so die ed. Bomb.) वक्तुमिच्छसि MBh. 7,9153. n. *Tadel, Vorwurf:* एको मां दहति ज्ञानापवादवह्निर्वक्तव्यं यदिह मया कृता प्रियेति Mṛkkh. 167,12. — 4) (*verantwortlich, Rede und Antwort zu geben verpflichtet*) *abhängig, in der Gewalt von — stehend;* = अधीन AK. st. dessen fälschlich हीन H. an. Med. कामवक्तव्यहृदया R. 3,2,25. — Vgl. पुनर्वक्तव्य, वचनीय, वाच्य.

वक्तव्यता f. nom. abstr. 1) von वक्तव्य 3): वक्तव्यतां या, गम् oder व्रज् *dem Tadel anheimfallen, sich einen Tadel zuziehen* MBh. 10,86. Hariv. 4204. R. 7,43,6. so v. a. *Verantwortlichkeit:* दिवा वक्तव्यता पाले रात्रौ स्वामिनि तद्गृहे। योगक्षेमे ऽन्यथा चेत्तु पालो वक्तव्यतामियात्॥ M. 8,230. — 2) von वक्तव्य 4): तस्य वक्तव्यतां याति *gerathen in seine Gewalt* MBh. 12,13877. साहं त्वद्दर्शनाद्विप्र कामवक्तव्यतां गता Mârk. P. 61,47. कामवक्तव्यतां नीतः 64,7.

वक्तव्यत्व n. nom. abstr. von वक्तव्य 1): अवश्य° Nilak. zu MBh. 1,7308.

वक्ति (von वच्) f. *Rede* Bṛh. Âr. Up. 4,3,26 (वचम् Çat. Br.). — Vgl. उक्ति.

वक्तु nach Sâj. *harte Worte führend* Ṛv. 7,31,5; s. jedoch u. वच् infin.

वक्तृक am Ende eines adj. comp. von वक्तृ *Sprecher:* तद्वक्तृको वेदवाक्यार्थोपदेशः Comm. zu Kap. 1,99.

वक्तृता (von वक्तृ) f. *Rednerei, Gewandheit in der Rede:* विना सत्यं च वक्तृता Çatr. 10,189.

वक्त्र (von वच्) Uṇâdis. 4,166. n. Siddh. K. 249,b,3. m. (nicht zu belegen) und n. 250,b,6. वक्त्र am Ende von Ortsnamen P. 4,2,126. 1) *Mund, Maul, Gesicht, Schnauze, Schnabel* AK. 2,6,2,40. H. 572. an. 2, 452. Med. r. 84. Halâj. 2,363. Çikshâ in Ind. St. 4,107. M. 8,272. MBh. 1,5932. 12,4273. R. 4,9,82. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,27. Suçr. 1,116, 14. 120,19. 155,7. 187,10. नेत्रवक्त्रविकारैः Spr. 310. वक्त्रामृत 775. कस्तोयमं विना वक्त्रे प्रविशेन्न कथं च न (भोजनम्) 1745. Varâh. Bṛh. S. 51,32. 58,9. 77,35. fg. Kathâs. 18,165. Pańkat. 264,1. चन्द्राभ° MBh. 3,2860. 3000. Megh. 51. Spr. 2518. 2696. fg. Varâh. Bṛh. S. 68,56. 103. 69,24. Dhûrtas. 66,5. 6. 8. 72,11. मृगपत्ति° Suçr. 1,96,15. गज° MBh. 3,12247. Varâh. Bṛh. S. 93,2. 13. 94,13. कराल° (उलूक) Pańkat. 158, 22. वक्त्रं कृ *den Mund —, das Maul aufsperren* R. 5,56,17. fg. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 4,185. R. 5,17,28. Ṛt. 3,1. Kathâs. 28,81. 45,334. 124,98. Kaurap. 28. Verz. d. Oxf. H. 146,a, No. 310. — 2) *Spitze* (eines Pfeils): तीक्ष्ण° MBh. 7,4963. — 3) *Schnauze eines Gefässes;* s. अ°. — 4) *Anfang:* कलि° Gaṇitâdhj. Pratjabdaç. 11. — 5) *the initial quantity of the progression; the first term* Colebr. Alg. 52. — 6) = श्लोक *ein aus* 4 X 8 *Silben bestehendes Metrum* H. an. Colebr. Misc. Ess. II, 118. 157. Ind. St. 8,313. 331. fgg. Kâvjâd. 1,26. Sâh. D. 567. Pratâpar. 19,a,7. — 7) *eine Art Zeug* (वस्त्रभेद) Med. — 8) *die Wurzel von Tabernaemontana coronaria R. Br.* (तगरमूल) Çabdam. im ÇKDr. — 9) fehlerhaft für वक्र in अग्र° Suçr. 2,56,4. — Vgl. अ°, अन्वत्तरसंधि° (unter अन्वत्तरम्), अप°, अपर°, दधि°, दत्त°, दश°, पद्म°, पार्श्व°, पूति° पृथु°, मत्स्य°, यव°, सूची° und मुख, वदन.

वक्त्रक am Ende eines adj. comp. = वक्त्र 1) Hariv. 14302. — Vgl. अप°.

वक्त्रखुर m. *Zahn* 2,6,29.

वक्त्रज m. *ein Brahmane* (*aus* Brahman's *Munde entstanden*) Trik. 2,7,2.

वक्त्रताल n. = वक्त्रनाल Çabdar. bei Wilson.

वक्त्रतुण्ड m. Bez. Gaṇeça's Liñga-P. bei Muir, ST. III, 161. Wilson, Sel. Works I, 267. fehlerhaft für वक्रतुण्ड.

वक्त्रदंष्ट्र s. वक्रदंष्ट्र.

वक्त्रदल n. *Gaumen* H. ç. 122 (falschlich वक्र°).

वक्त्रपट *Schleier;* am Ende eines adj. comp. f. आ Râǵa-Tar. 6,315.

वक्त्रपट्ट H. 1251 zur Erklärung von तलिका, तलसारक.

वक्त्रभेदिन् adj. *bitter* (*den Mund stechend*) H. 1389.

वक्त्रयोधिन् adj. *mit dem Maule kämpfend;* m. N. pr. eines Asura Hariv. 2652. VP. 148.

वक्त्ररुह *Schnauzhaar,* beim Elephanten Varâh. Bṛh. S. 67,10.

वक्त्ररोग m. *eine Krankheit des Mundes;* वक्त्ररोगिन् adj. *damit behaftet* Varâh. Bṛh. 20,1.

वक्त्रवास (वक्त्र + वास *Wohlgeruch*) m. *Orange* Râǵan. im ÇKDr.

वक्त्रशोधन 1) adj. *den Mund reinigend.* — 2) n. *die Frucht der Averrhoa Carambola Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

वक्त्रशोधिन् 1) adj. *den Mund reinigend.* — 2) m. *Citronenbaum* (n. *Citrone*) Gatâdh. im ÇKDr.

वक्त्रासव m. *Speichel* Trik. 2,6,18.

वक्त्व adj. s. v. a. वक्तव्य *auszusprechen, zu sagen* Ṛv. 3,26,9. 6,9,2. स वक्त्वान्यृतुथा वदाति 3.

वक्मन् (von 1. वक्) n. nach Sâj. so v. a. मार्गभूत Ṛv. 1,132,2.

वक्मराजसत्य adj. nach Sâj. *treu den Ordnern der heiligen Reden* d. h. *den* Stotar Ṛv. 6,51,10.

वक्य (von 1. वक्) adj. *verkündenswerth, preiswürdig:* प्र तं विविक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति Ṛv. 1,167,6.

वक्र (von 2. वक्) Uṇâdis. 2,13. gaṇa न्यङ्क्वादि zu P. 7,3,53. n. Siddh. K. 249,b,1. 1) adj. (f. आ) *a*) *gebogen, krumm, schief* (Gegens. ऋजु) AK. 3,2,21. Trik. 3,3,364. H. 1456. an. 2,452. Med. r. 66. Halâj. 4,11. धन्वन् AV. 4,6,4. 7,56,4. वयसः पत्नौ Çat. Br. 10,2,1,7. 10. 11,7,3,2. Kâtj. Çr. 17,1,16. 7,24. MBh. 3,10608. पत्त्र Suçr. 1,25,21. 27,15. धनुर्वक्र 94,1. समिध् Gṛhjasañgr. 1,29. fg. नाडी त्रिर्वक्रा Suçr. 2,182,1. केतकी Spr. 5046. शिखा Varâh. Bṛh. S. 11,12. 33,16. 47,24. वंश Verz. d. Oxf. H. 155,b,22. दारु AK. 2,2,14. H. 1009. दारु च वक्रसंस्थम् Halâj. 2,148. बालेन्दु° Kumâras. 3,29. Prab. 80,9. नासा Verz. d. Oxf. H. 51,

b,22. अनामिका मध्यमा च 202,b,8. धुवौ बालशशाङ्कवक्रे Varâh. Brh. S. 70,8. Spr. 3424. Çâk. 9. नख Ragh. 12,41. नितम्ब Vjutp. 206. von Haaren so v. a. *gelockt* Bhâg. P. 1,19,27. 4,21,17. 5,2,14. °गति adj. *sich schlängelnd* Spr. 342. 3659. Ind. St. 8,368. °गामिन् dass. Hariv. 5774. वक्रं व्रजति Vop. 20,4. °प्लुता मृगाः Kathâs. 27,156. पन्थाः Megh. 28. अग्र° *vorn gebogen*, Bez. eines Blasenräumers Wise 370. Suçr. 2,36,4 (°वक्त्र gedr.). अ° Âçv. Çr. 3,1,17. Varâh. Brh. S. 68, 51. अति° Verz. d. Oxf. H. 155, b, 20. वक्र *krumm*, *schief* und zugleich *hinterlistig* Spr. 4962. fg. Kathâs. 40,48. — b) *rückläufig*, *in rückläufiger Bewegung begriffen*; von Planeten: गति Bhâg. P. 3, 17, 14. Sûrjas. 2, 12. °गते (v. l. °गतौ) ग्रहे 8,15. वक्रातिवक्रगमनादङ्गारक इव ग्रहः MBh. 8,711. °ग Varâh. Brh. 2, 20. Ganitâdhj. Udaj. 5. 6. वक्रानुवक्रगा ग्रहाः Suçr. 1, 118, 21. मघास्वङ्गारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पतिः MBh. 6,81. Ind. St. 10,205. fgg. — c) *prosodisch lang* (wegen der Gestalt des *Längezeichens*) Ind. St. 8, 215. — d) *krumm* so v. a. *unredlich*, *hinterlistig*, *zweideutig*: °मति MBh. 3,8442. उभे प्रज्ञे वेदितव्ये ऋज्वी वक्रा च 12,3686. °धी f. und adj. Bhâg. P. 4,3,18. fg. °वाक्य Çiç. 10,12 (vgl. Sâh. D. 66,1). वचस् Spr. 730 (vgl. Th. III, S. 409). अपध्वष्टवक्रया। गिरा Kathâs. 17,141. 50,163. संदेश 47,6. Verz. d. Oxf. H. 142,a,10. अवक्रचेतम् Kathop. 5,1. अवक्रग *ehrlich verfahrend* Kathâs. 27,156. वक्र *hinterlistig*, *verschlagen*, von Personen Spr. 2669. Sâh. D. 215, 16. fg. (= वामा). Spr. 4962. fg. Kathâs. 40,48; an den drei letzten Stellen zugleich in der Bed. a). वक्र = क्रूर Trik. H. an. Med. — 2) m. a) *der Planet Mars* H. 116. H. an. Halâj. 1,46. Varâh. Brh. S. 104,4. Brh. 2,2. 4. 4,13. 9,3. 11,2 u. s. w. Ind. St. 2,261. Horâç. in Z. d. d. m. G. 4,318. *der Planet Saturn* Trik. Med. — b) N. pr. eines Fürsten der Karûsha MBh. 2,575. — c) N. pr. eines Râkshasa R. 5,12,13. — d) pl. N. pr. eines Volkes (v. l. für चक्र) VP. 188, N. 42. — e) = रुद्र Dhar. im ÇKDr. — f) = त्रिपुरासुर ebend. — g) = पर्पट Râgan. im ÇKDr. — 3) f. आ a) Bez. *eines best. musikalischen Instruments* Lâtj. 4,2,1. — b) (sc. गति) Bez. *eines best. Stadiums in der Bahn des Mercurs* Varâh. Brh. S. 7,15. fg. Ind. St. 10,205. fgg. — 4) n. a) *Krümmung eines Flusses* AK. 1,2,3,7. Trik. H. 1088. H. an. Med. Çvetâçv. Up. 1,5 (nach dem Comm. adj.); vgl. चक्र 12). — b) Bez. *eines partiellen Beinbruchs* Wise 190. Suçr. 1,300, 19. 301, 10. — c) *die rückläufige Bewegung eines Planeten*: कृत्वा चाङ्गारको वक्रं ज्येष्ठायाम् MBh. 5,4841. 6,85 (wo श्रवणे zu lesen ist). Hariv. 4237. 9875. Varâh. Brh. S. 1, 10. 2, S. 6, Z. 17. 6,1. 4. 7. 15, 31. 47,13. 97,1. Brh. 7,11. Golâdhj. 5,40. Ganitâdhj. Spashtâdhj. 44. Ind. St. 2,284. Bhâg. P. 5,22,14. — d) *a species of the* Anushtubh *metre* Wilson; fehlerhaft für वक्त्र. — Vgl. अष्टा°, कवाट°, कु°, त्रिवक्रा, दन्तवक्र (unter दन्तवक्त्र), परि°, रोधो°, वाक्य.

वक्रकण्ट m. *Judendorn* Râgan. im ÇKDr.

वक्रकण्टक m. *Acacia Catechu Willd.* Râgan. im ÇKDr.

वक्रखड्ग m. *ein krummer Säbel* Wilson nach Çabdar., ÇKDr. angeblich nach Râgan.

वक्रग्रीव m. *Kameel* (*Krummhals*) Trik. 2,9,23.

वक्रचञ्चु m. *Papagei* (*Krummschnabel*) Çabdar. im ÇKDr.

वक्रता f. nom. abstr. 1) von वक्र 1) a): नासिका वक्रतामेति Mârk. P. 43,25. भ्रूचापवल्लीं सुमुखी यावन्नयति वक्रताम् Spr. 2082. — 2) von वक्र 1) b) Sûrjas. 2,54. Ganitâdhj. Spashtâdhj. 41. — 3) *das Schiefgehen* so v. a. *Schlechtgehen*, *Misslingen*: लग्नेशो यदि वक्री स्यात्पुंसः कार्येषु वक्रता Gjotistattva im ÇKDr. unter वक्रिन्.

वक्रताल 1) n. v. l. für वक्रनाल Trik. 1,1,123 nach ÇKDr. — 2) f. ई dass. Çabdar. im ÇKDr.

वक्रतु m. N. pr. einer Gottheit Mârk. P. 80,6.

वक्रतुण्ड 1) adj. *schiefmäulig* Bhâg. P. 6,1,28. — 2) m. a) *Papagei* (*Krummschnabel*) Çabdar. im ÇKDr. — b) Bein. Ganeça's (wegen seines Elephantenrüssels so benannt) Taitt. Âr. 10,1,5. Verz. d. Oxf. H. 79,a, No. 135. °स्तोत्र 299,b,17. वक्रतुण्डाष्टक 132,b, No. 243. Verz. d. Pet. H. No. 63; vgl. वक्रतुण्ड und वक्त्रतुण्ड.

वक्रत्व (von वक्र) n. *Krummheit* und *Falschheit* Spr. 307. *Falschheit* und *Zweideutigkeit* Kathâs. 92,12.

वक्रदंष्ट्र m. *Eber* H. ç. 184 (fälschlich वक्त्र°).

वक्रदन्त m. Lesart der ed. Bomb. MBh. 2,577 st. दन्तवक्र der ed. Calc.

वक्रदल s. वक्त्रदल.

वक्रनक्र m. 1) *Papagei*. — 2) *ein boshafter Mensch* (खल, पिशुन) H. an. 4,278. Med. r. 287.

वक्रनाल n. *Blasinstrument* Trik. 1,1,123. — Vgl. वक्त्रनाल und वक्रताल.

वक्रनास 1) adj. *eine gebogene Nase —, einen krummen Schnabel habend* R. 3,7,6. Spr. 2698. — 2) m. N. pr. eines Rathgebers eines Eulenkönigs Kathâs. 62,89. fgg. Pankat. 173,21.

वक्रनासिक m. *Eule* (*Krummschnabel*) Trik. 2,5,14.

वक्रपाद् adj. *krummbeinig* Kathâs. 123,164.

वक्रपुच्छ m. *Hund* (*Krummschwanz*) Trik. 2,10,6. — Vgl. वक्रलाङ्गूल, वक्रवालधि.

वक्रपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 107,136.

वक्रपुष्प m. *eine best. Pflanze*, = बक Çabdar. im ÇKDr. *Butea frondosa* (पलाश) Râgan. im ÇKDr.

वक्रभणित n. = वक्रोक्ति Trik. 3,2,7. — Vgl. वक्रोक्ति.

वक्रभाव m. *das Gebogensein*, *Krummheit*, *das Sichschlängeln*: तरुणीगति° Ind. St. 8,368. *Schiefheit* und zugleich *hinterlistiges Wesen*, *Hinterlist* Spr. 5209.

वक्रम m. = अवक्रम *Flucht* Çabdar. im ÇKDr.

वक्रय m. = अ° *Preis* H. 868.

वक्रलाङ्गूल m. *Hund* Râgan. im ÇKDr. — Vgl. वक्रपुच्छ, वक्रवालधि.

वक्रवक्त्र m. *Eber* Çabdar. im ÇKDr.

वक्रवालधि m. *Hund* H. 1278, v. l. — Vgl. चक्रवालधि und वक्रपुच्छ.

वक्रशल्या f. *ein best. Strauch*, = कुटुम्बिनी Râgan. im ÇKDr.

वक्रशृङ्ग adj. (f. ई) *gebogene Hörner habend* Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,68.

वक्राग्र n. *eine best. Pflanze*, = कवाटवक्र Ratnam. im ÇKDr.

1. वक्राङ्ग n. *ein gekrümmtes Glied*: वेगगम्भीरवक्राङ्गी (नदी) Hariv. 5777. Râga-Tar. 6,128 wohl fehlerhaft für वक्राङ्घ्रि, wie die ed. Calc. liest.

2. वक्राङ्ग m. 1) *Gans* H. 1325; vgl. चक्राङ्ग. — 2) *Schlange* v. l. für व्याङ्ग ÇKDr. u. d. letzten W.

वक्राङ्घ्रि m. *Krummfuss:* तं °संग्रामे (so ist wohl zu lesen) हतम् *in einem Kampfe, bei dem man ihm ein Bein stellte, in einem hinterlistigen Kampfe* Rāǵa-Tar. ed. Calc. 6,128. वक्राङ्घ्रिसंग्रामम् Troyer.

वक्रातप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,352 (VP. 188). चक्राति ed. Bomb.

वक्रि adj. *unwahr redend* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वक्रित (von वक्र) adj. 1) *gekrümmt, gebogen:* ईषद्वक्रितकंधर Spr. 1235. — 2) *eine rückläufige Bewegung angetreten habend, in rückläufiger Bewegung seiend* (von einem Planeten) Varāh. Bṛh. S. 6,2. Ind. St. 2,284, N. 1.

वक्रिन् (wie eben) 1) adj. *in rückläufiger Bewegung seiend* (von Planeten) Sūrjas. 2,54. Ind. St. 2,284, N. 1. Ǵjotistattva im ÇKDr. — 2) m. *ein* Buddha Çabdar. im ÇKDr.

वक्रिम (wie eben) adj. *gekrümmt, gebogen:* ईषद्वक्रिमकंधर Spr. 1235, v. l. wohl fehlerhaft.

वक्रिमन् (wie eben) m. gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. 1) *Krummheit, Schiefheit, das Sichschlängeln:* तरुणीगति° Ind. St. 8,368. — 2) *Zweideutigkeit* Sāh. D. 40,11. गिराम् Gīt. 3,15.

वक्रीकर् (वक्र + 1. कर्) *biegen, krümmen:* °कृत *gebogen* Comm. zu Golādhj. 11,53.

वक्रीभू (वक्र + 1. भू) 1) *krumm —, schief werden* Suçr. 1,255,19. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,23. — 2) *die rückläufige Bewegung antreten* (von Planeten) Nīlak. zu MBh. 5,4841.

वक्रेतर (वक्र + इ°) adj. *gerade:* वक्रेतराग्रैरलकैः so v. a. *nicht gelockt* Ragh. 16,66.

वक्रोक्ति (वक्र + उक्ति) f. 1) *indirecte Ausdrucksweise* Kull. zu M. 3,133. Schol. zu Kap. 1,19. — 2) *ein zweideutiger Ausspruch, Wortspiel, Calembourg, Witzwort* Kāvjapr. 125,14. fgg. Sāh. D. 103. 641. 4,20. Kuvalaj. 181,*a*. Pratāpar. 87,*b*,2. Spr. 3235. Kathās. 55,130. 92,12. 124,135. Rāghavapāṇḍ. 1,41. Pańkat. 44,19. fg.

वक्रोक्तिजीवित n. Titel eines Werkes: °कार Sāh. D. 4,19. fg. Verz. d. Oxf. H. 210,*a*, No. 495.

वक्रोलक 1) m. N. pr. eines Dorfes Kathās. 76,16. — 2) n. N. pr. einer Stadt Kathās. 93,3. 25. 30. 108,23.

वक्रोष्ठिका (वक्र + ओष्ठ) f. *ein Lachen mit verzogenen Lippen* H. 297 (falschlich वक्रोष्टिका).

वॅक्व (von 2. वक्) adj. *sich drehend, rollend, volubilis; sich tummelnd:* नभन्वः ṚV. 4,19,7. ऊर्मिर्न निम्नैर्द्रवयन्त वक्वाः 10,148,5.

वॅक्वन् adj. dass.: स्वार ṚV. 1,141,7. vom Soma: असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ 9,91,1. एनी त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्वरी बर्हिराशाते 1,144,6. वेपी वक्वरी गीः 6,22,5.

वक्वरी s. u. वक्वन्.

वक्स m. *ein best. berauschendes Getränk* Suçr. 1,189,15. वक्कस im Rāǵav. des Nārājaṇa. — Vgl. बल्कस.

वक्ष्, वॅक्षति (रोषे, nach Andern संघाते) Dhātup. 17,11. Vgl. 2. उक्ष्. Im Veda finden sich davon nur die Perfectformen ववक्ष, ववक्षिथ, ववक्षुस्, ववक्षे, ववक्षिरे; vgl. zu den u. 2. उक्ष् angeführten Stellen noch ṚV. 1,64,3. 2,22,3. 24,11. 34,4. 3,7,6. 4,7,11. 8,12,4. fgg. 13,7. 77,5. 10,115,1. Ferner caus. *erstarken lassen, wachsen machen:* अहं नव आधतो नवतिं च वक्षयम् ṚV. 10,49,8.

वॅक्षण (von वक्ष्) 1) adj. (f. ई) etwa *stärkend, erfrischend:* सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ṚV. 10,64,9. — 2) n. etwa *Stärkung, Erfrischung* (वाक्कानि स्तोत्राणि Sāj.): सुते सोमे सुतपाः शंतमानि राण्ड्या क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः ṚV. 6,23,6. — Vgl. वीर°.

वॅक्षणा (vielleicht von वह्) f. pl. *der hohle Leib, Bauch; die Weichen:* यज्ञेन वक्षणा आ पृणाधम् ṚV. 1,162,5. 5,42,13. गर्भं माता सुधितं वक्षणासु बिभर्ति 10,27,16. AV. 7,114,1. 9,4,1. 8,16. सा वः प्रजां जनयद्वक्षणाभ्यः 14,2,14. Kauç. 36. der Kuh ṚV. 3,30,14. 6,72,4. 8,1,17. 10,49,4. der Berge 1,32,1. des Himmels 134,4. *Bett der Flüsse* (daher वक्षणाः unter den नदीनामानि Naigh. 1,13) 3,33,12; hierher nach Sāj. auch 10,28,8. — Dunkel ist नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा (= वहनेन Sāj.) ṚV. 5,52,15. — वक्षण n. = 2. वक्षस् Çabdar. im ÇKDr. Vgl. लोमशवक्षण, 2. वक्षस् und वङ्क्षण.

वॅक्षणि (von वक्ष्) adj. etwa *stärkend:* इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः ṚV. 8,52,4.

वक्षणेस्थाः adj. ṚV. 5,19,5 nach Sāj. so v. a. वक्षसि स्थितः.

वॅक्षथ (von वक्ष्) m. *das Erstarken, Kräftigung, Wachsthum, Zunahme:* अनूनेन बृहता वक्षथेन ṚV. 4,5,1. सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषाम् 7,33,8. 10,99,12. चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथः 115,1.

1. वॅक्षस् (von वक्ष्) Uṇādis. 4,220. 1) n. vielleicht *Stärke:* अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वणः *ich* Indra *bin Schutzwehr und Kraft des* Ath. ṚV. 10,48,2. — 2) m. *Ochs* Uǵǵval.

2. वॅक्षस् (wie वक्षणा) Uṇādis. 4,219. n. (auch pl.) *der obere Theil des Leibes, Brust* Nir. 4,16. AK. 2,6,2,29. H. 602. Halāj. 2,372. 368. 398. 1,27. वक्षस्सु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे ṚV. 1,64,4. 166,10. 5,54,11. 7,56,13. अपोर्णुते वक्षः 1,92,4. आविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती 123,10. 124,4. 6,64,2. des Opferthiers Ait. Br. 2,6. 7,1. Çat. Br. 3,8,3,17. 25. des Pferdes MBh. 3,2787. — R. 2,96,24. 3,34,30. प्रभिन्नवक्षोरुकटीशिरोधर mit unregelmässiger Contraction 5,42,20. Suçr. 1,49,2. 86,15. 100,13. 254,8. Ragh. 3,61. 12,77. Çāk. 161. Varāh. Bṛh. S. 53,100. 58,116. Bhāg. P. 3,21,11. वक्षःस्थशुक्लावर्णदक्षिणावर्तलोमावली Weber, Kṛshṇaǵ. 272. वक्षःस्थविपदुःसह Kathās. 19,47. Am Ende eines adj. comp.: पीन° R. 1,1,13. विपुल° 2,30,2. पृथु° 52,1. पृथुवक्षाश्चितनेत्रः d. i. पृथुवक्षा अश्चित° MBh. 1,2506. पृथुपीन° Varāh. Bṛh. S. 69,14. विशाल° R. 4,2,11. कपाट° Ragh. 3,34. विन्ध्यतटव्यूढ° Rāǵa-Tar. 3,240. श्रीवत्साङ्कित° Varāh. Bṛh. S. 58,31. श्रीवत्स° dass. MBh. 3,13004. Weber, Kṛshṇaǵ. 274. 289. लक्ष्मीकौस्तुभ° Verz. d. Oxf. H. 220,*a*, No. 326. अन्नवान्समवक्षाः स्यात्पीनैर्वक्षोभिरूर्जितः। वक्षोभिर्विषमैर्निःस्वः Gāruḍa-P. 66 im ÇKDr. वक्षःस्थल Hariv. 15673. R. 1,45,43. Spr. 3167. Prab. 116,2. Bhāg. P. 2,7,25. Pańkar. 1,5,15. 2,4,5. Pańkat. 239,4. 5. — Vgl. नि°, महा°.

वॅक्षी f. nach Sāj. *Flamme* (von वक्ष्): ता अस्य सन्धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः ṚV. 5,19,5.

वक्षु *der Oxus:* वक्ष्वाश्रिताः Varāh. Bṛh. S. 32,32, v. l. Ind. St. 10,212. Hiouen-thsang 1,23. 2,195. 283. Vie de Hiouen-thsang 61. 272. — Vgl. वङ्क्षु.

वक्षोग्रीव m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,252.

वक्षोज m. *die weibliche Brust* H. 603, Sch. Çabdar. im ÇKDr. du. Spr. 2696. Sâh. D. 40,4. 307,7. — Vgl. उरोज, उरसिज, वक्षोरुह्.

वक्षोमण्डलिन् m. (sc. हस्त) Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanz* Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,28.

वक्षोरुह् m. = वक्षोज Dhûrtas. 66,8.

वक्षोरुह m. desgl. Trik. 2,6,26. Halâj. 2,371.

वक्ष्यमाणत्व n. nom. abstr. von वक्ष्यमाण partic. fut. pass. von वच् P. 1,2,48, Sch.

वख्, वँखति (गतौ) Dhâtup. 5,16. — Vgl. वङ्ख्.

वगला f. = वगलामुखी ÇKDr. nach einem Tantra.

वगलामुखी f. N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 90,*a*, 20. 23. 28. 94,*a*,1. 2. *b*,1. 96,*a*,13. 15. *b*,10. 99,*b*,29. 30 (वगुला°).

वगाह् m. = अवगाह Vop. 3,171.

वग्नु (von वच्) Unâdis. 3,33. m. *Ton, Ruf, Zuruf* Naigh. 1,11. अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ṚV. 1,84, 3. TBr. 3, 7, 9, 1. der Frösche ṚV. 7,103,2. 9,14,6. 30,2. इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ 97,13. 10,3,4. ग्रावा यत्ते वदति वग्नुना सुमत् 32,3. der Würfel TBr. 3,7,12,3. SV. II, 4,2,1,2. adj. = वाचाल Uggval.

वग्वनु adj. etwa *schwatzhaft* ṚV. 10,32,2.

वग्वनु m. *Ton, Geräusch, Ruf* ṚV. 9,3,5.

वँघा f. *ein best. schädliches Thier* AV. 9,2,22. °पति 6,50,3.

वङ्क् s. 2. वक्.

वङ्क (von वञ्च्): वङ्कः पर्याणभागे ना नदीपात्रे च भङ्गुरे Med. k 33. = नदीवक्र (vgl. नदीवङ्क) Bhar. zu AK. nach ÇKDr. वङ्का f. = पर्याणस्याग्रभागः Trik. 2,8,47. — Vgl. कपोतवङ्का.

वङ्कटक m. N. pr. eines Berges Kathâs. 48,49.

वङ्कर m. = वङ्क *Biegung eines Flusses* Çabdam. im ÇKDr. u. नदीवङ्क.

वङ्कसेन m. *ein best. Baum*, = वक Trik. 2,4,29 (वङ्गसेन ÇKDr. nach ders. Aut.). Med. t. 85. n. 15. — Vgl. वङ्गसेन.

वङ्कालकाचार्य m. N. pr. eines Astronomen (der in Prâkrit schrieb) Utpala zu Varâh. Bṛh. 13,1.

वङ्काला f. N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 3,480.

वङ्किणी f. *eine best. Pflanze*, = कोलनासिका Hâr. 223.

वङ्किल m. *Dorn* Trik. 2,4,5.

वङ्कु (von वञ्च्) adj. *sich tummelnd* (gewöhnlich durch वक्रगामिन् erklärt): इन्द्रो वङ्कू वङ्कुतराधि तिष्ठति ṚV. 1,51,11. Rudra 114,4. यथा वणिग्वङ्कुरापा (nach Sâj. = वनगामिन्, पुरीषम् 5,45,6. वङ्कू वातस्य पर्णिनी 8,1,11.

वङ्क्षु MBh. 2,1846 fehlerhafte Lesart für वङ्क्षु; die ed. Bomb. liest बाल्हीचीनसमुद्भवम् st. वङ्कीतीरनिवासिनः.

वङ्क्य (von वञ्च्) adj. *biegsam*: काष्ठ P. 7,3,63, Sch. (angeblich = कुटिल). Vop. 26,8.

वँङ्क्रि (wie eben) Unâdis. 4,66. m. f. 1) *Rippe* (*gebogen*) H. 627. Comm. zu Uṇ. 4,67. vierunddreissig beim Ross ṚV. 1,162,18. sechsundzwanzig beim Rind Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 13,5,1,18. Çâṅkh. Çr. 5,17,6. 16,3,24. वङ्क्री Schol. वामपार्श्ववङ्क्रिषु Bhâg. P. 5,23,6. — 2) = गृहदारु *ein rippenförmiger Balken am Hause, Rippe eines Daches* u. s. w. — 3) *ein best. musikalisches Instrument* Uggval.

वङ्क्षण m. *Leisten, Weiche* AK. 2,6,2,24. H. 613. Halâj. 2,368. Jâgn. 3,97. Suçr. 1,15,20. 66,15. 100,13. चतुर्दशास्थ्नां संघातः। तेषां त्रयो गुल्फजानुवङ्क्षणेषु 338,19. °संधि 290,7. 2,112,19. 212,6 (Çârṅg. Saṃh. 3, 5,23). 463,5. 513,15. Varâh. Bṛh. S. 61,16 (f. आ; vgl. jedoch v. l.). 18. — Vgl. वक्षण.

वङ्क्षु *der Oxus* MBh. 2,1840. 13,7648. Bhâg. P. 5,17,7 nach der Lesart im ÇKDr. (die uns zu Gebote stehenden Ausgg. चक्षुः; nach dem Comm. ist चक्षुस् das Thema). Mârk. P. 57,18 (रङ्क्षु gedr.). 59,15. Nach Çabdam. im ÇKDr. ein Zufluss der Gaṅgâ. — Vgl. वक्षु.

वङ्ख्, वँङ्खति (गतौ) Dhâtup. 5,17. — Vgl. वख्.

वङ्खर 1) adj.: वपुः सुकोमलं चारु (= चारु) नातिदीर्घं न वङ्खरम् Pañkar. 1,14,60. — 2) m. N. pr. eines Mannes: °भण्डीरथाः *die Nachkommen des V. und* Bh. gaṇa तिककितवादि zu P. 2,4,68.

वङ्ग्, वँङ्गति (गतौ, खञ्जे Vop.) Dhâtup. 5,39.

वङ्ग 1) m. N. pr. eines Volkes (pl.) und des von ihm bewohnten Gebietes (sg.), *das eigentliche Bengalen* H. 957. an. 2,48. Med. g. 22 (lies वङ्ग st. रङ्ग). LIA. I,143, N. 1. gaṇa गह्यादि zu P. 4,2,138. P. 1,2,51, Schol. Vop. 7, 14. AV. Pariç. in Ind. St. 10,319. Weber, Nax. 2,392. MBh. 1,4220 (sg.). 5,1986. 6,353 (VP. 188). Hariv. 1692. 4967. 6607. 6631. 6650. 9147. 11201. 12831. R. 4,40,25. Ragh. 4,36. Varâh. Bṛh. S. 5,72. fg. 79. 9,10. 10,14. 14,8. 16,1. 17,18. 32,15. Mârk. P. 58,16. Prab. 87,19. Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 158. 217,*b*,19. 238,*b*,28. 352, *b*, 9. Kshitiç. 1,6. 12,8. 25,1. 41,2. 46,7. 56,15. °लिपि Lalit. ed. Calc. 143,17. Der Name des Volkes wird auf einen gleichnamigen Sohn der Sudeshṇâ und des Dîrghatamas (Dîrghatapas) zurückgeführt MBh. 1,4219. fg. Hariv. 1684. fg. VP. 444. Bhâg. P. 9,23,4. — 2) *Baumwolle*, m. H. an., n. Med. — 3) *Solanum Melongena*, m. H. an., n. Trik. 2,4,28. Med. — 4) n. *Zinn* (रङ्ग, त्रपु) AK. 2,9,106. H. 1042. H. an. Med. Halâj. 2,17. *Blei* H. an. Med. — Verz. d. B. H. No. 969. 971. Verz. d. Oxf. H. 320,*b*, No. 760. — Vgl. अधि°, कु°, चीन°, वाङ्ग, वाङ्गक.

वङ्गज n. 1) *Messing* H. 1049. — 2) *Mennig* (सिन्दूर) Ratnam. im ÇKDr.

वङ्गजीवन n. *Silber* H. ç. 160.

वङ्गन m. = वङ्ग 3) Çabdar. im ÇKDr.

वङ्गला f. Bez. einer Râgiṇî Halâj. im ÇKDr. वङ्गुला Wilson nach ders. Aut. — Vgl. वङ्गाली.

वङ्गशुल्बज n. *Messing* ÇKDr. und Wilson nach H. 1049, wo aber zwei Namen: वङ्गज und शुल्बज gemeint sind.

वङ्गसेन m. 1) = वङ्कसेन Med. j. 71. nach ÇKDr. soll auch Trik. 2,4, 29 so gelesen werden, während die gedr. Ausg. वङ्क° hat. — 2) N. pr. eines medicinischen Autors Verz. d. B. H. No. 974. Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,38.

वङ्गसेनक m. = वङ्गसेन 1) Ratnam. im ÇKDr.

वङ्गारि m. *Auripigment* (*ein Feind des Zinns* oder *Bleis*) H. 1059.

वङ्गाल 1) m. N. eines Sohnes des Râga Bhairava Saṃgîtaratn. im ÇKDr. — 2) f. ई N. der Gattin des Râga Bhairava Saṃgîtadâm. und Saṃgîtadarpaṇa im ÇKDr.

वङ्गालिका f. = वङ्गाली Saṃgîtaratnâkara im ÇKDr.

वङ्गिरि m. N. pr. eines Fürsten Bhâg. P. 12,1,30.

वङ्गीय adj. von वङ्ग 1) gaṇa गह्यादि zu P. 4,2,138.

वङ्गुला s. वङ्गला.

वेङ्गृद् m. N. eines Dämons ṚV. 1,53,8.

वङ्ग m. *ein best. Baum* Kauç. 7.

वच्, विवक्ति ved. (Schol. zu P. 2,4,76. 7,4,78), विवक्ति ṚV. 1,167, 7. 3,57,4. 7,67,1. विवक्तन; später वक्ति (परिभाषणे) Dhâtup. 24,55. Vop. 8,91. zu belegen nur der sg. des praes.: वक्ति, वक्षि, वच्मि; Siddh. K. 134,a,11. fg. werden noch वक्तम्, वग्धि, वच्यात् und उच्यात् aufgeführt. perf. उवाच (प्र ववाच ṚV. 1,67,8), उवक्थ, ऊचिम, ऊचुम् P. 6,1,15.17. Vop. 8,124. 9,25. ऊचे Vop. 9,56. ऊचिषे (प्र ववक्ते ṚV. 7, 100,6), ऊचिवंस्*); aor. अवोचत् P. 3,1,52. 7,4,20. Vop. 8,91.125. 9, 56. वोचसि Bhâg. P. 9,14,12. वोचन्ति 3,14,21. प्रवोचत् partic. 4,6,37. वोचाम, वोचेस्, वोचेम u. s. w., वोच, वोचतु, वोचत, अवोचत, अवोचथास्, वोचे, वोचन्त, वोचेय, वोचेमहि; वक्ष्यति Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. वक्ष्यते, अवक्ष्यत् Nir. 5,7. वक्ता (s. वक्तर्); infin. वक्तुम्, वक्तवे ṚV. 7, 31,5. वक्तोस् Çat. Br. 1,5,2,10. प्रवोचे: उक्त्वा, उच्य MBh. 8,4574. pass. उच्यते, उच्याते P. 3,4,96, Sch. अवाचि, उक्त. 1) *sagen, sprechen; nennen; hersagen, ansagen, verkünden:* आस्य जानन्तो नाम चिद्विवक्तन ṚV. 1,156,3. 166,1. सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः 4,33,6. यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते 5, 44,6. पितरं रुद्रं वोचन्त 52,16. 6,55,4. वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णम् 75, 3. 7,82,2. 87,4. मा त्वा वोचन्नराधसं जनासः AV. 5,11,7. 7,83,2. ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहत् *wo lauter Ruf erschallt* ṚV. 10,64,15. 11,6. मन्त्रम् 1,40,6. देवजुष्टिमुच्यते भामिने गीः 77,1. नमः 51,14. ऋतम् 4,5,11. स्तोत्रम् 6,34,5. 7,68,4. 9,97,7. यदुवक्थानृतं जिह्वया AV. 1,10,3. तं हैतम् (उद्गीथम्) — उदरशाण्डिल्यायोक्त्वा Khând. Up. 1,9,3. mit doppeltem acc.: अग्निं महामवोचाम सुवृक्तिम् ṚV. 10,80,7. इति मा भगवानवोचत् *hat mir gesagt* Khând. Up. 1,11,4. ब्रूयादिति वोचेरिति वा Çat. Br. 4,5,8,10. 11,8,4,2. दुर्गे वै हन्तावोचथाः *du hast dich genannt* oder *von dir gesagt* TS. 6,2,4,2.3. अथ नु किमनुशिष्टो ऽवोचथाः *wie konntest du dich für unterrichtet ausgeben?* Khând. Up. 5,3,4. — वैराग्यादिव वक्षि Spr. 3890. वच्मि 3739. वक्ति सामर्षम् 1873. Kathâs. 4,77. Z. d. d. m. G. 14,570,13. वागुवाचाशरीरिणी R. 1,1,81. Vet. in LA. (III) 9,15. परस्परमथोचतुः MBh. 1,7725. इत्यूचे Prab. 56,7. Bhâg. P. 9,14,11. इत्यूचिरे Râga-Tar. 1,166. LA. (III) 90,20. इत्यूचिवान् Kathâs. 18,55. 27,30. अवोचम् R. 4,9,13. Prab. 105,19. मैवं वोचः nach इति चेत् *so sollst du nicht reden* so v. a. *eine solche Behauptung wäre unrichtig* Sarvadarçanas. 7,15. 105,9. 127,7. 164,3. इत्यवोचत Kathâs. 32,26. वक्ष्यामि R. 1,1,9. Çâk. 22,21. वक्ष्ये MBh. 13,1119. R. 1,64,18. किमथ चोच्यते pass. impers. Kathâs. 18,308. अवोचि desgl. Daçak. 10,2. वक्तुम् AK. 3,1,38. वक्तुकाम Suçr. 1,115,20. वक्तुमनस् Pańkat. 77,2. उक्तवत् MBh. 3,2726. Kathâs. 18,272. 349. 40,6. पुनरुवाच *antwortete* Hit. 8,6. — अनुकूलं तथा वच्मि MBh. 3,14025. सत्यं जना वच्मि Spr. 3127. Kathâs. 18,373. वक्ति न स्वेच्छया किंचित् Spr. 410. मास्मत्सकाशे परुषाण्यवोचः MBh. 3,15689. प्रियाणि वक्ति Varâh. Bṛh. S. 78,5. उक्तानृतानि M. 4,145. देशधर्मान् u. s. w. शास्त्रे ऽस्मिन्नुक्तवान्मनुः 1,118. fg. 9,1. MBh. 2,1769. R. 2,30,4. 90,16. Çâk. 59. Râga-Tar. 5,62. बहूनां मतं वक्ष्ये Varâh. Bṛh. S. 9,7. 11,28. 21,5. MBh. 14,1559. R. 1,58,19. Ragh. 1,9. Bhâg. P. 1,7,12. 3,28,1. Pańkat. 37,25. 77,14. उवाच वचः Ragh. 3,25. क एवं वक्ष्यते वाक्यम् R. 5,64.19. अनीतिर्ऋष्यशृङ्गस्य विस्तरेण त्वयोच्यताम् 1,8,29. Hit. 43,14. यो वा अङ्गिरसां सत्रे द्वितीयमहन्नूचिवान् *berichten über* Bhâg. P. 9,3,1. कथां वक्तुं प्रचक्रमे Kathâs. 21,53. अ: पुष्ययोगं नियतं वक्ष्यते *verkünden* R. Gorr. 2,3,21. ऐन्द्र्यां दिशि शालायां विरुवन्नृपसंश्रितागमं वक्ति (ein Vogel) Varâh. Bṛh. S. 87,1. न तु वक्तुं समर्थो ऽहं स्वयमेवात्मनो गुणान् R. 4,7,5. तासां त्वं भारत नोत शक्यम् — वक्तुम् *beschreiben, in Worte fassen* MBh. 5,7207. वच्म्यत्र तूलिकम् *erzählen von* Kathâs. 61,28. वक्ति न च प्रश्नमेकमपि पृष्टः *beantworten* Varâh. Bṛh. S. 2,1. संयोगादिर्द्विरुच्यते *wird zwei Mal ausgesprochen* d. i. *verdoppelt* VS. Prât. 4,97. पुनरुच्यते *wird wiederholt* Kull. zu M. 4,32. pass. *genannt werden, heissen, gelten für:* एतद्द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते M. 1,71.77.79. 86. Bhag. 2,25. P. 4,2,10, Sch. वात्ताशीत्युच्यते बुधैः M. 3,109. MBh. 3, 16670. Çâk. 67,23. P. 6,2,66, Sch. statt des nom. auch der loc.: नेत्रे वारमुच्यते Trik. 2,9,2. *gelten:* एषामन्यतमाभावे द्विव्यान्यतममुच्यते Jâgń. 2,22. — *erzählen von*, mit abl. st. acc.: दुहितुः शैलराजस्य ज्येष्ठाया वक्तुमर्हसि R. 1,37,2. — हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः *sagen zu* M. 11,204. धर्मस्य परमं गुह्यं ममेदं सर्वमुक्तवान् *hat mir verkündet* 12, 117. 1,2. यानि यानि च कर्माणि तस्य वक्ष्यामहे वयम् *angeben* MBh. 4, 18. Râga-Tar. 4,344. संक्षेपेणैव ते वक्ष्ये यन्मां पृच्छसि Hariv. 876. सा स्नुषायै तदवोचत Kathâs. 19,34. — स तानुवाच *der sprach zu ihnen* M. 5, 3. MBh. 2,505. 3,2491. 5,5956. Hariv. 8833. R. 1,4,14. 2,40,11.45. Ragh. 2,59. 3,43. Çâk. 13,22. 30,13. वक्तुं धीरस्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः Megh. 96. Spr. 632. Varâh. Bṛh. S. 43,1. Kathâs. 18,206. 23, 29. 26,181. 43,98. 46,203. Verz. d. Oxf. H. 255,a,24. Pańkat. 5,1. मद्वचनादुच्यतां सारथिः। सवाणासनं रथमुपस्थापयेति Çâk. 28,18. 59,15. Vikr. 81,5. acc. mit प्रति statt des einfachen acc.: कयापि संनिहितप्रच्छन्नकामुकं प्रत्युच्यते Sâh. D. 20,15. तं प्रत्युक्तवती Pańkat. 186,1. — इदमूचुर्महात्मानम् *sprachen dieses zu* — M. 5,1. Bhag. 2,1. MBh. 1,3901. 5964. 3,2142. 2243. 2827. 5,6082. 7394. 7,6398. R. 1,1,80. 60,23. R. Gorr. 2,57,19. Ragh. 11,91. Pańkat. ed. orn. 2,5. तेनोच्यमानः — हेतुमद्वचः R. 3,53,20. — उक्त a) *gesagt, gesprochen, besprochen, erwähnt* AK. 3,2,57. यथोक्तं पुरस्तात् Âçv. Gṛhj. 1,23,1. तदुक्तम् Kâtj. Çr. 4,3,14. उक्तं च यतः Pańkat. 32,12. 68,1. Vet. in LA. (III) 2,11. Kathâs. 4,65. अनुप्रहरेत्युक्ते Kâtj. Çr. 5,9,29. शंयोरुक्ते Çâṅkh. Çr. 5,20,7. एवमुक्ते नैषधेन MBh. 3,2137. Bhâg. P. 6,1,37. अनुक्तेनापि *auch wenn es nicht gesagt worden wäre* R. 3,14,21. अर्धोक्तेन Vikr. 29,19. आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तम् AK. 1,1,5,12. अनृतं नोक्तपूर्वं मे R. 1,58,19. 4,6,22. एतदुक्तं द्विजानां भक्ष्याभक्ष्यमशेषतः M. 5,26. वेदोक्तमायुः 1,84. Kâtj. Çr. 18,6,7. भस्मनाद्भिर्मृदा चैव शुद्धिरुक्ता मनीषिभिः *angegeben, gelehrt* M. 5,111. उक्तविप्रेषु *erwähnt, genannt* 3,111. AK. 1,2,3,43. Varâh. Bṛh. S. 48, 58. P. 1,1,32, Sch. तस्मान्मेध्यतमं त्वस्य मुखमुक्तं स्वयंभुवा *erklärt für* M. 1,92. 2,230. उक्तो भवति यः पूर्वं गुणवानिति संसदि Spr. 1854, v. l. अ सारमेय उक्तः *genannt* Varâh. Bṛh. S. 88,9. उक्तो ऽलंकारणी *besprochen* Kathâs. 61,28. रक्तोत्पलेन राजा मन्त्री नीलोत्पलेनोक्तः *gemeint*

*) dat. ऊचुषे glauben wir zu उच् ziehen zu müssen nicht bloss in der dort bereits angeführten, sondern auch in folgender Stelle: तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत् *welchen der dazu Gewöhnte* d. h. *Geübte preisen soll durch die Generationen hin* ṚV. 1,103,4.

Varâh. Bṛh. S. 29,9. n. *Wort*, *Rede* AV. 1,30,2. ṚV. 10,27,10. 125,4. प्रतिकूलोक्तिः Spr. 1525. — b) *angeredet*, *zu dem gesagt worden ist*: स हेन्द्रेण उक्त आस *ihm war von* Indra *gesagt worden* Çat. Br. 14,1,1, 19. AV. 12,1,55. M. 1,60. 2,193. देहीत्युक्तस्य संसदि 8,52. MBh. 1,6179. 3,2102. R. 1,8,5. Çâk. 35. mit acc.: इत्युक्ता सिन्धुराजेन वाक्यं हृदयकम्पनम् MBh. 3,15636. विश्रयमुक्तस्तैः R. 2,71,30. Spr. 1724, v. l. Kathâs. 18,247. अध्युक्त *aufgefordert von* M. 8,62. अनुक्त *unaufgefordert* Kathâs. 18,117. — 2) *Jmd Vorwürfe machen*, *seinen Unwillen gegen Jmd aussprechen*; mit acc. der Person Hariv. 5268. R. 3,67,20. 22. 4, 19,21. — Vgl. अनुक्त, उक्त fgg., दुरुक्त, पुनरुक्त, पुनरुक्ति.

— caus. वाचयति 1) *zu sagen* —, *zu sprechen veranlassen*, *sagen* —, *hersagen* —, *aussprechen lassen* Pâr. Gṛhj. 2,2. वाच्यमानो ऽपि न ब्रूते Bhâg. P. 3,30,18. यतवाचं वाचयन्ति ताडयन्ति न वक्ति चेत् 11,23, 36. एनमपां शान्तिं वाचयति Ait. Br. 8,6. Çat. Br. 3,1,3,24. 3,4,11. 5,1, 5,17. Kauç. 10. 11. 17. 43. ब्राह्मणान्भोजयित्वा वेदसमाप्तिं वाचयीत *für sich erklären lassen* Âçv. Gṛhj. 1,22,18. 2,9,9. स्वस्त्ययनम् 3,13. 4,6, 19. वाचयामास रामस्य वने स्वस्त्ययनक्रियाम् R. 2,25,28. ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् AV. Pariç. in Ind. St. 9,19, N. 1. ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य MBh. 1,6976. 7936. 15,51. R. 2,25,28. स्वस्तिवाचितेषु ब्राह्मणेषु MBh. 3,13313. वाचयित्वा पुण्याहम् 2,1240. द्विजातीन्वाच्य पुण्याहं स्वस्ति चैव 3,7100. मङ्गलम् Bhâg. P. 1,12,13. 10,53,10. आशिषः 6, 14,33. आशिषं वाच्यमानो गुरूनाशिषं प्रयुङ्क्ते P. 8,2,83, Sch. वाचयित्वा ततः स्वस्ति प्रयुक्ताशीर्द्विजातिभिः R. 6,19,47. mit Ergänzung von स्वस्ति oder eines ähnlichen acc. Jâǵn. 1,243 (वाच्यताम् impers.). वाचयित्वा द्विजश्रेष्ठान् MBh. 3,788. 16644. 8,391. 14,2037. R. 2,6,7 (5,7 Gorr.). Mârk. P. 37,21. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,11.15. Bhaṭṭ. 17, 1. — 2) (etwas Geschriebenes *reden lassen*) *lesen* Hariv. 1. 16161. Mṛkkh. 42,5. Çâk. 17,4, v. l. 37,15. Vikr. 26,7. Mâlav. 70,21. Kathâs. 5,69. 8,19. 42,93. 44,158. 161. 56,90. 65,178. 102,134. 124,98. fg. Râǵa-Tar. 2,89. 3,208. 235. 372. 523. 4,576. 6,30. 38. Mârk. P. 37,22. Prab. 33,11. 49,8. Verz. d. Oxf. H. 12,*a*,2 v. u. पदं मिथ्या वाचयति P. 1,3,71, Sch. — 3) *sagen*, *berichten* Dhâtup. 34,35 (परिभाषणे, v. l. संदेशे). कथनीयमवोवचत् Bhaṭṭ. 6,46. — 4) *zusagen*, *versprechen*: स्नातकानां सहस्रस्य स्वर्णनिष्कानवाचयत् (अथो ददौ ed. Bomb.) MBh. 7,4352.

— desid. 1) *zu sprechen* —, *herzusagen* —, *zu verkündigen beabsichtigen*: तं विवक्षन्तमालक्ष्य MBh. 3,12609. 4,924. R. 4,27,10. Bhâg. P. 4, 9,4. पुनर्विवक्षन्पदम् ṚV. Prât. 11,22. 14,29. विवक्षता दोषम् Kumâras. 5,81. Pańkar. 3,7,3. Bhâg. P. 1,5,14. विवक्षमाणो भगवद्विभूतीः 3,8,8. विवक्षितं स्वानुक्रमनुतापं जनयति Çâk. 38,7. Mâlav. 21,21. Bhaṭṭ. 8,17. ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् MBh. 5,2585. 7481. R. 1,55,14 (56,14 Gorr.). विवक्षितार्थं मे ब्रूहि 7,59,2,2. वचो विवक्षितम् Râǵa-Tar. 5,481. — 2) pass. *gemeint sein*: शब्दानुशासनशब्देन च पाणिनिप्रणीतं व्याकरणशास्त्रं विवक्ष्यते Sarvadarçanas. 135,10. fg. 87,11. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 81. विवक्षित *was man im Sinne hat*, *gemeint*, *beabsichtigt*: शीघ्रमुक्त्वा यथाकामं यत्ते कार्यं विवक्षितम् MBh. 4,522. R. 5,15,2. मत्तं चक्रुर्विवक्षितम् MBh. 6,4405. न मे माया विवक्षिता 12,3314. विदितं मम राजेन्द्र यत्ते हृदि विवक्षितम् 15,781. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268. Kull. zu M. 7,33. 8,317. Sarvadarçanas. 116,20. 127,4. 10. 136,7. Schol. zu P. 1,4,54. 2, 4,49. 5,1,12. Schol. zu Kap. 1,93. अविवक्षित *nicht ausdrücklich gemeint*: अपादानादिविशेषकथाभिरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् Schol. zu P. 1,4,51. *was nicht zu urgiren ist*, *unwesentlich*, *worauf es nicht weiter ankommt* Çaṅk. zu Khând. Up. S. 30. Schol. zu P. 1,3,20. 2,3, 65. 3,2,109. Sâh. D. 9,17. Comm. zu Njâjas. 1,53. विवक्षितत्व n. *das Gemeintsein* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268. Sarvadarçanas. 105,10. अकारस्य विवक्षितत्वात् so v. a. *weil das* अ *wesentlich ist*, *in bestimmter Absicht gebraucht worden ist* Schol. zu P. 3,2,61. — 3) विवक्षित *in naher Beziehung zu Jmd stehend*, *zu Jmd haltend*: ततस्तान्भेदयित्वा तु परस्परविवक्षितान् (= वोढुमिष्टान् Nilak.) MBh. 12,3312. तमाज्ञाय प्रत्यनीकविवक्षितम् (प्रत्यनीका देवास्ते विवक्षिता जयं प्रापणीया इत्यभिप्रेतं यस्य तथाभूतं ज्ञात्वा प्रत्यनीकानां विवक्षितमिति वा Comm.) Bhâg. P. 9, 18,26. विवक्षितांश्च द्विरदेन्द्रमुख्यांस्तुरंगमानपि so v. a. *Lieblingselephanten und Lieblingspferde* Kâm. Nîtis. 15,48. — Vgl. विवक्षा fg.

— अच्छ *herbeirufen*, *begrüssen*, *einladen*: अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः ṚV. 1,122,5. अच्छा देवाँ ऊचिषे 3,22,3. अच्छा विवक्मि रोदसी 57,4. 4, 1,19. 6,2,11. 51,3. अच्छा सूनुर्न पितरा विवक्मि 7,67,1. 72,3. 8,64,2. — Vgl. अच्छावाक, अच्छोक्ति.

— अति 1) *Jmd tadeln*, *Jmd Vorwürfe machen*: यथा मां नातिवोचन्ति (नातिरो॰ ed. Burn.) Bhâg. P. ed. Bomb. 3,14,21. — 2) *Jmd über die Gebühr tadeln oder loben*: यो नात्युक्तः प्राह रूक्षं प्रियं वा Spr. 4906. — Vgl. अतिवक्तर् (auch in den Nachträgen), अत्युक्त, अत्युक्ति.

— अधि *sprechen* —, *hilfreich eintreten für* (dat.): अधि वोचा नु सुन्वते ṚV. 1,132,1. 2,27,6. 7,83,2. 8,20,26. ते नस्त्राध्वं ते ऽवत त उ नो अधि वोचत 30,3. 48,14. 56,6. 10,63,11. VS. 6,33. अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् 16,5. — Vgl. अधिवक्तर्, अधिवाक.

— अनु 1) *aufsagen* (Opfergebete u. s. w.) *für Jmd* (dat. gen.), *die Opfereinladung an Jmd richten*: दधन्वे वा यदीमनु वोचद्ब्रह्माणि ṚV. 2, 5,3. Ait. Br. 1,12. fg. प्रजापतौ वै स्वयं होतरि प्रातरनुवाकमनुवक्ष्यत्युभये देवासुरा यज्ञमुपावसन्नस्मभ्यमनुवक्ष्यत्यस्मभ्यमिति स वै देवेभ्य एवान्वब्रवीत् 2,15. 5,34. 3,45. 6,35. TS. 1,6,10,4. TBr. 3,3,8,6. Çat. Br. 1,5,1,16. ऋचम् 6,2,27. 3,9,3,7. अन्वेवैतदुच्यते नेत्तु ह्वयते 1,4,8. Âçv. Çr. 1,2,1. येषां द्विजानां सावित्री नानूच्येत यथाविधि M. 11,191. — 2) *Jmd* (acc.) *mit einem Spruche ansprechen*: अनूक्त Kauç. 47. fg. — 3) *Jmd Etwas aufsagen* so v. a. *lehren*, *mittheilen* Çat. Br. 2,3,1,31. Bhâg. P. 1,5,30. अनूच्यतां तात स्वधीतं किंचिदुत्तमम् 7,5,22. — 4) med. *nachsagen* (dem Lehrer u. s. w.) so v. a. *lernen*, *studiren*: यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचेत TS. 2,1,2,8. अननूच्य Khând. Up. 6,1,1. एतद्वा एतैस्त्रिभिरार्युभिरन्ववोचथाः। अथ त इतरदननूक्तम् TBr. 3,10,11,4. परोवरं यशो ऽनूच्यते Çat. Br. 1,6,2,4. 2,4,4,4. 6,1,1,8. अरण्ये ऽनूच्यमानत्वादारण्यकम् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 3. auch act. in dieser Bed.: ब्रह्मानूचुः Bhâg. P. 3,33,7. अनूचान (s. auch bes.) *der da studirt*, *Studirter*, *Gelehrter* Vop. 26,132. 135. Ait. Br. 2,2. Çat. Br. 10,6,1,3. 11, 4,1,8. अनूचानर्त्विज् Kâtj. Çr. 7,1,18. Kumâras. 6,15. अनूक्त (s. auch bes.) *studirt*, *gelernt* Âçv. Gṛhj. 1,22,15. मया यथानूक्तमवादि ते हरेः कृतावतारस्य सुमित्र चेष्टितम् so v. a. *wie es von mir gehört wurde* Bhâg. P. 3,19,32. — 5) *beistimmen*, *Recht geben*: प्रजापतिर्मनस एवानूवाच Çat. Br. 1,4,5,11. — 6) *nennen*: मनुना हरिरित्यनूक्तः Bhâg. P. 2,7,2. —

Vgl. अनुवक्तव्य, अनुवचन, अनुवाक, अनुवाक्या fg., अनूक्त fg., अनूचान, 1. अनूच्य. — caus. 1) *Jmd die Formel* oder *Einladung für — aussprechen lassen* Kâtj. Çr. 4,4,15. अग्नये 5,2,1. यूपाय 6,3,1. वायवे 9,9,14. mit gen. der Sache wozu 6. — 2) *einladen lassen auf, — zu Etwas* (dat.): स्तोकेभ्यः Kâtj. Çr. 6,6,18. सोमाय 7,9,15. 8,4,1. 26,6,21. — 3) *lesen* Çâk. 17,4. 90,18. Vikr. 26,3. Mâlav. 8,13. Kathâs. 74,273. 76,22. — Vgl. अनुवाचन. — desid. med. *zu lernen sich anschicken* Çat. Br. 4,6,7,2.

— अभ्यनु *in Hinblick auf —, in Beziehung auf —, über Etwas sagen, Etwas mit Worten bezeichnen:* तदेतदृषिः पश्यन्नभ्यनूवाच Ait. Br. 2,33. 3,12. 20. 8,6. यां देवतामृगभ्यनूक्ता Çat. Br. 6,5,1,2. यज्ञेनैवैतदभ्यनूक्तम् 1,4,1,9. 24. 3,3,10. 7,4,4. 2,3,3,6. 5,1,4. 5. 3,4,2,7. 4,1,3,17. 5,3,3. 6,1,10. इति संप्रति दिशो ऽभ्यनूच्यन्ते 8,1,4,2. 13,5,4,5. Khând. Up. 3,12,5.

— अप s. अपवक्तृ, अपवाचन.

— अभि 1) = अभ्यनुवच्; nur das partic. अभ्युक्त zu belegen. तदेष श्लोको ऽभ्युक्तः Çat. Br. 7,5,1,21. 2,52. 8,6,2,19. यजुषाभ्युक्तम् 10,2,6, 19. ऋषिणा 1,1,10. ऋचा 14,7,2,28. Mund. Up. 3,2,10. Weber, Râmat. Up. 337. श्लोकेन Kaush. Up. 1,6. हिरण्ययीति वा अभ्युक्ता Çat. Br. 6,3, 1,42. — 2) *Etwas zu Jmd sagen*, mit dopp. acc.: इदं तु तां कुरुराजो ऽभ्युवाच MBh. 2,1998. 3,560. 8709. 7,4230. R. Gorr. 2,51,8. इति रामो ऽभ्युवाच तान् 1,31,15. MBh. 4,1662. 8,3530. Bhâg. P. 4,17,9. *Jmd für Etwas erklären:* भूतं भव्यं भविष्यं च मार्कण्डेयो ऽभ्युवाच ह । यज्ञं त्वां चैव यज्ञानां तपश्च तपसामपि ॥ (so die ed. Bomb.) MBh. 6,3039.

— आ *Jmd anreden, Jmd zurufen:* आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् Ṛv. 7,73,2. इन्द्राय ब्रह्माण्योक्ता 1,63,9. Çâṅkh. Br. 7,4.

— उद् s. उद्वाचन.

— उप *zusprechen, ermuntern, antreiben:* यन्नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवः Ṛv. 1,127,7. उप यद्वोचे अध्वरस्य होता 5,49,4. तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे AV. 5,8,6. — Vgl. उपवक्तृ, उपवाक fgg.

— नि 1) *reden, sprechen:* न्यवोचत् Bhâg. P. 3,17,29. — 2) *schmähen:* दुर्योधनं नैकृतिकं न्यवोचत् MBh. 9,3320. — Vgl. निवचन, निवाक. — caus. *schmähen* Vjutp. 73.

— निस् 1) *aussprechen, mit Worten bezeichnen, ausdrücklich nennen, erklären:* यत्प्रथमे पदे देवता निरुच्यते Ait. Br. 4,29. अनिरुक्तां देवतां निरवोचत् Çat. Br. 10,3,5,15. Nir. 10,5. तस्मात्सत्यं निरुच्यताम् MBh. 3,16892. नामधेयानि लोकेषु बहून्यस्य यथार्थवत् । निरुच्यन्ते महत्त्वाच्च विभुत्वाच्च कर्मणस्तथा ॥ 7,9611. 13,7523. 12,236. शृणु पुत्र यथा ह्येष पुरुषः शाश्वतो ऽव्ययः । अक्षयश्चाप्रमेयश्च सर्वगश्च निरुच्यते ॥ 13740. यादवा यदुना चाग्रे निरुच्यन्ते च देहया: Hariv. 1898. वेदा निर्वक्तुमक्षमाः Pańkar. 1,12,38. (यः) निरुच्यमानं प्रश्नं नेच्छेत् *(der) eine an ihn gerichtete Frage nicht beantworten will* M. 8,55. विदिर्ज्ञाने निरुच्यते *die Wurzel* विद् *wird durch* ज्ञान *erklärt* Kâm. Nîtis. 2,17. Verz. d. Oxf. H. 4, a, No. 30. मांसात्तु मेदसो जन्म मेदसो ऽस्थि निरुच्यते *die Knochen werden vom Fette abgeleitet* Hariv. 2179. निरुक्त *ausgesprochen, in Worte gefasst, erklärt; deutlich gesprochen* (Gegens. उपांशु): निरुक्तमेनः कनीयो भवति Çat. Br. 2,5,2,20. अनिरुक्तः प्रजापतिः 14,2,2,21. Taitt. Up. 2,6. 7. अयमेव स्वार्थो भगवत्या विष्णुभक्त्या स्वामिनो निरुक्तः Prab. 104,18. Bhâg. P. 5,12,9. 19,20. 6,4,28. fg. नान्यत्त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम् 7,9,48. 8,5,26. अक्षौहिणी तु पर्यायैर्निरुक्ता च वरूथिनी MBh. 5,5267. Bhâg. P. 7,14,34. यन्निरुक्तं निधनमुपेयुः Pańkav. Br. 17,1,8. 18, 6,9. निरुक्त ऐन्द्र उपांशु प्राजापत्यः Çâṅkh. Çr. 17,7,9. Çat. Br. 1,4,4,2. 4,1,3,16. 14,1,2,18. या पञ्चमी तां निरुक्तानिरुक्तामिव गायेत् Shadv. Br. 2,2. Pańkav. Br. 7,1,8. Khând. Up. 1,13,3. 2,22,1. von Versen, *welche die Götternamen ausdrücklich enthalten:* निरुक्तं वैश्वानरं यजति Çâṅkh. Br. 19,4. Lâtj. 1,4,5. आग्नेय्यावनिरुक्ते *Verse an* Agni, *in welchen aber sein Name nicht vorkommt*, Âçv. Çr. 2,14,32. *ausdrücklich genannt, — vorgeschrieben* Gṛhj. 1,22,27. तदिदं वचनं तेषां निरुक्तं वै *ist erklärt* so v. a. *hat sich bewährt, ist in Erfüllung gegangen* MBh. 9, 1316. — 2) *wegsprechen, durch Worte vertreiben:* शल्यान्निरवोचमहं विषम् AV. 4,6,4. यक्ष्ममङ्गेभ्यः 5,30,8. 16. 9,8,10. — Vgl. निरुक्त (in der Bed. 2.: निरुक्तमस्य यो वेद Verz. d. Oxf. H. 50,a,18. सनिरुक्तां स्वसंहिताम् Bhâg. P. 12,6,58), निरुक्ति, निर्वक्तव्य fg., निर्वचनीय, निर्वाक, निर्वाच्य.

— परा *widersprechen, zurückweisen* (Gegens. अनु) Çat. Br. 1,4,5, 12. — Vgl. परावाक, परोच्य.

— परि *besprechen* (mit einem Spruche): ब्राह्मणेन पर्युक्तासि AV. 4,19,2.

— प्र 1) *verkünden, melden, mittheilen, aufführen, erwähnen; preisen; Jmd* (dat. gen.) *Etwas ankünden, lehren, praecipere:* सनिमग्ने देवेषु प्र वोचः Ṛv. 1,27,4. 6,15,10. AV. 7,78,2. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचम् Ṛv. 1,32,1. 167,7. अग्निर्मन्द्रो प्रेदु वोचन्मनीषाम् 4,5,3. प्र सा वोचि सुष्टुतिः 7,58,6. प्र नो वोचो ऽनागसो अर्यम्णे 62,2. 70,1. 86,4. प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट 8,90,15. 10,113,9. 139,6. गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे 9,95,2. AV. 2,1,2. Ait. Br. 6,34. तस्मा एतं राजसूयं यज्ञक्रतुं प्रोवाच 7,15. सूक्तम् Nir. 10,32. वेदान् Çat. Br. 3,2,4,5. 6,3,3,12. 10,4,2,1. Kâtj. Çr. 4,2,19. तस्मै हाप्रोच्यैव प्रवासं चक्रे Khând. Up. 4,10,2. 8,8,4. M. 2,89. 3,22. 124. 266. 5,57. 7,36. 8,266. 9,56. Bhag. 4,1. 8,11. MBh. 1,6148. Hariv. 9622. R. Gorr. 1,4,75. 5,84,4. 88,8. Varâh. Bṛh. S. 1,11. 11,53. 25,1. 41,1. 43,11. 45, 1. 46,1. 54,62. Kathâs. 1,60. Bhâg. P. 1,2,1. 4,1,12. ब्रह्म सनातनम् । नारदाय वोचत्तम् (acc. partic.) 6,37. Mârk. P. 54,8. Brahma-P. in LA. (III) 49,6. Pańkar. 1,1,23. आत्मचरितवृत्तान्तं परस्परं प्रोचतुः Pańkat. 116,1. ओमिति ब्राह्मणाः प्रवक्ष्यन्नाह *praecepturus* Taitt. Up. 1,8. नैव तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं वेष एव च *lässt sich nicht mittheilen, — beschreiben* MBh. 10,222. अद्य बार्हस्पतः श्रीमान्युक्तः पुष्येण (so ist zu lesen) प्रोच्यते ब्राह्मणैः R. 2,26,9 (11 Gorr.). H. 19. प्रोक्त *verkündet, mitgetheilt, gelehrt, aufgeführt, erwähnt* M. 2,68. 5,110. 7,98. 12,126. P. 4, 2,64. 3,101. Einl. . Varâh. Bṛh. S. 43,1. Bhâg. P. 2,9,43. 8,13,37. (अयं यज्ञधर्मः) मनुष्याणामपि प्रोक्तो वेणे राज्यं प्रशासति *wird auch bei den Menschen erwähnt, soll auch bei den Menschen stattgefunden haben* M. 9,66. याः कर्दमसुताः प्रोक्ता नव ब्रह्मर्षिपत्नयः Bhâg. P. 4,1,12. संज्ञप्तः पशुरिति प्रोक्ते *wenn angezeigt ist* Kâtj. Çr. 6,5,23. *Jmd verrathen:* यो मा प्रावोचः TS. 2,6,6,1. 3,5,2,1. — 2) *überweisen, überantworten:* मा नो अग्ने दुर्भृतये प्र वोचः Ṛv. 7,1,22. प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत 8,27, 10. विशं राज्ञे Pańkav. Br. 21,1,1. तेभ्यो ह पृथगावसथान्प्रोवाच Çat. Br. 10,6,1,2. — 3) *sagen, sprechen* MBh. 2,503. 5,7487. Kathâs. 3,48. Pańkat. 4,14. 77,1. 96,25. अतः प्रोच्यते impers. 49,5. समुद्र इत्येवं प्रो-

च्यते Praçnop. 6,5. कुमारिलस्वामिना प्रोक्तम् Prab. 110,9. तत्तत्प्रोच्य MBh. 5,888. R. 1,62,16. Spr. 155. वाक्यम् Hariv. 7286. R. 1,4,9. Râga-Tar. 5,367. न प्रावोचमहं किंचिदप्रियं यावदुज्जीविषम् Bhatt. 15,11. प्रोच्यमानश्रुतिभिः so v. a. erschallend Bhâg. P. 5,2,4. मन्त्रिप्रोक्तनिषेविन् das was der Minister sagt Varâh. Brh. S. 74,3. — तेभ्य एवं प्रवक्ष्यामि so will ich zu ihnen sprechen MBh. 4,65. gewöhnlich mit acc. der Person: राज्ञा प्रोवाच भीमम् 3,15673. 15788. 5,7332. R. 1,9,46. Bhâg. P. 3,23,22. Bhatt. 7,47. स्वागतं तु इति प्रोक्ता ते: MBh. 3,2468. Spr. 1927. Çuk. in LA. (III) 33,15. mit dopp. acc.: तं प्रवक्ष्यामि भारतीम् R. 2,64, 37. — 4) erklären für, nennen: ते मणिमध्यं प्रोचुरिदम् Çrut. 17. प्रोक्त genannt, erklärt für, geltend: आपो नारा इति प्रोक्ताः M. 1,10. 9,138. Sâṁkhjak. ed. Lass. 23. Çrut. 9. Varâh. Brh. S. 88,5. 7. Vet. in LA. (III) 8,11. Trik. 2,4,25. तपोमूलमिदं सर्वं दैवमानुषकं सुखम्। तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्त्यं वेददर्शिभिः॥ M. 11,234. Bhag. 17,18. Spr. 5398. H. 1242. काकयवाः प्रोक्ताः die sogenannte Krähengerste Spr. 2300. रणप्रोक्तेन कर्मणा genannt Schlacht Hariv. 5702. उदितं प्रोक्तमुद्गते (so ist zu lesen) d. i. उदित bedeutet so v. a. उद्गत Trik. 3,3,150. — प्रोक्का Pańkat. 97, 14 ist eine falsche Form für प्रोच्य. — Vgl. प्रवक्तर् fg., प्रवचन fg., प्रवाक, प्रवाच्य (in der Bed. 1) b) auch Hariv. 7178), पुराणप्रोक्त. — caus. verkünden lassen Gobh. 1,3,19. — Vgl. प्रवाचन. — desid. scheinbar MBh. 12,3767, wo aber mit der ed. Bomb. प्रविविक्षतः zu lesen ist.

— अनुप्र s. अनुप्रवचन.

— परिप्र Jmd (acc.) schelten, Jmd Vorwürfe machen: मा त्वाग्नयः परिप्रवोचन् Khând. Up. 4,10,2.

— प्रतिप्र 1) anzeigen, melden: अग्नये प्रतिप्रोच्य व्रतमालभते TS. 1,6, 7,2. 3,1,5,1. TBr. 3,2,2,4. 8,2,1. तां देवेभ्य आगतां प्रतिप्रोवाच Çat. Br. 3,2,1,22. — 2) erwiedern, antworten Ait. Br. 6,34. गुरुणैवं प्रतिप्रोक्तः Bhâg. P. 7,5,29.

— संप्र 1) zusammen erklären Çâṅkh. Br. 7,4. — 2) Etwas verkünden, mittheilen M. 8,229. MBh. 1,2601. 2,488. 3,144. 1838. 7,2025. Hariv. 4564. Çrut. 1. Varâh. Laghuǵ. 1,2 in Ind. St. 2,277. Bhâg. P. 3,26,1. Mârk. P. 40,1. Verz. d. Oxf. H. 7,b, No. 43, Z. 5. संप्रोक्त 14,a, N. MBh. 12,7842. Pańkar. 3,9,8. nennen, angeben: यादृशा धनिभिः कार्या व्यवहारेषु साक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामि M. 8,61. R. 6,3,1. — 3) zu Jmd (acc.) sagen: पुत्रेण मम संप्रोक्तः (die ed. Bomb. hat eine andere Lesart) MBh. 6,2235.

— प्रति 1) verkünden, melden R̥V. 1,41,8 (med.). — 2) antworten, erwiedern VS. 23,51. मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवोचत् R̥V. 8,89,5. स एकया पृष्टो दशभिः प्रत्युवाच Ait. Br. 7,13. M. 1,4. MBh. 3,2164. 2245. 5, 7480. R. 3,53,61. 55,23. Kumâras. 5,40. Kathâs. 1,34. Bhâg. P. 2,4,11. 3,2,1. Brahma-P. in LA. (III) 52,11. उत्तरम् Ragh. 3,47. तेदेष श्लोकः प्रत्युक्तः Çat. Br. 12,3,2,8. प्रातर्वः (acc.) प्रातिवक्तास्मि Ait. Br. 3,22. Çat. Br. 11,5,1,7. Khând. Up. 2,22,3. 5,11,7. MBh. 3,2156. 2521. 2812. 3056. 5,5433. 7377. R. 1,9,10. 42,9. 52,19. 63,20. अप्रत्युक्ता तान्पीन् 74,23 (76,27 Gorr.; die ed. Bomb. hat eine andere Lesart). 2,12,63. 31,18. 34,9. 3,53,43. Kathâs. 17,127. 18,339. 20,58. 22,87. 235. 24,15. 30. 28,234. 32,157. 33,56. 34,148. 49,156. Bhâg. P. 1,13,34. Mârk. P. 21, 55. Bhatt. 5,23. 46. 6,99. 7,87. प्रत्युक्त Antwort empfangen habend Ait. Br. 6,34. एवं तयाहं वक्रोक्त्या प्रत्युक्तः Kathâs. 124,185. तं कृष्णः प्रत्युवाचेदम् MBh. 2,1226. 7,1990. R. 2,57,19. वाक्यं प्रत्युवाच महीपतिम् 1,23,1. 2,68,1. अङ्कदे तु शुभं वाक्यं प्रत्युक्ते प्लवगर्षभैः 5,1,89. beantworten: प्रतिवक्तास्मि ते वचः MBh. 14,1700. Nir. 1,14. — Vgl. उक्तप्रत्युक्त, प्रतिवक्तव्य fg., प्रत्युक्त fg.

— वि 1) kundmachen, anzeigen; deutlich machen, erklären, lösen (eine Frage) R̥V. 1,105,4. 132,3. 4,1,14. कद्ध ऋतं वि नो वोचः 5,12. अस्ति स्विन्नु स्विदस्ति तदंतुथा वि वोचः 6,8,13. 22,4. 10,11,2. 28,5. Khând. Up. 4,4,5. तेषां (प्रश्नानां) नैकं च नाशकं विवक्तुम् 5,3,5. Çat. Br. 14,6,8,1. 5. 9,28. — 2) bestreiten, anfechten: नाहं वेदान्विनिन्दामि न विवक्ष्यामि कर्हिचित् MBh. 12,9607. med. verschieden oder gegen einander reden, sich streiten um: वि तोके अप्सु तनये च सूरे ऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः R̥V. 6,31,1. — Vgl. विवक्तर्, विवाच्, व्युच्य, अविवाक्य.

— सम् verkünden, mittheilen Pańkar. 1,15,8. Journ. of the Am. Or. S. 6,561 (to explain comprehensively Hall). sprechen, sagen Kathâs. 3, 49. हितार्थं समुवाचेमां भारतीं भरतान्प्रति MBh. 4,913. स्वं ज्ञानकं समुवाच sagte zu Pańkat. 97,12. Jmd (acc.) zusprechen, Vorstellungen machen: समुक्त Bhâg. P. 10,50,33. med. sich unterreden: सं नु वोचावहै पुनर्यतो मे मध्वाभृतम् R̥V. 1,25,17.

वच (von वच्) 1) nom. ag. sprechend gaṇa पचादि zu P. 3,1,134; vgl. कु°. — 2) nom. act. das Sprechen, Sagen in दुर्वच. — 2) m. a) Papagei H. an. 2,59. Med. k. 9. — b) angeblich = सूर्य und कारण: वचः सूर्यः समाख्यातः कारणं च वचस्तथा। अर्चयन्ति वचं नित्यं वचार्चास्तेन ते (मगाः) स्मृताः॥ Verz. d. Oxf. H. 33,a,40. fg. मुनिर्वचपरः (so ist zu lesen) b,21. — 3) f. आ a) Predigerkrähe (सारिका) Trik. 3,3,79. H. an. Med. — b) eine vielgebrauchte aromatische Wurzel, nach Einigen Orris root, Veilchenwurzel d. i. Iris florentina, nach Andern Calmus (श्वेतवच beng.). Keine von beiden ist in Indien zu Hause. Ausserdem wird sie als eine Zingiberacee bestimmt, entweder Curcuma Zedoaria oder die Galgantwurzel (Alpinia Galanga). Es scheinen verschiedene Wurzeln unter diesem Namen im Handel gewesen zu sein. ÇKDr. nennt solche aus Chorasan, Persien und vom Himavant stammend; dazu die महाभरा oder °भरी वचा d. i. Galgant, ferner auch चोपचीनी d. i. چوب چینی Chinawurzel, hier wohl eine indische Smilax, glabra oder lanceaefolia bezeichnend; vgl. Roxb. 3,792. — AK. 2,4,2,21. Trik. 3,3,200. 216. H. an. Med. Ratnam. 24. Râgan. und Vaidjabh. in Nigh. Pr. Suçr. 1, 139,5. 14. 144,14. 145,6. 146,6. 374,9. 11. हैमवती 2,161,21. Varâh. Brh. S. 16,30. 44,9. 57,1. सद्यःप्रज्ञाकारी वचा Spr. 5144.

वचःक्रम m. pl. mannichfache Reden Kathâs. 50,163.

वचक्नु Uṇâdis. 3,81. 1) adj. beredt. — 2) m. a) ein Brahmane Med. n. 125. Uǵǵval. — b) N. pr. eines Mannes Çaṅk. zu Brh. Âr. Up. 3,6,1. fehlerhaft वचक्रु Colebr. Misc. Ess. I,70; vgl. वाचक्नवी.

वचण्डा f. Predigerkrähe Trik. 2,5,22. वचण्डी nach Çabdar. im ÇKDr.; dieselbe Form soll nach ders. Aut. auch = वर्त्ति und शस्त्रभेद sein; bei dieser Gelegenheit wird bemerkt, dass in Med. sowohl वचण्डा als वरण्डा gelesen werde.

वचन (von वच्) 1) adj. a) oxyt. redefertig R̥V. 6,39,1. 49,12. दत्त, व°,

ऋक्वान् 10,113,9. — *b*) am Ende eines comp. *besagend, bedeutend, ausdrückend:* अभिज्ञा° P. 3,2,112. भावकर्म° 6,2,150. AK. 3,3,2. H. 839. SARVADARÇANAS. 49, 6. 144,15. 160, 8. 9. तद्वचनत्वात् *weil es das besagt* KÂTJ. ÇR. 1,3,4. 2,8,4. 7, 9,12. 8, 3,33. — *c*) *ausgesprochen werdend:* रक्तो वचनो मुखनासिकाभ्याम् ṚV. PRÂT. 13, 6. मुखनासिकावचनत्वमिह रक्तस्य विधीयते Comm. — 2) n. *a*) *das Sprechen* SÂṂKHJAK. 28. *Aussprache:* अग्रयामात्रं वचनं स्वराणाम् ṚV. PRÂT. 14, 4. समापाद्यानामन्ते संहितावद्वचनम् AV. PRÂT. 4,124. मुखनासिकावचनो ऽनुनासिकः P. 1,1, 8. — *b*) *das Ansagen, Hersagen, Aussagen:* मन्त्र° KÂTJ. ÇR. 1,7,9. 10, 2,33. LÂṬJ. 7,1,7. 5,7. संतानमुत्तमेन वचनेन ÂÇV. ÇR. 5,20,5. 7. तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् (ein berühmter und in seiner Auslegung streitiger Satz; vgl. NILAK. 8) KAṆ. 1, 1, 3. — *c*) *Benennung, ausdrückliche Nennung, Bestimmung, Anführung:* पशुवचनात् *weil es* पशु *heisst* KÂTJ. ÇR. 25,9,11. यथावचनम् *je nach dem Ausdruck* NIR. 1,3. यन्नेति वचनाच्छ्रुतिरिति AIT. BR. 7, 9. ÂÇV. ÇR. 1, 1, 26. KÂTJ. ÇR. 1, 5,12. 7,11. 22. 2,7,17. अ° 6,37. अवचने *wo nichts Besonderes bestimmt ist* 1, 8, 45. अन्तवचने *wenn* अन्त *im Text steht* 3, 25. 7,5,23. गुण° 20,7,20. °विरोधी *Bestimmung und widersprechende Bestimmung* 1,8,30. °प्रवृत्ती 4,3,4. इति वचनात् *weil es so heisst* PÂR. GṚHJ. 2,2. JÂGN. 3,226. P. 1,2,56. लिटः किद्वचनानर्थक्यम् *das Erklären des* लिट् *für* कित् PAT. zu P. 1,2, 6. ईयसो बहुव्रीहौ पुंवद्वचनम् Vârtt. zu P. 1,2,48. — *d*) *Aussage, Ausspruch, Worte, Rede* AK. 1,1,5,1. H. 241. द्वैधे बहूनां वचनं समेषु गुणिनां तथा। गुणिद्वैधे तु वचनं ग्राह्यं ये गुणवत्तमाः॥ JÂGN. 2, 78. मुनि° VARÂH. BṚH. S. 46,99. गुरु° SARVADARÇANAS. 97,1. 103,20. 160,19. स्मृति° PAÑKAT. 164, 20. इदं वचनमब्रुवन् M. 1, 1. मनोवचनकर्मभिः 2, 236. MBH. 3,2162. 2222. 2893. R. 1, 8,17. 28. MEGH. 4. 29. 96. SARVADARÇANAS. 111, 11. PAÑKAT. 140, 16. एतत्कार्याक्षमाणां केषांचिदालस्यवचनम् HIT. Pr. 6,9. 18,19. VET. in LA. (III) 4,4. 7,1. वचनैरसताम् Spr. 2700. तथ्य° so v. a. *Gelöbniss* PAÑKAT. 5,1. परुष° *barsche Rede führend* VARÂH. BṚH. S. 23,17. असत्यवचना नार्यः MBH. 1,3060. इत्युक्तवचनामेताम् 11,596. ईषत्प्रगल्भवचना SÂH. D. 100. — *e*) *Ausspruch* so v. a. *Rath, Geheiss:* वचनशतमवचनकरे नष्टम् Spr. 714. वृद्धानां वचनं ग्राह्यम् 2891. तदस्यापि वचनं संग्राह्यम् PAÑKAT. 158,13. यस्य वचनात् HIT. 13,10. 62, 20,v.l. 72,14. काकवचनेन 23,9. नरेन्द्रवचनासक्ताः R. 1,7,9. श्रेयो मे भर्तृवचनं न जीवितमिहात्मनः 3,48,16. ब्रह्मणो वचनात् MBH. 1,1153. 5574. 6013. 3,2682. 2853. 5,6047. R. 1,1,41. 56. 68. 11,13. 2,64,16. पितुर्वचननिर्देशात् 1,1,24. स्थास्यति वचने तव (vgl. वचनेस्थित) so v. a. *sie werden dir gehorchen* 2,24,15. मया कर्तव्यं वचनं पितुः 14. HIT. 62,19. — *f*) वचनात् und वचनेन (selten) so v. a. *im Namen von:* आरोग्यं ब्रूहि कौसल्याम् — सीतायाः सूत मम च वचनात् R. 2,52,30. मद्वचनात् — वन्द्यौ पादौ महात्मनः 58,13. MBH. 3,16149. 5,7510. MṚKKH. 135,12. मद्वचनाद्वच्यतां सारथिः ÇÂK. 28,18. 55,9. 59,15. 80,23. VIKR. 37,9. MEGH. 99. MÂRK. P. 66,24. भरतः कुशलं वाच्यो वाच्यो मद्वचनेन च R. 2,58,18. MBH. 4,229. — *g*) *Laut, Stimme:* वचनेन व्यवेतानां संयोगत्वं विकल्पते Schol. zu AV. PRÂT. 1,101. तद्वचनं प्रत्यभिज्ञाय HIT. 14,20. मृगेक्षणाभिः — अन्यभृतवल्गुवचनाभिः VARÂH. BṚH. S.48,14. मधुरवचना सारिका MEGH. 83. — *h*) *grammatische Zahl* P. 1,2,51. 2,3,46. VOP. 1,11. 24,6. — *i*) *trockener Ingwer* ÇABDAK. im ÇKDR. — Vgl. अ°, एक°, द्वि°, पर्याय°, पुनर्वचन, प्रतिकूल°, प्रागवचन, प्रिय°, बहु°, बुद्ध°, भाव°, भिन्न°, मूल°, लोक°, विशेष°, सत्य°, सु°.

वचनकर adj. (f. ई) P. 3,2,20, Sch. *einen Rath befolgend, folgsam, gehorsam* Spr. 714.

वचनकारिन् adj. dass. MBH. 3,14867. पितुः R. 2,21,33. R. GORR. 2,127,15.

वचनगोचर adj. *einen Gegenstand der Besprechung bildend* BHÂG. P. 5, 3, 12.

वचनग्राहिन् adj. *Jmdes Worte beherzigend, folgsam, gehorsam* RAMÂN. zu AK. 3,1,24 nach ÇKDR.

वचनपटु adj. *in der Rede geschickt, beredt* VARÂH. BṚH. S. 101, 9. PAÑKAT. 24,20.

वचनानुग (वचन + अ°) adj. *sich nach Jmdes Worten richtend, folgsam, gehorsam* MÂRK. P. 21,55.

वचनावत् (von वचन) adj. *redefertig* ṚV. 9,68,1.

वचनीकर (वचन + 1. कर) *dem Tadel aussetzen:* °कृत R. 7,47,4. Comm.: यलोप आर्षः। वचनीयो निन्द्यः कृतः.

वचनीय (von वच्) 1) adj. *a*) *zu sagen, zu sprechen, was gesagt werden darf:* किं वचनीयमत्र so v. a. *was soll man hierüber viele Worte verlieren?* Spr. 4200. न तानि वचनीयानि मया देवि तवाग्रतः R. 7,47,12. वादिष्ववचनीयेषु M. 8,269. — *b*) *zu benennen:* अश्वः स वचनीयः स्यात् NIR. 1,12. — *c*) *Jmdes* (gen.) *Tadel unterliegend* HARIV. 5267. — 2) n. *Vorwurf, Tadel* R. 7,48,13. KUMÂRAS. 4,21. 5,82. UTTARAR. 21,11 (28,13). एष वचनीयान्मुक्तो ऽस्मि ÇÂK. 111,7. दृष्टा निशाया वचनीयदोषम् MṚKKH. 58,17. — Vgl. वक्तव्य, वाच्य.

वचनीयता (von वचनीय) f. *Tadelhaftigkeit* H. 270. HALÂJ. 1,147. MṚKKH. 46,23. Spr. 595.

वचनेस्थित adj. *gehorsam, folgsam* AK. 3,1,24. H. 432; vgl. स्थास्यति वचने तव R. 2,24,15.

वचर m. 1) *Bösewicht.* — 2) *Hahn* (von वच्) MED. r. 209.

वचलु m. ÇABDAM. im ÇKDR. = शत्रु nach ÇKDR., *offence, fault* WILSON.

1. वचस् (von वच्) n. 1) *Rede, Wort, Sprache* AK. 1, 1, 5, 1. H. 241. न मृष्यते वचः ṚV. 1, 145,2. शृणावद्वचांसि मे 3. अश्मानं चित्स्वे बिभिदुर्वचोभिः 4,16,6. 6,39,2. बृहदु गायिषे वचः 7,96,1. 8,50,1. असेन्या वः पणयो वचांसि 10,108,6. नव 2,18,3. अद्रोघ 3, 14, 6. दैव्य 4,1,15. मधुमत्तम 5,11,5. त्रैष्टुभ 29,6. अनृत 7,104,8. सच्चासच्च वचसी 12. उग्र VS. 5,8. 9,5. स्तोतुः AV. 6,2,1. 4,7,4. 5,13,1. ÇAT. BR. 6, 1, 2, 15. वचोविपरिलोप (so zu verbinden; die Betonung in diesem Buche häufig fehlerhaft) 14, 7,1,26. इन्द्रस्य KAUÇ. 6. Auffallend ist die Form वचस् am Ende eines Pâda für den instr.: दिवित्मता वचः ṚV. 1,26,2. नव्यसा वचः 2,31,5. 6,48,11. 8,39,2 (नव्यसा वचसा 6,62,5). द्रोघाय चिद्वचस आनवाय 6,62,9 ist Tmesis für द्रोघवचसे. — मुनिवचश्चेदम् VARÂH. BṚH. S. 46,63. 71. 54, 110. शृगालो ऽब्रवीद्वचः MBH. 1, 5581. 3, 1804. तं तथेत्यब्रवीद्वचः 2835. 2104. R. 1,1,8. 36. RAGH. 2,41. उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचः 3,25. अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्ति (तनय) ÇÂK. 176. रघुणा समीरितं वचः RAGH. 3,47. Spr. 2701. KATHÂS. 18,300. 321. PAÑKAT. 167,7. HIT. 12,1. VET. in LA. (III) 88,7. अद्रुतर MBH. 3,2646. अनर्थक AK. 1,1,5,16. HALÂJ. 1, 150. अनिबद्ध 139. वक्र Spr. 730. pl. VIKR. 50. ad MEGH. 112. — 2) *Ausspruch* so v. a. *Rath, Geheiss:* वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्

Spr. 2702. वचसा मम *auf meinen Rath* Kathâs. 18, 137. कुरुष्व सत्यं सुहृदां हितं वचः R. 5,80,28. कुरु तूर्णं वचो मम MBh. 1,5938. 5944. 5, 6048. — 3) *Gesang* (der Vögel) Rt. 6, 21. fg. — 4) *ein Ausspruch des Schicksals, fatum:* कल्याणि सर्ववचसां वेदित्री त्वं प्रकीर्त्यसे wird eine Eule angeredet Varâh. Bṛh. S. 88, 42. — Vgl. ग्रात्त°, दुर्वचस्, युक्त°, द्रोघ°, पुरुष°, प्रति°, प्रीति°, मङ्गल°, मत°, मधु°, यज्ञ°, सु°.

2. वचस् (von वञ्च्) in ग्रधोवचस् *nach unten taumelnd, zu Boden sinkend*, wonach u. d. Wort ग्रधोवर्चस् zu ändern ist.

1. वचस am Ende eines comp. = 1. वचस्. ग्रथ यदाचार्यवचसं करोति *wenn er dem Geheiss des Lehrers folgt* Çat. Br. 11,3,3,6.

2. वचसॅ (von 2. वचस्) adj. *schwankend*, vom Wagen Ṛv. 1, 112, 2.

वचसांपति m. *der Herr der Worte*, = बृहस्पति *der Planet Jupiter* Varâh. Bṛh. 2,3. Ind. St. 2,261. Horâç. in Z. f. d. K. d. M. 4,318.

वचस्कार adj. = वचनकार ÇKDr.

वचस्य् (von 1. वचस्), वचस्यते *sich hören lassen, plaudern*, vom *Geräusch* des rinnenden Soma: पतिर्वचस्यते धियः Ṛv. 9, 99, 6. Passivische Bedeutung (= स्तूयते) pflegt man nach Sâjaṇa's Vorgang anzunehmen in der Stelle: स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् 1,55,4. Da dieses gegen die Analogie und den Zusammenhang ist, kann man erklären: *er lässt im Walde sich vernehmen durch die sich beugenden* (Bäume d. h. *ihr Rauschen*), *lieblich den Menschen kündend seine Macht*. Der Dichter vermied auf वने ein वनेभिस् oder वनिभिस् folgen zu lassen. Wollte man वने in einer anderen möglichen Bedeutung fassen, so liesse sich übersetzen: *bei der* (Soma-) *Kufe lässt er sich hören durch den Mund seiner Verehrer* (indem er sie zu Gesängen u. s. w. begeistert). Dazu passt jedoch der folgende Pâda weniger. In keinem Falle ist aber hier an Anachoreten zu denken.

वचस्य adj. sollte wohl AV. 14,2,6 *nennenswerth, rühmlich* bedeuten, scheint aber eine irrige Variante zu sein (वचस्यु Ṛv. 10,40,13).

वचस्यॉ (von वचस्य्) f. *Redelust, Redefertigkeit* Nir. 12,18. विश्वे देवासो ग्रध वृष्ण्यानि ते ऽवर्धयन्सोमवत्या वचस्यया *mit* Soma*trunkener Beredtsamkeit* Ṛv. 10, 113, 8. ग्रग्निं जुह्वा वचस्या नोक्वीमि 2, 10, 6. 35, 1. स ग्रर्विर्वचस्यया 4, 36, 6. 6, 49, 8.

1. वचस्युॅ (wie eben) adj. *beredt* Ṛv. 10,40,13. स्तोम 5,14,6.

2. वचस्युॅ (von 2. वचस्) adj. *schwankend, wackelnd:* ग्रददा ग्रर्भां महते वचस्यवे *dem wankenden Greise* Ṛv. 1, 51, 13. विप्र 182, 3. नौ 2,16,7.

वचाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. B. H. No. No. 586.

वचार्च m. *ein Verehrer der Sonne* (वच), *ein Magier* Verz. d. Oxf. H. 33, *a*, 41.

वचि = वचन 2) *c*) in वचिभेदात् Kâtj. Çr. 6,7,24.

वचोग्रह 1) adj. *die Worte auffassend*. — 2) m. *Ohr* Gaṭâdh. im ÇKDr.

वचोयुॅज् adj. *auf's Wort sich schirrend*, von den Rossen Indra's Ṛv. 1,7,2. 20,2. 6,20,9.

वचोविॅद् adj. *redekundig* Ṛv. 1,91,11. 8,90,16. विप्र 9,64,23. 91,3.

वच्छल = वत्सल H. 1271, v. l.

वच्छिका s. दीर्घ°.

वज्, वॅजति (गतौ) Dhâtup. 7, 78. ववजतुस्, वजिष्य Vop. 8, 58; vgl. व्रज्. Auf eine Wurzel वज् (उज्) etwa mit der Bed. *hart sein* gehen वज्र, उग्र, ग्रोजस्, ग्रोज्मन् zurück. वजयत्ति MBh. 2,1142 fehlerhaft für वर्जयत्ति, wie die ed. Bomb. liest. वाजय् s. bes.

वजग्राम N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339, *a*, 39.

वजह्रण desgl. ebend. 339, *b*, 16. — Vgl. वज्रह्रण.

वॅज्र (wohl desselben Ursprungs wie उग्र, ग्रोजस्, ग्रोज्मन्) Uṇâdis. 2,28. m. n. (in der älteren Sprache nur m.) gaṇa ग्रर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249, *b*, 4. 1) m. n. Indra's *Donnerkeil* Naigh. 2, 20. AK. 1,1,1,42. 3,4,18,115. 25, 186. Trik. 1,1,62. H. 180. an. 2, 453. Med. r. 82. fg. Halâj. 1,56. 5,68. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,28. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 42. विभ्रद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि Ṛv. 6, 23, 1. त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततत्त 1,32,2. 51,7. हिरण्यय 57, 2. 131, 3. 7. 132, 6. 3, 44, 4. ग्रह्निं वज्रेण मघवन्वि वृश्चः 4, 17, 7. ग्रोजिष्ठमस्मिन्नि वधिष्ट वज्रम् 41, 4. शताश्रि 6,17,10. शतपर्वन् 8,6,6. R. 1,46,19. Bhâg. P. 6,12,3. ग्रष्टाश्रि Ait. Br. 2, 1. त्रिषंधि AV. 11, 10, 27. 2, 3, 6. 4, 24, 6. Ait. Br. 4, 1. Çat. Br. 8,5,1,10. पुरोगुरु Pańkav. Br. 8,5,2. Kathop. 6,2. MBh. 3,1780. 1791. Ragh. 2,42. Spr. 963. 2703. वज्रादप्यकृतं भयं विरमति 2706. पौरुहूत Çâk. 48. वासवो भिनत्ति वज्रेण शिरांसि भूभृताम् Varâh. Bṛh. S. 9,39. neben ग्रशनि (vgl. वज्राशनि) 46, 84. Hariv. 7551. fg. वज्रमारुतोपहताः (तरवः) Varâh. Bṛh. S. 59, 3. Bhâg. P. 6,11,19. fg. वज्राहत इवाभवत् so v. a. *wie vom Blitz getroffen* Kathâs. 24, 180. aus den Knochen des Dadhjańk gezimmert MBh. 12, 13213. Bhâg. P. 6, 10, 13. pl. Ṛv. 1, 80, 8. मुमोच निशितबाणान्वज्राणीव शतक्रतुः R. 5,93,16. सवज्राविव तोयदौ 6, 77, 16. सवज्रामिव पौलोमीम् 4, 39, 6. बाहु सवज्रं शक्रस्य क्रुद्धस्यास्तम्भयत्प्रभुः MBh. bei Mallin. zu Ragh. 2, 42. Auch andern Göttern und verderblichen Gewalten wird eine solche Waffe zugeschrieben AV. 4,28,6. 6,6,2. dem Takman 5,22,6. 11,10,3. 12,2,9. einem Râkshasa MBh. 7,4083. dem Viçvâmitra R. 1,56,8. dem Vishṇu Bhâg. P. 10, 59, 20. Magische Waffen, verderbliche Sprüche und dgl. werden auch वज्र genannt AV. 6,134,1. fgg. 135,1. 11,10,12. fg. Çat. Br. 13,7,1,10. 14,1,2,3. ग्राकृति° Lâtj. 2,1,10. साम° Shaḍv. Br. 3, 8. Ait. Br. 3, 7. ग्रभिचार° Kâm. Nîtis. 1, 4. namentlich ein Wasserstrahl: ग्रपाम् AV. 10, 5,10. Çat. Br. 1,1,1,17. 3,1,2,6. उद° Kauç. 47. 49. Bez. des Manju Ṛv. 10,83,1. 84,6. den Donnerkeil denkt man sich in der Gestalt eines Andreaskreuzes (X): °रूपा Varâh. Bṛh. S. 33, 10. वज्राकार 68, 45. वज्राङ्कित 69, 29. °चिह्न 70, 2. ein वज्र ist das Attribut des 15ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 48. wird bei Zauberhandlungen gebraucht Wassiljew 193. — 2) n. in Verbindung mit वाच् oder वाक्य so v. a. *ein Donnerwort:* वाग्वज्रं भरतेनोक्तम् R. 2,103,2 (111,9 Gorr.). वाग्वज्राणि विमुञ्चसि R. Gorr. 2,63,4. वाग्वज्रं विससर्ज Bhâg. P. 1,18, 36. द्विजवाक्यवज्र 2,7,9. R. 2,35,4. das blosse वज्र hat dieselbe Bedeutung: प्रत्यत्तनिष्ठुरं वज्रम् Sâh. D. 362. Pratâpar. 21, *b*, 3. 33, *a*, 7. — 3) m. Bez. *einer best. Heeresaufstellung* M. 7, 191. MBh. 6, 701. 729. 3553. Kâm. Nîtis. 18, 49. 19, 51. °व्यूह Kathâs. 48, 3. — 4) m. Bez. *einer best. Säulenform* Varâh. Bṛh. S. 53, 28. — 5) m. Bez. *einer best. Gestalt des Mondes* Varâh. Bṛh. S. 4, 19. — 6) n. Bez. *einer best. Art zu sitzen* (vgl. वज्रासन) Verz. d. Oxf. H. 94, *a*, N. 2. — 7) Bez. verschiedener Pflanzen: m. *Euphorbia antiquorum* H. 1140. *Asteracantha longifolia Nees* und *weissblühender* Kuça Râǵan. im ÇKDr. = सेहुण्ड Bhâvapr. ebend. n. *Myrobalane* Med. Viçva a. a. O. *Sesamblüthe* (vgl. वज्रपुष्प) Çabdar.

im ÇKDr. — 8) n. Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich die günstigen Planeten in den Häusern 1 und 7 stehen, die ungünstigen in 4 und 10*, Varâh. Bṛh. S. 20,2. Bṛh. 12,3. 5. 14. — 9) m. Bez. *einer best. Zeiteintheilung* (योग) Med. Journ. of the Am. Or. S. 6,236.432. — 10) m. Bez. *einer best.* Soma-*Feier* Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,36. इषुवज्रौ P. 2, 4,4, Sch. — 11) m. Bez. *einer best. Busse:* गोमूत्रयावकपान एको वज्राख्यः कृच्छ्रः Prâjaçkittend. 9,a,8. — 12) m. n. *Diamant (hart wie der Donnerkeil)* AK. 3,4,25,186. H. 1065. H. an. Med. Viçva a. a. O. Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,40. fg. M. 11,57. °समानसार MBh. 1,7076. 12,6387. 16,141. Hariv. 4763. हृतापि ते ऽहं न शरं गमिष्ये वज्रं यथा मत्तिकया निगीर्णम् R. 3,53,59. 4,41,67. Suçr. 1,228,5. वज्रं वज्रेण भिद्यते Kâm. Nîtis. 8,67. मणौ वज्रसमुत्कीर्णे Ragh. 1,4. 6,19. वज्रादपि कठोराणि — लोकोत्तराणां चेतांसि Spr. 2705. वज्राद्वज्रकृतं भयं विरमति 2706. Varâh. Bṛh. S. 16,28. 29,8. 41,8. 44,27. Verz. d. Oxf. H. 31,a,14. Râga-Tar. 3,396. वज्रं न भिद्यते कैश्चिच्छिन्नत्त्यन्यान्मणींस्तु तत् 4,51. Bhâg. P. 3, 15,29. 23,18. fg. 5,17,12. Pańkar. 1,4,56. °परीक्षा Varâh. Bṛh. S. 80 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 86,a,10. — 13) n. *Stahl* ÇKDr. — 14) n. *eine Art Talk* Bhâvapr. im ÇKDr. — 15) m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* (कल्क) Varâh. Bṛh. S. 57,6. — 16) n. = वालक, बालक H. an. Med. Viçva a. a. O. *a child or pupil* Wilson. — 17) m. N. pr. eines Sohnes des Aniruddha MBh. 16,214. 249. Hariv. 9204. fg. VP. 440. 611. Bhâg. P. 1,15,39. 10,90,37. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,251. eines Sohnes des Manu Sâvarṇa Hariv. Langl. I,41 (वज्र der gedruckte Text). N. pr. eines der 7 Daçapûrvin bei den Gaina (vgl. वज्रस्वामिन्) H. 34. eines Ṛshi Varâh. Bṛh. S. 21,2, v. l. für वात्स्य; eines Ministers des Narendrâditja Râga-Tar. 3,384. eines Sohnes des Bhûti (eines Tempelhüters) 7,207. eines Fürsten Hiouen-thsang 2,44. Vie de Hiouen-thsang 150. eines Häretikers 228. — 18) f. वज्रा a) *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. Viçva a. a. O. *Euphorbia antiquorum* Med. — b) Bein. der Durgâ: वज्राङ्कुशकरी देवी वज्रा तेनोपगीयते Devî-P. 45 im ÇKDr. — c) N. pr. einer Tochter Vaiçvânara's VP. 147, N. 7. — 19) f. वज्री *eine Art Euphorbia* Med. — Vgl. इन्द्रवज्र (in den Nachträgen), इन्द्रवज्रा, उपेन्द्र°, कर्मवज्र, ज्ञान°, दान°, नीच°, लीला°, शैवाल°, शोण°, स्वर्ण°.

वज्रक (von वज्र) 1) adj. in Verbindung mit तैल Bez. *eines mit verschiedenen Species zubereiteten Oeles gegen Aussatz* Suçr. 2,64,5. 70,14. — 2) n. a) = वज्रक्षार Hâr. 220. Râgan. im ÇKDr. — b) Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपग्रह) Gjotistattva im ÇKDr. — Vgl. द्वि°, महा°.

वज्रकङ्कट m. Bein. Hanumant's H. 705.

वज्रकण्ट und °क m. *Euphorbia neriifolia* oder *antiquorum Lin.* Gaṭâdh. im ÇKDr. Ausn. 16. 29. °कण्टक m. *Asteracantha longifolia Nees* Râgan. im ÇKDr.

वज्रकण्टकशाल्मली f. *ein Baumwollenbaum mit Stacheln von der Härte eines Diamants*, N. einer Hölle Bhâg. P. 5,26,7. 21.

वज्रकन्द m. *ein best. Knollengewächs* Ratnam. im ÇKDr.

वज्रकपालिन् m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,23.

वज्रकर्णी m. = वज्रकन्द Ratnam. im ÇKDr.

वज्रकालिका f. ein Name der Mutter Çâkjamuni's Trik. 1,1,13.

वज्रकाली f. Bez. einer जिनशक्ति Vjâḍi beim Schol. zu H. 233.

वज्रकीट m. *ein best. Insect*, welches Holz und sogar Steine anbohren soll, = घुण Mallin. zu Çiç. 3,58. Verz. d. Oxf. H. 24,a, N. 4. — Vgl. वज्रदंष्ट्र.

वज्रकीलाय्, (von वज्र + कील) *einen Donnerkeil darstellen:* मर्मोपघातिभिः प्राणैर्वज्रकीलायितं स्थिरैः Uttarar. 22,10 (30,2).

वज्रकुक्षि N. pr. einer Höhle Burn. Intr. 222.

वज्रकूट 1) m. a) *ein aus Diamanten bestehender Berg* Bhâg. P. 3,13, 29. — b) N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,20,4. — 2) n. N. pr. einer mythischen Stadt auf dem Himâlaja Kathâs. 44,5. 65,242.

वज्रकेतु m. Bein. des Dämons Naraka Kâlikâ-P. 38 im ÇKDr. वज्रकेतोः सुतश्चोग्रो दानवो ऽरिविदारणः । पातालकेतुर्विख्यातः पातालात्तरसंश्रयः ॥ Mârk. P. 21,29.

वज्रक्षार n. *eine Art Aetzkali* Râgan. im ÇKDr.

वज्रगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21. Daçabhûm. 2. Saṁputodbh. 1.

वज्रगोप m. = इन्द्रगोप Dravjar. in Nigh. Pr.

वज्रघोष adj. *wie ein Donnerkeil tosend* Ragh. 18,20.

वज्रचञ्चु m. *Geier* Madanav. in Nigh. Pr.

वज्रचर्मन् m. *Rhinoceros (eine harte Haut habend)* Râgan. im ÇKDr.

वज्रच्छेदकप्रज्ञापारमिता oder वज्रच्छेदिका प्र° Titel eines buddh. Sûtra Schmidt und Böhtlingk, Verz. der tib. Hdschrr. 6. Burn. Intr. 7. 73. 465. 593. Lot. de la b. l. 338. Vie de Hiouen-thsang 310. Wassiljew 1. 3. 122. 145. 302. Die Schreibart वज्रच्छेदिक ist zu verwerfen.

वज्रजित् fehlerhafte v. l. H. 231 für वज्रिजित्.

वज्रज्वलन m. *Blitz* Kâm. Nîtis. 1,4.

वज्रज्वाला f. 1) dass. Halâj. 1,57. — 2) N. pr. einer Enkelin Vairokana's R. 7,12,23.

वज्रट m. N. pr. des Vaters des Uvaṭa (Ûaṭa) Verz. d. B. H. No. 36. 164. Verz. d. Oxf. H. 297,a,27. 405,b, No. 10.

वज्रटीक m. N. pr. eines Buddha Trik. 1,1,23.

वज्रणाखा f. N. pr. P. 4,1,58, Sch. — Vgl. वज्रनख.

वज्रतर (von वज्र) m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* (कल्क) Varâh. Bṛh. S. 57,7.

वज्रतुण्ड 1) adj. *einen Schnabel von der Härte des Diamanten habend:* गृध्राः (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 5,26,35. — 2) m. a) *Geier.* — b) *Stechfliege, Mücke* Râgan. im ÇKDr. — c) Bein. Garuḍa's Trik. 1,1,43. H. 231. — d) Bein. Gaṇeça's (vgl. वक्रतुण्ड) Trik. 1,1,55. — e) *Cactus Opuntia* Madanav. in Nigh. Pr.

वज्रतुल्य m. *Lasurstein* (वैडूर्य) Dravjar. in Nigh. Pr.

वज्रदंष्ट्र 1) adj. *Spitzzähne von der Härte des Diamanten habend:* श्वानः Bhâg. P. 5,26,27. नरसिंह 18,8. — 2) m. a) = वज्रकीट Verz. d. Oxf. H. 24, a, N. 4. — b) N. pr. α) eines Râkshasa R. 5,79,6. 80,3. 6,33,46. 69,11. — β) eines Asura Bhâg. P. 8,10,20. — γ) eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 65,72. — δ) eines Löwen Pańkat. 87,4.

वज्रदक्षिण adj. *den Donnerkeil in der Rechten haltend* ṚV. 1,101,1. 10,23,1. m. Bein. Indra's H. ç. 31 (fälschlich वज्रो द°).

वज्रदण्ड adj. *einen mit Diamanten verzierten Stiel habend* Bhâg. P. 8,10,13.

वज्रदण्डक n. *Cactus Opuntia* DRAVJAR. in NIGH. PR.

वज्रदत्त m. N. pr. eines Sohnes des Bhagadatta MBH. 14, 2176. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 52. श्री° N. pr. eines buddhistischen Autors BURN. Intr. 542.

वज्रदन्त 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *a) Eber.* — *b) Ratte* ÇABDAM. im ÇKDR.

वज्रदशन 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *Ratte* H. 1300.

वज्रदण्ष्ट्र m. N. pr. eines Fürsten der Jaksha VJUTP. 88.

वज्रदेश m. N. pr. einer *Oertlichkeit* Verz. d. Oxf. H. 352, *b*, 16.

वज्रद्रु m. Bez. *verschiedener Arten von Euphorbia* AK. 2, 4, 2, 24.

वज्रद्रुम m. desgl. ÇABDAR. im ÇKDR.

वज्रद्रुमकेसरध्वज m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva VJUTP. 88.

वज्रधर 1) adj. *den Donnerkeil tragend;* m. Bein. Indra's UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2, 22. HALÂJ. 1, 52. MBH. 1, 7812. 3, 1780. 11905. 6, 3664. 15, 548. R. 2, 25, 32. 3, 18, 41. 43, 41. 53, 60. 54, 27. RAGH. 18, 20. BHÂG. P. 2, 7, 1. 6, 10, 18. 11, 9. 8, 11, 27. — 2) m. N. pr. eines buddhistischen Heiligen TRIK. 1, 1, 21. WASSILJEW 7. 125. 179. 188. — 3) m. N. pr. eines Fürsten RÂǴA-TAR. 8, 540. 627.

वज्रधात्वी f. N. pr. der Gattin Vairokana's WILSON, Sel. Works II, 12. fehlerhaft für °धात्वीश्वरी, wie VJUTP. 105 eine Tantra-Gottheit heisst. Nach SÂDHANAM. 83 ist लोकधात्वीश्वरी ein Bein. der Mârîkî, der Gattin Vairokana's.

वज्रनख adj. *Krallen von der Härte des Diamanten habend:* नृसिंह, नरसिंह TAITT. ÂR. 10, 1, 6. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9, 104. BHÂG. P. 5, 18, 8. — Vgl. वज्रणखा.

वज्रनगर n. Bez. der *Stadt* des Dânava Vagranâbha HARIV. 8559. — Vgl. वज्रपुर.

वज्रनाभ 1) adj. *eine diamantene Nabe habend:* चक्र MBH. 1, 8196. 8, 3853. 10, 625. 16, 60. R. 4, 43, 33. — 2) m. N. pr. *a)* eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2565. — *b)* eines Dânava HARIV. 199. 8553. fgg. 12933. — *c)* eines Fürsten SÂH. D. 185, 1. eines Sohnes des Uktha HARIV. 827. VP. 386. des Unnâbha RAGH. 18, 20. des Sthala BHÂG. P. 9, 12, 2.

वज्रनाभीय adj. *zum* Dânava Vagranâbha *in Beziehung stehend, von ihm handelnd* HARIV. 152. fgg. in den Unterschriften.

वज्रनिर्घोष m. *Donnerschlag* HALÂJ. 1, 57.

वज्रनिष्कम्भ MBH. 5, 3595 fehlerhaft für वज्रविष्कम्भ.

वज्रनिष्पेष m. s. u. निष्पेष.

वज्रपञ्जर 1) Bez. *gewisser Gebete an die* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 71, *b*, 15. — 2) m. N. pr. eines Dânava KATHÂS. 46, 38. 47, 28.

वज्रपत्रिका f. *Asparagus racemosus* AUSH. 15.

वज्रपाणि 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend;* m. Bein. Indra's TRIK. 1, 1, 57. SHAḌV. BR. 5, 3. MBH. 1, 5771. 3, 11942. 8, 1689. R. 1, 19, 4 (12 GORR.). 2, 74, 16. 3, 29, 23. 6, 92, 11. 111, 32. RAGH. 2, 42. BHÂG. P. 8, 11, 3. 9, 6, 19. — 2) adj. *dessen Donnerkeil die Hand ist,* von den Brahmanen: वज्रपाणिर्ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रं वज्ररथं स्मृतम्। वैश्या वै दानवज्राश्च कर्मवज्रा यवीयसः॥ MBH. 1, 6487. — 3) m. Bez. *einer Klasse von Genien bei den Buddhisten* LALIT. ed. Calc. 75, 13. SCHIEFNER, Lebensb. 244 (14). HIOUEN-THSANG 1, 134. 2, 114. acht an der Zahl 1, 319. °धारणी 2, 114. — 4) m. N. pr. eines Dhjânibodhisattva BURN. Intr. 117. 538. 557. WILSON, Sel. Works II, 13. fg. 17. WASSILJEW 186. fgg. 191. 198.

वज्रपाणित्व n. *das Halten des Donnerkeils in der Hand:* महेन्द्रस्य VARÂH. BṚH. S. 58, 42.

वज्रपाणिन् = वज्रपाणि 1) HARIV. 1492. 9161.

1. **वज्रपात** m. *das Niederfallen des Donnerkeils, ein niederfahrender Blitz:* बाणान्वज्रपातसमस्वरान् R. 6, 92, 11. °हतशैलशिला PRAB. 67, 10. °सदृशं वचः PAṄKAT. 246, 17. वचनं °दारुणम् 66, 19. °दुःसहतरं वचनम् ed. orn. 59, 14. Am Ende eines adj. comp. f. आ Spr. 737.

2. **वज्रपात** adj. *wie ein Donnerkeil niederfahrend:* बाण R. 1, 28, 26.

वज्रपाषाण m. *eine Art Spath* DRAVJAR. in NIGH. PR.

वज्रपुर n. Bez. der *Stadt* des Dânava Vagranâbha HARIV. 8556. — Vgl. वज्रनगर.

वज्रपुष्प n. 1) *ein Diamant von Blume, eine kostbare Blume* WILSON, Sel. Works II, 35. — 2) *Sesamblüthe* AK. 2, 4, 2, 56.

वज्रपुष्पा f. *Anethum Sowa Roxb.* RÂǴAN. im ÇKDR.

वज्रप्रभ m. N. pr. eines Vidjâdhara KATHÂS. 35, 113. 122. 44, 6.

वज्रप्रभाव m. N. pr. eines Fürsten der Karûsha HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 53.

वज्रप्रस्तारिणी f. N. einer Tantra-Gottheit: °मन्त्रः Verz. d. Oxf. H. 93, *b*, 1. वज्रप्रस्ताविनीपूजायन्त्र (sic) 93, *b*, 48.

वज्रबाहु 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend,* Indra: मन्वे सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ṚV. 1, 165, 8. 2, 12, 12. fg. 4, 20, 1. Indra-Agni 1, 109, 7. Rudra 2, 33, 3. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 74, *b*, 7. eines Fürsten von Orissa MACK. Coll. I, 24.

वज्रबीजक m. *Guilandina Bonduc* RÂǴAN. im ÇKDR.

वज्रभूमि f. N. pr. einer Oertlichkeit WILSON, Sel. Works I, 295.

वज्रभूमिरत्न n. *ein best. Edelstein,* = वैक्रान्त DHANV. in NIGH. PR.

वज्रभृकुटि N. einer Tantra-Gottheit VJUTP. 105.

वज्रभृत् adj. *den Donnerkeil haltend,* m. Bein. Indra's ṚV. 1, 100, 12. 6, 17, 2. MBH. 1, 1151. 7457. 4, 1177. 1615. 5, 5431. HARIV. 3955. R. 3, 9, 19. KATHÂS. 29, 13.

वज्रमणि m. *Diamant* Spr. 2920. 3325.

वज्रमण्डा f. Titel einer Dhâraṇî BURN. Intr. 543.

वज्रमय (von वज्र) adj. (f. ई) *diamanten, hart —, unverwüstlich wie der Diamant* Spr. 3043. UTTARAR. 121, 10 (164, 6). KATHÂS. 11, 65. 45, 407.

वज्रमित्र m. N. pr. eines Fürsten VP. 471. BHÂG. P. 12, 1, 16.

वज्रमुकुट m. N. pr. eines Sohnes des Pratâpamukuṭa KATHÂS. 75, 62. VET. in LA. (III) 4, 22.

वज्रमुष्टि 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend,* m. Bein. Indra's R. 6, 72, 29. — 2) m. N. pr. *a)* eines Râkshasa R. 6, 18, 14. 39. 7, 5, 35. — *b)* zweier Krieger KATHÂS. 10, 19. 109, 50. 55.

वज्रमूली f. *Glycine debilis Lin.* RÂǴAN. im ÇKDR.

वज्रयोगिनी f. N. pr. einer Gottheit WILSON, Sel. Works II, 21. Verz. d. Oxf. H. 149, *a*, 14.

वज्ररथ adj. *dessen Donnerkeil der Wagen ist*, Bez. des Kriegers MBH. 1,6487; vgl. u. वज्रपाणि 2).

वज्ररद 1) adj. *Zähne von der Härte des Diamanten habend.* — 2) m. *Eber* TRIK. 2,5,5.

वज्ररात्र n. N. pr. einer Stadt KATHÂS. 44,55. 82.

वज्रलिपि f. Bez. *einer best. Schrift* LALIT. ed. Calc. 144,6.

वज्रलेप m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* VARÂH. BṚH. S. 57,3. Spr. 2704. °घटितेव (वज्रसारघटितेव DAÇAR. S. 149,16) MÂLATIM. 77,2; vgl. वज्रलेबकुडिदं विम्र मे हृत्यनुम्रलं VIKR. 47,18.

वज्रलेपाय्, °यते *den* Vagralepa *genannten Mörtel darstellen, fest haften wie dieser:* परस्पराश्रयवज्रप्रकारदोषो वज्रलेपायते SARVADARÇANAS. 5, 13. fg. वज्रलेपायमानत्व 132,22.

वज्रलोहक *Magnet* DRAVJAR. in NIGH. PR.

वज्रवध m. *forked or oblique [that is, cross] multiplication* COLEBR. Alg. 363.

वज्रवरचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten von Orissa MACK. COLL. I, 24.

वज्रवल्ली f. *Heliotropium indicum* HÂR. 95.

वज्रवाॅह्, °वाह् adj. *den Donnerkeil führend:* वृषणा: ṚV. 6,44,19.

वज्रवारक adj. ehrendes Beiwort einiger Weisen: जैमिनिश्च सुमन्तुश्च वैशंपायन एव च। पुलस्त्यः पुलहश्चैव पञ्चैते वज्रवारकाः॥ ÇKDR. u. जैमिनि und सुमन्तु nach einem PURÂṆA.

वज्रवाराही f. ein Name der Mutter Çâkjamuni's TRIK. 1,1,14.

वज्रविद्राविणी f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit WILSON, Sel. Works II, 12.

वज्रविष्कम्भ m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBH. 5,3595 nach der Lesart der ed. Bomb., °निष्कम्भ ed. Calc.

वॅज्रविहत adj. *vom Donnerkeil getroffen* ÇAT. BR. 8,2,3,14.

वज्रवीर m. Bein. Mahâkâla's WILSON, Sel. Works II, 21.

वज्रवृत्त m. *Cactus Opuntia* SUÇR. 1,138,21. RÂGA-TAR. 4,526. = सेहुण्ड RÂGAN. im ÇKDR.

वज्रवेग m. N. pr. 1) eines Râkshasa MBH. 3,16405. 16407. 16433. fg. — 2) eines Vidjâdhara KATHÂS. 65,58. fgg.

वज्रव्यूह s. u. वज्र 3).

वज्रशल्य m. *Stachelschwein* RÂGAN. im ÇKDR.

वज्रशाखा f. N. eines von Vagrasvâmin gegründeten Zweiges der Gaina WILSON, Sel. Works I, 337. fg.

वज्रशीर्ष m. N. pr. eines Sohnes des Bhṛgu MBH. 13,4145.

वज्रशुचि s. वज्रसूचि.

वज्रशृङ्खला f. N. pr. einer der 16 Vidjâdevî H. 239.

वज्रशृङ्खलिका f. *Asteracantha longifolia Nees* RÂGAN. in NIGH. PR. — Vgl. वज्रास्थिशृङ्खला.

वज्रसंहत m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 5,11.

वज्रसंघात m. Bez. *eines best. fest haftenden Mörtels* VARÂH. BṚH. S. 57,8.

वज्रसत्त्व 1) adj. *eine diamantene Seele habend* WASSILJEW 188. — 2) m. N. pr. eines Dhjânibuddha BURN. Intr. 525. WILSON, Sel. Works II, 12. 37. 39.

वज्रसत्त्वात्मिका f. N. pr. der Gattin Vagrasattva's WILSON, Sel. Works II, 12.

वज्रसमाधि m. Bez. *einer best. Vertiefung* bei den Buddhisten HIOUEN-THSANG I, 437. II, 180. Vie de HIOUEN-THSANG 140.

वज्रसार 1) adj. *a) hart wie der Diamant:* भुज R. GORR. 1,41,20. हृदय 4,19,15. मुष्टि BHÂG. P. 3,19,25. 7,10,59. 10,44,8. °प्रकारसदृशं दारुणं वचः PANKAT. 58,10; vgl. वज्रसमानसार MBH. 1,7076. — *b) diamanten:* स्तम्भ MBH. 13,5251. — 2) *Diamant:* वज्रसारोज्ज्वल (वेश्मन्) MBH. 5,3576. °घटितेव (v. l. वज्रलेपघटितेव MÂLATIM. 77,2) DAÇAR. S. 149,16. — 3) m. N. pr. zweier Männer KATHÂS. 58,80. fgg. RÂGA-TAR. 5,226.

वज्रसारमय (von वज्रसार) adj. *diamanten, hart wie der Diamant:* शिशु MBH. 2,718. शृङ्ग 13,833. हृदय 9,60. Spr. 4480. R. 2,61,9. KATHÂS. 11, 54. °त्व n. 44,5.

वज्रसारीकर् *hart wie der Diamant machen:* कुसुमबाणान् °करोषि ÇÂK. 54.

वज्रसूचि und °सूची f. 1) *eine diamantene Nadel:* °सूच्यग्र (प्रतोद) MBH. 13,2786. — 2) Titel einer dem Çaṁkarâkârja zugeschriebenen Upanishad COLEBR. Misc. Ess. I, 113. Ind. St. 1,250. HALL 128. Verz. d. Pet. H. No. 4 (श्रास°). — 3) Titel eines Werkes des Açvaghosha, herausgegeben 1860 von A. WEBER. Fälschlich वज्रशुचि BURN. Intr. 215. 557.

वज्रसूर्य m. N. pr. eines Buddha TRIK. 1,1,17.

वज्रसेन m. N. pr. eines Fürsten von Çrâvastî ÇATR. 10,50. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 397,*a*,4. 402,*a*, No. 205.

वज्रस्थान n. N. pr. einer *Oertlichkeit* R. GORR. 1,66,21.

वज्रस्वामिन् m. N. pr. einer der 7 Daçapûrvin bei den Gaina WILSON, Sel. Works I, 336. fgg. 341. ÇATR. 14,195. fgg.

वॅज्रहस्त 1) adj. *den Donnerkeil in der Hand haltend:* Indra ṚV. 1, 173,10. 2,12,13. 19,2. 6,22,5. Indra-Agni 1,109,8. die Marut 8,7, 32. Çiva ÇIV. — 2) f. श्रा *a)* N. einer der 9 Samidh GṚHJAS. 1,27. — *b)* N. pr. einer buddhistischen Göttin WILSON, Sel. Works II, 39. KÂLAKAKRA 1,119.

वज्रहूणा N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,5. 6. — Vgl. वत्राहूणा.

वज्रहृदय n. Titel eines buddhistischen Werkes BURN. Intr. 543.

वज्रांशु m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa HARIV. 9195 nach der Lesart der neueren Ausg., वज्रासु ed. Calc.

वज्राकर 1) m. *eine Fundgrube für Diamanten* RAGH. 18,20. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 102,*a*, No. 158.

वज्राकृति adj. *die Gestalt des Donnerkeils habend:* das Zeichen des Gihvâmûltja Vop. 1,18.

वज्राख्य 1) adj. *den Namen* वज्र *führend:* व्यूह MBH. 6,701. चन्द्र VARÂH. BṚH. S. 4,19. कल्क 57,6. कृच्छ्र PRÂJAÇKITTEND. 9,*a*,8. — 2) m. *eine Art Spath* DRAVJAR. in NIGH. PR. SUÇR. 2,70,10.

वज्राङ्कुशी f. N. einer Tantra-Gottheit VJUTP. 105.

वज्राङ्ग 1) m. *Schlange* RÂGAN. im ÇKDR. v. l. वक्राङ्ग wohl richtiger. — 2) f. ई *Heliotropium indicum* BHÂVAPR. im ÇKDR. *Coix barbata Roxb.* ÇABDAK. ebend.

वज्राचार्य m. *ein Diamant von Lehrer* und zugleich N. pr. eines best. *Lehrers* WILSON, Sel. Works II, 17. 20. 29. BURN. Intr. 527.

वज्रादित्य m. N. pr. eines Fürsten von Kâçmîra Râǵa-Tar. 4, 43. 355. 393.

वज्राभ (वज्र + आभा) m. *eine Art Spath* Râǵan. im ÇKDr.

वज्राभ्यास m. *multiplication crosswise or zigzag* Colebr. Alg. 171.

वज्राम्बुजा f. N. einer Tantra-Gottheit Vjutp. 105.

वज्राय् (von वज्र), °यते *zum Donnerkeil werden:* पक्षाणां हि वधे सूत वज्रायन्ते तृणान्यपि MBh. 7, 429. Spr. 2507. मृदुगतिर्वातो ऽपि वज्रायते Mahân. 201 = Çuk. ed. Bomb. S. 4.

वज्रायुध 1) adj. *dessen Waffe der Donnerkeil ist,* m. Bein. Indra's Hariv. 7551. Bhâg. P. 6, 11, 13. — 2) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 120, 14.

वज्राशनि m. f. Indra's *Donnerkeil* Trik. 1, 1, 62. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191, *b*, 1. °समस्वन R. 4, 43, 38. वज्राशनीनां संपाते, °विभूषित, °निपात 5, 7, 64. Oft werden वज्र und अशनि von einander unterschieden, z. B. Hariv. 7551. fg.

वज्रासन n. 1) *ein diamantener Thron* Burn. Intr. 387. Hiouen-thsang I, 458. 460. Vie de Hiouen-thsang 139. fg. — 2) Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1. 102, *b*, 13. 20. 234, *a*, 21.

वज्रासु s. u. वज्रांशु.

वज्रास्थिशृङ्खला f. *Asteracantha longifolia Nees* Râǵan. im ÇKDr. Dieser Ausdruck wird wohl eher zwei Namen enthalten: वज्रशृङ्खला und अस्थिशृङ्खला; vgl. वज्रशृङ्खलिका.

वज्राह्विका f. *Carpopogon pruriens* Râǵan. in Nigh. Pr.

वज्रिजित् m. *Besieger* Indra's (वज्रिन्), Bein. Garuḍa's H. 231.

वज्रिन् (von वज्र) 1) adj. *a) den Donnerkeil habend:* Indra Ṛv. 1, 7, 2. 32, 1. 3, 46, 1. 5, 22, 4. 10, 22, 2. AV. 10, 4, 12. Indra-Agni Ṛv. 6, 59, 3. Çiva MBh. 13, 981. — *b) das Wort* वज्र *enthaltend* Pańkav. Br. 10, 6, 5. — 2) m. *a)* Bein. Indra's AK. 1, 1, 1, 38. H. 171. Med. n. 124. यः कामयेत वज्री स्यामिति Pańkav. Br. 12, 13, 12. MBh. 4, 821. 8, 3053. 14, 266. R. 2, 23, 33. 64, 22. 4, 18, 11. 6, 30, 17. Ragh. 9, 24. Çâk. 193, v. l. Vikr. 5. Kathâs. 17, 18. Bhâg. P. 3, 1, 39. 6, 12, 3. unter den Viçve Devâḥ MBh. 13, 4358. — *b) ein* Buddha Trik. 1, 1, 8. Med. — 3) f. Bez. gewisser Ishṭakâ TS. 5, 7, 3, 1.

वज्रिवस् voc. (vgl. P. 8, 3, 1) = वज्रिन् 1) *a)* Ṛv. 1, 121, 14. 6, 37, 4. 45, 18. — Scheint eine Nachbildung von अद्रिवस्, हरिवस् zu sein.

वज्रीकरण (von वज्र + 1. कर्) n. *das zum-Donnerkeil-Machen,* unter den 18 संस्काराः कुण्डानाम् Verz. d. Oxf. H. 105, *b*, 3.

वज्रीभूत (von वज्र + 1. भू) adj. *zum Donnerkeil geworden* Sâj. zu Ṛv. 8, 14, 13.

वज्रेन्द्र m. N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 3, 105. 381.

वज्रेश्वरी f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Wilson, Sel. Works II, 39.

वज्रोदरी f. N. pr. einer Râkshasî R. 5, 23, 44.

वज्रोली f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Verz. d. Oxf. H. 235, *a*, 23.

वञ्च्, वञ्चति (गतौ) Naigh. 2, 14. Dhâtup. 7, 7. वञ्चित्वा und वचित्वा P. 1, 2, 24. Vop. 26, 205. वक्त्वा P., Sch.; wann der Palatal in einen Guttural übergeht P. 7, 3, 63. 1) *wanken, wackeln, krumm —, schief gehen* AV. 4, 16, 2. जीर्णा दण्डेन वञ्चसि (fälschlich वञ्चयसि Çvetâçv. Up. 4, 3) 10, 8, 27. यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति वञ्चति *watschelt* VS. 23, 22. कपोताय च्क्रिवपताय वञ्चते Çâṅkh. Çr. 12, 16, 5. विशो वै राष्ट्राय वञ्चन्ति Çat. Br. 13, 2, 9, 6. *gehen —, gelangen zu:* ववञ्चुश्चाहवक्षितिम् Bhaṭṭ. 14, 74. वञ्चित्वाप्यम्बरं दूरम् 7, 106. — 2) *schleichen* (in böser Absicht) VS. 16, 21. — 3) pass. वच्यते *a) sich schaukeln, sich drehen, rollen, volvi; sich tummeln* (von Rossen): वच्यन्ते वां ककुहासः Ṛv. 1, 46, 3. 184, 3. मनना वच्यमानाः *mit Bedacht sich tummelnd* d. h. *besonnen und doch eilig* 3, 6, 1. वच्यन्तां ते वह्नयः 2. वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः AV. 20, 127, 4. — *b)* übertragen: स्तोमासो मनसा वच्यमानाः *in der Brust sich bewegend* Ṛv. 10, 47, 7. इन्द्रं मतिर्हृद आ वच्यमानाच्छा पतिं जिगाति *hervordringend aus* 3, 39, 1. — 4) वञ्चते MBh. 12, 10934 fehlerhaft für वञ्च्यते (s. caus.), wie die ed. Bomb. liest.

— caus. 1) einem Feinde, einer Gefahr *ausweichen, entgehen, entrinnen, entwischen;* act. mit acc.: अहिं वञ्चयति P. 1, 3, 69, Sch. Vop. 23, 52. तदस्माभिरिमं पापं तं च पापं सुयोधनम्। वञ्चयद्भिर्निवस्तव्यं कृत्वावासं क्वचित्क्वचित् MBh. 1, 5794. लयमास्थाय (so die ed. Bomb.) राधेयो भीमसेनमवञ्चयत् 7, 5767. 9, 3224. Hariv. 13424. Kathâs. 64, 35. वाताश्ववेगवञ्चितसैनिक 75, 89. स शरान्वञ्चयामास R. 5, 40, 9. 7, 32, 45. Kathâs. 49, 147. fg. Bhâg. P. 3, 18, 15. 10, 37, 5. 67, 14. मृत्युम् MBh. 9, 3291. R. 7, 23, 1, 34. med.: वञ्चयानौ पुनश्चैव चेरतुः MBh. 9, 3195. अवञ्चयत मायाश्च स्वमायाभिर्नरद्विषाम् Bhaṭṭ. 8, 43. — 2) *Jmd anführen, täuschen, hintergehen, betrügen;* med. Dhâtup. 33, 29. P. 1, 3, 69. Vop. 23, 52. Gît. 8, 7. धूर्ता यद्वञ्चयन्ते जनान्नून् Kathâs. 24, 79. 28, 175. 39, 174. 66, 52. मूर्खास्त्वामववञ्चन्त Bhaṭṭ. 15, 15. act. MBh. 13, 1636. 2236. Hariv. 7755. Mṛkkh. 120, 25. Ragh. 19, 17. 33. Spr. 2819. 4962. Prab. 15, 4. LA. (III) 86, 12. Bhâg. P. 8, 9, 21. कालं वञ्चयता तं तम् so v. a. *Zeit gewinnend* 9, 7, 14. वञ्चयितुम् Kathâs. 7, 89. मद्रराजं च राजानमायान्तं पाण्डवान्प्रति। उपकारैर्वञ्चयित्वा वर्त्मन्येव सुयोधनः MBh. 1, 497. R. 2, 37, 21. 3, 44, 20. 47, 16. Ragh. 12, 53. Kathâs. 24, 200. 28, 184. 39, 171. Râǵa-Tar. 5, 303. Bhâg. P. 5, 26, 9. Pańkat. 35, 12. 95, 15. 169, 1. pass.: वञ्च्यते (so mit der ed. Bomb. zu lesen) MBh. 12, 10934. Kathâs. 29, 82. 32, 167. 34, 228. 61, 203. Prab. 19, 15. 27, 8. मया भूतेन्द्रियग्रामो नोपभोगैरवञ्च्यत *wurde nicht betrogen um* Kathâs. 13, 133. वञ्चित *angeführt, getäuscht, hintergangen, betrogen* AK. 3, 1, 41. H. 442. MBh. 1, 8242. 3, 11064 (S. 571). 5, 7449. 7454. R. 2, 24, 11 (25, 10 Gorr.). R. Gorr. 2, 35, 23. 59, 19. 3, 33, 18. 41, 16. 4, 34, 30. 5, 38, 10. 79, 3. Megh. 28. Kumâras. 4, 10. 5, 49. Mâlav. 51. Spr. 434. 3282. Kathâs. 17, 155. 18, 178. 20, 134. 26, 90. 37, 231. 61, 23. Daçak. 72, 8. Prab. 58, 3. Bhâg. P. 1, 15, 5. 3, 23, 57. 4, 23, 28. 25, 56. 62. 5, 13, 17. 14, 30. 10, 51, 47. Pańkat. 199, 23. Hit. III, 1. Haeb. Anth. 528, Çl. 1 (wo के न त्वया वञ्चिताः zu lesen ist). अवञ्चित Kathâs. 30, 84. 34, 210. Die Ergänzung im loc.: ननु नाम स्त्रियः साध्यः प्रियभोगेषवञ्चिताः (°भोगे ष die neuere Ausg.) । पत्नीनामपरित्याज्याः Hariv. 4790. im instr.: तैस्तैः फलैर्वञ्चिताः Spr. 784. 1337. Mârk. P. 23, 81. im abl.: स एव वञ्च्यते तेन ब्राह्मणाच्छागतो यथा Spr. 336. अहं सुतप्राप्तेः सपत्न्या वञ्चितैतया Kathâs. 72, 75. तद्वञ्चितवामनेत्रा *darum betrogen* so v. a. *dessen entbehrend* Ragh. 7, 8. *in seinen Erwartungen getäuscht* so v. a. *überrascht* R. 2, 84, 16. — 3) वञ्चिता f. Bez. *einer Art Räthsel* Verz. d. Oxf. H. 204, *a*, 27. — 4) वञ्चयसि Çvetâçv. Up. 4, 3 fehlerhaft für वञ्चसि, wie AV. 10, 8, 27 gelesen wird.

— intens. वनीवञ्चीति, वनीवच्यते P. 7, 4, 84. *sich drehen, sich tum-*

meln: अवावचीत्सारथिरस्य केशी ṚV. 10,102,6.

— अच्छ pass. *provolvi ad:* इयं हि त्वा मतिर्ममाच्छा सुजिह्व वच्यते ṚV. 1,142,4.

— अनु *nachwanken* TS. 7,4,22,1.

— अभि caus. *Jmd hintergehen, betrügen:* दुष्कृत्रास्म्यभिवञ्चितः MBh. 5,7506.

— आ pass. *hervorrollen, hervorquellen* ṚV. 9,2,2. आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानः 97,2. 108,10.

— उद् *hinauswanken, hinausschleichen* TS. 7,4,22,1.

— उप caus. *Jmd in seinen Erwartungen täuschen:* °वञ्चित R. 2,52, 18. — Vgl. सूपवञ्चन.

— निस् *hintergehen:* शपथैः किं धूर्त निर्वञ्चसे Spr. 688.

— परि *herumschleichen* VS. 16,21. TS. 7,4,22,1. — caus. *Jmd anführen, hintergehen:* °वञ्चित Hariv. 7107. Spr. 3195.

— सम् *schwanken* TS. 7,4,22,1.

वञ्चक (vom caus. von वञ्च्) nom. ag. 1) *der Andere anführt, Betrüger* AK. 3,1,47. Trik. 3,3,41. H. 376. an. 3,94. Med. k. 154. M. 9, 258. MBh. 2,527. 1207. 7,2598. स्फुटवक्ता न वञ्चकः Spr. 1625. Kathâs. 39,121. Khandom. 153. प्रकाश°, प्रच्छन्न° M. 9,257. अवञ्चकः परिज्ञनः *ehrlich* Spr. 3288. in comp. mit dem Object: ज्ञन° Hariv. 7124. विश्वस्त° Kathâs. 26,240. अन्य° Çatr. 14,288. जगद्वञ्चक Verz. d. Oxf. H. 133,*b*,36. *Bösewicht* (खल) H. an. Med. — 2) m. *Schakal* AK. 2,5,5. Trik. H. an. Med. Hâr. 78. Hit. 22,8. 14. 40,20. — 3) m. *Moschusratze* (गेहनकुल, गृहबभ्रु) H. an. Med. — Vgl. आत्म°, जगद्वञ्चक, बन्धु°.

वञ्चति m. *Feuer* H. ç. 169. — Vgl. अञ्चति.

वञ्चथ (von वञ्च्) Uṇâdis. 3,113. m. *Betrüger* Uǵǵval. = वञ्चना und कोकिल Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वञ्चन (vom caus. von वञ्च्) n. *das Betrügen, Betrug, Täuschung* H. 379. Halâj. 4,63. °प्रवणा वेश्याः Kathâs. 3,54. Spr. 213. °चञ्चुता 4131. गुरुष्वपि वञ्चनम् Vet. in LA. (III) 30,4. क्रयविक्रयकाले च सर्वः सर्वस्य वञ्चनम्। युगान्ते भरतश्रेष्ठ वित्तलोभात्करिष्यति॥ MBh. 3,13062. fg. विश्वासप्रतिपन्नानाम् 2855. Mârk. P. 15,41. कामि° Spr. 1660. 1815. Kathâs. 22,114. परवञ्चनजीविक 66,111. Çatr. 10,131. वञ्चनं कर् mit dem acc. der Person *Jmd anführen, betrügen* Pańkar. 1,10,17. काल° so v. a. *Zeitgewinnung* Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,29. वञ्चना f. dass.: वञ्चनां प्राप् *getäuscht werden* MBh. 1,3248. 3,15689 (वञ्चनम् Draup. 6,24). वञ्चनां लभ् R. 2,34,37. MBh. 1,8244. °योग 4,1560. 1563. 9,3316. 12, 467. नार्हसि वञ्चनाम् 14,2769. Hariv. 9707. °पण्डितत्व Mṛkkh. 17,12. 26,8. Varâh. Bṛh. S. 104,5. Râǵa-Tar. 2,109. Sâh. D. 525 (वञ्चनाहास्य° zu schreiben). लोकस्य Spr. 4669. Râǵa-Tar. 1,237. 6,139. pl. MBh. 12, 2036. Kathâs. 24,80. वञ्चनां कर् mit dem acc. der Person *Jmd anführen, betrügen* Pańkar. 2,5,9. 7,9. *Betrug* so v. a. *verlorene Mühe, verlorene Zeit:* स्वर्गाभिसंधिसुकृतं वञ्चनामिव मेनिरे Kumâras. 6,47. मन्यते स्म पिबतां विलोचनैः पक्ष्मपातमपि वञ्चनां मनः Ragh. 11,36. शीलवञ्चना so v. a. *Verstoss gegen* Mṛkkh. 18,20. An den folgenden Stellen ist es nicht zu entscheiden, ob वञ्चन oder वञ्चना gemeint ist, Kathâs. 7,87. 16,35. fg. 39,109. 56,269. — Vgl. मृत्यु°.

वञ्चनता f. = वञ्चन, अ° *Ehrlichkeit* Spr. 4262. Da in demselben Spruche auch समुत्साहता und विज्ञानता in der Bed. von समुत्साह und विज्ञान erscheinen, braucht अवञ्चनता nicht als nom. abstr. von einem adj. अवञ्चन *ohne Trug, ehrlich* gefasst zu werden.

वञ्चनवत् (wie eben) adj. *trügerisch* Nir. 4,15.

वञ्चनीय (vom caus. von वञ्च्) adj. 1) *dem man entgehen —, entrinnen muss:* शत्रोर्विख्यातवीर्यस्य वञ्चनीयस्य विक्रमैः R. 6,89,5. — 2) *zu hintergehen, anzuführen* R. 5,9,33. Spr. 763.

वञ्चयितर् (wie eben) nom. ag. *Betrüger* Hariv. 15476. परेषाम् Varâh. Bṛh. S. 69,9.

वञ्चयितव्य (wie eben) adj. *zu hintergehen, anzuführen* MBh. 1,1788. n. impers. mit dem gen. des obj.: आशावतां श्रद्दधतां च लोके किमर्थिनां वञ्चयितव्यमस्ति *darf man in der Welt Bedürftige* u. s. w. *hintergehen?* Spr. 3077.

वञ्चितक von वञ्चित, part. praet. pass. vom caus. von वञ्च्, in पत्त°.

वञ्चिन् adj. *anführend, betrügend* in आगत°.

वञ्चुक und वञ्चूक adj. *betrügerisch* Çabdar. im ÇKDr.

वञ्च्य part. fut. pass. von वञ्च् P. 7,3,63. Vop. 26,8. — Vgl. वङ्क्य.

वञ्जरा f. N. pr. eines Flusses Prâjaçkittend. 11,*b*,9.

वञ्जुल 1) m. *a)* N. verschiedener Pflanzen: *Dalbergia ougeinensis Roxb.* AK. 2,4,2,7. H. an. 3,682. Med. l. 129. *Calamus Rotang Lin.* AK. 2,4,2,10. H. 1137. H. an. Med. Halâj. 2,46. *Jonesia Asoca Roxb.* AK. 2,4,2,45. H. an. Med. Râǵan. (°द्रुम) im ÇKDr. — MBh. 13,2830. Hariv. 12674. R. 3,79,34. 4,1,12. 5,39,2. Suçr. 1,141,14. 2,39,11. 284, 7. 297,9. 378,16. Varâh. Bṛh. S. 54,50. 55,11. 95,16. Uttarar. 34,14 (46,1). Gît. 1,42. 7,11. 11,2. Sâh. D. 19,19. 329,18. — *b)* *ein best. Vogel* Halâj. 2,99. R. 3,68,7. 4,13,8. Varâh. Bṛh. S. 48,6. 86,20. 88,1. — 2) f. आ *a)* *eine Kuh, die viel Milch giebt,* H. 1269. — *b)* N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,22. VP. 185, N. 80.

वञ्जुलक m. 1) *eine best. Pflanze* Bhâg. P. 8,2,16. °द्रुम Hariv. 12676. — 2) *ein best. Vogel* R. 3,74,13. 78,23. वञ्जुलकः कीर्त्यते खदिरचञ्चुः Varâh. Bṛh. S. 88,5. 11.

वञ्जुलप्रिय m. *Calamus Rotang Lin.* Ratnam. im ÇKDr.

1. वट्, वँटति Dhâtup. 9,13 (वेष्टने). 19,17 (परिभाषणे). वँटयति 35,5 (ग्रन्थे, वेष्टने). 65 (विभाजने).

2. वट् ein Opferausruf: श्येनाय पत्वने वट् TS. 3,2,8,1. नृषदे वट् 5,4. 5,1. वेट् statt dessen VS.

वट n. (?) Siddh. K. 249,*a*,3. 1) m. *Ficus indica* (vgl. न्यग्रोध) AK. 2. 4,2,13. 3,4,12,98. Trik. 3,3,100. H. 1132. an. 2,97. Med. ṭ. 23. Halâj. 2,41. MBh. 1,3218. 3,41. fg. 8307. 11570. 7,2353. 8,2031. 13,635. 4253. 5046. 5970. Hariv. 3114. 3752. 7965. 14650. R. 2,52,96 (33 Gorr.). Suçr. 1,314,4. 2,26,18. 193,1. 393,13. °क्षीर 67,9. Ragh. 13,53. Spr. 710. 3890. 4702. Varâh. Bṛh. S. 53,85. 54,96. 119. 124. 60,8. 85,3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162. Weber, Râmat. Up. 289. Kathâs. 20,37. 25,216. 40,90. 49,154. 62,213. Râǵa-Tar. 3,430. 4,448. VP. 168. Weber, Kṛshṇaǵ. 256. Bhâg. P. 3,33,4. 4,6,31. 18,25. 5,16,25. 7,9,33. 8,2,12. Mârk. P. 54,21. 101,8. Pańkar. 1,1,12. 36. 40. 4,39. 43. 6,17. 7,21. 23. 68. Pańkat. 9,13. fg. 23. 98,9. 104,17. 134,5. Hit. ed. Johns. 2357. Vet. in LA. (III) 21,11. ad 13,17. Dhûrtas. 79,14. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 4. Verz. d.

Oxf. H. 17, *b*, No. 63, Çl. 5. अगस्त्य° N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 1,7813; vgl. अरुन्धती°, गृध्र°. Das f. वटी in मार्गवटी Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, N. 9. — 2) m. *ein best. Vogel* Bhâg. P. ed. Bomb. 3,10,24 (वक ed. Burn. 23). 10,66,9. — 3) *Strick*, m. f. (ई) und n. AK. 2,10,27. Trik. 3, 3,100. 5,23. Med. m. Halâj. 2,442. f. H. 928. वट im comp. Gaudap. zu Sâṅkhjak. 17. — 4) m. *Cypraea moneta, Otterköpfchen* Trik. 3,3,100. H. an. Med. — 5) m. *Kügelchen, Pille* (गोल) H. an. वटी f. dass. Çârṅg. Saṁh. 2,7,1. फिरङ्गवटी Verz. d. B. H. No. 966. *Klösschen, Knöpfchen* (vgl. वटक) Bhâvapr. im ÇKDr.; vgl. u. तापहर 2). — 6) m. = भक्ष्य H. an. — 7) m. = साम्य H. an. — 8) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2536. — 9) f. ई *ein best. Baum*, = नदीवट Râgan. im ÇKDr. — 10) गाढा वटी Bez. *einer best. Lage im Spiel* Katuraṅga: नैकैका वटिका यस्य विद्यते खेलने यदि । गाढा वटीति विख्याता पदं तस्य न दुष्यति ॥ Tithjâdit. im ÇKDr. — Vgl. उपवट, कल्प°, गृध्र°, तपो° (वट in dieser Zusammensetzung ist *Ficus indica*), नदी°, नभो°, प्राग्वट, भद्र°, मण्डल°, मुञ्ज°, रुद्र°, मधुवटी, मुद्गाङ्कक°, रत्न°, सिद्ध°.

वटक m. AK. 3,6,2,17. 1) *Klösschen, Knöpfchen* (gewöhnlich aus Mehl von Hülsenfrüchten gemacht, eingeweicht, gewürzt und in Oel geschmort), m. Trik. 2,9,14. H. 400. Suçr. 1,224,15. n. 233,6. m. oder n. P. 5,2,82, Vârtt. वटका f. Suçr. 2,468,12. वटिका H. ç. 95. Dhûrtas. 79,14 (von Lassen in वडिका geändert). अम्लिकावटः, तक्र°, माष°, मुद्गवटिका Bhâvapr. im ÇKDr. वटका, वटिका f. *Pille* Verz. d. B. H. 283 (XIII). वटिका Çârṅg. Saṁh. 2,7,1. वटकादिकल्पना Verz. d. Oxf. H. 315, *a*, No. 478. — 2) m. *ein best. Gewicht*, = 8 Mâsha Çârṅg. Saṁh. 1,1, 16. = 2 Çâṇa Verz. d. Oxf. H. 307, *b*, 3. — 3) वटिका f. *Schachfigur*; s. oben u. वट 10). — Vgl. काञ्जिकवटक unter काञ्जिक 1), खण्ड°, कामुन्दोवटिका.

वटकणिका s. u. वटकणीका.

वटकणीका f. *die kleinste Partikel vom indischen Feigenbaum* MBh. 12,7909, wo Nîlak. रेतो वटकणीकायाम् st. रेतो वटकणिकायाम् des Textes in der ed. Bomb. und st. रता वटकणीयानाम् der ed. Calc. liest.

वटकणीय s. u. वटकणीका.

वटकिनी (von वटक) f. Bez. *einer best. Vollmondsnacht, in der Klösschen gegessen werden*, P. 5,2,82, Vârtt.

वटत्र (वत्र + 1. त्र) P. 6,2,82. m. Schol.

वटतीर्थनाथ N. eines Liṅga: °माहात्म्य Mack. Coll. I,82.

वटपत्त्र 1) m. *eine best. Pflanze*, = सितार्जक Râgan. im ÇKDr. — 2) f. आ *eine Art Jasmin*, = त्रिपुरमाली Ratnam. im ÇKDr. — 3) f. ई *eine best. Pflanze*, = इरावती Bhâvapr. im ÇKDr.

वटपत्तिणीतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 76, *b*, 40. fg.

वटर m. = चञ्चल, शठ, चौर, कुक्कुट, वेष्ट Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वठर.

वटवती f. संज्ञायाम् gaṇa मधादि zu P. 4,2,86.

वटवासिन् adj. *in Feigenbäumen hausend*; m. *ein* Jaksha H. 194.

वटाकर m. v. l. für वराटक *Strick, Seil* Râmâçrama zu AK. 2,10,27 nach ÇKDr.

वटारक 1) m. *Strick* H. 928. वटारका f. ÇKDr. nach einem Purâṇa und Nîlak. zu MBh. 3,12776. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3, 12776. 12,12460. Vgl. वराटक, वटाकर. — 2) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69.

वटारकमय adj. *aus einem Seil gebildet*: पाश MBh. 3,12785.

वटावीक m. = नामचौर *ein Mann, der sich eines falschen Namens anmaasst*, Çabdam. im ÇKDr.

वटि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,117. P. 5,2,139. f. *Termite* Trik. 2,5,12. Hâr. 110.

वटिक m. *Bauer im Schachspiel* ÇKDr. u. चतुरङ्ग. — वटिका s. u. वटक.

वटिन् m. dass. ebend. und Bhavishja-P. bei Gold. I, 421, *a*, 2 v. u. adj. *stringed, having a string; circular, globular* Wilson.

वटिभ adj. von वटि P. 5,2,139.

वटी s. u. वट.

वटूरिन् und मक्ता° adj. *breit* nach Sâj.: छिन्धि वटूरिणा पदा मक्तावटूरिणा पदा RV. 1,133,2.

वटेश्वर (वट + ई°) m. 1) N. eines Liṅga Râga-Tar. 1,194. fg. — 2) N. pr. zweier Männer Verz. d. Oxf. H. 143, *a*, No. 296. 144, *b*, No. 300.

वटेश्वरसिद्धान्त m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 286, *a*, 8. Verz. d. B. H. No. 1166. Weber, Ǵjot. 103.

वटोदका (वट + उदक) f. N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 4,28,35.

वट्ट (वट्ट) m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,347. 570. 962. 969. — Vgl. नाग°.

वट्टदेव m. desgl. Râga-Tar. 7,1310. वाट्ट° 1303.

वट्य adj. von वट gaṇa बलादि zu P. 4,2,80. subst. Bez. *eines best. Minerals* Verz. d. Oxf. H. 321, *a*, No. 761.

वठ् (वठ्), वंठति (स्थौल्ये, पैन्ये) Dhâtup. 9,46.

वठर Uṇâdis. 5,39. = शठ Trik. 3,3,372. H. an. 3,580. = मन्द Trik. = मूर्ख Uǵǵval. = अम्बष्ठ H. an. = शब्दकार und वक्र Uṇâdivr. im Saṅkshiptas. nach ÇKDr. — Vgl. वटर.

वडभी und °भि f. *Söller* Trik. 2,2,5. Hariv. 4529. 4533. 8788. 8936. 16181 (die neuere Ausg. überall वलभी). R. 3,61,9. 6,14,22. Megh. 39. — Vgl. वलभी.

वडव 1) m. oxyt. nach dem Comm. *ein männliches, aber einer Stute ähnelndes Pferd, das deshalb den Hengst anzieht*, TS. 2,1,8,3. Diese Bedeutung hat sich ohne Zweifel erst aus dem f. वडवा *Stute* entwickelt. — 2) f. वडवा *a*) *Stute* AK. 2,8,2,14. Trik. 3,3,422. H. 1233. an. 3,711. Med. v. 49. fg. Halâj. 2,285. TS. 7,1,1,2. TBr. 1,8,6,3. 3,8,22,3. Çat. Br. 6,5,2,19. 11,1,6,2. 12,7,2,8. यद्यश्वो वडवां स्कन्देत् 13,3,8,1. 4,2,14. Kâtj. Çr. 15,10,20. Kauç. 93. 110. MBh. 4,319. Hariv. 561. R. Gorr. 2, 17,24. Varâh. Bṛh. S. 46,53. 50,24. Kathâs. 37,162. Râga-Tar. 4,396. 5,280. Bhâg. P. 9,1,26. Pańkat. 252,16. eine Gattin Vivasvant's wird als *Stute* die Mutter der beiden Açvin Bhâg. P. 6,6,38. 8,13,9. fg. Mârk. P. 77,23. Daçak. 64,13. °सुतौ H. 181. — *b*) = कुम्भदासी Trik. H. ç. 113. H. an. Med. = स्त्रीभिद् (नारीजात्यन्तर) und द्विजस्त्री (द्विजयोषित्) H. an. Med. = गृहदासी Mit. 268,15. = वेश्या Vivâdak. 50,15. — *c*) N. pr. einer Frau mit dem patron. Prâtîthejî Âçv. Gṛhj. 3,4, 4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 92,6. N. pr. einer Gattin Vasudeva's, die als परिचारिका bezeichnet wird, Hariv. 1949. — *d*) N. pr. eines Flusses MBh. 3,14232. eines Wallfahrtsortes 5034. — Die älteren Texte schreiben häufig वडब, वडबा, die Bomb. Ausgg.

वडवा, die Hdschrr. in Malajâlim- und Grantha-Characteren बडवा. — Vgl. पारेबडवा.

वडवाग्नि m. *das am Südpol gedachte Höllenfeuer, welches kein Wasser des Meeres zu löschen vermag* (vgl. u. और्व), Trik. 1,1,68. H. 17. MBh. 3,14149. Kathâs. 26,139. — Vgl. वाडवाग्नि.

वडवानल m. 1) dass. Golâdhj. 3,17.23. Spr. 419. 2153. — 2) *ein best. Pulver, aus Pfeffer und anderen scharfen Stoffen, das die Verdauung befördert*, Çârṅg. Saṁh. 2,6,39.

वडवाभृत s. वडवाहृत.

1. वडवामुख n. *das Stutenmaul* (vgl. u. और्व), Bez. *des Einganges zur Hölle am Südpol*, H. 1362. Halâj. 3,1. Ârjabhaṭa, Siddh. 3,12 MBh. 7,9608 (wo die ed. Bomb. पिबत्तोयमयं liest). 13,2230. Hariv. 2565. 3422. 3426.

2. वडवामुख 1) adj. in Verbindung mit अग्नि u. s. w. oder m. mit Ergänzung dieser Worte = वडवाग्नि Trik. 1,1,68. H. 1100. Halâj. 1,70. MBh. 1,1220. 4,1580. Hariv. 11415. R. 2,59,30. 4,40,50. fg. Kathâs. 26,10. 21. 137. als Bein. Çiva's MBh. 13,1169. personif. als ein Maharshi, der mit Nârâjaṇa identificirt wird, 12,13222. — 2) m. pl. N. pr. eines mythischen Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,17. Mârk. P. 58,30.

वडवावक्त्र n. = 1. वडवामुख MBh. 13,2909. °हुतभुज् Uttarar. 94,14 (123,1).

वडवाहृत adj. als Bez. einer Art von Sclaven Mit. 268,4. वडवा गृहदासी तया हृतस्तल्लोभेन (लोमेन gedr.) तामुद्वाह्य दासत्वेन प्रविष्टः 15. fg. वडवाभृत Vivâdak. 43,15.

वडविन् adj. von वडवा gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5,2,116.

वडा f. = वट *Klösschen, Knöpfchen* Çabdak. im ÇKDr.

वडिका Dhûrtas. 79,14 unnütze Aenderung von Lassen st. वटिका der Hdschr.

बडिश (so schreiben die Bomb. Ausgg.) m. (selten und von den Lexicogrr. nicht erwähnt) und n. *Angel, Haken zum Fangen von Fischen* AK. 1,2,3,16. H. 929. Halâj. 4,79. MBh. 1,1329. 3,11495. 8,3387. R. 3,57,7. Suçr. 1,25,1. Spr. 36. 2010. 2877. Bhâg. P. 3,28,34. *ein best. chirurgisches Instrument in Hakenform* Suçr. 1,26,13. Vâgbh. 25,31. Nach Trik. 3,5,20 auch f. आ, nach Bhar. zu AK. auch f. ई ÇKDr. — Vgl. वलिश.

वडेरु m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 117,b,13.

वडोसक N. pr. einer Oertlichkeit Râga-Tar. 8,1266.

वड्ड adj. *gross* AK. 3,2,10.

वण्, वणति (शब्दे) Dhâtup. 13,3. caus. aor. अवीवणत् und अववाणत् Njâsa in Siddh. K. zu P. 7,4,3. Vop. 18,3.

वण s. धिग्वण.

वणथलग्राम (wohl aus वनस्थल° entstanden) m. N. pr. eines Dorfes Verz. d. Oxf. H. 383,a, No. 462.

वणिकव्रत Verz. d. B. H. 135,b,9 fehlerhaft für विनयद्वादशीव्रत; vgl. Verz. d. Oxf. H. 34,b,13.

वणिक्कर्मन् (वणिज् + क°) n. *die Beschäftigung des Kaufmanns, Handel* Pañkat. 7,9.

वणिक्क्रिया f. dass. Varâh. Bṛh. S. 69,20.

वणिक्पथ m. = निगम AK. 3,4,22,142. H. an. 3,467. Med. m. 45. = विपणि AK. 3,4,13,54. 1) *die Beschäftigung des Kaufmanns, Handel* M. 1,90. 10,47. MBh. 12,11288. Hariv. 363. Kâm. Nîtis. 5,78. — 2) *Kaufmannsladen* Çiç. 3,38. अचौराभूत्तथा भूमिर्यथा रात्रौ वणिक्पथाः। अतिष्ठन्विवृतद्वाराः Râga-Tar. 6,7. — 3) *Kaufmann*: वणिक्पथा भिन्ननवौ यथार्णवे Bhâg. P. 8,11,25. 10,42,13. — 4) *die Wage im Thierkreise* Bhâg. P. 11,12,6.

वणिक्सार्थ m. *Handelskarawane* Bhâg. P. 5,14,1.

वणिग्जन m. *Kaufmann*, coll. *Kaufleute* R. 1,1,96. Mâlav. 67,21. Varâh. Bṛh. S. 15,29. 16,29. Mârk. P. 18,3.

वणिग्बन्धु m. *die Indigopflanze* Çabdak. im ÇKDr.

वणिग्भाव m. *Kaufmannsstand, Handel* AK. 2,9,3.

वणिग्वह m. *Kameel* Çabdak. im ÇKDr.

वणिग्वृत्ति f. *Handel, Kram, Schacher* Spr. 664 (pl.).

वणिङ्मार्ग m. = विपणि H. 988. — Vgl. वणिक्पथ.

वणिज् Uṇâdis. 2,70. 1) m. a) *Kaufmann, Krämer* Nir. 2,17. AK. 2,9,78. H. 867. an. 2,76. Med. ǵ. 26. Halâj. 2,416. ṚV. 1,112,11. 5,45,6. AV. 3,15,1. M. 7,127. 8,169. MBh. 3,2530. R. 1,5,16. 2,36,3. 48,3. Varâh. Bṛh. S. 5,29. 40. 9,31. 10,6. 7. 15,5. 11. 13. Spr. 1937. 3986. Kathâs. 18,292. 295. 27,15. 61,2. Bhâg. P. 7,10,4. Hit. 28,1. 45,6. वणिग्घन AK. 3,4,22,46. — b) *die Wage im Thierkreise* Varâh. Bṛh. 1,13. Ind. St. 2,260. — c) N. *eines best.* Karaṇa (*eine astrologische Eintheilung der Tage*) H. an. Med. Varâh. Bṛh. S. 99,7. — 2) f. *Handel* H. an. Med. M. 10,79. — Vgl. 1. पण्, पानवणिज्, पोत°, महावणिज्.

वणिज m. = वणिज्. 1) *Kaufmann* Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,78. unter den Beinn. Çiva's MBh. 13,1223. — 2) *die Wage im Thierkreise* Varâh. Lagh. 1,21 in Ind. St. 2,282. — 3) N. *eines best.* Karaṇa Varâh. Bṛh. S. 99,4.

वणिजक m. *Kaufmann* Med. r. 176.

वणिज्य (von वणिज) n. *Kram, Handel* Kâç. in Siddh. K. zu P. 5,1,126. Trik. 3,5,20. Halâj. 4,76. वणिज्या f. dass. Mâdhava in Siddh. K. zu P. 5,1,126. AK. 2,9,80. Trik. H. 867. Halâj. Çat. Br. 1,6,4,21. Pañkav. Br. 17,1,2. MBh. 3,11294. 12,2356. Kathâs. 13,68. 74. 27,188. 29,75. 194. 36,75. 52,318. 61,3. Mârk. P. 50,76. 57,9. — Vgl. वाणिज्य.

वण्ट् (v. l. बण्ट्), वण्टति (विभाजने) Dhâtup. 9,43. वण्टयति (auch वण्टापयति nach Durgâd. im ÇKDr.) dass. 32,48. 35,65. *vertheilen*: ज्ञातिभिर्वण्टयते नैव — विद्यारत्नं महाधनम् Spr. 985. — Vgl. वण्ड्, बण्ड्.

वण्ट m. 1) *Theil* H. 1434. — 2) *der Griff einer Sichel* H. 892. — 3) *ein unverheiratheter Mann* (oder adj. *unverheirathet*) Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. वण्ड, वण्ठ.

वण्टक m. *Theil* AK. 2,9,90.

वण्टाल m. 1) *Schaufel*. — 2) *Schiff*. — 3) *eine Art Kampf* H. an. 3,682. Med. l. 129. — वण्ठाल ÇKDr. nach denselben Autt., वण्डाल Wilson nach H. an.

वण्ठ्, वण्ठते (एकचर्यायाम्, एकचरे) Dhâtup. 8,9.

वण्ठ 1) adj. a) *verkrüppelt, verstümmelt* (खर्व). — b) *unverheirathet* H. an. 2,108. Med. ṭh. 8. — 2) m. a) *Diener* H. an. — b) *Lanze* H. an. Med. — Vgl. वण्ड.

वण्ठर m. 1) *die weibliche Brust*. — 2) = करीरकोष (*the sheath that envelopes the young bambu* Wils.). — 3) *ein junger Schoss bei der*

Weinpalme. — 4) *Hundeschwanz.* — 5) = स्थगिकारज्जु (*a rope for tying a goat, etc.* WILS.; sollte er etwa छगिका gelesen haben?) MED. r. 189. — 6) *Hund.* — 7) *Wolke* WILSON nach RÂGAN. — Die gedr. Ausg. der MED. schreibt वण्ठर्, ÇKDR. und WILSON व°.

वण्ड्, वण्डते (विभाजने, v. l. वेष्टने) DHÂTUP. 8,18. वण्डयति (विभाजने) 32,48, v. l. — Vgl. वण्ट्, व्रण्ड.

वत्, वतति mit अपि *verstehen, begreifen:* अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम RV. 7,3,10. 60,7. — caus. *verstehen —, begreiflich machen:* भद्रं नो अपि वातय मनः *wecke in uns einen guten Sinn* RV. 10,20,1. 25,1. पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतन्नृतम् 13,5. मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानाम् RV. 1,165,13. — Vgl. स्वपिवात.

वतंस m. = अवतंस H. 654, Sch. an. 3,747. MED. s. 36. *Kranz, reifenförmiger Schmuck* (auf dem Scheitel und am Ohre getragen) PAÑKAR. 3,11,4. GIT. 2,2. KHANDOM. 161. am Ende eines adj. comp. f. आ 50.

वतंसक m. dass. KHANDOM. 132.

वतण्ड m. N. pr. eines Mannes UĠĠVAL. zu UṆÂDIS. 1,128. P. 4,1,108. gaṇa शार्ङ्गरवादि zu 73. गर्गादि zu 105. शिवादि zu 112. वतण्डाः *die Nachkommen des* Vataṇḍa PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 56,36. तण्डवतण्डाः *die Nachkommen des* Taṇḍa und Vataṇḍa gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. वतण्डी f. *ein weiblicher Nachkomme des* Vataṇḍa P. 4,1,109. — Vgl. वातण्ड, वातण्ड्य.

वतरणी MBH. 3,8148 fehlerhaft für वैतरणी, wie die ed. Bomb. liest.

वतायन m. TRIK. 3,5,4 wohl fehlerhaft für वा°.

वति f. nom. act. von वन् P. 6,4,37, Sch.

वतू f. = देवनदी, सत्यवाच्, पथ् und अक्षिरोग UṆÂDIVR. im SAṂKSHIPTAS. nach ÇKDR. — Vgl. रतू.

वतोका f. = अवतोका BHAR. zu AK. 2,9,69 nach ÇKDR.

वत्स UṆÂDIS. 3,62. P. 7,2,9, Sch. 1) m. und f. आ (gaṇa अजादि zu P. 4,1,4) *Kalb, Junges; Kind* AK. 2,9,62. 3,4,30,228. TRIK. 2,9,20. 3,3,450. H. 1260. an. 2,589. MED. s. 10. fg. HALÂJ. 2,109. VIÇVA bei UĠĠVAL. RV. 1,164,5. 27. 2,2,2. वत्समिव मातरा संरिहाणे 3,33,3. गावो वत्सैर्वियुताः 5,30,10. अरीळ्हः 4,18,10. 8,61,5. वत्सो धारुरिव मातरम् AV. 4,18,2. 13,1,10. वत्सान्घातुको वृकः 12,4,7. 9,4,2. AIT. BR. 6,3. ÇAT. BR. 1,5,2,20. 7,1,1. 2,2,1,1. वत्सं जातं गौरभिजिघ्रति TS. 6,4,11,4. °च्छ्वी ÇAÑKH. BR. 25,15. KÂTJ. ÇR. 22,1,20. स्त्री° ÇAÑKH. ÇR. 2,8,7. °तन्ती M. 4,38. 9,50. 11,134. R. 2,24,9. RAGH. 1,84. Spr. 357. 2631. 2997. 4792. VARÂH. BRH. S. 48,11. PAÑKAT. 169,25. सन्नपवत्सा adj. ÂÇV. GRHJ. 1,13,2. जीव° PÂR. GRHJ. 3,4. स° MBH. 1,3942. R. GORR. 1,74, 29. BHÂG. P. 9,15,26. अ° JÂGN. 1,170. बद्ध° R. 2,40,42. RAGH. 2,1. प्रौढ° H. 1267. HALÂJ. 2,114. उरणकवत्स BHÂG. P. 5,14,3. वत्सविवृद्धिनिमित्तं क्षीरस्य यथा प्रवृत्तिरज्ञस्य SÂṂKHJAK. 57. *Kind, Sohn* R. GORR. 2,34,16. UTTARAR. 5,15 (8,9). वत्सजरत्तम् *Kinder und Greise* gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37. वत्सा KATHÂS. 25,168. मनो: BHÂG. P. 3,22, 18. वत्सया मदिरावत्या so v. a. *vom lieben Kinde* Mad. KATHÂS. 104,54. PRAB. 104,13. जीवद्वत्सा *deren Kind am Leben ist* SUÇR. 1,371,16. बालवत्सा *deren Sohn noch ein Knabe ist* MBH. 3,16666. R. GORR. 2,42, 18. वत्स voc. *Kind* als Schmeichelwort SÂH. D. 172,3. MBH. 1,691. R. 1,59,2. 63,19. 67,12. 2,37,16. 64,29. SUÇR. 1,3,5. 13,1. 119,12. RAGH. 2,61. ÇÂK. 109,18. VIKR. 70,10. RÂGA-TAR. 3,120. PRAB 19,4. BHÂG. P. 4,8,11. 22. MÂRK. P. 16,7. DHÛRTAS. 73,10. 75,10. ÇUK. in LA. (III) 34, 7. वत्से voc. f. KUMÂRAS. 5,4. ÇÂK. 51,13. 17. 71,16. 109,21. MÂLAV. 23, 11. UTTARAR. 5,14 (8,9). KATHÂS. 24,29. 25,167. 56,26. PRAB. 83,5. PAÑKAT. 130,4. अम्ब वत्सेति (संधिरार्षः Comm.) BHÂG. P. 3,22,25. वत्साम् voc. pl. 14,12. SUÇR. 1,1,15. — 2) m. *Jahr* (vgl. वत्सर) AK. 3,4,30, 228. TRIK. 3,3,450. H. ç. 25. H. an. MED. HALÂJ. 5,22. VIÇVA. — 3) *Brust*, n. AK. 2,6,2,29. TRIK. MED. und VIÇVA; m. H. 602 und H. an. unbestimmt ob m. oder n. HALÂJ. 2,372. — 4) m. N. pr. verschiedener Personen: eines Sohnes oder entfernten Nachkommen Kaṇva's RV. 8,6,1. 8,8. 9,1. 11,7. PAÑKAV. BR. 14,6,6. ÇÂÑKH. ÇR. 16,11,20. Ind. St. 3,460. eines Âgneja, Liedverfassers von RV. 10,187. eines Kâçjapa KATHÂS. 28,74. 92. वत्सस्य ह्यभिशस्तस्य पुरा भ्रात्रा यवीयसा । नाग्निर्ददाह रोमापि सत्येन जगतः स्पृशः ॥ M. 8,116. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 61,36. fg. (36 ist वत्सभृगू उभौ zu lesen). P. 4,1,102. 117. Verz. d. Oxf. H. 18,b,11. 53,b,24. Verfassers eines Gesetzbuches 266,b,9. 270,b,36. 279,a,40. Verz. d. B. H. No. 1166. eines Sohnes des Pratardana MBH. 12,1795. 13,1946. HARIV. 1587. 1597. 1741. 1753. VP. 408. = प्रतर्दन BHÂG. P. 9,17,6. eines Sohnes des Senaǵit 21,23. HARIV. 1059. der Akshamâlâ HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 12. des Urukshepa (vgl. वत्सवृद्ध) VP. 463. des Somaçarman KATHÂS. 6,9. बाभ्रव्यवत्सयोः HARIV. 1253. °गोत्र, °वंश Verz. d. Oxf. H. 100,a,1 v. u. 370,a, No. 213. COLEBR. Misc. Ess. II, 188. HALL 136. 173. pl. *die Nachkommen* Vatsa's P. 2,4,64, Sch. VOP. 7,14. ÂÇV. ÇR. 12,10. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 1,9,3. Verz. d. Oxf. H. 19,a,34. 405,b, No. 10. — 5) m. N. pr. eines Landes mit der Hauptstadt Kauçâmbî: वत्स इति ख्यातो देशः KATHÂS. 9,4. 30, 38. SCHIEFNER, Lebensb. 234 (4). pl. als Bez. des Volkes und Landes MBH. 5,7369. 8,237. 13,1951 (वत्सानां ed. Bomb.). VARÂH. BRH. S. 14, 2. 8. 17,18. 22. KATHÂS. 30,62. — Vgl. अनुपूर्व°, अप°, अभिवान्य° (vgl. Ind. St. 9,309. fg.), कुत्स°, तिल°, त्रि°, नित्य°, पुं°, पौण्ड्र°, मृत°, यम°, कृशद्वत्स, वि°, सकृ° und वात्स्य.

वत्सक (von वत्स) 1) m. a) *Kälbchen* M. 11,114. BHÂG. P. 4,9,17. am Ende eines adj. comp.: मृतवत्सका यथा गौः 10,7,24. — b) *Wrightia antidysenterica R. Br.* AK. 2,4,2,47. SUÇR. 2,371,2. °बीज 431,7. फलत्वचं वत्सकस्य 433,19. ÇÂRṄG. SAṂH. 2,2,35. 39. *der Same dieser Pflanze* RÂGAN. im ÇKDR. — c) N. pr. eines Sohnes des Çûra BHÂG. P. 9,24,28. 42. N. pr. eines Asura (vgl. वत्सासुर) 10,43,30. — 2) f. वत्सिका *Kalbe, Kälbin, eine junge Kuh* JÂGN. 3,272. — 3) n. *grüner* (*schwarzer*) *Eisenvitriol* RÂGAN. im ÇKDR.

वत्सकामा adj. f. *ihr Kalb liebend* H. 1271. HALÂJ. 2,115.

वत्सपारकतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,a,10. fg.

वत्सतर (von वत्स mit dem suff. des compar.) m. und f. (ई) *das entwöhnte Junge, ein heranwachsendes Thier: junger Stier, Kälbin* (auch vom Ziegengeschlecht) P. 5,3,91. AK. 2,9,62. H. 1260. HALÂJ. 2,109. TS. 1,8,17,1. 18,1. VS. 24,5. AIT. BR. 1,27. ÂÇV. ÇR. 8,14,12. 9,4,6. 10,2,29. KÂTH. 24,2. LÂTJ. 4,12,11. गर्भिण्यः *das erste Kalb tragend* 9, 4,21. 12,11. KÂTJ. ÇR. 12,5,12. वत्सतराः पञ्चवर्षाः vermuthlich Thiere, die nicht zur Begattung zugelassen werden, 22,9,12. वत्सतर्यस्त्रिहाय-

पयो ऽप्रवीता: 13. 23,4,6. Kauç. 12. 55. 72. M. 11,137. MBh. 9,2322. मव्हेन्नतां वत्सतर: स्पृशन्निव Ragh. 3,32. वत्सतरवत्सतरीनिकाये: Pańkar. 3,5,19. Bhâg. P. (hier auch Bez. *eines noch saugenden Kalbes*) 6, 11,26. 10,13,24. 14,31. 16,11. वत्सतरार्ण (वत्सतर + ऋण) n. P. 6,1, 89, Vârtt. 6. Vop. 2,9.

वत्सत्व n. nom. abstr. von वत्स *Kalb* Bhâg. P. 4,18,20.

वत्सदन्त m. Bez. von *Pfeilen, deren Spitzen Zähnen eines Kalbes gleichen*, MBh. 3,11724. 14892. 5,4793. 6,5022. 7,4421. Hariv. 13224. R. 6,20,27. 75,47. n. *eine einem Kalbszahne ähnelnde Pfeilspitze* Çârṅg. Paddh. 80,64 bei Aufrecht, Halâj. Ind. u. आराग्र. °क Vjutp. 141.

वत्सनपात् m. N. pr. eines Bâbhrava Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28.

वत्सनाभ 1) m. *ein best. Baum* MBh. 13,635. Hariv. 12677 (वसनाभ die neuere Ausg.). — 2) m. *ein best. vegetabilisches Gift* AK. 1,2,1,11. H. 1196. Halâj. 3,25. n. zu den कन्दविषाणि gezählt Suçr. 2,252,6. चत्वारि वत्सनाभानि 9. ग्रीवास्तम्भो वत्सनाभे पीतविण्मूत्रनेत्रता 253,1. beim Gottesurtheil angewandt nach Kâtj. und Pitâmaha; s. Z. d. d. m. G. 9,674. — 3) n. Bez. *eines Loches von bestimmter Form im Holze einer Bettstelle* Varâh. Bṛh. S. 79,32. 34. 36. — 4) m. N. pr. s. u. रत्ननाभ.

वत्सप m. 1) *Hüter von Kälbern* Bhâg. P. 3,2,27. 10,13,19. 27. — 2) N. eines Dämons: दुर्णामा तत्र मा गृधदलिंश उत वत्सप: AV. 8,6,1.

वत्सपति m. N. pr. eines Fürsten oder *Herr —, Fürst der* Vatsa Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

वत्सपत्तन n. *die Stadt der* Vatsa d.i. Kauçâmbî Trik. 2,1,14. H. 975.

वत्सपाल m. *Hüter von Kälbern* Hariv. 3615. Bhâg. P. 10,11,36.

वत्सपालन n. *das Hüten der Kälber* Pańkar. 4,1,22.

वत्सप्रचेतस् adj. *auf* Vatsa — oder *auf die* Vatsa *achtend* ṚV. 8,8,7.

वत्सप्री m. N. pr. mit dem patron. Bhâlandana (Sohn Bhanandana's fehlerhaft in Mârk. P.), Liedverfasser von ṚV. 9,68. 10,45. fg. TS. 5,2,1,6. Pańkav. Br. 12,11,25. Ind. St. 3,459. 478. VP. 352. Mârk. P. 116,7. fgg. — Vgl. वात्सप्र.

वत्सप्रीति m. = वत्सप्री Bhâg. P. 9,2,23. fg.

वत्सबन्धा Brâhman. 1,12 fehlerhaft für बद्धवत्सा, wie MBh. 1,6120 gelesen wird.

वत्सबालक m. N. pr. eines Bruders des Vasudeva VP. 436.

वत्सभूमि 1) f. N. pr. eines *Landes, das Land der* Vatsa MBh. 2,1084. 3,15245. 5,7351. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa Hariv. 1597. 1733; vgl. VP. 409, N. 15.

वत्समित्र m. N. pr. eines Gobhila Ind. St. 4,374.

वत्समुख adj. *ein Kalbsgesicht habend* P. 6,2,168.

वत्सर (वत्सर Uṇâdis. 3,71) 1) m. *das fünfte* (auch *das sechste im sechsjährigen Cyclus*) *Jahr im fünf-* oder *sechsjährigen Cyclus* VS. 27,45. 30,15. TS. 5,5,7,4. Pâr. Gṛhj. 3,2. Weber, Nax. 2,298. Ind. St. 1,88. *Jahr* überh. AK. 1,1,3,13. 20. 3,4,16,95. Trik. 1,1,109. H. 158. Hiouen-thsang I,62. Maitrjup. 6,14 (n.). M. 9,76. Jâǵn. 1,205. Varâh. Bṛh. S. 8,16. 19. 39. 42,12 (वत्सरार्ध). 86,64. Bṛh. 7,1. Spr. 1846. VP. 224. Bhâg. P. 3,11,12. 14. fg. 5,22,7. Mârk. P. 49,17 (n.). 92,20. Verz. d. B. H. No. 1166. आवत्सरम् Mârk. P. 30,11. आवत्सरान्तम् Kathâs. 23,20. °राजन् Kṛshis. 1,2 v. u. Personificirt M. 12,49. als Sohn Dhruva's und der Bhrami Bhâg. P. 4,10,1. 13,11. unter den Beinn. Vishṇu's MBh. 13, 6999. — 2) m. N. pr. *a*) eines Sâdhja Hariv. 11537. मत्सर die neuere Ausg. — *b*) eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 56,*b*,38. वत्सार v. l. — Vgl. अनु°, इदा°, इद्वत्सर, इदु°, परि°, प्रति°, सं°. Das Wort ist vielleicht auf वर्त् *sich drehen* zurückzuführen (vgl. Weber, Kṛshṇaǵ. 351); dann wäre वर्त्सर die urspr. Form.

वत्सराज m. 1) *ein Fürst der* Vatsa MBh. 1,7002. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 4. Kathâs. 11,5. 17. 19. fgg. 30,62. — 2) N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6,346. Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 799. °देव N. pr. eines Dichters 124,*b*,27.

वत्सराज्य n. *die Herrschaft über die* Vatsa Kathâs. 11,1.

वत्सरादि m. *der erste Monat des Jahres, der* Mârgaçîrsha H. 152.

वत्सरान्तक m. *der letzte Monat des Jahres, der* Phâlguna Râǵan. im ÇKDr.

वत्सरार्ण n. = वत्सर + ऋण Vop. 2,9.

वत्सल (von वत्स) 1) adj. (f. आ) P. 5,2,98. *a*) f. mit oder ohne Hinzufügung von गो, धेनु *eine Kuh, die zärtlich an ihrem Kalbe hängt*, H. 1271. Halâj. 2,115. MBh. 7,2410. 13,3132. 3523. Spr. 4302. R. 2,40,42. 43,17. 74,9 (76,14 Gorr.). 87,8 (95,9 Gorr.). R. Gorr. 2,17,11. 66,28. 5,67,3. Bhâg. P. 3,33,21. 4,18,9. — *b*) *zärtlich, liebevoll* AK. 3,1,14. H. 478. MBh. 13,6999 (Vishṇu). Suçr. 1,371,16. Uttarar. 36,3 (48,1). Bhâg. P. 4,7, 38. अति° Kathâs. 18,260. नाति° Mârk. P. 71,24. सकृत्° Hit. 87,12. नितान्त° Ragh. 8,41. कैतव° *verstellter Weise* 48. Die Ergänzung im loc.: गावो वत्सेषु वत्सला: Hariv. 4328. परेषु R. 2,62,7. दीनेषु Bhâg. P. 4,30,28. im gen.: रिपूणामपि R. 2,21,6 (18,8 Gorr.). im acc. mit प्रति R. Gorr. 2,19,13. im comp. vorangehend: सुत° 63,3. R. Schl. 2, 24,16. Pańkat. 238,7. दुहितृ° Kathâs. 13,70. Bhâg. P. 3,14,12. भृत्य° 4,8,22. R. 2,52,53. भ्रातृ° 82,20. MBh. 1,5900. पति° 12,1076. भर्तृ° R. 2,32,55. Spr. 4581. यशोदा° (हरि) Pańkar. 4,1,18. Kathâs. 56,320. पितृ° MBh. 3,16671. गुरु° R. 2,96,33. द्विजातिजन° MBh. 3,2478. सद्वत्सल Ragh. 2,69. भक्त° MBh. 4,203. Kathâs. 42,57. 50,197. Weber, Râmat. Up. 356. Pańkar. 1,4,1. Sarvadarçanas. 54,17. 56,2. 57,8. शरणागत° Kathâs. 21,44. 59,10. उपेत° Spr. 3957. अभ्युपपन्न° Mṛkkh. 108,5. प्रतिपन्न° Verz. d. Oxf. H. 209,*a*,20. दीन° Bhâg. P. 1,5,30. 4,17,20. वत्सलो रस: *der zärtliche Grundton* (eines Kunstwerks) Sâh. D. 241. — *c*) *von ganzer Seele einer Sache ergeben, ein Freund von:* धर्म° MBh. 3, 2459. R. 1,4,15. 2,27,23. 28,1. 53,34. 113,8. R. Gorr. 2,21,4. 4,3,7. Bhâg. P. 9,1,41. Pańkat. 222,14. चारित्र° R. 2,45,19. सत्य° Bhâg. P. 9,4,11. — 2) m. *a*) *ein durch Gräser genährtes* (schnell verlöschendes) *Feuer* Trik. 1,1,69. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBh. 9,2574. — Vgl. मित्र°, वात्सल्य.

वत्सलता f. 1) *Zärtlichkeit, liebevolle Gesinnung* Sâh. D. 241. उरु° Bhâg. P. 5,7,4. प्रजा° Râǵa-Tar. 5,194. — 2) *Freude an einer Sache:* धात्रीकर्म° Uttarar. ed. Cow. 35,8.

वत्सलत्व n. 1) = वत्सलता 1) R. Gorr. 2,25,8. Ragh. 5,7. 14,22. — 2) = वत्सलता 2): चापले Naish. 3,55.

वत्सलय् (von वत्सल), °यति *Jmd* (acc.) *zärtlich machen* Çâk. 102,7.

वत्सवत् (von वत्स) 1) adj. *ein Kalb habend:* गो Hariv. 3796. Bhâg.

P. 10,13,31. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Çûra Hariv. 1926. 1938.

वत्सविन्द् m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,24.

वत्सवृद्ध m. N. pr. eines Sohnes des Urukrija Bhâg. P. 9,12,9.

वत्सव्यूह m. N. pr. eines Sohnes des Vatsa VP. 463. — Vgl. वत्सभूमि.

वत्सशाल (von वत्सशाला) adj. *in einem Kälberstalle geboren* P. 4,3,36.

वत्सशाला f. *Kälberstall* P. 4,3,36.

वत्सादनी f. *Cucumis maderaspatanus* Gatâdh. im ÇKDr. — Vgl. गवादनी.

वत्साङ्क m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 130,a,5.

वत्साजीव adj. *durch Kälber seinen Lebensunterhalt gewinnend*, Bein. eines Piñgala Burn. Intr. 360.

वत्सादन 1) adj. *Kälber fressend.* — 2) m. *Wolf* Râgan. im ÇKDr. — 3) f. ई *Cocculus cordifolius Dec.* (*ihre Kinder aufzehrend*, so genannt, weil die Pflanze nur eine oder zwei von drei Beeren zur Reife bringt; vgl. Roxb. 3,812) AK. 2,4,3,1. H. 1137. Halâj. 2,460.

वत्साय् (von वत्स) *ein Kalb darstellen:* वत्सायती Bhâg. P. 10,30,17.

वत्सार m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa Verz. d. Oxf. H. 56, b, 38. — Vgl. अ°.

वत्सासुर m. N. pr. eines Asura Pankar. 4,3,132. — Vgl. वत्सक 1) c).

वत्सिन् (von वत्स) adj. *ein Kalb habend:* गावः R̥V. 7,103,2. als Beiw. Vishṇu's MBh. 13,6999 vielleicht *viele Kinder habend.*

वत्सिमन् (wie eben) m. nom. abstr. gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. *die erste Jugend, kindisches Alter* Naish. 3,55.

वत्सीपुत्र und वत्सीपुत्रीय fehlerhaft für वा°.

वत्सीय adj. = वत्सेभ्यो हितः, z. B. गोदुह् P. 5,1,5, Sch.

वत्सेश m. *ein Fürst von* Vatsa Kathâs. 30,69.

वत्सेश्वर m. dass. Ratnâv. 5,2. Kathâs. 26,280. 30,39.

वत्स्य MBh. 13,1951 fehlerhaft für वत्स, wie die ed. Bomb. liest.

वथ्सर m. Paushkarasâdi's Schreibung für वत्सर P. 8,4,48, Vârtt. 3, Sch.

वद्, वँदति und °ते Dhâtup. 23,40 (व्यक्तायां वाचि). 34,34 (संदेशवचने, v. l. संदेशने, भाषणे), वदेत्, उदेयम् (AV. 3,20,10. 16,2,2), अभिवादत 2. pl. imperat. (aus metrischen Rücksichten gedehnt) MBh. 3,10908. अनुवादयुस् (aus metrischen Rücksichten gedehnt) 4,229; उवाद, ऊदतुस् Vop. 8,141. वेदतुस्, वेदिथ 52. ऊदिमँ, ऊदे, ऊदाते, ऊदिरे; अवादीत् P. 7,2,3. Vop. 8,47. 141. (सम्) अवादिरन्; वदिष्यति; उद्यासम् Çat. Br. 1, 5,1,18. वदितुम्; उदित्वा P. 1,2,7. Vop. 26,204. °उद्य; pass. उद्यँते, अवादि, उदितँ. 1) act. a) *reden, sagen, sprechen:* यः पुरा सुते वँदामि कानि चित् R̥V. 1,105,7. ऋता वँदन्तः 161,9. तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति 164,45. 5,55,8. वाचं चित्राम् 63,6. Ait. Br. 1,6. असत् R̥V. 7,104,3. अविचेतनानि 8,89,10. 10,166,3. VS. 20,28. AV. 1,32,1. 6,47,2. 7,68,2. 8,11,3. 12,1,56. यद्वत्सु वँदः 3,52. यद्वदिष्यन्वा करिष्यन्वा स्यात् Çat. Br. 2,4,1,14. 3,2,1,20. 4,3,7. Ait. Br. 5,14. Kaush. Up. 3,2. वदतां वरः MBh. 3,3019. R. 2,99,13. Ragh. 1,59. वद मौनं समाचर Spr. 579. Vet. in LA. (III) 4,3. वद वन्ध्या कीदृशी नाम Spr. 855. MBh. 3,2183. त्रिर्वदामि R. 1,71,22. 2,28,4. Ragh. 19,22. उन्मत्तस्येव वदतस्तस्य Râga-Tar. 5,81. अवादीस्त्वं वयसा यः प्रवृद्धः स वै राजन्नाभ्यधिकः कथ्यते च MBh. 1,3579. Kathâs. 4,64. 5,92. 18,143. 340. 21,137. Hit. 15,1. 18. 18,1. 26,11. 27,5. Çuk. in LA. (III) 36,4. Bhatt. 7,96. भद्रमित्येव वा वदेत् M. 4,139. R. 1,55,25. 2,63,49. Spr. 471. 1163. Kathâs. 18,211. Daçak. 59,10. Pankat. 63,21. Bhatt. 1,18. त्वमप्येवं नले वद MBh. 3, 2102. Çâk. 25,14. Pankat. 67,22. मैवं वद MBh. 5,5985. मैवं वादीः Kathâs. 12,95. Sarvadarçanas. 79,22. 119,14. अन्यथा M. 8,103. MBh. 1, 913. Mârk. P. 64,16. मिथ्या 21,58. M. 8,59. Çâk. 125. मृषा M. 8,71. यदि यथा वदति तथा त्वमसि Çâk. 123. सर्वो जनो वदिष्यति यत् *dass* Pankat. 48,14. किं वदामि यत् so v. a. *was brauche ich noch zu sagen, dass? dann brauche ich es kaum mehr zu sagen, dass* Spr. 2649. वदत यदि *ob* Spr. 711. किं प्रयच्छामि तुभ्यं द्रोणा वदाशु तत् MBh. 1,5130. Spr. 2177. Bhâg. P. 7,10,69. Pankat. 45,25. सर्वमेवाञ्जसा वद M. 8,101. अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति Bhag. 2,36. इति वचनं युक्तमस्मद्विधो वदेत् MBh. 3,16720. 2,2300. 5,7510. R. 2,47,3. 64,30. 5,29,17. 6,16,1. Spr. 1232. 5336. Bhâg. P. 3,25,35. Bhatt. 4,28. तथा सह स्नेहवचनानि वदति Vet. in LA. (III) 20,2. 3. नानृतं वदेत् M. 3,229. 4,236. 8,36. 82. 97. Spr. 5389. यः साक्ष्यमनृतं वदेत् M. 8,93. 119. वद सत्यम् MBh. 3,2473. Kathâs. 4, 77. Brahma-P. in LA. (III) 56,12. नासत्यं नाप्रियं वदेत् R. 4,17,27. Varâh. Brh. S. 75,6. तदवितथमवादीर्यन्मम त्वं प्रियेति Sâh. D. 43,9. गर्हितम् R. 3,51,23. अप्रस्तुतम् Pankat. 36,23. आक्रुष्टः कुशलं वदेत् M. 6,48. तेभ्यो ऽभयं वदेत् Kauç. 49. स्वागतम् Kathâs. 18,353. स्वस्ति R. 1,4,21. द्रुणा इद्धतिर्मूदिम R̥V. 1,161,1. 5,37,2. शमम् so v. a. *rathen zu* MBh. 3, 1111. fg. *zu Jmd sprechen, anreden;* mit acc.: मामेवं वदतु R. 1,65,22. Kathâs. 18,272. Daçak. 84,8. Bhatt. 5,55. वदेद्राज्ञीं च चेटीं च भवतीति विदूषकः Bhar. im Comm. zu Çâk. 5,2. आशीर्भिरनुकूलाभिरूभावप्यवदत्तदा Hariv. 6973. mit dopp. acc.: यन्मां वदसि MBh. 3,1853. R. 1, 65,7. Bhatt. 5,96. Die Person im acc. mit अभि: वद मामभि MBh. 7, 98. im gen. Kathâs. 18,142. — pass.: ताभ्यामवादि impers. Râga-Tar. 1,219. 3,23. उदित α) *gesagt, gesprochen* AK. 3,2,57. H. an. 3,252. Med. t. 100. इत्युदिते impers. Kathâs. 26,98. सत्योत्तरा हैवास्य वागुदिता भवति Ait. Br. 1,6. धात्र्या प्रथमोदितं वचः Ragh. 3,25. उदितं प्रियां प्रति वचः Çiç. 9,69. पुष्पदन्तोदितां कथाम् Kathâs. 7,39. n. *das Gesprochene, Rede, Worte* H. ç. 81. Varâh. Brh. S. 51,1. Bhâg. P. 4,7, 6. — β) *angeredet, angesprochen:* इत्युदितः स तया Kathâs. 26,183. Çiç. 9,61. Bhâg. P. 6,7,26. — b) *mittheilen, verkünden, angeben, besprechen, sprechen über:* अथ मागधराजानो भाविन्यो ये वदामि ते Bhâg. P. 9,22, 44. यं वदन्ति तमोभूता धर्मतद्विदः M. 12,115. ब्रह्म Hariv. 11140. Varâh. Brh. S. 54,1. वदन्ती जारवृत्तान्तं पत्यौ Spr. 2712. यो गोत्रादि वदति स्वयम् H. 856. जटायुषं को वदति प्राणैरिष्टतरं मम *Bericht erstatten über* R. 4,56,21. यदि न च परपुरुषं वदसि *sprechen von* Pankat. 37,24. आश्चर्यवद्वदन्ति तथैव चान्यः (एनम्) *spricht von ihm wie von einem Wunder* Bhag. 2,29. Ait. Up. 3,13 (wohl वावदिष्यदिति zu lesen). उदित *mitgetheilt, verkündet, angegeben:* निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः M. 2,16. 1. 79. 4,259. 8,214. 9,25. 31. 96. 250. 11,89. 12,113. उत्तरं सूत्रमभ्यूह्य स्वयमेव मयोदितम् Kathâs. 7,11. मन्त्रो मे गुरुणोदितः 49, 239. Verz. d. Oxf. H. 65,b,21. Râga-Tar. 5,117. Bhâg. P. 5,1,10. 26,37. AK. 2,1,1. तदुदितं संकेतनम् Vet. in LA. (III) 20,14. श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मम् M. 2,9. 4,14. 155. 11,203. Jâgn. 1,154. *gelehrt* so v. a. *recipirt, richtig;* compar. उदिततर so v. a. इष्टतर Çânkh. Br. 19,2. — c) *ankündigen,*

voraussagen, anzeigen: युगपत्प्राप्तौ परामृद्धिं वदन्ति Âçv. Gṛhj. 4,4,5. अतिमुक्तककुन्दाभ्यां कर्पासं सर्षपान्वदेद्दशनैः Varâh. Bṛh. S. 29, 5. 5, 77. 7,19. 46,23. 87. 68,1. स प्रत्यक्षं देवेभ्यो भागमवदत्परोक्षमसुरेभ्यः so v. a. *zusprechen, zusagen* TS. 2,5,1,1. Bhâg. P. 6,9,2. *besagen, bezeichnen:* केशादिशब्देभ्यः पराः पाशादयः शब्दाः केशभूयस्त्वं वदन्ति H. 568, Sch. अन्तःस्थे ऽङ्गे (स्पृष्टे) स्वजन उदितः *angedeutet* Varâh. Bṛh. S. 51,25. — *d) behaupten, annehmen:* शमार्थिनः कालगतिं वदन्ति MBh. 13,25. शतमेकाधिकमेके सहस्रमपरे वदन्ति केतूनाम् Varâh. Bṛh. S. 11,5. 21,5. 23,4. Prab. 112,15. Sarvadarçanas. 126,14. — *e) bezeichnen als, erklären für, nennen:* स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति AV. 11,1,7. TBr. 3,1,2,1. त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् Taitt. Up. 1,12. स्वभावमेके कवयो वदन्ति — येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम् Çvetâçv. Up. 6,1. AV. Prât. 3,65. M. 3,182. 213. 284. 4,221. 8,103. 9,172. 12,123. MBh. 3,8351. R. 5,52,18. Çâk. 38. 165. Çrut. 25. Spr. 2660. 2707. 2711. 2887. 3657. Kâr. zu P. 2,1,32. Varâh. Bṛh. S. 68,116. Bhâg. P. 2,4,21. 3,1,10. तदुपरागमिति वदन्ति लोकाः 5,24,3. — *f) die Stimme ertönen lassen* (von Vögeln u. s. w.); *tönen, schallen, klingen:* वयो वदन्तः Ṛv. 2,43,1. 10,146,2. Frösche 7,103,5. 6. यथा वदत्स्येषः — शालावृकः MBh. 3,15674. यथा वदन्ति शान्तायां दिशि वै मृगपक्षिणः 16875. क्रूरम् 15669. सारसाः — वदन्ति मधुरा वाचः 11612. कशा हस्तेषु यद्वदान् Ṛv. 1,37,3. ग्रावा यत्र वदति 83,6. दुन्दुभिः AV. 12, 1,41. वीणाः Kâṭh. 34,5. Kauç. 84. वृष्टिः Maitrjup. 6, 22. — 2) med. *a) sagen, sprechen:* वदस्व यत्ते वाच्यम् Çat. Br. 4,3,1,1. 9,2,1,17. 4,2, 17. 14,3,1,30. स कथं वदसे शत्रून्युध्यस्व गदयेति ह MBh. 9,1901. 1, 4527. 5125. 3,16893. 4,287. 13,999. R. 5,59,18. Kathâs. 49,159. Mârk. P. 49,2. 134,22. प्रतिवाक्यं वदस्व MBh. 3,2732. सत्यं वदे 13722. वृषपर्वाणमवदत *sprachen zu* 11544. वदस्वैनं निदेशान्मम शासनम् R. 7,23, 2,7. देवानां त्वामहं वचनाद्वदे *ich spreche zu dir im Namen der Götter* Mârk. P. 66,24. *besprechen, sprechen über, mittheilen, angeben:* ब्रह्मवाद्यमवदेताम् TS. 2,5,8,3. वदस्व तद्विभूतीः Bhâg. P. 3,7,23. 10,2. 8, 1,1. 5,12. 14,1. तद्वदधं वरान्सर्वे R. 7,36,9. वदस्वैनं तत्त्वतो मम *angeben* so v. a. *mit Namen nennen* Hariv. 9996. — *b) sich besprechen über* (loc.): देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे Ṛv. 10,109,4. देवा ब्रह्मन्नवदन्त TS. 3,5, 2,2. *sich streiten um:* मनश्च ह वै वाक्चाहंभद्र ऊदाते Çat. Br. 1,4,5,8. — *c) sich nennen, sich ausgeben für:* तुरीये हैव संग्रहितारो वदन्ते Ait. Br. 2,25. — *d)* भासने P. 1,3,47. ज्ञाने ebend. und Vop. 23,39. wohl so v. a. *eine Autorität sein, hervorstechen, sich auszeichnen:* शास्त्रे वदते = भासमानो ब्रवीति oder सम्यग्बोधपूर्वकं वदति P., Sch. पाणिनिर्वदते Vop. लङ्कां समाविशद्रात्रौ वदमानो ऽरिदुर्गमाम् so v. a. *triumphirend* Bhaṭṭ. 8,27. — *e) sich bewerben um* (यत्ने) P. 1,3,47. Vop. 23,39. क्षेत्रे P., Sch. Vop. — Vgl. अनुदित, 1. उद्य, यथोदित, वाद्य.

— caus. वादयति, °ते (संदेशवचने, v. l. संदेशने, भाषणे) Dhâtup. 34, 34. med. P. 1,3,89. Vop. 23,58. 1) *Etwas sagen —, sprechen lassen:* अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेत् MBh. 5,1270. *Jmd zum Reden veranlassen, — auffordern:* वादितो ऽपि न वदति Verz. d. Oxf. H. 156,*a*,24. — 2) *ertönen —, erklingen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument); act., selten med.: वीणाम् Çat. Br. 3,2,4,6. 13,1,5,1. TBr. 3,9,14,1. MBh. 3,1843. R. Gorr. 2,100,23. Spr. 1523. Kathâs. 11,3. 34,159. fg. 49,23. 32. Hit. 63,13. P. 8,1,59, Sch. वीणा वाद्यते वेणुः पूर्यते Comm. zu Njâjas. 2,1,15. आयसेषु वाद्यमानेषु Kâtj. Çr. 21,3,7. Çâṅkh. Çr. 17,3,13. 16. Lâṭj. 4,1,7. वादित्राणि M. 4,64. MBh. 3,12097. Bhâg. P. 3,24,7. आतोद्यानि Kathâs. 34, 171. 37, 72. तूर्याणि Bhâg. P. 4,1, 53. दुन्दुभयो नेदुर्देवमानववादिताः 1, 9, 45. Kathâs. 37, 64. 65, 75. fg. Bhaṭṭ. 3, 34. 15, 4. घण्टाम् Pañkat. 229, 13. Hit. 59, 17. 20. पर्यङ्कं साङ्गुलीयेन पाणिना । वादयन्निव Râga-Tar. 4, 439. तलतालान् MBh. 3,12379. पाणिवादानि R. 2,65,4. सर्वतूर्यस्वनैः — वाद्यमानैः R. Gorr. 1,79,40. दन्तवीणाम् so v. a. *mit den Zähnen klappern* Pañkat. 94,4. med.: वादयते वेणुम् Gît. 5,9. पटहान् Mârk. P. 82,54. घण्टां वादयानः Pañkar. 3,8,10. वादयानो नखान् Hariv. 10770. Statt des acc. ausnahmsweise der loc.: वीणायाम् Kathâs. 106,12. Ohne Ergänzung *musiciren:* गायन्नृत्यन्वादयंश्च MBh. 1,3206. 4,305. Hariv. 11029. R. 1,34,13 (35,12 Gorr.). 2, 69,4. वादित n. *Instrumentalmusik:* गीतवादितरुदित Gobh. 3,3,22. MBh. 4,308. fg. Spr. 1766. Varâh. Bṛh. S. 33,23. Bṛh. 27 (25),9. वाद्यमान n. dass.: भेरीशङ्खमृदङ्गानां पणवानां सहस्रशः । वाद्यमानं स (वाद्यमानानि die neuere Ausg.) Hariv. 6889. — 3) *von Jmd* (ein musikalisches Instrument) *spielen lassen:* अवीवदद्वीणां परिवादकेन Schol. zu P. 1,1, 58, Vârtt. 2. 7, 4,1, Vârtt. 3. 93, Vârtt. 1. — 4) *sprechen; hersagen:* नान्दीं च वादयामास प्रद्युम्नो गद एव च Hariv. 8692. die neuere Ausg. liest नान्दिं und Nîlak. fasst das Wort fälschlicher Weise in der Bed. *eines musikalischen Intruments.* — Vgl. जलवादित.

— desid. *zu sagen —, zu sprechen beabsichtigen:* सत्यं विवदिषेत् Gobh. 1,5,27.

— intens. वावदीति P. 7,3,94, Sch. *laut reden, — tönen:* केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति (vgl. P. 2,4,74 Sch.) Ṛv. 6,47,31. त्रिष्टुभी 59,6. 10,67, 3. 68,1. AV. 6,126,3. 20,135,13. वावद्यमान Çat. Br. 1,7,4,19. 8,2,12.

— अच्छ P. 1,4,69. Vop. 8,141. *begrüssend anreden, einladen;* act. Ṛv. 1,38,13. 5,83,1. अच्छा च त्वैना नमसा वदामि 8,21,6. 10,88,14. Vâlakh. 3,3. VS. 16,4. AV. 6,59,3. 142,2. 8,7,1. 12,1,27.

— अति act. 1) *übertönen, lauter* oder *besser reden, niederschwatzen, niederdisputiren:* दुन्दुभिः सर्वा वाचो ऽतिवदति TBr. 1,3,6,2. राष्ट्रं विशमति वदति 8,3,2. अतिवादेन देवा असुरानत्युद्याथैनानत्यायन् Ait. Br. 6,33. Çat. Br. 11,6,2,5. 14,6,9,20. Pañkav. Br. 12,13,14. Shaḍv. Br. 2,3. एष तु अतिवदति यः सत्येनातिवदति Khând. Up. 7,16,1. वृद्धान्नातिवदेज्जातु (नाभिभवेज्जातु ed. Bomb.) MBh. 13,7578. — 2) *mehr sagen, überfordern:* यावद्दाताभिमनस्येत तन्नाति वदेत् AV. 11,3,25. — Vgl. अतिवाद, °वादिन्, अत्युद्य.

— अभ्यति act. = अति 1) Pañkav. Br. 8,3,6.

— अधि act. *dabei —, dazu sprechen:* इमामगृभ्णन्रशनामृतस्येत्यधिवदति TBr. 3,8,3,2. Çat. Br. 7,1,1,14. 2,1,12. 3,1,24. — Vgl. अधिवाद.

— अनु 1) *nachsprechen,* (Laute) *nachahmen;* act.: चित्तं वा इदं मनो वागनुवदति Çat. Br. 3,2,4,16. पूर्वमेवोदितमनुवदति Kâṭh. 19,4. Ait. Br. 2,40. इति वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति Kaush. Up. 3,2. Sâh. D. 192, 1. Sarvadarçanas. 28,10. गिरं नः — अनुवदति शुकः Ragh. 5,74. तत्कूजितान्यनुवदद्भिः — गृहकपोतशतैः Sâh. D. 41,9. *mit Worten begleiten:* अन्वेको वदति यद्ददाति तत् Ṛv. 2,13,3. *nachtönen:* अनुवदति वीणा P. 1,3,49, Schol. Als intrans. med. P. 1,3,49. Vop. 23, 40. अनुवदते कठः कलापस्य *der Kaṭha wiederholt die Worte des Kal. P.,* Sch. घोषस्या-

न्ववदिष्टेव लङ्का पूतक्रतोः पुरः Laṅkâ *erklang wie* Indra's *Stadt* BHAṬṬ. 8,29. — 2) act. *abermals sagen, auf Etwas zurückkommen, Etwas wiederholen* (um die Wichtigkeit desselben hervorzuheben) ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 54. Comm. zu NJÂJAS. 1,1,1. 2,1,64. zu GAIM. 1,23. BHÂG. P. 11, 21,42. fg. KULL. zu M. 1,74. 2,6. 45. 3,25. fg. 6,87. 8,409. SÂH. D. 215, 2. — 3) *schmähen:* दत्तमनूद्य BHÂG. P. 4,4,24. — 4) *Jmd um ein Almosen ansprechen:* ये त्वानुवादेयुरवृत्तिकर्शिताः MBH. 4,229. NILAK.: अनुवादे ऽयुः पूर्वं देहीत्युक्त्वा दत्तस्यैव त्वत्तोऽरामादेः प्रतिवर्षं पुनर्देहीति राजवचनं यदधिकारिणां प्रति तदनुवादस्तन्निमित्तं ये त्वां प्रति अयुः प्राप्नुयुः. — Vgl. अनुवाद fg. — caus. *ertönen —, erklingen lassen:* अतोद्यान् HARIV. 8688.

— अभ्यनु act. *in Beziehung auf Etwas sagen* ÇAT. BR. 10,4,1,9.

— अप med. P. 1,3,73. VOP. 23,58. 1) *seinen Unmuth auslassen gegen, tadeln, schmähen:* उत मे ऽपं वदेयुः TBR. 2,3,9,9. ÇÂṄKH. ÇR. 13, 16,1. नार्तो ऽप्यपवदेद्विप्रान् M. 4,236. MBH. 10,504. स्वं पुत्रमपवदति oder °ते P. 1,3,77, Sch. नृभ्यो ऽपवदमानस्य (so ist zu lesen) BHAṬṬ. 8, 45. — 2) act. *Jmd* (acc.) *durch Reden zerstreuen* PÂR. GṚHJ. 3,10. अपवदेयुस्तानितिहासैः पुरातनैः JÂGN. 3,7. — 3) act. *ausnehmen* (*eine Ausnahme machen*) Schol. zu AV. PRÂT. 2,63. 101. 3,60. अपोद्य ṚV. PRÂT. 4,18. अपोद्यत 11,5. — Vgl. अपवाद fg. — caus. 1) *Jmd tadeln, schmähen:* यश्चैनमभिनन्देत यश्चैनमपवादयेत् MBH. 12,8797. *Etwas tadeln, missbilligen:* तस्मान्नित्यं त्वमा तात पण्डितैरपवादिता (अपि वर्जिता ed. Bomb.) 3,1036. — 2) *ausnehmen* (*eine Ausnahme machen*): °वाद्य ṚV. PRÂT. 1,10. 6,5. °वाद्यते 11,18.

— अभि 1) *Jmd anreden, begrüssen* AIT. BR. 3,28. 4,20. TS. 2,5,8,3. पूर्वो राज्ञो ऽभिवदति ÇAT. BR. 3,3,4,14. प्रियेण नाम्ना 13,1,6,1. इतर इतरम् 14,5,4,15. 7,3,24. 9,4,1. अतिथीन् AV. 9,6,4.48. KAUÇ. 46. KHÂND. UP. 4,1,2. 5,1. KAṬHOP. 1,10. KENOP. 17. ÇVETÂÇV. UP. 3,21. M. 8,356. MBH. 1,5443. 8003. 3,907. fg. 10908 (अभिवादत). 15668. 4,223. 5,4230. R. 1,70,33. 2,110,21 (119,20 GORR.). KATHÂS. 45,99. जारं चौरेत्यभिवदन् *wer den Ehebrecher Dieb schilt* JÂGN. 2,301. med. MBH. 5,923. st. अभिवादे 3,1836 liest die ed. Bomb. अभिवादये. — 2) *in Bezug auf — sagen, erwähnen, Etwas* (mit einem Worte u. s. w.) *meinen:* तस्मै प्रत्नमिति पूर्वं कर्माभिवदति AIT. BR. 1,4. यत्कर्म क्रियमाणमृगभिवदति ebend. तान्देवो ऽभ्यवदत मम वा इदम् 3,34. 5,2. 6,15. 8,26. ÇÂṄKH. ÇR. 16,3,12. अग्नीनभ्यूदे *er sprach auf die Feuer hinweisend* KHÂND. UP. 4,14,2. *aussagen, ausdrücken:* वाचा हि नामान्यभिवदति ÇAT. BR. 14,6,2,4. यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते KENOP. 4. *erklären für, nennen:* एतद्वै तदक्षरं गार्गि ब्राह्मणा अभिवदन्ति ÇAT. BR. 14,6,8,8. तद्विदः परमं पदमभिवदन्ति BHÂG. P. 5,23,1. *sprechen:* ते प्रकाश्याभिवदन्ति PRAÇNOP. 2,2. यो ऽनृतमभिवदति 6,1. प्रियां वाचमभिवदन्त्यः MUṆḌ. UP. 1,2,6. — Vgl. अभिवदन, °वाद, °वादिन्, °वाद्य. — caus. 1) *Jmd anreden, begrüssen* (oft mit Ergänzung der Person); med. LÂṬJ. 3,3,15. गुरुं गोत्रेणाभिवादयेत GOBH. 2,3,11. MBH. 1,5166. 2,148. 3,1836 (nach der Lesart der ed. Bomb. und INDR. 5,20). 11628. 5,1693. HARIV. 10881. R. 2,64,29. R. GORR. 1,78,2. 5,65,17. MṚKKH. 34,6. 145,10. 155,12. ÇÂK. 28,8. 64,15. VIKR. 80,2. 82,7. MÂLAV. 13,5. 64,19. PRAB. 116,12. P. 8,2,83, Sch. act. M. 2,117. 119. 122. 202. 205. 4,154. JÂGN. 1,26. पादौ MBH. 1,5123. 3, 3010. 4,1390. 14,2023. 2609. HARIV. 9066. 10882. fg. 10885. R. 1,70,33. 2,40,2. 54,11. 56,13,c. 103,47. 110,21 (119,20 GORR.). R. GORR. 2,39, 2. 5,53,29. 64,1. 6,104,9. KATHÂS. 49,155. HIT. ed. JOHNS. 1738. °वाद्य पादावाचार्यस्य ÇÂṄKH. GṚHJ. 2,7. M. 2,126. 212. 11,204. MBH. 1,7181. 3,2467. 3056. 11906. 15663. 16645. 14,2601. HARIV. 9066. 10881. 10884. R. 1,12,2 (1 GORR.). 57,15. 70,12. 2,44,23. 50,6. 52,26. 92,30. R. GORR. 1,34,3. BHÂG. P. 1,10,8. 13,36. °वादयितुम् R. GORR. 1,26,4. °वादित MBH. 1,8003. 3,11907. 15,654. R. 2,90,5. KATHÂS. 63,74. BHÂG. P. 5,3,16. *sich anmelden bei* (dat.): आचार्याय ÇÂṄKH. GṚHJ. 4,12. — 2) med. *Jmd* (acc.) *durch Jmd* (acc. oder instr.) *begrüssen lassen* P. 1,4,53, Vârtt. VOP. 5,5. — 3) *Etwas hersagen lassen:* आशिषमभ्यवादयत् BHÂG. P. 4, 12,28. — 4) *erklingen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument): वादित्राणि MBH. 3,14386. — Vgl. अभिवादक fg., °वादनीय.

— प्रत्यभि caus. med. *einen Gruss erwiedern* MṚKKH. 34,7. — Vgl. प्रत्यभिवाद fgg.

— समभि caus. *Jmd begrüssen:* मूर्ध्ना समभिवाद्य तम् MBH. 13,276. R. 2,115,8. वसुदेवस्य पादौ HARIV. 5735.

— अव 1) *durch Nachrede Abbruch thun, herabsetzen:* मा श्रियो ऽववादिष्मेति डुरववदं हि श्रेयसः AIT. BR. 5,22. — 2) *unterweisen:* अस्माभिरप्यन्ये बोधिसत्त्वा अववदिताः (!) SADDH. P. 4,6,a. — Vgl. अववद fgg., अववाद.

— व्यव act. 1) *beschreien* PAṄKAV. BR. 6,7,11. — 2) *zu reden beginnen, das Schweigen brechen* (nach ÇAṄK.) KHÂND. UP. 4,16,2.

— आ *reden zu, anreden; ankündigen, zusprechen:* तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् ṚV. 1,11,6. 64,9. विदथम् 117,25. 10,85,26. fg. सर्वतो नः शकुने भद्रमा वद 2,43,2. वर्षमा वद AV. 4,15,14. यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः VS. 26,2. AV. 6,69,2. 12,1,29. 1,10,4. गोष्ठम् VS. 5,17. इयम् TS. 1,1,5,2. ÇAT. BR. 1,1,4,18. LÂṬJ. 3,11,3. 4,2,3.

— समा act. *einen Ausspruch thun* MBH. 3,16148.

— उद् *die Stimme erheben, sich hören lassen; aussprechen:* अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदकात् ṚV. 10,166,5. यावन्तो यज्ञायुधानामुद्वदतामुपाशृण्वन् TBR. 3,2,5,9. ÇAT. BR. 1,1,4,17. 3,2,1,39. सांग्रामजित्यायेषामुद्वदे AV. 5,20,1. — caus. *ausrufen lassen:* हविष्कृतम् ÇAT. BR. 1,1,4,11. *erschallen lassen* 4,3,3,19. Vgl. उद्वादन.

— प्रत्युद् caus. *dagegen erschallen lassen* ÇAT. BR. 1,1,4,13. 17.

— उप 1) *missliebig reden über* (acc.), *beschreien, berufen* AV. 15,2, 1. TBR. 2,3,9,7. AIT. BR. 2,31. तं क्षेम उपोदुर्दास्या वै त्वं पुत्रो ऽसि ÇÂṄKH. BR. 12,3. LÂṬJ. 10,7,4. — 2) *anreden* AIT. BR. 3,23. *bitten* PAṄKAT. in Ind. St. 3,372,23. — 3) med. *Jmd bereden, an sich zu locken suchen* (उपसंभाषायाम् und उपमन्त्रणे) P. 1,3,47. (प्रलोभे) VOP. 23,39. कर्मकरानुपवदते = उपसान्त्वयति, कुलभार्यामुपवदते = उपच्छन्दयति P., Sch. कंचिन्नोपावदिष्टासौ BHAṬṬ. 8,28. — 4) in der dunklen Stelle गुहा हितमुपं निणिग्वदन्ति ṚV. 4,5,8 zieht SÂJ. उप zu हितम्. — Vgl. उपवाद fg.

— प्रत्युप *durch Reden beleidigen:* तेनो अग्नीः प्रत्युपोदिता PAṄKAV. BR. 10,7,2.

— नि caus. med. *erschallen lassen:* भेरीसहस्राणि शङ्खानामयुतानि च MBH. 5,7656. fg.

— निस् 1) *wegreden:* आयुर्मो निर्वादिष्टम् VS. 5,17. — 2) *hinausreden, hinausschallen lassen:* वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम् AV. 4,6,2. — 3) *seinen Unmuth gegen Jmd* (acc.) *auslassen, Jmd schmähen* MBH. 4,122. निर्वदिर्निर्वदेदेनम् 5,4618. med. 12,12361. — Vgl. निर्वाद.

— अभिनिस् *aussagen in Beziehung auf* (acc.): तत्रं वा एतदक्षरमभिनिर्वदति यत्पञ्चदशम् PAÑKAV. BR. 11,11,9. 23,7,2.

— परा *wegsprechen* AV. 6,29,2. द्विषत्तम् LÂṬJ. 3,11,3.

— अभिपरा *anreden* ÇAT. BR. 11,5,1,6. ÇÂÑKH. BR. 23,5.

— परि 1) *sich auslassen, einen Ausspruch thun* MBH. 12,4446. *bereden, besprechen, sich auslassen über* (acc.): गौ वाव तौ तत्पर्यवदताम् TS. 1,7,2,2. तदस्ति पर्युदितमिव ÇAT. BR. 3,1,3,2. ÇÂÑKH. BR. 6,4. प्रजापतिम् PAÑKAV. BR. 4,9,14. आदित्यमेव ते परि वदन्ति सर्वे AV. 10,8,17. 12,4,49. — 2) *sich nachtheilig über Jmd auslassen, Jmd tadeln* Spr. 134. MBH. 12,4869. 13,4992. med. 3.14686. 5,1338. — Vgl. परिवाद fgg.

— प्र 1) *heraussagen, reden, sprechen; aussagen, ansagen, verkünden:* प्रवदतां श्रेष्ठः HARIV. 5927. 7036. R. 3,22,37. विश्रब्धम् 4,8,16. 54,10. 63,28. 5,60,15. BHÂG. P. 1,17,21. 7,2,58. PAÑKAT. 143,21. *sprechen zu Jmd* (acc.) BHAṬṬ. 7,24. *die Stimme ertönen lassen* (von Thieren und Vögeln): एष दात्यूहको हृष्टः — प्रवदन्मन्मथाविष्टः स्वकान्तामनुतिष्ठति R. 3,79,12. VARÂH. BṚH. S. 28,17. (आप): अप्रवदत्यः *geräuschlos* ÂÇV. GṚHJ. 2,7,7. मन्त्रम् ṚV. 1,40,5. 7,33,14. वाचः 101,1. 103,1. 9,97,8. 10,94,1. पुरा वाचः प्रवदितोर्निर्वपेत् (vgl. P. 3,4,16, Sch.) TS. 2,2,9,5. AIT. BR. 2,15. ÇAT. BR. 7,4,2,38. KÂTJ. ÇR. 9,1,10. सत्यं वचो यत्प्रवदन्ति विप्राः R. 5,28,3. मृषोद्यम् BHAṬṬ. 5,60. त्वया प्रोदितं वचः HARIV. 15793. अतिवादं न प्रवदेत् MBH. 5,1270. शिवाश्चाप्यशिवा वाचः प्रवदन्ति महास्वनाः R. 6,16,11. अथर्वणे यां (ब्रह्मविद्यां) प्रवदेत ब्रह्मा MUṆḌ. UP. 1,1,2. ब्रह्म न प्रावदत्कश्चित् R. GORR. 2,45,4. 109,30. 6,102,34. BHÂG. P. 1,9,29. तस्यास्तत्प्रियाख्यानं प्रवदस्व MBH. 3,2910. प्रवदन्नर्जुने सख्यम् 5,2545. यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् AV. 4,24,3. 12,3,15. 18. प्राप्तं समरं समयं प्रवदेत् VARÂH. BṚH. S. 47,26. 93,11. 96,1. प्रह्वेषु कर्कटे लग्ने वाक्पतावन्दुना सह। प्रोद्यमाने (= उदयं गच्छति सति Comm.; vgl. WEST. u. इ mit प्रोद्) R. 1,19,3. *aussagen so v. a. annehmen, statuiren:* जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ÇVETÂÇV. UP. 3,21. Spr. 2843. ये ऽप्यङ्गनानां प्रवदन्ति दोषान् VARÂH. BṚH. S. 74,5. — 2) *bezeichnen als, erklären für, nennen:* एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति M. 5,55. सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः BHAG. 5,4. MBH. 3,5012. 8146. 15641. R. 5,52,18. प्रवदति भरतस्तां नायिकां विप्रलब्धाम् Comm. zu GÎT. 7,2. ÇRUT. 43. KÂr. 1 aus KÂç. zu P. 7,2,10. Spr. 1771. 2273. 2295. 2377. 3957. 4923. VARÂH. BṚH. S. 15,29. 68,114. 88,32. BHÂG. P. 3,25,31. PAÑKAR. 1,1,44. — Vgl. प्रवद् fgg., प्रवाद, प्रवादिन्. — caus. *ertönen lassen, spielen* (ein musikalisches Instrument): वीणाम् ÇÂÑKH. ÇR. 17,14,8. प्रवादितैश्च वादित्रैः MBH. 1,5329. 5356. 5460. 4,1164. 5,3350. 7,80. 3905. HARIV. 4725. MÂRK. P. 106,61. Verz. d. Oxf. H. 32,b,14. ohne Ergänzung *musiciren:* प्रवादयद्भिर्गन्धर्वैः HARIV. 12006. गन्धर्वान् — सुप्रवादितान् *schön musicirend* 11792. st. शङ्खाश्च मृदङ्गाश्च प्रवाद्यन्ति MBH. 12,1899 ist wohl शङ्खाश्च मृदङ्गाश्च प्र° zu lesen. — Vgl. प्रवादक.

— अनुप्र 1) *nachsprechen:* वाचं प्रोदितामनुप्रवदन्ति AIT. BR. 2,15. TS. 2,2,9,5. — 2) *aussagen über:* तामेता ऋचो ऽनुप्रवदन्ति NIR. 10,20.

— caus. *nachher ertönen lassen:* वीणाम् ÇÂÑKH. ÇR. 17,14,8.

— उपप्र *mit der Stimme einfallen* AV. 4,15,14.

— विप्र act. med. *sich gegenseitig widersprechen:* विप्रवदन्ते सांवत्सराः, मौहूर्ताः P. 1,3,50, Sch. VOP. 23,42. BHAṬṬ. 8,30.

— संप्र *laut aussprechen:* पुरा वाग्भ्यः संप्रवदितोः PAÑKAV. BR. 21,3,5. *gemeinschaftlich die Stimme ertönen lassen:* संप्रवदन्ति कुक्कुटाः Ind. St. 8,418. P. 1,3,48, Sch. VOP. 23,41. med. *sich unterhalten:* संप्रवदन्ते ब्राह्मणाः ebend. संप्रवदमानाज्जनात् BHAṬṬ. 8,28.

— प्रति 1) *zu Jmd* (acc.) *reden:* शिरः प्रति वामश्व्यं वदत् ṚV. 1,119,9. 8,45,5. मण्डूको मां प्रति वदतः KAUÇ. 96. — 2) *antworten* MBH. 13,1452. KATHÂS. 88,59. RÂGA-TAR. 3,1. DAÇAK. 63,5. mit acc. der Person RAGH. 3,64. KATHÂS. 14,85. 25,102. BHAṬṬ. 2,28. राज्ञा च प्रत्यवादि सः 15,9. इति प्रत्युदिता (*zurückweisen* Comm.) याम्या दूताः BHÂG. P. 6,2,21. — 3) *nachsprechen, wiederholen:* स चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तम् KAṬHOP. 1,15. MBH. 5,4635. — Vgl. प्रतिवाद fg. — intens. partic. प्रतिवावदत् *widerredend* AIT. BR. 2,3.

— वि 1) act. *Etwas widerreden:* यस्ते हवं विवदत् AV. 3,3,6. तदुभयं व्युदितम् *strittig* ÇÂÑKH. BR. 19,2. — 2) *sich mit Jmd in Wortstreit einlassen über* (loc.); med. P. 1,3,47, Sch. VOP. 23,41. TBR. 2,3,5,5. ÇAT. BR. 1,3,1,27. 8,6,2,3. 10,1,4,10. 14,8,15,5. अहंश्रेयसे 9,2,7. KHÂND. UP. 5,1,6. KAUSH. UP. 2,14. पित्रा M. 3,159. MBH. 13,4277. असाक्षिकेषु त्वर्थेषु मिथो विवदमानयोः M. 8,109. 252. 9,191. 250. तस्या निमित्तम् R. 3,67,10. fg. Spr. 3068. KATHÂS. 24,183. 45,103. BHÂG. P. 9,14,11. Verz. d. Oxf. H. 50,a,4. 156,a,29. BHAṬṬ. 8,28. PAÑKAT. 96,25 (विवद° zu lesen). 100,25. II, 10. यस्मात्स्त्रियं (acc. st. loc.) विवदध्वं सभायाम् MBH. 2,2396. परस्परं विवदमानानामपि धर्मशास्त्राणाम् *sich gegenseitig widersprechend* HIT. 19,21. कृत्ये विवदमाने *strittig* R. GORR. 2,79,9. Häufig auch act.: मिथो विवदतां नृणाम् M. 8,178. 263. 390. MBH. 3,12695. R. GORR. 2,109,57. शतं दद्यान्न विवदेदिति प्राज्ञस्य लक्षणम् Spr. 2935. 2938. BHÂG. P. 5,14,38. Verz. d. Oxf. H. 100,b, No. 156. 156,a,30. इत्थं चाक्रमक्रमिकया तयोर्विवदतोः PAÑKAT. 183,6. शरीरमापदश्चापि विवदन्त्यविहिंसतः MBH. 12,9479. *sich in Streit einlassen mit,* mit acc. der Person: न च तान्विवदेद्धीमानाक्रुष्टश्चापि तैः सदा MÂRK. P. 34,93. विवदितः *im Streite liegend:* राज्यहेतोः MBH. 13,556. — 3) *sich unterhalten:* एवं विवदतोस्तत्र कृष्णनारदयोः HARIV. 10481. — 4) *die Stimme ertönen lassen:* हृष्टो विवदमानश्च कोकिलो मामिवाह्वयत् R. 3,79,10. — Vgl. विवाद. — caus. *einen Process einleiten, die Gerichtsverhandlung beginnen* (*antworten lassen* ST.) JÂGN. 2,12. — intens. *die Stimme laut, wiederholt erschallen lassen:* य इन्द्र इव देवेषु गोष्वेति विवावदत् (ऋषभः) AV. 9,4,11.

— सम् 1) *zusammen sagen:* अथ हाग्नयः समूदिरे KHÂND. UP. 4,10,4. *sich unterreden mit* (instr.), *sich bereden über* (loc.); med.: इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्व ṚV. 1,170,5. उत स्वया तन्वा३ सं वदे तत् 7,86,2. स्वेन क्रतुना *mit sich zu Rathe gehen* 10,31,2. AV. 6,109,2. 11,4,6. सावित्रे TBR. 3,10,9,5. TS. 2,5,1,5. इन्द्राग्नी उ हैवैतत्समूदाते ÇAT. BR. 5,2,1,11. 1,1,4,14. 3,1,1,10. 8,4,1,4. कुमारं जातं संवदन्त उप वै प्रशूषते *man sagt zu einander von dem Kinde: es lauscht* AIT. BR. 3,2. NIR. 11,25. गृहपतेरेवारण्योः संवदन्ते ÇAT. BR. 4,6,8,13. 14,7,1,1. मा मैतस्मि-

न्संवदिष्ठाः *versuche nicht mit mir darüber zu reden* 5,1,2. तथैव भीमसेनेन लोकाः संवदते भृशम् MBH. 7,5318. act.: राज्ञा न संवदेत् 4,125. स्वचरैः सह संवदेत् Spr. 1037. तयोः संवदतोरेवम् MBH. 5,7033. 6,5606. R. 1,74,13. 2,89,5. R. GORR. 1,26,19. 76,15. 7,60,1. Spr. 4413. BHÂG. P. 3,20,5. 12,10,7. इति तौ दंपती तत्र समुद्य समयं मिथः so v. a. *einen Pact schliessend* BHÂG. P. 4,25,43. यथासमुदितम् *nach Uebereinkunft* ÇAT. BR. 13,5,4,27. — 2) act. *zusammen klingen*, von musikalischen Instrumenten AV. 4,37,4. — 3) *übereinstimmen, zustimmen:* दैवं न संवदति MṚKKH. 165,20. दैवं संवदते यदि HARIV. 7413. वदाख्याता च तस्यैषा संवदिष्यति मत्कथा KATHÂS. 121,218. अपि च कृतिनमेनं शक्तिदेवं स्वनाम्ना व्यधित समुदितेन स्वेषु विद्याधरेषु ॥ so v. a. *gebräuchlich* 26,279. — 4) *sprechen:* यदि ज्ञास्यामि वक्ष्यामि अज्ञानान्न तु संवदे MBH. 13,480. भीष्मः समवदत्तत्र गिरं साधुभिरर्चिताम् 4,915. एवं समुदितस्तेन *angeredet* BHÂG. P. 3,24,41. — 5) *bezeichnen als, erklären für, nennen:* मन्दाक्रान्तां तां संवदन्ति ÇRUT. 42. — Vgl. संवदितव्य, संवाद. — caus. 1) *sich unterreden lassen:* संवादयैनं दैवैः ÇAT. BR. 1,8,3,20. *eine Unterredung über* (loc.) *hervorrufen*, med. ÇÂÑKH. ÇR. 17,14,2. KAUSH. UP. 4,3. fgg.; vgl. S. 136. fg. — 2) *sich über Etwas einigen, einstimmen:* संवादयन्निव KATHÂS. 107,79. संवाद्यतां तत्सर्वेषाम् 50,166. संवादित *worüber man sich geeinigt hat* MBH. 1,7931. — 3) *zutreffend angeben:* संवाद्य नृपसंख्यादीन् M. 8, 31. — 4) *Jmd zum Sprechen auffordern* HIT. 83,1, v. l. — 5) *ertönen lassen* (ein musikalisches Instrument): तूर्याणि MBH. 1,7056. वादित्राणि 7909. वीणाम् KATHÂS. 21,4. — Vgl. संवादन.

— उपसम् s. उपसंवाद.

— परिसम् *sich gemeinschaftlich über Jmd äussern:* तं राजसाक्ष (so die ed. Bomb.) परिसंवदन्ति रायस्पोषः स विजिगीषुरेकः MBH. 13,7368.

— प्रतिसम् *sich unterreden mit* (acc.): ते न प्रति चन समवदत AIT. BR. 3,23.

— विसम् act. *seiner Zusage untreu werden* M. 8,219. *Einwendungen machen, widersprechen* KULL. zu M. 12,110. तन्मन्दारवती देवीत्रपं नात्र विसंवदेत् KATHÂS. 101,82. — Vgl. विसंवाद. — caus. 1) *Jmdes Unzufriedenheit erregen:* लक्ष्मणेन न विसंवादितः कश्चित् R. 6,24,27. — 2) *nicht bewähren:* अविसंवादितपौरुष MÂRK. P. 133,16. रमणीश्लोकव अवक्री विक्षिणा विसंवादिदो ÇÂK. 84,21.

वद 1) (von वद्) oxyt. nom. ag. *sprechend, Sprecher, Redner* gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. VOP. 26,30. AK. 3,1,35. H. 346. Vgl. एवा°, कद्वद, कु°, प्रियं°, ब्रह्म°, मन्त्र°, यद्वद, वशं°. — 2) N. des ersten Veda bei den Magiern Verz. d. Oxf. H. 33,*b*,3. REINAUD, Mém. sur l'Inde 394. WEBER, Lit. 144; vgl. विश्ववद.

वदक = वद 1) in दुर्वदक.

वदन (von वद्) n. 1) *das Reden, Sprechen, Tönen* ÇAT. BR. 5,4,4,5. सत्य° KÂTJ. ÇR. 2,1,12. ÇÂÑKH. ÇR. 2,3,24. 10,20,1. पुरस्ताद्वदन ÇAT. BR. 4,6,8,2. वदनादिव्यापार, वाग्वदन ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 83. — 2) = मुख u. s. w. AK. 2,6,2,40. H. 572. HALÂJ. 2,363. *a) Mund, Maul:* वाकसायका वदनान्निष्पतन्ति Spr. 2767. वदनैर्मधुगन्धिभिः R. 1,9,38 (36 GORR.). SUÇR. 1,124,10. °प्रिय 189,12. °मदिरा MEGH. 76. VARÂH. BṚH. S. 67,6. चुम्बाविरामे वदनं प्रमार्ष्टि 78,8. 93,5. 7. BHÂG. P. 8,9,18. शृगालिका मांसपिण्डगृहीतवदना *im Maule ein Fleischstück haltend* PAÑKAT. 226,20. — *b) Gesicht* R. 2,26,10. SUÇR. 1,118,14. 259,5. MEGH. 40. ÇÂK. 29. Spr. 364. 2708. fgg. VARÂH. BṚH. S. 48,10. 50,6. 58,47. 68,104. RÂGA-TAR. 6,55. BHÂG. P. 2,1,28. 5,9,19. पूर्णेन्दु° MBH. 3,2480. MÂLAV. 17. शशिप्रकाशवदना R. 5,14,21. विवृत्तवदना ÇÂK. 45. प्रहसित° PAÑKAT. 36,2. 185,25. अहृष्ट° R. GORR. 2,101,26. प्रहृष्ट° 4,8,32. विषण्ण° MBH. 3,14360. R. 1,62,3. विषादार्त° 2,47,3. विवर्ण° MBH. 3,2105. R. 2,26,8. 87,4. आपीतवर्ण° 76,4. व्रीडाविनम्र° KAURAP. 5. प्रचण्ड° DHÛRTAS. 85,1. सुवदना 79,17. MÂLAV. 65. VIKR. 29. ṚT. 6,20. PRAB. 60, 5. कमलवदना ÇRUT. 18. अश्रुवदना *mit Thränen auf dem Gesicht* BHÂG. P. 1,16,19. 17,3. किंचिच्चकार वदनम् *verzog ein wenig das Gesicht* 3, 33,20. — *c) Vorderes, Spitze:* अङ्कुश°, ताम्बव° adjj. (शलाकायन्त्र) SUÇR. 1,25,5. अधोवदनाः कण्टकाः H. 62. शृगालवदना बाणाः *Maul* und zugleich *Spitze* R. 6,79,69. fg. — *d) the first term, the initial quantity of the progression* COLEBR. Alg. 52. — *e) the side opposite of the base; the summit* COLEBR. Alg. 72. — Vgl. राज°.

वदनचक्र R. 5,25,15 fehlerhaft für रदनचक्र.

वदनदन्तुर m. N. pr. eines Volkes MÂRK. P. 58,12.

वदनरोग m. *Mundkrankheit* VARÂH. BṚH. S. 32,18. — Vgl. मुखरोग.

वदनश्यामिका f. *Schwärze des Gesichts*, Bez. einer best. Krankheit Verz. d. B. H. No. 963.

वदनामय (वदन + अ°) m. *Mund-* oder *Gesichtskrankheit* TRIK. 3,3,114.

वदनासव (वदन + आ°) m. *Speichel* BHÛRIPR. im ÇKDR.

वदनीभू (वदन + 1. भू) *sich in ein Gesicht umwandeln:* नो सत्येन मृगाङ्क एष वदनीभूतः Spr. 1654.

वदन्त s. किं°.

वदन्ति und वदन्ती bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3,50 ein zur Erklärung von किं° erfundenes Wort.

वदन्तिक m. pl. N. pr. eines Volkes MÂRK. P. 58,45.

वदन्य adj. = वदान्य SÂRAS. zu AK. 3,1,6 nach ÇKDR. H. 351.

वदान्य UṆÂDIS. 3,104. 1) adj. (f. आ) mit कृतादि componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. *a)* (von 1. अवदान mit Abfall des Anlauts; vgl. 3. दा mit अव) *freigebig* AK. 3,1,6. TRIK. 3,3,320. H. 351. an. 3,503. MED. j. 102. HALÂJ. 2,211. BALA bei MALLIN. zu NAISH. 5,11. AǴAJA bei UǴǴVAL. M. 4,224. fg. MBH. 1,7159. 3,1135. 4,16. 5,1347. 14,2695. R. 1,1,3. 60,2. 2,60,17. 61,2. 78,15. R. GORR. 2,1,15. RAGH. 5,24. Spr. 2154. 2713. 3132. VARÂH. BṚH. 18,8. NAISH. 5,11. RÂǴA-TAR. 3,258. BHÂG. P. 3,1,27. 4,25,41. 8,19,27. — *b) beredt* (als wenn das Wort von वद् käme) AK. 3,4,24,162. TRIK. MED. BALA und AǴAJA a. a. O. *freundlich redend, liebenswürdig* H. H. an. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi MBH. 13,1391.

वदाम (aus dem pers. بادام) m. *Mandel* RÂǴAN. im ÇKDR.

वदाल m. 1) *eine Art Wels* (s. पाठीन) TRIK. 1,2,16. H. ç. 195 (verschieden von पाठीन); vgl. चित्र°, वादाल. — 2) *Strudel* oder *Brandung* (कूलकुण्डक) TRIK. 1,2,11.

वदालक m. = वदाल 1) TRIK. 3,3,247. BHÛRIPR. im ÇKDR.

वदावद (von वद्) adj. *geschwätzig* P. 6,1,12, Vârtt. 2. PAT. zu P. 7, 4,58. VOP. 26,30. AK. 3,1,35. H. 346. — Vgl. अ°.

वदावदिन् adj. dass.: वदो (d. i. वद उ) वद वदावदी वदोरुः पृथुः LÂṬJ. 4,1,5.

वदि indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. bei Angabe eines Datums in Verbindung mit einem Monatsnamen so v. a. *in der dunklen Hälfte des —:* वैशाख° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,33,6. Nach Weber (Kṛshṇaǵ. 350) ist व oder richtiger ब Siglum für बहुल und दि für दिन.

वदितर् (von वद्) nom. ag. *Sprecher:* अपूतायै वाचो वदितारः Ait. Br. 7,27. proparox. mit acc.: जनापवादान् P. 3,2,135, Sch. वदिता न लघीयसो ऽपरः स्वगुणाम् *pflegt nicht von seinen Vorzügen zu reden* Spr. 3936. न पुरा भीमसेन त्वमीदृशीर्वदिता गिरः MBh. 2,2257.

वदितव्य (wie eben) adj. *zu sprechen, zu sagen:* सत्यम् Ait. Br. 5,14. वदितव्यम् impers. Sarvadarçanas. 44,13. 126,14. 156,9. 180,4.

वदिष्ठ (von वद् mit dem suff. des superl.) adj. *am besten redend:* वाग्वनस्पतीनाम् Pañkav. Br. 6,5,12.

वद्विवास N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 6,318.

वद्ध्री s. वध्री unter वध.

वद्य (von वद्) n. am Ende eines comp. *Rede, Unterhaltung über* P. 3,1,106. सत्य° adj. *die Wahrheit redend* Bhaṭṭ. 5,60. — Vgl. अ° (adj. *verächtlich, gemein* auch Bhâg. P. 4,19,22. n. *Unvollkommenheit, Fehler* auch 3,9,1) und ब्रह्म°.

वध् eine defective Wurzel, die nach P. und Vop. nur im aor. und prec. vorkommen soll. Die ältere Sprache kennt ausserdem vereinzelt den potent. वधेयम् AV. 10,5,15 und वधेत् VS. 10,8, das Epos auch das fut. und die Special-Tempora des pass. अवधीत् P. 2,4,43. 7,2,10, Schol. Vop. 8,49. 9,9. वधीम् (ṚV. 1,165,8. 10,28,7), अवधिष्म, वधिष्टन, वधिषुम्; वध्यासम्, वध्यात्, वध्यासुम् P. 2,4,42. pass. aor. अवधि 7,3,35. Vop. 11,7. 24,6. अवधिष्ट, अवधिषाताम्, अवधिषत P. 2,4,44. 6,4,62, Schol.; pass. prec. वधिषीष्ट ebend. *schlagen* (eig. und auch den Feind, ein Heer), *zerschlagen, erschlagen, tödten:* दस्युम् ṚV. 1,33,4. 38,6. वृत्रम् 51,4. 104,8. यस्यावधीत्पितरम् 5,34,4. 55,9. 8,56,20. गाम् 90,15. AV. 9,2,11. मृत्यो मा पुरुषं वधीः 8,2,5. 10,1,29. Ait. Br. 7,28. धिया धिया त्वा वध्यासुः TS. 2,6,6,1. 1,8,9,2. Çat. Br. 2,1,2,17. (अमित्रान्) वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैः 6,33,3. मा नो हार्दि त्विषा वधीः 8,68,8. सस्यम् AV. 7,11,1. कृविः 70,4. यज्ञम् Ait. Br. 2,31. वाचम् 6,33. सोमम् 3,32. TBr. 1,5,2,8. यथा वृक्षमशनिर्हन्ति । एवाहमद्य कितवानक्षैर्वध्यासमप्रति AV. 7,50,1. सम्राडुहां शार्दूलो ऽवधीत् Çat. Br. 11,8,4,4. वध v. l. des AV. 6,6,3 für अघ des ṚV. — एनाम् — पदावधीत् MBh. 4,461. 473. fgg. अवधीच्चैन गर्भम् 1,211. 4075. मृगं व्याघ्रो ऽवधीत्तदा 5573. 3,15727. R. 1,2,18. Spr. 1378. Kathâs. 25,250. 47,72. अवधीत्पापः स्वयमेव स्वविग्रहम् so v. a. *tödtete sich selbst* Râǵa-Tar. 5,240. 348. LA. (III) 92,12. तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत् Spr. 4247. MBh. 1,5500. 3,15776. Kathâs. 18,334. 121,207. Bhaṭṭ. 15,11. अवधिषुः 2. मा वधिष्ठा जटायुम् 6,41. वध्यास्त्वं रिपुसंहतीः 19,26. वधिष्यति u. s. w. MBh. 1,4801. 3,8695. 8798. 13543. 4,502. 13,64. Hariv. 8881. R. 2,31,31. 84,4. 3,49,31. Bhâg. P. 1,17,11. 10,50,48. Pañkat. 69,20. वधिष्ये u. s. w. MBh. 3,626. 5,4870. R. 7,67,26. य आह्वेषु वध्यन्ते Jâǵñ. 1,323. MBh. 12,5204. 13,5715. Hariv. 8282. Spr. 964, v. l. 1423. 1609. 1946 1930. 3826. 4605. Pañkat. 81,7. वध्यताम् MBh. 1,4316. वध्येत R. 2,75,29. वध्यमान MBh. 3,12118. 12227. 12251. 13865. 4,480. 6,3410. 4408. 5521. 8,939. 12,6648. R. 2,74,20. R. Gorr. 1,41,22. 7,29,23. वध्यति MBh. 13,5715. वध्यन्ति 3,8765. Spr. 1101. Hariv. 8281. वध्यामः R. 7,23,4,19. वध्यत् = वध्यमान MBh. 3,805. तेन सो ऽवधि Ragh. 17,5. statt वध्यमान MBh. 5,22 und Bhâg. P. 8,5,15 wird mit den Bomb. Ausgg. richtiger बा° gelesen; statt वध्यन्ते MBh. 14,560 ist mit der ed. Bomb. विध्यन्ते zu lesen. — Die Schreibung mit ब findet sich VS. 9,38. 10,8; mehrmals im Çat. Br. und vereinzelt im AV. Die Bomb. Ausgg. schreiben stets व.

— caus. *erschlagen, tödten:* वधयिष्यामि MBh. 2,1583.

— desid. बीभत्सते wird P. 3,1,6 und Vop. 8,103 119 auf eine Wurzel बध् oder वध् zurückgeführt, der Dhâtup. 23,4 die Bedeutung बन्धने (निन्दे च Vop.) beigelegt wird. Wir haben dieses desid. mit Westergaard zu बाध् gestellt.

— अप 1) *abhauen, spalten:* दारु ṚV. 10,146,4. — 2) *abschlagen* so v. a. *verjagen:* अररुं देवयजनात् VS. 1,26. उग्रं वचः 5,8. तमः Çat. Br. 4,3,4,21.

— अभि *auf Jmd schlagen:* तं वीरं सिंहो मत्तमिव द्विपम् । मर्मस्वभ्यवधीत्क्रुद्धः पादाष्ठीलैः सुदारुणैः ॥ MBh. 10,341. fg. तलेनाभ्यवधीत्कांश्चित्पद्ध्यामन्यान् R. 5,40,12.

— समभि dass.: तं समभ्यवधीत् MBh. 7,6942.

— आ *zermalmen, zerstückeln:* दृषदं जिह्वया ṚV. 8,61,4. *zerschellen:* ऊर्मिर्न नावमा वधीत् 64,9.

— अभ्या *schlagen auf:* (गङ्गा) सलिलेनैव सलिलं क्वचिदभ्यावधीत्पुनः R. Gorr. 1,45,17.

— उद् *zerreissen:* मा त्वा श्येन उद्वधीत् ṚV. 2,42,2. मा त्वा समुद्र उद्वधीन्मा सुपर्णाः VS. 13,16.

— उप *anschlagen an:* यदा स्थूलेन पससाणौ मुष्का उपावधीत् AV. 20,136,2. *erschlagen, tödten:* रक्षांस्युपावधीत् MBh. 12,2814.

— नि 1) *heften in* (loc.): दिद्युमस्मिन्नि वधिष्टं वज्रम् ṚV. 4,41,4. — 2) *niederschlagen, niederhauen, tödten:* तानि (अस्त्राणि) दण्डेन सर्वाणि न्यवधीत् R. Gorr. 1,57,13. सारथिम् MBh. 1,4121. 5472. 8,2597. Kathâs. 50,22. 96,46. Râǵa-Tar. 6,83. Bhaṭṭ. 1,2. 6,16.

— निस् *abspalten, abtrennen; zerspalten:* जायायै गर्भम् Çat. Br. 3,1,2,21. दीक्षाम्, तपः TBr. 3,1,1,3.

— परा *spalten, zerreissen:* यद्वा शिक्वः परावधीत्तक्षा हस्तेन वास्या AV. 10,6,3. य आसां कृष्णे लक्ष्मणि सर्दिगृदिं परावधीत् TS. 7,4,19,1.

— प्र *schlagen* (einen Feind): विश्वस्तास्तु प्रवध्यन्ते बलवन्तो ऽपि दुर्बलैः Spr. 1423, v. l.

— प्रति *zurückschlagen, abwehren:* तांस्तान् (भल्लान्) प्रत्यवधीद्दशभिर्दशभिः शरैः MBh. 7,1879.

— वि *zerstören:* यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य ṚV. 1,103,8. वि द्विषो वधीत् 5,44,12. त्रि यो ध्रुक्षो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः 6,17,1.

वधँ (von वध्; in VS. und in Çat. Br. öfters बध geschrieben) 1) nom. ag. *Tödter, Mörder, Ueberwinder* H. an. 2,247 (= हिंसक). ṚV. 1,175,4. 2,21,4. अमन्वतः 1,101,4. 8,51,12. VS. 1,24. TS. 1,8,7,2 (oder zu 3) *a*). तस्य न हन्तास्ति न बधः Çat. Br. 3,3,4,3. — 2) m. *tödtliche Waffe*, namentlich Indra's *Geschoss* Naigh. 2,20. ṚV. 1,25,2. 32,5. भृष्टिमत् 52,

15. वज्र 55,5. उग्र 133,6. मा प्रणाक्तस्य नो वधः 2,23,12. 28,7. वृत्राय प्र वधं जभार 30,3. शिरो दासस्य सं पिणग्वधेन 4,18,9. सहस्रभृष्टि 5,34,2. आरे गोहा नृहा वधो वः 7,56,17. 9,52,3. 10,89,9. न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुः 117,1. समरे वधानाम् AV. 5,20,5. 8,8,3. यो ऽभिदासान्मनसा यो वधेन 12,1,14. 32. Ait. Br. 2,1. 4,1. सैन्य° Çâṅkh. Gṛhj. 3,9. — 3) nom. act. P. 3,3,76. 7,3,35. Vop. 26,171. a) *das Erschlagen, Tödtung, Mord* Naigh. 2,9. AK. 2,8,2,84. H. 370. H. an. मृळा नो अभि चिद्वधात् ṚV. 10,25,3. सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य *wahrlich ich sage: es ist sein Untergang* (oder zu 2) 10,117,6. AV. 5,14,9. त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधात् 6,93,3. 17,1,28. पौरुषेय VS. 15,15. 1,17. 9,38. 30,12. Çat. Br. 1,6,4,21. 3,5,4,9. 6,2,8. मृत्यु, वध 5,4,1,1. वधाशङ्का 14,6,10,3. शरीरस्य Khând. Up. 8,10,2. °काम Gobh. 4,8,7. यज्ञे वधो ऽवधः M. 5,39. H. 830. वधायाभिपपातिनान् MBh. 1,5981. Mâlatim. 85,8. वधप्रवृत्तस्य वधानुत्पादे प्रायश्चित्तम् Verz. d. Oxf. H. 87,b,13. °प्रायश्चित्त 8,a,41. वधस्य स्थानम् H. 930. तत्रियेण वधः — ज्ञानपूर्वकृतः R. 2,64,22. यो बन्धनवधक्लेशान्प्राणिनां न चिकीर्षति M. 5,46. 49. 8,104. 11,126. 139. 141. MBh. 1,6174. 7688. 3,15735. 13,330. R. 1,1,42. 3,19. 14,34. Ragh. 2,30. 12,52. Varâh. Bṛh. S. 9,19. 11,53. 30,19. Kathâs. 18,387. Hit. 10,20. Vet. in LA. (III) 27,12. व्यधादाज्ञां ततो राजा वधाय श्रुतिद्विषाम् LA. (III) 92,8. कथं नु शस्त्रेण वधो मद्विधस्य विधीयते R. 2,63,26. नानुज्ञां मे युधिष्ठिरः प्रयच्छति वधे तुभ्यम् (= तव) MBh. 1,5919. in comp. mit dem obj.: प्राणि° MBh. 12,4295. M. 5,48. आततायि° 8,351. 10,49. 11,56. 66. 68. 88. Jâgn. 1,72. R. 1,1,47. 61. 63,29. Varâh. Bṛh. S. 3,30. 8,18. 9,21. 24,34. 87,44. रामेण रावणवधः Trik. 3,2,14. mit dem Werkzeuge: इषु° Çat. Br. 5,4,2,2. शस्त्र° Spr. 2502. Auffallend ist es, dass sogar in den Gesetzbüchern वध sowohl *die Todesstrafe* als auch (und zwar häufiger) *eine Leibesstrafe* überh. bezeichnet, so dass nur aus dem Zusammenhange zu ersehen ist, welche von beiden im einzelnen Falle gemeint ist: अङ्गुली ग्रन्थिभेदस्य छेदयेत्प्रथमे ग्रहे । द्वितीये हस्तचरणौ तृतीये वधमर्हति ॥ M. 9,277. तडागभेदकं हन्यादप्सु शुद्धवधेन वा 279. Jâgn. 2,286. ततः कुरुत मे वधम् Kathâs. 28,147. °मुक्त 150. विकृतं प्राप्नुयाद्वधम् M. 9,291. 8,130. 267. 320. fg. 323. 364. 366. 9,249. 11,100. Jâgn. 1,366. स कर्तव्यः प्रकाशं विविधैर्वधैः M. 8,193. 310. Jâgn. 2,270. Spr. 4964. 4979. वध so v. a. वधभूमि *Richtplatz* Comm. in der Einl. zu Kaurap. — b) *Schlag, Verletzung:* ज्यायाः *durch die Bogensehne* Nir. 9,15. — c) *Schlag* so v. a. *Lähmung:* सक्थ्नोर्द्वयोः Suçr. 1,256,13. — d) *Vernichtung, Untergang* (von leblosen Dingen): तमसाम् Çâk. 163, v. l. मृगाखुशलभाण्डजैः सस्यवधः Varâh. Bṛh. S. 8,4. पशुसस्य° 30,13. 35,5. देशनरेशसुभिक्ष° 30,30. सर्वशास्त्र° MBh. 13,2198. श्रियः Spr. 3654. धर्म° Hariv. 2897. — e) *Multiplication* Gaṇitâdhj. Tripraçnâdhj. 77. — Vgl. अ°, अग्रे°, आत्म° (auch Varâh. Bṛh. S. 87,45), गो° (auch Jâgn. 3,234), तपुर्वध, दण्डवध, दूरेवध, देव°, पितृ°, पुरुष° (*Gattenmord* Vet. in LA. (III) 17,2), ब्रह्म°, ब्राह्मण° (auch M. 8,381), महा°, मातृ°, मृगवधाजीव, राज°, शिशुपाल°.

वधक (wie eben) nom. ag. Uṇâdis. 2,36. P. 7,3,35. 2,3,54, Vârtt. 4, Schol. 1) *Mörder* Varâh. Bṛh. S. 16,13. Bṛh. 21,10. Kathâs. 3,39. 43. Râga-Tar. 4,104. द्विजाति° MBh. 12,1212. गुरुस्त्री° 1214. — 2) *Henker, Scharfrichter* Kathâs. 64,53. 72,196. 88,42. 124,122. — 3) Bez. *eines best. Schilfrohrs:* हत्वैनान्वधको वधैः AV. 8,8,3. Kauç. 16. Çat. Br. 5,4,5,14; hierher gehört 2. बाधक.

वधकर्माधिकारिन् m. *Henker, Scharfrichter* Râga-Tar. 2,79.

वधकाम्या f. *die Absicht zu tödten* oder *zu schlagen* M. 4,165.

वधजीविन् adj. *vom Tödten* (des Viehes) *lebend, Metzger, Jäger* u. s. w. Jâgn. 1,164.

1. वधत्र (von वध्) Uṇâdis. 3,105. n. *Geschoss, Mordwaffe:* अवाधेथाममृणतं नि शत्रूनविन्देथामपचितिं वधत्रैः ṚV. 4,28,4. 8,85,17. vielleicht ebenso auch 9,97,54.

2. वधत्र adj. nach dem Comm. *vor Tödtung schützend* (त्र): दण्डत्रतो वधत्रः स्यात्सर्वेषां मित्रमिव Pâr. Gṛhj. 2,7.

वधदण्ड *körperliche Strafe* M. 8,129.

वधना (von वध्) f. *tödtliche Waffe* ṚV. 7,83,4.

वधभूमि f. *Richtplatz* Comm. in der Einl. zu Kaurap. — Vgl. वध्यभूमि.

वधर्, वधस् (von वध्) n. *Geschoss*, namentlich Indra's Naigh. 2,9. 20. ṚV. 1,32,9. 174,8. 2,34,9. जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य 4,22,9. 5,32,3. यदिन्द्रो दानवाय वधर्यमिष्ट 7. अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमम् gen. st. dat. 10,49,3. वधर्दासस्य नीनमः 8,24,27. वधर्दासस्य दम्भय 22,8.

वधर्य् (von वधर्), partic. f. वधर्यन्ती *die Geschoss Werfende* so v. a. *Blitz* ṚV. 1,161,9. *nach dem Blitzgeschoss* Indra's *verlangend* Sâj.

वधस् s. u. वधर्.

वधस्थली f. *Richtplatz; Schlachthaus* Trik. 2,8,59.

वधस्थान n. dass. Hâr. 199; vgl. वधस्य स्थानम् H. 930 und वध्यस्थान.

वधस्न (von वधस्) Indra's *Geschoss;* nur im instr. pl.: विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः *ich richtete meine Geschosse auf jeden Feind* ṚV. 1,165,6. मर्तमनुयतं व° 5,41,13. यो देह्यो३ अनमयद्व° 7,6,5. उदुग्राभस्य नमयन्व° 9,97,15. Die erste Stelle ist u. नम् 2) zu streichen und unter 3) zu stellen und nach *biegen* beizufügen: (den Bogen, ein Geschoss) *richten auf* (gen.). Die zwei letzten Stellen gehören zu नम् caus. 2), so dass 4) ganz wegfallt.

वधस्नु (wie eben) adj. *ein Geschoss führend* ṚV. 9,52,3. SV. II,2,1,11,3 fehlerhafte v. l. zu ṚV. 9,97,15.

वधा indecl. v. l. für वधा im gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

वधाङ्गक n. *Gefängniss* Trik. 2,2,7. *poison* bei Wilson (u. व°) Druckfehler für *prison*, wie die erste Ausg. liest.

वधिक *Moschus* Ausn. 6.

वधित्र n. *der Liebesgott, Geschlechtsliebe* Uggval. zu Uṇâdis. 4,172. — Vgl. वन्धित्र.

वधिन् am Ende eines comp. *den Tod findend durch* —; s. u. जृम्भ 1).

वधु f. = वधू *Weib; Schwiegertochter* Comm. zu AK.

वधुका f. = वधू *Weib* Bhar. im Dvirûpak. nach Wilson.

वधुटी f. = वधूटी Hâr. 146.

वधू (von वध् = वह्) Uṇâdis. 1,85. f. 1) (*die Heimzuführende* und *die Heimgeführte*) *Braut, junge Ehefrau, Eheweib; Weib* überh. AK. 2,6,1,2. 3,4,18,104. Trik. 2,6,1. 3,3,223. H. 8. 503. 513. an. 2,248. Med. dh. 14. fg. Halâj. 2,327. 339. Viçva bei Uggval. वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते ṚV. 5,37,3. 47,6. 74,5. 7,69,3. अधिवस्त्रा 8,26,13. 10,27,12. 85,30. 107,9. AV. 1,14,2. 4,20,3. यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव

10,1,1. 14,2,9. 41. 8,6,14 (वधो die Hdschrr.). Âçv. Gṛhj. 1,7,8. 8,12. Gobh. 2,2,3. 5. °काले *zur Zeit, da sie Braut war*, R. 5,67,4. in Verbindung mit वर Ragh. 7,4. 17. Çâk. 122. Kathâs. 34,255. 44,106. 89,106. 103,189. 122,54. Verz. d. Oxf. H. 336,*b*,14. °गृहप्रवेश 86,*b*,11. °प्रवेश 335,*b*,17. Verz. d. B. H. No. 877. °बन्धुभिः Çâk. 92. Ragh. 1,90. Kathâs. 3,68. 18,262. 394. प्रेष्य° MBh. 3,15675. नाग° R. 2,65,24. 3,55,29. Varâh. Bṛh. S. 27,4. 43,5. Râǵa-Tar. 3,388. Hit. I,188. 39,20. नारीणामुत्तमा वधूः R. 1,1,27. 5,18. Megh. 16. 19. 48. 66. Naish. 22,47. Kir. 6,45. *Weibchen eines Thieres:* व्याघ्र° MBh. 3,15587. मृग° R. 3,51,14. Bhâg. P. 5,8,16. पिक° Kathâs. 56,197. प्लवगस्य *eines Frosches* Halâj. 3,40. am Ende eines adj. comp.: सवधूक Kathâs. 101,262. — 2) *Schwiegertochter* (AK. 2,6,1,9. 3,4,18,104. H. 514. H. an. Med. Halâj. 2,349. Viçva a. a. O.), überh. *die Frau eines jüngeren Verwandten* (z. B. *des jüngern Bruders, des Neffen*) MBh. 3,16741. 16876. 12,8408. R. 1,71,20 (73,19 Gorr.). 22. 77,10 (78,8 Gorr.). R. Gorr. 2,38,30. Ragh. 1,65. Kathâs. 90,158. der ältere Bruder nennt sein Weib गुरु des jüngeren, der jüngere sein Weib वधू des älteren MBh. 1,7726. हे वधूः (!) Bhâg. P. 7,2,20. MBh. 3,16152. — 3) अदान्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम् ṚV. 8,19,36; nach Durga *Mädchen*, von Sâj. nicht erklärt, also wohl im gewöhnlichen Sinne genommen. Es ist aber nicht wahrscheinlich, dass von geschenkten *Sclavinnen* in alter Zeit dieser Ausdruck gebraucht wäre; man kann daher vermuthen *Zugthier, zum Wagen gewohnte Stute;* vgl. वधूमन्त्. — 4) Bez. verschiedener Pflanzen: *Trigonella corniculata Lin.* AK. 2,4,4,21. Trik. 3,3,223. H. an. Med. Viçva; *Echites frutescens Roxb.* H. an. Med. *Curcuma Zerumbet Roxb.* Med. — Vgl. कुल°, गन्ध°, पुत्र°, भ्रातृ°, वार°, स्ववधू, स्वर्ग°, स्वर्गि°.

वधूजन m. *Weib* Trik. 2,6,1.

वधूटशयन m. *Fenster* Trik. 2,2,9. fälschlich वधूशयन Wilson in der 2ten Aufl.

वधूटी (von वधू) f. 1) *ein junges Weib* P. 4,1,20, Vârtt. H. 512. Halâj. 2,329. Mahâvîraḱ. 76,2 v. u. गोपवधूटीदुकूलचौराय — कृष्णाय Bhâshâp. 1. — 2) *Schwiegertochter* Trik. 2,6,3. H. 514, Sch. Hâr. 146.

वधूदर्श adj. *auf die Braut schauend:* ये पितरो वधूदर्शा इमं वहतुमागमन् AV. 14,2,73.

वधूपथ m. *Brautweg* AV. 14,1,63.

वधूमन्त् (von वधू) adj. 1) *mit Zugthieren versehen, bespannt:* उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमन्तो दश रथासो अस्थुः ṚV. 1,126,3. द्वा रथा वधूमन्ता सुदासः 7,18,22. — 2) *zum Zug tauglich:* षळश्वाँ आतिथिग्व इन्द्रोते वधूमतः (सनम्) ṚV. 8,57,17. इयाँ अग्ने रथिनो विंशतिं गा वधूमतो (वधूमन्तो Müller u. Aufrecht) मघवा मह्यं सम्राट् (ददाति) 6,27,8. उष्ट्राः AV. 20,127,2.

वधूयु (wie eben) adj. *heirathslustig, nach Weibern lüstern* ṚV. 3,52,3. 62,8. 9,69,3. 10,27,12. सोमो वधूयुरभवत् 85,9. AV. 14,2,42.

वधूसरा f. N. pr. eines Flusses, der der Sage nach aus den weinenden Augen eines *Weibes*, der Pulomâ, *sich ergossen haben soll*, MBh. 1,904. Hariv. 9508. नदीं वधूसरकृताह्वयाम् MBh. 3,8684.

वधैषिन् adj. *mordsüchtig, die Absicht habend zu tödten* MBh. 1,7670. निवातकवचानाम् 3,12071.

वधोद्यत adj. dass. AK. 3,1,44.

वधोपाय m. *die Art und Weise Jmd körperlich zu züchtigen:* (तम्) हन्याच्चित्रैर्वधोपायैरुद्वेजनकरैर्नृपः M. 9,248.

वध्र (वध्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,363 (VP. 192). richtiger वध्र ed. Bomb.

वध्य (von वध्; häufig बध्य geschrieben) adj. P. 3,1,97, Vârtt. gaṇa दण्डादि zu P. 5,1,66. Vop. 26,7. 1) *zu erschlagen, zu tödten, den Tod verdienend, dem Tode verfallen;* überh. *zu züchtigen, körperlich zu strafen* AK. 3,1,45. यस्त्वा जघान वध्यः सो अस्तु AV. 18,2,31. वध्यं हि प्रत्यञ्चं प्रतिमुञ्चति TS. 6,3,6,3. तस्मादपि वध्यं प्रपन्नं न प्रतिप्रयच्छन्ति 5,6,3. 8,5. Kâṭh. 11,5. Çat. Br. 1,2,3,2. यथाकामवध्य (*zu züchtigen* Sâj.) Ait. Br. 7,29. नैष मूर्ध्नि प्रभो वध्यो वध्य एष हि मर्मसु R. 6,92,41. यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः M. 5,22. तस्य तस्यैव ते वध्याः MBh. 4,496. 13,43. R. 2,97,24. 3,49,48. Kathâs. 27,147. LA. (III) 92,11. मानुषात् R. 1,14,22. विषेण P. 4,4,91. वध्यो दण्ड्यश्च M. 8,58. वध्यस्य मोक्षणे 9,249. 10,56. Jâǵn. 1,358. Çâk. 155. Spr. 964. 4926. Ragh. 2,30. Varâh. Bṛh. S. 51,21. Kathâs. 60,137. Râǵa-Tar. 3,38. Daçak. 79,7. Pańkat. 41,14. 70,4. Hit. 18,19. Bhaṭṭ. 6,117. मूषको ऽत्र त्रिभिर्वध्यो मार्जारेण त्रयो ऽपरे *kann getödtet werden, sein Leben ist bedroht* Kathâs. 33,109. वयं ग्राम्याः पशवो ऽरण्यचराणां वध्याः Pańkat. 215,6. m. *ein Feind, den man erschlägt*, H. 10. 221. — 2) *zu zerstören, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* सुरासुरैरवध्यं हि पुरमेतत्खगं महत् MBh. 3,12257. Spr. 179. 3617. — Vgl. अ° (auch Bhag. 2,30. सर्वभूतानाम् R. 3,31,1. Çâk. 157, v. l. अवध्यो ब्राह्मणो दण्डैः *keiner körperlichen Strafe unterliegend* R. 7,59,2. 34).

वध्यघ्न adj. *einen dem Tode Verfallenen hinrichtend, das Henkeramt verrichtend* MBh. 13,2572.

वध्यता nom. abstr. von वध्य 1): स गच्छेद्वध्यतां मम *der soll von mir getödtet* oder *körperlich gestraft werden* MBh. 3,2304. — Vgl. अ°.

वध्यत्व n. dass. H. 14.

वध्यपटह m. *eine Trommel, die bei der Abführung eines zum Tode Verurtheilten gerührt wird*, Mṛḱḱh. 84,2. 172,20.

वध्यभू f. *Richtplatz* Kathâs. 5,16. 28,146. 64,51. 77,82. 112,166.

वध्यभूमि f. dass. Kathâs. 88,33. 112,164. Hit. 63,6. — Vgl. वधभूमि.

वध्यमाला f. *ein Kranz, der einem zum Tode Verurtheilten aufgesetzt wird*, Mṛḱḱh. 176,8.

वध्यशिला f. 1) *ein Stein, auf dem hingerichtet —, geschlachtet wird; Schlachtbank, Schafott* Kathâs. 22,209. 60,87. 90,143. 148. Pańkat. 52,2. ed. orn. 42,10. — 2) Titel einer Schrift Sâh. D. 184,15.

वध्यस्थान n. *Richtplatz* Pańkat. 41,15. Vet. in LA. (III) 22,8. — Vgl. वधस्थान.

वध्या (von वध्) f. *Tödtung, Mord:* आत्म° MBh. 1,6227. द्विजप्रवर° 12,10163. ज्ञाति° 14,2618. दूत° R. 5,49,2. — Vgl. ब्रह्म°.

वध्र 1) n. *ein lederner Riemen* Varâh. Bṛh. S. 43,8. वध्री f. dass. Halâj. 2,441 (वद्ध्री). शतचर्मन् MBh. 1,1406. Vgl. वर्ध, वर्ध्री, वरत्रा. — 2) f. ई vielleicht *Speckstreifen:* वराहवध्रीः मुक्ता दधिसौवर्चलायुताः R. 5,14,43. der Comm. erklärt वराहस्य संस्थानविशेषान्; ed. Bomb. 5,11,16 liest वराहवाध्रीणसकान्दधिसौवर्चलायुतान्. — 3) n. *Blei* (बध्र) Bhar. zu AK.

nach Wilson; vgl. वर्ध्र. — 4) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 363 nach der Lesart der ed. Bomb., बध्र ed. Calc. — Vgl. अवध्र, गुच्छबध्रा.

वध्रक *Blei* H. ç. 159, wo vielleicht so zu lesen ist st. वन्धक.

वध्रस्व s. u. वध्र्यश्व.

वध्रि (von वध्) adj. (*dem die Hoden zerschlagen sind*) *verschnitten, entmannt, unmännlich* (Gegens. वृषन्): वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. वध्रयो निरष्टाः 33,6. 2,25,3. 8,46,30. 10,102,12. AV. 3,9,2. 3. 4,6,7. 8. वृषा त्वं वध्रयस्ते सपत्नाः 5,20,2. क्लीबं त्वाकरं वध्रिं त्वाकरम् 6,138,3. 16,6,11. fehlerhafte Schreibung बद्ध्र करोति Çat. Br. 13, 8, 1, 15. 2, 10. Die Synonyme क्लीब, निरष्ट, वध्रि mögen verschiedene Arten dieser Verstümmelung bezeichnen. Vgl. सप्तवध्रि; वध्री s. u. वध्र.

वध्रिका *Eunuch:* दर्शनीयः (als masc. behandelt) P. 1,2,52, Vârtt. 3, Sch.

वध्रिमती (f. von वध्रिमत् und dieses von वध्रि) adj. *einen unvermögenden Gatten habend* RV. 1,116,13. 117,24. 6,62,7. 10,39,7. 65,12.

वध्रिवाच् adj. *unmächtige Worte redend* RV. 7,18,9.

वध्र्य m. *Schuh, Pantoffel* Çabdârthak. bei Wilson (ब°).

वध्र्यश्व (*verschnittene Rosse habend*) m. N. pr. eines Mannes RV. 6, 61,1. 10,69,1. 2. 4. Âçv. Çr. 1,5,21. Maitrjup. 1,4. MBh. 2,323. Hariv. 1783 (nach der Lesart der neueren Ausg., वध्रस्व ed. Calc.). mit dem patron. Ânûpa Pańkav. Br. 13,3,17. pl. *sein Geschlecht* Çâñkh. Çr. 1, 7,3. Lâtj. 6,4,13. Schol. zu Kâtj. Çr. 107,15. 249,1. — Vgl. वाध्र्यश्व, ब्रध्र्यश्व und andere Varianten VP. 454, N. 51.

वधती = वधूटी Vjâḍi beim Schol. zu H. 512.

वधा indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वन्, वनति Dhâtup. 13,19 (शब्दे). 20 (संभक्तौ). 19,42 (क्रियासामान्ये, व्याप्तौ, हिंसायाम्). 34,33, v. l. (श्रद्धोपकरणयोः, श्रद्धोपहननयोः, उपकृतौ श्रद्धाघाते शब्दोपतापयोः). वनोति und वनुते (याचने) 30,8. Abfall des न P. 6,4,37. fgg. Vop. 9,7. Von dieser nur in der älteren Sprache lebenden Wurzel verzeichnen wir folgende Formen: वनोमि, वनुयाम, वन्वे, वनुते, वन्वानः, वन्वन्ति, वनाति, वनतम् du., वनत, वनाम्, वनेम, वनेम (RV. 2,5,7) und वनेम, वनते, वनामहे, °हैः, वनेमहि; ववान, ववन्थ, ववन्म, ववन्वंस्, वव्ने; वंसाम, वंसीमहि und वनीमहि RV. 9,72,8 aus metrischen Rücksichten; वनिषत् AV. 20,132,6. 7. वनिषीष्ट, वनिषन्त TS. 4,7,14,1 st. वनुषन्त des RV.; वन्त 3. pl., वंस्व; वावनस्, वावन्धि; वनिष्ये Çâñkh. Çr.; infin. प्रवन्तवे: वन्वताम् 3. imp. falsche Form (st. मनुताम् des RV.) AV. 6,126,1. partic. वात und वनित s. bes. 1) *gern haben, lieben; wünschen, verlangen:* कीरिश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् RV. 1,31,13. वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः 133,7. 2,6,1. ब्रह्म 3,8,2. वनिनो वन्त वार्यम् 1,139,10. विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्नो रास्व सन्म 4,11,2. वावन्धि यज्यून् 5,31,13. 65,1. अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्मः 6,23,5. जनस्य रातिम् 6,38,1. 8,13,33. माकी ब्रह्मद्विषो वनः 45,23. 10,61,4. मामित्किल त्वं वनाः AV. 1,34,4. 5,4,3. 8,2,13. 12,1, 58. इन्द्रस्य (नाम) वन्वे 6,82,1. तदग्निर्देवेभ्यो वनुतां वयमग्नेः परि Çat. Br. 1,9,1,19. Kâṭh. 23,6. Çâñkh. Çr. 1,5,9. प्रियं श्रपिधीर्वनिषीष्ट मेधिरः RV. 1,127,7. प्रजावो देवासो वनते मर्त्यो वः 5,41,17. — 2) *erlangen, verschaffen für; sich verschaffen:* अग्निर्वव्ने सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् RV. 1,36,17. तन्नो नो अश्वो वनताम् 162,22. राये वाजाय वनते मघानि 3, 19,1. 5,44,7. 65,4. वंसीमहि वामम् 6,19,10. वस्वः कुविद्वनाति नः 7, 15,4. वंस्व विश्वा वार्याणि 17,5. अर्वः 7,88,7. यथा वृष्टिं शन्तनवे वनेम 10,98,3. दक्षिणान्नं वनुते 107,7. AV. 12,3,53. Çat. Br. 3,8,2,22. — 3) *bemeistern, bezwingen; siegen, gewinnen:* वीरैर्वीरान्वनुयामा त्वोताः RV. 1,73,9. 132,1. 2,21,2. इन्द्राग्नी अग्निं वनवद्वनुष्यतः 25,1. स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान् 5,3,5. समिद्धाग्निर्वनवत् 37,2. 6,19,8. एकः कृष्टीर्वनोरार्याय 18,3. 7,21,9. ववन्मा नु ते युध्याभिरूती 37,5. 83,4. रयिं येन वनामहै *wodurch wir obenan kommen* 9,101,9. 10,38,3. अयुक्तं युनजद्ववन्वान् *der es vermag* 27,9. — 4) *verfügen über, innehaben:* एको यद्वव्ने भूरेरीशानः RV. 1,61,15. युवं श्रियमश्विना देवता वनथः 4,44,2. स देवेषु वनते वार्याणि 5,4,3. 7,2,7. सोवश्व्यं यो वनवत्स्वश्वः 6,33,1. यत्कृषते यद्वनुते यच्च वस्नेन विन्दते *was Einer erpflügt, besitzt und erhandelt* AV. 12,2,36. — 5) *bereit machen, sich anschicken zu:* स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम् RV. 2,5,7. धियम् 11,12. 8,61,1. *das Absehen haben auf, petere:* कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वं छुष्णमनन्तैः परियासि वधैः 1,121, 9. वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन *angreifend* 5,29,9.

— caus. वनयति und वा°, mit Präpp. nur व° Dhâtup. 19,68. AV. Prât. 4,93. Vop. 18,23. वा° Dhâtup. 34,33, v. l.

— intens. s. वनीवन्.

— अपि s. अपिवान्यवत्सा.

— अभि *erwünschen, erstreben:* अभीमवन्वन्स्वभिष्टिमूतयः RV. 1,51, 2. — Vgl. अभिवान्यवत्सा.

— आ 1) *begehren, wünschen, erflehen* RV. 1,127,7. 5,41,17. को वामद्य पुरूणामा वव्ने मर्त्यानाम् *durch Bitten herbeirufen* 74,7. — 2) *verschaffen:* तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् RV. 1,140,11.

— नि s. 2. निवात und निवान्यवत्सा.

— प्र *gewinnen, siegen:* चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे RV. 1,131, 5. *haben:* प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् 10,96,11.

— सम् caus. *geneigt machen, an Jmd gewöhnen:* गावो घृतस्य मातरो ऽमूं सं वानयन्तु (vgl. AV. Prât. 4,93) मे AV. 6,9,3. — Vgl. संवनन.

2. वन् = 1. वन; nur im loc. und gen. pl. *Holzgefäss, Kufe:* श्येनो न वंसु षीदति RV. 9,57,3. 86,35. गर्भो वनाम् *Sohn der Hölzer* d. i. Agni 10,46,5.

1. वन Nir. 8,3. 1) n. Siddh. K. 249, a, 8. a) *Baum, Wald* (AK. 2,4,1,1. 3, 4,18,129. Trik. 2,4,1. H. 1110. an. 2,283. Med. n. 19. Halâj. 2,55) RV. 1, 54,1. 65,8. 3,51,5. द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः 5,41,11. नि वो वना जिहते 57,3. 60,2. यथा वनं यथा समुद्र एजति 78,8. 6,6,3. 31,2. 8,40,1. उदिद्धूनोति वातो यथा वनम् 10,23,4. Kauç. 76. Pâr. Gṛhj. 2,15. wie अरण्य *das dem Menschen nicht gehörige, fremde Land:* मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः RV. 7,1,19. — वने वसेत् *im Walde* M. 6,1. 28. fg. 11,72. वनं गच्छेत् 6,3. वनेषु विहृत्य 33. चरन्तीनां मिथो वने 8,236. विजन 10,107. 11,105. कृष्टजानामोषधीनां जातानां च स्वयं वने 144. गहन MBh. 1, 5878. अन्तःपुरसमीपस्थ 3,2089. 2236. R. 1,1,24. 9,61,10. Ragh. 1, 82. 2,17. 17,66. Spr. 2716. fgg. Varâh. Bṛh. S. 2,8. 24,15. अरण्ये वने ऽपि वा M. 8,356. अरण्यानि, वनानि, उपवनानि 9,265. Kathâs. 93, 86. neben कानन R. 3,68,12. 6,2,15. Spr. 3105. आम्रवण R. 1,63,9. Spr. 3887. भुजतरु° Megh. 37. उद्यान° Vet. in LA. (III) 5,1. Nicht nur von Bäumen, sondern auch von einjährigen Pflanzen, Rohrarten und sogar Lotusblüthen wird das Wort वन gebraucht. P. 8,4,6. नल° MBh. 6,

4898. कीचकवेणूनाम् KATHÂS. 46,98. पद्म° MBH. 7,1245. RAGH. 16,16. Spr. 4173. KATHÂS. 46,169. BRAHMA-P. in LA. (III) 51,13. पङ्कज° R. GORR. 2,57,5. उत्पल° 4,44,89.91. कुमुद° RAGH. 6,86. नीरज° Spr. 1629. इन्दीवर° 2840. अरविन्द° 3655. BHÂG. P. 1,16,33. कमल° Spr. 4323. VARÂH. BṚH. S. 43,5. *Menge* überh.: लतागृहवनोपेता (नदी) R. 5,16,28. लूनबाहुवन adj. KATHÂS. 27,143. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBH. 1,1293. 3,16215. R. 1,41,14. 2,57,5. 4,2,12. Wann im comp. das न zu ण wird P. 8,4,4. fgg. Accent eines auf वन ausgehenden und mit einer Präp. anlautenden comp. 6,2,178. fg. वन als m. R. 5,50,21. — b) *Holz:* त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यो जायसे ṚV. 2,1,1. 3,9,2. जूर्यत्स्वग्निरजरो वनेषु 23,1. पुत्रो यो दग्धासि वना 5,9,4. शुष्क 6,8,10. 33,3. 60,10. परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन् 7,104,21. 8,43,3. शेषे वनेषु मात्रोः 49,15. 9,96,6. किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः 10,31,7. वना वृश्चः 28,8. — c) (*die aus Holz gemachte*) *Kufe des* Soma ṚV. 1,55,4. वने निपूतं वन उन्नयध्वम् 2,14,9. 8,35,7. 9,6,5. 7,3. सीदन्योना वनेष्वा 62,8. 78,2. 88,5. 90,2. सीदन्मृगो न महिषो वनेषु (zugleich Bed. 1) 92,6. सीदन्वनस्य जठरे 95,1. — d) *Wolke* (*die himmlische Kufe*): वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान ṚV. 5,85,2. अबुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते *hält oben den Zipfel der Wolke* 1,24,7. वीळु चिदृळ्हस्य समृतौ अवहन्नेव यत्स्थिरम् *das Feste löst sich auf wie eine Wolke* 127,3. ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनानि 171,3. Hierher und zu 3) dürfte auch ṚV. 3,6,7. 34,3. 7,7,2 zu ziehen sein. Unsicher ist der Text यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वः AV. 6,33,1; vgl. die Varr. SV. NAIGH. 1,3. ÇÂṄKH. ÇR. 18,3,2. ganz entstellt ist सरस्वत्या अधि वनाय चकृषुः PÂR. GṚHJ. 3,1 vgl. mit AV. 6,30,1. TBR. 2,4,8,7. — e) vielleicht *Kufe des Wagens:* तिष्ठं वनस्य मध्य आ ṚV. 8,34,18. — f) *Wasser* NAIGH. 1,12. AK. 1,2,3,3. 3,4,18,129. H. 1069. H. an. MED. HALÂJ. 3,26. °मुच् (इन्द्र) RAGH. 9,18. — g) *Aufenthaltsort* H. an. (गेह) und MED. (निवास, आलय). बहुमोसादन° NALOD. 3,22. — h) *Aufenthalt in der Fremde* (*im Walde?*), *Abwesenheit vom Hause* (प्रवास) H. an. — i) *Quelle* (प्रस्रवण) H. an. — k) *Cyperus rotundus* (v. l. घन und नव) VARÂH. BṚH. S. 77,29. — l) = रश्मि NAIGH. 1,4. — 2) m. a) N. pr. eines Sohnes des Uçînara BHÂG. P. 9,23,2. — b) N. eines der zehn auf Schüler Çaṁkarâkârja's zurückgeführten Bettelorden, dessen Mitglieder ihren Namen das Wort वन anfügen (vgl. रामेन्द्र°) Verz. d. Oxf. H. 277, b,15. WILSON, Sel. Works I, 202. — 3) f. आ *das Reibholz* (personificirt): वना जजान सुभगा विरूपम् (d. i. अग्निम्) ṚV. 3,1,13. — 4) f. ई *Wald* BHAR. zu AK. nach ÇKDR. चन्दन° SÂH. D. 79,14. — Vgl. असिपत्र°, उप°, चित्र°, तपो°, नड°, नृसिंह°, परशु°, पितृ°, पुष्प°, प्रमद°, प्रमदा°, प्रेत°, फलका°, फलको°, बिल्व°, बुद्ध°, भानु°, भार्ग°, मधु°, महा°, मित्र°, मैत्रेय°, वेला°, अग्रेवण, अन्तर्वण, कोटरा°, खदिर°, निर्वण, पुरगा°, प्र°, मिश्रका°, शर°, सारिका°, सिध्रका°, प्रतिवनम्, केलीवनी, श्यु°.

2. वन (von 1. वन्) n. etwa *Verlangen, Sehnsucht* in der Stelle: तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम् KENOP. 31. ÇAṀK.: तद्ब्रह्म ह किल तद्वनं नाम तस्य वनं तद्वनं तस्य प्राणिजातस्य प्रत्यगात्मभूतत्वाद्वननीयं संभजनीयम्.

3. वन indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

वनकचु m. *Arum Colocasia* WILSON.

वनकणा f. *wilder Pfeffer* RÂGAN. im ÇKDR. u. वनपिप्पली.

वनकण्डुल (!) m. = वनशूरण RÂGAN. im ÇKDR. u. dem letzten W.

वनकदली f. *wilder Pisang* RÂGAN. im ÇKDR.

वनकन्द m. Bez. zweier *Knollengewächse:* = वनशूरण und धरणीकन्द RÂGAN. im ÇKDR.

वनकपीवत् m. N. pr. eines Sohnes des Pulaha VP. 83, N. 6. Varianten घनकपीवत् und धनकपीवत्.

वनकरिन् m. *ein wilder Elephant* WILSON.

वनकाम adj. *den Wald liebend, gern im Walde weilend* Spr. 3066.

वनकार्पासी f. *die wilde Baumwollenstaude* RATNAM. 171. °कार्पासि aus metrischen Rücksichten SUÇR. 2,438,8.

वनकुक्कुट m. *ein wilder Hahn* WILSON.

वनकुञ्जर m. *ein wilder Elephant* BHÂG. P. 4,6,30.

वनकोकिलक n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑–, ⏑⏑⏑–⏑⏑, –⏑⏑– KHANDOM. 95. — Vgl. कोकिलक.

वनकोलि f. *wilder Judendorn* ÇKDR.

वनक्रक्ष adj. etwa *in der Kufe brausend:* Soma ṚV. 9,108,7. वनप्रक्ष v. l. im SV.

वनखण्ड n. *Wald* MBH. 3,13147. fg. fehlerhaft वनषण्ड R. 3,15,43. 5,15,51.

वनग MBH. 9,1334 fehlerhaft für वनप, wie die ed. Bomb. liest.

वनगज m. *ein wilder Elephant* MBH. 3,2539. 9,3229. R. 4,13,47. MEGH. 20. Spr. 3199. 3603. 4545. KATHÂS. 9,59. 12,18. BHÂG. P. 5,5,30. PAṄKAT. 80,6.

वनगव m. *Bos Gavaeus* (गवय) H. 1286.

वनगहन n. *Dickicht* PAṄKAT. 87,6. 96,5. 114,8. 228,13.

वनगुप्त m. *Späher* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

वनगुल्म m. *Waldstrauch, ein wilder Strauch* MBH. 3,2543. P. 1,3,67, Sch.

वनगो f. *Bos Gavaeus* (गवय) RÂGAN. im ÇKDR.

वनगोचर adj. (f. आ) 1) *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) M. 8,259. R. 2,30,14. 50,30. R. GORR. 2,94,1. 98,2. 3,7,17. 76,34. 4,40,32. 41,5. 35. 46,6. 48,9. 51,2. 6,17,15. BHÂG. P. 4,26,5. — 2) *im Wasser lebend* BHÂG. P. 3,18,2. 10.

वनंकरण n. *ein best. Körpertheil* ṚV. 10,163,5.

वनचन्दन n. 1) *Agallochum.* — 2) *Pinus Deodora* (देवदारु) *Roxb.* VIÇVA im ÇKDR.

वनचन्द्रिका f. *Jasminum Zambac* (मल्लिका) RÂGAN. im ÇKDR.

वनचम्पक m. *wilder* Kampaka RÂGAN. im ÇKDR.

वनचर adj. (f. ई) *im Walde umherschweifend, — wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) HALÂJ. 2,78. MBH. 4,2251. R. 1,1,42. 8,8. 9,3. 2,28,17. 32,34. 34,43. R. GORR. 1,13,30. 2,15,35. 28,26. SUÇR. 1,323,13. MEGH. 19. Spr. 2746. VARÂH. BṚH. S. 15,3. 46,66. KATHÂS. 104,211. KIR. 6,29. PAṄKAT. 255,17. BHÂG. P. 10,35,8. fem. 47,60. PAṄKAR. 2,5,34. — Vgl. वनेचर.

वनचर्या f. *das Umherschweifen —, der Aufenthalt im Walde* R. GORR. 2,28,31. 29,15. fg.

वनचारिन् = वनचर M. 8, 260. MBH. 1, 5994. R. 1, 16, 9. 2, 21, 31. 29, 3. 3, 14, 6. 30, 6. 4, 2, 4. 5. 9, 65. SUÇR. 1, 136, 3. MÂRK. P. 20, 44. तद्वनचारिन् R. GORR. 1, 29, 6. कविता° R. Einl.

वनच्छाग m. *die wilde Ziege* TRIK. 2, 5, 10. HÂR. 81. *Eber* ÇABDAM. im ÇKDR.

वनच्छिद् adj. *der sich mit dem Fällen der Bäume im Walde abgiebt* HARIV. 3814. BHATT. 9, 98.

वनज 1) adj. *im Walde geboren, Wäldner* R. 2, 54, 7. — 2) m. *a) Elephant* H. an. 3, 149. VIÇVA im ÇKDR. — *b) Cyperus rotundus Lin.* H. an. MED. g. 28. = गुल्म TRIK. 3, 3, 87. = वनपूरण RÂGAN. im ÇKDR. = तुम्बुरु AUSH. 24. *der wilde Citronenbaum* RÂGAN. im ÇKDR. u. वनबीजपूरक. — 3) f. आ *Phaseolus trilobus* H. an. MED. *die wilde Baumwollenstaude*; = वन्योपादकी, अश्वगन्धा, गन्धपत्त्रा, मिश्रेया und *wilder Ingwer* RÂGAN. im ÇKDR. — 4) n. *eine blaue Lotusblüthe (im Wasser entstanden)* H. an. MED. वनजात RAGH. 5, 73. वनजाती HARIV. 5145.

वनजीर m. *wilder Kümmel* RÂGAN. im ÇKDR.

वनतिक्त 1) m. *Terminalia Chebula Roxb.* ÇABDAM. im ÇKDR. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = श्वेतबुह्ना RATNAM. 51. = ग्रीष्मा HÂR. 95. — VÂGBH. 6, 78.

वनतिक्तिका f. *Clypea hernandifolia W. et A.* AK. 2, 4, 2, 3.

वनद् (von 1. वन्) m. etwa *Verlangen, Sehnsucht*; pl.: आ यन्मे अभ्वं वनदः पनन्त RV. 2, 4, 5. nach DURGA so v. a. वननीयस्य हविषो दातारः, nach SÂJ. वनजः संभक्तारः oder für अवनदस् von नद्.

वनद m. *Wolke (Wasser spendend)* HÂR. 18. ÇABDAM. im ÇKDR.

वनदमन m. = अरण्यदमन RÂGAN. im ÇKDR.

वनदारक m. pl. N. pr. eines Volkes MÂRK. P. 57, 48.

वनदाह m. *Waldbrand*: वनदाहाग्नि R. 2, 85, 17.

वनदीप m. = वनचम्पक RÂGAN. im ÇKDR.

वनदीपभट्ट m. N. pr. eines Scholiasten COLEBR. Misc. Ess. II, 57.

वनदेवता f. *eine Waldgöttin, Dryade* R. 1, 33, 15 (34, 13 GORR.). RAGH. 2, 12. 9, 52. KUMÂRAS. 3, 52. 6, 39. ÇÂK. 80. KATHÂS. 26, 175. 101, 237. PANKAT. 97, 22. HIT. 91, 20.

वनद्रुम m. *Waldbaum, ein im Walde stehender Baum* Spr. 2852, v. l.

वनद्विप m. *ein wilder Elephant* RAGH. 2, 38. KATHÂS. 11, 4.

वनधारा f. *Baumgang, Allee* VIKR. 60, 14.

वनधिति f. etwa *Holzschicht* (auf dem Feueraltar): स्विध्मा यद्वनधितिरपस्यात्सूरो अध्वरे परि रोधना गोः RV. 1, 121, 7.

वनधेनु f. *die Kuh des Bos Gavaeus* (गवय) RÂGAN. im ÇKDR.

वनन (von 1. वन्) 1) n. *Verlangen* NIR. 5, 5. — 2) f. वननी etwa *Wunsch*: उन्मध्व ऊर्मिर्वननी अतिष्ठिपत् RV. 9, 86, 40.

वननित्य m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva HARIV. 1660. धनेयु die neuere Ausg. und LANGLOIS.

वननीय (von 1. वन्) adj. *begehrenswerth* NIR. 3, 10. 4, 26. 6, 22. 11, 46. ÇANK. zu KENOP. 31.

वनन्व्, वनन्वति *im Besitz —, vorhanden sein, suppetere*: नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति (= काष्ठानि छिनत्ति SÂJ.) RV. 8, 91, 19. पार्थः नुमेकं स्वधितिर्वनन्वति 10, 92, 15.

वनन्वत् adj. (nach dem Comm. so v. a. वननवत् und erklärt durch संभजनवत् oder संभक्तवत्) 1) etwa *innehabend, besitzend*: या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति Ushas RV. 7, 81, 3. इन्द्रं वनन्वती मतिः so v. a. *die Andacht hält* Indra *fest* 8, 6, 34. — 2) *im Besitz befindlich, zu eigen gehörig*: आ यद्श्यान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम् RV. 8, 1, 31.

वनप m. *Waldhüter* VS. 30, 19. MBH. 9, 1334 nach der Lesart der ed. Bomb. (वनग ed. Calc.).

वनपन्नग m. *eine im Walde lebende Schlange* MBH. 3, 2409.

वनपर्वन् n. *Buch des Waldes*, Titel des 3ten Buches des Mahâbhârata, das über den Aufenthalt Judhishthira's und seiner Brüder im *Walde* handelt.

वनपल्लव m. *Hyperanthera Moringa Vahl.* GATÂDH. im ÇKDR.

वनपांसुल m. *Jäger* ÇABDAR. im ÇKDR. °पांशुल gedr.

वनपार्श्व m. *Waldgegend, Wald* R. 2, 91, 64. — Vgl. वनान्त.

वनपाल m. 1) *Waldhüter* R. 5, 39, 3. 62, 7. 63, 12. 15. वनपालाधिप 61, 7. 62, 10. — 2) N. pr. eines Sohnes des Devapâla ÇATR. 2, 657. des Dharmapâla WASSILJEW 54.

वनपिप्पली f. *wilder Pfeffer* RÂGAN. im ÇKDR.

वनपुष्प 1) n. *Waldblume, Feldblume.* — 2) f. आ *Anethum Sowa Roxb.* RÂGAN. im ÇKDR.

वनपुष्पमय adj. *aus Waldblumen gemacht, — bestehend*: आभरण KATHÂS. 101, 232.

वनपूरक m. *der wilde Citronenbaum* RÂGAN. im ÇKDR.

वनपूर्व m. N. pr. eines Dorfes RÂGA-TAR. 8, 1440.

वनप्रस्त v. l. des SV. I, 6, 2, 4, 3 für वनक्रत des RV.; = वने लीयते nach dem Comm.

वनप्रवेश m. *das Betreten des Waldes*, insbes. *der feierliche Gang in den Wald um Holz für ein Götterbild zu schneiden* VARÂH. BRH. S. 107, 7. — Vgl. वनसंप्रवेश.

वनप्रस्थ 1) *ein hoch gelegener Wald* MBH. 13, 7244. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit RÂGA-TAR. 8, 1931. — Vgl. वानप्रस्थ.

वनप्रिय 1) adj. *den Wald liebend.* — 2) m. *der indische Kuckuck* AK. 2, 5, 19. H. 1321. — 3) n. *Zimmetbaum* RÂGAN. im ÇKDR.

वनफल n. *Waldfrucht* R. 1, 4, 18.

वनबर्बर m. *Ocimum sanctum Lin.* RÂGAN. im ÇKDR.

वनबर्बरिका f. *eine best. Pflanze*, = दोषाक्लेशी u. s. w. RÂGAN. im ÇKDR. °बर्बरका (!) *eine Art Basilicum* (कुठेर) AUSH. 18.

वनबर्हिण m. *ein wilder Pfau*; davon °त्व n. nom. abstr. RAGH. 16, 14.

वनबाह्लक m. pl. N. pr. eines Volkes MÂRK. P. 58, 50. °वाह्लक gedr.

वनबिडाल m. *eine Art wilder Katze, Felis Caracal* WILSON.

वनबीज, °क und °पूरक m. *der wilde Citronenbaum* RÂGAN. im ÇKDR.

वनभद्रिका f. *Sida cordifolia* RÂGAN. im ÇKDR.

वनभुज m. *ein best. Heilkraut*, = ऋषभ ÇABDAK. im ÇKDR.

वनभू f. *Waldgegend*, pl. Spr. 311. Git. 1, 1. RÂGA-TAR. 2, 121. PRAB. 92, 16.

वनमक्षिका f. *Bremse* AK. 2, 5, 27. H. 1213.

वनमल्ली f. *wilder Jasmin* ÇABDAR. im ÇKDR.

वनमाल adj. *mit einem Kranze von Waldblumen geschmückt*, Beiw. Krshna's oder Vishnu's HARIV. 10678. — Vgl. वनमालिन्.

वनमाला f. 1) *ein Kranz aus Waldblumen (Feldblumen)*, insbes. der

von Kṛshṇa getragene, Çabdam. im ÇKDr. R. 2,96,31. 5,4,2. Ragh. 9,51. Varâh. Bṛh. S. 43,25. Kathâs. 39,107. 112. Çatr. 2,475. Verz. d. Oxf. H. 138, b,13. Bhâg. P. 1,11,28. 2,2,10. 3,8,31. 15,40. 28,15. 4,30,7. 5,3,3. 25,7. 6,4,37. 8,18,3. 20,32. Weber, Kṛshṇaǵ. 294. Pańkar. 1,3,78. 4,4. 2,2,85. 4,6,2. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑⏑ ––⏑–, ⏑––⏑––⏑– (auch ohne Cäsur nach der 10ten Silbe) Colebr. Misc. Ess. II,162 (XIII,2). Ind. St. 8,422. — 3) Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 185,b,40.

वनमालाधर 1) adj. *einen Kranz von Waldblumen tragend.* — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑ ––⏑⏑⏑⏑ ––⏑ ––⏑– Colebr. Misc. Ess. II,162 (XII,11). — Vgl. मालाधर.

वनमालिका f. 1) = वनमाला 1) Bhâg. P. 3,15,28. — 2) N. einer Pflanze, = वाराहीकन्द Ausn. 16. — 3) *ein best. Metrum*, = नवमालिनी Ind. St. 8,383. — 4) N. pr. eines Wesens im Gefolge der Râdhâ Pańkar. 2,4,44. — 5) N. pr. eines Flusses Hariv. 9514.

वनमालिन् 1) adj. *mit einem Kranze von Waldblumen geschmückt*, insbes. als Beiw. und Bein. Kṛshṇa's (Vishṇu's) AK. 1,1,1,16. H. 217. Med. n. 242. fg. Halâj. 1,24. MBh. 1,7950. 4,2356. 7,412. 9,2845. Hariv. 10386. Gît. 7,31. Khandom. 115. Bhâg. P. 4,7,21. 8,47. 8,6,6. 10,35,24. 11,27,39. Pańkar. 3,11,19. 4,1,25. 3,36. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13. — 3) f. °मालिनी a) = वाराही Med. wohl *eine best. Pflanze;* nach Wilson *a female energy of* Kṛshṇa. — b) ein N. der Stadt Dvârakâ Trik. 2,1,14.

वनमालीशा (वनमालिन् + ईश) adj. f. *den mit Waldblumen Geschmückten* (Kṛshṇa) *zum Herrn* (*Gemahl*) *habend*, Bein. der Râdhâ Pańkar. 2,5,32.

वनमुच् 1) adj. *Wasser spendend* Ragh. 9,18. — 2) m. *Wolke* Çabdar. im ÇKDr.

वनमुद्ग m. *Phaseolus trilobus* AK. 2,9,17. H. 1173. Suçr. 1,197,13. f. ग्रा dass. Râǵan. im ÇKDr.

वनमूत m. *Wolke*, nach ÇKDr. ein von Bhar. zur Erklärung von जीमूत erfundenes Wort.

वनमूर्धजा f. *eine best. Pflanze*, = कर्कटशृङ्गी Râǵan. im ÇKDr.

वनमूलफल n. sg. *Wurzeln und Früchte des Waldes* Varâh. Bṛh. S. 42,3.

वनमृग m. *eine im Walde lebende Gazelle* R. 3,49,45.

वनमोचा f. *wilder Pisang* Râǵan. im ÇKDr.

वनयितर् (vom caus. von 1. वन्) nom. ag.; superl. °तृतम zur Erkl. von वनीयंस् Nir. 12,5. Comm. zu Bhâg. P. 1,19,36.

वनर m. = वानर Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr.

वनराज m. *der König des Waldes* d. i. *der Löwe* H. ç. 183. Çabdam. im ÇKDr.

वनराजि und °राजी f. 1) *Baumreihe, ein sich lang hinstreckender Wald* Halâj. 2,56. पिप्पलानाम्, लोध्राणाम् MBh. 2,805. 3,11589. fg. 15572. ग्रास्तां ते स्तिमिते सेने रत्त्यमाणे परस्परम् । संप्रसुप्ते यथा नक्तं वनराज्यौ सुपुष्पिते ॥ 7,487. 13,1993. Hariv. 3841. R. Gorr. 2,102,2. 3,22,22. 52,23. 55,45. 79,25. 4,13,9. 5,8,21. Kâm. Nitis. 14,35. Ragh. 1,38. 3,3. 9,44. 13,15. Çiç. 12,29. Spr. 2828. Râǵa-Tar. 4,150. Bhâg. P. 3,21,40. — 2) °राजी (so im Index) N. pr. einer Sclavin Vasudeva's VP. 439, N. 2.

वनराज्य n. N. pr. eines *Reiches* Varâh. Bṛh. S. 14,30.

वनराष्ट्र m. pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,29. °क Mârk. P. 58,49.

वनरुह् n. *Lotusblüthe* (*im Wasser wachsend*) Bhâg. P. 5,3,3. 17,13. 10,31,12.

वनर्गु (वनम् = 1. वन + 4. गु) adj. *im Holze —, im Walde —* oder *in der Wildniss sich umtreibend;* = वनगामिन् Nir. 3,14. मृगो ग्रप्यो वनर्गुः von Agni, *der im Wasser und im Holze wohnt*, ṚV. 1,145,5. तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू 10,4,6. न स्तेनैर्न वनर्गुभिः AV. 4,36,7. daher = स्तेन Naigh. 3,24. तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः *Weise und Wilde* SV. Naigh. 4,9.

वनर्त्त m. *eine best. Pflanze*, = शृङ्गी Ausn. 24.

वनर्द्धि (1. वन + ऋद्धि) f. *ein Schmuck des Waldes* Bhâg. P. 4,6,19.

वनर्षद् (वनस् = 1. वन + सद्) adj. VS. Prât. 3,48. *auf Bäumen —, im Holze sitzend, — nistend:* वयः ṚV. 2,31,1. वनर्षदो वायवो न सोमाः 10,46,7.

वनलक्ष्मी f. 1) *ein Schmuck des Waldes.* — 2) *Pisang, Musa sapientum* Râǵan. im ÇKDr.

वनलता f. *eine im Walde lebende Schlingpflanze* Bhâg. P. 10,35,9.

वनलेखा f. = वनराजि. नवनग° Çiç. 4,65.

वनवल्लरी f. *eine best. Grasart*, = निःश्रेणिका Râǵan. im ÇKDr.

वनवह्नि m. *Waldbrand* H. 1101. Halâj. 1,70. Kathâs. 56,344.

वनवात m. *Waldwind* Çâk. 3.

1. वनवास m. 1) *das Wohnen —, der Aufenthalt im Walde* R. 1,17,18. 2,21,4. 47. 49. 22,29. 52,57. R. Gorr. 2,15,34. 29,2. 4,4,5. Kâm. Nitis. 2,27. Çâk. 69,2, v. l. Spr. 5229. Mârk. P. 109,34. — 2) N. pr. eines Landes Verz. d. Oxf. H. 339,a,37. fg. 340,a,15.

2. वनवास adj. *im Walde seinen Wohnort habend;* m. *Waldbewohner:* तरुभिर्वनवासबन्धुभिः Çâk. 85.

वनवासक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,366. °वासिक ed. Bomb. वानवासक VP. 192. in der 2ten Aufl. (II,178) वनवासक; als Varianten werden in beiden Ausgg. वानवासिक und वानवासिन् aufgeführt. — Vgl. वनवासिन्, वनवास्य, वानवासक.

वनवासन m. *Zibethkatze* Trik. 2,5,10.

वनवासिन् 1) adj. *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner* M. 6,27. R. 1,61,1 (63,1 Gorr.). 2,25,23. 52,48. 90,12. Kâm. Nitis. 2,28. Kathâs. 61,17. Hit. 49,12. — 2) m. a) N. pr. eines Landes im Süden Hariv. 5232. Varâh. Bṛh. S. 9,15. 14,12. 16,6; vgl. वनवासक, वनवास्य. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: = ऋषभ, मुष्कक, वाराहीकन्द, शाल्मलीकन्द und नीलमक्षिकन्द Râǵan. im ÇKDr.

वनवास्य = वनवासिन् 2) a): वनवास्यजनाधिपः Hariv. 5333 nach der Lesart der neueren Ausg., वनस्यास्य ज° die ältere Ausg.—Vgl. वानवास्य.

वनविरोधिन् m. N. *des zwölften Monats* Ind. St. 10,298.

वनवृन्ताकी f. *die Eierpflanze* (बृहती) Râǵan. im ÇKDr.

वनव्रीहि m. *wilder Reis* H. 1176.

वनशूकरी f. *Mucuna pruritus Hook* (कपिकच्छु) Râǵan. im ÇKDr.

वनशूरण m. *ein best. Knollengewächs* Râǵan. im ÇKDr.

वनशृङ्गाट m. *Asteracantha longifolia Nees* AK. 2,4,2,17. °क m. Râǵan. im ÇKDr.

वनशोभन (वन *Wasser* + शो°) n. *eine Lotusblüthe* Çabdak. im ÇKDr.

वनश्वन् m. 1) *Schakal* Trik. 2,5,7. 3,3,263. H. an. 3,412. Med. n. 205. — 2) *Tiger* Trik. 3,3,263. H. an. Med. — 3) *Zibethkatze* H. an. Med.

वनषण्ड s. u. वनखण्ड.

वनषद् adj. = वनसद्, Rudra Pâr. Gṛhj. 3,15.

वंनस् (von 1. वन्) n. etwa *Verlangen, Anhänglichkeit* oder *Lieblichkeit:* आ यांहि वनंसा सह गावंः सचन्त वर्तनिं यदूधंभिः ṚV. 10,172,1. nach Sâj. = तेजस् oder धन. — Vgl. यज्ञ°, गिर्वणस्.

वनसं adj. von वन gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80.

वनसंकट m. *Linse* (मसूर) Çabdak. im ÇKDr.

वनसंद् adj. *im Holze sitzend* VS. 17,12.

वनसमूह m. *ein dichter Wald* AK. 2,4,1,4.

वनसंप्रवेश m. *das Betreten des Waldes*, insbes. *der feierliche Gang in den Wald um Holz für ein Götterbild zu schneiden* Varâh. Bṛh. S. 59, 1. 14 und in der Unterschr. des Kapitels. — Vgl. वनप्रवेश.

वनसरोजिनी f. *die wilde Baumwollenstaude* Çabdar. im ÇKDr.

वनसाह्वया f. *eine best. Schlingpflanze*, = वन्योपोदकी Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten W.

वनस्तम्ब m. N. pr. eines Sohnes des Gada Hariv. 9194. fg.

वनस्थ 1) adj. *im Walde sich aufhaltend*, m. *ein Waldbewohner* M. 5, 137 (= वानप्रस्थ). Spr. 4621. R. 2,38,17. 82,29. 3,48,18. Kâm. Nîtis. 2,38. Pańkat. III,145. गज *ein wilder Elephant* Hariv. 8801. — 2) m. *Gazelle* Çabdak. im ÇKDr. — 3) f. आ *eine best. Pflanze*, = अश्वत्थी Râǵan. im ÇKDr.

वनस्थली f. *Waldgegend, Wald* Hariv. 3708. Ragh. 9,40. 15,8. Kumâras. 3,29. 31. Vikr. 79. Spr. 4387.

वनस्थान (?) N. pr. eines Reiches Wassiljew 59.

वंनस्पंति (वन + पति; vgl. रथस्पति) m. VS. Prât. 2,47. 3,49. 140. 5,37. P. 6,2,140. 1) *Baum (der Fürst des Waldes)* (Trik. 3,3,182. H. an. 4,125. Med. t. 218. Halâj. 2,22); *Stamm, Balken, Holz* ṚV. 1,28, 6. du. *Keule und Mörser* 8. 39,5. 90,8. 157,5. विश्वो वो अज्मन्भयते वनस्पतिः 166,5. 3,34,10. पावको यद्वनस्पतीन्प्र स्मा मिनाति 5,7,4. व°, ओषधि 41,8. व°, ओषधि, वीरुध् AV. 11,6,1. 9,24. वनस्पतिं वन आ स्थापयध्वम् ṚV. 10,101,11. Vâlakh. 6,4. AV. 1,12,3. 3,5,3. उच्छ्रयस्व वनस्पते wird ein *Pfahl* angeredet VS. 4,10. 13,7. Ait. Br. 2,1. 7,31. TS. 6,2,8,4. यस्त्वा शाले निमिमाय संजभार वनस्पतीन् AV. 9,3,11. यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान्प्साता वनस्पतीन् 10,3,14. Çat. Br. 14,6,9,30. 4,6, 9,16. 6,6,3,3. 12,1,4,2. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं वर्धते 13,2,7,4. 7,1,9. Agni heisst *Sohn der Bäume* ṚV. 8,23,25. AV. 5,25,7. *Herr der Bäume* 24,2. — M. 3,88. 4,39. 8,285. Jâǵń. 1,133. MBh. 1,1771. 5884. 4,469. Spr. 2714. R. 1,52,5. 2,55,24. R. Gorr. 2,53,6. 3,56,8. 5,21,4. Ragh. 12,21. Çâk. 50,8. Varâh. Bṛh. S. 29,1. 55,18. 79,39. Uttarar. 11,8 (15,11). Bhâg. P. 1,10,5. 4,18,25. फलं पुण्यवनस्पतेः *des Baumes «Verdienst»* Mârk. P. 24,21. In der Eintheilung der Pflanzen in व°, वृक्ष, वीरुध्, ओषधि u. s. w. *ein Baum, welcher Früchte trägt ohne in die Augen fallende Blüthen, ein grosser Waldbaum* (z. B. die Feigenbäume): अपुष्पा फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः। पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः॥ M. 1,47. Suçr. 1,4,17. वनस्पत्योषधिलतात्वक्साराः वीरुधो द्रुमाः Bhâg. P. 3,10,18. AK. 2,4,1,6. Trik. 2,4,3. H. 1116. H. an. Med. Halâj. 2,24. — 2) *die* Soma-*Pflanze, der König der Pflanzen* ṚV. 1,91,6. VS. 10,23. 14,31. Çat. Br. 3,8,3,33. Âçv. Gṛhj. 1,2,2. Bhâg. P. 8,18,15. — 3) *Bignonia suaveolens* Râǵan. im ÇKDr. — 4) *der Opferpfosten* (unter den Âprî-Gottheiten) Nir. 8,16. ṚV. 1, 142, 11. 188,10. 2,3,10. 10,110,10. VS. 21,46. Ait. Br. 2,4.10. Çat. Br. 3,8,3,33. TS. 6,3,11,4. Çâṅkh. Br. 10,6. 19,6. Kâtj. Çr. 6,8,18. 8,9,6. Bhâg. P. 2,6,23. Daher auch defectiver Ausdruck für *Opfer an den* Vanaspati Çat. Br. 6,2,2,37. Kâtj. Çr. 8,8,30. 19,4,3. 7. Çâṅkh. Çr. 15,1,27; vgl. auch Haug zu Ait. Br. II,95. — 5) *Theile des hölzernen Wagens* Nir. 9,11. ṚV. 2,37,3. 3,53,20. 6,47,26. — 6) *hölzerne Trommeln* VS. 9,12; vgl. AV. 12,3,15. Kauç. 61. — 7) *ein hölzernes Amulet:* देवो व° AV. 6,85,1. 10,3,8. 11; in 4,3,11 scheinen die Worte किंरिंदेवो वनस्पतिः unpassend eingeschoben zu sein. — 8) *ein Block, in welchen ein Gefangener gezwängt wird*, ṚV. 5,78,5; vgl. वृक्ष 6. — 9) N. pr. eines Sohnes des Ghṛtapṛshṭha Bhâg. P. 5,20,21.

वनस्पतिकाय m. *die Pflanzenwelt* H. 1201.

वनस्पतिसव m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,73,3.

वनस्या s. सञ्जात°; वनस्यु s. गिर्वणस्यु.

वनस्रज् f. *ein Kranz aus Waldblumen* Bhâg. P. 3,8,24. — Vgl. वनमाला.

वनहबन्दि N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,14.

वनहरि m. wohl *Löwe* Râǵa-Tar. 2,168.

वनहरिद्रा f. *wilde Gelbwurz* Râǵan. im ÇKDr.

वनहास m. *Saccharum spontaneum* Trik. 2,4,39. *wohlriechender Oleander* (कुन्द) Râǵan. im ÇKDr.

वनहासक m. *Saccharum spontaneum* Çabdar. im ÇKDr.

वनहुताशन m. *Waldbrand* Verz. d. Oxf. H. 184,*a*,31.

वनाखु (1. वन + आखु) m. *Hase* Trik. 2,5,9. Hâr. 184.

वनाखुक m. *Phaseolus Mungo* (मुद्ग) *Lin.* Trik. 2,9,2.

वनाग्नि m. *Waldbrand* R. 5,52,10.

वनाज (1. वन + अज) m. *die wilde Ziege* H. 1278.

वनाटन (वन + अ°) n. *das Umherstreifen im Walde*, pl. Râǵa-Tar. 6,158.

वनाटु m. *eine blaue Fliegenart* Çabdak. im ÇKDr.

1. वनान्त (1. वन + अन्त) m. *Waldgegend, Wald:* पर्वतैश्च वनान्तैश्च काननैश्चैव शोभिताम् (भूमिम्) MBh. 3,11845. 9,1334. R. 2,30,14 (वनान्तः ed. Bomb. st. वनान्ते). 54,39 (40 Gorr.). 4,37,9. 5,28,1. Ragh. 2,19. 58. 14,51. Kumâras. 5,56. Ṛt. 1,22. 26. 2,19. 24. Spr. 1966. विज्ञना वनान्ताः 2006. सन्तो वनान्तं गताः 2589. 2832. दृग्धं वनान्तं मृगाः (त्यजन्ति) 2883. °वासिन् (व्याध) 4131. Varâh. Bṛh. S. 69,26. °स्थ (नगर) Kathâs. 43,3. 103,241. 106,89. 113,59. 67. 75. Râǵa-Tar. 2,138. Bhaṭṭ. 9,106. °स्थली Spr. 2590. °भू Kir. 6,17 (Mallin.: अन्तशब्द स्वरूपवचनः, nach Utpala zu Varâh. Bṛh. S. ist अन्त hier = समीप). — Vgl. वनपार्श्व.

2. वनान्त adj. *durch einen Wald begrenzt* Hariv. 3812.

वनान्तर n. *das Innere eines Waldes:* °रे *im Walde* R. 2,92,22 (101, 24 Gorr.). 4,24,29. Mârk. P. 109,21. °रात् *aus dem Walde* Ragh. 1,49. प्रविवेश °रम् *in einen Wald* Kathâs. 42,7. प्राप °रम् 56,309. °चर *im*

Walde umherstreifend Varâh. Brh. 18,7.

वनापग *Fluss:* मक्टार्णवं समासाद्य वनापगशतं यथा R. 7,19,16. वनं ब्रलं तत्पूर्णानदीशतम् श्रार्षो क्रस्वः (श्रापग st. श्रापगा).

वनाब्जिनी (1. वन + श्र°) f. *eine im Wasser lebende Lotuspflanze* Kathâs. 21,14.

वनामल m. *Carissa Carandas Lin.* (कृष्णपाकफल) Çabdam. im ÇKDr.

वनाम्बिका f. N. pr. der Schutzgottheit im Geschlecht Daksha's Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,5.

वनाम्र (1. वन + श्राम्र) m. *eine best. Pflanze*, = कोशाम्र Râgan. im ÇKDr.

वनायु m. 1) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,363 nach der Lesart der ed. Bomb. (वातायन ed. Calc.). sg. N. pr. des von ihm bewohnten Gebietes Çabdar. im ÇKDr. °जा: (ह्याः) *Pferde aus* Vanâju H. 1235. Halâj. 2,284. MBh. 8,200. R. 1,6,21. °देश्या: Ragh. 5,73. — 2) N. pr. eines Sohnes des Purûravas MBh. 1,3149. Hariv. 1373. VP. 398, N. 1. — 3) N. pr. eines Dânava MBh. 1,2538. — Vgl. वानायु.

वनारिष्टा f. *wilde Gelbwurz* (वनहरिद्रा) Râgan. im ÇKDr.

वनार्चक m. *Kranzwinder* (*Verehrer des Waldes*) Gatâdh. im ÇKDr.

वनार्द्रका f. *wilder Ingwer* Râgan. im ÇKDr. वनार्द्रक n. *die Knolle;* s. u. मक्टार्द्रक.

वनालक्त n. *Röthel, rubrica* (*wilder Lack*) Trik. 2,3,6.

वनालय m. *der Wald als Behausung:* °जीविन् *in Wäldern hausend* Hariv. 3815.

वनालिका f. *Heliotropium indicum* Hâr. 95.

वनाली (1. वन + श्रा°) f. = वनराजि Khandom. 65.

वनाश्रम m. *das dritte Lebensstadium eines Brahmanen, der Aufenthalt im Walde* Hariv. 2538 nach der Lesart der neueren Ausg. (वन्याश्रम ed. Calc.).

वनाश्रमिन् m. = वानप्रस्थ *Anachoret, ein Brahmane im dritten Lebensstudium* Bhâg. P. 11,18,7.

वनाश्रय 1) adj. *im Walde lebend*, m. *Waldbewohner* R. Gorr. 2,28,22. Mârk. P. 109,31. 37. 43. 115,11. — 2) m. *Rabe* H. 1323. Halâj. 2,91.

वनाह्विर m. *Eber* Trik. 2,5,5.

वनिँ (von 1. वन्) Unâdis. 4,139. 1) f. *das Heischen, Verlangen, Wunsch* AV. 5,7,2. 3. मा वनिं मा वाचं नो वीर्त्सीः 6. य ईनां वनिमायन्ति *welche um sie bittend kommen* 12,4,11. — 2) nom. ag. am Ende eines comp. P. 3,2,27. — 3) m. *Feuer* Uggval. — Vgl. श्रादित्य°, उपमाति°, ऋतु°, तन्त्र°, धान्य°, धारा°, ब्रह्म°, रायस्पोष°, वसु°, वृष्टि°, विश्व°, शत°, सुप्रजा°.

वनिका (von 1. वन) f. *Wäldchen;* nur in der Verbindung श्रशोक° MBh. 1,3398. 3,16168. R. 1,1,71. R. Gorr. 1,4,91. 3,62,32. 6,7,9. 22,19. 23,40. Bhâg. P. 9,10,30. °वनिक n. R. 6,112,53.

वनिकावास m. N. pr. eines Dorfes Râga-Tar. 8,1879.

वनित (von 1. वन्) 1) adj. *geliebt, erwünscht, verlangt;* = प्रार्थित (याचित) und सेवित H. an. 3,292. Med. t. 150. — 2) f. श्रा *a) Geliebte, Gattin; Mädchen, Frauenzimmer* AK. 2,6,1,2. 3,4,14,76. H. 503. H. an. Med. Halâj. 2,327. MBh. 7,2226. 12,13217. Hariv. 4094. R. 2,94, 24. 26 (103,25 Gorr.). R. Gorr. 2,104,15. 4,35,32. Mrkkh. 44,11. Megh. 8. 33. 65. Ragh. 2,19. 9,37. 11,17. 14,51. Kumâras. 1,10. Rt. 3,15. 4, 13. Vikr. 44. 84. Mâlav. 35. Çiç. 9,34. Spr. 142. 1610. 2087. 2671. 3320, v. l. 5327. Varâh. Brh. S. 24,32. 46,13. 50,9. 54,98. 68,12. 87,26. वनिताहृत Brh. 18,4. Kathâs. 26,272. 37,235. Râga-Tar. 1,375. Bhâg. P. 4,29,54. 5,1,38. 2,2. Mârk. P. 17,23. 51,115. Dhûrtas. 76,6. Verz. d. Oxf. H. 218,*b*,19. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 22. वनितामु द्वेष्टा *Weiberfeind* MBh. 5,1639. °द्विष् dass. 1719. Varâh. Brh. 18,1. *Weibchen* (eines Thiers): रथाङ्गनाम° Kir. 6,8. — *b) ein best. Metrum: 4 Mal* ◡◡–◡◡– Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 5). — Vgl. त्रिदशवनिता, नाक° (Kir. 5,27).

वँनितर् (wie eben) nom. ag. *Inhaber, Besitzer:* (श्रग्निः) दाता यो वनिता मघम् Rv. 3,13,3. — Vgl. वन्तर्.

वनितामुख m. pl. N. pr. eines Volkes (*Frauengesichter habend*) Mârk. P. 58,30.

वनितास n. N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254.

1. वनिँन् (von 1. वन्) adj. 1) *heischend, verlangend:* वनिनो वन्त वार्यम् Rv. 1,139,10. इन्द्रं समीके वनिनो हवामहे 8,3,5. — 2) *mittheilend, spendend:* die Marut Rv. 1,64,12. der Wagen der Açvin 119,1. Fraglich bleibt 1,180,3.

2. वँनिन् (von 1. वन) 1) m. *Baum* Rv. 1,39,3. 58,4. 94,10. तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि 130,4. 140,2. 6,8,5. वि यन्ति वनिनो न वयाः 13,1. श्रोषधीश्च वनिनश्च 7,4,5. 34,25. 35,5. विश्वेग्वि यन्ति वनिनो न शाखाः 43,1. 10,91,6. श्रवर्धयो वनिनः 138,2. उपारिबुध्नान्वनिनश्चकर्थ *du hast Bäume entwurzelt* 73,8. In dieser Stelle und 1,130,4 würde übrigens die Bedeutung *Wolke*, im Anschluss an वन 1) *d*), noch passender sein. *Baum* d. h. *Pflanze im ausgezeichneten Sinne*, der Soma: श्रभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते श्रक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे 3,40,7. — 2) adj. *im Walde wohnend*, m. *ein Brahmane im dritten Lebensstadium:* ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा वनी भवेत् वनी भूत्वा प्रव्रजेत् Gâbâla bei Kull. zu M. 6,38. गृहमेधी शरद्वसन्तयोर्ह्न्क्रियवाभ्यां यजेत वनी वर्षासु श्यामाकैरापत्कल्पे ऽन्यैः पुरातनैर्वा Hârita im Çrâddhakintâmani nach ÇKDr.

वनिँन (von 1. वन) n. *Baum* oder *Wald:* श्राप श्रोषधीर्वनिनानि Rv. 10,66,9.

वनिँल (wie eben) adj. gaṇa काशादि zu P. 4,2,80.

वँनिष्ठ (von 1. वन् mit dem suff. des superl.) adj. 1) *am meisten ausrichtend, — erlangend:* दूत Rv. 7,10,2. — 2) *am meisten mittheilend:* त्वं वसुं देवयते वनिष्ठः Rv. 7,18,1. — Vgl. वनीयंस्.

वनिष्ठुँ m. *Mastdarm* (स्थूलान्त्र) oder nach Andern *ein in der Nähe des Netzes liegender Körpertheil* (उलूकपत्तिसदृशो मांसविशेषः TBr. Comm. 2,672,18) Rv. 10,163,3. AV. 9,7,12. 10,9,17. 20,131,12. VS. 19,87. 25,7. 39,8. Ait. Br. 2,7. Çat. Br. 3,8,3,25. 12,9,1,3. Kâtj. Çr. 1,8,21. 6,7,10. 9,4. Çâṅkh. Çr. 5,17,9.

वनिष्णुँ Unâdis. 4,2 fehlerhaft für वनिष्ठु; = श्रपान Uggval.

वनीक = वनीपक Sâras. zu AK. nach ÇKDr.

वनीपक = वनीयक H. 387, v. l. Halâj. 2,204 (v. l. वनीयक). Gadjarâm. bei Uggval. zu Unâdis. 4,139.

वनीय् denom. von वनि), °यति *betteln, bitten* Uggval. zu Unâdis. 4,139.

वँनीयंस् (von 1. वन् mit dem suff. des compar.) adj. 1) *mehr erlan-*

gend: पूर्वः पूर्वो यज॑मानो वनी॑यान् R̥V. 5,77,2. वद॑न्ब्रह्मावद॑तो वनी॑यान् 10,117,7. — 2) *am meisten mittheilend, — gebend* Bhâg. P. 1,19,36. वनयिता याचयिता वनयितृतमो वनीयान् अत्युदारतया याचेया इति प्रवर्तकः Comm. — Vgl. वनिष्ठ.

वनीयक m. *Bettler, Bittsteller* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,139. AK. 3,1,49. H. 387. Hâr. 38. Halâj. 2,104, v. l.

वनी॑वन् (vom intens. von 1. वन्) adj. *heischend:* वनी॑वानो मम॑ दूतास इन्द्रं स्तोमा॑श्चरन्ति R̥V. 10,47,7.

वनीवा॑हन (vom intens. von वह्) n. *das Hinundherführen* Çat. Br. 10,1,3,2. Kâtj. Çr. 16,6,22. 25.

वनु॑ (von 1. वन्) nom. ag 1) *Nachsteller:* त्वमि॑न्द्र वनूं॑रहन् R̥V. 4,30,5. — 2) fraglich ob *Anhänger, Ergebener:* वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः R̥V. 10,74,1.

वनुष्य् (von वनुस्), °ष्यति *das Absehen haben auf, nachstellen, angreifen;* = क्रुध्यति Naigh. 2,12. = हन्ति Nir. 5,2. R̥V. 1,132,1. इन्धा॑नो अग्निं व॑नवद्वनुष्य॒तः 2,25,1. 26,1. 7,1,15. 4,9. दीर्घप्र॑यज्युमति यो व॑नुष्यति 7,82,1. 8,40,7. स्पृधो॑ वनुष्यन्वनुषो नि जू॑र्व 6,6,6. यो दू॑णाशो वनुष्यता 9,63,11. med. *verlangen, erlangen:* रेभो व॑नुष्यते मती 7,6.

1. वनुस् (von 1. वन्) adj. 1) *verlangend, eifrig; anhänglich, liebend:* प्र प्रेते॑ अग्ने वनुषः॑ स्याम R̥V. 1,150,3. अमृतस्य॑ योगे॑ वनुषः॑ 3,27,11. ऋतस्य॑ वनुषे॑ पूर्व्याय॑ 4,44,3. अभि ये मिथो वनुषः॑ सप॑न्ते रातिं दिवः 7,38,5. प्र ते॑ वन्वे वनुषो॑ हर्य॑तं मद॑म् 10,96,1. — 2) *eifrig im feindlichen Sinne, Angreifer, Nachsteller:* ज्ञाहि वधर्वनुषो मर्त्य॑स्य R̥V. 4,22,9. 50,11. 6,6,6. अर्वाचीना॑सो वनुषो॑ युयुज्रे 6,25,3. वनुषामशस्तीः 68,6. 7,21,9. 56,19. 83,5. 97,9. वनुषो ऽभिमातिम् 8,25,15. सीद॑न्तो वनुषो॑ यथा *die* (beim Soma) *sitzen wie Kampfbereite* 9,64,29. 91,5.

2. वनुस् (von 1. वनुस्), वनुषते *erlangen:* दैव्या होता॑रो वनुषन्त पूर्वे R̥V. 10,128,3. वनिषन्त TS. सनिषन् AV.

वनेकिंशुक m. pl. *Butea frondosa im Walde*, bildlich von *Dingen, die zu treffen man nicht erwartete*, Schol. zu P. 2,1,44. 6,3,9.

वनेक्षुद्रा (वने, loc. von 1. वन, + क्षु°) f. *Pongamia glabra Vent.* (करञ्ज) Ratnam. im ÇKDr.

वनेचर adj. (f. ई) = वनचर *im Walde umherschweifend, — wohnend;* m. *Waldbewohner* (von Menschen und Thieren) MBh. 1,5579. 3,15590. 15641. 12,4636. Hariv. 1141. R. 2,37,26. 42,18. R. Gorr. 1,8,8. 2,111,48. 3,47,2. 51,34. 79,47. 5,62,8. 6,109,22 (überall bei Gorr. fälschlich वने चर getrennt geschrieben). Kumâras. 1,10. Kir. 1,1. Mârk. P. 37,7.

वनेज॑ adj. *hölzern:* वसतिर्व॑नेजाः R̥V. 6,3,3.

वनेज्य m. *eine Mango-Art* (बद्धरसाल) Râǵan. im ÇKDr.

वनेबिल्वक m. pl. *Aegle Marmelos im Walde*, bildlich von *Dingen, die zu treffen man nicht erwartete*, P. 2,1,44, Schol.

वनेयु m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva MBh. 1,3700. Hariv. 1660. VP. 447. Bhâg. P. 9,20,5.

वने॑राज् adj. *im oder am Holze prangend* R̥V. 6,12,3.

वनेषा॑ह् (वने + सह्) adj. etwa *im Holze schaltend:* अव॑ स्यति द्विवर्तनिर्व॑नेषाट् R̥V. 10,61,20.

वनेसर्ज m. *Terminalia tomentosa W. und A.* Ratnam. im ÇKDr.

वनोद्देश m. *Waldgegend, eine Stelle im Walde* MBh. 1,5889. 3,15572. R. 2,56,9. 3,19,18. 50,12. fg. 4,26,7. Varâh. Bṛh. S. 48,5. Pańkat. 68,10. Hit. 121,10.

वनोद्भव 1) adj. *im Walde entstanden, — befindlich:* मार्गाः MBh. 3,2541. — 2) f. आ *die wilde Baumwollenstaude* Ratnam. 171.

वनोपप्लव n. *Waldbrand* Megh. 17.

वनोर्वी (1. वन + उ°) f. *Waldgegend* Râǵa-Tar. 2,137.

वनौक = वनौकस् *Waldbewohner:* शैलद्रुमवनौकानाम् MBh. 5,4028. वनौका इव Bhâg. P. 5,19,25.

वनौकस् (1. वन + ओ°) adj. *im Walde wohnend;* m. *Waldbewohner, Anachoret, ein im Walde lebendes Thier* (insbes. *der Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. Halâj. 2,76) MBh. 1,1119. 5,6039. 7110. 7,4166. 12,4277. Spr. 3861. Hariv. 4550. 4554. R. 1,63,23. 2,100,39 (108,40 Gorr.). R. Gorr. 3,49,39. 60,13. 4,1,16. 17,50. 6,26,5. 27,19. Çâk. 55,18. Râǵa-Tar. 3,47. 4,168. Bhâg. P. 4,9,21. 5,19,7. 7,2,7 (so v. a. *Eber*). 9,9,25. स्थाणु° Çiva's *Wald bewohnend* Kumâras. 3,34.

वनौघ m. *dichter Wald*, N. pr. einer Gegend (eines Berges?) im Westen Varâh. Bṛh. S. 14,20.

वनौषधि f. *ein wild wachsendes Kraut* Verz. d. Oxf. H. 183,*a*,14. 191,*b*,22. 192,*a*,32. *b*, No. 437. 193,*a*,26.

वन्तृ॑ (von 1. वन्) nom. ag. *Inhaber, Besitzer:* रायो ब॑न्तृः R̥V. 3,30,18. 7,8,3. — Vgl. वनितृ.

वन्नव (?) m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,35.

वन्ति f. nom. act. von 1. वन् P. 6,4,39, Sch.

वन्द्, व॑न्दते (अभिवादनस्तुत्योः) Dhâtup. 2,10. ववन्दे, वन्दिषीमहि, वन्द्यते, वन्दि (ved.), वन्दितुं, वन्दितुम्, वन्दित्वा, वन्द्य (episch), वन्द॑ध्यै; act. (vgl. auch u. अभि): ववन्द R̥V. 6,51,12. 66,3. ववन्दिम 5,25,9. अवन्दताम् R. 1,31,31. 1) *loben, rühmen, preisen:* ब्रह्मणा R̥V. 1,24,11. नमो॑भिः 27,1. 82,3. वन्दारु॑स्ते तन्वं॑ वन्दे अग्ने 147,2. 173,12. 3,54,4. 4,57,6. अग्ने वन्दे तव॑ श्रियम् 5,28,4. उत्तानहस्तो युवयुर्ववन्द 6,63,3. नासत्या यो यज॑ते वन्द॑ते च 7,73,2. गिरा वन्द॑स्व मरुतो अह॑ 8,20,20. अयं स्तुतो राजा॑ वन्दि वेधाः 10,61,16. 115,8. AV. 7,60,1. त्वं हि दैव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ 1,7,1. Çâṅkh. Çr. 4,18,7. — 2) *Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen, Jmd* oder *Etwas seine Ehrfurcht bezeugen:* कुमारश्चित्पितरं वन्द॑मानं प्रति॑ नानाम रुद्रोपयन्त॑म् R̥V. 2,33,12. (भवनश्रेष्ठमासाद्य) ववन्दे पृथुताम्राक्षी पृथाम् MBh. 1,7982. 3,11917. 15795. 5,7324. 12,6408. Hariv. 7902. 10997. fg. R. Einl. 1. 1,31,31. 2,32,2. 55,19. 110,20. R. Gorr. 1,32,24. 71,20. 3,2,5. Ragh. 1,1. 13,72. 77. Vikr. 81,11. Spr. 411. Kathâs. 24,162. 45,240. Râǵa-Tar. 2,111. Bhâg. P. 3,31,14. 6,16,16. 7,7,35. Bhaṭṭ. 19,27. Sarvadarçanas. 73,2. 101,17. वन्द्यते यदवन्द्यो ऽपि तत्प्रभावो धनस्य च Spr. 1811. वन्द्यमानः सुरोत्तमैः R. 1,14,25. वन्दिभिर्वन्दितः काले बह्वीभिः सूतमागधैः R. Gorr. 2,96,9. Kathâs. 33,171. Bhâg. P. 3,28,23. Pańkar. 1,3,79. शिरसा वन्दनीयं तमवन्दत MBh. 13,2857. R. 7,44,11. 46,18. 48,20. Mârk. P. 66,20. Bhâg. P. 1,11,29. 19,11. 6,2,22. ववन्दे च पितरं पादयोः पतन् Kathâs. 45,123. ववन्दे चैतमभ्येत्य पादयोः 32,111. 45,155. पादयोश्च शिरसा ववन्दिरे 365. रामस्य ववन्दे चरणौ R. 2,100,37. 40,3 (39,3 Gorr.). 113,6. MBh. 3,11907 (st. च वन्द्य hat Arǵ. 1,5 ववन्द). Hariv. 14106. Bhâg. P. 1,11,6. 10,6,37. Mârk. P. 22,4. Git. 7,42. ववन्दे चरणौ मूर्ध्ना MBh. 2,23. R. 2,

44,20. वन्दे वृक्षांश्च पुष्पितान् 3,55,43. शचीतीर्थम् Çâk. 85,1. वन्दितुं संध्याम् Râga-Tar. 4,443. लिङ्गं भुवनवन्दितम् 3,445. भ्रातृभिर्वन्दिताज्ञया 4,680. रथ्याम्बु जाह्नवीसङ्गाच्चिद्गौरपि वन्द्यते Spr. 2152. एकं द्वौ सकलान्वापि वेदान्प्राप्य गुरोर्मुखात्। अनुज्ञातो ऽथ वन्दित्वा दक्षिणां गुरवे ततः॥ *dem Lehrer den Lohn ehrfurchtsvoll gereicht habend* Mârk. P. 28,14.

— caus. *Jmd Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen:* वन्दयित्वा R. 3,62,30. 4,25,19.

— अनु *Jmd Ehre erweisen* Kâm. Nîtis. 5,62 (vgl. jedoch Spr. 453). — Vgl. अनुवन्दिन्.

— अभि *Jmd Ehre erweisen, ehrfurchtsvoll begrüssen, Jmd* oder *Etwas seine Ehrfurcht bezeugen* Daçak. 59,14. Bhâg. P. 1,19,22. 2,6,34. 4,12,29. Hit. 18,17. अभिवन्द्य मूर्ध्ना मूर्धाभिषिक्तम् Ragh. 16,81. act. MBh. 14,2603. R. Gorr. 1,34,2. Vṛddha-Kâṇ. 13,20 (am Ende eines Çloka). पादौ चास्याभिवन्दितुम् R. 2,90,17. Bhâg. P. 4,6,40. 5,3,16. 13,24. 8,23,6. विबुधौघाभिवन्दिता (सरिद्वरा) Verz. d. Oxf. H. 65,a,2. अभिवन्द्य प्रभोर्लिखम् Râga-Tar. 3,235. — Vgl. अभिवन्दन.

— परि *loben, rühmen, preisen:* परि वन्द ऋग्भिः ṚV. 2,35,12.

— प्र *laut rühmen* oder *zu rühmen anfangen:* इन्द्रस्येव प्र तवसंस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि ṚV. 7,6,1.

— प्रति *vor Etwas seine Ehrfurcht bezeugen:* भर्तुः प्रसादं प्रतिवन्द्य Kumâras. 3,2.

— सम् *Jmd ehrfurchtsvoll begrüssen* Bhâg. P. 9,7,19. शिरसा MBh. 1,5420.

वन्द (von वन्द्) adj. *preisend;* s. देव°.

वन्दक m. *Schmarotzerpflanze* Ratnam. im ÇKDr. f. आ dass. Haḍḍa bei Bhar. zu AK. 2,4,2,62 nach ÇKDr. — Vgl. वन्दा, वन्दाक.

वन्दथ m. = स्तोतर् und स्तुत्य ÇKDr. nach Siddh. K.

वन्दद्वार adj. fehlerhafte v. l. des SV. I,1,2,3,6 statt वन्दे दारुम् des ṚV.

वन्दद्वीर adj. fehlerhafte v. l. des SV. I,4,2,3,1 statt मन्दद्वीर des ṚV.

1. वन्दन (von वन्द्) 1) m. proparox. N. pr. eines Schützlings der Açvin ṚV. 1,112,5. 116,11. 117,5. 118,6. युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथुः 10,39,8. — 2) f. आ P. 3,3,107, Vârtt. 1. Vop. 26,194. *Lob, Preis* Trik. 2,7,10. Hâr. 133. Halâj. 4,91. — 3) f. ई = नति, जीवातु, कटी und माचलकर्मन् Med. n, 97; nach ÇKDr. soll in einigen Hdschrr. वटी statt कटी und याचन st. माचल gelesen werden. = गोरोचन Ratnâk. in Nigh. Pr. Vgl. गो°. — 4) n. proparox. a) *Lob, Ruhm, Preis:* सखा सख्युः प्रणावद्वन्दनानि ṚV. 3,43,4. अयं हि वामूतये वन्दनाय मामबूबुधत् Cit. in Nir. 4,17. — b) *Ehrenbezeugung, ehrfurchtsvolle Begrüssung:* कामं तु गुरुपत्नीनां युवतीनां युवा भुवि। विधिवद्वन्दनं कुर्यादसावहमिति ब्रुवन्॥ M. 2,216. यथार्हं वन्दनाश्लेषान्कृत्वा MBh. 2,2585. 3,13645. 5,834. शिरसा वन्दनार्हः 7030. पूजयामास तं देवं पाद्यार्घ्यासनवन्दनैः R. 1,2,28 (27 Gorr.). गुरु° Bhâg. P. 1,13,29. 2,4,15. 7,5,23. 10,2,40. Mârk. P. 116,52. Verz. d. Oxf. H. 103,b,25. तैश्च विह्निताग्न्योऽन्यवन्दनैः Kathâs. 45,226. कुर्याच्छ्वश्रुरयोः पादवन्दनम् Jâǵn. 1,83. शिरसा पादवन्दनम् Spr. 3398. Prab. 106,5. संध्या° Vedântas. (Allah.) No. 7. — c) = वदन Çabdak. im ÇKDr.

2. वन्दन 1) n. a) *Schmarotzergewächs* (wie *Flechten* u. dgl.): या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव (d. i. वन्दनमिव, nach AV. Prât. 2, 56 वन्दन इव; vgl. Whitney zu d. St.) वृक्षम् AV. 7,115,2. — b) *eine Krankheit, die sich auf die Glieder setzt, Ausschlag, Flechten* und dgl.: यद्विजामन्पर्रुषि वन्दनं (= विषम् Sâj.) भुवद्ष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् ṚV. 7,50,2. personif. als Dämon: न यातवं इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना (= रक्षांसि Sâj.) शविष्ठ वेद्याभिः 21,5. Vgl. तृष्ट° (*rauhen Ausschlag habend, schäbig*). — 2) f. आ *ein auf den Körper mit Asche u. s. w. aufgetragenes Zeichen:* ऐशान्यामाकरेद्भस्म ध्रुवा वाथ ध्रुवेण वा। वन्दनां कारयेत्तेन शिरःकण्ठांशकेषु च॥ Vasishṭha im Tithjâdit. nach ÇKDr.

वन्दनमाला f. *ein zur feierlichen Begrüssung eines Ankommenden über dem Eingang eines Hauses angebrachtes Laubgehänge* Halâj. 2,146.

वन्दनमालिका f. dass. H. 1008. Spr. 1168. बद्धाः प्रतिगृहद्वारं यत्र °काः Pârçvanâthak. 4,7 (nach Aufrecht). द्वारदेशबद्ध° adj. f. Pañkat. 207,24.

वन्दनश्रुत् adj. *auf Lob —, auf Preis hörend* ṚV. 1,55,6.

वन्दनीय (von वन्द्) 1) adj. *dem Ehrfurcht bezeugt werden muss, ehrfurchtsvoll zu begrüssen* MBh. 7,2941. 12,13867. 13,2857. R. 2,58,13. Verz. d. Oxf. H. 120,a,21. 187,b, No. 428, Z. 14. 199,a,18. — 2) m. *eine gelbblühende Verbesina* (पीतभृङ्गराज) Râgan. im ÇKDr. — 3) f. आ = गोरोचना Trik. 2,9,22.

वन्दा f. 1) *Schmarotzerpflanze* AK. 2,4,2,62. 3,4,18,115. Trik. 2,4,3. Med. d. 10. — 2) *Bettlerin* Med. — 3) = वन्दि oder वन्दी (ब°) Med.

वन्दाक m. *Schmarotzerpflanze* Ratnam. 273. Varâh. Bṛh. S. 43,13. °का f. dass. Haḍḍa bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. °की f. dass. Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 2,50,11.

वन्दारु (von वन्द्) 1) adj. P. 3,2,173. Vop. 26,162. a) *lobend, rühmend, preisend:* वन्दारुस्ते (वन्दारुष्टे VS. 12,42; vgl. VS. Prât. 3,72) तन्वं वन्दे अग्ने ṚV. 1,147,2. वचम् 5,1,12. — b) *der Ehrfurcht zu bezeugen pflegt, ehrfurchtsvoll* AK. 3,1,28. H. 349. Prab. 81,5. Verz. d. Oxf. H. 127,b, No. 229. 139,a,7. in comp. mit dem obj.: पुरमथनपदारविन्दद्वन्द्वन्दारुकरपल्लव Dhûrtas. 67,6. — 2) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 3,460. — 3) n. *Lob, Preis* ṚV. 4,43,1. अग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात् 6,4,2.

वन्दितर् (wie eben) nom. ag. *laudator:* यथा निदो मुञ्चथ वन्दितारम् ṚV. 2,34,15. 9,93,5. पितुष्टे अस्मि वन्दिता 10,33,7. वं° Çat. Br. 6,8,2,9.

वन्दितव्य (wie eben) adj. 1) *zu loben* Nir. 7,16. — 2) *dem Ehrfurcht zu bezeugen ist, ehrfurchtsvoll zu begrüssen* R. 2,26,29 (31 Gorr.). 31.

वन्दिन् (wie eben) nom. ag. *Ehrfurcht bezeugend:* अस्तोतुः स्तूयमानस्य वन्द्यस्यानन्यवन्दिनः Kumâras. 6,83. — Vgl. राज° und बन्दिन्.

वन्दिनीका f. ein N. der Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,b,33. वन्दिनीया v. l.

वन्दिनीया s. u. वन्दिनीका.

वन्दीक (ब°) m. ein N. Indra's H. ç. 30.

वन्द्य (von वन्द्) 1) adj. P. 6,1,214. a) *zu loben, lobenswerth, preisenswerth* ṚV. 1,31,12. 79,7. 90,4. आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः 168,2. 2,7,4. अभूद्देवः सविता वन्द्यो नु नः 4,54,1. कविषु 10,4,1. 63,2. 110,3. AV. 6,98,1. 18,4,65. सुकवेर्गुणाः Râga-Tar. 1,3. Vṛddha-Kâṇ. 16,7. Sâh. D. 213,9. — b) *ehrfurchtsvoll zu begrüssen, zu verehren, dem Hochachtung gebührt* (von Göttern und Menschen) R. 4,44,41. Kumâras. 6,83. 7,54. Çrut. 44. Spr. 713. 1157. 1431. 1811. Kathâs. 26,157. Râga-Tar. 3,526. Bhâg. P. 1,7,46. Mârk. P. 76,23. Verz. d. Oxf. H. 16,a,11. Pañ-

KAR. 1,10,7. पादे R. 2,58,13. RAGH. 13,78. BHÂG. P. 10,6,37. VOP. 6,1. SARVADARÇANAS. 98,14. रघुपतिपदानि MEGH. 12. जगतां वन्द्यं तद्विष्णोः परमं पदम् BHÂG. P. 4,12,26. 3,15,26. — c) *zu berücksichtigen, zu beachten* Z. f. d. K. d. M. II, 425. — 2) m. N. pr. eines Mannes (andere Autt. st. dessen वध्यश्व) Verz. d. Oxf. H. 41,b,42. — 3) f. आ a) = वन्दा *Schmarotzerpflanze* ÇABDAK. im ÇKDR. — b) = गोरोचना BHÂVAPR. im ÇKDR. — c) N. pr. einer Jakshî KATHÂS. 123,24. — Vgl. जगद्वन्द्य.

वन्द्यता f. nom. abstr. zu वन्द्य 1) b) RÂGA-TAR. 1,283.

वन्द्रे UṆÂDIS. 2,13. adj. = पूजक UGGVAL.

वन्धा indecl. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

1. वन्धुर m. so v. a. वन्धुर ṚV. 1,34,9.

2. बन्धुर. अवस्युं अश्वं कावनं वधिं कृण्वन्तु बन्धुरः AV. 3,9,3 und mit anderer Betonung: बन्धुरा काबवस्य 4.

वन्धुर n. parox. *Sitz des Wagenlenkers* oder *die Stelle am Ende der Gabeldeichsel* (Comm.); *Wagensitz* überh., *Wagengehäuse*: अधि वां स्थाम वन्धुरे रथे दस्रा हिरण्यये ṚV. 1,139,4. आ वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे 3,14,3. वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धाः 6,47,9. अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् 10,119,5. वन्धुरेषु रथेषु 1,64,9. बन्धुर AV. 10,4,2. — MBH. 3,14910 (= रथबन्धन NÎLAK.). 6,19: 6 (सयुगबन्धुरः ed. Bomb.). 2659 (सोत्तरबन्धुरेषं ed. Bomb., बन्धुर = रम्य NÎLAK.). 7,1569. 1731. 6440. 8,624. 1479. HARIV. 5637. 9288. 9319. BHÂG. P. 7,15,41. त्रिवन्धुर (vgl. gaṇa त्रिचक्रादि zu P. 6,2,199, Vârtt.) ist der Wagen der Açvin ṚV. 1,47,2. 118,1. 2. 157,3. 183,1. 7,69,2. 71,4. 8,22,5. — 9,62,17. पञ्च° BHÂG. P. 4,26,1. 29,18. — Vgl. पूर्ण°, सुप्र°, हिरण्य° und बन्धुर in den Nachträgen.

वन्धुरायु adj. *mit einem Wagensitz versehen* (SÂJ.): der Wagen der Açvin यः सूर्यां वहति वन्धुरायुः ṚV. 4,44,1.

वन्धुरीय, सोत्तरबन्धुरीय MBH. 6,2659 falsche Lesart für सोत्तरबन्धुरेष, wie die ed. Bomb. liest.

वन्धुरेष्ठा adj. *auf dem Wagenstuhl sitzend*: Indra ṚV. 3,43,1.

वन्ध्य, so schreiben die Bomb. Ausgg. des MBH. und BHÂG. P. statt बन्ध्य in der Bed. 3).

वन्ना f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 154,a,30.

1. वन्य (von 1. वन्) s. चतुर्वन्य, अजीतपुनर्वण्य.

2. वन्य (वन्यं nach gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80) 1) adj. *im Walde lebend, — wachsend* u. s. w., *silvestris* MED. j. 53. रुद्र VS. 16,34. सिंह, गज, मृग u. s. w. MBH. 12,4288. HARIV. 3567. R. 2,24,17. 100,29. 107,17. 3,62,34. RAGH. 2,8. 37. 5,43. 50. 6,7. Spr. 2506. VARÂH. BṚH. S. 32,25. 46,66. 91,1. fgg. 95,57. KATHÂS. 21,30. 22,78. PAÑKAR. 1,6,27. ओषधि, वृक्ष, फल, मूल u. s. w. MBH. 13,461. 2772. M. 6,12. R. 1,9,57. 2,31,26. 54,17. 56,30. R. GORR. 1,3,63. 2,28,22. SUÇR. 1,197,18. 198,14. RAGH. 1,45. Spr. 3884. AK. 2,4,4,4. RÂGA-TAR. 5,49. BHÂG. P. 4,8,55. PAÑKAR. 1,6,16. रति HARIV. 14803. संविधा RAGH. 1,94. श्राद्ध MÂRK. P. 96,19. सुख PAÑKAT. 216,10. तकन् etwa so v. a. *grünlich* (vgl. रूपाणि हरिता कृणोषि) AV. 6,20,3. *hölzern*: योनि ṚV. 9,97,45. *im oder am Holz befindlich*: Agni TS. 5,5,9,1. 2. — 2) m. *ein im Walde lebendes —, ein wildes Thier* R. 2,56,2. VARÂH. BṚH. S. 97,8. — b) *eine wild wachsende Pflanze*: वन्येश्च (वंशैश्च ed. SCHL. 8) यामुनैः R. ed. Bomb. 2,55,9. — c) Bez. verschiedener *wild wachsender Pflanzen*: = वनशूरण, वाराहीकन्द und देवनाल RÂGAN. im ÇKDR. — 3) f. a) या nom. coll. von वन gaṇa पाशादि zu P. 4,2,49. α) *ein grosser Wald* AK. 2,4,1,4. MED. — β) *ein Ueberfluss an Wasser, Regenfülle, grosse Nässe* MED. KṚSHISAṂGR. 4,16. fg. 11,6. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: *Physalis flexuosa* RATNAM. bei WILSON; = मुद्गपर्णी, गोपालकर्कटी, गुञ्जा, मिश्रेया, भद्रमुस्ता und गन्धपत्त्रा RÂGAN. im ÇKDR. — 4) n. a) *im Walde Gewachsenes: Früchte und Wurzeln im Walde wachsender Pflanzen*: वन्येन जीवन् MBH. 12,380. R. 2,37,2. 63,26 (65,26 GORR.). वन्ये ऽपि विविधे सति 46,10 (44,10 GORR.). 84,17. 1,51,5. 3,52,51. 53,24. 76,17. °वृत्ति RAGH. 1,88. 5,9. 12,20. वन्याशन VARÂH. BṚH. 15,1. KATHÂS. 42,121. मितवन्यभुज् BHÂG. P. 4,8,56. MÂRK. P. 115,16. — b) = त्वच RÂGAN. im ÇKDR.

वन्याश्रम HARIV. 2538 fehlerhaft für वनाश्रम, wie die neuere Ausg. liest.

वन्येतर (2. वन्य + इ°) adj. *nicht wild, zahm* RAGH. 5,47. निवासाः *Wohnungen, die von denen im Walde verschieden sind*, 41.

वन्योपोदकी f. *eine best. Schlingpflanze* RÂGAN. im ÇKDR.

वंत्र UṆÂDIS. 2,28. = विभागिन् UGGVAL.

1. वप्, वपति, उप्त Haare oder Bart *scheeren* VOP. 8,134. med. *sich scheeren*: ये ते शुक्रासः स्तां वपन्ति विषितासो अश्वाः: *abgrasen* ṚV. 6,6,4. सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः nämlich केशान् AV. 6,68,1. fgg. यत्क्षुरेण वप्ता वपसि केशश्मश्रु 8,2,17. ÇAT. BR. 3,1,2,9. लोमानि 2,6,3,17. TS. 6,1,1,2. ते केशानग्रे ऽवपन्त। अथ श्मश्रूणि। अथोपपक्षौ TBR. 1,5,6,1. ÂÇV. GṚHJ. 1,17,7. 10. fgg. उप्तकेशश्मश्रु KAUÇ. 54. संवत्सरे वपत (नापितकार्यं करोति SÂJ. एकं एषाम् ṚV. 1,164,44.

— caus. *scheeren lassen, scheeren*; med. *sich scheeren lassen*: श्मश्रूणि वापयीत ÂÇV. ÇR. 2,16,24. केशश्मश्रुलोमनखानि (प्रेतस्य) वापयन्ति 6,10,2. GṚHJ. 4,1,16. 6,4. LÂṬJ. 4,4,18. 8,8,14. वापित = मुण्डित H. an. 3,293. fg. MED. t. 150.

— परि *rings scheeren* KAUÇ. 54. PÂR. GṚHJ. 2,1. अपर्युप्य ÂÇV. ÇR. 12,8,25. — caus. परिवापित *geschoren* AK. 3,2,35. — Vgl. परिवापण.

— प्र *abscheeren*: वप्तेव श्मश्रु वपसि प्र भूम ṚV. 10,142,4. देवश्रूरेतानि प्रवपे TS. 1,2,1,1. PÂR. GṚHJ. 2,1. — Vgl. प्रवपण.

2. वप्, वपति (बीजसंताने, तन्तुबीजसंताने) DHÂTUP. 23,34. अवपथास् P. 6,1,121. उवप, उवाप, उवपिथ P. 6,1,17. VOP. 8,134. ऊपे (आ वेपे KÂÇ. zu P. 6,4,120), ऊपिषे, अवाप्सीत्, वप्स्यति (vgl. Kâr. 5 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10) und वपिष्यति (episch), वप्तुम्, उप्त्वा, उप्यते, उप्त (auch उउपित und वपित) P. 6,1,15. *hinstreuen, hinwerfen* (bes. den Samen), *säen*: वपन्ति मरुतो मिहम् ṚV. 8,7,4. यो भूम्या उपस्थे ऽवपज्जघन्वान् (वीरान्) *hinstreckte* 2,14,7. इम उप्ता मृत्युपाशाः *hier liegen* AV. 8,8,16. KAUÇ. 14. 16. अक्षानुप्त्वा *die Würfel werfend* MBH. 2,2033. यवम् ṚV. 1,117,21. वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः 10,94,13. 101,3. मा वः क्षेत्रे परबीजान्यवाप्सुः P. 6,4,75, Sch. ÇAT. BR. 1,6,1,3. 7,2,4,13. LÂṬJ. 5,8,4. KÂṬJ. ÇR. 17,3,8. 21,4,4. इरिणे बीजमुप्त्वा M. 3,142. MBH. 3,1248. VARÂH. BṚH. S. 53,87. 55,2. KATHÂS. 32,121. 39. 116. 119. 61,8. 71,266. यादृशं वपते बीजम् Spr. 2468. KATHÂS. 32,118. MÂRK. P. 51,81. यादृशं तूप्यते बीजं क्षेत्रे Spr. 2469. वृत्तानारोपयेद्वपेत् Verz. d. Oxf. H. 325,a,10. fg. उप्यमानं मुकुः क्षेत्रम् *besäet werdend* Spr. 3809. यस्यां (स्त्रियां) बीजं

मनुष्याइं वपन्ति RV. 10,85,37. न तु विद्यामिरिणे वपेत् M. 2,113. उप्यन्ते विषवल्लिबीजविषमाः क्लेशाः प्रियाख्याः Spr. 3808. उप्त gestreut, gesäet: कालोप्तानि बीजानि M. 9, 38. Spr. 130. 2315. 3809. MBh. 13,7608. R. 3,44,3. Kumâras. 2,5. Çâk. 91,14. 151. Varâh. Bṛh. S. 40,9. 55,26. Kathâs. 32,183. 39,120. Râǵa-Tar. 3,294. Bhâg. P. 1,15,21. Mârk. P. 49, 59. gepflanzt Varâh. Bṛh. S. 75,2. so v. a. gespendet: तेषु दानानि पात्रेषु Bhâg. P. 11,6,38. = निक्षिप्त 3,2,10. bestreut, besäet, bedeckt: भूप्रदेश Verz. d. Oxf. H. 325,a,9. फलपुष्पाक्षताङ्कुरैः Bhâg. P. 1,11,15. पांसूप्त Kathâs. 98,25. अमवार्युप्त übergossen Bhâg. P. 10,44,11. उप्ति gesäet MBh. 3,14763. aufschütten so v. a. aufdämmen: यथा यमाय कूर्म्यमवपन्पञ्च मानवाः AV. 18,4,55. — Vgl. उप्त fgg. und यथोप्त.

— caus. säen, stecken, pflanzen: सरित्तीरेषु कुद्दालैर्वापयिष्यन्ति चौषधीः MBh. 3,13031. वापित gesäet H. an. 3,293. fg. Med. t. 150. Varâh. Bṛh. S. 55,28.

— अधि aufschütten, aufstreuen, med. TS. 1,6,9,3. an sich auftragen, — anbringen: अधि पेशांसि वपते नृतूरिव RV. 1,92,4.

— अनु 1) bestreuen Nir. 2,22. — 2) med. zerstieben machen: क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादश्व इवानु वपते नडम् AV. 12,2,50. pass. stieben: अनु स्वधा यमुप्यते यवं न चर्कृषद्वृषा RV. 1,176,2.

— अप zerstreuen, zerstören, verjagen RV. 1,133,4. यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपत् 2,14,6. 8,85,9. दस्यूनां सेनाम् AV. 8,8,5. 19,36, 4. यातीन् TS. 3,3,7,3.

— अपि bestreuen, überstreuen AV. 12,3,22. भस्मना पदम् TBr. 1,4, 3,6. 5,4,2. Çat. Br. 12,4,1,4. — Vgl. अपिवाप.

— अभि bestreuen, bedecken: स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च RV. 2,15, 9. अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त 7,56,3.

— आ 1) einstreuen, hineinwerfen; legen in, beifügen, beimengen: अग्नौ तुषान् AV. 11,1,29. 12,3,28. सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु VS. 35,5. Çat. Br. 2,5,2,11. तण्डुलान् 3,4.3. 3,2,2,14. अन्तान्पाणौ 5, 4,4,6. अङ्गारान् 6,6,2,9. स्थाल्यामग्निम् 11,5,1,13. पात्र्याम् Kâtj. Çr. 2, 4,21. 21,4,21. Âçv. Gṛhj. 1,7,8. 15. तिलान् 4,7,11. Kauç. 11. 14. 18. 85. कथं भूतानि पुनरात्मन्यावपेय wie kann ich in mich hereinschaffen? Çat. Br. 10,4,2,3. hinstreuen: श्वभ्यश्च श्वपचेभ्यश्च वयोभ्यश्चावपेद्भुवि MBh. 3,105 (= Mârk. P. 29,23). ausgiessen: वर्षमावपतां श्रेष्ठं बीजं निवपतां वरम् 17341. 17340. — 2) einschieben, einfügen: तान्यन्तरेणावापमावपेरन् Ait. Br. 6,19. सूक्तमधिगो Çat. Br. 13,5,1,18. Lâtj. 4,4, 1. 6,6,17. Âçv. Çr. 2,16,4.9. 7,2,16. तस्मिन्नन्या देवता ओप्यन्ते Nir. 12,5. — 3) vollschütten: पांसुभिरावपेत्तम् Varâh. Bṛh. S. 54,120. — 4) unter (Mehrere) bringen, mittheilen: त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे RV. 1,31,9. सोमं राजन्संज्ञानमा वपेभ्यः AV. 11,1,26. समदम् 32. darbringen, veranstalten: मघासु श्राद्धमावपन् MBh. 13,4259. — Vgl. आवपन fgg., आवाप fg., ओप्य. — caus. 1) beimischen, beimengen Suçr. 1,162,11. 164, 4. 2,436,9. — 2) kämmen, ordnen (das Haar): केशानावापयन्ती MBh. 1, 819. दन्तपत्रिकया वेणीत्रयेण संग्रथनं केशानां कारयन्ती Nilak. — Vgl. आवापन.

— अध्या darauf streuen Çat. Br. 3,3,2,13. — Vgl. अध्यावाप.

— अन्वा beifügen Kauç. 80.

— पर्या dass. Çat. Br. 6,6,4,8.

— प्रत्या wieder dazu werfen Kauç. 21.

— व्या scheinbar in der Stelle उद्धिं व्यावपाति ved. Cit. beim Schol. zu P. 3,1,34. 4,7.94. fehlerhaft für उद्धिं च्यावयाति TS. 3,5,5,2.

— समा zusammenwerfen, vermengen; hineinschütten Ait. Br. 7,5. संभारान्पात्र्यां वा चमसे वा समावपेयुः 8,17. अञ्जलौ Çat. Br. 2,6,2,16. Âçv. Gṛhj. 1,10,9. 11. समोप्तधान Lâtj. 8,8,18. Kauç. 82. fg. स्थाल्यामाज्यं समावपेत् Gṛhjas. 1,106. चरावाज्यम् 2,7. Suçr. 2,347,6. 419,21. — caus. dass. MBh. 1,1111. Suçr. 2,65,13.

— उद् 1) ausschütten, herausschaffen; ausscharren, ausgraben; wegschleudern: यद्विद्वांसा निधिमिवापगूळ्हमुद्दर्शतादूपथुर्वन्दनाय RV. 1, 116,11. 117,5. निखातं वसूदिद्वपति दाशुषे 8,55,4.10,39,8. वलगम् einen Zauber heben TS. 1,3,2,1. Çat. Br. 3,5,4,12. लाङ्गलमुदिद्वपतु गामविम् AV. 3,17,3. 6,109,3. Çat. Br. 7,2,2,11. VS. 11,63. उखाम् Çat. Br. 6,5, 4,10. fg. Kâtj. Çr. 16,4,8. प्रपदेन पांसून् Âçv. Çr. 4,4,2. भस्म Çat. Br. 6,6,4,1. हविः Kâtj. Çr. 2,4,17. Kauç. 61. — 2) hinzufügen (?) Weber, Ǵjot. 70. — Vgl. उद्वपन, उद्वाप. — caus. 1) ausgraben lassen Çat. Br. 3,6,1,27. fg. — 2) ausschütten, herausnehmen Çâṅkh. Gṛhj. 3,1.

— उप aufschütten, anhäufen; beschütten, bedecken, einscharren (Gegens. वप् mit उद्): यन्यच्छ्रत्यस्यामेव तदुपोप्यते das wird in die Erde verscharrt Çat. Br. 2,3,4,9. उत्तरवेदिम् TS. 5,2,5,6. TBr. 1,6,2,7. 4, 3. चात्वालाद्धिष्ण्यान् TS. 6,3,1,1. 5,2,2. Çat. Br. 6,5,4,10. Pañkav. Br. 14,12,6. 25,10,5. अपूपानां यमधर्यूराखूत्कर उपोपेत् (so die Hdschrr., der Comm. hat die richtige Form उपवपेत्) in einen Maulwurfshaufen einscharrt Lâtj. 5,3,2. 10,15,16.

— नि 1) hinschütten, hinwerfen; aufdämmen (bes. den Opferwall): धाना उत्तरवेदौ Çat. Br. 4,4,2,12. सिकताः, ऊषान् TBr. 1,1,3,1. धिष्ण्या न्युप्यन्ते 3,3,8,1. Çat. Br. 3,6,2,21. Kâtj. Çr. 8,6,15. 9,7,6. 18,6, 8. उत्तरवेदिम् Çat. Br. 7,1,1,6. पुरीषम् 8,7,3,1. Kâtj. Çr. 5,3,28. Çat. Br. 12,5,1,13. यावत्येव निवप्स्यन्स्यात्तावडुद्धन्यात् 13,8,1,20. 2,1. 3,2. खरौ Kâtj. Çr. 26,2,16. बलिम् Gobh. 3,7,11. Âçv. Gṛhj. 4,6,3. अंशुषु न्युप्तः (सोमः) VS. 8,57. Çat. Br. 4,6,1,5. 12,8,2,3. चर्मण्यानडुहे सोमम् Kâtj. Çr. 7,6,1. न्युप्य पिण्डान् M. 3,216. 218. न्युप्य चैव निवापं तं भूतेभ्यो ऽपि R. Gorr. 2,56,29. निवप्ते चाग्निपूर्वे (so die ed. Bomb.) वै निवापे MBh. 13,4383. ऐङ्गुदं बदरोन्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे। न्युप्य R. Gorr. 2, 111,35. 112,11. सहकारमञ्जरीः Kumâras. 4,38. बीजं निवपतां वरम् säen MBh. 3,17341. 17340. Varâh. Bṛh. S. 55,30. — 2) zu Boden werfen: अन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः RV. 2,33,11. Naigh. 2,19. VS. 16,52. RV. 4,16,13. — Vgl. निवपन, निवाप fgg.

— उपनि dazu hinwerfen: संभारान् Çat. Br. 3,5,2,14. 4,1,1,5. — Vgl. उपनिवपन.

— परिणि und प्रणि P. 8,4,17. Vop. 8,22. 134.

— संनि zusammenwerfen: अग्नीन् Ait. Br. 4,26. TS. 5,2,4,1. Çat. Br. 6,7,4,13. 7,1,1,38.

— निस् herausschütten, — schöpfen, — nehmen; daher ausscheiden für (dat. gen.), zutheilen, vertheilen (bes. Fruchtkörner, die zu Opferzwecken aus einer grösseren Masse ausgesondert werden): निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः RV. 10,68,3. AV. 9,6,14. आग्नावैष्णवं पुरोळाशं निर्वपन्ति दीक्षणीयमेकादशकपालं सर्वाभ्य एवैनं तद्देवताभ्यो ऽनन्तरायं निर्वपन्ति

Ait. Br. 1,1. यस्यां स्थाल्यां प्रायणीयं निर्वपेत् 11. हविरातिथ्यं निरुप्यते 15. रसस्य TS. 1,1,10,3. 6,8,3. 2,2,5,1. नाहमभागो निर्वप्स्यामि *so lange ich ohne Theil bin, werde ich nicht Andern austheilen* TBr. 3,3,8,5. Âçv. Çr. 3,10,10. नवानां सवनीयान्निर्वपेयुः *von neuer Frucht* 12,8,26. हविः Çat. Br. 1,6,3,19. 2,2,1,6. fg. चरुम् 18. ब्रह्मौदनान् 13,3,6,6. आज्यम् Kâtj. Çr. 1,3,22. 2,5,9. स्थालीपाकम् Âçv. Grhj. 2,2,2. 1,10,6. 7. Kauç. 2. 67. fg. बहुदेवतामिष्टिं निर्वपेरन् Çâñkh. Çr. 3,6,1. 13,29,14. — परत्रेत्रे निर्वपति यश्च बीजम् MBh. 5,1338. निर्वपेदुदकं भुवि M. 3,214. निर्ववाप पवित्रेषु निवापम् R. Gorr. 2,56,28. (अन्नस्य) अग्रमुद्धृत्य रामाय भूतले निर्वपिष्यति 4,61,10. शुनाम् u. s. w. निर्वपेद्भुवि M. 3, 92. 72. 220. MBh. 3,1455. 13,3342. Mârk. P. 29,20. पिण्डान् M. 3,215. 247. 9, 140. पुरोडाशांश्चरूंश्चैव 6,11. Bhâg. P. 4,7,17. 13,35. चरुपुरोडाशान् 7,12, 19. हविः 5,19,26. न च तत्स्वयमश्नीयाद्विधिवद्यन्न निर्वपेत् *wovon er nicht zuvor einen Theil* (für die Götter u. s. w.) *ausgeschieden und ihnen dargebracht hat* MBh. 3,104 (= Mârk. P. 29,46). अद्य ते निर्वपिष्यन्ति (निर्वर्तयिष्यन्ति die neuere Ausg.) शत्रुमांसानि दानवाः Hariv. 13756. यमायाकम्पनं तेन निरुवाप महापशुम् Bhatt. 14,86. श्राद्धम् *darbringen* M. 3, 281. Verz. d. Oxf. H. 40,*a*, N. 1. इष्टीः M. 4,10. 11,27. महायज्ञान् 6, 5. Bhâg. P. 11,18,7. यश्च नो निर्वपेत्कृषिम् (so die ed. Bomb.) so v. a. *und der nicht Ackerbau treibt* MBh. 5,1292. निरुप्य fehlerhaft für निरुप्य M. 6,38. Bhâg. P. 1,15,39. 8,16,51. 9,23,9. निरुप्यन्ते fehlerhaft für निरुप्यन्ते 4,1,61. — Vgl. निरुप्ति fg., निर्वपण, निर्वाप, निर्वाप्य, यथानिरुप्तम्. — caus. *aussäen:* वया कीदृङ्गीतिबीजं निर्वापितम् Pańkat. 85,20. (für die Götter u. s. w.) *ausscheiden, austheilen:* अनिर्वाप्य समश्नन्वै मृता जायन्ति वायसाः MBh. 13,5483. — Vgl. 1. निर्वापण und das caus. von वा mit निस्.

— अनुनिस् *nachher herausnehmen, — vertheilen* u. s. w. TS. 2,2,1,4. सौर्यमेककपालम् 3,12,2. 5,4,2. द्वादशसु रात्रीष्वनुनिर्वपेत् TBr. 1,1,6,7. 5. पशौ पुरोळाशमनुनिर्वपन्ति *nach dem Thiere* d. h. *dessen Schlachtung findet eine Austheilung des P. Statt* Ait. Br. 2, 8. Çat. Br. 3,8,3,1. 11,1, 3,1. 13,3,8,1. स एतं वैमृधं पूर्णमासे ऽनुनिर्वाप्यमपश्यत्तं निरवपत् TS. 2, 5,3,1. — Vgl. अनुनिर्वाप्या.

— अभिनिस् *zutheilen zu einem Andern hin,* in doppelter Weise construirt. प्रायणीयस्य निष्कास उदयनीयमभि निर्वपति *zu dem Rest des* Pr. *hin* TS. 6,1,5,5. °निष्कासमुदयनीयेनाभिनिर्वपेत् Ait. Br. 1,11.

— परिनिस् s. परिनिर्विवप्सु.

— प्रतिनिस् *als Gegenwerk austheilen* u. s. w.: अधरकल्पां प्रति निर्वपेद्भ्रातृव्ये यजमाने TS. 2,2,9,4. TBr. 1,7,3,7. Kauç. 48.

— संनिस् *zusammen austheilen* Ait. Br. 3,48.

— परा *bei Seite werfen, — legen, beseitigen:* Leichname AV. 18, 2, 34. Pfeile VS. 18,9. दन्तान् Çâñkh. Br. 6,23. परा वा एष यज्ञं पशून्वपति यो ऽग्निमुद्वासयति TS. 1,5,2,1. यद्वा क्रुद्धः परोवप मन्युना यद्वत्स्या (अग्ने) 3,2. परा वा एषो ऽग्निं वपति यो ऽप्सु भस्म प्रवेशयति 5,2,2,5. Çat. Br. 2,3,2,3. 6,8,2,1.

— परि *bestreuen:* पांसुभिः Lâtj. 10,15,16. — Vgl. परिवाप, पर्युप्ति.

— प्र *ausstreuen, ausschütten, ausspritzen:* मिहः प्र तम्रा अवपत्तमांसि RV. 10,73,5. वसून्यादाय समुद्रं प्रोप्यन्त Ait. Br. 5,11. व्रीहियवयोः Pâr. Grhj. 2,13. इन्द्रं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् RV. 10,115,3. — शिरांसि पादपत्राणां बीजवत्प्रवपन्मुहुः MBh. 3,15725. बीजवत्प्रवपञ्छरान् 5, 2109. 3,1931. 5,655. अस्त्रपूगान् 3,1357. *bestreuen:* क्षत्रियान्प्रवपञ्छरैः 6,5084. *hinwerfen auf, in:* प्रवपाणि (vgl. P. 8,4,16) शिरो भूमौ वानरस्य Bhatt. 9,98. प्रवपाणि वपुर्वह्नौ 20,36. — Vgl. प्रवपण, प्रवापिन्. — caus. *ausstreuen, ausschütten, ausspritzen:* प्रैवाग्नेयेन वापयति रेतः सौम्येन दधाति TS. 2,4,6,1. 6,6,5,1. Kâth. 11,2. Vgl. प्रवापयितर्.

— अभिप्र med. *sich auf Jmd stürzen:* यं मृधो ऽभि प्रवेपेरन् TS. 2,2,3,4.

— प्रति 1) *einstecken, einlegen, einfügen:* मुकुटप्रत्युप्तमुक्ताकणा Râga-Tar. 3,529. दुर्लोतभर्तुरङ्केषु प्रत्युप्तामिव वल्लभाम् (अपश्यत्) 507. प्रत्युप्तस्येव दयिते तृष्णादीर्घस्य चक्षुषः Uttarar. 68,1 (87,3). *bestecken, belegen:* मौलिमन्तर्गतस्रजम्। प्रत्यूपुः पद्मरागेण Ragh. 17,23. महार्हरत्नप्रत्युप्त Daçak. 90,8. — 2) *auffüllen:* भस्मना पुनः पदं प्रतिवपेत् Âçv. Çr. 3,10,14. — 3) *hinzufügen* TBr. 1,2,6,5. — Vgl. प्रतीवाप. — caus. *zugiessen* Suçr. 1,33,4.

— वि *zerstreuen, verwühlen:* व्युप्तकेश Bhâg. P. 4,2,14. 5,10.

— सम् *einschütten, hineinbringen; zusammenthun:* Mehl in einen Topf VS. 1,21. TS. 6,1,8,4. आहवनीयम् Âçv. Çr. 3,10,9. Çat. Br. 6, 7,4,13. 7,1,1,38. 12,3,5,1.

वप्तृ (von 2. वप्) nom. ag. gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. *Säemann* VS. 30,7.

1. वपन (von 1. वप्) 1) n. *das Scheeren, Rasiren* H. 923. an. 3,411. Med. n. 120. Halâj. 4,36. Çat. Br. 3,1,2,1. TS. 2,7,12,1 (°विधि Bez. dieses Anuvâka). M. 5,140. 11,151. Hariv. 7791. Bhâg. P. 1,7,57. Vop. 7,91. अ° Pâr. Grhj. 2,1. केश° Âçv. Grhj. 1,22,23. Kâtj. Çr. 4,7,11. 13,4,6. 15,8,28. 22,6,13. केशश्मश्रु° Râga-Tar. 6,100. — 2) f. ई *Barbierstube* H. 1000.

2. वपन (von 2. वप्) n. 1) *das Säen* H. an. 3,411. Med. n. 120. °विधि Verz. d. Oxf. H. 325,*a*,8. धान्य° 86,*b*,25. बीज° Krshis. 12,5. Pâr. Grhj. 2,13. — 2) *das Aufstellen, Ordnen:* भाण्ड° Med. p. 14.

1. वपनीय (von 1. वपन) in केश°.

2. वपनीय (von 2. वप्) adj. *zu säen;* n. impers.: आयुरिच्छता न कदाचित्परक्षेत्रायां वपनीयम् Kull. zu M. 9,41.

1. वपा f. gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. *Eingeweidehaut, Netzhaut, omentum* (= मेदस् AK. 2,6,2,15. H. 624. an. 2,300. Med. p. 11. Halâj. 3,13) VS. 12,103. छागस्य 21,41. 35,20. पुरा नाभ्या अपिशसो वपामुत्खिदतात् Ait. Br. 2,6. 9. 12. fg. TS. 2,1,1,4. वपामेकः (प्राणः) परिशये 6, 3,7,5. अग्रं वा एतत्पशूनां यद्वपा 9,5. मेदसा वपया यज्ञम् TBr. 2,8,4,4. Çat. Br. 3,8,2,19. 26. 4,5,2,1. वशायै 8,15. वपाहुति Ait. Br. 2,14. °होम Kâtj. Çr. 13,4,6. 24. Grhjas. 2,81. वपान्ते = वपाहोमान्ते Kâtj. Çr. 20,7,26. 21,2,7. Das Ross hat keine वपा Çat. Br. 13,5,2,20. Kâtj. Çr. 20,7,7. वपा वपावतां जुहोति त्वचमुत्कर्तमवपाकानाम् Çat. Br. 13,7, 1,9. Kâtj. Çr. 21,2,5. श्रप्यमाणा Âçv. Çr. 3,4,1. Grhj. 2,4,13. 4,3,20. वपया सत्तच्छिद्रया मुखं छादयति *des Todten* Kauç. 81. Kâtj. Çr. 25,7,36. वपामुत्खनति Kauç. 44. वपोद्धरण Pâr. Grhj. 3,11. M. 12,63. Jâgń. 3, 94. MBh. 1,4572. 3,10489. 7,1976. 14,2646. fg. R. 1,13,39. fg. (35. 37 Gorr.). वपाश्रपणी *die Bratspiesse für die Netzhaut* Z. d. d. m. G. 9, lxxv. वपाश्रपण्यौ *die zum Ausbraten der Netzhaut dienenden Geschirre* Çat. Br. 3,6,3,10. 8,2,17. 28. TS. 6,3,8,2. Kâtj. Çr. 6,5,7. 26. — Vgl.

अवपाक, प्रवप.

2. वपा (von 2. वप्) f. 1) *Aufwurf —, Haufen der Ameisen:* वल्मीकवपा TS. 5,1,2,5. TBr. 1,1,3,4. Âçv. Çr. 3,10,23. Çat. Br. 6,3,3,5. Kauç. 8. — 2) *Höhlung, Loch* AK. 1,2,1,2. H. 1364. H. an. Med. Halâj. 3,2. Vgl. महावप.

वपाटिका f. = अ° Suçr. 2,121,8.

वपावन्त् (von 1. वपा) adj. *mit einer Netzhaut versehen, — umwickelt* u. s. w.: वपावन्तं नाग्निना तपन्तः RV. 5,43,7. VS. 20,37. Çat. Br. 13,7,1, 9. Kâtj. Çr. 21,2,5. Schwerlich richtig in RV. 6,1,3; vgl. ebend. 2,5.

वपिल (von 2. वप्) m. *Vater* Uṇâdik. im ÇKDr.

वपु f. N. pr. einer Apsaras MBh. 1,4819. Mârk. P. 1,42. fgg. Vgl. वपुस्. — शूरास्थिवपु MBh. 7,661 fehlerhaft für शूरास्थिचय, wie die ed. Bomb. liest.

वपुन 1) m. *Gottheit* Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. *knowledge* Wilson. — Fehlerhaft für वयुन.

वपुर्धर (वपुस् + धर) adj. 1) *Schönheit besitzend, mit Schönheit ausgestattet* MBh. 13,2823. — 2) *verkörpert, leibhaftig:* तपस् Bhâg. P. 3,18,29.

वपुष (von वपुस्) 1) adj. (f. ई) = वपुस्. अश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता RV. 10,75,7. — 2) f. आ = कवुषा (?) Bhâvapr. im ÇKDr. — 3) n. वपुषाय so v. a. वपुषे *zum Wunder, wunderbar zu schauen:* (होतारम्) रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतम् RV. 3,2,15.

वपुष्टम (superl. von वपुस्) 1) adj. *überaus wundersam, — schön* AV. 5,5,6. — 2) f. आ a) *Hibiscus mutabilis Lin.* Gaṭâdh. im ÇKDr. — b) N. pr. der Gattin Ǵanameǵaja's MBh. 1,1809. fgg. 3838. Hariv. 11236. 11245.

वपुष्टर s. u. वपुस् 1).

वपुष्मत m. N. pr. eines Fürsten von Kuṇḍina Mârk. P. S. 656, Z. 6. aus metrischen Rücksichten वपुष्मतम् st. वपुष्मन्तम्.

वपुष्मन्त् (von वपुस्) 1) adj. a) *von schöner Gestalt, schön;* von Personen M. 7,64. MBh. 1,1149. 7695. 3,16755. 13,3862. R. 5,2,5. 7,41, 19. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3. 69,15. Mârk. P. 60,1. 98,5. 132,47. von Leblosem: मञ्चवाट Hariv. 4533. छत्र 10933. गिरि 12392. विमान R. 2, 64,18. — b) *verkörpert, leibhaftig:* पुण्यसंचय Kir. 2,56. — 2) *das Wort* वपुस् *enthaltend* Ait. Br. 5,6. — 2) m. N. pr. a) eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Hariv. 11542. — b) eines Sohnes des Prijavrata VP. 162. 198. Mârk. P. 53,18. 26. — c) eines Fürsten von Kuṇḍina Mârk. P. 134,53. 57. 135,9. — 3) f. वपुष्मती N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2629.

वपुष्य् (von वपुस्), °ष्यति etwa *sich wundern, bewundern:* देवासो अग्निं जनिमन्वपुष्यन् RV. 3,1,4. समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा 8,51,9.

वपुष्य (wie eben) adj. *wundersam, wunderbar schön:* सुधृष्टमे वपुष्ये न रोदसी RV. 1,160,2. (अग्निः) रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा 4,1,8. 12. 5,1, 9. oxyt.: वपुर्वपुष्या सचतामियं गीः 1,183,2.

वपुस् Uṇâdis. 2,118. 1) adj. *wundersam,* bes. *wunderbar schön:* परि वामश्वा वपुषः पतंगा वयो वहन्तु RV. 1,118,5. स मे वपुश्छदयदश्विनोर्यो रथो विरुक्मान् 6,59,5. तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो वपुष्टरम् *allerwunderbarst* 10,32,3. 9,77,1. देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् 5,62,1. स्वर्यद्भि मा वपुर्दृशये निनीयात् 7,88,2. Agni 8,19,11. 58,13. इदं वपुर्निवचनं जनासः *das ist eine erstaunliche Rede* 5,47,5. compar. वपुष्टर AV. Prât. 2,83, Schol. इन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः RV. 9,77,1. 10,32,3. वपुष्टर betont 2,3,7 vielleicht nur aus Anlass des parallel stehenden विदुष्टर. superl. वपुष्टम s. bes. — 2) n. a) *Wunder, Wundererscheinung; ungewöhnlich schöne Erscheinung* oder *Gestalt, species* Naigh. 3,7. पुरूपतः सर्वयसा तदिद्वपुः RV. 1,144,3. श्रिये सुदृशो वपुरस्य सर्गाः 4,23,6. 44,2. 6,44,8. वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु 66,1. 8,46,28. दर्शत 7,66,14. 10,140,4. कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या 1,62,8. 3,1,8. 18,5. 39,3. 55, 9. नाना चक्राते यम्याइ वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत् 11. पुरुरूपा 14. 57,3. 4,7,9. AV. 5,1,2. 8. 6,72,1. dat. वपुषे *zum Wunder, wunderbar zu schauen* (wie θαῦμα ἰδέσθαι bei Homer): चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते RV. 1,64,4. 119,5. 4,23,9. प्र वां वयो वपुषे ऽनु पप्तन् 6,63,6. 5,33,9. 73,3. बळित्था तद्वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः 1,141,1. स्वर्णं चित्रं वपुषे विभावम् 148,1. — b) *schönes Aussehen, Schönheit;* = शस्ताकृति H. an. 2,591. Med. s. 35. = भव्याकृति Viçva bei Uǵǵval. शिवमायुर्वपुरनामयम् Çâṅkh. Gṛhj. 6,6. Hierher etwa auch VS. 30,14. बिभर्षि परमं वपुः MBh. 3,2583. लेभे स्वकं वपुः 2997. वपुषा युक्तः 13,2819. वपुषाप्सरोपमा 2816. वपुःपुत्रधनाढ्या Hariv. 7881. MBh. 3,2146. 3059. दिव्य° R. 1, 1,54. Spr. 703. Kathâs. 4,42. Suçr. 1,378,17. Çâk. 16. Weber, Râmat. Up. 286. (रथम्) ज्वाज्वल्यमानं वपुषा R. 6,19,49. आत्ममाना तथात्यर्थं दधार परमं वपुः (सभा) MBh. 2,81. चान्द्रमस 12,9083. — c) *Aussehen, Gestalt:* (रासभः) दर्शयन्दारुणं वपुः Spr. 5254. वृद्धवपुर्धारिन् LA. (III) 86, 12. कृत्वा श्येनवपुः Kathâs. 7,89. लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ Megh. 78. अतिवृष्टेन लोकस्य विरूपमभूद्वपुः Hariv. 3907. परिघः क्षतजतुल्यवपुः Varâh. Bṛh. S. 30,25. वपुषान्वितः *eine best. Gestalt habend, deutlich sichtbar* 26. — d) *Natur, Wesen:* अष्टानां लोकपालानां वपुर्धारयते नृपः M. 5,96. तत्रप्ररूढवपुर्जन्तुरूपो नाम प्रजायते 10,9. 12,26. — e) *Leib, Körper* AK. 2, 6,2,21. H. 564. H. an. Med. Halâj. 2,355. 373. Viçva a. a. O. दीप्यमानः स्ववपुषा M. 2,232. मानुष MBh. 1,5974. 3,2798. मलसमाचित 2701. Suçr. 2,158,10. Çâk. 17. 38. Ragh. 2,18. 47. कुब्जीभूत Spr. 4965. वपुर्जलोद्गमः स्वेदः Sâh. D. 63,5. वपुषि तनुता Dhûrtas. 72,10. मृणालगौर° Varâh. Bṛh. S. 58,36. 64,1. स्त्री° Bṛh. 18,2. 24,1. धूसरश्यामवपुषी adj. f. Kathâs. 2,51. einer Wolke Megh. 15. 33. 61. सिन्धोः Spr. 419. — f) *Wasser* Naigh. 1,12. — g) N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's VP. (II) 1,109. Mârk. P. 50,21. 27. — Vgl. पूर्ण°, मेघ°.

वपुस्तात् adv. von वपुस् AV. Prât. 2,83, Schol.

वपोदर (1. वपा + उदर) adj. *fettleibig* (Sâj.): Indra RV. 8,17,8.

1. वप्तर् und वप्तर् (von 1. वप्) nom. ag. *Scheerer* RV. 10,142,4. AV. 8,2,17. TBr. 1,5,6,3. Âçv. Gṛhj. 1,17,16. Pâr. Gṛhj. 2,1.

2. वप्तर् (von 2. वप्) nom. ag. 1) *Säemann* Med. t. 53. M. 3,142. 9, 54. MBh. 13,4314. Mudrâr. 2,3. — 2) *Befruchter, Erzeuger, Vater* Trik. 2,6,7. H. 556. Med. Halâj. 2,349. Vgl. प्रख्यातवप्तृक. — 3) m. = कवि Gaṭâdh. im ÇKDr.

वप्तव्य (wie eben) adj. *zu säen:* यथा बीजं न वप्तव्यं पुंसा परपरिग्रहे M. 9,42. तत्र विद्या न वप्तव्या 2,112. n. impers.: आयुष्कामेन वप्तव्यं न जातु परयोषिति 9,41.

बप्प und बप्पक m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 34. fg. Journ. of the Am. Or. S. 6,318.

वप्पटदेवी N. pr. einer Fürstin Rāǵa-Tar. 5,289. वप्पटदेवी 281.

वप्पिय m. N. pr. eines Fürsten Rāǵa-Tar. 4,400. 402. 688. °क 393.

वप्पीह m. *Cuculus melanoleucus* H. 1329.

वप्यटदेवी s. वप्पटदेवी.

वप्यनील N. pr. eines Landes Rāǵa-Tar. 8,1994.

वॅप्र (von 2. वप्) Uṇādis. 2,27. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. n. Siddh. K. 249, *b*, 7. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) m. n. *Aufwurf von Erde, ein aufgeschütteter Erdwall* (zur Vertheidigung von Städten und Häusern); = चय AK. 2,2,2. Trik. 3,3,369. H. 980. an. 2,452. Med. r. 83. = प्राकार H. an. Halâj. 2,133. Dharaṇi und Rantideva bei Uǵǵval. Vaiǵ. bei Mallin. zu Kir. 7,11. Saǵǵana bei Mallin. zu Çiç. 3,37. °क्रीडा *die im Aufwerfen von Erde bestehende Belustigung* (eines Elephanten) Megh. 2. Mallin. zu Kir. 5,42. °क्रिया dass. Ragh. 5,44. शृङ्गाग्रलग्नाम्बुदवप्रपङ्क (चित्रकूट) 13,47. वप्राभिघात (so der Comm.) Kir. 5,42. वप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् Bhâg. P. 10,36,2. प्राकारवप्रसंबाधा (पुरी) MBh. 3,16056. 4,296. 7,6904. 8,2035. 9,1795 (क्षीणावृत्ति: st. क्षीणावप्राम् ed. Bomb.). 13,16-1. R. 5,9,15. 6,12,22. 37,13. Ragh. 1,30. Kumâras. 6,38. Çiç. 3,37. शिलावप्र Rāǵa-Tar. 6,307. सोत्सेधवप्रप्राकारं (so ist st. सोत्सेधवप्रकारं च zu lesen) Mârk. P. 49,43. प्रोत्तुङ्गवप्रप्राकारमालिनी (पुरी) 66,9. H. 62. उदपान° Varâh. Bṛh. S. 5,77. MBh. 12, 3828. — 2) m. n. *ein hohes Flussufer*, = रोधस्, तट Trik. H. an. Med. Dharaṇi und Rantideva bei Uǵǵval. Vaiǵ. bei Mallin. zu Kir. 7,11. MBh. 1,5810. 6456. 13,1957. नदी° R. 2,53,33. Kir. 7,11. — 3) m. n. *Abhang eines Berges*, = सानु Halâj. 5,24. Saǵǵana bei Mallin. zu Çiç. 3,37. Kir. 5,36. 6,8. सुमेरुवप्र: Çiç. 3,37. — 4) *Graben:* धरा पयःपरिपूर्णवप्रा Varâh. Bṛh. S. 19,16. — 5) *Kugelzone* Golâdhj. 3,59. °फल 61. °क्षेत्रफल dass. 60. — 6) m. n. *Feld (das besäet wird)*, = केदार, क्षेत्र AK. 2,9,11. Trik. 3,2,9. 3,369. H. 965. H. an. Med. Halâj. 2,419. Dharaṇi, Rantideva und Vaiǵ. a. a. O. — 7) m. n. *Staub* Trik. 3,2,9. 3,369. H. an. Med. — 8) n. *Blei* AK. 2,9,106. H. 1041; vgl. वध्र. — 9) m. n. = निष्कुट, वनज n., वाटिका (?) und पाटीर Gaṭâdh. im ÇKDr. — 10) m. *Vater* (vgl. 2. वप्तर्) Trik. 3,3,369. H. an. Med. Dharaṇi, Rantideva und Vaiǵ. a. a. O. — 11) m. = प्रजापति Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. — 12) m. N. pr. *a)* eines Vjâsa VP. 273. — *b)* eines Sohnes des 14ten Manu Hariv. 495. बुध्न die neuere Ausg. — 13) f. आ *a)* वप्रावत् adv. Kâtj. Çr. 18,5,4. वप्रा = अग्निक्षेत्रकेदार Karka, = क्षेत्रवपन Mahîdh. zu VS. 18,30. *wie bei einem Beete* d. h. *wie beim Ebnen, Herrichten des Platzes für das Feuer.* — *b) Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. — *c)* N. pr. der Mutter Nimi's, des 21ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî, H. 40. — Vgl. रोधोवप्र.

वप्रक m. = वप्र 5) Golâdhj. 3,59.

वॅप्रि = क्षेत्र nach Nagnavṛtti bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,66. = दुर्गति, समुद्र Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वॅप्सस् nach Sâj. so v. a. वपुस्, रूप, was ganz unwahrscheinlich ist. उत स्या वां रुशतो वप्ससो गीस्त्रिबर्हिषि सदसि पिन्वते नॄन् ṚV. 1,181,8.

वभ्र् (v. l. वभ्र्), वॅभ्रति (गतौ) Dhâtup. 15,49. अवभ्रीत् P. 7,2,2, Schol.

वम्, वॅमति (उद्गिरणे) Dhâtup. 20,19. वॅमिति ved. P. 7,2,34. अवमीत् 5. ववाम, ववमतुस्, ववमिथ 6,4,126. Vop. 8,52.125. वेमुस्, वेमिथ Bhâgavṛtti in Siddh. K. zu P. 6,4,126. Vop. 8,52.125. अवामि 11,7.24,6. वमित्वा und वान्त्वा, वमित und वान्त 26,103. fg. *erbrechen, ausspeien; Etwas von sich geben, entlassen:* एतद्वचो पणयो वमन्नित् *sie werden das Wort ausspeien* d. h. *von sich thun wollen, bereuen* ṚV. 10,108,8. चतुःशृङ्गो ऽवमीद्गौर एतत् 4,58,2. TS. 2,3,2,6. Çat. Br. 5,4,2,9. Suçr. 1, 38,21. 101,16. वमन्तो रुधिरं बहु MBh. 1,1170. Hariv. 15919 (अव° mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,28,26. 3,8,9. Bhâg. P. 9,10,23. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,30 (vgl. Mârk. P. 43,4). वेमुश्च केचिद्रुधिरम् Mârk. P. 82,57. ववमू रक्तम् Bhaṭṭ. 14,30. वमित्वा M. 4,121. वमन्तो पावकं मुखात् R. 3,29,6. मुखैः Spr. 4501. रक्तं चावमिषुर्मुखैः Bhaṭṭ. 15,62. मुखतः वमन्त्यो वह्निमुल्बणम् Bhâg. P. 3,17,9. रक्तं व्रणैर्वमन् Kathâs. 74, 86. Bhaṭṭ. 9,10. अमर्षजं क्रोधविषं वमन्तौ MBh. 3,15658. अक्ष्णो वमन्तो ऽग्निं रुषानिलैः Bhâg. P. 4,10,26. नापीडिता वमन्त्युच्चैरन्तःसारम् — दुष्टव्रणा इव प्रायो भवन्ति नियोगिनः Spr. 1535. किमाग्नेयो ग्रावा निकृत इव तेजांसि वमति Uttarar. 109,12 (148,8). Spr. 3062. वमति वसुधा भस्मनिकरम् Varâh. Bṛh. S. 27,2. वक्रेतरायैरलकैः — वारिलवान्वमन्ति Ragh. 16,66. हृदयनिहितं भावाकूतं वमद्भिरिवेक्षणैः Spr. 236. मुक्तकैर्भणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम् 247. partic. वान्त P. 7,2,16, Sch. 1) *ausgebrochen, ausgespien* AK. 3,4,58. Ait. Br. 3,46. M. 4,132. यथा स्वं वान्तमश्नाति श्वा वै नित्यमभूतये। एवं ते वान्तमश्नन्ति स्ववीर्यस्योपसेवनात्॥ MBh. 5,1608. Mârk. P. 43,4 (vgl. Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,30). वान्ताशिन् M. 3, 109. Bhâg. P. 7,15,36. वान्ते *wenn man vomirt hat* Mârk. P. 34,70.82. वान्त *was man von sich gegeben —, entlassen hat:* °वृष्टि (मेघ) Megh. 20. धारानिपातैः सह किं नु वान्तश्चन्द्रो ऽयम् Spr. 1603. °माल्य so v. a. *herausgefallen* Ragh. 7,6. — 2) *der vomirt hat* M. 5,144. Suçr. 2,138, 19. — Vgl. दुर्वान्त.

— caus. वामयति und वमयति (mit Präpp. nur वमयति) Dhâtup. 19, 68. *ausspeien machen, Erbrechen bewirken:* वा° Suçr. 1,42,13. 101,16. 158,11. 2,174,14. Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,27. 307,*a*,29.

— अभि *bespeien, anspeien* TS. 6,3,2,4. Çat. Br. 3,8,2,11.

— आ, आवमत् Hariv. 15919 fehlerhaft für अवमत्, wie die neuere Ausg. liest.

— उद् *ausbrechen, ausspeien; Etwas von sich geben, entlassen* TS. 2,3,2,6. वक्त्राच्छोणितमुद्वमन् MBh. 3,15729. R. 3,29,3. कर्कोटविषं तीक्ष्णं मुखात्सततमुद्वमन् MBh. 3,2838. बाष्पम्, ऊष्माणम् P. 3,1,16, Sch. क्रोधं स्फुलिङ्गमिव दृष्टिभिरुद्वमन्तम् Prab. 75,6. सा तत्संश्रुतौ वरौ। उद्वामेन्द्रसिक्ता भूर्बिलमग्नाविवोरगौ Ragh. 12,5. (अनलः) उद्ववाम च गङ्गायां तं गर्भम् Kathâs. 20,86. उद्वमन्प्रवपंश्चैव (*aus dem Köcher herausnehmend* nach Nilak.) बाणान् MBh. 3,1931. तदस्ति न किमप्यहो यदिह नोद्वमन्ति स्त्रियः *von sich geben* so v. a. *anstellen, vollbringen* Kathâs. 47,120. उद्वान्त *ausgespien, erbrochen* AK. 3,2,46. H. 1495. an. 3,253. Med. t. 101. उद्वमित dass. ebend. — Vgl. उद्वमन, उद्वान्त fg.

— निस् *ausspeien, auswerfen:* शोणितम् MBh. 7,3376. रोषजं वायुम् Hariv. 5661. सा (वडवा) तन्निरवमच्छुक्रं नासिकायां विवस्वतः 600.

— विनिस् dass.: रुधिरं स्रोतोभिः स विनिर्वमन् R. 6,76,42.

— परा *wegspeien* Kâṭh. 11,1.

वमॅ (von वम्) m. = वाम gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1,140.

वमथु (wie eben) m. 1) *Erbrechen* AK. 2,6,2,6. H. 469. an. 3,321.

Med. th. 23. Suçr. 1,21,16. 155,14. 245,15. 2,470,17. — 2) *das vom Elephanten aus dem Rüssel gespritzte Wasser* AK. 2,8,2,5. H. 1223. H. an. Med. Halâj. 2,61. — 3) = काश (कास *Husten?*) H. an.

वमन (wie eben) 1) n. a) *Erbrechen* H. 469. an. 3,410. Med. n. 121. Suçr. 1,38,20. 75,20. 99,17. °द्रव्य *Brechmittel* 135,19. 152,5. 158,7. 160,9. — LA. (III) 13,19. Verz. d. Oxf. H. 307,a,27. *das Vonsichgeben, Ausstossen, Entlassen:* स्वर्गाभिस्यन्दवमनं कृत्वेव Ragh. 15,29 = Kumâras. 6,37. — b) *Vomitiv* Suçr. 1,128,17. 160,12. Çârṅg. Saṁh. 1,4,7. Kathâs. 64,17. 108,79. — c) = अर्दन H. an. Med. — d) = आहुति Viçva im ÇKDr. — 2) m. a) *Hanf* Râǵan. im ÇKDr. — b) pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,35. — 3) f. ई *Blutegel* Râǵan. im ÇKDr.

वमनीय (wie eben) 1) adj. *auszubrechen, auszuspeien.* — 2) f. आ *Fliege* Râǵan. im ÇKDr.

वमि (wie eben) 1) f. (auch वमी) *Erbrechen, Uebelkeit* AK. 2,6,2,6. H. 469. Med. m. 29. Suçr. 1,119,16. 137,14. 201,17. 263,21. 2,279,2.12. 425,9.12. 491,13.15.19. 493,6. Vgl. अन्तर्वमि (wohl *Aufstossen*). — 2) m. a) *Feuer* H. ç. 167. Med. — b) = धूर्त Çabdar. im ÇKDr.

वमितव्य (wie eben) adj. *auszubrechen, auszuspeien* Kull. zu M. 11,160.

वमिन् (wie eben) adj. *auszubrechen —, auszuspeien pflegend* P. 3,2,157.

वम्भ m. = वंश Çabdar. im ÇKDr.

वम्माग N. pr. einer Gegend: °देश Verz. d. Oxf. H. 352,b,11.

वम्र 1) m. *Ameise:* यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति RV. 8,91,21. 1,51,9. Häufiger वम्री f. Naigh. 3,29. Nir. 3,20. H. 1208. Halâj. 3,23. वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो अदानम् RV. 4,19,9. VS. 37,4. TBr. 1,2,1,3. Çat. Br. 14,1,1,8. 14. °कूट n. *Ameisenhaufen* H. 971. Halâj. 3,22. — 2) m. nach dem Comm. N. pr. eines Mannes RV. 1,51,9. 112,15. 10,99,5. ein Liedverfasser Vamra Vaikhânasa wird zu 10,99 angenommen. — Vermuthlich etymologisch verwandt mit वल्मीक, μύρμηξ und *formica*.

वम्रक m. *Ameischen:* वम्रकः पड्भिरुप सर्पदिन्द्रम् RV. 10,99,12. ein ह्रस्वनामन् Naigh. 3,2.

वय्, वयते (गतौ) Dhâtup. 14,2. — वयति s. u. वा.

वय (von वा, वयति) nom. ag. f. वयी *Weberin:* उषासानक्ता वय्येव रण्विते । तन्तुं ततं संवयन्ती RV. 2,3,6. — Vgl. चतुर्वय.

वयन n. nom. act. von वा, वयति Vop. 26,171.

वयत् partic. praes. von वा, वयति; angeblich m. N. pr. eines Mannes Sâj. zu RV. 7,33,2. — Vgl. वायत.

वयम् *wir* s. u. अस्म.

1. वयस् n. *Geflügel, Vogel,* namentlich *kleinere Vögel* AK. 3,4,30,232. H. 1316. an. 2,590. Med. s. 34. Halâj. 2,82. AV. 3,21,2. 6,59,1. अर्पप्रहसतिं वयः 7,96,1. वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः 8,7,24. 11,1,2. हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि 24. 10,8. 12,1,5. TS. 3,1,1,1. पतत्प्रवयांसि वयांसि 5,2,5,1. 5,3,2. वयो वा अग्निः 7,6,1. वयं एवैनं कृत्वा सुवर्गं लोकं गमयति TBr. 2,2,6,4. 3,3,2. निर्ऋतेर्वा एतन्मुखं यद्वयांसि यच्छकुनयः Ait. Br. 2,15. 3,31. Çat. Br. 1,5,1,5. 3,3,4,15. 4,1,2,26. श्येनो ऽपाष्ठिहा वयसां राजा 12,7,1,6. तार्क्ष्यो वैपश्यतो राजा तस्य वयांसि विशः 13,4,3,13. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. 10,9. Kauç. 29. 123. Muṇḍ. Up. 2,1,7. Adbh. Br. 6,6. hierher zieht Mahîdh. auch बृहद्वयः VS. 23,11. fg. वयांसि M. 3,261. 6,51. 10,89. 11,240. MBh. 6,111. 13,1020. 14,1169. 2542. Hariv. 4940. R. 5,15,56. Kâm. Nîtis. 7,15. fg. Ragh. 2,9. Spr. 2419. 2784. Bhâg. P. 1,9,44. 2,1,36. Mârk. P. 26,32. 28,20. Pańkat. 1,14,2. im comp. M. 11,70. Ragh. 9,53. — Vgl. वि.

2. वयस् (von वी; vgl. वीति) n. *Mahl, Essen, Speise* Naigh. 2,7. वयं ते वय इन्द्र प्र भरामहे RV. 2,20,1. वयो वृकायारये 6,13,5. 1,127,8. गमन्न इन्द्रः सख्या वयश्च 178,2. कस्ते भागो किं वयः 6,22,4. 8,4,9. 33,7. स्वादोरभक्ति वयसः 48,1. ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति AV. 4,27,5.

3. वयस् n. 1) *Kraft, körperliche und geistige, Gesundheit;* besonders häufig mit dem adj. बृहत् verbunden; mit धा *verleihen,* mit dat. oder loc. der Person: गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः RV. 4,17,18. 5,8,5. 6,40,1. अथा ते यज्ञस्तन्वे3 वयो धात् 4. अविप्रे चिद्वयो दधत् 45,2. 7,58,3. बृहद्वयः शशमानेषु धेहि 3,18,4. मरुतो बृहद्वयो दधिरे 5,55,1. 7,36,9. 9,94,4. 10,93,4. VS. 28,14. mit कर्: वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभिः RV. 6,44,9. वयः कृण्वानस्तन्वे3 स्वायै 5,4,6. — उन्मा ममन्द त्वक्षीयसा वयसा 2,33,6. वयांसि जिन्व बृहतश्च *die Kräfte* 3,3,7. 7,69,4. 8,76,2. नि शत्रोः शुष्मं नि वयस्तिरः 9,19,7. अग्निरमृतो अभवद्वयोभिः 10,45,8. सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि 120,5. चित्र 7,43,4. 9,68,10. उत्तम 2,1,12. 23,10. युवद्वयः 1,111,1. 10,39,8. परमापद्य यद्वयः AV. 11,1,30. *Macht:* स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् RV. 10,68,12. पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तम् 2,10,4. VS. 18,51 (= धूमेन Mahîdh.). बृहद्वयो हि भानवे ऽर्चा देवायाग्नये 5,16,1. 43,15. VS. 7,22. युगे युगे वयसा चेकितानः RV. 6,36,5. — 2) *Zeit der Kraft, jugendliches Alter; Altersstufe* überh., *Lebensjahre* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,188. AK. 3,4,30,232. H. 565. an. 2,590. Med. s. 34. यावन्तावग्रे प्रथमं समेयथुस्तद्वां वयो यमराज्ये समानम् AV. 12,3,1. अन्वारभेथां वयं उत्तरावत् 47. पष्ठौहीमन्तर्वतीं दद्यात्सा हि सर्वाणि वयांसि यद्वत्सं बिभर्ति तेन वत्सा यद्वत्सतरी तेन वयो यत्परं वय आप्त तेन स्थविरा *er gebe eine trächtige Kalbin, denn sie repräsentirt sämmtliche Altersstufen: indem sie ein Kalb trägt, das Kalb; sofern sie eine Kalbin ist, die Jugend; weil sie selbst auf einer höheren Altersstufe steht, kann sie für alt gelten,* Kâṭh. 11,2; vgl. TBr. 3,12,5,9, wozu aus Âpastamba angeführt wird: एकहायनप्रभृत्या पञ्चहायनेभ्यो वयांसि d. h. *von einem Jahre an bis zu fünfen vertheilen sich die Altersstufen* (der Thiere). सर्वाणि वयांसि दद्यात् *Thiere jeden Alters* Kâṭh. a. a. O. यदन्येषां वयसां वीर्यं तद्धेन्वनडुह्योर्दधाम Çat. Br. 3,1,2,21. Hieran scheint sich die Redensart वयांसि प्रब्रूहि 3,3,3. Kâtj. Çr. 7,8,13 zu schliessen, wo das Wort, wie man aus der Antwort entnehmen kann, allgemein gebraucht wird für *Stufe, Art* überhaupt: *sage an die Sorten* (welche du als Kaufpreis geben willst). वयसे वयसे नमः *jedem Alter* Pâr. Gṛhj. 1,2. गच्छति वयसः संस्थाम् so v. a. सर्वमायुरेति Çat. Br. 11,2,7,28. 12,9,1,11. त्रेधा विहितं पुरुषस्य वयः 8. — बालमप्राप्तवयसमज्ञातव्यञ्जनाकृतिम् *unerwachsen* MBh. 1,6136. वयसि प्राप्ते 3,2082. ऊढवयस् Bhâg. P. 4,9,66. रूपेण संपन्ना वयसा च MBh. 3,10026. Spr. 703. 2724. Bhâg. P. 3,21,27. 9,3,11. fg. वयसि स्थितः 11,28,41. अतिक्रान्तेन वयसा MBh. 3,16622. अतिक्रान्त° adj. R. 2,58,20. वयो गतम् Râǵa-Tar. 3,373. गत° adj. Spr. 815. वयोगते *wenn die Jugend dahin ist* 1610. गत्वर 1974. वयसि निर्गते R. Gorr. 2,20,30. विगतं वयः Bhâg. P. 1,13,20. गलित° adj. Ragh. 3,70. वयसः पतमानस्य (प्लवमानस्य v. l.) Spr. 2723. वयसः स्थापनं (vgl. वयःस्थापन) कुर्यात् *Erhaltung der Jugend* Suçr. 1,167,8. न खलु वयस्तेजसो

हेतुः *die Lebensjahre* Spr. 3251. नासां वयसि निश्चयः (संस्थितिः) 1561. 1647. तुल्यशीलवयोयुक्ता MBh. 3, 2677. 2801. तुल्य° Pâr. Gṛhj. 3, 8. समान° Bhâg. P. 3, 15, 27. तद्वयस् *in demselben Alter stehend* Kâtj. Çr. 25, 9, 1. वयस्त्रिविधं बालं मध्यं वृद्धम् Suçr. 1, 129, 1. वयांसि तेषां स्तनपानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः । अतीव वृद्धा इति Varâh. Bṛh. S. 96, 17. M. 4, 18. Spr. 4993. 4997. Çânt. 1, 23. Suçr. 1, 124, 9. Kâm. Nîtis. 4, 6. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते Kumâras. 5, 16. Varâh. Bṛh. 26 (24), 2. व्यतीतपञ्चवर्षो ऽपि वयसा बत बुद्धिमान् Kathâs. 14, 45. द्वादशाब्दश्च च वयसा 124, 204. वयःशतम् Bhâg. P. 3, 11, 32. दशार्ध° *fünf Jahre alt* 15, 30. वयो वर्षशतं येन प्राप्तमस्त्येदमष्टमम् Kathâs. 41, 33. दृष्टव्यानि च तीर्थानि यावन्मे क्षमते वयः 93, 70. Bhâg. P. 5, 18, 13. 6, 7, 33. 9, 30. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः 1, 6, 3. गतं च सकलं वयः Spr. 3604. निमेषमात्रमपि हि वयो गच्छन्न तिष्ठति 4470. तस्य यात्रास्वेव वयो ययौ Râǵa-Tar. 4, 131. तस्य °शिमिकादिषु । स्थानेषु क्रोष्टुमगयारसिकस्य वयो ऽगमत् 6, 183. किं देव समतिक्रान्तमागच्छति पुनर्वयः Kathâs. 40, 54. मन्दप्रज्ञस्य वयो मन्दायुषश्च वै । निद्रया क्रियते नक्तं दिवा च व्यर्थकर्मभिः Bhâg. P. 1, 16, 10. 2, 1, 3. परिवर्तितेन वयसा रंहसा 5, 14, 29. ज्ञानवृद्धो वयोबालः R. 2, 45, 8 (43, 10 Gorr.). वयोऽनुरूपम् Kâm. Nîtis. 7, 35. वयसो ऽन्ते Hariv. 1748. यावद्धि ब्रह्मणो वयः Pańkar. 2, 3, 32. fg. वयोऽवस्था Suçr. 1, 129, 10. Spr. 3951. Bhâg. P. 5, 24, 13. अतिगम्भीरवयसः कालस्य 24. वृद्धा ज्ञानेन वयसौजसा R. 2, 45, 13. विद्यावयोवृद्ध Hit. 19, 3. वयसाधिकः Bhâg. P. 7, 2, 37. वयसान्वितः *bejahrt* MBh. 1, 984. वयोरूपसमन्वित *bei Jahren seiend* M. 8, 182. ताते तु वयसातीते *alt geworden* R. 2, 53, 12 (14 Gorr.). प्रभूत° *bejahrt* Spr. 1864. परिणतो बुद्ध्या वयसा च *reif an Jahren* R. 2, 43, 15. परिणत° adj. Pańkat. 197, 18. परिणतं (impers.) वयसा Kathâs. 103, 223. वयसः परिणामे Spr. 4966. वयःपरिणतिं प्राप्य Mârk. P. 135, 7. नव *Jugend* Ragh. 2, 47. 6, 79. Spr. 1039. Bhâg. P. 3, 20, 32. 4, 27, 5. 8, 9, 2 (यवः bei Burn. Druckfehler). कल्प्य Vikr. 42. प्रथम P. 4, 1, 20. R. 1, 45, 40. Suçr. 2, 27, 16. Varâh. Bṛh. 8, 1. Pańkat. 33, 16. पूर्व Lâṭj. 9, 4, 5. MBh. 3, 1304. Spr. 347, v. l. 4569. आद्य 347. Bhâg. P. 1, 6, 2. कैशोर 3, 28, 17. अल्प Subhâsh. 215. द्वितीय P. 4, 1, 20, Vârtt., Schol. Halâj. 2, 329. मध्यम Çat. Br. 11, 4, 1, 7. Kathâs. 104, 20. मध्य MBh. 3, 1304. Varâh. Bṛh. 8, 1. प्रगल्भ Kumâras. 1, 52. उत्तर Kâtj. Çr. 4, 1, 18. उत्तम Çat. Br. 11, 4, 1, 5. fgg. जघन्य MBh. 3, 1304. पश्चिम 5, 3062. Ragh. 19, 1. Hit. 28, 2. अचरम P. 4, 1, 20, Vârtt. अन्त्य Varâh. Bṛh. 8, 1. अन्त Ragh. 9, 79. 18, 25. — Vgl. अभि°, उद्वयस्, नीचा°, पूर्व°, प्र°, बृहद्वयस्, मध्य°, वृद्ध°, स°.

1. वयसँ m. = 1. वयस् *Vogel* TS. 3, 1, 11, 3. वायस ṚV.

2. वयस n. am Ende eines comp. = 3. वयस्; s. उत्तर°, पूर्व°, मध्यम°.

वयसिन् am Ende eines adj. comp. = 3. वयस्; s. पूर्व°, प्रथम°.

वयस्क am Ende eines adj. comp. = 3. वयस्. अभिनववयस्का *in der ersten Jugend stehend* Hit. 50, 1. Vgl. मध्यम°.

वयस्कृत् adj. *Kraft gebend, gesund —, jung erhaltend* ṚV. 1, 31, 10. 9, 69, 8. 10, 7, 7. VS. 3, 18. 15, 5.

वयस्य (von 3. वयस्) 1) adj. *in gleichem Alter stehend;* m. *Altersgenosse, Freund* P. 4, 4, 91. AK. 2, 8, 1, 12. Trik. 2, 8, 25. H. 730. Halâj. 2, 273. MBh. 12, 5163. Hariv. 15639. R. 1, 12, 22. 2, 69, 3 (71, 3 Gorr.). 103, 47. 3, 20, 2. 72, 28. 75, 64. 69. Kathâs. 32, 47. 35, 7. 36, 4. 59, 93. Bhâg. P. 4, 13, 41. 6, 14, 56. 7, 5, 54. 9, 10, 45. Mârk. P. 23, 22. als Anrede Hit. 27, 5. im Drama Sâh. D. 171, 12. 15. 19. Çâk. 22, 15. 81, 8. Vikr. 11, 15. वयस्या f. *Altersgenossin, Freundin, vertraute Dienerin* AK. 2, 6, 1, 12. H. 529. Halâj. 2, 332. R. 3, 58, 38. Mṛkkh. 43, 16. Kathâs. 10, 145. 18, 20. 367. 28, 98. 37, 101. 45, 243. 104, 49. Sâh. D. 60, 1. Verz. d. Oxf. H. 129, *b*, No. 234. am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 12, 62. — 2) f. आ (sc. इष्टका) Bez. *von 19 Backsteinen beim Bau eines Feueraltars, welche mit Sprüchen, die das Wort* वयस् *enthalten* (vgl. VS. 14, 9), *gelegt werden*, P. 6, 4, 127. TS. 5, 3, 1, 3. Kâṭh. 20, 10. Çat. Br. 10, 4, 3, 15. Kâtj. Çr. 17, 8, 22.

वयस्यक m. *Altersgenosse, Freund* Kathâs. 10, 197. 47, 24. 64. 50, 201. 59, 92. 65, 86. 119, 47. 175.

वयस्यत्व n. nom. abstr. von वयस्य *Altersgenosse, Freund* MBh. 4, 2202. R. 4, 4, 18.

वयस्यभाव m. dass. R. 4, 6, 15.

वयस्वत् (von 3. वयस्) adj. *mit Kraft begabt, kräftig* ṚV. 2, 24, 15. 5, 54, 13. VS. 3, 18. Indra 7, 32.

वयःसंधि m. *Pubertät* Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 26; vgl. u. रोमाली.

वयःसम adj. *altersgleich* R. 7, 4, 29. 31.

वयःस्थ 1) adj. (f. आ) *erwachsen, ausgewachsen;* = तरुण, युवन् AK. 2, 6, 1, 42. Trik. 3, 3, 198. H. 339. Med. th. 22. fg. = मध्यवयस् H. an. 3, 320. पित्रा पुत्रो वयःस्थो ऽपि सततं वाच्य एव तु MBh. 1, 1728. 4, 2339. Suçr. 1, 136, 17. अश्व MBh. 2, 1885. गो R. 1, 53, 20 (54, 22 Gorr.). *bejahrt:* परिश्रान्तो वयःस्थश्च षष्टिवर्षो जरान्वितः MBh. 1, 1958. *kräftig:* मांस Vâgbh. 6, 69. — 2) f. आ *a) Altersgenossin, Freundin* (vgl. वयस्या) Med. — *b)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Emblica officinalis Gaertn.* AK. 2, 4, 2, 38. Trik. H. an. Med. Ratnam. 90. = ब्राह्मी AK. 2, 4, 5, 3. Trik. H. an. Med. = काकोली AK. 2, 4, 5, 9. Trik. H. an. Med. *Terminalia Chebula* oder *citrina* AK. 2, 4, 2, 39. Med. *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. *Bombax heptaphyllum* H. an. = क्षीरकाकोली Bhâvapr. im ÇKDr. = अत्यम्लपर्णी Râǵan. — Suçr. 2, 389, 10. 393, 5. 536, 9. 14. — *c) kleine Kardamomen* H. an. Med.

वयःस्थान n. *Jugendfrische* Kâm. Nîtis. 19, 7.

वयःस्थापन adj. *die Jugendfrische erhaltend* Suçr. 1, 2, 17. 175, 9. 180, 12. 182, 12.

1. वया f. *Zweig, Ast* ṚV. 6, 7, 6. वत्सौभगानि वि यन्ति वनिनो न वयाः 13, 1. वृतस्य 24, 3. 57, 5. 2, 5, 4. 5, 1, 1. 8, 13, 6. 17. 10, 92, 3. 134, 6. Çâṅkh. Gṛhj. 1, 15. bildlich ṚV. 1, 59, 1. वया इदन्या भुवनान्यस्य 2, 35, 8. 8, 19, 33. *Zweig* so v. a. *Geschlecht, Sippe:* पश्यन्नन्यस्या अतिथिं वयायाः 10, 124, 3.

2. वया f. so v. a. 2. वयस्. एषा यासीष्ट तन्वे वयाम् *kommet mit Labung — eine Stärkung für mich!* ṚV. 1, 165, 15. nach Sâj. = वयम् *wir*, nach Mahîdh. = वयसाम् gen. pl.

वयाकिन् adj. nach Sâj. von वयाक, demin. von 1. वया, *verästelt, surculosus:* Soma ṚV. 5, 44, 5.

वयावत् (von 2. वया) so v. a. वयस्वत्. वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ṚV. 6, 2, 5. Hierher ziehen wir auch 1, 3, wo वयावन्तम् im Text steht.

वयियु adj. nach Durga zu Nir. 4, 15 so v. a. *Gewobenes, Gewänder*

(von वा, वयति): उत मे प्रयियोर्वयियोः (श्यावः प्रणेता भुवत्) R̥V. 8, 19, 37. Es liessen sich gen. du. annehmen von प्रयी und वयी für प्रय्योस् und वय्योस् und letzteres könnte zu der in 3. वयस् enthaltenen Wurzel gezogen werden als Bez. *des jungen, kräftigen Rosses.*

1. वयुन (वयुन Uṇâdis. 3, 61) 1) n. *a) Richtzeichen, Merkzeichen:* अभूदिदं वयुनम् R̥V. 1, 182, 1. विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम् 3, 3, 4. मन्मेव स्यवो न वयुनानि तक्षुः 2, 19, 8. अपतन्ता चरतो अन्यदन्यदिद्या चकार वयुना ब्रह्मणस्पतिः *Ziel* 24, 5. पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना *wo viele Genüsse als Ziel winken* 10, 44, 7. समुद्रस्य वयुनस्य पत्मन् etwa *im Fluge nach der Kufe* (des Soma) *als Ziel* TS. 5, 5, 4, 3. — 2) *Regel, Bestimmung, Ordnung; Sitte:* व्यब्रवीद्वयुना मर्त्येभ्यः R̥V. 1, 145, 5. क्षितीनाम् 72, 7. जनानाम् 7, 75, 4. वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति 8, 55, 8. Häufig वयुनानि विद्वान् und विश्वा व° वि° R̥V. 1, 152, 6. 189, 1. 3, 5, 6. 6, 15, 10. 75, 14. 7, 100, 5. 10, 122, 2. AV. 2, 28, 2. 4, 39, 10. 5, 20, 9. VS. 12, 15. Nir. 8, 20. instr. *nach der Regel:* अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोत R̥V. 1, 162, 18. यन्मातरिश्वा क्रीत वयुना चनानुषक् 10, 49, 5. Hierher vielleicht auch R̥V. 1, 144, 5. — 3) *(Bestimmtheit) Deutlichkeit, Unterscheidbarkeit, Helligkeit:* ता अत्नत वयुनं विश्वमा रजः R̥V. 5, 48, 2. इळायास्पुत्रो वयुने ऽजनिष्ट 3, 29, 3. Gewöhnlich pl.: अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्व्या 1, 92, 2. उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति *macht, dass man sich zurechtfinden kann* d. h. *hell* 6. अक्तुनाह्नां वयुनानि साधत् 2, 19, 3. 4, 16, 3. अविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् 6, 7, 5. 10, 46, 8. युवतिर्वयुनानि वस्ते *bestimmte Formen* 114, 3. क्षत्रियासो न वयुनेषु धूर्षदः etwa *deutlich, leibhaftig* 2, 34, 4. — *d) Kenntniss, Wissen* (= ज्ञान Comm.) Bhâg. P. 3, 4, 31. 4, 23, 12. 5, 11, 15. 10, 8, 30. चक्षुषा वयुनेन nach dem Comm. so v. a. ज्ञानमयेन 13, 38. — *e) Tempel* Uggval. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kr̥çâçva von der Dhishaṇâ Bhâg. P. 6, 6, 20. — 3) f. आ *a) Kenntniss, Wissen* Bhâg. P. 4, 9, 8. — *b)* N. pr. einer Tochter der Svadhâ Bhâg. P. 4, 1, 63. — Vgl. अवयुन.

2. वयुन adj. scheint zum Zweck der Etymologie im Anschluss an 3. वयस् gebildet zu sein: *lebenskräftig:* प्राणा वै देवा वयोनाधाः प्राणैर्हीदं सर्वं वयुनं नद्धम् Çat. Br. 8, 2, 2, 8.

वयुनवत् (von 1. वयुन) adj. *hell, klar:* इदं ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् R̥V. 4, 51, 1. स इत्तमो ऽवयुनं ततन्वत्सूर्येण वयुनवच्चकार 6, 21, 3.

वयुनशस् (wie eben) adv. *je nach der besonderen Bestimmung, regelrecht:* इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज R̥V. 6, 52, 12.

वयुनाविद् (वयुनऽविद् Padap.; vgl. R̥V. Prât. 9, 7. VS. Prât. 3, 96) adj. *der Regel kundig:* वि होत्रा दधे वयुनाविदेकः R̥V. 5, 81, 1.

वयोगत 1) adj. *bejahrt* Ait. Up. 4, 4. — 2) n. *das Dahinsein der Jugend* Spr. 1610.

वयोजुर् adj. *Kraft erregend, — erhöhend:* शुक्रासो वयोजुवः R̥V. 9, 23, 26.

वयोऽतिग adj. (f. आ) 1) *bejahrt, betagt* M. 7, 149. Mârk. P. 18, 10. — 2) *an kein Lebensalter gebunden:* सा सिद्धिर्या वयोऽतिगा MBh. 12, 11881.

वयोधस् (वयःधस् Uṇâdis. 4, 228) adj. s. v. a. वयोधा, mit welchem es in mehreren Formen zusammenfällt. सं धमन्तु वयोधसः AV. 8, 1, 19. VS. 15, 7. Indra 28, 24. Çat. Br. 12, 9, 2, 16. Kâtj. Çr. 19, 5, 22. Çâñkh. Çr. 7, 4, 5. = तरुण Uggval.

वयोधा 1) adj. acc. °धाम्, voc. °धस्, nom. pl. °धास्; fem. °धास्. *a) Kraft —, Gesundheit gebend, b) — besitzend, kraftvoll:* रयि R̥V. 1, 73, 1. 6, 6, 7. वृषभ (Indra) 3, 31, 18. 49, 3. 51, 6. 4, 17, 17. 5, 43, 13. 9, 90, 1. Agni 4, 3, 10. 8, 61, 4. भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः 10, 7, 7. पितरः 6, 75, 9. VS. 15, 52. वीर R̥V. 2, 3, 9. Soma 8, 48, 15. 9, 96, 12. 110, 11. Tvashṭar 6, 49, 9. देवो देवाय गृणते वयोधाः AV. 5, 11, 11. 7, 41, 2. ग्रावन् 12, 3, 14. 13, 2, 33. 18, 4, 38. 19, 46, 6. fem. 9, 1, 8. 18, 4, 50. TS. 4, 4, 12, 1. — 2) f. *Stärkung, Kräftigung:* °धायै Kauç. 24. °धै infinitivisch R̥V. 10, 55, 1. 67, 11.

वयोऽधिक adj. 1) *an Jahren überlegen, — älter* Varâh. Br̥h. S. 86, 11. — 2) *betagt,* m. *Greis* M. 4, 141. नगरी सस्त्रीबालवयोऽधिका R. 2, 47, 10.

वयोधेय n. *Kräftigung* R̥V. 10, 25, 8.

वयोनाध adj. etwa *Gesundheit befestigend, — zusammenhaltend* VS. 14, 7; vgl. Çat. Br. 8, 2, 2, 8.

वयोवयःशय adj. SV. I, 4, 2, 2, 2 vermuthlich entstellt; vgl. VS. 5, 8.

वयोविध adj. *vogelartig* Çat. Br. 10, 1, 2, 1. 2, 1, 1.

वयोवृद्ध adj. *bejahrt* Ragh. 4, 27.

वयोवृध् adj. *Kraft mehrend, stärkend:* Morgen und Nacht R̥V. 5, 5, 6. die Marut 54, 2. रयि 8, 49, 11.

वयोहानि f. *das Altern* Dhâtup. 26, 23. 31, 24. 34, 9.

वय्य nach Sâj. patron. des Turvîti, aus dem Geschlecht des Vajja R̥V. 1, 54, 6. N. eines Asura: याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथ 112, 6. eines Gefährten des Turvîti; Indra hilft beiden über einen Strom, indem er dessen Lauf hemmt: अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्रुतिम् 2, 13, 12. अवनिं तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् (अरमयः) 4, 19, 6. Appellativ etwa *Gefährte, Genosse* in der Stelle: परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः 9, 68, 8. Diese Bedeutung würde überall passen.

1. वर् (वृ, वॄ), वरते, वरन्ते, वराति, वरन्त, वरथस्; वृणोति, वृणुते (वरणे) Dhâtup. 27, 8. वृणाति, वृणीते (वरणे) 31, 16. 20. ववार, ववर्थ ved. und ववरिथ P. 7, 2, 64. 38. Vop. 8, 89. ववृव, ववृम P. 7, 2, 13. Vop. 8, 57. ववृषे 16, 5. ववृमहे P. 7, 2, 13. वव्रिवांसम् R̥V. 2, 14, 2 u. s. w. वव्रुषस् gen. 1, 173, 5. अवारीत्, अवारिषम् (Brâhmaṇa), अवारिष्टाम्, अवारिषुस् P. 7, 2, 40. 42. Vop. 12, 3. ved. अवर्, आवर्, वर् (R̥V. Prât. 1, 23. VS. Prât. 1, 164. P. 6, 4, 73, Schol.), अव्रन्, व्रन्, वरत्, वम् 1. sg. R̥V. 10, 28, 7. वर्धयस्, वृधि, वर्तम्; अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवृत P. 7, 2, 40. 42. Vop. 8, 99. 12, 3. 16, 5. वरिष्यति und वरीष्यति, वरिता und वरीता P. 7, 2, 38. वरिषीष्ट und वृषीष्ट (वरीषीष्ट fehlerhaft) 39. 42. 1, 2, 12, Sch. Vop. 12, 3. 16, 5. वरितुम्, वरीतुम् und वर्तुम् (MBh. 4, 52), वृत्वा, वृत्वी R̥V. 1, 52, 6. वृत P. 7, 2, 11. Vop. 26, 89. In Betreff des Bindevocals s. Kâr. 1 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. Vop. 8, 60. *verhüllen, bedecken, umschliessen, umringen; zurückhalten, gefangen halten; abhalten, hemmen, wehren:* गाः R̥V. 1, 61, 10. अपः 2, 14, 2. न यत्ते शोचिस्तमसा वरन्त *einen Glanz wie deinen deckt man nicht mit Dunkel zu* 4, 6, 6. वृत्वा Çat. Br. 1, 1, 2, 4. सः*) स्वर्गस्य लोकस्य द्वारमवृणोत् *machte zu* Ait. Br. 3, 42. — R̥V. 1, 65, 6. न त ओजो वरन्त 3, 32, 9. न त्वाद्रयः परि षन्तो वरन्त 16. 8, 77, 3. राधः 4, 31, 9. न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम् 4, 32, 8. 42, 6. 5, 32, 9. 55, 7. 8, 24, 5. नकिष्ट्वं वृण्वते युधि 45, 21. 7, 32, 6. AV. 6, 7, 3. 10,

*) So in den von uns benutzten Hdschrr. und in der Ausgabe.

3,2. मघोनो ह्यहो वरथस्तमांसि ṚV. 5,31,9. वार् unbetont, also als Verbum finitum behandelt, in AV. 10,4,3.4 ist, mit उग्रम्, ein dem Metrum widerstreitendes Anhängsel. — रेणुः — पृथिवीं चान्तरीक्षं च द्यां चैव सहसावृणोत् verhüllte MBh. 3,10970. वरीतुम् Spr. 1452. सूर्याचन्द्रमसोर्मार्गं नक्षत्राणां गतिं तथा । शैलराजो वृणोत्येष विन्ध्यः versperrt, hemmt MBh. 3,8799. वरितुम् abwehren Bhaṭṭ. 9,24. वृतं bedeckt, verhüllt, bezogen: वर्षेण AV. 12,1,52. शिशुमारोरगगणैर्नीरपि च चञ्चलैः । विद्युद्भिरिव विक्षिप्तैराकाशमभवद्वृतम् ॥ R. 1,44,23 (45,18 Gorr.). ह्रदिनीं वेत्रसैर्वृताम् MBh. 3,2511. स्थाने वृत्तैर्वृतान्तरे H. 1115. राजमार्गं नरैर्वृतम् R. 2,26,2. 5,16. दौर्गत्यतमसा वृतः Spr. 2905. वियत्पयोदैर्वृतम् Varâh. Bṛh. S. 19,15. 24,17. मृत्तिकालेपवृतमलाबुद्रव्यम् (कृतम् gedr.) Sarvadarçanas. 40,13. रथो वृतो द्वीपचर्मणा H. 755. धर्मच्छद्मावृतं शठम् R. 4,16,16. umringt, umgeben ṚV. 4,42,5. निवेशनम् — दण्डिभिः स्थविरैर्वृतम् MBh. 3,2184. सप्तपर्णो वल्मीकवृतः Varâh. Bṛh. S. 54,29. सभ्यैरेव त्रिभिर्वृतः M. 8,10. MBh. 1,5120. 3,2580. 5,164. R. 2,40,28. 54,10. 104,30. R. Gorr. 1,70,3. 3,43,16. 54,8. Varâh. Bṛh. S. 43,23. Kathâs. 12,108. 23,13. 45,137. Râǵa-Tar. 6,182. Bhâg. P. 1,12,37. 2,9,16. 3,17,31. Prab. 86,10. Bhaṭṭ. 5,10. स्त्रीवृत M. 7,224. MBh. 1,8064. fgg. R. 1,63,28 (मरुद्गणावृत zu lesen). 2,39,35. Ragh. 12,61. Varâh. Bṛh. S. 48,48. अवृत nicht von Andern umgeben, allein M. 4,57. वृत eingeschlossen, zurückgehalten: सिन्धवः ṚV. 4,19,5. 6,17,12. erfüllt von so v. a. behaftet —, versehen mit: दोषैः M. 8,77. वृतं राजगुणैः सर्वैरादित्यमिव रश्मिभिः R. 2,34,8. Bhâg. P. 1,11,13. हर्षेण महता (auch आवृत könnte angenommen werden) MBh. 5,7544. R. 3,11,13. शोकेन महता (वृत oder आवृत) 4,20,20. वितर्कैर्बहुभिः 61,21. लज्जा° (वृत oder आवृत) MBh. 3,1852. आगो° Kâm. Nîtis. 4,47. mit act. Bed. (nach dem Comm.) umhüllend Bhâg. P. 2,10,23. Vgl. ऊर्ध्ववृत.

— caus. वारयति, °ते (आवरणे) Dhâtup. 34,8. ved. अवावरीत्, अवीवरत AV. 3,13,3. Bed. wie beim simpl. हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथाम् ṚV. 1,116,8. नकिर्देवा वारयन्ते न मर्ताः 4,17,19. 8,70,3. प्र नूनं धावता पृथङ्नेह यो वो अवावरीत् der ist nicht mehr, der euch gefangen hielt, 8,89,7. 10,27,5. AV. 4,7,1. अन्तरेवोष्माणं वारयधात् (vgl. P. 7,1,42) Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 11,1,5,7. Âçv. Gṛhj. 3,11,1. तं वरणशाखयावारयन्त Pañkav. Br. 5,3,9. — छिद्रं च वारयेत्सर्वम् verstopfen M. 8,239. Jmd abhalten, zurückhalten, abwehren, Jmd wehren; act. MBh. 1,5350. प्रविशन्तं न मां कश्चित् — अवारयत् 3,2158. Hariv. 8217. R. 2,32,32. 45,32 (43,36 Gorr.). 96,41 (105,40 Gorr.). 5,61,8. 63,8. 6,99,26. Kâm. Nîtis. 4,45. Spr. 630. 3662. Kathâs. 26,247. 37,148. 38,37. 40,15. 49,37. Râǵa-Tar. 4,667. Prab. 22,2. 55,11. Bhâg. P. 4,14,40. 10,79,23. जनं वारयित्वा MBh. 3,2582. R. 5,80,7. Mârk. P. 57,111. वारयितुम् R. 2,23,30. 25,2. Râǵa-Tar. 1,247. pass. MBh. 3,315. R. 1,1,49 (52 Gorr.). 2,34,23. 3,42,46. 4,8,39. Ragh. 14,51. Çâk. 88,7. Spr. 974. Kathâs. 16,17. 56,300. Râǵa-Tar. 5,463. 6,2. Bhaṭṭ. 17,37. वारित MBh. 1,150. 2095. 4,675. 13,330. fg. Hariv. 8219. Spr. 1555. 1579. 4051. Gît. 3,3. Kathâs. 31,67. Râǵa-Tar. 4,231. 6,345. Bhâg. P. 9,20,36. Z. d. d. m. G. 14,572,20. Verz. d. Oxf. H. 99,a,13. न वारयेद्गां धयन्तीम् M. 4,59. विपालान्पशून् 8,240. वृकान् Râǵa-Tar. 2,88. स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो हि वार्यते Ragh. 19,49. चेतः Prab. 94,13. दृष्टिं तत्रापि वारयन् so v. a. es vermeidend dahin zu sehen R. Gorr. 2,16,40. abhalten —, zurückhalten —, abwehren von, mit abl. P. 1,4,27. यवेभ्यो गाम् Schol. शोकात् Vop. 5,20. धर्मात् MBh. 3,16686. त्रैलोक्यविजयात् Hariv. 8218. दंशान् — अङ्गात् R. 5,34,18. द्यूतात्, पानात् Kâm. Nîtis. 16,15. युद्धात् Kathâs. 20,93. पापात् 61,293. mit dopp. acc. (vgl. वारयितव्य): परमं स्थानं वार्यमाणो ऽसकृन्मया MBh. 13,1900. Geschosse abwehren: अस्त्रं वारयामास 5,7174. fg. शक्तीश्चर्मणा 7211. 6,2227 (वारयाणा). R. 3,35,45. Etwas zurückhalten, hemmen, verhindern, unterdrücken, beseitigen: यथा वारयते वेला क्षुब्धतोयं महार्णवम् MBh. 6,5121. क्रोधो ऽयम् — न शक्यते वारयितुं वेलेव लवणाम्भसा R. 3,28,2. कोपाग्निम् Spr. 160. जलेन हुतभुजम्, छत्रेण सूर्यातपम्, व्याधिं भेषजसंग्रहैः 2929. सुतकर्म गर्ह्यम् Bhâg. P. 3,1,7. बाष्पवेगम् R. 4,8,19. गतिम् Mṛkkh. 107,15. प्रसरम् Çâk. 28. विनयवारितवृत्ति (मदन) 44. प्रवाहम् Sarvadarçanas. 25,5. सर्वानिन्द्रियकृतान्दोषान् Weber, Râmat. Up. 344. fg. वातवर्षातपहिमान्सहन्तो वारयन्ति नः Bhâg. P. 10,22,32. संदेहम् Râǵa-Tar. 6,331. महाक्षेपम् 340. ausschliessen Kâr. 8 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. Siddh. K. zu P. 2,2,11. verbieten, untersagen: सर्वाणि वादित्राणि MBh. 1,6976. द्यूतम् 3,599. vorenthalten: राज्यम् R. Gorr. 2,116,49. अर्थम् Spr. 4948. वारितवाम Kathâs. 26,76. Râǵa-Tar. 3,417. अवारितम् ungehemmt, nach Belieben: अवारितम् । अश्वं प्रववृते Kathâs. 13,126. निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम् MBh. 13,3294. दीयतां भुज्यतां चेष्टं दिवारात्रमवारितम् 14,2686. Vgl. दुर्वारित.

— desid. विवरिषति und °ते, विवरीषति und °ते, वुवूर्षति und °ते P. 7,1,102. 2,41. Vop. 8,99. 12,3. 19,3.

— intens. वर्वर्मि P. 7,3,94, Schol.

— अनु zudecken: पलाशैः Çâñkh. Br. 10,2. überdecken, verhüllen, überschütten: शरैर्घोरैस्तमेकमनुवव्रिरे MBh. 6,3349. umringen, umgeben: ताः कृष्णमनुवव्रिरे Hariv. 4093. R. Gorr. 2,43,12. — caus. med. hemmen, hindern Ait. Br. 10,2.

— अप aufdecken, enthüllen, öffnen ṚV. 1,7,6. बिलम् 32,11. गोत्रम् 51,3. व्रजम् 10,7. 10,28,7. वलम् 2,14,3. दुरः 1,121,4. ज्योतिः 2,11,18. 3,43,7. 4,2,16. व्रजिनीः 5,45,1. (इषः) अप द्वारेव वर्षथः 8,5,21. 89,6. अपवृण्वंश्च द्वाराणि R. ed. Bomb. 5,12,16. अर्पा (vgl. ṚV. Prât. 7,33) वृधि परिवृतं न राधः ṚV. 7,27,2. 75,1. अपं कृष्णां निर्णिजं देव्यावः 1,113,14. पत्न्यै शिरो ऽपवृत्य Çat. Br. 14,1,4,16. अपावृत (vgl. ṚV. Prât. 9,2) ṚV. 1,57,1. Vgl. अपा und अपवरक, अपवृति. — caus. verstecken: अपवारितशरीर Mṛkkh. 127,3. Mâlatîm. 93,14. अपवारितम् = अपवार्य (s. d.) Sâh. D. 425. — Vgl. अपवारण fgg.

— अपि verhüllen: अपीव योषा जनिमानि वव्रे ṚV. 3,38,8. partic. अपीवृत bedeckt, verhüllt, verschlossen 1,121,4. 2,11,5. 10,32,8. — Vgl. u. वि 2).

— अभि, partic. अभीवृत umgeben von, eingefasst in: वज्रं शुभ्रैरभीवृतम् ṚV. 3,44,5. अभीवृतं कृशनैः (रथम्) 1,35,4. दक्षिणाभिः 8,39,5. उद्रा वज्री अभीवृतः 89,9. घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते 6,70,4. 10,73,2. येन गौरभीवृता bedeckt, beschritten 1,164,29. स्वबलाभिवृत umgeben von R. 6,92,83. — caus. Jmd zurückhalten, abwehren: तमभ्यवारयत् MBh. 4,1985. 6,3762 nach der Lesart der ed. Bomb. (संवारयिष्णुनभिवारयित्वा).

— आ bedecken, verhüllen Çvetâçv. Up. 6,10. Suçr. 1,168,15 (absol.). पटा-

त्तेन मुखमावृत्य ÇÂK. 69,11. अध्यर्धमिक्ष्वाकुचमूर्योजनं पर्वतस्य सा पार्श्वे न्यवसदावृत्य R. 2,98,30 (107,18 GORR.). योगतारकामावृणोति वपुषा VARÂH. BṚH. S. 24,34. वह्नी मण्डपमावृणोति 55,26. नीलजीमूतसंघातैः सर्वमम्बरमावृणोत् MBH. 1,1296. 1134. आवृणोन्मां महाशरैः 3,11959. धाराः — आवृण्वन्सर्वतो व्योम 12136. R. GORR. 2,65,14. खमावव्रे लोहितप्राशनैः खगैः MBH. 4,1715. KATHÂS. 55,187. आवव्रुर्जलदा व्योम MBH. 5,7238. व्योमावृत्य 7194. तमसा लोकमावृत्य 1,4232. 1105. 1152. 3550. R. 2,92,36. R. GORR. 2,102,16. 5,56,8. 10. BHÂG. P. 1,7,30. वरीतुमिवाकाशम् BHAṬṬ. 9,24. धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च BHAG. 3,38. *verstecken, verbergen:* वृत्तैरात्मानमावृत्य R. 4,12,12. 13,28. ÇÂK. 40,21. आवृणोदात्मनो रन्ध्रम् RAGH. 17,61. व्याजेनागतमावृणोति हसितम् Spr. 396. BÂLAB. 15. पन्थानम्, मार्गम् *einen Weg versperren:* आवृत्य R. 1,26,28. 2,28,20. 3,74,19. 7,23,1,11. MBH. 3,12222. RAGH. 7,28. 12,28. आवृण्वतो लोचनमार्गम् 39. द्वारम् *ein Thor besetzen* R. 4,61,39. 5,7,7. 6,6,11. 13,12. 17,16. fg. अग्निशालाम् *besetzen, in Beschlag nehmen* KATHÂS. 72,158. *einsperren in* (loc.): यातनादेहे आवृत्य BHÂG. P. 3,30,21. *umgeben:* कावेरीमावृत्य मलयो गिरिः R. 4,41,25. *erfüllen:* सर्वमावृत्य तिष्ठति ÇVETÂÇV. UP. 3,16 (= BHAG. 13,13). MÂRK. P. 45,56. BHÂG. P. 8,24,21. तेषां तु रुदतां शब्दः खमावृत्य समन्ततः R. GORR. 2,111,39. य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ M. 2,144. महीमावृत्य यशः R. 6,104,22. नात्युच्चैः स्थित आकाशे भूमिमावृत्य so v. a. *berührend* 13. *erfüllen* (einen Wunsch): कुविद्दसुभिः काममावरत् ṚV. 1,143,6. *abwehren:* आवव्रे मुषली तरुम् BHAṬṬ. 14,109. — आवृणोति MBH. 12,4010 wohl fehlerhaft für अपावृणोति. आवृत्य परिक्रमम् M. 3,214 fehlerhaft für आवृत्परिक्रमम्. — आवृत *bedeckt, umhüllt, umgeben, verhüllt, verborgen* AK. 3,2,40. H. 1476. तविषीभिः ṚV. 1,51,2. 55,8. रजसा 164,14. यज्ञेभिः 8,26,13. तूर्णैः AV. 9,3,17. तमसा 10,1,30. 2,29. 31. 8,43. 12,1,52. प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणा 17,1,27. ÇAT. BR. 10,6,5,1. 14,5,5,18. आवृतास्तत्र तिष्ठन्ति पितरः ÂÇV. GṚHJ. 4,7,16. — द्वीपिचर्मावृते रथे *bedeckt, bekleidet, bezogen* AK. 2,8,2,21. fg. हेमवर्णाम्बरावृत R. 1,54,22. Spr. 1210. चर्मावृतेव भूः 3206. वृक्षगुल्मावृत M. 7, 192. MBH. 3,2404. R. 2,56,11. VARÂH. BṚH. S. 44,8. 54,119. दीर्घलोमभिरावृतः PAÑKAR. 1,6,7. (नभः) प्रकुन्नतत्रताराभिरावृतम् R. GORR. 1,36, 16. जलजबिन्दुभिः 3,67,8. कृमिकुलशतैरावृततनुः Spr. 729. व्रणावृत R. 4,39,19. आवृतसर्वाङ्गी वराङ्गैः KATHÂS. 17,147. महीं राष्ट्रावृताम् R. 2, 49,12. उल्बावृतो गर्भः *umhüllt* KHÂND. UP. 5,9,1. BHAG. 3,38. BHÂG. P. 3,31,8. 4,22,37. वदनं कृत्त्रेण *verdeckt, verhüllt* R. 2,26,10. तृणैः कूपः 3,32,15. 4,16,17. BHÂG. P. 3,31,40. चक्षुस्तिमिरपटलैः Spr. 4965. तमसा लोकः MBH. 3,8779. R. 2,65,17. KATHÂS. 47,50. तुषारेण सूर्यप्रभा R. GORR. 1,50,16. जलपटलैर्नभस्तलम् HIT. 80,15. VARÂH. BṚH. S. 24,36. 32,13. 43,65. BHAG. 3,39. Spr. 3844. NAISH. 22,41. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 38. fg. अनावृता *unverhüllt* M. 4,44. ह्रदिनीं पर्वतावृताम् *umringt, umgeben* R. GORR. 2,73,5. शैलस्य पादे सलिलावृते R. SCHL. 2,56,15. ताराभिरुडुपतिः BHÂG. P. 3,23,38. भुजगावृतदेहा VARÂH. BṚH. 27 (25), 23. सखिगणावृता MBH. 3,2095. R. 2,14,29. KATHÂS. 23,7. PAÑKAT. 130,20. मृगी अभिः R. 3,61,4. ग्राम, वेश्मन् *umschlossen, mit einer Mauer* u. s. w. *umgeben* M. 4,73. *geschlossen:* वेश्मन् PAÑKAR. 3,15,47. RÂGA-TAR. 5, 235. पुरद्वार R. 2,88,19. DAÇAPATIÇ. 39. द्वारस्यावृतत्वात् PAÑKAT. 195,18. राजधानी R. 2,88,20. किमर्थमावृता लोका ममैते *für mich verschlossen* MBH. 1,8339. निर्धनेन ममैकेन कामुकेनावृतं गृहम् *besetzt, in Beschlag genommen* KATHÂS. 12,99. *gefangen gehalten* 72,158. BHÂG. P. 3,31,13. 8,2,31. अनावृताः किल पुरा स्त्रिय आसन् *nicht eingeschlossen, frei, sui juris* MBH. 1,4719. 4729. 3,1858. BHÂG. P. 4,20,7. अनावृतद्वम् *offen, frei* KATHÂS. 34,197. अनावृतकथ R. GORR. 2,1,8. अधार्मिकजनावृत *erfüllt, bewohnt* M. 4,61. VARÂH. BṚH. S. 5,78. मूषकैः परिधावद्भिरावृतानि वेश्मानि R. 2,33,19. वेतालैः श्मशानम् KATHÂS. 12,48. सफेनलालावृतवक्त्रसंपुट *voll von* ṚT. 1,21. येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वम् *erfüllt von* ÇVETÂÇV. UP. 6,2. BHÂG. P. 2,6,15. तेजोमहिम्ना RAGH. 18,39. आवृते हृदये राज्ञो गाढया भोगतृष्णया KATHÂS. 40,55. शोकैर्बहुभिः R. 2,72,26. 75,18. 4,27, 9. ब्रह्महत्यया *behaftet mit dem Verbrechen eines Brahmanenmordes* 7, 86,8. तैरेव भूतैः *versehen mit* (Gegens. परित्यक्त) M. 12,20. सलिलोपप्लवैरासीत्पुनरेवावृता क्षितिः *heimgesucht von* RÂGA-TAR. 5,70. आवृत m. Bez. *einer Mischlingskaste, der Sohn eines Brahmanen und einer* Ugrâ M. 10,15. — Vgl. आवरण, आवृति, दुरावार. — caus. 1) *bedecken* BHÂG. P. 5,17,4. *verhüllen, verstecken:* आवार्य गुल्मैरात्मानम् MBH. 3,2370. वृक्षेणावार्य (sc. आत्मानम्) R. 3,67,5. *erfüllen:* अथाकाशे महान् शब्दः प्रादुरासीद्भयानकः। आवार्य गगनं मेघो यथा प्रावृषि दृश्यते॥ R. 1,32,11. — 2) *abhalten, zurückhalten, abwehren:* तं बाणमयं वर्षं शरैरावार्य सर्वतः MBH. 1,4102. तमावार्य बाहुना बाहुशालिनम् 2,2431. 4,469. 1508. 5, 5829. 7,3131 (3123 liest die ed. Bomb. अभिहारयत्सु st. आवारयत्सु). *hemmen:* सारदारुभिरपां संपातमावारयेत् VARÂH. BṚH. S. 54,118.

— अपा (eigentlich nur ein gedehntes अप, wie auch अपि und अभि im Veda vor वर् ihren Schlussvocal verlängern); vgl. ṚV. PRÂT. 9,2. *öffnen:* अपावृण्वानाः LÂṬJ. 2,10,20. मुखमपावृणु BṚH. ÂR. UP. 5,15 = ÎÇOP. 15 = MAITRJUP. 6,35. लोकद्वारमपावार्णू KHÂND. UP. 2,24,4. द्वारमपावरीतुम् Verz. d. Oxf. H. 259,a,12. मञ्जूषां तामपावृत्य R. 1,67,13 (69,14 GORR.). *offenbar machen, enthüllen:* उत्थितस्य शयनं विलासिनस्तस्य विभ्रमरतान्यपावृणोत् RAGH. 19,25. अपावृणोति st. प्रावृणोति und आवृणोति möchten wir lesen in der Stelle: यो ऽपावृणोत्यवितथेन वर्णान् (कर्णा an einer Stelle) MBH. 5,1692. 12,4010. अपावृत (s. auch bes.) *geöffnet, offen:* आस्य MBH. 5,282. मुख R. 3,43,18. कर्णरन्ध्र BHÂG. P. 3,22,7. द्वार MBH. 4,228. HARIV. 2627. R. GORR. 2,96,22. 3,43,40. 45,3. 4,5,22. KATHÂS. 32,83. 108,45. Spr. 4663. BHÂG. P. 3,25,20. 6,9,32. कवाट KATHÂS. 81, 97. राजधानी R. GORR. 2,96,23. चन्द्रपथ HARIV. 2623. धर्मपथ 14021. दिशः MBH. 13,2091. लोकाः BHÂG. P. 3,9,30. 9,3,30. पयस् *offen* so v. a. *unbedeckt* MBH. 12,8391. HARIV. 3413. *geoffenbart, enthüllt:* ऋत BHÂG. P. 3,9,15. 4,3,23. — Vgl. unter अप, अपावृत fg.

— उपा, °वृधि ved. P. 6,4,102, Schol. उपावृत *verdeckt* so v. a. *beschattet* (nach dem Comm.) HARIV. 6547 nach der Lesart der neueren Ausg., उपावृत्त ed. Calc.

— समुपा *öffnen:* द्वाराणि समुपावृण्वन् R. 5,15,10. fehlerhaft für समपा°; अपवृण्वंश्च द्वाराणि ed. Bomb. 5,12,16.

— पर्या, °वृत *verhüllt, verdeckt* MÂLATIM. 90,7.

— प्रा (eigentlich ein gedehntes प्र; ṚV. schreibt im Padap. stets प्रावृत ohne Trennung; vgl. VS. PRÂT. 5,37 und unter अपि, अभि, अपा) *bedecken:* त्वचा प्रावृत्य सर्वम् AV. 11,8,15. प्रावारिषुः BHAṬṬ. 9,25. *umthun, anlegen* (ein Kleid u. s. w.): तद्वस्त्रमरजः प्रावृणोत् MBH. 3,2997. MṚKKH. 22,

23. वास एव यथा त्यक्तं प्रावृण्वानाः MBH. 5,4715. प्रावृत्य कृष्णवासांसि 1,2033. KATHÂS. 56,318. 412. MÂRK. P. 40,14. SADDH. P. 4,19,b. अयं पटः प्रावरितुं न शक्यते MṚKKH. 33,16. — प्रावृणोति MBH. 5,1692 wohl fehlerhaft für अपावृणोति. — प्रावृत *bedeckt:* निर्णिजा रेक्णसा RV. 1,162,2. नीहारेण 10,82,7. श्रिया AV. 12,5,2. तमसा 18,3,3. MBH. 13,7473. इषुजालेन R. 6,20,17. स्फाटिकप्रावृततला (शाला) 5,13,11. सिन्दूरेण प्रावृता (so ist schon des Metrums wegen zu lesen) पुरी KATHÂS. 103,169. कुम्भ GOBH. 2,1,12. 19. अप्रावृतो व्रजेत् ÇAT. BR. 7,5,2,41. JÂGN. 1,136. PAÑKAV. BR. 8,7,6. 7. वाससा 17,12,5. 19,7,1. वस्त्रार्ध° MBH. 3,2423. भयेन *erfüllt von* R. bei MUIR, ST. IV,401 (प्रभूताः ed. Bomb. 6,95,34. भयार्ताः GORR.). *umgelegt, angelegt* (ein Kleid u. s. w.): वल्कल KATHÂS. 32,107. अर्धपट 56,341. वस्त्रयुग 352. m. f. n. = निवीत AK. 2,6,3,15. — Vgl. प्रावर fgg., प्रावार fg., कण्टकप्रावृता, कुप्रावृत.

— व्या, व्यावृण्वान BHÂG. P. 1,11,38 nach BURNOUF *sich verhüllend, sich versteckend;* die ed. Bomb. (37) liest aber व्यापृण्वान, welches der Comm. durch व्याप्रियमाण erklärt. व्यावृत *offen:* शास्त्रेषु व्यावृता बुद्धिः so v. a. *hell sehend* RAGH. 1,19, v. l.; man könnte auch व्यापृता vermuthen. व्यावृत्य MBH. 3,363 gehört zu वर्त्.

— समा 1) *bedecken, verhüllen:* तान्परिधानेन वाससा स समावृणोत् MBH. 3,2310. 2295. शिलावर्षेण महता मां समावृणोत् 858. मक्षुभिर्गगनपथम् 1,1185. तमः सूर्यम् R. 2,40,9. *umgeben, umstellen:* तदानीमिन्द्रस्तद्विलं स्वसैन्येन समावृत्य SÂJ. zu RV. 1,11,5. *erfüllen:* स शब्दः प्रदिशः सर्वा दिशः खं च समावृणोत् MBH. 7,724. MÂRK. P. 102,9. समावृत *bedeckt, besetzt mit, verhüllt* KAUÇ. 125. नानागुल्म° (कानन) MBH. 4,870. R. 2,55,14. चैत्ययूप° 50,8. R. GORR. 1,20,22. 2,12,36. 125,12. 4,33,8. 24. KÂM. NÎTIS. 16,4. नानोरग° (ह्रद) *erfüllt von, bewohnt von* R. 3,76,36. दंष्ट्रि° (वन) VARÂH. BṚH. S. 19,1. चातुर्वर्ण्य° (जनपद) Verz. d. Oxf. H. 33,a,14. *bezogen, überzogen* (ein Sonnenschirm) VARÂH. BṚH. S. 73,3. सूर्यः — शरजालसमावृत *verhüllt* MBH. 5,7194. R. 2,69,11. R. GORR. 2,40,13. लतागुल्म° R. SCHL. 1,9,12. योगमाया° BHAG. 7,25. मोहजाल° 16,16. धर्मेण *gehüllt in* so v. a. *geschützt* MBH. 3,2356. प्राकारेण पुरी *umgeben* R. 3,54,15. प्रासादा ज्वलनेन 5,52,11. त्वरितेन Verz. d. Oxf. H. 33,a,13. PAÑKAR. 2,2,81. सखीगण° MBH. 3,2146. R. 2,48,2. 78,12. MÂRK. P. 20,3. PAÑKAR. 1,10,55. BHAṬṬ. 8,63. शशी नक्षत्रगणैः R. 4,42,16. — 2) *verstopfen, hemmen:* ततः शर्यातिसैन्यस्य शकृन्मूत्रे समावृणोत् MBH. 3,10329. तव लोकाः समावृताः *verschlossen für dich* 1,8343. — समावृत R. GORR. 2,83,1 fehlerhaft für समावृत्त.

— उद् *weit öffnen, aufreissen* (die Augen): क्रोधादुद्वृत्य चक्षुषी MBH. 7,869. 4051. 8,601. उद्वृत्त fehlerhaft für उद्वृत in उद्वृत्तलोचन 7,5406. उद्वृत्तनयन 9,432. उद्वृत्ताक्ष MÂRK. P. 4,62. Vgl. विवृत्य नयने unter वि 1). In der Stelle वटवृक्ष आत्मानमुद्वृत्य *sich aufhängend* PAÑKAT. 135,3 ohne Zweifel fehlerhaft für उद्बध्य, wie eine Hdschr. liest.

— नि 1) *abwehren:* शरवर्षेण निववार रणे हरिम् R. 7,7,25. निर्वृत *zurückgehalten, festgehalten:* अर्वांसृज्ञो निर्वृताः सर्तवा अपः RV. 1,57,6. रेभं निर्वृतं सितमद्ध्य उद्धन्दर्नैरयतम् 112,5. आपो देवेभिर्निर्वृता अतिष्ठन् 10,98,6. *umgeben, umringt* AK. 3,2,37. H. 1474. HALÂJ. 4,27. — 2) *umzingeln:* षड्विंशद्वरिकोट्यश्च निवव्रुर्वानराधिपम् BHAṬṬ. 14,29. — Vgl. अनिवृत, निवर, निवार. — caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren* MBH. 1,6765. निवारयेयं येनेन्द्रं वर्षमाणम् 8172. 3,688. 741. 2264. 4,645. 5,5066. 7244. 7304. 7,4435 (न्यवारयत ed. Bomb.). R. 1,37,23. 2,37,20. 60,23. 70,27. R. GORR. 2,91,20. 3,1,16. 42,59. 4,14,8. MṚKKH. 78,16. RAGH. 7,53. KUMÂRAS. 3,56. 5,83. ÇÂK. 88,7, v. l. Spr. 1640. 3197. KATHÂS. 12,14. 13,42. 25,179. 30,139. 42,115. BHÂG. P. 1,8,45. 5,1,30. 6,11,3. MÂRK. P. 20,54. 24,37. DAÇAK. 62,12. fg. PAÑKAT. 29,8. 105,5. 164,5. 247,20. VET. in LA. (III) 14,10. तन्माता कीर्तिसेनाया दासीः पार्श्वान्न्यवारयत् KATHÂS. 29,84. द्यूतात् MBH. 6,3940. पापात् Spr. 1771. अकुशलात् 3223. मुनिव्रतात् KUMÂRAS. 5,3. KATHÂS. 12,37. 20,80. 28,139. 36,80. statt des abl. der acc.: तम् — निवारयामासुर्देवापेरभिषेचनम् MBH. 5,5062. — चन्द्रं च सूर्यं च निवारयेत *in ihrer Bewegung aufhalten* MBH. 5,1880. शरीरस्य स्रोतांसि निवारयां चकार NIR. 2,16. समुद्रोर्मिनिवारिताः कीर्तयः सरितश्च KUMÂRAS. 6,69. वर्षं न्यवारयमहं तच्च शरजालेन *abwehren* MBH. 5,7269. KATHÂS. 47,65. महोल्काम् R. 3,24,19. उष्णम् RAGH. 7,4. स्तनोत्तरीयेण शशिनो मयूखान् Spr. 2852. मेघं तृणैः 4623. विन्ध्याद्रिम् 1818. तथ्येव सकामनिवार्य बुद्धिम् R. GORR. 2,110,3. *Etwas hemmen, unterdrücken, einer Sache Einhalt thun:* अवश्यभावी कार्यो ऽयं यो न शक्यो निवारितुम् (निवर्तितुम् ed. Bomb., = निवर्तयितुम् NÎLAK.) MBH. 6,5844. राजसूयम् HARIV. 11102. वृष्टिम् VARÂH. BṚH. S. 35,6. ad ÇÂK. 25,7, v. l. RÂGA-TAR. 1,183. 5,191. *verbieten, untersagen:* वादित्रगणम् MBH. 1,5352. न्यवारयत वादित्राणि कंसः सव्येन पाणिना HARIV. 4723. रामगमनम् R. GORR. 1,24,20. KATHÂS. 5,17. 10,57. 17,36. PAÑKAT. 28,19. BHÂG. P. 4,14,6. KULL. zu M. 2,99. *vorenthalten:* छाया केन निवार्यते Spr. 3293. *wegschaffen, entfernen:* बन्धनानि KATHÂS. 10,147. 39,229. 64,57. रोगवैरूप्यम् 12,71. आमयम् 29,158. अघम् BHÂG. P. 6,13,17. शोषम् Spr. 509, v. l. देववेषम् *ablegen* KATHÂS. 12,180. in Verbindung mit आदाय *Jmd abführen, wegführen* MBH. 1,4961. *wegschaffen —, verbannen aus:* द्यूतम् u. s. w. राष्ट्रान्निवारयेत् M. 9,221. RÂGA-TAR. 3,6. — Vgl. निवारक fgg.

— उपनि caus. *Jmd zurückhalten* R. 5,61,19.

— प्रतिनि caus. s. प्रतिनिवारण.

— विनि caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren* MBH. 3,11489. 16,85. R. GORR. 2,50,14. 5,36,35. 72,10. MṚKKH. 83,12. Spr. 2692. KATHÂS. 46,166. अस्त्रैरस्त्राणि MBH. 7,6195. HARIV. 10703. वातो ऽपि निश्चरंस्तत्र प्रवेशे निवार्यते MBH. 1,4756. *Etwas hemmen, unterdrücken, einer Sache Einhalt thun:* विनयम् MÂLATÎM. 11,16. RÂGA-TAR. 3,103. *verbieten, untersagen* 315. *wegschaffen, entfernen:* व्याधिम् MBH. 3,13857 (vgl. Spr. 4137). R. 7,61,24. KÂM. NÎTIS. 14,54. जीर्णां सुधामयं प्राकारम् RÂGA-TAR. 1,105. *entfernen* so v. a. *des Amtes entsetzen:* सचिवान् 71. einen Fürsten 4,715. — Vgl. विनिवारण fg.

— संनि caus. *zurückhalten, abhalten, hemmen* MBH. 8,479. HARIV. 13535. R. GORR. 2,14,21. स्वान्मेघान्संन्यवारयत् (इन्द्रः) BHÂG. P. 10,25,24. — Vgl. संनिवारण fg.

— निस्, partic. निर्वृत 1) *erloschen* MÂRK. P. 100,19. परि° *ganz erloschen* BURN. Intr. 590. — 2) (*aufgedeckt*) *froh, zufrieden* M. 1,54. MBH. 3,3062. R. 1,59,3. 2,33,24. R. GORR. 1,38,18. 2,38,34. 3,5,12. 66,11* (विर्वृत gedr.). VIKR. 71,12. KATHÂS. 18,405. 19,100. 25,209. 39,213. 49,202. 73,320. RÂGA-TAR. 2,42. HIT. 50,6. BHÂG. P. 4,1,52. 31,30. 5,1,3. 6,2,

5. साधु° 3,2,4. अति° 1,6,18. सु° Kathâs. 32,191. 46,151. अ° Ragh. 16,7. Spr. 3183. अनिर्वृत्य absol. Bhâg. P. ed. Bomb. 9,14,34. = मत्कृतां निर्वृतिमप्राप्य Comm. — Nach Çabdârthak. bei Wilson soll निर्वृत n. *Haus* bedeuten. — Vgl. निर्वृति. — caus. *abwehren* Prab. 81,7.

— परि *bedecken, umringen; zurückhalten, hemmen:* वव्रिवांसं परि देवीर्देवम् Ṛv. 3,32,6. नैनमंहः परि वरदघायोः 4,2,9. परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः 5,73,5. तम् — परिवव्रुस्तपस्विनः *umringten* MBh. 1,3. 3,933. 7,4767. R. Gorr. 2,39,39. 4,25,1. Pańkat. 63,21. °वृत्य R. 6,81,7. Kathâs. 45,291. Pańkat. 233,5. partic. 1) परीवृत Ṛv. 1,144,2. गोत्रा 2,17,1. तमसा 23,18. 10,133,6. राधस् 7,27,2. AV. 10,8,31. 12,5,2. 17,1,28. Ait. Br. 8,23. मृगान् (*eine Art von Elephanten*) हिरण्येन परीवृतान् *bedeckt* Bhâg. P. 9,20,28. कोपपरीवृतात्तर *erfüllt von* Verz. d. Oxf. H. 260,*a*, N. Z. 3. तमस् *umgebend* Ṛv. 4,45,2. — 2) परिवृत *bedeckt, umgeben* Çat. Br. 1,1,2,21. 11,4,4,11. Ait. Br. 2,2. रथ *bezogen* P. 4,2,10. H. 754. सुवर्णकिङ्किणीपरिवृतोरस्क *umhangen* Pańkat. ed. orn. 4,8. *verhüllt* MBh. 13,1447. मृत्पिण्डो जलरेखया *umgeben* Spr. 2245, v. l. दीपिकाभिः Vikr. 44. Varâh. Bṛh. S. 21,14. 54,51. 84. Bhâg. P. 3,32,9. पुत्रामात्य° Âçv. Çr. 10,6,10. भृत्यैः Jâǵn. 1,114. 359. MBh. 2,1628. 3,1726. 5,6098. R. 1,51,21. 2,14,26. 34,10 (35,8 Gorr.). 50,19. Mṛkkh. 137,8. Ragh. 1,37. Çâk. 112,14, v. l. Mâlav. 70,23. Varâh. Bṛh. S. 44,26. Prab. 107,4. Pańkar. 4,1,45. Pańkat. 48,22. Vet. in LA. (III) 6,5. अपरिवृतं धान्यम् *nicht eingehegt* M. 8,238. 240. — Vgl. परिवार, परिवृत fg., अपरिवृत, नित्यपरिवृत. — caus. *umgeben, umfassen, umringen:* भोगेभिः AV. 11,9,5. तमसा 10,19. उच्छ्रायिभ्यां छदिः Kâtj. Çr. 8,3,27. 6,12. Gobh. 4,2,2. Lâṭj. 5,8,15. शरवर्षैः MBh. 3,12127. 5,5961. रथव्रातेन 5962. परिवार्यामृतं तस्थुः *umstanden* 1,1428. रणाजिरम् 5,7112. पुरीम् Hariv. 4999. गिरिं परिवार्य प्रदक्षिणम् 3819. शयानं शकुन्ताः समन्तात्पर्यवारयन् MBh. 1,2947. 5154. 5,21 (med.). 14,1827. 17,27 (wo पर्यवारयन् st. पर्यरावयन् zu lesen ist). 28. R. 1,5,2. 2,87,7. 92,14 (101,16 Gorr.). R. Gorr. 2,95,28. 108,28. 3,62,30. 4,25,18. Spr. 2857. Kathâs. 12,20. 13,39. Râǵa-Tar. 5,79. तान्परिवार्यावतस्थिरे MBh. 1,5770. तं परिवार्योपविविशुः 3,464. 4,793. 5,6060. 7229. 7298. R. 1,36,10. 2,34,13. R. Gorr. 1,37,11. 6,2,35. 81,7. Kathâs. 28,29. स्वबाहुभिः परिवार्य (°धार्य ed. Bomb.) *umfassend* MBh. 5,7229. परिवारित *bedeckt mit, gehüllt in* (instr.): अजिनैः 3,2057. वैयाघ्र° 2,1854. 7,268. परिखा° (निवेश) *umgeben von* R. 2,80,18. वेदिका° (उदपान) R. Gorr. 2,87,16. शङ्कुभिस्तीक्ष्णैः सर्वतः परिवारितः (परिघः) 3,32,12. शकुन्तैः MBh. 1,2949. ब्रह्मर्षिभिः 7681. 2,1629. 3,2606. 4,616. 5,7052. 8,2301. R. 2,84,12. R. Gorr. 2,2,35. 123,19. 6,3,9. Kâm. Nîtis. 6,1. Çiç. 9,31. Spr. 2286, v. l. Kathâs. 6,67. 12,54. 20,90. Râǵa-Tar. 1,292. 4,590. Bhâg. P. 5,20,40. Mârk. P. 37,14. Pańkat. 43,5. — Vgl. परिवारण.

— अभिपरि, कोपेनाभिपरीवृतः *von Zorn erfüllt* R. 7,58,22.

— संपरि *umgeben, umringen:* संपरीवृत AV. 10,2,33. यूथपैः संपरिवृतौ R. 6,21,6. — caus. dass.: युधिष्ठिरं संपरिवार्य — उपाविशन् MBh. 3,10234. 4,2111. 6,2586. 2670. 7,5839. 8,3808. R. Gorr. 2,67,25. 3,28,33. वानरैः — लङ्का संपरिवारिता 6,37,91. क्षीरोदेन MBh. 6,410.

— प्र *abwehren:* द्वेषोभिः प्रवृणोति भूयसः Ṛv. 7,82,6. 9,21,2. प्रवृता Kathâs. 103,169 fehlerhaft für प्रावृता. Vgl. 2. प्रवर, 2. प्रवरण, प्रवार und प्रा. — caus. *abwehren* MBh. 3,10476. 6,2809.

— प्रति caus. *Jmd zurückhalten, abhalten, abwehren, Jmd wehren* MBh. 3,12119. 4,1821. 1896. 5,7128. 6,516. 7,1109. 8,1090. Hariv. 676. 6789. R. 3,49,22 (so v. a. *abweisen, widersprechen*). 4,33,3. Bhaṭṭ. 17,49. शिलावर्षं शरवर्षेण R. 1,28,16. MBh. 3,12217. प्रतिवारित 16643. R. 5,56,87. Mâlav. 11. विवेशाप्रतिवारितः R. Gorr. 2,17,3. 32,37. M. 8,360. n. *Verbot:* एतत्प्रतिवारिते R. 7,45,20. — Vgl. प्रतिवार fg. und प्रतिवार्य.

— वि 1) *aufdecken, eröffnen, öffnen;* daher (das Dunkel) *erhellen; offenbaren, kundthun;* häufig im Veda mit Dehnung आवर् und im Saṁdhi आवो Ṛv. Prât. 1,23. AV. Prât. 2,44. ज्योतिषा वि तमो ववर्थ Ṛv. 1,91,22. 62,5. 7. व्यस्मदा काष्ठा अर्वते वः 63,5. गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः 92,4. 113,4. 9. 13. 5,45,1. 6,44,8. 4,1,15. वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे 21,8. 51,2. 5,31,3. 6,62,11. 7,90,4. व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः 8,9,16. वि नो राये दुरो वृधि 9,45,3. 97,38. VS. 13,3 (P. 2,4,80, Sch.). 20,36. Çat. Br. 7,4,1,14. 11,1,1,2. द्वारं व्यवारिषम् 5,3,7. अङ्गुल्या मध्ये विवृणोति Kâtj. Çr. 7,7,21. 10,7,4. — नाकारणं विवृणुयात्खड्गम् *das Schwert entblössen* Varâh. Bṛh. S. 50,6. कामं तु मे मारुतस्तत्र वासः प्रक्रीडितायाः विवृणोतु *öffnen* MBh. 1,2935. विवृणु स्वमोकः Bhâg. P. 8,24,53. मञ्जूषां विवृतवान् Kathâs. 15,49. द्वारं विवृत्य 50,183. द्वारः स्वयं व्यवर्यन्त *öffneten sich von selbst* Bhâg. P. 10,3,50. विवृणोति मुखं यावत्तस्य Kathâs. 73,7. वक्त्रं व्यवृणुत (*den eigenen Mund*) R. 5,8,8. यस्तु कर्णौ विवृणुते 6,2,36. विवृत्य नयने *die Augen aufreissend* 5,24,22. 56,85. MBh. 1,6275. ममाप्येतद्धृदि संपरिवर्तते । अभिप्रायस्य पापत्वान्नैवं तु विवृणोम्यहम् *offenbaren, kund thun* MBh. 1,5687. 6952. R. 2,75,27. Ragh. 19,40. Mâlav. 45. Kumâras. 3,68. Râǵa-Tar. 1,132. 5,185. Bhâg. P. 3,9,20. 24. Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,18. 136,*a*, No. 259. Bhaṭṭ. 7,73. विवव्रुः Kumâras. 3,35. Ragh. 6,85. विवृण्वाना पुरातनम् MBh. 15,818. Daçak. 135,2. तथागतज्ञानं विवरामः Saddh. P. 4,28,*b*. विवृतवान् Kathâs. 72,211. विवरीतुमात्मनो गुणान् Spr. 1825. धातुपाठं विवरितुम् *erklären, commentiren* Verz. d. Oxf. H. 175,*b*, No. 398. विवृत *aufgedeckt, entblösst* MBh. 1,2942. Daçak. 90,11. वसुधां विवृतामधिशेरते *auf der nackten Erde* MBh. 11,457. प्रसुप्तश्चासि विवृते (so mit der neueren Ausg. zu lesen) dass. Hariv. 4823. तथा तैरवकीर्णस्य दिव्यैरस्त्रैः समन्ततः । न तस्य द्व्यङ्गुलमपि विवृतं संप्रदृश्यते *unbedeckt, frei von Wunden* MBh. 4,2027. अविवृतश्चरामि *verborgen, ungekannt* Bhâg. P. 5,12,15. एकाग्रः स्यादविवृतो नित्यं विवरदर्शकः *seine Blössen nicht zeigend* Spr. 3835. *geöffnet, offen:* पात्र Âçv. Gṛhj. S. 53 bei Stenzler. सद्मन् Kaṭhop. 2,13. मुख, आस्य, वक्त्र MBh. 3,12931. R. 5,8,10. 56,25. Çâk. 7. Kathâs. 18,324. Hit. 76,6. सर्व ऊष्माणोऽग्रस्ता निरस्ता विवृताः (so ist zu lesen; = विवृतप्रयत्नोपेताः Çaṁk.) Khând. Up. 2,22,5. कण्ठस्य खे विवृते संवृते वा Ṛv. Prât. 13,1. ऊष्मणां विवृतं च AV. Prât. 1,31. 34 (°तम). Ind. St. 4,118. fgg. Schol. zu P. 1,1,9. 8,4,68. द्वार R. 2,67,16. R. Gorr. 2,99,4. Kumâras. 4,26. Râǵa-Tar. 6,7. बिल R. 4,51,37. 52,7. 57,21. गर्त Mârk. P. 21,9. आश्चर्यमिव पश्यामि यस्यास्ते वृत्तमीदृशम् । आचरन्त्या न विवृता सद्यो भवति मेदिनी ॥ *dass sich die Erde nicht aufthut* R. 2,35,12. तस्याः शरीरं विवृतं प्रविश्य R. Gorr. 1,47,17. शतधा विवृतं कवचम् 3,34,18. शोकसागर 4,22,14. संसारवर्त्म विवृतं कः पिधातुं

तदीश्वरः Kathâs. 28,182. द्विजाः *blossgelegte Zähne* Bhâg. P. 6,6,41. 10,61,37. °स्मयन *ein Lächeln, wobei man die Zähne zeigt*, Âçv. Çr. 12,8,5. *offen zu Tage liegend* MBh. 1,2246. Varâh. Bṛh. S. 68,111. Spr. 3305. अवसर *eröffnet*, *dargeboten* Bhâg. P. 5,2,6. विवृतम् *vor aller Augen* MBh. 13,6225. विवृतस्नान Pâr. Gṛhj. 2,7. नहि शक्नोति विवृते प्रत्याख्यातुं नराधिपम् *gerade heraus* oder *öffentlich* MBh. 4,344. *enthüllt*, *kundgethan*, *offenbart*, *auseinandergesetzt*; = विस्तृत Med. t. 156. वेदाः Muṇḍ. Up. 2,1,4. पौरुष Spr. 4464. मन्त्र MBh. 12,36. आत्मन् Hariv. 4242. Ragh. 15,93. Kumâras. 3,11. Çâk. 44. Bhâg. P. 8,24,38. Pañkar. 2,7,30. Kull. zu M. 2,220. Sarvadarçanas. 31,15. 38,12. 87,1. 94,3. 148,19. वीवृत *kundgethan* Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,26. — 2) *verdecken*, *verhüllen*, *verstopfen*: वसनस्येव छिद्राणि साधूनां विवृणोति यः MBh. 3,13755. विशेषतः पिदधाति Nilak.; offenbar fehlerhaft für पिवृणोति (s. u. अपि). — विवृतैः Hariv. 3926 fehlerhaft für विधृतैः, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. विवर, विवरण, विवृता, विवृति.

— सम् 1) *zudecken*, *verhüllen*, *verbergen*: अश्मसहिता धाराः संवृण्वत्यः समन्ततः MBh. 3,10981. Mṛkkh. 46,18. Sâj. zu Ṛv. 1,52,5. राज्ञो लोचने संवृणोति Vikr. 47,12. (शराः) शलभा इव संवृण्वाना दिशो दश MBh. 7,1339. वस्त्रेण संवृत्य मुखम् 2,2623. संवृत्याकारमात्मनः Kathâs. 31,88. व्याघातौ हि महान्तौ मे संवर्तुं नृप दुष्करौ MBh. 4,52. *verschliessen*: द्वाराण्येतानि यो ज्ञात्वा संवृणोति 5,1484. संवृत *verdeckt*, *bedeckt*, *eingehüllt in*, *verhüllt* H. 1476. Halâj. 4,58. अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः प्र सोम इन्द्र सर्पतु *der* Soma *beschleiche dich, wie man verhüllt zu Weibern schleicht*, AV. 8,17,7. मलेन MBh. 3,2699. विषेण 2623. उल्बेन Bhâg. P. 3,31,8. चर्मणा M. 11,108. वाससो ऽर्धेन MBh. 3,2335. वल्कलाजिन° R. 1,1,31 (33 Gorr.). 2,75,30. Jâǵn. 3,199. Varâh. Bṛh. 27 (25), 16. 32. Bhâg. P. 4,4,24. सु° MBh. 1,4934. 4940. नीलालकवृन्द° (आनन) Bhâg. P. 4,25,31. काञ्चनैः कमलैः R. 4,44,14. पाण्डुकम्बल° (नौ) 2,89,13. असंवृतां संस्तरणेन मेदिनीम् R. Gorr. 2,8,59. असंवृतायां भूमौ *auf der blossen Erde* 9,35. 5,21,4. चन्द्रलेखा नीलाभ्रसंवृता MBh. 3,2671. तमसा सूर्यः R. 1,74,14. 4,39,9. Kâm. Nîtis. 16,23. Pañkar. 1,2,63. Bhâg. P. 1,7,30. अङ्गुलिसंवृताधरोष्ठ Çâk. 73. महता मेखलेन सुसंवृतः so v. a. *umgürtet* R. 5,24,26. सौधप्राकार° *umgeben von* R. Schl. 2,80,19. 80,19 (87,22 Gorr.). 5,56,67. पुलिने जलसंवृते 4,24,30. Varâh. Bṛh. S. 54,40. करसंवृतमध्या so v. a. *mit der Hand umspannt* R. 3,52,35. कंधरान्तर° 4,10,22. ब्राह्मणाग्र्यैः *umgeben von* MBh. 3,571. 1017. 2070. 5,2223. R. 2,34,16 (35,14 Gorr.). 96,3. R. Gorr. 1,79,26. 109,11. 4,13,10. Vet. in LA. (III) 5,16. सखीभिः सह संवृता Hariv. 4599. *verborgen*, *versteckt*, *geheim gehalten* Kaush. Up. 1,1 (n. *ein verborgener Ort*). गृह MBh. 1,5722. 4,140 (सु°). 571. R. Gorr. 2,101,13. 5,13,25. 53,4. 69,2. Pañkat. 91,2. भिक्षुरूपेण R. 3,52,14. °संवार्य Spr. 4464. Çat. Br. 14,6,8,8. MBh. 1,2246. R. 5,40,8. मन्त्र Kâm. Nîtis. 8,9. Ragh. 1,20. 7,27. Çâk. 44. Vikr. 43,5. Varâh. Bṛh. S. 68,54. Kathâs. 54,110. Bhâg. P. 1,18,17. 4,16,10. Verz. d. Oxf. H. 29,*a*,6. सुसंवृत *sehr auf seiner Hut seiend* Mârk. P. 32,22. स्व° (सु°?) dass. M. 7,104. *geschlossen*: संवृतापणवेदिका (so die ed. Bomb.) R. 2,42,23. कर Varâh. Bṛh. S. 68,39. लज्जासंवृतलोचन MBh. 3,1835. 6,5823. छिद्र Spr. 4244. °सर्वकारक Bhâg. P. 8,6,16. कण्ठस्य खे विवृते संवृते वा Ṛv. Prât. 13,1. संवृतो ऽकारः AV. Prât. 1,36. Ind. St. 4,118. fgg. Schol. zu P. 1,1,9. 8,4,68. *eingeschlossen in*: घट° (आकाश) Schol. zu Kap. 1,51. अयं पटः संवृत एव शोभते *eingeschlossen* so v. a. *verwahrt*, *bei Seite gelegt* Mṛkkh. 33,17. क्लेशसंवृतचेतना *geschlossen* so v. a. *unthätig* R. 5,30,12. *besetzt*, *in Beschlag genommen* MBh. 3,14870. fg. *erfüllt*, *voll von* Çat. Br. 14,5,5,18. शर्कैर्भूमिः R. 1,54,21 (55,21 Gorr.). तिमिनाग° (ह्रद) 2,81,16. भय° Bhâg. P. 10,4,35. युद्धाद्ब्राह्मणसंवृतात् so v. a. *von einem Kampfe, an dem auch Brahmanen Theil nehmen*, MBh. 1,7118. *versehen mit*, *begleitet von*: तुल्याभिजन° 3,2677. धर्म° (भारती) 4,914. ब्राह्मण्यं दुर्लभतरं संवृतं परिपन्थिभिः 13,1920. vielleicht so v. a. *mit Allem wohl ausgerüstet* 1814. — 2) *zusammenlegen*, *in Ordnung bringen*: यावद्वस्त्रं च वेणीं च विस्रस्तां संवृणोम्यहम् Kathâs. 64,38. पाशान्संवरितुम् Hit. 23,11, v. l. med. etwa *sich sammeln*, — *vereinigen*: समिथो वरन्त Ṛv. 1,121,15. — 3) *hemmen*, *abwehren*: संवरिषीष्ठास्त्वं शत्रोः पराक्रमम् Bhaṭṭ. 9,27. *Jmd abweisen*, *zurückweisen* Kathâs. 30,22. संवृत *gehemmt*, *unterdrückt*: °मैथुन Hariv. 1365. अभिमुखे मयि संवृतमीक्षितम् Çâk. 44, v. l. *gedämpft* (= समान Comm.) Ṛv. Prât. 15,10. — 4) असंवृत Bez. einer Hölle M. 4,81. — 5) संवृत vielleicht fehlerhaft für संभृत in der Stelle: वाजपेयसहस्राणां सहस्रैः सुसंवृतैः MBh. 7,2386. — Vgl. संवर, संवरण, संवृति. — caus. *zurückhalten*, *abhalten*, *abwehren*: प्रविशन्तं वनं द्वारि गन्धर्वाः समवारयन् MBh. 3,14868. अस्त्रैरस्त्राणि संवार्य 4,2057. 13,1981. Hariv. 6682. MBh. 3,14994.

— अभिसम् *verdecken*, *verhüllen*: अर्कं च सहसा दीप्तं स्वर्भानुरभिसंवृणोत् MBh. 5,7239. अभिसंवृत *bedeckt*, *verdeckt*, *verhüllt*: श्वेतच्छत्राभिसंवृत 7,1501. सर्वं बाणाभिसंवृतम् Hariv. 8075. R. Gorr. 2,125,11. शोकजालेन महता विततेन 5,18,10. वस्त्रार्धेन MBh. 3,2731. 2908. शैलो नीहारेण 1,6022. रजसा सूर्यः 7,667. Spr. 2969. *umgeben von*: सागरेण R. 5,9,14. Pañkar. 3,11,14. कुरुभिः MBh. 5,3239. 6,2415. Hariv. 5071. 11406. R. 2,42,22 (41,20 Gorr.). 3,63,13. 5,53,18. 6,2,32. 92,83. *erfüllt von*, *besetzt mit*, *voll von*: निरन्तरमभूत्तत्र जनौघैरभिसंवृतम् MBh. 2,911. यदोभिर्मकरावासः 7,400. विविधजनाभिसंवृता (पुरी) R. 7,70,17. शोकाभिसंवृता 4,19,5. *verbunden* —, *versehen mit*, *im Verein mit*: वीरलक्ष्म्या MBh. 18,5. इदं देवर्षिचरितं सर्वतीर्थाभिसंवृतम् (पठन्) 3,8261. 13,6765. किलकिलाशब्दः प्रभाजालाभिसंवृतः Harriv. 6813.

— समभिसम्, °समभिसंवृत *umgeben*: रघुवंशेन MBh. 6,4497.

2. वर्, वृणोति, वृणुते (वरणे) Dhâtup. 27,8. वृणाति, वृणीते (वरणे) 31,16. 20. अवृणि 1. sg. Ṛv. 10,33,4. (आ) वैरस्, वरन्त; ववार, वव्रे, ववृषे, ववृमहे; अवरिष्ट, अवृत, वृत, अवृथास्, अव्रि 1. sg. Ṛv. 4,55,5. अवृषत 3. pl., वुरीत Ṛv. 5,50,1. 6,14,1. वरिषीष्ट; वरितुम्, वरीतुम्; व्रियताम्, वृत; *sich erwählen*, *vorziehen*, *wünschen*; *lieber wollen als* (abl., ausnahmsweise instr.), *lieben*: दूतम् Ṛv. 1,44,3. होतारम् 58,7. सोमम् 32,3. योषावृणीत युवां पती 119,5. वयमव इन्द्रे वृणीमहे 114,9. इषं वरमरूण्यो वरन्त 140,13. 187,2. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये 3,9,1. 12,3. 36,8. ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन् *vorziehen* 39,7. अस्मा इन्द्रा वृणीष्व सख्याय 4,31,11. सोमात्सुतादवृणीता वसिष्ठान् 7,33,2. 9,88,1. अपो वृणानः पवते 94,1. कुरुश्रवणमावृणि मंहिष्ठं वाघतामृषिः 10,33,4. त्वां विशो वृणतां राज्याय AV. 3,4,2. अपक्रामन्पौरुषेयाद्वृणानो दैव्यं वचः 7,105,1. याभिः सत्यं भवति यद्वृणीषे 9,2,25. 10,4,21. भसन्तु ष प्र पूर्व्य इषं वुरीतावसे *Trank mag er sich wählen* d. h. *sich nehmen zur*

Genüge Ṛv. 6,14,1. सा तथेत्यब्रवीत्सा वै वो वरं वृणा इति वृणीष्वेति Ait. Br. 1,7. 2,22. गवां त्रीणि शतानि त्वमवृणीथा मत् *waren dir lieber als ich* 7,17. TS. 2,5,1,3. Çat. Br. 11,5,1,12. 14,7,1,1. कान्त्विद्गो ऽवृथाः 10,3,4,1. Âçv. Gṛhj. 1,23,1. fgg. 24,1. VS. 28,12. act.: इन्द्रो वृत्रमवृणोत्प्र मायिनामभिनात् (doppeltes Wortspiel) I. *suchte den* Vṛ. *aus, ihn unter den Zauberern vernichtete er* Ṛv. 3,34,3. — त्रीन्वरान्वृणीष्व Kaṭhop. 1,9. Kaush. Up. 3,1. MBh. 3,6000. Ragh. 2,63. 3,63. Kathâs. 22,189. Bhâg. P. 4,20,23. Mârk. P. 16,87. 91,34. वृणु त्वं वरमीप्सितम् MBh. 1,3391. R. 2,9,25. व्रियतामीप्सितो वरः Bhâg. P. 7,3,17. Mârk. P. 16,50. वरदं तं वरं वव्रे MBh. 1,498. वरं च मत्कंचन वृणीष्व Bhâg. P. 4,20,16. सा वव्रे मत्पराजयम् *erbat sich* MBh. 5,7377. R. 2,31,5. यदेव वव्रे तदपश्यदाहृतम् Ragh. 3,6. Kathâs. 15,1. Bhâg. P. 4,12,8. Weber, Râmat. Up. 344. स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनि चैव रूपाणि देही स्वगुणैर्वृणोति Çvetâçv. Up. 5,12. अन्यद्वृणीतम् MBh. 1,7639. अवृणोत्पाण्डवानामदासताम् 2,2698. ववार रामस्य वनप्रयाणम् Bhaṭṭ. 3,6. वृतं तेनेदम् Kumâras. 2,56. AK. 3,2,41. H. 1484. यन्मनोगतं मत्तः — वृणीहि Bhâg. P. 4,12,7. Kathâs. 7,57. Bhaṭṭ. 9,25. AK. 3,4,24,175. तद्वृणीष्व माम् *das erbitte dir von mir* Mârk. P. 24,4. वृणोमि धर्मं न महीमधर्मतः R. Gorr. 2,18,54. कामादर्थं वृणीते यः *zieht vor* MBh. 5,990 (eig. 995). अपक्रमणमेवातः (so die ed. Bomb.) सर्वकामैरहं वृणे R. 2,34,40. वव्रे यज्ञेयमिति 32,41 (45 Gorr.). वव्रे पुत्रं मारुतविक्रमम्। द्विजप्रसादादिच्छेयम् 5,3,24. वव्रे स च प्रभुम्। देवदानवयक्षाणाम् — अवध्यो भवेयं वै *er erbat sich von* MBh. 3,13583. रामं वरीतुं परिरक्षणार्थम् Râma *um Schutz anzugehen* Bhaṭṭ. 1,17. अवरिष्टाक्षमक्षम्यं कपिं हन्तुम् *er bat* Aksha *den Affen zu tödten* 9,26. यक्ष्यमाण आरुणिं वव्रे (d. i. zum Ṛtviǵ) Kaush. Up. 1,1. अन्यानवृषि Khând. Up. 1,11,2. MBh. 1,6914. वसिष्ठमवृतर्त्विजम् Bhâg. P. 9,13,1. वृणुयादेव चर्त्विजम् M. 7,78. वृत 2,143. 8,206. तां न वव्रे पुरुषः कश्चित् *es erwählte kein Mann sie* (zur Gattin), *es warb Niemand um sie* MBh. 3,8567. न च कश्चिद्वृणोति त्वाम् (so zu lesen) 16647. तेन चास्मि वृता पूर्वम् 5,5971. Bhâg. P. 4,27,20. पुत्रस्य कृते वव्रे वसुदत्तस्य कन्याम् *er warb für den Sohn um* Kathâs. 21,58. पितरं नो वृणीष्व *werbe beim Vater um uns* R. 1,34,29. नान्यं पतिं वृणे MBh. 1,3388. 3,2173. 2187. 10541. Ragh. 12,33. Kathâs. 20,118. 44,41. Bhâg. P. 3,14,12. 4,27,21. 6,6,39. स्वयं हि वृण्वते राज्ञां कन्यकाः सदृशं वरम् 9,20,15. 10,60,11. सकृद्वृतो मया भर्ता न द्वितीयं वृणोम्यहम् MBh. 3,16684. वृते नैषधे भैम्या 2225. 2242. 2963. Vikr. 101. अथैश्च त्वां वृणुते पद्मा R. 2,70,12. वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः Spr. 3226. Kathâs. 66,109. तं शुक्रवृषपर्वाणौ। वव्राते वै यथा पुरा so v. a. *zum Schwiegersohn ersehen* MBh. 1,3185. तं पौरोहित्याय वव्रे 675. Bhâg. P. 7,5,1. देवा वव्रिरे ऽङ्गिरसं मुनिम्। पौरोहित्येन याज्यार्थे काव्यं तूशनसं परे॥ MBh. 1,3188. पतित्वे 3,2208. Ragh. 16,24. सारथ्ये भोजने MBh. 3,2901. अत्रेरपत्यत्वं (°त्वे?) वृतः Bhâg. P. 1,3,11. यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थे (so die ed. Bomb.) वृतवानसि so v. a. *an Tochter Stelle annehmen* MBh. 5,7502. असमञ्जं वृणीष्वैकमस्मान्वा so v. a. *wähle zwischen ihm und uns* R. 2,36,20. परान्वृणीते स्वान्द्वेष्टि *liebt* MBh. 5,4149. *Jmd zum Gnadenempfänger erwählen* so v. a. *Jmd* (acc.) *eine Gnade gewähren*: वरीतुं त्वां तु शक्नुयाम् Râǵa-Tar. 3,421.

— caus. वरयति, °ते (ईप्सायाम्) Dhâtup. 35,2. *sich erwählen, — ausbitten, Jmd um Etwas angehen, werben um:* वरं वरय MBh. 1,6429. R. 1,31,13. 43,17. Bhâg. P. 2,9,20. 7,10,14. Mârk. P. 19,13. Hit. 116,7. वरयस्व MBh. 2,2410. 3,16778. Hariv. 7972. कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् Spr. 3864. खनित्रपिटके R. Gorr. 2,37,5. ज्येष्ठां हिमवतः सुतां गङ्गां वरयां चक्रिरे देवाः 1,37,17. सरथौ सधनुष्कौ च भीमसेनधनंजयौ। यमौ च वरये राजन्नदासान्स्ववशानहम्॥ *ich erwähle mir als Gnade, dass sie im Besitz von Wagen* u. s. w. *seien*, MBh. 2,2411. *Jmd bitten um*, mit dopp. acc.; act. MBh. 13,1119. R. 1,36,16. R. Gorr. 1,40,12. 2,9,18. — तं च राजा यष्टुकामो वरयिष्यति sc. zum Ṛtviǵ R. Schl. 1,10,9. आचार्यं वरयेयं त्वामस्त्रार्थम् MBh. 3,12015. सहायं वरयामास मारीचम् R. 1,1,48 (52 Gorr). 10,13. तं भर्तारं वरयामास MBh. 1,3779. 3,2157. 2169. fgg. 2189. 2217. 2769. 2972. fg. वरयेथाः प्रभे ऽद्य तम् (sc. भर्तारम्) 1,7004. 3,2180. R. Gorr. 1,35,42. तां न कश्चिद्वरयामास (sc. पत्नीम्) MBh. 3,16643. Spr. 4972. MBh. 13,112. med. 3,2241. वरयित्वा 1,6134. दंपती। वरयां चक्रतुः कन्यां दशार्णाधिपतेः सुताम् *sie warben um* sc. für den Sohn 5,7417. fg. नृपतेस्तनुजां शिखण्डिने वरयामास दारान् 7418. वरये त्वां महीपाल लोपमुद्रां प्रयच्छ मे 3,8571. 13,105 (act.). रामलक्ष्मणयोरर्थे त्वत्सुते वरये R. 1,70,44. सुताद्वयं पत्न्यर्थं वरयामहे 72,5. 6. R. Gorr. 1,72,34. 74,5. 8. 7,80,11. तं यज्ञाय वरयामास R. Schl. 1,11,2. पार्थिवस्त्वां वरयते नगोत्तम ध्वजार्थम् Varâh. Bṛh. S. 43,18. सख्ये R. 5,89,17. पतित्वे MBh. 3,2140 (med.). मैत्र्याद्वरयित्वा विदूषकम् Kathâs. 18,342. ओंकारो ऽथ वषट्कारो वेदाश्च वरयन्तु माम् so v. a. *mögen mir hold sein* R. 1,65,21. R. Gorr. 1,67,13. — वरयति ist eigentlich denom. von वर.

— अप *abfinden:* अप त्वा वृणे शतेन Lâṭj. 9,9,20.

— अभि *erwählen:* मया शाल्वपतिः पूर्वं मनसाभिवृतः MBh. 5,5971. Pańkar. 3,9,14. बहूनि सहस्राणि ग्रामणीत्वे ऽभिवव्रिरे MBh. 12,4861. श्रेयो हि धीरो ऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते *erwählen vor* so v. a. *vorziehen* Kaṭhop. 2,2.

— आ 1) *erwählen, erwünschen:* अवः Ṛv. 2,26,2. 41,19. 3,2,4. इषः 12,5. आ वो वृणे सुमतिम् 33,11. 37,9. 7,59,11. 97,2. यस्य त्वं सख्यमावरः 8,19,30. AV. 19,42,3. — 2) *Jmd Etwas zukommen lassen:* यां चान्ते दक्षिणामावृणोति MBh. 13,4317. = प्रयच्छति Nîlak. mit Erwähnung einer Lesart आपृणोति.

— व्या *erwählen:* तां कन्यां व्यावृण्वन्पार्थिवाः MBh. 1,4413 nach der Lesart der ed. Bomb., व्यवृण्वन् ed. Calc.

— उद् scheinbar R. 2,11,9, wo aber mit der ed. Bomb. उद्धरस्व st. उद्वरस्व und ausserdem माम् st. मे zu lesen ist.

— निस् *auswählen:* निरेकमिद्वृणाते वृत्रहत्यै Ṛv. 4,19,1. TBr. 1,3,6,7. 6,1,10.

— परि *erwählen:* युवोः श्रियं परि योषावृणीत Ṛv. 7,69,4. 4,41,7.

— प्र *erwählen:* प्र त्वा दूतं वृणीमहे Ṛv. 1,36,3. 3,19,1. पूषणं युज्याय 8,4,15. प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः *von dem gekelterten Tranke nehme er an* 9,101,13. पुरोहितस्यार्षेयेण प्रवरं प्रवृणीरन् Ait. Br. 7,25. TS. 2,5,11,9. Çat. Br. 1,3,5,3. 4,2,3. 2,5,2,30. 6,1,23. Kâtj. Çr. 9,8,8. यथाप्रवृतम् 16. आर्षेयाणि गृहपतेः प्रवरित्वा (falsche Form mit Anklang an प्रवर; प्रथमं वरित्वा Comm.) Âçv. Çr. 4,1,17. करोमि कामं कं ते ऽद्य प्रवृणीष्व यथेच्छसि MBh. 7,437. 3,17196. धर्मं तु यः प्रवृणीते 5,771. Bhaṭṭ. 20,23. यावन्न ते ऽङ्घ्रिभयं प्रवृणीत लोकः Bhâg. P.

3,9,6. 31,15. यदा नान्यं प्रवृणुते वरम् MBh. 3,17186. प्रवृणोमि Bhâg. P. 3,4,15. प्रवव्रे 4,20,26. प्रवृत so v. a. *adoptirt als Sohn* 9,7,1. — Vgl. 1. प्रवर, 1. प्रवरण, प्रवृतहोम fg. — caus. I. प्रवरयति *erwählen* MBh. 3,10810. — II. प्रवारयति 1) *Jmd befriedigen:* ननु भोज्येषु पानेषु वस्त्रेष्वाभरणेषु च प्रवारयसि नः R. 2,77,15. — 2) *anbieten, ausbieten:* पण्यस्त्रीव प्रवारिता MBh. 5,6006. प्रचोदिता ed. Bomb. — Vgl. प्रवारण 1) und प्रवार्य.

— प्रति *erwählen:* ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत AV. 3,3,5.

— वि s. u. व्या.

— सम् *erwählen, aufsuchen:* कृतज्ञं वृद्धाश्रयं संवृणुते (pl.!) ऽनु संपदः Bhâg. P. 4,21,43.

1. वर (von 1. वर्) m. 1) *Umkreis, Umgebung, Raum* AV. 13,4,53. स मानुषीरभि विशो वि भाति वैश्वानरो वावृधानो वरेण (oder *Wahl*) ṚV. 7,5,2. वर आ पृथिव्याः *auf dem Erdenrund* 3,23,4. 53,11. AV. 7,8,1. उभा स वरा प्रत्येति भाति च ṚV. 5,44,12. वरे देवानामव स्यति TS. 2,5,6,1. Vgl. वरस्, वरसद्. — 2) *das Hemmen:* न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा ṚV. 1,143,5.

2. वर (von 2. वर्) nom. ag. (f. आ) *wählend;* s. पतिंवरा. m. *Freier* (auch *Bräutigam, Geliebter, Gatte* H. 8. 516. Halâj. 2,342); *Freiwerber* ṚV. 1,83,2. 5,60,4. सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् 9,101,14. सूर्याया अश्विना वरा 10,85,8. 9. AV. 2,36,1. 5. 6. 11,8,1. Ait. Br. 4,7. Kauç. 24. स्नातं कृतमङ्गलं वरम् Çâṅkh. Gṛhj. 1,12. Dunkel ist: वरेभिर्वराँ अभि षु प्रसीदतः ṚV. 10,32,1. — M. 2,138 (Jâǵn. 1,117). 3,29. Jâǵn. 1,55. इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च M. 3,32. 9,88. MBh. 3,16647. Hariv. 5948. सदृशं चावकृष्टं च प्राप्य कन्यापिता वरम् *einen Freier für die Tochter* d. i. *Eidam* (daher वर = जामातर् Trik. 3,3,363. H. an. 2,450. fg. Med. r. 63) R. 3,4,21. 32 (वरवत्). 36. Ragh. 6,86. 7,4. 17. Çâk. 15,11. 88, v. l. Spr. 702. 2724. AK. 2,7,57. Kathâs. 16,67. का वरस्य विचारणा 24,32. 26,152. 30,73. 34,255. 35,133. 44,106. 52,400. 79,27. fg. 89,106. 103,189. 122,54. Sâh. D. 4,22. वरार्थ (= पतिकाम Comm.) Bhâg. P. 3,8,5. 14,12. 4,27,8. 9,6,43. 20,15. Pañkat. 129,15. LA. (III) 13,1. 29,14. 35,20. = विट, षिड्ग H. an. Med. — Vgl. ज्येष्ठ°.

3. वर (wie eben) m. P. 3,3,58. (hier und da auch n., z. B. MBh. 1,7644. 8,1764. 1767. Râǵa-Tar. 3,67. an allen Stellen ist leicht eine Correctur anzubringen; sicher steht das n. MBh. 1,7645 und Varâh. Bṛh. S. 58,38). am Ende eines adj. comp. f. आ. *Wahl, Wunsch; ein als Geschenk oder Lohn zu wählender Gegenstand: das Wünschenswerthe, Erwünschte; Wahlgabe, Lohn* Ind. St. 5,343. = वृति AK. 3,3,8. H. 1523. an. 2,450. Med. r. 63. = देवादृतम् AK. 3,4,25,175. = देवतादेरभीप्सितम् H. an. Med. = वृत Trik. 3,3,363. n. = किंचिदिष्ट H. an. आद्यः स्त्रीणां वरः (sc. पतेः) स्मृतः Bhâg. P. 9,14,21. नातो वरान्तरम् Weber, Râmat. Up. 345. कश्चिदत्रापि रुचिरस्ते वरो भवेत्। अथ वान्यां दिशं भूमेर्गच्छाव यदि मन्यसे MBh. 5,3582. पश्य यद्यत्र कश्चित्ते रोचते वरः 3633. एषो न स्याद्वरो मम *mein Wunsch ist, dass* 7,2058. Hariv. 4627. स्त्रीणां वरमनुस्मरन् Jâǵn. 1,81. वरं वर् *einen Wunsch wünschen, eine Bedingung machen:* इषं वरमरुण्यो वरन्त ṚV. 1,140,13. भद्रं वै वरं वृणते 10,164,2. त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे AV. 11,1,10. Ait. Br. 1,7.3,33. Kaush. Up. 3,1. MBh. 1,3391. 3,6000. R. 2,9,25. Ragh. 2,63. 3,63. Kathâs. 22,189. 38,70. Hit. 116,7. वरं याच् M. 3,258. R. 1,1,22 (25 Gorr.). 2,107,5. R. Gorr. 2,8,24. 37,16. 3,53,6. प्रार्थय् Spr. 1530. Râǵa-Tar. 3,67. 419. 5,182. Pañkat. 135,8. एकस्य वरः प्रार्थनीयः 137,19. वरं काङ्क्ष् R. 1,55,14. वराकाङ्क्षिन् Râǵa-Tar. 3,394. आचख्यौ सैव तद्वरणं वरम् 434. वरं ब्रूहि Vet. in LA. (III) 28,9. वराय चोदितः Bhâg. P. 4,12,8. वरं दा *einen Wunsch thun lassen, eine Wunschgabe gewähren* AV. 20,135,10. TS. 7,1,6,5. त्रीन्वरान्दद्यात् 5,2,8,2. TBr. 2,2,1,5. Ait. Br. 8,9. Çat. Br. 2,2,1,4. Jâǵn. 1,306. MBh. 1,7644. 3,2079. 2225. 16897. 8,1764. 1767. 1769. R. 1,4,22. 2,26,21. 34,42. 107,4. 3,53,8. Kathâs. 18,161. Râǵa-Tar. 3,420. Bhâg. P. 4,19,40. वरं प्रदा R. 5,3,22. वरस्य गोत्रस्य दावने ṚV. 8,52,5. AV. 16,6,10. तत्संश्रुतो वरो Ragh. 12,5. तस्य वरो ब्रह्मणायमाज्ञप्तः Varâh. Bṛh. S. 5,14. वरं लभ् *seines Wunsches —, einer Wunschgabe theilhaftig werden* MBh. 1,2410. 7645. fg. Varâh. Bṛh. S. 43,3. Bṛh. 28 (26),9. प्रभवो वरशापयोः *Wünsche zu gewähren und Flüche auszustossen* Bhâg. P. 4,14,27. प्रति वरम् *nach Wunsch, nach Belieben* ṚV. 2,11,21. 10,133,7. वरमा dass.: अस्य पिब सोमस्य वरमा सुतस्य 116,2. 1,88,2. प्रति प्र यातं वरमा जनाय 7,70,5. 65,4. 2,39,2. वैश्वानरो वरमा रोदस्योराग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् *A. wohnt nach Belieben im Schooss der Welten oder seiner Eltern* (könnte aber auch zu वरम् gezogen werden) 7,6,6. वराय *zur Wahl, zur Befriedigung, nach Herzenslust:* का त उपेतिर्मनसो वराय 1,76,1. स्वादुः रसो मधुपेयो वराय 6,44,21. यो वो वराय दाशति 7,59,2. वराय मन्यवे *nach Wahl und Sinn* 8,71,3. 73,4. मद्वरात् *in Folge der von mir gewährten Wunschgabe* Kathâs. 18,316. 27,105. so v. a. *Vorzug, Privilegium:* एष वरो वणिजामीदृशेषपराधेषसुभिरवियोगः Daçak. 82,10. — आदित्यं चरुं निर्वपति वरो दक्षिणा TS. 1,8,1,1. वरो दक्षिणा। वरो हि राज्यम् *denn das Erwünschte ist Herrschaft* TBr. 1,6,1,5. वरो दक्षिणा। वरेणैव वरं स्पृणोति। आत्मा हि वरः 3,12,5,7. In diesen und anderen Stellen erklären die Comm. unter Berufung auf Âpastamba das Wort durch गो. अश्वो निविद्वरो वरो वा nach Comm. *der Lohn für* Nivid *ist ein Ross oder ein Rind* Çâṅkh. Çr. 7,21,9; dazu vgl. तस्मादाङ्कुरश्वं निविदां शंस्त्रे दद्यादिति तद्ध खलु वरमेव ददाति Ait. Br. 3,11, wo Sâj. *und zwar das beste* erklärt; eher *und zwar lässt man wählen.* पशुर्दक्षिणा धेनुर्वरो वा nach Comm. *oder was er sich wünschen mag* Kâtj. Çr. 6,7,29. 10,38. Lâṭj. 4,12,13. Taitt. Âr. 2,16,3. Gobh. 3,2,31. आचार्याय वरं ददाति गौर्ब्राह्मणस्य वरो ग्रामो राजन्यस्य Pâr. Gṛhj. 1,9.2,1. Çâṅkh. Çr. 1,4,13. Gṛhj. 1,24. Kauç. 94. 106. Kâtj. Çr. 1,10,12. 9,6,2. Lâṭj. 2,9,15. Jâǵn. 1,51. so v. a. *Mitgift:* प्राप्तवरां कन्याम् Pañkat. 252,18. *Liebesgabe, Almosen* Varâh. Bṛh. S. 58,38. fg. — Vgl. काम°, दत्त (in der ersten Bed. auch R. 2,96,45), धारा°, स्वयं°.

4. वर (wie eben) 1) adj. (f. आ) a) (*erwünscht*) *der vorzüglichste, beste, schönste* AK. 3,4,25,173. 175. 30,237. H. 1439. an. 2,450. fg. Med. r. 63. Halâj. 4,4. देवा ददतु यद्वरम् Çâṅkh. Çr. 12,19,1. वरां (vielleicht वरं) धेनुं कर्त्रे दद्यात् Kauç. 112. 136. पुत्राः MBh. 1,2596. निघ्नमाना वरान्वरान् 7,1529. Hariv. 7904. भूषणानि R. 2,39,15. 68,9. दारूणि 56,14. भोगाः R. Gorr. 1,4,7. 3,52,40. कन्याः 4,25,26. 5,11,22. Varâh. Bṛh. S. 74,1. Râǵa-Tar. 5,431. Bhâg. P. 1,12,14. 6,4,15. Mârk. P. 96,45. Pañkar. 1,6,22. एतत्तत्रभतां वरम् *am Besten für* R. Gorr. 2,95,21. फलं

वरमध्यनीचम् Varâh. Bṛh. S. 88,46. वराधममध्यमाः Bṛh. 23,17. Häufig mit seinem subst. comp.: °वस्त्र Adbhuta-Br. 6,6 in Ind. St. 1,40. °दक्षिणा Jâǵn. 1,358. वरासनेषु MBh. 1,7717. वराङ्गना 3,2507. वरायुधानि 8811. वरान्नपान° R. 1,5,15. °वस्त्राणि 2,30,44. 78,7. Ragh. 11,54. AK. 2,6,3,20. 3,4,31,240. Spr. 4323. Kathâs. 16,85. 18,98. Prab. 85,3. Kaurap. 22. Bhâg. P. 1,9,33. Mârk. P. 61,35. 65,5. mit einem gen. pl. *der beste, vorzüglichste unter:* सर्ववेदविदाम् MBh. 1,107. द्विपदाम् 3,2232. 17341. भार्या च सुहृदां वरा 4,44. 14,1528. R. 1,1,1. सरितां वरा 35,11. R. Gorr. 2,23,3. Ragh. 1,59. 5,23. Kumâras. 6,18. Kathâs. 22,187. Bhâg. P. 1,3,41. Mârk. P. 108,10. mit einem loc.: नरेषु च नलो वरः MBh. 3,2101. mit einem abl.: प्रमदाभ्यो वरा *die schönste unter den Frauen* 1,950. सर्वद्रव्याच्च यद्वरम् M. 9,112. दशतश्चाप्युयाद्वरम् 114. स दुह्यादशतो वराम् 8,231. Häufig in comp. mit dem im gen. u. s. w. gedachten Substantiv: पापो नृषद्वरो जनः (hierher nach dem Comm., eher jedoch नृषद्वर = नृषदन्; Çâṅkh. Çr. 15,19,1 hat निषद्वर) Ait. Br. 7,15. ग्रामवराः MBh. 1,4965. रथवरः 3,2294. नर° 2792. नृवरो नरोत्तिव 4,238. R. 1,1,66. पुरवरम् 6,6. 7,15. 9,65. मूल° 29,6. इक्ष्वाकु° 2,42,1. सरिद्वरा Ragh. 16,71. तरुवराः Ṛt. 3,10. Vikr. 119. Spr. 411. 564. 2186. 3053. Varâh. Bṛh. S. 19,6. 44,15. 48,56. Kathâs. 17,8. 24,137. Râǵa-Tar. 5,157. Bhâg. P. 3,5,40. Vet. in LA. (III) 1,13. नरवरोत्तम N. 12,38. नरवरश्रेष्ठ R. 2,61,3. 7,104,13. ein solches comp. am Ende eines adj. comp.: उत्फुल्लनानातरुवरासु वनभूमिषु Kathâs. 54,52. — b) *vorzüglicher, besser:* इमाः स्युः क्रमशो वराः M. 3,12. mit einem abl.: हिरण्यभूमिलाभेभ्यो मित्रलब्धिर्वरा यतः Jâǵn. 1,351. त्वमेवैकः शतादपि वरः सुतः MBh. 1,4030. 13,1441. R. Gorr. 2,80,10. Spr. 3397. 4201. Kathâs. 78,127. Prab. 52,14. statt des abl. der gen.: कामो धर्मार्थयोर्वरः Spr. 3049. — 2) m. a) *eine best. Körnerfrucht,* = वरट Schol. zu Kâtj. Çr. 102,17. — b) *Bdellion* Çabdar. im ÇKDr. — c) *Sperling* Çabdârthak. bei Wilson. — 3) f. आ a) Bez. verschiedener Pflanzen und vegetabilischer Stoffe: *die drei Myrobalanen* Med. *Clypea hernandifolia* Râǵan. im ÇKDr. Ratnam. 14. *Asparagus racemosus* 15. *Cocculus cordifolius DC., Gelbwurz,* = ब्राह्मी, मेदा und विडङ्ग Râǵan. im ÇKDr. = रेणुका Çabdaḱ. im ÇKDr. — Suçr. 2,104,10. 227,17. — b) Bein. der Pârvatî H. ç. 48. — c) N. pr. eines Flusses MBh. 6,333 (VP. 183). — 4) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. a) *Asparagus racemosus* AK. 2,4,3,19. Trik. 3,3,376. H. an. Med. — b) Bein. der Khâjâ, der Gattin des Sonnengottes, Trik. 1,1,100. — 5) n. *Saffran* AK. 2,6,3,25. Trik. 3,3,363. H. an. Med. Bhâg. P. 4,6,16. — Vgl. पृषद्वरा, बीजवर, बुद्धि°, ब्राह्मण°, मन्त्रि°, मल्लवरा, मेधावर, यशो°, लोह°.

वरवरा f. *eine best. Pflanze,* = चक्रपर्णी Çabdaḱ. im ÇKDr.

1. वरक (von 1. वर्) m. *Mantel* H. ç. 136. n. *Zeug* (धौताधौतसाधारणवस्त्र) Çabdar. im ÇKDr. *Zelt* (पोताच्छादन?) Hâr. 69.

2. वरक (von 2. वर्) m. 1) *Brautwerber* Çâṅkh. Gṛhj. 1,6. — 2) *Wunsch:* द्वितीयं वरकं वव्रे MBh. 3,9903.

3. वरक (von 4. वर्) m. 1) *Phaseolus trilobus* H. 1173. *eine best. Arzeneipflanze,* = पर्पट Râǵan. im ÇKDr. Aush. 6. *eine wilde Bohnenart* Mad. in Nigh. Pr. = शारपर्णिका Siddh. ebend. = वृत्त (तृणधान्यभेद) Râǵan. im ÇKDr. — 2) N. pr. eines Fürsten (Varianten: धनक, कनक) VP. 417, N. 9.

वरकल्याण m. N. pr. eines Fürsten Schiefner, Lebensb. 232 (2).

वरकाष्ठका f. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* Vâtar. in Nigh. Pr. *ein der* वराटिका *ähnliches Korn* Siddh. ebend.

वरकीर्ति m. N. pr. eines Mannes Pańkat. 129,14.

वरक्रतु m. Bein. Indra's Trik. 1,1,58. H. 173.

वरग N. pr. einer Oertlichkeit Hall 174.

वरघण्टिका und °घण्टी f. *Asparagus racemosus* Aush. 16. 29.

वरचन्दन n. 1) *schwarzes Sandelholz* H. an. 5,31. Med. n. 240. Hâr. 104. — 2) *Pinus Deodora* (देवदारु) *Roxb.* H. an. Med.

वरज = वरेज P. 6,3,16.

वरजानुक m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,108. घटजानुक ed. Bomb.

वरट Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,81. 1) m. a) *eine best. Körnerfrucht,* vermuthlich *der Same von Safflor* (*Carthamus tinctorius*) Schol. zu Kâtj. Çr. 102,5. 781,3. — b) *eine Art Wespe* AK. 2,5,27. — c) *Gans* Med. ṭ. 50. — d) Bez. *eines best. Handwerkers* R. Gorr. 2,90,16. zu den Mlekkha gezählt H. 934; vgl. वरुट, वरुड. — 2) f. आ a) *der Same von Carthamus tinctorius* Bhâvapr. im ÇKDr. u. Râǵan. in Nigh. Pr. — b) *eine Art Wespe* AK. 2,5,27. H. 1215. an. 3,170. Med. — c) *das Weibchen der Gans* AK. 2,5,25. H. 1327. H. an. Med. Halâj. 2,96. Saṅskṛtapâṭhop. 32,2. 4. — 3) f. ई a) *eine Art Wespe* Trik. 2,5,34. Med. Suçr. 2,258,3. 287,19. — b) H. an. 3,171 fehlerhaft für बदरी. — 4) n. *Jasminblüthe* (कुन्दपुष्प) Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. रक्तवरटी und वरल, वरला.

वरटक m. = वरट 1) a) Schol. zu Kâtj. Çr. 102,7. 648,8.

वरट्टिका f. dass. Bhâvapr. im ÇKDr.

1. वरण (von 1. वर्) Uṇâdis. 2,74. 1) m. a) *Wall* AK. 2,2,3. H. 980. an. 3,224. Med. ṇ. 66. *Damm* Halâj. 3,49. — b) *Crataeva Roxburghii R. Br.* (auch वरुण, सेतु genannt), ein heil- und zauberkräftiger, in ganz Indien vorkommender Baum, AK. 2,4,2,5. H. an. Med. AV. 6,85,1. 10,3,1. fgg. 19,32,9. Kauç. 8. Pańkav. Br. 5,3,9. 10. Hariv. 12677 (nach der Lesart der neueren Ausg., वरुण die ältere). R. 2,94,9. Suçr. 2,449,10. Kir. 5,25. — c) *Kameel* Hâr. 81. — d) Bez. *einer best. Verzierung auf einem Bogen:* वरणा (वारणा ed. Bomb.) यत्र सौवर्णाः पृष्ठे भासन्ति दंशिताः MBh. 4,1326. — e) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. 1,30,7. वरुण ed. Bomb. — f) pl. N. pr. eines Volkes Kâç. zu P. 1,2,53. N. pr. eines Reiches Hiouen-thsang II, 183. fgg. Vie de Hiouen-thsang 265; vgl. 2) b). — g) Bein. Indra's H. ç. 30; vgl. वारण. — 2) f. आ a) N. pr. eines Flusses bei Benares Med. Gâbâlop. in Ind. St. 2,74. Verz. d. Oxf. H. 46,a,31. 71,b,41. Weber, Râmat. Up. 344. 348. VP. 184 = MBh. 6,338, wo aber die ed. Calc. वरुणामसीम् (वरुणा und असी), die ed. Bomb. वराणसीम् liest; vgl. VP. (II) II, 152. — b) N. pr. einer Stadt P. 4,2,82. वरणानाम् (wohl der Baum gemeint) अदूरभवं नगरं वरणा (वरणाः Siddh. K.) Schol.; vgl. 1) f). — 3) n. a) *das Abwehren, Verbieten* H. 1539. — b) *das Umringen, Umgeben* (वेष्टन) Med.

2. वरण (von 2. वर्) n. *das Wählen, Wünschen, Werben* H. an. 3,224. Med. ṇ. 66. वर° Kâtj. Çr. 1,10,2. 5,4,33. ब्रह्म° 8,1,6. 25,11,8.

Schol. 132,16. 133,3. षोडशानामृत्विजाम् Verz. d. Oxf. H. 267,*a*,25. Kull. zu M. 2,143. 4,57. मित्र° Varâh. Bṛh. S. 99,6. क्रियतां वरणं (so verbesserte Schlegel st. वरुणं) लोकपालानाम् *man wähle* sc. zu Gatten MBh. 3,2171. न च विप्रेष्वधीकारो विद्यते वरणं प्रति। स्वयंवरः क्षत्रियाणामितीयं प्रथिता श्रुतिः॥ 1,7067. Kathâs. 28,79. स्वयं कलिङ्गसेनाख्या वरणाय ममागता 31,61. Râǵa-Tar. 3,434. Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,34. कन्या° R. 1,70 (72 Gorr.) in der Unterschr. वरणं रोचयन्ति मे 7,17,10. Varâh. Bṛh. 24,16. = पूजनादि Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. पुनर्वरण.

वरणात्क (von 1. वरण) adj. *verdeckend, verhüllend* Sâṁkhjak. 13.

वरणमाला f. *der Kranz, den das Mädchen dem erwählten Bräutigam aufsetzt*, Kathâs. 56,278. — Vgl. वरणस्रज् und वरस्रज्.

वरणसी f. = वाराणसी Çabdar. im ÇKDr.

वरणस्रज् f. = वरणमाला Râǵa-Tar. 1,62; vgl. मन्दावराक्रमौलिस्रक्तस्य मूर्ध्नि पपात च। तदंसस्थितया पृथ्व्या वरणार्थमिवार्पिता॥ 7,1322.

वरणावती (von 1. वरण) f. vielleicht N. pr. eines Flusses AV. 4,7,1.

वरणीय (von 2. वर्) adj. *zu wählen, zu erwählen:* वर Kaṭhop. 1,27. पति Kathâs. 56,248. 107,86. Sarvadarçanas. 59,3.

वरणट s. जल°.

वरण्ड Uṇâdis. 1,128. m. AK. 3,6,2,18. Siddh. K. 249,*b*,16. 1) m. *a) Menge.* — *b) Ausschlag im Gesicht.* — *c) eine Veranda* (अन्तरावेदि) Trik. 3,3, 114. H. an. 3,185. Med. ḍ. 33. Viçva bei Uǵǵval. — Wilson nach Çabdârthak. ausserdem: *a heap of grass; the string of a fish hook; a packet, a package.* — 2) f. आ *a) eine Art Drossel* (सारिका) H. an. Med. ḍ. 36. Hâr. 89. — *b) Dolch, Messer* H. an. Med. — *c) Docht* (वर्ति) Med.

वरण्डक 1) m. *a) eine kleine Erdaufschichtung* Schol. zu Kâtj. Çr. 688,20.23. — *b) der Sitz auf einem Elephanten.* — *c) Ausschlag im Gesicht* H. an. 4,32. Med. k. 202. — *d) Wand* H. an. — 2) adj. *a) rund* H. an. Med. — *b) gross, umfangreich.* — *c) elend* (कृपण). — *d) erschrocken* (भयसंपन्न) Çabdar. im ÇKDr.

वरण्डालु m. *ein best. Knollengewächs*, = फलपुच्छ Trik. 2,4,34.

वरण्य्, °ण्यति (गतौ) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

वरतनु 1) adj. (f. ऊ) *einen schönen Leib habend* Kâlakakra 2,23. — 2) f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑—⏑⏑—⏑—⏑— Ind. St. 8,418. Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII,22; hier fälschlich mit Caesur nach der fünften Silbe).

वरतन्तु m. N. pr. eines alten Lehrers P. 4,3,102. Ragh. 5,1. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,9. pl. *seine Nachkommen* 19,*a*,25. — Vgl. वारतन्तवीय.

वरतिक्त m. *Wrightia antidysenterica* Râǵan. im ÇKDr.

वरतिक्तक 1) m. N. zweier Pflanzen: *Azadirachta indica* und = पर्पट Dhanv. in Nigh. Pr. — 2) f. °तिक्तिका *Clypea hernandifolia W. et A.* Râǵan. im ÇKDr.

वरतोया f. N. pr. eines Flusses (*schönes Wasser habend*) Çatr. 1, 55.

वरत्कारी f. *ein best. Parfum*, = रेणुका Çabdar. im ÇKDr.

वरत्रा (von 1. वर्) f. Uṇâdis. 3,107. *Riemen* AK. 2,8,2,10. 10,31. Trik. 3,3,436. H. 915. 1232. an. 3,599 (वर्त्ति fehlerhaft für वर्ध्री). Med. r. 191. Halâj. 2,66. प्रूनं वरत्रा वध्यताम् Ṛv. 4,57,4. यथा युगं वरत्रया नह्यन्ति 10,60,8. 101,5. 102,8. AV. 11,3,10. 20,135,13. Âçv. Gṛhj. 2, 9,4. Varâh. Bṛh. S. 89,1. 95,42. Pańkat. 128,9.18. Kull. zu M. 8,289. Bhaṭṭ. 9,90. °काण्ड *Riemenstück* (*Stecken* nach dem Comm.) Kâtj. Çr. 7, 8,27. वरत्र (wohl n.) Bhâg. P. 8,24,45. Die indischen Lexicographen führen *Elephantengurt* als besondere Bedeutung auf. — Vgl. दैर्घवरत्र, योगवरत्र, वध्रि und वर्ध्री.

वरत्वच् m. *Azadirachta indica* Ratnam. 31.

वरद (3. वर + 1. द) 1) adj. *Wünsche thun lassend, — gewährend, bereit Wünsche zu erfüllen* AK. 3,1,7. H. 480. an. 3,338. fg. (= प्रसन्न und शान्तचित्त). Med. d. 36. fg. (= प्रसन्न und समर्धक). von Göttern und Menschen Çvetâçv. Up. 4,11. MBh. 1,498. 1140. 6429. 5,7481. R. 1,14, 40. 31,10. 55,14. 2,34,42. 7,5,12. fg. Mṛkkh. 47,20. Kumâras. 6,78. Mâlav. 76. Kathâs. 4,87. 20,55. 35,75. 52,403. 110,56. Bhâg. P. 3,9, 23. 4,8,51. Mârk. P. 16,87. fg. Weber, Kṛshnaǵ. 295. f. °दा Taitt. Âr. 10,34. Kathâs. 6,79. 26,145. 53,175. Bhâg. P. 3,16,22. Pańkar. 2,4,9. Verz. d. B. H. No. 901. = पार्वती H. ç. 49. — 2) m. *a)* N. des Agni im Çântika Gṛhjasaṁgr. 1,9. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2566. — *c)* Bez. einer best. Manen-Gruppe Mârk. P. 96,45. — *d)* N. pr. eines Dhjânibuddha Wilson, Sel. Works II, 72. — *e)* N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 213,*a*, No. 505. — 3) f. आ *a) Jungfrau, Mädchen* H. an. Med. — *b)* N. pr. der Schutzgöttin in der Familie des Varatantu Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,25. — *c)* Bez. verschiedener Pflanzen: *Physalis flexuosa Lin.* Bhâvapr. im ÇKDr. und Mad. in Nigh. Pr. *Polanisia icosandra* Râǵan. im ÇKDr. = त्रिपर्णी Dravjar. in Nigh. Pr. *Helianthus* Râǵan. ebend. *Linum usitatissimum* und *Yam-Wurzel* Bhâvapr. ebend. — *d)* N. pr. eines Flusses MBh. 3, 8177. R. 4,41,13, v. l. Mâlav. 76. 88. LIA. I, 167. 174.

वरदचतुर्थी f. Bez. *des 4ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,29. वरदा° wohl richtiger Wilson, Sel. Works, II, 184. fgg. und ÇKDr.

वरदत्त 1) adj. *in Folge eines Wunsches geschenkt, als Wahlgabe verliehen:* मन्त्राः R. 5,44,16. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 106.

वरदराज m. N. pr. verschiedener Männer Hall 27. 83. 180. Gild. Bibl. 381. Verz. d. Oxf. H. 165,*b*, No. 367. 244,*a*, No. 606. 379,*b*, No. 394. 386,*b*, No. 509.

वरदराजीय adj. *von* Varadarâǵa *herrührend, — verfasst* Hall 27.

वरदर्शिनी R. 2,55,21 wohl nur fehlerhaft für वरवर्णिनी, wie die ed. Bomb. liest.

वरदाचतुर्थी s. वरदचतुर्थी.

वरदातर् = वरद 1): f. °दात्री Pańkar. 2,4,9.

वरदारु m. *ein best. Baum*, = दारुदारु Bhâvapr. im ÇKDr.

वरदाधीशयज्वन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 370,*a*, No. 213.

वरदान (3. वर + दान) n. 1) *das Gewähren eines Wunsches, das Verleihen einer Wunschgabe* MBh. 1,7657. 7666. 3,12391. 12394. 12401. 12412. R. 2,34,26. 58,24. *das Ausbezahlen des Lohnes* Âçv. Çr. 3,12,6. — 2) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3,5005. fg.

वरदानमय (von वरदान) adj. *aus der Gewährung eines Wunsches —, aus der Verleihung einer Wunschgabe hervorgegangen, darin wurzelnd* R. 2,77,13.

वरदानिक adj. dass. R. 2,107,7 (115,7 Gorr.).

वरदारु *Tectona grandis* RATNÂK. in NIGH. PR.

वरदारुक *eine best. Pflanze mit giftigen Blättern* SUÇR. 2,251,16.

वरदार्थम् adj. = वरद 1) BHÂG. P. 3,21,7.

वरद्रुम m. *Agallochum* H. ç. 129.

वरधर्मकिर् (4. वर - धर्म + 1. कर्) *ein ausgezeichnetes Werk an Jmd* (acc.) *thun:* °कृत: R. GORR. 1,74,16. statt dessen परो धर्मः कृतः 72,15 SCHL.

वरपत्निणी f. N. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 99,*b*,18. 20.

वरपण्डित m. N. pr. eines Autors: श्री° oder पण्डितश्रीवर Verz. d. B. H. No. 566.

वरपर्णाख्य m. *Lipeocercis serrata Trin.* RATNAM. im ÇKDR.

वरपाण्ड्य m. N. pr. eines Mannes WILSON, Sel. Works I, 334.

वरपीतक *Talk* RATNÂK. in NIGH. PR.

वरपोत = श्रेष्ठशाक SIDDH. in NIGH. PR.

वरप्रद 1) adj. = वरद 1). — 2) f. आ Bein. der Lopâmudrâ H. 123.

वरप्रदान n. 1) = वरदान 1) MBH. 1,7724. Spr. 2736. VARÂH. BRH. S. 5,2. HIT. 116,10. RAGH. 2 in der Unterschr.

वरप्रभ 1) adj. (f. आ) *einen ausserordentlichen Glanz habend* WEBER, KRSHNAG. 283. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 13. fgg.

वरफल 1) adj. *die schönsten Früchte habend.* — 2) m. *Kokosnussbaum* ÇABDAK. im ÇKDR.

वरबाल्हीक n. *Saffran* Comm. zu AK. 2,6,3,25. °वाह्लीक gedr.

वॅरम् (von 3. und 4. वर) gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. 1) वरं वरम् *nach Belieben:* तेषां व इन्द्रो हन्तु वरं वरम् AV. 6,67,2. 11,9,20. 10,21. — 2) *vorzugsweise, lieber, besser* AK. 3,4,25,175. MED. r. 63. fg. *a*) in der ältesten Sprache construirt mit einfachem abl. oder abl. mit आ. पाहि क्षेमं उत योगे वरं नः RV. 7,54,3. प्र ते अग्नयो ऽग्निभ्यो वरं निः शोशुचन्त *besser als die andern* 1,4. सा वह योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु 6,64,5. यदश्विना वहथः सूरिमा वरम् *wenn ihr zu* (meinem) *Opferherrn vorzugsweise kommt* 1,119,3. अयं सप्तभ्य आ वरं प्रान्धं श्रोणं च तारिषत् *besser als sieben* (andere gekonnt hätten) 10,25,11. कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः 2,5,5. (अभ्यर्ष) देवान्सखिभ्य आ वरम् *besser als deine Genossen* d. h. *wirksamer als die andern* Soma, *die von Andern gebrauchten Libationen* 9,45,2. 68,2. — *b*) mit praes. und imperat. so v. a. *es ist besser* —, *es ist am besten, dass, es wäre besser, wenn:* तस्माद्वरं सहायं तं शकटालं समुद्धरे KATHÂS. 5,4. 40. 18,355. 24,60. 38,15. 114,87. तत्कश्चित्सूपकृद्वरम्। नये ऽत्र स्थाप्यताम् 20,195. 26,248. KUSUM. 35,15. mit Ergänzung des verbi finiti: अन्यत्र गतस्यापि मे कस्यचिद्दुष्टसत्त्वस्य मांसाशिनः सकाशान्मृत्युर्भविष्यति। तद्वरं सिंहात् (genauer wäre सिंहस्य) *darum ist es besser, dass es durch den Löwen geschieht* PAṄKAT. 90,16. वरमनेन शेषेण प्रियतमा संतोषिता 264,3. — *c*) mit potent. so v. a. *eher könnte es geschehen, dass:* शठस्तु समयं प्राप्य नोपकारं हि मन्यते। वरं तमुपकर्तारं दोषदृष्ट्या च दूषयेत्॥ Spr. 5051. BHÂG. P. 2,1,12. — *d*) in prädicativer Stellung: यस्ते सखिभ्य आ वरम् *der besser als deine Genossen ist* RV. 1,4,4. प्रतीचीं दिशामियमिद्वरम् AV. 12,3,9. ÇAT. BR. 3,9,3,16. शिष्यैः शतकृतान्होमानेकः पुत्रकृतो वरम् (acc. st. abl.) SHAḌV. BR. 4,1. अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम् Spr. 35. वरमेकः (पुत्रः) कुलालम्बो 746. 1297. 1316. 2180. नरा न तमवेक्षन्ते तेनात्र वरमङ्गनाः VARÂH. BRH. S. 74,12. BRH. 7,13. KATHÂS. 43,89. वरं कूपशताद्वापी वरं वापीशतात्क्रतुः Spr. 2733. 2735. BHÂG. P. 5,19,23. अशुष्कस्य u. s. w. तरोरिव दरिद्रस्य न वरं जन्मिनः फलम् *der Nutzen ist nicht grösser als der eines verdorrten Baumes* Spr. 3006. — *e*) वरम् — न (न च, न तु, न पुनः, तदपि न, तथापि न) α) *eher* —, *lieber als:* या प्राणान्वरमर्पयन्ति न पुनः संपूर्णदृष्टिं प्रिये SÂH. D. 54,22. वरं महत्या म्रियते पिपासया तथापि नान्यस्य करोत्युपासनाम्॥ Spr. 1694. वरमाशीविषैः सङ्गं कुर्यान्न त्वेव दुर्जनैः 1618. अह्निना वरमहं दृश्यो न तच्चक्षुषा 342. नहि — वरम् *nicht — vielmehr* SAMSKRTAPÂTHOP. 38,12. — β) *besser* (prädicativ) *als:* सावित्रीमात्रसारो ऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः। नायन्त्रितस्त्रिवेदो ऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी॥ M. 2,118. वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धनम् (so ist zu lesen) MRKKH. 102,7. MEGH. 6. Spr. 2726. fgg. 2738. 2746. 2748. 3101. 4196. 4968. fg. 4971. KATHÂS. 19,22. 35,36. PAṄKAT. 172,25. वरम् — न च Spr. 2734. 2737. 2739. 2744. 2750. 4970. वरम् — न तु 2732. 2741. fg. 2745. 2747. 3768. वरम् — न पुनः 2730. 2740. PAṄKAT. 138,19. वरम् — तदपि न Spr. 2731. उचितः प्रणयो वरं विहन्तुम् — उपचारविधिर्मनस्विनीनां न तु पूर्वाभ्यधिको ऽपि भावशून्यः MÂLAV. 38. परमेवास्य सत्त्वस्य प्रदातुं जीवितं वरम्। न च विप्रसहस्रेभ्यो गोसहस्रं दिने दिने॥ Spr. 1704. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि (instr. statt nom.) 2743. वरम् im Nachsatz wiederholt: वरं यद्धर्मपाशेन क्षणमेकं हि जीवितम्। वरं न यदधर्मेण कल्पकोटिशतान्यपि॥ Spr. 2725. वरं शून्या शाला न च खलु वरं (so ist wohl zu lesen) दुष्टवृषभः 2730.

वरमुखी f. *ein best. Parfum,* = रेणुका ÇABDAK. im ÇKDR.

वरय् s. u. dem caus. von 2. वर्.

वरयात्रा f. *die feierliche Procession eines Werbers,* — *Bräutigams* H. ç. 107.

वरयितर् (von वरय्) nom. ag. *Werber, Bräutigam, Geliebter, Gatte* H. 517. HALÂJ. 2,342.

वरयितव्य (wie eben) adj. *zu wählen* NIR. 1,7. MBH. 1,4134. 4369.

वरयु m. N. pr. eines Mannes MBH. 5,2731.

वरयुवति und °ती f. 1) *eine schöne Jungfrau.* — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* —◡◡—◡—◡——◡◡◡◡◡◡◡— COLEBR. Misc. Ess. II, 162 (XI, 12). Ind. St. 8,421.

वरयोग्य adj. *einer Wunschgabe würdig* MÂRK. P. 16,88.

वरयोनिक = केसर NIGH. PR.

वररुचि m. N. pr. eines Dichters, Mediciners, Grammatikers und Lexicographen, der hier und da mit Kâtjâjana identificirt und unter den neun Perlen am Hofe des Vikramâditja aufgeführt wird, TRIK. 2,7,25. H. 852. HAEB. Anth. S. 1. MED. Anh. 1. KATHÂS. 1,64. 2,70. 9,2. PAṄKAT. 223,4. fgg. COLEBR. Misc. Ess. II, 45. 53. WEBER, Ind. Str. 2, 53. fgg. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 7. 20. Verz. d. B. H. No. 959. Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,18. 27. fg. 150,*b*, No. 320. 154,*a*,34. 156,*b*, No. 332. 167,*a*, No. 371. 178,*b*, No. 405. 182,*b*, 3 v. u. 185,*a*, No. 421. GILD. Bibl. 384. WASSILJEW 47. 49. 74. Ind. St. 4,346. UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 1,11. 37. °लिङ्गकारिका 2,109. unter den Beinn. Çiva's ÇIV.

वररूप 1) adj. *eine schöne Gestalt habend.* — 2) m. N. pr. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 5,13.

वरल 1) m. *eine Art Bremse* ÇABDAM. im ÇKDR. — 2) f. आ *a*) dass. H. an. 3,674. MED. l. 118. — *b*) *das Weibchen der Gans* H. 1327. H.

an. MED. HALÂJ. 2,96. — 3) f. ई = वरटा GAṬÂDH. im ÇKDR. — Vgl. वरट, वारला.

वरलब्ध 1) adj. *als Wahlgabe erhalten.* — 2) m. *Michelia Champaka* (चम्पक) *Lin.* TRIK. 2,4,18. *Bauhinia variegata* RÂǴAN. in NIGH. PR.

वरवत्सला f. *Schwiegermutter* HÂR. 201. ÇABDAM. im ÇKDR.

वरवर्ण m. *Gold* (vgl. सुवर्ण): वरवर्णाभ HARIV. 4464.

वरवर्णिन् 1) adj. *eine schöne Gesichtsfarbe habend* MBH. 3,8427. — 2) f. *a) ein schönfarbiges Weib, ein schönes —, ausgezeichnetes Weib* AK. 2,6,1,4. H. 507, Sch. an. 5,31. MED. n. 241. HÂR. 243. MBH. 1,6009. 3,1848. 1863. 2099. 2146. 2218. 2746. 4,485. 5,5980. 7026. 7366. 7386. R. 1,10,5. 2,96,36. 107,5. 3,53,30. 7;56,18. Spr. 2708. MÂRK. P. 16,76. 75, 47. VET. in LA. (III) 26,20. Bein. der Durgâ ÇABDAR. im ÇKDR. MBH. 6,797. der Sarasvatî und Lakshmî ÇABDAR. im ÇKDR. — *b) Gelbwurz* AK. 2,9,41. H. 418. H. an. MED. HÂR. — *c) Lack* H. an. MED. HÂR. — *d) ein best. gelbes Pigment* H. an. MED. — *e) eine best. Pflanze,* = प्रियङ्गु H. an. = फलिनी MED.

वरवासि m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 188, N. 40.

वरवाह्लीक s. वरबाल्हीक.

वरवृत adj. *als Wahlgabe empfangen* AIT. BR. 1,7.

वरवृद्ध m. Bein. Çiva's TRIK. 1,1,46.

वरशिख m. N. pr. eines Feindes des Indra ṚV. 6,27,4. 5.

वरशीत *Zimmt* RÂǴAN. in NIGH. PR.

वरश्रेणी f. *eine best. Pflanze,* = mahrattisch लघुमोरवेल d. i. मयूरवल्लि NIGH. PR.

वरस् (von 1. वर्; vgl. 1. वर) n. *Weite, Breite, Raum,* εὖρος ṚV. 1,190, 2. या सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान्युयूषतः पर्युरू वरांसि 6,62,1. पुरू वरांस्यमिता मिमाना 2. आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः 10,89,1. 2. वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे *die Breiten, Seiten* 4,21,8.

वरसद् (1. वर + सद्) adj. *im Kreise sitzend* ṚV. 4,40,5.

वरसार्न ved. = दारिक UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,86.

वरसुन्दरी f. 1) *ein überaus schönes Weib* Ind. St. 8,420. ḰAURAP. 22. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* —⏑⏑⏑—⏑⏑⏑—⏑⏑⏑⏑—— COLEBR. Misc. Ess. II, 161 (IX, 6). Ind. St. 8, 420.

वरसुरत (4. वर + सु°) adj. (f. आ) *eingeweiht in die Geheimnisse des Liebesgenusses* Spr. 2600.

वरसेन (?) N. pr. eines Gebirgspasses HIOUEN-THSANG II, 190.

वरस्त्री f. *ein ausgezeichnetes —, ein edles Weib* H. 673. HALÂJ. 2,334. 392. Spr. 2593. HARIV. 160.

वरस्या (von 3. वर) f. *Wunsch, Bitte:* वरस्या याम्यध्रिगू ṚV. 5,73,2. (आ) मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् 6,49,11.

वरस्रज् f. *der Kranz, den das Mädchen dem erwählten Bräutigam aufsetzt,* RÂǴA-TAR. 2,148. — Vgl. वरणमाला, वरणस्रज्.

वरह्लक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,42.

वराक 1) adj. (f. ई) P. 3,2,155. VOP. 26,47. 4,10. *elend, erbärmlich, jämmerlich, Mitleid erregend* (= शोच्य, शोचनीय) H. an. 3,93. MED. k. 129. ÇABDAM. (= अवर) im ÇKDR. von lebenden Wesen gebraucht Spr. 363. 429. 713. 740. 1527. 2667. 2825. KATHÂS. 25,98. 27,64. 37,60. 45, 35. 46,161. 52,361. 53,2. 58,51. 60,117. 74,64. 94,40. RÂǴA-TAR. 2,47. 4,116. DAÇAK. 70,6. 92,13. PAṄḰAT. 30,9 (ed. orn. 26,16). 41,4. 5. 16. 81, 18. 108,13. Z. d. d. m. G. 14,575,2. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,25. 253,*a*, 19. das Geld so genannt KATHÂS. 28,10. — 2) m. *a)* Bein. Çiva's MED. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,5. — *b) Schlacht* H. an. — *c)* = mahrattisch पित्तपापडा (nach MOLESWORTH *Gardenia latifolia* und *Fumaria parviflora*) DRAVJAR. in NIGH. PR.

1. वराङ्ग (4. वर + 3. अङ्ग) n. 1) *der schönste Körpertheil: a) Kopf* AK. 3,4,3,27. H. 567. an. 3,131. MED. g. 44. R. 1,66,10. VARÂH. BṚH. 1,4. — *b) die weibliche Scham* AK. TRIK. 2,6,21 (ववाङ्ग fälschlich gedr.). H. 609. H. an. MED. HALÂJ. 2,359. KATHÂS. 17,144. 147. 28,177. Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,46. — 2) *Hauptstück* VARÂH. BṚH. S. 47,2.

2. वराङ्ग (wie eben) 1) adj. *in allen seinen Theilen schön:* °रूपोपेत als Erklärung von सिंहसंहनन AK. 3,1,12. — 2) m. *a) Elephant* TRIK. 2,8,34. 3,3,69. H. an. 3,131. MED. g. 44. — *b)* Bez. *des* Nakshatra-*Jahres von 324 Tagen* WEBER, Nax. 2,281. — *c)* Bez. Vishṇu's ÇKDR. nach VISHṆU'S SAHASRANÂMASTOTRA. — 3) f. ई *a) Gelbwurz* RÂǴAN. im ÇKDR. — *b)* N. pr. einer Tochter Dṛshadvant's und Gattin Saṁjâti's MBH. 1,3767. — 4) n. *a) grober Zimmt, Kassiarinde* oder dgl. TRIK. 3,3,69. H. an. MED. — *b) Sauerampfer* v. l. in RATNAM. nach ÇKDR. u. वराङ्गिन्.

वराङ्गक n. = 2. वराङ्ग 4) *a)* AK. 2,4,3,22.

वराङ्गना (4. वर + अ°) f. *ein schönes Weib* MBH. 3,2152. R. 2,36,15. 65,20. R. GORR. 1,9,18. 2,100,51. Spr. 2624. KATHÂS. 22,10.

वराङ्गिन् m. *Sauerampfer* RATNAM. im ÇKDR. वराङ्ग n. v. l.

वराजीविन् m. *ein Astrolog* COLEBR. Misc. Ess. II, 181.

वराट 1) m. *a) Otterköpfchen* (als Münze gebraucht) TRIK. 3,3,206. 323. H. an. 2,97. HALÂJ. 3,42. Spr. 1721. — *b) Strick* HALÂJ. 2,442. RATNÂK. bei BHARATA zu AK. 2,10,27. — 2) f. ई = वराडी As. Res. 3,77.

वराटक m. und f. (वराटिका) AK. 3,6,5,38. TRIK. 3,5,18. 1) *Cyprea moneta, Otterköpfchen;* m. TRIK. 2,9,28. 3,3,34. H. 1206. an. 4,31. MED. k. 201. SÂH. D. 259,21. काण° Spr. 439. = 1/20 Kâkiṇî = 1/80 Paṇa Verz. d. B. H. No. 828. वराटिका Spr. 439, v. l. KATHÂS. 121,81. PAṄḰAT. 135,7. प्रयागे मुच्यते येन तेन गङ्गा वराटिका SUBHAṬA im ÇKDR. = 1/80 Paṇa PRÂJAÇḰITTEND. 7,*a*,4. — 2) m. *Samenkapsel der Lotusblume* AK. 1,2,3,42. TRIK. 3,3,34. H. 1163. H. an. (wo °बीजकोशे st. बीजकोश zu lesen ist) und MED. — 3) m. *Strick, Seil* AK. 2,10,27. TRIK. H. 928, v. l. H. an. MED. am Ende eines adj. comp. f. आ MBH. 12,2488, wo aber die ed. Bomb. °वटारका liest. — 4) f. वराटिका *Mirabilis Jalapa Lin.* VAIDJA in NIGH. PR. — 5) n. *ein best. Pflanzengift* SUÇR. 2,252,2. — Vgl. कालवराटक, किं°.

वराटकरजस् m. *Mesua Roxburghii Wight.* ÇABDAM. im ÇKDR.

वराटकि (वरातकि gedr.) PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,32 fehlerhaft für वाराटकि.

वराडी f. N. eines Râga (!): °राग GÎT. S. 48. वराडि° 47. eine Definition desselben S. VIII. — Vgl. वराटी und देशीय°.

वराण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80. m. 1) = वरण, वरुण *Crataeva Roxburghii* ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) Bein. Indra's TRIK. 1,1,57; vgl. 1. वरण 1) *g*).

वराणस 1) oxyt. adj. von वराण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80. — 2) f.

ई a) N. pr. eines Flusses MBH. 6, 338 nach der Lesart der ed. Bomb., वरणा und असी ed. Calc., वरणा und असी andere Autt. — b) = वाराणसी *Benares* H. 974.

वरातुष्ट N. pr. Ind. St. 1, 80. 82.

वरादन n. = राजादन ÇABDAK. im ÇKDR.

वरानना (4. वर + आनन) adj. f. *schönantlitzig* R. GORR. 2, 38, 16. 3, 51, 37. WEBER, KRSHNAG. 290.

वराभिध m. *Sauerampfer* RÂGAN. im ÇKDR.

वराम्र m. *Carissa Carandas Lin.* RATNAM. im ÇKDR. कराम्ल v. l.

वराय् (von 3. वर) *eine Wunschgabe darstellen:* शक्रशापेन मम वरायितम् KATHÂS. 121, 119.

वरारक n. *Diamant* H. 1065.

वरारणि in der Stelle: ददर्श रावणस्तत्र गोवृषेन्द्रवरारणिम् R. 7, 23, 22. Comm.: गोवृषेन्द्रो महावृषस्तस्य साक्षात्मातरम्.

1\. वरारोह (4. वर + आ°) m. *ein vorzüglicher Reiter;* = गजारोह *Reiter auf einem Elephanten* H. an. 4, 341. VIÇVA im ÇKDR. = आरोह *Reiter* VIÇVA ebend.

2\. वरारोह (wie eben) 1) adj. f. (आ) *schöne Hüften habend*, καλλίπυγος AK. 2, 6, 1, 4. H. 507, Sch. HALÂJ. 2, 334. MBH. 1, 7721. 3, 1861. 2362. 16646. R. 2, 40, 13. 96, 9. 3, 38, 14. 5, 16, 11. 53, 27 (lies वरारोहे). BHÂG. P. 4, 15, 5. 26, 13. 30, 15. 6, 18, 2; vgl. u. आरोह 6). — 2) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 68. wohl nur fehlerhaft für वराह. — 3) f. आ N. der Dâkshâjaṇî in Someçvara Verz. d. Oxf. H. 39, b, 22. — 4) f. आ *Hüfte* H. an. 4, 341.

वरार्थिन् adj. *um eine Wahlgabe bittend* KATHÂS. 20, 100.

वरार्ह (4. वर + अर्ह) adj. (f. आ) 1) *überaus würdig, in hohem Ansehen stehend:* शचीपति R. GORR. 2, 12, 35. नराधिपाः 3, 4, 32. 4, 29, 26. Buddha VJUTP. 2. — 2) *überaus kostbar:* रत्नानि, आच्छादनानि HARIV. 4810. पादुके R. 4, 25, 25.

वराल und °क *Gewürznelke* NIGH. PR. °क m. *Carissa Carandas Lin.* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

वरालि m. 1) *der Mond.* — 2) *a division of music* (vgl. वराडी) WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

वरालिका f. ein N. der Durgâ ÇKDR. und WILSON nach TRIK. 1, 1, 52, wo aber die gedr. Ausg. वारा° liest.

वराशि s. वरासी.

1\. वरासन (4. वर + 1. आ°) n. 1) *ein prächtiger Sitz, Thron* MBH. 1, 7717. BHÂG. P. 4, 15, 14. — 2) N. pr. einer Stadt; s. u. लोभक.

2\. वरासन (wie eben) 1) adj. *einen prächtigen Sitz habend.* — 2) m. a) *Thürhüter.* — b) *Buhle, Liebhaber* (षिड्ग) VIÇVA im ÇKDR.

3\. वरासन n. *Hibiscus rosa sinensis L.* ÇABDAM. im ÇKDR.

4\. वरासन n. *a cistern, a reservoir* WILSON nach VIÇVA. fehlerhaft für वारासन.

वराह VOP. 26, 33. 1) m. a) *Eber, Schwein* AK. 2, 5, 2. TRIK. 3, 3, 459. H. 1287. MED. h. 22. HALÂJ. 2, 71. विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता (daher als *Wolke* erklärt NAIGH. 1, 10. 4, 2. NIR. 5, 4) ṚV. 1, 61, 7. 8, 66, 10. 9, 97, 7. क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् 10, 28, 4. 99, 6. वराहो वेद वीरुधम् AV. 8, 7, 23. 12, 1, 48. Rudra heisst der himmlische *Eber* ṚV. 1, 114, 5. TS. 6, 2, 4, 2. 7, 1, 5, 1. °विहत *vom Eber aufgewühlt* TBR. 1, 1, 3, 6. ÇAT. BR. 14, 1, 2, 11. KÂTH. 8, 2. KÂTJ. ÇR. 26, 1, 2. पशूनां वा एष मन्युर्यद्वराहः TBR. 1, 7, 9, 3. KÂTH. 25, 2. मेद्रुर ÇAT. BR. 5, 4, 3, 19. वराहोपानहौ *Schuhe von Schweinsleder* KÂTJ. ÇR. 15, 6, 24. 25, 4, 18. KHÂND. UP. 6, 9, 3. M. 3, 239. 270. 5, 14. 19. 11, 134. 154. 199. 12, 43. MBH. 3, 2409. 15830. 6, 4134 (als Banner; वाराह ed. Bomb.). वराहोद्धूतनिस्वन 4, 352. R. 2, 110, 4 (119, 4 GORR.). SUÇR. 1, 46, 20. °वसा 84, 20. zu den आनूप gezählt 204, 11. °यूथ ṚT. 1, 17. RAGH. 2, 17. ÇÂK. 39. Spr. 3673. VARÂH. BṚH. S. 28, 14. 67, 1. 68, 104. 81, 29. KATHÂS. 11, 44. fg. Verz. d. B. H. No. 897. PAÑKAT. 120, 14. °दानविधि Verz. d. Oxf. H. 35, b, 23. Am Ende eines comp. als *Ausdruck der Vorzüglichkeit* gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2, 1, 56. — b) *Rind* (als sanskritisirtes Fremdwort) COLEBR. Misc. Ess. I, 314. — c) *Widder* TRIK. — d) *Delphinus gangeticus* RÂGAN. im ÇKDR. — e) Vishṇu *als Eber* (hebt die Erde vom Grunde des Meeres mit seinen Hauern) MED. वराहेण कृष्णेन शतबाहुनोद्धृता (भूमिः) TAITT. ÂR. in Ind. St. 1, 78. R. 4, 43, 33. 6, 102, 13. UTTARAR. 99, 21 (132, 6). VARÂH. BṚH. S. 43, 54. RÂGA-TAR. 6, 206. WEBER, KRSHNAG. 284. 294. RÂMAT. UP. 317. Verz. d. Oxf. H. 14, a, 8. 42, b, 31. 129, a, 18. °प्रादुर्भाव 45, a, 4. 83, a, 24. °पूजायन्त्र 96, a, 3. °प्रयोग 94, b, 13. °प्रसाद 75, b, 30. °मतनिबर्हण 251, a, 2. °माहात्म्य MACK. Coll. I, 83. महा° RAGH. 7, 53. PRAB. 2, 5. RÂGA-TAR. 4, 197. 7, 1322. आदि° 5, 105. यज्ञ° (vgl. यज्ञसूकर) MBH. 3, 15832. — f) Bez. *einer Truppenaufstellung in Form eines Ebers* M. 7, 187. — g) N. pr. α) eines Daitja MBH. 12, 8264 (वराहाश्च: st. वराहो ऽश्व: ed. Bomb.). HARIV. 2434. 2650. 3115. 14284. KATHÂS. 109, 50. — β) eines Muni MBH. 2, 112. — γ) = वराहमिहिर Ind. St. 2, 251. Verz. d. Oxf. H. 326, b, No. 772. 331, b, No. 782. 334, a, 3. UGGVAL. zu UṆÂDIS. 3, 86. 4, 188. 5, 8. — δ) eines Sohnes eines Tempelhüters RÂGA-TAR. 7, 207. °देव 365. — ε) eines Berges MED. MBH. 2, 799. R. 4, 43, 36. Vgl. °शैल, वराहाद्रि. — ζ) eines der 18 Dvîpa ÇABDAM. im ÇKDR. Vgl. °द्वीप. — η) *ein best. Maass* MED. — h) *Cyperus rotundus Lin.* TRIK. MED. = वाराहीकन्द RÂGAN. im ÇKDR. — i) Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325. — k) abgekürzt für वराहपुराण Verz. d. Oxf. H. 8, a, 2. — 2) f. ई = N. zweier Pflanzen, = भद्रमुस्ता und सूकरकन्द RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. दुर्वराह, नृ°, महा°, वाराह.

वराहक 1) m. N. pr. eines Schlangendämons MBH. 1, 2159. — 2) f. वराहिका *Mucuna pruritus Hook.* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) n. Titel einer Upanishad Ind. St. 3, 325.

वराहकन्द m. *Yamswurzel* RÂGAN. im ÇKDR.

वराहकर्ण (*Eberohr*) 1) m. a) Bez. *einer Art von Pfeilen* MBH. 6, 3700. 7, 7420. 8128. 8, 4547. R. 3, 34, 32. — b) N. pr. eines Jaksha MBH. 2, 398. — 2) f. ई *Physalis flexuosa Lin.* RÂGAN. in NIGH. PR.; vgl. वा°.

वराहकर्णिका f. *eine Art von Geschoss* H. 787, Schol.

वराहकान्ता f. *Yamswurzel* ÇABDAR. im ÇKDR.

वराहकालिन् m. *Sonnenblume* HÂR. 94.

वराहक्रान्ता f. *Mimosa pudica* RATNAM. im ÇKDR.

वराहदंष्ट्र m. N. *einer zu den* तुङ्गरोग *gezählten Krankheit* ÇÂRÑG. SAṂH. 1, 7, 65. °दंष्ट्रा f. ebend. und NIGH. PR.

वराहदत्त m. N. pr. eines Kaufherrn KATHÂS. 37, 100.

वराहदत् und दन्त° adj. *Eber-Zähne habend* P. 5,4,145.

वराहद्वादशी f. Bez. *eines Festes zu Ehren* Vishṇu's *als Ebers am 12ten Tage in der lichten Hälfte des* Mâgha Wilson, Sel. Works II, 207.

वराहद्वीप N. eines Dvîpa Vâju-P. in VP. 175, N. 3; vgl. वराह 1) g) ζ).

वराहनामन् m. 1) *Mimosa pudica* Ratnam. im ÇKDr. u. वराहक्रान्ता. — 2) *Yamswurzel* Çabdam. im ÇKDr.

वराहपुराण n. Titel *eines* Vishṇu *als Eber verherrlichenden* Purâṇa Wilson in der Einl. zu VP. xliv. fg. Weber, Kṛshṇaǵ. 260. fgg. Verz. d. Oxf. H. 279,a,40. Verz. d. Tüb. H. 15. Hall 163. — Vgl. u. वाराह.

वराहमिहिर m. N. pr. eines Astronomen, Sohnes des Âditjadâsa, Varâh. Bṛh. S. 47,2. 54,125. 86,4. 104,64. Bṛh. 28 (26), 9. Sârâvalî bei Utpala zu Bṛh. 7,13. Navar. bei Haeb. Anth. S. 1. Pańkat. 50,20. fg.

वराहमूल n. N. pr. einer Oertlichkeit mit einer Statue Vishṇu's als Ebers Râǵa-Tar. 7,1321. 8,453. fg.

वराहयुँ (von वराह) adj. *auf Eber begierig, zu ihrer Jagd tauglich:* श्रा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णौं वराहयुः ṚV. 10,86,4.

वराहशृङ्ग m. Bein. Çiva's Çiv.

वराहशैल m. N. pr. eines *Berges* Verz. d. Oxf. H. 39,b,4. — Vgl. वराह 1) g) ε).

वराहसंहिता f. Titel eines Werkes Verz. d. Cambr. H. 43. 67. Weber, Kṛshṇaǵ. 225. fg.

वराहस्वामिन् m. N. pr. eines mythischen Fürsten Kathâs. 48,55.

वराहाद्रि m. N. pr. eines *Berges* Mârk. P. 55,13.

वराहाश्च m. N. pr. eines Daitja MBh. 12,8264 nach der Lesart der ed. Bomb.; die ed. Calc. hat zwei Namen (wohl richtiger): वराह und श्रश्च.

वरा॑हु m. so v. a. वराह. *Götterschaaren des mittleren Gebiets* Nir. 5,4. श्रयादृष्ट्रान्विधावतो वराहून् ṚV. 1,88,5. त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो वराहुम् 121,11. Bez. von *Winden* Taitt. Âr. 1,9,4. Sâj. zu ṚV. 2,12,12.

वरितर् nom. ag. von 1. वर् P. 7,2,34, Schol. — Vgl. वरीतर्, वरूतर्, वन्नतर्.

वरिन् (von वर) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens MBh. 13,4358.

1. वरि॑मन् (von 1. वर् und nom. abstr. zu उरु) m. P. 6,4,157. *Umfang, Rund; Weite, Breite:* दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथे ṚV. 1,55,1. श्रयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो श्रकृणोत् 6,47,4. AV. 4,6,2. 7,14,3. 9,2,20. 12,5,72. VS. 3,5. 4,30. 11,29. 15,10. 18,4. Çâṅkh. Çr. 5,14,8.

2. व॑रिमन् und व॑रीमन् n. dass.: ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि AV. 4,25,2. मही पृथिवी वरीमभिः ṚV. 1,131,1. 159,2. वरिम्णा पृथिव्याः 3,59,3. 4,54,4. 10,28,2. 29,7. श्रकारि वामन्धसो वरीमन् *im Kreis umher* 6,63,3. श्रा वां सुम्ने वरीमन्सूरिभिः ष्याम् *in der Weite* d. h. *unbeengt* 11. 9,71,4. वरिमतः AV. 6,99,1.

3. वरिमन् und वरीमन् (nom. abstr. zu 4. वर) m. eig. *Vorzüglichkeit;* concret so v. a. 2. वरिष्ठ *der vorzüglichste, beste, ausserordentlich:* श्रस्य वर्ष्मणः पुंसां वरिम्णः सर्वयोगिनाम् Bhâg. P. 3,25,2. वरीमभिः कर्मभिः 4,15,26.

व॑रिवस् (von 1. वर्) n. *Raum, Weite; Freiheit, Behaglichkeit, Ruhe* (= धन Naigh. 2,10) VS. 15,4. 5. TS. 5,4,5,3. mit कर् (vgl. VS. Prât. 3,22): युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ *hast befreit* ṚV. 1,59,5. श्रंहो राजन्वरिवः पूरवे कः: *hast aus der Bedrängniss befreit* 63,7. 102,4. 3,34,7. 4,21,10. 24,6. करो यत्र वरिवो बाधिताय 6,18,14. 44,18. 50,3. राये वरिवस्कृधी नः *mache uns freie Bahn zu* 7,27,5. 48,4. 9,62,3. 10,52,5. प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवे कः *freilassen* 5,29,10. VS. 5,37. mit धा: मघवा सुश्रवे वरिवो धात् ṚV. 4,24,2. को वो ऽध्वरे वरिवो धाति देवाः *wer schafft euch Raum? wer macht es euch behaglich?* 55,1. 7,47,4. त्मनै तोकाय वरिवो दधन्तु 62,6. mit विद्: पुनान इन्दुर्वरिवो विदत्प्रियम् 9,68,9.

वरिवस्कृ॑त् adj. *Raum schaffend, befreiend* ṚV. 8,16,6. TS. 5,3,11,1.

वरिवस्य् (von वरिवस्), °स्यति P. 3,1,19. Vop. 21,13. 1) *Raum geben, einräumen, verstatten, freimachen:* उरोरा नो वरिवस्या पुनानः ṚV. 9,96,3. तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः 1,122,3. 14. 5,42,12. 6,20,11. त्वं उस्रा वरिवस्यन्तु देवाः 52,15. 7,56,17. 8,46,10. उभे यथा नो श्रहनी सचाभुवा सदः सदो वरिवस्यात उद्भिदा 10,76,1. — 2) *es Jmd behaglich machen, zu Jmdes Diensten sein, bedienen, pflegen* (परिचर्यायाम्) P. 3,1,19, Vârtt. 3. mit acc.: गुरून् P. 3,1,19, Schol. जराजरितगात्रं जात्यन्धं दीर्घतमसं मामतेयं वरिवसितुमशक्नुवानाः स्वगर्भदासा श्रग्नौ प्रदाहाय प्रचिक्षिपुः Sâj. zu ṚV. 1,158,4. नो नमस्यन्ति ते बन्धून्वरिवस्यन्ति नामराः Bhaṭṭ. 18,21. श्रग्नीनवरिवस्यन्यातुधानाः 17,51. चर्मभस्त्रिका वरिवस्यमाना mit pass. Bed. *gehegt, gepflegt* Daçak. 76,19. partic. वरिवस्यित und वरिवसित *gepflegt, gehegt* AK. 3,2,51.

वरिवस्या॑ (von वरिवस्य्) f. *das Gewähren* u. s. w.: ऊवे यद्वां वरिवस्या गृणानः ṚV. 1,181,9. *Diensterweisung* AK. 2,7,34. H. 497. Halâj. 1,129. कतिनो हि भवादृशेषु ये वरिवस्यां प्रतिपादयन्ति ते sagt eine arme Hausfrau zu Bettlern, die sie um ein Almosen angehen, Verz. d. Oxf. H. 255,a,25.

वरिवोदा॑ adj. *Raum —, Freiheit schenkend* VS. 17,15.

वरिवोधा॑ adj. *Raum —, freie Bewegung schaffend* ṚV. 1,119,1. 9,1,3.

वरिवोवि॑द् adj. *Raum —, Freiheit schaffend; Behaglichkeit gewährend:* श्रंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ṚV. 1,107,1. 175,5. रयि 2,41,9. 9,21,2. 61,12. 62,9. 96,12. 110,11. यो श्रभीके वरिवोविन्नृषाह्ये 10,38,4.

वरिशी f. = वडिशी = वडिश Çabdar. im ÇKDr.

वरिष m. = वर्ष m. Kandra bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,62. वरिषास् f. pl. = वर्षास् Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDr. वरिष n. = वर्ष *Jahr* Çabdar. im ÇKDr. Brahma-P. in LA. (III) 54,2 (Conj.).

वरिषाप्रिय m. *der Freund der Regenzeit,* Bez. des Kâtaka Çabdar. im ÇKDr.

1. व॑रिष्ठ (superl. zu उरु) adj. *der weiteste, breiteste, umfassendste* AK. 3,2,61. H. an. 3,177. Med. ṭh. 15. Halâj. 4,14. ṚV. 4,56,1. धीति 5,25,3. 48,3. 6,37,4. 41,2. वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धाः 47,9. तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं (= वर्षिष्ठं Nir. 5,1) गोपयत्यम् 8,25,13. कृत्वा वरिष्ठम् 86,10. वरिष्ठामनु सम्वतम् VS. 11,12. सूर्यो वरिष्ठो श्रन्तभिर्वि भाति TBr. 3,7,2,1. श्रतीव (विमान) R. 5,13,6. Vgl. auch u. उरु, wo aber das Beispiel MBh. 14,879 zu streichen ist.

2. वरिष्ठ (superl. zu 4. वर) 1) adj. *der vorzüglichste, beste* Trik. 3,3,108. fg. = वरतम H. an. 3,177. Med. ṭh. 15. = वत्स Aǵaja im ÇKDr. इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठम् Muṇḍ. Up. 1,2,10. 2,2,1. Praçnop. 2,3. ṚV.

Prât. 15, 4. MBh. 1, 2096. 2, 540. 3, 15594. 5, 3823. 6, 2976. Hariv. 11526. R. 2, 61, 15. अधमसमवरिष्ठानि Varâh. Bṛh. 13, 1. Mârk. P. 73, 13. 78, 4. Pańkar. 1, 7, 91 (fälschlich वरोष्ठ gedr.). Verz. d. Oxf. H. 47, *a*, No. 103, Z. 12. Schol. zu Gaim. 1, 2, 12. कः पुनरेषां वरिष्ठः Praçnop. 2, 1. पुण्यकृताम् MBh. 1, 2096. ब्राह्मणो द्विपदां श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् 3044. 3, 10599. 5, 511. 12, 5163. सर्वयज्ञानाम् 13, 3809. Hariv. 1032. 8812. R. 3, 3, 11. 5, 44, 13. 48, 15. 6, 6, 32. Bhâg. P. 1, 10, 1. 3, 25, 11. 5, 11, 1. आख्यान° *die vorzüglichste unter allen Erzählungen* MBh. 1, 18. 55. लोक° R. Gorr. 2, 108, 15. देव° 5, 7, 34. नृप° (so ist zu verbinden) Weber, Kṛshṇaǵ. 230. mit einem abl. *besser als:* वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्यो ब्राह्मणस्य मुखे हुतम् M. 7, 84. Bhâg. P. 7, 9, 10. *unter Schlechten vornan stehend, der schlimmste, ärgste:* दोष MBh. 14, 879 (unter उरु zu streichen). पापकृताम् 3, 12590. — 2) m. *a*) *Rebhuhn* H. an. Med. — *b*) *Orangenbaum* Râǵan. im ÇKDr. — *c*) N. pr. α) eines Sohnes des Manu Kâkshusha MBh. 13, 1315. — β) einer der 7 Weisen im 11ten Manvantara Mârk. P. 94, 19. — γ) eines Daitja Hariv. 12942. — 3) f. आ *Polanisia icosandra W. et A.* Râǵan. im ÇKDr. — 4) n. *a*) *Kupfer* AK. 2, 9, 98. Trik. H. 1040. H. an. Med. — *b*) *Pfeffer* Trik. H. an. Med.

वरिष्ठक adj. = 2. वरिष्ठ 1) Pańkar. 1, 10, 1.

वरिष्ठाश्रम m. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 138, *a*, 14.

वरिह्लिष्ठ Suçr. 2, 107, 14 wohl fehlerhaft.

वरी f., pl. वर्यस् als Bez. für *Flüsse* aufgeführt Naigh. 1, 13; vgl. वारु, वारि. — Vgl. auch u. 4. वर.

वरीतर् nom. ag. von 1. वर् P. 7, 2, 34, Sch. — Vgl. वरितर्, वरुतर्, वरूतर्.

वरीताक्ष m. N. pr. eines Daitja MBh. 12, 8264.

वरीदास m. N. pr. des Vaters des Gandharva Nârada Hariv. 1861.

वरीधरा f. *ein best. Metrum:* a. b. d: – – ⏑ – – ⏑ ⏑ – ⏑̄ – –, c: ⏑ – ⏑ – – – u. s. w. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6, 514.

वरीमन् s. 2. und 3. वरिमन्.

1. वरीयंस् (comparat. zu उरु) adj. *weiter, breiter* Med. s. 62. n. so v. a. वरिवस्; adv. *weiter, ferner ab* ṚV. 1, 136, 2. प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः 5, 45, 5. अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयः *befreiet uns, schaffet uns Ruhe* 49, 5. 6, 69, 5. उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु 75, 18. अपात इत पणयो वरीयः 10, 108, 10. fg. AV. 1, 2, 2. वरीयो यावया वधम् 20, 3. 3, 4, 7. 7, 50, 4. 51, 1 (वरिवः ṚV.). ब्राह्मणेभ्य ऋषभं दत्त्वा वरीयः कृणुते मनः *macht freier* d. h. *erheitert* 9, 4, 19. परः पर एव वरीयस्तपो भवति Çat. Br. 3, 4, 4, 27 (vgl. Ind. St. 10, 419). — Vgl. auch u. उरु und परोवरीयंस् 1).

2. वरीयंस् (comparat. zu 4. वर) 1) adj. *vorzüglicher, besser; der vorzüglichste, beste* AK. 3, 4, 30, 237. H. an. 3, 754. Med. s. 62 (= श्रेष्ठ und अतियुवन् *überaus jung;* es ist nämlich अतियूनि च zu lesen). त्वं मे प्रियः पुत्रस्त्वं वरीयान्भविष्यसि *du wirst mir noch lieber werden* MBh. 1, 3492. यं दास्यति स मे पुत्रं स वरीयान्भविष्यति so v. a. *der wird mir lieb sein* 4780. जन्मतपोविद्याचारवर्णाश्रमवतः *vorzüglicher an* Bhâg. P. 5, 26, 30. वरीयानेष मे प्रश्नः कृतः 2, 1, 1. 3, 1, 4. भूषणानि 23, 29. 5, 4, 2. मल्लदृशाम् 3, 1, 10. Beiw. Çiva's Çiv. — 2) m. *a*) Bez. eines Joga (विष्कम्भादि) H. an. Med. Journ. of the Am. Or. S. 6, 236. — *b*) N. pr. α) eines Sohnes des Manu Sâvarṇa Hariv. 465. — β) eines Sohnes des Pulaha von der Gati Bhâg. P. 4, 1, 38. — Vgl. परोवरीयंस् 2).

वरीवर्द m. = बलीवर्द Ramân. zu AK. 2, 9, 59 nach ÇKDr.

वरीवृत (vom intens. von वर्त्) adj. *rollend, kugelnd* AV. 8, 6, 22.

वरीषु s. स्वीषु.

वरु N. pr. nach dem Comm. in ṚV. 8, 23, 28. 24, 28. 26, 2, wo die Verbindung वरो (वरो इति Padap.) सुषाम्णे vorkommt. Ein voc. ist aber unpassend und am nächsten liegt die Vermuthung, dass वरोसुषामन् trotz seiner unerklärlichen Form ein Wort und N. pr. ist. — Vgl. बरु.

वरुक m. *eine best. geringere Körnerfrucht* (कुधान्य) Suçr. 1, 197, 1. 10.

वरुट m. Bez. einer Klasse von Mlekkha H. 934, v. l. für वरट. — Vgl. वरुड.

वरुड m. Bez. einer verachteten Mischlingskaste, die sich mit dem Spalten von Rohr abgiebt, Kull. zu M. 4, 215. Colebr. Misc. Ess. II, 184. Jama in Prâjaçkittatattva nach ÇKDr. सौचिकाच्छौण्डिकाज्जातो नटो वरुड एव च Parâçarapaddh. im ÇKDr. — Vgl. वरट, वरुट.

वरुण Uṇâdis. 3, 53. Çânt. 2, 9. 1) m. *a*) *der Umfasser des Alls,* N. pr. eines Âditja, des obersten Herrn unter den Göttern des Veda, Naigh. 5, 4. 6. Nir. 10, 3. 12, 21. AK. 1, 1, 1, 56. Trik. 1, 1, 75. H. 188. Halâj. 1, 74. daher König genannt ṚV. 1, 24, 7. 156, 4. 2, 28, 9. 5, 40, 7. 7, 64, 1. 87, 6. विश्वस्य भुवनस्य राजा 5, 85, 3. आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राट् 8, 42, 1. 10, 132, 4. य एको वस्वो वरुणो न राजति 1, 143, 4. त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा ये च मर्ताः 2, 27, 10. क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा 4, 42, 1. 2. अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः AV. 1, 10, 1. 3, 4, 5. (श्रेष्ठमासि) देवेषु वरुणो यथा 6, 21, 2. TBr. 1, 1, 4, 8. 4, 10, 6. Ait. Br. 1, 24. 7, 14. वरुणो वै देवानां राजा Çat. Br. 12, 8, 3, 10. तत्रस्य राजा वरुणो ऽधिराजः TBr. 3, 1, 2, 7. राज्ञो वरुणस्य पत्नी MBh. 3, 15590. 16, 120. Suçr. 1, 17, 6. धृतव्रत ṚV. 2, 1, 4. मायिन् 6, 48, 14. 7, 28, 4. 10, 99, 10. सुशंस 7, 35, 6. गम्भीरशंस 87, 6. वरुणस्य धाम 4, 5, 4. 7, 87, 2. 10, 10, 6. द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते 6, 70, 1. वरुणो धर्मपतीनाम् VS. 9, 39. Çat. Br. 5, 3, 3, 9. unter den 12 Âditja aufgeführt MBh. 1, 2523. Hariv. 176. 593. 11549. 12456. 12911. 14166. VP. 122. Bhâg. P. 6, 6, 37. Weber, Râmat. Up. 304. 313. Verz. d. Oxf. H. 190, *a*, 31. daher = अर्क H. an. 3, 224. = सूर्य Viçva im ÇKDr. Dem Varuṇa besonders zugeeignet sind *a*) die Gewässer, *b*) die Nacht und *c*) der Westen. *a*) H. an. Med. n. 63. आद्रिर्याति वरुणः समुद्रैः ṚV. 1, 161, 14. 2, 38, 8. 7, 34, 10. 49, 3. 8, 41, 2. 9, 90, 2. VS. 10, 7. AV. 3, 3, 3. 13, 2. 4, 15, 12. 5, 24, 4. अप्सु ते राजन्वरुण गृहो हिरण्ययो मितः (मिथः die Hdschrr.; vgl. Âçv. Çr. 3, 6, 24) 7, 83, 1. अप्सु वै वरुणः TBr. 1, 6, 5, 6. TS. 3, 4, 5, 1. उदकपति MBh. 5, 3531. 9, 2733. fgg. अपां राज्ये सुराणां (ऽसु ed. Calc.) च विदधे वरुणं प्रभुम् (पितामहः) 12, 4497. Hariv. 259. 2462. fgg. 12492. 13107. VP. 153. वरुणः पाति सागरम् Verz. d. Oxf. H. 59, *b*, 23. 69, *a*, 41. fgg. वरुणो यादसामहम् sagt Kṛshṇa Bhâg. 10, 29. सलिलविकारे कुर्यात्पूजां वरुणस्य वारुणीमृक्षैः Varâh. Bṛh. S. 46, 51. Varuṇa so v. a. *Ocean:* वरुणवह्नकुरलः Varâh. Bṛh. 27 (25), 9. so v. a. *Wasser:* वश्याग्निवरुणाः सूदः Kathâs. 56, 398. °मतनिवर्हणा Verz. d. Oxf. H. 250, *b*, 39. — *b*) वरुणेन समुब्जितं मित्रः प्रातर्व्युब्जतु AV. 9, 3, 18. स वरुणः सायमग्निर्भवति स मित्रो भवति प्रातरुद्यन् 13, 3, 13. वरुणस्य सायम् TBr. 1, 5, 3, 3. अहर्वै मित्रो रात्रिर्वरुणः Ait. Br. 4, 10. मित्रो ऽहरजनयद्वरुणो रात्रिम् TS. 6, 4,

8,3. — c) AK. 1,1,2,4. H. 169. Med. Halâj. 1,100. AV. 4,40,3. 12,3,57. 15,14,3. वरुणायेति पश्चात् Gobh. 4,7,25. Çâñkh. Çr. 6,3,3. इयं दिग्दयिता राज्ञो वरुणस्य तु गोपतेः (vgl. 3532) । सदा सलिलराजस्य प्रतिष्ठा चादिरेव च ॥ MBh. 5,3801. प्रतीचीं वरुणः पाति पालयानः सुरान्बली 8,2103. Hariv. 12511. °पालिता दिक् R. 1,37,26 (38,29 Gorr.). 4,45,4. Varâh. Brh. S. 54,3. 86,75. Çiç. 9,7. — Varuṇa ist Richter, der die Sünde straft und um Vergebung der Schuld angerufen wird; er ist allwissend ṚV. 5,85,7. 7,86,1. fgg. 89,5. विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया 10,11,1. अनागान्सविता देवो वरुणाय वोचत् 12,8. VS. 6,22. AV. 4,16,1. fgg. 5,11,4. 19,44,8. 9. अनृते क्रियमाणे वरुणो गृह्णाति TBr. 1,7,2,6. ईशो दण्डस्य वरुणः M. 9,245. 244. Varuṇa's Schlingen; von ihm kommen Krankheiten, besonders Wassersucht, ṚV. 6,74,4. 7,88,7. AV. 2,10,1. 4,16,6. 7. 14,1,57. 2,49. 18,4,70. ऐक्ष्वाकं वरुणो जग्राह Ait. Br. 7,15. Çat. Br. 2,3,2,20. 5,2,2,3. वरुणो वा एतं गृह्णाति यः पाप्मना गृहीतो भवति 12,7,2,17. वरुणो वा एतं गृह्णाति यो ऽप्सु म्रियते 13,3,8,5. वरुणेन यथा पाशैर्बद्ध एवाभिदृश्यते । तथा (राज्ञा) पापान्निगृह्णीयाद्व्रतमेतद्धि वारुणम् ॥ M. 9,308. 303. पाशहस्तो विपाशस्तु रणे वरुण एव च । भग्नः प्रयातः सहसा मया (Râvaṇa spricht) सीते त्वयि पतिः ॥ R. 3,54,9. कुंभात्रञ्च पाशभृद्वरुणः Varâh. Brh. S. 58,57. Kaçjapa raubt ihm seine Kühe (Varuṇa heisst गोपति MBh. 5,3532. 3801; nach Nilak. soll गो hier = उदक sein) Hariv. 3148. fgg. ist ein Sohn Kardama's Verz. d. Oxf. H. 69,a,41. Pushkara Varuṇa's Sohn MBh. 5,3533. Varuṇa ist Herr des Nakshatra Çatabhishag Varâh. Brh. S. 98,5. Varuṇa's Späher (s. unter स्पश्) ṚV. 7,87,1. Mitra-Varuṇa 5,62. 64. 7,36,2. 10,109,2. die Sonne ihr Auge 6,51,1. 7,61,1. 63,1. Indra-Varuṇa 4,41. 42. 6,68,5. 7,35,1. 82,1. fgg. 83,1. 84,1. fgg. 85,1. fgg. VS. 8,37. Agni-Varuṇa Çâñkh. Br. 18,10. Kâtj. Çr. 10,8,27. Agni heisst sein Bruder ṚV. 4,1,2. Jama-Varuṇa Gobh. 3,6,12. Vishṇu-Varuṇa Çâñkh. Çr. 3,20,4. Agni mit dem Bein. Varuṇa Ait. Br. 7,9. Varuṇa unter den Devagandharva MBh. 1,2550. als Nâga 16,119 (अरुण ed. Bomb.). König der Nâga Lalit. ed. Calc. 249,13. 268,7. als Asura Hariv. 12943 (wohl fehlerhaft für करुण, wie die neuere Ausg. liest). bei den Gaina Diener des 20ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 43. — pl. etwa so v. a. *die Götter* (wenn in der Stelle kein Fehler vorliegt): सं त्वाशांस्था वरुणैः संविदानः AV. 3,4,6. Appell. so v. a. *Abwehrer* nach Sâj. in ṚV. 5,48,5. Weitere Nachweisungen giebt J. Muir in As. J. new s. I, 77. fgg. — b) Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. ed. Bomb. 1,28,9. वरुण ed. Schl. — c) *Crataeva Roxburghii R. Br.* (s. 1. वरण 1) b) AK. 2,4,2,5. Trik. 2,4,8. H. an. Med. Hariv. 12677 (वरण die neuere Ausg.). R. Gorr. 2,103,9. 3,79,38. Suçr. 1,137,14. 145,15. 157,14. 220,9. 222,4. 2,389,8. °द्रुम Trik. 3,3,26. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (वराणसी ed. Bomb. st. वरुणा und असी der ed. Calc.; andere Autt. वरणा und असी), Mârk. P. 61,5. — 3) n. MBh. 3,2171 fehlerhaft für वरण.

वरुणक m. = वरुण 1) c) MBh. 13,635. Suçr. 2,53,17. 80,15. Varâh. Brh. S. 54,50.

वॅरुणगृहीत adj. *von* Varuṇa *ergriffen*, *durch Krankheit* bes. *Wassersucht* TS. 2,1,2,1. 6,4,2,3. एता वा अपां वरुणगृहीता याः स्यन्दमानानां न स्यन्दन्ते Çat. Br. 4,4,5,11. Kâṭh. 12,4. TBr. 1,6,4,1.

वरुणग्राह m. *Ergreifung durch* Varuṇa: अ° TS. 6,6,5,4. TBr. 1,6,4,2.

वरुणतीर्थ n. N. pr. eines heiligen *Badeplatzes* Verz. d. Oxf. H. 77,a,24. fg.

वरुणत्व n. Varuṇa's *Wesen*, — *Natur* R. 7,56,12. 83,6.

वरुणदत्त m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,84, Schol. Lot. de la b. l. 2.

वरुणदेव adj. Varuṇa *zur Gottheit habend*; n. *das* Nakshatra Çatabhishag Varâh. Brh. S. 32,20. v. l. °दैव.

वरुणदैवत dass. Varâh. Brh. S. 10,2.

वरुणधूर्त adj. Varuṇa *hintergehend* ṚV. 7,60,9.

वरुणपाश m. 1) Varuṇa's *Schlinge*, — *Fessel* TS. 2,1,9,3. 5,2,1,4. TBr. 1,5,9,7. 7,2,5. Çat. Br. 3,6,2,20. Ind. St. 3,478. — 2) *Haifisch* (vgl. तन्तु) H. 1351, Schol.

वरुणपुरुष m. *ein Diener des* Varuṇa Âçv. Gṛhj. 1,2,5.

वरुणप्रघास 1) m. pl. *das zweite Viermonat-Opfer, das auf den Vollmond des* Âshâḍha *oder* Çrâvaṇa *fällt* (TS. Comm. II, 34), *zum Zweck der Lösung von* Varuṇa's *Schlingen*; so genannt nach dem dabei üblichen *Essen* von Gerste zu Ehren des Gottes. TS. 3,2,2,3. TBr. 1,4,9,5. 10,6. 5,6,4. 6,1,1. Çat. Br. 2,5,2,1. 3,1. 5,2,4,2. Kâtj. Çr. 5,1,24. 2,8. Lâtj. 5,1,1. Âçv. Çr. 2,17,1. — 2) sg. N. eines Ahîna Çâñkh. Çr. 14,7,6.

वॅरुणप्रशिष्ट adj. *von* Varuṇa *angewiesen*, — *geleitet* ṚV. 10,66,2.

वरुणभट्ट m. N. pr. eines Astronomen Colebr. Misc. Ess. II, 461.

वरुणमति m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 22.

वरुणमित्र m. Bein. eines Gobhila Ind. St. 4,374.

वरुणमेनि f. Varuṇa's *Zorn* TS. 5,1,5,3. 6,1. Kâṭh. 19,5. fgg.

वॅरुणराजन् adj. Varuṇa *zum König habend* TS. 3,5,8,1. 5,5,9,5. Çâñkh. Çr. 4,21,10. Kauç. 135.

वरुणलोक m. Varuṇa's *Welt* Kaush. Up. 1,3. Varuṇa's *Gebiet* (*Wasser*) Tarkas. 7.

वरुणशर्मन् m. N. pr. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe derselben mit den Daitja Kathâs. 48,18. 24.

वॅरुणशेषस् adj. nach Sâj. *wehrfähige Nachkommen habend*; eher *als* Varuṇa's *Nachkömmlinge sich darstellend* ṚV. 5,65,5.

वरुणश्राद्ध n. Bez. *eines best. Todtenopfers* Verz. d. B. H. No. 1273.

वरुणश्रोतस s. वरुणस्रोतस.

वरुणसव m. Varuṇa's *Förderung*, — *Gutheissen* TBr. 1,7,4,3. 6,4. यो राजसूयः स व° 2,7,6,1. Çat. Br. 5,3,4,12. 4,3,2.

वरुणसेना f. N. pr. einer Prinzessin Kathâs. 44,44. 103. °सेनिका 101.

वरुणस्रोतस m. N. pr. eines Berges MBh. 3,8336 nach der Lesart der ed. Bomb., °श्रोतस ed. Calc.

वरुणाङ्गरुह m. Varuṇa's *Sprössling*, patron. Agastja's, Varâh. Brh. S. 12,13. — Vgl. मैत्रावरुणि, वारुणि.

वरुणात्मजा f. Varuṇa's *Tochter*, Bez. *des Branntweins* AK. 2,10,39.

वरुणाद्रि m. N. pr. eines *Berges* Pañkat. 197,17. fg.

वरुणानी f. Varuṇa's *Gattin* P. 4,1,49. Vop. 4,23. ṚV. 1,22,12. 2,32,8. 5,46,8. 7,34,22. AV. 6,46,1. pl. Kâṭh. 8,5. 19,3; vgl. TS. 5,5,4,1.

वरुणालय m. Varuṇa's *Behausung*, Beiw. und Bein. *des Meeres* R. Gorr. 1,1,75. 46,21. 3,60,18. fg. 4,53,2. 6,39,11. 98,8. करुणा° *ein*

Meer der Barmherzigkeit Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,27.

वरुणावास m. Varuṇa's *Wohnung* d. i. *das Meer* R. 5,74,28.

वरुणावि oder °विस् f. Bein. der Lakshmî: वरुणं वीक्ष्य दुःखार्तमाविर्भूतास्मि यद्गुवि। वरुणाविरिति ख्यातं नाम तन्मे भविष्यति ॥ Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,37. fg.

वरुणिक, वरुणिय und वरुणिल m. Hypokoristika von वरुणदत्त P. 5,3,84, Schol.

वरुणेश adj. Varuṇa *zum Herrn habend;* n. *das* Nakshatra Çatabhishag̊ Varâh. Bṛh. S. 15,22. °दिश *die* Varuṇa *zum Herrn habende Gegend* d. i. *der Westen* Gaṇit. Çṛṅgonn. 8.

वरुणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,44.

वरुणोद (वरुण + उद *Wasser*) n. N. pr. eines Sees Mârk. P. 56,6.

वरुणोपनिषद् f. Titel einer Upanishad Verz. d. Oxf. H. 252,*a*,8.

वरुण्य adj. *von* Varuṇa *kommend, ihm gehörig* u. s. w.: मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ṚV. 10,97,16. सर्वस्माद्वरुण्यात्प्रजाः प्रमुञ्चति Çat. Br. 5,2,5,16. 12,7,2,17. रज्जु 1,3,1,14. ग्रन्थि 16. ग्रये यवः 2,5,2,1. 14,2,1,11. ओषधयो या कृष्टे जायन्ते 5,3,2,8. stehendes Wasser 4,12. 3,2,4,18. 6,4,2,8. 5,2,13.

वरुतर् = वरूतर् P. 7,2,34.

वरुत्र (von 1. वर्) n. *Ueberwurf, Mantel* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,172.

वरुल = संभक्त Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वरूतर् (von 1. वर्) ved. nom. ag. P. 7,2,34. *Abwehrer, Beschirmer* ṚV. 1,169,1. त्वमिनो दाशुषो वरूता 2,20,2. को वंस्त्राता को वरूता 4,55,1. अभित्तुस्त्वावतो वरूता 7,21,8. रथानाम् P., Schol. वरूत्री P. 7,2,34. VS. Prât. 3,77. *Schirmerin, Schutzgenie*, Bez. gewisser göttlicher Wesen (sowohl sg. als pl.) ṚV. 1,22,10. 3,62,3. 5,41,15. 7,34,22. 38,5. 40,6. VS. 11,61. 13,44. Çat. Br. 6,5,4,6. TS. 4,1,6,1. होत्रा वै वरूत्रयः 5,1,7,2. — Vgl. तृष्णावरूत्री.

वरूथ (wie eben) Uṇâdis. 2,6. 1) n. *Wehr, Schirm, Schild, Obdach* (Synonyme sind शर्मन्, वर्मन्, छर्दिस्); = गृह Naigh. 3,4. = वेश्मन् H. an. 3,319. fg. Med. th. 21. — ṚV. 1,23,21. भवा वरूथं गृणते भव शर्म 58,9. 116,11. 2,18,2. 4,55,4. 56,4. त्रायस्व नो ऽवृकेभिर्वरूथैः 7,19,7. 20,8. 53,2. यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथम् 30,4. 8,27,9. बृहद्वरूथं मरुताम् 18,20. 68,3. 10,61,17. VS. 11,40. Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,96,2 (= श्रेष्ठ Comm.). त्रिवरूथ adj. *dreifach schirmend:* शर्मन् ṚV. 5,4,8. 8,43,2. AV. 7,6,4. तनूपान ṚV. 8,5,20. छर्दिस् 18,21. अधं स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव 6,15,9. 26,7. oxyt. Indra VS. 28,19. TBr. 2,6,10,5. — 2) m. n. *eine am Wagen zum Schutz angebrachte Einfassung* AK. 2,8,2,25. H. 758. H. an. Med. Halâj. 2,294. अश्वरथो विततवरूथः Çâṅkh. Çr. 17,5,1. MBh. 3,14910. 14917. Hariv. 9288. स° adj. MBh. 5,5245. 6,4823. सु° adj. R. 6,31,30. सप्त° adj. Bhâg. P. 4,26,2. सप्तधातु° 29,19. — 3) n. *Panzer* H. an. — 4) n. *Schild* (चर्मन्; daher *leather, skin* bei Wilson) Med. — 5) *Heer* Bhâg. P. 9,10,20. सुरेतर° 2,7,26. *Heerde:* अवि° 1,18,43. *Schwarm:* मधुव्रत° 3,28,28. 8,8,24. *Menge, Masse:* वक्रजटा° 5,2,14. — 6) m. *der indische Kuckuck* (पिक) H. an. — 7) m. *Zeit* (काल) H. an. — 8) = निशाराष्ट्रक (?) Trik. 3,3,201. — 9) m. N. pr. eines Grâma R. 2,71,11 (73,9 Gorr.). — 10) m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 75,45.

वरूथप m. *Führer einer Schaar, Heerführer:* देवासुरवरूथपाः Bhâg. P. 8,7,16.

वरूथशस् adv. *schaaren-, haufenweise* Bhâg. P. 3,17,11. 4,3,12. 5,1,8. 10,44,6.

वरूथाधिप m. *Heerführer:* यदूनाम् Bhâg. P. 3,1,28.

वरूथिन् (von वरूथ) 1) adj. *a) Schutzwaffen tragend* VS. 16,35. *mit einem Schutzbrett u. s. w. versehen:* रथ MBh. 5,4446. Hariv. 13469. R. 6,74,1. Ragh. 9,11. सु° R. 6,86,4. स° = वरूथिन् Hariv. 2021. — *b) Schirm, Schutz gewährend* MBh. 5,1848. 8,1524. Hariv. 2592. इन्द्रस्य गृहाः Pâr. Gṛhj. 3,4. Çâṅkh. Gṛhj. 3,4. — *c)* so v. a. रथवत् (wie die ed. Calc. liest) *zu Wagen sitzend* (Gegens. पदातिन्) Ragh. 12,84. — *d)* am Ende eines comp. *von einer Schaar von —, von einer Menge von — umgeben:* ललना° *von einer Frauenschaar umgeben* Bhâg. P. 3,23,39. नीलालक° *von einer Menge schwarzer Locken umgeben* 20,31. — 2) f. वरूथिनी *a) Heer* AK. 2,8,2,46. H. 746. Halâj. 2,302. MBh. 4,985. 5,7447. R. 1,51,21. Ragh. 12,50. 16,28. Çiç. 12,77. Kathâs. 46,48. °पति *Heerführer* Bhâg. P. 8,15,23. — *b)* N. pr. einer Apsaras Mârk. P. 61,35. fgg.

वरूथ्य (wie eben) adj. *Schirm —, Schutz gewährend:* त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ṚV. 5,24,1. शर्मन् 46,5. 8,47,10. छर्दिस् 6,67,2. विश्वानि वरूथ्या मनामहे 8,47,3. वचस् 90,5. शुचौ वरूथ्ये देशे (Glosse रमणीय) *an einem geschützten Orte* Çâṅkh. Gṛhj. 1,3.

वरेज = वरज P. 6,3,16.

वरेण् nom. ag. von वरेणय् Purushottamadeva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,98.

वरेण m. *Wespe* Wilson nach Gaṭâdh.; vgl. वरोल. — वरेणा H. ç. 53 wohl fehlerhaft für वरेण्या.

वरेण्य (von 2. वर्; वरेण्य Uṇâdis. 3,98) 1) adj. *wünschenswerth, liebenswerth; vorzüglich, der vorzüglichste* AK. 3,2,7. H. 1438. Halâj. 4,4. होतर् ṚV. 2,7,6. दूत 8,91,18. राधस् 1,9,5. श्रवस् 5,22,3 वसु 6,16,33. मद 1,175,2. सोम 3,40,5. वाज 2,4. वज्र 8,15,7. Bṛhaspati 3,62,6. Savitar 5,81,2. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि 3,62,10. Agni 5,25,3. यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर 39,2. वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वरेण्यः 10,113,2. der Sonnengott Çvetâçv. Up. 5,4. विष्णु MBh. 1,24. 3,12930. यः सर्वलोकेषु वरेण्य एकः 5,655. 13,1125. 1375 (मरेण्य ed. Calc.). Hariv. 10408. Ragh. 6,24. Kumâras. 7,90. VP. 20. Bhâg. P. 5,18,23. 8,5,26. 16,36. 24,53. Mârk. P. 78,4. Verz. d. Oxf. H. 79,*a*,19. 21. भिषजां वरेण्यः 187,*b*, No. 428, Z. 17. नाकसदाम् Bhaṭṭ. 1,4. — 2) m. *a)* Bez. einer best. Manengruppe Mârk. P. 96,45. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Bhṛgu MBh. 13,4146. — 3) f. आ Bein. der Gattin Çiva's H. ç. 53. वरेणा die Hdschr. — 4) n. *Saffran* Râǵan. im ÇKDr.

वरेण्यक्रतु adj. *wohlgesinnt, einsichtig:* होतर् ṚV. 8,43,12. वरेण्यक्रतुरहमा देवीरवसे हुवे 10,9,12; vgl. AV. 6,23,1.

वरेणय्, वरेणयति denom. von वरेण्य Purushottamadeva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,98.

वरेन्द्र Bez. eines Theils von Bengalen Colebr. Misc. Ess. II,179. Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,38 (वा° v. l.). 338,*b*,22. 339,*b*,36. Wassiljew 54. वरेन्द्री Trik. 2,1,7. — Vgl. वा°.

वरेय् *werben, freien:* य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् ṚV. 10,27,11. वरेयम् absol.: यदयातं वरेयं सूर्यामुप 85,15. येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम् 23.

— Vgl. 2. वर्.

वरेयु (von वरेय्) nom. ag. *Freier:* मर्याः ṚV. **10**,78,4.

वरेश (3. वर + ईश) adj. *über Wunschgaben verfügend, Wünsche zu gewähren im Stande seiend* BHÂG. P. **2**,9,20.

वरेश्वर adj. dass.: सर्वकाम° BHÂG. P. **3**,9,40. m. Bein. Çiva's ÇABDAR. im ÇKDR.

वरोट n. = मरुवकपुष्प ÇABDAM. im ÇKDR.

1. वरोरु (4. वर + ऊरु) m. *ein schöner Schenkel:* द्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिः VARÂH. BṚH. S. 68,4.

2. वरोरु (wie eben) adj. (f. °रु und रू): *schöne Schenkel habend:* °रुम् nom. f. VIKR. 47,13. °रुम् acc. f. R. **3**,52,53. °रु voc. f. PRAB. 7,15. BHÂG. P. **4**,3,24. **10**,42,2.

वरोल m. *eine Art Wespe* TRIK. **2**,5,34. HÂR. 217. f. ई *eine andere Art Wespe* TRIK.

वर्क् (वृक्), वर्कते (आदाने) DHÂTUP. 4,18.

वर्कर UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3,131. m. 1) *das Junge eines Thieres* AK. **2**, 10,23. MED. r. 211. *Ziege* TRIK. **2**,9,24. MED. = पशु H. an. 3,582. *Zicklein* H. 1276. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 976,6. — 2) *Scherz, Spass* H. 556. H. an. MED.

वर्करकर्कर viell. adj. so v. a. *von allen Sorten* Spr. 1555.

वर्कराट m. 1) *Seitenblick.* — 2) *eine vom Fingernagel des Geliebten herrührende Verwundung auf der Brust eines Weibes* TRIK. **3**, 3, 103. H. an. 4,64. MED. ṭ. 64. fg. — 3) *die Strahlen der aufgehenden Sonne* H. an. MED.

वर्करीकुण्ड N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,17.

वर्कुट m. *a pin, a bolt* WILSON nach ÇABDÂRTHAK.

वर्ग (von वर्ज्) 1) nom. ag. *Abwender, Beseitiger:* वर्गोऽसि पाप्मानं मे वृङ्धि KAUSH. UP. 2, 7. Vgl. दुर्वर्ग. — 2) m. am Ende eines adj. comp. f. आ VARÂH. BṚH. S. 19,17. *a) eine gesonderte, der Gleichartigkeit wegen zusammengestellte Anzahl von Dingen; Abtheilung, Gruppe, Klasse, Verein* AK. **2**,5,41. H. 1413. z. B. von Backsteinen, Versen KÂTJ. ÇR. **16**,7,25. **24**,3,5. LÂTJ. **10**,14,4. सप्तक M. 7, 52. चतुर्विध SUÇR. **1**,5,7. 12. 70,8. 132,1. ṚV. PRÂT. 16,7. 8. 52. VARÂH. BṚH. S. 14,32. 53,49. 76, 2. 96, 3. वर्गवर्गस्थैः काकैः *gruppenweise stehend* 95, 8. अष्टशतसाहस्रा गवां वर्गाः शतं शतम् MBH. 4, 288. अप्सरसाम् KUMÂRAS. 3,17. वर्गावुभौ देवमहीधराणाम् 7, 53. दास° so v. a. *die Sclaven, Dienerschaft* M. 3, 246. 4,180. 185. बन्धुवर्गाः MBH. 3,2683. नृशंस° 5,1639. मित्र° 13,309. भृत्य° 2186. पौर° 15,439. 446. HARIV. 11015 (S. 790). R. **2**,30,45. 45,2. KÂM. NÎTIS. 3,39. RAGH. 2,4. 11,7. VIKR. 3,9. MÂLAV. 67,11. Spr. 1940. 2542. 4645. AK. **2**,6,**1**,30. 8,**1**,6. H. 514. HALÂJ. 2,353. KATHÂS. 4,20. **18**,83. 26,145. RÂǴA-TAR. **1**,308. PRAB. 36,9. BHÂG. P. **4**,25,42. **7**,6,12. PAÑKAT. 33, 14. VET. in LA. (III) 1, 13. SARVADARÇANAS. 57, 11. 100, 22. आत्म°, पर° *die eigene —, die fremde Partei* VṚDDHA-ĆÂṆ. 11, 2. स्व° PAÑKAT. 192, 22. fg. नक्षत्रत्रय° VARÂH. BṚH. S. 14,1. मृदुवर्गस्त्वनुराधाचित्रापौष्णेन्दवानि 98,10. षडिन्द्रिय° BHÂG. P. **5**,14,1. संवत्सर° WEBER, Nax. **2**,283. fg. Häufig in comp. mit einem Zahlworte: त्रि° (s. auch bes.) *eine aus drei bestehende Abtheilung, — Gruppe, Trias* MBH. 5, 1484. 12,426. PAÑKAT. III,243. DAÇAK. 63,15. fg. BHÂG. P. **7**,5,18. चतुर्वर्ग (s. auch bes.) HIT. I,8. पञ्च° (s. auch bes.) Spr. 4902. Verz. d. B. H. No. 875. षड्वर्ग MBH. 1,1948. KATHÂS. 20,134. नव° KÂTJ. ÇR. **24**,3,25. दश° **22**, 10,11. द्वादश° Verz. d. Oxf. H. No. 875. प्रतिवर्गम् KÂTJ. ÇR. **9**,4,20. *eine Reihe nach irgend einem Eintheilungsgrunde zusammengehöriger Wörter* AK. **2**,1,1. **3**,4,**1**,1. TRIK. **1**,1,3. *Consonantenreihe im Alphabet* (es werden deren 7 angenommen; s. BÖHTLINGK, P. II, S. 525) ṚV. PRÂT. 1,3. चकार° 4,4. 5,3. स्पर्श° 6,8. 14,7. VS. PRÂT. 1,64. 3,92. 94. 4,92. AV. PRÂT. 2,14. 38. VOP. 2,25. fg. काद्या वर्गाः VARÂH. BṚH. S. 96,15. वर्गाष्टक (nach dem Comm. कचटतपयशलवर्गाणामष्टकम्) WEBER, RÂMAT. UP. 308. fg. — *b) Alles was zu Jmdes Gebiet gehört, — unter Jmd steht* (= परिग्रह) VARÂH. BṚH. S. 13, 7. 15,22. 17,7. 32,12. क्षेत्रं यद्यस्य स तस्य वर्गः BṚH. 1,9. 8,10. 23, 5. क्षेत्रं होराथ द्रेक्काणो नवांशो द्वादशांशकः । त्रिंशांशकश्च वर्गोऽयं सर्वस्य स्व उदाहृतः ॥ GÂRGI im Comm. zu 1,9; vgl. VARÂH. LAGH. 1,23 in Ind. St. **2**,283. — *c)* = त्रिवर्ग d. i. काम, अर्थ und धर्म BHÂG. P. **4**,21,29. — *d) Section, Abtheilung in einem Buche* AK. **3**,4,**11**,46. TRIK. **3**, 2, 24. *Unterabtheilung eines* Adhjâja *im* Ṛgveda *und in der* Bṛhaddevatâ, ROTH, Zur Lit. und G. d. V. 5. Ind. St. **3**,254. fgg. **1**,112. fg. — *d) Quadrat, die zweite Potenz* COLEBR. Alg. 8. 11. पञ्च° *das Quadrat von fünf* VARÂH. BṚH. 7, 6. GAṆITÂDHJ. SPASHṬÂDHJ. 21. 28. Ind. St. **8**,430. Vgl. भिन्न°. — *e)* = बल NAIGH. 2,9. — *f)* N. pr. eines Landes SCHIEFNER, Lebensb. 235 (5). — 2) f. आ N. pr. einer Apsaras MBH. **1**,7853. 2,394.

वर्गणा (von वर्गय्) f. *das Multipliciren* VARÂH. BṚH. 7,13. 26 (24),9. — Vgl. संवर्ग.

वर्गपद n. *Quadratwurzel* COLEBR. Alg. 9.

वर्गपाल m. *Beschützer seines Anhangs, — seiner Creaturen* MBH. 2,1544.

वर्गप्रकृति f. *unbestimmte Aufgabe des 2ten Grades, affected square* COLEBR. Alg. 112. 170. GOLÂDHJ. 13,2. BIǴAGAN. 1,33. fgg.

वर्गप्रशंसिन् m. *seinen Anhang —, seine Creaturen preisend* MBH. 5, 1639. NÎLAK.: वर्गो वृजिनं पराभिभवः.

वर्गमूल n. *Quadratwurzel* COLEBR. Alg. 9.

वर्गय् (von वर्ग), °यति *multipliciren;* vgl. वर्गणा.

वर्गशस् (wie eben) adv. *nach Abtheilungen, gruppenweise* BHÂG. P. **4**,9,68. **12**,6,50.

वर्गस्थ adj. *sich zu einer Partei haltend, parteiisch:* न वर्गस्था ब्रवीम्येतत्स्वपक्षपरपक्षयोः MBH. 12,12040.

वर्गान्त्य m. *der letzte Consonant in den fünf ersten Consonantenreihen:* त्रयस्त्रयो वर्गान्त्याः so v. a. *die Mediae, die aspirirten Mediae und die Nasale* AV. PRÂT. 1,13, Schol.

वर्गिन् (von वर्ग) adj. pl. *zu Jmdes Partei gehörend, Jmd untergeben:* परिचर्यावतो द्वारि ये च केचन वर्गिणः MBH. 12,3711. = समुदायाधिपतयः NÎLAK.

वर्गीण (wie eben) adj. am Ende eines comp. *zu der und der Kategorie —, Sippe —, zu der Partei von — gehörend* P. **4**,3,64. अर्जुन° Schol. — Vgl. महर्गीण.

वर्गीय (wie eben) adj. am Ende eines comp. dass. P. **4**,3,64. मण्डूकं स्ववर्गीयम् PAÑKAT. 212, 6. *zu der und der Consonantenreihe gehörig* P. **4**,3,63. क° *ein Guttural,* प° *ein Labial* Schol. प्रथमोत्तमवर्गीयैः स्पर्शैः ṚV. PRÂT. 4,11. चकार° 5,5. च° AV. PRÂT. 2,11. त° 15. —

Vgl. अर्थ°, मद्वर्गीय und वर्ग्य.

वर्गोत्तम (वर्ग + उ°) adj. 1) *der letzte in einer der fünf ersten Consonantenreihen* d. i. *ein nasaler Laut* AV. Prât. 1, 26, Schol. — 2) in der Astrol. *der vornehmste in seiner Klasse*, Bez. *des 1ten Neuntels in einem beweglichen Bilde* (Widder, Krebs, Wage, Steinbock), *des 5ten Neuntels in einem festen Bilde* (Stier, Löwe, Scorpion, Wassermann) *und des 9ten Neuntels in einem beweglichen und zugleich festen Bilde* (Zwillinge, Jungfrau, Schütze, Fische): वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्यपर्यन्ततः — नवभागसंज्ञाः Varâh. Bṛh. 1,14. 10,3. 19,9. 21,7. 22,4. Laghuǵ. 1,19 in Ind. St. 2,281.

वर्ग्य (von वर्ग) adj. *zu einer Abtheilung, Partei u. s. w. gehörend* gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. m. so v. a. *Zunftgenosse, College* Mâlatîm. 4,6. am Ende eines comp. (hat den Ton auf der ersten Silbe) P. 4,3,64. 6,2,131. अर्जुन° Schol. कृष्ण° Vop. 26,20. स्व° Âçv. Çr. 1,2,16. — Vgl. पार°, मद्वर्ग्य.

1. वर्च्, वर्चते (दीप्तौ) Dhâtup. 6,1.

2. वर्च्, वृणक्ति (वर्जने) Dhâtup. 29,24, v. l. — Vgl. वर्ज्.

वर्च m. N. pr. eines alten Weisen MBh. 3,14164. = सुवर्चक Nîlak.

वर्चल s. सुवर्चला.

वर्चस् 1) n. a) *Lebenskraft, Lebhaftigkeit; Energie, vigor; Wirksamkeit, Regsamkeit, Nachdruck; die leuchtende Kraft im Feuer und in der Sonne;* daher in der späteren Sprache *Licht, Glanz* (= तेजस् AK. 3,4,20,233. H. 101. an. 2,590. Med. s. 34. Halâj. 1,65), *Farbe* (= रूप H. an. Med.). Das Wort ist sehr beliebt in den späteren Theilen des ṚV., im AV. und in der VS. ṚV. 1,23,13. सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा 24. AV. 6,5,1. VS. 12,7. वर्चो धा यज्ञवाहसे ṚV. 3,8,3. 24,1. अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्सु 22,2. आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर 9,65,18. अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् 66,21. तत्राय वर्चसे बलाय 10,18,9. 85,39. AV. 1,35,1. 2,28,5. 29,1. 4,10,7. 6,63,1. 19,58,1. Çat. Br. 2,3,4,18. दीर्घायुत्व, वर्चस् Kâtj. Çr. 5,2,14. ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु ṚV. 10,128,1 (Schol. zu P. 1,2,34). हरिवता वर्चसा सूर्यस्य 112, 3. 159,5. im Feuer Çat. Br. 4,5,4,3. VS. 3,19. 10,7. रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् 13,40. AV. 1,9,4. 14,1. 2,13,2. 3,4,1. आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् 13,5. des Elephanten 22,6. der Wasser 4,8,5. 6. अस्मिन्निन्द्र महि वर्चांसि धेहि 22,3. निर्वै क्षत्रं नयति हन्ति वर्चः 5,18,4. 7,82, 2. der Männer und Weiber 13,1. वर्चस्तेजो बलमोजः 9,1,17. वर्चस्तेजः प्राणमायुः 10,5,36. 12,1,25. 14,1,35. fg. वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् 2,53. कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च 17,1,27. 18,3,10. वर्चो म इन्द्रो न्यनक्तु हस्तयोः 12. 19,33,5. 37,2. 20,48,1. 2. सहस्र° *tausenderlei Kräfte verleihend* ṚV. 9,12,9. 43,4. तीक्ष्ण° *scharf wirkend* Suçr. 2,296,4. तिग्म° (रात्नम्) R. 5,10,19. MBh. 1,1076. अविद्ध° (रूप) *Glanz, Herrlichkeit* Bhâg. P. 3,9,3. 17,25. अकुण्ठ° 19,27. ब्रह्म° 6,7,35. 8,7,14. ऋषीणाम् 24, 35. भूरि° 4,24,40. R. 2,35,18. रूपवर्चसा 3,4,11. देव° *einen göttlichen Glanz habend* R. Schl. 1,4,28 (3,72 Gorr.). 2,110,20. Bhâg. P. 10,74, 16. Verz. d. Oxf. H. 120, *b*, 2. भास्कर° Mârk. P. 105,16. सूर्यपावक° MBh. 1,15. ज्वलितानल° R. Gorr. 1,76,19. चन्द्रार्धाकार° 29,14. ताराधिपति° 4,54,1. चन्द्र° Bhâg. P. 9,15,6. सप्तार्चि° R. 5,40,1. विद्युच्चलित° 20,37 (23,33 Schl.). नक्षत्रपथ° 3,49,4. खड्गौ विमलाकाशवर्चसौ 2,31,25. 3,28,22. सिंहकेसर° *Farbe* 4,37,24. चरणौ पद्मवर्चसौ 2,60, 16. शश्वद्धरित° Bhâg. P. 3,22,30. संध्याभ्रानीक° 6,9,13. विगलितमेघ° MBh. 1,1182. — b) *Koth, stercus* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,188. AK. H. 634. H. an. Med. Halâj. 3,15. 5,49. वर्चो निचितं गुदे Suçr. 1,92,19. 349,9. वर्चोविवर्धन 178,1. 2,428,6. वर्चो मुञ्चति 14. गाढवर्चस्त्व 1,49,20. बद्धवात° 198,20. वर्चोनिरोध 2,456,4. बद्ध° (s. auch bes.) 48,4. Râǵa-Tar. 6,120. पारावतस्य *Taubenmist* Suçr. 2,300,12. — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Soma Med. MBh. 1,2586. 2747. 18,165. Hariv. 154. 12483. VP. 120. — b) eines Sohnes des Suteǵas (Suketas?) MBh. 13,2000. — c) eines Râkshasa (nach dem Comm.) Bhâg. P. 12,11,40. — Vgl. अ°, अघो°, अनून°, गूढ° (adj. *dessen Glanz verborgen ist* Bhâg. P. 1, 19,28), दस्म°, धूम°, पावक°, बद्ध°, भिन्न°, मित्र°, श्रेष्ठ°, समान°, सु°, सूर्य°, सोम°, हत°, हस्ति°.

वर्चस n. am Ende eines comp. = वर्चस् 1) a): चन्द्र° *Mondschein* Suçr. 1,113,17. अत्तकज्वलनसमान° adj. *Glanz, Farbe* MBh. 1,1180. सितोच्चशैलोत्तमशृङ्ग° adj. R. Gorr. 2,12,38. पुरुषाश्चाग्निवर्चसाः ad Vet. 19, 11 in LA. (III). — Vgl. पत्य°, ब्रह्म° (auch Bhâg. P. 9,16,28), ब्राह्मण°, राज°.

वर्चसिन् s. ब्रह्म°, सु°.

वर्चस्क m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,*a*,1. 1) = वर्चस् 1) a): रूपवर्चस्कं प्रेत्य वै लभते नरः *Schönheit und Glanz* (so Nîlak.) oder *glänzende Schönheit* MBh. 13,1708. सु° adj. *schön glänzend* (अग्नि) Hariv. 13930. — 2) = वर्चस् 1) b) AK. 2,6,2,19. H. 634. Halâj. 3,15. P. 6,1,148.

वर्चस्य (von वर्चस्) angeblich im Veda = वर्चस् Kâç. zu P. 5,4,30. 1) adj. a) *Lebenskraft verleihend:* आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषम् VS. 34,50 (vgl. Varâh. Bṛh. S. 48,74). AV. 19,26,4. Çâṅkh. Gṛhj. 3,1. — b) *auf* वर्चस् *bezüglich* u. s. w. Kauç. 12. — c) *auf die Excremente wirkend* Suçr. 1,206,2. 20. — 2) f. आ (sc. इष्टका) Bez. *von Backsteinen, welche mit Sprüchen, die das Wort* वर्चस् *enthalten, gelegt werden*, Schol. zu P. 4,4,125. — Vgl. ब्रह्म°.

वर्चस्वत् (wie eben) adj. 1) *lebenskräftig, frisch; leuchtend:* वाच् AV. 9,1,19. VS. 8,38. रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् 13,40. हिरण्य 34,50. सूर्य P. 5,2,122, Schol. neben आयुष्मत् TS. 3,3,1,1. — 2) *das Wort* वर्चस् *enthaltend* P. 4,4,125, Schol.

वर्चस्विन् (wie eben) 1) adj. *lebenskräftig, frisch* AV. 3,22,3. तास्त्वं बिभ्रद्वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव 5,28,10. 19,40,2. VS. 8,38. यद्वै वर्चस्वी कर्म चिकीर्षति शक्नोति वै तत्कर्तुम् *ein energischer Mann* Çat. Br. 5,2, 5,12. 8,4,1,16. Âçv. Gṛhj. 1,21,4. MBh. 3,1807. 2466. वर्चस्वितम Çâṅkh. Gṛhj. 3,11. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Varkas und Enkels des Soma MBh. 1,2586. Hariv. 154. 12483. VP. 120. — Vgl. ब्रह्म° (auch Bhâg. P. 4,1,3. 23,32).

वर्चाय्, °यते denom. von वर्चस् (अभूततद्भावे) gaṇa भृशादि zu P. 3,1,12.

वर्चित Pańkat. 3,10 fehlerhaft für चर्चित.

वर्चिन् m. N. pr. eines von Indra bekämpften Dämons: यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपत् ṚV. 2,14,6. 7,99,5. उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः 4,30,15. अर्हन्दासा उदव्रजे वर्चिनं शम्बरं च 6,47,21.

वर्चोग्रह m. *Verstopfung* Suçr. 2,193,20.

वर्चोदा adj. *Kraft* u. s. w. *verleihend* VS. 2,26. 3,17. 4,3. 7,27. TS. 3,

2,2,1. 5,4,5,3.

वर्चोधा adj. dass. AV. 2,11,4. VS. 4,11.

वर्ज्, वर्जति (वर्जने) DHÂTUP. 34,7. (परि) वर्जति, वृज्यास् 3. sg., वृज्याम; वृक्ते (वर्जने) DHÂTUP. 24,19. वर्क्, वर्क्तम्, (अप) अवृक् AV. 13,2,9. वृणक्ति (वर्जने, VOP. वृतौ) DHÂTUP. 29,24. वृणक्; वृङ्क्ते (vgl. DHÂTUP. 24,19), वृञ्जे; ववर्ज, ववृजे, ववृज्युस्, ववर्जुषी; अवृजन्, अवार्क्षीस्, वृक्ति; वर्क्ष्यति, °ते; pass. वृज्यते, वृक्ते; infin. वृजध्यै, वृञ्जसे. 1) *wenden, drehen:* वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वाम् ṚV. 4,7,10. — 2) *abdrehen, ausraufen* (das Gras zur Streu am Altar): बर्हिर्न यत्सुदासे वृथा वर्क् ṚV. 1,67,7. 83,6. 142, 5. वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नौ 6,11,5. 10,110,4. TBR. 3,6,12,1. — 3) *Jmd den Hals brechen* NAIGH. 2,19. वृणाक्पिप्रुं शुष्णमिन्द्रः ṚV. 6,18,8. त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क् 26,3. — 4) *ablenken* (vom Wege); *beseitigen:* इमं हुवे मरुत्वन्तं न वृञ्जसे (infin.) ṚV. 8,65,1. विशां ववर्जुषीणाम् *welche den Gott ab- d. h. zu sich lenken* 1,134,6. आराच्छदन्या वनानि वृक्ति AV. 6,30,2. ववृज्युस्तृष्यतः कामम् 8,68,5. पाप्मानं मे वृङ्धि KAUSH. UP. 2, 7. — 5) med. *Etwas von Jmd* (gen. abl.) *abwenden, abspannen, vorenthalten, abalienare:* तेऽरेवैषां तामूर्जमवृञ्जत TBR. 1,4,9,3. 5,6,4. पशून् 2,3,5,2. इन्द्रियम् TS. 2,1,4,5. यज्ञं भ्रातृव्यस्य 5,4,2. 3,1,7,3. 5,1,8,2. 6,9,3. अनया वा इदं विष्णुः सहस्रं वर्क्ष्यते 7,1,5,5. ÇAT. BR. 1,5,2,9. 6, 6,2,2. प्राणान् 9,2,1,17. न ह्येषां विह्वेऽन्य इन्द्राग्नी वृङ्क्ते AIT. BR. 6,6. इष्टापूर्ते ते वृञ्जीय (वृञ्जीयं die Hdschrr.) 8,15. एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसः KAṬHOP. 1,8. यन्मे माता प्रलुलुभे विचरन्त्यपतिव्रता। तन्मे रेतः पिता वृक्ताम् (wohl वृङ्क्ताम् zu lesen) *halte fern von mir den Samen* (des Ehebrechers) M. 9,20. BṚH. ÂR. UP. 6,4,3 (vgl. ÇAT. BR. 14,9,4,3). — 6) med. *sich zueignen:* वृञ्जते पशूनस्त्रियोऽर्थान्पुरुदस्यवो जनाः BHÂG. P. 1, 18,44. 4,17,22. 5,1,16. — 7) med. *für sich erwählen:* आसामेकतमां वृङ्क्ष्व सवर्णां स्वर्गभूषणाम् BHÂG. P. 11,4,14.

— caus. वर्जयति (वर्जने) DHÂTUP. 34,7. aus metrischen Rücksichten bisweilen auch med. 1) *beseitigen, vermeiden, unterlassen, entsagen, verzichten auf;* mit acc. der Sache oder der Person KHÂND. UP. 2,22,1. ṚV. PRÂT. 6,10. 15,8. क्रोधानृते LÂṬJ. 3,3,25. दानाध्ययने ÂÇV. GṚHJ. 4, 4,17. मांसमैथुने KÂTJ. ÇR. 2,1,8. KAUÇ. 75. 141. वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः। शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्॥ M. 2, 177. 185. 3,50. 4,31. 127. 163. 186. 245. 6,14. 8,63. 10,83. JÂǴN. 1,33. 130. MBH. 1,3959. तीर्थानि पञ्च 7840. 2,1142. 13,5420. 5659. R. 2,41, 3 (40,3 GORR.). भ्रष्टाचारमधर्मज्ञमस्वाधीनं नराधिपम्। वर्जयन्ति नरा दूरान्नदीपङ्कमिव द्विपाः॥ 3,37,5. मृगर्न्नं महिषं वापि शार्दूलं मानुषं गजम्। नावर्जयमुपप्राप्तं क्षीणपुण्यः क्षुधान्वितः॥ so v. a. *ruhig seiner Wege gehen lassen* 75,17. 4,13,20. 5,8,17. वर्जयेद्रत्नकृन्मर्त्यं वर्जयेदनिलोऽनलम् 23, 17. 36,4. 89,35. KÂM. NÎTIS. 5,19. हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः ÇÂK. 155. Spr. 54. 550. 1353. 1729. 3060. 4698. 4765. 4827. VARÂH. BṚH. S. 53,86. भार्यां स्पर्शेऽप्यवर्जयत् KATHÂS. 14,47. 27,186. BHÂG. P. 9,1,33. PANḰAT. 60,19. वर्जयीत MBH. 3,13882. Spr. 4380. वर्जयेथाः MBH. 3, 10583. यत्र वर्जयते राजा पापकृद्भ्यो धनागमम् M. 9,246. वर्जयित्वा JÂǴN. 1,158. pass.: तत एतानि वर्ज्यन्ते तीर्थानि MBH. 1,7845. वर्ज्येत (lies वर्ज्यन्त, der Comm. उज्झ्येत) विषदूषितम् KÂM. NÎTIS. 7,9. वर्ज्यते सेवकः Spr. 3660. सा वर्ज्यमाना च शनैः KATHÂS. 66,87. यस्मान्न वर्जितमिदं वनं ते मम HARIV. 1886. सज्जनैर्वर्जितः Spr. 727. वर्जितच्छत्त्रं रामम् (die ed. Bomb. hat eine ganz andere Lesart) R. 2,33,5. वर्जितं शयनीयं ते भर्त्रा केनाद्य हेतुना R. GORR. 2,74,15. — 2) pass. *um Etwas kommen, verlustig gehen einer Sache* (instr.): धर्मभागैर्नरो नित्यं वर्ज्यते (die neuere Ausg. hat eine andere Lesart) HARIV. 10962. वर्जित *dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend;* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: रूपं भूषणैरपि वर्जितम् MBH. 3,2584. लक्षणैर्हीनैः 2784. रामेण R. 3,51,12. VARÂH. BṚH. S. 53,38. अतिथि° MUṆḌ. UP. 1,2, 3. आरक्त° (आह्व) M. 3,204. 4,176. BHAG. 4,19. 11,55. MBH. 3,1760. 4, 306. R. 1,1,87 (94 GORR.). 2,27,11. 37,22. 60,18. 3,52,41. 5,90,17. SUÇR. 1,69,5. KÂM. NÎTIS. 10,21. VARÂH. BṚH. S. 19,20. 54,52. षष्टिः पञ्चवर्जिता *sechszig weniger fünf* 82. 71,14. 78,20. BṚH. 20,2. Spr. 3339. 3431. 4823. KIR. 5,47. KATHÂS. 52,113. 65,141. RÂǴA-TAR. 3,29. 6,279. BHÂG. P. 1,5,12. 4,6,32. 5,14,38. MÂRK. P. 50,73. H. 409. 854. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 529,11. SARVADARÇANAS. 69,20. भुक्ति° so v. a. *ungeniessbar* PANḰAT. 138,2. *ohne Etwas seiend* so v. a. *mit Ausnahme von, nicht einbegriffen* —: शतसाहस्रिको भागो वस्त्राभरणवर्जितः HARIV. 6305. नान्यं प्रज्ञास्यते कंचिन्मानवं पितृवर्जितम् R. 1,8,8. Spr. 3820. 4773. VARÂH. BṚH. S. 53,120. BṚH. 11,3. दण्डं वधवर्जितम् RÂǴA-TAR. 4,105. 6,88. Schol. zu P. 1,4,17. 2,3,24. रसखण्डनवर्जितम् adv. *ohne dass die Lust unterbrochen worden wäre* RAGH. 9,35. — 3) *ausnehmen, ausschliessen, auslassen:* देवशब्दम् LÂṬJ. 8,9,3. वर्जयित्वा *mit Ausnahme von* (acc.) M. 3, 276. JÂǴN. 1,263. HARIV. 7191. 13986. R. 1,14,40. 59,11. 67,19 (69,20 GORR.). R. GORR. 1,76,17. 3,4,46. 4,36,14. MṚḰḰH. 123,11. KATHÂS. 8, 20. 50,93. BHÂG. P. 8,15,29. KÂÇ. zu P. 1,1,56. Schol. zu 1,2,52. 6,1, 158. वर्जितस्त्वहमेवैकः KATHÂS. 1,36. एक एव तु वर्जितः। सोपानकूपो विक्रीतान्महतो वेश्मनस्ततः॥ RÂǴA-TAR. 6,18. आवर्जिते *mit Ausnahme von* आ AV. PRÂT. 3,95. — Vgl. मानवर्जित.

— intens.: वरीवृजत्स्थविरेभिः *ablenkend mit den starken* (Rossen, um einzukehren, *devertens*) ṚV. 7,24,4; vgl. P. 7,4,65.

— caus. vom intens.: कर्णौ वरीवर्जयन्ती *die Ohren hinundher drehend* AV. 12,5,22.

— अधि act. *an oder über* (das Feuer) *rücken:* पुरोडाशम् ÇAT. BR. 1, 2,2,3. 4. 7.

— अनु s. अनूवृज्.

— अप 1) *abwenden, beseitigen, verscheuchen:* अप वृङ्ग्ध्व शत्रून् AV. 3, 12,6. अपावृक्तमः 13,2,9. नेदतूनपवृणजै ÇAT. BR. 4,3,1,8. — 2) *abdrehen, abreissen:* नाप वृञ्जाते (sc. तन्तून्) न गमातोऽन्तम् AV. 10,7,42. यन्नाध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः *carpit viam* ṚV. 10,117,7. — 3) (*abbrechen*) *beendigen, abschliessen, absolviren* ÇAT. BR. 1,4,1,38. 4,6,9,21. पात्राण्यनपवृक्तानि *nicht ausgebraucht* Schol. zu KÂTJ. ÇR. 1066,18. 490,1. 493, 24. 528,19. द्वात्रिंशतमेकादशिन्योऽपवृज्यन्ते *werden abgemacht* d. h. *voll* ÂPAST. im Comm. zu TBR. I, 112,12. WEBER, ǴJOT. 45. — Vgl. अपवर्ग, अनपवृज्य. — caus. 1) *meiden, vermeiden, entsagen:* तद्वेहमपवर्जय (अपि वर्जय?) MÂRK. P. 50,63. पुरस्तादेव भगवन्मयैतदपवर्जितम् MBH. 12,3930. दूरापवर्जितच्छत्त्रैः शिरोभिः RAGH. 17,79. — 2) pass. *verlustig gehen, kommen um:* अपवर्जित *dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend:* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: षड्भिरपवर्जिताशीतिः VARÂH. BṚH. S. 53,7. रोमापवर्जितमुरः 70,

5. नूपमुखापवर्जिततनु 104,40. नयनापवर्जित Brh. 23,12. — 3) *entlassen:* सुमनसो दिव्याः खेचरैरपवर्जिताः so v. a. *wurden gestreut* Bhâg. P. 3,24, 8. — 4) *abtrennen, abreissen:* भल्लापवर्जितैस्तेषां शिरोभिः Ragh. 4,63. मदच्युता मतङ्गेन स्रगिवापवर्जिता Kir. 1,29. — 5) *umstossen, umwerfen:* घटे ऽपवर्जिते Jâǵn. 3,300. कुम्भे Varâh. Brh. S. 53,111. — 6) *verstossen, ächten:* अपवर्जित (= संस्कारानर्ह Nilak.) MBh. 13,2571. — 7) *überlassen, verleihen, geben, schenken:* यदि तावन्न गृह्णामि ब्राह्मणेनापवर्जितम् MBh. 12,7308. दक्षिणामपवर्ज्य 12276. Hariv. 1114. मल्लानां निष्काणां सहस्रमपवर्जय R. Gorr. 2,32,24. 27. सुहृद्भ्यश्चात्मनः कामानीप्सितानपवर्जय 14. भीमापवर्जितं (भीमेनावर्जितं ed. Bomb.) पिण्डम् Bhâg. P. 1,13,21. अपवर्जितो वैरो *verabfolgt* (nicht bloss gewährt) R. Gorr. 2,26,23. श्राद्धमपवर्जयन् *darbringend* MBh. 13,4263. — 8) *abschliessen, beendigen* Lâtj. 10,2,11. प्रतिज्ञाम् *sein Versprechen lösen* R. 1,44,49 (45,44 Gorr.). 51. — Vgl. अपवर्जन.

— व्यप s. व्यपवर्ग. — caus. *aufgeben, verlassen:* स तु सर्प इव त्वचं पुनः प्रतिपेदे व्यपवर्जितां श्रियम् Ragh. 8,13.

— समप caus. *überlassen, geben, schenken:* ते (गावौ) चोञ्छवृत्तये राजन्मया समपवर्जिते MBh. 12,7296.

— अपि *Jmd* (loc.) *Etwas zuwenden:* मयि देवासो ऽवृजन्नपि क्रतुम् Ṛv. 10,48,3. 120,3. स्यूमगृभे दुधये ऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये *hinrichten auf* (loc.) 6,36,2.

— अभि s. अभीवर्ग.

— अव *abdrehen, abtrennen:* गर्भम् Kâth. 13,3. — caus. *wegschaffen, beseitigen* TBr. 1,4,6,5.

— आ 1) *zuwenden:* कुविदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः Ṛv. 1, 33,1. — 2) *sich zuwenden, sich aneignen:* आ स स्त्रीणां सुकृतं वृङ्क्ते Çat. Br. 14,9,4,3. आवृक्तमन्यासां वर्चः Ṛv. 1,159,6. आ मावृक्त मर्त्यो दभ्नचेताः 8,90,16. यथा वातरथो घ्राणमावृङ्क्ते गन्ध आशयात् Bhâg. P. 3,29,20. — 3) *Jmd* (abl.) *Etwas vorenthalten:* मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि (nach Sâj. von व्रश्च्) देवाः Ṛv. 1,27,13. — 4) *Jmd* (acc.) *geneigt sein:* तमेव दयितं भूय आवृङ्क्ते पतिमम्बिका Bhâg. P. 4,7,59. — caus. 1) *neigen:* कलशम् Çâk. 11,9. कुमारस्य शिरसि कलशमावर्ज्य Vikr. 87,15. आवर्ज्य शाखाः Ragh. 16,19. दृष्टीः Megh. 47. आवर्जित *geneigt, gesenkt* MBh. 1,5883. 2,1804. 7,1145. 2073 (12,9187). 7,6905. Hariv. 3720 (आवर्जितमुखस्कन्ध die neuere Ausg., = धामित Nilak.). 6780. 8422. Ragh. 13,17. 24. Kumâras. 2,26. 3,54. 7,54. Spr. 3445. H. an. 4,24. Med. k. 202. — 2) *eine Flüssigkeit neigen* so v. a. *ausgiessen:* आवर्जित MBh. 3,2936. हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु Ragh. 1,62. 67. Kumâras. 5,34. 7,10. — 3) *aussaugen:* आवर्जितं मया चञ्च्वा हृदयात्तव शोणितम् Nâgân. 63,1. — 4) *darreichen:* तनयावर्जितपिण्ड Ragh. 8,26. भीमेनावर्जितं (so die ed. Bomb.) पिण्डम् Bhâg. P. 1,13,21. Ragh. 15,80. Spr. 229. चतुर्दिगावर्जितसंभृतां विभूतिम् 6,76. — 5) *sich Jmd geneigt machen, für sich gewinnen:* सर्वत्रावर्जयामास नगरीवासिनां मनः Kathâs. 24,104. तं वाहनमुखैरावर्ज्य 62,158. Daçak. 79,9. Çuk. in LA. (III) 37,15. मरीचिमावर्जितवतीव Daçak. 66,11. आवर्जित Ratnâv. 2,17. Nâgân. 2,5. Kathâs. 42,94. गुणैरावर्जितप्रजम् 44,24. 52,368 (nicht अवर्जित). 66,115. 93,60. 97,11. Râǵa-Tar. 5,303. Daçak. 51,5. Vgl. वर्त् mit आ caus. 6). — आवर्जित Hariv. 3799 wohl fehlerhaft für आवर्तित, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. आवर्जन, आवर्जित.

— अपा, partic. °वृक्त *beseitigt oder vermieden:* अपावृक्ता अरत्नयः Ṛv. 8,69,8.

— प्रा *erfüllen:* प्रावृङ्क्ते यद्यशो जगत् Bhâg. P. 4,8,68.

— व्या *absondern, abtheilen:* तामन्नाद्याय व्यावृज्यासते Pańkav. Br. 10,3,9. 5,8. तां चतुर्धा व्यावृज्य गायेत् Shadv. Br. 2,2. चतुरवनर्दां कृत्वा Comm.

— परिव्या *trennen von* so v. a. *retten vor:* परि वः सेन्याद्घाद्व्यावृञ्जन्तु घोषिण्यः Çâńkh. Grhj. 3,9.

— समा *an sich ziehen, sich aneignen:* तेनैवैव ब्रह्मणोभयतो राष्ट्रं परिगृह्णात्येकधा समावृङ्क्ते TS. 2,1,2,9. — caus. *neigen:* °वर्जित *geneigt, gesenkt:* केतु Kumâras. 6,7. नेत्र Ragh. 6,15.

— उद् *heraustrennen, austilgen:* उद्गीथो ऽसि पाप्मानं म उद्वृङ्घि Kaush. Up. 2,7. — intens. *schwingen:* अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत् Ṛv. 6,58, 2. = उद्यच्छन् Sâj. = परित्यक्तवान् derselbe zu TBr.

— नि 1) *niederbeugen, hinunterdrücken; zu Fall bringen:* नवतिं नवं श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् Ṛv. 1,53,9. 54,5. 101,2. येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृणक् 2,17,6. वीरान् 14,7. वि दुर्गाणि ओवृणग्वधवाचः 5,29,10. 32,8. समत्समेनं गृणते नि वृङ्क्षि 10,87,11. — 2) *wegwerfen:* तानियं प्रतिगृह्णीतात्पत्तो व्यवृञ्जन् Ait. Br. 6,35.

— अनुनि *versenken:* श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वनु द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः Ṛv. 7,18,12.

— परा 1) *abwenden:* परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रायज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः d. h. *sie flohen* Ṛv. 1,33,5. — 2) *abdrehen:* त्वाष्ट्रस्य त्रीणि शीर्षा परा वर्क् Ṛv. 10,8,9. — 3) *wegwerfen, beseitigen, verstossen, im Stiche lassen:* मा नं इन्द्र परा वृणक् Ṛv. 8,86,7. परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति 6,47,17. मा नः परा वर्क् गविष्टिषु 59,7. मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्भारभृद्यथा 8,64,12. पुत्रमग्रुवः परावृक्तम् 4,30,16. — Vgl. परावृज्.

— परि 1) *ausbiegen, ausweichen; umgehen, vermeiden; übergéhen, verschonen mit* (instr.) Ṛv. 1,124,6. 172,3. 183,4. परि अश्वेव दुरितानि वृज्याम् 2,27,5. परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः 33,14. 3,29,6. 31,17. 56,4. 6,51,16. 75,12. परि द्वेषोभिरर्यमा वृणक्तु 7,60,9. कुवं न परि वर्जति 8,1,27. 45,10. 47,5. 10,142,3. शतमन्यान्परि वृणक्तु मृत्यून् AV. 1,30, 3. 6,93,1. यज्ञस्थाणुम् TBr. 2,1,4,4. हरसा VS. 13,41. देवता वा एतं परिवृञ्जन्ति यमनृतमभिशंसन्ति *meiden* Pańkav. Br. 18,1,11. इन्द्रं देवताः पर्यवृञ्जन् *verstiessen, ächteten* Ait. Br. 7,28. — 2) *umgeben, umschliessen:* वृङ्क्ते Bhâg. P. 5,20,7. — Vgl. परिवर्ग, °वर्ग्य, °वृक्त fg. — caus. 1) *abhalten von, entfernen:* अङ्गादङ्गात्प्र च्यावय हृदयं (wohl हृदयात्) परि वर्जय AV. 10,4,25. — 2) *meiden, vermeiden:* अतिभोजनम् M. 2,57. दृशीतानि कुलानि 3,6. 4,6. 73. 114. 206. 8,127. Jâǵn. 1,170. MBh. 2,1796. एवंविधां स्त्रीम् 13,518. देयाः किंलक्षणा गावः काश्चापि परिवर्जयेत् 3443. 14,578. R. 4,31,8. Mrkkh. 7,24. Spr. 2147. 2423. 4776. विप्रियं परिवर्जये MBh. 3,14025. परिवर्जितसंस्पर्शा Kathâs. 36,45. *aufgeben, verlassen:* परित्यज्य गुरुं याहि यत्र राजा दुर्योधनः MBh. 7,7272. R. 5,24,35. *Jmd übergehen, nicht berücksichtigen* Râǵa-Tar. 6,90. परिवर्जित *verlassen, dem es an Etwas gebricht, — fehlt, frei von, ohne Etwas seiend;* die Ergänzung im instr. (abl.) oder im comp. vorangehend: त्वया R. Gorr. 2,49,12. पित्रा Kathâs. 74,61. स्वगणासुहृद्बन्धुभ्यः Bhâg. P. 5,8,6.

गद्या MBh. 14,2456. गुणैः Spr. 5021. Rāǵa-Tar. 6,101. संख्यया *ohne Zahl, unzählig* Pańkat. II,62. शतद्वये वत्सराणामष्टभिः परिवर्जिते *zweihundert weniger acht* Rāǵa-Tar. 2 am Schluss. विषाण° Spr. 299. अन्याय° MBh. 13,5558. धर्मार्थ° Spr. 3693. स्त्री° Varāh. Bṛh. S. 78,12. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,543,14. — 3) *umschlingen, umlegen:* कलसं च समालिङ्ग्य प्रसुप्ता भाति भाविनी । वसन्तपुष्पग्रथिता मालेव परिवर्जिता (परिवर्तिता?) ॥ R. 5,13,50. — Vgl. परिवर्जक fgg.

— संपरि caus. *meiden, vermeiden* MBh. 12,11027. 13,7541.

— प्र 1) *hinwerfen*, das Barhis ṚV. 1,116,1. 7,2,4. प्र वीवृजे सुप्रया बर्हिरेषाम् 39,2. विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तम् 1,116,24. Çat. Br. 1,3,3,14. पञ्चगन्वी 8,1,38. 4,4,1,7. 14,1,1,10. Ait. Br. 7,26 TS. 5,1,9,2. — 2) technischer Ausdruck für *in* oder *an das Feuer setzen*, also auch *heiss* oder *glühend machen:* घर्मं यत्तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयः ṚV. 5,30,15. VS. 39,5. उखाम् Çat. Br. 6,6,1,22. 2,1. 4,10. 7,1,2,6. 11,5,9,11. 12,5,2,3. 14,1,3,15. 2,2,45. घर्मो वा एषो ऽशान्तः । अर्कश्च प्रवृज्यते । यदग्निहोत्रम् TBr. 2,1,3,2. 3,2,8,6. प्रवर्ग्यं प्रवृञ्जन्ति Pańkav. Br. 7,5,6. Kāṭh. 37,7. Daher auch so v. a. प्रवर्ग्यं करु Çat. Br. 14,2,2,47. Çāñkh. Br. 8,3. Kātj. Çr. 26,7,52. Hiernach ist unter प्रवर्जन und प्रवृञ्जन zu ändern: *das Setzen in* oder *an das Feuer;* vgl. auch प्रवर्ग्य und प्रवृज्य.

— अनुप्र *hintennach werfen* Çat. Br. 1,8,3,19. 9,2,17. 3,8,5,5.

— प्रति *dagegen werfen* Kāṭh. 26,4.

— वि caus. 1) *meiden, vermeiden* M. 2,184. 3,42. 167. 4,42. 83 (= MBh. 13,5023). 101. 144. 172. 5,6. 11. 15. 48. 7,45. MBh. 12,8369. R. 4,9,28. Kām. Nītis. 5,32. Spr. 3240. 3471. 4014. 5178. Mārk. P. 34,30. विवर्जयीत Spr. 4198. अतो जन्तुर्लूताव्याप्तो विवर्ज्यते Rāǵa-Tar. 4,524. 5,374. — 2) विवर्जित *verlassen von, dem es an Etwas gebricht, — mangelt, frei von, ohne — seiend;* die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend: राघवेण R. 2,66,19. दावैः 55,9. रिपुभयकलहैः Varāh. Bṛh. S. 104,15. Bhāg. P. 8,3,16. वर्षषष्टिं सषण्मासैः षड्भिर्वर्षैर्विवर्जिताम् Rāǵa-Tar. 1,192. 348 (wo त्रिंशत्याङ्कां zu lesen ist). शर्कराविवालुका° Çvetāçv. Up. 2,10. सर्वेन्द्रिय° 3,17 (= Bhag. 13,14). काम° Maitrjup. 6,34. Jāǵn. 2,1. Bhag. 7,11. 12,18. MBh. 1,7674. 3,2616. R. 2,52,91. 66,22. 72,3. R. Gorr. 1,49,12. 5,87,14. Ragh. 5,19. Spr. 152. 172. 3564. 4192. 4973. 5338. AK. 3,1,21. H. 428. Varāh. Bṛh. S. 43,10. 46,99. 54,58. Bṛh. 8,4. Kathās. 45,62. Rāǵa-Tar. 1,344. 4,688. 693. Bhāg. P. 3,25,24. 4,9,34. 8,16,51. Mārk. P. 16,5. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*,7. Bhaṭṭ. 4,23. भध्रमास्तु भगणविवर्जिताः *vermindert um* Gaṇitādhj. Bhagaṇādhj. 9. Pratjabdaç. 17. Rāǵa-Tar. 1,50. उपकारस्य भेदास्तु सर्वे मैत्रविवर्जिताः *mit Ausnahme —, mit Ausschluss von* Spr. 3820, v. l. Varāh. Bṛh. S. 86,65. Sāñkhjak. 72. मानविवर्जितम् adv. *ohne Ehre, ehrlos* Spr. 2079. fg. — 3) *verabreichen, geben:* यद्दित्तं त्वयास्माकं विवर्जितम् Mārk. P. 133,23. — Vgl. विवर्जन u. s. w.

— सम् med. *an sich ziehen:* तृषु यदन्ना समवृक्ता जम्भैः ṚV. 7,3,4. सं यन्मित्रावरुणा वृञ्ज उक्थैः 10,61,17. यदाप उच्छुष्यन्ति वायुमेवापियन्ति वायुर्ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते Khānd. Up. 4,3,2. यदहोरात्राभ्यां पापमकरोत्सं तद्वृङ्क्ते Kaush. Up. 2,7. act.: पाप्मानं मे संवृङ्धि ebend *sich zueignen* Çat. Br. 1,2,5,7. सर्वमेव देवा असुराणां समवृञ्जत 7,2,24. 9,2,35. 5,1,1,14. — Vgl. संवर्ग, संवर्जन, संवृज्. — desid. संविवृक्षते *sich aneignen wollen*

Çat. Br. 12,4,1,3.

वर्ज (von वर्ज्) adj. am Ende eines comp. (f. आ) 1) *frei von, ermangelnd:* रस° Bhag. 2,59. चतुर्लक्षण° MBh. 12,7194. — 2) *mit Ausnahme von:* निर्यासाः सल्लकीवर्जाः (°वर्ज्याः ed. Bomb.) MBh. 13,4716. नञ्समासकर्मधारयसमासवर्जस्तत्पुरुषः Schol. zu P. 2,4,19. 1,2,45. रेफ° Vop. 2,31. 3,34. बहुवर्जा संख्या 6,22. — Vgl. वर्जम्.

वर्जक (vom caus. von वर्ज्) adj. am Ende eines comp. *meidend, vermeidend* MBh. 12,261. — Vgl. मान°.

वर्जन (wie eben) n. 1) *das Meiden, Vermeiden, Aufgeben, Fahrenlassen* H. an. 3,410. Med. n. 120. मधुमांसस्य MBh. 13,1555. अधर्माणाम् Kām. Nītis. 13,51. अनर्थस्य 54. आचारस्य M. 5,4. अनादेयस्य चादानादादेयस्य च वर्जनात् Spr. 3462. मांसस्य भक्षण° M. 5,26. Jāǵn. 1,178. परस्वादान° MBh. 14,512. Kathās. 17,84. Rāǵa-Tar. 6,100. परस्त्री° Pańkar. 2,7,45. Vedāntas. (Allah.) No. 6. Sarvadarçanas. 81,10. fg. *das Vernachlässigen* (Gegens. पालन) Pańkar. 2,7,46 (वर्जने zu lesen). *das Weglassen* Āçv. Çr. 3,14,19. *das Ausschliessen, Ausnehmen* P. 1,4,88. 8,1,5. AK. 3,5,3. H. 1527. — 2) *das Tödten, Verletzen* H. 372. H. an. Med. Halāj. 2,322. — 3) व्रतकस्यापि वर्जनम् Hariv. 7789 fehlerhaft für व्रतकस्यापवर्जनम् (*Beendigung, Beschluss*), wie die neuere Ausg. liest.

वर्जनीय (wie eben) adj. *zu meiden, zu vermeiden* Shaḍv. Br. 4,4. Nir. 10,41. M. 3,166. MBh. 13,3451. R. 2,105,35. 4,43,29. 5,81,15. Suçr. 1,119,18. Spr. 575. 3150. 3641. Mārk. P. 32,19. Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,49. न जीवनं वर्जनीयम् *nicht zu vermeiden* Sarvadarçanas. 101,9. अ° *unvermeidlich* Comm. zu Njājas. 2,2,27. अवर्जनीयत्व zu 2,1,22. अवर्जनीयता Sarvadarçanas. 2,14.

वर्जम् (absol. von वर्ज्) adv. am Ende eines comp. *mit Vermeidung —, mit Ausnahme von:* शूद्र° Kātj. Çr. 1,1,5. श्रोणि° 6,8,13. 10,8. 9,14, 3. 10,3,15. 12,3,21. Āçv. Gṛhj. 2,5,4. Çr. 5,3,5. Kauç. 54. 57. 67. ṚV. Prāt. 1,20 u. s. w. VS. Prāt. 1,131. AV. Prāt. 2,67 u. s. w. P. 6,1,158. Vārtt. 2 zu P. 1,1,72. Çānt. 4,3. 13. M. 3,45. 8,277. 11,117. Suçr. 1, 97,5. Kām. Nītis. 2,25. 7,42. Ragh. 15,98. Çāk. 49,13. Uttarar. 26,21 (35,10). Varāh. Bṛh. S. 48,81. Kathās. 52,106. Siddh. K. zu P. 1,4,7. मन्त्र° *mit Vermeidung* M. 10,127. Suçr. 1,7,4. अमलवर्जम् Kumāras. 7, 72. पुनरुक्त° Varāh. Bṛh. S. 47,28. als selbständiges Wort mit folgendem acc. in der Bed. *mit Ausnahme von* Verz. d. Oxf. H. 167,*a*,25. — Vgl. वर्ज.

वर्जयितर् (vom caus. von वर्ज्) nom. ag. 1) *Vermeider:* वर्ज्य° MBh. 12,6741. — 2) *Ansichzieher:* वृष्टेः Sāj. (bei einer etym. Erklärung) bei Muir, ST. IV,93, N. 87.

वर्जयितव्य (wie eben) adj. *zu vermeiden* Varāh. Bṛh. S. 59,4.

वर्जिन् (wie eben) adj. *vermeidend:* पतितान्न° MBh. 5,1557. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,34, wo °वर्जी zu lesen ist.

वर्ज्य (wie eben) adj. 1) *zu meiden, zu vermeiden* M. 3,124. 152. 161. 4,69. 5,9. MBh. 1,3625. 3,14720. 12,4223. 6741. 15,193. Spr. 894. Varāh. Bṛh. 18,18. Mārk. P. 29,2. 31,29. 51,37. 76. 71,23. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,21. — 2) am Ende eines comp. *mit Ausnahme von:* निर्यासाः सल्लकीवर्ज्याः (so ed. Bomb., °वर्जाः ed. Calc.) MBh. 13,4716. व्यञ्जनान्तारवर्ज्यमन्नम् Mārk. P. 31,46. त्वद्वर्ज्यम् *mit Ausnahme von dir* Pańkat.

128,22 fehlerhaft für त्वद्वर्त्म॑.

वर्ण॑ (von 1. वर्) Uṇâdis. 3,10. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) m. *Ueberwurf, Decke* AK. 2,8,2,10. H. 680. an. 2,152 (wo कुथायाम् st. कुप्यायाम् zu lesen ist). Med. ṇ. 26. Halâj. 2,153. = वेष *Kleid* 5,74; vgl. वर्णक 1). — 2) *Deckel, Lid:* अक्षिवर्णचतुष्कम् Jâǵń. 3,99. — 3) m. (*Ueberzug*) *das Ansehen, das Aeussere, Farbe;* = रूप H. an. Med. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,10. = श्वेतादि, शुक्लादि AK. 3,4,13,50. H. 1392. H. an. Med. Halâj. 5,74. Viçva a. a. O. कृष्ण, अरुण ṚV. 1,73,7. नक्तोषासा वर्णमामेम्याने 96,5. 113,2. सूरः 4,5,13. तवं स्पार्हे वर्णा आ संदृशि श्रियः 2,1,12. सुश्चन्द्र 34,13. रुशत् 10,3,3. 9,97,15. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि 104,4. 105, 4. 10,124,7. AV. 1,22.1. 2.23,2. येनेदमद्य रोचते को अस्मिन्वर्णमाभरत् 11,8,16. भद्रं वर्णं पुष्यन् so v. a. *in schönem Aussehen glänzend* VS. 4,2. 26. पृश्नि Ait. Br. 5,23. लोहितकृष्णवर्णा Çvetâçv. Up. 4,5. M. 8,32. मेघ° MBh. 3,1831. पाण्डु° 2106. 12721. 9,2644. R. 1,53,20. 2,63,18. 91,72. 4,59,18. प्रसन्न° 5,56,4. Suçr. 1,30,13. 85,18. 313,4. 2,438,15. Megh. 47. 50. 82. °प्रकर्ष Kumâras. 3,28. Varâh. Bṛh. S. 10,21. 11,6. Râǵa-Tar. 4,111. Bhâg. P. 2,7,11. 5,14,7. 8,24,48. fünf *Grundfarben* Suçr. 1,274,16. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,37. पञ्च° Kâtj. Çr. 22,9,13. Schol. zu 23,3,6. वर्णतस् *der Farbe nach* ṚV. Prât. 17,8. 10. मुखवर्णस्य विक्रिया *Gesichtsfarbe* R. 2,35,34. 76,4. 4,3,26. MBh. 3,15677. Spr. 2048. das einfache वर्ण dass.: °प्रसाद Çvetâçv. Up. 2,13. M. 8,25. वर्णं पूर्वोचितं जहत् R. 2,35,2. 6,6,2. Spr. 2754. 4017. Ragh. 8,42. वर्णवरोपसंपन्न *eine angenehme, schöne Farbe* M. 4,68. गन्धवर्णरसान्वित 5,128. वर्णोपपन्ना नार्यः *eine schöne Gesichtsfarbe* MBh. 4,2366. neben राग *Farbe:* मञ्जिष्ठारागवर्णाभ Hariv. 11698. *Farbe zum Malen (Schreiben):* यथा हि भरतो वर्णैर्वर्णयत्यात्मनस्तनुम् Spr. 4796. MBh. 13,5505. Çâk. 164. वर्ण m. = अङ्गराग und चित्र H. an. m. n. = विलेपन Med. — 4) m. (*Farbe so v. a. Sorte*) *Art, Geschlecht, Gattung;* von Personen und Sachen (= भेद, m. H. an. m. n. Med. m. = गुण H. an. Med.): दास ṚV. 2,12,4. कृत्वी दस्यून्प्रार्यं वर्णमावत् 3,34,9. Pańkav. Br. 5,5,14. Çâṅkh. Çr. 8,25,6. असुर्य Ait. Br. 6,36. देवासो मन्युं दासस्य श्चम्नन्ते न आ वक्षन्सुविताय वर्णम् *sie mögen unsere Art zum Heile führen* (Sâj. *Abwehrer*) ṚV. 1,104,2. वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम् 2,3,5. वर्णं पवित्रं पुनती न आगात् Pâr. Gṛhj. 2,2. Çâṅkh. Gṛhj. 2,2. अचैतयद्धियं इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ṚV. 3,34,5. यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः *dessen süsssaftige goldene Art man mit Steinen treibt* d. h. *bearbeitet* 9,65,8. असुर्यं वा एतस्माद्वर्णं कृत्वा पशवो वीर्यमपक्रामन्ति *asurischen Charakter annehmend* TBr. 1,4,7,1. Pańkav. Br. 9,10,2. ṚV. 9,71,2. त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य सः *das ist seine Weise* 8. मृत्योर्वा एष वर्णः । यच्छार्दूलः *eine Form des Todes* TBr. 1,7,8,1. TS. 2,5,2,3. 8,1. उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष *beide Arten* (Sâj.) ṚV. 1,179,6. समानं वर्णमभि शुम्भमाना *in derselben Weise* 92,10. अपं पापं वर्णं हते *er hält übles Wesen von sich ab* TS. 2,2,5,1. 4,11,6. सर्वान्वर्णानिष्टकानां कुर्यात् *alle Arten* 5,7,8,3. वर्णानुपूर्व्येण Kâtj. Çr. 23,3,6. Pańkav. Br. 13,5,2. 14,9,3. सिरावर्णविभक्ति *Arten der Gefässe* Suçr. 1,353,19 (so eine Berl. Hdschr., वर्णन die gedr. Ausg.). य एको ऽवर्णो बहुधा शक्तियोगाद्वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति *mannichfache Erscheinungsformen* Çvetâçv. Up. 4,1. एक° *einartig* Bhâg. P. 8,5,29. अग्नि° *feuerartig* d. i. *glühend heiss* M. 11,90. fg. वाग्भिर्मन्त्रवर्णाभिः Mantra-*artig* Bhâg. P. 5,24,30. — 5) m. (*Menschenart*) *Kaste* AK. 2,7,1. 3,4,13,50. H. an. Med. Halâj. 2,237. 5,74. Viçva a. a. O. चत्वारो वै वर्णाः Çat. Br. 5,5,4,9. 6,4,4,13. Ait. Br. 8,4. Nir. 3,8. शौद्र Çat. Br. 6,4,4,9. Ait. Br. 8,4. अर्यभावे यः कश्चार्यो वर्णः d. h. *wenn kein* Vaiçja *da ist, dann ein* Brâhmaṇa *oder* Kshatrija Lâṭj. 4,3,6.17. दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मणः । असुर्यः शूद्रः TBr. 1,2,6,7. M. 1,2. 91. 107. 116. 2,18. 137. 3,20. 5,57. 8,123. fg. MBh. 13, 181. R. 1,6,16. 7,15. Suçr. 1,7,2. 104,20. 122,16. Çâk. 46. नृपतयो रक्षन्ति वर्णान् Varâh. Bṛh. S. 27,8. 33,14. 47,11. 52,1. 53,69. Bhâg. P. 1,16, 32. 9,14,48. देशात M. 8,374. वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः Spr. 868. °गुरु ist der Fürst Râǵa-Tar. 3,85. वर्णाश्रमाः Spr. 4973. Çâk. 63,15. fg. Ind. St. 1,20,24. Verz. d. Oxf. H. 8,a,20. fg. 10,b,22. Râǵa-Tar. 6,108. LA. (III) 86,15. P. 1,1,31, Schol. वर्णाश्रमगुरु Beiw. Çiva's Çiv. °धर्माः M. 2,25. Verz. d. Oxf. H. 85,a,13. वर्णानां संकरः M. 9,67. वर्णानां व्यभिचारः 10, 24. उत्तम Spr. 443. अवर° M. 3,241. 9,248. न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टो ऽपि भजते Çâk. 107. निकृष्ट° MBh. 4,412. हीन° Spr. 2335. न्यून° Mârk. P. 118,4. एते षट्सदृशान्वर्णान् जनयन्ति स्वयोनिषु *Zwischenkasten* M. 10, 27. प्रतिकूलं वर्तमाना बाह्या बाह्यतरान्पुनः । हीना हीनान्प्रसूयन्ते वर्णान्पञ्चदशैव तु ॥ 31. Die vier *Kasten* mit vier *Farben* in Verbindung gebracht: ब्राह्मणानां सितो वर्णः क्षत्रियाणां च लोहितः । वैश्यानां पीतको वर्णः शूद्राणामसितस्तथा ॥ MBh. 12,6934. Ind. St. 10,10. — 6) (*eine Form* oder *Figur*) *Buchstab; Laut; Vocal; Silbe; Wort;* m. n. (das n. nicht zu belegen) = अक्षर AK. 3,4,13,50. H. an. Med. Halâj. 5,74. Viçva a. a. O. तेभ्यस्त्रयो वर्णा अजायन्ताकार उकारो मकार इति Ait. Br. 5,32 (ein ganz spätes Stück). Çâṅkh. Br. 26,5. परिमिता वर्णा अपरिमितां वाचो गातमाप्नुवन्ति Âçv. Çr. 10,5,16. Lâṭj. 7,11,19. अक्षरवर्णसामान्य Nir. 2,1. °लोप ebend. ता वर्णानां प्रकृतयो भवन्ति ṚV. Prât. 13,2. एके वर्णा क्राश्यतिकान्न कार्यान् 4. 14,29. VS. Prât. 1,34. 4,146. AV. Prât. 1,92. TS. Prât. 2,10. fg. P. 1,1,9, Schol. Vop. 1,1. स्वरव्यञ्जनात्मकवर्णोच्चारण Ind. St. 1,16,16. Bhâg. P. 6,16,32. Sarvadarçanas. 128, 22. 140,16. fgg. °बुद्धि *der mit den Lauten verbundene Begriff* 141,21. शब्दो वर्णात्मकः संस्कृतभाषादिरूपः Tarkas. 19. Kâvjâd. 3,114. Bhâshâp. 163. Verz. d. Oxf. H. 88,b,5.19. परया वर्णसंपदा (व्याकरण) Hariv. 12178. अकार°, ऋ° ṚV. Prât. 6,13. 9,2. AV. Prât. 1,37. 3,44. fg. 4,56. P. 6, 1,182. 2,90. 3,112. Çânt. 2,8. यीवर्णयोः P. 7,4,53. र° AK. 3,4,20,135. Varâh. Bṛh. S. 89,15. 90,13. वर्णाष्टक 96,15. fünfundsechszig *Laute* VS. Prât. 8,30. dreiundsechszig Hariv. 16161. Çikshâ in Ind. St. 4,348. vierundsechszig ebend. °देवताः VS. Prât. 8,47. दीर्घवर्णान्त M. 2,33. संध्यक्षराणि संस्पृष्टवर्णान्येकवर्णवद्वृत्तिः AV. Prât. 1,40. वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता *Silbe* VS. Prât. 1,158. दीर्घ Çrut. 15. ह्रस्व 19. वर्णपदवाक्यविविक्तता H. 71. AK. 1,1,5,20. Ind. St. 8,390, N. ध्वनिर्वर्णाः पदं वाक्यम् Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489. Weber, Râmat. Up. 308. fg. 335. अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्ति (तनय) *unverständliche Worte* Spr. 3726. Vikr. 78,10. अलिखद्वर्णान्वङ्क्ष्यांशुकपल्लवे । वध्यो ऽपि न हतो यत्त्वं स्मर्तव्यं तत्त्वत्येसौ ॥ Râǵa-Tar. 3,522. fg. 6,30. *ein musikalischer Ton:* शरवर्णा धनुर्वीणा शत्रुमध्ये प्रवादय *lass die Laute «Bogen», auf der die* (schwirrenden) *Pfeile die Töne darstellen, erschallen* MBh. 4,1164. वर्णाः (रा-

गा: ed. Bomb.) षड्विंशतिः Pankat. V,44. neben स्वर von *Thierlauten:* पूर्णवर्णस्वराश्चेमे प्रवदन्ति मृगद्विजाः R. 5,73,52. पूर्णवल्गुस्वराश्च ed. Bomb. 6,4,47. — 7) m. *Lob, Preis;* = स्तुति AK. 3,4,13,50. H. an. Med. Halâj. 5,74. Viçva a. a. O. Lot. de la b. l. 314. परवर्णग्रहणेषु Spr. 5210. = गीतक्रम H. an. Halâj. उपात्तवर्णे (= प्रारब्धगीतक्रमे सति Mallin.) चरिते पिनाकिनः Kumâras. 5,56. — 8) m. *Ruhm* H. an. Med. Halâj. Viçva a. a. O. स्वभुजविक्रमलब्ध° Mrkkh. 67,17. प्रतापरञ्जनलब्ध° Ragh. 6,21. hierher wohl auch °करणा Râǵa-Tar. 5,80. — 9) *eine unbekannte Grösse* Colebr. Misc. Ess. II, 431. Alg. 324. — 10) *die Ziffer Eins* Ind. St. 8,436. — 11) m. = व्रत H. an. Halâj. — 12) m. = शोभा Halâj. — 13) m. = स्वर्ण *Gold* H. an. — 14) m. = तालविशेष *ein best. Tact* H. an. — 15) n. *Saffran* H. 644. H. an. Halâj. 2,388. — 16) f. आ *Cajanus indicus Spreng.* H. 1175. — Vgl. अवर्ण (als adj. in Çvetâçv. Up. *keine Erscheinungsform habend*), अग्नि°, अप°, अमीत°, उत्पलवर्णा, एकवर्णा, कुलवर्णा, ज्येष्ठवर्णा, त्रि°, दुर्वर्ण, द्वि°, धूम्र°, धृषद्वर्णा, पञ्च°, पावक°, प्रियवर्णी, बहुवर्णा, मधु°, मन्त्र° (genauer *der Wortlaut eines Spruches* oder *Liedes;* vgl. noch Çank. zu Ait. Up. S. 184. zu Brh. Âr. Up. S. 132. 146), यथार्ह°, रक्त°, लब्ध°, वि°, स°, सम°, स्पृहयद्वर्णा, हिरण्य°.

वर्णक (von वर्ण) m. f. AK. 3,6,5,38. 1) *Maske, Anzug eines Schauspielers:* वर्णकैश्छादितः (könnte auch *Schminke* bedeuten; vgl. Spr. 4796) Bhar. Nâtjaç. 34,78. 80. वर्णिका f. dass.: °परिग्रह Mâlatîm. 4, 11. Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,32. °परिग्रहणा Prab. 3,17. वर्णका = तात्तव (= प्रावरणभेद *eine Art Ueberwurf, Mantel* Comm.) P. 7,3,45, Vârtt. 8. कृपणवर्णक adj. Daçak. 67,8 (*Gesichtsfarbe* Benfey). — 2) m. f. n. (das n. nicht zu belegen) *Farbe zum Malen, — Bestreichen des Körpers;* = विलेपन AK. 2,6,3,35 (n.). H. an. 3,95. Med. k. 152 (f.). m. f. = नील्यादि Med. वर्णक Çânkh. Grhj. 4,15. MBh. 3,14679. 4,635. 13,5039. 5237. 5506. Suçr. 2,152,18. 392,11. Mrkkh. 91,10. Varâh. Brh. S. 48, 27. Kathâs. 20,51. Weber, Krshnaǵ. 273. Mârk. P. 15,29. Daçak. 131, 10. Bhatt. 19,11. वर्णिका Weber, Krshnaǵ. 273. Çâk. 142, v. l. वर्णका ebend. मृदितवर्णका adj. f. R. 5,16,21. वर्णिका *Dinte* Trik. 1,1,127. वर्णक n. *Auripigment* Ratnam. im ÇKDr. — 3) वर्णिका f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Hâr. 269. — 4) etwa *Probestück:* वेधसः सर्वसौन्दर्यसर्गवर्णकसंनिभा von einem schönen Mädchen gesagt Kathâs. 28,3. सर्वसुन्दरनिर्माणवर्णकमिव यद्वपुः 106,10. सरोवरम् — समुद्रनिर्माणे विधातुरिव वर्णकम् 46,87. व्यधां भाविनिरयक्लेशवर्णिकाम् Râǵa-Tar. 4,654. — 5) m. *eine best. Pflanze* (nicht चन्दन) Suçr. 2,324,9. *Sandel*, m. H. an. f. Med. n. Çabdar. im ÇKDr. — 6) am Ende eines adj. comp. *Silbe* Çrut. 34. — 7) n. so v. a. *Kapitel, Abschnitt* Verz. d. Oxf. H. 221,*b*, No. 538. Verz. d. B. H. No. 612. — 8) m = चारण *ein umherziehender Schauspieler, — Sänger* H. an. Med. — 9) n. *Kreis* Çabdar. im ÇKDr. — 10) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa उपकादि zu P. 2,4,69. — 11) f. *vorzügliches —, gereinigtes Gold* (काञ्चनस्योत्कर्षः) Med. — Vgl. पानीयवर्णिका, वारिवर्णक.

वर्णकदण्डक *Farbenstock* und zugleich N. *eines Metrums* Varâh. Brh. S. 104,62; vgl. Ind. St. 8,412. fg.

वर्णकमय (von वर्णक) adj. *mit Farben hergestellt, gemalt:* वर्णकमयीर्वृतमयीर्धातुमयीर्वा नक्षत्रप्रतिमाः Çântik. 5.

वर्णकवि m. N. pr. eines Sohnes des Kubera Trik. 1,1,80.

वर्णकित्र adj. von वर्णक gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36.

वर्णकूपिका f. *Farbebehälter, Dintenfass* Trik. 2,8,27.

वर्णकृत् adj. *Farbe gebend* Suçr. 1,190,2.

वर्णक्रम m. 1) *Reihenfolge der Farben* Schol. zu Kâtj. Çr. 23,3,6. — 2) *Reihenfolge der Kasten* Prab. 27,14. — 3) *Buchstaben-Krama;* s. u. क्रम 8).

वर्णगत adj. *algebraisch* Colebr. Alg. 271; vgl. वर्ण 9).

वर्णचारक m. *Maler* Çabdam. im ÇKDr.

वर्णज adj. *aus den Kasten entspringend, auf die Kasten Bezug habend:* संकर = वर्णसंकर Varâh. Brh. S. 89,1.

वर्णज्येष्ठ adj. *der Kaste nach höher stehend:* वर्णज्येष्ठा च या नारी वर्णहीनश्च यः पुमान्। तयोर्विवाहे मृत्युः स्यात् षण्मासान्नात्र संशयः॥ ÇKDr. nach dem Ǵjotist. *der Kaste nach am höchsten stehend* Spr. 4092, v. l. m. *ein Brahmane* Trik. 2,7,2. H. 812.

वर्णट m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6,91. 94. 96. 113.

वर्णतनु f. Bez. eines best. Liedes an die Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,11.

वर्णता f. nom. abstr. von वर्ण *Kaste* MBh. 12,6939.

वर्णताल m. N. pr. eines Fürsten Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 53.

वर्णतूलि f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Çabdar. im ÇKDr. °तूली f. dass. Trik. 2,8,28. °तूलिका f. dass. Hâr. 212.

वर्णत्व n. nom. abstr. 1) von वर्ण *Kaste* Kull. zu M. 10, 57. — 2) von वर्ण *Laut* Njâjas. 2,2,50. — अन्य° nom. abstr. von अन्यवर्ण adj. *eine andere Farbe habend* Suçr. 1,117,15.

वर्णद 1) adj. *Farbe gebend.* — 2) n. *ein best. wohlriechendes gelbes Holz* (कालीयक) Gatâdh. im ÇKDr.

वर्णदातर् 1) nom. ag. *Verleiher von Farbe.* — 2) f. °दात्री *Gelbwurz* Râǵan. im ÇKDr.

वर्णदूत m. *Brief* (*Buchstaben als Boten*) Trik. 2,8,28. Hâr. 54.

वर्णदूषक adj. *die Kasten verunreinigend* M. 10,61.

वर्णदेशना f. Titel eines Wörterbuchs Colebr. Misc. Ess. II, 59. Uǵǵval. zu Unâdis. 1,108.3,43.4,64.139. abgekürzt देशना 1,113.2,13.4,200.

वर्णद्वयमय (von वर्ण + द्वय) adj. (f. ई) *zweisilbig* Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,24.

वर्णन (von वर्णय्) n. *Beschreibung, Schilderung* Halâj. 1,150. R. Gorr. 1,4,12. Suçr. 1,8,9. 9,9. Spr. 3232. 5293. Kathâs. 17,134. 19,10. 35, 118. 42,121. 71,288. 124,217. Sâh. D. 28,9. Daçak. 70,2. Râǵa-Tar. 1, 10. Bhâg. P. 10,74,30. Pankar. 1,9,11. 11,8. Pankat. 187,14. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Çl. 50. in den Unterschrr. von MBh. 2, 7. R. Gorr. 1,36. Çiç. 9. Bhâg. P. 3,12. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,10 u. s. w. 78,*b*,15. fgg. 210,*b*,1 v. u. *Angabe:* अनुक्रम° 11. 32. *b*,39. वर्णना f. *Beschreibung, Schilderung* (*Lob, Preis* H. 269. Halâj. 1,145) Vikr. 19, 9. Kathâs. 32,167. 117,12. Sâh. D. 436. 448. in den Unterschrr. von R. Gorr. 1,5. fgg. 2,103. fg. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,14. *Angabe* Kusum. 5,1 v. u. Am Ende eines adj. comp.: स्वयंवरवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः *das Kapitel, in dem die Selbstwahl beschrieben wird,* Ragh. 6. 9 in den Unterschrr. Rtus. in den Unterschrr. वर्णन Suçr. 1,353,19 fehlerhaft für

वर्णा, wie eine Berliner Hdschr. liest.

वर्णनीय (wie eben) adj. *zu beschreiben, zu schildern, anzugeben* Bhâg. P. 3,22,39. Sâh. D. 80,15. 208,8. Verz. d. Oxf. H. 110,*a*,16. Sarvadarçanas. 167,6. — शोणित° adj. von शोणितवर्णन *von der Beschreibung des Bluts handelnd* Suçr. 1,43,2.

वर्णपत्त्र s. वर्णपात्र.

वर्णपात्र n. *Farbenkasten* Çabdam. im ÇKDr. वर्णपत्त्र n. *Palette* Wilson nach ders. Aut.

वर्णपुष्प n. *die Blüthe vom Kugelamaranth* Halâj. 2,52.

वर्णपुष्पक m. *Kugelamaranth* Râgan. im ÇKDr.

वर्णपुष्पी f. *eine best. Pflanze*, = उष्ट्रकाण्डी Râgan. im ÇKDr.

वर्णप्रबोध m. Titel einer Schrift Hall 14.

वर्णप्रसादन n. *Agallochum* Râgan. im ÇKDr.

वर्णभेदिनी f. *Fennich* Aush. 59.

वर्णमय (von वर्ण) adj. (f. ई) *aus (symbolischen) Lauten bestehend, mit ihnen in Verbindung stehend:* दीक्षा Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,29 und N. 4.

वर्णमातृ f. *Schreibstift, Schreibpinsel* ÇKDr. angeblich nach Hâr.

वर्णमातृका f. Bein. der Sarasvatî Çabdar. im ÇKDr.

वर्णमात्रा f. *ein best. Metrum* Sâh. D. 546.

वर्णमाला f. *das Alphabet*, insbes. *die zu Diagrammen verwandte Buchstabenreihe* Med. k. 183; vgl. u. मातृक 3) *f*).

वर्णय् (von वर्ण), वर्णयति P. 3,1,25 (= वर्णं गृह्णाति Comm.) Vop. 21, 17. Dhâtup. 35,83 (वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु, स्तुतिविस्तारशुक्लाभ्युद्युक्तिदीपने mit der v. l. °शुक्लाद्यत्युक्तिदीपने Kavikalp. im ÇKDr.). 32, 18, v. l. (वर्णने, प्रेरणे). 1) *bemalen:* यथा हि भरता वर्णैर्वर्णयत्यात्मनस्तनुम् Spr. 4796 (Jâgn.). निर्यासवालुकाकल्कवर्णितफलक *mit Farben bedeckt* Daçak. 91,16. — 2) *beschreiben, schildern, darstellen, erzählen, berichten über, angeben;* act. MBh. 1,7402. गुणविस्तरम् 2,1226. 3,1173. 2064. 7,5562. Hariv. 14210 (आत्मना चैव die neuere Ausg.). R. 5,76, 10. परदाराभिमर्शे तु को धर्म इति वर्णयेत् 84,8. Ṛt. 5,15. Kir. 5,18. Spr. 145. Varâh. Bṛh. 1,12. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 249. कथाम् Kathâs. 1, 26. 48. 2,53. 9,22. 10,210. 11,50. 12,77. 191. 13,93. 27,75. 163. 29,64. 32,146. 35,31. 46,5. 56,363. 411. Râga-Tar. 3,94. Bhâg. P. 1,3,35. 9, 28. 2,7,52. fg. 10,2. 3,1,3. 5,9. 22. 7,26. 10,10. 5,22,10. 8,5,6. 9,23, 18. 10,33,40. Mârk. P. 84,5. Vedântas. (Allah.) No. 59. Schol. zu Kap. 1,103. Comm. zu Ṛv. Prât. 10,14. P. 7,2,18, Schol. Sarvadarçanas. 36, 14. 95,10. med. Kathâs. 33,28. Bhâg. P. 3,26,2. 4,7,2. 25,46. 12,8,40. वर्णयित्वा Hariv. 14211. वर्णयितुम् Maitrjup. 6,34 (गिरा). Kaurap. 39. Bhâg. P. 10,21,4. Hit. 93,20. वर्णितुम् R. 6,4,18. pass. MBh. 1,444. 3, 2187. 13,4722. Suçr. 1,312,6. Kathâs. 13,52. Râga-Tar. 5,67. वर्णित (= स्तुत u. s. w. AK. 3,2,59) MBh. 1,490. Gît. 3,10. Kathâs. 19,36. 20,188. 34,62. 42,60. 43,226. 73,16. 100,56. 103,95. Bhâg. P. 3,12,1. 14,6. 22,39. 4,13,5. 7,13,45. 9,10,3. Sarvadarçanas. 170,1. Sâj. bei Muir, ST. IV, 12. — 3) *betrachten:* वर्ण्यमानः पुरस्त्रीभिः Kathâs. 67,15. — 4) *ausbreiten:* मायूरज्जीर्णपर्णानां वस्त्रं तस्याश्च वर्णितम् (= विस्तारितम् Nilak.) MBh. 12,9817.

— अनु 1) *beschreiben, schildern, erzählen, berichten über, auseinandersetzen, mittheilen, angeben:* अप्रियं चाहितं यत्स्यात्तदस्मै नानुवर्णयेत् MBh. 4,107. Bhâg. P. 3,9,39. 5,23,4. 26,3. 10,21,3. Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,8. नाहमिन्द्रः स एवाज्ञा नाहमित्यनुवर्णयन् *erklärend, sagend* Müller, SL. 236,9. °वर्णयितुम् Bhâg. P. 5,16,3. °वर्णितुम् 1,1,13. pass. 12, 5,1. °वर्णित MBh. 13,3428. Kathâs. 101,323. VP. bei Muir, ST. IV, 217. Bhâg. P. 1,5,9. 2,10,35. 3,15,46. 4,31,26. 7,9,12. Kull. zu M. 3, 53. °वर्णयितव्य Suçr. 1,13,19. 14,5. — 2) *loben* MBh. 12,3920.

— समनु *beschreiben, schildern, berichten über:* °वर्णित MBh. 12, 2115. 7138. 9470. Bhâg. P. 10,35,8.

— अभि dass.: °वर्णित MBh. 12,2150. Suçr. 1,180,6. — Vgl. अभिवर्णन.

— व्या *erzählen:* व्यावर्ण्य कथाम् Kathâs. 98,57.

— उप *beschreiben, schildern, erzählen, berichten über, mittheilen, angeben:* तांस्तानुपायानुपवर्णयन्ति MBh. 3,8732. 12,3924. 3926. Hariv. 6458 (इति वर्णयन् st. उपवर्णयन् die neuere Ausg.). Daçak. 3,44. Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,37. °वर्णितवान् Hit. 27,8. pass. Bhâg. P. 5,20,1. Verz. d. Oxf. H. 270,*a*,10. °वर्णित MBh. 1,364. 12,4131. R. Gorr. 1,74,11. 5,56,146. Kathâs. 17,167. 112,110. Bhâg. P. 1,18,9. 3,14,1. 4,13,1. 31,28. 5,19,31. 7,15,77. 8,3,30. Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,36. 270,*a*,2. °वर्णनीय 269,*b*,36. — Vgl. उपवर्णन.

— नि scheinbar Daçak. 73,3, wo aber निर्वर्ण्य zu lesen ist.

— निस् 1) *betrachten, genau ansehen* Mṛkkh. 134,2. Çâk. 33,13. 66, 8. 104,1. Vikr. 10,3. Mâlav. 66. 73,18. Spr. 3010. Kathâs. 54,81. 55, 35. 84,10. 116,56. Prab. 74,8. Dhûrtas. 72,7. — 2) *beschreiben, schildern, darstellen* Suçr. 2,539,5. — Vgl. निर्वर्णन fg.

— विनिस् *betrachten, genau ansehen* Çâk. 66,8, v. l.

— प्र *mittheilen* MBh. 12,12111.

— सम् 1) *mittheilen, erzählen* MBh. 4,106. Hariv. 7173. Kathâs. 25, 159. 26,29. Bhâg. P. 1,13,11. — 2) *loben* MBh. 4,121. Lot. de la b. l. 314.

वर्णयितव्य (von वर्णय्) adj. *zu beschreiben, zu schildern* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 126.

वर्णराशि m. *das Alphabet* Ṛv. Prât. Einl. Sarvadarçanas. 124,14.

वर्णरेखा f. *Kreide* Çabdar. im ÇKDr.

वर्णलेखा f. dass. Trik. 2,3,7.

वर्णलेखिका f. dass. Ratnam. im ÇKDr.

वर्णवत् (von वर्ण) 1) adj. gaṇa रसादि zu P. 5,2,95. Schol. zu 134. — 2) f. °वती *Gelbwurz* Gatâdh. im ÇKDr.

वर्णवर्ति f. *Farbenpinsel* Kathâs. 31,19. 117,24.

वर्णवर्तिका f. dass. Daçak. 92,1.

वर्णवादिन् m. *Lobredner* Vjutp. 75.

वर्णविलासिनी f. *Gelbwurz* Aush. 60.

वर्णविलोडक m. 1) *Plagiarius.* — 2) *ein Dieb, der in ein Haus einbricht*, H. an. 6,2. Med. k. 235.

वर्णविवेक m. Titel eines Wörterbuchs Uggval. zu Uṇâdis. 1,2. 39. 47. 92. 96. u. s. w.

वर्णवृत्त n. *ein nach der Zahl der Silben gemessenes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 96. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,4. 197,*a*, No. 437. Verz. d. B. H. No. 816. 1354.

वर्णव्यवस्थिति f. *die Institution der Kasten, Kastensystem* Golâdhj. 3,42.

वर्णशिक्षा f. *Lautlehre* R̥V. Prât. 14,30.

वर्णश्रेष्ठ adj. *der Kaste nach am höchsten stehend*, m. *ein Brahmane* R. 1.6,17 (20 Gorr.).

वर्णसं adj. von वर्ण gaṇa तृणादि zu P. 4,2,80.

वर्णसंयोग m. *eine eheliche Verbindung innerhalb der eigenen Kaste, eine ebenbürtige Ehe* Mârk. P. 113,35.

वर्णसंसर्ग m. *Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen* M. 8,172.

वर्णसंस्कार m. *eine Versammlung, in der verschiedene* oder *alle Kasten vertreten sind*, Bhar. Nâṭjaç. 19,81. Daçak. 1,32. Sâh. D. 364. Pratâpar. 21,b,4.

वर्णसंकर m. 1) *Vermischung —, Mischung von Farben* MBh. 12,6935. Spr. 2522. an beiden Stellen zugleich in der Bed. 2). — 2) *Vermischung der Kasten durch unebenbürtige Ehen* M. 8,353. 10,12. Bhag. 1,41. MBh. 12,6935. Spr. 2522. Bhâg. P. 1,18,45. Mârk. P. 116,76.

वर्णसंकरिक (von वर्णसंकर) adj. *der durch eine unebenbürtige Ehe eine Vermischung der Kasten bewirkt* MBh. 12,3215.

वर्णसंघाट m. *das Alphabet* P. 3,2,49, Vârtt. 3, Schol.

वर्णसंघात m. dass. ebend.

वर्णसमाम्नाय m. dass. VS. Prât. 8,1. Kathâs. 7,10. Bhâg. P. 7,15,53. Verz. d. B. H. No. 768. H. an. 3,81.

वर्णसि Uṇâdis. 4,107. *Wasser* Uǵǵval. — Vgl. पर्णसि.

वर्णस्थान n. *der bei der Aussprache eines Lautes besonders wirksame Theil des Mundes* Ragh. 10,37. — Vgl. स्थान.

वर्णाङ्का f. *Schreibstift, Schreibpinsel* Çabdar. im ÇKDr.

वर्णाट m. 1) *Maler* H. an. 3,169. Med. ṭ. 54. — 2) *Sänger* Trik. 3,3, 103. H. an. Med. — 3) = स्त्रीकृताजीव, स्त्रीकृतजीवन *ein durch die Frau seinen Lebensunterhalt gewinnender Mann* (st. dessen *an actor, a mime* Wilson) H. an. Med. — 4) *Liebhaber* (कामिन्) Trik.

वर्णात्मन् m. *Wort* (*aus Lauten bestehend*) Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

वर्णाधिप m. *ein einer Kaste als Regent vorstehender Planet* Ǵjotist. im ÇKDr.

वर्णान्यत्व n. *Wechsel der Gesichtsfarbe* Sâh. D. 167.

वर्णापेत adj. *der seiner Kaste verlustig gegangen ist* M. 10,57.

वर्णार्ह m. *Phaseolus Mungo Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

वर्णाशा f. N. pr. eines Flusses VP. 184, N. 62. — Vgl. पर्णाशा.

वर्णाश्रमवत् (von वर्ण + आश्रम) adj. *den Kasten und den vier Lebensstadien eines Brahmanen angehörend* (eine Person) Bhâg. P. 5,19,10. 11,18,47.

वर्णाश्रमिन् adj. dass. Bhâg. P. 7,4,15.

वर्णि (nicht n.) *Gold* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,123.

वर्णिक m. *Schreiber* H. 484 fehlerhafte v. l. für वार्णिक. — एक° *einartig* von एक + वर्ण MBh. 3,11298; vgl. माल्ल°. — वर्णिका s. u. वर्णका.

वर्णिन् (von वर्ण) 1) adj. am Ende eines comp. P. 5,2,132. *a*) *das Aussehen von — habend*: कुमारौ देववर्णिनौ R. 2,92,23. — *b*) *zu der Kaste der — gehörig*: ब्राह्मण° P. 5,2,132, Sch. श्रेष्ठ° *ein Brahmane* Kâm. Nîtis. 2,19. — 2) m. *a*) *eine zu einer der vier Kasten gehörige Person* Jâǵn. 2,83. Spr. 303. Kâm. Nîtis. 2,33. — *b*) *ein Brahmane im ersten Lebensstadium, ein* Brahmakârin P. 5,2,134. AK. 2,7,42. H. 808. an. 2,284. Med. n. 125. Halâj. 2,239. Ragh. 5,19. Kumâras. 5,52. 65. Kathâs. 24,91. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 257. — *c*) pl. Bez. einer best. Secte Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 53. — *d*) *Maler* H. an. Med. *e*) *Schreiber* diess. — *f*) vielleicht *eine best. Pflanze*: पलाशशरवर्णिनाम् (= लेखकानाम् Nîlak.) MBh. 12,2652. in der Verbindung सर्व° adj. (यूप) 14,2630 erklärt Nîlak. वर्णिन् durch पलाशकाष्ठमय. — 3) f. *Weib* H. 504. Halâj. 2,326. *eine Frau aus hoher Kaste* Vâgbh. 7,70. — Vgl. वरवर्णिन्, वरवर्णिनी.

वर्णिल adj. von वर्ण gaṇa पिच्छादि zu P. 5,2,100.

वर्णीभू (वर्ण + 1. भू) *sich zu einem articulirten Laute gestalten*: (वायुः) वर्णीभवन् R̥V. Prât. 13,4. Schol. zu VS. Prât. 1,9.

वर्णु Uṇâdis. 3,38. m. 1) N. pr. eines Flusses und des daran angrenzenden Gebietes Uǵǵval. P. 4,2,103. gaṇa सुवास्त्वादि zu 77. gaṇa कच्छादि zu 133. gaṇa सिन्ध्वादि zu 3,93. Vgl. वार्णव. — 2) *die Sonne* Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वर्णेश्वरी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 105,b,14.

वर्णोदक n. *farbiges Wasser* Ragh. 16,70.

1. वर्ण्य (von वर्ण) 1) adj. *der Farbe zuträglich, Farbe verleihend* Suçr. 1,155,10. 184,16. 190,12. 2,352,16. — 2) n. = वर्ण *Saffran* H. 644, Schol.

2. वर्ण्य (von वर्णय्) adj. *zu beschreiben, zu schildern, was beschrieben —, geschildert wird* Sâh. D. 426. Verz. d. Oxf. H. 210,b,4 v. u. 211, a,8 und 2 v. u. वर्ण्यसम und अवर्ण्यसम m. (sc. प्रतिषेध) Bez. zweier Arten sophistischer Einwendungen Njâjas. 5,1,1.4. Sarvadarçanas. 114,10.

वर्त्, वर्तते Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 18,19 (वर्तने). ववृते P. 7,4,66, Schol. वावृते, ववृत्रन्; वर्तिथास् MBh. 5,4534. वर्तिषीष्ट P. 7, 2,59, Schol. वर्तिष्यते und वर्त्स्यति, अवर्तिष्यत und अवर्त्स्यत् P. 1,3, 92. 7,2,59. Vop. 8,121. Aus metrischen Rücksichten erscheint das act. auch in anderen Formen; in der ältesten Sprache zu belegen: (अनु) वर्त्ति, (आ) वर्त, (आ) अवर्त्, ववर्त, वावृतुम्, ववृत्युम्, (सम) ववर्त्ति, अवृतत् Çat. Br. 14,1,4,10. वर्तितुम्; वर्तित्वा Schol. zu P. 1,2,18. 26. वृत्त (s. bes.). 1) *sich drehen, rollen; sich rollend* u. s. w. *hinbewegen*: सुवृद्रथो वर्तते यन्नभि क्षाम् R̥V. 1,183,2. (रथः) य इषा वर्तते सह 8,5,34. चक्रं वर्तमानम् 4,28,2. 5,30,8. 40,6. AV. 5,14,5. 10,8,7. Lâṭj. 1,2,20. 5,5,13. Khând. Up. 4,16,3. Würfel R̥V. 10,27,19. ते अवृत्रन्कामकातयः 8,81, 14. Çat. Br. 1,6,3,9. हस्तवर्तं (absol.) वर्तयति P. 3,4,39. Bhaṭṭ. 15, 37. पूर्ववद्वर्ततां रविः Mârk. P. 16,73. तिर्यगूर्ध्वमधश्चैव शक्तिस्ते शैल वर्तितुम् R. 5,7,8. अर्मूणि यानि त्रीतस्यं वावृतुः AV. 5,19,13. *verlaufen* (von der Zeit): त्रेतायुगसमः कालो वर्तते Bhâg. P. 5,17,12. — 2) *vor sich gehen, einen Verlauf nehmen, von Statten gehen*: उदिते ऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा। सर्वथा वर्तते यज्ञः M. 2,15. पितृमेधाश्च केषांचिद्वर्तन्त MBh. 11,794. अग्निसंस्कारात्परा ववृतिरे क्रियाः Ragh. ed. Calc. 12,56. R. 1,11,14. दमयन्त्याः पणः साधु वर्तताम् MBh. 3,2299. ततो युद्धमवर्तत 5,7164. Bhaṭṭ. 2,37. यावदेतद्वर्तते Vet. in LA. (III) 9,12. 16,8. 21,11. न च तद्वर्तते तथा Spr. 3801. एकाङ्गेनापि विकलमेतत्साधु न वर्तते Kâm. Nîtis. 4,2. उपस्थाने वर्तमाने मनोरमे MBh. 3,1839. तस्मिंस्तथा वर्तमाने दारुणे जनसंक्षये 2550. mit einem instr. *in einer bestimmten Weise erfolgen, — sich verhalten, — auftreten*: (पादैः) एतैश्छन्दांसि वर्तन्ते सर्वाणय-

न्यैरतो ऽल्पशः Ṛv. Prât. 17,23. विषमाः समपर्यायैर्वर्तन्ते Lâṭj. 6,5,
21. अविकारेण 9,7,8. 10,10,15. भिन्नश्लिष्टा तु या प्रीतिर्न सा स्नेहेन
वर्तते Spr. 1171. इतरेषु ससंध्येषु ससंध्यांशेषु च त्रिषु । एकापायेन वर्तन्ते
सहस्राणि शतानि च ॥ so v. a. *nehmen um Eins ab* M. 1,70. — 3) *sich
irgendwo befinden, weilen; da sein, vorhanden sein, sich finden, es giebt*
(von Personen und Sachen): एते राष्ट्रे वर्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः M.
9,226. सर्वथा वर्तमानो ऽपि स योगी मयि वर्तते Bhag. 6,31. क्व नु वर्तते
MBh. 3,2737. गृहस्योपरि 5,7251. R. 1,18,4. 70,14. स्वे पथि 2,21,60.
26,25. 4,5,5. Çâk. 29,7 (वर्तिष्यते pass. impers.). 39,13. 98,15. 99,6.
Kathâs. 37,185. Bhâg. P. 3,28,24. 4,26,16. Dhûrtas. 89,5. Vet. in
LA. (III) 7,3. 31,11. Bhaṭṭ. 7,103. 8,68. सत्पथे Hariv. 14023. कण्ठे पि-
पासवः प्राणा वर्तन्ते भोजनं विना Râǵa-Tar. 4,230. मूर्ध्नि *obenan stehen*
Spr. 3213. मयि वर्तस्व *bleibe bei mir* MBh. 5,6046. Spr. 3182. act. MBh.
1,637. 3,12171. 12412. अधनि वर्तन् 13,350. 3210. R. 3,62,25. Spr. 4547.
Mârk. P. 50,42. — नाराजके जनपदे प्रहृष्टनटनर्तकाः । उत्सवाश्च समाजाश्च
वर्तन्ते राष्ट्रवर्धनाः ॥ Spr. 4415. पशवो ऽपि न वर्तन्ते नित्यं राष्ट्रे ह्यराजके
4405. 4407. नहि रूपोपमा काचित्तव मैथिलि वर्तते R. 5,22,13. एते पञ्च-
दश — गुणा भूतेषु पञ्चसु । वर्तन्ते MBh. 3,13927. R. 3,71,10. Sarvadar-
çanas. 13,14. 66,13. 116,13. Comm. zu Njâjas. 1,1,11. पापमधिकं स्त्रीषु
वर्तते Vet. in LA. (III) 23,3. व्याकुलत्वं मे हृदि वर्तते Pańkat. 76,12. fg.
sonst bedeutet हृदि, हृदये वर्त् wie मनसि वर्त् *am Herzen —, im Sinne
liegen, im Kopfe herumgehen:* अतो ऽन्यथा न मे वासो वर्तते हृदये क्व-
चित् MBh. 3,2602. वाक्यं नारदेनोक्तं वर्तते हृदि नित्यशः 16715. इदं च
मे मनसि वर्तते Çâk. 25,22. 33,12. Vikr. 30,5. Pańkar. 1,7,7. अत्यान-
न्दसमायुक्ते नावर्तेतां तदात्मनि (so ist wohl zu lesen) *sie befanden sich
nicht bei sich* so v. a. *sie waren ausser sich vor Freude* Kathâs. 55,184.
sich bei Jmd (loc. gen.) *vorfinden, da sein:* गुरुशापकृतं रूपं यदिदं त्वयि
वर्तते R. 1,59,4. जगत्संजनने शक्तिस्त्वयि वर्तते Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,25.
तपो यज्ञः श्रुतं शीलमलोभः सत्यसंधता । गुरुदैवतपूजा च एता वर्तन्ति भू-
मिदे (so lesen wir st. भूमिदं beider Ausgg.; Nîlak. giebt, um den acc.
zu erklären, वर्तन्ति die Bed. von अनुसरन्ति) MBh. 13,3126. मम चा-
कृतपुण्याया एकः पुत्रो ऽत्र वर्तते Kathâs. 18,269. तवेदानीं तुतृष्णा च
न वर्त्स्यति 316. एवमादिर्महागर्वस्तस्य संप्रति वर्तते Hariv. 15037. तद-
स्माकमप्यत्र विषये महत्कुतूहलं वर्तते Pańkat. 97,10. योगक्षेमौ हि सी-
ताया वर्तेते (so die ed. Bomb.) लक्ष्मणावयोः so v. a. *steht bei uns, hängt
von uns ab* R. 2,53,3. — 4) *sich in einem best. Lebensalter, in einer
best. Lage, in einem best. Falle, bei einer best. Beschäftigung befinden;
einer Sache obliegen, sich Etwas angelegen sein lassen;* mit loc.: वय-
स्याद्ये Bhâg. P. 1,6,2. पश्चिमे वयसि Hit. 28,2. यौवने R. 4,63,13. व्यसने
3,75,18. महति विषादे Vikr. 9,5. तृतीयायां प्रकृतौ वर्तता त्वया MBh. 2,
1434. जीविते वर्तमानः so v. a. *lebend* Spr. 982. वशे *in Jmdes Gewalt
stehen* 4417. Pańkar. 3,11,10. निदेशे MBh. 1,637. मातुर्मते Daçak. 63,5.
आदेशे भगवतः Bhâg. P. 3,13,14. सतां क्रमे R. 2,25,2. उग्रे तपसि वर्तन्
MBh. 1,1860. 4308. 5,6053. मनुष्यधर्मे 15,841. साहसे M. 8,346. कर्मसु
9,319. Bhag. 3,22. Spr. 4641. M. 2,5. लोभेषु Haviv. 294. उपकारे R. 3,
75,40. Mârk. P. 14,86. अहिते Spr. 3558. उद्वाहमहोत्सवे Kathâs. 14,26.
सुखोपभोगेषु 21,17. राजक्रियायाम् Pańkat. 63,25. वैष्णवास्त्रस्य शमने Ha-
riv. 10941. Ragh. 8,20. मर्यादाव्यतिक्रमे Pańkat. 46,21. न वर्ते प्रतिग्रहे
so v. a. *ich bin nicht in dem Falle es annehmen zu können* R. 2,50,29
(47,20 Gorr.). *in einer best. Bedeutung stehen, eine best. Bedeutung
haben:* पुष्यसमीपस्थे चन्द्रमसि पुष्यशब्दो वर्तते Pat. zu P. 4,2,3. Schol.
zu P. 1,2,15. सप्तम्यर्थमात्रे वर्तमानमीदृद्दत्तम् zu 1,1,19. — 5) *leben von*
(instr.): क्रीतोत्पन्नेन (अन्नेन) Âçv. Gṛhj. 4,4,15. मत्स्यमांसेन Hariv. 5237.
Varâh. Bṛh. S. 15,17. Kathâs. 4,123. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 274.
Bhâg. P. 4,28,36. 5,8,30 (°वीरुधा व° zu trennen). mit einem absol:
यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः । तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व
आश्रमाः M. 3,77. — 6) *leben* so v. a. *sein Leben hinbringen; sich befin-
den, sich fühlen:* मातामहकुले चापि यथा वर्तामहे वयम् । तथा पूर्वं भवा-
ञ्छंसेत्पितुर्मातुश्च मे ऽग्रतः ॥ R. Gorr. 1,80,20. कथं मे वर्तते बाला (ता-
नि) पश्यन्ती मामपश्यती 4,29,17. त्यक्ता त्वया कथं वर्त्स्यामि Kathâs. 53,
113. Spr. 4481. Bhâg. P. 1,13,42. 4,28,18. 21. पश्यतश्च ताम् । ममावर्तत
तत्कालं न जाने हृदयं कथम् Kathâs. 22,108. शिशुर्यथा पितुरङ्के सुसुखं
वर्तते MBh. 3,1740. — 7) *zu Werke gehen, verfahren, sich benehmen:*
तथा R. 2,30,38 (32 Gorr.). Spr. 1695. 3244. ततो ऽन्यथा M. 8,397. Ha-
riv. 9226. Suçr. 1,7,9. एवम् R. 1,8,10. एवंविधम् Kathâs. 12,159. प्र-
तिकूलम् M. 10,31. विधिपूर्वकम् Suçr. 2,93,7. कामतस् M. 9,63. अनुरू-
पतस् MBh. 15,678. साधु R. 4,28,11. उग्रम् Bhaṭṭ. 16,7. mit einem absol.:
अतः क्षमं न ते वचो ऽतिक्रम्य वर्तितुम् R. Gorr. 1,60,4. तस्य मतमुत्क्रम्य
वर्तितुम् 2,23,9. यदि धर्मं पुरस्कृत्य पुत्र वर्तितुमिच्छसि 22,1. *gegen Jmd,*
mit loc.: पितृवन्नृषु M. 7,80. 9,108. MBh. 3,1461. 5,7079. 15,678. R.
2,18,16. 41,4 (40,4 Gorr.). 52,33 (49,34 Gorr.). 58,16. 73,9. 104,19
(ववृतिरे zu lesen). R. Gorr. 2,58,24. 4,28,11. 5,36,64. Spr. 1612. 2607.
4850. Prab. 106,1. मातापित्रोर्गुरुषु च सम्यग्वर्तन्ति ये सदा MBh. 13,2042.
1,3259. गुरुवच्च स्नुषावच्च वर्तेयातां परस्परम् M. 9,62. निर्वैरसुखितास्त-
स्माद्वर्तधमितरेतरम् Kathâs. 50,116. mit dat.: कथं च तस्मै वर्तेयम् MBh.
14,140. mit acc. (!): पुत्रश्च पितरं मोहान्निर्मर्यादमवर्तत 7,1392. वर्त् mit
loc. der Person bedeutet auch *in einem best. Verhältniss zu Jmd ste-
hen,* insbes. *in einem unerlaubten geschlechtlichen:* भार्यायां वर्तसे भ्रातू
रुमायां त्वमधार्मिकः R. 4,17,28. mit सह *verkehren mit:* पापमित्रैः सह
वर्तितुम् Spr. 2729. अवर्तितुम् mit abl. der Person *gegen Jmdes Willen
verfahren* R. 2,111,6. *verfahren —, zu Werke gehen mit* (instr.) so v. a.
an den Tag legen, äussern, anwenden, gebrauchen: अनया वृत्त्या हीन-
प्रतिज्ञया R. 2,109,8. याम्यया वृत्त्या M. 8,173. अमायया 7,104. कविर्नि-
सर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमानः Mâlat. 3,9. fg. धर्मेण Kathâs. 45,160. देश-
रूपेण (वेषरूपेण die neuere Ausg., वंशरूपेण Nîlak.) वर्तन्तम् Hariv. 8335.
मित्रभावेन Spr. 4754. विभुत्वेन Çvetâçv. Up. 4,4. औदासीन्येन Ragh. 10,
26. पितृत्वेन Prab. 106,1. आत्मानुमानेन Vikr. 63,13. अनुकल्पेन M. 11,
30. ओजसा, सहसा, अम्भसा P. 4,4,27. दण्डेनैवारिशिरस्सु वर्तते देवः Mâ-
lav. 61,18. या तव । अभिषेकविघातेन पुत्रराज्याय वर्तते R. 2,23,24. व-
र्ततीनां पराज्ञया so v. a. *unter eines Andern Befehlen stehend* 6,98,28.
यावद्वत्स्यति पाञ्चाली पात्रेणानेन so v. a. *gebrauchen* MBh. 3,202. वर्तेत
ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रक्षया भुवः so v. a. *obliegen* Bhâg. P. 10,24,20.
प्रजारूपेण so v. a. *in der Gestalt eines Sohnes auftreten* 1,7,45. — 8)
mit dat. *sich um Etwas kümmern, sich Etwas angelegen sein lassen:*
पुत्रराज्याय R. 2,23,24. शीलगुणाय 5,37,30. — 9) mit dat. *gereichen zu:*
पुत्रेण किं फलं यः पितृदुःखाय वर्तते Çuk. in LA. (III) 35,12. — 10) *in*

einem gegebenen Augenblick da sein Bhag. 5,26. अहमेकः प्रथममासं वर्तामि च भविष्यामि च Muir, ST. IV, 298,8. अतीतानागता भावा ये च वर्तन्ति सांप्रतम् Spr. 3412. अहणासमयवेला वर्तते शीतरश्मेः 990. इयं च वर्तते संध्या Brahma-P. in LA. (III) 55,22. मम प्रसवसमयो वर्तते Pañkat. 74, 19. वर्तन्ते ऽद्य मघाः R. Gorr. 1,73,23. कालावस्था तदा ह्यन्या न सा वर्तति सांप्रतम् MBh. 3,11229. सायं संप्रति वर्तते Spr. 1960. Vet. in LA. (III) 29,19. कोपस्यायं न कालो मे साध्यमन्यद्धि वर्तते Kathâs. 21,77. अब्रह्मण्यमब्रह्मण्यं वर्तते Pañkat. 101,1. वर्तमान *gegenwärtig;* n. *Gegenwart* Bhag. 7,26. P. 3,2,123. 3,131. Mâlav. 3,13. Bhâg. P. 8,13,1. Sarvadarçanas. 7,12. 9,21. 10,6. 50,5. Halâj. 5,94. Vop. 5,27. 25,1. Pañkat. 48,8. वर्तिष्यमाण *zukünftig* Sarvadarçanas. 10,6. वर्त्स्यत् dass. Bhatt. 8,67. — 11) *im gegebenen Augenblick noch da sein, am Leben sein* Uttarar. ed. Cow. 66,2. Kathâs. 18,229. *bestehen:* तेनेदं वर्तते जगत् Spr. 3200. वर्तते ऽद्य महानब्धोः कल्पापाये ऽप्यनत्ययः। संगमो नगरोपान्ते स मुग्ध्योपक्रमस्तयोः॥ Râga-Tar. 5,98. *noch Geltung haben, fortgelten* so v. a. *aus dem Vorhergehenden zu ergänzen sein:* अप्रतेरिति वर्तते Pat. zu P. 8,3,67. Kâç. zu 1,1,50. 57. 2,39. Schol. zu 25. Comm. zu Njâjas. 2,1,49. — 12) das zur copula geschwächte *sein:* तावेकनिश्चयौ u. s. w. निरन्तरमवर्तेताम् MBh. 1,7622. जुगुप्सिता च वत्स्यामि (वत्स्यामि die neuere Ausg.) पतिपत्नैर्निराकृता Hariv. 4620. त्वदधीना वयं सर्वे वर्तामः सततं विभो Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,27. 58,*b*,36. सांप्रतं सा रजस्वला वर्तते Vet. in LA. (III) 8,9. 29,14. Kumâras. 5,65. Ragh. 19,19. Kathâs. 29,137. 37,221. Kâç. zu P. 1,1,56. Râga-Tar. 6,267. Pañkat. 69,17. समायातः Vet. in LA. (III) 7,14. fg. निरूपितमेव स्थानं वर्तते Hit. 26,11, v. l. द्रष्टव्यो वर्तते स नः Kathâs. 102,45. लावाणके ऽस्माकं गतानां वर्तते चिरम् *es ist lange her, dass* 15,123. इति मे वर्तते बुद्धिः *so ist meine Meinung* R. 5,92,9. mit einem absol.: सत्यमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः so v. a. *übertreffen an Geschwindigkeit* Çâk. 6,5. — 13) *hervorgehen aus* (abl.), *entstehen in* (loc.): मुखतो ऽवर्तत ब्रह्म पुरुषस्य Bhâg. P. 3,6,30. fg. विशो ऽवर्तन्त तस्योर्वोः 32. — 14) trans. mit einem acc.: वृत्तिम् *ein Verfahren einschlagen, verfahren* (mit loc. der Person, selten mit प्रति) MBh. 1,4832. 2,152. 3,14666 (वर्तामि). 15,9. 11. 677 (वर्तसि). R. 2,44,5. 58,18. 73,8. R. Gorr. 2,75,25. 3,1,7. 10. 4,17,52. न लोकवृत्तं वर्तेत वृत्तिहेतोः M. 4,11. संवृत्तिम् R. Gorr. 2,109, 31. *anwenden, gebrauchen:* सर्वोपायम् R. Schl. 2,82,18. मयि क्रौर्याण्यवर्तत Kathâs. 106,30. तद्विपर्ययम् Bhâg. P. 8,21,21. प्रिया खलु नो भवती सती प्रियमवृतत् (अवृधत् Brh. Âr. Up.) so v. a. *erweisen* Çat. Br. 14,1, 4,10. किमिदं वर्तसे so v. a. *treiben, thun* R. 7,25,5. — 15) nicht hierher scheint zu gehören: भूम्या वृत्वाय नो ब्रूहि यतः खनेम तं वयम् *wähle aus und sage, wo im Boden* u. s. w. (also वृत्वाय zu schreiben; = स्पृष्ट्वा Mahidh.) VS. 11,19.

— caus. वर्तयति Dhâtup. 33,108 (भाषार्थ, v. l. भासार्थ). अवीवृतत् und अववर्तत् P. 7,4,7, Schol. Vop. 18,4. ववृतत् ved.; aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *in drehende Bewegung setzen, schwingen, rollen lassen, schleudern:* वर्तयतं दिवो वधम् Ṛv. 7,104,4. अश्रु 10,95,12. fg. अद्रिं खं वर्तया पणिम् (SV. richtig पविम्) 156,3. चक्रम् 2,11,20. हस्तवर्तं (करवर्तं) वर्तयति P. 3,4,39. अन्यान्हस्तवर्तमवीवृतत् Bhatt. 15,37. तन्तून्सततं वर्तयन्त्यौ MBh. 1,809. दिनु चक्रमवर्तयत् Bhâg. P. 9,20,32. कुरुजाङ्गले — निम्नचक्रवर्तिते (so v. a. वर्तितनिम्नचक्रे; वर्तित = पालित Comm.) 1,16,11. यो (वायुः) ज्योतींषि वर्तयति Çâk. 165. अश्रूणि so v. a. *Thränen vergiessen* MBh. 1,4468. R. 2,58,21. 100,37. 6,24,4. 41. 101,3. Bhâg. P. 4,28,49. — 2) *drehen, drechseln:* त्वष्टा यद्वज्रं स्वपा अवर्तयत् Ṛv. 1,85,9. त्वष्टा ते वज्रं ववृतत् 6,17,10. गुटिकाम् Suçr. 2,88,20. = वर्तुलं करोति Siddh. K. zu P. 3,1,15. सो ऽमन्यत फलानीति मोदकांश्च सुवर्तितान् R. Gorr. 1,9,37. — 3) *Etwas vor sich gehen —, einen Verlauf nehmen —, von Statten gehen lassen, verrichten:* रोमन्थम् P. 3,1,15. Ragh. 1,52. द्यूतम् MBh. 2,2508. यज्ञम् Hariv. 14378. इष्टिमैन्द्रीम् Bhâg. P. 9,6,26. पारायणम्, तुरायणम्, चान्द्रायणम् P. 5,1,72. संप्रति संभोगकामिप्रवृत्त्या वर्तितजन्मानः so v. a. *erzeugt* (°प्रवृत्त्यावर्तित° gedr.) Kusum. 23,21. *herrichten, zurichten:* वर्तिते च सप्तद्वीपसमुद्रभूधरविचित्रे धरणीमण्डले Pañkat. 157,24. सुवर्तित (जाल) MBh. 13,2657. महत्साह्नम् so v. a. *an den Tag legen, äussern* 4,671. नात्तर्वर्तयति धनत्सु जलदेष्वामन्द्रमुद्गर्जितम् so v. a. *erheben* Mâlat. 153,2. — 4) (eine Zeit) *verlaufen lassen, zubringen, verleben:* पुष्करे तु ततः शेषं कालं वर्तितवान् MBh. 1,7976. काञ्चन — अवर्तयत्समाः Ragh. 19,4. रात्रिं कथंचिदेवेमां सौमित्रे वर्तयामहे R. 2,53,4. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः Bhâg. P. 1,6,3. दुःखशोकवती लोके वर्तयिष्यामि जीवितम् *das Leben hinbringen* R. 4,19,11. दुर्गतिम् *ein armseliges Leben führen* R. Schl. 1,59,21. वृत्तिम् *ein Leben —, eine Lebensweise führen;* तत्र° Lâtj. 8,12,11. 10, 18,11. मयि पञ्चत्वमापन्ने कां वृत्तिं वर्तयिष्यति R. 2,63,30. 7,88,3. *ein Verfahren einhalten* Lâtj. 8,7,10. — 5) intrans. *sein Leben hinbringen, ein Leben führen:* दीर्घकालं मम क्रोधाद्दुर्वृत्त्या वर्तयिष्यति R. Gorr. 1, 61,22. अनेन वृत्तेन M. 4,260. शूद्रवृत्त्या 10,98. कया वृत्त्या वर्तितं वश्चरद्भिः क्षितिमण्डलम् Bhâg. P. 1,13,8. एवं वर्तयन् Khând. Up. 8,15. वर्तयामास मुदितो देवराडिव नन्दने MBh. 3,3065. R. 1,77,15. 2,74,24. 7, 88,3. *leben —, bestehen von* (instr.): भैक्षेण M. 2,188. 11,123. शिलोञ्छाभ्याम् 4,10. 6,20. fg. निन्दितैः कर्मभिः 10,46. 50. कृच्छ्रैः Jâgñ. 3,50. MBh. 3,2306. 4071. 13,2595. 3238. 13723. Hariv. 1269. 3794. 11205. R. 2,24,2. Ragh. 12,20. Kir. 2,18. Spr. 5002. VP. bei Muir, ST. I, 181, N. 12. Bhâg. P. 8,19,33. Mârk. P. 49,28. 32. 60,12. *am Leben bleiben:* भवत्या च परित्यक्तो न नूनं वर्तयिष्यति R. 2,24,11 (25,10 Gorr.). 51, 12 (48,12 Gorr.). 86,13 (94,14 Gorr.). R. Gorr. 2,65,29. 113,16. 3,51, 12. Kathâs. 66,104. — 6) *eine Begebenheit vorführen, erzählen:* किं भूयो वर्तयिष्यामि ते MBh. 1,4539. आख्यानम् 3,328. 5,5421. 12,8493. 13, 435. 508. 2248. 3034. 4652. 14,640. Hariv. 4579. 8553. R. 1,5,4. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,17. हन्त वो वर्तयिष्यामि दानस्य फलमुत्तमम् *auseinandersetzen, vorführen* MBh. 14,2711. ब्रह्म *verkünden, lehren* Bhâg. P. 9,16, 25. — 7) *einsehen, erkennen:* भावाद्वैतं क्रियाद्वैतं द्रव्याद्वैतं यथात्मनः। वर्तयन् (= आलोचयन् Comm.) स्वानुभूत्येह त्रीन्स्वप्नान्धुनुते मुनिः॥ Bhâg. P. 7,15,62. — 8) शिरः oder शीर्षम् bei den Juristen so v. a. *sich zu einer Strafe bereit erklären, wenn der Andere durch ein Gottesurtheil gereinigt wird,* Vishnu in Z. d. d. m. G. 9,679. Jâgñ. 2,96; vgl. शीर्षकस्थ 95. — 9) mit dat. *sich kümmern um, sorgen für:* न्यायोपेतेभ्यः Çâñkh. Grhj. 4,8.

— desid. विवर्तिषते und विवृत्सति P. 1,3,92. 7,2,59. Vop. 8,121. 19,2. विवर्तिष्यते, विवृत्सिता, विवृत्सितुम् P. 7,2,59, Vârtt., Schol.

— intens. वरीवृत्यते, वरीवृतीति, वर्वृतीति, वरिवृतीति, वर्वर्त्ति, वरिवर्त्ति, वरीवर्त्ति Schol. zu P. 7,4,90. fg. *rollen*, die Würfel: इरिणे वर्वृतानाः RV. 10,34,1. वरीवर्त्यमानश्चरति Çat. Br. 14,1,4,10.

— अच्छ caus. *herbeibringen:* अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् RV. 1,186,10.

— अति 1) trans. *vorbeifahren, passiren bei* (acc.): कोसलान् R. 2,50, 10. *übersetzen über* (einen Fluss) 71,15. *überschreiten:* सतां गतिम् R. 2, 111,4. fgg. (act.). R. Gorr. 2,120,6. विधातृविहितं मार्गम् Spr. 2809. मर्यादां कौलीनाम् R. 5,87,12. *hinausgehen über:* येनेन्द्रियेण गृह्यते शब्दस्तस्य विषयभावमतिवृत्तो ऽर्थो न गृह्यते *jenseits von — gelegen* Comm. zu Njâjas. 2,1,51. *hinübergelangen über* eine Zeit so v. a. *so lange leben:* षण्मासान्नातिवर्तते Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,34. *vorbeikommen bei* so v. a. *übertreffen:* वेदस्याध्ययनेन बहूनृषीन् MBh. 3,11069 (S. 571). स्वर्गे संतानकुसुमान्यतिवर्तति (so die neuere Ausg.) Hariv. 8245. बान्धवस्नेहं राज्यलोभो ऽतिवर्तते Kathâs. 41,40. शर्मिष्ठयातिवृत्तास्मि (mit pass. Bed.) MBh. 1,3451. वाग्विभवातिवृत्तवैचित्र्य (mit act. Bed.) Mâlatîm. 16,1. *überwiegen:* अन्यो ऽन्यं नातिवर्तन्ते MBh. 3,13928. Verz. d. Oxf. H. 49,*b*,20. *hinwegkommen über* so v. a. *überwinden, widerstehen, entgehen, entrinnen, loskommen von:* असाध्या नातिवर्तन्ते प्रमेहा रजनीं यथा। ज्वराग्निं तथा नातिवर्तन्ते तथा दृश्या गुदोद्भवाः ॥ Suçr. 2,52,7. 8. 406,14. यदातिवर्तितुं बाहुबलं नाशक्नुतां मम Kathâs. 121,67. एतन्मुखं मम R. 5,6,14. मृत्युम् Kauç. 15. ते शुक्रमेमतदतिवर्तन्ति Mund. Up. 3,2,1. दिष्टम् MBh. 5,7543. दैवं पौरुषेण 13,1932. R. Gorr. 2,20,20. Daçak. 73,6. त्रीन्गुणान् Bhag. 14,21. Bhâg. P. 6,4,14. कालम् R. Gorr. 2,80,23. Bhâg. P. 8,21,20. स्वभावम् Spr. 4309. दोषम् MBh. 3,16679. भवितव्यम् Kathâs. 37,236. पूर्वकर्म 101,296. वैधात्रीर्वामताः Râga-Tar. 4,413. *hinweggehen über* so v. a. *versäumen, vergessen, unterlassen, verletzen:* यथा पुष्पाणि च फलानि च। स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम् Spr. 3394. समयम् MBh. 2,693. वेलां महोदधिः R. Gorr. 2,30,30. 6,103,18. नियोगम् R. Schl. 2,21,42. शासनं भर्तुः R. Gorr. 2,23,8. धर्मम् 30,30. 6,4,20. सत्यम् Kathâs. 98,53. *Jmd nicht beachten, keine Rücksicht nehmen auf Jmd, sich gleichgiltig verhalten gegen Jmd:* अनुव्रतां सतीं भार्याम् — अतिवर्तेत दुष्टात्मा R. 2,75,36. भ्रातरं धार्मिकं श्रेष्ठम् MBh. 2,2258. त्वां समासाद्य वैदेहि — कः पुमानतिवर्तेत साक्षादपि पितामहः R. 5,22,14. *sich vergehen gegen Jmd:* अपत्यलोभाद्या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते M. 5, 161. आत्मानं नातिवर्तेः R. 2,111,7. आत्मानं नातिवर्तस्व R. Gorr. 2, 120,7. यथाहं कर्मणा वाचा शरीरेण च राघवम्। सततं नातिवर्तेयम् 6, 101,27. 103,18. अतिवृत्त *der sich gegen Jmd vergangen hat* 3,56,22. 5, 80,14. — 2) intrans. *a*) *vorüberziehen* MBh. 3,12168. — *b*) *verstreichen:* नातिवर्तेत तत्क्षणम् R. 1,32,2. संध्याकालो ऽतिवर्तते 44,62. 51,20 (48, 23 Gorr.). 86,20. 5,7,53. वयो यदतिवर्तते 75,5. Pankat. 174,9. ed. orn. 49,18. तयोः प्रत्यहमन्योऽन्याहारदानेन u. s. w. कालो ऽविवर्तते Hit. 25, 17. fg. 62,22. आ षोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते *zu spät sein* M. 2,38. — *c*) *lassen von* (abl.): गौरवान्नातिवर्तते R. Gorr. 2,62,31. यथा मे हृदयं नित्यं नातिवर्तति राघवात् 6,101,28. — *d*) अतिवृत्त *weit fortgelaufen* R. 3,50,6. *weit entfernt von:* त्वं नातिवृद्धा वयसा नातिवृत्तश्च यौवनात्। कथमल्पेन कालेन पृथिवीमटसि द्विज ॥ Mârk. P. 61,11. *längst vergangen:* °कथक Spr. 5321. — Vgl. अतिवर्तन, °वर्तव्य° (°वर्त्तव्य), °वर्तिन्. — caus. 1) *übertreten —, austreten lassen:* पुरीषम् Suçr. 2,516, 9. — 2) = simpl. 1) *Jmd nicht beachten, keine Rücksicht nehmen auf:* अतिवर्त्य तौ MBh. 10,235.

— अभ्यति *bei Jmd vorbeifahren:* हन्ति स्मात्र पिता पुत्रं रथेनाभ्यतिवर्तते (रथेनाभ्येत्य संयुगे ed. Bomb.) MBh. 7,1391.

— व्यति 1) trans. *übersetzen über, passiren:* सागरम् R. 5,36,3. *hinüberkommen über* so v. a. *entgehen, entrinnen:* दिष्टम् MBh. 8,1731. — 2) intrans. *a*) *verstreichen:* सा रात्रिर्व्यत्यवर्तत MBh. 3,16722. 7,2794. Hariv. 4419. R. 2,91,74 (100,75 Gorr). R. Gorr. 2,79,38. 4,8,48. 44, 109. 48,6. 50,3. 5,22,12. 76,15. 7,9,8. — *b*) *lassen —, weichen von* (abl.): सत्यात् R. Gorr. 2,62,30.

— समति *vorüberziehen bei* (acc.): इन्द्रियाणां वशानुगम्। अर्थाः समतिवर्तन्ते हंसाः शुष्कं सरो यथा MBh. 5,1299. *entgehen, entrinnen:* विधिम् Hariv. 7404. यथाभावम् Spr. 4388. Vgl. u. समभि.

— अधि 1) *hinrollen über* (loc.): अध्यू ष्वेषु पवयो ववृत्युः RV. 10,27, 6. — 2) *sich bewegen —, hinfliegen irgendwohin:* यतो यतो षट्चरणो ऽधिवर्तते ततस्ततः प्रेषितवामलोचना Çâk. 23. — caus. *hinrollen über* (acc.): अङ्गारम् (कपाले) TBr. 3,2,2,1.

— अनु 1) *nachrollen, sich nach —, entlang bewegen; folgen, nachgehen, nachwandeln, sich richten nach, nachstreben, sich hängen an:* अनु व्रतानि वर्तते कविभ्यान् RV. 1,183,3. सचा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः 4,30,2. शुभं यातामनु रथा अवृत्सत 5,55,1. घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वाम् 62,4. अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम् 8,6,38. 10,37,3. AV. 7,21,1. यं क्रव्यादनुवर्तते *verfolgt* 12,2,37. 11,9,21. TBr. 1,7,2,7. Pankav. Br. 12,6,8. Çat. Br. 4,5,2,9. सत्यं नो ऽनुवर्तस्यति 7,4,2,3.4. 8,2,2,7. — वर्त्म Bhag. 3,23. MBh. 3,15690. अपथ्यं मार्गम् R. 3,46,17. ऋषभपदवीम् Bhâg. P. 5,15,1. प्रज्ञास्तमनुवर्तन्ते समुद्रमिव सिन्धवः Spr. 3899. MBh. 2,2052. 15,342. Hariv. 12070. R. 2,24,20. 30,30. 88,15. 100,3. 7,10,8. Kumâras. 3,36. Çâk. 35,21. Spr. 148. Bhâg. P. 4,7,34 (°वर्तन्ती). 8,16,37. Sarvadarçanas. 177,13. छायेवानुवृत्ता *wie ein Schatten folgend* R. 3,12,11. अद्वेष्टृत्वादयः सद्गुणाश्चालंकारवदनुवर्तन्ते Vedântas. (Allah.) No. 148. ते ऽन्ववर्तन्पितृन्सर्वे यशसा च बलेन च so v. a. *kamen ihnen gleich an* MBh. 3,15940. Bhâg. P. 1,12,18. सतः *nachgehen, in Jmdes Fusstapfen treten* (bildlich) R. 5,23,7. Spr. 2621. सन्तो ऽसतां (gen.) नानुवर्तन्ते MBh. 1,3580. अनुवर्तितुमिच्छन्ति मातरं सततं सुताः *nachgehen, sich halten zu, anhängen* R. 4,19,25. 2,9,39. MBh. 5,65. 14, 17 (act.). Hariv. 5632. Kathâs. 46,58. *Jmd willfahren* R. 5,84,9. Spr. 258. 2655. 2925. Kathâs. 33,14. वस्त्राभरणप्रेषणादिना Daçak. 86,14. Bhâg. P. 3,16,21. पित्रा मामनुवर्तता 4,30,15. अनुवृत्त *zu Willen seiend, gehorsam* Kathâs. 1,66. लोकानुवृत्त n. *Gehorsam des Volkes* Spr. 1314. छन्दोऽनुवृत्त n. *das Willfahren* 2676. *Jmd beipflichten* MBh. 1,1799. Ragh. 14,43. अनुवृत्त *der sich einverstanden erklärt hat* MBh. 3,14838. *Etwas befolgen, sich bekennen zu, sich richten nach, anhängen, einer Sache nachgehen, sich hingeben:* चार्वाकमतमनुवर्तमानाः Sarvadarçanas. 2,3. 154,1.2. अहं तावत्स्वामिनशिक्षितवृत्तिमनुवर्तिष्ये Çâk. 23,14. तच्छीलमनुवर्त्स्यन्ति मनुष्याः MBh. 3,13109. विद्वांसो दैवमनुवर्तन्ते Spr. 2786. fg. 46 (II). स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते 4829. कृपणानामसह्यानां मा वृत्तिमनुवर्तिथाः MBh. 5,4534. R. 4,31,7. पितृपैतामहं वृत्तम् MBh. 3, 11638. R. Gorr. 2,14,10. दुष्कृतं पितुः R. Schl. 2,106,15. अनुवर्तन्त्याः

स्वभावमिह योषितः Bhâg. P. 6,18,39. पितुर्नियोगम् R. Gorr. 2,18,49. सद्बुद्धिम् 51. पैतामहीमाज्ञाम् 5,44,17. वाक्यम् 6,93,14. 7,59,22. Bhâg. P. 3,14,45. 4,4,19. 25,56. 5,4,14. धर्मम् MBh. 3,11636. 5,990 (eig. 995). R. Gorr. 2,18,23. 30,30. 5,7,4. M. 6,93. MBh. 3,14683. द्विजाग्र्यानुमतानुवृत्तधर्म Bhâg. P. 4,20,15 (= परंपराप्राप्त Comm.). अर्थधर्मो परित्यज्य यः काममनुवर्तते R. 2,53,13 (15 Gorr.). पुरुषाणां च गार्हस्थ्यमनुवर्तताम् Mârk. P. 29,1. व्रतम् Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 321. वैल्लाव्यम् Spr. 4626. शोकम् R. 4,6,13. क्रोधम् 6,101,16 (act.). गोत्रं यन्नानुवर्तसे *sich angelegen sein lassen* Hariv. 2531. क्लेशम् ebend. अनुवृत्तस्त्वया भगीरथगृहे प्रसादः so v. a. *an den Tag gelegt* Uttarar. 124,3 (167,10). बलं धर्मो ऽनुवर्तते *richtet sich nach, hängt ab von* MBh. 12,4841. कृतः पुरुषकारस्तु दैवमनुवर्तते 13,316. स्वार्थस्तम् (कालम्) अनुवर्तते Spr. 3925. — 2) *gerathen in, theilhaftig werden:* सद्यो भयं नानुवर्तन्ति सन्तः Spr. 5117. — 3) *nach und nach besetzen, — erfüllen:* तत्पुत्रपौत्रनप्तृणामनुवृत्तं तदन्तरम् Bhâg. P. 4,1,9. — 4) intrans. *a) erfolgen, hinterher sich einstellen, — erscheinen* Bhâg. P. 1,15,36. 7,2,47. स्पृहा मे जायते ऽत्यर्थं तुष्टिश्चाप्यनुवर्तते R. 3,49,8. अनुवृत्त Bhâg. P. 1,18,6. निशायामनुवृत्तायाम् 3,11,28. — *b) fortdauern* Bhâg. P. 3,11,23. Schol. zu Kap. 1,19. Sarvadarçanas. 115,22. *Geltung haben:* अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेष्वनुवर्तते Spr. 3475. *fortgelten* so v. a. *aus dem Vorhergehenden zu ergänzen sein* Comm. zu Njâjas. 2,1,58. — *c) sich benehmen gegen* (loc.): तथा न संज्ञा कन्यायां पुत्रयोश्चान्ववर्तत Mârk. P. 77,25. abwechselnd mit acc. und loc.: कथं स भगवान्रामो भ्रातॄन्वा स्वयमात्मनः। तस्मिन्वा ते ऽन्ववर्तन्त (der Comm. fasst अनु als adv. *hinterdrein*) प्रजाः पौराश्च ईश्वरे ॥ Bhâg. P. 9,11,24. — *d) heimkehren* R. Gorr. 2,35,40 wohl nur fehlerhaft für निवर्त्. — *e)* अनुवृत्त = वृत्त *rund, voll:* °मनोज्ञजङ्घ Pańkar. 3,5,14. — Vgl. अनुवर्तन fg., अनुवर्तिन्, अनुवृत्ति, कान्तानुवृत्त. — caus. 1) *fortrollen —, weiterrollen lassen:* एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः Bhag. 3,16. — 2) med. *(sich) schlicht hinstreichen:* केशान् TBr. 1,5,5,1. — 3) *verfolgen lassen* AV. 11,10,18. — 4) *nachfolgen lassen, anreihen an* (loc.) Çâṅkh. Br. 10,2. Çr. 3,16,12. Âçv. Çr. 5,3,11. — 5) *aus dem Vorhergehenden ergänzen* Schol. zu P. 1,3,63. 7,1,36. 8,3,12. — 6) *hineinlegen, hineinthun in* (loc.): स्थिरचरेष्वनुवर्तितांशः Bhâg. P. 3,31,16. — 7) *anwenden:* स चतुर्णामुपायानां तृतीयमनुवर्तयन् R. 4,54,6. — 8) *Jmd* (acc.) *anhalten zu* (loc.): लोकं धर्मे Bhâg. P. 4,16,4. — 9) *vorsagen, vorsprechen:* सावित्रीम् Pâr. Gṛhj. 2,3. *besprechen* Verz. d. Oxf. H. 269,b,29. *beantworten:* यद्यद्दर्ता ऽनुयुञ्जीत तत्तदेवानुवर्तयेत् MBh. 4,105. — 10) *Etwas geschehen lassen* R. 5,46,16. *Etwas gutheissen, beipflichten:* वनवासकृता बुद्धिर्मम धर्म्यानुवर्त्यताम् R. 2,21,49. — 11) *auf Jmdes Gedanken eingehen, Jmd zu Willen sein:* अनुज्ञानुवर्तित (= सेवित Comm.) Bhâg. P. 1,10,3. — 12) *es Jmd* (acc.) *nachthun* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 104.

— समनु *nachgehen, folgen, sich richten nach* Spr. 4363. Bhâg. P. 3,11,21. राजवृत्तं किल लोकः कृत्स्नः समनुवर्तते R. Gorr. 2,118,9. सत्यम् R. Schl. 2,14,8. प्रयोजनवतीं प्रीतिं लोकः समनुवर्तते 6,82,45. भूमिन्द्यः u. s. w. कालं समनुवर्तन्ते MBh. 3,11231. 11233 (act.). *folgen* so v. a. *gehorchen* R. 5,64,17. *folgen* so v. a. *die Folge von Etwas sein* Bhâg. P. 5,6,17. — caus. *Etwas geschehen lassen* R. 5,46,17.

— अप *aus der Lage kommen, sich verdrehen:* ग्रीवा Suçr. 1,255,19. *vom Wege abkommen:* युग्यम् M. 8,293. *sich seitwärts wenden:* संनिवृत्यापवृत्य (अपसृत्य ed. Bomb.) च MBh. 7,1164. *sich entfernen, sich fortbegeben* 1,1784. रक्षांसि 13,4384. Ragh. 6,58. 7,30. *sich zur Seite begeben* (?) R. ed. Bomb. 2,53,4. अपवृत्त *abgerutscht:* सव्यापवृत्तं ज्ञटामण्डलम् Hariv. 3046. 4440. R. 6,93,12. सायक so v. a. *abgeschossen* 4,54,19. *umgekippt:* पदा शकटः Bhâg. P. 2,7,27. *abhanden gekommen:* पितृपैतामहं राज्यम् MBh. 7,3077. Oefters fehlerhaft für अपवृक्त (s. u. वर्ज् mit अप) *absolvirt*, z. B. यूपे विरूढे ऽनपवृत्ते Çâṅkh. Çr. 13,4,1. अपवृत्ते कर्मणि Gobh. 1,9,17. Kâtj. Çr. 1,3,28. Âçv. Çr. 6,13,17. fehlerhaft für उपवृत्त MBh. 5,7164 nach der Lesart der ed. Bomb. Mallin. zu Kir. 12,50. Vgl. अपवर्त fg. — caus. 1) *abwenden:* अप तं वर्तया पथः ṚV. 2,23,7. तिर्यगपवर्तितदृष्टि Mâlatîm. 24,15. — 2) *dividiren:* कुदिनानि द्वादशभिरपवर्तितानि Comm. zu Gaṇitâdhj. Grahânajanâdhj. 9. Lîlâv. 4. 8. 15. *auf einen kleinern Maassstab reduciren:* इष्टापवर्तिता पृथ्वी Golâdhj. 8,12.

— व्यप *sich abwenden:* चेतः कथं कथमपि व्यपवर्तते मे Mâlatîm. 11,15. *abstehen von* (abl.) Uttarar. 94,5 (122,11).

— समप caus. *wegtreiben:* उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिम् ṚV. 10,172,4.

— अपि caus. *hineinschleudern in* (acc.): कर्तम् ṚV. 1,121,13.

— अभि 1) *sich begeben —, kommen nach, zu* (acc.): सहस्रसनिं वाजमभिवर्तस्व रथ Âçv. Gṛhj. 2,6,5. संवत्सरः सर्वाणि भूतान्यभिवर्तते Çat. Br. 8,4,1,15. मथुराम् Hariv. 6442. वनम् R. Gorr. 2,43,4. 73,12. 7,21,9. जाह्नवीमभिवृत्तायाः (सरय्वाः) *sich ergiessend in* R. Schl. 1,26,10. *hinzutreten zu* 2,91,37 (100,36 Gorr.). *sich Jmd nähern, an Jmd herantreten:* भार्याम् MBh. 1,4486. चन्द्रमाः — रोहिणीं नाभ्यवर्तत Hariv. 12796. 2705. 4978 (act.). ये चैनमभिवर्तन्ते याचितार इतस्ततः R. 1,31,7. 3,31,31. 52,15. 4,62,13. 6,99,43. अथोस्त्री मत्संभवा सौम्य धनैघैरभिवर्त्स्यते Hariv. 4482. *losgehen auf Jmd* (in feindlicher Absicht), *überfallen, angreifen:* दस्यून् ṚV. 5,31,5. MBh. 1,4114. 3,11518. 11722. 11963. 5,7243. 6,4. 2362 (act.). 2666. 9,787 (act.). Hariv. 11043 (S. 791). R. 6,2,48. 19,19. intrans. *sich herbewegen, herbeikommen:* इत एव Mṛkkh. 98,21. Çâk. 8,23. 80,3. Mâlatîm. 11,7. Prab. 13,9. 20,2. आरात् Ragh. 2,10. *sich hinbewegen:* यतो यतो षट्चरणो ऽभिवर्तते Çâk. 23, v. l. वक्रेण von einem Planeten Bhâg. P. 5,22,14. *in feindlicher Absicht herankommen:* संग्राममेवाभिमुखा अभ्यवर्तन्त R. 7,27,24. त्वां योद्धुमभिवर्तते 6,4,23. युद्धार्थम् 7,27,7. युद्धाय 75,41. संग्रामे 28,7. स्प्रष्टुं (यस्य ed. Calc.) राजसहस्राणि — समरे नाभ्यवर्तन्त वेलामिव महार्णवः MBh. 4,578. *sich hinwenden:* (तेषाम्) मुखानि चाभ्यवर्तन्त येन याता तिलोत्तमा 1,7707. दीर्घारण्यानि दक्षिणां दिशमभिवर्तन्ते *sich hinstrecken, sich hinziehen nach* Uttarar. 32,18 (43,2). *über Jmd kommen* so v. a. *sich Jmds bemächtigen:* शङ्का मामभ्यवर्तत R. 5,56,143. — 2) *überwinden:* येनेन्द्रो अभिवावृते ṚV. 10,174,1. 2. — 3) *aufziehen* (von Wolken) R. 2,91,25 (अभ्यवर्षन्त ed. Bomb.) = 100,22 Gorr. *sich erheben, beginnen:* रथिनां रथिभिश्च संप्रहारो ऽभ्यवर्तत MBh. 4,1050. *anbrechen* (von der Nacht) R. 2,48,26. 62,19. 85,14 (92,23 Gorr.). R. Gorr. 2,10,6. संध्या 1,29,22. 2,95,23. *sich erheben* (von einem Geräusch u. s. w.): स्तुतिशब्दो ऽभ्यवर्तत (न्ववर्तत ed. Bomb.) R. Schl. 2,65,3. साधु साधिति शब्दश्च अ-

त्तरीत्ते ऽभ्यवर्तत 3,35,95. — 4) *sich befinden:* पूर्वम् so v. a. *obenan stehen* R. 6,1,8. *da sein:* ममाप्येषा सदा — हृदि कामो ऽभिवर्तते MBH. 5,6095. *Statt finden* UTTARAR. 39,3 (52,17). न च धर्मो ऽभ्यवर्तत *vorhanden sein* R. GORR. 2,45,4. — 5) *zuwenden:* तच्छीघ्रं दर्शनं मह्यमभिवर्तत्तु (= अभिवर्तयत्तु Comm.) कार्यिणा: so v. a. *mögen vor mir erscheinen* R. 7,53,25. — 6) fehlerhaft für अति in der Bed. *besiegen* HARIV. 4152 (अति die neuere Ausg.). *verstreichen* MBH. 13,2900. 14,367. (सं-नि ed. Bomb.). — Vgl. अभिवर्तिन्, °वृत्ति, अभीवर्त. — caus. 1) *überfahren:* वर्तयंत तपुषा चक्रियाभि तम् RV. 2,34,9. — 2) *überwinden:* यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन् AV. 12,1,5. अभि त्वा सोमो अवीवृतत् RV. 10,174, 3. — 3) *zum Herrn machen über* (dat.): तेनास्मानभि राष्ट्राय वर्तय RV. 10,174,1.

— समभि 1) *sich Jmd nähern:* यवीयसः कथं भार्या ज्येष्ठो भ्राता — समभिवर्तेत सद्वृत्तः सन् MBH. 1,7261. *auf Jmd losgehen* 7,1507. *heran-, herbeikommen* HARIV. 4934. 5007. — 2) *wiederkehren, sich wiederholen* SUÇR. 2,495,3. — 3) *anbrechen* (von der Nacht) MBH. 5,5134. — 4) *sich verhalten:* तूष्णीम् R. 7,13,15. — 5) fehlerhaft für समति in der Bed. *vorüberziehen bei* MBH. 5,1299 nach der Lesart der ed. Bomb. (richtig समति ed. Calc.). *entgehen, entrinnen* Spr. 4388, v. l. *vernachlässigen, unberücksichtigt lassen:* वचः MBH. 1,6854. *davonlaufen* R. 2,28, 8. *verstreichen* R. 1,8,10 (समभिवर्तत ed. Bomb.).

— अव s. अववर्तिन्.

— अभ्यव *sich zuwenden:* यथाह्वितस्याग्नेरङ्गारा अभ्यववर्तेरन् TBR. 1, 1,5,9. — caus. *herwenden* ÇAT. BR. 5,1,4,4. 4,3,5.

— न्यव scheinbar MBH. 7,1046, wo aber mit der ed. Bomb. ये न्यवर्तन्त st. न्यववर्तन्त zu lesen ist.

— समव caus. *zuwenden, kehren gegen* ÇAT. BR. 3,5,3,8. 9.

— आ 1) act. trans. *herbeiwenden, zurückwenden:* को अध्वरे मरुत आ ववर्त RV. 1,165,2. 6,63,1. ओ षु वर्त्त मरुतो विप्रमच्छ *wendet herbei* sc. den Wagen, also so v. a. *kommet her* 1,165,14. *umdrehen* ÇÂÑKH. ÇR. 5,10,26. — 2) med. intrans. (im Veda das perf. act.) *herbeirollen, — kommen; zurückkehren* (auch so v. a. *wiedergeboren werden*); *sich wenden:* आ कृष्णेन रजसा वर्तमानः RV. 1,35,2. रथमावृत्य *beschreiten* (wenn überhaupt hierher zu ziehen; = अवस्थाप्य SÂJ.) 56,1. 164,47. स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः 3,32,5. आवृतें infin. 42,3. भ्रातरमा ववृत्स्व 4,1,2. रथैः 5,77,3. आ स्तोमासो अवृत्सत 8,1,29. VS. 10,19. AV. 12,2,41. 52. KAUÇ. 72. आवर्ततां सेना *komme herbei* MBH. 3,12589. 6,2666. नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव । शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति ॥ Spr. 1529. KHÂND. UP. 4,17,9. MAITRJUP. 2,5. धेनुरावर्वृते वनात् *kehrte zurück* RAGH. 1,82. 2,19. KHÂND. UP. 4,4,5. VARÂH. BRH. S. 5,49. BHÂG. P. 1,15,44. 4,9,25. 5,13,14. 14,38. 7,15,47. 8,19,12. 9,3,30. 10,53,24. 88,26. MÂRK. P. 40,14. पुनर् ÇAT. BR. 5,5,2,4. 13,1,2,4. PRAÇNOP. 1,9. ved. Cit. beim Schol. zu KAP. 1,84. BHAG. 8,26. KATHÂS. 45,112. Verz. d. Oxf. H. 50,*b*,30. प्रयुद्धानां प्रभग्नानां पुनरावर्तताम् MBH. 6,1668. पुनरावर्तमानां च ददर्श सरितम् R. 5,16,32. इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते KHÂND. UP. 4,15,6. अग्नो भूत्वा पराङावर्तत *sich wenden* ÇAT. BR. 3,4,1,7. सव्येन KÂTJ. ÇR. 3,7,18. प्रदक्षिणम् 6,8,18. KAUÇ. 6. दक्षिणम् MBH. 13,462. ऐन्द्रीमावृतम् *einen Gang einschlagen* KAUSH. UP. 2,8. 9. आवृत्यावृत्य *sich beständig drehend* MUIR, ST. IV, 97. अर्कस्यावर्तमानस्य *der sich neigenden Sonne* R. 4,22,34. *zurückkehren* so v. a. *sich wiederholen, wiederholt werden* ÂÇV. ÇR. 12,10,5. ÇÂÑKH. ÇR. 6,9,4. 11,16. 13,19,14. VS. PRÂT. 4,165. SIDDH. K. zu P. 8,2,18. द्विर्द्विरावर्तम् KÂTJ. ÇR. 19,3,20. 20,2,4. स संप्रहारस्तेषां मम च — आवर्तत *erneuerte sich* MBH. 3,12100. *zurückkehren von* so v. a. *sich losmachen von:* मन्युवशात् 5,1277. आवृत्त *hergewandt* KÂTJ. ÇR. 15,9,14. *hergebracht* (Wasser) AIT. BR. 2,20. ÇÂÑKH. ÇR. 6, 7,3. *zurückgekehrt* M. 7,82. KATHÂS. 12,34. 51,65. 162. BHÂG. P. 6,1,58. *sich drehend:* चक्र MAITRJUP. 6,28. *umgewandt, umgekehrt* AV. 9,7,23. KHÂND. UP. 2,2,2.3. MBH. 13,4057. *abgewandt* KIR. 11,51. चतुस् KATHOP. 4,1. MAITRJUP. 6,1. आवृत्तमनाः समस्तात् Verz. d. Oxf. H. 256,*b*,29. *umgebogen* SUÇR. 1,24,9. *zur Seite geschoben:* शिरसा किंचिदावृत्तमौलिना HARIV. 5763. *wiederholt* ÇÂÑKH. ÇR. 12,2,25. 13,16,4. VS. PRÂT. 4,172. Comm. zu 173. स कृत्स्न एव संदर्भो ऽस्माकमावृत्तः UTTARAR. 115,16 (156,14). — 3) आवृत्त fehlerhaft für आवृत *bedeckt* MBH. 6,5491 (आवृता ed. Bomb.). = वृत COLEBR. und LOIS. zu AK. 3,2,41. — Vgl. आवर्त fgg., आवर्तिन्, आवृत्, आवृत्ति, अनावृत्त. — caus. ववर्तत्, ववर्तति, ववृत्तन 2. pl., ववृत्याम् u. s. w., ववृतीय, ववृतीत, ववृतीमहि, वर्तयध्यै. 1) *hinrollen lassen:* अश्रूणि MBH. 3,336. R. 2,47,16. *schwingen:* मुष्टिम् 6,78,21. — 2) *herwenden, sich wenden lassen, herführen, zurückführen:* अर्वाञ्चा वर्तया हरी RV. 4,32,15. आ ते मनो ववृत्याम मघाय 7,27,5. 36,4. 42,3. रथम् 48,1. आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः 68,4. 85,4. 93,6. 1,107,1. 152,7. 2,34,14. 5,43,2. ते नो वसून्या ववृत्तन 61,16. 6,68,1. 8,7,33. 77,4. 92, 11. 10,10,1. आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः 26,8. 72,3. VS. 23,7. *herbeilenken* sc. den Wagen so v. a. *herbeikommen:* आ नो ववृत्याः सुविताय RV. 1,173,13. med. MBH. 3,15684. — AV. 7,12,4. TBR. 2,1,8,1. तं प्रत्यञ्चमावर्तयन्ति *sie drehen den* (Wagen) *nach Westen* AIT. BR. 1,14. 3,15. 7,5. 8,10. आदित्यम् ÇAT. BR. 7,5,1,37. अश्वम् 13,2,6,2. हविर्धाने उभयतः शालाम् KÂTJ. ÇR. 8,3,21. दक्षिणेन चात्वालम् *aufstellen* 14,3,2. पशून् 16,3,12. अनावर्तयन्तः *ohne umzudrehen* ÇÂÑKH. ÇR. 16,1,20. अभ्यात्मम् *gegen sich drehen* LÂTJ. 2,11,19. ÂÇV. GRHJ. 1,20,9. KAUÇ. 56. रथं तूर्णमावर्तयस्व *führe vor* MBH. 7,78. आवर्तितैः शैवलैः *herangezogen, an sich gezogen* MÂLATIM. 153,3. स्वमाययावर्तितलोकतन्त्रः (so nach dem Comm.) *herbeigeschafft* BHÂG. P. 3,21,21. पशून् *zurückführen* MBH. 4, 1162. अश्वान् 1783. 16,233. अक्षमालिकाम् so v. a. *einen Rosenkranz abbeten* KATHÂS. 24,102. *verdrehen, umstellen, umwenden:* जिह्वाम् MBH. 13,4056. दिशः 1,2930. कालपर्ययम् HARIV. 2831. इदमावर्तितं शुभम् । स्थण्डिले कठिने सर्वं गात्रैर्विमृदितं तृणम् ॥ so v. a. *in Unordnung gebracht* R. 2,88,8. तस्मादावर्तितश्चैव क्रतुरिन्द्रेण ते *gestört, zu Nichte gemacht* HARIV. 11252. — 4) *wiederholen:* प्राणमासान् ÂÇV. ÇR. 12,6,11. KULL. zu M. 11,233. चतुस् *vier Mal* KÂTJ. ÇR. 7,8,9. द्विस् Ind. St. 8,442. ÇAÑK. zu KHÂND. UP. S. 56. SÂH. D. 637. आवर्तितम् (?) HARIV. 3799 nach der Lesart der neueren Ausg. (आवर्जितम् ed. Calc.). KÂM. NÎTIS. 11,64. — 5) *hersagen, hersprechen* R. 7,88,20. 109,4. BHÂG. P. 5,18,34. — 6) *heranziehen* so v. a. *gewinnen:* मनांसि MBH. 5,117. सामदानविभेदैश्च प्रतिलोमानुलोमतः । आवर्तयत वैदेहीं बहुदण्डोद्यमैरपि ॥ R. 5,24,34. अविसंवादनम् u. s. w. आवर्तयन्ति भूतानि Spr. 3628. vielleicht nur fehlerhaft für आवर्जयति, wie die ed. Bomb. an der ersten Stelle hat. — 7)

आवर्तित in der Stelle: सुध्मातमुतीक्ष्णावर्तिते ऽयसि Vâgbh. 26,2 vielleicht *ein wenig gebogen* (आ + वर्तित). — intens. *sich eilig —, sich wiederholt bewegen:* आ वरीवर्ति भुवनेष्वत्तः ṚV. 1,164,31. AV. 10,2,7. आ ये वयो न वर्वृतत्यामिषि गृभीता बाह्वोर्गवि ṚV. 6,46,14. आवर्वृततीः 10,30,10. किमावरीवः (nicht, wie Comm. und Neuere annehmen, von वृ) *regte sich Etwas?* 129,1. AV. 5,1,8.

— अन्वा med. (das perf. im act.) *herbeirollen* u. s. w.: अनु वामेकः पविरा ववर्त ṚV. 5,62,2. *nach Jmd sich hinwenden, Jmdes Gang folgen:* सूर्यस्यावृतमन्वा वर्ते VS. 2,26. Kaush. Up. 2,8. 9. TS. 1,6,6,2. अधर्युम् Lâṭj. 1,11,6. दक्षिणान्बाहूनन्वावर्तन्ते so v. a. *kehren rechts um* Çat. Br. 2,6,2,18. सव्यं बाहुम् Gobh. 3,7,13. — intens. *nachfahren:* अर्थमेतं रथीवाधानमन्वावरीवुः ṚV. 10,51,6. *sich entlang bewegen:* सर्वानृतूननु वायुरावरीवर्ति TS. 5,3,1,3.

— अपा *sich abwenden, sich trennen von:* अपावृत्य गार्हपत्यात्क्रव्यादा प्रेत AV. 12,2,34. अप चक्रा आवृत्सत (अ° v. l.) Çâṅkh. Çr. 5,13,3. — Vgl. अपावृत्त (auch in den Nachträgen) fg. und अनपावृत्.

— अभ्या *sich herwenden zu* (acc.), *kommen zu; wiederkehren:* पुरा संबाधादभ्या ववृत्स्व नः ṚV. 2,16,8. सखे सखायमभ्या ववृत्स्व 4,1,3. 31,4. 43,5. 6,19,3. 10,83,6. AV. 3,17,9. 7,105,1. 10,5,38. 11,1,22. VS. 12,103. MBh. 5,4128. अभ्यावर्तं स्तोमा भवन्ति Pañkav. Br. 16,4,11. अभ्यावर्तस्व (उपावर्तस्व ed. Bomb.) ब्रह्म अक्षरात्मनि विश्रुतम् *sich wenden an, seine Zuflucht nehmen zu* MBh. 5,1679. act.: अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी *zu euch wandte sich* ṚV. 7,59,4. अभ्यावृत्त *zurückgekommen, zurückgebracht* VS. 8,58. *hingekommen zu* (acc.) Çat. Br. 7,5,1,7. *hingewendet zu* Kâtj. Çr. 7,4,40. Vgl. अभ्यावर्त fgg. — caus. 1) *herwenden* sc. den Wagen so v. a. *herkommen:* कतम ऊती अभ्या ववर्तति ṚV. 10, 64,1. — 2) *wiederholen:* सावित्रीम् Çâṅkh. Gṛhj. 4,8.

— उदा caus. *hinaustreiben, verdrängen:* उदितो गन्धर्वमवीवृताम AV. 14,2,36. स्रोतांस्युदावर्तयति पुरीषं चातिवर्तयेत् *austreten machen* Suçr. 2,516,9. — Vgl. उदावर्त.

— उपा 1) *sich hinwenden, herantreten, gelangen zu* (acc., auch loc.), *sich auf Jmdes Seite stellen, Jmd zufallen:* अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम् ṚV. 8,20,18. यूपाद्भिभ्यत उपावर्तन्त तमेवाभ्याप्युपावृत्ताः Ait. Br. 2, 3. 3,36. 7,19. 23. पुनरेवैनं वामं वसूपावर्तते TBr. 1, 1,2,3. 6,2,3. यत्तरान्वा इयमुपावर्त्स्यति TS. 2,4,3,1. 5,2,1,4. वृद्धिम् 4,6,5. उप न आ वर्तस्व *komme zu uns* 9,1. 6,1,6,6. Çat. Br. 1,3,1,10. देवान् 1,1,11. 2,4,2,11. श्रोत्रं 4,3,3,8. स यत्प्रातःसवन उपावर्त्स्यत् 4,1,18. यज्ञे 1,5,2,7. पुरस्ताद्देवाः प्रत्यञ्चो मनुष्यानुपावृत्ताः 3,1,1,6. उपावृत्य *hinzutretend* MBh. 4, 1986. R. Gorr. 2, 17, 24. तमेव मनसा ध्यायत्युपावर्तस्त्वरिद्दरा MBh. 1,3850. अम्बरीषमुपावृत्य *sich wendend an* Bhâg. P. 9,5,1. उपावर्तस्व (अभ्यावर्तस्व ed. Calc.) तद्ब्रह्म अक्षरात्मनि विश्रुतम् *seine Zuflucht nehmen zu* MBh. 5,1679 (nach der Lesart der ed. Bomb.). अक्षय्यं तस्य तच्छ्राद्धमुपावर्तेत्पितॄन् *zu Theil werden* 1,2318. देवदृष्टं यथा पयः। अपर्तावपि — उपावर्तत मे Bhâg. P. 4,18,11. प्रदक्षिणामुपावृत्य *Jmd* (acc.) *die rechte Seite zuwendend* MBh. 2,1621. 3,4082. 12027. 4, 1784. 13,6887. R. 1,33,17 (34,15 Gorr.). R. Gorr. 1,67,29. 77,55. 2, 53,18. जम्बूमार्गादुपावृत्य *abbiegend* MBh. 3,4084. *zurückkehren, heimkehren* 1,7821. 2,1018. 1046. R. 3,25,22. 4,44,122. 6,97,25. Çâk. 8, 14. Kull. zu M. 12,124. उपावृत्त *gekommen zu:* त्वाम् (so die neuere Ausg. st. ताम्) Hariv. 5634. तस्मिन्यज्ञे R. Gorr. 1,13,7. *herangekommen:* उपात्तिकात् 4,59,14. संध्याकाल MBh. 5,325. Bhâg. P. 4,13,38. 6,14, 32. 9,6,30. 10,1,56. 33,39. 79,1. *zurückgekehrt, heimgekehrt* MBh. 14, 1546. 15,506. R. 2,55,11 (10 Gorr.). R. Gorr. 1,4,35. 2,24,3. वनवासात् 57,27. Ragh. 1,49. Çâk. 46, 6. 7. Mârk. P. 17,8. ब्रह्मचर्याश्रमात् 28,17. Daçak. 94,8. — 2) *sich niederlassen:* उपावर्तावहे (अपवर्तामहे ed. Bomb., यथाकथंचित् शयनं कुर्मः Comm.) भूमावास्तीर्य स्वयमर्जितैः R. 2, 53, 4. — 3) *Statt finden, geben:* यत्र धर्माधर्मौ सह कार्येण कालत्रयं च नोपावर्तते Çaṅk. bei Windischmann, Sanc. 127. — 4) उपावृत्त *sich wälzend* AK. 2,8,2,18. R. 5,26,21. — 5) उपावृत्त Hariv. 6547 fehlerhaft für उपावृत, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. उपावर्तन, उपावृत्. — caus. 1) *zuwenden:* आ वां धियो ववृत्युरध्वराँ उप ṚV. 1,135,5. तेभ्यो दशतमुपावर्तयेत् Çat. Br. 4,5,8,16. Kâtj. Çr. 10,1,19. — 2) *herbeiführen* Daçak. 94,8. *zurückführen* MBh. 2, 2671. R. 2,19,13 (16,13 Gorr.). R. Gorr. 2,16,16. 92,19. 93,4. 99, 33. Bhâg. P. 9,15,36. — 3) *herbiegen, herziehen:* अर्शः Suçr. 2,47,9. *zurückziehen:* पादौ प्रक्षिप्य सा पूर्वं पावके — दग्धौ दग्धौ पुनः पादावुपावर्तयत (अग्रे ऽग्रे प्रसारितवती Nîlak.) MBh. 9,2784. — 4) *sich erholen lassen:* अश्वान् MBh. 7,3739. 3741. — 5) *Jmd von Etwas abbringen* MBh. 15,504.

— अभ्युपा *sich hinwenden —, gelangen zu:* क्रीतस्य मनुष्यानभ्युपावर्तमानस्य Ait. Br. 1,12. 4,1. अन्नाद्यम् TS. 5,4,9,2. अभ्युपावृतत् Çat. Br. 2,2,1,13. 6,1,11. 4,2,5,7. 8. 9,1,2,19. °वृत्त *zurückgekehrt* R. Gorr. 1,61,10. 2, 65,13.

— पर्युपा *zurückkehren:* °वृत्त R. 4,29,22.

— न्या caus. *Jmd von Etwas* (abl.) *abstehen machen, abhalten von:* हरिणा दामोदरे न्यावर्तिते रणात् Kathâs. 50,62.

— पर्या 1) *sich umwenden, sich abwenden:* पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात् AV. 7, 100,1. मत्पर्यावृतः (°वृत्तः) 11,4,26. यच्छयानः पर्यावर्ते *wenn ich mich umdrehe* 12,1,34. TBr. 2,1,1,7. 8. 6,5. पतन्ती पर्यावर्तमाने *sich drehend* 3,11, 2,4. यदा खलु वा आदित्यो न्यङ्रश्मिभिः पर्यावर्तते TS. 2,4,10,2. 3,2,2,1. Çat. Br. 2,4,2,21. 3,9. पुरुषः पराङ्पर्यावर्तते 14,7,2,2. प्रसव्यम् Çâṅkh. Gṛhj. 2,3. पर्यावृत्येति गुह्यदर्शनात् Kull. zu M. 3,217. पर्यावर्तत्थ रथेन वीरो भोगी यथा पादतलाभिमृष्टः MBh. 4,2106. पर्यावर्तत ऽऽश्रमाय *er richtete seine Schritte zurück nach* 3,10074. पर्यावर्द्राष्ट्रं तदवाम्यायन् etwa *es hat sich das Reich gewendet* ṚV. 10, 124, 4. परि ऽआवर्त् Padap. — 2) *in den Besitz gelangen von:* प्रद्युम्नो यावत् — पर्यावर्तेद्दरारोहां वज्रनाभसुताम् Hariv. 8599. — Vgl. पर्यावर्त fg. — caus. *umwenden, umdrehen* TS. 6,4,2,1. Çat. Br. 6,5,1,12. Khând. Up. 1,5,2. — desid. *umdrehen wollen:* समानं चक्रं पर्याविवृत्सन् ṚV. 7,63,2.

— अनुपर्या *sich wenden in der Richtung von, nachfolgen:* दक्षिणं बाहुम् Çat. Br. 9,3,1,17. इन्द्रस्यावृतम् TS. 1,7,6,3. 5,2,5,4. 7,1,2,4. अनु वै श्रेयांसं पर्यावर्तन्ते *man stellt sich hinter* Ait. Br. 2,20. 3,11. स एतमेव (सूर्यं) शस्त्रेणानुपर्यावर्तेत *er folge gleichsam dem Laufe der Sonne* 44.

— अपपर्या *sich wegwenden:* अपपर्यावृत्य पुरोच्छ्रासादभिपर्यावर्तमानो जपेत् Gobh. 4,3,12.

— अभिपर्या *sich zuwenden, sich drehen nach* oder *um* AV. 12,3,8. 15,7,4. वयांस्यन्यतरमर्धमभि पर्यावर्तन्ते *die Vögel drehen sich nach der*

einen (und anderen) Seite TBr. 1,2,6,3. प्रजापतिमभि पर्यावर्तत *wandte sich gegen* 2,1,6,5. असौ वै लोक इमं लोकमभिपर्यावर्तत *drehte sich um* Ait. Br. 4,27. TS. 2,5,8,5. Âçv. Çr. 2,7,2. Lâṭj. 3,2,13. Gobh. 4,3,12.

— उपपर्या *sich gegen Jmd wenden* Çat. Br. 2,2,4,4. उपपर्यावर्त Kâṭh. 10,5 in Ind. St. 3,478.

— प्रतिपर्या *sich in entgegengesetzter Richtung wenden* Çâñkh. Çr. 4, 4,19. Kauç. 88.

— विपर्या *sich zurückwenden* Kauç. 1. — caus.: ईदृङ्ङ् राष्ट्रं वि पर्यावर्तयति *ein Solcher wendet die Herrschaft um* d. h. *bringt sie in fremde Hände* TS. 2,5,1,1.

— प्रा caus. *zur Erscheinung bringen, bilden, schaffen:* नदीं प्रावर्तयित्वा MBh. 8,4009. प्रावर्तयत्ति ते वर्णानाश्रमांश्चैव सर्वशः Hariv. 461. Aus metrischen Rücksichten statt प्रव°. — Vgl. प्रावर्तक.

— प्रत्या *sich wenden gegen:* प्रतीचीनः प्रति मामा वंवृत्स्व RV. 10, 98,2. *zurückkehren, heimkehren* Kathâs. 15,91. 40,97. 57,112. Bhaṭṭ. 9,12. Hit. 43,21. 103,14. Râǵa-Tar. 6,204. निशां श्रियम् 4,481. °वृत्त *zurückgewandt:* °मुखी Spr. 3327. *zurückgekehrt* 588. Megh. 40. Râǵa-Tar. 4,340. 5,215. 233. निशां भुवम् 473. प्रत्यावृत्तः पुनरिव स मे जानकीविप्रयोगः Uttarar. 15,10 (21,8). *wiederholt* Varâh. Bṛh. S. 89,7. Vgl. प्रत्यावर्तन. — caus. *zurücktreiben:* आमूरज प्रत्या वर्तयेमा RV. 6.47,31. Çat. Br. 13, 1,4,3. 4,2,16.

— व्या 1) *sich trennen; sich absondern, sich aussondern von* (instr.): इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन् RV. 10,18,3. व्यावृत्तः स पाप्मना AV. 10,7, 40. TS. 6,2,6,4. अ° TBr. 1,1,8,1. समाना अतव एकेन पदेन व्यावर्तन्ते TS. 5,3,1,2. 7,1,10,1. 2. व्यावृत्य शरीरेणामृतो ऽसत् Çat. Br. 10,4,3, 9. *schied sich* Pañkav. Br. 24,11,2. वाक्सृष्टा न व्यावर्तत *sich sondern, distinct werden* Kâṭh. 27,3. Lâṭj. 10,19,14. Z. d. d. m. G. 9, lxiii. न स पाप्मना (abl.) व्यावर्तते Çat. Br. 14,4,2,2. द्वौ वा एतावस्य पन्थानावन्तर्बहिश्चाहोरात्रेणैतौ व्यावर्तेते *sondern sich als Tag und Nacht* Maitrjup. 6,1. पन्था व्यावर्तते द्विधा *theilt sich* MBh. 3,16855. *sich öffnen* Suçr. 2,332,17. °वृत्त *geöffnet* 193,5. °वृत्तदेह (गिरि) *gespalten, auseinandergehend* Hariv. 3937. तद्बलमार्तमासीद्यावर्तमानं (आर्तन्रूपमावर्तमानं ed. Bomb.) ददृशे भ्रमत्तत् so v. a. *sich auflösend* MBh. 7,8145. *sich abwenden —, sich losmachen von:* व्यावर्ततान्योपगमात्कुमारी Ragh. 6, 69. व्यावृत्ता परस्वेभ्यः — तस्करता Ragh. 1,27. व्यावृत्तचेतसो ऽन्येभ्यो भावेभ्यः Kathâs. 112,67. नैव बुद्धिश्च व्यावृत्ता तस्य Hariv. 7291. विषयव्यावृत्तात्मन् Ragh. 3,70. विषयव्यावृत्तकौतूहल Vikr. 9. बाह्यविषयव्यावृत्तेन्द्रिय Comm. zu Maitrjup. 6,1. *abziehen, sich fortbegeben* Spr. 2162. *sich umwenden* 2691. *zurückkehren* Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 55. Râǵa-Tar. 1, 300. 5,85. Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,11. व्यावृत्य स्ववासं गतः Vet. in LA. (III) 8,20. 17,20. 18,20. °वृत्त Varâh. Bṛh. S. 3,5. Hit. 14,13. व्यावृत्तशिरस् *umgewandt, abgewandt* R. 5,13,33. *verdreht* Shaḍv. Br. 4,4. (सा मृता) व्यावृत्तनेत्रभ्रमरा पद्मिनीव हिमाहता *verdreht* und *abgewandt* Kathâs. 52,152. *sich absondern von* so v. a. *sich nicht vereinbaren lassen —, sich nicht vertragen mit:* क्रमाक्रमौ स्थायिनः सकाशाद्यावर्तमानौ Sarvadarçanas. 9, 17. fg. Comm. zu Njâjas. 2,2,2. Nilak. 112. व्यावृत्त 216. Tarkas. 41. Z. d. d. m. G. 7,289, N. 3. Bhâshâp. 72. विपत्तव्यावृत्तत्व Sâh. D. 122,10. — 2) *auseinanderkommen* so v. a. *eine Streitsache zur Erledigung bringen:* ते समावद्वीर्या एवासन्न व्यावर्तन्त Ait. Br. 3,49. 36. — 3) *sich wälzen* R. 4,19,3. — 4) *sich neigen*, von der Sonne: व्यावर्तत् MBh. 7,3660. *zu Ende gehen, aufhören, zu Nichte werden:* व्यावृत्ते ऽहनि (ऽर्यम्णि ed. Bomb.) 21. व्यावर्तमानं (so die neuere Ausg.) तु महद्भवद्भिः पुण्यकीर्तिभिः। धृतं यदुकुलम् Hariv. 4142. युगेष्वावर्तमानेषु धर्मो व्यावर्तते पुनः॥ धर्मे व्यावर्तमाने तु लोको व्यावर्तते पुनः। MBh. 3,11259. fg. व्यावृत्तसर्वेन्द्रियार्थ Pañkat. 5,4. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. व्यावृत्तगति (वायु) Kumâras. 2,35. — 5) व्यावृत्त *vollkommen frei:* आत्मन् Kap. 1,161. — 6) व्यावृत्त = वृत H. 1484. Colebr. und Lois. zu AK. 3,2,41. — Vgl. व्यावर्तन, व्यावृत्ति. — caus. 1) *trennen, sondern von* (instr.) TBr. 1,1, 8,1. पाप्मना 3,2,6. तनुवः 3,7,2,5. मनश्च वाचं च Çat. Br. 2,3,1,17. 8, 5,4,7. Kâtj. Çr. 12,3,13. mit abl.: शुक्लादयो हि गवादिकं सजातीयेभ्यः कृष्णगवादिभ्यो व्यावर्तयत्ति Sâh. D. 10,15. Çañk. zu Khând. Up. S. 9. *bei Seite legen:* दण्डम् R. 7,22,46. *beseitigen* Vikr. 154. Nilak. 113. Ânandagiri zu Khând. Up. S. 56. Sarvadarçanas. 5,9. 9,18. नैतच्छक्यं मम वचो व्यावर्तयितुमन्यथा so v. a. *zurücknehmen* MBh. 9,2046. यः कश्चन रघूणां हि परमेकः परंतपः। अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः॥ *einen Feind beseitigen, eine allgemeine Regel aufheben* Ragh. 15,7. *Jmd von Etwas abbringen* R. 2,111,21 (120,24 Gorr.). व्यावर्तितुम् = व्यावर्तयितुम् Mârk. P. 42,1. — 2) *zerstreuen, hierhin und dorthin werfen:* ऊरुवातविनिर्भग्ना द्रुमा व्यावर्तिताः पथि MBh. 3,12447. — 3) *umdrehen, umwenden:* व्यावर्तये (so die ed. Bomb.) रथं तूर्णं नदीवेगमिवार्णवात् MBh. 8, 1050. वक्त्रम् Râǵa-Tar. 4,23. — 4) *vertauschen* Hariv. 4174. — 5) *ersinnen, erdenken* (?) Daçak. 88,7. — Vgl. व्यावर्तक. — desid. *trennen wollen:* व्याविवृत्सते Çat. Br. 12,4,4,2.

— समा 1) *wiederkehren, sich wiedervereinigen; heimkommen* (insbes. vom Schüler, der die Lehrzeit beendigt hat): समाववर्ति विष्ठितो जिगीषुः RV. 2,38,6. समु प्रिया आववृत्रन्सदाय 3,32,15. VS. 20,23. Âçv. Gṛhj. 3,5,15. 8,1. Kauç. 59. Gobh. 3,5,23. Pâr. Gṛhj. 2,5. Sâmav. Br. in Ind. St. 4,377. गुरुणा च समनुज्ञातः समावर्तेत वै द्विजः MBh. 13,6426. Kull. zu M. 3,2. गुरोस्तु यः। लब्धानुज्ञः समावृत्तः AK. 2,7,10. M. 3,4. 8,27. Bhâg. P. 10,80,28. Kull. zu M. 3,212. 7,43. समावृत्ते (so zu lesen) जने *heimgekehrt* R. Gorr. 2,83,1. *herantreten, herbeikommen* MBh. 5, 7276. R. 5,6,7. अथ समाववृते कुसुमैर्नवैः — मधुः Ragh. 9,24. कुरीन्द्रेषु समावृत्तेषु सर्वशः MBh. 3,16282. नानादेशसमावृत्ताः 9,98. *sich wenden gegen:* प्रदक्षिणं समावृत्य स तौ *ihnen die rechte Seite zukehrend* R. 4,12, 22. — 2) *von Statten gehen:* तथापि लोके कर्माणि समावर्तन्ति (समापतन्ति hat Nilak. gelesen) MBh. 12,1155. — 3) समावृत्त *beendigt:* °व्रत (समावृत° ed. Bomb.) MBh. 1,3256. — Vgl. समावर्तन, समावृत्ति. — caus. *heimtreiben:* सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति RV. 7,79,2. *heimkehren lassen, entlassen* (einen Schüler) Khând. Up. 4,10,1.

— अभिसमा *heimkehren* TBr. 1,1,5,4. Kâṭh. 37,1. Çâñkh. Gṛhj. 1,1. Khând. Up. 8,15.

— उपसमा dass.: सायं पशव उप समावर्तन्ते TBr. 3,2,1,5. Çat. Br. 3,9,1,3.

— उद् 1) *zerspringen:* तस्य मूर्धोद्ववर्त Çat. Br. 4,4,3,4. — 2) *umstürzen:* तद्यथा वृक्ष उन्मूलः शुष्यत्युद्वर्तते ऽचिरात् Bhâg. P. 8,19,40. — 3) *ausgehen, excidi:* नास्यास्माल्लोकात्प्रजोद्वर्तते Çat. Br. 14,5,1,5. — 4) *in Wallung, in Aufregung gerathen:* उद्वर्ततामत्तकाले समुद्राणामिव

स्वन: Hariv. 13676. Bhâg. P. 10,13,56. *austreten* Suçr. 2,263,11. — 5) उद्वृत्त *a) angeschwollen* Suçr. 2,274, 17. मेघ MBh. 9,469. स्तन Spr. 472 (zugleich *in Wallung gerathen*). *hervorragend:* सितोद्वृत्तोर्ध्वदंष्ट्रिन् (शितदंष्ट्रोर्ध्वधारिन् die neuere Ausg.) Hariv. 12540. — *b) in Wallung gerathen, aufgeregt:* उद्वृत्तोर्मि MBh. 1,1215. सलिलार्णव 7, 4498. 5186. 8, 2509. R. 5,9,13. 6,75,15. Ragh. ed. Calc. 7, 56. Mârk. P. 9,17. °नक्र (समुद्र) Ragh. 16,79. पाकोद्वृत्तेषु दोषेषु Suçr. 2,7,6. पवन 274,11. हृदय R. 5,76,17. Bhâg. P. 10,13,56,v.l. — *c) ausschweifend, ungebührlich sich benehmend, übermüthig:* उद्वृत्तं सततं लोकं राजा दण्डेन शास्ति वै MBh. 1, 1718. 3,1893. 13,4765. 7194. Spr. 3246. Varâh. Bṛh. S. 19,19. Râǵa-Tar. 3,495. Bhâg. P. 10,41,35. पुत्र, गज Kâm. Nîtis. 7,6. अद्य ते बलमुद्वृत्तं शमये ऽग्निमिवाम्भसा R. 4,9,78. अधर्म Râǵa-Tar. 6,61. — *d)* fehlerhaft für उद्वृत्त *weit geöffnet, aufgerissen:* उद्वृत्तलोचन MBh. 7, 5406. उद्वृत्तनयन 9, 432. उद्वृत्तानि Mârk. P. 14,62. vielleicht auch als Bez. einer best. Stellung der Hände beim Tanze Verz. d. Oxf. H. 202,*a*,25. — Nach H. an. 3, 252 ist उद्वृत्त = उत्तलित (d. i. उत्तुलित), परिभुक्त und उज्झित. — Vgl. उद्वर्त fgg. — caus. 1) *zersprengen:* अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः ṚV. 8,14,13. TBr. 1,7,1,7. मुखजेनाग्निना क्रुद्धो लोकानुद्वर्तयन्निव MBh. 3,13608 (= Hariv. 699). 16283. दस्युसंघान् 5,1873. वेलामुद्वर्तयन्तीव (सागराः) 6,106. Hariv. 10626. 13101. — 2) *hinausschwingen* oder *schleudern* Kauç. 16. — 3) *anschwellen machen:* उद्वर्तितेक्षणा so v. a. *mit hervortretenden Augen* Kathâs. 29,80. — 4) पद्भ्यामुद्वर्तितः *der mit den Füssen sich Bewegung macht* Suçr. 2,139,12. — 5) *salben* (vgl. उद्वर्तन): शवशरीरमुद्वर्तितम् Spr. 209. Subhâsh. 75.

— समुद् *anschwellen:* समुद्वृत्त (महोदधि) MBh. 2,1488. — caus. *anschwellen machen, in Wallung versetzen, aufregen:* समुद्वर्तितवेगानां सागराणाम् R. 6,19,20.

— उप 1) *darauf treten:* स चेद्वध्यायाडुपवर्तेत वा Âçv. Çr. 10,8,3. — 2) *herantreten, herankommen:* कालो नरवरश्रेष्ठ समीपमुपवर्तितुम् (समीपमुपगत्योपवर्तितुं ज्ञापयितुं प्रेषित इति शेषः Comm.) R. 7,104,13. उषस्युपवृत्तायाम् Bhâg. P. 10,70,1. *an Jmd herantreten* so v. a. *treffen, zu Theil werden:* उत्पन्नमिह लोके वै जन्मप्रभृति मानवम्। विविधान्युपवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ॥ Spr. 3773. नाधर्मेणागमः कश्चिन्मनुष्यानुपवर्तते M. 1,81, v. l. — 3) *sich erholen:* मुक्ता कृयान्पाययित्वोपवृत्तान्। पुनर्युक्ता MBh. 1,192. स्नातोपवृत्तैस्तुरगैः 5,7164. पीतोपवृत्ताः (हयाः) 7,4346. — 4) *zappeln:* उपवृत्तजठरशफरीकुल (अपवृत्त Comm.) Kir. 12, 50. — 5) आत्ममांसोपवृत्त von einem Todten gesagt wohl so v. a. *sich vom eigenen Fleische nährend* MBh. 12,5726. — 6) AV. 19,56,3 wird उपावर्तत (von वर्त् mit उपा) zu betonen sein. — Vgl. उपवर्त fg. und उपवृत्ति. — caus. 1) *hinstreichen* (die Haare) TBr. 1,5,5,7. — 2) *sich erholen lassen:* विपर्याणोपवर्तित (तुरग) Kathâs. 94,17.

— समुप *sich benehmen, verfahren:* कामवृत्तो ऽन्वयं लोकः कृत्स्नः समुपवर्तते Spr. 2608, v. l.

— नि 1) *zurückkehren* (auch vom *Wiederkehren in dieses Leben, wiedergeboren werden*) AV. 10,1,17. सध्रीचीना नि वावृतुः ṚV. 1,105,10. यद्ध प्रसर्गे त्रिककुम्निवर्तत् 121,4. नि वर्तध्वं मानु गात 10,19,1. नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे 95,17. VS. 8,42. TS. 6,1,6,2. MBh. 2,42. 2671. 3,8450. 15774. fg. 5,7374. 13,2756. R. 1,9,64. 2,40,47. 42,12. 45,14. वनात्तस्मात् 52,94. R. Gorr. 1, 9,63. 4,13,20 (पुनर्). 5,79,11. Kumâras. 4,30. Ragh. 2,40. Çâk. 8,14, v. l. 70, 14. Vikr. 3. 66,2. Spr. 398. 2547. 3549. 5218. Varâh. Bṛh. S. 6,6. Kathâs. 18,94. 32,48. 124. Daçak. 66,14. 90,6. गत्वा गत्वा निवर्तन्ते चन्द्रसूर्यादयो ग्रहाः। अद्यापि न निवर्तन्ते त्वालोकाकाशमागताः ॥ Sarvadarçanas. 40,21. fg. मनसः प्राप्यते ह्यात्मा यमाप्त्वा न निवर्तते Maitrjup. 4,3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,122. Bhag. 8,21. 15,6. Sâṁkhjak. 39. एतमध्वानं पुनर्निवर्तन्ते Khând. Up. 5,10,5. सदोगृहम् Ragh. 3,67. 9,14. 11,57. पुरीं द्वारवतीं प्रति MBh. 3,785. 4,866. आश्रममाप R. 1,2,23. Bhâg. P. 3,17,1. 23,43. व्रजन्ति न निवर्तन्ते स्रोतांसि सरितां यथा। आयुरादाय मर्त्यानां तथा रात्र्यहनी सदा ॥ Spr. 2924. यायिन्यो न निवर्तन्ते सतां मैत्र्यः सरित्समाः: *rückwärts gehen* 345. न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम् Çâk. 53, v. l. act. Bhag. 15,4. MBh. 1,3242. 3,37. 15755. 16766. 16773. 16775. 16780. 16786. 12,1911. Hariv. 4814. R. 1,17,21. 4,43,62. 7,37,5,3. न्यवर्तन्मनोभिः Bhaṭṭ. 3,17. निवर्त्स्यन् 6,5. निवृत्त MBh. 4,142. R. 2,24, 31. R. Gorr. 2,58,36. 3,50,28. 70,11. 76,34. Ragh. 7,61. 9,82. ad Megh. 112. स्वगृहम् Pańkat. 95,25. Hit. 14,12. दृष्ट्वा निवृत्तमादित्यं प्रवृत्तं चोत्तरायणम् MBh. 13,7711. °हृदय 3,2352. °यौवन Ragh. 8, 5. — 2) *zurückkehren* so v. a. *abprallen:* अश्मानमिव (आसाद्य) परशुः पातितः (निवर्तेत) R. Gorr. 2, 114, 32. निवृत्तः सागराच्छरः 3,43,24. — 3) *fortgehen aus der Schlacht* so v. a. *den Rücken kehren, fliehen:* रणान्निववृते न च Bhaṭṭ. 5, 102. MBh. 3,12118. आहवे ये न्यवर्तन्त 7, 1046. निवृत्त 5,5964. अनिवृत्तयोधिन् 7,5828. Bhâg. P. 6, 10, 33. — 4) *sich abwenden:* रामं मे ऽनुमता दृष्टिरद्यापि न निवर्तते R. 2, 42, 33 (41, 28 Gorr.). ह्रिया चक्षुर्निववृते मनस्तु न कथं च न Kathâs. 12,30. सर्वान्तःपुरवनिताव्यापारं प्रति निवृत्तहृदयस्य Mâlav. 35. एनोनिवृत्तेन्द्रिय Ragh. 5,23. स्वप्ननिवृत्तलौल्य 7,58. निवृत्तं कर्म im Gegensatz zu प्रवृत्त *eine jeglichem persönlichen Interesse abgewandte Handlung, eine Handlung, bei der man an keine Belohnung weder diesseits noch jenseits denkt,* M. 12,88. fgg. Bhâg. P. 4,4,20. 7,15,47. प्रवृत्तं च निवृत्तं च शास्त्रम् 4,29,13. *enden mit, bei* (abl.) Varâh. Bṛh. S. 102,7. — 5) *sich neigen* (von der Sonne): निवृत्तश्च दिवाकरः MBh. 3,16821. निवृत्ते किंचिदादित्ये R. Gorr. 2,54,4. — 6) *abstehen von Etwas* (abl.) so v. a. *Etwas einstellen, aufgeben:* न सामि निवर्तेत *er höre nicht in der Mitte auf* Çat. Br. 2,3,2,14. यज्ञात् Gobh. 1,4,30. Kenop. 19. 23. M. 1,53. सर्वमांसस्य भक्षणात् 5,49. 10,98. MBh. 5,7308. रोषात् R. 2,78,24. तपसः R. Gorr. 1,65,21. अनुक्रोशान्मृदुत्वाच्च 3,69,2. Spr. 2558. 4762. नृत्यात् Sâṁkhjak. 59. Varâh. Bṛh. S. 74,14. गृहान्मम Kathâs. 12,100. 42,171. Bhâg. P. 3,8,21. प्रकृतेः Mârk. P. 43,6. Pańkat. 162,8. तावदादाय निवर्तन्ते Sarvadarçanas. 2,17. fg. act. MBh. 5,7310. 13,4855. R. Gorr. 1,65, 2. 7,13,32. Mârk. P. 113,37. न्यवृत्सन् Bhâg. P. 5,9,8. न्यवृतत् Bhaṭṭ. 1,18. निवृत्त MBh. 2,1770. R. Gorr. 2,35,21. प्रतिग्रहात् Jâǵń. 3,48. परस्त्रीभ्यः MBh. 7,2762. 2764. 13,1661. Einschiebung nach Kâm. Nîtis. 5,91. Kathâs. 22,232. Bhâg. P. 4,12,1. 19,15. Mârk. P. 114,1. मधुमांस° MBh. 7,2764. परपरिवाद° Spr. 174. 3215. आहार° Pańkat. ed. orn. 41,13. निवृत्त so v. a. विरक्त *der der Welt entsagt hat* Bhâg. P. 3,16, 19. 7,13,25. — 7) *sich losmachen —, sich befreien von Etwas:* मृत्योः MBh. 1,6760. पापात् Bhag. 1,39. मोहात् R. 3,29,15. *sich lossagen von Etwas:* निवृत्ता ऽस्म्यद्य याजनात् MBh. 14,127. *sich lossagen von einem*

Kampfe so v. a. *einen Kampf vermeiden, verweigern:* न निवर्तेत संग्रामात् M. 7,87. समाहूतश्च न शक्यति निवर्तितुम् MBh. 2,1720. ग्राहूतो न निवर्तेयम् 2047. ग्राहूतो न निवर्तेयं समरं प्रति शत्रुभिः Hariv. 7327. *sich lossagen von Jmd* Daçak. 77, 6. *absehen von Etwas, keine weitere Rücksicht auf Etwas nehmen:* दोषात् Hit. 71, 22. *kommen um:* निवृत्तानां मुखात् R. Gorr. 2,53,2. — 8) *inne halten, verstummen:* इत्युक्त्वा मा न्यवर्तत Kathâs. 28,131. न्यवृतत् 128; statt dessen विरराम 125. — 9) *weichen, aufhören, vergehen, schwinden, sein Ende erreichen:* पानात्पिपासा निवर्तते Çat. Br. 10,2,6,9. TS. 7,2,3,3. Kauç. 94. सर्वे पाप्मानो ऽतो निवर्तन्ते Khând. Up. 8,4,1. रसो ऽप्यस्य निवर्तते Bhag. 2,59. फलमेवास्य दैवस्य प्रतीपस्य निवर्तते R. Gorr. 2,20,32. निवर्तेत संतापः 114, 32. महाव्याधिः Suçr. 1,119, 5. Bâlab. 9. इच्छा Spr. 935. वाञ्छा 2387. स्वभावो न निवर्तते 1032. दोषः 2276. 5186. प्रायः Râga-Tar. 6,339. संमृतिः Bhâg. P. 4,29,35. स्नेहः Çuk. in LA. (III) 35, 21. यावदुक्तं निवर्तते P. 1,3,85, Sch. Sarvadarçanas. 108, 8. 116,8. तत्कार्यं निवर्तेत *der Process werde eingestellt* M. 8, 117. रेणुः *sich legen* Bhâg. P. 8, 10, 37. हेतुना तु निवर्तिष्यति केनचित् (मम वचः) so v. a. *seine Wirkung verlieren* MBh. 9,2047. न्यवर्तन्तातपत्राणि राज्ञामपगतोष्मणाम् so v. a. *wurden unnütz* Kathâs. 18, 71. यत्तिएयोत्सादितं (पूर्वं वनं) ग्रद्यापि न निवर्तते so v. a. *zeigt heute noch Spuren davon* R. 1,26,31. निवृत्त *gewichen, aufgehört, vergangen, geschwunden:* घनाः R. 4,27,23. शिरोरुजा MBh. 3,16829. Bhag. 14,22. ग्ररण्यवास R. 2,44,14. 51,19. 66,23. 6,22,17. निवृत्तसंताप Suçr. 2,169,15 (°संतापीय *ein Heilmittel von der Gattung der* Rasâjana 14; vgl. 1,10,2). Sâṁkhjak. 65. Kumâras. 1,52. Spr. 2717. Varâh. Bṛh. S. 8,5. 32,29. Kathâs. 21,121. Daçak. 65,17. Bhâg. P. 1,8, 27. 3,5,6. 25,41. Halâj. 2,244. यत्र वाचो निवृत्ताः Spr. 1427. Sarvadarçanas. 11,18. 109,1. 131,9. ग्रप्रतेरिति वर्तते उताहो निवृत्तम् *aufgehört zu gelten* so v. a. *nicht mehr zu ergänzen* Pat. zu P. 8,3,67. Schol. zu 1,2,23. इत उत्तरं गोत्राधिकारो निवृत्तः *zu Ende* zu P. 4,1,111. निवृत्ते ऽहनि *vergangen, abgelaufen* MBh. 5,7235. R. Gorr. 2,57,4. चतुर्दशसु वर्षेषु निवृत्तेषु R. Schl. 2, 52, 28. नीराजन Varâh. Bṛh. S. 45,11. 5,97. Bhâg. P. 3,14,36. निवृत्तकर्मन् R. 4,27,11. — 10) *unterbleiben, wegfallen, nicht eintreten:* प्रवरास्तु निवर्तन्ते Lâṭj. 1,12,19. 2,4,15. 9,16. Kauç. 63. 141. ग्रात्मनस्त्यागिनां चैव निवर्तेतोदकक्रिया M. 5,89. 11, 151. न निवर्तेत्क्रतुर्मम MBh. 1,2137. निवृत्तयज्ञस्वाध्याया (वसुंधरा) 1, 7673. fgg. निवृत्तमांस so v. a. मांसनिवृत्त *kein Fleisch geniessend* Uttarar. 72,4. 5 (93,2). ग्रनिवृत्तमांस 5. निवृत्तदक्षिणा so v. a. *eine von einem Andern verschmähte Gabe* Çat. Br. 3,5,1,25. *abgehen, nicht zukommen:* ज्येष्ठता च निवर्तेत ज्येष्ठावाप्यं च यद्धनम् M. 11,185. त्रयो धर्मा निवर्तन्ते ब्राह्मणात्क्षत्रियं प्रति। ग्रध्यापनं याजनं च तृतीयश्च प्रतिग्रहः॥ so v. a. *der* Kshatrija *hat drei Rechte weniger als der Brahmane* 10,77. निवर्तेरंश्च तस्मात्तु संभाषणसहासने। दायाद्यस्य प्रदानं च यात्रा चैव हि लौकिकी॥ *kommen ihm nicht zu* 11,184. यतो वाचो निवर्तन्ते so v. a. *wofür es keine Worte giebt* Taitt. Up. 2,4. — 11) *fortgehen zu, übergehen auf* (loc.): ऐश्वर्यधनरत्नानां प्रत्यमित्रे (so die ed. Bomb.) निवर्तताम्। दृष्टा (so die ed. Bomb.) हि पुनरावृत्तिर्जीवितानाम् MBh. 12,5090. — 12) *gerichtet sein auf:* ग्रथ वा ते मतिस्तत्र राजपुत्रि निवर्तते MBh. 5,7016. एवं तस्य तदा बुद्धिर्दमयन्त्यां न्यवर्तत *war der Art in Bezug auf* 3, 2347. — 13) परा निववृते क्रिया Ragh. 12,56 fehlerhaft für पुनरावववृते क्रिया oder परा ववृतिरे क्रियाः, wie die v. l. hat. निवृत्त R. 2,54,4 und Pañkat. 110,20 fehlerhaft für निर्वृत्त (so die Bomb. Ausgg.), निवृत्तास्य Hariv. 13891 fehlerhaft für विवृत्तास्य, wie die neuere Ausg. liest. भस्म निवृत्तां भूमिम् Suçr. 2,35,20 wohl fehlerhaft für भस्मनिवृतां भू°. — Vgl. निवर्त fgg., निवर्तिन्, निवृत्, निवृत्ति, नीवृत्, दुर्निवृत्त. — caus. 1) *nach unten drehen* (den Kopf) TBr. 2,2,10,7. — 2) *kürzen, zurückschneiden* (die Haare): स वै न्येव वर्तयते केशान्न वपते Çat. Br. 5, 5, 3,6. VS. 3,63. TBr. 1, 5, 5, 1. यो ग्रस्याः पृथिव्यास्त्वचि निवर्तयत्योषधीः 4. लोहितायसेन निवर्तयते 6, 5. केशान्निवर्तयीत श्मश्रूणि वापयीत (so) Âçv. Çr. 2, 16, 23. — 3) *zurückkehren machen, — heissen, zurückführen, zurückbringen:* (ग्राशवः) मघा नेमिं नि वावृतुः ṚV. 8,46,23. पुनरेना नि वर्तय 10,19,2. AV. 6,77,3. TS. 3,3,10,1. साह्नेन परमेण धनंजयम्। न्यवर्तयत MBh. 1,7972. 3,16808. 15, 497. 499. R. 1,1,37 (40 Gorr.). वनाद्भ्रातरम् 2,73,22. fg. R. Gorr. 1,79, 33. 13,20. Ragh. 2,3. Çâk. 24,7. Kathâs. 13,30. 39,174. 53,99. 72,179. Râga-Tar. 2,163. Pañkat. 208,25. ed. orn. 4,6. Bhaṭṭ. 15,21. वाजिराज्ञो निवर्तितः Mâlav. 90. Ragh. 7,41. रथम् 3,47. R. 2,46,31. 60,3. चौरहस्ताद्धनम् MBh. 1,7764. — 4) *zurückhalten, abhalten, abbringen, ablenken von* (abl.) MBh. 2,1770. 5,1729. 7120. 7323. 7350. R. 2,27,15. R. Gorr. 2,27,26. 35,21. Ragh. 3, 43. 5, 50. Çâk. 16,19. 40,1. Kathâs. 22,178. 28,140. Bhaṭṭ. 3,8. 6,40. तपसस्तम् MBh. 1,2920. 7644. 5,7311. देहत्यागात् Kathâs. 57,172. Bhâg. P. 4, 8, 82. ग्रधरात्कन्दुकाच्च करम् Kumâras. 5,11. ग्रसह्यहुंकारनिवर्तितः शिलीमुखः 54. धूमो निवर्त्येत समीरणेन Ragh. 7,52. व्यूहम् R. 5,83,3. ह्रियमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6,59. Vedântas. (Allah.) No. 12. नगेन्द्रसक्तां नृपस्य दृष्टिम् Ragh. 2, 28. 7, 20. चित्तम् Mârk. P. 40, 5. शकुन्तलाव्यापारादात्मानम् Çâk. 19,1. ततो हृदयम् 53. ग्रस्मादमदीप्सितान्मनः Kumâras. 5,73. दैवं पौरुषेण R. 2,23,21. R. Gorr. 2,20,24. 1,60,27 (58,24 Schl.). दैवं पुरुषकारेण को निवर्तितुमुत्सहेत् MBh. 5,7345. Spr. 2033. दैवं लोकान्निवर्तितुम् R. Gorr. 2,20,33. तन्निवर्तय लङ्केशाद्दण्डमेतम् 7,22,45. — 5) *aufgeben, fahren lassen:* युद्धे बुद्धिम् MBh. 6,5604. त्वय्येव सत्कामनिवर्त्य बुद्धिम् R. 2,102,9. R. Gorr. 2,21,5. 23. 3,61,31. मतिं परदाराभिमर्शनात् 56, 15. मतिं रामात् 5,25,5. किमात्मयोगेन निवर्तितेन 4,29,24. तस्मान्निवर्त्य ममताम् Mârk. P. 76,38. मयि भावो निवर्त्यताम् 74,31. निवर्तिताखिलाहार Bhâg. P. 1,13,53. *vorenthalten:* त्वया समुद्यतो दातुं कथं सो ऽर्घ्यो निवर्तितः Mârk. P. 69,51. यस्ते समुद्यतः शापो द्वितीयः स निवर्तितः *unterdrückt* 112,24. *Etwas rückgängig machen* M. 9,233. Jâǵn. 2,31. — 6) *aufhören machen, entfernen, beseitigen:* प्रकृतिम् Çâṅkh. Çr. 9,1,3. निन्दां स्तुत्या Ragh. 15,57. Çaṅk. zu Khând. Up. S. 16. Kull. zu M. 8, 351. ग्रविद्याम् Sarvadarçanas. 57,17. 116,3. — 7) *verschaffen, verleihen:* रूपं निवर्तयाम्यद्य तव कान्तम् Hariv. 587. Mârk. P. 106,38. — 8) *vollführen:* यज्ञम् R. 1,42,25 (43,22 Gorr., निर्वर्तयामास ed. Bomb.). 62,22. सर्वम् 2,22,4. 24. पितुर्न्यवर्तयच्छ्रीमान्निवापम् R. Gorr. 2,111,34. निवर्तितात्मनियम Bhâg. P. 8,16,28. — 9) = simpl. *abstehen von Etwas* MBh. 5,7370. R. 7,83,19. — Vgl. निवर्तक fgg., निवर्तनीय fgg. und दुर्निवर्त्य. — desid. s. निविवृत्सु.

— ग्रनुनि caus. *zurückbringen:* रार्थंतरस्य योनिम् Ait. Br. 5,1,4.

— ग्रभिनि *heimkehren, einkehren bei, wiederkehren:* मदनोद्यानयात्रा-

भिनिवृत्त *heimgekehrt von* MÂLATIM. 13,2. देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ṚV. 1,89,2. तं कृत्ये ऽभिनिवर्तस्व AV. 10,1,7. absol. अभिनिवर्तम् TS. 6,4,11,4. ÇAT. BR. 12,8,2,30. KÂTH. 27,9. act.: पुष्पफलनमभिनिवर्तति *wiederholt sich* SHAḌV. BR. 5,7. — caus. 1) *wiederholen* GOBH. 2,9, 18. — 2) *aufhören machen, entfernen*: श्रमं मानसम् HARIV. 11267.

— उपनि 1) *wiederkommen, sich wiederholen;* येन सूक्तेन निविदमतिपद्येत न तत्पुनरुपनिवर्तेत वास्तुक्रमेव तत् *das kann nicht wiederkehren, es ist abgethan* AIT. BR. 3, 11. 39. ṚV. PRÂT. 11, 30. उपनिवर्तमिव वै पशवः सौपवसे रमन्ते ÇÂÑKH. BR. 11, 5. — 2) *umkehren* so v. a. *anders werden, sich bessern* MBH. 12,2882. स चेन्नो परिवर्तेत wohl richtiger ed. Bomb. st. स चेन्नोपनिवर्तेत der ed. Calc. — caus. *wieder herbeiholen* AIT. BR. 7,5.

— अभ्युपनि *wiederkommen, sich wiederholen* ÇÂÑKH. BR. 11,5.

— परिनि *vorübergehen, vergehen*: क्लेशाः परिनिवर्तन्ते केषांचिदसमोक्षिताः Spr. 3990.

— प्रतिनि 1) *umkehren, zurückkehren, rückwärts gehen* MBH. 1,6941 (°वर्त्स्यथ). 4,1659. 7,1809. R. 7,27,18. 30,4. 70,4. UTTARAR. 94,11 (122, 17. fg.). KATHÂS. 85,25. PAÑKAT. 163,3. अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते Spr. 134 (II). अत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते 3426. यथा नद्याः प्रतिस्रोतःप्लावि द्रव्यं प्रतिप्तं प्रतिनिवर्तते SUÇR. 1,317, 8. von der Vorhaut 296,15. °वृत्त MBH. 1,6761. 13,1884. रणात् HARIV. 9046. ÇÂK. 28. प्रवासात् ed. CH. 72,6. सूर्योपस्थान° VIKR. 5,5. VARÂH. BṚH. S. 11,34. UTTARAR. 93,17 (122,1). PAÑKAT. 257,9. दोष SUÇR. 2,353,18. °गुणप्रवाह BHÂG. P. 3,28,35. — 2) *entrinnen, entgehen*: दिष्टात् MBH. 12, 1152. — 3) *aufhören, sich legen*: आप्रतिनिवृत्तगुणोर्मिचक्र BHÂG. P. 2, 3,12. — Vgl. प्रतिनिवर्तिन्. — caus. *zurückkehren machen, zurückführen*: यतो याता नरेन्द्राणां सेनाः प्रतिनिवर्तिताः R. 4,27,8. *rückwärts gehen machen, zurückwenden, abwenden*: मनः पयश्च निम्नाभिमुखम् MALLIN. zu KUMÂRAS. 5,5. दृष्टिं ततः BHÂG. P. 11,13,35.

— विनि 1) *zurückkehren, umkehren* MBH. 3,8451. 4,1646. 5,7085. 6, 4989. 14,556. Spr. 3781. R. 2,25,2. R. GORR. 2,1,35. fg. 3,5,6. 5,39,14. 7,23,53. VARÂH. BṚH. S. 11,39. act. MBH. 4,1381. युद्धात् 5,7315. R. 4, 40,69. विनिवृत्त JÂGÑ. 1,325. VARÂH. BṚH. S. 3,4. 6,4. 11,39. विनिवृत्तां करोम्यद्य (= विनिवर्तयामि) कृत्तकर्णाग्रनासिकाम् R. 1,28,10. RAGH. 8, 49. विनिवृत्ते दिनकरे प्रवृत्ते चोत्तरायणे MBH. 13,7702. — 2) *sich abwenden*: अधप्रकर्षाद्विनिवृत्तदृष्टिः R. GORR. 2,52,39. रावणाद्विनिवृत्तात्मा 5, 57,12 (st. dessen fälschlich विनिवृत्तार्थी 66,14). विनिवृत्तमतिर्बुद्धांभूव (विनिर्वृत्त° gedr.) MÂRK. P. 134, 58. सप्तरूपविनिवृत्ता (प्रकृति) so v. a. *befreit von* SÂÑKHJAK. 65. — 3) *abstehen von* (abl.) so v. a. *aufgeben*: देवनात् MBH. 2,2046. युद्धात् 5,7312. शीलयज्ञदानात् HARIV. 11268 (act.). तपसः R. GORR. 1,65,23. 67,10. स्वधर्मचरणाद्विनिवृत्तः 5,81,30. — 4) *weichen, aufhören, verschwinden*: गुरोर्दुष्टात् — गौरवं विनिवर्तते R. GORR. 2,62,34. विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः BHAG. 2,59. सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते M. 5,60. अद्य चारित्रशौण्डीर्यं त्वां प्राप्य विनिवर्तते R. 2,73,19 (विनिवर्तितम् ed. Bomb.). SUÇR. 2,372,18. SARVADARÇANAS. 67,6. हुताशनः so v. a. *erlischt* Spr. 1832. विनिवृत्तजरादुःख MBH. 14,561. नादाः प्रस्रवणानां च विनिवृत्ताः सदर्दुराः R. 4,29,13. °काम BHAG. 15,5. °शापा KATHÂS. 59,170. इक्ष्वाकुवंशजो राजा विनिवृत्तः स्ववंशकृत् *aufgehört zu sein* HARIV. 4237. सायन्तने सवनकर्मणि संनिवृत्ते *zu Ende gegangen* ÇÂK. 75, v. l. — 5) *wegfallen, unterbleiben* LÂṬJ. 10, 10, 11. PÂR. bei KULL. zu M. 5, 84. — Vgl. विनिवृत्ति. — caus. 1) *zurückkehren machen, — heissen, zurückführen*: आर्यं वनात् R. 2,82, 17. fg. (88,16 GORR.). MÂLATIM. 169,12. रथं संयुगात् R. 6,89,13. अस्त्रम् *zurückziehen* MBH. 5,7297. — 2) *sich abwenden machen, ablenken*: तेजोभिरस्य विनिवर्तितदृष्टिपातैः MÂLAV. 11. गमने तु कृतां बुद्धिं न ते शक्नोमि विनिवर्तयितुम् R. 2,24,30. — 3) *Jmd von Etwas abbringen*: रामाभिषेकसंकल्पात् R. GORR. 2,8,32. तपसः MÂRK. P. 76,46. — 4) *aufgeben, fahren lassen*: रणोत्साहम् R. 3,33,4. स्नेहम् Spr. 5012. — 5) *aufhören machen, beseitigen*: निखिलापदः Verz. d. Oxf. H. 171,*b*,45. R. ed. Bomb. 2,73,23. BHÂG. P. 4,7,39. 10,29,30. ÇÂK. 185. यस्मादपत्यकामो वै भर्ता मे विनिवर्तितः so v. a. *weil mein Gatte dahin gebracht worden ist, dass er keine Nachkommenschaft mehr wünscht* MBH. 13,4005. *Etwas rückgängig machen* M. 8,165. शापम् MBH. 1,1001. MÂRK. P. 115,5. यात्राम् VARÂH. BṚH. S. 95,25. तत्कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूयः ÇVETÂÇV. UP. = प्रत्यवेक्षणं कृत्वा ÇAṂK.

— संनि 1) *umkehren, zurückkehren* MBH. 3,40. 12231. 6,2250. 7,1164. HARIV. 8133. 10003. R. 1,42,4 (43,4 GORR.). 2,45,2 (43,2 GORR.). 4, 12, 32. 37,26. 40,70. 41,77. KATHÂS. 61,65. अर्को ऽस्तं संन्यवर्तत BHÂG. P. 7,2,35. act. MBH. 3,746. R. GORR. 1,42,10. 4,10,33. संनिवृत्त MBH. 6, 2250. 18,6. प्रवासात् HARIV. 8806. R. 3,30,26. RAGH. 7,68. 16,44. VARÂH. BṚH. S. 17,9. BHÂG. P. 10,77,21. — 2) *sich zurückziehen*: गतमभिमुखं संनिवृत्तं तथैव चतुः MEGH. 90. so v. a. *stocken* (vom Winde) SUÇR. 1,261, 12. 265,10. HARIV. 2189 (संनिवर्तयेत् die neuere Ausg.). — 3) *abstehen —, ablassen von* (abl.): साहसात् R. 3,33,2. 43,39. तपसः MÂRK. P. 99, 10. कश्मलात् BHÂG. P. 8,12,35. — 4) *weichen, aufhören*: संनिवृत्तपरिश्रम BHÂG. P. 9,20,10. — 5) *verstreichen* MBH. 14,367 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. संनिवर्तन, संनिवृत्ति. — 1) caus. *zurückkehren heissen, zurückschicken, zurückführen* MBH. 4,6. HARIV. 2189 (nach der Lesart der neueren Ausg.). R. 3,30,25. BHÂG. P. 1,10,33. 10,19,5. अन्ये संबन्धिनो विप्र मृत्युना संनिवर्तिताः *heimgeschickt* so v. a. *fortgeführt* MÂRK. P. 76, 33. — 2) *ablenken, abbringen*: नहि सत्यात्मनः — संनिवर्तयितुं बुद्धिः शक्यते R. 2, 34, 32. इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः प्रियेभ्यः (so die ed. Bomb.) संनिवर्त्य MBH. 7,2090. मित्रमकार्यात् 5,3318. रामं वनवासकृतोद्यमम् R. GORR. 2,16,39. — 3) *aufhören machen, unterdrücken*: तं घोषम् R. 2,81,4. अतिप्रसक्तिमिन्द्रियाणाम् Spr. 3750.

— निस् 1) act. *herausrollen lassen, auswerfen* (Würfel aus dem Becher) MBH. 4,24, wo die ed. Bomb. निर्वर्त्स्यामि st. निर्वत्स्यामि der ed. Calc. liest. — 2) *hervorkommen, hervorgehen, entstehen, sich entwickeln*: हस्तपादशिरसां पञ्च पिण्डका निर्वर्तन्ते SUÇR. 1,322,8. 9. द्रव्येषु पच्यमानेषु येष्वम्बुपृथिवीगुणाः। निर्वर्तन्ते ऽधिकाः 149,19. fg. *sich entwickeln zu, werden zu*: तस्य आत्तस्य तप्तस्य तेजो रसो निरवर्तताग्निः ÇAT. BR. 10,6, 5,2. तदाण्डं निरवर्तत KHÂND. UP. 3,19,1. निर्वृत्त *hervorgekommen, hervorgegangen, entstanden*: नवयौवननिर्वृत्तस्तन BHÂG. P. 8,8,43. मुद्गलाद्ब्रह्म निर्वृत्तं गोत्रं मौद्गलसंज्ञितम् 9,21,33. कर्मनिर्वृत्तैः फलैः RAGH. 17,18. P. 4,2,68. 4,19. 5,1,79. AK. 1,1,2,16. 3,2,50. H. 1487. VOP. 7,75. द्वापञ्चाशद्येन दुर्गाणि राज्ञा निर्वृत्तानि so v. a. *erbaut, angelegt* Inschr. in

Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 15. कारणेन निर्वृत्तं (so die ed. Bomb.) कृत्रिमम् (वैरम्) Pankat. 110,20. — 3) *erfolgen, zu Stande kommen:* निरवर्त्स्यन्न चेद्वार्त्ता सीतायाः Bhaṭṭ. 8,69. निर्वर्त्स्यत्युत्पतुसंघातः 16,6. देशो निर्वृत्तसंग्रामः R. 3,70,10. नियोगार्थे निर्वृत्ते M. 9,62. 61. वाक्यार्थविचारणाध्यवसाननिर्वृत्ता हि ब्रह्मावगतिः Çaṅk. bei Wind. Sancara 108. नाशं निर्वृत्तम् Bhaṭṭ. 7,33. — 4) *vollbracht werden, sein Ende erreichen:* निर्वर्तितास्य यावद्भिरितिकर्तव्यता नृभिः M. 7,61. एवं मक्तोत्सवस्तत्र निर्वर्तते स्म Kathâs. 23,86. निर्वृत्त *fertig, zurechtgemacht* Kâtj. Çr. 22,3,50. *ausgewachsen:* फल Suçr. 1,158,13. 159,18. *vollbracht, beendigt, zu Ende gegangen, vergangen:* कार्ये कर्मणि निर्वृत्ते R. ed. Bomb. 5,41,5. °चूडक M. 5,67. वैश्वदेव 3,108. विवाह MBh. 1,4067. स्वयंवर 3,2242. दोहद Mâlav. 80. निर्वृत्तमात्रे दिवसे R. ed. Bomb. 2,54,4. Çâṅkh. Gṛhj. 1,18. 2,12. — 5) *zurückkehren,* fehlerhaft für निवर्त् MBh. 5,5361 (निवर्तिष्ये ed. Bomb.). Kathâs. 26,114. Pankar. 1,14,68. — 6) निर्वृत्त fehlerhaft für निर्वृत MBh. 1,775 (मुनिर्वृता ed. Bomb.). Kâm. Nîtis. 4,20. — Vgl. निर्वृत्ति. — caus. 1) *herausbringen, herausschaffen:* अङ्गारान् Çat. Br. 12,8,1,6. Kâtj. Çr. 25,11,35. अद्य निर्वर्तयिष्यन्ति शत्रुमांसानि दानवाः *fortschaffen, fortbringen* Hariv. 13756 nach der Lesart der neueren Ausg. *hinauslassen aus* (abl.) Râǵa-Tar. 6,96, wo wohl निरवर्त्यत zu lesen ist. — 2) *hervorbringen, zu Stande bringen, bewirken:* einen Wagen ṚV. 10,135,5. मुखबाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्॥ M. 1,31. Vârtt. zu P. 3,2,1. अस्ते वर्षान्न कौन्तेय जातु निर्वर्तयेत्फलम् (क्षेत्रम्) MBh. 5,2824. 3,9993. Hariv. 3931. Sarvadarçanas. 22,1. सर्वसंभूतिम् R. 4,29,8. अभिलाषपूरणासुखम् Mâlav. 73. मदीयेन शरीरवृत्तिं देहेन निर्वर्तयितुम् Ragh. 2,45. Çaṅk. zu Khând. Up. S. 44. Bhâg. P. 1,17,25. — 3) *vollbringen, vollführen:* पितृयज्ञम् M. 3,122. R. ed. Bomb. 1,41,24. क्रियाः Ragh. 11,30. Râǵa-Tar. 1,75. समाधिम् Mṛkkh. 9,14. मध्याह्नसवनम् Kathâs. 69,167. शरीरचिन्ताम् Jâǵn. 1,98. शौचम् MBh. 12,2. विवाहम् Hariv. 10900. R. 1,69,12. R. Gorr. 1,71,14. Ragh. 3,33. Kathâs. 14,32. 34,255. नियमाभिषेकम् Ragh. 5,8. 14,7. सपर्याम् 16,39. शिरश्छेदकार्यम् 15,103. Vikr. 87,15. Kathâs. 20,98. 220. Prab. 30,4. Bhâg. P. 6,7,36. 9,13,2. 4. Bhaṭṭ. 6,142. Pankat. 88,18. आज्ञाम् Spr. 3686. प्रतिज्ञाम् R. 1,68,11. — 4) *zu Ende bringen, zubringen:* मङ्गलोदग्रं तदहो निरवर्तयत् Râǵa-Tar. 3,247. — 5) *erfreuen, zufriedenstellen* Bhâg. P. 9,14,34. अनिर्वृत्य (von 1. वर् mit निस्) ed. Bomb. — Vgl. निर्वर्तक fgg.

— अभिनिस् *hervorgehen, sich entwickeln* MBh. 10,79. अभिनिर्वृत्त *hervorgegangen, entstanden:* एतन्नामाभिनिर्वृत्तं तस्य देशस्य MBh. 1,284. 367. 12,6930. 14,2858. Suçr. 1,51,18. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 45. 83. Schol. zu P. 6,4,126. अनभिनिर्वृत्तत्व zu 6,1,101. — Vgl. अभिनिर्वृत्ति. — caus. 1) *hervorbringen* Hariv. 11817. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 83. — 2) *vollbringen, vollführen:* गुर्वर्थम् MBh. 14,1666.

— उपनिस् caus. *Etwas erzeugen an* Suçr. 1,260,13.

— विनिस्, partic. विनिर्वृत्त 1) *hervorgekommen, hervorgetreten aus:* स्वशरीराद्विनिर्वृत्ताश्चलार इव बाहवः R. 2,1,5. — 2) *zu Ende gekommen, beendigt* Jâǵn. 2,31. — 3) fehlerhaft für विनिवृत्त Draup. 4,3 (MBh. 3,15613 विनिवृत्त). Mârk. P. 134,58.

— परा 1) *sich umwenden, umkehren, den Rücken kehren; zurückkehren* M. 3,217. R. 7,48,24. युद्धात्परावृत्य किं पलायसे MBh. 4,2101. परावृत्य स्वमेवाश्रमतुर्गृहम् Kathâs. 63,86. Mṛkkh. 119,13. Çâk. 54,7. 70,14, v. l. Mâlav. 15,21. 51,20. Kathâs. 62,85. Daçak. 1,59. Sâh. D. 425. परावृत्त M. 7,93. fgg. MBh. 3,11721. 4,1092. 7,1254. 7703. 9,3607. Çâk. 72,1. Kathâs. 18,228. 72,373 (impers.). Bhâg. P. 7,5,54. Kusum. 28,4. Schol. zu Naish. 22,42. अश्लोघः (d. i. श्लोघः) स परावृत्तः प्रतिकूलेन वायुना Kathâs. 46,139. उपरि° *nach oben gewandt* Daçak. 91,2. अभयं च परावृत्तं प्रवमनाद्गृहनादिव *zurückgekehrt* Râǵa-Tar. 1,330. रसायनपरावृत्तरूप Kathâs. 40,72. परावृत्तं यौवनम् Prab. 40,16. अपरावृत्तभागधेय so v. a. *Unglücksvogel* Vikr. 55,10. — 2) *sich abwenden von:* परावृत्तधियो स्वलोकात् Bhâg. P. 11,22,32. ततः परावृत्तधियः 33. *abstehen von:* परावृत्य मरणात् Kathâs. 59,114. — 3) *schwinden, vergehen:* परावृत्तार्धरात्र R. 5,13,23. परावृत्तगुणाश्रम Bhâg. P. 3,33,27. — 4) परावृत्त *sich wälzend* AK. 2,8,2,18. n. *das Sichwälzen* H. 1245. — 5) परावृत्त Z. d. d. m. G. 7,311 fehlerhaft für पुरावृत्त. — Vgl. परावर्त fgg. und परावृत् fg. — caus. *bei Seite wenden:* परा कृ यत्स्थिरं हृथ नरो वर्तयथा गुरु ṚV. 1,39,3. *umkehren lassen* MBh. 7,9201 (परिवर्तय ed. Bomb.).

— परि 1) *sich drehen, sich in einem Kreise bewegen; umwandeln:* चक्रम् ṚV. 1,164,13. कालश्चक्रवत्परिवर्तमानः Suçr. 1,19,20. चक्रवत्परिवर्तन्तम् MBh. 13,2360. सुखदुःखे — चक्रवत्परिवर्ततः Spr. 3264. चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च 3261. MBh. 4,607. एवं संसारचक्रस्य परिवृत्तं विदुर्बुधाः 11,162. रथस्त्रिचक्रः परि वर्तते रजः ṚV. 4,36,1. Çat. Br. 12,3,2,7. 14,7,2,20. रथसहस्राणि पर्यवर्तन्त MBh. 3,12230. सौरो रथः Bhâg. P. 5,21,12. ज्योतींषि चन्द्रसूर्यौ च परिवर्तन्ति नित्यशः MBh. 5,5836. अधो विवस्वान्परिवर्तमानः Kumâras. 1,16. परिवर्तेत मेदिनी MBh. 14,118. Ganitâdhj. Kakshâdhj. 4. वज्रः समन्तात्परिवर्तमानः Bhâg. P. 6,12,33. परीवर्तम् *im Kreislauf* Pankav. Br. 2,2,2. यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्तते ऽयम् Çvetâçv. Up. 6,6. वेदिम् Çâṅkh. Çr. 17,15,4. देवम् Bhâg. P. 3,4,20. *sich wälzen:* भूमौ R. 6,94,10. 76,44 (act.). परिवृत्तोर्मि *rollend* 3,60,19. 5,93,20 (सधूमः zu lesen). 6,86,41. परिवृत्तनेत्र 2,65,46. 6,12,2. 39,16. परिवृत्तार्गल *umgedreht* Hariv. 3485. — 2) *umherreisen:* जनपदे Çat. Br. 14,5,1,20. *umhergehen, hinundhergehen, sich tummeln, sich hinundherbewegen* MBh. 4,2014. 6,2809. 8,3364. 14,228. 1396. Hariv. 5794. R. 1,9,42. Bhâg. P. 5,14,5. खेचरः MBh. 1,1498. नभसि यथा मेघाः श्येनादयो वायुवशाः परिवर्तन्ते Bhâg. P. 5,23,3. वहन्मूत्रं पुरीषं चाप्यपानः (so die ed. Bomb.) परिवर्तते MBh. 12,6871. प्राणो ऽस्य प्रथमं स्थानं वर्धयन्परिवर्तते (परिवर्धते die ältere Ausg.) Hariv. 2188. वनवासस्पृहा नित्यं हृदि मे परिवर्तते R. Gorr. 2,29,9. तस्याश्च भर्ता द्विगुणं हृदये परिवर्तते R. Schl. 1,77,27. अवमानकृतः क्रोधो मक्तान्मे (sc. हृदि) परिवर्तते 4,34,31. परिवृत्ततेजस् *nach allen Seiten verbreitet* Bhâg. P. 1,11,35. — 3) *sich umwenden, sich umkehren:* पृष्ठतः MBh. 1,7704 (act.). 4,2107. युद्धाय Hariv. 10587. R. 4,37,25. Mṛkkh. 81,16. Ragh. 4,72. Vikr. 12,18. Mâlav. 17,7. Spr. 1230. Sâh. D. 60,9. Kathâs. 64,35. Râǵa-Tar. 4,429. Pankat. 159,21. Hit. 47,19, v. l. 58,11. यदा च सर्वभूतानां छाया न परिवर्तते। अपराह्णगते समये Hariv. 12805. परिवृत्त MBh. 7,3248. परिवृत्तार्धमुखी Vikr. 17. अपसव्य° Varâh. Bṛh. S. 30,9. परिवृत्तो हि भगवान्सहस्रांशुर्दिवाकरः MBh. 13,7731 (vgl. 7702). प्रियया तदङ्गपरिवृत्तमाप्रयाम् Mâlatim. 76,10. °मुग्नातबाहु Pankar. 3,5,12. किरीट *umgedreht*

MBh. 7,1269. पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते *kehrt schwer zurück* Çâk. 172. *sich zurückwenden zu, sich zurückbegeben zu* (acc.) MBh. 12,896. — 4) अन्यथा *sich anders wenden, einen Wandel erfahren* Spr. 3499. नहि तारामतं किंचिदन्यथा परिवर्तते R. 4,21,15. Vikr. 132. auch ohne diesen Beisatz: (देवदेवाः) न कल्पपरिवर्तेषु परिवर्तन्ति ते तथा MBh. 3,15462. स चेन्नो परिवर्तेत (so die ed. Bomb.) *wenn er sich nicht ändert, wenn er kein anderer Mensch wird* 12,2882. — 5) *verweilen, sich befinden:* शतं वर्षाणि तामिस्रे नरके M. 4,165. MBh. 13,1902. fgg. स्वगृहे R. 6,98,10. अङ्के तु परिवर्तन्ती सीता R. Schl. 2,96,17. व्यादितास्यस्य यो मृत्योर्दंष्ट्राग्रे परिवर्तते Hariv. 10286. एवमेकत्वेन परिवर्तमानः Kapila 1,153. स्त्रीस्वभावात्तु मे बुद्धिः कारुण्ये परिवर्तते R. 6,95,32. Hariv. 11215. (act.). — 6) *währen, dauern:* योगशतपरिवृत्तिरन्योऽन्यकृत्यैः Çâk. 193, v. l. — 7) *ablaufen, verlaufen, verfliessen:* परिवृत्तं युगम् Hariv. 6479. Verz. d. Oxf. H. 54,a, No. 104, Z. 6. परिवृत्ते ऽहनि MBh. 3,11347. Brahma-P. in LA. (III) 55,15.18. — 8) *schwinden:* किंचित्परिवृत्तधैर्य Kumâras. 3,67. परिवृत्तभाग्या Mâlatîm. 164,10. — 9) *sich benehmen, verfahren:* सम्यक् R. Gorr. 2,17,32. — 9) trans. *umdrehen, umwenden:* पादौ Mṛkkh. 81,18. — 10) परिवृत्त = परिवृत *umringt, umgeben* Halâj. 4,27. — Vgl. परिवर्त fgg. und परिवृत्त fgg. — caus. 1) *sich drehen lassen, in die Runde bewegen:* मन्दरः परिवर्त्यताम् MBh. 1,1143. परिवर्तित n. nom. act. Bhâg. P. 5,14,29. भूमाविदं च परिवर्तितम् *die Stelle, wo er sich auf dem Boden gewälzt hat,* R. Gorr. 2,96,3. यद्घर्मः पर्यवर्तयदन्तान्पृथिव्या दिवः *wenn der* Gharma *Erde und Himmel umfuhr* (also eig. रथं पर्यवर्तयत्) TBr. 1,5,5,2. — 2) *umdrehen, umwenden:* रश्मम् MBh. 8,4989. Mṛkkh. 108,19. वाहिनीम् MBh. 7,9202 (auch 9201 nach der Lesart der ed. Bomb.). परिवर्तितवाहन Ragh. 9,25. सामुगमाननमितः परिवर्तयन्त्या Mâlav. 67. Kâtj. Çr. 6,9,17. अपूपान् Gobh. 3,10,9. पात्रम् Kathâs. 61,191. किरीटं परिवर्तितम् MBh. 7,1268. *umwerfen:* शकटम् Hariv. 3408. 3411. *verdrehen:* स तां वाचं गुरोः पत्न्या विपुलः पर्यवर्तयत् MBh. 13,2320. med. *sich umwenden, den Kopf herumwenden* TBr. 2,2,10,7. *zu sich umwenden machen:* पुरू सहस्रा परि वर्तयाते so v. a. *er zieht die Blicke vieler Tausende auf sich* RV. 5,37,3. — 3) *umwickeln, einwickeln:* पलाशवृन्तेनास्थीनि Kâtj. Çr. 25,8 1. — 4) *umherbewegen* Maitrjup. 6,21. Hariv. 2187. — 5) *vertauschen, umwechseln, wechseln:* उग्रसेनस्य वै रूपं कृत्वा स्वं परिवर्त्य च Hariv. 4614. परिवर्तितवासस् Kâm. Nîtis. 7,45. Varâh. Bṛh. S. 77,14. Kathâs. 110,75. Mârk. P. 51,13. कृतान्नं चाकृतान्नेन Kull. zu M. 9,219. ein Document gegen ein anderes *vertauschen* so v. a. *erneuern* M. 8,154. fg. — 6) *um und um drehen* so v. a. *zu Grunde richten, zu Nichte machen:* जगत् R. Gorr. 2, 20,34. 3,69,27. 4,26,15. 5,18,35. प्रत्यूहाः परिवर्तिताः Mârk. P. 16,55. भयेन परिवर्तितसौकुमार्या Mṛkkh. 9,18. — 7) *um und um kehren* so v. a. *genau durchsuchen:* गुहाश्च विविधाकाराः संक्रमाः परिवर्तिताः R. 4,47, 13. — 7) med. *sich rundum* (das Haar) *schneiden* TBr. 1,5,5,1. 3. Çat. Br. 2,6,2,16. fg. 4,5. — Vgl. परिवर्तक fgg. — intens.: वर्वर्त्ति चक्रं परि द्याम् *dreht sich beständig* RV. 1,164,11.

— अनुपरि *sich wiederholen* Çat. Br. 14,9,1,19.

— विपरि 1) *sich drehen, sich im Kreise bewegen:* जगत् Bhag. 9,10. *sich wälzen:* भूमौ M. 6,22 (= MBh. 12,8894). R. 2,72,26. — 2) *umherfahren:* नावं न शक्यमारुह्य स्थले विपरिवर्तितुम् Spr. 4439. *umherwandern:* दशमहासर्गेषु विपरिवर्तमानेन मया Wilson, Sâmkhjak. S. 25. एवं हृदि सदा तस्य बुद्धिर्विपरिवर्तते *im Herzen herumgehen* R. Gorr. 2,1,19. — 3) *sich umwenden:* विभावसुः प्रज्वलितो वामं विपरिवर्तते MBh. 16,44. — 4) *sich umwandeln, sich ändern:* सा तु बुद्धिः कृताप्येवं पाण्डवान्प्रति मे सदा। दुर्योधनं समासाद्य पुनर्विपरिवर्तते॥ MBh. 5,1563. — 5) *beständig heimsuchen,* mit acc.: दुःखं जनान्विपरिवर्तते Spr. 4964. — Vgl. विपरिवर्तन, °वृत्ति. — caus. *umdrehen, hinundherführen:* चक्राणि Lâtj. 10,5,13. *umwenden, abwenden:* विपरिवर्तिताधर Ragh. 19, 27. सव्यायतं कृत्वा वेषं विपरिवर्त्य च *umdrehend, umwendend* MBh. 4,809.

— संपरि 1) *sich drehen:* चक्रम् Jâgñ. 3,124. MBh. 1,40. *sich drehen um* (acc.) 13,1091. *sich wälzen* 7,8146. *rollen* vom Auge Mârk. P. 43, 30 = Verz. d. Oxf. H. 51,b,32. हृदि *im Herzen herumgehen:* कार्यं मे काङ्क्षितं किंचिद्धृदि संपरिवर्तते MBh. 1,5216. 5687. 3,1436. 13,127. 2233. Hariv. 10057. R. 2,1,24. अद्यापि तन्मनसि संपरिवर्तते मे Kaurap. 11. — 2) *umkehren, heimkehren* R. Gorr. 2,93,12. — 3) *sich frei machen von* (abl.) Bhâg. P. 5,5,9. — 4) संपरिवृत्तनाभि Suçr. 1,277,1 wohl fehlerhaft für संपरिवृत°. — caus. *herumführen:* रथाद्विमुच्य श्रान्तान्कृपान्संपरिवर्त्य शीघ्रम्। पीतोदकांस्तोयपरिप्लुताङ्गानचारयद्वै तमसाविदूरम्॥ R. 2,45,33.

— प्र 1) *in eine rollende Bewegung gerathen, in Gang kommen:* स्वामिसेवकयोरेवं वृत्तिचक्रं प्रवर्तते Spr. 212. प्रवृत्तो ऽश्वतरीरथः so v. a. *ist vorgefahren* Khând. Up. 5,13,2. *in Umlauf kommen, sich verbreiten:* ततः प्रभृति एतत्पञ्चतन्त्रकं नाम नीतिशास्त्रं बालावबोधनार्थं भूतले प्रवृत्तम् Pańkat. 5,13 (ed. orn. 2,18). यः प्रवृत्तां श्रुतिं दूषयति MBh. 13,1683. — 2) *aufbrechen, sich auf den Weg machen, sich begeben:* प्रावृतद्ध्रदात् Bhatt. 15,7. इतः प्रवृत्तैव Mâlatîm. 91,11. R. 5,27,21. देवालयं स्त्री प्रयता प्रवृत्ता Varâh. Bṛh. 27 (25), 8. लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः Bhag. 11,32. यो मत्पापप्रशमार्थमिह प्रवृत्तः Spr. 5340. वने प्रवृत्तामिव नीलकण्ठीम् R. 5,11,23. दक्षिणेन प्रवृत्ता वाताः Megh. 106. तावत्प्रावर्ततां तस्य चक्षुषी *so lange richteten sich seine Augen dahin* R. Gorr. 2,41,3. — 3) वर्त्मनि, वर्त्मना, पथा *auf einem Wege sich fortbewegen, auf dem Wege* (eig. und übertr.) *bleiben* R. 2,59,5. Daçak. 69,2. Kathâs. 41,57. अपथेन प्रववृते न जातु Ragh. 17,54. — 4) *hervorkommen, heraustreten, auftreten, hervorbrechen, hervorgehen, entstehen, entspringen, zu Stande kommen, erfolgen, eintreten, geschehen:* तासामश्रद्धया शृङ्गाणि प्रावर्तन्त। ता एतास्तूपराः *es entstanden ihnen nicht eigentlich Hörner* (nur Erhöhungen) Ait. Br. 4,17. VS. 28,19. आपः Gobh. 4,7,2. त्वं हि त्रिपथगा देवी ब्रह्मलोकात्प्रवर्तसे R. Gorr. 2,52,20. ततः प्रवृत्ता सरयूः 4,44,52. कृतैर्वो ऽरिगिरेश्चैः प्रावर्तत महानदी Hariv. 13814. तस्यास्यात्तु प्रवृत्तेन रुधिरौघेन R. 4,9,19. तस्य दृग्भ्यामवारितम्। अश्रं प्रववृते Kathâs. 13, 126. स्त्रीणां पुष्पम् Mârk. P. 51,42. अर्थेभ्यो हि — प्रवर्तन्ते क्रियाः सर्वाः पर्वतेभ्य इवापगाः Spr. 227. प्रवृत्ता वाणी मे मुखात् 4590. प्रवर्तते ऽन्यथा वाणी शाठ्योपहतचेतसः 127. यावत्सर्वजनानन्ददायिनी वाक्प्रवर्तते so v. a. *ertönt* 4123. प्रवृत्तवाच् 4589. Mârk. P. 72,27. तयोः संवदतोः नूनं प्रवृत्ता कामलाः कथाः Bhâg. P. 3,20,5. प्रवृत्तो मे श्लोकः R. 1,2,21. 34. तच्छोस्वनाः कर्णमुखाः प्रवृत्ताः 5,11,9. प्रवृत्तास्तत्र ते ऽग्नयः 4,44,50. प्रवर्तमानं च न दृश्यते रजः *aufsteigend, sich erhebend* Çâk. 169. रिपुः Kâm.

Nitis. 8,65. मत्तः सर्वं प्रवर्तते Bhag. 10, 8. Sâṁkhjak. 25. असंकल्पितमेवेह यदकस्मात्प्रवर्तते R. 2,22,24. तस्य कामः प्रववृते गहने ऽग्निरिवोत्थितः MBh. 1, 4871. कामं प्रवर्तताम् 12, 1064. क्रूरं प्रवर्त्स्यते 2, 658. Verz. d. Oxf. H. 50, b, 36. fg. उत्पाताः प्रावर्तंस्तस्य Bhaṭṭ. 15, 26. धर्मकामार्थसिद्धिश्च कोशादेतत्प्रवर्तते Kâm. Nitis. 13, 32. Spr. 53 (II). 4835. Sarvadarçanas. 60, 11. महान्विघ्नः R. 1, 61, 2. महान्विमर्दः R. Gorr. 1, 63, 2. परिक्रमः Çiç. 10, 12. अनुग्रहं संस्मरणप्रवृत्तम् Kumâras. 3, 3. Daçak. 94, 11. प्रीतिं पूर्वप्रवृत्तां मे संवर्धयितुमर्हसि R. Gorr. 1, 70, 13. संमानश्चावमानश्च लाभालाभौ तयोर्द्वयोः । प्रवृत्तानि निवर्तन्ते Spr. 5186. Çvetâçv. Up. 2, 12. सम्यग्योगः प्रवर्तते Maitrjup. 6, 28. प्रजननं न प्रवर्तते M. 3, 61. त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते 9, 186. Bhag. 17, 24. Hariv. 296 (act.). R. 3, 71, 13. 4, 7, 9. द्विविधः प्रवर्तते सर्गः Sâṁkhjak. 24. 52. Spr. 159. 2016. 4814. LA. (III) 87, 2. Schol. zu Kâtj. Çr. 3, 5, 1. zu P. 1, 4, 59. Çâṅkh. Çr. 3, 2, 1. 3, 1. 13, 3, 1. Sarvadarçanas. 164, 16. fg. 20. Comm. zu Njâjas. 2, 1, 43. गुरोर्यत्र परीवादो निन्दा वापि प्रवर्तते Spr. 4029. 4421. 4785. Mârk. P. 16, 35. प्रजासु ते कश्चिदपचारः प्रवर्तते Ragh. 15, 47. प्रवृत्त *zu Stande gekommen, erfolgt, geschehen* MBh. 4, 111. 5, 7534. Hariv. 11157. Çâk. 31, 3. Bhâg. P. 1, 10, 3. *da seiend* R. 2, 77, 23. Spr. 318. कूपः प्रवृत्तपानीयः MBh. 13, 3292. यथा दृष्टिः प्रवृत्ता मे so v. a. *wiedergekehrt* 3, 16874. — 5) *beginnen, einen Anfang nehmen:* एवं प्रववृते युद्धम् MBh. 4, 1846. R. 4, 9, 75. Ragh. 12, 72. Kathâs. 47, 50. Râǵa-Tar. 6, 243. Mârk. P. 82, 38. Prab. 87, 10. यज्ञः R. 1, 60, 8 (62, 8 Gorr.). कर्म 61, 8. यात्रामहोत्सवः Râǵa-Tar. 1, 222. Bhâg. P. 3, 11, 33. द्यूतम् MBh. 3, 2298. 3035. 3037. 3047. हेमन्तः R. 3, 22, 1. Varâh. Bṛh. S. 8, 27. Râǵa-Tar. 3, 168. कृतम् (युगम्) MBh. 3, 13099. संध्या 1, 6028. R. 1, 25, 2. प्रवृत्त *begonnen* Bhag. 1, 20. MBh. 3, 1843. 5, 6005. 13, 7702. 7711. R. 2, 66, 23. R. Gorr. 2, 96, 28. 3, 67, 10. 4, 25, 12. 5, 89, 11. Çâk. 4, 4. Mâlav. 17, 18. Varâh. Bṛh. S. 8, 28. Kathâs. 4, 23. 42, 131. Râǵa-Tar. 4, 114. 5, 329. Daçak. 77, 11. Vop. 6, 33. 58. — 6) *beginnen —, anfangen —, anheben zu;* mit infin.: तस्यामेव प्रववृते गन्तुं तद्वहनं दिशि Kathâs. 26, 12. मेघः प्रववृते ऽत्र धारासारेण वर्षितुम् 12, 110. ततः प्रावर्तत जवाद्गन्तुं सागरगामिनी Râǵa-Tar. 5, 93. ब्रह्मविद्यां वक्तुं लब्धावसरा श्रुतिः प्रववृते Kaush. Up. Einl. प्रववृते देवं पूजयितुं हरम् Kathâs. 11, 67. 12, 106. 13, 31. 83. 129. 18, 157. 22, 201. 24, 224. 26, 134. 27, 184. 29, 75. 32, 44. 35, 136. 36, 115. 126. 43, 199. 52, 162. 64, 34. Bhaṭṭ. 14, 95. अथाकस्मात्प्रववृते (impers.) तया साध्व्या प्ररोदितुम् Kathâs. 10, 36. प्रवेष्टुं प्रवृत्तवान् 42, 126. वातश्च तत्क्षणं वातुं प्रवृत्तो ऽभूत् 44, 136. इयं पावयितुं लोकान्प्रवृत्ता भगिनी मम R. Gorr. 1, 36, 9. 5, 11, 9. R. Schl. 2, 64, 45. Ragh. 13, 14. Çâk. 126. Vikr. 90. Kathâs. 2, 79. 9, 57. 13, 129. 25, 18. 26, 137. 27, 166. 29, 199. Bhâg. P. 5, 10, 20. — 7) *sich anschicken zu, gehen —, sich machen an, sich hingeben;* mit dat.: क्रियाविघाताय Ragh. 3, 44. उदरदरीपूरणाय Spr. 1785, v. l. Mâlatîm. 4, 4. Prab. 14, 6. तदर्थव्याख्यानाय ब्राह्मणं प्रवर्तते Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 267. तपसे Kumâras. 5, 33. प्रकृतिहिताय Çâk. 194. षड्भ्यः कर्मभ्यः MBh. 13, 1566. मैथुनाय Bhâg. P. 9, 20, 36. mit अर्थम्: लोकस्य हितकामार्थं प्रवृत्ता भगिनी मम R. 1, 35, 9. उदकपानार्थम् Sâj. zu ṚV. 1, 52, 5. mit loc.: अन्याये M. 9, 292. पैशुन्ये MBh. 13, 5868 (act.). अकार्येषु Kâm. Nitis. 1, 60. क्रियायाम् Spr. 51 (II). अकुत्सिते कर्मणि 2717. क्रियासु Sâṁkhjak. 58. वाणिज्ये Kathâs. 26, 126. अस्मिन्नर्थे Daçak. 66, 12.

P. 3, 2, 134, Schol. अग्निहोत्रादौ Sarvadarçanas. 3, 6. अव्रणे प्रवर्तमानता 58, 12. मनस्तेषु प्रवर्तताम् so v. a. *richte sich darauf* MBh. 3, 2165. Çâk. 25, 8. शंभुना साधनेन मुकुन्दे प्रवर्तते so v. a. *sein Sinnen und Trachten ist gerichtet auf* Vop. 5, 24. निग्रहे ऽपि समर्थस्य तस्य पापस्य — प्रावर्तत न मे बुद्धिस्तदा R. 4, 8, 56. न तस्य कामः कामेषु पापकेषु प्रवर्तते MBh. 3, 1877. प्रवृत्त *begriffen in, beschäftigt mit, hingegeben, obliegend:* परदाराभिमर्शेषु M. 8, 352. वार्यर्गलाभङ्गे Ragh. 5, 45. संग्रहे Sarvadarçanas. 41, 6. häufig in comp. mit der Ergänzung: वेणुशय्याप्रवृत्त R. 5, 13, 47. कामकार° 2, 22, 8. कार्य° Kathâs. 32, 92. हठ° 39, 234. होमकर्म° 45, 42. 46, 55. जलक्रीडा° 56, 249. प्रमद° 414. कुलक्षय° Prab. 12, 12. Hit. 68, 13. Pañkat. 248, 7. धर्म° MBh. 14, 75. न्याय° Kâm. Nitis. 1, 13. आर्य° R. Gorr. 2, 126, 6. वधप्रवृत्तस्य वधानुत्पादे प्रायश्चित्तम् so v. a. *einen Mord beabsichtigend* Verz. d. Oxf. H. 87, b, 14. — 8) *sich an Jmd* (loc.) *machen, feindselig gegen Jmd auftreten, sich vergreifen an:* एते न (so ist zu trennen) बहु मन्यन्ते न प्रवर्तन्ति चापरे MBh. 13, 3025. नाग्निरग्नौ प्रवर्तते R. 5, 51, 16. किम् — राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते Ragh. 11, 27. auch mit acc.: यांस्त्वं मोहादवमन्य प्रवृत्तः MBh. 3, 15714. अन्योऽन्यम् so v. a. *unter einander Unzucht treiben* Spr. 4815. — 9) *verfahren, zu Werke gehen;* mit loc. der Person: मयि मिथ्या MBh. 3, 2414. यथान्यायम् 5, 7081. यथा R. 4, 16, 23. एवम् Kathâs. 4, 34. अन्यथा Mârk. P. 28, 36. सर्वकार्येषु स्वेच्छातः Hit. 69, 19. उत्क्रम्य हि स्थितिं दैवीं (so die neuere Ausg.) प्रवर्तामि Hariv. 7258. Njâjas. 1, 1, 24. Sarvadarçanas. 113, 16. 121, 4. एवं प्रवृत्तः *so verfahrend* MBh. 1, 7662. Hariv. 3787. 7298. कामतस् M. 3, 12. दिष्ट्या (so die neuere Ausg.) Hariv. 7304. साधु Kâm. Nitis. 18, 68. सु° Hariv. 5174. अ° *schlecht verfahrend* MBh. 13, 6695. mit instr. *bei seinem Verfahren Etwas anwenden:* यया वृत्त्या Kâm. Nitis. 5, 80. वितण्डया Comm. zu Njâjas. S. 3, Z. 1 v. u. मायया Bhaṭṭ. 9, 58. धारणाभावेन Tattvas. 15. त्रिभिः कर्मभिः M. 4, 9. गुणैः Bhâg. P. 1, 5, 16. त्वद्वाचैव प्रवर्ते ऽहम् so v. a. *ich richte mich nach deinen Worten* Kathâs. 24, 57. mit loc.: वाक्ये मन्त्रिणाम् Spr. 1358. mit abl.: मयि लोभात्प्रवर्तसे Hariv. 9227. रभसात् Kathâs. 32, 93. — 10) *wirkend auftreten, seine Wirkung äussern; zur Geltung —, zur Anwendung kommen:* स्वभावः Bhag. 5, 14. तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् R. 2, 58, 20. Spr. 1383. Schol. zu P. 7, 1, 36. Comm. zu Njâjas. 1, 1, 1 (S. 3, Z. 9). कुशलपदं प्रवीणे वर्तमानम् *die Bedeutung von* प्रवीण *habend* Sarvadarçanas. 172, 18. 161, 10. mit ablat.: कारणमस्त्यव्यक्तं प्रवर्तते त्रिगुणतः समुदयाच्च । परिणामतः Sâṁkhjak. 16. प्रवृत्तं कर्म *eine auf ein bestimmtes Ziel gerichtete Handlung, eine Handlung, von der man sich einen Vortheil verspricht* M. 12, 88. fgg. Bhâg. P. 4, 4, 20. 7, 15, 47. 49. 4, 29, 13. *dienen —, verhelfen zu* (dat. oder mit अर्थम्) Comm. zu Njâjas. 2, 1, 55. Sarvadarçanas. 152, 11. fgg. — 11) *fortbestehen, fortwähren* Sarvadarçanas. 115, 21. 168, 9. mit einem partic. praes. *fortfahren Etwas zu thun:* वसंस्तत्र प्रववृते तदा Hariv. 7706. भजयन्तः प्रवर्तन्ते 15268. कूपः सुप्रवृत्तो नित्यशः so v. a. *stets in guter Ordnung befindlich* MBh. 13, 3292. — 12) *werden zu* (nom.): कौशिकी परमोदारा सा प्रवृत्ता महानदी R. 1, 35, 8. — 13) *vorhanden sein, da sein* Bhâg. P. 2, 9, 10. दृष्टुमेतां मम महीमतीवेच्छा प्रवर्तते Mârk. P. 61, 14. 133, 1. यतो ममापि महद्दुःखं प्रवर्तते Pañkat. 114, 18. — 14) als transit. = caus. *vollbringen, vollführen:* एवंविधानि कर्माणि प्रावर्तत R. 7, 36, 30.

असद्वा हसितं किंचिद्धितं वापि कर्मणा। रहस्यमरहस्यं वा न प्रवर्तामि सर्वथा॥ MBH. 13,5869. *zukommen lassen, gewähren:* कच्चिद्दाना ब्राह्मणानां यथावत्प्रवर्तते पूर्ववत्तात वृत्तिम् 5,699. — 15) प्रवृत्त wohl fehlerhaft für अपवृक्त (= परिसमाप्त Comm.) NIR. 1,9. für प्रचृत्त ÂÇV. GṚHJ. ed. St. 4,2,9. für प्रनृत्त INDR. 5,28 (MBH. 3,1844 richtig). KATHÂS. 45, 232. — Vgl. प्रवर्त, प्रवर्तमानक, प्रवर्तितव्य (न पुनरेवं प्रवर्तितव्यम् ÇÂK. 79,6), प्रवर्तिन्, प्रवृत्, प्रवृत्त (प्रवृत्ता N. pr. einer Unholdin MÂRK. P. 51,42, wo प्रवृत्ता st. प्रवृत्तं zu lesen ist), प्रवृत्ति. — caus. 1) *rollen machen, in Bewegung setzen; fortschleudern, fortschieben* u. s. w.: रथम् ṚV. 10,114,6. ÇAT. BR. 3,5,3,17. KÂTJ. ÇR. 8,4,1. इतस्तर्हि देवः प्रवर्तयतु पुष्पकम् UTTARAR. 36,7 (48,5). चक्रम् BHAG. 3,16. राजचक्रम् MBH. 13,4262. प्र वर्तय दिवो अश्मानम् ṚV. 7,104,19. PAÑKAV. BR. 12,6,6. प्रक्रम् ÇAT. BR. 1,6,3,8. कटं पदा GOBH. 2,1,20. अपः KÂTH. 26,1. LÂṬJ. 5,8,14. जाह्नवीम् R. 3,2,11. RAGH. 13,51. दोषम् SUÇR. 1,159,6. *senden, schicken* PRAB. 46,5. — 2) *in Gang —, in Umlauf bringen, verbreiten, einführen, einsetzen:* पूर्वैः प्रवर्तितं किंचित्कुले ऽस्मिन्नृपसत्तमैः। साधु वा यदि वासाधु तन्नातिक्रान्तुमुत्सहे॥ MBH. 1,4433. 13,4604. महाभाष्यम् RÂGA-TAR. 1,176. 4,487. धर्ममपूर्वम् R. 2,21,35. VÂJU-P. bei MUIR, ST. I,153. आचार्यैः — वेदार्थेभ्यो निष्कृष्य कर्मार्थं सुखावबोधनानीमानि विद्यास्थानानि प्रवर्तितानि UVAṬA bei MÜLLER SL. 98. संहिता यैः प्रवर्तिताः Verz. d. Oxf. H. 55,a,5. BHÂG. P. 3,8,2. यात्रायागादि नागानाम् RÂGA-TAR. 1,185. नीलोदितं विधिम् 186. तेन राज्ञा प्रवर्तिताः। स्थितयो वीतसंदेहा भास्वतेव दिनक्रियाः 4,53. म्लेच्छोचितां व्यवहृतिम् 397. इत्येष तेन संवाहो गृहकृत्ये प्रवर्तितः 5,175. 183. प्रवर्तिते ऽस्मिन्कर्माधनि कुमारिलेन LA. (III) 92,19. fg. BHÂG. P. 3,24,37. 5,1,21. मूर्खेण येन कायस्था दास्याः पुत्राः प्रवर्तिताः RÂGA-TAR. 5,179. — 3) *entstehen lassen, bilden, hervorbringen, vollbringen, bewirken:* भुवनानि सप्त MBH. 3,13981 = 12,6924. सेतुम् *einen Damm errichten* JÂGÑ. 2,157. गोभिः प्रवर्तिते तीर्थे M. 11,196. नदीम् MBH. 4,2014. 6,2336. 5501. 7,502. HARIV. 9338. अतश्चर्मण्वती गोचर्मभ्यः प्रवर्तिता MBH. 13,3351. 683. RÂGA-TAR. 4,306. वलादर्षं प्रवर्तितम् HARIV. 4809. 12150. RAGH. 5,37. युगमन्यत् MBH. 5,1873. वया प्रवर्तिते मार्गे HARIV. 9727. रुधिरनिस्यन्दैस्त्वच्छरीरप्रवर्तितैः R. 3,35,31. मरणम् SUÇR. 2,219,17. ईदृशैर्धर्म्यवृत्तान्तैः प्रवर्तितकृतोदयः RÂGA-TAR. 5,122. कर्मारम्भान् R. ed. Bomb. 6,6,8 (5,77,9 GORR.). प्रवर्तितलतालास्य KATHÂS. 35,5. लोकयात्रां प्रवर्तये (प्रवाहये ed. Bomb.) so v. a. *ich bringe mein Leben zu* R. 2,109,27. व्ययकर्म so v. a. *ausgeben* Spr. 367. अन्यैः प्रवर्तितां तत्कथाम् *vorbringen, erzählen* SÂH. D. 39,5. राज्ञा तेन सर्वं प्रवर्तितम् *vollführt* Verz. d. Oxf. H. 32,a,41. — 4) *an den Tag legen, bezeugen* R. 7,30,15. 33. BHÂG. P. 10,47,25. MALLIN. zu KUMÂRAS. 3,24. — 5) *beginnen, unternehmen:* कर्म KÂTJ. ÇR. 25,14,8. संग्रामम् MBH. 7,8930. HARIV. 10460. गिरियज्ञम् 3817. R. 1,60,3 (62,7 GORR.). BHÂG. P. 8,18,21. श्राद्धानि HARIV. 1000. वास्तुसंशमनीयानि मङ्गलानि R. 2,56,27. जलदोत्सवम् KATHÂS. 112,61. MÂLATIM. 13,2. — 6) *anwenden, gebrauchen:* तौ प्रावीवृततां जेतुं शरजालान्यनेकशः BHAṬṬ. 15,90. — 7) *Jmd zu Etwas veranlassen, bewegen:* तं पुत्रमाहारादौ प्रवर्त्य KATHÂS. 80,14. 106,26. प्रवर्तयामि सुरतं (wohl सुरते zu lesen) यावदेताम् 122,57. ज्ञातारं हि रागादयः प्रवर्तयन्ति पुण्ये पापे वा Comm. zu NJÂJAS. 1,1,18. KUSUM. 37,11. 13. — 8) = simpl. *verfahren, zu Werke gehen:* यो यथा वर्तते यस्मिंस्तस्मिन्नेव प्रवर्तयन्। नाधर्मं समवाप्नोति MBH. 5,7079. — Vgl. प्रवर्तक fgg.

— अतिप्र 1) *übermässig hervorkommen:* Blut SUÇR. 1,45,18. fg. — 2) *stark sich äussern:* मार्जारनकुलादीनां विषं नातिप्रवर्तते SUÇR. 2,269,12.

— अनुप्र *hervorkommen entlang, nach:* ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः ṚV. 1,191,15. तं सामानु प्रावर्तत 10,135,4. अनुप्रवृत्त *folgend auf* (acc.) BHÂG. P. 1,17,32. 3,2,14. 25,37. 4,29,54. 5,1,39.

— अभिप्र 1) *hinrollen, sich hinbewegen zu:* एतां ते दिशं रथो ऽभिप्रवर्तताम् AIT. BR. 8,10. तद्यदि ह वा एवं विद्वांसमुभौ पर्वतावभिप्रवर्तेयाताम् KAUSH. UP. 2,13. यत्र भागीरथीं गङ्गां यमुनाभिप्रवर्तते *sich ergiesst in* R. 2,54,2. *sich in Gang setzen* ÂÇV. GṚHJ. 2,6,5. 3,12,8. — 2) *beschreiten:* गौरभिप्रवृत्ता NIR. 2,9. अभिवृत्ता v. l. — 3) अभिप्रवृत्त *im Gange seiend, Statt findend:* नर्मण्यभिप्रवृत्ते (कर्मणि ed. Calc.) MBH. 8,3464. — 4) अभिप्रवृत्त *begriffen in, beschäftigt mit* (loc.): कर्मणि BHAG. 4,20. — Vgl. अभिप्रवर्तन. — caus. *rollen lassen, schleudern gegen:* वज्रमेनमभि प्रवर्तयति TS. 3,2,9,1. mit dat.: प्र यच्चक्रमरोण्यो सनता अभ्यवर्तयत् SV. ÂRAṆJAG. 2,24.

— उपप्र caus. *hinschleudern, hinschieben* u. s. w.: (शिष्टं सोमम्) त्वष्टाहवनीयमुप प्रावर्तयत् TS. 2,4,12,1. अपः 6,5,8,6. KÂTH. 26,1.

— परिप्र caus. *herführen:* den Wagen ṚV. 10,135,4.

— प्रतिप्र caus. *hinführen* KAUÇ. 14.

— संप्र 1) *aufbrechen, sich fortbegeben:* एवं पितरि संप्रवृत्ते BHÂG. P. 5,2,1. — 2) *hervorkommen, hervorgehen, entspringen, entstehen:* शिखराख्यस्य धाराणां सहस्रं संप्रवर्तते R. 4,43,37. मुखेभ्यो रुधिरं तीव्रं हयानां संप्रवर्तत 6,69,45. MBH. 12,8488. अन्नतम् 13,4626. HARIV. 12243. MÂRK. P. 45,48. दुःखं चतुर्भिः शारीरं कारणैः संप्रवर्तते Spr. 5045. SUÇR. 2,495,1. 524,8. संवत्सरस्य पर्यन्ते निःश्वासः संप्रवर्तते। यदा MBH. 3,13537. न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति *Entstandenes, Gekommenes, was da ist* BHAG. 14,22. — 3) *beginnen, seinen Anfang nehmen:* संप्रवृत्ते तु संग्रामे MBH. 4,1618. R. 6,19,2. PRAB. 72,6. संप्रवृत्ते महोत्सवे MBH. 3,3063. यज्ञो ऽसौ संप्रवर्तते R. 1,32,10. सायन्तने सवनकर्मणि संप्रवृत्ते ÇÂK. 73. निशा R. 3,5,10. त्रेता HARIV. 12161. BHÂG. P. 1,3,24. 9,14,43. नो सम्यगतुषु संप्रवृत्तेषु VARÂH. BṚH. S. 46,39. RÂGA-TAR. 6,271. नोत्सवाः संप्रवर्तन्ते *werden nicht unternommen, finden nicht Statt* R. 2,114,14. — 4) *beginnen —, anheben —, sich anschicken zu, sich machen an;* mit infin.: यतस्त्वमनैर्देवितुं संप्रवृत्तः (संप्रमत्तः ed. Calc.) MBH. 8,3509. mit dat.: स्थितिकारणाय संप्रवृत्तः MÂRK. P. 104,36. mit loc.: त्रैलोक्यस्य विनाशने MBH. 3,8737. जगतो विसृष्टौ VP. bei MUIR, ST. IV, 35. अधर्मे संप्रवृत्तः *begriffen in* MBH. 5,531. षट्कर्म° 12,2350. — 5) *verfahren, zu Werke gehen, sich benehmen* R. 4,16,23. MÂRK. P. 134,25. SÂH. D. 539. — 6) मनसि *im Sinne herumgehen* so v. a. *Jmd nahe gehen* R. 5,25,10. — 7) संप्रवृत्त MBH. 14,77 fehlerhaft für सम्यग्वृत्त, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. संप्रवर्तन, संप्रवृत्ति. — caus. 1) *in Gang —, in Umlauf bringen, verbreiten, einführen* MBH. 3,11047 (S. 571). 13,4601. कुपथपाषण्डम् BHÂG. P. 5,6,10 (med.). तोरमाणेन दीनाराः स्वाहताः संप्रवर्तिताः RÂGA-TAR. 3,103. — 2) *beginnen, unternehmen:* संग्रामम् MBH. 7,7737. क्रतून् HARIV. 2780. — Vgl. संप्रवर्तक.

— अभिसंप्र *beginnen:* संवत्सरे ऽभिसंप्रवृत्ते VARÂH. BṚH. S. 19,6. —

caus. *wechseln, ändern* (?): रणाजिरम् MBH. 1,1184. *inter se confundere et turbare* GILD.

— प्रति *Jmd* (acc.) *zu Theil werden* M. 1,81. — Vgl. प्रतिवर्तन, प्रतीवर्त und मन्दप्रतीवृत्त SIDDHÂNTAÇIR. S. 137. — caus. *schleudern gegen:* त्वमायसं प्रति वर्तयो गोर्दिवो अश्मानम् ṚV. 1,121,9.

— वि 1) *rollen, laufen, sich drehen:* चक्रं वि वावृते ṚV. 1,164,14. 166,9. वि वर्तेते अहनी चक्रियेव 185,1. 6,9,1. एवं द्वादशभिररैर्विवर्तते कालचक्रमिदम् H.128. अयं यो वक्रः पुरुधा विवृत्तः *sich schlängelnd, zerfahren* ṚV. 10,27,21. *sich wälzen* MBH. 3,11953 (act.). HARIV. 10535. अङ्के R. GORR. 2,105,16. *zappeln:* कालकण्ठमुखकन्दरविवर्तमानमिव भूतजातम् UTTARAR. 105,11 (143,3). *sich krampfhaft bewegen* R. 4,22,25. *sich hin und her bewegen, hin und her ziehen:* विवर्तन्ते (विवर्धन्ते die neuere Ausg.) जलधराः HARIV. 3822. R. 3,30,4. विवृत्त *sich nach allen Seiten drehend*, von Augen R. 2,87,2. 4,21,37. 5,39,16. BHÂG. P. 3,8, 16. 7,4,13. MÂRK. P. S. 655, Çl. 1. जालं बाणमयं विवृत्तम् MBH. 5,7209. विवृत्ताङ्ग *verdreht* R. 2,63,46. — 2) *sich abwenden, sich entfernen, fortlaufen; sich trennen, abscheiden* ṚV. 5,53,7. युजा वि वावृते 10,33,9. AV. 10,1,19. पाप्मना KÂṬH. 12,11. ÇAT. BR. 2,2,2,17. 11,2,5,3. अग्नेर्वा यज्ञस्य वा विग्रेहि वा वर्तेत 13,5,1,16. आपः PAÑKAV. BR. 13,9,16. KÂTJ. ÇR. 1,8,24. यत्रासौ केशान्तो विवर्तते *sich theilen* TAITT. UP. 1,6,1. *seinen Platz ändern* SUÇR. 1,26,7. *sich wenden, sich umwenden:* तामितः पुरतश्च पश्चादन्तर्बहिः परित एव विवर्तमानाम् MÂLATIM. 24,13. RAGH. 19,38. ÇÂK. 59. KATHÂS. 10,120. 19,114. अर्वाक् MÂRK. P. 47, 26. विवर्तमाने तिग्मांशौ *zum Untergange sich neigend* MBH. 7,3754. विवृत्त *umgewandt, gebogen:* °वदना ÇÂK. 45. त्रिक RAGH. 6,16. पार्श्व BHAṬṬ. 2,16. कटाक्ष BHÂG. P. 9,10,13. *vom rechten Wege abkommen:* कामिवार्थे विवर्तन्तं (निवर्तन्तं ed. Bomb., = भ्रश्यन्तं NILAK.) स्थापयेतां न वर्त्मनि MBH. 5,2861. — 3) *hervorkommen aus* (abl.) ÇAT. BR. 8,4,1,25. 12,4,1,2. — 4) *sich entfalten, sich entwickeln:* येनेशितं कर्म विवर्तते ह ÇVETÂÇV. UP. 6,2. जीवितं च शरीरेण जात्यैव सह जायते। उभे सह विवर्तेते उभे सह विनश्यतः॥ Spr. 4082. यतः सर्वं जगदेतद्विवर्तते Verz. d. Oxf. H. 177,*a*,8. Comm. zu PRAB. S. 100, Z. 1. KÛLIKOP. in Ind. St. 9,10. SARVADARÇANAS. 140,4. 146,18. — 5) *sich an Jemand wagen:* त्वयाभिगुप्तं कौन्तेयं न विवर्तेयुररातिकम् MBH. 3,8438. — 6) व्यवर्तत R. 2, 42,10 fehlerhaft für न्यवर्तत, wie die ed. Bom. liest. विवृत्त fehlerhaft für विवृत KHÂND. UP. 2,22,5. विवृत्तदंष्ट्रा (विवृद्ध° die neuere Ausg.) *mit blossgelegten Zähnen, die Zähne zeigend* HARIV. 12949. विवृत्तास्य (निवृत्तास्य ed. Calc.) aus metrischen Rücksichten statt विवृतास्य 13891. विवृत्तोरुशिरोग्रीव R. 5,10,21 eher विवृतो° *unbedeckt* als विवृत्त *verdreht.* — Vgl. विवर्त u. s. w. — caus. 1) *umdrehen, umwenden:* वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयत् ṚV. 6,8,3. 7,80,1. 8,14,5. Comm. zu TBR. I, 76,6. *umherdrehen* MBH. 1,809. 13,2361. परागः। वात्याभिर्वियति विवर्तितः KIR. 5,39. RÂGA-TAR. 4,635. विवर्तित *sich windend:* मेरुकूटात्तेभ्यो निपतन्ती विवर्तिता (गङ्गा) MÂRK. P. 65,3. *umgedreht, umgewandt:* विवर्तिताञ्जननेत्र KUMÂRAS. 5,51. *verbogen:* नेत्र SUÇR. 2,199,19. *verzogen:* भ्रू ÇÂK. 23. — 2) *entfernen, davongehen lassen; ausscheiden* ṚV. 5,48,3. AV. 10,7,26. अन्यत्रेमा वि वर्तय nämlich den Wagen 11,2,21.

— अतिवि caus. *zu weit von einander entfernen* so v. a. *zu stark unterscheiden* ṚV. PRÂT. 3,18.

— अनुवि *entlang laufen:* अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते ṚV. 8,92,2. — caus. med. *Jmd nacheilen* AV. 15,7,2.

— सम् 1) *sich zuwenden, sich einstellen, einkehren:* सं ते वब्रो वर्तताभिन्द्र गव्युः ṚV. 6,41,2. AV. 6,102,1. मा सं वृतो मोप सृपः 8,6,3. *herankommen, sich nähern* R. 4,39,28. *auf Jmd* (acc.) *losgehen* MBH. 6,5325. — 2) *congredi:* सं यद्विशो ऽववृत्रन्त युध्माः ṚV. 4,24,4. *sich zusammenthun* (in coitu): सो ऽन्तरेण अग्नंसवर्तमानः शेते ÇAT. BR. 13,4,1,9. ÇÂÑKH. ÇR. 16,1,12. etwa *sich vereinigen, sich zusammenballen* KAUÇ. 33. संवर्तम् absol. PAÑKAV. BR. 14,12,7. — 3) *sich bilden, entstehen, hervorgehen:* शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ṚV. 10,90,14. 121,1.7. ÇAT. BR. 6,1,1,10. 2,1. ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,17. तेजसाः समवर्तन्त गात्रेभ्यस्तस्य VP. bei MUIR, ST. I, 25, N. 40. येन (भीमेन) भैमाः सुसंवृत्ताः HARIV. 5243. सस्वेदा भ्रुकुटी चोग्रा ललाटे समवर्तत MBH. 4,466. तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्तत NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,72. *sich ereignen, eintreten:* काः कथाः समवर्तन्त तस्मिन्वीरसमागमे MBH. 12,1927. ततस्य तेन संवृत्तम् RÂGA-TAR. 1,271. अद्भुतं खलु संवृत्तम् ÇÂK. 71,22. 68,3. व्यवसितस्य मे संवर्धनं संवृत्तम् VIKR. 57,2. तेषां कदाचित्संवृत्तो विचारो लोकहेतुना Verz. d. Oxf. H. 68,*a*,35. तदस्या नासिकाच्छेदः स्वकर्मणापि संवृत्तः PAÑKAT. 41,25. सुसंवृत्त BHÂG. P. 10,87,10. जाग्रतामेव रजनी कल्यं सा समवर्तत R. GORR. 2,117,1. 6,14,24. शनैर्मध्याह्नः समवर्तत KATHÂS. 104,202. PAÑKAT. 77,12. अत्र यात्रामहोत्सवः संवृत्तः 43,3. मल्लाख्यश्चाद्य विधिवत्स यज्ञः समवर्तत *begann, nahm seinen Anfang* R. GORR. 1,33,8. — 4) *in Erfüllung gehen:* संवृत्तः मनोरथः R. GORR. 1,48,25. — 5) *werden:* दारुणाः समवर्तन्त ग्रहाः सर्वे प्रदक्षिणाः R. GORR. 2,40,10. स्विन्नाङ्गुलिः संववृते कुमारी RAGH. 7,19. इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः BHAG. 11,51. मर्त्या अमर्त्याः संवृत्ताः MBH. 1, 7280. 3,2735. 2849. 5,3354. R. 1,43,3. 63,10. 3,69,9. 4,42,7. 63,13. ÇÂK. 5,11.13. 6,14, v. l. दृष्टदोषापि स्वामिनि मृगया केवलं गुण एव (गुणायैव v. l.) संवृत्ता 23,6. 63,7. 100,18, v. l. 107,1. VIKR. 65,1. KATHÂS. 14,43. 49,201. RÂGA-TAR. 1,145. PAÑKAT. 5,12. 38,19. 125,24. — 6) *da sein:* तच्छश्वत्संवर्तते KHÂND. UP. 6,13,2. ब्रह्माग्रे समवर्तत MÂRK. P. 45, 34. तत्र संवर्तते रात्रिः HARIV. 531. मृगयां चैव नो गन्तुमिच्छा संवर्तते भृशम् MBH. 3,14839. शुश्रूषा भवतस्तथा। संवर्तताम् 13,1423. ततस्तथा महाक्रन्दः पौराणां भवनेष्वभूत्। यथैव तस्य नृपतेः स्वगेहे समवर्तत॥ so v. a. *so dass er auch im Palast des Fürsten hörbar war* MÂRK. P. 22, 26. — 7) सुसंवृत्त MBH. 15,191 fehlerhaft für सुसंवृत (*recht verborgen*), wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. संवर्त u. s. w. — caus. 1) *zusammenrollen:* उभे यत्समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ṚV. 8,6,5. वासः संवर्तितम् Verz. d. Oxf. H. 230,*b*,10. *ballen:* मुष्टिम् HARIV. 16025. *einwickeln, einhüllen:* संवर्तितमिवाकाशं जलदैः MBH. 1,1298. संवर्तः कल्पान्तः स जातो ऽस्मिन् NILAK. — 2) *herbeiwenden:* संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा ṚV. 5, 48,3. संवर्तयति वर्तनिम् *bringt auf seine Strasse* 10,172,4. — 3) *rollen lassen* (die Augen): रोषसंवर्तितलोललोचन R. 5,39,32. 44,20. 68,10. *schleudern, werfen:* शरौघान् R. 6,19,27. — 4) *zerknicken, zerbrechen:* यथा वायुस्तृणाग्राणि संवर्तयति सर्वशः MBH. 11,54 = 260. संवर्तयन्तः शैलेषु वानरा विविधांस्तरून् R. 4,47,6. 6,93,18. वासुदेवः प्रगृहीतचक्रः संवर्तयिष्यन्निव जीवलोकम् (सर्वलोकम् ed. Bomb.) MBH. 6,2602. इमां सप्तसमुद्रान्तां संवर्तयतु वा महीम् *zu Grunde richten* R. 4,15,8. — 5) *her-*

richten: चिताम् R. ed. Bomb. 6,113,112. *vollbringen, vollführen:* संवर्तयित्वा तत्कर्म R. Schl. 1,15,17. यज्ञं संवर्तयितुम् 42,22. वार्त्ता नृणां यः (विश्यः) समवर्तयत् Bhâg. P. 3,6,32. संवर्तयित्वा (अनुवर्णयित्वा die neuere Ausg.) तत्रस्य माहात्म्यम् Hariv. 8042. कामम् *einen Wunsch erfüllen* R. 7,45,23. — desid. *inire velle feminam:* य इमां संविवृत्सत्यपतिः स्व पतिं स्त्रियम् AV. 8,6,6.

— अधिसम् *entspringen:* कामस्तदग्रे समवर्तताधि RV. 10,129,4.

— अभिसम् *sich hinwenden zu:* मामभि ते मनः समेतु सं च वर्तताम् AV. 6,102,1. *sich anschicken —, beginnen zu:* वानरं सैन्यम् — संख्यातुमभिसंवृत्ता R. 6,1,15.

वर्त (von वर्त्) am Ende eines comp. P. 4,2,126 (am Ende von Ortsnamen); vgl. अन्धक°, कल्य°, बकु°, ब्रह्म°, अ°. वर्तेन Verz. d. Oxf. H. 50,*b*,26 wohl fehlerhaft für वातेन, wie Aufrecht annimmt; सुखवर्तया R. 1,30,7 fehlerhaft für सुखवत्तया, wie die ed. Bomb. liest.

वर्तक (wie eben) m. f. Trik. 3,5,18. 1) nom. ag. am Ende eines comp. *hingegeben, Jmd ergeben:* गुरु° R. Gorr. 2,107,19. — 2) m. *a) Wachtel* AK. 2,5,35. H. an. 3,93. Med. k. 153. MBh. 13,5502. Suçr. 1,200,20. Vâgbh. 6,46.58. Spr. 1499. Hit. 85,11. fgg. — *b) Pferdehuf* AK. 3,4,1,11. H. an. Med. — 3) f. वर्तका *Wachtel* P. 7,3,45, Vârtt. 9. — 4) f. वर्तिका dass. Unâdis. 3,146. P. 7,3,45, Vârtt. 9. AK. 2,5,35. Trik. 2, 5,31. Hâr. 184. im Mythus der Açvin RV. 1,112,18. आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके (अमुमुक्तम्) 116,4. 117,16. 118,8. 10,39,13. MBh. 1,724. — 3,12437. Suçr. 1,73,7. 200,20 (verschieden von वर्तक). Verz. d. B. H. No. 897. Schol. zu P. 1,3,32. 70. Vâgbh. 6,46. गिरि° ebend. वन° Mâlatim. 135,8. Vgl. मास°. — 5) f. वर्तकी dass. Med. — 6) n. *eine Art Messing,* = वर्तलोह H. 1050.

वर्तजन्मन् m. *Wolke* Çabdam. im ÇKDr.

वर्तन (von वर्त् simpl. und caus.) 1) oxyt. nom. ag. P. 3,2,149, Schol. *a)* = वर्तिष्णु AK. 3,1,29. Med. n. 123. fg. — *b) in Bewegung setzend, Leben verleihend:* Vishṇu Hariv. 10416. एष दैनंदिनः सर्गो ब्राह्मस्त्रैलोक्यवर्तनः Bhâg. P. 3,11,25. — 2) m. *Zwerg* Med. — 3) f. ई *a)* = वर्तन n. Trik. 3,3,263. H. an. = जीवन Med. — *b)* = वर्तनि *Weg, Pfad* Uǵǵval. zu Unâdis. 2,107. AK. 2,1,16. Trik. 3,3,263. H. an. 3,411. Med. n. 123. j. 50. Halâj. 2,105. Çabdar. im ÇKDr. — *c) das Zerreiben, Mahlen* (= पेषण) Çabdar. im ÇKDr. *das Absenden* (प्रेषण) Med. — *d) Spinnwirtel* (तर्कुपीठ) Trik. 2,10,10. 3,3,263. H. an. Med. n. 123. fg. *Spinnrocken* (तूलनाला) Med. — 4) n. nom. act. Dhâtup. 18,19. *a) das Sichdrehen, Rollen* Nir. 13,12. — *b) das Drehen:* रज्जु° P. 8,3,89, Schol. — *c) das Fortrollen, Fortbewegen* Kâtj. Çr. 8,4,2. Suçr. 1,25,15. — *d) das Umherschweifen, Umhergehen:* गृहमण्डलवर्तनैः *Rundgang im Hause* (einer Hausfrau) Bhâg. P. 7,11,26. 11,11,39. नियम्य सर्वेन्द्रियबाह्यवर्तनम् 6,16,33. — *e) das Verweilen, Aufenthalt:* तदुपात्तेग्रावयोर्वर्तनम् Uttarar. 12,9 (17,2). — *f) das Leben von* (instr.), *Unterhaltung des Lebens:* अवशिष्टेनान्नेन Mârk. P. 50,71. पद्मान्नकृत° Kathâs. 27,90. *Lebensunterhalt, Erwerb* AK. 2,9,1. Med. Spr. 718. Kull. zu M. 3,152. Hit. 98,8. 114,2. Pańkat. ed. orn. 6,11. लोक° *das Mittel, wodurch die Welt besteht* (u. d. W. ungenau wiedergegeben) Kathâs. 64, 42. *Lohn* Hit. I,40. 98,10. 99,18. — *g) Verkehr, Umgang:* असद्भिः सह Kâm. Nîtis. 14,44. — *h) das Verfahren, Benehmen:* नीतिः शास्त्रेण वर्तनम् Sâh. D. 489. अलक्तक° *das Verfahren mit Lack* so v. a. *das Färben mit Lack* Kir. 10,42. — *i) Spinnwirtel; Spinnrocken* Med.

वर्तनि (wie eben) Unâdis. 2,107 (वर्तनि) f. 1) *Radkreis, Radfelge; Radspur, Geleise:* चक्रस्य RV. 8,52,8. पर्णायं वधीस्तेविष्ठया वर्तनी 1, 53,8. वि वां रथो उत्तान्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् 7,69,3. °न्यौ Ait. Br. 5,33. हविर्धानस्य TS. 6,4,9,5. Shadv. Br. 1,5. — 2) *Wegspur, Weg, Bahn;* vollständiger पथो व° RV. 4,45,3. 7,18,16. वातस्य 1,25,9. 140, 9. 3,7,2. 5,61,9. या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतम् 10,65,5. 172,1. उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिम् 4. 144,4. AV. 7,21,1. *Bahn der Flüsse* RV. 4,19,2. TS. 2,3,10,2. पच्छदर्श° 4,3,3,1. ऋतस्य RV. 10,5,4. स्फ्य° *eine von einem Spahn gerissene Furche* (vgl. वर्त्मन्) Ait. Br. 8,5. द्वे वै यज्ञस्य वर्तनी Çânkh. Br. in Ind. St. 2,305. Khând. Up. 4,16,1. fgg. — 3) *die Augenwimpern* (vgl. वर्त्मन्) Çat. Br. 14,5,2,3. — 4) *das östliche Land* (पूर्वदेश) Trik. 2,1,12. — 5) = स्तोत्र gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1, 160. — Vgl. कृष्ण°, गायत्र°, घृत°, रघु°, रुद्र°, वृजिन°, हिरण्य°. — वर्तनी s. u. वर्तन.

वर्तनिन् am Ende eines comp.: एक°, द्वि°, सहस्र° *ein-, zwei-, tausendräderig* Shadv. Br. 1,4.5.

वर्तनीय (von वर्त्) adj. impers. *sich zu machen an, obzuliegen:* वर्तमानेषु कार्येषु वर्तनीयं विचक्षणैः Spr. 818.

वर्तमान (partic. praes. von वर्त्) adj. *praesens, was eben vor sich geht, gegenwärtig* Kâtj. Çr. 1,10,1. 11,1,2; vgl. u. वर्त् 10).

वर्तमानता f. *das gegenwärtig-Sein* Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 39. Sarvadarçanas. 15,22. fg.

वर्तमानाक्षेप m. *eine Erklärung, dass man mit Etwas, welches im Augenblick vorgeht, nicht einverstanden sei,* Kâvjâd. 2,124. Beispiel Spr. 3940. — Vgl. भविष्यदाक्षेप und वृत्ताक्षेप.

वर्तर् (von 1. वर्) nom. ag. *der zurückhält, abhält, Abwehrer:* न तै वर्तास्ति राधसः RV. 8,14,4. 4,20,7. नास्य वर्ता न तरुता महाधने 1,40, 8. 6,66,8. तविष्याः 5,29,14.

वर्तलोह n. *eine Art Messing* H. 1050.

वर्तव्य MBh. 12,3339 fehlerhaft für कर्तव्य (so die ed. Bomb.), 13, 6515 für चर्तव्य (so die ed. Bomb.), Pańkat. 175,10 für वर्तितव्य.

वर्तस् m. *die Augenwimpern:* वर्तोभ्याम् VS. 25,1. — Vgl. वर्तनि 3).

वर्ति Unâdis. 4,118. वर्ति 140. und वर्ती (von वर्त्) f. Siddh. K. 248, *a*, 3. *allerlei* (insbes. *länglich*) *Gerolltes.* 1) *Bäuschchen* oder *ähnliche Einlage in eine Wunde* Suçr. 1,16,7. पिचु° 54,18. 55,5. 6. 9. 2,3,18. 8,21. वाल° 2,23,15. fg. — 2) *Stengelchen, Paste, Pille* als Form für Heilmittel und Wohlgerüche, auch für Errhina, Suçr. 1,132,18. 133,16. अङ्गुष्ठमात्र 2, 89,5. 130,6. 233,6. 14. 19. 325,11. 17. 339,16. 19. 347,7. 353,2. 357,10. 12. कृत्वा पायौ विधातव्या वर्तयो मरिचोत्तराः *Stuhlzäpfchen* 456,5. 501, 15. वर्तीकृत 331,6. Çârng. Saṁh. 2,7,1. रोपणी Verz. d. Oxf. H. 311,*b*, 24. = भेषजनिर्माण H. an. 2,192. fg. Med. t. 55. oxyt. = योगकर्मविधि Uǵǵval. zu Unâdis. 4,140. — 3) *Docht,* parox. Uǵǵval. zu Unâdis. 4, 118. Trik. 3,3,183. H. an. Med. वर्त्याधारस्नेहयोगाद्यथा दीपस्य संस्थितिः

MAITRJUP. 6,36 = Spr. 4974. MBH. 4,716 (वर्ती). SUÇR. 2,67,9. VARÂH. BṚH. S. 53,94. 84,1. BṚH. 5,18. KATHÂS. 34,98. Verz. d. Oxf. H. 267,*b*, 15. BHÂG. P. 5,11,8. *Zauberdocht* PAÑKAT. 241,8. 9. vollständig साधक° 2. सिद्धि° (so ist zu lesen) 6. — 4) *Lampe* H. an. MED. — 5) *die am Ende eines Gewebes hervorragenden Zettelfäden* (दशा, was auch *Docht* bedeutet) H. 667. HALÂJ. 2,396. — 6) *Wulst* oder *Stab, der um ein Gefäss läuft*, KÂTJ. ÇR. 16,3,30. fg. — 7) *Zäpfchen*, *Polyp* oder dgl. *im Halse* SUÇR. 1,308,6. 2,261,20. — 8) *der durch einen Unterleibsbruch gebildete Wulst* SUÇR. 2,21,9. मूत्र° *Hodensackbruch* 134,14. — 9) *Schminke* AK. 2,6,3,35. H. 639. H. an. MED. पाणिनामृतवर्तिना — श्रालिख्य KATHÂS. 55,67. *Augensalbe* H. an. MED. इयममृतवर्तिर्नयनयोः UTTARAR. 18,4 (24,12). MÂLATÎM. 14,4. — 10) *Streifen*, = लेखा H. an. MED. अमुच्चञ्चासितां सूर्ये धूमवर्तिम् HARIV. 12792. — Vgl. पिष्ट°, फल°, वर्ण°.

वर्तिक m. = वर्तक *Wachtel* RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. मान°.

1. वर्तिका s. u. वर्तक.

2. वर्तिका (von वर्ति) f. P. 7,3,45, Vârtt. 9, Schol. 1) *Stengel:* पलाश° MBH. 1,1443 nach der Lesart der ed. Bomb. statt °वृत्तिका der ed. Calc.; = दीर्घयष्टि NÎLAK. — 2) *Docht* KÂLIKÂ-P. 68 im ÇKDR.; vgl. योगवर्त्तिका (lies °वर्तिका und verbessere *Zauberdocht*). — 3) *Farbenpinsel* ÇÂK. 86,17. अङ्गुलीत्तरणासन्नवर्तिक RAGH. 19,19. चित्र° MÂLATÎM. 21, 3. Vgl. वर्ण°. — 4) *Farbe* (zum Malen) ÇÂK. 142 fehlerhaft für वर्णिका. — 5) *Odina pinnata* (अन्नशृङ्गी) RÂGAN. im ÇKDR.

वर्तितव्य (von वर्त्) adj. 1) impers. *sich aufzuhalten, zu verweilen, sich zu befinden:* न वर्तितव्यं भवतां कथं च न तेत्रे मदीये BHÂG. P. 1,17, 31. 33. अस्माकं मध्ये त्वया न वर्तितव्यम् (so ist zu lesen) PAÑKAT. 175, 10. तद्धर्म्ये पथि वर्तितव्यम् *ihr müsst verbleiben auf* KATHÂS. 45,374. अस्मद्वशे वर्तितव्यं नित्यं त्रैलोक्यमालिना so v. a. *er muss uns gehorchen* 119,36. — 2) impers. *sich zu befleissigen, obzuliegen;* mit loc.: एवं त्वया वर्तितव्यं प्रज्ञाहिते (beide Ausgg. प्रज्ञाहितं) MBH. 15,254. रामस्य च मया सख्ये वर्तितव्यम् R. 5,36,48. — 3) impers. *zu leben, zu bestehen:* कथं नाम मया सुखोपायवृत्त्या वर्तितव्यम् PAÑKAT. 197,20. — 4) impers. *zu verfahren, zu Werke zu gehen:* न वर्तितव्यमसांप्रतम् Spr. 1444. R. 2, 27,10. मातृवत् (d. i. मातरीव) 112,19 (122,27 GORR.). तस्मान्मे सुतयोः कुन्ति वर्तितव्यं स्वपुत्रवत् MBH. 1,4893. Spr. 4850. MÂRK. P. 77,12. mit gen. der Person statt loc.: यथा भर्तुर्वर्तितव्यं श्रुतं च मे R. 2,39,27. mit instr. der Weise, die Person im instr. mit सह: श्रानुकूल्येन दैवस्य वर्तितव्यं सुखार्थिना Spr. 3707. मया समयधर्मेण वर्तितव्यम् PAÑKAT. 26,2. 55,21 (ed. orn. 46,20). व्याजेन 147,15. — 5) *wo sich Jmd aufhalten —, wo Jmd verweilen darf:* धर्मेण सत्येन च वर्तितव्ये । ब्रह्मावर्ते BHÂG. P. 1,17,33. — 6) *welcher Sache man obliegen muss, zu beobachten:* कुमारे भरते वृत्तिर्वर्तितव्या च राजवत् so v. a. *du musst mit* Bharata *wie mit einem Könige verfahren* R. 2,58,17. — 7) *zu behandeln:* मायाचारो मायया वर्तितव्यः Spr. 4850, v. l.

वर्तिता am Ende eines comp. nom. abstr. von वर्तिन्. गुरुवर्तिता *das einem Aelteren gegenüber zu beobachtende Verfahren* R. 2,115,19.

वर्तित्व (wie eben) n. *das Verfahren wie gegen, das Behandeln wie:* नित्याभ्यन्तर° KÂM. NÎTIS. 14,55.

वर्तिन् (von वर्त्) adj. = वर्तिष्णु H. 389. 1) *irgendwo sich aufhaltend, verweilend, sich befindend, gelegen;* in comp. mit dem Orte: पक्तृप्रदेश° SUÇR. 1,208,18. समीप° RT. 1,16. MÂRK. P. 74,24. HIT. 29,16. अन्तिक° KATHÂS. 36,100. कृतान्तान्तिकवर्ति जीवितम् BHÂG. P. 8,22,11. दूरान्तर° RAGH. 13,31. समदेश° ÇÂK. 5,14. कृस्त° Spr. 4885. सत्पथ° VARÂH. BṚH. S. 8,53. दुःखाम्भोनिधि° 74,3. कैलासोद्यान° KATHÂS. 15,138. 17,9. 30. 91. 18,245. 336. 20,54. 101. 24,136. 26,210. 29,51. 37,222. 43,137. 45, 280. 46,153. 88,20. RÂGA-TAR. 1,62. 199. 4,464. 5,55. 209. 6,263. BHÂG. P. 6,14,48. Schol. zu NAISH. 22,42. zu P. 6,3,19. SARVADARÇANAS. 63,6. 8. बाणपात° *in Pfeilschussweite sich befindend* ÇÂK. 6,14. संबाध° *dicht zusammenstehend* RAGH. 12,67. कान्तं तेजस्विनां मध्ये वर्तिनं सहचारिणाम् KATHÂS. 103,61. प्रियेषु समग्रवर्तीनि विलोचनानि *ganz auf den Geliebten weilend* MÂLAV. 66. *in einem best. Zeitpunkt liegend:* लग्नं मासषट्कान्तवर्तिनम् so v. a. *nach sechs Monaten erfolgend* KATHÂS. 32,17. — 2) *in irgend einem Zustande, einer Lage u. s. w. sich befindend:* कन्यकाभाव° KATHÂS. 22,80. क्लेश° 53,14. कृच्छ्र° KÂM. NÎTIS. 8,64. स्त्रीलिङ्ग° *im Femininum stehend, ein Femininum seiend* VOP. 3,80. दारसंग्रह° so v. a. *verheirathet* R. 2,37,23. निदेश° so v. a. *Jmdes Befehlen gehorchend* MBH. 15,155. R. 4,38,59. 40,5. KUMÂRAS. 3,4. ÇÂK. 139, v. l. MÂLATÎM. 87,14. शासन° dass. KATHÂS. 48,135. *einer Sache obliegend, begriffen in:* निमेष° so v. a. *blinzelnd, sich regelmässig schliessend* RAGH. ed. Calc. 3,43. गुणाग्र्य° RAGH. ed. ST. 3,27. व्यवसाय° KÂM. NÎTIS. 18, 68. अधर्म° BHÂG. P. 5,26,37. 9,13,5. सदाचार° PAÑKAT. 40,20. — 3) *verfahrend, sich benehmend, zu Werke gehend:* राज्ञैवं वर्तिना लोके R. GORR. 2,113,7. क्लीब° *wie* MBH. 13,6217. गुरुवद्वर्ती d. i. गुराविव वर्ती R. 3,1,12. न्याय° *sich nach Gebühr betragend* M. 5,140. JÂGÑ. 3, 22. Spr. 2617. अन्याय° M. 7,16. लोकव्यतिरेकवर्तिनी पार्थिवता KÂM. NÎTIS. 1,64. — 4) *sich nach Gebühr gegen Jmd benehmend:* गुरु° (s. auch bes.) MBH. 3,12432. 15,481. R. GORR. 2,7,8. MÂRK. P. 113,13. श्वश्रूश्वसुर° MBH. 15,5867. अ° *sich ungebührlich betragend* 13,3033. — Vgl. उच्छास्त्र°, कण्ठ°, गुण°, गुरु°, चक्र°, दूर°, पार्श्व° (auch BHÂG. P. 4,29,69), पितृ° (lies *gegen den Vater nach Gebühr sich benehmend*), पुरो° (auch VIKR. 72), पूर्व°, प्रतिकूल°, मण्डल°, मध्य° (auch RAGH. 5, 51), मातृ°, वश°.

वर्तिर m. = वर्तीर SIDDH. in NIGH. PR.

वर्तिष्णु (von वर्त्) adj. P. 3,2,136. VOP. 26,142. = वर्तन AK. 3,1,29. = वर्तिन् H. 389.

वर्तिस् (wie eben) n. *Umgang*, *Umlauf*, *Rundweg* (nach SÂJ. *Wohnplatz*, nach MAHÎDH. = मार्ग) ṚV. 1,34,4. अश्विना वर्तिरस्मदा रथं नि यच्छतम् 92,16. 2,41,7. 5,75,7. परि ह त्यद्वर्तिर्याथो रिषो न यत्परो नान्तरस्तुतुर्यात् 6,63,3. 7,69,5. 8,9,11. 35,7. 76,3. ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वतम् 10,39,13. Alle diese Stellen reden von den Açvin. अग्ने वर्तिर्यज्ञं परियन्सुक्रतूयसे so v. a. *die wiederkehrende Reihe der Opfer durchlaufend* (vgl. περίοδος) ṚV. 10,122,6.

वर्तीर m. *ein der Wachtel* (vgl. वर्तक) oder *dem Rebhuhn ähnlicher Vogel* SUÇR. 1,73,7. 200,20. — Vgl. वार्तीर.

1. वर्तु (von 1. वर्) s. दुर्वर्तु.

2. वर्तु (von वर्त्) in त्रिवर्तु *dreifach.*

वर्तुल (wie eben) 1) adj. *rund* AK. 3,2,19. TRIK. 3,3,182. H. 1467.

HALÂJ. 4,68. Ind. St. 2,262. BHÂG. P. 5,16,5. WEBER, KṚSHṆAǴ. 279. Verz. d. Oxf. H. 96,*b*,12. SIDDH. K. zu P. 3,1,15. VET. in LA. (III) 4,13. MAHÎDH. zu VS. 5,22. PAÑḰAR. 1,7,34. 14,57. वर्तुलाकार adj. 7,15. 2,2,87. वर्तुलाकृत (wohl वर्तुलाकृति) dass. 1,7,46. — 2) m. *a) eine Erbsenart* ÇABDAM. im ÇKDR. — *b)* N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's VJÂḌI beim Schol. zu H. 210. — 3) f. आ *Spinnwirtel* HÂR. 213. — 4) f. ई *Scindapsus officinalis Schott.* RÂǴAN. im ÇKDR. — 5) n. *a) Kreis* COLEBR. Alg. 87. — *b) die Knolle einer Zwiebelart* RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. फल°.

वर्त्मक am Ende eines adj. comp. von वर्त्मन्. रक्त° adj. *rothe Augenlider habend,* m. *ein best. Vogel* VÂGBH. 6,45.

वर्त्मकर्दम ungenau als comp. behandelt; s. u. 2. कर्दम.

वर्त्मकर्मन् n. *die Kunst Wege zu bahnen* R. 2,80,5.

वर्त्मद m. pl. N. einer Schule des AV. Ind. St. 3,277.

वर्त्मन् (von वर्त्) n. 1) *Radspur, Wegspur; Bahn* (auch bildlich) AK. 2,1,15. 3,4,18,124. TRIK. 3,3,225. H. 983. an. 2,284. MED. n. 126. HALÂJ. 2,105. वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् ṚV. 1,85,3. AV. 6,67,1. रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे 12,1,47. TS. 6,2,9,2. 6,2,1. KÂTJ. ÇR. 8,3,31. उत्तरोत्तर° ÇÂÑKH. ÇR. 4,10,3. 5,6,2. ÂÇV. ÇR. 4,4,2. दक्षिणस्य हविर्धानस्योत्तरस्य चक्रस्यान्तरा वर्त्मपादयोः 9,3. पृथग्वर्त्मन् ÇAT. BR. 10,6,1,7. वर्त्मानि नवानि MBH. 3,15683. 15689. 4,874. R. 2,59,5. ÇÂK. 7. MEGH. 19. RAGH. 2,20. हरेर्गृहीतवर्त्मा 9,72. KATHÂS. 21,16. VET. in LA. (III) 25,7. उर्वशी° VIKR. 13,20. शृगालवर्त्मना धावन् HIT. 41,14. उज्जयिनी° 85,3. भानोः MEGH. 40. VARÂH. BṚH. S. 12, Anf. मार्गवर्त्मसु INDR. 5,26. स्फ्यस्य *Furche, Strich* TS. 2,6,4,4. eines von der Stelle gerückten Gefasses TBR. 2,1,2,5. केशेषु H. 571. *Weg, Rinnsal* von Flüssigem: स्रोतसां वर्त्मान्यवरुध्यन्ते *die Gänge werden verstopft* SUÇR. 1,328,8. 2,189, 9. रस° 445,16. श्रोत्रवर्त्म (= श्रोत्रमार्गं) गतः so v. a. *zu Ohren gekommen* Spr. 401, v. l. चरत्समसिवर्त्मसु *Schwerthiebe* BHÂG. P. 10,69,25. 7,8,28. — मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः BHAG. 3,23. MBH. 1,7246. प्राप्त° adj. 12,194. त्रि° Nârâjaṇa 3,12983. अलक्ष्य° BHÂG. P. 2,4,12. 3,15,3. 4,16,10. 8,3,28. रेखामात्रमपि तुषादा मनोर्वर्त्मनः परम् । न व्यतीयुः प्रजास्तस्य RAGH. 1,17. अपुनर्जन्मनाम् VARÂH. BṚH. 1,1. धर्म्ये वर्त्मनि तिष्ठतोः M. 9,1. R. 2,26,1. गुरूपदिष्टेन वर्त्मना WEBER, RÂMAT. UP. 356. Ind. St. 5, 165. साधु BHÂG. P. 4,8,37. सनातन R. 5,11,22. Spr. 3745. KÂM. NÎTIS. 3,37. BHÂG. P. 4,2,32. शास्त्रदृष्ट R. 5,77,13. न्याय्य (so ist zu lesen) 4, 53. आर्ष 3,95. श्रौत LA. (III) 87,12. 92,16. भ्रष्ट PAÑḰAR. 2,8,26. योगीन्द्रगुरु° 4,4,2. गृहमेधीय BHÂG. P. 4,8,20. निर्द्वन्द्वस्य RÂǴA-TAR. 3,219. प्रच्यवन्धर्मवर्त्मसु MBH. 14,517. शास्त्र° Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,32. BHÂG. P. 3,32,33. निगम° 2,7,37. संसार° 4,25,6. KATHÂS. 28,182. अपवर्ग° BHÂG. P. 3,25,25. आत्म° 6,39. मोक्षितचित्त° 4,17,36. विस्मृततत्त्व° 20, 25. व्यवहारवर्त्मसु 12,4,30. MÂRK. P. 120,2. क्रमस्य *Art und Weise* ṚV. PRÂT. 11,32. वर्त्मना am Ende eines comp. so v. a. *entlang, durch:* पङ्क° Spr. 498, v. l. मत्तेभभिन्नप्राकार° KATHÂS. 13,23. प्रतस्थेऽम्बुधिवर्त्मना *zur See* 18,293. 25,40. 26,7. 51,129. स्थल° *zu Lande* RAGH. 4, 60. आकाश° *durch die Luft* HIT. 111,8. व्योम° KATHÂS. 44,184. 52,6. द्वार° *durch die Thür* HIT. 106,21, v. l. तदाकार° HIT. ed. JOHNS. 2361. नद्यद्रिवनवर्त्मसु *über Flüsse, Berge und durch Wälder* HIT. 102,1. Als masc. DAÇAK. 68,11 ohne Zweifel fehlerhaft. — 2) *Rand:* व्रण° SUÇR. 1,66,9. रूढ° 88,15. — 3) *Augenlid (runde Einfassung)* AK. 3,4,18,124. H. an. MED. HALÂJ. 3,6. AV. 20,133,6. ḰHÂND. UP. 4,15,1. Verz. d. Oxf. H. 308,*a*,14. fgg. SUÇR. 2,307,12. fgg. ग्रन्थि° 1,92,14. °मण्डल 340,13. 2,303, 13. °पटल 18. °स्थ 309,18. °भव 20. अक्लिन्न° *das Zusammenkleben der A.* 309,11. 331,11. अर्शो° *gewisse krankhafte Auswüchse an den A.* 308,14. WISE 297. — Vgl. अनु°, कल्याण°, कृष्ण° (*Feuer* MAITRJUP. 6,35), क्लिन्न°, क्लिष्ट°, घन°, देव°, धूम°, नक्षत्र°, परि°, पुरु°, प्रक्लिन्न°, प्रति°, बहुल°, बिस°, मरुद्वर्त्मन्, मेघ°, रथ° (आनाक° so v. a. *bis zum Himmel mit seinem Wagen sich erhebend* RAGH. 1,5), राज° (R. 2,25,39), श्याव°, सत्य°, सु°.

वर्त्मनि f. = वर्तनि GOVARDHANA bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 2,107.

वर्त्मबन्ध m. = वर्त्मविबन्धक WISE 297.

वर्त्मरोग m. *Krankheit der Augenlider* SUÇR. 1,35,2. 36,5. Verz. d. B. H. No. 934. Verz. d. Oxf. H. 308,*a*,12. 16.

वर्त्मविबन्धक m. *eine Krankheit der Augenlider, bei welcher diese das Auge nicht ganz bedecken,* SUÇR. 2,307,19; vgl. बन्धो वर्त्मनः 309,1 und वर्त्मबन्ध.

वर्त्मशर्करा f. *gewisse Verhärtungen an den Augenlidern* SUÇR. 2,307, 17. 308,13.

वर्त्मायास m. *Ermüdung von der Reise* Verz. d. Oxf. H. 20,*a*.

वर्त्मावरोध m. *Lähmung der Augenlider* SUÇR. 1,260,14.

वर्त्र (von 1. वर्) 1) adj. *wehrend* ÂÇV. GṚHJ. 3,11,1. — 2) n. *Deich, Schutzdamm:* प्र तं भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशन्त्या इव AV. 1,3,5. अति वा एता वर्त्रं नेदन्ति TS. 1,6,8,1.

वर्त्स m. nach dem Comm. zu ṚV. PRÂT. 1,10 *Wulst des Zahnfleisches (auf der inneren Seite des Kiefers).* Es ist deutlich, dass dieses kein anderes Wort sein kann als das in vedischen Texten vorkommende बर्स्व; vgl. auch TS. PRÂT. 2,18.

वर्त्स्य adj. von वर्त्स ṚV. PRÂT. 1,10. richtig wäre बर्स्व्य. Als ein altes und unbekannteres Wort ist es in den Hdschrr. entstellt worden; vgl. WEBER, Ind. Str. 2,96.

1. वर्ध्, वर्धते (वृद्धौ) DHÂTUP. 18,20. वर्धति, वृधति, वृधानं, ववर्धतुस्; ववर्ध, वावृधुस्, वावृधाति ṚV. 1,33,1. वावृधस्, ववृधे, वावृधे, वावृधन्त, वावृधानं; वर्धिष्यते und वर्त्स्यति, अवर्धिष्यत und अवर्त्स्यत P. 1,3,92. 7,2,59. अवर्धिष्ट und अवृधत् 1,3,91. वर्धिषीमहि VS. 2,14. partic. वृद्ध s. bes. 1) trans. act. *a) erhöhen, grösser machen, verstärken, gedeihen machen:* ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन् ṚV. 3,32,3. त्वयम् 4,53,7. अग्निं घृतेन 5,14,6. तान्वर्ध भीमसंदृशः 56,2. अस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति 1,33,1. इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः 8,6,35. AV. 18,3,10. ÇAT. BR. 1, 8,1,28. प्रियमवृधत् (अवतत् ÇAT. BR.) BṚH. ÂR. UP. 4,5,5. परराष्ट्राणि निर्जित्य स्वराष्ट्रं ववृधुः पुरा MBH. 1,5540. — *b) (innerlich erhöhen) erheben, freudig erregen, ergötzen, begeistern;* von der Befriedigung und Erregung des Kraftgefühls gebraucht, in welche man die Götter durch die Huldigungen ihrer Verehrer versetzt denkt. Es ist nicht zulässig in den zahlreichen Stellen, wo dieses in der alten priesterlichen Sprache so beliebte Wort vorkommt, immer bei dem räumlichen Begriff stehen zu bleiben. SÂJ. zu ṚV. 1,81,1 sucht das Verhältniss mit den Worten auszudrücken:

स्तुत्या हि देवता प्राप्तबला सती प्रवर्धते. यज्ञेन वर्धत जातवेदसम् RV. 2,2,1. वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद्ब्रह्म गिर उक्था च मन्म 6,38,4. स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय 8,2,29. यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन 3,5,8. 10,6. (मरुतः) ये त्वामवर्धन् 35,9. 47,4. त्वामग्ने विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम् 5,13,5. स्तोमैर्वर्धन्ति गीर्भिः प्रभ्यन्ति 5,22,4. 29,11. 36,5. त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्याम् 6,1,5. 7,97,8. यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवान् 10,14,3. ववृधन्त इन्द्रम् 4,2,17. वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयः P. 3,4,117, Schol. वर्धाय absol. (vgl. प्रक्राय unter ग्रभ् in den Nachträgen): ततस्तु भगवान्ब्रह्मा वर्धाय (वर्धाप्य die neuere Ausg.) स तु केशवम्। जगाम ब्रह्मलोकम् *durch Segenswünsche u. s. w. erfreut habend* Hariv. 10906. — 2) intrans. med. (in der älteren Sprache act. im perf., insbes. in der 3. pl., und die Form वृधति u. s. w.; in der späteren Sprache aor. fut. und condit. auch im act.; in der epischen Sprache aus metrischen Rücksichten häufig auch sonst act.) *a) wachsen, erwachsen; sich mehren, sich stärken, gedeihen; sich gross zeigen*: तोकं च तस्य तनयं च वर्धते RV. 2,25,2. वर्धतां गीः 3,1,2. तन्वा वावृधानः 34,1. 7,19,1. जहि रक्षो महि चिद्वावृधानम् *sich gross machend* 4,3,14. 5,42,9. 6,22,6. 7,104,4. अर्चाम तद्वावृधानं स्वर्वत् *sich ausbreitend* 1,173,1. द्वियन्निर्मृहतो वावृधन्त 6,66,2. ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासः। प्रैभ्य इन्द्रावरुणा भूतम् *als alle Götter, Männer und Frauen sich gross zeigten, da thatet ihr es ihnen zuvor* 6,68,4. देवं बर्हिर्वर्धमानं सुवीरम् *blühend* 2,3,4. पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्ध 5,2,2. असो नु कमजरो वर्धाश्च 10,50,5. ता वृधन्तावनु द्यून्मर्ताय देवौ पुरो दधे *gross erscheinend, sich gross zeigend* 5,86,5. 1,158,1. 6,66,11. अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्तः 49,11. VS. 38,21. AV. 2,28,1. 5,72,2. सा नो भूमिर्वर्धयद्वर्धमाना *gedeihend lasse uns gedeihen* 12,1,13. 13,1,49. इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व Çat. Br. 1,6,3,8. 11. 8,1,4. अन्नेन 2,2,1,12. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं वर्धते 13,2,7,4. Lâṭj. 6,5,1. — सततं ववृधे मत्स्यः *wuchs* MBh. 3,12757. ववृधे ऽन्तःपुरे शिशुः Hariv. 6437. ववृधिरे Ragh. 10,79. Kathâs. 17,71. 61,267. Râǵa-Tar. 3,110. अवर्धिषातनाम् 6,212. Bhâg. P. 8,20,21. 24,17. Vet. in LA. (III) 19,1. Brahma-P. ebend. 58,6. निष्प्रत्यूहमवर्धन्त श्रुतिशाखाः समन्ततः 92,18. सर्वे ववृधुरल्पेन कालेनाप्स्विव नीरजाः MBh. 1,4865. 4864. Hariv. 803. वर्धन्तम् 6439. मार्जारो वर्धते चापि *wird dick und rund* MBh. 5,5438. fg. शशिनं शुक्लपक्षादौ वर्धमानमिवोत्तमा R. 4,34,3. Varâh. Bṛh. S. 4,31. Râǵa-Tar. 6,292. Weber, Kṛshṇaǵ. 298. कलाभिः सोमस्य वर्धन्तीभिः Mârk. P. 64,9. उल्का वर्धते Varâh. Bṛh. S. 94,10. Bhâg. P. 1,7,30. दावाग्नेरिव वर्धतः (so ed. Bomb.) MBh. 3,16072. ववृधे च महाभागो वयसानुदिनं तथा। गुणौघैश्च यथा बालः कलाभिः शशलाञ्छनः॥ Mârk. P. 63,8. वयसा बुद्ध्या च 27,1. पूर्णचन्द्रोदये पूर्णो वर्धते सागरो यथा R. Gorr. 2,11,18. 3,30,32. Bhâg. P. 8,24,41. सागरस्येव वर्धतः R. Gorr. 2,105,57. वेलया वर्धमानया Râǵa-Tar. 4,539. तत्सेना नरनागानां पृतनाभिः पदे पदे। कुल्यापगेव (so die ed. Calc.) कुल्याभिर्विशन्तीभिरवर्धत॥ 5,140. वर्धते दिक्षु सर्वासु — तद्राक्षसं सैन्यम् R. 3,31,43. भूमिं द्यां च ववृधिरे दानवाः *breiteten sich aus über* Hariv. 8066. वर्धता चैव वर्षेण 12773. वर्धमानाम्बुभिः *sich füllend* R. 5,10,4. कुलं वर्धते *vermehrt sich* M. 3,57. अहान्येव वर्धन्ते *werden länger* Bhâg. P. 5,21,4. Spr. 2519. अवर्धमानश्चार्थः *sich nicht mehrend* Hit. 46,8. धनम् *durch Zinsen wachsen* Jâǵñ. 2,44. वर्धमानमृणं तिष्ठेत् Spr. 4976. तस्य तद्वर्धते (राष्ट्रं) नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः M. 9,255. तेनायुर्वर्धते राज्ञो द्रविणं राष्ट्रमेव च 7,136. येशो राष्ट्रं च 8,302. धर्मः सत्येन 83. आयुर्विद्या यशो बलम् Spr. 3551, v. l. ववृधे कामः MBh. 3,2148. अन्योऽन्यजयसंरम्भः Ragh. 12,92. स्नेहः Pańkat. I, 1. धर्मविजयः Râǵa-Tar. 3,329. कीर्तिः Spr. 3167. शोकः R. 2,62,18. Spr. 110 (II). वर्त्स्यन्त्यवामयः स (d. i. परः *der Feind*) च 448. श्रद्धया वर्धते धर्मः R. 3,43,38. वीर्यम् 5,3,3. मदः Bhaṭṭ. 14,13. तुच्छास्यावृधद्भ्रतः 15,29. नूनमापूर्यमाणायाः सरय्वा वर्धते रवः *verstärkt sich* R. 4,27,12. धनक्षये वर्धति जाठराग्निः Spr. 781, v. l. अधर्मेण वर्धता Bhâg. P. P. 3,11,21. स प्रेत्येह च वर्धते *gedeiht, dem geht es wohl* M. 8,172. 6,34. नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्धते M. 9,322. तथा ह्येता (प्रजाः) न वर्धेरन् MBh. 3,1212. R. 3,45,15. तथा वर्धस्व भूपते। यथा रविर्यथा सोमो यथेन्द्रो वरुणो यथा 2,11,19. पुत्रवत्पाल्यमानास्तु महात्मना॥ ववृधुर्विषये तस्य Mârk. P. 116,75. fg. वर्धस्वेत्याह राघवम् R. 7,103,7. कथं जीवेयुरत्यन्तं कथं वर्धेयुः MBh. 3,344. सर्वतो वर्धति 5,1702. वर्धिषीष्ठाः स्वजनेषु Bhaṭṭ. 19,26. वृद्ध *emporgekommen seiend* Spr. (II) 240. Kathâs. 10,25. शिल्पानि मन्त्राश्च तथौषधानि — वर्धन्ति *gedeihen, haben guten Erfolg* Spr. 4398. अपि तपो वर्धते Çâk. 12,20. Bhaṭṭ. 6,68. Râǵa-Tar. 5,461. दीयमानं तदा विप्रा वर्धतामिति चाब्रुवन् so v. a. *möge dir Segen bringen* MBh. 14,1854. — *b) wachsen, in die Höhe gehen*, beim Gottesurtheil mit der Wage so v. a. *steigen* (in der Wagschale) Z. d. d. m. G. 9,667. Mit. 145,12. — *c) wachsen, gedeihen* mit acc. der Beziehung: स्वयं वर्धस्व तन्वम् *an deiner Person* RV. 7,8,5. 10,98,10. 116,6. यस्तविषीं वावृधे शवः 23,5. अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य 8,3,8. — *d) gehoben —, freudig erregt werden; sich ergötzen, — begeistern durch, an* oder *bei Etwas* (instr., auch loc.): त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा RV. 2,1,11. 11,2. यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दधे 19,1. स वावृधे नर्यो योषणासु 7,95,3. अग्ने वृधान आहुतिं जुषस्व 3,28,6. यः स्तोमेभिर्वावृधे 32,13. सुते सुते वावृधे वर्धनेभिः 36,1. अग्ने वर्धास इन्दुभिः 6,16,16. पीवो सोमस्य वावृधे 3,40,7. 47,5. 51,1. 53,1. न रीषते (नः) वावृधानः परा दात् *wenn er freudig gestimmt —, befriedigt ist* 5,3,12. ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ 52,7. 68,4. 6,37,5. 44,13. 69,6. पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः *dabei ergötzt sich der Vater und (wächst) das Kind* 7,101,3. तुरस्येव 10,96,8. बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः 14,3. AV. 1,8,4. 12,1,29. VS. 20,43. इन्द्रं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शाशदुश्च RV. 2,20,4. रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः 34,13. 5,59,5. 7,60,5. 8,51,10. प्रुद्धे रुक्थैर्वावृधासम् 84,7. 87,8. बृहस्पतिर्नो हविषा वृधातु TS. 1,2,2,1. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः *hat sich erregen lassen zu* RV. 1,81,1. mit gen.: ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः *an mir freue dich* 8,6,12. अस्य सुवानस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः 2,11,20. वृधन्तमध्वराणाम् 8,91,7. कारिणां वृधन्तम् (so vermuthen wir) *der Preisenden sich freuend* 2,29. जम्भे रसस्य वावृधे *beim Schlucken* (eigentlich *im Rachen*) *freut sie sich des Safts (der Milch)* 1,37,5. 4,23,1. वृधम् und वृधत् Ausrufe in Opferformeln: *vergnüge dich* u. s. w. Âçv. Çr. 2,3,12. Kauç. 91. Aus der späteren Sprache gehören hierher Stellen wie: दिष्ट्या वर्धामहे पार्था दिष्ट्यासि पुनरागतः so v. a. *wir haben Grund uns zu freuen, geben wir uns der Freude hin, wir können uns glücklich schätzen* MBh. 3,12286. वर्धसे दिष्ट्या जगो ऽयं प्रतिगृह्यताम् R. 6,98,6. Vikr. 8,2. Pańkat. 46,9. वर्धसे दिष्ट्या क्षत्रधर्मेण R. 3,35,99. बलेन यशसा चैव वर्धस्व प्रज्ञया तथा 5,33,21. दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन

पुत्रमुखदर्शनेन चायुष्मान्वर्धते Çák. 108,14. Vikr. 11,11. Márk. P. 110,8. दिष्ट्या वर्धसि धर्मज्ञ साम्राज्यं प्राप्तवानसि MBh. 2,1601. 1632. 5,542. 7, 6452. R. 7,1,28. वर्धथ Márk. P. 18,47. वर्ध त्वमनया सार्धं धनपुत्रसुखायुषा 21,77. धर्मेण वर्ध त्वं नास्मान्हिंसितुमर्हसि MBh. 1,7864. दिष्ट्या वर्धसि गोविन्द अनिरुद्धसमागमात् Hariv. 10887. — 3) infin. वृधे zum Wachsthum, — Gedeihen; zur Begeisterung, zum Ergötzen: त्वं त्राता त्वमु नो वृधे भूः ṚV. 1,178,5. 4,2,18. 23,2. प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे 3,3,8. स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञंयज्ञमभि वृधे गृणीतः 6,10. 6,33,4. उतैधि पृत्सु नो वृधे 46,3. 11. 8,3,1. 13,3. 27,4. आपिं नक्षामहे वृधे 49,10. स्याम मरुत्वतो वृधे 52,10. 86,11. Válakh. 6,5. तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे AV. 11,2,24. Eben so वृधसे . स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे ṚV. 5,64,5. — 4) eine Verwechselung mit वर्त् ist vielleicht anzunehmen in folgenden Stellen: ततः समाजो ववृधे स राजन्दिवसान्बहून् MBh. 1, 6972 (vgl. वर्तमाने समाजे 6973). ततो विवाहो विधिवद्ववृधे मात्स्यपार्थयोः 4,2362. रामेण चेद्रावणसैन्द्र वर्धते तव विग्रहः R. 3,41,3. ततो ऽभिषेको ववृधे शत्रुघ्नस्य 7,63,13. उत्सवाश्च समाजाश्च वर्धन्ते (v. l. वर्तन्ते) Spr. 4415, v. l. सत्त्वं हि वर्धते तस्य सदैवाभयदक्षिणम् MBh. 8,303. स्वनेन वर्धमानेन R. 2,97,4. 3,34,4. यज्ञविघ्नकरी यक्षी पुरा वर्धत (oder an Macht gewinnen) मायया R. Schl. 1,28,20. धर्मे ते वर्धतां बुद्धिर्मा चाधर्मे मनः कृथाः MBh. 3,15799.

— caus. 1) वर्धयति, अवीवृधत् P. 7,4,8, Schol. a) erhöhen, grösser —, wachsen machen, mehren, fördern: आयं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र ṚV. 1, 103,2. वीरम् 118,2. इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति 2,11,1. 4. वाणीम् 8. वाचम् 9,97,36. यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः 2,27,12. अथा नो वर्धया गिरः 3,29,10. आयुः 62,15. 5,11,5. ओषधीः 62,3. (सरस्वती) पञ्च जाता वर्धयन्ती 6,61,12. रयिम् 7,36,7. राष्ट्रम् AV. 3,19,5. mit gen.: स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय lass den Lobsänger davon geniessen, sich daran ergötzen ṚV. 8,86,1. — जातमात्रश्च यः सद्य इष्ट्या देहमवीवृधत् MBh. 1,2210. R. 5,56,58. स्वमांसं परमांसेन M. 5,52. एकैकं ह्रासयेत्पिण्डं कृष्णे शुक्ले च वर्धयेत् 11,216. वर्धितेन्धना (so die neuere Ausg.) Hariv. 7039. पूरं पयोधेः Spr. 1813. वर्धयन्निव तत्कूटानुद्धतैर्धातुरेणुभिः Ragh. 4,71. ज्येष्ठः कुलं वर्धयति विनाशयति वा पुनः M. 9,109. रक्षितं वर्धयेत् Spr. 233. fg. कोशं काकिन्या 3228. R. 1,7,7. Schol. zu Kátj. Çr. 446,17. अघाहानि verlängern M. 5,84. रात्रयो ब्रह्मणा वर्धिताः Schol. zu Naish. 22,57. महोत्सवः — भूरिवासरवर्धितः Kathás. 23,86. शब्दं तोयसंरम्भवर्धितम् verstärkt R. 1,26,5. क्रमशो वर्धयंस्तपः M. 6,23. प्रीतिम् MBh. 1,4795. तेजो बलं च देवानां वर्धयन्ति श्रियं तथा 7661. शोकम् 3,2330. 15,811 (med.). 13,4722 (med.). R. Gorr. 2,38,28 (med.) 123,19. 7,99,19 (med.). 106,4. Kám. Nitis. 13,34. Spr. 3189. 4478 (med.). 4542. Márk. P. 16,65 (med.). Daçak. 87,8. LA. (III) 90,2. कर्म fördern MBh. 14,2300. वर्धिताशेषस्वानुसर्ग blühend Bhág. P. 4,23,1. grossziehen, aufziehen: शिशुम् ṚV. 10, 4,3. Hariv. 9222. Kathás. 2,32. 27,103. 61,266. नारी नाम विषाङ्कुरैरिव लता दोषैः समं वर्धिता Spr. 75 (II). Çák. 51, v. l. ये वर्धिताः कनकपङ्करेणुमध्ये कलहंसपोताः aufgewachsen Spr. 2520. ये वर्धिताः करिकपोलमदेन भृङ्गाः 2521. बालमन्दारवृक्षः Megh. 73. Jmd gross machen, zur Macht verhelfen, in die Höhe bringen AV. 2,6,1. 6,5,3. Çat. Br. 1, 6,3,13. MBh. 2,1632. वर्धयात्मानमात्मना Hariv. 3534. Spr. 438. 440. 862. 1375. 1828. Kám. Nitis. 5,69. fg. Rága-Tar. 4,493. तं (जनपदं) वर्धयेत्प्रयत्नेन hegen, pflegen Kám. Nitis. 4,56. med. mit medialer Bedeutung: प्रजां वर्धयमानः sich seine Nachkommenschaft mehrend ṚV. 1,125, 1. तन्वम् 10,59,5. वर्धित = पूर्ण und प्रसृत (प्रसित Med.) H. an. 3,291. fg. Med. t. 149. — b) erheben, freudig erregen, ergötzen: सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामः ṚV. 1,91,11. 36,11. 190,1. अस्मान्सु पृत्स्वा तरुत्रावर्धयो द्यां बृहद्भिरर्कैः 2,11,15. ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ 5,31,4. 6,44,5. गीर्भिरभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ 49,10. सूनृताभिः 1,125,3. ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति 8,89,4. AV. 1,9,3. वषट्कारेण यज्ञम् 5,26,12. प्रजापतिं हविषा वर्धयन्ती TBr. 3,1,1,2. 2,1. कृष्णं जयाशिषा वर्धयित्वा Hariv. 5404. 9222. MBh. 14,2650. R. 2,34,5. 6,5,17. 12,15. 7,23,3. 44,4. 6. Kathás. 108,9. 110,119. यज्ञैर्बहुविधैर्देवान्वर्धयानस्य R. 7,99,19, v. l. इष्ट्या देवीमवीवृधत् MBh. 1,2210 (eine von Nilak. erwähnte Lesart). वावृधध्यै infin.: सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ṚV. 1,61,3. 122,2. गीर्भिर्मित्रावरुणा वा° 6,67,1. 10,99,1. med. sich erregen u. s. w.: अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः begeisterten sich in dir 4,32,12. अस्तोढं स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वम् ergötztet euch an 124,13. अवीवृधन्त पुरोडाशैः thaten sich gütlich an VS. 21,60. TBr. 2,6,15,2 (vgl. Âçv. Çr. 6,11,5). Çat. Br. 1,9,1,9. 10. — 2) वर्धापयति freudig erregen u. s. w. Hariv. 10886. 10906 (वर्धाप्य die neuere Ausg.). — वर्धित s. auch bes.

— desid. विवर्धिषते und विवृत्सति P. 1,3,92. 7,2,59. Schol. zu 1,2,10.

— intens. वरीवृध्यते, वरीवृधीति P. 7,4,90, Schol.

— अति med. hinauswachsen über (acc.) Çat. Br. 1,8,1,3. अतिवृद्ध (अति + वृद्ध) sehr gross: प्रमाणेन R. 1,28,8. वन 5,17,6. sehr heftig: कोप MBh. 6,3768. वयसा sehr alt Márk. P. 61,11.

— अधि med. sich wohlbefinden bei (loc.) ṚV. 9,75,1.

— अनु 1) act. in der dunklen Stelle अनु श्रुताममतिं वर्धदुर्वीम् ṚV. 5,62,5. — 2) med. nachwachsen, heranwachsen, allmählich zunehmen ṚV. 5,44,1. न वै जातं गर्भं योनिरनु वर्धते Çat. Br. 10,2,3,6. महामीनो ऽन्ववर्धत er wuchs zu einem grossen Fische heran Bhág. P. 8,24,21. स्नेहो ऽन्ववर्धत 6,14,36. — 3) अनुवृद्ध in der Stelle वेदवादानुवृद्धानि वचांसि VP. bei Muir, ST. I, 147 fehlerhaft für अनुवृत्त. — caus. ausdehnen nach Etwas Çat. Br. 10,2,3,6. grossziehen: (शिशुम्) रसायनप्रयोगैश्च शीघ्रमेवान्ववर्धयत् (एव व्यवर्धयत् die neuere Ausg.) Hariv. 9220.

— अभि 1) heranwachsen, stärker —, grösser werden, zunehmen; sich ausdehnen —, hinauswachsen über (acc.): विश्वा भुवना ṚV. 2,17,4. वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे 5,44,5. ज्यायां सेनामभि वर्धताम् übertreffen AV. 6,78,1. 2. 1,29,1 (vgl. ṚV. 10,174,1, wo das Richtige). महश्चिद्भ्यवर्धत so gross er war, wuchs er noch ṚV. 9,47,1. अपरिमितं वीर्यमभिवर्धते Çat. Br. 2,1,4,17. 13,4,2,2. — तत्पीत्वा क्षीरमेकाक्षा स कुमारो ऽभ्यवर्धत R. Gorr. 1,39,29. क्षीणः क्षीणो ऽपि शशी भूयो भूयो ऽभिवर्धते Spr. 788. (कामः) हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते 1377. M. 9,318. द्यूते रागो भूयो ऽभिवर्धते MBh. 3,2285. सर्वप्राणिनां बलमभिवर्धते Suçr. 1,19,14. 128,8. MBh. 3,10857. अभिवर्धति चाधर्मः Hariv. 2307. वार्यमाणस्य वाञ्छा हि विषयेष्वभिवर्धते Kathás. 31,91. तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते R. 4,28,11. दातारो नो ऽभिवर्धन्तां वेदाः संततिरेव च zunehmen, gedeihen M. 3,259 (Jágn. 1,245). लोकः Kám. Nitis. 4,21. राजा त्रिवर्गेण nimmt zu an, wird reicher an M. 7,27. तपसा R. 1,65,10. —

2) fehlerhaft für अभिवर्त्: बलौघस्याभिवर्धतः *herankommend* R. 6,16, 49. ततः स कार्मुकी बाणी समरे चाभिवर्धत 7,21,39. — Vgl. अभिवृद्धि. — caus. *stärker —, grösser machen, vermehren* AV. 1,29,1.3 (vgl. ṚV. 10,174,1.3, wo das Richtige). स्वकोशम् Jāǵn. 1,339. भाण्डागारायुधागारं प्रयत्नेनाभिवर्धयेत् MBh. 13,3239. प्रीतिम् 1,4795. 3757. 5,2939. धर्मम् 13,7590. R. Gorr. 1,78,14. *dehnen* Suçr. 1,58,7. *grossziehen:* धात्र्यस्तानभ्यवर्धयन् R. Gorr. 1,40,18.

— समभि *wachsen, zunehmen:* अग्नेराज्याकृतस्येव तेजः समभिवर्धते (°वर्धत ed. Calc., °वर्तत: die neuere Ausg.) Hariv. 13923. — caus. *grösser machen, verstärken, mehren:* हर्षम् MBh. 5,583. कीर्तिम् R. 2,90,21 (99,37 Gorr.).

— आ 1) act. in der verdorbenen Stelle: एमैनमवृधन्नमृता अमर्त्यं क्षैत्रजित्याय VS. 33,60, wo es heissen müsste *liessen heranwachsen;* TBr. 2,4,6,7 wird st. dessen अमन्थन् gelesen. — 2) med. *heranwachsen —, sich heranbilden zu* (acc. oder dat.): भीम आ वावृधे शवः ṚV. 1,81,4. आ मैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः 5,19,3. श्रियं चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः 55,3.

— उद् *emporwachsen, hervorbrechen:* उद्वृद्धराग Rāǵa-Tar. 1,252. vielleicht fehlerhaft für उद्धत.

— नि scheinbar MBh. 4,1918, wo aber mit der ed. Bomb. व्यवर्धत zu lesen ist.

— परि 1) *heranwachsen, wachsen, zunehmen:* राजपुत्रः पर्याप्तं पर्यवर्धत Rāǵa-Tar. 3,107. सा परिवर्धमाना लब्धोदया चान्द्रमसीव लेखा Kumāras. 1,25. (उत्कण्ठा) परिवर्धते सह शुचा सुहृदाम् Spr. 931. बलासः Suçr. 1, 152,16. प्रजावत्सलता पर्याप्ता पर्यवर्धत Rāǵa-Tar. 5,194. परिवृद्ध *angewachsen, vermehrt* Kām. Nītis. 13,47. एकोत्तर° *der Reihe nach um eins zunehmend* Suçr. 1,153,13. *heftig:* राग Ragh. 9,69. शुच् Bhāg. P. 6, 14,47. *hoch gestiegen, zu grossem Ansehen gekommen* Hariv. 13807 (die neuere Ausg. तथ वृद्धः). — 2) fehlerhaft für परिवर्त् Hariv. 2188 (die neuere Ausg. richtig °वर्तते). एवं च स (महोत्सवः) प्रतिदिनं परिवर्धमानः Kathās. 34,264. — Vgl. परिवृद्ध fg. — caus. 1) *aufziehen, grossziehen:* या सा बाल्यात्प्रभृत्यस्मान्पर्यवर्धयत MBh. 5,2956. Hariv. 11077. Ragh. 13,62. अदितिपरिवर्धितमन्दारवृक्ष Çāk. 100,15. *anschwellen machen:* das Meer Ragh. 13,3. Bhaṭṭ. 7,107. — 2) *ergötzen, erfreuen;* mit gen. (!) der Person Hariv. 8804. — 3) fehlerhaft für परिवर्तय् *umwandeln:* सर्वं तत्काञ्चनमयं कालेन परिवर्धितम् MBh. 7,2160. — Vgl. परिवर्धन fg.

— प्र 1) act. *erheben, ergötzen:* प्र वां स्तोमा गिरो वर्धन्त्वश्विना ṚV. 8,8,22. — 2) med. (ausnahmsweise act.) *heranwachsen, zunehmen, Kraft gewinnen* ṚV. 2,22,2. अग्ने मा त्वं प्रवर्धिष्ठाः MBh. 1,1244. Mārk. P. 68, 33. गजमात्रः प्रववृधे *er wuchs zu der Grösse eines Elephanten an* Bhāg. P. 3,13,19. न मे मन्युः प्रवर्धते MBh. 3,1072. प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रवर्धते M. 4,42. धर्मः 11,15. दुःखं भूयश्चापि प्रवर्धते Spr. 4676. Rāǵa-Tar. 3,127. प्रवर्धमानवैर 6,343. लोकानुग्रहकर्तारः प्रवर्धन्ते महीभुजः *gedeihen* Spr. 2682. पापान्प्रवर्धतो दृष्ट्वा कल्याणानवसीदतः MBh. 13,5915. तदतीव प्रवर्धते (गृहम्) 13,3222. प्रेद्धग्निर्वावृधे स्तोमेभिः *erregt werden* ṚV. 3,5,2. प्रवृद्ध (प्रवृद्धे P. 6,2,147) = उच्छ्रित AK. 3,4,14,87. = प्रौढ, एधित 3,2,26. H. 1495. = प्रसृत AK. 3,2,38. *aufgewachsen* Spr. 4032. अंतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धः so v. a. *ausgetragen* ṚV. 4,18,1. प्रवृद्धो दस्युहाभवत् 8,66,3. *gross, hoch:* Indra 1,33,3. 165,9. 8,6,33. 12,8. 82,5. वृषभ 85,2. AV. 4,26,2. हरि MBh. 3,15645. R. Gorr. 1,72,27 (70,38 Schl.). 2,119,28. महाद्रुम 4,31,15. 6,16,20. MBh. 3,15703. प्राकार R. 3,54,15. नग 17,23. शिखर R. Schl. 2,56,10. 5,16,29. शृङ्ग 8,26. Varāh. Bṛh. S. 12,6. लिङ्ग Suçr. 2,396,3. स्तनद्वय Kumāras. 1,40. तोयदाः *angeschwollen* R. 6,73,4. ओघ Kumāras. 3,6. ऊर्मि Ragh. 5,61. अम्भः प्रलयप्रवृद्धम् 13,8. सरित् Rāǵa-Tar. 4,450. 5,85. *gesteigert, heftig, stark:* वायु MBh. 4,1978. पर्जन्य Ragh. 17,15. धाजिनीरजांसि 7,37. अनङ्गकश्मल Bhāg. P. 3,14,15. तमस् R. 6,104,4. दर्प 1,14,43. कोप 3,72,2. तृष्णा Ṛt. 1,15. मनोरथ Kumāras. 7,24. आननचन्द्रकान्ति 74. स्नेह Kathās. 31,90. गर्व Rāǵa-Tar. 6,142. राग 333. हर्ष Bhāg. P. 3,7,42. भक्ति 14,47. 10, 86,28. भाव 4,31,28. लोभ 24,66. निद्रा MBh. 1,5892. R. 3,23,39. 35,64. प्रवृद्धनक्षत्रगणा द्यौः *zahlreich* Hariv. 12545. सालाद्युपायसंघात इव प्रवृद्धः Ragh. 14,11. प्रवृद्धर्ण *viele Schulden habend* Rāǵa-Tar. 6,16. क्षितिः क्षितिपैरभिपालनप्रवृद्धा *blühend gemacht, zur Wohlfahrt gebracht* Varāh. Bṛh. S. 19,14. *mächtig:* काल Bhag. 11,32. *alt geworden* Kathās. 22, 159. वयसा *alt an Jahren* MBh. 1,3579. — 3) ein Verwechselung mit प्रवर्त् ist wohl in folgenden Stellen anzunehmen: प्रवर्धमानपृतनाः *heranrückend* Rāǵa-Tar. 6,222. धनात्कुलं प्रभवति धनाद्धर्मः प्रवर्धते *geht hervor* MBh. 12,226. अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनो न प्रवर्धते (प्रजनं न प्रवर्तते M. 3,61). तस्मात्सर्वं प्रवर्धते Kām. Nītis. 4,56. चित्ते प्रवर्धते तापः Rāǵa-Tar. 4,418. सीतास्नेहप्रवृद्धेन बाष्पेण R. 4,5,15. प्रवृद्धनृत्य (v. l. प्रवृत्त°) Ṛt. 2,6. प्रवृद्धसत्कार Rāǵa-Tar. 5,33. प्रवृद्ध R. 4,9,82 fehlerhaft für प्रविद्ध, Rāǵa-Tar. 4,319 für प्रबुद्ध. — Vgl. प्रवृद्धि, अतिप्रवृद्ध (*sehr hoch von Wuchs* R. 3,10,20. 4,17,14), चोदप्रवृद्ध. — caus. *grossziehen* Kathās. 61,271. Mārk. P. 38,9. *vergrössern, stärken, mehren:* कुलवंशम् MBh. 13,3340. Hariv. 6308. काकिनीम् so v. a. *zulegen* Spr. 3228, v. l. मतिम् ṚV. 8,6,32. AV. 2,6,2. प्रवर्धयते चन्द्रमा दीर्घमायुः *verlängert* Nir. 11,6. 36. AV. 19,32,3. *Jmd erhöhen, zur Wohlfahrt befördern* Hariv. 11272. — Vgl. प्रवर्धक fg.

— अभिप्र caus. partic. °वर्धित *gedehnt* Suçr. 2,149,12. *in einen blühenden Zustand versetzt:* देश MBh. 1,4350.

— प्रतिप्र, °वृद्ध *verstärkt* (°वृत्त die neuere Ausg.) Hariv. 12124.

— संप्र *wachsen, sich verstärken, zunehmen:* श्रोमिङ्गलात्प्रभवति प्रागल्भ्यात्संप्रवर्धते Spr. 5087. चत्वारि संप्रवर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् 3551. ज्ञातयः *gedeihen* 3509. °वृद्ध *aufgewachsen, gross geworden* MBh. 3,10629. 12738. (अब्दैः) स्थाण्वादिकसंप्रवृद्धैः *zusammengeballt, angeschwollen* Varāh. Bṛh. S. 24,24. शुक्ले पक्षे संप्रवृद्धे *wachsend, zunehmend* 4,32. प्रताप *zugenommen, verstärkt* Kām. Nītis. 15,8. यो विद्यया तपसा संप्रवृद्धः *reich an Jahren und an Askese* MBh. 1,3579. — caus. *Jmd zur Grösse verhelfen* R. 5,7,25.

— प्रति s. प्रतिवर्धिन्, welches Nīlak. durch प्रातिकूल्येन छेदिनी erklärt.

— वि 1) *heranwachsen, zunehmen, anschwellen, gedeihen:* (मरुतः) महित्वा वि वावृधुः ṚV. 5,59,6. उर्विया वि वावृधे 1,141,5. ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे 9,108,8. Çāṅkh. Çr. 5,11,16. द्वादशाहो यैरहोभिर्विवर्धते *verlängert werden* 13,14,10. Āpast. beim Schol. zu Kātj. Çr. 1,3,18.

— संवत्सरेणोद्द वै जाता विवर्धन्ते MAITRJUP. 6,15. MBH. 1,2992. 4864 (ववृधुस्). (गर्भः) व्यवर्धत तदा शुक्ले तारापतिरिवाम्बरे 3,16638. R. 2,42, 2. 5,3,1. 35,33. 41,26. विवर्धन्तौ 1,27,7. MÂRK. P. 43,54. इन्द्रशत्रो विवर्धस्व BHÂG. P. 6,9,11. 13. उदरेण विवर्धता MBH. 1,4520. विना मलयादन्यत्र चन्दनं न विवर्धते (प्ररोहति v. l.) Spr. 2615. विवर्धमानैरमलसरित्सलिलैः BHAṬṬ. 10,53. VARÂH. BṚH. S. 21,28. Verz. d. Oxf. H. 117, b,9. चन्द्रोदये विवर्धन्तम् (अम्भसां निधिम्) MBH. 8,1804. बाले विवर्धते श्लेष्मा मध्यमे पित्तमेव तु SUÇR. 1,129,12. विवर्धमाना कथा BHÂG. P. 3,5, 13. धर्मः M. 9,111. ह्रच्छयः MBH. 3,2088. 4,1918 (व्यवर्धत st. न्यवर्धत ed. Bomb.). तथा भूमिकृतं दानं सस्ये सस्ये विवर्धते 13,3135. 7160 (विवर्धन्ति). HARIV. 11307. R. GORR. 2,63,18. 76,25. 3,43,38. 5,42,15. SUÇR. 2, 309,18. 371,21. Spr. 1460. 1524. 2450. 2596. 3417. 4466. Verz. d. Oxf. H. 37,b,9, v. u. अग्निः, दैवम् Spr. 4782. विवर्धमानो वीर्येण समुद्र इव पर्वणि R. 1,55,20 (56,20 GORR.). धनवीर्यैस्त्वं विवर्धस्व सुतेन च MÂRK. P. 21,101. राष्ट्रम् *gedeihen* Spr. 3811. प्रजाः MBH. 1,4342. 7746 (व्यवर्धन्). HARIV. 49. 6452 (विवर्धितुम्). 8933. Spr. 4574. समागमेन पुत्रस्य सावित्र्या दर्शनेन च । चतुर्षश्चात्मनो लाभात्त्रिभिर्दिष्ट्या विवर्धसे ॥ so v. a. *du hast Grund dich zu freuen, — dich glücklich zu schätzen* MBH. 3,16880. fg. विवृद्ध *herangewachsen, gross geworden* ÇVETÂÇV. UP. 5,11. MBH. 1, 6129. 7624. R. GORR. 1,8,32. KATHÂS. 2,71. 14,39. 34,87. MÂRK. P. 45, 63. वृत्त R. GORR. 2,117,13. ताः शाखा विवृद्धा शतयोजनम् 3,39,27. 5, 55,3. VP. bei MUIR, ST. IV, 34. हर्षविवृद्धवक्त्र R. 4,6,24. MBH. 4,396. 15,1081. दंष्ट्रा *gross* HARIV. 12949 (nach der Lesart der neueren Ausg.). कबन्ध R. 3,74,14. MṚKKH. 92,10. गोधनानि *gross, zahlreich* HARIV. 3729. अर्थाः *angewachsen* Spr. 227. सत्त्व *gesteigert* BHAG. 14,11. बुद्धि R. 3,28, 9. मन्यु 42. KUMÂRAS. 3,71. तृष्णा 56. RAGH. 2,32. 3,60. BHÂG. P. 2,7,19. 3,9,25. 10,6. 18,19. 4,2,19. 21,51. शत्रु *zu Macht gelangt* MBH. 12,4207. Spr. 3734. — 2) *sich erheben, entstehen:* ततो हलहलाशब्दो व्यवर्धत MBH. 3,805. 14,2590. — विवर्धन्ते HARIV. 3822 in der neueren Ausg. fehlerhaft für विवर्तन्ते, wie die ed. Calc. liest. — Vgl. विवृद्धि. — caus. 1) *grossziehen, gross machen* HARIV. 4202. 9920 (शीघ्रमेव व्यवर्धयत् die neuere Ausg.). KATHÂS. 24,2. 160. वृत्तम् Spr. 2349, v. l. KUMÂRAS. 5,14. बालरूपम् HARIV. 9268. *Etwas höher machen, erhöhen:* समन्ताद्विवर्धयेत्तुल्यम् VARÂH. BṚH. S. 53,116. *vermehren, vergrössern, verstärken, verlängern* ÇÂÑKH. ÇR. 16,20,9. भारम् Spr. 1107. मांसं रक्तं च SUÇR. 2,307, 15. रतिं तस्य MBH. 4,34. मदं च मदनं च Spr. (II) 93. अष्टवर्गम् KÂM. NITIS. 5,79. MÂRK. P. 34,12. 39,40. द्विकविवर्धित *vermehrt um zwei* VARÂH. BṚH. S. 72,5. 77,10. बलानि विवर्धयन्ति भूभृताम् so v. a. *bewirken, dass manche Heere sich in Bewegung setzen*, 30,28. *Jmd fördern, Jmd zur Wohlfahrt verhelfen:* मित्राणि MBH. 12,3441. R. 5,7,3. 6,11,20. प्रजास्तद्गुरुणा नद्यो नभसेव विवर्धिताः RAGH. 17,41. तपसा च विवर्धितः *den man an Askese hat gewinnen lassen* R. GORR. 1,67,4. — 2) *ergötzen, erfreuen:* विवर्धितश्च ऋषिभिर्हव्यैः कव्यैश्च MBH. 5,447. पितॄन्देवान्विवर्धयन् R. 7,99,18.

— अभिवि s. अभिविवृद्धि.

— प्रवि, caus. partic. प्रविवर्धित *in hohem Grade gesteigert:* °वित्तेच्छ RÂǴA-TAR. 4,621.

— संवि *gedeihen:* संव्यवर्धन्त भोगांस्ते भुञ्जानाः MBH. 1,4977.

— सम् 1) act. *erfüllen, gewähren:* कामान्संवर्ध R. ed. Bomb. 2,25,42. — 2) *heranwachsen, wachsen:* सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ṚV. 5,60,5. पुमान्संवर्धतां मयि ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,17. यथामयः संववृधे BHÂG. P. 10,37,7. संवृद्ध *aufgewachsen* MBH. 1,113. 3,16667. 6,3980. HARIV. 4202. R. 1, 8,8. 2,61,3. R. GORR. 2,58,5. 62,8. 80,8. 3,7,27. 22,29. 4,21,9. 5,3,28. Spr. 2721. RÂǴA-TAR. 3,130. *gross gewachsen, gross gezogen:* वृत्त Spr. 418, v. l. *grösser geworden, verstärkt:* वह्नि 1653. डाकिनीनादसंवृद्धगृध्रवायसवाशित KATHÂS. 18,147. MBH. 15,1077 (संरूढे ed. Bomb.). चन्द्रराग RÂǴA-TAR. 5,382. आश्रमं चिरसंवृद्धम् *blühend* R. 1,55,27 (56,27 GORR.). अतिसंवृद्ध *sehr gross:* अन्न 2,70,23. — caus. 1) *grossziehen, aufziehen, ernähren, füttern* MBH. 1,3613. 4264. 5089. HARIV. 99. R. 1,39,18. 2,53,20 (53,22 GORR.). R. GORR. 2,17,37. 64,7. 3,4,19. Spr. 1672. 1805. 5102. KATHÂS. 27,5. 59,98. MÂRK. P. 74,49. 99,35. PAÑKAR. 4,3,203. DAÇAK. 75,14. fg. PAÑKAT. 182,13. 188,19. HIT. 26,16. 58,10. 70,13. 113,7, v. l. KULL. zu M. 2,142. पादपान् *aufziehen, pflegen* RAGH. 5,6. 13,34. 14,78. Spr. 418. अग्निम् *verstärken* MBH. 3,258 (mit der ed. Bomb. संवर्धयन् zu lesen). R. 5,50,13. सूर्यः संवर्धयत्यग्निमग्निः सूर्यं स्वतेजसा VIKR. 158. निर्वाणदीपस्य स्नेहः संवर्धयेच्छिखाम् *beleben* Spr. 2241. कोशम् *vermehren, verstärken* KÂM. NITIS. 5,87. वर्षम् MBH. 1,8279. जयेति वाचा महिमानमस्य संवर्धयन्तो हविषेव वह्निम् KUMÂRAS. 7,43. यशः MBH. 2,1601. धर्मम् 15, 757. प्रीतिम् R. GORR. 1,70,13. आशाम् KÂM. NITIS. 5,40. अनुग्रहम् KUMÂRAS. 3,3. रागम् Spr. 622. *pflegen:* दण्डम् *ein Heer* RAGH. 17,62. महीम् *zum Gedeihen bringen* BHÂG. P. 1,17,42. शाख्यसंवर्धिता मेदिनी so v. a. *bepflanzt* VARÂH. BṚH. S. 27,1. *beschenken mit* (instr.) R. GORR. 2,84,13. RAGH. 4,37. *verschönern* 5,52 (संवर्धित zu lesen). — 2) = संवर्तय् *erfüllen, gewähren:* कामान् M. 11,242. R. 2,25,42 (संवर्ध याहि भो ed. Bomb.).

— अभिसम् *wachsen:* वनस्पतिः । वर्षपूगाभिसंवृद्धः so v. a. *sehr alt* MBH. 12,5805.

2. वर्ध्, वर्धयति DHÂTUP. 32,111 (छेदनपूरणयोः). *abschneiden:* वर्धित *abgeschnitten* H. an. 3,291. MED. t. 149. वर्धापयति dass. WEBER, KṚSHṆAǴ. 302. — Vgl. 2. वर्धक, वर्धकि, 2. वर्धन, वर्धापन.

3. वर्ध्, वर्धयति DHÂTUP. 33,109 (भाषार्थ, v. l. भासार्थ).

वर्ध (von 1. वर्ध्) 1) adj. *mehrend, verstärkend; erfreuend;* s. नन्दि°, मित्र°. — 2) m. *a*) parox. *das Gedeihenmachen, Fördern:* अर्चामि वां वर्धायापो घृतस्नू ṚV. 10,12,4. — *b*) *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* ǴAṬÂDH. im ÇKDR. — 3) n. *Blei* H. 1041.

1. वर्धक (vom caus. von 1. वर्ध्) 1) adj. *mehrend, verstärkend;* s. अग्नि°. — 2) m. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* AK. 2,4,2,8.

2. वर्धक (von 2. वर्ध्) 1) adj. *abschneidend, scheerend;* s. माष°, श्मश्रु°. — 2) m. *Zimmermann* R. GORR. 1,12,6; vgl. वर्धकि.

वर्धकि (wie eben) m. *Zimmermann* AK. 2,10,9. 3,4,1,4. H. 917. HALÂJ. 2,432. UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 4,118. MBH. 5,255. R. 2,80,2. त्रिदशानाम् MBH. 1,2592. HARIV. 162. — Vgl. देव°.

वर्धकिन् m. dass. ÇABDAR. im ÇKDR. MBH. 13,1223. R. GORR. 2,87,2. 7,91,24 VARÂH. BṚH. S. 43,22.

1. वर्धन (von 1. वर्ध्) oxyt. P. 3,2,149, Schol. proparox. (संज्ञायाम्) gaṇa नन्द्यादि zu 3,1,134. 1) adj. (f. ई) *a*) *wachsend, zunehmend;* =

वर्धिष्णु AK. 3,1,28. Med. n. 121. (क्रि:) कर्माण्यारभते कर्तुं कीनाश इव वर्धन: *wie ein Geizhals, der immer reicher und reicher wird*, MBh. 5, 2536. — b) *mehrend, stärkend; ergötzend, begeisternd; Wachsthumgeber, Mehrer* u. s. w.: इयं ते गी: सदमिद्वर्धनी भूत् ṚV. 10,4,7. यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूत् 3,32,12. 5,73,10. 7,22,7. 8,51,4. हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् VS. 8,46. यो वर्धन ओषधीनाम् ṚV. 7,101,2. स्तोमस्य 8,8,5. °नी राष्ट्रस्य Ait. Br. 8,7. ओज़स: Suçr. 1,175,10. als Beiw. Çiva's *Wachsthumgeber* MBh. 13,1232. In comp. mit dem obj.: पित्ताग्नि° Suçr. 1,217,21. विष° Spr. 489. वित्त° M. 10,85. राशि° Spr. 4859. वर्ष° Uttarar. 66,8 (85,8). संतान° Jâǵn. 1,90. मान° M. 9,115. कीर्ति° MBh. 1,121. कृच्छ्र° 3,2154. कर्ष° Hariv. 6369. 14554. R. 1,1,17. 2,45,7. 3,79,24. 5,80,30. 86,13. Spr. 4250 (fem.). Râǵa-Tar. 3,137. Bhâg. P. 3,4,34. 19,38. 5,1,23. 7,1,4. 8,22,28. Verz. d. Oxf. H. 20,*b*,7. 68,*a*, No. 119, Z. 10. सत्त्व° *fördernd* Bhâg. P. 1,7,2. अपवर्ग° 3,25,12. पुर° *Wohlfahrt verleihend* Hariv. 8187. कुरु° *erfreuend* MBh. 1,1739. 14,403. केकय° R. 7,38,13. मनोनयन° *ergötzend* Bhâg. P. 3,28,16. 4, 8,49. — 2) m. *a*) *Ueberzahn* Suçr. 1,303,10. 304,13. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2540. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Mitravindâ Bhâg. P. 10,61,16. — 3) f. ई *a*) *Besen* H. 1016. Halâj. 2,147. — *b*) *ein Wasserkrug von best. Form* H. 1021, v. l. an. 3,411. Med. Halâj. 2,162. Pańkar. 3,6,7. Gâruḍa-P. 48 im ÇKDr.; vgl. वार्धनी. — 4) n. *a*) *Wachsthum, Zunahme*; = वृद्धि Trik. 3,3,249. H. an. Med. इच्छते मांसशोणितवर्धनम् MBh. 12,12053. कुलस्य R. 1,13,55. यशस: 2,74,26. *das Gedeihen, Mächtigwerden* Spr. 1828. 2755. स्वपक्ष° R. 6,11,11. — *b*) *Vergrösserung*: वेदि° Kâtj. Çr. 8,8,22. आशानाम् Spr. 631. — *c*) *Stärkungsmittel; Ergötzung, Begeisterung* ṚV. 1,10,10. 52,7. 80,1. यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोम: 2,12,4. 39,8. 8,81,5. 10,49,1. यो भोजनं च दयसे च वर्धनम् 2,13,6. 3,36,1. 8,1,3. इदमुच्यते वच: स्वादो: स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् 1,114,6. 140,3. Nir. 4,19. — *d*) *das Aufziehen, Grossziehen*: बालयो: Kathâs. 21,119. — Vgl. अण्ड°, अशोक°, उक्थ°, कन्द°, कफ°, कमल°, कुल°, केश°, क्रोध°, तन्त्र°, गो°, चारुवर्धना, देववर्धन, द्युम्न°, द्रव्य°, धर्म°, धान्य°, नन्द°, नन्दि°, नृम्ण°, पशु°, पुण्ड्र°, पुण्य° (als adj. *Verdienst mehrend* Hariv. 14554), पुष्टि°, प्रभाकर°, बल°, ब्रह्म°, भूमि°, भोग°, मति°, मित्र°, मेरु°, यज्ञ°, रक्त°, रति°, रत्न°, राज°, राज्य°, राम°, राध्य°, राष्ट्र°, लक्ष्मि° (unter लक्ष्मि), लिङ्ग°, वंश°, शंकर°, शंभु°, स्तोम°.

2. वर्धन (von 2. वर्ध्) n. *das Abschneiden* AK. 3,3,7. Trik. 3,3,249. H. 372. an. 3,411. Med. n. 121. Halâj. 4,44. — Vgl. नाभि°.

वर्धनसूरि m. N. pr. eines Ǵaina-Lehrers Wilson, Sel. Works I,294.

वर्धनस्वामिन् m. Bez. eines best. Heiligthums (einer Statue) Râǵa-Tar. 3,357. 6,191.

वर्धनिका (von वर्धन) s. चतुर्वर्धनिका. Nach Vjutp. 208 ist वर्धनिका bei den Buddhisten *ein zur Aufbewahrung geheiligten Wassers dienendes Fläschchen* (abgebildet bei Pallas, Sammlung hist. Nachr. über die mongolischen Völkerschaften II, Pl. IX, Fig. 22). In dieser Bed. vielleicht nur fehlerhaft für वार्धानिका.

वर्धनीय (vom caus. von 1. वर्ध्) adj. *zu mehren, zu verstärken*: मति R. Gorr. 2,23,12. गर्व Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 33. *dessen Wohlfahrt zu fördern ist*: ज्ञातयो वर्धनीयास्तैर्य इच्छन्त्यात्मन: शुभम् MBh. 5,1463. 7,6421. Hariv. 5747.

वर्धमान (von 1. वर्ध्) 1) adj. s. u. वर्ध्. — 2) m. *Ricinus communis* (wegen seines *starken Wuchses* so genannt) AK. 2,4,2,32. Trik. 3,3,249. H. an. 4,188. Med. n. 205. Hâr. 108. Suçr. 2,284,7. — 3) m. *süsse Citronen* Râǵan. im ÇKDr. auch f. आ ebend. — 4) Bez. *einer best. Figur* Varâh. Bṛh. S. 50,2. 71,5. 79,21. 94,2. Lalit. ed. Calc. 122,20. 334,18. — 5) m. n. *eine Schüssel von best. Form* Trik. H. 1024. H. an. Med. Hâr. 167. Halâj. 2,160. MBh. 7,2930 (m.). तिलपूर्णानि वर्धमानानि 13,3263. 4243. Suçr. 1,107,5. — 6) m. n. *ein Haus, das nach der Südseite keinen Ausgang hat*, H. an. Halâj. 2,150. Varâh. Bṛh. S. 53,33. 36. R. 5,10,4. चतु:शालं दक्षिणाद्वारहीनं तु वर्धमानमुदाहृतम् Matsja-P. 241 (nach Aufrecht). — 7) m. Bez. *einer best. Verbindung der Hände* Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,33. 202,*a*,18. *b*,24. — 8) f. आ *eine Gâjatrî mit 6, 7, 8 (8, 6, 8) Silben* ṚV. Prât. 16,15. fg. Colebr. Misc. Ess. II, 152 (I,7). Ind. St. 8,239. fg. — 9) n. *ein anderes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 165 (VII,2). Ind. St. 8,356. fg. — 10) m. *eine Art Räthsel* (प्रश्नभेद) Trik. H. an. Med. — 11) m. Bein. Vishṇu's Trik. 1,1,32. 3,3,249. H. ç. 68. H. an. Med. — 12) m. N. pr. eines Berges und Districtes (das heutige Bardwân) Kûrmaćakra im Ǵjotistattva nach ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 14, 7. 16,5. Bhâg. P. 5,20,21. Mârk. P. 59,13. Kshitîç. 45,4. 48,7. n. N. pr. einer Stadt (vgl. वर्धमानपुर) Kathâs. 24,19. Pańkat. 26,10. f. आ desgl. Vet. in LA. (III) 23,10. m. N. pr. eines Grâma Râǵa-Tar. 4,269. m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,14. — 13) m. N. pr. verschiedener Männer: der 24te Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî, = वीर H. 30. H. an. Colebr. Misc. Ess. II,213. fgg. Wilson, Sel. Works I, 292 u. s. w. Çatr. 1,10. 26. Verz. d. B. H. No. 1364. Verz. d. Oxf. H. 186, *b*, 18. Gelehrte, Kaufleute, Diener Hall 21. fg. 29. 65. 72. 83. Verz. d. B. H. No. 550. 687. fgg. Verz. d. Oxf. H. 137,*a*,2. 162,*b*,23. 243,*a*, No. 601. 279,*a*,41. Bhâg. P. I, lxxviii. Sarvadarçanas. 136,16. Mṛkkh. 45,10. Pańkat. ed. orn. 3,11. Hit. 45,6. नव्य° Verz. d. Oxf. H. 292,*b*, 8. — 14) f. ई Bez. *eines von* Vardhamâna *verfassten Commentars* Hall 21.

वर्धमानक (von वर्धमान) m. 1) *eine Schüssel von best. Form*, = वर्धमान AK. 2,9,32. MBh. 14,1927. 2539. — 2) Bez. *einer best. Verbindung der Hände*, = वर्धमान Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,34. fg. — 3) Bez. *einer ein best. Gewerbe treibenden Person*: नटनर्तकगन्धर्वै: पूर्णकैर्वर्धमानकै: । नित्योद्योगैश्च क्रीडद्भिस्तत्र स्म परिकर्षिता: ॥ MBh. 7,2199. = आरात्रिककृत्त (wohl आरात्रिककृत्त) Nîlak. — 4) N. pr. einer Gegend oder eines Volkes, = वर्धमान AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). — 5) ein Mannsname Mṛkkh. 26,9. Pańkat. 6,5. — 6) N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 86. — Vgl. पिप्पली° unter पिप्पली 3) *b*) am Ende, wo noch hinzuzufügen ist Çârṅg. Saṃh. 2,5,2 und पिप्पलीवर्धमान Suçr. 2,417,15.

वर्धमानद्वार n. *das nach* Vardhamâna *führende Thor*, N. pr. eines *Thores* in Hâstinapura MBh. 15,443; vgl. वर्धमानपुरद्वार 1,4905. 3,10.

वर्धमानपुर n. N. pr. einer *Stadt* MBh. 1,4905. 3,10. Kathâs. 39,3. 124, 105. Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,24. *b*,18. Pańkat. 134,2. Nîlak. zu MBh. 1, 4905 erklärt °द्वार durch मुख्यद्वार, über °द्वारात् 3,10 lässt er sich folgendermaassen aus: वर्धमानपुरं नाम ग्रामविशेष: तदभिमुखं द्वारं त-

स्मात् वृधु हिंसायाम् वर्धमानाः हिंसकाः तेषां पुरं कुत्सितमार्गेण निःसारिता इत्यन्ये.

वर्धमानपुरीय adj. *aus* Vardhamânapura *gebürtig* Kathâs. 123,140.

वर्धमानमति m. N. pr. eines Bodhisattva Râshṭrapâlapar. 2. Lot. de la b. l. 2.

वर्धमानमिश्र m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 45. Verz. d. Oxf. H. 175,*b*, No. 398.

वर्धमानेन्दु m. Titel eines Commentars zur Vardhamânî Hall 21.

वर्धमानेश (वर्धमान + ईश) m. Bez. eines Heiligthums (einer Statue) Râga-Tar. 2,133.

वर्धमाल m. N. pr. eines Brahmanen Târan. 3. 268.

वर्धयितर् (vom caus. von 1. वर्ध्) nom. ag. *Aufzieher, Grosszieher:* कन्या° Kathâs. 61,265.

वर्धापक (von 2. वर्ध्) 1) nom. ag. wohl *der die Cerimonie des Abschneidens der Nabelschnur vollbringt* H. an. 3,15. 5,41. Med. k. 61. r. 305. — 2) wohl *die bei dieser Cerimonie vertheilten Geschenke* H. an. 4,272. Med. r. 285.

वर्धापन (wie eben) n. 1) *das Abschneiden der Nabelschnur, die Feier an die Erinnerung dieses Tages; Geburtstagsfeier* und überhaupt *jede Feier, bei der man Jmd langes Leben und Gedeihen anwünscht* (also mit Anknüpfung an caus. von 1. वर्ध्) Tithjâdit. im ÇKDr. Weber, Kṛshṇaǵ. 249. 299. 302. Ver. in LA. (III) 18, 8. Verz. d. B. H. No. 1038. एवं वर्धापनं वत्सरान्ते वै जन्मवासरे। व्यतीतेषु च मासेषु बालानां बालवृद्धये॥ Skanda-P. पूजयेन्मातृपितरौ बालवर्धापने सति Bhavishjottara-P. वर्धापनं नाम प्रतिसंवत्सरं जन्मदिनेषु पुरुषस्य क्रियमाणमभ्यङ्गादिकं महाराष्ट्रदेशे प्रसिद्धम् Smṛtjarthasâgara (Citate im Glossar zu LA. nach Aufrecht). Schol. zu Kâtj. Çr. 358, N. fälschlich वार्धापन Trik. 3,2,7. — 2) wohl = वर्धापक 2) Med. k. 200 (वर्धापण gedr.).

वर्धापनक = वर्धापन 1) Pańkat. ed. orn. 49,16.

वर्धित (vom caus. von 1. वर्ध्) 1) adj. s. u. 1. वर्ध्. — 2) *eine Art Schüssel* M. 3,224. = पूर्णं पिठरादिपात्रम् Kull.

वर्धितर् (von 1. वर्ध्) nom. ag. *Stärker, Mehrer* ṚV. 9,97,39.

वर्धिन् (wie eben) am Ende eines comp. *mehrend, verstärkend:* मेधाग्निबल° Suçr. 1,225,10. भय° MBh. 3,11731. 5,7413. Hariv. 3855. R. 2,94,26 (103,27 Gorr.). 5,76,5. Spr. 3320, v. l. Bhâg. P. 10,41,52. Vgl. केश°, बल°, भक्ति°, लिङ्ग°, वंश°. Ueberall nur im fem.

वर्धिष्णु (wie eben) adj. *wachsend, zunehmend* P. 3,2,136. Vop. 26, 142. AK. 3,1,28. Med. n. 121. संग्रामानन्दवर्धिष्णो विग्रहे Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,20. Prab. 70,11.

वर्ध्मन् (wie eben) so v. a. वृद्धि in अन्त्र° *Leistenbruch* Vâgbh. 25,36. वर्ध्मरोग Çârṅg. in Nigh. Pr. वर्ध्मवृद्ध्यधिकार Verz. d. Oxf. H. 357,*a*,10 v. u.

वर्ध्र Uṇâdis. 2,27. P. 4,3,151. 1) m. *Gurt, Band eines geflochtenen Stuhls* AV. 14,1,60. आसन्दी वर्ध्रव्युता Çat. Br. 5,4,4,1. n. = वरत्रा *Riemen* H. an. 2,453. Med. r. 83. वर्ध्री f. AK. 2,10,31. n. *Leder* Uǵǵval. — 2) n. *Blei* H. an. Med. — Vgl. मित्र°, वार्ध्र und वध्र.

वर्ध्रिका f. *Riemen;* als oxyt. vielleicht *ein Kerl, der geschmeidig wie ein Riemen ist,* P. 6,1,204, Schol.

वर्पणीति (वर्प = वर्पस् + नीति) adj. *in verstellter Gestalt auftretend* oder *listig handelnd* ṚV. 3,34,3.

वर्पस् n. 1) *a*) *verstelltes* oder *angenommenes Aussehen, Scheinbild;* *b*) *Bild* überh., *simulacrum;* = रूप Naigh. 3,7. = स्वरूप Uṇâdis. 4,200. (च्यवानाय) अधि यद्वर्प इतऊति धत्थः nämlich dem Greise die Jünglingsgestalt ṚV. 7,68,6. मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ 100, 6. कृष्णमभ्वं महि वर्पः करिक्रतः 1,140,5.7. 6,3,4. रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत्सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः 3,58,9. सूरे उपाके तन्वं दधानो वि यत्ते चेत्यमृतस्य वर्पः 4,16,14. प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः *um des Bildes inne zu werden* 5,48,4. 1,141,3. 9,97,47 (oder zu 2). — 2) (*Schein, Verstellung*) *Anschlag, List, Kunstgriff:* कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्पसा कं याथ ṚV. 1,39,1. अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वानिन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान 6,44,14. 1,117,9. 8,46,16. अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नञ्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत् 10,99,3. 11. 3,2. अनृत 100,7. — Vermuthlich mit μορφή verwandt. Vgl. घोर°, पुरु°, प्रतिरूति° (*je nach Antrieb* oder *Anlass eine Gestalt annehmend*), भूरि°, हरि°.

वर्फ्, वर्फति Kavikalpadruma im ÇKDr. (गत्याम्, वधे).

वर्फस् n. = वर्पस् Uṇâdis. 4,200, v. l.

वर्म am Ende eines adj. comp. (f. आ) = वर्मन् *Panzer* MBh. 9,2683.

वर्मक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1087.

वर्मकण्टक m. *eine best. Arzeneipflanze* Râǵan. im ÇKDr. *Gardenia latifolia* oder *Fumaria parviflora* Dhanv. in Nigh. Pr.

वर्मकषा f. *eine best. Pflanze,* = चर्मकषा (°कशा) Çabdar. im ÇKDr.

वर्मण (von वर्मन्) m. *Orangenbaum* Trik. 2,4,12.

वर्मण्वत् (wie eben) adj. *gepanzert:* योधाः ṚV. 10,78,3.

वर्मन् (von 1. वर्) m. n. (zu belegen nur n.) Siddh. K. 250,*b*, 12. 1) *Schutzrüstung, Panzer, Harnisch* (AK. 2,8,2,32. Trik. 2,8,49. H. 766. Halâj. 2,304); *Schutzwehr, Schirm* überh. (= गृह Naigh. 3,4): वर्म सीव्यध्वम् ṚV. 10,101,8. स्यूत 1,31,15. 140,10. 6,75,1. 8. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि 18. 19. 8,47,8. 10,107,7. AV. 8,5,7. 10. 14. 18. 19. 9,5,26. प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहम् 17,1,27. वर्मैतदग्नये नह्यति Çat. Br. 1, 3,2,14. सुवर्मन् adj. MBh. 1,1809. आमुञ्चतां च वर्माणि संभ्रमः सुमहानभूत् 4095. वसुवर्मधर 3,17165. 17174. सर्वपारसव 4,1011. 5,5209. 7,7916. 8,644. R. 3,30,27. 5,80,32. Ragh. 4,56. Gît. 4,3. Varâh. Bṛh. S. 42,6. Bṛh. 27 (25),21. Râǵa-Tar. 3,405 (अयोवर्मनिपातिनः zu lesen). 406. घर्मवक्त्र्वर्म 5,195. Bhâg. P. 4,10,17. 26,3. 7,10,65. 9,10,37. वर्मादिसीवन Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,22. वर्मभृत् Ragh. 7,45. AK. 2,8,2,34. दिव्यवर्मभृत् MBh. 3,17167. — शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत् ṚV. 1,114,5. 7,31, 6. 9,67,14. अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व 10,16,7. AV. 5,6,13. 14,2,21. 19, 19,1. 30,2. Çat. Br. 6,3,1,31. 2,25. TS. 2,6,1,5. Kauç. 46. auf वर्मन् auslautende Kshatrija-Namen Pâr. Gṛhj. 1,17. Jama und VP. bei Kull. zu M. 2,32 (vgl. VS. 297). Ind. St. 5,310. Z. f. d. K. d. M. 1,226. 3,168. Wassiljew 208. buddhistische Namen 268. Ableitungen von solchen Namen Vop. 7,10. — 2) *Rinde* Varâh. Bṛh. S. 51,3. — 3) Bez. *best. schützender Gebetsformeln:* नारायणाख्य Bhâg. P. 6,8,2. fgg. Verz. d. Oxf. H. 105,*a*,33. वर्ममल्ल *b*,1. Bez. *der mystischen Silbe* हुम् Weber, Râmat. Up. 310. fg. — Vgl. अ°, अपहार° (N. pr. Daçak. 59,1), अवन्ति°, अश्म°, आदित्य°, आर्य°, इन्द्र°, कनक°, कल्याण°, काञ्चन°, कीर्ति°, कृत°, गोपाल°, चक्र°, चण्ड°, चन्द्र°, चित्र°, तीक्ष्ण°, दृढ°, देव°, धर्म°,

धृत°, नर°, निर्जित°, परि°, पुण्य°, पूर्ण°, प्रचण्ड°, प्रज्ञा°, प्रति°, प्रभाकर°, बल°, बकुल°, भद्र°, भदत्त°, भानु°, भास्कर°, भूति°, भोग°, मयूर°, महेन्द्र°, मित्र°, यज्ञ°, यशो°, रत्न°, राम°, लक्ष्मी° (लक्ष्मीवर्मदेव), विन्ध्य°, शंकर°, शत°, शार्दूल°, शूर°, सु°, सुभट°.

वर्मवत् (von वर्मन्) 1) adj. *gepanzert:* कृपा: MBh. 6, 3975. — 2) n. *eine unbefestigte* (!) *Stadt:* प्राकारं (lies प्राकार) परिखाहीनं पुरं वर्मवदुच्यते Mârk. P. 49, 46.

वर्महर (वर्मन् + हर) adj. *schon einen Panzer tragend, das Jünglingsalter habend* Ragh. 8, 93. Kathâs. 35, 122. — Vgl. कवचहर.

वर्माय्, वर्मायते denom. von वर्मन् P. 1, 4, 15, Schol.

वर्मि m. *ein best. Fisch* Râgav. im ÇKDr. Suçr. 1, 40, 12. 206, 6. 228, 13. Vâgbh. 6, 54.

वर्मिक (von वर्मन्) adj. *gepanzert, geharnischt* gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5, 2, 116.

वर्मित (wie eben) adj. dass. gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. AK. 2, 8, 2, 33. Trik. 3, 3, 234 (s. Corrigg.). H. 766. Halâj. 2, 305. वाजिनां वर्मिताङ्गानाम् R. Gorr. 2, 91, 15.

वर्मिन् (wie eben) adj. dass. gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5, 2, 216. ṚV. 6, 27, 6. 75, 1. 9, 108, 6. AV. 11, 10, 23. 19, 30, 1. VS. 16, 35. Çat. Br. 13, 5, 4, 16. fg. Pâr. Gṛhj. 2, 17. MBh. 1, 1482. 7654. 7765. 5, 1863. 5362. 7, 3103. 8025. Hariv. 3582.

वर्मुष m. *ein best. Fisch* Râgav. im ÇKDr.

वर्य (von 2. वर्) P. 3, 1, 101. 1) adj. *a*) f. *wählbar, um die man freien kann:* शतेन वर्या कन्या P. 3, 1, 101, Schol. Vop. 26, 16. — *b*) *vortrefflich, ausgezeichnet, der beste* Vop. 26, 16. AK. 3, 2, 7. H. 1438. Med. j. 39. Halâj. 4, 4. TBr. 3, 9, 21, 1. देवानां वर्यस्य *des besten unter den Göttern* Vop. 5, 23. gewöhnlich am Ende eines comp.: नर° *der beste unter den Männern, ein vorzüglicher Mann* MBh. 3, 957. नरदेव° 12330. कुरुवृद्ध° 15, 673. विप्र° Hariv. 14399. 15074. R. 2, 67, 23. 4, 29, 28. Spr. 4540. Golâdhj. 3, 21. Daçak. 71, 11. Bhâg. P. 1, 5, 9. 9, 41. 11, 33. 15, 15. 16, 1. 19, 11. 2, 7, 45. 3, 1, 5. 5, 4. 23, 4. 4, 10, 20. Mârk. P. 61, 36. 69, 7. 72, 2. सर्व° R. 7, 23, 1, 67. करेणु° Kir. 7, 20. रथ° MBh. 2, 938. 7, 4692. 8, 756. मल्ल° Pańkar. 3, 7, 1. पुरवर्यामयोध्याम् R. 2, 111, 18. होतृ° s. u. होतृवर्य. — 2) m. *der Liebesgott* Med. — 3) f. आ *ein Mädchen, das selbst den Gatten sich wählt* (wohl durch Missverständniss von 1) *a*) AK. 2, 6, 1, 7. H. 511. Halâj. 2, 328. — Vgl. पतिवर्य.

वर्व viell. *eine best. Münze:* दद्यात्प्रहृष्टो नियुतं वर्वाणां राजघातिने Kâm. Nîtis. 19, 18.

वर्वणा f. *eine Fliegenart* (नीला मक्षिका) AK. 2, 5, 26. H. 1214. — Vgl. तुद्र°.

वर्वरि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 53, *a*, 32.

वर्वि Uṇâdis. 4, 53. adj. = घस्मर Uǵǵval.

वर्वूर m. *eine best. Pflanze,* = युगलाख्य u. s. w. Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. जालवर्वूरक.

वर्श्, वर्श्यति Dhâtup. 26, 116 (वरणे).

वर्श्मन् m. = zend. bareçman Verz. d. Oxf. H. 33, *b*, 10. वस्म, वर्सम Reinaud, Mém. sur l'Inde 395. fg.

वर्ष्, वर्षति Dhâtup. 17, 56 (सेचने, हिंसाक्लेशनयोश्च, दाने, प्रजनैश्वर्ये). ववर्ष, अवर्षीत्, वर्षिष्यति; aus metrischen Rücksichten häufig auch med. वर्षते u. s. w.; वृषस्व u. s. w. s. u. आ; वर्षितुम्; वर्षित्वा und वृष्ट्वा; वृष्ट; *regnen;* das Subject ist, wenn das Verbum nicht unpersönlich gebraucht wird, der Regen, Parǵanja, Indra, der Gott, der Himmel, die Wolken u. s. w. अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभाय (पर्जन्य) ṚV. 5, 83, 10. यत्तेँ अभ्रस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः 84, 3. सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु AV. 4, 15, 4. तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः 8, 1, 5. 9, 1, 9. ईश्वरः पर्जन्यो ऽवर्ष्टोः (त्रष्टोः Hdschrr.) *es ist möglich, dass P. nicht regnet* Ait. Br. 3, 18. VS. 22, 26. der Himmel Kâṭh. 25, 10. स्तोकाः Çat. Br. 3, 8, 2, 22. — पर्जन्यो वर्षतां वरः MBh. 4, 43. पर्जन्यः पर्वते वर्षन् 10, 74. 14, 2859. R. 5, 36, 43. Varâh. Bṛh. S. 26, 14. Bhâg. P. 1, 10, 4. समा द्वादश न ववर्ष सहस्राक्षः MBh. 1, 6621. वलवृत्रहा 3, 9992. वासवः 4, 1498. Spr. 2367. Bhâg. P. 1, 16, 21. 3, 2, 33. 25, 42. 5, 4, 3. क्षेत्रेषु वर्षति तदानुगुणं नरेन्द्रे Kathâs. 20, 228. इन्द्रं वर्षमाणाम् MBh. 1, 8172. 13, 811. देवो न ववर्ष Nir. 2, 10. MBh. 14, 2860. R. 1, 9, 56. R. Gorr. 1, 8, 25. Suçr. 1, 170, 4. Varâh. Bṛh. S. 81, 26. Kathâs. 5, 72. वर्षते देवः Bhâg. P. 3, 29, 40. अधो वर्षाम हि वयं (die Götter) नरास्तूर्ध्वप्रवर्षिणः MBh. 12, 2147. अधो हि वर्षाम वयं मर्त्याश्चोर्ध्वप्रवर्षिणः । तोयवर्षेण हि वयं कृषिवर्षेण मानवाः ॥ Mârk. P. 16, 40. वर्षन्निवाम्बुदः MBh. 14, 1979. R. 5, 17, 3. Spr. 1191, v. l. 1255. Bhâg. P. 8, 24, 41. मेघो ऽत्र तावदागत्य वृष्टवान् Kathâs. 40, 91. प्रारेभे वर्षितुं घनः 62, 196. Pańkat. 94, 3. वर्षमाणा घना इव MBh. 1, 5464. 4, 1902. 6, 5268. R. 7, 7, 2. न तस्य वर्षं (subj.) वर्षति वर्षकाले MBh. 5, 386. वर्षं भूत्वा वर्षतां काननेषु 14, 269. गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायशो वर्षति Suçr. 1, 170, 2. 3. वर्षति गर्भः Varâh. Bṛh. S. 21, 35. ववर्ष रुधिरोघासृकपूयविण्मूत्रमेदसः Bhâg. P. 4, 10, 24. नावर्षन्न समतपत् *es regnete nicht, die Sonne schien nicht* Ait. Br. 4, 27. TS. 2, 1, 7, 3. 4, 10, 1. सर्वानृतून्वर्षति 5, 1, 5, 2. Çat. Br. 1, 5, 2, 19. 8, 2, 11. वर्षिष्यत्यैषमः पर्जन्यो वृष्टिमान्भविष्यति *es wird heuer regnen, P. wird regenreich sein* 3, 3, 4, 11. 7, 2, 4, 5. 10, 6, 4, 1. परमाद्वा एतत्स्थानाद्वर्षति यद्दिवः 11, 1, 6, 16. Khând. Up. 2, 3, 2. Varâh. Bṛh. S. 23, 5. तयैषा वर्षन्तं तया हिमं तया घृणिं तितिक्षिष्यन्ते *Regen, Kälte und Hitze* Çat. Br. 3, 1, 2, 4. वर्षति *während es regnet, bei Regen* 7, 5, 2, 41. Kâtj. Çr. 18, 6, 25. Âçv. Gṛhj. 3, 9, 6. M. 4, 38. 11, 113. MBh. 4, 171. Hariv. 12014. Bhâg. P. 9, 2, 4. अवर्षति TS. 2, 4, 10, 1. यथा वा वर्षतो धारा असंख्येयाः स्म केनचित् *die Regentropfen* MBh. 3, 10299. Mârk. P. 15, 71. वृष्टी ṚV. 5, 53, 14. — मेघः प्रववृते तत्र धारासारेण वर्षितुम् Kathâs. 12, 110. रुधिरधाराभिर्वर्षन्तो मेघाः R. 3, 30, 4. प्रसूनवर्षैर्ववृषुः सुरस्त्रियः Bhâg. P. 7, 8, 35. 1, 10, 16. उभावुभयतस्तीक्ष्णैः शरवर्षैरवर्षताम् MBh. 3, 15731. किं ममोपर्यनवरतं व्यसनशतैर्वर्षति विधाता Pańkat. 145, 14. एवं स वसुधाराभिर्वर्षमाणो नृपाम्बुदः MBh. 15, 420. — प्रावृषीव च पर्जन्यो ववृषे निर्मलं पयः 13, 6871. तच्च मेघगतं वारि शक्रो वर्षति 3235. यस्मिन्हिरण्यं ववृषे मघवा परिवत्सरम् 12, 918. दिव्याः सुमनसः पुण्या ववृषे पाकशासनः 14, 2394. शोणितम् Hariv. 9869. कामान्सर्वान्वर्षतु वासवो वा MBh. 14, 270. न तेषु वर्षति देवो भीमान्यम्भांसि VP. bei Muir, ST. I, 186, N. 4. MBh. 1, 1419. वर्षध्वममृतं शुभम् (मेघाः) 1297. तैर्मेघैः सततासारं वर्षद्भिः 1300. 1420. R. 3, 29, 1. Bhâg. P. 1, 14, 16. 3, 19, 19. उपकारं सुहृद्वर्गे यो ऽपकारं च शत्रुषु । नृमेघो वर्षति Spr. 3796. नभो रक्तं गोष्पदप्रं ववर्ष Bhaṭṭ. 14, 20. पुष्पवृष्टिमवर्षन् (तरुगणाः) R. 5, 16, 17. कल्पवृक्षो ववर्ष सः । कनकं भूतले भूरि Kathâs. 22, 34. यज्ञसेनः

शरान्घोरान्ववर्ष MBh. 1,5453. 5,7155. बाणमयं वर्षम् 7269. R. 6,73,17. मध्यवर्षत शरधाराः सहस्रशः MBh. 3,796. कृष्णं वारि नेत्राभ्यां वर्षमाणा Hariv. 4744. ततो वसु तथार्थिभ्यो भृत्येभ्यश्च ववर्ष स (राजा) Kathâs. 52, 380. लोकस्य यद्वर्षति चाशिषो ऽर्थिनः Bhâg. P. 4,4,15. 6,14,35. *beregnen:* भ्रातरो भ्रातरं युधि। शरैर्ववृषतुर्घोरैर्महामेघौ यथाचलम्॥ MBh. 8, 2704. सेनां वर्षन्तौ शरवर्षैः 5,718. 6,2677. Mârk. P. 21,82. 83,2. अन्यो-ऽन्यं शरवर्षाभ्यां ववृषाते रणाजिरे MBh 6,1689. — वृष्ट mit act., neutr. und pass. Bed.: अप त्रिगर्तेभ्यो वृष्टो देवः Schol. zu P. 1,4,88. 2,1,12. यच्चतुर्विंशत्यापि वर्षैरवृष्टे ऽपि पर्जन्ये न शुष्यति Pankat. 51,16. गर्भः प्र-सवे यदि न वृष्टः Varâh. Bṛh. S. 21,33. यदि न वृष्टम् *wenn es nicht geregnet hat* 23,5. वृष्टे *wenn es geregnet hat* AV. 3,24,3. Varâh. Bṛh. S. 22,2. 25,3. यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधावति *das als Regen niedergefallene Wasser* Kathop. 4,14. R. 2,113,16 (124,16 Gorr.). देववृष्टं यथा पयः Bhâg. P. 4,18,11. वृष्टं तत् Varâh. Bṛh. S. 23,3. प्राणिनो यदा वृ-ष्टाः so v. a. *wenn es Thiere geregnet hat* 46,42. सुवृष्ट *ein schöner Regen* R. 6,109,60.

— caus. *regnen lassen:* यूयं वृष्टिं वर्षयथ Ṛv. 5,55,5. यथाम् 63,3. 6. 9,96,3. den Parǵanja TS. 2,4,10,2. Indra MBh. 3,9991. ohne acc. Khând. Up. 2,3,2. Bhâg. P. 5,22,12. ये अद्रिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति AV. 4,27,5. *Etwas als Regen herabfallen lassen:* कुसुमाद्यैर्वर्षितैः Varâh. Bṛh. S. 46,41. *beregnen:* (तम्) अवीवृषन्बाणमहौघवृष्ट्या यथा गिरिं तोयधरा जलौघैः MBh. 6,3756. 8,718. वर्षित n. *Regen* Hariv. 266. 12497. वर्षण die neuere Ausg. an beiden Stellen. वृषायति *regnen lassen:* स पर्जन्यं शंतनवे वृषाय Ṛv. 10,98,1. वर्षयते Dhâtup. 30,33 (शक्तिबन्धने, प्रजनैश्ये). — Vgl. वर्षय्.

— अति *in Menge regnen:* देवे ऽतिवर्षति Bhâg. P. 2,7,32. अतिवृष्टा-वित्राम्बुदो *heftig regnend* MBh. 7,8104 (nach der Lesart der ed. Bomb.). विद्याधरकिंनरसिद्धसुरैः — अतिवृष्टसुपुष्पचये Pankar. 3,12,6.

— अनु *hinregnen über* AV. 4,15,4. मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु 7. TS. 7,5,11,2.

— अभि *beregnen, beschütten:* यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत् Ṛv. 7,103, 3. 4. Parǵanja VS. 36,10. न वर्षं मैत्रावरुणं ब्रह्मज्यमभि वर्षति AV. 5, 19,15. 11,4,5. 6. 17. Çat. Br. 3,1,1,8. 2,2,27. Pankav. Br. 15,9,9. 17, 7,2. TS. 7,5,11,1. नाराजके जनपदे — अभिवर्षति पर्जन्यो महीं दिव्येन वारिणा Spr. 4425. Bhâg. P. 5,4,3. सस्यानि मन्दमभिवर्षति वृत्रशत्रौ Varâh. Bṛh. S. 19,21. मेघसंघाः — अभ्यवर्षन्सुरगणान् MBh. 1,1128. Hariv. 8800 (med.). पुष्पवृष्टिर्दशग्रीवं पुनरेवाभ्यवर्षत R. 3,58,30. fg. कुसुमैरभ्य-वर्षन् (तम्) Bhâg. P. 6,12,34. माल्यैः 10,18,32. वागमृतेन सः। अभिवृष्य मरुत्सस्यं कृष्णमेघस्तिरोदधे॥ Ragh. 10,49. मांसरुधिरौघेन वेदीं तामभ्य-वर्षताम् R. 1,21,5 (22,5 Gorr.). शोणितेन R. 6,11,28. भुवं कोष्णेन प्रस्र-वेण Ragh. 1,84. स्तनौ दुःखजैरश्रुबिन्दुभिः MBh. 3,583 (med.). शस्त्रैः 13, 1980 (med.). यष्टिभिः 1,5464 (med.). 5492 (med.). शरैः 5,1840. 7211. 4, 1688. R. 3,31,6. 56,37. 6,75,45 (med.). Vikr. 54,7. Bhâg. P. 4,10,12. 6,10,26. उपायनैः Ragh. 15,48. कामैः R. 2,31,12. Spr. 2781. परिहारैः 4037. अन्नपानेन MBh. 3,1810. धनवर्षेण 2,1101. *regnen:* यदा त्वमभिव-र्षसि Praçnop. 2,10. MBh. 1,6627 (med.). Hariv. 11329. R. ed. Bomb. 2,91,25 (med.). राष्ट्रे ऽभिवर्षति देवः Varâh. Bṛh. S. 82,6. चैत्रासितसंभू-ताः (गर्भाः) कार्त्तिकशुक्ले ऽभिवर्षन्ति 21,12. कुसुमैः MBh. 1,4062 (med.). अश्रुबिन्दुभिः R. Gorr. 2,29,25. तोमरैः MBh. 3,15732. धनौघैः Hariv. 6559 (med.). R. Gorr. 2,32,16. तस्य तस्य कामौघैः 1,34,6. mit acc.: रु-धिरम् Hariv. 10605 (चाप्यवर्षत die neuere Ausg. st. चाभ्यवर्षत der älteren). अखिलार्थान् Bhâg. P. 10,82,29. तत्सर्वं कामधुग्दिव्ये अभिवर्ष R. 1,52,23 (53,23 Gorr.). प्रबोधामृतमङ्गिवर्गे Çatr. 14,336. अभिवृष्ट *beregnet, worauf Regen gefallen ist, beschüttet* Âçv. Çr. 3,11,22. Suçr. 1, 129,9. 170,14. MBh. 3,12129. 5,4098. R. 4,29,14. Ragh. 7,66. Vikr. 79. Varâh. Bṛh. S. 11,61. Kathâs. 40,92. Bhâg. P. 8,7,12. माल्यैः MBh. 13, 2074. गदाभिः Hariv. 5586. प्रज्ञाम्बुभिः Ragh. 15,99. mit act. Bed.: अभि-वृष्टाविवाम्बुदौ MBh. 7,8104. येषु भेषभिवृष्टं भूयस्तेष्वेव वर्षति प्रायः *es hat geregnet* Varâh. Bṛh. S. 23,5. °वृष्टे 25,2. यथाभिवृष्टम् (u. d. W. nicht genau wiedergegeben) *so weit als es geregnet hat* 23,4. गह्वनमभिवृष्टं (so lesen wir mit der v. l.) पुनरिदम् so v. a. *aber es hat hier stark geregnet* Vikr. 125. — Vgl. अभिवर्षण fg. — caus. *beregnen, beschütten:* शरैः MBh. 7,8670. 1649. 7420. 8,655. प्रसूनवर्षैरभिवर्षितः Bhâg. P. 1, 11,28. 10,78,15.

— समभि *beregnen* Bhâg. P. 8,7,15.

— अव *beregnen* VS. 22,26. TBr. 3,7,2,3. Kâṭh. 35,19. Çat. Br. 12,4, 2,10. Kâtj. Çr. 25,11,23. 12,6. — Vgl. अववर्षण.

— आ 1) *beregnen, beschütten* (mit Pfeilen) MBh. 4,1688. — 2) med. *sich* (ein Getränk) *einschütten:* (इन्द्रः) उरुव्यचा जठर आ वृषस्व Ṛv. 1, 104,9. 3,32,2. 40,2. 60,5. 6,47,6. 8,24,10. 50,3. 10,96,13. 116,1. 4. वृक्षः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् 1,108,3. 6,68,11. पितरो मादयध्वं यथाभाग-मावृषायध्वम् (scheint aus °वृषध्वम् entstellt zu sein) Âçv. Çr. 2,7,1. — Vgl. अनावृष्टि.

— उद् *sich ausschütten* so v. a. *verschwenderisch austheilen:* उद्वा-वृषस्व und उद्वावृषाणः Ṛv. 8,50,7. 4,20,7. 29,3.

— निस् *ausregnen, aufhören zu regnen:* निर्वृष्टलघुभिर्मेघैः Ragh. 4,15. निर्वृष्टरमणीयेषु वप्रेषु Hariv. 3828. निर्वृष्ट° die neuere Ausg., निर्वि-ष्टाः कृतविवाहाः तद्वद्रमणीयेषु Nilak.

— परि *beregnen, beschütten:* शरांश्च वानरान्पर्यवर्षत R. 6,75,47.

— प्र *zu regnen anfangen, regnen:* पर्जन्यः R. 5,95,39. Pankat. 169, 7. सहस्राक्षः MBh. 1,6630. Hariv. 2123. Bhâg. P. 8,14,7. देवः R. Gorr. 1,9,55. मेघः Khând. Up. 5,10,6. impers. Schol. zu P. 1,4,84. 2,3,8. वि-षये वासवस्तस्य सम्यगेव प्रवर्षति। रत्नैर्धनैश्च पशुभिः सस्यैश्चापि पृथ-ग्विधैः॥ MBh. 13,97. यथेष्टमस्त्रवर्षेण प्रवर्षिष्ये 7,9020. प्रवर्षति चन्द्रि-काभिश्चकोरचञ्चुचुलुकान्प्रतीन्दुः Naish. 22,41. mit acc.: (मेघाः) क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति मिश्रं रुधिरबिन्दुभिः R. 6,16,6. रसान्देवः प्रवर्षति MBh. 13,3236. 5,3553. प्रववर्षाथ पर्जन्यः सधूमाङ्गारवृष्टयः (acc.) Hariv. 8289. अखिलान्कामान्प्रजासु ब्राह्मणादिषु Bhâg. P. 10,89,65. शरव्रातान् MBh. 5,2131. ततः पृषत्कान्प्रववर्ष सूर्यो यथा रश्मिजालान्समन्तात् 9,1086. *beregnen, beschütten:* शैलेन्द्रमिव धाराभिः प्रवर्षन्ति पयोधराः R. 3,31,9. शरैः परान्मेघ इव प्रवर्षन् MBh. 5,1854. जीमूताविव चान्योऽन्यं प्रववर्षु-राहवे 7,5710. प्रवृष्ट mit act. Bed.: मेघानां प्रवृष्टानाम् Hariv. 3928. प्रवृष्ट-स्थूलधाराभिर्मेघे ऽस्मिन् *als diese Wolke zu regnen anfing* Kathâs. 36, 82. यदाश्रौषं देवराजं प्रवृष्टं शरैः MBh. 1,150. अस्य पार्श्वे तरुः पुष्पैः प्रवृष्ट इव केसरः R. Gorr. 2,105,6 = Uttarar. 116,20 (158,6). मेघो रक्तौघं प्र-वृष्टः Kathâs. 46,141. प्रवृष्टे *wenn es regnet* Varâh. Bṛh. S. 25,3. Vgl. प्रवर्ष fgg., प्रावर्षिन्, प्रावृष् fg. — caus. *regnen machen* TS. 1,6,11,4.

Çat. Br. 1,5,2,18.

— अभिप्र *regnen:* वार्षिकांश्चतुरो मासानभ्यथेन्द्रो ऽभिप्रवर्षति Spr. 2781. *beregnen:* सप्त द्वीपानिमान्वर्षेण MBh. 13,4623.

— संप्र *zu regnen anfangen:* वारिधारासमूहेन संप्रवृष्टः शतक्रतुः MBh. 12,5478. संप्रवृष्ट n. *die gefallene Regenmenge* Varâh. Bṛh. S. 23,1.

— प्रति *beregnen, beschütten:* शरौघेण प्रत्यवर्षं गुरुं तम् MBh. 5,7215.

— वि caus. dass.: पर्जन्य इव घर्मान्ते वृष्ट्या साद्रिद्रुमां मह्हीम्। आचार्यपुत्रस्तां सेनां बाणवृष्ट्या व्यवीवृषत् (so die ed. Bomb.) ‖ MBh. 8,801.

— सम् *beregnen* TS. 7,5,11,1.

वर्ष (von वर्ष्) Uṇâdis. 3,62. 1) am Ende eines comp. adj. (f. आ) *regnend:* देवो गिर्युपरिवर्षः Spr. 1183. काम° Bhâg. P. 3,21,21. — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,11. Siddh. K. 249,b,6. n. (nur dieses in der älteren Sprache) Pat. zu P. 3,3,56. *a) Regen* AK. 1,1,2, 12. 3,4,29,226. H. 165. fg. an. 2,570. Med. sh. 24. वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः ṚV. 5,58,7. 83,10. AV. 3,27,6. वर्षस्य सर्गाः 4,15,2. 6. fgg. 5,19,15. 11,4,5. 5,13. 12,1,52. TS. 2,4,9,1. VS. 16,64. यदा वर्षस्य तृप्तः स्यात् Âçv. Çr. 2,9,3. Nir. 2,22. Çat. Br. 1,5,2,19. 8,3,12. Kauç. 94. 98. Khând. Up. 5,5,2. विद्युत्स्तनितवर्षेषु M. 4,103. MBh. 3,17341. 5,386. 6,4096. 13,3306. R. 1,20,16. 2,33,9. 77,25. 3,79,4. 4,39,2. 44, 84. Suçr. 1,21,11. Mṛkkh. 75,6. Megh. 36. ad Çâk. 193. Varâh. Bṛh. S. 95,54. प्रबन्ध° *ein ununterbrochener Regen* 46,40. Kathâs. 104,39. Râga-Tar. 5,275. °पूगाः Bhâg. P. 3,17,26. 4,28,37. बाणमय MBh. 5, 7269. अस्त्राणाम्, अग्नेः, वायोः, अश्मनाम् 3,12143. महाज्वलौघ° R. 1,9,66. गन्धाम्बु° H. 63. अङ्गारपांसु° Varâh. Bṛh. S. 46,41. पांसु° M. 4,115. रक्तो° R. 6,111,24. शिला° R. Schl. 1,28,15. fg. अश्म° 22. शर° MBh. 3, 15715. 5,5961. 6,4096. R. 3,31,9. पुष्प° 79,4. 5,17,3. सुधा° Kathâs. 44,21. वात° m. *ein von Wind begleiteter Regen* Pańkat. III, 150. सौधोद्गतलाजवर्षाम् — राजधानीम् Ragh. 14,10. Râga-Tar. 2,119. — *b)* n. pl. *Regenzeit* AV. 8,2,22. 12,1,36. — *c) Wolke* H. an. Uģģval. zu Uṇâdis. 3,62. — *d) Jahr* Nir. 2,10. AK. 3,4,18,111. 29,226. 3,5, 16. H. 159. H. an. Med. Halâj. 1,116. षष्ट्यां वर्षेषु *in sechszig Jahren* Ait. Br. 4,17. भूयांसि शताद्वर्षेभ्यः पुरुषो जीवति Çat. Br. 1,9,3,19. अदो वर्षमकुर्म *in dem und dem Jahre* 2,2,3,7. 10,2,6,7. 8. 11,1,2,10. 13. Kâtj. Çr. 4,2,47. Âçv. Gṛhj. 1,18,2. 19,1. 22,3. Khând. Up. 3,16,1. M. 1,67. 2,82. 4,158. वर्षाण्त्रयोदशाद्भूर्धम् MBh. 3,1999. 3,3006. 15,803. दश वर्षसहस्राणि R. 1,1,93. 31,10. 62,28. 63,9. 2,39,15. 3,53,10. Spr. 1074. 2367. Megh. 1. Ragh. 13,67. Varâh. Bṛh. S. 8,1. fgg. 12,17. 13,4. Kathâs. 5,72. Râga-Tar. 6,326. Bhâg. P. 3,15,1. Pańkat. 159,14. Vet. in LA. (III) 2,14. 8,17. बह्वून्वर्षगणान् M. 12,54. °पूगसहस्र Bhâg. P. 2,5,34. 4,12,42. वर्षे वर्षे *in jedem Jahre* M. 3,53. Weber, Kṛshṇaģ. 307. आ वर्षात् *ein Jahr lang* Varâh. Bṛh. S. 43,16. वर्षात् *nach einem Jahre* 97,2. 8. वर्षेण *binnen eines Jahres* 97,1. masc. R. Gorr. 1,1,99. Râga-Tar. 1,50. 193. 3,322. वर्षार्ध *Halbjahr* Varâh. Bṛh. S. 42,10. वर्षार्धात् *nach einem halben Jahre* 97,5. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) P. 5,1,88. fg. 4,1,22, Schol. युगस्य पञ्चवर्षस्य Weber, Ģjot. 23. 36. अद्विवर्ष *nicht zweijährig* Pâr. Gṛhj. 3,10. त्रि° Âçv. Çr. 9,4,20. पञ्च° Kâtj. Çr. 22,9,12. तावद्वर्ष *eben so alt* Lâṭj. 9,12,12. पूर्णविंशति° M. 2, 212. 5,70. 9,74. MBh. 4,173. 13,2417. Spr. 4643. Varâh. Bṛh. S. 68, 107. Pańkat. 188,20. अनावृष्टिः शतवर्षा Bhâg. P. 11,3,9. पञ्चाशद्वर्षता *ein Alter von fünfzig Jahren* Âçv. Çr. 2,7,6. — *e) Tag* (!): अप्राप्तयौवनं बालं पञ्चवर्षसहस्रकम् R. 7,73,5. वर्षशब्दो ऽत्र दिनपरः। सहस्रसंवत्सरं सत्त्रमुपासीतेतिवत् तेन षोडशवर्षमित्यर्थ इत्येके। तेन किंचिन्न्यूनचतुर्दशवर्षमित्यर्थ इत्यन्ये Comm.; vgl. Comm. zu Kâtj. Çr. 1,6,16. 25. fgg. — *f) Welttheil*, im System: *die zwischen Hauptbergen liegende Niederung* (deren in Ģambudvîpa neun und auch sieben angenommen werden) AK. 2,1,6. Trik. 2,1,4. H. 946. fg. (vgl. Comm.). H. an. Med. वर्षाण्येषां (पर्वतानां) जगुरिह बुधा अन्तरे द्रोणिदेशान् Golâdhj. 3,26. fgg. भारत, हैमवत u. s. w. MBh. 6,201. 288. fgg. VP. 167. fgg. (vgl. Muir, ST. 186. 189. 191. fg.). Bhâg. P. 1,16,13. 5,2,20. 4,3. 16,6. fgg. 20,20. Verz. d. Oxf. H. 41,a,32. Mârk. P. 53,22. 57,4. 5. Pańkar. 1,1,67. Çatr. 1,292. fg. = जम्बुद्वीप Med. und Uģģval. a. a. O. — 3) f. आ pl. *a) die Regenzeit* Kâç. zu P. 1,2,53. AK. 1,1,3,19. H. 157. H. an. Med. Halâj. VS. 10,12. 13,56. 21,25. AV. 6,55,2. TS. 1,6,2,3. 2,6,1,1. 5,6,10,1. TBr. 1,4,10,10. Çat. Br. 1,5,3,11. 2,1,3,1. 5. 2,3, 7. 9. Nir. 7,11. Khând. Up. 2,5,1. Maitrjup. 6,33. M. 3,273. 281. 4,102. 6,23. Jâģń. 3,52. Spr. 4182. MBh. 14,1284. R. 1,63,24. 4,27,13. Suçr. 1,19,8. 9. 20,5. 135,12. Varâh. Bṛh. S. 46,89. 55,9. 89,6. Bhâg. P. 4,23, 6. Mârk. P. 106,49. Bhaṭṭ. 7,1. Hit. 80,15. °समय Kathâs. 19,65. Verz. d. Oxf. H. 123,a,26. °काल R. 4,29,1. Hit. 115,15. वर्षाशरदौ Çat. Br. 8, 3,2,7. 8. 12,8,2,34. 13,6,1,10. वर्षात्रयोदशी Jâģń. 1,260. °रात्रि R. Gorr. 1,3,18 (fälschlich वर्षरात्रि 24 Schl.). वर्षारात्र m. Vop. 6,46. 51. R. 4,26,24. 7,64,10. वर्षा sg. 4,25,14. — *b) Regen:* विद्युत्स्तनयित्नुवर्षासु Çâńkh. Gṛhj. 4,7,6,1. *Regenmenge:* °निमित्त Varâh. Bṛh. S. 24, 10. °प्रश्न 28,1. अ° *Dürre* (?) MBh. 13,4579; vgl. 4527. — *c)* = कोटिवर्षा Comm. zu AK. 2,4,4,21. — 4) m. N. pr. eines Grammatikers Kathâs. 2,46. fgg. 4,17. — Vgl. अ°, अति° (auch Varâh. Bṛh. S. 34,6), अध°, उप°, काङ्कण°, कनक°, कोटिवर्षा, तारवर्ष, तिरो°, नाभि°, पीयूष°, पुष्प°, प्रकाश°, प्रतिवर्षम्, भारतवर्ष, मण्डल°, मध्या°, मेरु°, रत्न°, हरि°.

वर्षक 1) (von वर्ष्) nom. ag. *regnend, als Regen herabfallend:* वृष वर्षकं वसु यस्य स वृषणवसुः Siddh. K. zu P. 1,4,18. — 2) *Sommerhaus* (!) Vjutp. 212. — 3) am Ende eines adj. comp. = वर्ष *Jahr:* पञ्च° *fünfjährig* MBh. 12,1119; vgl. द्वि°.

वर्षकर 1) adj. *Regen hervorbringend, — ankündend.* — 2) f. ई *Grille* H. 1216.

वर्षकर्मन् n. *die Thätigkeit des Regnens* Nir. 7,22. fg.

वर्षकाम adj. *nach Regen begierig:* वर्षकामेष्टि Âçv. Çr. 2,13,1. Kauç. 41. 98. Nir. 2,10. 9,6.

वर्षकृत्य 1) adj. *jährlich zu vollbringen* Verz. d. B. H. 148,1. — 2) n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 292,b,8. 9. 12.

वर्षकेतु m. 1) *eine roth blühende* Punarnavâ Râgan. im ÇKDr. — 2) N. pr. eines Sohnes des Ketumant Hariv. 1750. fg.

वर्षकोश m. 1) *Monat* H. ç. 21. Çabdam. im ÇKDr. — 2) *Astrolog* Çabdam. im ÇKDr.

वर्षगणितपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 874. fg. — Vgl. वर्षपद्धति.

वर्षगिरि m. *ein zur Bildung eines* Varsha *dienender Berg* Bhâg. P.

5,20,21. — Vgl. वर्षपर्वत, वर्षमर्यादागिरि.

वर्षघ्न adj. *den Regen abhaltend, vor Regen schützend* R. 7,54,9.

वर्षज adj. = वर्षेज P. 6,3,16. 1) *von Regen herrührend* SÂH. D. 171. — 2) *vor einem Jahr entstanden, ein Jahr alt:* दुरित WEBER, RÂMAT. UP. 355.

वर्षण (von वर्ष्) 1) adj. (f. ई) *regnend:* सम° (घन) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 35. कर्कशाङ्गार° HARIV. 5528. पांसु° BHÂG. P. 10,79,1. पीयूषवृष्टिवर्षणी Verz. d. Oxf. H. 20,b,9. अस्त्र *eine Regen bewirkende Waffe* R. 1,29,16 (30,14 GORR.). — 2) n. *das Regnen, Regnenlassen, Ausgiessen* TRIK. 1,1,83. H. 166. HARIV. 266 (nach der Lesart der neueren Ausg.). शारद 8087. 12497 (nach der Lesart der neueren Ausg.). सुचिरमूषरे वर्षणम् Spr. 209. MÂRK. P. 104,21. P. 1,4,84, Schol. निःशब्दवर्षणमिवाम्बुधरस्य RÂGA-TAR. 3,252. अ° Spr. 3637. वर्षणाह्वभः NIR. 9,22. शस्त्रास्त्राश्माम्बु° KÂM. NÎTIS. 17,53. घृततैलवसादि° VARÂH. BRH. S. 97,10. रक्तौघ° KATHÂS. 46,146. अङ्गार° 101,127. अपात्र° *das Herabregnenlassen* (von Gaben) *auf Unwürdige* Spr. 144.

वर्षणि f. = वर्तन und कृति UṆÂDIK. im ÇKDR. = वर्षण und क्रतु UNADIVR. im SAṄKSHIPTAS. nach ÇKDR.

वर्षतन्त्र n. Titel einer Schrift Ind. St. 2,252. MACK. Coll. I,123.

वर्षधर 1) adj. *Regen enthaltend;* m. *Wolke* H. an. 2,571. — 2) adj. *einen Welttheil* (वर्ष) *enthaltend, — einschliessend;* m. *ein solcher Berg* H. 947 (vgl. Comm.). ÇATR. 1,292. 294. — 3) m. *der Gebieter über ein* Varsha BHÂG. P. 5,3,16. — 4) m. = वर्षवर *Eunuch* (*die Samenergiessung zurückhaltend*) HALÂJ. 2,275. ÇABDÂRTHAK. bei WILSON, R. 2,65, 7 (वर्षवर ed. Bomb.). BHÂR. NÂṬJAÇ. 34,52. 55. 57. KÂM. NÎTIS. 7,41 (वर्षवर Comm.). MÂLAV. 47,15. PAṄKAT. 43,5. 53,2.

वर्षधार m. N. pr. eines Schlangendämons VJUTP. 87.

वर्षधाराधर adj. *regenschwanger:* मेघ Spr. 4623.

वर्षनिर्णिज् adj. *in den Schmuck —, in das Gewand des Regens gekleidet:* die Marut ṚV. 3,26,5. 5,57,4. ÇÂṄKH. ÇR. 8,23,4.

वर्षप m. *Beherrscher eines* Varsha BHÂG. P. 5,20,20.

वर्षपति m. dass. BHÂG. P. 5,8,11. 20,31.

वर्षपद n. *Kalender* Ind. St. 2,256.

वर्षपद्धति f. Titel eines Werkes MACK. Coll. I,123. — Vgl. वर्षगणिपद्धति.

वर्षपर्वत m. = वर्षगिरि HÂR. 26.

वर्षपाकिन् m. *Spondias mangifera* (s. आम्रातक) H. 1152.

वर्षपुरुष m. *Bewohner eines* Varsha BHÂG. P. 5,18,24. 29. 20,22.

वर्षपुष्प 1) m. N. pr. eines Mannes SAṄSK. K. 185,a,10. — 2) f. आ *eine best. Schlingpflanze,* = सहदेवी RÂGAN. im ÇKDR.

वर्षप्रावन् adj. nach dem Comm. *Regenfülle gebend* TBR. 3,6,12,1. die Ausg. schreibt im Comm. °प्रावा:.

वर्षप्रिय m. *ein Freund des Regens,* Bez. des Kâtaka TRIK. 2,5,17.

वर्षभुज् m. *der Beherrscher eines* Varsha BHÂG. P. 10,87,28.

वर्षमर्यादागिरि m. = वर्षगिरि BHÂG. P. 5,20,26.

वर्षमेदस् adj. *durch Regen fett* AV. 12,1,42.

वर्षय् 1) caus. von वर्ष्; s. das. — 2) denom. (vgl. वर्षिष्ठ, वर्षीयंस्) *hoch u. s. w. machen* SIDDH. K. 162,b,4.

वर्षवर (वर्ष so v. a. *Samenergiessung* und वर *Hemmung, Zurückhaltung* oder *hemmend, zurückhaltend*) m. *Eunuch* AK. 2,8,1,9. H. 728. HARIV. 3217. R. GORR. 2,17,2. 67,5. 7,109,10. DAÇAR. 2,42. RATNÂV. 27, 7. MÂLATÎM. 16,16. — Vgl. वर्षधर 4).

वर्षवसन n. *der Aufenthalt der buddhistischen Mönche in festen Wohnungen während der Regenzeit* BURN. Intr. 285. वर्षावसन wäre die richtigere Form.

वर्षवृद्ध adj. *im —, durch Regen erwachsen* AV. 6,30,3. 12,3,19. VS. 1,16. ÇAT. BR. 1,1,4,19. KAUÇ. 61.

वर्षवृद्धि f. *Wachsthum der Jahre* WEBER, KṚSHṆAG. 249. Bez. *der Feier des Geburtstages* ÇKDR.

वर्षशतिन् adj. *hundertjährig* HARIV. 4196.

वर्षांश m. *Monat* (*Jahrestheil*) TRIK. 1,1,109. °क m. dass. H. ç. 21. वर्षांसक HÂR. 28.

वर्षागम m. *der Anfang der Regenzeit* VARÂH. BṚH. S. 55,6.

वर्षाघोष (व° + घोष) m. *ein grosser Frosch* (महामण्डूक) RÂGAN. im ÇKDR.

वर्षाङ्ग 1) m. *Monat* (*Jahrestheil*) HÂR. 28. — 2) f. ई = पुनर्नवा ÇABDAR. im ÇKDR.

वर्षाचर adj. in der Stelle: वर्षाचरो ऽस्तु भृतकः (als Fluch) MBH. 13, 4527. st. dessen करोतु भृतको ऽवर्षाम् 4579.

वर्षाज्य (वर्ष + आ°) adj. *dessen Opferbutter der Regen ist* AV. 13,1,47.

वर्षाधिप m. *Jahresregent* GAṆIT. PRATJABDAÇ. 7. — Vgl. वर्षेश.

वर्षाधृत adj. *in der Regenzeit getragen:* Gewand KÂTJ. ÇR. 4,6,18.

वर्षाबीज n. *Hagel* H. ç. 28.

वर्षाभव m. = रक्तपुनर्नवा RÂGAN. im ÇKDR.

वर्षाभू Declin. P. 6,4,84. VOP. 3,59. *in der Regenzeit erscheinend.* 1) m. a) *Frosch* AK. 1,2,3,24. TRIK. 3,3,290. H. 1354. an. 3,457. MED. bh. 18. — b) *Regenwurm* TRIK. H. an. MED. — c) *Coccinelle* RÂGAN. im ÇKDR. — 2) f. °भू a) *Froschweibchen* HALÂJ. 3,40. RÛPARATNÂK. bei BHAR. zu AK. nach ÇKDR. — b) *Boerhavia procumbens* (s. पुनर्नवा) TRIK. H. an. MED. RATNAM. 25. SUÇR. 1,217,6. 218,21. 2,36,19. 80,14. 207,1. 416,12. Vgl. दीर्घ°, नील°, रक्त°. — 3) f. °भ्वी a) *Froschweibchen* AK. 1,2,3,24. — b) *Boerhavia procumbens* AMARAMÂLÂ und BHÂGURI nach ÇKDR.

वर्षामद m. *Pfau* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

वर्षाम्भःपारणाव्रत m. Bez. *des* Kâtaka ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

वर्षार्चिस् m. *der Planet Mars* ÇABDAR. im ÇKDR.

वर्षालङ्कायिका f. *Trigonella corniculata Lin.* BHAR. zu AK. 2,4,4,21. — Vgl. कोटिवर्षा und लङ्कापिका.

वर्षाली indecl. in Verbindung mit अस्, कर् und भू gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61.

वर्षावसान m. (!) *Ende der Regenzeit, der Herbst* RÂGAN. im ÇKDR.

वर्षावस्तु n. Titel einer Abtheilung des Vinaja bei den Buddhisten VJUTP. 211.

वर्षाशाटी f. bei den Buddhisten *ein zur Regenzeit getragenes Gewand:* °चीवर VJUTP. 207. °गत 196. °गोपक 216; vgl. वास्सिकसाटिका МИНАЕВЪ, Пратимокша-сутра 19,16.

वर्षासुज adj. *in der Regenzeit* (वर्षासु loc. pl.) *entstehend, — erscheinend* P. 6,3,1, Vârtt. 5.

वर्षाह्विक m. *eine best. giftige Schlange* (अहि) SUÇR. 2,265,19.

वर्षाह्वू f. *Frosch (in der Regenzeit rufend)* VS. 24,38.

वर्षाह्वा f. = वर्षाभू *Boerhavia procumbens* TS. 2,4,10,3.

वर्षिक in Ableitungen von auf वर्ष (वर्षा) auslautenden Zusammensetzungen: द्वादश° *zwölfjährig* Âçv. Çr. 12,5,13. fgg. — Vgl. त्रै°, द्वै°, पौर्व° und वार्षिक.

वर्षितर् nom. ag. von वर्ष् Nir. 4,8. 7,23.

वर्षिता (von वर्षिन्) f. *das Regnen, Spenden:* समयवर्षितया कृतकर्मणाम् Ragh. 9,3. कङ्कण° Râǵa-Tar. 6,161.

वर्षिन् adj. 1) (von वर्ष्) *regnend, als Regen entlasssend, ausschüttend, spendend:* काम° *nach Belieben regnend* Gobh. 3,2,19. निकाम° Varâh. Bṛh. S. 8,32. यथर्तु° MBh. 1,4338. समय° 5,2357. काल° Spr. 3997. सम्यग्वर्षिन् MBh. 4,931. अभीष्ट° Spr. 1915. चित्र° Hariv. 11145. विचित्र° Varâh. Bṛh. S. 5,74. गिर्युपरि (v. l. गिर्युदधि°) Spr. 1183. वङ्कवारि° Ṛt. 2,3. सीकर° Hariv. 3802. धाराङ्कुश° Varâh. Bṛh. S. 32,21. प्रभूतहिम° Râǵa-Tar. 1,179. करकासार° 239. शोणित° 4,278. मांसशोणित° R. 3,29,7. पुष्प° Bhâg. P. 8,8,27. 10,11,43. पूय° 3,17,13. शर्करा° Çâṅkh. Gṛhj. 6,1. शर्कर° MBh. 4,1288. 16,2. शिला° (पर्वत) Ragh. 4,40. अङ्गार° (उल्का) MBh. 16,3. Hariv. 4260. पीयूष° Râǵa-Tar. 3,411. Bhâg. P. 4,30,14. Pańkar. 3,14,34. प्रस्नवोत्पीड° (पूतना) Hariv. 3426. निर्यास° (वृत्त) R. 2,96,11. मद° (करिन्) MBh. 8,652. बाण° Ragh. 12,50. MBh. 7,4382. Kathâs. 48,80. Mârk. P. 114,15. सौजन्यामृत° Râǵa-Tar. 2,40. दर्शनामृत° Kathâs. 25,265. प्रेमरसासार° (चक्षुस्) 11,49. प्रेम° (चक्षुस्) 39,81. Verz. d. Oxf. H. 132,a,2. दुःख° Kathâs. 21,79. स्वर्ण° *Gold spendend* Râǵa-Tar. 6,301. अपात्र° *Unwürdigen spendend* Spr. 1919. अस्थान° Daçak. 102,15. वर्षिणी वर्षमात्रेण शान्तशोका बभूव सा so v. a. *Thränen vergiessend.* — 2) (von वर्ष *Regen*) in साश्मवर्षिन् *mit einem Steinregen verbunden* Bhâg. P. 4,10,25. — 3) (von वर्ष *Jahr*): षष्टि° *sechszigjährig* MBh. 1,5885. दश°, शत° 13,394.

वर्षिमन् m. = वर्ष्मन्. वरिमा प्रथिमा, वर्षिमा द्राघिमा *Weite Breite, Höhe Länge* VS. 18,4.

वर्षिष्ठ adj. superl. *der höchste, oberste; der längste, grösste* (Gegens. अणिष्ठ, कनिष्ठ, ह्रसीयंस्); von Personen Ṛv. 1,37,6. Ait. Br. 6,3. Agni ist वर्षिष्ठः क्षितीनाम् Ṛv. 5,7,1. श्रेष्ठे वर्षिष्ठे देवते Çat. Br. 11,5,4,3. वर्षिष्ठः समानानाम् TBr. 2,7,11,2. वर्षिष्ठं व्यामिवोपरि Ṛv. 4,31,15. मूर्धन् 6,45,31. सानवि 9,31,5. नाके VS. 1,22 (वर्षिष्ठे अधि नाके nach P. 6,1,118 zu schreiben). 30,12. यो वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम् Ṛv. 10,3,5. Berg AV. 4,9,8. तनू VS. 5,8. इषा Ṛv. 1,88,1. 6,47,9. सुवीर्य 3,13,7. 16,3. रयि 1,8,1. रत्न 3,26,8. क्षत्र 5,67,1. श्रवस् 8,46,24. द्यौत्न 66,9. धामन् 9,67,26. अत्त 3,56,2. अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि 4,22,9. व°, ह्रसीयंस् TS. 6,6,4,2. Çat. Br. 3,7,2,7. 6,2,1,19. Pfosten 3,5,1,1. Kâth. 25,10. शिश्न Çat. Br. 11,1,6,31. 5,2,2. Metrum u. s. w. 8,2,4,19. 13,6,1,9. Çâṅkh. Çr. 16,24,10. Ṛv. Prât. 17,22. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं (adv.) वर्धते *wächst am höchsten* Çat. Br. 13,2,7,4. वन *ein sehr grosser Wald* Bhâg. P. 10,20,25. Nach P. 6,4,157 und Vop. 7,56 ist वर्षिष्ठ der superl. und वर्षीयंस् der compar. zu वृद्ध. Zu diesen beiden adjj. ist वर्ष्मन् als nom. abstr. des nicht vorhandenen pos. zu stellen und zu vergleichen das slavische врьхъ *cacumen.*

वर्षिष्ठक्षत्र adj. *Oberherr:* Mitra-Varuṇa Ṛv. 8,90,1.

वर्षीका f. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,107. 111. 113.

वर्षीण (von वर्ष) adj. nach einem Zahlworte so v. a. *—jährig* P. 5,1,86. fgg. — Vgl. द्वि°.

वर्षीय (wie eben) adj. desgl.: त्रि° *dreijährig* MBh. 13,4467. दश° Pańkar. 1,3,9. — Vgl. पञ्च°.

वर्षीयंस् adj. compar. *der höhere, obere; der längere, grössere:* वयस् Ṛv. 6,44,9. Haar AV. 6,136,2. प्राण 9,6,19. 15,11,5. यज्ञ VS. 6,11. ह्रस्वाय च वामनाय बृहते च वर्षीयसे VS. 16,30. 23,47. इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् 48. वर्षीयानिध्म इध्माद्भवति TBr. 1,6,8,6. 3,2,9,11. प्रैष Ait. Br. 3,9. छन्दस् 4,24. वत्रेयं पुरस्ताद्वर्षीयः पश्चाद्ध्रसीयः TS. 2,6,1,5. 4,3. 5,3,1,5. Çat. Br. 6,5,2,9. 8,6,2,12. 7,2,17. दंष्ट्रा: 11,4,1,5. 12,2,4,3. Kauç. 17. मही so v. a. *blühend* Bhâg. P. 10,20,7. अनुग्रह *mächtig, gross* 3,9,34 (वर्षीयान् वृद्धतरः अत्यधिकः Comm.). Nach P. 6,4,157 und Vop. 7,56 compar. zu वृद्ध; nach AK. 2,6,1,43 und H. 340 *bejahrt,* in welcher Bed. das Wort Prab. 16,4 und Daçak. 92,16 gebraucht wird. Vgl. वर्षिष्ठ und वर्ष्मन्.

वर्षु adj. nach Mahîdh. *lang* oder *regenentsprosst;* ein Grashalm wird angeredet: वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः VS. 6,11. Dagegen liest TS. 1,3,8,2 und Kâth. 3,6 वर्षीयो व°. Wer kein Verderbniss des Textes zugeben will, der kann annehmen, वर्षु sei ein zu वर्षिष्ठ und वर्षीयंस् gebildeter Positiv.

वर्षुक (von वर्ष्) 1) adj. (f. आ) *regnerisch, regenreich* P. 3,2,154. Vop. 26,146. वर्षुकः पर्जन्यो भवति TS. 5,4,1,4. 6,2,4. TBr. 3,3,1,2. Çat. Br. 7,5,2,37. अब्द *Wolke* AK. 3,4,18,112. H. an. 4,143. Med. d. 51. Halâj. 5,40. द्यौर्वर्षुका Bhaṭṭ. 2,37. अ° TS. 5,4,1,4. Çat. Br. 12,1,4,3. *regnend* so v. a. *regnen lassend;* s. रत्न°. — 2) m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

वर्षेज adj. = वर्षज P. 6,3,16.

वर्षेश m. *Jahresregent* Ind. St. 2,256. Verz. d. B. H. No. 868. 881. — Vgl. वर्षाधिप.

वर्षोपल m. *Hagel* AK. 1,1,2,13. H. an. 2,399. Med. r. 12. Varâh. Bṛh. S. 81,24.

वर्षौघ m. *Regenstrom, Platzregen* Spr. 3156.

वर्ष्टर् (von वर्ष्) nom. ag. *Regner:* अग्नि बीजं वर्ष्टा पर्जन्यः पक्ता सस्यम् TS. 7,5,20,1.

वर्ष्म m. in der Stelle वर्ष्मो ऽस्मि समानानाम् Pâr. Gṛhj. 1,3 fehlerhaft für वर्ष्मास्मि; vgl. Ind. Str. 2,117.

1. वर्ष्मन् m. *Höhe, das Oberste:* अयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोत् Ṛv. 6,47,4. 8,32,3. 10,63,4. उतामूं द्यां वर्ष्मणाव स्पृशामि *mit meinem Scheitel* 125,7. AV. 7,14,3. zweifelhaft 20,127,2.

2. वर्ष्मन् n. 1) *Höhe, das Oberste; Oberfläche; das Aeusserste, Spitze:* पृथिव्याः Ṛv. 3,8,3. 10,28,2. 70,1. VS. 5,16. दिवः Ṛv. 3,5,9. 4,54,4. VS. 28,1. वर्ष्मन्राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व AV. 3,4,2. वर्ष्म क्षत्राणामयमस्तु राजा 4,22,2. वाचः TBr. 1,3,6,2. छन्दसाम् 7,9,6. 2,7,9,4. TS. 3,4,8,7. 5,2,1,5. तद्वर्ष्म सत्समं स्यात् Çat. Br. 3,1,1,2. स्वर्गाणां लोकानाम् Kâth. 33,6. Pańkav. Br. 11,9,14. 19,10,10. अहं वर्ष्म सजातानां विद्युतामिव सूर्यः Âçv. Gṛhj. 1,24,8. AV. 5,2,7 ist vielleicht वर्ष्मन् zu lesen.

अस्य वर्ष्मणः पुंसां वरिम्णः सर्वयोगिनाम् Bhâg. P. 3,25,2. 5,18,30. — 2) *Höhe, Grösse;* = प्रमाण AK. 3,4,18,126. H. an. 3,283. fg. Med. n. 126. हनूमतः MBh. 3,11275. गज° Ragh. 4,76. विशाचं तं वर्ष्मणा सालसंनिभम् Kathâs. 2,5. वर्ष्मणा व्यात्तगगणो विन्ध्याद्रिरिव जङ्गमः ein künstlicher Elephant 12,8. Bhâg. P. 10,35,16. गुहाकारेण वर्ष्मणा (वर्चसा die neuere Ausg.) Hariv. 3924. गिरि° adj. Mârk. P. 14,54. MBh. 7,7896. पर्वताभोग° 1,463. 3,12387. 16,118. महापर्वतवर्ष्माभ 3,15831. गजाचल° R. Gorr. 1,20,10. मेरुपर्वत° Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 326,19. मेघसंघात° MBh. 1,5963. Hiḍ. 2,7. भूरि° (तरु) Bhâg. P. 4,19,8. चलिताचलवर्ष्माणः पयोवाहाः Varâh. Bṛh. S. 32,17. अङ्गुष्ठोदर° (ऋषि) MBh. 1, 1443. — 3) *Körper, Leib* AK. 2,6,2,21. 3,4,18,112. 126. H. 564. H. an. Med. Halâj. 2,355. Jâǵń. 3,33. 55. 107. शिलाशकल° (मूर्ख) Mṛkkh. 115,5. Spr. 2507 (Conj.). 2641. Prab. 27,11. Bhâg. P. 5,4,2. 10,12,15. Pańkar. 3,9,18. वर्ष्मावरण (गात्रावरण ed. Bomb.) MBh. 8,557. शत° (शतशीर्ष die neuere Ausg.) Hariv. 13433. — 4) *eine schöne Gestalt* H. an. Med. — Vgl. वर्षिष्ठ und वर्षीयंस्.

वर्ष्मलं (von वर्ष्मन्) adj. (मत्वर्थे) gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

वर्ष्मवन्त् (wie eben) adj. *mit einem Körper versehen* MBh. 12,7853.

वर्ष्यं (nach P. 3,1,120 und Vop. 26,19 von वर्ष् und zwar = वृष्य) adj. *pluvialis:* हूताः Ṛv. 5,83,3. अपो दिव्यो असृजद्वर्ष्या अभि 10,98,5. वर्ष्या जुहुयात् *Regenwasser* Kauç. 103. आतपवर्ष्या आपः *Sonnenregenwasser* Ait. Br. 8,5. 8. Kâtj. Çr. 15,4,35. वर्ष्यस्येव विद्युतः *der Regenwolke* Ṛv. 10,91,5. parox. VS. 16,38. TS. 7,4,13,1.

वल्, वलते Dhâtup. 14,20 (संवरणे = स्तृतौ Vop., nach Andern auch संचरणे); häufiger act. वलति. 1) *sich wenden, sich hinwenden zu:* त्वदभिसरणरभसेन वलन्ती पतति पदानि कियन्ति चलन्ती Gît. 6,3. किंचिद्वलिता Vikr. 59,20. सुरतगागरघूर्णमानतिर्यग्वलत्तरलतारकदीर्घनेत्रा Kaurap. 5. Verz. d. Oxf. H. 121,b, No. 214. प्रणयिनं परिरब्धुमथाङ्गना ववलिरे (= परिवृत्ताः Mallin.) Çiç. 6,38. अलिकदम्बकम् — वलते (= चलते Mallin.) ऽभिमुखं तव 11. अद्यापि विस्मयकरीम् — बुद्धिर्बलाद्वलति मे Kaurap. 27. हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात् Gît. 7,40. चेतः परं वलति शैलवनस्थलीषु Spr. 406, v. l. नले — अवलत (= अन्वरज्यत Comm.) या Nalod. 3,5. वलित *gewendet, gebogen:* °कंधर Mâlatîm. 16,19. Kathâs. 39,133. 90,87. 112,152. °ग्रीव 116,55. Spr. 343. 531. वलिताननं Kathâs. 39,141. 74,236. °दृश् 117,164. 74,218. Spr. 236. Mâlatîm. 16,9. वलितापाङ्गी Kathâs. 104,31. Râǵa-Tar. 5,481. 360. अलसवलितैरङ्गन्यासैः Sâh. D. 42,15. मुखेन वलितभ्रुणा Kathâs. 17,128. प्रियपरिरम्भणारभसवलितमिव कुचकलशम् Gît. 12,5. चुम्बनवलिताधरे (वलित = संकोचित *gespitzt* Comm.) 7,22. भुजगैः — वलितजठरपृष्ठमात्रदृश्यैः Varâh. Bṛh. S. 24,13. एकैव मूत्रधारा वलिता 12. 11. अवलिता हस्ताङ्गुलयः 68,36. अनतिवलिततनुतरोदर Daçak. 90,15. वरद्भिर्वलितं (impers.) रुषा *sie wandten sich* Spr. 2237. नितम्बयुग्मं वलितं चक्राकारम् Pańkar. 1,14,58. वलित m. Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202,a,32. — 2) *hervorbrechen, sich äussern, sich zeigen:* चित्ताकुलतया वलद्बाधां राधाम् Gît. 1,26. वलन्नूपुरनिस्वना Sâh. D. 116. वलितविलोचनजलधर Gît. 4,5. — 3) वलित *begleitet von, verbunden mit:* त्रिवलिवलितशोभा Ṛt. 2,26 जपो होमवलितः Pańkar. 3,10,12. — 4) *verbergen, verstecken* (vgl. 1. वर्): वलते धनं लोकः Durgâd. im ÇKDr.

— caus. *sich wenden* —, *rollen machen:* तनुतरंगततिं सरसां दलत्कुवलयं (adv.) वलयन्मरुदाववौ Çiç. 6,3. = चालयन् Mallin. पट्टसूत्रवलितदोरक Schol. zu Naish. 22,53. वलयति und वालयति Dhâtup. 19,58.

— आ s. u. वल्ग् mit आ.

— वि *sich abwenden:* स्विद्यति कूणति वेल्लति विवलति निमिषति विलोकयति तिर्यक् । अन्तर्नन्दति चुम्बितुमिच्छति नवपरिणाया वधूः शयने ॥ Kâvjapr. 154,10. आगते (प्रिये) विवलितं चनुः Spr. 1219.

— सम्, partic., संवलित *zusammengetroffen, zusammengekommen, gemischt* —, *verbunden mit:* तां वह्लभां रहसि संवलितां स्मरामि Kaurap. 13 bei Haeb. 229. संवलितं निषादैर्विप्रम् Çiç. 5,66. रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः संवलिताः — भासः Kir. 5,38. 48. सिन्दूरसंवलितमौक्तिकहारभारम् Kaurap. 13 bei Haeb. 229. Spr. 988. Mâlatîm. 73,4. Sâh. D. 46. Verz. d. Oxf. H. 14,b,1. 233,a,12. 241,b, No. 591. Mallin. zu Kir. 16,3. यथा भूमिरुप्तबीजमात्रा तदैव प्रचुरपचेलिमफलव्रीहिस्तबकसंवलिता न भवति Kull. zu M. 4,172. दुःख° Schol. zu Prab. 29,11.

1. वलं (wohl von 1. वर्) m. Nir. 6,2. 1) *Höhle:* भिनद्वलस्य परिधीन् Ṛv. 1,52,5. 2,11,20. 15,8. 24,3. 3,34,10. 8,14,7. 10,62,2. वलं रवेण दरयः 1,62,4. रुजद्रुग्णं वि वलस्य सानुम् 6,39,2. 4,50,5. यो गा उदाजदपधा वलस्य 2,12,3. अप हि वलं वः 14,3. 1,11,5. 3,30,10. 6,18, 5. अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् 8,14,8. एषो अपश्रितो वलः 24,30. इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण 10,67,6. 68,5. 138,1. In keiner dieser Stellen ist man genöthigt die Personification zu einem Dämon anzunehmen, obschon dieselbe in mehreren zulässig wäre. येन ऋषयो वलमद्योतयन्युजा AV. 4,23,5. देवा वै वले गाः पर्यपश्यन् वलं विरुज्य गा उदाजन् Ait. Br. 6,24. इन्द्रो वलस्य बिलमपौर्णोत् TS. 2,1,5,1. असुराणां वै वलस्तमसा प्रावृतो ऽश्मापिधान आसीत् Pańkav. Br. 19,7,1. = मेघ Naigh. 1,10. — 2) *Decke* Schol. zu Kâtj. Çr. 702, 2 v. u. — 3) als Personification von 1) ein von Indra besiegter Dämon, ein Sohn des Danâjus (der Anâjushâ) und Bruder Vṛtra's, H. 174. an. 2,500. Med. l. 37. Verz. d. Oxf. H. 182,a,30. MBh. 1,2541. 3,12073. 12,3660. Hariv. 12961. fgg. 13044. fgg. 13187. 13222. 13268. 13271. 13630. fgg. Bhâg. P. 8,11,28. Verz. d. Oxf. H. 12,b, 3 v. u. Nicht nur die Calc., sondern auch die Bomb. Ausgg. schreiben regelmässig बल.

2. वल = वलि in शतवल Çâṅkh. Çr. 14,32,10. 14.

वलंरुजं adj. *Höhlenbrecher* Ṛv. 3,45,2.

वलक 1) *Decke* Schol. zu Kâtj. Çr. 694,20. 703,1. — 2) n. *Procession:* जन्य° Kathâs. 123,175. 191. 216. — 3) m. N. pr. a) eines Dânava (verschieden von Vala) Hariv. 202. 13222. = वल 13277. 13291. In beiden Ausgg. बलक geschrieben. — b) einer der sieben Weisen unter Manu Tâmasa Mârk. P. 74,59.

वलकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,b,11.

वलक्रम m. N. pr. eines Gebirges VP. 180, N. 3.

वलगं (वल + 1. ग) VS. Prât. 5,35. n. *ein in einer Höhlung oder Grube verborgenes* —, überh. *ein verstecktes Zaubermittel* AV. 5,31,4. यां ते बर्हिषि यां श्मशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वा निचख्नुः 10,1,18. 19,9,9 VS. 5,23. TS. 6,2,11,1. 2. Çat. Br. 3,5,4,2.

वलगहन् adj. *versteckten Zauber vernichtend* VS. 5,23. 25.

वलगिन् (von वलग) adj. *der sich mit verstecktem Zauber abgiebt* AV. 5,31,12. 10,1,31.

वलती f. = प्रासादोपरि मण्डलिका, also = वलभि ÇKDr. nach einem Purâṇa.

वलद्विष् m. Vala's *Feind* d. i. Indra H. 174, Schol.

1. वलन (von वल्) 1) n. *das Sichwenden, Sichbiegen:* आस्य° Sâh. D. 236. अपाङ्ग° Spr. 530. सविभ्रमाङ्गवलना adj. 3235. भ्रमभुजालतान्तिपवलनैः Ratnâv. 40,12. *das Wallen, Wogen:* कर्मोर्मिर्णां विषमवलनैः Spr. 734. अलोलकीर्तिकल्लोलडुकूल° Râǵa-Tar. 2,64. — 2) n. und f. आ *Variation der Ekliptik* Sûrjas. 4,24. fg. Varâh. Bṛh. S. 5,18. Golâdhj. 8,31. fgg. 9,3. fgg. Gaṇit. Kandragrahaṇâdhj. 21. fgg.

2. वलन = 1. वरण in काय°.

वलनाशन m. *der Tödter* Vala's d. i. Indra MBh. 5,283.

वलनिमूदन m. dass. Hariv. 3967. R. 1,47,8 (bei Schl. falschlich बलिनिषूदन). Ragh. 9,3. — Vgl. वलवृत्रनिमूदन.

वलन्तिका f. Bez. *einer best. Art von Gesticulation* Vikr. 59,15. वलभिका v. l.

वलपुर n. Vala's *Burg* ṚV. Anukr.; s. Hoefer, Z. f. d. W. d. Sprache I, 288.

वलभि s. वलभी.

वलभिका f. 1) *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,258,5. — 2) v. l. für वलन्तिका Vikr. 59,5.

वलभिद् m. 1) *der Spalter* Vala's d. i. Indra MBh. 1,1188. Ragh. 11, 51. Ṛt. 3,12. Çâk. 27,23. Kir. 5,43. Spr. 1643. Bhâg. P. 9,17,15. — 2) N. eines Ekâha für den, welcher um Heerdenbesitz opfert, Pańkav. Br. 19,7,1. 3. 25,1,1. 11. Âçv. Çr. 12,1,5. Çâṅkh. Çr. 14,11,10. Kâtj. Çr. 22,10,21. Lâtj. 9,4,9.

वलभी (hier und da auch °भि) f. 1) *First, Zinne eines Hauses, Söller* AK. 2,2,14. H. 1011 nebst Comm. Halâj. 2,148. Ind. St. 10,279. MBh. 1,796. 5003 (= उभयतो नमत्पक्षा स्तम्भशाला Nilak.). Vikr. 43. Mâlav. 33. Çiç. 3,53. Varâh. Bṛh. S. 56,25. 57,4. Kathâs. 87,12. Râǵa-Tar. 1, 369. Bhâg. P. 8,15,20. 9,10,17. 10,41,21. Z. f. d. K. d. M. IV, 166. Vgl. वडभी. — 2) N. pr. einer Stadt in Saurâshṭra gaṇa वाराणादि zu P. 4,2,82. Daçak. 158,3. Bhaṭṭ. 22,35. Çatr. 14,284; vgl. वल्लभी.

वलम्भ N. pr. einer Gegend Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,26.

वलय (von 1. वर्) Uṇâdis. 4,99. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,12. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) m. n. *ein am Handgelenk von Männern und Frauen getragenes Armband* AK. 2,6,3,8. 3, 4,1,18. H. 663. an. 3,504. Med. j. 95. Halâj. 2,402. MBh. 4,53. 185. 1418. Hariv. 8678. R. 2,32,5. 5,13,67. मुञ्ज° Suçr. 1,171,19. मृणाल° 2,284,13. कनक° Megh. 2. 61. fg. 77. Ragh. 13,21. अक्षमाला° 43. Uttarar. 82,10 (106,2). Kumâras. 2,64. Çâk. 57. 61. 66, v. l. 133. Çiç. 9,8. Kathâs. 9,87. 108,131. Spr. 77 (II). 490. 573. 2792. 3719. Bhâg. P. 1,15, 40. 3,15,40. 28,15. 27. 4,8,48. 10,18. 5,25,5. 6,4,38. 8,8,34. Sâh. D. 54,1. 55,20. Mârk. P. 88,15. Prab. 12,1. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26,16. Bhaṭṭ. 3,22 (= अवैधव्यचिह्न Comm.). Wellen als *Armspangen* eines Teiches u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 12,10. Spr. 344 (II). 477. — 2) m. n. *Kreis* Golâdhj. 6,1. 3. Suçr. 1,36,10. Vikr. 140. *Umkreis, Rund, runde Einfassung:* भूमेः Mârk. P. 20,49. भू° (s. bes.), अवनी° Kathâs. 103,238. पृथ्वी° 119,209. धात्री° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 16. दिग्वलय Çiç. 9,8. नभो° Bhâg. P. 5,22,5. मन्थान° Hariv. 3396. वेलावप्रवलया उर्वी *rundum begrenzt von* Ragh. 1,30. पृथिवी समुद्रवलया MBh. 14,400. Kathâs. 10,199. द्वान्तावलयभूमिषु Ragh. 4,65. कण्ठे शीर्णलताप्रतानवलयेनात्यर्थसंपीडितः Çâk. 170. 32. वल्ली° (so ist zu lesen) Kathâs. 123,61. — 3) n. Bez. *gewisser runder Knochen an Hand, Fuss, Seite, Brust* Suçr. 1,339,15. 17. — 4) m. *eine best. Krankheit des Schlundes* H. an. Med. Suçr. 1,306,14. 307,20. — 5) m. Bez. *einer best. Art von Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,45. — 6) m. pl. N. pr. eines Volkes AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). — वलया भूतरंगाभा: Hariv. 4298 fehlerhaft für वलयो ऽभ्र°, wie die neuere Ausg. liest. Vgl. कु°, दृग्वलय, भू°, लता°.

वलयवन्त् in लता° s. u. लतावलय.

वलयित (von वलय) adj. 1) *rundum eingefasst* AK. 3,2,40. H. 1474. Halâj. 4,27. मृत्पिण्डो (*die Erde*) जलरेखया वलयितः Spr. 2245. बर्हैरू-चन्द्रकान्तिर्वलयितचिकुरा Kuandom. 112. पीतपरागपटलभरवलयितमूल Gît. 11,26. चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेश 2,3. 5. — 2) *einen Kreis bildend* Mâlatim. 75,21.

वलयिन् (wie eben) adj. 1) *mit einem Armband versehen* Bhâg. P. 3, 23,31. माङ्गल्यौर्णा° Ragh. 16,87. कटकवलयिनी *mit einem* कटक *und einem* वलय *versehen* P. 5,2,128, Schol. — 2) am Ende eines comp. *rundum eingefasst:* ज्योतिर्लेखा° Megh. 45. हंसावलीवलयिनो जलसंनिवेशाः Spr. 737.

वलयीकार् (वलय + 1. कार्) *Etwas zum Armband machen, als Armband verwenden* Kumâras. 5,66. Verz. d. Oxf. H. 239,*b*, No. 579.

वलयीभू (वलय + 1. भू) *zu einer ringförmigen Einfassung werden* Kir. 13,30.

वलवन्त् adj. *das Wort* वल *enthaltend* Ait. Br. 6,7.

वलवृत्रघ्न m. *der Tödter* Vala's *und* Vṛtra's d. i. Indra MBh. 13,2343.

वलवृत्रनिमूदन m. dass. MBh. 3,2126.

वलवृत्रहन् m. dass. MBh. 3,2240.

वलसूदन m. *der Vernichter* Vala's d. i. Indra Halâj. 1,52. MBh. 1, 1285. 7706. 13,278. 828. R. 1,47,2 (बलिसूदन falschlich bei Schl.). Brahma-P. in LA. (III) 50,6.

वलहन्तार् m. dass. MBh. 7,1202.

वलाट m. *Phaseolus Mungo Lin.* (s. मुद्ग) H. 1172.

वलाराति m. Vala's *Feind* d. i. Indra AK. 1,1,1,38.

वलाहक (s. बलाहक in den Nachträgen) m. 1) *Wolke* (*Regenwolke, Gewitterwolke*) Naigh. 1,10. Varâh. Bṛh. S. 30,28. Verz. d. Oxf. H. 256, *a*,13. — 2) *Cyperus rotundus Lin.* (vgl. मेघ) Aush. 10. — 3) *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,7. — 4) *ein best. Metrum* Ind. St. 8,408. fg. — 5) N. pr. eines Berges Kathâs. 54,16. — Die Schreibart mit व ist die richtigere, da das Wort ursprünglich identisch mit वराह ist.

वलि (von वल्) f. Çânt. 2,2, Comm. Siddh. K. 248, *a*, 3 und वली. 1) f. (*ringsum laufende*) *Falte der Haut* (bei Menschen und Thieren), *Runzel* AK. 3,4,26,197. Trik. 3,3,401. H. an. 2,501. Med. l. 35. fg. Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 3,53. M. 6,2 (= MBh. 12,8887). जरा वली च मां तात पलितानि च पर्यगुः MBh. 1,3467. 3492. वलीसंगतगात्र 3471.

वलीमण्डिततनु Spr. 779. वलिभिर्मुखमाक्रान्तम् 1948. गात्रेषु वलयः प्राप्ताः 4011. Bhâg. P. 5,24,13. 9,3,14. 6,42. Suçr. 1,62,4. 129,8. वक्त्रं वलिभिर्विमुक्तम् 2,152,16. 236,8. am Augenlid 338,1. अर्म यत्र वलीव्राप्तम् 334,14. *Falte* im After 1,258,11. 260,5. 6. Çârṅg. Saṁh. 1,6,5. 2,9,24. वलित्रय (vgl. त्रिवली) Kumâras. 1,39. Kathâs. 84,7. Spr. 2878. 3728. MBh. 4,394. Kumâras. 5,24. Kathâs. 90,45. Bhâg. P. 1,19,27. 4,21,16. 24,50. Varâh. Bṛh. S. 51,8. 61,15. 68,22. 24. कक्षावलयः (beim Elephanten) 67,2. वलयो ऽधतरंगाभाः (so die neuere Ausg.) Hariv. 4298. शृङ्गावलि P. 6,3,12, Schol. *Falte* an einem Horn: त्रि°, पञ्च° Kâtj. Çr. 7,3,29. in einem Betttuche Sâh. D. 42,11. — 2) वलि m. *Griff eines Fliegenwedels* H. an. Med. Hâr. 265. Megh. 36. — 3) m. *Giebelbalken* Trik. H. an. Med. वली f. Vaiǵ. — 4) f. वली *Welle* Vaiǵ. — 5) वलि *Schwefel* H. an. — 6) वलि *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 85. — 7) वली Kathâs. 123,61 fehlerhaft für वल्ली.

1. वलित partic. von वल्; s. daselbst.

2. वलित (von वलि) 1) adj. *gefaltet:* अप्रदक्षिण° Schol. zu Kâtj. Çr. 988,12. — 2) n. *schwarzer Pfeffer* H. ç. 100.

वलिन॑ (wie eben) adj. *mit Falten versehen, runzelig* gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. AK. 2,6,1,45. H. 456. Çâṅkh. Çr. 16,18,8. — Vgl. युव°.

वलिभ॑ (wie eben) adj. dass. P. 5,2,139. AK. 2,6,1,45. H. 456. दधाना वलिभं मध्यम् Bhaṭṭ. 4,16.

वलिमत् (wie eben) adj. dass. Comm. zu AK. 2,6,1,45. Bhâg. P. 10,39,48. — Vgl. वलीमत्.

वलिमुख m. = वलीमुख *Affe* Ramân. zu AK. 2,5,3 nach Wilson.

वलिर adj. *schielend* AK. 2,6,1,49. H. 458.

वलिवण्ड m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,15. fg.

वलिवाक (व° gedr.) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,109 nach der Lesart der ed. Bomb.; वलीवाक ed. Calc.

वलिश n. 1) = वडिश (बडिश) *Angel* Çabdar. im ÇKDr. — 2) *ein aus einem Gelenk hervorbrechender Spross* H. 1119.

वलिशान॑ m. *Wolke* Naigh. 1,10.

वलिशि und वलिशी f. = वडिश *Angel* Çabdar. im ÇKDr.

वली s. u. वलि.

वलीक (von वली) 1) am Ende eines adj. comp. *mit — Falten versehen:* त्रि° R. 5,32,12. Çiç. 3,53. — 2) n. proparox. *ein vorspringendes Stroh-* oder *Schilfdach* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,25. AK. 2,2,14. Trik. 3,3,360. H. 1011. Halâj. 2,148. Çiç. 3,53. — 3) n. etwa *Schilf, Büschel,* als Fackeln u. s. w. gebraucht Kauç. 25. 29. fg. 75. 77; vgl. Ind. St. 5,379.

वलीमत् (von वली) adj. *gekräuselt:* अलकाः Ragh. 8,52. — Vgl. वलिमत्.

वलीमुख 1) adj. *Runzeln im Gesicht habend.* — 2) m. *a) Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. Halâj. 2,76. R. 5,60,10. 61,1. — *b)* N. pr. eines Affen Kathâs. 63,97.

वलीवाक (व° gedr.) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2,109. वलिवाक ed. Bomb.

वलू॑क Uṇâdis. 4,40. adj. *roth* oder *schwarz:* दामतूषाणि वलूकान्तानि Kâtj. Çr. 22,4,20. Pañkav. Br. 17,1,15. Lâṭj. 8,6,20. Anupada 5,4. Da das Wort nur in dieser Verbindung erscheint, wird es wohl eine speciellere Bedeutung haben, etwa *Verbrämung, umlaufende Schnur* oder *Wulst.* Nach Uǵǵval. m. *Vogel* und *Lotuswurzel;* in der letzten Bed. n. nach Uṇâdik.

वल्क्, वल्कयति (परिभाषणे) Dhâtup. 32,35.

वल्क॑ Uṇâdis. 3,42. 1) m. n. (n. nicht zu belegen) *Bast, Splint* AK. 2,4,1,12. H. 1121. an. 2,16. Med. k. 33. Halâj. 2,28. इन्द्रो वृत्रमहन् तस्य (यो) वल्कः परापतत् तानि फाल्गुनान्यभवन् TBr. 1,4,7,6. यत्पूतीकैर्वा पर्णवल्कैर्वातञ्च्यात् (*Splint* des Palâça dient zum Gerinnen) TS. 2,5,3,5. 3,7,4,2. द्रुमवल्कैः (बबन्धुः) R. 5,44,12. fg. शाणवल्कैः 56,138. तरुवल्कवासम् Ragh. 8,11. °वासम् Kir. 1,35. अश्मन्तकस्य Suçr. 1,93,15. तिल्वकस्य त्वचं बाह्यामन्तर्वल्कविवर्जिताम् 166,5. 2,259,11. धन्वन° Varâh. Bṛh. S. 57,1. — 2) n. *Fischschuppe* H. an. Med. Çabdar. im ÇKDr. — 3) n. *Stück* (खण्ड) Viçva im ÇKDr. — 4) m. *ein best. Baum, eine Art* Lodhra (पट्टिकालोध्र) Râǵan. im ÇKDr. Pañkar. 1,7,24. — 5) nom. ag. = वक्तार् *Sprecher* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 139 bei der Erklärung von यज्ञवल्क. — Vgl. उरु°, दन्त°, पर्ण°, बध्न°, बृहद्वल्क, यज्ञ°, दृढवल्का, शिला°, वकल und वल्कल.

वल्कज m. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 127.

वल्कतरु m. *Betelpalme* Râǵan. im ÇKDr.

वल्कद्रुम m. *eine Art Birke* (भूर्ज) Râǵan. im ÇKDr.

वल्कल 1) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,11. (nur das n. zu belegen) = वल्क *Bast, Splint; ein Gewebe von Bast, ein aus Bast verfertigtes Gewand* AK. 2,4,1,12. 3,4,1,13. H. 1121. Halâj. 2,28. अन्तर्वल्कल Suçr. 1,25,10. 65,14. 344,5 (वल्कल v. l.). Jâǵn. 2,180. जटावल्कलधारिन् MBh. 1,7626. 13,352. R. 1,1,31. 2,7. 2,24,35. 28,13. 63,27. 73,10. 101,24. R. Gorr. 1,2,8. 3,77,26. Kumâras. 5,8. 6,6. Ragh. 12,8. Çâk. 14. 18. 10,6. Varâh. Bṛh. S. 51,14. Spr. 1934. 2722. 2727. 2784. 3131. Bhâg. P. 5,2,10. Pañkat. 188,13. Schol. zu Kâtj. Çr. 880,3. am Ende eines adj. comp. f. आ Kumâras. 5,84. Kathâs. 32,107. — 2) n. *Cassiarinde* Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. आ = शिलावल्का Râǵan. im ÇKDr. — 4) m. N. pr. eines Daitja Bhâg. P. 2,7,34. 3,3,11. fehlerhaft für बल्वल, wie die ed. Bomb. an beiden Stellen liest. — Vgl. गन्ध°, दृढ°.

वल्कलक्षेत्र n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* Verz. d. Oxf. H. 30,*a*,13. °माहात्म्य Mack. Coll. I,83.

वल्कलवत् (von वल्कल) adj. *ein Gewand aus Bast tragend* Ragh. 18,25.

वल्कलिन् (wie eben) adj. *Bast habend, — liefernd:* शाखा Spr. 665. *ein Gewand aus Bast tragend* MBh. 1,4622. Ragh. 14,82.

वल्कलोध्र m. = पट्टिकालोध्र Râǵan. im ÇKDr.

वल्कवत् (von वल्क) 1) adj. *mit Bast —, mit Schuppen versehen.* — 2) m. *Fisch* Trik. 1,2,15.

वल्किल m. *Dorn* Çabdar. im ÇKDr.

वल्कुत n. = वल्कल *Bast* Çabdar. im ÇKDr.

वल्ग्, व॑ल्गति Dhâtup. 5,35 (गतौ, खञ्जे). ववल्ग; aus metrischen Rücksichten auch med.; *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen* (auch von leblosen Dingen): मंहिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा VS. 22,7. TS. 7,1,13,1. वल्गमाना हयोत्तमाः MBh. 7,4559. वल्गत्तुरंग Kathâs. 103,157. Spr. 2399, v. l. हरयः *Affen* R. 6,15,18. MBh. 3,16123. वल्गते

च शशकः Spr. 566. MBh. 13,748 (med.). वल्गमानमिव सिंहम् Hariv. 4688. वल्गतां भूतानाम् Kathâs. 7,33. 22,175. शैलूषस्येव मे राज्यरङ्गे ऽस्मिन्वल्गतश्चिरम् Râǵa-Tar. 2,156. 5,342 (वल्गन् mit der ed. Calc. zu lesen). Bhâg. P. 10,44,11. Mârk. P. 43,17. Bhatt. 13,28. तव पुत्रो ववल्ग ह so v. a. *sprang vor Freude* MBh. 7,5430. अशक्तो मद्गुणान्वक्तुं वल्गसे बक दुर्मते 8,2018. समुद्रं वल्गन्तमिव वायुना 3,8802. ऊर्मयश्चात्र दृश्यन्ते वल्गन्त इव पर्वताः 12080. गच्छन्त्याः स्तनौ तस्या ववल्गतुः 1824. ववल्गुश्चापि कासांचित्कुण्डलान्यङ्गदानि च R. 5,13,41. वल्गु वल्गन्ति सूक्तयः (so die v. l.) so v. a. *klingen schön* Spr. 553. वल्गित 1) adj. *hüpfend, springend:* वत्स Varâh. Brh. S. 48,11. (वारणाः) रणावल्गितैः (°गर्वितैः die neuere Ausg.) Hariv. 3469. *flatternd:* वल्गिताम्बरैः (बलिनां वरैः die neuere Ausg.) 4992. °भ्रु *sich hinundher bewegend* Kâvjâd. 2,73. Bhâg. P. 10,35,2. so v. a. *klingend, wohlklingend:* योधानां वल्गितस्वनः Hariv. 14017. °कण्ठ Bhâg. P. 10,90,21. — 2) n. impers. statt des verbi finiti: कस्मादेतेन वल्गितम् *weshalb ist er vor Freude gesprungen?* Râǵa-Tar. 3,104. — 3) n. *das Hüpfen, Springen, springender Gang* (eines Pferdes z. B.) AK. 2,8,2,16. H. 1245. 1247. MBh. 7,2860. क्रीडन्त्यः प्लुतवल्गितैः R. 1,9,14 (13 Gorr.). Bhatt. 6,106. *Geberdenspiel* Bhar. Nâtjaç. 20,12. 22. तद्दृष्ट्वा च सभामध्ये वल्गितं ते वृकोदर *das Hüpfen vor Freude* MBh. 5,5476. Çiç. 2,27. विस्फुरन्मकरकुण्डल° *das Zittern, Hinundhergehen* Bhâg. P. 3,28,29.

— अभि *herbeihüpfen, herbeispringen* MBh. 6,3265. *aufhüpfen, aufwallen* vom siedenden Wasser: उखेवाधत्यभि वल्गन्ति तप्ताः AV. 12,3,29.

— आ *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen:* आवल्गमानं तं (मल्लं) रङ्गे नोपतिष्ठति कश्च न MBh. 4,342. आवल्गित *hüpfend, springend* 9,600 (आवर्तित ed. Bomb.). विषाणावल्गितगति Hariv. 4103. प्लुतावल्गितपाद (प्लुतवल्गित° die neuere Ausg.) 4302. *flatternd:* आवल्गिताम्बर (आवलिता° die neuere Ausg.) 4661. 4686 (बलिनां वरम् die neuere Ausg.).

— व्या *galoppiren* Uttarar. 92,3 (119,4). *hüpfen, sich rasch hinundher bewegen,* vom Busen Spr. 2921. व्यावल्गत्स्तनकपाल Prab. 3,13. व्यावल्गित *dahinfahrend:* पुरोवात MBh. 6,1666.

— परा *wegspringen:* परावल्गन्ते स्वाहा TS. 7,1,13,1.

— प्र *die Glieder rasch bewegen, hüpfen, springen* MBh. 8,848. in der Nacht इच्छया ते प्रवल्गन्ति ये सत्त्वा रात्रिचारिणः 10,26. med. Hariv. 4703. 13591. प्रवल्गन्तमिवोर्मिभिः — सागरम् R. 5,74,39. °वल्गित *hüpfend, springend* Hariv. 4991. 5470.

— वि *hüpfen, springen:* माहेन्द्रेण विवल्गतीव धनुषा — अम्बरम् Mrkkh. 85,15.

— सम् *sich in wallende, rollende Bewegung setzen:* यत्प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत AV. 3,13,2. TS. 5,6,1,2.

वल्गन (von वल्ग्) n. *das Hüpfen, Springen, Galoppiren:* तुरग° Ragh. 9,51.

वल्गा f. 1) *Zaum, Zügel* Trik. 2,8,47. H. 1252. Halâj. 2,287. वाजी वल्गासु गृह्यते Mrkkh. 20,12. Râǵa-Tar. 5,342. Schol. zu Kâtj. Çr. 14,3,9. Dieses Wort ist wohl herzustellen in der Stelle: विप्रविद्धकुथावल्गाः (तुरगाः) MBh. 7,1217. विप्रविद्धकुथा नागाः ed. Bomb. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers Râǵa-Tar. 6,308. °मठ ebend.

वल्गु (von वल्ग्) Unâdis. 1,20. 1) adj. *artig, zierlich, anständig, schmuck, lieblich, schön* (eig. *von angenehmer Geberde*) AK. 3,4,22,146. H. 1444. an. 2,48. Med. g. 23. Halâj. 4,4. जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुः das Weib AV. 2,36,1. die Açvin RV. 6,62,5. 63,1. 7,68,4. 8,76,6. नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु AV. 12,3,32. °जन Hariv. 16252. मुख MBh. 3,15639. Spr. 3281. R. 2,26,10. वामकर Bhâg. P. 8,12,21. प्रकोष्ठ 3,15,40. 4,10,18. वलिवल्गूदर 1,19,27. 4,21,16. 24,50. °गति 8,8,7. °स्पन्दन 5,2,6. °स्मित R. 6,95,25. Bhâg. P. 10,6,6. °हास 1,9,40. 11,37. उन्मिषित Ragh. 5,68. °दर्शना AK. 3,4,2,33. बलेन चतुरङ्गेण वृतः परमवल्गुना MBh. 1,2817. नदीतीरेषु वल्गुषु R. 2,91,51 (100,50 Gorr.). °द्रुम Khandom. 149. insbes. von Rede, Stimme, Laut (daher unter den वाङ्नामानि Naigh. 1,11): एषा वदिष्ठैषा वल्गुतमा वाग्या वनस्पतीनाम् *venustissima* Pańkav. Br. 6,5,12. वचस् MBh. 3,1160. शब्दाः 11565. °नाद R. 1,30,16. 2,95,11. R. Gorr. 1,31,19. 66,9. वल्गु द्विज्ञानां (so ist zu trennen) च रुतं शृण्वन् 2,98,16. 104,7. 11. 3,76,7. 5,74,5. Ragh. 19,13. AK. 3,4,24,162. Varâh. Brh. S. 48,14. 70,7. 74,18. Kâvjâd. 3,110. °विचित्रजल्पैः Bhâg. P. 1,7,17. 16,36. 3,21,43. 4,9,59. 25,31. 26,23. 6,18,27. 8,8,18. 24,25. साम्ना परमवल्गुना MBh. 1,3294. 3,13008. 5,3338. 8,3308. 13,657. 2313. 14,2603. वल्गुना साम्ना Bhâg. P. 4,28,51. adv.: अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे RV. 10,62,4. वदन्ते वल्ग्वत्रये 8,62,8. अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत AV. 3,30,5. कोकिलस्य वल्गु व्याहृतः R. 1,64,9 (66,10 Gorr.). 2,56,2. वल्गु वल्गन्ति सूक्तयः (so die v. l.) Spr. 553. °वादिन् MBh. 7,2255. °चलच्चरणनूपुर Bhâg. P. 8,8,45. अवल्गुकारिणं सत्सु *nicht schön handelnd an* MBh. 5,4522. फलत्यवल्गु Bhatt. 12,66. — 2) m. *a) Ziege* Trik. 3,3,70. H. an. Med. — *b)* N. einer der vier Schutzgottheiten des Bodhi-Baumes Lalit. ed. Calc. 347,8. — 3) vielleicht N. pr. einer Oertlichkeit gaṇa वराहादि zu P. 4,2,82. — 4) verwechselt mit फल्गु Spr. 4400, v. l. fehlerhaft für वर्ण (so die ed. Bomb.) MBh. 6,2138.

वल्गुक 1) adj. = वल्गु Aǵaja im ÇKDr. — 2) m. *ein best. Baum* Pańkar. 1,7,24. — 3) n. *a) Sandel.* — *b) Gehölz, Wald.* — *c)* = पण n. Aǵaja im ÇKDr. *Preis* Wilson.

वल्गुज m. und °जा f. so v. a. अवल्गुज Râǵan. in Nigh. Pr.

वल्गुजङ्घ 1) adj. *schöne Beine habend.* — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,251.

वल्गुपत्त्र 1) adj. *schöne Blätter habend.* — 2) m. *Phaseolus trilobus* Çabdak. im ÇKDr.

वल्गुपोदकी f. *Amaranthus polygamus* oder *oleraceus* (eine Gemüsepflanze) Dhanv. in Nigh. Pr.

वल्गुला 1) *Serratula anthelminthica.* — 2) *ein best. Nachtvogel* (दिवान्धा) Râǵan. im ÇKDr.

वल्गुलिका f. 1) *Kiste, Kasten:* वल्गुलिकान्तःस्थं दृष्ट्वा पटम् Kathâs. 55,79. 101,74. कृष्ट्वा वल्गुलिकातः सा चित्रस्थां तामदर्शयत् 75. — 2) *ein best. Nachtvogel* oder *eine Art Fledermaus* H. 1337.

वल्गुली f. *ein best. Nachtvogel* oder *eine Art Fledermaus* Dhanv. in Nigh. Pr. unter den प्रतुद aufgeführt Suçr. 1,201,19. Varâh. Brh. S. 88,2 (*Fledermaus* nach dem Comm.).

वल्गूय् (von वल्गु), °यति Naigh. 3,14 (अर्चतिकर्मन्). gaṇa कण्ड्वादि

zu P. 3,1,27 (पूजामाधुर्ययोः). 1) *artig behandeln:* बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दते पूर्वभाजम् RV. 4,50,7. — 2) *frohlocken:* वल्गूयन्तीं (= शोभमानाम् Comm.) विलोक्य त्वां स्त्री न मन्तूयतीह का Bhatt. 5,73. मन्तूयिष्यति यत्तेन्द्रो वल्गूयिष्यति (= हृष्टमना भविष्यति, शोभनो भ° Comm.) नो (= न) यमः 16,31.

वल्भ्, वल्भते *essen* Dhâtup. 10,31.

वल्भन (von वल्भ्) n. *das Essen* H. 423. Halâj. 2,170.

वल्मिक m. n. = वल्मीक *Ameisenhaufe* Çabdar. im ÇKDr.

वल्मिकि m. n. dass. Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

वल्मी Haeb Anth. 238,2 fehlerhaft für वल्ली; s. Spr. 1972.

वल्मीक (वै° Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,25) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,15. 1) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Ameisenhaufe* (vgl. वम्र) AK. 2,1,15. Trik. 2,1,18. H. 970. an. 3,95. Med. k. 127. Halâj. 3,22. VS. 25,8. TS. 1,1,2,4. Çat. Br. 2,6,2,17. 14,7,2,10. Kâṭh. 19,2. 31,12. 35,19. °संभूति Çâṅkh. Gṛhj. 5,11. °वपा s. u. 2. वपा 1). °राशि Kauç. 21. 25. fg. 31. M. 4,46. धर्मं शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिकाः Spr. 4248. शनैः शनैः संचिनुयाद्धर्मं वल्मीकशृङ्गवत् Kaçikh. 35,35 (nach Aufrecht). Jâǵn. 1,278. 2,151. MBh. 2,1441. 4,651. R. 5,83,9. Suçr. 1,134,18. 2,173,11. Çâk. 170. Spr. 82 (II). अञ्जनस्य क्षयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य च संचयम् 115 (II). 3611. 4746. Kâm. Nîtis. 14,21. 32. 16,18. Varâh. Bṛh. S. 35,5. 43,13. 46,70. 48,16. 54,9. 12. (गृहम्) मूषकैः कृतवल्मीकम् Kathâs. 2,49. Bhâg. P. 7,3,15. 23. 9,3,3. Mârk. P. 34,65. 39,49. Pańkat. 9,7. ein beliebter Aufenthaltsort von Schlangen MBh. 7,5590. 14,1715. R. 3,35,12. Kathâs. 33,43. fgg. Verz. d. Oxf. H. 90,*b*,6 v. u. Pańkat. 170,23. — 2) m. n. Bez. *einer best. Krankheit: Knoten an Hand und Sohle u. s. w. von wunden Stellen umgeben* Trik. 2,6,15. H. an. Med. Wise 412. Suçr. 1,92,4. 291,17. 292,6. 293,7. Çârṅg. Saṃh. 1,7,65. Vgl. पाद°. — 3) m. = सातपो मेघः und सूर्य Schol. zu Megh. 15 (s. Schütz's Uebers.). — 4) m. N. pr. eines Mannes, des Vaters von Vâlmîki, Bhâg. P. 6,18,4. = वाल्मीकि Trik. 2,7,19. H. 846. H. an. — वल्मीकभवः कविः Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 283. — 5) n. N. pr. einer Oertlichkeit Kathâs. 46,51. 53. वल्मीकाग्र Megh. 15 nach einem Schol. Bez. einer best. *Kuppe* des Râmagiri.

वल्मीकल्प (!) m. Bez. *des 11ten Tages* (कल्प) *in der dunkelen Hälfte im Monat* Brahman's; s. u. कल्प 2) *d*).

वल्मीकशीर्ष n. *Antimonium* Râǵan. im ÇKDr.

वल्मीकि m. = वल्मीक Çabdam. im ÇKDr.

वल्मीकूट n. *Ameisenhaufe* ÇKDr. angeblich nach H.; vgl. वम्रीकूट.

वल्युलय् und वल्यूलय् s. u. पल्पूलय्.

वल्ल्, वल्लते (स्तृतौ, संचरणे) Dhâtup. 14,21. (संवरणे) Verz. d. Oxf. H. 168,*b*. वल्लाद्विद्याधर Kathâs. 110,87 fehlerhaft für वेल्लद्वि°.

वल्ल m. 1) *eine Waizenart* H. 1174. Halâj. 2,429. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,26. = खल्व Çaṃk. zu Bṛh. Âr. Up. 6,3,13. °पुष्प Varâh. Bṛh. S. 80,7. — 2) *ein best. Gewicht* Verz. d. B. H. No. 968. = 3 Guṅǵâ Çârṅg. Saṃh. 1,1,30. Lîlâv. im ÇKDr. = 2 Guṅǵâ Colebr. Alg. (dies. Aut.). Vaidjakapar. im ÇKDr. = 1½ Guṅǵâ Râǵan. ebend.

वल्लकरञ्ज m. so v. a. करञ्ज Aush. 25.

वल्लकि s. u. वल्लकी 1).

वल्लकी f. gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. 1) *eine Art Laute* (steht öfters neben वीणा) AK. 1,1,2,3. H. 288. ç. 81. Halâj. 1,96. MBh. 7,6665. 13,3782. 5180. Hariv. 4635. Ṛt. 1,8. Ragh. 8,41. 19,13. Çiç. 4,57. Varâh. Bṛh. S. 76,2. Kathâs. 49,18. 34. 86,78. Râǵa-Tar. 2,126. वल्लकि aus metrischen Rücksichten R. 4,33,26. Vgl. चण्डालवल्लकी. — 2) Bez. *einer best. Constellation von der Gattung* संख्यायोग, *bei der alle Planeten in sieben Häusern stehen*, Varâh. Bṛh. 12,10; vgl. वीणा. — 3) = शल्लकी *Boswellia thurifera* Râǵan. im ÇKDr.

वल्लभ Uṇâdis. 3,125. Accent eines darauf ausgehenden Wortes gaṇa घोषादि zu P. 6,2,85. 1) adj. (f. आ) *vor Allen lieb*, subst. *Liebling, Günstling, Geliebter, Geliebte* AK. 3,2,3. H. 515. fg. an. 3,457. Med. bh. 18. Halâj. 2,212. प्रमदां वल्लभामिव R. 3,35,63. भृत्य Kathâs. 23,32. भार्या 63,21. Verz. d. Oxf. H. 15,*b*, No. 59. आत्मसदृशेक्षणवल्लभाभिर्हरिणाङ्गनाभिः Çâk. 26. Spr. 806. वल्लभातिथयो गृहाः Râǵa-Tar. 3,224. प्रायेण हि नरश्रेष्ठ ज्येष्ठाः पितृषु वल्लभाः। मातॄणां च कनीयांसः R. 1,61,18 (63,20 Gorr.). कस्यास्ति को वल्लभः Spr. 2883. राज्ञः 4675. Kâm. Nîtis. 5,19. सर्वजनस्य Varâh. Bṛh. S. 68,117. Bṛh. 24,10. Z. d. d. m. G. 14,569,9. Pańkat. 169,25. श्रेयसामेकवल्लभः Bhâg. P. 4,24,77. वल्लभतरा Kaurap. 27. अतिवल्लभा भार्या Kathâs. 36,113. Mârk. P. 65,11. राज° *ein Liebling des Fürsten* MBh. 2,1207. Spr. 336 (II). 984. 1261. 1283. 1354. 1862. 1927. 2493. 2561. 3193. नृप° 1009. नरेन्द्र° Varâh. Bṛh. S. 46,99. अस्मत्स्वामि° Prab. 9,3. गण° (so die ed. Bomb.) R. 2,81,12. नैगमयूथ° 2,106,33. हरिवल्लनवल्लभः Vet. in LA. (III) 1,14. श्री° Spr. 1912. अङ्गना° Varâh. Bṛh. 17,1. पतिवल्लभा Bṛh. S. 103,8. प्राण° Pańkat. IV,8. समस्तगुणवल्लभः *ein Liebling aller Vorzüge* so v. a. *mit allen Vorzügen ausgestattet* Verz. d. Oxf. H. 140,*a*, No. 280. गुण° R. 2,81,12. क्षिति° *Geliebter, Gatte* Râǵa-Tar. 5,380. उमा° Sâh. D. 19,1. 43,12. Pańkat. 129,7. 8. Vet. in LA. (III) 20,15. वल्लभा *Geliebte, Gattin* Ragh. 19,16. Spr. 2791. 4030. Râǵa-Tar. 3,9. 482. 507. Bhâg. P. 1,14,37. Kaurap. 14. H. 185. Çuk. in LA. (III) 38,3. Dhûrtas. 90,16. राजानो बहुवल्लभाः Kathâs. 47,104. 22,129. वल्लभजन *Geliebte* Ragh. 19,24. Ausnahmsweise wird वल्लभ auch von Unpersönlichem gesagt: कायः कस्य न वल्लभः Spr. 700. अखिललोकवल्लभतमं शीलम् 2765. (धनिः) अभूत्तस्य वल्लभः Râǵa-Tar. 2,126. Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,10. न मे ब्रह्मकुलात्प्राणाः कुलदैवान्न चात्मजाः। न श्रियो न मही राज्यं न दाराश्चातिवल्लभाः॥ *lieber als* Bhâg. P. 9,9,43. हरिणा — आवत्सवत्सस्थलवल्लभेन 3,8,28. — *b*) *die Aufsicht über Etwas habend* AK. 3,4,22,140. H. an. Med. अध्यक्षो ऽत्र गवाध्यक्षः Svâmin zu AK. nach ÇKDr. also wohl nur fehlerhaft für वल्लव *Kuhhirt.* — 2) m. *a*) *ein edles Pferd* (eher *Lieblingspferd*) H. an. Med. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Balâkâçva MBh. 13,204. eines Lehrers (vgl. वल्लभाचार्य) Hall 146. Wilson, Sel. Works II, 72. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,5. 6. — *c*) pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 129; v. l. für मल्लव; अपरवल्लभाः MBh. 6,370. die ed. Bomb. des MBh. liest वल्लवाः und अपरवल्लवाः. — 3) f. आ N. zweier Pflanzen: = अतिविषा und प्रियङ्गु Aush. 64. — 4) वल्लभी s. bes. — Vgl. अपर°, कुबेर°, दैवज्ञ°, पिक°, भवानी°, भू°, भूपाल°, भृङ्ग°, मुख°, मुहूर्त°, मृग°, राज°, राधा°, राम°, रोहिणी°, लक्ष्मी°, मार्तण्डवल्लभा, याज्ञिक°, वह्नि°.

वल्लभगणि m. N. pr. = वल्लभाचार्य HALL 93. 227.

वल्लभता f. nom. abstr. von वल्लभ *Liebling*: स्त्रीषु वल्लभतां याति *er wird ein Liebling der Weiber* MBH. 13,5154. यच्छङ्खलमपि ग्नलदो वल्लभतामेति सकललोकस्य Spr. 2272. राजवल्लभतामेति *er wird ein Liebling des Fürsten* PAÑKAR. 4,6,17. तात° (s. die v. l.) PRAB. 10,5. अति° PAÑKAT. 221,5.

वल्लभदीक्षित m. N. pr. eines Lehrers, = वल्लभाचार्य HALL 145. 227.

वल्लभदेव m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,29.

वल्लभन्यायाचार्य m. N. pr. eines Autors HALL 71.

वल्लभपालक m. *Rosshirt* TRIK. 2,8,47. HÂR. 117. BHÛRIPR. im ÇKDR.

वल्लभपुर n. N. pr. einer *Stadt* KSHITÎÇ. 12,4. eines Dorfes (ग्राम) 10,18. 18,8.

वल्लभशक्ति m. N. pr. eines Fürsten KATHÂS. 10,17. 59.

वल्लभस्वामिन् m. N. pr. = वल्लभाचार्य WILSON, Sel. Works I, 365.

वल्लभाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* und Gründers einer Vishṇuitischen Secte COLEBR. Misc. Ess. I, 196. WILSON, Sel. Works I, 54 u. s. w. HALL 93 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 94. 274,*a*, No. 649. 387,*b*, No. 525.

वल्लभाष्टक n. *die acht Strophen* Vallabha's, Titel einer Schrift HALL 152. °विवृति Verz. d. Oxf. H. 274,*a*, No. 649.

वल्लभी f. N. pr. einer Stadt KATHÂS. 22,60. 116. 128. 29,75. 32,44. HIOUEN-THSANG II, 162. 404. Vie de HIOUEN-THSANG 206. LIA. II, 409. 750. III, 501. fgg. In allen Stellen des KATHÂS. wäre metrisch auch वलभी möglich, dagegen erfordert das Metrum BHAṬṬ. 22,35 die Schreibart वलभी (s. d.).

वल्लभेश्वर m. N. pr. eines Fürsten Ind. St. 8,330.

वल्लर n. s. u. वल्लुर.

वल्लरि und °री f. 1) *Ranke, Rankengewächs*; = मञ्जरि AK. 2,4,1, 13. H. 1122. HALÂJ. 2,30. °री VARÂH. BṚH. S. 53,21. वल्लरीश्रग्न् PAÑKAT. 229,16. निष्पाव° MÂRK. P. 50,83. शय्या लतावल्लरी Spr. 3153, v. l. अनपायिनि संश्रितद्रुमे गजभग्ने पतनाय वल्लरी KUMÂRAS. 4,31. विष° Spr. 1549. भुजा° SÂH. 57,5. दोर्वल्लरी PAÑKAR. 3,5,21. Spr. (II) 185. गात्र° PAÑKAR. 3,5,24. व्यालोलालक° Spr. 2629. — 2) *ein best. Metrum: 52 + 50 Moren* COLEBR. Misc. Ess. II, 154. — Vgl. अङ्गार°, गन्ध°, नाग°, वन°, सोम°.

वल्लापुर n. N. pr. einer *Stadt* RÂGA-TAR. 7,220. 8,542. 544. 624. 1446.

वल्लि (selten und meist aus metrischen Rücksichten) und वल्ली f. 1) *Rankengewächs, Schlingpflanze* AK. 2,4,1,9. 3,4,14,69. 6,1,3. H. 1118. an. 2,509. MED. l. 38. HALÂJ. 2,25. M. 1,48. 8,247. 330. 11,142. MBH. 1,6067. वृत्तगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारास्तृणजातयः 6,171. 13,2992. MÂRK. P. 15,33. VARÂH. BṚH. S. 48,5. वल्ली वेष्टयते वृत्तं सर्वतश्चैव गच्छति MBH. 12,6833. 4841 (वल्वीव st. वल्लीव ed. Calc.). Spr. 3528. 5305. लता वल्लीश्च गुल्मांश्च R. 2,80,6. 3,52,10. SUÇR. 1,73,15. 80,14. 107,17. 199, 9. VARÂH. BṚH. S. 28,13. 41,3. 43,13. 48,66. 55,18. 22. 26. 95,37. 42. MÂLATIM. 1,13. Spr. 1972. KATHÂS. 19,81. 69,7. RÂGA-TAR. 1,371. BHÂG. P. 5,13,18. PAÑKAR. 1,7,20. PAÑKAT. 299,9. Insbes. *eine Klasse von Arzeneipflanzen* (विदारी, सारिवा, रजनी, गुडूची) SUÇR. 1,143,13. 146,5. 2,209,2. Bildlich: दोर्वल्लि GIT. 10,11. PRAB. 12,1. भुजावल्लि (in ungebundener Rede) 81,15. भ्रूचापवल्ली Spr. 2082. विद्युद्वल्ली 421. मनोभव° KATHÂS. 17,73. मार° 72,286. लज्जा° Spr. 188. कर्म° BHÂG. P. 5,14,40. सर्वसंसार° Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,13. — वल्लिसिद्धि (?) 92,*b*,32. — 2) Bez. *best. Pflanzen*: = अजमोदा H. an. MED. = कुसुमाक्तर H. an. = कैवर्तिका und चव्य RÂGAN. im ÇKDR. — 3) वल्ली Bez. der Theile einiger Upanishad KAṬHOP. S. 92. 109. 121. 132. 143. 159. TAITT. UP. S. 42. Verz. d. B. H. No. 368; vgl. आनन्द°, उत्तर°, ब्रह्मानन्द° (unter ब्रह्मानन्द 1), मध्य°, शिक्षा°. — 4) वल्लि *die Erde* ÇABDAM. im ÇKDR. — Vgl. अङ्गार°, अङ्घ्रि°, कृष्ण°, चित्र°, धाड्य°, नाग°, नील°, पर्व°, प्रिय°, बदर°, बक्क°, फणि°, ब्रह्म°, भद्र°, मधु°, मधुर°, मक्ता°, माधव°, मेष°, मोक्न°, यज्ञ°, योजन°, रति°, राज°, वज्र°, विष°, सूर्य°.

वल्लिकण्टकारिका f. *Solanum Jacquini* RÂGAN. im ÇKDR.

वल्लिका demin. von वल्ली *Schlingpflanze*; s. अङ्घ्रि°, अनुज्ञ°, कृष्ण°, नाग°, भद्र°, मोक्न°, योजन°, रङ्ग°, चित्रवल्लिका.

वल्लिकाग्र *Koralle* NIGH. PR.

वल्लिज m. *eine best. Pflanze mit giftiger Blüthe* SUÇR. 2,252,1. *Pfeffer* AUSH. 24. *Tabaschir* RÂGAN. in NIGH. PR. — Vgl. वल्लीज.

वल्लिदूर्वा f. *eine Grasart*, = मालादूर्वा RÂGAN. im ÇKDR.

वल्लिमत् (von वल्लि) adj. *mit einer Schlingpflanze versehen*; bildlich: अनन्नुभ्रूवल्लिमद्वल्लवी (eigentlich adj. von अनन्नुभ्रूवल्लि) GIT. 2,19.

वल्लिराष्ट्र m. pl. N. pr. eines Volkes, v. l. für मल्लराष्ट्र VP. 188, N. 38.

वल्लिशाकटपोतिका f. *eine best. Gemüsepflanze*, = मूलपोती RÂGAN. im ÇKDR.

वल्लिशूरणा (°सूरणा gedr.) m. *eine best. Pflanze*, = अत्यम्लपर्णी RÂGAN. im ÇKDR.

वल्ली s. u. वल्लि.

वल्लीकर्ण m. Bez. *einer best. Deformität des Ohres* SUÇR. 1,55,16. तनुविषमाल्पपालिर्वल्लीकर्णः 56,5.

वल्लीज m. Bez. *einer Klasse von Pflanzen* (= मुद्गादिक Comm.) VARÂH. BṚH. S. 8,13. 16,25. *Pfeffer* ÇABDAK. und RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. वल्लिज.

वल्लीबदरी f. *eine Art Judendorn*, = भूबदरी RÂGAN. im ÇKDR.

वल्लीमुद्ग (वल्लिमुद्ग gedr., aber zwischen वल्लीबदरी und वल्लीवृत्त stehend) m. *eine Bohnenart* (मकुष्ठ) RÂGAN. im ÇKDR. वल्ली° NIGH. PR.

वल्लीवृत्त m. *Shorea robusta* RÂGAN. im ÇKDR.

वल्लुर n. = शाद्वल und क्षेत्र (तत्र in MED. gedr.) H. an. 3,598. MED. r. 212. = कुञ्ज, मञ्जरी und अनम्भस् H. an. = गह्न und ओषध MED. Nach ÇKDR. sollen VIÇVA, DHARA. und ÇABDAR. वल्लर n. lesen. — Vgl. वल्लूर.

वल्लू॑र UGGVAL. zu UṆÂDIS. 4,90. m. f. n. TRIK. 3,5,22. *getrocknetes Fleisch*, m. f. (आ) und n. AK. 2,6,2,14. TRIK. 3,3,370. MED. r. 212. n. H. 624. an. 3,598. fg. M. 5,13. JÂGN. 1,175. SUÇR. 1,41,16. 70,6. 103, 14. 2,233,11. 457,15. Nach den Lexicographen ausserdem noch: *Schweinefleisch*, m. f. n. TRIK. MED. n. H. an. n. = वनक्षेत्र, वाह्न und ऊषर H. an. = नक्तत्र, गह्न und उशर (sic) TRIK. — Vgl. वल्लुर.

वल्लूरक m. Bez. *einer best. Deformität des Ohres* SUÇR. 1,55,14. छिन्नस्ववृत्तसमोभयपालिर्वल्लूरकः 18.

वल्ह्या f. *Myrobalane* HÂR. 92.

व॑ल्श m. *Schössling, Zweig* TS. 7,3,19,1. BHÂG. P. 3,8,29. मुञ्ज° ÇAT. BR. 3,2,1,13. शत॑° ṚV. 3,8,11. VS. 5,43. 12,100. AV. 6,30,2. शतव-

ल्शो नाम वटः Bhâg. P. 5,16,25. सदैम॰ ṚV. 3,8,11. 7,33,9. 9,5,10. VS. 5,43.

वल्ह्, वैल्हते Dhâtup. 16,38 (प्राधान्ये). 40 (परिभाषणहिंसादानेषु, छादन st. दान v. l.; स्तुतिहिंसादानवानु Vop.). — caus. वल्हैयति 33,97 (भाषार्थ oder भासार्थ).

— उप mit einer Frage auf die Probe stellen, ein Räthsel vorlegen: एतद्वंद्मत्रुपं वल्ह्मासि (वलिह्मामहे Lâṭj. 9,10,11) त्वा VS. 23,51. med. Çat. Br. 11,4,1,9. 12,4,2,28. — Vgl. उपवल्ह.

— प्र dass.: प्रवल्हिकाभिर्वै देवा असुरान्प्रवल्ह्याथैनानत्यायन् Ait. Br. 6,33. यच्च किं चित्प्रवल्हितमादित्यकर्मैव तत् räthselhaft Nir. 7,11.13, 8. — Vgl. प्रवल्ह fg.

ववाङ्ग n. die weibliche Scham Trik. 2,6,21 fehlerhaft für वराङ्ग.

वव्रै (von 1. वर्) 1) adj. sich versteckend, sich in sich zurückziehend: वव्र ऊर्धनि ṚV. 1,52,3. वव्रासो न ये स्वजाः स्वतवसः 168,2. त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मह्याददुग्रः 5,32,8. — 2) m. Höhle, Grube, Tiefe Naigh. 3,23. अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तः ṚV. 4,1,13. 5,31,3. 10,8,7. दुष्कृतो वव्रे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् 7,104,3. वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट 17.

वव्रि (wie eben) m. Versteck, Hülle, Gewand; körperliche Hülle, Leib Naigh. 3,7. Nir. 2,9. वव्रिं वसानाः ṚV. 1,164,7. 29. राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः 4,42,1. शर्यं वव्रिश्चरति जिह्वयादन् 10,4,4. इच्छन्वव्रिमविदत्पूषणस्य 5,5. हिवो वव्रिम् 9,69,9. 71,2. स्वं वव्रिं कुर्ह धित्सथः 1,46,9. अभि नद्यो वव्रिणा हिताः 54,10. युवरूपो वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् 116,10. 5,74,5. प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत 19,1. Daher angeblicher Liedverfasser von ṚV. 5,19. — Vgl. वि॰.

वव्रिवासस् adj. eine Hülle oder Verkleidung umlegend AV. 8,6,2.

वश्, वैष्टि Dhâtup. 24,71 (कान्तौ). वैश्मि Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). वैत्ति, उश्मसि, श्मसि ṚV. 2,31,6. उशैन्ति P. 6,1,16. वशन्ति ṚV. 8,28,4. विवष्टि (Schol. zu P. 2,4,76. 7,4,78), ववैन्तिः अवशत्, वैशम्, वैशाम; अवट् Vop. 9,6. उशानै, उशैमानः उवाश, ऊशतुम् P. 6,1,17. Vop. 9,6. वावशैस्, वावशे, वावशानैः वशीस् MBh. उशितवत् P. 6,1,16, Schol. 1) wollen, gebieten: समेयो गा अजति यस्य वष्टि ṚV. 1,33,3. 2,22,1. 24,8. नास्यो वश्मि विमुचम् 5,46,1. 8,20,17. 28,4. तथेदसदिन्द्र क्रत्वा यथा वशः 50,4. 82,10. 1,163,7. यदा दुग्धं वरुणो वष्टादित् 5,85,4. त्वं च सोम नो वशो जीवातुम् 1,91,6. यस्ते वष्टि ववशि तत्। यद्दीळयासि वीळु तत् wenn man Etwas von dir will, so befiehlst du es 8,45,6. दृशमीमुग्रः सुमना वशेह (वसेह?) gebiete, herrsche AV. 3,4,7. mit dat. inf. वष्टि प्र देवान्यजध्यै ṚV. 6,11,3. यथा त उश्मसीष्टये 1,30,12. 5,74,3. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै 1,154,6. med.: दृळ्हा न्योंखा उशमान ओजः verfügend über, aufbietend 4,19,4. — 2) verlangen nach, begehren, gern haben, lieben: इन्दवो वामुशन्ति हि ṚV. 1,2,4. यज्ञं वष्टु 3,10. 22,6. स्तोमम् 21,1. 2,31,7. 37,1. सुष्टुतिम् 6,61,7. 7,16,11. पीतिम् 98,2. सख्यम् 3,31,14. ग्रावाणः सोम वो हि कं सखित्वनाय वावशुः 6,51,14. इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया 8,3,18. हव्यं तवेदं क्रतभुग्वष्टि देवः (so die ed. Bomb.; Nilak. erwähnt die Lesart der ed. Calc. देवान्, wozu er प्रापयितुम् ergänzt) MBh. 1,2106. मा धर्मान्सकलान्वशीः 3,11002 (S. 569). निःस्वो वष्टि शतम् Spr. 1626. अमी हि वीर्यप्रभवं भवस्य जयाय सेनान्यमुशन्ति देवाः Kumâras. 3,15. भवनेषु रसाधिकेषु पूर्वं क्षितिरक्षार्थमुशन्ति ये निवासम् Çâk. 179. Hariv. 4360. mit infin.: बाणाश्च मे तूणमुखाद्विसृत्य मुहुर्मुहुर्गन्तुमुशन्ति चैव MBh. 5,1909. — 3) mit Entschiedenheit seine Meinung an den Tag legen, statuiren, behaupten, annehmen, erklären für (vgl. velle): स वा एष आत्मेत्येवं वशन्ति कवयः सितासितैः कर्मफलैरनभिभूत इव प्रति शरीरेषु चरति Maitrjup. 2,7. भस्मनिभे (अर्के) भयमुशन्ति परचक्रात् Varâh. Bṛh. S. 3,29. पञ्चमं व्ययमुशन्ति शोभनम् 8,36. 24,34. 43,62. Bṛh. 23,3. 27 (25), 10. 23. Bhâg. P. 1,5,10. 40. 10,8,12. 12,8,46. दलीकृतं चक्रमुशन्ति चापम् so v. a. nennen Golâdhj. 11,15. — 4) partic. उशत्, उशान und वावशान willig, gern, freudig, folgsam, verlangend ṚV. 1,12,4. 61, 6. 101,10. पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति 62,11. 17,17. 22,9. या नः ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम् 10,85,37. 9,2. 3,33,1. 4,22,3. 5,32,10. 10,16,2. AV. 14,2,52. उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ Kathop. 1,1. आ योनिमस्या उशतीमुशानः ṚV. 3,5,7. 4,23,1. 6,39,2. सजोषसो अध्वरं वावशानाः 3,20,1. 22,1. 35,9. स वावशान इह पाहि सोमम् 51,8. 10,89,13. सोमं यन्ति मतयो वावशानाः 9,97,34. इन्द्रो रयिमश्विनं वावशानः bereitwillig 93,4. 1,113,10. 7,5,5. 36,6. Im Bhâg. P. erscheint उशत् (vgl. उशती in den Nachträgen) sehr häufig in der Bed. reizend, lieblich (= कमनीय Comm.): वाच उशतीः 2,7,11. कथा 3,13, 47. कीर्ति 2,7,20. 4,30,11. उशद्दुकूल 8,9,17. उशत्तम 1,3,14. 7,9,16. उशतात्मना 7,7,24 wird durch शुद्धेनात्मना erklärt; उशद्भिर्लसत्तेजसा 4, 4,34 durch देदीप्यमानैः; उशति 10,8,31 als voc. fem., als loc. (= स्वर्चिते) und auch als verbum finitum (= जल्पति) erklärt. उशत् als partic. und Nom. pr. in folgender Stelle: सुयज्ञतनयो ऽभवत्। उषन्यो (उशतो die neuere Ausg., उशतो नामतः Nilak.) यज्ञमखिलं स्वधर्ममुषतो (उशतो die neuere Ausg., = कामयानानाम् Nilak.; wir würden Bed. 3) annehmen) वरः Hariv. 1974. im folgenden Çloka liest die neuere Ausg. सूनुरोषतः statt पुत्र उषतः der älteren.

— caus. वशयति in seine Gewalt bekommen, sich unterthan machen: वशयेत्सकलान्मर्त्यान्विशेषेण महीपतीन् Verz. d. Oxf. H. 105,b,24.

— intens. वावश्यते P. 6,1,20. Vop. 20,13.

— अभि 1) beherrschen: वृषेव वध्रींरभि वष्ट्योजसा ṚV. 2,25,3. — 2) zustreben auf: स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्मा ṚV. 4,1,8. — 3) med. begehren: जुषाणो हस्त्यमभि वावशे वः ṚV. 2,14,9. — 1,164,28 hierher oder zu वाश्.

— समा, समावशेत् Kâm. Nitis. 4,57 (auch im Comm.) fehlerhaft für समावमेत्.

1. वैश (von वश्) 1) m. a) Willen, Wunsch, Belieben P. 3,3,58, Vârtt. 3. AK. 3,3,8. 3,4,16,91. Trik. 3,3,432. H. 430. an. 2,553. Med. ç. 12 (n. nach Med. und Çabdar. im ÇKDr.). देवानां चित्तिरो वशम् ṚV. 10,171,4. क्षत्रियस्य वशे सति wenn der Ksh. will Çat. Br. 1,3,2,15. यावदस्य वशः (= शक्तिः Comm.) स्यात् so lange er mag 5,14. 4,4,5,19. 6,2,1,39. स्वं वशं चेरुः 3,9,1,14. 13,5,1,22. वश एतत्कुर्यात् Kâtj. Çr. 10,8,29. वशाँ अनु ṚV. 1,82,3. 181,5. पिबा सोमं वशाँ अनु 8,4,10. 10,91,7. तेन (यथा) याहि वशाँ अनु 142,7. अनु वशं (mit Abfall des Nasals und Verkürzung des Vocals) क्षणामीदृदिः 2,24,13. अथो वशीनां भवथा सह श्रिया 3,60,4. Ait. Br. 3,13. Ait. Up. 5,2. आत्मनो वशः Spr. 1349. — b) Befehl, Herrschaft, Gewalt, Botmässigkeit; = प्रभुत्व und आयत्तता (आयत्तत्व) Trik. H. an. Med. (n. nach Med. und Çabdar.). वशा

हि मत्या वरुणस्य राज्ञः AV. 1,10,1. अर्यो वशस्य पर्येतास्ति RV. 6,24, 5. वशं देवासस्तन्वीई नि मामृजुः 10,66,9. सर्वं तदिन्द्र ते वशे 8,82,4. 9, 86,28. VS. 4,11. 31,21. TS. 6,3,2,6. Ait. Br. 4,3. Praçnop. 2,13. वशे बलवतां धर्मः MBh. 12,4842. Bhâg. P. 1,6,7. 9,14. 3,29,44. 5,20,29. 6,3,1. 12,8. यथा तवेयं वसुधा वशे भवेत् R. 2,23,41. 3,55,18. Râga-Tar. 4,145. न पुत्रो भार्या वा वर्तते वशे Spr. 4417. R. 4,17,54. Kathâs. 33,9. Pankar. 3,11,10. बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् Spr. 1969. R. Gorr. 2,53,10. Kathâs. 120,30. Bhâg. P. 5,17,23. Mârk. P. 62,31. वशे स्थापयितुं प्रजाः M. 7,44. तं च देशं वशे स्थापयामास MBh. 1,683. R. 3,47,8. 9. 4,32,19. 7,20,19. Kâm. Nîtis. 8,83. Bhâg. P. 9,19,23. प्रमदाः कामिवशे संस्थिताः Varâh. Brh. S. 24,31. विषयेषु च सज्जन्त्यः संस्थाप्या आत्मनो वशे Spr. 3663. वशे लभ् AV. 1,8,2. Çat. Br. 1,9,2,35. वशे कर् gaṇa साक्षादादि P. 1,4,74. वर्त्रेणैवैनं वशे कृत्वा लभते TS. 6,3,7,5. वशे कृत्वेन्द्रियग्रामम् M. 2,100. तं वशे कुर्वन्ति शत्रवः 8,174. R. 3,46,5. 55,7. 6,11,10. 7,87,4. Spr. 2757. Bhâg. P. 9,4,66. मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि AV. 3,8,6. य इदं वशे (sonst वशम्) ऽनयत् Bhâg. P. 5,18,26. न मित्रं नयते वशम् (वशम् als indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57) AV. 5,19,15. RV. 10,84,3. परराष्ट्रं वशं नयन् Jâǵn. 1,341. एतदात्मन्येव वशं नयेत् Bhag. 6,26. Kâm. Nîtis. 11,16. Spr. 251. Ragh. 8,19. Râga-Tar. 4,404. Bhâg. P. 3,27,5. 8,15,33. तानानयेद्वशम् M. 7,107. fg. 9,261. R. 3,62,34. Bhâg. P. 4,27,1. वशमुपनयते Çat. Br. 1,5,4,5. Bhâg. P. 5,2,6. येन वशं प्रणीताः 7,8,8. एवं मनः (acc.) कर्म (nom.) वशं प्रयुङ्क्ते 5,5,6. नान्यस्य मनो वशमन्वियाय TBr. 3,12,2,3. वशमुपेताः Çat. Br. 4,3,4,12. Çânkh. Br. 30,9. Ait. Br. 8,9. यदा च गच्छत्यनुदात्तमन्तरं वशं पदादेरुदयस्य RV. Prât. 11,26. कामबाणवशं गता MBh. 3,1865. 5,7237. R. 2,21,2. 30,19. 64,26. 78,4. 4,35,10. Spr. 331. Bhâg. P. 1,8,47. 6,1,61. निद्रावशमगमत् Pankat. 38, 3. तयोर्न वशमागच्छेत् Bhag. 3,34. MBh. 3,1851. R. 2,53,8. 97,22. यदा वशमुपागतः (देशः) Jâǵn. 1,342. निद्रावशमुपागताः R. 5,56,94. वशमेष्यामः 2,52,18. MBh. 3,2395. Varâh. Brh. S. 43,35. Hit. I,32. निद्राया वशमेयिवान् R. 2,62,20. वशमुपैति Varâh. Brh. S. 45,11. समेति वशम् Brh. 17,4. को न याति वशम् Spr. 748. 1017. 2246. Suçr. 1,158,5. Varâh. Brh. S. 34,17. क्षिप्रं कोपस्य वशं प्रयाति 68,110. वासो यथा रङ्गवशं प्रयाति MBh. 5,1269. वशमायान्ति Suçr. 1,149,14. राक्षसीनां वशं प्राप्ता R. 3,62, 37. Spr. 2756. Vet. in LA. (III) 26,19. पुनः पुनर्वशमापद्यते मे Kathop. 2,6. अनर्थवशमापन्ना MBh. 1,6160. R. 1,42,13 (43,13 Gorr.). 3,70,4. कामस्य वशमास्थितः 2,49,4. वशेन *auf Geheiss, in Folge —, in Veranlassung von, zufolge, gemäss, vermittelst:* छन्दोग° Çânkh. Çr. 10,8,33. स्तोम° Lâṭj. 8,5,12. कालादि° Suçr. 1,131,9. भूमिराज° Jâǵn. 2,166. माहात्म्य° Spr. 3571. 3733. Varâh. Brh. S. 2,4. तिग्मांशुसांनिध्य° Ganit. Bhagrahaj. 15. Sarvadarçanas. 26,21. 46,11. 95,4. 152,10. 154,20. वत्सरो गुरु° *ein Jahr zufolge Jupiters* d. i. *ein Jupiter-Jahr* Varâh. Brh. S. 8,39. वशात् dass.: प्रकृतेः Bhag. 9,8. Spr. 3246. तपसः Brahma-P. in LA. (III) 49,20. विधेः Kathâs. 25,273. विधि° Megh. 6. दैव° Dhûrtas. 90,13. Bhâg. P. 3,28,37. Pankat. 160,17. 174,25. Spr. 2418. अर्थ° RV. Prât. 12,9. Sâmkhjak. 65. Verz. d. Oxf. H. 48,b,13. प्रकृतिभेद° Maitrjup. 6,30. 35. अपराध° Jâǵn. 1,366. कार्य° 2,3. R. 2,68,14. Spr. 2883. Kap. 1,30. Sâmkhjak. 67. Ragh. 11,7. 15,11. दाक्षिण्य° Vikr. 2. 56. Spr. 665. 688. 775. AK. 2,7,43. Varâh. Brh. S. 5,9. 11. 51,38. 104,40. Golâdhj. 5,9. Kathâs. 3,74. 21,82. 25,280. 21,22. 54,100. Râga-Tar. 1,371. Dhûrtas. 68,13. 76,5. Pankat. 32,24. 33,6. 148,10. 183,6. 252,14. 264, 23. ed. orn. 4,25. Hit. 44,3. Vet. in LA. (III) 11,2. Schol. zu Naish. 22,45. Sarvadarçanas. 29,18. 34,6. 86,17. 20. 92,22. चन्द्रवशात् । पञ्चनवते दिनशते so v. a. *in 195 lunaren Tagen* Varâh. Brh. S. 21,7. वशतस् dass.: कर्म° Spr. 2085. अक्ष° *in Folge der geographischen Breite* Golâdhj. 7,34. वश am Ende eines adj. comp. (f. आ): काल° *in der Gewalt von — stehend* MBh. 13,66. 1466. 16,111. प्रतिग्रहो दातृवशः R. 1,69,14. 3,61,4. 5,16,51. 7,24,11. निद्रा° Ragh. 5,67. Spr. 3197. 3347. सद्यः खेदवशो ऽभवत् Kathâs. 8,17. 18,240. 25,294. Bhâg. P. 1,13,39. 2,7,39. 5,23,3. 8,7,15. Vet. in LA. (III) 20,7. — c) *die personificirte Herrschaft:* ईशा वशस्य या जाया AV. 11,8,17. — d) = जन्मन् *Geburt, Ursprung* H. an. — e) *Hurenhaus* (vgl. वेश) Trik. — f) N. pr. eines Schützlings der Açvin, mit dem Bein. Açvja RV. 1,112,10. 116,21. 8,8,20. 46,21. 23. 10,40,7. Vâlakh. 2,9. angeblicher Verfasser von RV. 8,46. abgekürzt so v. a. *dessen Lied* Çat. Br. 8,6,2,3. 9,3,3,19. Çânkh. Çr. 18,14,1. RV. Prât. 17,18. — g) pl. N. pr. eines Volkes Ait. Br. 8, 14. MBh. 1,6684. बहून् st. वशान् ed. Bomb. — 2) adj. (f. आ) *unter Jmdes Befehlen stehend, unterthan, abhängig* Trik. H. an. H. ç. 92. Med. सपुत्राहं वशा तव Kathâs. 81,102. Bhâg. P. 8,12,43. तासां वशश्च सततं स्त्रीणाम् Pankar. 1,10,25. 14,90. fgg. Pankat. 208,13. — Vgl. अ° (in der 2ten Bed. auch Maitrjup. 6,30. Bhag. 8,19. 9,8. R. Gorr. 2,38,4. Spr. 251. 3056), आत्म°, कर्म°, क्रोध°, तद्वश, पर°, यथावशम्, विवश.

2. वश n. *flüssiges Fett:* केवलीन्द्राय डुडुहे हि गृष्टिर्वशं पीयूषं प्रथमं डुहाना AV. 8,9,24. यद्वशमश्नवत्सा वशाभवत्तस्मात्सा हविरिव Ait. Br. 3,26. nach Sâj. = मेदस्. Kâth. 13,8. — Vgl. वसा.

वशंवद (von 1. वश + वद) adj. P. 3,2,38. Vop. 26,57. *Jmdes Willen —, Herrschaft anerkennend:* वशंवदं कर् Verz. d. Oxf. H. 258,b,21. मद्वशंवद 24. *in Jmdes Gewalt stehend, ganz ergeben:* मन्मथ° Sâh. D. 115. धर्म° Râga-Tar. 6,109. लोभ° 4,395. 621. कृतज्ञत्व° so v. a. *dem Gefühl der Dankbarkeit folgend* 1,243. Spr. 3797. गुरुहर्षवशंवदवदन so v. a. *sich grosser Freude hingebend, solche an den Tag legend* Gît. 11,24. मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाल so v. a. *ganz duftend nach* 1,29.

वशंवदत्व n. *das Jemand-zu-Willen-Sein, das Sichfügen in den Willen Anderer* Ragh. 18,12.

वशकर adj. *sich unterthan machend, für sich gewinnend* MBh. 13, 1192. (विद्या) सभावशकरी Spr. 2797, v. l.

वशका f. *ein gehorsames Weib* Çabdar. im ÇKDr.

वशकारक adj. *zur Unterwerfung führend:* भेद Spr. 1436.

वशक्रिया f. *das sich-zu-Willen-Machen, Bezaubern* AK. 3,3,4. H. 1498.

वशग adj. (f. आ) *in Jmdes Gewalt stehend, unterthan, gehorsam:* तव MBh. 4,225. 706. 14,2172. Hariv. 7796. R. 1,30,11. R. Gorr. 1,31,14. 2,34,10. Spr. 2393. 2554. प्रमदानां वशगा नराः Varâh. Brh. S. 24,32. धात्रीं वशगां करोति 43,32. Kathâs. 33,9. Pankar. 1,14,93. Mârk. P. 61,56. मह्यम् MBh. 3,14687. कामस्य 4,391. विधेः Spr. 1431. मानव्याधेः 2834. काम° MBh. 4,269. R. 1,63,6. R. Gorr. 2,31,10. Varâh. Brh. 20, 9. ज्येष्ठ° R. 2,40,5. निद्रा° Suçr. 1,69,14. कुवैद्य° 353,11. आश्चर्य° Kathâs. 22,233. मदनावेग° 113. दैव° Bhâg. P. 3,28,38. 6,14,20. स्वकर्म°

9,19,3. क्रोध° Pańkat. 36,21. वचन° 25,21. कामिनी° (शिल्प) *die Geliebte in die Gewalt bringend* Pańkar. 1,11,31.

वशगत adj. dass. Bhâg. P. 4,26,26. मदन° Varâh. Bṛh. 24,12. निद्रा° Pańkat. 37,7. 8.

वशगत्व (von वशग) n. *Unterthänigkeit, Abhängigkeit von:* निजजन° Bhâg. P. 4,31,20.

वशगमन n. *das in-die-Gewalt-Kommen* Nir. 10,40.

वशगामिन् adj. *in Jmdes Gewalt kommend, unterthänig —, gehorsam werdend* Mârk. P. 72,7.

वशंकर adj. *in seine Gewalt bringend:* सर्वभूत° Pańkar. 4,3,25. वशंकर: Arǵ. 3,9 fehlerhaft für च शंकर:, wie MBh. 3,11943 gelesen wird.

वशंगम adj. *beeinflusst*, Bez. gewisser Saṁdhi, die eine Lautaffection mit sich führen, ṚV. Prât. 4,5. Gobh. 4,8,3. — Vgl. अ°.

वशतमा s. u. 1. वशा 1).

वशता (von वश) f. 1) *das in-der-Gewalt-Stehen, Abhängigkeit:* स्त्रियाश्च भर्तुर्वशतां समीक्ष्य MBh. 2,2243. चित्तं निजवशतामिदं नय Verz. d. Oxf. H. 122,*a*,24. — 2) *das Gewalthaben über* (loc.), *Beherrschen:* शास्त्रे नृपे च युवतौ वशतावसन्ना Spr. 2977, v. l.

वशत्व in रिपु°, eig. nom. abstr. von रिपुवश *in der Gewalt des Feindes stehend* Varâh. Bṛh. S. 79,24 = 94,5.

वशन n. nom. act. von वश् P. 3,3,58, Vârtt. 3, Schol.

वशनी (1. वश + 2. नी) adj. *unterthan, leibeigen:* देवानां वशनीर्भवाति ṚV. 10,16,2.

वशवर्तिन् 1) adj. *in Jmdes Gewalt sich befindend, sich in Jmdes Willen fügend, unterthan, gehorsam:* यथा च पुष्करस्थाना: पतन्ति वशवर्तिन: MBh. 3,2286. ब्राह्मणा: 2727. 4,549. 624. Hariv. 14647. कामस्य R. Gorr. 2,46,6. 3,40,10. 7,89,6. Râǵa-Tar. 3,100. Bhâg. P. 5,14,1. 6,14,19. Mârk. P. 118,3. कैकेयी° R. 2,23,13. दु:ख° 25,37. आत्म° 30,6. R. Gorr. 1,22,2. 4,39,34. Râǵa-Tar. 5,466. — 2) m. Bez. einer Klasse von Göttern Mârk. P. 73,5. Lalit. ed. Calc. 342,18. 465,13. परनिर्मित° 49,4.

वशस्थ adj. *in Jmdes Gewalt stehend* Spr. 4843.

1. वशा (in der klassischen Sprache वशा Çânt. 1,14) f. 1) *Kuh* (Med. ç. 12), im engeren Sinne *die Kuh, welche weder trächtig ist, noch ein Kalb nährt;* die Comm. beschränken häufig den Begriff noch weiter auf *die unfruchtbare Kuh* (vgl. AK. 2,9,69. H. 1266. an. 2,553. Halâj. 2,114): वशाभिरुक्षभि: । अष्टापदीभिराहुत: *Kühe, Stiere und trächtige Thiere* ṚV. 2,7,5. 6,63,9. उक्ष्णो ऋषभासो वशा उत 16,47. 10,91,14. Âçv. Gṛhj. 1,1,4. AV. 4,24,4. 10,10,2. 12,4,1. fgg. im ganzen Liede werden वशा und गो abwechselnd gebraucht. तां देवा अमीमांसन्त वशेयाऽअवशेति । तामब्रवीन्नारद एषा वशानां वशतमेति (superl.) 42. परिवृक्ता यथासस्यृषभस्य वशेव 7,113,2. VS. 2,16. 18,27. 28,33. TS. 2,1,4, 4. 5. 3,4,2,2. Çat. Br. 5,4,5,22. अनूबन्ध्या 2,4,4,14. 3,8,5,11. अष्टापदी 5,5,2,8. Kâṭh. 13,4. Ait. Br. 3,26. सूत° *die schon ein Kalb gehabt hat* TS. 2,1,5,4 (Comm. *nach einem Kalbe unfruchtbar geworden*). Kâṭh. 37,5. 13,4. °चर्म Kâtj. Çr. 13,3,13. 8,8,41. 14,2,6. — 2) in Verbindung mit अवि (अविर्वशा) *Mutterschaf* TS. 2,1,2,2. TBr. 1,2,5,2. — 3) *Elephantenkuh* AK. 2,8,2,4. 3,4,28,219. H. 1218. H. an. Med. Hâr. 52. Halâj. 2,70. Vikr. 110. Kathâs. 6,110. 67,11. 68,18. 27. fg. वधूं साश्ववशाम् 67,114. — 4) *ein unfruchtbares Weib* Med. M. 8,28. — 5) *Weib, Weibchen* überh. AK. 3,4,28,219. H. 504. H. an. Med. Halâj. 2,327. — 6) *Tochter* H. an. Med. — Vgl. अ°, उत्तवश, गोवशा.

2. वशा MBh. 7,1976 fehlerhaft für वसा.

वशाकु m. *Vogel* Çabdârthak. bei Wilson vielleicht fehlerhaft für वाशाकु.

वशागत in मार्ग° *am Wege gelegen* Kathâs. 37,55. — Vgl. मार्गवशानुग fg.

वशाघ्नक s. वसाघ्नक.

वशातल m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1871 nach der Lesart der ed. Bomb., वशाति ed. Calc.

वशाति, वशातिक und वशातीय s. वसाति u. s. w.

वशानुग (1. वश + अ°) adj. *seinem Willen folgend:* स्वच्छन्देन Kûlikop. in Ind. St. 9,13. *Jmdes Willen folgend, in Jmdes Gewalt stehend, unterthan, gehorsam:* तव R. Gorr. 2,34,4. 5,10,15. MBh. 1,6014. Mârk. P. 118,29. कालस्य MBh. 13,51. भर्तृ° R. Gorr. 2,13,19. आत्म° 16,3. परस्पर° Spr. 2353. कामक्रोध° 3626. मदस्नेह° R. 5,13,58. Bhâg. P. 6,9, 3. Mârk. P. 99,17. — Vgl. मार्ग°.

वशान्न (1. वशा + अन्न) adj. *Kühe verzehrend* ṚV. 8,43,11.

वशापायिन् s. वसापायिन्.

वशामत् adj. von वशा gaṇa यवादि zu P. 8,2,9.

वशायात (1. वश + आ°) adj. *in Folge von Etwas gekommen, — eingetreten:* प्राक्संस्कारवशायातवैरस्नेह Kathâs. 23,51. — Vgl. मार्ग°.

वशारोह s. वसारोह.

वशि 1) oxyt. adj. VS. 28,33 nach Mahîd. = कान्त. — 2) n. = वशित्व Çabdam. im ÇKDr.

वशिक adj. *leer* AK. 3,2,6. वसिक H. 1446. — Vgl. वशिन् 1) *d*).

वशितर् (von वश्) nom. ag. *seinen Willen habend, unabhängig* Bhâg. P. 11,15,27.

वशिता (von वशिन्) adj. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* H. 202. Bhâg. P. 11,15,16. Vjutp. 24 werden zehn वशिता eines Bodhisattva aufgezählt: आयुर्वशिता, चित्त°, परिष्कार°, कर्म°, उपपत्ति°, अधिमुक्ति°, धर्म°, प्रणिधान°, ऋद्धि° und ज्ञान°.

वशित्व (wie eben) n. *Willensfreiheit, das eigener-Herr-Sein* Spr. 4332. MBh. 14,1053. Hariv. 13061. न राज्ञा तु वशित्वेन धनलोभेन वा पुन: । स्वयं कर्माणि कुर्वीत नराणामविवादिनाम् ॥ Kâtj. bei Kull. zu M. 8,43. *Herrschaft über* (loc.): शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशित्वम् Spr. 2977. प्रकृतिविकारेषु सर्वेषु Sarvadarçanas. 179,6. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* Verz. d. Oxf. H. 51,*a*,18. 184,*a*,14. 191,*a*,20. 231,*b*,12. Mârk. P. 40,29. Pańkar. 1,1,49. 2,8,2. Vet. in LA. (III) 3,13. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 23. *die Herrschaft über sich selbst, Selbstbeherrschung* Kumâras. 3,69. Mârk. P. 40,32.

वशिन् (von 1. वश) 1) adj. *a*) *gebietend; Herrscher:* गवां गोपतिर्वशी ṚV. 1,101,4. जनानाम् 3,23,3. जगत: स्थातुरुभयस्य यो वशी 4,53,6. 8, 13,9. 56,8. वशी वशं नयसे 10,84,3. 85,26. 103,3. 152,2. AV. 4,24,7. 5,22,9. वशी सन्मंऽक्ष्यासि न: 6,26,1. 36,2. अग्नि: पृथिव्या वशी 86,2. VS. 17,51. Çat. Br. 14,7,2,24. तस्यै जनतायै कल्पते यत्रैवं विद्वान्यजमानो वशी भवति Ait. Br. 3,13. TS. 5,5,10,2. TBr. 2,7,17,1. Kaṭhop. 5,12. Çvetâçv. Up. 3,18. 6,12. Jâǵń. 3,69. Hariv. 1902. Varâh. Bṛh. 2,6. — *b*)

willig VS. 8, 50. वशा त्वं वशिनी गच्छ देवान् TS. 3, 4, 2, 2. *gehorsam* (richtiger वश्य, wie die v. l. hat) Vet. in LA. (III) 26, 6. — c) *sich selbst beherrschend, sich in der Gewalt habend* (= जितेन्द्रिय Comm.) Bhag. 5, 13. MBh. 1,2551. 3,12766. 14,14. R. 1,1,10 (12 Gorr.). 6,2. Spr. 3947. 4410. 5308. Kâm. Nîtis. 4,15. Ragh. 2,70. 8,89. 15,38. 17, 4. Kumâras. 4,43. Çâk. 47. Kathâs. 22,47. 42,14. Râǵa-Tar. 2, 3. 82. 3, 512. 4,118. Liṅga-P. bei Muir, ST. IV, 330. — d) *leer* (eig. *verfügbar*), von Gefässen Kâtj. Çr. 9,13,20. 10,3,6; vgl. वशिक. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛti Bhâg. P. 9, 13, 26. — 3) f. वशिनी a) *Schmarotzerpflanze.* — b) *eine Mimosa-Art* (s. शमी) Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. अ°, कर्म°, तनू°.

वशिमन् (von वशिन्) m. *die übernatürliche Kraft Alles seinem Willen zu unterwerfen* Mârk. P. 40,32.

वशिर und वशिष्ठ s. वसिर und वसिष्ठ.

वशी (von वश्) s. उर्वशी.

वशीकर् (1. वश + 1. कर्), °करोति und °कुरुते *in die Gewalt bekommen, bezwingen, sich unterthan machen:* राष्ट्रमेव वश्यंकः TBr. 1, 7,3,4. अजितात्मा हि विवशो वशीकुर्यात्कथं परान् Kathâs. 34,192. Pańkat. 13,5. med. Spr. 691. Kathâs. 72,342. Râǵa-Tar. 3,113. °कर्तुम् Spr. 2373. °कृत्य R. 1,29,3. Kâm. Nîtis. 12,40. Kathâs. 19,108. 26,64. 27, 64. 37,208. Pańkat. 13,2. Sarvadarçanas. 178,2. °कृत MBh. 3,15659 = 4,457. Hariv. 9795. Spr. 3077. 3201. 3745. Kathâs. 12,89. 18,400. 26,48. 37,28. 38,33. Râǵa-Tar. 3,53. 68. 169. Prab. 19,9. 10. Bhâg. P. 7,9,22. Mârk. P. 19,8.

वशीकर adj. *in die Gewalt bekommend, bezwingend, sich unterthan machend* MBh. 13,1195. जगत्त्रय° Pańkar. 3,15,35.

वशीकरण n. *das in-die-Gewalt-Bekommen, Bezwingung, das sich-unterthan-Machen* (insbes. durch Zaubermittel) Halâj. 4,31. Pâr. Gṛhj. 3, 13. R. Gorr. 1,31,4. Spr. 3196. Kathâs. 12,64. Verz. d. Oxf. H. 86,a, 2. 216,a,10. 218,b,20. युवजनमनसः Sâh. D. 52,13. Verz. d. B. H. No. 393. 914. सर्व° 904. नृप° Verz. d. Oxf. H. 78,b,23. जगत्त्रय° Pańkar. 3, 13,21. °मन्त्र P. 4,4,96, Schol.

वशीकार m. dass. Jogas. 1,15. 40. Kathâs. 12,134. Sarvadarçanas. 169, 4. नृप° Çuk. ed. Bomb. S. 24.

वशीकृति f. dass. MBh. 5,1020.

वशीक्रिया f. dass. Verz. d. Oxf. H. 256,a,15.

वशीभू (1. वश + 1. भू), °भवति *in Jmdes Gewalt kommen, unterthan werden* Kâm. Nîtis. 3,38. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 17. °भूत *unterthänig, folgsam, gehorsam* Spr. 4836. Pańkar. 1,14,94. fg. *zur Macht gelangt* Lot. de la b. l. 288.

वशीयंस् s. वसीयंस्.

वशीर m. *Scindapsus officinalis Schott.* Gaṭâdh. im ÇKDr. — Vgl. वसिर.

वश्चिक m. N. pr. eines Agrahâra Râǵa-Tar. 1,345.

वश्मसा indecl. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. — Vgl. मस्मसा (मष्मषा).

वैश्य (von 1. वश) 1) adj. *in Jmdes* (gen.) *Gewalt stehend, sich in Jmdes Willen fügend, gehorsam, folgsam* P. 4,4,86. AK. 3,1,25. H. 432. MBh. 1,3419. 3,10093. 16013. 5,783. 13,1192. 4297. 4759. 14,894. R. 2,21,56. 30,9. 31,10. R. Gorr. 2,117,18. 5,78,4. 7,75,7. Spr. 1783. 2319. 2947. 4372. 5102. Kâm. Nîtis. 4,65 (nach der Lesart des Comm.). Kathâs. 11,9. 12. 30,70. 46,242. 56,268. Prab. 99,8. Mârk. P. 39,17. fg. 120,13. Pańkat. 23,3. 46,20. 146,24. 156,10. Vet. in LA. (III) 26,6, v. l. इन्द्रियाणि Kaṭhop. 3,6. Hariv. 14714. R. 3,13,5. Spr. 2758. वश्यात्मन् Bhag. 6,36. MBh. 5,994 (S. 124). R. Gorr. 2,1,12. 4,44,120. Mârk. P. 16,5. वश्याग्निवरुणा Kathâs. 56,398. ममैते विषया वश्या नाहमेतेषां वश्यः Sarvadarçanas. 169,5. 6. मद्वश्य Hariv. 3922. R. Gorr. 2,10,24. Kathâs. 43,71. इन्द्रियैरात्मवश्यैः Bhag. 2,64. स्ववश्यैर्वाजिभिः R. 6,19,48. स्त्री° Pańkat. 223,18. मनो° MBh. 14,1451. मृत्यु° R. 3,35,73. शाप° 6,37,48. 98,28. Mârk. P. 113,9. समाधि° Kumâras. 3,50. इन्द्रियाण्यवश्यानि Kaṭhop. 3,5. किमवश्यं प्रियवचसाम् Spr. 684. मन्त्रान्वश्यान् vielleicht so v. a. *nach Wunsch zur Hand seiend* MBh. 2,681. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Âgnîdhra Mârk. P. 53,34. रम्य andere Autt. — 3) f. वश्या s. u. 4). — 4) n. *Macht, Gewalt:* धात्री वश्यं सागरान्ताभ्युपैति Varâh. Bṛh. S. 88,18. वश्यार्थे heisst Agni कामदः Gṛhjas. 1,10. *die übernatürliche Macht Andere seinem Willen zu unterwerfen; eine darauf gerichtete Zauberhandlung* Prab. 61,16. Verz. d. Oxf. H. 97,b,33. 98,a, 1. 6. 100,a,40. 105,a,11. 322,a, No. 764. Verz. d. B. H. No. 903. fg. सर्व° Verz. d. Oxf. H. 107,a, No. 163. auch वश्या f. 98,a,3. — Vgl. अवश्यम्, कामवश्य, पर°, पार° (auch Verz. d. Oxf. H. 120,a,33).

वश्यक (von वश्य) 1) adj. f. (आ) *folgsam, gehorsam* Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. *eine Zauberhandlung, durch die man Gewalt über Andere zu erlangen beabsichtigt,* Verz. d. Oxf. H. 98,a,17.

वश्यकर adj. *Gewalt über Andere verleihend* Verz. d. Oxf. H. 267,b,13.

वश्यकर्मन् n. = वश्यक 2) Verz. d. Oxf. H. 92,a,27. 97,b,29. 98,a, N. 1. Verz. d. B. H. No. 905.

वश्यता (von वश्य) f. *das in-der-Gewalt-Stehen, Unterwürfigkeit, Folgsamkeit, Gehorsam:* पितुर्मातुश्च R. 2,30,32. इन्द्रियाणाम् Jogas. 2,55. VP. in Sarvadarçanas. 177,17. वश्यतां गम्, इ *in Jmdes* (gen.) *Gewalt kommen* MBh. 1,1613. Hariv. 3689. Spr. 2868. Khandom. 92. कष्टा कुस्त्रीषु वश्यता Kathâs. 61,308. रोषस्य वश्यतां याति R. 4,35,11. स्त्री° Hariv. 7266.

वश्यत्व (wie eben) n. dass. MBh. 5,2591. नीतो मदनवश्यत्वम् R. 3,15,16.

वष्, वंषते (हिंसायाम्) Dhâtup. 17,40.

वैषट् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. चादि zu 1,4,57. ein Opferruf, vom Hotar am Schluss der Jâǵjâ gesprochen, auf welchen der Adhvarju die Spenden in's Feuer wirft (vgl. 2. वट्, वौषट्). Ind. St. 10,324. AK. 3,5,8. H. 1538. ṚV. 10,115,9. Hariv. 3291. Bhâg. P. 2,7, 38. mit einem dat. verbunden P. 2,3,16. Vop. 5,16. कस्मै देव वषडस्तु तुभ्यम् VS. 11,39. वषड्ढ्तेभ्यः AV. 7,97,7. Weber, Râmat. Up. 303. वषट्कर् *diesen Ruf aussprechen* gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि ṚV. 7,99,7. AV. 1,11,1. 8,10,20. अभ्येवैनांस्तद्वषट्करोति Ait. Br. 2,12. 5,9. Çat. Br. 1,6,1,25. 7,2,12. 20. 8,2,16. वैषट्कृत *worüber der Ruf gesprochen ist* AK. 2,7,26. Halâj. 2,262. ṚV. 1,120,4. पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट्कृतं होत्रादा सोमम् 2,36,1. 1,162,15. तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् 10,17,12; vgl. Çâṅkh. Çr. 10,21,2. तौ वषट्कृतौ सन्तौ मन्त्रेण हूयेते Çat. Br. 4,2,1,26. 23. 1,7,2,12. 14,2,2,15. Kâtj. Çr. 1,9,18. M. 2,106. वषट्कृत्वीषि MBh. 1,1294 = Mârk. P. 99,65. अग्रयः: *denen* वषट् *gesprochen ist* ṚV. 8,28,2. अनुवषट्कर् *einen* vashaṭ-*Ruf* (*auf den ersten*) *folgen lassen mit den Worten* सोमस्याग्ने वीहि oder ähnlich (Sâj.)

Ait. Br. 2,29. Çâñkh. Br. 13,6. अग्ने वीहीत्यनुवषट्करोति Çat. Br. 2,4,1,23. 13,5,2,23. Çâñkh. Çr. 5,10,19. 22. partic. Çat. Br. 4,3,1,21. 4,3,9. 14,2,2,17; vgl. अनुवषट्कार.

वषट्कर्तृ nom. ag. *Ausrufer von* वषट् Çat. Br. 4,2,1,29. 4,3,10. Âçv. Çr. 5,8,8. 9,28. Kâtj. Çr. 9,5,29.

वषट्कार m. *der Ausruf* vashaṭ H. 821. VS. 19,19. 20. 20,12. 21,53. AV. 5,26,12. 9,6,22. 10,3,22. Ait. Br. 5,33. ये३ यजामहे समिधः समिधो अग्न आज्यस्य व्यन्तु३ वौ३षडिति वषट्कारः Âçv. Çr. 1,5,15. 5,5,8. °क्रिया 2,19,17. Çat. Br. 1,5,2,11. 18. 20. 7,2,21. 13,1,2,3. TBr. 1,6,11,1. 4. 3,3,2,2. स्वाहाकारवषट्कारप्रदाना देवाः Kauç. 1. Kâtj. Çr. 1,2,6. 8,47. Âçv. Grhj. 3,41. Çâñkh. Çr. 1,1,34. 36. 39. उच्चैस्तरां वा वषट्कारः P. 1, 2,35. Hariv. 14115. R. 1,53,14 (54,16 Gorr.). 65,21. 5,12,22. 6,102, 17. 7,90,9. Lalit. ed. Calc. 313,5. 6. Weber, Râmat. Up. 311. Bhâg. P. 9,1,15. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3,778. Nach dem Schol. zu Kâtj. Çr. 9,5,29 ist in allen Soma-Opfern der वषट्कार und अनुवषट्कार vorgeschrieben, nur bei einzelnen Graha der letztere untersagt. वषट्कार personificirt unter den 33 Göttern VP. 123, N. 27.

वषट्कारनिधन n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,232, b. Lâtj. 9, 6,1. 10,12,12. Çâñkh. Çr. 7,2,13. प्रजापतेर्वषट्कारनिधनम् Ind. St. 3,224, b.

वषट्कारिन् adj. = वषट्कर्तृ Lâtj. 9,6,1. 10,12,12.

वषट्कृति f. = वषट्कार. य आहुतिं परि वेदा वषट्कृतिम् Ṛv. 1,31,5. 7, 14,3. °कृति adv. 1,14,8.

वषट्कृत्य adj. impers. vashaṭ *zu sprechen* Ait. Br. 5,9.

वषट्क्रिया f. *eine von* vashaṭ *begleitete Opferhandlung* Mârk. P. 75,15.

वष्क्, वष्कते (गतौ) Dhâtup. 4,27, v. l. für वस्क्.

वष्टि (von वश्) *begehrend, begehrlich:* परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयम् Ṛv. 5,79,5.

1. वस् enklitischer acc., dat. und gen. pl. des Pronomens der 2ten Person VS. Prât. 2,5. P. 8,1,21. 24. fgg. acc. Ṛv. 7,36,9. 37,1. dat. 1, 14,4. 20,5. 7,42,3. gen. 1,38,5. 39,4. 7,47,2.

2. वस्, उच्छति, औच्छत्, अवस्रन्, उवास, ऊषुः 2. pl. ऊषुस्, अवत्स्यत्, inf. वस्तवे Ṛv. 1,48,2. *hell werden, — sein, leuchten* (vom Lichte des anbrechenden Morgens): उवासोषा उच्छाच्च नु Ṛv. 1,48,3. 10,11,3. उषसो रेवदूषुः 3,7,10. अवंस्रन्नुषसो विभातीः 4,2,19. 6,65,6. औच्छत्सा रात्री *illuxit* 5,30,14. दूरे अमित्रमुच्छ *leuchte weg* 7,77,4. अया तदुच्छ गृणते *bringe durch dein Licht* 1,113,7. fehlerhaft scheint उछन्तु st. उतन्तु zu stehen AV. 3,12,4. उषित = व्युष्ट Trik. 3,3,102. = व्युषित H. an. 3,253. Med. t. 96. — Vgl. 1. उष, उषस्, 2. und 3. उषा, 2. उस्र.

— caus. *aufleuchten machen:* प्र चेतय रोदसी वासयोषसः Ṛv. 1,134, 3. 6,17,5. 32,2. 7,91,1.

— अधि, अध्युषिते *bei Tagesanbruch* MBh. 8,1673.

— अप 1) *durch Helle vertreiben* Ṛv. 1,48,8. उषा उच्छदप स्रिधः 7, 81,6. 104,23. AV. 2,8,2. चन्द्रमा वो ऽपोच्छतु 6,83,1. 14,2,48. 16,6,2. — 2) *erlöschen:* अपवास उषसामपं नेत्रियमुच्छतु AV. 3,7,7. — Vgl. अपवास.

— वि 1) *aufleuchten, in oder an das Licht treten* Ṛv. 1,113,7. या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् 10. 13. 3,55,1. अक्ता यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् 7, 30,3. प्रथमा ह व्युवास AV. 3,10,1. 4. Çat. Br. 6,2,2,17. 7,2,4. न व्यवत्स्यत् *es wäre nicht Tag geworden* 4,3,1,10. Çâñkh. Çr. 15,16,6. infin. loc.: व्युषि Ṛv. 5,3,8. 45,8. तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च 7,81,2. 8,46,21. व्युष्ट *hell geworden:* व्युष्टायां रात्रौ Çat. Br. 12,7,3,3. Kâtj. Çr. 20,4,33. MBh. 1,1205. 3,11917. 4,452 (सुव्युष्टा रजनी मम). 7,2605. 12,1548. 15,355. R. 2,54,37. R. Gorr. 1,30,1. Bhâg. P. 9,2,8. 10,42,32. Pañkat. 130,7. n. = दिन, प्रभात H. an. 2,99. Trik. 1,1,103. = कल्य 3,3,102. Med. t. 28; vgl. अव्युष्ट. व्युषिते Çâñkh. Çr. 2,7,3. — 2) *erhellen:* आदित्यो विवस्वानेतात्र विवस्ते (ganz unregelmässig der Etymologie wegen) Çat. Br. 10,5,2, 4. — caus. *hell werden lassen:* व्यैवास्मै वासयति *er lässt ihm Tag werden* TBr. 1,8,2,3 (nach dem Comm. zu 3. वस्). अयं वासयद्व्यृतेनं पूर्वीः Ṛv. 6,39,4. इदं नो विवासयतम् TS. 6,4,8,3. TBr. 1,4,4,5. Pañkav. Br. 8,1,13. 18,9,8. 11,11.

— अभिवि *hell werden über* d. h. *zur Zeit von* (acc.): यदि पर्यायानभिव्युच्छेत् *über den* p. d. h. *ehe diese beendet sind* Âçv. Çr. 6,6,1. Pañkav. Br. 9,3,3. med. (°च्छेत vielleicht nur Schreibfehler für °च्छेत्) Çâñkh. Çr. 13,10,4.

— परिवि *aufleuchten von — her* so v. a. *nach:* व्युच्छन्ती परि स्वसुः Ṛv. 4,52,1.

3. वस्, वस्ते (आच्छादने) Dhâtup. 24,13. P. 6,1,186. वसिष्व 2. imper. Ṛv. 1,26,1. वध्वम् 2. pl. Kauç. 88. Çâñkh. Çr. 4,5,2. वसत 3. pl. वसिष्टः; वसान, ved. वावसानः; ववसे; वत्स्यति (वत्स्यते wäre nicht gegen das Metrum) Hariv. 11206. वसिता und वस्ता Vop. 9,39. वसितुम्, वसित्वा; *anziehen, sich ein Gewand oder eine Hülle umlegen; eine Form der Erscheinung annehmen; sich in Etwas hineinmachen, eindringen in:* वस्त्राणि Ṛv. 1,152,1. वासः 9,89,2. निर्णिजम् 1,25,13. द्रापिम् 9,86,14. AV. 13,3,1. अत्कम् Ṛv. 1,122,2. 4,18,5. अधीवासं रोदसी वावसाने 10, 5,4. ज्योतिः 1,124,3. शोचिः 3,1,5. श्रियम् 2,10,1. 3,38,4. स्पार्हा, प्रुक्ता 1,135,2. अपः 164,47. 9,2,3. मिहम् 2,30,3. विद्युतम् 35,9. उस्राः 7,69, 5. असुर्यम् 3,38,7. वपूंषि 55,14. अधा वसत मरुतः सु मायया 5,63,6. 32,9. सुपर्णा वस्ते *hüllt sich in Vogels Gewand* 6,75,11. वना वसानो वरुणो न सिन्धून् 9,90,2. आयुः 10,16,5. 53,3. वयुनानि 114,3. 136,2. नृम्णा 9,7,4. अमृतम् AV. 9,1,1. 3,17. 13,1,16. त्रयम् 14,1,56. ऊर्जम् Ṛv. 9,80,3. VS. 10,7. 13,31. 19,89. दिशः AV. 19,20,2. दिवो वर्ष्माणम् Ṛv. 10,63,4. समानं नीळम् 5,2. Çat. Br. 10,5,2,4. 14,1,4,10. — स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च M. 1,101 (= Bhâg. P. 4,22,46). वस्ते वासश्च शोभनम् Spr. 537. Kathâs. 52,100. वल्कलम् Bhâg. P. 7,13, 39. चर्माणि वसीरन् M. 2,41. 6,6. आशावासो वसीमहि Spr. 270. न वसीताधौतवासः स्रजं च विधृतां क्वचित् Bhâg. P. 6,18,47. 19,3. मुनिवस्त्राण्यवस्त R. 2,37,7. वसनं ववसे Çiç. 9,75. वसानः पराम्शुकम् Jâgn. 2,238. MBh. 3,11976. 9,1794. 10,219. Hariv. 2903. 3595. (मातङ्गाः) वसाना विविधाः कुथाः 6926. R. 2,38,1. 90,2. 3,7,8. Ṛt. 3,28. Ragh. 12,8. Kumâras. 3,54. 7,9. Çâk. 180. Spr. 638. Kathâs. 71,22. कौशेयवाससी पीते वसानम् — अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् Bhâg. P. 10,66,14. Bhaṭṭ. 4,10. कुशचीरे वसितुम् R. Gorr. 2,37,18. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,8, Çl. 28. वसित्वा मैथुनं वासः M. 4,116. 11,122. Bhâg. P. 10,15,45. 41,39. 65,30. Bhaṭṭ. 3,45.

— caus. *anziehen lassen, hüllen in, bekleiden mit;* med. *sich hüllen in:* (नेजकः) वासांसि न च वासयेत् *soll nicht die Kleider von Andern tra-*

gen lassen M. 8,396. वस्त्रेणेव वासया मन्मना शुचिम् RV. 1,140,1. गव्या वस्त्रेव वासयन्त इत् 8,1,17. Âçv. Gṛhj. 1,19,11. Lâṭj. 2,6,1. यद्गोभिर्वासयिष्यसे *wenn du in Milch dich kleiden willst* RV. 9,2,4. यदी गोभिर्वसायते (aus metrischen Rücksichten) 14,3. कदा स्तोमं वासयो ऽस्य राया 6,35,1. तं गोभिर्वासयामसि 9,35,5. 43,1. वासित = वस्त्रच्छन्न H. an. 3,295. fg.

— अधि *anziehen:* उताधि वस्ते सुभगो मधुवृधम् RV. 10,75,8. — Vgl. 2. अधिवास und अधीवास.

— अनु *bekleiden, umfangen,* (schützend) *umgeben:* सोमस्त्वा राज्ञामृतेनानु वस्ताम् RV. 6,75,18. इडैवास्माँ अनु वस्तां व्रतेन AV. 7,27,1. प्राणः प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव 11,4,10. 13,3,11. *sich bekleiden* Çâṅkh. Br. 25,15. Pâr. Gṛhj. 3,4.

— अभि *sich hüllen in:* यथान्तरिक्षं मातरिश्वाभिवस्ते Kauç. 98. — caus. *bekleiden, bedecken:* पिता यत्सीमभि रूपैरवासयत् RV. 1,160,2. 9,75,5. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि 104,4. भस्मना TS. 2,6,3,4. TBr. 3,2,8,7. Çat. Br. 1,2,2,16. fg. Kâtj. Çr. 2,5,25.

— उप s. उपवासन.

— नि *anziehen über ein anderes Gewand* Kâtj. Çr. 15,5,12. *umthun, anlegen:* (खड्गेन) अर्धं वाससश्छित्त्वा निवस्य (so die ed. Bomb. und N. 10, 19) च MBh. 3,2351. R. Gorr. 2,99,2. वासोभिर्त्रहुसाहस्रैर्यो वै निवसितः पुरा *gekleidet in* 108,32. *sich kleiden, sich aufputzen:* न्यवसिष्ट ततो द्रष्टुं रावणम् Bhaṭṭ. 15,7. निवड्वम् 3,44. — Vgl. 2. निवसन, 2. निवास, 2. निवासिन्. — caus. *anziehen:* वासः MBh. 3,2631. R. ed. Gorr. 2,38, 16. पीतैर्निवासिता वस्त्रैः *gekleidet in* 5,27,22. नानाकर्म° so v. a. *beschäftigt mit* MBh. 13,1285. Vgl. निवास (आच्छादने) Dhâtup. 35,33 und 2. निवासन.

— प्रतिनि s. प्रतिनिवासन.

— संनि *umthun, anlegen:* प्रावारान् MBh. 5,745.

— परि 1) *anziehen* RV. 3,1,5. — 2) *umgeben, um Etwas her sein:* अहोरात्रे परि सूर्यं वसाने AV. 13,2,22.

— प्र *anziehen, umnehmen:* मृगाजिने प्रवस्ते R. 2,100,30.

— प्रति dass.: स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः RV. 6,3,3. — caus. *sich hüllen in* (instr.): अजिनैः प्रतिवासितः MBh. 2,2469. 2502. 3,11362. 5, 930. 2147. 9,1792.

— वि 1) *die Kleider tauschen:* वासंसी इव विवसानौ ये चरथः TS. 1, 5,10,1. Âçv. Çr. 2,5,10. — 2) *anziehen, umlegen:* मनोरमे न व्यवसिष्ट वस्त्रे Bhaṭṭ. 3,20. — caus. *anziehen, umlegen:* विवासयन्तो रुरुचर्माणि MBh. 2,2520.

— सम् *sich kleiden in:* समभ्रेण वसत पर्वतासः RV. 5,85,4.

— अभिसम् *umnehmen:* समानं तन्तुमभिसंवसानौ AV. 12,3,52.

4. वस् (= 3. वस्) adj. am Ende eines comp. *gekleidet in:* प्रेतचीवर° Ragh. 11,16.

5. वस्, वसति (निवासे) Dhâtup. 23,36. उवास, ऊषतुस् P. 6,1,15. 8, 3,60. Vop. 8,141. 3,34. ऊषिवंस् P. 3,2,108. ऊषुषाम् Bhaṭṭ. 6,135. अवात्सीत्, अवात्ताम् Vop. 8,141. अवास्तम् Khând. Up. 8,7,3. वत्स्यति (वसिष्यति Bhag. 12,8. R. 1,48,30. 2,30,39; so ist wohl auch Çatr. 14, 140 zu lesen) P. 7,4,49. वस्ता Kâr. 6. 9 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. उषित्वा P. 1,2,7. 7,2,52. Vop. 26,102. 204. episch उष्ट्वा (MBh. 3,4077. Mârk. P. 44,13) und उष्य; वस्तुम्; pass. उष्यते; उषित P. 7,2,52. 8,3, 60. Vop. 26,102. aus metrischen Rücksichten in der klassischen Sprache häufig auch med.; in der älteren Sprache vom simpl. med. nur partic. perf.: वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा (आ गतम्) *verweilend* oder *verweilt habend* RV. 1,46,13; und auch an dieser Stelle sind andere Erklärungen möglich. Medialformen in der älteren Sprache s. u. सम्. 1) *an einem Orte bleiben, Halt machen, übernachten; verweilen, sich aufhalten, wohnen; stehen bleiben bei Etwas:* कुह स्विद्दोषा कुह वस्तोः ... कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः *wo übernachtet ihr?* RV. 10,40,2. वसन्नरण्यान्याम् 146,4. शिरिणायां चिदक्तुना महोभिरपरीवृतो वसति प्रचेताः 2,10,3. मा मे ऽरवेशायां वात्सीत् *bleibe keine Nacht länger in meinem Besitz* Çat. Br. 5,3,1,13. मद्रेषु 14,6,3,1. गन्धर्वेषु Ait. Br. 1, 28. नेह्नेवास्मिं लोके ज्योगिव वसेयुः *sich nicht zu lange aufhalten* 4,21. तदभ्यारभ्य वसन्ति *inne halten* 5,10. क्व भगवो ऽवात्सीः *wo bist du so lange gewesen?* 8,24. कस्यां देवतायां वसथ *bei welcher Gottheit stehet ihr?* Çat. Br. 12,1,3,22. इयं विद्या न ब्राह्मण उवास *nahm nicht Aufenthalt* 14,9,1,11. ते ऽस्माद्दूषिवांसो ऽपप्रयन्ति *gehen weiter, nachdem sie über Nacht geblieben sind* 12,4,4,7. चन्द्रमा नक्षत्रे वसति 10,5,4,17. रात्रिम् 1,6,4,5. Çâṅkh. Çr. 18,23,21. Âçv. Gṛhj. 1,7,21. 3,9,3. mit Auslassung von रात्रि *Nacht:* यत्र दशोषित्वा प्रयाति *nach zehnmaligem Uebernachten* TS. 3,4,10,2. अरण्ये तिस्रो वसति Pañkav. Br. 16,6,3. 7. यां वनस्पतिष्ववसत् *die Nacht, welche er in den Bäumen zubrachte,* TS. 6,2,8,4. — उवास सार्थः सुमहान्वेलामासाद्य पश्चिमाम् *machte Halt für die Nacht* MBh. 3,2536. वसन्ति तत्र मार्गस्थाः सुरम्ये नगसत्तमे *übernachten* 12,5808. 13,1409. R. 2,58,4. Kathâs. 3,54. 56. Râǵa-Tar. 4, 219. इहैवाद्य वसावहे R. 2,50,12. अस्तु गतासि तं देशं वसाद्य सह मन्त्रिभिः *übernachte* 90,23. नास्यानग्निगृहे वसेत् M. 3,105. 100. 4,29. चिन्तय तावत् केनापदेशेन सकृदप्याश्रमे वसामः Çâk. 27,2. Unterschied der Bedeutung von aor. und imperf. P. 3,2,110, Vârtt. तामवसं प्रीतो रजनीं तत्र *die Nacht zubringen* MBh. 3,11991. रात्रिं कथयन्तौ पुरातनम् — ऊषतुः 3004. 5,6011. R. 1,33,1. 68,18. 2,34,34. 46,10. 89,6. R. Gorr. 1,71,25. fg. Kathâs. 18,255. 25,62. 42,50. इह त्वामाश्रमे राम सुखं वत्स्यामहे निशाम् R. 1,25,17. 76,14. R. Gorr. 1,48,21. तत्र तामुषित्वैकां रजनीम् MBh. 3,11025 (S. 570). R. 1,9,51. 31,30. 2,54,1. Bhaṭṭ. 3,45. तां रजनीमुष्य R. 1,29,1. 48,8. 2,15,1. वत्स्यस्येकां निशां साकं मया चेत् Kathâs. 43,81. Bhâg. P. 9,14,39. एकाहं चोदके वसेत् M. 11,157. स तया बाहुकः सार्धं त्रिरात्रं नैषधो ऽवसत् MBh. 3,2303. सो ऽद्य रात्रौ वसतु तद्गृहे Kathâs. 18,322. 42,62. वसस्व मयि *bleibe bei mir* MBh. 3,2596. 2252. 2598. 2638. 2640. 2842. गुरौ M. 2,164. 175. 4,1. गुरुकुले वसति स्म, स तत्र वसमानः MBh. 1,749. Itih. bei Sâj. zu RV. 1,125,1. ब्रह्मकुले Bhâg. P. 1,6,8. मातृकुले Bhaṭṭ. 3,24. मासादूर्ध्वं न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेन्मम so v. a. *ausbleiben, wegbleiben* R. 4,41,77. गृहे *sich aufhalten, wohnen, leben* M. 3,71. 4,60. 252. 5,102. 169. वने 6,1. 28. fg. 11,72. विषये 7,133. एवं सह वसेयुर्वा पृथग्वा 9,111. शैलेषूपवनेषु च 10, 50. दूरतरे ग्रामात् 11,128. तावत्यब्दसहस्राणि तत्कर्ता नरके वसेत् 207. तथा तु तेषां वसतां तस्मिन्राष्ट्रे MBh. 1,6109. 3,1790. निषधेषु 2255. सुखं वत्स्यसि नो गृहे 2332. रम्यमावसथं तत्र कृत्वा रामः सलक्ष्मणः। उवास सीतया सार्धम् R. 1,1,31. तस्यां वसत्यां वर्षाणि पञ्च पञ्च च — विश्वामि-

त्राश्रमे 63, 9. RÂGA-TAR. 1, 180. विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः Spr. 2980. वसन्ति ये ताम्रलिप्त्याम् so v. a. *die Bewohner von* Tâm. VARÂH. BṚH. S. 10, 14. KATHÂS. 30, 95. 31, 22. मध्ये लालितकादीनां दुर्वृत्तानां वसन्नपि — दुःसंस्कारान्न सो ऽग्रहीत् RÂGA-TAR. 5, 228. DAÇAK. 66, 17. 76, 6 (lies अवात्सम् st. अवास्तम्). PAÑKAT. 68, 24. VET. in LA. (III) 6, 20. 7, 6. med. MBH. 1, 4583. 2, 609. 2502. 2872. 3, 11658. 4, 13. विराधनगरे वत्स्यसे केन कर्मणा 19. 5, 3823. 13, 720. 5219. 14, 457. HARIV. 6017. R. 1, 25, 8. 50, 4. 2, 34, 43. 48, 21. 52, 27. 3, 75, 12. Verz. d. Oxf. H. 32, b, 32. BHÂG. P. 1, 17, 37. SADDH. P. 4, 10, a. pass. impers.: इक्ष्योष्यतां वत्से यावत्ते भर्तुरागमः BHÂG. P. 7, 7, 12. 9, 13, 11. 20, 14. PAÑKAT. 30, 24. तस्मिन्नण्डे स भगवानुषित्वा परिवत्सरम् M. 1, 12. Spr. 1142. उष्ट्वा मदालसागर्भे MÂRK. P. 44, 13. उष्य तत्र यथाकामम् MBH. 3, 2232. 3030. 8032. R. 2, 52, 78. गमिष्यामि वनं वस्तुमहं त्विता: 19, 2. आसां सपत्नीनां वस्तुं मध्ये न मे क्षमम् 24, 17. 35, 11. 37, 18. 3, 52, 37. 53, 23. अतः संप्रति गच्छावो वस्तुमुज्जयिनीं पुरीम् KATHÂS. 24, 85. 18, 376. दिवसेनैव तत्कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत्। अष्टमासेन तत्कुर्याद्येन वर्षाः सुखं वसेत्॥ *sich behaglich betten, behaglich leben* Spr. 4182. येन वृद्धः सुखं वसेत्, येनामुत्र सुखं वसेत् 4570. 4863. M. 6, 95. अदमान उवास कृच्छ्रम् BHÂG. P. 9, 10, 9. नाहं कमण्डलावस्मिन्कृच्छ्रं वस्तुमिहोत्सहे spricht ein herangewachsener Fisch 8, 24, 18. *beiwohnen, geschlechtlichen Umgang haben mit* (loc.): वियोनिषु च वत्स्यन्ति (चरिष्यन्ति die neuere Ausg.) प्रमदासु नरास्तथा HARIV. 11167. *seinen Standort haben*, von Thieren: यत्रोदकं तत्र वसन्ति हंसाः Spr. 4776. मूले वसति चेत्फणी 2210. 3198. GÎT. 1, 47. KATHÂS. 33, 44. चत्वारः प्राणिनस्तत्र वसन्ति स्म महान्तरे 107. HIT. 14, 18, v. l. हस्तिनो लब्धनामानस्तुरंगास्तु मनोजवाः। गृहोपकण्ठे नृपतेर्वसेयुः स्वान्तरक्षिताः॥ KÂM. NÎTIS. 16, 8. *bleiben* so v. a. *nicht fortgehen* Spr. 3673. अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः 243. दृष्ट्वा च दूरतो व्याघ्रमुवास स सरस्तटे PAÑKAR. 1, 3, 69. दूरतम् *sich fern halten* Spr. 2257, v. l. नावसत्तत्र (नारमत्तत्र ed. Bomb.) तत्रास्य दृष्टिः MBH. 13, 1480. *sich irgendwo befinden, — sein:* स मृत्योर्वसते ऽन्तिके MBH. 12, 3515. पार्श्वतम् Spr. 404, v. l. यत्र तत्राश्रमे वसन् M. 3, 50. 12, 102. नमस्ये ऽहं पितॄन् श्राद्धे ये वसन्त्यधिदेवताः MÂRK. P. 96, 13. पारिजातो वसंस्तत्र HARIV. 7706. मतयः तत्रविद्याश्च मायाश्चात्र वसन्ति R. GORR. 2, 8, 44. वसति तत्राधरमधु (मुखाम्बुजे) Spr. 2379. यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे। मृत्युश्च वसति क्रोधे 2438. एते (गुणाः) यत्र वसन्ति 2773. यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति VARÂH. BṚH. S. 70, 23. तरलत्वं नयनयोः Spr. 3985. भूतिः श्रीर्ह्रीर्धृतिः कीर्तिर्दक्षे वसति नालसे 5246. स्वर्गस्थितानामिह जीवलोके चत्वारि चिह्नानि वसन्ति देहे 5365. युगपत्सत्त्वासत्त्वे परस्परविरुद्धे नैकस्मिन्वस्तुनि वस्तुं युक्ते SARVADARÇANAS. 45, 2. 3. सेवायाम् *in Jmdes Diensten stehen* HIT. ed. JOHNS. 2700 (सेवया ed. SCHL. 127, 11). *sich halten zu* (loc.) कुशासने Verz. d. Oxf. H. 20, a, No. 65. fg. — 2) *liegen —, stehen bleiben, verbleiben:* तिस्रो रात्रीः क्रीतः सोमो वसति TBR. 1, 8, 3, 5. परिमुषितो ऽवसत् *blieb gestohlen* TS. 6, 1, 6, 5. ÇAT. BR. 9, 2, 2, 3. छन्ना वसति KÂTJ. ÇR. 5, 4, 1. वसंतु नु नं इदम् TS. 6, 4, 2, 1. — 3) mit einem acc. *a) in einer Lage u. s. w. sich dauernd befinden, sich widmen, obliegen:* नाब्राह्मणे गुरौ शिष्यो वासमात्यन्तिकं वसेत् M. 2, 242. कृष्टो वासमुवास ह MBH. 5, 7516. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो मम R. 2, 37, 5. R. GORR. 2, 60, 7. वनवासम् R. SCHL. 2, 75, 3. उदवासम् MBH. 13, 354. अज्ञातवासम् 3, 3020. सुखवासम् R. 1, 17, 17. बहुदुःखवासम् BHÂG. P. 3, 31, 20. रात्रवसतिम् MBH. 4, 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, v. l. ब्रह्मचर्यम् AIT. BR. 5, 14. ÇAT. BR. 12, 2, 2, 13. 14, 8, 2, 2. KHÂND. UP. 4, 4, 3. 10, 1. 8, 7, 3. ब्रह्मचर्याश्रमम् MÂRK. P. 28, 17. आश्रमश्रेष्ठम् d. i. गार्हस्थ्यम् MBH. 12, 2339. वीरासनम् M. 11, 110. इदं वत्स्यामः (z. B. गार्हस्थ्यम् Comm.) ÂÇV. GṚHJ. 3, 10, 2. — *b) an einem Orte verbleiben:* नदीर्वनेषु चोषित्वा VOP. 5, 3. वस तां पुरीम् R. GORR. 2, 114, 24. — *c)* in der Stelle: ब्राह्मेण विप्रान्वसति युद्धेनैव च क्षत्रियान्। प्रदानकर्मणा वैश्यान् शूद्रान्परिचरेण च॥ HARIV. 11968 ergänzt NÎLAK. zum acc. अधिष्ठाय; dem Zusammenhange nach muss वस् hier so v. a. *sich beschäftigen lassen (bekleiden?)* bedeuten. — 4) partic. उषित *a)* mit pass. Bed.: दिनमेकं मन्ये त्वया सार्धमिहोषितम् *zugebracht, verlebt* BRAHMA-P. in LA. (III) 56, 13. impers.: यत्रोषितं त्वया *wo du geweilt hast* MBH. 1, 3268. कारागृहे RAGH. 6, 40. Spr. 2445. 2928. — *b)* mit act. Bed. = स्थितवत् TRIK. 3, 3, 150. *α) Halt gemacht —, übernachtet —, verweilt —, sich aufgehalten —, irgendwo gelebt habend:* वेलातटेषूषितसैनिकाश्वः RAGH. 18, 22. त्रिरात्रमुषितः *drei Nächte zugebracht habend* MBH. 3, 2306. एकरात्रोषितः कश्चिद्दृश्यं ब्राह्मणं पथि 11945. ते त्रिरात्रोषिताः प्राप्ताः करवीरं पुरोत्तमम् *nachdem sie drei Mal übernachtet hatten* HARIV. 5652. पञ्चरात्रोषितौ पथि 5720. R. 1, 68, 1 (70, 1 GORR.). R. GORR. 1, 75, 8. 2, 12, 1. 6, 106, 1. KATHÂS. 22, 102. वर्षाकालोषित R. 4, 29, 1. शर्वरीम् — तवाश्रमे। उषिताः स्नेहवसतिम् R. SCHL. 2, 54, 36. सुखमस्म्युषितः MBH. 1, 3269. त्वयि 3, 1737. 2711. 3024. उषितो ऽहं त्वया सह *ich habe mit dir gelebt* (geschlechtlich) BRAHMA-P. in LA. (III) 57, 12. BHÂG. P. 1, 10, 27. सुखोषित *der die Nacht gut zugebracht hat* MBH. 3, 3003. R. 2, 92, 6. सुखोषितो ऽस्मि रजनीम् 5. अज्ञातवासमुषिताः MBH. 4, 1. उषितास्मि तथा बाल्ये पितुर्वेश्मनि 5, 6034. शम्बरस्य गृहोषितः HARIV. 9475. RAGH. 14, 32. MÂRK. P. 16, 20. दीर्घकालोषितस्तत्र गिरौ R. 2, 94, 1. सुचिरोषित *der lange bei Jmd gelebt hat* 32, 17. चिरोषित *lange abwesend gewesen* BHÂG. P. 1, 11, 10. 14, 39. परिसंवत्सरोषिताः *ein Jahr lang abwesend gewesen* MBH. 4, 2359. *ein Jahr lang gewartet habend* 1, 2260. 13, 4672. अभ्यन्तरोषित *seinen Standort habend* KÂM. NÎTIS. 17, 28. — *β) gestanden —, gelegen habend* (insbes. über Nacht), von Sachen: अधोषितं कुसुमम् VARÂH. BṚH. S. 53, 95. त्वरि दिनोषिते 50, 26. बदराणि सप्तरात्रमुषितानि 54, 114. 55, 18. वर्षद्वयमुषितानि 42, 9. SUÇR. 1, 158, 15. 2, 35, 19. शतं वत्सरानुषितं घृतम् *hundert Jahre alt* 1, 181, 16. 199, 19. चिरोषितं भक्तं पर्युषितं च MÂRK. P. 34, 57. जलोषित *im Wasser gelegen* SUÇR. 2, 448, 15. — *γ) gefastet habend* (vgl. unter उप): शुचिः पुरोधाश्च्यहोषितः स्नातः VARÂH. BṚH. S. 46, 15.

— caus. 1) वासयति, °ते; *a) über Nacht behalten, Quartier geben, beherbergen, wohnen lassen;* med. P. 1, 3, 89. यदेनान्वासयते यदेभ्यो ऽशनं ददाति *wenn er sie beherbergt, wenn er sie speist* ÇAT. BR. 1, 7, 2, 5. MBH. 1, 5727. 5, 5972. 13, 2114. BHAṬṬ. 8, 64. वत्सान्मातृभिः सह वासयेत *die Nacht über belassen* LÂṬJ. 5, 1, 2. GOBH. 3, 8, 7. act.: त्वयि रात्रिं वासयामसि ved. Cit. beim Schol. zu P. 7, 1, 46. ब्राह्मणं मे पिता पूर्वं वासयामास *beherbergen* MBH. 3, 1261. अतिथीन् 12, 4057. 3, 982. अधनान्नास्तिकांश्चौरान्विषये स्वे न वासयेत् 1, 5600. 4, 278. स्वगृहे 5, 7071. 13, 7416. HARIV. 8211. रामं वने वासयता *wohnen heissen* R. GORR. 2, 91, 13. संयतां वासयेद्गृहे *er halte sie eingesperrt* M. 8, 365. परिभूतामधः शय्यां वासयेद्व्यभि-

चारिणीम् Jâǵn. 1,70. सदानमानसत्काराञ्श्रोत्रियान्वासयेत्सदा 338. वासयितुं गृहे MBh. 13,7382. R. 2,101,21. वासिताश्च महारण्ये वर्षाणीह त्रयोदश MBh. 5,611. कृतावासे वासितः Hit. 92,19. अटव्यां वासिते सार्थे *für die Nacht Halt machen lassen* Kathâs. 64,21. अयोनौ यः समाक्रामेद्बहुभिर्वा वासयेत् so v. a. *mit Vielen den Beischlaf vollziehen lassen* Matsja-P. in Vivâdak. 50,15. fgg. *über Nacht stehen lassen:* तिस्रो वासयित्वा Kauç. 7. — b) *warten lassen, hinhalten:* वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः RV. 7,37,6. *aufhalten:* रिपोर्बलम् Kâm. Nîtis. 18,22. — c) *bevölkern:* स्वराष्ट्रं वासयेद्राजा परदेशापवाहनात् Spr. 5361. — d) *bestehen lassen, erhalten:* ते यदिदं सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति Çat. Br. 11,6,3,6. 14,2,1,20. act. in derselben Verbindung Bṛh. Âr. Up. 3,9, 3, v. l. bei Çaṅk. (vgl. jedoch Burnouf, Yaçna S. 344) und Khând. Up. 3, 16,1. यः सर्वांल्लोकानुद्गृह्णाति विसृजति वासयति Atharvaç. Up. bei Muir, ST. IV,299,18. 27. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,93. — e) *stellen, setzen, an einen Ort thun:* मूर्ध्नि त्वां वासयिष्ये वै MBh. 4,265. स्वमेवांशमवासयत् (sc. तस्य शरीरे) Hariv. 1428. जघने मम — मणिरसनावसनाभरणानि — वासय Gît. 12,24. अनध्यायं मुखे वासयते so v. a. *beobachtet Stillschweigen, schweigt* Naish. 9,61. — f) *entstehen lassen, hervorrufen:* प्रकृतिः (wird so genannt) प्रकृष्टकरणाद्वासना वासयेच्यतः Sarvadarçanas. 66,11. — 2) वसयति *wohnen* (निवासे) Dhâtup. 35,84,*e*.

— desid. विवत्सति P. 7,4,49, Schol.

— अधि, अध्यूषिवंस् P. 3,2,108, Schol. (einen Ort) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen, einnehmen* (einen Platz), *bewohnen;* mit acc. P. 1, 4,48. गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः Megh. 26. Ragh. 5,63. 13,79. Kumâras. 1,55. Kathâs. 24,92. Bhâg. P. 7,4,8. स राजा ब्रह्मदत्तस्तु पुरीमध्यवसत्तदा । काम्पिल्याम् R. 1,34,46. R. Gorr. 1,27,26. Kir. 5,21. 27. Uttarar. 42,3 (55,16). Kathâs. 30,42. Bhâg. P. 3,21,25. दण्डकामध्यवात्तां यौ Bhaṭṭ. 5,6. तनुम् Ragh. 9,17. भास्करश्च दिशमध्युवास याम् 11, 61. सहासनं गोत्रभिदाध्यवात्सीत् *nahm mit* Indra *denselben Sitz ein* Bhaṭṭ. 1,3. कथं पर्णावृतां भूमिमधिवत्स्यति मे स्नुषा *auf dem Erdboden liegen* R. Gorr. 2,62,13. Bhaṭṭ. 8,79. 15,69. partic. अध्युषित 1) *besetzt, eingenommen, innegehabt* (von einem Orte), *bewohnt:* भरताध्युषितं पूर्वं सो ऽध्यतिष्ठत्पुरोत्तमम् MBh. 1,3736. 3,2464. 12208. 13,2666. Hariv. 6413. R. 1,27,13. 31,21. 47,11. 2,49,9 (46,10 Gorr.). R. Gorr. 2,109,47. 7,23,4. Ragh. 4,46. 9,25. 14,30. Spr. 807. Varâh. Bṛh. 26,5. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 96. Kathâs. 34,254. 44,187. 73,318. Râǵa-Tar. 2,169. गोऽध्युषिता मही *Grund, auf dem Kühe sich aufgehalten haben,* Varâh. Bṛh. S. 53,98. मरुता परितापकृताध्युषिते — यमुनापुलिने so v. a. *wo ein — Wind weht* Paṅkar. 3,12,4. अनुत्तमेनाध्युषितः (बाहुः) प्रियेण वीरेण *auf dem der Geliebte lag* R. 5,28,14. — 2) *geweilt —, zugebracht habend:* संवत्सरं चाध्युषिता राघवस्य निवेशने R. 3,53,3. चिरम् R. Schl. 2,30,8. *bewohnend:* द्वारकाम् Vop. 5,2. — 3) *dem man obliegt:* प्रमदाध्युषितां वृत्तिम् R. 3,1,7. — 4) अम्लाध्युषित n. (sc. नेत्र) *eine durch Genuss saurer Speise erzeugte Augenentzündung* Wise 293. Suçr. 2,305, 8. 315,1. — Vgl. 1. अधिवास, समयाध्युषित. — caus. 1) *über Nacht liegen lassen:* अधिवास्यापरेद्युः पाटयित्वा Suçr. 1,32,9. अधिवासित Varâh. Bṛh. S. 26,1. — 2) *einweihen* (ein neues Götterbild): सुप्तां (प्रतिमां) सुनृत्यगीतैर्जागरकैः सम्यगेवमधिवास्य । दैवज्ञसंप्रदिष्टे काले संस्थापनं कुर्यात् Varâh. Bṛh. S. 60,15. — 3) *heimsuchen:* वैधव्येनाधिवासिता Hariv. 5398. — 4) *sich einverstanden erklären mit Jmd* (gen.), *Jmd willfahren* Lalit. ed. Calc. 6,9. Lot. de la b. l. 351. Burn. Intr. 250, N. 1; vgl. अधिवासना.

— अनु mit acc. P. 1,4,48. 1) *Jmd nachziehen, Jmd an einen Ort folgen;* mit acc. der Person MBh. 5,664. 12,6516. 10598. R. 2,37,26. 88, 23. 25 (96,27 Gorr.). अनूषितो गुरुं भवान्, अनूषितो गुरुर्भवता, अनूषितं (impers.) त्वया P. 3,4,72, Schol. — 2) *an einen Ort ziehen, zum Aufenthaltsort wählen:* ग्रामम् P. 1,4,48, Schol. मथुरामनूष्य Vop. 5,2. अनूष्यं वनम् Bhaṭṭ. 5,75. अन्ववात्सीत्तं (अण्डकोशं) ईश्वरः Bhâg. P. 3,20,15. — 3) *verweilen, irgendwo zubringen* (eine Zeit): अमांसभोजनाः सर्वे वासिष्ठा इव ज्ञातिषु । पूर्णावर्षसहस्रं तु पृथिव्यामनुवत्स्यथ ॥ R. 1,62,17. अनुवसन्नपि (*längere Zeit stehend, älter werdend*) न दुष्यति (अनुवासनः) Suçr. 2,198,8. — 4) अनुवत्स्यते MBh. 3,14758 fehlerhaft für अनुवत्स्यति, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अनुवासिन्. — caus. (das Kalb bei der Mutter) *belassen* TBr. 1,6,7,3.

— समनु *obliegen, befolgen:* कीनाशीनं तथा धर्मं प्रजा समनुवत्स्यति Hariv. 11210 nach der Lesart der neueren Ausg.; समनुपत्स्यति die ältere Ausg.

— अन्तर् *drinnen stecken* Çiç. 3,9. निश्चित्य यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः *der nicht mitten in der Arbeit stecken bleibt* MBh. 5,994. — Vgl. अन्तरुष्य.

— अभि *verweilen, zubringen* (eine Nacht): सुखमभ्युषितो निशाम् R. 3,17,2. — Vgl. अभिवास.

— आ 1) *verweilen, sich aufhalten, wohnen:* अपामुपस्थे विभृतो यदावसत् RV. 1,144,2. आवसन्कृष्णया सार्धं काम्यके MBh. 3,2014. गृहे Bhâg. P. 3,32,1. 7,10,47 (= 15,75). *nahe* oder *gegenwärtig sein:* दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा RV. 6,38,2. — 2) *beziehen* (einen Ort), *zum Aufenthaltsort erwählen, bewohnen;* mit acc. P. 1,4,48. स्वाजीव्यं देशम् M. 7, 69. Jâǵn. 1,320. लोकानावसते शुभान् MBh. 3,8032. कथंविधं पुरं राजा स्वयमावस्तुमर्हति 12,3228. 13,5074. षष्टिं वर्षसहस्राणि दिवमावसते स च 5180. पुरीं तां सुखमावसत् Hariv. 4904. 6548. 8160. 8977 (med.). 9167. R. 1,47,17. दैवतानि च यानि त्वां (पुरि) पालयन्त्यावसन्ति च 2,50,2. 54,42. 105,36. Varâh. Bṛh. S. 24,7. Bhâg. P. 6,13,15. नैते गृहान् — आवसन् so v. a. *wurden keine Haushalter, gründeten kein Haus* 4,8,1. आवसतात्स्म हन्नः Vop. 5,2. गुरोस्तल्पम् *das Ehebett des Lehrers beziehen* so v. a. *mit der Frau des Lehrers Ehebruch treiben* Khând. Up. 5,10,9. — 3) *zubringen* (eine Nacht): निशां तां सुखमावसत् Mârk. P. 125,24. — 4) *sich begeben in, antreten:* गृहस्थाश्रमम् M. 3,2. Mârk. P. 28,15. गार्हस्थ्यम् MBh. 12,2472. fg. राज्यम् *die Regierung antreten* R. 2,12,57. 42,21. — 5) *fleischlich beiwohnen:* शूद्रो गुप्तमगुप्तं वा द्वैजातं वर्णमावसन् M. 8,374. — 6) statt मामा वसन्ति AV. 7,79,2 vermuthen wir अमा वसन्ति; आवसित Kathâs. 54,124 fehlerhaft für आवासित. — Vgl. आवसति, आवास. — caus. 1) *beherbergen, bei sich wohnen lassen:* विनाशकामामहितामामित्रामावासयं मृत्युमिवात्मनस्त्वाम् R. 2,12,101. Râǵa-Tar. 3,161. — 2) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen:* इदमेवंविधं (नगरं) कस्माद्देवा नावासयन्त्युत MBh. 3,12188. R. Gorr. 1,35,4.5. यथा हि शून्यां पथिकः सभामध्यावसेत् (so die ed. Bomb.) पथि । तथाप्यावासयिष्या-

मि गुरुपत्न्याः कलेवरम् MBh. 13,2298. प्रेमावासिता *in der die Zuneigung ihre Wohnung aufgeschlagen hat* Spr. 3270. — 3) *Halt machen, sich lagern* (für die Nacht): इह क्वावास्यते पान्थैः Kathâs. 124,133.fg. (राजानः) ग्रावासिता नातिदूरे षदुरस्य *machten Halt* Hariv. 8021. R. Gorr. 2,107,18. Kathâs. 47,2. 3. 54,124 (fälschlich ग्रावसित gedr.). 123,268.

— ग्रध्या 1) *beziehen, zum Aufenthaltsort wählen, bewohnen;* mit acc. MBh. 1,5512. 3,11215. 4,2278. 12,11986. यथा हि प्रून्यां पथिकः सभामध्यावसेत् (so die ed. Bomb.) पथि 13,2298. 5320. R. 1,70,2. R. Gorr. 1,35,44. त्वद्धृदयमध्यावसन्तं मां मा रोत्सीः Bhaṭṭ. 8,80. *seinen Aufenthalt haben in, wohnen in;* mit loc. MBh. 13,5279. — 2) *sich begeben in, antreten, obliegen:* गार्हस्थ्यमध्यावसते MBh. 12,2339.

— उदा *hinausziehen in, zu:* वनवासम् MBh. 13,205. उपावसत् st. उदावसत् ed. Bomb. — caus. *hinausbringen, hinausschaffen:* सर्पं तमुदावासयत् Bhâg. P. 10,16,1.

— उपा (aus metr. Rücksichten statt उप) *fasten* Weber, Kṛshṇaǵ. 228.

— समा 1) *Halt machen, sich lagern* (für die Nacht): तीरेस्तले Kathâs. 25,87. सायम् 28,120. 56,390. 57,73. 109,82. — 2) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen, bewohnen:* ग्राश्रमम् R. 2,54,41. पुरम् Kâm. Nîtis. 4,57 (Text und Comm. समावशेत्). Bhâg. P. 3,22,32. ब्रह्मकुलम् 5,14, 30. — caus. *Halt machen, sich lagern:* मलयाधित्यकायां समावासितो वर्तते चित्रवर्णो नाम राजा Hit. ed Johns. 2147. Journ. of the Am. Or. S. 7,32,8. मलयपर्वतोपत्यकायां समावासितकटको (v. l. समावासितो) वर्तते Hit. 97,15. 39,5 (hier dieselbe v. l.).

— उद् caus. 1) act. und med. *aus seiner Stelle entfernen;* z. B. das Havis, das Feuer vom Altar (mit oder ohne ग्रग्निम्) TS. 1,5,2,1. 2,2, 5,5. 6,2,5. TBr. 2,1,3,4. 7,1. 8,2. Çat. Br. 1,2,2,6. 3,8. 2,3,2,4. 11, 5,2,2. Kâty. Çr. 25,2,3. Ait. Br. 5,26. Kâty. Çr. 3,4,22. 4,2,33. Âçv. Gṛhy. 1,10,12. Kauç. 2. 61. 87. Kull. zu M. 11,41. संयावमनुद्वास्य Bhâg. P. 10,29,5. देवम् 8,16,43. (ग्रहीन्द्रम्) ह्रदात्प्रसह्योद्वास्य 10,26,12. Pañkar. 3,13,8. Weber, Kṛshṇaǵ. 307. fg. mit loc. des Ortes wohin: पृथिव्यां हृदयशूलम् TS. 6,4,1,5. स्थाल्यामाज्यम् Çat. Br. 2,5,3,11. देवं स्वे धाम्नि Bhâg. P. 6,19,19. 11,3,54. 27,47. Pañkar. 3,9,3. 11,27. 15,45. शिरः *abtrennen* Çat. Br. 12,7,3,3. *ausroden,* Bäume Âçv. Gṛhy. 2,7, 5. *fortgehen heissen:* पितॄन् Saṁsk. K. 236, b, 4. — 2) *verwüsten:* रत्तसोद्वासितां नगरीम् Hariv. 6266. सदैवतगणांल्लोकानुद्वासयति दर्पितः 3065. सर्वं देशमुद्वास्य Pañkat. 47,6. — Vgl. उद्वासन, उद्वास्य.

— पर्युद् caus. = उद् 1) AV. 12,3,35.

— समुद् caus. dass. Çat. Br. 2,6,2,7.

— उप 1) *verweilen bei* (acc.), *warten, abwarten:* देवासुरा यज्ञमुपावसन्नस्मभ्यमनुवदत्यस्मभ्यमिति Ait. Br. 2,15. ग्राग्नीध्रे 36. गृहेषु Çat. Br. 1,1,1,7. ग्राशिता एवाद्योपवसाम। कस्य वाहेदम्। कस्य वा श्वो भविनेतीति *wir wollen abwarten, wem es heute oder morgen gehören wird,* TBr. 1, 6,6,4. उपास्मिं ह्यो यद्यमाणे देवता वसन्ति TS. 1,6,7,3. यज्ञमेवारभ्य गृहीत्वोपवसति 6,4,3,1. Çat. Br. 3,6,1,26. यत्ते वयं पश्यन्त उपवसाव *dessen Erscheinen sehend wir bei dir bleiben wollen* 8,1,1,3. — 2) (*mit Essen zuwarten*) *sich enthalten, fasten* P. 1,4,48, Vârtt. mit acc. der Speise oder der Zeitdauer: यद्याम्यानुपवसति TS. 1,6,7,3. पौर्णमासेन Çat. Br. 1,6,3,31. fgg. तदह्नः 11,1,1,4. त्रिरात्रम् Çâṅkh. Gṛhy. 5,1.10. पौर्णमासीम् Kâty. Çr. 2,1,1. Âçv. Gṛhy. 1,9,3. 13,2. त्रिरात्रोपोषित Gobh. 4,8,13. Kauç. 94. 140. उपवत्स्यद्भक्त 1. 8. med. Çâṅkh. Gṛhy. 2, 12. — उपवसेद्दिनम् M. 2,220. 5,20. 11,157, 213. 259. Jâǵn. 3,292. MBh. 15,126. R. Gorr. 1,45,1. Varâh. Bṛh. S. 105,8. Bhâg. P. 7,12,5. Weber, Kṛshṇaǵ. 226. त्रिरात्रमुपोष्य Jâǵn. 3,264. MBh. 3,4060. 5092. Spr. 4494. Varâh. Bṛh. S. 26,11. Kathâs. 93,82. Bhâg. P. 4,8,71. 8,9,14. उपोषित *gefastet habend, nüchtern* Jâǵn. 2,97. MBh. 13,3259. 3264. 3267. 3276. Hariv. 7602. Ragh. 16,39. Kathâs. 33,156. 42,173. Pañkat. 199,12. ततो रोपोषित Kathâs. 46,107. तं द्वादशाहमुपोषितम् 114,48. 115, 141. त्रिरात्रोपोषित Jâǵn. 3,302. MBh. 3,4086. Kathâs. 19,6. 21,143. Râǵa-Tar. 4,100. उपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् Ragh. 2,19. mit pass. Bed. *in Fasten zugebracht:* तिथि Weber, Kṛshṇaǵ. 222. n. *das Fasten* Spr. 4455. Mârk. P. 16,61. उपोष्य *in Fasten zuzubringen* Weber, Kṛshṇaǵ. 227. fg. — 3) *beziehen, zum Aufenthaltsort erwählen;* mit acc. P. 1,4,48. ग्रामम् Schol. विकुपठम् Vop. 5,2. — 4) *sich zu Jmd* (acc.) *in die Lehre begeben* MBh. 5,2177. — 5) *antreten, sich widmen, obliegen:* तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्ति Muṇḍ. Up. 1,2,11. वनवासमुपावसत् MBh. 13,205 nach der Lesart der ed. Bomb. उदावसत् ed. Calc. किमिच्छकमुपोषिता Mârk. P. 126,17. 19. — 6) उपवसित Âçv. Gṛhy. 1,14,7 bei St. fehlerhaft für उपावसित (von सा mit उपा), wie eine von uns verglichene Hdschr. liest; vgl. Çat. Br. 3,9,2,8. Andere schreiben ganz falsch उपवसथा, die Ausg. der Bibl. ind. उपवसिथा. — Vgl. उपवसथ, उपवस्तर्, उपवास, उपवासिन्, उपोषण fg. — caus. 1) *warten—, eine Zeit zubringen lassen* TS. 6,3,2,3. — 2) *fasten lassen* Pâr. Gṛhy. 1,14. R. 2,5,4 (4,4 Gorr.). ग्रतिथिं नोपवासयेत् MBh. 12,7046 = 13,7576.

— समुप 1) *fasten:* समुपोषित *gefastet habend* MBh. 13,3273. Varâh. Bṛh. S. 105,16. Bhâg. P. 9,4,30. — 2) *antreten, obliegen:* तद्व्रतं समुपोषिता Mârk. P. 126,9.

— नि 1) *verweilen, sich aufhalten, seinen Standort haben* (von Menschen und Thieren und bisweilen auch von Sachen), *wohnen* Nir. 10, 12. 21 (*ruhen* im Gegens. zur Bewegung). एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः M. 3,102. MBh. 3,1454. 4,276. ग्रपरत्र — मासानष्टौ न्यवसत्सुखम् R. 3,15,26. केनापदेशेन सकृदप्याश्रमे निवसामः Çâk. 27,2, v. l. शूद्रस्तु यस्मिन्कस्मिन्वा (देशे) निवसेत् M. 2,24. 4,61. 5,43. 6,4. 11,78. Jâǵn. 2,184. Bhag. 12,8. MBh. 1,5567. fg. 3,2622. fg. 2641. 13848. 16917. 4,148. 5,7539. 12,6316. Hariv. 3948. R. 1,9,70. 17,41. 48,30. 32. 2,27, 12. 16. 21. 98,30. 3,42,5. Spr. 1461. 3868. Çâk. 26. Varâh. Bṛh. S. 53, 84. Kathâs. 12,194. 16,5. 18,62. 22,151. 23,43. 26,62. Râǵa-Tar. 5,393. Prab. 25,12. 107,13. Daçak. 69,8. Bhâg. P. 4,8,43. 5,18,29. 10,20,22. शशकश्चन्द्रमण्डले Pañkat. 160,23. तत्र रात्रौ निवसन्ति पक्षिणः Hit. 9,4. 14,16. 18. 17,14. 22. 38,8. त्वयि ये च निवत्स्यन्ति देवगन्धर्वदानवाः R. 4, 43,45. इत्थं क्रियासु निवसत्यपि यासु तासु पुंसां श्रियः Kathâs. 27,208. निवसन्नन्तर्दारुणि लङ्घ्यो वह्निः Spr. 169. इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः AK. 1,1,2,25. दूरे मार्गान्निवससि (शाल्मले) Spr. 1223. तत्रस्थस्यापि मे नित्यं हृदये त्वं निवत्स्यसि R. Gorr. 2,28,32. — med. MBh. 1,6435. 3,1453. 11430. 13703. 4,287. 324. 7,2400. R. 2,44,12. Bhâg. P. 8,24,18. Hierher könnte man ziehen (mit metrischer Dehnung, die jedoch vom Padap. nicht angenommen wird): न ते ग्रदेवः प्र-

दिवो नि वासते *verweilt, hält aus* ṚV. 10, 37, 3. — 2) *bewohnen, innehaben:* स गतः स्वर्निवासं तं निवसन्मुदितः सुखी MBH. 1, 3537. अमूनि पञ्च स्थानानि कलिः — न्यवसत् BHÂG. P. 1, 17, 40. — 3) *beiwohnen* (geschlechtlich): रोहिणीं निवसति (सोमः) MBH. 9, 2023. — 4) *sich dauernd in einer Lage befinden, sich unterziehen:* अज्ञातवासं न्यवसद्राज्ञस्तस्य निवेशने MBH. 3, 2653. कथं त्वनर्हा वनवासमाश्रमे निवत्स्यते (v. l. सहिष्यते) क्लेशमिमम् 16699. — 5) न मे वैरं निवसते HARIV. 6049 fehlerhaft für न मे वैरं प्रवसति, wie die neuere Ausg. hat. — Vgl. निवसति fgg., निवस्तव्य, 1. निवास, निर्वासिन्. — caus. 1) *verweilen lassen, beherbergen, aufnehmen* (in seinem Hause): (तान्) न्यवासयत्स्वगेहेषु BHÂG. P. 10, 45, 16. 71, 44. 75, 28. पर्यङ्के *setzen auf* 81, 17. — 2) *bewohnt machen, bevölkern:* संनिवासान् MBH. 12, 4366. — 3) *zur Wohnstatt wählen, bewohnen:* निवासयामास तदा लङ्काम् R. 7, 3, 31. — Vgl. 1. निवासन.

— अधिनि *zur Wohnstatt wählen:* सुरनदीम् Spr. 1001.

— संनि *zusammen wohnen, — leben:* यादृशैः संनिवसति Spr. 4874. ततः सतां संनिवसेत्समागमे 5116. *wohnen:* यस्मिन्संनिवसेत्पुरे MBH. 14, 564. R. in LA. (III) 64, 18 (in den drei Ausgg., die uns zu Gebote stehen, स न्यवसत्, nicht संन्यवसत्).

— निस् *ausleben, zu Ende leben:* वासमिमं निरुष्य MBH. 3, 915. वने वासमिमं निरूष्य (निरुध्य ed. Calc.) 962 (nach der Lesart der ed. Bomb.). कृच्छ्रं वासम् 5, 646. दुर्गवासम् 14, 749. तस्मिन्गुरौ गुरुवासं निरुष्य 14, 749. — निर्वत्स्यामि 4, 24 fehlerhaft für निर्वत्स्यामि, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निर्वास. — caus. 1) *aus seinem Wohnorte entfernen, vertreiben, verbannen:* पुरात् M. 9, 225. राष्ट्रात् MBH. 2, 2644. R. 1, 39, 22 (40, 20 GORR.). राष्ट्राद्वनवासाय 2, 21, 4. वनम् 39, 11. R. GORR. 2, 3, 25. 18, 6. 81, 18. 3, 79, 47. Spr. 2186. RAGH. 14, 67. UTTARAR. 87, 10 (112, 6). KATHÂS. 4, 68. 10, 41. 23, 25. 24, 76. fg. 39, 56. 232. 51, 73. 57, 118. RÂGA-TAR. 1, 115. 344. 3, 288. 330. 6, 342 (निर्वासिता देशात् zu schreiben). DAÇAK. 82, 14. BHÂG. P. 3, 1, 15. 4, 8, 65. *entlassen:* मुखनिर्वासितो वायुः 5, 16, 25. देह्री निर्वास्यते कदा नु 3, 31, 17. — 2) *sich vertreiben, zubringen, verleben:* मृगयाविहारनिर्वासितसकलदिवस Z. d. d. m. G. 14, 574, 16. — Vgl. 1. निर्वासन, निर्वासनीय (auch DAÇAK. 82, 12), निर्वास्य.

— परि *verweilen:* द्वादशरात्रं परिवसत्युखावदर्धिं बिभ्रत् KÂTJ. ÇR. 22, 1, 21. चतुर्दश हि वर्षाणि पर्युष्य विजने वने R. GORR. 2, 52, 18. 3, 15, 25. तथा परिवसंश्चैव राघवः सह सीतया *lebend* 29. एतान्यथावत्कृतप्रायश्चित्तानपि संसर्गितया न परिवसेत् so v. a. *er verkehre nicht mit diesen* KULL. zu M. 11, 190. भर्ता राजकुले कार्यवशात्पर्युषितः *übernachtete* PAÑKAT. 40, 13 (ed. orn. 36, 13). गङ्गापर्युषित *an der* Gaṅgâ *die Nacht zubringend* MÂRK. P. 9, 2. पर्युषित *über Nacht gelegen, — gestanden, gestrig,* überh. *abgestanden, alt, verdorben;* von Speisen und anderen Stoffen GOBH. 3, 5, 4. M. 4, 211. 5, 24. JÂǴN. 1, 167. 169. BHAG. 17, 10. MBH. 12, 1323. 13, 5048. SUÇR. 1, 65, 8. 81, 6. 174, 8. 191, 9. 2, 247, 13. Verz. d. Oxf. H. 281, *b*, 43. Spr. 2883. MÂRK. P. 34, 57. 35, 1. पर्युष्टा वनमाला BHÂG. P. 11, 6, 12. दशरात्रपर्युषित *zehn Tage gestanden, — alt* SUÇR. 1, 174, 19. निशा° 2, 414, 14. 437, 1. रात्रि° 1, 158, 18. रात्रौ गोमूत्रपर्युषितम् *über Nacht in Kuhharn gelegen* 2, 72, 9. पर्युषितं वाक्यम् *ein alt gewordenes* so v. a. *nicht zur Zeit gelöstes Wort* (= प्रतिज्ञातकालातिलङ्घि NILAK.) MBH. 3, 2865. अपर्युषितपाप *dessen Sünden nicht über Nacht bestehen* d. i. *alsbald gesühnt sind* (= निःशेषित NILAK.) 1, 6456. — Vgl. परिवसथ, परिवास. — caus. *über Nacht stehen lassen* ÂÇV. GṚHJ. 2, 8, 4.

— प्र 1) (*für die Nacht seine Wohnung verlassen*) *verreisen, sich entfernen:* प्र प्रवासेव वसतः ṚV. 8, 29, 8. दीक्षितविमितात् TS. 6, 2, 5, 5. TBR. 3, 11, 8, 2. गृहेभ्यः ÇAT. BR. 11, 3, 1, 5. MBH. 4, 129. संवत्सरं प्रोष्य ÇAT. BR. 14, 9, 2, 8. पितरं प्रोषुषमागतम् 12, 5, 2, 8. 2, 4, 1, 6. VS. 3, 42. AIT. BR. 7, 2, 12. व्रात्यां प्रवसन्ति PAÑKAV. BR. 17, 1, 2. प्रवत्स्यन् ÂÇV. ÇR. 2, 5, 1. वर्षगणं प्रोवास KHÂND. UP. 4, 4, 5. प्रवासां चक्रे 10, 2. अप्रोषिवान्गृहपतिः ÇÂÑKH. ÇR. 8, 24, 3. प्रोष्यागच्छताम् ved. Cit. bei MALLIN. zu RAGH. 1, 49. M. 9, 74. MBH. 3, 13084. 16811. HARIV. 8931. R. 7, 72, 12. Spr. 4816. RAGH. 11, 4. BHÂG. P. 1, 11, 32. प्रोषित *von Hause abwesend, in der Fremde weilend, verreist:* प्रोषितश्चेत्प्रेयात् KÂTJ. ÇR. 25, 8, 9. 3, 4, 29 (अ°). M. 9, 75. fg. JÂǴN. 1, 84. MBH. 1, 750. R. 2, 72, 2. 49. 76, 6. 103, 38 (111, 43 GORR.). 106, 7. R. GORR. 2, 17, 32. MṚKKH. 84, 2. ṚT. 6, 9. MEGH. 97. VARÂH. BṚH. S. 78, 6. 90, 14. KATHÂS. 16, 105. KAUSH. UP. Einl. 2, 6. DAÇAK. 59, 9. BHÂG. P. 8, 16, 8. पतङ्गे प्रवसति *wenn die Sonne vom Himmel verschwindet, nicht mehr scheint* VARÂH. BṚH. S. 27, 2. प्रोषित *untergegangen* (*heliakisch*): इन्दुज 7, 17. न मे वैरं प्रवसति (so die neuere Ausg.) एकाहमपि *verschwinden, aufhören* HARIV. 6059. प्रोषितपत्त्रलेख *verschwunden, verwischt* RAGH. 6, 72. — 2) *verweilen, sich aufhalten:* प्रवत्स्यति सुखं वने R. 2, 36, 8. यत्र नित्यं प्रवसति (प्रभवति ed. Bomb.) स्वयं देवः प्रजापतिः MBH. 6, 466. अत्र वटे यक्षिणी प्रवसति GAUḌAP. zu SÂṀKHJAK. 4. — 3) = caus. *verbannen:* रामं वनवासे प्रवत्स्यति R. 2, 41, 6. — Vgl. प्रवसथ fg., °वस्तव्य, °वास, °वासिन्, अप्रोषिवंस्. — caus. etwa *entfernen* ṚV. 3, 7, 3. *Jmd aus seinem Wohnort vertreiben, verbannen* M. 8, 123. 284. 352. 9, 289. 10, 96. JÂǴN. 2, 294. MBH. 1, 5694. 6, 4089. HARIV. 10311. R. 1, 70, 28. 2, 49, 6. KATHÂS. 39, 203. 56, 306. 60, 22. RÂǴA-TAR. 6, 41. — तीर्थयात्राप्रवासितः KATHÂS. 73, 222 fehlerhaft für °प्रवासतः. — Vgl. प्रवासन 1).

— अपप्र s. अपप्रोषित.

— विप्र *verreisen, in die Fremde ziehen, in der Fremde weilen:* विप्रोष्य *nach einer Reise* GOBH. 2, 8, 21. ÇÂÑKH. GṚHJ. 2, 16. M. 2, 132. 217. स तत्र (जनपदप्रदेशे) बहूनि वर्षाणि विप्रवसेत् SADDH. P. 4, 8, *a*. वनं विप्रोषिते मयि R. GORR. 2, 26, 37. 32, 28. चिरविप्रोषित *lange in der Fremde weilend, — geweilt habend* 111, 43 (103, 38 SCHL.). MBH. 3, 2712. HARIV. 4779. KATHÂS. 64, 114. राज्यविप्रोषित so v. a. *ausserhalb des Reichs in der Verbannung lebend* MBH. 4, 7. विप्रोषितकुमारं राज्यम् RAGH. 12, 11. भिक्षुभिर्विप्रवसिते *nachdem die Bettler fortgezogen waren* BHÂG. P. 1, 6, 2. 5. — caus. *verbannen:* राष्ट्रात् M. 8, 219. JÂǴN. 2, 187. 270. MBH. 3, 1404. 8892. *verscheuchen, entfernen:* विप्रवासितकल्मष R. 2, 74, 30.

— प्रति *seinen Wohnsitz haben:* समुद्रकुक्षिमाश्रित्य प्रतिवसत्युत MBH. 3, 12063. देवानामुपरिष्टाच्च गावः प्रतिवसन्ति वै 13, 3805. MṚKKH. 121, 1. PRAB. 83, 11. PAÑKAT. 26, 12. 32, 23. 43, 1. 53, 18. 62, 21. 77, 9. HIT. 17, 22, v. l. 18, 8. 26, 13. 27, 11. 59, 14. 79, 7. 110, 2. Z. d. d. m. G. 14, 573, 3. 19. fg. Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, 7. VET. 8, 17. fg. DHÛRTAS. 77, 11. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 102. यत्रेमाः शरदः सर्वाः सुखं प्रतिवसेमहि MBH. 3, 921. R. 3, 53, 23. — Vgl. प्रतिवसथ, °वासिन्. — caus. *beherbergen:* एतान्गृहे न प्रतिवासयेत Spr. (II) 5. *ansässig machen:* प्रति मर्तां अवास-

यो दमूना: RV. 3,1,17.

— वि 1) *sich ausquartieren, sich fortbegeben:* स्वयं पुराद्यवात्सीग्यत् Bhâg. P. 3,2,16. (देहो) इच्छन्नितो विवसितुम् 31,17. ब्रह्मचर्यम् *in die Lehre gehen* Khând. Up. 4,4,1. व्युषित *verreist, abwesend* Bhâg. P. 4,28, 20. 6,11,26. — 2) *zubringen, verleben:* अरण्ये ते विवत्स्यन्ति चतुर्दश समाः R. 2,23,23. 89,1. 92,1. तपत्या सहितं व्युषितं शाश्वतीः समाः MBh. 1,6628. तां व्युषितो रात्रिम् 3,3009. अन्यथा व्युषिताः (व्युषिताः ed. Bomb.) पूर्वम् 12,4124. सा व्युष्टा रजनीं तत्र पितुर्वेश्मनि 3,2721. — 3) *bewohnen:* इत्वाकुव्युषिता R. 6,112,50. — व्युषित = उषित H. an. 3, 253. Med. t. 96. व्युष्ट = उषित Trik. 3,3,102. Med. t. 28. = पर्युषित H. an. 2,99. — 4) Âçv. Çr. 11,5,1 ist st. वत्स्यन्तः zu lesen वत्स्यन्तः gegen die Ausg. und die Hdschrr. — Vgl. विवास. — caus. 1) *zum Hause —, zum Lande hinausjagen, verbannen* M. 8,123. Jâgn. 1,338. 2,82. MBh. 1,5675 (med.). 5917. पुत्रान्विवास्यतः pass. 2,2610. 3,8895. 5,3440. R. 1,1,23. 2,13,6. 24,4. 33,10. 36,28. 43,3. 8. 48,28. 58,22. 61,23. 84,4. R. Gorr. 1,1,26. 2,20,27. 33,11. Daçak. 2,21. Kathâs. 4,84. Bhâg. P. 9, 11,15. Bhatt. 4,35. *fortsenden, entsenden* MBh. 3,8277. — 2) (eine Zeit) *mit Erzählungen —, mit Gesprächen zubringen:* रात्रिम् P. 3,1,26, Vârtt. 5, Schol. — Vgl. विवासन, विवास्य.

— निर्वि *zubringen, verleben:* द्वादशेमानि वर्षाणि वने निर्व्युषितानि नः MBh. 5,3424.

— सम् 1) act. und med. *sich beisammen aufhalten, zusammen wohnen, mit Jmd verkehren:* देवा अमावास्ये संवसन्त: AV. 7,79,1. 80,1. संवसानाः स्वसारः RV. 4,6,8. 9,26,4. आभिः प्रजाभिरिह संवसेय TBr. 1,2, 1,21. Çat. Br. 10,2,6,16. 13,8,1,3. Lâty. 4,4,22. Nir. 4,27. संवत्सरं संवत्स्यथ Praçnop. 1,2. M. 9,77. तत्रं संवस्तुमर्हसि so v. a. *zusammenkommen* R. 5,7,27. तान्वशीकृत्य संवसेत् Kâm. Nîtis. 12,40. Bhâg. P. 3, 2,8. 6,4,24. न संवसेत्पतितैः M. 4,79. 246. Jâgn. 3,210. MBh. 12,470. R. 5,88,2. Bhâg. P. 9,14,40. न च तैः सह संवसेत् Jâgn. 3,15. 227. MBh. 4,109. R. 3,30,13. Spr. 1037, v. l. mit acc. der Person M. 11,190. Jâgn. 3,299. — 2) *sich aufhalten, seinen Wohnsitz haben, leben:* क्षितौ च ये चाधस्तात्संवसन्ते MBh. 12,11809. तथा संवसतस्तस्य मुनीनामाश्रमे सुखम् R. 3,15,28. स्वभूमौ नैव संवसेत् Verz. d. Oxf. H. 269,a,38. — 3) *zubringen* (eine Zeit): तां समुष्य निशां कृत्स्नां प्रभाते प्रत्यबुध्यत R. 3,12,1. वार्षिकं समुवास 7,51,2. तृणामिव पुलिने यमस्वसुस्तां समुषितः — निशाम् Bhâg. P. 3,4,27. — Vgl. संवसथ u. s. w. — caus. 1) *zusammen wohnen lassen, zusammenbringen:* (सोमम्) सं गोभिर्वासयामसि RV. 9, 8,5. प्रजा अग्ने संवासय । आशाश्च पशुभिः सह TBr. 1,2,1,13. Lâty. 3,6,1. — 2) *beherbergen* MBh. 13,7418.

— अधिसम् *sich beisammen aufhalten, zusammen wohnen:* तस्यां देवा अधि संवसन्त उत्तमे नाके इह मादयन्ताम् TS. 3,5,1,1 = TBr. 3,1,1,12.

— अभिसम् *sich vereinigen um:* अग्निं गृहपतिमभि संवसानाः TBr. 3, 7,1,4. स कृत्तिकाभिरभिसंवसानः 1,1,1. Lâty. 2,9,1.

6. वस् (wohl = 5. वस्) etwa *Wohnplatz* oder *Ansässiger:* वसां (= वसतां प्राणिनाम् Sâj.) राजानं वसतिं जनानाम् *der Häuser (Angesessenen) Herrscher, der Leute Heimath* RV. 5,2,6. Es könnte auch वसं angenommen werden.

7. वस् (वस्ते), वसिष्व, वावसे (ववसे Padap.), वस्तोस्; *den Angriff oder Lauf richten gegen, losstürmen auf:* मध्ये वसिष्व तुविनृम्णोर्वोः (nämlich दासस्य) *ziele mitten zwischen seine Schenkel* RV. 8,59,10. आजावद्रिं वावसानस्य नर्तयन् *indem er den Schleuderstein des Angreifenden oder Zielenden schnellte* 1,51,3. रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नांहः *dem Erwerb nachjagend* 6,11,6. रक्षा णो अग्निमग्रुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः *wehre dem gefrässigen Feuer, dass es nicht wie ein Löwe auf die Werke* (d. h. Geräthe, Besitzthümer) *im Hause sich stürze* 1,174,3.

— अनु *den Lauf richten nach:* सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति *er eilt nach der linken Seite* (wo der Anrufende sich denkt): *unsern Schmaus verschmäht er nicht* RV. 8,4,8.

8. वस्, वासयति (स्नेहच्छेदापहरणेषु, स्नेहन v. l. st. स्नेह; अवहरण und उपहरण v. l. st. अपहरण; वधे Vop.) Dhâtup. 33,70.

— उद् vgl. उद्वासन 2).

— नि, निवासित *um's Leben gebracht* Spr. 2440, v. l.

— निस् vgl. 1. निर्वासन 2).

— परि *rings abschneiden, ausschneiden:* यावद्लोहितं तावत्परिवासय Ait. Br. 2,14. औदुम्बरीम् Çat. Br. 3,6,1,6. यूपम् 4,17. वपाम् 8, 2,18. Kâty. Çr. 6,1,23. 6,13. मूलतः शाखाम् Mahîdh. zu VS. 1,17. Schol. zu Kâty. Çr. 1,3,23. — Vgl. परिवासन.

— प्र vgl. प्रवासन 2).

9. वस्, वस्यति (स्तम्भे) Dhâtup. 26,105.

वस nom. act. von 5. वस् in दुर्वस.

वसति (von 5. वस्) f. Unâdis. 4,60. 1) *das Haltmachen für die Nacht, Uebernachten; das Verweilen, Aufenthalt;* = वास, अवस्थान Trik. 3,3,182. H. an. 3,293. Med. t. 151. न कंचन वसतौ प्रत्याचक्षीत Taitt. Up. 3, 10,1. Çat. Br. 14,9,1,5. तिस्रः — मार्गे वसतीरुषित्वा *drei Mal übernachtend* Ragh. 7,30. तस्य मार्गवशादेका बभूव वसतिर्यतः 15,11. तवेह वसतिः कुतः *wie kannst du hier die Nacht über bleiben?* Sâh. D. 332,10. ग्रामीणैर्जनतो जनस्य वसतिर्ग्रामे निषिद्धा यथा Spr. 1335. शर्वरीम् — तवाश्रमे । उषिताः स्नेहवसतिम् (उषिता स्मो ह व° ed. Bomb.) R. 2,54,36. निवेशनानां क्षेत्राणां वसतीनां च दातारः MBh. 13,1672. एकान्ते *das Wohnen an einsamem Orte* Spr. 2279. रम्यं हर्म्यतलं न किं वसतये 2589. Kathâs. 115,76. MBh. 3,13282. अरण्ये 8,4252. पितृमन्दिरे Spr. 5373. अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे Çâk. 47. आवासे नैकस्मिन्वसतिश्चिरम् Mârk. P. 28,29. गर्भेषु Spr. 2734. चरिष्यसि — वनेषु वसतीः पुनः so v. a. *wohnen, sich aufhalten, leben* MBh. 3,2044. यथा राज्यात्परिभ्रष्टो वसामि वसतीरिमाः 5,2620. 3,455. त्वमिवाज्ञातवसतिं चन्द्रो वसति वार्षिकीम् Hariv. 3571. उवास दुःखवसतिम् *ein Leben voller Leiden leben* MBh. 3,16135. दुःखवसतिमिमां प्राप्तास्मि शाश्वतीम् 5,7373. स पद्मे पद्मनाभस्य रोचयामास वसतिम् Hariv. 2927. गोलोक° adj. Pañkar. 4,8,22. तत्र स्कन्दं नियतवसतिम् Megh. 44. वसतिं कर् *sich niederlassen:* चक्रे वसतिं रामगिर्याश्रमेषु 1. Râga-Tar. 2,166. कृतवसतिरमुष्मिन्नेव तस्थौ पुरे सः Kathâs. 29,194. कृतवसतयो यत्र धनिनः *wo reiche Leute wohnen* Spr. 770. Pañkat. 123,16. यस्यास्तोये कृतवसतयः — हंसाः Megh. 74. वसतिं प्रच्छ् dass. Kathâs. 10,1 (für die Nacht). 24,107. वसतिं बन्ध् dass. Râga-Tar. 2,97. — 2) *Nest* RV. 1,25,4. 33,2. उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् 124,12. 6,64,6. 3,3. विर्यानां वसताविव 9,62,15. 10,

97,5. 127,4. AV. 6,83,1. — 3) *Aufenthaltsort, Wohnung, Haus, Behausung* AK. 3,4,14,69. H. 991. H. an. Med. ṚV. 1,31,15. 5,2,6. VS. 18,15. ब्राह्मणं वसत्यै नापरुन्ध्यात् TBr. 3,7,3,3. 2,3,5,4 (आवसति vom Comm. angenommen). Çat. Br. 6,8,1,12. 14. 13,4,2,17. Vikr. 137. Spr. 3684. यत्तेश्वराणाम् Megh. 7. रमणा॰ 38. Kathâs. 16,30. वसतिं निजाम्। प्रविवेश 93. 24,110. 28,189. 38,157. 45,150. 49,236. 53,73. 58,13. 79,31. 35. 86,108. Râǵa-Tar. 3,331. 4,129. 431. 5,481. 6,237. Prab. 80,7. Nalod. 4,29. जीवितेश॰ Ragh. 11,20. भुजंगमानाम् 6,77. Râǵa-Tar. 1,203. Verz. d. Oxf. H. 38,*b*, No. 95. *Niederlassung* Mârk. P. 49,47. fg. *ein* Ǵaina-*Kloster* Halâj. 5,21. *Behausung* so v. a. *eine Stätte von*, — *für:* वसुसंपदाम् Kumâras. 6,37. अवज्ञाविक्रमित॰ Spr. 711, v. l. धर्मक॰ Kathâs. 67,37. तच्छङ्का॰ Râǵa-Tar. 4,93. शौर्यशृङ्गार॰ 5,233. Dhûrtas. 73,16. 83,2. — 4) *Nacht* AK. H. 142. H. an. Med. Halâj. 1,108. न शेते वसतीरमर्षात् MBh. 3,14752. 15,804. तिसृणां (so die ed. Bomb.) वसतीनां हि स्थानं परमदुश्चरम् 3,16718. — Vgl. गर्भ॰, दुर्वसति, पितृ॰, प्रति॰, रात्र॰, सत्त्र॰, सत्र॰.

वसतिद्रुम m. *ein Baum, unter dem man auf der Reise zu übernachten pflegt*, Ragh. 12,14.

वसतीवरी (von वसति) adj. pl. ॰र्यस् nämlich आपस् heisst *das am Vorabend des* Soma-*Opfers aus Fliessendem geschöpfte Wasser, übernächtiges Wasser* Ind. St. 10,368. Ait. Br. 2,20. TS. 6,4,2,1. Çat. Br. 3,6,1,26. 9,2,2. 16. 3,12. 4,25. Kâtj. Çr. 8,9,7. 17. 9,3,12. 15. Lâtj. 1,9,8. 3,4,4. Âçv. Çr. 4,12,8.

1. वसन (von 3. वस्) m. n. Siddh. K. 249,*a*,10. 1) n. *Gewand, Kleid; Tuch, Zeug* AK. 2,6,3,17. H. 666. = वस्त्र und छादन an. 3,410. Med. n. 121. नवा मातृभ्यो वसना जहाति ṚV. 1,95,7. Âçv. Çr. 4,4,6. तस्योरोर्वसनमपोच्छाद्य 5,6,10. Lâtj. 2,6,1. 8,23. आविक 8,6,20. अहत 9, 8,4. Kauç. 54. शुचि Gobh. 2,8,2. क्षौमशाणकार्पासौर्णा 10,5. कृष्ण॰ Kauç. 31. 83. Nir. 8,9. Khând. Up. 8,8,5. Kaush. Up. 2,15. M. 2,174. वसनस्य दशा 3,4. जीर्णा 10,125. Suçr. 1,168,14. MBh. 1,5104. 5,5332. R. 3,55, 14. 5,19,10. 36,37. Megh. 42. Vikr. 115. दिशो ऽपि वसनम् Spr. 1339. 4702. वसनं च वल्कलम् 2727. शीते ऽतीते वसनम् 2989. 2045. 3322. 4462. 4795. Varâh. Bṛh S. 52,3. 104,27. Gît. 1,12. Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,24. पीत॰ adj. Bhâg. P. 10,16,9. कोशकार॰ Varâh. Bṛh. 27 (25), 31. विराग॰ MBh. 2,824. नानाविराग॰ R. 4,33,28. कुचयुग्मे विस्रस्तवसने Kathâs. 55,119. मलिन॰ (उत्सङ्ग) Megh. 84. गले बद्ध्वा च वसनम् Pańkat. 1,8,14. du. *Ober- und Untergewand* R. 2,37,8. 39,6. 55,17. Çâk. 180. एक॰ adj. MBh. 1,5078. 3,2589. प्रावार॰ adj. MBh. 2,2071. चीर॰ adj. Hariv. 10248. R. 2,52,64. 75,12. 101,21. R. Gorr. 2,37,14. 81,18. 99,14. 4,1,8. Kathâs. 4,69. Am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 1,5078. 3,2959. 7,896. 13,5865. R. Gorr. 1,65,7. 5,10,1. 13,35. 22,30. 54,15. Kâm. Nîtis. 7,49. AK. 2,6,1,17. H. 531. Kathâs. 38,124. Pańkat. 3,7,37. उर्वी समुद्रवसना (v. l. ॰रसना) *meerumkleidet* Çâk. 68. विकल्प॰ adj. *gehüllt in* so v. a. (einer Lehre) *anhängend* Bhâg. P. 1,17,19. वसन n. und वसना f. = स्त्रीकटीभूषण Çabdar. im ÇKDr. — 2) n. *Belagerung* Ind. St. 10,165. 198. — Vgl. चर्म॰, नील॰, भद्र॰, मुक्त॰, वि॰, सु॰ und दीक्षित॰ unter दीक्षित.

2. वसन (von 5. वस्) n. *das Verweilen, Aufenthalt, das Wohnen;* = निवास Çabdar. im ÇKDr. अरण्य॰ MBh. 5,1680.

वसनमय (von 1. वसन) adj. (f. ई) *aus einem Stücke Zeug bestehend:* रशना Lâtj. 8,11,23.

वसनवत् (wie eben) adj. *bekleidet:* उपेत्य वसनवतः स्वाहाकारान्ताभिः Gobh. 4,9,6.

वसनार्ण (1. वसन + अर्ण) n. P. 6,1,89, Vârtt. 6. Vop. 2,9.

वसनार्णव adj. (f. आ) *meerumkleidet:* मही R. 7,11,16; vgl. समुद्रवसना unter 1. वसन 1).

वसन्त (von 2. वस्) Uṇâdis. 3,128. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. *Frühling* (*die Licht bringende Jahreszeit*) AK. 1,1,2,18. H. 156. Halâj. 1,113. ṚV. 10,90,6. 161,4. AV. 6,55,2. 8,2,22. 12,1,36. VS. 10,10. 21,23. TBr. 1,1,2,6. Çat. Br. 1,5,3,9. 13. 2,1,3,1. 5. fgg. वसन्ते दावाश्चरन्ति 11, 2,7,32. Kâtj. Çr. 7,1,4. वसन्ते पर्वणि ब्राह्मणा आदधीत Âçv. Çr. 2,1,12. Gṛhj. 4,8,2. Khând. Up. 2,5,1. Maitrjup. 6,33. मधुमाधवौ वसन्तः Suçr. 1,19,9. 22,8. 135,12. Mṛkkh. 2,4. Ṛt. 6,2. 3. 22. 29. fg. Spr. 1843. 2759. 4409. Varâh. Bṛh. S. 27,1. 86,26. Gît. 1,26. Brahma-P. in LA. (III) 52, 20. Râǵa-Tar. 3,163. Bhâg. P. 8,8,11. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,28. ॰वर्णन 129,*b*,15. 349,*a*, No. 820. ॰विलास 129,*b*, No. 234. ॰व्रत 19,*b*,28. fg. ॰सच्चरितमध्ययनं वसन्ताध्ययनम् Pat. zu P. 4,2,63. ॰समय R. 1,11,1. Ṛt. 6,19. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,27. वसन्तर्तुप्रवर्तन 142,*a*, No. 290. ॰काल R. 3,79,9. ॰मास Ind. St. 10,298. Personificirt (im Gefolge des Liebesgottes) Brahma-P. in LA. (III) 51, 5. 52,20. Wilson, Sel. Works II,231. ॰योध *der Frühling als Kriegsmann* Ṛt. 6,1. — 2) m. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑ — ⏑⏑ — ⏑ Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 10). — 3) m. Bez. *eines best.* Râga Saṅgîtadâm. im ÇKDr. Gît. S. VIII und 6. — 4) m. Bez. *eines best. Tactes* Saṅgîtadâm. im ÇKDr. — 5) m. *Durchfall* Çabdar. im ÇKDr. — 6) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2338. — Vgl. सु॰, वासन्त, वासन्तिक.

वसन्तक (von वसन्त) 1) m. *a*) *ein best. Baum, eine Art* Çjonâka Râǵan. im ÇKDr. — *b*) N. pr. eines Mannes Kathâs. 9,44. 10,213. 12,40. 21,3. 23,29. 34,115. 52,5. am Ende eines adj. comp. f. आ 16,48. — 2) f. वसन्तिका N. pr. einer Waldnymphe: ॰परिणय Mack. Coll. I, 111.

वसन्तकुसुम m. *Cordia latifolia* und *Myxa* Çabdam. im ÇKDr.

वसन्तकुसुमाकर m. Bez. *einer best. Mixtur* Vṛddhajogataraṅgiṇî im ÇKDr.

वसन्तगन्धि oder ॰गन्धिन् m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,16.

वसन्तघोषिन् 1) adj. *den Frühling ankündigend.* — 2) m. *der indische Kuckuck* Wilson nach Çabdârthak.

वसन्तज 1) adj. *im Frühling hervorkommend* u. s. w. — 2) f. आ *a*) *eine best. Schlingpflanze*, = वासन्ती Râǵan. im ÇKDr. — *b*) *Frühlingsfest, ein Fest zu Ehren* Kâmadeva's Wilson.

वसन्ततिलक 1) n. *die Zierde des Frühlings:* पुष्पं वसन्ततिलकं तिलकं वनाल्याः Khandom. 65. als n. Bez. *der Blüthe des* Tilaka: ॰द्युतिमूर्धज Varâh. Bṛh. S. 104,33. An beiden Stellen mit Anspielung auf das gleichnamige Metrum. — 2) n. und f. आ Bez. *eines best. Metrums: 4 Mal* — — ⏑ — ⏑⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑ — — Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 4). Ind. St. 8,387. Çrut. 37 (mit Cäsur nach der 8ten Silbe nach einer Lesart). — 3) n. Bez. *einer best. Mixtur* ÇKDr. nach Vṛttaratnâvalî. —

4) m. N. pr. eines Mannes **Kathâs.** 113,10.

वसन्ततिलकतन्त्र n. Titel eines buddhistischen Werkes, das sich handschriftlich in der Kais. Bibl. zu Paris befindet.

वसन्तदूत 1) m. *der Bote des Frühlings: a) der indische Kuckuck. — b) der Mangobaum.* — c) Bez. *des fünften* Râga. — 2) f. ई *die Botin des Frühlings: a) Gaertnera racemosa* (st. अभियुक्त ist in **Med.** अतिमुक्त zu lesen). — *b) Bignonia suaveolens* H. an. 5,21. fg. **Med.** t. 234. fg. — *c) eine der Premna spinosa ähnliche Pflanze* (गणिकारी). — *d) Kuckucksweibchen* **Râǵan.** im **ÇKDr.**

वसन्तद्रु m. *der Mangobaum* **Trik.** 2,4,9. **Çabdam.** im **ÇKDr.**

वसन्तपञ्चमी f. Bez. *eines Frühlingsfestes am 5ten Tage in der lichten Hälfte des* Mâgha Verz. d. Oxf. H. 284,*b*,37. **Wilson,** Sel. Works II, 191. fg. 209. 223. 227. 229.

वसन्तपुष्प n. *Frühlingsblume* **Kumâras.** 3,53.

वसन्तबन्धु m. *der Freund des Frühlings* d. i. *der Liebesgott* **Daçak.** 91,13. fg.

वसन्तभानु m. N. pr. eines Fürsten **Daçak.** 192,21.

वसन्तमहोत्सव m. *das grosse Frühlingsfest* Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,7. — Vgl. वसन्तोत्सव und वसन्तसमयोत्सव.

वसन्तमालिका f. *ein best. Metrum: 4 Mal* ◡◡–◡◡–◡–◡––, ◡◡––◡◡–◡–◡–– Ind. St. 8,363.

वसन्तयात्रा f. *der im Frühling stattfindende feierliche Umzug* **Wilson,** Sel. Works I, 323.

वसन्तराज m. N. pr. eines Grammatikers Verz. d. Oxf. H. 181,*a*, No. 412. Verfassers eines Çâkuna 399,*b*, No. 168. Ind. St. 2,252. Verz. d. B. H. No. 896. fg. 899. **Hall** in der Einl. zu **Vâsavad.** 45.

वसन्तराजीय n. *ein von* Vasantarâǵa *verfasstes Werk* **Hall** in der Einl. zu **Vâsavad.** 44. fg. **Mallin.** zu **Çiç.** 2,8.

वसन्तलता f. N. pr. eines Frauenzimmers Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,21.

वसन्तलेखा f. desgl. **Sâh. D.** 300,20. **Râǵa-Tar.** 7,957. 1592.

वसन्तवितल m. Bez. einer Form Vishṇu's **Wilson,** Sel. Works I, 141.

वसन्तव्रण *die Blattern* **Trik.** Ind. zu 2,6,15.

वसन्तशेखर m. N. pr. eines Kiṁnara Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,3.

वसन्तसख m. *der Freund des Frühlings* d. i. *der Liebesgott* **ÇKDr.** angeblich nach **Halâj.**

वसन्तसमयोत्सव m. *Frühlingsfest, die frohe Zeit des Frühlings* **Kathâs.** 122,8. — Vgl. वसन्तोत्सव und वसन्तमहोत्सव.

वसन्तसेन 1) m. N. pr. eines Fürsten **Kathâs.** 33,53. — 2) f. आ ein Frauenname **Mṛkkh.** 2,4. 9,16. **Hall** in der Einl. zu **Vâsavad.** 37.

वसन्ता loc. neben ग्रीष्मे u. s. w. (etwa von वसन्ति) *im Frühling* P. 7,1,39, Schol. TS. 2,1,2,5. 4,1. TBr. 1,1,2,7. 4,10,10. **Kâṭh.** 10,2. 13,1. 7. 21,7. 25,4. 34,9. 36,2. **Çat. Br.** 7,2,4,26 (hier oxyt.).

वसन्ताध्ययन n. = वसन्तसहचरितमध्ययनम् **Pat.** zu P. 4,2,63.

वसन्तोत्सव m. *das Frühlingsfest* **Wilson,** Sel. Works I, 25. II, 223. **Çâk.** 78,15. **Kathâs.** 4,49. 43,218. — Vgl. वसन्तमहोत्सव und वसन्तसमयोत्सव.

वसर्हन् (वसर् [vgl. वासर] + हन्) adj. als Beiw. des Windes (des Feuers oder der Sonne nach **Sâj.**; vgl. auch zu TS. 2,1,11,1) etwa *früh treffend* d. h. *in der Morgenfrühe die Nachtunholde vernichtend:* ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातः **ṚV.** 1,122,3.

वसवान (von वसु) m. *Güterbesitzer, Schätzebewahrer:* die Âditja heissen वस्वो वसवानाः **ṚV.** 1,90,2. त्वं (इन्द्र) सत्यो वसवानः सहोदाः 174,1. स न एनीं वसवानो (irrig als voc. betont) रयिं दाः 5,33,6. 8,88,8. मा रिषण्यो वसवान वसुः सन् 10,22,15.

वसव्य (wie eben) 1) n. *Güterbesitz, Reichthum* P. 4,4,140 nebst Vârtt. 2 und 3. **Kâç.** zu P. 5,4,30. **ṚV.** 2,9,5. बहु ते वसव्यम् 13,13. 4,55,8. 6,1,3. धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः 13,4. 60,1. 14. 7,37,3. 56,21. 10,74,3. हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः (so wird zu betonen sein) AV. 7,26,8. — 2) adj. देवा वसव्याः wohl *die reichen;* so werden Agni, Soma und Sûrja angeredet TS. 2,4,8,1.

वसा und in TS. वसा (bisweilen auch वशा geschrieben; vgl. 2. वश) f. gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. **Vop.** 26,192. 1) *Speck, Fett, Schmalz, adeps* AK. 2,6,2,15. H. 624. **Halâj.** 3,13. VS. 6,19. 25,9. रसं एष पंख्नां यद्वसा TS. 6,3,11,1. 6,6,2. **Çat. Br.** 12,8,3,12. **Kâtj. Çr.** 1,8,21. 6,8,12. 8,8,34. **Lâṭj.** 5,4,16. °होमे TS. 6,3,11,1. **Çat. Br.** 3,8,3,13. 20. **Âçv. Çr.** 3,6,8. **Kâtj. Çr.** 6,8,8. °ग्रह 19,4,12. 24. **Maitrjup.** 3,4. M. 5,135. **Jâǵn.** 3,94. 106. MBh. 1,5724. 5781. 8251. 8320. 3,12250. 7,1976. R. **Gorr.** 2,83,6. 38. 3,7,7. 4,44,65. **Kâm. Nîtis.** 19,60. **Ragh.** 15,16. Spr. 596. 3335. **Varâh. Bṛh. S.** 27,5. 46,40. 50,22. 55,20. 97,10. **Kathâs.** 34,70. 73,153. fg. **Râǵa-Tar.** 1,260. **Prab.** 5,7. 54,1. **Bhâg. P.** 5,26,22. **Mârk. P.** 91,26. **Pańkar.** 1,3,33. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,3. **Pańkat.** 253,23. **Nalod.** 3,11. अन्तरस्थं स्नेहजातं वसाख्यं स्त्रीणां विशेषतः *Fett* **Suçr.** 1,51,19. वराह° 84,20. शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्तिता 327,10 (vgl. **Mahîdh.** zu VS. 25,9); dazu aber v. l. einer Berl. Hdschr. ताप्यमानस्य वा स्नेहो मेदसः सा वसा मता also *ausgelassenes Fett, Schmalz.* 2,32,15. 36,15. 323,8. कुक्कुट° 364,14. Nach **Çârṅg. Saṁh.** 3,1,1 giebt es viererlei *Fette:* घृत, तैल, वसा und मज्जन्. *Gehirn* **Kathâs.** 25,104. 274. Oefters durch *Lymphe, Serum* und dgl. erklärt **Wise** 360. — 2) N. pr. eines Flusses MBh. 6,338 (VP. 184); vgl. चन्द्र°. — Vgl. महावसा.

वसाकेतु m. N. *eines best. Kometen* **Varâh. Bṛh. S.** 11,29.

वसाढ्य 1) adj. *reich an Fett.* — 2) m. *Delphinus gangeticus* **Trik.** 1,2,24.

वसाढ्यक (वशा° gedr.) m. *Delphinus gangeticus* **Çabdar.** im **ÇKDr.**

वसाति (von 2. वस्) 1) wohl f. *Morgendämmerung:* वसातिषु स्म चरथो ऽसितौ पेत्वाविव Citat in **Nir.** 12,2 (wo in der verdorbenen Erklärung रात्रयो zu bessern sein wird); nach **Durga** zu d. St. so v. a. जनपदाः; vgl. 2). — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes gaṇa राजन्यादि zu P. 4,2,53. MBh. 2,1781 (वशातल ed. Bomb.). 5,889 (चशाति ed. Calc.). 7609. 6,688. 2104. 2584. 7,3254. 8,2070. **Varâh. Bṛh. S.** 14,25. 17,19. Oefters वशाति geschrieben. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Ǵanameǵaja MBh. 1,3746. des Ikshvâku **Hariv.** 664 (वशाति die ältere, शशाद die neuere Ausg.). — Vgl. वासातक, वासात्य.

वसातिक m. pl. = वसाति 2) MBh. 7,6949 (वशा° ed. Calc.).

वसातीय adj. *zum Volk der* Vasâti *gehörig;* m. *ein Fürst der* Vasâti MBh. 7,1789. 1792. 1934, wo die ed. Bomb. पुनश्चैव वसातीयान् st. पुनर्ब्रह्मवशा° der ed. Calc. liest.

वसादनी f. *Dalbergia Sissoo* (शिंशपा) *Roxb.* **Dhanv.** in **Nigh. Pr.**

वसापायिन् 1) adj. *Fett trinkend.* — 2) m. *Hund* ÇABDAM. im ÇKDR. वशा° gedr.

वसापावन् adj. *Fett trinkend* VS. 6,19.

वसामय (von वसा) adj. (f. ई) *aus Fett bestehend:* पिशितवसामय्यो नार्यः Spr. 2828.

वसामूर् N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,*a*,8.

वसामेह m. *Fettharnruhr* ÇÂRÑG. SAÑH. 1,7,43.

वसामेहिन् adj. *die Fettharnruhr habend* SUÇR. 1,273,1. 2,78,13.

वसारोह m. *Pilz (auf Fett wachsend)* HAR. 25. वशा° gedr.

वसाँवि oder °वी (von वसु) f. etwa *Schatzkammer:* वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राश्विना शूर ददतुर्मघानि RV. 10,73,4.

वसि (von 3. वस्) UṆÂDIS. 4,139. = वस्त्र *Gewand* UǴǴVAL.

वसिक्र adj. *leer* H. 1446. — Vgl. वशिक्र, वशिन्.

वसितर् nom. ag. von 3. वस्; वसितृतम = आच्छादयितृतम ÇAÑK. zu KHÂND. UP. 5,1,2. Zur Erklärung von वसिष्ठ gebildet.

वसितव्य (von 3. वस्) adj. *anzulegen, umzuthun:* वल्कलाजिनवस्त्राणि R. GORR. 2,28,23.

वसिन् (von वसा) m. *Fischotter* H. 1350.

वसिर 1) m. *Scindapsus officinalis Schott.*, eine Schlingpflanze (= गजपिप्पली); n. *die Frucht* AK. 2,4,3,16. MED. r. 209. fg. RATNAM. 77. SUÇR. 1,137,15. 20. 145,17. 214,2. 2,52,19. *Achyranthes aspera* MED. — 2) n. *Meersalz* AK. 2,9,41. H. 941. MED. — Wird auch वशिर geschrieben.

वँसिष्ठ (superl. von वसु; vgl. वसीयंस्) P. 6,4,163, Schol. 1) adj. *der treffliche, beste, angesehenste, reichste:* श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् AV. 6,21,2. Agni RV. 2,9,1. 7,1,8. पुरोहित 10,150,5. Indra 2,36,1. 10,15,8. 95,17. यूयं तेषां वसिष्ठा भूयास्त TBR. 1,3,10,9. 2,3,1,3. TS. 2,2,11,6. आत्मा ह्युपंहूतानां वसिष्ठः 6,2,3. प्रजापतिर्वै वसिष्ठः ÇAT. BR. 2,4,4,2. 14,9,2,2.7. 3,4. TBR. 3,1,2,7. KHÂND. UP. 5,1,2. वसिष्ठो ऽस्मि वरिष्ठो ऽस्मि वसे वासगृहेष्वपि। वसिष्ठत्वाच्च वासाच्च वसिष्ठ इति विद्धि माम्॥ MBH. 13,4484. — 2) m. N. pr. eines der hervorragendsten Ṛshi des Veda, Priesters des Königs Sudâs, Hauptverfassers des 7ten Maṇḍala des ṚV. Nach der Legende ein Sohn Mitra-Varuṇa's und der Urvaçî, oder aus dem zu Boden gefallenen Samen jener Götter entsprungen. SÂJ. zu ṚV. 7,33,11. Nachmals einer der sieben Ṛshi PARIÇ. zu ÂÇV. ÇR. — ṚV. 1,112,9. 7,9,6. 13,4. 21. 22,3. 23,1. 26,5. 33,11. fgg. 59,3. 70,6. 86,5. 88,4. 10,65,15. TS. 3,1,7,3. 5,2,1. 7,4,7,1. ÂÇV. GṚHJ. 3,4,2. PAÑKAV. BR. 4,7,3. 15,5,24. ÇAT. BR. 5,4,11,3. 12,6,1,38. पाशा अस्यां व्यपाश्यन्त वसिष्ठस्य मुमूर्षतः Bruchstück in NIR. 9,26. ein Pragâpati und Sohn Brahman's M. 1,35. MBH. 1,6638. HARIV. 41. 14072. 14148. R. 1,52,6. 65,22. RAGH. 1,64. VP. 49. BHÂG. P. 3,12,23. MÂRK. P. 50,5. ein Sohn Varuṇa's HARIV. 1885. Brahmarshi TRIK. 2,7,16. 20. R. 1,65,25. Vater Aurva's HARIV. 417. 14130. Vater von 7 Söhnen 422. 14151. VP. 83. BHÂG. P. 4,1,40. 8,1,24. Vater der Väter Sukâlin M. 3,198. Gatte der Akshamâlâ oder Arundhatî MBH. 1,6638. der Ûrǵâ VP. 83. BHÂG. P. 4,1,40. इक्ष्वाकूणां हि सर्वेषां पुरोधाः R. 1,57,21. इक्ष्वाकुकुलदैवतम् 70,16. sein Zwist mit Viçvâmitra MBH. 1,6710. fgg. 9,2365. fgg. R. 1,51. fgg. वसिष्ठवत्ते नियतश्च कोपः MBH. 1,2110. als Vjâsa VP. 272. Verz. d. Oxf. H. 52,*b*, 2. einer der sieben Weisen (welche das Gestirn des grossen Bären bilden) H. 124, Schol. HARIV. 413. 439. VARÂH. BṚH. S. 13,5. 6. 9. 23,4. 58,8. MÂRK. P. 75,74. Gesetzgeber M. 8,140. JÂǴÑ. 1,5. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,42. 264,*b*,30. 266,*a*,42. 270,*b*,37. 279,*a*,42. 341,*a*,40. 356,*a*,25. °यज्ञ ÇAT. BR. 2,4,4,2. ÇÂÑKH. BR. 4,8. ÇR. 3,8,2. 11,1. °गोत्राः VARÂH. BṚH. S. 5,72. pl. *das Geschlecht* Vasishṭha's P. 2,4,65. VOP. 7,14. ṚV. 7,7,7. 12,3. 23,6. 33,1. fgg. 39,7. 80,1. 90,7. 10,122,8. ÇAT. BR. 12,6,1,41. ÂÇV. ÇR. 12,15,1. KÂTJ. ÇR. 19,6,8. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 57,32. fg. 61,1. Verz. d. Oxf. H. 268,*b*,19. Namen von Sâman sind: वसिष्ठस्याङ्कुशः, वसिष्ठस्यानुपदम्, वसिष्ठस्यापानः, वसिष्ठजमदग्न्योरर्कः, वसिष्ठस्यासितम्, वसिष्ठस्य क्रोशम् Ind. St. 3,233,*a*. वसिष्ठस्य जनित्रम् ebend. PAÑKAV. BR. 8,2,3. 19,3,8. वसिष्ठस्य निवेष्टः, निह्नवः (vgl. वसिष्ठनिह्नव), पञ्चम्, पदम्, पदासम्, पिप्पलि, प्राणाः Ind. St. 3,233. वसिष्ठस्य प्रियम् ebend. PAÑKAV. BR. 12,12,9. fg. वसिष्ठस्य प्रेङ्खः, प्लवः, वीङ्कम्, वैराजम्, वैरूपम्, व्रतम्, व्रतोपकः, शकुलः, शुद्धाशुद्धीयम्, संक्रमम्, समन्तम्, सूक्तम् Ind. St. 3,233. वसिष्ठो ऽनुवाकः so v. a. वसिष्ठस्यानुवाकः PAT. zu P. 4,3,133. Das Wort wird häufig fälschlich वशिष्ठ geschrieben und auf वशिन् zurückgeführt; vgl. Comm. zu BHAṬṬ. 1,15 und Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449. — Vgl. बृहद्वसिष्ठ, वृद्ध° und वासिष्ठ.

वसिष्ठक m. = वसिष्ठ 2) Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449.

वसिष्ठतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,2 v. u.

वसिष्ठत्व n. nom. abstr. von वसिष्ठ 1) MBH. 13,4484.

वसिष्ठनिह्नव m. N. eines Sâman LÂṬJ. 3,9,12. = वसिष्ठस्य निह्नवः Ind. St. 3,233,*a*.

वसिष्ठप्राची f. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 149,*a*,32.

वसिष्ठशफ m. N. eines Sâman Ind. St. 3,233,*b*. LÂṬJ. 1,6,32. KÂTJ. ÇR. 26,5,13.

वसिष्ठसंसर्प m. N. einer Viertagefeier KÂTJ. ÇR. 23,2,14. ÂÇV. ÇR. 10,2,25.

वसिष्ठसंहिता f. Titel eines Werkes, = योगवासिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,11. 109,*b*,15. eines anderen philosophischen Buches 233,*a*, No. 565.

वसिष्ठसिद्धान्त m. N. eines der fünf Haupt-Siddhânta zu Varâhamihira's Zeit COLEBR. Misc. Ess. II, 379 u. s. w. Ind. St. 2,251. fg. — Vgl. वासिष्ठ.

वसिष्ठहनुस् wohl verdorbene Lesart VS. 39,8; vgl. dafür ओषिष्ठहनम् TS. 1,4,36,1.

वँसीयंस् (compar. von वसु; vgl. वसिष्ठ) adj. *besser, der besser daran ist, der sich wohler befindet; angesehener, reicher* (Gegens. पापीयंस्): यो यज्ञस्यार्त्या वसीयान्स्यात् TS. 2,6,6,3. य एवो ऽस्मा ईशानाय वसीयो भवति 5,4,1. 3,1,6,5. नमस्कृत्य हि वसीयांसमुपचरन्ति 5,4,4,5. यथा वसीयांसं भागधेयेन बोधयति 10,5. इतो मे वसीयांसो जनिष्यन्ते *bessere als diese* 6,5,6,1. TBR. 1,1,2,8. य एवं विद्वान्विचिकित्सति। वसीय एव चेतयते 2,1,2,3. 3,1,1,9. VS. 18,8. जुह्वद्देवाञ्जुह्वतो वसीयान् AIT. BR. 3,36. 8,26. ÇAT. BR. 3,4,4,27. 9,14. उपतापी वसीयान्भूवान्नमिच्छति *wenn er wohler geworden ist* 8,5,2,1. ते देवाः पापीयांसो ऽभवन्वसीयांसो ऽसुराः *den Göttern ging es schlimmer, den* Asura *besser* KÂṬH. 24,9. PAÑKAV. BR. 7,10,4. 22,12,3. GOBH. 1,6,4. — Vgl. पाप° und वस्यंस्.

वँसु UṆÂDIS. 1,11. 1) adj. (f. वँस्वी) *gut, trefflich* (= साधु ÇABDAR. im

ÇKDr.); *zu Gute kommend, wohlthuend:* वसोर्मन्द्रानमन्धसः RV. 8,77,1. वस्वी ते अग्ने संदृष्टिरिषयते मर्त्याय 6,16,25. वसुः शंसो नरां कारुधायाः 24,2. 44,15. 5,74,10. माकुध्र्यगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः 10,22, 12. धीतयः 3,13,5. धी 10,172,2. शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना 9,81,3. देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः 5,3,8. वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिः 7,20,10. सूर्य Âçv. Gṛhj. 1,3,3. यज्ञ Çâṅkh. Çr. 4,12,10. = स्वादु, मधुर *süss* H. an. 2,590. fg. Med. s. 5. = शुष्क *trocken* H. an. Vgl. वसिष्ठ und वसीयंस्. — 2) m. *a)* Bez. *der Götter* überhaupt RV. 1,106,1. 143,1. 3,39,8. 57,2. 4,55,1. तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन् 7,1,2. 39,3. पन्थां देवयाना वसुभिरिष्कृतासः 76,2. 10,37,12. सूरादश्वं वसवो निरतष्ट 1,163,2. 10,100,7. 87,9. आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु 142,6. 110,3. VS. 8,18. Insbes. die Âditja RV. 2,27,11. 7,52,1. 2. 8,18,15. 17. Agni AK. 3,4,30,230. H. 1099. H. an. Med. Halâj. 1, 62. 5, 64. Viçva bei Mallin. zu Kir. 1,18. Vaig. bei Mallin. zu Kir. 1,46. RV. 1,44,3. 143,6. 4,5,15. अग्निं तं मन्ये यो वसुः 5,6,1. 24,2. वैश्वानरो वसुरग्निः 51,13. वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने 8,44,24. युगान्ते सर्वभूतानि दग्धेव वसुरुल्बणः MBh. 7,6865. die Marut RV. 5,55,8. 6,50,4. 7,56,17. Indra 1,110,7. 4,32,14. 7, 31, 3. 4. AV. 7,98,1. Ushas RV. 6,64,1. die Açvin 1,158,1. Rudra: श्रेष्ठो देवानां वसुः 43,5. वसुरन्तरिक्षसत् (nach dem Comm. Vâju; wohl collectiv zu verstehen) 4,40,5. Vishṇu MBh. 13,7023. वसुः पूर्वो वसूनाम् R. 6,102, 18. Kubera Viçva a. a. O. Kir. 1,18. वसोर्वसुपतेः Pankar. 3,7,7. Çiva Anekârthak. im ÇKDr. Indra Mâdh. im Kâlanirṇaja. Vasu als Herr des Nakshatra Dhanishṭhâ Varâh. Bṛh. S. 98,5. unter den Viçvadevatâ Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,32. — *b)* eine Klasse von Göttern, gewöhnlich neben den Âditja und Rudra, auch mit den Viçve devâḥ (RV. 2,3,4. 10,125,1. AV. 1,9,1. 30,1) und den Aṅgiras (RV. 7, 44, 4. AV. 2,12,4) genannt; unter die Götter des obersten Gebiets gezählt Naigh. 5,6. Nir. 12,41. ihr Haupt ist nach der ältesten Ansicht Indra, nach der späteren Agni; gaṇa पर्श्वादि zu P. 5, 3,117. Vârtt. 2 zu 4, 1,177. AK. 1,1,1,5. 3,4,30,230. H. an. Med. Halâj. 5,64. RV. 1,45,1. 58,3. 2,31,1. 3,8,8. 6, 62, 8. 7, 10, 4. 35,6. 14. 8,35,1. 90,15. 9,67,27. 10,48,11. 66,3. Vâlakh. 6,3. VS. 2,5. 22. 5,11. 11,55. 58. AV. 10,7,22. 9,8. 10,30. fg. 11,6,13. 19,9,11. Ait. Br. 3, 42. 8,12. Bṛhaspati mit den Vasu AV. 6,73,1. — TBr. 1,5,11,2. 2,1,10,1. Khând. Up. 3,16, 1. M. 11,221. Bhag. 11,6. 22. MBh. 3,1840. 2356. 13,7774 (वसूनेष mit der ed. Bomb. zu lesen). 14,2414. fgg. Hariv. 441. 3007. fgg. 11849. R. 3,52,42. Varâh. Bṛh. S. 48, 56. Pankar. 1, 11, 32. वसून्वदन्ति तु (वसु = पितृविशेष Mâdh. im Kâlanirṇaja) पितृन्नुद्रांश्चैव पितामहान्। प्रपितामहांस्तथादित्यान् M. 3,284. Agni mit den Vasu AV. 19,17,1. TS. 2,1, 11,2. VS. 15,10. Ait. Br. 3,13. Çâṅkh. Br. 22,1. Çr. 3,6,2. 4,21,8. Taitt. Âr. 4,6,1. Khând. Up. 3,6,1. 3. 4. वसूनां पावकश्चास्मि Bhag. 10,23. वसूनामिव हव्यवाट् MBh. 4,50. 5,5290. 13,914. वसवो वासवं यथा पर्युपासते R. 1, 7, 5. 4, 25, 34. 6, 112,75. वसुः पूर्वो वसूनाम् ist Vishṇu 102,18. dreihundert und dreiunddreissig TS. 5,5,2,5. acht Ait. Br. 1,10. Çat. Br. 4,5,7,2. 6,1,2,6. 11, 6, 3,5. MBh. 1, 2710. 3914. fgg. Hariv. 6497. Burn. Intr. 605. Agni, Erde, Vâju, Luft, Âditja, Himmel, Mond, Sterne Çat. Br. 11,6,3,6. Dhara, Dhruva, Soma, Ahan (Sâvitra, Âpas), Anila, Anala (Vâju), Pratjûsha, Prabhâsa MBh. 1,2582. 13,7094. fg. Hariv. 152. fg. Weber, Râmat. Up. 312. VP. 120. Dhara (Manu die ältere Ausg.), Dhruva, Viçvâvasu (Vivasvant die ältere Ausg.), Soma, Parvata, Jogendra, Vâju, Nirṛti (Nikṛti die ältere Ausg.) Hariv. 11538. fgg. zehn Vasu, Indra der eilfte Kâṭh. 28,3. Ind. St. 5, 240. fg. धर्मस्य वसवः पुत्राः MBh. 12,7540. die Vasu (möglicher Weise auch sg.) als Herren der achten Tithi Varâh. Bṛh. S. 99,1. ein Vasu mit Namen Vidhûma Kathâs. 9,23. fgg. — *c)* Bez. *der Zahl acht* (wegen der *acht* Vasu) Varâh. Bṛh. S. 98,1. 2. Bṛh. 12,1. Gaṇitâdhj. Spashṭâdhj. 23. Ind. St. 8,228. 302. 314. वसुत्रिगुणित, °गणार्धकोण Pankar. 3,7,7. वसौ = अष्टमे Verz. d. Oxf. H. 102, *a*, No. 159, Z. 10. — *d) Strahl* Naigh. 1,15 (vgl. Nir. 12,41). AK. 3,4,30,230. H. 100. H. an. Med. Halâj. 1, 39. 5, 64. Viçva und Vaig. a. a. O. Kir. 1,46. Çiç. 9,10. — *e) die Sonne* Anekârthak. im ÇKDr. *der Mond* Mâdh. im Kâlanirṇaja. — *f) Strick, Seil, Gurt* (योक्त्र) Trik. 3, 3,447. H. an. Med. — *g) Baum* H. 1114. — *h) eine best. Pflanze,* = बक AK. 2,4,2,62. Med. = पीतमुद्ग H. 1172. — *i) Teich, See* Comm. zu Uṇ. 1,10. — *k) ein best. Fisch* Bhar. zu AK. nach Wilson. — *l)* N. pr. eines Mannes mit dem patron. Bhâradvâga, Liedverfassers von RV. 9,80. fgg. unter den sieben Weisen Hariv. 467. Mârk. P. 94,8. Sohn eines Manu Hariv. 415. 465. ein Sohn Uttânapâda's 62. fg. ein Fürst der Kedi mit dem Bein. Uparikara (als नृप, राजन् bezeichnet H. an. Med.) MBh. 1,2334. fgg. 3, 11080 (S. 572). 12,12742. 12746. 13,328. 5650. 14,2828. fgg. Hariv. 1612. 1804. 5252. 5254. 6598. 8813. Varâh. Bṛh. S. 43,8. 9. 68. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,31. 80,*b*,40. Bhâg. P. 9,22,5. कमीणामुद्धतो (क्र° ed. Calc.) MBh. 5,2729. ein Sohn Ilina's MBh. 1,3708. Kuça's (vgl. अमावसु) R. 1,34, 3. 7. 8 (35,2. 6. 7. Gorr. das von ihm beherrschte Land führt denselben Namen: देशो ऽयं वसुनामासीद्वसोरमिततेजसः). Bhâg. P. 9, 15, 4. Vater des Paila MBh. 2,1239. ein Sohn Vasudeva's Bhâg. P. 9,24,50. Kṛshṇa's 10,61,13. Vatsara's 4,13,12. Hiraṇjaretas' (zugleich Bez. seines Varsha) 5,20,15. Bhûtaǵjotis' 9,2,17. fg. Naraka's 10,59,12. ein König von Kâçmîra Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,27. — 3) f. वसु *a) Licht, Glanz* (दीप्ति). — *b) ein best. Arzeneimittel* (वृद्धौषध; lies वृद्धौ°) Çabdar. im ÇKDr. — *c)* N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's und Mutter der Vasu Hariv. 145. 12449 (Gattin Manu's). 12479. VP. 119. Bhâg. P. 6,6,4. 10. — 4) f. वस्वी *Nacht* Naigh. 1,7. — 5) n. *a) Gut, Besitzthum, Habe, Reichthum* (gen. वस्वस्, वसोस् und वसुनस् in der älteren Sprache) AK. 2, 9, 90. 3,4,30,230. H. 191. H. an. Med. Halâj. 1, 80. 5,64. RV. 4,17,11. वस्वो राशिम् 20,8. 6,55,3. स्तोतारं मघवा वसौ धात् 4,17,13. कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ धाः 8,13,22. 7,94,9. जेन्य 2,5,1. 8,90,6. वाम 5,19,15. himmlisches und irdisches *Gut* 1,113,7. 2,14,11. अमृत 3,43,5. 6,45,20. 59,9. 9,14,8. 19,1. ईशे हि वस्व उभयस्य 6,19,10. वसुपतिर्वसूनाम् 4,17,6. 5,4,1. 6,52,5. 1,27,5. 109,5. तुभ्यं धेनुः सबर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते 134,4. यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु 176, 3. इन्द्रमुक्तं न वसुनः सिचामहे 2,16,7. वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे 3,2, 4. वसूनां च वसुनश्च दावने *Güter und Gut* 10,50,7. AV. 7,115,2. 9,4,3. 10,8,20. अन्येषां विन्दते वसु 14,2,8. VS. 4,16. 6,7. 8. 18,15. आ द्विषतो वसु दत्ते Ait. Br. 4,6. Çat. Br. 1,6,4,5. 9,3,2,4. 14,7,2,29. संगमनो वसूनाम् Çâṅkh. Gṛhj. 1,7. 3,2. 4. कोश इव वसुना (संपूर्णः) Maitrjup. 3, 4.

पित्र्यस्य वसुनः M. 9,163.196. यच्चान्यन्ममास्ति वसु किंचन MBh. 3,2161. 2276. 2297. 2369. 3036. वसु दृष्ट्वा च पुष्कलम् 2655. 13472. खण्डिते च वसुनि Spr. 2183. Kathâs. 23,26. Râga-Tar. 4,682. Bhâg. P. 1,18,44 (वसास्). 4,14,39. 16,6. 17,22. 9,4,6. 20,25. दिव्य Pańkar. 1,11,36. वसुना नातिपुष्टो ऽभवत् Daçak. 67,15. जितो राज्यं वसूनि च MBh. 3,2483. वसुंधरा तस्य भवेत्सुतुष्टा धारां वसूनां प्रमुञ्चतीव 13390. वसूनां विमोक्तः R. 2,23,39. धनं धान्यं वसूनि च 4,35,16. Kir. 1,13.18. Bhâg. P. 2,7,9. 3,30,3. 9,24,52. Vet. in LA. (III) 9,18. वसुसंपूर्णा वसुधा MBh. 3,2238. वसतिं वसुसंपदाम् Kumâras. 6,37. Râga-Tar. 6,367. Varâh. Bṛh. S. 104, 40. Bṛh. 24,13. वसुकामो वसून् (यजेत) Bhâg. P. 2,3,3. Ragh. 9,16. क्रयाणकानि वसूनि *Güter, Waaren* Vet. in LA. (III) 18,21. बुभुजे ऽजय्यषड्वसु *die sechs Güter* so v.a. *die sechs Sinnengebiete* Bhâg. P. 9,23,25. Als masc. (vgl. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31, aber auch Siddh. K. 248,*b*,12): वसवश्च वसून्दिव्यान् (ददुः) Pańkar. 1,11,32. — α) वसोष्पतिः m. etwa *der Genius der Besitzthümer*, über einem Todkranken angerufen, denselben bei seiner irdischen Habe zu erhalten: वसोष्पते नि रमय मय्येव तन्वं मम Cit. in Nir. 10,18, wofür AV. 1,1,2 gelesen wird: मय्येवास्तु मयि श्रुतम् *mir bleibe das Gehör!* Nach Mâdh. im Kâlanirṇaja soll वसु auch = निवास (also von 5. वस्) sein; wenn diese Bedeutung sich erweisen liesse, würde वसोष्पतिः mit वास्तोष्पतिः nahe zusammentreffen. — β) वसोर्धारा *Strom der Güter* heisst, nach dem Anfange eines Spruches वसोर्मे धारा, *eine* Ghṛta-*Spende beim* Agnikajana AV. 12,3,41. TS. 5,4,8,1. 7,3,2. TBr. 3,11,9,9. 10,3. Çat. Br. 9,3, 2,1. 3,15. 10,1,5,3. Âçv. Çr. 4,8,30. Kâtj. Çr. 18,5,1. Verz. d. B. H. No. 1127. वसोर्धाराकृतं हविः (वसोर्धारा = पात्रविशेष Nilak.) MBh. 1,8146. Weber, Kṛshṇag. 249. 299. 302. als Gattin Agni's Bhâg. P. 6, 6,13. als Bez. *der himmlischen* Gangâ: प्रासादा यत्र सौवर्णा वसोर्धारा (= मन्दाकिनी Nilak.) च यत्र सा । गन्धर्वाप्सरसो यत्र तत्र यान्ति सकृत्प्रदाः ॥ MBh. 13,3789. N. pr. eines Tîrtha 3,5018. — *b*) *Gold* H. 1043. Viçva im ÇKDr. °वर्मधर MBh. 3,17165. — *c*) *Juwel, Edelstein, Perle* (रत्न, मणि) AK. 3,4,30,230. H. 1063. H. an. Med. Halâj. 2,21. 5,64. Vaig. a. a. O. °मेखल Pańkar. 3,7,7. — *d*) *ein best. Arzeneimittel*, = वृद्धि H. an. Med. — *e*) *Wasser* Vaig. a. a. O. — *f*) = अग्र Med. = श्याम ÇKDr. nach derselben Aut. — Vgl. अक्षिता°, अन्तर्वसु, अर्वा°, आ°, आघृणि°, आभरद्वसु, आयद्वसु, इद्वसु, उषा°, चित्रा°, जेन्या°, त्वा°, दिवा°, धिया°, निर्वसु, परा°, पुनर्वसु, पुरा°, पुत्र°, पुरो°, प्र°, प्रभू°, बृहद्वसु, भवद्वसु, मना°, मयि°, महा°, मित्रा°, मुदा°, वाजिनी°, विदद्वसु, विभा°, विश्वा°, वृषण्वसु, शतद्वसु, संयद्वसु, स्वा°.

वसुक 1) adj. oxyt. in der Formel: वसुको ऽसि वेषश्रिरसि u. s. w. TS. 3,5,2,5. 4,4,1,3. 5,3,6,3. Pańkav. Br. 1,10,17. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Calotropis gigantea* AK. 2,4,2,61. H. an. 3,96. Med. k. 152 (wo वसुकं zu lesen). *Agati grandiflorum Desv.* H. an. (lies शिवमल्ली°). Med. Ratnam. 76. *Adhatoda Vasika Nees* Roxb. I,126. = वास्तूक Râgan. im ÇKDr. — Suçr. 1,137,15. 20. 145,17. 238,13. 2,52,19. — 3) n. *eine Art Salz* (रोमक) AK. 2,9,42. H. 942. Med. H. an. 3, 95. fg. (lies वसुकं st. वस्तुकं). = पांसव Râgan. im ÇKDr. — 4) m. Bez. *eines best. Tactes* Cit. beim Schol. zu H. 292.

वसुकर्ण m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâsukra, Liedverfassers von ṚV. 10,65. fg.

वसुकीट m. *Bettler* (*Geldwurm*) Trik. 2,8,56. Hâr. 38.

वसुकृत् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâsukra, Liedverfassers von ṚV. 10,20—26.

वसुक्र m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Aindra, Liedverfassers von ṚV. 10,27. fgg. °पत्नी von 28,1. Kaush. Âr. 1,3. — Vgl. वासुक्र.

वसुगुप्त und वसुगुप्ताचार्य m. N. pr. eines Autors Sarvadarçanas. 95, 17. Hall 196. 198.

वसुचन्द्र m. N. pr. eines Kriegers MBh. 7,7009.

वसुच्छिद्रा f. *eine best. Heilpflanze*, = महामेदा Râgan. im ÇKDr.

वसुजित् adj. *Güter gewinnend* AV. 5,20,10. 13,1,37.

वसुता (von वसु) f. *Reichthum* oder *Freigebigkeit*: वसूनि राजन्वसुता ते अश्याम् ṚV. 6,1,13.

वसुताति f. dass.: अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः ṚV. 1,122,5. द्युम्नानि येषु वसुताता (°ति zu °तात्) रारन् 12.

वसुत्ति f. *Bereicherung*: विदा भगं वसुत्तये ṚV. 8,50,7. स नो अद्य वसुत्तये (वाजं जेषि) 9,44,6. Zur Bildung des Wortes vgl. भगत्ति, मघत्ति.

वसुत्व (von वसु) n. *Reichthum* ṚV. 10,61,12.

वसुत्वन n. dass. ṚV. 7,81,6. 8,1,6. अवेः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् 13, 12. उतोवे वज्रिन्वतो वसुत्वना सदा पीपेथ दाशुषे Vâlakh. 2,6.

वसुद 1) adj. (f. आ) *Güter —, Reichthum verleihend* Varâh. Bṛh. S. 58, 49. die Erde MBh. 12,4381. Spr. (II) 538. Vgl. वसुदा. — 2) m. Bein. Kubera's Hariv. 4362 (विबुधोपमः die neuere Ausg.). — 3) f. आ N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,17. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2647. einer Gandharvî und Gattin Mâli's R. 7,5,41.

वसुदत्त 1) m. ein häufiger Mannsname P. 5,3,83, Vârtt. 5, Schol. Kathâs. 21,58. fgg. 22,60. 89. 29,134. 156. 32,43. 46,43. 47,13. 74,155. 93,31. — 2) f. आ ein Frauenname Kathâs. 77,49 (°धत्ता Druckfehler). 62. angeblich N. der Mutter Vararuki's 2,30.

वसुदत्तपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 29,134. 156.

वसुदा adj. *Güter gebend, freigebig* ṚV. 8,88,4. die Erde AV. 12,1,44. 19,55,3. — Vgl. वसुद.

वसुदान 1) adj. dass. AV. 6,82,3. Çat. Br. 14,7,2,29. — 2) m. N. pr. eines Fürsten von Pâmsurâshṭra MBh. 2,122. 1884. 1914. 6,2110. 7,8724. eines Sohnes des Bṛhadratha (vgl. Vasudâman) VP. 462. des Hiraṇjaretas und N. eines nach ihm benannten Varsha Bhâg. P. 5,20,15.

वसुदाम 1) m. N. pr. eines göttlichen Wesens Pańkar. 3,7,27. — 2) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2623.

वसुदामन् m. N. pr. eines Sohnes des Bṛhadratha Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,19. fg. — Vgl. unter वसुदान 2).

वसुदावन् adj. = वसुदा ṚV. 2,6,4. 27,12. सविता वसोर्वसुदावा TS. 1,2,3,2.

वसुदेय n. *das Schenken von Gütern, Freigebigkeit* ṚV. 1,54,9. 2,35, 7. 6,39,5. AV. 3,4,4. 13,4,26.

वसुदेव adj. *die* Vasu *zu Göttern habend, ein Verehrer der* Vasu; Vasu *zum Regenten habend*: 1) m. *a*) N. pr. eines Fürsten aus dem Stamme der Vṛshṇi, Vaters des Kṛshṇa, P. 4,1,114, Schol. AK. 1,1, 1,17. H. 223. Halâj. 1,27. MBh. 1,2428. 2764. 5905. 7,6031. 6034. 13,

6837. Hariv. 1923. 1947. 3163. fgg. 3308. fgg. 5090. 5254. 7993. fgg. 8144. 9085. Bhâg. P. 1,11,17. 9,24,22. 27. 29. 45. 51. Verz. d. Oxf. H. 27,a,23. 43. 53,b,28. 190,b,15. Weber, Kṛshṇâg. 282. fgg. 288. fgg. 296. fg. 306. Wassiljew 215. — b) Beiw. Kṛshṇa's neben वासुदेव, वसुश्रेष्ठ u. s. w. Pańkar. 4,8,33. — c) N. pr. eines Fürsten aus der Kaṇva-Dynastie VP. 471. Bhâg. P. 12,1,18. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. — d) N. pr. des Grossvaters des Dichters Mâgha Verz. d. Oxf. H. 118, a, No. 194. — 2) n. Bez. *des* Nakshatra Dhanishṭhâ (वसु = धन) Varâh. Bṛh. S. 7,11. °दैव v. l. — Vgl. वासुदेव.

वसुदेवत n. = वसुदेव 2) Varâh. Bṛh. S. 8,22. f. आ dass. H. 114.

वसुदेवता f. *eine Gottheit des Reichthums, eine Reichthum verleihende Gottheit* Hariv. 7023. — Vgl. auch u. वसुदेवत.

वसुदेवब्रह्मप्रसाद m. N. pr. eines Autors Hall 102.

वसुदेवभू m. Vasudeva's *Sohn* d. i. Kṛshṇa H. 697.

वसुदेवात्मज m. dass. Pańkar. 4,1,17.

वसुदेव्या f. 1) *das* Nakshatra Dhanishṭhâ. — 2) Bez. *der 9ten* Tithi Çabdârthak. bei Wilson; vgl. Varâh. Bṛh. S. 99,1, wo die Vasu als Herren der 8ten Tithi erscheinen.

वसुदैव n. = वसुदेव 2) Varâh. Bṛh. S. 7,11, v. l.

वसुदैवत n. dass. Varâh. Bṛh. S. 15,30.

वसुधरा f. N. pr. einer buddhistischen Göttin Burn. Intr. 542.

वसुधर्मन् m. N. pr. eines Mannes MBh. 8,1079.

वसुधर्मिका f. *Krystall* Çabdârthak. bei Wilson.

वसुधा 1) adj. oxyt. *Güter schaffend, freigebig:* °तम VS. 27,15. TS. 4, 1,8,2; vgl. AV. 5,27,6 (AV. Prât. 4,45). — 2) f. a) *die Erde; Land, Reich* AK. 2,1,3. H. 935. Halâj. 2,1. MBh. 3,2238. R. 1,3,38 (°तले). 2,34,41. 37,27. Çâk. 192. Spr. 203. 484. 1886. Bhâg. P. 2,7,9. Varâh. Bṛh. S. 27,2. 32,3. 54,2. भुक्त्वा सम्यग्वसुधाम् so v. a. *regiert habend* 69, 19. शास्ति वसुधाम् Bṛh. 11,8. राज्ये सारं वसुधा वसुधायामपि पुरम् Spr. 2624. 4250. 4721. रुद्धवसुधान्म्लेच्छान् Râǵa-Tar. 1,115. मगधदेशे धर्मारण्यसंनिहितवसुधायाम् *Gegend* Hit. 49,9. fg. गव्हनवसुधाः *Gegenden* Râǵa-Tar. 2,164. वसुधागम *Ertrag vom Boden* Varâh. Bṛh. S. 72,6. क्षेत्र° *die Erde des Feldes* R. 3,4,17. समीक्ष्य वसुधां चरेत् *Erdboden* M. 6,68. °रेणु MBh. 1,6022. Megh. 43. °तलात् Çâk. 25. °तले Kathâs. 43,123. — b) *Anapaest* (was das Wort वसुधा ist) Ind. St. 8,217.

वसुधाखर्जूरिका f. *eine Dattelart* (भूखर्जूरिका) Râǵan. im ÇKDr.

वसुधाधर 1) adj. *die Erde tragend, — erhaltend:* Vishṇu MBh. 13, 6866. स धराधरः ed. Bomb. st. वसुधाधरः. — 2) m. *Berg* MBh. 1,6022. R. 2,54,41 (42 Gorr.). Vikr. 16.

वसुधाधिप m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* MBh. 3, 2238. 2997. 3009. 8,3789. R. 1,8,3. 2,35,17. 42,26. R. Gorr. 1,21,9. 3,70,12. 4,17,21. 38,59. Ragh. 1,32. 9,9. 81. Spr. 2980. Kathâs. 39, 242. 91,4. LA. (III) 90,11. 92,5. Mârk. P. 99,1.

वसुधाधिपति m. dass. R. 3,4,23. Râǵa-Tar. 3,344. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 8.

वसुधाधिपत्य n. *Königthum* Spr. 406. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,10.

वसुधान 1) adj. (f. ई) *Güter enthaltend, — aufbewahrend* AV. 11,2,4. 12,1,6. Nir. 9,42. Khând. Up. 3,15,1. — 2) n. *das Güterschenken* Nir. 9,42. Mahîdh. zu VS. 21,48.

वसुधापति m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* Hariv. 8374. Spr. (II) 416.

वसुधापरिपालक m. *Hüter der Erde*, Beiw. Kṛshṇa's Pańkar. 4,8,33.

वसुधापाल m. *Hüter der Erde, — des Landes, König, Fürst* MBh. 14,2413.

वसुधार 1) adj. *Reichthümer bergend:* मुक्तैर्नियोगिनो बाध्या वसुधारा मक्तीभुजाम् Spr. 2220. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,7. — 3) f. आ N. pr. a) einer buddhistischen Göttin Trik. 1,1,19. Târan. 220. 247. 267. — b) eines Flusses Hariv. 12387. — c) der Residenz Kubera's Çabdam. im ÇKDr.

वसुधारा f. *ein Strom von Gütern, — Gaben;* pl. MBh. 15,420. — Vgl. auch u. वसुधार.

वसुधारिन् adj. *Schätze bergend;* f. Bez. *der Erde* MBh. 3,10942.

वसुधासुत m. *der Sohn der Erde, der Planet Mars* Varâh. Bṛh. S. 16,15.

वसुधित ved. P. 7,4,45. वसुधितमग्नौ जुहोति Schol. wohl so v. a. *Güterbesitz.*

वसुधिति 1) adj. *Güter besitzend, — spendend:* die Açvin ṚV. 1,181, 1. अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते 3,31,17. 4,48,3. देवी जोष्ट्री VS. 28,15. Nir. 9,42. Çâṅkh. Çr. 8,18,5. वायुं नियुतः सश्चत स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके (vgl. Siddh. K. zu P. 7,4,45) ṚV. 7,90,3. — 2) f. *Güterspende:* स हि वेदा वसुधितिम् ṚV. 4,8,2.

वसुधेय n. *Güterspende* oder *Güterbesitz* in der Formel वसुवने वसुधेयस्य वेतु (वीताम्, व्यन्तु) VS. 21,48. 28,12. TBr. 2,6,14,1. 3,5,9,1. Çat. Br. 1,8,2,16. 2,2,3,25. Nir. 9,48. fg. Çâṅkh. Çr. 1,13,1. fgg.

वसुनन्द m. N. pr. eines Fürsten Râǵa-Tar. 1,339.

वसुनन्दक = खेटक Hâr. 150.

वसुनीति gaṇa दासीभारादि zu P. 6,2,42, Vârtt. 2. adj. v. l. zu वसुनीथ. ब्रह्मा AV. 12,2,6.

वसुनीथ adj. *Güter bringend:* Agni VS. 12,44.

वसुनेत्र m. N. pr. eines Brahmanen Târan. 5. 93.

वसुनेमि m. N. pr. eines Schlangendämons Kathâs. 9,80.

वसुंधर 1) adj. *Schätze bergend* Hariv. 7426. — 2) m. a) pl. Bez. der den Vaiçja entsprechenden Bewohner von Plaksha Bhâg. P. 5,20, 11. — b) N. pr. eines Mannes Kathâs. 57,7. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,30. Ind. St. 8,389. — 3) f. आ a) *die Erde; Land, Reich* Vop. 26,60. AK. 2,1,3. H. 935. Halâj. 2,2. हस्त्यश्वरथघोषेण पूरयन्तो वसुंधराम् MBh. 3,2114. 4,554. R. 2,88,18. 110,4. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,77. Ragh. 4,7. Varâh. Bṛh. S. 18,2. Râǵa-Tar. 1,101. अर्धसंजातसस्येव तोयं प्राप्य वसुंधरा *Land, Boden* MBh. 3,3007. वसुंधरेवोप्तबीजा Çâk. 151. नील° Varâh. Bṛh. S. 54,104. पिबत्यसृग्भूरि रणे वसुंधरा 36,5. वसुंधरायां पतिता *Erdboden* R. 3,68,40. °पृष्ठे पतितः Pańkat. 101,23. — b) Bez. eines Theilchens der Prakṛti Verz. d. Oxf. H. 23,b,2. — c) N. einer buddhistischen Göttin Wilson, Sel. Works II, 13. 22. — d) N. pr. einer Tochter Çvaphalka's Hariv. 2085. einer Fürstin Daçak. 194,15. — e) du. Bez. zweier Kumârî an Indra's Banner Varâh. Bṛh. S. 43,40.

वसुंधराधर m. *Träger der Erde* d. i. *Berg* MBh. 7,4591.

वसुंधराधव m. *Gatte der Erde* d. i. *König, Fürst* Râǵa-Tar. 7,1127.

वसुंधरेशा adj. f. *den Berger von Gütern* (Kṛshṇa) *zum Herrn habend*, Bein. der Râdhâ Pańkar. 2,5,27.

वसुपति m. *Herr der Güter*, häufig mit dem Beisatz वसूनाम्: Agni ṚV. 2,1,11. 6,4. 5,4,1. वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने 8,24,24. Indra 1,9,9. 170,5. 3,30,19. 36,9. 4,17,6. Savitar 7,45,3. Kubera Pańkar. 3,7, 7. *Herr der* Vasu, so wird Kṛshṇa genannt 4,8,33.

वसुपत्नी f. *Herrin der Güter:* वसूनाम् als Beiwort der Kuh ṚV. 1,164,27.

वसुपातर् m. *Beschützer der* Vasu: Kṛshṇa Pańkar. 4,8,33.

वसुपाल m. *Hüter der Güter*, Bez. *des Königs* Bhâg. P. 9,11,21.

वसुपालित m. N. pr. eines Mannes Daçak. 67,13.

वसुपूज्यराज् m. N. pr. des Vaters des 12ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37. — Vgl. वासुपूज्य.

वसुप्रद 1) adj. *Güter verleihend* MBh. 5,3954. Çiva Çiv. — 2) m. Bez. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2565.

वसुप्रभा f. 1) Bez. einer der sieben Zungen des Feuers H. 1099, Schol. — 2) N. der Residenz Kubera's H. ç. 40.

वसुप्राण m. *Feuer* Çabdar. im ÇKDr.

वसुबन्धु m. N. pr. eines berühmten buddhistischen Gelehrten, Verfassers des Abhidharmakoça, Burn. Intr. 563. 571. Lot. de la b. l. 359. Hiouen-thsang I,105. 115. 269. Vie de Hiouen-thsang 83. 97. 114. Wassiljew 43 u. s. w. Schiefner, Lebensb. 310 (80). LIA. II, Anh. VIII (hier fälschlich °बन्ध). Târan. 4 u. s. w.

वसुभ n. *das unter* Vasu *stehende* Nakshatra Dhanishṭhâ Varâh. Bṛh. S. 10,16. 15,21.

वसुभृत m. N. pr. eines Gandharva Verz. d. Oxf. H. 71,b,4.

वसुभूति m. ein Vaiçja-Name Kull. zu M. 2,32. N. pr. eines Brahmanen Wilson, Sel. Works I,298. Kathâs. 73,206.

वसुभृद्यान m. N. pr. eines Sohnes des Vasishṭha Bhâg. P. 4,1,41.

वसुमति m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 108,40.

वसुमती s. u. वसुमन्त्.

वसुमतीपति m. *Herr der Erde, — des Landes, König, Fürst* Râǵa-Tar. 4,218. 659.

वसुमत्ता (von वसुमन्त्) f. *Reichthum* MBh. 2,1695.

वसुमनस् N. pr. eines Mannes mit dem patron. Rauhidaçva, Verfassers von ṚV. 10,179,3. ein Sohn Harjaçva's und Fürst von Kosala MBh. 2,323. 3,8504. 13302. 4,1768. 5,3954. 12,2536. fgg. 3465. fgg.

वसुमन्त् (von वसु) 1) adj. a) *mit Gütern versehen, Güter enthaltend; begütert, reich:* रथ ṚV. 1,118,10. 125,3. 4,4,10. रयि 1,159,5. 4,34,10. भाग 10,11,8. पर्वत 2,24,2. Himmel und Erde 3,30,11. गृह Çâńkh. Gṛhj. 3,4. वेश्मानि R. Gorr. 2,86,3. — ṚV. 9,69,8. 86,38. न दरिद्रो वसुमतः सखा Spr. 4295. Varâh. Bṛh. S. 43,9. Bṛh. 13,9. वसुमत्तर MBh. 5,3954. — b) *von den* Vasu *begleitet:* Indra und Agni Ait. Br. 2,20. Kâtj. Çr. 10,7,14. Çâńkh. Çr. 6,7,10. TS. 2,2,4,5. 7,5,7,2. Kâṭh. 33,7. Âçv. Çr. 2,11,11. MBh. 2,447. वसुमद्गण heisst Soma TS. 3,2,5,2. — 2) m. a) N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Aushadaçvi (vgl. वसुमनस्) MBh. 1,3539. 3663. fgg. 2,127. 5,84. eines Sohnes des Manu Vaivasvata Mârk. P. 79,12. Bhâg. P. 8,13,3. des Kṛshṇa 10,61,12. des Çrutâju 9,15,2. des Ǵamadagni 13. N. pr. eines Ministers des Dushjanta Çâk. 80,23, v. l. — b) N. pr. eines Berges im Norden Varâh. Bṛh. S. 14,24. Mârk. P. 58,41. — 3) f. वसुमती a) *die Erde; Land, Reich* AK. 2,1,3. H. 936. Halâj. 2,1. MBh. 3,1688. 12,918. R. Gorr. 1,41, 21. 2,45,16. 3,20,16. 5,78,15. भवतु वसुमती सर्वसंपन्नसस्या Spr. 3997. Ragh. 8,82. Çâk. 24. Mâlav. 81. Varâh. Bṛh. S. 27,8. 32,6. Râǵa-Tar. 4,7. Z. d. d. m. G. 14,574,23. Vop. S. 176. *Land, Gegend* MBh. 3,10323. *Erdboden* R. 3,10,7. पद्भ्यां स्पृशेद्वसुमतीं यदि सा Vikr. 79. °पृष्ठ *die Oberfläche der* (sphärischen) *Erde* Golâdhj. 8,2. — b) Bez. zweier Metra: α) *4 Mal* ◡◡◡◡◡◡ — Colebr. Misc. Ess. II, 159 (II, 4). — β) *4 Mal* — — ◡◡◡ — Ind. St. 8,366. — c) N. pr. einer Gemahlin Dushjanta's Çâk. 59,13. fg. einer Brahmanenfrau Kathâs. 68,34.

वसुमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Gütern bestehend:* धारा Çat. Br. 9,3,2,4.

वसुमित्र m. ein gewöhnlicher Mannsname Sarvadarçanas. 18,4. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,2677. eines Sohnes (Grosssohnes) des Agnimitra Mâlav. 70,23. 90. VP. 471. Bhâg. P. 12,1,15. N. pr. eines berühmten buddhistischen Gelehrten Burn. Intr. 447. 566. fgg. Hiouen-thsang 94. fg. Wassiljew 49 u. s. w. Schiefner, Lebensb. 310 (80). LIA. II, Anh. IV. Târan. 60 u. s. w.

वसुर adj. etwa *werthvoll* oder *reich* (von वसु) Kâṭh. 12,11.

वसुरक्षित m. N. pr. eines Mannes Daçak. 194,13.

वसुरण्व adj. *an Gütern sich ergötzend* Mahânâr. Up. in Ind. St. 2,99.

वसुरात m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 114,13. 15. Z. d. d. m. G. 14,566.

वसुरुच् adj. etwa *wie die* Vasu d. i. *wie Götter glänzend:* श्रादीं के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ṚV. 9,110,6.

वसुरुचि m. N. pr. eines Gandharva H. 183, Schol. AV. 8,10,27.

वसुरूप adj. Vasu-*artig*, unter den Beinn. Çiva's MBh. 14,205. im Piṇḍa-Opfer der Väter wird ein Ahnherr angeredet: पितः अमुकशर्मन् अमुकगोत्र वसुरूप Saṁsk. K. 236,a,3.

वसुरेतस् *Feuer, der Gott des Feuers* (*Same der* Vasu oder *des Reichthums*) MBh. 1,1021. 2168. 8319. R. 7,31,7. वसुरेतःसुवपुस् unter den Beinn. Çiva's MBh. 14,206. auch वसुरेतस् allein (अग्नौ रेतःक्षेपणात् Nîlak.) 7,2878.

वसुरोचिस् Uṇâdis. 2,112 (parox.). m. N. pr. ṚV. 8,34,16. nach der Anukr. eine Abtheilung der Ańgiras. वसुरोचिषः सूर्यवर्चसः साम Ind. St. 3,233,b. neutr. = यज्ञ Uǵǵval.

वसुल m. 1) *ein Gott* (von वसु) Trik. 1,1,5. — 2) oxyt. Hypokoristikon von वसुदत्त P. 5,3,83, Vârtt. 5, Schol.

वसुवन् so v. a. वसुवनि in der unter वसुधेय angeführten Formel, wo der gen. von वसुवने abhängt, wie वसुपतिर्वसूनाम्. Nach dem Comm. *das Gewinnen von Gut*, oder auch voc. von वसुवनि, gegen den Ton und gegen den Sinn.

वसुवन n. *der* Vasu-*Wald*, Bez. eines mythischen Landes im NO. Varâh. Bṛh. S. 14,31.

वसुवनि adj. *Gut heischend* oder *verschaffend:* स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति ṚV. 7,1,23. AV. 7,60,1 (v. l. VS. 3,41). 13,4,26.

वसुवन्त् (von वसु) adj. *mit den* Vasu *verbunden:* Agni AV. 19,18,1.

वसुवाह् m. N. pr. eines Rshi Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,44.

वसुविद् adj. *Gut verschaffend:* Agni RV. 1,45,6. 6,16,41. 8,23,16. VS. 3,38. TS. 1,6,2,1. und andere Götter RV. 1,46,2. 18,2. 91,12. 7,41,6. ÇÂṄKH. ÇR. 2,15,3. KAUÇ. 78. 108. — RV. 1,164,19. ज्ञिन्वा धियो वसुविदः 8,49,12. 50,5. 10,42,3. 9,86,39. 101,11. AV. 18,4,48.

वसुवृष्टि f. *ein Regen von Gütern, — Schätzen* Verz. d. Oxf. H. 132,*b*, No. 242.

वसुशक्ति m. N. pr. eines Mannes PAÑKAT. ed. orn. 1,7.

वसुश्रवस् adj. etwa *durch Reichthum bekannt* oder *Reichthum strömend* (श्रवस् = स्रवस्) RV. 5,24,2. unter den Beinn. Çiva's ÇIV.

वसुश्री f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9,2632.

वसुश्रुत m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von RV. 5,3. fgg.

वसुश्रेष्ठ 1) adj. *der beste unter den* Vasu als Bein. Krshṇa's PAÑKAR. 4,8,33. — 2) n. *Silber* (*das beste Gut*) RÂǴAN. im ÇKDR.

वसुषेण (वसु + सेना) m. ein anderer Name Karṇa's TRIK. 2,8,18. MBH. 1,2776. 2782. 4404. 4411. 3,17165. fg. 5,4764.

वसुसार 1) m. N. pr. eines Mannes TÂRAN. 14. — 2) f. °रा *die Residenz* Kubera's H. ç. 40; vgl. वसुधारा unter वसुधार und वस्वोकसारा.

वसुस्थली f. = वसुसारा ÇABDAM. im ÇKDR.

वसुहट्ट m. *ein best. Baum,* = बक RATNAM. im ÇKDR. °क m. dass. ÇABDAM. im ÇKDR.

वसुहोम m. N. pr. eines Fürsten der Aṅga MBH. 12,4469. fgg.

वसूक 1) m. *ein best. Baum* (n. *die Blüthe*), = बक DVIRÛPAK. im ÇKDR. — 2) n. *eine Art Salz* H. 942. — Vgl. वसुक.

वसूजु (वसु + जु) adj. *Güter auftreibend:* इन्द्रं वसवानं वसूजुवम् RV. 8,88,8.

वसूत्तम m. *der Beste unter den* Vasu, Bez. Bhîshma's BHÂG. P. 1,9,9; vgl. LIA. I,628.

वसूद्रेक m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,13. 19,*a*,35.

वसूमती (aus metrischen Rücksichten statt वसुमती) adj. f. *die Reiche* HARIV. 3288.

वसूय् (von वसु) *um Güter —, um Gaben angehen, nach Gaben verlangen:* यो वां सुम्नाय तुष्टवद्वसूयात् RV. 8,8,16.

वसूया adv. instr. AV. PRÂT. 4,30. *mit dem Wunsche nach Gaben* RV. 1,97,2. 165,1.

वसूयु (von वसूय्) adj. *Gut begehrend, erwerbslustig, begehrlich* RV. 1,49,4. 51,14. 62,11. दीधिति 186,11. धी 7,67,5. 2,11,1. 4,44,1. 5,29,15. 7,1,6. जरितारः 32, 2. 10,47,1. वसूयवो वसुपतिं हवामहे VÂLAKH. 4, 6. वसूयव आत्रेयाः als Liedverfasser von RV. 5,25. fg.

वसोर्धारा und **वसोष्पति** s. u. वसु 5) *a*) α) β).

वस्क्, वस्कते (गतौ) DHÂTUP. 4,27.

वस्क m. = अध्यवसाय BHÛRIPR. im ÇKDR.

वस्कराटिका f. *Scorpion* (कालिका) HÂR. 135.

1. **वस्तर्** (von 2. वस्) in दोषा°. Wir bleiben bei der Erklärung *im Dunkel des Abends leuchtend* stehen (vgl. SÂJ. zu RV. 4,4,9. 7,15,15) und sehen eine Bestätigung derselben in der Formel: यदि सायम् दोषावस्तर्नमः स्वाहेति। यदि प्रातः। प्रातर्वस्तर्नमः स्वाहेति *spät leuchtender, früh leuchtender* ÂÇV. ÇR. 3,12,4. Ein adv. वस्तर् ist sonst nirgends zu finden.

2. **वस्तर्** (von 3. वस्) nom. ag. 1) *Verhüller* nach SÂJ. त्वषां वस्ता जनिता सूर्यस्य RV. 3,49,4. Liesse sich zu 1. वस्तर् ziehen. — 2) *anziehend* (ein Gewand) KAUÇ. 107.

3. **वस्तर्** (von 5. वस्) nom. ag., superl. वस्तृतम (zur Etymologie) *am meisten wohnend* ÇAT. BR. 8,1,2,6.

वस्तव्य (wie eben) adj. 1) impers. *zu verweilen, sich aufzuhalten, zu wohnen* MBH. 1,5787. 4,15. पराजितैर्हि वस्तव्यं तैश्च द्वादश वत्सरान्। वने 1473. 13,6518. 14,888. कृतेन चापि शूरेण वस्तव्यं त्रिदिवे सुखम् HARIV. 8123. R. 1,76,13 (77,46 GORR.). 2,26,38 (39 GORR.). 27,4. 29,8. 101,24 (110,19 GORR.). 111,26. R. GORR. 2,26,24. 3,53,16. Spr. 96 (II). 994. 1375. 2928. तेषु साधुषु 4556. VARÂH. BṚH. S. 2,12. KATHÂS. 43,51. PRAB. 115,7. BHÂG. P. 11,6,35. PAÑKAT. 63,19. गुरुकुले SARVADARÇANAS. 124,3. *zu verweilen* so v. a. *auszubleiben:* मासादूर्ध्वं न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेत् R. 4,40,69. 41,77. — 2) *zuzubringen:* चतुर्दश हि वर्षाणि वस्तव्यानि वने त्वया R. 2,40,12 (39,17 GORR.). MBH. 3,14837.

वस्तव्यता (von वस्तव्य) f. *Aufenthalt:* ये त्वया कीर्तिता दोषा वने वस्तव्यतां प्रति R. 2,29,2.

वस्ति (बस्ति die Bomb. Ausg. des MBH. und VARÂH. BṚH. S.) UṆÂDIS. 4,179. m. SIDDH. K. 250,*a*,4. m. f. 251,*a*,12. TRIK. 3,5,17. 1) m. *Blase, Harnblase* H. 606. AV. 1,3,4. 11,3,43. VS. 19,88. 25,7. TBR. 2,2,9,2. ÇAT. BR. 10,6,1,5. 12,9,1,3. KAUÇ. 14. 26. KHÂND. UP. 5,16,2. M. 8,234. JÂǴN. 3,94. SUÇR. 1,48,13. 2,197,1. VARÂH. BṚH. 1,4. WEBER, RÂMAT. UP. 342. °मूल MBH. 3,13965. 12,6871. °शोधन SUÇR. 1,174,4. °पीडा 261,19. °रुज् 165,21. °व्यापद् Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,36. *die Gegend unterhalb des Nabels:* वस्तिर्नाभेरधः AK. 2,6,2,24. MED. t. 54. वस्तिः (स्त्रियाः) प्रशस्ता विपुला मृद्वी स्तोकं समुन्नता। रोमशा च सिराला च KÂÇIKH. 37, 44 (nach AUFRECHT). VARÂH. BṚH. S. 51, 34. 52, 6. — 2) *Klystierblase, Klystierbeutel;* auch *das Klystier* selbst MED. SUÇR. 2,196,4. 13. 197, 15. 19. 198,2. 201,5. fgg. सत्तीर 227,2. 20. वस्तिभिर्दीयते यस्मात्तस्माद्वस्तिर्विधीयते ÇÂRṄG. SAṂH. 3,5,1. 2. 7. °विधि Verz. d. Oxf. H. 304,*b*,29. °कल्प 307,*a*,30. वस्त्यर्थमौषधं दत्त्वा KATHÂS. 64,15. वस्त्यौषधं गुदे मूर्ख दीयते न तु पीयते 18. वस्त्यादिदानप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,23. fg. वस्ती (वास्ति) bei Selbstpeinigungen 234,*b*,6. fgg. — 3) sg. und pl. *Fransen* AK. 2,6,3,15. H. 667. MED. HALÂJ. 2,396. — Vgl. अन्त°, इन्द्र°, उत्तर°, नेत्र°, वात°, सिद्ध°, स्नेह°, वास्तेय.

वस्तिक adj. als Bez. eines in einem ehrlichen Kampfe nicht anzuwendenden Pfeiles MBH. 7,8638. वस्तिकः शल्यदण्डसंधौ शिथिलस्तस्योद्धरणे शल्यं बस्तिमध्ये सज्जति दण्डमात्रं निःसरति। अन्ये बस्तक इति पठित्वा शृङ्गघटित इति व्याचख्युः NILAK.

वस्तिकर्मन् n. *Anwendung des Klystiers* SUÇR. 1,196,3.

वस्तिकर्माढ्य m. *Sapindus detergens Roxb., der Seifenbaum* ÇABDAK. im ÇKDR.

वस्तिकुण्डलिका f. *eine best. Blasenkrankheit* ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,40. — Vgl. वातकुण्डलिका.

वस्तिबिल n. *Blasenöffnung* AV. 1,3,8.

वस्तिमल n. *Urin* H. 633.

1. वँस्तु (von 2. वस्) f. *das Hellwerden, Tagen; Morgen, Frühe* Naigh. 1,9. Nir. 3,15. 8,9. वस्तोरुषसः RV. 1,79,6. 7,10,2. दोषा वस्तोः 1,104,1. 179,1. 6,5,2. 39,2. 8,25,21. 10,40,4. वस्तोर्वस्तोः *alle Morgen* 1.3. एकस्या वस्तोः 1,116,21. वस्तोरस्याः *heute früh* 10,110,4. 6,4,2. प्रति वस्तोः 2,39,3. 4,45,5. 10,189,3. मह्नि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः 4,16,4. 1,177,5. VS. 28,12. तपो वस्तुषु राजसि RV. 8,19,31. 60,15. Vgl. auch u. 2. वस् infin.

2. वँस्तु (von 5. वस्) Uṇâdis. 1,76. n. AK. 3,6,2,13. 1) *Sitz, Ort:* व्रण° Suçr. 1,83,7.11. Vgl. कपिल°. — 2) *Ding, Gegenstand, ein reales Ding* AK. 3,4,15,88. Trik. 3,2,8. H. 168. आपणे प्रसारितं वस्तु P. 6,1,82, Schol. इष्ट Megh. 111. स्पृहावती केषु वस्तुषु Ragh. 3,5.5,18. अनास्था बाह्यवस्तुषु Kumâras. 6,13. दर्शनीय Çâk. 25,1. परिहार्य 8.173. अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यकारिका Spr. 237. अवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च 1713. स्वभावसुन्दरं वस्तु 3331. Varâh. Bṛh. S. 51,27. अस्यां (कारण्डकायां) अस्ति च वस्तु किम् Kathâs. 29,10.36,65. Mârk. P. 81,63. स्त्रीवस्त्वेच्छत् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 138. यन्नास्ति तदस्ति वस्त्विति मृषा जल्पद्भिरास्तिकैः Prab. 27,9. °धी 108,5. वास्तव Bhâg. P. 1,1,2.2,6,4.10,23. वस्तूनि पण्यानि 6,16,6. 8,6,25. 8,35. Pańkar. 1,11,12. Pańkat. 157,22. 253,19. Hit. 114,17, v. l. भक्ष्य° Hit. ed. Johns. 1916. श्राद्ध° Pańkar. 1,13,21. Nîlak. 26. 259. Bâlab. 14. नित्यानित्यवस्तुविवेक Vedântas. (Allah.) No. 9. Sarvadarçanas. 13,4. 22,20. fgg. 35,1. 22. 44,10. वस्तुजातम् *die Dinge* 17,12. 53,10. नावस्तुनो वस्तुसिद्धिः *aus Nichts wird nicht Etwas* Kap. 1,79. असो वस्तुनि मात्सर्यमहो भक्तिरवस्तुनि *was da ist, was nicht da ist* Kathâs. 21,49. अवस्तुनिर्बन्धपर Kumâras. 5,66. Kap. 1,20. Bhâg. P. 5,10,6. 7,4,33. Vedântas. (Allah.) No. 20. 79. प्रतिबुद्धवस्तु adj. *Realität* Bhâg. P. 3,28,38. क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति *ein würdiger Gegenstand* Ragh. 3,29. वस्तूनि so v. a. *Geräthe* Bhâg. P. 2,6,24. वस्तुपाणय: *die zu Etwas erforderlichen Dinge in der Hand haltend* 10,84,45. वस्तु am Anfange eines comp. so v. a. वस्तुतस् (s. bes.) *in Wirklichkeit* 5,18,37. — 3) *Sache, Angelegenheit, das worum es sich handelt:* यच्चापि सर्वगं वस्तु तच्चैव प्रतिपादितम् MBh. 1,70. वस्तुष्वशक्येषु समुद्यमश्चेच्छक्येषु मोहादसमुद्यमश्च Kâm. Nîtis. 15,25. निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु Spr. 672. स्मरणं प्रियवस्तुषु 1217. न किंचित्क्वचिदस्तीह वस्त्वसाध्यं विपश्चिताम् 1351. सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः 273. ज्ञात° adj. Kathâs. 17,53. 22,191. 32,131. 60,226.232. वस्तुनि व्यक्तिमागते Râga-Tar. 1,231. वस्तु निर्णेष्यतीं स्वयम् 6,27. हास्यवस्तुषु MBh. 4,118. वक्तारः शास्त्रवस्तुषु Hariv. 13767. उदाहरणवस्तुषु Kumâras. 6,65. कस्मिन्नभिनयवस्तुन्युपदेशं दर्शयिष्यामि Mâlav. 16,12. पानभोजनवस्तुषु Spr. 402. कोपप्रसादवस्तूनि 749. भीतपरित्राण° 3172. — 4) *Stoff, Gegenstand* einer Rede u. s. w. Trik. 3,2,21. im Gegens. zu वाच् *Form der Rede* Spr. 3975. कालिदासग्रथित° (नाटक) Çâk. 3,12. Vikr. 2.3,8. Mâlav. 3,9. Daçar. 1,11.51. Sâh. D. 5,9. 129,19. 257. fg. 281. °प्राधान्य Pratâpar. 7,a,5. 15,b,4. 20,a,2. °प्रतिवस्तुभाव 77,b,2. °ध्वनि 15,b,4. 9. 16,a,2. 8. कथा° Râga-Tar. 1,8. Verz. d. Oxf. H. 50,a, N. 1. °निर्देश *Inhaltsangabe* Sâh. D. 559. Kâvjâd. 1,14. — 5) bei den Buddhisten so v. a. *Statut* Wassiljew 83. — 6) वस्तुसम MBh. 13,5519 fehlerhaft für बभ्रुसम, wie die ed. Bomb. liest. Bhâg. P. 9,4,27 liest die ed. Bomb. °पत्तिषु statt °वस्तुषु. — Vgl. प्रति°, भोग°, मङ्गल्य°, यथा°, युद्ध°, रङ्ग°.

वस्तुक n. = वास्तूक Çabdar. und Râgan. im ÇKDr. — In der Stelle आकृतिविशेषप्रत्ययादनामनूनवस्तुकां संभावयामि Mâlav. 7,22 übersetzt Weber das Wort durch *Herkunft;* wir vermuthen einen Fehler, etwa für °वस्तुभूतां.

वस्तुतस् (von 2. वस्तु) adv. 1) *von Seiten der* (erforderlichen) *Dinge, — Gegenstände:* विधिमन्त्र° Bhâg. P. 5,19,26. देशकालार्ह° 8,23,16. — 2) *in Wirklichkeit* Râga-Tar. 6,364. Weber, Râmat. Up. 287. Bhâg. P. 5,18,5. 6,8,29. 7,13,5. Kull. zu M. 7,17. Sarvadarçanas. 17,1. 30,13. 94,6. 115,11. 177,9. Nîlak. 25. 55. 240. 259. Siddh. K. zu P. 6,3,34. 7,1,53. Kusum. 19,9. Schol. zu AV. Prât. 4,35.

वस्तुता (wie eben) f. 1) *das Gegenstand-Sein:* परिहासवस्तुतां प्रया *zum Gegenstand des Gespöttes werden* Spr. (II) 305. — 2) *Wirklichkeit:* वस्तुतया *in Wirklichkeit* Bhâg. P. 7,10,49.15,58.77.11,18,26.28,32.

वस्तुत्व (wie eben) n. = वस्तुता 2) Kap. 1,21.

वस्तुधर्म m. *die Natur —, die wahre Beschaffenheit der Dinge* Kathâs. 57,129. pl. Sâh. D. 10,16. °त्व n. Kap. 1,44.

वस्तुपाल m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,31.

वस्तुबल n. *die Macht der Dinge* Sarvadarçanas. 15,2. — Vgl. वस्तुशक्ति.

वस्तुभाव m. *Realität, Wirklichkeit:* °भाविम् *in Wirklichkeit* Râga-Tar. 1,309 (st. माग्य ist mit der ed. Calc. भाग्य zu lesen).

वस्तुभेद m. *ein wirklicher —, ein wesentlicher Unterschied* Spr. 2159. Bhâg. P. 8,12,8.

वस्तुवत् (von 2. वस्तु) in उत्तम° *aus den vorzüglichsten Stoffen bestehend:* शय्यासनानि MBh. 1,7210.

वस्तुविचार m. *gründliches Urtheil,* personif. Prab. 70,6. fgg.

वस्तुवृत्त n. *das wirklich Vorgegangene, der wahre Sachverhalt* Râga-Tar. 6,59.

वस्तुशक्ति f. *die Macht der Dinge:* °तस् Spr. 947. pl. 238 (II). Golâdhj. 3,5. — Vgl. वस्तुबल.

वस्तुशासन n. *ein Original-Edict* Râga-Tar. 1,15. *donation de proprietés* Tr., *Schenkungsurkunde über Eigenthum* Lassen (LIA. II, 19, N. 5).

वस्तुशून्य adj. *keine Realität habend, unwirklich* Jogas. 1,9. Verz. d. Oxf. H. 171,a,2.

वस्तूकी f. *eine Gemüseart,* = श्वेतचिल्ली Râgan. im ÇKDr.

वस्तूत्थापन n. in der Dramat. *das Erfinden von Dingen, das Vorführen unwirklicher Dinge* Bhar. Nâṭjaç. 20,58. Daçar. 2,54. Sâh. D. 420.

वस्तूपमा f. *ein Gleichniss, bei dem zwei Dinge schlechtweg ohne Angabe des tertium comparationis, welches als bekannt vorausgesetzt wird, mit einander verglichen werden;* Beispiel: राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव Kâvjâd. 2,16.

वस्त्य n. *Wohnung* AK. 2,2,4. geht vielleicht nur scheinbar auf 5. वस् zurück; vgl. पस्त्य.

वँस्त्र (von 3. वस्) Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,158. n. Sidd. K. 249,b,3. m. (dieses nicht zu belegen) und n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. *Gewand, Kleid; Zeug, Tuch* AK. 2,6,3,17. 3,4,26,204. H. 666. Halâj. 2,393. 5,85. वसिष्व वस्त्राणि RV. 1,26,1. भद्र 134,4. 3,39,2. 5,29,15. 1,140,1. 152,1. 2,14,3. वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति 5,47,1. 6,47,23. 9,8,6. 96,1. AV. 5,1,3. 9,5,25. 12,3,21. 14,2,41. Çat. Br. 3,3,3,4. Kâtj. Çr. 14,1,

20. 2,29. कृत्त° Kauç. 47. 57. वधू° Âçv. Gṛhj. 1,8,12. एक° Gobh. 3,2, 42. Pâr. Gṛhj. 3,10. M. 3,52. 9,219. 11,188. हीनान्नवस्त्रवेष adj. 2,194. MBh. 3,2310. 2730. R. 2,32,16. 52,82. Varâh. Bṛh. S. 41,2. 46,15. क्षौम 54,108. पीत° Weber, Kṛshṇag. 291. Vet. in LA. (III) 8,22. 17,18. स्वनिते वस्त्रपर्णानाम् AK. 1,1,6,2. वस्त्रापकारक M. 11, 51. गोपीनां वस्त्रहरणम् Pańkar. 1,11,6. तद्वस्त्रमरजः प्रावृणोत् MBh. 3,2997. सूक्ष्मवस्त्रमवतिष्य मुनिवस्त्राण्यवस्त ह R. 2,37,7. °परिधान Verz. d. Oxf. H. 86, b, 13. fg. सूक्ष्मवस्त्रधर (जघन) MBh. 3,1827. सितवस्त्रोज्ज्वलधर Varâh. Bṛh. S. 43,30. दिव्यवस्त्रधर Brahma-P. in LA. (III) 54,3. °धारण Verz. d. Oxf. H. 267,b,9. मृतवस्त्रभृत् M. 10,35. मूर्खो ऽपि शोभते तावत्सभायां वस्त्रवेष्टितः Spr. 2225. वस्त्रेण वेष्टितः Weber, Kṛshṇag. 278. °संवीत 279. °गर्भित 276. °च्छन्न Vop. 4, 21. Sûrjas. 13,16. रामलक्ष्मणसंत्रासं वस्त्रं क्षिप्तमिवात्यजत् R. 4,36,2. °भोग Verz. d. B. H. No. 590. पाटयन्निजवस्त्राणि Kathâs. 18,250. °च्छेद das Zerreissen von Gewändern Varâh. Bṛh. S. 71 in der Unterschr. °विच्छेद 107,8. वस्त्रस्यान्तः Halâj. 2, 395. वस्त्रान्त MBh. 3,2217. Spr. 688. Bhâg. P. 4,25,24. वस्त्राञ्चल Kathâs. 18, 181. Hit. 63,8. वस्त्रेणैकेन R. 4,9,24. वस्त्रयोर्युगम् ein Ober- und Untergewand AK. 2,6,3,14. चीनदेशजसद्वस्त्रयुग्मानि Kathâs. 43,75. fg. Weber, Kṛshṇag. 255. °युगल Pańkat. 29,16. वस्त्राणां प्रवरा शाणी Zeug MBh. 3,13027. चीनांशुकं चीनदेशोद्भवो वस्त्रविशेषः Schol. zu Çâk. 33. कृत्रिमवृताः — नानावस्त्रसमावृताः R. 1,9,6. पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता AK. 2,10,29. °परीक्षा Verz. d. B. H. No. 967. Suçr. 1,25,10. वस्त्राधारक Unterlage von Tüchern 2,92,8 (so ist auch 55,11 zu lesen und demnach die Anführung unter धारक zu streichen). °पूतं जलम् Seihtuch Spr. 1232. °गोपनानि unter den 64 Kalâ Verz. d. Oxf. H. 217,a, 18. Am Ende eines adj. comp. f. आ M. 9,70. MBh. 1,4267. एकवस्त्रा 2,2216. 3,2303. Spr. 3658. Kathâs. 21,114. — Vgl. अन्तर्वस्त्र, उत्तर°, नील°, नेत्र°, वि°, स्नान° und unter दशा 1) und युग 2).

वस्त्रक n. dass.: सूक्ष्म° MBh. 2,1892.

वस्त्रकुट्टिम n. Sonnenschirm Trik. 2,8,32. Zelt (?) Hâr. 69.

वस्त्रक्नोपम् adv. so dass das Gewand durchnässt wird; s. u. क्नूय् caus.

वस्त्रगृह n. Zelt Trik. 2,6,34. 3,3,313.

वस्त्रग्रन्थि m. Schurz (नीवि) Trik. 3,2,14.

वस्त्रघर्घरी f. Sieb, Seihtuch Trik. 3,3,239.

वस्त्रदा adj. Gewänder schenkend Ṛv. 5,42,8. वस्त्रद und अवस्त्रद MBh. 3,13400.

वस्त्रदानकथा f. Titel einer Erzählung Wilson, Sel. Works I, 283.

वस्त्रप m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 2,1871.

वस्त्रपञ्जल m. ein best. Knollengewächs, = कोलकन्द Râǵan. im ÇKDr.

वस्त्रपुत्रिका f. eine Puppe aus Zeug Çabdam. im ÇKDr.

वस्त्रपेशी f. Franse H. ç. 136.

वस्त्रबन्ध m. ein Tuch, das umgebunden wird: स्त्रीकटी° als Erklärung von नीवी AK. 3,4,22,214.

वस्त्रभूषण m. ein best. Baum, = माकुरण्ड Râǵan. im ÇKDr.

वस्त्रमथि adj. Gewänder oder Zeug abreissend: तायु Ṛv. 4,38,5.

वस्त्रय्, वस्त्रयति denom. von वस्त्र P. 3,1,21. Mit सम् anziehen: संवस्त्र्य लाक्षिके वस्त्रे Bhaṭṭ. 5,62.

वस्त्रयुगिन् (von वस्त्र + युग) adj. in ein Ober- und Untergewand gekleidet P. 8,4,13, Schol.

वस्त्रयोनि f. der Stoff, aus dem ein Zeug bereitet wird: त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिः AK. 2,6,3,12.

वस्त्ररङ्गा f. eine best. Pflanze, = कैवर्तिका Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten Worte.

वस्त्ररञ्जन m. Safflor Râǵan. im ÇKDr.

वस्त्रवत् (von वस्त्र) adj. ein schönes Gewand habend, schön gekleidet MBh. 5,904. जिता सभा वस्त्रवता Spr. 4075.

वस्त्रवेश m. Zelt Med. m. 11.

वस्त्रवेश्मन् n. dass. AK. 2,6,3,21.

वस्त्रान्तर n. Obergewand, Ueberwurf Kaurap. 13.

वस्त्रापथक्षेत्र n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 348, b, 10.

वस्त्रिन् (von वस्त्र) adj. = वस्त्रवत् MBh. 3,13400.

वस्न Uṇâdis. 3,6. m. n. Kaufpreis, Werth AK. 2,9,80. H. 868. an. 2, 283. Med. n. 18 (wo अवक्रय st. अविक्रय zu lesen ist). Viçva bei Uǵǵval. भूयसा वस्नमचरत्कनीयः Ṛv. 4,24,9. वस्नेव वि क्रीणावहा इषमूर्जम् VS. 3,49. यत्कृषते यद्वनुते यच्च वस्नेन विन्दते AV. 12,2,36. P. 4,4,13. 5,1,51. 56. Lohn, n. Med. m. Viçva a. a. O. n. = धन, वस्त्र und मृति (d. i. भृति) H. an. = वसन und द्रव्य Viçva im ÇKDr. = त्वच् Râmâçrama zu AK. nach ÇKDr.

वस्नन n. = कटीभूषण Çabdar. im ÇKDr.

वस्नय् (von वस्न) feilschen: अर्केन्द्रासा वृषभो वस्नयन्ता Ṛv. 6,47,21.

वस्नसा f. Sehne, = स्नायु, स्नसा AK. 2,6,2,17. Trik. 2,6,18. H. 631.

वस्निक adj. = वस्नेन जीवति P. 4,4,13. = वस्नं हरति, वहति oder आवहति 5,1,51. etwa des Preises werth (wenn die Lesart richtig ist): इमां मां यूयं वस्निकां जयाथ Pańkav. Br. 14,3,13.

वस्न्य (von वस्न) adj. werthvoll: अश्व Ṛv. 10,34,3.

1. वस्मन् (von 3. वस्) n. Decke: अवव्ययन्नसितं वस्म Ṛv. 4,13,4.

2. वस्मन् (von 4. वस्) n. Nest: प्र यद्वयो न पप्तन्वस्मनस्परि Ṛv. 2,31,1.

वस्य (von 3. वस्) adj. anzuziehen: स्नात° nach einer Waschung Kâtj. Çr. 7,2,18.

वस्यइष्टि (वस्यंस् + 1. इष्टि) f. das Suchen —, Wünschen von Besserung, — von Wohlfahrt: परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये Ṛv. 1, 25,4. 175,1. युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये 8,75,2.

वस्यंस् = वसीयंस् 1) adj. besser, trefflicher; angesehener, reicher: कृधि वस्यसो नः Ṛv. 2,17,8. 4,2,20. 8,48,6. 80,4. VS. 3,58. सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यान् Ṛv. 6,41,4. 7,32,19. स्त्री पुंसो भवति वस्यसी 5, 61,6. 8,20,18. अङ्क्षाङ्क्षा नो वस्यसा वस्यसोदिहि 10,37,9. TBr. 2,2,9, 10. वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः Ṛv. 8,1,6. यथा वस्यसे प्रतिप्रोच्याहेदं करिष्यामीति TBr. 3,2,2,4. TS. 6,5,10,2. 7,2,8,7. संसद् 4, 2,2. श्रेयान्वस्यसो ऽसानि Taitt. Up. 1,4,3. — 2) n. das Bessere, Beste; Wohlfahrt, Ansehen Ṛv. 1,31,18. 141,12. अस्मां च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ Ṛv. 2,1,16. 9,2. 39,5. 6,44,7. 8,21,9. नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्ति 5,31,2. वस्य इच्छन् 1,109,1. AV. 6,47,3. 7,103,1. Ṛv. 10,92,13.

वस्यस = वस्यंस् in पाप°, श्वो°.

वस्योभूय n. Besserung, Mehrung der Wohlfahrt AV. 16,9,4.

1. वस्र (von 2. वस्) m. Tag Med. r. 84.

2. वस्र (von 4. वस्) n. 1) Haus, Wohnung. — 2) Kreuzweg Med. r. 84.

वस्वनन्त m. N. pr. eines Sohnes des Upagupta Bhâg. P. 9,13,25.

वस्वोकसारा und वस्वौकसारा f. 1) N. pr. eines Flusses MBH. 3,12908. 6,243. R. 2,94,25 (103,26 GORR.). — 2) Bez. von Kubera's Stadt H. 190. MBH. 7,2371. R. 5,9,61. RAGH. 16,10. वस्वौकसारा लिन्द्रस्य धनदस्य च ॥ नलिनीपुर्योः H. an. 5,42. fg. वस्वोकसारेन्द्रपुरे कुबेरनलिनीपुरी: MED. r. 308. An den unter 1) aufgeführten Stellen steht नलिनी als Flussname neben वस्वोकसारा. — Vgl. वसुधारा und वसुसारा.

1. वह्, वँहति und वँहते (NAIGH. 2,14 unter den गतिकर्माणि) DHÂTUP. 23,35 (प्रापणे). imperat. वोळ्हँम्, वोळ्हाम्, ऊढ्वम् TS. वोढ्वम् VS.; अवाट् 2. sg. अवाक्षीत् VOP. 8,134. अवाक्षुस्, वक्षि, वक्षत्, वाक्षीत्, वक्षन्, वक्षतम्, (आ)वक्षति; अवोढ VOP. 8,126. 134. उवाह P. 6,1,17. VOP. 8,134. ऊहँथुस्, ऊहे VOP. 8,134. ऊहिषे, ऊहिरे, ऊहिवंस्, ऊकुषी; वक्ष्यति Kâr. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. वहिष्यति MBH. 1,4796. 6053. BHÂG. P. 4,25,36. PAÑKAT. ed. orn. 22,21. वोढा, वोढुम् P. 6,3,112. वोळ्हवे; ऊढ्वा; pass. उह्यँते; ऊढ P. 6,1,15. Hierher zieht MAHÎDH. auch वँहस्व VS. 8,26, was vermuthlich eine Entstellung für वस्स्व oder वत्स्व (von 3. वस्) ist. Vereinzelt ist (नि) उह्णीत 3. sg. potent. 1) *führen, fahren; mit Gespann* oder *zu Schiffe bringen, — fortführen, den Wagen ziehen, die Rosse führen* d. h. *lenken*: रथेन वामम् ṚV. 7,71, 2. अश्वा उषसं वहन्तः 75,6. रथः सूर्यो वहति 4,44,1. अरं वहन्ति मन्यवे (अश्वाः) 6,16,43. नौभिः 1,116,3. पतंगैः 4. अश्वैः 175,4. युक्तं वांह्नष्ठा धुरि वोळ्हवे 5,56,6. 1,116,5. 18. एको अश्वो वहति रथम् 164,2. इन्द्रं हरी सोमपेयाय वक्षतः 8,14,12. अश्व ऊहिवान् AIT. BR. 3,47. ÇAT. BR. 6,6,3,3. PAÑKAV. BR. 13,12,14. AV. 6,82,2. ÇAT. BR. 1,4,4,15. KÂTJ. ÇR. 15,4,32. TS. 1,3,8,2. वहतं (die Füsse angeredet) पृणतो गृहान् AV. 1,27,4. वहे वायो नियुतो याह्यस्मयुः ṚV. 1,135,2. 7,90,1. — वहन्ति ये (अश्वाः) रथम् MBH. 3,1720. R. GORR. 2,51,10. ते हयाः — अवहन्माम् MBH. 5,7107. R. 2,45,11. R. GORR. 2,41,15. हयाः — वहन्ति देवमादित्यम् BHÂG. P. 5,21,15. पुरुषाणां शतान्यष्टौ मञ्जूषामष्टचक्रस्थां गुर्वीमूहुः कथंचन R. GORR. 1,69,4. उवाह मां हिरण्यपुरमत्तिकात्। रथेन तेन मातलिः MBH. 3,12214. शीघ्रं मां वहस्व 13179. वह मां कौरवान्प्रति 4,1250. यद्नेन रथेनैव त्वां वहेयं पुरीं पुनः R. 2,52,51 (51,19 GORR.). HARIV. 9136. ततो मामवहत्सूतो हयैः MBH. 5,7181. BHÂG. P. 10,1,34 (med.). तच्छिष्यानवहद्वत्सम् VOP. 5,6. ग्राममजां वहति SIDDH. K. zu P. 1,4,51. नहि वोढुं रथः शक्तः शरान्मम MBH. 1,8169. Agni *führt* oder *geleitet* die Gegenstände des Opfers zu den Göttern: स्वाहाकृतं वक्षि हव्यम् ṚV. 2,3,11. 3,29,4. 10,15,12. AIT. BR. 3,47. अस्यापो यज्ञं वहन्ति 2,20. VS. 29,3. कति पात्राणि यज्ञं वहन्ति TBR. 1,5,4,1. आज्यम् AV. 5,8,1. घृतम् 7,109,2. 9,5,17. ÇAT. BR. 2,2,3,28. med. ṚV. 2,34,12. VS. 6,13. KAUÇ. 5. न च हव्यं वहत्यग्निः M. 4,249. R. 5,7,62. BHÂG. P. 4,7,41 (med.). हविः ÇÂK. 1. यज्ञम् R. 5,89,19. त्रिस्रोतसं वहति यो (वायुः) गगनप्रतिष्ठाम् *dahin treiben* ÇÂK. 165. — 2) intrans. *fahren, zu Wagen durchlaufen, den Wagen lenken, am Wagen* u. s. w. *ziehen, dahinfahren*; med.: वँहमाना रथेन ṚV. 5,31,9. 36,5. अश्वैः 7,45,1. य आश्वश्वा वहन्ते 5,58,1. 60,7. 8,46,26. VS. 27,33. act.: ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धिय ऊहथुः शश्वदश्वैः 6,62,3. वहन्नश्वः: *ein am Wagen ziehendes Pferd* M. 8,146. कथमल्पप्राणा वक्ष्यन्तीमे हया मम MBH. 3,2786. 2795. आलिखन्त इवाकाशमूहुः (हयाः) 4,1233. हयाश्च नागाश्च वहन्ति देशिताः Spr. 463. R. 2,74,12 (76,17 GORR.). यानैः किंकरसंयुक्तैरुवाह मधुसूदनः *fuhr dahin* HARIV. 6932. वहते ऽयं मघवा सर्वसेनः *zieht* (in reisigem Zuge) ṚV. 5,30,3. अपश्यं ग्रामं वहमानमारात् 10,27,19. न नाभिभङ्गे ह्यरयो वहन्ति *laufen, rollen* Spr. 2420. वियति वहतां नक्षत्राणाम् *dahin ziehen* PRAB. 54,13. *dem Wasser entlang hinfahren, schwimmen*: वहता देहेन वहनेन च KATHÂS. 26,21. गङ्गां गच्छत तत्रान्तर्वहन्तीं यां च पश्यथ। मञ्जूषाम् 15,40. प्रवाहे वहदायातं सौवर्णं पद्मपञ्चकम् 40,84. 59,4. — 3) pass. dass.: उह्याते अन्नैः अनु सोमपेयं सुखो रथः ṚV. 1,120,11. वहतुरुह्यमानः AV. 14,2,9. वाजिभिरुह्यमानाः MBH. 3,15672. उह्यन्तो वाजिभिर्द्रुतम् 1,5337. उह्यमान इव वाहनोचितः पादचारमपि न व्यभावयत् RAGH. 11,10. युग्यैः क्षितिभुजां योग्यैरुह्यमानाः (so ist zu lesen) RÂGA-TAR. 5,33. रथमुह्यन्तं दिव्यतुरगैः HARIV. 6198. स रथो भ्राजते ऽत्यर्थमुह्यमानो रणे तदा। उह्यमानमिवाकाशे विमानं पाण्डुरैर्हयैः (so die ed. Bomb.) MBH. 7,757. उह्यमान इवाकाशे कालमेघेन चन्द्रमाः HARIV. 3757. याति वियत्युह्यमानेव (उल्का) VARÂH. BṚH. S. 33,7. 24. तेन प्लवेन स यथावुह्यमानो महीतले *zu Schiffe fahrend* MÂRK. P. 74,12. स्रोतसोह्यमानस्य (so ist zu lesen) *vom Strome getrieben werdend* VIKR. 24. मञ्जूषागतो गर्भस्तरंगैरुह्यमानकः MBH. 3,17151. वेदशास्त्रार्णवे घोर उह्यमाना इतस्ततः Verz. d. Oxf. H. 91,a,2. गुणौघैरुह्यमानः MAITRJUP. 3,2. 6,30. — 4) *fliessen, mit sich führen* (von Flüssen): महिमानं वहन्तीः परि यन्ति ṚV. 2,35,9. 9,83,1. प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति 10,28,4. तिरश्चीरापो वहन्ति AIT. BR. 4,25. वहन्ती: (sc. आपः) *fliessendes Wasser* TS. 7,4,14,1. 6,4,2,3. KÂṬH. 22,13. KAUÇ. 32. उदकमवहत् *stehendes Wasser* ÂÇV. GṚHJ. 4,4,10. प्रत्यग्गङ्गमहानद्यः प्राङ्मुखाः सिन्धुसत्तमाः MBH. 5,2998. 16,3. HARIV. 8287. 8297. तीरेदाः — वहन्ति यत्र वै नद्यः MBH. 13,3790. R. 4,41,55. परोपकाराय वहन्ति नद्यः Spr. 1734. 3921. KATHÂS. 39,37. Verz. d. Oxf. H. 120,a,16. BHÂG. P. 7,4,17. MÂRK. P. 99,6. वहति निकटे कालस्रोतः Spr. 1158. छन्देन चोदकं तस्य वहत्यावर्जितं द्रुतम् *zufliessen* MBH. 3,2936. नद्यश्च सरितो वारि वहन्त्यो ब्रह्मसंभवम् 14,783. ऊहुः सर्वरसान्नद्यः BHÂG. P. 4,19,8. तोयं वहति सिरा पश्चिमा VARÂH. BṚH. S. 54,6. 19. 21. 36. 39. 66. 71. 73. अस्त्रौघं मुमुचुर्वहुः *liessen einen Thränenstrom fliessen* BHÂG. P. 4,9,48. (शिरः) ववाह (!) रक्तम् MÂRK. P. 88,45. — 5) *wehen* (*dahinfahren* vom Winde): मन्दं वहति मारुतः R. 3,78,13. Spr. 3137. GÎT. 5,2. SÂH. D. 19,18. — 6) *heimführen, heirathen*; med.: जनीः ṚV. 1,167,7. 5,37,3. य ईं वहाते य ईं वा वरेयात् 10,27,11. MBH. 1,3377. 3384. act.: उभे ते एकशुल्केन वहेत् M. 8,204. 9,94. R. 1,73,36. KATHÂS. 45,357. 58,86. 84,65. BHÂG. P. 3,3,4. 4,1,6. 6,6,31. 9,2,18. 24,22. वोढुम् 4,8,18. MBH. 13,5090. act. vom Weibe: जाया पतिं वहति वग्नुना सुमत् ṚV. 10,32,3. ऊढा *geheirathet, verheirathet* (*Gattin* H. 513) AK. 2,6,1,23. MBH. 5,7459. R. GORR. 2,34,8. 53,16. KUMÂRAS. 5,70. KATHÂS. 36,54. अनूढा R. 2,63,13. so v. a. *Concubine* SÂH. D. 81. ऊढपूर्वा ÇÂK. 79,15. 110,17. दैवोढा, आर्षोढा M. 3,38. कायोढज ebend. aus metrischen Rücksichten statt कायोढाज. अनूढ *unverheirathet* (vom Manne) AK. 2,7,55. H. 526. ऊढात्प्रभृति *seit der Verheirathung* (eines Weibes) MBH. 5,2961. Die Form वोढ (vgl. सोढ) in der Stelle: इदं भार्याशतम् — पुत्रार्थिना मया वोढम् (वोढम्?) MBH. 3,10482. — 7) *mit sich —, bei sich führen*: न स पथ्योदनं वहेत् Spr. 4816. यो हि दिवा द्विजश्रेष्ठं गजकान्तो वहेत् 2575. — 8) *zuführen*: गुहासमीरणो गन्धान्नानापुष्पभवान्वहन् R. 2,94,14. दिव्यगन्धवहद्वात KATHÂS. 50,190. 55,34. निदाघकाले प्रालेयं प्रायः शैत्यं वहत्यलम् Spr. 1295. र-

सिको हि वहेत्काव्यं पुष्पामोदमिवानिलः so v. a. *in die Weite führen, verbreiten* Kathâs. 8,10. *darbringen:* बलिम् Bhâg. P. 1,13,39. 3,21, 16. 5,1,14. 6,3,13. भागम् 9,3. *bringen* so v. a. *verschaffen, bewirken:* तेषां योगक्षेमं वहाम्यहम् Bhag. 9,22. मनोवाग्देहवस्तुभिः । प्रेयसः परमां प्रीतिमुवाह Bhâg. P. 9,18,47. दुःखानिवहम् 3,9,9. — 9) *wegführen:* (सरस्वती) वेगेनोवाह तं विप्रं विश्वामित्राश्रमं प्रति MBh. 9,2391. अद्रेः शृङ्गं वहति पवनः किं स्वित् Megh. 14. तं (रेणुं) वहत्यनिलः शीघ्रम् R. 2,93, 14 (102,16 Gorr.). Mârk. P. 17,3. कुहूलद्मीम् MBh. 1,4796. उह्यमानः (जलेन) 9,2386. जलेनोढम् *vom Wasser fortgeschwemmt* M. 8,189. ऊढ *fortgeschleppt, geraubt* 9,270. — 10) *tragen:* पृष्ठेन MBh. 1,5888. 6053. Kathâs. 22,140. स्कन्धेन Spr. 2764. 3924. मूर्ध्ना 2684. Megh. 17. शिरसा Spr. 1847. Kathâs. 62,115. मूर्ध्नि 114 (med.). Bhâg. P. 8,20,18. 9,4,54. Bhatt. 14,91. वक्षसि Spr. 592. हृदि Kathâs. 56,245. शृङ्गोढघन Bhâg. P. 3,13,40. तेषामहं पादसरोजरेणुम् — वहेयाधिकिरीटमायुः 4,21,42. मुखे निबद्धां निर्भ्रतिम् Spr. (II) 576. धर्मराजं च धौम्यं च कृष्णां च यमजौ तथा । एको ऽप्यहमलं वोढुम् MBh. 3,11019. fgg. 4,148. R. 3,4,26. 5,35,31. Kathâs. 18,170. 22,142. यत्रारोहन्ति जेतारो वहन्ति च पराजिताः ein Spiel Bhâg. P. 10,18,21. fg. वहन्ति शिबिकामन्ये यान्त्यन्ये शिबिकागताः Spr. 4699. Bhâg. P. 5,10,2. 6. खे खेलगामी तमुवाह वाहः Kumâras. 7, 49. खरवत् Spr. 4780. करभाणां सहस्राणि कोशं तस्य — ऊहुर्दश MBh. 2, 1201. वाहकैरुह्यमानां तां प्रैरैः R. 4,24,21. 5,73,48. गुह्यकैरुह्यमाना सा (सभा) MBh. 2,385. उह्यन्ते स्म सुपर्णेन Ragh. 10,62. Pańkat. 198,17. fg. वसुधा तयोहे येन Bhatt. 2,39. अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान्वहन्तः Çâk. 176. शरीरमेको वहते ऽन्तरात्मा MBh. 12,6917. गर्भम् *eine Leibesfrucht tragen* Spr. 1596. (नावः) वहन्त्यो जनमारूढं तदा संपेतुरापगाः R. 2,89,17. fg. (97,22. fg. Gorr.). तं जनमसत्यसंधं भगवति वसुधे कथं वहसि Spr. 484. Bhâg. P. 8,20,4. वहति भुवनश्रेणीं शेषः Spr. 2763. अम्भोनिधिर्वहति दुर्वहवाडवाग्निम् 203, v. l. (II). Kathâs. 25,100. कार्यधुरम् MBh. 8,1663 (med.). R. Gorr. 2,21,12. 36,14. भारं स वहते तस्य Spr. 4919. Bhatt. 3,51. 15,20 (भरम् st. परम् Comm.). Bhâg. P. 5,2,11. 8,6,34. चिरोढां धुरम् Ragh. 18,11. Râǵa-Tar. 5,171. छत्त्रम् Spr. 4891. चापम् Megh. 72. Kathâs. 22,92. (या अलका) वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमानैर्मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम् Megh. 64. कतोह कवचं वहमानाः P. 3,2, 129, Schol. घर्मे वहन्वर्म Râǵa-Tar. 5,195. रक्तांशुकम् Mṛkkh. 10,9. वसन्तपुष्पाभरणम् Kumâras. 3,53. नानालिङ्गानि Râǵa-Tar. 4,178. 1,2. शिरः so v. a. *den Kopf hoch tragen* Hariv. 7105. शिरांसि गर्वितान्यूहुः 8321. मूर्धानम् — उच्चैस्तरां वक्ष्यति शैलराजः Kumâras. 7,68. वसुंधराम्, क्ष्मामण्डलम् *tragen* so v. a. *regieren* Râǵa-Tar. 1,101. 4,119. असुभिरुह्यमानाः *von den Lebensgeistern getragen* so v. a. *am Leben erhalten* Bhâg. P. 5, 26,22. — 11) *ertragen:* मनोभवम् Mârk. P. 18,41. *ertragen* so v. a. *nachsehen, verzeihen* Bhâg. P. 5,3,15. — 12) *an sich tragen, haben:* यच्चाश्रुपातात्कलिलं वदनं वहसे MBh. 11,43. वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरम् Mṛkkh. 13,15. पीयूषपूर्णाकुचकुम्भयुग्मम् Kaurap. 26. वीरकायवहद्वाहा Kathâs. 47,52. दृशा बाष्पकलामुवाह Bhâg. P. 4,8,16. वहन्निव रविप्रभाः Râǵa-Tar. 4,197. — 13) *sich unterziehen, sich hingeben; an den Tag legen, äussern:* अग्निम्, विषम्, तुलाम् *sich dem Gottesurtheil mit dem Feuer, dem Gift, der Wage unterwerfen* Jâǵń. 2,99 (vgl. Z. d. d. m. G. 9,677, N.). वहाम सर्वे विवशा यस्य दिष्टम् Bhâg. P. 5,1,11. भगवतो ऽनुशासनम् 20. दुर्वहं योगम् MBh. 13,1918. मानुषीं दीक्षाम् Hariv. 3735. नियमान् Bhâg. P. 3,16,7. सूर्याधिकारम् Mârk. P. 111,3. कपटम् MBh. 1,3094. अधर्मम् R. 1,23,7. लज्जाम् Spr. 382 (II). खेदम् 568. पश्चात्तापम् 3055. चिन्तामेकाम् Kathâs. 11,7. 79,10. निद्राम् Bhâg. P. 3,9,19. संरब्धिसिंहप्रहतम् Ragh. 16,16. प्रीतिम् Hariv. 4189. जीविताशाम् 8091. मानम् 8315. वाल्लभ्यं केशवमयम् 8321. मानम्, मदनम्, मदम् 8433. धैर्यम् R. 5,33,41 (med.). शोभाम् Megh. 53. गर्वम् Spr. 826. द्विगुणारुचिम् 2026. निष्ठुरताम् 2417. कान्तिम् 3225. Bhatt. 8,49 (med.). महद्दुःखम् Kathâs. 66,143. शूरमानम् Bhatt. 16,5. परमैर्ष्याधर्मम् Pańkat. 218,5. ज्वरम् Râǵa-Tar. 4,526. हृतवातानुकारिताम् 1,252. विफलश्रमत्वम् 4,717. ऊढहास Bhâg. P. 2,7,25. ऊढवयस् = प्राप्तवयस् 4,9,66. — 14) *bezahlen:* मिथ्याभियोगी द्विगुणमभियोगाद्धनं वहेत् Jâǵń. 2,11. 292. — 15) *zubringen* (eine Zeit): बहिः केनाप्युपायेन वह त्वं नालिकाद्वयम् Râǵa-Tar. 4, 570. तत्राप्यहानि द्वित्राणि वहन्नेवाभवत् 290. — 16) वहन् (तन्महं सहस्रा वहन्) Hariv. 4453 fehlerhaft für ज्ञपन्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नवोढा, सहोढ, मूर्धोढ.

— caus. वाहयति, selten °ते 1) *fahren lassen*, (den Wagen) *laufen lassen, lenken:* रथं वाहय (सूत) मे शीघ्रम् MBh. 4,1435. Hariv. 2433. 7300. 9359. R. 2,114,8 (125,18 Gorr.). 7,28,24. 29,7. (die Pferde) *ziehen lassen, lenken:* शनकैर्वाहयन्हयान् MBh. 7,6421. 8,688. महावृषान् Râǵa-Tar. 4,227. Schol. zu Kâtj. Çr. 626,2 v. u. वाहयामास तानृषीन् *liess sie* (wie Zugthiere) *ziehen* MBh. 5,469. 13,4753. mit doppeltem acc. P. 1,4,52, Vârtt. 7. बलीवर्दान्यवान् Schol. (zu Wagen) *Etwas führen:* अर्पितविमानवाहितकाञ्चनकर्पूरवस्त्रकोटिचय Kathâs. 43,250. (ein Schiff) *führen, lenken:* नावम् MBh. 1,2399. तरिम् 4014. Ohne acc. *fahren zu Wagen, sich vermittelst eines Vehikels irgendwohin begeben:* त्वरितं वाह्यताम् (impers.) wird dem Wagenlenker zugerufen R. 2,40,31. अधिष्ठाय च गां लोके भुञ्जते वाहयन्ति च MBh. 12,6705. अवाहयंस्ततः (आधावन्तस्तदा die neuere Ausg.) शीघ्रं बाणस्य पुरमन्तिकात् Hariv. 10476. दक्षिणेन च मार्गेण सव्यं दक्षिणमेव च । वाहयस्व महाभाग ततो द्रक्ष्यसि राघवम् ॥ R. 2,92,13 (in der ed. Bomb. wird ein Vers eingeschoben, so dass dort वाहयस्व in der Bed. *führen* mit वाहिनीम् zu verbinden ist). — 2) *Jmd lenken lassen;* mit dopp. acc.: वाहानवाहयत्पार्थम् Vop. 5,5. — 3) *Etwas tragen lassen* P. 1,4,52, Vârtt. 5. भारं देवदत्तेन Schol. शैलान्कपिभिः Vop. 5,5. उष्ट्रवामीशतवाहितार्थ Ragh. 5,32. Râǵa-Tar. 5,274. Z. d. d. m. G. 14,571,7. 572,4. 8. *Jmd tragen lassen, zum Tragen anstellen:* पशुवच्चैव तान्पृष्ठे वाहयामास MBh. 1,3153. न वाहयेद्द्विजान् Mârk. P. 34,34. *sich tragen lassen* so v. a. *reiten auf* (acc.): तुरगम् 121,8. Kathâs. 12,135. ते वाहयन्तो ऽन्योऽन्यम् Hariv. 3749. तं च मण्डूकैर्वाह्यमानं दृष्ट्वा Pańkat. 199,3. 4. हयारोहेण वाहिता किशोरीम् R. Gorr. 2,125,14. — 4) *tragen;* nur im pass. *getragen werden:* वहन्तो वाह्यमानाश्च Bhâg. P. 10,18,22. वाह्यमानमयःखण्डम् Kâm. Nītis. 11,48. प्रतीपं कृष्यमाणो हि नोत्तरेदुत्तरेन्नरः । वाह्यमानो ऽनुकूलं तु जलौघाद्यसनात्तथा ॥ so v. a. *sich treiben lassend, getrieben werdend* Spr. 1845. अनङ्गवाहित *getrieben von* Ragh. 19,47. वाह्यमानस्य तृष्णया Spr. 1440. — 5) *betreten:* स वाह्यते राजपथः शिवाभिः Ragh. 16,12. वाहयेदध्वशेषम् so v. a. *den Rest des Weges zurücklegen* Megh. 39. — 6) *Etwas in Bewegung setzen, wirken —, arbeiten lassen:* सूनाः M. 3,68. दश सूनास-

ह्स्राणि यो वाह्यति सौनिकः 4,86. असीन् Bhaṭṭ. 14,23. wird von Westergaard und Andern zu वाह् gezogen. — 7) *Jmd anführen, betrügen:* वाहिता वयमनेन Pañkat. 64,6. wird von Benfey auf वाह् zurückgeführt. — Vgl. डुर्वाहित.

— intens. वनीवाह्यते *hinundherführen* Çat. Br. 1,4,3,6. 6.8,1,1.fgg. दृतिषु दृधि वनीवाह्यते Çāñkh. Çr. 14,40,19. — Vgl. वनीवाहन.

— अति 1) *hinüberführen über, vorbeifahren an:* स नो वक्षद्विश्वान्यति डुर्गहाणि Ṛv. 6,22,7. Çat. Br. 13,8,4,6. मृत्युम् 14,4,1,12. Lāṭj. 3,5,1. — 2) *verbringen* (eine Zeit): स्वेनैव धनव्ययेन रममाणाया मासमात्रमत्यवाहि Daçak. 62,10. — Vgl. अतिवोढर्. — caus. 1) *betreten:* लोकातिवाहिते मार्गे Sarvadarçanas. 39,4. — 2) *versetzen:* अलकामतिवाह्येव Kumāras. 6,37. — 3) *verstreichen lassen, glücklich über Etwas hinüberkommen:* अतिवाहितानि मया कथंचिद्घनगर्जितानि Ragh. 13,28. राजपुत्रैः समं सख्यं कृच्छ्रादप्यतिवाह्यते Kathās. 28,111. स शापस्तेन — अतिवाहितः 33,91. insbes. eine Zeit *verbringen:* त्रियामाम् Ragh. 9,70. ऋतून् 19,47. तान्यहानि Kathās. 5,78. 6,133. 12,184. 39,247. 51,209. 54,186. 66,62. 75,2. Rāǵa-Tar. 2,34. 3,159. 190. 4,447. 572. 6,47. Prab. 2,11. 68,6. Pañkat. 185,25. ed. orn. 52,24.

— व्यति med. (व्यतिवहते) Vop. 23,55; vgl. P. 1,3,15, Vârtt. 2.

— समति caus. *verstreichen lassen, zubringen:* दिवसशेषम् Nāgân. 19,10.

— अधि *tragen:* पुरुषानधिवहतः *eine Sänfte* Bhāg. P. 5,10,2. अध्यूढ (s. auch bes.) *aufgesetzt auf* (loc.) Ait. Br 3,41. — Vgl. अधिवाहन.

— अनु 1) *entlang führen:* पन्थाम् AV. 14,2,74. तृणकुणकं स्रोतसानूह्यमानम् *vom Strome fortgetrieben werdend* Bhāg. P. 5,8,4. — 2) med. *nachschlagen, ähnlich werden* Kull. zu M. 3,7. — 3) *betreiben:* लोकयात्राम् Bhāg. P. 12,6,67. — Vgl. अनुवह्.

— अप 1) *wegfahren, wegführen* MBh. 4,2085. तमारोप्य स्वरथे — अपोवाह 6,2347. 5400. fg. रणात् Bhāg. P. 10,76,27. (राक्षसः) कीचकमपोवाह वातवेगेन MBh. 4,462. Hariv. 10726. यज्ञपशुमपोवाह Bhāg. P. 4,19,11. 10, 37,29. Çañk. zu Khând. Up. S. 31. नदी। अपोवाह वसिष्ठं तु प्राचीं दिशम् MBh. 9,2393. वायुरपोवाह तद्रजः 1,1479. अपोवाह च वासो ऽस्या मारुतः 2939. — 2) *wegtreiben, vertreiben:* नैरैरिवोल्काभिरपोह्यमानो महागजः R. 2,21,53. अपोढविघ्न Ragh. 13,22. — 3) *abwerfen:* अपोह्य वसनं स्वकम् MBh. 2,2389. *entfernen, wegschieben:* अनपोढार्गल Ragh. ed. Calc. 16,6. — 4) *aufgeben:* अपवहति Bhāg. P. 5,14,37. अपोढकर्मन् Ragh. 11,25. अपोढनेपथ्यविधि 16,73. तद्वत्त्वपोढपितृराज्यमहाभिषेक 13,70. आसुरं भावमपोह्य Bhāg. P. 6,18,19. सौहृदम् 9,6,44. — Vgl. अपवाह, अपवाह्य und 1. उह् mit अप. — caus. 1) *wegfahren, wegführen, abführen:* रथं युद्धात् R. 6,88,36. 89,3. त्रिगर्तसेनापतिना स्वरथेनापवाहितः MBh. 7,4968. 9,2394. Hariv. 9233. 9237. 10728. 10844. R. 1,1, 51 (54 Gorr.). 2,9,13. R. Gorr. 1,42,2. 43,2. 2,6,26. 3,59,4. 66,25. 5, 32,27. 7,28,19. Mālav. 67,19. Bhaṭṭ. 8,86. कङ्कालम् Rāǵa-Tar. 2,101. अपोवाहित (!) Bhāg. P. 10,76,33. — 2) *vertreiben, verjagen* Daçak. 68,9. 80,10. Pañkat. 231,5.6. — 3) *sich aus dem Staube machen* Daçak. 75, 3. — Vgl. अपवाहक, अपवाहन.

— प्रत्यप *zurückdrängen, zurückstossen:* गृहीत्वा शृङ्गयोस्तं च अष्टादश पदानि सः। प्रत्यपोवाह भगवान् Bhāg. P. 10,36,11.

— व्यप (hierher oder zu 1. उह्) 1) *vertreiben, verscheuchen:* व्यपोढाश्च MBh. 5,2942. व्यपोढे च ततो घोरे तस्मिंस्तेजसि 7,8279. व्यपोह्य मातृदोषम् Bhāg. P. 6,18,66. अव्यपोह्यानिमित्तं हि कार्यं यत्क्रियते — तदनिष्टाय कल्पेत Kathās. 32,42. — 2) *offenbaren, an den Tag legen:* तया ते मानुषं कर्म व्यपोढम् MBh. 8,1610.

— अभि *hinfahren, herbei —, hinführen zu* Ṛv. 1,118,4. रथो न सस्निरभि वक्षि वाजम् 3,15,5. 6,21,12. 37,3. 8,32,9. (मामाशवः) अभि प्रयो वक्षन् 63,14. स्वर्गं लोकम् Çat. Br. 3,8,1,16. 4,1,1,25. Ait. Br. 6,9. 8, 24. घृतकुल्या मधुकुल्याः पितृन्स्वधा अभिवहन्ति Çat. Br. 11,5,6,4. ततो ऽभ्यवहद्व्यग्रो वैराटिः सव्यसाचिनम्। यत्रातिष्ठत्कृपः MBh. 4,1757. fg. Vgl. अभिवहन, अभिवाह्य, अभ्यूढि. — caus. *zubringen* (eine Zeit) fehlerhaft für अति Rāǵa-Tar. 1,332 (wo ausserdem zu lesen ist सत्रपोद्दशवासरा) und Pañkar. 3,7,23.

— आ *herbeiführen, bringen:* आड् वह् P. 8,2,91. अग्ने पत्नीरिहा वह Ṛv. 1,22,9. ते न आ वक्षन्सुविताय वर्णम् 104,2. 113,15. 3,58,1. देवान् 4,8,2. आ वां वहन्तु रथाः 14,4. आ को वहतो मर्त्याय यज्ञम् (die Zeit des Opfers und dadurch dieses selbst) 5,41,7. रयिम् 42,18. उषसं स्वरावहन्तीम् 80,1. 8,34,8. आ वक्षि महि न आ च सत्सि 10,3,7. AV. 3,24,7. 4,23,2. जायाम् 6,78,1. 12,2,42. Çat. Br. 1,4,2,16. fgg. येन यथा हव्यमा वो वहानि 5,1,26. VS. 18,59. सर्वाभ्यो दिग्भ्यो बलिमावहन्तः Ait. Br. 7, 34. श्रियम् Taitt. Up. 1,4,2.1. med. Ṛv. 7,71,3. 8,19,1. partic. आढ Çat. Br. 2,5,2,29. Âçv. Çr. 1,3,22. 3,10,19. ओढा, अवोढा P. 6,1,95, Schol. — आत्राह्यमावहेत् (so die ed. Bomb.) *zuführen* (die Braut) MBh. 13,2407. रुक्मं हिरण्यम् u. s. w. न जातु त्वयमावहेत् *bringe man nicht in's Haus* 4,535. तस्यार्घ्यपुष्पमावहन् R. Gorr. 2,80,11. किमस्य त आवहन्ति *bringen, darbringen* Bhāg. P. 8,22,19. गुरवे प्रीतिम् *bringen, verschaffen* M. 2,246. 3,82. सुखम् MBh. 1,3355. 3,2830. 16709. सौभाग्यम् Hariv. 7155. क्षयम् R. 3,56,27. आपदं घोराम् 5,76,5. रुचिम् Vikr. 48. संगमं प्रियजनेन 128. Ragh. 11,73. ad Çāk. 54. Spr. 1474. 3112. 4436. 5285. Varâh. Bṛh. S. 6,4. 45,8. 77,35. Rāǵa-Tar. 6,248. Daçak. 64,17. Bhāg. P. 1,13,13. 7,15,28. 8,23,9. 9,1,38. 10,65,17. Pañkat. 3,15 (1, 10 ed. orn.) — 2) *heimführen* (als Gattin) MBh. 13,2443. 5079. 5088. Hariv. 120. — 3) *eintragen, bezahlen:* द्विगुणम् Jāǵn. 2,193. — 4) *fortführen:* तेन कूलापहारिणा मैत्रावरुणिरोह्यत *wurde vom Flusse fortgetrieben* MBh. 9,2386. — 5) *sich ergiessen, fliessen:* बलवत्प्रतिविद्धस्य नस्तः शोणितमावहत् MBh. 4,2209. — 6) *tragen:* नानाविचित्रकृतमण्डनम् Kaurap. 19. धुरम् *die Last der Regierung* R. 1,71,15. राज्यम् so v. a. *regieren* Hariv. 1943. — 7) *an den Tag legen, anwenden:* सर्ग उद्यमम् Bhāg. P. 3,9,29. मा रोदीर्धैर्यमावह Mārk. P. 52,5. — Vgl. आवह fg., आवाह. — caus. *herbeirufen:* ऋषिम् MBh. 1,4287. Hariv. 7787. insbes. die Götter zum Opfer u. s. w.: देवताः Çat. Br. 1,7,2,13. 2,6,1,22. 3, 5,2,13. Ait. Br. 1,2. Çāñkh. Çr. 1,4,22. Gobh. 4,3,4. Âçv. Çr. 1,5,24. 4,8,6. Jāǵn. 1,229. 233. MBh. 1,2770. 4887. 4754. 4757 (med.). 15,824. Hariv. 7580. R. 1,13,9. R. Gorr. 1,13,36. Varâh. Bṛh. S. 48,21. fg. Weber, Râmat. Up. 325. Kṛshṇaǵ. 279. 289. Bhāg. P. 11,27,24. Pañkar. 3,13,3. — Vgl. आवाहन.

— अन्वा *herbeiführen:* अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन् Ṛv. 10,29,2.

— अभ्या dass. Ṛv. 1,134,7. 6,63,7. अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक्सुभाषिता Spr. (II) 510.

— उदा *davonführen* Çat. Br. 3, 3, 2, 17. ततो मां सूतस्तूर्णमुदावहत् MBh. 5, 7177. *dahinziehen:* तुरगाः शिखण्डिनमुदावहन् so v. a. *zogen den Wagen des* Çikh. 7, 969. 3, 15704. *hinaufführen:* अग्निर्दिव्यमुदावहन् 12, 12196. *heimführen, heirathen:* सुभद्रां भार्यामुदावहत् 1, 3830. fg. 6, 5601 (nach der Lesart der ed. Bomb.). R. 7, 4, 16.

— समुदा *hinausführen, hinausziehen:* पूर्वं तु बालाः समुदावहन्ति (so die neuere Ausg.) । वृद्धाश्च पश्चात्प्रतिमा नयन्ति Hariv. 8467. *davonführen, forttragen:* ततो हत इति ज्ञात्वा तान्मृतान्समुदावहत् (राक्षसः) R. 7, 69, 15. *dahinziehen* (am Wagen) *Jmd:* (अश्वाः) पुत्रं विराटराजस्य सवरं समुदावहन् MBh. 7, 966. *heimführen, heirathen:* अहं विचित्रवीर्यस्य द्वे कन्ये समुदावहम् 13, 2441.

— उपा *herbeiführen* RV. 1, 74, 6. 3, 35, 2. द्विजगृहे द्विजमोदमुपावहन् Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 17.

— निरा *entführen* Pañkav. Br. 9, 4, 11. *holen:* नावा हिरण्ययीरासन्याभिः कुष्ठं निरावहन् AV. 5, 4, 5.

— समा *zusammen herbeiführen, zusammenbringen, versammeln:* अपदातीनृत्विजः समावहन्ति TBr. 3, 8, 1, 2. Ait. Br. 8, 22. *herbeiführen:* (अनिलः) कदम्बसर्जार्जुनपुष्पभूतं समावहन्गन्धम् Hariv. 8790. med. etwa *sich zusammenfinden:* ताविह संवहावहै Ait. Br. 8, 27. nach Sâj. *sich Lebensunterhalt* (निर्वाह) *verschaffen.*

— उद् 1) *hinausführen, hinaufführen; hinausschaffen, hinaufheben* RV. 1, 50, 1. भुज्युमुहथुर्यासः 7, 69, 7. अपः समुद्रादिवमुद्वहन्ति AV. 4, 27, 4. 13, 1, 36. 18, 2, 22. 19, 25, 1. Kaush. Up. 3, 5. *hinausschaffen* Ait. Br. 2, 19. TBr. 1, 1, 5, 6. श्यावाश्वमार्चनानसं सत्त्रमासीनं धन्वोदवहन् Pañkav. Br. 8, 5, 11. यदीमाविदं रोहिताश्वमाचितं कूलमुद्वहतः *hinaufziehen* 14, 3, 13. हयाः प्रयान्ति देवेश्वरमुद्वहन्तो नभस्तलम् Hariv. 13127. *herausziehen* (Pfeile aus dem Köcher) MBh. 3, 15657. 12, 125. उद्ववाह शरान्घोरत्नावणस्य सुतं प्रति R. 6, 70, 9. *aufheben:* उद्वहेयं भुजाभ्यां हि मेदिनीमम्बरे स्थितः 3, 55, 9. 5, 73, 36. 6, 36, 90. Bhâg. P. 10, 13, 22. *in die Höhe bringen:* पौरवं वंशम् MBh. 1, 3705. — 2) *wegführen* (die junge Frau aus dem Vaterhause) Gobh. 2, 2, 17. Pâr. Gṛhj. 1, 11. Ragh. 7, 32. 67. überh. *heimführen, heirathen:* नोद्वहेत्कपिलां कन्याम् M. 3, 8. 10. 15. 7, 77. Jâǵn. 1, 52. Ragh. 11, 54. Varâh. Bṛh. S. 70, 1. Kathâs. 26, 184. 34, 239. Bhâg. P. 3, 22, 15. 4, 30, 15. 5, 2, 22. 10, 52, 41. Mârk. P. 21, 31. 28, 18. 34, 77. fg. 113, 32. med. M. 3, 4. Kathâs. 36, 56. Bhâg. P. 10, 52, 42. Pañkat. 190, 1. उदवोढ Bhaṭṭ. 2, 48. उदूढा Kathâs. 45, 304. 75, 131. 89, 108. 92, 52. — 3) *zuführen, bringen:* रतिमुद्वहतादद्धा गङ्गेवौघमुदन्वति Bhâg. P. 1, 8, 42. बलिम् 10, 87, 28. द्विषां खेदम् 4, 10, 36. उद्वहिष्यामि तांस्ते ऽहं कामान् 25, 36. — 4) *tragen:* स्कन्धेन Bhâg. P. 5, 8, 10. भारं शिरसा गुरुम् 4, 29, 33. जटाजूटैः 5, 17, 3. MBh. 7, 7963. R. 7, 34, 38 (med.). Ragh. 11, 66. आत्मानमुद्वोढुमशक्नुवन्त्यः 16, 60. Çiç. 9, 73. Hit. 127, 1. परिघं गुरुम् Bhaṭṭ. 9, 7. भारम् MBh. 3, 335 (med.). 336. R. 7, 68, 4. दारिद्र्यभारम् Spr. 446. राज्यभारम् Kathâs. 15, 4. गृहभारम् 22, 156. Bhâg. P. 7, 9, 43. राज्यधुरं गुर्वीम् MBh. 1, 4272. 3, 334. 4, 919. 8, 375. 13, 377. 7169. 14, 25. R. 5, 36, 65 (med.). 6, 112, 109 (med.). Kumâras. 6, 30. Pañkat. ed. orn. 22, 21. जटामण्डलम् Hariv. 4565. रशनाकलापम् Mṛkkh. 11, 15. भूषणम् Ṛt. 3, 7. वासांसि Bhaṭṭ. 3, 42. कौशेयकान्युद्वहते ऽजिनं च Varâh. Bṛh. 27 (25), 27. गार्हस्थ्यम् (als eine Last) MBh. 12, 324. गार्हस्थ्यं भारमाहितम् । स्कन्धे Mârk. P. 29, 41. महीम् so v. a. *regieren* Râǵa-Tar. 3, 529. राज्यम् dass. Kathâs. 86, 16. द्विधा विभक्तां श्रियमुद्वहन्तौ धुरं रथाश्वाविव संग्रहीतुः Mâlav. 89. मनसोद्वहन्ती भृशम् । दुःखान्यधारयन् MBh. 15, 137. पुत्रशोकं धैर्येणोद्वहते 150. R. Gorr. 2, 16, 46. महादेवस्य वचनमुद्वहन्मनसा *im Herzen tragend* so v. a. *eingedenk* Hariv. 8046. *halten* Spr. 846. सरोजमितरेण (करेण) चोद्वहन्ती Varâh. Bṛh. S. 58, 37. पदमुद्वहतमुद्वहन्ती Kumâras. 5, 85. स्कन्धासक्तं हस्तमथोद्वहन्ती MBh. 15, 436. लम्बं शिरस्त्रं वामपाणिना Râǵa-Tar. 5, 342. *festhalten* (Gegens. अपवह् *aufgeben*) Bhâg. P. 5, 14, 37. — 5) *an sich tragen, haben; äussern, an den Tag legen:* अत्यद्भुतरूपम् Bhâg. P. 7, 8, 18. स्कन्धमुद्वहति गोपतितुल्यम् Varâh. Bṛh. 27 (25), 5. Vikr. 150. मनोरथं यौवनम् Kumâras. 1, 19. श्रियमुद्वहति मुखं ते बालातपरक्तकमलस्य Vikr. 136. चिन्ताविषादविपदं च महोत्सवं च Mâlatim. 96, 4. 5. शतगुणीभूतामिवोत्कण्ठाम् Kathâs. 18, 371. नाकारमुद्वहसि Râǵa-Tar. 3, 252. तर्षोत्कर्षम् 478. प्रमादम् 6, 174. गर्वम् Sâh. D. 56, 13. मानम् Spr. 2180. अच्युते तीव्रां भक्तिम् Bhâg. P. 4, 12, 11. 23, 37. 6, 17, 31. वासुदेवे रतिम् 4, 28, 39. प्रभूतमुच्छ्वासम् (so die ed. Bomb.) Pañkat. 141, 4. — 6) *zu Ende führen:* प्रारब्धम् Spr. 1913, v. l. — 7) उदूढ = ऊढ und पीवर (स्थूल) H. an. 3, 189. Med. ḍh. 7. — 8) उद्वहन् (वहन्नाच्छोणितम्) MBh. 3, 16129 fehlerhaft für उद्वमन्, wie die ed. Bomb. liest und wie schon Westergaard vermuthet hatte. — Vgl. उद्वह fg. und उद्वाह. — caus. 1) *verheirathen* (eine Tochter u. s. w.) MBh. 1, 3801. Spr. 512. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) Pañkat. 181, 5. 261, 5. — Vgl. उद्वाहन.

— प्रोद् *äussern, an den Tag legen:* भूतेषु प्रोद्वहंश्चानुकम्पाम् Pañkar. 3, 10, 3. — Vgl. प्रोद्वाह.

— समुद् 1) *hinaustragen, forttragen:* नरेन्द्रं दिधतपत्तः समुद्धराज्ञात् Bhaṭṭ. 3, 33. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) Jâǵn. 3, 261. R. 2, 107, 3 (115, 3 Gorr.). Bhâg. P. 10, 52, 24. — 3) *aufheben:* वज्रसारमयं शिशुम् MBh. 2, 718. कृच्छ्रादिव समुद्वहन् । पदानि 15, 171. — 4) *tragen:* जटाभारम् Hariv. 2825. 12306. मल्लिधुराम् Kathâs. 4, 136. तद्राज्यचिन्ताभारम् 86, 9. मालाम् MBh. 13, 982. दुःखानि 780. मनसा, हृदयेन *im Herzen tragen, eingedenk sein* Hariv. 8749. R. 7, 17, 16. — 5) *an sich tragen, haben, an den Tag legen, äussern:* चतुर्मनोहरं पीनं मेखलादामभूषितम् । समुद्वहन्तो जघनम् R. 7, 26, 16. शक्रकार्मुकरुचम् Varâh. Bṛh. S. 44, 25. स्वेदम् Verz. d. Oxf. H. 171, *a*, 1. विषादम् R. 6, 82, 22.

— उप 1) *herbeiführen:* हरी इन्द्रोप वक्षतः (इन्द्रम्) RV. 1, 16, 2. 47, 8. गृहम् 49, 1. 8, 4, 14. 6, 42. 10, 32, 2. (रथः) य इक्षास्मानुपावहत् MBh. 2, 2064. न मे प्रीतिमुपावहत् *bringen, verschaffen* 13, 709. सर्वं तद्भगवान्मह्यमुपोवाह प्रतिश्रुतम् Bhâg. P. 3, 23, 51. *Jmd zu Etwas bringen, verleiten:* मा त्वं भर्तारमसद्धर्ममुपावह R. ed. Bomb. 2, 35, 28. Hierher oder zu 1. ऊह् उपोढ *herbeigeführt, bewirkt:* कुकर्मभिरूपोढापि लक्ष्मीः Râǵa-Tar. 6, 295. °राग Spr. 3807. °मद Daçak. 83, 11. *nahe gerückt, in der Nähe befindlich, nahe bevorstehend:* °बल Mâlav. 76. °पाणिग्रहणा Kumâras. 7, 4. ततो ऽप्युपोढा रजनी दिनक्षये so v. a. *brach ein* R. Gorr. 2, 116, 49. अनुपोढार्गल *mit nicht vorgeschobenem Riegel* Ragh. 16, 6 gehört zu 1. ऊह्. — 2) उपोढा *eine Hinzugeheirathete* d. i. *Nebengattin* R. 1, 13, 37. — उपोढ = ऊढ H. an. 3, 189. Med. ḍh. 7. — Vgl. उपवह्, उपवाहिन् fg.

— समुप 1) *mit sich führen, strömen lassen:* (नदी) शोणितं समुपावहत् MBh. 9,2400. — 2) pass. *heranrücken, einbrechen, beginnen:* रात्रिश्च समुपोह्यते Hariv. 7369. संग्रामे समुपोळ्हे Âçv. Gṛhj. 3,12,1. इन्दौ समुपोढे so v. a. *aufgegangen* Uttarar. 99,14 (131,14). könnte eben so gut zu 1. ऊह् gezogen werden.

— नि 1) *hernieder —, hereinführen zu* (dat. oder loc.): रथेन नः शं योर्न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् Ṛv. 7,69,5. पत्नीर्विमदाय 1,112,19. 116,1. 10,39,7. जायाम् 1,117,20. 119,4. अश्वम् 117,9. ऊर्जम् 6,65,3. 10,42,8. Çat. Br. 12,2,3,11. med.: पृक्तो नो अर्वा न्युहीत वाजी Ṛv. 7,37,6. — 2) *fliessen:* षडिमा निवहन्त्येता गुडकुल्याः MBh. 12,10318. — 3) *tragen, erhalten:* जगन्निवहते (partic.) Git. 1,16. — Vgl. निवह, निवाह. — caus. *in Bewegung setzen:* ऊर्ध्वं चापि निवाह्यन्तौ (= प्रापयन्तु Nilak.) प्रासा वै तोमरास्तथा Hariv. 5009. st. dessen प्रवाह्यन्ताम् 5487.

— परिणि P. 8,4,17, Schol.

— प्रणि P. 8,4,17, Schol. प्रण्यवाक्षीत् Vop. 8,22. 134.

— निस् 1) *herausführen, retten aus* (abl.): aus dem Wasser Ṛv. 1,117,14. fg. 6,62,6. दुरितात् AV. 12,2,47. *wegschaffen* 18,2,27. यानेन मृतम् Lâṭj. 8,5,6. *wegspülen:* ओघ इमाः सर्वाः प्रजा निर्वोढा Çat. Br. 1,8,1,2.6. — 2) *ausführen, zu Stande bringen:* कर्म Suçr. 1,12,21. — 3) *zu Stande kommen, gelingen:* तत्कर्म निर्वहेच्च नः Kathâs. 32,32. चर्या विना योगो ऽपि न निर्वहति Sarvadarçanas. 82,11. *zu seinem Ziele gelangen, glücklich über Etwas hinwegkommen* Çuk. in LA. (III) 37,22. गृहस्थाश्रयेण सर्वाश्रमिणो निर्वहन्ति Kull. zu M. 3,77. — Vgl. निर्व्यूढि, निर्वहण fg., निर्वाह, निर्वाहिन्, निर्वाह्य, निर्वोढर्. — caus. *zu Ende bringen, verbringen:* बाल्यसमयम् Pañkat. 219,14. *ausführen, vollführen, zu Stande bringen:* कुटुम्बकम् Kathâs. 66,107. मैत्रीम् 55,211. प्रतिपन्नमर्थम् 76,42. प्रतिज्ञातं कार्यम् 123,174. Hit. 106,4. — Vgl. निर्वाहक fg.

— परा *wegführen, wegschaffen zu* (dat.) Ṛv. 5,61,17. दुःष्वप्न्यमाप्त्याय परा वह 8,47,14. AV. 16,6,3. 7. 11. परा च वक्षदुत पर्षदेनान् Ṛv. 10,61,23. विषम् AV. 10,4,20. — Vgl. परावह.

— परि act. P. 1,3,82, Schol. 1) *herumführen:* परि वामश्वा वहन्त्वभीके Ṛv. 1,118,5. AV. 11,3,15. 12,5,3. सोमम् Çat. Br. 3,2,3,17. 3,3,17. 4,8. Kâtj. Çr. 14,1,16. 15,3,42. 4,3. Ait. Br. 1,14. *umherschleifen:* हतान्परिवहन्तः (नागाः) MBh. 7,839. — 2) *herumfliessen:* आपः परिवहन्तीः TS. 7,4,13,1. Âpast. in TS. II, 109,6. — 3) *den Hochzeitszug* oder *die Braut führen* (vom Vaterhaus in das des Gatten); *heimführen, heirathen:* यमस्य माता पर्युह्यमाना ननाश Ṛv. 10,17,1. अर्जुन्योः पर्युह्यते 85,13. तुभ्यमग्ने पर्यवहन्सूर्यां वहतुना सह 38. Bhâg. P. 3,21,15. — Vgl. परिवह, परिवाह, परिवाहिन्.

— प्र act. P. 1,3,81. Vop. 22,1. 1) *weiterführen, vorwärts ziehen* Ṛv. 10,94,6. (सोमः) प्रोह्यमाणः VS. 8,55. Ait. Br. 1,13. हविर्धाने 29. रथ देव प्रवह Âçv. Gṛhj. 2,6,5. Çâñkh. Çr. 9,5,3. कथं रथं त्वया हीनं प्रवक्ष्यन्ति हयोत्तमाः R. 2,52,43. R. Gorr. 2,109,35. *im Fliessen mitführen, wegspülen:* (गङ्गा) प्रवहन्ती शिलाः R. 4,44,63. इदमापः प्र वहत दुरितम् Ṛv. 1,23,22. 10,17,10. VS. 6,17. आपो मरीचीः प्रवहन्तु नो धियः Âçv. Gṛhj. 2,4,14. *hinfliessen, fliessen:* प्रवीरमुण्डपाषाणाः प्रावहन्रुधिरापगाः Kathâs. 116,65. अद्यापि कूलवाहिन्यः प्रवहन्त्युत्तरापथे Râǵa-Tar. 4,306. प्रवहज्ज्वालानाम् Kull. zu M. 3,163. *hinbrausen, wehen:* कालेन शीघ्राः प्रवहन्ति वाताः Spr. 3922. *zuführen:* तत्र दिव्यानि पुष्पाणि प्रावहत्पवनस्तदा MBh. 13,3888. आमोदम् Bhaṭṭ. 8,52. *hinführen zu* (acc.): विषयान् MBh. 12,11170. med. *davonfahren:* प्र यद्वहेथे महिना रथस्य Ṛv. 1,180,9. प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा 10,49,7. 77,6. — 2) *tragen:* राज्यधुराम् Bhaṭṭ. 3,54. — 3) *an sich tragen, haben, an den Tag legen, äussern:* भक्तिं त्वयि Bhâg. P. 4,9,11. 12,18. — प्रोह्य *fortschiebend, ausnehmend* Vop. 6,53, Anf. gehört zu 1. ऊह्. — Vgl. प्रवह fg., प्रवाह, प्रवाहिन्, प्रवोढर्, प्रौढ. — caus. 1) *fortfahren lassen* so v. a. *wegschicken:* die Väter Âçv. Çr. 2,7,9. — 2) *im Fliessen entführen,* pass. *fortgeschwemmt werden:* स त्वेवं नैकधा छिन्नः तारनद्यां प्रवाह्यते Mârk. P. 14,68. — 3) *in Bewegung setzen, in Gang bringen:* ऊर्ध्वं चापि प्रवाह्यन्तां प्रासा वै तोमराणि च Hariv. 5487 (निवाह्यन्तौ st. dessen 5009). लोकयात्राम् R. ed. Bomb. 2,109,27. — 4) लोमप्रवाहितम् MBh. 6,1919 fehlerhaft für लोमप्रवाहिनम् (s. d.), wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्रवाहक, प्रवाहण.

— अतिप्र *darüber hinaus führen, — ziehen:* छन्दः Çâñkh. Br. 11,5.

— अनुप्र 1) *umherfahren, umherführen:* स मां रथेनानुप्रावहत् MBh. 3,13305. 13307. — 2) *vorwärts kommen:* आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम् *quantum, tantum* Ṛv. 10,2,3.

— अभिप्र *hinführen zu* Ait. Br. 6,9.

— प्रति *entgegenführen:* सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेन Ṛv. 3,58,2. आज्यगन्धं प्रतिवहन्मारुतः सुरभिर्ववौ Hariv. 13729. — प्रत्यस्य वह द्युभिः TS. 1,5,3,1 ist aus VS. 3,8 entstellt. — Vgl. प्रतिवाह, प्रतीवाह, प्रतिवोढव्य. — caus. *hinführen im Fliessen, hinschwemmen:* किमर्थं च सरिच्छ्रेष्ठा तमृषिं प्रत्यवाहयत् MBh. 9,2358.

— वि 1) *entführen* Ṛv. 4,27,3. हरो यमस्य वहतो वि सूरिभिः 10,23,3. *wegspülen, wegschwemmen:* लोहितापगा। गजाश्वनरदेहान्सा व्युवाह पतितान्बहून् MBh. 8,2379. — 2) *wegführen* (die Braut aus dem Elternhause) AV. 14,1,13. *heimführen, heirathen* (ein Mädchen) überh.: अतो ऽदत्तां च पित्रा त्वां भद्रे न विवहाम्यहम् MBh. 1,3384. Kull. zu M. 3,4. नेमिभिर्विवहेयुः *eheliche Verbindungen schliessen* Gobh. in Ind. St. 10,21, N. 4. विवहन्मिथः Bhâg. P. 5,13,13. med.: तौ देवविवाहं व्यवहेताम् *feierten eine Götterhochzeit* Ait. Br. 4,27. Pañkav. Br. 7,10,1. *sich verheirathen:* विवहावहै Âçv. Gṛhj. 1,7,6. Çâñkh. Gṛhj. 1,13,4. व्यूढा *geheirathet, verheirathet* Kathâs. 34,6. 238. Bhâg. P. 10,60,48. Prab. 23,14. — व्यूढ s. auch bes. und unter 1. ऊह् mit वि. Vgl. विवाह u. s. w. — caus. 1) *verheirathen* (ein Mädchen) MBh. 6,5601. Spr. 2908. Mârk. P. 51,104. 134,34. गान्धर्वविवाहेनात्मानं विवाहयित्वा Pañkat. 129,9. तेनान्धेन सह विवाहिता 262,3. — 2) *heimführen, heirathen* (ein Mädchen): राजपुत्रेण किं न तावद्विवाह्यते Kathâs. 34,228. 36,54. विवाह्य 49,231. 52,38. 53,84. 84,65. Vet. in LA. (III) 18,19. तेन गान्धर्वविवाहेन सा विवाहिता Pañkat. 46,11. Kathâs. 124,92.

— निर्वि, partic. निर्व्यूढ *ausgeführt, vollbracht* hierher oder zu 1. ऊह्. निर्व्यूढोद्वाहमङ्गल Kathâs. 35,157. प्रतिज्ञात 38,145. *verbracht* Râǵa-Tar. 3,470, wenn °निर्व्यूढं gelesen wird.

— सम् 1) *zusammenführen; führen, hinüberführen* AV. 2,30,2. 6,48,1. 13,3,17. *ziehen:* सीदमानानि चक्राणि समूहुस्तुरगा भृशम् MBh. 8,1116.

नृणां शतानि पञ्चाशत् — मञ्जूषामष्टचक्रस्थां समूहुस्ते कथंचन R. 1,67,4. MBh. 3,13188. *mit sich fortziehen, treiben;* vom Winde Çat. Br. 2,1,4, 8. समुह्यमाना बहुधा येन (वायुना) नीताः पृथग्घनाः MBh. 12,12405. pass. *getragen werden von, reiten auf* (instr.): गरुडेन समुह्यमानः Bhâg. P. 8, 3,31. पक्षिभ्यां कूर्मः समुह्यते Hit. 112,3, v. l. — 2) *entlang fahren mit der Hand, streichen:* तस्याः पादौ कराभ्यां शनकैः संववाहतुः MBh. 3,11005. 1,6639. 13,2760. Westergaard stellt diese unregelmässige Form (st. समूहतुम्) zu वाह्. — 3) *an den Tag legen, äussern:* वासुदेवे समुवाह भक्तिम् Bhâg. P. 9,5,25. — 4) समुह्य *in Ordnung bringend* (कुटिलालकान् Bhâg. P. 10,43,3. केशान् 60,26) gehört zu 1. ऊह्. — Vgl. समूढ und 1. ऊह् mit सम्. — caus. 1) *zusammenführen, sammeln:* क्षिप्रं संवाह्यतां व्रजः Hariv. 3496. सैन्यम् Râǵa-Tar. 4,468. — 2) *fahren, lenken* (den Wagen u. s. w.), *hinfahren, hinführen:* सूतः संवाहयामास रथम् R. 6,79,7. Kathâs. 56,375. MBh. 13,5734. रथमास्थाय द्रुतमश्वानचोदयत्। संवाहयितवांश्चापि राजदारान्पुरं प्रति॥ 9,1653. *heimführen* (eine Gattin) Vet. in LA. 17,14, v. l. *jagen, treiben:* सो ऽपि संवाह्यते लोके तृष्णया Spr. 540. — 3) *entlang fahren mit der Hand, streichen* R. 2,91, 52 (100,51 Gorr.). R. Gorr. 2,80,10 (med.). Çâk. 69. Kathâs. 66,157. Bhâg. P. 10,38,39. Weber, Kṛshṇaǵ. 288. fg. Comm. zu Gît. 12,3. — Vgl. संवाह fgg.

— अनुसम् *ziehend folgen:* प्रष्ठ्यो युक्ता अनुसंवहन्ति AV. 10,8,8. *entlang führen:* तां दिशो ऽनु वातः समवहत् TBr. 1,1,3,7.

2. वह् oder वाह् (= 1. वह्) am Ende eines comp. *fahrend, ziehend, führend, tragend, haltend* u. s. w. P. 3,2,64. Declination 6,4,132. Vop. 3,102. fg. Bildung des fem. 4,9. P. 4,1,61. VS. Prât. 4,56. उडुपतिवाडिवाम्बुदः Bhâg. P. 10,18,26. — Vgl. अनडुह्, अनो°, अप्सु°, इध्म°, इन्द्र°, गिर्वह्, तुर्य°, दक्षिणा°, दित्य°, पष्ठ°, पार्ष्णि°, पूर्व°, पूर्वाग्नि°, पृष्टि°, प्रष्ठ°, प्रेत°, भार°, भू°, मध्यम°, वज्र°, वीर°, विश्व°, श्वेत°, सह°, सुष्टु°, हविर्वह्, हव्य°.

वह (von 1. वह्) 1) adj. (f. आ) *fahrend, führend, ziehend* u. s. w.: प्रतिस्रोतोवहा नदी *gegen den Strom fliessend* MBh. 9,3304. सर्वलोक°, परलोक°, पर° *hinfliessend in, nach* 8,3324. fg. 9,441. रणभूमि° *durchfliessend* 7,895. वसामेदोवहाः कुल्याः *strömend, mit sich führend* 1, 2052. 8466. 3,8397. पुण्यवहा नद्यः 16744. 13,3166. R. 4,13,5. 44,95. Varâh. Bṛh. S. 46,48. सर्वगन्ध° (वायु) *führend, verbreitend* M. 1,76. MBh. 3,1764. R. 3,78,13. योगक्षेम° *bringend* 2,115,14. अनवरतसंचय° Varâh. Bṛh. S. 38,5. मर्मव्यथा° (oder zu आवह) Râǵa-Tar. 3,277. Spr. 1155. क्लेश° Bhâg. P. 4,21,31. अनर्थ° 10,70,39. न ता नदीशब्दवहाः *nicht den Namen* नदी *führend* Khandogapar. bei Kull. zu M. 4,203. रज्जुयन्त्र° (कंसयुग) *versehen mit* Kathâs. 43,25. रजोरूप° *habend* Mârk. P. 102,2. शीतयोग°, अग्नि° so v. a. *sich der Kälte —, sich dem Feuer aussetzend* MBh. 13,6546. 6548. — 2) subst. वह P. 3,3,119. gaṇa भीमादि zu 4,74. वृषादि zu 6,1,203. a) m. n. *Schulter des Joch-* oder *Zugthiers* AK. 2,9,63. Trik. 3,3,459. H. 1264. an. 2,602. Med. h. 8. Halâj. 2,112. AV. 4,11,7 (oder zu b). 9,7,3. VS. 25,3. TS. 7,3,16,1. Çat. Br. 1,1,2,9. 2,2,3,28. 4,5,1,15. ऊरुषो वहं प्रत्यनक्ति Pankav. Br. 13, 12,15. Nir. 3,9. MBh. 4,49. Vgl. u. 1. स्कन्ध. — b) m. *der Theil des Jochwagens, welcher auf der Schulter des Thieres liegt, Schulterstück des Joches:* मध्यमेतदनडुहो यत्रैष वह आहितः AV. 4,11,8. वहा वा आग्नेया रथस्य Çat. Br. 5,4,3,15. — c) m. *Pferd* Med. — d) m. *Fluss* Trik. 1, 2,30. H. 1090. — e) m. *Wind* Trik. H. an. H. ç. 170. Med. — f) m. *Weg* Trik. 2,1,18. — g) m. *ein best. Gewicht* (*Last*) = 4 Droṇa Çabdârthak. bei Wils. Verz. d. Oxf. H. 307,b,2. — h) nom. act. in दुर्वह und सुवह°. — 3) f. आ *Fluss* H. 1080. — Vgl. अंशी°, गन्ध°, जगद्वहा, दारुवह, दुर्वह, धूर्वह, पीलु°, प्रावृत्काल°, मुनी°, मूत्र°, योग°, रस°, रुचि°, वारि°, सुख°, स्रोतो°, हुत°.

वहंलिह् adj. *die Schulter leckend:* गो P. 3,2,32.

वहन्त् (von 1. वह्) f. nach Sâj. *Fluss* ṚV. 3,7,4. — Vgl. स्रवत्.

वहत (wie eben) m. *Stier; ein Reisender* Uṇâdik. im ÇKDr.

वहति (wie eben) Uṇâdis. 4,60. m. *Wind* Uǵǵval. *Stier; Gefährte* Med. t. 149. — Vgl. वहतु.

वहती (wie eben) f. *Fluss* Çabdârthak. bei Wilson.

वहतु (wie eben) Uṇâdis. 1,79. m. 1) *Brautzug* (*der Zug in's Haus des Gemahls, sammt Geleit und Mitgift*); überh. *Hochzeit:* कन्या इव वहतुमेतवा उ ṚV. 4,58,9. सूर्याया: 1,184,3. वहतुः प्रागात् 10,85,13. 14. 20. 31. 38. त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति 10,17,1 (AV. 3,31,5). पुंस इन्द्रो वहतुः परिष्कृतः 32,3. AV. 10,1,1. उह्यमान 14,2,9. 12. यद्दुष्कृतं विवाहे वहतौ च यत् 66. 73. तस्या एतत्सहस्रं वहतुमन्वाकरोद्यदेतदाश्विनम् Ait. Br. 4,7. pl. *Gegenstände der Mitgift* TBr. 1,5,1,2. — 2) etwa *Darbringung:* उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे ṚV. 7,1,17. *Mittel der Darbringung,* nämlich स्तोत्र und शस्त्र nach Sâj. — 3) *Stier* Med. t. 149. Uǵǵval. — 4) *ein Reisender* Med.

वहद्गु (वहत्, partic. praes. von 1. वह्, + गो) adv. *zur Zeit wann die Stiere im Anspann sind* gaṇa तिष्ठद्ग्वादि zu P. 2,1,17.

वहन (von 1. वह्) 1) adj. *fahrend:* वरविमान° Kathâs. 43,242. 119, 196. *führend, auf seinem Rücken tragend:* राज° (नाग) MBh. 2,2076. — 2) n. a) *das Fahren, Führen:* हविषाम् Nir. 7,8. हव्य° (अग्नेः) MBh. 2, 1146. *das Fliessen des Wassers* Nir. 6,2. *das Mitsichführen:* मणिकुसुमाद्य° der Krähen Varâh. Bṛh. S. 95,12. *das Tragen:* धराभार° Spr. 5152. — b) *Schiff* Trik. 1,2,13. H. 876. Kathâs. 25,45. 26,7. 123. — c) *der unterste Theil einer Säule* Varâh. Bṛh. S. 53,29. उद्वहन dass. Cit. beim Schol. — Vgl. चतुर्वहन, पूर्वाग्नि°, सोम°.

वहनभङ्ग m. *Schiffbruch* Kathâs. 25,58. 26,127. 54,87.

वहनीकार् (वहन + 1. कार्) *zum Vehikel machen* Kathâs. 65,36.

वहनीय (von 1. वह्) adj. *zu fahren, zu führen, zu ziehen, zu tragen* P. 4,3,120, Vârtt. 2, Schol. Vop. 26,25.

वहन्त (wie eben) Uṇâdis. 3,128. m. *Wind* Uǵǵval. *Knabe* Uṇâdik. im ÇKDr.

वहराविन् adj. *wund vom Schulterstück des Joches:* आन्ता आन्ता अक्षणावन्तो वहराविणी *matt, schulterkahl* (*abgerieben;* vgl. 1. अक्षन्), *jochwund* Ait. Br. 5,9. *unter dem Joche Schmerzenstöne ausstossend* Sâj., indem er राविन्, welches wir zu 3. रु stellen, auf 1. रु zurückführt.

वहल (von 1. वह्) 1) adj. oxyt. (f. आ) *im Joch gehend, zuggewohnt:* अनडुही Çat. Br. 5,2,4,11. 13. — 2) n. *Schiff* Hâr. 142. wohl nur fehlerhaft für वहन. — Vgl. गन्ध°, welches richtiger °वहल geschrieben würde; vgl. बहलगन्ध.

वहित्र (wie eben) n. *Schiff* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,172. Vop. 26,169,

v. l. Trik. 1,2,13. Gît. 1,5. Kull. zu M. 3,158. ज्ञगद्वीज्ञवर्हित्रधृक् Pańkar. 4,3,57.

वर्हित्रक n. dass. H. 875.

वर्हित्रभङ्ग m. *Schiffbruch* Sâh. D. 130,6.

वर्हिन् (von 1. वह्) adj. *im Joch gehend, zuggewohnt* TBr. 1,4,4,10. 6,1,6. fgg. 7,1,4. TS. 1,8,1,1. 3,1. 2,2,2,1. Kâtj. Çr. 15,1,19.

वर्हिष्ठ (wie eben mit dem suff. des superl.) adj. 1) *am besten fahrend, — führend, — ziehend* ṚV. 1,121,12. 134,3. 4,13,4. आ वां वर्हिष्ठा इह ते वंहन्तु रथा अश्वांसः 14,4. 6,47,9. Pańkav. Br. 11,1,5. — 2) *am besten fahrbar* ṚV. 6,21,12.

वर्हीयंस् (von 1. वह् mit dem suff. des compar.) adj. 1) *besser —, trefflich fahrend* ṚV. 1,104,1. Shaḍv. Br. 3,7. — 2) *fahrbarer* TS. 7,2,8,6.

वर्ह्नि (von 1. वह्) Uṇâdis. 4,51. m. 1) *Zugthier, Gespann* Naigh. 1, 14. Nir. 8,3. ये त्वा वर्हन्ति वर्ह्नयः ṚV. 1,14,6. अन्ना अन्यस्य वर्ह्नयः 6, 57,3. Rosse 2,24,13. 37,3. 3,6,2. 7,73,4. 8,3,23. वह्निर्वा अनड्वान् TBr. 1,8,2,5. AV. 18,2,56. VS. 35,13. (गौः) युक्ता वर्ह्नी रथानाम् ṚV. 8,83,1. — 2) *Darbringer einer Gabe an die Götter*, daher namentlich Agni: वर्ह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै ṚV. 3,1,1. 20,1. 31,1.2. 5,79,4. दिव्य 6,39, 1. त्वं होता मनुर्हितो वर्ह्निरासा विदुष्टरः 6,16,9. तं होतारमध्वरस्य वर्ह्निं देवा अकृण्वत 7,16,12. 73,5. 82,4. 8,43,20. Agni 1,60,1. 76,4. 3,5,1. 11,4. 7,7,5. Hierher wohl अ° Nir. 3,6. — 3) *der Fahrende* (*Reiter*), *Wagenstreiter;* daher von verschiedenen Göttern gebraucht: विशां वर्ह्निर्न विश्पतिः ṚV. 9,108,10. 1,3,9. वर्ह्निभिर्विहरंन्ने सुयावंभिः 44,13. Marut 1,6,5. 10,138,1. Agni 8,8,12. Indra 2,21,2. AV. 12,2, 47. Savitar u. s. w. ṚV. 1,160,3. अह्नोर्दसी ज्योतिषा वह्निरातनोत् 2,17, 4. 38,1. *der fliessende* Soma 9,9,6. 20,6. 36,2. 63,28. 89,1. — 4) (im Anschluss an 2) N. *eines best. Feuers* Gṛhjasaṁgr. 1,8. *Feuer* (auch *der Gott des Feuers*) überh. AK. 1,1,1,48. 2,4. 2,8,1,30. H. 1097. Med. n. 19. Halâj. 1,62. M. 11,119. 246. 12,101. MBh. 1,2037. R. 3,53,60. Suçr. 1,28,10. 34,14. 114,10. Ṛt. 1,27. Ragh. 2,75. 3,58. Çâk. 83. 174. Spr. 789. घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद्बुधः 887. 1399. 2765. 3006. °कोप *das Wüthen des Feuers, Feuersbrünste* Varâh. Bṛh. S. 8,47. अतिप्रचण्ड 19, 7. °भय 95,7. 56. °कृत् *Feuersbrunst verursachend* 18. Weber, Râmat. Up. 293. 302. Bhâg. P. 3,1,21. वैद्युता इव वह्नयः 7,10,59. Mârk. P. 82, 66. 89,23. Verz. d. Oxf. H. 27,*a*,8. 47. 103,*a*,29. 104,*b*,14. °पूजा Verz. d. B. H. No. 1253. fg. °लोक 489. क्रोधतीव्रेण वह्निना Brahma-P. in LA. (III) 57,11. °कोप ad Çâk. 32,5. — 5) *das Feuer der Verdauung* Varâh. Bṛh. 20,4. — 6) Bez. *der Zahl drei* (*drei heilige Feuer*) Weber, Nax. II,382. — 7) *Plumbago zeylanica Lin.* AK. 2,4,2,60. Med. *Semecarpus Anacardium Lin.* Ratnam. 68. *Citronenbaum* Râǵan. im ÇKDr. — Suçr. 2,69,15. 505,21. — 8) mystische Bez. *des Buchstabens* र Weber, Râmat. Up. 317. fg. — 9) N. des 8ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 51, *b*,42. — 10) N. pr. *a*) eines Daitja MBh. 12,8264. — *b*) eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61,16. — *c*) eines Sohnes des Turvasu Hariv. 1830. VP. 442. Bhâg. P. 9,23,16. — *d*) eines Sohnes des Kukura Bhâg. P. 9,24,18. — Vgl. मख°, मेघ°, वन°, सु°.

वह्निकन्या f. *eine Tochter des Feuergottes;* pl. Hariv. 7738.

वह्निकर 1) adj. *das Feuer der Verdauung befördernd.* — 2) f. ई *Grislea tomentosa* Çabdak. im ÇKDr.

वह्निकाष्ठ n. *eine Art Agallochum,* = दाहागुरु Râǵan. im ÇKDr.

वह्निकुण्ड n. *eine Höhlung im Boden zur Aufnahme heiligen Feuers* Kathâs. 46,56. 62.

वह्निकुमार m. pl. bei den Ǵaina N. einer zu den Bhavanapati gezählten Klasse von Göttern H. 90.

वह्निकोण m. *Südost* Pańkar. 2,5,31. — Vgl. अग्निकोण.

वह्निगन्ध m. *das Harz der Shorea robusta* Çabdak. im ÇKDr.

वह्निगर्भ 1) m. *Bambusrohr.* — 2) f. आ *Mimosa Suma* (शमी) *Roxb.* Çabdak. im ÇKDr.

वह्निगृह n. *Feuergemach* Varâh. Bṛh. S. 53,16. — Vgl. अग्निशाला.

वह्निचक्रा f. *Methonica superba Lam.* Bhâvapr. im ÇKDr.

वह्निचूड n. = स्थूपक (?) Aush. 31.

वह्निजाया f. Vahni's *Gattin* d. i. Svâhâ Sarvadarçanas. 170,4.

वह्निज्वाल 1) m. N. einer Hölle VP. 207. 209. — 2) f. आ *Grislea tomentosa Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

वर्ह्नितम (von वर्ह्नि) adj. *am besten fahrend, — führend* VS. 1,8. *am besten eine Gabe* (den Göttern) *darbringend* Praçnop. 2,8.

वह्निद adj. (körperliches) *Feuer verleihend* Suçr. 1,242,3.

वह्निदग्ध adj. so v. a. अग्निदग्ध Çârṅg. Saṁh. 1,7,59.

वह्निदमनी f. = अग्निदमनी Râǵan. im ÇKDr.

वह्निदीपक 1) m. *Safflor* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. °दीपिका = अजमोदा Râǵan. im ÇKDr.

वह्निनाशन adj. (körperliches) *Feuer löschend* Suçr. 1,176,2.

वह्निनी f. = जटामांसी Râǵan. im ÇKDr.

वह्निनेत्र m. Bein. Çiva's H. ç. 44.

वह्निपुराण n. Titel eines Purâṇa, = अग्निपुराण Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,38. 279,*a*,43.

वह्निपुष्पी f. *Grislea tomentosa Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

वह्निप्रिया f. *die Gattin des Feuergottes* Hariv. 7738 nach der Lesart der neueren Ausg. (चाग्निप्रिया die ältere).

वह्निबीज n. 1) *Gold* H. 1044. — 2) *Citronenbaum* Râǵan. im ÇKDr. — 3) mystische Bez. *der Silbe* रम् Weber, Râmat. Up. 318.

वह्निभोग्य n. *Schmelzbutter* (घृत) Çabdak. im ÇKDr.

वह्निमत् (von वह्नि) adj. *Feuer enthaltend:* पर्वत Tarkas. 29. davon nom. abstr. वह्निमत्त्व n. 46.

वह्निमन्थ m. *Premna spinosa* Ǵaṭâdh. und Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. अग्निमन्थ.

वह्निमय (von वह्नि) adj. *aus Feuer bestehend* Kuvalaj. 166,*a*.

वह्निमारक 1) adj. *Feuer vernichtend.* — 2) n. *Wasser* Çabdak. im ÇKDr.

वह्निमित्र m. *der Wind* (*der Freund des Feuers*) Çabdak. im ÇKDr.

वह्निरस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 998.

वह्निरेतस् m. Bein. Çiva's H. 197. Halâj. 1,12.

वह्निरोहिणी f. so v. a. अग्निरोहिणी, *eine zu den* क्षुद्ररोग *gerechnete Krankheit* Suçr. 2,121,16. 18. Çârṅg. Saṁh. 1,7,65.

वह्निलोहक n. *Messing* Râǵan. im ÇKDr.

वह्निवधू f. *die Gattin des Feuergottes,* Svâhâ Çabdar. im ÇKDr.

वह्निवत् adj. *das Wort* वह्नि *enthaltend* Ait. Br. 6,18.

वह्निवर्ण 1) adj. *feuerfarben.* — 2) n. *eine rothe Lotusblüthe* ÇABDAK. im ÇKDR.

वह्निवल्लभ 1) m. *Harz* (*ein Freund des Feuers*) TRIK. 2,6,37. — 2) f. आ *die Gattin des Feuergottes* PAÑKAR. 3,14,30.

वह्निशाला f. *Feuergemach* (s. अग्निशाला) MÂRK. P. 75,29.

वह्निशिख 1) n. *Safflor* AK. 2.9,107. *Saffran* H. 645. — 2) f. आ *a*) *Flamme* MAHOP. in Ind. St. 2,7. मदन° Spr. (II) 340. — *b*) *Methonica superba Lam.* RATNAM. 38. RÂGAN. im ÇKDR. *Grislea tomentosa Roxb.* RÂGAN. ebend. = फलिनी DHAR. ebend.

वह्निशिखर m. *Hahnenkamm, Celosia cristata* ÇABDAR. im ÇKDR.

वह्निशुद्ध adj. *rein wie Feuer:* वस्त्रयुग PAÑKAR. 2,4,24. वह्निशुद्धांशुक 1,7,47. 8,5. 11,9. 28. 12,19. 14,60. 2,4,4.

वह्निसंस्कार m. *die Verbrennung eines Todten* KATHÂS. 73,407. — Vgl. अग्निसंस्कार.

वह्निसख m. 1) *der Freund des Feuers* d. i. *der Wind* ÇKDR. — 2) *Kümmel* (*das Feuer der Verdauung befördernd*) RÂGAN. im ÇKDR.

वह्निसाक्षिकम् adv. *so dass das Feuer Zeuge ist* (*war*) KATHÂS. 39,158. — Vgl. अग्निसाक्षिक.

वह्नीश्वरी f. *die Herrin des Feuers*, Bez. der Lakshmî PAÑKAR. 2,5,31.

वह्न्युत्पात m. *eine feurige Lufterscheinung* H. 126.

वह्यं (von 1. वह्) 1) n. *ein Vehikel* P. 3,1,102. VOP. 26,16. H. 759. UÇÇVAL. zu UṆÂDIS. 4,111. *Tragsessel* (der auf die Schultern वह् des Saumthiers gelegt wird), *Sänfte; Ruhebett* überh.: सा भूमिमा रुरोहिथ वह्यं श्रान्ता वधूरिव AV. 4,20,3. रुक्मप्रस्तरणं 14,2,30. Dieselbe Bedeutung ist zulässig in folgender Stelle: गवां शतानामश्वरथानामश्वानां साद्यानां वह्यानां महानसानाम् (सप्तदश सप्तदश दक्षिणाः) *hundert Rinder, Reisewagen, Rosse, Sättel, Palankine, Lastwagen* ÂÇV. ÇR. 9,9,14. nach dem Comm. *Rosse zum Reiten und zum Zug.* — 2) f. आ *die Gattin eines* Muni UṆÂDIK. im ÇKDR.

वह्यक 1) wohl n. KÂTJ. ÇR. 14,3,31 in demselben Zusammenhange gebraucht wie वह्य ÂÇV. ÇR. 9,9,14. vom Comm. durch वाहन erklärt. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वह्यशीवन् adj. (f. °शीवरी) *in einer Sänfte* oder *in einem Ruhebette liegend* AV. 4,5,3. तल्प° ṚV.

वह्यस्क m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

वह्येशय adj. = वह्यशीवन्. नारीः ṚV. 7,55,8. = वाहने शयानाः SÂJ.

1. वा indecl. VS. PRÂT. 2,16. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. 1) *oder* NIR. 1,4. AK. 3,4,32 (28),11. H. an. 7,14. MED. avj. 74. HALÂJ. 5,87. in Verbindung mit वा werden die betonten Formen der Pronomina gebraucht P. 8,1,24. VOP. 3,143. स्तेनं राय तस्करं वा ṚV. 7,55,3. 104,9. यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम् 8,44,23. AV. 2,12,6. 6,7,1. 12,2,4. व्रीहीन्यवान्वा KÂTJ. ÇR. 1,9,1. 2,1,11. न वा 4,12,2. 5,4,32. दशम्यां तु द्वादश्यां वा M. 2,30. 35. तेन चाहं न शक्तो ऽस्मि संयोढुं तस्य वा बलैः R. 1,22,22. 2,1,32. ÇÂK. 145. कुर्यादन्यन्न वा कुर्यात् M. 2,87. न हृष्यति ग्लायति वा *weder — noch* 98. 3,11. अल्पो ऽप्येव महान्वापि 53. 243. 4,33. 95. MBH. 3,2929. धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा M. 2,112. अभ्युदियात् — निम्लोचेद्वापि 220. एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः 141. MBH. 3,2625. 2657. Spr. (II) 687. अल्पमपि वा बहु M. 10,60. राजतैर्भाजनैः — अथो वा रजतान्वितैः 3,202. पक्षिणीं रात्रिं तद्वाप्येकमहर्निशम् 4,97. नलं वा (gehört zum folgenden Worte) भीमपुत्रिकाम् MBH. 3,2659. यदत्र सत्यं वासत्यम् 2778. वर्धनं वाथ संमानः Spr. 2755. वेदान्वेदौ वा वेदं वापि M. 3,2. 82. नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत् । अमेध्यलिप्तमन्यद्वा लोहितं वा विषाणि वा ॥ 4,56. 5,32. 7,187. एकेन त्रिभिः पञ्चभिरेव वा 2,43. 224. 3,34. 267. Spr. 659. 4538. षट्त्रिंशदाब्दिकं तदर्धिकं (hier fehlt वा) पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव वा M. 3,1. ऋतामृताभ्याम् — मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपि वा ॥ 4,4. 51. न नृत्येदथ वा गायेन्न वादित्राणि वादयेत् 64. मद्यैर्मूत्रैः पुरीषैर्वा ष्ठीवनैः पूयशोणितैः 5,123. 7,70. नैनामीक्षेत चाश्नतीम् । क्षुवतीं जृम्भमाणां वा न चासीनां यथासुखम् ॥ 4,43. लौकिकं वैदिकं वापि तथाध्यात्मिकमेव च 2,117. 10,109. R. 1,7,10. बालो युवा वा वृद्धश्च Spr. 4627. न — नापि — वा R. 1,53,11. न — वा — न — न च — न — न च 1,6,8. न — न — नापि वा — न — न च — न — न 10. VIKR. 51. प्रसीद मा (so die ed. Bomb.; es ist die prohibitive Partikel, nicht das Pronomen) वा यद्वा ते कार्यं तत्कुरु माचिरम् MBH. 5,7072. वा — वा *entweder — oder;* bei einer Disjunction zweier Sätze wird das Verbum des ersten Satzes betont VS. PRÂT. 6,20. P. 8,1,58. fg. उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वम् ṚV. 7,16,11. 104,14. शक्री वा विद्रा वो 1,31,18. तस्यं वा त्वं मनं इच्छा स वा तवं 10,10,4. अर्दये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु 7,104,9. चयते वैनं स यदि वा न चयते ऽथ पुत्रम् AIT. BR. 2,7. 3,30. beide Verba betont: जुहोति वानु वा मन्त्रयते ÇAT. BR. 5,1,3,18. 21. — अल्पं वा बहु वा M. 2,149. 208. 3,26. R. 1,6,25. नासीत्पुरे वा राष्ट्रे वा तस्करः *weder — noch* 7,14. Spr. 3054. किं वा काव्यरसः स्वादुः किं वा स्वादीयसी सुधा 3868. किं वा दुर्जनचेष्टितं न वा HIT. 73,22. आत्मतुल्यं सुवर्णं वा दद्याद्वा विप्रतुष्टिकृत् JÂGÑ. 3,258. तपसा वा युधा वापि MBH. 5,6009. प्राणि वा यदि वाप्राणि M. 4,117. लोभाद्वाथ भयाद्वापि Spr. 2689. अन्यो नरो वाप्यथ वापि नारी MBH. 3,15603. गां विप्रमजमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षिपेत् M. 3,260. सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समञ्जसम् 8,13. त्यज वैनां गृहाण वा ÇÂK. 122. पिपासया वा म्रियते याचते वा पुरंदरम् Spr. 514. मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्यति वने ऽथ वा 708. भिद्यन्ते येन वा न वा M. 7,66. नहि स ज्ञायते वीरो नलो जीवति वा न वा *ob — oder nicht* MBH. 3,2769. 2821. ÇÂK. 62. 115. Spr. 1694. RÂGA-TAR. 3,402. पातालं यदि वा नीता वर्तते वा नभस्तले R. 4,5,5. मातरं वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम् M. 2,50. गच्छ वा तिष्ठ वा भद्रे यद्वापीच्छसि तत्कुरु MBH. 1,5961. मुण्डो वा जटिलो वा स्यादथ वा स्याच्छिखाजटः M. 2,219. व्यसने वाथ कृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तके R. 4,6,10. वा — यदि वा — अपि वा — वा M. 3,242. वा — वा — वापि Spr. 4624. वा — वा — वापि — वा M. 4,7. वा — वा — वापि — अपि वा 6,17. वापि — अथ वा — वापि 8,274. — उत वा, उता वा घ: या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा स्वयंजाः ṚV. 7,49,2. 82,8. पाहि रीषत उत वा जिघांसतः 1,36,15. 3,4,6. AV. 4,8,5. 5,1,7. विजामातुरुत वा घा स्यालात् ṚV. 1,109,2. इह वा — उत वा प्रेत्य MBH. 1,6185. वाह, कस्य वाहेदं कस्यं वा अो भवितेति TBR. 1,6,6,4. TS. 1,6,7,1. उ वा, यद्यु वा कामयेत ÇAT. BR. 3,8,1,16. überzählig: यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा ṚV. 6,15,11. — 2) *oder* so v. a. *entweder oder auch nicht, beliebig, facultativ* TRIK. 3,4,6. MED. प्रतिष्ठेति ब्रूयाद्वा KÂTJ. ÇR. 2,2,22. 1,9. 21. 7,6. 3,2,13. 4,27. 7,9. 8,7. ज्ञातदन्तस्य वा कुर्युः M. 5,70. ṚV. PRÂT. 1,5. 2,1. 4,11. 6,2. 7. 8. 15,8. 15. AV. PRÂT. 4,27. ÇÂNT. 1,9. 12.

16. 24. 2,25. 3,8. P. 1,2,13.35. AK. 3,4,22,50. — 3) = इव *wie* AK. 3,4,22(28),11. 3,5,9. H. an. Med. Halâj. Siddh. K. zu P. 1,1,11. यदेषि मनसा दूरं दिशो ऽनु पवमानो वा Pâr. Gṛhj. 1,4. यस्याद्य कर्म दृश्यते मूढसत्त्व शतक्रतोर्वा दैत्यसेनासु संख्ये MBh. 3,15710. 4,1754. 5,3862. स तु दोलायमानो वा द्वैधीभावेन पाण्डवः 7,1211. 13,4312. R. 1,10,37. Mṛkkh. 77,2. Megh. 81. Ragh. 19,51. Spr. 2562, v. l. 2723. Mâlav. 87. Çiç. 3, 63. 4,35. 7,64. 18,25. Kir. 3,13. मुखेन्दोश्चन्द्रिका वास्य शिशोर्मुग्धस्मितं बभौ Pârçvanâthak. 4,18 (nach Aufrecht). — 4) = एव H. an. Kull. zu M. 2,30. Kâtj. Çr. 1,1,4. 8,18. 10,2. 2,6,20. 29. 36. 3,1,7. 4,15. Spr. 4702. — 5) *selbst, sogar:* देवासुरगणान्वापि सगन्धर्वोरगान्भुवि। यैरमित्रान्प्रसह्यानौ वशीकृत्य जयिष्यसि R. 1,29,3. नरं वा पुरुषर्षभ। आनयस्व पशुं शीघ्रम् 61,8. नास्य वाच्यं भवेत्किंचित् लब्धव्यं वाधिगच्छति MBh. 10,85. वरमिह वा सुतमरणं न तु मूर्खत्वं कुलप्रसूतस्य Spr. 2742. नयनाभ्यां प्रसुप्तो वा जागर्ति नयचक्षुषा 4335. आगमनमपि तेषां न संभाव्यते भविष्यति वा so v. a. *gesetzt aber auch, dass* Pankat. 246,21. — 6) nach interrogativen und relativen pronomm. so v. a. *wohl, etwa:* के वा Megh. 55. Spr. 737. 3107. किं ते हिडिम्ब एतैर्वा सुखसुप्तैः प्रबोधितैः MBh. 1, 5984. किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या Çâk. 105,7. काणेन चक्षुषा किं वा Spr. 753. 3233. कथं वा Çâk. 25. 56,3. नैतत्कर्तुं क्षमा वयम्। यो वा शक्तः स कुरुताम् Kathâs. 18,142. यत्र वा MBh. 1,7694. — 7) nach H. an. und Med. समुच्चये d. i. = च; nach Med. auch पादपूरणे. - Vgl. noch u. अथ 7) *b*), 1. क 1) *e*) und 3) *d*), 1. घ, 1. य 1) *c*) ζ), यद्व 2) *l*), यदि 9).

2. वा, वाति Naigh. 2,14 (गतिकर्मन्). Dhâtup. 24,42 (गतिगन्धनयोः, गमनहिंसयोः Vop.). अवान् und अवुस् P. 3,4,111, Schol. अवासीत् 7,2, 73, Schol. 1) *wehen:* तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजम् Ṛv. 1,89,4. AV. 4, 13,8. 16. 7,69,1. 12,3,12. Çat. Br. 2,2,3,8. यदा बलवद्वात्यत्युग्रो वातीत्याहुः 6,1,3,13. 10,3,5,14. यां दिशं वातो वायात् 11,5,3,11. वातिं वाति 6,9. TBr. 2,3,9,4.5. वाति मारुतः R. 1,14,17. 65,13. 2,41,15. 3, 54,12. Spr. 1769. Varâh. Bṛh. S. 27,7. 31,5. Bhâg. P. 1,14,16. 3,25, 42. वान्गन्धवहः Bhaṭṭ. 2,10. मारुते वाति वा भृशम् M. 4,122. 11,113. Kâm. Nîtis. 7,38. Spr. 1914. वायुरवात् R. Gorr. 1,25,4. Bhaṭṭ. 8,61. 17,9. 74. ववौ MBh. 1,5883. 3,2995. 12041. 5,7206. R. 2,91,24. Ragh. 3,14. Kathâs. 55,109. Brahma-P. in LA. (III) 52,22. Bhaṭṭ. 7,1. अवासीत् 9,2. 15,26. वास्यति Megh. 43. नाशकन्मारुतो वातुम् Hariv. 90. Kathâs. 25,42. 44,136. — 2) *anwehen:* साधसाधूंश्चापि वातीह वायुः Spr. 5222. — 3) *Gerüche aushauchen, ausdünsten, sich verbreiten* (von einem Geruche): तस्मात्ते शणाः पूतयो वान्ति Çat. Br. 3,2,1,11. वाति गन्धः सुमनसां प्रतिवातं कथं च न। धर्मज्ञस्तु मनुष्याणां वाति गन्धः समन्ततः॥ Spr. 4982. अदनाद्धविरङ्ग वाति Bhâg. P. 5,2,13. Diese Bed. ist wohl mit गन्धन im Dhâtup. gemeint. — Vgl. 3. वा.

— अति *darüber hinaus wehen:* न भूमिं वातो ऽति वाति AV. 4,5,2.

— अनु *anblasen, anfachen, weiterwehen:* आदस्य वातो अनु वाति शोचिरस्तुर्न शर्याम् Ṛv. 1,148,4. 4,7,10. 7,3,3. 10,142,4. वायुरस्य कामाननुवाति Kâṭh. 12,13. *nachwehen:* वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः AV. 12,1,51. TS. 5,5,7,3.4. अनुवाति प्रभो वायुः सेनाम् *anwehen* R. 5,73,52. शिवश्चानुववौ वायुः *wehen* MBh. 5,2942. Bhâg. P. 10,35,21.

— अप *ausdünsten:* यदूवध्यमुदरस्यापवाति Ṛv. 1,162,10.

— अभि *anwehen, herwehen:* शं नं इषिरो अभि वातु वातः Ṛv. 7,35,4. 10,169,1. पूतिरेनानभिववौ Çat. Br. 4,1,3,6. Kâṭh. 31,3. सुखो वातो ऽभिवाति माम् MBh. 4,2238. पुराभिवाति मारुतो यमस्य यः पुरःसरः 12,12080.

— अव *herabwehen:* न्यग्वातो ऽव वाति Ṛv. 10,60,11. तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः *wird vom Lufthauch getragen in* 1,58,5.

— आ *herwehen:* द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः। दक्षं ते अन्य आ वातु Ṛv. 10,137,2.3. वात आ वातु भेषजम् 186,1. आवानावान्मातरिश्वा Kir. 5,36. यत्रामोदमुपादाय मार्ग आवाति मारुतः Bhâg. P. 8, 15,18. आववुर्वायवो घोराः Bhaṭṭ. 14,97. *anwehen:* वायुर्भूत्वा सर्वा दिश आ वाहि TBr. 3,10,4,2.

— उद् *durch Luftzug erlöschen:* अग्निर्वा उद्वान्वायुमनुप्रविशति Ait. Br. 8,28 (Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. 321). Kauç. 72. — Vgl. 3. वा mit उद्.

— अनूद् im Winde (acc.) *verwehen:* यदा वा अग्निरनुगच्छति वायुं तर्ह्यनूद्वाति तस्मादेनमुद्वासीदित्याहुर्वायुं ह्यनूद्वाति Çat. Br. 10,3,3,8 (Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 321).

— उप *anwehen* Çat. Br. 13,3,8,6. *anblasen:* यूयं तु मे सच्युपवात 4, 1,3,7. — Vgl. उपवा und 3. वा mit उप.

— परिणि und प्रणि° P. 8,4,17, Schol.

— निस् 1) *wehen:* निर्ववुः शतशश्चैव वृष्टिवाताः सविद्युतः R. 4,29,11. — 2) *erlöschen:* निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखेव Çâk. Ch. 91,11. — 3) *sich abkühlen, gestillt —, erquickt werden:* तथा वपुर्जलार्द्रापवनैर्न निर्ववौ Çiç. 1,65. इति सर्वं समुन्नद्धं न निर्वाति कथं च न MBh. 9,259. त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम् Spr. 1086. Kathâs. 104,57. 117,51. — Vgl. निर्वाण. — caus. *auslöschen; ablöschen, von der Gluth —, von der Hitze befreien, kühlen; stillen, zur Ruhe bringen, erquicken:* यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः Ṛv. 10,16,13. अग्नीन्निर्वापयां चक्रुः Ait. Br. 2,36. उदकेनास्थीनि Çâṅkh. Çr. 4,15,13. समिद्धं जातवेदसम्। वर्षैर्निर्वापयिष्यामो मेघा भूत्वा सविद्युतः॥ MBh. 1,1608. 5857. 11,241. Hariv. 6227. Kathâs. 66,15. प्रदीपं पटान्तेन Mṛkkh. 16,7. 49,20. Burnouf, Intr. 589. Kathâs. 4,67. अनलप्रवेशेन शोकानलम् Prab. 90,20. क्षारं सर्पिषा Suçr. 2,47,11. 74,10. भस्मीभूतांल्लोकान् — जलयुक्तेन कर्मणा Hariv. 11343. अतिप्रबन्धप्रहितास्त्रवृष्टिभिस्तमाश्रयं दुष्प्रसहस्य तेजसः। शशाक निर्वापयितुं न वासवः स्वतश्च्युतं वह्निमिवाद्भिरम्बुदः॥ Ragh. 3, 58. प्रियस्पर्शैः सीताम् 12,63. निर्वापितः कनककुम्भमुखोज्झितेन वंशाभिषेकविधिना शिशिरेण गर्भः 19,56. दग्धं चिराय मलयानिलचन्द्रपादैर्निर्वापितं तु परिरभ्य वपुर्न नाम Mâlat. 128,14. fg. अङ्गानि त्वमनङ्गतापविधुराण्येह्येहि निर्वापय Ratnâv. 65,9. पितरौ विप्रयोगाग्नितापितौ (acc.) निरवापयतां सद्यो दर्शनामृतवर्षिणी (nomin.) Kathâs. 25,265. इति वाक्सुधया तस्याः कृती निर्वापितः 103,72. निर्वापय प्रसन्नेन लोचनेनामृतश्च्युता। दृष्ट्वा मां दुःखदावाग्निदग्धम् 101,304. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,42. स (अग्निः) मे निर्वाप्य सहसा चक्षुषी शाम्यते पुनः so v. a. *blendend* (= मन्दीकृत्य Nilak.) MBh. 5,3864. — Vgl. 2. निर्वापण fg.

— अनुनिस् *erlöschen nach* (acc.): निर्वाणमनुनिर्वाति तपनं तपनोपलः Spr. 1611.

— परिनिस् *vollkommen erlöschen, — zur Ruhe gelangen:* उल्केव परिनिर्वाति स्म Lalit. ed. Calc. 20,9. शाम्यामि परिनिर्वामि MBh. 12,6635. Vgl. परिनिर्वाण. — caus. *vollkommen zur Ruhe bringen:* परिनिर्वापयि-

तव्य Burnouf, Intr. 593.

— परा *wegwehen:* परान्यो वातु यद्रपः ṚV. 10,137,2.

— प्र *wehen:* अहमेव वात इव प्र वामि ṚV. 10,125,8. वनाच्च वायुः सुरभिः प्रवायात् MBh. 1,2936. वाताश्च प्रववुः 4509. 3,11998. 6,731. 7,328. 9029. 12,6333. 12081. Hariv. 4941. 8790. R. 2,71,25. 91,26. R. Gorr. 2,100,21. 3,22,15. 52,11. Bhâg. P. 3,9,18. 5,24,5. Pańkat. 169,6. von Gerüchen: गन्धो यस्याः क्रोशात्प्रवाति वै MBh. 1,6934. 6,133. R. Gorr. 2,100,23. 125,21 (114,10 Schl.). 4,13,21. 5,73,59. — Vgl. प्रवा, प्रवात (auch R. 5,26,1), प्रवाय्य.

— वि *verwehen, auseinanderblasen; durchwehen:* वि वात वाहि यद्रपः ṚV. 10,137,3. मिहं न वातो वि ह वाति भूम 31,9. 1,28,6. व्यवात्ते ज्योतिरभूत् AV. 8,1,21. इमे वै सहास्तां ते वायुर्व्यवात् TS. 3,4,3,1. Çat. Br. 4,1,3,7. 10. Kâth. 13,2. 27,3. ततो लोकान्विवात्यसौ (वायुः) MBh. 12,13379. *nach verschiedenen Richtungen hin wehen:* विष्वग्वाताश्च विववुः 6,732. वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणाम् Ṛt. 6,22.

— अनुवि *der Reihe* oder *der Länge nach durchwehen:* दिशः TBr. 2,3,9,6. 3,10,4,2.

— सम् *wehen* TBr. 3,11,7,2. MBh. 4,1288. 12,12395. 12401 (wo mit der ed. Bomb. संवाति st. संभाति zu lesen ist).

— अनुसम् *der Reihe nach (zusammen) anwehen:* दिशः TBr. 2,3,9,6. 3,10,4,2.

3. वा, वायति Dhâtup. 22,24 (शोषणे). अवासीत्; auch med. in der Bed. von 2. वा; partic. वान (s. bes.) und वात. 1) *matt —, müde werden, sich erschöpfen, erliegen:* न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ताः ṚV. 7,67,8. न ता वाजेषु वायतः 8,31,6. बप्सद्ग्निर्न वायति *wird nicht müde zu verzehren* 43,7. — 2) = 2. वा *wehen:* अभीक्ष्णवाता वायन्ते धूमकेतुमवस्थिताः MBh. 6,97. — अवायत् MBh. 9,947 Druckfehler für अवारयत्.

— अति *heftig wehen:* अतिवायति *bei heftigem Winde* MBh. 12,12420.

— अभि, partic. °वात *matt, siech:* अभिवातासु गोषु या अनभिवाताः स्युः Lâṭj. 8,5,3. = व्याधित Comm.

— उद् *matt werden, hinsterben,* vom Feuer so v. a. *in sich erlöschen* TS. 2,2,4,7. 5,7,5,1. यस्याहवनीये ऽनुद्वाते गार्हपत्य उद्वायेत् TBr. 1,4,4,6. 7,2. यदा वा अग्निरुद्वायति Khând. Up. 4,3,1. उद्वासीत् Çat. Br. 10,3,3,8. — caus. *ausgehen lassen:* आहवनीयमुद्वाप्य TBr. 1,4,4,7.

— उप *durch Vertrocknen ausgehen, eintrocknen:* नराशंसः Soma Pańkav. Br. 9,9,5. Çâṅkh. Çr. 13,12,10. falsch उपवायात् (als ob von 2. वा) st. °वायेत् Kâtj. Çr. 25,12,10. 12. कलशमुपवायन्तं प्राणो ऽनूपदस्यति Kâṭh. 35,16. °वात (Gegens. आर्द्र) *trocken:* Holz Âçv. Gṛhj. 3,8,4. प्रक्षालितोपवात Kauç. 2.

— निस् *erlöschen:* निर्व्यग्निः शीतेन वायति TS. 6,2,3,7. — Vgl. 2. वा mit निस् simpl. und caus.

— प्र *wehen:* वर्धमाने क्षतवहे वाते चाशु प्रवायति MBh. 1,8431. नैव वाताः प्रवायन्ते Hariv. 10758. — Vgl. 2. वा mit प्र.

— अतिप्र *heftig wehen:* वायुनातिप्रवायता MBh. 12,12418.

— वि *wehen:* सर्वगन्धवहः शुचिर्वायुर्विवायमानः शरीरमस्पृशत् MBh. 12,13221.

4. वा Nebenform von 1. वन्. partic. वात *begehrt, erwünscht; angegriffen, angefochten:* अवस्युवात TS. 4,4,12,3. विवस्वद्वात 4. — Vgl. अ°, इन्द्र°, देव° (auch TS. 3,2,11,1), 2. नि°, मनो°.

— desid. विवासति unter den परिचरणकर्माणः Naigh. 3,5. mit आ act. med. *zu gewinnen —, herbeizuziehen suchen; huldigen; locken:* अग्निं देववीतये ṚV. 1,12,9. 84,9. मदाय होता विवासते वाम् 117,1. 152,6. 173,1. रोदसी 7,72,3. 100,1. 8,49,5. 9,86,14. VS. 6,23. एकायुरग्ने विश आविवासति ṚV. 1,31,5. AV. 6,21,1; vgl. SV. I, 4,2,4,3. आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु ṚV. 9,39,5. नमसा 5,83,1. 6,16,46. सुम्नैः 1,41,8. 10,93,2. आङ्गूषैः 7,94,11. हविषा 1,58,1. 2,26,3. गीर्भिः 7,6,2. 8,15,1. उक्थेभिः 5,45,4. धीतिभिः 6,61,2. सुष्टुत्या 8,16,3. वचसा 6,62,5. हवसा 66,11. मनो यो अस्य घोरमाविवासात् 7,20,6. 1,119,9. सुम्नम् 2,11,16. 33,6. 6,60,11. आविवासन्ती युवतिर्मनीषा 5,47,1. तव प्रणीती तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः 3,51,7. कृतं चिदेनो नमसा विवासे *ich suche zu begütigen* 6,51,8. = वर्जयामि, विनाशयामि Sâj.

— अभ्या *in feindlicher Absicht sich nähern:* पराशरो हविर्मथीनामभ्याइ विवासताम् ṚV. 7,104,21. = आगच्छताम् Sâj., nach Durga *derjenigen Verehrer, welche* Jâtu *sind,* also *der falschen Verehrer.*

— उप *zu gewinnen suchen:* उप वो गीर्भिरमृतं विवासत ṚV. 6,15,6.

5. वा, वयति und °ते Dhâtup. 23,37 (तन्तुसंताने); ववौ, उवाय, ववुस्, ऊवुस्, उयुस् P. 2,4,41. 6,1,16. 38. fgg. Vop. 8,124. 135. fgg. उवयिथ P. 7,2,61, Schol. वयिष्यति; °वाय P. 6,1,41. Vop. 26,217. partic. उत (auch ऊत *gewebt, genäht* AK. 3,2,50. H. 1487) P. 6,4,2. *weben, flechten, künstlich ineinanderfügen,* auch Reden, Lieder u. s. w.: नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरे ऽतमानाः ṚV. 6,9,2. निर्णिजम् 9,99,1. वस्त्रा 5,47,6. MBh. 1,723. पटं वयन्त्यौ 806. वयामि प्रत्यहं पञ्च कुड्कायुगलानि यत् Kathâs. 52,99. इन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ṚV. 1,61,8. मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे 2,28,5. 38,4. 7,33,9. 10,53,6. 130,1. को अस्मिन्प्राणमवयत् AV. 10,2,13. VS. 19,80. 82. 89. TBr. 1,5,1,1. Çat. Br. 3,1,2,19. खमूयुर्वसुधामूयुः सायका रज्जुवत्तताः *beweben, gleichsam zu einem Gewebe machen* (आवृतवन्तः, छादितवन्तः Comm.) Bhaṭṭ. 14,84. रज्जूत Kâtj. Çr. 15,7,1. उत 7,9,27. Schol. zu 15,3,9. अथ तुरीयेणोतश्च (wohl तुरीयेण ओतश्च gemeint) प्रोतश्च क्षयमात्मा सिंहः *eingefasst —, steckend —, enthalten in* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,158. fg. — Vgl. ऊय, अमोत, ओतु, 3. वान.

— caus. वाययति P. 7,3,37. Vop. 18,6.

— अप *ein Gewebe auflösen* ṚV. 10,130,1.

— आ *einweben, anfassen, reihen* (z. B. Perlen an eine Schnur), *durchziehen* AV. 10,8,37. वानेषु काचान् TBr. 3,9,4,4. 5. Çat. Br. 13,2,6,8. पुष्पाण्यादायावयन्तः Kaush. Up. 1,3. देवतानां पशौ मनांस्योतानि Çat. Br. 3,8,3,14. Ait. Br. 2,10. मणौ सूत्रमोतम् *ist durchgezogen* Pańkav. Br. 20,6,6. Çat. Br. 12,3,4,2. 14,6,6,1. 8,3. Kâtj. Çr. 16,5,1. अस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः Muṇḍ. Up. 2,2,5. यस्मिन्निदमोतं प्रोतं विश्वं शाटीव तन्तुषु Bhâg. P. 9,9,7. 10,15,35. प्राणैश्चित्तं सर्वमोतम् Muṇḍ. Up. 3,1,9. Maitrjup. 6,3. ओतप्रोतो ऽहम् MBh. 5,1789. — Vgl. अगावानम् und नस्योत.

— समा *anfassen, aufreihen:* आदित्य इमां लोकान्सूत्रे समावयते Çat. Br. 7,3,2,13. 8,7,3,10.

— उद् *hinaufbinden, aufhängen:* शिक्योद्धत Çat. Br. 5,5,4,28. आ-

द्वित्यं पञ्चभी रश्मिभिरुद्वयन् TBr. 1,2,4,2. Ait. Br. 4,19.

— उप, °वाय P. 6,1,41, Schol. उपोत *eingesteckt* (in den Köcher oder in eine andere Vorrichtung für Pfeile): °परुष Çâñkh. Çr. 14,22,20. Lâṭj. 8,5,8.

— निस्, निरुत P. 6,4,2, Schol.

— परि *durchweben:* यत्र ह वित्तग्रहं पापपुरुषं धर्मराजपुरुषा वायका इव सर्वतो ऽङ्गेषु सूत्रैः परिवयन्ति Bhâg. P. 5,26,36. *umstricken, binden:* परिवयसे पशूनिव गिरा विबुधानपि 10,87,27. पर्युत *eingefasst* (mit Zierat): ein Wagen Çat. Br. 13,2,7,8.

— प्र *daran weben* ṚV. 10,130,1. दिश्यैव दिशं प्रवयति तस्माद्दिशि दिक्प्रोता TS. 5,7,9,4. हिरण्यम् Çat. Br. 5,3,5,15. Kâtj. Çr. 15,5,4. तस्मिन्यज्ञमयं प्रवयन्ति Kaush. Up. 2,6. रज्जू: *daran knüpfen* Çâñkh. Çr. 17,3,7. °वाय P. 6,1,41, Schol. Vop. 26,217. प्रोत *gereiht auf, gesteckt an, steckend an, in;* = उत H. 1487. = गुम्फित H. an. 2,181. = खचित Med. t. 37. मणिः सूत्र इव प्रोतः MBh. 3,1142. 8,1829. मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव Bhag. 7,7. सूत्रप्रोता दारुमयीव योषा so v. a. *Drahtpuppe* MBh. 5,951. 1446. शूले *gesteckt, gespiesst* 1,2421. 4316. Mârk. P. 16,27. शूल° Hariv. 14579. शूलाग्र° 14856. शूलान्तः Râga-Tar. 2,87. शूलिका° Suçr. 1,230,15. शृङ्ग° Hariv. 15438. शल्य° Ragh. 9,75. प्रास° Kathâs. 21,15. Schol. zu Çâk. 32. हृदये प्रोतः शरः MBh. 5,852. रोप्याङ्कुरमुखप्रोतमुक्तासंतति Kathâs. 18,47. प्रोतशूले श्रुते तस्मिन् Râga-Tar. 2,80. प्रोतघने विषाणे Kumâras. 7,49. करान् — शशिनस्तरुच्छिद्रप्रोतान् *steckend in* Spr. 3866. इषीकातूलमग्नौ प्रोतम् *gesteckt in* Khând. Up. 5,24,3. यस्मिन्सर्वमिदं प्रोतं ब्रह्म स्थावरजङ्गमम् *enthalten in* Mṛtjul. Up. in Ind. St. 9,20. Çat. Br. 14,6,6,1. Ashṭâv. 1,15. Bhâg. P. 3,15,6. ओतप्रोतमिदं यस्मिंस्तन्तुष्वङ्ग यथा पटः 10,15,35. 9,9,7. MBh. 5,1789. एताभिः सर्वमिदमोतं प्रोतं च *durchzogen* Maitrjup. 6,3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,158. fg. प्रोत *gewebtes Zeug, ein gewebtes Gewand,* m. H. 667. n. H. an. Med. — Vgl. 1. प्रवयण, प्रवाण fg.

— अतिप्र *weiter daransetzen* Çâñkh. Br. 11,5.

— अनुप्र *daranheften:* शिखाम् TS. 7,4,9,1.

— संप्र *verflechten:* प्रउगी Çâñkh. Br. 24,1. Çr. 16,7,15. 14,4.

— वि *flechten* Lâṭj. 8,8,13. व्युत *geflochten, gewebt:* अत्क ṚV. 1,122, 2. रज्जुभिः Çat. Br. 6,7,1,15. 14,1,3,11. वध्र° 5,4,4,1. उरौ पथि व्युते (= विविक्ते Sâj.) तस्थुरन्तः ṚV. 3,54,9.

— सम् *beweben,* mit Figuren u. s. w.: तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती VS. 20,41. ṚV. 2,3,6. तर्ध्मसमुत *mit Pflöcken zusammengesteckt* Çat. Br. 3,2,1,2.

वांश 1) adj. von वंश ÇKDr. — 2) f. ई = वंशरोचना *Tabaschir* Râgan. im ÇKDr.

वांशकठिनिक adj. = वंशकठिने व्यवहरति P. 4,4,72, Schol.

वांशभारिक (von वंशभार) adj. *eine Tracht Bambus tragend* P. 5,1,50.

वांशिक (von वंश) 1) adj. dass. P. 5,1,50. — 2) m. *Flötenspieler* Gaṭâdh. im ÇKDr.

वाःकिटि (वार् *Wasser* + किटि) m. *Meerschwein* Çabdârthak. bei Wilson.

वाःपुष्प (वार् + पु°) n. *Gewürznelke* Çabdârthak. bei Wilson.

वाक (von वच्) 1) m. *a) Spruch, Recitation, Formel im Ritus:* (प्रति मिमीते) त्रैष्टुभेन वाकम्। वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ṚV. 1,164,24. स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः 8,52,4. वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम् AV. 19,3,4. तेना वाका (wohl वाकाः) आशिषो नो जुषन्ताम् VS. 17, 57 (TS. v. l.). वाकेष्वनुवाकेषु निषत्सूपनिषत्सु च MBh. 12,1613. — *b) Geschwätz, Gesumme:* वाका अपचितामिव नश्यतु AV. 6,25,1. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,a. — Vgl. अच्छा°, अमृत°, ऋत°, चक्र°, चार्वाक, जोष°, धार°, नमो°, प्रशंस्यु°, वलि°, वली°, शंयु°, शंयोर्वाक, सत्य°, सिनी°, सूक्त°.

वाकारकृत् m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184,a,1.

वाकिन 1) m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,158. — 2) f. ई N. pr. einer Tantra-Gottheit Verz. d. Oxf. H. 89,b,5; vgl. राकिणी, लाकिनी.

वाकिनकायनि m. patron. von वाकिन P. 4,1,158.

वाकिनि m. desgl. ebend.

वाकु (von वच्) in कृक°.

वाकुची f. *Vernonia anthelminthica* AK. 2,4,3,14. Suçr. 2,68,5. 150,19.

वाकोपवाक n. *Dialog;* s. u. वाकोवाक्य.

वाकोवाक्य n. *Dialog;* auch Bez. *gewisser Stücke der vedischen Ueberlieferung:* वाकोवाक्यं ब्रह्मोद्यं वदन्ति Çat. Br. 4,6,9,20. 11,5,6,8. काककोकिलयोर्वाकोवाक्यम् (nach Pandit II,115 soll वाकोपवाकम् zu lesen sein) Sâh. D. 314,16. Verz. d. Oxf. H. 208,a, No. 489 (eine rhetorische Figur). वाकोवाक्यमधीते Çat. Br. 11,5,7,5. Lâṭj. 3,12,7. Çâñkh. Gṛhj. 1, 24. Khând. Up. 7,1,2. 4. Jâgñ. 1,45. Verz. d. Oxf. H. 54,b,6.

वाक्कलह (वाच् + क°) m. *Wortstreit* Prab. 55,11. fg.

वाक्कीर (वाच् + कीर) m. *der Bruder der Frau (Jabruder)* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वारकीर.

वाक्केलि und °केली f. *ein Scherz mit Worten, eine witzige Unterredung* Daçak. 3,15. Sâh. D. 521. 525. Pratâpar. 23,a,9. 27,a,8.

वाक्चक्षुस् n. sg. *Rede und Blick* Jâgñ. 2,14.

वाक्चपल adj. *unbesonnen in der Rede, unüberlegt redend* M. 4,177. MBh. 14,1251.

वाक्चापल्य n. *Unbesonnenheit in der Rede* Jâgñ. 1,112.

वाक्छल n. *lügnerische Reden,* pl. Hariv. 4228 (die neuere Ausg. besser वाक्छलैः). सवाक्छलम् Kathâs. 39,215. *Verdrehung der Worte seines Gegners in einer Disputation:* वक्तुरभिप्रायादर्थान्तरकल्पना वाक्छलम् Njâjas. 1,1,53. 56.

वाक्त्वच n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् mit त्वच् P. 5,4, 106, Sch. Vop. 6,7.

वाक्त्विष n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् mit त्विष् ebend.

वाक्पटु adj. *beredt* Spr. 1870. 2255. 2600. 4747.

वाक्पटुता f. *Beredsamkeit* Spr. 2825.

वाक्पति (parox. VS., oxyt. nach P. 6,2,19) m. 1) *Herr der Rede* VS. 4,4. Kâṭh. 14,1. Taitt. Up. 1,6,2. Vishṇu Hariv. 12312. *Meister der Rede* so v. a. *ein beredter Mann* AK. 3,1,35. H. 346. — 2) *der Planet Jupiter* Colebr. Misc. Ess. I, 108. R. 1,19,2 (ed. Bomb. 18,9). Varâh. Bṛh. S. 4,23. 8,15. Bṛh. 9,4. 14,1. Ind. St. 2,261. 283. fg.

वाक्पतिराज m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,31. Râga-Tar. 4,144. Ind. St. 8,194. 294.

वाक्पतीय n. *Herrschaft der Rede* (Comm.) TBr. 2,7,3,1.

वाकपत्य n. dass.: ब्राह्मणस्य Kāṭh. 37,2.

वाकपथ m. *die Gelegenheit —, der geeignete Augenblick zum Reden:* अतीतवाकपथे काले MBh. 2,1590. 3,2399.

वाकपा adj. *Rede beschützend* Ait. Br. 2,27. TS. 3,2,10,1. 2.

वाकपारुष्य n. s. u. पारुष्य 2) *a)* und füge noch Verz. d. Oxf. H. 263, *a*,26. Spr. 4978 und *Rauhheit der Stimme* hinzu.

वाकपुष्टा f. N. pr. einer Fürstin Rāǵa-Tar. 2,11. वाकपुष्टाटवी 57.

वाकपुष्प n. pl. *Redeblüthen, schwungvolle Worte:* ऋषिभिर्देवतैश्चैव वाकपुष्पैरर्चिताम् (देवीम्) Hariv. 10234. Kathâs. 109,98. — Vgl. पुष्प 1) *e*).

वाकप्रलाप m. *Redekunst, Beredsamkeit:* न ते तुल्यो विद्यते वाकप्रलापे MBh. 3,10650.

वाकप्रवदिषु adj. *als Redner auftretend* Âçv. Çr. 10,2,27.

वाक्य (von वच्) n. P. 7,3,67. Schol. zu 3,1,124. 7,3,52. Vop. 26,10. 1) *Ausspruch, Rede, Worte;* sg. und pl.: शृणु मे त्वम् — यद्वाक्यं मूषिको ऽब्रवीत् MBh. 1,5577. वाक्यमर्जुनमब्रवीत् 3,1723. सुहृद्वाक्यमिदं शृणु 2171. 2287. वाक्यमप्रतिनन्दन् 2279. 2743. 2910. 2977. तेन वाक्ये कृते सम्यक्प्रतिवाक्ये तथाहृते 2979. R. 1,1,8. 45. 2,20. 9,53. 52,15. °विशारद 53,8. 2,74,18. अतिक्रम्य तु मद्वाक्यम् 1,62,16. Çâk. 22,12. उद्धत Spr. 2375. तर्कोद्दिमस्तु भरतवाक्यम् Çâk. 113,6. वैद्यवाक्यस्थ Suçr. 1,123, 20. इत्यादि मन्त्रिणां वाक्यं न लेभे तस्य चान्तरम् Kathâs. 40,55. सद्वाचवाक्यानि न तानि तेषाम् Varâh. Bṛh. S. 74,5. अनिष्टमसत्प्रणीतम् 75,7. परुष 78,7. दुष्ट 104,19. प्रसृत° adj. Bṛh. 14,2. मधुर, प्रिय, सत्य Halâj. 1,141.146. LA. (III) 91,21. वल्गु° adj. Bhâg. P. 4,26,23. Pańkat. 41, 17. Hit. 22,3. क्व गन्तव्यमित्यादिवाक्यैः पृष्टा Çuk. in LA. (III) 36,9. वेदान्तवाक्यजालैः Sarvadarçanas. 55,13. वेदान्तवाक्यजात 61,13. वेदवाक्यानि 72,19. 128,3. fgg. आप्त° 144,2. गुरु° 91,17. श्रुतवाक्या MBh. 5,4496. इत्युक्तवाक्या Kathâs. 48,130. मम वाक्याद्वाच्यौ *in meinem Namen* Pańkat. 142,24. *Aussage vor Gericht:* उक्तवाक्यस्य साक्षिणः M. 8,108. *ausdrückliche Aussage* (Gegens. लिङ्ग *Andeutung*) Sarvadarçanas. 159,14. Verz. d. Oxf. H. 219,*b*, No. 523. *Ausdrucksweise* 207,*a*,15. °दोषाः 208, *a*, No. 489. *Gesang der Vögel:* वयांसि साधुवाक्यानि Hariv. 4940. — 2) *Disputation:* पञ्चावयवयुक्तस्य वाक्यस्य गुणदोषवित् MBh. 2,139. Comm. zu Njâjas. 1,1,32.39. — 3) *Satz* (in grammatischem Sinne) Vârtt. und Pat. zu P. 8,1,20. Kâr. zu P. 1,1,14. AK. 1,1,5,3. 3,4,32,1. Tarkas. 49. Weber, Râmat. Up. 335. H. 71. 242. Sâh. D. 6. Schol. zu P. 1,2,33. Siddh. K. zu P. 8,1,20. Vop. 3,143. 26,10. Sarvadarçanas. 41,20. 42,1. 70,8. 123,1. 135,2. *Satzglied in einem Syllogismus* Z. d. d. m. G. 7,307. — 3) *umschriebene Ausdrucksweise*, z. B. राज्ञः पुरुषः st. राजपुरुषः Schol. zu P. 1,2,46. उपगोरपत्यम् st. औपगवः zu 4,1,82. 8,3,85. Siddh. K. zu 1,1,30. der Gebrauch von इच्छति mit einem infin. statt des desid. Siddh. K. 154,*a*,11. — Vgl. निर्वाक्य, प्रति°, प्रमाण°, मन्त्र°, मिथ्या°, सत्य°.

वाक्यकर adj. *Jmdes Worte —, Geheiss ausführend:* राज° (दूत) R. 2,72,10.

वाक्यकरणसिद्धान्त m. Titel eines mathematischen Werkes Mack. Coll. I,129.

वाक्यकार m. *der Verfasser eines* Vâkja *genannten* Vedânta-*Werkes* Sarvadarçanas. 58,22. 59,10.

वाक्यगर्भित n. *Einschaltung eines Zwischensatzes* Pratâpar. 62,*b*,5. 63,*b*,7.

वाक्यग्रह m. *Lähmung der Sprache* Suçr. 1,156,17.

वाक्यता (von वाक्य) f. in गद्गद° (so ist wohl zu lesen) *das Stammeln* Suçr. 1,260,17.

वाक्यत्व (wie eben) n. *das Bestehen aus Worten:* वेदवाक्यानि पौरुषेयाणि वाक्यत्वात् Sarvadarçanas. 128,3. 4. *das Satz-Sein* Sâh. D. 8,19. 21. सानुनासिक° *nasale Aussprache* Suçr. 1,260,16. एक° *das Zusammenfassen in ein Wort* Schol. zu den Çivasûtrâṇi bei P.

वाक्यपदीय (von वाक्य + पद) n. P. 4,3,88, Schol. Titel eines zu Pâṇini's Grammatik in Beziehung stehenden Buches des Bhartṛhari Sarvadarçanas. 136,15. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,9. 247,*b*,13. fg. Gold. Mân. 93. 237. Ind. St. 5,67. 158. fgg.

वाक्यपूरण adj. *den Satz ausfüllend* Nir. 1,9.

वाक्यप्रदीप m. fehlerhaft für वाक्यपदीय Colebr. Misc. Ess. II, 42. Verz. d. B. H. No. 763. Gold. Mân. 237.

वाक्यप्रबन्ध m. *fortlaufende Rede, Erzählung* Dhâtup. 35,1.

वाक्यभेदवाद m. Titel eines Werkes Hall 62.

वाक्यमाला f. 1) *Aneinanderreihung mehrerer Sätze* Kâvjâd. 2,108. — 2) Titel eines Commentars zum Tattvavivekadîpana Hall 156.

वाक्यविवरण n. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 618.

वाक्यवृत्ति f. desgl. ebend. Hall 106. 204. °प्रकाशिका und °व्याख्या 106.

वाक्यशेष m. *Satzergänzung* Nir. 12,22. Ind. St. 10,415. 418.

वाक्यसंयोग m. *grammatische Construction* Nir. 6,1.

वाक्यसंकीर्ण n. *Vermengung zweier Sätze* Pratâpar. 62,*b*,5. वाक्यान्तरपदैः कीर्णं वाक्यसंकीर्णमुच्यते 63,*b*,2.

वाक्यसार n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,44.

वाक्यसिद्धान्तस्तोत्र n. Titel eines Werkes Z. d. d. m. G. 1,201.

वाक्यसुधा f. Titel eines dem Çaṁkarâkârja zugeschriebenen Schriftchens Verz. d. Oxf. H. 225,*b*, No. 551. Hall 129. °व्याख्या 130.

वाक्यस्वर m. *der Accent im Satze* Verz. d. Oxf. H. No. 757.

वाक्याध्याहार m. *Ergänzung eines Satzes* P. 6,1,139.

वाक्यार्थ m. *der Sinn —, der Inhalt eines Satzes* Tarkas. 48. fg. Kâvjâd. 2,43. Comm. zu VS. Prât. 4,179. °गुणाः, °दोषाः Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, No. 489. °विवेक (= मन्त्रवाक्यविवेक) 222,*b*,11.

वाक्यार्थदीपिका f. Titel eines Commentars Hall 38.

वाक्यार्थोपमा f. *ein Gleichniss, in welchem die Aehnlichkeit zweier Dinge im Einzelnen durchgeführt wird*, Kâvjâd. 2,43. Beispiele Spr. 4150 und 4341.

वाक्यालंकार m. *Schmuck der Rede, — des Satzes* AK. 3,4,32(28),16.

वाक्र (von वक्र), वाक्रं सुवात्रम् N. eines Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

वाक्र्य n. nom. abstr. von वक्र gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वाक्तसद् adj. in einer Formel TS. 3,2,10,1. nach dem Comm. ist वाक्त so v. a. वाच्.

वाक्संयम m. *Hemmung der Rede, Bändigung der Zunge* Spr. 2766.

वाक्सङ्ग m. = वाक्यग्रह Suçr. 1,255,20.

वाक्सिद्ध n. *eine übernatürliche Vollkommenheit in Bezug auf die Rede* Pańkar. 2,8,4.

वाकस्तम्भ m. = वाक्यग्रह् Vâgbh. 8,9.

वागतीत (वाच् + अ°) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* Verz. d. Oxf. H. 22,*a*,19. 21.

1. वागन्त m. *Ende der Stimme* d. h. *lauteste Stimme* Kâtj. Çr. 7,2,31.

2. वागन्त adj. *mit* वाच् *endigend* Kâtj. Çr. 9,13,22.

वागर m. = वारक, शाण, निर्णय, वाडव, वृक, मुमुत्तु, पण्डित, परित्यक्तभय H. an. 3,599. fg. = गतातङ्क, मुमुतु, वातवेष्टक, विशारद, शाण, निर्णय, वारक Med. r. 214.

वागा f. *Zaum* Çabdârthak. bei Wilson; fehlerhaft für वल्गा.

वागायन m. patron., pl. Saṁsk. K. 184,*a*,5.

वागारु adj. *ein Kind mit falschen Hoffnungen täuschend* Çabdam. im ÇKDr.

वागाशनि m. *ein* Buddha Çabdar. im ÇKDr.

वागाशीर्दत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Vârtt. 3, Schol.

वागिन्द्र m. N. pr. eines Sohnes des Prakâça MBh. 13,2003.

वागीश Vop. 2,37. 1) adj. subst. *der Rede mächtig, ein Meister in der Redekunst* AK. 3,1,35. H. 346. MBh. 10,292. am Ende von Namen grosser Gelehrten: कृष्णानन्द° Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,30. सिद्धान्त° 106,*b*, N. 261,*a*,17. fg. Vgl. न्याय°. — 2) m. Bein. Brahman's Kumâras. 2,3. Verz. d. Oxf. H. 75,*a*, No. 129. Bhâg. P. 3,6,23. — 3) m. *der Planet Jupiter* Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Brh. S. 17,27. 86,1. Brh. 3,7. — 4) f. आ Bein. der Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 63,*a*, No. 113. Ind. St. 3,398 (वागेशा gedr.). वागीशाख्या: Sâj. Comm. Einl.

वागीशत्व n. nom. abstr. von वागीश 1) Pañkar. 3,8,56.

वागीश्वर 1) m. *a*) *ein Meister in der Redekunst* Garuḍa-P. 196 im ÇKDr. सर्ववागीश्वरेश्वर heisst Vishṇu Pañkar. 4,3,53. — *b*) Bein. Brahman's Çabdârthak. bei Wilson. — *c*) N. pr. eines Gina Trik. 1,1,23. Ind. St. 8,467. Târan. 236. — *d*) N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. No. 1006. Verfassers des Mânamanohara Sarvadarçanas. 131,5. Muir, ST. III, 191. 202. — 2) f. ई Bein. der Sarasvatî Çabdârthak. bei Wils. Verz. d. Oxf. H. 103,*a*,35. 106,*b*, No. 162. 214,*b*, No. 511. °मन्त्रा: 93,*b*,3. °पूजापद्धति 96,*a*,1. — Vgl. वादि°.

वागीश्वरकीर्ति m. N. pr. eines Lehrers Târan. 235. 238.

वागु N. pr. eines Flusses: °रेवासंगम Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,2.

वागुजी f. = वाकुची Muk. zu AK. 2,4,3,14 nach Wilson.

वागुञ्जार m. *ein best. Fisch* Suçr. 1,206,6.

वागुण m. *Averrhoa Carambola Lin.* Çabdam. im ÇKDr.

वागुरा f. *Fangstrick, ein Netz zum Einfangen von Wild, Garn* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,42. AK. 2,10,27. H. 928. Halâj. 2,442. संत्रस्ता पृषती वागुरामिव (संप्रेक्ष्य) R. 2,37,9 (10 Gorr.). 4,17,16. भङ्क्त्वा बलाद्वागुराम् Spr. 923. Kathâs. 21,16. 22,49. 27,150. 112,74. Râǵa-Tar. 6,182. वागुरां प्राप्त: Mârk. P. 121,22. Z. d. d. m. G. 14,573,23. °वृत्ति M. 10,32. °बन्धजीवन MBh. 13,2582. वनानि देवदारूणां मेघानामिव वागुरा: 3,12372. 7,3640. गजा: पदाता रथिनस्तुरगाश्च विशांपते। व्यतिष्ठन्वागुराकारा: शतशो ऽथ सहस्रश: ॥ 6,617. शर° 14,2257. व्यतीत: सर्ववागुरा: 1,4609. व्यसन° R. 3,72,27. दुर्जनवागुरासु पतित: Spr. 754. संसार° Prab. 102,4. कम्र्यपृष्ठमुदुनाधरप्लमय: सोत्पलं मधु मदालसा प्रिया। वल्लकी स्मरकथा रह: स्रजो वर्ग एष मदनस्य वागुरा ॥ Varâh. Brh. S. 76,2.

वागुरि m. N. pr. eines Arztes Verz. d. B. H. No. 802.

वागुरिक (von वागुरा) m. *ein mit Netzen dem Wilde nachstellender Jäger* AK. 2,10,14. H. 928. Halâj. 2,441. Ragh. 9,53.

वागुलि = पटि Med. t. 22.

वागुस m. *ein best. grosser Fisch* Halâj. 3,37.

वागृषभ m. *ein Meister (Stier) in der Redekunst;* davon °त्व n. *Meisterschaft in der Rede* R. 1,1,96.

वागोयान N. pr. einer Oertlichkeit Kshitîç. 8,19. 17,1.17. 21,1.

वाग्गुण m. *Redevorzug*, deren 35 bei den Arhant's H. 65—71.

वाग्गुद m. *ein best. Vogel* Trik. 2,5,30. M. 12,64.

वाग्गुम्फ m. pl. *Sprach-Gewinde* so v. a. *eine künstliche Sprache* Verz. d. Oxf. H. 129,*b*, No. 234, Z. 10.

वाग्गुलि m. *Betelträger eines vornehmen Herrn* Çabdam. im ÇKDr.

वाग्गुलिक m. dass. Trik. 2,8,31. Hâr. 132.

वाग्घस्तवत् (von वाच् + हस्त) adj. *der Sprache mächtig und Hände habend* Spr. 1106.

वाग्दण्ड m. *Verweis* M. 8,129. 12,10.

वाग्दत्ता adj. f. *verlobt, versprochen* Kull. zu M. 5,72.

वाग्दरिद्र adj. *wortarm, wortkarg* Çabdam. im ÇKDr.

वाग्दल n. *Lippe (Rede-Blatt)* Trik. 2,6,28.

वाग्दान n. *Verlobung* Kull. zu M. 5,72. 152. 9,69.

वाग्दुष्ट adj. *grob, Grobian* M. 3,156. 8,345. Spr. (II) 282. Hariv. 1189 (zugleich N. pr. eines Brahmanen). 7757 (अ°). Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,44. = व्रात्य Gaṭâdh. im ÇKDr.

वाग्देवता f. *die Göttin der Rede*, Sarasvatî Sâh. D. 1,5. Tantras. im ÇKDr. °गुरु Ind. St. 8,195. पुंभाव° Verz. d. Oxf. H. 177,*a*,12.

वाग्देवत्य adj. *der Rede geweiht* Çâñkh. Çr. 6,11,11. — Vgl. वाग्दैवत्य.

वाग्देवी f. *die Göttin der Rede*, Sarasvatî Trik. 1,1,27.1. Spr. (II) 804. Prab. 86,13. Râǵa-Tar. 5,158. Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 467.

वाग्दैवत्य adj. *der* Sarasvatî *geweiht* M. 8,105. — Vgl. वाग्देवत्य.

वाग्द्वार n. 1) *Eingang zur Rede:* कृतवाग्द्वारे वंशे ऽस्मिन्पूर्वसूरिभि: so v. a. *zu dessen Beschreibung vorangegange Dichter mir den Eingang erleichtert haben* Ragh. 1,4. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Wilson, Sel. Works II, 22.

वाग्बलि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,3 (वाग्वलि, im Index aber वाग्बलि).

वाग्भट m. N. pr. verschiedener Gelehrten: Verfasser des Vâgbhaṭâlaṁkâra Verz. d. Oxf. H. 214,*a*, No. 509. der Kavikalpalatâ Verz. d. B. H. No. 822. ein berühmter Arzt, Verfasser des Ashṭâñgahṛdaja 923. 929. fgg. 937. 940. fg. 958. 979. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,42. 126,*a*,19. 303,*a*, No. 741. fg. 311,*b*,39. 316,*a*,12. 317,*b*, N. 2. Ind. St. 1,21,4. Târan. 311. fgg. Verfasser der Çârîravidjâ Ind. St. 1,467. Oefters वाग्भट्ट geschrieben. — Vgl. वृद्ध°.

वाग्भटालंकार m. Titel eines Werkes des Vâgbhaṭa Verz. d. Oxf. H. 214,*a*, No. 509.

वाग्भट्ट m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 211,*a*, No. 498. — Vgl. वाग्भट.

वाग्भृत् adj. *Rede tragend, — erhaltend* Çat. Br. 8,1,3,6. 7.

वाँग्मायन m. patron. von वाग्मिन् gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110; vgl. 6,4,144.

वाग्मिता (von वाग्मिन्) f. *Beredsamkeit* Kâm. Nîtis. 1,21. Sâh. D. 158.

वाग्मित्व (wie eben) n. dass. MBh. 12,13873. Kâm. Nîtis. 4,36. Râga-Tar. 5,474.

वाग्मिन् (von वाच्) 1) adj. *beredt* P. 5,2,124. Vop. 7,34. AK. 3,1,35. H. 346. an. 2,286. Med. n. 128. Vaiç. beim Schol. zu Çiç. 2,27. Çat. Br. 10,3,3,1. Lâṭy. 1,1,7. M. 7,64. MBh. 3,2450. 15,969. Hariv. 12699. R. 1,1,11 (12 Gorr.). 2,26,12 (14 Gorr.). Kâm. Nîtis. 4,15. 12,2. Ragh. 5, 52. Spr. 3016. 3229. 3953. Çiç. 2,27. 109. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3. Bṛh. 14, 4. Kathâs. 26,284. 46,135. Sâh. D. 78. Râga-Tar. 4, 261. Mârk. P. 20,20. 118,11. Bhâg. P. 4, 19, 25. Pańkar. 4,3,53 (Vishṇu). 6,17. सु° R. 1,13,21 (17 Gorr.). स्खलद्वाग्मी (= स्खलद्वाच्) LA. 17,6 vielleicht fehlerhaft für स्खलद्वाग्गो. — 2) m. *a) Papagei* H. ç. 194 (wohl वाग्मी st. वाल्मी zu lesen). — *b) der Planet Jupiter* H. ç. 13. H. an. Med. — *c)* N. pr. eines Sohnes des Manasju MBh. 1,3697.

वाग्य adj. = वागदरिद्र Çabdam. im ÇKDr. = निर्वेद und काल्य Agaja ebend.

वाग्यत adj. *die Stimme an sich haltend, schweigend* Çâṅkh. Br. 27,6. Gobh. 1,4,1. 6,15. Âçv. Çr. 1,12,16. 4,13,1. Gṛhj. 1,18,7. 3,7,1. Kâty. Çr. 2,2,2. 7,3,9. M. 3,236. 258. 9,60. Jâǵn. 1,31. 238. R. 1,2,10. 27. 2, 87,19. R. Gorr. 2,5,4. Ragh. 11, 30. Bhâg. P. 3, 14,31. 5,23,8. 6,8,4. Mârk. P. 34,27.

वाग्यमन n. *das Schweigen* Kâty. Çr. 4,12,17. 20,1,11. Çâṅkh. Çr. 1, 12,7. 2,14,6. Âçv. Çr. 1,5,35.

वाग्याम adj. = वाग्यत P. 3,2,40, Schol.

1. वाग्वज्र m. n. *ein als Blitz wirkendes Wort, Donnerwort* Çikshâ 10 in Ind. St. 4,367. Andere Belege s. u. वज्र 2).

2. वाग्वज्र adj. *dessen Worte Blitze sind* Bhâg. P. 4,13,19.

वाग्वट m. N. pr. eines Autors Verz. d. Cambr. H. 56.

वाग्वत् (von वाच्) adj. *mit der Rede verbunden* Ait. Br. 6,7.

वाग्वलि s. वाग्वलि.

वाग्वाद m. N. pr. eines Mannes P. 6,3,109, Vârtt. 2.

वाग्वादिनी f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 108,*a*, No. 168, Z. 25.

वाग्विद् adj. *redekundig, beredt* R. 1,1,1.

वाग्विदग्ध adj. *redefertig, beredt;* davon °ता f. *Redefertigkeit, Beredsamkeit* Spr. 2817.

वाग्विधेय adj. *durch das* (blosse) *Wort zu bewerkstelligen* so v. a. *was man aus dem Gedächtniss hersagen kann* R. 1,4,8 (3,48 Gorr.). वाचा विधेयम् (= विनापि पुस्तकं पाठयोग्यम् Comm.) ed. Bomb. 4,12.

वाग्वीन् (von वाच्) adj. *beredt:* वाग्वीव मन्त्रं प्र भरस्व वाचम् AV. 5,20,11.

वाग्विप्रुष् n. sg. copul. Zusammensetzung von वाच् + विप्रुष् P. 5,4, 106, Schol.

वाग्विसर्ग m. *das Brechen des Schweigens* Gobh. 2,3,12. 3,2,29.

वाग्विसर्जन n. dass. Kâty. Çr. 4,10,6. 7,4,15. 12,4,26.

वाँग्वीर्य adj. *stimmkräftig* TS. 6,3,1,5.

वाघत् m. *der Gelobende, Veranstalter eines Opfers* (nicht der Priester, sondern der यजमान); = मेधाविन् Naigh. 3,15. = ऋत्विज् 18. त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते RV. 4,2,13. 1,3,5. 31,14. 40,4. मूर्धा विश्वस्य वाघतः 6,16,13. होतारं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु 1,58,7. 3, 2,1. 3,4,8. इन्द्रेण युजा निःसृजन्त वाघतो व्रजम् 10,62,7. यदङ्गिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे 1,36,13. पुरुत्रा चिद्धि वां विह्वयन्ते मनीषिणः। वाघद्भिरश्विना गतम् (= वाहकैरश्वैः Sâj., vielmehr *die* म° *mit den* वा°) 8,5, 16. 1,88,6. न सुषा न सुद्रा उत। नान्यस्त्वच्छूर वाघतः 8,67,4. मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् 7,32,1. die Ṛbhu विष्ट्वी शमी तरणित्वेन वाघतः (वोढारो मेधाविनो वा Nir. 11,16) 1,110,4. 3,60,4. Soma पुनानो वाघद्वाघद्भिरमर्त्यः 9,103,5. मंहिष्ठो वाघताम् 10,33,4. Die herkömmliche Zurückführung auf वह् (mit der Nebenform वघ् in वधू u. s. w.) befriedigt nicht; wir vergleichen εὔχομαι und *voveo* (für *vogveo*).

वाघातक s. घातक in den Nachträgen.

वाघेल्ल N. pr. eines Geschlechts Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,7.

वाङ्क m. *das Meer* Trik. 1,2,9.

वाङ्, वाँङ्क्ति (काङ्क्षायाम्) Dhâtup. 17,17. — Vgl. काङ्क् und वाञ्छ्.

वाङ्ग m. *ein Fürst der* Vaṅga P. 4,1,170, Schol. Varâh. Bṛh. S. 11, 60. als Dichter Verz. d. Tüb. H. 13.

वाङ्गक adj. *ein Verehrer der* Vaṅga oder *des Fürsten der* Vaṅga P. 4,3,100, Schol.

वाङ्गारि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,4 v. u.

वाङ्निधन adj. वाच् *zum Refrain habend* Nid. 1,12. Lâṭy. 4,7,1. वाङ्निधनं क्रौञ्चम् und — सौहविषम् Namen von Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

वाञ्चती f. N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 149,*b*,3. Wilson, Sel. Works II, 16. 18. 22. 32.

वाङ्मधु n. pl. *süsse Worte* Çâk. 68,13.

वाङ्मधुर adj. *süss in Worten, schöne Worte im Munde führend:* वाङ्मधुरो विषहृदयः Hit. 74,20.

वाङ्मनस् n. du. *Rede und Geist* Kaṭhop. 3,13. M. 2,160. वाङ्मनसं n. sg. dass. P. 5,4,77. Vop. 6,8. अवाङ्मनसगोचर Vedântas. (Allah.) No. 2.

वाङ्मय (von वाच्) P. 8,4,45, Vârtt., Schol. Siddh. K. zu P. 4,3,144. Vop. 7,72. 1) adj. (f. ई) *aus Rede bestehend, auf der Rede beruhend, dessen Wesen die Rede ist, die Rede betreffend* Çat. Br. 10,5,3,4. 14,4,3, 10. 5,5,3. यत्किंचिद्वाङ्मयम् VS. Prât. 8,31. Jâǵn. 3,189. कर्मन् M. 12,6. तपस् Bhag. 17,15. MBh. 3,15830. कन्या R. 7,17,9. समुद्र Ragh. 3, 28. अमृत Verz. d. Oxf. H. 173,*a*, No. 125, Z. 11. ज्योतिस् 210,*b*, No. 496, Z. 6. 14. स्तोत्र Pańkar. 4,1,11. तर्कादयः Prab. 101,7. आदर्श Spr. (II) 934. Davon nom. abstr. °त्व n. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 17. — 2) f. ई *die Göttin der Rede*, Sarasvatî Çabdârthak. bei Wilson. — 3) n. *Redekunst, Redeweise* Sâh. D. 1,3. Vop. 5,4. मिताक्षर und अमिताक्षर ṚV. Prât. 12,9. Ind. St. 8, 210. Kathâs. 113,23. गद्यं पद्यमिति प्राहुर्वाङ्मयं द्विविधं बुधाः Verz. d. Oxf. H. 198,*b*,2 v. u. °भेदाः Trik. 3,2,22. द्विधा प्रयुक्तेन च वाङ्मयेन सरस्वती तन्मिथुनं नुनाव so v. a. *Rede* Kumâras. 7,90.

वाङ्माधुर्य n. *Lieblichkeit der Rede, — der Stimme* Spr. 4978.

वाङ्मुख n. *Eingang einer Rede* AK. 1,1,5,9. H. 262.

वाच् (von वच्) f. Uṇâdis. 2,57. P. 3,2,178, Vârtt. 1. Vop. 26,71. 1) *Sprache, Stimme, Rede, Wort, Aussage; Laut, Ton* AK. 1,1,5,1.18. H. 241. an. 1,7. Med. k. 9. Halâj. 1,8. 5,48. 68. 83. ṚV. 1,164,34. 37. वाचं वाचं जरितू रत्निनीं कृतम् 182,4. 4,57,5. वाचो मतिं सर्कस : सूनवे भरे 1,

143,1. वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते 6,67,10. 7,22,3. प्र वां देवत्रा वाचं कृणुधम् 7,34,9. इयर्ति वाचम् 2,42,1. उभे वाचौ वदति 43,1. प्र दूतमिव वाचमिष्ये 4,33,1. तिस्रो वाचः प्र वद 7,101,1. 8,5,3. प्रतीचीं अग्रभा वाचम् 10,18,14. अमुं वागपि गच्छतु AV. 2,12,8. 10,2,7. यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा 5,7,5. चक्षुषा मनसा वाचा 6,96,3. 7,70,1. वाचो मधु 12,1,16. VS. 3,47. अविया ṚV. 1,190,2. नित्या 8,64,6. मधुमती AV. 3,30,2. अनुदिता 5,1,2. भर्गस्वती 6,69,2. दैवी 8,1,3. विचक्षणवती Ait. Br. 1,6. अनुद्यमाना Çat. Br. 4,2,2,11. पूता 13,2,9,9. अपूता Ait. Br. 7,27. वाचं यच्छति Çat. Br. 2,4,1,6 (vgl. u. यम्). विसृजेत Kâtj. Çr. 2,4,7. वदेत् TS. 2,1,2,6. पुरा वाग्भ्यः प्रवदितोः Pañkav. Br. 21,3,5. Kâtj. Çr. 9,1,10. पशूनां वाच आजानाति Pañkav. Br. 10,2,7. Âçv. Gṛhj. 3,10,9. वाग्देवेभ्यो यज्ञं वहति Çat. Br. 1,4,4,2. वाचं आसन्नसोः प्राणाः TS. 5,5,9,2. वाग्घ्येवैतत्सर्वं यत्स्त्री पुमान्नपुंसकं वाचा ह्येवैतत्सर्वमाप्तम् Çat. Br. 10,5,1,3. सप्तधा वागवदत् Ait. Br. 2,17. त्रेधाविहिता Çat. Br. 10,5,1,2. der Steine ṚV. 10,94,1. der Trommel AV. 5,20,1. 4. Pañkav. Br. 6,5,12. übertragen auf *die Zunge* Çat. Br. 8,5,4,1. 10,5,2,15. वृषा वाव प्रत्यक्षं वाग्यज्जिह्वा Pañkav. Br. 20,14,3. — तपो वाचं रतिं चैव कामं च क्रोधमेव च। सृष्टिं ससर्ज चैवेमां स्रष्टुमिच्छन्निमाः प्रजाः ॥ *Sprache* M. 1,25. 2,90. म्लेच्छ°, आर्य° adjj. 10,45. Sâṁkhjak. 26. 34. Bhâg. P. 3,26,13. मनुष्यवाचा Ragh. 2,33. यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः *Rede, Worte* Bhag. 2,42. मधुरा श्लक्ष्णा M. 2,159. वेषवाग्बुद्धिसारूप्य 4,18. वाग्दण्डयोश्च पारुष्ये 8,72. वाचा दारुणया क्षिपन् 270. वाक्शस्त्रं वै ब्राह्मणस्य 11,33. पवित्रं विदुषां हि वाक् *Rede, Ausspruch* 11,85. सहैभी चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य 3,30. MBh. 1,5973. वाचं व्याजहार 3,2091. वाग्भिरभिनन्द्य 2223. 3045. R. 1,62,19. (भरतम्) तुष्टुवुर्वाग्विशेषज्ञाः स्तवैर्मङ्गलसंहितैः 2,81,1. सूनृता Spr. 1047. 2768. सत्यपूतां वदेद्वाचम् 1232. 1553. fg. वाचा दुरुक्तम्, वाक्क्षतम् 2647. वाक्सायकाः 2767. वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः। तां तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः ॥ 4981. वागर्थाविव संपृक्तौ Ragh. 1,1. वागर्थं परिगृह्य Dhûrtas. 85,9. प्रविशेत्यप्रणोद्वाचम् Kathâs. 18,211. दैवी *ein königliches Wort* Râga-Tar. 5,205. मन्ये त्वां विषये वाचां स्नातमन्यत्र च्छान्दसात् *auf dem ganzen Gebiete der Rede* Bhâg. P. 1,4,13. वाचां वैचित्र्यम् Hit. Pr. 2. ललितमधुरा वाक्प्रत्यक्षे परोक्षविघातिनी Vet. in LA. (III) 30,5. वाचमाददे Ragh. 1,59. वाचं दा *die Rede richten an* (dat.) Çâk. 132. वाचं न मिश्रयति यद्यपि मे वचोभिः 30. नियम्य वाचम् M. 2,185. 192. 4,49. मृदु° adj. 9,335. अनृत° adj. R. 1,6,15. वाग्बाहूदरसंयत M. 4,175. कर्मणा मनसा वाचा Spr. 2445. वाङ्मनःकर्मजैः पापैः 4977. मनोवाग्देहजैः कर्मदोषैः M. 1,104. 5,165. fg. 9,29. 12,3. मनोवाङ्मूर्तिभिः 11,231. 241. वाचि, चेतसि Spr. 1974. बालवृद्धातुराणां च साक्ष्येषु वदतां मृषा। जानीयादस्थिरां वाचमुत्सिक्तमनसां तथा ॥ *Aussage* M. 8,71. 81. 103. वेदस्यापौरुषेयत्ववाचो युक्तिर्न युक्ता *Behauptung* Sarvadarçanas. 129,3. वाङ्मात्र M. 4,30. Spr. 2769. Pañkat. 78,7. वाचं वा को विजानाति पुनः संश्रुत्य संश्रुताम् *Stimme* Jâgñ. 3,150. VS. Prât. 1,9. Varâh. Bṛh. S. 68,101. वाप्यकलया वाचा MBh. 3,2267. 2321. 2458. श्लक्ष्णया वाचा 2771. 2940. दीनया वाचा 5,7327. वागुवाचाशरीरिणी R. 1,1,81. Weber, Kṛshṇag. 320. LA. (III) 92,1. वागभूत्तत्र मानुषी R. 2,63,24. fg. इत्युक्त्वा विरराम वाक् Kathâs. 18,316. वागमानुषी Varâh. Bṛh. S. 46,92. पूर्वं चरति देवेषु पश्चाद्गच्छति मानुषान्। नाचोदिता वाग्वदति सत्या ह्येषा सरस्वती ॥ *Orakelstimme* 98. सारसाः — वदन्ति मधुरा वाचः *Laute, Töne* MBh. 3,11612. सारसाश्च मयूराश्च वाचो मुञ्चन्ति दारुणाः 6,62. शकुनिः पुत्र पुत्रेति भाषते। मधुरां करुणां वाचम् R. 2,96,12. शिवाश्चाप्यशिवा वाचः प्रवदन्ति महास्वनाः 6,16,11. पक्षिणां सुस्वरा वाचः Varâh. Bṛh. S. 22,6. Spr. 4683. eines Esels Kathâs. 62,18. उलूकवाग्भिः Bhâg. P. 5,13,5. रक्षांसि विविधा वाचो विसृजन्ति महावने R. 3,51,20. — वाचा सत्ये कृते so v. a. *wenn das Wort gegeben worden ist, wenn die Verlobung stattgefunden hat* M. 9,69. वाचा तेनोपकोशा च प्राग्धर्मभगिनी कृता so v. a. *ausdrücklich* Kathâs. 4,96. ईदृक्तु वाचा नियमो ग्राह्यः संबन्धिना त्वया 17,83. Man findet zahlreiche Allegorien, z. B. TS. 2,5,11,4. 6,4,7,3. Kâṭh. 12,5. 27,1. Ait. Br. 5,25. Çat. Br. 1,4,5,8. 5,4,6. 3,2,1,8. 5,1,18. 6,1,2,6. 7,5,2,6. am verbreitetsten die Legende von der Sendung der Vâk zu den Gandharva Ait. Br. 1,27. TS. 6,1,6,5. Çat. Br. 3,2,4,3. Kâṭh. 24,1. वाचः साम N. verschiedener Sâman Pañkav. Br. 12,5,12. Ind. St. 3,234,*a*. वाचो व्रतम् N. eines Sâman Ind. St. ebend. वाचः स्तोमः N. eines Ekâha Çâñkh. Çr. 15,11,2. Kâtj. Çr. 22,6,24. — 2) personificirt, übrigens in unbestimmter Weise als Vâk Âmbhṛṇî im Liede ṚV. 10,125. Anukr. Çat. Br. 14,9,4,33. als *die Stimme des mittleren Gebietes*, oft bei Comm. zur Erklärung gebraucht Naigh. 5,5. Nir. 11,27. 10,46. 12,10. = भारती, सरस्वती H. an. Med. प्रणम्य वाचम् Kathâs. 1,3. als Tochter Daksha's und Gattin Kaçjapa's VP. 122, N. 19. — 3) defectiv für वाङ्गिधन Lâṭj. 6,9,8. 7,8,5. 13,7. — Vgl. अ°, अद्रोघ°, अनृत°, अभय° (unter अभय 4,*a*), आप्त°, दुर्वाच्, निर्वाच्, पुरुष°, प्र°, प्रति°, प्रिय°, भद्र°, मधुर°, मित°, मिथ्या°, मृध्र°, सत्य°, सु°, सूक्त°.

वाच m. *ein best. Fisch* Râgav. im ÇKDr. *eine best. Pflanze* (मदन) Wilson. — Vgl. कोक°.

वाचंयम (वाचम्, acc. von वाच् + यम) 1) adj. (f. आ) = वाग्यत *die Rede —, die Stimme an sich haltend, schweigend* P. 3,2,40. 6,3,69. Vop. 26,60. AK. 2,7,41. Trik. 3,3,252. H. 76. Halâj. 2,257. TBr. 3,2,3,8 (अ°). Ait. Br. 5,33. Çat. Br. 1,7,1,15. 2,2,2,20. 4,6,9,21. Çâñkh. Br. 11,8. 27,6. Shaḍv. Br. 1,5. Khând. Up. 5,2,8. Kaush. Up. 2,3. 4. Pañkar. 3,9,16. 14,57 (fem.). Sarvadarçanas. 39,7. m. so v. a. Muni Verz. d. Oxf. H. 255,*b*,19. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,14. 19,*a*,38.

वाचंयमत्व (von वाचंयम) n. *das Schweigen* Ragh. 13,44. °व्रत Spr. 3661.

वाचक (von वच्) nom. ag. (f. वाचिका) 1) *sprechend, sagend:* यथार्थस्य Spr. 467. आननं वल्गुवाचकम् (वल्गूनि वाचकानि यस्मिन् Comm.) Bhâg. P. 4,25,31. *Sprecher, der Vortragende, Hersager* MBh. 18,213. 229. 231 (= Hariv. 16141. 16159. 16161). R. 7,111,7. Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,19. Weber, Kṛshṇag. 253. *sprechend —, handelnd über, aussagend:* ब्रह्मादीनां वाचको ऽयं मन्त्रः Weber, Râmat. Up. 288. सर्ववाच्यस्य ebend. und 291. Bhâg. P. 12,6,41. प्रणवं वाचकं मत्वा वाच्यं ब्रह्मेति निश्चितः Hariv. 14695. Weber, Râmat. Up. 341. अध्यात्म° (पर्वन्) MBh. 1,354. — 2) *ausdrückend, bezeichnend* Jogas. 1,27. शब्दो ऽपि वाचकस्तद्वल्लक्षको व्यञ्जकस्तथा Sâh. D. 31 (daher वाचकः = शब्दः AK. 1,1,5,2. Trik. 1,1,118). Verz. d. Oxf. H. 177,*b*, No. 403. 230,*a*,15. H. 14. Sarvadarçanas. 50,21. 51,7. 141,10. 146,11. क्रिया° ṚV. Prât. 12,8. अव्यय° MBh. 1,7868.

5,2563. AK. 1,1,4,5. 3,4,22(28),13. 3,5,15. WEBER, RÂMAT. UP. 354. H. 15. 568. Verz. d. Oxf. H. 22,b,44. fg. 201,b, No. 483. 230,a,14. PAÑKAR. 1,2,58. KUSUM. 55,12. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 97. Comm. zu GAIM. 1,1,2. सर्वाश्चैकार्थवाचिकाः Verz. d. Oxf. H. 56,a,3. 4. अर्थसृष्टिर्वाच्या शब्दसृष्टिस्तु वाचका (!) WEBER, RÂMAT. UP. 336. — Vgl. गुण°, पर्याय° (auch SUÇR. 1,320,18), ब्रह्मसमुद्रवाचका, स्वस्तिवाचक.

वाचकता f. nom. abstr. von वाचक *sprechend —, handelnd über:* वाच्य° (das suff. gehört zu beiden Wörtern) BHÂG. P. 2,10,36. von वाचक *ausdrückend, bezeichnend* SARVADARÇANAS. 143,2.

वाचकत्व n. nom. abstr. von वाचक *sprechend —, handelnd über* WEBER, RÂMAT. UP. 332. von वाचक *ausdrückend, bezeichnend* PAT. zu P. 1,2,10. SÂH. D. 11,4. SARVADARÇANAS. 140,22. 141,8. वर्णानां वाचकत्वे *wenn die Buchstaben dasjenige sind, was den Begriff ausdrückt,* 9. 142,10. 143,1. वाचकलक्ष्यकव्यञ्जकत्वेन (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) त्रिविधं शब्दजातम् PRATÂPAR. 8,b,3.

वाचकमुख्य Titel einer Schrift HALL 166.

वाचकाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* bei den Gaina SARVADARÇANAS. 34,8. 37,14. fg. उमास्वाति° 38,8. 9.

वाचकूटी f. COLEBR. Misc. Ess. I,144 wohl fehlerhaft für वाचक्नवी.

वाचक्नवी (auf वचक्नु zurückgeführt) f. N. pr. einer Lehrerin mit dem patron. Gârgî ÇAT. BR. 14,6,6,1. 8,1. ÂÇV. GṚHJ. 3,4,4. ÇÂÑKH. GṚHJ. 4,10. AV. PARIÇ. in Verz. d. B. H. 92,6.

वाचन (vom caus. von वच्) n. 1) *das Hersagenlassen* KÂTJ. ÇR. 5,4,33. 7,9,23. LÂṬJ. 2,1,5. 6,12. °मन्त्र Comm. zu ÂÇV. ÇR. 1,11,1. — 2) *das Hersagen:* गायत्र्याः JÂGN. 3,310. शुद्धेनानन्यचित्तेन पठितव्यं प्रयत्नतः । न कार्यासक्तमनसा कार्यं स्तोत्रस्य वाचनम् ॥ VÂRÂHITANTRA im ÇKDR. *das Lesen:* पुस्तक° Verz. d. Oxf. H. 217,a,10. स्व° 186,a,6. वाचनाचार्य 4. No. 423. — 3) *das Ausdrücken, Bezeichnen:* अनेकार्थ° SÂH. D. 705. — Vgl. पुण्याह° (unter पुण्याह), शान्ति°, स्वस्ति°.

वाचनक n. = प्रहेलक HÂR. 152. der Schol. zu HÂLA 334 liest प्रहेनक und वायनक.

वाचनिक (von वचन) adj. *auf einer ausdrücklichen Angabe beruhend, ausdrücklich erwähnt* ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 83. 100. 292. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 72,5 v. u. 88,13. 107,12. zu VS. PRÂT. 1,75. SIDDH. K. zu P. 6,1,116. Verz. d. Oxf. H. 161,a, No. 354.

वाचमीङ्ख्य adj. *die Stimme in Bewegung setzend:* Soma ṚV. 9,35,5. 101,6.

वाचयितर् (vom caus. von वच्) nom. ag. *der Etwas hersagen lässt, der Leiter einer Recitation* SAṂSK. K. 21,b,2. fgg.

वाचश्रवस् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 53,a,19. 28. wohl fehlerhaft für वाजश्रवस्.

वाचस s. वि°, स°.

वाचसांपति m. = बृहस्पति *der Planet Jupiter* ÇABDAR. im ÇKDR. fehlerhaft für वचसांपति.

वाचस्पत m. patron. von वाचस्पति ÇÂÑKH. BR. 26,5.

वाचस्पति m. 1) *Meister der Rede,* pl. BHÂG. P. 4,16,2. 29,44. *Herr der Stimme* oder *Rede* NAIGH. 5,4. NIR. 10,17. fg. Genius des menschlichen Lebens, das so lange dauert als die Stimme im Leibe ist, ṚV. 9,26,4. 10,166,3. VS. 7,1. 9,1. AV. 1,1,1. 13,1,17. AIT. BR. 5,25. TS. 2,6,8,1. प्रवदितेव वाचो भवत्यथो एनं वाचस्पतिरित्याहुः 7,1,10,3. ÂÇV. ÇR. 1,7,2. ÇAT. BR. 1,8,1,15. 11,7,2,6. प्राण SHAḌV. BR. 2,9. ÂÇV. GṚHJ. 3,3,4. KAUÇ. 41. Soma ṚV. 9,101,5. Viçvakarman 10,81,7. Pragâpati ÇAT. BR. 5,1,1,16. Brahman KUMÂRAS. 7,87. Bṛhaspati als *Herr der heiligen Rede* TS. 1,8,10,1. als *Meister der Redekunst,* Lehrer der Götter und Regent des Planeten Jupiter, AK. 1,1,2,26. H. 118. HALÂJ. 1,47. उत्तरोत्तरयुक्तौ च वक्ता वाचस्पतिर्यथा R. 2,1,13. 5,31,49. KUMÂRAS. 2,30. PAÑKAT. Pr. 2. Verz. d. Oxf. H. 255,a,11. Verz. d. B. H. No. 897. BHÂG. P. 6,7,8. MÂRK. P. 123,14. VOP. S. 176. — 2) N. pr. eines Ṛshi Verz. d. Oxf. H. 53,a,34. eines Lexicographen, Philosophen u. s. w. HÂR. 273. MED. Anh. 4. Schol. zu H. 106. 183. 222. 250. 972. 1194. 1214. UĠĠVAL. zu UṆÂDIS. 3,22. 4,129. 233. Verz. d. B. H. No. 802. 843. Verz. d. Oxf. H. 162,b,23. 182,b,3 v. u. 188,a,27. fg. 189,b, No. 433. 178,a,34. 247,a,37. 352,b, No. 835. COLEBR. Misc. Ess. I,230. PRAB. 20,10. SARVADARÇANAS. 148,19. 158,12. °निबन्ध Verz. d. B. H. No. 1176. वैद्य° Verz. d. Oxf. H. 314,b, No. 746. °गोविन्द 125,b, No. 218. °भट्टाचार्य 138,b, No. 272. °मिश्र 237,b, No. 570. 244,a, No. 606. 273,a, No. 646. fgg. 274,a, No. 650. 279,a,45. 289,a, N. 1. 292,a,5. 18. b,9. Verz. d. B. H. No. 608. 637. fg. 1403. COLEBR. Misc. Ess. I,234. 262. 332. HALL 5 u. s. w. in der Einl. zu VÂSAVAD. 9. SARVADARÇANAS. 165,22. 166,12. GILD. Bibl. 499.

वाचस्पतिकल्पतरु m. Titel eines Werkes, = वेदान्तकल्पतरु HALL 87. Verz. d. Oxf. H. 177,b,9.

वाचस्पत्य 1) adj. *zum Gott* Vâkaspati *in Beziehung stehend,* Beiw. Çiva's MBH. 13,1187. NÎLAK.: वाचस्पतिं देवपुरोहितमनुज्ञातः वाचस्पत्यः । पुरोहितकर्मकर्ता । बृहस्पतिर्ह वै देवानां पुरोहितस्तमन्वन्ये मनुष्यराज्ञां पुरोहिता इति ब्राह्मणे बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्तीति मन्त्रस्थबृहस्पतिपदस्य व्याख्यानात्. — 2) adj. *von* Vâkaspati (dem Philosophen) *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 289,a,1. — 3) n. *Beredsamkeit* Spr. 335. — Vgl. योग°.

वाचा f. 1) = वाच् *Rede, Wort; Göttin der Rede* BHÂGURI und KANDRA bei UĠĠVAL. zu UṆÂDIS. 2,57. VOP. 4,2. TRIK. 1,1,116. MED. k. 9. मनसा वाचया च Schol. zu KÂTJ. ÇR. 207,2 v. u. तिसृभिर्वाचाभिः PAÑKAT. 221,7. °शौच Spr. 4980. °सिद्धि Verz. d. Oxf. H. 99,a,10. — 2) MBH. 13,6149 fehlerhaft für वचा, wie die ed. Bomb. liest.

वाचाट (von वाच्) adj. (f. आ) *geschwätzig* P. 5,2,125. VOP. 7,34. AK. 3,1,36. H. 347. M. 3,8. KATHÂS. 102,148. MÂRK. P. 34,76. BHAṬṬ. 5,23. टिट्टिभ Spr. (II) 408. — Vgl. वाचाल.

वाचारम्भण n. 1) nach ÇAṂK. = वागालम्बन *ein Beruhen auf blossen Worten* so v. a. *eine Verschiedenheit dem blossen Namen nach* KHÂND. UP. 6,1,4; vgl. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 21. — 2) Titel einer Schrift HALL 137.

वाचाल (von वाच्) adj. (f. आ) *geschwätzig* P. 5,2,125. VOP. 7,34. AK. 3,1,36. H. 347. नावाचालो मृषाभाषी Spr. 1536. पत्त्रवर्णानि 5293. KATHÂS. 40,34. PRAB. 27,10. 111,15. = विकत्थन *grosssprecherisch* UTPALA zu VARÂH. BṚH. 18,9. *geräuschvoll:* किङ्किणीजाल° (लङ्का) R. 5,9,59. आयोधनैर्वा RÂGA-TAR. 8,477. — Vgl. वाचाट.

वाचालता (von वाचाल) f. *Geschwätzigkeit* Spr. 411.

वाचालय् (wie eben) *geschwätzig machen:* अमी मूकान्वाचालयितुमपि शक्ता यतिपतेः कटाक्षाः Verz. d. Oxf. H. 253, *a*, 14. fg. वाचालित *geschwätzig gemacht* KATHÂS. 24, 227. *geräuschvoll gemacht:* सार्यं वनस्पतिर्लोनैः खगैर्वाचालितो यथा RÂGA-TAR. 8, 476.

वाचाविरुद्ध adj. *mit dem Worte in Widerspruch stehend* so v. a. *nicht in Worte zu fassen, nicht mit Worten zu schildern* (= वाङ्मियमनशील NILAK.); pl. Bez. einer Gruppe göttlicher Wesen MBH. 13, 1372. — Vgl. मनोविरुद्ध.

वाचावृत्त s. वाचावृद्ध.

वाचावृद्ध m. pl. N. einer Göttergruppe im 14ten Manvantara VP. (II) 3, 28. वाचावृत्त v. l. वावृद्ध in der 1ten Ausg. 269.

वाचास्तेन (वाचाऽस्तेन Padap.) adj. etwa *der durch Rede heimlich Abbruch thut* ṚV. 10, 87, 15.

1. वाचिक (von वाच्) P. 5, 4, 35. VOP. 7, 15. 1) adj. *durch Worte bewirkt, aus Worten hervorgegangen, in Worten bestehend* MBH. 12, 13490. कायिकं वाचिकं चैव मनसा समुपार्जितम् । तत्सर्वं नाशमायाति 18, 303. कर्मदोषाः M. 12, 9. पारुष्ये दण्डवाचिके (das suff. gehört zu beiden Worten) 8, 6. वाक्कृग्रीवानेत्रसकथिविनाश so v. a. *angedroht* JÂGN. 2, 208. अभिनय *in Worten bestehende Darstellung* so v. a. *Declamation* SÂH. D. 274. H. 283. Verz. d. Oxf. H. 102, *b*, 31. 200, *a*, 1. त्रि° *durch drei Worte bewirkt* PAÑKAT. 222, 16. fg.; vgl. 221, 7. — 2) n. *Auftrag* AK. 1, 1, 5, 18. H. 276. HÂR. 166. भृत्यमेकं वणिग्वेश्म प्राहिणोद्दत्तवाचिकम् RÂGA-TAR. 6, 35.

2. वाचिक m. Hypokoristikon von वागाशीर्दत्त P. 5, 3, 84, Vârtt. 3, Schol.

वाचिकपत्त्र n. *Schriftstück, Contract* (लिपि, संवादपत्त्र) ÇKDR.

वाचिकहारक m. *Brief* TRIK. 2, 8, 28. HÂR. 54.

वाचिन् (von वच्) adj. *behauptend, annehmend:* जातिशब्दार्थ° SARVADARÇANAS. 145, 9. 10. प्रतिषेध° Kâr. 4 aus Kâç. zu P. 7, 2, 10. *ausdrückend, bezeichnend:* क्रिया° AV. PRÂT. S. 261 (II, 1). SÂH. D. 10, 15. WEBER, RÂMAT. UP. 291. Schol. zu P. 1, 1, 35. 4, 105. VOP. 4, 15. SARVADARÇANAS. 87, 8. davon nom. abstr. वाचित्व n.: सत्ता° 144, 20.

वाची s. अम्बु°.

वाचोयुक्ति (वाचस्, gen. von वाच्, + यु°) P. 6, 3, 21, Vârtt. adj. *beredt* RÂMÂÇR. zu AK. nach ÇKDR.; eher f. *angemessene Rede* (*Art und Weise der Rede* VJUTP. 76). °पटु *beredt* AK. 3, 1, 35. H. 346. VAIG. bei MALLIN. zu ÇIÇ. 2, 27.

वाच्कृत्य MBH. 12, 535 fehlerhaft für वाक्कृत्य (वाक्शल्य ed. Bomb.).

वाच्य्, वाच्यति denom. von वाच् P. 1, 4, 15, Schol.

1. वाच्य (von वच्) 1) adj. P. 7, 3, 67. VOP. 26, 10. = गर्ह्य, वचोऽर्हे, हीन H. an. 3, 504. = कुत्सित, हीन, वचनार्हे MED. j. 54. *a) zu sprechen, zu sagen, zu verkünden, mitzutheilen, zur Sprache zu bringen, zu besprechen:* यथा वाच्यमृतं च तैः M. 8, 61. इदं ते नातपस्काय वाच्यम् BHAG. 18, 67. MBH. 1, 7460. 4, 922. HARIV. 14403. Spr. 439 (II). 1149. सान्त्व, परुष 4114. वचन 4343. शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि 5060. VARÂH. BṚH. S. 11, 6. 17, 27. 23, 1. 3. 24, 5. 27. 26, 12. 47, 2. 22. KATHÂS. 28, 135. 30, 21. 39, 109. 45, 30. 60, 152. RÂGA-TAR. 1, 12. 3, 309. PAÑKAT. 83, 20. 24. SÂH. D. 216. अनन्य° *keinem Andern zu sagen* Verz. d. Oxf. H. 28, *b*, 38. वाच्य ऊर्णोर्णुवद्भावः *auszusagen* Kâr. zu P. 3, 1, 22. MÂRK. P. 38, 14. *aufzuführen, aufzuzählen* TRIK. 3, 3, 463. *was gesprochen wird:* अह्नो अव्यमह्नो वाच्यमह्नो गीतमविस्वरम् R. GORR. 1, 3, 60. BHÂG. P. 7, 15, 57. *worüber gesprochen wird, wovon Etwas ausgesagt wird* HARIV. 4695. WEBER, RÂMAT. UP. 288. 291. 336. 341. अ° *was nicht in Worte zu fassen ist* MAITRJUP. 6, 7. *was nicht gesagt werden sollte* BHAG. 2, 36. वाच्यावाच्ये हि कुपितो न प्रजानाति कर्हिचित् MBH. 3, 1069. 12, 4220. R. GORR. 2, 63, 10. 3, 35, 73. KATHÂS. 59, 36. वाच्यम् impers. *zu sagen, zu sprechen* JÂGN. 1, 238. MBH. 1, 4630. 3, 254. 15787. 4, 1125. Spr. 2770. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 106. PAÑKAT. 97, 17. 236, 22. VET. in LA. 9, 7. SARVADARÇANAS. 45, 1. 82, 7. 167, 10. अवश्यं च मया वाच्यं लेशमात्रेण — विष्णोरतुलवीर्यस्य *zu sprechen über* HARIV. 9787. — *b) anzureden, zu dem man sagen —, — sprechen soll:* आयुष्मान्भव सौम्येति वाच्यो विप्रो ऽभिवादने M. 2, 125. अवाच्यो दीक्षितो नाम्ना 128. BHAR. beim Schol. zu ÇÂK. 1. देवाश्च मुनयश्च भगवन्निति वाच्याः zu 52, 3. 22, 23. SÂH. D. 171, 13. 15. fg. 172, 11. fg. 15. 18. वाच्यश्च नन्दगोपः mit folgender oratio directa HARIV. 4209. RAGH. 14, 61. एवं वाच्यः सः KUMÂRAS. 6, 31. VARÂH. BṚH. S. 28, 2. KATHÂS. 11, 60. 24, 116. 112, 49. RÂGA-TAR. 4, 359 (भूया mit der ed. Calc. zu lesen). DAÇAK. 72, 16. PAÑKAT. 32, 11. 47, 25. mit einem acc.: श्रेयः MBH. 1, 7488. मृदु वचः 5, 67. 14, 2566. R. 2, 58, 18. 68, 6. 98, 15. पित्रा पुत्रो वयःस्थो ऽपि सततं वाच्य एव तु । यथा स्याद्गुणसंयुक्तः प्राप्नुयाच्च महद्यशः ॥ *anzuweisen* MBH. 1, 1728. — *c) zu benennen:* तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाहुर्मनीषिणः MBH. 1, 281. — *d) was noch zu sagen ist* so v. a. *nicht angegeben* KÂTJ. ÇR. 1, 10, 10. — *e) was ausgedrückt —, was bezeichnet wird, ausdrücklich gemeint* SÂH. D. 6, 17. fg. 10. fg. 27. 251. fgg. 687. 291, 9. VOP. 7, 15. Verz. d. Oxf. H. 177, *b*, No. 403. अयं गोशब्दस्य वाच्यः *gemeint mit* 230, *a*, 16. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 78. महावाक्य° 35. 94. ÇAÑK. zu KHÂND. UP. S. 10. 59. NILAK. 42. Comm. zu GAIM. 1, 1, 17. Schol. zu P. 1, 2, 43. 4, 105. SÂJ. zu ṚV. 1, 154, 1. SARVADARÇANAS. 54, 1. 12. 58, 6. 154, 10. — *f) zu tadeln, einen Tadel verdienend* H. 436. काले ऽदाता पिता वाच्यो वाच्यश्चानुपयन्पतिः Spr. 656. 5240. नृपतेः JÂGN. 2, 40. वाच्याश्च यादवाः कृताः HARIV. 4206. R. 3, 64, 18. 5, 7, 2. गुणेष्ववाच्याः MṚKKH. 70, 19. KATHÂS. 55, 11. 71, 26. BHÂG. P. 10, 72, 20. न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः *darüber darf kein Tadel ausgesprochen werden* ÇÂK. 92. — *g) zu lesen* (vgl. caus. von वच्): वाच्यं ते शासनं पट्टे सूक्ष्माक्षरनिवेशितम् MÂRK. P. 36, 8. — 2) n. *a) Hauptwort* (*das wovon Etwas ausgesagt wird*): वाच्यमित्युच्यते भेद्यं तल्लिङ्गं भजते तु यः । विशेषणत्वमापन्नो वाच्यलिङ्गः स उच्यते ॥ SARASVATÎPR. °वत् *wie das Hauptwort* so v. a. *im Geschlecht sich nach dem Hauptwort richtend, adjectivisch* MED. K. 12. j. 54. l. 130. वाच्य adj. *als Hauptwort gebraucht* VOP. 6, 16. Vgl. °लिङ्ग. — *b) Tadel, Makel, Fehler:* = दूषण DHAR. im ÇKDR. न तस्मिन्वाच्यमस्ति नः MBH. 1, 4511. परवाच्येषु निपुणः सर्वो भवति सर्वदा । आत्मवाच्यं न जानीते 8, 2116. नास्य वाच्यं भवेत् 10, 85. R. GORR. 2, 49, 27. नात्र वाच्यं सुसूक्ष्ममपि विद्यते MBH. 15, 326. सर्वथा ते कृतं वाच्यं सीतामुत्सृज्य वने R. 3, 65, 14. परवाच्यानि गोपितुम् Spr. 1825. RAGH. 8, 71. वाच्यं परिमार्ष्टुम् 14, 35. निह्नुतवाच्यशल्य 42. चिरस्य वाच्यं न गतः *hat sich nicht dem Tadel ausgesetzt* ÇÂK. 112. — *c)* = प्रतिपादन DHAR. im ÇKDR. — Vgl. अ°, दुर्वाच्य, पर°, भद्र°, स्वस्ति°, वक्तव्य und वचनीय.

2. वाच्य (von वाच्) 1) adj. P. 4, 1, 85, Vârtt. 1. *der Stimme zugehörig* u. s. w. VS. 13, 58. — 2) m. metron. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. प्रज्ञा-

पति angeblicher Liedverfasser von ṚV. 3,38. 54—56. 9,84.

वाच्यता f. nom. abstr. von वाच्य 1) in der Bed. *zu sagen, zu sprechen:* ये चान्यमोदंस्तद्वाच्यतां द्विजाः so v. a. *eine ungebührliche Art und Weise zu reden* Bhâg. P. 4,2,20. in der Bed. *wovon Etwas ausgesagt wird:* वाच्यवाचकता (das suff. gehört zu beiden Wörtern) 2,10,36. — 2) in der Bed. *zu tadeln:* तथापि मे ऽत्र वाच्यता *dessenungeachtet verdiene ich deshalb getadelt zu werden* Varâh. Bṛh. S. 47,3. कास्माकं तत्र वाच्यता Kathâs. 45,167. दुर्लभा सत्स्ववाच्यता Kir. 11,53. वाच्यतां गम्, इ, या, प्राप् *in Tadel verfallen, sich Tadel zuziehen* MBh. 2,1657. Kâm. Nîtis. 10,23 (wohl नैति st. नैव zu lesen). 11,44. Spr. 2095. fg. 3125. Bhâg. P. 6,13,11. याति व्यालत्ववाच्यताम् Spr. 5143.

वाच्यत्व (von वाच्य) n. 1) *das Gesagtwerdenmüssen, Nothwendigkeit einer ausdrücklichen Angabe* Kâty. Çr. 5,4,4. 18,2,8. nom. abstr. von वाच्य *wovon Etwas ausgesagt wird:* वाच्यवाचकत्व (das suff. gehört zu beiden Wörtern) Weber, Râmat. Up. 332. — 2) *das Ausgedrücktsein, ausdrückliches Gemeintsein:* मङ्गलस्य वाच्यत्वलक्ष्यत्वे Sarvadarçanas. 157,10. शब्द° 146,4. लोकत्रयस्य पृथिवीशब्दवाच्यत्वम् Sâj. zu ṚV. 1,154,1. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 11. अ° Sâh. D. 59.

वाच्यलिङ्ग adj. *nach dem Geschlecht des Hauptwortes sich richtend, ein Adjectiv seiend* AK. 2,7,26. 10,37. 3,4,9,42. Trik. 3,3,119. H. 600, Schol.

वाच्यलिङ्गक adj. dass. AK. 3,4,8,35. Trik. 3,3,88. Med. l. 4.

वाच्यलिङ्गत्व n. nom. abstr. von वाच्यलिङ्ग AK. 1,1,4,19. Schol. zu P. 2,4,18.

वाच्यवर्जित n. *ein elliptischer Ausdruck* Pratâpar. 62,b,6. नोक्तं स्याद्यत्र वक्तव्यं तदाहुर्वाच्यवर्जितम् 64,b,7.

वाच्याय् (von 1. वाच्य), °यते *erscheinen, als wenn es wirklich ausgedrückt wäre,* Sâh. D. 115,10.

वाच्यायन m. patron. von 2. वाच्य TS. 4,3,3,3.

वाज (vielleicht desselben Ursprungs mit उग्र, ओजस्, ओज्मन्, वज्र) m. VS. Prât. 2,39. 1) *Raschheit, Behendigkeit; Muth,* namentlich des Rosses; auch im pl. gebraucht; = वेग H. 495. an. 2,76. fg. Med. ģ. 15. Halâj. 2,288. Varuṇa gab वाजमर्वत्सु पयं उस्रियासु ṚV. 5,85,2. मन्हो वाजेभिर्मंहद्भिश्च शुष्मैः । दधानो वज्रम् 4,22,3. VS. 2,15. वाजाय, श्रवसे, इषे, राये ṚV. 6,17,14. पयांसि वाजा वृष्ण्यानि 1,91,18. Çâṅkh. Çr. 15,1,4. अश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ṚV. 10,39,10. व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् *mögen den Muth* (der Rosse Indra's) *wecken* 7,19,6. AV. 6,38,3. स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ṚV. 1,169,4. 181,5.6. *männliche Kraft* AV. 4,4,8. — 2) *Wettlauf; Wettkampf, Kampf* überh. Naigh. 2,17. हरिर्वाजाय मृज्यते ṚV. 9,3,3. आशुं वाजाय यातवे । हरिं हिनोत वाजिनम् 62,18. हितो न सप्तिरभि वाजमर्ष 70,10. 82,2. आजाविन्द्रस्येन्दो प्रावो वाजेषु वाजिनम् 1,176,5. गन्ता वाजेषु सनिता धनं धनम् 2,23,13. 3,11,9. 10,6,6. वाजेषु सासहिर्भव 3,37,6. 42,6. 5,35,1. 86,2. 8,31,6. 46,9. वाजे वाजे हव्यो भूत् 6,61,12. वाजं त्वा सरिष्यन्तं वाजजितं सं मार्ज्मि VS. 2,7. 14. सहस्रसनिं वाजमभिवर्तस्व रथ देव Âçv. Gṛhj. 2,6,5. Lâṭj. 7,12,13. — 3) *Preis des Wettlaufs; Kampfpreis, Beute:* सिन्धो यद्वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम् ṚV. 10,75,2. रथेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ 9. 9,90,1. त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा 6,33,2. देवहित 17,15. गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः 7,32,11. अर्यद्वृत्रमुत सनोति वाजम् 6,60,1. अर्वद्भिर्वाजं भरते धना 1,64,13. 2,26,3. 31,7. अत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे 3,2,3. स इद्वक्षे चिदभि तृणत्ति वाजम् 8,92,5. 6,17,2.3. 13,3. 4,17,9. VS. 5,37. Indra ist वाजानां पतिः ṚV. 6,45,10. 8,24,18. 81,30. Soma 9,31,2. Agni ist वाजस्य शतिनस्पतिः 1,145,1. 8,64,4. Mehrere dieser Stellen fänden eben so wohl unter 2) oder 4) Platz. — 4) *Gewinn, Lohn; werthvolles Gut* überh.: आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ṚV. 1,27,5. प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान् 92,7. अश्विनः, गोमन्तः 6,45,21. 23. 7,81,6. 8,2,24. शतिन् सहस्रिन् 1,124,13. 2,2,7. द्युमन्त् 4,8. इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं सनुहि 8,70,8. विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे 10,35,13. यस्मिन्नश्वास्त असनाम वाजम् 62,11. राये वाजाय वनते मघानि 3,19,1. 4,12,3. चित्र 22,10. पुरुश्चन्द्र 1,53,5. 3,27,1. पुरुरूप 8,1,4. AV. 13,1,22. वाजमाप्नुयां स्वर्गं लोकम् Pañkav. Br. 18,7,1.12. — 5) nach den Comm. gewöhnlich *Speise,* auch *Opferspeise;* = अन्न Naigh. 2,7. H. 395. n. = यज्ञान्न und सर्पिस् oder घृत H. an. Med. Manchmal sehr scheinbar, z. B. त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ṚV. 7,1,3. सं यज्ञासश्चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः 5,9,2. 43,2. वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु VS. 9,1 deutliche Entstellung aus वाचम्. 18,32. fgg. und Mahîdh. Am wenigsten Gewicht haben Stellen wie: ओषधयः खलु वै वाजः TBr. 1,3,7,1. अन्नं वै वाजः Çat. Br. 9,3,4,1. — 6) *Wasser,* n. H. an. Med. — 7) *Laut, Ton* diess. — 8) *Renner, muthiges Ross am Wagen des Kriegers und der Götter:* प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यसि ṚV. 5,84,2. उद्वाज आगन्यो अप्स्वन्तः AV. 13,1,2. ओ षु प्र याहि वाजेभिः ṚV. 8,2,19. वाजाय प्रथमं सिषासते 3,12. वाजो न साधुरस्तमेष्यृक्वा 7,37,4. प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्नयः 3,26,4. इषो रयोः सयुजः शूर वाजान् 30,11. 4,3,15. 29,1. यूयमर्वन्तं भरताय वाजं धत्थ 5,54,14. स्थविर 6,1,11. 37,5. 7,93,2. त इद्वाजेभिर्जिग्युर्महद्धनम् 8,19,18. 2,1,12. 6,61,4. — 9) *Flügel* H. 1317. H. an. Med. Halâj. 2,84. — 10) *die Federn am Pfeile* AK. 2,8,2,55. H. 781. H. an. Med. Halâj. 2,313. शोणिताक्तदिग्धवाजाग्राः (so die ed. Bomb.) शराः MBh. 7,5642. विचित्र° adj. Bhâg. P. 10,59,16. — 11) N. eines der drei Ṛbhu: *der Behende, Muthige* ṚV. 1,161,6. 4,33,3.9. 34,1. 5,45,5. 6,50,12. 7,36,8. 10,23,2. pl. Bez. sämmtlicher Ṛbhu 3,34,4.5. 35,6. 37,1. 7,37,1. 48,1. 10,93,7. — 12) N. pr. eines Mannes Çâṅkh. Çr. 15,1,12 (zum Zweck einer Etymologie). eines Muni H. an. eines Sohnes des Manu Sâvarṇa Hariv. 465. — Vgl. गृध्र°, चित्र°, ज्या°, तुवि°, दाश°, पत्त्र°, पुरु°, वर्हिण°, भरद्वाज, रायो°.

वाजकर्मन् adj. etwa *kampfthätig* v. l. des SV. I,2,1,2,2 für °भर्मन्.

वाजकृत्य n. *Kampfesthat, Wettkampf* ṚV. 10,50,2.

वाजगन्ध्य adj. etwa *eine Wagenlast von Gütern* (*Beute*) *bildend oder habend* ṚV. 9,98,12. Nir. 5,15. गन्ध्य so v. a. गध्य von गन्धा = गधा; dieses bezeichnet *einen Bestandtheil des Lastwagens* Âpast. in TS. Comm. II,507,8. nach einer Glosse so v. a. छदिस्. Versteht man darunter *die Leitern* oder *Spangen des Wagens, welche die Last zusammenhalten,* so ist गध्य so v. a. *den Leitern gleich* d. h. *die Wagen füllend.*

वाजजठर adj. ṚV. 5,19,4 nach Sâj. so v. a. हविर्जठर.

वाजजित् 1) adj. *im Wettlauf —, im Kampfe siegend, Beute gewinnend* VS. 2,7. 9,9.13. बृहस्पतिना वाजजिता वाजं जेषम् TBr. 1,3,6,1.

3,7,6,4. Lâṭj. 5,12,13. — 2) n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 13,9,20. 15,11,11. Lâṭj. 9,5,14. Ind. St. 3,234,a. प्रजापतेर्वाजजित् desgl. 224,b.

वाजजिति f. *siegreicher Lauf, — Kampf* Kâṭh. 14,1 bei Weber, Nax. 2,349.

वाजजित्या f. dass. TBr. 3,7,6,15.

वाजदा adj. *Behendigkeit —, Kraft verleihend* R̥V. 1,135,5. वाजदा (°धा) अस्य गावः *kräftig* 3,36,5.

वाजदावन् 1) adj. *Preis —, Güter verleihend* R̥V. 1,17,4. 8,2,34. — 2) f. pl. °दावर्यस् N. eines Sâman Pañkav. Br. 13,9,12. 17. Lâṭj. 6,11,4. Ind. St. 3,231,b. 234,a. यद्दा° 230,a (der Artikel यद्दावाजदावर्य ist demnach zu verbessern).

वाजद्रविणस् adj. *reichen Lohn findend* R̥V. 8,73,6; vgl. 5,43,9.

वाजपति m. VS. Prât. 3,37. *der Beute —, des Lohnes* u. s. w. *Herr:* Agni R̥V. 4,15,3. VS. 18,33. fg. Çâñkh. Çr. 7,10,13. Gobh. 3,10,17.

वाजपत्नी f. *des Lohnes* u. s. w. *Herrin:* धेनु Kauç. 114.

वाजपस्त्य adj. *ein Haus voller Güter* u. s. w. *habend, — verschaffend* Nir. 5,15. R̥V. 9,98,12. Pûshan 6,58,2. वाजबस्त्य TBr. 3,1,2,9.12.

वाजपेय m. und n. (n. AK. 3,6,2,31) *Kampf-* oder *Krafttrunk, ein* Soma-*Opfer für den nach der höchsten Stellung strebenden Fürsten und Brahmanen, dem* Râgasûja und Br̥haspatisava *vorangehend.* Im System eine der sieben Formen des Soma-Opfers Âçv. Çr. 6,11,1. 9,9,1. fgg. Lâṭj. 5,4,24. Ind. St. 10,352. Z. d. d. m. G. IX, lxxiv. — AV. 11,7,7. यो वाजपेयेन यजेत । गच्छति स्वाराज्यम् । अग्रं समानानां पर्येति TBr. 1,3,2,3. 2,1. यो वै वाजपेयः । स संम्राट्स्वः 2,7,6,1. Ait. Br. 3,41. Çat. Br. 5,1,1,13. 2,9. 2,1,12. Çâñkh. Çr. 15,1,1. कुरु° 3,14. fg. 5,6. Kâṭj. Çr. 6,1,33. 10,9,28. 14,1,1. यं ब्राह्मणा राजानश्च पुरस्कुर्वीरिन्स वाजपेयेन यजेत Lâṭj. 8,11,1.6.12,6. MBh. 2,233. 3,6048. त्रयो युक्ता वाजपेयं वहन्ति 10660. 13,4927. °समुत्थानि च्छत्त्राणि R. 2,45,22 (43,23 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 30,b,10. 266,b,40. Bhâg. P. 3,12,40. 4,3,3. °याजिन् TBr. 1,3,8,1. Pañkav. Br. 18,6,4. °ग्रह Çat. Br. 5,1,2,4. °यूप 3,6,4,26. Çâñkh. Br. 10,1. °सामन् Lâṭj. 2,5,23. 3,1,24. °स्तोमयाग Verz. d. B. H. No. 317. Abgeleitet so v. a. अन्नपेय Çat. Br. 5,2,1,13. so v. a. वाजाप्य, वाजं ह्येतेनं देवा ऐप्सन् TBr. 1,3,2,3. Abgekürzt so v. a. वाजपेये भवो मन्त्रः und वाजपेयस्य व्याख्यानं कल्पः Schol. zu P. 4,3,66, Vârtt. 2.3.

वाजपेयक adj. *zum* Vâgapeja *in Beziehung stehend, daher kommend, dabei dienend* u. s. w.: छत्त्राणि R. 2,45,23.

वाजपेयिक adj. (f. ई) dass. P. 4,3,68, Schol. Kâṭj. Çr. 18,5,4. 8. Ind. St. 3,388. छत्त्राणि R. Gorr. 2,43,24. दक्षिणा P. 5,1,95, Schol.

वाजपेयिन् adj. *der den* Vâgapeja *vollzogen hat* Verz. d. Oxf. H. 142, a, No. 290. — राम°.

वाजपेशस् adj. etwa *kraft-* oder *lohngeschmückt:* कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम् R̥V. 2,34,6. = अन्नैराश्लिष्टम् Sâj.

वाजप्य m. N. pr. eines Mannes gaṇa नडादि zu P. 4,1,99.

वाजप्यायन m. patron. von वाजप्य gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. N. pr. eines Grammatikers Sarvadarçanas. 145,10.

वाजप्रमहस् adj. etwa *an Muth* oder *im Kampf überlegen:* Indra R̥V. 1,121,15.

वाजप्रसवीय adj. *mit den Worten* वाज *und* प्रसव *beginnend, sie enthaltend* (TS. I,1038,7); n. nämlich कर्मन् TBr. 1,3,3,3. Çat. Br. 5,2,2,5. 9,3,4,1. TS. 5,4,9,1. Kâṭj. Çr. 18,5,4.

वाजप्रसव्य adj. dass. Kâṭh. 14,8. 21,12.

वाजप्रसूत adj. *zum Lauf* u. s. w. *aufgebrochen* oder *von Muth getrieben* R̥V. 1,77,4. 92,8.

वाजबन्धु m. *Kampfgenosse* oder N. pr. R̥V. 8,57,19.

वाजबस्त्य s. वाजपस्त्य.

वाजभर्मन् adj. etwa *Preis —, Lohn gewinnend* R̥V. 8,19,30.

वाजभर्मीय (von वाजभर्मन्) n. भरद्वाजस्य °यम् N. eines Sâman Ind. St. 3,227,b.

वाजभृत् n. N. eines Sâman Lâṭj. 6,10,3. भरद्वाजस्य वा° Ind. St. 3,227,b.

वाजभोजिन् m. = वाजपेय Çabdar. im ÇKDr.

वाजंभर 1) adj. *den Preis davontragend:* अश्व R̥V. 1,60,5. 4,4,4. 10,80,1. — 2) m. Sapti Vâgambhara angeblicher Liedverfasser von R̥V. 10,79.

वाजय् (von वाज), वाजयति (अर्चतिकर्मन् Naigh. 3,14. मार्गसंस्कारगत्योः, मार्गणसंस्कारयोः Dhâtup. 32,74) und वाजयते, °ते. 1) *wettlaufen, wettfahren, kämpfen;* überh. *schnell laufen, eilen:* मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो हवन्ते R̥V. 4,42,5. 17,16. त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम 5,4,1. सयावानं धने धने वाजयन्तमवा रथम् 5,35,7. 31,1. 60,1. 8,3,15. 11,9. अत्य 7,24,5. हरी 2,11,7.19,7. प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्तः *wetteifernd* 8,89,3. आवर्यदस्य कर्णा वाजयध्यै *zum Eilen* 4,29,3. ता वां धियो ऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुः 41,8. 3,62,8. 11. — 2) *zur Eile treiben, anspornen; anregen, zur Kraftäusserung bringen:* अग्निं सप्तिं न वाजयामसि R̥V. 8,43,25. Vâlakh. 5,2. तमिन्द्रं वाजयामसि वृत्राय हन्तवे 8,82,7. Pañkav. Br. 15,2,7. 14,8,5. तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः R̥V. 1,4,9. स वां धियं वाजयन्तीमतत्नम् 109,1. 6,24,6. अश्वं न वाजयते हिन्वे अर्वा 4,7,11. वाजयाग्रूंरिवाजो 10,68,2. येनं कृशं वाजयन्ति येनं हिन्वन्त्यातुरम् AV. 6,101,2. यदिमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे R̥V. 10,97,11. wird in der Bed. विधूनने (*anfachen*) P. 7,3,38 als caus. von वा angesehen: वाजयति पक्षेण Schol.

— उप 1) *zur Eile antreiben, beschleunigen:* अश्वान्धावतः Çat. Br. 5,1,5,21. — 2) (das Feuer) *anfachen* TS. 2,5,11,6. वेदेन TBr. 3,3,7,2. 3. Kâṭj. Çr. 3,1,12. 21,3,7. 26,4,2. — Vgl. उपवाजन.

वाजयु (von वाजय्) adj. 1) *wettlaufend, kampflustig; eilig* R̥V. 2,20,1. 5,19,3. Vâlakh. 5,8. रथ R̥V. 2,31,2. 5,10,5. 8,69,6. अवस् 5. Ross 1,19. 9,63,19. उक्षन् 83,3. — 2) *eifrig, kräftig* R̥V. 2,35,1. — 3) *Beute* oder *Gut schaffend* R̥V. 7,31,3.

वाजरत्न 1) adj. *reich an gewonnenem Gut:* R̥bhu R̥V. 4,34,2. 35,5. 43,7. रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः 5,49,4. कदा धियः करसि वाजरत्नाः 6,35,1. 10,42,7. — 2) m. N. pr.; s. वाजरत्नायन.

वाजरत्नायन (von वाजरत्न) m. patron. des Somaçushman Ait. Br. 8,21.

वाजर्षि MBh. 2,319 fehlerhaft für राजर्षि, wie die ed. Bomb. liest.

वाजवत (von वाजवत्) m. N. pr. eines Mannes gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाजवतायनि m. patron. von वाजवत gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाजवत् (von वाज) adj. 1) *aus Preis, Gut* u. s. w. *bestehend, damit*

verbunden u. s. w.: राये RV. 1,120,9. 6,50,11. सुमति 1,31,18. TBr. 1, 4,4,10. — 2) *muthig:* इषः RV. 1,34,3. 6,60,12. — 3) *aus Rennern —, aus Streitrossen bestehend* u. s. w.: गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं रयिम् RV. 4, 34,10. 1,9,7. गोमत् हिरण्यवत् अश्वावत् वाजवत् 9,41,4. 86,18. — 4) *von dem* oder *den* Vâga *begleitet* u. s. w.: Indra RV. 3,52,6. 60,1. VS. 38,8. Ait. Br. 2,20. घर्म 1,22. ऋभवः RV. 3,60,5. die Açvin 8,35,15. Kâtj. Çr. 10,5,9. 7,14. — 5) *das Wort* वाज *enthaltend* TS. 1,7,4,2. TBr. 3,3,9,1. सवन Pańkav. Br. 18,6,7. 7,3. Kâth. 14,10. — 6) *mit Speise versehen:* der घर्म heist मधुमत् वा° पितुमत् Çâṅkh. Çr. 5,10,31. scheint eine Variation zu ऋभु° वाज°, विभु° zu sein.

वाजश्रव m. N. pr. eines Mannes: वेनो वाजश्रवान्वयः VP. (II) 3,35, N. 5. — Vgl. वाजश्रवस्, वाजस्रव und वाजस्रवस्.

वाजश्रवस् 1) adj. वाँ° *mit Rennern eilend, wettlaufend:* Agni RV. 3, 2,5 (vgl. वाजसृत्). गोमघा अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अधि धेहि पृक्षः 6,35,4. — 2) m. parox. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 14,9,4,33.

वाजश्रवसँ m. patron. von वाजश्रवस् TBr. 1,3,10,3. 3,11,8,1.8. Çat. Br. 10,5,5,1. Kathop. 1,1.

वाँजश्रुत adj. *für Schnelligkeit berühmt:* Ṛbhu RV. 4,36,5.

वाजस (wohl von वाजसा) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

वाजसन adj. (f. ई) *zu* Vâgasaneja *in Beziehung stehend:* Çiva MBh. 13,1187 (शाखाविशेषप्रवर्तको ऽध्वर्युकर्मकर्ता Nilak.). R. 7,23,4,44. Vishṇu MBh. 13,7034. वाजसन्यस्ताः (शाखाः) Bhâg. P. 12,6,74, v. l. für °संन्यस्ताः.

वाजसँनि adj. *Beute —, Preis gewinnend; Muth —, Kraft verschaffend; siegreich:* Indra RV. 3,51,2. Soma 9,110,11. वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि 10,91,15. *Speise verleihend* Mahidh. Einl. zu VS. Comm. als Beiwort Vishṇu's MBh. 12,1507 eben so erklärt.

वाजसनेयँ 1) m. patron. des Jâgńavalkja Çat. Br. 14,9,4,15. 4, 33. gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. °संहिता N. des bekannten Jagus-Buches; °शाखा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,27,15. °ब्राह्मण Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,39. Kull. zu M. 9,45. °गृह्यसूत्र Ind. St. 5,337. — 2) adj. *ein Anhänger des* Vâgasaneja, pl. *seine Schule* Ind. St. 3, 262. fg. निर्जित्य वाजसनेयानृषीन्सर्वान् Verz. d. Oxf. H. 262,*a*,2 v. u.

वाजसनेयक adj. *zu* Vâgasaneja *in Beziehung stehend, von ihm verfasst* (n. *das von ihm verfasste* Brâhmaṇa), *ihm anhängend, zu seiner Schule gehörig* Kâtj. Çr. 25,8,4. Lâtj. 4,12,13. Schol. zu Kâtj. Çr. 7, 4,7. 10,8,29. Ind. St. 1,83. 450. 3,266. 269. 5,73. Kull. zu M. 11,250. बृहदारण्यक Bṛh. Âr. Up. S. 1096. विप्राः Verz. d. Oxf. H. 262,*a*,8 v. u.

वाजसनेयिन् m. pl. *die Schule des* Vâgasaneja gaṇa शौनकादि zu P. 4,3,106. Hariv. 7994. 11140. Ind. St. 1,44. 53. 83. 283. 2,9. 4,140. 257. 309. 10,37. 76. 393. Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,8. Verz. d. B. H. No. 879. 1023. sg. वाजसनेयी अध्वर्युः Schol. zu Kâtj. Çr. 10,8,29. °सनेयिसंहिता = °सनेयसंहिता; °शाखा Verz. d. Oxf. H. 264,*b*,26. 270,*b*,39. °प्रातिशाख्य Ind. St. 5,103. fgg. °ब्राह्मणोपनिषद् Bṛh. Âr. Up. S. 2.

वाजसाँ adj. so v. a. वाजसनि. इन्द्रस्य वज्रो ऽसि वाजसाः VS. 9,5.6. धी RV. 6,53,10. गो°, नृ°, अश्व°, वाज° 9,2,10. 35,4. superl. 1,28,7. 78,3. 3,12,4. 8,5,5. 9,66,27. 98,1.

वाँजसाति f. *Gewinn des Preises —, von Gütern; Kampf, Sieg* Naigh. 2,17. RV. 1,34,12. 110,9. अनु नु स्थाति रथं महे सनये वाजसातये 2,31, 3. 3,30,22. 37,5. 5,33,1. 7,35,6. 46,7. उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये 5,64,6. 6,15,15. वयं त्वा रथं न वाजसातये (अयुज्महि) 53,1. 66, 8. 8,20,16. 40,2. (त्वया युजा) अभि ष्मो वाजसातये 91,3. 10,21,4. 35,14. 63,14. अयं वाजं जयतु वाजसाती VS. 5,37. AV. 14,2,72.

वाजसामन् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,*a*.

वाजसँत् adj. *wettlaufend:* इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति RV. 9,43,5. वाजसृद्भ्यः सुराधःकान्कुरुति *Wettläufer* TBr. 1,3,2,7. 6,7. 8,4. Agni TS. 2,2,4,5. — Vgl. वाजश्रवस्.

वाजस्रजात m. N. pr. = वेन Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,14. — Vgl. वाजश्रव und वाजस्रव.

वाजस्रव und वाजस्रवस् m. N. pr. = वेन VP. (II) 3,35, N. 3. वाजश्रवान्वय und वाजस्रजात v. l.

वाजिकेश (वाजिन् + केश) adj. *eine Pferdemähne habend;* m. pl. Bez. eines fabelhaften Volkes Mârk. P. 58,37.

वाजिगन्धा f. *Physalis flexuosa Lin.* Ratnam. 56. Suçr. 2,206,14. 207,8. 449,1. — Vgl. अश्वगन्धा.

वाजिग्रीव adj. *einen Pferdehals habend;* m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12,722; vgl. हयग्रीव 720 und अश्वग्रीव 721.

वाजित (von वाज) adj. am Ende eines comp. *mit Federn von — versehen*, von Pfeilen: कङ्क° MBh. 6,5385. गृध्र° 14,2454. — Vgl. गार्ध°.

वाजिदन्त m. *Adhadota Vasika* (वासक) *Nees.* Ratnam. 157. °क m. dass. AK. 2,4,2,22.

वाजिदैत्य m. N. pr. eines Asura, der sonst केशिन् genannt wird, Hariv. 4279.

वाजिँन् (von वाज) adj. subst. 1) *rasch, muthig*, subst. *Ross des Streitwagens* Naigh. 1,14. Nir. 3,3. RV. 1,135,5. 162,1. 12. 163,5. रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरः 6,75,6. अश्व 7,7,1. 41,6. शकेम वाजिनो यमम् 2,5,1. 10,1. तं नो दात वाजिनं रथं 34,7. 8,43,25. श्वेत 5,1,4. अत्य 30,14. अरुष 5,56,7. नार्वाजिनं वाजिना हासयन्ति 3,53,23. उद्धर्षय वाजिनां वाजिनानि 10,103,10. des Indra 1,176,5. रथ *der rasche Wagen, Kriegswagen* 7,34,1. 9,22,1. AV. 13,2,7. die Sonne als *Ross* 1,1. Taitt. Up. 1,10 (nach Çaṅk.; vgl. u. वाजिनीवसु). रासभ RV. 1,34,9. 53,5. VS. 1,29. 9, 8. 13,48. Çat. Br. 10,6,4,1. गावो वाजिनीः AV. 1,4,4. VS. 1,29. Später m. *Ross, Pferd* überh. AK. 2,8,2,12. 3,4,18,110. 25,176. H. 1233. an. 2,286. Hâr. 52. Halâj. 2,281. 1,151. Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. M. 8,209. Spr. 2771. 3746. MBh. 3,1720. 2823. 15672. Hariv. 11253 (wo mit der neueren Ausg. दृश्य वाजिनम् zu lesen ist). R. 1,54,12. 2, 39,13. 40,22. 91,8. 92,31. Ragh. 3,43. वाजिनीराजना 4,25. 67. Çâk. 8, v. l. 6,5. 8,14. Varâh. Bṛh. S. 2,22. 5,41. 18,5. 42,7. 66,1. Kathâs. 18,96. 26,85. 72,52. Râga-Tar. 5,143. Brahma-P. in LA. (III) 52,12. Pańkat. 218,7. Verz. d. B. H. No. 590. वाजिकर्मन् Verz. d. Oxf. H. 86, *b*,21. वाजिनी *Stute* Halâj. 2,285. Wie alle Worte für *Pferd* Bez. der *Zahl sieben* Golâdhj. 7,29. — 2) *tapfer, kriegerisch;* subst. *Held, Krieger; Mann im lobenden Sinne* Nir. 3,3. RV. 2,24,10. 13. आ नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः 7,4,8. 90,2. अश्वायन्तो वाजिनो गव्यन्तः 32,23. 6,16,4. Agni RV. 3,2,14. 6,16,48. VS. 29,1. Indra RV. 8,2,38. 3,2. AV. 5, 29,10. Marut 7,36,7. 8,20,16. Pûshan 6,55,4. विप्र 7,56,15. Bṛhas-

pati Lâṭj. 5,12,13. Ṛbhu ṚV. 3,60,7. 4,37,4. यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः der Würfel mit dem beutemachenden Krieger verglichen 10,34,4. Ushas Naigh. 1,8. वाजेन वाजिनि reisig ṚV. 3,61,1. Sarasvatî 6,61,6. घृताची 3,6,1. superl. वाजिन्तम 4,37,5. 10,115,6. — 3) männlich, zeugungskräftig: सोमाय वाजिने निर्वपेद्यः क्लैब्याद्बिभीयात् TS. 2,3,2,4. तस्य ते वाजिपीतस्य भक्षयामि Âçv. Çr. 2,16,19. वाजी सोमं पीत्वा भवति TBr. 1,3,2,4. पुरुष Pañkav. Br. 13,9,13. शुष्म AV. 4,4,2. अग्ने तोकं तनयं वाजि नो (so Sâj. und Padap.-Hdschr., Müller und Aufrecht lesen वाजिनो) दाः männlich ṚV. 6,13,6. तस्मात्स द्विरेता वाजी Ait. Br. 4,9. — 4) mit Flügeln versehen: तार्क्ष्येण स्तोत्रवाजिना der die Stotra zu Flügeln hat Bhâg. P. 4,7,19. m. Vogel AK. 2,5,33. 3,4,18,110. H. an. Halâj. 2,83. ein best. Vogel: वाजिपक्षिन् (प्राजिपक्षिन् Med. k. 116) = पालङ्क H. an. 3,63. — 5) mit Federn versehen (ein Pfeil): सु° Hariv. 15944. m. Pfeil AK. 3,4,18,110. H. an. — 6) वाजिनस् pl. Renner, Bez. göttlicher Wesen Naigh. 5,6. Nir. 12,43. nach Durga zu d. St. Zügel, wobei er auf Nir. 9,6 sich zu beziehen scheint; nach TBr. 1,6,3,9 Agni, Vâju, Sûrja. Es sind aber die Rosse oder überh. Gespanne der Götter zu verstehen (vgl. Mahîdh. zu VS. 9,16). ṚV. 7,38,7. 8. 10,66,10. Âçv. Çr. 2,16,13. वाजिनो यजति देवाश्वा वा वाजिनः Çâñkh. Br. 5,2. Oefters auf die Ṛtu bezogen Çat. Br. 2,4,4,22. Kâtj. Çr. 4,4,23. Lâṭj. 4,12,18. पशवो वाजिनः Kâṭh. 36,4. वाजिनां साम (der Vers SV. I, 5,1,5,9) Âçv. Çr. 9,9,8. Ind. St. 3,234,a. — 7) वाजिनस् pl. so v. a. वाजसनेयिनस् die Schule des Vâgasaneja, so genannt, weil die Sonne als Ross dem Jâgńavalkja die अयातयामसंज्ञानि यजूंषि offenbarte, VP. bei Muir ST. 3,32 (VP. 281). Verz. d. Oxf. H. 55,a,30. fgg. — 8) m. Adhadota Vasika Nees. Çabdar. (Çabdak. nach Wilson) im ÇKDr. — 9) वाजिनी f. a) Stute s. u. 1). — b) = अश्वगन्धा Physalis flexuosa Lin. ÇKDr. — Vgl. श्वेत°.

वाजिन 1) adj. den Vâgin gehörig VS. 24,7. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 3,234,a. — 3) n. a) Wettlauf, Wettstreit, Wetteifer: नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ṚV. 10,71,5. अयं हितो भवति वाजिनाय 10. — b) Schnelligkeit, Muth, Kraft: अग्ने त्री ते वाजिना ṚV. 3,20,2. उद्धर्षय वाजिनां वाजिनानि 10,103,20 (vgl. AV. 3,19,6). 56,3. VS. 13,39. AV. 12,3,2. — c) männliche Kraft: आजरसं हास्मै वाजिनं नापच्छिद्यते Ait. Br. 1,13. — d) Molke (erzeugt durch Einmischen saurer Milch in heissgemachte süsse; die festen Bestandtheile heissen आमिक्षा) Trik. 3,2,17. H. 831. VS. 19,21. 23. TS. 1,6,3,10. Çat. Br. 2,4,4,21. 3,3,3,2. 9,5,1,57. Kâtj. Çr. 7,8,8. 9,12,1. 19,7,17. Lâṭj. 4,12,16. Âçv. Çr. 2,16,15. °भक्ष 17. — e) die Cerimonie mit der Molke für die Vâgin Âçv. Çr. 2,16,13. 6,14,20.

वाजिनीवत् (von वाजिन्) adj. rasche Rosse besitzend, damit fahrend, ἱππηλάτης: die Açvin ṚV. 1,120,10. Indra 5,36,6. AV. 8,8,6. 18,3,54. TBr. 2,8,4,2. Ushas Naigh. 1,18. ṚV. 1,3,10. 48,6. 16. 92,13. 4,55,9. 7,75,5. Sarasvatî 2,41,18. 6,61,3. 4. 7,96,3. Pâr. Gṛhj. 1,7,2. Sindhu ṚV. 10,75,8. Wagen der Açvin 7,69,1. etwa die Sonne AV. 4,38,5. fgg. so v. a. वाजिन् 10,4,7.

वाजिनीवसु (वाजिन् + वसु) adj. so v. a. वाजिनीवत्: die Açvin ṚV. 2,37,5. 5,74,6. 8,5,3. 10,40,2. Indra 3,42,5. अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुः 10,96,8. 1,2,5. Kraft verleihend: ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीवस्वमृतमस्मि Taitt. Âr. 7,9 in Ind. St. 10,106 = Taitt. Up. 1,10, wo Çañk. वाजिनीव (= वाजवतीव d. i. सवितरीव) स्व° trennt.

वाजिनेय (von वाजिन्) m. Helden-, Kriegersohn: त्वं वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ ṚV. 6,26,2.

वाजिपृष्ठ m. Kugelamaranth (अम्लान) Çabdak. im ÇKDr.

वाजिभ (वाजिन् + भ) n. das Nakshatra Açvinî Varâh. Bṛh. S. 23,9.

वाजिभक्ष m. Kichererbse (Pferdefutter) Râgan. im ÇKDr.

वाजिभोजन m. Phaseolus Mungo Lin. (Pferdefutter) Râgan. im ÇKDr.

वाजिमत् (von वाजिन्) m. Trichosanthes dioeca Roxb. (पटोल) Ratnam. im ÇKDr.

वाजिमेध m. Rossopfer MBh. 1,2181. Hariv. 8571. 11241. R. 1,8,2. 17,1. Bhâg. P. 1,12,35.

वाजिमेष m. pl. Bez. einer Art Ṛshi R. 3,39,31. nach dem Comm. die nach Belieben Pferde- und Bocksgestalt annehmen können.

वाजिराज m. König der Rosse, als Bein. Vishṇu's Pañkar. 4,3,169.

वाजिवाहन ein best. Metrum: 4 Mal — — — — — — — — —, ◡◡◡◡ ◡◡◡◡◡◡◡◡◡◡ — Colebr. Misc. Ess. II, 163 (xviii, 2).

वाजिविष्ठा f. Umschreibung von अश्वत्थ Suçr. 2,119,21.

वाजिशत्रु m. eine best. Pflanze Kâlakakra 4,158. — Vgl. अश्वमार.

वाजिशाला f. Pferdestall AK. 2,2,6. H. 998. Halâj. 2,141. Râga-Tar. 4,165. Verz. d. Oxf. H. 157,b, No. 341. वाजिवारणशालाः R. 1,12,11.

वाजिशिरस् adj. einen Pferdekopf habend; m. N. pr. eines Dânava Hariv. 13092. — Vgl. अश्वशिरस्, हयशिरस्.

वाजिसनेयक adj. fehlerhaft für वाजसनेयक (वेद) Verz. d. Oxf. H. 56,a,15.

वाजीकर (वाज + 1. कर), °करोति potent machen Suçr. 2,154,3.

वाजीकर (von वाजीकर) adj. Manneskraft —, Potenz gebend; n. Aphrodisiacum Suçr. 1,9,21. 12,4. 2,153,16. 154,17. 226,1. Verz. d. B. H. No. 993. Verz. d. Oxf. H. 309,a,28.

वाजीकरण (wie eben) adj. (f. ई) und n. dass. Suçr. 1,44,12. 148,6. 175,8. 2,149,4. 153,10. 11. 18. 156,21. Kâm. Nîtis. 7,56. Verz. d. B. H. No. 1006. Verz. d. Oxf. H. 309,a,30. fg. 311,b,28. 316,b,18. 319,b, No. 578. Madhus. in Ind. St. 1,21,6. °तन्त्र die Lehre von den Aphrodisiaca Suçr. 1,2,2. 19.

वाजीकार्य (wie eben) n. = वाजीक्रिया Verz. d. Cambr. H. 64.

वाजीक्रिया f. der Gebrauch von Aphrodisiaca Suçr. 2,154,8.

वाजीय in रायो°; s. रायोवाज.

वाजीविधान n. die Anwendung von Aphrodisiaca Verz. d. B. H. No. 1006. wohl fehlerhaft für वाजि°.

वाजेध्या f. nach Mahîdh. वाज + इध्या (= दीप्ति): वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सं मार्ज्मि VS. 1,29. anders TS. Einen richtigen Sinn gäbe वाजेत्यायै (इत्या) dich den Renner mache ich blank zum Wettlauf.

वाज्य m. patron. von वाज gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Ketu Ind. St. 4,372. 383.

वाभ्रेय adj. von वभ्र gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

वाञ्छ् (wohl auf 1. वन् zurückgehend), वाञ्छति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). Dhâtup. 7,28 (इच्छायाम्). zu belegen nur praes., potent., imperat., partic. praes. act. und pass., imperf. act. und pass. und partic. praet.

pass. वाञ्छित. 1) *begehren, wünschen, lieben, mögen;* mit acc.: विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु RV. 10,173,1. AV. 4,8,4. वाञ्छे मे तन्वं पादौ 6,9,1. वत्स वै पशवो वाञ्छन्ति Çâṅkh. Br. 25,15. छिद्राण्यस्य MBh. 2,508. सर्वेश्वरत्वम् 3,1925. 2227. fg. द्यूतम् 3037. 16772. Suçr. 1,343,19. 2,461,18. Çâk. 171, v. l. Spr. 802. 1012, v. l. 1675. 2322. 2618. 2779. अत एव हि वाञ्छन्ति मन्त्रिणः सापदं नृपम् 3145. 3335. 3843. 3926. न धनं वाञ्छन्ति सन्तः Kathâs. 12,85. 13,114. 18,264. 20,97. 25,283. 32,29. 192. 33,11. 41. 37,174. 39,230. 40,48. 49,229. 57,128. Sâh. D. 57,7. Râǵa-Tar. 5, 288. Prab. 110,14. Bhâg. P. 4,24,55. 5,4,17. 9,13,9. Mârk. P. 15,2. 96, 16. Vet. in LA. (III) 19,10. mit infin. Spr. 1072 (Conj.). 2920. Varâh. Bṛh. S. 75,10. med. MBh. 3,11086 (S. 572). Kâm. Nîtis. 11,20. Spr. 2387. Bhâg. P. 4,18,10. Mârk. P. 29,38. 66,34. वाञ्छमाना Kathâs. 33,11. वाञ्छित *begehrt, gewünscht, erwünscht* (Vop. 26,131); n. *Wunsch:* अर्थाः Hariv. 16238. R. Gorr. 2,78,22. Ṛt. 2,29 (वाञ्चित gedr.). Spr. 2487. 2847. Varâh. Bṛh. S. 68,92. 87,2. 89,12. Kathâs. 13,90. 18,163. 33,102. 105,25. Halâj. 2,380. Prab. 48,17. Weber, Kṛshṇaǵ. 297. Bhâg. P. 1,9,29. 4,14,22. 8,20,10. Mârk. P. 74,28. वाञ्छिताभीष्टलाभ 96,18. Hit. ed. Johns. 2833. मम पूरय वाञ्छितम् Kathâs. 22,32. स तस्य वाञ्छितं कुर्यात् Spr. 2496. Weber, Kṛshṇaǵ. 291. Bhâg. P. 4,3,14. यदि मे वाञ्छितं प्रयच्छसि Pańkat. 251,22. प्रार्थयस्व हृदयवाञ्छितम् 255,22. वाञ्छितसिद्धि Vikr. 28. Kathâs. 19,4. °संसिद्धि 30,56. अनुमत° 35,149. संप्राप्ताखिलवाञ्छिता Mârk. P. 105,10. अमोघ° Bhâg. P. 3,4,29. — 2) *statuiren, behaupten, annehmen* (vgl. इष्, वश् und *velle*): होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् Varâh. Bṛh. 1,3.12.

— अभि *begehren, verlangen nach:* लोकाञ्शाश्वतान् MBh. 1,3675. 2,2406. R. Gorr. 1,22,16. 3,59,13. Spr. 306 (II). 380 (II). 1174. 1540. 2322, v. l. 2618, v. l. Varâh. Bṛh. 27 (25),4. Kathâs. 22,41. 25,297. 30,14. 33,188. 38,70. 42,19. 90,44. Prab. 52,3. Mârk. P. 40,2. 61,73. 113,6. Pańkat. ed. orn. 60,25. अभ्यवाञ्छत Kathâs. 108,153. अभिवाञ्छित *begehrt, erwünscht;* n. *Wunsch* R. Gorr. 1,53,22. Kathâs. 31,76. 71,10. Bhâg. P. 2,9,20. Mârk. P. 20,26. 29,3. 96,6. 7. Pańkar. 1,1,34. 2,3. mit infin. Mârk. P. 96,7. ममाभिवाञ्छितं ह्येतत् Kathâs. 71,117. °संसिद्धि 16,2. °संप्राप्ति 25,72. अभिवाञ्छितानि Varâh. Bṛh. S. 72,6. Vgl. अभिवाञ्छा. — caus. अभिवाञ्छयामि = अभिवाञ्छामि MBh. 12,2907.

— समभि *begehren —, verlangen nach* Varâh. Bṛh. 27 (25), 7.

— सम् dass.: समवाञ्छन्नथाशिषः Bhaṭṭ. 17,53.

— अभिसम् dass.: अभि हैनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति Kenop. 31.

वाञ्छा (von वाञ्छ्) f. 1) *Verlangen, Wunsch* AK. 1,1,2,27. H. 430. Halâj. 4,25. Tattvas. 30. वाञ्छामपृच्छम् Râǵa-Tar. 3,268. °मात्रे ऽपि दर्शिते 4,233. ततो वाञ्छा प्रवर्तते, यतो वाञ्छा निवर्तते Spr. 2387. वाञ्छा निवर्तते नार्थैः 2772. यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा 1016. 2773. Kathâs. 56,297. यद्यस्ति वाञ्छा मच्छिष्यतां प्रति। त्वत्पृच्छ्याः 11,27. वार्यमाणास्य वाञ्छा हि विषयेष्वभिवर्धते 31,91. ततो ऽस्य पृथ्वीराज्ये च वाञ्छा — उदपद्यत 18,178. राज्यस्य वाञ्छां कुरुते Mârk. P. 37,39. Vet. in LA. (III) 16,21. सर्ववाञ्छाप्रदात्री सर्वयोषिताम् Verz. d. Oxf. H. 23,*b*, N. 3. °सिद्धि Râǵa-Tar. 3,344. Verz. d. Oxf. H. 99,*a*,12. °विच्छेदन Spr. 2772. स्व° Weber, Râmat. Up. 292. व्ययमानः स्ववाञ्छया Spr. 787. सुवर्णाब्ज° Kathâs. 25,236. हृदि प्रविष्टया तत्प्रत्यागमवाञ्छया 18,230. 21,59. 29,116. Pańkat. 93,4. 195,16 (°वाञ्चया gedr.). am Ende eines adj. comp. (f. आ) Çiç. 10,69. Râǵa-Tar. 2,103. — 2) *das Statuiren, Annehmen:* उभयवाञ्छायाम् Sarvadarçanas. 41,13.

वाञ्छित 1) adj. *erwünscht,* n. *Wunsch* s. u. वाञ्छ्. — 2) m. Bez. *eines best. Tactes;* s. u. प्रतिताल 1).

वाञ्छिनी (von वाञ्छ्) f. *ein begehrliches, ausschweifendes Frauenzimmer* Trik. 2,6,5.

वाट् indecl. v. l. im gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Opferruf, wohl auf die Wurzel वह् zurückgehend im Sinne von *nimm* oder *bringe;* vgl. 2. वट्, वषट्. अग्ने वाट्स्वाहा वाळिति Ait. Br. 5,22. VS. 2,18. 20. 18,38. 38, 6. Çat. Br. 1,8,2,25. 9,2,20. वाट्कार Kâtj. Çr. 18,5,16.

1. वाट (von वट) adj. *aus der Ficus indica gemacht:* दण्ड M. 2,45.

2. वाट m. f. (वाटी) und n. AK. 3,6,2,42. 1) m. *a) Einzäunung, ein eingehegter Platz* Trik. 2,2,10. 3,3,272. H. 982. an. 2,98. Med. ṭ. 27. Halâj. 2,135. अस्ति वाटपरिक्षिप्ते वर्तते (ग्रामः)। तद्यथा। ग्रामं प्रविष्ट इति Pat. in Mahâbh. 321. 409. निबद्धवाटस्य शालेरिव Kathâs. 34,203. 62,213. कण्टकी° Hariv. 3393. इक्षु° Varâh. Bṛh. S. 19,6. ऋषि° R. 1,50,4. 65,38. 7,93,3. 5. Kathâs. 112,183. Bhâg. P. 10,11,15. समाज° MBh. 1,6960. Hariv. 4538. चमू° 8684. मल्ल° 4528. 4533. श्मशान° Mâlatîm. 77,7. हयमेध° Bhâg. P. 8,18,23. वेश° Daçak. 80,16. प्राच्य°, प्रतीच्य° so v. a. *Bezirk* 135,13. fg. — *b) Weg* Trik. 2,1,19. 3,3,102. H. an. Med. — *c)* = वास्तु Trik. 3,3,102. — 2) f. ई *ein eingehegter Platz, Garten* H. 1113. H. an. Vjutp. 132. Sâh. D. 117. Bhâg. P. 1,6,11. Verz. d. Oxf. H. 17,*b*, No. 63, Çl. 5. Daçak. 108,12. शृगाल° Hariv. 7964. — *b)* = कुटी Med. = कटी H. an. शून्य° *eine leere, verlassene Hütte* oder *ein verwilderter Garten* H. an. 2,96. — *c)* = वास्तु H. an. Med. — 3) n. = वरण्ड, अङ्ग und अन्नभेद H. an. — Vgl. अन्तवाट, अनल°, इन्द्रवाटतीर्थ, काष्ठ°, गो°, चक्र°, पाण्ड्य°, यज्ञ°, रङ्ग°, इक्षुवाटी, कर्म°, गृह°, पुष्प°.

वाटक 1) m. *ein eingehegter Platz, Garten:* शाक° Kathâs. 20,142. 161. चण्डाल° 112,65. 80. — 2) f. वाटिका *a)* dass. Verz. d. Oxf. H. 155,*b*,37. fg. 40. 44. Kâlaḱakra 1,147. जीर्ण° Kull. zu M. 9,265. वृत्त° Mṛḱkh. 46,19. Çâk. 8,21. अशोक° R. 5,16,5. शाक° Kathâs. 72,206. — *b)* = कुटी ÇKDr. angeblich nach Med. शून्य° *eine verlassene Hütte* oder *ein verwilderter Garten* Med. ṭ. 24. — *c)* = वास्तु ÇKDr. angeblich nach Med., Wilson nach Çabdar. — *d)* = वात्यालक Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. अन्नवाटिका, इक्षु°, गृह°, गृहवृत्त°, पुष्प°, फल्गु°, भूतीर°, मुख° und अश्ववाटिका.

वाटधान m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,354 (VP. 189). 2405 (वारधान ed. Calc.). 7,398. 8,3650. Varâh. Bṛh. S. 14,26. 16,22. Mârk. P. 57,35. 58,44. als Brahmanen bezeichnet MBh. 2,1190. 1749. 1826. m. sg. *ein Fürst der* Vâṭ. 1,2699. 5,86. n. sg. Bez. des Landes 600. Nach M. 10,21 stammt der वाटधान von ausgestossenen Brahmanen.

वाटभीकार s. वाडभीकार.

वाटमूल (von वट + मूल) adj. *an den Wurzeln der Ficus indica sich aufhaltend* Hariv. 7988; vgl. 7965.

वाँटर n. wohl *eine Art Honig* (von der वटर् genannten Biene herkommend) P. 4,3,119.

वाटशृङ्खला f. *Hecke, Einfriedigung* Hâr. 174.

वाँटाकवि m. patron. von वटाकु gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96.

वाटीदीर्घ m. *eine Art Rohr* (इत्कट) Ratnam. im ÇKDr.

वाटीप s. ब्रह्म°, शृगाल°.

वाटु m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 5,8.

वाट्टक n. *geröstete Gerste* Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. 3. वाट्य.

वाट्टदेव m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,1303. 1310.

1. वाट्य (von वट) adj. *aus der Ficus indica gemacht* Suçr. 1,235,20.

2. वाट्यॅ (von 2. वाट, वाटी) und बाट्य adj. *erzogen, cultivirt:* ग्रीषंधयो बाट्याः पर्वतीया उत AV. 19,44,6. Nir. 2,1. nach Durga zu d. St. von 1. भट्.

3. वाट्य 1) *geröstete Gerste* (vgl. वाट्टक): °मण्ड (fälschlich वाघ्य° geschrieben) *Gerstenschleim* Mad. in Nigh. Pr. Çârṅg. Saṁh. 2,2,118; vgl. u. मण्ड 1) *a*). — 2) f. श्रा = वाट्यालक Ratnam. im ÇKDr.

वाट्यपुष्पी f. *Sida rhomboidea* oder *cordifolia* Ratnam. 167.

वाट्याल m. und वाट्याली f. dass. Çabdar. im ÇKDr. वाट्यालक m. dass. AK. 2,4,3,25. Trik. 3,3,402. Ratnam. 167.

वाडभीकार (von वडभीकार) m. patron. N. pr. eines Grammatikers TS. Prât. in Ind. St. 4,245. 250. वाटभी° 78; vgl. Whitney zu AV. Prât. 2,6.

वाडभीकार्यॅ m. patron. von वडभीकार gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वाडव (von वडवा) 1) adj. *von der Stute kommend:* दधि Suçr. 1,177, 17. — 2) m. *a*) *Beschäler* P. 6,2,65, Schol. — *b*) *das am Südpol gedachte Höllenfeuer, welches kein Wasser des Meeres zu löschen vermag,* AK. 1,1,2,52. Trik. 3,3,422. H. 1100. an. 3,712. Med. v. 50. fg. Halâj. 1,70. Spr. 794. 3214. Mârk. P. 99,64. — *c*) *ein Brahmane* AK. 2, 7,3. Trik. H. 812. H. an. Med. Halâj. 2,236. P. 4,2,42. gaṇa ब्राह्मणादि zu 5,1,124. Spr. 832, v. l. (I,324). Vaǵras. 258. Çaunaka in Alaṁk. K. 116,*b*,5. — *d*) metron. (oxyt.) Kâr. zu P. 4,1,120. N. pr. eines Grammatikers Pat. zu P. 8,2,106. — 3) n. *a*) *Stuterei* (proparox.) gaṇa खण्डिकादि zu P. 4,2,45. AK. 2,8,2,14. Trik. H. an. Med. — *b*) Bez. eines Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — *c*) *eine Art coitus* H. an. Med. — 4) m. n. *Unterwelt, Hölle* Trik. H. an. (m.) und Med.

वाडवकर्ष N. pr. eines Grâma im Nordlande; davon adj. °कर्षीय P. 4,2,104, Vârtt. 9, Schol.

वाडवहरण n. angeblich *das einem Beschäler gereichte Futter* P. 6, 2,65, Schol.

वाडवहारक m. *Haifisch* oder *ein anderes grosses Seeraubthier* Trik. 1,2,22.

वाडवहार्य n. Siddh. K. zu P. 6,2,65.

वाडवाग्नि m. = वडवाग्नि *das am Südpol gedachte höllische Feuer* Spr. (II) 130. 203. Çiç. 11,45. Paṅkar. 1,14,100. Nâgân. 65,19.

वाडवानल m. dass. AK. 1,1,2,52. Paṅkar. 1,14,42. — Vgl. वडवानल.

वाडवेयॅ m. (von वडवा) m. *Beschäler* gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97. Kâr. zu P. 4,1,120. H. 1257. Halâj. 2,108.

वॅाडव्य (von वाडव) n. 1) *eine Gesellschaft von Brahmanen* P. 4,2, 42. AK. 3,3,41. H. 1419. — 2) *der Beruf —, der Stand eines Brahmanen* gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वॅाडेयीपुॅत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,30.

वाडौत्स m. N. pr. eines Mannes oder *ein Bewohner von* Vaḍautsa (vgl. वडौसक) Râǵa-Tar. 8,1308.

वॅाड्वलि m. angeblich patron. von वाग्वाद P. 6,3,109, Vârtt. 2.

1. वाणॅ m. = बाण *Röhre* so v. a. *Zitze* (vgl. बाण 6): दीना दक्षा वि दुह्न्ति प्र वाणम् *Einfältige und Kluge melken das Euter aus* ṚV. 4,24,9.

2. वाणॅ m. 1) *Instrumentalmusik,* = वाच् Naigh. 1,11. धर्मन्तो वाणं मरुतः ṚV. 1,85,10. इर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् 9,97,8. वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः so v. a. *die sieben* वाणी 10,32,4. गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणाम् *die Opfermusik der* Sobh. *ist mit Milchtränken* (oder *Fleischspeisen*) *ausgestattet,* dadurch noch anziehender gemacht 8,20,8. को बाणं को नृत्तं दधौ *wer hat in den Menschen Musik und Tanz gelegt?* AV. 10, 2,17. — 2) *eine Harfe mit hundert Saiten:* शततन्तु TS. 7,5,9,2. Kâth. 34,5. Paṅkav. Br. 5,6,12. 14,7,8. Kâtj. Çr. 13,2,20. Lâṭj. 3,12,15. 4, 1,5. 6. 10. in वाणशब्दे M. 4,113 wird das Wort sowohl als *Pfeil* als auch als *Laute* gedeutet.

वाणकि m. N. pr. eines Mannes; pl. Saṁsk. K. 184,*a*,7.

वाणदण्ड bei Wilson und im ÇKDr. fehlerhaft für वानदण्ड.

वाणप्रस्थ AK. ed. Colebr. 2,7,3. Mârk. P. 119,17. 135,8. 11. Paṅkar. 1,10,80 fehlerhaft für वान°.

वाणरसी f. Verz. d. Oxf. H. 155, *a*, N. fehlerhaft für वाराणसी oder वाणारसी.

वाणशाल (बाण°) N. pr. einer Feste Râǵa-Tar. 8,1668.

वाणारसी f. Çatr. 14,2 = वाराणसी; vgl. Weber, Bhagavatî 222.

वाणि f. 1) *das Weben* AK. 2,10,29. H. 913. an. 2,153. fg. man könnte वानि (von 5. वा) vermuthen; vgl. 1. वाणी. — 2) = 3. वाणी *Stimme, Rede* H. an. Lois. zu AK. 1,1,5,1. — 3) *Wolke* H. an. — 4) *Preis, Werth* (मूल्य) H. an.; vgl. वस्नि. — Vgl. अन्तर्वाणि, पर°, प्रति°.

वाणिकाव्य v. l. für वालिकाव्य im gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4,2,54.

वाणिजॅ m. 1) = वणिज् *Handelsmann* gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. AK. 2,9,78. H. 867. VS. 30,17. TBr. 3,4,1,14. MBh. 12,9340. 9397. im comp. mit dem Orte wohin oder mit der Waare, mit der man handelt (das vorangehende Wort behält seinen ursprünglichen Ton) P. 6, 2,13. मद्र°, काश्मीर°, गो°, अश्व° Schol. Vgl. प्रेक्षिवाणिजा. — 2) *das am Südpol gedachte Höllenfeuer* Trik. 1,1,68.

वाणिजक m. 1) = वाणिज 1) Trik. 3,3,42. Med. ǵ. 26. k. 203. MBh. 14,4283 (= M. 3,181, wo die v. l. gleichfalls वाणिजक hat). 6028. Hariv. 11148. R. Gorr. 2,90,26. Varâh. Bṛh. S. 31,4. वाणिजकविध = वाणिजकानां विषयो देशः gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4,2,54. धर्म° *mit seinen Tugenden Handel treibend* so v. a. *die Tugend des Vortheils wegen ausübend* MBh. 13,7595; vgl. धर्मवाणिजिक und धर्मध्वज. — 2) = वाणिज 2) Med. k. 203.

वाणिजिक m. *Handelsmann* Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,78. M. 3, 181 (वाणिजक v. l.). 8,102. — Vgl. धर्मवाणिजिक.

वॅाणिज्य n. = वणिज्य *Handel, Handelsgeschäfte* Siddh. K. zu P. 5,1, 126. AK. 2,9,2. 80. H. 864. 867. Halâj. 4,76. M. 4,6. 8,410. 11,69. Bhag. 18,44. R. 7,70,11. Spr. 1960. 2085. Kathâs. 6,33. 10,107. 43,70. Bhâg. P. 7,11,20. Mârk. P. 51,54. Dhûrtas. 76,19. Paṅkat. 7,10. Hit. 46,14. Vet. in LA. (III) 18,22. वाणिज्या f. Kathâs. 43,77.

वाणिज्यक in धर्म° = धर्मवाणिजक (s. u. वाणिजक 1) MBh. 3,1164.

वाणिनी (wohl von 3. वाणी) f. 1) *Tänzerin* AK. 3,4,18,114. H. an. 3,413. Med. n. 98. Hâr. 251. *ein ausgelassenes* oder *berauschtes Weib*

AK. H. 510. H. an. Med. Hâr. Halâj. 2, 334. *ein verschlagenes Weib* Trik. 3,3,248. H. H. an. Med. Hâr. Halâj. in der Bed. *ein berauschtes Weib* Ragh. 6,75. — 2) Bez. zweier Metra: *a) 4 Mal* ⏑⏑—⏑—⏑—⏑⏑⏑ —⏑—⏑—— Ind. St. 8, 397. — *b) 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑—⏑—⏑⏑⏑—⏑—⏑ —— Colebr. Misc. Ess. II,162 (XI,2). Ind. St. 8,393.

वाणिता f. = वाणिनी 2) *a)* Ind. St. 8,393.

वाणिभूषण s. वाणीभूषण.

1. वाणी f. *das Weben* Trik. 3,3,134. Med. ṇ. 22. fg. — Vgl. वाणि.

2. वाणी f. = बाण *Rohr:* दृळ्हा चित्स्म प्र भेदति युम्ना वाणीरिव त्रितः ṚV. 5,86,1. *Stäbe am Wagen* 1,119,5.

3. वाणी f. 1) *Musik*, pl. *ein Chor Spielender* (oder *Singender*), *concentus;* = वाच् Naigh. 1, 11. इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ṚV. 1,7,1. 8,9,19. 12,22. 9,104,4. उक्थैः, वाणीभिः 8,9,9. नक्षद्वाणी मुष्टुता वाम् 6,63,6. प्रावन्वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः 3,30, 10. मरुद्वती 7,31,8. 12. 2,11,8. 9,82,4. अभि वृषणमाङ्गूषाणामवावशन्त वाणीः 90,2. वाघतः 1,88,6. 10,123,3. *sieben musikalische Stimmen, Instrumente* u. s. w. von den Comm. auf *sieben Metra, die Töne der Scala* u. s. w. gedeutet 1,164,24. 3,1,6. 7,1. 9,103,3. Vâlakh. 11,3. — 2) *Stimme* überh.; *Rede, Worte* AK. 1, 1, 5, 1. Trik. 3, 3, 134. H. 241. Med. ṇ. 22. fg. Halâj. 1,8. निरभिद्यतास्य प्रथमं मुखं वाणी ततो ऽभवत् Bhâg. P. 3,26,54. अरूपा 7,4,24. अशरीरा Kathâs. 30,52. 36,29. आकाशगता 18,180. 162. Dhûrtas. 92,5. Pańkat. 186,17. मृगपक्षिणाम् R. 2, 71,24. मयूरस्य AK. 2,5,31. Halâj. 2,87. अमृतवाणी adj. f. Çrut. 5. वीणावाणी adj. f. 15. पुंस्कोकिलसम° adj. f. Varâh. Bṛh. S. 105,11. *Sprache* H. 59. प्रवर्तते ऽन्यथा वाणी शाठ्योपहतचेतसः *Rede* Spr. 367(II). वाण्येका समलंकरोति पुरुषम् 735. नवनीतसमां वाणीं कृत्वा 1454. इक्षुरसोपमाम् 1622. मधुरा 2209. प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखात् 4590. सत्यपूतां वदेद्वाणीम् Mârk. P. 41,4. LA. (III) 89,4. तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्या Varâh. Bṛh. S. 21,3. *beredte Worte, schöne Diction:* कवेः Uttarar. 132,8 (177,7). Kathâs. 51,227. *die Göttin der Rede*, Sarasvatî R. 7,10,42. Weber, Râmat. Up. 321. 361. Brahmavaiv. P. 2,78. Vop. S. 176. — 3) Bez. zweier Metra: *a) a. c. d:* ⏑—⏑——⏑⏑— ⏑——, *b:* ——⏑—— u. s. w. Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6,514. — *b) ein aus lauter Längen bestehendes Metrum* Comm. zu Kâvjâd. 3, 86. — Vgl. माकेन्द्र°.

वाणीची f. vielleicht *ein best. musikalisches Instrument*, = वाच् Naigh. 1,11. सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ṚV. 5,75,4. = वाग्रूपा स्तुतिः Sâj.

वाणीभूषण n. Titel eines Werkes des Dâmodara über Prosodie Verz. d. B. H. No. 816. वाणिभूषण Colebr. Misc. Ess. II,64. Mack. Coll. I,103.

वाणीवत् (von 3. वाणी) adj. *redereich, wortreich* Pańkar. 2,3,92.

वाणीवाद m. *ein best. Vogel* oder adj. *beredt, geschwätzig* als Beiw. von Papageien (वाणीवादाङ्कुशांश्चैव ed. Bomb.) MBh. 13,2835.

वाणीविलास m. Titel einer Schrift Verz. d. Tüb. H. 13.

वाणेय m. *ein Trabant des* Bâṇa Hariv. 11017 (S. 791).

वात् indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57.

1. वात (von 2. वा) Uṇâdis. 3,86. m. Trik. 3,5,3. 1) *Wind* Naigh. 5, 4. Nir. 10,34. AK. 1,1,1,58. Trik. 1,1,75. H. 1106. Halâj. 1,75. ṚV. 1,28,6. 2,1,6. अयं चिद्वातो रमते परिज्मन् 38,3. 3,14,3. वातो न जूतः 4,17,12. 22,4. वातस्य पत्मन् 5,5,7. वातान्ह्यश्वान्धुर्यायुयुज्रे 58,7. प्र वाता वान्ति 83,4. 10,137,2. VS. 6,10. 9,7. न भूमिं वातो अति वाति AV. 4, 5,2. 5,5,7. 12,1,51. fünf *Winde* TS. 1,6,1,2. Kâṭh. 32,6. वाते वाति Çat. Br. 11,5,6,9. शीत Çâńkh. Çr. 16,4,2. वातं प्राणमन्ववसृजतात् Ait. Br. 2,6. Çat. Br. 3,4,2,7. 7,4,9. 14,6,2,13. यो वै प्राणः स वातः 5,2, 4,9. TS. 5,6,4,2. 4,9,5. प्रति वातम् M. 4,52. 9,54. सधूमाः सार्चिषो वाता निष्पेतुरसकृन्मुखात् MBh. 1,1127. R. 2,28,18. °वेग 60,16. 63,16. असह्य Ṛt. 1,10. Ragh. 1,38. आर्द्र° Çâk. 69. Spr. 2774. fgg. °व्यायतपातितश्च तुरगाः 5155. Varâh. Bṛh. S. 9,38. 19,7. अतिचण्ड 32,24. Kathâs. 18,121. वातस्य मण्डली Halâj. 1,77. पत्त° M. 3,241. मलय° *von dorther blasend* Vikr. 25. सिप्रा° Megh. 32. तुषाराद्रि° 106. तरंग° Vikr. 67,3. अति° Gobh. 3,3,22. वातेनोदरं पूरयित्वा *Wind* so v. a. *Luft* Hit. 23,7. — 2) *Wind* so v. a. *Furz:* सदा वातं च वाचं च ष्ठीवनं चाचरेच्छनैः MBh. 4,117. वातं (वांतं ed. Bomb.) निष्ठीवनं चैव कुर्वते चास्य संनिधौ 12, 2038. — 3) *Wind* oder *Luft als einer der humores des Leibes* (nach Belieben wechselnd mit वायु, मारुत, पवन, अनिल, समीरण) und *eine zu diesem humor in Beziehung stehende Krankheitserscheinung* Suçr. 1,4, 8. 58,14. 77,3. 2,33,3. 19. 37,12. °कफातिरिक्ता Varâh. Bṛh. S. 78,17. बहुवातकफ Bṛh. 2,8. Spr. 775. वातेन क्षुभितः (vgl. वातक्षोभ) Kathâs. 94,103. वातग्रहज्वरादीनां शमनम् Pańkar. 4,1,42. — 4) *der Gott des Windes:* अश्वा वातस्याश्वा ṚV. 1,174,5. 5,31,10. 41,4. 8,1,11. 10,22,4. 64,3. 168,1. 186,1. VS. 2,21. Çat. Br. 1,5,1,22. M. 11,119. MBh. 1, 5908. 3,11914. वाताः (= मरुतः) पञ्चाशद्दूनकाः Verz. d. Oxf. H. 190,*a*, 26. — 5) wohl N. pr. eines Volkes in वातपति und वाताधिप. — Vgl. 1. अ°, अनु° (अनुवातम् *vor dem Winde:* क्षेत्रस्य Âçv. Gṛhj. 2,10,4. पशुमवस्थाप्य Pâr. Gṛhj. 3,15), ग्राम°, दुर्वात, 1. नि°, पश्चाद्वात, पुरो°, पूति°, प्रति° fg., बृहद्वात, महा° (auch R. 2,30,13), रक्त°, सूति°.

2. वात s. u. 4. वा.

वातक (von 1. वात) m. *eine best. Pflanze*, = अशनपर्णी AK. 2,4,5,15.

वातकण्टक m. Bez. *eines gewissen Schmerzes im Fussknöchel* Wise 255. Suçr. 1,82,11. 256,17. 360,9. Çârńg. Saṁh. 1,7,70.

वातकर्मन् n. *das Farzen, Furz:* °कर्म प्रमुञ्चति Varâha-P. im ÇKDr.

वातकलाकल etwa *Knurren im Leibe;* davon वातकलाकलीय adj. *darüber handelnd* Verz. d. Cambr. H. 23.

वातकि m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वातकिन् adj. *an der Windkrankheit* (s. वातव्याधि) *leidend* P. 5,2, 129. Vop. 7,32. fg. AK. 2,6,2,10. H. 460. Halâj. 2,451.

वातकुण्डलिका f. *eine schmerzhafte Urinverhaltung, welche so dargestellt wird, als ob die Luft* (वात) *den Urin nicht aus der Blase liesse, sondern im Kreise drehete*, Wise 364. Verz. d. Oxf. H. 313,*b*, 18. fg. Çârńg. Saṁh. 1,7,40. Suçr. 1,87,3. 2,523,11. 18. °कुण्डली 225,3.

वातकुम्भ m. *die Gegend unterhalb der beiden Erhöhungen auf der Stirn des Elephanten* (कुम्भौ) H. 1227.

वातकेतु m. *das Banner des Windes* so v. a. *Staub* Trik. 2,8,57.

वातकेलि m. 1) *leises Gemurmel* (कलालाप) H. an. 4,298. Med. l. 163. — 2) = षिड्गानां दन्तलेखनम् H. an. = षिड्गदन्तक्षत Med.

वातकोपन adj. *den Wind* (als *humor*) *aufregend* Suçr. 1,214,3.

वातकर्य m. patron. von वातकि gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वातक्षोभ m. *Aufregung des Windes (im Körper)* Kathâs. 120,49; vgl. वातेन क्षुभितः 94,103.

वातखुडा f. = वात्या, पिच्छिलस्फोट, वामा und वातशोणित H. an. 4, 72. — Vgl. वातकुडा.

वातगण्डा f. N. *einer best. Gesellschaft:* वातगण्डाख्यया पर्षदा Râga-Tar. 7,995. adj. *zu dieser Gesellschaft gehörig* 1179.

वातगामिन् 1) *schnell wie der Wind gehend.* — 2) m. *Vogel* Çabdârthak. bei Wilson.

वातगुल्म m. 1) *Sturmwind* Trik. 1,1,77. — 2) *eine best. Krankheit* Mârk. P. 39,55.

वातगोप adj. *den Wind zum Hüter habend* AV. 2,12,1.

वातघ्न adj. 1) *dem Winde* (als *humor*) *entgegenwirkend* Suçr. 1,153, 2. 2,108,13. 385, 8. तैल P. 3,2,53, Schol. Kâlakakra 2,126. — 2) m. N. pr. eines der Söhne des Viçvâmitra MBh. 13,253. — 3) f. ई *a)* Bez. verschiedener Pflanzen: = शालपर्णी, अश्वगन्धा und शिमृडीतुप Râgan. im ÇKDr. = बला Aush. 55. — *b)* N. einer Schutzgottheit der Kinder Weber, Kṛshṇag. 250.

वातचक्र n. *Windrose* Varâh. Bṛh. S. S. 7, Z. 2. Unterschr. in Adhj. 27. Verz. d. Cambr. H. 34. 36.

वातचोदित adj. *vom Winde gescheucht* Ṛv. 1,58,5. 141,7.

वातज adj. *vom Winde* (als *humor*) *veranlasst* Suçr. 2,305,3. Çârṅg. Saṁh. 1,7,70.

वातजव m. N. pr. eines Dämons Lalit. ed. Calc. 394,11.

वातजा adj. *aus dem Winde entsprungen* AV. 1,12,3.

वातजाम m. pl. N. pr. eines Volkes: °रथोरगाः MBh. 6,362; vgl. VP. (II) 2,175.

वातजित् adj. so v. a. वातघ्न Suçr. 1,214,13.

वातजूत adj. *windgetrieben, windschnell* Ṛv. 1,58,4. 65,8. 140,4. 4, 33,1. 6,6,3. 8,43,4. 10,170,1. AV. 4,15,1.

वातजूति m. N. pr. eines Ṛshi; s. u. वातरशन.

वातज्वर m. *ein durch den Wind* (als *humor*) *veranlasstes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318,*b*,5 v. u. Verz. d. B. H. No. 949.

वातण्डे m. patron. von वतण्ड gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Schol. zu 108. f. वातण्डी 109, Schol.

वातण्ड्य m. patron. von वतण्ड P. 4,1,108. gaṇa गर्गादि zu 105.

वातण्ड्यायनी f. zu वातण्ड्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18. Schol. zu 109.

वाततूल n. *in der Luft umherfliegende Flocken* Hâr. 23.

वातत्राण n. *ein Schutz vor Wind* P. 6,2,8.

वातत्विष् adj. *im Winde stürmend:* die Marut Ṛv. 5,54,3. 57,4.

वातथुडा bei Wilson fehlerhaft für वातकुडा.

वातध्वज m. *das Banner des Windes* d. i. *Wolke* Çabdam. im ÇKDr.

वातनामन् m. Bez. *bestimmter Anrufungen des Windes, mit Libationen verbunden,* Comm. zu TS. II, 504,1. 513,14. TS. 2,4,9,1. 5,4,9,4. Kâṭh. 11,10. Çat. Br. 14,2,2,1. Kâtj. Çr. 26,6,1.

वातनाशन adj. = वातघ्न Suçr. 2,53,7.

वातंधम adj. *Wind blasend* Vop. 26,55.

वातपट m. *Segel:* प्रवहणे चलवातपटध्वजे Kathâs. 101,174. — Vgl. मरुत्पट.

वातपति m. *Herr der* Vâta, N. pr. eines Sohnes der Sattrâgit Hariv. 2077. MBh. 1,7000. — Vgl. वाताधिप.

वातपत्नी f. *Winds-Gattin:* दिशः AV. 2,10,4.

वातपर्याय m. *eine best. entzündliche Augenkrankheit* Suçr. 2,314,16.

वातपान n. *Windschirm,* vielleicht Bez. *eines Theiles des Gewandes* TS. 6,1,1,3.

वातपालित m. Bein. Gopâlita's Uggval. zu Uṇâdis. 4,1.

वातपित्तक adj. *auf dem Winde* (als *humor*) *und der Galle beruhend:* विकार Çârṅg. Saṁh. 1,7,19.

वातपित्तज adj. *vom Winde* (als *humor*) *und von der Galle herrührend:* मातुलुङ्गस्य निर्यासं गुडाढ्येन समन्वितम्। वातपित्तजशूलानि हन्ति वै पानयोगतः॥ Garuḍa-P. 188 im ÇKDr.

वातपित्तज्वर m. *ein vom Winde* (als *humor*) *und von der Galle herrührendes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318,*b*,4 v. u.

वातपुत्र m. *ein Sohn des Windes:* 1) *Schwindler,* = महाधूर्त Med. r. 296. = विट, धर Hâr. 139. — 2) Bein. *a)* Bhîmasena's. — *b)* Hanumant's Med.

वातपू adj. etwa *windlauter* AV. 18,3,37.

वातपोथ m. *Butea frondosa* AK. 2,4,2,10.

वातप्रमी (वातप्रमै Uṇâdis. 4,1). Declin. Vop. 3,56. fg. Uggval. zu Uṇâdis. 4,1. 1) adj. *den Wind hinter sich lassend* Ṛv. 4,58,7. — 2) m. *a) eine Antilopenart* AK. 2,5,7. H. 1295. Halâj. 2,75. — *b) Pferd.* — *c) Ichneumon* Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वातफुल्लान्त्र n. *Lunge* (फुप्फुस) Bhûripr. im ÇKDr. *cholic, flatulence, borborygmi* Wilson nach ders. Aut.

वातबलास m. *eine best. Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 306,*b*,13.

वातबहुल adj. *blähend:* धान्यानि Varâh. Bṛh. S. 15,13.

वातभ्रजस् adj. von unbekannter Bed. in der Stelle: वातभ्रजा (vielleicht वाताभ्रजा zu lesen) स्तनयन्नेति वृष्ट्या AV. 1,12,1.

वातमज (वातम् + अज) adj. *den Wind treibend, windschnell* P. 3,2, 28, Vârtt. Vop. 26,30 (नाम्नि d. i. संज्ञायाम्). मृगाः P., Schol. कदम्बकं वातमजं मृगाणाम् Bhaṭṭ. 2,17. m. *Gazelle* Gaṭâdh. im ÇKDr.

वातमण्डली f. *Wirbelwind* Trik. 1,1,80; vgl. वातस्य मण्डली Halâj. 1,77.

वातमायस्, nom. °यास्, वातम् ग्रावाः Padap., scheint eine Entstellung zu sein AV. 13,2,42.

वातमृग m. *eine Antilopenart* AK. 2,5,7. H. 1295.

वातय् (von वात), °यति (सुखसेवनयोः, गतिसुखसेवनयोः) Dhâtup. 35,30. *Jmd Wind zufächeln:* वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता Kâç. bei West.

वातयन्त्रविमानक n. *ein künstlicher, vom Winde getriebener* (in der Luft schwebender) *Wagen* Kathâs. 43,44.

वातर (von 2. वा) m. *Wind* Bhar. im Dvirûpak. nach Wilson.

वातर adj. *windy, stormy; swift (as the) wind* Wilson.

वातरंह adj. = वातरंहस् MBh. 3,13190.

वातरंहस् adj. *windschnell* Naigh. 2,15. der Wagen der Açvin Ṛv. 5,77,3. 8,34,17. VS. 9,8. — MBh. 1,5840. 3,1720. 2795. R. Gorr. 2, 72,23. Bhâg. P. 3,19,9.

वातरक्त n. 1) *Wind* (als *humor*) *und Blut* Suçr. 2,37,20. — 2) *eine*

aus der Verbindung beider Elemente entspringende Krankheit, die in den Extremitäten beginnt, Gicht Suçr. 1,253,8. 2,37,13. Çârṅg. Saṁh. 1,7, 69. Verz. d. B. H. No. 967. 972. 975. 996. Verz. d. Oxf. H. 357, *a*, No. 849. fg. Vgl. वातशोणित.

वातरक्तघ्न adj. *die* वातरक्त *genannte Krankheit verscheuchend; m. eine best. Pflanze,* = कुक्कुर Çabdak. im ÇKDr.

वातरक्तारि m. *der Feind der* वातरक्त *genannten Krankheit,* Bez. *des Cocculus cordifolius DC.* Çabdak. im ÇKDr.

वातरङ्ग m. *Ficus religiosa Lin.* Çabdar. im ÇKDr.

वातरज्जु f. pl. *Fesseln der Winde:* शोषणं मकार्णवानां शिखरिणां प्रपतनं ध्रुवस्य प्रचलनं व्रश्चनं वातरज्जूनां निमज्जनं पृथिव्याः स्थानादपसरणं सुराणाम् Maitrjup. 1,4. वातरज्जूनां वातमयानां रज्जूनां शिशुमारचक्रबन्धनानां व्रश्चनं छेदनम् Comm.

वातरथ 1) adj. *den Wind zum Wagen habend, vom Winde getragen:* गन्ध Bhâg. P. 3,29,20. — 2) m. *Wolke* Trik. 1,1,82.

वातरशन (वात + रशना) adj. *windgegürtet:* मुनयः RV. 10,136,2. ऋषयः Taitt. Âr. 1,23,2. 24,4. 2,7,1. so v. a. *nackt*, m. *ein nackt einhergehender Mönch* (= दिग्वासस्, दिगम्बर Comm.). Bhâg. P. 3,15,30. 5, 3,20 (°रसन Burn.). 11,2,20. m. sg. patron. der sieben Ṛshi: Ṛshjaçṛṅga, Etaça, Karikrata, Ǵûti, Vâtaǵûti, Vipraǵûti und Vṛshâṇaka RV. Anukr.

वातरसन s. u. वातरशन.

वातरायण m. = क्रकच, सायक, शरसंक्रम und निष्प्रयोजननर H. an. 5,17. = उन्मत्त, निष्प्रयोजनपूरुष, काण्ड, करपात्र, कूट und परसंक्रम Med. ṇ. 116. = सरलद्रुम Çabdar. im ÇKDr. m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,275.

वातरूपा f. N. pr. einer bösen Genie, einer Tochter der Likâ, Mârk. P. 51,114. fg.

वातरूष m. 1) *Sturmwind.* — 2) *Regenbogen* H. an. 4,322. — 3) = उत्कोच *Bestechung* H. an. उत्कट (उत्कोच ÇKDr. und auch wohl Wilson) Med.

वातरेचक m. 1) *Windstoss:* ईरयत्तः (दारयत्तः die neuere Ausg.) पदाक्षेपैः सुघोरान्वातरेचकान् Hariv. 13770. वातरेचकान् व्यजनीकृतान्वृत्तादीनीरयत्तः (also nicht दारयत्तः) Nilak. — 2) etwa *Windmacher, ein leerer Schwätzer* (Gegens. वेदविद्) MBh. 12,9749. वातरेचको भस्त्रापरनामा चर्मकोशः वातवेटक इति गौडाः पठत्ति व्याचक्षते च वातवशात् वेटकः भाषकः वेट परिभाषणे इति धातुः Nilak.

वातरोग m. = वातव्याधि Râǵan. im ÇKDr. Suçr. 1,9,13. 173,5.201, 17. 2,35,12. Çârṅg. Saṁh. 1,7,70. Verz. d. Oxf. H. 316,*a*, 3 v. u. Verz. d. B. H. No. 965.

वातरोगिन् adj. *an der* वातरोग *genannten Krankheit leidend* AK. 2, 6,2,10. H. 460. Halâj. 2,451. Varâh. Bṛh. S. 87,11.

वातर्दि *ein aus Holz und Eisen bestehendes Gefäss* oder *Geräthe* Trik. 2,9,9. wohl richtiger वातर्द्धि ÇKDr. und Wilson nach derselben Aut.

वातर्द्धि s. u. वातर्दि.

वातल (von 1. वात) 1) adj. (f. आ) = वातुल H. an. 3,683. *windig; luftig; den Wind* (als *humor*) *befördernd; zu demselben disponirt* Suçr. 1,53,3. 76,9. 173,8. 177,17. 187,5. 197,17. Verz. d. Oxf. H. 306,*b*,11. योनि Bez. *eines best. Defects der weiblichen Geschlechtstheile* Wise 380. Suçr. 2,396,19. Çârṅg. Saṁh. 1,7,102. — 2) m. *Kichererbse* Çabdak. im ÇKDr. — Vgl. अ°.

वातलमण्डली f. = वातमण्डली *Wirbelwind* Bhâvapr. im ÇKDr.

वातवत m. patron. von वातवत् Pañkav. Br. 25,3,6. वातावत Ait. Br. 5,29. Kaush. Br. 2,9. Ind. St. 4,373. — Vgl. वाधावत.

वातवत् und वातावत् (von 1. वात) adj. *windig, luftig:* वातवती गुक्षा P. 5,2,129, Schol. वातावद्वर्षन् TS. 2,4,7,1. दृतिवातवतोरयनम् N. einer Feier Pañkav. Br. 25,3,6. Kâtj. Çr. 24,4,16. 35. 6,25. Lâtj. 10, 13,21. Âçv. Gṛhj. 12,3,1.

वातवर्ष m. *Regen mit Wind* Pañkat. III, 150. pl. Râǵa-Tar. 5,275. — Vgl. वातवृष्टि.

वातवस्ति m. *eine best. Art der Harnverhaltung* Suçr. 2,524,6. Çârṅg. Saṁh. 1,7,10.

वातविकार m. *eine durch den Wind im Körper erzeugte Affection, rheumatische Affection:* वातविकारेण वक्रीभूतः Verz. d. Oxf. H. 155, *b*,22; vgl. वातोत्थविकार Verz. d. B. H. 279 (XXI).

वातविकारिन् adj. *an Unordnung des Windes* (als *humor*) *leidend* Suçr. 2,34,4. 44,13.

वातवृष्टि f. *Regen mit Wind* Varâh. Bṛh. S. 24,24. 32,25. 34,12. — Vgl. वातवर्ष.

वातवेग 1) adj. *windschnell.* — 2) m. N. pr. eines der Söhne *a*) des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2737. 4549. 8,4263. — *b*) des Garuḍa MBh. 5,3595.

वातवेटक s. u. वातरेचक 2).

वातवैरिन् m. *ein Feind des Windes im Körper,* Bez. *des Mandelbaums (der Mandel)* Râǵan. im ÇKDr.

वातव्याधि m. *Windkrankheit,* so heissen *die auf Wirkung dieses humors zurückgeführten rheumatischen und nervösen Krankheiten, Lähmungen, Krämpfe* u. s. w. Râǵan. im ÇKDr. Wise 250. achtzig werden gezählt Çârṅg. Saṁh. 1,7,70. — Suçr. 1,119,13. 120,1. 249,3. 2,33,2. 44,1. Verz. d. B. H. No. 941. 967. 972. 975. 996. Verz. d. Oxf. H. 306, *b*,4. 307,*a*,10. 313,*a*,23. 29. 357,*a*, No. 849. fg. — Vgl. महा°.

वातशीर्ष n. = वस्ति Râǵan. im ÇKDr.

वातशुक्रल n. Bez. *einer fehlerhaften Beschaffenheit des Samens* (auch beim Weibe) Mârk. P. 51,115.

वातशूल m. *rheumatischer Schmerz* Suçr. 1,156,10.

वातशोणित n. = वातरक्त 2) Suçr. 1,82,11. 156,4. 360,9. 2,37,8. Verz. d. Oxf. H. 306,*b*,13. 307,*a*,13.

वातशोणितिन् adj. *an der* वातशोणित *genannten Krankheit leidend* Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,13. fg.

वाताश्विक Kâm. Nîtis. 16,12 vielleicht fehlerhaft für वाताश्विक *auf windschnellen Pferden eilend.*

वातश्लेष्मज्वर m. *ein auf die Wirkung des Windes (im Körper) und des Phlegmas zurückgeführtes Fieber* Verz. d. Oxf. H. 318,*b*,3 v. u.

वातसख adj. *von Wind begleitet:* हुताश Bhâg. P. 6,8,21.

वातसह adj. (f. आ) 1) *dem Winde Trotz bietend:* नौ MBh. 1,5639. — 2) *an Rheumatismus u. s. w. leidend* Çabdar. im ÇKDr. AK. 3,4,

26,198 liest Colebr. वातसह्, Lois. वातासह्.

वातसारथि m. *der Wagenlenker des Windes*, Bez. *des Feuers* Çabdârthak. bei Wilson.

वातस्कन्ध m. 1) *Windregion*, deren sieben angenommen werden, Hariv. 8349. R. 1,47,4. R. Gorr. 1,48,4. — 2) N. pr. eines Ṛshi MBh. 2,295. — Vgl. वायुस्कन्ध.

वातस्वन 1) adj. *wind-sausend:* Agni ṚV. 8,91,5. — 2) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,13.

वातस्वनस् adj. = वातस्वन; vom श्येन ṚV. 7,56,3.

वातहत adj. *vom Winde* (als *humor*) *betroffen*, insbes. *eine Krankheit des Lides* Wise 298. Suçr. 2,305,3. 309,13. — Burn. Intr. 187 (?).

वातहन् adj. = वातघ्न Suçr. 1,187,1.

वातहर adj. dass. Suçr. 1,214,11.

वातकुडा f. = वात्या, राजशोणित (!), पिच्छिलस्फोटिका und वामा योषित् Med. ḍ. 40. fg. — Vgl. वातखुडा.

वातहोम m. *Luftopfer* (mit hohler Hand geschöpft) Çat. Br. 9,4,2,1. 9. Kâṭh. 21,12. Kâtj. Çr. 18,6,1.

वाताख्य n. Bez. *eines Hauses mit einer Doppelhalle, von denen eine gegen Süden, die andere gegen Osten steht*, Varâh. Bṛh. S. 53,39. 41.

वातागार gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90. davon adj. वातागारीय ebend.

वाताग्रम् adv. *dem Winde voran* TS. 1,7,7,2.

वाताट (वात + अट) m. 1) *Sonnenross* Trik. 2,8,42. — 2) *eine Antilopenart* (वातमृग) Çabdar. im ÇKDr.

1. वाताण्ड (वात + अण्ड oder आण्ड) m. *Hodengeschwulst* Mâdhavakara im ÇKDr.

2. वाताण्ड (wie eben) adj. *mit Hodengeschwulst behaftet* Vjutp. 206.

वातातपिक (von वात + आतप) adj. *bei Wind und Sonnenschein vor sich gehend* Verz. d. Oxf. H. 309,*a*,30; vgl. कुटीप्रावेशिक.

वातात्मज m. *der Sohn des Windgottes*, Bez. *des Affen* Hanumant R. 5,38,40. 50,18. 6,4,12. 109,11.

वातात्मन् adj. *das Wesen der Luft habend, luftig* Mahîdh. zu VS. 19,49.

वाताद m. 1) (वात + अद) *ein best. Thier* Vâgbh. 6,50; vgl. वाताट. — 2) = वाताम *Mandelbaum* Bhâvapr. im ÇKDr.

वाताधिप m. = वातपति MBh. 2,1120.

वाताध्वन् m. *Luftloch, rundes Fenster* Bhâg. P. 10,14,11. — Vgl. वातायन.

वातानुलोमन adj. *den Wind* (als *humor*) *in Ordnung bringend* Suçr. 1,167,2.

वातानुलोमिन् adj. dass. Suçr. 1,176,13.

वातापह adj. = वातघ्न Suçr. 1,177,8.

वातापि (वात + आपि, Padap. ohne Trennung) Vop. 26,48. 1) adj. *windschwellend:* Soma als *der gährende* ṚV. 1,187,8. fgg. Götter: वरुणराजभ्यो वातापिभ्यः पर्जन्यात्मभ्यः TS. 3,5,8,1. Indra: आतास्त इन्द्र सोमा वातापेर्हवनश्रुतः Cit. in TBr. II, 419,15. Çâñkh. Br. 27,4. — 2) m. N. pr. eines Asura, eines Sohnes des Hrâda (Bhâg. P.), den sein Bruder Ilvala in einen Bock verwandelte, von Brahmanen verspeisen und dann wieder aus ihren Bäuchen herauskriechen liess; zur Strafe wurde er von Agastja aufgegessen. MBh. 3,8541. fgg. 12,5389. R. 3,16, 13. fgg. 49,49. fgg. Varâh. Bṛh. S. 12, Anf. VP. 148. Bhâg. P. 6,18,14. Hariv. 215. 2287. 14290. Kathâs. 45,377. Agastja führt die Beinamen: °द्विष् H. 122. °सूदन Trik. 1,1,89.

वातापिन् m. = वातापि 2) MBh. 1,2537.

वाताप्य 1) adj. = वातापि Naigh. 4,3. वाताप्यमुदकं भवति वात एतदाप्याययति Nir. 6,28. Soma ṚV. 1,121,8. überh. *anschwellend:* रयि 9,93,5. महित्व 10,26,2. — 2) n. *das Anschwellen, Gähren:* दीर्घं सुतं वाताप्याय ṚV. 10,105,1.

वाताभ्र n. *eine vom Winde getriebene Wolke* Spr. 2775.

वाताम = वदाम, वादाम *Mandel* Ratnâk. in Nigh. Pr.

वातामोदा f. *Moschus* Çabdam. im ÇKDr.

वाताय् (von 1. वात), °यते *dem Winde gleichen;* partic. वातायमान *schnell wie der Wind dahinfahrend*, von Ross und Wagen MBh. 6,2349. 4701. 4709. 5445. 7,1787. 4681.

वाताय n. *Blatt* Çabdârthak. bei Wilson.

1. वातायन (von 1. वात) m. patron. des Anila und Ula ṚV. Anukr. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,36. sg. N. pr. eines Kämmerers des Dushjanta Çâk. 81,4. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,363 (वनायु ed. Bomb.) = VP. 192. einer Schule Ind. St. 3,274.

2. वातायन (1. वात + अयन) 1) adj. *im Winde sich bewegend* Nir. 1,4. °विमान MBh. 5,3998. — 2) m. *Pferd* (*wie der Wind sich bewegend*) Trik. 2,8,42. — 3) n. *Luftloch, ein rundes Fenster* AK. 2,2,8. Trik. 2, 2,9. H. 1012. Halâj. 2,149. °गतानां स्त्रीणाम् R. 2,57,15. R. Gorr. 2, 14,9. स्त्रियो वातायनार्धेन विनिःसृतास्याः Mṛkkh. 158,15. Ṛt. 5,2. Megh. 86. Ragh. 6,24. 56. 13,21. Kumâras. 7,59. Kathâs. 3,61. 18,13. 168. 71,97. Uttarar. 16,11 (22,13). Râǵa-Tar. 4,567. Pańkar. 3,7,7. Pańkat. 46,11. ed. orn. 49,21. स्वगृहोत्तुङ्गवातपनगता Kathâs. 95,18. हर्म्यवातायनारूढ 103,162. दृष्ट्वान्महिषीं निजाम्। वातायनाग्रात्पृच्छन्तीं ब्राह्मणातिथिमुन्मुखम् ॥ 5,14. 33,64. 37,99. 58,58. 120. जाल° R. Gorr. 2, 14,16. Çiç. 11,50. गवाक्ष° Saddh. P. 4,19,*a*. °रजस् = 7 Truṭi = 1/7 शशरजस् Lalit. ed. Calc. 169, 1 v. u. °च्छिद्ररजस् Vjutp. 188. वातायन *a porch, a portico, a covered shed, a pavilion* Wilson nach Dhanańǵaja.

वातायनीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,275.

वातायु (von 1. वात) m. *Antilope* AK. 2,5,8. H. 1293.

वातारि m. *ein Feind des Windes* (*im Körper*) so v. a. *ein wirksames Mittel gegen denselben;* Bez. verschiedener Pflanzen: *Ricinus communis* Çabdar. im ÇKDr. Ratnam. 3. = शतमूली Çabdak. im ÇKDr. = पुत्रदात्री, शेफालिका, यवानी, भार्गी, स्नुही, विडङ्ग, शूरण, भल्लातक und जतुका Râǵan. im ÇKDr.

वाताली (1. वात + आ°) f. *Wirbelwind* Trik. 1,1,80. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,124. किं नामोत्पातवाताली बाहुभ्यां जातु बध्यते Spr. 1592.

वातावत und वातावत् s. u. वातवत und वातवत्.

वाताश (1. वात + आश) adj. *vom Winde* (*von der Luft*) *sich nährend;* m. *Schlange* Spr. 4132. — Vgl. पवनाश.

वाताशिन् (1. वात + आ°) m. *Schlange* Spr. 934. — Vgl. पवनाशिन्.

वाताश्व m. *ein windschnelles Pferd, Renner* Trik. 2,8,44. Hâr. 160. Kathâs. 66,174. 67,12. 75,89. 103,120. 123,14.

वाताष्ठीला s. u. अष्ठीला.

वातासह adj. = वातसह AK. 3,4,26,198 (bei Lois.). Çabdar. im ÇKDr.

वाताम्र (1. वात + ग्रम्र) n. = वातरक्त 2) Verz. d. B. H. 278 (Çl. 41).

वाँति Uṇâdis. 5, 6. m. *die Sonne; der Mond* Rabhasa bei Uǵǵval. *Wind* (von 2. वा) Sâhasâñka bei Bhar. zu AK. 1, 1, 1, 58 nach ÇKDr. वर्षावात्युष्णातिशीतकृत (दुःख) MBh. 12, 6978 fehlerhaft für वर्षवातात्युष्णातिशीतकृत, wie die ed. Bomb. liest.

वातिकँ (von 1. वात) 1) adj. (f. ई) *vom Winde* (als *humor*) *herrührend* P. 5,1,38, Vârtt. 1. व्याधि Suçr. 1, 20, 20. दोष 58, 16. 192, 3. ग्रश्मरी 263, 1. 2, 130, 16. Mit. 224, 8. कफ° *bei dem* कफ *und* वात *vorwalten* Varâh. Laghuǵ. 2, 14 in Ind. St. 2,286. — 2) adj. *windige Worte redend; m. Lobhudler, Schmeichler, Lobsänger* MBh. 3, 15327. fg. सिद्धचारणवातिकैः (पन्नगैः st. वातिकैः ed. Bomb.) 7, 6132. 7188. वातिकाश्चारणाः 9, 3090. 3404. — 3) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda: कथकवातिकौ MBh. 9, 2569. — 4) m. *der Vogel* Kâtaka (nach Pandit I, 182. fg.) Sâh. D. 286, 14. 21; vgl. वातीक.

वातिकखण्ड m. N. pr. eines zum See Mânasa führenden Passes MBh. 3, 10548. वातिकषण्ड ed. Bomb.

वातिकषण्ड s. वातिकखण्ड.

वातिग 1) adj. subst. *Probirer, Metallurg.* — 2) m. *Solanum Melongena* Med. g. 47.

वातिगम m. *Solanum Melongena* Çabdar. im ÇKDr.

वातिङ्गण m. dass. Trik. 2, 4, 27.

वातीक m. *ein best. Vogel* Suçr. 1, 200, 20. — Vgl. वातिक 4).

वातीकारँ (von 1. वात + 1. कर्) m. *eine best. Krankheit* AV. 9, 8, 20.

वातीँकृत n. dass. AV. 6, 109, 3. °नाशन adj. 44, 3.

वातीय (von 1. वात) 1) adj. *den Wind im Körper befördernd, blähend.* — 2) n. *saurer Reisschleim* Çabdak. im ÇKDr.

वातुल 1) adj. *windig* Ind. St. 2, 258. *windige Worte redend, schmeichelnd* Spr. 2257. = उन्मत्त Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — 2) m. Bez. *bestimmter blähender Hülsenfrüchte* (राजमाषप्रभृतयः Comm.) Varâh. Bṛh. S. 16, 34. — 3) m. *Sturmwind* Trik. 1, 1, 77. — 4) n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109, *a*, 5. 33. वातुलोत्तर n. desgl. ebend. ग्रादिवातुलतन्त्र 97, *a*, No. 151. — Vgl. वातूल.

वातुलानक N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 4, 312.

वातुलि m. *eine Art Vampyr* Hâr. 185. — Vgl. तरुतूलिका.

वातूल (von 1. वात) 1) adj. gaṇa सिध्मादि (मत्वर्थे) zu P. 5, 2, 97. Vop. 7, 32. fg. = वातं न सहते Vârtt. 10 zu P. 5, 2, 122. = वातासह (v. l. वातसह) AK. 3, 4, 26, 198. = मारुतासह Med. l. 130. = वातल und मारुतालह H. an. 3, 683. = उन्मत्त Bhar. zu AK. nach ÇKDr. *Wind machend, prahlend, grosssprecherisch* Râǵa-Tar. 5, 83. 86. — 2) m. *Sturmwind* P. 5, 2, 122, Vârtt. 10. Kâç. zu P. 4, 2, 42. Vop. 7, 35. AK. H. 1421. H. an. Med.

वातेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66, *b*, 38.

वातोत्थ (वात + उत्थ) adj. = वातज Suçr. 2, 396, 11. Verz. d. B. H. 279 (XXI).

वातोदरिन् (von वात + उदर) adj. *an Unterleibsanschwellung durch Wind leidend* Suçr. 2, 86, 11.

वातोना f. *eine best. Pflanze,* = गोजिह्वा Râǵan. im ÇKDr.

वाँतोपधूत adj. *vom Winde geschüttelt, — getrieben* ṚV. 10, 91, 7.

वातोर्मीँ f. 1) *eine vom Winde getriebene Welle* Khandom. 31. — 2) *ein best. Metrum:* 4 Mal – – – –, ◡◡– – ◡– – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 6). Ind. St. 8, 374. 372. Khandom. 31.

1. वाँत्य (von 1. वात) adj. *im Winde befindlich* u. s. w. VS. 16, 39.

2. वात्य s. सवात्य.

वात्या (von 1. वात) f. *ein heftiger Wind, Sturmwind, Wirbelwind* gaṇa पाशादि zu P. 4, 2, 49. Kâç. zu P. 4, 2, 42. AK. 3, 4, 26, 198. Trik. 1, 1, 80. H. 1421. Halâj. 1, 77. Ragh. 11, 16. Kir. 5, 39. Kathâs. 17, 122. 69, 129. 72, 256. Spr. 843 (II). 1094. 5320. Bhâg. P. 3, 17, 5. 5, 13, 4. 14, 9. महावात्या प्रकुप्यति Varâh. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3, 86. इत्युक्ति° Kathâs. 56, 304. तद्वार्त्ता° 67, 56. — Statt वात्याकीर्ण° R. Gorr. 2, 41, 21 ist mit der ed. Bomb. und Schl. नात्याकीर्ण° zu lesen.

वात्याय् (von वात्या), °यते *einem Sturmwinde gleichen:* वात्यायमानरूपश्री Kathâs. 101, 167.

वात्स (von वत्स) 1) m. patron. Verz. d. B. H. 54, 2 v. u. Varâh. Bṛh. S. 21, 2, v. l. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 234, *a.* Pañkav. Br. 14, 6, 5. 6. Lâṭj. 7, 8, 2. — वात्सी s. bes.

1. वाँत्सक (von वत्स) n. *Kälberschaar* P. 4, 2, 39. AK. 2, 9, 60. H. 1417.

2. वात्सक (von वत्सक) adj. *von der Wrightia antidysenterica kommend:* फल Suçr. 2, 431, 19.

3. वात्सक adj. von वात्स्य P. 6, 4, 151, Schol.

वात्सप्रँ (von वत्सप्री) 1) m. patron. N. pr. eines Grammatikers Taitt. Prât. 10, 23. — 2) n. *a*) sc. सूक्त *das Lied* ṚV. 10, 45 = VS. 12, 18. fgg. bei Verehrung des Aukhja Agni verwendet, daher auch *die Cerimonie* selbst, TBr. 5, 2, 1, 6. Çat. Br. 6, 7, 4, 1. fgg. 8, 1, 3. Kâtj. Çr. 4, 12, 1. 16, 5, 21. 17, 1, 1. — *b*) N. eines Sâman Pañkav. Br. 12, 11, 23. Lâṭj. 7, 7, 28. Ind. St. 3, 234, *a.* महा° *b.*

वात्सप्रीँय (von वात्सप्र) adj. *das Lied des* Vatsaprî, resp. *die dazu gehörige Handlung enthaltend:* ग्रहन् Çat. Br. 6, 7, 4, 15; vgl. Schol. zu Kâtj. Çr. 16, 6, 5. 17, 1, 2.

वात्सबन्धँ (von वत्स + बन्ध) m. wohl Bez. *gewisser Sprüche,* sieben an der Zahl TS. 6, 1, 2, 5.

वात्सल्य (von वत्सल) n. *Zärtlichkeit, das Gefühl zärtlicher Liebe* R. Gorr. 2, 17, 11. 25, 8. Vikr. 147. Cit. beim Schol. zu Çâk. 51, 16. Râǵa-Tar. 5, 21. Bhâg. P. 4, 6, 35. 9, 59. 19, 39. 22, 61. 5, 7, 8. 9, 11, 5. Mârk. P. 77, 31. Wilson, Sel. Works I, 164. als रस Gauḍa beim Schol. zu H. 294. Trik. 1, 1, 126. ग्र° Suçr. 1, 372, 10. स्वभक्तेषु Sarvadarçanas. 55, 5. ग्राश्रितानाम् (obj.) Hit. 16, 12, v. l. in comp. mit dem obj.: खरो° MBh. 5, 4587. भ्रातृ° R. 2, 115, 5 (126, 5. 6 Gorr.). शरणागत° Kâm. Nitis. 8, 10. पति° Ragh. 15, 98. पुत्र° Kumâras. 5, 14. प्रजा° Râǵa-Tar. 3, 472. भार्या° Pañkat. 221, 1. ग्राश्रित° Hit. 16, 12. भृत्य° 100, 6. जन्मभूमि° *Heimathsliebe* Spr. 388.

वात्सल्यता f. dass. mit dem obj. comp.: भागवतवात्सल्यतया Bhâg. P. 5, 3, 2.

वात्सशालँ (von वत्सशाला) adj. *in einem Kälberstalle geboren* P. 4, 3, 36. — Vgl. वत्सशाल.

वात्सि (von वत्स) m. patron. des Sarpi Ait. Br. 6, 24.

वात्सी f. zum patron. वात्स्य Schol. zu P. 4, 1, 16. 6, 4, 150.

वौत्सीपुत्र m. *der Sohn der* Vâtsî: 1) N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14, 9, 4, 31. fälschlich वत्सी° geschr. Wassiljew 34. 61. 230. Târan. 292. 298. — 2) *Barbier* Trik. 2,10,3.

वात्सीपुत्रीय m. pl. *die Schule des* Vâtsîputra Vjutp. 210. Burn. Intr. 446. 569. fg. Lot. de la b. l. 357. 489. Wassiljew 57. 230. 233. 253. 262. 269. Târan. 4. 130. 271. fgg. 292. Oefters fälschlich वत्सी° geschr.

वौत्सीमाण्डवीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,30.

वात्सीय m. pl. N. einer Schule P. 4,1,89, Schol.

वौत्सोद्धरण adj. *aus* वत्सोद्धरण *gebürtig* gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4,3,93.

वात्स्य 1) adj. *von* Vatsa *handelnd* Çâṅkh. Çr. 16,11,19. — 2) m. parox. patron. von वत्स gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Schol. zu 4,1,102. 117. 6,1,197. 8,4,66. Vop. 7,1. 8. Çat. Br. 9,5,1,62. 10,6,5,9. 14,5,4, 22. Kâtj. Çr. 1,1,11. 3, 6. 5,13. 4, 3, 18. MBh. 1, 2049. Varâh. Bṛh. S. 21,2. VP. 277. Bhâg. P. 12,6,57. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*, N. 5. 55, *a*, 34. Schol. zu AV. Prât. 2,6. pl. Bez. einer Völkerschaft MBh. 7,396. — 3) n. oxyt. nom. abstr. von वत्स *Kalb* gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

वात्स्यगुल्मक m. N. pr. einer Völkerschaft Verz. d. Oxf. H. 217,*b*,20.

वात्स्यायन 1) m. patron. von वात्स्य gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4,1,73. Vop. 7,1. 9. Trik. 2,7,23. H. 853. Taitt. Âr. 1, 7, 2. Hall 20. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 9. 11. fg. Muir, ST. III, 210 (fälschlich वात्सायन). Verz. d. B. H. No. 1403. Verz. d. Oxf. H. 13,*a*,14. 109,*a*,7. 113,*b*,43. 167, *a*,39. 178,*a*,35. 215,*a*, No. 517. 256,*a*, N. 3. Madhus. in Ind. St. 1,21,7. Pańkat. 45, 9 (als Verfasser des Kâmaçâstra). f. वौत्स्यायनी gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4,1,73. — 2) adj. (f. ई) *zu* Vâtsjâjana *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2,392.

वात्स्यायनीय adj. *von* Vâtsjâjana *verfasst;* n. *ein von ihm verfasstes Werk* Njâjas. in den Unterschrr. des Comm. Verz. d. Oxf. H. 216, *b*,27. 218,*a*,14.

वाद (von वद्) 1) nom. ag. *ertönen lassend, spielend:* भेरीशङ्ख° MBh. 6, 33; vgl. वीणा°. — 2) m. *a*) *Ausspruch, Aussage, Angabe, Aeusserung:* वादेष्ववचनीयेषु M. 8,269. अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति Bhag. 2, 36. वादः प्रवदतामहम् sagt Kṛshṇa 10,32. एवं वादो (der Artikel एवंवाद zu streichen) मनीषिणाम् MBh. 1,7865. 8381. 2,2607. पूर्व, द्वितीय (so v. a. पूर्वपक्ष und सिद्धान्त) 13,7200. R. 7,23,1,66. fg. महान् 7,45,11. Bhâg. P. 4,4,28. 29,59. सभ्येतरवादचञ्चु Spr. 1406. Bhâg. P. 3,5,14. न यत्र वादः *worüber sich Nichts sagen lässt* 4, 9, 13. Verz. d. Oxf. H. 62, *a*, 21. प्रज्ञावादांश्च भाषसे Spr. 722 (II). पिशुनवादेषु 2750, v. l. मा वद कैतववादम् Gît. 8,2. ब्राह्मण° Nir. 2,16. शास्त्रवादानतिक्रम्य R. 5,85, 11. श्रुतिस्मृतिवादाः Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 148. 277. इतिहासवादाः Mâlatîm. 47,1. सांख्यवेदान्तवादोक्त Mârk. P. 23,42. काल° *Angabe der Zeit* Çâṅkh. Çr. 10,21,19. °मात्रम् Lâtj. 10, 3, 6. 7,7. 10,2. 4. यथाभूयसो° 4, 10, 15. तद्वादात्तद्वादः *weil die Aussage von jenem gilt, gilt sie auch von diesem* Kap. 3,11. तत्त्व° Bhâg. P. 5,11,2. असत्य° Daçak. 90, 1. अनृत° Prab. 88,8. उच्चैर्वाद *ein hochfahrendes Wort* Uttarar. 101,20 (136,2). *Erwähnung, Nennung, das Sprechen über:* गुण° Bhâg. P. 3,6, 37. 21,17. अखिल° 4,31,28. 6,3,26. निक्षिप्तवाद adj. *der das Reden über Etwas eingestellt hat, kein Wort mehr sprechend* MBh. 1,7033. युद्धस्य Hariv. 10797. न्यस्तवाद dass.: गवां प्रति 10967. — *b*) *eine aufgestellte Behauptung, eine Theorie, die man vertheidigt,* Suçr. 1,150,3. Sarvadarçanas. 9,4. 26,21. 42,16. निर्गुण° 52,15. 63,11. 117,4. 146,19. 147,11. Madhus. in Ind. St. 1,13,18. fgg. 23,13. fg. Verz. d. Oxf. H. 109, *b*, No. 170. Schol. zu Kap. 1, 37. Kusum. 37,16. Bhâg. P. 8,22, 19. — *c*) *eine Unterhaltung über einen wissenschaftlichen Gegenstand, Disputation, Wortstreit* Colebr. Misc. Ess. I, 293. नानुशासनवादाभ्यां भिन्नां लिप्सेत कर्हिचित् M. 6,50. विप्रं निर्जित्य वादतः Jâgń. 3, 292. MBh. 3,10602. 10612. fg. 10638. दुर्जनैः 5,1085. मनोः प्रजापतेर्वादं महर्षेश्च बृहस्पतेः 12, 7366. 13,4678. वादाविचक्षण 14,2629. सर्ववादविशारद Hariv. 14062. न च वादस्त्वया कार्यो वादिभिः सह 14467. R. 1,13,23. 7,53,15. Spr. 2075, v. l. Kathâs. 3,23. 18,133. 66, 6. 10. 13. fg. 64. fg. 72, 67. 70. 72. 211. Râga-Tar. 1,178. Prab. 111,9. Verz. d. B. H. No. 914. Verz. d. Oxf. H. 258,*b*,30. Madhus. in Ind. St. 1,18,24. Sarvadarçanas. 112,11. तत्त्वनिर्णयः कथाविशेषो वादः 114,3. Njâjas. 1, 1, 42. Comm. zu 41. सीमा° *Grenzstreitigkeit* M. 8,253. — *d*) *Verabredung:* यस्यां च निशि चर्मरत्नस्तेयवादः Daçak. 79,16. — *e*) *Laut, Ruf* (eines Thieres,; *Klang, Spiel* (eines musikalischen Instruments): शकुनि° Ait. Br. 2,15. त्वदीयं गीतं शङ्खवादानुवादि Pańkat. 248,11; vgl. वीणा. — Vgl. अनारभ्य°, अनेकान्त°, अर्थ°, आशीर्वाद, एक°, कु°, गुण°, ज्ञन° डुर्वाद, धर्म°, धातु°, नास्ति°, पक्ष°, पर°, पाणि°, पाप°, पूर्व°, प्रतिकूल°, प्रामाण्य°, प्रिय° (auch R. 1, 17, 27), ब्रह्म°, भक्ति°, भावप्रत्ययवादार्थ, मङ्गल°, माया°, मिथ्या°, मुक्ति°, मृषा°, लोक°, वाक्यभेद°, वाग्वाद, वाणी°, वाद°, वीणा°, वेद°, सत्य°, साधु°, सान्त्व°, साम°, स्वयं°, क्लीन°, हेतु°.

वादक (vom caus. von वद्) nom. ag. *Spieler eines musikalischen Instruments:* शताङ्गानि च तूर्याणि वादकाः समवादयन् MBh. 1,7056. 7909. 5,5304. 13,756. 1586. Varâh. Bṛh. S. 10, 3. Kathâs. 123,134. Bhâg. P. 10,18,13. वाद्य° 53,43. — Vgl. पाणि°, प्रियवादिका.

वादकथा f. Titel einer Schrift Hall 128.

वादन (vom caus. von वद्) 1) nom. ag. = वादक R. 1,19,12. — 2) n. *a*) *das Werkzeug, mit dem die Saiten gestrichen werden, Plectrum:* वैतस Kâtj. Çr. 13,2,21. Çâṅkh. Çr. 17,3,14. Lâtj. 4,2,7. वीणादि° AK. 1,1,2,6. H. 294. — *b*) *das Spielen eines musikalischen Instruments, Instrumentalmusik:* गीतवादनम् *Gesang und Musik* M. 2,178. कुशला नृत्यवादने MBh. 3,14856. Kathâs. 21,5. 49,18. वादनविधौ als Erklärung von वाद्ये Utpala zu Varâh. Bṛh. 18,1. in comp. mit dem musikalischen Instrumente: भाण्ड° M. 10, 49. वीणा° Jâgń. 3, 115. Kathâs. 47, 113. 49,33. वेणु° R. Gorr. 2,96,8. Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,16. मृदङ्ग° u. s. w. Schol. zu P. 4,4,55. fg. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 2,48,29. st. उच्चण्डवादनादण्डो° Râga-Tar. 2, 99 ist vielleicht उच्चण्डवादनादण्डो° zu lesen.

वादनक n. = वादन 2) *b*): गीतवादनकप्रिय MBh. 12,10417.

वादनक्षत्रमालिका f. Titel einer Schrift Hall 159.

वादनदण्ड m. = वादन 2) *a*) Halâj. 1,98.

वादपरिच्छेद m. Titel einer Schrift Hall 49.

वादमहार्णव m. desgl. Hall 166.

वादयुद्ध n. *Wortstreit, Disputation* M. 12,46.

वादरङ्ग m. *Ficus religiosa* Trik. 2,4,6.

वादल 1) m. *Süssholz* Çabdak. im ÇKDr. — 2) n. *ein trüber Tag* H.

165, Schol.

वादवती f. N. pr. eines Flusses LIA. I, 167.

वादवाद 1) m. *ein Ausspruch über eine aufgestellte Behauptung:* अकोविदः कोविदवादवादान्वदसि Bhâg. P. 5,11,1. — 2) *einen Wortstreit —, eine Disputation hervorrufend:* तर्क Bhâg. P. 7,13,7.

वादवादिन् bei Wilson und im ÇKDr. fehlerhaft für स्याद्वादवादिन्.

वादान्य adj. = वदान्य Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr.

वादाम m. = वदाम *Mandel* Râéav. im ÇKDr.

वादायन m. patron. von वद gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110.

वादाल m. = वदाल *eine Art Wels* H. 1345.

वादि (von वद्) Uṇâdis. 4,124. P. 3,3,108, Vârtt. 7, Schol. adj. = वाचक und विद्वंस् Uééval.

वादिक (von वादिन्) adj. *redend, sprechend:* प्राज्ञ° *wie ein Kluger* MBh. 2,2288. *behauptend, annehmend, einer Theorie anhängend:* हठ° 3,1214.

वादित s. u. dem caus. von वद्.

वादितर्ङ्गन (वादिन् + त°) n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, 8.

वादितव्य (vom caus. von वद्) n. *Instrumentalmusik:* गीतेन वादितव्येन नित्यं मामनुयास्यसि MBh. 13,697.

वादित्र (von वद्) Uṇâdis. 4,170. n. 1) *ein musikalisches Instrument* AK. 1,1,2,5. H. 286. Kauç. 14. 16. न वादित्राणि वादयेत् M. 4,64. MBh. 1,5329. सर्ववादित्रनादैः 4941. 3,1766. 11918. R. Gorr. 2,12,12. 4,60,9. Varâh. Bṛh. S. 44,16. Bhâg. P. 3,24,7. 8,8,26. Weber, Kṛshṇaé. 270. Schol. zu Kâtj. Çr. 697, 8. — 2) *Musik, musikalische Aufführung:* गीतवादित्रे Khând. Up. 8,2,8. Pâr. Gṛhj. 2,7. MBh. 3,1794. 1796. 4,56. 12,10417. R. 1,9,8. 2,61,6. 114,9. R. Gorr. 2,125,19. Suçr. 1,335,9. 2,146,3. Varâh. Bṛh. S. 46,91. 86,22. Bhâg. P. 3,22,28. 4,15,19. Weber, Kṛshṇaé. 302. 304. न गात्रनखवक्त्रवादित्रं कुर्यात् Suçr. 2,145,3. सु° als m. pl. Hariv. 7018.

वादित्रवत् (von वादित्र) adj. *von Musik begleitet* Kâtj. Çr. 21,3,11.

वादित्व s. सत्य°.

वादिन् (von वद्) nom. ag. 1) *redend, sprechend:* तवास्मीति वादिनम् M. 7,91. Bhag. 2,42. R. 6,94,4. Ragh. 1,82. 11,69. Kathâs. 18,107. 20,82. 30,105. 37,179. 44,102. Râéa-Tar. 2,87. 5,435. 6,53. 225. 357. Bhâg. P. 4,14,45. 7,5,40. 7,3. 8,10,47. Mârk. P. 22,12. 114,30. Sarvadarçanas. 64,4. तवास्मीति च वादिनम् MBh. 3,729. 5,1037. R. 5,91,14. इति तं वादिनम् Kathâs. 37,228. 59,115. 72,145. 119,161. तमेवं वादिनम् MBh. 1,1576. 7104. 13,2315. R. Gorr. 1,67,17. Kumâras. 6,84. इत्येवं वादिभिः Mârk. P. 23,5. इत्येव वादिनम् Kathâs. 73,271. तं तथा वादिनम् MBh. 1,219. तवाहं वादिनम् (von Stenzler als comp. gefasst) Jâéñ. 1,325. वादिनं मृषा MBh. 4,99. mit einem acc.: लोकनिश्चयम् *aussprechend* 12,2389. Häufig am Ende eines comp.: धृष्ट° Hariv. 4628. पण्डित° Pańkat. I, 437. सद्वादिन् Maitrjup. 6,30. भूयो°, वरीयो°, कनीयो° Ind. St. 10,419. पृथग्वादिन् Çat. Br. 8,7,2,3. आकृत्स्नस्य° 9,3,1,24. वृत्त° R. 5,48,6. न्याय्य° (so ist zu lesen) 88,14. सुयुक्त° 2,60,23. प्रियशब्द° R. Gorr. 2,13,29. अनृत° M. 3,41. MBh. 4,99. Spr. 3793. वितथ° Kathâs. 26,96. 31,83. तथ्य° Bhâg. P. 8,11,11. गुह्य° 1,10,24. *redend von, sich auslassend über:* स्वगुणोत्कर्ष° Sarvadarçanas. 64,5. Kathâs. 6,27. Bhâg. P. 3,24,1. Pańkat. 37,23. नय° so v. a. *Lehrer, Kenner* Kâm. Nîtis. 8,33. संहिता° Verz. d. Oxf. H. 55, *a*, 13. *verkündend, ankündend, anzeigend:* शर्वानुग्रह° Kathâs. 23,11. भूयोभर्तृसंगम° 30,48. 34,69. 73. नक्तभोगित्व° 69,67. वादिनी R. 2,36,3 vielleicht *Wahrsagerin* (= परचित्ताकर्षकवचनचतुरा Comm.). — 2) *der eine Theorie behauptet, — verficht, Anhänger einer Theorie, Vertreter einer Ansicht* Kap. 1,112. Suçr. 1,150,3. वादिप्रतिवादिनौ Schol. zu Kap. 1,70. Sarvadarçanas. 114,5. 123,5. 26,3. 42,19. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. शब्द° Maitrjup. 6,22. षट्पदार्थ° Kap. 1,25. Verz. d. Oxf. H. 259, *a*, 24. 34. Sarvadarçanas. 47,6. 62,10. fg. 116,14. 127,18. 130,5. 134,22. 135,2. — 3) *Disputant* MBh. 3,10602. Hariv. 14467. Kâm. Nîtis. 5,25. Ragh. 12,92 (= कथक Mallin.). Spr. 606 (II). 1545. 2075. Kathâs. 66,63. 72,68. fg. Râéa-Tar. 1,112. 178. Verz. d. Oxf. H. 140, *a*, No. 280. 259, *a*, 14. fg. Dhûrtas. 92,2. Bhâg. P. 6,4,31. Wilson, Sel. Works I, 304. — 4) *Kläger* Jâéñ. 2,73. Kull. zu M. 8,254. — 5) *Töne hervorbringend, als Plectrum dienend* Çâṅkh. Çr. 17,3,10. — 6) *Alchemist* Kâlakakra 5,222. — 7) पुरुष° so v. a. *einen männlichen Namen führend* R. 7,87,13. भो° *mit* bhos *angeredet* MBh. 3,12843. Hariv. 11140. आर्य° *mit* Ârja *angeredet* MBh. 3,12843; vgl. Weber, Ind. St. 1,181. — 8) in der Stelle न च विद्वेषणाद्दं न चाहं कारवादिना । न चात्मविनिगीषुत्वाद्दूषयामि वचो ऽमृतम् ॥ Hariv. 5904 ist वादिना so v. a. वादेन, das nicht zum Metrum passt. — Vgl. अग्नि°, अनेकान्त°, अन्य°, अहं°, उत्तर°, क्षत°, कोण°, क्रिया°, क्षान्ति°, गुण° (auch MBh. 4,123), ग्राम्य°, दण्ड°, देहात्म°, धर्म°, धातु°, पूर्व°, प्रज्ञप्ति°, प्रतिकूल°, प्रत्यक्ष°, प्रिय°, बल्गु°, बृहद्वादिन्, ब्रह्म°, भद्र°, मङ्गल°, मञ्जु° (adj. Ragh. 12,39, v. l.), मन्त्र°, मन्द°, मिथ्या° (auch Kathâs. 23,24), मृषा° (auch R. Gorr. 1,24,7), वाग्वादिनी, वेदवादिन्, सत्य°, स्त्रीन°.

वादिर m. *ein dem Judendorn* (बदरी) *ähnlicher Fruchtbaum* Çabdar. im ÇKDr.

वादिराज् (वादिन् + राज्) m. 1) *ein Fürst unter Disputanten, ein ausgezeichneter Disputant* Pańkar. 3,14,75. — 2) Bein. Mańguçrî's Trik. 1,1,21.

वादिवागीश्वर m. N. pr. eines Autors Hall 44.

वादिश adj. = साधुवादिन् *Beifall zurufend* Çabdam. im ÇKDr. m. *a learned and virtuous man, a sage, a seer* Wilson nach ders. Aut.

वादीन्द्र m. 1) = वादिराज् 1) Hall 26. 67. Verz. d. Oxf. H. 173, *b*, No. 388. — 2) N. pr. eines Philosophen Verz. d. Oxf. H. 244, *a*, No. 606.

वादीश्वर m. = वादिराज् 1) Verz. d. Oxf. H. 140, *a*, No. 280.

वाडुलि m. N. pr. eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,252 nach der Lesart der ed. Bomb. वाङ्कलि ed. Calc.

वाद्य (von वद्) P. 3,3,106, Schol. 1) adj. *zu reden*, n. *Rede:* वदस्व यत्ते वाद्यम् Ait. Br. 6,14. Çat. Br. 2,3,4,6. 18. 4,3,2,1. — 2) adj. *zu spielen, zu blasen* (ein musikalisches Instrument): शङ्ख Verz. d. Oxf. H. 32, *b*, 15. — 3) n. *Instrumentalmusik* H. 279. Halâj. 1,95. Lâtj. 4,2,3. Spr. 4889. Varâh. Bṛh. 18,1. Kathâs. 39,247. 52,266. Madhus. in Ind. St. 1,22,5. Verz. d. Oxf. H. 85, *b*, 26. 200, *b*, No. 476. 201, *a*, No. 479. fg. Verz. d. B. H. No. 1384. Daçak. 60,11. Bhâg. P. 8,15,21. Weber, Kṛshṇaé. 302. वल्लकी° Hariv. 4635. मुरजवाद्यराव Mâlav. 21. शङ्खवाद्यरव We-

BER, KRSHNAǴ. 266. RAGH. 16,64. वीणा° Spr. 3991. KATHÂS. 49,50. वेणु° PAÑĆAR. 3,5,24. RÂǴA-TAR. 5,464. स्वाङ्गे पीठे च Spr. 4462. RÂǴA-TAR. 5,417. — 4) n. (hier und da auch m.) *ein musikalisches Instrument* AK. 1,1,2,5. H. 286. HALÂJ. 1,93. सस्वनुर्देववाद्यानि R. GORR. 1,50,20. 5,13,1. वाद्यानि चित्राण्यपि वादयेत SUÇR. 2,259,5. °वादक BHÂG. P. 10,53,43. KATHÂS. 18,404. °शब्द PAÑĆAT. 129,15. masc. R. 2,81,2. MÂRK. P. 66,26. 128,14. — Vgl. एकवाद्या, उदकवाद्य, जल°, पर्ण°, ब्रह्म°, मङ्गल°, मुख°, वंशि°.

वाद्यक = वाद्य 3) BHÂG. P. 10,12,34.

वाद्यधर m. *Musikant* BHÂG. P. 10,12,34.

वाद्यभाण्ड n. *ein musikalisches Instrument* H. an. 3,558. MED. r. 159. l. 74. °मुख AK. 3,4,25,188. HALÂJ. 5,72.

वाद्यमण्ड m. *Gerstenschleim* fehlerhaft für वाट्य° MAD. in NIGH. PR. ÇÂRÑG. SAṀH. 2,2,118.

वाधक die richtigere Schreibart für 2. बाधक; s. u. वधक 3).

वाधव n. nom. abstr. von वधू gaṇa उद्गात्रादि zu P. 5,1,129.

वाधवक n. (संज्ञायाम्) von वधू gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

वाधावत m. patron. v. l. für वातावत Ind. St. 1,215, N. 1. 2,293, N. 1.

वाधुक्य (von वधू) n. *das Heirathen, Heimführen eines Weibes* TRIK. 2,7,30.

वाधुल m. N. pr. eines Mannes SAṀSK. K. 185,a,10.

वाधून m. N. pr. eines Lehrers Ind. St. 1,82.

वाधूय (von वधू) adj. *hochzeitlich*, n. *Hochzeitskleid, das dem Brahmanen geschenkt wird;* bald wird *das des Bräutigams*, bald *ein Kleid* oder *Kopftuch der Braut* verstanden (vgl. Comm. zu ÇÂÑKH. GṚHJ. 1,14): वाधूयं वासो वध्वश्च वस्त्रम् AV. 14,2,41. fg. सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात्स इद्वाधूयमर्हति ṚV. 10,85,34 (vgl. सूर्याविदे वधूवस्त्रं दद्यात् ÂÇV. GṚHJ. 1,8,12). KAUÇ. 77. 79.

वाधूल m. N. pr. eines Mannes HALL 112. — Vgl. वाधौल.

वाधूलेय m. patron.: कटकवाधूलेयाः gaṇa कार्तकौजपादि zu P. 6,2,37.

वाधौल m. patron. ÂÇV. ÇR. 12,10,10. — Vgl. वाधूल.

वाधिय (!) m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,7.

वाध्रीणस m. *Nashorn* H. 1287. HALÂJ. 2,72. आत्मनो मरणे यातो वाध्रीणस (°नस ed. Calc.) इव द्विपः (द्विजः v. l.) MBH. 8,3324. वाध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी (पितॄणाम्) 13,4248. MÂRK. P. 32,7. वराहवाध्रीणसकान् R. ed. Bomb. 5,11,16. NÎLAK. zu MBH. 8,3324: वाध्रीणसः मेषविशेषः यस्य नासापुटयोर्वध्रीसदृशं चर्म भवति। द्विपः द्वाभ्यां वक्त्रकर्णाभ्यां पिबतीति। द्विज इति पाठे कृष्णग्रीवो रक्तशिराः श्वेतपक्षो विहंगमः स वै वाध्रीणसः प्रोक्तो याज्ञिकैः पितृकर्मणीति प्राञ्चः; derselbe zu 13,4248: वाध्रीणसः वध्या स्थूलनासिको मकोलः। पक्षिविशेषो ऽजविशेषश्चेत्यन्ये; Comm. zu R. 5,11,16: वाध्रीणसः पक्षिविशेषः कृष्णग्रीवो रक्तशिराः श्वेतपक्षो विहंगमः। स वै वाध्रीणसः प्रोक्त इति विष्णुधर्मोक्तेः। छागविशेषो वा। त्रिःपिबं त्विन्द्रियक्षीणं श्वेतं वृद्धप्रजापतिम् (lies वृद्धमजापतिम् wie KULL. zu M. 3,271)। वाध्रीणसं च तं प्राहुर्याज्ञिकाः श्राद्धकर्मणीति स्मृतेः ॥ मुखकर्णौ च पानसमये जलं स्पृशन्ति यस्य स त्रिःपिबः ॥ — Vgl. वार्ध्रीणस, वार्ध्रीनस.

वाध्र्यश्व m. patron. von वध्र्यश्व ṚV. 10,69,5. ÂÇV. ÇR. 12,10,12. NIR. 8,22.

1. वान (von 2. वा) n. 1) *das Wehen* (गति) TRIK. 3,3,260. H. an. 2,285. MED. n. 20. VAIǴ. beim Schol. zu NALOD. 2,26. — 2) *Geruch, Wohlgeruch* H. an. VAIǴ. — 3) *Fluth* H. an.

2. वान (partic. von 3. वा) 1) adj. *eingetrocknet, trocken;* n. *getrocknete Frucht* AK. 2,4,2,15. TRIK. 3,3,260. H. 1130. an. 2,151. 285. MED. n. 20. HALÂJ. 2,34. VAIǴ. beim Schol. zu NALOD. 2,26. श्रानन *ein trockener Mund* NALOD. 2,26. — 2) n. = गोक्षीरजं तवक्षीरम् RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. म्र° 2).

3. वान (von 5. वा) n. 1) *das Weben* TRIK. 3,3,260. H. an. 2,285. MED. n. 20. SÂJ. zu ṚV. 2,3,6. सूचीवानकर्माणि (सूचीकर्मन् beim Schol. zu BHÂG. P. 10,45,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,8 (ebend. 11 liest der Schol. zu BHÂG. P. बाण st. वान). — 2) *Geflecht, Matte* TRIK. H. an. MED. — Vgl. तन्तु°.

4. वान (von 1. वन) n. *ein dichter Wald* NALOD. 3,6. H. 91, Schol.

5. वान n. *ein unterirdischer Gang, Mine* H. an. 2,285. Vielleicht bildlich vom *Blumenkelch* in der Stelle पुष्पवानकलस्वनाः (भ्रमराः) R. GORR. 2,56,13.

वानकौशाम्बेयी adj. von वन + कौशाम्बी gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97. °कौशाम्बेयी v. l.

वानदण्ड (3. वान + दण्ड) m. *Webstuhl* H. 913.

वानप्रस्थ 1) m. (von वनप्रस्थ) *ein Brahmane im dritten Lebensstadium, wenn er sein Haus aufgegeben hat und in den Wald gezogen ist; Einsiedler* AK. 2,7,3. TRIK. 2,7,2. 3,3,198. H. 807. 809. an. 4,134. MED. th. 29. HALÂJ. 2,239. Ind. St. 2,287. M. 6,87. JÂǴN. 2,137. 3,45. KAṆ. 6,2,2. MBH. 1,7683. R. 2,64,22. R. GORR. 2,52,26. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,121. Verz. d. Oxf. H. 8,a,39. 83,a,32. 85,b,37. 269,a,7. VP. 295. BHÂG. P. 7,12,16. fg. MÂRK. P. 28,23. 119,17. 135,8. PAÑĆAR. 1,10,80. — 2) m. *Bassia latifolia* AK. 2,4,2,8. TRIK. 3,3,198. H. an. MED. *Butea frondosa Roxb.* H. an. RATNAM. 44. — 3) adj. (von वानप्रस्थ 1) *zum Einsiedler in Beziehung stehend, ihn betreffend;* m. (mit Ergänzung von आश्रम) *das dritte Lebensstadium eines Brahmanen, das Leben im Walde:* धन MED. m. 39. विधि HARIV. 7985. R. 3,18,31. MBH. 12,2325. MÂRK. P. 16,3. 44,38. 135,11. — Hier und da fälschlich वाण° geschrieben.

वानमन्तर m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern bei den Ǵaina, = व्यन्तर H. 91, Schol.; vgl. WEBER, BHAGAVATÎ 2,159. fgg.

वानर 1) m. *Affe* AK. 2,5,3. H. 1292. HALÂJ. 2,76. M. 1,39. 11,135. JÂǴN. 3,277. MBH. 1,2571. 3,12244. 9,202. R. 1,1,57. 16,18. 2,54,28. 55,33. SUÇR. 1,202,17. 333,18. VARÂH. BṚH. S. 68,104. 86,28. 42. Spr. (II) 107. BHÂG. P. 5,13,17. 14,30. PAÑĆAT. 203,3. Çâkjamuni als *Affe* in einer früheren Geburt VJÂDI beim Schol. zu H. 233. am Ende eines adj. comp. (f. श्रा) R. 6,19,53; vgl. निर्वानर. — 2) f. ई a) *Aeffin* MBH. 3,15935. R. 1,16,6. R. GORR. 1,20,13. 4,19,4. 20,1. KATHÂS. 123,60. PAÑĆAT. 206,15. — b) *Carpopogon pruriens Roxb.* ÇABDAR. im ÇKDR. ÇÂRÑG. PADDH. 3,2,17. — 3) (von वानर 1.) adj. (f. ई) *den Affen gehörig, ihnen eigen* u. s. w.: वपुस् MBH. 3,11168. 12,1067. योनि 13,411. सेना R. 5,1,14. 46,7. 6,1,6. 2,26.

वानरकेतन adj. *einen Affen zum Erkennungszeichen habend;* m. Bein. Arǵuna's (des Pâṇḍuiden) MBH. 14,2430. 2466.

1. वानरकेतु m. *Affenbanner* MBH. 5,4815. वानरराज ed. Bomb.

2. वानरकेतु = वानरकेतन MBH. 5,4683.

वानरप्रिय adj. *den Affen lieb;* m. Bez. *eines best. Baumes* (क्षीरिवृत्त) RATNAM. im ÇKDR.

वानरवीरमाहात्म्य n. *die Majestät der heldenmüthigen Affen*, Titel einer Legende (angeblich aus dem SKANDA-P.) MACK. Coll. I, 83.

वानराक्त m. *eine wilde Ziege* ÇKDR. nach HÂR. 81, wo aber nach den Corrigg. बालवाह्य zu lesen ist.

वानराघात m. *Symplocos racemosa Roxb.* ÇABDAK. im ÇKDR.

वानराष्टक n. *die acht Strophen eines Affen*, Titel einer Sammlung von acht Sprüchen, abgedruckt in HAEB. Anth. S. 244. fg. — Vgl. वानर्यष्टक.

वानरास्य adj. *ein Affengesicht habend;* m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 188, N. 40.

वानरेन्द्र m. *Affenfürst*, Bein. Sugriva's ÇABDAR. im ÇKDR.

वानरेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,41.

वानर्यष्टक n. *die acht Strophen einer Aeffin*, Titel einer Sammlung von acht Sprüchen, abgedruckt in HAEB. Anth. S. 242. fg. — Vgl. वानराष्टक.

वानल m. *eine Art Basilienkraut*, = वावय ÇABDAK. im ÇKDR.

वानव m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6, 362 (= VP. (II) 2,175).

वानवासक 1) adj. (f. °वासिका) *zum Volke der* Vanavâsaka *gehörig:* वानवासिकाः स्त्रियः Verz. d. Oxf. H. 217, *b*, 20. — 2) f. °वासिका *ein best. Metrum* COLEBR. Misc. Ess. II, 86. 155. Ind. St. 8,315. 318.

वानवासिक und वानवासिन् s. u. वनवासक.

वानवासी f. N. pr. einer Stadt DAÇAK. 192,21.

वानवास्य m. *der Fürst von* Vânavâsî DAÇAK. 194, 5. 11 (hier fälschlich वानावस्य).

वानसि m. *Wolke* H. ç. 27 vielleicht fehlerhaft für वार्मसि; vgl. वारिमसि.

वानस्पत्य (von वनस्पति) 1) adj. *vom Baume kommend*, *hölzern:* अद्रिरसि वानस्पत्यः VS.1,14. fg. ग्रावाणः AV.3,10,5.12,3,18. चक्र ÇAT. BR. 5,4,3,16. इष्टका 6,1,2,30. TS. 5,7,2,3. Gefäss ÇAT. BR. 14,2,2,53. Pauke: वानस्पत्यः संभृत उस्रियाभिः AV. 5,20,1. 21,3. द्रव्य MBH. 3, 10294. 12739. R. 6,96,13. माल्य *ein Kranz von Baumlaub* Verz. d. Oxf. H. 43,*a*, N. 2. वानस्पत्यं द्रुमौषधम् MÂRK. P. 109,70. *zum Baum* d. h. Jûpa *gehörig* TS. 6,3,11,3. — LÂTJ. 1,2,7. ÂÇV. GṚHJ. 2,6,6. 3,8,20. Soma AIT. BR. 7,33. — SUÇR. 1,336,13. बलि so v. a. *an Bäumen* (Schlangen) *dargebracht* BHÂG. P. 10,17,2. als Beiw. Çiva's vielleicht so v. a. *unter Bäumen* —, *im Walde lebend* R. 7,23,4,44. — 2) m. *Baum* AV. 3,6,6. 14,2,9. वानस्पत्यौषधीष्विव (वन° die neuere Ausg.) HARIV. 11979. 12804. neben वनस्पति vielleicht *Strauch*, *ein kleiner Baum:* वनस्पतीन्वानस्पत्यान् ओषधीरुत वीरुधः AV. 8,8,14. 11,9,24. *Gewächs* überh.: यस्यां वृक्षा वानस्पत्यास्तिष्ठन्ति 12, 1, 27. nach AK. 2, 4, 1, 6. H. 1115 und HALÂJ. 2, 24 *ein Fruchtbaum mit* (in die Augen fallenden) *Blüthen.* — 3) n. *a*) *Baumfrucht* ÇAT. BR. 11,1,7,2. 3,1,3. AIT. BR. 8,15. M. 8,339. — *b*) = वनस्पतीनां समूहः P. 4,1,85, Vârtt. 10, Schol.

वाना f. *Wachtel* GAṬÂDH. im ÇKDR.

वानाम (वा नाम?), Einfluss auf den Ton eines verbi finiti gaṇa गोत्रादि zu P. 8,1,27. 57.

वानायु m. 1) pl. N. pr. eines Volkes, = वनायु ÇABDAR. im ÇKDR. VP. 192, N. 92. °ज adj. Bez. *einer edlen Pferderace* AK. 2,8,2,13. MBH. 6, 3974. 7,1574. 4831 (die ed. Bomb. an allen drei Stellen वनायुज). R. GORR. 1,6,24. 2,106,17. Verz. d. B. H. 292,1 (चानायुज die Hdschr.). Vgl. वनायु. — 2) v. l. für वातायु H. 1293, Schol.

वानावास्य s. u. वानवास्य.

वानिक adj. vielleicht *im Walde wohnend* (von वन): वेश्यानपुंसककिटैर्वानिकदासीजनेन वा कीर्णाम् BHAR. NÂṬJAÇ. 18,96.

वानीर m. 1) *eine Rohrart*, *Calamus Rotang Lin.* AK. 2,4,2,10. H. 1137. HALÂJ. 2,46. °फलमालिनी (नर्मदा) MBH. 3,8355. °मालिनी (नदी, könnte auch N. pr. eines Flusses sein; = वेत्रपङ्क्तियुता NILAK.) 8519. 12552. R. 3,17,7. 21,15. 19. MEGH. 42. RAGH. 13,30. VARÂH. BṚH. S. 55, 10. GÎT. 4,1. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,25. °गृह RAGH. 13,35. 16,21. am Ende eines adj. comp. f. आ MBH. 12,3644. — 2) = चित्रक HÂR. 265.

वानीरक m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) *Roxb.* RÂGAN. im ÇKDR.

वानीरज m. = कुष्ठ RÂGAN. im ÇKDR.

वानेय (von 1. वन) 1) adj. *im Walde lebend*, — *wachsend*, *silvestris* (vgl. वन्य) MBH. 3,10015. मुनि 9,2183. °पुष्प 15,722. माल्य 13,5038. वानेयमथ वा कृष्टम् 3,1957. fg. 14,1270. R. 5,34,11. — 2) n. *Cyperus rotundus* AK. 2,4,4,19.

वान्त 1) partic. s. u. वम्. — 2) m. Bez. eines Priestergeschlechts Verz. d. Oxf. H. 76,*b*,39.

वान्ताद (वान्त + अद) 1) adj. *Ausgebrochenes essend.* — 2) m. *Hund* TRIK. 2,10,5.

वान्ताशिन् (वान्त + आ°) adj. = वान्ताद M.3,109.12,71. BHÂG. P.7,15,36.

वान्ति (von वम्) f. *Erbrechen* RATNAM. im ÇKDR. Verz. d. B. H. No. 972.

वान्तिकृत् 1) adj. *Erbrechen verursachend.* — 2) m. *Vanguiera spinosa Roxb.* WILSON nach ÇABDAK. वान्तिह्वत् ÇKDR. nach ders. Aut., aber in der Reihenfolge vor वान्तिदा, also wohl nur Druckfehler.

वान्तिद 1) adj. *Erbrechen bewirkend.* — 2) f. आ *Helleborus niger Lin.* (कटुकी) ÇABDAK. im ÇKDR.

वान्तिह्वत् s. u. वान्तिकृत् 2).

वान्दन m. patron. von वन्दन ÂÇV. ÇR. 12,11,2.

1. वान्या f. *eine Kuh, deren Kalb todt ist*, TBR. 2,6,16,2. — Vgl. अपि°, अभि°, नि°.

2. वान्या (von 1. वन) f. *ein dichter Wald* (वनसमूह) ÇABDAR. im ÇKDR.

1. वाप (von 1. वप्) m. *das Scheeren:* कृत° adj. *geschoren*, *dessen Kopfhaare geschoren sind* M. 11,108.

2. वाप (von 2. वप्) 1) nom. ag. *Säer*, *Säemann:* बीज° MBH. 3,1372. — 2) m. *Aussaat* P. 5,1,45. वापः क्षेत्रे न नश्यति MBH. 12,10944. द्रोणाढकादिवाप adj. *besäet mit* AK. 2,9,10. H. 969. व्रीहि°, माष° adjj. P. 8,4,11, Schol. — Vgl. अन्य°, खारी°, बीज°, मूल° (wo *Stecker* d. i. *Pflanzer* st. *Stecher* zu lesen ist).

3. वाप = वाय in तन्तु°, तल्प°, सूत्र°, °दण्ड.

वापक s. पट्टिका°.

वापदण्ड m. = वायदण्ड Comm. zu AK. 2,10,28. nach ÇKDR. Lesart des Textes.

वापन (vom caus. von 1. वप्) n. *das Sichscheerenlassen* ÂÇV. ÇR. 2,16,

26. Gṛhj. 1,22,22. Çāñkh. Gṛhj. 4,7. कृत° adj. M. 11,78.

वापनि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184,a,3.

वापय् s. u. dem caus. von 1. und 2. वप् und 2. वा (mit निस्). Es befremdet, dass वापयति (s. das caus. von 1. वप्) in Verbindung mit केशान् vom Schol. zu P. 7,3,38 auf वा zurückgeführt wird.

वापातिनर्मिध n. N. eines Sâman Ind. St. 3,234,b.

1. वापि Uṇâdis. 4,124. P. 3,3,108, Vârtt. 7. f. = वापी Uǵǵval. Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr. Bhâg. P. 4,6,31.

2. वापि m. adj. von वापिन् gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

वापिका (von वापी) f. *ein länglicher Teich* Spr. 1693. 3728. Kathâs. 18,365. अम्बु° 63,71. am Ende eines adj. comp. 34,145.

वापिन् (von 2. वप्) adj. *säend:* व्रीहि°, माष° P. 8,4,11, Schol. — Vgl. बीज°.

वापी (von 2. वप् *aufdämmen*) f. 1) *ein länglicher Teich* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,124. AK. 1,2,3,28. Trik. 1,2,28. H. 1093. Halâj. 3,62. M. 8, 248. 11,163. MBh. 2,1667. 3,2407. 8,1418. 1420. 14,1728. R. 2,68,19. 91,65. 3,61,17. Suçr. 1,22,21. 169,12. 2,485,3. Megh. 74. Ṛt. 6,3. Spr. 1307. 2733. 2777. fgg. 4983. Varâh. Bṛh. S. 12,10. 68,49. Kathâs. 6, 109. 26,84. 63,72. Bhâg. P. 3,15,22. Pañkat. 247,14. °तुल्यविलोचन Verz. d. Oxf. H. 10,b, N. 6. °कूपतडागोत्सर्गविधि 35,a,5. °कूपतडागजलोद्देश Verz. d. B. H. No. 903. am Ende eines adj. comp. वापीक Kathâs. 29,58. — 2) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten in den Epanaphorae und Apoklimata stehen,* Varâh. Bṛh. 12, 5. 14. — Vgl. मतङ्ग°, लीला°, स्वर्वापी.

वापीह adj. *Teiche meidend;* m. Bez. *des Vogels* Kâtaka Trik. 2,5, 17. — Vgl. वप्पीह.

वापुष (von वपुस्) adj. etwa *wundersam* Ṛv. 5,75,4.

1. वाप्य (von वप्) 1) adj. P. 3,1,126. Vop. 26,12. *hinzustreuen* (von 2. वप्) Kauç. 16. — 2) m. *Vater* H. ç. 116; vgl. वप्तर्, वप्र.

2. वाप्य (von वापी) adj. *aus Teichen kommend:* Wasser Suçr. 1,173, 12. Fisch 207,2.

3. वाप्य n. v. l. für व्याप्य = कुष्ठ die Erklärer zu AK. 2,4,4,14. nach ÇKDr. liest der Text वाप्य.

वाभट m. N. pr. eines Lexicographen Med. Anh. 4. vielleicht fehlerhaft für वाग्भट.

वाभि s. ऊर्णा°.

वाम् enklitischer acc., dat. und gen. du. des Pronomens der 2ten Person VS. Prât. 2,5. P. 8,1,20. 24. fgg. Das betonte वाम् scheint für आवाम् *wir beide* zu stehen: एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै Ṛv. 6,55,1. nach Sâj. acc. von वा = स्तोतर्.

1. वाम (von 1. वन्, wie धूम von 1. धन्) 1) adj. (f. ई, in der späteren Sprache आ) a) *werth, lieb; gefällig, gut, schön;* = वननीय Nir. 4,26. 6, 31. 11,46. = वल्गु, चारु AK. 3,4,22,146. H. 1444. an. 2,336. fg. Med. m. 29. fg. Halâj. 4,4. इषः Ṛv. 3,53,1. वसु 6,19,5. 8,1,31. गृहपति 6, 53,2. अतिथि 10,122,1. प्रणीति 69,1. 1,164,1. 7. 6,48,20. TS. 1,5,4,1. 2,3. TBr. 1,1,2,3. Kâṭh. 25,2. 6. यं वै गामश्वं यं पुरुषं प्रशंसन्ति वाम इति तं प्रशंसन्ति Pañkav. Br. 13,3,19. निबध्य भ्रुकुटीं वामाम् Hariv. 7066. °भ्रू *eine Schönbrauige* Spr. 546. Sâh. D. 34,7. प्रोषितवामलोचना Çâk. 23. वामनयना adj. Spr. 3194. वामाक्षी 2978. Kathâs. 26,283. H. 507. °नेत्रा Halâj. 2,326. सूक्त Çâñkh. Çr. 7,6,10. Bhâg. P. 3,25,36. °स्वभावा *schön, edel* 1,7,42. °भाषिणी *schön redend* R. 3,23,17. — b) *zugethan, strebend nach, versessen auf:* अन्न° Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,139. प्रायो वारितवामा हि प्रवृत्तिर्मनसो नृणाम् *nach Verbotenem lüstern* Kathâs. 26,76. वारितवामेन कामेन Râǵa-Tar. 3,417. im Prâkṛt: पडिसिद्धवामा खु एमा ज्ञादी Çâk. 88,15, v. l. — 2) m. a) *die weibliche Brust* H. an. Med. — b) Bein. Çiva's H. an. Med. Bhâg. P. 4,3,8. bei den Çaiva Bez. einer der fünf Formen ihres Gottes, = वामदेवगुह्य Sarvadarçanas. 83, 17. Bhâg. P. I, Einl. lxv. N. pr. eines Rudra Bhâg. P. 6,6,17. Könnte auch zu 2. वाम gehören. — c) Bez. *des Liebesgottes* H. an. Med. — d) N. pr. eines Sohnes des Ṛkîka MBh. 13,7671. राम ed. Bomb. — e) N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa von der Bhadrâ Bhâg. P. 10,61,17. eines Fürsten, eines Sohnes des Dharma, Verz. d. Cambr. H. 7,6. eines Sohnes des Bhaṭṭanârâjaṇa Kshitîç. 5,8. — 3) f. आ a) *eine Schöne, ein schönes Weib, Weib* überh. (vgl. वनिता) AK. 2,6,1,2. H. 504. H. an. Med. Pañkar. 1,14,73. Sâh. D. 55,2. — b) *eine Form der* Durgâ Devî-P. 45 und Kâlikâ-P. 11 im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 104, b,13. nach Çabdârthak. bei Wilson auch Lakshmî und Sarasvatî. — c) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2630. — d) N. pr. der Mutter Pârçva's, des 23ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî, H. 41. — 4) f. ई *Stute* AK. 2,8,2,14. H. 1233. Halâj. 2,285. H. an. Med. *Eselin, Kameelstute* (करभी) und *das Weibchen eines Schakals* H. an. Med. Zu belegen nur in der Verbindung उष्ट्र° im pl. oder im comp. MBh. 2,1745. 1824. 5,5700. Ragh. 5,32. Nîlak. zu MBh. 2,1824: उष्ट्राः वाम्यः गर्दभाश्वसंकरजाः, der Schol. zu Ragh. 5,32 erklärt das Wort durch *Kameele und Stuten;* eher als *Kameelstute* zu fassen; vgl. P. 6,2,40, wo beim Schol. wohl उष्ट्रवामी st. उष्ट्रवामिः zu lesen ist. — 5) n. a) *Werthes, Liebes: Gut* (= धन Med.) Ṛv. 1,33,3. विश्वेद्वामा वो अश्नवत् 40,6. 48,1. स नो नेषन्नेषतमैः सुनीतिभिर्वामं वस्यो अच्छ 141, 12. 4,5,13. 7,71,2. 78,7. 8,72,4. 5. विश्वा वामानि धीमहि 92,5. 10, 20,8. 40,10. 76,8. रातिं वामस्य 140,5. AV. 4,25,6. गृहाः पूर्णा वामेन तिष्ठन्तः 7,60,12. 14,2,9. आ वो देवास ईमहे वामम् VS. 4,5. 8,5. देवानाम् TS. 5,3,8,1. Ait. Br. 5,6. Çat. Br. 1,9,1,22. Âçv. Çr. 1,9,5. एतं हि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति Khând. Up. 4,15,2. 3. — b) *eine best. Gemüsepflanze, Chenopodium;* = वास्तूक Gaṭâdh. im ÇKDr. masc. Wilson nach ders. Aut. — 6) वामया adv. *gefällig, schön* Ṛv. 8,9,7. — Vgl. अन्न°, यज्ञ°.

2. वाम Uṇâdis. 1,139. 1) adj. (f. आ) a) *link* AK. 2,6,2,36. 3,2,34. H. 1466. an. 2,336. Med. m. 29. fg. Halâj. 4,71. Çat. Br. 14,6,11,3. Çâñkh. Gṛhj. 2,10. Gobh. 2,9,13. 4,1,2.3. Suçr. 1,27,5.244,2. MBh. 1,7723. R. 2,42,4. 92,22. Megh. 76.94. Çâk. 133. Mâlav. 53. Spr. 2780. Râǵa-Tar. 1, 2. Dhûrtas. 94,9. Vet. in LA. (III) 10,4. Verz. d. Oxf. H. 103,a,25. 29. Weber, Râmat. Up. 292. चरणेनापि वामेन न स्पृशेयं कदा च न। रावणं किं पुनर्नीचं कामयेयम् R. 5,26,27. fg. वामं प्रास्पन्दतैकं नयनं वराङ्ग्याः (Glück verheissend) 28,13. Mâlatîm. 5,2. बाहुर्वामः परिवेपते स्म (beim Weibe Glück verheissend) R. 5,28,14. वामः सस्कन्धश्चास्फुरद्भुजः (beim Manne Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. वामश्चायं नदति मधुरं चा-

तक: *zur Linken stehend* Megh. 9. वामस्तस्याभवत्काक: (Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. *an der linken Seite befindlich* Varâh. Bṛh. S. 5,83. 36,4. °किरीटिन् 58,57. अग्निर्वामार्चि: *ein Feuer, dessen Flamme nach links geht*, (Unglück verheissend) MBh. 6,108. आ वामाद्दक्षिणं ययौ *von links nach rechts* (Unglück verheissend) Kathâs. 49,130. वामस्थ *zur Linken stehend* 39,139. वामेन *zur Linken* Spr. 3890. Râǵa-Tar. 5, 97. वामे *zur Linken* so v. a. *im Westen* Weber, Râmat. Up. 300. — *b*) *schief, verkehrt* Çabdârthak. bei Wilson. वामं (वक्रं यथा भवति तथा Comm.) चतुर्भ्यामभिवीक्ष्य *seitwärts* Bhâg. P. 4,2,8. *in entgegengesetzter Richtung* —, *anders verfahrend* Çâk. 93. *widerstrebend, widerspänstig, widerwärtig;* = प्रतीप, प्रतिकूल AK. 3,4,23,146. H. 1465. H. an. Med. Halâj. 5,22. Bhaṭṭ. 6,17. रतौ वामा so v. a. *spröde* Sâh. D. 99. 40,13. विधि *ein widerwärtiges Geschick* Spr. 740. 781, v. l. 3786. Kathâs. 73, 163. शिवा वामैकशंसिनी *Widerwärtiges, Unheil* 124,108. अहो वामैकवृत्तित्वं किमप्येतत्प्रजापते: 21,48. उदासित° Gît. 11,9. *hart, grausam:* काम Spr. 936 (II). 2834. Mârk. P. 16,23. कामस्य वामा गति: Gît. 12,11. *verkehrt* so v. a. *schlecht, böse:* वामशीला हि जन्तव: Kir. 11,24. = दुष्ट Uǵǵval. — 2) m. *Schlange* Çabdârthak. bei Wilson. *ein lebendes Wesen* Wilson angeblich nach Ǵaṭâdh. — 3) n. = वामाचार Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,18.

3. वामँ (von वम्) m. = वम gaṇa ज्वलादि zu P. 3,1,140. Vârtt. zu P. 7,3,34. Vop. 26,170.

वामक 1) adj. (f. वामिका) = 2. वाम. *a*) *link* Varâh. Bṛh. S. 51, 26. Mâlatîm. 5,5. Kusum. 65,10. — *b*) *widerwärtig, hart, grausam:* वक्ष्यस्तु चण्डिकादेव्या वामिका मूर्तय: स्मृता:। लक्ष्म्यास्तु वामिका मूर्तिरुक्ता दक्नभैरवी ॥ Kâlikâ-P. 11 im ÇKDr. — 2) m. Bez. *einer best. Mischlingskaste* MBh. 13, 2622. — 3) m. N. pr. eines Ḱakravartin Vjutp. 92. — 4) wohl n. Bez. *einer best. Gesticulation* Vikram. 59,20.

वाँमकत्तायण m. patron. Çat. Br. 7,1,2,11. 10,4,1,11. oxyt. 6,3,9.

वामकेश्वरतन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,11. fg. 108, *b*,2. 109,*a*,3. 32.

वामचूड m. pl. N. pr. eines Volkes Hariv. 12838 nach der Lesart der neueren Ausg. वामचूल die ältere.

वामचूल s. u. वामचूड.

वामजुष्ट n. = वामकेश्वरतन्त्र Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,3. 32.

वामतन्त्र n. Titel eines Tantra Wilson, Sel. Works I, 249.

वामतस् (von 2. वाम) adv. *von links, links* MBh. 7,3539. Suçr. 1,107, 11. Mṛkkh. 14,6. Varâh. Bṛh. S. 52,9. 54,70. 86,37. 88,28. Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,9. 136,*a*,28. कार् 24,*a*, N. 2. MBh. 12,12118.

वामता (von 2. वाम) f. 1) *Ungunst:* वेधात्र्य: (pl.) Râǵa-Tar. 4,413. — 2) *Sprödigkeit* Spr. 1230. 1761.

वामत्व n. = वामता 1): विधातु: Mâlatîm. 146,10.

वामदत्त (1. वाम Çiva + दत्त) 1) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 68, 34. fgg. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 112,169.

1. वामँदेव m. 1) N. pr. eines Ṛshi, eines Sohnes des Gotama (ṚV. 4,4,11. 32,9. 12), Verfassers des 4ten Maṇḍala. ṚV. 4,16,18. AV. 18, 3,15. Ait. Br. 4, 30. 6,18. Çat. Br. 14, 4, 2, 22. Paṅkav. Br. 13, 9, 27. Âçv. Gṛhj. 3,4,2. Ind. St. 3,460. 478. fg. Ait. Up. 4,5. Kap. 1,158. 4, 20. Bâdar. 1,1,30. M. 10,106. MBh. 2,298. 3,13180. fgg. 12,3464. fgg. Verz. d. B. H. No. 646. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,7. 53,*a*,8. 310,*a*,26. Verz. d. Cambr. H. 22,8. Kathâs. 109,5. fgg. Paṅkar. 1,10,64. Minister Daçaratha's MBh. 3,15981. R. 1,7,1. 11,6. 68,13. 2,67,2. R. Gorr. 1, 11,9. 19,9. 2,2,3. Weber, Râmat. Up. 302. 306. वामदेवस्य स्तोत्रम् Çâṅkh. Çr. 10,13,10. pl. *sein Geschlecht* Âçv. Çr. 12,10. Verz. d. B. H. 60,32. Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,19. — 2) N. pr. eines Fürsten MBh. 2,1020. Hariv. 5021. 5502. — 3) *eine Form* Çiva's AK. 1,1,1,28. H. 195. Halâj. 1,12. Hariv. 14842. Bhâg. P. 2,6,36. 3,12,12. VP. 51, N. 3. Verz. d. Oxf. H. 44,*b*,14. 74,*b*,17. 75,*a*,1 v. u. Wilson, Sel. Works II, 215. — 4) Bez. *eines best. Krankheitsgenius* Hariv. 9557. — 5) N. pr. eines neueren Autors Verz. d. Oxf. H. 135,*a*, No. 254. Gild. Bibl. 504. — 6) N. pr. eines Berges im Dvîpa Çâlmala Bhâg. P. 5,20,10. — 7) Bez. *des 5ten Tages* (Kalpa) im Monat Brahman's; s. u. कल्प 2) *d*).

2. वामदेव adj. (f. ई) *zu* Vâmadeva *in Beziehung stehend, von ihm verfasst, über ihn handelnd:* सावित्री Ind. St. 10,122. पर्वन् MBh. 1,332.

वामदेवगुह्य m. bei den Çaiva Bez. einer der fünf Formen ihres Gottes Sarvadarçanas. 83,10.

वामदेव्यँ 1) adj. *von* Vâmadeva *herkommend* Çat. Br. 13,2,2,14. — 2) m. patron. von वामदेव Âçv. Çr. 12,10. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,21. — 3) n. N. verschiedener Sâman (nach P. 4,2,9 oxyt. oder perisp.) AV. 4,34,1. 8,10,13. 15,2,2. 4,2. VS. 12,4. TS. 2,6,2,2. TBr. 1,1,8,2. 2,1,5,7. Ait. Br. 3,46. Paṅkav. Br. 7,8,1. 9,1,31. Âçv. Gṛhj. 2,6,2. Lâṭj. 2,10,1. Gobh. 1,9,27. 2,4,4. Ḱhând. Up. 2,13,1. 2. Ind. St. 3,234,*b*. मह्रा° ebend. इडवत् 209,*b*. द्विहिंकारम् 220,*b*. पञ्चनिधनम् 222,*a*. बृहत् 226,*a*. विराट् 236,*b*.

वामदेव्यविद्या f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. I, 326.

वामन् gaṇa पामन् zu P. 5,2,100. wohl nur ein zur Erklärung von वामन gebildetes Wort.

वामन 1) adj. *a*) oxyt. gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. f. आ gaṇa प्रियादि zu P. 6,3,34. Vop. 6,13. *klein gewachsen, zwerghaft;* m. *Zwerg* AK. 2,6,1,46. 3,2,19. Trik. 3,3,259. fg. H. 454. 1429. an. 3,412. fg. Med. n. 127. Halâj. 2,456. ह्रस्व, वामन VS. 16,30. 24,1. 7. वामनो वक्री दक्षिणा। यद्वक्री। तेनाग्नेय:। यद्वामन:। तेन वैष्णव: TBr. 1,6,1,6. TS. 1,8,1,1. 2,1,3,1. Âçv. Çr. 12,7,11. वामनो ह विष्णुरास Çat. Br. 1, 2,5,5. Spr. 4870. Bhâg. P. 5,24,18. 6,8,11. 18,7. 8,13,6. 18,24. कुब्जवामना ग्रन्नमाना ह्रस्वाश्च Shaḍv. Br. 4,3. Kaṭhop. 5,3. MBh. 2,403. 3, 13736. 15842. 15856. 5,906. 13,2221. Hariv. 8394 (आ°). 12218. R. 2, 91,48. 5,10,19. 17,28. Suçr. 1,89,11. 322,13. Kâm. Nîtis. 7,41. 12,42. Ragh. 1,3. 10,61. Sâh. D. 81. °विटपद्रुमा: Varâh. Bṛh. S. 54,49. वामनार्चिरिव दीपभाजनम् *klein* Ragh. 19,51. दिनानि *kurz* Naish. 22,57. वामनी (गो) bei Colebr. und Lois. zu AK. 2,9,68 ist wohl eine falsche Form. — *b*) (vom vorhergehenden) *einem Zwerge eigen* u. s. w.: वपुस्, रूप *der Körper* —, *die Gestalt eines Zwerges* MBh. 3,8759. 12,13673. 13,6016. Hariv. 2279. 4159. 4166. R. 1,31,17 (32,12 Gorr.). Bhâg. P. 8,20,21. प्रादुर्भाव *die Erscheinung* (Vishṇu's auf Erden) *in der Gestalt eines Zwerges* MBh. 3,15847. Hariv. 2304. वामन n. so v. a. वामनं रूपम् Bhâg. P. 2,7,17. वामन in Verbindung mit पुराण (उपपुराण) oder

n. mit Ergänzung dieses Wortes *das vom Zwerge* (Vishṇu) *handelnde* Purâṇa 12,7,24. Mârk. P. S. 659, Çl. 4. Verz. d. Oxf. H. 8,a,3. 8. 59, a,40. 65,a,1 v. u. 79,b,36. Madhus. in Ind. St. 1,18,9; vgl. वामनपुराण. — c) *vom Weltelephanten* Vâmana *abstammend:* द्विप R. Gorr. 1,6, 26. — 2) m. a) Bein. Vishṇu's, der als *Zwerg* vom Daitja Bali sich so viel Land erbat, als er mit drei Schritten ausmessen würde, und darauf die drei Welten durchschritt, Trik. 1,1,29. 3,3,259. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 190,b,12. MBh. 3,6073. 12,7543. 13,5379. Hariv. 2279. R. 1,31,3 (32,2 Gorr.). वामनाश्रम Ragh. 11,22. Gît. 1,9. Bhâg. P. 8,23,21. Weber, Kṛshṇaǵ. 294. Pańkar. 1,5,19. °प्रादुर्भाव Bhâg. P. 8,19 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 83,a,25. वामनावतार 14,a,10. 129,a, No. 232. वामनोत्पत्ति 78,b,17. als N. Vishṇu's zugleich Bez. eines best. Monats Varâh. Bṛh. S. 105,14. übertragen auf Çiva MBh. 14,193. — b) Bez. *eines unter einer best. Constellation geborenen Menschen* Varâh. Bṛh. S. 69,32. — c) Bez. *einer Ziege* (*Bocks*) *mit best. Merkmalen* Varâh. Bṛh. S. 65,9. — d) *Alangium hexapetalum* Med. — e) = काण्ड H. an. — f) N. pr. des Weltelephanten des Südens (nach Andern des Westens) AK. 1,1,2,5. Trik. 3,3,259. H. 170 (vgl. Comm.). H. an. Med. Hâr. 147. Halâj. 1,104. MBh. 5,3561. 6,475. 2866. R. 1, 6,23. 7,31,36. Bhâg. P. 5,20,39. वामनेभी Trik. 3,3,202. — g) N. pr. eines Schlangendämons H. 1311, Schol. MBh. 1,1551. 5,3626. Hariv. 230. — h) N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3595. — i) N. pr. eines Dânava Hariv. 197. — k) N. pr. eines der 18 Diener des Sonnengottes Vjâḍi beim Schol. zu H. 103. — l) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 54,b,38. eines Sohnes des Hiraṇjagarbha Hariv. 14152. — m) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2105. ग्रम्बष्ठ ed. Bomb. — n) N. pr. verschiedener Männer Râǵa-Tar. 4,496. 6,155. 7,569. 594. 730. 1045. einer Autorität in der Mîmâṁsâ Hall 166. Verfassers der Kâvjâlaṅkâravṛtti Verz. d. Oxf. H. 206,b, No. 487. 210,a, No. 495. 211,b, No. 499. 212,a, No. 500. Sâh. D. 6,13. der Kâçikâvṛtti Verz. d. Oxf. H. 113,b,7. 126,a,20. 161,b,9. 162,b,24. 176,a,2. Med. Anh. 5. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,52. Kull. zu M. 2,125. N. pr. eines Astronomen Ind. St. 2,251. 262. 274. eines buddhistischen Lehrers Târan. 4. 78. — o) N. pr. eines Berges MBh. 6,459. 462. — 3) f. ग्रा N. pr. einer Apsaras R. ed. Bomb. 2,91,45 (100,46 Gorr. रामणा ed. Schl.). Brahma-P. in LA. (III) 50,19. — 4) f. वामनी *a disease of the vagina* bei Wilson fehlerhaft für वामिनी. — 5) n. N. pr. eines nach Vishṇu, *dem Zwerge*, benannten Wallfahrtsortes MBh. 3,8108.

वामनक 1) adj. = वामन 1) a) Hariv. 8394. Varâh. Bṛh. S. 67,9. Bṛh. 4,19. Bhâg. P. 4,5,13. — 2) m. a) = वामन 2) b) Varâh. Bṛh. S. 69,31. — b) = वामन 2) o) MBh. 6,459. — 3) f. वामनिका N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2641. — 4) n. a) *die Gestalt eines Zwerges:* वामनकं कृत्वा Bhâg. P. 1,3,19. — b) = वामन 5) MBh. 3,6073.

वामनकाशिका f. = काशिकावृत्ति Colebr. Misc. Ess. II,249.

वामनजयादित्य m. = वामन = जयादित्य N. pr. des Verfassers der Kâçikâvṛtti Colebr. Misc. Ess. II, 40.

वामनत्व (von वामन) n. *Zwerghaftigkeit* Çârṅg. Saṁh. 1,7,70. °त्वं गम् *die Gestalt eines Zwerges annehmen* R. 1,31,8. कथं भगवता — वामनत्वं धृतं पूर्वम् Verz. d. Oxf. H. 45,b,5.

वामनद्वादशी Bez. *des 12ten Tages in der lichten Hälfte des* Kaitra, *eines Festtages zu Ehren* Vishṇu's *als Zwerges:* °व्रत Verz. d. Oxf. H. 38,a,28. fg.

वामनपुराण n. *das von* Vishṇu *als Zwerge handelnde* Purâṇa VP. Einl. XLVII. Verz. d. Oxf. H. 45,b,1. 84,b,3. 182,b,46. 270,b,40. 279,a,46.

वामनवृत्ति f. = काशिकावृत्ति Verz. d. Oxf. H. 161,a,13. °टीका 207, b, No. 488.

वामनव्रत n. Bez. *einer best. Begehung,* = वामनद्वादशीव्रत (s. u. वामनद्वादशी) ÇKDr.

वामनसूक्त n. Bez. *einer best. Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398,a, No. 144. 405,b, No. 11.

वामनस्वामिन् m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,35.

वामनाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Verz. d. Oxf. H. 197,a, No. 460. 379,b, No. 394. 386,b, No. 509. Verz. d. B. H. No. 819.

वामनी (1. वाम + 2. नी) adj. *Güter bringend*, Beiw. des Purusha im Auge Khând. Up. 4,15,3.

वामनीकर् (वामन + 1. कर्) *zum Zwerge machen:* °कृत (विष्णु) Spr. 1053. *flach drücken:* गाढालिङ्गनवामनीकृतकुच 830.

वामनीति m. *Führer zum Guten* oder *des Guten:* भवा सुनीतिरुत वामनीतिः Ṛv. 6,47,7.

वामनीय (von वम्) adj. 1) *mit Brechmitteln zu behandeln* Çârṅg. Saṁh. 3,3,3. — 2) *Erbrechen bewirkend* Suçr. 2,60,17. धूम 233,4.11. Wise 150.

वामनेत्र 1) adj. (f. ग्रा) *schönäugig* Halâj. 2,326. — 2) n. Bez. *des Lautes* ई ÇKDr. nach dem Tantrasâra.

वामनेन्द्रस्वामिन् m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 164,a, No. 360. fg.

वामभाज् adj. *Liebes geniessend, des Guten theilhaft* Ṛv. 3,55,22. 6,71,6.

वामभृत् f. N. einer Ishṭakâ (*Gutes bringend*) TS. 5,5,2,3. Kâṭh. 20, 6. Çat. Br. 7,4,2,35.

वाममार्ग m. = 1. वामाचार Verz. d. Oxf. H. 249,b,26.

वाममोष adj. *Werthes stehlend* TS. 6,2,2,5.

वामरथ m. N. pr. eines Mannes gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. pl. *seine Nachkommen* Vârtt.

वामरथ्य m. patron. von वामरथ gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. ein Zweig der Âtreja Kâtj. Çr. 10,2,21. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,6. 61,13.

वामरिन् H. ç. 178 fehlerhaft für चामरिन्.

वामलूर m. *Ameisenhaufe* AK. 2,1,15. H. 971. Halâj. 3,22. मुनयः प्ररूढवामलूराङ्गाः Kâçikh. 22,19 nach Aufrecht.

वामलोचन 1) adj. *schönäugig*, f. ग्रा AK. 2,6,1,3. Spr. 1520. MBh. 3, 2690. Ragh. 19,13. Mâlav. 35. Bhâg. P. 6,14,13. — 2) f. ग्रा N. pr. einer Tochter des Vîraketu Daçak. 24,5.6.

वामशिव m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 97,23.

वामाक्षि n. Bez. *des Lautes* ई ÇKDr. — Vgl. वामनेत्र.

वामागम m. = 1. वामाचार Wilson, Sel. Works I, 251.

1. वामाचार m. *das Ritual der* Çâkta *von der linken Hand* Verz. d. Oxf. H. 250,a,2.4.

2. वामाचार adj. *sich verkehrt benehmend, ein falsches Verfahren be-*

folgend Suçr. 1,105,18. Pankar. 2,6,8.

वामाचारिन् adj. *das Ritual der* Çâkta *von der linken Hand befolgend* Wilson, Sel. Works I, 250. 252. 254. fgg.

वामापीडन m. *Careya arborea Roxb.* oder *Salvadora persica Lin.* (s. पीलु) Çabdak. im ÇKDr.

1. वामिन् (von वम्) adj. *ausbrechend, ausspeiend:* सोम° TS. 2,3,2, 6. Çat. Br. 12,7,2,2. 3,10. Kâtj. Çr. 19,1,2.10. वामिनी योनिः *den empfangenen Samen wieder ausschüttend* Suçr. 2,396,12. 397,1.

2. वामिन् (von 2. वाम) adj. = वामाचारिन् Wilson, Sel. Works I, 254. fgg.

वामिल adj. = वाम und दाम्भिक H. an. 3,683. Med. l. 130.

वामीयभाष्य n. Titel einer Schrift Ind. St. 1,470.

वामेतर (2. वाम + इतर) adj. *recht* (Gegens. *link*) Ragh. 2,31. 6,68.

वामोरु adj. *schöne Schenkel habend*, f. वामोरू P. 4,1,70. Vop. 4,30. MBh. 1,1903. 2,2988 (वामोरुः ed. Calc. °रूः ed. Bomb.). R. 2,96,23 (105,22 Gorr.). Ragh. 8,56. Mâlav. 53. Çiç. 8,24. Bhâg. P. 6,18,31. 8, 9,3. compar. f. वामोरूतरा und वामोरुतरा Vop. 7,49.

वाम्नी f. N. pr. eines Frauenzimmers; vgl. वाम्नेय.

वाम्नेय m. metron. von वाम्नी Pankav. Br. 14,9,38.

1. वाम्य (von वम्) adj. = वामनीय 1) Çârng. Samh. 3,3,3.

2. वाम्य adj. *dem* Vâma d. i. Vâmadeva *gehörig:* ग्रग्र MBh. 3,13180. fgg.

3. वाम्य (von 2. वाम) n. *Verkehrtheit* oder *Widerspänstigkeit* Sâh. D. 551.

वाम्र (von वम्र) 1) m. patron.: वाम्रस्य वैखानसस्य साम Ind. St. 3,234, b. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,234, b. 235, a. Pankav. Br. 13,3,18. Lâtj. 3,4,15. 6,10,8.

1. वाय (von 5. वा) am Ende eines comp. nom. ag. (P. 3,3,2) und act. s. तन्तु°, तन्त्र°, तुन्न°, वासो°. तिरश्चीन° m. *Querband* Ait. Br. 18,12.17.

2. वाय angebl. patron. von वि *Vogel* Nir. 6,28.

3. वाय = वी in पद°.

1. वायक (von 5. वा) nom. ag. *Weber, Näher* P. 3,1,145, Vârtt., Schol. सूच्या सूत्रं यथा वस्त्रे संसारयति वायकः Spr. 5286. Kathâs. 52,110. Bhâg. P. 5,26,36. 10,41,40. — Vgl. u. पट्टिकावायक.

2. वायक m. *Menge* Çabdak. im ÇKDr.

वायत (von वयत्) m. patron. des Pâçadjumna RV. 7,33,2.

वायदण्ड m. *Webstuhl* AK. 2,10,28 (nach ÇKDr. eine von Bharata erwähnte v. l. für वापदण्ड, wie der Text lesen soll). — Vgl. तन्तु°.

वायन n. *eine Art Backwerk* Trik. 2,9,14. वायनक n. dass. Hâr. 152 nach der Lesart des Schol. zu Hâla 334. वायन *eine Art Räucherwerk* Vjutp. 143.

वायनिन् m. patron., pl. Samsk. K. 184, a, 3.

वायरज्जु (प्रतिकृतौ संज्ञायाम्) gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

वायव (von 1. वायु) adj. 1) (f. ई) *zum Winde —, zur Luft —, zum Gotte des Windes in Beziehung stehend, dem Winde gehörig —, geweiht, entsprungen* u. s. w.: श्वेतवायवान्तरिक्षाः सर्पाः Pâr. Gṛhj. 2,14. मातरः स्कन्दस्य MBh. 9,2655. — 2) *nordwestlich*, f. mit oder ohne दिश् *Nordwest* Gaṭâdh. im ÇKDr. Âçv. Gṛhj. 4,9,3. Schol. zu Kâtj. Çr. 412, 9. Verz. d. Oxf. H. 76, b, 10. Whitney zu Sûrjas. 8,19. — वायवीसंहिता vielleicht nur fehlerhaft für वायवीयसंहिता Verz. d. Oxf. H. 84, b, 4. 5. — Vgl. ऐन्द्र°.

वायवीय adj. = वायव 1): परमाणवः Jâgn. 3,104. Madhus. in Ind. St. 1,23,14. Suçr. 1,151,15. पुराण Verz. d. B. H. 127, N. Verz. d. Oxf. H. 8, a, 3. 65, a, 33. स्कन्दपुराण 84, b, 34. °संहिता 270, b, 41. Verz. d. B. H. No. 648.

वायव्य 1) adj. P. 4,2,31. a) = वायव 1): पशून्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या-न्ग्राम्याश्च ये ṚV. 10,90,8. पात्र (auch n. ohne diesen Beisatz) Bez. *gewisser wie ein Mörser geformter* Soma-*Gefässe* (Comm. zu TS. I, 477,13) AV. 9,6,17. VS. 18,21. 19,27. 85. TS. 3,1,2,3. 6,3,2,3. स्थालीभिरन्ये ग्रहा गृह्यन्ते वायव्यैरन्ये 5,11,3. Kâṭh. 27,7. 9. Çat. Br. 3,6,3,10. MBh. 13,5266. वायव्यं श्वेतमालभेत TS. 2,1,1,1. 3,1,6,1. पयस् Çat. Br. 2,6,3,6. क्रुच् 4,4,1,15. Ait. Br. 5,26. Kâtj. Çr. 4,5, 7. 23,4,15. बलि Gobh. 1,4,10. Âçv. Gṛhj. 4,9,6. पशु Jâgn. 3,287. गुण MBh. 12,6855. स्पर्श 14,1201. Suçr. 1,151,4. 313,3. Varâh. Bṛh. S. 32, 8. भूकम्प 10.27. 80,10. 46,64 (*in der Luft seiend*). ग्रस्त्र MBh. 1,5365. 3,11964. 4,1876. 5,7173. R. 1,29,11. 56,10. 5,58,6. Vikr. 18. Uttarar. 105,13 (143,5). Kathâs. 14,29. पुराण Verz. d. Oxf. H. 79, b, 36. — b) = वायव 2): घनरिपु Varâh. Bṛh. S. 27,6. दिश् 2, S. 7, Z. 14. 60, 3. Verz. d. Oxf. H. 103, b, 14. *Nordwest:* वायव्यपश्चिमान्तरे Varâh. Bṛh. S. 86, 31. नैर्ऋतवायव्यस्थौ 5,86. वायव्ये 87,12. 95,4. Mârk. P. 58,78. Weber, Râmat. Up. 308. वायव्यात् Varâh. Bṛh. S. 87,13. वायव्योत्थैरब्दैः 24,24. वायव्या f. dass. 28. Mârk. P. 34,101. H. 169, Schol. — 2) n. *das unter dem Gotte des Windes stehende* Nakshatra Svâti Varâh. Bṛh. S. 7, 9. 107,4.

1. वायस (von 1. वयस्) Uṇâdis. 3,120. gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38. 1) m. a) *Vogel*, insbes. *ein grösserer* ṚV. 1,164,52. ग्रयं वां वायसो दोषा दयमानो ग्रबूबुधत् ved. Cit. in Nir. 4,17. Einschiebung nach ṚV. 5,51. — b) *Krähe* AK. 2,5,20. H. 1322. an. 3,755. Med. s. 37. Halâj. 2, 90. श्वचाण्डालभूतपतितवायसेभ्यो ऽन्नं भूमौ निक्षिपेत् Âçv. Gṛhj. 4,9,8. M. 3, 92. Suçr. 1,116,20. Kauç. 95. Shaḍv. Br. 6,8. ṚV. Prât. 13,20. MBh. 3, 15746. 10,35. 40. शंसन्ति मम वायसाः। ग्रनागतमतीतं च यच्च संप्रति वर्तते 12,3062. R. 2,96,54. यदन्तरं वायसवैनतेययोः 3,53,58. किं न भक्षन्ति वायसाः Spr. 615. Suçr. 1,202,15. Varâh. Bṛh. S. 95,17. °रुत in der Unterschr. ebend. Kathâs. 18,147. 114,130. °पङ्क्यः Verz. d. Oxf. H. 51, a, 34. Bhâg. P. 5,26,18. Pankat. 140,16. fg. Hit. 9,6. 17,7. 13. 25,16. — c) *ein Fürst der* Vajas gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117. — d) *Agallochum.* — e) *Terpentin* H. an. Med. — 2) f. ई a) *Krähenweibchen* H. an. परभृत इव नीडे रक्षितो वायसीभिः Mṛkkh. 108,2. Pankat. 53,1. Hit. 67, 8. 13. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: *Solanum indicum Lin.* AK. 2, 4,5,17. H. 1188. H. an. Med. Hâr. 180. *Ficus oppositifolia* H. an. Med. = काकतुण्डी, काकनामन् und महाज्योतिष्मती Râgan. im ÇKDr. — Suçr. 2,67,21. — 3) adj. (f. ई) a) *aus Vögeln bestehend:* श्रेण्यः Nalod. 1,27. — b) *das Wort* वयस् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. — Vgl. तीर्थ°, नगर°, निर्वायस.

2. वायस (von 1. वायस) 1) adj. (f. ई) *zu Krähen in Beziehung stehend, sie betreffend* u. s. w.: तीर्थ Bhâg. P. 1,5,10. विद्या (vgl. वायसविद्या) MBh. 12,3062. — 2) n. *Krähenschaar* P. 4,2,37, Schol.

वायसतीर n. *Krähen-Ufer*, wohl N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. °तीरीय P. 4,2,104, Vârtt. 9, Schol.

वायसतुण्ड adj. *krähenschnabel-ähnlich:* संधि *Kiefergelenk, processus coronoideus* Wise 37. Suçr. 1,340,16. 20.

वायसविद्या f. *Krähenauguralkunde*, Bez. des 95ten Adhj. in Varâh. Bṛh. S. 2 (S. 7, Z. 2). 107,11. Verz. d. Cambr. H. 36. Davon adj. वायसविद्यिक *sich damit beschäftigend, damit vertraut* P. 4, 2, 60, Vârtt. 3, Schol.

वायसादनी f. *Krähenfutter*, Bez. zweier Pflanzen: = काकतुण्डी und महाज्योतिष्मती Râǵan. im ÇKDr.

वायसान्तक m. *der Vernichter —, der Feind der Krähen* d. i. *die Eule* MBh. 10, 40.

वायसाराति m. dass. AK. 2,5,15.

वायसाह्वा f. *die nach der Krähe Benannte*, Bez. zweier Pflanzen: = काकमाची und काकनामन् Râǵan. im ÇKDr.

वायसीकर् (1. वायस + 1. कर्) *in eine Krähe verwandeln:* त्वरमाणेन मूर्खेण मयूरो वायसीकृतः Spr. (II) 186.

वायसीभू (1. वायस + 1. भू) *in eine Krähe verwandelt werden:* °भूत Kathâs. 114, 131.

वायसेतु (1. वायस + इतु) m. *Saccharum spontaneum Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

वायसोलिका f. *eine best. Arzeneipflanze* Çabdar. im ÇKDr.

वायसोली f. dass. AK. 2,4,5,9. — Vgl. काकोली.

वायस्क Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4, 188 angeblich nach gaṇa यावादि zu P. 5,4,29.

1. वायु (von 2. वा) Uṇâdis. 1,1. m. 1) *Wind, Luft;* personif. *der Gott des Windes* (häufig mit Indra zusammen angerufen; s. ṚV. 1, 134. fg. 2,41. 7,90. 92) Naigh. 5,4. Nir. 10,1. AK. 1,1,1,57. H. 21. 1106. Halâj. 1,75. 5,61. 70. सोमं शुक्रो वायवे ऽयामि ṚV. 7, 64, 5. इन्द्रो यो वायुना जयति गोमतीषु 4,21,4. प्र वां वायुं रथयुजं कृणुध्वम् 5,41,6. Indra-Vâju 4,36,3. fgg. 7,90,7. 91,2. fgg. pl. ṚV. 8,7,3. 4,17. प्र वायवः पात्यग्रंणीतिम् 2,11,14. यां दिशं वायुरेति तां दिशं वृष्टिरन्वेति Çat. Br. 8,2,3,5. म्लोचन्ति ह्यन्या देवता न वायुः 14,4,3,33. यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः 4,1,3,19. TS. 2,1,1,1. 7,1,5,1. 5,10,2. °सम Pâr. Gṛhj. 2,17. बलमाहारयामास यद्वायोर्ज्ञगतः तये MBh. 1,6030. यं न वायुर्नादित्यः पुरा पश्यति मे प्रियाम् 3,2353. वायुना धूयमानो हि वनं दहति पावकः 2733. शीत Megh. 43. वायो सरति 54. चण्डवेग Varâh. Bṛh. S. 25,5. पूर्व 27,1. आग्नेय 2. दक्षिण 3. नैर्ऋत 4. वायव्य 6. उत्तर 7. ऐशान 8. शिव Bhâg. P. 3,15,38. ये वायवः सप्त MBh. 13,1005. Hariv. 2479. 9494. आकाशात्तु विकुर्वाणात्सर्वगन्धवहः शुचिः। बलवाञ्जायते वायुः स वै स्पर्शगुणो मतः॥ *Luft* M. 1, 76. वायोर्विकुर्वाणाद्विरोचिष्णु तमोनुदम्। ज्योतिरुत्पद्यते 77. Verz. d. Oxf. H. 225, *a*, No. 549. यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः M. 3,77. वायोराकर्षणम् *das Einathmen von Luft* Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,26. उत्क्षिप्य वायुम्, वायुर्यक्तीतव्यः 27. तत्र श्वासो नाम बाह्यस्य वायोरन्तरानयनम् प्रश्वासः पुनः कोष्ठस्य बहिर्निःसारणम् Sarvadarçanas. 174,13. fgg. वायुं पीत्वा MBh. 13,360. भुजगो वायुमश्नाति Pańkat. 184,11. यत्र कन्यान्तःपुरे वायुं मुक्त्वा नान्यस्य प्रवेशो ऽस्ति 44,11. unter den fünf Elementen Njâjas. 1,1,13. Verz. d. Oxf. H. 240, *b*, 3. Sarvadarçanas. 106, 3. 176,1. fgg. °धातु 21, 6. वायुः खात् *Hauch* VS. Prât. 1, 6. Îçop. 17. *fünf Winde* im Körper AK. 1,1,1,59. Sâṁkhjak. 29. Hariv. 2479. 9494. Verz. d. Oxf. H. 225, *b*, No. 549. in der Medicin (wie वात u. s. w.) Suçr. 1,23,10. 48,4. 80,1. वायुनाक्रान्तदेहः so v. a. वायुरोगेणाक्रान्त° Kathâs. 64,14. — गाथा वायुगीताः M. 9,42. MBh. 1, 7682. वायुरन्तरीक्षादभाषत 3, 2991. वायोरस्त्रम् 12020. Suçr. 1,19,18. Varâh. Bṛh. S. 43, 44. 46, 64 (*Luftgott*). 53,63. गन्धानां चैव सर्वेषां भूतानामशरीरिणाम्। शब्दाकाशवलानां (काल st. आकाश die neuere Ausg.) च वायुरीशस्तदा कृतः॥ Hariv. 12493. 265. Fürst der Gandharva VP. 153, N. 1. ततः प्रभञ्जनो वायुर्ब्रह्मणा चोदितः। मा शब्द इति सर्वत्र प्रचक्रामाथ तां सभाम्॥ Hariv. 2911. Wagenlenker des Feuers 2480. Ragh. 3, 37. °मतनिबर्हण Verz. d. Oxf. H. 250, *b*, 39. Regent des Nakshatra Svâti Weber, Ǵjot. 94. Nax. 2,300. 373. Hüter von Nordwest H. 169. pl. *die* Marut Kathâs. 115,57. Mârk. P. 128, 28. deren neunundvierzig H. ç. 5. sg. N. eines der Marut R. 1,47,5. Mit. 142,12. eines Vasu Hariv. 11540. Weber, Râmat. Up. 312. — वायुप्रणेत्र Çat. Br. 4, 4, 1, 5. °चिति 8,4,1,12. वायोरभिक्रन्दः N. eines Sâman Lâṭj. 7,3,11. Ind. St. 3, 235, *a*. वायोरनत्यम्, आदित्यम्, ऐषिरम्, परम्, पराणम्, भासम्, विकर्म, व्रतम्, स्परम्, स्वरम् und स्वर्ग्यम् desgl. Ind. St. ebend. — 2) N. pr. eines Daitja Hariv. 2285. 14288. — 3) Bez. *des 4ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — 4) mystische Bez. *des Buchstabens* य Weber, Râmat. Up. 317. fg. — Vgl. महा°.

2. वायु (von 3. वा) adj. *matt, müde:* ते वायवे मनवे बाधितायावासयन्नुषसं सूर्येण ṚV. 7, 91, 1. Der Vers ist durch Missverstehen des वायवे an seine Stelle gekommen.

3. वायु (von वी) adj. 1) *appetens:* वायवः स्थोपायवः स्थ TS. 1,1,1,1. VS. 1,1. Kälber sind angeredet: *ihr seid Näscher, seid zudringlich;* deshalb trennt man sie von den Müttern. = गन्तारः Comm. zu TS. — 2) etwa (*zum Genuss*) *einladend, appetitlich:* वनर्षदो वायवो न सोमाः ṚV. 10,46,7. ये वायवे (d. i. °वः, nicht °वे, wie Padap. annimmt) इन्द्रमादनासः 7,92,4.

वायुक m. Hypokoristikon von वायुदत्त P. 5,3,83, Vârtt. 6, Schol.

वायुकेतु m. *Staub* Hâr. 158. — Vgl. वातकेतु.

वायुकेश adj. etwa *flatternde Haare habend:* Gandharva ṚV. 3,38,6.

वायुगण्ड m. *Blähungen, Indigestion* Trik. 2,6,14.

वायुगुल्म m. *Strudel* Trik. 1,2,11.

वायुगोप adj. *den Wind zum Hüter habend* ṚV. 10,151,4.

वायुग्रन्थि m. *eine Verhärtung in Folge einer Störung des Windes im Körper* Mârk. P. 39,55.

वायुग्रस्त adj. *vom Winde gepackt, in einem best. krankhaften Zustande sich befindend* Varâh. Bṛh. S. 87,37 (= अनिलेन क्रोडीकृतः Comm.). Daçak. 92,18.

वायुचक्र m. N. pr. eines der sieben Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2222.

वायुज Pańkat. 44,14 fehlerhaft; die ed. Bomb. liest सवाङ्कयुगलं चिरञ्जार्जुनवृत्त°.

वायुज्वाल m. N. pr. eines der sieben Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2222.

वायुत्व (von 1. वायु) n. *der Gattungsbegriff Luft* Sarvadarçanas. 106,8.

वायुदत्त m. N. pr. eines Mannes gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. सख्यादि zu 2,80. 5,3,86, Vârtt. 6, Schol. Davon मैय und °दैय्य adjj. 4,2,104,

Vârtt. 23, Schol.

1. वायुदत्तेय adj. von वायुदत्त gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

2. वायुदत्तेय m. patron. von वायुदत्त gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वायुदारु m. *Wolke* Trik. 1,1,82. Hâr. 18.

वायुदिश् f. *die Weltgegend des Windgottes* d. i. *Nordwest* Varâh. Bṛh. S. 31,4. 87,24.

वायुदीप्त adj. als Auguralausdruck von Thieren Varâh. Bṛh. S. 86, 58. — Vgl. u. दीप्.

वायुदेव adj. Vâju *zur Gottheit habend*, n. *das* Nakshatra Svâti Varâh. Bṛh. S. 60,21.

वायुदैवत adj. dass.: इद्वत्सर Weber, Gjot. 35.

वायुदैवत्य adj. dass. Varâh. Bṛh. S. 81,8.

वायुधारणा adj. in Verbindung mit दिवस Bez. *gewisser Tage in der lichten Hälfte des* Ǵjaishṭha Varâh. Bṛh. S. 22,1.

वायुन (?) m. *ein Gott* H. ç. 3.

वायुनिघ्न adj. = वायुग्रस्त Daçak. 93,2.

वायुपथ m. 1) *Windpfad*, Bez. *einer best. Region im Luftraum* Hariv. 13379. R. 4,60,8. 20. Vgl. वातपथ. — 2) N. pr. eines Fürsten Kathâs. 106,164. fgg.

वायुपुत्र m. *ein Sohn des Windgottes*, patron. 1) Hanumant's R. 1, 3, 36. 4,4,11. 5,30. Weber, Râmat. Up. 361. fg. — 2) Bhîma's Dhanaṅǵaja im ÇKDr.

वायुपुत्राय् (denom. von वायुपुत्र) Hanumant *darstellen*: °पुत्रायितं (impers.) तया संयाब्धिलङ्घने Râǵa-Tar. 6,226.

वायुपुर n. N. pr. einer *Stadt* Wilson, Sel. Works II, 23.

वायुपुराण n. *das vom Windgotte geoffenbarte* Purâṇa, N. eines Purâṇa VP. Einl. XXII. fg. Verz. d. Oxf. H. 47,*a*, No. 103. 65,*b*,16. 67,*b*, No. 117. 84, No. 142. 182,*b*,3 v. u. 270,*b*,41. Verz. d. B. H. No. 1231.

वायुफल n. 1) *Hagel*. — 2) *Regenbogen* H. an. 4,297. Med. l. 163.

वायुबल m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2221. eines Kriegers auf Seiten der Götter im Kampfe gegen die Asura Kathâs. 48,17. 20.

वायुबीज ? Sarvadarçanas. 170,17.

वायुभक्ष 1) adj. (f. आ) *nur Luft geniessend, von Luft lebend* MBh. 2, 296. 5,7347. R. Gorr. 1,45,2. 52,25. Bhâg. P. 4,8,75. 23,5. — 2) m. N. pr. eines Muni MBh. 2,108.

वायुभक्षक adj. = वायुभक्ष Spr. 2131.

वायुभक्ष्य 1) adj. dass. R. Gorr. 1,65,29. 3,15,12. — 2) m. *Schlange* Râǵan. im ÇKDr.

वायुभूति m. N. pr. eines der eilf Gaṇâdhipa bei den Ǵaina H. 31. Wilson, Sel. Works I, 298. 300.

वायुभोजन adj. *nur Luft geniessend, von Luft lebend* Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,1. Bhâg. P. 7,4,23.

वायुमण्डल 1) m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2221. — 2) n. *Wirbelwind* MBh. 12,6886.

वायुमत् (von 1. वायु) adj. P. 8,2,9, Schol. 1) *mit Wind verbunden* Kâtj. Çr. 4,14,13. — 2) *das Wort* वायु *enthaltend* u. s. w. TS. 5,2,10, 7. 3,3,4. 5,1,2.

वायुमय adj. *die Natur der Luft* oder *des Windes habend* Çat. Br. 14, 7,2,6. MBh. 12,6886.

वायुमरुल्लिपि f. N. einer mythischen Schrift Lalit. ed. Calc. 144,4.

वायुर adj. nach dem Comm. *windig* (von 1. वायु) Çat. Br. 14,8,1,1.

वायुरुजा f. *Wind-Krankheit* so v. a. *Entzündung*: नेत्राभ्यां सरुजाभ्यां यः प्रतिवातमुदीक्षते । तस्य वायुरुजात्यर्थं नेत्रयोर्भवति ध्रुवम् ॥ MBh. 12,5210.

वायुरेतस् m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2222.

वायुरोषा f. *Nacht* Ǵaṭâdh. im ÇKDr. wohl fehlerhaft für वासुरा उषा (zwei Synonyme).

वायुलोक m. *die Welt des Windgottes* Çâṅkh. Br. 20,1. Kaush. Up. 1,3.

वायुवर्त्मन् n. *der Pfad des Windes* so v. a. *Luftraum*, *Atmosphäre* H. 163, Schol. Çabdaḱ. im ÇKDr. (angeblich m.).

वायुवाह् m. *Rauch* (*den Wind zum Vehikel habend*) H. 1103.

वायुवाहन adj. *den Wind zum Vehikel habend*; m. Bein. Vishṇu's H. ç. 68. Çiva's Çiv.

वायुवाहिनी f. Bez. *desjenigen Gefässes, welches den Wind im Körper führen soll*, ÇKDr. nach dem Vaidjaka.

1. वायुवेग m. *die rasche Bewegung des Windes*: °सम R. 2,40,17.

2. वायुवेग 1) adj. *windschnell*. — 2) m. N. pr. *a*) eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2221. — *b*) eines Fürsten MBh. 1,2699. 5,80. — 3) f. आ N. pr. einer Jogini Kâlaḱakra 4,29.

वायुवेगयशस् f. N. pr. der Schwester Vâjupatha's Kathâs. 108,153. fgg.

वायुष m. *ein best. Fisch* Râǵav. im ÇKDr.

वायुसंहिता f. Titel einer Schrift Hall 18. Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,46.

वायुसख m. *Feuer* (*den Wind zum Freunde habend*) Halâj. 1,62.

वायुसखि m. dass. AK. 1,1,1,50.

वायुसूनु m. *der Sohn des Windgottes*, patron. Hanumant's R. 1,3, 31. 5,39,31. Weber, Râmat. Up. 301. 305.

वायुस्कन्ध m. *Windregion* Hariv. 13894 (वातस्कन्धान् die neuere Ausg.). Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,19. सप्तम Varâh. Bṛh. S. 81,24. Comm. zu Golâdhj. 4,1. — Vgl. वातस्कन्ध.

वायुहन् m. N. pr. eines der 7 Ṛshi, die als Väter der Marut gelten, MBh. 9,2221.

वायोधस adj. *dem* Vajodhas (Indra) *gehörig* u. s. w. Kâtj. Çr. 4,5, 15. 19,3,3. 6,11. 7,19.

वायोविद्यिक (von 1. वयस् + विद्या) m. *Vogelsteller* Çat. Br. 13,4,3,13.

वाय्य (von वय्य) m. patron. des Satjaçravas Ṛv. 5,79,1. 2.

वाय्वभिभूत adj. = वायुग्रस्त Sarvadarçanas. 78,10.

वाय्वास्पद n. *die Region der Luft*, *Luftraum*, *Atmosphäre* Dhanaṅǵaja im ÇKDr.

वार् n. 1) *Wasser* Naigh. 1,12. Nir. 5,12. AK. 1,2,3,3. H. 1069. Halâj. 3,26. उच्चा चक्रथुः पातवे वाः Ṛv. 1,116,22. कन्याइ वारवायती (nach dem Comm. zu 2) 8,80,1. तप्त VS. 5,11. वार्ध्येस् 22,25. मामनु प्र ते मनः पथा वारिव धावतु *Wasser im Rinnsal* 10,145,6. 2,4,6. डुहे पदेनी दिव्यं घृतं वाः 10,12,3. 99,4. 105,1. AV. 3,13,3. Çat. Br. 6,1,1, 9. Çâṅkh. Çr. 12,16,5. शिववार्विगाह्य Bhâg. P. 4,12,17. Nalod. 3,51.

वाराम् Spr. (II) 546. Prab. 87,6. संसारवारां निधेः 103,14. वार्भिस् Bhâg. P. 3,13,17. 4,1,18. 8,18,31. मरुदग्निवार्धराः 4,24,63. 10,14,11. nom. pl. वारस् (m. oder f.) 4,31,15. — 2) *stehendes Wasser, Teich:* अतोदयच्छवसा क्षामं बुध्नं वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः ṚV. 4,19,4. वारिन्मएडूक इच्छति 9,112,4. 8,87,8. — Die Stellen ṚV. 1,132,3. 10,93,3 scheinen entstellt zu sein; über 4,5,8 s. u. 4. वार 1). — Vgl. वारि, वार्वती.

1. वार m. = वाल 1) *Schweifhaar,* insbes. *Rosshaar,* οὐρά Nir. 1,20. P. 8,2,18, Vârtt. 2. अत्यो न रथ्यो दोधवीति वारान् ṚV. 2,4,4. अश्वस्य 1, 32,12. AV. 10,4,2. अश्व° P. 8,2,18, Vârtt. 2, Schol. — 2) *Haarsieb,* auch n. pl.: अव्यो वारैः परिपूतः ṚV. 8,2,2. तिरो वाराण्यव्यया 9,67,4. 103,2. 1,6. 16,8. 20,1. 50,3. 98,7. — Vgl. उद्धार, पुरु°, वीत°.

2. वार adj. nach dem Comm. *schwer zu bändigen:* Ross TBr. 1,1,8, 3. die Stelle schliesst sich an ṚV. 1,32,12 an.

3. वार (von 1. वर्) m. *das Zurückhalten, Abwehr;* s. तनु°, दुर्वार, बाण°.

4. वार (von 2. वर्) 1) m. *a) Kostbares, Schatz:* सुकृते वारमृएवत्यग्निर्द्वारा व्यृएवति ṚV. 1,128,6. 151,5. वि हव्यमग्निरानुषग्भगो न वारमृएवति (vgl. 1,58,3) 5,16,2. वारं न देवः सविता व्यूर्णुते 9,110,6. Hierher ziehen wir यदुस्त्रियाणामप वारिव (für वारमिव mit unregelmässig behandelter Elision) व्रन् 4,5,8. Incorrect sind wohl die Stellen 1,132,3. 10,74,2. Vgl. अशस्त°, अधद्वार, दाति°, पुरु°, भूरि°, विश्व°. — *b) der für Etwas bestimmte Augenblick, die an Jmd kommende Reihe;* = अवसर und क्षण AK. 3,4,25,163. H. 1509. an. 2,454. Med. r. 66. fg. Halâj. 4,65. स वारो बहुभिर्वर्षैर्भवत्यसुकरो नरैः MBh. 1,6211. सो ऽयमस्माननुप्राप्तो वारः कुलविनाशनः 6218. कस्य वारो ऽद्य भोजने 6308. तस्य वारो ऽद्य संप्राप्तस्तत्र गन्तुम् Kathâs. 18,270. 22,208. एकदा शशकस्यागाद्वार एकस्य तत्कृते 60,96. अथ कदाचिद्वृद्धशशकस्य वारः समायातः Hit. 67,21. Sâh. D. 33,18. वारक्रमात् Kathâs. 115,10. °क्रमेण 18,268. स्ववारं समास्था so v. a. *seinen Platz einnehmen, an seinen Platz sich stellen* R. 2,80,5. सुरतवाररात्रिषु *in den zum Beischlaf bestimmten Nächten* Ragh. 19,18. — *c) Mal* (mit Zahlwörtern): कति कति न वारान् Spr. 5173. Prab. 60,4. वारांस्त्रीनन्यान् Kathâs. 43,124. Râǵa-Tar. 3,332. 4,167. भूरिभिर्वारैः 5,20. वारमेकम् Kathâs. 30,130. °त्रयम् Pańkar. 1,4, 21. 9,35. वाराणां शतं भुङ्क्ते, भूरिवारान् Schol. zu P. 5,4,17. Vop. 7,70. बहुवारान् Schol. zu Bhaṭṭ. 3,32. पञ्चमं वारम् Kathâs. 49,92. वारे तु पञ्चमे 43,125. Râǵa-Tar. 3,333. त्रिवारम् Verz. d. Oxf. H. 102,b,4. सकृत्सकृदेकवारे स्यात् AK. 3,4,32(28),4. एकवारम् (s. auch bes.) *irgend ein Mal* Pańkat. ed. orn. 64,22. सर्ववारम् *alle auf ein Mal, alle zugleich* 58,15. दशवारजप *zehnmalig* Pańkar. 1,8,31. वारं वारम् *oftmals, häufig* Trik. 3,4,3. Spr. 738. Kathâs. 13,132. Hit. 67,12. 85,14. वारं वारेण dass. Trik. 3,4,3. Vgl. त्रि°, बहु°, सप्त°. — *d) der wechselnde (der Reihe nach von einem Planeten beherrschte) Tag, Wochentag* (vollständig दिव°, दिवस°) H. an. Med. जगति तमोभूते ऽस्मिन्सृष्ट्यादौ भास्करादिभिः सृष्टैः। यस्मादिनप्रवृत्तिर्दिनवारो ऽर्कोदयात्तस्मात्॥ Brahmag. सृष्टेर्मुखे धात्तमये क्वि विश्वे ग्रहेषु सृष्टेघिनपूर्वकेषु। दिनप्रवृत्तिस्तदधीश्वरस्य वारस्य तस्माडुदयात्प्रवृत्तिः॥ Çrîpati nach Kern. °प्रवृत्ति Gaṇit. Madhjamâdh. 6, Comm. दिनवारप्रवृत्ति ebend. वारो भौमस्य Verz. d. Oxf. H. 31,a,35. 86,a,38. b,30. 93,a,34. °व्रतानि 285,a,27. 332,a,13. 337,a,18. fgg. 4 v. u. Comm. zu Sûrjas. 1,52. Saṁsk. K. 1,b. गुरु° *Donnerstag* Journ. of the Am. Or. S. 6,177. Vgl. कुल°, दिवस°, प्रतिमङ्गल° (*jeder Dienstag*), बुध°, बृहस्पति°, भट्टारक°, भानु°, भौम°, मङ्गल°, रवि°, शनि°, शुक्र°, सूर्य°. — 2) f. आ *Buhldirne:* तूर्याणि गणिका वाराः (तूर्याणि शतसंख्यानि ed. Bomb.) MBh. 6,5766; vgl. वारकन्यका u. s. w.

5. वार 1) m. *a) Menge* AK. 2,5,39. 3,4,25,163. H. 1411. an. 2,454. fg. Med. r. 66. Halâj. 4,2. चापान्निर्यातो बाणवारः Pârçvanâthak. 4,151 nach Aufrecht. — *b) eine best. Pflanze,* = कुब्ज Trik. 3,3,364. H. an. Med. — *c) Bein. Çiva's* diess. — *d) Pfeil* H. ç. 142. — *e) Thür, Thor* Med. — 2) n. *a) ein Geschirr für berauschende Getränke* (मदिरापात्र) H. an. — *b) ein best. künstlich zubereitetes Gift* H. 1314 (चार v. l.). — Vgl. अश्ववार (in der Bed. *Reiter* auch Râǵa-Tar. 5,342. 453), मधु°, सिन्दु°, सिन्धु°.

1. वारक (von 1. वर्) nom. ag. *Zurückhalter, Abwehrer* Med. k. 131. न चास्ति तस्य वारकः MBh. 12,12079. 12110. अ° vielleicht *keinen Abwehrer habend, ungehemmt* Mârk. P. 49,17. — Vgl. कार°, मारिव्यसन°, वज्र°.

2. वारक = 4. वार 2): वारकेण *der Reihe nach* Pańkat. ed. orn. 44,25.

3. वारक 1) m. *a) ein best. Gang des Pferdes* Med. k. 131. — *b) eine Pferdeart* (अश्वविशेष) Viçva im ÇKDr. *Pferd* Wilson nach ders. Aut. — 2) n. *a)* = कष्टस्थान Hâr. 128. — *b) ein best. wohlriechendes Gras* H. 1158, v. l. für वालक. Brahmavaiv.-P. 2,50.

4. वारक MBh. 14,1130 fehlerhaft für चारक *in Bewegung setzend,* wie die ed. Bomb. liest; Kathâs. 72,20 fehlerhaft für वार्द्धक *Alter.*

वारकन्यका (4. वार + क°) f. *Buhldirne* (*ein umwechselndes* oder *ein zur Verfügung stehendes Mädchen*), neben गणिका Daçak. 78,11. fg. — Vgl. वारनारी, °मुख्या, °युवति, °योषित्, °वधू, °विलासिनी, °सुन्दरी, °स्त्री, वाराङ्गना und गणिका वाराः MBh. 6,5766.

वारकिन् m. 1) *Feind.* — 2) *ein scheckiges Pferd* (चित्राश्व). — 3) *ein von Blättern sich nährender Asket* (पर्णाशिविन् st. पर्णाशीव ÇKDr.). — 4) *das Meer* Med. n. 197.

वारकीर m. 1) *der Bruder der Frau* Trik. 2,6,8; vgl. वारकीर. — 2) = द्वारग्राहिन् (वारग्राहिन् ÇKDr.). — 3) = वाडव. — 4) = यूका. — 5) = रोलरोधिनी (वेणिवेधिनी ÇKDr.). — 6) नीराजितहय Med. r. 288.

वारङ्क m. *Vogel* Trik. 2,5,37.

वारङ्ग Uṇâdis. 1,121. m. *Heft, Griff* Uǵǵval. Suçr. 1,24,10. 101,1. 2. Vâgbh. 25,14.

वारट 1) n. *Feld* Trik. 2,9,2. *eine Menge von Feldern* Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. आ = वरटा *das Weibchen der Gans* H. 1327. N. *eines zu den* विष्किर *gehörigen Vogels* Vâgbh. 6,47.

1. वारण (von 1. वर्) 1) adj. (f. ई) *a) abhaltend, abwehrend, hemmend* Med. t. 205 (= निराकृति). परवारण° *feindliche Elephanten abwehrend* MBh. 1,2822. 3,11097. 14,2184. Hariv. 4553. पर° R. 6,16,20. रश्मि° MBh. 13,4641. व्याघात° AK. 2,8,2,52. H. 776. अशेषविघ्नौघ° Kathâs. 67, 1. वारणः शक्रवारणः *der Allen Widerstand leistende Elephant* Indra's Hariv. 1700. वारि जले रणति चरतीति वारणः समुद्रोद्भव इत्यर्थः Nilak. — *b) Abwehr betreffend* Suçr. 1,8,17; vgl. 119,10. — *c) scheu, wild:* मृग ṚV. 8,33,8. 10,40,4. वृक 8,55,8. एणी AV. 5,14,11. न्यर्प्न्येन वनिनो मृष्ट वारणः (अग्निः) ṚV. 1,140,2. — *d) gefährlich:* अघेषु ṚV. 10,185,2. रक्षांसि Shaḍv. Br. 3,1. — *e) verboten:* बहु वारणं क्रियते Ait. Br. 5,

21. — 2) m. a) *Elephant* AK. 2,8,2,2. H. 1217. an. 3,224. Med. ṇ. 67. Halâj. 2,59. 1,151. M. 3,10. MBh. 1,2822. 2826. 6005. 3,2857. 6,1763 (वरवारण ed. Bomb. st. रणवारण). 8,457. 14,2184. 2227. R. 2,55,33. 63,21. 91,8. R. Gorr. 2,47,3. Suçr. 1,104,6. 107,3. 112,2. Mṛkkh. 2, 1. Ragh. 12,93. Kumâras. 5,70. Spr. 227 (II). 692. 2771. 4984. Varâh. Bṛh. S. 79,7. 81,29. 94,14. Gît. 12,24. Kathâs. 6,110. 19,68. 27,172. 52,118. 61,172. Daçak. 115,14. Naish. 22,45. शक्र° Hariv. 1700. °पति Kâm. Nîtis. 19,62. Spr. 4056. वारणेन्द्र Pańkar. 1,4,61. Bhâg. P. 1,11, 19. 5,25,7. मनो° 4,7,35. ग्रन्तःकरण° Râǵa-Tar. 1,251. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा R. 2,114,2 (nach dem Comm. वारण = कवाट). वारणी (वारिणी gedr.) *Elephantenkuh* H. an. 3,75. — b) *Elephantenhaken* (s. ग्रङ्कुश) Daçak. 115,14. — c) *Panzer* Çabdar. im ÇKDr. — d) Bez. *einer best. Verzierung auf einem Bogen:* वारणा (वरणा ed. Calc.) यत्र सौवर्णाः पृष्ठे भासन्ति दंशिताः MBh. 4,1326. — 3) n. a) *das Abhalten, Abwehren* H. an. Med. P. 1,4,27. Vop. 5,10. 20. AK. 3,4,22(28),13. 3,5, 11. ग्रश्वस्य वडवाभ्यः Kâtj. Çr. 20,2,12. दृंश° Nir. 1,20. Suçr. 1,10,1. 20. MBh. 7,8762. ग्रस्त्राणाम् Hariv. 10618. रौद्रवृष्टि° Pańkar. 1,6,60. ग्रौर्व° MBh. 1,179 in der Unterschr. पृथ्वीभर° Verz. d. Oxf. H. 28,b, 23. ग्राद्युदात्तत्व° Schol. zu P. 2,1,2. 6,3,30. 35. ग्रङ्कुश° *das Abhalten, Zurückhalten, Lenken mittels eines Hakens* H. 1231. Halâj. 2,67. वारण = कृस्तवारण Gaṭâdh. im ÇKDr. — b) *ein Mittel zum Zurückhalten:* न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् Spr. (II) 227. — c) etwa so v. a. वर्मन्. त्रिधातु वारणं मधु ṚV. 9,1,10. — d) = कृरिताल Aush. 34. — e) N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 5,600. — Vgl. ग्रातप°, उष्ण° (auch Râǵa-Tar. 2,150. 3,63. 70), दिग्वारण, दुर्वारण, मत्त° (in der ersten Bed. MBh. 3, 11097), शर°.

2. वारणे (von 1. वरण) adj. *aus dem Holze der Crataeva Roxburghii bestehend* Çat. Br. 13,8,4,1. 8. Kâtj. Çr. 1,3,36. 21,3,31. 4,26. Kauç. 83. 85. etwa auch: निर्तिक्ति यो वारणमन्नमत्ति ṚV. 6,4,5.

वारणकृच्छ्र m. *eine im Trinken von Reiswasser bestehende Pönitenz* (*Elephanten-Pönitenz*): मासं परिमितसक्तूदकपानं वा° Prâjaçkittend. 9,a,5.

वारणकेशर m. = नागकेशर Suçr. 2,496,7.

वारणपुष्प m. Bez. *einer best. Blume* MBh. 13,2831.

वारणबुसा f. *Pisang, Musa sapientum* AK. 2,4,4,1.

वारणवल्लभा f. dass. Trik. 2,4,27.

वारणशाला f. *Elephantenstall* R. 1,12,11.

वारणसाह्वय adj. in Verbindung mit पुर oder n. mit Ergänzung dieses Wortes *die nach den Elephanten benannte Stadt* d. i. Hâstinapura MBh. 1,4966. 3,11326. 5,6002. 14,1501. Hariv. 9596. 11067. — Vgl. गजसाह्वय, नागसाह्वय.

वारणस्थल n. N. pr. einer Oertlichkeit (*Elephantenstation*) R. Gorr. 2,73,8.

वारणानन adj. *ein Elephanten-Gesicht habend*, m. Bein. Gaṇeça's Kathâs. 67,1.

वारणावत n. N. pr. einer acht Tagereisen von Hâstinapura an der Gaṅgâ gelegenen Stadt LIA. I, 662. fg. MBh. 1,377. 2250. 3822. 5647. 5710. 5714. 5874. 5904. 5,934. 1989. 2595. Hariv. 2096.

वारणावतक adj. *in* Vâraṇâvata *wohnend:* जनाः MBh. 1,5770. 5835.

वारणाह्वय = वारणसाह्वय MBh. 3,15083. 15,1098.

1. वारणीय (von 1. वर्) adj. *abzuhalten:* ग्र° *unaufhaltsam, unwiderstehlich:* उदक MBh. 1,693. ग्रस्त्र 4,2112. 5,1888. Kathâs. 57,1. — Vgl. दुर्वारणीय und unter ग्रवारण.

2. वारणीय (von 1. वारण) adj. *an Elephanten befindlich* u. s. w.: कर *Elephantenrüssel* Kathâs. 57,1.

वारतन्तव m. patron. von वरतन्तु Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,35 (चारतंतताः die Hdschr.).

वारतन्तवीय m. pl. *die Schule des* Varatantu P. 4,3,102. Ind. St. 1,68, N. (वार्तान्तवीय gedr.). 3,257 (वार्तन्तवीय). 274 (वार्तांतवेय).

वारत्र n. = वरत्रा *Riemen* ÇKDr. und Wilson.

वारत्रक adj. (देशे) von वरत्रा gaṇa राजन्यादि zu P. 4,2,53.

वारधान m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2405. fehlerhaft für वाटधान, wie die ed. Bomb. liest.

वारनारी f. *Buhldirne* Kathâs. 73,137. 122,69. am Ende eines adj. comp. °क 16,85. — Vgl. वारकन्यका, वारयोषित् u. s. w.

वारपाशि s. वारपाश्य.

वारपाश्य m. pl. N. pr. eines Volkes: वारपाश्यापवाह्काः MBh. 6,352. वारवास्यायवाह्काः ed. Bomb. वारपाशि Wilson in VP. 188 (2,165 in der zweiten Auflage). — Vgl. पाशिवाट.

वारबाण m. n. gaṇa ग्रर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,13. = बाणवार *Panzer, Wamms, Jacke* AK. 2,8,2,31. Trik. 3,3,14. H. 767. an. 4, 87. Halâj. 2,397. 5,9. Ragh. 4,55. Çiç. 15,118.

वारबुषा f. = वारणबुसा Çabdar. im ÇKDr.

वारवृषा f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

वारमुख्या f. *Buhldirne* AK. 2,6,1,19. H. 533. Halâj. 2,335. häufig in Verbindung mit वेश्या, auch ग्रङ्गना MBh. 3,10020. 5,3054. Hariv. 8665. R. 1,9,11. R. Gorr. 1,9,10. 79,41. Bhâg. P. 1,11,20. 9,10,38. 10,53,42. Daçak. 66,4. 5. Das m. etwa in der Bed. *Tänzer, Sänger* Mârk. P. 69,15. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारयितव्य (von 1. वर्) adj. *abzuhalten von* (acc.): न तद्वारयितव्यास्मि MBh. 1,3898.

वारयुवति f. *Buhldirne* Daçak. 59,13. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारयोषित् f. dass. Ragh. 3,19. Kathâs. 23,79. Sâh. D. 60,14. Bhâg. P. 10,75,15. वारयोषिन्मुख्याः Daçak. 76,8.

वाररुच adj. *von* Vararuki *verfasst:* काव्य Pat. in Verz. d. Oxf. H. 160,a,36. ग्रन्थ P. 4,3,116, Schol. पुष्पसूत्र Weber, Hâla S. 258.

वारलक s. नन्दि°.

वारला f. 1) *eine Art Bremse* H. an. 3,674. Med. l. 118. — 2) *das Weibchen der Gans* H. 1327. H. an. Med. Halâj. 2,96. — Vgl. वरला, वारटा.

वारलीक m. *eine Grasart,* = वल्वजा Çabdar. im ÇKDr.

वारवत्या f. N. pr. eines Flusses MBh. 2,374.

वारवधू f. *Buhldirne* H. 533. Çiç. 11,20. Kathâs. 82,32. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारवत् (von 1. वार) adj. *langschweifig:* Ross ṚV. 1,27,1.

वारवन्तीय (von वारवन्त्) n. N. eines Sâman P. 5,2,59, Schol. TS. 5,5,8,1. TBr. 1,5,12,1. 8,2,5. 2,7,14,2. Âçv. Çr. 6,8,12. Pańkav. Br.

13,10,4. 17,5,7. Lâṭj. 7,4,8. 9,5,15. Ind. St. 3,235,a. वारवन्तीयाद्य n. und वारवन्तीयोत्तर n. ebend. इन्द्रस्य वारवन्तीयम् 208,b.

वारवाणि 1) m. a) *Flötenspieler* Trik. 1,1,124. *ein vorzüglicher Sänger* Çabdar. im ÇKDr. — b) *Richter.* — c) *Jahr* Agajapâla im ÇKDr. — 2) f. *Buhldirne* Trik. 2,6,5. °वाणी Çabdar. im ÇKDr.

वारवाणा m. n. v. l. für वारबाण gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31.

वारवाल m. N. pr. eines Agrahâra Râga-Tar. 1,121.

वारवासि s. वारवास्य.

वारवास्य m. N. pr. eines Volkes: वारवास्यापवाहाः MBh. 6,352 nach der Lesart der ed. Bomb. वारपाश्यापवाहाः ed. Calc. वारवासि Wilson in VP. (II) 2,165.

वारविलासिनी f. *Buhldirne* Kathâs. 12,78. 82,24. Spr. 3167. Sâh. D. 8,13. Prab. 15,3. 37,8, v. l. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वारसुन्दरी f. dass. Hâr. 144.

वारसेवा f. *Hurerei, Hurenwirthschaft* Gaṭâdh. im ÇKDr.

वारस्त्री f. *Buhldirne* AK. 2,6,1,19. Halâj. 2,335. — Vgl. वारकन्यका u. s. w.

वाराङ्गना f. dass. Spr. 3132, v. l. Kathâs. 21,7. Râga-Tar. 4,660. — Vgl. रङ्ग°.

वाराटकि m. patron. gaṇa गह्लादि zu P. 4,2,138. Davon adj. वाराटकीय ebend.

वाराणसी f. N. pr. einer Stadt, das heutige Benares, Trik. 2,1,16. H. 974. Halâj. 2,132. gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97. Schol. zu 2,1,16. MBh. 1,4084. 3,8056. 5,1883. 13,694. von Divodâsa erbaut 1955. 5795. 14,141. Lalit. ed. Calc. 20,12. 331,13. Spr. 920. Kathâs. 3,27. 19,54. 37,97. 69,48. 53. Râga-Tar. 3,297. Prab. 19,8. Prâjaçkittend. 11,b,2. Verz. d. Oxf. H. 10,a,9. 39,a,31. 46,a,32. 53,a,39. 64,a,7. 68,b, No. 120. fgg. 83,b, No. 141. 121,b, No. 214. Bhâg. P. 7,14,31. Pañkar. 4,2, 17. Vet. in LA. (III) 4,21. Çuk. ebend. 34,16. Hit. 49,22. Kshitîç. 17,5. °माहात्म्य Verz. d. Oxf. H. 8,a,28. 42,a,6. 75,b,25. 85,a,8. °श्रीपर्वतयोर्माहात्म्यम् 45,a,3. °नाथ Verz. d. B. H. No. 1242. Das Wort wird auf die Namen zweier Flüsschen nördlich und südlich von der Stadt, वरणा und असि oder असी (auch नाशी), zurückgeführt; vgl. Gâbâlop. in Ind. St. 2,74. Verz. d. Oxf. H. 46,a,32. Sherring, Sacred city 34. Padma-P. Kâçikh. 5,58. Hall Introd. ebend. — Vgl. वाणारसी.

वाराणसेय adj. von वाराणसी gaṇa नद्यादि zu P. 4,2,97.

वारालिका f. Bein. der Durgâ Trik. 1,1,52.

वारावस्कन्दिन् adj. Bez. des Agni Lâṭj. 1,4,4.

वारासन (वार् + 1. आसन) n. *Wasserbehälter* Trik. 2,9,7. Hâr. 214. — Vgl. वाःसदन und 4) वरासन.

वाराह (von वराह) 1) adj. (f. ई) a) *vom Eber kommend, zu ihm —, zu* Vishṇu *als Eber in Beziehung stehend:* उपानहौ *aus Schweinsleder gemacht* TBr. 1,7,9,4. Çat. Br. 5,4,3,19. Lâṭj. 9,1,24. मांस *Fleisch vom Wildschwein* Jâǵn. 1,258. MBh. 2,97. R. 2,91,66 (100,64 Gorr.). Suçr. 1,205,7. Verz. d. Oxf. H. 60,a,18. Varâh. Bṛh. S. 81,23. रूप *die Gestalt eines Ebers* MBh. 3,1558. 5088. 10959. 15829. Hariv. 2135. 5862. Kathâs. 11,56. 26,179. Liñga-P. bei Muir, ST. IV, 34. तनु Hariv. 12420. Bhâg. P. 3,18,20. Mârk. P. 88,18. वपुस् 21,36. 47,7. VP. bei Muir, ST. IV, 31. प्रादुर्भाव Hariv. 2131. 2226 (die ältere Ausg. fälschlich वराह). ज्ञातक Kathâs. 72,120. आसन Verz. d. Oxf. H. 11,a, N. 1. पुट s. u. गन्ध 5). तन्त्र Kathâs. 39,37. Râga-Tar. 6,186. 204. कल्प Bhâg. P. 3,11, 36. Mârk. P. 46,44. Verz. d. Oxf. H. 21,b, N. 2. 24,b,19. 50,a,33. 52, a,11. 65,b,30. 67,b, No. 117. मन्त्र Weber, Râmat. Up. 314. 361. बीज 315. पुराण Madhus. in Ind. St. 1,18,9. VP. 284. Verz. d. B. H. No. 1170. Verz. d. Oxf. H. 35,a,1. 57,a, No. 105. 59,a,39. 65,a,42. 79,b,37. 101, b,47. 104,a,20. Mârk. P. S. 659, Çl. 3. वाराहाख्या संहिता Verz. d. Oxf. H. 82,a,34. गायत्री Colebr. Misc. Ess. II, 152. Ind. St. 8,239. fg. — b) *von* Varâhamihira *verfasst, — ausgesprochen:* संहिता Titel von Varâhamihira's Bṛhatsam̃hitâ in den Hdschrr. °तान्त्रिकमुकुन्दमत Verz. d. B. H. No. 880 = Verz. d. Oxf. H. 334,a,3. — 2) m. a) Vishṇu *als Eber* MBh. 3,10927 (vgl. aber 10944). 17205 (वराह ed. Bomb.). Pañkar. 4,7,5. Weber, Kṛshṇaǵ. 294. 296. — b) *ein Banner mit dem Bilde eines Ebers* MBh. 6,4134 nach der Lesart der ed. Bomb. (वराह ed. Calc.). — c) *Dioscorea:* °कन्द *Yamswurzel* Suçr. 1,226,4. = d) N. pr. eines Berges (vgl. वराह) MBh. 12,13422 (वराह ed. Bomb.). Hariv. 12407. 12559. — e) pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 3,258. — Die dem m. वाराह zugetheilten Bedd. H. an. 3,768. fg. kommen वराह zu, wie ohne Zweifel auch zu lesen ist. — 3) f. ई a) *die personif. Energie* Vishṇu's *als Eber* H. 201, Schol. an. 3,769. Med. h. 22. Mit. 142,10. Weber, Râmat. Up. 326. Verz. d. Oxf. H. 23,b,25. 25,b, N. 5. 71,b,12. 81, a,41. 184,a,5. 9. pl. unter den Müttern Skanda's MBh. 9,2556. — b) *Dioscorea* AK. 2,4,5,16. Trik. 3,3,80. H. an. Med. Varâh. Bṛh. S. 54, 87. Suçr. 2,53,9. 100,16. 103,19. °मूल *Yamswurzel* 159,5. कृष्णसर्पस्वरूपेण वाराही कन्दसंभवा 161,10. — c) N. pr. eines Flusses Verz. d. Oxf. H. 65,b,34. — 4) n. a) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,5088; vgl. वाराहतीर्थ. — b) N. eines Sâman Ind. St. 3,235,b. — Vgl. महा°, वज्रवाराही.

वाराहक adj. von वराह P. 4,2,80.

वाराहकर्णी f. = वराहकर्णी *Physalis flexuosa Lin.* Râgan. im ÇKDr. Aush. 37.

वाराहतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,7. 77,a,14. — Vgl. वाराह 4) a).

वाराहद्वादशी f. = वराहद्वादशी Verz. d. Oxf. H. 58,a,26. fg.

वाराहपत्री f. = वाराहकर्णी Râgan. im ÇKDr.

वाराहाङ्गी f. *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* Bhâvapr. im ÇKDr.

वाराहीतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,b,12. 104,a, 21. 108,b,27. 109,a,26. 279,a,47. 292,b,11. Verz. d. B. H. No. 1312.

वाराहीय n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 95,b,13.

वाराह्या f. patron. von वराह P. 4,1,78, Schol.

1. वारि Uṇâdis. 4,124. n. 1) = वार् *Wasser* Naigh. 1,12. AK. 1,2, 3,3. H. 1069. an. 2,455. Med. r. 68. Halâj. 3,26. 5,68. यथा खनन्खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति Spr. 4779. Varâh. Bṛh. S. 54,58. निपतति वारि तदा नचिरेण vom *Regen* 28,8. 9,37. 23,3. न वार्यञ्जलिना पिबेत् M. 4,63. °स्थ 37. वार्यनिलाशन adj. 6,31. घटं पूर्णं परमवारिणा R. 2,64,3. Kathâs. 18,302. मेघन्न MBh. 1,1136. वातास्त Halâj. 1,59. वेला वृद्धिश्च वारिणः 2,32. महावारि *Erde und Wasser* M. 5,126. 134. महावारिशुचि 106.

कुश° 11,148. चन्दन° R. 3,53,57. येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः P. Einl. 2. समाप्लुताभ्यां नेत्राभ्यां शोकजेनाथ वारिणा MBh. 3,2172. 2965. R. 2,30,24. 5,31,3. acc. वारिम् Hariv. 12055. — 2) *ein best. Parfum*, = ह्रीबेर H. an. Med. — 3) allegorische Bez. *eines Metrums von 94 Silben* RV. Prât. 17,5. Ind. St. 8,107. 111. — Vgl. नेत्र°, मद°.

2. वारि f. 1) *ein Ort, wo Elephanten eingefangen* oder *angebunden werden*, H. 1229. an. 2,455. Med. r. 68. वारी AK. 2,8,2,11. Med. r. 67. Halâj. 2,68. Dhar. im ÇKDr. वार्यर्गलाभङ्ग Ragh. 5,45. — 2) *ein Gefangener* H. an. — 3) *Rede, die Göttin der Rede* H. an. Med. r. 68. — 4) वारी *Topf, Krug* Med. r. 67. Dhar. im ÇKDr.

3. वारि nach Mahîdh. adj. = वरणीय in der Stelle: एष मे देवेषु वसु वार्यायक्ष्यते VS. 21,61. es ist aber वार्यम् आ° aufzulösen.

वारिक s. नाग°.

वारिकण्टक m. *Trapa bispinosa Lin.* Trik. 2,4,30.

वारिकर्णिका f. *Pistia Stratiotes Lin.* Çabdar. im ÇKDr.

वारिकर्पूर m. *ein best. Fisch*, = इल्लिश Trik. 1,2,18.

वारिकुब्जक m. *Trapa bispinosa Lin.* Trik. 1,2,37.

वारिकोश m. = कोशवारि *das beim Gottesurtheil angewandte Weihwasser* Kathâs. 119,39.

वारिक्रिमि m. = जलमक्षिका *Wasserfliege* Trik. 1,2,25.

वारिगर्भोदर adj. *regenschwanger*: घन Çâk. 166.

वारिचत्वर m. *Pistia Stratiotes Lin.* Trik. 1,2,35.

वारिचर 1) adj. *im Wasser lebend, Wasserbewohner*: पक्षिन् MBh. 12, 9015. खग R. 4,44,42. चक्रहंसादिद्वन्द्वैर्वारिचरोत्तितैः Kathâs. 72,40. m. *Fisch* Dhanaṅgaja im ÇKDr. MBh. 12,5953. Bhâg. P. 6,9,22. 9,6,50. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes (*Fischer*) Varâh. Bṛh. S. 14,14. Mârk. P. 58,25.

वारिचामर n. *Vallisneria (Blyxa) octandra Roxb.* Trik. 1,2,35. — Vgl. अम्बुचामर.

वारिज 1) adj. *im Wasser entstanden* u. s. w. — 2) m. *Muschel* H. 1204. Çabdam. im ÇKDr. MBh. 4,2188. 8,409. 2985. 3043. R. 7,7,23. *Muschel* (*Fisch* Nîlak.) oder *Wasserrose* MBh. 1,3373. — 3) n. *a*) *Wasserrose* H. 1162, Schol. Râgan. im ÇKDr. Spr. 2973. Çiç. 4,66. Kathâs. 42,224. 43,62. Bhâg. P. 10,20,47. वारिजात Verz. d. Oxf. H. 29,*a*,1. — *b*) *eine best. Gemüsepflanze* (गौरसुवर्ण). — *c*) *Gewürznelke*. — *d*) *eine Art Salz* (द्रोणीलवण) Râgan. im ÇKDr. — Vgl. वारिसंभव.

वारिजात adj. *im Wasser entstanden*; m. *Muschel* MBh. 8,4805.

वारिजावन् Vop. 26,69.

वारिजीवक adj. *durch Wasser seinen Lebensunterhalt habend* Varâh. Bṛh. S. 15,18.

वारितस्कर m. *Wasserdieb*: 1) Beiw. der Sonne, *die mit ihren Strahlen das Wasser an sich zieht*, Mârk. P. 78,26. 105,8. 108,14. — 2) *Wolke* Çabdam. im ÇKDr.

वारिति adj. nach dem Comm. *am Wasser wachsend, Wasserpflanze*: देवं बर्हिर्वारितीनाम् VS. 21,57. 28,21. 44. TBr. 2,6,14,5. Âçv. Çr. 3,6,13.

वारित्रा f. *Regenschirm* Trik. 2,10,13. — Vgl. जलत्रा.

वारिद 1) adj. *Wasser gebend* M. 4,229. *Regen gebend*: गर्भाः Varâh. Bṛh. S. 21,12. — 2) m. *Regenwolke* AK. 1,1,2,8. H. 164, Schol. Mṛkkh. 86,20. Spr. 1332. 1840. 2776. 4891. Uttarar. 93,6 (120,14). Wilson, Sâṅkhjak. S. 64. — 3) m. (wie alle Wörter für *Wolke*; vgl. AK. 2,4,3, 25) *Cyperus rotundus Lin.* Suçr. 2,224,16. Varâh. Bṛh. S. 51,15. — 4) n. = वाला Çabdar. im ÇKDr. = बाल *ein best. vegetabilisches Parfum* Wilson nach ders. Aut.

वारिद्र m. *der Vogel* Kâtaka Wilson nach Çabdârthak.

वारिधर m. *Regenwolke* MBh. 3,12340. Mṛkkh. 84,14. Vikr. 73. Spr. 1335. 2522. 4812. Verz. d. Oxf. H. 117,*b*,6.

वारिधानी f. *Wasserbehälter, Wasserfass* Kathâs. 27,91.

वारिधापयन्त m. patron. Âçv. Çr. 12,14,5.

वारिधार m. N. pr. eines Berges Bhâg. P. 5,19,16. VP. 180, N. 3.

वारिधारा f. *Wasserstrom*, sg. und pl. Vjutp. 8. Mṛkkh. 91,4. Megh. 54. Spr. 737. Kathâs. 9,89. 105,47. Prab. 26,6. am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 16,66.

वारिधि m. Vop. 26,182. *das Meer* Çabdar. im ÇKDr. Kir. 1,23. Spr. 177 (II). 2619. Kathâs. 12,148. 18,301. 385. 22,218. 43,195. Râga-Tar. 1,253. 3,71. पूर्व° 479. °सुता Gît. 12,27. sieben *Meere* Bhâg. P. 5,1,40. Bez. *der Zahl vier* (auch *der vierte*) Ind. St. 8,345. — Vgl. नीर°.

वारिन् (wohl von 2. वर्) nom. ag. in मूल° und काण्डवारिणी.

वारिनाथ m. *der Gebieter des Meeres: das Meer; Wolke; der Aufenthaltsort der Schlangen* Çabdârthak. bei Wilson.

वारिनिधि m. *das Meer* H. 1074, Schol. Çabdar. im ÇKDr. Spr. 4992. Kathâs. 25,33. Râga-Tar. 3,78. पूर्व° 327.

वारिप adj. *Wassertrinker, der das Wasser ausgetrunken hat* MBh. 13,7259.

वारिपथ m. *Wasserstrasse, Wasserverbindung*: वारिस्थलपथान्विता भूः Kâm. Nîtis. 4,52. *Wasserfahrt, Seefahrt*: इयं (नौः) वारिपथे युक्ता MBh. 1,5641. वारिपथोपजीविन् *vom Seehandel lebend, Seehandel treibend* Çâk. Ch. 136,11. प्रतिकृतौ संज्ञायाम् gaṇa देवपथादि zu P. 5,3,100.

वारिपथिक adj. *zu Wasser fahrend, — eingeführt* P. 5,1,77, Vârtt. 1.

वारिपर्णी f. *Pistia Stratiotes Lin.* AK. 1,2,3,37.

वारिपालिका f. dass. Çabdam. im ÇKDr.

वारिपूर्णी f. dass. Colebr. zu AK. 1,2,3,37.

वारिप्रवाह m. *Wasserfall* AK. 2,3,5. Çabdam. im ÇKDr.

वारिप्रश्नी (lies °पृश्नी) f. *Pistia Stratiotes Lin.* Çabdam. im ÇKDr.

वारिबदर n. *die Frucht der Flacourtia cataphracta* Trik. 2,4,26. — Vgl. वारिवदन.

वारिबीज (?) Sarvadarçanas. 171,4.

वारिभव n. *Antimonium* Râgan. im ÇKDr.

वारिमन्त् (von 1. वारि) adj. *wasserreich*: वन MBh. 3,16288.

वारिमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Wasser bestehend* MBh. 3,13611. Hariv. 702. 2566. तदा मही वारिमयीव लक्ष्यते in Folge des vielen Regens Varâh. Bṛh. S. 9,36. *am Wasser haftend, dem Wasser eigen*: रस MBh. 12,6852. 14,1411.

वारिमसि f. *Regenwolke* Trik. 1,1,82.

वारिमुच् 1) adj. *Wasser (Regen) entlassend*: प्रभूत° Varâh. Bṛh. S. 3, 16. — 2) m. *Regenwolke* Çabdar. im ÇKDr. Ragh. 4,86. Varâh. Bṛh. S. 3,16. 28,15.

वारिमूली f. *Pistia Stratiotes Lin.* Trik. 1,2,34.

वारियन्त्र n. *Wasserwerk* Mâlav. 33. — Vgl. जलयन्त्र, तोययन्त्र.

वारिरथ m. *Boot, Schiff* Trik. 1,2,12.

वारिराज m. *der Fürst der Gewässer*, Varuṇa Hariv. 2501.

वारिराशि m. 1) *Wassermenge* Ragh. 5,46. — 2) *das Meer* Trik. 1,2, 8. H. 1074, Schol. Spr. 1823. 2486. Kathâs. 56,423. 63,98. 122,110. Pañkar. 3,5,25.

वारिरुह् 1) adj. *im Wasser wachsend*. — 2) n. *Lotusblüthe* Râǵan. im ÇKDr. Hariv. 8817. Kir. 5,13. Kathâs. 33,88. Ḱaurap. 25. — Vgl. कृमि°.

वारिलोमन् m. Bein. Varuṇa's (*bei dem Wasser die Stelle der Haare am Körper vertritt*) Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

वारिवदन n. wohl nur fehlerhaft für वारिबदर Bhûripr. im ÇKDr.

वारिवर m. *Carissa Carandas Lin.* Ǵaṭâdh. im ÇKDr.

वारिवर्णक vielleicht *Sand* (vgl. पानीयवर्णिका) Weber, Kṛshṇaǵ. 267. *Wasserfarbe* Weber.

वारिवल्लभा f. *eine best. Pflanze*, = विदारी Râǵan. im ÇKDr.

वारिवस्कृत adj. von वरिवस्कृत् P. 5,4,36, Vârtt. 5. VS. 16,19.

वारिवह् adj. *Wasser führend, — strömend:* शिववारिवहा नदी R. 2,49,9. पम्पा रम्यवारिवहा 3,79,49. — Vgl. वारिवाह्.

वारिवालक n. = ह्रीवेर *ein best. Arzeneimittel* Hâr. 178.

वारिवास m. *Branntweinbrenner* H. 901.

वारिवाह् 1) adj. (f. आ) *Wasser führend, — strömend:* कूलातिक्रान्तवारिवाहाभिः सरिद्भिः Varâh. Bṛh. S. 9,24. — 2) m. *Regenwolke* AK. 1,1,2,8. H. 164, Schol. Spr. 661. 2354 (vielleicht *der Regengott*).

वारिवाहक adj. *Wasser zuführend, — bringend* Spr. 713.

वारिवाहन m. *Regenwolke* H. ç. 27. Çabdar. im ÇKDr.

वारिवाहिन् adj. *Wasser führend, — strömend:* सरित् Hariv. 9638.

वारिविन्दी f. *eine blaue Wasserrose* Aush. 48 wohl entstellt aus अरविन्द.

वारिविहार m. = जलक्रीडा *Spiel im Wasser, wobei man umherhüpft und sich mit Wasser besprützt*, Ragh. 6,48.

वारिश 1) m. Bein. Vishṇu's (*der im Wasser Ruhende*) Trik. 1,1,32. — 2) n. N. eines Sâman (v. l. für वार्श) Ind. St. 3,235, *b*.

वारिषेण (1. वारि + सेना) m. N. pr. P. 8,3,99, Schol. eines Fürsten MBh. 2,331 (°सेन ed. Bomb.). वारिसेन N. pr. eines Ǵina Wilson, Sel. Works I, 321.

वारिसंभव 1) adj. *im Wasser entstanden, aus dem Wasser gewonnen:* मणि R. 5,37,8. 66,26. 67,9. — 2) m. *eine Rohrart* (पावनालशर). — 3) n. *a*) *Gewürznelke*. — *b*) *die Wurzel von Andropogon muricatus* (उशीर). — *c*) *Antimonium* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. वारिज.

वारिसाम्य *Milch* Aush. 67.

वारिसार m. N. pr. eines Sohnes des Ḱandragupta Bhâg. P. 12,1, 12. LIA. II, 213.

वारिसेन s. वारिषेण.

वारी s. u. 2. वारि.

वारीट m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDr.

वारीय् (von वारि), वारीयते *dem Wasser gleichen* Spr. 899.

वारीश (वारि + ईश) m. *der Herr der Gewässer, das Meer* H. 1073.

वारु m. *ein im Triumph geführter Elephant* (विजयकुञ्जर) Hâr. 160.

वारुठ m. *Todtenbahre* Trik. 2,8,62.

वारुड m. = वरुड P. 5,4,36, Vârtt. 1.

वारुडक (von वरुड) n. संज्ञायाम् gaṇa कुलालादि zu P. 4,3,118.

वारुडकि m. patron. von वरुड Pat. zu P. 4,1,97.

वारुणि (वारुण gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75) 1) adj. (f. ई) *a*) Varuṇa *gehörig, an ihn gerichtet, ihm geweiht, zu ihm in Beziehung stehend:* पाश AV. 6,121,1. 7,83,4. M. 8, 82. MBh. 2, 2323. R. 1,29,9 (30,10 Gorr.). 56,9 (57,10 Gorr.). Bhâg. P. 8,21,26. मैत्रं वा अहर्वारुणी रात्रिः TS. 2, 1,7,3. 5,1,6,1. TBr. 1,7,2,6. 2,7,2,1. Ait. Br. 1,13. 5,26. Çat. Br. 4, 4,5,15. वारुणं यत्कृष्णम् 5,2,5,17. 3,1,5. न्यग्रोधो वारुणो वृक्षः Gobh. 4,7,15. Ḱhând. Up. 2,22,1. Maitrjup. 6,14. AV. Pariç. in Ind. St. 10, 320. Varâh. Bṛh. S. 5,22. 32,20. कम्प 27. 80,9. 81,7. शङ्ख MBh. 2,65. अस्त्र 5,7174. R. 1,56,6 (57,5 Gorr.). 5,58,6. Uttarar. 105,4 (142,10). Kathâs. 14,29. कृच्छ्र Râǵa-Tar. 2,148. व्रत Spr. 2751. fg. लोक MBh. 15, 903. वारुण्यो मातरः स्कन्दस्य 9,2655. गणाः Hariv. 10923. सैन्य 10924. 10929. 13924. युद्ध (प्रयुद्ध die ältere Ausg.) 10928. तनु Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,10. माया 59,*b*,23. स्नान 267,*b*,23. ऋच् M. 8,106. Varâh. Bṛh. S. 24,8. 46,51. Mârk. P. 22,11. भूतानि so v. a. *Wasserthiere* MBh. 1,1132. 12,6807. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,34. मन्त्रिन् R. 7,23,49. पुरी Bhâg. P. 5,21, 7.11. पुराण Madhus. in Ind. St. 1,18,16. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,8. 65,*b*,12. 80, *a*,5. कर्मन् *eine Wasser betreffende Arbeit* (Graben eines Brunnens u. s. w.) Vahni-P. im ÇKDr. — *b*) *westlich* (*unter* Varuṇa *stehend*), in Verbindung mit दिश् und वारुणी f. *Westen* AK. 3,4,13,54. H. 169, Schol. H. an. 3,225. Med. ṇ. 68. Halâj. 1,101. Adbh. Br. in Ind. St. 1,37,1. दिशं पश्चिमां वारुणीम् R. 4,43,4. सिरा Varâh. Bṛh. S. 54,46. 86,22. वारुण्याम् 11,43. 54,37. नैर्ऋतीवारुणीमध्ये 86,31. 87,10. 36. 95,22. Spr. 792 (II). वारुणे *im Westen* Pañkar. 2,5,32. वारुणी *Westen* und zugleich *Branntwein* Spr. 600. 4933. — *c*) *zu* Vâruṇi (Bhṛgu) *in Beziehung stehend:* भार्गवी वारुणी विद्या Taitt. Up. 3,6. उपनिषद् Ind. St. 1,75. fg. 2,208. 3,386. Verz. d. B. H. No. 152. — 2) m. *a*) *Wasserthier, Fisch:* यादृध्यं वारुणो (so vermuthen wir st. वरुणो) योनिमप्यमनिशितं निमिषि जर्भुराणः (आ गात्) *der regsame Fisch eilt seinem Standort zu* ṚV. 2,38,8. MBh. 13,4210. — *b*) patron. Bhṛgu's (vgl. वारुणि) MBh. 13, 4142. pl. Varuṇa's *Kinder, — Leute, — Krieger* Hariv. 10925. fg. 14827. R. 7,23,37. 47. — *c*) N. *des 15ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — *d*) N. pr. eines Dvîpa; s. u. 4) *c*). — 3) f. ई *a*) *Westen;* s. u. 1) *b*). — *b*) Bez. *gewisser Schlangen* Âçv. Gṛhj. 2,3,3. Pâr. Gṛhj. 2,14. — *c*) Varuṇa's *Energie* person. als *seine Gattin* Taitt. Âr. 10,1,12. MBh. 2,358. 4,259. Hariv. 9532. Verz. d. Oxf. H. 81,*a*,41. 98,*a*,23. Pañkar. 1,10,93. 11,38. H. ç. 52 (angeblich Çiva's Gemahlin). Varuṇa's *Tochter* (auch *Gattin*), die bei der Quirlung des Meeres aus demselben emportaucht und als *Göttin des Branntweins* gedacht wird, MBh. 5,3613. Hariv. 5412. 5417. 5420. fgg. R. 1,45,36 (46,26 Gorr.). VP. 76. 571. fg. Bhâg. P. 8,8,30. 10, 65,19. — *d*) *Branntwein* AK. H. 903. H. an. Med. Halâj. 2,175. M. 11, 146. MBh. 12,6087. 6720. Hariv. 5760. R. 2,114,10 (125,21 Gorr.). R. Gorr. 2,50,12. 5,79,16. 6,10,9. Suçr. 1,74,9. 2,391,15. 460,6. Kumâras. 4,12. Spr. 3355. Bhâg. P. 1,15,23 (neben मदिरा, = अन्नमयी Comm.). 3,4,1. 8,8,30. 10,10,3.19. Mârk. P. 17,24. Verz. d. Oxf. H. 91,*b*,10.

PAÑKAR. 1,11,38. *Branntwein* und zugleich *Westen* Spr. 600. 4933. — *e*) Bez. *eines Festtages am 13ten Tage in der dunklen Hälfte des* Kaitra As. Res. 3,279 (nach HAUGHTON). — *f*) *eine best. Pflanze*, = गण्डदूर्वा H. an. MED. = दूर्वा RÂǴAN. im ÇKDR. = इन्द्रवारुणी AUSH. 34. — *g*) *das unter* Varuṇa *stehende* Nakshatra Çatabhishaǵ H. 114. — *h*) N. pr. eines Flusses R. GORR. 2,70,12. PRÂJAÇKITTEND. 11,*b*,6. — 4) n. *a*) *Wasser* RÂǴAN. im ÇKDR. — *b*) *das unter* Varuṇa *stehende* Nakshatra Çatabhishaǵ MBH. 13,4266. WEBER, Nax. 1,310. VARÂH. BRH. S. 7,6. 11. 15,29. 71,11. GAṆIT. BHAGRAHAJ. 6. MÂRK. P. 33,15. 58, 48. — *c*) वारुणं खण्डं ist der N. eines der 9 Theile, in welche Bharatavarsha eingetheilt wird, GOLÂDHJ. 3,41. auch द्वीप genannt VP. 175. MÂRK. P. 57,6. — Vgl. इन्द्रवारुणी, बृहद्वारुणी, महा°, महेन्द्र°.

वारुणतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,38. — Vgl. वरुणतीर्थ.

वारुणप्रघासिक adj. von वरुणप्रघास MAÇ. in Verz. d. B. H. 72 (IV,1).

वारुणानी in वारुणान्याः साम Ind. St. 3,235,*b* wohl nur fehlerhaft für वरु°.

1. वारुणि (von वरुण) m. patron. Bhṛgu's AIT. BR. 3,34. ÇAT. BR. 11,6,1,1. TAITT. UP. 3,1. Satjadhṛti's ṚV. ANUKR. Nikuñkuṇa's Ind. St. 3,459. Vasishṭha's MBH. 1,3926. Agastja's TRIK. 1,1,89. H. ç. 16. MBH. 3,8775. eines Vainateja 1,2548.

2. वारुणि f. = वारुणी *Branntwein* HARIV. 8432 (das Metrum verlangt eine Kürze).

वारुणीवल्लभ m. *Gatte der* Vâruṇî d. i. Varuṇa ÇABDAM. im ÇKDR.

वारुणीश m. *Herr der* Vâruṇî, Bein. Vishṇu's PAÑKAR. 4,3,127.

वारुणेन्द्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 104,*a*, No. 160.

वारुणेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67,*a*,1.

वारुण्ड 1) *Unreinigkeit des Auges und des Ohres*, m. H. an. 3,186. m. n. MED. ḍ. 33. fg. — 2) *Giesskanne, Schöpfgefäss, Schöpfkelle* oder dergl. (सेकभाजन, सेकपात्र), m. H. an. m. n. MED. m. = नौसेचन HÂR. 259. — 3) m. = गणिस्थराज H. an. = फणिनां राजकः MED. — 4) f. ई *Thürschwelle* MED.

वारुण्य adj. *dem* Varuṇa (nach NÎLAK. der Vâruṇî) *gehörig*: भवन MBH. 5,3535.

वारूठ m. = अग्नि, शम्बल, पञ्जर, वस्त्राञ्चल, अरर (in H. an. ist ऽररे st. ररौ zu lesen) oder कपाट H. an. 3,190. MED. ḍh. 8.

वारेण्यायनि m. patron. von वरेण्य gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वारेन्द्र = वरेन्द्र Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,39, v. l. COLEBR. Misc. Ess. II, 188. °नन्दन M. ed. Calc. in der Unterschr. von Buch 3 und 12. वारेन्द्री ÇABDAR. und ǴJOTISTATTVA im ÇKDR. Das heutige राजशाही nach ÇKDR.

वारेवृत (वारे, loc. von वार *Wahl*, + वृत) adj. *gewählt* TS. 2,5,1,3. 4. 6,2,3,1. TBR. 2,1,1,3. — Vgl. वरवृत.

वार्कखण्डि m. patron. von वृकखण्ड GOBH. 3,10,6 bei WEBER, Nax. 2,337.

वार्कग्राहिकि m. patron. von वृकग्राह gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146.

वार्कजम्भ (von वृकजम्भ) 1) m. patron. MAÇ. in Verz. d. B. H. 71. — 2) n. N. eines Sâman LÂṬJ. 10,4,9. Ind. St. 3,235,*a*. वार्कजम्भाद्य n. und वार्कजम्भोत्तर n. ebend.

वार्कबन्धविकि m. patron. von वृकबन्धु gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146.

वार्कलि m. metron. von वृकला gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96. तौल्वल्यादि zu 2,4,61. ÇAT. BR. 12,3,2,6. VS. App. LVI, 13. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 55,29.

वार्कलेय m. metron. von वृकला oder patron. von वार्कलि (vgl. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61) SAṂSK. K. 185,*a*,10.

वार्कवञ्चिक m. patron. von वृकवञ्चिन् gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146; vgl. P. 6,4,144.

वार्कारुणीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers ÇAT. BR. 14,9,4,31.

वार्कार्या adj. f. nach SÂJ. so v. a. उदकैर्निष्पाद्या. इमां धियं वार्कार्यां च देवीम् ṚV. 1,88,4.

वार्केणी f. zu वार्केण्य P. 5,3,115, Schol.

वार्केण्य m. *ein Fürst der* Vṛka P. 5,3,115.

वार्क्ष (von वृक्ष) 1) adj. (f. ई) *a*) *in Bäumen bestehend, aus Bäumen gebildet*: दुर्ग M. 7,70. KÂM. NÎTIS. 4,59. MÂRK. P. 49,35. *Bäume betreffend*: सिद्धि 56,23. fg. *auf Bäumen wachsend*: कवक KULL. zu M. 6,14. — *b*) *hölzern* KÂTJ. ÇR. 4,14,12. GOBH. 2,10,37. 3,1,11. MBH. 7,2329. SUÇR. 2,49,3. 136,15. WEBER, KṚSHṆAǴ. 273. 277. — 2) f. ई *die Tochter der Bäume*, Bein. der Gattin der Praketas, MBH. 1,7266. BHÂG. P. 6, 4,15; vgl. BRAHMA-P. in LA. (III) 58,1. fgg. — 3) n. *Wald* TRIK. 2,4,1. H. 1110. — Vgl. दण्ड°.

वार्क्ष्य (wie eben) 1) adj. = वार्क्ष *hölzern* SUÇR. 1,99,3. TITHJÂDIT. im ÇKDR. wohl nur fehlerhaft. — 2) m. parox. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. — 3) n. *Wald* H. 1110. schlechte Lesart für वार्क्ष.

वार्क्ष्यायणी f. zum patron. वार्क्ष्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18. v. l. तार्क्ष्यायणी.

वार्घ m. *Gans* VOP. 26,33. angeblich = वारि चरति.

वार्चलीय adj. von वर्चल gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वार्जिनीवत m. patron. von वृजिनीवत् HARIV. 1969.

वार्ज्यक adj. von वर्ज्य gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

वार्ढ्य (वा°) n. nom. abstr. von वृढ (वृढ) gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वार्णकि m. pl. zum sg. वार्णक्य v. l. im gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

वार्णक्य m. patron. von वर्णक v. l. im gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

वार्णव adj. von वर्णु gaṇa सुवास्त्वादि zu P. 4,2,77. कच्छादि zu 133. सिन्ध्वादि zu 3,93.

वार्णवक adj. desgl. gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,134.

वार्णिक (von वर्ण) m. *Schreiber* H. 484. ÇABDAM. im ÇKDR.

वार्तक 1) m. *Wachtel* ÇKDR. wohl nur fehlerhaft für वर्तक. Vgl. वार्ताक. — 2) f. वार्तिका dass. ÇKDR. und WILSON nach HÂR. 184, wo aber die gedr. Ausg. वर्तिका liest.

वार्तन adj. = वर्तनीषु भवः P. 4,2,125, Schol.

वार्तनाक्ष m. patron. von वर्तनाक्ष gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वार्तन्तवीय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,257. — Vgl. वारतन्तवीय.

वार्तमानिक (von वर्तमान) adj. *zur Gegenwart gehörend, jetzt lebend*: मनुष्याः ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 219.

वार्ताक m. = वर्तक *Wachtel* BHÂVAPR. im ÇKDR.

वार्तान्तवेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,274. — Vgl. वारतन्तवीय.

वार्तिक m. *ein best. Vogel* VÂGBH. 6,45. = वर्तिक RÂǴAN. im ÇKDR. — वार्त्तिक s. bes.

वार्तेरि m. desgl. VÂGBH. 6,45. — Vgl. वर्तेरि.

वार्त्त (von वृत्ति) 1) adj. P. 5, 2, 101, Vârtt. 2. *was besteht: a) einen Lebenserwerb habend* H. an. 2, 193. fg. — *b) gesund* AK. 2, 6, 2, 8. 3, 4, 11, 78. TRIK. 3,3,182. H. 474. H. an. HALÂJ. 2,225. वार्त्तशरीरलाभे तद्वार्त्ताया अयोगात् SARVADARÇANAS. 100,19. — *c) gewöhnlich, mittelmässig:* प्रशस्त, वार्त्त, गर्हित ÂÇV. GṚHJ. 2,8,3. 5. — *d) werthlos, nichtig* (फल्गु, निःसार) AK. 3, 4, 11, 78. H. an. MED. t. 56. SARVADARÇANAS. 160,11. 165,4. अ° 100,19. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBH. 2,321. — 3) f. आ *a) Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe,* insbes. das des Vaiçja d. i. *Ackerbau, Viehzucht und Handel* AK. 2, 9, 1. 3, 4, 11, 78. 29, 224. H. 865. H. an. MED. HALÂJ. 2,415. M. 9, 326. वार्त्ता कर्मैव वैश्यस्य 10, 80. वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता 11, 235. JÂGN. 1, 310. कच्चित्स्वनुष्ठिता तात वार्त्ता ते साधुभिर्जनैः । वार्त्तायां संश्रितस्तात लोको ऽयं सुखमेधते ॥ MBH. 2,213. वार्त्तया धार्यते सर्वम्, त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिस्तिस्रो विद्या विजानताम् 3, 11295. 12, 567. 2154. °मूलो ह्ययं लोकः 2569. R. GORR. 1, 4, 6 (त्रयी वार्त्ता zu trennen). 2,109,24. KÂM. NÎTIS. 2, 1. 2. 3. 4. 7. पाशुपाल्यं कृषिः पण्यं वार्त्ता वार्त्तानुजीविनाम् 14. वार्त्ता प्रजा साधयति वार्त्ता वै लोकसंश्रयः 13,27. RAGH. 16,2. VARÂH. BṚH. S. 19,11. PRAB. 28. 7. पापीयसो BHÂG. P. 1,14,3. 3,6,21. 7,32. 12,42. 44. 30,12. विविधा 7,6,26. 9, 46 (pl.). वैश्यस्तु वार्त्तावृत्तिः 11,15. विचित्रा 16. वैश्यस्तु वार्त्तया जीवेत् 10,24,20. कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते । वार्त्ता चतुर्विधा 21. 11,8,31. 23,6. MÂRK. P. 49,55. 57. 73. 75. 84,9. ननु चतस्रो राजविद्यास्त्रयी वार्त्तान्वीक्षिकी दण्डनीतिरिति DAÇAK. 183,5. Am Ende eines adj. comp.: फलमूलवार्त्त *lebend von* VARÂH. BṚH. S. 5,77. 15,17. अग्नि° 6,1. 17,13. पण्यनीति° 10,17. शस्त्र° 16,13. शस्त्रपुस्त° 87,37. — *b) Kunde, Nachricht, Neuigkeit, Gerücht, Sage, Rede von Etwas* AK. 1,1,5,8. 3,4, 11,66. 78. 32 (28),16. H. an. MED. HALÂJ. 1,146. 5,88. संश्राव्य वार्त्ताम् R. 3,63,28. ad MEGH. 113. श्रुत्वा सांग्रामिकीं वार्त्तां भविष्यां स्वामिनं प्रति Spr. 3045. श्रुत्वा प्रदानवार्त्ताम् KATHÂS. 3,36. 38,120. 42,87. BHÂG. P. 1, 16,11. धनदेववणिग्गेहवार्त्ताम् — वेत्सि किम् KATHÂS. 64, 98. fg. RÂGA-TAR. 2,114. उज्जयिनीवार्त्तां ज्ञातुम् KATHÂS. 18,46. तस्थौ च वार्त्तामन्विष्यन्स ततः पुत्रयोस्तयोः 42,116. पत्युर्वार्त्तां विचिन्वती 56, 337. वार्त्तां को ऽपि न पृच्छति Spr. 4882. KATHÂS. 5, 107. 6, 125. VOP. 5, 6 (pl.). वार्त्तां गहनां विवृणोति कः RÂGA-TAR. 5, 185. वार्त्तां व्यसर्जयत् 6, 270. अजस्य वार्त्ताम् — कीर्तय *erzähle von* BHÂG. P. 3,1,45. कां शिशुजनस्य वार्त्तां कथयिष्यसि PAÑKAT. 95,17. 233, 9. HIT. 64,17. 79,15. 85,11. न काप्यन्या विद्यते वार्त्ता 100,11. का वार्त्ता *was giebt es zu erzählen? was giebt es Neues?* 64,16. 93,19. अस्ति महती वार्त्ता 79,16. Spr. 580. स्त्रीणां च हृदये वार्त्ता न तिष्ठति कदापि हि 394 (II). 3062. 4205. KATHÂS. 2,52. 42, 149. UTTARAR. 112,1 (151,6). अद्यापि क्वचिदप्यहो खलु मया वार्त्तापि नाकर्णिता PRAB. 44,10. कुशलिनी वत्सस्य वार्त्तापि नो SÂH. D. 65, 8. RÂGA-TAR. 1,9. 49. 337. 4,371. उत्तमश्लोक° *das Reden von* BHÂG. P. 2, 3,17. 4,30,19. 11,6,48. 7,55. BHAR. NÂṬJAÇ. 18,47. 97. मिथ्या° PAÑKAT. 51,21. °व्यतिकर 130,7. आस्तां तावल्लुब्धकवार्त्ता 143,24. 231,21. तदर्हर्निनाय बहुवार्त्तया *unter vielen Erzählungen* ÇATR. 10,126. मनूनाम् *Geschichte* BRAHMAVAIV. P. bei BURNOUF, BHÂG. P. I, XLVI. पुरातनी H. 259. सङ्गत्यागमुद्दिश्य वार्त्ता श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम् *vom Aufgeben der Liebe kann nur bei — die Rede sein* (vgl. den Gebrauch von कथा) Spr. 2701. तत्र वार्त्ता शीलतृणस्य का 5309. 1690. KATHÂS. 64,159. का तु वार्त्ता तन्मांसभक्षणे 26,169. Spr. 2355. (तस्य) आप्यायं राजपुरुषा वार्त्तयापि न चक्रिरे so v. a. *nicht einmal mit Worten, sie sprachen nicht einmal davon* RÂGA-TAR. 2,69. मम — अनया वार्त्तयापि किं कार्यम् *was habe ich mit ihr zu schaffen, sei es auch nur mit Worten?* Z. d. d. m. G. 14,571,1 (*mit weltlichen Dingen mag ich mich nicht befassen* AUFRECHT). Am Ende eines adj. comp.: पृष्टरात्रिवार्त्ता KATHÂS. 32, 39. शनैर्विज्ञातवार्त्त RÂGA-TAR. 5,236. उत्तमश्लोकवार्त्त *redend von* BHÂG. P. 1,18, 4. — *c) Geruchsempfindung* Verz. d. Oxf. H. 231, *a*, 23. 26. — *d)* Bein. der Durgâ DEVÎ-P. 45 im ÇKDR. — *e)* = वार्त्ताकु *Eierpflanze* H. an. MED. — 4) n. *Wohlergehen, Gesundheit* TRIK. H. 474. H. an. MED. JÂDAVA bei MALLIN. zu KIR. 13, 34. सर्वत्र नो वार्त्तमवेहि RAGH. 5,13. वार्त्तानुयोग 13,71. स पृष्टः सर्वतो वार्त्तमाख्यत् (so die ed. Calc. 40) 15,41. ÇIÇ. 13,68. KIR. 13,34. — Vgl. गलवार्त्त, दुर्वार्त्ता, प्रति°, लोक°.

वार्त्ताक (wohl von वृत्त *rund*) m. *die Eierpflanze, Solanum melongena* (n. *die Frucht*) UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3,79. 4,15. TRIK. 2,4,27. HARIV. 7842. SUÇR. 1,72,4. 157,15. 221,20. 228,20. 2,308,9. VÂGBH. 6,78. Auch वार्त्ताकी f. AK. 2, 4, 4, 2. TRIK. 2, 4, 28. वार्त्ताक्यभिषवाः MÂRK. P. 32,26. — Vgl. कटुवार्त्ताकी, तुङ्ग°.

वार्त्ताकिन् 1) m. = वार्त्ताक BHAR. zu AK. nach ÇKDR. — 2) वार्त्ताकिनी f. dass. AUSH. 57. RATNAM. in NIGH. PR. Vgl. तुङ्ग°.

वार्त्ताकु UṆÂDIS. 3,79. m. dass. TRIK. 2, 4, 27. SUÇR. 1,221,5. 2,36,14. 129,11. 368,6. 551,9.

वार्त्तापति m. *Herr —, Verleiher des Lebensunterhalts* BHÂG. P. 4,17,11.

वार्त्तायन (वार्त्ता + अ°) m. *Kundschafter, Späher* TRIK. 2,8,25. H. 734.

वार्त्तारम्भ (वार्त्ता + आ°) m. *Gewerbe* M. 7,43.

वार्त्तावह (वार्त्ता + वह oder आवह) m. *ein umherziehender Krämer* (*Neuigkeiten bringend*) AK. 2,10,15. H. 364.

वार्त्ताशिन् (वार्त्ता + आ°) adj. *Nachrichten essend* so v. a. *von Klatscherei lebend, Neuigkeitskrämer, Schwätzer;* = भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् H. 856.

वार्त्ताहर m. *Ueberbringer einer Nachricht, Bote* TRIK. 3,3,431.

वार्त्ताहर्तृ m. dass. BHÂG. P. 4,9,38.

वार्त्तिक (von वार्त्ता und वृत्ति) = वृत्तौ साधुः gaṇa कथादि zu P. 4,4, 102. = वृत्तिमधीते वेद वा gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. 1) adj. *ein Gewerbe betreibend, Gewerbsmann:* दुर्गतो वार्त्तिकजनो लाभार्त्तिकं नाम नाचरेत् KATHÂS. 34,76. — 2) m. *Kundschafter, Bote* TRIK. 2, 8, 25. MBH. 10,174. 200. — 3) m. *Giftarzt, Beschwörer;* = नरेन्द्र HALÂJ. 5,54; vgl. वार्त्तिकेन्द्र. — 4) m. *ein* Vaiçja RÂGAN. im ÇKDR. — 5) m. = वार्त्ताकी *die Eierpflanze* ÇABDAR. im ÇKDR. — 6) f. आ = वार्त्ता *Erwerb, Gewerbe* MBH. 3, 17399 (vgl. 17401). am Ende eines adj. comp.: मोक्ष° so v. a. *betreibend, obliegend* 12, 12027. देहंभर° *das Gewerbe eines — treibend* so v. a. *nur daran denkend den Leib zu ernähren* BHÂG. P. 5, 5, 3. so wird wohl auch विद्याजम्भक° MBH. 5,2470 zu fassen sein; NÎLAK. dagegen erklärt: विद्या मन्त्रयन्त्रादिरूपा जम्भक औषधिसाधनानि तद्वार्त्ताप्रियाः. — 7) n. *Ergänzungen und Berichtigungen zu einem* Sûtra: उक्तानुक्तदुरुक्तार्थचिन्ताकारि तु वार्त्तिकम् H. 256. वार्त्तिकमिति । सूत्रे ऽनुक्तदुरुक्तचिन्ताकरत्वं वार्त्तिकत्वम् NÂGOǴ. bei BALLANT. MAHÂBH. 213. Co-

lebr. Misc. Ess. I, 262. II, 49. 297. Verz. d. B. H. No. 217. Verz. d. Oxf. H. 237, *a*, 30. *b*, 3. fgg. Am bekanntesten sind die Vârttika Kâtjâjana's zu Pâṇini's Sûtra, Madhus. in Ind. St. 1, 16, 26 fgg. Schol. zu P. 3, 1, 20 in der ed. Calc. Sarvadarçanas. 145, 7; vgl. Böhtlingk, P. Einl. XLVI. fgg. तन्त्र°, प्रमाण°, बृहदारण्यक° (unter बृहदारण्यक), भट्ट°, मन्त्रा°, योग°, राज°, सुरेश्वर°.

वार्त्तिककार m. *Verfasser von* Vârttika Weber, Râmat. Up. 284. Bez. Kâtjâjana's Comm. zu P. 7, 3, 59. 8, 3, 5. Verz. d. Oxf. H. 160, *a*, 24. Kumârila's 270, *b*, 42. श्लोक° *der Verfasser von metrischen* Vârttika (zu Pâṇini's Grammatik) Gold. Mân. 93. fg. 102.

वार्त्तिककाशिका f. Titel eines Commentars Hall 171 (the title is dubious).

वार्त्तिककृत् m. = वार्त्तिककार Weber, Râmat. Up. 284. 342.

वार्त्तिकतात्पर्यटीका f. Titel eines Commentars des Vâkaspatimiçra Colebr. Misc. Ess. I, 262. Hall 27.

वार्त्तिकतात्पर्यपरिशुद्धि f. Titel eines Commentars des Udajanâkârja Colebr. Misc. Ess. I, 262.

वार्त्तिकयोजना f. Titel eines Commentars, = राणक Hall 207.

वार्त्तिकाभरण n. Titel eines Commentars Hall 172.

वार्त्तिकाख्य n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 235, *b*.

वार्त्तिकेन्द्र m. *Alchemist* Jogajâtrâ 5, 4. — Vgl. वार्त्तिक 3).

वार्त्रघ्न (von वृत्रहन्) VS. Prât. 3, 91. P. 6, 4, 135, Schol. (oxyt.). Vop. 7, 21. 1) adj. (f. ई) *a*) *auf den Schläger des* Vṛtra *bezüglich, ihn betreffend* u. s. w.: इन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि VS. 10, 8. Ait. Br. 1, 4. वार्त्रघ्नं वा एतद्धविर्यदग्नीषोमीयः so v. a. *Siegesopfer* 2, 3. TS. 2, 5, 2, 4. TBr. 1, 6, 1, 7. वज्र TS. 5, 7, 3, 1. 6, 1, 6, 7. रोहिणी 7, 1, 6, 3. Çat. Br. 3, 3, 1, 14. Kâth. 24, 1. आज्यभाग Âçv. Çr. 1, 5, 32. Çat. Br. 1, 6, 2, 12. 9, 5, 2, 4. सोम Kâth. 27, 3. °लिङ्गैर्मन्त्रैः Bhâg. P. 6, 12, 34. — *b*) (oxyt.) *das Wort* वृत्रहन् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5, 2, 61. — 2) m. patron. Arguṇa's, der für *einen Sohn* Indra's gilt, Trik. 2, 8, 17 (वार्त्राघ्न gedr.). Kir. 15, 1. — 3) n. इन्द्रस्य वार्त्रघ्नम् und इन्द्रस्य संवर्गं वार्त्रघ्नम् Namen von Sâman Ind. St. 3, 208, *b*. 209, *a*.

वार्त्रतुर (von वृत्रतुर्) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 235, *b*. Lâṭj. 7, 1, 1. 5.

वार्त्रहत्य (von वृत्रहत्य) 1) adj. *zum Schlagen des* Vṛtra *dienlich*: शवस् RV. 3, 37, 1. — 2) n. *das Schlagen des* Vṛtra Bhâg. P. 6, 12, 33.

वार्द (वार् + 1. द) m. *Wolke* Çatr. 14, 336.

वार्दर n. s. बादर. Nach Viçva im ÇKDr. hat das Wort वार्दर die Bedd. कृमिज *Seide*, जल *Wasser* und आम्रबीज *Same der Mangifera indica.*

वार्दल 1) *ein trüber Tag, Regenwetter;* m. Trik. 3, 3, 402. n. H. an. 3, 674. Med. l. 119. — 2) n. *Schwärze, Dinte* (मसि) H. an. *Dintenfass* Hâr. 269. m. dass. Trik. Med.

वार्दाली f. gaṇa मधादि zu P. 4, 2, 86. Davon वार्दालीवती (vgl. P. 8, 2, 11) ebend.

वार्द्ध m. patron. von वृद्ध gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104.

वार्द्धक (von वृद्ध) 1) n. *a*) *vorgerücktes Alter, Greisenalter* AK. 2, 6, 2, 40. H. 340. an 3, 97. Med. k. 156. Bala beim Schol. zu Naish. 1, 77 (तद्भाव st. सद्भाव zu lesen nach Stenzler). MBh. 14, 2747. Spr. 4928. 4997. 5373. Ragh. 1, 8. Kumâras. 5, 44. Çârṅg. Saṁh. 1, 7, 16. Kathâs. 61, 116. 72, 20 (वारक gedr.). Weber, Kṛshnag. 222. 298. Mârk. P. 109, 24. Pańkar. 1, 3, 21. Prab. 24, 15. °भावे (so die ed. Bomb.) Pańkat. 95, 16. — *b*) *das Treiben eines Alten, Gebrechlichkeit eines Greises* H. an. Med. — *c*) *eine Versammlung von Alten* P. 4, 2, 39, Vârtt. 1. AK. H. 1416. H. an. Med. Bala a. a. O. — 2) adj. subst. *alt, ein alter Mann* Bala a. a. O. महर्षि° Naish. 1, 77.

वार्द्धक्य n. *vorgerücktes Alter, Greisenalter* Gaṭâdh. im ÇKDr. MBh. 9, 2988 (वार्द्धक ed. Bomb.). वार्द्धिक्यभाव (!) Pańkat. 95, 16, v. l.

वार्द्धक्षत्रि (von वृद्धक्षत्र) m. patron. des Gajadratha MBh. 3, 15576. 15581. 6, 752.

वार्द्धनेमि m. patron. von वृद्धनेम MBh. 1, 6989. 5, 5909. 7, 916.

वार्द्धायनि m. patron. von वार्द्ध gaṇa हरितादि zu P. 4, 1, 100. — Vgl. u. वर्धापन 1) am Ende.

वार्द्धुष m. = वार्द्धुषि MBh. 13, 4283 (वर्द्धुषि M. 3, 180).

वार्द्धुषि (wohl von वृद्धि) m. *Wucherer* AK. 2, 9, 5. H. 881. M. 3, 153. 180 (= MBh. 12, 4283). 4, 224 (= MBh. 12, 9452). Jâǵń. 1, 132.

वार्द्धुषिक m. dass. Siddh. K. zu P. 4, 4, 30 (auf ein erfundenes वृधुषि = वृद्धि zurückgeführt). AK. 2, 9, 5. H. 880. Halâj. 2, 416. Âpast. 1, 18, 22. M. 4, 210. 220. 8, 102. 140. MBh. 12, 1320. 8310. 13, 1592. 4275.

वार्द्धुषिन् m. dass.: वार्द्धुषी भूत्वा MBh. 13, 4826.

वार्द्धुषी f. = वार्द्धुष्य *Wucher* MBh. 2, 525.

वार्द्धुष्य (von वार्द्धुषि) n. *Wucher* Trik. 2, 9, 1. M. 11, 61. Jâǵń. 1, 161. 3, 235. Prâjaçkittend. 3, *b*, 3. 40, *b*, 3.

वार्धनी (वार् + ध°) f. *Wasserkrug* H. 1021. — Vgl. वर्धन 3) *b*).

वार्धि (वार् + धि) m. 1) *das Meer* Trik. 1, 2, 8. H. 17. Spr. (II) 345. Verz. d. Oxf. H. 129, *a*, 15. 151, *a*, 6. 254, *a*, 3. Bhâg. P. 3, 17, 7. 24. — 2) Bez. *der Zahl* 100,000,000,000,000 H. 874.

वार्धिभव n. *eine Art Salz* (द्रोणीलवण) Râǵan. im ÇKDr.

वार्धेय (von वार्धि) n. dass. ebend.

वार्ध्र (von वर्ध्र) 1) adj. (f. ई) *zu Riemen bestimmt, geeignet:* चर्मन् P. 5, 1, 15, Schol. *aus Riemen bestehend* P. 4, 3, 151. — 2) f. und n. *Riemen* Râjam. zu AK. 2, 10, 31 nach ÇKDr. तं शतेन वार्ध्रीभिराण्डयोरबध्नात् Pańkav. Br. 9, 2, 22. वार्ध्रीव नासास्येति वार्ध्रीणसः Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2, 27.

वार्ध्राणस s. u. वार्ध्रीणस.

वार्ध्रीणस m. P. 5, 4, 118. 8, 4, 3. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2, 27. *Nashorn* Trik. 2, 5, 3 (°नस gedr.). *ein alter weisser Ziegenbock* (nach den Erklärern) M. 3, 271. Jâǵń. 1, 259. Nach Andern auch *ein Vogel mit schwarzem Halse, rothem Kopfe und weissen Flügeln* Uǵǵval. वार्ध्राणस Âpast. 1, 17, 36. 2, 17, 3. — Vgl. वाध्रीणस und वार्ध्रीनस.

वार्ध्रीनस VS. Prât. 3, 89. 6, 28. adj. etwa *auf der Nase gestriemt*, nach Mahîdh. *mit Zäpfchen am Halse versehen* VS. 24, 39. — Vgl. वार्ध्रीणस.

वार्बट m. *Schiff, Boot* Hâr. 142. वार्वट Trik. 1, 2, 13. vielleicht nur fehlerhaft für वार्यट (वारि + अट); vgl. jedoch auch वावुट.

वार्भट (वार् + भट) m. *Krokodil* Trik. 1, 2, 23. Hâr. 76.

वार्मण (von वर्मन्) n. *eine Menge von Panzern* Sâras. zu AK. 3, 3, 43 nach ÇKDr.

वार्मतेय adj. *aus* Varmatî *gebürtig* P. 4, 3, 94. वार्मतेयक gaṇa कत्र्यादि zu P. 4, 2, 95.

वार्मिकायणि m. patron. von वर्मिन् P. 4, 1, 158, Vârtt.

वार्मिक्य n. nom. abstr. von वर्मिक gaṇa पुरोहितादि zu P. 5,1,128.

वार्मिण (von वर्मिन्) n. *eine Menge gepanzerter Männer* Svâmin zu AK. 3,3,43 nach ÇKDr.

वार्मुच् (वार् + 2. मुच्) m. *Wolke* Çabdar. im ÇKDr. Bhâg. P. 10,24,9.

1. वार्य (von 1. वर्) 1) adj. *zurückzuhalten, aufzuhalten:* नास्मि वार्या MBh. 5,7375. 14,2442. राज्ञा भृत्यैर्वार्यः Spr. 2912. अवार्यः सर्वकार्येषु गमने केनचित् Hariv. 15067. कृतान्त इवावार्यः शरः R. 6,92,57. अवार्यं चक्रम् Hariv. 10805. अवार्यवेग R. 3,35,45. अवार्यवीर्य Spr. 609. अवार्यं सूर्यरश्मिभिस्तमः 571 (II). — 2) m. *Wall* (nach dem Comm.) R. 1, 70, 3. — Vgl. दुर्वार्य, निर्वार्य.

2. वार्य (von 2. वर्) P. 6, 1, 214. adj. 1) *zu wählen:* ऋत्विज्ः P. 3, 1, 101, Schol. — 2) *kostbar, werth; n. Kostbarkeit, Gut, Schatz* Naigh. 4, 2. Nir. 5,1. वसु RV. 8, 43, 33. 10, 45, 11. श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् 3, 21, 2. व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि (उषाः) 5,80,6. des Savitar 1,24,2. 4,53,1. 5, 48,5. अद्रत्रया दयते वार्याणि 49,3. 6,50,8. 7,17,5. 42,4. 1,5,2. 81,9. हस्ते बिभ्रद्भेषजा वार्याणि 114,5. तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् 8, 25, 13.44,18. दानाय वार्याणाम् 60,11. 9,63,30. परिप्रीता पन्यसा वार्येण 10, 27,12. 133,2. वार्यवृत st. वैर° anderer Texte Kâth. 23, 8. 24,7. 27, 3. 4. 8 (Ind. St. 5, 343).

3. वार्य (von 1. वारि) adj. *aquaticus* ÇKDr.

वार्ययन (वारि + अ°) n. *Wasserbehälter, Teich* u. s. w. (= जलाशय Comm.) Bhâg. P. 12,2,6.

वार्यामलक (वारि + आ°) m. *eine bes. am Wasser wachsende Myrobalane* R. 1,70,3, v. l. im Comm. der Bomb. Ausg.

वार्युद्भव 1) adj. *im Wasser entstehend, — wachsend.* — 2) n. *Lotusblüthe* Dhanaṁgaja im ÇKDr.

वार्युपजीविन् adj. *vom Wasser seinen Unterhalt habend; m. Wasserträger, Fischer* u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 5,42.

वार्योकस् 1) adj. *im Wasser lebend.* — 2) wohl f. (vgl. जलौकस्) *Blutegel* M. 7,129. Suçr. 2,275,4.

वार्राशि (!) m. *das Meer* ÇKDr. nach einem Purâṇa.

वार्वट s. वार्बट.

वार्वणा f. = वर्वणा Çabdar. im ÇKDr.

वार्वती f. *Fluss* Naigh. 1,13, v. l. für पार्वती.

वार्वर (वार्बर) adj. *im Lande der Barbaren geboren* gaṇa तक्षशिलादि zu P. 4,3,93.

वार्वरक (वार्बरक) adj. von वर्वर (बर्बर) gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127.

वार्श (von वृश) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,235,*b*. Pañkav. Br. 13,3,11. fg.

1. वार्ष (von वर्षा) adj. (f. ई) *zur Regenzeit gehörig* u. s. w. VS. 13,56.

2. वार्ष (von वृष) 1) adj.: देवानां वार्षाणामार्षेयम् N. eines Sâman, = इन्द्रस्य वृषकम् Ind. St. 3, 208, *b*. — 2) n. *a*) nom. abstr. von वृष gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122. — *b*) N. eines Sâman Ind. St. 3,235,*b*.

वार्षक n. N. eines der zehn Theile, in welche Sudjumna die Erde theilte, Vahni-P., Sâgaropâkhjâna nach ÇKDr.

वार्षगण (von वृषगण) m. patron. des Asita Çat. Br. 14,9,4,33. वार्षगणास् *die Nachkommen des* Vârshagaṇa gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111.

वार्षगणीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,9,4,31.

वार्षगण्य m. patron. von वृषगण gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. Lâṭj. 10,9,10. SV. Gâna Tüb. Hdschr. Nidânas. 2,9. 6,7. Ind. St. 4,372. MBh. 12,11782. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 570.

वार्षद adj. von वृषद् v. l. im gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86 nach Uǵǵval. zu Uṇâdis. 5,21.

वार्षदंश adj. von वृषदंश v. l. für पृषदंश im gaṇa उत्सादि zu P. 4, 1, 86 nach Uǵǵval. zu Uṇâdis. 5,21. *aus Katzenhaar verfertigt* (nach Nilak.): प्रावार MBh. 2,1823.

वार्षपर्वणी (von वृषपर्वन्) f. patron. der Çarmishṭhâ MBh. 1,3310. Hariv. 1604. Bhâg. P. 9,18,33.

वार्षभ (von वृषभ) adj. *dem Stiere eigen:* आसन Verz. d. Oxf. H. 11, *a*, N. 1 (चार्षभ die Hdschr., die Correctur von Aufrecht).

वार्षभाणवी (von वृषभाणु) f. patron. der Râdhâ Pâdmottarakh. 67 nach ÇKDr.

वार्षल (von वृषल) 1) adj. *einem* Çûdra *eigen:* कर्मन् Nârada bei Kull. zu M. 7,2. — 2) n. *die Beschäftigung —, der Stand eines* Çûdra gaṇa युवादि zu P. 5,1,130.

वार्षलि (von वृषली) f. *der Sohn eines* Çûdra-*Weibes* gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96.

वार्षशतिक (von वर्ष + शत) adj. *hundertjährig* P. 5,1,58, Vârtt. 5, Schol.

वार्षसहस्रिक (von वर्ष + सहस्र) adj. *tausendjährig* ebend.

वार्षाकप adj. von वृषाकपि Ait. Br. 6,32. Pañkav. Br. 20,9,2.

वार्षागिर (von वृषागिर्) m. patron. des Ambarîsha, Ṛgrâçva, Bhajamâna, Sahadeva und Surâdhas RV. Anukr. pl. RV. 1,100,17.

वार्षायणि m. patron. von वृष gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154. — Vgl. वार्ष्यायणि.

वार्षाहर n. N. eines Sâman Çat. Br. 14,3,1,26. Ind. St. 3,235,*b*. वार्षाहराद्य und वार्षाहरोत्तर n. desgl. ebend.

वार्षिक ved. und वार्षिक in der klass. Spr. (von वर्षा, वर्ष) P. 4, 3, 18. fg. 1) adj. f. (ई) *pluvialis, zur Regenzeit gehörig* u. s. w. H. an. 3,96. Med. k. 156. आपः *Regenwasser* AV. 1,6,4. तक्मन् 5,22,13. ऋतु VS. 14, 15. Çat. Br. 10,2,5,11. मासौ Ait. Br. 4,26. TS. 7,5,1,2. 14,1. Âçv. Çr. 4,12,1. Gṛhj. 3,5,19. Çat. Br. 5,5,2,4. नड AV. 4,19,1. Weber, Ǵjot. 113. वार्षिकांश्चतुरो मासान् Spr. 2781. 4037. MBh. 1,2313. 13,5657. Hariv. 4006. R. Gorr. 1,1,73. 4,25,12. 6,108,25. Bhâg. P. 10,58,12. मासौ Hariv. 3787. निदाघवार्षिकौ मासौ MBh. 7,1311. रात्रि R. 7,66,13. जीमूत MBh. 3,15732. 4,2025. धनुस् Ragh. 4,16. ऋतु 12,25. चक्र Hariv. 2844. त्वमिवाज्ञातवसतिं चन्द्रो वसति वार्षिकीम् 3571. लिङ्ग Suçr. 1,21, 6. वासस् P. 4,3,18, Schol. वार्षिकी und वार्षिकोदका नदी *ein Fluss, der nur während der Regenzeit Wasser hat,* MBh. 5,7363. 7368. *sich auf die Regenzeit verstehend, sich mit der Bestimmung derselben abgebend* gaṇa वसन्तादि zu P. 4,2,63. — *b*) *auf ein Jahr ausreichend:* अन्न Jâǵñ. 1,124. भिक्षा MBh. 12,6296. संचय 8892. 13,4464. *ein Jahr während* Mârk. P. 69,58. *jährlich:* कर *Abgabe, Tribut* Hariv. 4209. Bhâg. P. 10,5,31. यात्रा Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,13. महापूजा 103,*a*,14. Mârk. P. 92,11. सर्ववार्षिकपर्वमु Bhâg. P. 11,11,37. Häufig in comp. mit einem Zahlworte, *so und so viele Jahre während, — alt, — ausreichend, — jährig* P. 5,1,88. 7,3,16. त्रि° Pañkat. 167,2. पञ्च° Âpast. beim Schol. zu Kâtj. Çr. 541,6. MBh. 13,3587. सप्त° Pañkat. 167,2. दश° R. 4,48,

12. Spr. 2182. द्वादश° MBh. 3, 8070. 8072. 10464. 8,424. 13,6550. 14, 2850. 2859. 15,375. Hariv. 6244. VP. bei Muir, ST. I, 86, N. 58. Verz. d. Oxf. H. 29,b,3. Bhâg. P. 9,9,23. Mârk. P. 97,30. Pańkat. 50,18 (wo mit der ed. Bomb. °वार्षिकयनावृष्टिः zu lesen ist). त्रयोदश° MBh.7,9088. पञ्चदश° Pańkat. 101,5. षोडश° Verz. d. Oxf. H. 261, a, 15. विंशति° Jâǵń. 2,24. ऊनद्वि° M. 5,68. बहु° Bhâg. P. 9,7,6. षड्वार्षिका (!) Verz. d. Oxf. H. 121, b, No. 213, Çl. 4. Auch mit Steigerung des Vocals im vorangehenden Worte; vgl. त्रै°. — 2) *eine best. Pflanze*, n. AK. 2, 4, 5,16. H. an. Med. f. ई Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. दश°, द्वादश°, द्वि°, पञ्च°, पूर्व°, बहु°, महावार्षिका.

वार्षिक्य (von वार्षिक) 1) adj. *jährlich:* कर *Abgabe, Tribut* Bhâg. P. 10,5,19. — 2) n. *die Regenzeit:* वसिष्ठस्याश्रमे पुण्ये वार्षिक्यं समुवास ह R. 7,51,2.

वार्षिला f. *Hagel* Çabdak. im ÇKDr.

वार्षुक (von वर्ष्) adj. *regnend* ÇKDr. und Wilson. Wohl fehlerhaft für वर्षुक.

वार्ष्टि adj. von वृष्टि gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

वार्ष्ण m. patron. des Gobala TBr. 3,11,9,3. des Barku (oxyt.) Çat. Br. 1,1,1,10. 14,6,10,8. wird von den Comm. auf वृष्णि, वृषन् und वृष्ण zurückgeführt.

वार्ष्णि m. patron. s. Weber, Ind. Str. 2, 380.

वार्ष्णिक m. patron. von वृष्णिक gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वार्ष्णिवृद्ध adj. nach dem Comm. = वृष्णिवृद्धेषु ज्ञातः Kaush. Br. 7, 4 in Ind. St. 2, 308.

1. वार्ष्णेय (von वृष्णि) m. patron. Çûsha's TBr. 3,10,9,15. Kekitâna's MBh. 6,3715. Kṛshṇa's Bhag. 1,41. 3,36. Pańkar. 3,8,7. 4,3,130. N. pr. des Wagenlenkers Nala's, der später in die Dienste Ṛtuparṇa's tritt, MBh. 3,2281. 2292. 2297. 2640. f. ई 1,4401. 5,4914. 7,2503. 12, 16. 14,1839. 1846. m. pl. *das von* Vṛshṇi *abstammende Geschlecht, — Volk* 2,1844. 5,804. 16,134.

2. वार्ष्णेय (vom vorhergehenden) adj. *zu* Kṛshṇa *in Beziehung stehend, ihn betreffend* MBh. 12,7652. 7654.

वार्ष्ण्य (von वृष्णि) m. patron. Çat. Br. 3,1,1,4.

वार्ष्मण (von वर्ष्मन्) adj. *zu oberst befindlich* Kauç. 23.

वार्ष्यायणि (von वृष) m. patron. P. 4,1,155, Vârtt. N. pr. eines Grammatikers Nir. 1,2. Verz. d. Oxf. H. 160,a,28. — Vgl. वार्षायणि.

1. वाल (spätere Form für वार; auch बाल geschrieben; die Bomb. Ausgg. des MBh. und Bhâg. P. वाल) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 250,b,8. 1) m. *Schweifhaar*, bes. *Rosshaar* (*Schweif*); = कुन्तल, कच, केश, शिरोरुह AK. 2, 6, 2, 46. Trik. 3, 3, 401. H. 568. an. 2, 502. Med. l. 39. Halâj. 2,375. = रोमन् H. ç. 127. = अश्वपुच्छ und इभपुच्छ (अश्वस्य करिणाश्च वालधिः) H. an. Med. अश्ववालाः TS. 6,2,1,5. 7,5, 25,1. AV. 9,7,8. वालादेकमणीयस्कम् *feiner als ein Haar* 10,8,25. 3, 22. 10,1. 12,4,7. Çat. Br. 3,4,1,17. 6,2,4. वालमात्रादसंभिन्नः 8,3,4,1. °दामन् 5,3,1,10. Kâtj. Çr. 15,3,30. गोः Gobh. 4,8,14. वालेषु काचानावयन्ति TBr. 3,9,4,4. Nir. 1,20. 11,31. वालाः पशूनाम् M. 8, 234. MBh. 1,1194. वालान्कृष्णान्पुच्छसमाश्रितान् 1237. 13,3348. 3798. R. 7, 37, 1, 37. Suçr. 1,28,6. 13. 93,16. 100,4. 2,90,6. तनुकेशवालरोमाणि (वाजिनः) ad Çâk. 6,5. कृष्ण° MBh. 1,1192. काल° 1236. 7, 959. 8, 2348. सूक्ष्मवक्रेशवाल (वाजिन्) Varâh. Bṛh. S. 66,1. किरन्ति वालान् (वाजिनः) 93,11. 67,3. Bhâg. P. 10,12,9. 37,3. चमरीवालभार Megh. 54. Spr. 2636. दैवैश्चमर्यः किल वालहेतोः सृष्टाः Varâh. Bṛh. S. 72,1. Kathâs. 59,42. वत्सर्याश्चित्कायन्या वालः Ind. St. 8,436. वाललेशो ऽपि व्याघ्राणां यत्स्याज्जीवितहानये Spr. (II) 1. Kathâs. 82,41.43. 45. 106,25. fg. पुनः 49,21. अ° 19. गोवालाः M. 8,250. Jâǵń. 1,185. 3,60. °ग्रथिता P. 4,3,151, Schol. सुवाल adj. von einem Elephanten Varâh. Bṛh. S. 67,7. बहुवालता चमर्याः 72,2. am Ende eines adj. comp. f. आ gaṇa क्रोडादि zu P. 4,1,56. — 2) m. *Haarsieb* VS. 19,88. Çat. Br. 12,7,3,11. 8,1,14. Kâtj. Çr. 14, 1,27. 19,2,8. — 3) m. n. *eine Art Andropogon* (ह्रीवेर; vgl. केश) AK. 2,4,4,10. Trik. 3,3,401. H. an. Med. Ratnam. 121. Suçr. 1, 72, 4. 238, 15. 344,5. Varâh. Bṛh. S. 77,7. — 4) f. आ und ई gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45. a) वाला α) *Kokosnuss* (wegen ihrer *Fasern* so genannt). — β) *Gelbwurz* (vgl. शिफा). — γ) *eine Art Jasmin* Med. — b) वाली α) *eine Art Schmuck*. — β) = मेध्य H. an. Med. — Vgl. ऊर्ध्ववाल, गोवाल, गोवाल, दीर्घवाला, दुर्वाल, प्रवाल, मणिवाल, रज्जु°, लोह°.

2. वाल n. angeblich so v. a. पर्वन् (zur Etymologie von सिनीवाली) Nir. 11,31.

वालक (von 1. वाल) 1) m. *Schweif eines Pferdes* oder *Elephanten* H. an. 3, 75. fg. Med. k. 129. — 2) m. n. *eine Art Andropogon* H. 1158. Med. Halâj. 2, 467. R. Gorr. 2,83,30. Suçr. 1,139,9. 2,416,19. 431, 3. 433,15. 16. 21. Çârṅg. Saṁh. 2,2,35. 37. Varâh. Bṛh. S. 77, 5. 9. 13. 28. — 3) m. f. n. *Fingerring* Med. k. 129. 157. — 4) m. n. *Armband* (vgl. वलय) ebend. — 5) f. वालिका a) *Sand* (vgl. वालुका) Trik. 3,3,35. H. an. Med. k. 129. — b) *eine Art Ohrschmuck* Trik. H. 656. H. an. Med. — c) *das Rauschen der Blätter* Trik. (wo पिञ्छोला st. पिञ्छे ना zu lesen ist). H. an. Med. — Vgl. वारि°.

वालखिल्य 1) adj. मन्त्राः oder ऋचः heissen die in der ṚV.-Saṁhitâ nach 8,48 aufgenommenen eilf (oder nach Sâj. zu Ait. Br. acht) Lieder Ait. Br. 5, 15. 6, 24. der Abschnitt wird in den Hdschrr. als वालखिल्यम् bezeichnet Âçv. Çr. 8,2,3. Çâṅkh. Br. 30,4.8. Pańkav. Br. 13,11,3. 14,5,4. Çâṅkh. Çr. 12,6,12. Roth, Zur L. u. G. d. V. 35. °खिल्याः Verz. d. Oxf. H. 56, a, 8. °खिल्याध्यमंहिता Bhâg. P. 12,6,59. स° Karaṇavjûha in Ind. St. 1,61. दशतीं वालखिल्यकाम् 3,276. — 2) m. pl. Bez. gewisser daumengrosser Ṛshi, die in Beziehung zur Sonne zu stehen scheinen, Sâj. zu Ait. Br. a. a. O. Ind. St. 3,236,a. Maitrjup. 2,3. Taitt. Âr. in Ind. St. 1,78. MBh. 1,1385. fgg. 2863. 7683. 2,437. 3,174. 10903. 7,8728. 12,13564. 13,442. 681. 4121. 5604. 6488. fgg. R. 1, 51, 27 (52, 26 Gorr.). 3, 10, 2 (नवे ऽन्ने प्राप्ते पूर्वसंचितान् त्याजिनः Comm.). 39, 30. 4, 40, 60. विरराज — वालखिल्यैरिवांशुमान् Ragh. 15,10. Kathâs. 12,142. Bhâg. P. 3, 12,43. 4,1, 39. 5,21,17. 6,8,38. 12,11,49. Mârk. P. 18,49. 52,24. fg. 106,52. Sarvadarçanas. 99,2. Verz. d. Oxf. H. 310, a, 30. °खिल्याश्रम 52,b, 27. fg. °कृता धर्माः 266,b,24. °खिल्येश्वरतीर्थ 67,a,37. — 3) f. आ Bez. *gewisser* Ishṭakâ TS. 5,3,2,5. Çat. Br. 8,3,4,1. 7. 10,4,3,16. Kâtj. Çr. 17,9,8. — Zur Etymologie vgl. Çat. Br. 8,3,4,1. Ait. Br. 6,24. Als Eigenname vermuthlich so v. a. *eine kahle Stelle in den Haaren habend, glatzköpfig*, jedoch mit spottendem Nebensinn, da वाल eigentlich nicht von mensch-

lichen *Haaren* gebraucht wird. Häufig falsch वालि° und बालि° geschrieben.

वालधान (1. वाल + धान) n. *Schweif, Schwanz* TS. 7,3,16,2. Kâtj. Çr. 13,3,16. Lâtj. 3,11,3.

वालधि m. 1) dass. AK. 2,8,2,18. H. 1239. 1244. Halâj. 2,286. अश्वस्य Lâtj. 9,9,19. Shadv. Br. 5,10. M. 4,67. MBh. 7,1574. 14,1731. गोः 1,3934. 13,5969. सु° (गो) 1,6662. Varâh. Bṛh. S. 61,12. 15. शार्दूलस्य R. 2,61,19 (बलधि ed. Schl.). Vgl. चक्रबालधि, दण्ड°, वक्र°. — 2) N. pr. eines Muni MBh. 3,10736. fgg. (beide Ausgg. बालधि).

वालधिप्रिय 1) adj. *seinen Schweif lieb habend.* — 2) m. *Bos grunniens* Râgan. im ÇKDr. u. चमर; vgl. उपलधिप्रिय und Spr. 2656.

वालन adj. von 1. वलन 2): सूत्र Golâdhj. 9,14.

वालपाश्या f. *eine Perlenschnur, mit der das Haupthaar gebunden wird*, AK. 2,6,3,4. H. 655.

वालबन्ध m. *Schwanzriemen* MBh. 8,976. Eine andere Bed. muss das Wort in Verz. d. Cambr. H. 63 haben.

वालबन्धन m. dass. MBh. 8,1483.

वालभिद् in मक्षा° (wie st. मक्षावालभिद् zu lesen ist). Die Redespielerei dieses Namens hat die sechs ersten Vâlakhilja-Lieder zum Stoff.

वालम्मदेश m. N. pr. einer *Gegend* Verz. d. Oxf. H. 352,*b*,14.

वालव (बालव, बालब) wohl n. N. eines Karaṇa Varâh. Bṛh. S. 99,4. 6. Koshṭhipr. im ÇKDr. im Prâkrit Ind. St. 10,286. — Vgl. 2. करण 3) *m*).

वालवर्ति f. *Haarbäuschchen* Suçr. 2,23,15. fg.

वालवाय m. 1) (*Ross-*) *Haarweber* P. 6,2,76, Schol. — 2) N. pr. eines Berges P. 6,2,77, Schol.

वालवायज 1) adj. *auf dem Berge* Vâlavâja *wachsend, — gewonnen werdend.* — 2) n. *Lasurstein* Trik. 2,9,29. H. 1063. Hâr. 27. Halâj. 2,20.

वालवासस् n. *ein härenes Gewand* M. 11,92. Jâǵn. 3,254.

वालव्यजन n. *ein Fliegenwedel aus Schweifhaaren* insbes. *des Bos grunniens* H. 717. MBh. 1,5416. Hariv. 9580. R. 2,91,38 (100,37 Gorr.). 6,112,78. Ragh. 9,66. 14,11. Kumâras. 1,13. Râǵa-Tar. 5,386. Bhâg. P. 4,15,15. 10,81,17. am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 16,57.

वालव्यञ्जन fehlerhaft für °व्यजन H. 717, Schol. Saddh. P. 4,12, *a*.

वालहस्त m. *Schweif, Schwanz* AK. 2,8,2,18. H. 1244. Halâj. 2,286.

वालाती f. *eine best. Pflanze* (= केशपुष्ट?) Çabdak. bei Wilson.

1. वालाग्र n. *die Spitze eines Haares* (*Schwanzhaares*) Çvetâçv. Up. 5, 9. als Maass = 8 Raǵas = 64 Paramâṇu Varâh. Bṛh. S. 58,2. Mârk. P. 49,37.

2. वालाग्र adj. *eine haarfeine Spitze habend* Shadv. Br. 4,4.

वालाग्रपोतिका f. wohl *ein auf einem zugespitzten Pfahle, also gleichsam auf einer Haarspitze, balancirendes Boot* Ind. St. 10,279.

वालावितु m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 5,225.

वालि m. 1) N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,*b*,27. — 2) eines Affen, = वालिन् Trik. 2,8,7. H. 704.

वालिक (बालिक) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,39.

वालिकाज्य (बा°, v. l. वाणिकाज्य) m. gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4,2,54. वालिकाज्यविध *von* Vâl. *bewohnt* ebend.

वालिकायन adj. von वलिक gaṇa पक्षादि zu P. 4,2,80.

वालिखिल्य s. u. वालखिल्य.

वालिखिल्ल m. N. pr. eines Sohnes des Draviḍa Çatr. 7,2.

वालिन् (von 1. वाल) 1) adj. *geschwänzt* oder *haarreich; ein Haar habend* d. h. *desselben bedürfend* (für eine Etymologie gebildet) Nir. 11, 31. — 2) m. N. pr. *a*) eines Daitja MBh. 2,367. — *b*) eines Affen, Bruders des Sugrîva und Sohnes des Indra, Trik. 2,8,7. H. 704. MBh. 3,11194. 4,752. R. 1,1,61. 68. 3,23. 16,11. 6,4,48. 75,63. 7,34,3. (वासवस्य) वालेषु पतितं बीजं वाली नाम बभूव सः 37,1,37. Ragh. 12,58. Bhâg. P. 9,10,12. — 3) f. वालिनी *das* Nakshatra Açvinî H. 108.

वालिशिख m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1553.

वाली in खले°.

वालु m. = एलवालु Uṇâdik. bei Wilson.

वालुक (von वालुका) 1) adj. *a*) *aus Sand gemacht:* °सेतु Spr. 5079. — *b*) *sandhaltig, sandartig.* — 2) m. *ein best. vegetabilisches Gift* H. 1197. — 3) f. ई *a*) *Sandbad.* — *b*) *Kampher* Çabdak. bei Wilson. — *c*) *Cucumis utilissimus* (vgl. वालुङ्की) H. 1189. Halâj. 2,54. Gaṭâdh. bei Wilson. — 4) n. = एलवालुक, हरिवालुक AK. 2,4,4,9. H. an. 3,98. Med. n. 121.

वालुका f. (gew. pl.) *Sand* AK. 3,4,14,76. H. 1089. an. 3,75. 98. Med. k. 130. fg. Halâj. 3,48. Çvetâçv. Up. 2,10. M. 8,250. MBh. 3,10723. 13530. वालुकास्विव मुद्रितम् Spr. 677 (II). 4787. Suçr. 1,171,21. Çârṅg. Saṁh. 3,2,14. Sâh. D. 64,11. Pańkat. 205,8. Daçak. 91,16. वालुकार्णव *Sandmeer, Sandwüste* MBh. 17,48. Râǵa-Tar. 4,289. 294. वालुकाम्बुधि dass. 172. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) R. 1,2,7. 2,55,31. 5,16,35. Hariv. 9005. fg. Varâh. Bṛh. S. 54,83. 91. Scheinbar N. einer Hölle MBh. 13,5491, wo aber mit der ed. Bomb. घोरवालुकं zu lesen ist. — Vgl. करम्भ° unter करम्भ 1) *a*) (MBh. 18,50 liest die ed. Bomb. °वालुकास्तप्ताः), तप्तबालुक, ब्रह्मवालुक, रक्त°, स्थूलवालुका.

वालुकागड n. *ein best. Fisch* Hâr. 190.

वालुकात्मिका f. *Sandzucker* Çabdak. bei Wilson.

वालुकाप्रभा f. N. einer Hölle bei den Ǵaina H. 1360.

वालुकि m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 234,*a*,6. वालुकिन् Hall 16. भालुकि und वासुकि v. l.

वालुकेल n. *eine Art Salz* Suçr. 1,227,8.

वालुकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,29.

वालुङ्की f. = वालुकी *Cucumis utilissimus* Trik. 2,4,36.

वालूक m. = वालुक 2) H. 1197, v. l.

वालेय m. patron. Kâtj. Çr. 10,2,21. — Vgl. बालेय (in der Bed. *Esel* Varâh. Bṛh. S. 86,26. 88,5 mit व geschr.).

वाल्क (von वल्क) adj. *aus Bast gemacht* AK. 2,6,3,12. n. *Zeug* —, *ein Gewand aus Bast:* °कर्तृ Mârk. P. 15,29.

वाल्कल (von वल्कल) 1) adj. *aus Bast gemacht.* — 2) f. ई *ein best. berauschendes Getränk* Trik. 2,10,15.

वाल्गव्य m. patron. von वल्गु gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

वाल्गव्यायनी f. zu वाल्गव्य gaṇa लोहितादि zu P. 4,1,18.

वाल्गुक (von वल्गु) adj. (f. ई) *recht zierlich* u. s. w. gaṇa अङ्गुल्यादि zu P. 5,3,108.

वाल्मिकि m. v. l. für वाल्मीकि gaṇa गहादि zu P. 4,2,138.

वाल्मिकीय adj. von वाल्मिकि v. l. im gaṇa गहादि zu P. 4,2,138.

वाल्मीक 1) adj. *von* Vâlmîki *verfasst:* काव्य Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, xxiii. — 2) m. = वाल्मीकि Trik. 2,7,19. H. 846. MBh. 5,2946. Hariv. 3285. R. 7,71,3. Weber, Râmat. Up. 306. ein Sohn Kitragupta's Verz. d. Oxf. H. 341,*b*, No. 799.

वाल्मीकभौम n. wohl = वल्मीक *Ameisenhaufe* Adbh. Br. 6,6 in Ind. St. 1,40.

वाल्मीकि (von वल्मीक) m. N. pr. gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. einer der Söhne des Garuḍa MBh. 5,3596. ein alter Ṛshi: वाल्मीकिवत्ते निभृतं स्ववीर्यम् 1,2110. 2,297. 12,7521. Grammatiker TS. Prât. 5,36. 9,4. Verfasser des Râmâjaṇa Trik. 2,7,18. H. 846. Halâj. 2,257. ग्रपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि। न कृत्तव्याः स्त्रिय इति MBh. 7,6019. Hariv. 5. R. 1,1,1. fgg. 2,56,13,*c*. Ragh. 14,45. VP. 273. Bhâg. P. 6,18,4. Weber, Râmat. Up. 314. Saṁsk. K. 183,*b*,11. Kshitiç. 1,2. Madhus. in Ind. St. 1,20,25. Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,36 (°मुनि, °कवि). Verfasser des Jogavâsishṭha Hall 121. Ind. St. 1,468. des Adbhutarâmâjaṇa ebend. des Gaṅgâshṭaka Verz. d. B. H. No. 1352. गौड° 973.

वाल्मीकीय adj. *zu* Vâlmîki *in Beziehung stehend, von ihm verfasst* u. s. w. gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. तपोवन Ragh. 15,11. रामायण R. in den Unterschrr. der Sarga.

वाल्मीकेश्वर n. und °तीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*b*,25. 77,*a*,15.

वाल्लभ्य (von वल्लभ) n. *das Beliebtsein, das in Gunst-Stehen:* राज° *beim Fürsten* MBh. 4,687. नरेन्द्र° Varâh. Bṛh. S. 53,72. वाल्लभ्यमायाति जनस्य 85,7. वाल्लभ्यं केशवमयं वकृत्यः so v. a. *die Gunst* Keçava's *besitzend* Hariv. 8321. स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् Suçr. 2,153,13. पूर्वोक्तं प्राप भूपतेः। वाल्लभ्यम् Kathâs. 20,46. वाल्लभ्यं तस्य लेभिरे Râǵa-Tar. 6,158. *Zärtlichkeit:* विविधघटनावाल्लभ्यानां निधिः 2,1.

वाल्वङ्गिरि m. *Cucumis utilissimus* Hâr. 126. — Vgl. वालुक.

वाँवँ Çânt. 4,15. adv. doppelt betont, vermuthlich Zusammenrückung zweier Partikeln, bekräftigend und dem Worte nachgesetzt, auf welches der Nachdruck fällt: *gewiss, gerade, eben.* Besonders häufig im ersten von zwei correlaten Sätzen, daher namentlich im Relativsatz gebraucht. Das Wort ist dem umständlichen Stil der Brâhmaṇa eigen; im Çat. Br. erst vom 6ten Buche an häufig. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,64. एष वाव सो ऽग्निरित्याहुः *das ist gerade derselbe* Agni TS. 2, 2,4,8. 5,1,6. त्रीणि वाव सवनानि 3,2,2,1. TBr. 1,1,10,3. 2,1,2,9.10. Çat. Br. 1,9,3,16. ग्रस्यन्वान्वाव पशुर्जायते 6,6,2,9.4,10. ग्रतं वाव दीता सत्यं दीता Ait. Br. 1,6. 13. 15. मकृद्वाव, ग्रभ्यल्पं वा 3,9.15. यदि कृ वा ग्रपि बह्व इव जायाः पतिर्वाव तासां मिथुनम् 47. 5,25. ग्रग्निर्वाव पुरोहितः पृथिवी पुरोधाता 8,27. इयं वाव, ग्रसौ TBr. 1,4,6,2. पुरुषो वाव सुकृतम् Ait. Up. 2,3. तव कृ वाव किल भगव इदम् *dir allerdings gehört dieses* Ait. Br. 4,14. ग्रादित्येन वाव सर्वे लोका मकृीयन्ते Taitt. Up. 1,5, 2. ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूम Ken. 32. नाम्नो वाव भूयो ऽस्ति Khând. Up. 7,1,5. 3,2. वाग्वाव नाम्नो भूयसी 2,1. 3,1. 4,1 u. s. w. ग्रहं वाव पितास्मि यो मत्तकृदस्मि Paṅkav. Br. in Ind. St. 9,46. एतावती वाव प्रजापतेर्वेदिर्यावत्कुरुक्षेत्रम् 1,35. एष वाव देवतल्पः 10,78. Maitrjup. 2,6. ग्रयं वाव 1. इयान्वाव किल पशुर्यावती वपा Ait. Br. 2,13. एवं कृ वाव 4, 25. 8,11. TBr. 1,2,2,5. nach इति 6,9,9. 7,8,5. TS. 1,5,8,5. nach इत्थम् 2,6,8,5. पुरा खलु वाव 6,1,11,6. यद्वाव, तदेव Ait. Br. 1,2. यर्हि वाव, तर्ह्येव 27. यस्यै वाव, सैव 2,6. यतरो वाव, स एव 3,9. TBr. 1,5, 11,2. 12,2. 3,8,14,1. TS. 2,6,2,1. 5,6,2,1. यो कृ खलु वाव, स वा एषः Maitrjup. 2,4. यथा वाव Vedântas. (Allah.) No. 77. यर्हि वाव Bhâg. P. 2,9,3. 5,1,6. 5,32. यद्ध कृ वाव 3,15. तस्यामु कृ वाव 1,24. इति कृ वाव 23. ग्रथ कृ वाव 6,9,38. सद्यो कृ त्वाव (= तु वाव) Çat. Br. 11,5,4,12. त्रयो कृ त्वाव पशवो ऽमेध्याः 12,4,1,14.

वावदूक (vom intens. von वद्) adj. Vop. 26,153. gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. *sehr beredt, geschwätzig, streitsüchtig* AK. 3,1,35. H. 346. Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 2,27. Bhâgavṛtti bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,41. MBh. 12,598. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 308.

वावदूकत्व (von वावदूक) n. *Beredsamkeit* Paṅkar. 1,14,107.

वावदूक्यँ m. patron. von वावदूक gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151.

वावय m. *eine Art Basilienkraut* Çabdak. im ÇKDr.

वावर्त् (वावृत्), वावर्त्यते Dhâtup. 26,51. *wählen:* वावृत्यमाना Bhaṭṭ. 4,28. वावृत्त *gewählt* AK. 3,2,41.

वावल्ल m. *ein bes. Pfeil* H. 780, Schol.

वाँवक्हि (vom intens. von 1. वक्) adj. P. 3,2,171, Vârtt. 4. Vop. 26, 154. *trefflich führend* ṚV. 9,9,6.

वावाँत (ववात Padap.) 1) adj. etwa *geliebt, Liebling* (vgl. 1. वन्): सं तें वावाता जरतामियं गीः ṚV. 4,4,8. उपं ब्रध्नं वावाता वृषणा कृरी इन्द्रमपसु वतत: 8,4,14. — 2) f. ग्रा *Favoritin*, nach den Comm. *diejenige Gattin eines Fürsten, welche der* मकृिषी, *der Gesalbten, nachsteht, aber der* परिवृक्ती *vorangeht.* सेना वा इन्द्रस्य प्रिया जाया वावाता प्रासहा नाम Ait. Br. 3,22. शचीं वावातां सुपुत्रां चादितिम् Çâṅkh. Gṛhj. 1,12. TBr. 1,7,3,3. Âçv. Çr. 10,8,12. Çat. Br. 13,2,6,5. 4,1,8. 5,2,6. Kâtj. Çr. 20,1,12. 3,5. 5,15. R. ed. Bomb. 1,14,35.

वावाँतृ (ववातृ Padap.) nom. ag. *der Anhängliche, Getreue:* वावातुर्यः पुरंदरः ṚV. 8,1,8. सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि 16.

वावट m. *Schiff* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वार्बट.

वावृद्ध s. वाचावृद्ध.

वाश्, वाँश्यते Dhâtup. 26,54 (शब्दे). वाँश्यति, वाशते, वाँशति; ववाशिरे und वावश्रे (ved.); वाँवशती P. 7,3,87, Vârtt. 1. ṚV. 4,50,5. वावशानँ; ग्रवाशिष्टाम् TBr. 3,7,8,1. *blöken, brüllen* (von der Kuh), *heulen* (vom Schakal u. s. w.); auch vom Ruf grösserer Vögel: *krächzen; ächzen:* यस्याग्निक्तोत्री दुक्ह्यमाना वाश्येत Ait. Br. 5,27. धेनवो वावशानाः ṚV. 1, 72,6. 3,57,3. तं (उत्तणं) वावशानं मतयः सचत्ते 9,95,4. ग्रवीवशत धीतयो वृषभस्याधि रेतसि 19,4. 86,31. Da von वश् dieselbe reduplicirte Form gebildet wird, so wird mit dem Doppelsinn gespielt, z. B. 9,97,34 vgl. mit 35. — Çat. Br. 12,4,1,12. Kâtj. Çr. 25,9,12. Kauç. 63. vom Raubvogel Pâr. Gṛhj. 3,5. Klagerufe: बिभ्यस्यतो ववाशिरे Nir. 1,10. सं विद्युता दधति वाशति त्रितः ṚV. 5,54,2. — वाश्यमान R. Gorr. 1,27,13. Varâh. Bṛh. S. 90,13. काका वाश्यन्ति R. 7,6,58. वाश्यत्यग्र शिवाः 55. वाशते MBh. 2,1547. 5,4857. R. 3,64,4. Varâh. Bṛh. S. 95,42. वाशमान MBh. 1,8433. 12,4213. Spr. 4594. चीची कूचीति वाशन्ति सारिकाः MBh.

16,38. Hariv. 1146. 9297. Mṛkkh. 143,13 (वासति). Varâh. Bṛh. S. 46, 68. 88,6. 95,39. कुररीमिव वाशतीम् MBh. 3,2381. 10437. ह्वा ह्वताः स्मेति वाशत्यः 10493. 6,4526. Hariv. 1144. 1146. 4820. Varâh. Bṛh. S. 88,21. 95,28. 43. Mârk. P. 2,44. ववाशिरे च दीप्तायां दिशि गोमायुवायसाः MBh. 6,639. 4522. Ragh. 11,61 (ed. St. ववासिरे, ed. Calc. ववाशिरे). Bhaṭṭ. 14,14. 76. वाशित्वा Varâh. Bṛh. S. 95,26. — Vgl. राश् und 1. रास्.

— caus. *blöken* —, *krächzen machen* ṚV. 9,21,7. ऋतो यथा गणं विश्रस्यावीवशन्मतिम् 32,3. धेनूर्वाश्रो अवीवशत् 34,6. गाः 107,26. क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशत् *dröhnen machen* 86,19. त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः *hast dröhnen* d. h. *donnern gemacht* 1,31,4. med. *sich laut hören lassen:* ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः 10,64,15.

— intens. *laut heulen*, — *krächzen:* पक्षापक्षेति सुभृशं वावाश्यन्ते वयांसि च MBh. 6,111. वावाश्यमान 12,389 nach der Lesart der ed. Bomb. st. रारास्यमान der ed. Calc.

— अनु *ein Gebrüll* u. s. w. *erwiedern:* वामे वाशित्वादौ दक्षिणपार्श्वे ऽनुवाशते यातुः Varâh. Bṛh. S. 95,26. हस्त्यश्वश्वादयो ऽनुवाशन्ते 53,107. mit acc.; pass.: ते ग्राम्यसत्त्वैरनुवाश्यमानाः 91,2. शकुनो दीप्तो वामस्थेनानुवाशितः 86,70.

— प्रत्यनु dass.: द्वाभ्यामपि प्रत्यनुवाशितास्ते मृगाः Varâh. Bṛh. S. 91,2.

— अभि *blökend* u. s. w. *begrüssen, anbrüllen* u. s. w.: अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरे ऽग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ṚV. 2,2,2. ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम् 9,94,2. 90,2. 10,123,3. गृत्समदं कपिञ्जलो ऽभिववाशे Nir. 9,4. अभिवाशन्तः MBh. 6,53. 15,1073. Varâh. Bṛh. S. 95,39. — Vgl. वत्साभिवाशिन्.

— उद् *wehklagend anrufen:* उद्वाश्यमानः पितरम् Bhaṭṭ. 3,32.

— नि s. निवाश.

— प्र *ein Gekrächz erheben:* काकैः प्रवाशद्भिः Varâh. Bṛh. S. 95,8.

— प्रति *Jmd* (acc.) *zublöken, zukrächzen:* प्रति गाव उषसं वावशन्त ṚV. 7,75,7. यदन्यच्छुनश्च गर्दभाच्च प्रतिवाश्यते Pañkav. Br. 21,3,5. 6. Lâṭj. 9,8,16. प्रतिवाश्य Varâh. Bṛh. S. 95,29. fg. — Vgl. प्रतिवाश.

— सम् *zusammen blöken* u. s. w.: समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः ṚV. 1,62, 3. इच्छन्ते ज्ञाता समवावशीताम् 181,4. सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः 9,96,14. — caus. *zusammen blöken lassen:* धेनूः Lâṭj. 3,6,1.

1. वाश (von 1. वश्) adj. etwa *botmässig, gehorsam* (= कान्त oder शब्दायमान Sâj.) ṚV. 8,19,31.

2. वाश adj. entweder eben so oder zu 2. वश, in einer Formel VS. 10,4. TS. 2,4,7,2. 9,3. वाशी 3,3,2,1. — TBr. 1,7,5,4.

3. वाश 1) m. patron. von वश Çâñkh. Çr. 6,11,22. — 2) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,*a*. Lâṭj. 1,6,45.

1. वाशक (von वाश्) adj. *krächzend:* नानावाशककङ्कपङ्क्तिरुचिर Mṛkkh. 144,11.

2. वाशक 1) m. *eine best. Pflanze*, = वासक Colebr. und Lois. zu AK. 2,4,2,22. — 2) f. वाशिका dass. diess. zu AK. 2,4,2,21. Varâh. Bṛh. S. 55,22, v. l. (nach Kern).

वाशन (von वाश्) 1) adj. *krächzend, zwitschernd* u. s. w.: भृङ्गालीकोकिलक्रुञ्चिर्वाशनैः Bhaṭṭ. 6,73. — 2) m. proparox. संज्ञायाम् gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. — 3) n. *das Blöken* Comm. zu TBr. III, 518, 8. 16. — Vgl. घोर°.

वाशव m. = वासव Dvirûpak. in Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449.

वाशा f. *eine best. Pflanze*, = वासक Çabdar. im ÇKDr. Kauç. 8. 39. — Vgl. वासा.

वाशि Uṇâdis. 4,124. m. = अग्नि Uģģval.

1. वाशित (von वाश्) n. *Geheul, Gekrächz* u. s. w. AK. 1,1,6,4. H. 1407. गोमायु° R. 3,64,10. शकुनेः MBh. 9,1797 (वासित ed. Calc.). Varâh. Bṛh. S. 88,26. 29. 36. गृध्रवायस° Kathâs. 18,147. 121,169. मयूरवासित Comm. zu Njâjas. 2,1,36.

2. वाशित = वासित (von वासय्) Svâmin zu AK. nach ÇKDr.

वाशिता (von वश् oder वाश्) f. 1) *eine rindernde Kuh:* अभिक्रन्दन्नृषभो वाशितामिव (वासिताम् die Hdschr.) AV. 5,20,2. पर्यर्षभाय वाशिता न्यावित्क्षायति TBr. 1,1,9,9. Ait. Br. 6,18. 21. fg. Kâṭh. 13,4. MBh. 1,4114. 4,512 (wo mit der ed. Bomb. वरर्षभम् st. नरर्षभम् zu lesen ist). 7,5483. R. 7,32,52. Bhâg. P. 10,46,9. auch von andern weiblichen Thieren gebraucht, die nach dem Männchen verlangen; insbes. von der *Elephantenkuh* (*Elephantenkuh* überh. AK. 3,4,14,78. Trik. 2,8,35. H. ç. 176. an. 3,295. fg. Med. t. 152. Hâr. 52) MBh. 1,4109. बृंहन्तौ वासितार्हेतोः समदाविव कुञ्जरौ 5344. 7092. 4,751. 7,314. 7102. 11,642. R. 5,23,16. 7,23,24. Ragh. 19,11. Bhâg. P. 8,12,32. von einer *Löwin:* वासितासंगमे यत्तौ सिंहाविव महावने MBh. 6,5395. von *Gazellen:* वासिताभिः स्वच्छाभिर्मृगीभिः परिवारितम् (मृगम्) Mârk. P. 65,21. *Weib, Gattin* überh. AK. H. an. Med. Halâj. 2,326. हत्वा साध्वीं च नारीं च व्यसनित्वाच्च वासिताम्। भर्तव्यत्वेन भार्या च MBh. 12,9532. यो भर्ता वासितातुष्टो भर्तुस्तुष्टा च वासिता 13,5854. Im MBh. R. Ragh. Bhâg. P. Mârk. P. und bei den Lexicographen (nach ÇKDr. soll AK. वाशिता lesen, aber bei वासिता wird dasselbe gesagt) stets वासिता geschrieben.

वाशिन् (von वाश्) adj. *heulend, krächzend* u. s. w.: मण्डलैः काकगृध्राणामाकीर्णा रुतवासिभिः (lies रुतवाशिभिः) Kâm. Nîtis. 16,26. — Vgl. काक°, घोर°.

वाशिष्ठ s. वासिष्ठ.

वाशी f. 1) *ein spitzes Messer*, bes. zum Schnitzen: वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीम् ṚV. 8,29,3. सं शिशीत वाशीभिर्याभिरमृताय तक्षथ 10,53,10. अश्मन्मयी 101,10. der Marut 1,37,2. 88,3. 5,53,4. यत्रा शिक्षः पराव्यधीत्तना हस्तेन वाश्या (वास्या die Hdschrr.) AV. 10,6,3. ṚV. 8,12,12. यदी घृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चाव च *wenn* Agni *sein Messer* d. h. *die spitze Flamme auf und ab bewegt* 19,23. वाशि Uṇâdis. 4,124. P. 3,3,308, Vârtt. 7, Schol. = छेदनवस्तु Uģģval. = काष्ठभेदिनी ders. zu 117. वाशी *Axt* Trik. 2,10,3. H. 918. वास्यैकं (वास्यैकं ed. Calc.) तक्षतो वक्त्रम् MBh. 1,4605. 5,5250 (वाशी ed. Bomb., = काष्ठप्रच्छन्नं शस्त्रम् Nîlak.). — 2) angeblich *Stimme, Ton* Naigh. 1,11. Nir. 4, 16. 19. — Vgl. हिरण्य°.

वाशीमत् (von वाशी) adj. *ein Messer tragend* Nir. 4,16. die Marut ṚV. 5,57,2. Agni 10,20,6.

वाशुरा f. Uṇâdis. 1,39. *Nacht* Uģģval.

वाश्र (von वाश्) Uṇâdis. 2,13. adj. (f. आ) *blökend, brüllend; dröhnend; klingend, pfeifend:* das Rind ṚV. 1,32,2. 38,3. 95,6. 2,34,15. 8,43,17. 9,13,7. 34,6. 77,1. 10,119,4. वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना न्येतु 149,4.

भगवान्परिपाति दीनान्वाश्रेव (वाश्रेव ed. Bomb.) वत्सकम् *wie eine Kuh ihr Kalb* Bhâg. P. 4, 9, 17. धावन्तीभिश्च वाश्राभिर्द्रधोभारैः स्ववत्सकान् 10, 46, 9. गिरः ṚV. 8, 44, 25. Winde 7, 3. 7. 1, 37, 10. — 10, 99, 1. compar. Kâth. 33, 4. — Nach Viçva bei Uǵǵval. m. *Tag;* n. *Haus, Wohnung; Kreuzweg;* dieselben Bedeutungen bei Wilson und im ÇKDr. angeblich nach Med., wo aber die gedr. Ausg. वस्र hat; vgl. वास्र.

वाष्ट्का f. N. pr. eines Dorfes Râǵa-Tar. 8, 1262. 1491.

1. वास् s. वाश्.

2. वास्, वासयति s. वासय्.

1. वास (von 3. वस्) m. *Gewand, Kleid* Comm. zu AK. 2, 6, 3, 17. कृष्णवासाय MBh. 13, 882. चीरवल्कलवासधृक् Hariv. 12059. nur scheinbar Kathâs. 3, 71, wo वासस्यलक्तकम् zu schreiben ist. Eine aus metrischen Rücksichten für वासस् eintretende Nebenform. — Vgl. 2. उद्वास, कृत्ति°, 2. गो°, घन°, 2. पट°.

2. वासे (von 5. वस्) m. n. Siddh. K. 249, b, 7. zu belegen nur m. 1) *das Haltmachen für die Nacht, Uebernachten; das Verweilen, Aufenthalt; Aufenthaltsort, Wohnung* AK. 2, 2, 5. 3, 4, 14, 73. H. an. 2, 592. शिप्रं मृत्रन्त्यायवो न वासे ṚV. 5, 43, 14. Kâtj. Çr. 16, 6, 21. 25, 4, 3. 13, 23. Âçv. Gṛhj. 1, 8, 7. Çr. 3, 14, 18. Çâṅkh. Gṛhj. 2, 12. दिवसान्ते परिश्रान्ताः — विकारावसथेष्वेव वीरा वासमरोचयन् MBh. 1, 5014. व्यपयातेषु वासाय सैन्येषु 7, 2478. न्यग्रोधमेव वासार्थे कल्पयामासतुः R. 2, 52, 100. वासमाज्ञापयत् 5, 74, 20. अथ जगाम सुकृतं वासाय 7, 54, 18. वासार्थमारुरोह महातरुम् Kathâs. 42, 42. अहं वासाय प्राविशं गृहम् 71, 264. विविशुः सर्वतः पार्थ वासायेवाण्डजा द्रुमम् MBh. 7, 5620. अमात्याक्रान्ताः कुरुते वासम् 11, 165. R. 1, 33, 20 (34, 18 Gorr.). तस्यास्तीरे तदा सर्वे चक्रुर्वासपरिग्रहम् 36, 8. कृत्वा तु शैलपृष्ठे तौ वासमेकां निशाम् 3, 77, 4. 4, 63, 8. 7, 66, 16. 71, 3. चक्रुर्वासं नाध्वनि *sie machten unterwegs nirgends Halt* 108, 1. करोति वासं गिरिगह्वरेषु *seinen Wohnsitz aufschlagen* Spr. 2047. गर्भवासेषु कुर्वन्ति वासम् MBh. 11, 166. तत्र वासं न कारयेत् Spr. 1670. वासं चाभ्यकल्पयत् R. 2, 54, 17. समन्तात्तस्य शैलस्य सेना वासमकल्पयत् 98, 29. R. Gorr. 1, 1, 45. अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु Varâh. Bṛh. S. 59, 11. गङ्गोपकण्ठे वासश्च विहितो हस्तिनापुरे Kathâs. 18, 63. यदि तावद्वने वासश्चरितस्त्वया MBh. 4, 1934. तस्मिन्गृहे नित्यमुपैमि वासम् 13, 524. ऋषीणामाश्रमे वासमभ्ययात् R. 7, 66, 15. नन्दनवासमेत्य MBh. 3, 12348. अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् Spr. (II) 106. इतो वासमर्जुन रोचय MBh. 4, 8. mit einem loc. componirt P. 6, 3, 18. ग्रामेवास und ग्राम° Schol. गृहान्तिके Jâǵn. 3, 297. गृहे MBh. 1, 1877. शरभङ्गाश्रमे R. 1, 3, 17. fg. वने 2, 52, 61. Spr. 557. 2183. 2730. काञ्चनपञ्जरे 2782. विदेशे 5373. व्रजे Bhâg. P. 3, 2, 16. असकृद्गर्भवासेषु वासः M. 12, 78. नरके Bhag. 1, 44. Bhâg. P. 8, 21, 32. स्वर्गे R. 2, 27, 20. पादमूले Bhâg. P. 7, 1, 37. तत्पदे Pańkar. 1, 4, 15. गुरोः कुले M. 2, 243. गुरौ 67. Kâm. Nîtis. 2, 22. दासीषु MBh. 2, 2230. नारीणां चिरवासो बान्धवेषु 1, 2999. Mârk. P. 77, 19. अरण्य° R. 2, 28, 23 (°वासे वसतः). 44, 6. पुर° 95, 12. परगृह° Uttarar. 20, 3 (27, 3). अन्यगेह° Spr. 1765. 5418. Ragh. 19, 2. स्वर्ग° Suçr. 1, 96, 4. स्वर्गवासकर *einen Aufenthalt im Himmel verschaffend* Hariv. 282. गोलोक° Pańkar. 1, 4, 24. अन्धतामिस्र° Kathâs. 4, 63. वासं वस् *sich niederlassen, sich aufhalten, wohnen, leben:* अस्तमर्के गते वासं केशिन्यां तावथोषतुः R. 7, 51, 30. नाब्राह्मणे गुरौ शिष्यो वासमात्यन्तिकं वसेत् M. 2, 242. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो मम R. 2, 37, 5. अज्ञातवासं वसतो मद्गृहे MBh. 3, 3020. अज्ञातवासं न्यवसद्ब्राह्मणस्तस्य निवेशने 2653. दुर्गवासं बहुधा निरूप्य *ein schwerer Aufenthalt* 12344. तस्मिन्गुरौ गुरुवासं निरूप्य 14, 749. उषित्वा सुखवासम् R. 1, 17, 17 (6 Gorr.). वसन्बहुदुःखवासम् Bhâg. P. 3, 31, 20. अनाश्रमे *das Leben ausserhalb der vier* Âçrama Jâǵn. 3, 241. Am Ende eines adj. comp. *seinen Aufenthalt habend, wohnend in:* व्रज° Hariv. 4213. तन्तीरवासानि (°वासीनि ed. Bomb.) दैवतानि R. 2, 52, 84. एक° *am selben Orte lebend* Spr. 856. गुरु° *beim Lehrer* MBh. 14, 917. सुख° *frohe Tage verlebt habend* R. 1, 17, 20 (9 Gorr.). — न ह्यन्ति शुको वासम् *Wohnstätte* MBh. 13, 269. Vop. 23, 6. वासं विवेश *Haus* Hariv. 7679. दृश्यन्ते ब्राह्मणानां च वासाः R. Gorr. 1, 51, 4. Kathâs. 71, 82. Daçak. 74, 14. Vet. in LA. (III) 8, 20. Dhûrtas. 75, 10. Pańkat. 118, 23. Bhâg. P. 1, 16, 33. तौ तपसां वासौ यशसां तेजसामपि। ऋषी *Stätte* MBh. 12, 13346. कान्तविलासवासवसति Dhûrtas. 73, 16. Vgl. अन्ते°, उद°, कीर्ति°, गर्भ° (auch MBh. 11, 166. Kathâs. 29, 110), 1. गो°, ग्राम°, जल° (*im Wasser sich aufhaltend* auch R. Gorr. 2, 28, 26), तपो°, नाग°, पङ्क°, 1. पट°, बदरीवासा, बिलवास, ब्रह्म°, भूत°, मर्कट°, मृगमादवासा, यथावासम्, वन° (adj. auch MBh. 14, 917), वारि°, वेश°, शयनीय°, अम्बुवासी. — 2) *Tagereise:* स गत्वा गणितान्वासान्सप्ताष्टौ R. 7, 71, 3. — 3) *Lage, Verhältniss:* नैवंविधेषु वासेषु भयमस्ति Hariv. 9933. — 4) = वासना *Vorstellung, falscher Schein:* भुजंगभोगवासेन श्रोणिसूत्रेण MBh. 4, 190.

3. वास m. *Wohlgeruch* Vikr. 38. Mâlatîm. 148, 4. — Vgl. 3. पट°, भङ्गवासा, मुखवास (auch Çiç. 9, 52), वक्त्र°, सु° und वासय्.

वासःकुटी *Zelt* Çabdârthak. bei Wilson.

वासःपल्पूली m. VS. Prât. 3, 37. *Kleiderwäscher* VS. 30, 12.

1. वासक = 1. वास am Ende eines adj. comp.: अशुद्ध° *schmutzige Kleider tragend* (*in einem verrufenen Hause wohnend* St.) Jâǵn. 2, 266. सर्व° *vollständig gekleidet* (= सर्वस्याच्छादक Nîlak.) im Gegens. zu दिग्वासस् MBh. 13, 753. संवीतासित° Kathâs. 73, 283. पट° (so die ed. Bomb.) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2159.

2. वासक (von 2. वास) 1) n. *Schlafgemach* Kathâs. 5, 31. 15, 21. 17, 131. 18, 281. 22, 14. 24, 166. 30, 113. 115. 33, 13. 45, 317. 46, 249. 48, 138. 49, 117. 71, 50. 87. 157. 73, 187. 337. 120, 47. am Ende eines adj. comp. f. आ 17, 66. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57, 46; vgl. वन°.

3. वासक (von 3. वास) 1) m. *a) Wohlgeruch:* मुख° = मुखवास Pańkar. 3, 9, 4. — *b) Gendarussa vulgaris Nees.*, ein hübscher Strauch in Gärten, AK. 2, 4, 3, 22. Aush. 6. Suçr. 2, 69, 15. 208, 13. 222, 18. Çârṅg. Saṁh. 2, 1, 7. 2, 32. 59. °ज Suçr. 2, 505, 4. — 2) f. वासका f. dass. Gaṭâdh. im ÇKDr. वासिका f. dass. AK. 2, 4, 3, 21. Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 55, 22.

4. वासक m. = गानाङ्गविशेष ÇKDr. mit folgendem Belege aus Saṁgîtadâm.: मनोहरो ऽथ कन्दर्पश्चानन्दन एव च। चत्वारो (!) वासकाः प्रोक्ताः शंकरेण स्वयं पुरा॥ केषांचिन्मते नामान्यपि पृथक्। विनोदो वरदश्चैव नन्दः कुमुद एव च। चत्वारो वासकाः प्रोक्ता गीतवाद्यविशारदैः॥

वासकर्णी f. *Opferhalle* (यज्ञशाला) Çabdar. im ÇKDr.

वासकसज्जा adj. f. *im Schlafgemach bereit*, Bez. *einer Geliebten, die zum Empfang des Geliebten Alles in Bereitschaft gesetzt hat,* Daçar. 2, 23. Sâh. D. 112. 120. Gît. 6, 8.

वासकसज्जिका f. dass. Sâh. D. 543. Pratâpar. 5,b,3.

वासगृह n. *Schlafgemach* AK. 2,2,8. Hâr. 140. MBh. 1,1874. Varâh. Bṛh. S. 53,70. Spr. 3010. Gît. 6,3. 8. Kathâs. 5,30. 18,262. 26,272. 31, 71. 95. 42,67. 45,182. 289. 46,15. 49,112. 52,89. 55,1. 57,80. 64,1. 66, 45. 71,83. 73,353. 82,27. Káurap. 37. Káurap. bei Haeb. 28. Çuk. in LA. (III) 33,14. am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 34,48. — Vgl. ज्ञात°.

वासगेह n. dass. Gît. 11,16.

वासत m. 1) *Esel* Çabdar. im ÇKDr. — 2) *Terminalia Bellerica Roxb.* Aush. 40.

वासताम्बूल (3. वास + ता°) n. *mit aromatischen Stoffen versehener Betel* Daçak. 88,3.

वासतीवर adj. von वसतीवरी Kâtj. Çr. 25,13,24. देवाः Ind. St. 3,458.

वासतेय 1) adj. = वसतौ साधुः P. 4,4,104. *Obdach gewährend* AV. 8, 10,4. वन Bhaṭṭ. 4,8. — 2) f. ई *Nacht* Trik. 1,1,105. H. 142. Halâj. 1,108.

वासधूपि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

1. वासन (vom caus. von 3. वस्) n. 1) *Gewand, Kleid* Med. n. 127. fg. Viçva beim Schol. zu Gît. 7,26 (zu lesen वासनं वसने). कृत° *bekleidet* Gît. 7,26. Vgl. गो°, welches Nilak. durch बलीवर्दपोषक erklärt. — 2) *Hülle, Umschlag, Enveloppe:* °स्थं द्रव्यम् Jâǵn. 2,65. वासनं निक्षेपाधारभूतं संपुटादिकं समुद्रं ग्रन्थ्यादियुतम् Vjavahârat. im ÇKDr.

2. वासन (vom caus. von 5. वस्) 1) n. a) *Wohnort* Çabdar. im ÇKDr. Viçva beim Schol. zu Gît. 7,26 (zu lesen वासनं वसने). Vgl. वन°. — b) *Wasserbehälter* Med. n. 127. fg. — c) = ज्ञान Dhar. im ÇKDr. Viçva beim Schol. zu Gît. 7,26. — 2) f. आ a) = भावना, संस्कार, अनुभूताद्यविस्मृति H. 1373. Halâj. 4,95. = प्रत्याशा (so ÇKDr.) und अज्ञान Med. *der vom Geiste empfangene und darin bleibende Eindruck, Vorstellung, Idee; falsche Vorstellung:* प्रकृतिः प्रकृष्टकारणाद्वासना वासयेच्चतः Sarvadarçanas. 66,11. Nilak. 62. 89. यस्मिन्नेव हि संताने आहिता कर्मवासना। फलं तत्रैव बध्नाति Sarvadarçanas. 25,13. fg. पूर्वजन्मानुभूतमरणादुःखानुभववासनाबलात् 168,6. 7. Çaṁk. zu Brahmas. 1,1,9. स्थिरा *feste Vorstellung, Ueberzeugung* 24,5. 41,1. 66,10. fg. 115,20. भेद° *die falsche Vorstellung, dass es eine Verschiedenheit gebe,* 16,16. 13,8. 17,4. 9. 10. 19,12. 14. 24,13. Kap. 2,3. Bâlab. 11. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 16. 213. 258. 282. Bhâshâp. 162. Prab. 50,12. 93,3. Kusum. 15,14. fgg. Schol. zu Kap. 1,26. 58. Vedântas. (Allah.) No. 138. 144. Spr. 1973. Gît. 3,1. Kathâs. 23,30. 54,235. 94,135. 98,30. Râǵa-Tar. 3,424. 4,389. 6,168. 174. 285. Bhâg. P. 2,2,2. 10,4. 5,6,7. 11,5. 25,8. 9,24,61. 10,51,62. Brahmavaiv. P. bei Burnouf, Bhâg. P. I, xlvi. Mârk. P. 95,12. Pańkar. 1, 9,10. 15,19. 2,8,5. Sâh. D. 39. 31,8. Verz. d. Oxf. H. 92,a,34. 233, a,7. Verz. d. B. H. No. 645. Kâçikh. 34,103 (dieses und die beiden folgenden Citate nach Aufrecht). Sarasvatik. 1. Kulârn. 1,115. विगलिताखिलवासनत्व Prab. 48,12. कुवासना Praçnottaram. 23. Vgl. दुर्वासना (*eine falsche Vorstellung*), 2. निर्वासन. — b) bei den Mathematikern so v. a. उपपत्ति *Beweis:* पूर्वार्धस्य वासना प्रागेवोक्ता Comm. zu Grahâlaj. 3. zu Pâtâdh. 9. zu Bhaganâdh. 12. fg. Golâdhj. 5,37. वासना मतिमता — ऊह्या 10,6. Titel von Bhâskara's Bemerkungen zum Çiromaṇi Colebr. Misc. Ess. II, 324. 332. °भाष्य 220 u. s. w. °वार्त्तिक 376. 396. 452. fg. — c) *ein Metrum von* 4×20 *Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 157 (III, 45). — d) N. pr. der Gattin Arka's Bhâg. P. 6,6,13. — e) Bein. der Durgâ Devî-P. 45 im ÇKDr.

3. वासनँ adj. von वसन P. 5,1,27.

4. वासन (von वासय्) n. *das Parfumiren* Med. n. 127. Viçva beim Schol. zu Gît. 7,26 (wo वासनं — च धूपने zu lesen ist). वासना Mallin. zu Çiç. 9,52. — Vgl. मुख°.

वासनामय (von वासना) adj. *in Vorstellungen bestehend, auf Vorstellungen beruhend* Bhâg. P. 12,7,12. Davon °त्व n. Vedântas. (Allah.) No. 63.

वासन्तँ (von वसन्त) 1) adj. (f. ई) a) *vernus* P. 4,3,46. मासौ AV. 15,4, 1. गायत्री VS. 13,54. Agni TS. 7,5,14,1. मुन्यन्न M. 6,11. अर्क MBh. 12,2025. Mallin. zu Kumâras. 4,18. — b) = अवहित Med. t. 153. = विहित H. an. 3,295. — 2) m. a) *Phaseolus Mungo Lin.* Trik. 2,9,3. *eine schwarze Varietät dieser Bohnenart* H. 1173. = मदनवृत्त Çabdam. im ÇKDr. — b) *Kameel* Trik. 2,9,23. H. 1254. H. an. Med. — c) *der indische Kuckuck* H. an. Râǵan. im ÇKDr. — d) *der vom Malaja blasende Wind im Frühling* Trik. 1,1,77. — e) *Schranze* u. s. w. (विट) H. an. — — 3) f. ई a) Bez. verschiedener *im Frühling blühender* Pflanzen P. 4, 3,43, Schol. *Gaertnera racemosa Roxb.* AK. 2,4,2,52. H. 1147. Med. t. 153. 183. Halâj. 2,53. Aush. 40. *eine Jasminart* (यूथी) H. an. Med. = मागधी (wohl nur fehlerhaft für माधवी) H. an. *Bignonia suaveolens* H. an. Viçva im ÇKDr. = प्रहसन्ती u. s. w. Râǵan. ebend. = नवमालिका Bhâvapr. ebend. — Gît. 1,26. — b) *das Frühlingsfest am Vollmondstage im Monat* Kaitra Trik. 1,1,109. — c) *ein best. Metrum: 4 Mal* ‒ ‒ ‒ ‒ ‒ ◡◡◡◡ ‒ ‒ ‒ ‒ ‒ Colebr. Misc. Ess. II, 161 (IX, 15). — d) N. pr. einer Waldgöttin Uttarar. 28,12 (37,14). 35,2 (46,11); vgl. वासन्तक 2) b). — e) N. pr. einer Tochter des Fürsten Bhûmiçukla Târan. 76. fg.

वासन्तक 1) adj. वाँ° = वासन्त P. 4,3,46. — 2) f. वासन्तिका (von वासन्ती) a) *Gaertnera racemosa Roxb.* H. an. 4,96. — b) N. pr. einer Waldgöttin: °परिणाय (वस° fälschlich gedr.) Mack. I, 111 (demnach ist वसन्तक 2) zu streichen); vgl. वासन्त 3) d).

वाँसन्तिक (von वसन्त) 1) adj. (f. ई) *vernus* P. 4,3,20. 5,1,96, Schol. ऋतु VS. 13,25. मासौ Ait. Br. 4,26. Âçv. Çr. 4,12,1. Çat. Br. 4,3,1,14. 8,5,2,14. Bhâg. P. 5,9,5. निशा R. 7,60,1. तरु Çâk. 78,18. वासन्तिकँ = वसन्तमधीते वेद वा P. 4,2,63. — 2) m. *der Spassmacher im Drama* (विदूषक) H. 331. Halâj. 2,277.

वासपर्यय m. *Wechsel des Wohnorts:* क्रियतां °पर्ययः Varâh. Bṛh. S. 43,17.

वासपुष्पि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

वासप्रासाद m. *Palast* Kathâs. 38,27.

वासभवन n. *Schlafgemach* Spr. 1230. Kathâs. 12,156. 51,185. im Prâkrit Dhûrtas. 75,5. 78,2. 82,1. — Vgl. वासगृह.

वासभूमि f. *Wohnort* Hit. 17,21.

वासमुलि (wohl °मूलि) m. N. pr.; pl. Saṁsk. K. 186,a,11.

वासय् (von 3. वास), वासयति (Dhâtup. 35,32 उपसेवायाम्) und वासयते 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* पुष्पवर्षाणि मुञ्चन्तो नगाः पवनताडिताः। शैलं तं वासयन्तीव मधुमाधवगन्धिनः॥ R. 7,26,10. अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम् Spr. (II) 118. Kusum. 65,10. Gît. 1,35. मुखमारुतैः Hariv. 8745. वस्त्रमापस्तिलान्भूमिं गन्धो वासयते

यथा। पुष्पाणामधिवासेन MBH. 3,24. माल्यैर्वास्यमानम् 12,10039. वासित = भावित (diese Bed. von भावित scheint dafür zu sprechen, dass man einen Zusammenhang von वासित in dieser Bed. mit dem caus. von 5. वस् annahm; auch वासना *Eindruck* u.s.w. wird durch भावना erklärt) AK. 2, 6, 3, 35. 2, 9, 46. H. 414. an. 3, 295. fg. MED. t. 152. *wohlriechend gemacht, parfumirt* KAUÇ. 11. 16. 19. 41. MBH. 1,6965. 10,332. 12,10038. HARIV. 3555. 3708. 8420 (पुष्पोच्चयैर् mit der neueren Ausg. zu lesen). MEGH. 20. ṚT. 1,4. 5,5. RAGH. 4,74. एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना। वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥ Spr. 551. MÂLATIM. 148,14. 153,17 = UTTARAR. 49, 2 (63, 4). KATHÂS. 63,11. 73,120. BHÂG. P. 8, 2, 24. 11,27,30. MÂRK. P. 61,25. 65,5. PAÑKAR. 1,14,71. 2,4,36. WILSON, SÂṄKHJAK. S. 130. लिप्तवासित (angeblich umgestellt) gaṇa राजदन्तादि zu P. 3,2,31. BHAṬṬ. 5,90. सुवासित HARIV. 4533. ṚT. 1,3. PAÑKAR. 1,6, 37. 2,4,39. — 2) वासित *parfumirt, gesalbt* so v. a. *afficirt, gefärbt:* मैत्र्यादिचित्तपरिकर्मवासितान्तःकरणा Verz. d. Oxf. H. 236,*b*, N. 4. अविद्यावासनया ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 238.

— अधि 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् BHÂG. P. 10,65,19. मधुभिर्गन्धपुष्पैश्च स्वधिवास्य Verz. d. Oxf. H. 103,*b*,2.3. सर्वगन्धाधिवासित MBH. 1,4949. 5,2903. 13, 642. HARIV. 6036. 8381. R. GORR. 1,5,17 (15 SCHL.). 66,11. 79,39. 4,27, 5. 5,13,15. ṚT. 2,17. VIKR. 127. — 2) *weihen:* अधिवास्यात्मनात्मानं (अधिवास्याद्य चात्मानं die neuere Ausg.) विधिदृष्टेन कर्मणा HARIV. 5994. अधिवासितशस्त्र MBH. 5,5135. Hierher gehört auch die unter 5. वस् mit अधि caus. 2) stehende Stelle. — 3) *afficiren, färben:* भावैरधिवासितं (= उपरञ्जितं Comm.) लिङ्गम् SÂṄKHJAK. 40. WILSON, SÂṄKHJAK. S. 130. — Vgl. 3. अधिवास und अधिवासन.

— अनु 1) *mit Wohlgeruch erfüllen, wohlriechend machen:* सुगन्धवातो दशयोजनं समन्तादनुवासयति BHÂG. P. 5,16,19. 24. 20,24. पारिजातपुष्पस्य संस्पर्शेनानुवासितः HARIV. 7058. — 2) *eine mit Riechstoffen gemischte ölige Einspritzung machen:* पयोमधुरकषायसिद्धेन तैलेनानुवासयेत् SUÇR. 1,367,15. °वासित *der ein solches Klystier erhalten hat* 276,19. — Vgl. अनुवास, °वासन, °वास्य.

— अभि, °वासित *wohlriechend gemacht* MBH. 12,6349 fehlerhaft für अधिवासित, wie die ed. Bomb. liest.

— आ *mit Wohlgeruch erfüllen:* (नागाः) आवासयन्तो गन्धेन R. 2,103,40.

— सम्, partic. संवासित *riechend* (*stinkend*) *gemacht:* Athem SUÇR. 2,369,13.

वासयष्टि f. *ein mit Querhölzern versehener aufrecht stehender Pfahl als Nachtquartier von zahmen Pfauen* MEGH. 77. VIKR. 43. Dieselbe Bed. hat यष्टिनिवास, wonach die Uebersetzung daselbst zu ändern ist.

वासयितर् (vom caus. von 5. वस्) nom. ag. wohl *Beherberger* oder *Erhalter:* अहं हि सुभ्रु राज्यस्य कृत्स्नस्यास्य सुमध्यमे। प्रभुर्वासयिता चैव MBH. 4,420.

वासयितव्य (wie eben) adj. *zu beherbergen* MBH. 13,5068.

वासयोग (3. वास + योग) m. *ein aus dem Gemisch verschiedener Stoffe zubereitetes wohlriechendes Pulver* AK. 2,6,3,35. H. 637.

वासर॑ (von 2. वस्) UṆÂDIS. 3,132. 1) adj. (f. ई) *früh erscheinend, morgendlich,* ἠέριος: प्र ण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ṚV. 8,48,7. प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् 6,30. तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः: *wie die Kuh am Morgen* 1,137,3. — 2) m. n. (eigentlich *Morgen*) *Tag* im Gegens. zur *Nacht; Tag* überh., *Wochentag* NAIGH. 1,9. AK. 1,1,3,2. H. 138. an. 3,600. MED. r. 215. HALÂJ. 1,106. नम्य ÇÂÑKH. GṚHJ. 4,7. वासरान्ते, निशान्ते Spr. 2989. निशावासरयोः KATHÂS. 71,96. 42,67. MṚKKH. 85,1. WEBER, KṚSHṆAǴ. 227. वासरावसाने RÂǴA-TAR. 2, 166. दयिणि वासरे DAÇAK. 86,4. वासरप्रहरैस्त्रिभिः KATHÂS. 59,89. व्यक्ते ऽपि वासरे Spr. 2905. 2519. परितापिषु वासरेषु KÂM. NÎTIS. 7,34. वसन्तोत्सववासरे KATHÂS. 4,49. 95,70. अन्यवासरे RÂǴA-TAR. 5,456. चैत्रादिवासरे 6,122. VARÂH. BṚH. S. 96,1. 104,61,*a*. BṚH. 2,14. masc. Spr. 3979. KATHÂS. 4,23. 5,80. 22,259. 28,188. 34,130. 173. 51,53 (विवाह°). RÂǴA-TAR. 1,285. 4,400. PRAB. 68,14. neutr. MEGH. 104. Spr. 634. PRAB. 106,13. VET. in LA. (III) 18,22. VARÂH. BṚH. S. 55,19. 78,26. 96,1. *Tag* so v. a. *Reihe:* अथ कदाचित्कस्यापि वृद्धशशकस्य वासरः (वारः ed. SCHL. 67,21) प्राप्तः HIT. ed. JOHNS. 1426. — 3) m. N. pr. eines Schlangendämons (नाग) MED. राग st. नाग H. an. — 4) f. ई *Tagesgottheit* KÂLAKAKRA 2,149. — Vgl. बिन्दु°, बोध°, रवि°, प्रतिवासरम्.

वासरकन्यका f. *Nacht* (*Tochter des Tages*) H. ç. 17.

वासरकृत् m. *Tagmacher* d. i. *die Sonne* H. 97, Schol.

वासरकृत्य n. *Tagesverrichtung, die täglich zu einer bestimmten Zeit zu verrichtenden Cerimonien* KATHÂS. 103,216. — Vgl. दिनकर्तव्य, दिनकार्य und दिवसक्रिया in den Nachträgen.

वासरमणि m. *das Juwel des Tages* d. i. *die Sonne* HAEB. Anth. S. 510, Çl. 3.

वासरसङ्ग m. *Tagesanbruch* BHAṬṬ. 13,2.

वासरा H. an. 3,601 fehlerhaft für वासुरा.

वासराधीश m. *der Herr des Tages* d. i. *die Sonne* SÂH. D. 308,18.

वासरेश m. 1) dass. KATHÂS. 28,189. — 2) *der Herr* (Planet, Sonne, Mond) *eines Wochentages:* ÇRÎPATI in SIDDHÂNTAÇIR. ed. BÂPÛD. S. 54.

वासव॑ 1) adj. (f. ई) *a*) *von den* Vasu *stammend, zu den* Vasu *gehörig* u. s. w.: Indra AV. 6,82,1. अग्निर्वसुभिर्वासवः NIR. 12,41. die sieben Sonnenrosse (Comm.) TS. 1,6,12,2. KÂṬH. 8,16. ÂÇV. ÇR. 4,7,4 (vgl. ṚV. 2,5,2). पङ्क्ति ṚV. PRÂT. 17,6. — *b*) *das Wort* वसु *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61. — *c*) *vom König* Vasu *kommend, ihm gehörig:* वीर्य MBH. 1,2389. — *d*) Indra (वासव) *gehörig* AV. PARIÇ. in Ind. St. 10,320. शक्ति MBH. 3,17211. 7,6331. 7812. 8302. fg. अशनी 9,581. अस्त्र HARIV. 10617. चमू MEGH. 44. — 2) m. *a*) Bez. Indra's (*das Haupt der* Vasu gaṇa पर्श्वादि zu P. 5,3,117) AK. 1,1,1,38. H. 171. HALÂJ. 1,52. 5,70. देवानामस्मि वासवः sagt Kṛshṇa BHAG. 10,22. MBH. 3,1777. 12047. 4,1296. 5,7072. 13,328. विषये वासवस्तस्य सम्यगेव प्रवर्षति 13,97. 14, 2863. HARIV. 261. R. 1,3,17. वसवो वासवं यथा (पर्युपासते) R. 1,7,5. 40, 7. 46,20. 62,26. 2,25,8. 40,10. 63,2. 4,25,34. RAGH. 3,58. 5,5. ÇÂK. 109, 16. VARÂH. BṚH. S. 9,39. 17,21. ÇÂK. 109,16. KATHÂS. 11,76. VP. 153. PRAB. 24,8. BURN. Intr. 131. LALIT. ed. Calc. 313,10. — *b*) *ein Sohn des Fürsten* Vasu MBH. 1,2365. — *c*) इन्द्रस्य वासवः N. eines Sâman Ind. St. 3,208,*a*. — *d*) N. pr. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13. — 3) f. ई *a*) patron. der Mutter Vjâsa's, die nach dem MBH. von der Apsaras Adrikâ, welche als Fisch den Samen des Fürsten Vasu verschluckt hatte, geboren ward, H. 847. MBH. 1,2401. BHÂG. P. 1,4,14. 6,38. sie

heisst पितॄणां मानसी कन्या Verz. d. Oxf. H. 12, *a*, 24. 47, *b*, 19. — *b*) Vâsava's *Energie* Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 42. — 4) m. n. *das unter den* Vasu *stehende* Nakshatra Dhanishṭhâ Sûrjas. 9, 18. Varâh. Bṛh. S. 71, 11. Weber, Nax. 2, 354. fg. Gjot. 34. fg. — 5) वासवं साम N. eines Sâman Khând. Up. 2, 24, 3.

वासवज m. Indra's *Sohn*, Bein. Arǵuna's MBh. 4, 1674.

वासवदत्त 1) m. N. pr. eines Mannes Târan. 38. — 2) f. आ *a*) ein häufig vorkommender Frauenname Burn. Intr. 146. Ratnâv. 12, 9. Kathâs. 11, 6. 79. 21, 34. 30, 65. Verz. d. Oxf. H. 153, *a*, 13. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 3. 36. Weber, Ind. Str. 1, 370. — *b*) *eine über* Vâsavadattâ *handelnde Erzählung* Schol. zu P. 4, 3, 87, Vârtt. Siddh. K. zu 4, 2, 60, Vârtt. 5. Titel eines Romans von Subandhu, herausgegeben von Hall in der Bibl. ind. 1859.

वासवदत्तिक adj. *mit der Erzählung von der* Vâsavadattâ *vertraut, sie studirend* P. 4, 2, 60, Vârtt. 5, Schol.

वासवदत्तेय m. metron. von वासवदत्ता P. 4, 1, 113, Schol.

वासवदिश् f. Indra's *Weltgegend* d. i. *Osten* Kathâs. 72, 27.

वासवावरज m. Indra's *jüngerer Bruder*, Bez. Vishṇu's H. 214, Schol.

वासवावास m. Indra's *Wohnstatt, der Himmel* H. ç. 1.

वासवि (von वासव) m. Indra's *Sohn* d. i. Arǵuna MBh. 3, 5115. 7, 745. 1209. 1250. 16, 143. patron. des Affen Vâlin R. 7, 34, 32.

वासवेय 1) adj. von वासव gaṇa सख्यादि zu P. 4, 2, 80. — 2) (von वासवी) metron. Vjâsa's MBh. 1, 59.

वासवेश्मन् n. *Schlafgemach* Kathâs. 6, 133. 10, 110. 12, 88. 14, 32. 18, 279. 22, 104. 28, 129. 29, 94. 31, 73. 41, 1. 45, 280. 50, 157. 64, 44. 111, 50. 122, 19. Sâh. D. 120. — Vgl. शय्या° und वासगृह.

वासवेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 67, *b*, 17.

1. वासस् (von 3. वस्) Uṇâdis. 4, 217. n. 1) *Gewand, Hülle, Kleid; Tuch, Zeug* AK. 2, 6, 3, 17. 3, 4, 25, 183. H. 666. Halâj. 2, 392. fg. 395. Ṛv. 1, 34, 1. रात्री वासस्तनुते सिमस्मै 115, 4. 162, 16. 8, 3, 24. 10, 26, 6. 102, 2. रुशत् 7, 77, 2. विश्वरूप VS. 11, 40. कौश Çat. Br. 5, 2, 1, 8. कृष्ण 5, 17. अहत Âçv. Gṛhj. 3, 8, 9. Kaush. Up. 2, 15. VS. 2, 32. वाससोपनह्यति TS. 6, 1, 9, 7. 11, 2. TBr. 1, 1, 6, 11. वाससा प्रोर्णुवन्ति Ait. Br. 1, 3. यद्वासः पर्यधास्यत Çat. Br. 11, 5, 1, 4. 1, 3, 1, 14. 3, 1, 2, 18. वासोभिर्यूपो वेष्टितो वा विग्रथितो वा भवति 5, 2, 1, 5. 3, 5. Kâtj. Çr. 8, 6, 37. 9, 4, 39. 10, 2, 5. Khând. Up. 5, 2, 2. वासश्च धृतमन्यैर्न धारयेत् M. 4, 66. वसित्वा मैथुनं वासः 116. परिधानेन वाससा MBh. 3, 2310. वासश्चेदं निवासयेः 2631. R. 4, 5, 14. Megh. 60. 69. Kumâras. 7, 9. Spr. 738. 2771. वासो वल्कलम् 2784. 3153. वासश्चित्रदुकूलम् 2207. प्रसुप्तस्य न्यस्तं वासस्यलक्तकम् (so ist zu schreiben) Kathâs. 3, 71. Bhâg. P. 2, 1, 34. व्यालम्बिपीतवर° 3, 28, 24. स्नानमाचरेत् — न वासोभिः सह M. 4, 129. जीर्णानि 6, 15. Bhag. 2, 22. विरजांसि MBh. 3, 2167. विमुच्य वासांसि गुरूणि Ṛt. 1, 7. नववासांसि Spr. (II) 515, v. l. कान्तवासांसि Vet. in LA. (III) 3, 21. वाससी *ein Ober- und Untergewand* Hariv. 7073 (वाससी ते die neuere Ausg.). R. 2, 90, 2. Mṛkkh. 88, 8. Spr. 800 (II). 1934. Bhâg. P. 1, 13, 23. Pankat. 1, 9, 32. वासोयुग MBh. 3, 2632. वासश्च परिधापिकम् 4, 245. 1, 7719. वासःखण्ड Spr. 2783. कण्ठे वाबध्य वाससा *Tuch* M. 11, 205. वाससावेष्टयद्वले Kathâs. 61, 262. वाससाच्छादयामास einen Leichnam R. 4, 24, 23. (यूपाः) वासोभिरेकविंशद्भिरेकैकं समलंकृताः R. Schl. 1, 13, 27. 29. कौपीन° Râǵa-Tar. 4, 180. अधो° *Untergewand* Uttarar. 82, 9 (106, 1). Am Ende eines adj. comp.: शुचिवासम् Âçv. Gṛhj. 2, 2, 2. R. 1, 6, 13. सुसूक्ष्माम्बर° MBh. 1, 5975. Suçr. 1, 105, 5. 6. पीतकौशेय° Khandom. 74. तडिद्वासस् Bhâg. P. 1, 12, 8. रक्त° M. 8, 256. कृष्ण° R. 2, 69, 14. चीर° M. 11, 101. 105. R. 2, 37, 26. 72, 42. Bhâg. P. 1, 15, 43. द्रुमचीर° R. 2, 86, 22. चीरवल्कल° 73, 10. 3, 55, 15. वल्कल° 2, 101, 24. वल्कलाजिन° 63, 27. जीर्णमलवद्वासस् M. 4, 34. Kathâs. 18, 244. लघु° M. 2, 70. अहत° R. 2, 91, 62. आमुक्त° 5, 13, 35. परिवर्तित° Kâm. Nîtis. 7, 45. वीत° Kathâs. 12, 169. आर्द्र° M. 6, 23. Brahma-P. in LA. (III) 49, 16. एक° *im blossen Untergewande* M. 4, 45. MBh. 3, 2302. सवासा जलमाप्लुत्य M. 5, 77. 11, 174. 223. पीतकौशेयवाससी f. R. 3, 58, 19. वरवाससाम् acc. f. MBh. 5, 4553 fehlerhaft für °वाससम्, wie die ed. Bomb. liest. मर्कटस्य वासः *Spinngewebe* H. an. 4, 149. अग्नेः oder समुद्रस्य वासः N. eines Sâman Ind. St. 3, 212, *b*. — 2) *das Kleid eines Pfeiles* so v. a. *die Federn am Pfeile:* कङ्क° adj. MBh. 7, 5612. बर्हिण° R. 6, 69, 3. कङ्कबर्हिण° MBh. 4, 1867. 6, 3478. Hariv. 9366. कलहंस° Bhâg. P. 4, 11, 3. दीर्घ° MBh. 4, 1361. — Vgl. अन्तर्वासस् (auch Bhâg. P. 9, 8, 6), उत्तर°, उद्वासस्, कृत्ति°, गार्ध°, दृत्त°, दिग्वासस्, दुर्वासस्, नील°, परि°, पीत°, बर्हिर्वासस्, भित्ता°, मलोद्वासस्, मेघ°, रात्रि°, वत्रि°, वाल°, सु°.

2. वासस् (von 5. वस्) n. *Nachtlager:* यथा वयांसि वासो (= वासार्थं Çank.) वृक्षं संप्रतिष्ठन्ते Praçnop. 4, 7.

वाससज्जा adj. f. = वासकसज्जा Gaṭâdh. im ÇKDr.

वासस्तेवि (!) m. patron.; pl. Samsk. K. 186, *a*, 11.

वासा f. = वासक *Gendarussa vulgaris Nees.* H. 1140. an. 2, 592. 605. Halâj. 2, 43. Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 2, 163, 6. 473, 10. Çârng. Samh. 2, 2, 34.

वासागार n. *Schlafgemach* Trik. 2, 2, 8. Halâj. 2, 140. Prab. 42, 12. Sarasvatîk. 2, 19 (nach Aufrecht). — Vgl. वासगृह u. s. w.

वासातक adj. *von den* Vasâti *bewohnt* gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 53.

वासात्य (von वसाति) 1) adj. *dämmerig, der Morgendämmerung angehörig:* वासात्यो ऽन्य उच्यत उषः पुत्रस्तवान्यः Cit. in Nir. 12, 2. वासात्यौ चित्रौ जगतो निधानौ *dämmerig und hell* (Erde und Himmel) Taitt. Âr. 1, 10, 2. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes, = वसाति MBh. 8, 2762.

वासाभृत् Z. f. d. K. d. M. 4, 342 fehlerhaft für वासोभृत्.

वासायनिक (von वास + अयन) adj. wohl *von Haus zu Haus gehend, Besuche machend:* न वयं वासायनिकाः कार्यचेष्टाकुलत्वात् MBh. 3, 13333. वासो विटागारं तदेव अयनं वासायनं तत्र भवाः Nilak.

वासाश्व m. N. pr. Verz. d. Oxf. H. 41, *b*, 42 fehlerhaft für वध्र्यश्व.

वासि s. u. वाशी 1).

वासिक s. कषाय°, तृप°, वन°; वासिका s. u. 3. वासक.

1. वासित s. u. dem caus. von 3. वस्.

2. वासित s. u. dem caus. von 5. वस्.

3. वासित s. unter वासय्.

4. वासित n. = ज्ञानमात्र H. an. 3, 295; vgl. 2. वासन 1) *c*).

5. वासित n. = वाशित H. 1407, v. l. Med. t. 152.

वासिता f. s. unter वाशिता.

1. वासिन् (von 3. वस्) adj. am Ende eines comp. *gekleidet:* कृष्णश° *schwärzlich gekleidet* Ait. Br. 5,14. पाण्डर° MBh. 1,1146. नील° (so ist statt लीन zu lesen) R. Gorr. 2,8,43. मलिन° 19. रौरवाजिन° MBh. 1,7124. कौशेय° R. 2,37,9. पीतकौशेय° R. Gorr. 2,37,9. 3,52,19.25. 5,31,2. रक्तकौशेय° MBh. 1,7980. महार्हक्षौम° R. 5,2,16. चीरकाषाय° MBh. 3,8588. काषाय° Hariv. 6942. चीर° R. 2,38,12. धौतोद्गमनीय° Daçak. 63,12. — Vgl. अजिन°, रक्त° (auch R. 5,27,17).

2. वासिन् (von 5. वस्) adj. *verweilend, sich aufhaltend, wohnend, lebend* (an einem Orte): तत्र R. 1,25,21. समानतीर्थे (nach P. 6,3,18 comp.) P. 4,4,108. in comp. mit dem Orte H. 10. आवसथ° Çat. Br. 12,4,4,6. आचार्यकुल° Khând. Up. 2,23,1. पातालतल° MBh. 1,1132. समुद्र° 7659. अयोध्या° 3,2766. बाह्य° 13,2572. विषय° R. 1,7,8. 2,25,21. क्षत्तीरवासोनि (so die ed. Bomb.) दैवतानि 52,84. Ragh. 15,61. Kumâras. 5,25. Çâk. 61,7. Varâh. Brh. S. 101,9. Kathâs. 25,57. 61,4. Râga-Tar. 3,413 (वासी mit der ed. Calc. zu lesen). Spr. 4131. Prab. 53,8. Mârk. P. 46, 40. 76,25. Pańkar. 2,4,7. 51. 4,8,38. fg. Çuk. in LA. (III) 37,2. Çaṅkaragaja ebend. 87,21. Verz. d. Oxf. H. 70,b,12. Pańkat. 129,14. तद्वत्तवासिनः पक्षिणः Hit. 18,8. भूतानां धन्नवासिनाम् MBh. 4,1526. 5,3701. भ्रमरैः स्रग्दामासक्तवासिभिः Hariv. 8372. भ्रमर° *unter Bienen* Râga-Tar. 3,394. 423. छन्न° *verborgen* MBh. 4,893. संवत्सर° *ein Jahr lang bleibend* Çat. Br. 14,1,1,27. कल्प° *einen* Kalpa *bestehend* Bhâg. P. 4,9, 20. ब्रह्मचारि° *als Brahmanenschüler lebend* TS. 6,3,10,5. — Vgl. अन्त°, अन्ते°, अम्बु°, अरण्य°, आश्रम° (auch R. 1,4,3. Çâk. 8,13. fg. 16), कान्तार°, काम°, काम्पील°, कोश°, क्षीण°, खदूर°, खर्व°, गिरि°, गृहे°, ग्राम°, ग्रामे°, चत्वर°, जल°, पर्वत°, पुर° (auch R. Gorr. 2,13, 29. 4,9,6), प्रतिवेश°, बिल°, बिले°, मध्य°, मलय°, महाविहार° (unter महाविहार), वन°, सामन्त°, सुवासिनी, स्ववासिनी.

3. वासिन् (von 3. वास) 1) adj. *schön duftend.* — 2) वासिनी f. *eine weiss blühende Barleria* (शुक्लाकिण्टी) Çabdak. im ÇKDr.

4. वासिन् ungenaue Schreibart für वाशिन् in ऊन्त° Kâm. Nîtis. 16, 26. — Vgl. वस्त°.

वासिनायनि m. patron. von वासिन् P. 6,4,174; vgl. 4,1,157.

वासिल adj. von वास gaṇa काशादि zu P. 4,2,80.

वासिषुम्फ N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,9.

वासिष्ट n. *Blut*, schlechte Lesart für वासिष्ठ H. 621.

वासिष्ठ 1) adj. (f. ई) *von* Vasishṭha *stammend, von ihm verfasst, ihn betreffend, zu ihm in Beziehung stehend:* सूक्त Ait. Br. 6,20. Ind. St. 1,119. M. 11,249. ऋच् P. 4,3,69, Schol. उपसर्ग Ind. St. 4,330. चतुरक्र Maçaka in Verz. d. B. H. 73 (VII,6). आख्यान MBh. 1,6650. वेष 5,3728. गणपात Verz. d. B. H. No. 939. सिद्धान्त Varâh. Brh. S. 2, S. 4, Z. 1. श्लोकाः 22,3. पञ्चरात्र Pańkar. 1,1,57. पुराण, उपपुराण Verz. d. Oxf. H. 80,a,7. 83,b, No. 141. Ind. St. 1,18,17. fg. गोत्र 8,276. शत *die hundert Söhne* Vasishṭha's R. 1,59,12. — 2) m. patron. Schol. zu P. 2,4,58. 4,1,114. Vop. 7,1.10. वासिष्ठो ब्रह्मा कार्यः TS. 3,5,2,1. Çat. Br. 12,6, 1,41. Ind. St. 1,39. 58. 214. 381. 3,460. 474. 4,373. Ait. Br. 8,23. TS. 6,6,2,2. Taitt. Âr. 1,12,5. Âçv. Çr. 12,15,2. Verz. d. Oxf. H. 53,b,12. 267,a,28. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,39. 58,7. MBh. 1,6892. R. 1,59,7. gaṇa नडादि zu P. 4,1,99. Mârk. P. 94,14. H. 32, Schol. plur. MBh. 3,970. Hariv. 422. 14151. R. 1,59,15. f. वासिष्ठी P. 4,1, 78, Schol. — 3) f. ई N. pr. eines Flusses, = गोमती Trik. 1,2,32. H. 1085. MBh. 3,8026. — 4) n. a) N. verschiedener Sâman P. 4,2,7, Schol. Ind. St. 3,236,a. Pańkav. Br. 12,8,13. 15,3,33. Lâṭj. 3,6,29. — b) Titel eines Werkes, = योगवासिष्ठ, वासिष्ठरामायण Verz. d. Oxf. H. 95,b,13. 125,a,39. fg. °सार 233,a,17. °तात्पर्यप्रकाश Hall 121. — c) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8026. — d) *Blut* H. 621. — Vgl. बृहद्वासिष्ठ, योग°.

वासिष्ठरामायण n. = योगवासिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 104,a,21. 108,a, 33. 125,a,39. 353,b, No. 840.

वासिष्ठसूत्र n. N. eines Sûtra Ind. St. 1,53.

वासिष्ठायनि adj. von वसिष्ठ gaṇa कर्णादि zu P. 4,2,80.

वासिष्ठिक adj. von वसिष्ठ. अध्याय P. 4,3,69, Schol.

वासी s. u. वाशी 1).

वासीफल n. *eine best. Frucht* Varâh. Brh. S. 80,16.

वासु m. ein Name Vishṇu's Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,1. Trik. 1,1,29. Verz. d. Oxf. H. 190,b,14. Pańkar. 2,6,26. Beruht auf einer künstlichen Erklärung von वासुदेव; vgl. VP. 9, N. 10 und Uǵǵval. a. a. O.

वासुक adj. von वसु gaṇa अश्मादि zu P. 5,1,39.

वासुकि m. N. pr. 1) eines Genius (empfängt बलि) Gobh. 4,7,25. Kauç. 74. वासुकिवैद्युताः Rudra-Namen Taitt. Âr. 1,9,2. 17,1. Fürst der Schlangen AK. 1,2,1,5. Trik. 1,2,6. H. 1308. सर्पाणामस्मि वासुकिः sagt Kṛshṇa Bhag. 10,28. MBh. 1,1053. fgg. 1124. 1550. °ज्ञा नागाः 2148. 2549. 4,41. 5,3617. 3625. 13,7119. Hariv. 227. 267. 4443. 6326. 9501. 11001. 12075. 12184. 12466. 12496. 12821. 14172. R. 1,45,19 (46, 21 Gorr.). 3,36,13. 4,41,53. 5,78,9. 6,37,64. 86,32. Kumâras. 2,38. Spr. 2131. Varâh. Brh. S. 81,25. Lot. de la b. l. 3. Kathâs. 6,13. 9,80. 11,3. 22,203. 72,34. 90,100. VP. 149. 153, N. 1. Bhâg. P. 5,24,31. 8, 6,22. Pańkar. 4,1,12. Verz. d. Oxf. H. 31,a,38. 239,b, No. 579. वासुकेर्ह्रदः 43,b, N. 4. — 2) eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 37. Hall 16.

वासुकेय m. = वासुकि Çabdar. im ÇKDr. °स्वसर् Bez. der Manasâ Çabdar. bei Wilson (ÇKDr. angeblich nach AK.).

वासुक्र adj. *von* Vasukra *verfasst:* सूक्त Çâṅkh. Çr. 17,9,5.

1. वासुदेव m. 1) patron. von वसुदेव P. 4,1,114, Schol. Çṛgâla Hariv. 5321. 5639. 5674. fg. ein Fürst der Puṇḍra 6582. 15179. fgg. 15326. MBh. 1,6992. 2,584. 1096. insbes. Bez. Kṛshṇa's oder Vishṇu's AK. 1,1,1,15. H. 215. Halâj. 1,23. P. 4,3,98. Taitt. Âr. 10,1,6. Bhag. 7,19. वृष्णीनां वासुदेवो ऽस्मि sagt Kṛshṇa 10,37. 11,50. 18,74. Vasishṭha bei Müller, SL. 55. Amṛtabindûp. in Ind. St. 1,252. यस्तु नारायणो नाम देवदेवः सनातनः। तस्यांशो मानुषेष्वासीद्वासुदेवः प्रतापवान्॥ MBh. 1,2785. 6997. 7080. वसनात्सर्वभूतानां वसुत्वाद्देवयोनितः। वासुदेवस्ततो वेद्यः 5, 2562. वासुश्चासौ देवश्चेति वासुदेवः। तथा च स्मृतिः। सर्वत्रासौ समस्तं च वसत्यत्रेति वै यतः। ततो ऽसौ वासुदेवेति विद्वद्भिः परिगीयते॥ Uǵǵval. a. a. O. MBh. 12,12904. Hariv. 4183. fg. 5321. R. 1,41,2 (42,2 Gorr.). 25. वासुदेवस्य भक्तः Varâh. Brh. S. 69,32. VP. 1. 9. 274. 643. Bhâg. P. 3,26,21. 5,12,11. Pańkat. 44,19. यदा स भगवान्वासुदेवः परब्रह्माख्यः सिसृक्षुर्भवति। तदा तस्मात्संकर्षणाख्यो ऽशो निर्गत्य प्रकृतिपुरुषयोः क्षोभं जनयति Comm. zu Golâdhj. 3,1. त एते वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धा

इति मूर्तिभेदा वैष्णवागमे विशेषतः प्रसिद्धाः ebend. MADHUS. in Ind. St. 1, 23,5. 6. SARVADARÇANAS. 54,14. fgg. 57,15. Am Ende eines adj. comp. f. आ PAÑKAR. 3,2,4. neun schwarze Vâsudeva bei den Ǵaina H. 695. fgg. Vgl. प्रति°. — 2) *Pferd* H. ç. 178; vgl. लक्ष्मीपुत्र. — 3) N. pr. verschiedener Fürsten und Gelehrten u. s. w. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 4, Çl. 4. Verz. d. Oxf. H. 72,a,43. 124,b,37. 132,b,5. 135,a, No. 254. 237,b, No. 569. 292,b,11. 321,a, No. 761. 384,b, No. 476. Verz. d. B. H. No. 265. 489. fgg. 940. Ind. St. 1,470. HALL 7. 109. 112. 143. 182. 192.

2. वासुदेव 1) adj. (f. ई) a) *zu* Vâsudeva (dem Gotte) *in Beziehung stehend:* द्वादशाक्षर NRS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,112. — b) *von einem* Vâsudeva *verfasst:* पद्धति Verz. d. B. H. No. 266. — 2) n. N. einer Upanishad Ind. St. 3,325. वासुदेवोपनिषद् Verz. d. Oxf. H. 390,b, No. 35.

वासुदेवक m. 1) *ein Verehrer des* Vâsudeva P. 4,3,98. — 2) *ein winziger* Vâsudeva, *Einer der dem patronymicum* Vâsudeva *Unehre macht* HARIV. 15184. 15327. *ein zweiter* Vâsudeva MṚKKH. 13,4. 121, 16 im Prâkrit.

वासुदेवप्रिय m. *ein Freund* Vâsudeva's, Bein. Kârttikeja's MBH. 3,14636.

वासुदेवप्रियंकरी f. *Asparagus racemosus Willd.* RÂǴAN. im ÇKDR.

वासुदेववर्गीण und वासुदेववर्ग्य adj. *zu* Vâsudeva's *Partei sich haltend* P. 4,2,104, Vârtt. 18, Schol.

वासुदेवानुभव m. Titel eines Werkes von Vâsudeva Verz. d. Oxf. H. No. 940.

वासुपुर (!) n. N. pr. einer *Stadt* WILSON, Sel. Works II, 23.

वासुपूज्य m. bei den Ǵaina N. pr. des 12ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî, eines Sohnes des Vasupûǵjarâǵ, H. 27.

वासुभद्र m. ein N. Kṛshṇa's, = वासुदेव H. ç. 69. ÇABDAM. im ÇKDR.

वासुमत adj. *das Wort* वसुमत् *enthaltend* gaṇa विमुक्तादि zu P. 5,2,61.

वासुमन्द n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,a.

वासुरा f. = वासिता, रात्रि (वासतेय! MED.) und भू H. an. 3,601 (वासरा gedr.). MED. r. 215. in der Bed. *Nacht* auch H. ç. 18.

वासुरायणीय (!) m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,274.

वासू f. *Mädchen* AK. 1,1,2,14. H. 333. voc. वासु DAÇAK. 51,14. 64, 1. 73,6.

वासोद adj. *Gewand schenkend* M. 4,231.

वासोदा adj. dass. ṚV. 10,107,2.

वासोभृत् 1) adj. *ein Kleid tragend:* माञ्जिष्ठ° Spr. 3359. — 2) *Hüfte* VARÂH. BṚH. 1,4.

वासोवाय adj. *Gewand webend* ṚV. 10,26,6.

वासौकस् n. *Schlafgemach* H. 995. — Vgl. वासगृह, वासागार.

वास्तव (von वस्तु) adj. (f. ई) *wirklich, wahr, real* GOLÂDHJ. 3,53. BÂLAB. 34. BHÂG. P. 1,1,2. 11,11,2. PAÑKAR. 1,14,49. MALLIN. zu ÇIÇ. 3, 51 (Gegens. कृत्रिम). Schol. zu KAP. 1,91. KULL. zu M. 2,9. WILSON, SÂÑKHJAK. S. 75. KUSUM. 38,12. MUIR, ST. IV, 319, N. 284. P. 5,1,21, Vârtt., Schol. °योषित् *ein wahres Weib, ein Weib wie es sein soll* PAÑKAR. 1,14,112. अ° NÎLAK. 97.

वास्तवत्व (von वास्तव) n. *Wirklichkeit, Realität* SARVADARÇANAS. 34, 21. fg. MUIR, ST. IV, 300, N. 268. SÂH. D. 267,11. अ° 12.

वास्तविक adj. = वास्तव ÇKDR. und WILSON.

वास्तवोषा f. *Nacht* TRIK. 1,1,105. किं तु वास्तवा (blosser Fehler für वासुरा) उषा इति नामद्वयमिति साधुपाठः ÇKDR.

वास्तव्य (von वास्तु) adj. P. 3,1,96, Vârtt. (irriger Weise auf वस् zurückgeführt). 1) *auf dem Platz bleibend, verlassen* (*werthloser Abfall*): यद्वै यज्ञस्य वास्तव्यं क्रियते। तदनु रुद्रो ऽवचरति। यत्पूर्वमन्ववस्येत्। वास्तव्यमग्निमुपासीत *der nur ein Rest ist* (= लौकिक Comm.) TBR. 1, 4,4,7. TS. 5,2,8,5. So heisst Rudra, *weil ihm die Reste* (des Opfers) *gehören*, ÇAT. BR. 1,7,3,1. 7. 5,2,4,13. 3,3,7. VS. 16,39 (*zur Wohnstatt gehörig* MAHÎDH.). — 2) *irgendwo ansässig;* m. *Einwohner:* इहैवास्मि वास्तव्यो नगरे द्विजः KATHÂS. 38,107. 52,320. 72,157. RÂǴA-TAR. 3,362. 4,623. 638. 5,216. 345. 6,15. ग्राम° MBH. 12,4803. नानानगर° R. 2,1, 30. नगर° PAÑKAT. 48,25. तद्देशनित्य° Verz. d. Oxf. H. 142,a, No. 290. RÂǴA-TAR. 4,88. HIT. 34,18. समीप° *Nachbar* KULL. zu M. 7,69. — नीवर = वास्तव्य H. an. 3,659. MED. r. 176. वास्तव्य PAÑKAT. III, 236 fehlerhaft für वस्तव्य; vgl. Spr. 2928.

बास्तिक (von बस्त) n. *eine Menge von Böcken* R. 2,77,2 (वा° ed. SCHL. बा° ed. Bomb.).

वास्तु (von 5. वस्) UṆÂDIS. 1,77. 1) m. n. TRIK. 3,5,9. *Stätte; Hofstatt* (*Platz des Hauses und zugehöriger Raum*); *heimathliche Flur; Haus* NIR. 10,16. UṆÂDIS. 1,77. AK. 2,2,19. TRIK. 2,2,5. 3,3,102. H. 989. an. 2,195 (वास्तु स्याद्गृहभूपूर्वोर्गृहे सीमसुरङ्गयोः). HALÂJ. 2,135. fg. ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गाः ṚV. 1,154,6. सुप्रदानु इषो वास्त्वधि क्षितः 8,25,5. मैषां वास्तु भून्मो अर्पत्यम् AV. 7,108,1. ÇAT. BR. 1,7,3,1. 7. 17. fg. वास्तु वै शरीरमयज्ञियं निर्वीर्यम् 2,1,2,9. यज्ञस्य TS. 3,1,10,3. ÇÂÑKH. GṚHJ. 2,14. गृहदेवताः, वास्तुदेवताः ÂÇV. GṚHJ. 1,2,4. 2,9,9. PÂR. GṚHJ. 3,4. अ° TS. 3,4,10,2. °संपादन M. 3,255. वास्तूनि निर्ममे HARIV. 6418. सभावास्तूनि रम्याणि प्रदेष्टुमुपचक्रमे MBH. 5,3033. गृहवास्तूनि HARIV. 6501. °निवासाः SUÇR. 1,16,19. प्रशस्तवास्तुनि गृहे 69,5. Verz. d. Oxf. H. 43,a, N. 2. 86,a,16. 332,b,20. 342,b,22. Verz. d. B. H. No. 877. वास्तुज्ञं वैरम् Spr. 5038. KÂM. NÎTIS. 10,15. °शमन R. 2, 56,18. Verz. d. Oxf. H. 43,a,8. वास्तूपशमन N. 2. वास्तुसंशमनीयानि मङ्गलानि R. 2,56,27. वास्तूपशम Verz. d. B. H. No. 1075. °शान्ति, °पद्धति, °प्रवेशपद्धति 1076. °कल्प, °कालाः 1075. °स्थापन *Aufrichtung eines Hauses* 1074. °संज्ञकं तत्त्वम् Verz. d. Oxf. H. 298,b, No. 693. रवेरविषये वास्तु किं न दीपः प्रकाशयेत् Spr. 2491. Verz. d. Oxf. H. 42,b,35. °मध्ये M. 3,89. MBH. 13,4662. 7140. 16,58. राष्ट्रपूर्ग्रामवास्तूनाम् PAÑKAR. 3,14, 77. VARÂH. BṚH. S. 53,11. 15. 20. 31. 37. 59,14. 107,6. °नर *der als Genius gedachte Prototyp eines Hauses* 53,3. 67 (vgl. वास्तुपुरुष bei KULL. zu M. 3,89). °बन्धन *das Kapitel über Hausbau* 87,18. °देव WILSON, Sel. Works 2,161. वास्तु auch *Gemach* VARÂH. BṚH. 5,18. 21. Als m. nur BHÂG. P. 10,8,31. 46,44 (वास्तून् = देहल्यादीन् Comm.). — 2) m. N. pr. eines der acht Vasu BHÂG. P. 6,6,11. 15. — 3) m. N. pr. eines Râkshasa Verz. d. Oxf. H. 105,a,24. — 4) wohl f. N. pr. eines Flusses (neben सुवास्तु) MBH. 6,333 (VP. 183). LIA. II, 132, N. 4. — 5) n. = वास्तुक 2) RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. नापित°, पुर°, पृष्ठ°, यज्ञ° (auch BHÂG. P. 9,4,8), यथा°.

वास्तुक (von वास्तु) 1) adj. *auf dem Opferplatz als werthloser Abfall liegen geblieben:* वसु Bhâg. P. 9,4,6. 9; vgl. u. वास्तव्य 1) und वास्तुह. — 2) m. n. (*Hofunkraut*) *Melde, Chenopodium* Bhar. zu AK. 2,4,5,23 nach ÇKDr. H. 1186. Suçr. 1,72,3. 73,9. 228,16 (m.). 2,342,20. 473,6. Vâgbh. 6,73. fg. Vgl. वास्तूक. — 3) f. ई *eine best. Gemüsepflanze,* = चिल्ली Râgan. im ÇKDr.

वास्तुकर्मन् n. *Hausbau* R. 1,3,15 (9 Gorr.). R. Gorr. 1,4,35. Varâh. Bṛh. S. 56,9.

वास्तुज्ञान n. *Baukunst* Varâh. Bṛh. S. 53,1.

वास्तुप adj. *die (verlassene) Stätte behauptend* VS. 16,39.

वास्तुपरीक्षा f. *Untersuchung des Platzes für den Hausbau* Âçv. Gṛhj. 2,7,1. 8,1.

वास्तुप्रदीप m. Titel eines über *Hausbau* handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,a,47.

वास्तुयाग m. *das vor dem Beginn des Baues eines Hauses veranstaltete Opfer* Verz. d. Oxf. H. 105,a,22. °विधेस्तत्त्वम् 290,a, No. 695. °तत्त्व Gild. Bibl. 465. 479.

वास्तुविद्य (vom folgenden) adj. *die Baukunst betreffend* u. s. w. gaṇa ऋगयनादि zu P. 4,3,73.

वास्तुविद्या f. *Baukunst* gaṇa ऋगयनादि zu P. 4,3,73. MBh. 1,2029. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 1. Verz. d. Cambr. H. 34. fgg. Weber, Kṛshṇag. 266. Verz. d. Oxf. H. 217,a,12.

वास्तुविधान n. *Hausbau* Ragh. 16,39.

वास्तुविधि m. dass., Titel eines Werkes Mack. Coll. 1,133.

वास्तुव्याख्यान n. Titel eines Werkes über *Hausbau* ebend.

वास्तुशास्त्र n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 279,a,43. 341,a,40. fg. Ind. St. 1,467,3. Mack. Coll. I, 132.

वास्तुसंग्रह m. desgl. Mack. Coll. I, 133.

वास्तुसनत्कुमार desgl. ebend.

वास्तुह adj. *was auf dem Platze bleibt, Ueberrest* Ait. Br. 3,11. Rudra sagt: मम वै वास्तुहम् 34. 5,14. — Vgl. वास्तुक 1).

वास्तूक m. n. = वास्तुक 2) Uģģval. zu Uṇâdis. 4,41. AK. 2,4,5,23. Trik. 2,4,30. Suçr. 1,220,12. 20. 2,48,9. Dhûrtas. 79,14. — Vgl. ग्रन्न°, ग्ररण्य°, चुक्र°.

वास्तेय (von वस्ति) adj. (f. ई) *in der Blase befindlich* P. 4,3,56. AV. 11,8,28. उदक im Weltei Khând. Up. 3,19,2. *blasenähnlich* P. 5,3,101.

वास्तोष्पति (वास्तोस्, gen. von वास्तु, + पति) m. *der Genius der Hofstatt* Naigh. 5,4. Nir. 10,16. Ṛv. 5,41,8. 7,54,1. fgg. 55,1. 8,17,14. 10, 61,7. AV. 6,73,3. Pâr. Gṛhj. 3,4. M. 3,89 (fälschlich वास्तोस्पति und वास्तोः पति geschrieben). Verz. d. Oxf. H. 43,a, N. 2. Bhâg. P. 10,50, 54 (pl.). auf Rudra bezogen (vgl. वास्तव्य 1) TS. 3,4,10,3. unter den Namen Indra's AK. 1,1,1,38. H. 172. Halâj. 1,52.

वास्तोष्पतीय adj. *dem* Vâstoshpati *gehörig* u. s. w. P. 4,2,32. TS. 3,4,10,3. कर्मन् Çâṅkh. Gṛhj. 3,4. Çr. 2,16,1. Kauç. 8.

वास्तोष्पत्य adj. dass. P. 4,2,32. Kauç. 120. Anukr. zu AV. 5,9.

वास्त्र (von वस्त्र) adj. *mit Zeug überzogen:* रथ P. 4,2,10, Schol. AK. 2,8,2,22. H. 754.

वास्त्व ved. adj. von वास्तु P. 6,4,175.

वास्त्व्य desgl. ebend.

1. वास्य adj. in der Stelle ईशा वास्यमिदं सर्वम् Îçop. 1 nach Çaṅk. = ग्राच्छादनीय *gehüllt werdend* (also von 3. वस्). — Vgl. प्रथम°.

2. वास्य (vom. caus. von 5. वस्) adj. *anzusiedeln:* तेषु च यथानुरूपं वर्णा विप्राद्यो वास्याः (= निवासनीयाः Comm.) Varâh. Bṛh. S. 53, 69. — Vgl. 1. ग्रमा° und वन°.

3. वास्य = वासी *Axt* Nilak. zu MBh. 1,4605. 5,5250.

वास्र m. *Tag* Trik. 1,1,103. — Vgl. 1. वस्र und वाम्र.

वास्रा s. u. वाम्र.

वाःसदन n. = वारासन *Wasserbehälter* Trik. 2,9,7. Hâr. 214.

1. वाह्, वाहे dat. nach Sâj. *der Fahrende:* एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरीवात्यो ग्रधायि Ṛv. 7,24,5. Wir erklären das Wort lieber als dat. inf. von 1. वह् mit metrischer Dehnung und der beim infin. häufigen Attraction: *um den Gewaltigen zu fahren.* Ueber das nom. ag. वाह् s. u. 2. वह्.

2. वाह्, वाहते Dhâtup. 16,44 (प्रयत्ने). partic. वाहित (verschieden von वाढ d. i. बाढ) P. 7,2,18, Schol.

— प्र *drängen, drücken:* प्रवाहस्व wird einer Kreissenden zugerufen Suçr. 1,368,13. प्रवाहेथाः शनैः शनैः 14. प्रवाहमाणा 2,47,4. 58,10. 440, 15. Hierher प्रवाहिका (s. u. प्रवाहक). — caus. act. dass. Suçr. 2,187, 7. 241,8.

वाह (von 1. वह्) 1) adj. (f. ग्रा) *ziehend* u. s. w.; *tragend:* हेमरत्नादिभार° Kathâs. 51,213. शिबिका° Bhâg. P. 5,10,1. *fliessend:* नदीमुभयतोवाहाम् 6,5,8. *sich unterziehend, sich hingebend:* धर्म° MBh. 13, 7398. — 2) m. a) *Zugthier, Reitthier, Vehikel* überh. Ṛv. 4,57,4. 8. AV. 6,102,1. Kaṭhop. 1,26. वाहान्पीडयेत् Kṛshisaṅgr. 7,9. fgg. तत्रियस्यैष वाहः MBh. 3,13190. यो वाहान्कुरुते मुनीन् 5,463. इन्द्रस्य वाजिनो वाहा हस्तिनो ऽथ रथास्तथा 456. Spr. 1570. यानं °वियुक्तम् Varâh. Bṛh. S. 46,60. Bhâg. P. 8,10,25. 9,15,24. महेन्द्र° 2,7,25. 6,11,10. 12. *Pferd* AK. 2,8,2,12. H. 1233. an. 2,602. Med. h. 9. Halâj. 2,281. MBh. 1,6484. 2,2086. 3,943. 2535. 12003. 15609. 15727. 4,1648. 10,2. 12, 6041. 13,3505. Hariv. 5489. Ragh. 4,56. 5,73. 14,52. Kathâs. 59,121. 67,24 (°विद्यारहस्यविद्). 75,92. Râga-Tar. 6,251. Prab. 79,8. Bhâg. P. 1,10,35. 14,13. 7,10,65. 8,10,40. *Stier* H. an. Med. Kumâras. 7,49. *Wagen:* ग्रश्वयुक्तमिव वाहम् Çvetâçv. Up. 2,9. MBh. 1,3680. 3,698. 11903. 15,905. Bhâg. P. 6,8,1. Am Ende eines adj. comp. (f. ग्रा) — *zum Vehikel habend:* वृषभ° *reitend auf* MBh. 13,891. Hariv. 10682. सिंहवाहा 9428. हंस° Bhâg. P. 7,3,24. गरुड°, ग्नारि° 8,10,55. सिंह° 11, 14. विमान° *fahrend in* Hariv. 8586. — b) *Wind* Med. Çabdar. im ÇKDr. — c) *ein best. Hohlmaass* AK. 2,9,89. H. an. Med. = Droṇî Çârṅg. Saṁh. 1,1,21. = 4 Bhâra Bhar. zu AK. = 10 Kumbha Svâmin zu AK. nach ÇKDr. — d) bildliche Bez. des Veda Kuvalaj. 105,b,4. — e) nom. act. *das Ziehen:* °संपीडिता धुर्याः MBh. 12,9384. *das Fahren, Reiten* Spr. 3812. Kull. zu M. 4,172. Kathâs. 62,157. *das Tragen:* ग्रतिभार° Hit. 81,12 (v. l. वाहन). *Strömung:* गङ्गायमुनयोर्वाहो Kathâs. 93,81. चन्दनसंक्रान्तवाहनिर्भर 90,38. — Vgl. ग्रग्नि°, ग्रज°, ग्रम्बु° (*Wolke* auch Râga-Tar. 2,149. Daçak. 94,18. Bhâg. P. 2,1,34), ग्रश्व°, इध्म°, इन्द्र°, उद°, गन्ध°, जल°, जले°, नौ°, पत्त्र°, पयो°, पीलु°, पुरुष°, पू-

य°, पोत°, बभ्रु°, भाण्डि°, भार°, महारथ°, महावाह°, मित्र°, यज्ञ° (adj. auch MBh. 13,7169), युग्य°, यूप°, योग°, रत्न°, रथ°, रथवाहन°, राज°, वायु°, वारि°, विषय°, शव°, शुक°, सार्थ°, स्कन्ध°, हव्य°, हस्ति°, होत्र°.

वाहक (vom caus. von 1. वह्) 1) nom. ag. (f. वाहिका) *a) Träger* Jâǵn. 2,197. R. 4,24,21. Bhâg. P. 10,18,21. वासंसां वाहिका राज्ञो धातुर्ब्येष्ठस्य मे भव MBh. 7,4867. शासन° *Träger, Ueberbringer* Kâm. Nîtis. 12,3. — *b) fliessen lassend, mit sich führend:* नद्यः शीततोयौघवाहिकाः Mârk. P. 59,8. — *c) in Bewegung setzend:* संसारचक्रवाहकस्य महामोहस्य Prab. 69,15. — 2) m. *a) ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,288, 13; vgl. वाह्यकी. — *b)* N. pr. eines Mannes Mâlav. 8,13, v. l. — Vgl. जल°, ताम्बूल°, पथि°, रथ°, वारि°, श्वेत°, स्कन्ध°.

वाहकत्व (von वाहक) n. *das Amt eines Trägers* Bhâg. P. 7,8,52.

वाहतक m. N. pr. eines Mannes Mâlav. 8,13. fehlerhaft für वार्हतक.

वाहव MBh. 1,399 fehlerhaft für ग्राहव, wie die ed. Bomb. liest.

वाहद्विषत् m. *Büffel (ein Feind des Ziehens* oder *Tragens)* AK. 2,5, 4. — Vgl. वाहरिपु.

वाहन (vom caus. von 1. वह्) 1) adj. *tragend:* मद्यधू° (सिंह) Kathâs. 22,134. जामातृ° (हय) 30,101. नागानां वाहना मेघाः 124,223.221. *bringend:* स्वप्नोत्तमः सत्यवाहनः Râǵa-Tar. 4,100. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,22. — 3) n. *a) Zugthier, Gespann, Reitthier, Vehikel* überh. AK. 2,8,2,26. 3,4,25,181. H. 221. 759. Halâj. 2,294. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 3,11279. R. Gorr. 2,125,2. Kathâs. 20,164. गर्दभः सर्वेषां वाहनानामनाशिष्ठः Ait. Br. 4,9. Çat. Br. 1,8,2, 9. 2,1,4,4. 4,4,4,10. M. 7,75. 222. 8,113. 419. MBh. 3,2129. 13,352. 4855. 14,75. fg. R. Gorr. 2,86,2. 7,16,7. Kâm. Nîtis. 7,30. 12,44. 13, 31. 80. Spr. 5408. Varâh. Bṛh. S. 4,24. 9,43. 46,7. 27. 48,68. 90,8. 93, 12. Kathâs. 20,146. 30,137. 43,244. Naish. 22,45. Weber, Râmat. Up. 288. Bhâg. P. 6,12,17. Häufig in Verbindung mit बल so v. a. *Heer und Tross* M. 7,172. 9,313. MBh. 1,6652. 2,1074. 4,993. 2219. R. 1,53,6. R. Gorr. 1,16,11. 2,101,5. 5,9,51. 30,2. 73,4. Spr. 768. Mârk. P. 37, 9. हृष्टवाहनपूरुष Jâǵn. 1,347. प्रययौ पुण्डरीकाक्षः शैब्यसुग्रीववाहनः *Ross* MBh. 2,35. 555. 4,319. श्रान्त° adj. R. 1,62,1. 68,1. 2,68,21. 71, 30. Ragh. 1,48. 9,25. Kathâs. 16,91. 18,106. Bhâg. P. 9,15,31. स्पृष्ट्वा त्वत्रियो वाहनायुधम् (शुध्यति) *Reitthier (Elephant* oder *Ross)* M. 5,99. MBh. 13,3724. Kathâs. 7,13. 12,134. यज्ञेश° Bhâg. P. 6,6,22. Pańkar. 1,1,76. Pańkat. 198,5. Hit. 126,16. Auch m.: कंसस्यैव स वाहनः Hariv. 3113. 5884 (n. in der neueren Ausg.). — *Wagen* Çat. Br. 9,4,2,11. R. Gorr. 2,109,35. 3,56,52. Spr. 4423. in comp. mit der Last (wobei das न in ण verwandelt wird, wenn र oder ष vorhergehen) P. 8,4,8. शरवाहणा, दर्भ°, इक्षु° Schol. *Schiff* Verz. d. Oxf. H. 151,*a*,6. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) nach dem näher angegebenen Vehikel so v. a. *fahrend in, reitend auf:* स्यन्दन° Hariv. 4426. नाग° 10998. सिंह° Kathâs. 22,79. हंस° Bhâg. P. 7,3,16. गरुड 8,10,2. In der Stelle वन्यवाहनहन्तृ Kathâs. 21,30 bedeutet das Wort *Thier* überh. — *b) Ruder* (Comm.) oder *Segel* R. 2,52,5. — *c)* nom. act. *das Ziehen, Tragen* (eines Zugthieres, eines Reitthieres oder Trägers) MBh. 5,473. 13,4755. शिबिका° R. 4,24,18. Pańkat. 83,19. 198,6. 253,13. Hit. ed. Johns. 1705. *das Fahren* Suçr. 1,119,2. 244,8. 277,10. *das Reiten* Kathâs. 62,158. 160. fg. Spr. 3174. *das Lenken* (der Rosse) MBh. 3,2635. — Vgl. उद्°, कव्य°, क्रव्य°, जल°, द्विज°, देव°, नग°, नर°, नृ°, पत्त°, पवन°, पुरीष°, पुरीष्य°, पुष्प°, प्रवर°, प्रष्टि°, बभ्रु°, बर्हि°, बर्हिण°, बीज°, भार°, भूत°, भूति°, मणि°, मधु°, महिष°, मृग°, मेघ°, यज्ञ°, यम°, रथ°, राज°, रुक्म°, वसु°, वाजि°, वायु°, वारि°, शालि°, शिखि°, श्वेत°, हरि°, हव्य°, होत्र°.

वाहनता f. nom. abstr. von वाहन 3) *a)* Kathâs. 119,162.

वाहनत्व n. desgl. Kathâs. 36,15. Çańk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 25. Bhâg. P. 9,6,14.

वाहनप m. *Hüter der Zug- und Reitthiere* R. 2,91,53.

वाहनप्रज्ञप्ति f. Bez. *einer best. Zählmethode* Lalit. ed. Calc. 169,10.

वाहनिक (von वाहन) adj. *von Zugthieren* u. s. w. *lebend* gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12.

वाहनीकार् (वाहन + 1. कार्) *zum Vehikel machen* Kathâs. 18,390. 26,33. 62,156.

वाहनीभू (वाहन + 1. भू) *zum Vehikel werden* Kathâs. 117,21.

वाहनीय (vom caus. von 1. वह्) = वाह्य *Lastthier* Kull. zu M. 8,151.

वाहरिपु m. *Büffel* H. 1282. — Vgl. वाहद्विषत्.

वाहश्रेष्ठ m. *das beste Vehikel* d. i. *das Pferd* Râǵan. im ÇKDr.

वाहस् (von 1. वह्) n. *Darbringung, Aufwartung* Naigh. 4,1. Nir. 4, 6 (erklärt als *Lob, das den Gott herbeiführt* oder *ihm die* Soma-*Bereitung verkündigt*). इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ṚV. 3,30,20. जुष्ट 53, 3. 11,7. ऋतस्य 8,6,2. 10,29,3. (प्र यातु) अग्निरुक्थेन वाहसा VS. 26,8. पचत° Çâńkh. Çr. 8,21,5. — Vgl. उक्थ°, गिर्वाहस्, नृ°, ब्रह्म°, यज्ञ°, रिप्र°, विप्र°, सिन्धु°, स्तोम°.

वाहस (वाहस Uṇâdis. 3,119) m. 1) *Boa* AK. 1,2,1,5. H. 1305. an. 3, 756. Med. s. 36. Halâj. 3,20. TS. 5,5,14,1. — 2) *Quelle* (वारिनिर्याण). — 3) *eine best. Pflanze,* = सुनिषण्ण, सुनिषण्णक H. an. Med.

1. वाहिक (von वाह) gaṇa निष्कादि zu P. 5,1,20. m. 1) *Karren* u. s. w. — 2) *eine grosse Trommel* Dhar. im ÇKDr. — Vgl. भार°, नृप°.

2. वाहिक 1) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2084. fehlerhaft für बाह्लिक, wie die ed. Bomb. liest. — 2) n. *Asa foetida* Colebr. und Lois. zu AK. 3,4,1,9. fehlerhaft für बाह्लिक oder बाल्हीक.

वाहितर् (von 1. वह्) nom. ag. *Führer:* सर्वभूतानाम् MBh. 13,1227. = वोढर् Nîlak.

वाहिता f. nom. abstr. von वाहिन् *fliessend:* प्रशान्त° Verz. d. Oxf. H. 229,*b*,10.

वाहित्थ n. *die Gegend unterhalb des* कुम्भ *oder* वातकुम्भ *beim Elephanten* AK. 2,8,2,7. H. 1227.

वाहित्व s. योग°.

वाहिन् (von 1. वह्) 1) adj. *a) fahrend, ziehend:* बद्धन्धुजनवाहिनो हयाः R. 2,52,43. R. Gorr. 2,51,10. — *b) dahinfahrend* (vom Wagen): शीघ्रैरश्वैर्वाहिना स्यन्दनेन MBh. 3,245. शीघ्र° Spr. 4423. — *c) fliessend:* दक्षिणापथ° (नदी) Hariv. 9513. गङ्गां पातालवाहिनीम् Kathâs. 73,119. प्रतीप° 74,190. उत्पथ° Bhâg. P. 10,20,10. कलिन्दान्तर° Mârk. P. 78, 30. 108,19. सिरा पुरुषत्रयवाहिनी *in einer Tiefe von* — Varâh. Bṛh. S. 54,23. — *d) fliessen lassend, mit sich führend* (von Flüssen), *zuführ-*

rend (von Winden): रुधिरौघ° MBh. 8,3807. घृत° (गो) 13,3523. ग्रसृग्वाहिनी (नदी) 3,14274. पुष्पसंचय° Hariv. 12018. R. 1,36,22. R. Gorr. 2,54,39. 65,15. 3,59,20. Râǵa-Tar. 1,260. Bhâg. P. 5,26,22. Mârk. P. 59,24. धमनी शब्दवाहिनी Suçr. 1,257,7. स्फारनीहारलव° (पवमान) Râǵa-Tar. 3,168. 226. Çâk. 55. चलद्धारिविप्रुषाम् Pańkar. 3,5,3. — e) bringend so v. a. bewirkend: रथानां शब्दवाहिनाम् Hariv. 2675. उद्वेग° Kathâs. 59,152. Verz. d. Oxf. H. 120,a,11. तृष्णया भववाहिन्या Bhâg. P. 7,13,23. — f) tragend: लगुड° Kathâs. 81,11. भार° Spr. 1576. 4780. Prab. 107,7. वागुरा° Râǵa-Tar. 6,182. विप्रुषवाहिन्या चश्वा Pańkat. 79,16. स्थूलकम्बल° Râǵa-Tar. 5,460. — g) an sich tragend, habend: विग्रह° Râǵa-Tar. 6,308. रोषनिश्वासवाहिना (°वायुना die neuere Ausg.) Hariv. 4748. कुसुमसौगन्ध्य° Spr. 1908. — h) sich unterziehend, ausübend: कर्म° MBh. 1,8114. ग्रकूट° 13,3899. — 2) m. Wagen MBh. 3,2293. — 3) f. वाहिनी a) ein reisiger Zug; Heer AK. 2,8,2,46. Trik. 3,3,249. H. 745. an. 3,413. Med. n. 98. Halâj. 2,302. ग्रनस्वती AV. 10,1,15. R. 2,36,3. 5,40,11. Ragh. 7,33. Spr. 692. 3272. Varâh. Bṛh. S. 47,25. Dhûrtas. 66,14. Heer und zugleich Fluss MBh. 6,2337. Râǵa-Tar. 4, 134. Vâsavad. 13,3. am Ende eines adj. comp. वाहिनीक Ragh. 13,66. — b) eine best. Heeresabtheilung: 81 Elephanten, 81 Wagen, 243 Reiter und 405 Fusssoldaten AK. 2,8,2,49. H. 748. H. an. Med. MBh. 1, 291. — c) Fluss AK. 3,4,18,114. Trik. H. 1080. H. an. Med. MBh. 3, 17141. 6,341. R. 2,71,13. 89,3. Râǵa-Tar. 4,303. Fluss und zugleich Heer 134. MBh. 6,2337. Vâsavad. 13,3. — d) Rinne Schol. zu Kâtj. Çr. 366,15. — e) N. pr. der Gattin Kuru's MBh. 1,3740. — Vgl. ग्रम्बु°, कनक°, काष्ठाम्बु°, कुमार°, चतुर्वाहिन्, जय°, दण्ड°, नर°, पद्म°, पुष्प°, प्रष्टि°, फेन°, भार°, मन्द°, मधु°, मल°, मातृ°, मेघ°, मेष°, यज्ञ°, योग°, रोम°, लोम°, वायु°, वारि°, वेग°, साधु°.

वाहिनीपति m. 1) Heerführer AK. 2,8,2,30. Halâj. 2,278. MBh. 4, 702. 834. 2160. 6,1982. R. Gorr. 2,109,28. 3,29,16. 4,7,24. 5,73,30. 89,71. Bhâg. P. 9,12,10. — 2) N. pr. oder Bein. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13.

वाहिनीश m. N. pr. eines Mannes Hall 6.

वाहिष्ठ adj. = वहिष्ठ 1) am meisten führend, — herbeiführend Nir. 5, 1. रथ R̥V. 7,37,1. 8,26,4. स्तोम 6,45,30. 8,5,18. 26,16. यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च 5,25,7. — 2) am meisten fliessend R̥V. 8,26,18.

वाहूक m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 1,47, N.

वाह्न (von वह्नि) adj. an Agni gerichtet, zu ihm in Beziehung stehend: मन्त्राः Varâh. Bṛh. S. 46,24. पुराण Bhâg. P. 12,13,5.

वाह्नेय (wie eben) m. patron. Ind. St. 4,373.

वाह्य (von 1. वह्) 1) adj. was gefahren u. s. w. wird P. 3,1,102, Schol. Vop. 26,7. 25. P. 4,3,120, Vârtt. 2. Comm. zu 8,4,8. मनुष्य° (यान) von Menschen gezogen Ragh. 6,10. यथा वाह्यो ऽस्मि दुर्बुद्धेः geritten werdend Pańkat. III, 250. getragen werdend (Gegens. वाहक) Bhâg. P. 10,18,21. स्कन्ध° (शिबिका) Hariv. 3385. — 2) n. Zugthier M. 8,151. Jâǵń. 2,177. Hariv. 4001. Varâh. Bṛh. S. 104,24. इन्द्र° Indra's Reitthier MBh. 9,1077. Vehikel überh. H. 9. 759. — 3) f. ग्रा N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,26. — Vgl. ग्रनो°, पृष्ठ°, बाल°, राज°, स्त्री°.

वाह्यक (von वाह्य) n. Wagen AK. 2,8,2,20. H. 753.

वाह्यकायनि m. metron. von वह्यका gaṇa तिकादि zu P. 4,1,154.

वाह्यकी f. ein best. giftiges Insect Suçr. 2,288,1. — Vgl. वाहका.

वाह्यत्व (von वाह्य) n. das Vehikel-Sein H. 12.

वाह्यस्क m. patron. von वह्यस्क gaṇa विदादि zu P. 4,1,104.

वाह्यस्कायनि m. patron. von वाह्यस्क gaṇa हरितादि zu P. 4,1,100.

वाह्यायनि m. patron. von वह्य Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,111 (er hat also im gaṇa तिकादि nicht वह्यका, sondern वह्य gelesen).

वाह्याश्व (बा° die neuere Ausg.) m. N. pr. eines Mannes Hariv. 1777. fg.

1. वि m. Uṇâdis. 4,133. nom. sg. विस् und वेस् (R̥V. 6,3,5. 1,173,1. 3,54,6. 9,72,5. 10,33,2), acc. विम्, gen. abl. वेस्; nom. und acc. pl. वयस् (R̥V. 1,104,1), विभिस्, विभ्यस्, वीनाम्. Vogel Nir. 2,6. AK. 2,5, 33. H. 1316. Halâj. 2,83. मा माधिं पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट R̥V. 2,29,5. 38, 7. उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् 6,64,6. यद्वां रथो विभिष्पतात् der Açvin 1, 46,3. 8,29,8. वयो ऽश्वाः fliegende Rosse 1,104,1. 117,14. 6,63,7. वीनां पदम् 1,25,7. पदं वेः 164,7. 3,5,5. 6. 7,7. 4,5,8. 10,5,1. माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः 1,72,9. 6,48,17. प्र सु ष विभ्यो मरुतो विरस्तु 4,26,4. पर्णिन् 8,5, 32. द्रुषद् 9,72,5. Pańkav. Br. 5,6,15. वयः पुरुषादः die Pfeile R̥V. 10, 27,22. ग्रनु त्वा पत्नीर्हृषितं वयश्च विश्वे देवासो ग्रमदन्ननु त्वा nach dem Comm. die fliegenden Marut 1,103,7. 5,53,3. VS. 2,16. चतुष्पादो Vop. 23,6. नदेभ्या ऽपि क्रूदेभ्यो ऽपि पिबत्यन्ये वयः पयः Spr. 1398. वीन् Bhaṭṭ. 9,24. भूतविग्रहाः Spr. 3154. बहुवि जयति वनम् Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,133. — Vgl. राजवि und 1. वयस्.

2. वि praep. gaṇa प्रादि zu P. 1,4,58. Vârtt. zu 84. Vop. 1,8. euphonischer Einfluss auf ein folgendes स VS. Prât. 3,65. bezeichnet Trennung und Abstand; mit acc. elliptisch hindurch: यो वि दुरः पणीनाम् der durch die Pforten der P. (ging) R̥V. 7,9,2. मद्या रजांस्यश्विना वि घोषैः 1,181,5. (ग्रसृग्रम्) वि वारमव्यमाशवः durch den Sieb 9,13,6. कति स्वित्ता वि योजना wie viele Rasten auch dazwischen sind 10, 86,20. zufällige Schreibung: मनुषो नक्षुषो वि ज्ञाताः (d. i. विज्ञाताः) 80,6. Die einheimischen Gelehrten geben dem Worte folgende Bedeutungen: प्रातिलोम्य Nir. 1,3. वि श्रेष्ठे ऽतीते नानार्थे H. an. 7,15. वि नियहे नियोगे च तथैव पदपूरणे ॥ निश्चये सकने केतावव्याप्तिविनियोगयोः । ईषदर्थे परिभवे शुद्धावलम्बने ऽपि च ॥ विज्ञाने Med. avj. 75. fgg. विशेषे गतौ ग्रालम्भे und पालने Çabdar. nach ÇKDr. विशेषवैरूप्यनजर्थगतिदानेषु Durgâd. nach ÇKDr.

3. वि Verbalwurzel s. वी.

4. वि n. zu einer Etymologie gebildet, angeblich so v. a. ग्रन्न Çat. Br. 14,8,12,3.

विंश (von विंशति) 1) adj. P. 6,4,142. a) der zwanzigste P. 5,2,56. Vop. 7,40. Bhâg. P. 1,3,23. — b) mit oder ohne भाग, ग्रंश ein Zwanzigstel Jâǵń. 2,261. Varâh. Bṛh. S. 82,10. M. 8,398. 9,112. 10,120. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा Weber, Ǵyot. 104. — c) von zwanzig begleitet, um zwanzig vermehrt: शत hundertundzwanzig P. 5,2,46. Vop. 7,95. Varâh. Bṛh. S. 58,30. — d) aus zwanzig Theilen bestehend MBh. 12,9904. पुरुष (mit Zehen und Fingern) TS. 7,3,9,2. Pańkav. Br. 23,14,5. ग्रार्भव (wegen des 20theiligen Stoma) 19,5,7; vgl. Çat. Br. 13,5,1,1. n. Zwanzigzahl, ein Zwanzig: ग्रहं योजनविंशानां प्लविता R. 4,45,13. योजनविंशानां सहस्राणि शतानि च MBh. 3,12876. सविंशे योजनशते hundertund-

4,19. Âçv. Çr. 8,6,16. Lâṭj. 4,7,1. Ind. St. 3,236,b. मृत्योर्विकर्णभासे 229,b. — Vgl. वैकर्णी, वैकर्णि, वैकर्णेय.

विकर्णक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210.

विकर्णिक m. pl. N. pr. eines Volkes, = काश्मीर H. 958. — Vgl. विकर्ण 2) c).

विकर्णिन् m. *eine Art Pfeil*, = विकर्ण MBh. 7,6488. R. 3,31,24. 34, 10. 56,37. 6,20,26. 75,47. — Vgl. कर्णिन् 1) c).

विकर्त (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°.

विकर्तन (wie eben) 1) adj. *zerschneidend, zertheilend* Nir. 2,22. 6,30. — 2) m. a) *die Sonne* (*Zertheiler des Gewölks;* vgl. jedoch ṚV. 10,85, 35) AK. 1,1,2,31. H. 97. Halâj. 1,35. Gaṇit. Grahâṇajanâdh. 9. Uttarar. ed. Cow. 124,1 (वैकर्तन die ältere Ausg.). Râǵa-Tar. 4,101. — b) *ein Sohn, der des Vaters Herrschaft an sich reisst*, Çabdârthak. bei Wilson. — 3) n. *das Zerschneiden, Zertheilen* Nir. 2,22. 5,21. 6,26. — Vgl. अधि°.

विकर्तर् (von 1. कर् mit वि) nom. ag. 1) *Umwandler, Umbildner* Çat. Br. 13,3,8,1. Pańkav. Br. 9,10,3. Pâr. Gṛhj. 3,4. एष कर्ता विकर्ता च MBh. 3,12823. त्वं हि कर्ता विकर्ता च भूतानामिह सर्वशः 13503. 9,3529. 13,6990. Hariv. 12261. 12312. — 2) *der feindselig verfährt, Beleidiger* MBh. 3,1385 (निकर्तर् ed. Bomb.). R. 1,21,10.

विकर्त्तर् (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°, welches Nîlak. sehr ungeschickt auf folgende Weise erklärt: गोविकर्त्ता गवां महतां बलीवर्दानामपि विकर्त्ता दमनेन विकृतिजनकः वृषभान्वा महाबलान्नियहीष्यामीत्युपक्रमात्. Die ed. Bomb. schreibt, wie man sieht, richtig विकर्त्तर्, während sie im nom. ag. von 1. कर् das त nicht verdoppelt.

1. **विकर्मन्** (2. वि + क°) n. 1) *eine Einem nicht zukommende, unerlaubte Beschäftigung, — Handlung:* कर्मन्, विकर्मन्, अकर्मन् Bhag. 4, 17. Bhâg. P. 11,3,43. 45. पतनीयेषु विकर्मसु MBh. 3,14075. 5,2139. 12, 2277. 2289. 13,1645. 3450. 4531. Prâjaçkittend. 30,a,5. Bhâg. P. 3,14, 30. 5,5,4. 18,3. विकर्मक्रिया M. 9,226. विकर्मकृत् 8,66. Kathâs. 52,134. विकर्मनिरत Bhâg. P. 3,9,17. 10,70,26. विकर्मस्थ M. 4,30. 9,214 (= MBh. 13,5122). 225. 11,192. MBh. 3,12841. 13728. 5,797. 7,8848. 12, 2879. 2884. fg. 13,6205. Hariv. 11161. Kathâs. 52,113. Mârk. P. 31,29. — 2) वायोर्विकर्म N. eines Sâman Ind. St. 3,235,a.

2. **विकर्मन्** (wie eben) adj. 1) *einer Einem nicht zukommenden, unerlaubten Beschäftigung nachgehend:* विकर्माणश्च ये केचित्तान्युनक्ति स्वकर्मसु MBh. 3,13727. 12,2359. — 2) *sich jeglicher Beschäftigung enthaltend, nicht arbeitend* MBh. 13,341.

विकर्मिन् adj. = 2. विकर्मन् 1) MBh. 13,6201.

विकर्ष (von 1. कर्ष् mit वि) m. 1) *das Anziehen* (des Pfeils mittels der Sehne) R. 6,69,32. — 2) *das Auseinanderziehen, Zerlegen* (der Halbvocalverbindungen und dergl.) ṚV. Prât. 17,30. fg. Nidânas. 1,12 in Ind. St. 8,84. — 3) *Entfernung* Gobh. 1,5,7. Nir. 3,9. — 4) *Pfeil* Trik. 2,8,53.

विकर्षण (wie eben) 1) nom. ag. a) *auseinanderziehend, spannend:* महाचाप° MBh. 2,1527. — b) *fortnehmend, entfernend:* कालः पुंसां गुणविकर्षणः Bhâg. P. 1,13,26. गृहमाधिविकर्षणम् 10,42,12. — 2) nom. act. a) *das Auseinanderziehen, Auseinanderrecken* MBh. 1,7109. 2,915. 4,356. Suçr. 1,25,16. Bhâg. P. 10,18,12. अङ्ग° Spr. 1885. *das Spannen* (des Bogens, der Bogensehne) MBh. 3,1387. 4,1386. Hariv. 4038 (mit der neueren Ausg. चापविक° zu lesen). R. Gorr. 1,69,15. Kir. 3,57. *das Anziehen* (eines Strickes) 4,15. — b) *das Auseinanderlegen:* पांसु° Bez. eines best. Kinderspiels MBh. 1,4979. *das Vertheilen:* वेद° Bhâg. P. 3,7,29. — c) *das Hinausschieben des Essens, Enthaltung von Speise* MBh. 15,1037. — d) *das Auseinanderthun* so v. a. *Ausforschen:* दूतेन नरेन्द्रस्तु कुर्वीतारिविकर्षणम् Kâm. Nîtis. 12,24.

विकल (2. वि + कला) 1) adj. (f. आ; nach gaṇa गौरादि zu P. 4,1, 41 विकली) *woran Etwas fehlt, mangelhaft, unvollkommen;* = विह्वल Gaṭâdh. im ÇKDr. = स्वभावहीन Bhar. ebend. von *Krüppeln* MBh. 1, 1943. 6,4964. R. Gorr. 2,32,35. Spr. 1113. 1337 (II). 1390. 2518. Varâh. Bṛh. S. 5,38. 45,13. 95,7. Bṛh. 18,6. Kathâs. 27,172. Mârk. P. 23, 109. 29,38. von Theilen des Körpers: °दशन Varâh. Bṛh. 18,18. °नयन 20,1. विकलेतणा 3. विकलेन्द्रिय M. 8,66. Jâǵn. 2,70. MBh. 7,6397. °करणा Uttarar. 13,4 (18,1). 52,13 (68,3). दृष्टिर्गाढनिमीलिता न विकला नाभ्यन्तरे चञ्चला (सुप्तस्य) *nichts Unnatürliches zeigend* Mṛkkh. 48, 23. श्रुतियुगले पिकरुतविकले *ermüdet, mitgenommen* Gît. 12,7. नष्टहीनविकलविकृतस्वरता Suçr. 1,118,8. अधिकविकलं रूपम् Dhûrtas. 72,12. °रश्मि *schwach, unvollkommen* Spr. (II) 1168. किरणाः Varâh. Bṛh. S. 30,9. पर्जन्य Spr. 1737. श्राद्ध *mangelhaft* Mârk. P. 97,33. काला Spr. (II) 1360. *vorübergehend unwohl, geistig niedergedrückt, in schlimmer Lage seiend* MBh. 5,3695 (विह्वल ed. Bomb.). Gît. 5,3 (विकलतर). 9,5. विषाद° Kathâs. 78,32. Brahma-P. in LA. (III) 53,7. तद्यथा पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वाहमेव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति Nîlak. 13. das, woran es Einem mangelt, steht im instr. oder geht im comp. voran (ein solches comp. ist ein Oxytonon nach P. 6,2,153): माषेण *woran ein* Mâsha *fehlt* P. 2,1,31, Schol. एकाङ्गेनापि विकलमेतत्साधु न वर्तते (राष्ट्रम्) Kâm. Nîtis. 4,2. पुच्छ° *am Schwanze verstümmelt* Spr. 729. पत्त° *flügellahm* 1662. एकाक्षि°, पाद°, हस्ताग्र° Kull. zu M. 8,274. माष° Schol. zu P. 2,1,31. 6,2,153. प्रसूति° *kinderlos* Çâk. 152. कलङ्क° *fleckenlos* Spr. 2708. कुलकुशलशील° 3259. श्रवणविकलं श्रोत्रयुगलम् 4965. त्रिगुणज्ञान° Verz. d. Oxf. H. 89,a,25. कार्याकार्यविवेक° Sarvadarçanas. 78,13. वह्निशक्ति° Kaij. zu P. 8,4,8. अविकल (s. auch bes.) *dem Nichts fehlt, vollkommen, vollständig* Kathâs. 29,24. Varâh. Bṛh. S. 2, Anf. 53,68. °पार्श्व 68,19. इन्द्रियाणि Spr. 1019. पुमंस् *Seele* Bhâg. P. 7,2,24. °वृत्तः परिवेषः Varâh. Bṛh. S. 34,4. यज्ञ Maitrjup. 1,1. वाक्य MBh. 12,11943. अविकलं कृत्वा वर्णविषम् *vollständig* Kathâs. 24,91. त्रयी Varâh. Bṛh. S. 19,11. फल 38,8. फलानामविकलदाता = अविकलफलदाता Bṛh. 17,13. कल्याणिता Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 1. राज्य Bhâg. P. 2,4,2. — 2) m. N. pr. कलविकलवध (unter कलविकल in den Nachträgen कलविकल als ein Name gefasst) Verz. d. Oxf. H. 79,a,9. ein Sohn Çambara's Hariv. 9253. Lambodara's Bhâg. P. 12,1,22. Ǵîmûta's VP. 422, N. 22. — 3) f. आ a) *eine Frau, die nicht mehr menstruirt*, Çabdar. im ÇKDr. — b) *Secunde* Weber, Ǵjot. 106. Sûrjas. 1,28. 7,10. Gaṇit. Spashṭâdh. 67, Comm. 77. = 6 Prâṇa = $^1/_{60}$ Daṇḍa VP. 23, N. 3. — c) Bez. *eines best. Stadiums im Laufe des Mercur* Varâh. Bṛh. S. 7,15. fg. Ind. St. 10,

208. — 4) f. ई *eine Frau, die nicht mehr menstruirt,* ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. वैकल्य und सकल.

विकलता (von विकल) f. *Mangelhaftigkeit:* चतुर्विकलता *Krankheit der Augen* MBH. 1,8102. उन्मना विकलतां प्राप्नोति *ein krankhafter Zustand, Mangel an vollem Bewusstsein* Spr. (II) 615.

विकलत्व (wie eben) n. *Gebrechlichkeit* SUÇR. 1, 352, 16. 353, 8. *Mangelhaftigkeit, Fehlerhaftigkeit:* दृष्टान्तस्य साधनविकलत्वात् *da der Vergleich ein mangelhafter Beweis ist* SARVADARÇANAS. 48, 5.

विकलपाणिक adj. *eine lahme Hand habend* HALÂJ. 2, 455.

विकलाङ्ग adj. *der an irgend einem Theile des Körpers ein Krüppel ist* AK. 2,6,1,46. H. 455. HALÂJ. 2,232. MBH. 1,1469. VARÂH. BṚH. S. 16,35.

विकलीकर् (विकल + 1. कर्) *Jmd krank machen, mitnehmen* GÎT. 12, 8.

विकल्प (von कल्प् mit वि und 2. वि + कल्प) 1) m. = कल्पन, संभ्रान्ति MED. p. 23. = भ्रान्ति, शङ्का, वितर्क u. s. w. HALÂJ. 4, 6. Am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) Wechsel, Wahl zwischen Zweien* oder *Mehreren, Zulässigkeit des Einen und Andern:* स्थानासनयोः ÂÇV. ÇR. 1, 12, 5. 2,2,12. 3,2,14. विकल्पे प्रवृत्तम् *wo die Wahl ist, da geht das Angefangene weiter* KÂTJ. ÇR. 1,4,14. संख्या° 8,20. 4,5,25. KAUÇ. 63. विकल्पः शंसेन्न वा ÇÂÑKH. ÇR. 7,10,8. दण्ड° *eine beliebige Strafe* M. 9,228. SUÇR. 2,560,10. VARÂH. BṚH. S. 86,79. वेति विकल्पः Schol. zu P. 1, 1, 44. 2,4,39. 6,1,91. AK. 3,4,32(28),4. 9. 3,5,5. TRIK. 3,4,6. HALÂJ. 5,87. अनुनासिक° Schol. zu P. 6,3,76. विकल्पेन *nach Belieben* ÇRUT. 2. BHÂG. P. 7,12,11. व्यवस्थित *eine bedingte Zulässigkeit des Einen oder Andern* Schol. zu KÂTJ. ÇR. 173, 8. 252, 4. 700,14. zu P. 6, 4, 38. zu AV. PRÂT. 4,27. DÂJABH. 109, 9. ऐच्छिक *eine unbedingte* ebend. विकल्पस्तुल्यबलयोर्विरोधश्चातुरीयुतः *Alternative* SÂH. D. 738. विरोधस्तुल्यबलयोर्विकल्पालंकृतिर्मता PRATÂPAR. 100,a,3. संगमविरहविकल्पे Spr. 3101. SARVADARÇANAS. 13,1. 16,3. °जाल *eine Menge denkbarer Fälle* 30,3. पञ्चम° 132,16. 143,2. — *b) Variation, Combination, Verschiedenheit, Mannichfaltigkeit:* द्वादशाह° KÂTJ. ÇR. 24,7,11. कार्तयशे त्रयो विकल्पाः LÂṬJ. 7,10,13. SUÇR. 1,5,15. 14,2. असंख्येयविकल्पत्वाच्छल्यानाम् 25,20. 129,4. 160,14. षोडशके द्रव्यगणे चतुर्विकल्पेन भिद्यमानानाम्। अष्टादश जायन्ते शतानि सहितानि विंशत्या ॥ VARÂH. BṚH. S. 77,20. fgg. BṚH. 12, 1. 13,4. नाभसयोगानां चत्वारो विकल्पाः। तत्राकृतियोगा एको विकल्पः। आकृतियोगाः संख्यायोगाश्च विकल्पद्वयम् u. s. w. UTPALA zu 12,1. आश्रमाणां विकल्पाश्च MBH. 12,2441. विकल्पा आपदाम् 13,245. मायाविकल्परचितैः स्यन्दनैः RAGH. 13,75. 17,49. MÂLAV. 29. Spr. 1012. BHÂG. P. 1,17,19. °रचित 6,8,30. 8,12,8. Verz. d. Oxf. H. 56,a,26. अ° adj. BHÂG. P. 3,9,3. WEBER, RÂMAT. UP. 349. अष्ट° *achtfältig* SÂMKHJAK. 53. TATTVAS. 45. अष्टाविंशतिविकल्पा (अशक्ति) GAUḌAP. zu SÂMKHJAK. 49. अनेक° *mannichfaltig* DAÇAK. 63,14. विकल्पाः BHÂG. P. 2,9,36 nach dem Comm. so v. a. विविधाः सृष्टयः. — *c) Nebenform:* होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् VARÂH. BṚH. 1,3. — *d) Verschiedenheit in der Auffassung, Unterscheidung:* धर्म° NJÂJAS. 1,1,55. BHÂG. P. 6,17,30. 7,15,61. — *e) Unschlüssigkeit, Unentschlossenheit, Zweifel* MBH. 14,1028. RAGH. 17,49. Spr. 581 (II). 889. विकल्पो ऽत्र न कर्तव्यः 1622. 4591. KATHÂS. 39,137. 45,62. 216. 46,185. 72,168. GÎT. 6,11. RÂGA-TAR. 3,219. NÎLAK. 46. BHÂG. P. 3,26,27. 6,9,35. 7,13,43. 8,20,7. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 47. PAÑKAT. 71,20. SARVADARÇANAS. 22,20. 23,2. 44,13. 70, 19. 148,17. अ° *sich nicht lange bedenkend* KATHÂS. 24,65. PAÑKAT. 88, 6. अविकल्पम् adv. *ohne sich zu bedenken* 45,4. — *f) das Annehmen, Statuiren:* यत एतस्याः सप्तद्वीपविशेषविकल्पस्त्वया भगवन्खलु सूचितः BHÂG. P. 5,16,2. — *g) falsche Vorstellung, Einbildung* JOGAS. 1,6. शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः 9. किसलयतल्पं गणयति विहितहुताशविकल्पम् GÎT. 4,15. WASSILJEW 305 u. s. w. — *h) Berechnung:* बलाबल° VARÂH. BṚH. 24,6. — *i) geistige Beschäftigung, das Denken* H. 1370, Schol. — *k) Zwischen-Kalpa, der Zeitraum zwischen zwei Weltperioden* BHÂG. P. 2,8,12. 10,46. 8,14,11. — *l) ein Gott* (nach dem Comm.) BHÂG. P. 10,85,11. — *m)* pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6, 366 (VP. 192) nach der Lesart der ed. Bomb. विकल्य ed. Calc. — 2) adj. *an dem eine Verschiedenheit wahrzunehmen ist:* फले विकल्पाः so v. a. *verschiedenen Lohnes theilhaftig werdend* BHÂG. P. 8,9,28. — Vgl. निर्विकल्प, स°, वैकल्पिक.

विकल्पक 1) nom. ag. vom caus. von कल्प् mit वि. *a) Vertheiler, Austheiler:* पक्वान्नलेह्यपानानां मांसानां च MBH. 3,8451. — *b) Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* षडशीतिश्च तस्यापि (d. i. याज्ञवल्क्यस्य) संहितानां विकल्पकाः Verz. d. Oxf. H. 55,a,9. 38,b,28. — 2) am Ende eines adj. comp. von विकल्प. अ° *der sich nicht lange bedenkt* MBH. 18, 226; vgl. निर्विकल्पक, स°.

विकल्पन (vom caus. von कल्प् mit वि) 1) nom. ag. *Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* श्रेष्ठा ह्याथर्वणो ह्येते संहितानां विकल्पनाः Verz. d. Oxf. H. 55,b,39. — 2) n. und f. आ nom. act. *a) das Freistellen, der-Wahl-Ueberlassen* KÂR. zu P. 8,3,31 (n.). वाशब्दो ऽत्र चार्थे न विकल्पने UTPALA zu VARÂH. BṚH. 23,5. कालविकल्पना PAÑKAR. 3,11, 12. — *b) Gebrauch einer Nebenform* UTPALA zu VARÂH. BṚH. 1,3 (f.). — *c) das Unterscheiden* KUSUM. 39,14 (n.). संकल्पः प्रत्युपस्थितविषयविकल्पनं शुक्लनीलादिभेदेन ÇAṀK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 286. परिव्राट्कामुकशुनामेकस्यां प्रमदातनौ। कुणपः कामिनी भक्ष्य इति तिस्रो विकल्पनाः *verschiedene Auffassungen* SARVADARÇANAS. 15,6. 7. — *d) falsche Vorstellung, — Annahme, Einbildung:* माया लोकसृष्टिविकल्पना BHÂG. P. 10, 28,6. — Vgl. निर्विकल्पन.

विकल्पनीय (wie eben) adj. *zu bestimmen, zu berechnen, auszumitteln* VARÂH. BṚH. 10,1. 14,5.

विकल्पवत् (von विकल्प) adj. *einen Zweifel habend, unschlüssig seiend* VEDÂNTAS. (Allah.) No. 85.

विकल्पसम m. Bez. *einer best. sophistischen Einwendung* NJÂJAS. 5, 1,1. 4. SARVADARÇANAS. 114,10.

विकल्पानुपपत्ति f. *die durch ein Dilemma hervorgehende Unhaltbarkeit* SARVADARÇANAS. 15,19. 79,22. 101,7. 105,11. 110,12. fg. 116,19. 142,11. 152,17.

विकल्पासह adj. *ein Dilemma nicht aushaltend, durch ein Dilemma sich als unhaltbar ergebend;* davon nom. abstr. °त्व n. SARVADARÇANAS. 11,20. fg. 25,17. 119,6. 127,21. 141,12. 156,1.

विकल्पिन् (von विकल्प) adj. *was man verwechseln kann, zum Verwechseln ähnlich:* नीलाशोकविकल्पिकेशनिकरः so v. a. *bei dem man die blauen Açoka-Blüthen als Kopfhaar ansehen könnte* ṚT. 6,34, v. l.

zwanzig Jogana R. 4,62,18. — 2) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 14, 68. VP. 352. — Vgl. त्रिंशद्विंश, वि°.

विंशक (wie eben) adj. P. 5,1,24. 6,4,142. 1) *von zwanzig begleitet, um zwanzig vermehrt:* सप्तभिः शतैर्विंशकेन (विंशत्या च besser ed. Bomb.) *siebenhundertundzwanzig* Bhâg. P. 4,27,16. शत so v. a. *zwanzig Procent* Jâǵn. 2,38. — 2) *aus zwanzig Theilen bestehend* MBh. 12,11961. fg. गण Mârk. P. 80,5. 7. n. *Zwanzigzahl, ein Zwanzig:* मोन° *zwanzig* (Çloka) *über* Hariv. 14346. Târan. 318.

विंशत् = विंशति *zwanzig:* विंशदर्णक Pańkar. 4,5,20. विंशच्छ्लोकीव्याख्या Verz. d. B. H. No. 1403. विंशदङ्क 907. — Vgl. एक°, परि°.

विंशति (von द्वि und दशन्) f. *ein Zwanzig* P. 5,1,59. AK. 2,9,84. Trik. 3,5,2. Ṛv. 1,90,8. आ विंशत्या त्रिंशता याहि हरिभिर्युजानः 2,18, 5. सप्त शतानि विंशतिश्च *siebenhundertundzwanzig* 1,164,11. 5,27,2. 6,27,8. 7,18,11. विंशतिं शता *zweitausend* 8,46,22. 31. 10,87,14. 23. Çat. Br. 2,3,3,20. 7,5,2,44. 10,4,2,16. द्वाभ्यां विंशती च VS. 27,33. Varâh. Bṛh. S. 7,13. 11,23. 21,30. 53,19. Bhâg. P. 7,6,7. अस्यां विंशतौ Siddh. K. zu P. 5,2,45. घोरा विरेजुर्विंशतिर्द्रुमाः R. 3,56,32. 2,70,5. MBh. 12,11963. Spr. 4631. AK. 2,9,87. Varâh. Bṛh. S. 23,7. H. 872, Schol. विंशतिश्च सहस्राणि Mârk. P. 46,36. विंशतिं वै सहस्राणि वर्षाणाम् R. Gorr. 1,44,6. नरकानेकविंशतिम् M. 4,87. 5,35. MBh. 3,8379 (विंशतिं zu lesen, eine von Nilak. gekannte Lesart). विंशत्या वत्सरैः Râǵa-Tar. 6,20. विंशतिर्घटानाम् H. 872, Schol. MBh. 12,11961. Weber, Ǵjot. 89. Varâh. Bṛh. S. 54,75. H. 127. °दीक्ष Kâtj. Çr. 23,2,15. °रात्र 24,2,1. 2. Maç. in Verz. d. B. H. 73 (IX, 3). °पद Çâṅkh. Çr. 12,17,6. °पशु 16,15,20. विंशत्यक्षर Çat. Br. 10,5,4,8. विंशत्यङ्गुलि 12,3,2,2. विंशत्योदन Kauç. 65. पूर्णविंशतिवर्ष M. 2,212. °द्विज 8,392. °भुज R. 3,36, 5. — Vgl. एक° u. s. w.

विंशतिक (von विंशति) P. 5,1,27. 32. adj. (f. आ) 1) *zwanzig Jahre alt* Varâh. Bṛh. S. 68,78. — 2) *aus zwanzig Theilen* (z. B. Silben) *bestehend* Ind. St. 8,101. 144. दशविंशतिकौ दमौ *Geldstrafen von zehn und zwanzig* (Paṇa) Jâǵn. 2,216. n. *Zwanzigzahl* Kâm. Nîtis. 19,21. — Vgl. वैंशतिक.

विंशतिकीन s. अध्यर्ध°, द्वि°.

विंशतितम (von विंशति) adj. *der zwanzigste* P. 5,2,56. Vop. 7,40. भाग *der zwanzigste Theil* Mit. 246,14, wo विंशतितमो st. विंशतिमतो zu lesen ist.

विंशतिप (विं° + 2. प) m. *das Haupt von zwanzig* (Dörfern) MBh. 12,3264.

विंशतिबाहु adj. *zwanzig Arme habend;* m. Bein. Râvaṇa's Bhaṭṭ. 5,104.

विंशतिम (von विंशति) adj. *der zwanzigste:* सर्ग Verz. d. Oxf. H. 53, a,27. भाग *der zwanzigste Theil* Mit. 246,15.

विंशतिशत n. *hundertundzwanzig:* अह्नानि Çat. Br. 12,3,5,12. °शतेष्टक 10,4,2,8.

विंशतिसाहस्र adj. (f. आ) *zwanzigtausend* Hariv. 6927. R. 2,91,42. fg.

विंशतीश m. = विंशतिप M. 7,115. 117.

विंशतीशिन् m. dass. M. 7,116.

विंशत्यधिपति m. dass. MBh. 12,3265.

विंशद्बाहु = विंशतिबाहु R. 7,32,50.

विंशिन् (von विंश) 1) adj. *aus zwanzig bestehend* P. 5,2,37, Vârtt. 6. अङ्गिरसः Schol. Pańkav. Br. 24,10,2. — 2) m. *a)* = विंशतिप M. 7, 119. — *b)* angeblich = विंशति ÇKDr. nach Siddh. K.

विःकन्धिका f. *Gequake* (nach dem Comm.): भेक° Maitrjup. 6,22.

विक 1) m. N. pr. eines Mannes Kshitîç. 5,8. — 2) n. *die Milch einer Kuh, die vor Kurzem gekalbt hat,* Çabdak. im ÇKDr.

विकंसा f. N. pr. eines Frauenzimmers v. l. im gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

विककर (वि + ककर) m. *ein best. Vogel* VS. 24,20.

विकङ्कट (2. वि + क°) gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80. m. *Asteracantha longifolia Nees.* Çabdam. im ÇKDr.

विकङ्कटिक adj. von विकङ्कट gaṇa कुमुदादि 1. zu P. 4,2,80.

विकङ्कत (2. वि + क°) 1) m. *Flacourtia sapida Roxb.* dornig, aus dem Holze werden Opfergeräthe verfertigt, AK. 2,4,2,18. Ratnam. 205. TS. 3,5,7,3. 6,4,10,5. TBr. 1,1,3,12. 2,1,7. Çat. Br. 2,2,4,10. 5,2, 4,18. 6,4,10,5. Kâtj. Çr. 26,2,10. 3,9. Suçr. 2,79,2. gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141. Ragh. 11,25. Varâh. Bṛh. S. 48,42. — 2) f. आ *Sida cordifolia* und *rhombifolia* (अतिबला) Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. वैकङ्कत.

विकङ्कतीमुख adj. etwa *dornmäulig* AV. 11,10,3.

विकच (2. वि + कच) 1) adj. *a) haarlos, kahlköpfig* Med. k. 18. MBh. 1,6078. 3,15416. — *b) geöffnet* (von Blüthen) AK. 2,4,2,7. H. 1127. Med. Hariv. 3829. 9016. Ṛt. 1,24. 2,25. 3,1. 28. Ragh. 9,36. ad Çâk. 19. Kir. 5,13. Spr. 2840. 4173. Kathâs. 42,224. Râǵa-Tar. 4,245. Sâh. D. 178,7. Prab. 60,6. Dhûrtas. 92,6. Bhâg. P. 5,17,13. Pańkar. 3,8,17. Verz. d. Oxf. H. 108,b,2. 130,b,5. — *c) strahlend, glänzend, prangend:* विकचानना Kathâs. 34,102. भावविकचैर्नेत्रैः Hariv. 4094. पुष्प° (द्रुम) MBh. 3,11602. पर्णभार Hariv. 12083. मरीचि° MBh. 1,1147. 7,5718. स्वरश्मिजाल° 8,664. हेम° 1,1412. 8,3788. हारविकचौ स्तनौ 3,1824. शिखासहस्र° (जटाभार) Hariv. 12306. — 2) m. *a) ein buddhistischer Bettler* Med. — *b) eine Art* Ketu (*Komet*) Trik. 3,3,78. Med. विकचो यथा ग्रहः MBh. 8,690. deren 65 Varâh. Bṛh. S. 11,19. — *c)* N. pr. eines Dânava Hariv. 12933. — Vgl. उत्कच, ऊर्ध्वकच.

विकचय् (von विकच), °यति *öffnen* (eine Blüthe): आमीलितनयननलिनमुकुलयुगलमीषद्विकचय्य Bhâg. P. 5,2,5. विकचित *geöffnet, aufgeblüht* Spr. 2601, v. l.

विकचालम्बा f. Bein. der Durgâ H. ç. 56.

विकचीकर् (विकच + 1. कर्) = विकचय्. पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति Spr. 1692.

विकच्छ adj. = कच्छरहित ÇKDr. nach der Smṛti.

विकच्छप (2. वि + क°) adj. *keine Schildkröte habend, um dieselbe gekommen* Kathâs. 61,135.

विकट P. 5,2,29. 1) adj. (f. आ, nach gaṇa बह्वादि zu P. 4,1,45 auch विकटी) Nir. 6,30. *a) das gewöhnliche Maass überschreitend, umfangreich, weit, gross* Trik. 3,3,102. H. 1430. an. 3,70. Med. ṭ. 55. Halâj. 68. विकटोद्धतपिण्डक MBh. 1,6074. 7,7897. वक्षस् Çiç. 10,42. Khandom. 81. Knie Varâh. Bṛh. S. 68,6. ललाटतट Prab. 85,15. विकटास्यकोटर Bhâg. P. 10,37,2. Uttarar. 91,14 (118,6). An mehreren Stellen würde auch Bed. *b)* passen. — *b) ein ungewöhnliches Aussehen*

habend, ungeheuerlich, scheusslich, grauenhaft Trik. Med. अरांयि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ṚV. 10,155,1. वामनैर्विकटैः कुब्जैः ततज्ञानैर्मत्कारवैः (भूतसंघैः) MBh. 2,403. 3,2338 (nach Nilak. कट = तृणासन und विकट = तद्रहित). 15856. 6,4294. 10,289. 12,3748. 16,34. Hariv. 9551. 10596. 12218. 13052. R. 5,10,19. 21. 17,28. 6,11,43. 7,16,8. Suçr. 1,368,18. Mârk. P. 43,20. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,14. °विधुंतुद Git. 4,5. फटासहस्रविकटं शेषम् MBh. 3,15815. विकटाकृति Kathâs. 20, 107. भैरवद्रूप 105,88. क्रोधान्धकारविकटभ्रुकुटी Prab. 74,4. Sâh. D. 221, 9. Verz. d. Oxf. H. 139,*a*,9. 141,*b*,22. अत्तर्ललाटसंपुटविकटात्तरमालिका Spr. (II) 1504. अतिविकटाभिः कर्णाटगौडलाटभाषाभिः Sarvadarçanas. 178, 11. fg. विकटां (so ist wohl zu lesen) भीतिम् Çatr. 14,331. विकटम् adv. *in grauenhafter Weise:* विकृस्य Verz. d. Oxf. H. 117,*b*,5. परिक्रामति Uttarar. 111,15 (150,13). — c) *hervorstehende Zähne habend* (दत्तुर) Dhar. im ÇKDr. — d) *über die Maassen schön* H. an. Halâj. 5, 8. Viçva im ÇKDr. मणिसोपानविकटा (शाला) R. 5,13,11. Khandom. 120. — 2) m. a) *ein best. Baum,* = साकुरुण्ड Râgan. in Nigh. Pr. — b) N. pr. einer der hundert Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2731. 6983. 6,2838. 8,2455. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2561. eines Râkshasa R. 5,12,13. 6,69,12. 7,5,39. einer mythischen Person Kathâs. 47, 86. einer Gans 60,169. Pañkat. 76,7. Hit. 110,2, v. l. — 3) f. आ N. pr. der Mutter Çâkjamuni's Trik. 1,1,14. Med. einer Râkshasî R. 5,25,30. — 4) n. a) *weisser Arsenik* Vaidjabh. in Nigh. Pr. — b) *Sandel* Dhanv. ebend. — c) Bez. *einer best. Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 94,*a*, N. 2. — Vgl. अति°, उत्कट, प्रकट, संकट.

विकटग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,29.

विकटत्व (von विकट) n. = पदानां नृत्यत्प्रायत्वम् Sâh. D. 250,2.

विकटनितम्बा f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,39.

विकटवदन m. N. pr. eines Wesens im Gefolge der Durgâ Kathâs. 52,246.

विकटवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Daçak. 96,6.

विकटविषाण m. *Hirsch* Siddh. in Nigh. Pr.

विकटशृङ्ग m. dass. Mad. ebend.

विकटाक्ष 1) adj. *Grauen erregende Augen habend:* व्याघ्र Pañkar. 1, 3,68. — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 45,224. 383. 46,39.

विकटानन 1) adj. *einen grossen* oder *scheusslichen Mund habend* Kathâs. 52,77. — 2) m. N. pr. eines der hundert Söhne des Dhṛtarâshṭra (= विकट) MBh. 1,4544.

विकटाभ m. N. pr. eines Asura Hariv. 12698.

विकण्टक (2. वि + क°) 1) adj. *dornenlos.* — 2) m. *Alhagi Maurorum Tourn.* Gaṭâdh. im ÇKDr. *Asteracantha longifolia Nees.* Râgan. im ÇKDr. — विकण्टकैः MBh. 12,1585 fehlerhaft für विभङ्गैः (so die ed. Bomb.) oder विटङ्कैः (von Nilak. erwähnte Lesart).

विकण्टकपुर n. N. pr. einer *Stadt* Pañkat. ed. Bomb. IV, S. 20, Z. 5.

विकत्थन (von कत्थ् mit वि) 1) nom. ag. *der da prahlt, Prahler* MBh. 2,2545. 5,1638. 12,3161. Daçak. 2, 5. Varâh. Bṛh. S. 75,7. Bṛh. 18,9. Râga-Tar. 2,157. स्व° dass. R. 3,4,28. अ° MBh. 12,3010. 13,100. 2016 (ऽवि° mit der ed. Bomb. zu lesen). Ragh. 14,73. Spr. 1919. 3137. Sâh. D. 66. Mârk. P. 118,11. — 2) n. *das Prahlen, Prahlerei* H. 270. Halâj. 1,145. MBh. 8,1961. 4,48 in der Unterschr. R. 6,36,74. Daçak. 4, 68. Kâvjâd. 2,23. P. 5,1,134, Schol. Bhâg. P. 1,15,19. 3,18,10. अशक्यार्थप्रतिज्ञान° Kathâs. 62,235. आत्म° Verz. d. Oxf. H. 185,*b*,6. विकत्थना f. dass. MBh. 12,5802. Daçak. 1,43. — Vgl. दुर्विकत्थन.

विकत्था (wie eben) f. *Prahlerei* MBh. 12,5886.

विकत्थिन् (wie eben) adj. = विकत्थन P. 3,2,143. MBh. 5,1718. fg. Bhaṭṭ. 7,11. अ° Spr. 2874.

विकथा f. gaṇa काथादि zu P. 4,4,102. — Vgl. वैकथिक.

विकद्रु m. N. pr. eines Jâdava Hariv. 5138. fgg. 6311. 6574.

विकनिकक्लिक n. und विकविकक्लिक n. in Verbindung mit प्रजापतेः N. eines Sâman Ind. St. 3,225,*a*. क्लिकविकनिक v. l.

विकपाल (2. वि + क°) adj. *der Hirnschale beraubt* Hariv. 3780.

विकम्पन (von कम्प् mit वि) 1) m. N. pr. eines Râkshasa Bhâg. P. 9,10,18. — 2) n. *Bewegung* (der Sonne) Ind. St. 10,274.

विकम्पित (wie eben) n. Bez. *einer best. Senkung des Tones* AV. Prât. 3,65.

विकम्पिन् (wie eben) adj. *zitternd:* विकम्पिकंधर Mârk. P. 63,45.

विकर (von 1. कर् mit वि) gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. संकाशादि zu 2,80. m. 1) *Krankheit* Çabdak. im ÇKDr. — 2) Bez. *einer best. Fechtart* Hariv. 15978. विष्कर die neuere Ausg. — Vgl. वैकर, वैकर्य.

विकरण (wie eben) 1) nom. ag. *eine Veränderung hervorrufend:* आख्यातपदविकरणाः *diejenigen Wörter und Stellungen, welche ein Verbum finitum verändern* d. i. *das als Regel geltende Unbetontsein desselben aufheben,* Ind. St. 10,412. 420. Insbes. heissen so in der Grammatik (mit oder ohne प्रत्यय) *die zwischen Wurzel und Personalendungen stehenden stammbildenden Suffixe* Pat. zu P. 1,2,21. Schol. zu 3, 1,85. 6,1,192. 7,2,44. 8,4,30, Vârtt. 1. Siddh. K. 10,*b*,1. Verz. d. Oxf. H. 171,*b*,27. fgg. Schol. zu Bhaṭṭ. 7,93. लुग्विकरणत्वात् Schol. zu P. 3,2,142. 145. — 2) n. a) *das Verändern, Modificiren:* उपधारज्ञनं कुर्यान्मनोर्विकरणे सति *wenn* म *oder* न *einen Wandel erfahren* Ind. St. 4, 206. अर्थ° Nir. 1,3. — b) *störende Einwirkung:* विकरणाभावः कायनिरपेक्षाणामिन्द्रियाणामभिमतदेशकालविषयापेक्षवृत्तिलाभः Sarvadarçanas. 179,4. 5; vgl. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,21, wo fälschlich विकारणाभावः gelesen wird.

विकराल (2. वि + क°) 1) adj. (f. आ) *ungeheuerlich, grauenhaft* Med. ṭ. 55. MBh. 9,2601. मूर्ति Prab. 65,11. Mârk. P. 118,48. प्रकारत्नत Pañkat. 218,1. — 2) f. आ Bein. der Durgâ H. ç. 57. Kathâs. 52,159.

विकरालता (von विकराल) f. *scheussliches Aussehen, Grauenhaftigkeit:* ततः प्रकारविकारो ऽयं मे ललाट एवं विकरालतां गतः Pañkat. 218,13.

विकरालमुख m. N. pr. eines Makara Pañkat. 205,7.

विकर्ण (2. वि + कर्ण) 1) adj. a) etwa *auseinanderstehende Ohren habend* (als gute Eigenschaft eines best. Hausthiers) AV. 5,17,13. — b) *keine Ohren habend, taub* Spr. 3915. — 2) m. a) *eine Art Pfeil* MBh. 7, 7420. 8,3758. Vgl. विकर्णिन्. — b) N. pr. eines Mannes P. 4,1,117. 124. MBh. 13,688. ein Sohn Karṇa's Hariv. 1704. Dhṛtarâshṭra's MBh. 1,2447. 2729. 3810. 4543. 4,1151. 5,791. Bhag. 1,8. — c) pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 6,2105. Vgl. विकर्णिक. — 3) f. ई Bez. *einer best.* Ishṭakâ TS. 5,3,2,3. Çat. Br. 8,5,4,9. 7,2,9. 10,1,2,7. Kâtj. Çr. 17,7,11. 20. — 4) n. N. eines Sâman TBr. 1,2,4,3. Ait. Br.

4,19. Âçv. Çr. 8,6,16. Lâṭj. 4,7,1. Ind. St. 3,236,b. मृत्योर्विकर्णभासे 229,b. — Vgl. वैकर्ण, वैकर्णि, वैकर्णेय.

विकर्णक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210.

विकर्णिक m. pl. N. pr. eines Volkes, = काश्मीर H. 958. — Vgl. विकर्ण 2) c).

विकर्णिन् m. *eine Art Pfeil*, = विकर्ण MBh. 7,6488. R. 3,31,24. 34, 10. 56,37. 6,20,26. 75,47. — Vgl. कर्णिन् 1) c).

विकर्त (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°.

विकर्तन (wie eben) 1) adj. *zerschneidend, zertheilend* Nir. 2,22. 6,30. — 2) m. a) *die Sonne* (*Zertheiler des Gewölks;* vgl. jedoch Ṛv. 10,85, 35) AK. 1,1,2,31. H. 97. Halâj. 1,35. Gaṇit. Grahânajanâdh. 9. Uttarar. ed. Cow. 124,1 (वैकर्तन die ältere Ausg.). Râga-Tar. 4,101. — b) *ein Sohn, der des Vaters Herrschaft an sich reisst*, Çabdârthak. bei Wilson. — 3) n. *das Zerschneiden, Zertheilen* Nir. 2,22. 5,21. 6,26. — Vgl. अधि°.

विकर्तृ (von 1. कर् mit वि) nom. ag. 1) *Umwandler, Umbildner* Çat. Br. 13,3,8,1. Pañkav. Br. 9,10,3. Pâr. Gṛhj. 3,4. एष कर्ता विकर्ता च MBh. 3,12823. त्वं हि कर्ता विकर्ता च भूतानामिह सर्वशः 13503. 9,3529. 13,6990. Hariv. 12261. 12312. — 2) *der feindselig verfährt, Beleidiger* MBh. 3,1385 (निकर्तृ ed. Bomb.). R. 1,21,10.

विकर्त्तृ (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. s. गो°, welches Nilak. sehr ungeschickt auf folgende Weise erklärt: गोविकर्त्ता गवां महतां बलीवर्दानामपि विकर्त्ता दमनेन विकृतिजनकः वृषभान्वा महाबलान्निग्रह्णीष्यामीत्युपक्रमात्. Die ed. Bomb. schreibt, wie man sieht, richtig विकर्त्तृ, während sie im nom. ag. von 1. कर् das त nicht verdoppelt.

1. विकर्मन् (2. वि + क°) n. 1) *eine Einem nicht zukommende, unerlaubte Beschäftigung, — Handlung:* कर्मन्, विकर्मन्, अकर्मन् Bhag. 4, 17. Bhâg. P. 11,3,43. 45. पतनीयेषु विकर्मसु MBh. 3,14075. 5,2139. 12, 2277. 2289. 13,1645. 3450. 4531. Prâjaçk̂ittend. 30,a,5. Bhâg. P. 3,14, 30. 5,5,4. 18,3. विकर्मक्रिया M. 9,226. विकर्मकृत् 8,66. Kathâs. 52,134. विकर्मनिरत Bhâg. P. 3,9,17. 10,70,26. विकर्मस्थ M. 4,30. 9,214 (= MBh. 13,5122). 225. 11,192. MBh. 3,12841. 13728. 5,797. 7,8848. 12, 2879. 2884. fg. 13,6205. Hariv. 11161. Kathâs. 52,113. Mârk. P. 31,29. — 2) वायोर्विकर्म N. eines Sâman Ind. St. 3,235,a.

2. विकर्मन् (wie eben) adj. 1) *einer Einem nicht zukommenden, unerlaubten Beschäftigung nachgehend:* विकर्माणश्च ये केचित्तान्युनक्ति स्वकर्मसु MBh. 3,13727. 12,2359. — 2) *sich jeglicher Beschäftigung enthaltend, nicht arbeitend* MBh. 13,341.

विकर्मिन् adj. = 2. विकर्मन् 1) MBh. 13,6201.

विकर्ष (von 1. कर्ष् mit वि) m. 1) *das Anziehen* (des Pfeils mittels der Sehne) R. 6,69,32. — 2) *das Auseinanderziehen, Zerlegen* (der Halbvocalverbindungen und dergl.) Ṛv. Prât. 17,30. fg. Nidânas. 1,12 in Ind. St. 8,84. — 3) *Entfernung* Gobh. 1,5,7. Nir. 3,9. — 4) *Pfeil* Trik. 2,8,53.

विकर्षण (wie eben) 1) nom. ag. a) *auseinanderziehend, spannend:* महाचाप° MBh. 2,1527. — b) *fortnehmend, entfernend:* कालः पुंसां गुणविकर्षणः Bhâg. P. 1,13,26. गृहमाधिविकर्षणम् 10,42,12. — 2) nom. act. a) *das Auseinanderziehen, Auseinanderrecken* MBh. 1,7109. 2,915. 4,356. Suçr. 1,25,16. Bhâg. P. 10,18,12. अङ्ग° Spr. 1885. *das Spannen* (des Bogens, der Bogensehne) MBh. 3,1387. 4,1386. Hariv. 4038 (mit der neueren Ausg. चापविक° zu lesen). R. Gorr. 1,69,15. Kir. 3,57. *das Anziehen* (eines Strickes) 4,15. — b) *das Auseinanderlegen:* पांसु° Bez. eines best. Kinderspiels MBh. 1,4979. *das Vertheilen:* वेद° Bhâg. P. 3,7,29. — c) *das Hinausschieben des Essens, Enthaltung von Speise* MBh. 15,1037. — d) *das Auseinanderthun* so v. a. *Ausforschen:* दूतेन नरेन्द्रस्तु कुर्वीतारिविकर्षणम् Kâm. Nîtis. 12,24.

विकल (2. वि + कला) 1) adj. (f. आ; nach gaṇa गौरादि zu P. 4,1, 41 विकली) *woran Etwas fehlt, mangelhaft, unvollkommen;* = विह्वल Gaṭâdh. im ÇKDr. = स्वभावहीन Bhar. ebend. von *Krüppeln* MBh. 1, 1943. 6,4964. R. Gorr. 2,32,35. Spr. 1113. 1357 (II). 1590. 2518. Varâh. Bṛh. S. 5,38. 45,13. 95,7. Bṛh. 18,6. Kathâs. 27,172. Mârk. P. 23, 109. 29,38. von Theilen des Körpers: °दशन Varâh. Bṛh. 18,18. °नयन 20,1. विकलेक्षण 3. विकलेन्द्रिय M. 8,66. Jâǵn. 2,70. MBh. 7,6397. °करण Uttarar. 13,4 (18,1). 52,13 (68,3). दृष्टिर्गाढनिमीलिता न विकला नाभ्यन्तरे चञ्चला (सुप्तस्य) *nichts Unnatürliches zeigend* Mṛkkh. 48, 23. श्रुतियुगले पिककृतविकले *ermüdet, mitgenommen* Gît. 12,7. नष्टहीनविकलविकृतस्वरता Suçr. 1,118,8. अधिकविकलं त्वरूपम् Dhûrtas. 72,12. °रश्मि *schwach, unvollkommen* Spr. (II) 1168. किरणाः Varâh. Bṛh. S. 30,9. पर्जन्य Spr. 1737. आढ्य *mangelhaft* Mârk. P. 97,33. कला Spr. (II) 1360. *vorübergehend unwohl, geistig niedergedrückt, in schlimmer Lage seiend* MBh. 5,3695 (विह्वल ed. Bomb.). Gît. 5,3 (विकलतर). 9,5. विषाद° Kathâs. 78,32. Brahma-P. in LA. (III) 53,7. तद्यथा पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वाहमेव विकलः सकलो वेति बाह्यधर्मानात्मन्यध्यस्यति Nilak. 13. das, woran es Einem mangelt, steht im instr. oder geht im comp. voran (ein solches comp. ist ein Oxytonon nach P. 6,2,153): माषेण *woran ein* Mâsha *fehlt* P. 2,1,31, Schol. एकाङ्गेनापि विकलमेतत्साधु न वर्तते (राष्ट्रम्) Kâm. Nîtis. 4,2. पुच्छ° *am Schwanze verstümmelt* Spr. 729. पत्त° *flügellahm* 1662. एकाक्षि°, पाद°, हस्ताग्रङ्ग° Kull. zu M. 8,274. माष° Schol. zu P. 2,1,31. 6,2,153. प्रसूति° *kinderlos* Çâk. 152. कलङ्क° *fleckenlos* Spr. 2708. कुलकुशलशील° 3259. श्रवणविकलं श्रोत्रयुगलम् 4965. त्रिगुणाज्ञान° Verz. d. Oxf. H. 89,a,25. कार्याकार्यविवेक° Sarvadarçanas. 78,13. वहनशक्ति° Kaij. zu P. 8,4,8. अविकल (s. auch bes.) *dem Nichts fehlt, vollkommen, vollständig* Kathâs. 29,24. Varâh. Bṛh. S. 2, Anf. 53,68. °पार्श्व 68,19. इन्द्रियाणि Spr. 1019. पुमंस् *Seele* Bhâg. P. 7,2,24. °वृत्तः परिवेषः Varâh. Bṛh. S. 34,4. यज्ञ Maitrjup. 1,1. वाक्य MBh. 12,11943. अविकलं कृत्वा वर्णविषम् *vollständig* Kathâs. 24,91. त्रयी Varâh. Bṛh. S. 19,11. फल 38,8. फलानामविकलदाता = अविकलफलदाता Bṛh. 17,13. कल्याणिता Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 1. राज्य Bhâg. P. 2,4,2. — 2) m. N. pr. कलविकलवध (unter कलविकल in den Nachträgen कलविकल als ein Name gefasst) Verz. d. Oxf. H. 79,a,9. ein Sohn Çambara's Hariv. 9253. Lambodara's Bhâg. P. 12,1,22. Ǵîmûta's VP. 422, N. 22. — 3) f. आ a) *eine Frau, die nicht mehr menstruirt*, Çabdar. im ÇKDr. — b) *Secunde* Weber, Ǵjot. 106. Sûrjas. 1,28. 7,10. Gaṇit. Spashṭâdh. 67, Comm. 77. = 6 Prâṇa = $^1/_{60}$ Daṇḍa VP. 23, N. 3. — c) Bez. *eines best. Stadiums im Laufe des Mercur* Varâh. Bṛh. S. 7,15. fg. Ind. St. 10,

208. — 4) f. ई *eine Frau, die nicht mehr menstruirt*, Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वैकल्य und सकल.

विकलता (von विकल) f. *Mangelhaftigkeit:* चतुर्विकलता *Krankheit der Augen* MBh. 1,8102. उन्मना विकलतां प्राप्नोति *ein krankhafter Zustand, Mangel an vollem Bewusstsein* Spr. (II) 615.

विकलत्व (wie eben) n. *Gebrechlichkeit* Suçr. 1, 352, 16. 353, 8. *Mangelhaftigkeit, Fehlerhaftigkeit:* दृष्टान्तस्य साधनविकलत्वात् *da der Vergleich ein mangelhafter Beweis ist* Sarvadarçanas. 48, 5.

विकलपाणिक adj. *eine lahme Hand habend* Halâj. 2,455.

विकलाङ्ग adj. *der an irgend einem Theile des Körpers ein Krüppel ist* AK. 2,6,1,46. H. 455. Halâj. 2,232. MBh. 1,1469. Varâh. Bṛh. S. 16,35.

विकलीकार् (विकल + 1. कार्) *Jmd krank machen, mitnehmen* Gît. 12, 8.

विकल्प (von कल्प् mit वि und 2. वि + कल्प) 1) m. = कल्पन, संभ्रान्ति Med. p. 23. = भ्रान्ति, शङ्का, वितर्क u. s. w. Halâj. 4, 6. Am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *Wechsel, Wahl zwischen Zweien* oder *Mehreren, Zulässigkeit des Einen und Andern:* स्थानासनयोः Âçv. Çr. 1, 12, 5. 2,2,12. 3,2,14. विकल्पे प्रवृत्तम् *wo die Wahl ist, da geht das Angefangene weiter* Kâtj. Çr. 1,4,14. संख्या° 8,20. 4,5,25. Kauç. 63. विकल्पः शंसेन्न वा Çâṅkh. Çr. 7,10,8. दण्ड° *eine beliebige Strafe* M. 9,228. Suçr. 2,560,10. Varâh. Bṛh. S. 86,79. वेति विकल्पः Schol. zu P. 1, 1, 44. 2,4,39. 6,1,91. AK. 3,4,32(28),4. 9. 3,5,5. Trik. 3,4,6. Halâj. 5,87. अनुनासिक° Schol. zu P. 6,3,76. विकल्पेन *nach Belieben* Çrut. 2. Bhâg. P. 7,12,11. व्यवस्थित *eine bedingte Zulässigkeit des Einen oder Andern* Schol. zu Kâtj. Çr. 173, 8. 252, 4. 700,14. zu P. 6, 4, 38. zu AV. Prât. 4,27. Dâjabh. 109,9. ऐच्छिक *eine unbedingte* ebend. विकल्पस्तुल्यबलयोर्विरोधश्चातुरीयुतः *Alternative* Sâh. D. 738. विरोधस्तुल्यबलयोर्विकल्पालंकृतिर्मता Pratâpar. 100,a,3. संगमविरहविकल्पे Spr. 3101. Sarvadarçanas. 13,1. 16,3. °जाल *eine Menge denkbarer Fälle* 30,3. पञ्चम° 132,16. 143,2. — b) *Variation, Combination, Verschiedenheit, Mannichfaltigkeit:* द्वादशाह° Kâtj. Çr. 24,7,11. कार्तयशे त्रयो विकल्पाः Lâtj. 7,10,13. Suçr. 1,5,15. 14,2. असंख्येयविकल्पत्वाद्धत्यानाम् 25,20. 129,4. 160,14. षोडशके द्रव्यगणे चतुर्विकल्पेन भिद्यमानानाम्। अष्टादश जायन्ते शतानि सहितानि विंशत्या॥ Varâh. Bṛh. S. 77,20. fgg. Bṛh. 12, 1. 13,4. नाभसयोगानां चत्वारो विकल्पाः। तत्राकृतियोगा एको विकल्पः। आकृतियोगाः संख्यायोगाश्च विकल्पद्वयम् u. s. w. Utpala zu 12,1. आश्रमाणां विकल्पाश्च MBh. 12,2441. विकल्पा आपदाम् 15,245. मायाविकल्परचितैः स्यन्दनैः Ragh. 13,75. 17,49. Mâlav. 29. Spr. 1012. Bhâg. P. 1,17,19. °रहित 6,8,30. 8,12,8. Verz. d. Oxf. H. 56,a,26. अ° adj. Bhâg. P. 3,9,3. Weber, Râmat. Up. 349. अष्ट° *achtfältig* Sâṅkhjak. 53. Tattvas. 45. अष्टाविंशतिविकल्पा (अशक्ति) Gauḍap. zu Sâṅkhjak. 49. अनेक° *mannichfaltig* Daçak. 63,14. विकल्पाः Bhâg. P. 2,9,36 nach dem Comm. so v. a. विविधाः सृष्टयः. — c) *Nebenform:* होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् Varâh. Bṛh. 1,3. — d) *Verschiedenheit in der Auffassung, Unterscheidung:* धर्म° Njâjas. 1,1,55. Bhâg. P. 6,17,30. 7,15,61. — e) *Unschlüssigkeit, Unentschlossenheit, Zweifel* MBh. 14,1028. Ragh. 17,49. Spr. 581 (II). 889. विकल्पो ऽत्र न कर्तव्यः 1622. 4591. Kathâs. 39,137. 45,62. 216. 46,185. 72,168. Gît. 6,11. Râga-Tar. 3,219. Nîlak. 46. Bhâg. P. 3,26,27. 6,9,35. 7,13,43. 8,20,7. Vedântas. (Allah.) No. 47. Pañkat. 71,20. Sarvadarçanas. 22,20. 23,2. 44,13. 70, 19. 148,17. अ° *sich nicht lange bedenkend* Kathâs. 24, 65. Pañkat. 88, 6. अविकल्पम् adv. *ohne sich zu bedenken* 45, 4. — f) *das Annehmen, Statuiren:* यत एतस्याः सप्तद्वीपविशेषविकल्पस्त्वया भगवन्खलु सूचितः Bhâg. P. 5,16,2. — g) *falsche Vorstellung, Einbildung* Jogas. 1,6. शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः 9. किसलयतल्पं गणयति विहितहुताशविकल्पम् Gît. 4, 15. Wassiljew 305 u. s. w. — h) *Berechnung:* बलाबल° Varâh. Bṛh. 24, 6. — i) *geistige Beschäftigung, das Denken* H. 1370, Schol. — k) *Zwischen-Kalpa, der Zeitraum zwischen zwei Weltperioden* Bhâg. P. 2,8,12. 10,46. 8,14,11. — l) *ein Gott* (nach dem Comm.) Bhâg. P. 10,85,11. — m) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 366 (VP. 192) nach der Lesart der ed. Bomb. विकल्प ed. Calc. — 2) adj. *an dem eine Verschiedenheit wahrzunehmen ist:* फले विकल्पाः so v. a. *verschiedenen Lohnes theilhaftig werdend* Bhâg. P. 8,9,28. — Vgl. निर्विकल्प, स°, वैकल्पिक.

विकल्पक 1) nom. ag. vom caus. von कल्प् mit वि. a) *Vertheiler, Austheiler:* पक्वान्नलेह्यपानानां मांसानां च MBh. 3,8451. — b) *Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* षडशीतिश्च तस्यापि (d. i. याज्ञवल्क्यस्य) संहितानां विकल्पकाः Verz. d. Oxf. H. 55,a,9. 38. b,28. — 2) am Ende eines adj. comp. von विकल्प. अ° *der sich nicht lange bedenkt* MBh. 18, 226; vgl. निर्विकल्पक, स°.

विकल्पन (vom caus. von कल्प् mit वि) 1) nom. ag. *Verfertiger, Zusammensetzer, Bildner:* श्रेष्ठा ह्यथर्वणो ह्येते संहितानां विकल्पनाः Verz. d. Oxf. H. 55,b,39. — 2) n. und f. आ nom. act. a) *das Freistellen, der Wahl Ueberlassen* Kâr. zu P. 8, 3, 31 (n.). वाशब्दो ऽत्र चार्थे न विकल्पने Utpala zu Varâh. Bṛh. 23, 5. कालविकल्पना Pañkar. 3, 11, 12. — b) *Gebrauch einer Nebenform* Utpala zu Varâh. Bṛh. 1,3 (f.). — c) *das Unterscheiden* Kusum. 39,14 (n.). संकल्पः प्रत्युपस्थितविषयविकल्पनं शुक्लनीलादिभेदेन Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. परिव्राट्कामुकशुनामेकस्यां प्रमदातनौ। कुणपः कामिनी भक्ष्य इति तिस्रो विकल्पनाः *verschiedene Auffassungen* Sarvadarçanas. 15,6. 7. — d) *falsche Vorstellung, — Annahme, Einbildung:* माया लोकसृष्टिविकल्पना Bhâg. P. 10, 28,6. — Vgl. निर्विकल्पन.

विकल्पनीय (wie eben) adj. *zu bestimmen, zu berechnen, auszumitteln* Varâh. Bṛh. 10,1. 14,5.

विकल्पवत् (von विकल्प) adj. *einen Zweifel habend, unschlüssig seiend* Vedântas. (Allah.) No. 85.

विकल्पसम m. Bez. *einer best. sophistischen Einwendung* Njâjas. 5, 1,1. 4. Sarvadarçanas. 114,10.

विकल्पानुपपत्ति f. *die durch ein Dilemma hervorgehende Unhaltbarkeit* Sarvadarçanas. 15, 19. 79,22. 101,7. 105,11. 110,12. fg. 116,19. 142,11. 152,17.

विकल्पासह adj. *ein Dilemma nicht aushaltend, durch ein Dilemma sich als unhaltbar ergebend;* davon nom. abstr. °त्व n. Sarvadarçanas. 11,20. fg. 25,17. 119,6. 127,21. 141,12. 156,1.

विकल्पिन् (von विकल्प) adj. *was man verwechseln kann, zum Verwechseln ähnlich:* नीलाशोकविकल्पिकेशनिकरः so v. a. *bei dem man die blauen* Açoka-*Blüthen als Kopfhaar ansehen könnte* Ṛt. 6,34, v. l.

विकल्प्य (vom caus. von कल्प् mit वि) adj. 1) *zu vertheilen, einzutheilen* Varâh. Bṛh. S. 87,18. — 2) *zu bestimmen, zu berechnen* Varâh. Bṛh. S. 24,10. Bṛh. 23,15. 26,3.

विकल्मष (2. वि + क°) adj. (f. आ) *sündenlos* R. 2,29,16.

विकल्य m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 366 (VP. 192). विकल्प ed. Bomb.

विकवच (2. वि + क°) adj. *panzerlos* MBh. 6,3237. 8,4096. Hariv. 13562. R. 3,34,19.

विकविकल्कि s. विकनिकल्कि.

विकश्यप adj. *ohne* Kaçjapa's *vor sich gehend:* यज्ञ Ait. Br. 7,27.

विकश्वर adj. = विकस्वर Bhar. zu AK. 3,1,30.

विकषा = विकसा = मञ्जिष्ठा Râjam. zu AK. 2,4,3,9. = मांसरोहिणी Râgan. im ÇKDr.

विकषर adj. = विकस्वर Bhar. zu AK. 3,1,30.

विकस 1) m. *der Mond* Trik. 1,1,87. — 2) f. आ *Rubia Munjista* (मञ्जिष्ठा) *Roxb.* AK. 2,4,3,9.

विकसन (von कस् mit वि) n. nom. act. विकसने in Verbindung mit 1. कर् gaṇa साक्षादादि zu P. 1,4,74.

विकसुक (wie eben) adj. *berstend,* Beiw. des Agni AV. 12,2,13.

विकस्ति (wie eben) f. *das Bersten* TS. 5,4,3,7.

विकस्वर (wie eben) adj. (f. आ) *offen* so v. a. *aufgeblüht* Trik. 2,4,3. Çiç. 4,33. केसरपुष्प Khandom. 115. °चरणपद्म Verz. d. Oxf. H. 199,a,16. *geöffnet,* von Augen: दृष्टिर्नृपालोकविकस्वरा Kathâs. 18,15. पृथुपुष्पलोचनानि 54,53. vom Munde 108,120. Spr. 2668. *offen,* von Menschen AK. 3,1,30. H. 350. vom Tone so v. a. *klar ertönend* Daçak. 8,2. Bez. einer best. Redefigur Kuvalaj. 126,a.

विकस्वरूप (!) m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184,a,10.

विकाकुद् (2. वि + काकुद्) adj. P. 5,4,148.

विकाङ्क्ष (2. वि + काङ्क्षा) adj. *kein Verlangen habend* MBh. 14,539.

विकाङ्क्षा (von काङ्क्ष् mit वि) f. *das Anstehen, Bedenken, Unschlüssigkeit:* दुःखोपायस्य मे वीर विकाङ्क्षा (= विसंवादः Nilak.) परिवर्तते MBh. 7,2835. न मे विकाङ्क्षा (= इच्छाभावः Comm.) जायेत त्यक्तुं त्वां पापनिश्चयाम् R. 2,73,16. कार्यं तद्विकाङ्क्षया 52,23.

विकाम (2. वि + काम) adj. *frei von Begierden* Varâh. Bṛh. 19,7.

1. विकार (von 1. कर् mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Umgestaltung, Umwandlung, Veränderung, Modification, Abart, veränderter —, abnormer Zustand;* im Ritual *die gestatteten Abänderungen der Grundform* (प्राकृतेष्वेव विशेषविधयो विकारा उच्यन्ते Comm. zu Âçv. Çr. 9,7,19); = विकृति, परिणाम AK. 3,3,15. Trik. 3,3,371. H. 1518, Schol. H. an. 3,603. Med. r. 219. — Âçv. Çr. 2,1,34. तत्त्व° 14,14. नित्या नैमित्तिका विकाराः 9,1,13. 7,19. प्रकृतेः Çâṅkh. Çr. 14,1,1. 4,6,8. 6,1,4. Kâtj. Çr. 5,5,26. 6,7,23. वर्ण° Lâṭj. 7,11,19. 21. भाव° Nir. 1, 2. 3. ṚV. Prât. 2,2. 10,7. 11,21. 17,23. VS. Prât. 1,133. 140. 4,22. 169. fg. TS. Prât. 1,28. 56. Kaṇ. 2,2,29. वह्नेर्विकारः समजायत *eine Veränderung an* MBh. 1,8141. अर्क° Varâh. Bṛh. S. 30,30. संध्या° 32,26. देव° *an einem Götterbilde* 46,15. 17. वृष्टि° 46. 51. 72. 54,56. चन्द्रमाः सर्वविकारकोशः Bhâg. P. 2,1,34. Gegens. स्वभाव MBh. 3,17112. R. 5,94,6. घनेः AK. 1,1,3,13. H. 1410. नेत्रवक्त्राविकाराः Spr. 848 (II). 2754. नयनभ्रूविकाराः R. 1,9,18 (14 Gorr.). मुख° Kumâras. 7,95. Pańkat. 257,23. वक्त्र° Varâh. Bṛh. S. 104,15. वक्त्रास्य 56. भ्रूनेत्रादि° Sâh. D. 127. गतिचेष्टा° R. 4,1,28. कटाक्षौष्ठ° 5,24,11. विकाराः सहजा यस्य हर्षक्रोधभयादिषु भावेषु नोपलभ्यन्ते Cit. beim Schol. zu Çâk. 13,12. विधेहि मरालविकारम् so v. a. *nimm den dir sonst ungewöhnlichen Gang des Flamingo an* Gît. 11,3. *Verwandlung, Gespenstererscheinung:* अपगतवेताल° Kathâs. 18,151. °घोरा 25,153. वसन्तकविकाराः Vasantaka's *Extravaganzen, ungewöhnliche Spässe* 16,46. — 2) *Erzeugniss* P. 4,3,134. Khând. Up. 6,1,4 = Vedântas. (Allah.) No. 121. सुरा° *was aus* Surâ *bereitet wird* Suçr. 1,70,10. इक्षु° 157,2. 161,3. 229,1. यवान्न° 2,79,2. MBh. 8,2060. Varâh. Bṛh. 8,13. AK. 2,9,43. अयसः 99. H. 1039. P. 4,1,42, Schol. Mârk. P. 34,58. °भूत Kâç. zu P. 4,2,12. Vop. 7,19. भक्ष्यविकाराः *zubereitete Speisen* MBh. 15,21. — 3) pl. im Sâṁkhja *die 16 Derivate aus den 8* Prakṛti, nämlich *11 Organe* (इन्द्रियाणि) *und 5 Elemente* (भूतानि) Sâṁkhjak. 3. Tattvas. 13. 16. Ind. St. 2,69. 9,17. Bhag. 13,6. 19. MBh. 12,11552. Hariv. 14073 (विकाराश्च die neuere Ausg.). Suçr. 1,311,3. — 4) *die abgeleitete Form* (eines Wortes): अनन्विते ऽर्थे ऽप्रादेशिके विकारे Nir. 2,1. — 5) *Veränderung im normalen Zustande des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection;* = रोग Trik. H. an. Med. Suçr. 1,5,7. 14,3. 23,10. 30,19. 34,15. 96,2. शिरसः 2,377,6. 186,4. 189,20. 307,16. 399,20. (विषमं) तज्जीर्णमविकारेण MBh. 3,541. R. 5,31,40. सांनिपातिक Kumâras. 2,48. अङ्ग° P. 2,3,20. मोहादिविकारकारिन् Kull. zu M. 5,10. स्वाङ्गमविकारजम् Kâr. zu P. 4,1,54. °ज्वर Vop. 4,17. प्रहार° *eine durch einen Schlag bewirkte Wunde* Pańkat. 218,13. — 6) *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung,* insbes. *Liebesregung:* विकारो मानसो भावः AK. 1,1,3,21. Halâj. 1,90. मनसः Çâk. 190. Spr. 5149. विकारं याति नो चित्तं वित्ते कदा च न 4987. पद्मादिषु प्रबोधसंमीलनविकारवत्तद्विकारः d. i. आत्मविकारः Njâjas. 3,1,20. न च तौ चक्रतुः कंचिद्विकारम् (so ist wohl zu lesen) MBh. 13,2761. 2802. 3,2920. 2947. 2951. R. Gorr. 2,15,6. द्यूतेच्छाविकारसंवरणं बहुविधं कृत्वा Mṛkkh. 30,19. Kumâras. 1,60. Çâk. 66,4. Spr. 1123 (II). Bhâg. P. 2,3,24. Sâh. D. 51,4. 164. चित्तव्याधि° Spr. 4544. मन्मथ° Einl. zu Kaurap. मान्मथ Spr. 1103 (II). मन्मथज 2006. मन्मथव्यथा° Mâlat. 14,8. Mârk. P. 17,3. हरिपरिरम्भणवलितविकारा Gît. 7,14. Sâh. D. 99. स° *verliebt* Gît. 2,11. fg. — 7) *Wandel der Gesinnung, feindliche Gesinnung, Auflehnung, Abfall:* उपाध्यायांश्च भृत्यांश्च भक्तांश्च — ये त्यजन्त्यविकारांस्त्रींस्ते वै निरयगामिनः MBh. 13,1650. Kathâs. 50,119. विकारं याति पुत्रो ऽपि Kâm. Nîtis. 9,54. Râga-Tar. 8,21. — Vgl. अ°, अन्न° (in der Bed. *eine präparirte Speise* P. 5,1,2, Vârtt. 4), चित्त°, चेतो°, तमो°, निर्विकार (füge *nichts Abnormes habend* und die Stellen Varâh. Bṛh. S. 44,28. Kathâs. 33,5. Prab. 8,15. Schol. zu Çâk. 8,12 hinzu), भ्रू°, रोम°, वात°, स°, विकृति und विक्रिया.

2. विकार m. *die Silbe* वि Bhâg. P. 6,8,7.

विकारत्व n. nom. abstr. von 1. विकार Comm. zu Njâjas. 2,2,42. सुवर्ण° Çaṁk. zu Khând. Up. S. 60. अन्न° Vedântas. ed. 1829 S. 12,18. fg. (°विकारित्व bei Ballant.).

विकारमय (von 1. विकार) adj. *aus den Derivaten* (im Sinne des

Sâmkhja) *bestehend* Weber, Râmat. Up. 324.

विकारवत्त् (wie eben) adj. *Veränderungen zeigend:* मूर्तित्रय° *drei verschiedene Gestalten annehmend* Verz. d. Oxf. H. 73, *b*, 40. अ° *keine Wandelungen zeigend, stets sich gleich bleibend* Kâm. Nîtis. 5, 5.

विकारिता (von विकारिन्) f. अ° *Unwandelbarkeit, Beständigkeit* Kâm. Nîtis. 2, 30.

विकारित्व (wie eben) n. *Wandelbarkeit, Veränderung:* अन्न° Vedântas. (Allah.) No. 73. अ° *Unwandelbarkeit, Beständigkeit* Bhâg. P. 3, 26, 22.

विकारिन् (von 1. कर् mit वि oder von 1. विकार) 1) adj. *a) dem Wandel unterworfen, wandelbar, veränderlich, wechselnd* VS. Prât. 1, 142. Suçr. 2, 150, 3. मनस् MBh. 3, 13448. आत्मन् Schol. zu Kap. 1, 7. Prab. 111, 16. Çând. 95. यद्विकारिन् *worin sich umwandelnd* Bhag. 13, 3. यौवन *Gemüthsveränderungen —, der Liebe zugänglich* Mâlatîm. 11, 10. *seine Gesinnung ändernd, untreu werdend, abtrünnig* Spr. 2758. mit gen. der Person Kathâs. 17, 60. अ° *unwandelbar, unveränderlich:* सत्य MBh. 12, 5979 (अविकारितम). 5986. Pat. in Mahâbh. S. 104. Mârk. P. 23, 40. Bhâg. P. 2, 29, 20. 7, 2. कङ्कमुखं प्रधानं स्थानेषु सर्वेष्वविकारि *ohne Aenderung aller Orten brauchbar* Suçr. 1, 26, 9. so v. a. *keine Miene verziehend* Kathâs. 16, 42. *treu bleibend, nicht abfallend* M. 7, 190. — *b) mit einer Affection behaftet, nicht normal* Suçr. 1, 202, 12. अतो ऽन्यथा गर्भो विकारी भवति 324, 2. Varâh. Brh. S. 53, 122. — *c) eine Veränderung bewirkend, afficirend, entstellend:* बुद्धिचित्तविकारिणी Spr. 3142. — 2) m. und n. Bez. *des 33ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Brh. S. 8, 39. Verz. d. Oxf. H. 332, *a*, 1. Weber, Ǵjot. 99. — Vgl. चेतो°, वात°.

विकार्य 1) adj. *was umgewandelt wird;* s. u. कर्मन् 6) *b*). अ° *unwandelbar, unveränderlich* Bhag. 2, 25. — 2) m. Bez. des Ahamkâra Bhâg. P. 2, 2, 30. विविधं कार्यमस्येति विकार्यो ऽहंकारः Comm.

विकाल (2. वि + काल) m. *Abend* H. 140. Sâv. 5, 82 (व्हि कालं MBh. ed. Calc. 3, 16830. विकालम् ed. Bomb.). Spr. 4347. R. Gorr. 2, 108, 9. Mârk. P. 35, 30. Pańkat. V, 74. 258, 9. °चर्य Vjutp. 70.

विकालक 1) m. dass. Trik. 1, 1, 103. — 2) f. विकालिका *eine Art Wasseruhr* Trik. 1, 1, 121.

1. विकाश (von काश् mit वि) m. *heller Schein:* शरद्विजशीतरश्मिशतसाध्यविकाशकर Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, Çl. 44. विकाशः केषांचित् (जलमुचाम्) — विद्युद्दयैः Râǵa-Tar. 8, 1558. = प्रकाश Med. ç. 28. = व्यक्त H. an. 3, 727. = विजन Med. = रहस् H. an. — Vgl. वीकाश.

2. विकाश ungenaue Schreibart für विकास.

विकाशक, विकाशन und विकाशिता s. विकासक u. s. w.

1. विकाशिन् (von काश् mit वि) 1) adj. *a) glänzend, leuchtend:* वक्त्रं चन्द्रविकासि Spr. 2696, v. l. — *b) erhellend, erklärend:* पिङ्गलसारविकाशिनी Titel eines Commentars Verz. d. Oxf. H. 197, *a*, No. 437. — 2) f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2636.

2. विकाशिन् s. विकासिन्.

1. विकाषिन् adj. von कष् mit वि P. 3, 2, 143.

2. विकाषिन् adj. = विकासिन् Bhar. zu AK. 3, 1, 30 nach ÇKDr.

विकास (von कस् mit वि) m. 1) *das Erblühen, Aufblühen* Halâj. 2, 32. Spr. 337 (II). 2334. Çiç. 9, 41. Gît. 1, 30. 2, 20. ad Kumâras. 3, 26. अविकाशभाव Kumâras. 3, 29. — 2) *das Sichöffnen:* नेत्र° Varâh. Brh. S. 58, 11. Sâh. D. 237. अन्तर्हासविकाशमुख Pańkat. 187, 1. 2. दृष्ट्या सविकाशया Kathâs. 10, 89. चेतो° *das Sichöffnen des Herzens* so v. a. *heitere Stimmung* Sâh. D. 75, 20. Çiç. 9, 41. मनसः Daçar. 4, 41. — 3) *Ausbreitung, Entfaltung* (Gegens. संकोच) Gît. 11, 24. 12, 20. Çiç. 9, 53. Bhâg. P. 3, 7, 21. Mârk. P. 46, 12. Sarvadarçanas. 53, 4. ज्ञानशक्तिविकासानाम् Çańk. zu Brh. Âr. Up. S. 171. दोष° Vikr. 35, 8. अलंकृति° Bâlab. 10. — Vgl. निर्विकास, वैकासेय.

विकासक (vom caus. von कस् mit वि) adj. *öffnend:* बुद्धिविकाशक *den Verstand öffnend, klug machend* Dhûrtas. 90, 11.

विकासन (wie eben) adj. *zum Aufblühen bringend:* अम्भोरुहविकाशनपटिष्ठ Verz. d. Oxf. H. 170, *b*, No. 380, Z. 5. 6.

विकासिता (von विकासिन्) f. *Ausbreitung, Entfaltung:* संकोचविकाशितया Çańk. zu Brh. Âr. Up. S. 112.

विकासिन् (von कस् mit वि oder von विकास) adj. 1) *blühend* Spr. 660. Ḱhandom. 51. 77. Pańkar. 3, 5, 2. कल्पशाखिनः पल्लवाः Râǵa-Tar. 8, 1567. चन्द्र°, सूर्य° H. 1163, Schol. — 2) *geöffnet, offen:* ईषद्विकासि नयनम् Sâh. D. 228. Daçar. 4, 70. घोणा Pańkar. 3, 5, 20. von einem Menschen AK. 3, 1, 30. H. 350. — 3) *sich ausbreitend, — entfaltend:* ब्रह्मन् Spr. 1012. °पुण्यमति Verz. d. Oxf. H. 110, *a*, No. 173, Çl. 4. — 4) *eine grosse Ausdehnung habend, gross:* श्री Spr. 45, v. l. (II.). लक्ष्मी 4947. नृपतिसंपदः Kâm. Nîtis. 5, 37. *reich an:* तस्य (eines Fürsten) नित्याम्लानलक्ष्मीविकाशिनः प्रभवन्त्याश्रिताः Râǵa-Tar. 8, 1567. — 5) *den Zusammenhang aufhebend, lösend* (daher *lähmend*), z. B. als Eigenschaft geistiger Getränke und Gifte, durch welche die Glieder unbrauchbar werden, Suçr. 2, 253, 16. 21. 477, 4. 8. विकासी विकसन्नेवं धातुबन्धान्विमोक्षयेत् 1, 247, 12. 182, 3. 188, 16. 191, 20. संधिबन्धांस्तु शिथिलान्यत्करोति विकाशि तत् Çârṅg. Saṁh. 1, 4, 20.

विकासिनीलोत्पल् (von विकासिन् und नीलोत्पल), °लति *einer blauen Wasserrose in der Blüthe ähnlich sehen* Sâh. D. 294, 20.

विकिर (von 3. कर् mit वि) m. 1) *Reis u. s. w., der als Spende für verschiedene Wesen, die eine heilige Handlung stören könnten, hingestreut wird,* M. 3, 245. Mârk. P. 31, 12. — 2) *ein Vogel aus dem Hühnergeschlecht (Scharrer)* P. 6, 1, 150. AK. 2, 5, 33. H. 1316. Halâj. 2, 83. Âpast. 1, 17, 32. Vgl. विष्किर. — 3) *Brunnen* Trik. 1, 2, 27.

विकिरण (wie eben) 1) n. *das Ausstreuen, Hinstreuen* Kull. zu M. 3, 255. — 2) Bez. eines Samâdhi Vjutp. 18.

विकिरिद्र adj. Bez. Rudra's VS. 16, 52 (विकिरिद् TS. विकिरिड Kâth.). nach Mahîdh. *Wunden abwendend*, nach Uvata *Pfeile aussendend.*

विकीरण m. *Calotropis gigantea* (अर्क) AK. 2, 4, 2, 61.

विकीर्णरोमन् n. *ein best. Parfum,* = स्थौणेय Râǵan. im ÇKDr.

विकीर्णसंज्ञ n. dass. ebend.

विकुक्षि (2. वि + कुक्षि) 1) adj. *einen starken Bauch habend;* davon °त्व n. nom. abstr. Hariv. 661. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ikshvâku (auch Grosssohnes des Ikshvâku und Sohnes des Kukshi) Hariv. 661. 664. fgg. R. 1, 70, 22 (72, 19. fg. Gorr.). 2, 110, 8. 9 (119, 8. 9 Gorr.). VP. 359. fg. Bhâg. P. 9, 6, 4. 6. fgg. Verz. d. Oxf. H. 49, *a*, 28.

Hall in der Einl. zu Vâsavad. 50.

विकुत्तिक adj. = विकुत्ति MBh. 10,458.

विकुज (2. वि + कुज) adj. *ohne Mars* Varâh. Laghuǵ. 2,9 in Ind. St. 2,285. दिन *irgend ein Tag mit Ausnahme von Dienstag* Varâh. Bṛh. S. 60,21.

विकुजारवीन्दु adj. *ohne Mars, Sonne und Mond* Varâh. Laghuǵ. 2,9 in Ind. St. 2,285.

विकुञ्ज (2. वि + कु°) m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2410.

विकुट्यास gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

विकुण्ठ (2. वि + कुण्ठ) 1) adj. *a) scharf, durchdringend, unwiderstehlich* Bhâg. P. 3,16,9. — *b) überaus stumpf*, अ° = विकुण्ठ *a)* Bhâg. P. 3,31,14. — 2) m. *a)* Bein. Vishṇu's MBh. 6,774. Bhâg. P. 3,16,6. — *b)* = वैकुण्ठ Vishṇu's *Himmel* Bhâg. P. 2,7,31. 3,15,26.34. 7,9,39. 11,7,18. Vop. 5,2. Pańkar. 4,8,39. — 3) f. आ N. pr. der Gattin Çubhra's Bhâg. P. 8,5,4. — Vgl. वैकुण्ठ.

विकुण्ठन m. N. pr. eines Sohnes des Hastin MBh. 1,3788.

विकुण्डल (2. वि + कु°) 1) adj. *keine Ohrringe habend:* कर्ण Hariv. 4766. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 15,*a*, No. 57.

विकुत्सा f. *heftige Schmähung:* एते त्वां पाण्डवाः सर्वे कुत्सयन्ति विकुत्सया (विवित्सया ed. Bomb.) MBh. 7,9135.

विकुब्ज (2. वि + कु°) adj. (f. आ) *vom Buckel befreit* R. 1,34,50.

विकुम्भाण्ड (2. वि + कु°) m. N. pr. eines Dânava Hariv. 12939.

विकुर्वण adj. unter den Beiww. Çiva's MBh. 13,1244. करोतीति कुर्वा विगतः कुर्वा यस्माद्विकुर्वणः कर्माप्राप्य इत्यर्थः समासान्त आर्षः Nîlak.; eher = विकुर्वाण (partic. von 1. कर् mit वि) aus metrischen Rücksichten.

विकुस्र Uṇâdis. 2,15. m. *der Mond* Uǵǵval. — Vgl. विक्रस्र.

विकूज (von कूज् mit वि) m. *Gebrumme, Gesumme:* इया° Hariv. 6836.

विकूजन (wie eben) n. dass.; s. अन्त्र°.

विकूट N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,9. त्रिकूट v. l.

विकूणिका f. *Nase* H. 580.

विकूबर (2. वि + कू°) adj. *der Deichsel beraubt:* रथ MBh. 8,623.

विकृत 1) adj. s. u. 1. कर् mit वि. Hinzugefügt könnte noch werden: *verändert, umgewandelt* (von Lauten) Ṛv. Prât. 10,6. AV. Prât. 4,81. so v. a. *umgefärbt:* वासस् Pâr. Gṛhj. 2,7. *hässlich:* मुख Spr. 2838. — 2) m. *a)* Bez. *des 24ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,37. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*, 2 v. u. — *b)* N. pr. α) eines Pragâpati R. ed. Bomb. 3,14,7 (विक्रीत und विक्रान्त nach andern Autt.). — β) eines bösen Genius, eines Sohnes des Parivarta, Mârk. P. 51,62. — 3) n. *a) Umwandelung, Veränderung* Vop. 15,4. — *b) unzeitiges Schweigen aus Verlegenheit:* वक्तव्यकाले ऽप्यवचो व्रीडया विकृतं मतम् Sâh. D. 146.125. statt dessen richtiger विह्वृत Daçar. 2,30.39. — Vgl. वैकृत.

विकृतत्व (von विकृत) n. *das Verändertsein, Umwandelung:* ब्रह्म विकृतत्वेन भासते Bâlab. 18.

विकृतदंष्ट्र 1) *entstellte —, widerliche Spitzzähne habend.* — 2) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 47,69. fgg.

विकृति (von 1. कर् mit वि) 1) f. *a) Umgestaltung, Umwandelung, Veränderung, Modification, Abart, veränderter —, abnormer Zustand* (Gegens. प्रकृति) AK. 3,3,15. H. 1518, Schol. H. an. 3,302. Kâtj. Çr. 1,5,4. 3,5,9. 4,3,22. Z. d. d. m. G. IX, lxvii. Gaim. 1,2,10. MBh. 3,1298. तेन सर्वमिदं बुद्धं प्रकृतिर्विकृतिश्च या 5,1382 = 12,9667. 13,54. Suçr. 1,112,12. मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः Spr. 4697. Bhâg. P. 5,7,5. वर्ण° Kâr. zu P. 6,3,109. Varâh. Bṛh. S. 3,2. लवण° *Veränderung im Zustande des Salzes* 28,4. 30,22. सस्ये दृष्ट्वा विकृतिम् 46,37. सलिलाशय° 50. अग्नेः 53,59. प्रसूति° 97,4.13. प्रकृति° Spr. 4158. दोष° 4132. अब्ध्यम्बु° als Umschreibung von वेला *Fluth* AK. 3,4,26,200. विकृतिं गम्, या, व्रज्, प्रपद् *sich verändern* Suçr. 2,104,15. Jâǵń. 2,15. Hariv. 11311. Prab. 112,9. Kumâras. 7,34. *ein in best. Weise abgeänderter Vers* Çat. Br. 6,7,2,5.8. 3,9. 9,2,3,34. Kâtj. Çr. 16,5,9. *Verwandlung, Gespenstererscheinung* Kathâs. 25,150. — *b) Erzeugniss* P. 5,1,12. Vârtt. 1 zu 2,1,36. अश्म° AK. 3,4,14,68. किलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे Halâj. 2,169. H. 403. 405. पिष्ट° *aus Mehl Gemachtes* Suçr. 1,70,6. 233,4. अन्न° *zubereitete Speisen* MBh. 13,6694. — *c)* im Sâṁkhja so v. a. विकार 3) Sâṁkhjak. 3. Ind. St. 9,17. Sarvadarçanas. 147,14.21. 148,1. fgg. 149,9. fgg. — *d) eine abgeleitete Form* (in der Grammatik) Nir. 2,2. — *e) Gestaltung, Bildung, Entwickelung:* रेतसः Ait. Br. 2,39. 6,16. — *f) Missbildung* Suçr. 1,319,6 (विकृत v. l.). — *g) Veränderung im normalen Zustand des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection;* = रोग H. an. — *h) Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung:* स्वचेतो° Kumâras. 3,69. विकृतिमेति मनो न येषाम् Spr. 1310. न च तौ विकृतिं गतौ MBh. 2,1122. Uttarar. 100,20 (133,16). विकृतिमनया नीतः Prab. 15,6. सकोप° adj. Kathâs. 56,1. — *i) Wechsel der Gesinnung, feindselige Gesinnung, Auflehnung, Abfall;* = डिम्ब H. an. Kâm. Nîtis. 17,47 (wohl विकृतिं zu lesen). एवमुत्पाद्ये दोषं बालो ऽपि विकृतिं गतः Kathâs. 14,57. विकृतिं ययुः 22,37. ये सुचिरमभजंस्तस्य विकृतिम् *die sehr lange eine feindselige Gesinnung gegen ihn hegten* 254. 31,66. विकृतिं नी 60,137. Pańkat. 85,1. — *k) ein Metrum von 92 Silben* Ṛv. Prât. 16,55.58. Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XVIII). Ind. St. 8,137 (*91 Silben*). 281. auch andere Metra so genannt 110. 402. — *l)* = मद्यादि H. an. = मद्यादि ÇKDr. nach ders. Aut. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Ǵîmûta VP. 422. — Vgl. अङ्ग°, विकार und विक्रिया.

विकृतिमत् (von विकृति) adj. 1) *einem Wandel unterworfen:* सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः Çâk. 38. — 2) *afficirt, krank:* मदनेषु विकृतिमानङ्ग Nalod. 2,47.

विकृतोदर 1) adj. *einen entstellten —, hässlichen Bauch habend.* — 2) m. N. pr. eines Râkshasa R. 3,29,31.

विकर्त्तृ (von 1. कर्त् mit वि) nom. ag. *Zerschneider, Zerreisser* VS. 16,21. v. l. प्रकृत्त TS. 4,5,3,1.

विकृषित, अ° = अविकृष्ट *nicht auseinandergehalten* (von Lauten) Schol. zu AV. Prât. 4,12; vgl. u. 1. कर्ष् mit वि 1).

विकेतु (2. वि + केतु) adj. *des Banners beraubt* MBh. 8,4587.

विकेश (2. वि + केश) 1) adj. (f. ई) *a) wirrhaarig, struppig:* मद AV. 6,30,2. मिथो विकेश्यो३ वि घ्नताम् Bez. best. dämonischer Wesen 1,28,4. 11,2,11. 9,7. 14,2,60. तारका *Haarstern* 5,17,4. — *b) haarlos, kahlköpfig* Dhar. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf.

H. 52,a,25. — 3) f. ई a) Charpie (पटवर्त्ति) Dhar. im ÇKDr. *a small braid or tress of hair, first tied up severally, and then collected into the* Veṇî *or larger braid* Wilson nach ders. Aut. — b) N. pr. der Gattin Çiva's in seiner Manifestation als Erde VP. 59. Mârk. P. 52,9.

विकेशिका f. *Charpie, Bausch auf eine Wunde* Suçr. 1,66,8. 67,1. 2. 68,3.

विकोक m. N. pr. eines Sohnes des Asura Vṛka und jüngeren Bruders des Koka Kalki-P. 21 im ÇKDr.

विकोथ (von कुथ् mit वि) m. *Fäulniss, Schmutz* Suçr. 2,363,1.

विकोश (2. वि + कोश) adj. (f. ञ्रा) 1) *aus der Scheide gezogen, entblösst* (von einem Schwerte u. s. w.) MBh. 3,2350. 6,1788. 7,573. 3090. 8,3514. Hariv. 2658. Ragh. 7,45. Kathâs. 112,153. 124,119 (fälschlich विक्रोश). Râga-Tar. 3, 50. 346. 8, 5. 484. 845. 849. — 2) *keine Vorhaut habend:* °मेह्न Kull. zu M. 11, 49. — 3) *kein Wörterbuch —, keine Stellen aus Wörterbüchern enthaltend* Verz. d. Oxf. H. 72,b,2.

विकोष s. विकोश.

विक्क m. *Elephantenkalb* Trik. 2,8,36. *ein zwanzigjähriger Elephant* H. 1220. — Vgl. पिक्क.

विक्रम॑ (von क्रम् mit वि) m. 1) *Schritt* AK. 3,4,22,143. H. an. 3, 473. Med. m. 54. Çat. Br. 1,7,3,23. 3,5,1,1. fgg. 12,9,2,5. Kâtj. Çr. 19, 5,15. °त्रय MBh. 3,15844. R. Gorr. 1,32,7. 5,1,54. 2,45. 5,3. द्वितीयक्रि° Çâk. 165. Bhâg. P. 2,6,6. *Gang, Bewegung:* आकूतिर्विक्रमो वाल्लो मृगतृष्णां धावति 4,29,20. 5,2,8. काल° 2,9,10. *Art und Weise zu gehen* R. 5,1,43. सु° adj. 1,1,12. गजेन्द्र° adj. MBh. 3,2454. 2863. R. 2,23,26. स्थिर° adj. Varâh. Bṛh. S. 86,8. 9. पञ्च° *fünf Gangweisen habend* (रथ) Bhâg. P. 4,26,2. त्वरित° *eiligen Schrittes, — Ganges* Hariv. 3182. 4507. R. 7,107,8. शीघ्रविक्रमा Hariv. 3409. 9453. R. 2,39,12. द्रुत° Bhâg. P. 4,4,4. वाक्यं समग्रं नृपतेर्यथावद्रुवाच चानुक्रमविक्रमेण so v. a. अनुक्रमेण allein d. i. *der Reihe nach* MBh. 1,7188. — 2) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth* AK. 2,8,2,71. H. 739. H. an. Med. Halâj. 4,38. 5,34. MBh. 1,5971. 7021. लभते क्षत्रियो विक्रमेण श्रियम् 13,313. R. 2,21,38. 3,4,48. 36,13. 4,8,7. 5,80,8. 9 (pl.). Ṛt. 1, 14. Ragh. 12,87. 93. Vikr. 11,11. Spr. 1806. 2298. 2825. 2948. 3159. 3957. Varâh. Bṛh. S. 69,11. Bṛh. 11,9. Kathâs. 18,343. Bhâg. P. 3,11, 27. 5,20,6. 9,1,5 (pl.). Hit. 81,4. III, 1. नास्ति विक्रमेण so v. a. *dieses kann nicht mit Gewalt erreicht werden* Râga-Tar. 8,1687. विक्रमं कर् *seine Kraft entwickeln, Muth an den Tag legen* MBh. 1,6004. Spr. 1046. Kathâs. 12,39. am Ende eines adj. comp. (f. ञ्रा) MBh. 7,8280. Ragh. 3, 55. 9,24. Râga-Tar. 3,484. दृढ° R. 3,46,10. चण्ड° 5,39,24. सत्य° MBh. 3,3055. R. 2,72,34. सिंह° Râga-Tar. 6,354. सु° MBh. 7,8224. अ° AK. 3,4,27,215. Kir. 2,15. — 3) *Intensität:* छाया (*Teint*) युक्ता तेजोविक्रमैः सप्रतापैः *mit intensivem Glanze* Varâh. Bṛh. S. 68,92. — 4) *das Bestehen* (= स्थिति Comm.): संप्लवः सर्वभूतानां विक्रमः प्रतिसंक्रमः Bhâg. P. 2,8,21. — 5) *die unbetonte Silbe zwischen betonten* (oder *zwischen* प्रचय *und betonter*) TS. Prât. 17,6. 19,1. — 6) *das Nichteintreten des* क्रम (gramm.) ṚV. Prât. 11,29. Einl. 5 (= TS. Prât. 24,5). — 7) *Nichtverwandlung des* Visarga *in einen* Ûshman ṚV. Prât. 13,11. अ° 6,1. 11,22. 14,11. — 8) Bez. *des 14ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,33. fg. Verz. d. Oxf. H. 331,b,5 v. u. — 9) Bez. *des 3ten astrologischen Hauses* Varâh. Bṛh. 1,16. — 10) *Fuss* Râgan. im ÇKDr. — 11) unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,6958. — 12) N. pr. des Sohnes eines Vasu Kathâs. 48,78. = विक्रमादित्य Haeb. Anth. 1. LIA. 2,401. Verz. d. Cambr. Hdschr. 12. 15. Târan. 3. 267. = चन्द्रगुप्त LIA. 2,401. 947 (श्री°). ein Sohn des Vatsaprî Mârk. P. 118,1. des Kanaka Verz. d. Oxf. H. 148,a,4. — 13) N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 181,a,6. — आवृत्य विक्रमम् M. 3,214 fehlerhaft für आवृत्परिक्रमम्. — Vgl. त्रि°, भीम°, महा°, लघु°.

विक्रमक (wie eben) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2539.

विक्रमकेशरिन् m. N. pr. eines Fürsten von Pâṭaliputra Verz. d. Oxf. H. 152,b,13. Kathâs. 77,5. eines Ministers des Fürsten Mṛgâñkadatta 69,18. 75,4.

विक्रमचण्ड m. N. pr. eines Fürsten von Vârâṇasî Kathâs. 23,31.

विक्रमचरित n. und °चरित्र n. Vikrama's (d. i. Vikramâditja's) *Abenteuer*, Titel einer Sammlung von Erzählungen, = सिंहासनद्वात्रिंशत्पुत्रिकावार्त्ता Roth in Journ. As. 1845. VI, 278. fgg. Verz. d. Oxf. H. 152,a, No. 326.

वि॑क्रमण (von क्रम् mit वि) n. 1) *das Schreiten, Schritt:* Vishṇu's ṚV. 10,15,3. VS. 10,19. Çat. Br. 5,4,2,6. MBh. 12,7544. Gît. 1,9. त्रिषु विक्रमणेषु ṚV. 1,154,2. 8,9,12. MBh. 3,485. 13501. fg. 5,296. Hariv. 14307. — 2) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth:* पाण्डुर्जित्वा बह्वन्देशान्बुद्ध्या विक्रमणेन च MBh. 1,110. 12,1500. *übernatürliche Kraft* (bei den ekstatischen Pâçupata): °धर्मित्व Sarvadarçanas. 76, 12. fg. उपसंहृतकारणस्यापि निरतिशयैश्वर्यसंबन्धित्वं विक्रमणधर्मित्वम् 15. fg. — 3) *das Verfahren nach den Regeln des* Krama (gramm.): अ° ṚV. Prât. 14,25.

विक्रमतुङ्ग m. N. pr. eines Fürsten von Pâṭaliputra Kathâs. 35,55. fgg. von Vikramapura 53,86. fgg.

विक्रमदेव m. Bein. Kandragupta's LIA. 2,401.

विक्रमनिधि m. N. pr. eines Mannes aus der Kriegerkaste Kathâs. 121,276.

विक्रमपट्टन n. Vikrama's (d. i. Vikramâditja's) *Stadt* d. i. Uggajinî Hall 71.

विक्रमपति m. wohl = विक्रमादित्य Spr. 4210.

विक्रमपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 53,86. Hit. 110,16. °पुरी Târan. 247.

विक्रमबाहु m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 153,a,11.

विक्रमराज m. N. pr. eines *Fürsten* Râga-Tar. 8,2453. °राजन् = विक्रमादित्य Hall 167.

विक्रमशक्ति m. N. pr. verschiedener Männer aus der Kriegerkaste Kathâs. 10,17. 60. 46,155. 48,72. 49,43. 101,48. 120,69. fgg. 122,1. LIA. 2,804, N. 4.

विक्रमशील m. 1) N. pr. eines Fürsten Mârk. P. 75,32. — 2) N. eines buddhistischen Klosters Wassiljew 55. Târan. 6 u. s. w.

विक्रमसिंह m. N. pr. eines Fürsten von Uggajinî Kathâs. 27,138. fgg. von Pratishṭhâna 58,2. fgg. = नारायणगुप्त LIA. 2,973.

विक्रमसेन m. N. pr. eines Fürsten von Uggajinî Kathâs. 30,72. fgg.

eines Fürsten von Pratishṭhâna 75,22. Vet. in LA. (III) 1,11. 12,10. 15,5. 32,7.

विक्रमस्थान n. *Spazierplatz, ein Raum, in dem man auf und ab geht* Weber, Kṛshṇag. 266, N. 1.

विक्रमादित्य m. N. pr. verschiedener Fürsten, unter denen einer für den Besieger der Çaka und für den Gründer einer Aera (56 v. Chr.) gilt, Kathâs. 38,3. fgg. 120,39. fgg. Râǵa-Tar. 2,5. 6. 3,125. 474. Vet. in LA. (III) 1,11, v. l. Verz. d. Oxf. H. 152,a, N. 2. 154,a, 32. 157,b, No. 339. 166,b,20. 167,b,16. Journ. of the Am. Or. S. 6,517,e. Târan. 313. 318. Reinaud, Mém. sur l'Inde 79. fgg. LIA. 2,400. fg. 409. fg. 800. fgg. 904. Weber, Lit. 188. fg. 206. ein Dichter Verz. d. Oxf. H. 124,b,10. 40. ein Lexicograph 182,b, 2 v. u. Med. Anh. 4. Hâr. 273. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,95. fg. 2,15. 3,83. 126. 4,16. 56. 75. 139.

विक्रमादित्यचरित n. = विक्रमचरित Verz. d. Tüb. Hdschr. 17.

विक्रमार्क m. N. pr. eines Fürsten Çatr. 14,102. 286. = विक्रमादित्य in विक्रमार्कचरित्र Verz. d. Tüb. Hdschr. 17.

विक्रमिन् (von क्रम् mit वि) 1) adj. *a) schreitend, durchschreitend;* unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,6958. — *b) muthig* MBh. 1,226. 4991. 6,2067. Hariv. 14496. R. 4,17,11. — 2) m. *Löwe* Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. त्रैलोक्य°, मक्रा°.

विक्रमेश m. N. eines buddhistischen Heiligen Wilson, Sel. Works II, 19.

विक्रमेश्वर 1) m. N. pr. eines der 8 Vîtarâga bei den Buddhisten Wilson, Sel. Works II, 32. — 2) N. pr. eines von Vikramâditja errichteten Heiligthums Râǵa-Tar. 3,474.

विक्रमोपाख्यान n. = विक्रमचरित LIA. 2,802, N. 1.

विक्रमोर्वशी f. *die durch Muth gewonnene* Urvaçî, Titel eines dem Kâlidâsa zugeschriebenen Dramas, Gild. Bibl. 303. fgg. 327. fgg.

विक्रय॑ (von 1. क्री mit वि) m. *Verkauf* AK. 2,9,83. H. 872. AV. 3, 15,4. Nir. 3,4. M. 3,53. 54 (= MBh. 13,2484). 7,127. 8,4. 9,98. 100. MBh. 13,2672. R. Gorr. 1,64,3. Spr. 2693. Verz. d. Oxf. H. 86,b,20. 87,b,27. 282,b,19. Varâh. Bṛh. S. 51,5. Mâlatîm. 72,10. Kathâs. 25, 182. 43,72. Râǵa-Tar. 1,309. 4,397. 5,273. विद्या° Pańkat. 5,1 (ed. orn. 2,6). 121,21. 241,2. — Vgl. आत्म°, क्रय° (auch Varâh. Bṛh. 8,17. 17,7. Kathâs. 13,83. 86. Râǵa-Tar. 5,161), पण्य°, मांस°.

विक्रयक (wie eben) nom. ag. *Verkäufer:* प्राणि° MBh. 13,1601. केश° u. s. w. 1646. 1648. विक्रयिक ed. Bomb. an allen Stellen. — Vgl. विक्रायक.

विक्रयपत्त्र n. *Verkaufsurkunde, Kaufbrief* Râǵa-Tar. 6,30.

विक्रयिक (von विक्रय) m. *Verkäufer* Kâç. und Siddh. K. zu P. 4,4, 13. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,44. AK. 2,9,79. H. 868. क्रतु° MBh. 12,1321. — Vgl. unter विक्रयक.

विक्रयिन् (von 1. क्री mit वि) nom. ag. *Verkäufer* H. 868. Çabdar. im ÇKDr. तस्य Jâǵn. 2,170. in der Regel in comp. mit dem obj. P. 3,2,93 (vgl. Vârtt.). M. 2,118. 3,51. 4,215. 220. 9,291. Jâǵn. 1,163. वेद° MBh. 3,13356. R. Gorr. 2,90,21. fg. मान° Kathâs. 43,88. प्राण° 52,112. Bhâg. P. 10,11,11. Pańkat. 1,6,46. — Vgl. अश्व°, क्रतु°, क्रय°, पण्य°, फल°, मांस°, रस°, सोम°.

विक्रय्य (wie eben) adj. *zu verkaufen* MBh. 13,2450. अ° *was nicht verkauft werden darf* Verz. d. Oxf. H. 87,b,27. Kull. zu M. 11,59. fgg. (S. 358, Z. 15). — Vgl. विक्रेय.

विक्रस्न॑ m. *der Mond* Vikramâditja bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,15. — Vgl. विकुस्र.

वि॑क्रान्त 1) adj. s. u. क्रम् mit वि. विक्रान्त heisst *derjenige* Saṁdhi, *welcher den* Visarga *unverändert lässt,* ṚV. Prât. 4,11. 34. — 2) m. *a) Löwe* Râǵan. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Praǵâpati (vgl. विकृत und विक्रीत) VP. 50, N. 2. eines Sohnes des Kuvalajâçva und der Madâlasâ Mârk. P. 25,9. 76,17. fgg. — 3) n. *a) das Geschrittene, Schritt* VS. 10,19. TBr. 1,1,5,10. — *b) muthiges Auftreten, Muth* Spr. 4861 (pl.).

विक्रान्तभीम Titel eines Schauspiels Verz. d. Oxf. H. 180,a,30.

वि॑क्रान्ति (von क्रम् mit वि) f. 1) *das Schreiten (Beschreiten* oder *in Besitz-Nehmen):* दे॒वानां॒ विक्रा॑न्ति॒मनु॒ विक्र॑मते TS. 2,5,6,1. 5,3,7,4. TBr. 1,4,9,5. Çat. Br. 1,1,2,13. 9,3,9.3,6,3,3. — 2) *Galopp eines Pferdes* Trik. 2,8,45. — 3) *kraftvolles —, muthiges Auftreten, Kraft, Muth* Râǵa-Tar. 4,128. 8,678.

विक्राम॑ (wie eben) m. *Schrittweite* TBr. 1,1,4,1.

विक्राय (von 1. क्री mit वि) nom. ag. *Verkäufer:* धान्य° P. 3,2,93, Vârtt., Schol.

विक्रायक m. dass. H. 868. Kull. zu M. 8,223. श्रुति° MBh. 5,1401. — Vgl. विक्रयक.

विक्रिया (von 1. कर् mit वि) f. 1) *Umgestaltung, Umwandlung, Veränderung, Modification, veränderter —, abnormer Zustand* AK. 3,3,15. H. 1518. Çâk. 106,1. मुखवर्णस्य R. 2,35,34. भ्रू° = भ्रूविकार Kumâras. 3,47. गुणा न यान्ति विक्रियाम् Spr. 3314. असतां सङ्गदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम् 747 (II). 3266. Suçr. 1,128,3. *Verunstaltung:* प्राप्तेयं विक्रिया मया R. Gorr. 1,50,2. श्मश्रुप्रवृद्धिजनिताननविक्रिय Ragh. 13,71. ब्रह्म° Bhâg. P. 9,1,17. स मल्ल इति विज्ञेयः शेषास्तु खलु विक्रियाः so v. a. *ein schlechter Rath, kein wahrer Rath* R. 5,86,18. सामसिद्धानि कार्याणि विक्रियां यान्ति न क्वचित् *zu Schanden werden* Spr. 942 (II). विक्रियायै न कल्पन्ते संबन्धाः सदनुष्ठिताः Kumâras. 6,29. दीपस्य so v. a. *das Verlöschen* Spr. 4974. अविक्रिय (f. आ) *keine Veränderung erleidend, keinem Wandel unterworfen* Ragh. 10,17. Bhâg. P. 1,18,26. 7,7,19. *keine Veränderung im Aeussern zeigend, keine Miene verziehend, seine Gemüthsstimmung nicht verrathend* Kathâs. 31,88. *keine Verschiedenheit zeigend, ganz gleich* Râǵa-Tar. 5,363. विक्रिया *ungewöhnliche Erscheinung* Kathâs. 5,25. *Missgeschick* 4,605. 14,73. *Schaden:* राक्षसा दुष्टभावा हि यतन्ते विक्रियां वने *beabsichtigen Schaden zuzufügen* R. 3,49,56. — 2) *Erzeugniss:* पयसश्चैव विक्रियाः *alles was aus Milch bereitet wird* M. 5,25. Jâǵn. 1,169. Mârk. P. 35,2. — 3) *Veränderung im normalen Zustande des menschlichen Körpers, Indisposition, Affection:* मारुत° R. 5,31,40. कम्पादि° Râǵa-Tar. 4,174. भावितविषवेगविक्रिय Daçak. 72,16. संधि° Suçr. 1,300,14. — 4) *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung:* विकारं याति नो चित्तं वित्ते यस्य कदा च न Spr. 4987. आत्म° R. Gorr. 1,65,14. चित्त° 2,16,45. न चासीद्विक्रिया यस्य प्राप्य श्रियमुत्तमम् MBh. 7,2428. R. 2,34,53. R. Gorr. 2,17,31. Ragh. 7, 27. Kumâras. 3,34. 4,41. Spr. 3018. निर्विकारात्मके चित्ते भावः प्रथमवि-

क्रिया SÂH. D. 126. PRAB. 15,6. भग्नत्वा दर्पविक्रियाम् RÂGA-TAR. 4,378. BHÂG. P. 3,23,8 (pl.). 5,10,26. स्मरविक्रियम् SÂH. D. 59,17. — 5) *Wechsel der Gesinnung, feindselige Gesinnung, Auflehnung, Abfall:* साधोः प्रकुपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम् Spr. 3234. भवद्भिर्वर्धिताश्चैव यास्यामो विक्रियां कथम् HARIV. 5756. Spr. 1447 (II). 3128. 3136. KATHÂS. 50,122. RÂGA-TAR. 3,153. 6,238. 8,585. वर्ण° *eine gegen die Kasten an den Tag gelegte feindselige Gesinnung* RAGH. 15,48. — Vgl. भूत°, रोम° (auch VIKR. 12), विकार und विकृति.

विक्रियोपमा f. *ein Gleichniss, welches einen Gegenstand als aus einem andern gemacht oder hervorgegangen bezeichnet;* Beispiel: चन्द्रबिम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम्। तव तन्वङ्गि वदनम् KÂVJÂD. 2,41.

विक्रीड (von क्रीड् mit वि) 1) m. *a) Spielplatz* HARIV. 12183. — *b)* N. pr. eines Schlangendämons TÂRAN. 190. — 2) f. आ *Spiel, Scherz* BHÂG. P. 10,44,13. — विक्रीडम् R. GORR. 2,121,17 fehlerhaft für विक्रीतम्, wie die beiden anderen Ausgaben lesen.

विक्रीत 1) adj. s. u. 1. क्री mit वि. — 2) m. N. pr. eines Pragâpati R. 3,20,7. Andere Autoritäten विकृत und विक्रान्त.

विक्रेतर् (von 1. क्री mit वि) m. *Verkäufer* AK. 2,9,79. JÂGN. 2,170. 253. HARIV. 11114. Spr. 4955. VARÂH. BṚH. S. 42,6. SÂJ. zu ṚV. 4,24,9. वाजि° *Pferdehändler* RÂGA-TAR. 8,495. — Vgl. मांस°.

विक्रेतव्य (wie eben) adj. *zu verkaufen, verkäuflich* KULL. zu M. 10,85.

विक्रेय (wie eben) 1) adj. dass. AK. 2,9,82. H. 871. M. 10,85. JÂGN. 2,255. MBH. 12,2922. 13,2483. KATHÂS. 75,177. VOP. 26,16. अ° *was nicht verkauft werden darf* MBH. 5,1402. Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,18. *nicht verkäuflich* R. 1,61,17 (63,19 GORR.). — 2) *Verkaufspreis:* विक्रेयाष्टगुणो दमः JÂGN. 2,246.

विक्रोश (von क्रुश् mit वि) m. *Geschrei, Hilferuf:* सविक्रोशम् adv. MBH. 14,1948.

विक्रोशन (wie eben) m. N. pr. eines mythischen Fürsten KATHÂS. 48,50.

विक्रोशयितर् (vom caus. von क्रुश् mit वि) nom. ag. zur Erklärung von कुशिक NIR. 2,25.

विक्रोष्टर् (von क्रुश् mit वि) nom. ag. *der da aufschreit, einen Hilferuf erschallen lässt:* अकारणेन JÂGN. 2,234. *wer ohne Ursache schimpft* STENZLER.

विक्लव 1) adj. (f. आ) = विह्वल AK. 3,1,44. H. 448. HALÂJ. 2,231. *benommen, befangen, seiner nicht ganz mächtig, kleinmüthig, verwirrt* MBH. 3,12993. R. GORR. 2,39,35. Spr. 2786. fg. 4671. MEGH. 38. ÇÂK. 82, 20. 95,15. KATHÂS. 114,120. BHÂG. P. 4,28,47. प्रकृति° *schüchtern* 5,8, 2. 6,9,29. अति° HARIV. 7101. PRAB. 91,5. सु° MBH. 13,6905. अ° 1, 2070. Spr. 2787. BHÂG. P. 2,9,29. 8,12,37. 24,35. मद° R. 4,9,70. भय° MṚKKH. 11,2. PAÑKAT. 106,2. घनशब्द° so v. a. *erschrocken* RAGH. 19,38. KUMÂRAS. 4,11. शोक° KATHÂS. 76,13. स्नेह° MBH. 3,14362. R. GORR. 2, 51,2. KUMÂRAS. 6,92. प्रत्याख्यान° ÇÂK. 111,3, v. l. सह्यानेन वियोगविक्लवा ÇIÇ. 12,63. DAÇAK. 93,10. वाक्य° R. 2,59,2. बाष्प° R. GORR. 2, 52,14. BHÂG. P. 4,20,21. दूराध्वक्लाम° so v. a. *erschöpft* KATHÂS. 72,181. vom Herzen, Gemüthe u. s. w.: अन्तरात्मन् MBH. 9,1670. आत्मन् BHÂG. P. 3,4,34. विक्लवां बुद्धिं कृत्वा R. 5,71,5. 7,68,19. स्नेहविक्लवया बुद्ध्या 5,36,7. हृदय BHÂG. P. 3,23,49. दुर्नयव्यक्तिविक्लवं हृदयम् KATHÂS. 21,94. वाच्यविवेकविक्लवधियाम् Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,33. अविक्लवया धिया BHÂG. P. 8,22,22. अविक्लवमनम् 23. मृगयाविक्लवं चेतः so v. a. *unschlüssig* ÇÂK. 22,5. von Theilen und Functionen des Körpers, die eine gemüthliche Erregung u. s. w. verrathen: *verstört, entstellt, unsicher* u. s. w.: विक्लवानन R. 1,8,20. ÇÂK. 73. दीनविक्लवदर्शन R. 2, 65,28. दृष्टिपाताः RÂGA-TAR. 3,38. अङ्गैर्हृत्कम्पविक्लवैः KATHÂS. 3,65 (vgl. उत्कम्पविक्लवा 33,172). यावत्स्वस्थो ऽस्ति मे देहो यावन्नेन्द्रियविक्लवः so v. a. *so lange meine Sinne gesund sind* KÂÇIKH. 7,38 (nach AUFRECHT). अविक्लवा गतिः R. 6,23,16. प्रस्थानविक्लवगति ÇÂK. 100. स्नेहविक्लवगद्गदाः HARIV. 10295. वाक्यं मदविक्लवम् 5420. भयविक्लवया वाचा R. 2,34,5. 6,9,4. BHÂG. P. 3,31,11. बाष्पविक्लवं वचः R. 4,6,2. अविक्लवं वचः 2,21,50. 52,36. BHÂG. P. 3,33,9. 4,21,19. 8,22,1. 10,68, 20. बाष्पविक्लवभाषिणी R. GORR. 2,57,30. KATHÂS. 53,142. MÂRK. P. 21,66. — 2) n. *Befangenheit, Kleinmuth, Verwirrung:* किमिदानीमिदं देवि करोषि हृदि विक्लवम् R. 2,44,22. आगत° adj. R. GORR. 2,123,7. गत° adj. 7,32,45. विगत° adj. BHÂG. P. 3,31,21. 7,9,12. अज्ञात° adj. 6,12,3. सविक्लवम् adv. MÂLAV. 67,15. — विक्लव fehlerhaft für विप्लव (wie die neuere Ausg. liest) HARIV. 2885. — Vgl. वैक्लव्य.

विक्लवता = विक्लव 2): मा च विक्लवतां गच्छ R. 6,82,22. KATHÂS. 95,52. 101,388. मा स्म विक्लवतां कृथाः 18,272. *Verstümmelung, Entstelltsein:* रोम्णाम् R. 4,59,19.

विक्लवत्व n. dass.: मृदुत्वं च तनुत्वं च विक्लवत्वं तथैव च। स्त्रीगुणा ऋषिभिः प्रोक्ताः so v. a. *Schüchternheit* MBH. 13,541. एकपक्षाश्रय° *Unschlüssigkeit* RAGH. 14,34.

विक्लवित (von विक्लव) n. *eine kleinmüthige Rede* BHÂG. P. 10,29,42.

विक्लिधं adj. nach den Comm. *schweisstriefend* (vgl. क्लिद्), oder *dessen Zähne vorstehen*, oder *aussätzig* TBR. 3,9,15,3. ÇAT. BR. 13,3,6,5. KÂTJ. ÇR. 20,8,16. ÇÂÑKH. ÇR. 16,18,18.

विक्लिन्दु (vielleicht von क्लिद् mit वि) m. *eine best. Krankheit:* पद्दोरस्या अधिष्ठानाद्विक्लिन्दुर्नाम विन्दति AV. 12,4,5.

विक्लिष्ट s. u. क्लिश् mit वि.

विक्ली adv. in Verbindung mit कर्, भू und अस् gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. — Vgl. आक्ली.

विक्लेद (von क्लिद् mit वि) m. 1) *Feuchtigkeit* SUÇR. 1,48,13. 2,363,1. MBH. 12,7747. नेत्रैरागतविक्लेदैः 15,138. प्राप्य तत्तोयविक्लेदम् so v. a. *nachdem er sich in dieses Wasser gestürzt hatte* R. 7,110,26. — 2) *das Zerfliessen, Auflösung:* इन्द्रिय° so v. a. *Abnahme der Sinneskräfte* BHÂG. P. 3,20,41.

विक्लेदीयंस् (wie eben mit dem suff. des compar.) adj. *mehr feuchtend* AV. 7,76,1.

विक्लोश (von क्लिश् mit वि) m. *Unklarheit*, Bez. eines best. Fehlers bei der Aussprache der Dentalen ṚV. PRÂT. 14,7.

वितर्ं (von तर्ं mit वि) 1) adj. (f. आ) *ausgiessend:* वारि° HARIV. 13953. — 2) m. *a) Abfluss:* समुद्रस्य AV. 6,105,3. — *b)* unter den Beinn. Vishṇu's (Kṛshṇa's) MBH. 13,6989. PAÑKAR. 4,8,17. — *c)* N. pr. eines Asura MBH. 1,2541. 2677. fg. HARIV. 2285. 12940. 14288.

वित्ता (त्ता + वि) f. nom. act. gaṇa कृत्तादि zu P. 4,4,62. — Vgl. वैत्त.

वितान (von 1. ता mit वि) partic. n. *das Verglommene, todte Kohle:*

आह्वनीयस्य ÇÂÑKH. ÇR. 4,13,1.

विक्षार्ं m. nach dem Comm. = विशिष्टो लक्ष्यवेधः *ein guter Treffer* TBR. 1,5,1,1.

विक्षाव (von 1. क्षु mit वि) m. nom. act. P. 3,3,25. AK. 3,3,37. *Geschrei* BHAṬṬ. 7,36 (pl.). nach SVÂMIN und KALIÑGA bei BHAR. zu AK. *Husten* ÇKDR.

विक्षिणात्कें (vom partic. praes. von 3. क्षि mit वि) adj. (das Uebel) *zerstörend* (nach MAHÎDH.) VS. 16,46.

विक्षित् scheinbar MBH. 13,6260, wo aber mit der ed. Bomb. ऽविक्षितः zu lesen ist.

विक्षिप्त s. u. 1. क्षिप् mit वि; davon °त्व n. *das Zerstreutsein* (an verschiedenen Orten): वेदवाक्यानाम् UVAṬA bei MÜLLER, SL. 98.

विक्षीणार्कं v. l. zu विक्षिणात्क TS. 4,5,9,2. ÇATAR. in Ind. St. 2,43.

विक्षीर (2. वि + क्षीर) m. *Calotropis gigantea* (अर्कवृक्ष) RÂGAN. im ÇKDR.

विक्षुद्र (2. वि + क्षुद्र) adj. *relativ kleiner, eines kleiner als das andere:* विक्षुद्रमिव अक्षस्त्यम् AIT. BR. 1,21. विक्षुद्रा इव हि पशवः 5,6.

विक्षेप (von 1. क्षिप् mit वि) m. 1) *das Hinwerfen, Ausstreuen* DHÂTUP. 28,116. ज्वलाग्र° MÂRK. P. 31,14. 8,117. *Wurf:* इषुविक्षेपमतीत्य *die Entfernung eines Pfeilwurfs* VP. bei KULL. zu M. 4,151. *das Schleudern:* वज्र° und मन्त्रा° zur Erklärung von तुविक्ष NIR. 6,33. — 2) *das Hinundherbewegen:* पाद° DHÂTUP. 13,31. VIKR. 60,14. बाहु° R. 2,59,30. 7,32,41. KATHÂS. 52,327. भुजाग्र° R. 5,42,9. पक्ष° MBH. 4,1399. 12,6397. HARIV. 6960. 10397. KATHÂS. 72,42. लाङ्गूल° KUMÂRAS. 1,13. RAGH. 5,45. कटाक्ष° Verz. d. Oxf. H. 130,*a*,24. SÂH. D. 301,18. भ्रू° 210. वीचीतरंग° SUÇR. 2,84,14. RAGH. ed. Calc. 1,44. *das Hinundherstossen* R. 2,78,26 (77,32 GORR.). BHÂG. P. 10,44,4. P. 6,1,141, Schol. — 3) *das Schnellen:* ज्या° HARIV. 13409. — 4) *das Gehenlassen, Gewähren eines freien Laufes:* इन्द्रिय° (Gegens. इन्द्रियसंयम) BHÂG. P. 11,18,22. चित्त° 19,42. — 5) *das Verstreichenlassen, Versäumen:* काल° H. an. 3,401. — 6) *Ablenkung der Aufmerksamkeit, Zerstreutheit:* चित्तस्य Verz. d. Oxf. H. 229,*b*,15. चित्तविक्षेपाः JOGAS. 1,30. UTTARAR. 38,20 (52,12). लयविक्षेपरहितं मनः कृत्वा सुनिश्चलम् MAITRJUP. 6,34. NJÂJAS. 5,2,1. 20. SARVADARÇANAS. 114,16. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 135. 137. fg. SÂH. D. 149. — 7) bei den Vedântin Bez. *einer Fähigkeit* (शक्ति) *des Irrthums* (अज्ञान), *vermöge welcher die Welt als real erscheint*, VEDÂNTAS. (Allah.) No. 36. 39. 41. BÂLAB. 13. — 8) *Schmähung:* नानाविक्षेपवचनैः BHAR. NÂṬJAÇ. 20,5. — 9) *Mitleid* DAÇAR. 4,41. — 10) *Himmelsbreite, gemessen auf einem Declinationskreise*, SÛRJAS. 1,70. COLEBR. Misc. Ess. II, 466. विमण्डले यद्ग्रहस्थानं तस्य क्रान्तिवृत्ताग्यत्तिर्यगन्तरं स विक्षेपः GOLÂDHJ. 6,16, Comm. GAṆIT. GRAHAKKHÂJÂDH. 1. fgg. °वृत्त = क्षेपवृत्त *der Declinationskreis, auf dem die Himmelsbreite gemessen wird*, GOLÂDHJ. 6,14 (vgl. 13). Vgl. शर. — 11) *eine best. Krankheitsform* Verz. d. B. H. No. 934. — 12) *eine best. Angriffswaffe:* सकचग्रह° MBH. 5,5247. NÎLAK.: कचग्रहविक्षेपः कचेषु गृहीत्वा येन शत्रुर्विक्षिप्यते तादृशः कलविङ्कग्रहतुल्यग्रिक्रापाद्व्याञ्चितायो दण्डविशेषः । काग्रहेति पाठे अङ्कुशविशेषः. — Vgl. अङ्ग°, दृष्टि° (*das Hinundhergehenlassen der Augen* ÇÂK. CH. 16,1) und unter 1. क्षिप् mit वि (विक्षेपम् absol.).

विक्षेपण (wie eben) n. 1) *das Hinundherwerfen* SUÇR. 1,85,8. गात्र° 252,18. रक्तौ तवाङ्घ्री मृदुलौ भुवि विक्षेपणाद्ध्रुवम् *das Bewegen der Füsse* so v. a. *das Gehen* KUVALAJ. 39,*b*. — 2) = विक्षेप 6) VEDÂNTAS. (1829) 26,9, wo die neuere Ausg. besser विक्षेप liest.

विक्षेपलिपि f. Bez. *einer best. Schriftart* LALIT. ed. Calc. 144,6.

विक्षेप्तर् (von 1. क्षिप् mit वि) nom. ag. *Zerstreuer, Vertheiler:* अग्रगण° MBH. 1,1288.

विक्षोभ (von 1. क्षुभ् mit वि) m. 1) *heftige Bewegung:* क्षीरोद° HARIV. 13122. Spr. 1449. वीचि° RAGH. 1,43. — 2) *das aus-der-Ruhe-Kommen, Aufregung, Verwirrung:* उत्तमः क्लेशविक्षोभं क्षमः सोढुं नहीतरः Spr. (II) 1173. रिपुविक्षोभकारक MBH. 7,6794. Verz. d. Oxf. H. 261,*a*, 2. मं° TBR. 3,7,6,7.

विक्षोभण (wie eben) m. N. pr. eines Dânava HARIV. 198.

विक्षोभिन् (wie eben) adj. *in Aufregung —, in Verwirrung versetzend;* s. रक्षोविक्षोभिणी.

विख adj. *nasenlos* BHAR. im DVIRÛPAK. nach ÇKDR. — Vgl. विखु, विख्य, विख्र, विख्रु, विग्र.

विखण्डिन् (von खण्ड् mit वि) adj. *zertheilend, schlichtend:* वैर° Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 244.

विखनन (von खन् mit वि) n. *das Aufgraben* NIR. 3,17.

विखनस् m. Bein. Brahman's BHÂG. P. 10,31,4.

विखादं (von खाद् mit वि) m. etwa *das Verzehren* (vgl. खाद): Indra heisst विखादे सस्निः ṚV. 10,38,4.

विखानस m. N. pr. eines Muni Comm. zu ÇÂK. 26. — Vgl. वैखानस.

विखु adj. = विख KÂÇ. zu P. 5,4,119. BHARATA im DVIRÛPAK. nach ÇKDR.

विखुर m. *ein* Râkshasa TRIK. 1,1,74.

विखेद (2. वि + खेद) adj. *von der Erschlaffung befreit, munter* BHÂG. P. 1,17,21.

विख्य adj. = विख P. 5,4,119, Vârtt.

विख्याति (von ख्या mit वि) f. *Berühmtheit* R. 5,66,15.

विख्यापन (vom caus. von ख्या mit वि) n. *das Bekanntmachen, Verkünden* GAUTAMA in MIT. 47,11.

विख्ये und विख्यै s. u. ख्या mit वि 1).

विख्र adj. = विख KÂÇ. zu P. 5,4,119. H. 450.

विख्रु adj. dass. H. 450.

विगणन (von गणय् mit वि) n. *das Bezahlen, Abtragen* TRIK. 2,9,2. HÂR. 157. P. 1,3,36. VOP. 23,28.

विगत s. u. गम् mit वि. — विगतद्वंद्व adj. *von den Gegensätzen befreit;* m. *ein* Buddha H. ç. 80.

विगतभय 1) adj. *furchtlos.* — 2) m. N. pr. eines Brahmanen KATHÂS. 10,7. fgg.

विगतरागध्वज m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers TÂRAN. 63.

विगतार्तवा adj. f. *die Regeln nicht mehr habend* AK. 2,6,1,21.

विगताशोक m. N. pr. eines jüngeren Bruders (oder Enkels) des Açoka BURN. Intr. 360. TÂRAN. 2. 40. 48. fgg. — Vgl. वीताशोक.

विगर्दं in der Stelle: प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ṚV. 10,116,5.

विगन्ध (2. वि + ग°) adj. (f. आ) *übelriechend* SUÇR. 1,136,13. 247,13. VARÂH. BRH. S. 86,79.

विगन्धक 1) m. *Terminalia Catappa* (इङ्गुदी). — 2) विगन्धिका f. *eine*

best. Pflanze, = कृपुषा Râǵan. im ÇKDr.

विगन्धि adj. = विगन्ध Spr. 728. Varâh. Bṛh. S. 48,4.

विगम (von 1. गम् mit वि) m. *das Fortgehen, Verschwinden, Aufhören, zu-Ende-Gehen, Abwesenheit:* संयोगविगमौ Bhâg. P. 1,13,40. मुकुन्द° 10,42,24. स्वधातु° 2,7,49. ग्रसु° 3,9,15. कारण° Megh. 56. पयोद° Varâh. Bṛh. S. 12,10. पवन° 28,4. तिमिर° Kathâs. 47,121. चारुनृत्य° Ragh. 19,15. नीहारपात° Ṛt. 6,22. ईति° Mâlav. 95. केतु° Spr. 2691. साधस° Khandom. 82. तृप्तिपपासा° Kull. zu M. 4,229. बाल्य° 8,27. उपाधि° Schol. zu Kap. 1,158. 160. Kusum. 46,20. छ्यालोकालम्भ° so v. a. *Vermeidung* Jáǵn. 3,157. — Vgl. दिवस°, रात्रि°.

विगमचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Târan. 2. 126. fg.

विगर्भा (2. वि + गर्भ) adj. f. *von der Leibesfrucht befreit* MBh. 5,3808.

विगर्ह gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135. — Vgl. विगर्हिन् 2).

विगर्हण (von गर्ह् mit वि) n. *das Tadeln, Tadel:* वसुदेव° Hariv. 4255. R. Gorr. 2,75 in der Unterschr. Schol. zu Kâtj. Çr. 1,4,4. लोके चैव विगर्हणाम् (प्राप्तम्) R. Gorr. 2,68,19. नारदो गच्छंस्त्वयोक्तो मद्विगर्हणाम् *du hast übel von mir zu* Nârada *gesprochen* MBh. 12. 5846. विगर्हणां कर् *tadeln* 5,7556. auch विगर्हणा f.: विगर्हणां परमडरात्मना कृतां सहेत यः 12,4230.

विगर्हिन् 1) adj. (wie eben) *tadelnd:* सर्वलोक° MBh. 12,9702. कामयोग° (so die neuere Ausg.) Hariv. 11688. — 2) विगर्हिणी Bez. *einer an* विगर्ह *reichen Localität* gaṇa पुष्करादि zu P. 5,2,135.

विगर्ह्य (von गर्ह् mit वि) adj. *tadelnswerth, tadelhaft;* von Personen und Sachen M. 4,72. Bhâg. P. 3,14,25. 6,7,36. ग्रति° 11,8,31.

विगर्ह्यता f. nom. abstr. von विगर्ह्य. विगर्ह्यतां प्रया *sich dem Tadel aussetzen* Râǵa-Tar. 6,276.

विगाढर् (von गाह् mit वि) nom. ag. *der sich hineinbegiebt in* (gen.): वनस्य Bhaṭṭ. 9,29.

विगाथा (2. वि + गा°) f. *eine Abart des* Ârjâ- *oder* Gâthâ-*Metrums* Colebr. Misc. Ess. II, 154.

विगान (von 2. गा mit वि) n. *böser Ruf* H. 270. Halâj. 1,147. an. 4,48.

विगामन् (von 1. गा mit वि) n. *Schritt* Ṛv. 1,155,4.

विगाह (von गाह् mit वि) 1) adj. *sich eintauchend:* Agni Ṛv. 3,3,5. — 2) m. nom. act. s. डुर्विगाह.

विगाहन (wie eben) 1) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 5,2732. — 2) n. nom. act. s. ग्रन्तर्विगाहन.

विगाह्य (wie eben) adj. *intrandus:* भूतिरुच्चावचैरपि। गङ्गा विगाह्या सततम् Spr. 4674. — Vgl. डुर्विगाह्य.

विगीति f. *eine Abart des* Ârjâ-*Metrums*, 29 + 29 *Moren* Colebr. Misc. Ess. II, 154.

विगुण (2. वि + गुण) adj. (f. ग्रा) 1) *woran Etwas mangelt, unvollkommen, mangelhaft:* वैदिकानि कर्माणि MBh. 12,2689 (Gegens. ग्रपिगुण 2677). Kâtj. Çr. 1,2,18. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् Spr. 3050. 4968. 5093. ग्राज्ञा so v. a. *ein Befehl, der nicht ausgeführt wird,* Râǵa-Tar. 4,502. विधि so v. a. *ein widriges Schicksal* Spr. 923, v. l. Die Ergänzung, woran es mangelt, geht im comp. voran: धर्मविगुणाः क्रियाः Râǵa-Tar. 4,60. विवेकविगुणाः क्रियाः 5,352. — 2) *qualitätlos* Bhâg. P. 3,24,43. 7,9,48. 8,12,7. — 3) *der Vorzüge baar, schlecht:* von Menschen MBh. 5,1465. 12,10655. R. 4,31,3. 5,86,16. 6,100,9. Spr. 3097. Çiç. 9,12. विगुणेष्वपि पुत्रेषु न माता विगुणा भवेत् Mârk. P. 77,32. 106,25. सु° MBh. 4,1561. *was seine Eigenschaften verändert hat, verdorben, schlecht;* von den humores im Körper Suçr. 2,370,7. 464, 11. 523,16. Çârṅg. Saṁh. 1,2,4. — तद्विगुणैः MBh. 8,667 fehlerhaft für तद्गुणैः, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. वैगुण्य.

विगुणता (von विगुण) f. *Verdorbenheit:* वायोः Suçr. 2,529,16.

विगुल्फ adj. *reichlich:* विगुल्फं बर्हिराज्यं च Âçv. Gṛhj. 4,1,17. सौम्यं विगुल्फं निर्वपयेयुः Çr. 12,8,35. विगुल्फान्नमाहरेत् (विफ°) Kâtj. Çr. 21, 3,10. — Vgl. unter गुल्फ् in den Nachträgen.

1. विगृह्य (von ग्रह् mit वि) adj. in der Gramm. *was besonders —, selbständig für sich erscheint* (im Pada-Text) AV. Prât. 4,78.

2. विगृह्य (wie eben) absol. *aggressiv* Kâm. Nîtis. 11,2. fgg. °गमन 4. °यान 3. विगृह्यासन 14.

विग्न s. u. विज्.

विप्रै gaṇa ग्रश्चादि zu P. 4,1,123. सुतंगमादि zu 2,80. adj. nach Dev. zu Naigh. von 1. गर् mit वि; nach Naigh. 3,15 so v. a. मेधाविन्. पौर्ंक्षि विप्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छ Ṛv. 1,4,4. ता विप्रं धैथे जठरं पृणध्यै 6,67,7. Nach P. 5,4,119, Vârtt. AK. 2,6,1,46. H. 450 und Halâj. 2,455 *nasenlos* (vgl. विख u. s. w.). — Vgl. वैग्रि, वैग्रेय.

1. विग्रह (von ग्रह् mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा. 1) *Trennung, Sonderstellung* Nir. 1,4. बाह्वङ्ग्राङ्ग° beim zweimonatlichen Fötus Bhâg. P. 3,31,3. — 2) *Trennung, Eintheilung;* = प्रविभाग Trik. 3,3,460. = विभाग Med. h. 23 (statt विभागे ना ist वि° ना zu lesen). कल्पलताण° (= ग्रवान्तरकल्प Comm.) Bhâg. P. 2,10,47. — 3) *Vertheilung*, namentlich von Flüssigem (z. B. Soma) Ind. St. 10,381. Kâtj. Çr. 9,4,13. 16. 12,5,16. 22,10,3. — 4) in der Gramm. *Sonderstellung eines Wortes, Selbständigkeit desselben* (Gegens. zur *Composition*) Ṛv. Prât. 4,15. 5,16. 25. 7,2. विग्रह ऋषपृक्त उकारः प्लवते u, *wenn es ein eigenes Wort ist, wird gedehnt* 8,1. 4,12 (ग्र°). AV. Prât. 4,3. Comm. in der Einl. zu 4. zu 4,27. S. 262 (9. 10.). *grammatische Auflösung eines zusammengesetzten Wortes:* वृत्त्यर्थबोधकं वाक्यं विग्रहः Schol. zu P. 2,1,3. 1, 2,44. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 14. ग्रविग्रहो नित्यसमासः Schol. zu P. 2,1,3. = व्यास, विस्तार AK. 3,3,22. Trik. H. 1432, Schol. Med. Halâj. 5,19. — 5) *Uneinigkeit, Zwist, Hader, Streit, Krieg* AK. 2,8,1,18. 2,73. Trik. H. 735. 796. Med. Halâj. 2,299. M. 7,160. fgg. 164. तदा कुर्वीत विग्रहम् *einen Krieg eröffnen* 170. ऋषीणां देवतानां च सदा भवति विग्रहः MBh. 13,319. Hariv. 2865. R. Gorr. 1,46,32. 3,74,12. Ragh. 9,47 (pl.). 19,38. ग्रकारण° Spr. 3 (II). 864 (II). 3202. Varâh. Bṛh. S. 30,9. 46,76. 47,7. 86,63. Bhâg. P. 3,15,32. 4,2,2. Mârk. P. 69,26. यदुपुंगवैः Hariv. 15875. R. 3,41,3. 6,87,7. Spr. 4086. 4617. विग्रहो ऽयं कृतो ऽनेन त्वया सह मयापि च R. Gorr. 2,18,16. Varâh. Bṛh. S. 87,38. Pańkat. 78,20. 149,14. तैः सार्धम् R. 6,82,51. स्त्रीभिः साकम् Varâh. Bṛh. S. 89,11. ग्रस्योपरि विग्रहं कर्तुम् Pańkat. 78,21. करोति विग्रहं कामी कामिषु Bhâg. P. 3,31,29. वालिसुग्रीव° *zwischen* R. 1,3, 23. Varâh. Bṛh. S. 104,21. सुरदानव° Bhâg. P. 9,14,5. ग्रसुरगण° *mit* MBh. 1,1185. Suçr. 1,89,16. 290,5. Kathâs. 19,79. Pańkat. ed. orn. 56, 1. स्थल° *ein Kampf auf festem Lande* Spr. 4611. निजवने बद्धा वचोवि-

ग्रहम् *Wortstreit* SÂH. D. 73, 10. Gegens. संधि M. 7, 56. JÂGN. 1, 346. MBH. 17, 87. R. 1, 7, 11. RÂGA-TAR. 4, 142. 6, 189. DAÇAK. 65, 5. BHÂG. P. 8, 6, 28. HIT. 4, 3. VET. in LA. (III) 29, 12. Gegens. अनुग्रह AK. 3, 3, 13. RÂGA-TAR. 5, 247. *Kampf der Planeten* SÛRJAS. 7, 22. अविग्रहेण धर्मेण so v. a. *unbestreitbar* RÂGA-TAR. 4, 76. Nach den Lexicographen (in MED. ist ऽस्त्रियां zu lesen) in dieser Bed. auch n., welches wir nur durch R. 6, 34, 19 belegen können. — 6) *individuelle Form, — Gestalt; Leib, Körper* AK. 2, 6, 2, 21. TRIK. H. 563. MED. HALÂJ. 2, 355. MAITRJUP. 6, 7. WEBER, RÂMAT. UP. 288. 298. 337. 354. NÎLAK. 67. RÂGA-TAR. 2, 105. 4, 647. BHÂG. P. 4, 9, 33. 5, 12, 1. 17, 22. विकृत° 8, 10, 12. PAÑKAR. 1, 3, 45. देवीं त्रिविधविग्रहाम् Verz. d. Oxf. H. 210, *a*, No. 495. राज्ञ्याः (so ist zu lesen) पञ्चधा विग्रहवाहिनी RÂGA-TAR. 6, 308. विग्रहं ग्रह *eine Gestalt annehmen* BHÂG. P. 4, 7, 24. 30, 23. °ग्रहणा SARVADARÇANAS. 129, 2. °परिग्रह 13. मानुषं विग्रहं कृत्वा *menschliche Gestalt annehmend* R. 5, 2, 15. MBH. 1, 3903. प्रमदाविग्रहं कृत्वा R. 2, 91, 49 (100, 48 GORR.). 5, 81, 46. उपात्तविग्रह BHÂG. P. 1, 9, 10. नृकेसरि° adj. NRS. TÂP. UP. in Ind. St. 9, 84. पुरुष° MBH. 13, 850. 14, 2771. HARIV. 5954. 15559. R. 2, 30, 3. SUÇR. 2, 393, 20. 394, 3. Spr. 2513. PAÑKAR. 4, 1, 17. त्रिपाद्विग्रहे धर्मे अधर्मे पादविग्रहे so v. a. *dreifüssig, einfüssig* HARIV. 2626. 11305. 11318. 14023 (unter 2. पादविग्रह ungenau wiedergegeben). दिव्यशरीरास्ते न च विग्रहमूर्तयः MBH. 3, 15461. कालपाशेन सीताविग्रहरूपिणा R. 5, 47, 35. विग्रहयोरभेदम् *Leiber* Spr. 190 (II). नलिनीपत्त्रेण — आवृतविग्रहा VIKR. 102. RAGH. 3, 39. 9, 52. KATHÂS. 13, 104. तस्यै दातुं स्वविग्रहात्। अनुज्ञां प्रददौ भोक्तुं यदा RÂGA-TAR. 1, 133. श्वासापूरित° *sich aufgeblasen habend* 4, 574. विसर्पच्छिन्न° 653. 5, 240. नग्न 433. BHÂG. P. 2, 1, 38. पुलकाञ्चित° BRAHMA-P. in LA. (III) 53, 7. मुक्ताकेश° *Körper einer Statue* RÂGA-TAR. 4, 201. *Form, Gestalt* eines Regenbogens KIR. 5, 43. — 7) im Sâmkhja unter den Synonymen *der Elemente* TATTVAS. 16. — 8) *Verzierung, Schmuck:* महासिर्हेमविग्रहः R. 3, 18, 39. MBH. 4, 1338. गदया हेमविग्रहया 7, 9240. महार्हमणि° (आभरणा) R. 5, 45, 3. देव्याः पुत्रो भवेत् — तप्तकुण्डलविग्रहः MBH. 3, 5027. — 9) unter den Beiww. Çiva's MBH. 13, 1017. = विशिष्टानुभवद्रूप, निष्कलज्ञप्तिमात्र NÎLAK. — 10) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2552. — Die H. an. 3, 770 dem Worte विग्रह gegebenen Bedeutungen kommen संग्रह zu. Vgl. तनुविग्रहा, पदविग्रह, प्र°, महासंधि°, स° und वैग्रहिक.

2. विग्रह (2. वि + ग्रह) adj. *von* Râhu *befreit:* शशाङ्क R. 6, 39, 16.

विग्रहण (von ग्रह् mit वि) n. 1) *das Aussondern* (?): पवित्रस्य PAÑKAV. BR. 6, 6, 12. — 2) = 1. विग्रह 3) TS. 6, 4, 2, 2. KÂTJ. ÇR. 10, 7, 11. — 3) *das Ergreifen, Packen:* बाह्वोः (subj.) MBH. 11, 337.

विग्रहपालदेव m. N. pr. eines *Fürsten* COLEBR. Misc. Ess. II, 280. fg.

विग्रहय् (von 1. विग्रह) *streiten, kämpfen:* कथमनेन बलवता कृष्णसर्पेण सार्धं भवान्विग्रहयितुं समर्थः HIT. ed. JOHNS. 1417. fg.

विग्रहराज m. N. pr. verschiedener *Fürsten* RÂGA-TAR. 6, 335. 340. 343. 345. 7, 74. 139. 8, 1938. 2490. — Vgl. संग्रामराज.

विग्रहवन्त् (von 1. विग्रह) adj. *einen Körper habend, verkörpert, leibhaftig:* देवता NÎLAK. 68. काल MAITRJUP. 6, 16. श्री MBH. 1, 7695. 2, 381. धर्म 1250. 3, 16640. 4, 2269 (= R. 1, 23, 10 = 24, 11 GORR.). R. 2, 113, 17. R. GORR. 1, 67, 20. 5, 31, 46. 7, 59, 1, 22. SUÇR. 2, 259, 16. MÂLAV. 13.

• विग्रहव्यावर्तनी f. Titel eines Werkes TÂRAN. 302.

विग्रहावर (1. विग्रह + अ°) n. *Rücken* ÇABDAK. im ÇKDR.

विग्रहिन् (von 1. विग्रह) adj. *Krieg führend:* तस्मान्न विद्वानतिविग्रही (so ist zu lesen) स्यात् KÂM. NÎTIS. 9, 74. m. *Minister des Krieges* R. ed. GORR. Bd. VII, S. 341.

विग्रहीतव्य partic. fut. pass. von ग्रह् mit वि in der verdorbenen Stelle HIT. 72, 10.

विग्रा॑हम् (von ग्रह् mit वि) absol. *in Abtheilungen, successiv* u. s. w. TS. 5, 4, 8, 2. TBR. 2, 3, 2, 1. ÇAT. BR. 6, 3, 3, 5. ÂÇV. ÇR. 5, 9, 20.

विग्राह्य (wie eben) adj. *mit dem man Krieg führen muss* HIT. 116, 22.

वि॑ग्रीव (2. वि + ग्रीवा) adj. nach SÂJ. *dessen Nacken durchhauen ist* ṚV. 7, 104, 24. AV. 4, 18, 4. etwa *dem der Hals umgedreht ist.*

विग्ला॑पन (vom caus. von ग्ला mit वि) n. *Ermüdung* ÇAT. BR. 14, 7, 2, 23.

विघटन (vom caus. von घट् mit वि) n. *das Trennen:* कोकयूनोर्विघटनसंघटनकौतुकी कृष्णः SÂH. D. 122, 8. 22. *das Zerstreuen, Vernichten:* तमो° PRAB. 80, 6.

विघट्टन (von घट्ट् mit वि) 1) adj. *öffnend:* स्वर्गद्वार° HARIV. 13559. — 2) f. आ *Trennung* NALOD. 4, 45. — 3) n. *a*) *das Rütteln, Erschütterung* SUÇR. 1, 57, 6. 2, 476, 14. — *b*) *das Zersprengen:* वैरिवारणघटासंघट्ट° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 543, 2. — *c*) *das Lösen, Aufbinden:* रशना° RAGH. 19, 27.

विघट्टिन् (wie eben) adj. *reibend:* अन्योऽन्यकेयूर° RAGH. 16, 56.

1. विघ॑न (von घन् = हन् mit वि) P. 3, 3, 82. m. 1) etwa *Stämpfel, Keule:* स्फ्यः स्वस्तिर्विघनः स्वस्तिः TS. 3, 2, 4, 1 (v. l. द्रुघनः AV. 7, 28, 1). — 2) N. eines Ekâha TBR. 2, 7, 18, 1. PAÑKAV. BR. 19, 18, 1. 19, 1. KÂTJ. ÇR. 22, 11, 23. ÂÇV. ÇR. 9, 7, 32. ÇÂÑKH. ÇR. 14, 39, 8. LÂTJ. 9, 4, 33. MAÇ. in Verz. d. B. H. 73 (V, 7. 8).

2. विघन (2. वि + घन) 1) adj. *sehr dick:* पूर्णाविघनं चरुं श्रपयित्वा ÇÂÑKH. GṚHJ. 1, 2. — 2) *wolkenlos:* विघने *bei wolkenlosem Himmel* MBH. 5, 2997.

विघनि॑न् (von 1. विघन) adj. wohl *eine Keule tragend:* Indra-Agni ṚV. 6, 60, 5. *zerschlagend* SÂJ.

विघर्षण (von 2. घर्ष् mit वि) n. *das Reiben:* गात्र° als Bed. von कण्डूय् gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3, 1, 27.

विघ॑स (von घस् mit वि) P. 3, 3, 59, Schol. (vgl. 6, 2, 144). 1) m. n. *Speiseüberreste* AK. 2, 7, 28. H. 834. HALÂJ. 2, 171. विघसो भुक्तशेषम् M. 3, 285 (= MBH. 3, 106). MBH. 12, 8866. 8890. HARIV. 7146. UTTARAR. 93, 13 (121, 7). विघसाश MBH. 3, 1267. 11470. 12, 310. विघसाशिन् M. 3, 285 (= MBH. 3, 106). MBH. 12, 308. 310. fg. 8018. 8866. 13, 4403. 4410. करोति विघसं बहु *macht grosse Speiseüberreste* so v. a. *hält ein üppiges Mahl* 3, 111. 12, 516. 519. *das Essen* (als v. l. von निघस) ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) n. *Wachs* (vgl. मधूच्छिष्ट) RÂGAN. im ÇKDR.

विघात (von हन् mit वि) m. 1) *Schlag:* (काकाः) अभयाश्च तुण्डपक्षैश्चरणविघातैर्जनानभिभवन्तः VARÂH. BṚH. S. 95, 9. — 2) *das Zerbrechen, Abbrechen:* शस्त्रस्य न शिलासु भवेद्विघातः VARÂH. BṚH. S. 50, 25. — 3) *das Zurückschlagen, Abwehr:* शर° MBH. 6, 5563. गदायाः R. 3, 35, 45. — 4) *Verderben:* स्वज्ञातीय° Spr. 3326. शत्रुनिचयस्य VARÂH. BṚH. S. 52, 5. PAÑKAT. 42, 12. 156, 23. ed. orn. 40, 15. — 5) *Aufhebung, Entfernung, Hemmung, Stockung, Unterbrechung, Störung:* क्षुत्पिपासा° MBH. 1, 1351.

तपो° 7629. द्रोषस्य 3,13804. अभिषेकस्य R. 1,3,12. 2,23,24. परिश्रम° 96,5 (105, 5 Gorr.). R. Gorr. 2,18,11. fg. 5,81,48. तव विश्रामकेतोर्हि तथैव रथवाजिनाम्। परस्परविघातार्थं तमं कृतमिदं मया ॥ *des beiderseitigen Hemmnisses wegen* 6,89,20. 7,63,21. Njâjas. 1,1,51. Sâṁkhjak. 51. Suçr. 1,51,21. 80,1. 156,9. 2,63,16. 201,14. 304,18. 474,16. 513,21. 514,3. Kâm. Nîtis. 10,4.7. 8. 19,3. Ragh. 3,44. 11,1. 16,82. Kumâras. 3,32. AK. 1,1,2,12. Vikr. 85,19. Varâh. Bṛh. S. 12, Anf. 87,34. 104,26. Bhâg. P. 4,29,71. 5,12,13. 6,5,37. 11,23. यदि प्राप्तिं विघातं च ज्ञानन्ति सुखदुःखयोः 11,10,19. 12,4,6. Mârk. P. 39,56. 103,12. Pańkat. 172,25. Comm. zu VS. Prât. 4,16. संयोगाविघात AV. Prât. 1,104. Sâṁkhjak. 45. Kâm. Nîtis. 11,13. Kathâs. 1,11. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 273. Comm. zu Njâjas. 4,1,68. P. 3,1,8, Schol. अविघात adj. *ungehemmt* Bhâg. P. 1,6,32. विघात im Comm. zu AV. Prât. 4,107 fehlerhaft für निघात. — Vgl. दत्त°.

विघातक (wie eben) adj. *aufhebend, hemmend, unterbrechend, störend:* दैवमत्र विघातकम् Bhâg. P. 3,12,50. धर्मार्थकाममोक्षाणां यद्त्यन्तविघातकम् 4,22,34. इषुवेग° MBh. 7,3268. Schol. zu P. 7,1,13. 4,46.

विघातन (wie eben) 1) adj. *zurückschlagend, abwehrend:* सर्वशस्त्र° (अस्त्र) MBh. 13,854. — 2) n. *das Hemmen, Unterbrechen, Stören* R. 5,89,34. 7,45,21. Suçr. 2,519,20.

विघातिन् (wie eben) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. adj. 1) *schlagend, bekämpfend:* अरि° MBh. 3,8279. Hariv. 4825. R. Gorr. 1,19,22. Pańkar. 1,6,49. *verletzend:* ललितमधुरा वाकप्रत्यत्ने परोत्तविघातिनी Vet. in LA. (III) 30,5. — 2) *aufhebend, entfernend, hemmend, unterbrechend, störend* Med. n. 245. R. Gorr. 1,23,22. अघौघ° Kathâs. 69,158. 120,29. Kâr. zu P. 6,4,62.

विघृत lässt sich als partic. von 1. घर् ansehen: *träufelnd, besprengt* (= रसोपेत Sâj.) ṚV. 3,54,6.

विघ्न (von हन् mit वि) 1) nom. ag. *Zerbrecher, Zerstörer:* त्रिपुर° MBh. 14,205. — 2) m. (im Epos auch n.) *Hemmung, Hemmniss, Hinderniss* P. 3,3,58, Vârtt. 4. AK. 3,3,19. H. 1509. Halâj. 2,246. Kauç. 135. विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं (ohne Zweifel कर्माविघ्न° zu lesen; vgl. अविघ्नसिद्धि *glückliches Gelingen ohne Hindernisse* Varâh. Bṛh. S. 95,61) विनियोजितः Jâǵn. 1,270. तस्य यज्ञस्य R. 1,11,16 (22 Gorr.). राज्य° 2,22,30 (19,22 Gorr.). 63,27. 3,35,26 (n.). 5,7,21. 6,82,95. 98. मूर्तो विघ्नस्तपस इव Çâk. 32. 111. Spr. 243 (II). स्वर्गद्वारस्य 1038 (II). विघ्नभयेन, विघ्नविहृत, विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः 1913. प्रजापालनविघ्नाय यः 4718. Uttarar. 27,9 (35,19). Varâh. Bṛh. S. 79,23 = 94,4 (n.). 104,5,9. Kathâs. 45,89. °कुल Daçar. 2,12. वृष्टि° so v. a. *Dürre* H. 166. पुण्यकर्मणि Râǵa-Tar. 4,63. Brahma-P. in LA. (III) 50,2. 9. महान्विघ्नो प्रवृत्तो ऽयम् R. 1,61,2. तपसो हि महाविघ्नो विश्वामित्रमुपागमत् 63,8. काममोहाभिभूतस्य विघ्नो ऽयं प्रत्युपस्थितः 12. घोरं विघ्नमापतितं महत् 5,36,40. ईदृशो विघ्न उत्पन्नः 54. को हि मे भोक्तुकामस्य विघ्नं चरति MBh. 1,5979. गमने ऽस्याः तणविघ्नमाचरन्त्या Vikr. 17. तपोविघातार्थमथो देवा विघ्नानि चक्रिरे MBh. 1,7629. 3,2826. R. 1,22,18. 49,2. 2,23,40. 6,82,67 (n.). Mârk. P. 20,45 (n.). Pańkat. 168,3. रक्षांसि न इष्टिविघ्नमुत्पादयन्ति Çâk. 28,13. विघ्नानपोहति 32. निर्जिता विघ्नाः R. 3,77,9. सिद्धिविघ्नानपाकर्तुम् Râǵa-Tar. 2,153. °नाश Pańkar. 1,7,95. am Ende eines adj. comp. (f. आ): प्रतिहतविघ्नाः क्रियाः Çâk. 13. Kathâs. 19,3. अविघ्नतम् *ohne Hinderniss* Râǵa-Tar. 4,157. — 3) m. ein Name Gaṇeça's (vgl. विघ्नजित् u. s. w.) Weber, Râmat. Up. 321. 361. — Vgl. अ°, अप°, निर्विघ्न, महा°.

विघ्नक am Ende eines adj. comp. in der Bed. von विघ्न 2) LA. (III) ad 4,5.

विघ्नकर adj. *Hindernisse bewirkend, — in den Weg legend, hemmend, störend* Varâh. Bṛh. S. 49,7. Weber, Râmat. Up. 361. तपो° R. 2,52,46.

विघ्नकर्तर् nom. ag. dass. MBh. 3,2553. Pańkar. 1,14,4.

विघ्नकारिन् adj. dass. H. an. 4,192. Med. n. 245. R. 5,29,24. = घोरदर्शन *furchtbar anzusehen* H. an. Med.

विघ्नकृत् adj. dass. ṚV. Prât. 5,25. गमनस्य Varâh. Bṛh. S. 95,28. अन्न° 89,17. प्रस्थान° Jâǵn. 2,197. Spr. 1786. शील° Râǵa-Tar. 3,496.

विघ्नजित् m. *Besieger der Hindernisse*, ein Name des Gottes Gaṇeça Kathâs. 1,2. 21,1. 50,180. 55,169. 75,1. 102,2. 105,2. — Vgl. विघ्ननायक, विघ्नराज u. s. w.

विघ्नतल्लित adj. von विघ्न + तल्ल gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. vielleicht ist im gaṇa विघ्न । तल्ल zu lesen, so dass विघ्नित und तल्लित zu bilden wären.

विघ्ननायक, विघ्ननाशक und विघ्ननाशन m. = विघ्नजित् Çabdar. im ÇKDr.

विघ्नय् (von विघ्न), °यति *hemmen, hindern, stören:* अर्थान् Spr. 3893. स्वर्नैव तस्य विघ्न्येत (so ist zu lesen) सिद्धिश्चित्तान्धया धिया Râǵa-Tar. 8,2623. विघ्नित (vgl. u. विघ्नतल्लित) *gehemmt, gehindert, gestört:* राज्याभिषेक Pańkat. 168,7. °कर्मन् Spr. 2221. °दृष्टिपात Kumâras. 3,31. गुरुजघनोद्वहनविघ्नितपदाभिः — मृगेन्नणाभिः Varâh. Bṛh. S. 48,14. °समागमसुख Spr. 1403. Dhûrtas. 74,16. विघ्नितेच्छ Ragh. 19,27. Kathâs. 77,60. °यज्ञ 82,47. मार्गाश्चाविघ्निताध्वगाः Râǵa-Tar. 6,7. Ragh. 12,53. अ° R. 1,62,12.

— सम् dass.: ताम्बूलानयनच्छलेन रभसाश्लेषो ऽपि संविघ्नितः Spr. (II) 1363.

विघ्नराज m. = विघ्नजित् AK. 1,1,1,33. H. 207, Schol. Halâj. 1,18. Kathâs. 20,101. Pańkar. 1,11,23. Wilson, Sel. Works II, 23.

विघ्नवत् (von विघ्न) adj. *mit Hindernissen verknüpft:* प्रार्थितार्थसिद्धयः Çâk. 41,11.

विघ्नविनायक m. = विघ्नजित् Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,28.

विघ्नहन्तर् m. desgl. Spr. 4710. Verz. d. Oxf. H. 126,*b*,3.

विघ्नहारिन् m. desgl. Trik. 1,1,56.

विघ्नाधिप m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 121,*b*, No. 214. Trik. 1,1,1.

विघ्नान्तक m. desgl. Kathâs. 73,378. 114,2.

विघ्नेश m. desgl. H. 207. Kathâs. 20,83. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*,28. 249,*a*,9. Bhâg. P. 8,7,8.

विघ्नेशवाहन m. Gaṇeça's *Reitthier*, Bez. *einer Rattenart* (महामूषक) Râǵan. im ÇKDr.

विघ्नेशान m. = विघ्नेश. °कान्ता Bez. *des weissblühenden* Dûrvâ-*Grases* Râǵan. im ÇKDr.

विघ्नेश्वर m. = विघ्नेश Kathâs. 20,62. 84. 104,1. Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,35.

विङ्ग m. *Pferdehuf* Trik. 2,8,46.

1. विच्, विनक्ति, विङ्क्ते Dhâtup. 29,5 (पृथग्भावे). वेवेक्ति 25,12. विवेत्ति; erhält nicht den Bindevocal इ Kâr. 2 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. *durch*

Schwingen oder *Worfeln aussondern* (Getraide von der Spreu u. s. w.); überh. *sondern*: यवं न दस्म जुह्वा विवेक्षि *wie Getraide sonderst du mit deiner Zunge* (*der Flamme* d. h. *nimmst nur das dürre Gras und lässest Anderes stehen*) ṚV. 7,3,4. nach Sâj. = भक्षयसि oder व्याप्नोषि. प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषाम् 3,57,1. जीवितेन विवेच च (तान्) *trennte vom Leben* so v. a. *beraubte des Lebens* Bhaṭṭ. 14,103.

— अप dass.: वातो ऽपाविनक् AV. 11,3,4. तुषं पलावानप तद्विनक्तु 12,3,19. Çat. Br. 1,1,4,22. अपविवेक्ति Kauç. 61.

— अभ्यप *in* (ein Gefäss) *aussondern* Çat. Br. 1,1,4,22.

— प्र s. प्रवेक.

— वि 1) *durch Schütteln und Blasen sondern*: वायुर्वो वि विनक्तु VS. 1,16. Çat. Br. 1,1,4,22. अविविचम् (sc. व्रीहीन्) absol. Âçv. Çr. 2,6,7. *durchschütteln*: (मरुतः) वि विञ्चन्ति वनस्पतीन् ṚV. 1,39,5. *sichten*: दर्भान् Kauç. 90. *scheiden, trennen*: विविच्य संध्यन्तराणामकारं स्नावयेत् Âçv. Çr. 1,5,9. mit instr. oder abl.: वि विच्यध्वं यज्ञियासस्तुषैः *sondert euch* AV. 11,1,12. सुरा पूयमाना बल्कसेन विविच्यते Çat. Br. 12,8,1,16. पाप्मना Çâṅkh. Br. 18,4. ज्योतिरादिरिवाभाति संघातान्न विविच्यते Bhâg. P. 7,1,9. विविनच्मि दिवः सुरान् so v. a. *brachte sie um den Himmel* Bhaṭṭ. 6,36. — 2) *unterscheiden*: श्रेयश्च प्रेयश्च विविनक्ति धीरः Kaṭhop. 2,2. प्रकृतिपुरुषौ विविच्य Schol. zu Kap. 1,103. Bhâg. P. 4,4,20. *nach seiner Eigenthümlichkeit erkennen*: विविनक्ति न शौचं यः MBh. 1,6372. Suçr. 1,128,19. Bhâg. P. 10,87,20. *entscheiden*: प्रश्नम् MBh. 2,2243. fg. — 3) *untersuchen, prüfen, erwägen*: क्रियते चेद्विविच्यैव तस्य श्रेयः करस्थितम् Spr. 4277. Kathâs. 73,344. Prab. 114,18. Bhâg. P. 3,26,72. कृतिलीलाभिधानेयं यथाबुद्धि विविच्यते Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. 195,*b*,3. 222, *a*, No. 540. 246, *a*, No. 619. — 4) *offenbaren, kund thun*: विवेक्तुं नाहमिच्छामि त्वाकारं विदुरं प्रति MBh. 1,7396. अन्तर्गतमभिप्रायम् 13,5906. — partic. विविक्त 1) *gesondert, unterschieden* Kap. 3,63. शरीरादात्मनि विविक्ते, प्रधानात्पुरुषे विविक्ते Schol. zu Kap. 1,58. गोसहस्राणि वर्णशो विविक्तानि MBh. 3,13305. अविविक्तपरव्यथ *ohne einen Unterschied zu machen* Bhâg. P. 5,26,17. — 2) *abgesondert, isolirt*; = असंपृक्त H. an. 3,297. fg. Med. t. 153. विविक्तैश्च विभक्तैश्च शृङ्गैः Kâm. Nîtis. 16,4. चित्ता° so v. a. *ganz in Gedanken vertieft* MBh. 13,1482. *einsam*; n. *Einsamkeit, ein einsamer Ort*; = विजन, रहस् AK. 2,8,1,22. 3,4,14,85. H. 742. H. an. Med. देश M. 3,206. Bhag. 13,10. R. 1,50,5 (51,5 Gorr.). Mârk. P. 51,45. प्रदेश Pañkat. 159,21. कूर्मपृष्ठ Spr. (II) 622. अवकाश R. 2,54,21. 56,15. 4,24,30. Kathâs. 8,18. 30,76. 50,105. Daçak. 67,6. 69,6. Bhâg. P. 5,8,28. Mârk. P. 96,11. तद्विविक्तमिदम् Mṛkkh. 60,5. निषेवते विविक्तम् Çâk. 102. 107, v. l. °सेविन् Bhag. 18,52. Bhâg. P. 3,28,3. 4,22,23. 5,5,12. विविक्तासन Spr. 2175. °ग Kathâs. 17,1. 33,149. °शरण Bhâg. P. 3,27,8. 7,15,30. विविक्ते M. 4,258. MBh. 3,1870. 12,540. 16,105. Vikr. 40,5. Kathâs. 7,75 (गत्वा). Prab. 105,12. Bhâg. P. 1,4,15. 2,1,16. 3,24,26. 7,5,48. विविक्तेषु M. 3,207. — 3) *frei von*: स्वल्पेन खलु कालेन विविक्तं पृथिवीतलम्। भविष्यति नरेन्द्रैर्घैः शतशो विनिपातितैः॥ Hariv. 4986 (vgl. 5465). पांसुविविक्तवात Kumâras. 1,23. — 4) (*von allem Ungehörigen getrennt*) *rein, lauter* AK. 3,4,14,85. H. an. Med. Suçr. 1,151,17. संकल्प Spr. 1726. °दृष्टि Bhâg. P. 1,4,5. मेध्यविविक्तवृत्ति 3,1,19. °मार्ग 8,26. °चरित 16,21. विविक्ताध्यात्मदर्शन 20,28. 4,24,31. °चेतस् 1,19,12. 3,5,40. von Personen M. 11,6. MBh. 13,6202. Bhâg. P. 5,19,12. n. *Reinheit, Lauterkeit*: प्रज्ञाबुद्धिविविक्तद् Mârk. P. S. 658, Z. 6 v. u. — 5) *klar, deutlich*: विविक्ताकारदर्शन (तालवन) Hariv. 3725. °दर्शनस्थाने (एकान्तदर्शने तादृशस्थाने Comm.) रहस्ये च Kâm. Nîtis. 5,36. — 6) = विवेकिन् H. an. Med. — 7) MBh. 5,7152 fehlerhaft für विषक्त, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. विविक्ति, विविचि, विवेक u. s. w. — caus. 1) *sondern* Suçr. 1,78,5. धर्माधर्मौ व्यवेचयत् M. 1,26. — 2) *untersuchen, prüfen, erwägen* Pañkar. 3,1,12. Sâh. D. 278,7. Verz. d. Oxf. H. 126,*a*,5. 246,*a*, No. 618.

— प्रवि *untersuchen, prüfen, erwägen*: प्रविविच्यते Verz. d. Oxf. H. 222,*a*, No. 540. — partic. प्रविविक्त 1) *einsam* R. 2,54,31. 63,25 (65, 25 Gorr.). प्रविविक्तेषु *in der Einsamkeit* Spr. 3094. — 2) *fein*: विविक्ताहारतर Çat. Br. 14,6,11,4. °भुज् Mâṇḍ. Up. 4 (vgl. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. Weber, Râmat. Up. 338. Vedântas. Allah. No. 66). °चक्षुस् *ein feines —, scharfes Auge habend* MBh. 12,889. — Vgl. प्रविवेक.

2. विच् s. व्यच्.

विचकिल m. *Jasminum Zambac* H. 1148. Med. l. 164. Halâj. 2,51. Bez. *einer anderen Pflanze*, = मदन Med. विचिकिल in beiden Bedd. H. an. 4,298.

विचक्र (2. वि + चक्र) 1) adj. *radlos* Ait. Br. 6,30. MBh. 7,846. — 2) m. N. pr. eines Dânava Hariv. 15380. 15384. 15864.

विचक्षण (von चक्ष् mit वि) 1) adj. (f. आ) Schol. zu P. 2,4,54, Vârtt. 3. 4. Uggval. zu Uṇâdis. 2,122. Vop. 26,29. *a*) *conspicuus, sichtbar, scheinend, ansehnlich*: यस्यं श्वेता विचक्षणा तिस्रो भूमीरधिक्षितः ṚV. 8,41,9. द्रप्स 10,11,4. Soma 9,12,4. 51,5. 66,23. 70,7. 106,5. AV. 10,2,19. 10,3. Çâṅkh. Çr. 6,8,14. die Sonne ṚV. 1,50,8. 10,37,8. auch wohl 1,164,2. Çâṅkh. Çr. 5,9,20. Savitar ṚV. 4,53,2. Indra 1,101,7. 4,32,32. असौ वै सोमो राजा विचक्षणश्चन्द्रमाः Çâṅkh. Br. 4,4. 7,10. प्रतीक Pâr. Gṛhj. 3,15. Viele dieser Stellen liessen sich auch zu *b*) ziehen. — *b*) *sehend, scharfsichtig*, daher auch *einsichtig, klug, erfahren, bewandert, weise* AK. 2,7,5. H. 341. Halâj. 2,178. चक्षुर्विचक्षणं वि ह्येनेन पश्यति Ait. Br. 1,6. याभिस्त्रिमन्तुरभवद्विचक्षणः ṚV. 1,112,4. यं विचक्षणाः सोमं सुषावं 4,45,5. Bṛhaspati 2,23,6. 10,92,15. Praçnop. 1,11. अतन्द्रितान्, दक्षान्, विचक्षणान् M. 7,61. 9,71. Bhag. 18,2. MBh. 4,123. 8,4517. R. 1,1,16. R. Gorr. 1,45,42. Suçr. 1,122,21. Ragh. 5,19. Spr. (II) 313. 479. 989. 1464. Varâh. Bṛh. S. 22,5. 38,5. 68,98. Kathâs. 51,135. 94,29. Bhâg. P. 1,5,16. 10,81,37. Mârk. P. 34,110. 116,23. Verz. d. Oxf. H. 50,*a*,15. die Ergänzung im loc.: परिग्रहानुग्रहणे R. 2,1,19. कृत्स्नासु विद्यासु कलासु च Kathâs. 59,29. im comp. vorangehend: सर्वपण्य° M. 8,398. गुणदोष° 9,169. धर्माधर्म° 10,106. 108. MBh. 4,745. परिहास° Hariv. 7696. 14212. R. 2,109,27. R. Gorr. 2,67,7. Ragh. 9,35. 13,69. Spr. 984. 1276. 1874. 3241. Kathâs. 6,69. 24,91. 33,3. 43,22. Râga-Tar. 4,664. 668. Bhâg. P. 3,23,9. 8,11,48. महाविचक्षणेन ज्ञानेन 5,5,13. अ° M. 3,115. 8,150. Spr. 598 (II). 5085. (हंसः) निशास्वविचक्षणः *nicht gut sehend* 3195. सु° Kâm. Nîtis. 10,11. Spr. 3266. — 2) m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Tâṇḍja Ind. St. 4,373. — 3) f. आ *a*) *Tiaridium indicum Lehm.* Râgan. im ÇKDr. — *b*) Bez. *des Thrones* Brahman's Kaush. Up. 1,3. 5. — 4) विचक्षणम् enklitisch gaṇa गोत्रादि

zu P. 8,1,27. 57. — Vgl. कृन्त° und कृन्द्धि°.

विचक्षणत्व (von विचक्षण) n. *Einsicht, Klugheit, Weisheit* MBh. 3,10619.

विचक्षणंमन्य adj. *sich für klug haltend* Sarvadarçanas. 46,14.

विचक्षणवत् (von विचक्षण) adj. *auf Augenschein beruhend, dem Augenschein entsprechend:* वाच् Ait. Br. 1,6. nach späterer Auffassung *mit dem Worte* विचक्षण d. h. *Einsichtiger verbunden* Kâtj. Çr. 7,5,7 und Manu im Comm. zu d. St.; vgl. विचक्षणान्त Lâtj. 3,3,14. Eine Variation jener Stelle in Çâñkh. Br. 7,3 lautet: अथ यमिच्छेद्विचक्षणवत्या वाचा तस्य नाम गृह्णीयात् *dessen Namen nenne er in Verbindung mit einem auszeichnenden Worte* (etwa आयुष्मत्, पूज्य, विद्वयिन् Comm.). Vgl. u. चनसित und Ind. St. 10,20.

विचक्षस् (von चक्ष् mit वि) m. *Lehrer* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,232.

विचक्षुस् (2. वि + च°) 1) adj. a) *augenlos, blind* MBh. 12,2450. — b) = विमनस् Trik. 3,1,17. — 2) m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 8058 (निचक्षुस् die neuere Ausg.). Verz. d. Oxf. H. 40,*b*,8. 9.

विचक्ष्य (von चक्ष् mit वि) adj. *conspicuus:* मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्यम् RV. 8,13,30.

विचख्नु m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12,9467 nach der Lesart der ed. Bomb. विचख्यु ed. Calc.

विचख्यु s. विचख्नु.

विचतुर (2. वि + चत्वर्) adj. P. 5,4,77. Vop. 6,29. *verschiedene Vierheiten* (von Halbversen) *enthaltend* Çâñkh. Çr. 18,23,15.

विचन्द्र (2. वि + च°) adj. (f. आ) *mondlos:* शर्वरी R. 6,112,46.

1. विचय (von 1. चि mit वि) m. *Sichtung* so v. a. *Aufzählung* (vgl. 1. विचेय): छन्दसाम् Ind. St. 8,83. fg. 120.

2. विचय (von 2. चि mit वि) m. *das Suchen, Nachforschen* R. Gorr. 1,4,78. 4,31,4. 52,8. 5,15,7. Ragh. 16,75. Uttarar. 11,2 (15,4). *das Durchsuchen* R. Gorr. 1,4,77. 5,10 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 344,*a*,4.

विचयन (wie eben) n. *das Suchen* AK. 3,3,30. Verz. d. Oxf. H. 193, *a*,31. *das Durchsuchen* 344,*a*,3. 4.

विचयिष्ठ (von 1. चि mit वि und dem suff. des superl.) adj. *am meisten wegräumend:* पुरू दाशुषे विचयिष्ठो अंहः RV. 4,20,9; vgl. 6,67,8.

विचर (von चर् mit वि) adj. *zu weichen pflegend, wankend, gewichen seiend von* (abl.): न त्वं धर्मे विचरं संबयेक्ह मत्तश्च जानासि युधिष्ठिराच्च MBh. 5,812.

1. विचरण (wie eben) n. *Bewegung* Suçr. 1,207,8.

2. विचरण (2. वि + च°) adj. *fusslos, der Beine beraubt* MBh. 7,779.

विचरणीय (von चर् mit वि) adj. impers. *zu verfahren:* न गर्वमासाद्य स्वप्रभुतया विचरणीयम् Pañkat. 26,3. besser न प्रभुत्वमासाद्य सगर्वतया वि° ed. orn. 22,20.

विचर्चिका (von चर्च् mit वि) f. (*Ueberzug*) *eine der Formen des sog. kleinen Aussatzes: Räude, Grind* AK. 2,6,2,4. H. 464. Wise 261. Suçr. 1,268,4. 269,8. 292,9. 360,10. 2,118,21. Varâh. Bṛh. S. 32,14. — Vgl. घर्म°.

विचर्ची f. dass.: पामाविचर्च्यो Suçr. 1,294,18.

विचर्मन् (2. वि + च°) adj. *schildlos* MBh. 7,5761.

विचर्षण s. u. विचर्षणि.

विचर्षणि (2. वि + च°) adj. *sehr rührig, — rüstig:* यं देवासो ऽवथा स विचर्षणिः RV. 4,36,5. स्तोतर् 8,13,6. Indra 2,22,3. 41,10. 12. 6, 45,16. 46,3. Agni 1,78,1. 3,2,8. 11,1. die Marut und Andere 1,64,12. 5,63,3. 1,35,9. Soma 9,11,7. 40,1. 62,10. falsche Bildung विचर्षण Taitt. Âr. 7,3,1 (Taitt. Up. 1,4,1).

विचल (von चल् mit वि) adj. (f. आ) in der Verbindung mit अ° *sich nicht von der Stelle bewegend, nicht wankend, nicht abschweifend, beharrlich, beständig:* त्वय्यत्राविचले स्थिते Mârk. P. 22,48. स्थितिर्धर्मे MBh. 1,638. 12,7849. 11385. अविचलेन्द्रिय *nicht abschweifend, im Zaume gehalten* Bhâg. P. 4,12,14.

विचलन (wie eben) n. 1) *das Wandern von Ort zu Ort* Bhâg. P. 10, 8,4. — 2) *das Kundthun seiner Vorzüge, Prahlerei* Bhar. Nâṭjaç. 19,93. Daçar. 1,43. Pratâpar. 22,*a*,7. 42,*b*,6.

विचाचलि (vom intens. von चल् mit वि) adj. *beweglich, unstät;* s. अ° und vgl. P. 3,2,171, Vârtt. 4, Schol.

विचार (von चर् mit वि) m. 1) *Verfahren; besonderes Verfahren* so v. a. *einzelner Fall* Âçv. Çr. 1,5,33. Lâtj. 9,3,7. 11,1. 10,10,15. 13,1. विचारास्तत्र (कारितास्तत्र ed. Bomb.) बह्वो विहिताः शास्त्रदर्शनात् R. 1,13,44. hierher vielleicht °विद् als Beiw. Çiva's MBh. 13,1188. — 2) *Wechsel der Stelle:* देवता° Gobh. 3,10,3. — 3) *Ueberlegung, Erwägung, in-Betracht-Ziehung, Prüfung, Untersuchung;* = प्रमाणैर्वस्तुतत्त्वपरीक्षणम् P. 8,2,97, Schol. Trik. 1,1,114. VS. Prât. 2,53. विचारश्च विवेकश्च वितर्कश्च MBh. 12,7143. वेदतत्त्वार्थ° Hariv. 14433. विषसलिलतुलाग्निप्रार्थिते मे विचारे Mṛkkh. 156,3. Kâm. Nîtis. 13,48. 15,57. °मार्गप्रहितेन चेतसा Kumâras. 5,42. अहितहित° Spr. 826 (II). 948. 1583. 1976. 2891. 4591. Gît. 2,15. Kathâs. 34,213. 36,56. Râga-Tar. 3,511. 6,193. 208. Prab. 73,12. Sâh. D. 202. Çañk. zu Khând. Up. S. 31. Bhâg. P. 6,9,35. Vop. 8,119. Pañkar. 1,14,93. Verz. d. Oxf. H. 44,*b*,25. 68,*a*, No. 119. 88,*b*,4. 178,*a*,1. fgg. 223,*b*, No. 544. Verz. d. B. H. No. 896. Dhûrtas. 93,8. Pañkat. I,417. Hit. 104,7, v. l. 127,10. Gaudap. zu Sâñkhjak. 69. Schol. zu P. 1,1,9. zu Kap. 1,70. Madhus. in Ind. St. 1,19,14. 21. Sarvadarçanas. 122,12. fgg. 125,7. Wassiljew 231. 236. स्वगृहे को विचारो ऽस्ति *Bedenken, Anstand* R. 1,73,13 (75,14 Gorr.). विचारं कुरुषे कथम् Mârk. P. 75,51. Kathâs. 32,16. °दोलामारोहत् *sich langer Ueberlegung hingeben* 9,87. विचारार्हे पुनस्तस्य मत्तस्याभून्न मानसम् 13,19. न चैवं तमते नारी विचारं मारमोहिता 36,88. 40, 51. प्रवादमोहितः प्रायो न विचारक्षमो जनः 24,218. अनुरागान्धमनसां विचारसहता कुतः 17,51. °पतित 33,21. °पर Z. d. d. m. G. 14,573,5. °मूढ Ragh. 2,47. Hit. 116,10. °वन्ध्य Râga-Tar. 3,513. °शून्यत्व 4,236. अ° *Mangel an Ueberlegung* 235. Vet. in LA. (III) 12,10. अविचारम् *ohne Bedenken* MBh. 9,2376. अविचारानुमतेन Daçak. 74,14. अविचार adj. *nicht überlegend:* चित्तं योषिताम् Kathâs. 65,42. किं न जानासि यज्ञाज्ञामविचारतमा धियः 5,58. त्वया मुक्तविचारया Kumâras. 7,83. — 4) *wahrscheinliche Vermuthung:* विचारो युक्तवाक्यैर्यद्प्रत्यक्षार्थसाधनम् Sâh. D. 447. 434. — Vgl. निर्विचार (auch Kathâs. 40,32. 46,74), मुक्ति°, रात्रिपद°, वस्तु° und unter महावाक्य 2).

विचारक (vom caus. von चर् mit वि) nom. ag. 1) *Führer* Verz. d. Oxf. H. 211,*a*, No. 498. दुर्ग° R. 2,79,13. — 2) *Späher* R. 4,45,18. — 3) *erwägend, in Betracht ziehend:* ब्रह्मविचारकशास्त्र Sarvadarçanas.

159,18. चक्रं कालाकालविचारकम् Verz. d. Oxf. H. 88,*a*,36.

विचारचिन्तामणि m. Titel eines grammatischen Werkes Verz. d. Oxf. H. 161,*b*,9. 162,*b*,24.

विचारण (vom caus. von चर् mit वि) 1) n. *das Wechseln der Stelle* Suçr. 1,151,15. — 2) *das Ueberlegen, Erwägen, Bedenken, Reflexion, Erörtern;* n. VS. Prât. 6,20. धातुर्वधविचारणे R. 4,58,3. गुणदोष° 5, 1,61. 29 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 44,*b*,28. 224,*a*,7. Prab. 106,18. Bhâg. P. 12,13,18. अविचारणात् *ohne Bedenken* R. 3,28,27. Häufiger विचारणा f. AK. 1,1,4,11. H. 251. 1373. Halâj. 1,10. Vop. 8,103. Gṛhjasaṁgr. 1,94. Suçr. 1,312,17. मूर्ख° Spr. 1071. ब्रह्म° Spr. (II) 1758. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 315. zu Khând. Up. S. 315. वस्तु° Prab. 20,12. नित्यानित्य° 100,3. Sarvadarçanas. 29,13. का वरस्य (obj.) वि° Kathâs. 24,32. न मे ऽत्रास्ति वि° *Bedenken* MBh. 13,1964. R. Gorr. 1, 74,22. 7,104,19. न ते कार्या वि° MBh. 13,127. 1,4373. 3,8635. 14,800. नात्र कार्या वि° 3,1854. 2558. Hariv. 14419. 14964. R. 1,2,33. 7,45,20. 65,21. Kûrma-P. in Sarvadarçanas. 72,12. मा ते वि° MBh. 7,2082. Mṛkkh. 144,3. Hit. 51,22. Unbestimmt ob n. oder f.: वा विचारणार्थे Nir. 1,4. Spr. 4733. Windischmann, Sancara S. 108.

विचारणीय (wie eben) adj. *worüber man lange nachzudenken braucht, einer langen Erwägung bedürfend* Mṛkkh. 149,12. अ° Ragh. 14,46. Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,15. Prab. 104,17.

विचारभू f. *Gerichtshof* Trik. 1,1,72.

विचारमञ्जरी f. Titel eines Werkes Wilson, Sel. Works I, 282.

विचारमाला f. desgl. Hall 133.

विचारयितव्य adj. = विचारणीय Kull. zu M. 2,10.

विचारवत् (von विचार) adj. *mit Ueberlegung verfahrend* Çatr. 14,168.

विचारशास्त्र n. *die Wissenschaft (das Lehrbuch) der Erörterung,* insbes. *der Abwägung gesetzlicher Vorschriften unter einander;* es ist ein anderer Name für मीमांसाशास्त्र, insbes. पूर्व°. Verz. d. Oxf. H. 185, *b*,41. Comm. in der Einl. zu Gaim. Sarvadarçanas. 123,14. fg. 124,4. 125,6. fgg. 126,12. धर्म° 124,5.

विचारित s. u. dem caus. von चर् mit वि. Nach gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36 ist विचारित adj. von विचार.

विचारिन् (von चर् mit वि) adj. 1) *umherstreichend* ṚV. 5,84,2 (nach dem Comm.). यथाकाम° MBh. 5,7352. R. 3,25,2. मम कालविचारिणः Hariv. 4009. जलस्थल° (so die ed. Bomb.) MBh. 12,6138. सर्वत्रग° Hariv. 3447. 3726. 4600. 10914. 14536. R. Gorr. 2,21,17. 7,18,29. Mârk. P. 131,6. *durchlaufend:* नभसो ऽर्ध° Varâh. Bṛh. S. 11,31. — 2) *verfahrend:* मायाशत° so v. a. *anwendend* MBh. 5,3567. — 3) *wandelbar, wechselnd* Âçv. Çr. 9,7,24. — 4) *ausschweifend* Spr. (II) 1330, v. l. — 5) *erwägend, prüfend:* कार्याकार्य° Mṛkkh. 61,5. तत्त्वातत्त्व° Çiva MBh. 12,10391. — Vgl. अन्त°, भ°.

विचारु (2. वि + चारु) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61,9.

विचार्य adj. 1) = विचारणीय. नात्र विचार्यमस्ति *hier braucht man sich nicht lange zu bedenken* MBh. 1,7080. किं विचार्यमतः परम् 12, 6377. न विचार्यं कथं च न 13,5100. 14,1864. नैतत्ते विचार्यं वचनं मम Mârk. P. 69,18. अ° 19. Kathâs. 32,116. 75,159. — 2) schlechte v. l. für विचाल्य MBh. 15,213 in der ed. Bomb.

विचाल (von 1. चल् mit वि) m. 1) *das Auseinanderrücken, Zertheilen:* अधिकरण° P. 5,3,43. — 2) *Zwischenraum* H. 1460.

विचालन (vom caus. von 1. चल् mit वि) adj. (f. ई) *zu Schanden machend, aufhebend, vernichtend:* तस्यासीन्मानसो बुद्धिस्तदा धैर्यविचालनी R. 3,4,9.

विचालिन् (von 1. चल् mit वि) adj. *die Stelle verlassend:* कूटस्थैरविचालिभिर्वर्णैः *unwandelbar* Pat. in Mahâbh. S. 104. *weichend von* (abl.): धर्माद्विचालिनः Kathâs. 72,119.

विचाल्य (vom caus. von 1. चल् mit वि) adj. *von der Stelle zu rücken:* अविचाल्याश्च ते ते स्युरचला इव नित्यशः MBh. 15,213. अविचार्य ed. Bomb.

विचि f. = वीचि *Welle* Bhar. zu AK. 1,2,3,5 nach ÇKDr. Auch विची Dvirûpak. im ÇKDr. Nach H. an. 2,7 hat विची auch die anderen Bedd. von वीचि.

विचिकित्सन (vom desid. von 4. चित् mit वि) n. *zweifelndes Ueberlegen, das im-Zweifel-Sein über Etwas:* यस्मिन्प्रेते (loc.) इदं विचिकित्सनम् Çaṁk. zu Kathop. 1,29.

विचिकित्सा (wie eben) f. *zweifelnde Ueberlegung, ein obwaltender Zweifel in Betreff von* AK. 1,1,4,12. H. 1375. Halâj. 4,6. TBr. 2,1,2, 2. Çat. Br. 2,2,4,9. 10,6,3,2. 14,4,3,9. Khând. Up. 3,14,4. Kathop. 1, 20. Taitt. Up. 1,11,3. 5. Kaush. Br. bei Müller, SL. 406. Mâlat. 42,11. Kathâs. 82,8. Bhâg. P. 3,9,37. 11,21,3. Verz. d. B. H. No. 1016. Nîlak. 228 (Sarvadarçanas. 162,17). Lot. de la b. l. 443. विचिकित्सार्थीय Nir. 1,5. जातविचिकित्सा adj. Kathâs. 43,87. — Vgl. निर्विचिकित्स.

विचिकित्स्य (wie eben) adj. *unter Zweifeln zu überlegen, zu zweifeln:* अत्र क्वेव न विचिकित्स्यम् Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,163.

विचिकिल s. विचकिल.

विचिकीर्षित (vom desid. von 1. कर् mit वि) partic. *mit dem man eine Veränderung vorzunehmen wünscht* Bhâg. P. 11,29,34.

विचिन्त् (von 1. चि mit वि) adj. *sondernd, sichtend* VS. 4,24.

विचिति (von 2. चि mit वि) f. 1) *das Suchen, Nachforschen:* नल° Nalod. 1,2. — 2) *Prüfung, Untersuchung* oder *Sichtung, Aufzählung* (von 1. चि mit वि; vgl. 1. विचय) in छन्दो° (auch in den Nachträgen).

1. विचित्त s. u. 4. चित् mit वि.

2. विचित्त (2. वि + चित्त) adj. *besinnungslos* Suçr. 2,489,4. Accent eines mit वि° anlautenden comp., dessen zweites Glied ein adj. ist, gaṇa विस्पष्टादि zu P. 6,2,24.

विचित्तता (von 2. विचित्त) f. *Besinnungslosigkeit* Sâh. D. 177.

विचित्य (von 1. चि mit वि) adj. *zu sichten* TS. 6,1,9,1.

विचित्र (2. वि + चित्र) 1) adj. (f. आ) Accent eines mit वि° anlautenden comp., dessen zweites Glied ein adj. ist, gaṇa विस्पष्टादि zu P. 6,2,24. *a) vielfarbig, bunt, schillernd:* °माल्याभरणैः MBh. 3,2114. °वेषाभरणाः R. 1,9,22. 2,39,17. °वालुकजाल 55,31. 91,21. रुक्मबिन्दुविचित्राभ्यां चर्मभ्याम् 100,21. 3,49,3. 61,11. Spr. 2207. Varâh. Bṛh. S. 3,39. 12,11. 24,14. 43,57. 64,1. 2. Ind. St. 2,258. 278. Bhâg. P. 1,6,12. 2,1,36. 3,23,14. — *b) verschiedlich, mannichfaltig, verschiedenartig:* सुरापानस्य निष्कृतिः M. 11,98. विचित्रायुधपाणयः MBh. 3,12092. वनानि 16743. विचित्रार्थपद (आख्यान) R. 1,4,28 (3,72 Gorr.). 2,95,3. 7,20,

12. Spr. 731. 1253 (II). संसार 1623 (II). RÂǴA-TAR. 2, 113. Spr. 3276. 3359. 4990. BHÂG. P. 1, 7, 17. 3, 1, 37. 7, 24. 18, 19. 22, 20. 26, 5. 4, 14, 21. 7, 1, 10. SÂH. D. 100. NÎLAK. 114. विचित्राध्याय Verz. d. Oxf. H. 325, *a*, 31. विचित्रम् adv.: उपकूजिता BHÂG. P. 5, 2, 4. विचित्रविकृताननाः KATHÂS. 46, 201. विचित्रकृत्रिमाणि PANKAR. 2, 1, 24. नानाविचित्रकृतमण्डन KAURAP. 19. — *c*) *seltsam, absonderlich, wunderbar:* अत्यद्भुतमिदं लब्ध विचित्रमाभाति मे MBH. 3, 12029. वस्तुशक्तयः Spr. 238 (II). 1019. किमत्र विचित्रम् GÎT. 8, 8. KATHÂS. 49, 241. RÂǴA-TAR. 5, 261. SÂH. D. 722. Verz. d. Oxf. H. 250, *a*, 40. विचित्रा हि सूत्रस्य कृतिः पाणिनेः KÂÇ. zu P. 1, 2, 35. n. *eine Gattung des Paradoxon:* विचित्रं यत्तदोद्विपरीतः फलेच्छया KUVALAJ. 107, *b*. z. B. नमन्ति सन्तस्त्रैलोक्यादपि लब्धुं समुन्नतिम् ebend. PRATÂPAR. 91, *b*, 3. — *d*) (*durch Abwechselung*) *reizend, prächtig, schön:* गृहाणि R. 1, 6, 26. जलयन्त्रमन्दिर ṚT. 1, 2. तपाः Spr. 1039 (II). शय्या 1391. ब्रह्मसभा PANKAR. 1, 10, 94. कथा so v. a. *unterhaltend, amüsant* KATHÂS. 18, 68. 40, 115. 63, 5. 69, 185. HIT. 8, 18. 26, 22. °वाक्यपटुता so v. a. *Beredsamkeit* Spr. 4713. अर्थवच्च विचित्रं च न शक्यं बहु भाषितुम् 2766. कर्णे कलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम् 1884. विचित्रं गायन्ति R. 3, 79, 12. — 2) m. N. pr. *a*) eines Fürsten MBH. 1, 2697. — *b*) eines Sohnes des Manu Raukja (Devasâvarṇi) HARIV. 489. MÂRK. P. 94, 31. BHÂG. P. 8, 13, 31. — *c*) eines Reihers HIT. 120, 10. — 3) f. आ *Koloquinthe* RÂǴAN. im ÇKDR. — 4) n. SIDDH. K. 249, *b*, 1. — Vgl. वैचित्र्य.

विचित्रक (von विचित्र) 1) adj. *wunderbar* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON. जम्बुवृत्ता विस्तीर्णा ऽतिविचित्रकः PANKAR. 2, 2, 52. — 2) m. *eine Art Birke* (भूर्ज) RÂǴAN. im ÇKDR. — 3) n. *Wunder* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

विचित्रकथ (वि° + कथा) adj. *dessen Erzählungen unterhaltend sind;* m. N. pr. eines Mannes KATHÂS. 69, 20.

विचित्रता (von विचित्र) f. 1) *Mannichfaltigkeit, Abwechselung* SÂH. D. 621. — 2) *Absonderlichkeit, eine wunderbare Erscheinung* Spr. 2855, v. l.

विचित्रदेह m. *Wolke* ÇABDAK. im ÇKDR.

विचित्ररूप adj. *mannichfaltige Formen annehmend* MBH. 12, 11232.

विचित्रवर्षिन् adj. *verschiedentlich* — d. i. *nicht allerwärts* —, *nur hier und da regnend* VARÂH. BṚH. S. 5, 74.

विचित्रवीर्य m. N. pr. eines Sohnes des Çaṃtanu (Çâṃtanu) und der Satjavatî, mit dessen Gattin Vjâsa Dhṛtarâshṭra, Pâṇḍu und Vidura zeugte, MBH. 1, 94. 2441. 3803. fgg. 4069. 4126. fgg. 5906. HARIV. 970. 1825. 3009. VP. 459. BHÂG. P. 9, 22, 20. 23. °सू f. *die Mutter* Vikitravîrja's d. i. Satjavatî TRIK. 2, 8, 11. — Vgl. वैचित्रवीर्य, वैचित्रवीर्यक.

विचित्रसिंह m. N. pr. eines Mannes RÂǴA-TAR. 7, 104.

विचित्राङ्ग 1) adj. *einen vielfarbigen Körper habend.* — 2) m. *a*) *Pfau* ÇABDAR. im ÇKDR. — *b*) *Tiger* ÇABDAK. im ÇKDR.

विचित्रापीड m. N. pr. eines Vidjâdhara KATHÂS. 48, 115.

विचित्रित (von विचित्र) adj. *bunt gemacht, vielfarbig; verziert, geschmückt:* शक्ति MBH. 5, 7210. अलंकृतस्तु स गिरिर्नानारूपैर्विचित्रितैः। बभौ रत्नमयैः कोशैः संवृतः 14, 1755. नभस्ताराविचित्रितम् R. GORR. 2, 62, 30. 3, 28, 31. 49, 35. मह्नीम् — तोयैः प्रवलैर्विचित्रिताम् 5, 80, 31. 6, 83, 40. BHÂG. P. 4, 6, 10. 8, 2, 3. PANKAR. 1, 7, 55. भवनं हरिणप्लुतशावविचित्रितम् VARÂH. BṚH. S. 104, 28. KHANDOM. 119. वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय कुसुमायुधाय Spr. 2957.

विचिन्नर (विचिन्नार) s. u. विज्जिल.

विचिन्तन (von चिन्त् mit वि) n. *das Denken an Etwas:* ग्रैर्ध्वदेहिकधर्माणामासीद्युक्तो विचिन्तने MBH. 12, 7883. अ° 3, 69.

विचिन्तनीय (wie eben) adj. *in Betracht zu ziehen, zu beobachten* VARÂH. BṚH. 18, 20.

विचिन्ता (wie eben) f. *Gedanken, Sorge:* अस्माकं तु विचिन्तेयं कथं सागरलङ्घनम्। स्यादिति R. 4, 62, 3. विचिन्ताज्ञान° MBH. 14, 1240 fehlerhaft für विचित्राज्ञान°, wie die ed. Bomb. liest.

विचिन्तितर् (wie eben) nom. ag. *der an Etwas denkt:* कामानामविचिन्तिता MBH. 5, 2446.

विचिन्त्य (wie eben) adj. *in Betracht zu ziehen* VARÂH. BṚH. S. 5, 17. 25, 1. 44, 18. 96, 13. *zu beobachten* 89, 18. *woran man denken muss:* हृदि BHÂG. P. 10, 69, 18. *worauf man seine Gedanken, seine Sorge zu richten hat:* किमत्र विचिन्त्यम् PRAB. 84, 3. *auszudenken, ausfindig zu machen:* अभ्युपाय DAÇAK. 79, 8. अ° *auf den man keine Aufmerksamkeit richten kann, unhütbar, ohne alle Aufsicht seiend:* °कृपद्विपा (अपन्त्रित die andere Rec.) R. GORR. 2, 96, 22. — Vgl. दुर्विचिन्त्य.

विचिन्वत्कँ (von विचिन्वत्, partic. praes. von चि mit वि) adj. *sichtend, unterscheidend* (nach MAHIDH.) VS. 16, 46. Ind. St. 2, 43.

विचिन्वार s. u. विज्जिल.

विचिलक m. *ein best. giftiges Insect* SUÇR. 2, 288, 13.

विचीरिन् HARIV. 14859 fehlerhaft für त्रिचारिन्, wie die neuere Ausg. hat.

विचूर्णन (von चूर्णय् mit वि) n. *das Zerreiben* SUÇR. 2, 2, 1.

विचूर्णीभू = चूर्णीभू ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 88.

विचूलिन् adj. *keinen Haarbüschel auf dem Scheitel habend* HARIV. 11138. — Vgl. चूलिन्.

विचृत् (von चर्त् mit वि) f. 1) *Lösung:* कृण्वन्संचृतं विचृतमभिष्टये ṚV. 9, 84, 2. — 2) du. N. zweier Sterne AV. 2, 8, 1. 6, 100, 2. 122, 3. N. des 17ten Nakshatra TS. 4, 4, 10, 2; vgl. Journ. of the Am. Or. S. 6, 337.

1. विचेतन (von 4. चित् mit वि oder 2. वि + चेतन) adj. s. अ°.

2. विचेतन (2. वि + चेतना) adj. (f. आ) *bewusstlos, nicht das volle Bewusstsein habend, geistesabwesend* MBH. 3, 10050. 11078 (S. 572). HARIV. 4939. R. 1, 32, 18 (33, 16 GORR.). 74, 15. 2, 75, 7. 45. R. GORR. 2, 45, 32. 65, 45. 3, 26, 15. 40, 34. 42, 42. 43, 24. 64, 6. 68, 21. Spr. 911 (so v. a. *entseelt*). 2970 (so v. a. *unvernünftig, dumm*). KATHÂS. 17, 27. BHÂG. P. 6, 1, 63. PANKAR. 1, 14, 64. 78. PANKAT. 43, 11.

3. विचेतन (von einem nicht vorhandenen denom. विचेतय्) adj. (f. ई) *bewusstlos machend:* नृणामिव विचेतनी PANKAR. 2, 8, 10.

विचेतयितर् (vom caus. von 4. चित् mit वि) nom. ag. *sichtbar machend, unterscheidend* AIT. BR. 6, 135.

विचेतर् (von 1. वि mit वि) nom. ag. *Sichter* ÇAT. BR. 3, 3, 2, 8.

विचेतव्य (von 2. चि mit वि) adj. *zu suchen:* सीता R. 4, 44, 116. *zu durchsuchen:* मही MBH. 3, 16215. R. 4, 40, 27. 41, 74. 44, 34. *zu untersuchen, zu prüfen:* इन्द्रियाणि च कर्ता च विचेतव्यानि भागशः MBH. 12, 10500. बलाबलम् R. 5, 82, 11. *ausfindig zu machen:* उपाय KATHÂS. 102, 16.

विचेतस् (2. वि + चे°) adj. 1) *in die Augen fallend:* Wasser ṚV. 1,

83,1. — 2) *verständig, klug:* Menschen ṚV. 7,7,4. 8,13,20. Götter 1, 45,2. 190,4. 10,132,6. अग्निरङ्ग विचेता: स प्रचेता: 79,4. 2,10,1. 4,7,3. Indra 6,24,2. 8,46,14. die Açvin 5,74,9. — 3) = दुर्मनस्, विमनस्, अन्तर्मनस् H. 435. *nicht bei vollem Bewusstsein seiend, ausser sich seiend* Hariv. 9878. R. 2,47,18. 48,28. R. Gorr. 2,80,24. 4,16,53. Bhâg. P. 6, 11,6. 10,11,48. 19,4. — 4) *unvernünftig, dumm* MBh. 3,1948. Spr. 4558.

विचेती (von विचेतस्) adv. in Verbindung mit कर्, भू und अस् P. 5,4,51, Schol.

1. विचेय (von 1. चि mit वि) adj. *zu sichten, zu sondern, zu zählen* (so v. a. *gering an Zahl*): °तारका Ragh. 3,2.

2. विचेय (von 2. चि mit वि) 1) adj. *zu suchen:* जनकात्मजा R. 4,41, 34. *zu durchsuchen:* आलया: 40,32. — 2) n. *Untersuchung, Nachforschung:* विचेयं कर् *eine Untersuchung anstellen* R. 4,47,7.

विचेष्ट (2. वि + चेष्टा) adj. *regungslos* R. 2,63,49.

विचेष्टन (von चेष्ट् mit वि) n. *Bewegung der Glieder:* शरीरस्य MBh. 12,412. 10549. सिन्धुतीरविचेष्टनै: eines Pferdes Ragh. 4,67.

विचेष्टा (wie eben) f. 1) dass. s. निर्विचेष्ट. — 2) *das Auftreten, Gebahren, Benehmen, Betragen, Treiben* MBh. 5,767. 12,542. Kâm. Nîtis. 15,32. Bhâg. P. 10,30,2. Vgl. दुर्विचेष्ट.

विचेष्टित (wie eben) n. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) = विचेष्टा 1) Ragh. ed. Calc. 4,67. मन्दविचेष्टिता ein Blutegel Suçr. 1,41,19. नयनभ्रूविचेष्टितै: R. 1,9,48. — 2) = विचेष्टा 2) Jâǵń. 1,337. MBh. 3,2923. R. 6,109,4. Ragh. 7,5. 17,76. अनङ्ग° Vikr. 28. विधि° Kathâs. 52,332. 99,40. Brahma-P. in LA. (III) 49,6. Bhâg. P. 1,5,13. Pańkat. 95,16. 98,3. — विचेष्टित Hariv. 10200 in beiden Ausgg. fehlerhaft für विवेष्टित.

विच्चिर्के m. *ein best. Vogel* ṚV. 10,146,2.

विच्छन्द m. *Palast* H. 1015. — adj. s. u. विच्छन्दस् 1) *a*).

विच्छन्दक m. dass. AK. 2,2,10. Halâj. 2,150.

विँच्छन्दस् (2. वि + छ°) 1) adj. *a*) *nicht metrisch,* f. nämlich ऋच् Ait. Br. 5,4. Çat. Br. 10,3,2,12. ṚV. Prât. 17,7. pl. विच्छन्दा: VS. 23,34. — *b*) *verschieden im Metrum* Ait. Br. 1,21.25. Kâṭh. 25,1. Pańkav. Br. 8,8,24. Âçv. Çr. 6,5,14. Lâṭj. 6,9,3. — 2) n. *ein best. Metrum* Gârgja in Ind. St. 8,279, N.

विच्छर्दक m. = विच्छन्दक Râjam. zu AK. 2,2,10 nach ÇKDr.

1. विच्छाय (1. वि + छाया) n. *Schatten von Vögeln* AK. 3,6,2,26. f. आ dass. Bhâg. P. 10,12,8.

2. विच्छाय (2. वि + छाया) 1) adj. (f. आ) *alles Farbenspiels —, alles Glanzes bar, kein Ansehen habend;* von einem Menschen Bhâg. P. 1,14, 24. von einer Kuh 16,19.20. गृह Kathâs. 2,49. निशीथस्था पद्मिनी 16,45. सुराङ्गनासर्ग 45,186. — 2) m. = मणि Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

विच्छायता (von 2. विच्छाय) f. *Mangel alles Glanzes, — alles Ansehens:* अपच्छत्त्रेण शिरसा कामत्रपेश्वरो ऽपि तम्। नमन्विच्छायतां भेजे यत्तदा न तदद्भुतम्॥ Kathâs. 19,113. रत्नादीपास्तत्कान्तिजिता विच्छायतां ययु: 28,4.

विच्छायय् (wie eben), °यति *des Glanzes berauben:* राहुग्रसनसंभूतं क्षणो विच्छाययेद्विधुम् Spr. (II) 1172.

विच्छायीकर् (2. विच्छाय + कर्) dass. Kathâs. 48,61.

विँच्छित्ति (von 1. छिद् mit वि) f. 1) (*das Abschneiden*) *Unterbrechung, Störung, Hemmung, Aufhebung* Trik. 3,3,184 (= छेद, विनाश). H. an. 3,303. Med. t. 159. यज्ञस्य TBr. 3,2,4,1. 7,1,2. वृत्य° Gobh. 4,8,12. 9,9. दिनकररथमार्गविच्छित्तये ऽभ्युद्यतं चलच्छृङ्गम् (विन्ध्यस्य) Varâh. Bṛh. S. 12,6. वंशस्य *des Geschlechts* 68,3. सत्समागम° Kâm. Nîtis. 14,44. संताप° Spr. 794. संसार° 1405. — 2) *eine ungewöhnliche, absonderliche, piquante Auffassung* oder *Darstellung* Sâh. D. 41,3. 228,1. 253,4. 264, 8. 711. Kuvalaj. 127,*b*. — 3) *eine durch ihre Einfachheit reizende Toilette* Bhar. 3,5 beim Schol. zu Nalod. 2,55. Daçar. 2,36. Sâh. D. 125. 138. Pratâpar. 55,*b*,6. H. 507. — 4) *Schminke* Trik. 2,6,40. Med. Çâk. 164. — 5) *Hausgrenze* (गेहावधि) H. an. — 6) = अङ्गहार H. an. = हारभेद Med.

विच्छिन्न s. u. 1. छिद् mit वि. Davon °ता f. *Auseinandergerissenheit:* न चातिरसतो वस्तु दूरं विच्छिन्नतां नयेत् Daçar. 3,29 (Sâh. D. 139,20).

विच्छेद (von 1. छिद् mit वि) m. 1) *das Zerspalten, Zerhauen:* कवच° Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,21. *Brechung, Theilung:* यातस्य विच्छेदं वारिवाहजाले सुरधनुष: Kir. 7,16. — 2) *Ausrottung, Vertilgung, Vernichtung:* दायाद° Râǵa-Tar. 8,1030. वैरि° 1249. सर्ग° Kathâs. 20,70. अस्मज्ज्ञाते: Pańkat. ed. orn. 45,1. — 3) *Trennung:* लालितानां स्वज्ञातानाम् von Spr. 2666. Khandom. 78. प्रिय° Sâh. D. 147. कान्तायाः कान्तविच्छेदो मरणादतिरिच्यते Brahmavaiv. P. Ganapatikh. im ÇKDr. — 4) *Unterbrechung, Hemmung, Störung, Aufhebung:* स्नेहस्य विलापरुदितस्य च MBh. 12,5741. हरचरणस्मरण° 13,774. श्वासप्रश्वासयो: Jogas. 2,49. Sarvadarçanas. 174,13.18. 175,1. संप्रदाय° 127,18. Râǵa-Tar. 5,139. Kâm. Nîtis. 10,5.14. पिण्ड° Ragh. 1,66. कथा° Vikr. 60,6. 120,22. Varâh. Bṛh. S. S. 4, Z. 7. वृत्ति° Pańkat. ed. orn. 45,1. Sâh. D. 8,22. 139,7. 215. 319. Çit. beim Schol. zu Çâk. 98. Devar. bei Roth, Nir. LI. Kusum. 52,10. पिपासा° Kull. zu M. 5,128. स्वार्थ° so v. a. *Beeinträchtigung* Kâm. Nîtis. 17,57. अँ° Çat. Br. 6,4,2,10. 9,5,1,44. Sarvadarçanas. 127,16. fg. अविच्छेदेन *ununterbrochen* 115,21. अविच्छेदकृता गिर: MBh. 8,2514. तेन सार्धमविच्छेदस्थानम् Pańkar. 1,1,21. — 5) *Unterschied, Verschiedenheit* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 159. Bhâg. P. 2,10,8. प्रतिशरीरं जीवविच्छेद: Sarvadarçanas. 45,12. धातुविच्छेदै: so v. a. *mit verschiedenen Erzen* MBh. 3,11090. — 6) gramm. *Einschnitt, Brechung* ṚV. Prât. 6,13. VS. Prât. 4,160. = यति *Cäsur* Ind. St. 8,363. — Vgl. पद°, पाठ°.

विच्छेदन (wie eben) 1) adj. *trennend, unterbrechend:* संधिबन्ध° Suçr. 1,156,7. — 2) n. *a*) *das Abhauen* Varâh. Bṛh. S. 59,14. — *b*) *das Beseitigen, Aufheben:* वाञ्छा° Spr. 2772. — *c*) *das Unterscheiden* MBh. 5,799.

विच्छेदिन् (wie eben und von विच्छेद) adj. 1) *zerstörend, vernichtend* MBh. 12,10989. Pańkar. 4,3,109. — 2) *abgebrochen, unterbrochen, mit Zwischenräumen versehen:* (वारिमुच:) सोपानविच्छेदिन: Varâh. Bṛh. S. 28,15.

विच्युति (von 1. च्यु mit वि) f. 1) *das Abfallen* (eig. und übertr.) Kathâs. 53,88 (wo nach Kern कुवलयजस्सु गुणा° zu lesen ist). — 2) *Trennung von* (abl.): तनयाभ्याम् MBh. 3,2565. — Vgl. गर्भ°.

विछ्, विच्छाययति (गतौ) Dhâtup. 28,129. P. 3,1,28. Die Erweiterung des Stammes kann auch in den allgemeinen Temporibus eintreten 31. विच्छाययति ist auch caus. von 1. छा mit वि (s. Nachträge) und denom. von विच्छाय (s. विच्छायय्). विछ्, विच्छयति (भाषार्थ oder भासार्थ) Dhâ-

tup. 33,100.

1. विज्, विनक्ति (भयचलनयोः) Dhâtup. 29,23. विजते (auch विजति; s. u. उद्), विविज्रे, अविजे 1. sg. अभि विक्त 3. sg. अविजिष्ट Vop. 13,8. der Wurzelvocal wird vor dem Bindevocal nicht verstärkt nach P. 1,2,2. partic. विक्त, später विग्न. *sich schnellen, losfahren*, ἀΐσσειν. a) *emporschiessen*, von der Wasserwoge (vgl. αἶγες): ऊर्ध्वः समुद्रो विजते Çat. Br. 7,1,1,14. Çâñkh. Br. 3,1. — b) *zurückfahren, flüchtig davoneilen* Ait. Br. 3,4. आयुधेभ्यः 7,19. गौरो न क्षेप्नोरविजे ज्यायाः Ṛv. 10,51,6. AV. 8,7,15. यापसर्पं विजमाना 12,1,37. — partic. विग्न *in Aufregung gerathen, aufgeregt, gemüthlich erregt, bestürzt* Ragh. 14,68. Kathâs. 22,178. 24,32. 30,113. 33,117. 42,32. 45,286. 46,97. 199. 48,119. 52,52. 53,48. 59,20. 61,65. 66,97. 106,186. — Vgl. वेग.

— caus. 1) *schnellen:* अपां वेगमवेजयत् Pañkav. Br. 14,5,15. वातो ऽतिमात्रं प्रववौ समुद्रानिलवेजितः so v. a. *verstärkt* MBh. 12,12388. — 2) *in Aufregung —, in Unruhe versetzen:* काश्चित्सवत्साः पतिता गावः शीकरवेजिताः (°वीजिताः die neuere Ausg., welches Nîlak. durch चलिताः oder भीताः erklärt, also auf विज् zurückführt) Hariv. 3915. Ragh. 8,39. 19,35.

— intens. *zusammenfahren, entfliehen:* त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया Ṛv. 1,80,14. भरद्यदि विरतो वेविजानः 4,26,5. स मध्व आ युवते वेविजान इत्कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा 9,77,2. — Vgl. वेविज.

— अभि *umkippen, umschlagen:* मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः Ṛv. 1,162,15. — Vgl. अभिवेग.

— आ, partic. आविग्न *in Aufregung gerathen, bestürzt* MBh. 3,12087. 7,1406 = 3664. 8541. Hariv. 13572. °चेतस् Kathâs. 32,18. अनाविग्नमनस् (अनुद्विग्न° die neuere Ausg.) Hariv. 4234. — Vgl. आवेग. — caus. *in Aufregung versetzen, beunruhigen:* स रामलक्ष्मणौ — शरैः — भृशमावेजयामास R. 6,20,8.

— समा, partic. °विग्न *in Aufregung gerathen, bestürzt:* भय° R. 5,56,11.

— उद् 1) *aufschnellen, heraufschlagen:* अपां वेगासः पृथगुद्विजन्ताम् AV. 4,15,3. — 2) *schaudern, zusammenfahren, zurückschrecken, sich scheuen;* die Person oder die Sache, vor der man zurückschrickt u. s. w., im abl. oder gen., selten instr.: शयानस्य हि ते भूमौ कस्मान्नोद्विजते वपुः Hariv. 4815. यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः Bhag. 12,15. तेजसस्तपसश्चैव कोपस्य च महात्मनः। त्वमप्युद्विजसे यस्य MBh. 1,2922. 2929. 2933. 2,2221. उद्वेजते मे हृदयम् 3,2322. 14660. 4,561. गवां मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कथं च न 13,3748. 4815. R. 3,76,8. 5,29,32. Spr. 10 (II). 1258 (II). ययास्य वाचा पर उद्विजेत 1554. 4465. 5187. तेन जीवितादुद्विजमानेन Mâlatîm. 51,1. Pañkat. III,191. Bhâg. P. 4,11,32. 5,9,3. 24,3. 7,9,43. 8,22,3. उद्विविजे 10,43,18. यस्मान्नोद्विविजिष्ठास्त्वम् Bhaṭṭ. 6,69. act.: न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् Bhag. 5,20. MBh. 1,2922. 3,560. 2585. स्वकर्मभिर्मद्व्यालैर्नोद्विजन्ति 11,170. मरणात् 13,5707. 14,1299. R. 5,35,17. 6,3,15. Spr. 2939. उद्विजन्तः Bhâg. P. 6,9,20. 7,9,13. उद्विग्न P. 7,2,14, Schol. *zusammenfahrend, schaudernd, zurückschreckend, erschrocken* MBh. 5,7191. तस्य दुश्चरितैः 13,3144. भयोद्विग्न R. 1,9,12. R. Gorr. 1,42,1. 3,50,4. Varâh. Bṛh. S. 5,88. R. 1,6,11 (19 Gorr.). 2,74,16. 3,1,1. 4,9,98. तत्र 6,95,4. Suçr. 2,384,3. (पक्षिणः) क्रोशन्ति भृशमुद्विग्ना विषपन्नगदर्शनात् Kâm. Nîtis. 7,11. Ragh. 16,56. Spr. 853 (II). 1401 (II). 2628. Kathâs. 28,132. 32,11. °शङ्किता 45,262. 281. 292. 51,206. Bhâg. P. 5,2,13. मज्जनात् 8,30. 9,6,33. Mârk. P. 23,2. मनस् R. 3,74,11. °मानस, °मनस् MBh. 5,6040. R. 7,44,21. Bhâg. P. 1,13,30. 5,24,29. Hit. 4,13. °धी Bhâg. P. 8,16,8. °चित्त 4,5,9. 7,4,33. °चेतस् Mârk. P. 74,4. °हृदय R. 4,1,3. Bhâg. P. 1,14,24. °चञ्चलकटाक्ष Mṛkkh. 9,20. °दृश् Bhâg. P. 4,5,12. 10,6. °लोचन 8,8,43. स्पर्शोद्विग्नौ पादौ Suçr. 1,253,10. °वर्णा तापसम् *eine Aufregung verrathend* Daçak. 59,7. अनुद्विग्न MBh. 12,5309. 13,1093. दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः Bhag. 2,56. — 3) *zurückschrecken vor* so v. a. *ablassen, abstehen von:* नायमुद्विजितुं कालः स्वामिकार्याद्भवादृशाम् Bhaṭṭ. 7,92. न पुनः काश्चिदुद्वेजिष्यति चाग्रहात् Çatr. 14,234. — 4) *in Schrecken jagen:* कच्चिन्नोग्रेण दण्डेन भृशमुद्विजसे प्रजाः MBh. 2,178. — Vgl. 1. उद्वेग und निरुद्विग्न. — caus. *in Schrecken jagen, schaudern machen, scheu machen:* उद्वेजिता वृष्टिभिः Kumâras. 1,6. इमे मार्जारका उद्वेजयन्ति नः MBh. 1,8427. 13,3047. 3439 (med.). 14,1299. 2838. Hariv. 8747. R. 3,1,18. 5,29,12. 34. Mṛkkh. 141,13. Spr. (II) 1056. 1261. fgg. (I) 1649. 4239. 4467. Kathâs. 74,157. Râga-Tar. 1,254. 4,667. 6,277. Daçak. 63,10. 68,14. Bhâg. P. 5,18,15. 26,33. 9,8,16. Pañkat. 209,23. 222,7. ed. orn. 64,13. उद्वेजयति जिह्वाग्रं कुर्वञ्चिमिचिमां कटुः *erschrecken, zusammenfahren machen* Vâgbh. 10,5 (vgl. Suçr. 1,155,5). जलेन *durch kaltes Wasser einen Bewusstlosen beleben (schaudern machen)* Suçr. 2,22,14. उद्वेजयति सूक्ष्मो ऽपि चरणं कण्टकाङ्कुरः so v. a. *belästigen, quälen* Spr. 2827. Kumâras. 1,11. Spr. 1526. — Vgl. उद्वेजन fg.

— पर्युद् *schaudern vor* (acc.): दुःखस्यानुचिता दुःखं वने पर्युद्विजिष्यति R. 2,66,9.

— प्रोद्, partic. प्रोद्विग्न *eine Unruhe an den Tag legend:* °तारापतलोललोचना Bhâg. P. 8,12,20. — caus. *in Schrecken jagen* MBh. 13,6715. Bhâg. P. 10,38,14.

— समुद् *zusammenfahren, zurückschrecken:* समुद्विविजिरे MBh. 6,632. समुद्विग्न = उद्विग्न 5,7188. R. Gorr. 2,67,21. 5,91,10. Brahma-P. in LA. (III) 50,2. Bhâg. P. 7,5,5.

— प्र *davon stürzen:* सिन्धवः प्र विविज्रे जवेन Ṛv. 10,111,9. भूमी रेजते अर्धनि प्रविक्ते *weichend, Einsturz drohend* 6,50,5. — caus. 1) *abschnellen, schleudern:* शरैः सुप्रवेजितैः MBh. 7,8590. — 2) *verscheuchen* MBh. 4,1052.

— वि, partic. विविग्न *sehr erschrocken* Ragh. 7,45. 18,12. Kumâras. 1,57. Kathâs. 46,5. 117,145. Râga-Tar. 5,339. Bhâg. P. 8,19,10. Mârk. P. 136,10. — caus. *in Schrecken jagen* Hariv. 568. प्रतोदितः st. विवेजितः die neuere Ausg., Nîlak. erwähnt eine Lesart विरेजितः.

— सम् *zusammenfahren, entfliehen:* यथा मृगाः संविजन्ते पुरुषादधि AV. 5,21,4. 6. 8,7,15. 11,9,12. मा भेर्मा सं विक्थाः VS. 1,23. 6,35. — संविग्न 1) *aufgeregt, bestürzt, erschrocken, scheu:* शोक° Bhag. 1,47. MBh. 3,2777. R. 2,72,18. रोष° 5,56,131. अनर्थदुःख° R. Gorr. 2,10,12. भय° 3,48,1. 5,38,1. MBh. 3,2561. 5,7187. Hariv. 1209. 10780. R. 2,30,2. Bhâg. P. 3,15,3. 20,21. 4,28,46. 6,13,4. 7,4,21. 10,68,49. Bhaṭṭ. 9,1. सु° MBh. 14,129. R. 7,80,5. भयसंविग्नया वाचा *aufgeregt, unsicher* MBh. 1,6763. बाष्पसंविग्नया गिरा Hariv. 3666. — 2) *beweglich, hinundhergehend:* पूरकरेचकसंविग्नवलि° Bhâg. P. 4,24,50. — 3)

gefallen: कूप° Bhâg. P. 9, 19, 7. संलग्ना ed. Bomb. — Vgl. संवेग. — caus. erschrecken: मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथाः ṚV. 8, 68, 8.

2. विज् f. nach Sâj. so v. a. flüchtiger Vogel oder erschreckend; es scheint ein Spielausdruck zu sein: अघ्नीवे कृतुर्विजं ग्रामिनाना ṚV. 1, 92, 10. 2, 12, 5.

3. विज्, वेवेक्ति, वेविक्ते (पृथग्भावे) Dhâtup. 25, 12. P. 7, 4, 75. Vop. 10, 9. erhält keinen Bindevocal Kâr. 2. 9 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. — Vgl. 1. विच्.

विजग्ध s. u. 1. जग् mit वि und vgl. वैजग्धक.

विजञ्जप (vom intens. von जप् mit वि) adj. flüsternd Nir. 5, 22.

विजट (2. वि + जटा) adj. nicht in Flechten gebunden: Haar Çâñkh. Gṛhj. 1, 28. विजटीकर् aufflechten: केशान् P. 3, 1, 21, Schol.

विजन (2. वि + 1. जन) adj. menschenleer, einsam AK. 2, 8, 1, 22. 3, 4, 14, 85. H. 742. Halâj. 4, 23. वन M. 10, 107. 11, 105. MBh. 1, 5896. 3, 2384. R. 1, 9, 26. 63, 6. 2, 26, 24. 29, 21. 5, 28, 2. Suçr. 1, 241, 7. Spr. 2006. Kathâs. 10, 164. Brahma-P. in LA. (III) 49, 7. subst. ein einsamer Ort: निन्ये विजनम् Vop. 24, 13. विजनासेविनी Kathâs. 71, 95. विजने an einem einsamen Orte, fern von allen Menschen, ohne Zeugen, im Geheimen MBh. 1, 4666. 2, 1790. 3, 2748. 14, 150. R. 2, 53, 28. R. Gorr. 2, 114, 34. Spr. 4208. Varâh. Bṛh. S. 43, 16. Bṛh. 5, 16. Kathâs. 4, 114. 10, 178. 12, 143. 13, 3. 16, 7. 23, 1. 27, 152. 29, 8. 32, 157. Râǵa-Tar. 4, 31. 282. Bhâg. P. 1, 6, 21. 7, 9, 44. Pańkat. 58, 8. 225, 25. Hit. 87, 22. Vet. in LA. (III) 7, 13. विजनेषु Mârk. P. 118, 12. विजनं कर् alle Zeugen entfernen: अत्र विजनं कृत्वा Kathâs. 38, 53. 40, 100. 75, 172. राज्ञा विजनं कृतम् Vet. in LA. (III) 3, 9.

विजनता (von विजन) f. Menschenleere, Einsamkeit: देशस्य Sâh. D. 20, 14.

विजनन (von जन् mit वि) n. das Zeugen, Gebären H. 541.

विजनीकर् (विजन + 1. कर्) alle Zeugen entfernen R. Gorr. 2, 68, 46. Kathâs. 102, 118. von einer geliebten Person trennen: अहं विजनीकृता R. 7, 48, 6.

विजन्मन् (2. वि + ज°) m. Bez. einer Mischlingskaste, des Sohnes eines ausgestossenen Vaiçja M. 10, 23.

विजन्या (von जन् mit वि) adj. f. die gebären soll Pâr. Gṛhj. 2, 7 in Z. d. d. m. G. 7, 537.

विजपिल adj. = पिच्छिल Halâj. 3, 56. विजवल v. l. — Vgl. विज्जल.

विजय (von 1. जि mit वि) 1) m. a) Streit um den Sieg; Sieg, Uebermacht; Besiegung, Eroberung AK. 2, 8, 2, 78. H. 803. an. 3, 505. Med. j. 103. ṚV. 10, 84, 4. AV. 10, 2, 5. विजयमुपयन्तः in den Kampf ziehend TS. 1, 5, 1, 1. TBr. 1, 1, 6, 1. Çat. Br. 2, 2, 3, 2. 4, 3, 3, 15. 13, 2, 7, 13. Kenop. 14. अनित्यो विजयो यस्माद्दृश्यते युध्यमानयोः Spr. 294 (II). संदिग्धो विजयो युधि 3166. 2438. M. 10, 119. विजयमवाप्य MBh. 1, 1187. विजयायाभिषेचितः 1989. विजयाभिषेक Verz. d. Oxf. H. 45, a, 23. MBh. 1, 7655. तद्युद्धे विजयं चात्मनो मरुत् (s. u. मरुत्) 7, 5650. R. 2, 40, 9. विजयमुक्तास्तैः (विजयं पृष्टस्तैः ed. Bomb.) 71, 30. Kumâras. 3, 19. Ragh. 12, 44. Çâk. 48. स भवान्विजयाय प्रतिष्ठताम् 95, 11. Varâh. Bṛh. S. 4, 31. 18, 5. 73, 3. नृपति° 36, 2. Bhâg. P. 2, 10, 4. 6, 11, 20. धर्म° der Sieg des Rechts Râǵa-Tar. 3, 329. अन्यविद्विषाम् Besiegung Kathâs. 34, 192. कामादि° Prab. 70, 5. 73, 16. Pańkat. 168, 25. दिशाम् Eroberung Bhâg. P. 9, 11, 13. त्रैलोक्य° MBh. 1, 7625. 7641. R. 1, 46, 14 (पुत्र mit der ed. Bomb. zu lesen). 4, 10, 4. पृथिवी° MBh. 4, 137. Kathâs. 17, 47. विश्व° Bhâg. P. 3, 9, 25. — b) der Gewinn, das Eroberte, Beute Kâtj. Çr. 20, 4, 27. — c) bildliche Bez. des Schwertes H. ç. 143. MBh. 12, 6204. der Strafe 4428. — d) Götterwagen (विमान) H. an. — e) Bez. einer best. Stunde des Tages (मुहूर्त) R. 1, 73, 8. der 17ten Ind. St. 10, 296. die Geburtsstunde Kṛshṇa's Hariv. 3320. Weber, Kṛshṇaǵ. 236. 237. 262. — f) Bez. des 5ten Monats Ind. St. 10, 298. — g) Bez. des 27ten (1ten) Jahres im 60jährigen Jupitercyclus Varâh. Bṛh. S. 8, 38. Verz. d. Oxf. H. 331, b, 2 v. u. Weber, Ǵjot. 24. 99. Journ. of the Am. Or. S. 6, 180. — h) Bez. einer best. Truppenaufstellung Kâm. Nîtis. 19, 44. — i) Bein. Jama's Çabdak. im ÇKDr. — k) N. pr. verschiedener Männer: ein Sohn Ǵajanta's (eines Sohnes des Indra) Hariv. 8914. 8920. Vasudeva's 1956. Kṛshṇa's Bhâg. P. 10, 61, 12. ein Diener Vishṇu's 3, 16, 2. 8, 21, 16. Padmapâṇi's Wilson, Sel. Works 2, 24. ein Sohn des Svarokis Mârk. P. 66, 5. 6. ein Muni Hariv. 9573. ein Fürst MBh. 1, 226. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's (?) 7, 6851. ein Krieger auf Seiten der Pâṇḍava 7012. einer der acht Rathgeber Daçaratha's R. 1, 7, 3. 7, 59, 3, 26. Weber, Râmat. Up. 302. Bein. Arǵuna's Trik. 2, 8, 16. H. ç. 137. H. an. Med. MBh. 4, 176. 804. 1376. 1381. 12, 896. 14, 2423. 2477. Bhâg. P. 1, 9, 33. 39. ein Sohn Ǵaja's Hariv. 1514. fg. VP. 390. Bhâg. P. 9, 13, 25. Kańku's (Kuńku's) Hariv. 758. fg. VP. 373. Saṁǵaja's VP. 412. Sudeva's Bhâg. P. 9, 8, 1. 2. des Purûravas 15, 1. 3. des Bṛhanmanas (oder Grosssohn desselben) Hariv. 1707. fg. VP. 445. fg. Bhâg. P. 9, 23, 11. ein Sohn des Ǵagńaçrî 12, 1, 25. VP. 473. einer der 9 weissen Bala bei den Ǵaina H. 698. einer der 5 Anuttara 94, Schol. der 20te Arhant der zukünftigen Avasarpiṇî 56. Vater des 21ten Arhant's der gegenwärtigen Avas. 38. Diener des 8ten Arhant's der gegenwärtigen Avas. 42. ein Sohn Kalki's Kalki-P. 13 im ÇKDr. Kalpa's Kâlikâ-P. ebend. ein Fürst von Kaçmîra Râǵa-Tar. 2, 62. — 7, 1493. 8, 506. 520. 670. 673. 691. 1162. 1265. 1267. Burn. Intr. 377, N. 1. 399, N. 2. Verz. d. Oxf. H. 16, b, 14. 154, a, 22. fg. — l) pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6, 353 (VP. 188). — m) N. pr. eines Hasen Kathâs. 62, 32. Hit. 82, 17. fg. — n) N. des Wurfspiesses Rudra's, personif. MBh. 3, 14551. 14553. — 2) f. आ a) eine best. Pflanze Suçr. 2, 373, 20. 415, 21. Varâh. Bṛh. S. 48, 39. = हरीतकी Ǵaṭâdh. im ÇKDr. = वचा Ratnam. ebend. = जयन्ती, शेफालिका, मञ्जिष्ठा, eine Art Çamî, अग्निमन्थ und त्रैलोक्यविजया Râǵan. ebend. — b) Bez. einer best. Tithi H. an. Med. N. der 3ten, 8ten und 13ten Tithi Varâh. Bṛh. S. 99, 2. der 12te Tag in der lichten Hälfte des Monats Çrâvaṇa (an dem Kṛshṇa geboren wurde) Bhâg. P. 8, 18, 6. der 10te Tag in der lichten Hälfte des Monats Âçvina (ein Festtag zu Ehren der Durgâ) As. Res. 3, 261 nach Haught. die 7te Nacht im Karmamâsa Ind. St. 10, 296. — c) N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 19, a, 31. 95, a, 8. im Gefolge Kubera's (विजय ed. Bomb.) MBh. 2, 415. Bein. der Durgâ H. ç. 52. H. an. MBh. 4, 194. 6, 798. Hariv. 3271. 9426. Gattin Jama's Ǵaṭâdh. im ÇKDr. eine Freundin der Durgâ Trik. 1, 1, 54. H. 205. H. an. Med. Wilson, Sel. Works 2, 38. die Mutter des 2ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 39. eine Tochter Da-

ksha's R. 1,23,14 (24,15.17 Gorr.). Mutter verschiedener Suhotra's MBh. 1,3786. 3832. Bhâg. P. 9,22,30. — d) N. des Kranzes von Krshna MBh. 8,3855. — e) N. *einer der* Kumârî (*kleines Flaggenstöckchen*) *an* Indra's *Banner* Varâh. Brh. S. 43,40. — f) N. pr. eines Speers R. 1, 29,12 (30,13 Gorr.). — g) Bez. eines best. Zauberspruchs Bhatt. 2,21. — 3) n. a) *die* (giftige) *Wurzel der* विजया *genannten Pflanze* Suçr. 2, 251,15. — b) N. pr. eines heiligen Gebietes in Kaçmîra Kathâs. 51, 48. 66,5; vgl. विजयक्षेत्र. — 4) adj. *siegreich* H. ç. 151. *zum Siege führend, Sieg verkündend:* चापं विजयं महत् MBh. 8,2326. निमित्तानि विजयानि (विजयाय ed. Bomb.) बहूनि 7,2998. — Vgl. त्रैलोक्यविजया, दिग्विजय (auch Bhâg. P. 9,11,25), पवन°, प्र°, मधाचार्य°, विशाल°.

विजयक adj. = विजये कुशलः gaṇa आकर्षादि zu P. 5,2,64.

विजयकण्टक m. *ein Dorn für den Sieg* so v. a. *Andern den Sieg erschwerend, — streitig machend;* Bein. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 6,518, g.

विजयकुञ्जर m. *Siegeselephant* so v. a. *ein königlicher Elephant* Trik. 2,8,35. Hâr. 160.

विजयकेतु m. N. pr. eines Fürsten der Vidjâdhara Hall in der Einl. zu Vâsavad. 40.

विजयक्षेत्र n. = विजय 3) b) Kathâs. 39,36. Râǵa-Tar. 1,275. — Vgl. विजयेक्षेत्र.

विजयचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Journ. of the Am. Or. S. 6,548,6. Colebr. Misc. Ess. II, 286.

विजयच्छन्द m. *ein aus 504 Schnüren bestehender Perlenschmuck* H. 659. Varâh. Brh. S. 81,31.

विजयडिण्डिम m. *Siegestrommel* Verz. d. Oxf. H. 257,b,21.

विजयतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 73,b,15.

विजयदत्त m. ein Mannsname Kathâs. 25,75.254. N. pr. des Hasen im Monde Pańkat. 160,23.

विजयदुन्दुभि m. *Siegestrommel;* davon nom. abstr. °ता f. Ragh. 9,11.

विजयदेवी f. ein Frauenname Wilson, Sel. Works I, 299.

विजयद्वादशी f. Bez. *des 12ten Tages in der lichten Hälfte des Monats* Çrâvaṇa Verz. d. Oxf. H. 34,b,13.

विजयनगर n. N. pr. einer grossen *Stadt* in Karṇâṭa LIA. I, 168. IV, 168. fgg. Wilson, Sel. Works I, 332. fg. 335. Verz. d. Oxf. H. 213, a, No. 503. Burnouf in Bhâg. P. I, lx, N. Z. f. d. K. d. M. I, 103. fg.

विजयनन्दन m. N. pr. des 11ten Ḱakravartin in Bhârata H. 694.

विजयन्त (von 1. जि mit वि) 1) m. Bein. Indra's Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,128. — 2) f. ई AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56) wohl fehlerhaft für वैजयन्ती. — Vgl. वैजयन्त.

विजयपाल m. N. pr. eines Fürsten Râǵa-Tar. 8,206.

विजयपुर n. N. pr. verschiedener *Städte:* 1) Bejapur, Stadt und District im Dekkhan nördlich von der Krshṇâ LIA. I, 168, N. 1. — 2) in Khandesh. — 3) in der Nähe von Mîrzâpur Colebr. Misc. Ess. II, 249. — 4) an der Kauçikî im nördlichen Hindustan.

विजयपूर्णिमा f. Bez. *einer best. Vollmondsnacht* Verz. d. Oxf. H. 34,b,29.

विजयप्रशस्ति f. Titel eines Werkes Hall 161. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 18.

विजयभाग adj. *Spielglück gebend* TBr. 3,7,4,6.

विजयमर्दल m. *Siegestrommel* Trik. 1,1,120. Hâr. 72.

विजयमल्ल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,732. 761. 820. 823. 836.

विजयमालिन् m. N. pr. eines Kaufmanns Kathâs. 72,284.

विजयमित्र m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,366.

विजयरक्षित m. N. pr. eines Autors; s. u. पक्षपात 1) und पैष्टिक 1).

विजयराज m. N. pr. zweier Männer Râǵa-Tar. 7,1067. 8,2228.

विजयलक्ष्मी f. N. pr. der Mutter Veńkaṭa's Verz. d. Oxf. H. 196,b,24.

विजयवत् adj. von विजय; विजयवती f. N. pr. einer Tochter des Schlangendämons Gandhamâlin Kathâs. 72,33.

विजयवर्मन् m. N. pr. eines Kshatrija Kathâs. 52,339.

विजयवेग m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 25,292.

विजयश्री f. 1) *Siegesgöttin* Spr. 5327. Kumâras. in Verz. d. Oxf. H. 116,b,33. — 2) N. pr. eines Frauenzimmers Hall 23.

विजयसप्तमी f. Bez. *eines best. 7ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,a,42. — Vgl. विजयासप्तमी.

विजयसिंह m. N. pr. verschiedener Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 20. LIA. II, 757, N. 784. Râǵa-Tar. 7,581. 584. 828. 833. 888.

विजयसेन 1) m. N. pr. eines Kriegers Kathâs. 104,25. fgg. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers Lalit. ed. Calc. 331,17.

विजयाकल्प m. Titel eines Buches Verz. d. Oxf. H. 95,b,13.

विजयादशमी f. Bez. *des 10ten Tages in der lichten Hälfte des Monats* Âçvina, an welchem das Bild der Durgâ, am Ende ihres Festes, in's Wasser geworfen wird, Verz. d. Oxf. H. 285,a,22.

विजयासप्तमी f. Bez. *eines 7ten Tages in der lichten Hälfte eines Monats, der auf einen Sonntag fällt,* Tithjâdit. im ÇKDr.

विजयिक्षेत्र n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* in Orissa LIA. I, 187, N. 1. — Vgl. विजयक्षेत्र.

विजयिन् (von 1. जि mit वि) adj. *siegreich, Sieger* Jâǵń. 3,333. MBh. 1,834. 5,7040. 6,5221. 7,8889. Hariv. 11059. 15752. R. Gorr. 2,1,35. 3,35,111. 6,98,20. 7,1,19. 22,1. Ragh. 7,68. Spr. 1800. 3167. 4611. Gît. 7,22. Kathâs. 109,146. Mârk. P. 18,17. वादेषु विद्यावताम् Verz. d. Oxf. H. 261,a,18. समर° Spr. 2087. धर्म° *des Rechtes wegen* Ragh. 4,43. fem. Verz. d. Oxf. H. 110,a,23. neutr.: आचार्यकं विजयि मान्मथम् Mâlatîm. 16,4. *Besieger:* अरि° Mârk. P. 22,45. 129,18. *Eroberer:* जगतां त्रयाणाम् Prab. 78,2. त्रिलोक° Spr. 2186. दिग्विजयिन् Bhâg. P. 9,10,15. पुर° Vishṇu Prab. 25,15.

विजयिन adj. = विजिल Râǵam. zu AK. 2,9,46 nach ÇKDr.

विजयिष्ठ (von 1. जि mit वि mit dem suff. des superl.) adj. *am meisten siegend* P. 6,4,154, Schol.

विजयीन्द्र mit dem Bein. यतीन्द्र N. pr. eines Autors Hall 113.

विजयेश m. Bez. eines best. Heiligthums Râǵa-Tar. 1,38. 105. fg. 2, 123. 3,46.

विजयेश्वर m. dass. Râǵa-Tar. 1,113. 131. 316. 2,62. 125. 4,695. 6,98.

विजयैकादशी Bez. *des 11ten Tages in der dunklen Hälfte des* Phâlguna Wilson, Sel. Works II, 209. fg.

विजयोत्सव m. *Siegesfest,* das zu Ehren Vishṇu's am 10ten Tage in

der lichten Hälfte des Âçvina gefeiert wird, ÇKDr. Verz. d. B. H. No. 1181.

विजर॑ (2. वि + जरा) adj. *nicht alternd* Çat. Br. 14,7,2,28. Khând. Up. 8,7,1. Maitrjup. 6,4. 25. Kathâs. 41,11. — 2) m. *Stengel* Çabdârthak. bei Wilson. — 3) f. आ N. eines Flusses in Brahman's Welt (*das Alter fern haltend*) Kaush. Up. 1,3. 4.

विजरत्न Maitrjup. 6,13 wohl fehlerhaft für विजरण्य.

वि॑जर्जर (2. वि + ज°) adj. *gebrechlich* VS. 30,15. विजर्जरीकर् *gebrechlich machen:* पुरा जरा कलेवरं विजर्जरीकरोति ते MBh. 12,12084.

1. विजल (2. वि + जल) adj. *wasserlos:* जलधर Hariv. 3822. तोयाशय Varâh. Brh. S. 19,20. विजले (= अवृष्टिकाले Comm.) *bei Dürre* Adbh. Br. 6,10 in Ind. St. 1,41.

2. विजल adj. fehlerhafte v. l. für विजिल H. 414.

विजल्प (von जल्प् mit वि) 1) m. *ein ungerechter Vorwurf:* व्यक्तया-सूयया गूढमानमुद्रान्तरालया। अघद्विषि कटाक्षोक्तिर्विजल्पो विदुषां मतः॥ Uggvalanîlamani im ÇKDr. f. dass.: अवज्ञानतदुष्टोक्तिर्विजल्पा Mârk. P. 51,50. — 2) f. आ N. einer bösen Genie Mârk. P. 51,50.

विजवल s. u. विजपिल.

विजाका v. l. für विल्लाका Verz. d. Oxf. H. 124,*b*, N. 4.

विजाति (2. वि + जा°) adj. *zu einer anderen Klasse gehörig, ungleichartig, heterogen* Kusum. 7,9. Kull. zu M. 9,198. — Vgl. वैजात्य, सजाति.

विजातीय (2. वि + जा°) adj. dass. Kap. 1,22. Nilak. 180. Kusum. 6,14. 7,11. 16,11. Vedântas. (Allah.) No. 123. Madhus. in Ind. St. 1,22, 24. Sarvadarçanas. 61,18. Kull. zu M. 1,2. 3,43. तद्विजातीय Sâh. D. 219,3. Schol. zu Kap. 1,104.

विजानक (von 1. ज्ञा mit वि) adj. *kennend, vertraut mit:* दुःखानाम-विजानकः MBh. 13,5334.

वि॑जानि (2. वि + 1. जानि) adj. *fremd:* विजानिर्यत्र ब्राह्मणो रात्रिं वसंति पापया AV. 5,17,18. Wollte man übersetzen *ohne Weib*, so müsste man die Sitte der Ueberlassung des Weibes an den geehrten Gast annehmen, für welche sonst keine Belege bekannt sind.

विजानिवंस् partic. perf. für विजज्ञिवंस् (von जन् oder ज्ञा) RV. 10,77,1.

विजानु s. जानु°; die neuere Ausg. liest सव्यजानु विजानु च.

विजापक N. pr. einer Gegend gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,133. — Vgl. वैजापक.

विजापयितर् (vom caus. von 1. जि mit वि) nom. ag. *der zum Sieg hilft* Kâth. 13,5.

वि॑जामन् (von जन् mit वि) adj. *verwandt* so v. a. *entsprechend, correspondirend* (z. B. Glieder wie die Arme, Füsse): यद्विजामन्परुषि वन्दनं भुवत् RV. 7,50,2. विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः AV. 7,76,2. धिष्ण्याः Çat. Br. 3,6,2,1.

वि॑जामातर् m. wohl so v. a. जामातर् RV. 1,109,2. nach Nir. 6,9 *ein uneigentlicher Tochtermann*, im Süden nenne man so *den Mann, der sein Weib durch Kauf erlangt hat* (weil er nicht von tüchtiger Qualität sei Dev.).

वि॑जामिन् adj. *blutsverwandt* oder überh. *verwandt* (Gegens. अजामिन्) RV. 10,69,12.

वि॑जावन् (von जन् mit वि) adj. Schol. zu P. 3,2,75. 6,4,41. VS. Prât. 5,6. *leiblich, eigen:* स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावा RV. 3,1,23.

विजावत् (wie eben) adj. f. °वती *die geboren hat* AV. 9,3,13.

विजिगीत und विजिगीथ॑ s. 2. गा mit वि.

विजिगीषा (vom desid. von 1. जि mit वि) f. *das Verlangen zu siegen, — zu besiegen, — zu erobern* R. 4,9,58. 61. Kâm. Nitis. 8,55. 10,40. पाण्डवान् MBh. 8,413. सुरलोकाय R. 7,104,15. तत्तद्वत्तविजिगीषया *aus Verlangen zu überwinden, unnütz zu machen* Kathâs. 36,71. °विवर्जित als Erklärung von आम्लून, औद्रिक AK. 3,1,21 und H. 428 beruht auf einer ungeschickten Auffassung von P. 8,2,49; vgl. Schol. zu 5,2,67.

विजिगीषावत् (von विजिगीषा) adj. *zu siegen —, zu besiegen verlangend* Nilak. zu MBh. 1,7096.

विजिगीषिन् (wie eben) adj. dass.: अन्योऽन्यविजिगीषिणौ MBh. 1,7096.

विजिगी॑षीय (wie eben) adj. (चतुर्थर्थेषु) gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

विजिगीषु (vom desid. von 1. जि mit वि) adj. *zu siegen —, zu besiegen —, zu erobern verlangend, eroberungssüchtig* Çabdam. im ÇKDr. M. 7,155. MBh. 1,2302. Hariv. 3840. R. 3,22,7. 4,17,11. 5,80,10. Suçr. 1, 122,5. Kâm. Nitis. 8,3. 4. 6. Ragh. 1,7. Varâh. Brh. S. 15,16. 16,39. Spr. 2885. 3911. Hit. 94,13. 119,20. fg. रिपुबल° Kathâs. 47,121. वसुंधराम् MBh. 1,4448. संसार° 3,126. *der in einer Disputation den Sieg davonzutragen wünscht* Sarvadarçanas. 114,4.

विजिगीषुता (von विजिगीषु) f. *das Verlangen Eroberungen zu machen* Kathâs. 18,84. fg.

विजिगीषुत्व (wie eben) n. dass. Kâm. Nitis. 8,40.

विजिग्राहयिषु (vom desid. des caus. von ग्रह् mit वि) adj. *Jmd* (acc.) *in einen Kampf zu verwickeln beabsichtigend* Bhaṭṭ. 4,34.

विजिघत्स॑ (2. वि + जिघत्सा) adj. *dem Hunger nicht unterliegend, nicht hungrig werdend* Çat. Br. 14,7,2,28. Khând. Up. 8,7,1 (fälschlich ऽवि° gedr.). Sarvadarçanas. 55,1 (°घत्सा fälschlich Wilson, Sel. Works I, 45).

विजिघांसु (vom desid. von हन् mit वि) adj. *zu schlagen —, zu tödten beabsichtigend* (mit acc. der Person) MBh. 3,14371. 14373. fg. Bhâg. P. 10,17,5. *zu vernichten, zu entfernen wünschend:* दुःखम् MBh. 5,741.

विजिघृक्षु (vom desid. von ग्रह् mit वि) adj. *zu kriegen —, Feindseligkeiten anzufangen begierig* Râga-Tar. 8,1997.

विजिज्ञा॑सा (vom desid. von 1. ज्ञा mit वि) f. *das Verlangen zu erfahren, — kennen zu lernen, Erkundigung* Çat. Br. 14,6,1,1. MBh. 12, 11921. तद्विजिज्ञासया 1,4391. Bhâg. P. 1,9,16.

विजिज्ञासितव्य (wie eben) adj. *was zu erfahren —, kennen zu lernen man wünschen muss* Khând. Up. 7,16,1. 17,1.

विजिज्ञासु (wie eben) adj. *zu erfahren —, kennen zu lernen begierig* R. 5,56,75. तव *von dir* MBh. 12,3108.

विजिज्ञा॑स्य (wie eben) adj. = विजिज्ञासितव्य Çat. Br. 14,4,3,15. fg. Jâgn. 3,191. Çaṁk. zu Brh. Âr. Up. S. 290.

वि॑जित adj. s. u. 1. जि mit वि; n. *Gewonnenes; Sieg* Çat. Br. 1,5,3, 21. 4,2,1,7. 3,3,5. 16. Lâṭj. 9,10,7.

विजितारि (वि° + अरि *Feind*) m. N. pr. eines Râkshasa R. 6,35,15.

विजिताश्व (वि° + अश्व) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Bhâg. P. 4,9,18. 22,54.

विजितासु (वि° + असु) m. N. pr. eines Muni Kathâs. 69,101. fgg.

विंज्ञिति (von 1. ज्ञि mit वि) f. *Kampf; Sieg:* देवा विजितिमुत्तमामसुरैर्व्यजयन्त TS. 2,4,2,3. 5,1,10,2. Ait. Br. 1,24. 8,9. Çat. Br. 2,2,4, 18. 5,2,3,7. Kâtj. Çr. 19,5,4. Âçv. Çr. 11,3,11. पुण्यलोक° *Gewinnung* Maitrjup. 6,36. क्षिति° Kâvjâd. 3,85. विजिति als Genie MBh. 12,8415.

विजितिन् (von विजित) adj. *siegreich* Ait. Br. 2,31. अ° 7,18. — Vgl. गेहे°, गोष्ठे°.

विजित्वर (von 1. जि mit वि) 1) adj. (f. आ) *siegreich:* पृतना Kumâras. in Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,33. — 2) f. आ N. pr. einer Göttin; so ist wohl zu lesen st. विचित्वारा und विचिन्वरा Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,32. fg.

विजित्वरत्व n. nom. abstr. von विजित्वर 1) Verz. d. Oxf. H. 256,*a*,38.

विजिन adj. = विजिल Râjam. zu AK. 2,9,46 nach ÇKDr.

विजिपिल adj. dass. H. 414, Schol.

विजिल adj. = पिच्छिल, विजिविल, विज्जल AK. 2,9,46. H. 414.

विजिविल adj. dass. H. 414.

विजिहीर्षु (vom desid. von हर् mit वि) adj. *sich erlustigen wollend* MBh. 3,14875.

विजिह्म (2. वि + जि°) adj. *krumm, gebogen:* °भ्रु (विजिह्मभ्रु gedr.) Suçr. 2,538,4. °शिख Kir. 6,2. °नयन so v. a. *seitwärts gerichtet* Ragh. 19,35. — Vgl. व्याजिह्म.

विजिह्व Suçr. 2,538,4 fehlerhaft für विजिह्म.

विजीवित (2. वि + जी°) adj. (f. आ) *leblos, todt* R. Gorr. 2,17,40. 6,23,37.

विजु m. *am Leibe des Vogels derjenige Theil, wo die Flügel ansitzen,* Ait. Âr. 1,17.

विजुल m. *die Wurzel von Bombax heptaphyllum* Râgan. im ÇKDr.

विजृम्भ (von जम्भ् mit वि) m. *Ausreckung:* भ्रू° *das Verziehen der Brauen* Bhâg. P. 2,1,30. 3,31,38. 9,10,4. 10,47,15.

विजृम्भक (wie eben) 1) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 46,69. — 2) f. विजृम्भिका *das Schnappen nach Luft, Gähnen* Suçr. 2,288,21.

विजृम्भण (wie eben) n. 1) *das Gähnen* Suçr. 2,254,15. — 2) *das Aufblühen* Ragh. 16,47. — 3) *Ausdehnung, Ausbreitung:* पर्यन्तभूधरनिकुञ्ज° Mâlatîm. 144,20. भ्रुवोः *das Verziehen der Brauen* Bhâg. P. 7,5,49.

विजृम्भित 1) adj. s. u. जम्भ् mit वि. — 2) n. *a) das Hervorbrechen, Manifestation, die Folgen:* नवानङ्ग° Kathâs. 4,13. Sarvadarçanas. 68, 15. निर्वाणोत्रो° adj. Râga-Tar. 5,147. कपालकुण्डलाकोपस्य Mâlatîm. 87,5. अघोरघण्टवध° 170,13. शाप° Kathâs. 67,104. तस्येदं मे विजृम्भितम् 73,161. तदज्ञानविजृम्भितमेव Mallin. zu Kir. 5,22. — *b) That,* = चेष्टा Med. t. 219. वीर° *Heldenthat* Mâlav. 92.

विजृम्भिन् (von जम्भ् mit वि) adj. *hervorbrechend, sich manifestirend:* कलभकुम्भविजृम्भिबल (s. die Corrigg.) Verz. d. Oxf. H. 259,*a*,17.

विजेतर् (von 1. जि mit वि) m. *Sieger, Besieger, Eroberer* Kâth. 13, 5. MBh. 7,6046. कृष्णपाण्डवयोः 1,8296. Hariv. 10633. 14088. Kumâras. in Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,38. मदमुचां वारणानाम् Uttarar. 48,12 (62,14). पुराम् Çiva Kir. 5,35. दुष्कृतुर्मम MBh. 1,7172. *Sieger in einer Disputation* 13,2196.

विजेतव्य (wie eben) adj. *zu besiegen:* वीर MBh. 7,6337. Kathâs. 38, 7. Sâh. D. 234. इन्द्रियाणि MBh. 12,7093. 9008.

विजेन्य (विऽजेन्य Padap.) adj. *fern* (von विजन) nach Sâj.: यामिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यम् RV. 1,119,4. Liesse sich als partic. fut. pass. von विज् fassen: *flüchtig zu durchlaufen.*

विजेय (von 1. जि mit वि) adj. *zu besiegen:* शत्रूणामविजेयो भविष्यसि Kathâs. 107,131.

विजेयविलास m. Titel eines Buches Colebr. Misc. Ess. I, 14. 23. Sollte nicht विजय° zu lesen sein?

विजेष (von 1. जि mit वि) m. *Sieg:* °कृत् *Sieg bewirkend* RV. 10,84,5.

विंजोषस् adj. nach Sâj. (die Götter) *ergötzend* RV. 8,22,10. Könnte als Gegens. zu सजोषस् gefasst werden.

विज्ज 1) m. ein Mannsname Râga-Tar. 7,321. fgg. 332. 537. 549. 566. °राज 8,2327. — 2) f. आ ein Frauenname Râga-Tar. 8, 3444. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21.

विज्जन adj. = विज्जल Râjam. zu AK. 2,9,46 nach ÇKDr.

विज्जनामन् m. N. *eines nach* Viggâ *benannten* Vihâra Râga-Tar. 8, 3444.

विज्जल 1) adj. = पिच्छिल *schleimig, schmierig* H. 414. श्लेष्मातकस्य बीजानि निष्कुलीकृत्य भावयेत्प्राज्ञः । अङ्कोल्लविज्जलाद्भिः Varâh. Brh. S. 55,29. — 2) f. आ ein Frauenname Râga-Tar. 8, 290. 369. — 3) n. *eine Art Pfeil* Trik. 2,8,53.

विज्जलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 327,*b*,7. = विज्जलविड.

विज्जलविड n. = विज्जलपुर Verz. d. Cambr. H. 53. 56.

विज्जाका f. N. pr. einer Dichterin Verz. d. Oxf. H. 124,*b*,41. 209,*a*, 13. fg. विज्ञाका und विज्जिका v. l.

विज्जिका f. = विज्जाका Verz. d. Oxf. H. 124,*b*, N. 4. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 21.

विज्जिल adj. = विज्जल Çabdar. im ÇKDr.

विज्जुल n. *Cassia-Rinde* Râgan. im ÇKDr.

विज्जूलिका f. *eine best. Pflanze,* = जतुका Râgan. im ÇKDr.

विज्ञ (von 1. ज्ञा mit वि) adj. *kundig, eine richtige Einsicht habend, gelehrt* AK. 3,1,4. H. 341. MBh. 2,2353. 14885 (Çiva). Spr. 660. 1678, v. l. (Th. III, S. 372). 2042, v. l. 2935, v. l. Verz. d. Oxf. H. 257, *a*, N. 3. LA. (III) 90,9. Pańkar. 1,1,81. अति° Verz. d. Oxf. H. 141,*a*,20. विज्ञाभिमानिन् *sich für gelehrt haltend* Bhâg. P. 6,16,61. नीत्यर्थ° MBh. 2, 2609. Bhâg. P. 1,17,33. प्रबोधयति माविज्ञम् (मामज्ञम् ed. Bomb.) 4,28, 20. अविज्ञता *Dummheit* Spr. 2206. — Vgl. चन्द्र°, मन्त्र°.

विज्ञप्ति (vom caus. von 1. ज्ञा mit वि) f. *Gesuch, Bitte an Jmd* (gen.), überh. *die Anrede eines Niederen an einen Höheren:* विज्ञप्तिर्मे ऽस्ति Kathâs. 13,183. fg. आगता देव विज्ञप्त्यै कापि स्त्री 23,13. 6. अद्य गच्छामि विज्ञप्त्यै तातस्याहं भवत्कृते 26,70. स च तस्य न संप्राप विज्ञप्त्यवसरम् 55,16. 57,5. मद्विज्ञप्तिमिमां शृणु 60,112. 66,114. 84,32. Râga-Tar. 4,639. 6,43. 8,312. विज्ञप्तिं कर् *an Jmd* (gen.) *ein Gesuch richten, einem höher Stehenden Etwas melden:* तत्कृते Kathâs. 1,57. 12,164. 20,20. 26,65. 35,80. 49,61. 72,254. 77,81. Râga-Tar. 8,2137. *Meldung* überh. Naish. 6,76.

विज्ञप्य (wie eben) adj. *dem man zu melden hat* Kathâs. 17,58. — Vgl. विज्ञाप्य.

विज्ञबुद्धि f. = जटामांसी Çabdak. im ÇKDr.

विज्ञातर् (von 1. ज्ञा mit वि) nom. ag. *Erkenner, Begreifer, Kenner* Çat. Br. 14,5,4,16. 6,5,1. 7,31. 7,2,30. Kaush. Up. 3,8. MBh. 12,4401.

14,634. धर्मस्य 2,2321. पुराणशास्त्र° Spr. 4747, v. l. अ° unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,7000. *unwissend* Nir. 2,3.

विज्ञातवीर्य adj. *von bekannter Kraft* TBr. 2,4,1,2.

विज्ञातव्य (von 1. ज्ञा mit वि) adj. *was erkannt wird, zu erkennen* Kaush. Up. 1,7. R. 7,16,24. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 189. *ausfindig zu machen* MBh. 4,892. *zu erkennen als, zu betrachten als* Varâh. Bṛh. S. 43,49. 54,3. वृत्तस्यैका शाखा यदि विनता भवति विज्ञातव्यं शाखातले जलम् so v. a. *da kann man versichert sein, dass unter dem Zweige Wasser ist,* 55. 68,14. 33. — Vgl. विज्ञेय.

विज्ञाति (wie eben) f. 1) *Erkenntniss* Çat. Br. 14,6,5,1. Bṛh. Âr. Up. 4,3,30 (विज्ञानात् st. विज्ञातेः Çat. Br.). — 2) N. einer zu den Gaja gezählten Gottheit Verz. d. Oxf. H. 56, b, 32. — 3) N. des 25ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 52, a, 3.

विज्ञान (wie eben) 1) n. a) *Erkenntniss, richtige Erkenntniss, Kenntniss, Wissen* AK. 1,1,4,15. H. 310. an. 3,415. Med. n. 128. AV. 7,13,3. 15, 2,1. TS. 3,3,8,5. 4,4,1. 5,7,4,4. Çat. Br. 3,3,4,11. 8,7,2,10. 10,3,5, 13. 14,5,4,17. दर्शन, श्रवण, मति, विज्ञान 5,4,5. 14. 7,1,30. Kaush. Up. 3,3. Taitt. Up. 2,5. Maitrjup. 6,13. नित्यं ह्यविज्ञातुर्विज्ञाने ऽसूया Nir. 2,3. M. 4,20. MBh. 3,16771. विदितविज्ञानः परेषां धर्ममादिशन् 5,5984. Kap. 1,42. 90. Suçr. 1,30,6. 125,11. एतदेव हि विज्ञानं यदात्मपरवेदनम् Spr. 909 (II). 1169. °निधि 1502. परस्परं °संघर्षिणः Mâlav. 13,13. 34. Prab. 50,11. बुद्धिर्विज्ञानरूपिणी Bhâg. P. 2,10,32. विज्ञानं स्वपराभासि प्रमाणं बाधवर्जितम् Sarvadarçanas. 32,15. निरवशेषशास्त्रविषयं ग्रन्थतो ऽर्थतश्च सिद्धिज्ञानं विज्ञानम् 76,9. दिव्य Kathâs. 26,60. Çuk. in LA. (III) 32,5. °शक्ति Verz. d. Oxf. H. 225, No. 549. Bhâg. P. 2,1,35. °घन Çat. Br. 14,5,4,12. Sarvadarçanas. 2,8. शरीरस्य *Kenntniss des Körpers* Suçr. 1,9,12. विज्ञानेष्वपि चास्त्राणाम् MBh. 1,8033. दुष्टस्य 12,3845. व्यक्ताव्यक्तज्ञ° Sâṁkhjak. 2. आत्म° Kâm. Nîtis. 2,7. प्रयोग° Çâk. 2. शास्त्र° Spr. 1037. Bhâg. P. 1,2,20. Mârk. P. 16,35. Sâh. D. 158. Paṅkat. 44, 17. 186,11. लोचन° *eine Erkenntniss durch's Auge* Sarvadarçanas. 29, 6. किं विज्ञानं विजानासि *auf welche Kunst* (विज्ञान = शिल्प, कला H. 900. = कार्मण H. an. = कर्मन् Med.) *verstehst du dich?* Kathâs. 12,75. 52,95. 98. fg. 79,14. 83,21. *Wissenschaft von Etwas, Lehre* Suçr. 1, 8, 10. 11,3. Verz. d. Oxf. H. 308, a, 37. 44. b, 9. 10. 13. 36 u. s. w. *profanes Wissen* neben ज्ञान M. 9,41. Bhag. 3,41. 7,2. MBh. 14,600. R. 1,24,16 (25,16 Gorr.). 3,11,12. Kathâs. 77,8. Bhâg. P. 3,24,17. 4,1,63. Ueber den Begriff विज्ञान bei den Buddhisten s. Burn. Intr. 488. 502. fg. 511. 636. fgg. Lot. de la b. l. 476. 512. fgg. Wassiljew 102 u. s. w. Sarvadarçanas. 19,8. 20,13. 22,10. 23,22. H. 233, Schol. अविज्ञानात् *ohne es zu wissen, ohne es gewahr zu werden* Çaunaka in Z. f. vgl. Spr. I, 442. M. 2,220. MBh. 5,5443. Hariv. 3687. R. 4,57,21. अ° *keine Kenntniss von Etwas habend* Kathâs. 24,61. — b) *die Fähigkeit der Erkenntniss, richtiges Urtheil:* दुःखोपहतविज्ञाना MBh. 11,742. हृतविज्ञानबुद्धि R. Gorr. 1,65,13. विज्ञानं हि मम भ्रष्टम् 3,75,44. बुद्धिविज्ञानसंपन्न 4,1,22. °संपन्न 34,27. Varâh. Bṛh. S. 78,13. सु° adj. Spr. 4622. *das Organ der Erkenntniss,* = मनस् Bhâg. P. 11,28, 20. — c) *das Verstehen unter Etwas, das Halten für, das Erkennen als, das Annehmen* P. 6,4,120, Vârtt. 3. 8,2,48, Vârtt. 2. Schol. zu 6,1,131 (im 2ten Theile) und 8, 2,62. Bhâg. P. 3,9,28. — 2) m. N. pr. eines Sâdhja Hariv. 11536 nach der Lesart der neueren Ausg., विधान die ältere. — Vgl. अर्थ°, दुर्विज्ञान, रथ°.

विज्ञानक = विज्ञान 1): बाह्यार्थविज्ञानकशून्यवादिः Verz. d. Oxf. H. 259, a, 5.

विज्ञानकन्द m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 260, b, No. 628.

विज्ञानकाय m. Titel eines buddh. Werkes Burn. Intr. 448. Târan. 296.

विज्ञानकेवल adj. = विज्ञानाकल Sarvadarçanas. 86,5.

विज्ञानकौमुदी f. N. pr. einer buddh. Frau Verz. d. Oxf. H. 71, a, 15.

विज्ञानता f. = विज्ञान *Kenntniss:* शास्त्रेषु Spr. 4262.

विज्ञानदेशन m. *ein* Buddha H. ç. 79.

विज्ञानपति m. *Herr der Erkenntniss* Taitt. Up. 1,6,2.

विज्ञानपाद m. Bein. Vjâsa's Çabdârthak. bei Wilson.

विज्ञानभट्टारक m. N. pr. eines Gelehrten Hall 198.

विज्ञानभिक्षु m. N. pr. eines Gelehrten, = विज्ञानयति Hall 2. 4. 7. 8. 10. fgg. 92. Verz. d. Oxf. H. 238, a.

विज्ञानभैरव Titel eines Werkes Hall 197.

विज्ञानमय (von विज्ञान) adj. *aus Erkenntniss gebildet, — bestehend* Çat. Br. 14,5,1,16. 7,1,7. 2,6. Muṇḍ. Up. 3,2,7. Taitt. Up. 2,4. 5. 8. Vedântas. (Allah.) No. 49. Bhâg. P. 11,29,38. Kathâs. 50,207.

विज्ञानमातृक adj. *dessen Mutter die Erkenntniss ist;* m. *ein* Buddha H. 235.

विज्ञानयति m. N. pr. = विज्ञानभिक्षु Hall 2. 10. 92.

विज्ञानयोगिन् m. N. pr. = विज्ञानेश्वर Colebr. Misc. Ess. I, 103.

विज्ञानललित Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 341, b, N.

विज्ञानवत् (von विज्ञान) adj. *mit Erkenntniss ausgestattet* Khând. Up. 7,8,1. Kathop. 3,6. Maitrjup. 6,5. 13. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 5. Kathâs. 41,10. 45,399. LIA. III, 390. अ° Kathop. 3,5.

विज्ञानवाद m. *die Theorie* (der Jogâkâra), *nach der nur die Erkenntniss Realität hat* (nicht die Objecte der Aussenwelt), Verz. d. Oxf. H. 259, b, 6. 7.

विज्ञानवादिन् adj. *der da behauptet, dass nur die Erkenntniss Realität habe* (nicht die Objecte der Aussenwelt), *ein* Jogâkâra Wassiljew 289. °वादिनय Sarvadarçanas. 19,13. °वादिवाद 117,4.

विज्ञानाकल adj. bei den Çaiva (eine Einzelseele) *an der nur noch* मल *haftet* Sarvadarçanas. 85,12. 14. fg. 86,12. — Vgl. विज्ञानकेवल.

विज्ञानाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* Gild. Bibl. 411. Verz. d. Oxf. H. 232, a, No. 562.

विज्ञानानन्त्यायतन n. N. einer buddhistischen Welt Burn. in Lot. de la b. l. 812.

विज्ञानामृत n. Titel eines Commentars Hall 92.

विज्ञानिक adj. angeblich = विज्ञ Bhar. zu AK. 3,1,4 nach ÇKDr. — Vgl. वैज्ञानिक.

विज्ञानिता (von विज्ञानिन्) f. *Kennerschaft, das Vertrautsein:* सर्व° Kâm. Nîtis. 8,9.

विज्ञानिन् (von विज्ञान) adj. *Wissen von Etwas habend, mit Wissen verfahrend:* यदि राज्ञा कृता धेनुरियं विज्ञानिना सता Mârk. P. 112,16. *sich auf eine Kunst verstehend* Kathâs. 30,104. 79, 9. 13. 15. एवं° 83,

25. ज्ञानिविज्ञानिनौ Vet. in LA. (III) 31,19.

विज्ञानीय (wie eben) am Ende eines comp. *die Lehre von — behandelnd* Suçr. 1,48,2. विष° 2,251,9. 306,16. 307,12. Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,2. 7. 8. 11. 23. 36. 305,*b*,2. 7. 308,*a*,12.

विज्ञानेश्वर m. N. pr. eines Gelehrten Gild. Bibl. 459. fgg. Verz. d. B. H. No. 1028. 1128. 1403. Verz. d. Oxf. H. 262,*b*, No. 632. 279,*a*,48. 356,*a*, No. 842. fgg. Hall 175. 177. 183. 192.

विज्ञापन (vom caus. von 1. ज्ञा mit वि) n. *eine Mittheilung —, ein Gesuch, das ein Niederer an einen Höheren richtet*, Kathâs. 31,58. 103, 127. कृत° adj. 27,30. f. ग्रा dass. Ragh. 17,40. Kumâras. 7,93.

विज्ञापनीय (wie eben) adj. 1) *mitzutheilen, zu melden:* (तव) कियानिक् वा ग्रर्थविशेषो विज्ञापनीयः स्यात् Bhâg. P. 6,9,41. — 2) *dem* (von einem Niederen) *eine Mittheilung zu machen ist:* त्वया पुनरपि विशङ्कमद्यैव राज्ञा विज्ञापनीयो देव u. s. w. इति Daçak. 86,9. fgg.

विज्ञाप्य (wie eben) adj. 1) *mitzutheilen, zu melden:* विज्ञाप्यं कुरु मे MBh. 6,2965. ग्रूयतां मम विज्ञाप्यम् Hariv. 4510. 10064. 10547. R. 4,35, 21. 6,33,20. 7,36,54. 59,1,27. 2,11. Prab. 31,4. Bhâg. P. 6,16,46. 8, 6,14. Pańkat. 19,6. 10. ed. orn. 53,18. 56,25. — 2) *dem* (von einem Niederen) *eine Mittheilung zu machen ist:* ग्रवश्यं तु मया सर्वं विज्ञाप्यस्त्वं नराधिप *ich muss dir Alles mittheilen* MBh. 7,4247. तौ हि डुःखार्तौ विज्ञाप्यौ वचनाद्धि मे 9,3599. 14,2568. R. Gorr. 1,80,21. 2,58,17. 20. 49,32. 5,66,25. Kathâs. 121,263.

विज्ञाय (von 1. ज्ञा mit वि) adj. s. बल°.

विज्ञेय (wie eben) adj. 1) *zu erkennen, erkennbar* Çat. Br. 14,7,1,30. 2,23. Mând. Up. 7. Bhâg. P. 10,80,31. Sarvadarçanas. 73,1. विज्ञेयमनुमेयमिति सेयं विरुद्धा भाषा 22,11. विज्ञेयानुमेयत्ववाद् 13. MBh. 12,3840. ग्रागमिष्याम्यहं शृङ्गी विज्ञेयस्तेन 3,12778. R. 4,1,31. रक्तैः परुषैश्चैराः श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेयाः Varâh. Brh. S. 68,57. स्वस्तिक° R. 2,89,12. fg. हृतविज्ञेयसारसाः 3,22,23. Ragh. 4,62. परमविज्ञेयः सतां धर्मः Spr. 5284. सु° Kathop. 1,21. ग्र° M. 1,5. 12,29. Bhag. 13,15. — 2) *was man zu wissen hat:* शतं चैवात्र विज्ञेयं श्लोकाः पञ्चाशदेव तु so v. a. *man wisse, dass* R. Gorr. 1,4,60. फलकुसुमसंप्रवृद्धिं वनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम्। सुलभत्वं द्रव्याणाम् Varâh. Brh. S. 29,1. तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे M. 8,227. इत ऊर्ध्वं वक्ष्यमाणाः प्रत्यया भूतकालिके धात्वर्थे विज्ञेयाः Schol. zu P. 3,2,84. — 3) *zu erkennen —, anzusehen als, zu halten für:* स ब्रह्मेति विज्ञेयः Kaush. Up. 1,7. वालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च। भागो जीवः स विज्ञेयः Çvetâçv. Up. 5,9. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः M. 2,10. 81. स विज्ञेयो जितेन्द्रियः 98. 171. 8,133. Jâjn. 1,95. MBh. 2,2122. Hariv. 9970. R. 5,77,12. 86,18. Spr. 809 (II). उन्मत्त इति विज्ञेयः 1501, v. l. (II). 4511. Çrut. 2. 36. Bhar. beim Schol. zu Çâk. 9,6. Varâh. Brh. S. 5,47. 11,15. 14,16. Bhâg. P. 3,11,1. — Vgl. डुर्विज्ञेय, भाग°.

विज्य (2. वि + 3. ज्या) adj. *nicht besehnt:* धनुस् VS. 16,10. विज्यं कृत्वा महद्धनुः R. 3,6,10. Bhâg. P. 5,2,7. — Vgl. विबाणज्य und सज्य.

विज्वर (2. वि + ज्वर) adj. (f. ग्रा) 1) *fieberfrei* Kathâs. 71,125. — 2) *frei von Seelenschmerz, wohlgemuth, guter Dinge* MBh. 3,16472. 16917. 5,271. 8,1669. R. 1,1,84 (89 Gorr.). 46,14. R. Gorr. 1,46,35. 7,6,21. 81,14. Râga-Tar. 8,2003. Bhâg. P. 3,14,18. 6,13,1. 9,5,10. fg. — Statt विज्वरा ज्वरया त्यक्ता Hariv. 10918 liest die neuere Ausg. richtig विजराश्च जरां त्यक्त्वा.

विज्ञामर n. *das Weisse im Auge* Çabdârthak. bei Wilson und ÇKDr. ohne Angabe einer best. Autorität. विज्ञमर Wilson in der 2ten Aufl.

विज्ञोली f. = पङ्क्ति, ग्रावली *Reihe* u. s. w. Trik. 2,4,1.

विट्, वेटति Dhâtup. 9,29 (शब्दे). = बिट् Vop. in Dhâtup. 9,30.

विट m. AK. 3,6,2,17. 1) = षिङ्ग Trik. 3,1,6. 3,104. H. 331. an. 2, 98. fg. Med. t. 27. Hâr. 228. = वातपुत्र 139. = वेश्यापति Halâj. 2,227. *ein leichtsinniger Geselle, ein Schwindler* Kathâs. 6,51. 54. 32,167. Prab. 36,9. in der Umgebung eines leichtsinnigen Frauenzimmers so v. a. *Galan, Hurenjäger* Bhar. Nâtjaç. 18,46. 96. 34,105. Daçar. 2,8. 3,44. 49. Sâh. D. 21,4. 50,1. 77. fg. 85. 512. fg. Pratâpar. 5,*a*,7. 20,*a*,6. Mrkkh. 11,4. Spr. 918. 1406. 5219. 5336. Çiç. 4,48. Daçak. 61,6. Pańkat. 186,1. 199,9. Vet. in LA. (III) 20,12. in der Umgebung eines Fürsten so v. a. *Schranze, Schmarotzer, Speichellecker* Mrkkh. 9,16. fgg. 67, 17. Spr. 726. 1593 (II). 2522. 2760. 4675. Râga-Tar. 1,358. fg. 2,67. 3, 153. 4,662. 667. 5,202. 351. 367. 376. 400. 6,153. 155. 158. 167. 324. Mârk. P. 68,26. Am Ende eines comp. als tadelnder Ausdruck gaṇa खसूच्यादि zu P. 2,1,53. — 2) *Maus* Trik. 3,3,104. H. an. Med. Hâr. 228. — 3) *Acacia Catechu Willd.* (s. खदिर) diess. — 4) *Orangenbaum* Çabdam. im ÇKDr. — 5) *eine Art Salz* (s. विड) Trik. H. an. Med. Hâr. — 6) N. pr. eines Berges diess. — 7) = प्रांचल्लोक् (!) Trik. — 8) = विटप Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr.

विटक m. pl. N. pr. einer Völkerschaft, wohl = लम्पाक Varâh. Brh. S. 16,2.

विटङ्क m. n. gaṇa ग्रर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *Taubenhaus, Vogelhaus* AK. 2,2,15. H. 1010. Halâj. 2,148. R. 2,80,20. R. Gorr. 2,87,23. Çiç. 3,55. Bhâg. P. 9,10,17 (am Ende eines adj. comp. f. ग्रा). तोरणविटङ्कस्थं कूजमत्तम् 5,39,19. शाखाविटङ्कैर्वृत्ताणां क्रियमाणैरितस्ततः Hariv. 3538. (रथोत्तमम्) मसारगल्वर्कमयैर्विटङ्कैर्विभूषितम् MBh. 12,1585 nach einer von Nilak. erwähnten Variante. सभारण्यविटङ्कवत् (भारतद्रुम) 1, 88. — 2) *die höchste Spitze;* im Prâkrit: मह्लीहर विटङ्को Mâlatim. 166, 2. — 3) *Verzierung, Schmuck:* ग्रलकविटङ्ककपोल (= ग्रलकालंकृतकपोल Comm.) Bhâg. P. 10,33,16. पराध्यकेयूरकुण्डलकिरीटविटङ्कवेषौ (विटङ्क = सुन्दर Comm.) 3,15,27. — 4) ग्रङ्क° Bhâg. P. 5,2,10 nach dem Comm. = नितम्ब.

विटङ्कक m. n. = विटङ्क 1) Çabdar. im ÇKDr.

विटङ्कपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 25,35. 38. 26,115. 82,16.

विटङ्कित adj. in den zwei unter टङ्क् mit वि aufgeführten Stellen ist nach genauerer Erwägung doch auf विटङ्क zurückzuführen; der Comm. erklärt das Wort an der ersten Stelle durch ग्रलंकृत, an der zweiten durch शोभित, also *verziert, geschmückt.*

विटप Uṇâdis. 3,145. m. n. gaṇa ग्रर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Trik. 3,5,14. Siddh. K. 249,*a*,12. 1) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Ast, Zweig, Ranke;* = विस्तार AK. 2,4,1,14. H. 1124. an. 3,446. Med. p. 22. Halâj. 2,26. = शाखा H. an. Med. = पल्लव Trik. 3,3,279. H. an. Med. प्रवृद्धविटपैर्वृत्तैः MBh. 1,2850. कुटजानां विटपेषु 3,11586. सस्कन्धविटपैर्द्रुमैः 16391. 4,814. R. 4,18,23. विटप, शाखा, ग्रङ्कुर MBh. 12,9118. R. 3, 79,7. 5,20,21. Ragh. 8,46. Kumâras. 6,41. Çâk. 31. Vikr. 59,2. Çiç. 4,

48. 56. DAÇAK. 201,1. 2. SÂH. D. 50,1. BHÂG. P. 4,6, 32. 25,18. 5,2,4. 16,13. 17,13. 24,10. 7,2,9. कुमुद° Spr. 3195. बाङ्कभिर्विटपाकारैः RAGH. 10,11. Spr. 217 (II). 2780. विस्फुरद्भ्रू° BHÂG. P. 3,2,18. भ्रुकुटि° 5,9,19. Am Ende eines adj. comp. f. आ VIKR. 27. — 2) m. n. (das n. nicht zu belegen) *Busch, Strauch* AK. 3,4,19,133. TRIK. H. 1120. H. an. MED. HALÂJ. 2,35. वनं सवृत्तविटपम् MBH. 1,5882. R. 2,52,95 (32 GORR.). MṚKKH. 92,13. KÂM. NÎTIS. 14,31. ṚT. 1,24. ÇÂK. 33,1. VARÂH. BṚH. S. 19,20. 54,49. 95,18. BṚH. 3,7. GÎT. 7,28. PAÑKAT. 184,21. — 3) m. *Calotropis gigantea* (आदित्यपत्त्र) RÂǴAN. im ÇKDR. — 4) n. *der Raum zwischen Scham und Oberschenkel, Perinaeum* H. 613. SUÇR. 1,345,17. 346,12. वङ्क्षणावृषणयोरन्तरे विटपं नाम 348,21. 349,3.4. — 5) m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 6) m. = षिड्ग d. i. = विट 1) TRIK. H. an. = विटाधिप MED. — Vgl. प्रतिविटपम्, वैटप und उलप.

विटपशस् (von विटप) adv. *in Zweige, nach Zweigen:* वेदद्रुमं विटपशो विभजिष्यति स्म BHÂG. P. 2,7,36.

विटपिन् (wie eben) 1) adj. *mit Aesten —, mit Zweigen versehen:* वृत्त (daneben शाखिन्) MBH. 1,1775. — 2) m. *a) Baum* AK. 2,4,1,5. 3,4, 25,171. H. 1114. HALÂJ. 2,22. R. 2,97,19. ÇÂK. ed. CH. 8,9. KATHÂS. 73, 27. Spr. 1094. 4055. 4869. LA. (III) 89,17. BHÂG. P. 5,2,4. 17,13. 24, 10. — *b) Ficus indica* RÂǴAN. im ÇKDR. — Vgl. कल्प°.

विटप्रिय m. *eine Art Jasmin* (मुद्गरवृत्त) RÂǴAN. im ÇKDR.

विटभूत m. N. pr. eines Asura MBH. 2,367.

विटमाक्षिक m. *ein best. Mineral* H. 1055.

विटलवण n. = विडुवण ÇKDR. ohne Angabe einer best. Aut.

विटि f. *gelber Sandel* ÇABDAM. im ÇKDR.

विटिकपठीरव (so im Index) m. N. pr. des Vaters des Grammatikers VaradarâǴa Verz. d. Oxf. H. 166,a,23.

विट् am Ende eines adj. comp. = विष् *Schmutz, Unreinigkeit, faeces:* कर्ण° SUÇR. 2,368,13. — Vgl. भिन्न°.

विट्कारिका (3. विष् + का°) f. *ein best. Vogel* BHÛRIPR. im ÇKDR. — Vgl. विट्सारिका.

विट्कुल (2. विश् + कुल) n. *das Haus eines* Vaiçja ÂÇV. ÇR. 2,2,1.

विट्खदिर (3. विष् + ख°) m. *Vachellia farnesiana W. u. A.* AK. 2,4,2,30.

विट्चर (3. विष् + चर) m. *Hausschwein* AK. 2,10,23. H. 1281.

विठ्ठल, विठ्ठलदीक्षित, °भट्ट, विठ्ठलाचार्य, विठ्ठलेश्वर und विठ्ठलोपाध्याय m. N. pr. verschiedener Gelehrten HALL 134. 145. 147. 150. 152. fgg. 174. 187. 200. 205. fg. COLEBR. Misc. Ess. II, 41. Verz. d. Oxf. H. 161, No. 355. 341,a, No. 798. 384,a, No. 473. विठल, विठ्ठल und विठ्ठल Verz. d. B. H. No. 692. 734. 738. 1168. 1346. विठल, विठ्ठल ist *eine Form* Vishṇu's, unter welcher er im Dekkhan, vorzüglich in Pundarpur, verehrt wird.

विट्पण्य (2. विश् + प°) n. *Waare, die ein* Vaiçja *zu verkaufen pflegt,* M. 10,85.

विट्पति (2. विश् + पति) 1) *Herr des Volkes, Fürst* MBH. 3,10804. — 2) *Haupt der* Vaiçja: वैश्यः पठन्विट्पतिः स्यात् BHÂG. P. 4,23,32. विशां पश्चादीनां वैश्यादीनां वा पतिः स्यात् Comm. — 3) *Schwiegersohn* ǴAṬÂDH. im ÇKDR. M. 3,148. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 422,1 v. u. 423,1. — Vgl. विश्पति.

विट्शूद्र (2. विश् + शूद्र) n. sg. *die* Vaiçja *und* Çûdra R. GORR. 1,6,21.

विट्शूल (3. विष् + शूल) m. *eine best. Form der Cholik* SUÇR. 2,463,16.

विट्सङ्ग (3. विष् + सङ्ग) m. *Stockung der faeces* SUÇR. 2,428,12.

विट्सारिका (3. विष् + सा°) m. *ein best. Vogel,* = कुणपी HÂR. 85. — Vgl. विट्कारिका.

विट्सारी f. dass. TRIK. 3,3,276.

विठङ्क (?) adj. *bad, vile* WILSON.

विठर = वाग्मिन् UṆÂDIVṚ. im SAṀKSHIPTAS. nach ÇKDR.

विड्, वेडति (आक्रोशे) DHÂTUP. 9,30, v. l. UṆÂDIS. 1,120. — Vgl. विट्, विट्.

विड n. *eine Art Salz* AK. 2,9,42. H. 942. SUÇR. 1,33,9. 157,8. 226, 20. 2,125,15. °लवण (vgl. विडुवण) 89,13. masc. MBH. 13,4365. Nach WILSON auch *a part, a fracture, a bit* (!).

विडगन्ध n. = विडुवण WILSON nach RATNAM. विडगन्ध ÇKDR. nach ders. Aut.

विडङ्ग UṆÂDIS. 1,120. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) m. n. (n. wohl nur *die Frucht*) *Embelia Ribes* AK. 2,4,3,25. H. an. 3,131. MED. g. 47. n. *die Frucht*, dem schwarzen Pfeffer ähnlich, ein Wurmmittel (vulgo वावडिंग) SUÇR. 1,136,15. 138,17. 139,5. 144,12. 214,19. 2,70, 17. °सार 1,161,10. ÇÂRṄG. SAṀH. 3,13,58. VARÂH. BṚH. S. 55,7. 15. 76, 3. auch विडङ्गा f. ÇKDR. nach BHÂVAPR. — 2) adj. = अभिज्ञ H. an. MED.

विडम्ब (von डम्ब् mit वि) 1) adj. *Jmd nachahmend, Jmds Benehmen annehmend:* नृ° BHÂG. P. 10,23,37. 35,6. — 2) m. *a) Verspottung, Verhöhnung* Spr. 2226. SÂH. D. 261,19. — *b) Entweihung, Entwürdigung* (einer Sache), z. B. eines Leichnams durch wilde Thiere, indem diese ihn fressen, VARÂH. BṚH. 25 (23),13.

विडम्बक (wie eben) nom. ag. *Entweiher:* आश्रमापसदा ह्येते खल्वाश्रमविडम्बकाः BHÂG. P. 7,15,39.

विडम्बन (wie eben) 1) nom. ag. *Jmd nachahmend, Jmdes Benehmen annehmend* BHÂG. P. 10,70,40. — 2) n. und f. आ nom. act. *a) das Nachmachen, Nachäffen, das Spielen einer Person, das dem Scheine nach Etwas Sein, das dem Scheine nach Annehmen einer Erscheinungsform;* insbes. von einem Gotte, der menschliches Aussehen und Benehmen annimmt: तवेहमानस्य नृणां विडम्बनम् BHÂG. P. 1,8,29. fg. मर्त्य° 3,1,42. 10,3,31. 23,45. मां खेदयत्येतदजस्य जन्मविडम्बनं यद्वसुदेवगेहे 3,2,16. 9,15. अहो विभूम्नश्चरितं विडम्बनम् 14,28. 10,84,17. मायामर्त्य° 8,24,1. भेजे भीतिविडम्बनम् 10,30,23. तदर्त्यन्तविडम्बनम् 74, 3. 80,45. वद कस्य कुले जन्म माययामुविडम्बनम् (so ist zu schreiben, d. i. मायया अमु° und letzteres = अमु + वि°) sc. करे: Verz. d. Oxf. H. 26,b,17. fg. कुरुते ऽर्चाविडम्बनम् so v. a. *scheinbare, falsche Verehrung* BHÂG. P. 3,29,21. प्रीयते ऽमलया भक्त्या हरिरन्यद्विडम्बनम् *alles Andere ist nur Schein,* — *Maske* 7,7,52. अन्येष्वर्थकृता मैत्री यावदर्थविडम्बनम् 10,47,6. MUIR, ST. IV, 319, N. 284. करोति विडम्बनाम् *äfft nach* Spr. (II) 494. — *b) Verspottung, Verhöhnung; Spott, Hohn; Schimpf:* लभते विडम्बनम् *erntet Spott ein* Spr. (II) 453. प्राप्तं सर्वैर्विडम्बनम् KATHÂS. 41,32. न विडम्बनशीलाहम् 81,94. वेदेषु PAÑKAR. 1,2,19. कृष्णानुग्रहतो विद्वान् लब्धा च जन्म भारते। न भजेत्कृष्णपादाब्जं तदत्यन्तविडम्बनम्॥ 2,2,65. अधनापुत्रस्य जीवनं विडम्बनम् *Schimpf* HIT. 99,18. PRAB. 43,12. विडम्बनं कर् *Jmd* (acc.) *verspotten, verhöhnen* BRAHMAVAIV. P. 2,79. In

dieser Bed. häufig das f.: शराः कुर्वन्ति नार्थं पार्थ काद्य विडम्बना MBh. 7,3852. Mṛkkh. 89,11. इयं च ते ऽन्या पुरतो विडम्बना यत् u. s. w. Kumâras. 5,70. Kathâs. 94,134. 115,12. का वा पूज्ये विडम्बना 81,94. जरागमे जीर्णरसं च मादृशां कुभोगतृष्णाव्यसनं विडम्बना 103,225. 104,120. विडम्बनामाप्नोति Spr. 2565. एतेषां सकाशाद्विडम्बनां प्राप्य मरिष्यसि Pańkat. 220,14. स प्राप नटस्येव विडम्बनाम् Râǵa-Tar. 5,207. विडम्बनां कुर्वन्ति Pańkat. 125,25. तिस्रः पुंसां विडम्बनाः Spr. 1743. 5032. — c) *Entweihung, Entwürdigung* (einer Sache): चार्वधिष्ठानवन्नृत्यं नृत्यमन्यद्विडम्बनम् Mârk. P. 1,36. ग्रसति त्वयि वारुणीमदः प्रमदानामधुना विडम्बना Kumâras. 4,12. एतं ज्ञानचरणविडम्बनां सहते Spr. 2078. तस्मात्कृतं चरणपातविडम्बनाभिः (चरणपात als obj. aufzufassen) 3247. दर्दुरवृन्दलघनं सरोजखण्डस्य महाविडम्बना Râǵa-Tar. 8,1576. प्रोक्ताप्यथाकरणमस्य (des Betels) विडम्बनैव so v. a. *Missbrauch* Varâh. Bṛh. S. 77, 37. — Vgl. कु°.

विडम्बिन् (wie eben) adj. 1) *nachmachend, den Schein von Etwas annehmend:* जृम्भा° Uttarar. 91,14 (118,6). — 2) *verspottend, verhöhnend* so v. a. *übertreffend:* वक्त्रं चन्द्रविडम्बि (Conj.) Spr. 2696. स्तनयुगलं श्रीफलश्रीविडम्बि Vikramâṅk. 31. नारीरमरस्त्रीविडम्बिनीः Kâvjâd. 3, 109. — 3) *entweihend, entwürdigend, Unfug treibend mit Etwas:* ज्ञात° so v. a. *ein Charlatan von Astrolog* Varâh. Bṛh. S. 2,18.

विडम्ब्य (wie eben) n. *ein Gegenstand des Spottes* Bhâg. P. 10,47,12.

विडायतनीय (von 2. विश् + आयतन) adj. Bez. einer Vishṭuti Lâṭj. 6,6,7.

विडाल u. s. w. s. u. बिडाल in den Nachträgen. विडाली f. *eine best. Pflanze,* = विदारी Râǵan. im ÇKDr.

विडीनक n. s. u. डी mit वि.

विटु m. AK. 2,8,2,5 fehlerhaft für विडु.

विटुल m. bei Wilson und im ÇKDr. fehlerhaft für विडुल.

विडोजस् m. Bein. Indra's AK. 1,1,1,36. Çâk. 193, v. l. Als zwei Worte in der Bed. *der* Vaiçja *und sein Gewerbe* Bhâg. P. 8,5,41.

विडौजस् m. Bein. Indra's H. 171. Halâj. 1,54. Ragh. 3,59. 14,59. Çâk. 193. विडौजसामासनानि Çatr. 1,27.

विड्गन्ध (3. विष् + गन्ध) n. = विड्लवण Ratnam. im ÇKDr. विडगन्ध Wilson nach ders. Aut.

विड्ग्रह (3. विष् + ग्रह) m. *Constipation* Çârṅg. Saṁh. 1,7,70.

विड्घात (3. विष् + घात) m. *eine best. Harnkrankheit* Çârṅg. Saṁh. 1,7,40.

विड्ज (3. विष् + ज) adj. *auf Mist wachsend* Jâǵn. 1,171.

विड्डसिंह m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2457. 2817. 2862. 3000.

विड्बन्ध (3. विष् + बन्ध) m. *Stockung der faeces:* स° Suçr. 2,437,16.

विड्भङ्ग (3. विष् + भङ्ग) m. *dünner Stuhlgang, Diarrhoe* Suçr. 2,228, 11. 279,4.

विड्भुज् (3. विष् + 4. भुज्) adj. *Excremente fressend:* पत्त्रिन् M. 12,56. m. so v. a. *Mistkäfer* oder *ein anderes von Mist sich nährendes Insect* Bhâg. P. 11,27,54.

विड्भेद (3. विष् + भेद) m. = विड्भङ्ग Suçr. 2,252,17. 259,4. 509,20.

विड्भेदिन् (3. विष् + भे°) 1) adj. *laxirend* Suçr. 1,224,17. — 2) subst. = विड्लवण Ausu. 48.

विड्भोजिन् adj. = विड्भुज् Pańkar. 1,10,77.

विड्लवण (3. विष् + ल°) n. *ein best. Salz,* = विड Ratnam. im ÇKDr.

विड्वराह (3. विष् + व°) m. *Hausschwein* Gaṭâdh. im ÇKDr. M. 5,14. 19. 11,154. Jâǵn. 1,176.

विण्ट्, विण्टयति (नित्याम्) Dhâtup. 32,116, v. l.

विण्मूत्र (3. विष् + मूत्र) n. sg. und du. (dieses selten) *Koth und Urin* M. 4,48. 77. 109. 132. 5,134. 11,150. Verz. d. Oxf. H. 267,*b*,8. 282,*a*, 22. fg. रेतो° n. sg. M. 4,222.

वितंस m. = वीतंस Bhar. zu AK. 2,10,26 nach ÇKDr.

वितण्ड m. 1) *a sort of lock or bolt with three divisions or wards* Çabdârthak. bei Wilson. — 2) *Elephant* Wilson. — वितण्डा s. bes.

वितण्डक m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 266,*b*,25.

वितण्डा f. AK. 3,6,1,9. 1) *Chicane in der Disputation, wobei der Streitende seinen Gegner zu widerlegen bemüht ist, ohne dadurch für seine Behauptung eine Stütze zu gewinnen,* gaṇa कथादि zu P. 4,4,102. H. an. 3,186. Med. ḍ. 36. fg. Hâr. 228. Njâjas. 1,1,1. 44. Sarvadarçanas. 114,4. 5. Madhus. in Ind. St. 1,18,25. Prab. 111,9. एवमेतन्न चाप्येवमेवं चैतन्न चान्यथा। इत्यूचुर्बहवस्तत्र वितण्डां वै परस्परम्॥ MBh. 2,1310. 7,3022. कुशास्त्राध्ययनेन वितण्डावादेन चाधीतवेदानां नाशनम् Prâjaçkittend. 3,*a*,4 (4,*a*,5). °त्व n. Comm. zu Njâjas. 1,1,1. — 2) *Arum Colocasia Lin.,* = शाकभिद् Trik. 3,3,116. = कच्चीशाक (so ist auch in H. an. zu lesen) Med. H. an. — 3) = करवीरी H. an. Med. Hâr. — 4) = शिलाह्वय H. an. Med. — 5) = दर्वि Hâr. — Vgl. वैतण्डिक.

वितत s. u. 1. तन् mit वि; davon °त्व n. *grosser Umfang:* देहस्य Hariv. 12375 = Mârk. P. 47,10 = VP. bei Muir, ST. IV, 32,13.

वितताध्वर adj. *dessen Opfer gerüstet ist* AV. 9,6,27.

वितति (von 1. तन् mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Länge:* विटप° Bhâg. P. 5,16,13. — 2) *Ausbreitung, Verbreitung:* यशोवितत्यै Bhâg. P. 9,10, 15. कस्यास्ति नाशो मनसो वितत्या *durch Ausbreitung* so v. a. *durch Ueberschreitung der Schranken* Spr. (II) 1608. — 3) *grosser Umfang, Fülle, Menge:* वंशवितति so v. a. *Rohrdickicht* Kir. 12,48. प्रसून° *Blumenstrauss* Spr. (II) 1087. मोह° Bhâg. P. 11,8,29.

वितत्करण (2. वि + तद् - क°) n. अ° bei den ekstatischen Pâçupata *das Verrichten allgemein für unziemlich geltender, ihnen aber anders erscheinender Handlungen:* कार्याकार्यविवेकविकलस्येव लोकनिन्दितकर्मकरणमवितत्करणम् Sarvadarçanas. 78,13. fg. — Vgl. वितद्भाषण.

वितत्य m. N. pr. eines Sohnes des Vibhavja MBh. 13,2001.

वितथ (2. वि + तथा) 1) adj. (f. आ) *a) unwahr, falsch* AK. 1,1,5,22. 3,5,15. H. 265. Halâj. 1,144. यः प्रश्नं वितथं ब्रूयात् M. 8,94. साक्ष्य 118. Jâǵn. 2,53. प्रतिज्ञा MBh. 1,6842. R. 6,85,9. प्रमाण 2,116,47. वाच् Ragh. 9,8. Bhâg. P. 4,15,22. प्रौढि Spr. (II) 1162. °वादिन् *Unwahrheit redend* Kathâs. 26,96. 31,83. वितथाभिनिवेश M. 12,5. Jâǵn. 3,134. वितथेन *falsch* M. 8,273. अ° (s. auch bes.) *nicht unwahr, ganz wahr, richtig* MBh. 12,4010. R. 5,31,15. Ragh. 5,26. 15,95. Mâlav. 9,16. Varâh. Bṛh. S. 1,2. वार्त्ता (so v. a. *ehrlich*) 19,11. Bhâg. P. 5,3,17. 8,17,22. Mârk. P. 15,81. तदवितथमवादीर्यन्मम प्रियेति Sâh. D. 43,9. इत्यवितथं वदन् Kathâs. 24,162. °संस्कृतप्रभाषिन् *richtig* Suçr. 2,532,4. आज्ञामवितथां कृ so v. a. *erfüllen* Spr. 745, v. l. अवितथेन *der Wahrheit gemäss* MBh. 5 1692. अवितथम् dass. 3,11946. R. 1,2,37. Kathâs. 28,191. — *b) unnütz, vergeblich:* बाण MBh. 8,1062. पुत्रजन्मन् Hariv. 1730. आशा R.

2,75,35. प्रयत्न RAGH. 2,42. 7,14. इच्छा KATHÂS. 45,398. BHÂG. P. 6,10, 29. 7,2,48. 9,20,35. 39. तद्वितथं कुर्यात् so v. a. *annulliren* M. 9,83. अ° *nicht vergeblich:* °क्रिय (zu schreiben तथावि°) R. 2,47,5. अवितथेक्ति BHÂG. P. 5,18,6. 8,7,8. अतिवितथ GIT. 7,5. — 2) m. *a)* N. pr. eines Sohnes des Bharadvâga HARIV. 1730. fgg. Bein. Bharadvâga's VP. 449. BHÂG. P. 9,21,1. — *b)* N. eines mythischen Wesens, dem bei der Eintheilung eines Hauses in Felder ein best. Platz gehört, VARÂH. BṚH. S. 53,44. 53. 63.

वितथता (von वितथ) f. *Unwahrheit, Falschheit:* °तां गम् *zur Lüge werden* HARIV. 7326.

वितथीकर् (वितथ + 1. कर्) *unnütz machen, vereiteln* KUMÂRAS. 6, 72. आशाम् MBH. 5,3923. 14,2003.

वितद्भाषण (2. वि + तद्-भा°) n. अ° bei den ekstatischen Pâçupata *das Reden von allgemein für Unsinn geltenden, ihnen aber anders erscheinenden Worten:* व्याहतापार्थकादिशब्दोच्चारणमवितद्भाषणम् SARVADARÇANAS. 78,14. fg. — Vgl. वितत्करण.

वितद्रु f. N. pr. eines Flusses UGGVAL. zu UṆÂDIS. 4,102.

वितन s. आक्रवितना.

वितनितर् (von 1. तन् mit वि) nom. ag. *Verbreiter:* यशो° BHÂG. P. 1,12,20.

वितनु (2. वि + तनु) adj. 1) *überaus schmal* MBH. 13,1849 (वितन्वी f.). — 2) *körperlos* KÂVJÂD. 3,60. m. *der körperlose Gott* d. i. *der Liebesgott* GIT. 10,10. — 3) *ohne Wesenheit* TS. 6,6,8,2.

वितन्तसाय्य (von तंस् mit वि) adj. *zu schütteln, in rasche Bewegung zu bringen:* समत्सु ṚV. 6,18,6. भेरे 45,13. यज्ञः 8,6,22. 57,11.

वितन्त्री (2. वि + त°) f. (nom. °स्) *eine verstimmte Saite* (= विषमबद्धा त° MALLIN.) KUMÂRAS. 1,46.

वितमस् (2. वि + त°) adj. *frei von Finsterniss, nicht verdunkelt, licht* MBH. 3,11869. RAGH. 9,16.

वितमस्क adj. (f. आ) dass. MBH. 12,11391. 13,4874. VARÂH. BṚH. S. 5,51. 30,10. Schol. zu NAISH. 22,56.

वितर (von 1. तर् mit वि) adj. *weiter führend:* ein Pfad ÇAT. BR. 14,7,2,11.

वितरण (wie eben) n. 1) *das Weiterleiten, Uebertragen:* दोषावितरण SUÇR. 1,285,12. — 2) *das Spenden, Spende* AK. 2,7,29. H. 386. HALÂJ. 2,264. वित्तेन किं वितरणं यदि नास्ति Spr. 2791. जलमुचि — वितरणविमुखे 4064. 4105. वरविभवभूषा वितरणम् 4323. सज्जने वितरणैः Verz. d. Oxf. H. 127,*b*, No. 228. प्रियवितरणैः *durch Geschenke des Geliebten* KHANDOM. 92. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 17.

वितरणाचार्य m. N. pr. eines *Lehrers* WILSON, Sel. Works I, 201.

वितरम् (von 2. वि mit dem suff. des compar.) adv. *weiter, ferner* (von Raum und Zeit) NIR. 8,9. भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ ṚV. 1,123,11. 124, 5. 2,33,2. वितरं वि क्रमस्व 4,18,11. रोदसी वितरं वि ष्कभायत् 5,29,4. 6,1,11. 10,110,4.

वितराम् (wie eben) adv. *weiter weg* ÇAT. BR. 1,4,1,23.

वितर्क (von तर्क् mit वि) m. 1) *Vermuthung:* यौ तौ कुमाराविव कार्त्तिकेयौ द्वावश्विनेयाविति मे वितर्कः MBH. 1,7083. KUMÂRAS. 1,41. VARÂH. BṚH. S. 74,5. MÂLATIM. 20,3. मां वितर्कैर्बहुभिर्वृतम् R. 4,61,21. बहुवितर्कमभ्यन्तरं प्रविश्य KATHÂS. 28,190. बह्वन्कुर्वन्वितर्कान् 52,219. इत्यनेकवितर्कौघव्याकुलः 87,12. वितर्कपदवीं नैवं समारोहति PRAB. 116, 9. RÂGA-TAR. 6,83. इन्दोर्वितर्कात् *weil er den Mond darin vermuthete* Spr. 2013. — 2) *ein auftauchender Zweifel* JOGAS. 1,17. SARVADARÇANAS. 164,22. BHÂG. P. 6,9,35. संगमविरहवितर्के (st. dessen °विकल्पे Spr. 3101) VET. in LA. (III) 21,1. = संशय H. an. 3,98. MED. k. 157. HALÂJ. 4, 6. ऊं वितर्के 5,90. AK. 3,4,22(28),3. 14. *eine fragliche Sache:* वितर्का किंस्विदादयः JOGAS. 2,34. 33. — 3) *das Hinundherüberlegen, Erwägung;* = ऊह H. 322. H. an. MED. संदेहात्कल्पनान्यत्वं वितर्कः परिकीर्तितः PRATÂPAR. 54,*b*,5. SÂH. D. 169. 74,16 (= तर्क 202). 237. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,8. कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्कः Spr. 966. 1047 (II). 3321. वितर्कः समभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषु को महान् BHÂG. P. 10,89,1. WASSILJEW 251. 256. — 4) N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBH. 1,3747. — Vgl. दुर्वितर्क, निर्वितर्क, स°.

वितर्कण n. = वितर्क ÇABDAR. im ÇKDR.

वितर्कवत् (von वितर्क) adj. *eine Erwägung enthaltend:* इदं वाक्यं वितर्कवत् DAÇAR. 1,36 = SÂH. D. 367.

वितर्क्य (von तर्क् mit वि) adj. *in Betracht zu ziehen, zu erwägen* BHÂG. P. 2,4,19. — Vgl. दुर्वितर्क्य.

वितर्तुरम् (vom intens. von 1. तर् mit वि) absol. *abwechselnd* ṚV. 1,102,2.

वितर्दि f. *eine Terrasse im Hofe eines Hauses zum Aufenthalt und Lustwandeln* AK. 2,2,15. H. 1004. R. ed. GORR. 2,12,32. R. ed. Bomb. 2,80,20, v. l. im Comm. ÇIÇ. 3,55. वितर्दी f. ÇABDAR. im ÇKDR.

वितर्दिका f. dass. HALÂJ. 2,144. RÂGA-TAR. 8,2685.

वितर्द्धि f. dass. ÇKDR. angeblich nach AK. वितर्द्धी f. BHAR. zu AK. nach ÇKDR. वितर्द्धिका f. ÇABDAR. im ÇKDR.

वितल (2. वि + तल) n. N. einer der sieben Unterwelten ÂRUṆ. UP. in Ind. St. 2,178. VP. 204. BHÂG. P. 2,1,27. 5,40. 5,24,7. 17. Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,45. 251,*a*,24. PAÑKAR. 2,2,45. fg. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 70.

1. वितस्त partic. zur Erklärung von वैतस. वैतसो वितस्तं भवति NIR. 3,21. उपस्तीर्णं (also auf तस् zurückgeführt) तद्भवति प्रागनुस्मरणात्स्त्रियाः DURGA.

2. वितस्त = वितस्ति in त्रिवितस्त adj. TBR. 1,5,10,1.

वितस्तदत्त (वितस्ता + दत्त; vgl. P. 6,3,63) m. N. pr. eines buddhistischen Kaufmanns KATHÂS. 27,15.

वितस्ता (nach ÇÂNT. 3,8 auch वितस्ता) f. N. pr. eines Flusses, *Hydaspes* der Griechen, *Bihat* heut zu Tage, ṚV. 10,75,5. NIR. 9,26. MBH. 2,372. 3,5031. 12910. 6,324 (VP. 181). 8,2055. 13,1694. HARIV. 9512. SUÇR. 2,169,4. VARÂH. BṚH. S. 16,27. PRÂJAÇKITTEND. 11,*b*,4. KATHÂS. 27, 10. 37,54. धत्ते नाम वितस्तेति वहन्ती यत्र जाह्नवी 39,37. 63,55. RÂGA-TAR. 1,103. 163. fg. 4,391. 5,88. fgg. नीलजा सरित् 91. 271. 6,305. BHÂG. P. 5,9,18. MÂRK. P. 57,17. 74,6. Verz. d. Oxf. H. 348,*b*, No. 818. Davon nom abstr. °त्व n. RÂGA-TAR. 1,29.

वितस्ताख्य (वितस्ता + आख्या) n. N. pr. der Behausung des Schlangendämons Takshaka in Kâçmîra: काश्मीरेष्वेव नागस्य भवनं तक्षकस्य। वितस्ताख्यमिति ख्यातम् MBH. 3,5032.

वितस्ताद्रि m. N. pr. eines *Berges* RÂGA-TAR. 1,102.

वितस्तापुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 239,*a*,23.

वितस्ति (wohl von 1. तन् mit वि) UṆÂDIS. 4,181 (oxyt.). m. f. (das

m. nicht zu belegen) *Spanne*, als Maass verschieden definirt: *wirkliche Spannbreite; Länge vom Handgelenk bis zur Fingerspitze; zwölf* **Añguli** AK. 2,6,2,35. 3,4,1,7. Trik. 2,2,3. H. 593. Halâj. 2,383. Hiouen-thsang I, 60. Çat. Br. 10,2,2,8. 3,11. 14. Âçv. Gṛhj. 4,1,11. Kauç. 85. Karaṇavjûha in Ind. St. 3,280. Mahânâr. Up. ebend. 2,92. Varâh. Bṛh. S. 26,9. Râǵa-Tar. 4,600. Mârk. P. 49,38. fg. Bhâg. P. 2,6,15. Pañkar. 3,12,3. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. Accent eines auf वि° ausgehenden comp. mit vorangehendem Zahlworte P. 6,2,31.

वितान (von 1. तन् mit वि) 1) m. n. *Ausbreitung, Ausdehnung, grosser Umfang* AK. 3,4,18,116. H. an. 3,414. Med. n. 130. Halâj. 5,62. जगदेतद्द्रुतवितानम् Nîlak. 178. लता° so v. a. *ein Netz von Schlingpflanzen* R. Gorr. 2,56,15. 20. 87,9. 3,21,13. 5,4,4. 17,10. Varâh. Bṛh. S. 27,3. Verz. d. Oxf. H. 187,*b*, No. 428, Z. 15. वल्ली° dass. Çiç. 11,28. विपिन° *ein dichter Wald* Gît. 5,5. *Menge, Fülle, Masse:* ज्योत्स्ना° R. 5,11,1. 3. दिनकरस्य भासाम् Çiç. 11,43. अम्बुमुचां विताने: 4,2. मेघ° Spr. 2072. क्लान्ति° so v. a. *grosse Abspannung* 1769. परिपूरितसुरत° *die mannichfaltigen Arten von Liebesgenuss* Gît. 2,16. — 2) m. *Ausbreitung* d. h. *gesonderte Aufstellung der drei heiligen Feuer: diese Feuer selbst* Ind. St. 9,216. Âçv. Çr. 1,1,1. Kâtj. Çr. 25,7,15. Pâr. Gṛhj. 3,8. Gâbâla bei Kull. zu M. 5,84. यथावितानम् Kauç. 137. Als Devatâ im SV. Ind. St. 3,236,*b*. — 3) m. n. *das in's-Werk-Setzen, Ausführung, Entwickelung, Entfaltung:* लोक° Bhâg. P. 3,26,52. यज्ञस्य च वितानानि 7,30. यज्ञ° 1,17,33. 3,1,33. उरुगार्हमेध° 5,11,2. नानाकर्म° 3,9,34. भक्ति° 25,31. योग° 5,22,4. वेदवितानमूर्ति (वेदैर्वितन्यते स्तूयते मूर्तिर्यस्य Comm.) 3,13,26. — 4) m. n. *Opferhandlung* AK. H. 820. H. an. Med. Halâj. 2,259. 5,62. MBh. 5,1282. 13,7374. उत्तमवितानयाजिन् Çiç. 14,10. Bhâg. P. 2,1,37. 3,16,8. वितानाग्नि 10,69,24. 74,54. 85,39. — 5) m. n. *Traghimmel, Baldachin* AK. 2,6,3,21. Trik. 3,3,258. H. 681. H. an. Med. Halâj. 2,155. 5,62. MBh. 1,6961. 6,2664. 8,2656. Hariv. 6938. Mṛkkh. 92,5. Ragh. 9,50. 17,28. 19,39. Vikr. 76. Çiç. 3,50. Spr. 2034. 2156. Varâh. Bṛh. S. 72,4. Kathâs. 8,4. 73,338. 74,285 (am Ende eines adj. comp. f. आ). Râǵa-Tar. 4,652. Bhâg. P. 7,4,10. 8,15,20. 10,70,44. 81,30. Weber, Kṛshṇaǵ. 270. 272. Pañkar. 3,7,6. 15,3. Saddh. P. 4,12,*a*. Bhaṭṭ. 5,101. — 6) m. oder n. *ein best. Verband für den Kopf* Suçr. 1,65,18. 66,3. — 7) n. Bez. *einer Klasse von Metren* H. an. Med. Ind. St. 8,329. fgg. 367. Colebr. Misc. Ess. II, 119. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–––⏑––– 159 (III, 7). — 8) n. *Gelegenheit* H. an. Halâj. 5,62. — 9) f. आ N. pr. der Gattin Sattrâjaṇa's und Mutter Bṛhadbhânu's Bhâg. P. 8,13,36. — 10) adj. = तुच्छक, तुच्छ (तुत्थ st. dessen H. an.) AK. Med. = रिक्त Trik. = शून्य H. an. Halâj. 5,62. = मन्द (मत्त st. dessen Med.) AK. H. an. अ° *nicht leer* Çiç. 3,50. वितान im Gegens. zu प्रमुदित so v. a. *niedergeschlagen* Ragh. 6,86. — Vgl. मेघ°, वैतान und वैतानिक.

वितानक m. n. 1) = वितान 5) *Traghimmel, Baldachin* Çabdam. im ÇKDr. Kathâs. 48,99. am Ende eines adj. comp. 57,80. R. Gorr. 2,87, 23. 3,61,13. — 2) m. *ein best. Baum,* = माड *Caryota urens Lin.* (liefert den Palmwein) Râǵan. im ÇKDr.

वितानकल्प m. Titel eines zum AV. gehörigen Pariçishṭa Karaṇavjûha in Ind. St. 3,279.

वितानमूलक n. *die Wurzel von Andropogon muricatus* Râǵan. im ÇKDr.

वितानवत् (von वितान) adj. *mit einem Traghimmel versehen* Kumâras. 7,12.

वितानाय् (wie eben) *einen Traghimmel darstellen:* मेघैर्वितानाय्यते (pass. impers.) Mâlatîm. 148,7.

वितामस (2. वि + ता°) adj. *licht, hell* Kathâs. 111,99.

वितायितर् s. u. 1. तन् mit वि 5).

वितार (2. वि + तारा) adj. *sternenlos* Ghaṭ. 3. *ohne Stern* so v. a. *ohne Kern* (ein Komet) Varâh. Bṛh. S. 11,24.

वितारिन् (von 1. तर् mit वि) adj. s. अ°.

वितिमिर (2. वि + ति°) adj. (f. आ) *frei von Finsterniss, licht, hell* MBh. 1,1255. 3,1716. 2665. 5,331. 13,6366. R. 1,76,23 (77,54 Gorr.). 3,43,21. 4,39,2. 43,59. 53,3. 5,18,24. 7,21,9. Bhâg. P. 4,2,5. 30,5. 6,1,36. 9,1,29. 10,38,33. वितिमिरे ज्ञाते *nachdem es hell geworden war* MBh. 1,1479.

वितिलक (2. वि + ति°) adj. *keinen mit Farbe aufgetragenen Fleck habend* (auf der Stirn): वक्त्र Bhâg. P. 4,26,25.

वितुङ्गभाग (2. वि + तुङ्ग - भाग) adj. *anderswo als auf dem Höhepunkt stehend:* क्रियगे (भानौ) वितुङ्गभागे Varâh. Bṛh. 18,1.

वितुद् (von 1. तुद् mit वि) m. N. pr. eines gespenstischen Wesens Taitt. Âr. 10,69.

वितुन्न (wie eben) n. *eine best. Pflanze,* = सुनिषण्णक, सुनिषण्ण AK. 2,4,5,14. Med. n. 129. = शैवाल Med. f. आ *Flacourtia cataphracta Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

वितुन्नक (von वितुन्न) 1) *Loch im Ohr für den Ring* Ratnam. in Nigh. Pr. — 2) *Flacourtia cataphracta Roxb.*, m. AK. 2,4,4,14. Med. k. 213. neutr. H. an. 4,33. f. वितुन्निका Râǵan. im ÇKDr. — 3) *Koriander*, m. AK. 2,9,37. H. an. neutr. Med. Ratnam. 48. — 4) *blauer Vitriol*, n. AK. 2,9,101. H. 1052. masc. Med.

वितुल m. N. pr. eines Fürsten der Sauvîra MBh. 1,5536. विपुल ed. Bomb.

वितुष (2. वि + तुष) adj. *enthülst* Gobh. 4,2,8. वितुषीकर् *enthülsen* Sâj. zu Çat. Br. 1,1,4,22.

वितुष्ट (2. वि + तुष्ट, partic. von तुष्) adj. *ärgerlich, verstimmt* Pañkar. 1,4,30.

वितूस्तय् (von 2. वि + तूस्त), °यति = तूस्तानि विहन्ति Vop. 21,17. 1) *entflechten, aufflechten:* केशान् P. 3,1,21, Schol. — 2) *vom Staube befreien:* वि° पन्थानं वातः Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,86.

वितृण (2. वि + तृण) adj. *graslos* Bhaṭṭ. 2,13.

वितृतीय (2. वि + वि°) 1) adj. Bez. einer Art des Takman AV. 5, 22,13. — 2) n. *Drittel* Çat. Br. 6,5,2,12. 17. 10,2,1,5. 9. Kâtj. Çr. 16,3,30.

वितृप्तक (von वितृप्त, partic. von तर्प् mit वि) adj. *gesättigt:* कामानामवितृप्तकः *der sich an den Genüssen noch nicht gesättigt hat* Spr. 5115.

वितृप्तता (wie eben) f. *Sättigung* Mârk. P. 49,19.

वितृष् (2. वि + तृष्) adj. *frei von Durst* Bhâg. P. 4,6,26. अ° *dessen Durst nicht gestillt werden kann* 29,40.

वितृष (2. वि + तृषा) adj. *frei von Durst:* अ° *dessen Durst —, Ver*

langen nicht gestillt werden kann BHÂG. P. **10**,51,59.

वितृष (2. वि + तृषा) adj. (f. आ) *frei von Durst, nicht durstig* MBH. **12**,3109. *kein Verlangen empfindend, nicht begehrend:* मति BHÂG. P. **1**, 9,32. दृष्टानुश्रविकविषय° JOGAS. 1,15.

वितृषता (von वितृष) f. *das Nichtverlangen, Nichtbegehren, Zufriedenheit* Spr. (II) 1278.

वितृषा (2. वि + तृषा) f. 1) *das Nichtverlangen, Nichtbegehren* BHÂG. P. 5,5,10. कुरु तनुबुद्धिमनस्सु वितृषाम् Spr. 4732. — 2) *ein heftiges Verlangen* BHÂG. P. **10**,7,2.

वितोय (2. वि + तोय) adj. (f. आ) *wasserlos* HARIV. 3466. VARÂH. BṚH. S. 54,109. BHÂG. P. 5,13,6.

वितोला f. N. pr. eines Flusses RÂGA-TAR. 8,922.

1. वित्त (von 1. विद्) adj. 1) *erkannt:* वित्तात्मन् JÂGN. 3,173. — 2) *bekannt, berühmt* P. **8**,2,58. VOP. 26,101. AK. **3**,1,9. TRIK. **3**,3,185. H. 1493. an. 2,195. MED. t. 58. तेन P. **5**,2,26. VOP. 7,74. श्रोवसीयार्ताभ्युपपत्ति° DAÇAK. 60,3.

2. वित्त॑ (von 3. विद्) 1) adj. *a) erhalten, erworben* H. 1490, Schol. व्यस्य वित्तं वेदो हरति ÇAT. BR. **12**,8,**2**,1. AV. **12**,5,1. AIT. BR. 3,25. — *b) ergriffen —, getroffen —, befallen von:* रक्षो° KAUÇ. 37. श्रद्धा° ÇAT. BR. **14**,7,**2**, 28. पिपासया AIT. BR. 2,19. — *c) genommen, geheirathet* (ein Weib) ÇAT. BR. **6**,5,**3**,1. KÂTJ. ÇR. **16**,3,21. — 2) n. *a) Fund* AIT. BR. 3,28. — *b) Habe, Besitz, Gut, Vermögen, Geld* NAIGH. 2,10. P. **8**,2,58. VOP. 26,101. AK. **2**,9,90. TRIK. **3**,3,185. H. 191. an. 2,195. MED. t. 58. HALÂJ. 1,80. ṚV. **5**,42,9. वित्ते र॑मस्व **10**,34,13. VS. 18,11. 14. NIR. 2,24. एतावान्पुरुषः। यावदस्य वित्तम् TBR. 1,4,**2**,7. यद्देवानां वित्तं वेद्यमासीत् TS. 1,5,**9**,2. **6**,2,**4**,3. AIT. BR. 3,48. ÇAT. BR. **1**,9,**1**,20. **6**,6,**2**,4. **13**,5,**4**,24. वित्तैषणा **14**,6,**4**,1. 7,**2**,26. तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् TAITT. UP. 2,8. M. 8,36. 140. 9,198. fg. 10,85. **11**,20. °काम adj. MBH. **1**,5124. बह्व वित्तं मयार्जितम् 3,3033. °संचय R. **2**,39,14. R. GORR. **2**,32,33. SUÇR. **1**,126,16. Spr. (II) 772, v. l. भार्या त्रीणेषु वित्तेषु (ज्ञानीयात्) 954. 992. 998. 1307, v. l. ऊष्मा वित्तजः 1328. Spr. (I) 883. 1316. 1505. 2384. 2790. fg. 2950. 4344. 4922. fgg. ÇÂK. 188. VARÂH. BṚH. S. 5,46. 19,19. वित्ताप्ति 50,19. भूरि 52,3. RÂGA-TAR. 1,78. 202. 6,150. PRAB. 21,7. BHÂG. P. **1**,8,27. **3**,31,41. **5**,13,11. **8**,16,51. **9**,23,25. **10**,50,41. MÂRK. P. 92,37. HIT. 45,7. PAÑKAT. 6,6. पुस्तकानां च लेखनाय लेखकानां वित्तं प्रदत्तमास्ते 237,1. स° LÂTJ. **9**,1,14. दानशतैः सुवित्तैः *überaus reich* Spr. 4289. — Vgl. पितृ° (n. *väterliches Vermögen* VARÂH. BṚH. S. 68,39), प्रथम°, भग°, यथावित्तम्, वेलावित्त.

3. वित्त (von 5. विद्) adj. = विचारित P. **8**,2,56, Schol. AK. **3**,2,49. H. 1475. an. 2,195. MED. t. 58.

वित्तक (von 1. वित्त) adj. *bekannt, berühmt:* तच्छिल्प° DAÇAK. 61,4.

वित्तकाम्या॑ instr. *aus Habsucht* AV. **12**,3,52.

वित्तगोप्तर् m. *der Hüter der Reichthümer*, Bein. Kubera's MBH. 8,4661.

वित्त॑जानि adj. *der ein Weib genommen hat* ṚV. **1**,112,15.

वित्तद् 1) adj. *Besitz verleihend.* — 2) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9,2646.

वित्तध॑ adj. *reich* VS. 30,11.

वित्तनाथ m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's KATHÂS. 34,79.

वित्तनिचय m. *grosser Reichthum*, pl. MÂRK. P. 120,17.

वित्तप 1) adj. (f. आ) *Reichthümer hütend:* अखिलवित्तपा BHÂG. P. **10**, 8,42. — 2) m. Bein. Kubera's HARIV. 13820. R. **7**,3,35. KATHÂS. 95, 5. BHÂG. P. **5**,10,18.

वित्तपति m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's M. **5**,96. MBH. 7,8444. HARIV. 13882. RÂGA-TAR. 8,1912.

वित्तपपुरी f. N. pr. einer *Stadt* KATHÂS. 98,49.

वित्तपाल m. *der Hüter der Reichthümer*, Bein. Kubera's R. **7**,11,25. — Vgl. वैत्तपाल्य.

वित्तपेटा (so die ed. Bomb.) und वित्तपेटी f. *Geldkörbchen, Geldbeutel* PAÑKAT. 126,2.

वित्तम s. u. 2. विद्.

वित्तमय (von 2. वित्त) adj. (f. ई) *in Reichthümern bestehend* KAṬHOP. 2,3.

वित्तमात्रा f. *eine Summe Geldes* PAÑKAT. 32,24 = 29,2 ed. orn.

वित्तय्, वित्तयति (त्यागे) VOP. in DHÂTUP. 35,78. eine aus der Bedeutung (वित्तसमुत्सर्गे) der Wurzel व्यय् durch fehlerhafte Trennung gebildete Wurzel.

वित्तर्द्धि (2. वित्त + ऋद्धि) f. *ein grosses Vermögen* MÂRK. P. 84,32. 121,4.

वित्तवत् (von 2. वित्त) adj. *wohlhabend, reich* ÂÇV. ÇR. **2**,2,1. MBH. 3, 3060. 5,3922. Spr. 2329. 2386. VARÂH. BṚH. 13,1. BHÂG. P. **7**,13,16. 14, 19. PAÑKAT. 8,3.

वित्ताढ्य (2. वित्त + आ°) adj. dass. Spr. 2808.

वित्ता॑यन adj. (f. ई) VS. 5,9 s. MAHÎDH. zu d. St.

वित्तार्थ (1. वित्त + अर्थ) m. *Sachkenner* TRIK. **3**,3,446.

1. वित्ति (von 1. विद्) f. *Bewusstsein* SARVADARÇANAS. 19,1. = ज्ञान H. an. 2,195. fg.

2. वित्ति (von 3. विद्) f. im Mantra oxyt., sonst parox. (so in VS. und ÇAT. BR.) nach P. **3**,3,94. 96. 1) *das Finden, Habhaftwerden:* अ° KHÂND. UP. **1**,11,2. *das in-Besitz-Gelangen, Erwerb;* = लाभ H. an. 2,195. fg. MED. t. 57. VS. 18,14. वित्तिं वेत्स्यमानः ÇAT. BR. **4**,1,**3**,5. 7,3,**1**,19. **14**, 9,**4**,19. ÇÂÑKH. GṚHJ. **1**,15,12. KAUÇ. 20. 106. — 2) *Fund* AIT. BR. 3,28. Hiernach dürfte die Stelle भरताः सत्वनां वित्तिं प्रयन्ति 2,25 richtiger *sie suchen auf* zu erklären sein, als *sie treten in den Sold*, wie u. d. W. भरत nach SÂJ. übersetzt wurde. — 3) *das Gefundenwerden, Vorhandensein;* = संभव H. an. st. dessen fälschlich संभाव MED. — 4) ein Ausdruck des Lobes am Ende eines comp. gaṇa मतल्लिकादि zu P. **2**,1, 66. भित्ति v. l. — Vgl. अ°.

3. वित्ति (von 5. विद्) f. = विचार H. an. 2,195. fg. MED. t. 57.

4. वित्ति m. N. pr. eines göttlichen Wesens Verz. d. Oxf. H. 56,*b*,20.

वित्तेश (2. वित्त + ईश) m. *der Herr der Reichthümer*, Bein. Kubera's M. 7,4. BHAG. 10,23. HARIV. 13822. KATHÂS. 73,48. MÂRK. P. 104, 37. °पत्तन RÂGA-TAR. 1,202.

वित्तेश्वर (2. वित्त + ई°) m. 1) *Besitzer von Reichthümern* VARÂH. BṚH. 14,2. MÂRK. P. 126,8. — 2) Bein. Kubera's KATHÂS. 38,151.

वित्त्व n. nom. abstr. von 2. विद् in ब्रह्म°.

वित्यज (von त्यज् mit वि) s. अ°.

वित्रप (2. वि + त्रपा) 1) adj. *schamlos.* — 2) m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 5,26.

वित्रास (von 1. त्रस् mit वि) 1) adj. *in Schrecken versetzend:* त्रैलोक्य° (नाद) HARIV. 14561. — 2) m. *das Erschrecken, Schreck* AK. 1,1,2,21. SUÇR. 1,374,15. BHÂG. P. 10,50,17. KATHÂS. 26,245. द्विषां वित्रासकारी 67,33. in comp. mit dem subj.: सुग्रीव° R. 4,1 in der Unterschr.; mit der Veranlassung zum Schreck: गङ्गावज्रयवित्रासवेपमान KATHÂS. 19,90. विषाग्नि° 46,93. सिंहव्याघ्रादि° 100,9.

वित्रासन (vom caus. von 1. त्रस् mit वि) adj. (f. ई) *in Schrecken versetzend:* सुकृतिनाम् HARIV. 6806. R. 6,36,84. सर्व° 92,49.

विवॅक्षण (von वक्ष् mit वि) adj. etwa *rüstig* ṚV. 5,34,6. = तनूकर्तृ SÂJ.

वित्सन m. *Stier* ÇABDAK. im ÇKDR.

विथ्, वॅथते (याचने) DHÂTUP. 2,32. — Vgl. वेथ्, विध्.

विथक् indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37.

विथुॅर (von व्यथ्) UṆÂDIS. 1,40. 1) adj. (f. आ) *schwankend, taumelnd:* प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिः ṚV. 1,87,3. 168,6. 186,2. त्वमेषां विथुरा शवांसि (कृणुहि) 6,25,3. 46,6. अतिविद्धा विथुरेणा चिदस्त्रा *von dem taumelnden* d. h. *trunkenen Schützen,* nämlich Indra 8,85,2. AV. 7,95, 1. वधिर्यथासद्विथुरो न साधुः 16,6,11. यद्दुल्बणं यद्विथुरं क्रियते *hinfällig, unsicher* AIT. BR. 2,7. Vgl. अ° (auch ÂÇV. ÇR. 3,1,17). — 2) m. *a) Dieb.* — *b) ein* Rakshasa UǴǴVAL.

विथुर्य् (von विथुर), विथुर्यति *taumeln* ṚV. 10,77,4.

विथ्या f. *eine best. Pflanze,* = गोजिह्वा ÇABDAK. im ÇKDR.

1. विद्, वेत्ति (ज्ञाने) DHÂTUP. 24,56. Im Veda: विद्धि, वित्तात्, वित्तम्, विद्याम्, वेदत्, वेदथस्, वेदति, अवेत्, वेत् (अवेस् aus den Saṁhitâ nicht zu belegen; über वेस् s. unter 1. विष् und वी); वेद, वेत्थ, विदथुस्, विद्म, विद, विदुस्, विद्वांस् (s. bes.). In den BRÂHMAṆA u. s. w.: विद्मसि ÇÂÑKH. ÇR. 15,27,3. वित्थ 2. pl. ÇAT. BR. 13,4,2,17. वेत्तु 1,5,2,1. 9,1, 2,22. AV. 12,3,12. वेदानि, वेदाव; विदां चकार, विदामक्रन् TBR. 1,3,10, 3. P. 3,1,42. अवेदिषम्, वेदिष्यति, वेदिष्यन्ते (KHÂND. UP. 1,9,3); विदित्वा, वेदितुम्; विदथ eine verdächtige Form AV. 1,32,1 (vgl. Journ. of the Am. Or. S. 5,411); विदत् VS. 5,9 angeblich (nach MAHÎDH.) hierher. Bei den Grammatikern: वेत्ति und वेद (mit der Bedeutung eines praes.), वेत्थ u. s. w. P. 3,4,83. VOP. 9,17. विदन्तु = विद्वांस् P. 7,1,36. VOP. 26, 139. AK. 3,4,21,236. अवेस् und अवेत् 2. sg. P. 8,2,75, Schol. अवित्तम् u. s. w. VOP. 9,21. अविदुस् P. 3,4,109. auch अविदन् VOP. 9,20. विदां कुर्वन्तु P. 3,1,41. VOP. 9,18. fg. विवेद und विदां चकार P. 3,1,38. auch विदां बभूव VOP. 9,21. विविद्वांस् P. 7,2,68, Schol. अवेदिषुम् P. 3,1,42, Schol. विदित्वा P. 1,2,8. VOP. 19,16. 26,207. Die in der späteren Sprache vorkommenden Formen wird man im Verlauf des Artikels verzeichnet finden. 1) *Etwas* oder *Jmd kennen lernen, erkennen; wissen, begreifen, sich auf Etwas verstehen, Etwas* oder *Jmd kennen, wissen von Jmd* (acc.); in der älteren Sprache mit acc. und gen.: वेदद्विद्वान् ṚV. 5,30, 3. स वेद देव आनमं देवान् 4,8,3. 8,24,24. वेद वातस्य वर्तनिम् 1,25,9. 43,9. विदा देवा अघानामपाकृतिम् 8,47,2. त्वष्टा माया वेत् 10,53,9. AV. 8,9,3. प्रत्यत्नम् 10,7,24. 14,1,57. VS. 31,18. AIT. BR. 2,1. 7,1. TS. 5,3, 8,1. ÂÇV. GṚHJ. 1,5,5. 15,8. य एवं वेद stehende Formel in den BRÂHMAṆA, z. B. TS. 5,2,10,3. ÇAT. BR. 10,6,2,4. कृत्स्नमेतद्भगवतो वेदानि KHÂND. UP. 1,8,7. विदां चकार 2,13. अवेदिषम् PRAÇNOP. 6,1. अवेदीत् KENOP. 13. विदाम ÇVETÂÇV. UP. 6,7. एष वेद निधीनाम् ṚV. 8,29,6. विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः 1,131,4. 4,42,7. न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयम् 5,48,5. ÇAT. BR. 13,4,2,17. — यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्रः प्रत्यभिवादनम् M. 2,126. विद्याम् MBH. 3,2800. रामो क्षेममृगं न वेत्ति *hat keine richtige Vorstellung von* Spr. 2631. 2674. देवो वेत्ति तु नो कुतः KATHÂS. 43,231. श्रुत्वा वेत्त्यधुना प्रभुः so v. a. *weiss, was jetzt zu thun ist,* 110, 6. तद्देवो वेत्त्यतः परम् 115,106. वेत्सि ÇUK. in LA. (III) 34,2. वेद्मि KATHÂS. 12,130. वित्थ M. 8,80. विदन्ति MBH. 7,3378. BHÂG. P. 7,9,49. विद्धि BHAG. 4,34. विद्धि यथा *wisse, dass* MBH. 3,15681. एतद्विदन्तः M. 4,91. 125. RÂǴA-TAR. 5,54. यो वेदैनम् M. 11,264. fg. 12,106. MBH. 3, 1651. 2246. आत्मैव हि नलं वेद (st. dessen वेत्ति 2904) या चास्य तदनन्तरा। नहि वै स्वानि लिङ्गानि नलः शंसति कर्हिचित्॥ 2905. R. 4,10, 36 (mit der Bed. eines perf.). Spr. (II) 1319. RAGH. 2,43. NAISH. 22,55. वेत्थ BHAG. 10,15. MBH. 1,4258. 3,16893. यथा विद KATHÂS. 51,76. विदुस् BHAG. 10,14. MBH. 1,6164. 3,15593. शास्त्राणि सर्वाणि विदां करोतु Spr. 3016. विदां कुर्वन्तु 1883 (II). SARVADARÇANAS. 118,22. fg. BHAṬṬ. 6,4. विद्यात् M. 7,67. 8,56. 9,298. 332. Spr. 1438. 1369. न नो विद्यात्सुयोधनः MBH. 1,6040. कथं विद्यां नलं नृपम् 3,2203. न त्वां विद्युर्जनाः (so ist mit NAL. und der ed. Bomb. zu lesen) 2621. R. 2,46,31. अविदत् BHÂG. P. 3,8,17. विवेद wirkliches perf. HARIV. 8461. KATHÂS. 34,161. विविदुस् BHAṬṬ. 14,49. विदां चकार 50. नावेदिषुर्दिशः R. 1,74,14. अवेत् (!) Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,19. विदितवानसि HARIV. 4873. वेत्स्यामि u. s. w. MBH. 2,1768. 3,2778. 16968. KATHÂS. 33,34. 36,124. Verz. d. Oxf. H. 59,*a*,34. BHÂG. P. 8,24,38. श्रुतवृत्ते विदित्वास्य M. 7,135. 202. तान्विदित्वा सुचरितैर्गूढैस्तत्कर्मकारिभिः 9,261. एवम् BHAG. 2,25. MBH. 1,6118. 5,7515. 12,4304. VARÂH. BṚH. S. 21,4. 50,10. वेदितुम् BHAG. 18, 1. एतदिच्छामि वे° MBH. 1,1660. 6517. 3,507. 1507. 2953. 13553. 5, 6066. 12,10440. 13,3548. 3624. 14,2400. HARIV. 24. R. 3,7,18. 4,59,23. KUMÂRAS. 5,50. ÇÂK. 153. BHÂG. P. 1,5,16. 2,8,2. 6,9,31. 10,70,38. वेत्तुम् MBH. 13,3628. R. 2,105,8. mit infin. *verstehen:* न वेत्ति रामः परुषाणि भाषितुम् 12,104. RAGH. 6,30. Spr. 1558. 1648 (II). med.: विद्महे R. 1,57,5. 3,75,38. विदन्ते (वदन्तम् ed. Bomb.) MBH. 12,1349. वेत्स्यते MBH. 4,25. R. 4,27,18. 5,94,11. pass.: साधु विद्यते VET. in LA. (III) 31,10. — 2) *in Jmd* oder *in Etwas Jmd* oder *Etwas erkennen, kennen als* (oft so v. a. *erklären für, nennen*): कथं मां वेत्सि चाण्डालम् MBH. 13,1880. fg. तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ÇÂK. 76. अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः *rein wissen* 123. अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायाम् *wisse dass* KAṬHOP. 1,14. अविनाशि तु तद्विद्धि BHAG. 2, 17. 13,19. 18,21. MBH. 1,6012. 3,2156. 2222. 2433. 2611. 2833. R. 1, 61,17. 2,30,6. 40,7. 3,41,3. MEGH. 97. RAGH. 1,79. 11,76. Spr. (II) 1603. अन्यथा मां मृतं विद्धि KATHÂS. 7,91. 49,202. तं मां वित्तास्य सर्वस्य स्रष्टारम् M. 1,33. KUMÂRAS. 6,30. वेत्थ KATHÂS. 35,137. तद्वै युगसहस्रान्तं ब्राह्मं पुण्यमहर्विदुः M. 1,73. 75. 2,22. 3,24. 9,44. RAGH. 3,49. Spr. 1392. 4162. 4659. 4675. भारताख्यं तु वर्षं हैमवतं विदुः TRIK. 2,1,2. 7,3. यमेव तु शुचि विद्या नियतं ब्रह्मचारिणम् M. 2,115. तमपीह गुरुं विद्यात् 149. 3,23. 4,104. Kâr. zu P. 1,1,14. विवेद RÂǴA-TAR. 8,1835. न चैनं विविदुर्देवं कृतत्नपणाकाकृतिम् KATHÂS. 20,132. एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा MEGH. 111. RAGH. 3,43. med.: वेदते ÇVETÂÇV. UP. 5,6. विद्महे MBH. 1,3895. statt des zweiten acc. der nom. mit इति, z. B. शि-

खण्डीति च तां विदुः MBh. 3,7407. R. 1,57,8. स्तेन इत्येव तं विदुः Spr. 4915. Vop. 24,8. मां विदित्वा कृतेति *wenn er erfährt, dass* R. 3,55,52. — 3) *merken, beachten; eingedenk sein:* मन्त्रस्य ṚV. 2,35,2. विद्युर्मे अस्य देवाः 1,23,24. 105,1. 2,32,2. 3,39,1. 5,12,3. 39,2. अग्ने वित्ताद्धविषः 5,60,6. मनीनाम् 8,5,37. 48,8. 7,72,2. AV. 6,123,8. VS. 6,2. Çat. Br. 4,3,3,19. स हि नेत्रमवेत्तवे AV. 10,10,22. Ait. Br. 2,19. सो ऽवेदिन्द्रो वायुर्मुद्धि जयतीति Indra *merkte, dass* Vâju *Sieger sein werde,* 25. 3,20. Çat. Br. 3,6,2,6. 11,6,2,5. न वेत्ति विभवं स्वम् *achtet nicht auf* Spr. (II) 585. — 4) *wahrnehmen, bemerken:* तस्यान्तरं विदित्वा R. 1,48,17 (49,17 Gorr.). Çâk. 14,4. स तु तद्याञ्चमविदन् Kathâs. 37,214. स्वं तु नाङ्गभेदं विवेद सः 39,156. mit einem zweiten acc.: तां विदित्वा चिरगताम् MBh. 1,5962. न विवेद तयोरतृप्तयोः प्रियमत्यन्तविलुप्तदर्शनम् Kumâras. 4,2. 7,54. न विवेद गतां निशाम् Kathâs. 64,49. Râǵa-Tar. 3,147. 405. 5,95. नात्मानं विविदुर्विद्धमिषुभिः Ragh. 9,60. विदां चकार Bhaṭṭ. 6,1. — 5) *erfahren, zu geniessen haben:* विद्यामवसो वो अस्य ṚV. 2,27,5. एतावत्तस्ते विद्याम नव्यसः Vâlakh. 2,9. या न वेत्ति सदा पुंसां चतुराणां रतिक्रमम् Vet. in LA. (III) 16,20. न वेत्ति दुःखमण्वपि Spr. 4762. न दुःखमुचितं किंचिद्राज्ञा वेद यथा जनः MBh. 4,21. दुःखं वनवासस्य वेत्स्यति R. 2,52,90 (29 Gorr.). न विवेद दुःखम् Ragh. 14,56. नाविदद्भयम् Bhâg. P. 4,27,18. तद्दीर्घकालं वेत्तासि so v. a. *daran wirst du lange denken müssen* R. 7,36,34. वेत्ति न वेदनाम् *empfindet keinen Schmerz* Jâǵń. 3,130. गन्धरसान् Suçr. 2,369,11. 373,2. — 6) *glauben, wähnen, annehmen, voraussetzen:* मृतो ऽयमिति न वेत्ति Vet. in LA. (III) 21,4. दार्ष्यं स्वयशसो विदन् Râǵa-Tar. 6,173. विदित्वेति (= इति वि°) 8,2003. mit einem zweiten acc. so v. a. *halten für:* य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् Bhag. 2,19. Suçr. 1,113,12. Spr. (II) 519. 926. (I) 4266. यं मां वेत्सि Râǵa-Tar. 1,135. विदन् 3,150. विदन्ति Spr. 2125. विवेद Râǵa-Tar. 4,22. 315. — 7) *wissen wollen, prüfen* Çat. Br. 12,4,1,3. 9,2,4. तां वेद (2. sg. imper.) so v. a. *erkundige dich nach ihr* MBh. 3,2688. — 8) विदितं *kennen gelernt, gekannt, bekannt als* Kâr. zu P. 8,2,56. Vop. 26,131. AV. 4,27,7. यौ विदितावसुभृतामसिष्ठौ 28,2. यद्देवैर्विदितं पुरा 6,12,2. Çat. Br. 7,2,1,11. 9,1,1,17. 11,5,3,8. Nir. 11,33. P. 5,1,43. MBh. 3,2691. 5,5984. तुभ्यम् 7045. 7116. तव 7258. 12,4297. R. 1,2,37. 68,6. 2,35,17. R. Gorr. 1,70,2. 3,35,38. 37,22. 4,9,66. 10,14. 5,18,31. विदितागम Suçr. 1,242,1. वंशे भुवनविदिते Megh. 6. Çâk. 7,17. 40,4. 108,16. सा बाला परवतीति मे विदितम् 53. विदितार्थ 111,12, v. l. Vikr. 63,9. Kathâs. 3,74. Prab. 3,6. 22,10. Bhâg. P. 3,15,30. विदितात्मन् R. 1,43,8. 2,58,13. 103,22. 4,18,19. तच्चैकस्याः स्वभार्यायाः स चक्रे विदितं तदा Kathâs. 19,34. सौमित्रिर्मम विदितः प्रधानमित्रम् R. 2,107,19. Pańkat. I,458. रामो नो विदितो यो ऽयं यथा च वसुधां गतः *wir wissen von* Râma R. 3,30,22. त्रेतायुगे प्रसूतो ऽसि विदितो मे ऽसि नारदात् *ich weiss durch* Nârada *von dir, dass* Hariv. 6483. विदितो मन्ये न ते ऽहं राघवं (राघवे?) यथा *du weisst nicht, wie ich zu* Râma *stehe,* R. 2,73,11. विदितो भवानाश्रमसदामिहस्थः *haben erfahren, dass* Çâk. 28,11. विदितं भवतामेतद्यथा *es ist euch bekannt, dass* R. 2,2,3. R. Gorr. 1,72,14. 4,9,10. Kumâras. 4,36. विदितं वाथ वाज्ञातं पितुर्मे संविधीयताम् *mit oder ohne Wissen meines Vaters* MBh. 3,2954. अविदित Çat. Br. 10,6,1,4. 11,5,3,8. 14,4,2,28. R. 1,7,10. 2,51,7. 86,8. गृहादविदितः पित्रोः प्रायाद्धात्युमितस्ततः *ohne Wissen der Eltern* Kathâs. 123, 294. 158 (wo अविदितो st. अवेदितो zu lesen ist, wie schon das Metrum zeigt). अविदिते पितुः *ohne Wissen des Vaters* MBh. 5,5971. तस्मादविदितं तस्य गन्तव्यं क्रोधनस्य नः *ohne sein Wissen* Kathâs. 39,167. सुविदित Çat. Br. 10,6,1,10. MBh. 4,70. अयं सुविदितं कुर्यात् M. 12,105. विदित = बुधित AK. 3,2,57. H. 1496. an. 3,297. Med. t. 159. = श्रुत H. an. = अर्थित Med. = प्रतिज्ञात (Colebr. संविदित st. विदित) AK. 3,2,58. Vgl. 1. वित्त. — 9) fehlerhaft für 3. विद्, z. B. नाविदन्धृतिमात्मनः (नाविन्द° ed. Bomb.) MBh. 7,8885. विन्ध्याद्धङ्कसुवर्णाकम् (विन्ध्या° ed. Bomb.) 13,5384.

— caus. वेदयते (चेतनाख्यानविवासेषु Dhâtup. 33,34. वेदन st. चेतन und विवास, निवेदन, परिवादन und वाद st. विवास v. l.) und seltener वेदयति. 1) *ankündigen, mittheilen, melden:* आचार्याय Âçv. Çr. 8,14,3. Gṛhj. 1,22,10. 12. 24,7. 30. Çat. Br. 14,6,11,6. Khând. Up. 8,7,3. M. 11,31. त्रिप्रमागमनं मह्यं तस्य त्वं वेदयस्व ह MBh. 14,1835. वेदयानो भयं घोरम् 6,5207. Varâh. Bṛh. S. 31,2. वेदयितुम् R. Gorr. 2,16,46. वेदित Râǵa-Tar. 3,351. act. Jâǵń. 3,243. MBh. 4,1463. Hariv. 10297. उपस्थितं भयं घोरं पक्षिणो वेदयन्ति ते R. Gorr. 1,76,14. त्वया गुप्तौ च काकुत्स्थौ वेदयतु नृपाय ते *melden, dass* 69,27 (67,26 Schl.). बलं सङ्ग्रामवेदयन् R. Schl. 2,82,25. यः साधयन्तं छन्देन वेदयेद्धनिकं नृपे so v. a. *anklagen, dass* M. 8,176. — 2) *lehren, erklären* Çâṅkh. Çr. 4,21,26. Nir. 5,2. 11. 6,27. ऋषेरन्तपरिद्यूनस्यैतदार्षं वेदयन्ते 9,8. — 3) *kund thun* so v. a. *zeigen, anwenden:* वेदयामास मान्धाता दिव्यं पाशुपतं महत्। तदस्त्रम् R. 7,23,2, 52. — 4) *kennen:* अवेदयानो नष्टस्य देशं कालं च तत्त्वतः। वर्णं रूपं प्रमाणं च M. 8,32. MBh. 1,3626. कृतं च क्रोध्यमाणं च काले वेदयते सदा 2,175 (vgl. R. Gorr. 2,109,8). 13,7389. 14,986. वेदितवान् R. 7,35,12. नाकृतात्मा वेदयति धर्माधर्मविनिश्चयम् MBh. 3,14048. 4,1531. Hariv. 11293. 12287. नासौ वेदितवान्धनैर्विरहितं विश्रब्धसुप्तं जनम् *wusste nicht, dass* Mṛkkh. 52,3. *halten für:* यन्मां वेदयसे प्रियम् MBh. 4,724. ब्राह्मणयां वृषलाञ्जातं वेदयतीव माम् 13,1886. समुपागतं सुतं सुमन्त्रतो वेद्य *nachdem er erfahren hatte, dass* R. Gorr. 2,34,29. *erkennen, wahrnehmen:* यद्वेद्यते येन वेदनेन तत्ततो न भिद्यते यथा ज्ञानिनात्मा वेद्यन्ते तैश्च नीलादयः Sarvadarçanas. 16,11. fg. परस्य सुखं वेदयति P. 3,1,18, Schol. — 5) *fühlen, empfinden:* त्वचा हि स्पर्शान्वेदयते Çat. Br. 14,6,2,9. येन वेदयते सर्वं सुखं दुःखं च जन्मसु M. 12,13. सुखम् P. 3,1,18, Schol. रुजम् MBh. 12,6912. वेदये न च संयुक्तान् शब्दस्पर्शरसानहम् R. 2,64,67. — 6) वेदयन्ति MBh. 13,5186 fehlerhaft für रमयन्ति, wie die ed. Bomb. liest; अवेदितो Kathâs. 1,23,158 fehlerhaft für अविदितो, wie auch das Metrum zeigt.

— desid. विविदिषति P. 1,2,8. Vop. 19,16. *zu wissen wünschen, erkennen —, kennen lernen wollen* Nir. 2,8. Çat. Br. 11,5,3,1. 14,7,2, 25 (= Vedântas. [Allah.] No. 8. Kull. zu M. 12,87). Bhâg. P. 2,9,41. Sarvadarçanas. 56,14. भगवन्तं वा अहं विविदिषाणि Khând. Up. 1,11,1. विवित्सतां नः Bhâg. P. 10,64,8. अवाप्तविविवित्सित 1,13,1. यावत्स करभग्रीवकोट्टमार्गं विवित्सति *sich erkundigen nach* Kathâs. 102,64.

— desid. vom caus. s. विवेदयिषु.

— अनु *wissen, vollständig kennen* ṚV. 1,34,2. 164,18. अन्वेषामवेदं जनिमानि 4,27,1. पूर्वेमा आशा अनु वेद सर्वाः 10,17,5. देवाननुविद्वान्

Çat. Br. 1,5,1,6. AV. 12,2,38. 52. यद्यप्येको ऽनुवेदैषां भावानां चैव संस्थितिम् Jâǵn. 3,104.

— समनु caus. *in Erinnerung rufen* Ait. Br. 3,20.

— अभि caus. *melden* R. Gorr. 2,4,23.

— व्यव *unterscheiden können* Çat. Br. 1,6,1,19.

— आ *gut kennen, genau wissen:* कश्छन्दसां योगमा वेद RV. 10,114,9. Vgl. आविद्, आविद्वंस्. — caus. 1) *anreden, einladen; ankündigen* RV. 4,36,2. 7. 10,151,1. Çat. Br. 5,3,5,31. *kund thun, mittheilen, melden, anzeigen* Jâǵn. 2,5. 6. MBh. 1,3820. 15,1083. Hariv. 9128. R. 1,1,60. R. Gorr. 1,19,1. 2,3,5. 7. 4,39,43. 5,56,133. Kumâras. 6,21. आत्मनः सुमहत्कर्म व्रणैराविद्य Ragh. 12,55. Çâk. 112,15. शयनगृहमार्गमावेदय (v. l. आदेशय) 72,12, v. l. 94,2, v. l. Vikr. 82,18. Mâlav. 10,7. Spr. 1755. Varâh. Bṛh. S. 12,15. Kathâs. 3,70. 18,76. 22,72. 25,69. 280. 26,50. 278. 29,29. 39,164. 52,5. Prab. 78,8. 83,9. Bhâg. P. 1,13,12. 3,4,19. 7,8,2. 10,41,18. Hit. 97,13. आत्मानम् *sich anmelden, seinen Namen nennen* Kathâs. 22,110. पुरोगावेदितश्चैनमभ्यगात्स पुरोहितम् *angemeldet von* 24,122. 50,164. Râǵa-Tar. 3,116. 371. 5,450. राज्ञ आवेदयध्वं मां संप्राप्तम् *meldet, dass* R. 1,20,5 (21,4 Gorr.). 7. R. Gorr. 2,3,18. 34,28. Çâk. 30,4. Bhaṭṭ. 3,49. यावदावेद्यते राज्ञे हतः कर्णो ऽर्जुनेन वै MBh. 8,4992. *Jmd* (acc.) *benachrichtigen:* आवेदित Ragh. 5,23. Râǵa-Tar. 1,224. — 2) *Jmd Etwas anmelden* so v. a. *anbieten, darbringen:* तस्यार्घ्यमासनं चैव गां चावेद्य MBh. 3,16696. तनयेयमनावेद्य राज्ञो देया क्वचिन्न मे Kathâs. 15,66. आवेदितापि सा पित्रा न तेनात्ता मद्भीभृता 33,63. 91,11. — Vgl. आवेदक fgg.

— समा caus. *kund thun, melden* MBh. 2,14. Kâm. Nîtis. 18,68.

— नि *kund thun, zu Jmd sprechen:* न्यवेदिषुः Bhâg. P. 10,30,3. °वेदितुम् = °वेदयितुम् MBh. 2,1724. Çâk. 60,18 (°वेदयितुम् v. l.). Vgl. निविद्. — caus. 1) *Jmd* (dat. gen. loc.) *kund thun, melden, sagen, berichten, ankündigen, mittheilen, anzeigen* M. 2,236. 3,109. 7,117. Jâǵn. 2,20. 172. 3,258. MBh. 1,2371. 3224 (med.). 5171. 6476 (med.). 7685. 2,1723. fg. 3,1869. 2103. 2265. fg. 2292. 2756. 2920. 2927. 11994. 16697. 5,5965. 6043. 7339. 7423. R. 1,1,72 (°वेदयित्वा). 76 (81 Gorr.). 9,40. 39,1. R. Gorr. 1,80,26 (med.). 4,27,23. 5,15,37. fg. 6,84,31. Ragh. 1,95. 2,68. 10,30. 15,65. Çâk. 50,17. एकमप्यन्तरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् Spr. 1367 (II). 3287. 4083. Varâh. Bṛh. S. 38,4. 54,105. 68,89. 86,5. Kathâs. 4,16. 71. 11,19. 14,7. 18,195. 241. 367. एवं विज्ञपदत्तेन तेन तत्र निवेदिते 25,281. Mârk. P. 72,17. Kathâs. 27,194. 32,15. Râǵa-Tar. 3,505. 4,273. fg. Prab. 64,16. 83,8. Bhâg. P. 1,7,41. 4,6,2. 13,49. Mârk. P. 21,26. Pańkat. 43,23. 68,22. 81,17. 96,21. 98,3 (°वेदयामास ed. Bomb. st. °वेदयित्वा). 228,4. Hit. 40,11. Vet. in LA. (III) 6,4. तन्ममाग्रे निवेदय 6,15. 7,15. न्यवेदयत्तामस्वस्थाम् *meldete, dass* MBh. 3,2109. 2139. 2278. 5,7457. R. 1,18,1. R. Gorr. 1,12,28. 4,39,42 (med.). 5,3,20. 89,65. Râǵa-Tar. 3,231. निवेदयन्ति तां नगस्वरूपिणीम् so v. a. *nennen* Çrut. 14. *Jmd anmelden* Ait. Br. 1,10. Çat. Br. 3,2,1,39. MBh. 3,1833. 11547. 13,1414. Hariv. 8843. Çâk. 7,18, v. l. 101,11. Kathâs. 38,7. 45,365. अन्तः प्रविष्टो ऽहं शिष्यैरग्रे निवेदितः 6,66. आत्मानम् *sich anmelden* (*indem man seinen Namen nennt*) R. 2,54,12 (med. = 14 Gorr.). Kathâs. 26,151. 32,111. कथमिदानीमात्मानं निवेदयामि। कथं वात्मापहारं करोमि Çâk. 13,21. — 2) *Jmd Etwas anmelden* so v. a. *anbieten, übergeben* Ait. Br. 3,9. Çat. Br. 3,3,4,17. Âçv. Gṛhj. 4,7,27. Gobh. 2,10,42. भैक्षं गुरवे M. 2,51. 3,253. सर्वस्वम् 11,116. Jâǵn. 1,27. 2,307. MBh. 1,702. 2369. 3,16645. 12,6346. देवेभ्यो ऽन्नम् 13,3369. Hariv. 6302. R. 1,25,19. 46,10. 2,84,16. 3,63,26. 7,1,13. Suçr. 1,240,7. Ragh. 15,70. Kathâs. 26,203. 75,174. Râǵa-Tar. 5,52. Bhâg. P. 4,22,44. 9,6,8. 10,38,38. Mârk. P. 97,15. Weber, Kṛshṇaǵ. 297. 309. Pańkar. 2,4,22. fg. 25. 28. fgg. 3,8,16. Daçak. 76,14. Pańkat. 174,16. राज्ञे दस्यून् so v. a. *überantworten* MBh. 1,4315. 5,5436. R. 2,78,8. आत्मानम् *sich zu eigen übergeben, sich zur Verfügung stellen* Çat. Br. 11,5,4,1. M. 4,253. fg. Jâǵn. 1,166. मम हस्ते निवेदिता (सीता) *übergeben* R. 7,45,10. — 3) न्यवेदयत् MBh. 14,2678 fehlerhaft für न्यवेशयत्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निवेदक fg., निवेदिन् fg.

— अतिनि caus. *Jmd Etwas anbieten* Pańkar. 3,9,4. vielleicht fehlerhaft für अभिनि°.

— विनि caus. 1) *kund thun, berichten, melden* MBh. 5,7344. R. 1,1,72 (77 Gorr.). Kathâs. 71,65. *Jmd anmelden* MBh. 1,4906. — 2) *Jmd Etwas anbieten, übergeben* Çańkha bei Kull. zu M. 3,236.

— संनि caus. 1) *kund thun, berichten, melden* MBh. 1,4064. 5,155. R. 6,112,69. 7,31,12. चिरं गतं पुनः कन्या पित्रे तं संन्यवेदयत् *meldete, dass* MBh. 1,3224. — 2) *anbieten:* आत्मानम् so v. a. *sich Jmd zur Verfügung stellen* R. 2,56,13, *g*.

— निस् caus. *kund thun, an den Tag legen:* धिगस्तु खलु दारिद्र्यमनिर्वेदितपौरुषम् (अनिवेदित°?) Mṛkkh. 50,9.

— परि *genau wissen, — kennen,* πέρι οἶδε Hom.: य आकूतिं परि वेदा वषट्कृतिम् RV. 1,31,5. 6,1,9. निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद AV. 6,84,1. Vgl. परिविद् und 1. परिवेदन (st. dessen पदवेदन ed. Bomb.). — caus. med. Nir. 14,22. Bisweilen fälschlich für परिदेवय्, z. B. MBh. 7,2615, wo die ed. Bomb. पर्यदेवयत् st. परिवेदयन् der ed. Calc. liest; st. परिवेदित R. 2,39,40 (38,50 Gorr.) hat die ed. Bomb. परिदेवन; vgl. 3. परिवेदन.

— प्र *kennen, wissen:* नहि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थाम् RV. 10,71,6. 15,13. AV. 8,9,10. 9,1,6. 7. MBh. 12,8944. स (योगः) तु दुःखं प्रवेदितुम् 589. प्रविद्वंस् *wissend, wissentlich verfahrend; kundig* RV. 1,147,5. 7,33,12. TBr. 3,6,6,4. AV. 5,26,1. 11,1,31. 12,2,55. Vgl. प्रविद्, प्रवेत्तर् (in den Nachträgen), प्रवेद, प्रवेदिन्. — caus. 1) *kund thun, verkünden, berichten;* med. Taitt. Up. 1,5,1. R. 4,3,2. चारैः प्रवेदिते तत्र MBh. 7,2613. — 2) *eine richtige Erkenntniss haben* Muṇḍ. Up. 1,2,9. — Vgl. प्रवेदन, प्रवेद्य.

— अनुप्र, partic. *genau kennend:* पन्थामनु प्रविद्वान् RV. 10,2,7.

— प्रतिप्र caus. *verkünden, zu wissen thun* TS. 3,1,4,1.

— प्रति *merken, erkennen:* प्रति त्वादितिर्वेत्तु VS. 1,14. 16. — caus. 1) *zu wissen thun, ankünden, melden* MBh. 3,8275. 4,712. 5,7549. 6,3984. 12,9388. 9391. R. 2,46,26. 57,23. 4,61,50. 5,37,27. विदर्भान्संप्राप्तमृतुपर्णं जना राज्ञे प्रत्यवेदयन् (so ed. Bomb. und N. 21,1) *meldeten, dass* MBh. 3,2852. 15669. 14,2588. R. 5,32,24. 35,14. रामस्य स्यन्दनम् *anmelden* so v. a. *melden, dass der Wagen bereit stehe,* 2,46,32 (44,27 Gorr.). नावं गुहाय 52,6. *Jmd anmelden* MBh. 5,973. R. 7,105,6. *Jmd mit Etwas bekannt machen,* mit zwei acc.: याचनां प्रतिवेदिताः 2,45,

15. — 2) *Jmd Etwas anbieten, zur Verfügung stellen, übergeben* ṚV. 1, 162, 4. AV. 6, 119, 2. 12, 3, 44. Kauç. 42. परिचर्या स्वका तस्मै MBh. 3, 3018. ज्वलमानं पायसम् 13, 7424. वल्कलं तस्मै R. 1, 2, 9.

— संप्रति caus. *zu wissen thun, verkünden* MBh. 1, 3627. 4, 2213.

— वि *unterscheiden, wissen* ṚV. 1, 185, 1. 10, 12, 5. — caus. विवेदयामास Indr. 5, 52 fehlerhaft für निवे°.

— सम् med. P. 1, 3, 29, Vârtt. 1. Vop. 23, 14. संविदते und संविद्रते P. 7, 1, 7. Vop. 9, 42. 1) *zusammen wissen, wissen, kennen;* act. ṚV. 5, 34, 8. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म AV. 6, 46, 2. साम्रा साम 10, 8, 41. 11, 6, 9. संविद्वान् 1, 25, 1. न चेत्पुराणं संविद्यात् Verz. d. Oxf. H. 50, *a*, 15. संवित्तस्तच्छक्तिम् Bhaṭṭ. 5, 37. med.: के न संविद्रते यथा 8, 17. 18, 29. संवेत्स्यसे *du wirst kennen lernen* Verz. d. Oxf. H. 71, *a*, 37. संविदित *erkannt:* लग्ने छायाम्बुपत्वसंविदिते Varâh. Bṛh. S. 2, 3. *bekannt:* अस्तु वः संविदितं यथा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 27, 5. पश्चाच्छिष्यसकाशात्तु कालः संविदितो मया *erfuhr ich* Hariv. 1036. सर्वे संविदिता (तो विदिता die neuere Ausg.) देशाः प्राग्युम्निर्न च दृश्यते so v. a. *durchsucht* 10350. — 2) *empfinden (schmecken* u. s. w.): यो वा रसान्न (so ist zu lesen) संवेत्ति Suçr. 1, 113, 11. — 3) *einverstanden sein:* इच्छाम्यहं वरमस्मै प्रदातुं तन्मे विप्राः संविदधं (man hätte संविद्वम् oder संविन्दधम् von 3. विद् erwartet) यथावत् MBh. 1, 2114. mit einem acc.: ते पृथग्दर्शनास्तस्य संविदन्ति तथैकताम् 12, 10053. सर्वेषामेव नः सर्वमेतत्संविदितं यथा *wir sind alle darin einverstanden* R. 5, 82, 5. जयसेनायास्तावत्संविदितं गच्छ *im Einverständniss mit* Mâlav. 45, 17. संविदित = उरीकृत u. s. w. AK. ed. Colebr. 3, 2, 58 (विदित Lois.). — 4) *ermahnen:* एवं संविदिते भर्त्रा Bhâg. P. 3, 14, 29. — caus. 1) *Jmd zur Erkenntniss bringen, erleuchten* Praçnop. 5, 3. — 2) *kund thun, verkünden* MBh. 4, 2177. — 3) *erkennen, wahrnehmen:* समवेद्यन्त च द्विषः Bhaṭṭ. 17, 63.

— अनुसम् *zugleich mit Etwas —, in Folge von Etwas wissen* AV. 10, 7, 17. 26.

— अभिसम् *wissen, kennen:* यं त्वा होतारं मनसाभि संविदुः AV. 3, 21, 5.

— प्रतिसम् s. प्रतिसंविद् fgg.

2. विद् (= 1. विद्) 1) nom. ag. *wissend, kennend, sich verstehend auf, vertraut mit Etwas, Kenner:* एवं यो वित् Kaṭhop. 6, 18. विदां वरः Sarvadarçanas. 119, 1. Bhâg. P. 1, 5, 40. 3, 4, 16. 11, 16. 8, 19, 29. अ° 10, 19. Ueberaus häufig in comp. mit einem obj. P. 3, 2, 61. कार्यतत्त्वार्थ° M. 1, 3. अहोरात्र° 73. धर्म° 2, 61. 245. सर्वधर्म° 8, 63. वेदार्थ° 3, 186. MBh. 3, 2074. 2078. गजयान° 15733. R. 1, 1, 1. 15. 65, 22. 2, 72, 34. Çrut. 5. Ragh. 1, 94. Spr. 125 (II). 3340. AK. 2, 7, 16. Varâh. Bṛh. S. 69, 21. 81, 36. Bṛh. 14, 4. Kathâs. 48, 29. Râǵa-Tar. 4, 245. 498. 5, 380. Bhâg. P. 2, 2, 27. Hit. 15, 13. superl.: वेदवित्तम M. 5, 107. अध्यात्म° Jâǵn. 1, 199. योग° Bhag. 12, 1. अस्त्र° MBh. 1, 5101. Kâm. Nîtis. 9, 78. 12, 18. Kathâs. 34, 194. Bhâg. P. 4, 13, 24. 7, 14, 34. Vgl. 1. अश्वविद्, एवं°, क्रतु°, क्षेत्र°, 1. ज्योतिर्विद्, तद्विद्, देव°, दैव°, निमित्त°, नीथा°, पुरा°, पुराण°, पूर्व°, प्रकल°, बहु°, ब्रह्म°, भूत°, भृग्वङ्गिरो°, मति°, मनो°, मन्त्र°, मर्म°, मृदु°, योग°, वचो° u. s. w. — 2) m. *der Planet Mercur* (vgl. ज्ञ) Varâh. Bṛh. 2, 2 (Z. f. d. K. d. M. 4, 318). — 3) f. *das Wissen, Erkenntniss:* शक्री वा यत्ते ब्रह्म चकृमा विदा वा ṚV. 1, 31, 18. तद्विदे, प्रतितद्विदे Kaush. Up. 1, 2.

3. विद्, विन्दति, °ते Dhâtup. 28, 138 (लाभे). P. 7, 1, 59. Accent Siddh. K. zu P. 6, 1, 186. अविदम्, विदत्, विदस्, विदाम्, विदात्, विदतम्, विदन्, अविदाम, विदासि, विदन्ति; विदे 3. sg. वित्से, विदत्त; अवेम् parallel mit अविदम् Ait. Br. 2, 20. विदेयम् VS. 7, 46. Schol. zu P. 3, 1, 86. विदेम AV. 10, 6, 35. विदेय VS. 4, 23. विदेष्ट 3. sg. AV. 2, 36, 3. अवित्सि 1. sg. विवेद, विवेदिथ, विविदथुस्, विविदुस्, विविदत्; विविदे, विवित्से, विविद्रे, विविदिरे; विविद्वंस् und विविदिवंस् P. 7, 2, 68. Vop. 26, 134. वेत्स्यति und °ते; विद्वा, वेत्तुम्, वेत्तवे AV. 2, 36, 7. partic. वित्त (s. bes.) und विन्न P. 8, 2, 58 (vgl. Kâr.). Vop. 26, 98. Ueber die Anfügung des Bindevocals gehen die Meinungen der Grammatiker auseinander Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. 1) *finden, habhaft werden, antreffen, sich aneignen, erwerben, theilhaftig werden:* नष्टम् ṚV. 8, 68, 6. शत्रुम् 1, 176, 1. 10, 54, 2. वसु 2, 13, 11. 3, 1, 3. 55, 20. गातुम् 2, 21, 5. रम्भो चिदत्र विविदे हिरण्यम् 15, 9. 22, 4. भगम् 8, 50, 7. रयिम् 9, 19, 6. ऋते स विन्दते युधः *der macht Erwerbungen ohne Kampf* 8, 27, 17. नैव ते मनो हृदयं चाविदाम *gewinnen* 10, 10, 13. न देवेषु विविदे मर्डितारम् 4, 18, 13. सूर्यं विविदु तमसि क्षियन्तम् 3, 39, 5. देवान् 8, 48, 3. मक्षिवमग्ने त्वमङ्ग वित्से *du besitzest* 10, 4, 4. 54, 4. वातात्ते प्राणमविदम् AV. 8, 2, 3. 18, 2, 31. लोकम् 25. यद्वन्नेन विन्दते 12, 2, 36. पुत्रं विन्दस्व 3, 23, 4. 5. वीरं विदेय VS. 4, 23. प्रजाम् TBr. 1, 1, 4, 6. Ait. Br. 7, 13. अप्सु विन्दन्ति *man findet Etwas im Wasser, es ist Etwas dort zu erholen* Çat. Br. 2, 1, 1, 5. Ḱhând. Up. 1, 2, 9. 4, 3. 4, 1, 7. 6, 13, 1. 8, 3, 2. Kaush. Up. 4, 9. Çvetâçv. Up. 1, 9. Kenop. 12. तं मार्गमाणा भर्तारम् — न विन्दाम्यमरप्रख्यं प्रियं प्राणेश्वरं प्रभुम् MBh. 3, 2594. यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् Spr. 2312. मार्गम् Kumâras. 1, 5. यज्ञसंभारान् Bhâg. P. 2, 6, 22. सखायम् 4, 28, 25. पञ्चपुत्रांश्च MBh. 13, 354. वेदम् Jâǵn. 3, 192. अविन्दंस्तद्व्रतः सत्यम् M. 8, 109. वेदनाम् Jâǵn. 3, 143. सुखम् Bhag. 5, 21. धृतिम् 11, 24. सिद्धिम् 18, 45. MBh. 1, 2636. बहून्दोषान् 3, 1035. रतिम् 2107. प्राणयात्राम् 2314. दुःखम् 2377. फलम् 7072. 5, 1383. 7079. 7, 8885 (अविन्दन् ed. Bomb. st. अविदन् der ed. Calc.). शर्म R. Gorr. 2, 71, 23. 5, 34, 14. Spr. (II) 577. 856. (I) 4169. इमं च लोकं परमं च Kâm. Nîtis. 3, 37. Sâh. D. 5, 7. भद्राणि Bhâg. P. 1, 18, 42. 2, 4, 16. 4, 13, 43. 5, 13, 1. 18, 22. Mârk. P. 33, 15. विन्द्यात् (vgl. u. 10) MBh. 3, 8123. 8144. 8153. 13, 5384 (विद्यात् fälschlich ed. Calc.). med.: तदविन्दत Bhâg. P. 3, 8, 19. 4, 29, 77. न दिशो ऽविन्दत so v. a. *fand sich nicht zurecht in den Weltgegenden* MBh. 13, 535. राज्यम् Spr. 4261. पयः 4917. फलम् Bhag. 5, 4. सुखम्, दुःखम् MBh. 1, 3584. 3, 2344. 6016. R. 3, 62, 38. 5, 32, 38. Spr. 4944. Bhâg. P. 2, 2, 2. 3, 5, 2. 12, 19. 4, 18, 4. 23, 20. 24, 77. तत्स्वरूपताम् 7, 1, 27. 11, 2. 9, 18, 43. Mârk. P. 34, 8. 100, 36. विन्दते 3. pl. MBh. 3, 15388. विविदे Ragh. 14, 56. Mârk. P. 75, 39. वेत्स्यन्ति MBh. 2, 2415. 3, 8503. वेत्स्यथम् 1, 1111. वेत्तुम् 3, 1312. विन्न = लब्ध AK. 3, 2, 54. Trik. 3, 3, 262. H. an. 2, 286. Med. n. 20. *gefunden* Jâǵn. 2, 131. Vgl. अविन्न°, क्रोष्टुविन्ना, मत्स्य°, शृगाल°. विदित (= लब्ध Nilak.) MBh. 3, 15621. — 2) *Jmd* (dat.) *Etwas verschaffen:* यया ज्योतिर्विदासि नः ṚV. 9, 35, 1. 8, 15, 5. लोकं मे यजमानाय विन्द Ḱhând. Up. 2, 24, 5. — 3) *aufsuchen, sich zuwenden:* इन्द्र क्रतुं विदः ṚV. 1, 42, 7. विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः 92, 9. श्रद्धा तमद्य विन्दतु AV. 5, 7, 5. Çat. Br. 11, 5, 1, 1. देवा विविदाना (*wissend* Sâj.) इव समुत्पतन्त्यदो ऽहं करिष्ये ऽदो ऽहं गमिष्यामीति *die Götter machen sich auf, diesem und jenem*

sich zuwendend: das will ich thun u. s. w. Ait. Br. 5, 28. नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे *suchst dir aus zum Freund* Ṛv. 8, 21, 14. मोघमन्नं विन्दति *er sucht vergebens nach Speise* MBh. 5, 387. राज्ञानं प्रथमं विन्देत्ततो भार्यां ततो धनम् Spr. 2616. — 4) *empfinden:* शीतोष्णं च न विन्दति (गर्दभः) Spr. (II) 694. *halten für:* स्वादुतीवाम्बु विन्दते (I) 2914. — 5) *treffen; betreffen, befallen:* मा ते भयं जरितारं विदत् Ṛv. 1, 189, 4. 2, 42, 1. 10, 146, 1. भीः Çat. Br. 11, 4, 1, 1. येभिर्वृत्रस्य विविद् मर्म 3, 32, 4. 5, 32, 5. तृष्णाविदज्जरितारम् 7, 89, 4. 50, 1. AV. 1, 20, 1. 12, 4, 4. 5. 8. तं यदि दर्प एव विन्देत् Ait. Br. 6, 26. ग्राह्यः Çat. Br. 3, 5, 3, 25. पाप्मा 12, 7, 1, 10. — 6) *zu Stande bringen, zu machen wissen, erreichen:* भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम् Ṛv. 7, 18, 18. न शत्रुरन्तं विविदद्युधा ते 21, 6. 8, 46, 11. 1, 71, 7. अविन्देयामपचितिं वर्धत्रैः 4, 28, 4. उत अर्वा विविदे श्येनो अत्र *es gelang ihm die Eile* (des Flugs) 26, 5. सर्वैरङ्गैरात्मानं संपन्नं विदे Çat. Br. 10, 2, 6, 15. वपुर्मियर्ति यं विदे *den er machen kann* Ṛv. 9, 14, 6. 8, 51, 9. — 7) *ein Weib —, zum Weibe nehmen:* सोमः प्रथमो विविदे Ṛv. 10, 85, 40. विन्देत सुतां ममैताम् MBh. 1, 7192. 13, 2530. M. 9, 69. Bhâg. P. 9, 24, 37. विन्दते 3. pl. MBh. 1, 4090. ततो वेत्स्यति मे सुताम् 13, 209. mit Hinzufügung von भार्याम्, दारान्, योषितम् *Gattin:* काशिराजस्य सुतां भार्याम् अविन्दत Hariv. 1912. M. 9, 85. 95. विन्दन्ति MBh. 1, 4090. विन्ना *verheirathet* Spr. 4928. Jâgn. bei Kull. zu M. 9, 178. *einen* (Mann) *finden, heirathen* (vom Weibe): या पूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विन्दते ऽपरम् AV. 9, 5, 27. 11, 5, 18. 14, 2, 22. यत्सा पतिमविन्दत MBh. 3, 2244. M. 9, 90. *zum Sohne* (mit und ohne सुतम्) *bekommen:* यं विन्देत्सदृशात्सुतम् 136. हविर्धानमविन्दत Bhâg. P. 4, 24, 5. — 8) pass. (med.) *gefunden werden, vorhanden —, da sein;* विद्यते (विद्यते सत्तायाम् Dhâtup. 20, 26) selten im Veda (Ṛv. 5, 44, 9. AV. 19, 49, 7. VS. 20, 26), später gewöhnlich für *es giebt, ist da, es besteht,* insbes. mit der Negation Lâṭy. 8, 5, 16. यद्युडुम्बरो न विद्यते Çâṅkh. Çr. 17, 1, 18. न तस्य कार्यं करणं च विद्यते Çvetâçv. Up. 6, 8. नहि वः शत्रुर्विविदे Ṛv. 1, 39, 4. त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः 7, 7, 1. या वने विदे वसु 10, 23, 2. 1, 100, 10. 8, 82, 32. 9, 99, 7. पुरा विविद्रे किमु नूतनासः *bestehen sie längst oder sind sie neu?* 6, 27, 1. ते विद्रे मारुतस्य धाम्नः *sie gehören zu* 1, 87, 6. स्वर्यद्वेदि 4, 16, 4. अयमवेदि होता 7, 8, 2. स विद्वान्प्रवसन्विदे (als Antwort auf die Frage किं स्विद्विद्वान्प्रवसति) *er entfernt sich wirklich* Çat. Br. 11, 3, 1, 6 (लाभाय Comm.). Die Redensart यथा विदे *wie es geht, wie es so ist* d. h. *wie gewöhnlich* und *so gut als möglich:* दृळ्हा चिदस्मा अनु दुर्यथा विदे Ṛv. 1, 127, 4. अह्नन्निन्द्रो य° 132, 3. तत्तुं तनुष पूर्व्यं य° 8, 13, 14. 29. इन्द्रमर्च य° 58, 4. Vâlakh. 1, 1. Ṛv. 9, 86, 32. सोमो जैत्रस्य चेतति य° 106, 2. AV. 12, 3, 54. — यच्चान्यदस्माकं विद्यते धनम् MBh. 1, 7070. 3, 3034. बुद्ध्या समो यस्य नरो न विद्यते 15711. Spr. 1373. 1496. 1670. विनिपातो न विद्यते M. 4, 146. मानुषे विद्यते क्रिया 7, 205. 8, 183. 381. 9, 210. Bhag. 2, 16. 31. 3, 17. 4, 38. 16, 7. MBh. 1, 6143. 3, 2571. 15699. R. 2, 22, 25. 39, 5. R. Gorr. 2, 17, 41. 4, 37, 28. 6, 82, 9. Spr. (II) 404. 670. 1296. (I) 1318. 1507. 4995. Kathâs. 25, 243. 26, 192. Mârk. P. 30, 18. LA. (III) 7, 8. 17, 16. विज्ञातमेव भगवन्विद्यते यद्धिताय नः 86, 11. विद्यन्ते Spr. 4996. विद्येत M. 11, 7. Kathâs. 24, 189. स्वर्गे विद्यस्व Bhaṭṭ. 20, 33. विद्यति MBh. 4, 229. विद्यन्ति R. 6, 86, 17. विद्यते भोक्तुम् *es ist Etwas da zum Essen* P. 3, 4, 65, Schol. विद्यते तत्रभवान्वृषलं याजयिष्यति *geschieht es wirklich —, ist es möglich, dass?* 3, 146, Schol. विद्यमान *da seiend, vorhanden* P. 3, 2, 126, Vârtt. 4, Schol. AK. 3, 4, 14, 86. Spr. (II) 427. (I) 1102. 2793. °मति adj. 3220. P. 4, 1, 57, Schol. 1, 2, 48, Vârtt., Schol. अविद्यमान M. 2, 248. 11, 116. Bhâg. P. 4, 29, 35. अविद्यमानवत् *als wenn es nicht da wäre* P. 8, 1, 72. 3, 1, 3, Vârtt. विन्न Kâr. zu P. 8, 2, 56. = स्थित Trik. 3, 3, 262. H. an. 2, 286. — 9) partic. विदान und विदानं *vorhanden, bestehend, da seiend; gewöhnlich, gewohnt:* तमु ष्टुष इन्द्रं यो विदानः *den wirklichen* Ṛv. 6, 21, 2. इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदानाः 3, 36, 2. न त्वावाँ अस्ति विदानः 1, 165, 9. स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः 10, 111, 1. दुर्गेषु पथिकृद्विदानः 6, 21, 12. आ सीदतं स्वमु लोकं विदाने 10, 13, 2. नि होता होतृषदने विदानः (असदत्) 2, 9, 1. उषासानक्ता पुरुधा विदाने 1, 122, 2. यदी विदानः 8, 45, 27. वृषेव यूथे विदानः AV. 5, 20, 3. अधा न तन्वो विदाना Ṛv. 5, 80, 5. 1, 169, 2. विदानासो जन्मनो वाजरत्नाः *von Haus aus seiend* 4, 34, 2. विदाना अस्य योजनम् *welche die Zurüstung dafür bilden, — ausmachen* 9, 7, 1. 10, 77, 6. विप्राः समुद्राम्भसि मज्जिता ये वाचा जिता मेधया वा विदानाः (= पण्डिताः Nîlak.) MBh. 3, 10676. — 10) विन्द्यात् fehlerhaft für विद्यात् (wie die v. l. häufig hat) von 1. विद् Varâh. Bṛh. S. 3, 33. 5, 71. 83. 8, 7. 46, 35. 41. 53, 57. 58, 1. 78, 5. 86, 78. 96, 3. Bṛh. 1, 18. 11, 9. 20; vgl. noch v. l. zu Varâh. Bṛh. S. 46, 83. 68, 24. Es ist hierbei jedoch zu bemerken, dass MBh. 3, 2874 auch विन्दति in der Bed. von वेत्ति gebraucht wird.

— desid. *zu finden wünschen:* नष्टं विवित्सितं पशुम् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 190.

— intens. partic. *sich befindend:* नरः श्चित्समिथे वेविदानाः Ṛv. 3, 54, 4.

— अधि (eig. *überheirathen*) *die erste Frau* (acc.) *durch eine zweite Frau* (instr.) *hintansetzen:* कीर्तिं श्रिया प्रणयिनीं लब्धयाधिविवेद सः (सम्राट्) Râǵa-Tar. 5, 135. *die erste (früheren) Frau (Frauen) hintansetzen* (von der neuen Frau) so v. a. *als Nebenbuhlerin auftreten von* (acc.): अधिविविदुरमात्यैराहृतास्तस्य तस्य यूनः प्रथमपरिगृहीते श्रीभुवौ राजकन्याः Ragh. 18, 52. अधिविन्ना *eine durch eine Nebenbuhlerin hintangesetzte Frau* AK. 2, 6, 1, 7. H. 527. M. 9, 83. Jâǵn. 1, 74. अधिविन्नस्त्री 2, 148. अधिवेत्तव्या *durch eine zweite Frau hintanzusetzen* 1, 73. M. 9, 80. 82. अधिवेद्या dass. 81.

— अनु 1) *auffinden, habhaft —, theilhaftig werden* Ṛv. 1, 6, 5. 2, 12, 11. 3, 9, 4. 5, 40, 9. जायाम् 10, 109, 5. अमृतम् AV. 4, 23, 6. 10, 1, 19. Çat. Br. 1, 1, 4, 1. 2, 5, 10. 14, 4, 2, 18. Khând. Up. 8, 4, 3. 7, 1. अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसि TBr. 3, 12, 2, 2. TS. 2, 5, 3, 6. तथा पुराकृतं कर्म कर्तारमनुविन्दति Spr. 2312. भद्रम् Bhâg. P. 4, 14, 24. अन्वविन्दत med. 8, 8, 19. 10, 8, 47. 11, 7, 20. शारद्वतीं ततो भार्यां कृपीं द्रोणो ऽन्वविन्दत so v. a. *ehelichte* MBh. 1, 5114. *nach Jmd finden* TS. 7, 1, 6, 1. pass. *vorhanden —, da sein:* स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणः Ṛv. 1, 132, 3. त्रयोदशो मासो नानुविद्यते Ait. Br. 2, 12. अनुवित्त *aufgefunden, vorhanden* Çat. Br. 14, 7, 2, 11. 12 (= Gâbâlop. in Ind. 2, 76). 17. Ait. Br. 1, 2. TBr. 1, 2, 1, 3. Ṛv. 4, 18, 1. — 2) *finden* so v. a. *halten für:* इन्दुकिरणमनुविन्दति खेदमधीरम् Gît. 4, 2. — Vgl. अनुवित्ति (auch TBr. 3, 12, 2, 8). — desid. अनुविवित्सति *aufsuchen wollen* TBr. 3, 12, 2, 8.

— अभि 1) *auffinden:* अपः Çat. Br. 11, 1, 6, 16. अभ्यविन्दत् MBh. 13, 4945. शर्म 2, 1933. त्रातारं नाभ्यविन्दत R. 5, 68, 13. — 2) *kennen:* ये

धर्ममभिविन्दते MBh. 3,13698.

— आ 1) *habhaft werden, sich verschaffen:* आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अविवित्सि ṚV. 10,15,3. ओषधीः 97,7. शंसमाविदे inf. etwa *um des Flehens* (der Menschen) *dich anzunehmen* 10,113,3. — 2) *zu erfahren haben:* माहमा विदं पूर्नमापिः ṚV. 2,27,17. मा सख्युः शूनमा विदे 8,45,36. — 3) pass. *vorhanden sein:* उतो हि वां पूर्व्या आविविद्र ऋतावरी ṚV. 3,54,4. partic. etwa *vorhanden*, in einer Formel, आविदम् genannt, आविन्न TBr. 1,7,6,6 (vgl. TS. Comm. II, 132) und आवित्त VS. 10,9. nach Mah. = आवेदित, ज्ञापित, nach Sây. = लब्धवत्.

— उप s. उपविद्.

— निस् 1) *herausfinden, aussondern:* सतो बन्धुमसति निरविन्दन् ṚV. 10,129,4. — 2) med. *sich entledigen*, mit gen.: अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः ṚV. 1,120,12. mit acc.: पाण्डित्यं निर्विद्य बाल्येन तिष्ठासेत् *die Gelehrsamkeit von sich thuend* Çat. Br. 14,6,4,1. — 3) pass. (*sich ausserhalb von Etwas befinden*) *überdrüssig werden, Nichts mehr wissen wollen von;* mit abl.: निर्विद्यते ऽर्थात् MBh. 12,3888. 6603. गृहात् Bhâg. P. 4,13,46. 6,5,41. विर्विद्येयुश्च लौकिकात् MBh. 12,3889. कामात् 3854. निर्विद्य निरयादतः Bhâg. P. 4,30,18. mit instr.: निरविद्यत जीवितेन MBh. 6,5344. दास्येन Spr. (II) 1373. mit acc.: निर्विद्यते ततः कृत्स्नम् MBh. 14,530. ohne Ergänzung: उपसेदो ना चनागच्छन्निर्विद्येव Çâñkh. Br. 9,1. सा च निर्विद्यतां पुनः MBh. 3,14792. Bhâg. P. 2,1,11. 5,13,6. 7,9,25. 11,20,9. निर्विद्य absol. 1,4,12. 4,13,48. MBh. 12,3854. 6603. Naish. 3,128. partic. निर्विण्ण (bisweilen fälschlich निर्विन्न geschrieben) P. 8,4,29, Vârtt. Vop. 26,88. fg. *überdrüssig*, mit abl.: तत्रभावात् MBh. 1,6692. जीवितात् 7,5575. Kathâs. 86,108. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 196. Bhâg. P. 3,25,7. 4,13,18. 47. mit instr.: देहेनानेन MBh. 6,5348. P. 8,4,29, Vârtt., Schol. Kathâs. 5,125. Pañkat. ed. orn. 42, 3. mit gen.: मत्स्यमांसानाम् (मत्स्यमांसादनेन ed. Bomb. 54,19) Pañkat. 51,25. 137,1. mit loc. Kâm. Nîtis. 18,42. Bhâg. P. 11,20,27. die Ergänzung im comp. vorangehend Kathâs. 30,98. 40,27. Râga-Tar. 3,503. Pañkar. 3,14,16. ohne Ergänzung *der Sache überdrüssig, von Nichts mehr Etwas wissen wollend, an Allem verzagend* Bhag. 6,23. Spr. (II) 86: 937. 1373. (I) 1145. Râga-Tar. 3,164. 6,262. Bhâg. P. 5,13,7. 6,12, 30. 7,10,2. 9,6,26. 19,1. Sarvadarçanas. 42,20. Mârk. P. 74,6. 133,25. अति° 20,47. सु° 123,22. Bhâg. P. 8,7,7. अ° *gutes Muths* Spr. (II) 301. R. 3,43,7. Kathâs. 82,52. Râga-Tar. 3,159. — Vgl. निर्वेद. — caus. *Jmd zur Verzweiflung bringen:* निर्वेदयित्वा तु परं हत्वा वा MBh. 12,2658.

— परिनिस्, partic. °र्विण्ण *in hohem Grade überdrüssig:* स्त्रीभावे MBh. 5,7375. °चेतस् *an Allem verzagend* 16,276.

— परि 1) *umfangen:* पाशैः परिवित्तः AV. 6,112,3. — 2) *vor dem älteren Bruder* (acc.) *heirathen:* यया च परिविद्यते *und diejenige, welche ein jüngerer Bruder heirathet, bevor der ältere verheirathet ist*, M. 3, 172. या चैव परिविद्यते dass. MBh. 12,6108. Vgl. परिविण्ण, परिवित्त (oxyt. TBr. 3,2,8,12), परिवित्ति u. s. w. — 3) *genau kennen:* यद्वेदितव्यं त्रिदशैस्तदेष परिविन्दति Hariv. 12318.

— प्र *finden, erfinden* ṚV. 3,57,1. नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये 10,86,2. In einer Worterklärung: मा त इदं पुष्टं कश्चन प्रविदत etwa *vorwegnehmen* Çat. Br. 1,9,1,5.

— प्रति 1) (*dazu*) *finden:* स देवेषु न प्रत्यविन्दत् *fand keinen zweiten unter den Göttern* Ait. Br. 4,5. वाचो मिथुनम् Pañkav. Br. 21,13,2. — 2) med. *sich gegenüber befinden:* स एतं भागं प्रतिविदान (= जानन् Comm.) आस्ते यत्प्राशित्रम् *sitzt gegenüber* Çat. Br. 1,7,4,18. — 3) *kennen lernen:* विश्वावसोस्तु तनयाद्गीतं नृत्यं च साम च। वादित्रं च यथान्यायं प्रत्यविन्दद्यथाविधि ॥ MBh. 3,8420. *Etwas wissen von* (acc.): पाण्डवानप्रतिविन्दमानः 1,7169. — 4) in der Stelle नास्त्यदेयं मे त्वामद्य प्रतिविद्यते R. Gorr. 1,21,22 trennen wir प्रति von विद्यते und verbinden es mit त्वाम्; विद्यते neben अस्ति ist tautologisch.

— वि intens. *aufsuchen, suchen:* रक्षांसि विवेविदत् ṚV. 9,68,3. इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत् 86,9.

— सम् med. 1) *finden, habhaft werden, sich erwerben, zusammengewinnen:* पतिम् ṚV. 10,145,1. भोजनम् 1,83,4. समरीर्विदाम् VS. 6,36. सर्वां पृथिवीम् Çat. Br. 1,2,5,7. 11. गोपितौ गौतमस्तत्र तपसा समविन्दत MBh. 1,5090. सुखम् Bhâg. P. 11,9,2. pass. संविद्यते *sich finden, da sein* Saddh. P. 4,10,b. — 2) *sich zusammenfinden mit* (instr.): सं वित्स्वाङ्गैः AV. 8,2,3. सं तैः पशुभिर्विदे 4,36,5. शरीरमस्य सं विदाम् 5,30,13. समिमे प्राणा विद्र Ait. Br. 1,17. Çat. Br. 3,5,4,17. partic. संविदान *zusammen mit, zugleich; verbunden, vereint; einträchtig* ṚV. 7,44,4. यमः पितृभिः संविदानः 10,14,4. 30,13. fg. 162,1. 8,48,13. समानेन क्रतुना संविदाने *vereinigt durch, — in* 3,54,6. AV. 2,28,2. 4,15,10. 12,1,48. VS. 12,61. Çat. Br. 3,8,1,12. 14,5,2,4. Kauç. 99. 124. अप शत्रून्विध्यतं संविदाने ṚV. 5,73,4. AV. 11,2,14. ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः *ihr alle miteinander* ṚV. 10,97,14. AV. 3,4,7. देवैः सह सं° 5,29,2. अ° Çat. Br. 10,6,1,2. Khând. Up. 8,7,2. — intens. partic. dass.: सं भस्मना वायुना वेविदानः ṚV. 5,19,5.

— अभिसम् med. *zusammentreffen:* मुखं यज्ञानामभि संविदाने (= कथयन्त्यौ Mahîdh.) VS. 29,6.

4. विद् (= 3. विद्) adj. am Ende eines comp. *findend, gewinnend; verschaffend;* s. अन्न°, 2. अश्व°, अहर्विद्, एकधन°, कुहचिद्विद्, गातु°, गो°, जन°, ज्ञाति°, 2. ज्योतिर्विद्, तेजो°, द्रविणो°, नाथ°, पशु°, प्रजा°, मित्र°, रयि°, वसु°, स्वर्विद्.

5. विद्, विन्ते (विचारणे) Dhâtup. 29,13. erhält keinen Bindevocal इ Kâr. 3 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10. *halten für:* न तृणाह्मीति लोको ऽयं मां विन्ते निष्पराक्रमम् Bhaṭṭ. 6,39. partic. विन्न Kâr. zu P. 8,2,56. = विचारित AK. 3,2,49. H. 1475. an. 2,286. Med. n. 20. = ज्ञात Trik. 3,3,262.

1. विद (von 1. विद्) 1) adj. = 2. विद् am Ende eines comp.: चतुर्वेदविदैर्विप्रैः Verz. d. Oxf. H. 31,a,16. विदम् am Ende eines adv. comp. gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 6,62. Vgl. को°, त्रयी°, द्वि°. — 2) nom. act. in दुर्विद.

2. विद m. N. pr. eines Mannes P. 4,1,104. gaṇa अश्वादि zu 110. pl. *die Nachkommen des* Vida Kâç. zu P. 1,1,63. Schol. zu 2,4,64. Vop. 7,14. Âçv. Çr. 12,10,9 (बिद die Ausg.). Schol. zu Kâtj. Çr. 155,11. विदकुल = वैदकुल P. 2,4,64, Vârtt., Schol. — Vgl. वैद, वैदायन, वैदि.

विदंश m. = अवदंश Râgan. im ÇKDr.

विदक्षिण (2. वि + द°) adj. *nach einer anderen Gegend als nach Süden gerichtet* Kâm. Nîtis. 16,25.

विदग्ध gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80. 1) adj. s. u. दह् mit वि; *geschickt, gewandt, pfiffig* Halâj. 2,230. 334. सांवत्सर Weber, Ǵjot. 110. Kâvjâd. 1,89. — 2) m. oxyt. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 11,6,3,3. 14,6,9,1. 10,17. Verz. d. Oxf. H. 55,a,34. — Vgl. वैदग्धक, वैदग्धी, वैदग्ध्य.

विदग्धचूडामणि m. N. pr. eines verzauberten Papageien Kathâs. 77,6. Vet. in LA. (III) 15,17. 22,17.

विदग्धता (von विदग्ध) f. *Klugheit, Gewandtheit:* विश्वासप्रतिपन्नानां वञ्चने का विदग्धता Spr. 2855. 2817 (सा विदग्धता v. l.). वाचि Mâlatîm. 2,19.

विदग्धमाधव n. N. pr. eines Lustspiels Verz. d. Oxf. H. 145,a, No. 305. Verz. d. Tüb. H. 24. Wilson, Sel. Works I, 158. 167.

विदग्धमुखमण्डन n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 215,a, No. 514. gedruckt in Haeb. Anth. 269. fgg.

विदण्ड (2. वि + द°) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,6992.

विदत्र s. दुर्विदत्र und सु°.

विदथ (von 1. विद्) Uṇâdis. 3,116. 1) n. a) *Weisung, Gebot; Anordnung, Ordnung* Nir. 1,7. 3,12. 6,7. 9,3. विदथमा वद् *Weisung geben, entscheiden, zu gebieten haben:* सुवीरासो विदथमा वदेम ṚV. 1,117,25. वशिनी त्वं विदथमा वदासि *als Gebieterin schalten* 10,85,26. fg. यथा यमस्य सादनं आसाति विदथावदन् (wohl so gegen Padap.) AV. 18,3,70. °था निचिकित् 5,20,12. ṚV. 4,38,4. होता विदथानि प्रचोदयन् 3,27,7. साधन् 1,18. 10,92,2. प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः *das Walten des* Agni 6,8,1. AV. 4,25,1. वृजिनवर्तनिं सकन्पिपर्षि विदथे ṚV. 1,31,6. यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र VS. 23,57. — b) (*Ansage, Aufgebot*, concret *was auf Ansage u. s. w. sich sammelt, coetus*) α) *Versammlung einer Gemeinde u. dgl., Verein, Rathsversammlung:* विदथेषु प्रशस्तः *im Rathe geachtet* ṚV. 2,27,12. बृहद्वदेम विदथे सुवीराः 17. 1,4. उभे वि विदथे कविरन्तश्चरति दूत्यम् *zwischen der Götter- und Menschengemeinde* 8,39,1. विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना दधाथे *den Vorsitz in der Göttergenossenschaft* 3,38,5. यस्मिन्देवा विदथे मादयन्ते 10,12,7. 5,63,2. AV. 17,1,15. drei Ordnungen derselben: त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् ṚV. 2,27,8. 6,51,2 (= स्थानानि Sâj.). 7,66,10. 8,39,9. 3,38,6. — β) *Versammlung zum Gottesdienst; Festgenossenschaft; Feier;* = यज्ञ Naigh. 3,17. अस्मिन्नो अद्य विदथे देवा मादयध्वम् ṚV. 6,52,17. 3,54,2. 7,84,3. या कृणवः प्रेडु ता ते विदथेषु ब्रवाम 5,29,13. अग्निं होतारं विदथाय जीजनन् 10,11,3. 1,60,1. 3,1,1. त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः 56,8. 2,4,8. 39,1. AV. 1,13,4. ṚV. 7,21,2. VS. 22,2. 34,2. — γ) (*kriegerisches Aufgebot: zusammengehörige Schaar*) *Zug, Geschwader, ordo*, insbes. der Marut: गणैरा यज्ञं विदथेषु (vgl. ebend. व्रातं व्रातं गणं गणम्) *turmatim* ṚV. 3,26,6. क्रीळन्ति विदथेषु घृष्वयः 1,166,2. 85,1. 167,6. अन्तर्मन्हे विदथे येतिरे नरः 5,59,2. 7,57,2. श्रेष्ठं यद्वं विदथे so v. a. *in geordnetem Kampfe* 18,13. भरेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा कृतम् 93,5. — 2) m. a) = योगिन् H. an. 3,322. Med. th. 24. — b) = प्राज्ञ H. an. = कृतिन् Med. — c) N. pr. eines Mannes nach Sâj. ṚV. 5,33,9.

विदथिन् (von विदथ) m. N. pr. eines Mannes P. 6,4,165. — Vgl. वैदथिन.

विदथ्य (wie eben) adj. *in eine Versammlung —, in eine Gemeinde —, in einen Rath tauglich* u. s. w.: वीरं सादन्यं विदथ्यं सभेयम् (vgl. ἀγορητής) ṚV. 1,91,20. सभावती विदथ्या 167,3. यः सभेयो विदथ्यः सुत्वा यज्वाथ पूरुषः AV. 20,128,1. ṚV. 7,36,8. 4,21,2. Agni 3,54,1. 6,8,5. Wagen der Açvin, *festlich* 10,41,1. ग्रो अष्टिर्विदथ्याइ समेतु 7,40,1. आ विश्वाची विदथ्यामनक्तु *die gemeine und die festliche Flamme* 43,3.

विदद्श्व (विदत्, partic. von 3. विद्, + अश्व) m. N. pr.; s. वैददश्वि.

विदद्वसु (विदत् + वसु) adj. *Güter gewinnend* ṚV. 1,6,6. 3,34,1. 5,39,1. 8,55,1. Ait. Br. 2,27. Pañkav. Br. 8,3,3. 6. 11,4,5.

विदन्त (2. वि + द°) adj. *der Zähne —, der Fangzähne beraubt;* von einem Elephanten Hariv. 3822. 4679.

विदन्वत् m. N. pr. eines Bhârgava Pañkav. Br. 13,11,10.

विदभृत् m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,118. gaṇa गर्गादि zu 4,1,105. — Vgl. वैदभृत, वैदभृत्य.

1. विदर (von 1. दर् mit वि) 1) m. *das Bersten, Zerreissen* AK. 3,3,5. H. 1488. — 2) n. *Cactus indicus Roxb.* (wohl *die Blüthe*) Çabdak. im ÇKDr.

2. विदर (2. वि + दर) adj. (f. आ) *frei von Spalten, — Löchern:* भू Kâm. Nîtis. 19,10; vgl. निर्दरणा 12.

विदरण (von 1. दर् mit वि) n. *das Bersten, Spalten* Varâh. Bṛh. S. 5,81 (vgl. मध्य°). भुवः 97,9.

विदर्भ 1) m. pl. N. pr. eines Volkes und des von ihm bewohnten Landes, südlich vom Vindhja mit der Hauptstadt Kuṇḍina, AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). MBh. 3,2076. 2093. 2772. 2852 (an den beiden letzten Stellen nach der Lesart der ed. Bomb., °दर्भा ed. Calc.). 6,351 (VP. 187). 12,9813. R. 4,41,16. Ragh. 5,60. Varâh. Bṛh. S. 14,8. Mârk. P. 58,17. sg. das Land: विदर्भा नाम जनपदः Daçak. 180, 9. विदर्भाधिप MBh. 3,2409. विदर्भाधिपराजधानी Ragh. 5,40. विदर्भाधिपति Bhâg. P. 10,53,16. °राज R. Gorr. 1,40,3. Naish. 1,50. °पति Mâlav. 77. °भू Naish. 2,16. Verz. d. Oxf. H. 213,b, No. 507. °नगरी MBh. 3,2094. 2780. Hariv. 5842. — 2) m. sg. *ein Fürst der* Vidarbha (vgl. वैदर्भ): कन्या विदर्भस्य MBh. 3,2103. °तनया 2412. °सुभ्रू Naish. 1,82. °राजधानी Verz. d. Oxf. H. 258,a,28. — 3) m. sg. N. pr. eines Mannes Hariv. 9569. Bhâg. P. 4,28,28. ein Sohn Ǵjâmagha's Hariv. 1988. fg. 6588. VP. 422. Bhâg. P. 9,23,38. 24,1. ein Sohn Ṛshabha's 5,4,10. — 4) m. = वैदर्भ *Krankheit des Zahnfleisches* Çârṅg. Saṁh. 1,7,76. — 5) f. आ N. pr. a) einer Stadt, = कुण्डिन H. 979. MBh. 3,2772. 2826. fgg. 2852 (an allen Stellen m pl. die ed. Bomb.). Hariv. 6588. — b) eines Flusses Hariv. 9511. — c) einer Tochter Ugra's und Gattin des Manu Kâkshusha Mârk. P. 76,47. — Vgl. दधि°, दशी° und वैदर्भ, वैदर्भि.

विदर्भजा (वि° + जा) f. patron. der *Gattin* Agastja's Trik. 1,1,91.

विदर्भि m. N. pr. eines Ṛshi Ind. St. 1,441. Çaṁk. zu Praçnop. 1,1, wo वैदर्भि nicht auf विदर्भ, sondern auf विदर्भि zurückgeführt wird.

विदर्भीकौण्डिन्य m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28.

विदर्व्य adj. *ohne Haube* (दर्वि), von einer Schlange Çâṅkh. Gṛhj. 4,18.

विदर्शिन् adj. बुद्धिं सर्वलोकविदर्शिनीम् R. Gorr. 2,116,27. °निदर्शनीम् Schl. °निदर्शिनीम् (= संमताम् Comm.) ed. Bomb.

विदल s. विदल. In der Bed. 1) Varâh. Bṛh. S. 86,76 (darauf wird geschrieben). — सो ऽयं स्कन्धो विदलो ऽध्यूळ्हः Kaush. Âr. 2,3. Gṛhjas. 1,28.

विदलन (von दल् mit वि) n. 1) *das Bersten:* der Erde Kathâs. 74,

279. — 2) *das Aufreissen, Spalten:* यथा नखविदलनादिना तण्डुलनिष्पत्तिः Sarvadarçanas. 123,9. मत्तेभकुम्भविदलनकृतश्रम (सिंह) Spr. 2093.

विदलीकृत (auch R. 3,57,22. 4,47,13. 49,4) s. वि°.

विदश (2. वि + दशा°) adj. *keine Verbrämung habend:* वस्त्र Mârk. P. 34, 55.

विदा f. nom. act. von 5. विद् nach gaṇa भिदादि zu P. 3,3,104. Vop. 26,192. *Kenntniss* H. an. 2, 234. Med. d. 14. *Verstand* Trik. 1,1,114. H. an. Med.

1. विदान partic. s. u. 3. विद् 9).

2. विदान (von 3. दा mit वि) n. *das Zertheilen* Çat. Br. 14,8,2,1.

विदाय m. *Erlaubniss zum Weggehen* nach ÇKDr. in der Stelle: विदायं देहि संप्रीत्या क्षणं मां (?) प्राणवल्लभे Brahmavaiv. P., Ganmakhaṇḍa.

विदायिन् (von 1. दा mit वि) adj. *verleihend, bewirkend:* विश्वनाथाय विश्वस्थितिविदायिने Çatr. 1,1.

विदाय्य (von 3. विद्) adj. *zu finden* Ṛv. 10,22,5.

विदार (von 1. दर् mit वि) 1) m. a) *das Zerreissen, Zerspalten, Zerhauen;* = दारण H. an. 3, 603. Med. r. 218. Vop. 8,127 (als Bed. von खन्). 16,5 (als Bed. von दर्). वल्लोविदारकुठारिका Spr. (II) 494. — b) *Kampf, Schlacht* H. an. Med. — c) *Abzugsgraben* (जलोच्छ्वास) Med. — 2) f. ई a) *eine best. Pflanze* und *ihre Wurzel* P. 4,3,166, Vârtt. 2, Schol. AK. 2,4,1,20. α) *Batatas paniculata Chois.* AK. 2,4,3,28. H. an. (°इक्षुगन्धयोः st. °इक्षुदण्डयोः zu lesen). Med. Ratnam. 73. Suçr. 1,53,10. 137, 4. 143,13. °कन्द 225, 2. 8. 274,1. °कन्दक Med. n. 211. विदारि Suçr. 1,145,21. — β) = विदारीगन्धा *Hedysarum gangeticum* H. an. Med. — b) *eine Art von Abscessen* H. an. Med. — c) विदारि N. einer Unholdin: ऐशान्यादिषु कोणेषु संस्थिता बाह्यतो गृहस्यैताः। चरकी विदारिनामाथ पूतना राक्षसी चेति ॥ Varâh. Bṛh. S. 53,83. — Vgl. कोविदार und क्षीरविदारी.

विदारक (vom caus. von 1. दर् mit वि) 1) adj. *zerreissend, zerspaltend, zerfleischend:* प्रचण्डगजकुम्भ° (सिंह) Spr. (II) 1193. — 2) m. = कूपक AK. 1,2,3,10. H. 1088. *Vertiefung in einem ausgetrockneten Flusse, in der das Wasser zurückgehalten wird;* nach Andern *ein Stein — oder Baumstamm im Wasser.* — 3) f. विदारिका a) *Hedysarum gangeticum* Çabdar. im ÇKDr. Suçr. 1,292,8. 294,11. Varâh. Bṛh. S. 76,5. 9. — b) *eine Art von Abscessen* Suçr. 1,92,7. 93,3. 273,13. 274,1. 2,118, 10. 132,14. — Vgl. क्षीरविदारिका.

विदारण (wie eben) 1) adj. *zersprengend, aufreissend, zerreissend, verwundend, zerbrechend, zerspaltend, zerschmetternd* Hariv. 11942. 12538. Vâgbh. 6,152. असुरपुरविदारणाः सुराः MBh. 1,1434. तनुत्रास्थि° (इषु) 8,1823. परानीक° (योध) 5,5154. तिमिरवारणयूथ° (von der Sonne und vom Löwen) 7,8409. अरि° (अस्त्र) R. Gorr. 1,30,12. Mârk. P. 20, 2. 21,29. हृदय° (वचन) R. Gorr. 1,22,20. शत्रुदेह° 3,32,13. Gît. 1,29. Bhâg. P. 10,79,4. मक्षिषस्य विदारणी (विदारिणी ed. Bomb.) शक्तिः MBh. 3,14609. — 2) m. *Pterospermum acerifolium Willd.* Çabdar. im ÇKDr. — 3) n. a) *das Zersprengen, Aufreissen, Zerreissen, Verwunden, Zerbrechen, Zerspalten, Durchbohren, Zerschmettern;* = भेदन, भेद H. an. 4,88. Med. n. 108. Dhâtup. 31,23 (als Bed. von दर्). = क्षति Schol. zu Çâk. 39. प्राकारहर्म्याद्रि° Kâm. Nîtis. 15,12. दन्तभङ्गो हि नागानां श्लाघ्यो गिरिविदारणे Spr. 2137. 2144. व्यूहानाम् Hariv. 5351. MBh. 8,4214. R. 4, 54,13. fg. मणीनाम् *das Durchbohren* Kull. zu M. 9,286. पृथिवी° R. 1, 40 (41 Gorr.) in der Unterschr. Suçr. 1,85,9. गुद° 2,58,17. प्रोद्भिशाखिनां शाखास्कन्धसर्वविदारणम् *das Abhauen* Jâǵn. 2,227. Ârjabhaṭa in Journ. of the Am. Or. S. 6,558. चम्पारण्य° *das Verwüsten* Inschr. ebend. 504, Çl. 14. = मारण Çabdar. im ÇKDr. — b) *das Aufreissen* so v. a. *Aufsperren:* des Mundes Çaṅk. zu Khând. Up. S. 35. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23. 51. — c) *Schlacht, Kampf* H. an. masc. und fem. Med. — d) *das Abweisen, Zurückweisen:* तेन विद्याधरांस्तांस्तान्वरानुद्दिशतो बहून्। पितुर्विदारणं कृत्वा कन्यैवाध्याप्यदुं स्थिता ॥ Kathâs. 26,63. — e) = विडम्बन, विडम्ब H. an. Med. — Vgl. अनीक°, मर्म°.

विदारि s. u. विदार 2).

विदारिगन्धा s. विदारीगन्धा.

विदारिन् (von 1. दर् mit वि oder von विदार) 1) adj. *zersprengend, zerspaltend, zerreissend* u. s. w.: गिरिशृङ्ग° MBh. 9,582. मक्षिषस्य विदारिणी (so ed. Bomb., विदारणी ed. Calc.) शक्तिः 3,14609. रुरुविदारिणी Bein. der Durgâ Kathâs. 53,171. — 2) f. विदारिणी *Gmelina arborea Roxb.* Râǵan. im ÇKDr.

विदारीगन्धा f. *Hedysarum gangeticum* AK. 2,4,4,3. Ratnam. 9. Suçr. 1,53,10. विदारिगन्धा 57,18. 369,16. 376,15. 2,35,20. °कषाय 86,11.

विदारीगन्धिका f. dass. H. an. 4,194.

विदारु m. *Eidechse, Chamäleon* Hâr. 218.

विदासिन् (von दस् mit वि) adj. अ° *nicht versiegend:* हृद Âçv. Gṛhj. 1,5,5. 2,6,9. Gobh. 4,5,22. Bhâg. P. 1,3,26. 8,24,22. fg. — Vgl. अविदस्य.

विदाह (von 1. दह् mit वि) m. *das Brennen, Hitze:* auch als Thätigkeit und Wirkung der Galle im Körper Suçr. 1,20,8. शोणितस्य 79, 12. 285,1. 2,183,17. 451,12. शोफो विदाहमापद्यते 80,11. als Krankheit der Galle Çârṅg. Saṁh. 1,7,71.

विदाहवत् (von विदाह) adj. *hitzig* Suçr. 1,199,11.

विदाहिन् (wie eben oder von 1. दह् mit वि) adj. *hitzig, brennend;* von Speisen Bhag. 17,9. Suçr. 1,80,6. 177,6. 245,3. 2,314,21. अ° 1, 39,7. 173,16. अविदाहित्व 188,17. कोष्ठविदाहिन् 155,16. *ein hitziger Ort* Kâtj. Çr. 22,3,3. Lâṭj. 8,5,5.

विदि f. Siddh. K. 247,b,15. *die Wurzel* 1. विद्. विदिर्ज्ञाने निरुच्यते Kâm. Nîtis. 2,17.

विदिक्चङ्ग (विदिश् + चङ्ग) m. *ein best. Vogel,* = कुलिङ्गाङ्ग Çabdak. im ÇKDr.

विदित 1) adj. s. u. 1. विद्. — 2) f. आ N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 13ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî ausführt, H. 45.

विदिथ m. = विदथ 2) a) und b) ÇKDr. nach Çabdak. und einer Hdschr. der Med.

विदिश् (2. वि + 2. दिश्) 1) adj. *nach verschiedenen Richtungen gehend* Kâtj. Çr. 1,8,43. — 2) f. oxyt. *Zwischengegend (Südost* u. s. w.) AK. 1,1,2,7. H. 167. Halâj. 1,102. VS. 6,19. Shaḍv. Br. 4,4. Çâṅkh. Gṛhj. 1,7. MBh. 2,1394. 3,1861. 2853. 12114. 13,1845. Hariv. 9367. 11000. R. Gorr. 1,77,54. 4,39,39. 6,90,28. Sûrjas. 3,32. Varâh. Bṛh. S. 5,33. 11,28. 30,16. 35,4. 86,75. Kathâs. 22,36. Weber, Râmat. Up.

314. Prab. 117,6. Bhâg. P. 4,17,16. 6,8,32. Mârk. P. 50,46.

विदिशा f. 1) = विदिश् 2) MBh. 12,10454. Hariv. 2243. — 2) N. pr. eines Flusses und der daran gelegenen Stadt (Bilsa heut zu Tage) LIA. II, 945. Varâh. Bṛh. S. 16,32. Fluss MBh. 2,371. 6,335 (VP. 183). Mâlav. 76. Mârk. P. 57,20. P. 4,2,70, Schol. Stadt Megh. 25. Ragh. 15,36. Mâlav. 46,1. 67,19. Kathâs. 33,106. 71,72. an der Vetravatî Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,583. — 3) = विदेश (?) *Fremde* Spr. 2639 (die ed. Bomb. des Pañkat. hat hier ganz andere Lesarten). — Vgl. वैदिश.

विदीगय m. *ein best. Vogel* (= श्वेतबक Comm.) TS. 5,6,22,1. TBr. 3,9,9,3.

विदीधयु (von 1. धी mit वि) adj. s. अ°.

विदीधिति (2. वि + 2. दी°) adj. *strahlenlos* Varâh. Bṛh. S. 3,31.

विदीपक (von दीप् mit वि) m. *Laterne:* रथे रथे पञ्च विदीपकाः (विदिपिकाः ed. Calc.) MBh. 7,7295.

विदु 1) m. *die zwischen den beiden Erhöhungen auf der Stirn des Elephanten befindliche Gegend* AK. 2,8,2,5 (विन्दु fälschlich Lois.). H. 1226. Auch विदू Comm. zu AK. nach ÇKDr. — 2) m. oder f. N. pr. einer Gottheit des Bodhi-Baumes Lalit. ed. Calc. 421,16. — 3) m. N. pr. eines Brahmanen Târan. 62.

विदुद्द vielleicht = Vendidad Bhavishja-P. in Verz. d. Oxf. H. 33,b,3.

विदुर (von 1. विद्) 1) adj. *klug, verständig, weise* P. 3,2,162. Vop. 26,152. AK. 3,1,30. H. 349. an. 3,602. Med. r. 217. = नागर H. an. Med. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vjâsa von einer Çûdra-Frau, jüngeren Bruders des Dhṛtarâshṭra und Pâṇḍu, H. an. Med. MBh. 1,95. 2213. 2245. 2426. 2442. 2721. 3808. 4301. 4335. 5313. 12,1476. 15,751. Hariv. 1826. Spr. (II) 721. VP. 459. Bhâg. P. 1,13,1. 9,22,24. °वाक्यानि Verz. d. Oxf. H. 266,b,26. विदुराक्रूरवरद Beiw. Kṛshṇa's Pañkar. 4,1,30. विदुरागमनपर्वन् heissen die Adhjâja 200 — 206 im 1ten Buche des MBh.

विदुरता f. nom. abstr. von विदुर 2) MBh. 15,752.

विदुल 1) m. Bez. *zweier Calamus-Arten* AK. 2,4,2,10. fg. H. 1137. Med. l. 132. Halâj. 2,46. Suçr. 1,144,13. 2,480,11. विदुलस्येव तत्पुष्पं मोघं जनयितुः स्मृतम् MBh. 13,5120. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers MBh. 1,333. 509. 5,4494. fgg. 15,461.

विदुषितर und विदुषीतर s. u. विद्वंस्.

विदुष्कृत (2. वि + दु°) adj. *frei von Uebelthaten, — Sünden* Kaush. Up. 1,4.

विदुष्टर s. u. विद्वंस्.

विदुष्मत् (von विद्वंस्) adj. *reich an Kennern, — Gelehrten* Vop. 7,27. S. 176.

विदुस् (von 1. विद्) adj. *aufmerksam, sich merkend* ṚV. 1,71,10. 7,18,2.

विदूर (2. वि + दूर) 1) adj. (f. आ) *weit entfernt* Çâñkh. Çr. 1,1, 25. विदूरान्तरभाव Ragh. 13,48. देश Kathâs. 21,115. Râǵa-Tar. 1,125. Bhâg. P. 2,4,14. आसन्नो ऽपि विदूरवत् 4,16,11. Verz. d. Oxf. H. 132, b, No. 243. नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि *weit entfernt von so v. a. nicht zu erreichen für* Bhâg. P. 8,3,10. भर्तृस्नेह° so v. a. *Nichts wissend von* 4,14,25. Gewöhnlich ohne subst. im acc. abl. und loc.: विदूरम् *in weiter Ferne* (Gegens. समन्तिकम्) TBr. 3,9,2,2. Çat. Br. 1,4, 1,23. 6,4,18. 3,9,4,21. Çâñkh. Br. 26,1. Gît. 11,25. Bhâg. P. 8,12,23. विदूरात् *aus —, in weiter Ferne* Hariv. 6644. Ragh. 13,38. Bhâg. P. 7, 6,18. 8,2,23. विदूरतस् dass. R. 4,58,35. Mâlatim. 61,12. Kathâs. 12, 6. 34,34. 69,58. 121,160. विदूरे *in weiter Ferne, weit weg* R. 4,58,14. इतः Kathâs. 61,78. 85,23. °कृ *entfernen* Spr. 2792. Am Anfange eines comp.: °जाताश्च लताः *fern wachsend* MBh. 3,396. स्वरं विदूरसंश्रवम् *aus weiter Ferne hörbar* R. 3,66,26. °क्रमणा Spr. 2998. °गमन Kathâs. 26,31. °ग *sich weit verbreitend:* गन्ध H. 1390. *weit entfernt* Verz. d. Oxf. H. 256,b,42. Vgl. अ° (adj. auch Kumâras. 7,41. अविदूरे auch R. Gorr. 2,47,5. 53,5. Bhâg. P. 5,2,6. 7,5,46). — 2) m. N. pr. a) eines Sohnes des Kuru MBh. 1,3792. fg. nach der Lesart der ed. Bomb. विदूरथ ed. Calc. — b) eines Berges oder einer Gegend, von wo der Lasurstein herkommen soll, P. 4,3,84. Mallin. zu Çiç. 3,45. °भूमि Kumâras. 1,24. विदूराद्रि Ǵaṭâdh. im ÇKDr. विदूरशब्दो नगरविशेषस्य पर्वतविशेषस्य वालवायस्य वाचकः Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,60; vgl. वैदूर्य und वैडूर्य.

विदूरज n. *Lasurstein* Çabdârthak. bei Wilson. — Vgl. वैदूर्य und वैडूर्य.

विदूरत्व (von विदूर) n. *weite Entfernung:* विदूरत्वात् = विदूरात् Hariv. 6828.

विदूरथ m. N. pr. eines Muni Varâh. Bṛh. S. 48,64. eines Sohnes des 12ten Manu Hariv. 484. Mârk. P. 94,26. eines Fürsten Hariv. 5017. 5081. 5498. 6643. Verz. d. B. H. 189 (46. fg.). Bhâg. P. 2,7,34. aus Vṛshṇi's Geschlecht MBh. 1,6999. 7915. 7,408. पौरवदायादो विदूरथसुतः 12,1791. ein Sohn Kuru's MBh. 1,3792. fg. (विदूर ed. Bomb.). दाक्षिणात्यो भूभृत् Mârk. P. 109,10. ein Sohn Bhaǵamâna's und Vater Çûra's Hariv. 2032. VP. 436. Bhâg. P. 9,24,25. ein Sohn Suratha's und Vater Ṛksha's (Sârvabhauma's) Hariv. 1816. VP. 457. Bhâg. P. 9,22,10. ein Sohn Kitraratha's 24,17. Vater Sunîti's und Sumati's Mârk. P. 116,8. 10. fgg. wird von seiner Gattin getödtet Kâm. Nîtis. 7,54. Varâh. Bṛh. S. 78,1 (Kull. zu M. 7,153). Spr. 1353. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

विदूरय (von विदूर), °यति *weit forttreiben* Spr. 2776, v. l.

विदूरविगत adj. Bhâg. P. 5,1,36 nach dem Comm. = अत्यन्त *von niedrigster Herkunft.*

विदूरीभू (विदूर + 1. भू) *sich entfernen:* °भवतः समुद्रात् Ragh. 13,18.

विदूषक (vom caus. von 1. दुष् mit वि) 1) nom. ag. *Verunglimpfer* H. an. 4,33. Med. k. 214. ब्रह्मब्राह्मणायज्ञपुरुषलोक° Bhâg. P. 5,6,11. — 2) m. *Spassmacher, lustiger Geselle;* = षिड्ग u. s. w. Trik. 3,1,6. = चाटुवटु Med. — Spr. (II) 736. Daçak. 61,6. insbes. *die lustige Person im Schauspiel, der nur an Essen, Trinken und Spässe denkende Gefährte des Helden* H. 331. H. an. Sâh. D. 77. 79. 85. Hariv. 8695. Çâk. 20,1. u. s. w. Vikr. 15,1 u. s. w. Mâlav. 27,12 u. s. w. Dhûrtas. 87,6 u. s. w. Verz. d. Oxf. H. 139,a, No. 274. — 3) m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 18,109. fgg.

विदूषण (wie eben) adj. *beschimpfend, verunglimpfend:* मतिं धर्मविदूषणाम् (!) R. 5,87,25.

विदृति (von 1. दर् mit वि) f. *die Naht auf dem Kopfe* Ait. Up. 3,12.

विदृश् (2. वि + दृश्) adj. *blind* Varâh. Bṛh. 4,3.

विदेघ m. N. pr. eines Mannes Çat. Br. 1,4,1,10. fgg. — Vgl. विदेह.

विंदेव (2. वि + देव) *widergöttlich, ungöttlich:* रतस् AV. 12,3,43. 20,136,14. *ohne Götter:* यज्ञ Kâth. 26,9.

विदेश (2. वि + देश) m. *Fremde* (Gegens. स्वदेश, स्वविषय): विदेशे प्रेत: Kauç. 80. M. 8,167. MBh. 3,17140. R. 5,33,36. को वीरस्य मनस्विन: स्वविषय: को वा विदेश: स्मृत: Spr. 756. गच्छति विदेशम् 2346. 5223. वासो विदेशे 5373. को विदेश: सविद्यानाम् 1926 (II). भजते विदेशमधिकेन जित: Çiç. 9,48. Kathâs. 21,118. 25,70. 36,74. 43,39. मा गा विदेशम् 49,215. विदेशं व्रजन् 56,309. गुणिनो न विदेशो ऽस्ति 61,121. Râga-Tar. 4,605. °ग Varâh. Bṛh. 5,7. Pańkat. V,84. Kathâs. 33,207. °गमन 20,148. Spr. 1191. विद्या बन्धुजनो विदेशगमने 2797. 4259. °निरत Varâh. Bṛh. 12,11. °वासिन् 101,9. °वास Vet. in LA. (III) 19,19. °स्थ Âçv. Gṛhj. 1,12,2. M. 5,75. MBh. 4,2139. 13,5888. R. Gorr. 1,11,7. Varâh. Bṛh. 5,1. Verz. d. Oxf. H. 87,b,8. 272,b, No. 644. संप्रसारण *anderwärts vorkommend* P. 6,1,37, Schol.

विदेश्य (von विदेश) adj. *auswärts befindlich* AV. 4,16,8.

1. विदेह (2. वि + देह) adj. *körperlos, vom Körper befreit, verstorben* H. an. 3,769. Med. h. 24. MBh. 3,8874. 6,3445. शिरोगणा: 11,432. R. 7,55,21. 57,20. Bhâg. P. 9,13,11. 13. Jogas. 1,19. Verz. d. Oxf. H. 42, a,35. °कैवल्यप्राप्ति Madhus. in Ind. St. 1, 20,17. °मुक्ति (Gegens. जीवन्मुक्ति) Weber, Râmat. Up. 337. Colebr. Misc. Ess. I, 370. Verz. d. Oxf. H. 123, a, 28. °मुक्त्यादिकथन Titel einer Abhandlung 237, a, No. 568. Hall 13. — Vgl. महा° 2).

2. विदेह (= विदेघ) 1) m. a) pl. N. pr. eines Volkes, nördlich vom Ganges im heutigen Tirhut mit der Hauptstadt Mithilâ, Trik. 2,1,8. H. 946. अत्तरा निषधं नीलं च विदेहा: 1538, Schol. कोसलविदेहानां मर्यादा: Çat. Br. 1,4,1,17. 14,6,11,6. 7,2,30. काशिविदेहेषु Kaush. Up. 4,1. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. No. 93 (56). MBh. 1,4452. 2,1062. 6,353 (VP. 188). Hariv. 1980. 12832. R. 1,68,14 (70,16 Gorr.). R. Gorr. 1, 71,7. 4,40,25. Varâh. Bṛh. S. 5,41. 71. Mârk. P. 57,44. Verz. d. Oxf. H. 258,b,27. Daçak. 95,8. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. Burn. Intr. 421. Târan. 14. °राज R. 2,88,7. विदेहाधिपति Hariv. 4968. Ragh. 12,26. विदेहाधिप ein Mediciner (vgl. u. b) Suçr. 2,302,8. °नगरी = मिथिला Ragh. 11,36. °नगर Hall 46. विदेहा: पश्च ते च द्विविधा: पूर्वे चापरे च H. 946, Schol. पूर्व° Vjutp. 81. पूर्वविदेहे (das Land) Lalit. ed. Calc. 21,9. पूर्वविदेहो नव योजनसहस्राणि 170,15. पूर्वविदेहलिपि 144, 5. — b) *ein Fürst der* Videha (vgl. वैदेह) H. an. Med. जनक Weber, Râmat. Up. 331. als N. pr. Bhâg. P. 2,7,44. Râga-Tar. 8,612. ein Mediciner (vgl. विदेहाधिप unter a) Verz. d. B. H. 290,1. Verz. d. Oxf. H. 314,b, No. 746. 358,a,6. — 3) f. आ Bez. der Stadt Mithilâ Trik. 2,1, 15. H. 975. Halâj. 2,132. Schiefner, Lebensb. 235 (5). — Vgl. अपर°, महा° und वैदेह.

विदेहक (von 2. विदेह) 1) m. N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 306 (76). — 2) n. N. pr. eines Varsha Çatr. 1,292.

विदेहत्व (von 1. विदेह) n. *Körperlosigkeit* R. 7,56,7. विदेहत्वं प्राप्त: so v. a. *gestorben* MBh. 1,3805. 3817.

विदोष (2. वि + 1. दोष) adj. *frei von Schuld, keines Vergehens schuldig:* अ° Lâṭj. 6,5,3.

विदोह (von 1. दुह् mit वि) m. *verkehrtes* oder *übermässiges Melken* (*Ausnützen*): यज्ञियस्य कर्मणा: TBr. 3,3,2,2. सोमपीथस्याविदोहाय Pańkav. Br. 18,2,12.

विद्ध s. u. व्यध्.

विद्धक (von विद्ध) m. *eine Art Egge* Kṛshis. 9,14 (s. u. मदि).

विद्धकर्ण m. und °कर्णा f. *Clypea hernandifolia W. u. A.* Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr. °कर्णी f. dass. AK. 2,4,3,3. °कर्णिका f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

विद्धत्व (von विद्ध) n. *das Behaftetsein* Comm. zu Khând. Up. S. 31.

विद्धपर्कटी f. *Pongamia glabra Vent.* Hâr. 101.

विद्धशालभञ्जिका f. Titel eines Lustspiels von Râgaçekhara Wilson, Sel. spec. of the Theatre of the Hindus II, 354. fgg. Verz. d. Oxf. H. 140,b, No. 284. Sâh. D. 201,8. Comm. zu Kuvalaj. 37,b. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

विद्धि f. nom. act. von व्यध् P. 6,4,2, Schol.

विद्मन् (von 1. विद्) n. *Aufmerksamkeit; Wissen, Kenntniss:* अग्निर्हि विद्मना निदो देवो मर्तमुरुष्यति RV. 6,14,5. 1,110,6. यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति *beobachtend* 7,4,1. 5,87,2. पृच्छामि विद्मने (infinitiv) न विद्वान् 1,164,6. 10,88,18.

विद्मनापस् (विद्मना + अपस्) adj. *geschickt —, sorgfältig zu Werke gehend* RV. 1,31,1. 111,1. AV. 7,47,1. Nir. 11,33.

विद्मिसार m. N. pr. eines Fürsten VP. 466. fehlerhaft für बिम्बिसार.

1. विद्य (von 3. विद्) n. *das Finden, Erlangen* in पति°, पुत्र°.

2. विद्य (von विद्या) am Ende eines adj. comp., z. B. अ° *ungelehrt* Spr. (II) 684. अभ्यस्त° Ragh. 1,8. कृत° (s. auch bes.) *der Studien gemacht hat, im Besitz einer Wissenschaft, gelehrt* MBh. 1,3279. Spr. (II) 813. 1863. Kathâs. 7,60. 22,154. अर्पितविद्या 26,251. प्राप्त° Varâh. Bṛh. 14,3. Çuk. in LA. (III) 34,10. तद्विद्य *ein Kenner davon, Sachkenner* Kâm. Nîtis. 1,33. 2,1. Vgl. noch दुर्विद्य, निर्विद्य, बहु°, भूयो°, यथाविद्यम्.

विद्यमानत्व (von विद्यमान; s. u. 3. विद्) n. *das Vorhandensein, Dasein* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 33. अ° ebend.

विद्या (von 1. विद्) f. P. 3,3,99. Vop. 26,186. 1) *Wissen, Wissenschaft, Lehre* (Hâr. 196); namentlich *die in drei Kapitel zerfallende vedische Lehre* AV. 6,116,1. 11,7,10. 8,23. यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचते TS. 2,1,2,8. 5,1,3,2. Ait. Br. 8,23. त्रयी (s. auch u. त्रय) TBr. 3,10,11,5. Bhâg. P. 5,9,8. त्रिधातु Çat. Br. 5,5,5,6. 10,2,6,15. 11,5, 3,8. 1,6,3,8. 4,2,3,8. सर्वासां विद्यानां वागेकायनम् 14,5,4,11. °कर्मणी 7,2,3. विद्ययाप्यस्ति प्रीति: Veda*kunde* Âçv. Gṛhj. 1,1,4. 3,9,1. विद्यान्ते *am Ende der Lehrzeit* 4. Kauç. 67. 74. °प्रकर्ष Nir. 1,5. विद्यात: पुरुषविशेषो भवति 16. 14,8. 9. °स्थान *Disciplin, Wissenszweig* 1,15. — MBh. 3,2887. विविधा: R. 1,53,14. विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्ते ऽस्मि रक्ष माम्। असूयकाय मां मा दा: M. 2,114. अनभ्यसनशीलस्य विद्येव तनुतां गता R. 5,19,22. अर्थकरी Spr. 1791. अनवद्या 2016 (II). विद्याधनं यत्नस्य तत्तस्यैव धनं भवेत् M. 9,206. अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् Spr. (II) 94. कामधेनुगुणा विद्या सदैव फलदायिनी। प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्॥ 1651. 1974. का विद्या कविता विना 1710. विद्या रूपं कुरूपाणाम् 1919. वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्यातो बुद्धिरुत्तमा (I) 2749. विद्या ददाति विनयम् 2795. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् 2797. विद्या खलस्य विवादाय, साधोर्ज्ञानाय 2800. विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे

विद्ये प्रतिपत्तये। आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा। 2801. संगमयति विद्यैव नरं दुर्धर्षं नृपम् 3100. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम् 3210. विद्या मित्रं प्रवासे 4999. विद्या सहस्रं मित्रम् 5002. °रत्नं सरसकविता 5000. सर्वविद्यामुखं व्याकरणम् Kathâs. 4, 22. न च विद्यां विना राज्ञां प्रतिग्रहः केवलबुद्ध्या लभ्यते Pańkat. 243, 19. तत्र विद्या न वप्तव्या M. 2, 112. fg. शुभां विद्यां हीनादपि समाप्नुयात् Spr. 3030. शुभां विद्याम् — दद्दीतावरादपि 3032. विद्यामभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि (ताम्) Ragh. 1, 88. विद्याभ्यासे Spr. (II) 1793. सदभ्यस्त° Pańkat. 244, 1. पूर्वाधीत° 243, 25. विद्या नाधिगता कलङ्करहिता Spr. 2796. अपात्रे प्रतिपादिता 2803. ददौ विद्यामृतुपर्णाय MBh. 3, 3026. °दान Verz. d. B. H. No. 1218. Verz. d. Oxf. H. 35, a, 44. 87, a, 32. °प्रदान 85, a, 20. °मद Spr. 2798. विद्यानां पारदृश्वा Ragh. 1, 23. विद्यातग der sein Fach gründlich versteht Varâh. Bṛh. S. 68, 99. °भाज् 68, 45. विद्याभीप्सिन् Kathop. 2, 4. विद्यार्थिन् Spr. (II) 1649. (I) 5001. विद्यास्वभिविनीतानाम् (so ed. Bomb.) MBh. 13, 378. °विनीत R. 1, 7, 4. °समृद्ध M. 3, 98. °वृद्ध Spr. 2802. Sarvadarçanas. 3, 6. °हीन M. 4, 141. Pańkat. 243, 21. विद्यानुपालिन् M. 9, 204. रक्षो° Çâṅkh. Çr. 16, 2, 19. सर्प° u. s. w. Çat. Br. 13, 4, 3, 9. विष°, पुराण° u. s. w. Âçv. Çr. 10, 7, 5. fgg. सूदस्यन्दनविद्याभ्याम् Kathâs. 56, 338. vier *Wissenschaften* (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्त्ता und दण्डनीति) Ragh. 3, 30. Kir. 2, 6. vierzehn (षडङ्गी वेदाश्चत्वारो मीमांसान्वीक्षिकी तथा। धर्मशास्त्रं पुराणं च) H. 253. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 9. fgg. Naish. 1, 4. achtzehn (ausser den eben genannten noch आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व und शासन oder अर्थशास्त्र) Mallin. zu Naish. 1, 5. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 13. 22, 10. bei den Buddhisten Ind. St. 3, 131. vierundsechzig (hier so v. a. कला) Verz. d. Oxf. H. 217, a, 20. fg. Bei den Pâçupata *Wissen* überh., gleichviel ob richtiges oder falsches, Sarvadarçanas. 76, 17. तत्र पञ्चगुणा (so ist zu lesen) विद्या। सापि द्विविधा बोधाबोधस्वभावभेदात् 18. — 2) *Zauberkunst; Zauberspruch:* मन्त्राः पुंदेवता ज्ञेया विद्याः स्त्रीदेवताः पुनः Verz. d. Oxf. H. 105, a, 8. जीवनी MBh. 1, 3241. fg. मृतसंजीवनी Vet. in LA. (III) 14, 21. बलातिबलयोर्विद्ययोः Ragh. 11, 9. Kathâs. 10, 95. 18, 218. 227. 240. 377. 33, 170. 178. 37, 186. 38, 54. 42, 32. 34. fg. 38. 45, 280. 290. 52, 161. षडक्षरी Burn. Intr. 225. Pańkar. 2, 4, 47. — 3) *die Wissenschaft* personif. Hariv. 14035. mit der Durgâ identificirt Çabdar. im ÇKDr. unter den Verfasserinnen von Zaubersprüchen und Gebeten Verz. d. Oxf. H. 101, b, 2. — 4) *Premna spinosa* Çabdač. im ÇKDr. — 5) mystische Bez. *des Buchstabens* इ Weber, Râmat. Up. 318. — 6) *Glöckchen* (vgl. °मणि) H. ç. 134. — Vgl. अ°, अङ्ग°, आत्म°, तर्क°, धनुर्विद्या, नक्षत्र°, नीति°, प्राण°, ब्रह्म°, भूत°, मधु°, मल्ल°, महा°, मूल°, यज्ञ°, रथ°, राज°, वास्तु° und वैद्य.

विद्याकर (विद्या + आ°) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Cambr. H. 67. °वाजपेयिन् Verz. d. Oxf. H. 292, b, 11. fg.

विद्यागण m. pl. Bez. gewisser buddhistischer Schriften Târan. 241.

विद्यागम (विद्या + आ°) m. *Erlangung von Kenntnissen, Erlernung von Wissenschaften* Spr. 2423. R. Gorr. 2, 1, 10.

विद्यागुरु m. *Lehrer einer Wissenschaft*, insbes. *der heiligen* M. 2, 206. Bhâg. P. 3, 13, 38.

विद्यागृह n. *Schulhaus, Collegium* Kâd. in Z. d. d. m. G. 7, 583, 1 v. u. — Vgl. विद्यावेश्मन्.

विद्यौचण (°चन bei Vop.) und विद्यौचुञ्चु adjj. *gelehrt* P. 5, 2, 26, Schol. Vop. 7, 74.

विद्यातीर्थ n. 1) *Wissen als Badeplatz, Bad der Wissenschaft:* °तीर्थे विमलमतयः कल्मषं क्षालयन्ति Spr. 4998. — 2) N. pr. eines *heiligen Badeplatzes* MBh. 3, 8030. — 3) Bein. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 222, a, No. 540. 244, b, No. 606. 252, b, No. 626. 263, b, No. 636. fg. Sâj. in der Einl. zu Ṛv. u. s. w.

विद्यात्व n. *der Begriff* विद्या Kâm. Nîtis. 2, 17.

विद्यादल m. *eine Art Birke* (भूर्ज), *auf deren Rinde geschrieben wird,* Çabdam. im ÇKDr.

विद्यौदायाद m. *der Erbe einer Wissenschaft* P. 6, 2, 5, Schol.

विद्यादेवी f. bei den Gaina Bez. einer Klasse göttlicher Wesen, deren sechszehn angenommen werden, H. 238. fgg.

विद्याधर 1) adj. *im Besitze einer Wissenschaft —, von Zaubersprüchen seiend.* — 2) m. *a)* Bez. einer Klasse von Luftgenien, die im Gefolge Çiva's erscheinen, im Himâlaja ihren Sitz haben und *im Besitz der Zauberkunst stehen,* AK. 1, 1, 1, 6. Trik. 1, 1, 64. Halâj. 1, 87. Hariv. 3930. R. 1, 16, 10. 6, 83, 26. 32. Sûrjas. 12, 31. Varâh. Bṛh. S. 9, 27. 38. 12, 6. 13, 8. Ragh. 2, 60. Spr. 807. Uttarar. 103, 1. fgg. (139, 1. fgg.). Kathâs. 1, 13. 17. 18, 216. 220. 232. Verz. d. Oxf. H. 69, a, 32. 92, b, 40. Vet. in LA. (III) 22, 20. Brahma-P. ebend. 49, 18. Târan. 69 u. s. w. विद्याधराङ्गना Kathâs. 13, 35. विद्याधरी f. MBh. 4, 258. R. 1, 16, 5. Uttarar. 103, 15 u. s. w. (140, 6 u. s. w.). Kathâs. 22, 58. 93, 8. 105, 13. Prab. 62, 10. 101, 13. Bhâg. P. 3, 23, 37. fg. Hit. 63, 16. 108, 5. विद्याधरताल Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, a, 11. fg. — *b)* N. pr. verschiedener *Gelehrter* Mallin. zu Kir. 4, 38. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46. Verz. d. B. H. No. 166. Verz. d. Oxf. H. 122, a, 3. 4. 136, a, No. 259. 157, b, No. 340. °गच्छ 152, a, N. 3. विद्याधराचार्य 95, b, 14. — *c) ein best. Metrum: 4 Mal* — — — —, — — — — — — — — Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VII, 26). — 3) f. ई *a)* s. u. 2) *a)*. — *b)* N. pr. einer Tochter des Fürsten Çûrasena Kathâs. 56, 81. — Vgl. रङ्ग° und वैद्याधर.

विद्याधरत्व n. *der Stand eines* Vidjâdhara Kathâs. 24, 14. 26, 168. 108, 122.

विद्याधरपिटक Vie de Hiouen-thsang 159 ohne Zweifel fehlerhaft für धारणीपिटक, wie Hiouen-thsang II, 38 gelesen wird; nach dem Index soll dieses letztere falsch sein.

विद्याधररस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 993.

विद्याधरीभू (विद्याधर + 1. भू) *zu einem* Vidjâdhara *werden:* °भूत Kathâs. 25, 262. 26, 234. 108, 96.

विद्याधरीविलास m. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 67.

विद्याधरेन्द्र m. *ein Fürst der* Vidjâdhara Râga-Tar. 1, 218. so v. a. कपीन्द्र als Bez. Gâmbavant's MBh. 13, 630. Hiervon °ता f. nom. abstr. Kathâs. 44, 30.

विद्याधार (विद्या + आ°) m. *ein Behälter von Wissen, ein überaus grosser Gelehrter* Mâlatîm. 41, 2.

विद्याधिदेवता f. *die Schutzgottheit der Wissenschaften:* Sarasvatî Pańkar. 1, 12, 52.

विद्याधिप m. *das Haupt der Wissenschaften*, wohl. Beiw. Çiva's

WEBER, RÂMAT. UP. 305.

विद्याधिराज m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 3.

विद्याधीशवेंदेर m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* ebend. 177, *b*, 13.

विद्याध्र m. = विद्याधर 2) *a)* BHÂG. P. 2,6,13. 10,37. 3,10,26. 7,4,6. 10,85,41. 11,16,29.

विद्यानगर n. N. pr. einer *Stadt* COLEBR. Misc. Ess. I, 301. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 35. TÂRAN. 86. 264. 267. BURNOUF in BHÂG. P. I, LX, N. MACK. Coll. II, 30. °नगरी Inschr. bei COLEBR. Misc. Ess. II, 263, Çl. 13.

विद्यानन्द (विद्या + आ°) m. 1) *die Wonne am Wissen* Verz. d. Oxf. H. 223, *a*, 1. 3. — 2) N. pr. eines Autors über die Lehre der Gaina SARVADARÇANAS. 38, 12. °निबन्ध Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 14.

विद्यानाथ m. N. des Verfassers des Pratâparudrîja PRATÂPAR. 2, *b*, 1. °भट्ट Verfasser der Vedântakalpatarumañgarî COLEBR. Misc. Ess. I, 333.

विद्यानिधि m. N. pr. oder Beiw. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 20.

विद्यानिवास m. N. pr. verschiedener Männer HALL 22. 34. 46. 49. 58. 66. 79. 84. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, No. 395. fg., Z. 9. 175, *a*, 38. 239, *a*, No. 577. °भट्टाचार्य 38, *b*, 11. fg. 246, *a*, No. 618. HALL 184.

विद्यानुलोमालिपि (!) f. Bez. *einer best. Art zu schreiben* LALIT. ed. Calc. 144, 10.

विद्यापति m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 42. 279, *a*, 49. 292, *b*, 13. WILSON, Sel. Works I, 168. °ठक्कुर HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 24.

विद्याप्रवाद n. Titel des 10ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 248.

विद्याभट्ट m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1170.

विद्याभरण (विद्या + आ°) m. N. pr. des Verfassers der nach ihm benannten विद्याभरणी HALL 206.

विद्याभृत् m. = विद्याधर 2) *a)* ÇATR. 2, 602.

विद्यामणि (°मनि gedr.) m. = विद्या *Glöckchen* H. ç. 134.

विद्यामय (von विद्या) adj. *aus Wissen bestehend, im Wissen aufgehend* MBH. 12,8573. 14,1456. BHÂG. P. 11,11,7.

विद्यामहेश्वर m. Bein. Çiva's ÇIV.

विद्यामात्रसिद्धि f. Titel einer buddhistischen Schrift HIOUEN-THSANG I, 286. Vie de HIOUEN-THSANG 115. 122. 191. 218. 261. °त्रिदशशास्त्रकारिका 101.

विद्यामृतवर्षिणी f. Titel eines Commentars HALL 91.

विद्यारण्य m. N. pr. und Bein. verschiedener *Gelehrter*, insbes. des Mâdhavâkârja, COLEBR. Misc. Ess. I, 53. 63. 78. fg. 96. Verz. d. B. H. No. 629. fgg. Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, 33. 124, *b*, 43. 223, *a*, No. 541. Ind. St. 1, 471. WILSON, Sel. Works I, 203. BURNOUF in BHÂG. P. I, LX. HALL 18. 98. 133. MACK. Coll. II, 30. °तीर्थ HALL 2. 12. भारतीतीर्थ° Verz. d. Cambr. H. 20.

विद्यारत्नाकर m. Titel einer ganz neuen Compilation Verz. d. Oxf. H. 260, *b*, 7.

विद्यारम्भ (विद्या + आ°) m. *Beginn der Studien:* प्राप्ते तु पञ्चमे वर्षे विद्यारम्भं च कारयेत् Cit. bei MALLIN. zu RAGH. 3, 28. Verz. d. Cambr. H. 63. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 7. खड्गधनुर्विद्यारम्भ 22.

विद्याराज m. *Fürst des Wissens, — der Zaubersprüche* WASSILJEW 189. 194. 197. Bein. Vishṇu's PAÑKAR. 4,3,56. N. pr. eines buddhistischen Heiligen WASSILJEW 175.

विद्याराशि m. Bein. Çiva's ÇIV.

विद्यार्थदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 108.

विद्यार्थप्रकाशिका f. desgl. ebend.

विद्यालंकारभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors ebend. 174, *a*, No. 390.

विद्यालय N. pr. einer Oertlichkeit ebend. 251, *b*, 15.

विद्यावंश m. *Lehrerverzeichniss, ein Verzeichniss, das die Lehrer in einem Wissenszweige in chronologischer Folge aufführt*, Schol. zu P. 2,1,19.

विद्यावत् (von विद्या) adj. P. 8,2,9, Schol. VOP. 7,28. *gelehrt* INDR. 4, 3 (विद्यया st. विद्यावान् MBH. 3,1802). Spr. 1932. 2799. 4713. PRAB. 35, 10. Verz. d. Oxf. H. 33, *b*, 11. 261, *a*, 18. RÂGA-TAR. 2, 39. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 39, 23.

विद्यावागीश m. *ein Meister in der Wissenschaft und im Worte*, als Beiw. eines grossen Gelehrten HALL 39. 72. Verz. d. Oxf. H. 175, *a*, 23.

विद्याविद् adj. *gelehrt* KÂM. NÎTIS. 8, 57. RÂGA-TAR. 3, 111.

विद्याविनोद m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, No. 320. 181, *b*, No. 413. 279, *a*, 49. fg. COLEBR. Misc. Ess. II, 116. citirt im ÇKDR. u. ग्रंश und त्रप्स्य.

विद्याविरुद्ध adj. *mit der Wissenschaft im Widerspruch stehend;* davon °ता f. nom. abstr. SÂH. D. 576.

विद्याविशारद m. N. pr. oder Bein. eines *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 10.

विद्यावेश्मन् n. *Schulhaus, Collegium* RÂGA-TAR. 1, 42. — Vgl. विद्यागृह.

1. विद्याव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 39.

2. विद्याव्रत m. wohl Bez. *einer Art von Zauberern* TÂRAN. 189.

विद्याव्रतस्नात adj. *der das* Veda-*Studium und die Gelübde absolvirt hat:* वेद° M. 4, 31. विद्याव्रतस्नातक PÂR. GṚHJ. 2, 5. GOBH. 3, 5, 12. — Vgl. विद्यास्नात.

विद्यासागर m. *ein Meer von Wissen* als Beiw. eines grossen Gelehrten Verz. d. B. H. No. 217. 613. HALL 96. ders. in der Einl. zu VÂSAVAD. 47.

विद्यास्नात adj. *der das* Veda-*Studium absolvirt hat* MBH. 13, 3019. R. 2, 82, 10. °क PÂR. GṚHJ. 2, 5.

विद्युच्छत्रु (1. विद्युत् + शत्रु) m. N. pr. eines Râkshasa (nach dem Comm.) BHÂG. P. 12, 11, 41.

विद्युच्छिखा (1. विद्युत् + शिखा) f. 1) *eine best. Pflanze mit giftiger Wurzel* SUÇR. 2, 251, 14. — 2) N. pr. einer Râkshasî KATHÂS. 25, 196.

विद्युज्जिह्व (1. विद्युत् + जिह्वा) 1) adj. *eine blitzähnliche Zunge habend:* कृतान्त R. 7, 23, 1, 74. — 2) m. *a)* N. pr. eines Râkshasa MBH. 6, 4083. R. 5, 12, 9. 14. 6, 69, 13. 7, 12, 2. 23, 18. — *b)* N. pr. eines Jaksha KATHÂS. 72, 41. 43. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2626.

विद्युज्ज्वाल (1. विद्युत् + ज्वाला) m. N. pr. eines Schlangendämons SCHIEFNER, Lebensb. 272 (42).

1. विद्युत् (1. द्युत् mit वि) P. 3, 2, 177. 1) adj. *blinkend, blitzend:* वर्ष्म विद्युतामिव सूर्यः ÂÇV. GṚHJ. 1, 24, 8. ṚV. 1, 23, 12. 105, 1. die Marut

168,8. 5,52,6. *blitzende Waffe* 54,11. Wasser und Regen: गोरिवं वि-द्युतं तृषाणा सवनोपं यातम् 7,69,6. धारा 9,84,3. Âçv. Gṛhj. 2,4,14. यत्ते ग्रभस्यं विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ṚV. 5,84,3. वर्ष 10,91,5. पुरुष VS. 32,2. — 2) f. AK. 3,6,1,3. *a*) *Blitz* AK. 1,1,2,11. Trik. 1,1,84. H. 1104. Med. t. 156. Halâj. 1,60. ṚV. 1,32,13. 38,8. 2,35,9. 3,1,14. 5,10,5. पतयन्ति विद्युतः 83,4. विद्युन्न दविद्योत् 6,3,8. 10,95,10. °तो ज्योतिः 7, 33,10. दिवो न विद्युत्स्तनयन्त्यभ्रैः 9,87,8. 10,99,2. AV. 9,2,14. fg. 10, 1,23. 7,59,1. मा नो वधीर्विद्युता शस्यम् 7,11,1. विद्युद्वा अशनिः Çat. Br. 6,1,3,14. अपां ज्योतिः 7,5,2,49. 11,4,4,1. 4,5,1,4. विद्युत्स्तनयि-त्नुवर्षाः Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. Khând. Up. 5,22,2. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (59). M. 1,38. 4,103. 106. 5,95. MBh. 1,1134. 3,1717. 2083. 2584. R. 1,63,5. Suçr. 1,7,17. 17,3. 22,17. 89,20. Ragh. 1,36. Megh. 39. 79. 113. Varâh. Bṛh. S. 3,33. 5,93. 22,5. 28,12. विद्युत् — तटतटस्वना स-कृमा। कुटिलविशाला निपतति 33,5. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,1. Bhâg. P. 2, 6,5. तत्र विद्योतत स्म विद्युतः 9,14,31. विद्युज्ज्योतिस् Vet. in LA. (III) 1,12. विद्युत्कम्प Megh. 96. विद्युद्दामन् 28. विद्युद्वलो Spr. (II) 1098. विद्युल्लता Kathâs. 25,41. 34,223. मेघसंघाः सविद्युतः MBh. 1,1128. Bhâg. P. 3,19,19. Auch n. MBh. 7,9569. Schol. zu Shaḍv. Br. 1,2. — *b*) *Morgenröthe* Med. — *c*) pl. Bez. der Töchter des Pragâpati Bahuputra: बहुपुत्रस्य विदुषश्चतस्रो विद्युतः स्मृताः (सुताः die neuere Ausg.) Hariv. 179. — *d*) *ein best. Metrum: 4 Mal* ◡◡◡◡◡–, ––◡––◡– Colebr. Misc. Ess. II, 161 (VIII, 10). — 3) m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,41. — Vgl. अष्टि°, सु°.

2. विद्युत् (2. वि + 2. द्युत्) adj. *glanzlos* Med. t. 156.

विद्युता (von 1. द्युत् mit वि) f. N. pr. einer Apsaras (daneben वि-द्योता) MBh. 13,1425.

विद्युताक्ष (विद्युता = 1. विद्युत् + अक्ष *Auge*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2564. — Vgl. विद्युदक्ष.

विद्युत्केश (1. वि° + केश) m. N. pr. eines Râkshasa R. 7,4,17. fg.

विद्युत्केशिन् m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,20.

विद्युत्त (von 1. द्युत् mit वि) adj. *aufblitzend; n. das Aufblitzen* Çat. Br. 14,5,3,10.

विद्युत्पताक m. N. einer der sieben Wolken, die am Ende der Welt die Erde überschwemmen werden, Verz. d. Oxf. H. 347,*b*,33.

विद्युत्पर्णा f. N. pr. einer Apsaras Vjâḍi beim Schol. zu H. 183 (विद्युन्पर्णा falschlich geschr.). MBh. 1,2557. 4818. Hariv. 14162.

विद्युत्पुञ्ज 1) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 108,177. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter des Vidjutpuṅga ebend.

विद्युत्प्रभ (1. वि° + प्रभा) 1) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,5963. eines Fürsten der Daitja Kathâs. 115,3. — 2) f. आ N. pr. einer Grosstochter des Daitja Bali Kathâs. 10,39. einer Tochter eines Fürsten der Râkshasa 25,208. eines Fürsten der Jaksha mit Namen Ratnavarsha 26,213. pl. Bez. einer Gruppe von Apsaras MBh. 5,3841.

विद्युत्प्रिय 1) adj. *dem Blitze lieb.* — 2) n. *Messing* H. 1049.

विद्युत्य (von 1. विद्युत्) adj. *fulmineus* VS. 16,38. P. 4,4,110, Schol.

विद्युद्वत् (von 1. विद्युत्) 1) adj. *blitzreich* (von Wolken) Schol. zu P. 1,4,19 und 8,2,10. Vop. 7,28. MBh. 1,1411. 8,1681. 3133. Megh. 65. — 2) m. *a*) *Gewitterwolke* Kumâras. 6,27. — *b*) N. pr. eines Berges Hariv. 12843. R. 4,41,44 (hier fälschlich विद्युद्दत्त geschrieben). — Vgl. विद्युन्मत्.

विद्युदक्ष (1. विद्युत् + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Daitja Hariv. 12934. Vgl. विद्युताक्ष.

विद्युद्द्योता (1. विद्युत् + द्योत) f. N. pr. einer Tochter des Fürsten Vasantasena Kathâs. 33,55. fgg.

विद्युद्धस्त (1. विद्युत् + हस्त) adj. *eine blitzende Waffe in der Hand haltend:* die Marut ṚV. 8,7,25.

विद्युद्घन (1. विद्युत् + घन) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 114,140. 115,5. fgg.

विद्युद्रथ (1. विद्युत् + रथ) adj. *in blitzendem Wagen fahrend* ṚV. 3, 14,1. 54,13.

विद्युद्दत्त s. u. विद्युद्वत् 2) *b*).

विद्युद्वर्चस् (1. विद्युत् + व°) m. N. pr. eines göttlichen Wesens MBh. 13,4358.

विद्युन्मत् (von 1. विद्युत्) adj. *blinkend, blitzend:* रथ ṚV. 1,88,1. — Vgl. विद्युद्वत्.

विद्युन्महस् (1. विद्युत् + म°) adj. etwa τερπικέραυνος ṚV. 5,54,1.

विद्युन्माल (1. विद्युत् + माला) m. N. pr. eines Affen R. 4,33,13.

विद्युन्माला (wie eben) f. 1) *ein Kranz von Blitzen* R. 4,12,17. Varâh. Bṛh. S. 25,5. Kathâs. 44,180. Ind. St. 8,367. Khandom. 17. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ––––, –––– Çrut. 15. Colebr. Misc. Ess. II, 159 (III, 2). Ind. St. 8,367. Khandom. 17. — 3) N. pr. *a*) einer Jakshî Kathâs. 49,166. 170. fgg. — *b*) einer Tochter Suroha's, Königs von Kîna, Kathâs. 44,46. 174. 178.

विद्युन्मालिन् 1) adj. *blitzbekränzt:* पर्जन्य Spr. 4425. — 2) m. N. pr. *a*) eines Asura MBh. 7,9557. 8,1395. 1412. Verz. d. Oxf. H. 41,*b*,2. — *b*) eines Râkshasa R. 6,18,16.

विद्युन्मुख n. Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपग्रह) Gjotistattva im ÇKDr. u. वज्रक.

विद्युल्लेखा (1. विद्युत् + ले°) f. 1) *Blitzstreifen, Blitzstrahl* Mṛkkh. 1, 7. Vikr. 76. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ––– ––– Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 2). Ind. St. 8,366. — 3) N. pr. einer Kaufmannsfrau Kathâs. 69,125.

विद्येश (विद्या + ईश) m. 1) *Herr des Wissens,* Bein. Çiva's Çiv. — 2) bei den mystischen Çaiva Bez. *einer best. Klasse von Erlösten* (मुक्तात्मन्); davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 86,9.

विद्येश्वर (विद्या + ई°) m. 1) = विद्येश 2) Sarvadarçanas. 81,13. 85, 20. 86,2. 89,1. — 2) N. pr. eines Zauberers Daçak. 45,11.

विद्योत् ungrammatischer abl. von 1. विद्युत् dem Gleichmaass der Formel zu Liebe: मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि VS. 20,2. eben so st. dessen दिद्योत् TS. 1,8,14,1. TBr. 1,7,8,2; vgl. VS. 10,17.

विद्योत (von 1. द्युत् mit वि) 1) adj. *blitzend, blinkend* Bhâg. P. 3,14, 24. 8,7,17. — 2) m. *a*) *Geblitz, Glanz:* मुक्तामणि° Hariv. 2901. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,143. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Dharma von der Lambâ und Vaters des Stanajitnu (*Donners*) Bhâg. P. 6,6,5. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras (daneben auch विद्युता) MBh. 13,1425.

विद्योतक (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *erhellend, erleuchtend:* वेदार्थ° Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,13.

विद्योतन (von 1. द्युत् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *erhellend, erleuchtend* Dhûrtas. 67, 2. — 2) n. *das Blitzen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 23.

विद्योतयितव्य (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *was erhellt —, erleuchtet wird* Praçnop. 4, 8.

विद्योतिन् adj. *erhellend, erleuchtend:* अर्थ° Verz. d. Oxf. H. 1, *b*, 19.

विद्र n. = छिद्र Çabdak. im ÇKDr. aus विद्रधि geschlossen.

विद्रय n. Name eines Sâman Ind. St. 3, 236, *b*.

विद्रध 1) adj. nach Nir. 4, 15 so v. a. विद्ध, nach Sâj. so v. a. विदृढ, व्यूढ. विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके ṚV. 4, 32, 23. — 2) m. *eine best. Krankheit* (vgl. विद्रधि) AV. 6, 127, 1. 3. 9, 8, 20.

विद्रधि (wohl von 1. दृर् mit वि) m. (nach AK. f.) *eine Art von gefährlichen Abscessen* (äusserlich und innerlich vorkommend) AK. 2, 6, 2, 7 (विद्रुधि Lois.). H. 471. Suçr. 1, 31, 18. 52, 18. 61, 3. 92, 6. 20. 121, 10. 279, 11. 298, 9. 299, 16. 2, 96, 13. Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 54. Varâh. Bṛh. 23 (21), 8. Verz. d. B. H. No. 972. 975. Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 4. 306, *a*, 28. 32. *b*, 39. fg. 313, *b*, 42. 316, *b*, 5. पित्त° Suçr. 1, 280, 12. 2, 24, 15. कर्ण° Wise 287. — Vgl. गल° (auch Çârṅg. Saṃh. 1, 7, 79. 86), रक्त°.

विद्रधिका (von विद्रधि) f. *ein in Verbindung mit Harnruhr vorkommender Abscess* Suçr. 1, 273, 13. 274, 2. Wise 362.

विद्रधिनाशन m. *Hyperanthera Moringa* Trik. 2, 4, 10.

विद्रव (von 1. द्रु mit वि) m. 1) *Flucht* AK. 2, 8, 2, 79. Trik. 2, 8, 59. H. 802. an. 3, 712. Med. v. 51. Hâr. 99. सैन्यस्य MBh. 7, 4092. 9, 1644. R. 1, 3, 30 (25 Gorr.). 6, 93, 4. Varâh. Bṛh. S. 34, 13. 47, 25. 94, 9. Râga-Tar. 8, 1020. — 2) *Entsetzen, Bestürzung* Bhar. Nâṭjaç. 18, 18. 58. 64. 19, 63. 88. Daçak. 1, 40. fg. 2, 54. 3, 58. 60. Sâh. D. 171. 377. 549. Pratâpar. 22, *a*, 5. 41, *a*, 2. — 3) *das Ausfliessen, Schmelzen* ÇKDr. ohne Angabe einer best. Aut. — 4) *Tadel* Çabdar. im ÇKDr. — 5) = धी *Verstand* u. s. w. H. an. Med.

विद्राव m. = विद्रव 1) Çabdârthak. bei Wilson.

विद्रावण (vom caus. von 1. द्रु mit वि) 1) adj. *in die Flucht jagend:* मदमत्तवारणचमू° (केशरिन्) Spr. 1772. — 2) m. N. pr. eines Dânava Hariv. 200 (°मत्कासुरी die neuere Ausg.). — 3) n. *a) das in-die-Flucht-Schlagen* Khandom. 129. — *b) das Fliehen:* कंसविद्रावणकरी MBh. 4, 180.

विद्राविन् adj. 1) *fliehend, davonlaufend* MBh. 6, 2299. — 2) wohl *zum Schmelzen bringend* in वज्रविद्राविणी.

विद्राव्य adj. *in die Flucht zu jagen, zu vertreiben:* वनचारिणः R. 5, 81, 26. अनया मुद्रयापि तुद्रोपद्रवा विद्राव्याः Sarvadarçanas. 29, 17.

विद्रिय s. अ°.

विद्रुति f. = विद्रव 1) *Flucht* Med. v. 51.

विद्रुधि AK. 2, 6, 2, 7 ed. Lois. fehlerhaft für विद्रधि.

1. विद्रुम (2. वि + द्रुम) 1) *Koralle* (*ein absonderlicher Baum*) AK. 2, 9, 93. Trik. 2, 9, 30. H. 1066. an. 3, 473. Med. m. 53. nach den Lexicographen masc., welches wir nicht zu belegen vermögen; als neutr. erscheint es MBh. 3, 14222 und Suçr. 2, 328, 13. — MBh. 1, 7943. 2, 1102. 4, 1827. 6, 406. 450. 13, 2873. Hariv. 7880. R. 1, 74, 5. R. Gorr. 2, 12, 32. 4, 41, 57. 5, 19, 12. Suçr. 1, 228, 5. 259, 17. 2, 166, 15. Mṛkkh. 159, 8. Ragh. 13, 13. Kumâras. 1, 45. Ṛt. 6, 16. Khandom. 80. Varâh. Bṛh. S. 12, 2. 16, 14. 29, 8. 104, 15. Kathâs. 70, 117. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 8. Bhâg. P. 3, 15, 22. 23, 17. fg. 4, 25, 16. 7, 4, 9. 8, 15, 16. Mârk. P. 23, 103. 68, 38. Pañkar. 3, 12, 13. °च्छवि Çiva Çiv. — 2) m. = वृत्त H. an. = रत्नवृत्त Med. — 3) m. *Schoss, Trieb, junger Zweig* Aģajapâla im ÇKDr.; vgl. प्रबाल (richtiger प्रवाल).

2. विद्रुम (wie eben) adj. *baumlos* MBh. 9, 289. Varâh. Bṛh. S. 12, 2.

1. विद्रुमच्छाय (1. वि° + छाया) adj. *korallenfarbig:* अधर Spr. (II) 1470.

2. विद्रुमच्छाय (2. वि + द्रुम - छाया) adj. *keinen Baumschatten gewährend:* मरुमार्ग Spr. (II) 1470.

विद्रुमदण्ड *Korallenstock;* davon nom. abstr. °ता f.: (कर:) तन्वन्विद्रुमदण्डताम् so v. a. *eine fünfästige Koralle bildend* Kathâs. 105, 2.

विद्रुमलता f. 1) *Korallenstock:* विद्रुमलतारक्ताङ्गुलिश्रेणयः (so ist zu schreiben) शार्ङ्गिणः पाणयः Verz. d. Oxf. H. 141, b, No. 289, Z. 4. — 2) *ein best. wohlriechender Stoff,* = नली AK. 2, 4, 4, 17. Ausḧ. 43.

विद्रुमलतिका f. = विद्रुमलता 2) Râġan. im ÇKDr.

विद्वंस् (partic. zu वेद् von 1. विद्) 1) adj. = विदत् P. 7, 1, 36. Vop. 26, 139. *aufmerkend; wissend, kundig; verständig, kenntnissreich, gelehrt* AK. 1, 1, 7, 12. 2, 7, 4. 3, 4, 8, 36. 30, 236. H. 341. an. 2, 592 (= ज्ञ, प्राज्ञ, आत्मविद्). Med. s. 38 (= प्राज्ञ, पण्डित, आत्मविद्). Halâj. 1, 99. 2, 177. ṚV. 6, 21, 11. 7, 28, 1. अपांसि नर्याणि विद्वान् 21, 4. 1, 24, 13. 70, 6. विद्वांसाविदुरः पृच्छेदविद्वान् 120, 2. वयुनानि 152, 6. 4, 1, 4. अविद्वाँ अत्र विदुषे कांसि 19, 10. 5, 41, 7. क्त्वो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि 46, 1. 6, 54, 1. AV. 9, 3, 3. VS. 6, 26. यदेनो विद्वांश्चकार *wissentlich* 8, 13. AV. 7, 108, 1. mit gen. AV. 2, 1, 2 (vgl. VS. 32, 9). 35, 3 (vgl. TS. 3, 2, 8, 2). एवं विद्वान् 8, 10, 30. 9, 6, 24. TS. 7, 4, 5, 1. Çat. Br. 1, 5, 1, 6. 10, 6, 1, 10. श्रोत्रिय 14, 9, 2, 15. ब्राह्मण Kauç. 94. M. 1, 97. 103. 2, 1. 3, 51 u. s. w. MBh. 3, 2477. 2988. R. 1, 1, 3. 7, 18. 8, 6. Çâk. 2. Spr. (II) 686. fg. 1940. (I) 2793. 2805. fgg. 3351. 3353. 4988. 5003. fgg. Varâh. Bṛh. S. 5, 65. 68, 66. Çiva Çiv. mit acc.: जन्ममृती *kennend* Bhâg. P. 10, 72, 42. mit loc.: आरण्यके *bewandert in, vertraut mit* Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 1 v. u. in comp. mit dem obj.: वेदतत्त्वार्थ° M. 3, 96. वेद° 9, 334. 11, 4. 76. MBh. 1, 2025. 3, 17205. 5, 6054. R. Gorr. 2, 17, 4. 24, 17. 6, 96, 10. Pañkar. 1, 1, 64. सर्वार्थ° R. 4, 4, 20. विश्व° Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 3 v. u. दिव्यास्त्र° MBh. 3, 1427. शस्त्रास्त्र° R. 2, 27, 3. R. Gorr. 2, 64, 13. Ragh. 16, 81. तुलाधारण° Jâģñ. 2, 100. अतद्वीर्य° *dessen Mannheit nicht kennend* Bhâg. P. 6, 17, 10. Unregelmässige Formen im Epos: दिव्यास्त्रविदुषौ nom. du. MBh. 4, 1847. विदुषस् nom. pl. 3, 15850. वेद° 12958. Varâh. Bṛh. S. 16, 24. अध्यात्म° MBh. 3, 13966. सर्वास्त्र° 8284. ब्रह्म° 12, 10397. f. विदुषी Vop. 4, 12. compar. विदुष्टर ṚV. 2, 3, 7. 16, 4. 4, 7, 8. 6, 15, 10. 7, 16, 9. 10, 70, 7. compar. f. विद्वत्तरा, विदुषीतरा und विदुषितरा Vop. 7, 49. superl. विद्वत्तम als Beiw. Çiva's Çiv. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen Hariv. 1265. — Vgl. अ° (auch Spr. (II) 686. fgg. (I) 2807), अनेवं°, एवं°, ब्रह्म°.

विद्वज्जन (विद्वंस् + जन) m. *ein kenntnissreicher —, ein gelehrter Mann* Spr. 1051. 1125. 2291. 2806.

विद्वत्ता (von विद्वंस्) f. *Gelehrsamkeit* Hariv. 8760. Spr. (II) 1011. (I) 1802. Râga-Tar. 4, 493.

विद्वत्त्व (wie eben) n. dass. Spr. 2804.

विद्वन्मण्डन (विद्वंस् + म°) n. Titel einer Schrift Hall 152. 154.

विद्वन्मनोरञ्जिनी f. Titel eines Commentars zum Vedântasâra Gild.

Bibl. 421. Hall 101.

विद्वन्मोदतरंगिणी f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 291. fgg. Verz. d. B. H. No. 543. Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629.

विद्वलँ (von 1. विद्) adj. *klug, listig* RV. 10,159,1. AV. 10,1,9.

विद्विष् (1. द्विष् mit वि) m. *Feind* Jâġn. 1,162. MBh. 8,230. Ragh. 3, 60. Kâm. Nîtis. 13,70. Spr. (II) 613. 689. 1843. (I) 1051. 4176. Kathâs. 19,72. 112. 34,192. Râġa-Tar. 6,245. Prab. 104,11. Bhâg. P. 3,17,29. 6,9,11. 7,1,15. Daçak. 94,2. विबुध° MBh. 1,4801. 3,8798. 4,1728. Bhâg. P. 4,7,32. 20,22. श्रुति° LA. (III) 92,8. — Vgl. अशिमि°, ब्रह्म°, मधु°.

विद्विष्ट s. u. 1. द्विष् mit वि; davon °ता f. *das Verhasstsein*: न च विद्विष्टतां लोके गमिष्यामो मक्षीक्षिताम् MBh. 1,7041.

विद्विष्टि (von 1. द्विष् mit वि) f. *Hass, Feindschaft* Kâm. Nîtis. 5,31.

विद्वेषँ (wie eben) m. 1) *Hass, Feindschaft, Abneigung* AK. 1,1,2,25. H. 730. AV. 5,21,1. Kâtj. Çr. 25,14,17. पार्थेषु (Gegens. भक्ति) MBh. 7, 7180. Kathâs. 24,227. 39,203. 42,87. 63,174. Râġa-Tar. 2,69. 76. 4,87. Bhâg. P. 4,2,3. राज्ञो (obj.) ऽसंमतवृत्तीनां विद्वेषो बलवानभूत् Bhâg. P. 6, 14,42. fg. देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु। धर्मे मयि च 7,4,27. विद्वेषं विससर्ज ह *gab auf* 4,20,18. विद्वेषं कर् *gegen Jmd* (loc.) *Feindschaft an den Tag legen* 2,1. स्वजनजनविद्वेषकरण (दारिद्र्य) *verhasst machend bei* Mṛkkh. 8,19. विद्वेषं चाधिगच्छति *macht sich verhasst* M. 8,346. Spr. (II) 219. विद्वेषमृच्छति Bhâg. P. 5,13,11. विद्वेषं स कदाचिन्न गच्छति Mârk. P. 72,40. लोकविद्वेषमागताः Kâm. Nîtis. 6,10. कम्पनाधिपतौ राज्ञ्या विद्वेषो ऽग्राहि *Hass fassen* Râġa-Tar. 6,233. अन्न° *Widerwille gegen Speisen, Appetitlosigkeit* Suçr. 1,120,14. 121,7. °कर 116,5. — 2) °कर्मन् und विद्वेष allein *eine Zauberhandlung* oder *eine Zauberformel, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt*, Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,22. 30. 34. 37. 98,*a*,1. 4. 5. — 3) *stolze Gleichgiltigkeit auch bei Erreichung von Erwünschtem*: विद्वेषो ऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः Bhar. 8,3 beim Schol. zu Nalod. 2,55. — 4) Bez. *einer Sippe feindseliger Geister*: विद्वेषश्च तथा गणाः (मक्षावेगस्तथापरः die neuere Ausg.) Hariv. 12868. — Vgl. अ°.

विद्वेषक (wie eben) adj. *hassend, sich feindlich verhaltend gegen*: धर्म° MBh. 13,3568.

विद्वेषण (von 1. द्विष् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. proparox. *verfeindend* RV. 8,1,2. — 2) f. ई N. einer bösen Genie, einer Tochter Duhsaha's, Mârk. P. 51,6. विद्वेषिणी st. dessen 117. द्वेषणी 47. — 3) n. *a*) *das Hassen, das Hegen einer feindseligen Gesinnung*: तस्य (obj.) MBh. 3,2305. ब्राह्मणानां परीवादो मम विद्वेषणं मक्त् 13,6006. नास्तिवादार्थशास्त्रं हि धर्मविद्वेषणं परम् Hariv. 1505. — *b*) *das sich-verhasst-Machen, ein Mittel sich verhasst zu machen*: दाक्षिण्यं सुभगत्वक्ेतुर्विद्वेषणं तद्विपरीतचेष्टा Varâh. Bṛh. S. 75,5. विद्वेषणं परमं जीवलोके कुर्यान्नरः पार्थिव याच्यमानः *sich verhasst machen* MBh. 3,13257. — *c*) *eine Zauberhandlung, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt*, Verz. d. Oxf. H. 94,*a*,14. 322,*a*, No. 764 (Verz. d. B. H. No. 905).

विद्वेषवीर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,8 (Hall 167).

विँद्वेषस् (2. वि + द्वे°) adj. *der Feindschaft entgegentretend* RV. 8,22,2.

विद्वेषिता (von विद्वेषिन्) f. *Hass, Feindschaft*: गूढ्मन्विद्वेषिताम् Râġa-Tar. 6,170.

विद्वेषिन् (von 1. द्विष् mit वि) 1) nom. ag. *Hasser, Feind*: अस्माकम् Prab. 31,11. Spr. 1371. मार° Râġa-Tar. 3,7. त्रउसमाज्ञ° Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. धर्म° MBh. 13,6740. शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दा *hassend, anfeindend* so v. a. *wetteifernd mit* Çaut. 30. — 2) f. विद्वेषिणी N. einer bösen Genie, einer Tochter Duhsaha's, Mârk. P. 51,117; vgl. विद्वेषण 2).

विद्वेष्टर् (wie eben) nom. ag. *Hasser, Feind* Kâvjâd. 3,132.

विद्वेष्य (wie eben) adj. *verhasst, odiosus*: समस्त° Râġa-Tar. 8,1388.

1. विध्, विधँति (विधाने) Dhâtup. 28,36. विधेँम (als परिचरणकर्मन्) Naigh. 3,5. अँविधत्, विधँत्. 1) *den Göttern* (dat.) *dienen, Ehre erweisen; sich hingeben*: त्वं पायुर्दमे यस्ते ऽविधत् RV. 2,1,7. 9. कथा विधात्यप्रचेताः 1,120,1. यो वो धामभ्यो ऽविधत् 8,27,15. वाघते, विधते 4,2, 13. 7,75,6. 1,136,5. 8,5,22. 10,40,8. Indra als विधत् bezeichnet 8, 67,7. अच्छम्बह्मारमस्यां विधेम TBr. 1,2,1,3. med. RV. 8,19,16. Mit instr. der Sache: ऊर्जा RV. 2,6,2. स्तोमैः 9,3. गिरा 24,1. कृव्यैः 26,4. 35,12. समिधा 7,14,2. मतिभिः 8,23,23. नमसा 1,114,2. AV. 10,4,23. Bhâg. P. 3,13,41. कृविषा RV. 10,121,1. fgg. oft im AV. TBr. 3,1,1,3. Çvetâçv. Up. 4,13. Mit acc. der Person VS. 8,25. नक्तंत्रमस्य कृविषा विधेम TBr. 3, 1,1,3. — 2) *dienend* oder *ehrend hingeben, widmen*; mit acc.: नमउक्तिम् RV. 1,189,1. आकूतिम् 8,23,21. यज्ञम् 3,4,2. वचः 8,50,9. यस्ते सोमाविधन्मनः 9,114,1. कृविः AV. 6,97,1. तस्मै नमो भगवते नु विधेम तुभ्यम् Bhâg. P. 3,9,4. शुष्मं त एना कृविषा विधेम etwa *wir wollen dir Muth geben* RV. 8,85,8. med.: रत्नं 3,3,1. Die Formel वाचस्पते विधे नामन्। विधेम ते नाम। विधेस्त्वमस्माकं नाम्ना द्यां गच्छ erklärt Sâj. Vâkaspati, *Ordner, Beherrscher! Deinen Namen wollen wir preisen* (oder *dir wollen wir Opferspeise zurüsten*). *Gieb uns* (Ruhm oder Nahrung). *Durch* (unsere) *Opferspeise geh zum Himmel!* Man könnte etwa erklären: Vâkaspati, *Huldiger genannt* (für विधिनामन्), *wir huldigen deinem Namen! Huldige in unserm Namen* (den Göttern), *geh zum Himmel!* Çâṅkh. Çr. 10,18,12.

— उप *huldigen*: उप धन्नंत्वमद्र्यो विधन्नित् RV. 1,149,1.

2. विध्, विन्धँते *leer werden von, mangeln einer Sache* (instr.), *viduor*: अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते RV. 8,9,6. (इन्द्रः) य उक्थेभिर्न विन्धते Vâlakh. 3,3. mit Acc. der Ergänzung: न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् RV. 1,7, 7. durch विन्दामि erklärt Nir. 4,18. — Vgl. विधवा, विधुर.

3. विध् s. व्यध्.

4. विध् (von व्यध्) nom. ag. am Ende eines comp. in मर्मा°, मृगा°, श्वा°, कृदया°; vgl. P. 6,3,116.

5. विध्, वैँधति v. l. für विथ् Dhâtup. 2,32. fg.

विध m. = विमान, कृस्त्यन्न, प्रकार, वेधन (von व्यध्), ऋद्धि Rabhasa und Aġaja bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — Vgl. विधा.

विधन (2. वि + धन) adj. *besitzlos, arm* Varâh. Bṛh. S. 68,70. Bṛh. 12,18. fg. 18 (16),7. 21 (19),2. — Pańkat. II, 156 falsche Lesart; vgl. Spr. (II) 2189.

विधनता (von विधन) f. *Armuth* Spr. 1145.

विधनीकर् (विधन + 1. कर्) *besitzlos —, arm machen*: द्यूतेन विधनीकृतः Kathâs. 24,58.

विधनुष्क (2. वि + धनुस्) adj. *bogenlos* MBh. 7,7702. 14,2456.

विधनुस् adj. dass. MBh. 8,4587. 10,805.

विधन्वन् adj. dass. MBh. 7,5756.

विधमचूडा (वि°, 2. imperat. von धम् mit वि, + चूडा) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72.

विधमन (von धम् mit वि) 1) adj. *ausblasend:* वह्नेः Suçr. 1,178,9. — 2) n. *das Zerblasen* u. s. w.: °शील als Erklärung von विधु Nir. 14,18.

विधमा (wie eben) f. Bez. einer Unholdin AV. 1,18,4.

विधरण (von धर् mit वि) adj. (f. ई) 1) proparox. *zurückhaltend, hemmend:* सेतु Çat. Br. 14,7,2,24; vgl. विधृति. — 2) *erhaltend:* विधरणी Çat. Br. 14,9,2,3. — विधरणी AV. 9,7,4.

विधर्तर् (wie eben) 1) *Vertheiler, Ordner; Träger, Erhalter* ṚV. 2,1, 3. 28,4. 7,7,5. पुत्रमदितेर्यो विधर्ता 7,41,2. जनानाम् 56,24. AV. 10,8, 36. 13,4,3. VS. 15,10. 17,82. — 2) विधर्तरि loc. infin. zu धर् mit वि. यस्य द्विता विधर्तरि । हस्ताय वज्रः प्रति धायि *zu halten* ṚV. 8,59,2. स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति *um zu vertheilen* 9,47,4.

1. विधर्म (2. वि + धर्म) m. *Unrecht, Ungesetzlichkeit:* °स्थ MBh. 12, 8397. R. 5,47,30. वैरं विधर्माश्रितैः Varâh. Bṛh. 8,16. = धर्मबाध Bhâg. P. 7,15,13. 12. 3,28,2. Mârk. P. 113,30. Pañkar. 1,2,41. 2,7,40. °तस् *auf ungerechte Weise* MBh. 12,3163.

2. विधर्म (wie eben) adj. 1) *ungesetzlich:* विधर्मे पथि वर्तते MBh. 5, 4889. अतेषु दोषा बहवो विधर्माः श्रुतास्त्वया 8,3508. — 2) *keine charakteristischen Eigenschaften besitzend, qualitätslos* (= निर्गुण Nilak.): Kṛshṇa MBh. 12,1508. — Vgl. वैधर्म्य.

विधर्मक adj. = 2. विधर्म 1): विधर्मकाणि कुर्वन्ति MBh. 7,8989 nach der Lesart der ed. Bomb., विधर्मिकाणि ed. Calc.

1. विधर्मन् (von धर् mit वि) 1) m. *Halter, Erhalter; Anordner* ṚV. 5,17,2. AV. 16,3,2. — 2) n. a) *das Umfangende: Behälter; Grenze:* हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि ṚV. 9,64,9. 4,9. 97,40. 100,7. 109,6. रजसो विधर्मणि *innerhalb* 86,30. 6,71,1. पश्यन्नन्यस्य चक्षसा विधर्मन् *in seinem Kreise* 10,123,8. परमं वा एतद्धर्विधर्म Pañkav. Br. 15, 1,2. संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् *Zusammenhalt* ṚV. 10, 46,6. — b) *Capacität, Umfang:* समुद्रो अस्मि विधर्मणा AV. 16,3,6. — c) *Vertheilung, Anordnung, Verfügung:* तवेमा पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ṚV. 9,86,29. 1,164,36. 3,2,3. नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे येमिरे 8,7,5. SV. I, 5,2,2,2; vgl. AV. 7,22,1. — d) N. eines Sâman Ind. St. 3,236,b. प्रजापतेर्विधर्म desgl. 224,b.

2. विधर्मन् (2. वि + ध°) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBh. 3,12860.

विधर्मिक MBh. 7,8989 fehlerhaft für विधर्मक.

विधर्मिन् (von 2. वि + धर्म) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBh. 7, 9114. Hariv. 1510. Mârk. P. 34,82. 35,34. *ungesetzlich:* वाच् MBh. 3,17293.

विधव् (von 2. विधु), विधवति *dem Monde gleichen:* विधवति मुखाब्जमस्याः Sâh. D. 273,15. सविता विधवति Kâvjapr. 139,13.

विधवता (von विधवा) f. *Wittwenstand* Varâh. Bṛh. 24 (22),14.

विधवन (von 1. धू mit वि) n. *das Abschütteln* Nir. 3,15.

विधवयोषित् f. *Wittwe* Varâh. Bṛh. S. 16,34. — Vgl. विधवा.

विधवा (von 2. विधु; vgl. Roth in Z. f. vgl. Spr. 19,223) f. *Wittwe* (häufig auch adj. in Verbindung mit स्त्री, योषित्, नारी u. s. w.) Nir. 3, 15. AK. 2,6,1,11. Trik. 2,6,4. H. 530. Halâj. 2,332. कस्ते मातरं विधवामचक्रत् ṚV. 4,18,12. को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ 10,40,2. युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः *viduum cultorem* (wir vermuthen Dehnung aus विधवम्, wodurch sich auch ein masc. *Wittwer* ergäbe) 8. — Shaḍv. Br. 3,7. M. 8, 28. 9,60. 62. 64. °वेदन 65. 175. °गामिन् Jâgñ. 2,234. MBh. 1,6152. 9, 1787. Hariv. 7918. R. 2,21,60. 42,21. 66,11. 19. R. Gorr. 2,34,3. 4,18, 27. 6,8,8. Spr. 4493. Varâh. Bṛh. S. 86,79. 103,1. 6. 10. Bṛh. 24 (22),9. Pañkat. 186,18. °धर्म Verz. d. Oxf. H. 85,b,35. 277,b,6. विधवास्त्री (vgl. dagegen विधवयोषित्) Spr. (II) 1265. मेदिनी *ihres Gatten* d. i. *ihres Fürsten beraubt* R. 2,51,12. 86,13 (94,14 Gorr.). लङ्का Bhâg. P. 9,10, 28. — Vgl. अ° (auch Kauç. 72. Hariv. 7841. R. 1,1,88), वैधवेय, वैधव्य.

विधस् m. = वेधस् = ब्रह्मन् Uṇâdik. im ÇKDr.

विधा (1. धा mit वि) f. 1) *Verhältniss, Maass; Weise, Art;* = प्रकार AK. 3,3,18,104. Trik. 3,3,222. H. an. 2,249. Med. dh. 17. यज्ञस्य Çat. Br. 2,6,1,13. 4,1,2,25. देवानां वै विधामनु मनुष्याः 6,7,4,9. 10,2,2,6. 11. 4,3. 6,1. 10. यस्यैषा विधा विधीयते TS. 5,3,4,7. pl. in einer Formel VS. 14,7. Âçv. Gṛhj. 2,2,4. यया कया च विधया *auf irgend eine Weise* Taitt. Up. 3,10,1. न च विधाद्वयरहितं विधातारं संभवति Nilak. 164. Kusum. 21,10. 38,14. चतस्रो विधाः Sarvadarçanas. 147,13. Kuvalaj. 48,b,5. = भेद 49,a,1. Häufig am Ende eines adj. comp. ज्ञातिविध *mannichfaltig* Kaurap. 30. उक्तविधम् Schol. zu Naish. 22,48. एकशत° Çat. Br. 10,2,4,3. nach भौरिकि u. s. w. (das comp. ein proparox.) so v. a. *voll von* P. 4,2,54. Vgl. अनेकविध (auch Paribhâshâ zu P. 1,1,50. Kathâs. 24,17. Pañkat. 61,10), अष्ट° (auch Spr. (II) 1091), अस्मद्विध, एक°, एवं°, कति°, गुण°, चतुर्विध, तथा°, तद्विध, तादृग्विध, त्रि°, त्वद्विध, दश°, द्विविध, द्वि°, नव°, नाना°, पुरुष°, पृथग्विध, बहु°, भवद्विध, मद्विध, यथा°, यद्विध, युष्मद्विध, वयो°, वि°, षड्विध, स°, सप्त°, सु°; विधा auch als adv. in त्रि° (s. u. त्रिविध) und द्वि° (in den Nachträgen). — Die Lexicographen kennen noch folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,104. H. an. कर्मन् Trik. 3,2,1. H. 1497. वेतन oder मूल्य AK. 2,10,38. H. 362. H. an. Med. ऋद्धि (hier wohl nur eine Verwechselung mit एधा; vgl. AK. 3,3,10) H. an. Med. *Elephantenspeise* (vgl. विधान) H. an. Med. (hier ist गजाशने zu lesen). वेधन (also von व्यध् oder eine blosse Verwechselung mit वेतन) Trik. 3,3,222.

विधातर् (von 1. धा mit वि) nom. ag. 1) m. *Vertheiler, Verleiher; Festsetzer, Ordner, Urheber, Schöpfer* u. s. w. Naigh. 3,15 (= मेधाविन्). 5, 5. Nir. 11,11. ṚV. 10,82,2. 3. 167,3. विधातारो वि ते दधुरजस्राः 4,55, 2. देव्यः (प्रजापति Sâj.) 6,50,12. 9,81,5. AV. 3,10,10. 5,3,9. Çâñkh. Gṛhj. 2,14. Pâr. Gṛhj. 2,9. zur Erklärung von वेधस् Nir. 10,6. — त्वं नस्त्राता विधाता च *du bist unser Retter und Verfüger* sagen die Götter zu Agastja MBh. 3,8809. विधाता (= विहितकर्मणामनुष्ठाता Kull.) शासिता वक्ता मैत्रो ब्राह्मण उच्यते M. 11,35. mit विधातर् spricht König Dilîpa den Vasishṭha an Ragh. 1,70. अश्वस्तन° *der Vorkehrungen trifft für* MBh. 12,8920; vgl. अनागत° (auch MBh. 12,4246. Spr. (II) 268). तपसः फलानाम् *Verleiher* Kumâras. 1,58. प्रसिद्धनेपथ्यविधेः *Ausführer* Kumâras. 7,36. नदीनद° *Urheber* Pañkar. 4,8,45. H. 5. जगताम् *Schöpfer* Pañkar. 1,2,54. 6,58. 12,3. जगद्विधातर् 10,14. *der Schöpfer, Bestimmer der Geschicke der Menschen,* Brahman AK. 1,1,1,12. H.

212. an. 3,303. Med. t. 157. MBh. 3,13328. Hariv. 3367. 4588. Spr. 544 (II). 2418, v. l. विधातृविहितं मार्गं न कश्चिदतिवर्तते 2809. विधात्रा र-चिता रेखा ललाटे 2810. 2971. 3340. 4147. 4273. Ragh. 1,35. 6,11. 7,22. Varâh. Bṛh. S. 53, 3. Mâlatîm. 18, 7. Kathâs. 26, 82. 30, 134. 35, 139. विधुर 123,339. Râǵa-Tar. 2,89. 4, 332. 8,1771. प्रतिकूल Prab. 44,14. Bhâg. P. 3,8,15. 7,2,33. 8,2,31. Dhûrtas. 91, 13. Pańkat. 138, 23. विपरीत so v. a. *ein widerwärtiges Geschick* Spr. 5401. विधाता वेधसाम् *der Schöpfer unter den Schöpfern* Kumâras. 2,14. एवं विधातारः प्रसीदन्ति Çâk. 110,13. = प्रजापति, काल, भुवनप्रणेतृ Javaneçvara in Z. f. d. K. d. M. 4,343. 345. Vidhâtar als Herr der 2ten Tithi (Brahman ist Herr der ersten) Varâh. Bṛh. S. 99,1. Vishṇu so genannt H. ç. 70. Bhâg. P. 3,1,42. Çiva 4,5,11. Çiv. der Liebesgott H. an. Med. Dhâtar und Vidhâtar als verschiedene göttliche Wesen neben einander MBh. 3,10419. 15591. R. 2,25,8 (21 Gorr.). Bhâg. P. 5,23,5. Mârk. P. 51,88. unter den Âditja Bhâg. P. 6,6,37. als Söhne Brahman's MBh. 1,2614. Bhṛgu's VP. 59. 82. Bhâg. P. 4,1,43. Mârk. P. 52,14.16. — 2) f. विधात्री a) *festsetzend, bestimmend, vorschreibend* Comm. zu Kâtj. Çr. 23, 13. *Urheberin, Schöpferin:* धातुः Pańkar. 2,4,7. त्रिभुवन° Tantras. im ÇKDr. — b) N. pr. eines Wesens im Gefolge der Devî Wilson, Sel. Works II, 39. — c) *langer Pfeffer* (पिप्पली) Çabdak. im ÇKDr.

विधातव्य (wie eben) adj. 1) *festzusetzen, zu bestimmen:* देशो ऽयं स विधातव्यो यत्र नः संगतिर्भवेत् Hariv. 15748. — 2) *herbeizuschaffen, zu besorgen:* आसनानि च दिव्यानि यानानि शयनानि च। विधातव्यानि पाण्डूनाम् MBh. 1,5728. fg. — 3) *zu erweisen, zu veranstalten, in's Werk zu setzen, zu verrichten:* त्वया रक्षा विधातव्या कृष्णायाः फाल्गुणेन च MBh. 4,90. मयि यत्नाः Hariv. 298. नोपदेशो विधातव्यो मूर्खस्य Spr. 1651. तस्य पूजा 1968. उपासनम् Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 58 und zu Khând. Up. S. 50. किमेतस्य विधातव्यमस्माभिः *was sollen wir für ihn thun?* Kathâs. 62, 81. तैरवश्यं विधातव्यं व्यलीकं किंचिदेव नः so v. a. *die werden uns gewiss einen Schabernack spielen wollen* R. 5,41,10. न राजपुत्रस्य कृते चिन्ताधुना त्वया विधातव्या so v. a. *du musst dir keine Sorgen machen* Kathâs. 24,4. — 4) *was man sich angelegen sein lassen muss, worauf man bedacht sein muss:* मया कीदृं विधातव्यं भवतां यद्धितं भवेत् MBh. 1,1621. भवता यद्विधातव्यं तन्नः श्रेयः 5,2285. इह कीर्तिर्विधातव्या सा च युद्धेन नान्यथा 9,269. तथा मया विधातव्यं (impers.) विश्राम्यति यथा कपिः R. 5,7,4. MBh. 3,1802 (विधातव्यं mit der ed. Bomb. zu lesen). Pańkat. 85,6. — 5) *zu gebrauchen, anzuwenden:* कर्मण्येषा षष्ठी विधातव्या Sarvadarçanas. 135,18. बिन्दुप्रवेशको नेह विधातव्यौ Sâh. D. 193,4. तस्मादमी (नियोगिनः) विधातव्याः *zu verwenden, anzustellen, einzusetzen* Spr. 1593.

विधातृका (von 2. वि + धातृ) adj. zur Erklärung von विधवा Nir. 3,15.

विधातृभू (विधातृ + 2. भू) m. Bein. Nârada's Trik. 2,7,17. — Vgl. विधिपुत्र.

विधात्रायुस् (विधातृ + आयुस्) m. *eine best. Blume,* = सूर्यशोभा Çabdak. im ÇKDr.

विधान (von 1. धा mit वि) 1) adj. (f. ई) *regelnd:* अङ्को विधान्यामेकाष्टकायाम् TS. 3,3,8,4. — 2) m. N. pr. eines Sâdhja Hariv. 11536. विज्ञान die neuere Ausg. — 3) n. a) *Ordnung, Maass; Festsetzung, Bestimmung, Vorschrift, Regel, das zu beobachtende Verfahren, Art und Weise des Verfahrens:* मासाम् ṚV. 10,138,6. यथा विधाना विदधुर्ऋभूणाम् 4,51,6. तिस्रो भूमीरुपरा: षड्विधानाः *eine Ordnung von Sechsen bildend* 7,87,5. Kâtj. Çr. 1,2,19. 7,8. 9,5. अकृतक्रिया हि विधानम् *die Regel verlangt* Lâtj. 10,7,15. स्तोम° 6,2,1. ṚV. Prât. 4,7. 6,4. 11,12. 21. त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयंभुवः। अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभो॥ *der von* Svajambhu *eingesetzten Ordnung* M. 1,3. सर्वं विधानं पाञ्चयज्ञिकम् 3,286. दैवमानुष 7,205. यज्ञदानतपःक्रियाः — विधानोक्ताः Bhag. 17,24. जातकर्माणि सर्वाणि पुंवद्विधानयुक्तानि *wie sie für ein männliches Individuum festgesetzt sind* MBh. 5,7407. 12,493. 495. 14,318. ददर्श भारतं सैन्यं विधानं विश्वकर्मणा: so v. a. *nach* Viçvakarman's *Vorschrift aufgestellt* R. 2,91,28. Kâm. Nîtis. 15,48. Kathâs. 61,269. Bhâg. P. 5,3,2. एकपाद्योर्विधाने *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,102. एतद्विधानं विज्ञेयं विभागस्यैकयोनिषु M. 9,148. Kâr. zu P. 2,1,32. Kâm. Nîtis. 19,28. Varâh. Bṛh. S. 43,12. Pańkar. 1, 4,86. मृत्योः so v. a. *der gesetzmässige Tod* MBh. 1,7639. 7643. सर्वशास्त्रविधानज्ञ *die Bestimmungen aller Lehrbücher* 13,2499. शास्त्रविधानोक्तं कर्म Bhag. 16,24. आम्नाय° Bhâg. P. 8,20,11. ऋत्विगादि° *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,36,17. शान्तिप्रश्न° M. 1,115. MBh. 1, 49. Bhâg. P. 1,8,20. Mârk. P. 119,17. भावार्थे त्वतलादीनां विधानात् *weil die Suffixe* त्व, तल् *u. s. w. vorgeschrieben sind, als Regel gelten* Sarvadarçanas. 144,20. 126,1. अस्यैवेदं स्वरविधानम् Kâç. zu P. 1,2,35. Schol. zu P. 1,2,54. 2,1,13. 6,4,93. विधानमिदमाचरेत् *eine Regel befolgen* M. 7,113. 226. एतद्विधानमातिष्ठेत् dass. 8,244. विधानेन *nach der Regel, — Vorschrift* R. 4,56,4. अनेन विधानेन M. 7,181. 8,228. 9,69. 128. Varâh. Bṛh. S. 48,87. राक्षसेन विधानेन (उपयेमे) Bhâg. P. 10,52,18. शास्त्रोक्तविधानेन Pańkat. 34,11. पाकयज्ञविधानेन *nach den für — geltenden Bestimmungen* M. 11,118. Bhâg. P. 9,10,29. Mârk. P. 75,16. देशकालविधानेन so v. a. *am rechten Orte und zu rechter Zeit* Spr. 4215. देशकालविधानज्ञ R. 4,40,16. Bhâg. P. 9,20,16. संख्याविधानात् *nach mathematischer Regel, mathematisch* Varâh. Bṛh. S. 12,14. विधानतस् *der Vorschrift gemäss* Jâǵń. 1,234. R. 1,72,21. 2,26,13. R. Gorr. 2,56,29. 5,72,6. Mârk. P. 16,57. 69, 54. Weber, Kṛshṇaǵ. 296. अविधानतस् M. 9,144. 12,7. सुविधानतस् *genau nach der Vorschrift* Kâm. Nîtis. 13,76. वेदस्मृतिविधानतस् M. 6, 89. R. Gorr. 1,19,29. विधानैस् = विधानेन, विधानतस् MBh. 14,291 (निवापैस् ed. Bomb.). R. 2, 83, 26. — b) *Methode, Verfahren, Recept* (in der Medicin) Suçr. 1,159,17. 2,12,15. 51, 9. 105,7. 227,6. °ज्ञ 299,19. *Regime* (des Essens) 486,12. — c) *Bestimmung, Schicksal:* अर्थानर्थौ सुखं दुःखं विधानमनुवर्तते MBh. 12,850. 852. 6755. Spr. 5186. 5271. — d) *das Treffen von Anordnungen, — Verfügungen, Ergreifen von Maassregeln:* स्वयं शाधि यज्ञे विधानम् MBh. 14, 280. °ज्ञ R. 1,38,4. कृत्वा विधानं मूले M. 7,184. MBh. 5,6088. करिष्यामो विधानं ते येन त्वं वर्तयिष्यसि Hariv. 1269. R. 1,11,17. विधानं द्विगुणं कृत्वा 6,17,2. Pańkar. 1,14,8. तस्माद्विधाय नगरे विधानं सचिवैः सह MBh. 5,7472. R. 7,21,5. विधानमनुतिष्ठन्तं प्राणिनो यस्य यादृशम् 2. वालिवध° 4,12 in der Unterschr. पुर° 6,12 in der Unterschr. रक्षाविधानं मनसा स संचिन्त्य MBh. 13,2267. अनागतविधानं च कर्तव्यम् Spr. (II) 270. R. 3,30,11. अनागतविधानं च तस्यार्थे प्रविधीयताम् 4,14,29. अश्वस्तन°

M. 11,16. — *e) Mittel:* तदस्ति किंचिदस्य डुरात्मनः प्रतिषेधविधानम् Pańkat. 258,11. — *f) das Aufstellen:* किंन्नरपत्न° Jâǵn. 3,240. — *g) das Schöpfen, Bilden* Ragh. 6,11. 7,14 (= Kumâras. 7,66). Spr. 2858. — *h) das Veranstalten, Ausführen, Ausrichten:* यदानुमन्यसे कालं यस्मिन्देशे यथा यथा। तथा तथा विधानाय स्वयमाज्ञापयस्व माम्॥ MBh. 1,5316. मक्तायज्ञ° M. 1,112. वैवाह्निके ऽग्नौ कुर्वीत गृह्यं कर्म यथाविधि। पञ्चयज्ञविधानं च 3,67. ज्ञपयज्ञविधानेषु Mârk. P. 51,59. चान्द्रायणविधानैर्वा वर्तयेत् M. 6,20. अभिषेकविधानं संव्हृत्य R. 2,22,11. यात्रा° Varâh. Bṛh. S. 51,7. रात्रियुद्ध° R. Gorr. 1,4,108. डुर्गकर्म° 110. प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुः 13,4. प्रतिकार° Ragh. 8,40. नेपथ्य° 14,9. Çâk. 3,6. प्रज्ञातेम° Ragh. 18,8. प्रस्तुतविधानाय Prab. 18,15. ज्ञेयता° Schol. zu Kap. 1,96. वेदिस्थलविधानानि *Herrichtung* R. 2,56,29. — *i) Aufzählung, Einzeldarlegung* Suçr. 2,559,12. — *k)* in der Dramatik *Veranlassung sowohl zur Freude als auch zum Leid* Sâh. D. 338. 346. Pratâpar. 21,a,5. — Nach den Lexicographen hat विधान n. folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,102. Trik. 3,2,1. H. an. 3,417. fg. प्रेरण, अभ्यर्चन, धन, चेतन, उपाय, प्रकार H. an. हस्तिकवल oder करिकवल (vgl. विधा) H. an. Hâr. 191. विधान mit कृत u. s. w. componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. — तथाविधान Hit. 101,12 fehlerhaft für तथाविध (wie die v. l. hat); देवविधानं MBh. 6,3030 fehlerhaft für देवो निधानं, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. आच्छद्विधान, अग्निविधान, पाद°, यथाविधानम् (auch Khând. Up. 8,15), रुद्रविधान, वास्तु°, साम°.

विधानक (von विधान) n. 1) *die für Etwas geltenden Bestimmungen, die bei Etwas zu beobachtende Regel:* यज्ञषाम् Ind. St. 3,270. Pańkar. 2,4,1. (तस्मै) ददौ सुलोचनामल्लमर्थितं सविधानकम् so v. a. *nebst Anweisung zum richtigen Gebrauch desselben* Kathâs. 49,181. — 2) = व्यथा Çabdar. im ÇKDr.

विधानकल्प m. Titel einer Schrift Ind. St. 3,279.

विधानग m. *ein gelehrter Mann* (पण्डित) Çabdar. im ÇKDr.

विधानपारिजात m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1403.

विधानमाला f. desgl. Mack. Coll. I, 28.

विधानसप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha Wilson, Sel. Works II, 200.

विधायक (von 1. धा mit वि) nom. ag. 1) *vorschreibend, eine Vorschrift enthaltend* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 58. Schol. zu Kâtj. Çr. 9,11, 16. विवाहविधायकशास्त्र Kull. zu M. 9,65. Schol. zu P. 1,2,43. षत्वस्य विकल्पविधायकमेतद्वचनम् zu 8,3,119. अविधायकत्व n. Schol. zu Kâtj. Çr. 9,11,16. — 2) *Einsetzer:* पञ्चकृत्य° Verz. d. Oxf. H. 90,b, No. 147, Z. 8. चतुर्वेद° Pańkar. 4,3,153. — 3) *Gründer, Erbauer, Stifter:* ज्ञपस्वामिपुरस्य Râǵa-Tar. 1,169. 4,80. 6,186. — 4) *verrichtend, ausführend, an den Tag legend:* नवायास° (so ist vielleicht zu lesen) Râǵa-Tar. 6,266.

विधायिन् (wie eben) nom. ag. 1) *regelnd, vorschreibend, eine Vorschrift ertheilend in Betreff von:* विधिर्विधायकः Njâjas. 2,1,62. विधेरपि विधायिनीं वाणीम् LA. (III) 89,3. गुणवृद्धि° (पाणिनि) Râǵa-Tar. 4, 634. भूतनिष्ठा° 636. An den beiden letzten Stellen zugleich *bewirkend.* — 2) *Gründer, Erbauer, Stifter:* पुरत्रय° Râǵa-Tar. 1,168. 5,37. 295 (वि° st. वै° zu lesen). 6,169. — 3) *verrichtend, ausführend:* वैश्यैः पण्यवृत्तिविधायिभिः (वैश्यवृत्तिमनुष्ठितैः die neuere Ausg.) Hariv. 402. तादृक्कार्य° Kathâs. 42,113. बलिक्षोम° Râǵa-Tar. 1,181. 6,11. स्वाज्ञा° 1,156. Kathâs. 52,336. इच्छा° 50,150. यत्किंचनविधायिता (so ist zu schreiben) Râǵa-Tar. 1,354. 3,212. यत्किंचनविधायित्व 4,610. — 4) *bewirkend, verursachend:* नानाडुःख° Hariv. 14596. कोप° Spr. 2662. सिद्धि° Verz. d. Oxf. H. 99,b,16. प्रज्ञाह्लाद° Râǵa-Tar. 4,394. गुणवृद्धि° 634. भूतनिष्ठा° 636 (vgl. u. 1). मानक्षति° 5,255. प्रतिनादविधायिता H. 65. — Vgl. प्राय°.

विधार (von धर् mit वि) m. etwa *Behälter:* अग्नेरिवास्य ह्नि पवमान सूर्ये विधारे शक्मना पयः RV. 9,110,4.

विधारण (wie eben) 1) adj. *scheidend, trennend:* सेतुं विधारणं पुंसाम् Bhâg. P. 4,2,30. — 2) n. *a) das Anhalten:* रथ° Kathâs. 56,376. *das Verhalten, Unterdrücken:* व्यञ्जन° *eines Consonanten in der Aussprache* AV. Prât. 1,43. कोप° MBh. 2,2577. वेग° *der Ausleerungen* Suçr. 1, 48,17. 258,5. 290,18. 2,513,5. रेतसः 184,19. des Athems Jogas. 1,34. Kap. 3,33. — *b) das Tragen:* गङ्गापि तं गर्भमसक्ती विधारणे MBh. 9, 2458. गोवर्धन° Hariv. 16336. Khandom. 97. Bhâg. P. 10,26,14. उष्ट्रकण्टकवड्गास्थितौमवस्त्र° Mârk. P. 51,10. जीर्णोपानद्विधारण 24. — *c) das Ertragen:* वेग° MBh. 6,4926. न ते शक्तास्मि तेजसो ऽस्य विधारणे 13,4076.

विधार्य (wie eben) adj. etwa so v. a. विधर्तर् VS. 17,82.

विधारयितर् (wie eben) nom. ag. zur Erklärung von विधर्तर् Nir. 12,14.

विधारयितव्य (wie eben) adj. *was erhalten —, aufrechterhalten wird* Praçnop. 4,8.

विधारिन् (wie eben) adj. *verhaltend, unterdrückend:* वेग° Vâgbh. 8,10.

विधावन (von 1. धाव् mit वि) n. *das Hinundherlaufen* Nir. 3,15.

1. विधि (von 1. धा mit वि) P. 3,3,92, Schol. 1) m. *a) Anordnung, Anweisung, positive Vorschrift; gesetzliches Verfahren; Regel, Methode;* = नियोग H. 1520. = विधिवाक्य H. an. 2,249. fg. = विधान AK. 3,4, 18,102. H. an. Med. dh. 17. = कल्प AK. 2,7,39. H. 839. H. an. Med. Halâj. 5,40. — P. 3,3,161. Kâtj. Çr. 1,5,17. 4,3,8. सवन° 24,7,26. मल्ल° Lâtj. 1,1,2. 6,3,1. 10,8,9. Kauç. 1. Pâr. Gṛhj. 2,6. स्वाध्याय° Âçv. Gṛhj. 3,2,1. Kauç. 141. मल्ल, विधि, अर्थवाद Müller, SL. 170. विधिर्विधायकः Njâjas. 2,1,62. धर्मार्थसाधकव्यापारो विधिः Sarvadarçanas. 77,17. Gegens. निषेध Bhâg. P. 8,20,27. Sarvadarçanas. 5,11. प्रतिषेध 29,13. अपवाद Njâja zu P. 3,3,20. द्वयोर्विभाषयोर्मध्ये विधिर्नित्यः Vop. 2,5. — आगम° Sarvadarçanas. 28,7. Râǵa-Tar. 1,183. 186. मांसस्य भक्षणवर्जने *Vorschrift in Betreff* M. 5,26. 8,188. 301. 9,149. Jâǵn. 1,92. 178. व्रतानां विविधो विधिः M. 11,161. Bhâg. P. 2,8,21. 3,7,32. संस्कार° M. 1,111. प्रायश्चित्त° 116. 5,146. 8,221. 278. यथोदितेन विधिना 4,100. अनेन विधिना 3,281. 5,169. 6,81. 8,178. विधिना *nach der Vorschrift, rite* M. 2,107. 4,193. R. 1,8,16. 2,25,25. 72,53. Ragh. 3,65. AK. 2,7,8. Kathâs. 26,207. अविधिना Muṇḍ. Up. 2,1,7. M. 5,33. Spr. (II) 1682. Kathâs. 14,5. 103,146. °ज्ञत Çâk. 1. नैत्यकं विधिमास्थितः M. 2,104. 5,36. 11,86. एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेद्यवमध्ये 217. एतमेव विधिं कुर्यात् 188. विधिं हित्वा 5,50. 9,63. शास्त्रविधिमुत्सृज्य Bhag. 16,23. 17,1. त्यक्तविधि adj. Bhâg. P. 9,6,9. च्युतो विधिः Ragh. 3,45. निमित्तनैमित्तिकयोरयं विधिः *Gesetz, Ordnung* Çâk. 189, v. l. *eine grammatische Vorschrift,*

— *Regel* P. 1,1,57.72. विधिं कार् 57, Schol. स्थान° AV. Prât. 1,41. P. 1,1,56. 6,13. 2,1,1. 8,2,2. गणित° *mathematische Regel* Varâh. Brh. S. 11,2. — विधयस्त्रयः (nach Nîlak. der अपूर्वविधि, नियम° und परिसंख्या° der Mîmâṁsaka) Hariv. 9490. — *b*) *Verfahren, Weise, Art;* = प्रकार् H. an. Bhâg. P. 2,10,46. प्राजापत्य M. 3,30. राक्षस 33. गान्धर्वेण विवाहविधिना Çâk. 110,14. गान्धर्वविधिना Kathâs. 18,220. देवताः पूजयामास परेण विधिना MBh. 3,2719. विधिना मन्त्रयुक्तेन Spr. 2812. उग्रेण विधिना Hariv. 1857. क्रीडारतिविधिज्ञ R. 3,42,47. विधिना येन MBh. 3,11943. एतेन विधिना 4,59. Varâh. Brh. S. 40,12. Pańkat. 121, 18. भवद्विधिना 215,8. यथोचितेन विधिना Hit. 42,3. वृथा निरर्थकाविध्योः *nicht die rechte Weise* AK. 3,4,22(28),9. अद्भुतविधि adj. *auf eine wunderbare Weise verfahrend* Kathâs. 18,267. अस्य को विधिर्भूतात्मनो येन u. s. w. Maitrjup. 4,1. को ऽयं विधिः *was ist das für eine Art?* so v. a. *wie geht das zu?* Vikr. 72. को ऽयं ते ऽनुचितो विधिः Râga-Tar. 3, 423. किं त्वस्मिन्नर्थे संदेहप्रवृत्तिर्न विधिः *ist nicht die Art* Hit. 10,11, v. l. 89,6. 94,3. गुणदोषावनिश्चित्य विधिर्न ग्रहनिग्रहे Spr. (II) 2115. — *c*) *Mittel, Weg zu Etwas:* संभाषणार्थं च मया ज्ञानक्या निश्चितो विधिः R. 5,56,96. तस्याधिगमे Kumâras. 5,59. तत्कूलोद्भूतये 6,82. उद्धारण° Pańkat. 138,15. स्थले गच्छतस्ते को विधिः Hit. 117,7, v. l. यद्येवं कुरुते विधिम् *wenn er diesen Weg einschlägt* Mârk. P. 116,44. कनककरिणाच्छद्मविधिना Uttarar. 13,2 (17,14). अधविधिना गोमत्तमचलं प्राप्ताः *mittels des Weges* so v. a. *indem sie den Weg entlang gingen* Hariv. 5359. — *d*) *Act, Handlung, Ausführung, Veranstaltung, Geschäft;* = कर्मन् Trik. 3,2,1. रात्रावेष विधिः कार्यः Râga-Tar. 4,104. व्यवहारविधौ Jâǵń. 2,30. मण्डन° Çâk. 133. दुग्धजलभेदविधौ (so v. a. °भेदे) Spr. (II) 544. वादिदर्पज्वरशमनविधौ 606. कंश्चित्पातविधौ करोति 1610. अभ्युद्गम° 1876. 2054. (I) 1233. 1859. अलंकारविधये 3106. Varâh. Brh. S. 79,19. शिरःकृन्तन° Spr. 4147. योग° Ragh. 8,22. सर्ग° Vikr. 9. प्रसाधन° 22. Mâlav. 40. Çiç. 9,78. आहारनीहार° H. 58. यज्ञ° Varâh. Brh. S. 44,14. Gît. 1,13. निर्वासन° Kathâs. 12,97. रक्षा° 34,72. विवाहविधये बुद्धिं व्यधाद्वत्सेश्वरस्तयोः 34,104. Prab. 8,5 (pl.). Dhûrtas. 83,13. Pańkat. 117,11. 260,17. Hit. 16,14. नेपथ्य° Kumâras. 7,36. शृङ्गारविधिं विधाय Pańkat. 36,15. सकलकार्यविधौ समर्थः Spr. (II) 1431. विघ्नेश° *der von* Gaṇeça *kommende Act* so v. a. *Hinderniss* Bhâg. P. 8,7, 8. किं नु स्वप्नो मया दृष्टः को ऽयं विधिरिहाभवत् so v. a. *Ereigniss* MBh. 3,2497. सामसिद्धा हि विधयो न प्रयान्ति पराभवम् so v. a. *facta* Spr. 3241. तं विधिं (= सत्कारं Comm.) लब्धा so v. a. *Behandlung* R. 2,91, 58. कर्तव्यस्तद्गतो विधिः so v. a. *darauf bezügliche Vorbereitungen* 52, 61. — *e*) *ein feierlicher Act, Cerimonie:* वैवाहिक M. 2,67. औपनायनिक 68. Ragh. 1,34. 2,16. सायन्तन 1,56. सांध्य 2,23. होमार्थ° 66. गोदान° 3,33. परलोक° (= पिण्डोदकादिकर्मन् Mallin.) Kumâras. 4,38. माल्य° Varâh. Brh. S. 43,56. नीराजना° AK. 2,8,2,62. Pańkat. 158,5. H. 789. अनङ्गोत्सव° Spr. 2792. मङ्गल° Daçak. 60,10. fg. — *f*) *Schöpfung* Kir. 7,7 (pl.). Kumâras. 3,28. — *g*) *Schicksal* AK. 1,1,4,6. 3,4,18,102. H. 1379. H. an. Med. Halâj. 1,86. शुभावह AK. 1,1,4,5. अहो ममोपरि विधेः संरम्भो दारुणो महान् MBh. 3,2562. 13,343. यम, मृत्यु, काल, विधि R. 3,69,20. वैरिन् Megh. 100. Spr. (II) 2060. पराङ्मुख (I) 2028. 2813. fg. Çâk. 43. Kathâs. 18,267. 32,57. Râga-Tar. 2,92. Mârk. P. 8,183. विधेर्वशात् Kathâs. 25,273. °वशात् Megh. 6. Spr. (II) 645; vgl. दैवो विधिः *ein Gebot der Götter* (I) 4487. दैवविधिषु 3256. — *h*) *die Zeit* Trik. 3,3,222. H. an. Med. Halâj. 5,40. — *i*) *Schöpfer:* जगताम् Pańkar. 1,2,11. 10,32. 14,8. जगद्विधि 10,48.56. Brahmavaiv. P. 2,94. ohne weiteren Beisatz *der Schöpfer* d. i. Brahman AK. 1,1,1,12. Trik. H. 212. H. an. Med. Halâj. 1,6. Çâk. 42. Spr. (II) 945. 1180. 1545. (I) 1970. 2858. Naish. 22,47. 57. Pańkar. 1,2,13. 9,39. Vishṇu Halâj. 1, 25. — *k*) *Arzt* Râǵan. im ÇKDr. — *l*) *Elephantenspeise* (vgl. विधा, विधान) Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,34. — Vgl. दुर्विधि, यथा°, लोक°, वास्तु°, हृत°.

2. विधि (von 1. विध्) m. etwa *Huldiger* Ait. Br. 5,25 (vgl. u. 1. विध्). N. Agni's beim Prâjaçkitta Grhjas. 1,8.

विधिकार् adj. (f. ई) *Jmdes Vorschriften befolgend, — Befehle ausführend; Diener:* सर्वे स्वामी विधिकरास्तव Bhâg. P. 7,9,13. 8,56. 10,31,8.

विधिकृत् adj. dass. Bhâg. P. 7,10,48 = 15,76.

विधित्व (von 1. विधि) n. *das Vorschrift-Sein* Sarvadarçanas. 126,9.10.

विधित्सा (vom desid. von 1. धा mit वि) f. 1) *Beabsichtigung, Wunsch, Verlangen* MBh. 1,3682. 5,1636. 12,3882 (wo die ed. Bomb. साधनेन च liest). नात्तं सर्वविधित्सानां गतपूर्वो ऽस्ति कश्च न Spr. 4393. व्यथितस्य विधित्साभिः 5040. Mârk. P. 38,10. वैरस्यान्त° MBh. 5,2639. प्राणोत्क्रान्ति° Kathâs. 72,390. ब्रह्मविद्या° Çańk. zu Brh. Âr. Up. S. 268. निजजनाभिप्रेतार्थ° Bhâg. P. 5,3,2. श्रेयो° 10,82,2. आत्म° *Selbstsucht* Spr. (II) 145. — 2) *der Wunsch Jmd zu Etwas zu machen:* सुक्षिप्रतिमक्ष° Râga-Tar. 8,1636. — Vgl. निर्विधित्स.

विधित्सु (wie eben) adj. *beabsichtigend, im Sinne habend;* mit acc.: कलहम् MBh. 3,699. 5,2063. 8,1198. Hariv. 16274. Kir. 10,17. Prab. 25,12. Râga-Tar. 8,2313. क्षेमं ज्ञनाय Bhâg. P. 3,16,24. असत् 7,9,29. प्रियं प्रियायाः 3,3,5. आतिथ्यम् *Jmd Gastfreundschaft zu erweisen wünschend* Kathâs. 101,26.

विधिदर्शिन् m. *Beisitzer; eine Person, die darauf zu achten hat, dass Alles nach Vorschrift geschieht,* AK. 2,7,15.

विधिदृष्ट adj. *vorschriftmässig:* कर्मन् MBh. 3,3026. 11924. R. 1,49, 20. यज्ञ Bhag. 17,11; vgl. विधियज्ञ.

विधिदेशक m. = विधिदर्शिन् Çabdar. im ÇKDr.

विधिनिरूपण n. Titel einer Schrift Hall 60.

विधिपुत्र m. Brahman's *Sohn*, patron. Nârada's Pańkar. 1,1,11. — Vgl. विधातृभू.

विधिपूर्वकम् adv. *vorschriftmässig, rite* M. 2,173. 3,84. 96. 99. 216. 4,101. 6,5. R. 1,9,29. 2,28,14. Suçr. 2,93,7. अ° Bhag. 9,23. 16,17.

विधियज्ञ m. *ein vorschriftmässiges Opfer* M. 2,85. fg.

विधियोग m. 1) *Beobachtung einer Vorschrift, — Regel:* अनेन °योगेन M. 8,211. — 2) *Fügung des Schicksals:* °योगात् Spr. 3227. °योगतम् Kathâs. 25,48. 26,264 (°योगज्ञः gedruckt). 30,54. 49,193. 51,61.

विधिरसायन n. Titel einer Schrift Hall 194. °सुखोपयोजिनी f. Titel eines Commentars zu derselben ebend. °दूषण m. Titel einer *Widerlegung* derselben 195. Verz. d. Tüb. H. 17.

विधिवत् (von 1. विधि) adv. *vorschriftmässig, rite, auf gehörige Weise, wie es sich gebührt* Muṇḍ. Up. 1,1,3. M. 1,58. 2,40. 148. 216. 3,

वि॑देव (2. वि + देव) *widergöttlich, ungöttlich:* रक्षस् AV. 12, 3, 43. 20,136,14. *ohne Götter:* यज्ञ Kâṭh. 26,9.

विदेश (2. वि + देश) m. *Fremde* (Gegens. स्वदेश, स्वविषय): विदेशे प्रेतः Kauç. 80. M. 8,167. MBh. 3,17140. R. 5,33,36. को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशः स्मृतः Spr. 756. गच्छति विदेशम् 2346. 5223. वासो विदेशे 5373. को विदेशः सविद्यानाम् 1926 (II). भजते विदेशमधिकेन जितः Çiç. 9,48. Kathâs. 21,118. 25,70. 36,74. 43,39. मा गा विदेशम् 49,215. विदेशं व्रजन् 56,309. गुणिनो न विदेशो ऽस्ति 61,121. Râǵa-Tar. 4,605. °ग Varâh. Bṛh. 5,7. Pańkat. V, 84. Kathâs. 33,207. °गमन 20, 148. Spr. 1191. विद्या बन्धुजनो विदेशगमने 2797. 4259. °निरत Varâh. Bṛh. 12,11. °वासिन् 101,9. °वास Vet. in LA. (III) 19,19. °स्थ Âçv. Gṛhj. 1,12,2. M. 5,75. MBh. 4,2139. 13,5888. R. Gorr. 1,11,7. Varâh. Bṛh. 5,1. Verz. d. Oxf. H. 87,*b*,8. 272,*b*, No. 644. संप्रसारण *anderwärts vorkommend* P. 6,1,37, Schol.

विदेश्य॑ (von विदेश) adj. *auswärts befindlich* AV. 4,16,8.

1. विदेह (2. वि + देह) adj. *körperlos, vom Körper befreit, verstorben* H. an. 3,769. Med. h. 24. MBh. 3,8874. 6,3445. शिरोगणाः 11,432. R. 7,55,21. 57,20. Bhâg. P. 9,13,11. 13. Jogas. 1,19. Verz. d. Oxf. H. 42, *a*,35. °कैवल्यप्राप्ति Madhus. in Ind. St. 1, 20,17. °मुक्ति (Gegens. जीवन्मुक्ति) Weber, Râmat. Up. 337. Colebr. Misc. Ess. I, 370. Verz. d. Oxf. H. 123, *a*, 28. °मुक्त्यादिकथन Titel einer Abhandlung 237, *a*, No. 568. Hall 13. — Vgl. महा° 2).

2. विदे॑ह (= विदेघ) 1) m. *a)* pl. N. pr. eines Volkes, nördlich vom Ganges im heutigen Tirhut mit der Hauptstadt Mithilâ, Trik. 2,1,8. H. 946. अत्तरा निषधं नीलं च विदेहाः 1538, Schol. कोसलविदेहानां मर्यादाः Çat. Br. 1, 4, 1, 17. 14, 6, 11, 6. 7, 2, 30. काशिविदेहेषु Kaush. Up. 4, 1. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. No. 93 (56). MBh. 1,4452. 2,1062. 6,353 (VP. 188). Hariv. 1980. 12832. R. 1, 68, 14 (70, 16 Gorr.). R. Gorr. 1, 71,7. 4,40,25. Varâh. Bṛh. S. 5,41. 71. Mârk. P. 57,44. Verz. d. Oxf. H. 258, *b*, 27. Daçak. 95, 8. gaṇa धूमादि zu P. 4, 2, 127. Burn. Intr. 421. Târan. 14. °राज R. 2,88,7. विदेहाधिपति Hariv. 4968. Ragh. 12, 26. विदेहाधिप ein Mediciner (vgl. u. *b*) Suçr. 2, 302, 8. °नगरी = मिथिला Ragh. 11,36. °नगर Hall 46. विदेहाः पञ्च ते च द्विविधाः पूर्वे चापरे च H. 946, Schol. पूर्व° Vjutp. 81. पूर्वविदेहे (das Land) Lalit. ed. Calc. 21,9. पूर्वविदेहो नव योजनसहस्राणि 170,15. पूर्वविदेहलिपि 144, 5. — *b) ein Fürst der* Videha (vgl. वैदेह) H. an. Med. जनक Weber, Râmat. Up. 331. als N. pr. Bhâg. P. 2,7,44. Râǵa-Tar. 8, 612. ein Mediciner (vgl. विदेहाधिप unter *a*) Verz. d. B. H. 290,1. Verz. d. Oxf. H. 314,*b*, No. 746. 358,*a*,6. — 3) f. आ Bez. der Stadt Mithilâ Trik. 2,1, 15. H. 975. Hâlaj. 2,132. Schiefner, Lebensb. 235 (5). — Vgl. अपर°, महा° und वैदेह.

विदेहक (von 2. विदेह) 1) m. N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 306 (76). — 2) n. N. pr. eines Varsha Çatr. 1,292.

विदेहत्व (von 1. विदेह) n. *Körperlosigkeit* R. 7, 56, 7. विदेहत्वं प्राप्तः so v. a. *gestorben* MBh. 1,8805. 3817.

विदोष (2. वि + 1. दोष) adj. *frei von Schuld, keines Vergehens schuldig:* अ° Lâṭj. 6,5,3.

विदो॑ह (von 1. दुह् mit वि) m. *verkehrtes* oder *übermässiges Melken* (*Ausnützen*): यज्ञियस्य कर्मणः TBr. 3,3,2,2. सोमपीथस्याविदोहाय Pańkav. Br. 18,2,12.

विद्ध s. u. व्यध्.

विद्धक (von विद्ध) m. *eine Art Egge* Kṛshis. 9,14 (s. u. मदि).

विद्धकर्ण m. und °कर्णा f. *Clypea hernandifolia W. u. A.* Bhar. im Dvirûpak. nach ÇKDr. °कर्णी f. dass. AK. 2, 4, 3, 3. °कर्णिका f. dass. Çabdar. im ÇKDr.

विद्धत्व (von विद्ध) n. *das Behaftetsein* Comm. zu Ḱhând. Up. S. 31.

विद्धपर्णकटी f. *Pongamia glabra Vent.* Hâr. 101.

विद्धशालभञ्जिका f. Titel eines Lustspiels von Râǵaçekhara Wilson, Sel. spec. of the Theatre of the Hindus II, 354. fgg. Verz. d. Oxf. H. 140,*b*, No. 284. Sâh. D. 201,8. Comm. zu Kuvalaj. 37,*b*. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 20.

विद्धि f. nom. act. von व्यध् P. 6,4,2, Schol.

विद्म॑न् (von 1. विद्) n. *Aufmerksamkeit; Wissen, Kenntniss:* अग्निर्हि विद्मना निदो देवो मर्तमुरुष्यति RV. 6, 14, 5. 1, 110, 6. यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति *beobachtend* 7,4,1. 5,87,2. पृच्छामि विद्मने (infinitiv) न विद्वान् 1,164,6. 10,88,18.

विद्मनापस् (विद्मना + अपस्) adj. *geschickt —, sorgfältig zu Werke gehend* RV. 1,31,1. 111,1. AV. 7,47,1. Nir. 11,33.

विद्मिसार m. N. pr. eines Fürsten VP. 466. fehlerhaft für बिम्बिसार.

1. विद्य (von 3. विद्) n. *das Finden, Erlangen* in पति°, पुत्र°.

2. विद्य (von विद्या) am Ende eines adj. comp., z. B. अ° *ungelehrt* Spr. (II) 684. अभ्यस्त° Ragh. 1,8. कृत° (s. auch bes.) *der Studien gemacht hat, im Besitz einer Wissenschaft, gelehrt* MBh. 1,3279. Spr. (II) 813. 1863. Kathâs. 7,60. 22,154. अर्पितविद्य 26,251. प्राप्त° Varâh. Bṛh. 14,3. Ćuk. in LA. (III) 34,10. तद्विद्य *ein Kenner davon, Sachkenner* Kâm. Nîtis. 1,33. 2,1. Vgl. noch दुर्विद्य, निर्विद्य, बहु°, भूयो°, यथाविद्यम्.

विद्यमानत्व (von विद्यमान; s. u. 3. विद्) n. *das Vorhandensein, Dasein* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 33. अ° ebend.

विद्या॑ (von 1. विद्) f. P. 3, 3, 99. Vop. 26, 186. 1) *Wissen, Wissenschaft, Lehre* (Hâr. 196); namentlich *die in drei Kapitel zerfallende vedische Lehre* AV. 6, 116, 1. 11, 7, 10. 8, 23. यो ब्राह्मणो विद्यामनूच्य न विरोचते TS. 2,1,2,8. 5,1,3,2. Ait. Br. 8,23. त्रयी (s. auch u. त्रय) TBr. 3,10,11,5. Bhâg. P. 5, 9, 8. त्रिधातु Çat. Br. 5,5,5,6. 10,2,6,15. 11,5, 2,8. 1,6,3,8. 4,2,3,8. सर्वासां विद्यानां वागेकायनम् 14,5,4,11. °कर्मणी 7,2,3. विद्ययाप्यस्ति प्रीतिः Veda*kunde* Âçv. Gṛhj. 1,1,4. 3,9,1. विद्यान्ते *am Ende der Lehrzeit* 4. Kauç. 67. 74. °प्रकर्ष Nir. 1,5. विद्यातः पुरुषविशेषो भवति 16. 14,8. 9. °स्थान *Disciplin, Wissenszweig* 1,15. — MBh. 3,2887. विविधाः R. 1,53,14. विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्ते ऽस्मि रक्ष माम्। असूयकाय मां मा दाः M. 2,114. अनभ्यसनशीलस्य विद्येव तनुतां गता R. 5,19,22. अर्थकरी Spr. 1791. अनवद्या 2016 (II). विद्याधनं यस्य तत्तस्यैव धनं भवेत् M. 9,206. अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् Spr. (II) 94. कामधेनुगुणा विद्या सदैव फलदायिनी । प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम् ॥ 1651. 1974. का विद्या कविता विना 1710. विद्या रूपं कुरूपाणाम् 1919. वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्यातो बुद्धिरुत्तमा (I) 2749. विद्या ददाति विनयम् 2795. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् 2797. विद्या खलस्य विवादाय, साधोर्ज्ञानाय 2800. विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे

विद्ये प्रतिपत्तये। श्राद्या क्तास्याय वृद्धवे द्वितीयाद्रियते सदा। 2801. संगमयति विद्येव नरं दुर्धर्षं नृपम् 3100. सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाङ्करनुत्तमम् 3210. विद्या मित्रं प्रवासे 4999. विद्या सकृलं मित्रम् 5002. °रत्नं सरसकविता 5000. सर्वविद्यामुखं व्याकरणाम् KATHÂS. 4, 22. न च विद्यां विना राज्ञां प्रतिग्रहः केवलबुद्धा लभ्यते PAÑKAT. 243, 19. तत्र विद्या न वक्तव्या M. 2, 112. fg. शुभां विद्यां क्तीनादपि समाप्नुयात् Spr. 3030. शुभां विद्यामाददीतावरादपि 3032. विद्यामभ्यसनेनेव प्रसादयितुमर्हसि (ताम्) RAGH. 1, 88. विद्याभ्यासे Spr. (II) 1793. सदभ्यस्त° PAÑKAT. 244, 1. पूर्वाधीत° 243, 25. विद्या नाधिगता कलङ्करहिता Spr. 2796. श्रपात्रे प्रतिपादिता 2803. ददौ विद्यामृतुपर्णाय MBH. 3, 3026. °दान Verz. d. B. H. No. 1218. Verz. d. Oxf. H. 35, a, 44. 87, a, 32. °प्रदान 85, a, 20. °मद Spr. 2798. विद्यानां पारदृश्वा RAGH. 1, 23. विद्याज्ञ der sein Fach gründlich versteht VARÂH. BṚH. S. 68, 99. °भाज् 68, 45. विद्याभीप्सिन् KAṬHOP. 2, 4. विद्यार्थिन् Spr. (II) 1649. (I) 5001. विद्यास्वभिविनीतानाम् (so ed. Bomb.) MBH. 13, 378. °विनीत R. 1, 7, 4. °समृद्ध M. 3, 98. °वृद्ध Spr. 2802. SARVADARÇANAS. 3, 6. °क्तीन M. 4, 141. PAÑKAT. 243, 21. विद्यानुपालिन् M. 9, 204. रक्तो° ÇÂÑKH. ÇR. 16, 2, 19. सर्प° u. s. w. ÇAT. BR. 13, 4, 3, 9. विष°, पुराण° u. s. w. ÂÇV. ÇR. 10, 7, 5. fgg. सूदस्यन्दनविद्याभ्याम् KATHÂS. 56, 338. vier *Wissenschaften* (श्रान्वीक्तिकी, त्रयी, वार्त्ता und दण्डनीति) RAGH. 3, 30. KIR. 2, 6. vierzehn (षडङ्गी वेदाश्चत्वारो मीमांसान्वीक्तिकी तथा। धर्मशास्त्रं पुराणं च) H. 253. MADHUS. in Ind. St. 1, 13, 9. fgg. NAISH. 1, 4. achtzehn (ausser den eben genannten noch श्रायुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व und शासन oder श्रर्थशास्त्र) MALLIN. zu NAISH. 1, 5. MADHUS. in Ind. St. 1, 13, 13. 22, 10. bei den Buddhisten Ind. St. 3, 131. vierundsechszig (hier so v. a. कला) Verz. d. Oxf. H. 217, a, 20. fg. Bei den Pâçupata *Wissen* überh., gleichviel ob richtiges oder falsches, SARVADARÇANAS. 76, 17. तत्र पशुगुणो (so ist zu lesen) विद्या। सापि द्विविधा बोधाबोधस्वभावभेदात् 18. — 2) *Zauberkunst; Zauberspruch:* मन्त्राः पुंदेवता ज्ञेया विद्याः स्त्रीदेवताः पुनः Verz. d. Oxf. H. 105, a, 8. जीवनी MBH. 1, 3241. fg. मृतसंजीवनी VET. in LA. (III) 14, 21. बलातिबलयोर्विद्ययोः RAGH. 11, 9. KATHÂS. 10, 95. 18, 218. 227. 240. 377. 33, 170. 178. 37, 186. 38, 54. 42, 32. 34. fg. 38. 45, 280. 290. 52, 161. षडत्तरी BURN. Intr. 225. PAÑKAR. 2, 4, 47. — 3) *die Wissenschaft* personif. HARIV. 14035. mit der Durgâ identificirt ÇABDAR. im ÇKDR. unter den Verfasserinnen von Zaubersprüchen und Gebeten Verz. d. Oxf. H. 101, b, 2. — 4) *Premna spinosa* ÇABDAK. im ÇKDR. — 5) mystische Bez. *des Buchstabens* इ WEBER, RÂMAT. UP. 318. — 6) *Glöckchen* (vgl. °मणि) H. ç. 134. — Vgl. श्र°, श्रङ्ग°, श्रात्म°, तर्क°, धनुर्विद्या, नक्तत्र°, नीति°, प्राण°, ब्रह्म°, भूत°, मधु°, मन्त्र°, मक्ता°, मूल°, यज्ञ°, रथ°, रात्र°, वास्तु° und वैद्य.

विद्याकर (विद्या + श्रा°) m. N. pr. eines Autors Verz. d. Cambr. H. 67. °वाजपेयिन् Verz. d. Oxf. H. 292, b, 11. fg.

विद्यागण m. pl. Bez. gewisser buddhistischer Schriften TÂRAN. 241.

विद्यागम (विद्या + श्रा°) m. *Erlangung von Kenntnissen, Erlernung von Wissenschaften* Spr. 2423. R. GORR. 2, 1, 10.

विद्यागुरु m. *Lehrer einer Wissenschaft*, insbes. *der heiligen* M. 2, 206. BHÂG. P. 3, 13, 38.

विद्यागृह n. *Schulhaus, Collegium* KÂD. in Z. d. d. m. G. 7, 583, 1 v. u. — Vgl. विद्यावेश्मन्.

विद्याचण (°चन bei VOP.) und विद्याचुञ्चु adjj. *gelehrt* P. 5, 2, 26, Schol. VOP. 7, 74.

विद्यातीर्थ n. 1) *Wissen als Badeplatz, Bad der Wissenschaft:* °तीर्थे विमलमतयः कल्मषं चालयन्ति Spr. 4998. — 2) N. pr. eines *heiligen Badeplatzes* MBH. 3, 8030. — 3) Bein. Çiva's Verz. d. Oxf. H. 222, a, No. 540. 244, b, No. 606. 252, b, No. 626. 263, b, No. 636. fg. SÂJ. in der Einl. zu ṚV. u. s. w.

विद्यात्व n. *der Begriff* विद्या KÂM. NÎTIS. 2, 17.

विद्यादल m. *eine Art Birke* (भूर्ज), *auf deren Rinde geschrieben wird*, ÇABDAM. im ÇKDR.

विद्यादायाद m. *der Erbe einer Wissenschaft* P. 6, 2, 5, Schol.

विद्यादेवी f. bei den Gaina Bez. einer Klasse göttlicher Wesen, deren sechszehn angenommen werden, H. 238. fgg.

विद्याधर 1) adj. *im Besitze einer Wissenschaft —, von Zaubersprüchen seiend.* — 2) m. a) Bez. einer Klasse von Luftgenien, die im Gefolge Çiva's erscheinen, im Himâlaja ihren Sitz haben und *im Besitz der Zauberkunst stehen*, AK. 1, 1, 1, 6. TRIK. 1, 1, 64. HALÂJ. 1, 87. HARIV. 3930. R. 1, 16, 10. 6, 83, 26. 32. SÛRJAS. 12, 31. VARÂH. BṚH. S. 9, 27. 38. 12, 6. 13, 8. RAGH. 2, 60. Spr. 807. UTTARAR. 103, 1. fgg. (139, 1. fgg.). KATHÂS. 1, 13. 17. 18, 216. 220. 232. Verz. d. Oxf. H. 69, a, 32. 92, b, 40. VET. in LA. (III) 22, 20. BRAHMA-P. ebend. 49, 18. TÂRAN. 69 u. s. w. विद्याधराङ्गना KATHÂS. 13, 35. विद्याधरी f. MBH. 4, 258. R. 1, 16, 5. UTTARAR. 103, 15 u. s. w. (140, 6 u. s. w.). KATHÂS. 22, 58. 93, 8. 105, 13. PRAB. 62, 10. 101, 13. BHÂG. P. 3, 23, 37. fg. HIT. 63, 16. 108, 5. विद्याधरताल Bez. *eines best. Tactes* Verz. d. Oxf. H. 87, a, 11. fg. — b) N. pr. verschiedener *Gelehrter* MALLIN. zu KIR. 4, 38. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 46. Verz. d. B. H. No. 166. Verz. d. Oxf. H. 122, a, 3. 4. 136, a, No. 259. 157, b, No. 340. °गच्छ 152, a, N. 3. विद्याधराचार्य 95, b, 14. — c) *ein best. Metrum: 4 Mal* — — — —, — — — — — — — — COLEBR. Misc. Ess. II, 160 (VII, 26). — 3) f. ई a) s. u. 2) a). — b) N. pr. einer Tochter des Fürsten Çûrasena KATHÂS. 56, 81. — Vgl. रङ्ग° und वैद्याधर.

विद्याधरत्व n. *der Stand eines* Vidjâdhara KATHÂS. 24, 14. 26, 168. 108, 122.

विद्याधरपिटक Vie de HIOUEN-THSANG 159 ohne Zweifel fehlerhaft für धारणीपिटक, wie HIOUEN-THSANG II, 38 gelesen wird; nach dem Index soll dieses letztere falsch sein.

विद्याधररस m. Bez. *einer best. Mixtur* Verz. d. B. H. No. 993.

विद्याधरीभू (विद्याधर + 1. भू) *zu einem* Vidjâdhara *werden:* °भूत KATHÂS. 25, 262. 26, 234. 108, 96.

विद्याधरीविलास m. Titel einer Schrift Verz. d. Cambr. H. 67.

विद्याधरेन्द्र m. *ein Fürst der* Vidjâdhara RÂGA-TAR. 1, 218. so v. a. कपीन्द्र als Bez. Gâmbavant's MBH. 13, 630. Hiervon °ता f. nom. abstr. KATHÂS. 44, 30.

विद्याधार (विद्या + श्रा°) m. *ein Behälter von Wissen, ein überaus grosser Gelehrter* MÂLATÎM. 41, 2.

विद्याधिदेवता f. *die Schutzgottheit der Wissenschaften:* Sarasvatî PAÑKAR. 1, 12, 52.

विद्याधिप m. *das Haupt der Wissenschaften*, wohl. Beiw. Çiva's

WEBER, RÂMAT. UP. 305.

विद्याधिराज m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 255, *a*, 3.

विद्याधीशवडेरु m. N. pr. eines *grossen Gelehrten* ebend. 177, *b*, 13.

विद्याध्र m. = विद्याधर 2) *a*) BHÂG. P. 2,6,13. 10,37. 3,10,26. 7,4,6. 10,85,41. 11,16,29.

विद्यानगर n. N. pr. einer *Stadt* COLEBR. Misc. Ess. I, 301. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*, 35. TÂRAN. 86. 264. 267. BURNOUF in BHÂG. P. I, LX, N. MACK. Coll. II, 30. °नगरी Inschr. bei COLEBR. Misc. Ess. II, 263, Çl. 13.

विद्यानन्द (विद्या + आ°) m. 1) *die Wonne am Wissen* Verz. d. Oxf. H. 223, *a*, 1. 3. — 2) N. pr. eines Autors über die Lehre der Gaina SARVADARÇANAS. 38, 12. °निबन्ध Verz. d. Oxf. H. 95, *b*, 14.

विद्यानाथ m. N. des Verfassers des Pratâparudrîja PRATÂPAR. 2, *b*, 1. °भट्ट Verfasser der Vedântakalpatarumañgarî COLEBR. Misc. Ess. I, 333.

विद्यानिधि m. N. pr. oder Beiw. eines *grossen Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 20.

विद्यानिवास m. N. pr. verschiedener Männer HALL 22. 34. 46. 49. 58. 66. 79. 84. Verz. d. Oxf. H. 174, *b*, No. 395. fg., Z. 9. 175, *a*, 38. 239, *a*, No. 577. °भट्टाचार्य 38, *b*, 11. fg. 246, *a*, No. 618. HALL 184.

विद्यानुलोमालिपि (!) f. Bez. *einer best. Art zu schreiben* LALIT. ed. Calc. 144, 10.

विद्यापति m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 124, *b*, 42. 279, *a*, 49. 292, *b*, 13. WILSON, Sel. Works I, 168. °ठक्कुर HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 24.

विद्याप्रवाद n. Titel des 10ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 248.

विद्याभट्ट m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 1170.

विद्याभरण (विद्या + आ°) m. N. pr. des Verfassers der nach ihm benannten विद्याभरणी HALL 206.

विद्याभृत् m. = विद्याधर 2) *a*) ÇATR. 2, 602.

विद्यामणि (°मनि gedr.) m. = विद्या *Glöckchen* H. ç. 134.

विद्यामय (von विद्या) adj. *aus Wissen bestehend*, *im Wissen aufgehend* MBH. 12, 8573. 14, 1456. BHÂG. P. 11, 11, 7.

विद्यामहेश्वर m. Bein. Çiva's ÇIV.

विद्यामात्रसिद्धि f. Titel einer buddhistischen Schrift HIOUEN-THSANG I, 286. Vie de HIOUEN-THSANG 115. 122. 191. 218. 261. °त्रिदशशास्त्रकारिका 101.

विद्यामृतवर्षिणी f. Titel eines Commentars HALL 91.

विद्यारण्य m. N. pr. und Bein. verschiedener *Gelehrter*, insbes. des Mâdhavâkârja, COLEBR. Misc. Ess. I, 53. 63. 78. fg. 96. Verz. d. B. H. No. 629. fgg. Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, 33. 124, *b*, 43. 223, *a*, No. 541. Ind. St. 1, 471. WILSON, Sel. Works I, 203. BURNOUF in BHÂG. P. I, LX. HALL 18. 98. 133. MACK. Coll. II, 30. °तीर्थ HALL 2. 12. भारतीतीर्थ° Verz. d. Cambr. H. 20.

विद्यारत्नाकर m. Titel einer ganz neuen Compilation Verz. d. Oxf. H. 260, *b*, 7.

विद्यारम्भ (विद्या + आ°) m. *Beginn der Studien*: प्राप्ते तु पञ्चमे वर्षे विद्यारम्भं च कारयेत् Cit. bei MALLIN. zu RAGH. 3, 28. Verz. d. Cambr. H. 63. Verz. d. Oxf. H. 86, *b*, 7. खड्गधनुर्विद्यारम्भ 22.

विद्याराज m. *Fürst des Wissens*, — *der Zaubersprüche* WASSILJEW 189. 194. 197. Bein. Vishṇu's PAÑKAR. 4, 3, 56. N. pr. eines buddhistischen Heiligen WASSILJEW 175.

विद्याराशि m. Bein. Çiva's ÇIV.

विद्यार्थदीपिका f. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 108, *a*, No. 108.

विद्यार्थप्रकाशिका f. desgl. ebend.

विद्यालंकारभट्टाचार्य m. N. pr. eines Autors ebend. 174, *a*, No. 390.

विद्यालय N. pr. einer Oertlichkeit ebend. 251, *b*, 15.

विद्यावंश m. *Lehrerverzeichniss*, *ein Verzeichniss*, *das die Lehrer in einem Wissenszweige in chronologischer Folge aufführt*, Schol. zu P. 2, 1, 19.

विद्यावत् (von विद्या) adj. P. 8, 2, 9, Schol. VOP. 7, 28. *gelehrt* INDR. 4, 3 (विद्यया st. विद्यावान् MBH. 3, 1802). Spr. 1932. 2799. 4713. PRAB. 35, 10. Verz. d. Oxf. H. 33, *b*, 11. 261, *a*, 18. RÂGA-TAR. 2, 39. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 39, 23.

विद्यावागीश m. *ein Meister in der Wissenschaft und im Worte*, als Beiw. eines grossen Gelehrten HALL 39. 72. Verz. d. Oxf. H. 175, *a*, 23.

विद्याविद् adj. *gelehrt* KÂM. NÎTIS. 8, 57. RÂGA-TAR. 3, 111.

विद्याविनोद m. N. pr. verschiedener *Gelehrter* Verz. d. Oxf. H. 150, *b*, No. 320. 181, *b*, No. 413. 279, *a*, 49. fg. COLEBR. Misc. Ess. II, 116. citirt im ÇKDR. u. अंश und त्र्यस्य.

विद्याविरुद्ध adj. *mit der Wissenschaft im Widerspruch stehend*; davon °ता f. nom. abstr. SÂH. D. 576.

विद्याविशारद m. N. pr. oder Bein. eines *Gelehrten* Verz. d. Oxf. H. 212, *a*, 10.

विद्यावेश्मन् n. *Schulhaus*, *Collegium* RÂGA-TAR. 1, 42. — Vgl. विद्यागृह.

1. विद्याव्रत n. Bez. *einer best. Begehung* Verz. d. Oxf. H. 284, *a*, 39.

2. विद्याव्रत m. wohl Bez. *einer Art von Zauberern* TÂRAN. 189.

विद्याव्रतस्नात adj. *der das* Veda-*Studium und die Gelübde absolvirt hat*: वेद° M. 4, 31. विद्याव्रतस्नातक PÂR. GṚHJ. 2, 5. GOBH. 3, 5, 12. — Vgl. विद्यास्नात.

विद्यासागर m. *ein Meer von Wissen* als Beiw. eines grossen Gelehrten Verz. d. B. H. No. 217. 613. HALL 96. ders. in der Einl. zu VÂSAVAD. 47.

विद्यास्नात adj. *der das* Veda-*Studium absolvirt hat* MBH. 13, 3019. R. 2, 82, 10. °क PÂR. GṚHJ. 2, 5.

विद्युच्छत्रु (1. विद्युत् + शत्रु) m. N. pr. eines Râkshasa (nach dem Comm.) BHÂG. P. 12, 11, 41.

विद्युच्छिखा (1. विद्युत् + शिखा) f. 1) *eine best. Pflanze mit giftiger Wurzel* SUÇR. 2, 251, 14. — 2) N. pr. einer Râkshasî KATHÂS. 25, 196.

विद्युज्जिह्व (1. विद्युत् + जिह्वा) 1) adj. *eine blitzähnliche Zunge habend*: कृतान्त R. 7, 23, 1, 74. — 2) m. *a*) N. pr. eines Râkshasa MBH. 6, 4083. R. 5, 12, 9. 14. 6, 69, 13. 7, 12, 2. 23, 18. — *b*) N. pr. eines Jaksha KATHÂS. 72, 41. 43. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2626.

विद्युज्ज्वाल (1. विद्युत् + ज्वाला) m. N. pr. eines Schlangendämons SCHIEFNER, Lebensb. 272 (42).

1. विद्युत् (1. द्युत् mit वि) P. 3, 2, 177. 1) adj. *blinkend*, *blitzend*: वर्म विद्युतामिव सूर्यः ÂÇV. GṚHJ. 1, 24, 8. ṚV. 1, 23, 12. 105, 1. die Marut

168,8. 5,52,6. *blitzende Waffe* 54,11. Wasser und Regen: गौरेव वि- द्युतं तृषाणा सवनोपं यातम् 7,69,6. धारा 9,84,3. Âçv. Gṛhj. 2,4,14. यत्ते अश्वस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः Ṛv. 5,84,3. वर्ष 10,91,5. पुरुष VS. 32,2. — 2) f. AK. 3,6,1,3. *a) Blitz* AK. 1,1,2,11. Trik. 1,1,84. H. 1104. Med. t. 156. Halâj. 1,60. Ṛv. 1,32,13. 38,8. 2,35,9. 3,1,14. 5,10,5. पतयन्ति विद्युतः 83,4. विद्युन्न दंविद्योत् 6,3,8. 10,95,10. °तो ज्योतिः 7, 33,10. दिवो न विद्युत्स्तनयन्त्यभ्रैः 9,87,8. 10,99,2. AV. 9,2,14. fg. 10, 1,23. 7,59,1. मा नो वधीर्विद्युता शस्यम् 7,11,1. विद्युद्वा अशनिः Çat. Br. 6,1,3,14. अपां ज्योतिः 7,5,2,49. 11,4,4,1. 4,5,1,4. विद्युत्स्तनयि- त्नुवर्षाः Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. Khând. Up. 5,22,2. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (59). M. 1,38. 4,103. 106. 5,95. MBh. 1,1134. 3,1717. 2083. 2584. R. 1,63,5. Suçr. 1,7,17. 17,3. 22,17. 89,20. Ragh. 1,36. Megh. 39. 79. 113. Varâh. Bṛh. S. 3,33. 5,93. 22,5. 28,12. विद्युत् — तटतटस्वना स- हसा। कुटिलविशाला निपतति 33,5. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,1. Bhâg. P. 2, 6,5. तत्र विद्योतन्त स्म विद्युतः 9,14,31. विद्युज्ज्योतिस् Vet. in LA. (III) 1,12. विद्युत्कम्प Megh. 96. विद्युद्दामन् 28. विद्युद्वल्लो Spr. (II) 1098. विद्युल्लता Kathâs. 25,41. 34,223. मेघसंघाः सविद्युतः MBh. 1,1128. Bhâg. P. 3,19,19. Auch n. MBh. 7,9569. Schol. zu Shaḍv. Br. 1,2. — *b) Morgenröthe* Med. — *c)* pl. Bez. der Töchter des Pragâpati Bahuputra: बहुपुत्रस्य विदुषश्चतस्रो विद्युतः स्मृताः (सुताः die neuere Ausg.) Hariv. 179. — *d) ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑⏑—, ——⏑——⏑— Colebr. Misc. Ess. II, 161 (VIII, 10). — 3) m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 57,*b*,41. — Vgl. अष्टि°, सु°.

2. विद्युत् (2. वि + 2. द्युत्) adj. *glanzlos* Med. t. 156.

विद्युता (von 1. द्युत् mit वि) f. N. pr. einer Apsaras (daneben वि- द्योता) MBh. 13,1425.

विद्युताक्ष (विद्युता = 1. विद्युत् + अक्ष *Auge*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2564. — Vgl. विद्युदक्ष.

विद्युत्केश (1. वि° + केश) m. N. pr. eines Râkshasa R. 7,4,17. fg.

विद्युत्केशिन् m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 46,*b*,20.

विद्युत्त (von 1. द्युत् mit वि) adj. *aufblitzend; n. das Aufblitzen* Çat. Br. 14,5,2,10.

विद्युत्पताक m. N. einer der sieben Wolken, die am Ende der Welt die Erde überschwemmen werden, Verz. d. Oxf. H. 347,*b*,33.

विद्युत्पर्णा f. N. pr. einer Apsaras Vjâḍi beim Schol. zu H. 183 (विद्युत्म्पर्णा fälschlich geschr.). MBh. 1,2557. 4818. Hariv. 14162.

विद्युत्पुञ्ज 1) m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 108,177. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter des Vidjutpuńga ebend.

विद्युत्प्रभ (1. वि° + प्रभा) 1) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,5963. eines Fürsten der Daitja Kathâs. 115,3. — 2) f. आ N. pr. einer Gross- tochter des Daitja Bali Kathâs. 10,39. einer Tochter eines Fürsten der Râkshasa 25,208. eines Fürsten der Jaksha mit Namen Ratna- varsha 26,213. pl. Bez. einer Gruppe von Apsaras MBh. 5,3841.

विद्युत्प्रिय 1) adj. *dem Blitze lieb.* — 2) n. *Messing* H. 1049.

विद्युत्य (von 1. विद्युत्) adj. *fulmineus* VS. 16,38. P. 4,4,110, Schol.

विद्युद्वत् (von 1. विद्युत्) 1) adj. *blitzreich* (von Wolken) Schol. zu P. 1,4,19 und 8,2,10. Vop. 7,28. MBh. 1,1411. 8,1681. 3133. Megh. 65. — 2) m. *a) Gewitterwolke* Kumâras. 6,27. — *b)* N. pr. eines Berges Hariv. 12843. R. 4,41,44 (hier fälschlich विद्युद्दत्त geschrieben). — Vgl. विद्युन्मत्.

विद्युदक्ष (1. विद्युत् + अक्ष *Auge*) m. N. pr. eines Daitja Hariv. 12934. Vgl. विद्युताक्ष.

विद्युद्द्योता (1. विद्युत् + द्योत) f. N. pr. einer Tochter des Fürsten Vasantasena Kathâs. 33,55. fgg.

विद्युद्धस्त (1. विद्युत् + हस्त) adj. *eine blitzende Waffe in der Hand haltend:* die Marut Ṛv. 8,7,25.

विद्युद्घन (1. विद्युत् + घन) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 114,140. 115,5. fgg.

विद्युद्रथ (1. विद्युत् + रथ) adj. *in blitzendem Wagen fahrend* Ṛv. 3, 14,1. 54,13.

विद्युद्वत् s. u. विद्युद्वत् 2) *b*).

विद्युद्वर्चस् (1. विद्युत् + व°) m. N. pr. eines göttlichen Wesens MBh. 13,4358.

विद्युन्मत् (von 1. विद्युत्) adj. *blinkend, blitzend:* रथ Ṛv. 1,88,1. — Vgl. विद्युद्वत्.

विद्युन्महस् (1. विद्युत् + म°) adj. etwa τερπικέραυνος Ṛv. 5,54,1.

विद्युन्माल (1. विद्युत् + माला) m. N. pr. eines Affen R. 4,33,13.

विद्युन्माला (wie eben) f. 1) *ein Kranz von Blitzen* R. 4,12,17. Varâh. Bṛh. S. 25,5. Kathâs. 44,180. Ind. St. 8,367. Khandom. 17. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ————, ———— Çrut. 15. Colebr. Misc. Ess. II, 159 (III, 2). Ind. St. 8,367. Khandom. 17. — 3) N. pr. *a)* einer Jakshî Kathâs. 49,166. 170. fgg. — *b)* einer Tochter Suroha's, Königs von Kîna, Kathâs. 44,46. 174. 178.

विद्युन्मालिन् 1) adj. *blitzbekränzt:* पर्जन्य Spr. 4425. — 2) m. N. pr. *a)* eines Asura MBh. 7,9557. 8,1395. 1412. Verz. d. Oxf. H. 41,*b*,2. — *b)* eines Râkshasa R. 6,18,16.

विद्युन्मुख n. Bez. *einer best. Himmelserscheinung* (उपग्रह) Gjotistattva im ÇKDr. u. वज्रक.

विद्युल्लेखा (1. विद्युत् + ले°) f. 1) *Blitzstreifen, Blitzstrahl* Mṛkkh. 1, 7. Vikr. 76. — 2) *ein best. Metrum: 4 Mal* ——— ——— Colebr. Misc. Ess. II, 159 (I, 2). Ind. St. 8,366. — 3) N. pr. einer Kaufmanns- frau Kathâs. 69,125.

विद्येश (विद्या + ईश) m. 1) *Herr des Wissens*, Bein. Çiva's Çiv. — 2) bei den mystischen Çaiva Bez. *einer best. Klasse von Erlösten* (मुक्तात्मन्); davon °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 86,9.

विद्येश्वर (विद्या + ई°) m. 1) = विद्येश 2) Sarvadarçanas. 81,13. 85, 20. 86,2. 89,1. — 2) N. pr. eines Zauberers Daçak. 45,11.

विद्योत् ungrammatischer abl. von 1. विद्युत् dem Gleichmaass der Formel zu Liebe: मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि VS. 20,2. eben so st. dessen दिद्योत् TS. 1,8,14,1. TBr. 1,7,8,2; vgl. VS. 10,17.

विद्योत (von 1. द्युत् mit वि) 1) adj. *blitzend, blinkend* Bhâg. P. 3,14, 24. 8,7,17. — 2) m. *a) Geblitz, Glanz:* मुक्तामणि° Hariv. 2901. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,143. — *b)* N. pr. eines Sohnes des Dharma von der Lambâ und Vaters des Stanajitnu (*Donners*) Bhâg. P. 6,6,5. — 3) f. आ N. pr. einer Apsaras (daneben auch विद्युता) MBh. 13,1425.

विद्योतक (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *erhellend, erleuchtend:* वेदार्थ° Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,13.

विद्योतन (von 1. द्युत् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *erhellend, erleuchtend* DHŪRTAS. 67, 2. — 2) n. *das Blitzen* ÇAṄK. zu BṚH. ĀR. UP. S. 23.

विद्योतयितव्य (vom caus. von 1. द्युत् mit वि) adj. *was erhellt —, erleuchtet wird* PRAÇNOP. 4, 8.

विद्योतिन् adj. *erhellend, erleuchtend:* अर्थ° Verz. d. Oxf. H. 1, *b*, 19.

विद्र n. = छिद्र ÇABDAK. im ÇKDR. aus विद्रधि geschlossen.

विद्रथ n. Name eines Sâman Ind. St. 3, 236, *b*.

विद्रघ 1) adj. nach NIR. 4, 15 so v. a. विद्ध, nach SĀJ. so v. a. विदृढ, व्यूढ. विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके ṚV. 4, 32, 23. — 2) m. *eine best. Krankheit* (vgl. विद्रधि) AV. 6, 127, 1. 3. 9, 8, 20.

विद्रधि (wohl von 1. दृ mit वि) m. (nach AK. f.) *eine Art von gefährlichen Abscessen* (äusserlich und innerlich vorkommend) AK. 2, 6, 2, 7 (विद्रुधि LOIS.). H. 471. SUÇR. 1, 31, 18. 52, 18. 61, 3. 92, 6. 20. 121, 10. 279, 11. 298, 9. 299, 16. 2, 96, 13. ÇĀRṄG. SAṂH. 1, 7, 54. VARĀH. BṚH. 23 (21), 8. Verz. d. B. H. No. 972. 975. Verz. d. Oxf. H. 234, *b*, 4. 306, *a*, 28. 32. *b*, 39. fg. 313, *b*, 42. 316, *b*, 5. पित्त° SUÇR. 1, 280, 12. 2, 24, 15. कर्ण° WISE 287. — Vgl. गल° (auch ÇĀRṄG. SAṂH. 1, 7, 79. 86), रक्त°.

विद्रधिका (von विद्रधि) f. *ein in Verbindung mit Harnruhr vorkommender Abscess* SUÇR. 1, 273, 13. 274, 2. WISE 362.

विद्रधिनाशन m. *Hyperanthera Moringa* TRIK. 2, 4, 10.

विद्रव (von 1. द्रु mit वि) m. 1) *Flucht* AK. 2, 8, 2, 79. TRIK. 2, 8, 59. H. 802. an. 3, 712. MED. v. 51. HĀR. 99. सैन्यस्य MBH. 7, 4092. 9, 1644. R. 1, 3, 30 (25 GORR.). 6, 93, 4. VARĀH. BṚH. S. 34, 13. 47, 25. 94, 9. RĀGA-TAR. 8, 1020. — 2) *Entsetzen, Bestürzung* BHAR. NĀṬJAÇ. 18, 18. 58. 64. 19, 63. 88. DAÇAR. 1, 40. fg. 2, 54. 3, 58. 60. SĀH. D. 171. 377. 549. PRATĀPAR. 22, *a*, 5. 41, *a*, 2. — 3) *das Ausfliessen, Schmelzen* ÇKDR. ohne Angabe einer best. Aut. — 4) *Tadel* ÇABDAR. im ÇKDR. — 5) = धी *Verstand* u. s. w. H. an. MED.

विद्राव m. = विद्रव 1) ÇABDĀRTHAK. bei WILSON.

विद्रावण (vom caus. von 1. द्रु mit वि) 1) adj. *in die Flucht jagend:* मदमत्तवारणचमू° (केशरिन्) Spr. 1772. — 2) m. N. pr. eines Dânava HARIV. 200 (°मल्लामुरो die neuere Ausg.). — 3) n. *a) das in-die-Flucht-Schlagen* KHANDOM. 129. — *b) das Fliehen:* कंसविद्रावणकरी MBH. 4, 180.

विद्राविन् adj. 1) *fliehend, davonlaufend* MBH. 6, 2299. — 2) wohl *zum Schmelzen bringend* in वज्रविद्राविणी.

विद्राव्य adj. *in die Flucht zu jagen, zu vertreiben:* वनचारिणः R. 5, 81, 26. अनया मुद्रयापि तुद्रोपद्रवा विद्राव्याः SARVADARÇANAS. 29, 17.

विद्रिय s. अ°.

विद्रुति f. = विद्रव 1) *Flucht* MED. v. 51.

विद्रुधि AK. 2, 6, 2, 7 ed. Lois. fehlerhaft für विद्रधि.

1. विद्रुम (2. वि + द्रुम) 1) *Koralle* (*ein absonderlicher Baum*) AK. 2, 9, 93. TRIK. 2, 9, 30. H. 1066. an. 3, 473. MED. m. 53. nach den Lexicographen masc., welches wir nicht zu belegen vermögen; als neutr. erscheint es MBH. 3, 14222 und SUÇR. 2, 328, 13. — MBH. 1, 7943. 2, 1102. 4, 1827. 6, 406. 450. 13, 2873. HARIV. 7880. R. 1, 74, 5. R. GORR. 2, 12, 32. 4, 41, 57. 5, 19, 12. SUÇR. 1, 228, 5. 259, 17. 2, 166, 15. MṚKKH. 159, 8. RAGH. 13, 13. KUMĀRAS. 1, 45. ṚT. 6, 16. KHANDOM. 80. VARĀH. BṚH. S. 12, 2. 16, 14. 29, 8. 104, 15. KATHĀS. 70, 117. Verz. d. Oxf. H. 57, *b*, 8. BHĀG. P. 3, 15, 22. 23, 17. fg. 4, 25, 16. 7, 4, 9. 8, 15, 16. MĀRK. P. 23, 103. 68, 38. PAṄKAR. 3, 12, 13. °च्छवि Çiva ÇIV. — 2) m. = वृत्त H. an. = रत्नवृत्त MED. — 3) m. *Schoss, Trieb, junger Zweig* AGAJAPĀLA im ÇKDR.; vgl. प्रबाल (richtiger प्रवाल).

2. विद्रुम (wie eben) adj. *baumlos* MBH. 9, 289. VARĀH. BṚH. S. 12, 2.

1. विद्रुमच्छाय (1. वि° + छाया) adj. *korallenfarbig:* अधर Spr. (II) 1470.

2. विद्रुमच्छाय (2. वि + द्रुम - छाया) adj. *keinen Baumschatten gewährend:* मरुमार्ग Spr. (II) 1470.

विद्रुमदण्ड *Korallenstock;* davon nom. abstr. °ता f.: (करः) तन्वन्विद्रुमदण्डताम् so v. a. *eine fünfästige Koralle bildend* KATHĀS. 105, 2.

विद्रुमलता f. 1) *Korallenstock:* विद्रुमलतारक्ताङ्गुलिश्रेणयः (so ist zu schreiben) शार्ङ्गिणः पाणयः Verz. d. Oxf. H. 141, b, No. 289, Z. 4. — 2) *ein best. wohlriechender Stoff,* = नली AK. 2, 4, 4, 17. AUSH. 43.

विद्रुमलतिका f. = विद्रुमलता 2) RĀGAN. im ÇKDR.

विद्वंस् (partic. zu वेद von 1. विद्) 1) adj. = विदत् P. 7, 1, 36. VOP. 26, 139. *aufmerkend; wissend, kundig; verständig, kenntnissreich, gelehrt* AK. 1, 1, 2, 12. 2, 7, 4. 3, 4, 8, 36. 30, 236. H. 341. an. 2, 592 (= ज्ञ, प्राज्ञ, आत्मविद्). MED. s. 38 (= प्राज्ञ, पण्डित, आत्मविद्). HALĀJ. 1, 99. 2, 177. ṚV. 6, 21, 11. 7, 28, 1. अपांसि नर्याणि विद्वान् 21, 4. 1, 24, 13. 70, 6. विद्वांसाविदुरः पृच्छेदविद्वान् 120, 2. वयुनानि 152, 6. 4, 1, 4. अविद्वाँ अथ विदुषे कांसि 19, 10. 5, 41, 7. कृपो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि 46, 1. 6, 54, 1. AV. 9, 3, 3. VS. 6, 26. यदेनो विद्वांश्चकार *wissentlich* 8, 13. AV. 7, 108, 1. mit gen. AV. 2, 1, 2 (vgl. VS. 32, 9). 35, 3 (vgl. TS. 3, 2, 8, 2). एवं विद्वान् 8, 10, 30. 9, 6, 24. TS. 7, 4, 5, 1. ÇAT. BR. 1, 5, 2, 6. 10, 6, 2, 10. श्रोत्रिय 14, 9, 2, 15. ब्राह्मण KAUÇ. 94. M. 1, 97. 103. 2, 1. 3, 51 u. s. w. MBH. 3, 2477. 2988. R. 1, 1, 3. 7, 18. 8, 6. ÇĀK. 2. Spr. (II) 686. fg. 1940. (I) 2793. 2805. fgg. 3351. 3353. 4988. 5003. fgg. VARĀH. BṚH. S. 5, 65. 68, 66. Çiva ÇIV. mit acc.: जन्ममृती *kennend* BHĀG. P. 10, 72, 42. mit loc.: आरण्यके *bewandert in, vertraut mit* Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 1 v. u. in comp. mit dem obj.: वेदतत्त्वार्थ° M. 3, 96. वेद° 9, 334. 11, 4. 76. MBH. 1, 2025. 3, 17205. 5, 6054. R. GORR. 2, 17, 4. 24, 17. 6, 96, 10. PAṄKAR. 1, 1, 64. सर्वार्थ° R. 4, 4, 20. विश्व° Verz. d. Oxf. H. 11, *b*, 3 v. u. दिव्यास्त्र° MBH. 3, 1427. शस्त्रास्त्र° R. 2, 27, 3. R. GORR. 2, 64, 13. RAGH. 16, 81. तुलाधारण° JĀGṄ. 2, 100. अतद्वीर्य° *dessen Mannheit nicht kennend* BHĀG. P. 6, 17, 10. Unregelmässige Formen im Epos: दिव्यास्त्रविदुषौ nom. du. MBH. 4, 1847. विदुषस् nom. pl. 3, 15850. वेद° 12958. VARĀH. BṚH. S. 16, 24. अध्यात्म° MBH. 3, 13966. सर्वास्त्र° 8284. ब्रह्म° 12, 10397. f. विदुषी VOP. 4, 12. compar. विदुष्टर ṚV. 2, 3, 7. 16, 4. 4, 7, 8. 6, 15, 10. 7, 16, 9. 10, 70, 7. compar. f. विद्वत्तरा, विदुषीतरा und विदुषितरा VOP. 7, 49. superl. विद्वत्तम als Beiw. Çiva's ÇIV. — 2) m. N. pr. eines Brahmanen HARIV. 1265. — Vgl. अ° (auch Spr. (II) 686. fgg. (I) 2807), अनेवं°, एवं°, ब्रह्म°.

विद्वज्जन (विद्वंस् + जन) m. *ein kenntnissreicher —, ein gelehrter Mann* Spr. 1051. 1125. 2291. 2806.

विद्वत्ता (von विद्वंस्) f. *Gelehrsamkeit* HARIV. 8760. Spr. (II) 1011. (I) 1802. RĀGA-TAR. 4, 493.

विद्वत्त्व (wie eben) n. dass. Spr. 2804.

विद्वन्मण्डन (विद्वंस् + म°) n. Titel einer Schrift HALL 152. 154.

विद्वन्मनोरञ्जिनी f. Titel eines Commentars zum Vedântasâra GILD.

Bibl. 421. Hall 101.

विद्वन्मोदतरंगिणी f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 291. fgg. Verz. d. B. H. No. 543. Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629.

विद्वलं (von 1. विद्) adj. *klug, listig* ṚV. 10,159,1. AV. 10,1,9.

विद्विष् (1. द्विष् mit वि) m. *Feind* Jâgñ. 1,162. MBh. 8,230. Ragh. 3,60. Kâm. Nītis. 13,70. Spr. (II) 613. 689. 1843. (I) 1051. 4176. Kathâs. 19,72. 112. 34,192. Râga-Tar. 6,245. Prab. 104,11. Bhâg. P. 3,17,29. 6,9,11. 7,1,15. Daçak. 94,2. विबुध° MBh. 1,4801. 3,8798. 4,1728. Bhâg. P. 4,7,32. 20,22. श्रुति° LA. (III) 92,8. — Vgl. अशिमि°, ब्रह्म°, मधु°.

विद्विष्ट s. u. 1. द्विष् mit वि; davon °ता f. *das Verhasstsein:* न च विद्विष्टतां लोके गमिष्यामो महीक्षिताम् MBh. 1,7041.

विद्विष्टि (von 1. द्विष् mit वि) f. *Hass, Feindschaft* Kâm. Nītis. 5,31.

विद्वेषं (wie eben) m. 1) *Hass, Feindschaft, Abneigung* AK. 1,1,7,25. H. 730. AV. 5,21,1. Kâtj. Çr. 25,14,17. पार्थेषु (Gegens. भक्ति) MBh. 7,7180. Kathâs. 24,227. 39,203. 42,87. 63,174. Râga-Tar. 2,69. 76. 4,87. Bhâg. P. 4,2,3. राज्ञो (obj.) ऽसंमतवृत्तीनां विद्वेषो बलवानभूत् Bhâg. P. 6,14,42. fg. देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु। धर्मे मयि च 7,4,27. विद्वेषं विससर्ज ह *gab auf* 4,20,18. विद्वेषं कर् *gegen Jmd* (loc.) *Feindschaft an den Tag legen* 2,1. स्वजनजनविद्वेषकारण (दारिद्र्य) *verhasst machend bei* Mṛkkh. 8,19. विद्वेषं चाधिगच्छति *macht sich verhasst* M. 8,346. Spr. (II) 219. विद्वेषमृच्छति Bhâg. P. 5,13,11. विद्वेषं स कदाचिन्न गच्छति Mârk. P. 72,40. लोकविद्वेषमागताः Kâm. Nītis. 6,10. कम्पनाधिपतौ राज्ञ्या विद्वेषो ऽग्राहि *Hass fassen* Râga-Tar. 6,233. अन्न° *Widerwille gegen Speisen, Appetitlosigkeit* Suçr. 1,120,14. 121,7. °कर् 116,5. — 2) °कर्मन् und विद्वेष allein *eine Zauberhandlung* oder *eine Zauberformel, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt,* Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,22. 30. 34. 37. 98,*a*,1. 4. 5. — 3) *stolze Gleichgiltigkeit auch bei Erreichung von Erwünschtem:* विद्वेषो ऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः Bhar. 8,3 beim Schol. zu Nalod. 2,55. — 4) Bez. *einer Sippe feindseliger Geister:* विद्वेषश्च तथा गणाः (महावेगस्तथापरः die neuere Ausg.) Hariv. 12868. — Vgl. अ°.

विद्वेषक (wie eben) adj. *hassend, sich feindlich verhaltend gegen:* धर्म° MBh. 13,3568.

विद्वेषण (von 1. द्विष् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. proparox. *verfeindend* ṚV. 8,1,2. — 2) f. ई N. einer bösen Genie, einer Tochter Duḥsaha's, Mârk. P. 51,6. विद्वेषिणी st. dessen 117. द्वेषणी 47. — 3) n. *a*) *das Hassen, das Hegen einer feindseligen Gesinnung:* तस्य (obj.) MBh. 3,2305. ब्राह्मणानां परीवादो मम विद्वेषणं महत् 13,6006. नास्तिवादार्थशास्त्रं हि धर्मविद्वेषणं परम् Hariv. 1505. — *b*) *das sich-verhasst-Machen, ein Mittel sich verhasst zu machen:* दाक्षिण्यं सुभगत्वहेतुर्विद्वेषणं तद्विपरीतचेष्टा Varâh. Bṛh. S. 75,5. विद्वेषणं परमं जीवलोके कुर्यान्नरः पार्थिव याच्यमानः *sich verhasst machen* MBh. 3,13257. — *c*) *eine Zauberhandlung, durch die man Hass und Feindschaft zu erregen bezweckt,* Verz. d. Oxf. H. 94,*a*,14. 322,*a*, No. 764 (Verz. d. B. H. No. 905).

विद्वेषवीर m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,8 (Hall 167).

विंद्वेषस् (2. वि + द्वे°) adj. *der Feindschaft entgegentretend* ṚV. 8,22,2.

विद्वेषिता (von विद्वेषिन्) f. *Hass, Feindschaft:* गृह्णन्विद्वेषिताम् Râga-Tar. 6,170.

विद्वेषिन् (von 1. द्विष् mit वि) 1) nom. ag. *Hasser, Feind:* अस्माकम् Prab. 31,11. Spr. 1371. मार° Râga-Tar. 3,7. ज्ञउसमाज्ञ° Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. धर्म° MBh. 13,6740. शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दा *hassend, anfeindend* so v. a. *wetteifernd mit* Çaut. 30. — 2) f. विद्वेषिणी N. einer bösen Genie, einer Tochter Duḥsaha's, Mârk. P. 51,117; vgl. विद्वेषण 2).

विद्वेष्टर् (wie eben) nom. ag. *Hasser, Feind* Kâvjâd. 3,132.

विद्वेष्य (wie eben) adj. *verhasst, odiosus:* समस्त° Râga-Tar. 8,1388.

1. विध्, विधंति (विधाने) Dhâtup. 28,36. विधेम (als परिचरणकर्मन्) Naigh. 3,5. अंविधत्, विधंत्. 1) *den Göttern* (dat.) *dienen, Ehre erweisen; sich hingeben:* त्वं पायुर्दमे यस्ते ऽविधत् ṚV. 2,1,7. 9. कथा विधात्यप्रचेताः 1,120,1. यो वो धामभ्यो ऽविधत् 8,27,15. वाघते, विधते 4,2,13. 7,75,6. 1,136,5. 8,5,22. 10,40,8. Indra als विधत् bezeichnet 8,67,7. अच्छम्बट्कारमस्यां विधेम TBr. 1,2,1,3. med. ṚV. 8,19,16. Mit instr. der Sache: ऊर्जा ṚV. 2,6,2. स्तोमैः 9,3. गिरा 24,1. हव्यैः 26,4. 35,12. समिधा 7,14,2. मतिभिः 8,23,23. नमसा 1,114,2. AV. 10,4,23. Bhâg. P. 3,13,41. हविषा ṚV. 10,121,1. fgg. oft im AV. TBr. 3,1,1,3. Çvetâçv. Up. 4,13. Mit acc. der Person VS. 8,25. नक्षत्रमस्य हविषा विधेम TBr. 3,1,1,3. — 2) *dienend* oder *ehrend hingeben, widmen;* mit acc.: नमउक्तिम् ṚV. 1,189,1. आकूतिम् 8,23,21. यज्ञम् 3,4,2. वचः 8,50,9. यस्ते सोमा विधन्मनः 9,114,1. हविः AV. 6,97,1. तस्मै नमो भगवते नु विधेम तुभ्यम् Bhâg. P. 3,9,4. शुष्मं त एना हविषा विधेम etwa *wir wollen dir Muth geben* ṚV. 8,85,8. med.: रत्ना 3,3,1. Die Formel वाचस्पते विधे नामन्। विधेम ते नाम। विधेस्त्वमस्माकं नाम्ना द्यां गच्छ erklärt Sâj. Vâkaspati, *Ordner, Beherrscher! Deinen Namen wollen wir preisen* (oder *dir wollen wir Opferspeise zurüsten*). *Gieb uns* (Ruhm oder Nahrung). *Durch* (unsere) *Opferspeise geh zum Himmel!* Man könnte etwa erklären: Vâkaspati, *Huldiger genannt* (für विधिनामन्), *wir huldigen deinem Namen! Huldige in unserm Namen* (den Göttern), *geh zum Himmel!* Çâṅkh. Çr. 10,18,12.

— उप *huldigen:* उप घ्रंसमग्रयो विधन्नित् ṚV. 1,149,1.

2. विध्, विन्धंते *leer werden von, mangeln einer Sache* (instr.), *viduor:* अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते ṚV. 8,9,6. (इन्द्रः) य उक्थेभिर्न विन्धते Vâlakh. 3,3. mit Acc. der Ergänzung: न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ṚV. 1,7,7. durch विन्दामि erklärt Nir. 4,18. — Vgl. विधवा, विधुर.

3. विध् s. व्यध्.

4. विध् (von व्यध्) nom. ag. am Ende eines comp. in मर्मा°, मृगा°, श्वा°, हृदया°; vgl. P. 6,3,116.

5. विध्, वैधति v. l. für विद्य् Dhâtup. 2,32. fg.

विध m. = विमान, हस्त्यन्न, प्रकार, वेधन (von व्यध्), ऋद्धि Rabhasa und Agaja bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — Vgl. विधा.

विधन (2. वि + धन) adj. *besitzlos, arm* Varâh. Bṛh. S. 68,70. Bṛh. 12,18. fg. 18 (16), 7. 21 (19), 2. — Pañkat. II, 156 falsche Lesart; vgl. Spr. (II) 2189.

विधनता (von विधन) f. *Armuth* Spr. 1145.

विधनीकर् (विधन + 1. कर्) *besitzlos —, arm machen:* द्यूतेन विधनीकृतः Kathâs. 24,58.

विधनुष्क (2. वि + धनुस्) adj. *bogenlos* MBh. 7,7702. 14,2456.

विधनुस् adj. dass. MBh. 8,4587. 10,805.

विधन्वन् adj. dass. MBh. 7,5756.

विधमचूडा (वि°, 2. imperat. von धम् mit वि, + चूडा) f. gaṇa मयूरव्यंसकादि zu P. 2,1,72.

विधमन (von धम् mit वि) 1) adj. *ausblasend:* वह्नेः Suçr. 1,178,9. — 2) n. *das Zerblasen* u. s. w.: °शील als Erklärung von विधु Nir. 14,18.

विधमा (wie eben) f. Bez. einer Unholdin AV. 1,18,4.

विधरण (von धर् mit वि) adj. (f. ई) 1) proparox. *zurückhaltend, hemmend:* सेतु Çat. Br. 14,7,2,24; vgl. विधृति. — 2) *erhaltend:* विधरणी Çat. Br. 14,9,3,3. — विधरणी AV. 9,7,4.

विधर्तर् (wie eben) 1) *Vertheiler, Ordner; Träger, Erhalter* ṚV. 2,1,3. 28,4. 7,7,5. पुत्रमदितेर्यो विधर्ता 7,41,2. जनानाम् 56,24. AV. 10,8,36. 13,4,3. VS. 15,10. 17,82. — 2) विधर्तरि loc. infin. zu धर् mit वि. यस्य हिता विधर्तरि । हस्ताय वज्रः प्रति धायि *zu halten* ṚV. 8,59,2. स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति *um zu vertheilen* 9,47,4.

1. विधर्म (2. वि + धर्म) m. *Unrecht, Ungesetzlichkeit:* °स्थ MBh. 12,8397. R. 5,47,30. वैरं विधर्माश्रितैः Varâh. Bṛh. 8,16. = धर्मबाध Bhâg. P. 7,15,13. 12. 3,28,2. Mârk. P. 113,30. Pañkar. 1,2,41. 2,7,40. °तस् *auf ungerechte Weise* MBh. 12,3163.

2. विधर्म (wie eben) adj. 1) *ungesetzlich:* विधर्मे पथि वर्तते MBh. 5,4889. अन्तेषु दोषा बहवो विधर्माः श्रुतास्त्वया 8,3508. — 2) *keine charakteristischen Eigenschaften besitzend, qualitätslos* (= निर्गुण Nîlak.): Kṛshṇa MBh. 12,1508. — Vgl. वैधर्म्य.

विधर्मक adj. = 2. विधर्म 1): विधर्मकाणि कुर्वन्ति MBh. 7,8989 nach der Lesart der ed. Bomb., विधर्मिकाणि ed. Calc.

1. विधर्मन् (von धर् mit वि) 1) m. *Halter, Erhalter; Anordner* ṚV. 5,17,2. AV. 16,3,2. — 2) n. *a) das Umfangende: Behälter; Grenze:* हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि ṚV. 9,64,9. 4,9. 97,40. 100,7. 109,6. रजसो विधर्मणि *innerhalb* 86,30. 6,71,1. पश्यन्नर्धस्य चक्रसा विधर्मन् *in seinem Kreise* 10,123,8. परमं वा एतदृक्छविधर्म Pañkav. Br. 15,1,2. संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् *Zusammenhalt* ṚV. 10,46,6. — *b) Capacität, Umfang:* समुद्रो अस्मि विधर्मणा AV. 16,3,6. — *c) Vertheilung, Anordnung, Verfügung:* तवेमा पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ṚV. 9,86,29. 1,164,36. 3,2,3. नि यन्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे येमिरे 8,7,5. SV. I, 5, 2, 3, 2; vgl. AV. 7,22,1. — *d)* N. eines Sâman Ind. St. 3,236,b. प्रजापतेर्विधर्म desgl. 224,b.

2. विधर्मन् (2. वि + ध°) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBh. 3,12860.

विधर्मिक MBh. 7,8989 fehlerhaft für विधर्मक.

विधर्मिन् (von 2. वि + धर्म) adj. *gegen das Gesetz verfahrend* MBh. 7,9114. Hariv. 1510. Mârk. P. 34,82.35,34. *ungesetzlich:* वाच् MBh. 3,17293.

विधव् (von 2. विधु), विधवति *dem Monde gleichen:* विधवति मुखाब्जमस्याः Sâh. D. 273,15. सविता विधवति Kâvjapr. 139,13.

विधवता (von विधवा) f. *Wittwenstand* Varâh. Bṛh. 24 (22),14.

विधवन (von 1. धू mit वि) n. *das Abschütteln* Nir. 3,15.

विधवयोषित् f. *Wittwe* Varâh. Bṛh. S. 16,34. — Vgl. विधवा.

विधवा (von 2. विधु; vgl. Roth in Z. f. vgl. Spr. 19,223) f. *Wittwe* (häufig auch adj. in Verbindung mit स्त्री, योषित्, नारी u. s. w.) Nir. 3,15. AK. 2,6,1,11. Trik. 2,6,4. H. 530. Halâj. 2,332. कस्तं मातरं विधवामचक्रत् ṚV. 4,18,12. को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ 10,40,2. युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः *viduum cultorem* (wir vermuthen Dehnung aus विधवम्, wodurch sich auch ein masc. *Wittwer* ergäbe) 8. — Shaḍv. Br. 3,7. M. 8,28. 9,60. 62. 64. °वेदन 65. 175. °गामिन् Jâǵn. 2,234. MBh. 1,6152. 9,1787. Hariv. 7918. R. 2,21,60. 42,21. 66,11. 19. R. Gorr. 2,34,3. 4,18,27. 6,8,8. Spr. 4493. Varâh. Bṛh. S. 86,79. 103,1. 6. 10. Bṛh. 24(22),9. Pañkat. 186,18. °धर्म Verz. d. Oxf. H. 85,b,35. 277,b,6. विधवास्त्री (vgl. dagegen विधवयोषित्) Spr. (II) 1265. मेदिनी *ihres Gatten* d. i. *ihres Fürsten beraubt* R. 2,51,12. 86,13 (94,14 Gorr.). लङ्का Bhâg. P. 9,10,28. — Vgl. अ° (auch Kauç. 72. Hariv. 7841. R. 1,1,88), वैधवेय, वैधव्य.

विधस् m. = वेधस् = ब्रह्मन् Uṇâdik. im ÇKDr.

विधा (1. धा mit वि) f. 1) *Verhältniss, Maass; Weise, Art;* = प्रकार AK. 3,3,18,104. Trik. 3,3,222. H. an. 2,249. Med. dh. 17. यज्ञस्य Çat. Br. 2,6,1,13. 4,1,2,25. देवानां वै विधामनु मनुष्याः 6,7,4,9. 10,2,3,6. 11. 4,3. 6,1. 10. यस्यैषा विधा विधीयते TS. 5,3,4,7. pl. in einer Formel VS. 14,7. Âçv. Gṛhj. 2,2,4. यया कया च विधया *auf irgend eine Weise* Taitt. Up. 3,10,1. न च विधाद्वयरहितं विधातरं संभवति Nîlak. 164. Kusum. 21,10. 38,14. चतस्रो विधाः Sarvadarçanas. 147,13. Kuvalaj. 48,b,5. = भेद 49,a,1. Häufig am Ende eines adj. comp. जातिविध *mannichfaltig* Kaurap. 30. उक्तविधम् Schol. zu Naish. 22,48. एकशत° Çat. Br. 10,2,4,3. nach भोरिकि u. s. w. (das comp. ein proparox.) so v. a. *voll von* P. 4,2,54. Vgl. अनेकविध (auch Paribhâshâ zu P. 1,1,50. Kathâs. 24,17. Pañkat. 61,10), अष्ट° (auch Spr. (II) 1091), अस्मद्विध, एक°, एवं°, कति°, गुण°, चतुर्विध, तथा°, तद्विध, तादृग्विध, त्रि°, त्वद्विध, दश°, दुर्विध, द्वि°, नव°, नाना°, पुरुष°, पृथग्विध, बहु°, भवद्विध, मद्विध, यथा°, यद्विध, युष्मद्विध, वयो°, वि°, षड्विध, स°, सप्त°, सु°; विधा auch als adv. in त्रि° (s. u. त्रिविध) und द्वि° (in den Nachträgen). — Die Lexicographen kennen noch folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,104. H. an. कर्मन् Trik. 3,2,1. H. 1497. वेतन oder मूल्य AK. 2,10,38. H. 362. H. an. Med. ऋद्धि (hier wohl nur eine Verwechselung mit एधा; vgl. AK. 3,3,10) H. an. Med. *Elephantenspeise* (vgl. विधान) H. an. Med. (hier ist गजाशने zu lesen). वेधन (also von व्यध् oder eine blosse Verwechselung mit वेतन) Trik. 3,3,222.

विधातर् (von 1. धा mit वि) nom. ag. 1) m. *Vertheiler, Verleiher; Festsetzer, Ordner, Urheber, Schöpfer* u. s. w. Naigh. 3,15 (= मेधाविन्). 5,5. Nir. 11,11. ṚV. 10,82,2. 3. 167,3. विधातारो वि ते दधुरजस्राः 4,55,2. देव्यः (प्रजापति Sâj.) 6,50,12. 9,81,5. AV. 3,10,10. 5,3,9. Çâñkh. Gṛhj. 2,14. Pâr. Gṛhj. 2,9. zur Erklärung von वेधस् Nir. 10,6. — त्वं नस्त्राता विधाता च *du bist unser Retter und Verfüger* sagen die Götter zu Agastja MBh. 3,8809. विधाता (= विहितकर्मणामनुष्ठाता Kull.) शासिता वक्ता मैत्रो ब्राह्मण उच्यते M. 11,35. mit विधातर् spricht König Dilîpa den Vasishṭha an Ragh. 1,70. अश्वस्तन° *der Vorkehrungen trifft für* MBh. 12,8920; vgl. अनागत° (auch MBh. 12,4246. Spr. (II) 268). तपसः फलानाम् *Verleiher* Kumâras. 1,58. प्रसिद्धनेपथ्यविधेः *Ausführer* Kumâras. 7,36. नदीनद° *Urheber* Pañkar. 4,8,45. H. 5. जगताम् *Schöpfer* Pañkar. 1,2,54. 6,58. 12,3. जगद्विधातर् 10,14. *der Schöpfer, Bestimmer der Geschicke der Menschen,* Brahman AK. 1,1,1,12. H.

212. an. 3,303. Med. t. 137. MBh. 3,13328. Hariv. 3367. 4588. Spr. 544 (II). 2418, v. l. विधातृविहितं मार्गं न कश्चिद्तिवर्तते 2809. विधात्रा रचिता रेखा ललाटे 2810. 2971. 3340. 4147. 4273. Ragh. 1,35. 6,11. 7,22. Varâh. Bṛh. S. 53, 3. Mâlatîm. 18, 7. Kathâs. 26, 82. 30, 134. 35, 139. विधुर 123,339. Râǵa-Tar. 2,89. 4, 332. 8,1771. प्रतिकूल Prab. 44,14. Bhâg. P. 3,8,15. 7,2,33. 8,2,31. Dhûrtas. 91, 13. Pañkat. 138, 23. विपरीत so v. a. *ein widerwärtiges Geschick* Spr. 5401. विधाता वेधसाम् *der Schöpfer unter den Schöpfern* Kumâras. 2,14. एवं विधातारः प्रसीदन्ति Çâk. 110,13. = प्रजापति, काल, भुवनप्रणेतर् Javaneçvara in Z. f. d. K. d. M. 4,343. 345. Vidhâtar als Herr der 2ten Tithi (Brahman ist Herr der ersten) Varâh. Bṛh. S. 99,1. Vishṇu so genannt H. ç. 70. Bhâg. P. 3,1,42. Çiva 4,5,11. Çiv. der Liebesgott H. an. Med. Dhâtar und Vidhâtar als verschiedene göttliche Wesen neben einander MBh. 3,10419. 15591. R. 2,25,8 (21 Gorr.). Bhâg. P. 5,23,5. Mârk. P. 51,88. unter den Âditja Bhâg. P. 6,6,37. als Söhne Brahman's MBh. 1,2614. Bhṛgu's VP. 59. 82. Bhâg. P. 4,1,43. Mârk. P. 52,14.16. — 2) f. विधात्री a) *festsetzend, bestimmend, vorschreibend* Comm. zu Kâtj. Çr. 23, 13. *Urheberin, Schöpferin:* धातुः Pañkar. 2,4,7. त्रिभुवन° Tantras. im ÇKDr. — b) N. pr. eines Wesens im Gefolge der Devî Wilson, Sel. Works II, 39. — c) *langer Pfeffer* (पिप्पली) Çabdak. im ÇKDr.

विधातव्य (wie eben) adj. 1) *festzusetzen, zu bestimmen:* देशो ऽयं स विधातव्यो यत्र नः संगतिर्भवेत् Hariv. 15748. — 2) *herbeizuschaffen, zu besorgen:* आसनानि च दिव्यानि यानानि शयनानि च । विधातव्यानि पाण्डूनाम् MBh. 1,5728. fg. — 3) *zu erweisen, zu veranstalten, in's Werk zu setzen, zu verrichten:* त्वया रक्षा विधातव्या कृष्णायाः फाल्गुणेन च MBh. 4,90. मयि यत्नाः Hariv. 298. नोपदेशो विधातव्यो मूर्खस्य Spr. 1651. तस्य पूजा 1968. उपासनम् Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 58 und zu Khând. Up. S. 50. किमेतस्य विधातव्यमस्माभिः *was sollen wir für ihn thun?* Kathâs. 62, 81. तैरवश्यं विधातव्यं व्यलीकं किंचिदेव नः so v. a. *die werden uns gewiss einen Schabernack spielen wollen* R. 5,41,10. न राजपुत्रस्य कृते चिन्ताधुना त्वया विधातव्या so v. a. *du musst dir keine Sorgen machen* Kathâs. 24,4. — 4) *was man sich angelegen sein lassen muss, worauf man bedacht sein muss:* मया ह्रीदं विधातव्यं भवतां यद्धितं भवेत् MBh. 1,1621. भवता यद्विधातव्यं तन्नः श्रेयः 5,2285. इह कीर्तिर्विधातव्या सा च युद्धेन नान्यथा 9,269. तथा मया विधातव्यं (impers.) विश्राम्यति यथा कपिः R. 5,7,4. MBh. 3,1802 (विधातव्यं mit der ed. Bomb. zu lesen). Pañkat. 85,6. — 5) *zu gebrauchen, anzuwenden:* कर्मण्येषा षष्ठी विधातव्या Sarvadarçanas. 135,18. बिन्दुप्रवेशको नेह विधातव्यौ Sâh. D. 193,4. तस्मादमी (नियोगिनः) विधातव्याः *zu verwenden, anzustellen, einzusetzen* Spr. 1593.

विधातृका (von 2. वि + धातर्) adj. zur Erklärung von विधवा Nir. 3,15.

विधातृभू (विधातर् + 2. भू) m. Bein. Nârada's Trik. 2,7,17. — Vgl. विधिपुत्र.

विधात्रायुस् (विधातर् + आयुस्) m. *eine best. Blume,* = सूर्यशोभा Çabdak. im ÇKDr.

विधान (von 1. धा mit वि) 1) adj. (f. ई) *regelnd:* अङ्क्षो विधान्यामेकाष्टकायाम् TS. 3,3,8,4. — 2) m. N. pr. eines Sâdhja Hariv. 11536. विज्ञान die neuere Ausg. — 3) n. a) *Ordnung, Maass; Festsetzung, Bestimmung, Vorschrift, Regel, das zu beobachtende Verfahren, Art und Weise des Verfahrens:* मासाम् ṚV. 10,138,6. यथा विधाना विदधुर्ऋभूणाम् 4,51,6. तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः *eine Ordnung von Sechsen bildend* 7,87,5. Kâtj. Çr. 1,2,19. 7,8. 9,5. अकृतक्रिया हि विधानम् *die Regel verlangt* Lâṭj. 10,7,15. स्तोम° 6,2,1. ṚV. Prât. 4,7. 6,4. 11,12. 21. त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयंभुवः । अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित्प्रभो ॥ *der von* Svajambhu *eingesetzten Ordnung* M. 1,3. सर्वं विधानं पाञ्चयज्ञिकम् 3,286. दैवमानुष 7,205. यज्ञदानतपःक्रियाः — विधानोक्ताः Bhag. 17,24. जातकर्माणि सर्वाणि पुंवद्विधानयुक्तानि *wie sie für ein männliches Individuum festgesetzt sind* MBh. 5,7407. 12,493. 495. 14,318. ददर्श भारतं सैन्यं विधानं विश्वकर्मणः so v. a. *nach* Viçvakarman's *Vorschrift aufgestellt* R. 2,91,28. Kâm. Nîtis. 15,48. Kathâs. 61,269. Bhâg. P. 5,3,2. अकपादयोर्विधाने *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,102. एतद्विधानं विज्ञेयं विभागस्यैकयोनिषु M. 9,148. Kâr. zu P. 2,1,32. Kâm. Nîtis. 19,28. Varâh. Bṛh. S. 43,12. Pañkar. 1, 4,86. मृत्योः so v. a. *der gesetzmässige Tod* MBh. 1,7639. 7643. सर्वशास्त्रविधानज्ञ *die Bestimmungen aller Lehrbücher* 13,2499. शास्त्रविधानोक्तं कर्म Bhag. 16,24. आम्नाय° Bhâg. P. 8,20,11. ऋत्विगादि° *die für — geltenden Bestimmungen* Ind. St. 1,36,17. स्नातिप्रश्न° M. 1,115. MBh. 1, 49. Bhâg. P. 1,8,20. Mârk. P. 119,17. भावार्थे त्वतलादीनां विधानात् *weil die Suffixe* त्व, तल् *u. s. w. vorgeschrieben sind, als Regel gelten* Sarvadarçanas. 144,20. 126,1. अस्यैवेदं स्वरविधानम् Kâç. zu P. 1,2,35. Schol. zu P. 1,2,54. 2,1,13. 6,4,93. विधानमिदमाचरेत् *eine Regel befolgen* M. 7,113. 226. एतद्विधानमातिष्ठेत् dass. 8,244. विधानेन *nach der Regel, — Vorschrift* R. 4,56,4. अनेन विधानेन M. 7,181. 8,228. 9,69. 128. Varâh. Bṛh. S. 48,87. राक्षसेन विधानेन (उपयेमे) Bhâg. P. 10,52,18. शास्त्रोक्तविधानेन Pañkat. 34,11. पाकयज्ञविधानेन *nach den für — geltenden Bestimmungen* M. 11,118. Bhâg. P. 9,10,29. Mârk. P. 75,16. देशकालविधानेन so v. a. *am rechten Orte und zu rechter Zeit* Spr. 4215. देशकालविधानज्ञ R. 4,40,16. Bhâg. P. 9,20,16. संख्याविधानात् *nach mathematischer Regel, mathematisch* Varâh. Bṛh. S. 12,14. विधानतस् *der Vorschrift gemäss* Jâǵñ. 1,234. R. 1,72,21. 2,26,13. R. Gorr. 2,56,29. 5,72,6. Mârk. P. 16,57. 69,54. Weber, Kṛshṇaǵ. 296. अविधानतस् M. 9,144. 12,7. सुविधानतस् *genau nach der Vorschrift* Kâm. Nîtis. 13,76. वेदस्मृतिविधानतस् M. 6,89. R. Gorr. 1,19,29. विधानैस् = विधानेन, विधानतस् MBh. 14,291 (निवापैस् ed. Bomb.). R. 2,83,26. — b) *Methode, Verfahren, Recept* (in der Medicin) Suçr. 1,159,17. 2,12,15. 51, 9. 105,7. 227,6. °ज्ञ 299,19. *Regime* (des Essens) 486,12. — c) *Bestimmung, Schicksal:* अर्थानर्थौ सुखं दुःखं विधानमनुवर्तते MBh. 12,850. 852. 6755. Spr. 5186. 5271. — d) *das Treffen von Anordnungen, — Verfügungen, Ergreifen von Maassregeln:* स्वयं शाधि यज्ञे विधानम् MBh. 14, 280. °ज्ञ R. 1,38,4. कृत्वा विधानं मूले M. 7,184. MBh. 5,6088. करिष्यामो विधानं ते येन त्वं वर्तयिष्यसि Hariv. 1269. R. 1,11,17. विधानं द्विगुणं कृत्वा 6,17,2. Pañkar. 1,14,8. तस्माद्विधाय नगरे विधानं सचिवैः सह MBh. 5,7472. R. 7,21,5. विधानमनुतिष्ठन्तं प्राणिनो यस्य यादृशम् 2. वालिवध° 4,12 in der Unterschr. पुर° 6,12 in der Unterschr. रक्षाविधानं मनसा स संचिन्त्य MBh. 13,2267. अनागतविधानं च कर्तव्यम् Spr. (II) 270. R. 3,30,11. अनागतविधानं च तस्यार्थे प्रविधीयताम् 4,14,29. अश्वस्तन°

M. 11,16. — e) *Mittel:* तदस्ति किंचिदस्य डुरात्मनः प्रतिषेधविधानम् PAṄKAT. 258,11. — f) *das Aufstellen:* किंस्त्रयन्त्र° JÂGṄ. 3,240. — g) *das Schöpfen, Bilden* RAGH. 6,11. 7,14 (= KUMÂRAS. 7,66). Spr. 2858. — h) *das Veranstalten, Ausführen, Ausrichten:* यदानुमन्यसे कालं यस्मिन्देशे यथा यथा। तथा तथा विधानाय स्वयमाज्ञापयस्व माम्॥ MBH. 1,5316. महायज्ञ° M. 1,112. वैवाह्निके ऽग्नौ कुर्वीत गृह्यं कर्म यथाविधि। पञ्चयज्ञविधानं च 3,67. ज्ञपयज्ञविधानेषु MÂRK. P. 51,59. चान्द्रायणविधानैर्वा वर्तयेत् M. 6,20. अभिषेकविधानं संहृत्य R. 2,22,11. यात्रा° VARÂH. BRH. S. 51,7. रात्रियुद्ध° R. GORR. 1,4,108. डुर्गकर्म° 110. प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुः 13,4. प्रतिकार° RAGH. 8,40. नेपथ्य° 14,9. ÇÂK. 3,6. प्रज्ञानेम° RAGH. 18,8. प्रस्तुतविधानाय PRAB. 18,15. ज्ञेयता° Schol. zu KAP. 1,96. वेदिस्थलविधानानि *Herrichtung* R. 2,56,29. — i) *Aufzählung, Einzeldarlegung* SUÇR. 2,559,12. — k) in der Dramatik *Veranlassung sowohl zur Freude als auch zum Leid* SÂH. D. 338. 346. PRATÂPAR. 21,a,5. — Nach den Lexicographen hat विधान n. folgende Bedeutungen: विधि AK. 3,4,18,102. TRIK. 3,2,1. H. an. 3,417. fg. प्रेरण, अभ्यर्चन, धन, चेतन, उपाय, प्रकार H. an. हस्तिकवल oder करिकवल (vgl. विधा) H. an. HÂR. 191. विधान mit कृत u. s. w. componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2,1,59. — तथाविधान HIT. 101,12 fehlerhaft für तथाविध (wie die v. l. hat); देवविधानं MBH. 6,3030 fehlerhaft für देवो निधानं, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. श्राद्धविधान, ऋग्विधान, पाद°, यथाविधानम् (auch KHÂND. UP. 8,15), रुद्रविधान, वास्तु°, साम°.

विधानक (von विधान) n. 1) *die für Etwas geltenden Bestimmungen, die bei Etwas zu beobachtende Regel:* यज्ञुषाम् Ind. St. 3,270. PAṄKAR. 2,4,1. (तस्मै) ददौ सुलोचनामस्त्रमर्थितं सविधानकम् so v. a. *nebst Anweisung zum richtigen Gebrauch desselben* KATHÂS. 49,181. — 2) = व्यथा ÇABDAR. im ÇKDR.

विधानकल्प m. Titel einer Schrift Ind. St. 3,279.

विधानग m. *ein gelehrter Mann* (पण्डित) ÇABDAR. im ÇKDR.

विधानपारिजात m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1403.

विधानमाला f. desgl. MACK. Coll. I, 28.

विधानसप्तमी f. Bez. *des 7ten Tages in der lichten Hälfte des* Mâgha WILSON, Sel. Works II, 200.

विधायक (von 1. धा mit वि) nom. ag. 1) *vorschreibend, eine Vorschrift enthaltend* ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 58. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 9,11, 16. विवाहविधायकशास्त्र KULL. zu M. 9,65. Schol. zu P. 1,2,43. षत्वस्य विकल्पविधायकमेतद्वचनम् zu 8,3,119. अविधायकत्व n. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 9,11,16. — 2) *Einsetzer:* पञ्चकृत्य° Verz. d. Oxf. H. 90,b, No. 147, Z. 8. चतुर्वेद° PAṄKAR. 4,3,153. — 3) *Gründer, Erbauer, Stifter:* जयस्वामिपुरस्य RÂGA-TAR. 1,169. 4,80. 6,186. — 4) *verrichtend, ausführend, an den Tag legend:* नवायास° (so ist vielleicht zu lesen) RÂGA-TAR. 6,266.

विधायिन् (wie eben) nom. ag. 1) *regelnd, vorschreibend, eine Vorschrift ertheilend in Betreff von:* विधिर्विधायकः NJÂJAS. 2,1,62. विधेरपि विधायिनीं वाणीम् LA. (III) 89,3. गुणवृद्धि° (पाणिनि) RÂGA-TAR. 4, 634. भूतनिष्ठा° 636. An den beiden letzten Stellen zugleich *bewirkend.* — 2) *Gründer, Erbauer, Stifter:* पुरत्रय° RÂGA-TAR. 1,168. 5,37. 295 (वि° st. वै° zu lesen). 6,169. — 3) *verrichtend, ausführend:* वैश्यैः पण्यवृत्तिविधायिभिः (वैश्यवृत्तिमनुष्ठितैः die neuere Ausg.) HARIV. 402. तादृक्कार्य° KATHÂS. 42,113. बलिहोम° RÂGA-TAR. 1,181. 6,11. स्वाज्ञा° 1,156. KATHÂS. 52,336. इच्छा° 50,150. यत्किंचनविधायिता (so ist zu schreiben) RÂGA-TAR. 1,354. 3,212. यत्किंचनविधायित्व 4,610. — 4) *bewirkend, verursachend:* नानाडुःख° HARIV. 14596. कोप° Spr. 2662. सिद्धि° Verz. d. Oxf. H. 99,b,16. प्रज्ञाह्लाद° RÂGA-TAR. 4,394. गुणवृद्धि° 634. भूतनिष्ठा° 636 (vgl. u. 1). मानन्नति° 5,255. प्रतिनादविधायिता H. 65. — Vgl. प्राय°.

विधार (von धर् mit वि) m. etwa *Behälter:* अग्नेरिवास्य हि पवमान सूर्ये विधारे शक्मना पयः RV. 9,110,4.

विधारण (wie eben) 1) adj. *scheidend, trennend:* सेतुं विधारणं पुंसाम् BHÂG. P. 4,2,30. — 2) n. a) *das Anhalten:* रथ° KATHÂS. 56,376. *das Verhalten, Unterdrücken:* व्यञ्जन° *eines Consonanten in der Aussprache* AV. PRÂT. 1,43. कोप° MBH. 2,2577. वेग° *der Ausleerungen* SUÇR. 1, 48,17. 258,5. 290,18. 2,513,5. रेतसः 184,19. *des Athems* JOGAS. 1,34. KAP. 3,33. — b) *das Tragen:* गङ्गापि तं गर्भमसहन्ती विधारणे MBH. 9, 2458. गोवर्धन° HARIV. 16336. KHANDOM. 97. BHÂG. P. 10,26,14. उष्ट्रकण्टकखड्गास्थितैमवस्त्र° MÂRK. P. 51,10. जीर्णोपानहिधारण 24. — c) *das Ertragen:* वेग° MBH. 6,4926. न ते शक्तास्मि तेजसो ऽस्य विधारणे 13,4076.

विधार्य (wie eben) adj. etwa *so v. a.* विधर्तर् VS. 17,82.

विधारयितर् (wie eben) nom. ag. zur Erklärung von विधर्तर् NIR. 12,14.

विधारयितव्य (wie eben) adj. *was erhalten —, aufrechterhalten wird* PRAÇNOP. 4,8.

विधारिन् (wie eben) adj. *verhaltend, unterdrückend:* वेग° VÂGBH. 8,10.

विधावन (von 1. धाव् mit वि) n. *das Hinundherlaufen* NIR. 3,15.

1. विधि (von 1. धा mit वि) P. 3,3,92, Schol. 1) m. a) *Anordnung, Anweisung, positive Vorschrift; gesetzliches Verfahren; Regel, Methode;* = नियोग H. 1520. = विधिवाक्य H. an. 2,249. fg. = विधान AK. 3,4, 18,102. H. an. MED. dh. 17. = कल्प AK. 2,7,39. H. 839. H. an. MED. HALÂJ. 5,40. — P. 3,3,161. KÂTJ. ÇR. 1,5,17. 4,3,8. सवन° 24,7,26. मन्त्र° LÂTJ. 1,1,2. 6,3,1. 10,8,9. KAUÇ. 1. PÂR. GṚHJ. 2,6. स्वाध्याय° ÂÇV. GṚHJ. 3,2,1. KAUÇ. 141. मन्त्र, विधि, अर्थवाद MÜLLER, SL. 170. विधिर्विधायकः NJÂJAS. 2,1,62. धर्मार्थसाधकव्यापारो विधिः SARVADARÇANAS. 77,17. Gegens. निषेध BHÂG. P. 8,20,27. SARVADARÇANAS. 5,11. प्रतिषेध 29,13. अपवाद Njâja zu P. 3,3,20. द्वयोर्विभाषयोर्मध्ये विधिर्नित्यः VOP. 2,5. — आगम° SARVADARÇANAS. 28,7. RÂGA-TAR. 1,183. 186. मांसस्य भक्षणवर्जने *Vorschrift in Betreff* M. 5,26. 8,188. 301. 9,149. JÂGṄ. 1,92. 178. व्रतानां विविधो विधिः M. 11,161. BHÂG. P. 2,8,21. 3,7,32. संस्कार° M. 1,111. प्रायश्चित्त° 116. 5,146. 8,221. 278. यथोदितेन विधिना 4,100. अनेन विधिना 3,281. 5,169. 6,81. 8,178. विधिना *nach der Vorschrift, rite* M. 2,107. 4,193. R. 1,8,16. 2,25,25. 72,53. RAGH. 3,65. AK. 2,7,8. KATHÂS. 26,207. अविधिना MUṆḌ. UP. 2,1,7. M. 5,33. Spr. (II) 1682. KATHÂS. 14,5. 103,146. °कृत ÇÂK. 1. नैत्यकं विधिमास्थितः M. 2,104. 5,36. 11,86. एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेद्यवमध्ये 217. एतमेव विधिं कुर्यात् 188. विधिं हित्वा 5,50. 9,63. शास्त्रविधिमुत्सृज्य BHAG. 16,23. 17,1. त्यक्तविधि adj. BHÂG. P. 9,6,9. च्युतो विधिः RAGH. 3,45. निमित्तनैमित्तिकयोरयं विधिः *Gesetz, Ordnung* ÇÂK. 189, v. l. *eine grammatische Vorschrift,*

— *Regel* P. 1,1,57. 72. विधिं कर् 57, Schol. स्थान° AV. Prât. 1, 41. P. 1,1,56. 6,13. 2,1,1. 8,2,2. गणित° *mathematische Regel* Varâh. Bṛh. S. 11,2. — विधयस्त्रयः (nach Nîlak. der अपूर्वविधि, नियम° und परिसंख्या° der Mîmâṁsaka) Hariv. 9490. — *b) Verfahren, Weise, Art;* = प्रकार् H. an. Bhâg. P. 2,10,46. प्राजापत्य M. 3,30. राक्तस 33. गान्धर्वेण विवाहविधिना Çâk. 110,14. गान्धर्वविधिना Kathâs. 18,220. देवताः पूजयामास परेण विधिना MBh. 3,2719. विधिना मन्त्रयुक्तेन Spr. 2812. उग्रेण विधिना Hariv. 1857. क्रीडारतिविधिज्ञ R. 3, 42, 47. विधिना येन MBh. 3,11943. एतेन विधिना 4,59. Varâh. Bṛh. S. 40,12. Pańkat. 121, 18. भवद्विधिना 215, 8. यथोचितेन विधिना Hit. 42,3. वृथा निरर्थकाविध्यो: *nicht die rechte Weise* AK. 3,4,22(28), 9. अद्भुतविधि adj. *auf eine wunderbare Weise verfahrend* Kathâs. 18,267. अस्य को विधिर्भूतात्मनो येन u. s. w. Maitrjup. 4,1. को ऽयं विधिः *was ist das für eine Art?* so v. a. *wie geht das zu?* Vikr. 72. को ऽयं ते ऽनुचितो विधिः Râǵa-Tar. 3, 423. किं त्वस्मिन्नर्थे संदेहप्रवृत्तिर्न विधिः *ist nicht die Art* Hit. 10,11, v. l. 89,6. 94,3. गुणदोषावनिश्चित्य विधिर्न ग्रहनिग्रहे Spr. (II) 2115. — *c) Mittel, Weg zu Etwas:* संभाषणार्थं च मया ज्ञानक्या निश्चितो विधिः R. 5,56,96. तस्याधिगमे Kumâras. 5, 59. त्वत्कूलोद्भूतये 6,82. उद्धारण° Pańkat. 138,15. स्थले गच्छतस्ते को विधिः Hit. 117,7, v. l. यद्येवं कुरुते विधिम् *wenn er diesen Weg einschlägt* Mârk. P. 116,44. कनकहरिणाच्छद्मविधिना Uttarar. 13,2 (17,14). अध्वविधिना गोमन्तमचलं प्राप्ताः *mittels des Weges* so v. a. *indem sie den Weg entlang gingen* Hariv. 5359. — *d) Act, Handlung, Ausführung, Veranstaltung, Geschäft;* = कर्मन् Trik. 3,2,1. रात्रावेष विधिः कार्यः Râǵa-Tar. 4,104. व्यवहारविधौ Jâǵn. 2,30. मण्डन° Çâk. 133. दुग्धजलभेदविधौ (so v. a. °भेदे) Spr. (II) 544. वादिदर्पज्वरशमनविधौ 606. कांक्षितपातविधौ करोति 1610. अभ्युद्गम° 1876. 2054. (I) 1233. 1859. अलंकारविधये 3106. Varâh. Bṛh. S. 79,19. शिरःकृन्तन° Spr. 4147. योग° Ragh. 8, 22. सर्ग° Vikr. 9. प्रसाधन° 22. Mâlav. 40. Çiç. 9,78. आहारनीहार° H. 58. यज्ञ° Varâh. Bṛh. S. 44,14. Gît. 1,13. निर्वासन° Kathâs. 12,97. रक्ता° 34,72. विवाहविधये बुद्धिं व्यधाद्वत्सेश्वरस्तयोः 34,104. Prab. 8, 5 (pl.). Dhûrtas. 83,13. Pańkat. 117,11. 260,17. Hit. 16,14. नेपथ्य° Kumâras. 7,36. शृङ्गारविधिं विधाय Pańkat. 36,15. सकलकार्यविधौ समर्थः Spr. (II) 1431. विघ्नेश° *der von* Gaṇeça *kommende Act* so v. a. *Hinderniss* Bhâg. P. 8, 7, 8. किं नु स्वप्नो मया दृष्टः को ऽयं विधिरिहाभवत् so v. a. *Ereigniss* MBh. 3, 2497. सामसिद्धा हि विधयो न प्रयान्ति पराभवम् so v. a. *facta* Spr. 3241. तं विधिं (= सत्कारं Comm.) लब्धा so v. a. *Behandlung* R. 2,91, 58. कर्तव्यस्तद्गतो विधिः so v. a. *darauf bezügliche Vorbereitungen* 52, 61. — *e) ein feierlicher Act, Cerimonie:* वैवाहिक M. 2,67. औपनायनिक 68. Ragh. 1,34. 2,16. सायन्तन 1,56. सांध्य 2,23. होमार्थ° 66. गोदान° 3,33. परलोक° (= पिण्डोदकादिकर्मन् Mallin.) Kumâras. 4, 38. मात्स्य° Varâh. Bṛh. S. 43,56. नीराजना° AK. 2,8,2,62. Pańkat. 158,5. H. 789. अनङ्गोत्सव° Spr. 2792. मङ्गल° Daçak. 60,10. fg. — *f) Schöpfung* Kir. 7,7 (pl.). Kumâras. 3, 28. — *g) Schicksal* AK. 1,1,4,6. 3,4,18,102. H. 1379. H. an. Med. Halâj. 1, 86. शुभावह AK. 1, 1, 4, 5. अहो ममोपरि विधेः संरम्भो दारुणो महान् MBh. 3,2562. 13,343. यम, मृत्यु, काल, विधि R. 3,69,20. वैरिन् Megh. 100. Spr. (II) 2060. पराङ्मुख (I) 2028. 2813. fg. Çâk. 43. Kathâs. 18, 267. 32, 57. Râǵa-Tar. 2, 92. Mârk. P. 8,183. विधेर्वशात् Kathâs. 25, 273. °वशात् Megh. 6. Spr. (II) 645; vgl. दैवो विधिः *ein Gebot der Götter* (I) 4487. दैवविधिषु 3256. — *h) die Zeit* Trik. 3,3,222. H. an. Med. Halâj. 5, 40. — *i) Schöpfer:* जगताम् Pańkar. 1,2,11. 10,32. 14,8. जगद्विधि 10, 48. 56. Brahmavaiv. P. 2, 94. ohne weiteren Beisatz *der Schöpfer* d. i. Brahman AK. 1,1,1,12. Trik. H. 212. H. an. Med. Halâj. 1,6. Çâk. 42. Spr. (II) 945. 1180. 1545. (I) 1970. 2858. Naish. 22,47. 57. Pańkar. 1,2,13. 9,39. Vishṇu Halâj. 1, 25. — *k) Arzt* Râǵan. im ÇKDr. — *l) Elephantenspeise* (vgl. विधा, विधान) Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,34. — Vgl. दुर्विधि, यथा°, लोक°, वास्तु°, कृत°.

2. विधि (von 1. विध्) m. etwa *Huldiger* Ait. Br. 5,25 (vgl. u. 1. विध्). N. Agni's beim Prâjaçkitta Gṛhjas. 1,8.

विधिकर् adj. (f. ई) *Jmdes Vorschriften befolgend, — Befehle ausführend; Diener:* सर्वे स्वामी विधिकरास्तव Bhâg. P. 7,9,13. 8,56. 10,31,8.

विधिकृत् adj. dass. Bhâg. P. 7,10,48 = 15,76.

विधित्व (von 1. विधि) n. *das Vorschrift-Sein* Sarvadarçanas. 126,9.10.

विधित्सा (vom desid. von 1. धा mit वि) f. 1) *Beabsichtigung, Wunsch, Verlangen* MBh. 1,3682. 5,1636. 12,3882 (wo die ed. Bomb. साधनेन च liest). नास्ते सर्वविधित्सानां गतपूर्वा ऽस्ति कश्च न Spr. 4393. व्यथितस्य विधित्साभिः 5040. Mârk. P. 38,10. वैरस्यान्त° MBh. 5,2639. प्राणोत्क्रान्ति° Kathâs. 72,390. ब्रह्मविद्या° Çańk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 268. निजजनाभिप्रेतार्थ° Bhâg. P. 5,3,2. श्रेयो° 10, 82, 2. आत्म° *Selbstsucht* Spr. (II) 145. — 2) *der Wunsch Jmd zu Etwas zu machen:* सुज्ञिप्रतिमल्ल° Râǵa-Tar. 8,1636. — Vgl. निर्विधित्स.

विधित्सु (wie eben) adj. *beabsichtigend, im Sinne habend;* mit acc.: कलहम् MBh. 3, 699. 5,2063. 8,1198. Hariv. 16274. Kir. 10,17. Prab. 25,12. Râǵa-Tar. 8, 2313. क्षेमं ज्ञनाय Bhâg. P. 3, 16, 24. असत् 7, 9, 29. प्रियं प्रियायाः 3,3,5. आतिथ्यम् *Jmd Gastfreundschaft zu erweisen wünschend* Kathâs. 101,26.

विधिदर्शिन् m. *Beisitzer; eine Person, die darauf zu achten hat, dass Alles nach Vorschrift geschieht,* AK. 2,7,15.

विधिदृष्ट adj. *vorschriftmässig:* कर्मन् MBh. 3,3026. 11924. R. 1,49, 20. यज्ञ Bhag. 17,11; vgl. विधियज्ञ.

विधिदेशक m. = विधिदर्शिन् Çabdar. im ÇKDr.

विधिनिरूपण n. Titel einer Schrift Hall 60.

विधिपुत्र m. Brahman's *Sohn,* patron. Nârada's Pańkar. 1,1,11. — Vgl. विधातृभू.

विधिपूर्वकम् adv. *vorschriftmässig, rite* M. 2,173. 3,84. 96. 99. 216. 4,101. 6,5. R. 1,9,29. 2,28,14. Suçr. 2,93,7. अ° Bhag. 9,23. 16,17.

विधियज्ञ m. *ein vorschriftmässiges Opfer* M. 2, 85. fg.

विधियोग m. 1) *Beobachtung einer Vorschrift, — Regel:* अनेन °योगेन M. 8,211. — 2) *Fügung des Schicksals:* °योगात् Spr. 3227. °योगतस् Kathâs. 25,48. 26,264 (°योगतः gedruckt). 30,54. 49,193. 51,61.

विधिरसायन n. Titel einer Schrift Hall 194. °सुखोपयोगिनी f. Titel eines Commentars zu derselben ebend. °दूषण m. Titel einer *Widerlegung* derselben 195. Verz. d. Tüb. H. 17.

विधिवत् (von 1. विधि) adv. *vorschriftmässig, rite, auf gehörige Weise, wie es sich gebührt* Muṇḍ. Up. 1,1,3. M. 1,58. 2,40. 148. 216. 3,

29 u. s. w. MBH. 3,1770. 2794. 11924. R. 1,2,11. 28. 8,25. RAGH. 1,62. 3,29. ÇÂK. 64,11. ad 191. Spr. 1405. 5418. VARÂH. BṚH. S. 43,8. 29. 46, 16. 59,10. fg. 68,1. LA. (III) 89,14.

विधिवधू m. Brahman's *Gattin* d. i. Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 259,*b*,21. fg.

विधिवाद m. Titel zweier Schriften HALL 60.

विधिविवेक m. Titel einer Schrift HALL 87.

विधिशोणितीय (von विधि + शोणित) adj.: अध्याय Titel eines Abschnitts in der Karakasaṁhitâ Verz. d. Cambr. H. 23.

विधिषेध (विधि + सेध = निषेध) m. du. *Gebot und Verbot:* निवृत्ता विधिषेधतः BHÂG. P. 2,1,7.

विधिसार m. N. pr. eines Fürsten BHÂG. P. 12,1,5. fehlerhaft für विम्बिसार.

विधिस्वरूपवादार्थ m. Titel einer Schrift HALL 60.

1. विधु (von 1. धू mit वि) m. *Schlag* (des Herzens): शीर्षः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः AV. 9,8,22.

2. विधु (विऽधु Padap.) UṆÂDIS. 1,24. 1) adj. विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ṚV. 10,55,5. nach SV. Comm. so v. a. विधारयितर्, विधातर्; eher würde sich die Ableitung von 2. विध् empfehlen: *vereinsamt* (so v. a. विधुर). Die NIR. 14,18 angenommene Deutung auf den *Mond* kann richtig sein. — 2) m. *a) der Mond* AK. 1,1, 2,15. 3,4,18,102. H. 105. an. 2,250. MED. dh. 16. HALÂJ. 1,43. VIÇVA bei UGGVAL. °क्षय M. 3,127. °संक्षय Verz. d. Oxf. H. 30,*b*,7. Spr. (II) 457. °परिध्वंस 986. 1323. (I) 1813. 3018. वक्त्र° 3143. 3227. GÎT. 4,5. 7,21. WEBER, RÂMAT. UP. 324. विधूदय KṚSHṆAG. 257. KÂÇÎKH. 59,33 (nach AUFRECHT). Ind. St. 2,261. NAISH. 22,47. VOP. 5,30. °प्रिया ÇKDR. ohne Angabe einer best. Aut. — *b) Kampher* (wie alle Namen des *Mondes*) MED. VIÇVA a. a. O. — *c)* ein N. Vishṇu's AK. 1,1,1,17. 3,4,18,102. H. 216. H. an. MED. VIÇVA a. a. O. — *d)* ein N. Brahman's ÇABDAR. im ÇKDR. — *e) ein* Râkshasa (vgl. विधुर) VIÇVA a. a. O. — *f) Wind* UṆÂDIVṚ. im SAṀKSHIPTAS. nach ÇKDR. — *g)* = आयुध m. ÇKDR. nach ders. Aut. *an expiatory oblation* WILSON. — *h)* N. pr. eines Fürsten (v. l. für विप्र) VP. 463, N. 9.

विधुक्रान्त m. Bez. *eines best. Tactes* SAṀGÎTARATNÂKARA im ÇKDR. unter रथक्रान्त im Suppl.

विधुति (von 1. धू mit वि) f. 1) *das Schütteln, Hinundherbewegen* NÂGÂN. 51,4. वदन° Spr. 3055. MÂLATÎM. 1,8 (pl.). भुजविधुतिभिः BHÂG. P. 10,33,8. — 2) *Vertreibung, Entfernung* BHÂG. P. 4,22,38.

विधुदिन n. *ein lunarer Tag* GAṆIT. GRAHÂNAJ. 2. 17.

विधुनन (von 1. धू mit वि) n. = विधूनन GAṬÂDH. im ÇKDR.

विधुंतुद (विधुम्, acc. von विधु *Mond* + तुद) P. 3,2,35. VOP. 26,55. m. Bez. Râhu's AK. 1,1,2,28. H. 121. HALÂJ. 1,49. Spr. (II) 457. 1323. (I) 2848. GÎT. 4,5. KÂÇÎKH. 59,33 (nach AUFRECHT).

विधुपञ्जर m. *Schwert* ÇABDAM. im ÇKDR.

विधुमास m. *ein lunarer Monat* GAṆIT. BHAGAṆÂDH. 13.

विधुर 1) adj. (f. आ) *a) der Deichsel beraubt* (oder überh. *mitgenommen, beschädigt*): रथ MBH. 6,1890. — *b) allein stehend,* insbes. *vom geliebten Gegenstande getrennt* MEGH. 113. KUMÂRAS. 4,32. VIKR. 102. GÎT. 7,2. NALOD. 3,50. RÂGA-TAR. 8,656. अविधुरो भवति als Erkl. von मिथुनीभवति ÇAṀK. zu KHÂND. UP. 2,13,2. — *c)* am Ende eines comp. *frei von, ermangelnd:* कलङ्क° Verz. d. Oxf. H. 130,*b*,28. अर्थावधारणा° PRAB. 20,13. द्रविणा° BHÂG. P. 5,8,20. प्रियार्थ° 14,15. 6,16,36. व्याप्तिश्चोभयविधोपाधिविधुरः संबन्धः SARVADARÇANAS. 4,9. 17,1. 35,9. 17. 179,20. 180,1. KUSUM. 32,7. अस्मद्विधुरा *von uns entfernt, — abgesondert* KATHÂS. 39,55. — *d) woran Etwas fehlt, mitgenommen, in einem kläglichen Zustande sich befindend;* = विकल TRIK. 3,3,371. H. an. 3, 604. MED. r. 217. कृपैश्च विधुरग्रीवैः MBH. 7,6177. दुर्दाववह्निविधुराणि काननानि Spr. (II) 1059. वपुर्जराव्याधिविधुरम् (I) 2847. अङ्गानि — अनङ्गतापविधुराणि SÂH. D. 155,14. त्रपया विधुरं (= विलक्ष MALLIN.) वपुः ÇIÇ. 9,77. स्वभेद° (मण्डल) RÂGA-TAR. 2,7. तस्थौ विधुरविच्छाया निशीथस्येव पद्मिनी KATHÂS. 16,45. गृहं विधुरस्थिति 2,48. विधुरायुस् BHÂG. P. 7,2,54. KUSUM. 42,7. — *d) niedergedrückt, niedergeschlagen:* विरहविधुरा भार्या MEGH. 8. Spr. (II) 987. (I) 1894. स्मरार्ति° KATHÂS. 17, 74. नैराश्य° 52,44. आक्रन्द° 56,37. 61,128 (wohl बन्ध° zu lesen). Spr. 1163, v. l. UTTARAR. 60,5 (78,1). RÂGA-TAR. 8,1210. हृदयमतिविधुरम् GÎT. 9,8. नैराश्यदुःखविधुरं (adv.) पश्यन्तीम् KATHÂS. 18,328. *freudig erregt:* मधुरमधुविधुरमधुप Spr. 3224. — *e) widerwärtig, widrig, ungünstig:* विधुरं ब्रुवन् so v. a. *Unfreundliches, Unangenehmes* KATHÂS. 33,33. दशाः — व्यसनशतसंपातविधुराः Spr. (II) 284. विधि, दैव, विधातर् 425. (I) 923 (die ed. Bomb. des PAṄKAT. bestätigt unsere Vermuthung). 1072. KATHÂS. 29,196. 74,104. 123,339. RÂGA-TAR. 8,1592. 1771. PAṄKAT. 42, 13. n. *Widerwärtigkeit, Ungemach;* = कष्ट und प्रत्यवाय VAIG. bei MALLIN. zu KIR. 2,7. = प्रत्यवाय HALÂJ. 5,38. विधुरं किमतः परम् KIR. 2,7. विधुरे ऽप्यस्मिन् KATHÂS. 21,101. °वर्गहस्तगत 26,145. HIT. 50,8. विधुरेषु Spr. 925. KATHÂS. 103,139. — 2) m. *ein* Râkshasa (vgl. 2. विधु) H. ç. 36. — 3) f. आ *a) gekäste Milch mit Zucker und Gewürz* (रसाला) H. an. MED. — *b)* Bez. *zweier Gelenke* (स्नायुमर्मन्): द्वे विधुरे (was auch n. sein könnte) SUÇR. 1,345,12. 17. — 4) n. *a) Widerwärtigkeit* s. u. 1) *e*). — *b)* = वैकल्य TRIK. 3,3,371. — *c)* = विश्लेष TRIK. HALÂJ. VAIG. a. a. O. = प्रविश्लेष AK. 3,3,20. H. an. = परिश्लेष MED. — Für die erste Bed. des adj., wenn sie sich bewährte, müsste man eine Zusammensetzung von 2. वि mit धुर annehmen; die übrigen Bedd. liessen sich auf 2. विध् zurückführen. Gegen diese Herleitung könnte aber die erst von uns erschlossene und den späteren Indern unbekannte Bedeutung von 2. विध्, das späte Erscheinen von विधुर und das adj. उद्धुर geltend gemacht werden. — Vgl. वैधुर्य.

विधुरता (von विधुर) f. 1) am Ende eines comp. *das Ermangeln, Nichtbesitzen:* शक्तिविधुरतया (so ist zu lesen) चिरमविरतक्लेशमनुभूतवान् Verz. d. Oxf. H. 109,*b*, No. 170. — 2) *Mangelhaftigkeit, kläglicher Zustand:* गतिषु DHÛRTAS. 72,11.

विधुरत्व n. = विधुरता 1) *a*): समस्तदुःखबीज° SARVADARÇANAS. 74,5.

विधुरय् (von विधुर), °यति 1) *vom Geliebten trennen:* मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी GÎT. 7,6. विधुरिता (= विरहविह्वला Comm.) KUVALAJ. 140,*a*. — 2) *sich widerwärtig zeigen:* लभ्यं श्रेयो विधिविधुरितैर्नान्यतो न स्वतो ऽपि so v. a. *die bösen Streiche des Schicksals* RÂGA-TAR. 8,1038.

विधुरीकर् (विधुर + 1. कर्) *niederschlagen, niederdrücken:* मानेनेव विशीर्णेन वाससा विधुरीकृता Kathâs. 21,41. मातुश्च पाप्मभिर्विधुरीकृतः Râǵa-Tar. 6,289.

विधुवन (von 1. धू mit वि) n. *das Schütteln, Hinundherbewegen* AK. 3,3,4. H. 1522.

विधूत 1) adj. s. u. 1. धू mit वि. — 2) n. *Zurückweisung, an den Tag gelegte Unlust* Bhar. Nâṭjaç. 19,59. कृतस्यानुनयस्यादौ विधूतं ह्यपरिग्रहः 76. विधूतं स्यादरतिः Daçar. 1,30. अनिष्टवस्तुविक्षेपो विधूतम् Pratâpar. 21,*b*,1. 32,*a*,6.

विधूनन (von 1. धू mit वि) n. 1) *das Schütteln, Hinundherbewegen* AK. 3,3,4. H. 1522. P. 7,3,38. शिरःकर° Sâh. D. 142. महाकूवाम्भोधि° *das Wogen* Verz. d. Oxf. H. 116,*b*,1 v. u. — 2) *das Zurückweisen, Verschmähen:* रतेः Daçar. Comm. S. 23, Z. 5. शीतोपचार° Z. 3.

विधूप (2. वि + धूप) adj. *ohne Räucherwerk, wo nicht geräuchert wird:* सूतिकागृह Mârk. P. 51,105.

विधूम (2. वि + धूम) 1) adj. (f. आ) *nicht rauchend:* Feuer Gṛhjas. 1, 25. MBh. 1,4111. 8320. 5,2945. R. 3,34,20. 4,33,31. 5,3,5. 49,23. 7, 20,27. 42,3. Suçr. 1,114,10. Kathâs. 28,77. अग्नेः शिखा R. 2,114,5 (125, 5 Gorr.). विधूमे *wenn kein Rauch mehr* (aus der Küche) *zu sehen ist* M. 6,56. MBh. 14,1277. Mârk. P. 41,6. — 2) m. N. pr. eines Vasu Kathâs. 9,23.

विधूम्र (2. वि + धूम्र) adj. *ganz grau:* तुरगरत्नो° Bhâg. P. 1,9,34.

विधूरता Verz. d. Oxf. H. 109,*b*, No. 170 fehlerhaft für विधुरता.

विधृति (von धर् mit वि) 1) f. *a) Sonderung, Scheidung; Scheidewand:* लोकानाम् AV. 4,35,1. 19,54,5. VS. 25,9. 37,12. अर्धनाम् TS. 1,5,11,2. दिशाम् 5,2,3,5. वाचः VS. 11,66. TS. 1,5,3,2. धर्मस्य Pańkav. Br. 15,5,36. तत्रस्य विशश्च Çat. Br. 1,3,4,10. 9,2,2,6. Khând. Up. 8, 4,1. *das Entfernthalten:* पापवस्यसस्य TBr. 1,3,3,5. Pańkav. Br. 7,5, 5. Çat. Br. 10,5,2,9. 13,3,7,4. — *b)* du. Bez. *zweier Halme, welche eine Scheidewand zwischen* Barhis *und* Prastara *andeuten*, TBr. 3, 7,6,7. Çat. Br. 1,3,4,10. 2,6,1,16. ऐन्द्रव्यौ विधृती 3,6,3,10. 4,1,18. Kâtj. Çr. 8,1,14. — 2) m. *a)* N. eines Sattra Kâtj. Çr. 24,2,38. Âçv. Çr. 11,5,3. Maç. in Verz. d. B. H. 74 (IX, 8). — *b)* N. pr. α) eines göttlichen Wesens: देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनयाः Bhâg. P. 8,1,29. — β) eines Fürsten Bhâg. P. 9,12,3.

विधृष्टि (von धर्ष् mit वि) f. in einer Formel Çâńkh. Çr. 8,24,13.

विधेय (von 1. धा mit वि) adj. 1) *zu verleihen, zu verschaffen:* आसां (प्रजानां) प्राणपरीप्सूनां विधेयमभयं हि मे Bhâg. P. 8,7,38. — 2) *was vorgeschrieben —, angeordnet wird* Pâr. Gṛhj. 2,6. — 3) *festzusetzen, mit Bestimmtheit auszusagen, zu statuiren* Varâh. Bṛh. S. 95,49. Bṛh. 24 (22),1. 16. Kâm. Nîtis. 19,27. Sâh. D. 574. 214,4. — 4) *zu verfertigen, zu construiren:* क्रान्तिवृत्तं गृहाङ्कम् Golâdhj. 5,11. तत्रायतसूत्ररेखा जीवाभिधाना विधेयाः so v. a. *zu ziehen* 11,9. *zurechtzumachen:* तन्त्वया किमपि पाथेयं मम योग्यं विधेयम् Pańkat. 185,20. *zu vollbringen, zu machen, zu thun:* किमत्र विधेयमन्यत् *was ist hierbei Anderes zu thun?* Spr. (II) 1937. किमधुना मया विधेयम् Pańkat. ed. orn. 56,12. Çâk. 29, 21, v. l. Hit. 41,15. 58,4. 101,18. तद्यथायं विनश्यति तन्मया विधातव्यम् 92,6. विधेयं यत्तत्वम् Spr. 2847. नृपरत्नणम् 5080. आदौ न वाप्रणयिनां प्रणयो विधेयः *an den Tag zu legen* (II) 941. कुतो हि भीतिः सततं विधेया 1792. विश्वासलेश इह नैव बुधैर्विधेयः (I) 5102. कोपः Râǵa-Tar. 6,225. अस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृत्तिर्न विधेया Hit. 10,11. वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयः *mit wem soll man nicht wohnen und Umgang haben?* Praçnottaram. 17. विधेय n. *das zu Thuende, Obliegenheit:* यातान्च कुर्या प्रातर्वा विधेयम् Râǵa-Tar. 8,2139. °ज्ञ Spr. 3221. — 5) *aufzustellen:* गृहाणि च प्रवेश्यात्तर्विधेयः स्याद्धुताशनः MBh. 12,2644. — 6) *fügsam, lenksam, sich in Jmdes* (gen.) *Willen fügend, abhängig von* AK. 3, 1,24. H. 432. MBh. 5,697. 878. 5051. Hariv. 8731. R. 2,30,9. 55,25. 4, 14,23. 6,98,28. Spr. (II) 2141. Varâh. Bṛh. 17,5. तस्य राज्ञः परमविधेयाः (परमं विधेयं विधेयं कार्यं येषां ते प° Comm.) *sich ganz in seinen Willen fügend* Daçak. 3,6. विधेयात्मन् Bhag. 2,64. अ° R. 4,14,23. हयाः, इन्द्रियाणि MBh. 5,4336. 1154. Kir. 11,33. स्त्री° *in der Gewalt des Weibes stehend, von ihr abhängig* R. Gorr. 2,22,8. 50,9. 6,82,118. Utpala zu Varâh. Bṛh. 18 (16),5. स्त्रीविधेयनवयौवन Ragh. 19,4. भृत्यविधेयधी Râǵa-Tar. 8,882. विटबन्ध्यादिचाटुकारविधेयधी 5,351. आज्ञा° *den Befehlen gehorsam* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28,5. निद्रा° *in der Gewalt von — stehend, übermannt von* Ragh. 7,59. करुणाविधेयचेतस् Prab. 25,15. त्रपा° Râǵa-Tar. 8,768. — Vgl. तथा° (besser wohl तथा विधेयानाम् zu trennen und विधेय in der Bed. *folgsam* aufzufassen), पन्न°, वाग्विधेय.

विधेयता f. nom. abstr. 1) zu विधेय 2) *das Vorgeschriebensein, Gebotensein;* Gegens. निषिद्धता Prâjaçkittat. im ÇKDr. — 2) zu विधेय 6): अविधेयेन्द्रियः पुंसां गौरिवैति विधेयताम् Kir. 11,33. स्तनपरीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् Gît. 10,10. निन्द्ये °ताम् Râǵa-Tar. 3,417. निन्द्यिरे दीर्घनिद्राविधेयताम् 1,85.

विधेयत्व n. 1) *Brauchbarkeit, Anwendbarkeit:* धनुषश्चाविधेयत्वात् *und weil der Bogen nicht gebraucht werden konnte* MBh. 16,241. — 2) nom. abstr. zu विधेय 3) Sâh. D. 214,11. — 3) nom. abstr. zu विधेय 6): मन्मथस्य शराणां च विधेयत्वं गमिष्यसि *du wirst in die Gewalt der Pfeile des Liebesgottes gelangen, wirst ihnen erliegen* R. 3,38,19.

विधेयिता f. Kâm. Nîtis. 19,7 fehlerhaft für विधेयता in der 2ten Bed.

विधेयीकर् (विधेय + 1. कर्) adj. *in Jmdes Gewalt bringen, abhängig machen:* °कृत Mâlatim. 16,14.

विधेयीभू (विधेय + 1. भू) *sich fügen in:* आज्ञाप्रवणविधेयीभूय Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,17.

विध्मापन (vom caus. von धम् mit वि) adj. *zerstreuend:* स्तम्भसंघातबन्ध° Vâgbh. 10,12.

विध्य (von व्यध्) adj. *zu durchbohren, zu erschiessen:* अ° MBh. 16,96.

विध्यपराध (1. विधि + अ°) m. *Verfehlung gegen die Regel* Âçv. Çr. 3,10,1. Çâńkh. Çr. 3,19,1.

विध्यपाश्रय (1. विधि + अपा°) m. *das Halten an der Vorschrift, das genaue Beobachten der Vorschrift* Bhar. Nâṭjaç. 19,4.

विध्वंस (von ध्वंस् mit वि) m. 1) *das Zusammenstürzen, Umfall:* प्राकारागार° MBh. 12,8392. प्रपादेवविप्रौकोद्वालयसभाः — भङ्गा विध्वंसमानीताः (तैः) Mârk. P. 14,65. — 2) *Verderben, Untergang, das Schadennehmen:* अतृप्ता यान्ति विध्वंसम् Spr. (II) 375, v. l. तेषां चकार विध्वंसम् (विघ्नं स die neuere Ausg.) Hariv. 8222. सुरारिविध्वंसकारिन् Verz. d.

Oxf. H. 57,*b*,4. सस्याम्बुदयायि° Varâh. Bṛh. S. 17,17. सस्यानामीतिभिः 5,54. दक्षयज्ञ° Bhâg. P. 4,5 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,24. व्याधि° so v. a. *das Weichen einer Krankheit* Suçr. 2,348,16. *ein erlittenes Unrecht* (= अपकार Mallin.) Kir. 3,16. so v. a. *das Entehrtwerden, Geschändetwerden* (eines Frauenzimmers): मद्विध्वंसाय Kathâs. 13,141. नैतासामस्ति विध्वंसः 45,75. — Vgl. रोम°.

विध्वंसक (vom caus. von ध्वंस् mit वि) nom. ag. *Schänder:* स्वसुः Kathâs. 106,166.

विध्वंसन (wie eben) 1) nom. ag. *verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend, verscheuchend:* शत्रु° R. 7,25,12. यज्ञ° MBh. 13,906. दुःखौघ° Spr. 2046. प्रविलसत्तन्मान° Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,5 v. u. — 2) n. *das Zerstören, Vernichten, Verderben, zu-Grunde-Richten:* चैत्य° R. 5,38 in der Unterschr. मधुवन° 60 in der Unterschr. शत्रूणाम् MBh. 3,17472. शत्रु° R. 3,28, 9. 32 in der Unterschr. दक्षयज्ञ° Verz. d. Oxf. H. 12,*b*, 14. 75,*b*,19. fg. शक्रयशो° 79,*a*,3. 4. पापौघ° 244,*a*, No. 606. कर्मबन्ध° Bhâg. P. 5,9,3. °मुद्रा Vjutp. 106. *das Schänden, Entehren:* देवी° Kathâs. 5,38. — Vgl. काल°, मख°.

विध्वंसिन् 1) adj. *a*) *zu Grunde gehend:* एकान्त° (पिण्ड) Ragh. 2,7. — *b*) *verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend:* वृषभासुर° Pańkar. 4, 1.32. श्रुतिकुलज्ञातिख्यातावनिपालगणाय° Varâh. Bṛh. S. 32,18. सस्यानाम् 8,16. स्वबान्धववधूवैधव्य° Spr. (II) 1624. 1721 (Conj.). *Schänder, Entehrer:* गृहान्त° Kathâs. 71,303. — 2) f. विध्वंसिनी Bez. *eines best. Zauberspruches* Kathâs. 109,22. — Vgl. कोला°, क्षण° (in der ersten Bed. auch Spr. 941), क्षत°.

विध्वस्त s. u. ध्वंस् mit वि; davon विध्वस्तता f. *das Entehrtsein:* भार्याविध्वस्तता (अविध्वस्तता anzunehmen) Kathâs. 73,77.

विन् Verbalwurzel in der Bed. von कान्ति zur Erklärung von वेन angenommen von Mahîdh. zu VS. 7,16.

विनंशिन् (von 1. नश् mit वि) adj. *verschwindend* (nach Mahîdh.) VS. 9,20. 18,28. व्यश्निय v. l. in TS. — Vgl. वैनंशिन.

विनङ्गृस m. du. *die Arme* nach Naigh. 2,4. अन्वस्मै जोषमभरद्विनङ्गृसः ṚV. 9,72,3.

विनज्योतिस् Kathâs. 72,301 wohl fehlerhaft für विनयज्योतिस्.

विनत 1) adj. s. u. नम् mit वि. In der Bed. *cerebral geworden* auch AV. Prât. 4,82. — 2) m. *a*) *eine Ameisenart* Kauç. 116. — *b*) N. pr. α) eines Sohnes des Sudjumna VP. 350; vgl. विनताश्व und विनय. — β) eines Affen R. 4,31,29. 33,14. 39,37. 6,2,45. 75,64. — γ) einer Oertlichkeit an der Gomatî R. 2,71,16. könnte in dieser Bed. auch n. sein. — 3) f. आ *a*) sc. पिडका *ein best. Abscess bei Harnruhr* Wise 362. Suçr. 1,273,12. 18. Çârṅg. Saṁh. 1,7,45. H. an. 3,300. Med. t. 157. — *b*) N. pr. α) proparox. der Mutter Suparṇa's (Garuḍa's, auch Aruṇa's u. s. w.), einer Tochter Daksha's und Gattin Kaçjapa's, H. an. Med. Halâj. 1,119. Verz. d. B. H. No. 95. MBh. 1,1074. fgg. 2520. Hariv. 170. 224. 11521. 11556. 12447. 12469. R. 2,25,31. 3,20,33. Varâh. Bṛh. S. 48,57. Kathâs. 22,181. fgg. 90, 97. fgg. VP. 122. 149. Bhâg. P. 6,6,21. fg. Mârk. P. 104, 6. Verz. d. Oxf. H. 31,*a*, 44. 70, *b*, 30. °सूनु m. *der Sohn der* Vinatâ d. i. Aruṇa, der Wagenlenker der Sonne, H. 102. — β) eines weiblichen Krankheitsdämons, = शकुनिग्रह MBh. 3,14480. — γ) einer Râkshasî R. 5,23,19. — Vgl. गो°, वैनतीय, वैनतेय.

विनतक (von विनत) m. N. pr. eines Berges Vjutp. 102.

विनताश्व m. N. pr. eines Sohnes des Sudjumna Hariv. 631. VP. 350, N. 6; vgl. विनत 2) *b*) α) und विनय 2) *c*).

विनति (von नम् mit वि) f. *Verneigung:* गुरुषु Spr. 1891, v. l. Khandom. 150. कृत° adj. Kathâs. 45,403.

विनद (von नद् mit वि) 1) m. *a*) *Geschrei* R. 4,12,24. — *b*) *Alstonia scholaris R. Br.* Çabdak. im ÇKDr. — 2) f. आ Bez. einer Çakti Pańkar. 3,2,6. — 3) f. ई (wohl 2. वि + नदी) N. pr. eines Flusses MBh. 6, 335 (VP. 183); v. l. वैनदी.

विनदिन् (wie eben) adj. *tosend, donnernd:* पयोधर MBh. 3,15811.

विनमन (von नम् mit वि) n. *das Zusammen-, Niederbeugen* (Gegens. उन्नमन) Suçr. 1,25,16. 84,13. 365,14.

विनम्र (2. वि + नम्र) adj. (f. आ) *sich neigend, gesenkt, herabhängend:* शाखाभुज Kumâras. 3,39. व्रीडाविनम्रवदना Kaurap. 5. 28. Varâh. Bṛh. S. 78,12. °कंधर Bhâg. P. 10,13,64. °भुजा Daçak. Comm. 77,3. °देवासुरमौलि Verz. d. Oxf. H. 187,*a*, No. 427, Z. 5. *geneigt* so v. a. *gesenkten Hauptes* 116,*b*,3 v. u. Kathâs. 28,40. 63,85. *unterwürfig, demüthig* 20,225.

विनम्रक (von विनम्र) n. = तगरपुष्प Râgan. im ÇKDr.

विनय (von 1. नी mit वि) 1) adj. *entfernend* ṚV. 2,24,9. — 2) m. *a*) *Zucht, Erziehung, Unterweisung, Dressur;* = शिक्षा H. an. 3,507. Med. j. 104. = शास्त्रज्ञसंस्कार H. 432, Schol. — Spr. 2819. शस्त्रास्त्रविनयेषु Mârk. P. 20,5. न तस्य विनयः कृतः (न तस्यावि° ed. Bomb. तस्य अविनयः न कृतः न नाशितः Nîlak.) so v. a. *man konnte ihn nicht eines Bessern belehren* MBh. 4,675. विनये चैव युक्तो वारणावाजिनाम् R. 2,1, 20. अश्वानां प्रकृतिं वेद्मि विनयं चापि सर्वशः MBh. 4,318. — *b*) *Zucht* so v. a. *gutes —, gesittetes Benehmen, Anstand; bescheidenes Benehmen;* = वैनयिक P. 5,4,34. = प्रणति H. an. Med. औदार्यं विनयः सदा Sâh. D. 134. = इन्द्रियजय H. 432, Schol. — R. 1,9,62. R. Gorr. 1,1,28. 9,60. 53,1. 3,70,21. कच्चित्ते विनयः प्राप्तः 77,10. नयश्च विनयश्च 4,16, 25. 5,66,17. अभिनवसेवकविनयैः कश्चिदवञ्चितो नास्ति Spr. (II) 488. प्रथित° adj. (I) 2978. वनस्था अपि राज्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे 4621. Ragh. 3,34. 6,79. Çâk. 28. 44. Mâlav. 81. Varâh. Bṛh. S. 15,10. Bṛh. 13,1. Kathâs. 17,56. 34,159. Râga-Tar. 4,51. संपन्नो विनयेन R. 2,42,5. °संपन्न 1,1,25. विनयान्वित 52,10. च्युत° adj. Varâh. Bṛh. S. 104,63. गुरुविनयवृत्ति *dem Lehrer* u. s. w. *gegenüber* Spr. (II) 1871. पित्रोश्च विनयपरः Çuk. in LA. (III) 35,11. 6. प्रजानां विनयाधानात् Ragh. 1,24. विनयावलोक Bhâg. P. 5,2,6. प्रबोधविनयौ Ragh. 10,72. लक्ष्मीविनयौ Kathâs. 25,171. °ज्ञ MBh. 12,2538. R. 2,37,1. 40,10. 84,11. विनयावनतास्थिता MBh. 3,2467. Kathâs. 24,15. तेभ्यो ऽधिगच्छेद्विनयम् M. 7,39. विनयं समालम्बते Spr. 3168. नयश्च विनयं विना Çatr. 10,187. अकीर्तिं विनयो हन्ति Spr. (II) 28. निर्धनो विनयं याति 1020. कुलस्य विनयो विभूषणम् 1487. मदेन विनयो हतः 1674. विद्या ददाति विनयम् (I) 2795. जितेन्द्रियत्वं विनयस्य कारणम् 972. जायते विनयः श्रुतात् 3038. सकलगुणभूषा च विनयः 4323. विनयं राजपुत्रेभ्यः शिक्षेत 5006. Am Ende eines adj. comp. f. आ 1675. विनयोपपन्न (अश्व) *gut gezogen* Varâh. Bṛh. S. 93,13. अ° (s. auch bes.) *ungebührliches Benehmen:* °भवनम् (स्त्रीयत्नम्) Spr. (II) 1038. (I) 1934. Varâh. Bṛh. S. 19,8. Kathâs. 20,183, 27,

63. Sâh. D. 181. द्रोहाविनय Râǵa-Tar. 6,247. adj. (f. श्रा) *sich ungesittet betragend* Schol. zu Kap. 1, 66. Personificirt ist der Vinaja ein Sohn der Krijâ VP. 55. Mârk. P. 50,26. der Laǵǵâ 27. Bei den Buddhisten ist विनय *die über die Disciplin handelnde Lehre* Burn. Intr. 37. fgg. — c) N. pr. eines Sohnes des Sudjumna (vgl. विनत und विनताश्व) Mârk. P. 111,15. — 3) f. श्रा *Sida cordifolia* H. an. Med. (wo बलायां st. कलायां zu lesen ist). Ratnam. 167. — Vgl. डुर्विनय, स° und unter मह्नीशासक.

विनयकर्मन् n. *Unterweisung, Unterricht* Ragh. 10, 80.

विनयतुह्रक Titel eines buddhistischen Werkes Wassiljew 18. 89. Târan. 294. °वस्तु Burnouf, Intr. 565.

विनयग्राहिन् adj. *lenkbar, fügsam* AK. 3,1,24.

विनयज्योतिस् m. N. pr. eines Muni Kathâs. 72, 301 (विनज्योतिस् gedr.).

विनयता f. = विनय 2) b) Spr. 4262.

विनयदेव m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers Wassiljew 234.

विनयन (von 1. नी mit वि) 1) adj. *entfernend, verscheuchend:* तृष्णा° MBh. 15,85. श्रध्यम° Megh. 53. — 2) n. *das Unterweisen, Unterrichten:* लिपिज्ञानवचनकौशलेषु Daçak. 60,13. — Vgl. मनो°.

विनयपत्त्र n. = विनयसूत्र Burn. Intr. 36. 559.

विनयपिटक bei den Buddhisten *der Korb* (d. i. *Sammlung*) *der über die Disciplin handelnden Schriften* Burn. Intr. 35. fg. 448.

विनयवत् (von विनय) 1) adj. *wohlgesittet:* श्रविनयवती भार्या Spr. (II) 691. — 2) f. °वती ein Frauenname Kathâs. 69, 103. Daçak. 118, 3. Pańkat. 129,5.

विनयवस्तु n. Titel einer Abtheilung der über Vinaja handelnden Bücher bei den Buddhisten Wassiljew 89.

विनयविभाषाशास्त्र n. Titel eines buddhistischen Werkes Hiouen-thsang 1,177. Vie de Hiouen-thsang 95.

विनयसूत्र n. bei den Buddhisten *das über die Disciplin handelnde* Sûtra Burn. Intr. 36. 38. 559.

विनयस्थ adj. *fügsam, lenkbar* H. 432.

विनयस्वामिनी f. N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 24,154.

विनयादित्य (विनय + श्रा°) m. Bein. Ǵajâpîḍa's Râǵa-Tar. 4, 516. °पुर n. N. pr. einer von ihm gegründeten *Stadt* ebend.

विनयितर् (von 1. नी mit वि) nom. ag. etwa *Erzieher, Unterweiser:* Vishṇu MBh. 13,7004.

विनयिन् (von विनय) adj. *gesittet, sich gut —, bescheiden betragend* Kâm. Nîtis. 1,63 (विनयं st. विनयी der Comm.). Spr. 3167, v. l. Verz. d. Oxf. H. 237,b,7. 8. Râǵa-Tar. 2, 84. Bhâg. P. 1,15,38 nach der Lesart der ed. Bomb. (विनियतम् st. विनयिनम् Burn.). Pańkar. 1,1,39.

विनर्दिन् (von नर्द् mit वि) adj. *brüllend*, Bez. einer Sâman-Sangweise Khând. Up. 2,22,1.

विनशन (von 1. नश् mit वि) n. *das Verschwinden:* सरस्वत्याः, सरस्वती° und mit Ergänzung des Flussnamens *der Ort, wo die* Sarasvatî *verschwindet*, Pańkav. Br. 25,10,1. Kâtj. Çr. 24,5,30. Lâtj. 10,15, 1. MBh. 3,10538. M. 2,21. MBh. 3,5052. 8090. 10694. 9,2118. fgg. Hariv. 9520. Bhâg. P. 1,9,1. 10,71,21. 79, 23. Verz. d. Oxf. H. 79, b, No. 136, Z. 9. H. 951. = कुरुतेत्र Trik. 2,1,14.

विनश्वर (wie eben) adj. *verschwindend, vergänglich* AK. 3,4,12,101. कलेवर Spr. 2160. Çatr. 3,3. फल Sarvadarçanas. 56,15. श्र° Spr. 5130. द्विषां सैन्यं विननाश विनश्वरम् so v. a. *so dass es nicht mehr gesehen ward* Râǵa-Tar. 6,247.

विनश्वरता (von विनश्वर) f. *Vergänglichkeit* Sarvadarçanas. 98,9.

विनश्वरत्व n. dass. Sarvadarçanas. 81,22.

विनष्ट s. u. 1. नश् mit वि; विनष्टक s. बाल° (unter बालविनष्ट).

विँनष्टतेजस् adj. *dessen Energie verschwunden ist, kraftlos* AV. 19,34,2.

विँनष्टि (von 1. नश् mit वि) f. *Verlust:* महती Çat. Br. 14,7,2,15. Kenop. 13. मुहुर्विनष्टि Bhâg. P. 3,1,21.

विनस (2. वि + 2. नस्) adj. (f. श्रा) *der Nase beraubt* Ǵatâdh. im ÇKDr. Bhaṭṭ. 5,8.

विँना praep. P. 5,2,27 (oxyt.). स्वरादि zu P. 1,1,37. *ohne, mit Ausnahme von, bis auf* (excl.) AK. 3,5,3. H. 1527. an. 7,32. Halâj. 5, 90. mit acc. instr. und abl. P. 2,3,32. Vop. 5,7. 10. 21. 1) mit vorangehendem acc.: कथं कर्म विना दैवं स्थास्यति MBh. 13,317. पौरास्ते राघवं विना । शोकोपहतनिश्चेष्टा बभूवुर्हतचेतसः ॥ *ohne* Râma so v. a. *weil er nicht da war* R. 2,47,1. 1,19,22. 5,26,25. Çâk. 146, v. l. Spr. (II) 667. 1710. (I) 1459. न विश्वासं विना शत्रुर्देवानामपि सिध्यति 1468. 2614. 2821. स्वजातीयं विना वैरी न जय्यः 3325. 4148. Pańkat. 250,5. Çuk. in LA. (III) 35,15. 38,2. H. 529. Sarvadarçanas. 81,11. श्रारण्यानां च सर्वेषां मृगाणां माहिषं विना । स्त्रीलीरं चैव वर्ज्यानि *mit Ausnahme von* M. 5, 9. स्वस्ति स्यादपि वैदेह्या रक्षोभ्यो रक्षणं विना R. 3, 64, 4. सेवावृत्तिविदां चैव नाश्रयः पार्थिवं विना Spr. 2799. Varâh. Bṛh. S. 3,6. 48, 82. स्थानं विनात्ययम् 77,22. Bhâg. P. 4,24,55. H. 946. P. 1,1,20, Schol. त्वयापि कर्तव्यो नासंतोषो युधं विना so v. a. *wenn es nicht zum Kampfe kommt* Kathâs. 27,144. प्रशान्तम् । विनोपसर्पत्यपरम् so v. a. *einen Andern als* Bhâg. P. 6,9,21. तान्प्रदेशमात्रं विना परिलिखति *bis auf die Entfernung eines* Pr., *so dass der Zwischenraum eines* Pr. *bleibt* Çat. Br. 3,5,1,5. — 2) mit folgendem acc. AV. 20,136,13 (Conj.). विनान्योऽन्यं न भुञ्जाते MBh. 1,7623. काकः सर्वरसान्भुङ्क्ते विनामेध्यं न तृप्यति Spr. 1458. 2315. 2818. 2821. Varâh. Bṛh. S. 95, 46. Hit. I, 40. Bhâg. P. 3, 29, 13. 31,18. विना नारायणं देवं सर्वे *alle mit Ausnahme von* MBh. 1,1141. वरं वृणीष्व विनास्य जीवितम् 3,16773. 4,533. विना मलयमन्यत्र चन्दनं न विवर्धते Spr. 2615. विना वज्रमणिं मुक्तामणिर्भिद्यः कथं भवेत् 3325. सर्वं तत्समवर्णायत् — विना यडुकुलत्तयम् Bhâg. P. 1,13,11. — 3) mit vorangehendem instr. MBh. 1,6141. R. 1,9,22. 2,52,50. Spr. 1541. 2021. 2315. 2330. 3053. Ragh. 1,23. Vikr. 10. AK. 2,6,1,11. Varâh. Bṛh. S. 54,57. Sarvadarçanas. 81,9. वृष्ट्यापि विना Ragh. 2,14. वैदेह्या तं विनागतम् R. 3,65,1. न दर्शन विना श्राद्धमाहिताग्नेर्द्विजन्मनः *mit Ausnahme von* M. 3,282. Jâǵń. 2,25. इमं नान्यो मया विना वेत्ति *kein Anderer als ich* Kathâs. 5,35. न होढेन विना चौरं घातयेद्धार्मिको नृपः so v. a. *wenn nicht das Geraubte da ist* M. 9,270. ज्ञातयो वा हरेयुस्तदागतास्तैर्विना नृपः *wenn diese nicht da sind* Jâǵń. 2, 264. — 4) mit folgendem instr. M. 11,202. MBh. 1,6152. Sâṁkhjak. 41. 52. Spr. 1630 (II). 1458. 1460. 1933. 2819. fg. Çâk. 146. Varâh. Bṛh. S. 28,7. 46,42. 49,5. 54,93. H. 412. Bhâg. P. 6,13,1. विना वा तैः M. 4,252. विनाप्यर्थैः Spr. 2822. विना तु तैः H. 1115. न विना पार्थिवो भृत्यैः Spr. 1459. न तदस्ति विना य-

तस्यान्मया भूतं चराचरम् Bhag. 10,39. — 5) mit vorangehendem abl. Varâh. Bṛh. 93,5. स्थाएवादिभ्यो यथा विना छाया Sâṁkhjak. 42. — 6) mit folgendem abl. Varâh. Bṛh. S. 44,17. 74,2. Bhâg. P. 6,12,11. विनाप्यस्मत् Çiç. 2,9. स्रागमो ऽभ्यधिको भोगाद्दिना पूर्वक्रमागतात् *Erwerb gilt mehr als Genuss, ausser wenn dieser schon von den Vorfahren stammt* (Stenzler) Jâǵń. 2,27. न च स्नायाद्दिना ततः *bevor dieses geschehen ist* M. 4,82. — 7) mit der Ergänzung componirt: सत्य°, गति° u. s. w. Spr. 2614. Subhâsh. 155,26. — 8) als adv. und ausserdem überflüssig: न तदस्ति विना देव यत्ते विरहितं करे *es giebt Nichts, wobei du nicht wärest*, Hariv. 14966.

विनाकर् (विना + कर्) *trennen von, berauben;* °कृत *getrennt von, beraubt, gekommen um, ermangelnd;* = विरहित Trik. 3,1,19. Hâr. 206. die Ergänzung im instr.: भृत्यैः MBh. 4,322. R. 2,53,8 (10 Gorr.). 103,11. R. Gorr. 2,17,40. 5,21,17. 26,8. 24. Kâm. Nîtis. 13,88. Kumâras. 4,21. Kathâs. 13,122. 52,271. सुखैः R. 3,19,3. चेतनेन 7,55,20. Varâh. Bṛh. S. 104,1. भुक्तिरागमेन विनाकृता Jâǵń. 2,29. im abl.: न ते ऽपवर्गः सुकृताद्दिनाकृतः (Nîlak. verbindet विना mit सुकृतात् und erklärt कृत durch निष्पादित) MBh. 3,16799. im comp. vorangehend: पतिराज्य° MBh. 3,2398. 2556. 2867. 16489. 16800. R. 2,53,15 (17 Gorr.). 4,61,27. 5,16,19. Varâh. Bṛh. S. 19,19. Kathâs. 16,45. 35,35. तृत्पिपासा° *frei von* 29,125. ohne Ergänzung *allein stehend* R. 5,31,38.

विनाकृति (von विनाकर्) f. *Ausschliessung:* °कृत्या so v. a. विना *ohne*, mit instr. Spr. (II) 1360 (Conj.).

विंनाट m. *Schlauch* Çat. Br. 5,3,2,6. Kâtj. Çr. 15,3,42.

विनाडिका f. *ein best. Zeitmaass*, = $^1/_{60}$ Nâḍikâ Weber, Ǵjot. 105. fg. Z. d. d. m. G. 9,667. fg. Mit. 145,3.

विनाडी f. dass. Weber, Ǵjot. 106. Z. d. d. m. G. 9,667. fg. Journ. of the Am. Or. S. 6,149. Mit. 145,4. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 3.

विनाथ (2. वि + नाथ) adj. (f. स्रा) *des Beschützers beraubt* R. 5,35,45.

विनादिन् (von नद् mit वि) adj. *aufschreiend:* हाहाकार° MBh. 9,1636.

विनाभव (वि° + भव) m. *das Getrenntsein, Trennung von:* स्रप्रियैः सह संवासः प्रियैश्चापि विनाभवः Spr. (II) 476. R. 2,94,3 (विनाभवः zu schreiben). ध्रुवो ह्यपां विनाभवः 105,25. रामस्य विनाभवम्। वैदेह्या 7,50,4.

विनाभाव (von विनाभू) m. स्र° *Unzertrennlichkeit, Zusammengehörigkeit* Sâh. D. 15,1. Sarvadarçanas. 4,14. धूमधूमधजयोः 21. 5,14. 7,6. fgg. Comm. zu Njâjas. 2,2,2. Z. d. d. m. G. 7,307. Verz. d. Oxf. H. 18,a,38. विनाभावम् absol. s. u. विनाभू.

विनाभाविन् (wie eben) adj. स्र° *unzertrennlich* Comm. zu Njâjas. 2, 2,1. Davon स्रविनाभावित्व n. nom. abstr. Schol. zu Kap. 1,112.

विनाभाव्य (wie eben) adj. स्र° *unzertrennlich, nicht ohne etwas Anderes anzuwenden* Weber, Râmat. Up. 292.

विनाभू (विना + 1. भू) *getrennt werden:* °भूय (auch विना भूत्वा), °भावम् (absol.) P. 3,4,62, Schol. °भूत *getrennt von* (instr.), *beraubt* MBh. 3, 3092. R. 3,79,20. चेतनेन 7,55,17.

विनाम (von नम् mit वि) f. = नति *Umbeugung eines dentalen Lautes in einen cerebralen* VS. Prât. 4,190. AV. Prât. 4,34. 114. P. 8,2,16, Vârtt. 1.

विनायक (von 1. नी mit वि) 1) m. a) *Führer, Lenker:* रात्रिव कर्ता भूतानां राजा चैव विनायकः (विनाशकः MBh. 12,3411) । राजा सुप्तेषु जागर्ति राजा पालयति प्रजाः ॥ R. 7,59,2. 4. MBh. 13,7135. गणेश्वरविनायकाः 7103. = गुरु *Lehrer* Trik. 3,3,41. H. an. 4,32. fg. Med. k. 212. — b) Bein. Gaṇeça's, *des Entferners* der Hindernisse, AK. 1,1,1,33. H. 207. H. an. Med. Halâj. 1,18. Jâǵń. 1,270. Atharvaç. Up. bei Muir, ST. 4,298. Varâh. Bṛh. S. 46,12. Kathâs. 20,55. 39,139. 50,147. 179. 51,1. 70,125. Râǵa-Tar. 3,352. Vet. in LA. (III) 1,2. Verz. d. B. H. No. 1127. 1254. 1275. fg. Verz. d. Oxf. H. 36, a, No. 78. 45, a, 7. 46, a, 44. 78, b, 6. 14. 36. 277, a, 6. Saṁsk. K. 124. — c) pl. Bez. einer Klasse von Dämonen: राक्षसाः, पिशाचाः, भूताः, विनायकाः MBh. 12,10477. Hariv. 10697 (विघ्नानि st. भूतानि die neuere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 59,9. Wassiljew 193. प्रेतभूतविनायकाः Bhâg. P. 2,10,38. विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु 10,2,33. विनायकाः विघ्नहेतवः तेषामनीकानि स्तोमास्तानि पान्ति Comm. Vgl. Verz. d. Oxf. H. 79, a, 33, wo von 56 Vinâjaka's d. i. Gaṇeça's die Rede geht. — d) pl. Bez. gewisser über Waffen gesprochener Sprüche R. Gorr. 1,31,11. — e) *ein* Buddha AK. 1,1,1,9. 3,4,1,6. Trik. H. 234. H. an. Med. — f) Bein. Garuḍa's Trik. H. an. Med. — g) *Hinderniss* Trik. H. an. Med. — h) = स्रनाथ (?) Trik. — i) N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. II, 174. Verz. d. B. H. No. 53 (S. 12). 109. Verz. d. Oxf. H. 150, b, No. 320. 134, a, No. 249. °पण्डित 124, b, 43. 295, b, No. 717. Verz. d. B. H. No. 1092. °भट्ट 80. fg. Verz. d. Oxf. H. 134, a, No. 249. — k) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39, b, 17. — 2) विनायिका f. Gaṇeça's *Gattin* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. भूत°, लोक°, विघ्न°.

विनायकचतुर्थी Bez. *eines best. vierten Tages*, eines Festes zu Ehren Gaṇeça's, Verz. d. B. H. 135, a, 1. स्रविघ्न° st. dessen Verz. d. Oxf. H. 34, a, 35.

विनायकास्नपनचतुर्थी f. Bez. *eines best. vierten Tages, an welchem* Gaṇeça's *Bild gebadet wird*, Verz. d. Oxf. H. 34, a, 34 (Verz. d. B. H. 134, b, 1 v. u.).

विनायिन् (von 1. नी mit वि) adj. P. 3,2,78, Schol. — Vgl. स्र°.

विनारुहा f. *eine best. Pflanze*, = त्रिपर्णिका Râǵan. im ÇKDr.

विनाल (2. वि + नाल) adj. *des Stengels beraubt:* नलिन MBh. 7, 1567. 8,615.

विनाश (von 1. नश् mit वि) m. *das Verlorengehen, Verschwinden, Aufhören, Verlust, Vernichtung, Untergang* AK. 3,3,22. TS. Prât. 1,57. मतिप्रणाशः Vikr. 85. Bhâg. P. 4,22,27. तस्य (स्रर्थस्य) नाशे विनाशे वा MBh. 3,1299. Jâǵń. 2,165. मम सर्वविनाशाय R. Gorr. 1,77,11. स्रर्थ° Varâh. Bṛh. S. 5,21. 53,90. Kathâs. 19,14. Spr. 1297. Pańkat. 145,15. बीज° Varâh. Bṛh. S. 5,34. वृष्टि° 17,4. त्तीर° 23. घन° 47,12. नरपतिदेश° 46,82. कर्मणाम् Spr. 3146. तदावरण° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 35. बुद्धि° Hit. 55,8. डुष्टाचार° LA. (III) 87,15. स्रपमृत्यु° Pańkat. 187, 7. दोष° Dhûrtas. 90,10. तं यस्तु द्वेष्टि संमोहात् – तस्य ह्याशु विनाशाय राजा प्रकुरुते मनः M. 7,12. MBh. 1,6132. 3,12195. Kap. 1,44. Suçr. 1, 365,10. R. 1,3,34. 41,4. 2,40,9. Spr. 2631. 5258. Mâlav. 8,14. Kathâs. 30,135. Bhâg. P. 9,6,50. 14,7. Mârk. P. 112,12. Vet. in LA. (III) 19, 20. Pańkat. 175,3. Gegens. संभूति Îçop. 14. संभव Bhâg. P. 7,2,26. उत्पत्ति Kap. 2,22. स्थित्युत्पत्तिविनाशहेतु Suçr. 1,194,17. 249,12. पुरस्याविनाशाय MBh. 5,7470. उपस्थितविनाशा (वसुंधरा) 4878. विनाशमेवा-

पीतो भवति Khând. Up. 8,11,1. विनाशं व्रजति M. 3,179. 4,71. 8,346. अगमत् Verz. d. Oxf. H. 54,b,30. एष्यसि Pańkat. 162,12. यास्ति R. 2,44, 13. उपयास्यति 48,22. R. Gorr. 2,69,7. Pańkat. 184,19. अभ्येति Spr. (II) 1532. अवाप्स्यति Mârk. P. 16,30. कर्तुम् Bhag. 2,17. Varâh. Bṛh. S. 4,27. निन्ये 43,7. दासीगर्भविनाशकृत् Jâgń. 2,236. बाङ्मग्रीवानेत्रसक्थिविनाशे वाचिके so v. a. *Verletzung* 208. विनाशोन्मुख so v. a. *reif* AK. 3,2,41. — Vgl. जगद्विनाश.

विनाशक (vom caus. von 1. नश् mit वि) adj. *verschwinden machend, vernichtend, zu Grunde richtend* P. 3,2,146. राजैव कर्ता भूतानां राजैव च विनाशकः (विनायकः R. 7,59,2,4) । धर्मात्मा यः स कर्ता स्यादधर्मात्मा विनाशकः ॥ MBh. 12,2411. लोक° R. 5,51,14. मूलाविद्या° Pańkar. 4, 3,54. मल्लस्य सिद्धस्य Vet. in LA. (III) 3,15. Sarvadarçanas. 108,18. वृत्तादि° (अशनि) Kull. zu M. 1,38. als Erklärung von भेदक 9,280. 285. Vielleicht fehlerhaft für विनायक 1) c) in der Stelle: चतुर्थं वायुमार्गं तु शीघ्रं गत्वा परंतप । वसन्ति यत्र नित्यस्था भूताश्च सविनाशकाः R. 7,23,4,6.

विनाशन (wie eben) 1) adj. (f. ई) dass.: चन्द्रस्य (राज्ञः) MBh. 1,2674. शत्रूणाम् Hariv. 1944. श्रियः Spr. (II) 750. मायानाम् Bhâg. P. 3,19,22. परव्यूह° MBh. 3,2430. 12238. 4,864. 8,4207. Hariv. 8469. R. 3,31,45. आत्मवंश° 5,87,24. Git. 1,20. Pańkar. 4,1,34. लोकद्वय° Spr. 1542. स्वर्गकीर्तिलोक° Jâgń. 1,356. शोकदुःख° MBh. 1,7559. 3,15529. 4,1119. बलदर्प° R. Gorr. 1,77,42. 5,82,9. 84,12. 6,79,20. कृत्याव्याधि° Suçr. 1,17,20. 64,19. 189,5. Bhâg. P. 3,22,32. 4,30,22. Pańkar. 2,1,8. 3,6, 10. 4,3,175. Verz. d. Oxf. H. 62,a,15. — 2) m. N. pr. eines Asura, eines Sohnes der Kalâ, MBh. 1,2543. — 3) n. *das Verschwindenmachen, Verscheuchen, Vernichten, zu-Grunde-Richten:* भयस्य Kathâs. 46, 146. खाण्डवस्य MBh. 1,8305. बालस्य 13,63. R. 1,21,10. 2,71,33. 74, 4. R. Gorr. 1,4,91. 7,102,4. सर्प° MBh. 1,1204. प्राण° 5,7474. लोक° Hariv. 10627. Kâm. Nîtis. 10,4. R. 7,105,9. Mârk. P. 21,96. वेद° Verz. d. Oxf. H. 54,a, No. 104, Z. 10. उन्मूल° *mit der Wurzel* Prab. 69,18. बन्ध° (so die ed. Bomb.) *Gefangenmachung und Vernichtung* MBh. 12, 4207. — Vgl. चित्त°, पाप°, पित्त°, मूल°.

1. विनाशान्त (विनाश + अन्त) m. *Tod* MBh. 12,12533. Spr. (II) 315.

2. विनाशान्त (wie eben) adj. *mit Verlust endend:* संचय Spr. 3113.

विनाशित्व (von विनाशिन्) n. *Vergänglichkeit* Kusum. 48,14. Wilson, Sâṁkhjak. S. 42. Comm. zu Kap. 1,44. अ° Çat. Br. 14,7,2,23. fgg.

विनाशिन् (von 1. नश् mit वि und von विनाश) adj. 1) *verschwindend, zu Grunde gehend, vergänglich:* उत्पत्त्यनन्तरम् (विद्युत्) P. 5,1,114, Schol. मात्राः M. 1,27. MBh. 12,7501. Spr. 1443 (II). 3216. Varâh. Bṛh. S. 11, 42. Mârk. P. 46,39. Sarvadarçanas. 111,19. अद्य श्वो वा Spr. (II) 944. प्रतिक्षण° 233. क्षण° Kathâs. 72,130. अविनाशिन् Çat. Br. 14,7,3,15. Bhag. 2,17. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 328. Verz. d. Oxf. H. 62,a,4. Pańkar. 1,8,22. — 2) *verderbend, vernichtend, zu Grunde richtend:* अन्योऽन्यं च विनाशिनो MBh. 12,3967. कुलस्य R. Gorr. 2,9,38. नृपस्य Kathâs. 29,55. कथामिमाम् — खाण्डवस्य विनाशिनीम् so v. a. *vom Untergang handelnd* MBh. 1,8097. Gewöhnlich in comp. mit dem obj.: परानीक° MBh. 6,5535. 7,5223. 12,3927. Hariv. 9424. शोक° MBh. 3,2459. तेमारोग्यमुभित्त° Varâh. Bṛh. S. 4,27. कार्य° Spr. (II) 186. आत्मस्मृति° Bhâg. P. 8,4,12. 10,55,16. Pańkar. 1,7,39. Verz. d. Oxf. H. 260,b, No. 629. Kull. zu M. 8,353. — Vgl. मलविनाशिनी.

विनाश्य (vom caus. von 1. नश् mit वि) adj. *zu verderben, zu vernichten, zu Grunde zu richten:* यदि नाहं विनाश्यस्ते MBh. 12,6604. Kathâs. 5,119. Kusum. 48,13. fg. विवादाध्यासितानि ज्ञानानि उत्तरोत्तरकार्यविनाश्यानि Sarvadarçanas. 108,12. fg. अ° MBh. 15,926. Schol. zu Kâvjâd. 2,245.

विनाश्यत्व (von विनाश्य) n. *Vernichtbarkeit:* बुद्धेर्बुद्ध्यन्तरविनाश्यत्वे Sarvadarçanas. 108,12. संचितकर्मणामेव ज्ञानविनाश्यत्वागमात् Nîlak. 31.

विनासक (von 2. वि + नासा) 1) adj. *nasenlos* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) f. विनासिका *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,287,20.

विनासादशन (2. वि + ना° - द°) adj. *der Nase und der Zähne beraubt* MBh. 7,1570. विनेमिदशन ed. Bomb.

विनाह m. = वीनाह Çabdar. im ÇKDr.

विनिकर्त्तव्य (von 1. कर्त् mit विनि) adj. *zu zerhauen, niederzumetzeln:* नामित्रो विनिकर्त्तव्यो नातिच्छेद्यः कथं च न MBh. 12,3571. Nîlak. führt das Wort auf 1. कर् mit विनि zurück: निकृत्या वञ्चयितव्यः.

विनिकार (von 1. कर् mit विनि) m. *Beleidigung, Kränkung* MBh. 7,685.

विनिकृन्तन (von 1. कर्त् mit विनि) adj. *zerhauend, niedermachend:* सुरारि° (धनुस्) MBh. 3,14319.

विनिक्षण (von निक्ष् mit वि) n. *das Durchbohren* Nir. 4,18.

विनिक्षेप्य (von 1. क्षिप् mit विनि) adj. *zu werfen in* (loc.): अम्भसि Spr. 1268.

विनिगड (2. वि + नि°) adj. *von Fussketten befreit:* विनिगडीकृत Daçak. 89,17.

विनिगमक (vom caus. von 1. गम् mit विनि) adj. *eine Alternative entscheidend, für den einen oder andern Fall den Ausschlag gebend* Schol. zu Kap. 1,38. Kusum. 37,8.

विनिगमना (wie eben) f. *das Entscheiden einer Alternative, das Ausschlaggeben für den einen oder andern Fall* Dâjabh. im ÇKDr. (Nachträge).

विनिगूहितर् (von 1. गुह् mit विनि) nom. ag. *Verheimlicher, Geheimhalter:* रहस्य° Spr. 4253.

विनिग्रह (von ग्रह् mit विनि) m. 1) *das Getrennthalten, Trennung* Nir. 1,3. 5. 7. — 2) *das Niederhalten, Zurückhalten, Verhalten, Einhaltthun;* einer Person: भवतः (subj.) Bhâg. P. 8,22,3. पितुः (obj.) R. Gorr. 2,20,46. द्विषताम् 5,43,5. MBh. 3,17460. 15011. 5,2284. अरि° 3,17464. 8,1518. Hariv. 2577. आत्म° Bhag. 13,7. 17,16. पञ्चवर्ग° MBh. 12,2600. प्राण° Verz. d. Oxf. H. 237,a, No. 568. वृष्टेः Varâh. Bṛh. S. 4,13. मूत्र° Suçr. 2,514,4. निश्वास° 8. वेग° 304,17. लोभस्य क्रोधस्य च MBh. 3, 13987. 12,6958. पाप° M. 9,263. यौवराज्याभिषेकस्य R. Gorr. 2,19,12. — 3) *Restriction, Einschränkung,* als Bed. von एव Med. avj. 77. von अह 88.

विनिग्राह्य (wie eben) adj. *niederzuhalten, zurückzuhalten:* द्विपाः, वृषभाः MBh. 4,33. बाहुभ्याम् 12,1139.

विनिघ्न adj. = घ्न, निघ्न *multiplicirt* Gaṇit. Spashṭâdh. 68. Grahajutj. 1.

विनिद्र (2. वि + निद्रा) 1) adj. (f. आ) *a) frei von Schlaf, wach, nicht schlafend* MBh. 3,16399. 16814. 10,146. 12,10444. Ragh. 5,66. Spr. 1559. चिन्ता° Kathâs. 20,32. 43,66. 45,200. 64,45. 71,96. 119. Bhâg. P. 3,27,14. 7,4,23. Pańkar. 4,3,145. °करण MBh. 1,5695. *im wachen*

Zustande geschehend: सुस्पष्टो विनिद्रो ऽनुभवो हि मे KATHÂS. 81,61. — 2) *aufgeblüht* H. 1129. हेमाब्ज HARIV. 15771. KUMÂRAS. 5,80. Spr. 1600. KHANDOM. 103. Verz. d. Oxf. H. 187,*b*, No. 428,8. PAÑKAR. 3,5,3. *geöffnet* von Augen: अतो विनिद्रे सहसा विलोचने करोमि न VIKR. 132. — 2) m. Bez. eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches R. 1,30,6.

विनिद्रक (von विनिद्र) adj. *wach, erwacht:* सुप्त° KATHÂS. 106,56.

विनिद्रत्व (wie eben) n. *das Wachsein* H. 319.

विनिद्रासु adj. RÂGA-TAR. 8,2139 fehlerhaft für निद्रिासु *schlafen wollend, schläfrig* vom desid. von 2. द्रा mit नि.

विनिनीषु (vom desid. von 1. नी mit वि) adj. *zu leiten —, zu ziehen beabsichtigend:* प्रजाः RAGH. 9,23.

विनिन्द् (von निन्द् mit वि) 1) adj. *spottend* so v. a. *übertreffend* PAÑKAR. 1,3,78. 14,59. — 2) f. आ *das Schmähen, Lästern:* महद्विनिन्दा BHÂG. P. 4,4,13.

विनिन्दक (wie eben) adj. *verspottend:* वेद° MÂRK. P. 10,58. Verz. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 4. *spottend* so v. a. *übertreffend* GÎT. 2,6.

विनिपात (von 1. पत् mit विनि) m. 1) *Fall, Sturz,* = निपात MED. t. 218. = अवपान d. i. अवपात (ÇKDR. dagegen liest अवमान) H. an. 4, 126. in übertr. Bed. so v. a. *Unfall, Ungemach;* = दैवतो व्यसनम् H. an. = दैवादिव्यसन MED. त्रपतां जुह्वतां चैव विनिपातो न विद्यते M. 4, 146. MBH. 3,331. 4,622. नैकान्तविनिपातेन (= अत्यन्ताभिनिवेशेन NILAK.) विचचारेह कश्च न 12,2859. 8091. ÇÂK. 70,1. 2. MÂLAV. 69,5. °गत Spr. 752 (II). 2932. PAÑKAT. 92,5. 203,2. KULL. zu M. 4, 145. °प्रतिक्रिया KATHÂS. 15,113. °प्रतीकार PAÑKAT. 92,4. HIT. 119,18. KULL. zu M. 7, 147 (विनिपातः falschlich). so v. a. *Tod* M. 8,185. क्रोधो हि सर्वतपसां विनिपातहेतुः *das zu Schanden Werden* Spr. (II) 1977. — 2) *das Fehlgehen:* अविनिपातं स्मृतिं च ÇÂÑKH. GṚHJ. 2,10.

विनिपातक (vom caus. von 1. पत् mit विनि) adj. *zu Schanden machend, vernichtend:* श्रेयसाम् (रोषः) MBH. 12,13881.

विनिपातिन् (von 1. पत् mit विनि) adj. *fehlgehend:* धर्मेष्वविनिपातिनः ÂPAST. 2,29,5.

विनिबर्हण (von 1. बर्ह् mit विनि) adj. *niederschmetternd:* द्विषताम् MBH. 3,879. सुरारि° 9,2364. 2528. An der ersten und letzten Stelle विनिवर्हण, an der zweiten विनिर्वर्हण ed. Calc.

विनिबर्हिन् (wie eben) adj. dass.: अमित्र° MBH. 3,16991. विनिव° ed. Calc.

विनिमय (von 5. मा mit विनि) m. 1) *Tausch, Vertauschung* H. 869. HALÂJ. 2,418. अविहितश्चैतेषां विनिमयः ÂPAST. 1,20,14. विनिमयं कर MBH. 3,17194. KATHÂS. 73,349. MBH. 13,3465. 3468. COLEBR. Alg. 38. RAGH. 1,26. MÂLAV. 51. ÇIÇ. 7,65. KATHÂS. 80,48. 50. SÂH. D. 734. BHÂG. P. 1,1,1. 5,26,28. KÂÇ. zu P. 8,2,60. द्रव्य° DHÂTUP. 31,1 (°विनमय gedr.). कार्य° *Reciprocität* MÂLAV. 9,8. — 2) *Verpfändung* MED. k. 128. ÇABDAM. im ÇKDR. विक्रयैर्गो विनिमयैर्दत्त्वा गोमांसखादके। व्रतं चान्द्रायणं कुर्याद्वधे साक्षाद्वधी भवेत् ॥ GOBHILA in PRÂJAÇKITTAT. nach ÇKDR.

विनिमेष (von 1. मिष् mit विनि) m. *das Schliessen* (der Augen): नयनविनिमेष (als Zeichen) KIR. 12,26.

विनियम (von यम् mit विनि) m. *Beschränkung:* वैश्यस्य वर्तमानस्य वैश्यायाम् — शूद्रायां चापि — तयोर्विनियमः स्मृतः *eine Beschränkung auf diese beiden* MBH. 13,2552.

विनियोक्तर् (von 1. युज् mit विनि) nom. ag. 1) *der Jmd an Etwas* (loc.) *stellt,* — *Etwas thun heisst:* तेषु तेषु हि कृत्येषु विनियोक्ता महेश्वरः MBH. 3,1225. SIDDH. K. zu P. 1,4,98. सा (श्रुतिः) त्रिविधा विधात्री अभिधात्री विनियोक्त्री च *die specielle Anordnung enthaltend, die Unterscheidung angebend* KÂTJ. ÇR. Comm. 23,13. fg. — 2) *Verwender:* आदाता सम्यगर्थानां विनियोक्ता च पात्रवित् KÂM. NITIS. 4,17.

विनियोग (wie eben) m. 1) *Vertheilung:* अविह्वकर्मणाम् NIR. 1,8. — 2) *Anstellung an ein Geschäft* (loc.), *Beauftragung mit Etwas; die Einem angewiesene Beschäftigung:* अनेनेदं तु कर्तव्यं विनियोगः प्रकीर्तितः ÂHNIKAT. im ÇKDR. सारथ्ये मद्रराजस्य MBH. 1,542. अतश्च विनियोगे ऽस्मिन्भवन्तो विनियोजिताः R. 3,60,38. 5,90,26. °प्रसादा हि किंकराः प्रभविष्णुषु KUMÂRAS. 6,62. विनियोगं च भूतानां धातेव विदधात्युत MBH. 12,8528. MÂRK. P. 48,41. — 3) *Anwendung, Verwendung, Gebrauch* (z. B. eines Verses im Ritual), überall bei Comm. TAITT. ÂR. 10,33. 35. GAIM. 1,32. व्यूढानां विनियोगज्ञः HARIV. 13014. गुणानां बलानां च षणाम् RAGH. 17,67. WEBER, RÂMAT. UP. 292. ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 53. 206 (अ°). 266 (pl.). 269. 275. PAÑKAR. 1,5,13. 2,5,23. 3,14,1 (pl.). 4,5, 9. S. 238. 278. Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,25. 106,*b*, No. 161. fg. 219,*b*, No. 525. 229,*a*, No. 561. तथान्नशेषविनियोगं कुर्यात् KULL. zu M. 3,253. घनस्य संग्रहणे विनियोगे च zu 9,11.11,20. DHÛRTAS. 84,16. P. 1,3,32, Schol. HIT. 98,15. कदापि तावदेवंविधे कर्मण्येतस्य देहस्य विनियोगः श्लाघ्यः 99, 13. शब्द° Comm. zu NJÂJAS. 2,1,55. पृथिव्यादीनां यथाविनियोगं (*wie sie der Reihe nach angewandt —, aufgeführt worden sind*) गुणा इन्द्रियाणां यथाक्रममर्था विषया इति zu 1,1,14. — 4) *Relation, Correlation* NILAK. 195. VS. PRÂT. 6,21. P. 8,1,61. Ind. St. 10,415. 417. MADHUS. ebend. 1,14. 15. fg. अङ्गसंबन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः। व्रीहिभिर्यजेत समिधो यजतीत्यादिः 19. fg. — 5) als Erklärung von अधिकार 8) KÂÇ. zu P. 1,3,11. — 6) = अर्पणं फले H. 1520. wohl = 3).

विनियोगसंग्रह m. Titel eines zum SV. gehörigen Pariçishṭa Ind. St. 1,59.

विनियोज्य (von युज् mit विनि) adj. *anzuwenden, zu verwenden, zu gebrauchen:* प्राप्तश्चार्थस्ततः पात्रे विनियोज्यो विधानतः MÂRK. P. 16,57. न तत्र दण्डो बुधेन विनियोज्यः Spr. 3243.

विनिर्गम (von 1. गम् mit विनिस्) m. 1) *das Hinausgehen, Fortgehen:* अनीकात् M. 7,2498. R. GORR. 2,14,22. गृहात् VARÂH. BṚH. S. 28,9. स्वनगर्याः KATHÂS. 70,2. 100,32. BHÂG. P. 10,1,65. अन्तर्गृहगताः काष्ठिद्वाप्यो लब्धविनिर्गमाः 29,9. MBH. 13,6315. असुविनिर्गमकाले KHANDOM. 36. लिङ्ग° (लिङ्गादिनिर्गमे ed. Bomb. = लिङ्गशरीरनाशे सति Comm.) BHÂG. P. 3,27,29. बहिर्मत्त्वविनिर्गमः so v. a. *das Ruchbarwerden* MÂRK. P. 27,5. 6. — 2) *das letzte Drittel eines astrologischen Hauses* VARÂH. BṚH. 22 (20),6.

विनिर्घोष (von घुष् mit विनिस्) m. *Klang, Laut:* यथाशनेर्विनिर्घोषो वज्रस्येव च पर्वते MBH. 3,1565. कलहंसविनिर्घोषैः 13,5271.

विनिर्जय (von 1. जि mit विनिस्) m. *Besiegung:* पाण्डवानाम् MBH. 3,15188.

विनिर्णय (von 1. नी mit विनिस्) m. *Entscheidung, ein maassgebender Ausspruch in Betreff von Etwas* (gen.): कार्याणाम् M. 1,114. कार्य° 8,

8. शौचस्य 5,110. निक्षिप्तस्य धनस्य 8,196. सीमावाद° 253. सीमा° 258. 266. 262. दण्ड° 301. इदं तदिति वाक्यं ते प्रोच्यते स विनिर्णयः MBH. 12, 11936. दुःखस्य 14,595. HARIV. 9678 (निर्विर्णय die ältere Ausg.). R. 5, 18,17. 6,13,6. KIR. 2,12. KATHÂS. 6,25. Verz. d. Oxf. H. 44,b,20. 45,a, 1. 2. 49,b,8. 65,a,13. 80,b,7. BHÂG. P. 1,3,10. MÂRK. P. 121,14. PAÑKAR. 3,11,17. LA. (III) 87,16.

विनिर्दहनी (von 1. दह् mit विनिस्) f. *ein best. Heilmittel* SUÇR. 2,468,19.

विनिर्देश्य (von 1. दिश् mit विनिस्) adj. *anzuzeigen, zu verkündigen:* तुद्दयम् VARÂH. BRH. S. 5, 56. 17,12. 21,11. 46,44. 53,104. 108. 54,86.

विनिर्बन्ध (von बन्ध् mit विनिस्) m. *das Bestehen auf —, Beharren bei Etwas:* वैर° so v. a. *hartnäckige —, ununterbrochene Feindschaft* MBH. 1,1166. वनवासविनिर्बन्धं नोपसंहरते यदा MÂRK. P. 109,46.

विनिर्बाहु (2. वि - निस् - बाहु) m. Bez. *einer best. Art des Kampfes mit dem Schwerte* HARIV. 15979.

विनिर्भय (2. वि + नि°) m. N. pr. eines Sâdhja VAHNI-P. im ÇKDR.

विनिर्भोग m. N. eines Kalpa Lot. de la b. l. 227.

विनिर्मल (2. वि + नि°) adj. *überaus rein, — lauter:* सुविनिर्मलचेतस् HARIV. 15468. ज्ञाननिर्मल° die neuere Ausg.

विनिर्माण (von 3. मा mit विनिस्) n. 1) *das Ausmessen:* जम्बूखण्ड° MBH. 1,337. 520. so heissen die 10 ersten Adhjâja des 6ten Buches im MBH. — 2) *das Bilden, Bauen; Bau:* मांसत्वग्लोमाङ्ग° KATHÂS. 96, 49. नियम्यतां विनिर्माणं क्वचान्यत्र विधीयताम् RÂGA-TAR. 4,59. 509. क्रीडासार° adj. *erbaut, verfertigt aus* PAÑKAR. 1,7,48. ईश्वरेच्छा° adj. *nach seinem Wunsch verfertigt* 51.

विनिर्मातर् (wie eben) nom. ag. *Bildner, Schöpfer:* ब्रह्मदण्ड° MBH. 13,1247. देवासुर° 1257.

विनिर्मिति (wie eben) f. *Bildung, Schöpfung, Erbauung:* शरीर° RÂGA-TAR. 2,1. धर्मस्वामि° 4,696.

विनिर्मुक्ति (von 1. मुच् mit विनिस्) f. *Befreiung von:* दोष° Verz. d. Oxf. H. 212,a,23. WILSON, SÂÑKHJAK. S. 25.

विनिर्मोक्ष m. 1) dass.: ग्रात्मबन्ध° MBH. 14,540. R. 5,87,21. — 2) *Ausschluss von* (= व्यतिरेक ÇKDR.): दिवाकरवारविनिर्मोक्षे GJOTISTATTVA im ÇKDR.

विनिर्याण (von 1. या mit विनिस्) n. *das Hinausgehen, Auszug, Aufbruch* R. GORR. 1,4,116.

विनिर्वर्हणा MBH. 9,2364 fehlerhaft für विनिबर्हणा.

विनिवर्तन (von वर्त् mit विनि) n. 1) *Rückkehr, Heimkehr* MBH. 3, 15979. R. GORR. 2,89,5. KÂM. NÎTIS. 19,25. BHÂG. P. 10,39,37. abgeschossener Geschosse MBH. 3,1690. — 2) *das Zuendegehen, Aufhören* Comm. zu DAÇAR. 3,15.

विनिवर्तिन् (wie eben) adj. *umkehrend:* ग्र° *nicht umkehrend* sc. in der Schlacht Spr. 4499.

विनिवारण (vom caus. von 1. वर् mit विनि) n. *das Zurückhalten, Abhalten:* रक्षसाम् R. 3,66,22. 4,22,38. स सचिवैरशक्यविनिवारणः KATHÂS. 112,84.

विनिवार्य (wie eben) adj. *zu verdrängen:* तन्मुद्रयेयं मन्मुद्रा विनिवार्या RÂGA-TAR. 4,416.

विनिवृत्ति (von वर्त् mit विनि) f. *das Weichen, Aufhören:* प्रसङ्ग° M. 8,368. स्वादूनाम् HARIV. 11143. शूल° SUÇR. 2,365,16. SÂÑKHJAK. 55. 68. RAGH. 6,74. DAÇAR. 3,15. RAGH. 6,74. ÇAÑK. zu BRH. ÂR. UP. S. 271. *das Unterbleiben* PÂR. GRHJ. 2,17.

विनिवेदन (vom caus. von 1. विद् mit विनि) n. *das Anmelden:* द्वारि मद्विनिवेदनम् KATHÂS. 38,145.

विनिवेश (von 1. विश् mit विनि) m. 1) *das Aufsetzen, Aufstellen, Auflegen:* किसलयशयनतले कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम् GÎT. 12,2. स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशो मलिनः so v. a. *die schmutzigen Spuren der aufgelegten schwitzenden Finger* ÇÂK. 142. *das Hinstellen in einem Buche* so v. a. *Aufführen:* ग्रवशिष्टानां पाशानामत्र विनिवेशः SARVADARÇANAS. 81, 4. — 2) *angemessene Vertheilung* Schol. zu ÂÇV. ÇR. 2,1,11. 2,13. 4,4. 11,16. zu LÂṬJ. 1,9,7. 3,1,15. 6,1,19.

विनिवेशन (vom caus. von 1. विश् mit विनि) n. *das Aufrichten, Aufstellen, Erbauen:* ग्रोजयेन्द्रविहारस्य बृहद्बुद्धस्य च व्यधात्। — विनिवेशनम् RÂGA-TAR. 3,355.

विनिवेशिन् (von 1. विश् mit विनि) adj. *gelegen:* विषये बककाचक्रनाम्नि कूलोपकण्ठविनिवेशिनि (°विनिवेसिनि gedr.) नर्मदायाः KATHÂS. 6,166.

विनिश्चय (von 2. चि mit विनिस्) m. *eine feste Meinung, feststehende Ansicht, feste Bestimmung, Entscheidung; fester Entschluss:* इति विनिश्चयः M. 8,277. JÂGÑ. 2,233. Spr. 1550. Verz. d. Oxf. H. 47,b,33 (विचिश्चयः gedr.). 80,b,22. इति शास्त्रविनिश्चयः 54,b,16. R. 5,81,40. विनिश्चयेनाभिगतो ऽस्मि ते MBH. 3,16700. 5,293. 5427. तस्य जज्ञे विनिश्चयः R. 2,65,15 (67,11 GORR.). मन्त्रयन्तो विनिश्चयम् BHÂG. P. 8,5,17. मन्त्रः सुविनिश्चयलक्षणः R. 5,81,18. विनिश्चयं कृत्वा MBH. 1,7670. तं चिन्तयित्वा विनिश्चयम् 5260. कर्तव्यस्य SUND. 3,10 (च निश्चयम् st. विनिश्चयम् MBH. 1,7687). कार्यस्य R. 3,44,8. 5,37,31. जरामृत्युभवव्याधिभावाभाव° MBH. 1,64. स्वधर्मार्थविनिश्चयज्ञ 3,15700. निश्चित्यार्थविनिश्चयम् 5,7013. एतद्विनिश्चयं विचिनोतु 6088. 12,6938. कुरु मूल्यविनिश्चयम् *bestimme* 13,2687. 14,950. 1322. R. 3,75,64. ग्रर्थसूक्ष्म° 4,21,14. 34,4. 40,12. 5,56,3. SUÇR. 1,160,10. KATHÂS. 33,183. BHÂG. P. 2,8,16. रोग° Verz. d. B. H. No. 954. SARVADARÇANAS. 32,16. KUSUM. 27,19. — Vgl. ग्रर्थ°, पाप° (f. ग्रा R. GORR. 2,8,5), प्रमाण°, रुग्विनिश्चय.

विनिश्चल (2. वि + नि°) adj. *unbeweglich:* तस्थौ विनिश्चलः KATHÂS. 62,153. चित्रारम्भ° *unbeweglich wie* VIKR. 4. चित्तामोहविनिश्चलेन मनसा Spr. (II) 2292.

विनिश्चायिन् (von 2. चि mit विनिस्) adj. *entscheidend, endlich bestimmend:* संपूर्णार्थ° SARVADARÇANAS. 42,20. 43,4.

विनिष्कम्प (2. वि + नि°) adj. *unbeweglich* AMRTAN. UP. in Ind. St. 9,32.

विनिष्पात (von 1. पत् mit विनिस्) m. *das Hervorstürzen, Vordringen:* कृतमुष्टिविनिष्पातोनिष्पिष्टाङ्गोरुबन्धन so v. a. *Faustschläge* BHÂG. P. 10,56,25.

विनिष्पाद्य (vom caus. von 1. पद् mit विनिस्) adj. *zu Stande zu bringen, auszuführen:* यादृक्कर्म विनिष्पाद्यं तादृग्द्रव्यमुपाहरेत् MÂRK. P. 121,14.

विनिष्पेष (von पिष् mit विनिस्) m. *das Aneinanderreiben:* तयोर्भुजविनिष्पेषादुभयोर्बलिनोस्तदा। शब्दः समभवद्धोरः MBH. 3,443. 1610. 4, 759. घोरवज्रविनिष्पेषस्तनयित्नु so v. a. *Donnerschlag* 8,4106.

विनिवेसिन् s. विनिवेशिन्.

विनीत 1) adj. s. u. 1. नी mit वि. — 2) m. a) *Kaufmann, Krämer*

H. an. 3, 299. Med. t. 154. — b) *Artemisia indica* (दमनक) Râgan. im ÇKDr. — c) N. pr. eines Sohnes des Pulastja Vâju-P. in VP. 83, N. 5.

विनीतक m. n. = वैनीतक Râjam. zu AK. 2,8,2,26 nach ÇKDr.

विनीतता (von विनीत) f. *Wohlgezogenheit, Sittsamkeit, bescheidenes Betragen, Bescheidenheit* Kâm. Nîtis. 4,8.

विनीतत्व (wie eben) n. dass.: स्वाभाविकं विनीतत्वं तेषां विनयकर्मणा । मुमूर्छ Ragh. 10,80. Spr. 1448 (wo so zu lesen ist).

विनीतदेव m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten Vjutp. 90. Târan. 198. 272.

विनीतप्रभ m. desgl. Vie de Hiouen-thsang 101.

विनीतमति m. N. pr. zweier Männer Kathâs. 72,24. 101,138.

विनीतसेन m. N. pr. eines Mannes Târan. 159.

विनीति (von 1. नी mit वि) f. *Bescheidenheit* Spr. 4446.

विनीतेश्वर m. N. pr. eines göttlichen Wesens: प्रशान्तश्च विनीतेश्वरश्च Lalit. ed. Calc. 6,20. प्रशान्तश्च प्रशान्तविनीतेश्वरश्च st. dessen 4,16; vgl. noch Foucaux's Uebersetzung 401.

विनीय (von 1. नी mit वि) m. = कल्क P. 3,1,117. Vop. 26,20. — Vgl. विनेय.

विनील (2. वि + नील) adj. *dunkelblau* H. 49.

विनीवि oder °नीवी (2. वि + नी°) adj. f. *des Schurzes entkleidet* Bhâg. P. 10,21,12.

विनुत्ति (von 1. नुद् mit वि) f. 1) *Verstossung, Vertreibung* Kâṭh. 26, 1. 27,8. — 2) Abhibhûti und Vinutti heissen zwei Ekâha Âçv. Çr. 9,8,19. Çâñkh. Çr. 14,8,16. 38,4. 15,11,13.

विर्नुद् (1. नुद् mit वि) f. *Stoss* ṚV. 2,13,3.

विनेतर् (von 1. नी mit वि) m. 1) *Erzieher, Unterweiser, Lehrer* Med. t. 157. MBh. 3,12584. fg. 11,660. R. 3,55,37. 39. Spr. 5204. Ragh. 6,39. 8,90. 14,23. 15,69. Ragh. ed. Calc. 1,71. Mâlav. 14,23. 67. परात्रणो R. 5,32,7. *Zähmer, Abrichter:* हस्तिगवाश्वोष्ट्राणाम् Kull. zu M. 3,162. — 2) *Fürst, König* Med.

विनेत्र (wie eben) m. *Unterweiser, Lehrer:* सद्विनेत्राय (कृष्णाय) Hariv. 10675.

विनेमिदशन (2. वि + ने° - द°) adj. *der Radfelge und der Zähne* (wohl *ein best. Theil des Wagens*) *beraubt* MBh. 7,1570 nach der Lesart der ed. Bomb.

विनेय (von 1. नी mit वि) adj. P. 3,1,117, Schol. 1) *zu verscheuchen, zu entfernen:* अद्रिः श्रमः Hariv. 4698. — 2) *zu erziehen, zu unterrichten* Sâh. D. 6,1. Sarvadarçanas. 22,9. m. *Schüler* H. 79. — 3) *zu züchtigen, zu strafen* Bṛhaspati in Dâjabh. 90,4. ज्योतिर्ज्ञानं तथोत्पातमविदित्वा तु ये नृणाम् । श्रावयन्त्यर्थलोभेन विनेयास्ते ऽपि यत्नतः ॥ Gjotistattva im ÇKDr.

विनोक्ति (विना + उक्ति) f. in der Rhetorik *ein Ausspruch, der da besagt, dass Etwas erst ohne ein Anderes einen Werth oder ohne ein Anderes keinen Werth habe; conditio sine qua non* Sâh. D. 702. Kuvalaj. 60,a. Pratâpar. 86,a,2. — Vgl. सहोक्ति.

विनोद (von 1. नुद् mit वि) m. 1) *Vertreibung, Verscheuchung:* श्रम° Varâh. Bṛh. S. 53,88. Kathâs. 91,2. — 2) *Vertreibung der Sorgen u. s. w. Unterhaltung, Amüsement* H. 926, Schol. H. ç. 115. Halâj. 4,35. Mṛkkh. 43,17. अङ्गनानां विनोदाः Megh. 85. Çâk. 38. अविनोददीर्घयामा रात्रिः Vikr. 45. विनोदाय Kathâs. 15,125. 37,117. लोकानाम् Vet. in LA. (III) 1,3. तस्या विनोदार्थम् Kathâs. 17,63. ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः 20, 46. 25,73. 35,35. Bhâg. P. 3,16,24. जलक्रीडादिभिर्विचित्रविनोदैः 5,17, 13. Mârk. P. 20,10. 13. 65,15. विनोदतस् Verz. d. Oxf. H. 67, b, N. 5. स्वात्मविनोदाय Kathâs. 13,52. Prab. 3,16. लोकात्मविनोदाय (°विद्राणाय gedr.) Einl. zu Kaurap. चेतोविनोदाय Kathâs. 28,7. तद्विनोदोपपादिन् 29,1. Çuk. in LA. (III) 32,6. °स्थान Çâk. 80,22. 81,21. 86,17. °पात्र (oder विना उदपात्रम्) Bhâg. P. 4,22,47. °मृग 5,1,38. अध्वविनोदाय *zur Unterhaltung auf der Reise* Kathâs. 75,58. Häufig in comp. mit dem, was die Unterhaltung bildet, woran man Vergnügen findet: असमरस° Ṛt. 3,24. अभिनवनलिनीविनोदलुब्ध Spr. (II) 487. काव्यशास्त्र° 1711. गात्रकाण्डू° 2054, v. l. (I) 2280. Gît. 12,9. विलपन° Uttarar. 56,17 (73,10). दानिकविनोदासक्तचेतस् Kathâs. 35,34. कथा° 61, 330. 62, 237. 64,164. 69,86. Verz. d. Oxf. H. 122, b, 18. 132, b, 8. Bhâg. P. 4,29, 20. 5,8,17. Pañkar. 4,8,115. Pañkat. 5,6 (ed. orn. 2,10). 147,14. Çuk. in LA. (III) 32,18. Am Ende eines adj. comp.: माया° *sich vergnügend an* Bhâg. P. 5,24,8. 6,29,41. Verz. d. Oxf. H. 199, a, 17. — 3) Bez. *einer best. Umschlingung Liebender:* नायको नायिकाया दक्षिणपादं वामपादं वा स्वमध्यदेशे स्वदक्षिणपादं वामपादं वा नायिकामध्यदेशे निधाय वक्षसि वक्ष ओष्ठे ओष्ठं दत्त्वा यदाश्लिष्यति तत् Kâmaçâstra im ÇKDr. — 4) *eine Art Palast* Juktikalpataru und Bhavishjottara-P. im ÇKDr. — 5) Titel eines über Musik handelnden Werkes Verz. d. Oxf. H. 201, a, No. 479. — Vgl. निर्विनोद, मदन°, राजविनोदताल und राधा°.

विनोदन (wie eben) n. = विनोद 2) Kathâs. 51,207. 104,191. Sâh. D. 117. Râga-Tar. 3,164. °शतैः Vikr. 38. कृष्णविनोदनार्थम् Hariv. 8409. मार्ग° *eine Unterhaltung auf Reisen* Kathâs. 83,4.

विनोदवत् (von विनोद) adj. *unterhaltend, ergötzlich:* शुकानां गिरः Kathâs. 59,150.

विनोदिन् (von 1. नुद् mit वि) adj. 1) *vertreibend, verscheuchend:* क्लम° Çâk. 69. उत्कण्ठा° Kathâs. 72,294. — 2) *Sorgen* u. s. w. *verscheuchend* so v. a. *unterhaltend, ergötzend:* कथा Kathâs. 49,2. 59,21. 78,4. हृदयस्य 10,3. चेतो° 12,32. वृन्दावन° Pañkar. 2,4,7. 5,34.

विन्त m. N. pr. eines göttlichen Wesens Mârk. P. 80,8.

विन्द् s. 3. विद्.

विन्दु (von विन्द्) 1) adj. *findend, gewinnend* P. 3,1,138. Vop. 26,35. Vgl. गो°, चारु°, भद्र°, मित्र°, वत्स°. — 2) m. a) Bez. *einer best. Stunde des Tages* R. 3,73,16 (68,13 ed. Bomb.). — b) N. pr. neben अनुविन्द, Söhne Dhṛtarâshṭra's MBh. 1,2729. 4543. Fürsten von Avanti 2, 1114. 5,2503. 7,3691 (vgl. 3682). Hariv. 5016. 5497. 8020. 8099. Söhne Gajasena's VP. 437.

विन्दक m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8,650.

1. विन्दु *Tropfen* u. s. w. s. बिन्दु.

2. विन्दु (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner* P. 3,2,169. Vop. 26,160. AK. 3,1,30. Trik. 3,3,209. H. 349. an. 2,234. Med. d. 10. fg. Hâr. 262. = वेदितव्य Çabdar. im ÇKDr.

3. विन्दु (von 3. विद्) adj. am Ende eines comp. *findend, suchend, gewinnend, verschaffend* (= दातर् Agajapâla im ÇKDr.): नाथ °Pañkat.

Br. 14,11,23. — Vgl. गो°, लोक°.

विन्दुप्रतिष्ठानमय (von वि° + प्रतिष्ठान) adj. (f. ई) *den* Anusvâra *zur Grundlage habend* Verz. d. Oxf. H. 110,*a*, No. 173, Çl. 4.

विन्दुल (von विन्दु) m. *ein best. giftiges Insect* Suçr. 2,287,20 (वि° gedr.).

विन्ध् s. 2. विध्.

विन्ध Mârk. P. 57,52 fehlerhaft für विन्ध्य.

विन्धचुलक MBh. 6,369 fehlerhaft für विन्ध्यचुलिक oder °चुलुक.

विन्धपत्नी f. *eine best. Pflanze*, = श्वेतापत्त्रा (unter welchem Worte im ÇKDr. nach derselben Aut. als Synonym विद्यापत्नी genannt wird) Çabdak. im ÇKDr. Die richtige Form wird wohl विद्धपत्त्री oder बिल्व° sein.

विन्धस (!) m. *der Mond* ÇKDr. angeblich nach Trik.

विन्ध्य 1) m. *a*) N. pr. des Gebirges, welches die indische Halbinsel von Ost nach West durchzieht, AK. 2,1,8. 3,3. Trik. 2,1,6. 3,4. H. 948. 1029. an. 2,381. Med. j. 54. हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः॥ M. 2,21. MBh. 1,7625. 7716. 3,2318. 14,1173. Hariv. 3261. 3275. 5211. 9499. 11448. 12008. 12399. R. 4,2,12. 41,10. Suçr. 1,172,6. 2,169,3. Çârṅg. Saṃh. 1,1,38. विन्ध्यस्तरेत्सागरम् Spr. 2853. Megh. 19. Ṛt. 2,28. Mâlav. 56. Varâh. Bṛh. S. 12,6. 16,10. 43,35. 69,30. VP. 174. Mârk. P. 57,11. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,15. °पर्वत R. 1,6,22. विन्ध्याद्रि Ragh. 12,31. Varâh. Bṛh. S. 16,12. Kathâs. 12,8. Râǵa-Tar. 4,153. 161. Vet. in LA. (III) 31,5. 6. विन्ध्याद्रिनिवासिनः Verz. d. Oxf. H. 82,*a*, No. 138, Z. 10. विन्ध्याचल Varâh. Bṛh. S. 12, Anf. °वन R. 4,48,2. विन्ध्याटवी Varâh. Bṛh. S. 16,3. Kathâs. 7,25. 10,115. 18,96. 42,97. Hit. 34,19; vgl. मध्येविन्ध्याटवि. °तटव्यूढवत्तम् Râǵa-Tar. 3,240. विन्ध्यनिवासिनः (so ist zu lesen) Mârk. P. 57,52. विन्ध्यान्तवासिनः *die Bewohner des inneren* Vindhja Varâh. Bṛh. S. 14,9. Der Vindhja, eifersüchtig auf den Meru, weil die Sonne um diesen sich bewegt, erhebt sich um der Sonne den Weg zu versperren, MBh. 3,8781. fgg. Verz. d. Oxf. H. 69,*a*, 7. fgg. — *b*) = व्याध *Jäger* H. an. Med. — 2) f. आ *a*) *Averrhoa acida Lin.* H. an. Med. — *b*) *kleine Kardamomen* H. an. — Vgl. निर्विन्ध्य, प्रति°, बलि°.

विन्ध्यकन्दर Vindhja-*Schlucht*, N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,19.

विन्ध्यकवास m. N. pr. eines Mannes Wassiljew 219.

विन्ध्यकूट m. Bein. Agastja's Trik. 1,1,89. H. ç. 16.

विन्ध्यकेतु m. N. pr. eines Fürsten der Pulinda Kathâs. 101,284.

विन्ध्यचुलिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,369 nach der Lesart der ed. Bomb. विन्धचुलक ed. Calc. विन्ध्यचुलुक VP. 193.

विन्ध्यचुलुक s. विन्ध्यचुलिक.

विन्ध्यनिलया f. *eine Form der* Durgâ H. ç. 49. — Vgl. विन्ध्यवासिनी.

विन्ध्यपर m. N. pr. eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 37,22.

विन्ध्यपालक m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193, N. 126.

विन्ध्यमूलिक m. pl. desgl. ebend.

विन्ध्यमौलेय m. pl. desgl. Mârk. P. 57,47.

विन्ध्यवत् (von विन्ध्य) m. N. pr. eines Mannes Mârk. P. 21,34.

विन्ध्यवर्मन् m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,26, Çl. 12. Z. f. d. K. d. M. 1,226.

विन्ध्यवासिन् 1) adj. *den* Vindhja *bewohnend.* — 2) m. Bein. Vjâḍi's H. 852. Hall 166. ders. in der Einl. zu Vâsavad. 46. Verz. d. B. H. No. 974. Verz. d. Oxf. H. 182,*b*, 2 v. u. Vgl. विन्ध्यस्थ. — 3) °वासिनी f. mit oder ohne देवी *eine Form der* Durgâ Colebr. Misc. Ess. II, 249. Wilson, Sel. Works I, 253. II, 78. Kathâs. 2,2. 3,38. 6,78. 7,24. 23,38. 42,117. 172. 52,161. 165. Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,7. 97,*a*, 2 v. u. Daçak. 142,6. 197,11; vgl. विन्ध्यकैलासवासिनी Hariv. 10246 und विन्ध्ये देवीं भ्रमरवासिनीम् Râǵa-Tar. 3,394.

विन्ध्यशक्ति m. N. pr. eines Fürsten der Javana VP. 477.

विन्ध्यसेन m. N. pr. eines Fürsten VP. 466, N. 12. बिम्बिसार v. l.

विन्ध्यस्थ 1) adj. *im* Vindhja *sich aufhaltend.* — 2) m. Bein. Vjâḍi's Trik. 2,7,24. Verz. d. B. H. No. 974; vgl. विन्ध्यवासिन्.

विन्ध्याधिवासिनी f. *eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,15. — Vgl. विन्ध्यवासिनी.

विन्ध्यावलि (विन्ध्य + आ°) f. N. pr. der Gattin Bali's und Mutter Bâṇa's Bhâg. P. 8,20,17. 22,19. °ली ÇKDr. nach einem Purâṇa.

विन्ध्यावलीपुत्र m. metron. Bâṇa's Trik. 2,8,22.

विन्न partic. s. u. 3. und 5. विद्.

विन्नप m. N. pr. eines Fürsten Râǵa-Tar. 5,129.

विन्यय (von 3. इ mit विनि) m. *Stellung, Lage:* करण° TS. Prât. 23,2.

विन्यस्य (von 2. अस् mit विनि) adj. *aufzusetzen, zu stellen auf:* भद्रासनं विन्यस्यं चर्मणामुपरि Varâh. Bṛh. S. 48,46.

विन्याक m. = विद्धवृत्त Çabdak. im ÇKDr.

विन्यास (von 2. अस् mit विनि) m. 1) *das Hinsetzen, Hinstellen, Anlegen* (am Körper): अस्थाने भूषणादीनाम् Sâh. D. 143. *Setzung, Bewegung, Stellung* (der Glieder des Körpers): निःशब्दपद° Kathâs. 88,16. Bhâg. P. 5,2,5. द्रुतपद° 6. कारचरणोरःस्थलविपुलबद्धंसगलवदनाद्यवयव° 5,31. सुकुमारतयाङ्गानाम् Sâh. D. 144. अङ्ग° Prâtapar. 56,*b*,2. Als Erklärung von विन्यय Comm. zu TS. Prât. 23,2. — 2) *Anordnung, Eintheilung, Ordnung:* एतावाँल्लोकविन्यासो मानलक्षणसंस्थाभिः Bhâg. P. 5,20,38. भुवन° Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,28. fg. वर्ण° 88,*b*,19. नक्षत्रविन्यासाद्विषयाः समवस्थिताः Mârk. P. 54,32. वेणिः स्यात्केशविन्यासः so v. a. *Haartracht* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,48. — 3) *Vertheilung, Ausbreitung:* कर्म वायोर्वक्त्रं (so ist zu lesen) विन्यासरूपम् Kull. zu M. 1,18. concret: तं दर्भविन्यासं भित्त्वा so v. a. *das ausgestreute* Darbha-*Gras* MBh. 13,3945. हंससारसविन्यासैर्यमुना सातिशोभना (विन्यासैः = उपवेशनस्थलैः Nîlak.) so v. a. *zerstreute Gruppen von* Hariv. 3833. — 4) *das Errichten, Gründen, Anlegen:* ग्रामसंघोष° Mârk. P. 49,43. — 5) *das Zusammenfügen* (einer Rede u. s. w.): द्वयो वचनविन्यासः Sâh. D. 303. प्रबन्ध° (= रचना Comm.) Vâsavad. 9. स्फुटार्थपदविन्यासः शिष्याणां प्रतिपत्तये Verz. d. Oxf. H. 182,*a*,17. स्निग्धैश्च नोतिविन्यासान्मूर्खान्सर्वत्र वर्जयेत् wohl so v. a. *klug thuend* MBh. 3,11310. — 6) *das Ausstossen von Worten der Verzweiflung* (= निर्वेदवाक्यव्युत्पत्ति) Sâh. D. 556. — Vgl. अन्तर°, बल°.

1. विप्, वेपते (Dhâtup. 10,6 वेपृ कम्पने), विपानं, अवेविपिष्टाम्, विविप्रे; *in schwingender, zitternder Bewegung sein, beben:* वेपते भियसा मह्यो ṚV. 1,80,11. चक्रं न वृत्तं वेपते मनो भिया मे 5,36,3. वेपते मती 9,71,3. 10,11,6. AV. 10,10,23. गृह्णा मा बिभीत मा वेपध्वम् (वेपिध्वम् Lâṭj.) VS. 3,41. TBr. 3,7,8,2. त इद्धिविप्रे मरुतः *fingen an sich zu re-*

gen, zu schütteln R̥V. 3,32,4. यस्तौ विपान एजति 8,6,29. प्रक्रामन्वेपते *zittert* Suçr. 1,256,14. Çâk. 70,15. हिमार्त इव वेपते सकल एष बिम्बाधरः ad 69,2. Spr. 1230. मनः कदलिकेवाद्याप्यहो वेपते Prab. 65,13. पर्वताग्राणि वेपन्ते R. 6,16,4. मन्मन्त्रग्रहणात् — तेषां पापानि वेपन्ते कोटिजन्मकृतानि च so v. a. *weichen gleichsam erschrocken* Pañkar. 1,13, 13. अवेपत Kathâs. 19,105. वेपमान Bhag. 11,35. MBh. 2,2339. 3,522. 2174. 2207. 2611. 2840. 2975. 5,6042. 12,4286. R. 1,64,5. 2,26,6. 60, 1. 62,6. 63,49. 92,15. 3,53,62. Ragh. 11,65. Kathâs. 19,90. Daçak. 94, 16. Pañkat. 45,8. 93,2. 94,4. वेपन्ती MBh. 3,1864. 10989. R. 1,63,13. — Vgl. विप्र, वेपथु u. s. w.

— caus. वेपयति, विपेपयति, अवीविपत् *zittern machen, schwingen, schütteln:* शिप्रे R̥V. 8,65,10. 12,2. AV. 5,22,10. चक्रं न वृत्तं व्यतौंरवीविपत् R̥V. 1,155,6. सिन्धोरूर्मावधि वेना अवीविपन् 9,73,2. विपयन्ति बर्हिः 7,21,2. वेपयन्मण्डलं भुवः Bhâg. P. 3,21,53. 9,4,47. वातवेपित Kathâs. 111,10. Bhâg. P. 10,20,6. भुजवीर्यवेपित 8,7,10. वेपितकंधरा Mârk. P. 1,41. मनो मदनवेपितम् Bhâg. P. 6,1,62. सवेपितम् *mit Zittern* (also wohl von वेप् simpl.) Spr. (II) 1637.

— उद् *in unruhige Bewegung gerathen, erzittern, erschrecken:* उद्वेपमाना मनसा चक्षुषा हृदयेन च (धावत) AV. 5,21,2. Kâṭh. 31,3. TBr. 3, 2,1,7. उद्वेपते मे हृदयम् MBh. 5,2028. नरहस्तिगात्रैरुद्वेपमानैः 8,4900. Vgl. उद्वेप. — caus. *erschrecken* (trans.) AV. 9,8,6. 11,9,12. 18. 13,3,1.

— परि *zittern:* बाष्पवामः परिवेपते स्म R. 5,28,14.

— प्र *erzittern:* यः शीतेन प्रवेपते Suçr. 1,113,2. प्रावेपत भयोद्विग्ना प्रवाते कदली यथा MBh. 5,403. प्रावेपत सुसंत्रस्तः 13,2325. R. 5,21,1. शिरोभिः पतिताः सर्वे प्रावेपन्त यथोरगाः Hariv. 5830. भयात्प्रवेपे R. 2,8, 8. प्रवेपमान MBh. 4,459. Kumâras. 5,27. Brahma-P. in LA. (III) 57,20. Daçak. 72,14. नागाश्चोष्ट्रमुखास्तत्र प्रावेपन्नभिपीडिताः (प्रवेपुरतिपीडिताः die neuere Ausg.) Hariv. 10592. हृदयेन प्रवेपती MBh. 3,16756. 13, 4614. Hariv. 4744. Bhâg. P. 3,14,36. Vgl. प्रवेप fgg. — caus. *erschüttern:* पर्वतान् R̥V. 1,39,5. 3,26,4. 8,7,4. *in schwingende Bewegung setzen, erzittern machen:* प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुः 9,96,7. प्रवेपयन्हस्त्यसंघान् MBh. 5,707. प्रवेपित *in eine zitternde Bewegung versetzt, erzitternd:* शरशतैस्तीक्ष्णैर्व्यवच्छेद्प्रवेपितैः R. 6,79,35. बाहुरेकः प्रवेपितः 5,27,28. प्रवेपिताङ्ग MBh. 4,2095. Bhâg. P. 10,44,25.

— अभिप्र *sich in Bewegung setzen gegen* (acc.), *bedrohen:* यं मृधो ऽभिप्रवेपेरन् TS. 2,2,2,4. 5,2,1.

— संप्र *erzittern:* संप्रावेपन्त धन्विनः MBh. 5,2975. 6,5789 (संप्रा° ed. Bomb.).

— वि *zittern, zucken:* das Auge Kauç. 58.

— प्रवि caus. partic. °वेपितः als verbum finitum *wurde zum Zittern gebracht, erzitterte* R. 7,19,22.

— सम् *zittern:* ते समवेपन्त गावो वै शिशिरे यथा MBh. 7,6645. संवेपमाना अवभृथादुदायन्ति *zitternd* (vor Kälte) Çâñkh. Br. 19,3.

2. विप् (= 1. विप्) 1) adj. *innerlich erregt, begeistert;* = मेधाविन् Naigh. 3,15. वैश्वानराय विपो रत्ना विधन्त R̥V. 3,3,1. उशिग्देवानामसि सुक्रतुर्विपाम् 7. 10,5. वि तर्तूर्यन्ते विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् 8,1,4. प्र गायत वरुणाय विपा गिरा *mit begeistertem Liede* 5,68,1; daher unter den Wörtern für वाच् Naigh. 1,11. Hierher etwa auch R̥V. 10,61,3. Vgl. विप्र. — 2) f. (eigentlich *schwank*) *Ruthe, Gerte; dünner Stab, Schaft* (des Pfeils u. s. w.): विपा वंसहमयोग्रया हन् R̥V. 10,99,6. अस्तृणाहर्हणो विपः 8,52,7. स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य विपः 6,49,12. विपो न यस्योतयो वि यद्रोहन्ति सक्षितः 44,6 (vgl. 24,3). विपामग्रेषु धीतयः। अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः *vorn an den Schäften ist Schimmer* (धीतयः = दीतयः; vgl. 3. धी und 2. दी), *wie Feuer strahlen die Geschosse* 8,6,7. विपो न द्युम्ना नि युवे जनानाम् *wie Ruthen fasse* (und knicke) *ich* 19,33. अवीता विपो न रायो अर्यः *wie* (werthlose) *Ruthen* oder *Reiser* 4,48,1. Bei der Soma-Bereitung *die Stäbe, welche den Boden des Trichters bilden und das Seihtuch tragen:* एष देवो विपा कृतो ऽति ह्वरांसि धावति R̥V. 9,3,2. पूताः सोमासो विपा 22,3. अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया *bald an diesem, bald an jenem Stabe bemerkbar, rinne ab in gelbem Strahle* 65,12. प्रक्रा वेयत्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः 99,1. Nach Naigh. 2,5 so v. a. *Finger.* Die Commentatoren erklären विप् 1) und 2) mit मेधाविन्, स्तोतर्, वेपयितर्, पालक, व्याप्त u. s. w. Zu vergleichen ist etwa lat. *vepres.*

3. विप्, वेपयति (तेपे) v. l. für व्यप् Dhâtup. 32,95. Hierher zieht Benfey प्रवेप्यमान, wie die v. l. Pañkat. ed. orn. 3,13 st. प्रवेश्यमान hat, in der Bed. *verausgabt werdend.* Wir wagen es nicht einer solchen verdächtigen Wurzel das Wort zu reden.

विपक्त्रिम (von 1. पच् mit वि) adj. *gereift, reif:* °ज्ञानगति Bhaṭṭ. 1,10.

विपक्व (2. वि + पक्व) adj. (f. आ) 1) *gar gekocht, gar gemacht, gar, gekocht* überh.: अशन AV. 5,29,6. माषान्पयःसर्पिषि वा विपक्वान् Varâh. Bṛh. S. 76,4. अङ्गारेषु विपक्वं मांसम् Halâj. 2,168. सर्वद्रव्याण्यभ्यवहृतानि सम्यक् मिथ्या विपक्वानि गुणं दोषं वा जनयन्ति Suçr. 1,149,5. fg. तैल 58,3. 2,20,17. 21. 359,18. कल्क° 39,10. 89,12. — 2) *gereift, reif* (von Früchten): यच्च तत्तं तपस्तस्य विपक्वं फलमद्य नः Kumâras. 6, 16. — 3) *gereift* so v. a. *zur vollkommenen Entwickelung gelangt, vollkommen ausgebildet:* °प्रज्ञ Nir. 3,12. °बुद्धि MBh. 12,7791. धिया योगविपक्वया Bhâg. P. 3,6,38. बहुजन्मविपक्वेन सम्यग्योगसमाधिना 24, 28. सुविपक्वयोगैः 10,84,26. अविपक्वबुद्धि 1,18,42. अविपक्वकरण Jâgñ. 3,141. अविपक्वभाव Çând. 79. — 4) *geglüht, verbrannt* so v. a. *vollkommen vernichtet:* अविपक्वकषाय Bhâg. P. 1,6,22. 11,18,41. — 5) *nicht geglüht:* लोहयुक्तं यथा हेम विपक्वं (= पाकहीनं Nilak.) न विराजते MBh. 12,7712.

1. विपत्त (2. वि + पत्त) m. 1) *der Tag des Uebergangs von einer Monatshälfte in die andere* Kâty. Çr. 4,3,25. — 2) *Widerpart, Gegner, Feind* AK. 2,8,2,11. H. 729. Halâj. 2,300. Hariv. 3013. Kâm. Nîtis. 5, 40. Ragh. 17,75. Spr. 1946. 2824. Kathâs. 6,129. 9,19. 11,8. 27,144. 44,7. 45,380. 46,227. 58,119. 63,168. 75,61. Râga-Tar. 3,503. 4,527. 5,257. 8,848. 1042. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 22. Prab. 2,12. Bhâg. P. 4,10,30. 11,20. 7,5,26. 8,22,8. Mârk. P. 23,14. 27,18. 48,16. परस्परविपत्तौ तौ 71,27. Pañkat. 171,10. fg. 210,18. Hit. 91,11. 109,7. Kull. zu M. 7,106. *Nebenbuhlerin* Ragh. 19,20. 22. °रमणी Spr. (II) 1379. — 3) *eine entgegengesetzte Behauptung; Gegenbeispiel* Tarkas. 39..41. Bhâshâp. 72. Sarvadarçanas. 12,12. 17,15. Sâh. D. 122,10. Schol. zu Kap. 1,84. 112. Kusum. 16,12. 28,16.

2. विपत्त (wie eben) adj. *der Flügel beraubt* R. 4,60,24.

विपत्नभाव m. *Feindschaft* Ragh. 3,62.

विपत्नशूल m. N. pr. des Hauptes einer best. Secte Verz. d. Oxf. H. 248,*a*, 11.

विँपत्तम् (2. वि + प°) adj. *an beide Seiten des Wagens gehörig* (Sâj.): Indra's Rosse ṚV. 1,6,2. Da dieses eine müssige Bezeichnung wäre, verstehen wir lieber: *die Seiten* (des Wagens) *vertauschend* d. h. *eben so wohl rechts als links gehend.*

विपत्तीकर् (2. विपत्त + 1. कर्) *der Flügel berauben:* °कृत्य शरभान् Kathâs. 94,11.

विपत्नीय (von 1. विपत्न) adj. *feindlich:* °नृपोग्रम Bhâg. P. 10,53,20.

विपञ्चिका f. = विपञ्ची *die indische Laute* Çabdar. im ÇKDr.

विपञ्ची (wohl 2. वि + पञ्चन्) f. 1) *die indische Laute* AK. 1,1,7,3. H. 287. Med. k. 17. Halâj. 1,96. Kathâs. 49,20. Sâh. D. 98,2. am Ende eines adj. comp. f. °का R. 5,13,43. — 2) *Belustigung, Spiel* (केलि) Med.

विपण (von 1. पण् mit वि) m. 1) *Verkauf, Handel* AK. 2,9,83. H. 872. विपणेन जीवन्तः M. 3,152. अर्थेन तु समो ऽनर्थो (so die ed. Bomb.) यत्र लभ्यते नोदयः। न तत्र विपणः कार्यः (विपणः प्रतिज्ञा न कार्यः न निर्वाह्यः Nilak.) MBh. 3,1329. निवृत्तविपणापणा (वसुधा) 1,7674. समृद्धविपणापणा 13,1956. संततविपणापणा R. Gorr. 2,125,10. — 2) *Wette:* प्राणयोर्विपणे कृते MBh. 5,1201. fg. — 3) *ein Ort, an dem Handel getrieben wird: Kaufladen, Kaufhof, Markt* H. 1002. प्रपाश्च विपणांश्चैव यथोद्देशं समाविशेत् (so die ed. Bomb.) MBh. 12,2648. विपणापणवत् 14,1761. Mârk. P. 49,50. — 4) *Markt* als bildliche Bez. *der Rede, des Organs der Rede* oder *der Energie der Thätigkeit* (क्रियाशक्ति) überh. Bhâg. P. 4,25,49. 28,56. 58. 29,11. — 5) unter den Beinn. Çiva's MBh. 13,1185. = निर्व्यवहार, दण्डादिरहित Nilak.

विपणन (wie eben) n. *das Verkaufen, Handel* Mallin. zu Çiç. 5,24.

विपँणि (wie eben) f. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,117. Çânt. 3,7, Comm. 1) *Verkauf, Handel* AK. 3,4,13,54. M. 10,116. °जीविका MBh. 5,2627. °जीविन् Hariv. 3809. — 2) *ein Ort, an dem Handel getrieben wird: Kaufladen, Kaufhof, Markt* AK. 2,2,2. H. 988. an. 3,226. fg. Med. ṇ. 78. Halâj. 2,141. विपण्यापणपण्यानाम् MBh. 9,2000. Mṛkkh. 130,23. °स्वपण्या (पूः) Ragh. 16,41. मत्स्यो विपणिमध्यगः Kathâs. 5,16. 19,23 (fälschlich विपिनि gedr.). 24. 56,184. 112,164. तपःपणेन स (वरः) क्रय्यः सुतीर्थविपणौ क्वचित् Kâçikh. 59,60 (nach Aufrecht). विपणी Dvirûpak. im ÇKDr. Kathâs. 6,47. 20,165. 43,10. 62,209. fg. विपणीं (विपणीः Mallin.) Çiç. 5,24. — 3) *Handelsartikel, Waare* H. an. Med.

विपणिन् (wie eben) m. *Handelsmann, Krämer* H. an. 3,569. Çiç. 5,24.

विपताक (2. वि + पताका) adj. *der Fahne —, des Banners beraubt* MBh. 8,876.

विपत्ति (von 1. पद् mit वि) f. *das Missrathen, Misslingen* (Gegens. संपत्ति, सिद्धि) Spr. (II) 415. अर्थ° R. Gorr. 2,16,47. सस्य° Varâh. Bṛh. S. 40,10. फल° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 221. कर्म° Suçr. 1,105,1. Spr. 713 (II), v. l. कार्य° 1364. कार्यकाल° so v. a. *Ungunst* Kâm. Nîtis. 12,21. *Unfall, Ungemach, Unglück* R. Gorr. 2,29,5. Kâm. Nîtis. 9,7. विपत्तेः प्रतीकारः 11,56. जन्मजराविपत्तिमरणम् Spr. (II) 931. 1346. 1676. समासन्नविपत्तिकाले 766. प्रत्यासन्नविपत्तिकाले (I) 1824. संपत्तेश्च विपत्तेश्च दैवमेव हि कारणम् 3184. संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता 3187. Râǵa-Tar. 3,84. नृपविपत्तिकर् Varâh. Bṛh. S. 30,25. विपत्तिषु Spr. 933. प्रायेण साधुवृत्तीनामस्थायिन्यो विपत्तयः 1685. खलाः (तुष्यन्ति) परविपत्तिषु 4133. 5008. भीता इव हि धीराणां यान्ति दूरे विपत्तयः Kathâs. 37,42. *das Zugrundegehen, Verderben, Untergang:* क्रिमसेक° adj. (नलिनी) Ragh. 8,45. वानराणाम् R. 4,56,7.8. शरीरस्य 7,75,4. भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेरेव कारणम् Spr. 2009. Kathâs. 18,270. 42,114. Pańkat. 125,12 (pl.). *Tod:* तव विपत्तौ MBh. 1,4029. Ragh. 19,56. अ्य विपत्तेः Spr. (II) 2122. Kathâs. 66,84. Râǵa-Tar. 4,370. Mârk. P. 110,14. *das Verschwinden, Aufhören:* इष्टानिष्ट° MBh. 12,9140. = विपद्, आपद् AK. 2,8,2,50. H. 478. an. 3,302. Med. t. 159. = यातना H. an. Med. — Vgl. गर्भ° (auch Varâh. Bṛh. S. 5,85).

विपत्न (!) *eine best. Krankheit* Verz. d. B. H. No. 963 (22,*b*).

विँपत्मन् (von 1. पत् mit वि oder 2. वि + पत्मन्) adj. etwa *durchfliegend* ṚV. 1,180,2.

1. विपथ (2. वि + पथ) 1) m. (AK.) n. (H.) *Abweg* AK. 2,1,17. H. 984. °गतिं प्रयान्ति ते MBh. 1,1257. सत्पथं कथमुत्सृज्य यास्यामि विपथं पथः 12,13858. विपथे सार्थहीना R. 2,66,4. विपथमाश्रितः 3,45,7. विपथावपात Spr. 2522. — 2) *eine best. grosse Zahl* Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638. — Vgl. वैपथिक.

2. विपथँ (wie eben) m. n. *ein für ungebahnten Weg tauglicher Wagen* AV. 15,2,1. Kâtj. Çr. 22,4,14. Pańkav. Br. 17,1,14. Lâtj. 8,6,9. Anupadas. 5,4 in Ind. St. 1,44,1. °वाहिन् *einen solchen Wagen ziehend* AV. 15,2,1.

विँपथि adj. *auf Abwegen gehend* ṚV. 5,52,10.

विपद् (1. पद् mit वि) f. gaṇa संपदादि zu P. 3,3,108, Vârtt. 9. *das Misslingen* (Gegens. संपद्, सिद्धि): नेत्रवस्ति° Suçr. 1,10,5. *Unfall, Ungemach, Unglück* AK. 2,8,2,50. 3,4,24,151. 18,123. H. 478. विपदा धैर्यं कृतम् Spr. (II) 1674. संपद्विपदौ प्रायः कस्यापि नहि स्थिरे स्याताम् 2040. (I) 931 (pl.). महद्भिः स्पर्धमानस्य विपदेव गरीयसी 2144. तत्त्वनिकषग्रावा तु तेषां (सुहृदां) विपत् 2200. 2235 (pl.). विपदि धैर्यम् 2825. विपदि न यस्य विषादः 2826. विपत्संनिहिता तस्य 5278. Varâh. Bṛh. S. 53,90 (pl.). 75,9 (pl.). जन° 79,25. 93,6. 96,11. उत्तीर्णरोग° adj. Kathâs. 17,43. महती दैवाडपेता विपत् Prab. 75,12. Bhâg. P. 1,9,15. 4,20,12 (pl.). सर्वविपद्विमोक्षण 8,10,54. त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम् Mârk. P. 91,27. विपत्काले Hit. 13,19. सुलभविपदां प्राणिनाम् Megh. 99, v. l. *Tod:* सिंहाद्वापद्विपदं नृसिंहः Ragh. 18,34. — Vgl. दर्श° und व्यापद्.

विपदा f. = विपद् Râjam. zu AK. 2,8,2,50 nach ÇKDr.

विपदी f. gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139.

विपन्न 1) adj. s. u. 1. पद् mit वि. — 2) m. *Schlange* Trik. 3,3,263. H. an. 3,418. Med. n. 132.

विपन्नता (von विपन्न) f. *die Lage eines Unglücklichen, das Zugrundegehen* Varâh. Bṛh. S. 51,22. °तां गताः R. Gorr. 2,80,24.

विपन्यौँ (von पन् mit वि) und विपन्यँया instr. *mit Bewunderung, — Jubel, freudig; auf wunderbare Weise:* देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया ṚV. 10,72,1. देवेद्धेधरं विपन्यया धाः 3,28,5. प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्या 4,1,12. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया 6,16,34. 1,119,7. Çâṅkh. Çr. 18,3,2.

विपन्युँ (wie eben) adj. VS. Prât. 5,37. 1) *bewundernd, rühmend, ju-*

belnd: विप्रास: R̥V. 1,22,21. 102,5. 138,3. 2,20,1. 3,10,9. 7,94,6. सो ग्रवद्भिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम् 8,19,10. यदृष्विना रुवामहे। वयं गीर्भिर्विपन्यवः 8,22,11. 76,6. 9,3,3. धियः 86,17. — 2) *bewundernswerth:* die Açvin R̥V. 8,8,19. die Marut 5,61,15.

विपराक्रम (2. वि + प°) adj. *ohne alle Energie, keines muthigen Auftretens fähig* MBh. 6,4665.

विपरिणाम (von नम् mit विपरि) 1) *Veränderung, Umwandelung, Vertauschung* Saddh. P. 4,26,b. ग्रग्निहोत्राग्न्याकृति° Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 277. विभक्ति° Pat. bei Gold. Mân. 173,a. Kâç. zu P. 3,3,96. Kull. zu M. 4,189. — 2) *das Reifen:* फल° Durgâkârja zu Naigh. 1,20 bei Muir, ST. II, 175.

विपरिणामिन् adj. *sich verändernd, — umwandelnd:* पञ्चमहाभूतरूपतया Kull. zu M. 1,27.

विपरिधान (von 1. धा mit विपरि) n. *Vertauschung* Kauç. 17.

विपरिध्रंश (von 1. ध्रंश् mit विपरि) m. 1) *das Misslingen, Missrathen:* कार्याणाम् MBh. 5,1419. — 2) *das Kommen um, Verlust:* सहाय° MBh. 3,54.

विपरिलोप (von 1. लुप् mit विपरि) m. *Verlust* Çat. Br. 14,7,1,23. Çaṅk. zu Bâdar. 2,1,34 (nach Banerjea S. 121, die Ausg. in der Bibl. ind. विलोप).

विपरिवत्सर m. *Jahr* Weber, Naksh. 2,286. — Vgl. परिवत्सर und वत्सर.

विपरिवर्तन (von वर्त् simpl. und caus. mit विपरि) 1) adj. (f. ई) *umkehren machend:* विद्या Kathâs. 46,121; vgl. परिवर्तन 1). — 2) n. *das Sichwälzen* R. Gorr. 2,96,14.

विपरिवृत्ति (von वर्त् mit विपरि) f. *Umkehr, Wiederkehr:* स्मरण° Prab. 72,14.

विपरीत (s. u. 3. इ mit विपरि) adj. *verkehrt* Halâj. 4,72. R̥V. Prât. 14,14. 17. 18,23. Sâṅkhjak. 2. 10. 11. Ind. St. 8,338. fg. पादमेकमूरौ कृत्वा द्वितीयं कटिसंस्थितम्। नारीषु रमते कामी विपरीतस्तु बन्धकः॥ Ratimañgarî im ÇKDr. °क्रीडा Verz. d. Oxf. H. 123,a,29. °प्रसूति Weber, Kṛshnag. 302. विपरीता sc. सतोबृहती *ein best. Metrum* R̥V. Prât. 16,38. sc. विष्टारपङ्क्ति desgl. Ind. St. 8,98. Bez. *einer best. Stellung der Finger* Verz. d. Oxf. H. 235,a,24. विपरीता = कामुकी Dhanaṅgaja im ÇKDr. — Vgl. वैपरीत्य.

विपरीतक (von विपरीत) adj. *verkehrt* Spr. 2999. पादमेकमूरौ कृत्वा द्वितीयं स्कन्धसंस्थितम्। कामिन्याः कामयेत्कामी बन्धः स्याद्विपरीतकः॥ Smaradîpikâ im ÇKDr.

विपरीतता (wie eben) f. *Gegentheil:* गुरुत्वं विपरीततां (d. i. लाघवं) वा Spr. 1346.

विपरीतपथ्या f. *die umgestellte* Pathjâ, Bez. eines best. Metrums Colebr. Misc. Ess. II, 158 (IV, 3).

विपरीतवत् (von विपरीत) adv. *auf verkehrte Weise* Spr. 4216.

विपरीताख्यानकी f. *die umgestellte* Âkhjânakî, Bez. eines best. Metrums Colebr. Misc. Ess. II, 164 (VI, 7). Ind. St. 8, 360.

विपरीतादि adj.: वक्त्र *ein best. Metrum* Ind. St. 8, 345.

विपरीतान्त adj.: प्रगाथ *ein best. Metrum* R̥V. Prât. 18,9.

विपरीतोत्तर adj.: प्रगाथ *ein best. Metrum* Ind. St. 8,101. 143.

विपर्णक (2. वि + पर्ण) m. *Butea frondosa* Çabdak. im ÇKDr.

विपर्य *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 179. 181. Mél. asiat. 4, 638.

विपर्यक् (von पर्यञ्च्, ग्रञ्च् mit परि) adv. *verkehrt:* काश्चिपद्विपर्यग्धृतवस्त्रभूषणाः Bhâg. P. 10,41,25. — Vgl. पर्यक्.

विपर्यत्त, °त्तं Hariv. 12108 falsche Lesart für विसर्पत्तं, wie die neuere Ausg. liest.

विपर्यय (von 3. इ mit विपरि) 1) adj. *in umgekehrtem Verhältnisse stehend:* तदहोरात्राणि विपर्ययाणि Bhâg. P. 5,21,5. *im Gegensatz stehend zu* (gen.) 6,1,55. *verkehrt:* नृणां विपर्ययेहेक्षा (निष्फलक्रियाणामीक्षणम् Comm.) 7,11,9. कर्मन् 9,1,17. *verkehrt zu Werke gehend* 6,14,53. — 2) m. = व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, वैपरीत्य AK. 3,3,33. H. 1501. Halâj. 4,44. *a) Umlauf:* सूर्यस्य Weber, Gjot. 93. — *b) Umwälzung* R. 7,11,18. *Untergang der Welt* 7,4. — *c) Umstellung, Vertauschung, Wechsel; umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil:* ग्रहर्विपर्यय, पक्ष° Âçv. Çr. 9,3,6. ग्रादि° Nir. 2,1. ग्र° 5,26. 6,1. ग्राद्यन्त° 2,1. P. 3,1,123, Schol. Lâtj. 6,5,29. Çâṅkh. Çr. 4,6,3. नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा Bhâg. P. 6,8,5. ग्रालिङ्गने चैरौ (so die ed. Bomb.) चैव चक्रतुस्ते विपर्ययम् MBh. 3,11061 (S. 571). विपर्ययं न कुर्वीत वाससः 13,5040. Hariv. 535 (विपर्ययः die neuere Ausg.). वायोः *Veränderung des Windes* Varâh. Bṛh. S. 21,13. गन्धरस° 46,50. सोम° AV. Pariç. in Ind. St. 10, 319. वर्ग° AV. Prât. 2,38. रूप° Jâgñ. 3,63. प्रियाप्रिय° 64. समुद्रगानूपविपर्यये ऽपि Kumâras. 7,42. वेष° Pañkat. 37,3 (33,9 ed. orn.). हेतु° Suçr. 2,154,16. 413,2. लिङ्ग° Weber, Râmat. Up. 336. Bhâg. P. 9,1,27. द्रव्य° als Bedeutung von क्री Vop. 16, Anf. क्रियाकारकफलभेदादिविपर्ययेण Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 16. विपर्ययो न तेषस्ति Mârk. P. 53,37. संधिविपर्ययौ *Friede und sein Gegentheil* d. i. *Krieg* M. 7,65. संयोगविपर्ययौ *Verbindung und Trennung* Ragh. 8,88. R̥V. Prât. 6,12. 11,24. 14,25. 27. MBh. 3,2286. 5,1646. R. 2,22,20. Spr. 4364. 4912. 5152. Suçr. 1,118,8. 236,3. 2,558,12. Kâm. Nîtis. 16,34. Varâh. Bṛh. S. 15,32. 21,27. 26,12. 40,14. 86,71. 88,24. Bhâg. P. 1,19,38. तद्विपर्ययः 4,5,25. 6,1,40. 8,21,21. ग्रति° Kathâs. 52,355. विपर्ययं या *in seinen Gegensatz umschlagen* Spr. (II) 1294. विपर्यय so v. a. *Nichts von alle dem Vorhergehenden* M. 3,49. प्रभावस्य so v. a. *Ohnmacht* Râga-Tar. 1,160. रात्रेः so v. a. *Tag* Kir. 11,44. स्वप्न° so v. a. *Wachen* Suçr. 1,245,7. 2,304, 15. संज्ञा° R. ed. Bomb. 6,46,38. Kumâras. 6,44. श्लाघा° Ragh. 1,22. ज्ञय° 11,86. कीर्ति° 14,33. सदाचार° Râga-Tar. 4,28. सत्यधर्म° R. 1,23, 2. 7,106,13. बुद्धि° *eine entgegengesetzte Ansicht* Bhâg. P. 7,5,9. विपर्यये *im umgekehrten Falle* R̥V. Prât. 1,20. 2,3. 16,38. M. 4,235. R. Gorr. 2,51,20. 3,45,9 (विपर्यये न zu schreiben). Suçr. 1,124,2. Spr. (II) 1006. Çâk. 71,13. विपर्ययेण dass. R̥V. Prât. 14,16. MBh. 12,1734. 13,491. विपर्ययात् dass. Varâh. Bṛh. 4,5. — *d) ein Umschlagen zum Schlimmern, Verschlimmerung, schlimme Wendung:* लक्ष्म्या विपर्यये R. 2,22,29. कार्यमिति विपर्ययम् *nimmt einen schlechten Ausgang* Spr. 4771. काल° *ungünstige Zeit* MBh. 2,2525. रूप° *Entstellung der Gestalt* M. 11,48. R. 3,75,20. भाग्य° *ein schlimmes Los, Missgeschick* 72,28. Vikr. 63,19. Spr. 2586. Râga-Tar. 1,198. 4,352. 619. दशाभाग्य° R. 5,75,17. 7,30,31 (hier भाग st. भाग्य). विधि° *ein widerwärtiges Geschick, Unglück* Vikr. 69,9. ग्रर्थ° *eine Verkehrung der Vermögensverhältnisse, Verlust des Vermögens* Spr. 1804 (II). 4190. लङ्का° *der Unfall* (= ना-

श Comm.) *mit* Laṅkā R. 7,6,50. प्रवङ्गणा° Mṛkkh. 106,5. गर्भ° R. 1, 47, 3. *Elend, Unglück* R. 6,23,26. Bhâg. P. 4,12,4. 7,2,47. — *e) Verkehrtheit, perversitas:* विपर्यस्ता मतिः पुत्रे विश्वासो वैरिसंश्रिते । ज्ञायते क्षीणभाग्यानां को नाम न विपर्ययः ॥ Râǵa-Tar. 8,1259. अयुक्तो ऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः R. ed. Bomb. 1,21,2. Bhâg. P. 4,6,45. 7,13,25. कृत्वा विपर्ययम् Kathâs. 62,203. प्रज्ञा° R. 5,51,6. बुद्धि° Kathâs. 61,151. मति° Râǵa-Tar. 2,45. कर्म° *ein verkehrtes Thun* Spr. 1595. — *f) das Wechseln der Ansicht, das in Widerspruch Gerathen mit sich selbst* R. 2,34,48. विचारस्यान्यथाभावः संदेहात्तु विपर्ययः Sâh. D. 456. 434. Beispiel: मत्वा लोकमदातारं संतोषे यैः कृता मतिः । त्वयि राजनि ते राजन्न तथा व्यवसायिनः ॥ 179, 9. 10. — *g) eine verkehrte Ansicht, — falsche Auffassung, Irrthum:* सीमाज्ञाने नृणां वीक्ष्य नित्यं लोके विपर्ययम् M. 8, 249. Kap. 1,56. विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम् Jogas. 1,8. Tarkas. 32. अतस्मिंस्तद्बुद्धिर्विपर्ययः Sarvadarçanas. 166,16. Vedântas. (Allah.) No. 142. Bhâg. P. 3,7,10. 4,14,29. 7,12,10. अविपर्ययात् *ohne Irrthum, ganz sicher, ohne allen Zweifel* Sâṅkhjak. 64. विपर्ययः संशयो ऽविपर्ययादसंशयात् Comm. — *h) das Vermeiden, Entgehen* (= परिहार Comm.): शूलस्य R. 7,63,31. — *i) das Währen, Dauern* (?): यावन्मोक्षविपर्ययात् R. 6,21,35. — *k)* Bez. *gewisser Formen des Wechselfiebers* Wise 232. Suçr. 2,404,4.

विपर्यस्त adj. *umgestellt, verkehrt* Ind. St. 8,319. 10,420. *entgegengesetzt,* mit abl. Sâṅkhjak. 23. Andere Belege s. u. 2. अस् mit विपरि.

विपर्याण (2. वि + प°) adj. *entsattelt* Kathâs. 94,17. विपर्याणीकृ *entsatteln:* °कृत 81,20.

विपर्याय m. = विपर्यय *Gegentheil* Bhar. zu AK. 3,3,33 und Kulârṇavakârikâ im ÇKDr.

विपर्यास (von 2. अस् mit विपरि) m. = विपर्यय AK. 3,3,33. H. 1501. Halâj. 4,44. = प्रपञ्च AK. 3,4,5,29. 1) *das Umwerfen:* eines Wagens Gobh. 2,4,3. Pâr. Gṛhj. 1,10. — 2) *Umstellung, Versetzung an einen andern Ort:* मेरोः MBh. 7,8899. — 3) *Ablauf:* युगस्य MBh. 7,424. — 4) *Vertauschung, Verkehrung, Wechsel; umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil:* कर्म° Çâṅkh. Çr. 5,10,13. ऋचाम् 13,1,6. Âçv. Çr. 1,12,31. 4, 8,11. Kâtj. Çr. 5,8,17. 9,5,11. 19,1,17. ऋतुसात्म्य° Suçr. 1,253,2. P. 2,3,36, Vârtt. 5. H. 69. Ind. St. 10,421. विपर्यासं प्राप् MBh. 3,13233. विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् Uttarar. 35,12 (47,6). दशा° 75,5 (96,15). न च कुर्याद्विपर्यासं वाससोः Mârk. P. 34,54. Kathâs. 20,79. नाम° MBh. 3,13486. शीतोष्ण° Varâh. Bṛh. S. 46,39. 97,4. Hariv. 1451. रूपस्य R. 7,2,22. घर्मवृद्धिः क्षपाह्रास उदग्गतौ । दक्षिणेतौ विपर्यासः *das umgekehrte Verhältniss* Weber, Ǵjot. 29. Sâṅkhjak. 19. 45. Varâh. Bṛh. S. 41,13. पाद° Kathâs. 98,54. आत्म° (= अन्यथाभाव Comm.) Bhâg. P. 7,2,25. करोत्यतो विपर्यासम् *er thut das Gegentheil davon* 7, 41. 11,3,18. स्त्रीपुंसयोर्विपर्यासचेष्टितम् Sâh. D. 307. स्तुति° so v. a. *Tadel* Râǵa-Tar. 4,633. — 5) *ein Umschlagen zum Schlimmern, schlimme Wendung:* भाग° (wohl भाग्य° zu lesen; vgl. u. विपर्यय 2) *d)* MBh. 7, 1352. — 6) *Unglücksfall* so v. a. *Tod* (= देहवियोग Comm.) R. 7,108, 9. — 7) *Verkehrtheit* Râǵa-Tar. 4,635. मति° *eine falsche —, irrige Meinung, Irrthum* 3,42. Pañkat. 129,5. — 7) *eine im Geiste vorgehende Verwechselung:* मुखदुःख° Spr. 5242. *eine verkehrte Ansicht, — falsche Auffassung, Irrthum* Bhâshâpar. 126. Bhâg. P. 3,26,30. — विपर्यासम् absol. s. u. 2. अस् mit विपरि.

विपर्व (2. वि + पर्वन्) adj. *gelenklos* d. i. *ohne verwundbare Stelle* ṚV. 1,187,1. erklärt durch विपर्वन् Nir. 9,25.

विपल (2. वि + पल) *ein best. Zeitmaass, ein best. Theil eines* Pala Siddhântaçir. 4,8.

विपलायिन् (von पलाय् mit वि) adj. *fliehend* Spr. 4499.

विपलाश (2. वि + प°) adj. *blattlos, der Blüthenblätter beraubt:* अम्बुज Hariv. 4772.

विपवन (2. वि + प°) adj. (f. आ) *windlos:* संध्या Varâh. Bṛh. S. 30,7.

विपव्य (von 1. पू mit वि) adj. *vollständig zu läutern, — reinigen* P. 3,1,117, Schol. — Vgl. विपूय.

विपशु (2. वि + पशु) adj. *des Viehes beraubt* Varâh. Bṛh. S. 19,7.

विपश्चि adj. = विपश्चित् TBr. 3,12,3,4.

विपश्चित् (विपस् + 2. चित्) 1) adj. *begeistert, seherisch;* überh. *sinnig, weise, klug, verständig, seine Sache kennend* AK. 2,7,4. H. 342. Halâj. 2,177. विश्वाँ अर्यो विपश्चितो ऽति ख्यः ṚV. 8,54,9. धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितः 4,36,7. वि तर्तूर्यन्ते विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् 8,1,4. 3,3. 43,19. 1,164,36. 5,81,1. वाचम् 9,64,25. 16,8. 10,177,1. ब्रह्मैनद्विद्यात्तपसा विपश्चित् AV. 8,9,3. Çat. Br. 3,5,3,12. 11,5,5,7. (अग्निः) पिता यज्ञानामसुरो विपश्चिताम् ṚV. 3,3,4. विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम् 26,9. 27,2. Mitra-Varuṇa 5,63,7. Indra 1,4,4. 8,13,10. 87,1. Soma 9,12,3. 22,3. 33,1. 86,36. 96,22. 101,12. die Sonne AV. 13,2,4. यत्रैतंशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चितो VS. 4,32. die Seele Kaṭhop. 2,18. — सर्वेषां तु विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता । मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राजा M. 7, 58. 81. Bhag. 2,60. R. 2,21,31. R. Gorr. 2,78,6. 3,30,11. 6,20,7. Ragh. 3,29. Spr. 947 (II). 1100. 1150. 1351. 2122. 4683. 5339. 5347. Varâh. Bṛh. S. 5,17. 43,49. 56,30. Bhâg. P. 1,18,23. 2,10,35, 4,24,68. 5,1,18. 5,7. 6,5,9. Mârk. P. 13,11. Sarvadarçanas. 58,1. 129,10. सेवा° *erfahren in* Kâm. Nîtis. 5,57. अ° Kauç. 73. Bhag. 2,42. — 2) m. N. pr. *a)* des Indra unter Manu Svârokisha VP. 260. Mârk. P. 67,3. Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,3. — *b)* eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,22. fehlerhaft für विपश्यिन्.

विपश्चित adj. = विपश्चित् Hariv. 6194.

विपश्यन (von 1. पश् mit वि) n. bei den Buddhisten *richtiges Erkennen* u. s. w. Wassiljew 141. 144. 172. 254. 319. Hier und da fälschlich वैपश्यन geschrieben.

विपश्यिन् (wie eben) m. N. pr. eines Buddha H. 236. Wilson, Sel. Works I, 290. II, 5. 8. 13. fg. 22. Burn. Intr. 222. 317. Lot. de la b. l. 503. Wassiljew 187. — Vgl. विपश्चित् 2) *b)*.

विपस् (von 1. विप्) n. *Erregung, Begeisterung* in विपश्चित् und विपोधा.

विपांसुल (2. वि + पां°) adj. (f. आ) *frei von Staub* MBh. 3,13597 (°पांशुला ed. Calc.).

विपाक (von 1. पच् mit वि) 1) adj. *reif:* साति ṚV. 1,168,7. — 2) m. *a) das Kochen,* = पचन Med. k. 158. — *b) das Reifen, Fruchttragen,* insbes. *das Heranreifen der Frucht der Werke; die Folgen;* = परिणाम Trik. 3,3,43. H. an. 3,99. = कर्मणो विसदृक्फलम् Med. = भवितव्यता Halâj. 1,126. फलस्य Kir. 4,26. Varâh. Bṛh. S. 46,30. Bṛh. 8,

1. 22. 9,8. SARVADARÇANAS. 168,15. कर्मणाम् JAḈN. 3,181. MBH. 8,2163. 13,6661. 6666 (mit der ed. Bomb. विपाकं कर्मणां zu lesen). Spr. (II) 318. 2122. (I) 5009. MÂRK. P. 71,12. Verz. d. Oxf. H. 151,*a*,12. कर्मणाः R. 2,64,57. JOGAS. 1,24. 2,13. MBH. 5,967. HARIV. 7347. जन्मान्तरपातकानाम् RAGH. 14,62. पुण्यानाम् Spr. 1484. विधेः 2407. सुकृत° GIT. 5,12. BHÂG. P. 3,10,9. 4,5,9. 24,41. 5,25,15. 10,71,10. — MBH. 3,13787. UTTARAR. 38,11 (52,5). 75,4 (96,14). KATHÂS. 37,145. विपाककटुकं कस्य नानवाक्यावधीरणम् 36,94. °काल RÂǴA-TAR. 6,93. PAÑKAR. 1,15,18. दशा° *ein resultirender Zustand* MÂLATIM. 149,4. °दारुणो राज्ञां रिपुरल्पोऽपि *in den Folgen, in der Folgezeit* Spr. 2827. श्रुत्वा यः सुहृदां शास्त्रं मर्त्यो न प्रतिपद्यते । विपाकान्ते दहत्येनं किंपाकमिव भक्षितम् ॥ 5092. योगविपाकतीव्रा *in Folge des* Joga, *durch die Wirkungen des* Joga BHÂG. P. 4,9,2. वाय्वर्कसंयोग° 5,16,21. 7,15,50. भक्षितस्य विषस्येव विपाकः R. GORR. 2,65,10. — *c) Verdauung; Verarbeitung und Umwandlung der in den Körper aufgenommenen Heilstoffe* (so v. a. पाक): द्रव्यं चतुर्विपाकञ्च त्रिधा ज्योतिर्विधीयते MBH. 12,8983. 7413. HARIV. 11337. अर्कपत्त्रैः — तीव्रविपाकैः 1,716. 14,999 (अ°). SUÇR. 1,5,17. 75,5. 147,2. 149,4. fgg. यदुपयुक्तं चिराद्विपच्यते विष्टभ्नाति वा स विपाकदोषः 171,4. 183,5. जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम् रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः VÂGBH. 9,20. fg. — *d) Unglücksfall, Unfall:* गोवृषाणाम् JAḈN. 3,284. = दुर्गति H. an. — *e)* = स्वाद MED. = स्वादु H. an. — Vgl. अ°, कटु°, कर्म°, दुर्विपाक (दैव° auch UTTARAR. 20,5 (27,5). 121,8 (164,4). दुर्विपाक adj. *schlimme Folgen habend* 22,4 (29,8).

विपाकश्रुत n. Titel des 11ten der 12 heiligen Bücher der Ǵaina H. 244. WILSON, Sel. Works I,285.

विपाकिन् (von 1. पच् mit वि oder von विपाक) adj. *reifend, Früchte tragend, Folgen habend:* संप्रत्यसाविह पाप्मनः फलमनुभवत्युग्रं पापः (so die v. l.) प्रतीपविपाकिनः MÂLATIM. 83,8. fg.

विपाट m. 1) N. pr. eines Mannes MBH. 7,1433. — 2) MBH. 4,1666. 1668 fehlerhaft für विपाठ (so die ed. Bomb.).

विपाटक (von पट् mit वि) adj. wohl *aufschliessend* so v. a. *bringend:* नक्षत्रत्रितयं शुभाशुभविपाटकम् MÂRK. P. 58,10.

विपाटन (wie eben) n. 1) *das Spalten* NIR. 9,26. — 2) *das zu Grunde-Richten:* राष्ट्र° RÂǴA-TAR. 3,328. अन्योऽन्य° 5,264.

विपाटल (2. वि + पा°) adj. *roth:* °नेत्र RT. 4,14. कोपविपाटलद्युतिमुख SÂH. D. 136,10 (RATNÂV. 30,6 कोपविपाण्डुरप्रतिमुख).

विपाठ 1) m. *eine Art Pfeil* TRIK. 2,8,52. HÂR. 5. MBH. 1,1552. 3,15732. 4,168. 1331. 1666. 1668 (fälschlich विपाट ed. Calc. an den zwei letzten Stellen). 5,1865. 7,1644. R. 6,20,27. — 2) f. आ ein Frauenname MÂRK. P. 75,46.

विपाण्डव RT. 2,13 fehlerhaft für विपाण्डुर, wie die v. l. hat.

विपाण्डु (2. वि + पा°) adj. *weisslich, bleich* SUÇR. 1,95,13. ÇIç. 9,3. KIR. 5,6. KATHÂS. 87,31.

विपाण्डुता (von विपाण्डु) f. *das Bleichsein:* विपाण्डुतां या *bleich werden* RT. 4,10.

विपाण्डुर (2. वि + पा°) adj. = विपाण्डु RT. 2,13 (nach der richtigen Lesart). ÇIç. 4,5. SÂH. D. 136,7 (RATNÂV. 30,3). Ind. St. 2,258. NÂGÂN. 20,15.

विपात adj. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. यावादि zu 4,129. — Vgl. वैपात्य.

विंपातक adj.: पशु gaṇa यावादि zu P. 5,4,29.

विपातन (vom caus. von 1. पत् mit वि) n. *das Flüssigmachen, Schmelzen:* स्नेह° P. 7,3,39.

विपादिका (von 2. वि + पाद) f. 1) *eine Art des Aussatzes* SUÇR. 1,269, 9. ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,64. *Blasen u. s. w. an den Füssen,* = पादस्फोट AK. 2,6,2,3. H. 465. °कृते दास्यानीतं पञ्चाशतो घृतम् RÂǴA-TAR. 8,137. विपादिकां व्याहरति P. 1,3,20, Schol. — 2) *Räthsel* ÇABDAM. im ÇKDR. — Vgl. वैपादिक.

विपा॑न (von 1. पा mit वि) n. *das Wegtrinken* VS. 19,72. ÇAT. BR. 12, 7,3,4. PAÑKAV. BR. 14,11,26. — विपानानि MBH. 12,9270 fehlerhaft für निपानानि, wie die ed. Bomb. liest.

विपा॑प (2. वि + पाप) 1) adj. (f. आ) *fehlerfrei, sündenlos* ÇAT. BR. 14, 7,2,28. R. 1,36,22. 7,59,3,63. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBH. 6,323 (VP. 181).

विं॑पाप्मन् (2. वि + पा°) 1) adj. *fehlerfrei, sündenlos* TBR. 2,3,3,1. MBH. 1,6781. R. GORR. 2,74,54. सभा *frei von Leiden* MBH. 2,83. — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens MBH. 13,4355.

विपार्श्व (2. वि + पा°), instr. विपार्श्वेन wohl so v. a. *zur Seite, dicht bei* R. GORR. 2,70,18. Die beiden anderen Ausgg. lesen विपाशां चापि st. विपार्श्वेन च.

विपाल (2. वि + पाल) adj. *keinen Hüter habend:* पशु M. 8,240. 242.

विं॑पाश् f. (nom. °पाट्) N. pr. eines Flusses im Pandshab, Hypanis und Hypasis der Alten, Bijas heut zu Tage; soll früher Uruńǵirâ geheissen haben. NIR. 2,24. 9,26. 38. AK. 1,2,3,32. H. 1086. ṚV. 3, 33,1. 3. 4,30,11. P. 4,2.74. gaṇa कुञ्जादि zu 1,98. शिवादि zu 112. VOP. 6,62. Am Ende eines adv. comp. °विपाशम् gaṇa शरदादि zu P. 5,4, 107. — Vgl. विपाशा, वैपाश, वैपाशायन.

विपाश gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80. 1) adj. (2. वि + पाश) *keine Schlinge habend:* Varuṇa HARIV. 2693. R. 3,54,9. *von den Fesseln befreit* AIT. BR. 7,16. MBH. 1,6749. 3,10544. 13,192. — 2) f. आ = विपाश् AK. 1,2,3,32. H. 1086. MBH. 1,6780. 2,371. 3,10543. 6,323 (VP. 181). 8,2055. 13,193. 1710. 1733. 4888. HARIV. 9506. R. 2,68,19. R. GORR. 2,85,15. VARÂH. BṚH. S. 16,21. KATHÂS. 74,190. MÂRK. P. 57,18 (विपासा gedr.). 22. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,9. PRÂJAÇKITTEND. 11,*b*,4.

विपाशन (von पाशय् mit वि) n. *das Losbinden* NIR. 4,3. 9,26.

विं॑पाशिन् adj. *ohne Strang* (पाश) nach NIR. 11,48 in ṚV. 4,30,11.

विपासा s. u. विपाश 2).

विं॑पिन UṆÂDIS. 2,52. 1) n. SIDDH. K. 249,*a*,8. *Wald* AK. 2,4,1,1. H. 1110. HALÂJ. 2,55. MBH. 1,2949. 5569. 3,1511. 2730. 2960. 12424. HARIV. 14611. R. 2,47,6. KÂM. NÎTIS. 14,22. RAGH. 4,31. 9,72. VIKR. 37,18. Spr. 1442 (II). 4723. GIT. 1,33. 45. KATHÂS. 22,137. 37,57. PRAB. 73,8 (विलास°). BHÂG. P. 1,6,14. 4,28,47. 5,2,7. 7,2,50. 9,10,11. MÂRK. P. 127,5. am Ende eines adj. comp. (f. आ): अति° KIR. 5,18. सुविपिना MBH. 3,16235. — 2) adj. *dicht:* वन BHÂG. P. 9,15,23.

विपिनतिलक n. *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑–⏑⏑–⏑–⏑–⏑– COLEBR. Misc. Ess. II, 161 (X, 10).

विपिनाय् (von विपिन) *wie ein Wald erscheinen, zum Walde werden:* ग्रावासो विपिनायते Git. 4,10. Spr. (II) 1081.

विपीडम् (von 2. वि + पीडा) adv. *so dass kein Schaden, kein Leid erwächst (erwuchs):* तस्मिन् — विपीडं सम्यगमहीं शासति Ragh. 18,28.

विपुंसक (2. वि + पुमंस्) adj. *nicht recht männlich, unmännlich* Kâth. 13,5.7.

विपुंसी (wie eben) f. nach dem Comm. *ein Weib mit männlichem Aeusseren* Pâr. Gṛhj. 2,7 (°पुंषी die Hdschr.).

विपुच्छय् (von 2. वि + पुच्छ), °यते *den Schwanz hinundher bewegen* P. 3,1,20, Vârtt. 3.

विपुत्र (2. वि + पुत्र) adj. (f. ग्रा) *des Sohnes —, des Kalbes beraubt* R. Gorr. 2,38,4.

विपुरीष (2. वि + पु°) adj. *vom Unrath befreit* Çat. Br. 12,5,2,5. Kâtj. Çr. 25,7,18.

विपुरुष (2. वि + पु°) adj. *menschenlos:* कृत्वा रथान्विपुरुषान् MBh. 5,2051.

विपुल 1) adj. (f. ग्रा) *gross, umfangreich (breit, dick), stark, intensiv;* = महत्, विशाल, बृहत्, पृथु u. s. w. AK. 3,2,10. H. 1430. an. 3,683. Med. l. 131. Halâj. 4,14. = ग्रगाध H. an. Med. neben पृथु Pâr. Gṛhj. 2,6. कुत्तिराष्ट्र MBh. 4,12. सागरानूपविपुला मही Hariv. 6363. वन R. 1,2,11. पुलिन Ṛt. 1,27. Spr. 2828. Pańkar. 3,12,4. ह्रद MBh. 3,2251. सरस् Bhâg. P. 8,2,14. स्रोतांसि R. Gorr. 2,65,15. शमी MBh. 1,481. पद्मिनी R. Gorr. 2,57,5. वल्ली Spr. (II) 494. छाया MBh. 1,5896. सभा 2,83. ग्रोकस् Bhâg. P. 8,24,18. पताका R. 2,64,9. प्रास MBh. 1,1169. रथ्या: *gross, breit* R. 1,19,12. लोका: Spr. 1342 (II). ग्राकाश 2085. नक्षत्रमार्ग MBh. 3,1767. तारका, ग्रह Varâh. Bṛh. S. 11,17.28. 13,7. 17,10.11. 20,8. 21,17. षोडशहस्तोच्छ्रायं दशविपुलं तोरणं कार्यम् *breit* 44,3. *dick* 58,22. fg. शिरसि तनुर्विपुलश्च मध्यदेशे (संधिः) Mṛkkh. 51,19. नकुल *gross* AK. 3,4,25,172. मूर्ति Varâh. Bṛh. S. 6,13. सटा MBh. 7,7904. ग्रस्थि Suçr. 1,301,12. °ग्रीव R. 5,73,13. बाहु Bhâg. P. 5,5,31. भुज 25,5. ग्रंस R. 1,1,11 (13 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 68,34. श्रोणि Hip. 3,7. MBh. 3,2971. Spr. (II) 1633. नितम्बदेशे Mâlav. 42. वक्षस् R. 2,30,2. उरस् 111,12. त्रिषु (d. i. उरसि, ललाटे und वदने) विपुलः Varâh. Bṛh. S. 68,84. कर्ण 59. नेत्र, ईक्षण, दृष्टि MBh. 1,5977. R. 2,87,2. R. Gorr. 2,30,2. 3,21,3. दण्डनीति *umfangreich* 1,4,6. नीतिशास्त्र 79,20. रचना Varâh. Bṛh. S. 1,2. 104,64. Verz. d. Oxf. H. 21,*a*,32. 79,*b*,2 v. u. प्रभा *intensiv* R. 4,39,8. दीधिति Varâh. Bṛh. S. 3,40. कराः *sich weit ausbreitende Strahlen* Bṛh. 2,20. वृष्टि *viel Regen* Varâh. Bṛh. S. 24,29. कोश *reicher Schatz* R. 3,61,27. बल *zahlreich* Prab. 3,7. ज्ञनौघ R. 2,80,4 (87,5 Gorr.). धनौघ Spr. 5010. धनागम M. 8,347. R. 2,48,4 (45,7 Gorr.). Spr. 1887. धन 1992. 5044. वित्त 2524. वसु Kathâs. 23,26. ग्राय *grosse Einnahme* R. Gorr. 2,109,53. लाभ *Gewinn* Varâh. Bṛh. S. 42,4. पृथ्वीविपुलदानक Pańkar. 2,7,20. भोगाः Spr. 4704. R. 3,43,29. विपुलार्थभोगवन्तः Varâh. Bṛh. S. 68,67. गुणाः *viele* Spr. 2487. गुणविपुलेषु कुलेषु R. 4,41,79. पूर्वसुकृत Spr. 2051. वृत्ति Suçr. 2,395,12. श्री R. 3,54,28. 6,95,22. Spr. 3176. संलापो विपुलोदयः Râǵa-Tar. 3,142. धर्म MBh 1,1715. धर्मावाप्ति R. 2,51,5. 86,6. वृद्धि 3,4,18. कर्मन् *bedeutend* MBh. 4,31. Hariv. 9327. R. 5,59,5. व्रत MBh. 1,5126. त्रिपुलौजस् R. 2,96,24. 4,1,24. तपस् MBh. 13,207. यशस् R. 3,45,8. ख्याति Râǵa-Tar. 5,153. मर्द MBh. 1,1121. ग्रायास Prab. 92,13. श्रम Bhâg. P. 9,21,11. लोभ 3,9,6. शोक R. 2,66,21. 3,69,21. प्रीति 2,79,2 (75,19 Schl.). शाप Bhâg. P. 4,27,22. प्रसाद 3,28,31. रुज् Çrut. (Br.) 5. दण्डधारणा MBh. 3,2244. ग्राशय Râǵa-Tar. 4,241. बुद्धि MBh. 2,925. °बुद्धि adj. Suçr. 1,14,4. °प्रज्ञ MBh. 3,11285. °मति Varâh. Bṛh. S. 51,44. Spr. 1104. 2829. fg. Kathâs. 53,197. °हृदय Spr. 2829, v. l. सत्त्व R. Gorr. 2,64,10. वंश so v. a. *vornehm* MBh. 1,2313. कुल R. 3,1,12. गृह MBh. 13,3784. काल *lange Zeit* Hariv. 2954. स्वने, नाद, धनि so v. a. *laut* MBh. 1,6037. 3,393. 8679. 5,3812. R. 6,101,34. Varâh. Bṛh. S. 19,13. स्तुवन्ति यान्तं विपुलैर्वचोभिः Hariv. 13125. ग्रतिविपुल Spr. (II) 1435 (ख). ग्रतिविपुलतर (पृष्ठ) Git. 1,6. सुविपुल Varâh. Bṛh. S. 48,79 (सिद्धि). MBh. 3,2302 (श्री). सुविपुलौजस् R. 1,7,5. प्रणादाः MBh. 1,5348. शङ्खशब्द Hariv. 13221. Das unbelegte पुल mit derselben Bed. wie विपुल ist aller Wahrscheinlichkeit nach erst aus diesem geschlossen worden. — 2) m. N. pr. *a)* eines Fürsten der Sauvîra MBh. 1,5536 (nach der Lesart der ed. Bomb., वितुल ed. Calc.). eines Schülers des Devaçarman 13,2248. 2262. fgg. 7671. eines Sohnes des Vasudeva Bhâg. P. 9,24,45. — *b)* eines Berges Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10. Hiouen-thsang II, 23. im Westen (Osten VP.) des Meru Med. VP. 168. Mârk. P. 54,20. fg. 56,13. = सुमेरु und हिमालय Dhar. im ÇKDr. — 3) f. ग्रा *die Erde* (vgl. पृथ्वी, मही) H. 938. H. an. Halâj. 2,1. — *b)* N. der Dâkshâjaṇî auf dem Berge Vipula Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,10. — *c) eine best. Varietät des* Ârjâ-*Metrums* Med. Colebr. Misc. Ess. II, 154,*a*. Ind. St. 8,296. fgg. 300. fg. 305. ग्रादि°, मुख°, ग्रन्त्य°, जघन°, उभय°, महा° 297. 300. fg. *eine best. Varietät des* Vaktra 339. Colebr. Misc. Ess. II, 158 (IV, 5). भ°, र°, न°, त°, म°, य°, ज° ebend.

विपुलता (von विपुल) f. *Grösse:* यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलताम् Çâk. 9.

विपुलत्व (wie eben) n. *Breite:* विपुलत्वेन so v. a. *im Durchmesser* MBh. 6,483. 486.

विपुलपार्श्व m. N. pr. eines Berges Vjutp. 103.

विपुलमति 1) adj. s. u. विपुल 1). — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Râshṭrapâlap. 2.

विपुलय् (von विपुल) *verbreiten:* यशो विपुलयंस्तव Bhâg. P. 4,8,69.

विपुलरस 1) adj. *überaus saftig.* — 2) m. *Zuckerrohr* Çabdârthak. bei Wilson.

विपुलस्कन्ध 1) adj. *breitschultrig.* — 2) m. Bein. Aruṇa's H. ç. 9.

विपुलास्रवा f. *Aloe perfoliata Lin.* Râǵan. im ÇKDr.

विपुलिनाम्बुरुह (2. वि + पु° - ग्रम्बुरुह) adj. (f. ग्रा) *keine Sandbänke und Wasserrosen habend:* सरित् Kir. 5,10.

विपुलीकर् (विपुल + 1. कर्) *ausbreiten, einer Sache einen grösseren Umfang geben:* त्वमेतद्विपुलीकुरु (भागवतम्) Bhâg. P. 2,7,51.

विपुष्ट (2. वि + पुष्ट) adj. *schlecht genährt, ausgehungert* Spr. 2409.

विपुष्प (2. वि + पुष्प) adj. *blüthenlos:* तरु Spr. 5027.

विपूय (von 1. पू mit वि) m. *Saccharum Munja* (मुञ्ज) *Roxb.* P. 3,1,117. Vop. 26,20. Bhaṭṭ. 6,60. nach einer anderen Lesart adj. als Beiw. von मुञ्ज in der Bed. *reinigend;* zu bemerken ist, dass auch पवित्र als Kuça-*Gras* erklärt wird.

विपूयक (2. वि + पूय) adj. *nicht mit Eiterung verbunden* Suçr. 1,270, 11; vgl. jedoch Wise 261.

विपृक्वत् (von पर्च् mit वि) adj. etwa *unvermischt, lauter* (= सर्वतो व्याप्तम् Sâj.): ददानो ग्रस्मा ग्रमृतं विपृक्वत् ṚV. 5,2,3.

विपृच् (wie eben) adj. *sich nicht berührend, gesondert* VS. 9,4. TS. 3,1,6,2.

विपृथ s. विपृथु.

विपृथु (2. वि + पृथु) 1) v. l. für विपथ anderer Bücher Çâñkh. Çr. 14,72, 3 in Ind. St. 1,35. — 2) m. N. pr. eines zu den Vṛshṇi gehörenden Fürsten (neben पृथु) MBh. 1,6998. 7,409. सप्तर्षीणामथोर्ध्व च विपृथुर्नाम पार्थिवः 12,10810. Hariv. 5078. 6626. 6635.fgg. 8058. 10298. 10386. 11008. ein Sohn Kitraka's (so auch die neuere Ausg. des VP.) und jüngerer Bruder Pṛthu's 1920. 2087. VP. 435 (विपृथ ein Fehler bei Wilson).

विपोधा (विपस् + 2. धा) adj. *Begeisterung machend* ṚV. 10,46,5. = मेधाविनो धर्ता Comm.

विप्र (von 1. विप्) Uṇâdis. 2,28. 1) adj. subst. *innerlich erregt, begeistert;* gewöhnliche Bez. *desjenigen, welcher vor dem Altar dem frommen Drang Worte leiht: Dichter, Sänger, Vorbeter* u. s. w. Naigh. 3,15. Unter allen Synonymen ist im ṚV. dieser Ausdruck am häufigsten gebraucht. येषां ब्रह्माणि विप्रा विष्वग्वियन्ति ṚV. 7,43,1. मति 66, 8. 8,25,24. ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः die Marut 3,47,4. ग्रविप्रो वा यद्विधद्विप्रो वेन्द्र ते वचः 8,50,9. त्वामीक्षुर्विप्रतमं कवीनाम् 10,112,9. 3,31,7. मा त्वा विप्रा नि रीरमन्यत्नमानासो ग्रन्ये 2,18,3. कतमस्यं ग्रगमतु विप्रस्य वा यत्नमानस्य वा गृहम् 10,40,14. प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते 9,85,7. वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यः 10,42,1. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति 1,164,46. वेपिष्ठो ग्रङ्गिरसां विप्रः 6,11,3. विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति 3,34,7. 1,129,2.11. इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः 7,31,11. ऋषि 1,162,7. 4,26,1. 7,22,9. 10,108,11. sieben 3,7,7. 31,5. 4,2,15. 6,22,2. ऋषिर्विप्राणाम् 9,96,6. VS. 9,4. Çat. Br. 1,4,2,7. TS. 2,5,9,1. Priester Varâh. Bṛh. S. 44,21. neben पुरोहित 29,10. Priester Brahman's 60,19. — 2) adj. überh. *geistig belebt: scharfsinnig, klug;* auch Bez. von Göttern ṚV. 5,51,3. 6,51,2. 68,3. 7,88,4. 6. die Açvin 6,50,10. 7,44,2. Indra 4,19,10. 5,31,7. Savitar 5,81,1. Soma 9,66,8. bei Agni, der häufig so heisst, z. B. 3,2,13. 5,1. 14,5. 4,8,8. 8,39,9 könnte die Beziehung auf sein *priesterliches* Amt, also Bed. 1) gemeint sein. विप्रः स उच्यते भिषक् ṚV. 10,97,6. — 3) adj. subst. *gelehrt, ein gelehrter Theolog:* ये वै ब्राह्मणाः शुश्रुवांसो ऽनूचानास्ते विप्राः Çat. Br. 3,5,3,12. TS. 2,5,9,1. vgl. Schol. zu Çâk. 128: जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्काराद्दिज उच्यते । विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते ॥ — 4) m. *ein Brahmane* überh. AK. 2,7,4. 3,4,7,32. 18,117. Trik. 2,7,2. H. 812. Halâj. 2,236. M. 1,98. 109. 2,37. 42. 150 u. s. w. (fast eben so häufig wie ब्राह्मण gebraucht). Jâǵn. 1,91. MBh. 1,6119. 3,11914. R. 1,8,13. 61,6. 2,32,2. 82,31. Spr. 1705 (II). 1399. 2631. 4334. 5013. fgg. Suçr. 1,15,6. 111,10. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 5,32. 98. 30,17. 33,18. Weber, Râmat. Up. 362. Kathâs. 4,110. 18,107. 403. Brahma-P. in LA. (III) 56, 6. Dhûrtas. 76,6. Pańkat. 158,2. Am Ende eines adj. comp. f. ग्रा MBh. 12,5341. विप्रा f. *eine Frau aus der Brahmanenkaste* Gotama bei Colebr. Misc. Ess. I,120. M. 8,378. 10,12. Bhâg. P. 6,1,65. Pańkar. 1,4,42. 44. — 5) m. Bez. gewisser göttlicher Wesen: साध्या विप्रा यत्ता रक्षांसि Âçv. Gṛhj. 3,4,1. — 6) m. *der Mond* Dravjar. in Nigh. Pr. — 7) m. = भाद्रपद ebend. — 8) m. *Ficus religiosa* Râǵan. in Nigh. Pr. = शिरीष Med. ebend. — 9) m. *Proceleusmaticus* Colebr. Misc. Ess. II, 151. — 10) m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi VP. 98 (रिप्र Hariv.). des Çrutamǵaja (Sṛtamǵaja) 465. Bhâg. P. 9,22,46. — Vgl. ग्र° und वेपिष्ठ.

विप्रकर्ष (von 1. कर्ष् mit विप्र) m. gaṇa क्रेडादि zu P. 5,1,64. 1) *das Wegschleppen, Fortführung:* द्रौपद्याः MBh. 3,55. — 2) *räumliche Entfernung* Vikr. 66,10. Daçak. 4,47. — 3) *zeitliche Entfernung:* काल° *Zeitintervall* AV. Prât. 2,39. चिरकालविप्रकर्षात् *weil eine lange Zeit dazwischenliegt* Prab. 24,15. — 4) *Abstand, Contrast, Unterschied:* ग्रदूर° P. 5,3,55, Vârtt. 3. ग्रन्येषां कर्म सफलमस्माकमपि वा पुनः । विप्रकर्षेण (= कर्मकारणात्ते Nilak.) बुध्येत कृतकर्मा यथाफलम् ॥ MBh. 3,1247. स्वगुणैरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृथग्जनात् Spr. (II) 924. — 5) in der Gramm. *Auseinanderreissung —, Trennung zweier Consonanten durch Einfügung eines Vocals* Varar. 3,58 bei Lassen, Institt. linguae pracr. S. 87. — Vgl. वैप्रकर्षिक.

विप्रकार (von 1. कर् mit विप्र) m. *Zufügung eines Leides, Beleidigung* AK. 3,3,15. H. 441. Halâj. 4,84. MBh. 1,2244. स बाधते प्रजाः सर्वा विप्रकारैः (विविधैः प्रकारैः Nilak.) 3,15931. 5,21. 7,5369. ग्रागमाय तदाख्यातुं (तमा°?) विप्रकारं सुरेतरैः 8,1429. 13,4213. विप्रकारान्प्रयुङ्क्ते स्म सुबहून्मम वेश्मनि 7495. R. Gorr. 2,22,5. तपस्विनाम् 3,10, 19. 6,13,29. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा Kir. 3,55.

विप्रकाश am Ende eines comp. = प्रकाश *den Schein von Etwas habend, aussehend wie, ähnlich:* ग्रमर° Hariv. 6138.

विप्रकाष्ठ (विप्र + का°) n. *das Holz der* (weichen) *Brahmanen* d. i. *die Baumwollenstaude* Râǵan. im ÇKDr. *Thespesia populneoides Wall.* Nigh. Pr. nach ders. Aut.

विप्रकीर्ण s. u. 3. कर् mit विप्र. m. (sc. हस्त) Bez. *einer best. Stellung der Hände beim Tanze* Verz. d. Oxf. H. 202,a,26.

विप्रकीर्णत्व (von विप्रकीर्ण) n. *das Zerstreutsein:* शाखानाम् Kumârila bei Müller, SL. 105.

विप्रकृत् (von 1. कर् mit विप्र) adj. *Jmd* (gen.) *ein Leid zufügend* Bhâg. P. 6,17,11.

विप्रकृति (wie eben) f. *Abänderung:* नोक्तं विप्रकृतिं नयेत् *das einmal Ausgesagte soll er nicht abändern* Jâǵn. 2,9.

विप्रकृष्ट s. u. 1. कर्ष् mit विप्र und füge daselbst noch für die Bed. *entfernt* Halâj. 4,8 hinzu.

विप्रकृष्टक adj. = विप्रकृष्ट *entfernt* AK. 3,2,18.

विप्रकृष्टत्व (von विप्रकृष्ट) n. *Entfernung* MBh. 3,1747.

विप्रकॢप्ति (von कल्प् mit विप्र) f. *besondere Veranstaltung* Kâtj. Çr. 25,4,16.

विप्रचित् m. N. pr. eines Dânava, Vaters des Râhu, Bhâg. P. 6, 18,12. — Vgl. विप्रचित्ति.

विप्रचित (विप्र + चित) gaṇa मुतंगमादि zu P. 4,2,80. — Vgl. वैप्रचिति und मुनिचित.

विप्रचित्त MBh. 6,5031 fehlerhaft für विप्रचित्ति, wie die ed. Bomb. liest.

विप्रचित्ति (विप्र + चित्ति) 1) adj. *scharfsinnig* TBr. 3,10,8, 3. — 2)

m. N. pr. *a*) eines Lehrers Bṛh. Âr. Up. 2,6,3. 4,6,3. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,15. 19,*a*,39; vgl. विप्रजित्ति. — *b*) eines Dânava, Vaters des Râhu u. s. w. MBh. 1,2530. 2640. 2,365. 6,4212. 5031 (विप्रचित्त ed. Calc.). 12,3661. 6146. 7545. Hariv. 204. fg. 213. 264. 2281. 12463. 12502. 12695. 13059. 13193. 13883. fgg. 14282. VP. 147. fg. Bhâg. P. 6,6,30. 35. 10,19. 7,2,5. 8,10,19. Mârk. P. 18,18.

विप्रजन (विप्र + जन) m. 1) *Priester* oder coll. *die Priester* MBh. 3, 15687. — 2) N. pr. eines Mannes mit dem patron. Saurâki Kâṭh. 27, 5 in Ind. St. 3,477,2 v. u.

विप्रजित्ति m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*, N. 5. — Vgl. विप्रचित्ति 2) *a*).

विप्रजूत (विप्र + जूत) adj. *von den Betern getrieben* Ṛv. 1,3,5.

विप्रजूति m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtaraçana, Liedverfassers von Ṛv. 10,136,3.

विप्रणाश (von 1. नश् mit विप्र) m. *das Verlorengehen, spurloses Verschwinden:* अविप्रणाशः सर्वेषां कर्मणामिति निश्चयः so v. a. *kein Werk bleibt unbelohnt* (*ungestraft*) MBh. 15,923.

विप्रता (von विप्र) f. *der Stand —, die Würde eines Brahmanen* Spr. 4713. विप्रतामुपाजगाम *wurde Brahmane* VP. 4,19 bei Muir, ST. I,55, N. 45.

विप्रतारक (vom caus. von 1. तर् mit विप्र) m. *Schakal* (*Betrüger;* vgl. वञ्चक) H. an. 3,412.

विप्रतिकूल (2. वि + प्र°) adj. *widerspänstig, widersetzlich:* पुत्राः Bhâg. P. 7,4,45.

विप्रतिपत्ति (von 1. पद् mit विप्रति) f. 1) *Verkehrtheit der Wahrnehmung, Sinnestäuschung* u. s. w. Suçr. 1,112,11. 114,13. 117,14. — 2) *Widerspruch:* वसन्पितृवने रौद्रे शौचे वर्तितुमिच्छसि। इयं विप्रतिपत्तिस्ते (= विपरीता बुद्धिः Nilak.) यदा त्वं पिशिताशनः॥ MBh. 12,4091. — 3) *das Auseinandergehen von Meinungen, Meinungsverschiedenheit:* व्याहतमेकार्थदर्शनं विप्रतिपत्तिः (= व्याघात, विरोध, असम्भाव) Comm. zu Njâjas. 1,1,23. Kâtj. Çr. 1,4,9. Lâṭj. 6,1,19. Varâh. Bṛh. S. 9,7. Kull. zu M. 9,33. Verz. d. Oxf. H. 244,*b*, No. 609. गुणवताम् Kull. zu M. 8,73. Comm. zu TBr. 1,168,2 v. u. वादि° Kap. 1,112. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 7. आचार्य° Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 8. Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,39. परस्पर° Nilak. 71. Kull. zu M. 7,120. धर्मविशेषे Schol. zu Kap. 1,139. ऋतुसंख्यायां विप्रतिपत्तिराचार्याणाम् Weber, Gjot. 36. Kull. zu M. 8,7. द्वयोर्ग्रामयोर्मर्यादां प्रति विप्रतिपत्तावुत्पन्नायाम् zu 245. Windischmann, Sancara 93,1 v. u. Sarvadarçanas. 116,20. 129,7. कार्यकारणभावे चतुर्धा विप्रतिपत्तिः 149,15. द्वितीय°, तृतीय°, तुरीय° Kusum. 21,3. 4. 25,3. 43,3. ऋणादि° Kull. zu M. 7,154. अविप्रतिपत्त्या *ohne alle Meinungsverschiedenheit, einstimmig* Comm. zu Ṛv. Prât. 3,12 (Sûtra 20). *Conflict zwischen zwei Auffassungen, Antinomie* Sarvadarçanas. 113,15.

विप्रतिपन्न s. u. 1. पद् mit विप्रति; in der Bed. *nicht übereinstimmend* Ṛv. Prât. 17,13.

विप्रतिषेध (von सिध् mit विप्रति) m. 1) *das Wehren, Einhaltthun:* क्रव्यादा इव भूतानामदान्तेभ्यः सदा भयम्। तेषां विप्रतिषेधार्थं राजा सृष्टः स्वयंभुवा॥ MBh. 12,7990. — 2) *Widerspruch, Widerstreit, Gegensätzlichkeit, Conflict zweier Aussprüche* Çâṅkh. Çr. 13,14,2. 5. अ° Lâṭj. 6,3,11. 8,5,10. उभयोः कार्ययोर्विप्रतिषेधः Çiç. 2,6. Njâjas. 3,1,57. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 38. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 8. विप्रतिषेध उत्तरं बलवल्लोपे VS. Prât. 1,159. विप्रतिषेधे परं कार्यम् P. 1,4,2. विरोधो विप्रतिषेधः। यत्र द्वौ प्रसङ्गावन्यार्थावेकस्मिन्प्राप्नुतः स विप्रतिषेधः Kâç. अणो (abl.) ण्यङ्ण्यत्रेजो (nom.) विप्रतिषेधेन *die Suffixe* ण्यङ् u. s. w. *gehen in Folge des Conflictes zweier Bestimmungen dem Suffix* अण् vor P. 4, 1,170, Vârtt. 2. 158, Vârtt. 2. 2,2,36, Vârtt. 3. 3,16, Vârtt. 1. 4, 2,39, Vârtt. 3. पूर्व° *ein Conflict zweier Bestimmungen, bei dem die vorangehende die folgende aufhebt,* 6,1,2, Vârtt. 2. Kâr. zu 7,2,90. Schol. zu 3,4,24. 6,1,208. 2,3,16, Vârtt. 1. 4,2,39, Vârtt. 2. पर° *ein Conflict zweier Bestimmungen, bei dem die folgende die vorangehende aufhebt,* Schol. zu 2,2,35, Vârtt. 1. — 3) = प्रतिषेध (wie 1.) *Aufhebung, Verneinung* Njâjas. 2,1,14.

विप्रतिसार (von सर् mit विप्रति) m. 1) *Reue* Râjam. zu AK. 1,1,7, 25 nach ÇKDr. H. 1378. an. 5,43. Halâj. 4,31. चेतसि सविप्रतिसारे Çiç. 10,20. — 2) *Ingrimm, Zorn.* — 3) *Schandthat, Schlechtigkeit* H. an. — Vgl. विप्रतीसार.

विप्रतीप (2. वि + प्र°) adj. *sich widersetzend, widerspänstig, feindselig:* पुत्र MBh. 5,2027. चेतांसि 2754. डुरुक्तं विप्रतीपं वा रभसाच्चापलात्तथा। यन्मयेह कृतं किंचित् 6,5850. प्रस्तुतविप्रतीपविधि Kusum. 64,18.

विप्रतीसार m. = विप्रतिसार. 1) *Reue* AK. 1,1,7,25. Trik. 1,1,132. H. 1378, Schol. — 2) *Ingrimm, Zorn.* — 3) *Schandthat, Schlechtigkeit* Med.

विप्रत्यय (2. वि + प्र°) m. *Misstrauen* MBh. 12,4137, Bhar. Nâṭjaç. 18,72. Spr. (II) 406.

विप्रत्व (von विप्र) n. *der Stand —, die Würde eines Brahmanen* Jâǵn. 2,304. Verz. d. Oxf. H. 276,*a*, 4 v. u. Bhâg. P. 5,9,2. *eines gelehrten Brahmanen* Cit. beim Schol. zu Çâk. 128.

विप्रदुह् m. *getrocknete Früchte, Wurzeln* u. s. w. Çabdaḱ. im ÇKDr.

विप्रदेव (विप्र + देव) m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 924. eines Hauptes der Bhâgavata Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,18.

विप्रपात (von 1. पत् mit विप्र) m. 1) *eine Art von Flug* Paṅḱat. ed. Bomb. II, 53. — 2) *Abgrund* MBh. 12,6688.

विप्रप्रिय (विप्र + प्रिय) 1 adj. *bei den Brahmanen beliebt* R. im ÇKDr. — 2) m. *Butea frondosa* Râǵan. in Nigh. Pr.

विप्रबन्धु (विप्र + बन्धु) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Gaupâjana oder Laupâjana, Liedverfassers von Ṛv. 5,24,4. 10,57. fgg.

विप्रमठ (विप्र + मठ) m. *Brahmanenkloster* Kathâs. 18,105. 25,63.

विप्रमनस् (2. वि + प्र°) adj. *verstimmt, kleinmüthig:* असक्य मन्यमानाश्च ते विप्रमनसो (नातिप्रमनसो st. ते वि° ed. Bomb.) ऽभवन् MBh. 6,2860.

विप्रमन्मन् (विप्र + म°) adj. *begeisterte Andacht habend* Ṛv. 6,39,1.

विप्रमाथिन् (von 1. मथ् mit विप्र) adj. *zermalmend, zerstörend:* विषयवृत्तिन् Spr. 4572.

विप्रमादिन् (von 1. मद् mit विप्र) adj. *auf Nichts achtend, sich ganz gehen lassend* Spr. 4572, v. l.

विप्रमोक्ष (von मोक्ष् mit विप्र) m. *das Sichlösen:* सर्वग्रन्थीनाम् Khând. Up. 7,26,2. Sarvadarçanas. 58,15. *Befreiung von:* ततो दास्याद्विप्रमोक्षो भविता तव MBh. 1,1319.

विप्रमोक्षण (von मोक्षय् mit विप्र) n. *das Sichlosmachen —, Sichbe-*

freien von: शतक्रतोः कल्मषविप्रमोक्षणमिदं पठन् Hariv. 11271. कृत्स्न-कर्म° Sarvadarçanas. 40, 8. 9.

विप्रमोच्य (von 1. मुच् mit विप्र) adj. *zu befreien von* (abl.): पौरा ह्यात्मकृताद्दुःखाद्विप्रमोच्या नृपात्मजैः R. 2, 46, 23 (44, 23 Gorr.).

विप्रमोह (von 1. मुह् mit विप्र) m. *Begehung eines Fehlers, Versehen:* अ° Âçv. Çr. 1, 2, 12.

विप्रयाण (von 1. या mit विप्र) n. *Flucht* Çabdârthak. bei Wilson.

विप्रयोग (von 1. युज् mit विप्र) m. gaṇa क्षेद्रादि zu P. 5, 1, 64. *Trennung* AK. 3, 3, 28. H. 1511. M. 9, 1. MBh. 1, 6126. Megh. 10. Varâh. Bṛh. S. 51, 12. Daçak. 4, 47. 53. संयोगा विप्रयोगान्ता ज्ञातानां प्राणिनां ध्रुवाः Spr. 3075. 3217. 5011. Kathâs. 9, 89. चिर° Prab. 17, 12. तत्रापि विप्रयोगश्च विचित्रो वां भविष्यति Kathâs. 25, 284. Wilson, Sâṅkhjak. S. 51. mit instr.: प्रियैः M. 6, 62. MBh. 1, 6124. 12, 850. R. 7, 50, 11. Megh. 113. mit gen.: अनिष्टसंप्रयोगाच्च विप्रयोगात्प्रियस्य च Spr. (II) 307. Hariv. 10288. mit सह und instr. Vikr. 154. Die Ergänzung im comp. vorangehend: शोकं मैथिलीविप्रयोगजम् R. 5, 75, 16. Ragh. 13, 26. Spr. 1081 (II). 1111. 1813. Kathâs. 13, 194. *das Fehlen, Nichtdasein* Sâh. D. 17, 10. — Vgl. वैप्रयोगिक.

विप्रयोगिन् (von विप्रयोग) adj. *getrennt* (von einem geliebten Gegenstande) Kathâs. 104, 77.

विप्रराज्य (विप्र + राज्य) n. 1) *Reich der Frommen* ṚV. 8, 3, 4. — 2) *die Herrschaft der Brahmanen:* °द् Pańkar. 4, 3, 87.

विप्रर्षि (विप्र + ऋषि) m. = ब्रह्मर्षि MBh. 5, 6069. 13, 331. R. 1, 9, 57. 4, 63, 8. Bhâg. P. 3, 14, 32. 4, 4, 6. 5, 1, 3. 8, 20, 9. Brahma-P. in LA. (III) 57, 18.

विप्रलम्बक Prab. 54, 9 fehlerhaft für विप्रलम्भक.

विप्रलम्भ (von लभ् mit विप्र) m. P. 7, 1, 67, Schol. 1) *Täuschung, Betrug* AK. 1, 1, 2, 36. H. 1519. Halâj. 4, 63. MBh. 3, 1187. 5, 7426. Kâm. Nitis. 5, 19. एभिर्भूतैः स्मर कति कृताः स्वात्त ते विप्रलम्भाः Spr. (II) 1409. Uttarar. 64, 10 (82, 12). Daçak. 69, 4. Kuvalaj. 151, *b*, 1 v. u. Kusum. 8, 16. उपाध्यायात् *das Getäuschtwerden* (in seinen Erwartungen) *durch den Lehrer* MBh. 14, 133. — 2) *Trennung eines liebenden Paars* (*getäuschte Erwartung*) AK. 3, 3, 28. Trik. 1, 1, 127. H. 1511. Ragh. 19, 18. Uttarar. 64, 5 (82, 7). Spr. 1460. Sâh. D. 211. fg. 224. 231. 539. भानुमत्या सह 165, 16. Verz. d. Oxf. H. 208, *a*, 30. Pratâpar. 19, *a*, 4. 58, *a*, 7.

विप्रलम्भक (wie eben) adj. *täuschend, betrügend, Betrüger:* पुमंस् Verz. d. Oxf. H. 264, *a*, 26. 27 (अ°). *b*, 22. Kathâs. 60, 84. Prab. 54, 9 (fälschlich °लम्बक gedr.). Kull. zu M. 2, 11.

विप्रलम्भन (wie eben) n. *Täuschung, Betrügerei:* अमराणां च तेषु तेषु कार्येष्वसुरविप्रलम्भनानि (= अकृत्यचरणानि Comm.) Daçak. 64, 16. fg.

विप्रलम्भिन् (wie eben) adj. *täuschend, betrügend* Pańkat. 203, 3.

विप्रलय (von 1. ली mit विप्र) m. *das Aufgehen in* (loc.): ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि विप्रलयः कृतः Uttarar. 105, 15 (143, 8). *das Verlöschen:* शिखां विप्रलयं गताम् R. 2, 114, 5 (125, 5 Gorr.).

1. विप्रलाप (von 1. लप् mit विप्र) m. 1) *Auseinandersetzung:* वचो वृत्तान्तरं विप्रलापानुबद्धम् (so die ed. Bomb.) MBh. 6, 3776. — 2) *sinnloses Schwatzen* H. an. 4, 210. Med. p. 29. Suçr. 2, 488, 8. — 3) *Widerspruch, Widerrede* AK. 1, 1, 5, 17. H. 276. H. an. Med. P. 1, 3, 50. — 4) *Täuschung, Betrug* Halâj. 4, 63.

2. विप्रलाप (2. वि + प्र°) adj. *frei von allem Geschwätz:* सत्य MBh. 3, 260.

विप्रलुम्पक (von 1. लुप् mit विप्र) adj. *Raub verübend, auf eine unrechtmässige Weise sich Geld schaffend:* ein Fürst M. 8, 309.

विप्रलोभिन् (von लुभ् mit विप्र) 1) adj. *lockend, verführend.* — 2) m. *eine best. Pflanze,* = किंकिरात Râǵan. im ÇKDr.

विप्रवाद (von वद् mit विप्र) m. *eine abweichende Meinung:* विप्रवादाः सुबह्वः श्रूयन्ते पुत्रकारिताः MBh. 13, 2614.

विप्रवास (von 5. वस् mit विप्र) m. *ein Aufenthalt auswärts:* ज्ञातिभिः MBh. 3, 15870. °मलाः स्त्रियः 5, 1525. R. Gorr. 2, 50, 20. 5, 33, 33. Bhâg. P. 6, 8, 13. गृहेभ्यः *ausserhalb des Hauses* Spr. (II) 252. पुर° R. 2, 56, 33. अ° Çâńkh. Gṛhj. 1, 17. Spr. (II) 1013.

विप्रवासन (vom caus. von 5. वस् mit विप्र) n. *das Verbannen* R. 2, 33, 11. R. Gorr. 2, 59, 21. 7, 50, 7.

विप्रवाहस् (विप्र + वा°) adj. *die Darbringung* oder *Huldigung der Sänger u. s. w. empfangend:* die Açvin ṚV. 5, 74, 7.

विप्रवीति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 19, *a*, 39. विप्रचित्ति und विप्रवित्ति v. l.

विप्रवीर (विप्र + वीर) adj. *begeisterte Männer habend; Männer begeisternd:* Soma ṚV. 9, 44, 5. 10, 47, 4. 5. गिरः 104, 1. ज्ञातवेदस् 188, 2.

विप्रव्राजिन् (von व्रज् mit विप्र) adj. *sich gern von Haus entfernend* Âçv. Gṛhj. 1, 5, 5. nach dem Comm. द्विप्रव्राजिनी *Zweien nachlaufend.*

विप्रशस्तक m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 34.

विप्रश्न (von प्रछ् mit वि) m. gaṇa क्षेद्रादि zu P. 5, 1, 64. *das Befragen des Schicksals* P. 1, 4, 39. — Vgl. वैप्रश्निक.

विप्रश्निक (von विप्रश्न) m. *Schicksalsbefrager, Astrolog* H. 483. Kâṭh. in Ind. St. 3, 470, 3 (wohl तं वि° zu lesen). विप्रश्निका f. AK. 2, 6, 1, 20. — Vgl. वैप्रश्निक.

विप्रसात् (von विप्र) adv. mit कृ *den Brahmanen Etwas* (acc.) *schenken* Ragh. ed. Calc. 11, 85.

विप्रसारण (vom caus. von सृ mit विप्र) n. *das Strecken* (der Glieder) Suçr. 1, 115, 16.

विप्रहाण (von हा mit विप्र) n. *das Weichen, Verschwinden:* दुःखस्य MBh. 12, 7949. — Vgl. प्रहाण.

विप्रानुमदित adj. *von Sängern bejubelt* TBr. 3, 5, 2, 1. Çat. Br. 1, 4, 2, 7; vgl. auch u. 1. मद् mit अनु.

विप्रापण (vom caus. von आप् mit विप्र) n. Nir. 7, 13. 9, 26.

विप्राप्त adj. zur Erklärung von विप्पित Nir. 6, 20. nach Durga so v. a. विस्तीर्ण.

विप्राषिक m. *ein best. Gemüse:* विप्राषिका मसूराश्च श्राद्धकर्मणि गर्हिताः Mârk. P. 32, 11.

विप्रिय (2. वि + प्रिय) adj. 1) *entzweit:* मिथः TS. 2, 2. 11, 5. 6, 2, 2, 1. Vgl. विप्रेमन्. — 2) *Jmd* (gen.) *unlieb, unangenehm;* n. sg. und pl. (selten) *etwas Unliebes, — Unangenehmes* H. 744. Halâj. 4, 64. नहि कस्य प्रियः को वा विप्रियो वा जगत्त्रये Spr. 4372. वलीपलित° *durch, in Folge von — unangenehm* Bhâg. P. 9, 3, 14. तत्तेषां विप्रियं भवेत् MBh. 1, 6188. कर्मन् Bhâg. P. 1, 7, 14. 9, 8, 16. विप्रियं न मे कर्तव्यम् MBh. 1, 1876. अ-

कार्षो विप्रियं सुमहन्मम 5980. 4,495. 14,178. R. 2,22,8. 26,33. 98,14 (107,2 GORR.). 6,8,5. RAGH. 8,51. KUMÂRAS. 4,7. त्वमेव कृतवानस्या नवं विप्रियम् Spr. 1098. BHÂG. P. 6,5,42. मा कृथा रामविप्रियम् *was Râma unlieb sein könnte* R. 3,42,58. °कर् KATHÂS. 28,35. °कारिन् MBH. 1, 5979. प्रजाविप्रियकारिन् Spr 2694. विप्रियं ह्याचरन्मर्त्यो देवानां मृत्युमृच्छति MBH. 3,2166. विप्रियमन्यत्र (= अन्यस्यां) गूढमाचरति SÂH. D. 74. विप्रियं दा BHÂG. P. 1,14,11. वच् MBH. 1,1876. R. 2,62,9. R. GORR. 2, 50,17 (pl.). 5,23,26 (pl.). 6,5,5. BHÂG. P. 8,9,23. दृश् R. 2,30,17. प्राप् 3,55,17. देवानां विप्रिये नित्यमृषीणां च स वर्तते HARIV. 6822. अस्माकं विप्रिये रतान् MBH. 7,3421. यदि स्थास्यति विप्रिये R. 2,21,10. Spr. 1776 (Conj.). विप्रियेषु स्थितास्माकम् MBH. 3,1893. — Vgl. अ°.

विप्रियंकर् adj. *Jmd etwas Unliebes erweisend* MBH. 12,12955. — Vgl. प्रियंकर.

विप्रियत्व (von विप्रिय) n. *das unlieb —, unangenehm Sein* Comm. zu BHÂG. P. 1,7,16.

विप्रुष् (1. प्रुष् mit वि) f. (nom. विप्रुट्) SIDDH. K. 247,b,2 v. u. *Tropfen* (TRIK. 3,3,209. H. 1089. HALÂJ. 3,55), *Krümchen, Fleckchen, mica:* अोदनानाम् AV. 9,5,19. VS. 25,9. TBR. 3,2,3,5. 7,6,21. ÇAT. BR. 4,2,5,1. 9,1,1,6. 15. 11,5,5,11. 14,2,1,14. 2,28. KÂTJ. ÇR. 3,7,19. विप्रुड्ढोम ÂÇV. ÇR. 5,2,6. KÂTJ. ÇR. 24,3,43. विप्रुषश्चैव यावत्यो निपतन्ति नभस्तलात् । वर्षासु वर्षतः MBH. 13,5339. fg. न पिबति पयसां विप्रुषः पत्त्रसंस्थाः Spr. 2013. जल° ÇIÇ. 8,40. स्वेद° 2,18. अमृतरससमुद्र° BHÂG. P. 6,9,38. मद्यविण्मूत्र° PRÂJAÇKITTEND. 19,a,3. पावक° *Feuerfunke* Spr. 4501. पाठे तु मुखनिष्क्रान्ता विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः H. 839. मुख्याः M. 5,141. auch ohne diesen Beisatz von *den Tropfen, die beim Sprechen dem Munde entfallen*, 133. JÂGN. 1,193. MÂRK. P. 35,21. — Vgl. विप्लुष्.

विप्रुष wohl n. dass.: वस्त्राम्बुविप्रुषैः MÂRK. P. 50,95. जलविप्रुषैः 51, 88. °वाक्क्रिया (so auch die ed. Bomb., eine Berl. Hdschr. soll विप्रुट्वा° lesen) चस्त्वा PAÑKAT. 79,16. — Vgl. वाग्विप्रुष.

विप्रुष्मत् (von विप्रुष्) adj. *mit Tropfen versehen:* विषोदोर्मिमारुत BHÂG. P. 10,16,5. कृमिनिर्कर° (das suff. gehört zum ganzen comp.) 4,25,18.

विप्रेक्षण (von ईक्ष् mit विप्र) n. *das sich Umschauen:* सिंह° adj. R. 4,2,7.

विप्रेक्षितर् (wie eben) nom. ag. *der sich umschaut:* सिंह Spr. 2691.

विप्रेत s. u. 3. इ mit विप्र.

विप्रेमन् (2. वि + प्रे°) m. *Entfremdung, Entzweiung* AIT. BR. 1, 24. — Vgl. विप्रिय 1).

विप्रोषित s. u. 5. वस् mit विप्र.

1. विप्लव (von प्लु mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *das zu Grunde Gehen, Verlorensein, zu Schanden Werden:* त्रैलोक्यस्य Spr. 5120. व्रत° BHÂG. P. 2,7,32. भर्तृ° 4,13,49. शिलीमुखैः । विप्लवो ऽभूद्दुःखितानाम् 26,9. प्राण° 1,18,2. द्वापरे विप्लवं यान्ति यज्ञाः कलियुगे तथा । अपथ्यधर्मिणो मर्त्या अकस्मादानि यजूंषि च ॥ MBH. 12,8543. मन्त्रो न गच्छति विप्लवम् Spr. 1875. मन्त्र° 1349 (II). यज्ञ° RÂGA-TAR. 1, 184. विश्वामित्रमखस्य विप्लवकृतो नक्तंचरान् Verz. d. Oxf. H. 121,b, No. 213, Çl. 3. धर्म° MBH. 1,3872. KATHÂS. 89,72. बुद्धि° MBH. 2,868. सत्त्व° RAGH. 8,41. भाग्य° 46. धैर्यविप्लवकारिन् Spr. 1053. शील° KATHÂS. 13,87. 29, 113. RÂGA-TAR. 3,500. प्रतिज्ञात° 88. संकल्प° 89. जनताघ° BHÂG. P. 1,5,11. आत्मलोकावरणस्य 8,3,25. SARVADARÇANAS. 17,6. *Verlust bei einem Geschäfte* JÂGN. 2,260. अ° adj. JOGAS. 2,26. — b) *Noth, Elend, Drangsal, Calamität:* सच्छिद्रे MBH. 13,4827. शास्त्रागमे VET. in LA. (III) 30,9. द्विजातीनां च वर्णानां विप्लवे कालकारिते M. 8,348. MBH. 3, 13474. दिव्यमानुष° DAÇAR. 4,60. देश° JÂGN. 3,29. RÂGA-TAR. 5,471. राष्ट्रदेशादि° SÂH. D. 278. KATHÂS. 91,4. तोय°, जल°, सलिल° *Wassernoth, Ueberschwemmung* RÂGA-TAR. 1,159. 5,80. 95. तुहिन° 1,183. दुर्भिक्ष° 2,20. KATHÂS. 56,12. अग्नि° RÂGA-TAR. 1,252. भिक्षु° 184. अरण्य° MÂLAV. 9,3. पद्माग्नि° KATHÂS. 101,285. क्लेश° 156. विकल्प° Spr. 4591. नौरिवासन्नविप्लवा (so die neuere Ausg.) so v. a. *Schiffbruch* HARIV. 2885. — c) *Unruhen im Lande, Aufstand* AK. 3,3,14. H. 803. HALÂJ. 1,127. RÂGA-TAR. 5,19. 8,531. 796. 883. 965. विप्लवोन्मुख 559. 2261. उर्वी शमितविप्लवा 1041. °स्पृश् 915. गौडराक्षस° 4,334. प्रजाविप्लवशान्ति 715. 5,420. 8,993. राज्य° 6,334. 336. राष्ट्र° Spr. (II) 1221, v. l. — d) योनि° so v. a. *ein geschlechtliches Vergehen von Seiten einer Frau* HARIV. 7762. विप्लव allein so v. a. *Schändung —, Entehrung eines Frauenzimmers:* कृतः कृतो ऽमुना नूनं ममान्तःपुरविप्लवः KATHÂS. 5,36. अनङ्गीकृत° (so ist zu lesen) 7,58. 20,120. अज्ञारक्षितविप्लवा 64,41. अविप्लवा (= साध्वी NILAK.) MBH. 1,2070 nach der Lesart der ed. Bomb. (अविज्ञावा ed. Calc.). — 2) adj. (f. आ) *verworren:* गिरः BHÂG. P. 7,8,12. — Vgl. चित्त°.

2. विप्लव (2. वि + प्लव) adj. *kein Schiff habend:* वणिजो नावि भिन्नायामगाधे विप्लवा (ऽविप्लवा ed. Bomb.) इव । अपारे पारमिच्छन्तः MBH. 9, 130 = 8,4838, wo beide Ausgg. विप्लवे lesen; vgl. अपारे भव नः पारमप्लवे भव नः प्लवः 5,4559.

विप्लवता MBH. 12,11148 fehlerhaft für विज्ञावता, wie die ed. Bomb. hat.

विप्लविन् (von प्लु mit वि) adj. *dahingehend, verschwindend:* हरिणीव च राजश्रीरेवं विप्लविनी सदा Spr. 5393.

विप्लाव (wie eben) m. *Galopp* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

विप्लावक (vom caus. von प्लु mit वि) adj. *zu Schanden machend, schändend:* वेद° (durch Mittheilung an unberechtigte Personen) PRAB. 20, 14. धर्म° ÇATR. 14,101.

विप्लाविन् adj. dass.: वेद° PRÂJAÇKITTEND. 47,b,3.

विप्लुति f. = विप्लव 1) a): विप्लुतिं गतः SUÇR. 2,342,14.

विप्लुष् f. = विप्रुष् AK. 1,2,3,6 (nach ÇKDR. von RÂMÂÇRAJA erwähnte v. l., nicht Lesart des Textes, der विप्रुष् haben soll). पाठे विप्लुषो ब्रह्मबिन्दवः 2,7,38.

विफ (2. वि + फ) adj. *ohne* फ (सफ *mit* फ) PAÑKAV. BR. 8,5,7.

विफल (2. वि + फल) adj. (f. आ) 1) *keine Früchte tragend:* Bäume Spr. 1395. 5046. VARÂH. BRH. 3, 7. — 2) *keinen Erfolg habend, seinen Zweck verfehlend, nutzlos, vergeblich:* विफलारम्भ JÂGN. 1,273. शक्रशासन HARIV. 4126. विफलाश (निष्फलाश die neuere Ausg.) 9351. KÂM. NÎTIS. 18,1. पारणा RAGH. ed. Calc. 2,55. यत्न KUMÂRAS. 7,66. Spr. 1223. 1395. 2989. परितोषकालाः 3012. MEGH. 69. VARÂH. BRH. 9,3. GÎT. 5,17. KATHÂS. 13,122. 21,30. भुज 42,79. 54,175. 58,48. RÂGA-TAR. 4,304. 716. fg. BHÂG. P. 5,14,1. 8,5,47. fg. MÂRK. P. 75,56. 95,23. Verz. d. Oxf. H. 239, a,13. PRAB. 73,6. KUSUM. 8,15. SARVADARÇANAS. 24,20. fg. *keinen Erfolg habend*, von einer Person so v. a. *nicht zum Ziele gelangend, dessen Hoffnungen vereitelt werden* Spr. 1689, v. l. für निराश. — 3) *keine Ho-*

den habend R. 1,48,27 (49,27 Gorr.).

विफलता (von विफल) f. *Nutzlosigkeit:* दृष्टिर्विफलतां गता Spr. 2670, v. l. विघ्नां विफलतां नेष्यामि Pankat. 244,8.

विफलत्व (wie eben) n. 1) *Fruchtlosigkeit* (eig.): भूर्जद्रुमस्य Spr. 1259. — 2) *Nutzlosigkeit:* विफलत्वमेति बहुसाधनता Çiç. 9,6.

विफलीकार् (विफल + 1. कार्) 1) *unnütz machen, vereiteln:* शोभां व्योम्नः प्रदोषे °चकार Kumâras. 1,42. सा लोकपालान् °चकार Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 22. किं °कुरुषे कुचकलशम् Gît. 9,3. तन्नया °कृतम् MBh. 1,4577. Hariv. 4172. ग्राधानकाल Mârk. P. 74,25. *Jmd nicht zum Ziele gelangen lassen, Jmdes Hoffnungen vereiteln:* राजानं °कृतम् R. 1,58,13. — 2) *entmannen* R. 1,48,29 (49,28 Gorr.).

विफलीभू (विफल + 1. भू) *nutzlos werden:* यस्य कोपप्रसादा °भवन्ति Spr. 1306. Pankat. 174,12. fg. °भूत R. Gorr. 2,17,29. 38.

विफल्फ s. u. विगुल्फ.

विफाण्ट adj. = फाण्ट. सर्वौषधिविफाण्टाभिरद्भिः Gobh. 3,4,7; vgl. u. फाण्ट adj. am Ende.

विबद्ध (von बन्ध् mit वि) partic. gaṇa ऋश्यादि zu P. 4,2,80. davon °कं ebend.

विबन्ध (wie eben) m. = ग्राकलन Trik. 3,3,230. 1) *das Umspannen:* पादोदरविबन्धैः MBh. 7,5923. = पादाभ्यामुदरक्रोडीकरणैः Nilak. — 2) *kreisförmiger Verband* Wise 172. Suçr. 1,65,18. 66,2. — 3) *Hemmung, Stockung, Verstopfung* (*des Leibes* AK. 2,6,2,6. H. 471): वृष्टि° Trik. 3, 3,455. Suçr. 1,165,3. 189,8. 210,9. 217,17. वात° 2,202,13. 214,9. मूत्र° 228,10. 408,20. 437,17. °हृत् Vâgbh. 6,164.

विबन्धक (wie eben) s. वर्त्म°.

विबन्धन (wie eben) adj. *stocken machend, verstopfend:* वर्चो° Suçr. 1,209,10.

विबन्धु (2. वि + ब°) adj. *verwandtenlos* AV. 18,2,57. Bhâg. P. 3,1,6.

1. विबर्ह (von 1. बर्ह् mit वि) m. *das Zerstreuen:* ग्रविबर्हाय Çânkh. Br. 17,2. — Vgl. वीबर्ह.

2. विबर्ह (2. वि mit बर्ह) adj. *keine Schwanzfedern habend:* ग्रण्डजा MBh. 7,4749.

विबल (2. वि + बल) adj. *schwach:* Planeten Varâh. Bṛh. 3,6. 4,17.

विबलाक (2. वि + बलाका) adj. *ohne Kraniche:* जलधराः Hariv. 3822. बलाका ग्राकस्मिकपाताशनिः तद्रहिता विबलाकाः Nilak.; vgl. u. बलाक 1).

विबाण (2. वि + बाण) adj. *ohne Pfeil:* चाप Hariv. 4516.

विबाणज्य (2. वि + बाण - ज्या) adj. *keinen Pfeil und keine Bogensehne habend:* चाप Hariv. 3578.

विबाणधि (2. वि + बा°) adj. *keinen Köcher habend* MBh. 8,3192.

विबाध (von 1. बाध् mit वि) 1) m. *das Zersprengen, Verjagen* u. s. w.: s. das folgende Wort. — 2) f. ग्रा = विहेठन Trik. 1,1,132. — Vgl. वैबाध.

विबाधवत् (von विबाध) adj. *zersprengend, verjagend;* Bein. des Agni TS. 2,4,1,3. Kâth. 10,7.

विबाली entweder adj. f. dem Sinne nach *überschwemmend* oder *reissend*, oder N. pr. eines Flusses Ṛv. 4,30,12. = विगतबाल्यावस्था Sâj., schon deswegen unwahrscheinlich, weil बाल nicht vedisch ist.

विबाहु (2. वि + बा°) adj. *der Arme beraubt* MBh. 8,4344.

विबिल (2. वि + बिल) adj. *ohne Loch, — Oeffnung:* कोश Kâth. 13,10.

विबुध (2. वि + बुध) 1) adj. subst. *sehr klug, — verständig; ein Kluger, Weiser* H. an. 3,348. Med. dh. 36. जनाः Pankat. II, 47. °जन Spr. 2742. ग्रापन्नाशाय विबुधैः कर्तव्याः सुहृदो ऽमलाः Spr. 965 (II). 3089. Kathâs. 63,105. Bhâg. P. 3,8,4. Vet. in LA. (III) 20,16, v. l. ग्रविबुधजन Spr. 2297 (II). — 2) m. *ein Gott* AK. 1,1,1,2. H. 89. H. an. Med. Halâj. 1,4. MBh. 1,1126. 1161. 7700. 3,2190. 13,1840. R. Gorr. 1,46, 35. Varâh. Bṛh. S. 2, Anf. 43,41. 46,17. 48,32. Gît. 10,15. Bhâg. P. 4, 24,12. विबुधर्षभ 4,1,23. विबुधाधिपत्य 2,7,18. विबुधानुचराः M. 12,47. विबुधेश्वराः MBh. 3,2186. °स्त्री Çâk. 171. °शत्रु Vikr. 3. °रिपु Prab. 81,9. °सख Bhaṭṭ. 1,1. °मति adj. Kâm. Nîtis. 14,67. ग्र° Kâvjâd. 2,322. — 3) m. *der Mond* ÇKDr. und Wilson angeblich nach Halâj. — 4) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Devamîḍha, R. 1,71,10 (73,9 Gorr.). des Kṛta VP. 390. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 340,b,6.

2. विबुध (wie eben) adj. *keine Gelehrten habend* (= विगतपण्डित Comm.) Kâvjâd. 2,322.

विबुधगुरु m. *der Lehrer der Götter* d. i. Bṛhaspati, *der Planet Jupiter* Varâh. Bṛh. S. 104,27.

विबुधतटिनी f. *der Götterfluss* d. i. *die* Gangâ Spr. 5000.

विबुधत्व (von 1. विबुध) n. *Klugheit:* यत्नात्वा बहवो लोका विबुधत्वमवाप्नुयुः Verz. d. Oxf. H. 153,a, No. 328, Çl. 2.

विबुधप्रिया f. *die Geliebte der Klugen* oder *der Götter*, N. eines Metrums: *4 Mal* —◡—◡◡—◡—,◡◡—◡—◡◡—◡— Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XIII, 14). Ind. St. 8,422.

विबुधराज m. *der Fürst der Götter*, Beiw. Indra's R. 4,52,19.

विबुधाधिप m. dass. MBh. 3,11948. 12018.

विबुधाधिपति m. dass. Varâh. Bṛh. S. 53,47.

विबुधावास m. *Wohnung* (ग्रावास) *der Götter, Tempel* Râga-Tar. 5,26.

विबुधेतर (1. विबुध + इ°) m. *ein Nichtgott, ein* Asura Bhâg. P. 8,22,6.

विबुभूषा (vom desid. von 1. भू mit वि) f. *der Wunsch sich zu entfalten* Bhâg. P. 3,3,9.

विबुभूषु (wie eben) adj. *sich zu entfalten wünschend* Bhâg. P. 2,5,21.

1. विबोध (von 1. बुध् mit वि) 1) adj. *wachsam, aufmerksam* Ṛv. 10, 133,4. — 2) m. a) *das Erwachen* Maitrjup. 2,5. Daçak. 4,21. Sâh. D. 178. Pratâpar. 53,b,7. — b) *das Erkennen:* तत्त्वात्म° Bhâg. P. 3,4,20. — c) in der Dramatik *das (aufmerksame) Verfolgen des Endzieles:* कार्यस्यान्वेषणं यत्तु विबोध इति स्मृतः Bhar. Nâṭjaç. 19,96. 66. विबोधः कार्यमार्गणम् Daçar. 1,46. 45. Sâh. D. 393. 556. — d) N. pr. eines Vogels, eines Kindes des Droṇa, Mârk. P. 1,21. — Vgl. राग°.

2. विबोध (2. वि + बोध) m. *Unaufmerksamkeit* Çabdârthak. bei Wilson.

विबोधन (von 1. बुध् simpl. und caus. mit वि) 1) nom. ag. *Erwecker:* ग्रर्दाद्रायो विबोधनम् etwa so v. a. *der zum Erwerb den Anfang macht* Ṛv. 8,3,22. — 2) n. a) *das Erwachen:* सुखस्वप्न° adj. MBh. 1,3975. निबोधन ed. Bomb. — b) *das Erwecken:* हरेः Mârk. P. 81,52. चित्तन्द्रिकानन्द° Verz. d. Oxf. H. 141,a,25.

विभक्त s. u. भज् mit वि. सु° *richtig —, glatt getrennt:* Wunde oder Schnitt Suçr. 1,15,10. 12.

विभक्तता (von विभक्त) f. सु° *schöne Vertheilung, Ebenmaass:* der

Glieder Suçr. 2,139,4.

विभक्तर् und विभक्तर् (von भज् mit वि) nom. ag. *Vertheiler:* शीर्ष्णे शीर्ष्णे वि जभाजा विभक्ता R̥V. 7,18,24. मघानाम् 26,4. 1,22,7. 27,6. रायः 4,17,11. 10,147,5. विभक्ता भागम् 3,49,4. Çat. Br. 10,2,6,5. वेद° *Sonderer* so v. a. *Ordner:* Vjâsa Pañkar. 1,1,30.

विभक्ति (wie eben) f. 1) *Theilung, Sonderung; Unterscheidung, Modification* Ait. Br. 1,1. पशोः 7,1. TBr. 1,1,5,6. 8,5. इडायै TS. 5,7,1,1. Ait. Br. 6,5. Pañkav. Br. 10,9,1. 10,1. 11,1. °स्तुति Nir. 7,8, v. l. कालविभक्तयः M. 1,24. वर्णविभक्तयः MBh. 12,6767. — 2) *Abwandlung des Nomens, Casus;* bei Pâṇini *Casus- und Personalendung.* Im Ritual heissen speciell so *die Casus des Wortes* अग्नि *in den* Jâǵjâ-*Formeln;* vgl. Comm. zu TS. I, 778. TBr. I, 125. Âçv. Çr. 2,8,5. 6. — TS. 1,5,2, 2. 3. TBr. 1,3,2,1. Çat. Br. 2,2,3,26. Pañkav. Br. 10,7,1. Çâṅkh. Br. 1,4. Nir. 2,1. नाना° 6,24. नाम° 7,1. द्वितीया Âçv. Çr. 1,3,6. षष्ठी 6, 3. °प्रत्यय VS. Prât. 5,13. °पदशम् 8,41. fg. AV. Prât. 2,51. 3,78. Çâkat. beim Schol. zu 4,30. P. 1,4,104. 3,4. 5,3,1. 6,1,168. 3,132. 7,1,73. 2, 84. 8,4,11. Verz. d. Oxf. H. 165,*a*,21. *b*,3 v. u. 350,*b*,16. Sarvadarçanas. 136,1.10. ते विभक्त्यन्ताः पदम् Njâjas. 2,2,60. विभक्तिर्द्वयी नामिक्याख्यातिकी च Comm. Am Ende eines adj. comp.: असर्व° P. 1,1,38. °क 2, 44, Comm. Ind. St. 8,462. fg. — 3) *eine best. grosse Zahl* Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638.

विभक्तितत्त्व n. Titel einer Schrift Hall 57.

विभग्न s. u. 1. भञ्ज् mit वि und vgl. वैभग्निक.

विभङ्ग (von 1. भञ्ज् mit वि) m. 1) *Biegung:* भ्रू° so v. a. *das Zusammenziehen der Brauen* Ragh. 19,17. — 2) *Einschnitt, Furche:* वली° MBh. 4,394. Vâsavad. 3,2. विविधविकार° *Furchen auf dem Gesicht* Git. 11,24. शिलाविभङ्गैर्मृगराजशावस्तुङ्गं नगोत्सङ्गमिवारुरोह Ragh. 6, 3. — 3) *Unterbrechung, Störung, Vereitelung:* तृष्णाप्रोतो° Spr. 1891. वाग्विभङ्ग (°विभाग gedr.) so v. a. *Stummheit* Mârk. P. 72,23. आशा° adj. *dessen Hoffnungen vereitelt sind* Spr. 3054, v. l. — 4) Bez. bestimmter buddhistischer Schriften Târan. 318. Verz. d. Kop. H. 24,*a*. 45. fgg. (im Pâli). विनय° Vjutp. 43. विभाग (!) *Commentar* Wassiljew 89.

विभज *eine best. grosse Zahl* Vjutp. 181. Mél. asiat. 4,637.

विभजनीय (von भज् mit वि) adj. 1) *zu vertheilen:* अवशिष्टं धनं समं कृत्वा विभजनीयम् Kull. zu M. 9,112. — 2) *was gesondert —, unterschieden wird* oder *werden soll* P. 5,3,57, Schol.

1. विभज्य (wie eben) adj. 1) *zu theilen* Hariv. 12431. — 2) *was gesondert —, unterschieden wird* oder *werden soll* P. 5,3,57. — Vgl. विभाज्य.

2. विभज्य (wie eben) absol. *mit —, unter Vornahme einer Theilung:* °पाठ Halâj. in Ind. St. 8,353. °वाद Bez. *einer best. buddhistischen Lehre* Târan. 198. °वादिन् *ein Anhänger dieser Lehre* 175. Vjutp. 210. Burn. Intr. 446. Lot. de la b. l. 357. Wassiljew 78. 230. 233. °व्याकरण (neben एकांश°, परिपृच्छा° und स्थापनीय°) Vjutp. 53. Die Schreibart विभाज्य ist fehlerhaft.

विभञ्जनु (von 1. भञ्ज् mit वि) adj. *zerbrechend* (trans.) R̥V. 4,17,13.

विभाण्डक m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Kâçjapa Ind. St. 4,374. — Vgl. विभाण्डक.

1. विभय (2. वि + भय) n. *Gefahrlosigkeit* Bhâg. P. 7,9,14.

2. विभय (wie eben) adj. *keiner Gefahr ausgesetzt* Bhâg. P. 5,20,19.

विभरद् m. N. pr. eines Fürsten Târan. 205. विभरत Wassiljew 54.

विभव (von 1. भू mit वि) 1) m. Trik. 3,5,5. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) das Allenthalbensein, Allgegenwart* Kaṇ. 7,1,22. — *b) Entfaltung:* जगदुदयविभवलयलीलं ब्रह्म Sarvadarçanas. 49,20. bei den Vaishṇava *Entfaltung des göttlichen Wesens, dessen Erscheinung in secundären Formen* 54,18. रामाद्यवतारो विभवः 20. 55,15. 57,10. — *c) Macht, majestas, hohe —, bevorzugte Stellung, Herrschaft;* = ऐश्वर्य Med. v. 51. = भूति Halâj. 5,23. धनधान्यर्द्धिविभवैः शक्रवैश्रवणोपमः R. Gorr. 1,6,3. सर्वर्द्धिविभवैः पूर्णास्तथा वर्धस्व भूपते। यथा रविर्यथा सोमो यथेन्द्रो वरुणो यथा ॥ 2,11,19. वित्तर्द्धिविभवैः Mârk. P. 84,32. अविदितविभवो भवानीपतिः Kir. 5,21. Prab. 54,10. Ragh. 8,68. Çâk. 94. Varâh. Bṛh. S. 69,17. विभवास्त्रैलोक्यराज्यादयः Spr. 1995. प्रज्ञा कुलं च विभवं (*Macht* oder *Vermögen*) च यशश्च कृत्ति 2974. Bhâg. P. 3,23,8. 6,16, 35. विभवाय नो भव 7,8,55. 9,23. fg. 9,4,15. भृत्यप्रेष्यजनेभ्यश्च विभवस्यानुरूपतः। शिल्पिभ्यश्चोपकारिभ्यो ददौ रामः so v. a. *je nach ihren Stellungen* R. Gorr. 2,32,12. ततः प्रविशत्यौशीनरी चेटी च विभवतश्च परीवारः *und das Gefolge je nach seinem Range* Vikr. 30,18. Çâk. Ch. 92,8. Mâlav. 19,1. 45,21. 64,5. Prab. 27,1. तेषामभिन्नकाले ऽर्थे विभवः *Macht —, Einfluss auf* Çâṅkh. Çr. 1,16,5. 5,19,2. वसन्त° *die Macht des Frühlings* Mâlav. 80. वाग्विभव *die Macht der Rede* Ragh. 1,9. Mâlatim. 16,1. परिपक्वबुद्धि° Sâh. D. 15,16. आत्ममाया° Bhâg. P. 2,6,35. स्मृति° Çâṅkh. Gṛhj. 6,6. कर्म° Kathâs. 27,209. दृष्टि° Spr. 3318. मनसि रभसविभवे *dessen Macht in — besteht* Git. 5,6. *Macht, Stärke* eines Heeres R. 5,73,4. — *d)* sg. und pl. *Vermögen, Besitz, Geld* AK. 2,9, 91. Trik. 3,3,421. H. 191. an. 3,713. Med. Halâj. 1,80. विभवे सति M. 4,34. 11,38. Mârk. P. 29,39. MBh. 5,1728. 14,2791. तस्मै दास्यामि विभवान्मत्कार्क्षानपि काङ्क्षितान् R. Gorr. 2,32,19. यो मे ऽस्ति विभवः कश्चित्तं विश्राणय सर्वशः 29. उषित्वा रजनीं तत्र विभवैस्तेन पूजितः 98,9. Çâk. 105. Spr. (II) 251. 292. 585. 862. 1241. 1411. 2211. (I) 1078. 1903. 1933. 2784. 2958. 3153. स्थिर 3288. 4323. 4856. स्वल्पाः 4867. 5017. मान्या अबलाः (*die Weiber*) मानविभवैः Varâh. Bṛh. S. 74,4. तपयति विभवान् 104,5.7. परविभवपरिच्छदोपभोक्तर् Bṛh. 13,8. 18(16),4. Kathâs. 10, 180. 16,66. 18,287.344.405. 21,133. 22,176. 25,209. 28,115. 35,162. 121, 266. Râǵa-Tar. 1,175. 2,55. 4,683. कुसृत्या विभवान्वेषी Trik. 3,1,9. H. 475. Bhâg. P. 1,11,13. °क्षय Spr. 970. Pañkat. 99,19. 234,7. °हीन Spr. 2287. 2728. मत्त° adj. 2830. मन्द° adj. Varâh. Bṛh. S. 15,24. गत° adj. Spr. 1292. गलित° adj. 2087. समानविभवा पुरी Kathâs. 23,80. न चास्ति विभवः कश्चिन्नाशये येन ते तुधम् *ich habe Nichts, womit* Pañkat. III, 167. विभवतस् *nach den Vermögensumständen* Mârk. P. 34,26. यथा° (vgl. यथाविभवम्) dass. 71. — *e) Erlösung* Trik. H. an. Med. स भवान्सर्वलोकस्य भवाय विभवाय (विगतो भवो यस्मिन् तस्मै कैवल्यायेत्यर्थः Comm.) च। अवतीर्णः Bhâg. P. 10,10,35. — *f)* N. *des 2ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,29. Verz. d. Oxf. H. 331, *b*,7 v. u. — *g)* in der Tonkunst *eine Art Tact;* s. u. दृढ 2) *a*). — *h) Vernichtung, Untergang* Vjutp. 150. लोक° 158. — 2) adj. *reich:* मेरोश्च विभवेष्वन्तरेषु च (= दिव्यप्रदेषु Nilak.) MBh. 13,802. — Vgl. विभूति.

विभवमति (°मती?) f. N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 8,16 (°मत्याम्).

विभववत् (von विभव) adj. *vermögend*, *wohlhabend* Mṛkkh. 33, 4. Halâj. 2, 58.

विभस्मन् (2. वि + भ°) adj. *frei von Asche;* विभस्मीकरण *das Befreien von der Asche:* पुरोडाश° Schol. zu Kâtj. Çr. 231, 6; vgl. भस्मीकर् u. s. w.

विभा (1. भा mit वि) 1) adj. *scheinend:* यदुंष ओच्छः प्रथमा विभानाम् Ṛv. 10, 55, 4. भा विभा उषाः स्वर्ज्योतिः Çâṅkh. Çr. 7, 9, 6. — 2) f. *a) Licht, Lichtstrahl* H. 100. Halâj. 1, 38. — *b) Glanz, Schönheit* Sâh. D. 277, 10. Nalod. 1, 48.

विभाकर (वि° + 1. कर) P. 3, 2, 21. m. 1) *die Sonne* (*Licht machend*) AK. 1, 1, 2, 30. H. 97. an. 4, 279. Med. r. 298. Sâh. D. 312, 2 (zugleich *König*). — 2) *Feuer* H. an. Med. — 3) in der Astron. *das Maass des von der Sonne beleuchteten Theiles des Mondes* Gaṇit. Çṛṅgonnatj. 7. fg. — 4) *König, Fürst* Sâh. D. 312, 2 (zugleich *die Sonne*).

विभाग (von भज् mit वि) m. 1) *Vertheilung, Austheilung, Zutheilung:* पित्वः Ṛv. 5, 77, 4. वसुनः 1, 109, 5. 7, 37, 3. 40, 1. 56, 21. पशोः Ait. Br. 7, 1. °धर्म *das Gesetz über die Erbtheilung* M. 1, 115. समस्तत्र विभागः स्यात् 9, 120. 134. 205. 210. कथं तत्र विभागः स्यात् 122. 148. 149. धर्म्यं विभागं कुर्वीत 152. 216. 220. 8, 7. Jâǵn. 2, 114. 120. MBh. 1, 1355. fg. तस्माद्विभागं भ्रातृणां न प्रशंसन्ति साधवः *die Theilung des Vermögens* 1359. R. 2, 101, 25 (110, 20 Gorr.). आयुर्दायविभागो नृणाम् Z. f. d. K. d. M. 4, 324. Râǵa-Tar. 5, 111. पिटक° *die Vertheilung der Geschwüre über den Körper* Varâh. Bṛh. S. 52, 10. कृतस्थानविभागाः adj. Bhâg. P. 8, 7, 5. — 2) *Eintheilung:* एकाशीतिविभागे *wenn man den* (Raum) *in 81* (Felder) *eintheilt* Varâh. Bṛh. S. 53, 42. भू° VP. 1, 4, 48 bei Muir, ST. 1, 184, N. 1. जम्बुद्वीपवर्ष° Bhâg. P. 5, 19, 31. कालस्य Gaṇit. Kâlamân. 18 nebst Comm. Mârk. P. 46, 26. *Eintheilung eines Gebäudes, die Vertheilung der verschiedenen Räume in demselben* Daçak. 90, 6. — 3) *Antheil; Theil, Bestandtheil:* °भाज् Jâǵn. 1, 122. Pańkat. 243, 20. कुम्भविभागमध्ये MBh. 4, 2093. मणिबन्धकनिष्ठिकयोर्मध्यविभागे ऽपि करभः स्यात् Halâj. 5, 7. कोटि° Pańkat. 76, 19. ताभ्यां रूपविभागाभ्याम् Bhâg. P. 3, 12, 52. प्रकृतिविभागस्य त्रिगुणस्य Schol. zu Kap. 1, 127. त्रय्या एव विभागो ऽयं सेयमान्वीक्षिकी मता Kâm. Nitis. 2, 3. शाखा वेदविभागे Trik. 3, 3, 52. रात्रिंदिवविभागेषु *zu den verschiedenen Theilen* (*Stunden*) *der Nacht und des Tages* Ragh. 17, 49. काल° *Zeittheil* P. 3, 3, 137. — *Bruch, Zähler eines Bruchs* Colebr. Alg. 13. — 4) *Sonderung, Trennung, Unterscheidung; Verschiedenheit;* Gegens. समास Nir. 5, 27. संयोग Kaṇ. 1, 1, 6. 7, 2, 10. fg. Tarkas. 16. Bhâshâp. 3. Sarvadarçanas. 106, 16. 109, 3. 4. Schol. zu Ǵaim. 1, 13. समूह Suçr. 1, 14, 1. — पादानाम् Ṛv. Prât. 17, 15. पद° Nir. 1, 17. 2, 7. 10. मर्यादामर्यादिनोः 4, 2. श्रृङ्गैः सक्ताम्बरव्यक्तविभागैः Kathâs. 6, 111. लक्ष्यमाणे विभागे च शनैः स्वपरसैन्ययोः 47, 54. 115, 56. क्षीरपयो° Spr. 2858. पशूनां विभागार्थं दात्राद्याकारं कर्णादिषु यच्चिह्नं क्रियते P. 6, 2, 112, Schol. पूर्वसूत्रेण सह विषयविभागो यथा स्यात् 80, Schol. प्रकृतिप्रत्यय° Sarvadarçanas. 135, 4. fgg. विभागो विभागतः 107, 8. 109, 10. 110, 3. 4. वृत्ति° Lâṭj. 8, 1, 15. मेध्यामेध्यविभागज्ञ Çâṅkh. Gṛhj. 2, 3. क्रिया° Suçr. 1, 81, 20. fg. 106, 16. Çârṅg. Saṁh. 1, 5, 9. कार्यकारणविभागाद्विभागाद्विश्वरूपस्य Sâṁkhjak. 15. कृत्याकृत्य° Spr. (II) 1880. कृताकृत° Kusum. 55, 14. निमित्तोपादानयोः Schol. zu Kap. 1, 41. गुणत्रय° Kumâras. 2, 4. गुणकर्मविभागयोः Bhag. 3, 28. दूतानां विभागगर्भलक्षणमाह Sâh. D. 37, 10. सांख्ययोगविभागज्ञ MBh. 2, 141. 14, 1393. धर्माणामविभागवित् 8, 3455. वर्णाश्रमविभागविद् Kâm. Nitis. 2, 35. Bhâg. P. 3, 7, 29. स्वराणामुदात्तादीनामविभागः Kâç. zu P. 1, 2, 33. देशकालयोः Kâm. Nitis. 11, 56. देशकाल° 4, 17. Bhâg. P. 1, 9, 9. Pańkat. 92, 4 = Hit. 119, 18. कालदेश° Suçr. 1, 194, 10. युद्धभूमिविभागज्ञ Kâm. Nitis. 18, 33. Vedântas. (Allah.) No. 59. Wassiljew 265. सिराधमनीस्रोतसामविभागः *keine Verschiedenheit unter einander* Suçr. 1, 363, 8. स विज्ञेयो विभागेन *nach seiner Verschiedenheit* MBh. 3, 11292. उदात्तानुदात्तस्वरितानामविभागेनोच्चारणम् *ohne Unterscheidung, auf gleiche Weise* P. 1, 2, 33, Schol. विभागेन *getrennt, abgesondert* Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 16. — 5) unter den Beinamen Çiva's R. 7, 23, 4, 49. — 6) fehlerhaft für विभङ्ग in वाग्विभाग Mârk. P. 72, 23. eben so in der Bed. *Commentar* Wassiljew 89 und in मध्यान्तविभागशास्त्र (s. d.). — Vgl. दिग्विभाग (Ṛt. 3, 22. Vikr. 8, 14. Varâh. Bṛh. S. 12, 15. Kathâs. 16, 121. हिमाचलोत्तरदिग्विभागे Pańkat. 241, 7), दुर्विभाग, देव°, नक्षत्रकूर्म°, योग°.

विभागक adj. in वेद° *Sonderer —, Ordner des* Veda Pańkar. 4, 8, 66. vielleicht fehlerhaft für विभाजक.

विभागत्व n. nom. abstr. zu विभाग 4) Sarvadarçanas. 111, 4.

विभागभिन्न n. = तक्र Ausg. 59.

विभागवत् (von विभाग) adj. *getrennt, gesondert, unterschieden;* davon nom. abstr. विभागवत्ता f.: शब्दाः प्रकृतिप्रत्ययविभागवत्तया बोध्यन्ते Sarvadarçanas. 135, 17.

विभागशस् (wie eben) adv. *Theil für Theil, in Theilen, in Theile, gesondert, getrennt* M. 12, 17. MBh. 4, 979. कृयस्य तस्य चाङ्गानि कल्पितानि वि° *wurden in Theile zerlegt* R. Gorr. 1, 13, 37. भूरीणि भूरिकर्माणि श्रोतव्यानि वि° Bhâg. P. 1, 1, 11. 9, 27. 5, 1, 41. 8, 14, 6. वर्णाश्रम° 1, 2, 13. क्रियाज्ञान° 3, 26, 31. गुणकर्म° Bhag. 4, 13.

विभागिक (wie eben) adj. am Ende eines comp. *auf die Unterscheidung von — bezüglich* Suçr. 1, 10, 4.

विभागिन् (wie eben) adj. *getrennt, gesondert:* ग्रं° Verz. d. Oxf. H. 238, *b*, 15.

विभाग्य (von भज् mit वि) adj. *zu zerlegen, abzutheilen* Lâṭj. 6, 10, 1. 7, 6, 3. fgg. 7, 13. 19. — Vgl. विभाज्य.

विभाज (von भज् mit वि) adj. *vertheilend, zutheilend* Âpast. 1, 23, 2.

विभाजक (vom caus. von भज् mit वि) adj. *vertheilend, zutheilend* Hariv. 7430. *trennend, sondernd* Nilak. 238. विभाजकीभूत Verz. d. Oxf. H. 245, *b*, No. 616.

विभाजन (wie eben) 1) adj. *zuziehend, veranlassend:* घोणोन्नतं मुखमपाङ्गविशालनेत्रं नैतद्विभाजनमकारणदूषणानाम् Mṛkkh. 144, 18. fg. — 2) n. *das Sondern, Unterscheiden* Vjutp. 190.

विभाजम् ved. infin. von भज् mit वि P. 3, 4, 12, Schol.; vgl. u. भज् mit वि 1) Z. 4.

विभाजयितर् nom. ag. vom caus. von भज् mit वि P. 4, 4, 49, Vârtt. 3.

1. विभाज्य (von भज् mit वि) adj. *zu theilen, zu vertheilen* M. 9, 219. — Vgl. 1. विभज्य, विभाग्य.

2. विभाज्य in °वादिन् fehlerhaft für 2. विभज्य.

विभाण्ड 1) m. N. pr. eines Mannes MBh. 12, 1598. Vgl. विभाण्डक.

— 2) f. ई N. zweier Pflanzen: = नीलगोकर्णी Dhanv. in Nigh. Pr. = आवर्तकी Râǵan. im ÇKDr.

विभाण्डक 1) m. N. pr. eines Muni mit dem patron. Kâçjapa, Vaters des Ṛshjaçṛṅga, MBh. 3,9999. Hariv. 9571. R. 1,8,7. 10,13. 18, 13. Verz. d. Oxf. H. 10,b,8. 280,a, No. 656. Pańkar. 1,10,63. Vgl. विभण्डक und वैभाण्डकि. — 2) f. विभाण्डिका *Senna obtusa Roxb.* Dhanv. in Nigh. Pr.

विभानु (von 1. भा mit वि) adj. *scheinend* ṚV. 8,91,2.

विभात् (partic. praes. von 1. भा mit वि) adj. *glänzend;* m. N. einer Prağâpati-Welt Ait. Br. 7,26. TS. 1,6,5,1. 7,5,1.

1. विभाव (von 1. भा mit वि) adj. *scheinend, leuchtend:* स्वर्णा चित्रं वपुषे विभावम् ṚV. 1,148,1.

2. विभाव (von 1. भू mit वि) m. 1) viell. *Entfaltung* als Beiw. Çiva's Pańkar. 1,8,17. — 2) *Bekanntschaft* H. an. 3,713. Med. v. 52. — 3) *ein von der Kunst dargestellter Gegenstand, sofern derselbe ästhetische Empfindungen erregt,* H. 326. fg. H. an. Med. रत्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्ययोः Sâh. D. 61. 33. 40. 160. 117, 16. Daçar. 3,28. 4,1. 43. fg. Pratâpar. 48,b,1. Verz. d. Oxf. H. 213,a, No. 506. Schol. zu Nalod. 2,8.

विभावक adj.: चरमाणो ऽभिनिर्यातु विप्रेभ्यो ऽर्थविभावकः (अर्थार्जितमर्थं प्रदातुं तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायामिति ण्वुल् Nilak.; vgl. P. 3, 3,10) *um den Brahmanen Geld zu verschaffen* MBh. 3,1347. wohl fehlerhaft für विभाजक.

विभावत्व n. nom. abstr. zu विभाव 3) Sâh. D. 37.

विभावन् (von 1. भा mit वि) 1) adj. (f. विभावरी) *scheinend, leuchtend, glänzend:* Ushas ṚV. 1,92,14. 8,47,14. Naigh. 1,8. Agni 3,3,9. 5,3, 2. यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निः 10,6,2. त्वं यमयोरभवो विभावा 8,4. 91, 1. गङ्गा MBh. 13,1844. यशस्विनी मन्युमती कुले जाता विभावरी (= कुपिता Nilak.) 5,4495. — 2) f. विभावरी a) *(die sternhelle) Nacht* AK. 1,1,2, 4. H. 142. Med. r. 298. Halâj. 1,107. °मुखे MBh. 7,6832. R. 2,84,18. 5,16, 40. Kumâras. 5,44. Mâlav. 74. 82. Kathâs. 10,31. 12,184. 23,10. 39,213. 69,40. 71,288. Râǵa-Tar. 3,204. 8,2718. Bhâg. P. 4,8,71. — b) *Gelbwurz* (wie alle Wörter für *Nacht*) Med. *eine dem Ingwer ähnliche Pflanze* (मेढा) Ratnam. im ÇKDr. — c) *Kupplerin* Med. — d) = चक्रयोषित् Med. = वक्रयोषित् *ein hinterlistiges Weib* ÇKDr. nach ders. Aut., so auch Viçva bei Nilak. zu MBh. 5,4495. — e) = विवादवस्त्रगुण्ठी Med. °वस्त्रमुण्डी ÇKDr. nach ders. Aut. — f) = मौखर्यनिरतस्त्री *ein geschwätziges Weib* Çabdar. im ÇKDr. — g) *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–⏑–⏑– Ind. St. 8,383. — h) N. pr. α) einer Tochter des Vidjâdhara Mandâra Mârk. P. 63,14. 64,2. 66,6. — β) der Stadt Soma's Bhâg. P. 5, 21,7. — γ) der Stadt der Praketas Bhâg. P. 3,17,26. — Vgl. राकाविभावरी.

विभावन (vom caus. von 1. भू mit वि) m. (!) und n. Siddh. K. 249,a,10. 1) nom. ag. *entfaltend* oder *zur Erscheinung bringend, offenbarend* Hariv. 13777 nach der Lesart der neueren Ausg. (प्रभावन die ältere). — 2) f. आ eine best. rhet. Figur: *das Vorführen von Wirkungen, deren wahre Ursachen man Einem zu errathen überlässt,* Sâh. D. 716. 5,4. 105,14. Kâvjâd. 2,199. Kuvalaj. 93 (117,b). Pratâpar. 91,a. Verz. d. Oxf. H. 208,b,3. Mallin. zu Kir. 5,26. Beispiele Spr. (II) 239 und 442. — 3) n. a) *das Entfalten, Erschaffen* Vjutp. 147. विश्व° Bhâg. P. 4,8,20. = पालन Comm. — b) *das Offenbaren, an den Tag-Legen:* निजविद्यादि° Kull. zu M. 9,76. — c) *das Erwecken eines bestimmten Grundtons, einer best. Grundstimmung durch ein Kunstwerk* Sâh. D. 44. 25,10. — d) *das Wahrnehmen, Erkennen:* सम्यगृतविभावनात् M. 2,101. वर्ण° Vikr. 78,10. — e) *das Vorführen dem Geiste, das Nachsinnen über:* सततानुवृत्तभूत्यावमान° Kathâs. 1,66. 26,220.

विभावनीय (wie eben) adj. 1) *wahrzunehmen, zu erkennen* Mârk. P. 102,12. — 2) *zu überführen,* als Erklärung von भाव्य Kull. zu M. 8,60.

विभावरी s. u. विभावन्.

विभावरीश m. *Herr der Nacht* d. i. *der Mond* Varâh. Bṛh. S. 103,1.

विभावसु (वि° + वसु) 1) adj. *glanzreich:* Agni ṚV. 3,2,2. 5,25,2. 8,43,32. 44,6. 24. VS. 17,53. Soma ṚV. 9,72,7. Kṛshṇa Hariv. 13777. — 2) m. a) *Feuer, der Gott des Feuers* AK. 1,1,1,51. 3,4,30,228. H. 1100. an. 4,333. Med. s. 63. Halâj. 1,63. Bhag. 7,9. MBh. 1,1243. 2, 1138. 3,2662. 7,602. 12,11598. 13,114. 4033. 6751. Hariv. 1881. 3004. 11330. 13930. R. 3,18,25. 75,65. 6,103,4. Ragh. 3,37. 10,83. Kumâras. 4,34. Spr. (II) 986. Bhâg. P. 2,3,3. 4,9,7. 7,3,23. 8,10,31. 18,22. 11, 26,31. Mârk. P. 15,38. 99,48. — b) *die Sonne* AK. 1,1,2,32. 3,4,30, 228. H. 98. H. an. Med. AV. Pariç. 14,1 in Ind. St. 9,119. MBh. 1,42. 1178. 6,487. Bhâg. P. 10,46,8. Verz. d. Oxf. H. 62,a,17. — c) *der Mond* H. an. — d) *eine Art Perlenschmuck* H. an. Med. — e) N. pr. α) eines der acht Vasu Bhâg. P. 6,6,11. 16. — β) eines Sohnes des Naraka Bhâg. P. 10,59,12. — γ) eines Dânava Bhâg. P. 6,6,29. — δ) eines Ṛshi MBh. 1,1354. fgg. — ε) eines mythischen Fürsten auf dem Berge Gajapura Kathâs. 48,64.

विभाविन् adj. 1) *erscheinen lassend:* वर्ण° unter den Beiww. Çiva's MBh. 13,1219; vgl. das caus. von 1. भू mit वि. — 2) *Etwas enthaltend, das eine bestimmte Grundstimmung* (das Gefühl der Liebe u. s. w.) *erweckt,* Nalod. 2,8.

विभाव्य (vom caus. von 1. भू mit वि) adj. 1) *wahrzunehmen, vernehmbar, erkennbar, fassbar:* अविभाव्यतारकं नभः Çiç. 9,12. Spr. 1882. नाविभाव्यां (= अगम्भीरां Nilak.) गिरं सृजेत् MBh. 12,3491. अविभाव्यवाच् Ragh. 7,35. सनन्दनाद्यैर्मुनिभिर्विभाव्यम् (त्वाम्) Bhâg. P. 9,8,23. 10,64, 26. — 2) *anzunehmen, vorauszusetzen:* विभाव्यं (= विचारणीयम् Nilak.) तस्य भूयश्च कर्म पापं दुरात्मनः MBh. 5,2843. Kâvjâd. 2,199 (= अनुसंधनीय Comm.). — Vgl. दुर्विभाव्य.

विभाषा (von 1. भाष् mit वि) f. 1) *Beliebigkeit, Zulässigkeit des Einen und Andern* Trik. 3,4,6. न वेति विभाषा P. 1,1,44. विभाषोर्णोः 2,3. 36. 3,50. °प्राप्त AV. Prât. 1,2. विभाषया Pat. zu P. 6,1,14. द्वयोर्विभाषयोर्मध्ये विधिर्नित्यः Vop. 2,5, Comm. विभाषामिच्छन्ति Sarvadarçanas. 136,4. 5. अपरे तु स्वपदविभाषामाहुः Schol. zu Kâtj. Çr. 8,2,23. संयुक्तपूर्वो ऽपि लघुः क्वाचित्स्यात् वर्णास्तु प्रह्रादिगतो विभाषा (so v. a. विभाषया) Dâmodara in Ind. St. 8,224. नित्यं प्राप्ते वि°, अप्राप्ते वि° P. 8, 2,33, Schol. प्राप्त° 1,3,50, Schol. अप्राप्त° 43, Schol. व्यवस्थिता Siddh. K. zu P. 6,3,116. केचिदिदं सूत्रं व्यवस्थितविभाषायां व्याचक्षते Halâj. in Ind. St. 8,222. Vgl. विकल्प 1). — 2) Bez. *einer Klasse von* Prâkrit-*Sprachen,* zu denen शाकारी, चाण्डाली, शाबरी, आभीरिकी und शाक्की

gezählt werden, Verz. d. Oxf. H. 181,*a*, No. 412. — 3) bei den Buddhisten Bez. einer Klasse von Schriften: *ausführlicher Commentar* Burn. Intr. 567. Wassiljew 47. 63. fg. 75. 77. 107. Târan. 56. 294. Vie de Hiouen-thsang 63. 67. 106. °शास्त्र 50. 67. 174. Târan. 56. Hiouen-thsang I,115. 129. 175. 184. 269. अभिधर्म° 177. प्रकरणपादविभाषाशास्त्र 184. Vie de Hiouen-thsang 102. — Vgl. दुर्विभाष, महाविभाषाशास्त्र und वैभाषिक.

विभास (von 2. भास् mit वि) m. 1) N. einer der sieben Sonnen Taitt. Âr. 1,7,1. 16,1. fälschlich स° VP. 632, N. 6. — 2) N. pr. einer Gottheit Mârk. P. 80,7. — 3) N. eines Râga Gît. S. 51 und VIII.

विभास्कर (2. वि + भा°) adj. *ohne Sonne* Varâh. Laghuǵ. 2,9 in Ind. St. 2,285.

विभास्वत् (2. वि + भा°) adj. *überaus glänzend* Verz. d. Oxf. H. 28,*b*,40.

विभित्ति (von 1. भिद् mit वि) f. *Spaltung* Kâth. 11,5. Shaḍv. Br. 3,8.

विभिन्दु (wie eben) 1) adj. *spaltend* ṚV. 1,116,20. — 2) m. N. pr. eines Mannes ṚV. 8,2,41.

विभिन्दुक m. (*der sich spaltende Fels*) N. pr. eines Asura (Comm.): मेधातिथिः काण्व्यो विभिन्दुकाद्गृष्टीर्गा उदसृजत Pañkav. Br. 15,10,11.

विभिन्नदर्शिन् adj. = भिन्नदर्शिन् Mârk. P. 23,38.

विभी (2. वि + 2. भी) adj. *furchtlos* MBh. 3,11153. 8,786.

विभीत m. = विभीतक Halâj. 2,463. Çârṅg. Saṁh. 3,8,27. 11,3. 13,63.

विभीतक (spätere Form für विभीदक) m. f. (ई, nicht zu belegen) und n. Trik. 3,5,23. *Terminalia Bellerica Roxb.* (ein grosser Baum), n. *die als Würfel gebrauchte Nuss;* die Kerne berauschen, die Blüthe riecht widerlich. Wight Ill. I,91. Z. d. d. m. G. II,123. AK. 2,4,2,38 (m. f. n.). H. 1145. Halâj. 5,66. Ratnam. 91. Çat. Br. 13,8,1,16. Schol. zu Shaḍv. Br. 3,8. MBh. 3,2405. 2813. fgg. 11570. R. 2,91,47. 6,19,41. Suçr. 1, 32,15. 142,3. 8. 144,18. 167,5. 183,7. 2,77,16. 229,15. 468,11. Çârṅg. Saṁh. 2,1,30. 3,11,25. Varâh. Bṛh. S. 53,120. 54,24. 102. Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,33. Brahma-P. in LA. (III) 51, 20. — Vgl. वैभीतक.

विभीदक m. dass. ṚV. 7,86,6. 10,34,1. Kâtj. Çr. 21, 3,20. Sâj. zu Çat. Br. 5,4,4,6. Gobh. 1,5,17. — Vgl. विभेदक.

विभीषण (vom caus. von 1. भी mit वि) gaṇa नन्द्यादि zu P. 3,1,134. 1) adj. (f. आ) *schreckend, einschüchternd, Furcht erregend* ṚV. 5,34,6. राक्षस MBh. 1,5930. 6029. 6072. रूप 6,4295. 7,7903. Hariv. 13408. R. 6,1,30. Verz. d. Oxf. H. 10, *b*, N. 6. Vet. in LA. (III) ad 30, 5. भीरु° MBh. 7,892. सु° R. 3,55,25. — 2) m. *a*) *Rohrschilf, Amphidonax Karka Lindl.* Râǵan. im ÇKDr. Ausn. 36. — *b*) N. pr. α) eines edlen Râkshasa, Bruders des Kubera und Râvaṇa, der von Râma nach Râvaṇa's Vertreibung als Beherrscher von Laṅkâ eingesetzt wurde, MBh. 2,411. 3,15896. fgg. Hariv. 10410. R. 1,1,79. 3,33. 3,23,38. 7,9,35. Kâm. Nîtis. 8,61. Ragh. 12,68. 104. Kathâs. 45,144. fgg. Weber, Râmat. Up. 299. fg. 302. 311. Râǵa-Tar. 3,73. 4,504. Bhâg. P. 4,1,37. Pañkar. 4,3,110. Verz. d. Oxf. H. 76,*a*,4. — β) zweier Fürsten von Kâçmîra: eines Sohnes des Gonarda Râǵa-Tar. 1,192. eines Sohnes des Râvaṇa 196. fg. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2640. — 4) n. *a*) *das Schrecken, Einschüchterung* MBh. 3,15648. — *b*) N. *des 11ten* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912.

विभीषा (wie eben) f. *die Absicht* (als wenn es vom desid. käme) *Jmd zu schrecken:* यथावीर्यस्त्वया सर्पः कृतोऽयं मद्विभीषया MBh. 1,998.

विभीषिका (wie eben) f. *Schreck, Einschüchterung, Schreckmittel:* विभीषिका वै गन्धर्व नास्त्रज्ञेषु प्रयुज्यते । अस्त्रज्ञेषु प्रयुक्तेयं फेनवत्प्रविलीयते ॥ MBh. 1,6462. विभीषिकाभिर्बह्वीभिर्भीषयन्सर्वपार्थिवान् 2,14333. 5,5570. न वै विभीषिकां काचिद्राजन्कुर्वन्ति पाण्डवाः । युध्यन्ति ते यथान्यायं शक्तिमन्तश्च संयुगे ॥ 6,2913. Hariv. 13864. 16018. Kâm. Nîtis. 19, 3. Uttarar. 90, 17 (117,1). दृष्ट्वा तास्ता विभीषिकाः Râǵa-Tar. 7, 539. Pañkat. 160,17. 21. fg. कृत्वा शस्त्रविभीषिकाम् Spr. (II) 1889. — Vgl. भेद°.

विभु (von 1. भू mit वि P. 3,2,180. Vop. 26,168) 1) adj. im Veda auch विभू. f. विभू und विभ्वी; vgl. P. 4,1,47. *a*) *weit reichend, durchdringend; ausgebreitet, überall gegenwärtig* H. an. 2,312. Med. bh. 7. P. 3, 2,180, Schol. श्रोत्रम् ṚV. 1,165,10. ज्योतिस् 8,90,12. याम 1,34,1. 10, 138,5. यं भृगवो विभृतमुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे 4,7,1. 1,188,5. 10, 40,1. VS. 5,31. 22,30 (Kâth. 35,10). स श्रोतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु 32,8. Muṇḍ. Up. 1,1,6. Kâthop. 2,22. Maitrjup. 6,7. Kûlikop. in Ind. St. 9, 15. 19. Bhag. 10,12. R. 6,8,16. Varâh. Bṛh. S. 51,1. Bhâshâp. 50. 93. आकाश Tarkas. 10. fg. Z. d. d. m. G. 6,24, N. 3 und 4 (विभ्वी). 25, N. 1. 26. Schol. zu Kap. 1,49. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 3. Sarvadarçanas. 51,13. तन्नित्यं विभु चेच्छक्तीत्यात्मनो विभुनित्यता 85,1. — *b*) *reichlich; nachhaltig:* राति ṚV. 5,38,1 (vgl. 1,34,1). मनीषाः 6,34,1. पोष 5,5,9. अपः 3,31,16. कामाः VS. 20,23. 18,10. ṚV. 2,24, 10. यज्ञ TBr. 3,9,19,1. Çat. Br. 13,3,7,2. — *c*) *vermögend, mächtig, wirksam, tüchtig:* Indra ṚV. 3,33,13. 8,85,11. die Marut 1,166,11. Agni 31,2. 65,10. 141,9. 5,4,2. द्रप्स 10,11,4. विश्पति 6,15,8. अश्वाः 3,6,9. 7,48,1. VS. 22,19. MBh. 3,2118. 5,7202. R. 1,38,29. 77,29. 4, 1,4. 11,12. 5,89,8. Kumâras. 6,95. Bhâg. P. 4,1,48. विभो voc. MBh. 1, 6040. 3,1752. 5,6067. 7009. 13,2250. R. 1,62,14. 65,34. R. Gorr. 2, 66,29. 4,9,4. 36,9. 40,12. 5,83,17. Kathâs. 28,95. *vermögend, im Stande seiend* mit infin. Kir. 5,43. Bhâg. P. 5,18,23. 11,6,18. fg. (विभ्वी). subst. *Herr, Gebieter* Trik. 3,3,289. H. 359. H. an. Med. श्रेयसाम् Bhâg. P. 2,7,49. लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुः Varâh. Bṛh. S. 1,1. तेषां देवानाम् Mârk. P. 74,58. तव Kathâs. 26,280. मद्विभु Pañkat. 202,10. स्वजन° so v. a. *das Haupt* Varâh. Bṛh. 18,14. *Fürst* Ragh. 8,31. संमतोऽहं विभोर्नित्यम् Spr. 3193. Kathâs. 19,59. तावतोऽन्तश्च तत्सुतः । वर्षानभूद्विभुः Râǵa-Tar. 1,340. 351. — *d*) = नित्य H. an. — *e*) = दृढ Aǵajapâla im ÇKDr. — 2) m. *a*) *der Mächtige, Allmächtige* als Bez. des höchsten Gottes: α) Brahman's Med. Bhâg. P. 2,9,6. 9,3,29; vgl. विभुश्चतुर्मुखः R. 7,5,12. — β) Vishṇu's oder Kṛshṇa's Çabdam. im ÇKDr. Bhag. 5,15. MBh. 3,15591. Bhâg. P. 1,2,30. 3,16. 5,16.40. 8, 13. 7,8,34. — γ) Çiva's H. an. Med. MBh. 1,7297. Kumâras. 7,31. Spr. 3313. Kathâs. 7,111. 21,143. 39,153. — *b*) *Diener* (भृत्य) Trik. — *c*) ein N. der Ṛbhu (vgl. विभ्वन्), nur pl. ṚV. 7,48,1. ऋभुर्ऋभुभिः, विभ्वो विभुभिः 2. ये विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः 4,34,9. 36,3. — *d*) N. pr. (विभू nach P. 3,2,180, Schol., was aber nicht zu belegen ist) eines Gottes, eines Sohnes des Vedaçiras und der Tushitâ, Bhâg. P. 8, 1,21. eines Gottes unter Manu Sâvarṇi Mârk. P. 80,7. des Indra unter Manu Raivata 75,72. Bhâg. P. 8,5,3. unter dem 7ten Manu

Verz. d. Oxf. H. 52, *a*, 41. N. pr. eines Sohnes des Vishṇu von der Dakshiṇâ Bhâg. P. 4,1,7. des Bhaga von der Siddhi 6,18,2. eines Bruders des Çakuni MBh. 7,6944 (mit der ed. Bomb. zu lesen: शकुनेर्भ्रातरो वीरा गवाक्षः शरभो विभुः । सुभगो भानुदत्तश्च शूराः पञ्च महारथाः ॥). eines Sohnes des Çambara Hariv. 9253. eines Sohnes des Satjaketu und Vaters des Suvibhu 1594. fg. VP. 409. eines Sohnes des Dharmaketu und Vaters des Sukumâra ebend. N. 14. eines Sohnes des Varshaketu (Satjaketu) und Vaters des Ânarta Hariv. 1731. VP. 409, N. 14. eines Sohnes des Prastâva von der Nijutsâ Bhâg. P. 5,15,5. — Vgl. वैभव.

विभुक्रतु adj. *muthig* ṚV. 8,58,15.

विभुज्ञ nom. ag. von 1. भुज् mit वि; s. मूल°.

विभुत्व (von विभु) n. 1) *Allgegenwart, das Ueberallsein* Çvetâçv. Up. 4,4. Nîlak. 119. Sarvadarçanas. 106,12. 124,14. Schol. zu Kap. 1,110. — 2) *Allmacht, unumschränkte Herrschaft* Praçnop. 3,12. Sâṁkhjak. 12. Çâk. 42.

विभुप्रमित (auch Kaush. Up. 1,5) s. u. 1. मि mit प्र 1).

विभुमत् (von विभु) adj. 1) etwa *überall ausgebreitet:* विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ṚV. 8,85,16. = महत्त्वयुक्त Sâj. — 2) *mit den* Vibhu (Ṛbhu) *verbunden:* Indra VS. 38,8. Ait. Br. 2,20. Âçv. Çr. 5,1,15. Kâtj. Çr. 10,5,9.

विभुवरी (voc. विभुवरि) Kâṭh. 35,3 in Ind. St. 5,233 wohl f. zu विभ्वन्.

विभूतंगमा f. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 169, 4. 5. विभूतागम Foucaux, त्रिभूतंगम und विभूतगम Mél. asiat. 4,632.

विभूतद्युम्न adj. *dessen Glanz weit reicht* ṚV. 1,156,1. 8,33,6.

विभूतमनस् adj. zur Erklärung von विमनस् Nir. 10,26.

विभूतराति adj. *dessen Besitz reich ist* ṚV. 8,19,2.

विभूतागम s. विभूतंगमा.

विभूति (von 1. भू mit वि) 1) adj. *a) durchdringend:* सर्वं विभूतये zur Erklärung von विश्वाभुवे Nir. 11,9. — *b) reichlich:* सूनृता ṚV. 1,30,5. रयि 6,21,1. — *c) mächtig, wirksam:* ऊतयः ṚV. 1,8,9. die Marut 166, 11. Indra 6,17,4. Vâlakh. 1,6. *verfügend über* (gen.): विभूतिं राधसो महः Vâlakh. 2,6. — 2) m. N. pr. *a)* eines Sâdhja Hariv. 11537. — *b)* eines Sohnes des Viçvâmitra MBh. 13,256. — 3) f. *a) Entfaltung, Vervielfältigung, reiche Fülle:* विभूतयस्तदीयानां पशूनाम् Ragh. 4,19. वीर्य° Kumâras. 2,61. कर्मकर्तृत्वविभूत्यै Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 237. दिव्यभोगविभूतिभिः Kathâs. 45,337. वाचः Bhâg. P. 4,24,43. Verz. d. Oxf. H. 208, *b*,33. — *b) Manifestation einer Kraft, Machtäusserung* Nir. 4,23. Bhag. 10,7. 16. 18. fg. 40. Bhâg. P. 2,7,51. 9,13. 3,7,23. 8,8. 16,9. 25,37. 4,30,31. 5,4,1 (महा°). 20,40. 6,16,38. 8,21,5. 10,72,3. 12,11,45. MBh. 12,9142. 16620. Sarvadarçanas. 96,13. मायाविभूतयः Bhâg. P. 2,7,39. पुरुष°6 in der Unterschr. मनसः 5,11,12. मायागुणा° 16,4. ममैष कामो भूतानां यद्भूयासुर्विभूतयः 6,4,44. fg. विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा AK. 1,1,1,31. MBh. 13,1121. Colebr. Misc. Ess. I,235. Verz. d. Oxf. H. 17,*a*, No. 61. 191,*a*,18. 229,*a*, No. 561. Madhus. in Ind. St. 1,22. Kumâras. 2,11. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 248. Bhâg. P. 4,14,4. त्रिभुवनराज्य° MBh. 13, 771. *die Macht eines Herrschers, — eines grossen Herrn* Spr. (II) 1397. 2176. Ragh. 17,43. Kumâras. 7,29. प्रभूणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये

मतिः Kathâs. 17,138. Râga-Tar. 8,2618. राजविभूतयः (so die ed. Bomb.) Bhâg. P. 6,15,22. Pañkat. 203,1. Vet. in LA. (III) 30,6. मीना° *Entfaltung von Kraft, — Energie* R. 3,62 in der Unterschr. विद्या° *die Macht einer Zauberkunst* Kathâs. 52,23. महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः Spr. 2763. तपोविभूतयो ऽचिन्त्या द्विजानामुग्रतेजसाम् Râga-Tar. 1,160. वाग्विभूति Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 291. — *c) ein glücklicher Erfolg:* यज्ञे MBh. 1,411. यज्ञ° 441. 2,1937. यज्ञविभूतीयम् R. 7,65,8. — *d) Herrlichkeit, Pracht:* पारिजातस्य Hariv. 7707. आर्तवी वीरुधाम् Ragh. 8,36. इन्दोः Varâh. Bṛh. S. 12,10. 104,42. Râga-Tar. 8,2429. — *e) Wohlfahrt, Wohlergehen, Glück* H. 357. सोमलोके विभूतिमनुभूय Praçnop. 5,4. MBh. 3,2700. अतिमानुषी 8312. आत्मनश्च विभूतये R. 5,89,31. Kâm. Nîtis. 1,67. Spr. 1490. 5025. Kathâs. 33,10. Bhâg. P. 1,16,34. 2,6,44. 3,33,5. 4,7,34. Sâh. D. 277. — *f) Glücksgüter, Reichthum* Kâm. Nîtis. 4,13. 14,67. Ragh. 6,76. 15,29. Spr. (II) 855. 2205. 2270. (I) 1193. 2584. Kathâs. 7,102. 20,45. 30,33. 34,128. 45,313. Râga-Tar. 3,75. 4,388. 421. 709. fg. 5,18. 8,2430. Sâh. D. 276,12. fgg. Verz. d. Oxf. H. 148, *b*,8. 9. — *g) die Göttin der Wohlfahrt,* Lakshmî Bhâg. P. 3,16,20. महा° 28,26. — *h) Asche* (vgl. भूति) Wilson, Sel. Works I,186. 194. fg. 224. Pañkar. 1,8,9. Sâh. D. 19,1 (विमूति gedr.). — Vgl. महा° (auch Bhâg. P. 8,5,32 als adj.; als subst. s. u. 3) *b*) und *g*)) und विभव.

विभूतिचन्द्र m. N. pr. eines Autors Târan. 190.

विभूतिद्वादशी f. Bez. *eines best. zwölften Tages,* eines Festtages zu Ehren Vishṇu's, Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,9. 18. fg. 41,*a*,28.

विभूतिमत् (von विभूति) adj. *kräftig, mächtig:* सत्त्व Bhag. 10,41. उरस् Bhâg. P. 3,19,15.

विभूदावन् (विभू = विभु + दा°) adj. *reichlich gebend:* Pragâpati TS. 3,5,8,1.

विभूमन् (von 1. भू mit वि) 1) etwa *Ausbreitung, Macht* in einer Formel TS. 3,3,5,2. — 2) m. concret als Beiw. Kṛshṇa's (vgl. भूमन्) so v. a. *in vielfacher Gestalt erscheinend* oder *allmächtig* Bhâg. P. 1,9,32. 3,14,28. 4,7,43 (च भूमन् st. विभूमन् ed. Bomb.). 11,18. 10,60,34. 61,3. 84,17. Der Comm. erklärt das Wort durch परिपूर्ण und ein Mal durch विगतो भूमा यस्मात्.

विभूरसि (eig. *du bist mächtig*) m. *eine Form des Feuers* MBh. 3,14234.

विभूवसु (विभू = विभु + वसु) adj. *ausgebreiteten —, reichlichen Besitz habend* ṚV. 9,86,10.

विभूषण (vom caus. von 2. भूष् mit वि) 1) adj. *schmückend:* चरणौ परस्परविभूषणौ R. 3,52,33. — 2) m. Bein. Mañguçrî's Trik. 1,1,22. — 3) n. *a) Schmuck* AK. 2,6,3,3. Halâj. 2,402. अविभूषणपरिच्छदा M. 9,78. MBh. 3,11913. अङ्ग° 12066. R. 2,39,17. 3,3,22. Ragh. 16,80. शंभुजटाविभूषणमणि Spr. (II) 929. वृथा शूरे विभूषणम् (I) 2890. Varâh. Bṛh. S. 16,28. 43,49. 78,3. Bṛh. 21 (19), 8. 27 (25), 12. Kathâs. 21,82. Bhâg. P. 6,19,7. पाटलिपुत्राख्यं पुरं पृथ्वीविभूषणम् Kathâs. 17,64. 30, 38. ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता Spr. (II) 1487. विभूषणं शीलसमं न चान्यत् (I) 1137. महीपतीनां विनयो विभूषणम् 1709. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् 3340. am Ende eines adj. comp.: स° adj. MBh. 14,2667. तपनीय° *geschmückt mit* R. 3,67,18. आननं समकर्णविभूषणम् Bhâg. P. 4, 24,46. f. आ MBh. 3,12261. Kâm. Nîtis. 7,45. Kathâs. 18,54. 34,250.

— b) *schmuckes Aussehen, Glanz, Schönheit:* शोभा = रूपोपभोगतारुण्यैरङ्गानां विभूषणम् Daçar. 2,32. — Vgl. मकरविभूषणकेतन.

विभूषणवत् (von विभूषण) adj. *geschmückt* Mṛkkh. 61,2.

विभूषा (vom caus. von 2. भूष् mit वि) f. 1) *Anputz; Schmuck* Varâh. Bṛh. 27 (25), 34. श्रीमद्विभूषोज्ज्वलित Kâm. Nîtis. 15,46. भयोत्सृष्ट° adj. f. Ragh. 4,54. असमाप्त° adj. f. Spr. 3044. — 2) *schmuckes Aussehen, Glanz, Schönheit* H. 1312. Halâj. 2,410.

विभूषिन् (von विभूषा) adj. am Ende eines comp. *geschmückt mit:* सौम्यदंष्ट्रा° MBh. 13,890. जाम्बूनद° Hariv. 16183.

विभूक्षु (von 1. भू mit वि) adj. als Beiw. Çiva's wohl so v. a. *allmächtig* Çiv. — Vgl. भूक्षु.

विभृ॑त्र (von 1. भर् mit वि) adj. *was sich hinundher tragen lässt,* z. B. das zarte Kind Ṛv. 1,71,3. दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भं विभृ॑त्रम् 95,2. उतारुषार्के चक्रे विभृ॑त्रः (अग्निः) 2,10,2. आ पुत्रासो न मातरं विभृ॑त्राः (सदन्तु) 7,43,3.

विभृ॑त्वन् (wie eben) adj. *hinundher tragend* Ṛv. 9,96,19.

विभेतव्य (von 1. भी mit वि) n. *zu fürchten* (impers.): भयात् Spr. 1029, v. l.

विभेत्तर् (von 1. भिद् mit वि) nom. ag. *Durchbrecher, Zerstreuer, Verscheucher:* तमसाम् (अरुणा) Spr. 5233.

विभेद (wie eben) m. 1) *Durchbohrung, Spaltung, das Durchbrechen* MBh. 8,1966. सप्ततालॅ° R. Gorr. 1,4,63. भूधराणाम् Kir. 13,1. Varâh. Bṛh. S. 5,84. — 2) *das Verziehen:* भ्रू° *der Brauen* Sâh. D. 196. — 3) *das Zerfallen, Zwietracht, Uneinigkeit:* यो नः सुमनसां मूढ विभेदं कर्तुमिच्छसि MBh. 2,2158. सामदानविभेदैः R. 5,24,34. मित्राणाम् Varâh. Bṛh. S. 10,12. राष्ट्र° 46,26. विभेदं पूर्ववत्प्रापदेवं निजबलं पुनः Râǵa-Tar. 6,239. — 4) *das Zerfallen in* so v. a. *Unterschiedenheit, Verschiedenheit:* कालो द्विविधो ऽवसर्पिण्युत्सर्पिणीविभेदतः H. 127. देशरूपवयश्चेष्टाविज्ञानादिविभेदतः। भिन्ना गुणा वरस्त्रीणां नैका सर्वगुणान्विता॥ Kathâs. 47,105. Verz. d. Oxf. H. 23,a,12. 81,a,30. 32. 197,b, No. 462, Çl. 4. Varâh. Bṛh. S. 88,12. Bhâg. P. 8,3,22. उपहारविभेदाः *verschiedene Arten von* Spr. 1348, v. l. Bhâg. P. 3,13,37.

विभेदक (wie eben) 1) adj. *Etwas* (gen.) *von Etwas* (abl.) *unterscheidend:* विज्ञानवादस्य किं विभेदकं भवन्मतात् Verz. d. Oxf. H. 259,b,7. — 2) m. = विभीदक, विभीतक H. 1145, Schol.

विभेदन (wie eben) 1) adj. *durchbohrend, spaltend:* रत्नं मणिपूरविभेदनम् Verz. d. Oxf. H. 89,b,21. अविभेदनाः परस्परम् von Sternen so v. a. *sich gegenseitig nicht verfinsternd* Varâh. Bṛh. S. 20,4. — 2) n. a) *das Spalten, Zerbrechen* Nir. 9,8. अण्ड° MBh. 1,1089. — b) *das Entzweien, Veruneinigen:* सुहृद्विभेदन MBh. 3,17447. Kâm. Nîtis. 12,22. साम्ना प्रदानेन विभेदनेन 9,76. सामदानविभेदनैः MBh. 12,3968. R. 4,54,11.

विभेदिन् (wie eben) adj. 1) *durchbohrend, zerreissend;* s. मर्म°. — 2) *vertreibend, verscheuchend:* स्मरणादेव सर्वेषामङ्हसां या (गङ्गा) विभेदिनी Hariv. 3190.

विभेद्य (wie eben) adj. *zu spalten, zu zerbrechen:* एकेषुणा विभेद्यानि तानि दुर्गाणि MBh. 8,1434.

विभ्रंश (von 1. भ्रंश् mit वि) m. 1) *Verfall* so v. a. *das Aufhören, Verschwinden:* सत्त्वस्य MBh. 3,11254. नित्यक्रियाणाम् Mârk. P. 69,38. समस्ताचार° 40,12. शील° Kathâs. 61,143. चित्त° so v. a. *Geistesstörung* MBh. 13,2840. — 2) *Fall, Sturz* in übertr. Bed.: अनेकमदान्धानाम् Bhâg. P. 8,22,5. राज्यं चाप्युग्रविभ्रंशम् MBh. 5,4566. देश° *Verfall, Ruin eines Landes* Varâh. Bṛh. S. 45,7. — 3) *das Kommen um, Verlust:* राज्यविभ्रंशदुःख Râǵa-Tar. 1,375. स्वार्थ° Bhâg. P. 11,21,21. सुखास्वादविध्वंस Mârk. P. 24,11. — Vgl. मति°.

विभ्रंशिन् (wie eben) adj. 1) *zerbröckelnd:* अ॑° Çat. Br. 3,1,1,2. Kâtj. Çr. 7,1,13. Gobh. 4,7,1. — 2) *herabfallend, sich ablösend:* मन्दारपुष्पैः कर्णविभ्रंशिभिः Megh. 68.

विभ्रम (von भ्रम् mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. a) *das Hinundhergehen, das sich-hinundher-Bewegen, unstätes Wesen:* उत्त्रस्तमत्तकलहंस° Mâlatîm. 15,12. मत्तभ्रमर° adj. (बिन्दुसरस्) Bhâg. P. 3,21,41. पवनोद्भ्रान्तवीचि° Spr. 2036. अकृत्रिमविभ्रमैः — अङ्कैः Uttarar. 10,8 (14,6). मदविभ्रमलोचन adj. Varâh. Bṛh. S. 58,36. चलितापाङ्गविभ्रमैः Râǵa-Tar. 5,360. भ्रूलता° Megh. 48. Ṛt. 3,17. सविभ्रम (वीक्षण) 1,12. तडित्तरलविभ्रमाः संपदः Râǵa-Tar. 8,1898. घनसमयतडिद्विभ्रमाः भोगपूगाः Spr. (II) 993. वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यम् (I) 2775. — b) (*das Toben*) *Heftigkeit, Intensität, hoher Grad:* रति° Kaurap. 13. Khandom. 55. भूयो ऽपि मा कृथा ह्यास्यविभ्रमम् Kathâs. 43,103. निवृत्तसर्वेन्द्रियवृत्ति° Bhâg. P. 1,9,31. रोष° 9,10,13. शौर्यविभ्रमभरं बिभर्ति (राजनि) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 12. (कीर्तिः) विश्ववन्द्यविभ्रमा Khandom. 38. कर्मक्रियाविभ्रमाः so v. a. *buntes Gewirre* Spr. (II) 1721. सौन्दर्य° (I) 4791. 1265. गन्ध° Khandom. 143. दानविभ्रमाः *überaus grosse Schenkungen* Râǵa-Tar. 8,72. — c) *Coquetterie, Buhlkunst:* स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु Megh. 29. 72. Ragh. 8,58. 79. Spr. (II) 855. Kathâs. 47,110. Bhâg. P. 4,27,1. 9,23,8. विलासस्मितविभ्रमैः Râǵa-Tar. 5,365. Sâh. D. 113. सविभ्रमा Spr. 951. 3003. Ṛt. 6,23. — d) *Verwirrung, Unordnung, Störung:* पवनादीनाम् Suçr. 1,70,19. स्नेहादीनाम् 253,2. आकार° Sâh. D. 38,19. स्मृति° Bhag. 2,63. Spr. 5112. Daṁpatiç. 31,8 v. u. विभ्रमादिवियुक्तता वाचः H. 69. राज्य° R. 2,23,28. मल्लस्य MBh. 12,2157. दण्डस्य so v. a. *falsche Anwendung der Strafe* M. 7,24. दण्डनीतेः Kâm. Nîtis. 2,8. — e) *Aufregung:* लोकस्य Varâh. Bṛh. S. 33,11. न यस्य चित्तं बहिरर्थविभ्रमम् Bhâg. P. 4,24,59. मनस्यर्थविभ्रमे 7,13,43. स कार्ष्णो रूढयौवनः। जनयामास नारीणां वीक्षन्तीनां च विभ्रमम् 10,55,9. तत्राश्रौषं पुत्राणां तव विभ्रमम् MBh. 3,358. अ° *kaltes Blut, Besonnenheit* 4,1887. दुःख° *über, in Folge von* 14,321. राज्य° 5,1163. — f) *Verwirrung des Geistes* Pańkar. 3,13,22. *Irrthum, Wahn;* = भ्रम Trik. 3,3,303. = भ्रान्ति Med. m. 52. Vaiǵ. bei Mallin. zu Kir. 4,3 und Çiç. 15,94. प्रवृत्तविज्ञानविधूत° Bhâg. P. 1,10,3. *Zweifel* H. an. 3,473. fg. Halâj. 4,6. Vaiǵ. a. a. O. — g) *Trugbild, blosser Schein:* स्वप्नदर्शन° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 248. स्वप्न° Kathâs. 28,15. मिथ्यैव विभ्रमो दृष्टस्त्वया 63,143. गते रात्रिविभ्रमे 70,77. यो ऽधर्मे धर्मविभ्रमः Bhâg. P. 4,19,12. 17,29. लालापानमिवाङ्गुष्ठे बालानां स्तन्यविभ्रमः Spr. (II) 2067. अभूत — द्रुतवातपातवनविभ्रमं सदः Çiç. 15,94. बभार रत्नासर्षपविभ्रमम् Râǵa-Tar. 3,338. 5,332. भ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत् Spr. 988. गङ्गाम्भोविभ्रमं दधुः Râǵa-Tar. 3,365. विद्युतां विभ्रमं दधुः Verz. d. Oxf. H. 117,a,41. वितन्वानः प्रतिपदं प्रवातारम्भविभ्रमम् Kathâs. 20,223. करो ऽतिताम्रो रामाणां तन्त्रीताडनविभ्रमम्। करोति Kâvjâd. 3,21. कुर्वन्नकाण्डनिर्मेघवर्षासमयविभ्रमम् Kathâs. 19,65. वक्षोजौ करिकुम्भविभ्रम-

करोमित्युन्नतिं गच्छतः Sâh. D. 41, 13. प्रदीप्तानेकविवाहवह्निविभ्रमशालिन् Kathâs. 35, 155. Uttarar. 16, 16 (23, 3). मुखैः — व्योमगङ्गात्तरोत्फुल्लहेमाम्बुरुहविभ्रमैः Kathâs. 14, 19. 29, 59. Çiç. 6, 46. 7, 47. Râǵa-Tar. 4, 172. विलासिनीविभ्रमदत्तपत्त्रम् — केतकबर्हमन्यः — पाटयामास so v. a. *als wäre es ein Ohrring* Ragh. 6, 17. Kumâras. 1, 4. विभ्रमाभरणं भुवः Râǵa-Tar. 2, 14. अविभ्रमः कोपः so v. a. *nicht erkünstelt* Çâk. 69, 2, v. l. — *h) Anmuth, Schönheit* H. 1512. H. an. Halâj. 5, 27. Vaiǵ. a. a. O. einer Person Spr. 2185. नवप्रणाय° Mâlatim. 155, 8. Prab. 41, 1. गति° Ragh. 8, 57. Kumâras. 1, 34. वक्षोजाविभकुम्भविभ्रमकरौ Spr. 2696. कृतप्रियादृष्टिविलास° Kir. 4, 3. कुसुमकृतस्मितचारुविभ्रमा मालती Khandom. 52. Bhâg. P. 3, 13, 40. सविभ्रमाङ्गवलना Spr. 3235. — *i)* in der Erotik *die Zerstreutheit eines verliebten Frauenzimmers*, insbes. *in Bezug auf die Toilette:* चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो मतः Bharata beim Schol. zu Nalod. 2, 55. विभ्रमस्त्वरया काले भूषास्थानविपर्ययः Daçar. 2, 36. Sâh. D. 143. Pratâpar. 55, *b*, 9. H. 508. = हाव AK. 1, 1, 7, 31. Trik. H. an. Med. Halâj. 1, 89. — 2) f. आ *hohes Alter* Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. चित्त°, दृष्टि°, पान° (auch Suçr. 2, 478, 11. 479, 8. Çârṅg. Saṁh. 1, 7, 27), मति° (auch Daçar. 1, 5. Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 25).

विभ्रमवती (von विभ्रम) f. im Prab. N. pr. der Dienerin des Mahâmoha 37, 9. fgg. nach dem Schol. so v. a. विभ्रम (das als m. nicht passte) *Irrthum.*

विभ्रमसूत्र n. Titel einer grammatischen Abhandlung des Hemakandra Verz. d. Oxf. H. 170, *b*, No. 380.

विभ्रमार्क (विभ्रम + अर्क) m. N. pr. eines Ḍâmara Râǵa-Tar. 7, 58.

विभ्रमिन् (von भ्रम् mit वि) adj. *sich hinundherbewegend:* करिरतिरासविभ्रमी Khandom. 56.

विभ्राज् (1. भ्राज् mit वि) (nom. विभ्राट्) P. 3, 2, 177, Schol. 8, 2, 36, Schol. Vop. 3, 134. 1) adj. *strahlend* AK. 2, 6, 3, 2. ṚV. 10, 170, 1. fgg. — 2) m. angeblich N. pr. des Verfassers von ṚV. 10, 170, eines Sohnes des Sûrja, ṚV. Anukr.: vgl. Çâṅkh. Br. 18, 5.

विभ्राज (von 1. भ्राज् mit वि) m. N. pr. eines Fürsten Hariv. 1064. fgg. 1222. 1245. fgg. VP. 452 (विभ्रात्र fehlerhaft). — Vgl. वैभ्राज.

विभ्रातृव्य (2. वि + भ्रा°) n. *Nebenbuhlerschaft, Feindschaft* Çat. Br. 1, 1, 1, 21. 4, 4, 5, 3.

विभ्रान्ति (von भ्रम् mit वि) f. *Irrthum, Wahn* Prab. 81, 5.

विभ्राष्टि (von 1. भ्राज् mit वि) f. *das in-Flammen-Gerathen:* घृतस्य ṚV. 1, 127, 1. = विभ्रंश D. zu Nir. 6, 8.

विभ्रु m. als Synonym von राजन् MBh. 3, 12705. बभ्रु ed. Bomb.

विभ्रेष (von भ्रेष् mit वि) m. als Erklärung von विप्रमोह Schol. zu Âçv. Çr. 1, 2, 12.

विभ्वतष्ट (2. विभ्वन् + तष्ट) adj. *von einem tüchtigen Meister gebildet* im Sinne von *wohlgeschaffen, vollkommen; Meisterstück:* यं (इन्द्रं) सुक्रतुं धिषणे विभ्वतष्टं घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः ṚV. 3, 49, 1. वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः 5, 42, 12. यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा 58, 4. विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो यं देवासो ऽवथा स विचर्षणिः 4, 36, 5.

1. विभ्वन् (von 1. भू mit वि) so v. a. विभु. 1) adj. *weit reichend, durchdringend:* चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ṚV. 1, 113, 1. 190, 2. यो (अग्निः) वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा 10, 3, 6. — 2) m. N. eines der drei Ṛbhu (im Sinne von 2. विभ्वन्) ṚV. 1, 161, 6. 4, 33, 3. 9. 34, 1. 36, 6. Ṛbhu, Açvin, Tvashṭar, Vibhvan 5, 46, 4.

2. विभ्वन् (wie eben) adj. *tüchtig, geschickt; Künstler, Meister:* रथं इव बृहती विभ्वने (dat. für instr.) कृता ṚV. 6, 61, 13. विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः (अर्च) 10, 76, 5, wo nach Analogie der übrigen Pâda विभ्वनश्चित् zu vermuthen ist.

विभ्वासह् (विभ्वन् + सह्) adj. etwa *die Reichen überbietend:* रयि ṚV. 5, 10, 7. 9, 98, 1.

विमज्जान्त्र (2. वि + मज्जन् - अन्त्र oder आ°) adj. *des Markes und der Eingeweide beraubt:* शरीर MBh. 3, 8746.

विमण्डल (2. वि + म°) n. *ein Kreis, der die Bahn eines Planeten vorstellt*, Gaṇit. Grahakkhâjâdh. 2, Comm. Golâdhj. Golab. 20. 13, Comm.

विमत 1) adj. s. u. मन् mit वि. — 2) N. pr. eines Ortes an der Gomatî R. Gorr. 2, 73, 13.

1. विमति (von मन् mit वि) f. 1) *eine abweichende Ansicht* P. 1, 3, 47. Vop. 23, 41. mit loc. *in Bezug auf* Sâh. D. 6, 6. — 2) *Abneigung* R. 6, 7, 17.

2. विमति (2. वि + म°) adj. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. कुर्वादि zu 4, 1, 151. 1) *eine abweichende Ansicht habend.* — 2) *beschränkt, dumm.* — Vgl. वैमत्य.

विमतिता (von 2. विमति) f. *Beschränktheit, Dummheit* Spr. 954.

विमतिमन् (wie eben) m. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123.

विमतिविकीरण m. Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) Vjutp. 19.

विमतिसमुद्घातिन् m. N. pr. eines Prinzen Lot. de la b. l. 12.

विमत्सर (2. वि + म°) adj. *keinen Neid —, keine Missgunst —, keinen auf Selbstsucht beruhenden Unwillen an den Tag legend* Bhag. 4, 22. MBh. 3, 12674. 15444. 12, 1469. 14, 2858. Spr. 4886. VP. bei Muir, ST. IV, 331. Bhâg. P. 1, 6, 27. 4, 8, 19. Pañkar. 4, 8, 27. Brahma-P. in LA. (III) 48, 19. Verz. d. Oxf. H. 9, *b*, 6. शत्रावपि Mârk. P. 9, 7.

विमथितर् (von 1. मथ् mit वि) nom. ag. *Würger, Zerfleischer* Çâṅkh. Çr. 13, 3, 4.

विमद (2. वि + मद) 1) adj. *a) nüchtern geworden* R. 5, 64, 4. Pañkat. 37, 22. fg. — *b) brunstfrei:* ein Elephant R. 7, 7, 12. Spr. 2547 (zugleich in der Bed. *c*). — *c) von Hochmuth frei* MBh. 7, 8204. Hariv. 2594. R. 4, 36, 3. Spr. 2547. Bhâg. P. 1, 6, 27. 10, 26, 12. 43, 26. 87, 35. Mârk. P. 115, 4. — 2) m. N. pr. eines Schützlings der Götter; die Açvin verhalfen ihm zu einem Weibe; Liedverfasser von ṚV. 10, 20. fgg., Sohn Indra's oder Praǵâpati's ṚV. Anukr. ṚV. 1, 51, 3. 112, 19. 117, 20. 8, 9, 15. 10, 20, 10. 21, 1. fgg. 23, 7. 39, 7. 65, 12. AV. 4, 29, 4. pl. ṚV. 20, 23, 6.

विमध्य (2. वि + म°) n. *Mitte:* तमसः ṚV. 4, 51, 3. अह्नः 10, 179, 2.

विमनस् (2. वि + म°) 1) adj. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. = विचक्षुस् Trik. 3, 1, 17. *a) mit durchdringendem Verstande begabt* (nach Nir. 10, 26) ṚV. 10, 82, 2. — *b) nicht verständig:* कथा नूनं वां विमना उप स्तवत् ṚV. 8, 75, 2. N. pr. nach Sâj. — *c) ausser sich seiend, bestürzt, entmuthigt, niedergeschlagen* AK. 3, 1, 8. H. 435. Jâǵn. 1, 273 (*zerstreuten Geistes* Stenzler). MBh. 3, 951. 2591. 4, 343. 5, 2184. 7058. 7, 5289. लाभेन च न हृष्येत नालाभे विमना भवेत् 14, 1278. R. 1, 66, 11. 2, 76, 14. R. Gorr. 2, 9, 35. 46. 29, 29. 3, 20, 14. 5, 15, 59. Uttarar. 3, 11 (5, 9). Kathâs. 6, 135. 18, 263. 19, 101. 42, 67. 45, 276. 53, 53. 56, 313. 59, 21. 63,

116. Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,11. Bhâg. P. 3,17,7. 4,2,33. 13,21. 23,3. 25, 11. 26,14. 5,13,8. 9,1,27. 14,32. Pańkar. 1,2,8. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,11, Çl. 41. Pańkat. ed. orn. 41,8. उत्कण्ठा° Kathâs. 17,62. 28,5. 33,4. प्रति° 7,5. — *d) abgeneigt:* प्रज्ञा न विमनास्तस्य R. 3,41,11. — 2) m. N. pr. eines Liedverfassers in VS. Ind. St. 1,294,1 (v. l. विश्वमनस्). — Vgl. वैमनस्य.

विमनस्क adj. (f. आ) = विमनस् 1) c) MBh. 7,8829. 12,13554. Hariv. 7262. 8727. 10355. R. 7,6,51. Bhâg. P. 7,10,60. 10,77,23.

विमनाय् (von विमनस्), विमनायते *ausser sich —, entmuthigt —, niedergeschlagen sein* Sâh. D. 224.

विमनिमन् (wie eben) m. *Bestürztheit, Niedergeschlagenheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123; vgl. 6,4,155.

विमनीकर् (विमनस् + 1. कर्), °कृत *erzürnt, ausser sich gebracht* Spr. (II) 2299.

1. विॅमन्यु (2. वि + म°) m. *Sehnsucht, Verlangen* RV. 1,25,4.

2. विमन्यु (wie eben) adj. *frei von Unmuth, — Groll* Kumâras. 7,93. Bhâg. P. 5,5,2. 15.

विॅमन्युक (von विमन्यु) adj. *nicht grollend, Groll stillend* AV. 6,43,1.

विमय m. = निमय, विनिमय *Tausch* H. 870.

विमर्द (von मर्द् mit वि) m. 1) *Zerdrückung, Zerreibung, Reibung:* दिव्यपुष्प° MBh. 14,2799. 13,4708. AK. 1,1,4,19. H. 1391. शय्योत्तरच्छदविमर्दकृशाङ्गराग Ragh. 5,65. त्रिमार्गगावीचिविमर्दशीत (वायु) 13,20. फलं (कामस्य) पुनः परमाह्लादनं परस्परविमर्दजन्म Daçak. 65,8. *das Stampfen* (mit den Füssen): गजैः कृतं सरः सान्द्रविमर्दकर्दमम् Rt. 1,20. संसर्पद्धलिनी° Kathâs. 121,280. — 2) *feindlicher Zusammenstoss, Kampf:* तुमुल MBh. 1,4075. महा° 3,847. त्वया सह 1633. 5,7303. 4,1396. 5,4260. लक्ष्मणः शत्रुदेवेन विमर्दमकरोद्भृशम् 7,543. 8,1971. 15,288. Hariv. 13254. R. Gorr. 1,46,33. देवासुरविमर्देषु 3,36,8. 5,29,24. 6,18,1. 93,28. त्वया समम् 7,20,5. 32. Vikr. 87,1. °क्षमा भूमिः Uttarar. 102,21 (138,5). बाहु° *Faustkampf* Ragh. 7,49. सिंहशाव° *Balgerei* Çâk. 105,14. — 3) *Aufreibung, Zerstörung, Verwüstung, Vernichtung* MBh. 3,631 (विमर्द ed. Calc.). रथाश्वनरनागानाम् Hariv. 6075. बलस्य R. 3,70,11. महासुर° 4,58,17. विद्याधरगण° Varâh. Bṛh. S. 9,27. अरि° Bṛh. 8,14. तनोः Prab. 74,10. जनस्थान° Ragh. 6,62. R. Gorr. 1,63,2. सस्य° Varâh. Bṛh. S. 5,61. 82. समर° *durch Krieg* 60. — 4) *Störung, Unterbrechung:* परिषत्कुतूहल° Mṛkkh. 1,9. निद्रा° Hit. 30,18. — 5) *Berührung, Verbindung* Sâńkhjak. 46. — 6) *Abweisung, Zurückweisung:* कार्यार्थिनां विमर्दो (= कलह Comm.) हि राज्ञां दोषाय कल्पते R. 7,53,24; vgl. विदारण 3) *d*). — 7) *völlige Verfinsterung* Sûrjas. 4,15. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 13. — 8) *Cassia Sophora Lin.* (vgl. कासमर्द) Ratnam. im ÇKDr. — 9) N. pr. eines Fürsten Mârk. P. 74,5. — Spr. 2866 fehlerhaft für विसर्प oder विसर्ग. — Vgl. अह°.

विमर्दक (wie eben) 1) adj. *aufreibend, zerstörend, vernichtend:* शत्रुसैन्य° Hariv. 13769. प्रमर्दक die neuere Ausg. — 2) m. *a) Cassia Tora Lin.* (vgl. चक्रमर्द) Râǵan. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Mannes Daçak. 70,12.

विमर्दन (wie eben) 1) adj. *a) zerdrückend, drückend:* पीनस्तन° (कर) Sâh. D. 113,15. — *b) aufreibend, zerstörend, vernichtend:* अरि° MBh. 1,5062. Hariv. 5399. 5686. राज्ञ° R. 1,74,17. परसेना° Kathâs. 113,19. शत्रु° Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,35. दुर्गकोटि° Pańkar. 4,3,32 (S. 249). व्याधिसंघ° Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,5.6. — 2) m. N. pr. *a)* eines Râkshasa R. 6,74,4. — *b)* eines Fürsten der Vidjâdhara Kathâs. 48,78. — 3) n. *a) das Zerdrücken, Zerreiben* AK. 3,3,13. Kusum. 1,8. लोष्ट° Âpast. 1,32,28. — *b) feindlicher Zusammenstoss, Kampf:* द्विषतोः Bhâg. P. 3, 18,20. अन्योऽन्यसैन्यविमर्दनैः Prab. 87,16. — *b) das Zerstören, Verwüsten, Vernichten:* परराष्ट्र° Spr. 4752. मेरोः, धर्मस्य MBh. 3,1413.

विमर्दिन् (wie eben) adj. *zerschmetternd, verwüstend, vernichtend:* नगतरुशिखर° (मारुत) Varâh. Bṛh. S. 3,9. शत्रुसंघ° Hit. 1,31 (शत्रुसंघावमर्दिन् MBh. 1,5905). Pańkar. 2,3,57. Verz. d. Oxf. H. 98,*b*,35. क्लम° *zu Nichte machend, entfernend* Çâk. 69, v. l.

विमर्मधनजीवित MBh. 8,876 fehlerhaft für विवर्म°, wie die ed. Bomb. liest.

विमर्श (von मर्श् mit वि) m. 1) *Prüfung, Erwägung, Ueberlegung, Bedenken* Pańkav. Br. 14,10,3. तत्र मे बुद्धिरत्रैव विमर्शे (besser विषये ed. Bomb.) परिमुह्यते MBh. 13,5682. अलं विमर्शेन R. 4,9,107. 53,23. विशेषापेक्षो विमर्शः संशयः Njâjas. 1,1,23. प्रत्ययः स्त्रीषु मुष्णाति विमर्शं विदुषामपि Kathâs. 20,124. 105,19. Çańk. zu Khând. Up. S. 15. प्रतिक्रीर्षुः स्म रोषेण विमर्शेन निवारितः Râǵa-Tar. 3,510. विमर्शवशमापन्नः R. 6,101,22. विमर्शैर्बहुभिर्युक्तश्चिन्तयामास 92,28. °युक्त MBh. 5,7514. तेषां त्रयाणां विविधं विमर्शं विबुध्य 12,3178. पञ्चानामेकपत्नीत्वे विमर्शो द्रुपदस्य च 1,391. विमर्शं संकरादाने नायं कुर्यात्कदा च न 6371. कार्यस्य न विमर्शं च गन्तुमर्हसि R. 1,20,23. 5,89,72. Mârk. P. 23,24. °शील Hariv. 1176. °च्छेदि (v. l. संशयच्छेदि) वचनम् Çâk. 35,13, v. l. Sarvadarçanas. 169,6. अ° adj. Kathâs. 61,185. स° adj. (f. आ) 39,40. 45,293. R. 6,99,37. सविमर्शम् adv. 20. Çâk. 58,4. *Erörterung* Prab. 112,12. fg. Sarvadarçanas. 97,3. 158,6. — 2) *Intelligenz* Sarvadarçanas. 94,10. तस्य चिद्रूपत्वमनवच्छिन्नविमर्शत्वम् 9. unter den Beiww. Çiva's MBh. 13, 1235. — 3) in der Dramatik so v. a. *Knoten* Bhar. Nâṭjaç. 19,28. 35. 41. 88. Daçar. 3,54. Sâh. D. 321. 336. निर्विमर्श Daçar. 3,53. — Vgl. दुर्विमर्श, निर्विमर्श und विमृश. Häufig ungenau विमर्ष geschrieben.

विमर्शन (wie eben) 1) m. N. pr. eines Fürsten der Kirâta Verz. d. Oxf. H. 74,*a*,29 (mit ष geschrieben). — 2) n. *Prüfung, Erwägung, Untersuchung* H. 322. Bhâg. P. 6,1,11 (= ज्ञान Comm.). तत्त्व° 5,12,4. 7, 11,9. Verz. d. Oxf. H. 210,*b*, No. 497, Z. 6.

विमर्शिन् (wie eben) adj. *prüfend, erwägend, untersuchend* Sarvadarçanas. 90,19. सुतोद्वाह° Kathâs. 34,131. — Vgl. अलंकारविमर्शिनी, गणेश°, विवृति°.

विमर्ष (Gaṭâdh. im ÇKDr.), विमर्षण und विमर्षिन् s. विमर्श u. s. w.

विमल (2. वि + मल) 1) adj. (f. आ) *rein* (auch in übertr. Bed.), *klar, blank* AK. 3,2,5. H. 1436. an. 3,684. Med. l. 130. fg. Halâj. 1,132. वारि, जल, उदक, स्रोतांसि Çikshâ 58 in Ind. St. 4,369. R. 2,27,18. 48, 13. 63,18. Suçr. 1,173,1. Spr. 2520. 2936. Weber, Kṛshṇaǵ. 269. Varâh. Bṛh. S. 56,4. °स्नेहवर्ति 84,1. ओदन Suçr. 1,229,18. पद्मिन्यः R. 3,15,42. °पङ्कजा (नदी) MBh. 3,11063. नभस्, गगन, वियत् R. 4,39,3. 6,92,81. Râǵa-Tar. 3,374. Suçr. 1,23,3. 113,19. Varâh. Bṛh. S. 21,14. 47,23. दिशः 28,4. R. 7,99,12. रात्रि MBh. 4,1068. विषः Çiç. 9,13. वियद्विमलतारकम् Pańkat. III,147. भानि Varâh. Bṛh. S. 31,5. द्युति 3,27.

6,13. शशिन् R. 2,101,12. चन्द्रांशु° R. Gorr. 2,12,9. प्रभा सौरी 38,17. उदये विमलो रविः 2,21. विमले ऽभ्युदिते सूर्ये R. Schl. 2,54,1. प्रभाते विमले सूर्ये 86,21. प्रभाते विमले 1,26,1. 45,5 (46,5 Gorr.). प्रभातसमये भानुना विमले कृते Weber, Kṛshṇaǵ. 308. विमले so v. a. *mit Anbruch des Tages* MBh. 5,7247. आदित्यविमलौ खड्गौ R. 2,31,30. खड्गौ च विमलाकाशवर्चसौ R. Gorr. 2,31,25. मूल 5,39,10. शक्ति MBh. 5,7278. स्फटिकं विमलं द्रव्यं *klar, durchsichtig* Sarvadarçanas. 144,3. विमलेभ *ein weisser Elephant* Çatr. 3,5. जलधराः Hariv. 3822. नेत्र, ईक्षण, दृष्टि R. 2,59,16. Spr. 2146 (II). 2209. नरेन्द्रपत्नी विमला बभूव सा तमोवृता द्यौरिव नष्टभास्करा R. Gorr. 2,8,60. अन्तर्वेदयः *rein, lauter* 4,41,14. कुल Spr. (II) 2199. Mârk. P. 60,13. दान Gâruḍa-P. 51 im ÇKDr. ब्रह्मन् Spr. 1756. ज्ञान Sarvadarçanas. 22,3. Bhâg. P. 4,25,5. मति 1,15,28. 8,4,25. Spr. 4998. बुद्धि Suçr. 1,14,4. धी Pańkar. 3,9,1. शब्दशास्त्रं स्फुटपदविमलम् Spr. 1530. स्वाध्यायपयज्ञ 3124. सु° 990 (कान्ति). Suçr. 1,188,3 (शर्करा). — 2) m. *a*) Bez. des *Mondjahrs* Weber, Nax. II, 281. — *b*) *ein best. über Waffen gesprochener Zauberspruch* R. 1,30,6. — *c*) *eine best. Vertiefung* (समाधि) Vjutp. 18. Lot. de la b. l. 269. — *d*) N. pr. eines Arhant H. an. des 5ten in der vergangenen Utsarpiṇî H. 51. des 13ten in der gegenwärtigen Avasarpiṇî 27. ein Devaputra und Bodhimaṇḍapratipâla Lalit. ed. Calc. 346,10. ein Bhikshu 1,10. ein Bruder des Jaças Schiefner, Lebensb. 18 (248). ein Autor mystischer Gebete bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,34. *b*,14. ein Asura Kathâs. 47,24. ein Fürst 56,82. ein Sohn Sudjumna's Bhâg. P. 9,1,41. Vater des Padmapâda Verz. d. Oxf. H. 255,*a*,9. — Kathâs. 80,11. — *e*) N. pr. einer Welt Lot. de la b. l. 161; vgl. 3) *e*). — 3) f. आ *a*) *eine best. Pflanze*, = चर्मकशा AK. 2,4,5,9. Med. — *b*) Bez. einer Çakti Weber, Râmat. Up. 325. fg. — *c*) N. der Dâkshâjaṇî in Purushottama Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,8. N. pr. der Gottheit im Garten Vimalavjûha Lalit. ed. Calc. 139,2 v. u. — *d*) N. pr. einer Tochter der Gandharvî MBh. 1,2632. — *e*) = भुवो भेदः Med. N. einer der 10 Erden bei den Buddhisten Vjâḍi beim Schol. zu H. 233. Vjutp. 28. Daçabhûm. 32. विमलायां लोकधातौ Lalit. ed. Calc. 363,3. — 4) n. *a*) *mit Silber versetztes Gold* Râǵan. im ÇKDr. — *b*) N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,15. fg. — *c*) N. pr. einer Stadt (vgl. विमलपुर) Kathâs. 110,2.

विमलक (von विमल) m. *ein best. Edelstein* Varâh. Bṛh. S. 80,4. °मणिपीताभ 5,57.

विमलकीर्ति m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten, Verfassers eines Sûtra, Wassiljew 152. 222. Hiouen-thsang I, 385. 387. Vie de Hiouen-thsang 135. 232. °निर्देश m. Titel eines Mahâjânasûtra Vjutp. 41.

विमलगर्भ m. 1) N. pr. eines Prinzen Lot. de la b. l. 268. fgg. eines Bodhisattva Vjutp. 22. — 2) Bez. einer Meditation Lot. de la b. l. 254.

विमलचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 53. fg. Târan. 2. 172. 195.

विमलता (von विमल) f. *Reinheit, das Hellsein, Klarheit:* ततः प्रभाते — सूर्ये विमलतां गते MBh. 5,7217. Varâh. Bṛh. S. 5,90. मति° Spr. (II) 2441 (Conj.).

विमलत्व (wie eben) n. dass.: सर्वज्ञतेव विमलत्वमपीह हेतुः Verz. d. Oxf. H. 259,*b*,27. fg.

विमलदत्ता f. N. pr. einer Fürstin Lot. de la b. l. 268. fgg.

विमलनाथपुराण n. Titel eines Ǵaina-Werkes Verz. d. Oxf. H. 372, 6, No. 267.

विमलनिर्भास m. Bez. *einer best. Vertiefung* Lot. de la b. l. 269.

विमलनेत्र m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 14. eines Fürsten 268. fgg.

विमलपिण्डक m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1553.

विमलपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 56,86. — Vgl. विमल 4) *c*).

विमलप्रदीप m. Bez. *einer best. Vertiefung* (समाधि) Vjutp. 17.

विमलप्रभ 1) m. *a*) N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 363,34. eines Devaputra Çuddhâvâsakâjika ed. Fouc. 279. अ° ed. Calc. 334,2. — *b*) N. einer Meditation Vjutp. 17. Lot. de la b. l. 254 (hier fehlerhaft f. आ). — 2) f. आ N. pr. einer Fürstin Râǵa-Tar. 3,384.

विमलप्रभासश्रीतेजोराजगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhûm. 2.

विमलबुद्धि m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 69,19.

विमलबोध m. N. pr. eines Commentators des Mahâbhârata Verz. d. B. H. No. 392. des Râmâjaṇa R. Gorr. I, cxxxi. 353. III, 469.

विमलभद्र m. N. pr. eines Mannes Târan. 229.

विमलभास m. Bez. *einer best. Vertiefung* Lot. de la b. l. 269.

विमलमणि m. *Krystall* Râǵan. im ÇKDr.

विमलमणिकर m. N. pr. einer buddh. Gottheit Kâlakakra 3,140.

विमलमित्र m. N. pr. eines buddhistischen Gelehrten Hiouen-thsang I, 228. Vie de Hiouen-thsang 108. Târan. 225. Burnouf in Lot. de la b. l. 358.

विमलय् (von विमल), °यति *rein —, klar machen:* दिनमुखानि रविर्हिमनिग्रहैर्विमलयन् Ragh. 9,25. मलिनयितुं खलवदनं विमलयति जगन्ति देव कीर्तिस्ते Kuvalaj. 131,*a*. विमलितरणभाल Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 16.

विमलवाहन m. N. pr. zweier Fürsten Çatr. 3,5. 14,318.

विमलवेगश्री m. N. pr. eines Fürsten der Garuḍa Vjutp. 88.

विमलव्यूह N. pr. eines Gartens Lalit. ed. Calc. 139,7.

विमलश्रीगर्भ m. N. pr. eines Bodhisattva Daçabhûm. 2.

विमलसंभव m. N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 308 (78). विमलस्वभव (!) Târan. 300. — Vgl. विमलाद्रि.

विमलसरस्वति (wohl °ती) m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 48.

विमलस्वभाव m. N. pr. eines Berges Târan. 300 (°स्वभव gedr.). — Vgl. विमलसंभव.

विमलाकर (विमल + आ°) m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 71,67.

विमलाग्रनेत्र m. N. pr. eines zukünftigen Buddha Lot. de la b. l. 17.

विमलात्मक (विमल + आत्मन्) adj. *dessen Natur rein* u. s. w. *ist, rein, hell, klar* AK. 3,2,5.

विमलात्मन् adj. dass.: चन्द्रमस् R. 3,35,52.

विमलादित्य (विमल + आ°) m. *die klare Sonne*, Bez. *einer best. Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,7. 35.

विमलाद्रि (विमल + अ°) m. N. pr. eines *Berges* H. 1030.

विमलानन्दभाष्य n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104,*a*,22.

विमलार्थक adj. angeblich = विमलात्मक Râjam. zu AK. 3,2,5 nach ÇKDr.

विमलाशोक N. pr. eines Wallfahrtsortes MBH. 3,8047.

विमलाश्या f. N. pr. eines Dorfes RÂGA-TAR. 4,711.

विमलीकार् (विमल + 1. कार्) *reinigen, läutern;* davon °करण *Reinigung, Läuterung,* Bez. einer der zehn Zurichtungsweisen (संस्कार, संस्क्रिया) eines Zauberspruches ÇÂRADÂTILAKA in SARVADARÇANAS. 170,11. संचित्य मनसा मन्त्रं ज्योतिर्मन्त्रेण निर्दहेत्। मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं हि तत्॥ 22. 171,1; vgl. Verz. d. Oxf. H. 98,*b*,15. fg. 23. fg.

विमलेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,16. 67,*b*,18.

विमलेश्वरपुष्करिणीसंगमतीर्थ n. desgl. ebend. 66,*a*,16. fg.

विमलोग्य n. N. eines Tantra ebend. 109,*a*,16.

विमलोदका f. N. pr. eines Flusses MBH. 9,2189. विमलोदा 2214.

विमस्तकित (von 2. वि + मस्तक) adj. *enthauptet* WILSON.

विमहत् (2. वि + म°) adj. *überaus gross* INDRAL. 1,34. सुमहत् st. dessen MBH. 3,1747.

वि॑मह्स् (2. वि + 1. म°) adj. etwa *ergötzlich, lustig:* die Marut ṚV. 1,86,1. 5,87,4.

वि॑मह्री adj. nach SÂJ. *sehr gross* (sc. देवाः): इन्द्रमिद्विमह्रीनां मेधे वृणीत मर्त्यः ṚV. 8,6,44. könnte *erheiternd, begeisternd* (so v. a. *geistige Getränke*) bedeuten.

विमांस (2. वि + मांस) n. *schlechtes Fleisch* JÂGN. 2,297.

विमातर् (2. वि + मा°) f. gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. *Stiefmutter:* विमातृज AK. 2,6,1,25. H. 546. KULL. zu M. 9,118. — Vgl. वैमात्रेय.

विमाथ॑ (von 1. मथ् mit वि) m. *das Schütteln, Balgerei:* विमाथं कुर्वते वाजसृतः TBR. 1,3,8,4. ÇAT. BR. 3,8,2,36.

विमाथिन् (wie eben) adj. *niederschmetternd:* अथ तेषां दत्तसुखां तथान्तरविमाथिनीम्। दैवस्येव गतिं तत्र तस्थौ शोचन्स तां प्रियाम्॥ KATHÂS. 10,139.

1. विमा॑न (von 2. मा mit वि) 1) adj. (f. ई) *durchmessend, durchziehend, von einem Ende zum andern reichend;* gewöhnlich in Verbindung mit रजसस्. रजसो विमानं सप्तचक्रं रथम् ṚV. 2,40,3. 3,26,7. 7,87, 6. 10,95,17. 121,5. AV. 9,3,15. पन्थाः: 4,2,3. Soma ṚV. 9,62,14. Gandharva 10,139,5. अर्कम् 9,86,45. विमाने एष दिवो मध्ये आस्त आपप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् VS. 17,59. die Açvin MBH. 1,722 (विगतं मानं प्रमाणसाधनं ययोस्तौ NILAK.). — 2) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Verz. d. Oxf. H. 191,*b*,4. SIDDH. K. 249,*a*,10. *a*) *ein durch die Luft fliegender palastähnlicher Wagen der Götter* (in den Märchen überh. *ein durch die Luft fahrender Wagen*) AK. 1,1,1,43. 66. H. 89. 190. an. 3, 417. MED. n. 129. HALÂJ. 1,83. MBH. 1,1257. 4649. 4831. 3,1745. 2134. 11920. 5,3616. 5180. R. 1,44,20. 70,3. 2,27,9. 64,48. R. GORR. 1,5,10. 13. 3,48,6. 54,6. 5,13,2. 6,106,10. SUÇR. 1,113,20. RAGH. 12,104. 13,1. KUMÂRAS. 2,45. VIKR. 4,1. 11,17. Spr. 2180. PAÑKAT. III, 184. KATHÂS. 29,49. 46,122. fgg. °च्युतो ऽमर्त्यः RÂGA-TAR. 4,72. BHÂG. P. 2,9,12. 3, 15,20. 16,31. 23,12. 37. fg. 4,3,6. 9,10. 56. 5,1,8. 17,4. 6,8,37. MÂRK. P. 15,67. PAÑKAR. 1,7,46. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,26. नौ° *schiffförmig* RAGH. 16,68. विमानप्रतिमां तत्र मयेन सुकृतां सभाम् MBH. 1,132. 2,13. °प्रतिमः प्रासादः 13,2832. °प्रतिमं गृहम् Verz. d. Oxf. H. 32,*a*,5. तारा° Ind. St. 10,312. fg. — *b*) *ein kaiserlicher Palast,* = सार्वभौमगृह H. an. MED. *ein siebenstöckiger Palast* NIGHAṆṬU beim Schol. zu R. ed. Bomb. 1,5,16. *eine Kapelle von best. Form* VARÂH. BṚH. S. 56,17. जालगवाक्षकयुक्तो विमानसंज्ञस्त्रिसप्तकायामः 22. — वातायन° MBH. 5,3998. R. 1,5, 13. 2,33,3. 59,15. R. GORR. 2,59,13. 3,36,3. MEGH. 64. 70. RAGH. 17, 9. KUMÂRAS. 7,40. °गृह R. ed. Bomb. 1,5,16. Heut zu Tage bezeichnet das Wort *eine Art Thurm;* vgl. Mrs. MANNING, Anc. and Med. India I, 425. Diese Bed. kann das Wort in अन्तःपुरविमानेषु R. 5,52,8 haben. — *c*) *Schiff, Boot* (यानपात्र) MED. — *d*) *Pferd* MED. — 3) n. *a*) etwa *Ausdehnung* (wenn überhaupt der Text richtig ist): रजसः ṚV. 10,123, 1. Vgl. अभि°. — *b*) *Maass, Maassstab:* वि मानैमग्निर्वयुनं च वाघताम् ṚV. 3,3,4. Bez. einer der acht स्थान im Âjurveda MADHUS. in Ind. St. 1,21,2. wohl *die Lehre von Maass und Gewicht.* — *c*) *das Messen:* वेदि° ÇAT. BR. 10,2,3,10. — Vgl. वैमानिक.

2. विमान (von मन् mit वि) m. *Geringachtung:* अ° *Verehrung:* विप्राणाम् HARIV. 12039.

3. विमान (2. वि + 1. मान) adj. *der Ehre baar, entehrt, geschändet* BHÂG. P. 5,13,10.

विमानक 1) = 1. विमान 2) *a*) KATHÂS. 43,274. 46,31 (am Ende eines adj. comp.). वातयन्त्र° 43,44. यन्त्र° 201. — 2) = 1. विमान 2) *b*) R. 2, 80,20. nach dem Comm. *ein siebenstöckiger Palast,* eher *Thurm.*

विमानता f. nom. abstr. zu 1. विमान 2) *a*) VIKR. 137. KATHÂS. 119,72. — Hier und da fälschlich für विमानना, z. B. Spr. (II) 196, v. l. 446, v. l.

विमानत्व n. dass. KATHÂS. 119,79.

विमानन (vom caus. von मन् mit वि) n. und f. आ. 1) *Geringschätzung, geringschätzige Behandlung, Beschimpfung:* विमाननात्तयोः (des Brahmanen und des Kriegers) MBH. 12,2779. स्वयूथस्य KÂM. NÎTIS. 15,26. प्राप्ता विमाननाश्चोग्राः MBH. 14,443. उदधेरिव निम्नगाशतेष्वभवन्नास्य विमानना क्वचित् RAGH. 8,8. KUMÂRAS. 5,43. Spr. (II) 196 (Conj.). पद्यानाम् 446 (Conj.). (I) 2125. Gegens. संमानना 4564. मया विमानना प्राप्ता KATHÂS. 25,2. अन्वभावि तदग्रे ऽपि ब्राह्मणैर्न विमानना RÂGA-TAR. 4,640. 5,339 (mit der ed. Calc. विमाननावि° zu lesen). विमानननोत्तप्त° 6,277. मित्राणां चाविमानना Spr. 4714, v. l. Am Ende eines adj. comp.: अत्तज्ञातविमानना KATHÂS. 15,72. आत्तविमानना 91,19. — 2) *das Versagen, Abschlagen:* दौर्हृदविमानन SUÇR. 1,322,13. दौर्हृदे विमानना 21.

विमानपाल m. *Hüter eines Götterwagens* MBH. 3,4046.

विमानयितव्य (vom caus. von मन् mit वि) adj. *gering zu schätzen, zu beschimpfen* MBH. 12,4326.

विमानुष (2. वि + मा°) adj. *mit Ausschluss der Menschen* VARÂH. BṚH. S. 86,28.

विमान्य adj. = विमानयितव्य ÇÂK. 116.

वि॑माय (2. वि + माया) adj. *der Zauberkraft beraubt* ṚV. 10,73,7.

1. विमार्ग (2. वि + मार्ग) m. *Abweg* (eig. und übertr.): चरन्विमार्गान् MBH. 5,1582. °स्थो महाविष 8,662. विमार्गे स्थितः R. 5,89,35. °प्रस्थित ÇÂK. 105. °गमन SUÇR. 1,81,21. 263,7. °ग 2,401,4. °दृष्टि *in falscher Richtung blickend* 532,8.

2. विमार्ग (wie eben) adj. *auf Abwegen sich befindend* MBH. 13,341. धर्मात्मानो महात्मानो विमार्गपरिपन्थिनः MÂRK. P. 37,3.

3. विमार्ग (von 1. मर्ज् mit वि) m. *Besen* oder *Bürste* ÇKDR. und WILSON ohne Angabe einer Aut.

विमित s. u. 1. मि mit वि und दीक्षित°.

विमिथुन (2. वि + मि°) adj. *mit Ausschluss der Zwillinge* VARÂH. BṚH. 1,10. LAGHUǴ. 1,20 in Ind. St. 2,282.

विमिश्र (2. वि + विश्र) adj. (f. श्रा) 1) *vermischt, vermengt, nicht gleichartig:* कृपा गजाः पदाताश्च विमिश्रा दन्तिभिर्हताः MBH. 6,4050. गजैर्गजा हयैरश्वाः पदाताश्च पदातिभिः । रथै रथा विमिश्राश्च योधा युयुधिरे ततः ॥ HARIV. 5093. VARÂH. BṚH. S. 77,5. 86,16. 98,11. BṚH. 12,5. *vermischt —, versehen —, verbunden mit;* die Ergänzung *a*) im instr.: रसोत्तमैर्घृतम् MBH. 1,1139. मुतेन सोमेन विमिश्रतोयां पयोष्णीम् 3,10290. PAŃKAR. 3,10,22. 11,8. पुंभिर्विमिश्रा नार्यश्च MBH. 8,1841. HARIV. 4998. MÂRK. P. 57,15. रथौघानां शब्दो विमिश्रो दुन्दुभिस्वनैः MBH. 6,2423. 2893. 3869. BHÂG. P. 10,38,12. — *b*) im comp. vorangehend: ग्रसृग्विमिश्र SUÇR. 1,285,7. 370,11. 2,109,1. MBH. 1,4951. 4954. VARÂH. BṚH. S. 48,38. 54,119. 67,5. नीलोत्पल° (सरस्) MBH. 13,3824. 4089. अर्करश्मिविमिश्रेषु शस्त्रेषु 7,3516. BHÂG. P. 1,19,6. वाचा शोककर्षविमिश्रया R. 5,33,17. व्रीडाविमिश्रालसा VARÂH. BṚH. S. 78,12. GÎT. 5,18. — 2) Bez. *einer der 7 Theile, in welche die Bahn des Mercurs nach* Parâçara *getheilt wird,* VARÂH. BṚH. S. 7,8.

विमिश्रक (von विमिश्र) adj. *gemischt, mannichfaltig;* so heisst ein Kapitel in der Jâtrâ VARÂH. BṚH. 28(26),4.

विमिश्रित (wie eben) adj. *gemischt:* °लिपि Bez. *einer best. Schrift* LALIT. ed. Calc. 144,10. fg.

विमुक्त 1) adj. s. u. 1. मुच् mit वि und vgl. अविमुक्त und वैमुक्त. — 2) f. आ = मुक्ता *Perle* SHADV. BR. 5,6.

विमुक्तता (von विमुक्त) f. *das Aufgehen, Verlorengehen:* धनस्य KÂM. NÎTIS. 14,43.

विमुक्तसेन m. N. pr. eines buddhistischen Lehrers TÂRAN. 127 u. s. w.

विमुक्ति (von 1. मुच् mit वि) f. 1) *das Lösen* (Gegens. युक्ति) AIT. BR. 6,23. — 2) *das Vonsichlassen, Entlassen:* कृतप्राण° KUMÂRAS. 3,59. — 3) *Befreiung, das Befreitwerden:* आत्म° Spr. 501 (II). 1275. KATHÂS. 10,146. कर्मणो विगर्हितात् Spr. 111 (II). देह° *vom Körper* KUMÂRAS. 4,39. क्लेश° MÂRK. P. 96,28. *Befreiung von den Uebeln der Welt, Erlösung* TAITT. UP. 3,10,2. RAGH. 10,24. Spr. 1769 (II). 4089. PRAÇNOTTARAM. 2. BHÂG. P. 3,23,57. 4,8,61. 5,5,2. 7,9,44. 8,3,19. 24,46. 10,9,20. MÂRK. P. 41,26. 76,40. PAŃKAR. 4,3,134. NÎLAK. 34. Lot. de la b. l. 824. fgg.

विमुक्तिचन्द्र m. N. pr. eines Bodhisattva DAÇABHÛM. 2.

विमुख (2. वि + मुख) 1) adj. (f. आ) *a*) *das Gesicht abwendend, rückwärts gerichtet:* विमुखा बान्धवा यान्ति *kehren um, gehen heimwärts* Spr. 2238. यस्यार्थिनो वा शरणागता वा नाशाभिन्ना विमुखाः प्रयान्ति 3054. HARIV. 3916. द्रुतं जगाम विमुखः 3750. विमुखान्क्षात्रवान्सर्वान्कारयिष्यति मे सुतः *in die Flucht schlagen* MBH. 1,2755. विमुखो ऽभवद्रणे 5491. 3,12109. 15741. 6,2909. 7,1745. fg. जग्मुर्विषादविमुखा रणे HARIV. 11053 (S. 791). भीतान्यस्त्राणि सर्वाणि विमुखानि क्षणाद्ययुः KATHÂS. 118,84. — *b*) *das Gesicht im Unmuth,* insbes. *in Folge einer vereitelten Hoffnung von Jmd* (gen.) *abwendend, abgewiesen, unverrichteter Sache abziehend:* यस्यार्थिनो न विमुखाः Spr. 5145. विमुखो ऽर्थी न याति मे KATHÂS. 41,48. 123,263. दिवातिथौ तु विमुखे गते VP. bei KULL. zu M. 3,105. MÂRK. P. 13,12. 15. — *c*) *sich abwendend von Etwas, grollend, einer Person oder Sache abgeneigt, Nichts wissen wollend von:* दुर्मना विमुखश्चैव परिचक्राम तां सभाम् MBH. 2,1665. न ते ऽहं विमुखः HARIV. 10858. R. 3,41,11. MÂLAV. 44,5. Spr. 445 (II). BHÂG. P. 10,53,25. विधि *widerwärtiges Geschick* Spr. (II) 2310, v. l. अत्यन्त° 169. विमुखार्थसुत VARÂH. BṚH. S. 104,39. दरिद्रभावाद्विमुखं मित्रम् *den Rücken kehrend* Spr. 1630. न क्षुद्रो ऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः *sich abwendend von* MEGH. 17. क्रोरे क्रौ Verz. d. Oxf. H. 10,*a*, N. 2. BHÂG. P. 10,23,39. कृरेः कथायाम् 3,5,14. 32,18. विवाहे KATHÂS. 43,254. साधूनामुपरि Spr. 2380. कृष्णात् *sich von* Kṛshṇa *abwendend* BHÂG. P. 3,1,13. 5,3. स्वजनवधात् *abstehend von* 1,9,36. भवतः प्रसङ्गात् — विमुखेन्द्रियाः 3,9,7. 4,2,21. 6,3,28. ततो विमुखचेतसः 7,9,43. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: सौधोत्सङ्गप्रणाय° MEGH. 28. समर° 50. स्तनित° (so v. a. *sich enthaltend*) 95. ग्रन्यकार्य° RAGH. 19,47. व्यापारविमुखेन चेतसा MÂLAV. 28,15. शास्त्र° Spr. 1802. PAŃKAT. 3,13. SÂH. D. 5,19. 16,1. Spr. (II) 2063, v. l. (I) 1812. 3268. जलमुचि वितरणविमुखे (II) 2359. KATHÂS. 30,8. अन्यपत्नी° 32,122. 191. 45,96. 113. 46,149. PRAB. 16,5. BHÂG. P. 3,9,10. मद्याज्ञा° 4,27,22. 7,9,10. PAŃKAR. 1,2,60. 6,49. 10,11. 4,2,30. Verz. d. Oxf. H. 109,*b*, No. 170. करुणाविमुखेन मृत्युना so v. a. *kein Mitleid kennend* RAGH. 8,66. मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्ति 16,8. सुखं धैर्यविमुखम् so v. a. *ohne Bestand* Spr. 5319. — *d*) *ohne Mündung* (gemessen) ÇÂRṄG. SAṂH. 3,11,100. — *e*) *des Gesichtes* d. i. *des Kopfes beraubt* HARIV. 2755. — *f*) Bez. eines best. Spruches (VS. 17,86. 39,7) KÂTJ. ÇR. 18,4,24. 20,8,5. — 2) m. N. pr. eines Muni R. 7,1,3; v. l. विमुच. — ऽविमुखं MBH. 15,93 fehlerhaft für ऽभिमुखं, wie die ed. Bomb. liest.

विमुखता (von विमुख) f. *das Sichabwenden von, Abgeneigtheit gegen:* विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये GÎT. 9,10. धर्मं प्रति ÇÂK. 66,2. बाह्यमेय° SÂH. D. 23,9.

विमुखीकर् (विमुख + 1. कर्) 1) *Jmd in die Flucht schlagen* MBH. 6,1909. 4181. 7,1719. HARIV. 9307. R. 7,23,35. 29,30. — 2) *Jmd ziehen lassen, abweisen* R. 1,68,6. 76,19 (77,51 GORR.). — 3) *Jmd gleichgiltig gegen Etwas machen:* कोपविमुखीकृतगतुकामा KAURAP. 36. — 4) *vereiteln, zu Nichte machen:* °कृतविक्रम R. 6,80,27.

विमुखीभाव (von विमुखीभू) m. *Abneigung* GÎT. 10,13.

विमुखीभू (विमुख + 1. भू) 1) *den Rücken wenden, die Flucht ergreifen* RAGH. 5,48. — 2) *sich von Jmd abwenden, Nichts wissen wollen von Jmd:* सुहृदः Spr. 1144.

विमुग्ध s. u. 1. मुह् mit वि; davon °ता f. *Einfältigkeit, Dummheit* Spr. 2858.

विमुच् (1. मुच् mit वि) f. *das Losspannen, Ausschirren; Einkehr* ṚV. 5,46,1. AV. 6,112,3. KÂTJ. ÇR. 2,2,23. विमुचो नपात् *Sohn der Einkehr* heisst Pûshan, der zur glücklichen Ankunft hilft, ṚV. 1,42,1. 6,55,1.

विमुच (von 1. मुच् mit वि) m. N. pr. eines Ṛshi MBH. 12,7594. R. in Verz. d. Oxf. H. 122,7. — Vgl. विमुख 2).

विमुञ्ज (2. वि + मु°) adj. *ohne Blattscheide:* ein Halm ÇAT. BR. 4,3,3,16.

विमुद् *eine best. hohe Zahl* Mél. asiat. 4,639.

विमुद्र (2. वि + मुद्रा) adj. *aufgeblüht* H. 1129.

विमूढ s. u. 1. मुह् mit वि; davon °क n. Bez. *einer Art von Posse*

BHÂR. NÂṬJAÇ. 18,118. 127. vielleicht fehlerhaft für द्विमूढक und dieses eine Variante von द्विगूढक.

विमूति SÂH. D. 19,1 fehlerhaft für विभूति *Asche.*

विमूर्छन n. = मूर्छन 5): सप्तस्वर° HARIV. 4635.

विमूर्त s. u. मूर्छ् mit वि.

विमूर्धज (2. वि + मू°) adj. *haarlos (auf dem Kopfe)* MBH. 10,389.

विमूल (2. वि + मूल) adj. *entwurzelt* (eig. und übertr.) HARIV. 3465.

विमूलन (von विमूलय्) n. *das Entwurzeln:* युष्मन्मूल° ÇATR. 14,332.

विमूलय् (von विमूल) *entwurzeln;* s. विमूलन.

विमृग (2. वि + मृग) adj. *kein Thier des Waldes habend:* अरण्य R. 7,77,1.

विमृग्य (von मृगय् mit वि) adj. *zu suchen, aufzusuchen:* दुक्तिभिः पतयः समाः BHÂG. P. 3,23,52. महद्विमृग्यकैवल्य 7,10,48. 15,27. 76. 10,47,62. 85,45. 11,2,53. 19,8. PAÑKAR. 3,3,2. Verz. d. Oxf. H. 256,a,30.

विमृग्वन् (von 1. मर्ज् mit वि) adj. (f. °मृग्वरी) *reinlich* AV. 12,1,29. 35. 37. KAUÇ. 137.

विमृत्यु (2. वि + मृ°) adj. *dem Tode nicht unterliegend, unsterblich* KHÂND. UP. 8,7,1 (SARVADARÇANAS. 54,22). MAITRJUP. 6,4. 25.

विमृध् (von मर्ध् mit वि) nom. ag. 1) *Verächter, Feind:* विमृधो (gen.) वशी heisst Indra RV. 10,152,2. nachgebildet AV. 8,5,4. 22. — 2) *Abwehrer des Verächters,* technisch gewordener Bein. Indra's mit Anknüpfung an die Worte des Liedes वि नं इन्द्र मृधो जहि VS. 8,44. ÇAT. BR. 4,6,4,4. 11,1,5,1. KÂTJ. ÇR. 4,5,24. — Vgl. वैमृध.

विमृध adj. so v. a. विमृध् 2): तनू des Indra TS. 2,4,2,1.

विमृश (von मर्श् mit वि) m. = विमर्श *Prüfung, Erwägung, Ueberlegung, Bedenken* BHÂG. P. 3,16,36. 4,22,21.

विमृश्य (wie eben) adj. *zu prüfen, zu untersuchen* BHÂG. P. 10,85,23.

1. विमृष्ट von मर्ज् mit वि; s. das. विमृष्टान्तरांसा (nach dem Comm. विमृष्ट so v. a. न्यून) *bei welcher der Raum zwischen den Schultern etwas eingesenkt ist* ÇAT. BR. 1,2,5,16.

2. विमृष्ट von मर्श् mit वि; s. das. अविमृष्टविधेयांश n. N. einer Redefigur: *unmotivirte Bezeichnung einer kleineren Zahl durch Theilung einer grösseren;* Beispiel: व्यर्धाष्टार्धार्धवाह्ननाममीषामीदृशीं दृशाम्। कथं सकामके PRATÂPAR. 61,a,8. b,4. अष्टार्धार्ध = द्वि.

विमोक (von 1. मुच् mit वि) m. 1) *das Ausspannen; Lösung, Beendigung:* तर्पसः TBR. 2,7,12,1. यद्दि यज्ञस्य ब्रह्मणा युज्येत ब्रह्मणा वै तस्य विमोकः 3,3,10,4. TS. 1,7,4,4. AV. 16,3,4. — 2) *Befreiung:* गवामिन्द्रेण SÂJ. zu RV. 5,45,1. दुःखात् *vom Schmerz* Schol. zu KAP. 1,4. नहि ज्ञाद्यार्तस्य ज्ञाद्यविमोको जलाभिषेकात् zu 85. *Befreiung von der Welt, — von der Sinnlichkeit* SARVADARÇANAS. 59,11. विमोकः कामानभिषङ्गः 14.

विमोकम् (wie eben) absol. *so dass die Zugthiere gelöst* d. h. *umgespannt, gewechselt werden:* महान्तमध्वानं विमोकं समश्नुवन्ति ÇAT. BR. 6,7,4,12. TS. 7,5,1,5. KÂTJ. ÇR. 18,6,18. Eben so उपविमोकम्: अग्नीवानकुद्विर्वान्यैरन्यैरश्रान्ततरैरश्रान्ततरै रुपविमोकं यान्ति AIT. BR. 4,27. 6,26.

विमोक्तृ (wie eben) nom. ag. *der Abspannende* VS. 30,14. °क्त्री f. TBR. 3,7,11,1.

विमोक्तव्य (wie eben) adj. 1) *frei zu geben, den man laufen lassen darf:* अमित्रो न विमोक्तव्यः Spr. (II) 523. नाहं युधि विमोक्तव्यः MBH. 6,3927. — 2) *aufzugeben, was man fahren lassen muss:* क्रोधलोभौ R. 2,28,24. — 3) *zu werfen, zu schleudern, abzuschiessen:* अस्त्रं मनुष्येषु MBH. 1,5526. केशवाय शक्तिः 7,8298.

विमोक्य (wie eben oder von विमोक) adj. s. अ°.

विमोक्ष (von मोक्ष् mit वि) m. 1) *das Sichlösen, Aufgehen:* नद्ध° PÂR. GṚHJ. 1,10,1 (Ind. St. 5,353). GOBH. 2,4,1 (Ind. St. 5,370). — 2) *Befreiung* (intrans.): आत्म° R. 2,53,23 (25 GORR.). 5,44,17. RÂGA-TAR. 8,1698. सर्वविमोक्षाय so v. a. *damit Alle aus der peinlichen Lage herauskommen* MBH. 5,7452. तेभ्यो न विमोक्षमर्हसि *das Loskommen —, Sichbefreien von* 4,428. शापात् R. 6,82,166. वृत्तिनात् BHÂG. P. 4,8,81. ब्रह्मवधात् 6,13,15. अस्त्रबन्ध° R. 5,44,15. पशुपाश° MUIR, ST. 4,300, 12. शापतमो° KATHÂS. 25,290. तदत्यन्तविमोक्षो (तद् = दुःख) ऽपवर्गः NJÂJAS. 1,1,22. *Befreiung der Seele, Erlösung* ÇAT. BR. 14,7,2,16. 39. BHAG. 16,5. WEBER, RÂMAT. UP. 349. BHÂG. P. 9,5,24. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 124. Lot. de la b. l. 347. 824. fgg. Vie de HIOUEN-THSANG 168. प्रतिपुरुष° SÂÑKHJAK. 56. पुरुष° 57. पुरुषस्य 58. SARVADARÇANAS. 152,13. — — 3) *Befreiung* (trans.), *das Laufenlassen:* eines Diebes M. 8,316. — 4) *das Aufgeben, Fahrenlassen, Unterlassen:* स्थानकरण° VS. PRÂT. 1,90. प्राणिहिंसा° MBH. 13,6682. — 5) *das Entlassen, Fliessenlassen:* बाष्प° MBH. 12,5753. so v. a. *Spenden:* वसूनाम् R. 2,23,39. *das Abschiessen* MBH. 1,5245. बाणानाम् R. 6,69,32.

विमोक्षक (von मोक्षय् mit वि) nom. ag. *Löser:* सर्वबन्ध° R. 7,23,4,48.

विमोक्षण (wie eben) 1) adj. *befreiend von:* भवाप्यय° BHÂG. P. 4,9,9. मातृकप्रपन्नपशुपाश° *befreiend von* oder *lösend* 8,3,17. — 2) n. a) *das Lösen, Aufbinden:* केश° VARÂH. BṚH. S. 78,3. — b) *das Befreien, Befreiung* MBH. 14,2440. RÂGA-TAR. 8,1864. तेभ्यः Verz. d. Oxf. H. 20,b,23. जीवस्य शरीरतः BHÂG. P. 10,70,39. पुरुषादात्मविमोक्षणम् NILAK. 63. ऋणत्रय° MBH. 1,325. 3,271 in der Unterschr. R. 7,30,11. BHÂG. P. 8,2,30. करोतु मे विमोक्षणम् 3,19. आ शरीरविमोक्षणात् *bis zur Befreiung vom Körper* M. 2,243. BHAG. 5,23. विपद्विमोक्षण Spr. (II) 783. BHÂG. P. 8,10,54. पाशविमोक्षणं कुरु PAÑKAT. 107,24. पशुपाश° Verz. d. Oxf. H. 44,b,35. — c) *das Vonsichgeben —, Entlassen einer Leibesfrucht, Befreiung von der Leibesfrucht* MBH. 1,2369. अण्ड° *das Legen von Eiern* PAÑKAT. 74,20. प्राण° *das Aufgeben der Lebensgeister* MBH. 11,201. असृग्विमोक्षण *das Blutlassen* SUÇR. 1,58,20. सायकस्य *das Abschiessen* R. 4,12,29.

विमोक्षिन् (von विमोक्ष) adj. *der Erlösung theilhaftig geworden* MBH. 12,11494.

विमोघ (2. वि + मोघ) adj. *ganz vergeblich:* प्रयासाः BHÂG. P. 6,10,28.

विमोचक (von 1. मुच् mit वि) adj. *lösend, befreiend von:* भवबन्ध° Verz. d. Oxf. H. 91,b,11.

विमोचन (wie eben) 1) adj. (f. ई) a) *ausspannend, lösend:* Pûshan (vgl. विमुचो नपात्) RV. 8,4,15. fg. — TBR. 3,7,11,1. गोपीमानग्रन्थेर्विमोचनी KHANDOM. 155. हृदयग्रन्थि° BHÂG. P. 5,10,16. — b) *befreiend:* Çiva MBH. 13,1173. नारीगर्भ° *die Weiber von der Leibesfrucht befreiend* HARIV. 15345. आपद्विमोचनी KATHÂS. 37,43. — 2) n. a) *das Ausspannen, Einkehr; das Befreien vom Dienst* RV. 2,37,5. 3,30,12. वाजिनो रासभस्य 53,5. 20. इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम् 4,46,7. 5,53,7. TS.

7,5,1,5. ÇAT. BR. 1,8,3,27. KÂTJ. ÇR. 13,3,14. 18,6,17. — b) *Befreiung, Rettung:* अथ वाहं करिष्यामि कुलस्यास्य विमोचनम् MBH. 1,6193. तीर्थग्राह° 1,216 in der Unterschr. मम दुःखाद्विमोचनम्। यथा भवति R. 5, 37,24. पापाच्चात्मविमोचनम् MÂRK. P. 32,36. प्रभा बुद्धिर्विमोचनम् (so die neuere Ausg.) wohl so v. a. पापादात्मविमोचनम् MBH. 14,1048. — c) *das Aufgeben, Fahrenlassen:* देहस्यास्य MBH. 3,2489. — d) N. pr. eines Wallfahrtsortes MBH. 3,7032. — Vgl. अग्नि°, दुर्विमोचन, रथ°.

विमोचनीय am Ende eines comp. *auf das Abspannen von — bezüglich:* रथ° (s. auch u. रथविमोचन) ÇAT. BR. 5,4,3,14. KÂTJ. ÇR. 15,6,23.

विमोच्य (von 1. मुच् mit वि) adj. *zu befreien* MBH. 3,14952.

विमोह (von 1. मुह् mit वि) m. *Verwirrung des Geistes:* °द KATHÂS. 50,39. BHÂG. P. 2,9,9. 3,27,25. 7,2,37. महा° 5,5,27. मति° 2,7,37.

विमोहन (vom simpl. und caus. von 1. मुह् mit वि) 1) adj. *den Geist verwirrend* BHÂG. P. 11,24,6. लोक° 8,11,33. 9,14,23. — 2) n. a) *Verwirrung, das in-Unordnung-Gerathen* P. 7,2,54 (vgl. DHÂTUP. 28,22); nach dem Schol. *das Verwirren, in-Unordnung-Bringen* (आकुलीकरण). — b) *das Verwirren des Geistes:* वैमानिक° RÂGA-TAR. 5,370. unter den acht महासिद्धि PRAB. 61,16. — c) N. einer Hölle VP. 207. fg.

विमोहिन् (von विमोह) adj. *den Geist verwirrend* KATHÂS. 62,164. जगताम् BHÂG. P. 4,20,30. 10,13,37. जगत्त्रय° KATHÂS. 104,97. Verz. d. Oxf. H. 29,a,37.

विमौन (2. वि + मौ°) adj. *das Stillschweigen brechend* KATHÂS. 96,47.

विमौलि (2. वि + मौ°) adj. *mit keinem Diadem geschmückt* HARIV. 5446.

विम्लापन (vom caus. von म्ला mit वि) n. *das Welkmachen, Schlaffmachen, Erweichen:* eines Geschwürs u. s. w. SUÇR. 1,63,17. 2,3,15. 106, 17. 112,3.

वियङ्ग (so oder noch wahrscheinlicher अवियङ्ग) = 2. अव्यङ्ग (in den Nachträgen) VARÂH. BṚH. S. 58,47 (vgl. v. l.).

वियच्चारिन् (वियत् + चा°) 1) adj. *im Luftraum wandelnd.* — 2) m. *eine Falkenart* (चिल्ल) ÇABDAM. im ÇKDR.

वियत् s. वियन्त्.

वियति (2. वि + य°) m. 1) N. pr. eines der 6 Söhne des Nahusha VP. 413. BHÂG. P. 9,18,1. — 2) *Vogel* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

वियद्ग VARÂH. BṚH. S. 58,47 schlechte Lesart für वियङ्ग.

वियद्गङ्गा (वियत् + ग°) f. *die im Luftraum fliessende —, die himmlische* Gaṅgâ AK. 1,1,1,44.

वियद्भूति (वियत् + भू°) f. *Finsterniss* (wohl *die Asche des Luftraums*) TRIK. 1,2,2. H. ç. 20.

वियन्त् 1) adj. s. u. 3. इ mit वि. In der Bed. *hingehend, vergehend:* वियन्निन्नमायुः BHÂG. P. 7,6,14. वियद्वित्त 9,21,3. वियतो गगनादिवोद्यमं विना दैवादुपस्थितमेव वित्तं भोग्यं यस्य यद्वा वियद्व्ययं प्राप्नुवत् वित्तं भोग्यं यस्य Comm. — 2) n. SIDDH. K. 251, a, 7 (वियत् gedr.). a) *das sich Trennende, Auseinandergehende* als Bez. *des Zwischenraums zwischen den zwei Getrennten* (dem Himmel und der Erde; man vgl. Stellen wie: इदं वा अन्तरिक्षं वियदिमौ स्तनावभितः PAÑKAV. BR. 24,1,7. द्यावापृथिवी सहास्तांम् ते वियती अब्रूताम् TBR. 1,1,3,2. तयोर्वियत्योर्यो ऽन्तरेणाकाश आसीत्तदन्तरिक्षमभवत् ÇAT. BR. 7,1,2,23. संयत् वियत् VS. 15,5 nach MAHÎDH. *Tag und Nacht*), *Luftraum* AK. 1,1,2,2. H. 163. HALÂJ. 1,137. द्यौर्वियदवनिस्त्रयो लोका यज्ञे प्रतिष्ठिताः Schol. zu AV. PRÂT. 4,105. वियति, क्षितौ MBH. 1,1181. वियद्गत 1186. वियत्स्थ 8246. वियदभ्यागमत् 3,818. (शराणाम्) वियच्चराणां वियति दृश्यन्ते बहवो व्रजाः 4,1864. वियतीव चन्द्रः 7,672. 1192. 1194. 13,1846. HARIV. 8053. 8055. R. 5,95, 31. 6,97,7. SUÇR. 1,20,19. 152,14. वियत्पताका der Blitz ṚT. 3,12. RAGH. 13,40. ÇÂK. 7. वियदुपचितमेघम् Spr. 2832. VARÂH. BṚH. S. 3,38. 11,39. 51. 12,5. वियति चरतां ग्रहाणाम् 17,2. 19,8. 15. 21,14. 24,14. 20. 97, 12. PAÑKAT. III, 147. PRAB. 54,13. GHAṬ. 9. BHÂG. P. 3,10,7. 8,10,24. भूमौ वियति तोये 10,41,3. HIT. 10,1. — b) *der Aether* (als Element) BHÂG. P. 3,8,32. 20,13. 32,9. 7,9,48. Verz. d. Oxf. H. 104,b,28. SARVADARÇANAS. 148,20. 149,5. 176,7. — c) Bez. *des 10ten astrologischen Hauses* (= नभस्तल) VARÂH. BṚH. 11,20. 25(23),5.

वियन्मणि (वियत् + म°) m. *das Juwel des Luftraums* d. i. *die Sonne* H. an. 4,132. MED. th. 30. HÂR. 11.

वियम॑ (von यम् mit वि) m. = वियाम P. 3,3,63 (vgl. 6,2,144). AK. 3, 3,18. = दुःख SVÂMIN zu AK. nach ÇKDR.

वियव m. *eine Art von Eingeweidewürmern* SUÇR. 2,509,15.

वियवन (von 3. यु mit वि) n. *das Trennen* NIR. 4,25. वियावन v. l.

वियाङ्ग VARÂH. BṚH. S. 58,47, v. l. für वियङ्ग.

वियात s. u. 1. या mit वि.

वि॑यातम् als वधकर्मन् NAIGH. 2,19 und NIR. 3,10 auf यत् zurückgeführt, scheint nichts Anderes als 3. du. von 1. या mit वि zu sein: *sie durchfahren* d. h. *zerschneiden mit den Wagenrädern.*

वियातिम॑न् (von वियात) m. *Dreistigkeit, Unverschämtheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वियाम॑ m. = वियम P. 3,3,63 (vgl. 6,2,144). AK. 3,3,18. = व्याम *Faden, das Längenmaass der ausgestreckten Arme* H. ç. 123.

वियावन n. s. वियवन.

वियास॑ (von यस् mit वि) m. nach dem Comm. N. eines *Plagegeistes* in Jama's Welt VS. 39,11. TS. 1,4,35,1. TAITT. ÂR. 3,20.

वियुक्त s. u. 1. युज् mit वि; davon °ता f. *das Freisein von:* विभ्रमादि° H. 69.

वियु॑त् AV. 7,4,1 falsche Lesart für नियुत्.

वि॑युत partic. von 3. यु mit वि. du. fem. *die Getrennten* d. i. *Himmel und Erde* NAIGH. 4,1. NIR. 4,25. ṚV. 3,54,7; vgl. 4,7,7.

वियुतार्थक (von वियुत + अर्थ) adj. *sinnlos* HALÂJ. 1,141.

वियूथ (2. वि + यूथ) adj. *von seiner Heerde getrennt:* मातङ्ग MBH. 9,1928.

वियोग (von 1. युज् mit वि) m. = विरह u. s. w. H. 1511. HALÂJ. 4, 57. am Ende eines adj. comp. f. आ VIKR. 155. KATHÂS. 17,48. 1) *das Getrenntwerden, Trennung, das Kommen um, Verlustiggehen:* वियोगं प्राप्तवत्यहम् sc. vom Gatten MBH. 3,2573. VIKR. 29,17. संनिधि° MÂLAV. 65,10. प्रायो बन्धुभिरधनीव पथिकैर्योगो वियोगावहः Spr. 1974. संयोगो हि वियोगस्य संसूचयति संभवम् 3076. संयोगे च विप्रयोगान्ते 3113. VARÂH. BṚH. S. 103,8. श्येनवत्सुखदुःखी त्यागवियोगाभ्याम् KAP. 4,5. BHÂG. P. 5,14,1. 9,13,9. सद्भिः *Trennung von Guten* KÂM. NÎTIS. 14, 60. VIKR. 73. Spr. 2748. KATHÂS. 17,23. 25,83. BHÂG. P. 7,2,25. MÂRK. P. 22,35. 72,41. प्राणैः प्रयाति वियोगम् VARÂH. BṚH. 6,8. तस्याश्चतुर्दश समा वियोगस्ते भविष्यति KATHÂS. 9,34. भर्त्रा सह MBH. 3,2565. ÇIÇ. 12,

63. Pañkat. 30,22. ज्ञानपूर्वो वियोगो यो ऽज्ञानेन सह योगिनः Mârk. P. 39,1. Gewöhnlich in comp. mit der Ergänzung: धव इति मनुष्यनाम तद्वियोगाद्विधवा Nir. 3,15. इष्ट° Maitrjup. 1,3. बन्धुप्रिय° M. 12,79. R. 2, 21,26. 29,5. 3,75,73. 6,95,33. Ṛt. 1,10. Megh. 78. 86. 107. Ragh. 12, 10. Kir. 5,51. Kathâs. 24,31. Spr. 1630 (II). 1111. गङ्गा° 4711. मणि° Shaḍv. Br. 5,6. कर्म° Mit. 47,10. fg. — 2) *das Sichentfernen, von-dannen-Gehen, Verlorengehen; das Fehlen:* विहगस्य, अनिलस्य Spr. (II) 285.1983. धनस्य 1289 (I). विषयाणाम् 668 (II). तव वियोगेन *weil du fehlst* R. 2,52,37. 7,95,34. यस्य तणवियोगेन लोको ह्यप्रियदर्शनः Bhâg. P. 1, 15,6. करणानाम् MBh. 5,5814. 3,13993. द्विजपाणि° 7,2364. Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,8. दुःखसंयोग° Bhag. 6,23. मातृधात्रीवियोगतः *weil weder Mutter noch Amme da waren* Kathâs. 82,36. Sâh. D. 17,15. मनोवियोगात् *weil das Herz nicht dabei ist* Varâh. Bṛh. S. 75,1. Kusum. 60,4. 61,2. Bed. 1) und 2) lassen sich bisweilen nicht genau scheiden. — 3) *Subtraction* Gaṇit. Bhagaṇâdh. 13, Comm. Sûrjagr. 5. Golâdhj. 7,42. — 4) Bez. *eines best. astrol.* Joga Verz. d. Oxf. H. 86,*a*,43.

वियोगता Kathâs. 55,181 fehlerhaft für वियोगिता.

वियोगपुर n. N. pr. einer *Stadt* Kathâs. 52,278. 291.

वियोगवत् (von वियोग) adj. *getrennt* (vom geliebten Gegenstande) Kathâs. 12,106.

वियोगिता (von वियोगिन्) f. *das Getrenntsein:* अन्योऽन्यस्य तिरश्चामप्यत्र कष्टा वियोगिता Kathâs. 111,21. अन्योऽन्य° 15,94. पत्नीपुत्र° 55,181 (वियोगता gedr.).

वियोगिन् (von वियोग) 1) adj. *a) getrennt* (vom geliebten Gegenstande) Kathâs. 16,46. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,29. fg. Nalod. 2,12. Mârk. P. 51, 116. ताः शोच्या या वियोगिन्यो न शोच्या या मृताः सह 22,35. भर्त्रा 33. भार्या° Kathâs. 124,21. 72,19. — 2) *mit Trennung verbunden* so v. a. *wo Trennung Statt findet:* अ° MBh. 12,8816.

वियोजन (von 1. युज् mit वि) n. 1) *das Losmachen von, Befreien:* आस्रवः कर्मणां बन्धो निर्जरस्तद्वियोजनम् Sarvadarçanas. 43,20. als Bed. von रिच् Dhâtup. 34,10. — 2) *Trennung:* कर्तुं न युज्यते । मादृशानां प्रभोः पत्न्या विनाशो ऽथ वियोजनम् Kathâs. 32,125. इष्ट° *von* Spr. 4190. Mârk. P. 92,4. — वियोजनैर्धनैः MBh. 12,3213 fehlerhaft für वियोजयेद्धनैः, wie die ed. Bomb. liest.

वियोजनीय (wie eben) adj. *verlustig zu machen, zu bringen um:* लिङ्गसर्वस्वाभ्याम् Kull. zu M. 8,374.

वियोज्य (wie eben) adj. *zu trennen:* पिङ्गलकः संजीवकात् Pañkat. ed. orn. 39,7.

वियोतॄ (von 3. यु mit वि) nom. ag. *der da scheidet, trennt* ṚV. 4,55,2.

वियोध (2. वि + योध) adj. *der Streiter beraubt, ohne Streiter:* वारणाः MBh. 6,2286.

1. वियोनि und °नी (2. वि + यो°) f. *ein thierischer Mutterleib, eine thierische vulva; eine thierische Daseinsform, Thier:* संभवः वियोनीषु M. 12,77. MBh. 3,13873. वियोनिमधिगच्छति Çikshâ 54 in Ind. St. 4, 368. वियोनिषु विमोक्ष्यन्ति बीजानि पुरुषा यदा MBh. 12,8326. 8377. वियोनौ मैथुने रताः 13,6734. Hariv. 11167. °गर्भमोक्ष Verz. d. B. H. 142,10 v. u. °ज *ein Thier* MBh. 7,9475. 13,5204. °जन्मन् *zur Mutter ein Thier habend* Mârk. P. 73,15. वियोनि *Thier und Pflanze* Varâh. Bṛh. 3,1. fgg. °जन्मन् *die Entstehung der Thiere und Pflanzen* ist der Titel des 3ten Adhjâja 28 (26),1.

2. वियोनि (wie eben) adj. 1) *seiner Natur widersprechend* Pañkav. Br. 18,6,9. Kâṭh. 14,10. — 2) *ohne vulva:* Weib Suçr. 1,290,16. neben अयोनि (= अज्ञातकुला Nîlak.) MBh. 13,5087 von Nîlak. durch हीनकुला erklärt.

विरक्त s. u. रञ्ज् mit वि. °भाव adj. *gleichgiltig gesinnt, Einem nicht mehr zugethan* Spr. (II) 196.

विरक्तासर्वस्व n. Titel einer Schrift Hall 17.

विरक्ति (von रञ्ज् mit वि) f. *Gleichgiltigkeit:* विरक्तिं या *gegen Jmd gleichgiltig werden, aufhören ihn zu lieben* Râga-Tar. 3,200. विरक्तिः संजाता मे सांप्रतमस्य देशस्योपरि Pañkat. 114,1. fgg. शास्त्रं प्रति मे महती विरक्तिः संजाता 143,15. विषये Praçnottaram. 2. अन्यत्र Bhâg. P. 3, 5,13. Insbes. *die gegen die ganze Aussenwelt eingetretene Gleichgiltigkeit eines Asketen* 1,16,28. 19,4. 3,26,72. 27,5. 7,10,42. 64. 11,9,25. तीव्रा und तीव्रतरा Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,16.

विरक्तिमत् (von विरक्ति) adj. *gleichgiltig:* पत्निज्ञातौ Kathâs. 43,184. *verbunden mit der Gleichgiltigkeit gegen die ganze Aussenwelt:* ज्ञान Bhâg. P. 4,23,11. विज्ञान 12,10,36. समाधियोगर्द्धितपोविद्या° (das suff. gehört zum ganzen copul. comp.) 3,20,53.

विरक्षस् (2. वि + 2. र°) adj. *ohne* Râkshasa Çat. Br. 3,4,2,8. davon nom. abstr. विरक्षस्ता 1,2,13. 2,1,13.

विरग *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,637. विराग v. l.

1. विरङ्ग (von रञ्ज् mit वि) m. = विराग; vgl. वैरङ्गिक.

2. विरङ्ग (2. वि + रङ्ग) n. *eine best. Erdart*, = कङ्कुष्ठ Râgan. im ÇKDr.

विरचना (von रच् mit वि) f. *das Anlegen, Anthun* (eines Schmuckes u. s. w.): पीनस्तनोपरि निपातिभिर्पयन्ती मुक्तावलीविरचनापुनरुक्तमस्रैः (so ist zu lesen) Vikr. 153. नेपथ्य° Mâlatim. 13,20.

विरचित 1) adj. s. u. रच् mit वि. = 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers Kathâs. 14,65.

विरज (2. वि + रज = रजस्) 1) adj. (f. आ) *a) frei von Staub, rein* (eig. und übertr., auch in der Bed. *frei von Leidenschaft*): पन्थाः MBh. 1,3678 nach der Lesart der ed. Bomb. अम्बर, वासस् Bhâg. P. 3,21,9. 23,30. 8,8, 45. 15,17. 10,38,31. गङ्गा MBh. 13,1849. अश्विनौ 1,722. Çiva 13,1261. von Menschen Bṛh. Âr. Up. 4,4,23 (विजर Çat. Br.). Muṇḍ. Up. 1,2,11. Sarvadarçanas. 54,22 (विजर Khând. Up. 8,7,1). Kaṭhop. 6,18. Bhâg. P. 3,4,7. 21,9. 4,13,15. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,33. विरजेश्वरी wird Râdhâ genannt Pañkar. 2,5,34. ब्रह्मलोक Praçnop. 1,16. लोकाः MBh. 13,4871. 4877. 4880. 4884. Bhâg. P. 4,25,39. आत्मन् Çat. Br. 14,7,2,23. Bhâg. P. 1,15,48. 2,2,25. 4,2,35. मनस् 3,28,10. 12 (सु°). धी 10,87,19. धर्म 11,17,42. सत्त्व 3,15,15. ब्रह्मन् n. 14,31. 4,21,41. Muṇḍ. Up. 2,2,9. आनन्द Verz. d. Oxf. H. 26,*b*,29. — *b)* f. *nicht mehr menstruirend* Gaṭâdh. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. *a)* eines Marutvant Hariv. 11546. — *b)* eines Sohnes des Tvashṭar VP. 165. Bhâg. P. 5,15,13. fg. — *c)* eines Sohnes der Pûrṇiman, Tochter Kardama's, Bhâg. P. 4,1,14. — *d)* eines Schülers des Gâtûkarṇja Bhâg. P. 12,6,58. — *e)* pl. einer Klasse von Göttern unter Manu Sâvarṇi Bhâg. P. 8,13,12. — *f)* der Welt des Buddha Padmaprabha Lot. de la b. l. 42. — 3) f. आ *a) ein best. Hirsengras,*

Panicum Dactylon (दूर्वा) Hâr. 93. MBh. 13,6243. = कपित्थानी Râǵan. im ÇKDr. — b) N. pr. α) einer geistigen Tochter der Manen Susvadha (Svasvadha) und Gattin Nahusha's Hariv. 995. fg. 1599. Verz. d. Oxf. H. 40,a,3. — β) einer Freundin Kṛshṇa's, die wegen ihrer Furcht vor Râdhâ in einen Fluss verwandelt wird, Verz. d. Oxf. H. 25,a,3. dieser Fluss im Goloka Pańkar. 1,1,36. 13,30. 2,1,13. 2.19. — γ) einer Râkshasî Verz. d. Oxf. H. 78,b,7. — δ) eines heiligen Gebietes: °क्षेत्र Verz. d. Oxf. H. 30,a,14. 77,b,20. fg. 289,a,4. Mack. Coll. 1,84. मुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा गयां गङ्गां विशालां विरजां तथा ॥ Skânda-P. im Prâjaçkittat. nach ÇKDr. — 4) n. N. pr. eines heiligen Wallfahrtsortes MBh. 3,8148.

विरजप्रभ m. N. pr. eines Buddha Burn. Intr. 102.

विरजस् 1) adj. = विरज 1) a): अम्बर, वासस् MBh. 2,287. 3,2167. R. 3,9,4. 75,54. Bhâg. P. 10,34,21. वायु R. 3,78,8. जलजानि MBh. 3, 11395. पद्म Hariv. 11441. देश MBh. 3,11856. लोकाः 13,4874. ब्रह्मसदन 14,2794. von Personen 1,2876. 5,6099. यथा त्वमेनसा मुक्ता (so ed. Bomb.) विरजाः (विरजा ed. Calc.) ख्यातिमेष्यसि 7,2108. 13,3185. 14,1152. Hariv. 7160. Râǵa-Tar. 2,120. 4,200. Bhâg. P. 3,20,4. 10,10,28. — 2) m. N. pr. a) eines Schlangendämons MBh. 1,1559. 5,3632. — b) eines Ṛshi Hariv. 14153. Verz. d. Oxf. H. 52,a,39. b,29. unter Manu Kâkshusha Hariv. 435. Mârk. P. 76,54. ein Sohn des Manu Sâvarṇa 80,11. Nârâjaṇa's MBh. 12,2209. fg. Kavi's 13,4150. Vasishṭha's Bhâg. P. 4,1,41. Paurṇamâsa's VP. 82. Mârk. P. 52,19. — c) eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,4553. 7,6938. — 3) f. Bein. der Durgâ H. ç. 58. — Vgl. पाद°.

विरजस adj. = विरजस्. स्थान MBh. 3,10821.

विरजस्क 1) adj. (f. आ) desgl.: मार्ग MBh. 14,1540. Wind Hariv. 2880. 4941. 12688. Ragh. 10,74. वर्मन् MBh. 8,1491. eine Person R. 6,103, 10. लोक Bhâg. P. 1,19,21. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu Sâvarṇi Bhâg. P. 8,13,11.

विरजस्कर् (वि° + 1. कर्) *vom Staube befreien, reinigen*: davon °करण n. nom. act. Comm. zu Kâtj. Çr. 231,8. — Vgl. विरजीकर्.

विरजस्तमस् adj. *nicht von den* Guṇa Raǵas *und* Tamas *beherrscht* AK. 2,7,44.

विरजान्त (विरज + अन्त) m. N. pr. eines Berges im Norden des Meru Mârk. P. 55,13.

विरजी (von विरजस्) indecl. in Verbindung mit अस्, भू und कर् *rein werden* und *rein machen* P. 5,4,51, Schol.

विरञ्च m. Bein. Brahman's H. 211, Schol. Bhâg. P. ed. Bomb. 8,5, 39. 6 3. — Vgl. die folgenden Wörter und विरिञ्च fgg.

विरञ्चन m. desgl. H. 213, Schol.

विरञ्चि m. desgl. H. 211, Schol. Halâj. 1,7. Çiç. 9,9. Spr. (II) 1087 (die urspr. Lesart). Verz. d. Oxf. H. 31,a,3. 120,b,2. Ind. St. 10,203.

विरञ्च्य m. desgl. Bhâg. P. ed. Bomb. 7,9,18. 24 (= ब्रह्मणो भोगः). 11,30,38.

1. विरण s. अ°, was vielleicht richtiger zu fassen wäre als *nicht endendes Ergötzen* (von 1. रन् mit वि).

2. विरण n. = वीरण Çabdar. im ÇKDr.

विरत s. u. रम् mit वि und अविरत und vgl. वैरत्य. Davon °त्व n. *das Aufgehörthaben, Vorbeisein* Sâh. D. 14,18.

विरति (von रम् mit वि) f. 1) *das Aufhören; Schluss, Ende* AK. 3,3, 38 (37). H. 1522. हिंसा° Râǵa-Tar. 3,80. स्फूर्जत्तः क्रोधवह्नेर्न दधति विरतिं तावदङ्गे विस्फुलिङ्गाः Prab. 36,12. गतायां विरतिं निशि Kathâs. 101,6. Spr. 776 (II). 1883. — 2) *Ende eines* Pâda, *Cäsur innerhalb eines* Pâda Çrut. 28. 31. 37. 40. — 3) *das Ablassen von, Sichenthalten, Entsagung* Spr. 2032. 2054. Prab. 71,2. स्वेदनात् Çârṅg. Saṃh. 3,2,19. तेभ्यः Vedântas. (Allah.) No. 11. आहारे Spr. 1079 (II). धनेषु 2279. परद्रोह° 2845. Kṛshṇa heisst Pańkar. 4,8,49 विरतिः सर्वपापिनाम् *weil er die Bösewichter dazu bringt, dem Bösen zu entsagen.* अ° Jogas. 1, 30. — Vgl. अ°, प्रति°.

विरथ (2. वि + रथ) adj. *um den Streitwagen gekommen* MBh. 1,207. 6467. 3,730. 14918. 4,1074. 14,2456. R. 3,34,33. 35,1. 56,51. 4,57, 12. 7,7,37. Kathâs. 47,88. 48,75. 50,14. 74,291. fg. Spr. 4681. Mârk. P. 116,56.

विरथीकर् (विरथ + 1. कर्) *Jmd um den Streitwagen bringen*: °कृत्य Bhâg. P. 10,66,21. °कृत MBh. 6,5466. 8,2416. R. 3,34,35. Kathâs. 47,81.

विरथीकरण (von विरथीकर्) n. *das Bringen um den Streitwagen*: खर° R. 3,34 in der Unterschr.

विरथीभू (विरथ + 1. भू) *um den Streitwagen kommen*: °भूय Kathâs. 48,100. °भूत 107.

विरथ्य adj. als Beiw. von Çiva vielleicht so v. a. *an Nebenstrassen* (विरथ्या) *seine Freude habend* MBh. 12,10389. — Vgl. रथ्य 1) c).

विरथ्या (2. वि + र°) f. etwa *Nebenstrasse, eine schlecht unterhaltene Strasse* Mârk. P. 35,25; vgl. Jâǵn. 1,197, wo st. dessen रथ्या steht.

विरदावली s. विरुदावली.

विरप्शिं (von रप्श् mit वि) 1) adj. (f. ई) *strotzend*: सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे RV. 1,8,8. — 2) m. *Ueberschwang, Fülle*: मध्वः RV. 4,50,3. 7,101,4.

विरप्शिन् (wie eben) adj. *vollsaftig, strotzend, vollkräftig*; = महत् Naigh. 3,3. अग्ने विरप्शिनं मेध्यमयक्ष्मं कृणु AV. 5,29,13. die Marut RV. 1,64,10. 87,1. 166,8. 3,36,4. 4,17,20. 20,2. 6,22,6. 32,1. 40,2. 8, 65,8. VS. 1,28 (Vishṇu nach Mahîdh.). SV. Naig. 4,11. Wagen der Sindhu (*das übervolle Bett*) RV. 10,75,9.

विरम (von रम् mit वि) m. 1) *das Aufhören, Nachlassen*: धूमस्य MBh. 12,8663. दुःखस्य Bhâg. P. 3,8,2. von der Sonne so v. a. *Untergang* Çiç. 9,11. — 2) *das Abstehen von, Sichenthalten*: अदत्तादान° MBh. 13, 6415. — विरमे ऽत्र Râǵa-Tar. 4,427 fehlerhaft für विरमेत्र; vgl. Spr. 2691. Vgl. विराम.

विरमण (wie eben) n. 1) *das Aufhören, Nachlassen*: आश्रावणाविरमणात् Kâtj. Çr. 20,2,5. विराड्विरमणाद्विराजनाद्विराधनाद्वा Ind. St. 8, 57, N. 2. — 2) *das Abstehen von*: विषय° Subhâsh. 39.

विरल 1) adj. (f. आ) = पेलव AK. 3,2,15. H. 1447. = तलिन AK. 3, 4,18, 129. a) *auseinanderstehend, nicht dicht anschliessend, undicht*: स्तनौ R. 6,23,13. विरलाङ्गुली चरणौ Varâh. Bṛh. S. 68,3. 43. Verz. d. Oxf. H. 202,b,4. 5. 9. Uttarar. 10,6 (14,4). दन्ताश्चाविरला मम R. 6,23, 11. अरण्यं विरलद्रुमम् Hariv. 3487. Kathâs. 56,20. भूर्विरलसस्ययुता

VARÂH. BṚH. S. 19,1. वृत्तैरविरलैः MBH. 13,4471. अविरलपत्त्रसंचया (शाखा) 1,1383. अविरलकुसुमसंचय MÂLATIM. 14,6. °सुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दवः Spr. 1719. अविरलाः कराः *dichte Strahlen* KATHÂS. 21,12. अविरलच्छाया adj. *dichten Schatten gebend* MBH. 3,11033. R. GORR. 1,49, 12. अविरलम् adv. *dicht* UTTARAR. 33,12 (44, 6). अविरलमिव दाम्ना पौण्डरीकेण नद्धः MÂLATIM. 60,10. — b) *selten, wenig, nicht zahlreich:* प्रचार PRAB. 10,6. 31,7. °प्रयोग SÂH. D. 218,20. कलमविरलं (adv. *ununterbrochen*) क्षपात्तु शकुन्तयः UTTARAR. 53,14 (69, 6). विरलभक्तिम्लानपुष्पोपहाराः RAGH. 5,74. विरलातपच्छवि ÇIÇ. 9,3. °पार्श्वग RÂGA-TAR. 5, 56. वासराः (Gegens. भूयांसः) 4,336. कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः Spr. 2091. 5299. KATHÂS. 36,41. RÂGA-TAR. 4,240. पुरुषस्तु विरलपातको भवति VET. in LA. (III) 23,3. संसारे ऽस्मिन्भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् *hier und da Einer* Spr. 2978. तं भुवनतिलकभूतं जनयति जननी सुतं विरलम् 2826. विरलः को ऽपि यो वेत्ति रहस्यं कौसुमायुधम् VET. in LA. 20,19. — 2) n. *saurer Rahm* (दधि) RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. अ°, प्र°.

विरलजानुक (von वि° + जानु) adj. *auseinanderstehende Knie habend* H. 456.

विरलद्रवा (वि° + द्रव) f. *ein Gericht aus Körnerfrüchten mit* Ghṛta GAṬÂDH. im ÇKDR. SUÇR. 1,229,15.

विरलाय् (von विरल) *undicht gesäet sein, selten vorkommen:* सरला विरलायन्ते घनायन्ते कलिद्रुमाः Cit. bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 1,108.

विरलिका (wie eben) f. *ein best. undichtes Zeug* VJUTP. 208.

विरलित (wie eben) adj. *nicht dicht angelegt:* अविरलितकपोलं जल्पतोः UTTARAR. 12,11 (17,4).

विरलीकृत HARIV. 6231 fehlerhaft für विद्रली° (वि°), wie die neuere Ausg. hat.

विरलेतर (विरल + इ°) adj. *dicht* HALÂJ. 4,32.

विरव (von 1. रु mit वि) m. *das Brüllen, Dröhnen* ṚV. 10,68,8. (कौ मुखाग्रतः कृत्वा निशश्रासार्तमानसः) अस्य हस्तविरवात् MÂRK. P.122, 17. — विरव n. ebend. 126,14 wohl fehlerhaft für विवर. — Vgl. विराव.

विरश्मि (2. वि + र°) adj. *strahlenlos* MBH. 16,4. HARIV. 3579. R. GORR. 2,39,37. VARÂH. BṚH. S. 13,7.

विरस (2. वि + रस) 1) adj. a) *nicht mit Fruchtsaft gewürzt:* कृतान्न ÂPAST. 1,18,3. — b) *geschmacklos, schlecht schmeckend*, in übertr. Bed. so v. a. *einen üblen Nachgeschmack habend, einen Ekel bewirkend* MBH. 12,9814. SUÇR. 1,176,19. 190,17. 191, 7. 4. 225,14. VARÂH. BṚH. S. 28, 4. 54,122. RÂGA-TAR. 1,216. (अधरमधु) किंपाकद्रुमफलमिवातीव विरसम् Spr. 2379. स्त्रीनिमित्तेन प्रयासेन किंपाकफलतुल्येन विपाकविरसेन KATHÂS. 37,145. असारविरसेषु भोगेषु 36,105. विरतिविरसायासविषयाः Spr. (II) 776. क्रियावसानविरसैर्विषयैः 1962. विरहविरसः संगमरसः 2065. संसार (I) 1974. विभवास्त्रैलोक्यराज्यादयः 1995. असारे संसारे विरसपरिणामे 2756. 2789. विषयजरसाः परिणामविरसाः 3035. Verz. d. Oxf. H. 128,b,16. निरन्वयविपर्यासविरसवृत्तयः UTTARAR. 116,4 (157,6). विरसाध्मातहृदय *durch etwas Unangenehmes* UTTARAR. ed. Cow. 18,9 (विरसो दुःखम् Glosse). विरसम् adv. *auf eine widerliche Weise:* रटन्तो वायसाः MṚKKH. 157,10. BHAṬṬ. 2,32. विरस *was gegen den guten Geschmack ist* PRATÂPAR. 66,a,6. — c) *keinen Geschmack an Etwas findend:* विषय° im Gegens. zu विषयलोलुप KULL. zu M. 2,95. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBH. 5,3632. — विरस MBH. 8,4327 fehlerhaft für विवश, wie die ed. Bomb. liest.

विरसत्व (von विरस) n. *schlechter Geschmack, das Bereiten von Ekel:* परिणति° Spr. (II) 637. PRAB. 72,15.

विरसाननत्व (von विरस + आनन) n. *übler Geschmack im Munde* SUÇR. 2,520,17.

विरसास्यत्व (von विरस + आस्य) n. dass. ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,70.

विरसीभू (विरस + 1. भू) *einen Widerwillen bekommen, unangenehm berührt werden:* °भवन् KÂM. NITIS. 5,44.

विरह (von रह् mit वि) m. = वियोग H. 1511. HALÂJ. 4,57. 1) *das Getrenntsein, Trennung* (vom geliebten Gegenstande): न मे ऽद्य विरहः क्षमः MBH. 3,16737. MEGH. 8. 12. 30. 83. 87. 89. 92. 109. 111. Spr. (II) 788. °विरसः संगमरसः 2065. (I) 2834. 3101. विरहो ऽपि संगमः खलु परस्परं संगतं मनो येषाम्। यदि हृदयं तु घटितं समागमो ऽपि विरहं विशेषयति ॥ 5019. KATHÂS. 39,80. RÂGA-TAR. 2,56. BHÂG. P. 1,2,2. VET. in LA. (III) 6,1. 16,6. 21,3. SARVADARÇANAS. 96,16. पत्या *vom Gatten* Spr. 1765. पित्रा भर्त्रा सुतैर्वापि 4538. राज्ञा वासवदत्तया KATHÂS. 15,55. 67, 21. सीता° (könnte auch zu 2) gezogen werden) R. 2,59,29. इष्टजन° ÇÂK. 60,4. VIKR. 110. MEGH. 85. BHÂG. P. 9,10,30. — 2) *Abwesenheit, das Nichtdasein, Fehlen, Mangeln:* एषाम् (d. i. des Vaters, der Gattin oder der Söhne) Spr. 4538. R. 5,53,13. मम विरहजं दुःखम् *aus meiner Abwesenheit entstanden* ÇÂK. 94. 180. किं यौवनेन विरहो यदि वल्लभायाः *wenn keine Geliebte da ist* Spr. 2791. 4113. RÂGA-TAR. 5,373. BHÂG. P. 1,10,10. सपत्नी° KATHÂS. 32,178. वाग्विरहात् 43,11. विवेक° Spr. 2641. स्वकाल° VIKR. 130. लोभ° HIT. 11,5. आहार° 127,5. प्रदोष° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,502, Çl. 1. PRAB. 17,15. SÂH. D. 8,20. 218,21. SARVADARÇANAS. 16,7. 96,22. वृष्टि° KULL. zu M. 8,22. शङ्का° KUSUM. 28,15. 37,18. BHÂSHÂP. 68. am Ende eines adj. comp.: अनुचितनूपुर° (चरण) MÂLAV. 61. *an dem — fehlt* so v. a. *mit Ausnahme von* VARÂH. BṚH. S. 100,2.

विरहिन् (von विरह) adj. 1) *getrennt* (vom geliebten Gegenstande): चिरविरहिणोर्यूनोः Spr. 2298 (II). 2099. GÎT. 1,27. 31. KATHÂS. 16,72. 51,63. 103,241. 119,154. Verz. d. Oxf. H. 123,a,30. GAUḌAP. zu SÂṂKHJAK. 12. मालती° *getrennt von* MÂLATIM. 144,3. KATHÂS. 67,65. — 2) *abwesend* Spr. 1335. — 3) *frei von, sich enthaltend:* प्रवृत्तिनिवृत्त्योरन्यतरविरहिणः SARVADARÇANAS. 61,3. 4.

1. विराग (von रञ् mit वि) m. 1) *Entfärbung, Verlust der Röthe* NAISH. 22,55. — 2) *Entfärbung, Umfärbung* (eines Lautes, ein best. Fehler der Aussprache wie षड्ढा für षड्ढा) ṚV. PRÂT. 14,5. — 3) *Aufregung, das Versetzen in Leidenschaft:* चित्त° P. 6,4,91. — 4) *Abneigung* (gegen Personen) Spr. 1156. NAISH. 22,55. तस्य (राज्ञः) प्रकृतयो विरागं प्रतिपेदिरे RÂGA-TAR. 2,143. 3,500. 4,381. 6,198. 8,687. 696. *Abneigung, Gleichgiltigkeit* (gegen Unpersönliches): गृहमेधेषु योगेषु BHÂG. P. 3,3, 22. ज्ञातविराग ऐन्द्रियात् 25,26. सर्वकामेभ्यः Spr. 2835. बहिर्जातविराग BHÂG. P. 3,32,42. इहामुत्रफलभोग° VEDÂNTAS. (Allah.) No. 9. 11. ohne Ergänzung *Gleichgiltigkeit gegen die Aussenwelt* KAP. 2,9. SÂṂKHJAK. 23. Spr. 5011. BHÂG. P. 3,23,56. 4,22,26. 6,5,40.

2. विराग (2. वि + राग) adj. (f. आ) 1) *von mannichfacher Farbe,*

bunt: °वसन MBh. 2,824. 842. °वस्त्राभरण Hariv. 8423. नानाविरागवसन R. 4,33,28. MBh. 8,456. 10,286. नानावर्णविरागाः पताकाः 7,3931. — 2) *frei von aller Leidenschaft, gleichgiltig* R. 1,7,7. Bhâg. P. 3,15, 47. 32,10. सर्वतस् *für Alles abgestorben* 29,3.

3. विराग *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 181. Mél. asiat. 4,637. — Vgl. विरग.

विरागता (von 2. विराग) f. *Gleichgiltigkeit gegen Alles* MBh. 15,936.

विरागवत् (von 1. विराग) adj. *gleichgiltig:* सर्वत्र *gegen Alles* Verz. d. Oxf. H. 256,*b*,25. fg.

विरागार्ह (1. विराग + अर्ह) adj. = वैरङ्गिक H. 490. Halâj. 2,214.

विरागित (von 2. विराग) adj. *eine Abneigung —, einen Widerwillen empfindend:* नावसत्तत्र तत्रास्य दृष्टौ नृपविरागिता MBh. 13,1480.

विरागिता (von विरागिन्) f. *Abneigung, Widerwillen:* अस्रे मय्यार्यपुत्रस्य स्नेहो ऽमुष्य मुधैव मे। विरागिताभूत् Kathâs. 43,207.

विरागिन् (von 1. विराग oder von रञ्ज् mit वि) adj. *eine Abneigung —, keine Neigung für Jmd* oder *Etwas empfindend:* नास्थाने क्रोधवत्तश्च न चाकस्माद्विरागिणः MBh. 12,6283. Spr. (II) 751, v. l. वेश्या श्रोश्च 1083. Râǵa-Tar. 6,334. अलब्धे रागिणो लोका अस्रो लब्धे विरागिणः Spr. (II) 633. अ° R. 5,33,30.

1. विराज् (1. राज् mit वि) P. 3,2,61, Schol. 1) adj. *herrschend, an der Spitze befindlich; ausgezeichnet, prangend;* m. f. *Herrscher, Herrscherin* u. s. w.: विराजं गोपतिं गवाम् Ṛv. 10,166,1. मम पुत्राः शत्रुहणो ऽथो मे डुहिता विराट् 159,3. सोमो विराजमनु राजति 9,96,18. विराट् सम्राट् 1,188,5. AV. 12,3,11. 14,2,15. VS. 20,5. 55. ज्योतिस् 38,27. Ait. Br. 8,14. eine der Wesenheiten Agni's TBr. 1,1,3,2. Çat. Br. 10,4,3,11. Beiw. der Sarasvatî MBh. 3,10628. देवो विराट् von der Sonne Verz. d. Oxf. H. 62,*a*,42. m. = क्षत्रिय *Herrscher, Fürst* AK. 2,8,1,1. MBh. 1,3148. 3,12704. Bhâg. P. 4,27,6. — 2) f. *Auszeichnung, hohe Stellung:* अनवरुद्धा वा एतस्य विराड्य आहिताग्निः सन्सभः TS. 1,7,6,7. परमायां विराजि प्रतितिष्ठत्तः Âçv. Çr. 11,4,8. Çat. Br. 11,4,3,18. Çâṅkh. Br. 18, 5. 19,5. Çr. 16,30,13. — 3) f. und später m. N. eines der Speculation angehörigen göttlichen Wesens: Tochter (Sohn) des Purusha (auch Purusha selbst) oder Praǵâpati, oder dessen Gattin; als Kuh bezeichnet, die durch ihre Schritte die Opferfeuer vertheilt u. s. w. In der Folge Tochter (Sohn) Brahman's, Mutter (Vater) des Manu Svâjambhuva oder des Brahman selbst. In den Brâhmaṇa zu phantastischen Allegorien gebraucht, unter Vermengung aller Bedeutungen des Wortes. Ṛv. 10,90,5. AV. 8,5,10. 11. 9,1. 10,1. Die Sonne heisst वत्सो विराजः 13,1,31. TBr. 1,2,1,27. Çat. Br. 14,6,11,3. Kâṭh. 36,2. गां मा हिंसीरदितिं विराजम् VS. 13,43; vgl. 17,3. विराजो दोहो ऽसि Âçv. Gṛhj. 1,24,20. fgg. Çat. Br. 1,5,3,20. Vâk Virâǵ, Tochter des Kâma, AV. 9,2,5. angeblich Agni TBr. 1,1,5,10. Praǵâpati selbst (Comm.) 4,9,5. विराट्क्रम TBr. Comm. I,93,15. fgg. द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्धेन पुरुषो ऽभवत्। अर्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत्प्रभुः॥ M. 1, 32. तपस्तप्त्वासृजद्यं तु स्वयं पुरुषो विराट्। तं मां वित्त 33. विराट्सुताः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः 3,195. स आत्मा चैव यज्ञश्च विश्वरूपः प्रजापतिः। विराजः सो ऽन्नरूपेण यज्ञत्वमुपगच्छति॥ Jâǵn. 3,120. Ind. St. 9,5 u. s. w. Sohn Vishṇu's, Vater des Purusha (= Manu) Hariv. 51. यद्ब्रह्म चक्षुषोर्मध्ये स सूक्ष्मः पुरुषो विराट् 11709. Weber, Râmat. Up. 351. VP. 51. fgg., N. 3. 93. Bhâg. P. 2,6,16. 21. 41. 3,6,9. fgg. 26,51. Verz. d. Oxf. H. 23,*b*,10. 39,*a*,6. entsteht aus den fünf Elementen 226,*a*, No. 554, Çl. 7. = परमात्मन् als अङ्कुर 300,*a*, No. 734. = कृष्ण, विष्णु MBh. 12,1509. Pańkar. 2,6,25. 4,3,46. = वैश्वानर, चैतन्य Vedântas. (Allah.) No. 72. als f. = पृथिवी nach Nîlak. MBh. 7,2417. 2420. — 4) f. *ein best. Metrum*, als die achte zu den sieben gewöhnlichen Formen betrachtet (Çat. Br. 8,3,3,6. 10,1,2,9); in der Prosodik *ein um zwei Silben defectives Metrum* Nir. 7,13. Ṛv. Prât. 16,12. 28. 32. 37. 17,2. 4. 25. 32. — VS. 14,18. Ait. Br. 1,5. 6. 2,37. *mit 30 Silben* TBr. 1,6, 3,4. Çat. Br. 3,5,1,7. *mit zehn* Ait. Br. 3,50. TBr. 1,2,4,1. 8,2,1. VS. 9,33. Çat. Br. 2,3,1,18. Âçv. Çr. 2,18,5. Khând. Up. 4,3,8. Pańkar. 3,3,9. Vgl. Ind. St. 8. — 5) f. Bez. *gewisser Backsteine* (40 an der Zahl) VS. 13,24. 14,13. TS. 5,2,3,5. 5,4,1. Çat. Br. 8,5,1,5. Kâtj. Çr. 17, 7,15. — 6) m. N. eines Ekâha Pańkav. Br. 19,2,1. Kâtj. Çr. 24,4,48. Lâṭj. 9,4,2. Maçaka 5,1 in Verz. d. B. H. No. 72. — 7) m. N. pr. eines Sohnes des Prijavrata von der Kâmjâ Hariv. 59 (काम्यापुत्राश्च mit der neueren Ausg. zu lesen). des Nara VP. 165. — Vgl. भद्र°.

2. विराज् (1. वि + राज्) m. *der König der Vögel* Bhâg. P. 8,21,26.

विराज (von 1. राज् mit वि) 1) adj. *prangend:* भ्रमराकुलदामविराजभुज Pańkar. 3,12,13. — 2) m. *a) eine best. Pflanze*, vulg. त्रीकाली Ausa. 24. — *b)* N. pr. α) eines Praǵâpati Hariv. 936. = विराज् 3): इन्द्राग्नी वदनात्तभ्यं पशवो मलसंभवाः। ओषध्यो रोमसंभूता विराजस्त्वं नमो ऽस्तु ते॥ Vâmana-P. 83 im ÇKDr. — β) eines Sohnes des Avikshit MBh. 1,3741. — Vgl. वैराज.

विराजन, f. °राज्ञी so v. a. विराज् 1) TBr. 3,11,3,1.

विराजन n. nom. act. von 1. राज् mit वि zur Erklärung von 1. विराज् Nir. 7,13. Ind. St. 8,57, N. 2.

विराजिन् (von 1. राज् mit वि) adj. *prangend:* रथेनातिविराजिना (°राजता ed. Bomb.) MBh. 6,3585.

विराज्य n. = विराज् 2) *Herrschaft, Regierung:* बृहद्रथो वै नाम राजा विराज्ये पुत्रं निधापयित्वा Maitrjup. 1,2. — Vgl. वैराज्य.

विराट m. 1) N. pr. eines Fürsten der Matsja Bhag. 1,4. 17. MBh. 1,2717. 3835. 6988. 2,1272. 4,16. 5,5100. Hariv. 8071. 8098. Kâm. Nîtis. 17,56. Spr. 2638. Bhâg. P. 1,10,9. विराटनगर P. 6,2,89, Schol. MBh. 1,481. 3,17436. 4,1. fgg. °पर्वन् heisst das 4te Buch des MBh. — 2) N. pr. einer Gegend Çabdar. im ÇKDr. Varâh. Bṛh. S. 16,12. Verz. d. Oxf. H. 338,*b*,35. 339,*a*,43. *b*,44 (विराट् gedr.). — 3) ein Bein. Buddha's Vjutp. 2. — Vgl. वैराट, वैराट्या.

विराटज 1) m. *eine Art Edelstein* (*aus* Virâṭa *kommend*), = राजपट्ट Trik. 2,9,30. H. 1066. — 2) f. आ *eine Tochter* Virâṭa's MBh. 14,1857.

विराट्काम (1. विराज् + काम) f. *ein best. Metrum* Ṛv. Prât. 17,12. Ind. St. 8,107.

विराट्क्षेत्र (1. विराज् + क्षेत्र) n. N. pr. eines *heiligen Gebietes* Verz. d. Oxf. H. 19,*b*,11.

विराट्पूर्वा (1. विराज् + पू°) f. *ein best. Metrum* Ṛv. Prât. 16,46. Ind. St. 8,131. 143.

विराट्सु वामदेव्यम् n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,*b*.

विराट्स्थाना (1. विराज् + स्थान) f. *eine best. Form der* Trishṭubh

RV. Prât. 16,43. Ind. St. 8,57. 131. 140. 143.

विराट्स्वराज् m. N. eines Ekâha Çâṅkh. Çr. 14,30,2.

विराड्रूपा f. *eine best. Form der* Trishṭubh RV. Prât. 16,45. Ind. St. 8,103. 131. 140. 251.

विराड्वर्णा adj. (f. आ) *die Form der* Virâǵ *habend* Çâṅkh. Br. 22,7.

विराणिन् (von 1. रण् mit वि) m. *Elephant* Çabdam. im ÇKDr.

विरातक 1) m. *Terminalia Arǵuna* (अर्जुन) *W. u. A.* Aush. 11. — 2) n. *die Frucht von Semecarpus Anacardium L.* ebend.

विरात्र (2. वि + रात्र) *Ende der Nacht:* विरात्रे प्रत्यबुध्यत MBh. 13, 4333. 3, 16886. 16890.

विराध (von 1. राध् mit वि) m. N. pr. eines Râkshasa Hariv. 2334. R. 1, 1, 40 (43 Gorr.). 3, 18. 3, 7, 13. 46, 5. 5, 18, 29. 26, 33. 56, 84. 6, 92, 29. Ragh. 12, 28. Mahâvîrak. 72, 7. 9. °हन् Bein. Vishṇu's (Râma's) Pańkar. 4, 3, 100. विराध auch N. pr. eines Dânava Hariv. 197.

विराधन (wie eben) n. 1) *das Misslingen* AV. 11, 10, 27. Nir. 7, 13. Ind. St. 8, 57, N. 2. — 2) = पीडा *das Anthun eines Leides* Çabdar. im ÇKDr.

विराधय nom. ag. vom caus. von राध् mit वि gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5, 1, 124. — Vgl. वैराधय्य.

विराधान n. angeblich = विराधन 2) Çabdar. im ÇKDr. विवाधान v. l.

विराम (von रम् mit वि) m. 1) *das Aufhören; Schluss, Ende* Trik. 3, 2, 29. Çâṅkh. Gṛhj. 4, 8. Jogas. 1, 18. Hariv. 12108. चुम्बा° Varâh. Bṛh. S. 78, 8. Uttarar. 49, 3 (63, 5). अधर्मस्य Bhâg. P. 10, 50, 10. सुधां विना न प्रययुर्विरामम् *ruhten nicht* Spr. 2585. अधीष्व भो इति ब्रूयाद्विरामो ऽस्त्विति चारमेत् M. 2, 73. Mṛkkh. 44, 14. रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् Gît. 5, 14. *Ende eines Wortes, — eines Satzes, Pause:* पूर्वेणा चेद्विरामः AV. Prât. 2, 38. 4, 79. विरामो ऽवसानम् P. 1, 4, 110. Vop. 2, 43, Comm. ईद्विराम *auf* ई *und* ऊ *auslautend* AK. 3, 6, 1, 2. तुऋविरामक *auf* तु *und* ऋ *auslautend* 1, 13. त्रिविरामं (?) दशवर्णा षणमात्रमुवाच पिङ्गलः सूत्रम् Ind. St. 8, 216. अविरामम् *ohne Unterlass* Gît. 11, 9. — 2) *Ende eines* Pâda, *Cäsur innerhalb eines* Pâda Çrut. 16. 38. 42. — 3) *das die Abwesenheit eines* अ *anzeigende Zeichen unterhalb eines Consonanten am Ende eines Satzes.* — 4) *das Abstehen, Sichenthalten* Vop. 5, 20. — 5) neben राम unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13, 6992. Pańkar. 4, 8, 43. Çiva's Çiv.

विरामता (von विराम) f. *das Aufhören, Nachlassen:* पिबतो ऽच्युतपीयूषं न मे ऽत्रास्ति विरामता Pańkar. 4, 8, 4.

विराव (von 1. रु mit वि) m. 1) *Geschrei, Gebrüll, Getöse* AK. 1, 1, 6, 2. H. 1400. कुञ्जरैर्मुक्तो विरावः MBh. 3, 11133. 7, 3190. सैन्यस्य 4731. वनौकसाम्। विरावः शुश्रुवे घोरः समुद्रस्येव मद्यतः ॥ 1, 8223. राक्षसेन मुक्तो विरावः R. 7, 16, 29. वयसां विरावैः Ragh. 2, 9. महाविरावा adj. (सेना, रेवा) 16, 31. — 2) N. pr. eines Rosses MBh. 3, 8631. — Vgl. विरव.

विरावण (vom caus. von 1. रु mit वि) adj. *Geschrei —, Geheul verursachend* R. 1, 14, 47 (43 Gorr.).

विराविन् (von 1. रु mit वि) 1) adj. *a) schreiend, brüllend, Laute von sich gebend, tosend:* शृगालिनी प्रत्यादित्यम् MBh. 3, 14274. हम्भारव° (eine Kuh) R. Gorr. 1, 55, 7. महाराव° (in der Hölle Gemarterte) Mârk. P. 14, 12. जननीं हा पुत्रेति विराविणीम् Kathâs. 22, 178. शकुनो मधुरविरावी Varâh. Bṛh. S. 53, 109. 86, 53. सम° 72. गम्भीरविराविणः पयोवाहाः 32, 17. Kathâs. 107, 24. — *b) ertönend, erschallend:* (रथ्याः) गायनैश्च विराविणः R. 1, 19, 12. Varâh. Bṛh. S. 56, 5. — 2) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 2739. 4552.

विरार्षह् oder °षाह् (विर् = वीर + सह्, साह्) adj. *Männer in sich fassend, — aufnehmend:* Jama's Himmel RV. 1, 35, 6; vgl. den Hades πολυδέγμων.

विरिञ्च (wohl von रिच् mit वि) m. ein Name Brahman's Trik. 1, 1, 25. H. 211. Med. k. 18. Halâj. 1, 6. Kathâs. 7, 34. 46, 218. Bhâg. P. 1, 11, 6. 18, 21. 3, 10, 4. 19, 1. 4, 2, 6. 14, 26. 5, 15, 11. 6, 3, 14. 17, 32. 10, 60, 44. 63, 36. Verz. d. Oxf. H. 31, *a*, 4. ein Name Vishṇu's Med. MBh. 12, 13253. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. die folgenden Wörter und विरञ्च u. s. w.

विरिञ्चता f. nom. abstr. von विरिञ्च Brahman Bhâg. P. 4, 24, 29.

विरिञ्चन m. ein Name Brahman's H. 213.

विरिञ्चि m. desgl. AK. 1, 1, 1, 12. H. 211. Med. k. 18. MBh. 1, 1638. 12, 11231. Kathâs. 9, 24. 73, 170. Spr. 1087 (Conj.). Bhâg. P. 1, 2, 23. 3, 13, 32. Verz. d. B. H. No. 459, *a*. Verz. d. Oxf. H. 81, *a*, 1. 2. Sarvadarçanas. 91, 10. ein Name Vishṇu's Med. Hariv. 14114. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. Çiv.

विरिञ्चिपादशुद्ध m. N. pr. eines Schülers des Çaṁkarâkârja Verz. d. Oxf. H. 248, *a*, 3.

विरिञ्च्य m. ein Name Brahman's Bhâg. P. 5, 5, 22 (विरिञ्च ed. Bomb.). 7, 9, 18 (विरञ्च्य ed. Bomb.). 24 (विरञ्च्य ed. Bomb., = ब्रह्मणो भोगः Comm.). 36. 8, 5, 39 (विरञ्च ed. Bomb.). 8, 6, 3 (विरञ्च ed. Bomb.). 7, 31 (विरिञ्च ed. Bomb.). 9, 4, 52. 10, 9, 20. 51, 41. 11, 19, 18 (= ब्रह्मलोक Comm.).

विरिफित s. u. रिफ्.

विरीस s. नि°.

विरुक्मत् (2. वि + रु°) 1) adj. *leuchtend:* रथ RV. 6, 49, 5. पथा 10, 22, 4. ओजस् 1, 127, 3. *der Blitz* oder *Donnerkeil* 10, 138, 4. — 2) m. *ein glänzender Schmuck* oder *eine glänzende Rüstung* RV. 1, 85, 3.

1. विरुज् (2. वि + रुज्) f. *ein heftiger Schmerz, eine grosse Krankheit* Bhâg. P. 6, 19, 26.

2. विरुज् (wie eben) adj. *gesund* Varâh. Bṛh. 21 (19), 19. Text und Comm. निरुज्.

1. विरुज (von 1. रुज् mit वि) adj. *Schmerzen verursachend* Pâr. Gṛhj. 2, 6.

2. विरुज (2. वि + रुजा) adj. *frei von Schmerz, gesund* MBh. 8, 4593 (निरुज ed. Bomb.). Bäume Varâh. Bṛh. S. 46, 28. *schmerzlos* so v. a. *keine Leiden verursachend:* पन्थाः MBh. 1, 3678 (विरज ed. Bomb.).

विरुद n. (nach einem Citat im ÇKDr. auch m.) *ein Panegyricus auf einen Fürsten in Prosa und Versen:* गद्यपद्यमयी राजस्तुतिर्विरुदमुच्यते Sâh. D. 570. Verz. d. Oxf. H. 133, *a*, N. 1. वीर° ebend. No. 244, Z. 11. वीरात्नमाला° 12. fg. 275, *b*, 8. विरुदावलि und °ली *ein ausführlicher Panegyricus* Pratâpar. 19, *b*, 4. इति विरुदावली (so ist zu lesen) वदति सती Z. d. d. m. G. 23, 444, 10. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 18. 126, *a*, N. 1. als Titel eines best. *Panegyricus* des Raghudeva 133, *a*, No. 244.

विरुदमणिमाला f. Titel eines best. *Panegyricus* Sâh. D. 211, 3.

विरुदावलि, °ली s. u. विरुद.

विरुद्ध 1) adj. s. u. 2. रुध् mit वि. — 2) m. pl. Bez. einer Gruppe von Göttern unter dem 10ten Manu VP. 268. Bhâg. P. 8,13,22. — 3) n. (sc. रूपक) *ein best. Tropus, wobei einem verglichenen Dinge die dem Dinge, womit jenes verglichen wird, zukommenden Thätigkeiten abgesprochen, dagegen andere, diesem nicht zukommende zugesprochen werden,* Kâvjâd. 2,84. Beispiel Spr. 4330.

विरुद्धता (von विरुद्ध) f. *das im-Widerspruch-Stehen* Sarvadarçanas. 166,14. येन लोकद्वये ऽपि (wohl °द्वयेनापि zu lesen: *Conflict mit*) विरुद्धता न भवति (येन लोकद्वयं न विरुध्यते ed. Bomb.) Pańkat. 260,3. लोकद्वयाविरुद्धता 261,6.

विरुद्धत्व (wie eben) n. 1) *Feindseligkeit, feindselige Gesinnung:* राज्ञ° *von Seiten des Fürsten* Râga-Tar. 2,71. — 2) *das im-Widerspruch-Stehen* Sarvadarçanas. 45,20. Kusum. 38,15.

विरुद्धमतिकृत् adj. *eine entgegengesetzte Vorstellung erweckend;* n. Bez. *einer best. Redefigur, einer Art von Antiphrasis:* विपरीतार्थधीर्यस्मादिरुद्धमतिकृन्मतम् Pratâpar. 61,a,8. 62,a,7. Beispiel: अम्बिकारमणास्याङ्गिसेवा व्यर्था कथं भवेत्। राज्ञामकार्यमित्राणां विनाशं समुपेयुषाम्॥ Hier können die Worte अम्बिकारमण, अकार्यमित्र und विनाश zu einer verkehrten Auffassung Veranlassung geben.

विरुद्धार्थदीपक n. *eine best. rhetorische Figur, bei der von einem und demselben Subjecte zwei einander widersprechende Thätigkeiten in Bezug auf ein und dasselbe Object* (aber nur scheinbar) *ausgesagt werden* Kâvjâd. 2,110. Beispiel Spr. (II) 666.

विरुद्धाशन (विरुद्ध + अ°) n. *der Genuss ärztlich verbotener Speisen* Suçr. 1,75,19.

विरुधिर (2. वि + रु°) adj. *blutlos* MBh. 3,8746. 6,4079.

विरूक्ष (2. वि + रूक्ष) adj. (f. आ) *rauh:* °पाण्डुरनखौ चरणौ Varâh. Bṛh. S. 68,3. von Reden: °वचनप्राय Bhar. Nâṭjaç. 19,80. अविरूक्षा वाणी R. 6,23,14.

विरूक्षण (von विरूक्षय्) 1) adj. *trocken —, rauh machend, adstringirend* Suçr. 1,53,1. 198,1. 204,15. Verz. d. Oxf. H. 304,b,19. — 2) n. a) *das trocken-, rauh-Machen, Adstringiren* Suçr. 1,151,15. — b) *hartes Anfahren,* = क्षारण Halâj. 1,149.

विरूक्षय् denom. von विरूक्ष; s. विरूक्षण.

विरूढ s. u. 1. रुह् mit वि.

विरूढक (von विरूढ) 1) m. n. *angekeimte Körner* H. 1183. Siddh. in Nigh. Pr. Suçr. 1,233,4. 235,8. Vâgbh. 7,29. 8,41. — 2) m. N. pr. eines Lokapâla Vjutp. 83. eines Fürsten der Kumbhâṇḍa Lalit. ed. Calc. 266,13. 378,15. Lot. de la b. l. 3. 240. Vjutp. 89. eines gegen die Çâkja feindselig auftretenden Fürsten, eines Sohnes des Prasenaģit Schiefner, Lebensb. 270 (40). Burn. Intr. 167. Hiouen-thsang I, 141. 305. Wassiljew 11. eines Sohnes des Ikshvâku Vjutp. 92. Schiefner, Lebensb. 233 (3).

1. **विरूप** (2. वि + रूप) n. *Missgestalt, Hässlichkeit:* °धृक् Hariv. 16006. Kathâs. 52,75.

2. **विरूप** (wie eben) 1) adj. (f. आ) a) *verschiedenfarbig, verschieden gestaltet, verschiedenartig; mannichfaltig; verändert, verwandelt* Ṛv. 1,70,7. Nacht und Morgen 113,3. 5,1,4. 6,49,3. Agni 3,1,13. कृतानि 38,9. समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः 7,103,6. 10,169,2. VS. 16,25. 30,22. आपः TS. 5,6,1,1. TBr. 3,1,2,10. Pańkav. Br. 12,4,18. 14,9,8. Kauç. 101. यद्विरूपाचरं मर्त्येषु Ṛv. 10,95,16. ते विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवन्त आयन् *verwandelt euch* Ait. Br. 5,1. die Añgiras Nir. 11,17. Ṛv. 3,53,7. 10,62,5. 6; vgl. u. 2) c). प्रकृति° *verschieden von* (Gegens. सरूप) Sâṁkhjak. 8. प्रत्यय *ein der Form nach verschiedenes Suffix* P. 3, 1,7, Kâr., Schol. एकार्थानां विरूपाणाम् *gleiche Bedeutung aber verschiedene Form habend* 1,2,64, Vârtt. 16 in der ed. Calc. — b) *missgestaltet, unförmlich, hässlich* (Gegens. सुरूप, रूपवत्): पशु Khând. Up. 2,15,2. Personen MBh. 1,4290. 3,2749. R. 1,59,19. R. Gorr. 1,6,18. 3,1,21. 23,16. 5,10,19. Spr. 1561. 1647. 4972. Varâh. Bṛh. S. 16,33. प्रायो विरूपासु भवन्ति दोषाः 70,23. Kathâs. 20,119. 34,96. 40,26.55,46. 56,348. 87,33. 123,163. विन्देद्विरूपा *eine Hässliche finde einen Mann* Bhâg. P. 6,19,26. Mârk. P. 34,46. Çiva MBh. 12,10360. कीटस्य तनुः 8,1966. देह Hariv. 10863. Varâh. Bṛh. S. 69,39 (अति°). आकृति Kathâs. 12,69. रूप MBh. 13,2166. R. 3,75,21. °रूप adj. MBh. 1,5931. R. 3,62,38. 5,14,68. Mârk. P. 69,30. पक्षौ *Flügel* R. 4,60,5. विरूपाद्भुतदर्शन Varâh. Bṛh. S. 46,94. अतिविरूपफल (हस्तिन्) 67,10. °तार 11, 27. रेखा *eine hässlich aussehende Linie* 53,103. — c) *um Eins* (रूप) *vermindert, minus Eins* Varâh. Bṛh. 7,5. — 2) m. N. pr. a) eines Asura MBh. 2,366. Hariv. 12697. — b) eines Sohnes des Dämons Parivarta Mârk. P. 51,62. — c) eines Âñgirasa Ṛv. 1,45,3. 8,64,6. Liedverfasser von 8,43. fg. 64. MBh. 13,4148. Vater des Pṛshadaçva Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,16. fg. und Sohn des Ambarîsha VP. 359. Bhâg. P. 9,6,1. — d) eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,90, 34. — e) eines Fürsten Wilson, Sel. Works 2,20. — f) zweier buddhistischer Lehrer Târan. 146. 162. 170. 192. 205. — 3) f. आ a) Bez. zweier Pflanzen: = अतिविषा und दुरालभा Râgan. im ÇKDr. — b) N. pr. einer Tantra-Gottheit Kâlak. 4,30. — विरूपाय Kâṇ. 73 bei Weber fehlerhaft für प्रकोपाय; vgl. Spr. (II) 1287. Vgl. वैरूप und वैरूप्य.

विरूपक (von 2. विरूप) 1) adj. (f. विरूपिका) *missgestaltet, hässlich* Vet. in LA. (III) 19,3. कन्या Udvâhatattva im ÇKDr. — 2) m. a) *der Hässliche,* als Bein. eines Mannes Daçak. 67,13. 80,23. — b) N. pr. eines Asura MBh. 12,8263.

विरूपकरण (2. वि° + 2. करण) 1) adj. (f. ई) *verunstaltend:* जरा °करणी नृणाम् Bhâg. P. 9,18,36. — 2) n. a) *das Verunstalten:* einer Person R. 1,3,19 (13 Gorr.). R. Gorr. 1,4,50. 5,56,136. Bhâg. P. 10,60, 56. — b) *das Zufügen eines Leides:* सर्वो ऽपि जनो विरूपकरणे समर्थो भवति नोपकरणे Pańkat. 86,3. 213,23.

विरूपण (von विरूपय्) n. *das Verunstalten* R. 3,24 in der Unterschr.

विरूपता (von 2. विरूप) f. 1) *Verschiedenartigkeit* Sarvadarçanas. 69, 1. — 2) *Missgestalt, Hässlichkeit* MBh. 1,4265. मुखं तस्या विरूपतां यातम् R. 3,61,44.

विरूपय् (wie eben) *entstellen, verunstalten:* तं व्यरूपयत् Bhâg. P. 10, 54,35. विरूपयितुम् Hit. 65,1. विरूपित MBh. 13,1481. R. 1,1,44 (48 Gorr.). 3,24,26. 36,26. 40,18. Nalod. 3,18. वालधि° (धुर्य) M. 4,67.

विरूपशक्ति m. N. pr. eines Vidjâdhara Kathâs. 46,68.

विरूपशर्मन् m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 40,26. fgg.

विद्रूपात्त (2. विद्रूप + अत्त *Auge*) 1) adj. (f. ई) *unförmliche Augen habend* PÂR. GṚHJ. 3,6. R. 3,23,16. 5,12,35. KUMÂRAS. 5,72. °तर् R. 6,76,43. — 2) m. N. pr. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. pl. *die Nachkommen des* Vir. SAṂSK. K. 184,*a*,2. *a*) ein best. göttliches Wesen ÇÂÑKH. GṚHJ. 4, 9. 6,6. Bein. Çiva's AK. 1,1,1,28. TRIK. 1,1,47. H. 197. HALÂJ. 1,13. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,84 (vgl. 23. 58). MBH. 1,569. 7970. 3,15801. 12,7551. 13,6727. 14,200. HARIV. 14842. 15419. R. 7,23,4,45. KUMÂRAS. 6,21. Spr. 1228. Verz. d. Oxf. H. 148,*b*,36. — *b*) ein Rudra GAṬÂDH. in Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,36. MBH. 12,7585. — *c*) ein Wesen im Gefolge Çiva's HARIV. 14849. 15422. — *d*) ein Jaksha KATHÂS. 34,67. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,36. fg. — *e*) ein Dânava MBH. 1,2533. 2658. HARIV. 12939. 14285. BHÂG. P. 6,6,30. — *f*) ein Râkshasa MBH. 3, 16372. 7,7905. 12,6356. R. 3,7,6. 5,12,12. 41,2. 29. 80,3. 83,1. 6,12, 20. 75,30. 76,43. 7,5,35. — *g*) ein Schlangenfürst LALIT. ed. Calc. 266, 19. 378,5. BURN. Intr. 167. Lot. de la b. l. 3. ein Lokapâla VJUTP. 83. — *h*) Verfasser von VS. 12,30. — *i*) Lehrer der Haṭhavidjâ Verz. d. B. H. No. 647. (Verz. d. Oxf. H. 233,*b*, No. 566. WILSON, Sel. Works 1,214. HALL 16). — *k*) der Weltelephant des Ostens R. 1,41,13. fg. (42, 12 GORR.). R. GORR. 1,43,7. — 3) f. ई N. pr. der Schutzgottheit im Geschlecht der Devala Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,20.

विद्रूपाश्व (2. विद्रूप + अश्व) m. N. pr. eines Fürsten MBH. 13,5667.

विद्रूपिन् (von 1. विद्रूप) m. *ein best. Thier*, = शल्यक RÂGAN. im ÇKDR.

विरेक (von रिच् mit वि) m. 1) *das Purgiren, Laxiren* ÇABDAR. im ÇKDR. SUÇR. 1,110,15. 193,14. 2,205,11. ÇÂRÑG. SAṂH. 3,4,10. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,22. 311,*b*,20. 357,*b*,24. संज्ञात° und दृश° adjj. KULL. zu M. 5,144. — 2) *Laxir* SUÇR. 1,128,16. 2,61,3. — Vgl. शिरो°.

विरेचक (vom caus. von रिच् mit वि) adj. *laxirend* ÇKDR. nach dem VAIDJAKA.

विरेचन (wie eben) 1) adj. *öffnend:* सिरामुख° SUÇR. 2,140,17. — 2) m. *ein best. Baum*, = पीलु RÂGAN. im ÇKDR. — 3) n. DHÂTUP. 29,4 (als Bed. von रिच्). *das Laxiren* ÇABDAR. im ÇKDR. SUÇR. 1,99,17. 2,22, 2. 205,3. Verz. d. Cambr. H. 64,12. fg. Verz. d. B. H. No. 933. 935 (S. 284, XXIII). 958. 963. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,18. 304,*b*,25. 307,*a*,27. ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 22. °द्रव्य *Laxirmittel* SUÇR. 1,135,18. 152,3. 160,7. 14. — Vgl. मूल°.

विरेच्य (wie eben) adj. *zu laxiren* SUÇR. 1,60,17. डुर्विरेच्य 2,455,19.

विरेपस् (2. वि + रे°) adj. *fehlerlos, tadellos* UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 4,189.

विरेफ m. *Fluss* DHANAÑǴAJA im ÇKDR.

विरोक (von 1. रुच् mit वि) 1) m. *das Erglänzen, Leuchten:* उषसः ṚV. 3,5,2. *Lichtstrahl* H. 100. HALÂJ. 1,39. — 2) m. n. *Höhlung, Loch* TRIK. 1,2,1. नासा° *Nasenloch* ÇIÇ. 5,54. — Vgl. 1. रोक.

विरोकिन् (von विरोक) adj. *leuchtend:* (मरुतः) विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः ṚV. 5,55,3. 10,78,3.

विरोग (2. वि + रोग) adj. *gesund* HARIV. 7672.

विरोचन (von 1. रुच् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *erleuchtend, erhellend:* सूर्यात्सर्वलोकविरोचनात् MBH. 12,13338. — 2) m. *a*) *die Sonne, der Sonnengott* AK. 1,1,2,31. 3,4,18,111. H. 97. an. 4,189. MED. n. 207. HÂR. 11. HALÂJ. 1,36. MBH. 3,193. 5,4920. RÂGA-TAR. 6,107. als Beiw. Vishṇu's zwischen रवि und सूर्य MBH. 13,7043. जयस्वामि° wohl *ein Heiligthum des Sonnengottes* RÂGA-TAR. 5,448. — *b*) *der Mond* AK. 3,4,18,111. H. an. MED. MBH. 9,2025. — *c*) *Feuer* AK. H. 1097. H. an. MED. — *d*) Bez. verschiedener Pflanzen: = रोहितक, श्योनाकप्रभेद und घृतकरञ्ज RÂGAN. im ÇKDR. — *e*) N. pr. eines Asura, eines Sohnes des Prahrâda (Prahlâda), Vaters des Bali und der Mantharâ (Dîrghaǵihvâ) TRIK. 2,8,21 (°सुत). H. an. MED. AV. 8,10,22. TBR. 1,5,9,1. KHÂND. UP. 8,7,2. MBH. 1,2527. fg. 2,2315. 5,1185. fgg. 12,3660. 6146. 8154. 8262. 12943. HARIV. 189. 379. 2286. 2432. 12461. 13013. 13019. 13182. 13214. 13480. fgg. R. 1,27,19 (28,18 GORR.). 6,36, 104. KAP. 4,17. KATHÂS. 47,17. VP. 147. BHÂG. P. 5,24,18. 6,18,15. 8, 10,20. 13,12. Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,16. — 3) f. आ N. pr. *a*) einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBH. 9,2648. — *b*) der Gattin Tvashṭar's und Mutter Viraǵa's BHÂG. P. 5,15,13. — Vgl. डुर्विरोचन, वैरोचन, वैरोचनि.

विरोचिष्णु (von 1. रुच् mit वि) adj. *glänzend, leuchtend:* ज्योतिस् M. 1,77.

विरोद्धर् (von 2. रुध् mit वि) nom. ag. *Kämpfer:* राजाविरोद्धा *ein König, der nicht kämpft*, Spr. 1270, v. l.; vgl. noch MBH. 2,1958.

विरोद्धव्य (wie eben) adj. *mit dem man sich in Streit einlassen muss, — darf:* बहवो न विरोद्धव्या डुर्जया हि महाजनाः Spr. 1954. impers.: विरोद्धव्यं न चास्मत्पत्येण श्रुतशर्मणा KATHÂS. 45,164.

विरोध (wie eben) m. 1) *feindseliges Auftreten, Feindseligkeit, Zwist, Hader, Streit* AK. 1,1,7,25. 3,4,24,154. H. 730. उत्तरोत्तरवाक्यं तु विरोध इति संज्ञितः BHAR. NÂṬJAÇ. 19,92. 65. अनुरोधविरोधाभ्याम् MBH. 12,9980. विरोधाय *zum Streite* 1,2502. 4,1588. HARIV. 5271. Spr. 5185. VARÂH. BṚH. S. 8,51 (pl.). को विरोधः *wozu nützt das Streiten* PRAB. 22,19. अन्तर° 86,19 (Gegens. साहित्य). पूर्व° PAÑKAT. 148,10. विरोधं नाधिगच्छति Spr. 4354. विश्रान्त UTTARAR. 107,17 (146,1). °शमन DAÇAR. 1,42. नैसर्गिको ऽप्युत्ससृजे विरोधः RAGH. 6,46. देवानां दैत्यानां च HARIV. 238. यादवानाम् *mit* 5266. विरोधो वा स्नेहो वापीह देहिनाम् KATHÂS. 23,30. कुरुपाण्डवानां तीव्रो विरोधः Spr. (II) 1406. VARÂH. BṚH. S. 47, 13. BHÂG. P. 4,13,44. ततस्तयोर्मिथस्तत्र विरोधः समजायत MBH. 1, 3285. तेषां विरोधो ऽन्योऽन्यमुभयो RÂGA-TAR. 4,687. विरोधं जनयामास तयोः R. 1,75,15. विरोधे तु महद्युद्धमभवत् 16 (77,19 GORR.). विरोधः स्याद्यथा ताभ्यामन्योऽन्येन MBH. 1,7699. इष्टमित्रैः VARÂH. BṚH. S. 89,11. विरोधे देवदानवैः *zwischen den Göttern und den* Dânava MBH. 9,2949. धात्रा ज्येष्ठेन — विरोधं गन्तुमर्हति HARIV. 7385. न विरोधो बलवता तमो रावण तेन ते R. 1,1,49 (53 GORR.). Spr. 1950. मित्रैः सह विरोधं च प्राप्नुते MBH. 3,1046. 13080. MṚKKH. 98,14. कृत्वा विरोधं विषयस्थितानाम् (राज्ञा) Spr. (II) 1760. विरोधं कुरुते चान्यो दंपत्योः *verwickelt sie in Streit* MÂRK. P. 51,29. Spr. (II) 1760 (die Uebersetzung demnach zu verbessern). PAÑKAT. 91,8. अकारणविरोधं च वयं तावन्न कुर्महे *einen Streit beginnen* KATHÂS. 45,166. अन्योऽन्यं न कर्तव्यो विरोधः 50,114. यदुभिः HARIV. 8024. R. 6,11,14. यतिभिः सह HARIV. 15648. RÂGA-TAR. 6,126. PAÑKAT. 162,14. ब्राह्मण° *Streit mit* MBH. 13,2108. 2162. RAGH. 10,13. Spr. (II) 316. 2224. (I) 2147. KATHÂS. 45,147. 49,66. BHÂG. P. 7, 5,47. पितापुत्र° *zwischen Vater und Sohn* JÂǴN. 2,239. MBH. 13,2878.

Varâh. Bṛh. S. 3,27. 5,21. 9,32. 11,10. 17,4. 53,41. परस्पर° Kathâs. 15,140. अ° *freundliches Verhältniss:* क्रियतामविरोधस्तु राघवेण R. 6, 95,14. ब्रह्मक्षत्राविरोधेन पूजां च प्राप्नुयामहम् MBh. 13,1935. देवासुराणां सर्वेषामविरोधः Hariv. 8752. *feindliche Berührung* unbelebter Gegenstände: अंशुविरोधे *wenn die Strahlen* (zweier Planeten) *in feindliche Berührung mit einander kommen* Varâh. Bṛh. S. 17,5. — 2) (*logischer*) *Widerstreit, Widerspruch, Unvereinbarkeit;* = विप्रतिपत्ति, व्याघात, असहभाव Comm. zu Njâjas. 1,1,23. अर्थद्रव्य° Kâtj. Çr. 1,4,16. 5,5. 4,3,9. 25,11,10. Kaṇ. 10,1,1. Kap. 1,36. 114. Jogas. 2,15. AK. 3,6,8,46. स्मृत्योः Jâǵn. 2,21. दैवं हि मानुषोपेतं भृशं सिध्यति — परस्परविरोधाद्धि सिद्धिरस्ति न चैतयोः MBh. 5,7471. विसर्जयति यद्येक (Vogel) एकश्च प्रतिषेधति। स विरोधो ऽशुभो यातुः Varâh. Bṛh. S. 86,54. चित्तचेष्टा° 104, 7. एकग्रहस्य फलयोर्विरोधे Bṛh. 8,23. इति महति विरोधे वर्तमाने समाने Spr. 1443. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 30. 39. तर्कैः Madhus. in Ind. St. 1,19,24. 26. 20,2. 3. स्ववचन° Sâh. D. 6,19. 718. तुल्यबलयोः 738. P. 1,4,2, Schol. Kull. zu M. 11,82. नहि विरोध उभयम् Bhâg. P. 6,9, 35. Vedântas. (Allah.) No. 90. Kusum. 17,3. 30,1. लोक° *das im Widerspruch-Stehen mit der Ansicht des Volkes* R. 2,58,29. Nîlak. 164. Siddh. K. zu P. 6,1,150. 7,2,10. Sarvadarçanas. 9,15. fg. 14,20. 16,1. 22,15. 42,15. 45,1. 61,20. 122,7. अ° (s. auch bes.) 89,2. विरोध unter den Arthâlamkâra Verz. d. Oxf. H. 208,b,5. — 3) *Conflict mit* so v. a. *Beeinträchtigung:* प्राणविरोधेन *auf Kosten von* MBh. 3,16960. अ° *Abwesenheit eines Conflictes mit* so v. a. *Nichtbeeinträchtigung:* पितृद्रव्याविरोधेन *ohne Nachtheil für* Jâǵn. 2,118. 175. अविरोधेन धर्मस्य MBh. 1, 3270. Mârk. P. 27,4. 109,8. धर्माविरोधेन 66,4. शरीरस्याविरोधेन MBh. 3,16959. स्वार्थावि° Spr. (II) 1460. 1684. Kâm. Nîtis. 14,39. Bhâg. P. 3, 7,32. 22,33. — 4) *das in Noth-Gerathen* (व्यसनप्राप्ति) Sâh. D. 359. *Widerwärtigkeit* Weber, Râmat. Up. 356 (pl.). — 5) *Verkehrtheit:* कुर्वञ्चाविधिना कर्म विरोधफलमश्नुते Kathâs. 64,14. — 6) fehlerhaft für निरोध MBh. 14,573 (ed. Bomb. नि°). R. 1,76 in der Unterschr. चित्तवृत्ति° Ind. St. 1,22,19. fg.

विरोधक (vom caus. von 2. रुध् mit वि) 1) adj. *im Widerspruch stehend —, unvereinbar mit:* गृहस्थाश्रमिणास्तच्च यज्ञकर्म विरोधकम् MBh. 12,353. धर्मे लोकवेदविरोधके 1,7257. — 2) subst. *Hemmniss:* कामक्रोध° adj. MBh. 14,765.

विरोधकृत् 1) adj. *Streit verursachend.* — 2) m. Bez. *des 45ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 332,a,4; vgl. रोधकृत्.

विरोधक्रिया f. *Hader, Streit* Ragh. 16,45.

विरोधन (vom caus. von 1. रुध् mit वि) 1) adj. *bekämpfend:* सर्वराज° MBh. 12,12960. — 2) n. = पर्यवस्था AK. 3,3,21. als Erklärung von रोदसी Nir. 6,1 (*das Zurückhalten* nach dem Comm.). a) *das Hadern, Streiten:* अन्योऽन्यरोषसंरब्धवचनरूपं विरोधनम् Pratâpar. 42,a,9. Daçak. 1,43. मातापित्रोः *mit den Eltern* Kathâs. 56,170. भृत्यानां चाविरोधनम् Kâm. Nîtis. 13,55. — b) *das Beeinträchtigen:* धर्मविरोधनात् (°विरोधवान् ed. Bomb.) R. 2,36,29. — c) in der Dramatik *das Innewerden der Gefährdung des Vorhabens* Sâh. D. 387.

विरोधभाज् adj. *im Widerspruch stehend, entgegengesetzt;* mit instr. Sâh. D. 242.

विरोधवत् (von विरोध) adj. am Ende eines comp. *verbunden mit einer Beeinträchtigung von:* अदुष्टस्य संत्यागः — धर्मविरोधवान् R. 2, 36,29 nach der Lesart der ed. Bomb. अ° *Nichts beeinträchtigend* Mârk. P. 34,14.

विरोधाचरण (विरोध + आ°) n. *eine feindselige Handlung* AK. 3, 4,18,121.

विरोधाभास (विरोध + आ°) m. *ein scheinbarer Widerspruch* Pratâpar. 89,a,6.

विरोधिता (von विरोधिन्) f. 1) *Feindschaft, Streit, Hader* Kathâs. 50, 115. Sâh. D. 17,10. मतिमद्भिः सह Spr. (II) 2414. परापरपक्ष° Prab. 87, 15. — 2) *Widerspänstigkeit:* eines Pferdes Varâh. Bṛh. S. 93,5. — 3) *das im-Widerspruch-Stehen, Entgegengesetztsein* Sâh. D. 242.

विरोधित्व (wie eben) n. *das Aufheben, Entfernen:* साक्षात्कारिभ्रमे (obj.) साक्षात्कारिविशेषदर्शस्यैव (subj.) विरोधित्वात् Comm. zu Kap. 1,60.

विरोधिन् (von 2. रुध् mit वि) 1) adj. a) *versperrend, hemmend, störend:* दस्यून्मार्गविरोधिनः Râǵa-Tar. 8,827. अर्थानस्वाध्यायस्य विरोधिनः M. 4,17. स्वाध्याय° Gobh. 3,5,17. Jâǵn. 1,129. प्रसव° Kull. zu M. 9,167. स्वर्गादिप्राप्ति° zu 2,161. इह दुःखाय मत्सूतिः परत्र च विरोधिनी Mârk. P. 121,35. क्लम° so v. a. *vertreibend* Çâk. 69, v. l.; vgl. Sâh. D. 180,1. अ° *nicht störend* so v. a. *wohlthuend* Spr. (II) 471, v. l. कर्म पूर्वकार्याविरोधि *nicht störend, nicht beeinträchtigend* 1883. — b) *feindlich, feindselig;* m. *Gegner, Feind* Halâj. 2,300. MBh. 7,8263. °योधाः Râǵa-Tar. 8,1761. 4482. P. 2,4,12, Vârtt. 2. Kumâras. 5,17. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,25, Çl. 7. अस्माकम् Kathâs. 34, 227. Râǵa-Tar. 4,86. परस्पर° Hariv. 11903. Spr. 4510. Prab. 86,17. सर्वप्राणि° Hariv. 16240. सर्वभूत° R. 6,9,14. सर्वभूताविरोधिन् *mit keinem Geschöpfe in Feindschaft lebend* Spr. 4094. मद्विधैर्विरोधिभिः Verz. d. Oxf. H. 18,a,1. पापकर्म° *Feind von Missethaten* 15,a,6. सौगतानामाचार्यविरोधिनः 254,a,6. ज्ञान° Vedântas. (Allah.) No. 21. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 96. कर्म° Sâj. zu Ṛv. 6,33,3. देशकाल° so v. a. *keine Rücksicht nehmend auf Zeit und Ort* Spr. 3155. — c) *im Widerspruch stehend, entgegengesetzt* MBh. 3,10572. Kaṇ. 1,1,14. 3,1,9. 11. 9,2,1. Kusum. 49,13. Bhâg. P. 4,4,20. H. 16. धर्मश्चार्थश्च कामश्च परस्परविरोधिनः MBh. 3,17386. Râǵa-Tar. 4,47. विद्या° Nîlak. 10. Sarvadarçanas. 47,18. 105,22. कर्म लोकद्वयविरोधि Spr. 4730. तर्केणा वेदशास्त्राविरोधिना M. 12,106. — 2) m. Bez. *des 23ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,37. Verz. d. Oxf. H. 331,b,2 v. u. — 3) f. विरोधिनी N. einer bösen Genie, einer Tochter des Duḥsaha, Mârk. P. 51,5. 30. 89. 93. — Vgl. कफ°, वन°.

विरोधोक्ति (विरोध + उ°) m. *Widerspruch,* = विप्रलाप AK. 1,1,5, 17. P. 1,3,50, Schol. ननु च स्याद्विरोधोक्तौ AK. 3,5,14. H. 1542.

विरोधोपमा (विरोध + उ°) f. *eine auf Gegensätzen beruhende Vergleichung:* शतपत्त्रं (blüht am Tage) शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम्। परस्परविरोधीति सा विरोधोपमा मता॥ Kâvjâd. 2,33.

विरोध्य (vom caus. von 2. रुध् mit वि) adj. *zu entzweien* MBh. 12,2050.

विरोपण (vom caus. von 1. रुह् mit वि) 1) adj. *vernarben —, heilen machend:* व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां तैलम् Çâk. 89. — 2) n. *das Pflanzen:* संक्रामण° *das Verpflanzen* Varâh. Bṛh. S. 55,7.

विरोष (2. वि + रोष) adj. 1) *zornentbrannt* MBH. 3, 15782. सरोष ed. Bomb. — 2) *frei von Zorn* MBH. 3, 11394.

विरोह (von 1. रुह् mit वि) m. 1) *das Ausschlagen* (von Pflanzen): शुष्क° VARÂH. BṚH. S. 46, 28. छेद° BHÂG. P. 6, 9, 8. — 2) *Pflanzstätte* (in übertr. Bed.): छेदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः BHÂG. P. 7, 9, 25.

विरोहण (von 1. रुह् mit वि simpl. und caus.) 1) adj. *vernarben —, heilen machend:* व्रण° ÇÂK. 89, v. l. für विरोपण. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons MBH. 1, 2150. — 3) *das Ausschlagen* (von Pflanzen) NIR. 6, 3. छिन्नस्य MBH. 12, 6837. शुष्क° VARÂH. BṚH. S. 46, 88. des Jûpa KÂTJ. ÇR. 25, 9, 15. ÇÂÑKH. GṚHJ. 5, 8.

विरोहित (2. वि + रो°) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. — Vgl. वैरोहित und वैरोहित्य.

विरोहिन् (von 1. रुह् mit वि) adj. *ausschlagend, treibend:* अकाल° SUÇR. 1, 224, 21.

विल in der Verbindung अश्वा °वीनयः KUMÂRAS. 6, 39 *equi e* Vila *oriundi* STENZLER. Nach MED. ist विल (s. u. बिल) ein N. des Pferdes Uk̄kaiḥçravas, welche Bedeutung hier passen würde.

विलक्ष (2. वि + लक्ष) adj. (f. आ) 1) *kein bestimmtes Ziel* (vor Augen) *habend:* विलक्षो वीक्षते दिशः VÂGBH. 7, 12. °दृष्टि Spr. 1749, v. l. — 2) = विस्मयान्वित AK. 3, 1, 26. = वीक्षापन्न H. 433. *beschämt, verlegen* KATHÂS. 36, 35. 39, 15 (स वि° zu lesen). 45, 248 (स वि° zu lesen). 46, 73. 72, 352. 108, 155. 124, 135. PAÑKAT. 147, 4. °मनस् 29, 15 (= 25, 22 ed. orn. विलक्षानन ed. Bomb. 30, 5). व्रीडा° ÇÂK. 132. दर्पभङ्ग° KATHÂS. 44, 60. सविलक्षम् adv. PAÑKAT. 209, 13. सविलक्षस्मितम् adv. MṚKKH. 90, 17. PAÑKAT. 19, 16. विलक्षस्मितम् (!) 215, 25.

विलक्षण (2. वि + ल°) adj. (f. आ) 1) *verschieden dem Charakter, dem Wesen nach, ungleich, unterschieden* SUÇR. 1, 61, 4. BHÂSHÂP. 113. NÎLAK. 169. SÂH. D. 24, 12. SARVADARÇANAS. 13, 2. 69, 12. 76, 14. KUSUM. 16, 10. हर्म्यं धनिनां विलक्षणगृहम् Schol. zu PRAB. 7, 5. अत्यन्त° MADHUS. in Ind. St. 1, 16, 11. स्थानत्रय° BHÂG. P. 6, 16, 61. mit abl.: सर्वस्मादन्यो विलक्षणः NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9, 132. अतस् ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 16. 156. SÂH. D. 24, 10. Verz. d. Oxf. H. 231, a, 38. परस्पर° SÂÑKHJAK. 36. SARVADARÇANAS. 142, 12. fg. भाषां पैशाचीं भाषात्रयविलक्षणाम् KATHÂS. 6, 4. 19, 106. KUMÂRILA bei MÜLLER, SL. 510. ÇAÑK. zu KHÂND. UP. S. 8. MADHUS. in Ind. St. 1, 14, 9. H. 1071. SÂJ. zu ṚV. 3, 53, 23. 8, 14, 13. SARVADARÇANAS. 81, 2. 3. 86, 16. 169, 19. Schol. zu KAP. 1, 25. 62. KULL. zu M. 5, 42. HALL in der Einl. zu SÂÑKHJAPR. S. 5. NÎLAK. 32. 166. त्रैलोक्यविलक्षणप्रकृति *anders als sie in den drei Welten vorkommt* SÂH. D. 55, 2. जगद्विलक्षणं शिरः RÂGA-TAR. 3, 387. *unter sich verschieden so v. a. mannichfach* Verz. d. Oxf. H. 188, b, 26. BHÂG. P. 5, 6, 6. 10, 46, 31. 11, 10, 8. — 2) *nicht näher zu charakterisiren, — zu bestimmen:* विलक्षणात्मन् BHÂG. P. 10, 70, 38. छाया als Erklärung von कापि Schol. zu KÂVJÂD. 2, 263. n. = आस्था हेतुशून्या AK. 3, 3, 2. H. 1497. — अविलक्षण KÂM. NÎTIS. 8, 14 fehlerhaft für अरिलक्षण, wie der Comm. liest. Vgl. वैलक्षण्य.

विलक्षणता f. nom. abstr. zu विलक्षण 1) SARVADARÇANAS. 62, 15. विलक्षणत्व n. desgl. BÂDAR. 2, 1, 4.

विलक्षीकार् (विलक्ष + कार्) *beschämen, verlegen machen:* °चकार KATHÂS. 66, 53. °कृत 6, 126. गत्या विलक्षीकृतहंसकान्ता ÇRUT. 21.

विलक्ष्य adj. 1) = विलक्ष 1): °दृष्टि (v. l. विलक्ष°) Spr. 1749. — 2) = विलक्ष 2) MÂRK. P. 69, 62.

विलङ्घन (von लङ्घ् mit वि) 1) n. *a) das Hinüberspringen über:* सागरस्य MBH. 3, 16254. — *b) das Anspringen, Anprallen* KIR. 5, 29. — *c) das Jmd-zu-nahe-Treten, Beleidigung* KIR. 13, 55. मद्विलङ्घनात् *wegen der mir angethanen Beleidigung* KATHÂS. 34, 41. — *d) das Fasten;* sg. und pl. SUÇR. 2, 519, 1. 374, 3. 440, 19. — 2) f. आ *das Hinüberkommen über Etwas so v. a. Ueberwinden:* शक्तो न को ऽपि भवितव्यविलङ्घनायाम् RÂGA-TAR. 8, 2281.

विलङ्घिन् (wie eben) adj. 1) *überspringend, überschreitend* (in übertr. Bed.): तपसा स्वमार्गविलङ्घिना RAGH. 15, 53. प्रतीतिः शब्दन्यायविलङ्घिनी KÂVJÂD. 1, 75. — 2) *anspringend, anstossend an:* नभोविलङ्घिभिः सेनारजोराशिभिः KATHÂS. 14, 13.

विलङ्घ्य (wie eben) adj. *mit dem oder womit man fertig werden kann, überwindbar:* अविलङ्घ्यया - ईर्ष्यया KATHÂS. 42, 161. Davon °ता f. nom. abstr.: दुष्प्रेक्ष्याणां भवत्येव नियमाद्राजभास्वताम् । भाग्यात्तक्षेमत्तद्दिने जननेत्रविलङ्घ्यता ॥ so v. a. *die Augen der Leute können den Anblick eines Fürsten und der Sonne ertragen* RÂGA-TAR. 8, 2288.

विलज्ज (2. वि + लज्जा) adj. *frei von Scham, schamlos* BHÂG. P. 7, 4, 40. 11, 2, 39.

विलपन (von 1. लप् mit वि) n. *das Jammern, Wehklagen* UTTARAR. 56, 17 (73, 10). HIT. 65, 20.

विलब्धि (von लभ् mit वि) f. *das Wegnehmen* KṚSHIS. 7, 24.

विलम्ब (von 1. लम्ब् mit वि) 1) adj. *herabhängend:* °बाहु R. 5, 42, 20. — 2) m. *a) das Säumen, Zögern, Verzögerung:* विलम्बो मे ऽभवत्तत्र तेन न त्वरयागतः R. 6, 83, 44. गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् GÎT. 11, 5. विक्रितविलम्ब 7, 2. KATHÂS. 32, 92. 34, 215. तन्मुखालोकनायैष विलम्बो हि कृतो मया 41, 49. देवस्यागमने ज्ञातो विलम्बः 56, 105. तद्विलम्बो न कार्यो ऽस्य मया 124, 61. BHÂG. P. 4, 26, 23. HIT. 99, 12, v. l. हेतोः सदा सत्त्वेन कार्यस्य विलम्बायोगात् SARVADARÇANAS. 141, 15. KUSUM. 34, 14. प्रतिश्रुति° RÂGA-TAR. 8, 1283. 1393. किं विलम्बेन R. 3, 35, 35. अलं विलम्बेन DHÛRTAS. 75, 10. PRAB. 77, 17. अलमतिविलम्बेन 73, 11. कुतस्त्वं विलम्बादागतो ऽसि *so spät* HIT. 68, 4, v. l. आगतं तु विलम्बेन KATHÂS. 60, 99. विलम्बेन *zu spät* RÂGA-TAR. 8, 1116. अ° TARKAS. 50. गमनप्रतिबोधयोरविलम्बार्थो चकारो *zeitliches Zusammenfallen* MALLIN. zu RAGH. 10, 6 bei STENZLER zu KUMÂRAS. 3, 58. अविलम्ब adj. Verz. d. Oxf. H. 261, a, 30. सविलम्बम् adv. RÂGA-TAR. 4, 572. Vgl. अविलम्बम् (auch HARIV. 16160) und माविलम्बम्. — *b)* N. *des 52ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* (vgl. विलम्बिन्) Verz. d. Oxf. H. 331, b, 1 v. u.

विलम्बक (wie eben) 1) m. N. pr. eines Fürsten KATHÂS. 47, 83. — 2) f. विलम्बिका (*das Pausiren der Ausleerung*) *eine Form von Indigestion mit Verstopfung* WISE 330. SUÇR. 2, 464, 3. 502, 5. 518, 4. 6. ÇÂRÑG. SAṂH. 1, 7, 7. VÂGBH. 8, 28. Verz. d. Oxf. H. 312, b, 7. Verz. d. B. H. No. 955. *das letzte Stadium der Choleraerschöpfung* MOLESW. s. v.

विलम्बन (wie eben) n. *das Säumen, Zögern, Verzögerung:* न ते कार्यं विलम्बनम् HARIV. 15653. तव त्वद्‌कं क्षमं मन्ये नोत्सुकस्य विलम्बनम् R. GORR. 2, 16, 17. न कालो ऽस्ति विलम्बने 6, 8, 45. HIT. 99, 12. GÎT. 5, 17.

न कुरु गमनविलम्बनम् 8. कलिङ्गसेनाविवाह° KATHÂS. 33,3. समयस्ते कृतो यो ऽसौ तस्य कालविलम्बनम् *das Verstreichen* R. 4,30,10. अविलम्बनकारणात् im Gegens. zu चिरकारणात् MBH. 1,5227. Auch विलम्बना f. R. 6,82,59. — Vgl. अ°.

विलम्बसौपर्ण n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,236,*b*. PAÑKAV. BR. 14,9,19. fg.

विलम्बित adj. *langsam, gemessen* s. u. 1. लम्ब् mit वि und füge noch hinzu Çikshâ 22 in Ind. St. 4,269. NÂG. in MAHÂBH. S. 772. विलम्बितम् adv. ÇIKSHÂ 35 in Ind. St. 4,271. अविलम्बितम् LÂṬJ. 6,10,18 ebend. 468, N. — Vgl. अ°.

विलम्बितगति adj. *einen langsamen Gang habend* und als f. N. eines Metrums: *4 Mal* ⏑—⏑⏑⏑—⏑—, ⏑⏑⏑—⏑——⏑— VARÂH. BṚH. S. 104, 16. Ind. St. 8,394.

विलम्बिता (von विलम्बिन्) f. *Langsamkeit, Gemessenheit:* नातिविलम्बिता वाचः H. 70.

विलम्बिन् (von 1. लम्ब् mit वि und von विलम्ब) 1) adj. *a) herabhängend, hängend an:* नेत्र SUÇR. 2,358,18. व्रण ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,56. आजानु° (भुज) RAGH. 16,84. 18,25. घनाः VARÂH. BṚH. S. 30,29. दिगन्तविलम्बिनः सलिलदाः 24,19. शैलशिखरेषु विलम्बिबिम्बा मेघाः MṚKKH. 82, 25. दरीगृहद्वारविलम्बिबिम्बाः — बलदाः KUMÂRAS. 1,14. KIR. 5,6. नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः Spr. 2029. श्रवणान्तविलम्बिना कदम्बेन MṚKKH. 88,6. KUMÂRAS. 2,26. ÇÂK. 145. भूमेः कण्ठविलम्बिनीव कुटिला मुक्तावली जाह्नवी PRAB. 80,8. प्राङ्गणद्वारकवाटान्त° *sich lehnend an* KATHÂS. 15,89. — 2) am Ende eines comp. *behängt mit, woran Etwas hängt:* प्रलम्बबाहूरुकरग्रङ्गान्तरविलम्बिनाम्। कन्तानाम् *an denen die Arme* u. s. w. *schlotternd hängen* MBH. 3,16348. नेत्रैरस्रुविलम्बिभिः *an denen Thränen hängen* MÂRK. P. 12,23. श्वाजन्मुक्तादामविलम्बिना वितानेन BHÂG. P. 10,60,3. 69,10. 81,30. 4,9,55. — *c) zögernd, säumend:* भवति विलम्बिनि GÎT. 6,8. so v. a. *widerstrebend* ÇÂK. 173, v. l. — 2) m. n. N. *des 52ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* (vgl. विलम्ब) VARÂH. BṚH. S. 8,39. WEBER, GJOT. 99.

विलम्भ (von लभ् mit वि) m. *Freigebigkeit* AK. 3,3,28. H. 1519.

विलय (von 1. ली mit वि) m. P. 6,1,150, Vârtt. = प्रलय ÇABDAR. im ÇKDR. *das Verschwinden, Vergehen, zu-Nichte-Werden, Untergang:* वैदेह्याः UTTARAR. 127,10 (172,3). धनस्य Spr. 1289. गुल्म° VÂGBH. 25, 28. जगाद्विलयाम्बु BHÂG. P. 7,9,32. विघ्न° PRAB. 112,14. तद्वानाम् 114, 19. BÂLAB. 46. शील° Spr. 2731. कर्म° ÇATR. 14,96. आकाशधर्माधर्मादि° KUSUM. 25,10. Gegens. उदय BHÂG. P. 5,17,24. विलयं गम् u. s. w. *verschwinden, zu Nichte werden, sein Ende finden:* अगच्छन्विलयं सर्वे तार्क्ष्यं दृष्ट्वेव पन्नगाः MBH. 8,1082. रावणाशराः — विलयं जग्मुः R. 6,79,75. दिवसो ऽनु मित्रमगमद्विलयम् ÇIÇ. 9,17. आशा विलयं गता Spr. 1672. दृशो ऽसुराणाम्। यत्नागता विलयम् MÂRK. P. 84,19. विलयं समुपाजग्मुः MBH. 1,1131. विलयं व्रज् R. 5,56,117. 7,106,9. विलयं या Spr. 525 (II). 1371. MÂRK. P. 39,62. पुण्ये विलयमास्थिते LA. (III) 90,19. अश्मवर्षं विलयं गमयामास *zu Nichte machen* MBH. 1,8280. विलयं पावकं शीघ्रमनयन् 8155. ईषद्विलय und सु° adjj. P. 6,1,50, Vârtt., Schol.

विलयन (wie eben) 1) adj. *auflösend* SUÇR. 1,31,14. 148,6. — 2) n. *das Verschwinden, Vergehen, Auflösung:* कफ° SUÇR. 1,155,18. कफो विलयनं (so ist zu lesen) याति 2,501,11. *das Schmelzen* (intrans.) KAṆ. 5,2,8.

विलला f. *eine best. Pflanze,* = श्वेतबला RATNAM. im ÇKDR.

विलसन (von 1. लस् mit वि) n. *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit* (eines Weibes) und zugleich *das Zucken* (des Blitzes) MEGH. 39. DAÇAK. 91,9.

विलात adj. gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. f. आ gaṇa अजादि zu 4,1,4. — Vgl. वैलात्य.

विलातर् nom. ag. und विलातव्य partic. fut. pass. von 1. ली mit वि P. 6,1,51, Schol.

विलातिमन् m. nom. abstr. von विलात gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

विलाप (von 1. लप् mit वि) m. *Wehklage* AK. 1,1,5,16. H. 275. HALÂJ. 3,17. MBH. 10,168. R. 1,3,12 (7 GORR.). 20. 24. 2,21,53. 41. fg. in der Unterschr. 105,35. R. GORR. 2,53,31. 4,29 in der Unterschr. RAGH. 8 in der Unterschr. 12,78. GÎT. 1,28. विरचितविविध° 7,2. MÂRK. P. 136, 6. PAÑKAR. 1, 7, 78. 12, 4. करुणाविलापशब्द VET. in LA. (III.) 24, 20. fg. — Vgl. ब्राह्मण°.

1. विलापन (vom caus. von 1. लप् mit वि) 1) adj. *Wehklagen verursachend:* अस्त्र HARIV. 12734. R. 1,56,7 (57,7 GORR.). — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's VJÂḌI im Comm. zu H. 210. HARIV. 9558. — 3) n. *a) das wehklagen-Machen:* मद्विलापनं संत्यज्ञ MBH. 12, 6613. = नाश NÎLAK. — *b)* aus metrischen Rücksichten = विलपन *das Jammern, Wehklage* BHÂG. P. 1,18,39. 6,14,58. PAÑKAR. 1,11,6.

2. विलापन (vom caus. von 1. ली mit वि) 1) adj. (f. ई) *verschwinden —, zu Nichte machend, entfernend, auflösend:* कफमेदो° SUÇR. 2, 140, 8. *schmelzend* (trans.): आज्यविलापनी sc. स्थाली *Schmelzpfanne* ÇAT. BR. 1,9,2,1. 3,1,4,17. 4,4,22. — 2) n. *a) Untergang, Tod* BHÂG. P. 1,7,12. — *b) das Schmelzen* (transit.) MADHUS. in Ind. St. 1,15,2.

विलापिन् (von 1. लप् mit वि) adj. *klagend, jammernd* oder überh. *Töne von sich gebend:* कलविलापिकलापिकदम्ब ÇIÇ. 6,31.

विलायक (vom caus. von 1. ली mit वि) adj. *schmelzend, erweichend:* मनसो ऽसि विलायकः VS. 20,34.

बिलायन (बिल + अ°) n. *Höhle, Versteck unter der Erde* BHÂG. P. 5, 24,16. वि° BURN. वि° ed. Bomb.

विलाल m. = यन्त्र ÇABDAK. im ÇKDR. — Vgl. बिलाल.

विलापिन् adj. von 1. लप् mit वि P. 3,2,144.

विलास (von 1. लस् mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) das Erscheinen, zum-Vorschein-Kommen:* सुरतरस° ṚT. 3,24. मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूण° GÎT. 1,30. — *b) heiteres Spiel, Scherz, lustiges Treiben, Amüsement; Treiben* überh.; = लीला AK. 3, 4,26,201. H. an. 3,756. MED. s. 38. तेन च मह्यता विलासेनास्माभिर्विन्ध्याचले स्थातव्यम् HIT. 114,18. °व्यय 98,17, v. l. विलासाय *zum Vergnügen* Verz. d. Oxf. H. 153,*a*, No. 328, Z. 6. Z. d. d. m. G. 14,574,24. fg. 576,5. Spr. (II) 1039. 1948. (I) 2657. KATHÂS. 75,72. BHÂG. P. 3,25,36. सिंहविलासविक्रम MBH. 4,231. सविलासान्मदालसान्। मयूरान् 3,11584. अम्भोजिनीवननिवासविलासो हंसस्य Spr. (II) 544. विधेः KATHÂS. 26,18. 73,354. वेधसः 72,14. तारुण्यस्य SÂH. D. 52,12. तरुणयोषिल्लोचनानाम् Verz. d. Oxf. H. 120,*a*,15. वचसां विलासाः *literärische Spielereien*

110,a,31. वाग्विलास dass. 120,a,13. 167,b,15. Spr. (II) 433. लक्ष्मीविलासा: UTTARAR. 113,16 (154,3). RÂGA-TAR. 3,259. फेणविलासप्रोज्ज्वलकाशा *fröhliches Hinundherwogen* KHANDOM. 119. सविलासम् adv. RÂGA-TAR. 8,807. Spr. 4139. — c) *gefallsüchtiges Gebaren eines Weibes, verliebte Gebärden* u. s. w. AK. 1,1,7,31. H. 507. H. an. MED. (क्राव st. क्रार zu lesen). HALÂJ. 1,89. SÂH. D. 125. definirt 137. BHARATA beim Schol. zu NALOD. 2,55. DAÇAR. 2,35. GAGADDHARA bei HALL in der Einl. zu DAÇAR. S. 20. — HARIV. 8760. KUMÂRAS. 3,5. 5,13. ÇÂK. 35. Spr. (II) 410. 1123. (I) 1610. 1547. 2673. 3318. 5149. VARÂH. BRH. S. 78,13. 104, 53. 63. GÎT. 1,3. KHANDOM. 35. KATHÂS. 24,86. 49,48. 52,306. RÂGA-TAR. 5,360. 365. PRAB. 40,13. 101,12. BHÂG. P. 1,9,40. 5,17,13. 24,16. MÂRK. P. 106,60 (कुर्वत्यो zu lesen). DHÛRTAS. 73,16. SARVADARÇANAS. 78,12. *gefallsüchtiges Gebaren* überh.: सविलासाङ्गदर्शन SÂH. D. 181. सविलासहास VARÂH. BRH. 4,2. ÇIÇ. 9,26. BHÂG. P. 9,24,64 (सुविलास° ed. Bomb.).* — d) *Lebhaftigkeit*, eine der acht Vorzüge des Mannes, DAÇAR. 2,9. fg. SÂH. D. 89. 91. 277. Hierher könnte gezogen werden: यदि सुप्तस्य विश्रान्तविलासापीयमोदृशी । नृपशोभास्य तत्कीदृक्प्रबुद्धस्य भवेत्सखी ॥ KATHÂS. 40,175. — e) *erwachter Geschlechtstrieb, Geilheit* BHAR. NÂTJAÇ. 19,75. रत्यर्थेक्ता विलास: स्यात् DAÇAR. 1,30. 29. SÂH. D. 352. — f) *Anmuth, Liebreiz:* पदन्यास° BHÂG. P. 3,5,44. 5,2,5. 18,16. पदपङ्कजपलाश° 4,22,39. — g) N. pr. eines Mannes (v. l. कर्पूर°) HIT. 81,11, v. l. — 2) n. *ein best. Metrum* Ind. St. 8,357. — Vgl. ग्रनूप°, ग्रार्या°, कला°, काशी°, ज्ञान°, दुर्गा°, प्रतिभा°, भगवद्भक्ति°, भामिनी°, भ्रू° (auch BHÂG. P. 8,8,46. सभ्रूविलासम् MÂLATIM. 15,6), मोललक्ष्मी°, यति°, राघव°, राम°, वाणी°, विज्ञेय° (विज्ञेय°?), विवेक°, शंकरचेतो°.

विलासक (von विलास) 1) adj. f. विलासिका *sich hin und her bewegend, hinundher tanzend:* पताका: MBH. 7,3932. — 2) f. विलासिका *eine Art von Schauspielen* SÂH. D. 552.

विलासकानन n. *Lustwald* WILSON und ÇKDR.

विलासदोला f. *Vergnügungsschaukel:* स्मर° PAÑKAT. ed. orn. 49,24.

विलासन n. = विलसन *heiteres Spiel, frohe Ausgelassenheit* MBH. 3, 1829 (विलसन wäre gegen das Metrum).

विलासपुर n. N. pr. einer *Stadt* KATHÂS. 40,42. 98.

विलासभवन n. *Lusthaus* RÂGA-TAR. 1,292.

विलासमणिदर्पण m. *ein als Spielzeug dienender Spiegel aus Edelsteinen* RÂGA-TAR. 4,589.

विलासमन्दिर n. *Lusthaus* WILSON und ÇKDR.

विलासमेखला f. *ein als Spielzeug dienender* (kein eigentlicher) *Gürtel* RAGH. 8,63.

विलासवत् (von विलास) 1) adj. am Ende eines comp. *mit Scherzen des — versehen:* विदूषक° SÂH. D. 553. — 2) f. विलासवती a) *ein Frauenzimmer mit gefallsüchtigem Gebaren* RT. 1,12. RAGH. 9,48. — b) N. pr. verschiedener Frauenzimmer Verz. d. Oxf. H. 139,b,2. 153,a,18. fg. HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. S. 37. KÂD. in Z. d. d. m. G. 7,583. — c) Titel eines Schauspiels SÂH. D. 202,8.

विलासवसति f. *Vergnügungsort:* लक्ष्मी° KATHÂS. 9,5. साकूतकला° DHÛRTAS. 83,2.

विलासविपिन n. *Lustwald* KHANDOM. 42. PRAB. 73,8.

विलासविभवानस (!) adj. = लुब्ध GAṬÂDH. im ÇKDR.

विलासवेश्मन् n. *Lusthaus* KATHÂS. 94,6.

विलासशय्या f. *Lustlager* KATHÂS. 103,211.

विलासशील m. N. pr. eines Fürsten KATHÂS. 40,42.

विलासस्वामिन् m. N. pr. eines Mannes Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,11.

विलासिका s. u. विलासक.

विलासिता (von विलासिन्) f. *die Rolle des Scherzenden* u. s. w. HARIV. 8759.

विलासित्व (wie eben) n. *Munterkeit, Fröhlichkeit, heiteres Gebahren* MÂLAV. 57. लक्ष्म्या: RÂGA-TAR. 4,16.

विलासिन् (von 1. लस् mit वि oder von विलास) 1) adj. P. 3,2,143. a) *glänzend, strahlend:* वक्त्रं चन्द्रविलासि Spr. 2696, v. l. वयोरूपविलासिन्यो नार्य: MBH. 13,5242. — b) *sich hinundher bewegend:* पताका: MBH. 3,11700. — c) *munter, ein Freund der Fröhlichkeit, sich gern vergnügend, Genüsse liebend;* = भोगिन् H. an. 3,419. MED. n. 210. — R. GORR. 2,34,14. RAGH. 14,30. Verz. d. Oxf. H. 153,a, No. 328, Z. 7 (विलाशिन् gedr.). कमलालोलदृगञ्चल° *seine Freude habend an* 240,a, No. 582. गणिका° *sich vergnügend mit* DHÛRTAS. 70,10. — d) *coquettirend* RAGH. 6,14. मुग्धवधूनिकर GÎT. 1,38. चतुर्नर्तकीनाम् KIR. 10,41. — e) *verliebt;* m. *Geliebter, Gatte* KUMÂRAS. 4,5. 9,31. 42. 19,25. SÂH. D. 42,20. श्रीललना° Verz. d. Oxf. H. 187,b, No. 428, Z. 18. विलासिनौ *ein liebendes Paar* SÂH. D. 225. — 2) m. a) *Schlange* H. an. MED. — b) *Feuer.* — c) *der Mond.* — d) Kṛshṇa MED. — e) Çiva. — f) *der Liebesgott* ÇABDAR. im ÇKDR. — 3) f. विलासिनी a) *ein munteres Frauenzimmer, ein anmuthiges Weib, Weib* überh., *Geliebte; ein leichtfertiges Frauenzimmer;* = नारी RÂGAN. im ÇKDR. = वेश्या DHANAÑGAJA ebend. — MBH. 1,3893. 3,1830. 4,401. R. 1,10,35 (37 GORR.). 3,24,12. 52,23. 5,22,18. 29. 37,17. 6,108,32. RT. 4,2. RAGH. 6,17. KUMÂRAS. 7,69. ÇRUT. 29. MÂLAV. 53. ÇIÇ. 8,70. Spr. (II) 488. (I) 2177. 2673, v. l. VARÂH. BRH. S. 48,8. 10. 104,32. KATHÂS. 6,63. 38,160. 43,11. 52,31. 285. 287. 53, 60. 58,15. 49. 60,172. RÂGA-TAR. 3,413. 4,432. PRAB. 2,6. 37,8. SÂH. D. 18,18. MÂRK. P. 129,9. सुरशत्रु° *Gattin* Verz. d. Oxf. H. 139,a, No. 276. RAGH. 6,28. नवमल्लिका तरुचारु° 9,41. राज° *Concubine* KATHÂS. 53, 58. PAÑKAT. 156,22. fg. — b) *ein best. Metrum* Ind. St. 8,395. fg. — c) ein Frauenname KATHÂS. 44,57. 46,194. fg. — Vgl. पण्यविलासिनी, बुद्धि°, मत्त°, वर° (auch KATHÂS. 38,19), रूढ°.

विलासिनिका (von विलासिनी) f. *Geliebte, Gattin:* मुषलियुद्धि° PAÑKAR. 3,2,5.

विलिख (von लिख् mit वि) s. ग्र°.

विलिखिन PAÑKAT. ed. orn. 54,12 fehlerhaft für विलिखित.

विलिगी f. *eine Schlangenart* AV. 5,13,7.

विलिङ्ग (2. वि + लिङ्ग) n. *das Fehlen aller Erkennungsmittel:* कर्म चैतद्विलिङ्गस्थम् so v. a. *aus dem man nicht klug zu werden vermag* MBH. 2,845. ग्रन्यच्छिङ्गमन्यत्कर्मेत्यर्थ: NILAK.

विलिप्त 1) adj. s. u. लिप् mit वि. — 2) f. ग्रा (2. वि + लि°) *eine Secunde,* $^1/_{3600}$ *eines Grades* GAṆIT. KÂLAMÂN. 18. GRAHÂNAJ. 19 u. s. w. — 3) f. विलिप्ती Bez. *der Kuh in einem gewissen Stadium:* वि°, सूत-

वशा, वशा AV. 12,4,41. fgg.

विलिप्तिका f. = विलिप्ता GAṆIT. SPASHṬÂDH. 67.

विलिस्तेङ्गा f. N. pr. einer Dânavî KÂṬH. 13,5.

विलीढी (von 1. लिह् mit वि) f. Bez. eines best. unholden Wesens AV. 1,18,4.

विलीन s. u. 1. ली mit वि. Davon विलीनय्, °यति *schmelzen* (trans.) P. 7,3,39, Schol. VOP. 18,15.

विलीयन (wie eben) n. *das Schmelzen* (intrans.) Comm. zu ÂÇV. ÇR. 2,6,10.

विलुण्ठन (von 2. लुण्ठ् mit वि) n. *das Plündern*: स्वर्गग्रामटिका° SÂH. D. 3,2. 111,22. 214,3. *das Rauben, Stehlen*: मधूनाम् R. GORR. 1,4,87.

विलुण्ठिका f. zu विलुण्ठक nom. ag. von 2. लुण्ठ् mit वि; s. मुख°.

विलुप्य (von 1. लुप् mit वि) adj. *zerstörbar, zu Grunde zu richten*: अविलुप्यधैर्यनिधि *unverwüstlich* Spr. 5293 (die urspr. Lesart herzustellen).

विलुम्पक (wie eben) nom. ag. 1) *Räuber, Dieb*: वसोः (d. i. वसुनः) BHÂG. P. 1,18,44. — 2) *Zerstörer*: लोकस्य im Gegens. zu लोकपालो लोकानाम् MBH. 13,7249.

विलूरय् *zerkratzen*: मर्कटी तं भीतिकं कर्णनासिकादिषु विलूरयामास KATHÂRṆAVA in Z. d. d. m. G. 14,572,18.

विलेख (von लिख् mit वि) 1) m. *Verwundung*: हृदय° Schol. zu KÂTJ. ÇR. 25,3,2. 4,31. fg. — 2) f. आ *eine eingeritzte Linie* SUÇR. 1,36,10. wohl *die Spur, die ein Rad einschneidet* in: छायातप° adj. zu कालचक्र MBH. 14,1237. छायातपौ मेघसंतापौ विलेखावुत्खातारौ यत्र तत् NÎLAK.

विलेखन (wie eben) 1) adj. *aufritzend, wund machend* SUÇR. 1,198, 21. 228,4. — 2) n. *a*) *das Einritzen, Ziehen von Furchen* DHÂTUP. 28,6. *das Zerkratzen, Verwunden*: नखैरकस्मात्परितः स्वधात्र्यङ्गविलेखनम् Verz. d. Oxf. H. 307,*b*,31. विलेखनमिवात्युग्रो (निकर्तनमिवात्युग्रं ed. Bomb.) लाङ्गूलस्य यथा हरिः (न मृष्यति) MBH. 7,7634. — *b*) *der Lauf* (eines Flusses) HARIV. 12377.

विलेखिन् (wie eben) adj. *ritzend* so v. a. *sich reibend an, hinanreichend bis an*: (प्रासादैः) नभस्तलविलेखिभिः MBH. 1,6963.

विलेतर् nom. ag. und विलेतव्य partic. fut. pass. von 1. ली mit वि P. 6,1,51, Schol.

विलेप (von लिप् mit वि) 1) m. *Salbe*: अङ्ग° BHÂG. P. 10,42,1. — 2) f. ई *Reisbrei* AK. 2,9,50. H. 397. SUÇR. 1,72,7. 229,10.15. 2,229,20. VÂGBH. 6,30. ÇÂRṄG. SAṂH. 2,2,113.

विलेपन (wie eben) 1) n. *a*) *das Bestreichen, Besalben* AK. 3,3,27. SUÇR. 2,455,21. ÇÂRṄG. SAṂH. 3,11,11. कृतधूपविलेपनः समुत्थाप्यः स्तम्भः VARÂH. BṚH. S. 53,113. कुर्वन्पृष्ठविलेपनम् KATHÂS. 37,24. Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,1. — *b*) *Salbe* AK. 2,6,3,35. H. 635. HALÂJ. 2,390. पिंषे साधु विलेपनम् MBH. 4,261. HARIV. 6281. Spr. (II) 1910. 2215. (I) 1015. VARÂH. BṚH. S. 12,16. 44,27. KATHÂS. 37,5. 7. 85,21. 94,113. 104,56. RÂGA-TAR. 2,106. PAṄKAR. 3,8,4. PAṄKAT. ed. orn. 52,25. DAÇAK. 89,18. VET. in LA. (III) 21,4. WILSON, SÂṂKHJAK. S. 11. am Ende eines adj. comp. f. आ R. 5,81,53. KATHÂS. 55,62. — *c*) vielleicht = विलेपनी *Reisbrei*: गोष्ठे ऽग्निमुपसमाधाय विलेपनं जुहुयात् GOBH. 3,6,4. — *d*) Bez. *einer best. mythischen Waffe* R. 1,29,16. — 2) f. ई *a*) *Reisbrei*. — *b*) *ein hübsch gekleidetes Frauenzimmer* (चारुवेषस्त्री, सुवेषस्त्री) H. an. MED.

विलेपनिन् (von विलेपन) adj. *gesalbt*: अ° R. 1,6,9 (11 GORR.).

विलेपिका f. 1) (von विलेपक und dieses von लिप् mit वि) *Salberin* gaṇa महिष्यादि zu P. 4,4,48. Vgl. वैलेपिक. — 2) = विलेपी *Reisgrütze* HALÂJ. 2,165.

विलेपिन् (von लिप् mit वि und von विलेप) adj. 1) *salbend*: पृष्ठ° KATHÂS. 37,25. — 2) *klebrig*: अ° SUÇR. 2,176,14.

विलेप्य (von लिप् mit वि) 1) adj. *was gestrichen wird* so v. a. *aus Mörtel* u. s. w. *bereitet* oder *gemalt* BHÂG. P. 11,27,14. — 2) m. *Reisbrei* ÇABDAR. im ÇKDR. — 3) f. आ dass. H. 397, Schol.

1. विलोक (von लोक् mit वि) m. *Blick* BHÂG. P. 10,16,20.

2. विलोक (2. वि + लोक) = विजन *Menschenleere*: °स्थ *nicht unter Menschen lebend* MBH. 13,5888.

विलोकन (von लोक् mit वि) n. *das Hinschauen, Hinsehen, Schauen, Blick* SUÇR. 2,314,17. SÂH. D. 186. Spr. 5149. MÂLATIM. 68,5. MÂRK. P. 68,46. उत्फुल्ललोचन° Verz. d. Oxf. H. 161,*a*,6 v. u. ÇIÇ. 1,29. अदभ्रकरुणा BHÂG. P. 4,1,56. *das Anschauen, Anblicken, Betrachten*: अन्योऽन्यमवितृप्तौ विलोकने KATHÂS. 18,371. दिव्यान्योऽन्यवपुर्विलोकन 52, 407. Spr. 1572. 5400. *das Einsehen, Studiren* (eines Werkes) Verz. d. Oxf. H. 37,*b*, No. 92. *das Erblicken, Gewahrwerden*: सर्वलोक° PAṄKAR. 1,11,22. KIR. 5,16. KATHÂS. 25,298. 26,39. कार्याकार्य° Spr. 2035. — Vgl. दिग्विलोकन.

विलोकिन् (wie eben) adj. *hinsehend, blickend*: कटाक्षार्ध° KATHÂS. 37, 210. *anschauend, betrachtend*: मधूत्सव° 17,72. राजानन° 52,350. *erblickend, gewahr werdend*: जिनानन° ÇATR. 1,48.

विलोक्य (wie eben) adj. *sichtbar* MÂRK. P. 43,39. *was angeschaut wird*: यस्याः कटाक्षमात्रेण विलोक्यमपि वर्धते Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,18.

1. विलोचन (von लोच् mit वि) 1) adj. *sehend machend, das Augenlicht verleihend* oder *sehend*: अक्ष्णोः (विष्णोः) सूर्यः समुत्पन्नः सर्वप्राणिविलोचनः HARIV. 14943. — 2) n. = लोचन *Auge* H. 575, Schol. GAṬÂDH. im ÇKDR. HARIV. 4311. ṚT. 2,12. RAGH. 7,8. KUMÂRAS. 3,67. fg. 4,2. VIKR. 132. Spr. (II) 1672. VARÂH. BṚH. S. 12,10. 28,6.11. 43,62. GÎT. 1,40. NAISH. 22,47. KATHÂS. 14,24. 18,223. Verz. d. Oxf. H. 257,*a*,5. BHÂG. P. 3,3,15. 14,14. MÂRK. P. 132,33. साश्रु° adj. 22,20. VARÂH. BṚH. S. 32,5. अश्रु° dass. 93,14. am Ende eines adj. comp. f. आ KIR. 5,33. KATHÂS. 34,37 (साश्रु°). MÂRK. P. 21,17. 63,3. Vgl. एक°.

2. विलोचन (2. वि + लो°) 1) adj. *die Augen verdrehend*: शत्रुर्मित्रमुखो यश्च जिह्मप्रेक्षी विलोचनः (= विपरीतदृष्टिः NÎLAK.). — 2) N. pr. *a*) einer Gazelle HARIV. 1210. — *b*) eines Dichters HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 21. — *c*) einer mythischen Person KATHÂS. 47,86.

विलोचनपथ m. *Bereich der Augen*: °पथं चास्य न गच्छत्यनलंकृता *zeigt sich ihm nicht* SÂH. D. 155.

विलोट m. nom. act. von लुट् mit वि; s. u. लुट्.

विलोटक m. *ein best. Fisch*, = नलमीन ÇABDAK. im ÇKDR.

विलोटन n. nom. act. von लुट् mit वि; s. u. लुट्.

विलोड m. nom. act. von लुड् mit वि; s. u. लुट्.

विलोडक (von लुड् mit वि) m. *Dieb*; s. वर्ण° und vgl. लुण्ठ् mit वि.

विलोडन (von लुड् mit वि) n. nom. act. DHÂTUP. 2,4. 3,5. 9,27. 16,

48. 20,18. 26,113. 31,40. *das Verrühren, Umrühren, Quirlen:* दधि° KHANDOM. 34. सिन्धु° PRATÂPAR. 93,*b*,3. *das in-Verwirrung-Bringen:* शत्रु° ebend.

विलोडयितर् (wie eben) nom. ag. zur Erklärung von विगाढर् Schol. zu BHAṬṬ. 9,29.

विलोडित (wie eben) 1) adj. *verrührt, umgerührt.* — 2) n. = तक्र RÂǴAN. im ÇKDR. = दधि AUSH. 42.

विलोप (von 1. लुप् mit वि) m. 1) *Verlust, Unterbrechung, Störung, das zu-Nichte-Werden* R. 2,48,23 (45,28 GORR.). साधु° (so ist zu schreiben) MBH. 5, 813. धर्म° 12,3566. अविलोपेन धर्मस्य 5,3232. व्रतवृत्ति° KÂM. NITIS. 5,65. 18,8. 9. 61. KUSUM. 22, 6. 27,3. 38,20. 52,7. अ° RV. PRÂT. 11, 28. Schol. zu 8. 10. — 2) *Raub:* स्वर्गरत्न° HARIV. 7628. — Vgl. लोप und विपरिलोप.

विलोपक (vom caus. von 1. लुप् mit वि) nom. ag. 1) *der Etwas zu Nichte macht:* धर्म° HARIV. 11179. कलिकाल° PAŃKAR. 4, 3, 159. — 2) *Plünderer:* राजकोश° MBH. 12,3058.

विलोपन (wie eben) n. 1) *das zu Nichte-Machen:* तस्य रावणसैन्यस्य कुर्वन्दृष्टिविलोपनम् R. 6,90,27. — 2) *das Auslassen, Weglassen:* धर्मवादि° (so ist zu schreiben, d. i. धर्व-इवादि-) SÂH. D. 657. — 3) *das Zerpflücken:* केचिन्माल्यविलोपनैकनिपुणाः (es könnte auch die Bed. *Stehlen* angenommen werden; wahrscheinlich ist aber विलोपन nur Fehler für विलेपन) Spr. (II) 1902. — 4) *das Stehlen:* पररत्न° HARIV. 8212.

विलोपिन् (von लुप् mit वि) adj. *zu Nichte machend:* मदराग° RAGH. 10,12. सौभाग्य° KUMÂRAS. 1,3.

विलोप्तर् (wie eben) nom. ag. *Dieb, Räuber* MBH. 13,3095.

विलोप्य (vom caus. von 1. लुप् mit वि) adj. *zu Nichte zu machen:* नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28, Çl. 4.

विलोभन (vom caus. von लुभ् mit वि) n. 1) *das Locken, Verlockung:* अवृतस्य विलोभनान्तरैर्मम RAGH. 8,68. KIR. 10,17. कन्या° BHAR. NÂṬJAÇ. 18,69. °वस्तूनि DAÇAK. 188,4. — 2) *das Hervorheben von Vorzügen (wodurch man Jmd zu Etwas zu verleiten sucht)* BHAR. NÂṬJAÇ. 19,71. 57. DAÇAR. 1,25. SÂH. D. 342. PRATÂPAR. 21,*a*,4.

विलोम (2. वि + लोमन्) 1) adj. (f. आ) = प्रतीप H. 1465. an. 3,472. MED. m. 53. *a) wider das Haar —, wider den Strich —, in entgegengesetzter Richtung gehend, in verkehrter Ordnung laufend:* त्रिकवलनविलोमं वीक्ष्य दूरात्स्वदेशम् so v. a. *hinter sich* RÂǴA-TAR. 1,374. — *b) widerspänstig:* ein Elephant VARÂH. BṚH. S. 94, 12. — 2) m. *a) Schlange.* — *b) Hund.* — c) Varuṇa H. an. MED. — 3) f. ई *Myrobalanenbaum* H. an. MED. — 4) n. = अरघट्ट H. an. MED. (hier fälschlich अरपट्ट).

विलोमक adj. *verkehrt* ǴAṬÂDH. im ÇKDR.

विलोमज adj. = विलोमजात VP. 435, N. 8.

विलोमजात adj. *gegen den Strich geboren* d. i. *von einer Mutter geboren, die zu einer höheren Kaste gehört als der Vater* BHÂG. P. 1,18,18.

विलोमजिह्व m. *Elephant* TRIK. 2,8,34. H. ç. 174. HÂR. 14.

विलोमत्रैराशिक *rule of three terms inverse* COLEBR. Alg. 34.

विलोमन् 1) adj. *a)* = विलोम 1) *a)* Gegens. सलोमन् TS. 6,2,5,1. 7, 4, 5, 4. TBR. 1,5,11,4. ÇAT. BR. 1,5,3,23. 7,3,19. PAŃKAV. BR. 19,8, 6. पवनविलोमा कुटिलं याता (उल्का) *gegen den Wind gerichtet* VARÂH. BṚH. S. 33, 29. रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोम जन्म (d. i. रात्रिसंज्ञेषु दिवा जन्म द्युसंज्ञेषु रात्रौ जन्म Comm.) BṚH. 26(24),4. — *b) haarlos:* शिरस् KATHÂS. 61,186. — 2) m. N. pr. eines Fürsten VP. 435. BHÂG. P. 9,24,18.

विलोमपाठ m. *das Hersagen in umgekehrter Ordnung* d. i. *von hinten nach vorn* Verz. d. Oxf. H. 106,*a*,34.

विलोमवर्ण adj. = विलोमजात ÇKDR. nach der SMṚTI.

विलोमाक्षरकाव्य n. Titel eines *Gedichts, das silbenweise auch von hinten nach vorn gelesen werden kann,* = रामकृष्णकाव्य Verz. d. Oxf. H. 132,*a*, No. 240.

विलोमित (von विलोमन्) adj. *verkehrt* NAISH. 22,47.

विलोल (von लुल् mit वि oder 2. वि + लोल) adj. (f. आ) *sich hin- und her bewegend, unruhig, unstät:* घण्टा RAGH. 7,38. हार 16,68. यष्टि KUMÂRAS. 5,8. पल्लव 4,38. कमल KATHÂS. 103,162. दोर्वल्लरी PAŃKAR. 3, 5,21. अलक KATHÂS. 15,92. जिह्वा 22, 63. ṚT. 1,14. 19. BHÂG. P. 2,7, 28. Auge, Blick ṚT. 2, 9. RAGH. 7,11. 8,58. KUMÂRAS. 5,13. GÎT. 1,40. KIR. 8,45. ḰAURAP. 10. KHANDOM. 93. KATHÂS. 37,14. अश्रुविलोललोचन BHÂG. P. 8,22,14. °तारक Spr. 1311 (II). 1635. विलोलतिलकान्तैः सनेत्राम्भोभिराननैः RÂǴA-TAR. 4,130. नदी MÂRK. P. 77,6. शलभ, काम Spr. (II) 2303. यस्य चेतसि सदा मुरवैरी वल्लवीजनविलासविलोलः KHANDOM. 35. लक्ष्म्या विद्युद्विलोलया KATHÂS. 113,48. अपि कुञ्जरकर्णान्तादपि पिप्पलपल्लवात्। अपि विद्युद्विलसिताद्विलोलं ललनामनः ॥ Spr. (II) 421.

विलोलन (von लुल् mit वि) n. *das Hinundhergehen, unstätes Wesen:* °पर्यैमाकृतेः PAŃKAR. 3,5,3.

1. विलोहित (2. वि + लो°) m. *eine best. Krankheit* AV. 9,8,1. 12,4,4.

2. विलोहित (wie eben) 1) adj. *hochroth* (nach MAHÎDH.) VS. 16, 7. 52. क्रोधविलोहिताक्ष HARIV. 13164. RAGH. 16, 77. पांसुविलोहितरूप (राहु) VARÂH. BṚH. S. 5, 59. विग्रह der Sonne MÂRK. P. 107, 7. Beiw. Çiva's MBH. 7,2877. 8,1447. 10,256. 12,10359. 14,202. — 2) f. आ N. einer der sieben Flammenzungen MUṆḌ. UP. bei MAHÎDH. zu VS. 17,79. सुलोहिता die gedr. Ausg. 1,2,4.

विल्ल *Asa foetida* SUÇR. 2,433,2. — Vgl. बिल्ल.

विवंश m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2,193, N. 3. die richtige Lesart ist wohl विविंश.

विवक्तर् (von वच् mit वि) nom. ag. *der Etwas richtig aufsagt, Berichtiger* AIT. BR. 3,35. — Vgl. दुर्विवक्तर्.

विवक्तृत्व (von विवक्तर्) n. *Beredsamkeit:* संस्तवव्यक्त° adj. RÂǴA-TAR. 4,498.

विवक्वंस् (von वच् mit वि) adj. *beredt* ṚV. 7,67,3.

विवंक्षण adj. etwa *spritzend* (von वक्ष् = उक्ष्), Beiw. des Soma: मधो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये ṚV. 8,1,25.21,5.35,23. 45,11. VÂLAKH. 1,4.

विवक्षसे Refrain in den Vimada-Liedern, ohne Bedeutung für den Zusammenhang, ṚV. 10,24. fg. nach NIR. 3,13 von वच् oder वह्, nach NAIGH. 3,3 Synonym von महत्.

विवक्षा (vom desid. von वच्) f. 1) *die Absicht Etwas auszusprechen, auszudrücken* ÇIKSHÂ 8 in Ind. St. 4,106. तद्विषयदर्शनविवक्षया ÇAŃK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 26. 83. 157 (°क्षम्). SARVADARÇANAS. 41,11. fgg. 158,3. 4.

161,9. ज्ञातेः प्राधान्यविवक्षायामयमेकवद्भावः। द्रव्यविवक्षायां तु u. s. w. so v. a. *wenn gemeint ist* Schol. zu P. 2,4,6. वचनविवक्षार्थं विभक्त्यन्तानां पाठः so v. a. *um den Numerus hervorzuheben* zu 6,2,37. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*,4. विवक्षापचये यदि *wenn man eine Verminderung ausdrücken will* AK. 3,6,1,7. इतिशब्दो लौकिकविवक्षाबोधनार्थः so v. a. *das Wort* इति *dient dazu um anzuzeigen, dass die allgemein gangbare Auffassung* (dieser Worte) *gemeint ist*, Schol. zu P. 2,2,27. Siddh. K. 87,*a*,13. *die Absicht Etwas zu verkünden, — zu lehren:* मोक्षधर्म° Bhâg. P. 11,2,16. — 2) *die Absicht Etwas zu sagen, — zu bemerken* so v. a. *Bedenken, Zweifel, das Anstandnehmen:* विवक्षा तत्र मे ऽस्तीयम् R. 5, 90,29. न मे विवक्षास्ति MBh. 1,3618. न तत्र वर्णेषु कृता विवक्षा न चापि शीले न कुले न गोत्रे 7197. किं ते विवक्षया 6,5456. R. 5,27,30. 46, 9. अलं विवक्षया 35,36. 89,64. भावं जिज्ञासमानो ऽहं प्रणयादिदमब्रुवम्। न चाक्षेपान्न पाण्डित्यान्न क्रोधान्न विवक्षया॥ MBh. 5,2782. अस्ति काचिद्विवक्षा तु तां मे निगदतः शृणु। धृतराष्ट्रं प्रति 15,562. R. 5,90,35. न तु त्वां प्रसक्ते वक्तुमिष्टानिष्टविवक्षया *weil ich in Betreff des Angenehmen oder Unangenehmen im Zweifel bin* MBh. 1,4842.

विवक्षित s. unter dem desid. von वच्; = शोभन Halâj. 5,16. विवक्षितत्व (s. ebend.) *das Gemeintsein:* उभयत्रोभयाकारबुद्धिपरिणामस्यैव प्रतिबिम्बशब्देनात्र विवक्षितत्वात् Nîlak. 50.

विवक्षु (vom desid. von वच्) adj. 1) *laut rufend:* सुपर्णाः AV. 2,30,3. — 2) *zu reden —, zu sagen —, zu verkünden wünschend;* ohne Ergänzung MBh. 14,1516. fg. Hariv. 2863. R. 4,2,16. Râga-Tar. 4,561. Bhâg. P. 2,10,19. 6,2,23. Mârk. P. S. 657, Z. 4. Verz. d. Oxf. H. 200, *a*,1 v. u. Sarvadarçanas. 19,5. mit acc. der Sache: प्रियमुत्तमम् R. Gorr. 2,3,9. अप्रियम् 9,16. किम् 5,63,3. Bhâg. P. 10,79,24. Pańkat. ed. orn. 59,9. वचः Ragh. 2,43. Mârk. P. 51,14. किमप्ययं पुनर्विवक्षुः Kumâras. 5,83. तत् Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,25. स्मार्तधर्मम् 265,*a*,23. वेदार्थान् Hariv. 4138. विवक्षुरसि यच्चान्यत्तत्ते वक्ष्यामि so v. a. *zu fragen wünschend* MBh. 13,7161. mit acc. der Person: विवक्षू वै जनकेन्द्रं दिदृक्षू 3,10624. mit gen. der Sache: वेदार्थानाम् Hariv. 4138 (nach der Lesart der neueren Ausg.). भगवद्गुणानाम् Bhâg. P. 3,5,12. in comp. mit dem obj.: आशीर्वाद° MBh. 12,1408. 1416.

विवेचन (von वच् mit वि) n. *Berichtigung, Entscheidung, Erklärung* Çat. Br. 2,4,4,3.

विवत्स (2. वि + वत्स) adj. (f. आ) *des Kalbes —, des Jungen —, der Kinder beraubt* M. 5,8. MBh. 7,2748. Hariv. 3679. 4827. 9236. R. 2, 39,4. 41,7 (40,7 Gorr.). 43,17. 47,12. 74,9 (76,14 Gorr.). 25. R. Gorr. 2,48,15. 66,28. 6,8,12. Bhâg. P. 1,16,19. 17,3.

विवदन (von वद् mit वि) n. *Zank, Streit* MBh. 2,2318. Ueber die Bed. des Wortes bei den Buddhisten im Pâli s. Burnouf in Lot. de la b. l. 470 und Ind. St. 3,156.

विवदितव्य (wie eben) adj. *zu streiten:* न चाजन्मसिद्धो विवदितव्यम् (impers.) Verz. d. Oxf. H. 264,*b*,13.

विवदिषु (wie eben) adj. अ° *nicht zu Streit Anlass gebend* Âçv. Gṛhj. 2,7,2.

विवधं und वीवधं (von वध् = 1. वह्) 1) m. *a*) = पर्याहार AK. 3,4,12, 99. H. an. 3,349. Med. dh. 35. Halâj. 4,73. = भार H. 364. H. an. Med. (so ist st. भाव zu lesen). Halâj. *ein Schulterjoch zum Tragen von Lasten, Tragholz*, ἀναφορεύς: विवधवीवधशब्दावुभयतो बद्धशिक्ये स्कन्धवाह्ये काष्ठे वर्तेते Siddh. K. zu P. 4,4,17. द्वौ पिण्डौ कृत्वा वीवधे ऽभ्याधाय Âçv. Gṛhj. 1,12,3. विवधश्चस्कन्द: VS. 15,5. स° und वि° so v. a. *was das Gleichgewicht hält, — nicht hält:* यदन्यतः पृष्ठानि स्युर्विविवधं स्यान्मध्ये पृष्ठानि भवन्ति सविवधत्वाय TS. 7,3,3,2. 2,3. विवीवध Pańkav. Br. 4,5,19. उभयतोवीवध Kâṭh. 27,10. सवीवधता f. *Gleichgewicht* Ait. Br. 8,1. Pańkav. Br. 14,1,10. fg. सवीवधत्व n. dass. 5,1,11. 22,5,7. — *b*) *Proviant, Vorrath an Getraide u. s. w.:* धान्यादेर्वीवधः प्राप्तिः Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 2,64. Kâm. Nîtis. 13,87 (wo so zu lesen ist). 71 (in der Note die richtige Lesart). 11,15. fg. 15,5. 42. 16,39. 19,4. Spr. (II) 108. (I) 4118, v. l. der ed. Bomb. des Pańkat. Çiç. 2,64. — *c*) N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9,8,12. — *d*) *Weg* AK. H. an. Med. — 2) f. वीवधा *Joch* so v. a. *Zwangsjacke, Fessel:* वृद्ध° *Joch der Alten* so v. a. *die Fesseln der althergebrachten Anschauungen* Sarvadarçanas. 110,18. — Vgl. उद°, उदक° und वैवधिक.

विंवधिक und वैंविधिक adj. (f. ई) *auf einem Schulterjoch tragend, Träger einer Last auf einem Tragholze* P. 4,4,17. — Vgl. वैवधिक.

विवत् adj. *das Wort* वि *enthaltend* Ait. Br. 6,7.

विवन्दिषु (vom desid. von वन्द्) adj. *zu begrüssen —, seine Ehrfurcht zu bezeugen wünschend:* पित्रोः पादौ Mârk. P. 23,1.

विवन्धिक bei Colebr. und Lois. zu AK. 2,10,15 fehlerhaft für विवधिक, wie ÇKDr. nach Sâras. liest.

विवयन (von 5. वा mit वि) n. *Flechtwerk* Lâṭj. 3,12,7. Ait. Br. 8,5. मुञ्ज° Çat. Br. 12,8,3,6.

विवरं (von 1. वर् mit वि) m. n. 1) *Oeffnung, Loch, Spalte* AK. 1,2, 1,1. H. 1364. an. 2,422. Med. r. 219. Halâj. 3,2. ṚV. 1,112,8. in der Erde MBh. 1,1584. fg. दुर्योधनश्चापि मही प्रशास्ति न चास्य भूमिर्विवरं ददाति (wo er ungesehen wäre) 3,10242. कथं पतितवृत्तस्य विवरं नाशकद्दातुं पृथिवी मम 7,6512.*) धरण्यां विवरं महत् R. 4,8,43. 9,14.51,3. H. 1364. Bhâg. P. 9,11,15. मही° R. Gorr. 2,28,14. सप्त भूविवराः Bhâg. P. 5,24,7. 9. 12,4,9. नरक° Prab. 46,3. विन्ध्याद्रौ मायाविवरमन्दिरम् Kathâs. 29,14. सर्पस्य Hariv. 5335. 9739. Çâk. 166, v. l. Varâh. Bṛh. S. 24,1. Bhâg. P. 3,17,8. आविन्मूषक° Varâh. Bṛh. S. 48,16. Hit. 14, 17. fg. 25,16. Pańkat. 241,1. द्वारविवरः Maitrjup. 6,30. MBh. 3,2930. गवाक्ष° Ragh. 19,7. Spr. 1425. कृत्वाखुर्विवरम् (करण्डे) 2012. अण्डकटाह° Bhâg. P. 5,17,1. शरीर° R. 1,46,18. Bhâg. P. 3,31,17. लोम्नां विवरेषु Pańkar. 2,2,39. नेत्र° Ragh. 9,61. अस्थि° Suçr. 1,96,18. 97,9. 264,5. अन्त्र° 277,14. विवराकृति 2,315,10. स्व° d. i. वायु° so v. a. *Nasenloch* Bhâg. P. 3,15,43. वदन° Spr. 4540. श्रुति° Varâh. Bṛh. S. 69,10. कण्ठ° P. 5,2,107, Vârtt. 1, Schol. यच्चकार विवरं ताडकोरसि *eine klaffende Wunde* Ragh. 11,18. मनसि नृणां कुसुमायुधस्य विदधतीं विवरम् Bhâg. P. 5,2,6. स्तम्भ° *Spalte* Pańkat. 10,12. des Weibes Çâṅkh. Br. 6,5. — 2) *Zwischenraum:* द्यावापृथिव्योः MBh. 7,236. Bhâg. P. 8, 20,21. 9,4,51. नभसः Nalod. 2,19. त्रिभुवन° Prab. 3,8. अरविवरेभ्यः Çâk. 166. दोर्दण्डखण्ड° Bhâg. P. 3,15,41. अङ्गुली° Ragh. 11,70. नेत्रक-

---

*) Vgl. Weber, Ueber das Râmâjaṇa S. 50. 78.

र्णयोः Varâh. Bṛh. S. 58,8. — 3) *Abstand, Verschiedenheit:* युवराज्ञम-न्त्रि° Varâh. Bṛh. S. 53,9. 14. Gaṇit. Bhagaṇâdh. 14. — 4) *offene Stelle* so v. a. *Blösse:* °दर्शक Spr. (II) 1401. रन्ध्रेद्विवरमात्मनः (I) 1569. परेषां विवरानुगः 4464, v. l. MBh. 4,1503. 1907. 6,5322. 9,3280. 10,499. — 5) *Uebel, Schaden:* एतन्मत्कृते विरवं (wohl विवरं) क्रियात्कान्या भविष्यति Mârk. P. 126,14. = दोष H. an. = दूषण Med. — 6) *das Sichäussern, Offenbarwerden:* विशेषबुद्धेः Bhâg. P. 5,10,13. = अवकाश Comm. — 7) n. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,14. Vjutp. 180. 182. Mél. asiat. 4,640. — Vgl. कर्ण° (auch Bhâg. P. 3,9,5), काष्ठ°, नासा°, निर्विवर, रोम°.

विवरण (wie eben) n. 1) *das Oeffnen, Eröffnen* MBh. 12,3828. Suçr. 1,25,16. — 2) *Auseinandersetzung, Erörterung, Erklärung, Erläuterung* Halâj. 2,245. Brahmavaiv. P. 2,28. गुण° Bhâg. P. 5,9,3. 6,9,40. Colebr. Misc. Ess. II, 7. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 1. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,12, Çl. 50. Verz. d. Oxf. H. 3, *b*, No. 24. 14, *a*, 7. *b*, 17. 19. 44, *b*, 32. 45, *a*, 19. 21. 174, *a*, 2. 176, *b*, No. 401. 207, *b*, 1 v. u. 219, *b*, No. 525. Kusum. 57,2. Sarvadarçanas. 21,13. fg. 61,14. 90,20. — Vgl. कार्येनेति°, बोधचित्त°, बोधिचित्त°, महावाक्य° (unter महावाक्य 2), वाक्य° und विवृति.

विवरणतत्त्वदीपन n. Titel eines *Commentars* Hall 90. Verz. d. B. H. No. 622.

विवरणोपन्यास m. Titel eines *Commentars* Hall 202.

विवरनालिका f. *Flöte* Trik. 1,1,123.

विवरिषु (vom desid. von 1. वर् mit वि) adj. *offenbar zu machen beabsichtigend:* आज्ञाम् Bhaṭṭ. 9,26. Diese Bed. käme von Rechts wegen nur विविवरिषु zu.

विवरुणं adj. Varuṇa d. i. *den Tod abwehrend* AV. 8,7,10.

विवरूथ (2. वि + व°) adj. *der zum Schutz* (des Wagens) *dienenden Einfassung beraubt:* रथ MBh. 8,623.

विवर्चस् (2. वि + व°) adj. *glanzlos:* राक्षसराजयोषितः R. 5,14,68.

विवर्जक (vom caus. von वर्ज् mit वि) adj. *meidend, vermeidend, unterlassend:* परदार° MBh. 13,6633. प्राणिघात° 6678.

विवर्जन (wie eben) n. *das Meiden, Vermeiden, Unterlassen, Aufgeben* Spr. (II) 2046. गुणतः संग्रहं कुर्याद्दोषतस्तु विवर्जनम् R. 5,90,12. आमिषस्य MBh. 12,166. मधुमांस° 13,5610. Jâǵn. 1,181. कार्याणाम् Spr. (II) 17. अकार्याणाम् MBh. 4,414. स्तुतिनिन्दा° 12,5942. Jâǵn. 3,158. Spr. (II) 258. सदाचार° (I) 4236. 4519. 5045. Kathâs. 27,22. Bhâg. P. 7,15, 22. *das Abstehen von* (abl.): विरोधात् Mârk. P. 51,27.

विवर्जनीय (wie eben) adj. *zu vermeiden, zu unterlassen:* शोक, विलाप, रुदित R. Gorr. 2,114,23.

विवर्ण (2. वि + वर्ण) adj. (f. आ) 1) *farblos, entfärbt, nicht die natürliche, gesunde Farbe habend* Suçr. 1,37,1. 118,9. 176,19. Varâh. Bṛh. S. 79,29. 34. Sterne 13, 7. 17, 9. दुर्यश्चाप Hariv. 3577. °वर्णा 12294. विवर्णाङ्गो R. Gorr. 2,28,29. °देहा Râǵa-Tar. 6,21. मुख Kathâs. 32,86. °वदन MBh. 3,2105. 2499. R. 2,26,8. 87,4. R. Gorr. 2,15,15. 5,26,1. Spr. 2841 (Conj.). ओष्ठ Varâh. Bṛh. S. 68,52. कुनखविवर्णाः 68,41. 65, 10. पश्चात्ताप° Çâk. 106,20. MBh. 3,2514. 10022. 4,145. 13,4828. 14,221. 2761. R. 2,65,17. 75,7. R. Gorr. 2,41,4. Râǵa-Tar. 3,501. — 2) *zu einer Mischlingskaste gehörig* AK. 2,10,16. H. 932. Varâh. Bṛh. S. 36, 2. Mârk. P. 41,10 (विवर्णेषु zu lesen). — 3) *ungebildet, einfältig* H. 352. Halâj. 2,181. — Vgl. वैवर्ण्य.

विवर्णता (von विवर्ण) f. *Entfärbung, Wechsel der natürlichen, gesunden Farbe:* तेनाक्रमेवं कृशतां गतश्च विवर्णतां चैव सशोकतां च MBh. 2,1933. बलग्लान्या विवर्णता Hariv. 11174. विवर्णतां नयिष्यन्ति सीतां शीतोष्णवायवः R. Gorr. 2,33,10 (9 Schl.). 3,61,45. स जगाम विवर्णताम् — इन्दुरिवोषसि Kathâs. 105,7. Sâh. D. 167. अन्नस्य विषदग्धस्य Kâm. Nîtis. 7,17.

विवर्णभाव m. dass. Ragh. 6,67.

विवर्णमणीकर् (विवर्ण - मणि + 1. कर्) *an Etwas* (acc.) *die Juwelen der natürlichen Farbe berauben:* कनकवलयं °कृतम् Çâk. 61.

विवर्त (von वर्त् mit वि) m. 1) etwa *der sich drehende*, eine Bez. des Himmels VS. 14,23. TS. 5,3,4,5. — 2) *das Sichabwenden*, = अपावृत्ति (so ist zu lesen) H. an. 3,302. = अपवर्तन Med. t. 161. — 3) *Tanz* H. an. Med. — 4) *Umwandlung, Verwandlung:* कृतद्रूप° adj. Kathâs. 16, 92. Uttarar. 28,2 (37,3). 68,11 (88,2). Mâlatîm. 24,8. लक्ष्मी° Dhûrtas. 74,16. Bei den Vedântin *Entfaltung eines geistigen Urprincips* (*Gottes*) *zu der phänomenalen Welt* (im Gegens. zu परिणाम *die Entwickelung aus dem* प्रधान oder *der* प्रकृति): वेदान्तिनः सतो विवर्तः कार्यजातं न वस्तु सदिति Sarvadarçanas. 149,17. सतो ब्रह्मतत्त्वस्य विवर्तः प्रपञ्चः 151,7. °वाद Madhus. in Ind. St. 1,23,14. Nîlak. 180. Wilson, Sâṁkhjak. S. 31. ब्रह्मणीव विवर्तानां विप्रलयः Uttarar. 105,15 (143,8). Naish. 3, 64. Daher so v. a. *der blosse Schein von Etwas:* रज्जुविवर्तः सर्पः so v. a. *eine Schlange, die in Wirklichkeit nur ein Strick ist,* Vedântas. (Allah.) No. 92. वस्तुविवर्तस्यावस्तुनः ebend. — 5) *Menge* H. an. Med. — 6) अत्रेर्विवर्तः N. eines Sâman Ind. St. 3,202, *a*.

विवर्तन (von वर्त् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *a*) *sich drehend, rollend* MBh. 12,8946. निवर्तन = आयुःक्षपण Nîlak. — *b*) *umwandelnd, verwandelnd:* दृष्ट्वा योगं रूपविवर्तनम् Kathâs. 16,10. — 2) n. *a*) *das Rollen:* घर्माम्भोविसरविवर्तनैः Mâlatîm. 23,14. *das Sichwälzen:* शय्याप्रान्तविवर्तनैः Çâk. 132. eines Pferdes ṚV. 1,162,14. Kathâs. 81,20. *das Zappeln:* ज्वालान्तरुद्वर्तनविवर्तने । कुर्वन् 60,187. *das Sichhinundherbewegen, Hinundherziehen* (von einem Ort zum andern): तामिस्रादिषु चोग्रेषु नरकेषु M. 12,75. — *b*) *das Sichumwenden, Sichumdrehen, Sichabwenden* MBh. 5,2651. Ragh. 19,22. Kir. 5,40. *Umkehr* 7, 11. — *c*) *das Umdrehen* Suçr. 1,25,15. 300,9. 301,2. — *d*) *Wendung, Wendepunkt* TBr. 3,9,22,2. — *e*) *Umwandlung, Verwandlung:* संधेः ṚV. Prât. ed. Müller 1,3. कृतद्रूपविवर्तना Kathâs. 13,94. 33,178. 105,62. शब्दार्थ° Verz. d. Oxf. H. 188, *b*, 28. *Umschlag, Wechsel:* अकाण्डविवर्तनदारुणा (विधि) Uttarar. 79,7 (102,4) = Mâlatîm. 71,8.

विवर्तिन् (von वर्त् mit वि) adj. 1) *sich drehend, sich im Kreise bewegend:* उपलरोधविवर्तिभिरम्बुभिः Kir. 5,15. *sich wälzend:* बिसिनीपत्त्रशय्या° Kathâs. 55,62. 95,48. — 2) *sich abwendend, sich hinwendend zu:* मुखमंसविवर्ति Çâk. 73. — 3) *sich verändernd:* प्रतिक्षणविवर्तिनी। भवस्थितिरिवानित्यसंबन्धा विलासिनी Kathâs. 52,287. — 4) *sich irgendwo befindend, weilend:* नरा नरकान्तर्विवर्तिनः Mârk. P. 14,36. कण्ठविवर्तिभिः प्राणैः Kathâs. 21,24. — अ° Sâv. 7,12 fehlerhaft für अ-

निवर्तिन्, wie MBH. 3,16913 gelesen wird. Vgl. एकदेश°, पार्श्व°.

विवर्त्मन् (2. वि + व°) n. *Abweg:* राज्ञानं सज्जमानं विवर्त्मसु KÂM. NÎTIS. 5,52.

विवर्धन (von 1. वर्ध् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. (f. श्रा und ई) *vermehrend, verstärkend, fördernd;* das obj. *a)* im gen.: यूथस्य (वृषभ) VARÂH. BṚH. S. 61,17. श्रायुःश्रीबलकीर्तीनाम् BHÂG. P. 4,14,14. प्रजाम् 7,2,33. — *b)* im comp. vorangehend: यमराष्ट्र° (संग्राम) MBH. 9,533. महाशरौघास्त्रविवर्धने (= वर्धन n. = छेदन n. NÎLAK.) रणे 4,1689. ऐलवंश° 1,3753. 13,248. HARIV. 102. R. GORR. 1,40,8. 7,29,38. BHÂG. P. 4,27,8. भोज° *das Geschlecht* Bhoǵa's *vermehrend* so v. a. *zum Geschlecht* Bh. *gehörig* (विवर्धन = छेदिन् NÎLAK.) HARIV. 4523. मित्र° MBH. 13, 2974. दारपुत्रपौत्र° Verz. d. Oxf. H. 20,*a*, No. 65, Çl. 13. बीज° R. 3,49, 41. कफमेदो° SUÇR. 1,177,4. 178,1. 196,15. 205,5. मोहजाल° (f. ई) MBH. 12,12430. बुद्धि° M. 1,106. श्रायुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीति° BHAG. 17,8. MBH. 1,335. 3,88. 2302. 2334. 11064 (f. ई). HARIV. 9861. R. 1,9,18 (f. श्रा). R. GORR. 1,5, Einl. 3. 2,95,16. 3,79,9. 5,31,28. 7,26,7 (°विवर्धनम् adv.). KÂM. NÎTIS. 14,36. BHÂG. P. 7,14,24. 10,86,41. 12,7,25. Verz. d. Oxf. H. 33,*a*,7. 262,*b*,1. PAÑKAR. 4,3,174. — 2) m. N. pr. eines Kriegers MBH. 2,116. — 3) n. *Wachsthum, Zunahme, das Gedeihen:* तत्रस्य MBH. 1,7511. स्वपक्षस्य 7512. नृणामायुर्विवर्धनम् R. 7,74,33. जठराग्नि° Verz. d. Oxf. H. 237,*a*, No. 568, Z. 11. प्रीति° Spr. 1217, v. l. — — Vgl. धर्म°, ब्रह्म°.

विवर्धनीय (vom caus. von 1. वर्ध् mit वि) adj. *zu vermehren, zu fördern:* श्रर्थाः PAÑKAT. ed. orn. 3,16. गुणा Spr. (II) 1581, v. l.

विवर्धयिषु (vom desid. des caus. von 1. वर्ध्) adj. *zu vermehren beabsichtigend:* प्रजाः HARIV. 131. 135. BHÂG. P. 6,4,7. द्रौणेर्महिमानम् MBH. 10,299.

विवर्धिन् adj. am Ende eines comp. = विवर्धन. यमराष्ट्र° MBH. 6, 4717. वित्त° M. 8,140. शोक° MBH. 1,965. श्रायुर्वि° 3,16952. महाभय° 4,2016. चन्द्रादित्य° so v. a. *ihren Glanz vermehrend* 6,808. प्रीति° 15, 517. R. 2,63,13. KATHÂS. 13,53. PAÑKAR. 2,8,8.10. Ueberall fem. und am Ende eines Çloka, die v. l. hat hier und da विवर्धनी.

विवर्मन् (2. वि + व°) adj. *des Harnisches beraubt, keinen Harnisch habend* MBH. 5,2061. 6,32. 7,1386. विवर्मध्वजजीवित (so die ed. Bomb.) *des Harnisches, des Banners und des Lebens beraubt* 8,876. विवर्मायुधवाहनाः (so die ed. Bomb.) 1254.

विवर्षण (von वर्ष् mit वि) n. *das Regnen,* von der weiblichen Brust so v. a. *reichliches Fliessen der Milch:* सप्रस्रवस्तन° PAÑKAR. 3,5,18.

विवर्षिषु (vom desid. von वर्ष्) adj. *zu regnen im Begriff stehend:* मेघ R. 6,37,68.

विवल्तॆ adj. VS. 14,9.

विवॆव्रि (2. वि + वव्रि) adj. *unverhüllt, bloss* ṚV. 10,99,5.

विवश (2. वि + 1. वश) 1) adj. (f. श्रा) *keinen eigenen Willen habend, seiner nicht mächtig, sich willenlos bei Etwas verhaltend, nicht aus eigenem Antriebe handelnd, ungern* oder *unwillkührlich Etwas thuend:* पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृशम्। विवशः M. 8,82. स वशे (so die ed. Bomb.) विवशो राजा परेषामद्य वर्तते MBH. 4,550. 7,1559. 8,4327 (mit der ed. Bomb. विवश st. विरस zu lesen). 13,35 (विवशं mit der ed. Bomb. zu lesen). HARIV. 8765. R. 2,76,22. R. GORR. 2,83,42. 92,24. 3,55,51. 61, 5. 64,7. 5,35,42. 6,103,7. RAGH. 8,11. KUMÂRAS. 4,1. Spr. 2346 (II). सोद्योगं नरमायाति विवशाः सर्वसंपदः 1585. KATHÂS. 23,13. 28,70. 32, 54. 37,74. 40,88. 42,94. 84,49. RÂǴA-TAR. 2,38. 6,51. BHÂG. P. 1,1,14. 3,9,15. 5,1,11. 13,18. 24,20. 6,1,9. 2,7. 12,8. 8,2,30. 11,10,17. कुर्वत्ति कस्य न मनो विवशम् Spr. (II) 1456. RÂǴA-TAR. 2,82. 8,721. 1039. in comp. mit dem, was den Willen lähmt: क्लेश° Spr. 2744. स्मरावेश° KATHÂS. 37,205. 43,80. RÂǴA-TAR. 6,78. 8,1216. 1394. श्रौत्कण्ठ्यविवशामीलितलोचन *unwillkührlich* BHÂG. P. 5,17,2. श्र° MAITRJUP. 6,25. Nach den Lexicographen = श्ररिष्टदुष्टधी AK. 3,1,44. H. 438. MED. ç. 28. = श्ररिष्टदुष्टमति H. an. 3,727. = श्रवश्यात्मन् H. an. MED. = वश und विह्वल TRIK. 3,3,431. — 2) m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2,193, N. 3. nach anderen Lesarten विविंश, विविश, विवाश, विवास.

विवशता (von विवश) f. *Willenlosigkeit, das Nichtherrsein über sich selbst:* नीतो भूतैरिव विवशताम् RÂǴA-TAR. 8,1614.

विवशीकर् (विवश + 1. कर्) *Jmd willenlos machen:* स्मरेण °कृता KATHÂS. 122,86. तिर्यक्षविवशीकृत 68,47. 72,4. RÂǴA-TAR. 3,38. विवशीकृत von einem Wagen wohl so v. a. *in seinen Bewegungen gehemmt* MBH. 6,1890 (fehlt in der ed. Bomb.).

विवस् n. angeblich so v. a. धन SÂJ. zu ṚV. 1,187,7.

विवसन (2. वि + 1. वसन 1) adj. (f. श्रा) *unbekleidet, nackt* MBH. 9, 256. Spr. 4462. MÂRK. P. 8,154. ÇATR. 10,182. — 2) m. *ein (nackt einhergehender)* Ǵaina SARVADARÇANAS. 24,18. COLEBR. Misc. Ess. I, 380.

विवस्त्र (2. वि + व°) adj. (f. श्रा) *unbekleidet, nackt* MBH. 2,2230. 3, 2323. VARÂH. BṚH. S. 86,30. KATHÂS. 19,21. 20,110. 29,85. BHÂG. P. 8, 12,26. 9,14,30. 10,10,6. 22,19. MÂRK. P. 35,34. VET. in LA. (III) 11,5.

विवस्त्रता (von विवस्त्र) f. *Nacktheit* MBH. 2,2286. KÂM. NÎTIS. 14,59.

विवॆस्वन् (von 2. वस् mit वि) adj. so v. a. विवस्वत्. श्रग्निमींधे विवस्वभिः (instr. pl. im Sinne eines adv.) Agni *entzünde ich, so dass es aufleuchtet,* ṚV. 8,91,22. n. etwa *das Aufleuchtende, zuerst vom Licht Bestrahlte* d. h. *Gipfel:* यद्दो पितो श्रजगन्विवस्व पर्वतानाम् 1,187,8. Vielleicht ist die Stelle verdorben, nach SÂJ. als gen. pl. zu fassen.

विवॆस्वत् und विवॆस्वत् (wie eben) 1) adj. *aufleuchtend, in's Licht tretend, Helle verbreitend, morgendlich:* विवस्वदुषसश्चित्रं राधः ṚV. 1, 44,1. चतम् 96,2. Ushas 3,30,13. Agni 7,9,3. सदने विवस्वतः so v. a. *am Feueraltar* 1,53,1. 3,34,7. 51,3. 10,12,7. 75,1. — 1,139,1. VS. 22, 30. KÂṬH. 35,10 bei WEBER, Nax. 2,350. — 2) m. N. *des Gottes des aufgehenden Tageslichts, der Morgensonne;* in den BRÂHMAṆA, VS. 8,5 und im Epos u. s. w. Âditja genannt; später ein Name *der Sonne* (AK. 1,1,2,30. 3,4,14,60. H. 96. an. 3,296. MED. t. 219. HALÂJ. 1,35). यमः परो ऽवरो विवस्वान् AV. 18,2,32. भुवो विवस्वानन्वाततान ebend. विवस्वान्नो श्रभयं कृणोतु 3,61. श्रमृतत्वे दधातु 62. मा नो हेतिर्विवस्वतः पुरा नु जरसो वधीत् ṚV. 8,56,20. neben Varuṇa 10,65,6. AV. 11,6,2. Sohn der Aditi TBR. 1,1,9,3. PAÑKAV. BR. 24,12,4. die Götter heissen जनिम विवस्वतः ṚV. 10,63,1. यस्य योगे (des Wagens der Açvin) दुहिता जायते दिव उभे श्रहनी सुदिने विवस्वतः 39,12. स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति 2,13,6. श्रा विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत् 8,61,8 (vgl.

दिवः कोशम् 5,53,6). 6,39. ÇAT. BR. 3,9,4,7. 4,3,5,16. असौ वा आदित्यो विवस्वानेष ह्यहोरात्रे विवस्ते 10,5,2,4. KÂTH. 11,6. विवस्वद्वात TS. 4,4,12,4. Agni ist sein Bote ṚV. 1,58,1. 4,7,4. 5,11,3. 8,39,3. 10,21,5. ebenso Mâtariçvan, der das Feuer bringt, 6,8,4; vgl. त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव विवस्वते 1,31,3. Vivasvant ist Vater der Zwillinge Jama und Jamî und durch sie des Menschengeschlechts ṚV. 10,14,5. 17,1. 2. ततो विवस्वानादित्यो ऽजायत तस्य वा इयं प्रजा यन्मनुष्याः TS. 6,5,6,2. ÇAT. BR. 3,1,3,4. Daher wohl pl. विवस्वन्तः so v. a. मनुष्याः NAIGH. 2,3. Vater des Zwillingspaares der Açvin NIR. 12, 20. ṚV. 10,17,2; vgl. वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा । मनुष्वच्छम्भू आ गतम् *nachdem ihr*, Açvin, *bei* Vivasvant *die Nacht über euch aufgehalten* 1,46,13. Vater des Manu, welcher VÂLAKH. 4,1 Manu Vivasvant st. Vaivasvata heisst (विवस्वत् = वैवस्वतमनु AǴAJA im ÇKDR.). — Als Âditja, d. i. als Sohn Kaçjapa's und der Aditi, und als Vater Manu's (auch Jama's und der Jamunâ) MBH. 1,2523. 3136. 3760. HARIV. 176. 550. fgg. 594. 12912. 14167. R. 1,70,20. 2,110, 6 (119, 6 GORR.). VP. 122. 266, N. 1. BHÂG. P. 6,6,37. fg. विवस्वत्सुत d. i. Manu Vaivasvata M. 1,62. unter den Viçve Devâḥ MBH. 13, 4356. als Praǵâpati R. 3,20,9. VP. 50, N. 2. mit dem patron. Âditja als Liedverfasser von ṚV. 10,13. Vivasvant als Verfasser eines Gesetzbuchs Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 43. als Astronom Verz. d. B. H. No. 835. ein Daitja MBH. 5,3685. Als N. *der Sonne* MBH. 3,16672. 6,5743. R. 2,39,18. SUÇR. 1,19,17. ṚT. 1,18. RAGH. 10,31. 17,48. VARÂH. BṚH. S. 24,22. 28,3. 44,23. KIR. 5,48. Spr. 1437. PRAB. 114,10. MÂRK. P. 34, 20. *der Sonnengott* BHAG. 4,1. 4. Spr. 2842. VARÂH. BṚH. S. 53,46. 53. *Gott* überh. AK. 3,4,14,60. H. an. MED. — 3) die Commentatoren erklären das Wort häufig durch परिचरणावत्, यजमान, wohl wegen des Anklangs an आविवासत्. Wirklich scheint es ṚV. 9 *den* Soma-*Priester* zu bezeichnen: नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा *von den Töchtern* d. h. *den Fingern des* V. *gestreichelt* oder *geputzt* 9,14,5. 10, 5. 26,4. हिन्वती: सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः 66,8. यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे 99,2. Vermuthen liesse sich: *der Morgendliche* d. h. *der mit Sonnenaufgang sein Werk Beginnende*. — 4) f. विवस्वती *die Stadt des Sonnengottes* MED. — Vgl. वैवस्वत.

विवह (von 1. वह् mit वि) m. N. *eines der sieben Winde* MBH. 12, 12409. fgg. HARIV. 12787. BRAHMÂṆḌA-P. beim Schol. zu ÇÂK. 165 (विवहाख्यः zu lesen). *eine der sieben Zungen des Feuers* (als masc.!) COLEBR. Misc. Ess. II,398.

विवाक (von वच् mit वि) nom. ag. *ein Urtheil über Etwas abgebend:* अर्थिप्रत्यर्थिनोर्वचनं विरुद्धाविरुद्धं सभ्यैः सह विविनक्ति विवेचयति वा विवाकः MIT. im ÇKDR. — Vgl. प्रश्न°, प्राड्विवाक und मुख°.

विवाक्य (wie eben) s. अविवाक्य (so zu betonen nach TS. 7,3,1,1. 2).

विवाच् (2. वि + वाच्) 1) f. *widerstreitender Ruf, Streit* NAIGH. 2,17. ṚV. 1,178,4. 6,45,29. 7,23,2. हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ 30,2. — 2) adj. *gegen einander rufend, streitend:* त्वामग्ने विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ṚV. 6,33,1. 31,1. नुनुद्रे विवाचः 3,34,10. 10,23,5.

विवाचन (vom caus. von वच् mit वि) 1) nom. ag. (f. ई) *Schiedsrichter* ṚV. 10,159,2. त्वद्विवाचनाः (देवाः) TS. 1,5,10,2. — 2) n. *Zurechtweisung, Berichtigung, Entscheidung:* अहं वाचो विवाचनम् TBR. 2,7,16,4. एष वः सद्विवाचनम् AIT. BR. 7,18.

विवाचस (2. वि + वचस्) adj. *verschieden redend:* जन AV. 12,1,45. — Vgl. सवाचस.

विवाच्य (von वच् mit वि) adj. *zu berichtigen:* नास्मिन्नहनि केनचित्कस्यचिद्विवाच्यमविवाक्यमित्येतदाचक्षते ÂÇV. ÇR. 8,12,10.

विवात (von 2. वा mit वि oder 2. वि + 1. वात) adj. *heftig wehend:* वाताः SHAḌV. BR. in Ind. St. 1,40,8 v. u.

विवाद (von वद् mit वि) m. *Streit* (auch *wissenschaftlicher* und *vor Gericht*) AK. 1,1,5,9. TRIK. 3,2,18. H. 262. ÇÂṄKH. GṚHJ. 6,6. M. 4,121. 8,229. यस्मिन्यस्मिन्विवादे तु कौटसाक्ष्यं कृतं भवेत् 117. JÂǴN. 2,4. MBH. 4,226. R. 5,25,49. मन्त्रिणां तेषां विवादमनुपश्यताम् 87,4. KAP. 1,139. KÂM. NÎTIS. 5,25. ÇÂK. 106,10. MÂLAV. 13,21. (खलस्य) विद्या विवादाय Spr. 2800. विवादे ऽन्विष्यते पत्रम् 2843. VARÂH. BṚH. S. 16,39. BṚH. 21, 9. उभौ विवादसक्तौ तौ राजाग्रमुपजग्मतुः KATHÂS. 19,46. Verz. d. B. H. No. 495. Verz. d. Oxf. H. 98,*a*,2. P. 1,2,33, Schol. न कालो ऽयं विवादस्य PAÑKAT. 143,12. अलं विवादेन R. 6,1,46. KUMÂRAS. 5,82. प्रशमयसि विवादम् ÇÂK. 105. °शमन LIṄGA-P. bei MUIR, ST. 4,330 (ebend. विवाद als n.). विवादे विनिर्जित्य M. 11,205. विजयी KATHÂS. 66,61. मिथ्या यद्येषां भविता विवादः BHÂG. P. 3,3,15. स्वामिपालयोः M. 8,5. RAGH. 7, 50. एतयोः परस्परविवादः VET. in LA. (III) 17,5. एतैर्विवादान्संत्यज्य M. 4,181. JÂǴN. 1,158. तेन चेद्विवादस्ते Spr. 2406. विवादः (so die neuere Ausg.) संस्थितः HARIV. 7333. त्वयि तिष्ठते विवादः VOP. 23,8. विवादं किल चक्रतुः KATHÂS. 22,181. शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात्केनचित्सह M. 4,139 (= Spr. 4584). MBH. 5,388. Spr. 1354. VET. in LA. (III) 31,4. विवादं गताः 3. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च — आचरेत् Spr. 3147. दासीवर्गेण विवादं न समाचरेत् M. 4,180. एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चरतां नृणाम् 8,8. गृहक्षेत्रतडागेषु u. s. w. समुत्पन्ने त्रिवादे Spr. (II) 2188. उपकारस्य धर्मत्वे विवादो नास्ति कस्यचित् KATHÂS. 27,24. सीमां प्रति समुत्पन्ने विवादे ग्रामयोर्द्वयोः M. 8,245. सीम्न: JÂǴN. 2,150. सीमा° M. 8,6. राजकुल° *unter, zwischen* SHAḌV. BR. 6,3. R. 1,3,11 (5 GORR.). स्त्री° *mit* BHÂG. P. 8,9,22. विवादानवसर 6,9,35. °संवादभुवः 4,31. विवादास्पद SARVADARÇANAS. 47,22. 119,10. °पद 123,7. विवादाध्यासित *dem Streite unterliegend, bestreitbar, worüber man streitet* 19,6. 48,10. 82,18. 108, 12. fg. DHÛRTAS. 92,2. विवादानुगत dass. MIT. im ÇKDR. (fälschlich = विवादकर्तृ ÇKDR.). — Vgl. निर्विवाद, प्रश्न°.

विवादकल्पतरु m. Titel eines Werkes über *Rechtsverfahren* Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,13.

विवादचन्द्र m. desgl. MACK. Coll. I,26. Verz. d. Oxf. H. 296,*a*, No. 718.

विवादचिन्तामणि m. desgl. GILD. Bibl. 499. Verz. d. Oxf. H. 273, *a*, No. 646. fg.

विवादताण्डव desgl. MACK. Coll. I,26.

विवादभङ्गार्णव m. desgl. MACK. Coll. I, 27. Verz. d. Oxf. H. 296, *a*, No. 719. fgg.

विवादसौख्य n. desgl. Verz. d. B. H. No. 1403.

विवादार्णवसेतु m. desgl. (aus dem BṚHADDHARMAPURÂṆA) COLEBR. Misc. Ess. II,177.

विवादिन् (von वद् mit वि) nom. ag. *mit Jmd im Streite liegend* M. 8,69. 254. MBh. 3,12698. Kathâs. 79,45. अ° *nicht im Streite liegend mit* (अभि) Çat. Br. 3,9,2,3. *worüber Niemand streitet* MBh. 12,7132. — भीरुविवादिनः MBh. 3,13048 fehlerhaft für °विषादिनः, wie die ed. Bomb. liest.

विवाधान s. u. विराधान.

विवान (von 5. वा mit वा) m. 1) *das Flechten:* ग्रासन्दी° Kâtj. Çr. 22,6,12. — 2) *Flechtwerk* Kâtj. Çr. 26,2,8. Lâtj. 3,12,1.

विवार (von 1. वर् mit वि) m. *die Oeffnung der Stimmritze* (bei der Aussprache eines Lautes), Gegens. संवार P. 1,1,9, Schol.

विवारयिषु (vom desid. des caus. von 1. वर्) adj. *zurückzuhalten —, aufzuhalten beabsichtigend,* mit acc.: रथानीकम् MBh. 7,5219. 8838.

विवाश m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. bei Muir, ST. I,191, N. 11. nach anderen Lesarten विविंश, विविश, विवंश, विवश, विवास.

1. विवास (von 2. वस् mit वि) m. *das Hellwerden, Tagen* Âçv. Çr. 2, 18,9. °काले 4,13,1. ग्रारात्रिविवासमाचष्टे *bis zum Tagesanbruch* P. 3, 1,26, Vârtt. 5, Schol.

2. विवास (von 5. वस् mit वि) m. *das Verlassen der Heimat, Entfernung aus der Heimat, Verbannung* (intrans.): ग्रस्त्रहेतोर्विवासश्च पार्थस्य MBh. 1,432. 3,2776. 12,13830. विवासस्तवारण्ये R. 2,23,23 (20, 26 Gorr.). 63,2 (65,2 Gorr.). R. Gorr. 2,7,32. 33,15. 56,33. Varâh. Bṛh. S. 96,10. Bhâg. P. 3,16,12. *das Getrenntsein von* (instr.): प्रियैर्विवासो बहुशः संवासश्चाप्रियैः सह MBh. 14,441.

3. विवास m. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. 198. richtiger विविंश in der neuen Aufl.

1. विवासन (vom caus. von 2. वस् mit वि) 1) adj. *erhellend* Nir. 4,7. — 2) n. *das Erhellen* Nir. 12,41.

2. विवासन (vom caus. von 3. वस् mit वि) n. *das Bekleidetsein mit, das Gehülltsein in* (instr.): ग्रग्निना: MBh. 12,500 = 14,323.

3. विवासन (vom caus. von 5. वस् mit वि) n. *das Entfernen aus der Heimat, Verbannen* R. 1,1,22 (25 Gorr.). 3,12 (6 Gorr.). 2,22,15 (19, 12 Gorr.). 38,10 (37,19 Gorr.). 54,20 (21 Gorr.). 58,26. 72,48. 75,4. 5,7,14. Uttarar. ed. Cow. 41,5 (प्रवासन die ältere Ausg.). Varâh. Bṛh. S. 46,58.

विवासनवत् adj. zur Erkl. von विवस्वत् Nir. 7,26.

विवासयितर् (vom caus. von 5. वस् mit वि) nom. ag. *Vertreiber* TBr. Comm. 3,361,15.

विवासस् (2. वि + 1. वा°) adj. *unbekleidet, nackt* MBh. 3,2313. Bhâg. P. 8,10,47. 9,1,30. 14,22. 18,19.

विवास्य adj. *zu verbannen* M. 9,241. Jâǵn. 2,81. R. 2,36,24.

विवाहँ (von 1. वह् mit वि) 1) m. *Heimführung der Braut, Hochzeit, Heirath* AK. 2,7,55. Trik. 2,7,30. H. 517. Halâj. 2,340. AV. 12,1,24. 14,2,65. प्र वस्यंसो विवाहमाप्नोति TS. 7,2,8,7 (वसीयांसं विवाहम् Pańkav. Br. 7,10,4). Kâṭh. 25,3. देवविवाहं व्यवहेताम् Ait. Br. 4,27. Âçv. Çr. 11,2,6. 12,5,1. 15,6. Gṛhj. 1,4,1. die Arten der Heirath 6, 1. fgg. Kauç. 75. 79. 84. साम्नोः Pańkav. Br. 11,9,5. — M. 1,112. 5,152. 8,112. MBh. 3,13844. R. 1,3,10. 2,57,13. Ragh. 7,17. Varâh. Bṛh. S. 1,10. 2, S. 6, Z. 3. Bhâg. P. 8,19,43. ग्रस्य दमयन्त्याश्च MBh. 3,2230. विवाहं कारयामास दमयन्त्या नलस्य च 2231. विवाहं निर्वर्तयितुम् R. 1,69, 12. राजन्यविप्रयोः Bhâg. P. 9,18,5. इत्येतेषामविवाहः: *diese dürfen nicht unter einander heirathen* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55, 6 u. s. w. विवाहः सदृशैः सह M. 10,53. समैर्विवाहं कुरुते Spr. 5180. कुमारेण सह विवाहः कृतः Vet. in LA. (III) 11,18. fg. कदाचिद्विवाहः संजातस्तद्गृहे Pańkat. 26,19. विवाहोत्का Râǵa-Tar. 1,68. °विधि M. 9,65. Varâh. Bṛh. S. 71,13. Verz. d. B. H. No. 1046. °योग Verz. d. Oxf. H. 215,*b*, 37. °प्रयोग 276,*b*,29. विवाहेतिकर्तव्यता 28. fg. °दीक्षा Ragh. 3,33. °काल Varâh. Bṛh. S. 43,37. 98,14. Bṛh. 28 (26), 6. °समय Pańkat. 188, 22. विवाहाग्नि Âçv. Gṛhj. 1,8,5. °चतुर्थीकर्मन् Verz. d. B. H. No. 1046. °गृह Kathâs. 34,254. ग्रष्टौ स्त्रीविवाहाः *acht Arten der Heirath* M. 3, 20. 26. fgg. 9,167. Jâǵn. 1,58. fgg. Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,26. fg. 268,*b*, 41. 276,*b*,28. गान्धर्वेण विवाहेन बह्व्यो राजर्षिकन्यकाः। श्रूयन्ते परिणीताः Çâk. 71. इमां गान्धर्वेण विवाहविधिनोपयम्य 110,14. am Ende eines adj. comp. f. ग्रा Kathâs. 16,70. 24,32. 33,214. Kull. zu M. 9,97. — 2) m. in dem Verse Ait. Br. 7,13 wird mit einem misslungenen Wortspiele von dem Asketen gesagt: *der Athem ist sein Brod, das Kleid ist sein Haus, sein eigenes Aussehen sein Goldschmuck,* पशवो विवाहाः *die Hausthiere seine Fahrgelegenheiten* (Sänften und dgl.) und zugleich *seine Hochzeit, der Freund ist sein Weib* u. s. w. Nach Sâj. = विशेषेण निर्वाहकाः; es hat wohl ursprünglich विवाहः sg. gestanden. — 3) n. *eine best. grosse Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,15. fg. Vjutp. 181. 184. — 4) m. als Name *eines Windes* in einem Citat beim Schol. zu Çâk. 165 fehlerhaft für विवह. — Vgl. कु°, दुर्विवाह.

विवाहनीया (vom caus. von 1. वह् mit वि) adj. f. *heimzuführen als Frau, mit der man Hochzeit zu machen hat:* ग्रद्यैव तपावसाने विवाहनीया राजदुहिता Daçak. 53,2.

विवाहपटल m. n. Bez. *des Abschnittes in einem astr. Werke, der über die zu Hochzeiten günstigen Zeiten handelt,* Kern in der Einl. zu Varâh. Bṛh. S. 25. Utpala zu Varâh. Bṛh. S. 1,10. zu Bṛh. 28 (26), 6. Verz. d. Oxf. H. 338,*a*,16. शौनकीय° 19. Vgl. विवाहे लग्नपटलः Verz. d. Cambr. H. 63,23. fg. — Vgl. बृहद्विवाहपटल.

विवाहपटह m. *Hochzeitspauke* Mṛkkh. 172,21.

विवाहपद्धति f. Titel eines über *Hochzeiten* handelnden Werkes Verz. d. B. H. No. 1048.

विवाहवृन्दावन n. desgl. Verz. d. B. H. No. 873. Verz. d. Oxf. H. 336, *a*, No. 790. fg.

विवाहवेष m. *Hochzeitskleid:* कृतविवाहवेषा Ragh. 6,10.

विवाहहोम m. *Hochzeitsopfer:* °होमोपयुक्ता मन्त्राः Verz. d. Oxf. H. 398,*a*, No. 144.

विवाहिन् (von 1. वह् mit वि) adj. *heirathend, eine Ehe schliessend;* ग्र° *mit dem man sich nicht durch Heirath verbindet* M. 9,238. द्विविवाहिन् *mit Zweien durch Heirath verbunden;* davon °विवाहिता f. nom. abstr. Verz. d. Oxf. H. 87,*a*,24. fg.

विवाह्य (wie eben) adj. 1) *zu heirathen* (ein Mädchen): विवाह्याविवाह्यकन्यानिरूपण Verz. d. Oxf. H. 85,*a*,22. fg. विवाह्या Kathâs. 33, 190. 103,146. Kull. zu M. 3,5. ग्रविवाह्या Spr. 1777. — 2) *mit dem*

man sich verschwägern darf, in dessen Familie man heirathen darf LÂṬJ. 8,2,11. अविवाह्या हि राजानो देवयानि पितुस्तव MBH. 1,3376. — 3) *verschwägert, durch Heirath verwandt* JÂGN. 1,110 (*Schwiegersohn* STENZLER). MBH. 2,1390. अभ्यन्तरविवाह्याश्च कौशिका बभ्रव: स्मृता: HARIV. 1468 = 1772. nach dem Comm. = वैवाह्य *Gegenschwäher* GOBH. 4,10,20.

विविंश (2. वि + विंश) m. 1) N. pr. eines Sohnes des Ikshvâku (Vîra) und Grosssohnes des Kshupa MBH. 14,68. MÂRK. P. 120,14. fg. — 2) pl. Bez. der Vaiçja in Plakshadvîpa VP. (2te Aufl.) 2,193.

विविंशति (2. वि + विं°) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBH. 1,2447. 2729. 4543. 4,1151. eines Sohnes des Viṁça und Urgrosssohnes des Khanitra VP. 352. eines Sohnes des Kâkshusha und Grosssohnes des Khanitra BHÂG. P. 9,2,24. fg.

विविक्त 1) adj. und n. s. u. 1. विच् mit वि; विविक्ता s. u. विवृक्ता. — 2) m. = वसुनन्दन H. an. 3,297. = वसुनन्द MED. t. 153. fg.

विविक्तता (von विविक्त) f. 1) *Unterschiedenheit, Gesondertheit:* वर्णपद्वाक्य° so v. a. *genaue Sonderung der einzelnen Laute, Wörter und Sätze bei der Aussprache* H. 71. — 2) *Isolirtheit:* प्रतीहारा नृपस्याग्रमनयन्त विविक्तताम् RÂGA-TAR. 5,354. — 3) *Reinheit, Lauterkeit:* des Âkâça SUÇR. 1,313,2 (vgl. 151,17). — 4) *körperliches Wohlbehagen* SUÇR. 2,219,8. ÇÂRÑG. SAÑH. 3,6,10.

विविक्तत्व (wie eben) n. *Einsamkeit* MṚKKH. 98,25.

विविक्तनामन् m. N. pr. eines der sieben Söhne des Hiranjaretas, Beherrschers von Kuçadvîpa, und des von ihm beherrschten Varsha dieses Dvîpa BHÂG. P. 5,20,15.

विविक्ति (von 1. विच् mit वि) f. 1) *Sonderung, Trennung* VS. 30,13. विवित्ति v. l. im TBR. — 2) *richtige Unterscheidung* SARVADARÇANAS. 74,21.

विविक्तीकर् (विविक्त + 1. कर्) *leer machen:* अन्त:पुरोत्तमं °कृतं तया *aus dem die übrigen Bewohner von ihr entfernt worden waren* KATHÂS. 74,231. *allein lassen, verlassen:* (आश्रमम्) सेकान्ते मुनिकन्याभिर्विविक्तीकृतवृत्तकम् RAGH. ed. Calc. 1,52.

विविक्वंस् (von 1. विच् mit वि) adj. *unterscheidend* ṚV. 3,57,1.

विविन् (vom desid. von 1. विश्) nom. ag. VOP. 3,151. nom. विविट्.

विविक्षु (wie eben) adj. *hineinzugehen beabsichtigend, — im Begriff stehend;* mit acc.: उद्यानम् VIKR. 24. नगरम् RÂGA-TAR. 8,1160. 1367. अरण्याभ्यन्तरम् KATHÂS. 94,12. 109,60. BHÂG. P. 9,4,50. 11,18,1. तम: 4,21,46. देवतालयम् Verz. d. Oxf. H. 259,b,6. पतंगवद्वह्निमुखम् KUMÂRAS. 3,64. वह्निम् KATHÂS. 22,241. BHÂG. P. 10,89,45. mit loc. RÂGA-TAR. 8,1665.

विविचि (von 1. विच् mit वि) adj. P. 3,2,171, Vârtt. 2, Schol. *unterscheidend, sondernd:* Agni ṚV. 5,8,3. TBR. 3,7,1,5. AIT. BR. 7,6. ÇAT. BR. 12,4,1,2. ÂÇV. ÇR. 3,13,5. Indra VÂLAKH. 2,6. विविचीष्टि Comm. zu TS. 3,3,11,3.

विविघ्न RÂGA-TAR. 4,50 fehlerhaft für विविघ्न (s. u. विघ्न् mit वि), wie die ed. Calc. liest.

विविद्वै TAITT. ÂR. 10,58 in Ind. St. 2,87 = विविद्यै.

विविंत्ति f. nach dem Comm. so v. a. विशेषलाभ *Gewinnung* (von 3. विद् mit वि) TBR. 3,4,1,7. विविक्ति v. l. in VS.

विवित्सा (vom desid. von 1. विद्) f. *das Verlangen kennen zu lernen* MBH. 7,9135 (nach der Lesart der ed. Bomb.; विकुत्सा ed. Calc.). BHÂG. P. 11,7,27. सर्वधर्म° 1,9,1. 3,7,40. 7,13,13. 10,49,14. 69,19.

विवित्सु (wie eben) 1) adj. *kennen zu lernen wünschend*, mit acc. MBH. 5,2213. BHÂG. P. 3,8,3. 7,13,15. PAÑKAR. 3,7,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛtarâshṭra MBH. 1,2731. 4544. 6,2838. 8,2446. 2451.

विविदिका bei GAUḌAP. zu SÂÑKHJAK. 50 fehlerhaft für विविदिषा.

विविदिषा f. = विवित्सा GAUḌAP. zu SÂÑKHJAK. 1. 50 (wo त्रिदण्डकमण्डलुविविदिषातो zu lesen ist). WILSON, SÂÑKHJAK. S. 6. Einl. zu KAUSH. UP.

विविदिषु adj. = विवित्सु ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 196. अ° BHAṬṬ. 7,99.

विविद्युत् (2. वि + वि°) adj. *blitzlos:* जलधर HARIV. 3822.

विविध (2. वि + विधा) 1) adj. (f. आ) *verschiedenartig, mannichfaltig, allerhand* AK. 3,2,43. H. 1469. सिसृक्षुर्विविधा: प्रजा: M. 1,8. 39. गुच्छगुल्मम् 48. वधै: 8,193. वधेन 310. MBH. 3,1810. 1829. 2194. 12142. राज्य 7,2231. R. 1,9,14. 35. 53,14. 24. SUÇR. 1,117,9. VARÂH. BṚH. S. 19,15. 35,1. 3. Spr. 660 (II). 2595. KATHÂS. 20,227. BHÂG. P. 4,5,3. 7,6,26. BRAHMA-P. in LA. (III) 52,2. PAÑKAT. 192,22. विविधोपेत so v. a. विविध R. 2,80,5. विविधम् adv. 66,2. 78,6. — 2) m. N. eines Ekâha ÇÂÑKH. ÇR. 14,28,13.

विविन्ध्य (2. वि + वि°) m. N. pr. eines Dânava MBH. 3,680.

विविवध s. u. विवध.

विविश m. v. l. für विविंश VP. (2te Aufl.) 2,193.

विवीत (von वी = व्या) m. *ein umzäunter Weideplatz* (= प्रचुरतृणाकाष्ठो रक्ष्यमाण: परिगृहीतो भूप्रदेश: MIT. im ÇKDR.) JÂGN. 2,160. 282. °भर्तर् *der Besitzer eines solchen Platzes* (*Aufseher des Ortsgebietes* STENZLER) 271. — Vgl. वीतक.

विवीवध s. u. विवध.

विवृक्ता (partic. von वर्ज् mit वि) adj. f. = दुर्भगा BHÛRIPRAJOGA im ÇKDR. विविक्ता ÇKDR. nach TRIK., die gedr. Ausg. 2,6,4 liest aber विरक्ता.

विवृंत् in einer Formel VS. 15,9.

विवृत 1) adj. s. u. 1. वर् mit वि. — 2) f. आ a) Bez. *einer best. Eruption* MED. t. 156. BHÂVAPR. im ÇKDR. Suppl. WISE 412. SUÇR. 1,292,7. 293,1. ÇÂRÑG. SAÑH. 1,7,65. Vgl. विवृत्ता. — b) als Pflanzenname SUÇR. 1,144,16 vermuthlich fehlerhaft, त्रिवृत् liest WISE 146.

विवृतता (von विवृत) f. *das Offenbarwerden:* न शशाक मनोगतम् । तं शोकं राघव: सोढुं स (sc. शोक:) विवृततां गत: R. 2,26,7.

विवृताक्ष (विवृत + अक्ष *Auge*) m. *Hahn* H. 1325. — Vgl. विवृत्ताक्ष.

विवृति (von 1. वर् mit वि) f. = विवरण *Auseinanderlegung, Erörterung, Erklärung, Erläuterung:* धर्म° (fälschlich °वृत्ति gedr.; vgl. Mél. asiat. I,282, Çl. 10) Verz. d. Oxf. H. 122,b,37. पातक° 123,a,8. 39. 49. 136,b,8 v. u. सूत्र° 177,b,15. 185,b,5. 264,a,18. UTPALA am Anfange und am Schlusse von VARÂH. BṚH. SARVADARÇANAS. 90,19. °विमर्शिनी f. Titel eines *Commentars* Verz. d. Oxf. H. 238,b,33. न्यायमकरन्द°, मकरन्द° desgl. HALL 155. — Vgl. छन्दो°.

विवृतोक्ति (विवृत + उ°) f. *offener —, unverhüllter —, deutlicher Ausdruck* (Gegens. गूढोक्ति) KUVALAJ. 148,a.

विवृत्त 1) adj. s. u. वर्त् mit वि. — 2) f. श्रा Bez. *einer best. Eruption* Bhâvapr. im ÇKDr.; vgl. विवृता.

विवृत्ताक्त (विवृत्त + अक्त) 1) adj. *die Augen verdrehend* R. 4,21,37. — 2) m. *Hahn* Trik. 2,5,18.

विवृत्ति (von वर्त् mit वि) f. 1) *Entfaltung* Bhâg. P. 3,6,10. = विविधवृत्तिलाभ Comm., wo übrigens fehlerhaft विवृक्ति st. विवृत्ति gelesen wird. — 2) *Hiatus* Ṛv. Prât. 2,1. 5. 28. 32. 44. 3,9. 14,26. VS. Prât. 1,119. 7,6. AV. Prât. 3,63. Çikshâ 15 in Ind. St. 4,113. Çâñkh. Çr. 12, 3,6. विवृत्त्यभिप्राय m. *ein unächter Hiatus* Ṛv. Prât. 4,28; vgl. 14,11. — 3) fehlerhaft für विवृति Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, No. 111.

विवृद्धि (von 1. वर्ध् mit वि) f. *Wachsthum, Zunahme, Vergrösserung, Vermehrung, Gedeihen* Kâtj. Çr. 8,3,5. Çâñkh. Çr. 7,19,20. Lâṭj. 5,11, 11. वत्स° Sâñkhjak. 57. काय° MBh. 3,10629. gaṇa तुन्दादि zu P. 5, 2,117. ग्रैष्मिक° Varâh. Bṛh. S. 40,2. गर्भ° 21,18. 53,117. त्र्यङ्गुल° *um drei Zoll* 69,7. लोकानाम् *Vermehrung* M. 1,31. स्ववंशस्य 9,128. MBh. 1,6812. 7278. यमराष्ट्र° 7,2711. प्रजा° Bhâg. P. 6,5,5. धान्यार्घक्षय° *Fallen und Steigen des Preises* Varâh. Bṛh. S. 7,1. 4. ऐचोरुभयविवृद्धिप्रसङ्गादिडुतोः प्लुतवचनम् *das Längerwerden eines Vocals* P. 8,2,106, Vârtt. लोकानाम् *Gedeihen* M. 3,263. Varâh. Bṛh. S. 30,15. 44,21. 49, 8. Bhâg. P. 9,22,15. Kull. zu M. 5,39. विख्यातपो° *Zunahme* M. 6, 30. नृपतिलक्ष्मी° Varâh. Bṛh. S. 4,20. शोक° R. 3,79,15. °भाजा वयसा *zunehmend* Kathâs. 103,226. °द Varâh. Bṛh. S. 13,9. °कर 59,5. विवृद्धिं गम् Hariv. 10575. R. 7,5,8. या MBh. 1,3603. Hariv. 3910. Ragh. 18,48. Spr. (II) 1056. समुपैति Varâh. Bṛh. S. 24,11. अभ्युपैति 75,10. अश्नुवते Ragh. 13,4.

विवृह् (von 1. बर्ह्, वर्ह् mit वि) m. *das Sichlosreissen, Sichverlieren* (von Andern weg) Kauç. 75.

विवृहत् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Kâçjapa, Liedverfassers von Ṛv. 10, 163.

विवेक (von 1. विच् mit वि) m. 1) *Scheidung, Sonderung, Trennung; Unterscheidung;* = पृथगात्मता AK. 2,7,37. H. 79. = पृथग्भाव Med. k. 158. = एकान्त H. an. 3,99. — Suçr. 1,48,4. 2,176,13. कर्मणां च विवेकार्थं धर्माधर्मौ व्यवेचयत् M. 1,26. कर्मविवेकार्थम् 102. विवेकं कर्तुम् R. 5,13,64. वर्णदोषविवेकार्थम् VS. Prât. 1,26. स्थानप्रयत्न° P. 1,1,9, Schol. परात्मीय° Bhaṭṭ. 17,60. कार्याकार्य° Sarvadarçanas. 78,13. प्रकृतिपुरुष° 104,16. युक्तायुक्त° Spr. 5146. Nîlak. 12. 61. Sarvadarçanas. 81,12. अ° Kap. 1,55. °रहित *nicht gesondert, aneinanderstossend:* पयोधरयुग Spr. (II) 1446. — 2) *Untersuchung, Kritik, Prüfung:* = विचार H. an. Med. शृङ्गारविवेकतत्त्व Git. 12,28. शास्त्रसंभारविवेककृतनिश्चय Mârk. P. 20,4. दानप्रतिग्रहधर्म° Sarvadarçanas. 104,16. 59,10. fgg. वीणादिभिदाम् Verz. d. Oxf. H. 200,*b*,11. मेलानाम् 13. राग° 14. °पञ्चक d. i. तत्त्व°, भूत°, कोश°, द्वैत°, वाक्यार्थ° oder महावाक्य° 222, No. 540. 3) *richtige Unterscheidung, — Einsicht; Verstand, Urtheilskraft:* न विवेकं लभन्ते ऽमुष्याहं वृत्तस्य रसो ऽस्मीति Khând. Up. 6,9,2. Kap. 3,47. 75. Sarvadarçanas. 33,21. विवेको दुःखनाशाय Spr. (II) 257. विवेकोदय 1443. 1466. 2391. निर्मलविवेकदीपक (I) 1026. °विरह 2641. 2844. fg. घन° (Conj.) 2971. विवेको नास्ति मूर्खाणाम् 3146. 4561. ईर्ष्या हि °परिपन्थिनी Kathâs. 5,15. °पदवीं प्राप्य 33,81. Râǵa-Tar. 4,27. Prab. 5,16. कृतो विवेकः Brahma-P. in LA. (III) 56,22. अ° Spr. 3226. Bhâg. P. 5, 13,22. 6,17,30. विवेकाश्रय Verz. d. Oxf. H. 209,*a*,20. °तीर्थ 263,*b*,No. 636. fg. °विशद Râǵa-Tar. 2,113. °विगुण 5,352. °विश्रान्त (°शून्य v. l.) Mâlav. 4,1. °रहित Spr. (II) 1446. Pañkat. 3,14. °भ्रष्ट Spr. 2982. प्राप्त° adj. Kap. 1,83. विगलित° adj. Spr. (II) 526. यात° adj. Sarvadarçanas. 101,4. अ° adj. Spr. 2730. Kathâs. 49,223. स° adj. 15,62. — 4) abgekürzter Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,50. 292,*b*,13. — 5) *Wassertrog* (जलद्रोणी) H. an. Med. — Vgl. अ°, काल°, ज्ञाति°, तत्त्व°, तिथि° (unter तिथि), धर्म°, निर्विवेक, प्रत्यक्तत्त्व°, प्रायश्चित्त° (unter 1. प्रायश्चित्त), भावना°, भावसार°, वर्ण°, विधि°, व्यक्ति°, शुद्धि°, श्राद्ध°, संबन्ध°.

विवेकख्याति f. *richtige Einsicht* Jogas. 2,26. 28. Sarvadarçanas. 165, 16. 179,21.

विवेकचूडामणि m. Titel eines Werkes Nîlak. 18.

विवेकज्ञ adj. *eine richtige Erkenntniss habend* Spr. 1056. 2221. 3123. धर्माचार° R. Gorr. 1,7,7.

विवेकज्ञान n. *richtige Erkenntniss* Sarvadarçanas. 118,2. 176,21. 179, 24. Nîlak. 29. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,48; vgl. विवेकजज्ञान 232,*a*,3. 4.

विवेकता fehlerhaft für विवेकिता (wie die v. l. hat) Spr. 1030; अ° s. u. 2. अविवेक.

विवेकधैर्याश्रय n. Titel einer Schrift Hall 148. °विवृति ebend.

विवेकमार्तण्ड m. desgl. Hall 13.

विवेकवत् (von विवेक) adj. *richtig urtheilend, eine richtige Einsicht habend* Kathâs. 94,78. Mârk. P. 66,40.

विवेकविलास m. Titel einer Schrift Sarvadarçanas. 23,16.

विवेकसार n. desgl. Hall 98.

विवेकसिन्धु m. desgl. Hall 100. Verz. d. B. H. No. 1365.

विवेकाश्रम (विवेकाश्रय?) m. N. pr. eines Mannes Hall 141.

विवेकिता (von विवेकिन्) f. *richtige Unterscheidung, richtiges Urtheil, richtige Einsicht* Spr. 1030 (fälschlich विवेकता). 2872. वेदशास्त्रार्थेषु Jâǵñ. 3,156.

विवेकित्व (wie eben) n. dass. Spr. 1030, v. l. अ° Wilson, Sâñkhjak. S. 58.

विवेकिन् (von 1. विच् mit वि und von विवेक) 1) adj. P. 3,2,142. *a*) *scheidend, sondernd, unterscheidend:* स्वादु° Spr. (II) 407. युक्तायुक्त° 496. अ° Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 289. — *b*) *gesondert, getrennt:* अविवेकि कुचद्वंद्वम् Kuvalaj. 120, *a*. — *c*) *untersuchend, prüfend, kritisch behandelnd* Verz. d. Oxf. H. 238, *a*, No. 574. — *d*) *richtig unterscheidend, — urtheilend, verständig* Spr. (II) 748. (I) 1991. 2770. 4233. 5020. Kathâs. 58,140. Râǵa-Tar. 3,136. 6,97. 208. Mârk. P. 66,34. fg. 93,2. Pañkar. 1,6,59. Ind. St. 5,291, N. 3. Sarvadarçanas. 166,21. fg. Pañkat. 131,19. बुद्धि Kathâs. 39,108. अ° *nicht richtig urtheilend, keine richtige Einsicht habend* Spr. (II) 693. *keine urtheilsfähige Männer besitzend:* दुर्देश Kathâs. 24,225 (unter अ° zu streichen). — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Fürsten Devasena ÇKDr. nach dem Kâlikâ-P. — Vgl. अ°.

विवेक्तर् (von 1. विच् mit वि) nom. ag. 1) *der da sondert, — unterscheidet:* युक्तायुक्त° Râǵa-Tar. 3,134. — 2) *der da richtig urtheilt, eine richtige Einsicht habend* Râǵa-Tar. 3,134. 5,5. Spr. 2888.

विवेक्तव्य (wie eben) adj. impers.: इति विवेक्तव्यम् *so ist es richtig aufzufassen* Kumârila bei Müller, SL. 98. Sarvadarçanas. 140,13.

विवेक्तृत्व n. nom. abstr. zu विवेक्तृ 1): पात्रापात्र° Râǵa-Tar. 3,317.

विवेक्य (von 1. विच् mit वि) adj. 1) *zu sondern, zu unterscheiden:* अपृथग्धर्मिणो ऽपृथग्विवेक्याः Maitrjup. 6,22. — 2) *zu untersuchen, zu prüfen, kritisch zu behandeln* Verz. d. Oxf. H. 200, *a*, 3 v. u.

विवेचक (wie eben) adj. 1) *sondernd, unterscheidend:* सुखदुःख° Nilak. 21. — 2) *richtig unterscheidend, eine richtige Einsicht habend, verständig:* मनस् Spr. 1105. Personen Schol. zu Kap. 1,122 (Gegens. मूढ). Kusum. 2,10. Wilson, Sâṁkhjak. S. 47 (neben अ°). Davon विवेचकता f. *richtiges Urtheil, richtige Einsicht* Râǵa-Tar. 3,259. विवेचकत्व n. dass. Sarvadarçanas. 172,18. Sâh. D. 11,13.

विवेचन (wie eben) 1) adj. (f. ई) *a) unterscheidend:* शुभाशुभ° Bhâg. P. 6,3,7. — *b) untersuchend, prüfend, erörternd, kritisch behandelnd:* गुण° (परिच्छेद) Sâh. D. 253,16. न्यायमकरन्दविवेचनी Titel eines Werkes Hall 155. — 2) n. *a) das Unterscheiden:* दृष्टादृष्ट° Hariv. 15722. Vedântas. (Allah.) No. 10. Sarvadarçanas. 33,21. auch f. आ in कार्याकार्य° Wilson, Sâṁkhjak. S. 47. — *b) Untersuchung, Prüfung, Erörterung, kritische Behandlung:* यस्य शूद्रस्तु कुरुते राज्ञो धर्मविवेचनम् M. 8,21. MBh. 12,1860. शिरोगद° Suçr. 1,11,4. Verz. d. Oxf. H. 89,*a*,15. 208,*a*, No. 489. *b*,26. 209,*b*, 1 v. u. 210,*b*, No. 497. 245,*b*, No. 616. fg. 257,*b*,20. fg. Sarvadarçanas. 104,13. fg. — *c) richtiges Urtheil* Pańkar. 2,3,5. — Vgl. कालतत्त्व°.

विवेदयिषु (vom desid. des caus. von 1. विद्) adj. *zu melden beabsichtigend:* विवेदयिषवः पार्थं तपस्युग्रे समास्थितम् *dass* MBh. 3,1543 nach der Lesart der ed. Bomb.

विवेन (2. वि + वेन) s. अविवेनम्.

विवोढृ (von 1. वह् mit वि) m. *Gatte* H. 517.

विव्याधिन् (von व्यध् mit वि) adj. *mit Geschossen durchbohrend* AV. 1,19,1.

वि॑व्रत (2. वि + व्रत) adj. *widerstrebend, widerspänstig:* अमी ये वि॑व्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि AV. 3,8,5. die Rosse Indra's ṚV. 1,63, 2. 8,12,15. 10,23,1. 49,2. 55,3. 105,2. 4.

1. विश्, वि॑शति Dhâtup. 28,130 (प्रवेशने). विशते, अविश्रन्; विवेश, विविशे; ved. विवेशुस्, अविवेशीस् und विविश्यास्; विविशिवंस् und विविश्वंस् P. 7,2,68. Vop. 26,134. अविक्षत्, अविक्षत, अविक्ष्महि; वेक्ष्यति (vgl. Kâr. 5 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10), वेष्टा, वेष्टुम् P. 8,2,36, Schol. 1) *sich niederlassen, hineintreten in, eingehen in, — bei, sich hineinbegeben in* (loc. und acc.) Çat. Br. 8,6,2,5. 19. 14,8,13,3. सोमंश्चम्वोः ṚV. 9,103,4. विविशुर्जाह्नवीतीरे *liessen sich nieder* R. 1,36,9 (37,10 Gorr.). अन्तःपुरे *eintreten in* MBh. 7,2774. मन्दिरे Kathâs. 3,73. वासवेश्मनि 14,32. अवन्तीषु Râǵa-Tar. 4,162. ग्राममध्ये Varâh. Bṛh. S. 32, 25. नरकेषु Bhâg. P. 5,26,37. शलभो तीव्रदहने Spr. (II) 100, v. l. तेनैव पथा हृदि स्मरः Kathâs. 3,59. भगवान्विशते हृदि Bhâg. P. 2,8,4. संसृतौ 2,33. विशामस्तस्यान्तः Kathâs. 34,156. अतः कञ्चुकिकञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः Ratnâv. 27,8. विविशे ऽन्तरं विभोः Bhâg. P. 1,6, 30. मध्येवारि Kathâs. 18,302. mit acc.: अन्तःपुरम् M. 7,216. भवनं विविशाते MBh. 3,2117. गर्भभवनम् Kathâs. 18,159. गृहम् 20,122. Varâh. Bṛh. S. 53,125 (*Einzug halten*). Râǵa-Tar. 3,175. Hariv. 3948. निवेशनम् R. 1,20,14. वेश्मानि 2,47,19. Kathâs. 28,140. शय्याविश्म Râǵa-Tar. 4,433. आवसथम् R. 2,56,26. सुतावासम् Kathâs. 18,327. सभाम् MBh. 2, 2051. R. 2,56,32. Râǵa-Tar. 5,33. अविक्षत्सदः Bhaṭṭ. 11,45. रङ्गम् MBh. 3,2193. आश्रमपदम्, आश्रमम् 2466. R. 1,58,9. 4,13,20. पुरीम् Ragh. 12,18. Varâh. Bṛh. S. 46,66. Kathâs. 12,23. 18,118. Râǵa-Tar. 5,216. पातालम् R. 1,44,8. वनम्, अरण्यम्, अटवीम् MBh. 3,2536. R. 1, 1,29. 2,74,29. R. Gorr. 2,42,6. 3,74,7. Ragh. 9,53. 12,9. Kathâs. 25, 6. जन्मपादपान्, बिलानि Râǵa-Tar. 4,175 (अविक्षन्). सरःकच्छम् 1,204. वनदुर्गाणि R. 4,18,15. Spr. 1446 (med., aber v. l. act.). अम्भोनिधिम् 849 (II). सरः 2591. नदीम् MBh. 3,10689 (विशस्व). जलम् Jâǵn. 2,108. नृपार्णवम् Hariv. 5971. ज्वलनम् so v. a. *den Scheiterhaufen besteigen* R. 1,1,81. 6,101,32. Kathâs. 49,161. Bhag. 11,29. वक्त्राणि ebend. R. 5, 56,17. भुजंगविजृम्भितम् der Mond Varâh. Bṛh. S. 104,47. तमः Bhâg. P. 3,31,32. 4,19,34 (med.). 7,1,18. वराहकृष्टो विशतीव भूतलम् Ṛt. 1,17. जनमध्यम् MBh. 3,2513. द्विषद्बलम् Spr. 2846. भुजान्तरम् Ragh. 19, 38. Megh. 100. यन्नो ऽन्तर्हृदयं विश्य तमो हंसि Bhâg. P. 9,11,6. मल्लिणा विशता मनः Râǵa-Tar. 3,497. अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति *eingehen —, aufgehen in* Bhag. 11,21. 18,55 (med.). MBh. 13,1018 (med.). Prab. 80, 15. विशन्ति ताराग्रहा रविम् so v. a. *kommen in Conjunction mit* Varâh. Bṛh. S. 20,1. सो ऽद्रिरनाधारः — अपो ऽविशत् *versank in* Bhâg. P. 8,7,6. शरस्तस्य — अविशद्भूतलम् *drang in* Râǵa-Tar. 5,217. स शब्दो द्यां च भूमिं च प्राणिनां श्रवणानि च। विवेश R. 2,91,27 (100,24 Gorr.). Kathâs. 25,136. सर्वत्र यान्ति पुरुषस्य चलाः स्वभावाः खिन्नास्ततो हृदयमेव पुनर्विशन्ति *gehen wieder zurück in's Herz* Mṛkkh. 78,19. fg. Ohne Ergänzung *hineintreten* (in's Haus u. s. w.) Hariv. 3471. 4540 (*auf dem Schauplatze auftreten, erscheinen*). R. 1,9,57. Kâm. Nitis. 6,11. निर्गच्छेयुर्विशेयुश्च चराः 12,27. Spr. 288 (II). 1168. Kathâs. 45,248 (विश, nicht आविश gemeint). वत्सेशनिकटम् 13,2. Râǵa-Tar. 6,46. निर्गत्य न विशेद्भूयो महतां दन्तिदन्तवत्। वचः *kehrt nicht wieder zurück* Spr. 4472. — 2) *heimgehen, zur Ruhe gehen:* (सूर्यम्) विशन्तं जगदनु सर्वं विशति Çâṅkh. Br. 8,7. यद्देवासो अविक्षत ṚV. 10,136,2. — 3) *sich setzen* (vgl. उप): आसनानि R. 2,82,2. Hariv. 9051. परमासने 9080. — 4) *sich wohin begeben:* सेनयोरुभयोर्विविशुस्ते ऽग्रतो Bhâg. P. 8,10,12. अग्रे 26. राजमार्गम् Ragh. 6,10. सा परिक्रम्य वै मेरुं जम्बूमूलं पुनर्नदी। विशति Mârk. P. 54,30. *zuströmen*, von Heeresabtheilungen und Nebenflüssen Râǵa-Tar. 5,140. *Jmd* (acc.) *zuströmen, zufliessen, zu Theil werden:* इन्दुविषाणाशयः। विविशुस्तं विशां नाथमुदन्वन्तमिवापगाः Ragh. ed. Calc. 4, 70. उपदा विविशुः शश्वन्नोत्सेकाः कोसलेश्वरम् Lesart bei Stenzler. सरित इव समुद्रं संपदस्तं विशन्ति Kâm. Nitis. 2,44. उभयोरप्यलक्ष्म्या वै भागस्तं विशते नरम् Hariv. 14258. न विवेश च निद्रैनम् R. 4,26,9. मत्योर्विशतः समं प्रजाः so v. a. *treffen* Bhâg. P. 4,11,20. *Jmd* (loc.) *zukommen:* स एष साक्षात्पुरुषः पुराणो न यत्र कालो विशते न वेदः 8,12,44. — 5) *in einen Zustand eintreten, gerathen in:* कश्मलम् R. Gorr. 1,49,29. आपदम् Spr. (II) 585. — 6) *an Etwas gehen:* दीक्षाम् R. 1,11,20. शिवदीक्षायाम् Bhâg. P. 4,2,29. *sich zu schaffen machen mit:* पशुभ्यः (zur Erklärung von वैश्य) MBh. 12,6955. — 7) विष्ट॑ *eingegangen in:* तमः Bhâg. P. 10,40,25. अन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि so v. a. *ent-*

halten Çat. Br. 14,8,12,3. — Statt des sinnlosen ते विशत्तं मुदा युक्ताः MBh. 7,1551 liest die ed. Bomb. ते विंशतिपदे यत्ताः.

— caus. 1) *eingehen machen in:* इहेत्थमेतं शङ्कारोर्यत्रेदं वेशयामि वः AV. 3,13,7. — 2) *sitzen machen, — heissen:* तमवीविशदासने स्वे Bhâg. P. 10,69,14.

— desid. विविक्षति *hineinzutreten —, hineinzugehen beabsichtigen:* अरण्यम् Bhâg. P. 1,17,43. अग्निम्, वह्निम् Kathâs. 110,6. 122,97. पाण्डवीयामिव चमूं कर्णमूलं विविक्षतीम् 90,13.

— अधि caus. *setzen auf:* कान्तां शय्यामधिवेश्य Bhâg. P. 10,48,6.

— अनु 1) *nach Jmd* (acc.) *hineingehen in* (acc.): पतिं साध्वी तमग्निमनुवेक्ष्यति Bhâg. P. 1,13,55. — 2) *hineingehen, hineinfahren* überh. R. 4,37,32. Bhâg. P. 4,9,7. 10,86,45. वह्निम् Pańkat. 187,25. अनुविष्टो भगवता Bhâg. P. 3,20,17. — 3) *Jmd* (acc.) *folgen* MBh. 1,796. — Vgl. अनुवेश. — caus. *setzen:* संमूढं तस्मिन्नेवासने R. Gorr. 2,35,17.

— अप caus. *wegschicken:* अन्यत्र पापीरप वेशया धियः AV. 9,2,25.

— अभि, partic. °विष्ट *ergriffen —, in der Gewalt stehend von:* मदनाभिविष्ट R. 5,11,18. 22. — caus. *eingehen machen in, richten auf:* अव्यक्तवर्त्मन्यभिवेशितात्मा Bhâg. P. 3,8,33.

— आ 1) *eingehen, eintreten, sich niederlassen in* oder *unter* (acc.), *eindringen, fahren in, Besitz nehmen von:* नेदिह पुरा नाष्ट्रा रक्षांस्याविशान् Çat. Br. 1,1,4,6. इन्द्रमिन्दो वृषा विश ṚV. 1,176,1. 5,7. 91,11. 9,85,7. 10,16,6. (अग्निः) ओषधीरा विवेश 1,98,2. यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश AV. 7,87,1. Çvetâçv. Up. 2,17. मातॄः ṚV. 1,141,5. द्यावापृथिवी 3,32,10. मर्त्यान् 4,58,3. योनिम् 5,47,3. 6,36,3. अमीवा या नो गयमाविवेश 74,2. कृत्यैषा पद्वती भूत्वा जाया विशते पतिम् 10,85,29. अन्युः पतिस्तन्वं१मा विविश्याः 10,3. 125,6. मा नो रक्ष आ वेशीत् 8,49,20. VS. 4,13. 7,46. 12,105. 23,49. TBr. 3,1,4,8. कुमारं जातं जघन्या वागाविशति *zuletzt fährt die Stimme in das Kind* Ait. Br. 3,2. 5,2. तामयं पृश्निवर्णा आविशत् 23. Çat. Br. 11,6,2,6. 12,3,4,2. 14,4,3,26. 5,5,18. — गृहेष्वाविशतां पुंसाम् so v. a. *Haushalter* Bhâg. P. 4,30,19. शालायाम् 8,9,17. सभाम् Hariv. 6817. अन्तःपुरम् R. 2,70,27. R. Gorr. 2,14,21. Bhâg. P. 3,3,6. मन्दिरम् Kathâs. 20,224. अन्तर्गृहम् R. Gorr. 2,3,3. स्वं धिष्ण्यम् Bhâg. P. 3,16,31. mit Ergänzung von गृहम् u. s. w. R. 1,18,22. Kâm. Nîtis. 14,39. Bhâg. P. 10,64,16 (so v. a. *heimkehren* im Gegens. zu व्रज्). नगरम् Daçak. 69,10. Bhatt. 3,18. बिलम् MBh. 1,8379 (med.). 7294. गह्वरम् Ragh. 2,26. वनम् R. 2,43,6 (med.). Bhâg. P. 2,7,23. पातालम् Spr. 1756. जलम् M. 11,223. Spr. 2320. Bhâg. P. 3,13,26. सरः 23,25. समुद्रम् Ragh. 3,28. ययौ स्वर्गं खमाविश्य so v. a. *sich in die Luft erhebend* R. Gorr. 1,62,16. जगामाकाशमाविश्य 36,4. 4,63,24. 5,6,1. 89,43. गगनमाविश्य 3,31,25. वायुमार्गमथाविशत् 4,10,24. संवर्तको वह्निः — लोकमाविशते MBh. 3,12873. fg. परेताचरितां रविराविशते दिशम् *tritt ein in* R. 2,63,14. योनिं मानुषीम् MBh. 1,7300 (med.). कर्णं दक्षिणम् R. 5,56,27. Bhâg. P. 3,6,14. देहावरणं विभिद्य ते (बाणाः) सात्यकेराविविशुः शरीरम् *drangen in* MBh. 7,4694. 4881. Bhâg. P. 4,10,17. 11,3. तदाविशन्ति भूतानि कर्माणि महान्ति सह कर्मभिः M. 1,18. यश्चास्य सो ऽदधात्सर्गे तत्तस्य स्वयमाविशते 29. Bhâg. P. 3,6,2. 10,8. 26,53. Verz. d. Oxf. H. 47,*a*, No. 103, Z. 8. (पुरुषः) ब्रह्मसत्त्रमाविश्य 4,21,51. नाविशामि (so die ed. Bomb.) परस्त्रियम् so v. a. *geschlechtlichen Umgang haben* MBh. 12,2903. आविवेशांशभागेन मन आनकदुन्दुभेः Bhâg. P. 10,2,16. आविशन्ति च यं यत्ताः *fahren in, sich Jmdes bemächtigen* MBh. 3,14507. 2256. मामकान्तरमाविशः 12,2890. fgg. Hariv. 9478. संज्ञत्तमश्रमाविश्य तया मिश्रीबभूव सः 11237. कन्दर्पः — आवेष्टुमभ्ययात्तूर्णं कृतोद्वाहमुमापतिम् R. 1,25,10 (26,11 Gorr.). Mârk. P. 51,80. 101. सत्त्वमाविश्य भाषते R. 2,33,10. आविशत्यप्रमत्तो ऽसौ प्रमत्तं जनमन्तकृत् Bhâg. P. 3,29,39. 5,13,2. मृत्युः MBh. 3,10450. Spr. 4924 (med.). क्रोधो नान्तरमाविशत् R. 1,65,3. आवेष्टुं नान्तरं कामो न क्रोधो ददृशे मुनेः R. Gorr. 1,67,1. ततस्तौ मन्युराविशत् MBh. 1,7727. क्रोधः Mârk. P. 106,27. भयम्, भीः MBh. 3,11971. 5,7221. R. Gorr. 1,24,4. मोहः MBh. 1,216. कश्मलम् 4,1052. चिन्ता R. 2,63,44. वेपथुः MBh. 5,7279. आविवेशोपसर्गस्तं तमः सूर्यमिवासुरम् R. 2,63,2. तस्मात्त्वां नाविशत्वाशु ब्रह्महत्या 64,53. स्मृतिः 4,59,6. आविवेश महान्हर्षो देवानाम् 6,92,72. चोरमाविशन्ति प्रज्ञागाराः Spr. (II) 500. शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति (I) 3022. लोकानाविशते यशः *dringt in* Bhâg. P. 3,14,11. — 2) *sich nahe herbeimachen zu, kommen:* स मा धीरः पाकमत्रा विवेश ṚV. 1,164,21. नमसा 3,31,5. आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्तु 10,98,4. VS. 34,50. ऊर्जा मा विश 3,22. — 3) *sich niederlassen auf, sich setzen:* आसनानि MBh. 5,3. — 4) *in einen Zustand —, in ein Verhältniss eintreten, gerathen in:* निर्ऋतिम् ṚV. 1,164,32. इन्द्रस्य सख्यम् 9,36,2. ऋतम् 4,23,9. त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ 9,20,5. रूपाणि *Farben annehmen* 9,25,4. Kauç. 43. सुखम् MBh. 5,29. मन्युम् 13,475. भयम् R. 7,22,11. शोकम् Kathâs. 9,20. उपशमम् Bhâg. P. 6,15,26. मुच्यताम् 4,22,33. राज्यम् *die Herrschaft antreten* R. Gorr. 2,41,19. — 5) partic. आविष्ट *a)* in act. Bed. α) *hineingegangen, eingedrungen:* कर्णाविष्ट Bhâg. P. 11,30,3. Maitrjup. 6,31. भोगिनः कञ्चुकाविष्टः *steckend in* Spr. 2074. यन्मृगेषु पय आविष्टम् Kauç. 115. अर्धाविष्टया गिरा *mit halb stockender Stimme* Kathâs. 14,46. भगवत्याविष्टात्मा Bhâg. P. 4,31,8 (vgl. γ). आविष्टलिङ्गा जातिः *fest sitzend* so v. a. *constant* Pat. bei Gold. Mân. 155,*b* (nach Kaij. pass.: आविष्टं लिङ्गं यया साविष्टलिङ्गा नियतलिङ्गेत्यर्थः). आविष्टलिङ्गत्व Comm. zu Bhâg. P. 4,7,37. — β) *sitzend auf* (loc.), von Vögeln Bhâg. P. 10,41,22. *in der Luft schwebend* (= आकाशसंबद्ध Comm.): अभ्र R. 7,31,14. — γ) *ganz in Etwas steckend, einer Sache ganz hingegeben* (तत्पर) AK. 3,1,9, v. l. — *b)* mit pass. Bed. α) *bewohnt, erfüllt von:* बकुलाविष्ट *dicht bewohnt* Ait. Br. 3,44. तैर्दुरात्मभिराविष्टमाश्रमम् R. 3,1,27. — β) *getroffen von:* मन्मथशराविष्ट R. 3,52,20. आविष्ट इव तत्रस्थदेवीदाहेषुणाग्निना Kathâs. 16,50. — γ) *ergriffen von —, besessen von —, befallen —, überwältigt —, in der Gewalt stehend von:* कलिना MBh. 3,2270. आविष्टेयं मया बाला Hariv. 8729. सत्त्वेनाविष्टचेतनः R. Gorr. 2,33,11. fg. Mârk. P. 51,100. ohne Ergänzung so v. a. *von einem bösen Geiste besessen* Trik. 3,1,3. H. 491. Hâr. 66. आविष्टा इव युध्यन्ते MBh. 6,1759. Hariv. 4311. R. 5,21,8. Kathâs. 17,130. 70,62. Prab. 75,10. जरया R. 3,1,9. क्षुधा MBh. 3,2420. 12,4274. Pańkat. 69,4. कृष्णाविष्ट Kâtj. Çr. 25,11,31. वेदनया (*Schmerz* und *Wissen*) Spr. 2896. हृच्छयाविष्टचेतना MBh. 3,2106. मन्मथाविष्टहृदय Brahma-P. in LA. (III) 54,10. उपद्रवाविष्ट Suçr. 1,120,2. मन्युना MBh. 5,5996. 13,184. रोषेण महता R. 2,74,1. R. Gorr. 1,68,20. रोषाविष्टचित्त Pańkat. 186,5. कोपेन Mârk. P.

112,15. कोपाविष्ट Pańkat. 40,18. 55,7. Çuk. in LA. (III) 34,14. दुःखेन महता R. 1,57,7. Spr. (II) 1042. शोकदुःखाभ्याम् MBh. 3,2957. शोकाविष्ट Hit. 126,17. चिन्तया R. 1,55,8. भयेन महता MBh. 5,7446. कश्मलाविष्ट 7177. तमसा Hariv. 2518. Bhâg. P. 4,28,25. तपसा Hariv. 2522. अधर्मेण MBh. 13,1304. दोषैः R. Gorr. 2,109,66. विस्मयाविष्ट Bhag. 11, 14. MBh. 3,2831. कृपया 5,7159. करुणाविष्ट Râǵa-Tar. 2,43. दर्पेण महता R. 5,14,33. जवेन महता *von grosser Eile ergriffen* 3, 60, 1. त्वराविष्ट 2,111,44. स्नेहरूपाशैर्बद्धविधैराविष्टविषया जनाः *behaftet mit* MBh. 12,6480. Vgl. भूताविष्ट (auch Kathâs. 73,293). — 6) आविश्य Kathâs. 45,60 fehlerhaft für आवेश्य. — Vgl. आवेश fg. — caus. *eingehen machen, hineinbringen, hineinlassen; Jmd Etwas übergeben, mittheilen* u. s. w. AV. 4,30,2 (vgl. Ṛv. 10,125,3). मेधाम् 6,108,3. 18,4,48. राष्ट्रे श्रियम् Ait. Br. 8,27. स्वस्त्यावेशितं पमः *ist glücklich hineingeschoben* Çâńkh. Çr. 12, 24,6. ऊर्जं पुष्टं वसु AV. 7,79,3. तस्मिन्ना वेशया गिरः Ṛv. 1,176,2. TS. 4,4,12,2. — द्वाःस्थेनावेशितः *eingeführt* Râǵa-Tar. 8,2130. आदित्यश्चन्द्रमा वायुः u. s. w. सर्वे ब्राह्मणमावेश्य सदान्नमुपभुञ्जते *in's Haus hineinlassen* so v. a. *bewirthen* MBh. 13,2115. fg. यो ऽन्यस्मिन् शरीरे योगयुक्तितः। अन्तःकरणमाविश्य (so ist st. आविश्य zu lesen) प्रविशेदिन्द्रियाणि च (die beiden acc. von आवेश्य abhängig) *hineinfahren lassen* Kathâs. 45,60. भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य Bhag. 8,10. उत्सर्पयन्नसून्मूर्ध्नि क्रमेणावेश्य Bhâg. P. 4,23,15. सदसच्चैव मयावेशितमात्मनि MBh. 12,13234. आवेश्य मामात्मनि Bhâg. P. 7,10,11. मय्यावेश्य मनः so v. a. *richten auf* Bhag. 12, 12. Bhâg. P. 1,9,23. 5,16,3. 7,1,29. आत्मन्यात्मानमावेश्य 1,9,43. 3,10, 4. त्वय्यावेशितचित्ता MBh. 13,1504. Ragh. 10,28. Bhâg. P. 5,9,6. 1, 5. अधोक्षज आवेश्यतां मतिः 5,18,9. 20,25. आवेशितधियम् — भगवति 9,16, 11. 10,22,26. भारमावेश्य बन्धुषु *aufladen, übertragen* Hariv. 1621. त्वय्यावेश्य जयाजयौ *anheimstellen* 10301.

— अन्वा 1) *eingehen, fahren in, sich Jmdes bemächtigen:* आत्मसृष्टमिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः Bhâg. P. 10,48,19. क्रोधश्च क्रोधश्च बीभत्सुं तथोनाम्वाविवेश ह MBh. 1,5389. मोहः 7,1405. — 2) *nachgehen, folgen, sich nach Etwas richten:* यथा ह्येवेह प्रजा अन्वाविशन्ति यथानुशासनम् Khând. Up. 8,1,5. तं धर्ममसुराः — नामृष्यन्त — विवर्धमानाः क्रमशस्तत्र ते ऽन्वाविशन्प्रजाः MBh. 12,10800.

— अभ्या *eingehen, eindringen —, fahren in:* अनीकम् MBh. 7,5812. खं वायुमग्निं सलिलं तथोर्वीं समं ततो ऽभ्याविशते शरीरी 12,7412. भयं नाभ्याविशेत्तत्र *Eingang finden* 4,933.

— उपा 1) *eingehen, eintreten in:* पर्णशालाम् R. 3,23,2. आश्रमपदम् Bhâg. P. 9,15,23. स्वधिष्ण्यम् 3,6,19. 26,50. प्रीतिश्च दुर्योधनमुपाविशत् *fahren in, kommen über* MBh. 1,5389. — 2) *gerathen in:* देवा भयमुपाविशन् R. Gorr. 1,65,31. — Ueberall Formen mit dem Augment, aber die Bedeutungen sprechen für उपा, nicht für उप.

— समुपा *sich an Etwas machen, beginnen:* दीक्षां च समुपाविश (समुपाहर ed. Bomb., समुदाहर = कुरु Comm.) R. 1,62,22.

— न्या *eingehen in* Ṛv. 10,56,4.

— निरा *sich von Jmd (abl.) zurückziehen, — fern halten* MBh. 12,7127.

— प्रा *kommen zu:* दातारम् Çâńkh. Çr. 7,18,9. — caus. *einlassen, hineinführen:* वधं प्राप्तौ (so die ed. Bomb.) मन्यते नौ प्रावेश्य शरवेश्मनि MBh. 8,647. त्वया प्रावेशयिष्ये Daçak. 122,8.

— व्या *eindringen —, sich vertheilen in:* पर्वतम् Ṛv. 2,24,2. प्रजासु Çat. Br. 10,5,2,15.

— समा 1) *eintreten, betreten, eingehen —, fahren in, sich Jmdes bemächtigen:* राजवेश्म MBh. 1,7272. 3,2882. वनम् Hariv. 676. Bhâg. P. 5,8,9. यज्ञनम् 4,4,6. लङ्काम् Bhaṭṭ. 8,27. हंसकुलम् *sich begeben unter* Bhâg. P. 5,13,17. जम्बूमार्गम् *sich begeben auf* MBh. 3,4082. योगपथम् Bhâg. P. 4,4,24. प्रपाश्च विपणांश्च यथोद्देशं समाविशेत् (so ed. Bomb. st. समादिशेत् der ed. Calc.) *sich begeben zu* MBh. 12,2648. तान्बाणाः समाविशन् *drangen in* 3,12176. यदाणुमात्रिको भूत्वा बीजं स्थास्नु चरिष्णु च। समाविशति M. 1,56. सर्वलोकम् *durchdringen* Hariv. 9746. शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसमात्रं (acc.) समाविशत् Mârk. P. 45,54. fg. अन्तान् *fahren in* (von einem bösen Geiste) MBh. 3,2253. नलम् 2257. नाहमद्य समावेष्टुं शक्यः काम पुनस्त्वया Spr. 4524. कुब्जाः केन कृता यूयं समाविश्य दुरात्मना R. Gorr. 1,35,23. नन्ददेहात्तरिन्द्रदत्तः समाविशत् Kathâs. 4,101. Mârk. P. 51,85. आत्ममायाम् Bhâg. P. 4,7,51. चतुरपि प्रजानामीषत्तमश्चापि समाविवेश *Finsterniss kam über* Hariv. 16032. ग्लानिश्चैनं समाविशत् MBh. 1,8142. दर्पः 3,8493. कोपः 11092 (S. 572). मोहः R. 4, 60,15. रजस्तमश्चैव MBh. 12,13280. प्रमत्तमर्था हि नरं समन्तात्त्यजन्त्यनर्थाश्च समाविशन्ति 10,561. लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् *einkehren* Spr. 1581. — 2) *sich niederlassen an einem Orte:* तस्मिन्देशे MBh. 13, 1971. *Platz nehmen auf, sich setzen:* शय्यासने (loc.). M. 2,119. R. 2, 87,21. आसनम् Spr. (II) 1478, v. l. — 3) *in einen Zustand eingehen, gerathen in:* कोपम् MBh. 13,2778. अहंकारम् 4752. — 4) *gehen an, obliegen:* तांस्तान्धर्मविधीन् R. 7,10,2. — 5) समाविष्ट *ergriffen —, überwältigt von:* रुजाभ्यास° Suçr. 1,121,10. शाप° R. Gorr. 1,28,12. मोहेन Spr. 4748. जराशोक° M. 6,77. भयशोक° MBh. 3,2273. तीव्रशोक° 2958. R. 2,66,8. मन्यु° R. Gorr. 1,60,7. कोपेन Kâm. Nîtis. 14,18. कोप° R. 1,60,11. क्रोध° 64,11. MBh. 1,5920. तीव्ररोष° 3,2397. रोषामर्ष° R. Gorr. 1,76,21. मदकाम° MBh. 1,7725. मन्मथ° 4,418. कामभार° R. 3,23,18. बाष्प° 2,93,1. कौतूहल° Verz. d. Oxf. H. 13,b,42. fg. सत्त्व° *erfüllt von* Bhag. 18,10. यथाकर्म° *versehen mit* MBh. 14,500. गुण° Vet. in LA. (III) 2,1. सर्वभोग° Pańkar. 1,7,51. योगेन च समाविष्टो भरद्वाजेन so v. a. *unterwiesen in von* MBh. 13,1971. — Vgl. समावेश. — — caus. 1) *hineingehen lassen:* das Glied Kauç. 79. प्रस्थं स्वस्मिन्समावेशयति कटाहः *nimmt in sich auf, enthält* P. 5,1,52, Schol. *an einen Ort bringen, — führen:* स्त्रीबालवृद्धानादाय — इन्द्रप्रस्थं समावेश्य Bhâg. P. 11,31,25. *eingehen lassen in* so v. a. *richten auf:* आत्मानमात्मनि MBh. 12,1590. तस्मिन्समावेशितचित्तवृत्तिः Ragh. 6,70. भगवति मनः Bhâg. P. 5,8,28. 9,19,28. 10,46,32. भगवति समावेशितसकलकारकक्रियाकलापः 5,1,6. — 2) *sich setzen heissen:* गातारौ R. 7,94,9. — 3) *aufbürden, übertragen:* कथं दुरात्मनि समावेशयसे सर्वम् MBh. 2,1544. पौत्रे भारम् 3,9913. R. 1,71,14. तस्मिन्राज्यम् R. Gorr. 1,44,3. Mârk. P. 53,42. यस्मिन्कृत्यम् Spr. 2421.

— उप 1) *Jmd* (acc.) *nahe treten:* उपो नमोभिर्वृषभं विशेम Ṛv. 8,85, 6. — 2) *sich setzen* (auch vom *Niederliegen* der Thiere) Ait. Br. 7,5. 8,10. होतृषदने Çat. Br. 1,5,1,24. 13,4,2,1. Kauç. 79. उपविश्य दक्षिणं जान्वाच्य Kâtj. Çr. 3,7,5. उपविश्योर्ध्वजानुः Çâńkh. Çr. 1,5,8. Âçv. Gṛhj. 2,3,7. 3,2,2. Kaush. Up. 2,1. Bhag. 1,47. MBh. 3,464. 2884. 16810. 4,

97. 12, 13345. 13, 1274. R. 1,2,25. 2,53,28. 104,26. 3,49,43. इदमासनम् अत्रोपविश्यताम् (impers.) Mṛkkh. 73,20. 88,2. Çák. 13,7. 38,4. 110,3. Vikr. 15,5. Spr. 2052. Varâh. Bṛh. S. 48,48. Kathâs. 18,362. 24,145. 45,130. 252. 291. Râǵa-Tar. 2,163. 3,350. 454. Vop. 5,21. Vet. in LA. (III) 5,15. यस्याग्निहोत्री दुह्यमानोपविशेत् Ait. Br. 5,27. Çat. Br. 12, 4,1,9.11. वानरा उपाविशन् R. 4,39,43. गरुत्मन्तः MBh. 4,1052. उपविष्ट (auch st. des verbi finiti) *sich gesetzt habend, sitzend* H. 492. Halâj. 2,231. Kâtj. Çr. 1,2,7. MBh. 1,2219. 3,2427. 2890. 16658. 5,6039. R. 1,2,30. 52,3. 2,54,19. Çák. 37,3. 81,16. Kathâs. 18,215. Vet. in LA. (III) 2,1. 9,1. Pańkat. 34,25. Hit. 93,21. सुखोपविष्ट MBh. 3,2693. Hariv. 4569. R. 1,52,6. 5,11,18. Varâh. Bṛh. S. 85,8. Hit. 8,15. सूपविष्ट Bhâg. P. 8,12,3. अन्तिकोपविष्ट Daçak. 67,10. हर्म्यतलोपविष्ट R. 5,11, 18. जनमध्योपविष्ट Kathâs. 28,8. उपविष्ट von Thieren Jâǵn. 2,160. in der Thierfabel Pańkat. 53,22. fg. 68,21. von Vögeln 110,9 (wo mit der ed. Bomb. °द्वार zu lesen ist). Hit. 13,5. सभायामुपविष्टवान् Vet. in LA. (III) 28,14. — 3) *das Lager aufschlagen, Halt machen:* बलेनोपविवेश ह MBh. 3,659. — 4) *sich zu Jmd* (acc.) *setzen:* तमार्तम् — उपाविशत्सा परिषत्समन्तात् R. Gorr. 2,79,40. *sich zu Jmd setzen* so v. a. *nicht von seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen* (vgl. प्रत्युप): द्रौपदी यत्र भर्तॄनुपाविशत् MBh. 1,573. — 5) *sich zum Untergang neigen* (von der Sonne): तावदर्को ऽप्युपाविशत् Kathâs. 123,171. — 6) *sich mit einem Weibe vermischen:* तयोपविवेश ह Bhâg. P. 3,14,30. — 7) *sich einer Sache hingeben, obliegen;* mit acc.: प्रायम् Bhâg. P. 1,19,5. उपविष्टास्तु ते सर्वे तस्मिन्प्रायं धराधरे R. 4,56,1. 20. प्रायोपविष्ट (s. auch bes.) Bhâg. P. 1,19,18. 8,1,33. अनशनोपविष्ट Pańkat. 224,15. das einfache उपविष्ट in derselben Bed. MBh. 12,4258. 4263. Bhaṭṭ. 7,75. — 8) उपविश्य Hariv. 4568 in beiden Ausgg. fehlerhaft für उपवेश्य. — Vgl. उपवेश fg., उपवेशिन्, प्रायोपविष्ट fgg. — caus. 1) *Jmd* (acc.) *sich setzen lassen, sitzen heissen* Ait. Br. 5,23. प्रचौ देशे Gobh. 4,2,24. Âçv. Gṛhj. 4,7,2. 8,15. तल्पे Kauç. 79. 78. आसनेषु M. 3,208. fg. Jâǵn. 1,226. MBh. 3,1775. Hariv. 4568 (उपवेश्य zu lesen). उरौ 8745. अङ्के R. Gorr. 2,74,5. Suçr. 1,15,7. Vikr. 28,18 (उपवे° zu lesen; s. Anm.). 87,13. fg. Kathâs. 26,212. 28,109. 38,29. 50,106. Mârk. P. 31,37. Prab. 77,15. Dhûrtas. 89,18. 92,5. Vet. in LA. (III) 14,7. fg. अर्धासनोपवेशित Çák. 97 10. Ragh. 17,10. — 2) *niedersetzen in, bringen an einen Ort:* (अनेन) गृहीतो दैवतपतिर्लङ्कायां चोपवेशितः R. 5,78,20. Bhâg. P. 8,9,20. पुरुषपशुं भद्रकाल्याः पुरत उपवेशयामासुः 5,9,16. गुहादिषु 26,34. एवं परस्तात्क्षीरोदात्परित उपवेशितः शाकद्वीपः 20,24. — 3) उपवेश्य Pańkat. 147,6 fehlerhaft für उपविश्य, wie die ed. Bomb. liest.

— अध्युप *sich darauf setzen* Gobh. 4,10,5. v. l. अभ्युप.

— अनूप *sich der Reihe nach setzen* Âçv. Çr. 5,3,24. Lâṭj. 2,4,7. von *der kauernden Stellung* eines Thieres, das gebiert, Çat. Br. 7,4,1,2.

— अभ्युप *sich darauf setzen* Gobh. 4,10,5 (v. l. अध्युप). पर्यङ्कम् MBh. 5,3244. *sich setzen:* नातिदूरे Râǵa-Tar. 3,177. 8,1722.

— उपोप *sich neben einander setzen, zu Jmdes Seite sich setzen* (mit acc. der Person) Çâṅkh. Çr. 5,9,6. 8,5,3. 9,3. Gobh. 3,4,24. Khând. Up. 1,10,8. 4,1,8. 6,1. MBh. 1,2222. 4914. 3,12321. 11777. उपोपविष्ट mit act. Bed. 1,6959. R. 2,1,35. 104,27. fg. mit pass. Bed. MBh. 5, 4644. R. 1,4,26. 5,45,11.

— समुपोप *sich setzen:* °विष्टा शयने Hariv. 7042.

— पर्युप *sich herumsetzen* Âçv. Çr. 6,10,13. Çat. Br. 3,3,1,3. 4,6,8, 10. स्वं चमसम् Lâṭj. 2,11,16. — Vgl. पर्युपवेशन.

— प्रत्युप *sich gegen Jmd* (acc.) *setzen* so v. a. *nicht von seiner Seite weichen um ihn zur Nachgiebigkeit zu zwingen* MBh. 2,1156. 10,589. आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे न प्रसीदति R. 2,111,13 (120,13 Gorr.). किं मां कुर्वाणं प्रत्युपवेक्ष्यसे 16 (°वेक्ष्यसि Gorr.). प्रत्युपविष्टो यश्च प्रत्युपवेशयते तावत्तं कालम् *derjenige, der einem Andern Etwas abtrotzen will und derjenige, welcher die Veranlassung dazu giebt,* Âpast. 1,19, 1. caus. (°वेश्य) auch R. 5,80,7 in der Bed. *Jmd* (acc.) *entgegentreten, Opposition machen.* — Vgl. प्रत्युपवेश.

— व्युप *da und dort sich setzen* Çat. Br. 13,5,2,11.

— समुप 1) *sich zusammen setzen, sich setzen* überh. Çat. Br. 13,4, 3,2. Gobh. 3,9,15. Çâṅkh. Çr. 10,21,14. Khând. Up. 1,8,2. मञ्चेषु MBh. 1,6970. नदीकूले 8479. 2,2289. 3,16884. R. 4,31,29. Kathâs. 50,107. पद्मामनुचिता गन्तुं द्रौपदी समुपाविशत् MBh. 3,10986. 1,6242. आम्रवृक्षस्य च्छायायाम् 2,703. 3,11990. आसने Vikr. 81,14. चर्मणामुपरि Varâh. Bṛh. S. 48,75. Kathâs. 12,141. Prab. 106,10. शयनं समुपाविशत् (पुनरागमत् ed. Bomb.) R. 2,85,15. समुपविष्ट MBh. 1,7945. 13,4288. Z. d. d. m. G. 14,574,11. Pańkat. 29,18. Hit. 78,1, v. l. — 2) *verschlafen* (eine best. Zeit): स भुक्तवान् — तदन्नममृतोपमम् । प्रीतश्च परितुष्टश्च तां रात्रिं समुपाविशत् ॥ R. 7,82,4. — caus. *sich setzen lassen, sitzen heissen* Hit. 60,6. *sich lagern lassen:* तटे सिन्धोर्बलम् Râǵa-Tar. 4,534.

— नि med. P. 1,3,17. Vop. 23,1. 1) *hineingehen, heimgehen* (in's Haus, Lager, Nest); *sich zur Ruhe begeben, sich legen; sich lagern:* न्यविश्रन्न्यतयिष्णवः RV. 8,17,12. 10,127,4. नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तः 5. 37,2. 9. 1,164,22. मयि गोष्ठे निविशध्वम् Âçv. Gṛhj. 2,10,6. Çat. Br. 2,3,1,8. 4,1,5,2. न्यर्ष्ण्या अर्कमभितो विविश्रे *sich lagern um* RV. 8,90, 14. पद्मेन चैव व्यूहेन निविशेत M. 7,188. MBh. 1,5893. 6960 (act.). 3, 16364. 5,7049. Hariv. 8047. वेश्मानि *hineintreten in* MBh. 1,7566. संसारकारागृहे Spr. 1039. द्वारि Bhâg. P. 3,15,29 (act.). रामशालाम् Bhaṭṭ. 4,28. मकरालयम् 8,7. कूर्मस्याङ्गानि कूर्मशरीरे Sarvadarçanas. 150,20. शिलीमुखाः — न्यविशन्त रसातलम् *drangen in* R. 3,31,20. मह्यां निविशते रविः *die Sonne dringt* (mit ihren Strahlen) *in die Erde* MBh. 3, 136. तौ चापि केशौ निविशेतां यदूनां कुले स्त्रियौ देवकीं रोहिणीं च *gingen ein in* 1,7308. Wilson, Sâṁkhjak. S. 62. ज्ञेयपदे *in den Bereich des Erkennbaren treten* Sarvadarçanas. 101,7. 8. देहस्यापचयो मतौ निविशते *dringt in den Geist* so v. a. *kommt zum Bewusstsein* Spr. 1973. — 2) *sich flüchten zu* (acc.) Bhâg. P. 10,2,3 (act.). — 3) *sich setzen:* आसने Çiç. 1,19. Râǵa-Tar. 6,129. (मकरः) तीरोपान्ते न्यविशत् (richtiger निविष्टः ed. Bomb.) Pańkat. 205,8. — 4) *hinuntersinken:* अद्रीणां निविशतां भारैः Bhâg. P. 8,11,34. etwa *versinken* RV. 10,44,6. — 5) *sich niederlassen* so v. a. *ein Haus gründen, heirathen* (vom Manne) MBh. 1,1852. 1860. निवेष्टुकाम 13,1391; vgl. unter निस् 2). — 6) *gegründet werden:* द्वारवत्यां निविशत्याम् MBh. 13,3544. 3453 (निर्विश° ed. Calc. निवि° ed. Bomb.). Hariv. 2043 (निवसत्याम् die neuere Ausg., welches Nilak. durch कृतनिवासायाम् erklärt). — 7) *sich hinwenden zu, sich*

richten auf: पापे निविशते मनः Spr. (II) 894. *obliegen:* स्वधर्मे M. 2,8. अर्थे MBH. 7,3073. तदा वर्णा यथाधर्मं निविशेयुः कथंचन 12,2933. — 8) *zukommen* (Gegens. *abgehen*): (गुणाः) सत्त्वे निविशते ऽपैति Cit. bei VOP. zu 4,16. so v. a. *zur Anwendung kommen* KÂTJ. ÇR. Comm. 56,3 (act.). 57,24. 58,2. — 9) *sich legen* so v. a. *sich beruhigen, aufhören:* नि वो नु मन्युर्विशताम् ṚV. 10,34,14. der Wind 168,3. — 10) partic. निविष्ट *a) zur Ruhe gegangen* VS. 22,7. मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18,3,9. तस्यां सुपर्णावधि यौ निविष्टौ TBR. 3,7,2,14. *gelagert:* बलम् MBH. 3, 661. HARIV. 4974. 9701. R. 2,84,1 (91,1 GORR.). 99,1. 100,1. सागरं प्रति R. GORR. 1,4,93. 4,40,1. 5,74,26. 75,3. MÂLAV. 67,21. KATHÂS. 46,54. 47,9. सुनिविष्टांश्च रक्षिणः *aufgestellt* R. 5,49,14. *an einem Orte verweilend, sich aufhaltend* BHÂG. P. 1,3,44. धर्मपथे R. 3,48,18. 5,11,18. — *b) hineingegangen, eingedrungen* ÂÇV. GṚHJ. 1,14,7. BHÂG. P. 5,11,14. *ruhend in, auf, steckend an, in:* तस्यै मे तन्वो बहुधा निविष्टाः ṚV. 10,51, 4. AV. 9,1,2. दक्षिणापाङ्गनिविष्टमुष्टि KUMÂRAS. 3,70. मूल° VÂGBH. 26,9. °कर्णिक SUÇR. 2,215,7. भाण्डागारायुधागारे निविष्टमभवन्मधु HARIV. 12806. वनानां भूमिर्निविष्टतृणातपा R. 3,22,21. विलोचनमन्तर्निविष्टामलपिङ्गतारम् KUMÂRAS. 7,33. कण्ठनिविष्टकौस्तुभ BHÂG. P. 8,18,3. अन्तर्निविष्टज्ञानदीधिति MÂRK. P. 18,29. यस्मिन्नेतानि (Vorzüge) दृश्यन्ते न चाकार्याणि भारत । स्वभावतो निविष्टानि तत्पात्रं मानमर्हति ॥ MBH. 13, 2192. *gerichtet auf:* त्वदभिमुखनिविष्टोत्तानचञ्चूपुट Spr. 1428. सूर्यनिविष्टदृष्टि RAGH. 14,66. श्रुतिस्मृतिन्यायनिविष्टचित्त HARIV. 14657. साम्ये निविष्टचेतसाम् KUMÂRAS. 5,31. सीतेयमिति निविष्टबुद्धिः R. 5,19,34. — *c) gelegen:* पुरी यमुनातीरे HARIV. 3061. जनपदः सरयूतीरे R. 1,5,5. 3, 53,35. 6,15,22. — *d) sitzend:* उदधेः कूले RAGH. 12,68 (निर्विष्ट St.). ब्रह्मासन° RÂGA-TAR. 1,149. आस्थानभूमौ VET. in LA. (III) 23,11. (मकरः) तीरोपान्ते निविष्टः *setzte sich nieder* PAÑKAT. ed. Bomb. IV,1,9. — *e) der sich häuslich niedergelassen hat, verheirathet:* अ° MBH. 1, 7241. अनिर्विष्ट u. परिविन्न. — *f) gegründet, angelegt:* दिवोदासेन निविष्टां नगरीम् HARIV. 1556. 9597. यस्तु पूर्वनिविष्टस्य तडागस्योदकं हरेत् M. 9,281. — *g) bezogen, eingenommen:* सम्यङ्निविष्टदेशः M. 9,252. कृषिकरैः सुनिविष्टो जनपदः R. GORR. 2,109,21. अन्तर्निविष्टपदं शापम् RAGH. 9,82. — *h) begonnen* AIT. BR. 7,10. — *i) obliegend, bedacht auf:* स्वे स्वे धर्मे M. 7,35. पाण्डवार्थे MBH. 1,171. सर्वभूतप्रशमे 5,1090. शमे 13,3401. सत्ये HARIV. 9635. मन्त्रहिते R. 1,7,18. गुणे 20,24 (गुणैः *versehen mit* GORR. 21,23). — Statt निविष्टं HARIV. 5171 liest die neuere Ausg. विचित्रं. Vgl. अनिविशमान, निर्विष्टि, निवेश, निवेशन, निवेशिन्, निवेष्टव्य. — caus. 1) *zur Ruhe bringen:* निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ṚV. 1,35,2. TAITT. BR. 3,1,1,10. ṚV. 4,53,3. 7,45,1. — 2) *Jmd in ein Haus führen, einquartiren:* भार्यां स्वभवने MBH. 1,4424 (med.). HARIV. 8983. R. 2,42, 28. लोहमये गेहे KATHÂS. 56,148. मां निवेशयेह MBH. 3,15607. — 3) *ein Haus beziehen lassen* so v. a. *verheirathen* (einen Mann) ÇÂK. 95. — 4) *an einem Orte niedersetzen, hinstellen, an einen Ort bringen, — versetzen:* यस्माच्चैवोद्धृतः स्थानात्तत्रैवायं निवेश्यताम् । सुग्रीवः R. 6,84, 8. नागान्पुर्यां तस्याम् HARIV. 1868. वेश्या निवेशिता द्वारवत्याम् 8308. तत्रत्यं स न्यवेशयत् । चातुर्वर्ण्यं निजे देशे धर्म्यांश्च व्यवहारिणः ॥ RÂGA-TAR. 1,117. 3,353. गन्धर्वनगरं निवेशय स्वे पुरे R. 7,100,13. मध्ये निजपरबलयो रथं निवेश्य BHÂG. P. 1,9,35. काव्ये, नाट्ये *in ein Gedicht, in ein Drama* (Etwas) *versetzen* so v. a. *es dort zur Erscheinung bringen* SÂH. D. 32,1. — 5) *aufstellen, errichten* (ein Gebäude, ein Heiligthum u. s. w.): बन्धनानि सर्वाणि मार्गे M. 9,288. स्कन्धावारनिवेशे तेन चेह निवेशिते R. 3,2,3. पर्वतम् HARIV. 12407. 12410. तत्र वेदीं च भूमिं च देवतायतनानि च । निवेश्य MBH. 13,452. विहारे बुद्धबिम्बम् RÂGA-TAR. 3,464. शिवलिङ्गानि 2,131. 4,276. VARÂH. BṚH. S. 56,14. अथेयं (चर्मरत्नभस्त्रिका) देवतेव शुचौ देशे निवेश्यार्च्यमाना प्रातः प्रातः सुवर्णपूर्णेव दृश्यते DAÇAK. 76,10. fgg. *anlegen, gründen* (eine Stadt u. s. w.) HARIV. 1846. fg. 5169. 5211. 6392. R. 1,5,9. R. GORR. 2,73,16. 7,11,48. fg. 70, 17. 79,17. MÂRK. P. 66,10. न्यवेशयन्नामभिः स्वैस्ते देशांश्च पुराणि च MBH. 1,2365. वीरेण हृदाः पञ्च निवेशिताः 3,5097. आश्रमम् R. 3,16,35. *bevölkern, bewohnt machen:* पुरीम् HARIV. 1542. 1546. 1591. R. 7,72,10. — 6) *aufstellen* (ein Heer): बलं जनस्थाने R. 3,60,31. लुब्धान्मण्डलेन KÂM. NÎTIS. 16,7. *sich lagern lassen:* देशे समे सेनाम् MBH. 5,5170. R. 2,83,23 (90,36 GORR.). 25 (med. GORR. 38). 26 (39 GORR.). निवेशयित्वा 89,23 (निवेश्य 98,24 GORR.). 99,16. 5,74,20. 23. KÂM. NÎTIS. 16,1. 40. RAGH. 5,42. 16,37. ÇÂK. 18,23. PRAB. 82,2. — 7) *sitzen machen, Jmd setzen auf:* तामङ्के R. 1,18,21. भूमौ 2,76,4. 4,7,14. KUMÂRAS. 7,13. किसलयशयननिवेशिता GÎT. 2,13. विष्टरे RÂGA-TAR. 4,555. — 8) *stecken —, hineinsetzen in:* शरीरं तैलद्रोण्याम् R. GORR. 2,68,47. कन्यकां मञ्जूषायाम् KATHÂS. 15,38. वासकान्तरे भुजम् 18,281. कलापचक्रेषु निवेशिताननम् (भोगिनम्) ṚT. 1,16. विमानं सद्मनिवेशितम् R. 3,61,14. क्षत्रवीर्यं चरौ तस्याः MBH. 13,237. निवेशितान्तःकुसुमैः शिरोरुहैः ṚT. 5,8. अम्बुमध्याच्च वस्त्रं चौरनिवेशितम् । प्राप्तवान् KATHÂS. 10,107. 61,25. (हृदि) कुकाव्यहव्याकृतयो निवेशिताः Spr. 2352. स्वे ख इदं निवेश्य BHÂG. P. 3,5,6. — 9) *schleudern —, abschiessen auf:* भल्लान् — तव पुत्रे MBH. 8,3146 (med.). शरान्मूर्ध्नि R. 5,42,7. — 10) *aufstecken, aufsetzen, auflegen, anlegen:* तं शूले M. 9,276. ध्वजाग्रे तार्क्ष्यस्तेन निवेशितः RÂGA-TAR. 4,199. R. 4, 43,33. स्तम्भस्य पृष्ठे ताम् KATHÂS. 12,175. स्थलनिवेशिताटनी धनुषी RAGH. 11,14. वामे स्कन्धे भर्तुर्बाहुम् MBH. 3,16852. वदनं हस्ते HARIV. 7066. अङ्के चरणौ ÇÂK. 69, v. l. वामं भुजमासनार्धे RAGH. 6,16. करं स्तनाग्रे Spr. (II) 1538. कण्ठनिवेशितहस्तयुगला PAÑKAT. 226,19. अङ्कुशं द्विरदस्य मूर्ध्नि, प्रतापं महेन्द्रस्य मूर्ध्नि RAGH. 4,39. 80. अधरोष्ठे जलजम् *eine Muschel an die Lippen setzen* 7,60. नवचूतबाणे । निवेशयामास मधुर्द्विरेफान्नामाक्षराणीव मनोभवस्य KUMÂRAS. 3,27. धनुषि चूतशरम् ÇÂK. 135. अस्त्रम् (sc. धनुषि) MÂRK. P. 63,34. मूर्ध्नि निवेशिताः सर्वा एवाज्ञाः (als Zeichen grosser Ehrerbietung) PRAB. 97,12. रत्नोत्तंसेषु राज्ञामाज्ञां न्यवेशयत् RÂGA-TAR. 5,138. Schmucksachen, Kleidungsstücke: रत्नानि तस्या गात्रे MBH. 1,7692. स्तनेषु तन्वंशुकम् ṚT. 1,7. कटीतटनिवेशितं रशनाकलापम् MṚKKH. 11,15. कर्णेषु नीलोत्पलानि ṚT. 3,19 (med.). श्रुतिमण्डले (loc.) कुण्डले (acc.) GÎT. 12,20. PAÑKAT. ed. orn. 49,24. मुद्रामङ्गुलौ ÇÂK. 84,14. मालां तस्मिन् KATHÂS. 90,56. RAGH. 8,34. ईशस्य पदयुगे प्रसूनाञ्जलिम् KUSUM. 1,9. पाशं शृङ्गे *befestigen* MBH. 3,12786. *auftragen* Zeichen u. s. w.: तिलकं गण्डपार्श्वे R. 5,37,5. सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता MṚKKH. 48,12. चरणान्तनिवेशितां रागलेखाम् MÂLAV. 46. शासनं पटे सूक्ष्माक्षरनिवेशितम् MÂRK. P. 36,8. नाम स्वहस्तेन *eigenhändig seinen Namen darunterschreiben* JÂGÑ. 2,86. चित्रे so v. a. *malen* ÇÂK. 42. — 11) *bringen —, versetzen auf:* धर्म्ये पथि M. 8,228. मृत्युपथे

राज्यनाम्नि Râǵa-Tar. 6,313. दुरत्यये ऽध्वनि Bhâg. P. 5,13,1. 19. *ein setzen in* (ein Amt, eine Stellung): राज्ये MBh. 2,1107. 9,2300. Kathâs. 10,217. 41,58. Bhâg. P. 1,10,2 (निवेशयित्वा). पारमेश्वरे पदे Prab. 16,5. 8. 117,18. कुशावत्यां कुशम् *als Fürsten einsetzen in* Ragh. 15,97. Mârk. P. 56,11. तेषु (वर्षेषु) सप्त रिक्थादान्वर्षपान्निवेश्य Bhâg. P. 5,20,20. करे so v. a. *tributpflichtig machen* MBh. 2,1039. करनिवेशित Kâm. Nitis. 17,32; vgl. येरियं पृथिवी करवती प्रतिवर्षं निवेशिता Mârk. P. 53,11. समये so v. a. *mit Jmd einen Vertrag schliessen* MBh. 1,6297. — 12) *Jmd Etwas übertragen:* अधिकारं सचिवेषु Ragh. 19,4. धूर्गतः सचिवेषु निवेशिता Ragh. ed. Calc. 1,34. यौगंधरायणनिवेशितराज्यभार Kathâs. 20,229. लक्ष्मीश्चन्द्रगुप्ते निवेशिता *die königliche Würde* 5,123. भरते सा (प्रीतिः) निवेश्यताम् R. Gorr. 2,43,6. नाम *Jmd einen Namen geben* Kathâs. 23,87. — 13) चित्ते, हृदये *Etwas dem Herzen einprägen, dem Geiste vorführen* Çâk. 42, v. l. Bhâg. P. 9,2,15. Spr. 4272. Varâh. Bṛh. S. 85,8. — 14) *richten* (den Blick, die Gedanken, den Geist u. s. w.) *auf Etwas* (loc.): दृष्टिं पाञ्चाल्याम् MBh. 1,7141. Spr. 1004. 2257 (II). मयि बुद्धिम् Bhag. 12,8. मनो ऽधर्मे Spr. 4364. M. 6,35. fg. R. 6,100,23. Bhâg. P. 2,8,3. 7,1,31. Mârk. P. 41,20. चेतसा निवेशितस्यात्मनि Maitrjup. 6,34. आत्मानं कल्याणे MBh. 5,1382. Bhâg. P. 1,15,33. ध्येये ध्यानम् Spr. 3313. — Vgl. निवेशन, निवेश्य. — desid. निविविक्षते P. 1,3,62, Schol.

— अधिनि caus. 1) *setzen über:* चतसृष्वाशास्वात्मयोनिना — अधिनिवेशिता ये द्विरदपतयः Bhâg. P. 5,20,39. — 2) *Jmd veranlassen einer Sache obzuliegen, — sich zu widmen:* °वेशितकर्माधिकार Bhâg. P. 5,1,23.

— अभिनि mit acc. P. 1,4,47. Vop. 5,2. 1) *eintreten in:* ग्राममभिनिविशते P. 1,4,47, Schol. (नदी) नदनदीपतिमभिनिविशति *ergiesst sich in* Bhâg. P. 5,17,5. अभिन्यविक्षतयास्त्वं मे यथैवाव्याहता मनः *eindringen in* so v. a. *sich bemeistern* Bhaṭṭ. 8,80. — 2) *sich in Etwas* (acc.) *versenken, sich ganz hingeben:* धर्मानभिनिविश्य Vop. 5,2. (गणिका) यामेवं भवन्मनो ऽभिनिविशते Daçak. 78,8. 9. ohne Ergänzung *auf seinem Kopfe bestehen:* ते चेदभिनिवेक्ष्यन्ति (°न्ते ed. Bomb.) नाभ्युपैष्यन्ति मे वचः MBh. 5,2798. — 3) partic. °विष्ट *a) sich festgesetzt habend an einem Orte* Suçr. 1,82,12. *hartnäckig:* परस्परेणाभिनिविष्टरोषयोः MBh. 8,4210. — *b) fest auf einen Punkt gerichtet, ganz mit Etwas beschäftigt, nur Eines vor Augen habend:* अर्थसूक्ष्माभिनिविष्टदृष्टि Bhâg. P. 3,8,13. अभिनिविष्टया दृशा मालतीमुखावलोकनविह्वलया Mâlatîm. 19,2. अध्यन्तरं स्वभिनिविष्टधियः Varâh. Bṛh. S. 19,11. कार्याभियोगे ऽभिनिविष्टबुद्धिः R. 5,51,26. वित्तेषु नित्याभिनिविष्टचेताः Bhâg. P. 7,6,15. कृष्णपादाभिनिविष्टचेतस् 4,12,22. संरम्भमार्गाभिनिविष्टचित्त (der Comm. fasst संरम्भमार्ग in der Bed. eines abl.) 3,2,24. इष्टार्थाभिनिविष्टं मनः Mallin. zu Kumâras. 5,5. अध्ययनश्रवणाभिनिविष्ट Tattvas. 37. माधवापकारं प्रत्यभिनिविष्टा भवामि Mâlatîm. 88,2. अभिनिविष्टा ऽसि कष्टे so v. a. *versessen auf* Kathâs. 79,4. प्रुनोरेकार्थाभिनिविष्टयोः Spr. 2414. — *c) durchdrungen von, in Beschlag genommen von:* मनोरथेनाभिनिविष्टचेतसः Bhâg. P. 10,1,41. गुरुभिर्लोकपालानुभावैः *reichlich versehen mit* Ragh. 2,75. — Vgl. अभिनिविष्ट fgg. — caus. 1) *hineingehen lassen, führen in:* कालसूत्रसंज्ञके नरके Bhâg. P. 5,26,14. यदभिनिवेशितो ऽक्षमिन्द्रियैः — °विषयान्धकूपे 1,38. रूपाणि चक्षुषा ज्योतिष्यभिनिवेशयेत् *eingehen lassen in* 7,12,28. — 2) *sich gegenüber sitzen heissen:* मुनिमासने — अभिन्यवीविशत् Çiç. 1,15. — 3) मनः, आत्मानम् *den Geist —, die Gedanken ganz auf Etwas* (loc.) *richten* Bhâg. P. 5,8,26. तदभिनिवेशितमनस् 4,29,54. अर्थकामाभिनिवेशितात्मन् 1,18,45. — 4) *machen, dass Jmd einer Sache sein ganzes Herz zuwendet, Jmdes ganzes Verlangen auf Etwas richten:* (भ्रातरम्) गोषु गोवृषसंकाशं मत्स्येनाभिनिवेशितम् MBh. 4,591. प्रतिबन्धवत्सु विषयेषु Mâlav. 28,7.

— प्रत्यभिनि scheinbar Mâlatîm. 88,2, da hier प्रति mit dem vorangehenden acc. zu verbinden ist.

— उपनि, partic. °विष्ट 1) *belagernd, einschliessend:* mit acc.: लङ्कामुपनिविष्टे च रामे R. 6,16,26. — 2) *erfüllend,* mit acc.: इत्येतानि — सप्त वर्षाणि भागशः। भूतान्युपनिविष्टानि गतिमन्ति ध्रुवाणि च ॥ MBh. 6, 248. fg. — 3) *erfüllt von:* भारतादीनि वर्षाणि नदीभिः पर्वतैस्तथा। भूतैश्चोपनिविष्टानि गतिमद्भिर्ध्रुवैस्तथा ॥ Verz. d. Oxf. H. 48,*a*, 42. fg. — Vgl. उपनिवेशिन्. — caus. 1) *sich an einem Orte lagern lassen:* सेनाम् R. 7,25,52. — 2) *anlegen, gründen* (eine Stadt) Ragh. 15,29.

— परिणि *sich rings niederlassen* Çat. Br. 4,3,4,11. 14,1,1,7. 4,1,19.

— प्रणि P. 8,4,18, Schol.

— प्रतिनि, partic. °विष्ट *ganz mit Etwas beschäftigt, nur für Eines Sinn habend:* सीतायाम् R. 6,11,35. ohne Ergänzung so v. a. *auf seinem Kopfe bestehend, verstockt:* दैव MBh. 12,3902. मूर्ख Spr. 1876. 2661.

— विनि, partic. °विष्ट 1) *wohnend in:* गिरिशिखरकन्दरीविनिविष्टा म्लेच्छजातयः Varâh. Bṛh. S. 16,35. — 2) *befindlich in, vorkommend:* नाटकादिषु Sâh. D. 199,18. — 3) *aufgestellt:* मार्गे च दुर्गे च विनिविष्टसैन्यः Kâm. Nitis. 15,44. — 4) *aufgetragen:* गिरिधातु (ललाटे) R. 2, 96,19 (105,18 Gorr.). — 5) *angelegt:* तडागानि MBh. 2,211. — Vgl. विनिवेशिन्. — caus. 1) *Etwas an einem Orte niedersetzen, hinstellen:* कुम्भांश्च विनिवेश्यत्तामुदपानेषु Hariv. 3865. Ragh. 5,63. Kumâras. 1,50. *irgendwohin verlegen* Râǵa-Tar. 5,39. — 2) *aufstellen, errichten* (ein Bildniss u. s. w.): स्वविहारे भगवान्विनिवेशितः Râǵa-Tar. 4,262. *anlegen* (eine Stadt) Kumâras. 6,37. आरामान् Varâh. Bṛh. S. 55,1. — 3) *aufstellen* (Truppen) MBh. 7,1494. Kâm. Nitis. 16,6. — 4) *sitzen machen, setzen auf:* नृपासने *auf den Thron* Râǵa-Tar. 5,445. 6,115. — 5) *stecken in:* अक्षिमुखे करम् Spr. 2741. तनुलताविनिवेशितविग्रह Ragh. 9,52. — 6) *aufsetzen, auflegen, anlegen:* स्वक ऊरौ निकृत्तौ दानवेश्वरौ Hariv. 2723. मद्उरसि कुचकलशं विनिवेशय Gît. 12,5. शाटकम् — नितम्बे Spr. 2581. बन्धान्, संधीन् Suçr. 1,68,11. — 7) *anbringen, anwenden:* पाण्डित्यमस्थाने Spr. 1730. — 8) *bringen —, versetzen auf:* पथि विनिवेशितात्मनाम् Kâm. Nitis. 3,38. *Jmd anstellen:* सारथ्ये MBh. 5,5253. करे so v. a. *tributpflichtig machen* 2,1035. — 9) हृदये *in's Herz prägen:* हृदये कुशलैर्विनिवेशिता। शिल्पा Spr. 2605. — 10) *richten* (Blick, Gedanken) *auf Etwas:* गोविन्दे विनिवेशितां दृष्टिम् MBh. 14,1538. मतिं पुर्यर्थे Hariv. 6415.

— संनि 1) *verkehren, Umgang haben mit:* यादृशैः संनिविशते Spr. 4874, v. l. — 2) partic. °विष्ट *a) gelagert, Halt gemacht habend* MBh. 5,5188. R. 5,74,25. 6,7,20. Kathâs. 59,75. — *b) ruhend —, steckend —, enthalten in:* अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये संनिविष्टः Kathop. 6,17. Çvetâçv. Up. 3,13. 4,17. Bhag. 15,15. Maitrjup. 6,7. एको देवो बहुधा संनिविष्टः Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 160. Suçr.

1,97,13. 342,8. 347,15. Ragh. 6,47. पङ्क्त्यादिसूत्र° P. 5,3,56, Schol. अ° R. 2,21,57. — c) *sitzend* MBh. 2,2000. Hariv. 891. संनिविष्टोद्रम als Umschreibung von उत्थान AK. 3,4,18,120. — d) *steckend —, gehängt an, angebracht:* °कर्णिक Suçr. 2,196,17.297,4. — e) *sich befindend auf:* सत्पथे MBh. 3,13788. सनातने वर्त्मनि R. 5,11,22. — f) *in Jmdes Hand seiend* so v. a. *von Jmd abhängig:* बलावमर्दस्त्वयि संनिविष्टः R. 5,43, 11. — Vgl. संनिवेश. — caus. 1) *einführen* (in ein Haus u. s. w.), *einquartiren:* कृष्णं स्वपुरं संन्यवेशयत् (संप्रवेशयत् die neuere Ausg.) Hariv. 5845. तं पर्णशालायां वासार्थं संन्यवेशयत् R. 3,6,15. Kathâs. 24,159. — 2) *niedersetzen, hinstellen:* तत्र तं गिरिम् R. 6,84,30. Hariv. 12404. 12406. त्वमिह — देवराजेन मैनाक परिघः संनिवेशितः R. 5,7,6. हैमवते पादे गर्भो ऽयं संनिवेश्यताम् *niederlegen* 1,38,17. — 3) *aufstellen:* Truppen MBh. 6,2407. *sich lagern lassen:* बलं द्वारकायाम् 3,665. R. 2,85, 15 (92,24 Gorr.). Kathâs. 46,48. 103,103. — 4) *einbringen, hineinstecken, thun in:* अप्सु शरीरम् M. 11,202 (संनिवेश्य bei Lois. zu lesen). MBh. 13,237. Suçr. 2,55,16. तेषां त्ववयवान् — संनिवेश्यात्ममात्रासु M. 1,16. खं खेषु 12,120. हृदीन्द्रियाणि Çvetâçv. Up. 2,8. Bhâg. P. 6,4,27. शिरश्चैव शरीरे संनिवेशितम् *hineingeschoben, hineingedrückt* R. 3,75,27. — 5) *schleudern, abschiessen auf* (loc.) R. 5,41,23. — 6) *anheften, anlegen:* ललाटे मणिम् Vikr. 73,8. — 7) *anlegen, gründen:* eine Stadt Hariv. 1544. — 8) *Jmd einsetzen in:* स्वराज्ये MBh. 5,4978. R. 7,54, 13. 100,18. तत्पदे चिरकाङ्क्षिते धातोः स्थान इवादिशं सुग्रीवं संन्यवेशयत् Ragh. 12,58. — 9) *Jmd Etwas aufladen, übertragen:* तत्संनिवेशितधुरेण भर्त्रा Çâk. 95, v. l. द्विधा कृत्वा तयोर्वर्षं पुष्करः संन्यवेशयत् Mârk. P. 53, 20. — 10) *richten auf* (loc.): मनः Bhâg. P. 9,9,15.

— अभिसंनि, partic. °विष्ट *in Jmd vereinigt* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 103.

— निस् 1) *sich hineinbegeben in* (acc. und loc.): भर्तुरङ्कं (अङ्के ed. Calc.) निर्विशतीं भयात् Ragh. 12,38. निष्क्रामतो निर्विशतो Bhâg. P. 4,4,1. तत्र 5,17,15. अन्नम् 10,22,28. गर्तम् 23,22. गृहेषु (so v. a. *Hausvater werden*) 29,34. 5,1,18. निर्विशन्ति घना यस्य ककुदि 10,36,4. यां (पुरीं) निर्विश्य समावसत् 3,22,32. पुलिनम् 10,32,11. 52,37. med. 3,18,1. 8, 19,10. 10,89,51. निर्विष्ट *hineingegangen, steckend in* 1,2,33. 3,16,34. 4,24,56. *sitzend* Ragh. 12,68 (निविष्ट ed. Calc.). — 2) *ein Haus beziehen, heirathen* (vom Manne): निर्विषन् (lies निर्विशन्) *heirathend* und अनिर्विष्ट *nicht verheirathet* s. u. परिविन्न. — 3) *abtragen, bezahlen:* निर्वेष्टुं भर्तृपिण्डम् MBh. 8,637. अस्ति नूनं कर्म कृतं पुरस्तादनिर्विष्टं पापकं धार्तराष्ट्रैः 5,1816. — 4) *geniessen, Genuss —, Freude an Etwas haben;* act. mit acc.: प्रदोषान् Ragh. 6,34. मधुम् 9,35. इन्द्रियसुखानि 19, 47. क्रीडारसम् Kumâras. 1,29. नगेन्द्रम् Megh. 63. आत्माभिलाषम् 109. शरदम् Râga-Tar. 2,140. नारीम् Kâvjâd. 3,109. निर्विश्य Ragh. 4,51. 18,2. Pankar. 4,1,45. श्रियो निर्वेष्टुकामा Hariv. 7863. निर्विश्यतां यौवनश्रीः Ragh. 6,50. तत्र निरवेशि निद्रासुखम् Daçak. 24,16. fg. निर्विष्ट *genossen* Ragh. 6,38. 12,1. 13,60. 14,80. Spr. (II) 1087. — 5) निर्विशन्त्यो MBh. 13,3453 fehlerhaft für निवि°, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निर्वेश fg., निर्वेष्टव्य (statt der zweiten Bed. ist zu setzen *woran man Genuss haben kann*) und निवेश्य 3), wo die ed. Bomb., wie wir vermuthet hatten, निर्विश्य liest.

— परि *umlagern:* रक्षांसि समन्तं देवान्पर्यविशन् TS. 2,4,1,2. TBr. 2, 2,10,5. तं पर्यविशन्य एवं वेद विन्दते परिवेष्टारम् (zu विष्) TS. 6,3,1, 2. 3. परिविष्टं दासुषं विश्वतः सीम् ṚV. 1,116,20. *belagern:* उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह। निपीड्य परिवेत्स्यामि सबलो यत्र रावणः R. 6,13,31. — Vgl. परिवेशस्, अपरिविष्ट und 1. विष् mit परि, welches häufig mit श geschrieben wird. Hierher gehört wohl परिवेषण 2), welches auch in der ed. Bomb. mit श geschrieben wird.

— प्र 1) *eingehen, eintreten; eindringen, sich verstecken; gerathen in; sich begeben zu, — unter:* mit acc. und loc.: गृहम् ṚV. 10,16,10. R. 2,42,22. Kathâs. 12,101. 18,255. 64,54. Pankat. 96,6. भवनम् M. 11, 187. वेश्म MBh. 3,2144. 2279. R. 2,26,5. प्रविशेन्नरेन्द्रभवने कपोतकः Varâh. Bṛh. S. 46,68. वेश्मनि Râga-Tar. 5,393. अभ्रकुट्याम् Pankat. 253, 21. गेहम् Spr. 990. मन्दिरम् Kathâs. 18,399. 42,156. मठम् 18,106. 318. पर्णशालाम् Ragh. 12,40. अन्तःपुरम् M. 7,224. बिलम् MBh. 1,8394. छिद्रम् Spr. 1884. पुरम्, नगरम् MBh. 1,8141. 3,2634. 2853. 3060. 5,7339. 13,7697 (med.). Hariv. 7459. R. 1,18,18. 2,51,19 (med.). 86,19 (med.). Ragh. 2,74. Kathâs. 18,118. Râga-Tar. 5,451. नगरे MBh. 5,7099. R. 2,59,13. आश्रमपदम् 1,2,25. 2,64,7. सभाम् M. 7,145. 8,1.10. Vet. in LA. (III) 2,4. रङ्गम् MBh. 3,2198. वनम् R. 2,35,32. 52,91. 74,27. 107, 16. 17 (med.). Çâk. 32. श्मशानम् Kathâs. 18,146. अपः ṚV. 10,51,1. R. 5,15,57 (med.). समुद्रम् MBh. 1,3340 (med.). जलाशयम् Hit. 43,20. सरसि स्नातुं प्रविशति 12,2. रसातलं प्रविशते (विशेद्देवी die neuere Ausg.) पङ्के गौरिव दुर्बला Hariv. 12343. हुताशनम्, अग्निम् u. s. w. so v. a. *den Scheiterhaufen besteigen* MBh. 1,6908. 3,2863. 5,7388. R. 2,21,17. 47, 8. 66,12. 3,51,29. 41. 6,101,29. Varâh. Bṛh. S. 74,16. Râga-Tar. 4, 368. Mârk. P. 136,6 (med.). वह्नौ Pankat. 43,23. मध्यमग्नेः MBh. 3,2610. चितायाम् Vet. in LA. (III) 14,1. महाचमूम् MBh. 5,5367. चक्रव्यूहम् Kathâs. 48,6. सार्थम् Bhâg. P. 5,13,19. विशो विशः प्रविविशिवांसम् AV. 4,23,1. प्रविशद्भिः सैन्यादीन् — धाङ्क्षैः Varâh. Bṛh. S. 95,46. विहगान् — वटवृत्ते प्रविशतः Kathâs. 26,26. अत्र, तत्र MBh. 1,8382. Spr. (II) 2136. Kathâs. 18,76. 172. 325. Pankat. 97,16. नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः Spr. (II) 1249. उत्तरापथम् Râga-Tar. 5,214. उदीचीमाशाम् Bhâg. P. 1,15,44. पादमूलं मे 3,23,43. विद्वत्ता प्रतिदिनमधो ऽधः प्रविशति Spr. 1802. बाह्योरन्तरम् MBh. 3,2861. fg. मध्ये तयोः Pankat. 35, 6. अन्तरे Kathâs. 18,212. देवस्मितान्तिकम् 13,127. स्वैरं सुप्तस्य महत्सेवान्तिकं किं प्रविश्यते (so ist zu lesen) 45,247. अलंकारवतीपार्श्वम् 52, 31. महीं शराग्र्याः MBh. 3,15681. सायकाः शरीराणि R. Gorr. 2,91,15. Ragh. 3,54. भूछायां स्वग्रहणे भास्करमर्कग्रहणे प्रविशतीन्दुः Varâh. Bṛh. S. 5,8. समुद्रमापः, कामा यम् Spr. (II) 971. रसः पृथिवीम् TS. 3,5,7,1. तमः पाप्मानम् 2,1,10,3. 4,12,6. पुरुषो ऽश्वं प्राविशत् Ait. Br. 2,8. असुरा यज्ञं प्राविशन् 6,4. पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा 7,13. Çat. Br. 1, 1,4,16. 2,3,4,2. अथैनद्वाक्प्रविवेश Kaush. Up. 2,14. Bhâg. P. 5,17,15. घण्टामाबध्य कर्णयोः। मम न प्रविशेन्नाम विष्णोरिति विचिन्तयन् *der Name* Vishṇu's *komme mir nicht zu Ohren* Hariv. 14634. महामतिं प्रविशन्ति सदा लक्ष्म्यः सरित्पतिमिवापगाः Spr. 2882. प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः M. 9,306. आत्मनि प्रविशत्कर्म so v. a. *sich bemächtigend* Sarvadarçanas. 38,21. प्रविश्य सानुरागस्य चित्तम् Kâm. Nîtis. 5,24. प्रविशन्निव चेतांसि 17,15. प्रविशेन्मतमेषां पृथक्पृथक् *dringen in* 11,69. बहुवितर्कमभ्यन्तरम् *sich begeben in* Kathâs. 28,190. चेतः (voc.) प्रविश

निर्विकल्पे समाधौ Spr. (II) 77. प्रमाणकोटिम् *gelangen zu, erreichen* Sarvadarçanas. 128, 8. 9. प्रविवेशेव स्वानि गात्राणि लज्जया *schrumpfte zusammen* R. 2, 98, 19. प्रविशन्तीमिवाङ्गानि Kathâs. 18, 175. Ohne Ergänzung *eintreten* (in ein Haus u. s. w.) Âçv. Gṛhj. 4, 4, 11. MBh. 3, 2145. 3032. Hariv. 8341. निर्गच्छेत्प्रविशेच्चापि Kâm. Nîtis. 7, 47. 14, 40. Çâk. 7, 11. Kathâs. 18, 211. Râǵa-Tar. 5, 358. Im Drama stehender Ausdruck für *das Auftreten auf der Bühne.* — 2) *sich geschlechtlich vermischen* (von beiden Geschlechtern): ऋतुकाले मनस्विनी । पत्नी द्रुपदराजस्य द्रुपदं प्रविवेश ह MBh. 5, 7397. यो वा जननीं प्रविशेन्नरः im Traume Suçr. 1, 110, 9. — 3) *an Etwas gehen, obliegen, sich einer Sache hingeben:* दीक्षां प्रविश R. 1, 31, 28. fg. (32, 22 Gorr.). MBh. 14, 2850. वयं दीक्षां प्रवेक्ष्यामः संवत्सरगणान्बहून् Hariv. 300. — 4) *in Jmd hineingehen* so v. a. *in ihm aufgehen, gegen ihn verschwinden, vor ihm ganz in den Schatten treten:* तं (अर्जुनं) प्रवेक्ष्यन्ति वै सर्वे राजानः शस्त्रयोधिनः Hariv. 4039. — 5) partic. प्रविष्ट *a*) in act. Bed. α) *eingegangen, eingetreten, sich begeben habend unter, eingedrungen:* निवेशनम्, गृहम् MBh. 3, 2184. R. 2, 42, 29. Çâk. 34, 13. Kathâs. 18, 262. Bhâg. P. 1, 11, 29. Pańkat. 62, 24. गृहे Kathâs. 15, 32. पुरीम् R. 1, 17, 34. दुर्गम् Pańkat. 57, 11. छिद्रम् 21, 14. विवरम् Hit. 17, 4. 25, 16. कटकम् 44, 3. वनम् Bhâg. P. 3, 1, 1. दण्डके R. 3, 52, 47. आश्रमम् Çâk. 31, 12. अप्सु Ṛv. 10, 51, 3. 7, 49, 4. जलम् Hit. 38, 10. जीवलोकम् 17, 19. ऋषिषु Ṛv. 10, 71, 3. महासार्थे MBh. 3, 2555. fg. म्लेच्छप्रायाञ्जनपदान् — सौगताः Prab. 87, 19. इह Çat. Br. 14, 4, 2, 16. तत्र R. 2, 21, 17. पुरुषे ऽन्तः Çat. Br. 1, 1, 3, 2. तस्मिन्वाक् 4, 14. प्रविष्टः सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः Spr. 1869. यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेषु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि Bhâg. P. 2, 9, 34. 7, 12, 15. पश्चार्धेन प्रविष्टः भूयसा पूर्वकायम् Çâk. 7. मध्ये तमः प्रविष्टम् so v. a. *der finstere Theil befindet sich in der Mitte* Varâh. Bṛh. S. 5, 51. छायामिवादर्शतलं प्रविष्टाम् Ragh. 16, 6. शेषेन्द्रियवृत्तिरासीं सर्वात्मना चतुरिव प्रविष्टा 7, 12. लोलं मनः प्रविष्टाम् Kumâras. 3, 7. तिले च तैले च रुचिः प्रविष्टा घृते च दुग्धे च बलं प्रविष्टम् । स्त्रीणां वराङ्गेषु रतिः प्रविष्टा सर्वे पदा (= पदानि) हस्तिपदे प्रविष्टाः (so v. a. *verschwinden in*) ‖ Spr. (II) 2563. हृदि प्रविष्टया तत्प्रत्यागमवाञ्छया Kathâs. 18, 230. एवं मध्यप्रविष्टेन मूर्खः प्राज्ञेन वक्ष्यते so v. a. *der sein Vertrauen gewonnen hat* 62, 162. वायु° *eingegangen in* Kaush. Up. 2, 14. राज्ये so v. a. *die Herrschaft angetreten habend* Bhâg. P. 9, 18, 2. वासुदेवप्रविष्टधी so v. a. *versenkt in* 3, 33, 29. प्रविष्टाः स्मः पारमेश्वरं सिद्धान्तम् so v. a. *eingeführt —, eingeweiht in* Prab. 57, 14. कर्मोदये बुद्धिमतिप्रविष्टाम् MBh. 3, 12735. विदुषां मते so v. a. *übereinstimmend mit* 12, 6677. Ohne Ergänzung *eingetreten* (sc. in's Haus u. s. w.) von Personen 3, 2158. 4, 1000. Kathâs. 18, 83. 193. 52, 32. Râǵa-Tar. 5, 58. *aufgetreten* (auf der Bühne) Vikr. 71, 11. कालपाश so v. a. *durchgezogen* Râǵa-Tar. 5, 13. अम्बु *eingedrungen* 271. तमम् Bhâg. P. 3, 17, 6. पादानिन्द्रोः — जालमार्गप्रविष्टान् Megh. 90. उन्नम्य नयनं यदतिप्रविष्टम् *zu tief eingesunken* Suçr. 2, 358, 17. प्रविष्टे कलौ so v. a. *eingetreten, angebrochen* Vet. in LA. (III) 30, 10. — β) *der an Etwas gegangen ist, sich an Etwas gemacht hat, beschäftigt mit:* नवकर्मणि Râǵa-Tar. 4, 58. — *b*) in pass. Bed. α) *worin man eingetreten ist, betreten:* प्रविष्टं ते मया वक्त्रम् R. 5, 56, 28. अप्रविष्टविषयस्य — अन्तकस्य Ragh. 11, 18. — β) *benutzt, womit man Geschäfte macht* Jâǵń. 2, 64. राज्ञां कृपणवित्तैर्यत्प्रविष्टैः पुष्यते धनम् Râǵa-Tar. 4, 681. — Vgl. प्रवेश u. s. w. — caus. 1) *hereintreten lassen, an einen Ort bringen, niederlegen, hineinwerfen* u. s. w. AV. 9, 5, 23. अग्नौ कामान् TBr. 3, 7, 2, 1. अप्सु TS. 3, 4, 3, 8. 5, 2, 3, 4. तमसि Çat. Br. 1, 9, 2, 35. पत्नीः सदः Kâtj. Çr. 6, 3, 16. प्रवेश्यमानं राजानम् (Soma) Lâtj. 5, 6, 1. 1, 9, 8. गृहम्, निवेशनम्, वेश्म, आगारम् Âçv. Gṛhj. 1, 8, 8. MBh. 2, 2614. 3, 1789. R. 1, 68, 2. Suçr. 1, 18, 1. Kathâs. 4, 51. शुद्धान्तम् Çâk. 71, 13. यमसदने (°सदनम् ed. Bomb.) MBh. 7, 66. गेहे Kathâs. 4, 64. Bhâg. P. 3, 1, 6. गुहाम् Bhaṭṭ. 7, 23. पुरम् MBh. 1, 4427. R. 1, 10, 34. Ragh. 5, 62. पुरे Hariv. 5187. मठान्तः Kathâs. 18, 112. अन्तःपुरान्तरम् 185. गृहमध्ये Pańkat. 237, 12. सरसि 256, 1. तेषु देशेषु MBh. 12, 2631. अप्सु शिलां बद्ध्वा Jâǵń. 2, 278. मृत्युवक्त्रम् Râǵa-Tar. 4, 293. द्वारवतीं पारिजातं वरद्रुमम् Hariv. 7664 (med.). यष्टिं पुरं पौरैः (*bringen lassen*) Varâh. Bṛh. S. 43, 24. अप्सु दण्डम् M. 9, 244. सपत्नशरमस्य शरीरे P. 5, 4, 61, Schol. पतंगिकानां पुच्छेषु त्वयेषीका प्रवेशिता MBh. 1, 4332. तस्य पादौ च पाणी च शिरो ग्रीवां च सर्वशः । काये प्रवेशयामास यशोरिव पिनाकधृक् ‖ 4, 779. बृहद्रथस्तां सत्रपां प्रवेशयन्निव Râǵa-Tar. 4, 435. अर्घं (निधेः) कोशे M. 8, 38. प्रवेशितश्च तैः सर्पैः स कृष्णो भोगबन्धनम् Hariv. 3664. रामेषुभिर्दीर्घनिद्रां प्रवेशितः *versetzt in* Ragh. 12, 81. प्रवेशय मां पारमेश्वरीं दीक्षाम् *einführen —, einweihen in* Prab. 57, 15. एतस्मिन्गुणां को हि प्रवेशयेत् so v. a. *beibringen* Kathâs. 40, 11. Ohne Angabe des Ortes *Jmd hineinführen* (in's Haus u. s. w.) MBh. 3, 2954. 2956. R. Gorr. 1, 75, 11. 6, 7, 42. Kâm. Nîtis. 14, 38 (मृगजातीः *vorführen*). Kathâs. 12, 68. Râǵa-Tar. 3, 205. 4, 560. 6, 321. 329. 336. Pańkat. 16, 2. प्रवेश्यतामेष समीपमाशु मे MBh. 4, 314. *hereinführen auf die Bühne, auftreten lassen:* यत्र पात्रं नैव प्रवेश्यते Bhar. beim Schol. zu Çâk. 8, 20. प्रतिपुरुषम् Mṛkkh. 48, 14. प्रवेशय तौ Çâk. 27, 14. 29, 14. 61, 12. Mâlav. 10, 20. 65, 16. 18. Dhûrtas. 89, 7. प्रवेशित *in seine Würde —, in sein Amt eingesetzt* Bhâg. P. 5, 24, 18. — 2) *in sein Haus führen* so v. a. *heirathen* (vom Manne) MBh. 5, 5983. — 3) *verausgaben:* प्रभूतो ऽपि संचितो ऽर्थः प्रवेश्यमानो ऽञ्जनमिव क्षीयते Pańkat. ed. orn. 3, 13. — 4) = simpl. *hineintreten, hineingehen:* तल्लोकपद्मं स उ एव विष्णुः प्रावीविशत् Bhâg. P. 3, 8, 15. यष्टिं प्रवेशयन्तीम् (v. l. प्रविश्यमानाम्, प्रविशन्तीं भुवि) so v. a. *in die Stadt gebracht werdend* Varâh. Bṛh. S. 43, 28. — Vgl. प्रवेशन, प्रवेशयितव्य, प्रवेश्य. — desid. प्रविविक्षति *hineinzugehen —, einzudringen beabsichtigen:* शैलान् MBh. 3, 10836. सेनाम् 7, 4359. mit Ergänzung von सेनाम् 6, 139 = 12, 3767 (in der Calc. Ausg. fälschlich विवक्षतः). हुताशनम् R. Gorr. 2, 18, 17. — Vgl. प्रविविक्षु.

— अनुप्र 1) *eingehen, eintreten, eindringen, fahren in, sich begeben unter:* रूपाणि Çat. Br. 6, 1, 2, 19. 2, 2, 1. लोकान् 9, 1, 2, 6. विद्युद्वै विद्युत्य वृष्टिमनुप्रविशति *wird zu Regen* Ait. Br. 8, 28. TS. 5, 2, 8, 7. 5, 2, 1. अग्नयः पुरीष्याः प्रविष्टाः पृथिवीमनु 2, 5. Taitt. Up. 2, 6. Kaush. Up. 4, 20. सो ऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टः Kaṭhop. 1, 29. — गृहं गृहम् Kathâs. 86, 93. Daçak. 71, 5. Pańkat. ed. orn. I, 89. तान्बाणाः MBh. 3, 12178. बाणैर्मकरधानीकम् 9, 1337. स्नेहस्त्वगादीन् Suçr. 1, 36, 20. यतो न वेदा मनसा सहैनमनुप्रविशन्ति MBh. 5, 1622. Hariv. 3140. अप्सु Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 50. प्राणिजातम् 298. Bhâg. P. 3, 7, 21. देवम् Muir, ST. 4, 300, 24. वज्रं (nom.) दण्डकाष्ठम् (acc.) MBh. 1, 795. जातम् *fahren in* Mârk. P. 51, 106. Kathâs. 62, 162. 121, 195. Pańkat. ed. orn. 57, 8. यस्या यस्यास्तु यो भा-

वस्तां तां तेनैव केशवः। अनुप्रविश्य भावज्ञो निनायात्मवशम् HARIV. 8332. fg. Spr. 2443. नीतिशास्त्राणि eindringen in PANKAT. 201, 23. — आस्येनानुप्रविष्टो ऽहं शरीरे तव MBH. 3,12941. पृथिवीम् ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 293. अप्सु 295. एतत् BHÂG. P. 3,5,6. 6,3. 32,10. 4,24,64. 5,11, 14. 7,9,12. 30. MÂRK. P. 46,10. ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 18. अन्योऽन्यानुप्रविष्ट *in einander befindlich* SUÇR. 1,313,11. पथिकसार्थं विदिशगामिनमनुप्रविष्टः so v. a. *schloss sich an* MÂLAV. 67,19. अनुप्रविष्ट mit pass. Bed.: शवो वेतालानुप्रविष्टः KATHÂS. 73,290. 121,174. — 2) *nach Jmd in ein Haus, in ein Gemach treten, zu Jmd hereintreten;* mit acc. der Person MBH. 1,396. 4275. 7762. 7800. HARIV. 6472. RÂGA-TAR. 5,410. so v. a. *sich zu Jmd flüchten* MBH. 12,4985. कृष्णस्यानुप्रविष्टाः *nach* Kṛshṇa *hereingetreten* HARIV. 8166. देव्यां गीतायामनुप्रविष्टा *geflüchtet zu* PRAB. 105,9. — Vgl. अनुप्रवेश fg. — caus. *eingehen machen:* योनिम् MBH. 14,487.

— अभिप्र *hineingehen in —, sich ergiessen in* (acc.), von einem Flusse BHÂG. P. 5,17,6. fgg. महागतो धान्तमभिप्रविष्टः *gerathen in* R. 2,21,53. st. निपानगम्भीरमभिप्रविष्टम् HARIV. 8799 liest die neuere Ausg. °गम्भीरमिव प्र°. — Vgl. अभिप्रवेश.

— प्रतिप्र *zurückkehren in:* नगरम् R. 2,89,9 (97,14 GORR.).

— संप्र 1) *eintreten —, hineingehen —, fahren in:* गृहम्, वेश्म ÂÇV. GṚHJ. 4,6,7 (°विष्ट). R. 3,61,3. कुटीम् 2,123,24. नगरम्, पुरम् MBH. 1, 3303. 3,15140. 4,1156. R. 5,9,45. स्वराष्ट्रम् RÂGA-TAR. 4,342 (°विष्ट). येनैव संप्रविष्टः स पथा तेनैव निर्ययौ R. 7,23,1,89. VARÂH. BṚH. S. 91,3. RÂGA-TAR. 6,171. पूर्वाद्रिम् 4,514. सरस्वती। देवस्य वदने साक्षात्संप्रविष्टा KATHÂS. 6,140. समुद्रम् MBH. 1,3339. जलम् 13,2646. ज्वलितं जातवेदसम् 7,2606. यदस्य वारिजं किंचिदपस्तत्संप्रवेक्ष्यति 14,796. अदितिं देवाः सर्वे HARIV. 173 = VP. bei MUIR, ST. 4,104. MBH. 13,2291. गात्राणि (so die ed. Bomb.) गात्रैरस्याहं संप्रवेक्ष्ये हि रक्षितुम् 2293. छिन्नाभ्राणीव संपेतुः संप्रविश्य परस्परम् (मातङ्गाः) MBH. 7,838. मानसम् *in Jmdes Herz sich Eingang verschaffen* RÂGA-TAR. 8,1614. ध्यानम् *in Gedanken gerathen* R. 7,26,52. — 2) *geschlechtlich beiwohnen* (vom Manne): पतिर्भार्यां संप्रविश्य Spr. 4492. 4659. — 3) *sich zu Jmd halten, verkehren mit:* धर्मान्वितान्संप्रविशेद्बद्धिः कृत्वेह दुष्कृतीन् MBH. 12,4545. 4849. — 4) संप्रविश्य RÂGA-TAR. 6,361 fehlerhaft für संप्रवेश्य; s. Spruch 5042. — Vgl. संप्रवेश. — caus. *eintreten lassen, hineinführen:* सभाम् RÂGA-TAR. 4,555. स्वपुरम् HARIV. 5843 (nach der Lesart der neueren Ausg.). आश्रमे R. 7,50,1. समीपं राक्षसेन्द्रस्य 5,44,19. HARIV. 4568. RÂGA-TAR. 8,2138. संप्रवेशित *in's Land wieder eingelassen* im Gegens. zu निर्वासित *verbannt* 6,342. व्यसने *in's Unglück bringen* Spr. 5042 (Conj.). — संप्रवेश्य RÂGA-TAR. 4,325 fehlerhaft für संप्रविश्य.

— वि *eingehen in:* अभ्यन्तरम् MAITRJUP. 2,6. — caus. scheinbar HARIV. 5910, wo aber mit der neueren Ausg. विवेशतुः (= विवि°) zu lesen ist.

— अनुवि *sich da und dort niederlassen, — einfinden:* त इदं क्षेत्रमाविशन्तु त इदं क्षेत्रमनु विविशन्तु TS. 2,4,8,2.

— सम् 1) *herbeikommen, sich anschliessen:* इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु ṚV. 10,18,7. सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः VS. 8,25. — 2) *eintreten —, eingehen —, fahren in:* सुतलम् BHÂG. P. 10,85,34. अग्निमिद्धम् MBH. 1,6741. KATHÂS. 61,12. परिचुम्बति संविश्य भ्रमरश्चूतमञ्जरीम् R. 3,79,17. आपः पृथिवीं संविशन्तु *verlaufen sich in die Erde* KAUÇ. 103. गन्धर्वाश्चापि यं दिव्याः संविशन्ति नरम् MBH. 3,14505. बह्वीर्योनीः 13, 1923. ब्राह्मीं तनुम् 12,7171 (med.). यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश MUND. UP. 3,1,9. आत्मैव संविशत्यात्मनात्मानम् MÂND. UP. 12. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,134. विधिं ब्रह्मा विधयो संविशन्ति *gehen auf in* MBH. 13, 3539. — 3) *sich niederlassen, — niederlegen, — zur Ruhe begeben* ÇAT. BR. 8,2,1,20. 11,6,1,7. 13,4,1,9. पत्न्या KÂTH. 14,8. LÂṬJ. 3,4,4. 5,10, 6. ÂÇV. GṚHJ. 2,3,7. 9,5. गृहेषु ÇR. 2,5,17. AIT. BR. 8,28. चर्मणि वा स्थण्डिले वा KHÂND. UP. 5,2,8. संवेद्यन् (so ist st. संवेश्यन् zu lesen) ज्ञायते KAUSH. UP. 2,10. M. 2,194. 4,55. 76. 7,225. JÂGÑ. 1,114. 330. MBH. 1,688. 4299. शयनीये मया सह 4712 (med.). चरमं संविशति या प्रथमं प्रतिबुध्यते 2,2177. 3,13149. 13,1456. 2745. R. 2,53,5. R. GORR. 2,8,56. 53,7. 4,34,3. 55,16. 20. fg. 5,92,19. SUÇR. 2,165,11. KATHÂS. 56,316. BHÂG. P. 4,26,11. 7,13,26. 10,15,46. शाद्वलोपरि 20,30. व्याधितैर्न संविशेत् *er schlafe nicht mit Kranken* JÂGÑ. 1,138. शय्याम् *sich auf's Bett legen* R. 2,46,14 (44,14 GORR.). संविष्ट *zur Ruhe gegangen, schlafend, ruhend* MBH. 1,693. 5924. तृणेषु R. 2,86,11. R. GORR. 2,48,10. 94,12. 5,14,13 (हस्तिन्). कुशशयने RAGH. 1,95. उरुशाखा° KATHÂS. 42,43. 54, 162. रत्नपीठे Verz. d. Oxf. H. 28,*b*,33. MÂRK. P. 34,59. बृसी° PRAB. 21, 5. — 4) *beschlafen:* संविशेदार्तवे स्त्रियम् M. 3,48. JÂGÑ. 1,79. MÂRK. P. 34,81. — 5) *sich setzen zu* (acc.): संन्नतमश्वम् HARIV. 11236. यैः संविष्टः BHÂG. P. 9,11,22. — 6) *sich mit Etwas* (acc.) *befassen:* दृष्टं श्रुतमसद्बुद्धा नानुध्यायेन्न संविशेत् (= उपभुञ्जीत Comm.) BHÂG. P. 9,19,20. — Vgl. संवेश fgg. — caus. *legen —, setzen auf, in; bringen in, nach:* तल्पे KAUÇ. 79. शयने MBH. 1,4274. R. 2,76,5. शिबिकायाम् HARIV. 3385. R. GORR. 2,83,8. पर्यङ्के R. SCHL. 2,34,20. आसनेषु PRAB. 24,4. चितामध्ये R. 2,76,17. चितायाम् 6,96,9. तैलद्रोण्याम् 2,66,14. — 6,96,15. परं ब्रह्म त्वत्ते Verz. d. Oxf. H. 68,*b*,1. वाङ्मा सत्यं च बुद्धौ संवेशितानि ते MBH. 12,1556.

— अनुसम् *sich zur Ruhe begeben in der Richtung von, — im Gefolge von:* मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18,3,9. die Sonne एतां कुशीमनु संविशति TBR. 1,5,10,7. KAUÇ. 103. सुप्तामनुसंविवेश *wenn sie schlief, legte er sich auch zur Ruhe* RAGH. 2,24.

— अभिसम् *sich vereinigen um —, bei* AV. 3,3,4. इमां मेधिर्मभिसंविशध्वम् 8,5,20. fg. आत्मनात्मानम् VS. 32,11. इन्द्रं देवाः 13,25. ÇAT. BR. 14,4,1,19. TBR. 2,7,16,3. 3,1,2,7. KHÂND. UP. 1,11,5. 3,6,2. यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति *aufgehen in* TAITT. UP. 3,1. fgg. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,72. 100.

— उपसम् 1) *sich legen neben* (acc.): महिष्यश्वम् KÂTJ. ÇR. 20,6,14. — 2) = अभिसम् TBR. 2,2,10,6. 3,1,1,7. — caus. *sich dazu legen lassen:* पत्नीम् KAUÇ. 80. *daneben sitzen lassen* MBH. 14,2645.

2. विश् (= 1. विश्) nom. विट् P. 8,2,36. VOP. 3,149. 1) f. (in der 2ten und 3ten Bed. masc. nach MED.) a) *Niederlassung, Wohnsitz, Haus* (Bed. 1 und 2 nicht überall sicher zu scheiden): भवा पायुर्विशो अस्याः ṚV. 4,4,3. 37,1. अग्नन्तो हव्यं मानुषीषु विक्षु 7,67,7. विश्वासां गृहपतिर्विशामसि मानुषीणाम् 6,48,8. विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान् *welches Hauses Gast du wirst, der Mann* u. s. w. 5,3, 5. कमा जनं चरति कासु विक्षु 6,21,4. प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विक्षु *draussen im Felde und daheim* 41,5. 10,91,2. सं यद्धनन्त यक्षोघोषधीषु विक्षु

7,56,22. 61,3. 70,3. वि तिष्ठध्वं मरुतो विड्विर्च्छत 104,18. = प्रवेश *Eingang* H. an. 1,15. Viçva im ÇKDr. — *b) Gemeinde* (zunächst *die kleinere Vereinigung innerhalb des Volks*); *Stamm, Volk;* = मनुज u. s. w. AK. 3,4,28,216. H. 337. H. an. Med. ç. 13. Halâj. 2,176. अग्नत्रीयसे युष्मांश्च देवाग्निविश आ च मर्तान् RV. 4,2,3. स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते 2,26,3. विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनाम् 6,1,8. सं यद्विशो ऽयवन्त शूरसाता 26,1. 8,60,11. पत्ये, गृहेभ्यः, अस्यै सर्वस्यै विशे AV. 14,2,27. युध्माः RV. 4,24,4. आर्याः 10,11,4. विशो मनुष्यान् 6,47,16. मानुषीः 10,80,6. मनुषो विशः 6,14,2. 8,23,13. दिवः 6,16,9. उभे विशौ 9,70,4 (vgl. Kâth. 11,6). दिव्या 88,7. दैवीः 3,34,2. AV. 6,98,2. VS. 17,86. दासीः RV. 4,28,4. 6,25,2. अदेवीः 8,85,15. असिक्नीः 7,5,3. कृष्णा 8,62,18. Çat. Br. 5,1,3,5. 13,2,2,19. तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते *die Unterthanen, Leute* u. s. w. RV. 4,50,8. 6,8,4. 10,124,8. 173,6. des Tṛnaskanda 1,172,3. der Tṛtsu 7,33,6. VS. 8,46. यस्यै विशो राजा भवति Çat. Br. 5,4,2,3. एदं सदितु देवासः सर्वया विशा πανδημεί RV. 5,26,9. 8,28,3. विशो मरुताम् *das Volk der* Marut 5,56,1. मारुतीः 8,12,29; vgl. TBr. 2,7,2,2. Çat. Br. 5,4,3,8. auch andere *Götterschaaren* 14,4,2,24. विशो न युक्ता उषसो यतन्ते *Mannschaft* RV. 7,79,2. देवविशः कल्पयितव्या इत्याहुस्ताः कल्पमाना अनु मनुष्यविशः कल्पन्त इति सर्वा विशः कल्पन्ते Ait. Br. 1,9. क्षत्रं च बलं च राष्ट्रं च विशं च 8,24. TS. 2,3,13,4. क्षत्रं वै यमो विशः पितरः Çat. Br. 7,1,1,4. 13,4,3,15. राज्ञः, विशः Kaush. Up. 2,9. वशानुगाश्चापि विशो ऽथ कश्चित् MBh. 2,1996. संसाधको विशाम् Bhâg. P. 2,3,4. यत्र दारापकर्षणं राजैव कुरुते विशाम् Râǵa-Tar. 4,29. लवणोत्सेकासां विशाम् 6,57. विशां पतिः (vgl. विश्पति und विट्पति) Bez. eines *Fürsten* MBh. 1,6119. 3,2103. 2112. 2477. 12039. 5,5960. Hariv. 14170 (fehlerhaft nom. st. voc. Mit. 142,8). R. 2,34,17. 61,15. 6,82,33. Ragh. 1,93. 3,66. 5,3. 10,51 (विशां पत्युः). Kathâs. 25,127. Râǵa-Tar. 1,333. Bhâg. P. 4,8,6. 19,39. विशां नाथः Ragh. ed. Calc. 4,70. विशामीश्वरः Râǵa-Tar. 8,109. विशां वरिष्ठः MBh. 4,285. पूरुमर्त्तमं विशाम् Bhâg. P. 9,19,23. — *c) Volk in dem engern Sinne des brahmanischen Staates: die dritte Kaste* (später वैश्य genannt) AK. 2,9,1. 3,4,28,216. H. 864. H. an. Med. Halâj. 2,415. ब्रह्म, क्षत्रम्, विट् Çat. Br. 2,1,3,5. 8,7,2,3. 13,2,9,6. Pańkav. Br 18,10,9. Bhâg. P. 2,1,37. ब्राह्मणानाम्, राज्ञाम्, विशाम् Khând. Up. 8,14. ब्राह्मणस्य, राज्ञः, विशः M. 2,36. 38. 46. 3,13. 10,79. विशः स्त्री H. 897. विप्रः, क्षत्रियः, विशः, शूद्रः Varâh. Bṛh. S. 53,100. सस्यानि विशाम् M. 9,247. 10,120. ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् 9,155. क्षत्रियविशोः 8,383. ब्रह्मक्षत्रियविड्योनि 2,80. क्षत्रविट्शूद्रयोनि 8,62. 9,229. शूद्रविट्क्षत्रविप्राणाम् 8,104. विट्शूद्रयोः 3,23. 8,277. स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवध 11,66. विट्छूद्राः Varâh. Bṛh. S. 5,32. 8,52. विप्रक्षत्रियविट्छूद्रहन् 34,19. एको विड्वर्णः MBh. 13,2620. विट्शूद्रद्विजन्मनाम् Mârk. P. 134,24. — *d) Besitz, Habe:* pl. Bhâg. P. 8,22,24. — *e)* विशां साम N. eines Sâman Ind. St. 3,236,*b*. — 2) nom. ag. in अनर्विश्. — Vgl. देव°, मनुष्य°.

3. विश् f. fehlerhaft für विष् *faeces* H. 634, Schol. Verz. d. B. H. 278, Çl. 42.

विश 1) nom. act. von 1. विश् in दुर्विश. — 2) am Ende eines comp. n. und f. आ = 2. विश्. असुरविशं ह वै देवानभ्युदचार्य आसीत् (wohl °चार्यासीत्) Ait. Br. 6,36; vgl. देव° und मनुष्य°. Am Ende eines adv. comp. विशम् gaṇa शरदादि zu P. 5,4,107. Vop. 6,62. — 3) m. N. pr. eines Mannes gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,132; vgl. वैशेय. — 4) ungenaue Schreibart für बिस, z. B. Suçr. 2,162,17.

विशंवरा f. *eine kleine Hauseidechse* (पल्ली) Râǵan. im ÇKDr.

विशकल (2. वि + श°) adj. *in Stücke gegangen:* रथं चान्ये: सुबहुभिश्चक्रे विशकलं शरैः MBh. 7,3330. विशकलीकार् *zerstückeln, in Stücke brechen* 6,5653. 7,780. 1571.

विशकलित (von विशकल) adj. *gesondert, getrennt* so v. a. *verschieden* Sâh. D. 15,10.

विशङ्क (2. वि + शङ्का) adj. 1) *keine Scheu empfindend, unbesorgt:* अन्तःकरण Ragh. 2,11. प्राणत्याग° *sich nicht scheuend das Leben hinzugeben* R. 4,28,24. विशङ्कम् adv. *ohne Scheu* Daçak. 86,9. — 2) *keine Scheu —, keine Furcht verursachend, sicher:* पन्थाः Kâm. Nîtis. 15,13. — विशङ्का s. bes.

विशङ्कट adj. P. 5,2,28. f. आ und ई gaṇa बह्वादि zu 4,1,45. 1) *ausgedehnt, umfangreich* AK. 3,2,10. H. 1429. Halâj. 4,68. विशङ्कटो वक्षसि Bhaṭṭ. 2,50. °कटीरकस्थली Çiç. 13,34. अटवी Kathâs. 100,10. विसंकटोत्कटदृढपरिघकपाटतोरणार्गल° Pańkat. ed. orn. 3,7. — 2) *ungeheuerlich, scheusslich, grauenhaft:* दंष्ट्राकोटि° Mâlatîm. 78,2. Kathâs. 25,105. 114,107. 123,8. वेतालतालवाद्य° (रणोत्सव) 108,107. कोपाटोपविसंकटं वदत्यां मातरि Pańkat. 46,5. — Es liegt nahe der Schreibart विसंकट den Vorzug zu geben, da dieses sich einfach in वि + सं° zerlegt, aber Pâṇini's Schreibart durfte nicht unberücksichtigt bleiben. Dieselben Bedeutungen hat विकट.

विशङ्कनीय (von शङ्क् mit वि) adj. *Misstrauen verdienend, verdächtig:* राजन् R. Gorr. 2,19,22. मुखादिभ्यो ब्राह्मणादिनिर्माणं ब्रह्मणो न विशङ्कनीयम् Kull. zu M. 1,31.

1. विशङ्का (von शङ्क् mit वि) f. *Bedenken in Bezug auf* (loc.), *Verdacht:* दमयन्त्यां विशङ्कां तामुपाकर्षत् MBh. 3,2996. मयि ते मा विशङ्केयम् R. Gorr. 2,99,20. विशङ्का त्वय्यतामेषा 5,31,61. मनुष्यो ऽस्मि विशङ्का ते न कर्तव्यात्र कर्हिचित् Mârk. P. 21,53. — 2) *Besorgniss, Scheu, aus Besorgniss hervorgehendes Zögern:* परपुंसो विशङ्कया Mârk. P. 78,22 = 108,8. धर्मलोपविशङ्कया R. Gorr. 2,20,30. आत्मोच्छित्तिविशङ्कया Kâm. Nîtis. 8,64. मा विशङ्कां कुरुष्व *trage kein Bedenken* MBh. 2,2037. अविशङ्कया *ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern* 3,17038. 4,2322. 14,111. Hariv. 3834. Mârk. P. 20,28. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 267. वीतविशङ्क adj. Bhâg. P. 10,38,19. स्वपिहि त्वं निर्गतविशङ्कः *unbesorgt* Pańkat. 124,12. अ° adj. *sich nicht bedenkend, nicht zögernd* MBh. 13,2747. अविशङ्केन मनसा 3,2171. सविशङ्का adj. R. 2,22,6. — Vgl. निर्विशङ्क (auch R. 6,16,27).

2. विशङ्का (2. वि + शङ्का) f. *Abwesenheit aller Besorgniss, — Scheu:* विशङ्कया *ohne alle Scheu, ohne Bedenken, ohne Zögern* Bhâg. P. 4,24,67. 10,82,42.

विशङ्किन् (von शङ्क् mit वि) adj. 1) *vermuthend:* जीमूतस्तनितविशङ्किभिर्मयूरैः Mâlav. 20. वैधव्यवृत्ताविशङ्किन् Kathâs. 40,72. — 2) *befürchtend, besorgend:* नैवमस्मासु ते प्रीतिर्भवेदिति विशङ्किना Kathâs. 14,4. सर्वनाश° 17,81. — अ° MBh. 8,3505 fehlerhaft für अभिशङ्किन्, wie die ed. Bomb. liest.

विशङ्क्य (wie eben) adj. *Misstrauen verdienend, verdächtig:* स्त्रियः R. 6,101,8.

विशद 1) adj. (f. आ) a) *klar, hell, blank, heiter, rein;* = शुक्ल, पाण्डुर, शुचि u. s. w. AK. 1,1,4,22. Trik. 3,3,211. H. 1392. 1436. an. 3, 339. Med. d. 39. Halâj. 1,132. अच्छस्फटिक° (अम्भस्) Megh. 52. निर्धौतहारगुटिका° (हिमाम्भस्) Ragh. 5,70. शीधु Spr. 3322. मद्य Suçr. 2, 477, 3. Oel 1,182,3. Urin 2,82,15. वीर्य 1,148,9. व्योमन् Râga-Tar. 3,375. प्रभा Çiç. 9,26. Ragh. 4,18. 9,38. चन्द्रपादाः Megh. 71. चन्द्रिका Ragh. 19, 39. दशनांशवः Kumâras. 6,25. °हारमयूख Bhâg. P. 3,28,25. हिमाचल Kir. 5,12. शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैः Megh. 59. स्फटिक° (नगेन्द्र) 63. वपुस् Gît. 1,12. कदम्ब 2,8. कच AK. 2,6,2,49. H. 570. शस्त्र Bhâg. P. 8, 10,14. Auge Suçr. 2,141,17. कुमुदविशदानि प्रेक्षितानि Megh. 41. प्रीतिविशदैर्नेत्रैः Ragh. 17,35. विश्वासविशदां दृशम् Râga-Tar. 8,1279. Mund Suçr. 2,235, 6. प्रसादविशदानन Râga-Tar. 3, 25. अधर Kumâras. 3, 33. ओष्ठस्ताम्बूलद्युतिविशदः Çiç. 8, 70. स्मित Kumâras. 1, 45. Bhâg. P. 4, 16,9. दन्तावभासविशदस्मितवक्त्रकान्ति Ṛt. 3,18. स्वरूपं ब्रह्मचर्यं च MBh. 4,186. अन्तरात्मन् Çâk. 97. आशय Bhâg. P. 3, 5, 45. 4, 20, 10. हृत्पद्म Kaivaljop. bei Muir, ST. 4,304. हृदय Spr. 4568. चेतस् 2071. विशदात्मन् 2680. 4232. यशस् Kathâs. 22, 36. Bhâg. P. 1,18,11. कीर्ति 8,21, 4. Râga-Tar. 8,1152. अनुवृत्ति Bhâg. P. 3,4,12. नृपश्री Râga-Tar. 4,373. °प्रज्ञ 5,79. विज्ञान Sarvadarçanas. 29,18. स्वरूपावभास 47,18. फलपङ्क्ति Mârk. P. 43,39. निशदीर्घवंशविशदप्रेङ्खत्पताकाकृति Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 506, Çl. 22. *rein, lauter,* von einem Menschen Kâm. Nîtis. 12, 34. — b) *klar, deutlich, verständlich;* = व्यक्त Trik. H. an. Med. Halâj. 4, 67. विशदपदैरवैः Pankar. 3, 9, 14. उच्छ्वसित Ragh. 8, 3. निःश्वास (सुविशद) Mṛkkh. 48,22. शास्त्र Hariv. 15701 (विषद die ältere, विशद die neuere Ausg.). विवेकविशदा कथा Râga-Tar. 2,113. भारतव्याख्या Verz. d. Oxf. H. 2,*a*, No. 14. fg. 161,*b*,35 (सु°). 257,*b*,31 (°तर). — c) *weich anzufühlen* MBh. 12,6856. 14,1416. von Speisen im Gegens. zu खर Pat. zu P. 7, 3, 69. Schol. zu P. 2,1,35. 4,2,16. H. 921, Schol. Suçr. 1,246,21. der Südwind 76,14. von einem Geruch MBh. 12,6848. 14,1409. — d) *geschickt zu Etwas (geschmeidig):* नृत्यप्रयोगविशदौ चरणौ Mṛkkh. 9,19. — e) am Ende eines comp. *behaftet mit:* कासश्वासादिदुःख° Sarvadarçanas. 101, 1. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Ǵajadratha, Bhâg. P. 9,21,23. — Vgl. वैशद्य.

विशदय् (von विशद), °यति 1) *rein machen:* den Mund Vâgbh. 10,4. — 2) *klar machen, erläutern:* प्रतिज्ञातमेवार्थम् Schol. zu Ǵaim. 1,1,3.

विशदाय् (wie eben), °यते *klar —, deutlich werden:* जीवन्मुक्तस्य या तृप्तिः सा तेन विशदायते Verz. d. Oxf. H. 222,*b*,24.

विशदीकर् (विशद + 1. कर्) 1) *klar machen, erhellen:* उडुनाथकरैर्विशदीकृतमुप्रसर Pankar. 3,12,5. — 2) *erläutern, erklären* Verz. d. Oxf. H. 241,*b*, No. 591 (विषदी°).

विशन (von 1. विश्) n. *das Hineingehen in, Eindringen:* कपोतस्य सद्मविशनम् Varâh. Bṛh. S. 88,12. वह्नि° MBh. 3,14384.

विशफ (2. वि + शफ) adj. *keine* oder *verkehrte Hufe habend,* Bez. eines Unholds AV. 3,9,1.

विशब्द (2. वि + श°) im comp. *verschiedenartige Worte* Verz. d. Oxf. H. 188,*a*,3.

विशब्दन (von शब्दय् mit वि) n. *das Aussprechen von Worten* P. 7,2,23.

विशंप (विशम्, acc. von 2. विश्, + 2. प) adj. *das Volk beschützend;* m. vielleicht N. pr. gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110. — Vgl. वैशंपायन.

विशय (von शी mit वि) m. 1) *Ungewissheit, Zweifel* (vgl. संशय) P. 3, 3,39, Schol. Kâtj. Çr. 4,3,7. Lâṭj. 6,10,24. Anupadas. 7,10 in Ind. St. 10,5. Tithjâdit. im ÇKDr. — 2) = आश्रय Çabdak. bei Wilson.

विशयवत् (von विशय) adj. *unsicher, zweifelhaft* Nir. 2,1.

विशयिन् (von शी mit वि) adj. (neben विषयिन्) देशे gaṇa प्रेक्षादि zu P. 3,1,134.

विशर॑ (von शर् mit वि) m. 1) Bez. eines Unholds AV. 2,4,2. — 2) एष वै मासो विशर इति TS. 7, 5, 2, 1. Kâṭh. 33, 7. = विशीर्ण Comm. — 3) *Mord, Todtschlag* AK. 2,8,2,84.

विशरण (wie eben) n. 1) *das Auseinanderfallen, Zerfallen* Dhâtup. 14, 13. 15, 9. Verz. d. Oxf. H. 167, *b*, 16 (?). — 2) *Mord, Todtschlag* H. 370; vgl. विशारण.

विशरद Kathâs. 15,148 fehlerhaft für विशारद.

वि॑शरीक (von शर् mit वि) adj. etwa *abbröckelnd,* Bez. des बलास AV. 19,34,10.

वि॑शल्य (2. वि + शल्य) 1) adj. *ohne Spitze:* Pfeil VS. 16, 10. *von einer Pfeilspitze befreit, von einer Pfeilwunde geheilt* H. an. 3,507. fg. MBh. 3,16470. fg. 7,3703. 8,4593. 13, 7761. 7763. R. 2, 63, 43 (65, 41 Gorr.). fg. 6,36,120. 71,21. 24. *von einem fremden Körper im Leibe befreit:* आ विशल्यभावात् so v. a. *bis sie den Embryo los ist* Suçr. 1,368, 16. überh. *von einem Schmerze befreit* MBh. 6,3541. — 2) f. आ *eine best. Pflanze* Suçr. 2,110, 4. 275, 8. 517, 9. *ein gegen Pfeilwunden angewandtes Heilkraut* (vgl. विशल्यकरणी) MBh. 3,16470. R. 6,82,132. 136. = गुडूची AK. 2,4,3,1. H. an. Med. j. 106. = अग्निशिखा AK. 2,4, 5,2. Med. = दन्तिका, दन्ती AK. 3,4,24,157. H. an. Med. Ratnam. 34. = त्रिपुटा H. an. Med. = लाङ्गली H. an. = कलिकारी und अजमोदा Râgan. im ÇKDr. — b) N. pr. der Gattin Lakshmaṇa's H. an. — c) N. pr. eines Flusses MBh. 2,373. 3,8092. 12910. 13,7646. Verz. d. Oxf. H. 65,*b*,30. fg.

विशल्यकरण (वि + 2. क°) adj. *Pfeilwunden heilend;* f. ई Bez. *eines best. wunderthätigen Heilkrautes* MBh. 6,3540. R. 2,25,36. 6,71,23. 82, 113. Kathâs. 39,90. 105,44.

विशल्यकृत् adj. dass.; m. *eine best. Pflanze,* = विशाली Ratnam. im ÇKDr.

विशल्यघ्न oder विशल्यप्राणहर adj. heissen nach Suçr. 1,347,3 *diejenigen Stellen des Leibes, an welchen eine Wunde tödtlich wird, sobald die Spitze* (einer Waffe u. s. w.) *ausgezogen wird.* Diese Definition scheint falsch zu sein; es sind *diejenigen Stellen* gemeint, *auf welchen ein Schlag lebensgefährliche Wirkung hervorbringt auch ohne dass ein fremder Körper* (शल्य) *in den Leib eindringt: die Schläfen und der Raum zwischen den Brauen* Suçr. 1, 346, 2. 4. 11. 347, 3. 12 (°घ्नानि Hdschr.). 348,7.

विशल्यय् (von विशल्य), °यति *Jmd von einer Pfeilspitze* oder überh. *von einem Schmerze befreien* Kathâs. 24,228.

विशश्रमिषु Daçak. 22,14 fehlerhaft für विशिश्रमिषु.

विशंसन (von शस् mit वि) 1) adj. (f. ई) *mörderisch, Tod bringend:* गदा MBH. 6,2775. 2798. 9,3186. तय 8,2836. 10,540. विशसने गूढागारे बन्धनेन बद्धः MṚKKH. 98, 9. — 2) m. *Schwert* TRIK. 2,8,54. H. ç. 144. MBH. 12,6203. als solches bildliche Bez. *der Strafe* 4428. — 3) n. *a) das Schlachten, Zerschneiden* ṚV. 10,85,35. SUÇR. 1,96,12. *Metzelei* AK. 2, 8,2,83. H. 370. HALÂJ. 2,322. पुत्रशत्रुगणस्य MBH. 11,301. महद्विशसनं कृतम् । यादोगणमहाग्राहदैत्यदानवरक्षसाम् R. GORR. 1,42,7. 43,7. 6,108, 4. so v. a. *Schlacht* MBH. 7,661. 840. 12,11292. HARIV. 5596. *Metzelei* so v. a. *grausame Behandlung* UTTARAR. 74,13 (96,5). — *b)* N. einer Hölle VP. 207. fg. BHÂG. P. 5,26,7.

विशसितर् (wie eben) nom. ag. *Schlächter* P. 7,2,34, Schol. AIT. BR. 7,16. M. 5,51. KULL. zu M. 10,105.

विशस्तर् (wie eben) nom. ag. dass. P. 7,2,34 (vedisch). ṚV. 1,162, 19. MBH. 13,5642. — Vgl. अ°, विशास्तर् und वैशस्त्र.

विशस्ति gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124 vielleicht fehlerhaft für विशस्त; vgl. वैशस्त्य.

विशस्त्र (2. वि + श°) adj. *waffenlos* MBH. 8,984.

विशंस्पति (विशम्, gen. von 2. विश्, + पति) m. *Herr der Niederlassung* u. s. w.: Indra ṚV. 10,152,2. Agni 141,1.

विशाख (2. वि + शाखा) 1) adj. (f. आ) *a) verästet, gegabelt:* वीरुधः AV. 8,7,4. यूप TS. 2,1,9,3. ÇÂÑKH. ÇR. 16,9,26. वपाश्रपणी KÂTJ. ÇR. 6,5,7. 6,27. GOBH. 3,10,25. — *b) astlos:* पादप HARIV. 2753. — *c) händelos* HARIV. 2755. — *d) unter dem Sternbilde* Viçâkhâ *geboren* P. 4,3, 34. — 2) m. *a) Bettler* H. an. 3,114 (याचक). MED. kh. 12 (तर्कक). *Spindel* (d. i. तर्कु) WILSON nach ÇABDAM. — *b)* Bez. *einer best. Stellung beim Schiessen* (धन्विनां वितस्त्यन्तरेण पदे संस्थानम्) BHAR. zu AK. 2,8,2,53 nach ÇKDR. — *c) Boerhavia procumbens Roxb.* (पुनर्नवा) RÂGAN. im ÇKDR. — *d)* Bein. Skanda's AK. 1,1,1,35. TRIK. 3,3,51. H. 209. H. an. MED. HALÂJ. 1,19. MBH. 3,14634. — *e) eine Manifestation* Skanda's, *die als sein Sohn aufgefasst wird,* MBH. 1,2588. 3,14384. 14532. fg. 9,2487. fg. 13,7636. HARIV. 157. 2966. VARÂH. BṚH. S. 46,11. 48,26. KATHÂS. 20,92. 50,183. fg. VP. 120. BHÂG. P. 6,6,14 (st. स्कन्ध ist mit der ed. Bomb. स्कन्द zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 117,a,34 (?). — *f)* als *Manifestation* Skanda's N. *eines den Kindern gefährlichen Dämons* SUÇR. 2, 387,6. 394,8. ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,109. Verz. d. Oxf. H. 307,b,25. — *g)* Bein. Çiva's MBH. 13,1186. स्कन्द° (स्कन्ध° ed. Calc.) desgl. 907; vgl. स्कान्दविशाख P. 7,3,21, Schol. — *h)* N. pr. eines Devarshi MBH. 2, 295. eines Dânava KATHÂS. 47,18. eines Brahmanen RÂGA-TAR. 1,204. — SCHIEFNER, Lebensb. 270 (40). — 3) f. आ *eine best. Pflanze* KÂTJ. ÇR. 25,7,17. = दूर्वा Comm. = कठिल्लक H. an. MED. — *b)* du. Bez. *des 14ten* (später *des 16ten*) Nakshatra COLEBR. Misc. Ess. II, 338. Journ. of the Am. Or. S. 6,335. fg. P. 1,2,62. AV. 19,7,3. TS. 4,4,10,2. TBR. 1, 5,1,2. 7. 3,1,1,11. ÂÇV. ÇR. 2,1,10. AV. PARIÇ. bei WEBER, Nax. 1,312. MBH. 3,16970. R. 4,33,44. 5,73,56. VARÂH. BṚH. S. 4,6. pl. MBH. 13, 4262. R. 2,41,11. ÇÂK. 35,21. VARÂH. BṚH. S. 10,19. 11,58. 101,9. sg. vedisch nach P. 1,2,62. AK. 1,1,2,23. TRIK. H. 112. H. an. MED. GARGA bei WEBER, Nax. 1,309. MBH. 6,95. 13,3270. R. 6,86,43. VARÂH. BṚH. S. 6,9. 15,30. 102,4. 105,3. MÂRK. P. 33,12. ÇATR. 14,6. unbestimmt ob sg. oder pl. MÂRK. P. 58,33. im comp. LALIT. ed. Calc. 62,14. fg. VET. in LA. (III) 13,11. VARÂH. BṚH. S. 6,12. 9,3. 32,12. 47,18. 55,31. सविशाख 98,1. — *b)* ein Frauenname BURN. Intr. 24, N. 1. SCHIEFNER, Lebensb. 270 (40). HIOUEN-THSANG 1,305. — 4) f. ई *eine gabelförmige Stange* KÂTJ. ÇR. 13,3,13. ÇÂÑKH. ÇR. 17,1,15. 10,9. — 5) n. *Gabel, Verzweigung* KÂTJ. ÇR. 8,5,38. LÂṬJ. 1,5,19. 7,7,10. Dasselbe Wort vermuthen wir st. विशिख in der Stelle (सूतिकायाः) विशाखान्तरमभ्यज्यात् *das Innere der Gabel* d. h. *zwischen den Schenkeln* SUÇR. 1,368,12. — Vgl. वैशाख.

विशाखज m. *Orangenbaum* ÇABDAR. im ÇKDR.

विशाखदत्त (विशाखा + दत्त; vgl. P. 6,3,63) m. N. pr. des Autors des Dramas Mudrârâkshasa Verz. d. Oxf. H. 143,a, No. 296.

विशाखदेव m. N. pr. eines Mannes TÂRAN. 146.

विशाखयूप 1) m. N. pr. eines Fürsten aus der Pradjota-Dynastie VP. 466. BHÂG. P. 12,1,3. Verz. d. Cambr. H. 7. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit MBH. 3,8386. 12354.

विशाखल n. *eine best. Stellung beim Schiessen* ÇABDAM. im ÇKDR.

विशाखिल (von विशाखा) m. N. pr. eines Kaufmanns KATHÂS. 6,33. fgg. Autor eines Kalâçâstra Verz. d. Oxf. H. 207,b,33.

विशातन (vom caus. von शद् mit वि) 1) adj. (f. ई) *fällend, vernichtend:* परानीक° (शर) MBH. 7,5081. वीर्य° MÂRK. P. 116,25. मृत्युपाश° BHÂG. P. 3,14,4. als Beiw. Vishṇu's (= संहर्तर् NILAK.) MBH. 7,2963. — 2) n. *das Fällen, Vernichten:* द्रोणानीक° MBH. 7,485.

विशाद MBH. 8,4407 fehlerhaft für विवाद, wie die ed. Bomb. liest.

विशाप (2. वि + शाप) 1) adj. *von einem Fluche befreit* BHÂG. P. 9,9, 37. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 52,a,25.

विशाय (von शी mit वि) m. *die Reihe zu schlafen* P. 3,3,39. AK. 3, 3,32. H. 1503. HALÂJ. 4,54.

विशायक m. *eine best. Pflanze;* s. u. बिसाकर.

विशायिन् (von शी mit वि) adj. gaṇa ग्रहादि zu P. 3,1,134.

विशारण (vom caus. von शर् mit वि) n. *Mord, Todtschlag* H. 372. — Vgl. विशरण, निशारण.

विशारद (wohl 2. वि + शा°) 1) adj. (f. आ) gaṇa दृढादि zu P. 5,1, 123. *a) erfahren, kundig, vertraut* AK. 3,4,16,98. H. 341. an. 4,144. MED. d. 53. HÂR. 224. HALÂJ. 2,178. die Ergänzung im loc.: संख्याने MBH. 3,2833. रथमार्गेषु 8,1983. नृत्येषु 14,2643. भङ्गिसूचनविधौ KATHÂS. 15,148 (विशरद gedr.). im gen.: युद्धानामविशारदः MBH. 7,5540. im comp. vorangehend: सर्वशास्त्र° M. 7,63. श्रुतिजाति° JÂGÑ. 3,115. युद्ध° BHAG. 1,9. मल्लबुद्धि° MBH. 1,1597. प्रतिपत्ति° 8248. 2,394. 3,2485. 5, 5970. 13,6772. R. 1,2,1. 53,8. 2,43,18. 74,18. 80,1. R. GORR. 2,6,15. 4,9,45. 51,18. SUÇR. 1,122,12. 256,3. RAGH. 8,17. 9,32. Spr. (II) 265. 1288. (I) 3073. 4413. KATHÂS. 20,116. 74,287. RÂGA-TAR. 4,265. BHÂG. P. 2,3,25. 9,13,27. ललनानुनयाति° 5,2,17. ohne Ergänzung MBH. 4, 1032. R. 5,3,70. BHÂG. P. 8,23,8 (= सर्वज्ञ Comm.). बुद्धिः सुविशारदा 11,7,26. परापवादेन विशारदेन *geschickt, gewandt, dem Zwecke entsprechend* 28,23. स्तवैश्चार्थविशारदैः so v. a. *sinnvoll* MBH. 13,6413. — *b) dreist, frech* AK. H. an. MED. — *c)* = श्रेष्ठ AGAJAPÂLA im ÇKDR. — 2) m. *Mimusops Elengi Lin.* (बकुल) RÂGAN. im ÇKDR. AUSH. 48. — 3) f. आ *eine best. Pflanze,* = तुरुडुरालभा RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. विद्या°

und वैशारद्य.

विशारदिमन् (von विशारद) m. *Erfahrenheit, Vertrautheit* gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

विशाल Uṇâdis. 1,117. P. 5,2,28. 1) adj. (f. आ; nach gaṇa बह्वादि auch विशाली, das aber nicht zu belegen ist) *umfänglich, weit, breit, gross* AK. 3,2,10. H. 1429. Med. l. 133. Halâj. 4,14.68. स्वर्गलोक Bhag. 9,21. भूमि MBh. 2,638. R. 3,21,18. Mṛkkh. 173,17. दक्षिणा दिक् R. 4,41,8. भुवनत्रितयोदर Spr. (II) 840. कोसला: R. 2,50,1. उत्तरा: कुरव: 4,44,82. नियुतयोजन° (द्वीप) Bhâg. P. 5,16,5. 20,2. सलिल 3,8,14. अम्बुधि Kathâs. 53,187. शिला R. 2,94,20. पुर 4,43,5. 5,80,24. Megh. 31. रथ्या, राजमार्ग R. 4,41,52. 5,10,20. पर्णशाला 2,100,18. अग्निशरणा 3,6,4. भाजन H. 1026. कृत्त° (कुण्डक) Varâh. Bṛh. S. 23,2. उल्का शिरसि विशाला 33,8. चन्द्र 47,17. तडिद्रसनैर्विशालै: 24,13. विद्युत्कुटिलविशाला 33,5. यूप TS. 2,1,8,5. Baum u. s. w. MBh. 13,4862. 14,1329. Hit. 9,3. 80,14. Bhâg. P. 8,2,19. मूल Hariv. 3612. Suçr. 1, 63,12. नौ Bhâg. P. 8,24,33. वर्मन् Gît. 4,3. ऋषभ Kâth. 13,5. मूर्ति Varâh. Bṛh. S. 4,20. वक्षस् R. 4,2,11. Ragh. 6,32. श्रोणी Hariv. 7894. जघन R. 3,52,32. Kaurap. 7. प्रकृतान्तर Ragh. 2,21. ललाट Varâh. Bṛh. S. 68,71. वदन Bṛh. 17,5. Augen MBh. 1,7705. R. 3,26,26. Ragh. 4,13. Mṛkkh. 14,13. Pankar. 3,5,9. बाहु MBh. 2,2623. पक्षौ *Flügel* Hariv. 12745. व्रणा Suçr. 1,15,10. बल *Armee* Râga-Tar. 8,1624. छन्दस् VS. 14,9. कुल, वंश *grosses, vornehmes Geschlecht* Spr. (II) 1466. 1734. (I) 2637. Kâm. Nîtis. 1,2. तृष्णा Spr. 1946 (II). 2722. बुद्धिर्विशाला Kîkakavadha bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,117. Am Ende eines comp. *voll von:* सत्त्व°, रजो°, तमो° Sâṅkhjak. 54. विशालम् adv. Pankav. Br. 12,13,11. — 2) m. *a) ein best. Thier* (मृग). — *b) ein best. Vogel* Med. — *c) eine best. Pflanze* Çabdar. im ÇKDr. — *d)* Name eines Shaḍaha Kâtj. Çr. 24, 2,16. Âçv. Çr. 11,3,8. — *e)* N. pr. des Vaters des Mahidâsa Aitareja Colebr. Misc. Ess. I,46 (विशल gedr.). eines Sohnes des Ikshvâku und Gründers der Stadt Viçâlâ (Vaiçâlî) R. 1,47,12. fg. R. Gorr. 1, 46,10. 12. 48,14. fg. Sohn Tṛṇabindu's VP. 353. Bhâg. P. 9,2,33. Fürst von Vaidiça Mârk. P. 70,4. 123,20. 124,20. 125,4. ein Asura Kathâs. 47,75. — *f)* N. pr. eines Gebirges Mârk. P. 59,12. — 3) f. आ *a) Koloquinthe* AK. 2,4,5,22. H. 1157. Med. Ratnam. 15. Suçr. 2,65,3. 77,14. *Basella cordifolia Lam.* und = महेन्द्रवारुणी Râǵan. im ÇKDr. — *b)* N. pr. eines Flusses und einer daran gelegenen Einsiedelei, nach den Comm. = बदरी MBh. 9,2189. 12,13390. 13,1730. R. 1,61,3. Bhâg. P. 4,12,16. 5,4,5. 11,29,47. — *c)* ein N. der Stadt Uǵǵajinî (auch N. pr. einer anderen Stadt; s. Uǵǵval. a. a. O.) Trik. 2,1,16. H. 976. Med. R. 1,45,9. fgg. 47,13 (वैशाली Gorr.). Megh. 31. Kathâs. 95, 3. 104,22. — *d)* N. pr. einer Gattin Aǵamîḍha's MBh. 1,3790. einer Tochter Daksha's und Gattin Arishṭanemi's Garuḍa-P. 6 im ÇKDr. — 4) f. ई *eine best. Pflanze,* = अजमोदा Râǵan. im ÇKDr. — 5) m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. — 6) n. *a)* N. eines Sâman: वैनोविशाले Ind. St. 3,237,b. — *b)* N. pr. eines Wallfahrtsortes (wohl = बदरीतपोवन) Bhâg. P. 10,78,19. — Vgl. क्रिया°, वैशाली und वैशालायन fgg.

विशालक (von विशाल) 1) m. *a) Feronia elephantum Corr.* (कपित्थ) Aush. 11. — *b)* ein N. Garuḍa's H. ç. 78. — *c)* N. pr. eines Jaksha MBh. 2,397. — 2) विशालिका f. *Odina pennata* Ratnam. 74.

विशालग्राम m. N. pr. eines *Dorfes* Mârk. P. 76,25. 37.

विशालता (von विशाल) f. *grosser Umfang* AK. 2,6,2,16. H. 1431. Halâj. 4,101. Varâh. Bṛh. S. 4,8.

विशालतैलगर्भ m. *Alangium hexapetalum* Râǵan. im ÇKDr.

विशालत्वच् m. *Bauhinia variegata* AK. 2,4,2,3.

विशालदत्त m. ein Mannsname P. 5,3,84, Schol.

विशालदा f. *Alhagi Maurorum* Aush. 48.

विशालनगर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 378, *a*, No. 376. *b*, No. 379. 380, *a*, No. 398.

विशालनेत्र 1) adj. *grossäugig.* — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Vjutp. 21.

विशालनेत्रीसाधन n. Titel einer Schrift Tandjur, Bd. 43, Bl. 434.

विशालपत्त्र m. *ein best. Knollengewächs* (कासालु) und = श्रीताल Râǵan. im ÇKDr.

विशालपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,26.

विशालफलिका (von वि° + फल) f. *eine best. Hülsenfrucht,* = निष्पावी Râǵan. im ÇKDr.

विशालविजय m. Bez. *einer best. Truppenaufstellung* Kâm. Nîtis. 19,44.

विशालाक्ष (विशाल + अक्ष *Auge*) 1) adj. (f. ई) *grossäugig* H. an. 4, 322. fg. Med. sh. 57. MBh. 3,2662. R. 1,1,13 (15 Gorr.). 2,61,5. 70,4. — 2) m. *a)* Bein. Çiva's Trik. 3,3,440. H. ç. 43. H. an. Med. Çiv. als Verfasser eines Çâstra MBh. 12,2093. 2201. Kâm. Nîtis. 8,28. Daçak. 186,11. — *b)* N. pr. eines der Söhne Garuḍa's MBh. 5,3594. — *c)* Bein. Garuḍa's Trik. H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Schlangendämons Hariv. 9501. — *e)* N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2736. 4549. 6,3901. 3904. — 3) f. ई *a) eine best. Pflanze,* = नागदन्ती Râǵan. im ÇKDr. — *b)* N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2621. — *c) eine Form der* Durgâ H. ç. 54. Verz. d. Oxf. H. 19,*a*,10. 39,*a*,32. 71,*b*,11. 94,*a*,5. 96,*a*,12. — *d)* N. pr. einer Tochter Çâṇḍilja's Verz. d. Oxf. H. 28, *a*, No. 71. — 4) n. Titel *des von Çiva als* Viçâlâksha *verfassten* Çâstra MBh. 12,2203. वैशालाक्ष ed. Bomb.

विशालिक, विशालिय und विशालिल m. Hypokoristica von Personennamen, die mit विशाल anlauten, P. 5,3,84.

विशालीय adj. von विशाल gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

विशास्तर् nom. ag. = विशस्तर् Çâṅkh. Çr. 15,21,9. Pankav. Br. 25,18,4.

विशिका f. gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,4,62.

विशिक्षु (von शिक्ष् mit वि) adj. *mittheilsam* ṚV. 2,1,10.

विशिख (2. वि + शिखा) 1) adj. *ohne Haarschopf, kahl* VS. 16,59. AV. 4,18,4 (proparox.). Gegens. बद्धशिख Prâjaçkittat. (s. u. बद्धशिख). यत्र बाणा: संपतन्ति कुमारा विशिखा इव *wo die Pfeile fliegen jung und alt, nämlich befiedert und unbefiedert* ṚV. 6,75,17. — *b) ohne Spitze, stumpf:* Pfeile R. 3,67,18. 5,80,25. — *c) ohne Flamme:* Feuer R. Gorr. 2,40,11. 3,12,7. — *d) ohne Spitze* so v. a. *ohne Schweif,* von einem Kometen Varâh. Bṛh. S. 11,13. — 2) m. *ein stumpfer Pfeil, Pfeil* überh. AK. 2,8, 2,54. 3,4,2,20. H. 778. an. 3,114. Med. kh. 11. Halâj. 2,311. MBh.

3,805. 12163. 12220. 14892. 4,1666. 5,7213. R. 3,26,21. 6,19,28. Ragh. 5,50. Kathâs. 48,35. Râǵa-Tar. 5,221. 8,1420. 1581. Prab. 7,13. Bhâg. P. 1,9,38. 4,17,13. 19,21. 9,6,15. 10,83,26. मनसिज° Git. 4,2. 5,3. Kathâs. 56,254. कटाक्ष° Git. 3,14. Spr. 1626 (II). दृष्टि° 1861. दुरुक्ति° Bhâg. P. 4,7,15. = तोमर *Spiess*, *Wurfspiess* Med. — 3) f. आ gaṇa कृत्वादि zu P. 4,4,62. a) *eine kleine Schaufel* H. an. Med. Hâr. 263. — b) *Strasse* AK. 2,2,2. H. 981. H. an. Med. Halâj. 2,134. विशिखाक्तराणि — अतिपपात वाजिभिः Çiç. 15,104. — c) *Krankenzimmer* Suçr. 1, 8,8. विशिखानुप्रवेशनीय *vom Eintritt in das Krankenzimmer* d. h. *in die Praxis handelnd* 29,18. 30,4. — d) *die Frau eines Barbirs* Çabdârthak. bei Wilson. — e) = नलिका Med. नालिका ÇKDr. nach derselben Aut. — विशिखान्तरम् Suçr. 1,368,12 wohl fehlerhaft für विशाखान्तरम्. Vgl. वैशिख.

विशिंप Unâdis. 3,145. n. *Haus* Uǵǵval.

विंशिप्रिय (von 2. वि + शिप्र) adj. etwa *ohne Backenstücke* d. h. *ohne Handhaben an den Seiten*, von Soma-Gefässen VS. 9,4.

विशिर s. विसिर.

विशिरस् (2. वि + शि°) adj. 1) *kopflos* MBh. 8,4344. Hariv. 2753. *von einem* (fremden) *Kopfe befreit* MBh. 9,2265. — 2) *ohne Spitze*, *ohne Gipfel:* ताल Hariv. 13517.

विशिरस्क (wie eben) adj. *kopflos* MBh. 6,4167. 8,4096. 11,476.

विशिशासिषु (vom desid. von शस् mit वि) adj. *zu schlachten bereit* Ait. Br. 7,17.

विशिशिप्रं (विशि ऽशिप्र Padap.) m. N. eines dämonischen Wesens ṚV. 5,45,6. = विगतहनु Sâj.

विशिश्न (von 2. वि + शिश्न) adj. देवमातृणां विशिश्नानां मल्ला: Ind. St. 3,458.

विशिश्रमिषु (vom desid. von श्रम् mit वि) adj. *auszuruhen beabsichtigend* Daçak. 22,14 (विशश्रमिषु gedr.).

विशिष्ट s. u. शिष् mit वि und वैशिष्ट्य.

विशिष्टचारित्र m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 182. 233.

विशिष्टचारिन् m. dieselbe Person ebend. 235.

विशिष्टता (von विशिष्ट) f. *Vorzüglichkeit*, *ein ausgezeichneter —*, *besserer Zustand:* मतिः — एति विशिष्टताम् (विशिष्टैः सह समागमात्) Spr. 3358.

विशिष्टत्व (wie eben) n. dass. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 47.

विशिष्टवैशिष्ट्यबोधरहस्य n., विशिष्टवैशिष्ट्यबोधविचार m. und विशिष्टवैशिष्ट्यवाद m. Titel von Schriften Hall 42. fg.

विशिष्टाद्वैत n. *eine unterschiedene Einheit*, *eine Einheit mit Attributen* Wilson, Sel. Works I,43. °वादिन् Mâdhavabhâshja im ÇKDr.

विशिष्टी f. N. pr. der Mutter von Çaṁkarâkârja Hall 167.

विशिष्य in der Stelle: स्थावरेभ्यो विशिष्टानि जङ्गमान्युपधारयेत्। उपपन्नं हि यच्चेष्टा विशिष्येत विशिष्यया MBh. 12,8699. विशेष्यया ed. Bomb., welches Nilak. in विशेष्य (= विशेषं कृत्वा) या trennt. Wir vermuthen, dass विशिष्येताविचेष्टया zu lesen sei: *dass Bewegung höher stehe als Nichtbewegung.* विशिष्य bei Wilson, Sâṁkhjak. S. 151 und Sarvadarçanas. 158,18. fg. fehlerhaft für विशेष्य *zu specificiren, was specificirt wird.*

विशीत m. N. pr.; s. वैशीति.

विशीर्ण s. u. शर् mit वि. Davon विशीर्णता f. *das Zerbröckeln:* प्रुष्कस्य सर्वस्य विशेषादेहाद्विशीर्णता Kâm. Nitis. 7,22.

विशीर्णपर्ण m. = निम्ब Râǵan. im ÇKDr.

विंशीर्षन् (2. वि + शी°) adj. *kopflos* TBr. 2,3,3,1. Çat. Br. 4,1,5,15.

विशील (2. वि + शील) adj. *schlecht gesittet*, *einen schlechten Wandel führend* Spr. 5021. MBh. 13,4965.

विशुक्र m. *eine best. Pflanze*, = श्वेतार्क Aush. 6.

विशुपिड m. N. pr. eines Sohnes des Kaçjapa MBh. 5,3632.

विशुद्ध s. u. शुध् mit वि.

विशुद्धचारित्र m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 182.

विशुद्धता (von विशुद्ध) f. *Reinheit* Spr. (II) 2131.

विशुद्धत्व (wie eben) n. dass. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 31.

विशुद्धसिंह m. N. pr. eines Mannes Vie de Hiouen-thsang 94.

विशुद्धि (von शुध् mit वि) f. 1) *das Reinwerden*, *Reinigung*, *Läuterung*, *Reinheit* (eig. und übertr.): काव्यमुवर्णा विशुद्धिमायाति Varâh. Bṛh. S. 106,4. मन्त्रासृग्विशुद्धि Suçr. 2,56,18. मेह° 1,193,16. नृणामकृतचूडानां विशुद्धिर्नैशिकी स्मृता M. 5,67. 6,69. 9,9. 11,53. 72. 89. 131. तत्संसर्ग° 181. Jâǵn. 1,189. 2,95. 3,34. आत्म° Bhag. 6,12. मनो° MBh. 3,2213. R. Gorr. 2,121,13. Ragh. 1,10. 12,48. Kumâras. 5,79. Uttarar. 6,13 (9,17). Prab. 23,11. fg. Bhâg. P. 4,4,18. 5,7,7. 22,3. 6,9,6. 19,19. Mârk. P. 35,11. Bei den Pâçupata definirt als मिथ्याज्ञानादीनामत्यन्तव्यपोह: Sarvadarçanas. 75,9. 74,13. अ° Sâṁkhjak. 2. Nilak. 23. — 2) *Bereinigung* —, *Abtragung einer Schuld*, *Ausgleichung einer Rechnung:* उत्तमर्णाधमर्णयोर्द्रव्यविशुद्धौ Gaudap. zu Sâṁkhjak. 66. वैर° so v. a. *Rache* Râǵa-Tar. 4,283. — 3) *vollkommenes Klarwerden*, *klare Erkenntniss* Bhâg. P. 2,9,4. 10,2. — 4) = सम Viçva im ÇKDr.

विशुद्धिचक्र n. *ein best. mystischer Kreis:* कण्ठे °चक्रं तु धूम्रवर्णं विराजते Verz. d. Oxf. H. 149,*b*,36.

विशुद्धेश्वर und °तन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 104,*a*, 22. 95,*b*,14. fg. Verz. d. B. H. No. 1057.

विशुष्कं (2. वि + शुष्क) adj. P. 6,2,144, Schol. *ausgetrocknet*, *verdorrt*, *dürr:* द्रुम Kathâs. 56,20. कण्ठ Ṛt. 1,15. वातातपविशुष्काङ्ग R. Gorr. 2,28,34. Mâlatîm. 78,4. Personen MBh. 12,7926.

विशूचिक und विशूचिका s. u. विषूचिका.

विशून्य (2. वि + शू°) adj. (f. आ) *ganz leer:* °विपणापणा R. Gorr. 2,68,53. 85,24. दिश: MBh. 8,4621.

विशूल (2. वि + शूल) adj. *ohne Spiess* Ragh. 15,5.

विशृङ्खल (2. वि + शृ°) adj. *entfesselt*, *zügellos*, *unbändig*, *keine Schranken kennend;* von Personen Spr. (II) 1241. Kathâs. 5,3. उद्दामचिरोन्माद° 73,380. भितुपततयै लोको ह्युष्यन्नासीद्विशृङ्खलः Râǵa-Tar. 8,801. 813. 2233. त्रपाकोपशङ्काभिः 820. मनस् 2128. चेष्टित Kathâs. 5,28. मुखरविशृङ्खलमेखला so v. a. *über alle Maassen geschwätzig*, — *tönend* Git. 2,16. °पदस्थिति Kathâs. 38,115. राज्ञपथा उपप्लवविशृङ्खला: so v. a. *über die Maassen reich an* Râǵa-Tar. 8,744. — Vgl. उद्दाम.

विशृङ्ग (2. वि + शृङ्ग) adj. 1) *eines Hornes* oder *der Hörner beraubt* Hariv. 4154. निःशृङ्ग die neuere Ausg. — 2) *des Gipfels beraubt:* पर्वत MBh. 7,6900.

विशेष (von शिष् mit वि) 1) m. (n. Pańkat. 117, 2) mit कृत u. s. w. componirt gaṇa श्रेण्यादि zu P. 2, 1, 59. am Ende eines adj. comp. f. आ, z. B. P. 1, 1, 49, Schol. *a) Unterschied, Verschiedenheit; Besonderheit, Eigenthümlichkeit; Art, Species, Individuum;* = अन्तर Halâj. 5, 85. = व्यक्ति H. 1515. यथा ज्ञानपदीषु विद्यातः पुरुषविशेषो भवति Nir. 1, 16. सोमो वृपविशेषैरोषधिश्चन्द्रमा वा 11, 5. विधि° Kâtj. Çr. 4, 3, 8. गुण°, फल° 1, 10, 11. Âçv. Gṛhj. 4, 8, 17. Jogas. 1, 22. Ṛv. Prât. 13, 3. कर्म° 18. 17, 16. उपसर्गो विशेषकृत् 12, 8. P. 1, 2, 65. निर्विशेषो विशेषः Spr. 2722. Varâh. Bṛh. S. 1, 4. 75, 2. Kathâs. 96, 37. स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषो ऽस्ति कश्च न M. 9, 26. 133. 139. MBh. 12, 6939. R. 2, 59, 17. Çâk. 100, 7. Spr. 1482. P. 4, 4, 38, Schol. को विशेषस्तदा तस्य वन्यैरन्यमहीरुहैः Spr. (II) 1580. पल्लवतः कल्पतरोरेष विशेषः करस्य ते Kuvalaj. 74, *b.* न मे विशेषः पुत्रेषु स्वेषु पाण्डुसुतेषु वा MBh. 1, 142. R. 2, 22, 17. R. Gorr. 2, 6, 32. पात्रस्य हि विशेषेण so v. a. *je nach der Würdigkeit der Person* Spr. 4525. पात्रापात्रविशेषेण 2088 (II). कर्मविशेषेण M. 11, 52. Varâh. Bṛh. S. 4, 4. 54, 2. अश्वः शस्त्रम् u. s. w. पुरुषविशेषं प्राप्ता भवन्त्ययोग्याश्च योग्याश्च *je nachdem sie diesem oder jenem zu Theil werden* Spr. (II) 735. अविशेषेण *ohne Unterschied* M. 8, 192. Bhâg. P. 5, 20, 6. अविशेषात् dass. Kâtj. Çr. 1, 1, 3. 7. 3, 29. 6, 9, 20. 18, 6, 30. अ° adj. *nicht unterschieden* 7, 5, 23. Ṛv. Prât. 13, 17. Spr. 4265. *Besonderheit,* Gegens. सामान्य Kaṇ. 1, 2, 3. 5. Jogas. 1, 49. Njâjas. 1, 1, 23. Tarkas. 4. Madhus. in Ind. St. 1, 18, 28. 19, 8. Sarvadarçanas. 12, 21. 105, 3. 7. 22. Verz. d. Oxf. H. 240, *a,* No. 583. ज्ञानं नराणामधिको विशेषः Spr. (II) 1077. विशेषं ज्ञातुमिच्छामि मातॄणां तव *das Eigenthümliche, das wodurch sie sich von einander unterscheiden* R. 2, 92, 18 (101, 20 Gorr.). अभिः शृगालाः सदृशाः फलेन विशेष एषां शिशिरे मदाप्तिः Varâh. Bṛh. S. 90, 1. अर्घविशेषाः *die verschiedenen Preise* 42, 2. तपोविशेषाः M. 2, 165. दण्डविशेषाः 8, 119. Bhag. 11, 15. Kumâras. 1, 36. Pańkat. 113, 9. 114, 25. 247, 11. Hit. 25, 16. 26, 16. व्रत ist ein विशेष von वृत; रै, धन, विद्या, अश्व, गो von स्व *Besitz;* पुष्यमित्र (N. pr. eines Fürsten) von राजन् *Fürst* Vârtt. zu P. 1, 1, 68 nebst Scholl. स्वरूपम्, पर्यायाः, विशेषाः *das Wort selbst, seine Synonyme und seine Species* Siddh. K. zu P. 4, 4, 35. Schol. zu 2, 4, 23. क्षण ist ein काल° *ein best. Zeittheil* AK. 3, 4, 13, 50. अहोरात्रात्तान्कालविशेषान् Bhâg. P. 4, 29, 54. अवस्था ist ein विशेषः कालिकः AK. 1, 1, 4, 7. और्वाभिधस्य हव्याशविशेषस्य *eine Art von Feuer* Râǵa-Tar. 5, 416. छन्दो° *ein best. Metrum* AK. 3, 4, 14, 74. नद° 3, 4, 103. अर्थ° *eine bestimmte Bedeutung* Vop. 21, 17. शृगाल° *ein besonderer Schakal* Pańkat. 63, 2. दशा° Hit. 36, 5. तपस्वि° Vet. in LA. (III) 10, 7. अतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान् so v. a. *mannichfache Gegenstände* M... 38. प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः 65. दंशमशकवाता...प्रभृतिभिर्विशेषैः Suçr. 1, 67, 6. येन येन विशेषेण *auf jede beliebige Weise* Spr. 4893. Nicht selten steht विशेष im comp. voran: °मण्डन *ein besonderer Schmuck* Çâk. 133. विशेषार्थ *eine specielle Bedeutung* P. 1, 4, 93, Schol. °नियम MBh. 2, 849. °गुण Nilak. 52. °वृत्ति Tattvas. 43. °लिङ्ग Kaṇ. 1, 2, 17. °फल Varâh. Bṛh. S. 50, 20. °पक्षिवधप्रायश्चित्त *für das Tödten der einzelnen Vögel* Verz. d. Oxf. H. 281, *b,* 20. fg. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 109. fg. °दान Verz. d. Oxf. H. 85, *b,* 27. — *b) eine specifische Eigenschaft:* विशेषाः पञ्च भूतानाम् MBh. 14, 984. 1404. अविशेष आत्मनि Bhâg. P. 1, 10, 21. 4, 9, 13. — *c) ein auszeichnender Unterschied, Superiorität, Vorzüglichkeit:* संस्कारस्य beim Brahmanen M. 10, 3. रातसानाम् R. 5, 29, 5. प्राप्तुं विशेषं मनुजैः *einen Vorsprung vor anderen Menschen* Spr. 4319. ज्ञानात् Nilak. 31. विशेषार्थिन् (vgl. विशेषार्थिता *das Bedürfniss nach etwas Besserem* Pańkat. ed. orn. 6, 12. fg.) MBh. 1, 5094. विशेषोपचये 5229. अशक्नुवन्विशेषाय 14, 108. शोभाविशेषाय *zur Erhöhung der Schönheit* Râǵa-Tar. 8, 2123. विशेषं चैव कर्तास्मि so v. a. *etwas Ausserordentliches, Ungewöhnliches* MBh. 14, 2869. °करण *das Bessermachen* Mâlav. 5. प्रायः क्रियासु महतामपि दुष्करासु सोत्साहता (ein Wort) कथयति प्रकृतेर्विशेषम् Kathâs. 25, 296. ततः स ब्राह्मणां यं यमानिनाय पुरोहितः । विशेषेच्छानिभात्तं तं अदूधे न स माधवः ॥ *unter dem Vorwande, dass er einen Vorzüglicheren wünsche,* 24, 140. तत्ते महान्विशेषो भविष्यति *dann wird dir ein ganz besonderer Vorzug zu Theil werden* Pańkat. 162, 9. तेजोविशेष *ein ausserordentlicher —, vorzüglicher Glanz* Ragh. 2, 7. अनुभाव° 1, 37. प्रभा° 6, 5. रत्न° 16, 1. आकृति° Çâk. 80, 7. 8. सत्क्रिया° 97, 2. प्रसाधनविधेः प्रसाधनविशेषः Vikr. 22. मणि° 142. इक्षोरग्रात्क्रमशः पर्वणि पर्वणि यथा रसविशेषः Spr. (II) 1088. पात्र° (I) 1785. कविज्ञानविशेषैः 3297. Râǵa-Tar. 4, 423. 5, 306. Auch voranstehend im comp.: °प्रतिपत्तिभिः *mit ausserordentlichen Ehrenbezeigungen* Ragh. 15, 12. °विक्रमरुचि Spr. 3159. विशेषेण *gar sehr, vorzüglich, vornehmlich, besonders, vor Allem, zumal* M. 7, 150. 11, 11. MBh. 3, 1855. 2126. R. 1, 77, 28. 4, 35, 12. Kâm. Nitis. 11, 57. Spr. (II) 900. 2364. Çâk. 66, 5. Varâh. Bṛh. S. 90, 4. Kathâs. 24, 204. 33, 75. Mârk. P. 75, 38. Brahma-P. in LA. (III) 56, 16. Prab. 62, 9. Pańkat. 142, 15. विशेषात् dass. Çâk. 120. Spr. 1542. 2299. 2848. Kathâs. 72, 332. Pańkat. 109, 19. fg. विशेष im comp. vor einem adj. in der Bed. von विशेषेण oder विशेषात्: °पतनीय Jâǵń. 3, 298. यौवनोद्भेदविशेषकान्त Ragh. 5, 38. °दृश्य 6, 31. °रमणीय Vikr. 65, 18. °गर्हणीय Spr. 2813. विशेषाभद्य Verz. d. Oxf. H. 281, *b,* 26. Hierher gehört auch das mit प्रभावात् gleiche Bedeutung habende विशेषात् *in Folge von:* अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपि शिरः किलासुरस्येदम् u. s. w. Varâh. Bṛh. S. 5, 1. — *d)* in der Med. *Unterschied in Beziehung auf das Befinden: Milderung, Erleichterung* Suçr. 2, 376, 8. 10. im Prâkrit Çâk. 41, 2. — *e)* in der Rhetorik *Specialisirung, Variirung:* यदेकं वस्त्वनेकत्र वर्ण्यते, z. B. अन्तर्बहिः पुरः पश्चात्सर्वदिक्ष्वपि सैव मे Kuvalaj. 110, *a.* — *f) ein unterscheidendes Sectenzeichen, Stirnzeichen* überh. (= तिलक) Hâr. 257. — *g)* Bez. *der Elemente* (महाभूत): महदाद्यं विशेषान्तं लिङ्गम् Maitrjup. 6, 10. Sâṁkhjak. 38. 41. 56. VP. bei Muir, ST. 4, 34. sg. *Erde als Element* Bhâg. P. 2, 5, 29. 3, 11, 39. 4, 24, 39. 5, 12, 9. Bez. *des Welteis:* एतदण्डं विशेषाख्यम् 3, 26, 52. = विराज् 2, 1, 24. 2, 28. विशेषाः = सूक्ष्मा मातापितृजाः सह प्रभूतैः Sâṁkhjak. 39. अविशेषाः = तन्मात्राणि 38. — 2) adj. *vorzüglich, ausserordentlich:* आसीद्विशेषा फलपुष्पवृद्धिः Ragh. 2, 14. ed. Calc. wohl richtiger विशेषात्. — विशेषवेश्म MBh. 5, 7521 fehlerhaft für विवेशवेश्म, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. निर्विशेष, भगवद्विशेष, स°, वैशेषिक.

विशेषक 1) am Ende eines adj. comp. = विशेष 1) *a) Besonderheit:* सामान्यं सविशेषकम् Bhâshâp. 1. — 2) (vom caus. von शिष् mit वि) *a)* adj. *einen Unterschied bezeichnend, specialisirend* H. an. 4, 34. Med. k. 213. Kusum. 11, 17. — *b)* m. n. *Stirnzeichen* (s. तिलक) AK. 2, 6, 3, 24.

Trik. 3,2,23. 3,43. H. 653. H. an. Med. Halâj. 2,386. R. 7,26,17. Çiç. 3,63. 10,84. Daçak. 91,6. am Ende eines adj. comp. Mâlav. 40. Spr. (II) 1035. Kathâs. 104,113. विप्रनष्टविशेषका R. 3,55,6. 58,45. — c) m. α) *eine best. Redefigur, in der zwei Gegenstände beim ersten Anblick als gleich, schliesslich aber doch als verschieden hingestellt werden*, Kuvalaj. 143,*b*. 144,*a* (170). Beispiel Spr. (II) 1612. — β) N. pr. eines Gelehrten Târan. 149. — *d*) f. विशेषिका *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑— ⏑⏑—⏑⏑—⏑— Colebr. Misc. Ess. II,160 (VI,16). — *e*) n. *eine Verbindung von drei* Çloka, *durch welche ein und derselbe Satz durchgeht:* त्रिभिर्विशेषकम् Çatr. S. 54. 61. — Vgl. पत्त्र° (auch Ragh. 9,32).

विशेषकच्छेद्य n. unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,2. wohl *die Kunst Stirnzeichen zu malen*.

विशेषज्ञ adj. *den Unterschied der Dinge kennend* so v. a. *Urtheilskraft —, Einsicht besitzend* Spr. (II) 105 (Gegens. अज्ञ). (I) 2985. Kathâs. 25,127. Hit. 129,9. वाग्विशेषज्ञ *sich auf mannichfache Reden verstehend, redefertig* R. 2,81,1. अविशेषज्ञता f. *Mangel an Urtheilskraft, Unverstand* Kathâs. 49,223.

विशेषण (vom caus. von शिष् mit वि) 1) adj. *unterscheidend, einen Unterschied ausdrückend, specialisirend;* n. *das näher Bestimmende, Attribut, Adjectiv, Apposition, Prädicat:* विशेषाः पञ्च भूतानां तेषां चित्तं विशेषणम् MBh. 14,1404. एतद्विशेषणं तात मनोबुद्ध्योर्यदन्तरम् 3,12515. स मे भवान् शंसतु सर्वमेतत्सामान्यशब्देश्च विशेषणैश्च 12,7374. तच्च स्वशब्दाकारस्य विशेषणम् P. 7,3,47, Schol. Tarkas. 26. कर्म° Suçr. 1,247, 4. Schol. zu Kâtj. Çr. 1,4,19. 4,3,9. Vedântas. (Allah.) No. 96. 98. Sarvadarçanas. 62,19. 101,22. 104,9. 119,22. Verz. d. Oxf. H. 193,*a*,29. Vop. 5,9. Bhâg. P. 5,18,30. P. 1,2,52. 2,1,57. 3,35. Weber, Râmat. Up. 343. Vikr. 20,3. सविशेषणमाख्यातं वाक्यम् *ein Verbum finitum mit seinen Ergänzungen und näheren Bestimmungen heisst Satz* H. 242. विशेषणता Bhâshâp. 60. Kusum. 40,13. Verz. d. Oxf. H. 240,*a*, No. 581. — 2) n. *Art, Species* (= विशेष): नानाप्रहरणैर्नानायुद्धविशेषणैः MBh. 7, 1124. P. 2,2,8, Vârtt. 3. — 3) n. *das Unterscheiden, Unterscheidung* Sâh. D. 4,1. 452. ककारो नः क्व इति विशेषणार्थः P. 3,1,8, Schol. 4,1, 2, Schol. Bhâg. P. 3,26,46. 33,25. Sarvadarçanas. 127,17. fg. *das Specialisiren, genauere Angabe* Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,5. 56,*a*,13. क्ि स्याद्विशेषणे Halâj. 5,95. — 4) n. *das Bessermachen, Uebertreffen:* अस्य काव्यस्य कवयो न समर्था विशेषणे। विशेषणे गृहस्थस्य शेषास्त्रय इवाश्रमाः॥ MBh. 1,73. 653. — 5) n. = विशेषोक्ति Sâh. D. 434. — Vgl. क्रिया°, निर्विशेषण.

विशेषणीकर् (विशेषण + 1. कर्) *zum Unterscheidenden machen:* हेतुविशेषणीकृतत्व Kusum. 33,12.

विशेषतस् (von विशेष) 1) am Ende eines comp. *je nach der Verschiedenheit:* विद्या° M. 11,2. कर्मविद्या° 12,41. विशेषतस् so v. a. विशेषस्य *der Besonderheit* Kan. 4,1,4. धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतस् so v. a. *Röthel ist aber eine Species davon* AK. 2,3,8. अ° *ohne Unterschied* M. 9,125. R. 2,52,33. 77,23. Kathâs. 37,5. — 2) adv. = विशेषेण, विशेषात् *vorzüglich, vornehmlich, besonders, vor Allem, zumal* M. 2,226. 4,209. 5,21. 7,55. 8,323. 12,93. Jâǵn. 1,203. MBh. 1,5986. 3, 2175. 2366. 2636. 2638. 2777. 5,5441. 5972. 7299. R. 1,4,16. 10,36. 54, 11. 59,13. 2,21,60. 26,26. 31,20. 64,22. 31. 73,18. 4,6,18. 14,10. Spr. 2381. 3340. 5089. 5285. Varâh. Bṛh. S. 9,12. 11,9. 25,6. Kathâs. 12,48. 33,5. Prab. 9,3. 84,8. Bhâg. P. 1,17,41. 8,21,12. Pańkat. 47,7. Hit. 36,12. 57,12. 89,22.

विशेषता (von विशेष) am Ende eines comp.: आरोपित° (वाचः) nom. abstr. von आरोपितविशेष H. 70.

विशेषत्व (wie eben) n. *Unterschiedenheit, Besonderheit* Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,16. *der Begriff der Besonderheit* (Gegens. सामान्यत्व) Kusum. 30,12.

विशेषमति m. N. pr. eines Mannes Lot. de la b. l. 2. 12. eines Bodhisattva Râshṭrapâlapar. 2.

विशेषमित्र m. N. pr. eines Mannes Vjutp. 91. Târan. 204.

विशेषयितर् (vom caus. von शिष् mit वि) nom. ag. *der da unterscheidet, einen Unterschied macht* Med. k. 213.

विशेषवचन n. *Adjectiv, Apposition* P. 8,1,74.

विशेषवत् (von विशेष) adj. 1) *etwas Speciellem nachgehend, etwas Besonderes thuend* MBh. 2,849. — 2) *mit specifischen Eigenschaften versehen* Bhâg. P. 3,26,10. — 3) *vorzüglicher, besser:* यत्ते कृतं कर्म विशेषवद्धि ततः। करिष्ये MBh. 1,5387. 12,12866. Hariv. 1032. mit instr. (pl.) MBh. 8,1525. — 4) *unterscheidend:* अ° *keinen Unterschied machend zwischen* (loc.) Jâǵn. 3,154.

विशेषविद् adj. = विशेषज्ञ Spr. 4755.

विशेषिन् (von शिष् mit वि oder von विशेष) adj. 1) *von Andern geschieden, individuell* Bhâg. P. 3,10,18. — 2) *zuvorthuend, wetteifernd:* परस्परविशेषिणः Hariv. 11899.

विशेषोक्ति (विशेष + उ°) f. *eine best. Redefigur: Hervorhebung der Verschiedenheit zweier im Uebrigen einander ähnlicher Dinge* Sâh. D. 452. 106,11. Verz. d. Oxf. H. 208,*b*,21. Kuvalaj. 98,*a*.

विशेष्य (vom caus. von शिष् mit वि) adj. *was unterschieden —, specialisirt wird;* n. *Substantiv, Subject* Tarkas. 26. Sarvadarçanas. 62,19. Vedântas. (Allah.) No. 96. 98. P. 2,1,57. 8,1,74, Schol. Vop. 3,145. Trik. 3,1 in der Unterschr. Verz. d. Oxf. H. 183,*a*,20. 191,*b*,27. 192,*a*,32.*b*, No. 437. Kusum. 26,2.3. विशेष्यता 25,19. विशेषणविशेष्यता (das suff. gehört zu beiden Worten) Sarvadarçanas. 62,19. विशेष्यक am Ende eines adj. comp. Kusum. 29,19. Wilson, Sâńkhjak. S. 47. Bhâshâp. 134.

1. विशोक (2. वि + शोक) m. *das Weichen des Kummers:* सुहृदां विशोकाय Bhâg. P. 1,10,7. 3,23,52.

2. विशोक (wie eben) 1) adj. (f. आ) *kummerlos* d. i. sowohl *keinen Kummer empfindend* als auch *von Kummer befreiend, Kummer fern haltend* Ait. Br. 7,13. Ḱhând. Up. 8,7,1 (Sarvadarçanas. 54,22. fg.). Maitrjup. 6,25. Çâńkh. Çr. 15,17,16. Kaivaljop. bei Muir, ST. 4,304. MBh. 2,291. 3,2503. 16884. 7,187. 2729. 13,80. 15,813. Hariv. 1155. 9021. R. 2,96,28 (105,27 Gorr.). R. Gorr. 1,1,94. 5,35,36. 6,95,20. Kumâras. 6,92. Kathâs. 119,198. Bhâg. P. 1,15,31. 3,24,34. 7,10,62. ब्रह्मन् n. 2,7,48. 8,12,7. नाक Ḱhând. Up. 2,10,5. लोकाः MBh. 1,3659. Bhâg. P. 1,19,21. 4,14,15. 25,39. पुष्करिणी MBh. 3,12720. खड्गाजयः Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,38. °त्ता *keinen Kummer schildernd, — vorführend* Sâh. D. 416. — 2) m. *a*) *Jonesia Açoka* (s. अशोक) Aush. 6. — *b*) N. pr. α) eines Ṛshi Ind. St. 3,236,*b*. Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,25. —

β) des Wagenlenkers des Bhîma MBh. 2,1234. 6,2825. 2827. 3355. fgg. 8,3836. fgg. — γ) eines Dânava Kathâs. 47,22. — δ) eines Gebirges Mârk. P. 59,13. — 3) f. श्रा a) (sc. सिद्धि) Bez. *einer der Vollkommenheiten, zu denen man durch den* Joga *gelangt*, Sarvadarçanas. 168,19. सर्वभावाद्यधिष्ठातृत्वादिरूपा (so ist zu lesen) विशोका सिद्धिः 179, 9. fg. विशोका वा ज्योतिष्मती (Jogas. 1,36) 14. Verz. d. Oxf. H. 231,b,34. VP. 45, N. 5. — b) N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2623. — 4) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,236,b. — Vgl. पारे°.

विशोकता (von 2. विशोक) f. *Kummerlosigkeit* MBh. 12,8215. Mârk. P. 33,14.

विशोकदेव m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 280,b,3.

विशोकद्वादशी f. Bez. *eines best. 12ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34,b,18.

विशोकपर्वन् n. Bez. des 13ten *Buches* des MBh. bei dessen Eintheilung in 20 Bücher Ind. St. 2,138. Verz. d. B. H. No. 389. 397. Verz. d. Oxf. H. 2,a,8.

विशोकषष्ठी f. Bez. *eines best. 6ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 34, a, 39.

विशोकसप्तमी f. Bez. *eines best. 7ten Tages* Verz. d. Oxf. H. 41,a,17.

विशोकीकर् (विशोक + 1. कर्) *vom Kummer befreien*: °कृत Verz. d. Oxf. H. 280,b,4.

विशोठ्वह्नि (?) neben शोठाह्निदंश (?) Kathâs. 46,121.

विशोधन (vom caus. von शुध् mit वि) 1) adj. *reinigend, wegwaschend*: स्रोतो°, शुक्र° Suçr. 1,182,12. वस्ति° 188,14. *purgantia* 2,22,3. मल° R. 1,26,19 (27,18 Gorr.). कामक्रोधादिनिःशेषमनोमल° Pańkar. 4,3,176. unter den Beiww. Vishṇu's MBh. 13,7017. श्रात्म° (Vishṇu) Bhâg. P. 5,18,2. — 2) f. ई a) *Croton polyandrum Roxb.* oder *Croton Tiglium Lin.* (*purgirend*) Râǵan. im ÇKDr. — b) *die Residenz* Brahman's Çabdârthak. bei Wilson. — 3) n. a) *das Reinigen, Ausputzen*: मूत्रमार्ग° Suçr. 1,25,8. 16. 93,10. 156,2. der Bäume (durch Ausschneiden von dürren Zweigen u. s. w.): शस्त्रेण Varâh. Bṛh. S. 55,15. *Reinigung* in kirchlichem Sinne M. 11,143. 156. 165. 200. Jâǵn. 3,24. — b) *Subtraction*: दानविशोधने *Addition und Subtraction* Varâh. Bṛh. 26(24),11.

विशोधिन् (von शुध् mit वि) 1) adj. *reinigend*; davon विशोधित्व n. *das Reinigen*: दिङ्मार्गाणाम् Spr. 4585. — 2) f. °शोधिनी *Tiaridium indicum Lehm.* Râǵan. im ÇKDr.

विशोधिनीबीज n. *Croton Jamalgota Hamilt.* Râǵan. im ÇKDr.

विशोध्य (vom caus. von शुध् mit वि) adj. 1) *zu bereinigen, abzutragen*; n. *Schuld* Vop. 26,101. — 2) *zu subtrahiren*: चलाद्विशोध्यः — घुचरः Golâdhj. 6,24.

विशोविशीय n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,236,b. Pańkav. Br. 14,4,36. Lâṭj. 6,11,8. 12,11. श्रग्नेर्वि° Ind. St. 3,201,a.

विशोष (von शुष् mit वि) m. *Trockenheit* Suçr. 1,67,7.

विशोषण (vom caus. von शुष् mit वि) 1) adj. *trocknend, trocken machen*: श्रश्रुसागर° Bhâg. P. 3,28,32. श्रस्त्र MBh. 3,12139. व्रण° so v. a. *heilen machend* Çâk. 89, v. l. — 2) n. *das Trocknen, Trockenmachen* Suçr. 2,25,8. यशोवर्माद्रिवाहिन्याः (*Fluss* und *Heer*) तणात्कुर्वन्विशोषणम् Râǵa-Tar. 4,134. — Vgl. तालु°.

विशोषिन् adj. 1) *austrocknend, dürr werdend*: शस्यानामविग्रहविशोषिणाम् Ragh. 1,62. — 2) *trocknend, trocken machend* Suçr. 1,64, 9. 197,10. कफमेदो° 232,3. Verz. d. Oxf. H. 234,b,30.

विशौजस् adj. VS. Prât. 5,39. nach der Analogie von सत्यौजस् falsch gebildet st. विडौजस्, etwa *volkwaltend* VS. 10,28.

विश्वकद्राकर्ष (वि° + श्राकर्ष) m. *Hundezüchtiger* oder *Züchtiger eines Hundehalters* (Durga) Nir. 2,3. — Vgl. विश्वकद्रु.

विश्न m. nom. act. von विक्ष् P. 3,3,90. Schol. zu 6,4,19 und 8,4,44. Vop. 26,180.

विश्पति (2. विश् + प°) m. AV. Prât. 4, 60. *Haupt einer Niederlassung: Hausherr, Gemeindehaupt, Stammältester*: जुजुर्वान् Ṛv. 1,37,8. सप्तपुत्र 164,1. विश्पतेव (VS. Prât. 4, 23. 86) 7,39,2. 55,5. 9,108,10. रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन् 10,4,4. श्रत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ श्रनु वेनति 135,1. TS. 2,3,1,3. Agni Ṛv. 1,12,2. 26,7. त्वामग्ने दम श्रा विश्पतिं विशस्त्वा राजानमृञ्जते 2,1,8. 3,2,10. विशाम् 13,5. Indra 3,40, 3. विश्पतयः Bhâg. P. 10,20,24 nach dem Comm. entweder = राजानः oder वणिजां पतयः.

विश्पत्नी f. zu विश्पति AV. Prât. 4,60. Ṛv. 2,32,7. 3,29,1. TBr. 1,2,1,13.

विश्पला f. N. pr. eines Weibes, welchem die Açvin das abgerissene Bein wieder anheilen oder durch ein ehernes ersetzen, Ṛv. 1,112,10. 116,15. 117,11.

विश्पलावसु adj. nach Sâj. = विशां पालयितृधनौ, Bez. der Açvin Ṛv. 1,182,1.

विश्य (von 2. विश्) 1) adj. *eine Gemeinde* u. s. w. *bildend, zur Gemeinde gehörig* u. s. w.: व्राः Ṛv. 1,126,5. जन्य, विश्य 10,91,2. — 2) m. *ein Mann vom Volke* oder *von der dritten Kaste* AV. 6,13,1. VS. 18,48.

विश्यापर्ण adj. *ohne die* Çjâparṇa's *vor sich gehend* Ait. Br. 7,27.

विश्रंसन s. विस्रंसन.

विश्रपण n. = विश्रापण Çabdar. im ÇKDr.

विश्रम (von श्रम् mit वि) m. = विश्राम Vop. 26,170. Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDr. *Ruhe, Erholung*: (कुटुम्बी) पुत्रैरुपहृतभरः कल्पते विश्रमाय Vikr. 42. श्रनुज्ञात° adj. Çâk. 32,11, v. l. श्रविश्रमो ज्यं लोकतन्त्राधिकारः 60,19, v. l.

विश्रमण (wie eben) n. *das Ausruhen, Erholung* MBh. 12,5848. Kathâs. 101,64. Bhâg. P. 10,59,45 = 61,6.

विश्रम्भ (von श्रम्भ् mit वि) m. 1) *das Nachlassen* Ṛv. Prât. 3,1. — 2) *Vertrauen; vertrautes Benehmen, Vertraulichkeit*; = विश्वास AK. 2,8,1,23. Trik. 3,3,290. H. 1518. an. 3,459. Med. bh. 20. Halâj. 4,84. = प्रणय AK. 3, 4,22,138. 24,154. Trik. H. an. Med. — श्रविश्रम्भेण (श्रविश्रम्भे न v. l.) गन्तव्यं विश्रम्भे धारयेन्मनः MBh. 12, 6965. 14,1047. Bhâg. P. 3,23,2. 7,6, 30. विश्रम्भात्प्रियतामेति विश्रम्भात्कार्यमृच्छति। विश्रम्भेण हि देवेन्द्रो दितेर्गर्भमघातयत्॥ Spr. 2849. प्रेमविश्रम्भपेशलम् Kathâs. 29,8. प्रीतिविश्रम्भभाजनम् Hit. 43,6. विश्रम्भेण प्रविश्यताम् R. Gorr. 1,75,14. विश्रम्भार्ह (स्वैरालाप) Spr. 1836. दुष्टामात्येषु MBh. 5,1483. 12,5100. Spr. 1432. दर्शपूर्णमासादिवाक्येषु Çańk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 184. विश्रम्भाद्यस्य Spr. 2580. यद्विश्रम्भात् Bhâg. P. 9,14,29. द्वैते ध्रुवार्थविश्रम्भं त्यज 6, 15,26. विश्रम्भं कुरु मे MBh. 1,6051. विश्रम्भस्ते न कर्तव्यस्तेषु R. 1,9, 50 (49 Gorr.). Spr. (II) 389. कृत° adj. Bhâg. P. 4,22,15. विश्रम्भं लभते R. 2,60,7. श्रप्राप्य विश्रम्भं प्रभविष्णुषु Spr. (II) 483. तस्य विश्रम्भमालभ्य Kâm. Nîtis. 9,63. यथा विश्रम्भमाप्नुयात् 64. विश्रम्भं जग्मुः *fassten*

Vertrauen MBH. 5,5424. विश्रम्भस्तु न गन्तव्यो बह्लवानाम् 3,14825. यदा त्वयि विश्रम्भमेष्यति KATHÂS. 12,66. तस्य विश्रम्भास्पदं ययौ 7,81. एके न मनसो ऽद्धा विश्रम्भमनवस्थानस्य शठकिरात इव संगच्छते BHÂG. P. 5,6,2. नीत्वा विश्रम्भम् KATHÂS. 104,59. समुत्पन्नविश्रम्भा 1,21. संजात° 18,215. श्राद्धत्सर्वभूतेषु विश्रम्भं परमं शुभम्। जलचरेषु सर्वेषु शीतरश्मिरिव प्रभुः ॥ MBH. 13,2645. विधायालीकविश्रम्भमह्नेषु *Vertrauen an den Tag legen* Spr. 5303. °संसुप्त KÂM. NITIS. 18,64. (मन्त्राः) अविश्रम्भेषु वर्तन्ते विश्रम्भेष्वप्यसंशयम् so v. a. *was man nicht mit Vertrauen erwartet und was man vertrauensvoll erwartet* MBH. 12,9648. भार्यायाः — रतान्तविश्रम्भजुषः *Vertraulichkeit* KATHÂS. 19,30. (तम्) मल्लस्वैरकथास्वेषु विश्रम्भेषु व्यवर्तयत् RÂGA-TAR. 8,2069. विश्रम्भात् *vertraulich* MBH. 6,3514. HARIV. 5269. MṚKKH. 55,13. KATHÂS. 31,1. BHÂG. P. 3,4,24. 12,29. 20, 33. °भृत्य *ein vertrauter Diener* RÂGA-TAR. 8,2121. विश्रम्भालापाः *vertrauliche Gespräche* HIT. 21,4. 25,17. 29,12. °कथितानि ÇÂK. 33,3. सविश्रम्भवयस्या *vertraut* KATHÂS. 45,243. सविश्रम्भाः कथाः *vertraulich* 13,13. — 3) *ein scherzhafter Streit* (केलिकलह) TRIK. H. an. MED. — 4) *Tödtung* (वध) H. an. VIÇVA im ÇKDR. — Wird auch विस्रम्भ geschrieben, in den Bomb. Ausgg. aber nur ganz ausnahmsweise.

विश्रम्भण (von श्रम्भ् mit वि simpl. und caus.) n. 1) *Vertrauen:* गोपविश्रम्भणं गतः *er gewann das Vertrauen der Hirten* BHÂG. P. 10,24,35. — 2) *das Gewinnen des Vertrauens:* कन्या° Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,34. DAÇAK. 189,16.

विश्रम्भणीय adj. *Vertrauen einflössend:* भूतानाम् BHÂG. P. 6,2,6.

विश्रम्भता f. = विश्रम्भ 1): विश्रम्भतां गम् *Vertrauen gewinnen* R. 5,84,4.

विश्रम्भिन् (von श्रम्भ् mit वि und von विश्रम्भ) adj. P. 3,2,143. 1) *vertrauend, Vertrauen setzend in:* गुण° BHÂG. P. 6,5,20. SÂH. D. 284, 6. अ° *misstrauend* BHAṬṬ. 7,11. — 2) *Vertrauen geniessend* MBH. 1, 5845. Spr. 3851. — 3) *vertraulich:* कथा KATHÂS. 17,2.

विश्रयिन् adj. von श्रि mit वि P. 3,2,157.

विश्रवण (Nebenform von विश्रवस्) m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — Vgl. वैश्रवण.

वि॑श्रवस् (2. वि + श्र॰) 1) adj. *berühmt* TBR. 3,6,2,2. ÇAT. BR. 12,8, 2,26. KÂTJ. ÇR. 19,5,3. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi, Sohnes des Pulastja und Vaters des Kubera, Râvaṇa, Kumbhakarṇa und Vibhîshaṇa, MBH. 3,8358. 15885. 15889. 13,7638. HARIV. 13858. R. 1, 22,17 (23,18 GORR.). 3,53,30. 6,38,9. 7,2,31. fgg. BHÂG. P. 4,1,36. 7, 1,43. 9,2,32. 10,15.

विश्राणन (vom caus. von श्रण् mit वि) n. *das Verschenken, Verleihen* AK. 2,7,29. H. 387. an. 4,191. HALÂJ. 2,264. अन्यपयस्विनीनाम् RAGH. 2,54. वित्त° R. GORR. 2,32 in der Unterschr. निर्वाण° KÂÇIKH. 7,84 (nach AUFRECHT). Nach H. an. auch = परित्याग und संप्रेषण.

विश्राणिक, चित्रविश्राणिक m. Titel des 32ten Sarga im 2ten Buche des R.: वित्तविश्राणन st. dessen GORR.

विश्रान्ति (von श्रम् mit वि) f. 1) *Ruhe, Erholung:* जीर्णस्यास्य शरीरस्य विश्रान्तिमभिरोचये R. 2,2,6. विश्रान्तिं लभ् VIKR. 20. संसारश्रान्तचित्तानां तिस्रो °भूमयः Spr. 5107. सेनाविश्रान्त्यै KATHÂS. 20,1. 22,104. 51,172. 61, 330. °कृत् 100,14. RÂGA-TAR. 8,1793. SARVADARÇANAS. 96,10.14. °तस् Verz. d. Oxf. H. 238,*b*,13. विश्रान्तिं लभतामिदं धनुः ÇÂK. 39, v. l. — 2) *das zu-Ende-Gehen, Aufhören, Nachlassen, Schluss:* विश्रान्तिं वासरो (so ist zu lesen) ऽप्यगात् KATHÂS. 123,210. SÂH. D. 95,7. 267. वाक्य° 291,7. — 3) N. pr. eines Tîrtha ÇKDR. nach dem VÂRÂHA-P.; vgl. Verz. d. B. H. 144,16.

विश्राम (wie eben) m. = विश्रम VOP. 26,170. 1) *Ruhe, Erholung* Spr. (II) 1629. MBH. 3,12902. HARIV. 5991. R. 1,41,15. 2,2,8. MEGH. 26. यन्मरणं सो ऽस्य विश्रामः Spr. 2646. VARÂH. BṚH. S. 32,1. KATHÂS. 37,11. 62,5. 63,111. स्वात्म° SÂH. D. 62,19. 76,6. PAÑKAT. 145,9. Z. d. d. m. G. 14,574,17. KULL. zu M. 3,101. विश्रामं या Spr. 2403. अविश्रामम् *ohne auszuruhen* (II) 694. विश्रामं लभतामिदं धनुः ÇÂK. 39. रोगस्य विश्रामभूः *Ruhestätte* Spr. 2641. °वेश्मन् HARIV. 5965. — 2) *Ruhestätte, Ruheplatz* HARIV. 5336. BHÂG. P. 3,23,21. — 3) *das Aufhören, Nachlassen, Ruhe:* नैव रात्रिं न दिवसं न मुहूर्तं न च क्षणम्। रामरावणयोर्युद्धं विश्राममगमत्तदा ॥ R. 6,92,35. वाष्प° UTTARAR. 80,13 (103,13). अवान्तरप्रकरण° H. 255. अविश्रामो ऽयं लोकतन्त्राधिकारः ÇÂK. 60,19. अविश्रामदुःख 89,10, v. l. — 4) *Cäsur* ÇRUT. 15. 19. 36. — 5) N. pr. eines Mannes Ind. St. 1,60.

विश्राव (von श्रु mit वि) m. P. 3,3,25. 1) *Getose:* तोय° BHAṬṬ. 7,36. — 2) *Berühmtheit* AK. 3,3,28.

विश्रि m. 1) *Tod* UṆÂDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. nach ÇKDR. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa गृष्ट्यादि zu P. 4,1,136. pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu 2,4,63. — Vgl. वैश्रेय.

विश्रुत 1) adj. s. u. श्रु mit वि. — 2) m. N. pr. eines Mannes VP. 379, N. 6. DAÇAK. 179. fgg.

विश्रुतदेव m. N. pr. eines Fürsten TÂRAN. 252.

विश्रुतवन्त् 1) *überaus gelehrt*, Beiw. Maru's, Vaters des Bṛhadbala, HARIV. 830. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, Vaters des Bṛhadbala, VP. 387; vgl. u. 1).

1. विश्रुति (von श्रु mit वि) f. *Berühmtheit, Ruhm* BHÂG. P. 3,25,2. 10,29,82. विश्रुतिं गम् *berühmt werden* MBH. 5,4561. — Vgl. लोक°.

2. विश्रुति (von श्रु = स्रु mit वि) f. *Verzweigung* (des Weges oder Wasserlaufes): विश्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्ति रातयः ÇÂÑKH. ÇR. 9,6,6. Unter mystischen Namen der Kuh so v. a. *die nach den Seiten Ausströmende:* voc. °ति VS. 8,43. °ते PAÑKAV. BR. 20,15,15.

विश्लथ (2. वि + श्लथ) adj. *schlaff:* ऐरावतास्फालनविश्लथमङ्गदम् RAGH. 6,73. विश्लथाङ्गम् adv. Spr. 3042. पतत्प्रकर्षं तत्प्राङ्कः प्रकर्षो यत्र विश्लथः PRATÂPAR. 64,*b*,9.

विश्लेष (von श्लिष् mit वि) m. = वियोजन H. an. 3,742. fg. = अयोग MED. sh. 45. = अपाय P. 1,4,24, Schol. = विधुर H. an. MED. HALÂJ. 5,38. 1) *Auflösung, Lostrennung, das Auseinandergehen:* भित्ति° KATHÂS. 2,49. गात्र° SUÇR. 1,37,4. संध्यस्थि° 50,2. संधि° 300,15. 2,268,1. मलमायादिपाशानाम् Verz. d. Oxf. H. 7,*a*, No. 42. संधौ oder संधि° so v. a. *Hiatus* SÂH. D. 575. 221,13. fg. diese Bed. vielleicht auch Ind. St. 1,47. — 2) *Trennung* (von einem geliebten Gegenstande): कान्ता° Spr. (II) 1851. HAEB. Anth. 511, Çl. 5. RAGH. 13,23. ÇÂK. 81. KATHÂS. 16,97. 25,90. 38,77. 51,56. fg. 68,18. 73,439. 86,57. BHÂG. P. 1,15,1. 5,8,22. — 3) in der Arithm. *Differenz* GAṆIT. SÛRJAGRAH. 7. GOLÂDHJ. 5,2. 11,46. — Vgl. चित्त°, रात्रिविश्लेषगामिन्.

विश्लेषण (von श्लिष् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *auflösend* SUÇR.

1,156,1. — 2) n. a) *Trennung:* पादविश्लेषणात्मम Bhâg. P. 3,4,5. — b) *das Auflösen* Suçr. 1,85,9.

विश्लेषिन् adj. 1) *auseinandergehend, sich lösend:* विश्लेषिमुक्ताफलपत्रवेष्ट Ragh. 16,67. गरुडापातविश्लेषि मेघनादास्त्रबन्धनम् ed. Calc. 12, 76. — 2) *getrennt* (vom geliebten Gegenstande): भवत्स्येव च संयोगाश्चिरविश्लेषिणामपि Kathâs. 56,237.

विश्लोक (2. वि + श्लोक) 1) adj. *des Ruhmes baar* Ind. St. 8,315. 317. — 2) m. *ein best. Metrum* ebend. Colebr. Misc. Ess. II,86. 155 (II,2,2).

विश्व Uṇâdis. 1,151. VS. Prât. 2,39. Çânt. 2,6. 1) adj. (f. आ) pronom. Declin. gaṇa सर्वादि zu P. 1,1,27. Vop. 3,9. a) *jeder, alle, sämmtlich, ganz* (in den Brâhmaṇa und später durch सर्व ersetzt) Naigh. 3,1. AK. 3,2,14. Trik. 3,3,421. H. 1433. an. 2,537. Med. v. 23. fg. Halâj. 4,28. जगत् Ṛv. 4,13,3. भुवन 14,2. विशः 5,17,4. द्रविणा 28,2. मरुतः 31,10. विश्वस्य जन्तोः 32,7. त्वमस्य क्षयसि यद्ध विश्वम् 4,5,11. दूतो विश्वेषाम् 9,2. विश्वस्य दूतम् 7,16,1. एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूरि 5,29,14. ओजस् 32,10. दुरिता 7,32,15. रूपाणि 55,1. शक्र एणां पीपयद्विश्वया धिया 8,1,19. पिबा त्वस्यान्धस इन्द्र विश्वासु (nämlich दिक्षु nach Sâj., eher विक्षु) 8,84,2. AV. 1,32,4. 15,3,11. यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा TBr. 3, 1,1,1. विश्वस्य जगतः MBh. 3,14145. विश्वे जगति R. 4,11,10. °विश्वंभरा Verz. d. Oxf. H. 139,b,3. त्वया सृष्टमिदं विश्वं धातर्गुणविसर्जनम् Bhâg. P. 10,16,57. °लोकेषु Spr. 5023. — b) विश्वे देवाः sowohl *alle Götter* als *die so benannte Götterklasse;* s. u. 1. देव 2) b). In Stellen wie विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये *die göttlichen* Marut *insgesammt* Ṛv. 1,23, 10. 19,3 hat man nicht nöthig eine besondere Benennung der Marut anzunehmen. ऐन्द्राग्नं वर्म विश्वे देवा नातिविध्यन्ति सर्वे *alle Götter insgesammt* AV. 8,5,19. Als eine best. Götterklasse Çat. Br. 14,4,2,24. Weber, Ǵjot. 94. Nax. 2,300. 374. MBh. 12,7540. Hariv. 14171. Ind. St. 8,257. fg. Varâh. Bṛh. S. 43,47. विश्वेषां देवानामुद्वंशीयम् und वि° दे° व्रतम् Namen von Sâman Ind. St. 3,237,a. Auch विश्वे allein ohne देवाः AK. 1,1,1,5. H. an. (विश्वे सुरेषु zu lesen). Med. Bhag. 11,22. MBh. 2,303. 3,1768. Hariv. 441. 7573. 11849. Varâh. Bṛh. S. 98,5. 99,1. Bhâg. P. 6,6,15. आदित्यविश्वे 3,14. पितृविश्वसोमाः Varâh. Bṛh. S. 8,23. Sie werden für Kinder der Viçvâ, einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's, angesehen Hariv. 147. 11541. 12479. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 240. VP. 120. Bhâg. P. 6,6,7. Bez. *der Zahl dreizehn* Golâdhj. 11,23. Gaṇit. Spashṭâdh. 8. 12. — c) *Alles in sich enthaltend* oder *Alles durchdringend, überall seiend:* Vishṇu (Kṛshṇa) MBh. 6,2945. Weber, Kṛshṇaǵ. 289. 294. Seele, Intellect u. s. w. Maitrjup. 2,5. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Weber, Râmat. Up. 293. 340. 360. Bhâg. P. 7,15,54. Vedântas. (Allah.) No. 73. fg. — 2) m. a) N. pr. eines Fürsten MBh. 1,2672. eines गङ्गाधिप Râǵa-Tar. 8,2477. — b) Bez. einer Klasse von Manen Mârk. P. 96,43. — c) = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 126,a,20. 136,a, No. 259. 182,b,48. 195,b,7. — 3) f. आ a) *die Erde* H. 935. — b) *eine best. Pflanze,* = अतिविषा, विषा AK. 2,4,3,18. H. an. Med. = शतावरी Râǵan. im ÇKDr. = पिप्पली Çabdak. ebend. — c) *trockener Ingwer* AK. 2,9,38. H. 420. Med. Halâj. 2,460. Suçr. 2,207,9. Çârṅg. Saṁh. 2,2,17. 76. — d) Bez. *einer der Zungen des Feuergottes* Mârk. P. 99,58. — e) *ein best. Gewicht,* = विंशपल Ǵjotishmatî im ÇKDr.; nach ÇKDr. masc., aber das Citat lautet विश्वा विंशपलं प्रोक्तम्. — f) N. pr. einer Tochter Daksha's, Gattin Dharma's und Mutter der Viçve Devâḥ MBh. 1, 2520. Hariv. 146. fg. 11525. 11541. 12450. 12479. VP. 119. fg. Bhâg. P. 6,6,4. 7. wird in Viçveçvara verehrt Verz. d. Oxf. H. 39,a,36. — g) N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,19,18. — 4) n. a) *das All, Weltall* H. 1365. H. an. Med. AV. 9,7,4. Çat. Br. 14,9,2,5. Maitrjup. 5,1. विश्वस्य कर्ता Muṇḍ. Up. 1,1,1. विश्वस्य मातरः Varâh. Bṛh. S. 48,68. Çâk. 1. Prab. 3,8. Vop. 5,10. Bhâg. P. 3,10,12. 4,7,21. 8,3,26. °संप्लव 3,17, 15. इदं विश्वम् 2,1,24. 4,6. 3,22,20. अस्य विश्वस्य Varâh. Bṛh. S. 1,7. Kathâs. 22,90. विश्वमदः 240. विश्वत्रयेण यो मित्रं कर्तुं न शकितः पुरा (zur Erklärung des Namens Viçvâmitra) *die drei Welten* Mârk. P. 8,234. — b) *trockener Ingwer* AK. 2,9,38. H. an. Med. Ratnam. 92. Suçr. 2, 481,21. 504,9. — c) *Myrrhe* Dhanv. in Nigh. Pr. und Râǵan. im ÇKDr. — d) mystische Bez. *des Vocals* ओ Weber, Râmat. Up. 317. fgg. — Wir vermuthen einen Zusammenhang von विश्व mit विष्.

विश्वक 1) adj. = विश्व 1) c) Weber, Râmat. Up. 341. — 2) m. proparox. N. pr. eines Mannes mit dem Bein. Kṛshṇija, Schützlings der Açvin, welchem sie seinen verlorenen Sohn Vishṇâpû wiedergeben, Ṛv. 1,116,23. 117,7. 8,75,1. 10,65,12. Liedverfasser von 8,75. Sohn Kṛshṇa's Anukr. ein Sohn Pṛthu's VP. 361, N. 14. — 3) f. आ *ein best. Vogel,* = गङ्गाचिल्ली Hâr. 85.

विश्वकथा f. gaṇa कथादि zu P. 4,4,102. — Vgl. वैश्वकथिक.

विश्वकद्रु 1) adj. *schlecht, boshaft* (खल) Trik. 3,3,371. Med. r. 297. — 2) m. a) *Jagdhund* AK. 2,10,23. Trik. H. 1281. an. 4,279. Med. Hâr. 221. Halâj. 2,127. Vgl. विश्वकद्राकर्ष. — b) *Laut* H. an. Med.

विश्वकर्तृ m. *Schöpfer des Alls* Bhâg. P. 9,9,47. Çiva Çiv. Davon nom. abstr. विश्वकर्तृत्व n. Sarvadarçanas. 95,1.

विश्वकर्म (वि° + कर्मन्) adj. *Alles zuwegebringend:* अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना Ṛv. 10,166,4.

1. विश्वकर्मन् n. *jegliches Geschäft:* विश्वकर्मकृत् Maitrjup. 5,1. विश्वकर्माश्रय Vâsavad. 14.

2. विश्वकर्मन् Siddh. K. 239,b,2. 1) adj. *Alles wirkend, — ausführend, — schaffend:* Indra Ṛv. 8,87,2. Ait. Br. 4,22. Âçv. Çr. 2,11,8. Ṛv. 10,170,4. AV. 4,11,5. यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः 12,1,13. VS. 1,4. Praǵâpati 12,61. TS. 2,4,3,1. Çat. Br. 4,6,4,5. 9,2,3,2. Kauç. 139. Vishṇu (Kṛshṇa) MBh. 6,2944. 14,1485. 1573. त्वष्टा तथैवोर्जितविश्वकर्मा Hariv. 13143. — 2) m. a) N. *eines weltbildenden Genius,* ähnlich dem Praǵâpati, oft auch nicht von ihm zu unterscheiden, Naigh. 5,4. Nir. 10, 26. Ṛv. 10,81,2. 5. fgg. AV. 2,34,3. 35,1. fgg. 6,122,1. 12,1,60. VS. 5, 11. 8,54. 13,16. येन प्रजा विश्वकर्मा जजान 45. 55. 58. 15,16. 17,78. TBr. 1,1,1,5. 2,3,3. TS. 4,4,6,1. 5,5,5,1. 7,5,3. Çat. Br. 6,2,3,3. Çâṅkh. Br. 5,5. Kauç. 137. अनुत्पन्नेषु भूतेषु बभूव किल भूमितः। अग्रजः सर्वभूतानां विश्वकर्मेति विश्रुतः॥ R. 4,44,49. Varâh. Bṛh. S. 43,42. 46,12. *Baumeister* und *Künstler* (zugleich Praǵâpati genannt) *der Götter* AK. 3,4,18,111. H. 182. an. 4,192. Med. n. 245. Halâj. 1,84. MBh. 1,7688. fgg. 2,311. Hariv. 6512. fgg. (प्रजापतिसुत). 8937. fgg. 12149. 12385. 13178. R. 2,91,11. fg. (100,10. fg. Gorr.). 28. Kâm. Nîtis. 19,6. Kathâs. 15,136. VP. 76. Bhâg. P. 6,9,53. Pańkar. 1,1,80. 11,12. Verz.

d. Oxf. H. 76,*b*,28. wann er schläft 46,*a*,44. fgg. Burn. Intr. 131. Maja ist Viçvakarman der Dânava MBh. 2,5. ein Avatâra des Viçvakarman Kathâs. 34,148. Viçvakarman als Verfasser eines Werkes über Baukunst Varâh. Bṛh. S. 56,29. 79,10. Verz. d. Oxf. H. 341,*a*,41. mit dem patron. Bhauvana Çat. Br. 13,7,1,14. Ait. Br. 8,21. Liedverfasser von Ṛv. 10,81. ein Sohn des Vasu Prabhâsa und der Jogasiddhâ (योगसत्ता adj. st. dessen MBh.) MBh. 1,2592. fgg. Hariv. 161. VP. 121. ein Sohn Vâstu's Bhâg. P. 6,6,15. Vater der Barhishmatî 5,1,24. der Saṁǵńâ Mârk. P. 77,1 (विश्वकर्मजा und विश्वकर्मसुता = संज्ञा Çabdar. im ÇKDr.). Gatte der Ghṛtâkî Verz. d. Oxf. H. 21,*b*,16. विश्वकर्ममाहात्म्य Mack. Coll. 1,84. विश्वकर्मपुराण 46. विश्वकर्मपुराणसंग्रह 166. Nach H. an. und Med. ist Viçvakarman auch N. pr. eines Muni. — *b*) Bez. *der Sonne* AK. H. an. Med. Mârk. P. 107,11. Vâsavad. 14. — *c*) N. einer der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. 236, N. 3.

विश्वकर्मेश N. eines Liṅga Verz. d. B. H. 147,*a*,9.

विश्वकर्मेश्वरलिङ्ग n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 71,*b*,43.

विश्वकाय 1) adj. *dessen Körper das Weltall ist* Bhâg. P. 8,1,13. 19, 33. — 2) f. आ *eine Form der* Dâkshâjaṇî Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,33.

विश्वकारक m. *Schöpfer des Alls:* Çiva Çiv.

विश्वकारु m. = विश्वकर्मन् *der Baumeister der Götter* Pańkar. 1, 10, 46. 58.

विश्वकार्य m. N. eines der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. 263, N. 3. विश्वव्यचस् v. l. in der neueren Ausg.

विश्वकृत् 1) adj. subst. *Alles schaffend, Schöpfer des Alls:* Agni AV. 6,47,1. Çat. Br. 14,7,2,17. Çvetâçv. Up. 6,16. Varâh. Bṛh. S. 1,6. Spr. 4290. Bhâg. P. 3,12,27. 9,14,8. = ब्रह्मन् H. 6. — 2) m. *a*) *der Baumeister und Künstler der Götter*, Viçvakarman Halâj. 1,84. Sund. 3,13 (विश्वविद् MBh. 1,7691). R. 5,22,13. Mârk. P. 77,38. 108,4. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Gâdhi Hariv. 1766.

विश्वकृत adj. wohl *von* Viçvakarman *verfertigt:* अस्त्र MBh. 5,7259.

विश्वकृष्टि adj. *bei allen Völkern* oder *Menschen wohnend, — erscheinend, allbekannt, Allen freundlich* u. s. w.: Agni Ṛv. 1,59,7. die Marut 3,26,5. 10,92,6. nach Sâj. auch 1,169,2. Dadhikrâ 4,38,2. Im Wesentlichen synonym sind: विश्वक्षिति, °चर्षणि, °जन्य, °मनुस्, विश्वायु, विश्वानर.

विश्वकेतु m. 1) ein N. *des Liebesgottes* Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,31. — 2) ein N. Aniruddha's (Sohnes des Kâma) AK. 1,1,1, 22 (dieses so wie das vorangehende ब्रह्मसू könnten auch zum vorangehenden Artikel कामदेव gezogen werden). Trik. 1,1,41. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,37.

विश्वकोश, °कोष m. = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 194,*a*,13.

विश्वक्षय m. *Untergang der Welt* Râǵa-Tar. 2,19.

विश्वक्षिति adj. = विश्वकृष्टि TBr. 1,5,1,5.

विश्वक्सेन s. विष्वक्सेन.

विश्वग m. 1) ein Name Brahman's ÇKDr. angeblich nach H. — 2) N. pr. eines Sohnes des Pûrṇiman Bhâg. P. 4,1,14.

विश्वगत adj. *allgegenwärtig* Liṅga-P. bei Muir, ST. 4,36.

विश्वगन्ध 1) adj. *überallhin Geruch verbreitend.* — 2) m. *Zwiebel* Râǵan. im ÇKDr. — 3) f. आ *die Erde* Çabdaḱ. im ÇKDr. — 4) n. *Myrrhe* Râǵan. im ÇKDr.

विश्वगन्धि m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu Bhâg. P. 9,6,20.

विश्वगर्भ 1) adj. *Alles im Schoosse tragend* AV. 12,1,43. Çiva Çiv. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Raivata Hariv. 5250.

विश्वगश्व s. विषगश्व.

विश्वगुणादर्श m. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 150,*a*, No. 319.

विश्वगुरु m. *der Aelteste —, der Vater des Weltalls* Kumâras. 6,83. Çâk. Ch. 162,13. Bhâg. P. 3,15,26.

विश्वगूर्त adj. *allwillkommen:* स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः Ṛv. 1,61, 9. 8,1,22. 59,3.

विश्वगूर्ति adj. dass.: die Açvin Ṛv. 1,180,2.

विश्वगोत्र adj. *allen Sippen angehörig* Çat. Br. 3,5,2,5. 6,1,1.

विश्वगोत्र्य adj. etwa *alle Sippen um sich vereinigend:* eine Trommel AV. 5,21,3.

विश्वगोप्तर् m. *Behüter des Weltalls:* Çiva Çiv. Vishṇu (Hariv. 14120) und Indra Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वग्ज्योतिस् s. विष्वग्ज्योतिस्.

विश्वग्रन्थि m. *eine best. Pflanze,* = हंसपदी Râǵan. im ÇKDr.

विश्वग्लोप, विश्वग्वात und विश्वग्वायु s. विष्वग्लोप, विष्वग्वात und विष्वग्वायु.

विश्वंकर (विश्वम्, acc. von विश्व + 1. कर) n. *Auge* (*Alles bildend*) Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वचक्र n. *Erdkreis:* °दान Bez. *einer best. grossen Schenkung* (*Gold in Gestalt des Erdkreises*) Verz. d. Oxf. H. 35,*b*,20. ohne दान 43,*a*,18.

विश्वचक्रात्मन् m. Beiw. Vishṇu's Mâtsja-P. 259 nach ÇKDr.

विश्वचक्षण adj. so v. a. विश्वचक्षस् AV. 18,1,17.

विश्वचक्षस् adj. *allsehend:* die Sonne Ṛv. 1,50,2. 7,63,1. Soma 9, 86,5. Viçvakarman 10,81,2.

विश्वचक्षुस् adj. *Alles sehend* oder n. *Auge für Alles* Maitrjup. 6,6.

विश्वचर्षणि adj. so v. a. विश्वकृष्टि. Indra Ṛv. 1,9,3. 2,31,3. 5,38,1. Agni 1,27,9. 3,2,15. 5,6,3. 14,6. Soma 9,1,2. Manju 10,83,4. वाजिन् 6,2,2. श्रवस् 10,93,10. Beiw. des Viçvamanas 8,23,2 (vielleicht ist aber °षणिम् zu lesen). आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम् Vâlakh. 5,6. Naigh. 3,11.

विश्वजन gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99. *Jedermann, alle Welt:* विश्वजनस्य च्छायाम् (nach einem Vârtt. zu P. 6,1,76 छायाम् oder च्छायाम्) VS. 5,28. उर्वीमिमां विश्वजनस्य भर्त्रीम् TBr. 1,2,1,4. °छत्त्र oder °च्छत्त्र P. 6,1,76, Vârtt., Schol. — Vgl. वैश्वजनीन.

विश्वजनीन (von विश्वजन) adj. *allerlei Volk enthaltend:* जन AV. 7, 45,1. *über alles Volk herrschend* 20,127,7. *aller Welt zu Gute kommend* P. 5,1,9. Bhaṭṭ. 2,48. 21,17. — Vgl. वैश्व°.

विश्वजनीय (wie eben) adj. = विश्वेषां जनाय हितः Pat. zu P. 5,1,9.

विश्वजन्मन् adj. *von allerlei Art* AV. 11,4,23.

विश्वजन्य (von विश्वजन) adj. *alle Menschen enthaltend; überall vorhanden, — bekannt, — beliebt, allgemein:* Himmel und Erde Ṛv. 3,25,3. सुमति 57,6. VS. 17,74. इषः Ṛv. 10,2,6. अरुषः 1,169,8. मदासः 6,36,1.

राधस् 47,25. 10,67,1. उपन्यास M. 9,31.

विश्वजयिन् adj. *Besieger des Weltalls* Bhâg. P. 8,15,34.

विश्वजिच्छिल्प (विश्वजित् + शिल्प) m. N. *eines* Ekâha Pañkav. Br. 16,15,1. Çâñkh. Çr. 12,8,1. 5. 9,5. Lâṭj. 6,4,1. 8,4,10.

विश्वजित् 1) adj. *allbesiegend, allgewinnend* ṚV. 2,21,1. 8,68,1. 9,59,1. 10,170,3. AV. 4,11,5. 35,7. 17,1,11. Bhâg. P. 4,20,17. 7,4,7. — 2) m. *a*) N. *eines* Ekâha *in der Feier* Gavâmajana, *der 4te Tag nach dem* Vishuvant (Abhiǵit heisst *der 4te vor demselben*) AV. 11, 7,12. Ait. Br. 4,19. 6,18. 30. TS. 7,4,5,3. TBr. 1,2,2,2. 4,6,3. Çat. Br. 4,5,4,14. 12,1,2,2. Pañkav. Br. 4,5,19. 20,9,1. Kâtj. Çr. 24,1,17. Âçv. Çr. 8,7,1. 9,9,6. 12,5,12. Lâṭj. 4,6,13. Maç. 2,6. M. 11,74. MBh. 1,3764. 7,2386. 9,2321. 13,4943. R. 1,13,45. Ragh. 4,86. 5,1. 6,76. Bhâg. P. 8,15,4. Kull. zu M. 11,1. विहिताध्ययनस्य फलाकाङ्क्षायां विश्वजिन्न्यायेन स्वर्ग एव फलं कल्प्यम् Comm. in der Einl. zu Gaim.; vgl. Colebr. Misc. Ess. I, 320. — *b*) Bez. *eines best. Feuers:* यस्तु विश्वस्य जगतो बुद्धिमाक्रम्य तिष्ठति। तं प्राकुरध्यात्मविदो विश्वजिन्नामपावकम्॥ MBh. 3,14145. — *c*) N. pr. α) eines Dânava MBh. 12,8265. — β) eines Sohnes des Gâdhi Hariv. 1766. — γ) eines Sohnes des Dṛḍharatha und Grosssohnes des Ǵajadratha Hariv. 1704. eines Sohnes des Ǵajadratha VP. 452. — δ) eines Sohnes des Satjaǵit Hariv. 1037. VP. 465. Bhâg. P. 9,22,47.

विश्वजिन्व adj. *allerquickend* ṚV. 6,67,7.

विश्वजीव m. *Allseele* Bhâg. P. 5,15,11.

विश्वजू adj. *alltreibend:* धेनु ṚV. 4,33,8.

विश्वज्योतिष m. N. pr. eines Mannes (pl. *seine Nachkommen*) Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55,1. 2. — Vgl. विश्वज्योतिस्.

विश्वज्योतिस् 1) adj. *allglänzend.* — 2) m. *a*) N. eines Ekâha Kâtj. Çr. 22,2,8. Pañkav. Br. 16,10,1. — *b*) N. pr. eines Mannes Saṃsk. K. 186, *a*, 4; vgl. विश्वज्योतिष. — 3) f. Bez. *derjenigen* Ishṭakâ, *welche Feuer, Wind und Sonne repräsentiren sollen*, Çat. Br. 6,3,3,16. 10,4,3,14. 8,3,2,1. 7,1,9. TS. 5,3,9,2. Kâtj. Çr. 17,9,3. 18,6,33. — 4) n. इषिश्वज्योतिस् N. eines Sâman Ind. St. 3,209,*b*. — Vgl. विषग्ज्योतिस्.

विश्वञ्च् (विश्वक्) s. विषञ्च्.

विश्वतनु adj. *dessen Körper das All ist* Bhâg. P. 2,1,33.

विश्वतश्चक्षुस् adj. *der auf allen Seiten Augen hat* ṚV. 10,81,2.

विश्वतस् (von विश्व) adv. *von —, an allen Seiten, allenthalben* Comm. zu AK. 3,5,13 nach ÇKDr. ṚV. 1,31,5. 122,6. अभयं कृणुहि विश्वतो नः 3,47,2. तपं विश्वतः शोचिषा 6,22,8. 7,12,1. 83,8. परि वां भूतु विश्वतं इयं मतिः 104,6. 2,43,2. 6,19,9. गिरिर्न विश्वतस्पृथुः 8,87,4. 2,1,12. AV. 7,50,2. VS. 12,10. 16,11. Kauç. 47. 68. विश्वतो ऽस्थिमये जाते — क्षितिमण्डले Râǵa-Tar. 5,272. विश्वतो भयात् *vor aller Gefahr* Bhâg. P. 10,31,3.

विश्वतस्पद् (°पाद्) adj. *allenthalben Füsse habend* ṚV. 10,81,3.

विश्वतस्पाणि adj. *überall Hände habend* AV. 13,2,26.

विश्वतस्पथ adj. AV. 13,2,26 v. l. für विश्वतस्पद् des ṚV.

विश्वतुर् adj. *Alles übertreffend:* द्युम्न ṚV. 1,48,16.

विश्वतुराषह् adj. dass. Hariv. 14119.

विश्वतृप्त adj. *durch Alles befriedigt:* Vishṇu Pañkar. 4,3,152.

विश्वतूर्ति adj. *Alles übertreffend:* Bhâratî ṚV. 2,3,8.

विश्वतोधार (विश्वतस् + 1. धारा) adj. *nach allen Seiten strömend* VS. 17,68.

विश्वतोधी adj. *überallhin merkend* ṚV. 8,34,6.

विश्वतोबाहु adj. *allenthalben Arme habend* ṚV. 10,81,3.

विश्वतोमुख adj. *allenthalben Gesichter habend* oder *dessen Gesicht überallhin gewandt ist* ṚV. 1,97,6. 10,81,3. AV. 10,8,27 (Çvetâçv. Up. 4,3). Bhag. 9,15. Hariv. 14119. Bhâg. P. 3,25,40. 32,7. 33,25. unter den Namen der Sonne MBh. 3,157. °मुखम् adv. *nach allen Seiten hin* Bhâg. P. 4,28,41.

विश्वतोय adj. (f. आ) *alles Wasser führend:* गङ्गा MBh. 13,1846. = विश्वप्रियतोया Nilak.

विश्वतोवीर्य adj. *allenthalben wirksam:* वीरुध् AV. 6,32,2. die Sonne 3,31,7.

विश्वत्र (von विश्व) adv. *allenthalben, allezeit* ṚV. 10,61,25. एतच्च मत्पितुर्देशे वृत्तं विश्वत्र विश्रुतम् *überall bekannt* Kathâs. 20,187.

विश्वत्र्यर्चस् m. N. eines der 7 Hauptstrahlen der Sonne VP. (II) 2, 297, N. विश्वकार्य die erste Ausg.

विश्वथा (von विश्व) ved. adv. P. 5,3,11. VS. Prât. 5,12. *auf alle Weise, allezeit* ṚV. 1,141,9. 2,24,11. 5,44,1. SV. I,3,1,3,6 (°धा ṚV.). Çâñkh. Çr. 17,12,6.

विश्वदंष्ट्र m. N. pr. eines Asura MBh. 12,8264.

विश्वदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 10,158. 33,37.

विश्वदर्शत adj. *allsichtbar* ṚV. 1,25,18. 44,10. 7,96,6. 9,65,13. सूर 66,22. 106,5. 10,140,6.

विश्वदानि adj. nach dem Comm. *allschenkend:* ततो यज्ञो जायते विश्वदानिः TBr. 3,3,9,10. 7,4,12.

विश्वदानीम् (von विश्व) adv. AV. Prât. 4,23. *allezeit, immer* Nir. 11, 44. ṚV. 1,164,40. 4,50,8. 6,52,5. AV. 12,1,7. 18,3,54. Âçv. Çr. 2,5,9. — Vgl. इदानीम् und तदानीम्.

विश्वदाव adj. *allsengend* TS. 3,3,8,2.

विश्वदावन् adj. v. l. des AV. 4,32,6 für विश्वधायस् des ṚV.

विश्वदाव्य adj. so v. a. विश्वदाव AV. 3,21,3. 9. 10,8,39.

विश्वदासा f. N. der 7ten Zunge des Feuers (v. l. für विश्वरूपी, विश्वरुची) Ind. St. 2,396.

विश्वदृश् adj. *allsehend* Bhâg. P. 4,20,32. Kusum. 53,6.

विश्वदृष्ट adj. *allgeschaut* ṚV. 1,191,5. 6. 8.

विश्वदेव 1) m. pl. *alle Götter: die* Viçve Devâḥ P. 6,2,106, Schol. ṚV. 6,51,7. 10,125,1. VS. 2,22. Hariv. 11294. °देवा दश स्मृताः Gaṇâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,24. im comp. Varâh. Bṛh. S. 44,6. — 2) adj. P. 6,2,106, Schol. 2,2,35, Vârtt. 1, Schol. gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133. *allgöttlich:* Indra ṚV. 8,87,2. Vâju 1,142,12. Bṛhaspati 4,50,6. Savitar 5,82,7. Soma 9,92,3. 103,4. Mahâpurusha Hariv. 14115. 14119 (विश्वेदेव die neuere Ausg.). Bez. eines best. Gottes: विश्वदेवेन देवेन (विश्वेदेवेन विश्वेशः die neuere Ausg.) सहायुध्यत वीर्यवान् 13190. विश्वदेवभक्त = विश्वदेवानां (etwa *Verehrer der* Viçve Devâḥ) विषयो देशः gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. — 3) f. आ *Uraria logopodioides Dec.* Ratnam. im ÇKDr. Suçr. 1,59,21. 137,4. 317,11. = ह्रस्वगवेधुका Gaṇâdh. im ÇKDr. *eine rothblühende Species von* दण्डोत्पल Ratnam. 166.

— Vgl. वैश्वदेव, वैश्वदेवक.

विश्वदेवता f. pl. *die* Viçve Devâḥ Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,*a*,33.

विश्वदेवनेत्र adj. *von den* Viçve Devâḥ *geführt* VS. 9,35.

विश्वदेववत् (von विश्वदेव) adj. *mit allen Göttern verbunden* AV. 19,18,10.

विश्वदेवस्तुत् m. N. eines Ekâha Âçv. Çr. 9,8,7.

विश्वदेव्य adj. *auf alle Götter bezüglich, bei allen Göttern beliebt* u. s. w.: Agni Ṛv. 1,148,1. 3,2,5. Bṛhaspati 3,62,4. Pûshan 10,92,13. छाग 1,162,3. समुद्र 110,1.

विश्वदेव्यावत् adj. dass. Ṛv. 10,170,4. °देव्यावती P. 6,3,131. VS. Prât. 3,116. VS. 11,61. Bṛhaspati 38,8. Soma Kâtj. Çr. 10,5,9. 7,14. *mit den* Viçve Devâḥ *verbunden:* Indra Ait. Br. 2,20. Çâṅkh. Çr. 6,7,10. 9,14.

विश्वदेव adv. *die* Viçve Devâḥ *zur Gottheit habend;* n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Varâh. Bṛh. S. 7,2. वैश्वदेव v. l.

विश्वदैवत dass. Varâh. Bṛh. S. 71,11.

विश्वदोहस् adj. *Alles milchend:* धेनु Ṛv. 6,48,13.

विश्वद्यच् s. विषद्यच्.

विश्वध und **विश्वधा** (von विश्व) adv. *auf alle Art, allezeit* Ṛv. 1,63,8. 141,6. 174,10. 4,16,18. 5,8,4. 7,22,7. 9,79,2. — Vgl. विश्वह, विश्वहा, विश्वाहा.

विश्वधर m. N. pr. des Vaters von Harinâtha Verz. d. Oxf. H. 206,*b*,9.10.

विश्वधरण n. *die Erhaltung des Weltalls* Râga-Tar. 1,139.

1. **विश्वधा** adv. s. विश्वध.

2. **विश्वधा** adj. nach dem Comm. so v. a. विश्वं दधाति VS. 1,2, v. l. für विश्वधायस् der TS. — f. gaṇa कृत्वादि zu P. 4,4,62; vgl. वैश्वध.

विश्वधातर् nom. ag. *Allerhalter:* आपो देव्य स्रषोणां विश्वधात्र्यः Hariv. 7794.

विश्वधामन् n. *die allgemeine Heimath* Çvetâçv. Up. 6,6.

विश्वधायस् adj. *allnährend, allerhaltend* Ṛv. 1,73,3. 3,55,21. 5,8,1. 7,4,5. पृथिवी 2,17,5. AV. 12,1,27. रयि Ṛv. 8,5,15. 7,13. — 10,83,6. 122,1. 6. 176,1. AV. 3,22,2.

विश्वधार m. N. pr. eines der 7 Söhne des Medhâtithi und eines nach ihm benannten Varsha Bhâg. P. 5,20,25.

विश्वधारिणी f. *die Erde (Alles tragend)* Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वधावीर्य adj. *auf alle Art wirksam* AV. 5,22,3. 19,39,10.

विश्वधृक् adj. *Alles tragend, — erhaltend* Ind. St. 2,99, N. 4.

विश्वधृत् adj. dass. ebend.

विश्वधेन adj. *alltränkend* Ṛv. 4,19,2. 6.

विश्वधेनु s. वैश्वधेनव, वैश्वधैनव.

विश्वनगर m. N. pr. eines Mannes Dhûrtas. 70,12. fgg.

विश्वनर adj. = विश्वे नरा यस्य सः P. 6,3,129. — Vgl. विश्वानर.

विश्वनाथ m. 1) *Allbehüter, Allherrscher,* Bez. Çiva's Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 128,*a*,11. 141,*a*,21. 146,*b*,2. 149,*b*, N. 2. 257,*b*,36. Verz. d. B. H. No. 1242. — 2) N. pr. verschiedener Männer Colebr. Misc. Ess. I, 262. II, 57. 452. fg. Hall 23. 78. 113. 181. Verz. d. Oxf. H. 121,*a*, No. 212. 239, No. 576. fgg. 283,*b*, No. 663. fg. 333,*b*, No. 785. 337,*b*, No. 794. 341,*a*,33. 378,*a*, No. 376. 380,*a*,5. Verz. d. B. H. No. 245. 268. 680. 693. 700. 815. 823. Verz. d. Tüb. H. 13. Verz. d. Cambr. H. 42. 58. Kshitîç. 6,17. 7,9. °कविराज Sâh. D. 8,13. °चक्रवर्तिन् Wilson, Sel. Works I, 168. °तर्कालंकार Gild. Bibl. 414. °दीक्षित Verz. d. Oxf. H. 141,*a*,14. °देव 341,*b*, N. Hall 17. °दैवज्ञ Verz. d. B. H. No. 871. °पञ्चाननभट्टाचार्य Bhâshâpar. in der Unterschr. °पञ्चाननभट्टाचार्यतर्कालंकार Hall 73. °पण्डित 192. °भट्ट 176. °भट्टाचार्य Gild. Bibl. 416. Hall 22. 58. °राय Kshitîç. 26,9. °सिंह Notices of Skt Mss. 41. — Vgl. भावाविश्वनाथदीक्षित.

विश्वनाथनगरी f. *die Stadt* Viçvanâtha's d. i. Kâçî Verz. d. B. H. No. 1342. °स्तोत्र ebend.

विश्वनाथीय adj. *von* Viçvanâtha *verfasst* Verz. d. Oxf. H. 239,*b*,4.

विश्वनाभ m. ein N. Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 185,*a*,4.

विश्वनाभि f. *der Nabel des Weltalls* Bhâg. P. 2,2,25.

विश्वनामन् adj. *allnamig* AV. 7,75,2.

विश्वंतर (विश्वम्, acc. von विश्व, + तर) 1) adj. *Alles überwindend:* Buddha Vjutp. 2. — 2) m. *a)* N. pr. eines Fürsten mit dem patron. Saushadmana Ait. Br. 7,27. 34. — *b)* als जातक Çâkjamuni's Vjâdi im Comm. zu H. 233. Gâtakamâlâ 24.

विश्वपत्त m. N. pr. eines Autors mystischer Gebete Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,3.

विश्वपति m. *Herr des Alls:* Mahâpurusha Hariv. 14120. Kṛshṇa Weber, Kṛshṇag. 295. N. eines Feuers MBh. 3,14193.

विश्वपद् (°पाद्) in der Stelle विश्वपात्त्वम् Hariv. 14120, wo aber die neuere Ausg. richtig विश्वपास्त्वम् liest.

विश्वपर्णी f. *Flacourtia cataphracta Roxb.* Râgan. im ÇKDr.

विश्वपा adj. Decl. P. 6,4,140, Schol. Vop. 3,42. *Alles schützend* Hariv. 14120 nach der richtigen Lesart (s. u. विश्वपद्).

विश्वपाचक adj. *Alles kochend,* Beiw. des Feuers Mârk. P. 99,46.

विश्वपाणि m. N. pr. des 5ten Dhjânibodhisattva Burn. Intr. 117.

विश्वपातर् m. *Allschützer,* N. einer Gruppe von Manen Mârk. P. 96,46.

विश्वपादशिरोग्रीव adj. *dessen Füsse, Kopf und Hals aus dem Weltall gebildet sind* Mârk. P. 42,2.

विश्वपाल m. N. pr. eines Kaufmanns Verz. d. Oxf. H. 73,*b*,22.

विश्वपावन 1) adj. (f. ई) *allreinigend:* आपः Bhâg. P. 8,20,18. धूप Pañkar. 2,4,29. — 2) f. ई ein N. *der* Tulasî Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,27.

विश्वपिंश् adj. *allschmückend* Ṛv. 7,57,3. *allgeschmückt:* रथ 75,6.

विश्वपुष् adj. *allgedeihlich* Ṛv. 8,26,7.

विश्वपूजित 1) adj. *allgeehrt.* — 2) f. आ ein N. *der* Tulasî Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,27.

विश्वपेशस् adj. *allen Schmuck enthaltend, mit allem Schmuck ausgestattet:* राया Ṛv. 1,48,16. धियम् 61,16. अनु कृष्णे वसुधिती येमाते विश्वपेशसा 4,48,3.

विश्वप्रकाश m. *Allerheller,* Titel eines Wörterbuchs des Maheçvara Colebr. Misc. Ess. II, 58. Med. Anh. 3. Verz. d. Oxf. H. 108,*b*, No. 169. 110,*b*,17. 113,*b*,7. 156,*b*, No. 333. 187,*b*, No. 428. 188,*b*,37 und No. 429. 192,*a*,18. 196,*a*,22. *b*,2. Verz. d. B. H. No. 802. fgg. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 46.

विश्वप्रकाशिन् m. dass. Verz. d. Oxf. H. 323,*a*, No. 765.

विश्वप्रबोध adj. *allerweckend, allerleuchtend* Bhâg. P. 4,24,35.

विश्वप्री adj. heisst *der Abschnitt des* TBr. 3,11,5. — TBr. 3,11,9,9.

विश्वप्सन् Uṇâdis. 1,158. m. = देव Uģģval. = वह्नि, चन्द्र, समीरण und कृतान्त H. an. 3,418. fg. = सूर्य Çabdar. im ÇKDr. = विश्वकर्मन् Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

विश्वप्सा m. *Feuer* (*Alles verzehrend*) Trik. 1,1,67.

विश्वप्सु adj. nach dem Comm. *allgestaltig:* ब्रह्म RV. 6,35,3. कृत्वं विश्वप्सुं विश्ववीर्यम् 8,22,12. यज्ञ 10,77,4. — Vgl. विश्वाप्सु.

विश्वप्स्न्य adj. nach dem Comm. *allgestaltig* oder *allgeniessbar:* वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य RV. 7,42,6. 8,86,15. धारया विश्वप्स्न्या (von einem f. °प्स्नी oder für °प्स्न्यया) VS. 12,10. der Wagen der Açvin अभि यद्वां विश्वप्स्न्यो जिगाति RV. 7,71,4. विश्वप्स्न्याय (etwa n. *zu aller Sättigung*) प्र भरत भोजनम् 2,13,2.

विश्वबन्धु m. *ein Freund der ganzen Welt* Bhâg. P. 4,4,15.

विश्वबीज n. *der Same von Allem* Pañkar. 4,3,25.

विश्वबोध m. *ein* Buddha (*Alles wissend*) Trik. 1,1,10.

विश्वभद्र = सर्वतोभद्र Kâlakakra 4,20. 76.

विश्वभरस् adj. *allerhaltend, allnährend:* Agni RV. 4,1,19. Çâñkh. Çr. 6,12,10.

विश्वभर्तर् m. *Allerhalter* Bhâg. P. 3,16,24. Kâlakakra 3,93. 4,1.5,258.

विश्वभव adj. *aus dem Alles entsteht* Bhâg. P. 4,9,16. Weber, Kṛshṇaģ. 289.

विश्वभानु adj. *allscheinend:* die Marut RV. 4,1,3. 8,27,3.

विश्वभाव adj. = विश्वभावन Bhâg. P. 10,81,13.

विश्वभावन adj. *der Alles werden lässt* VP. 2, N. 2. Bhâg. P. 1,11, 7. 2,7,50. 4,7,32. 28,65. Mârk. P. 42,2. Weber, Râmat. Up. 337.

विश्वभुज् 1) adj. *Alles geniessend, — verzehrend* Maitrjup. 5,1. Mahâpurusha Hariv. 14119. fg. Vishṇu H. ç. 73. Indra Verz. d. Oxf. H. 41,*b*, N. 4. — 2) m. *a*) N. eines best. Feuers MBh. 3,14146. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Indra MBh. 1,7304. — *c*) N. einer Gruppe von Manen Mârk. P. 96,43.

विश्वभुजा f. N. pr. einer Göttin Verz. d. Oxf. H. 71,*b*,11. fg. Verz. d. B. H. 146,*b*,1 v. u.

विश्वभू m. N. pr. eines Buddha H. 236. Vjutp. 3. Lalit. ed. Calc. 5,1 v. u. Burn. Intr. 222. Lot. de la b. l. 504. Wilson, Sel. Works I, 290. II, 5. 8. 13.

विश्वभूत adj. *das All seiend* Hariv. 14120.

विश्वभृत् adj. *allerhaltend, allnährend* AV. 4,11,5. 5,28,5. Maitrjup. 6,6. 13.

विश्वभेषज 1) adj. (f. ई) *alle Heilmittel enthaltend, allheilend:* आपः RV. 1,23,20. 10,60,12. 137,3. VS. 20,34. AV. 2,4,3. 4,10,3. 19,35,5. 39,5.8.9. — 2) n. *trockener Ingwer* (*Panacee*) AK. 2,9,38. H. 420. Halâj. 2,460. Ratnam. 92. Suçr. 1,165,6. 2,417,21.

विश्वभोजस् adj. *allmittheilend, allspendend, allnährend* RV. 5,41,4. 7,16,2. इषम् 6,48,13. पृथिवी AV. 4,35,3. 18,4,6.

विश्वमदा (विश्वम् + अ°) f. N. einer der sieben Zungen des Feuers (*Alles verzehrend*) Çabdam. im ÇKDr.

विश्वमनस् 1) adj. *Alles merkend* RV. 10,55,8. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Vjaçva, Liedverfassers von RV. 8,23—26. — RV. 8,23,2. 24,7. Pañkav. Br. 15,5,20.

विश्वमनुस् adj. so v. a. विश्वकृष्टि, die Marut RV. 8,46,17.

विश्वमय (von विश्व) adj. *das Weltall in sich enthaltend* Kathâs. 35, 102. Verz. d. Oxf. H. 196,*a*, No. 455.

विश्वमहस् adj. *allgewaltig* oder *allergötzend:* विश्वो हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः RV. 10,93,3. Çâñkh. Çr. 4,10,3.

विश्वमहेश्वर m. *der grosse Herr des Alls* (Çiva): °मताचार Mack. Coll. I, 140.

विश्वमातर् f. *Allmutter* Kâlakakra 2,128. 3,197. 4,96. 5,4. 91. 105.

विश्वमानव s. वैश्वमानव.

विश्वमानुष m. *die Gesammtheit der Menschen:* यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति RV. 8,45,42.

विश्वमित्र m. ein Mannsname P. 6,3,130, Schol. — Vgl. विश्वामित्र.

विश्वमिन्व (विश्वम् + इन्व) adj. 1) *allbewegend, alltreibend:* स्तोम RV. 1,61,4. Pûshan 2,40,6. Agni 3,20,3. die Marut 5,60,8. Ushas 80, 2. Indra 7,28,1. — 2) *allwaltend, allenthaltend:* रोदसी RV. 1,76,2. 3, 38,8. 9,81,5. Thore 10,110,5. — Vgl. अ°.

विश्वमुखी f. N. der Dâkshâjaṇî in Ģâlaṁdhara Verz. d. Oxf. H. 39,*b*, 26.

विश्वमूर्ति adj. *allgestaltig* oder *dessen Leib das Weltall ist* MBh. 6, 2944. 2948. Hariv. 14114. Kumâras. 5,78. Bhâg. P. 1,8,41. 2,1,27. 3,4,27. 8,6,9. Mârk. P. 103,5.

विश्वमेजय (विश्वम् + ए°) adj. *allaufregend:* Soma RV. 9,35,2. 62,26.

विश्वमेदिनी f. Titel eines Wörterbuchs Verz. d. Oxf. H. 196,*b*,2.

विश्वमोहन adj. *allverwirrend* Pañkar. 4,3,24.

विश्वंभर (विश्वम् + भर) P. 3,2,46. Vop. 26,60. 1) adj. (f. आ) *alltragend, allerhaltend:* die Erde AV. 12,1,6. das Feuer 2,16,5. Çat. Br. 14,4,2, 16. हरि Spr. (II) 1620. — 2) m. *a*) *eine Art Scorpion* oder *ein ähnliches Thier* Suçr. 2,257,17. 288,7. 290,9; vgl. विश्वंभरक. — *b*) ein N. Vishṇu's AK. 1,1,1,17. H. 215. an. 4,278. Med. r. 297. Pañkar. 4,3,35 (S. 249). Khandom. 122. — *c*) ein N. Indra's H. an. Med. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,*a*, 29. — *d*) N. pr. eines Fürsten Kshitîç. 6,3. — 3) f. आ *die Erde* AK. 2,1,2. H. 935. H. an. Med. Halâj. 2,1. P. 3,2,46, Schol. Ragh. 15,81. 18,23. Uttarar. 5,2 (7,11). Spr. (II) 2395. Verz. d. Oxf. H. 139,*b*,3. Râģa-Tar. 3,300. Pañkar. 3,11,21. Kâvjâd. 3,132.

विश्वंभरक m. = विश्वंभर 2) *a*) Varâh. Bṛh. S. 54,26.

विश्वंभरशास्त्र n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,*a*,2 v. u.

विश्वंभरभुज् m. *Geniesser der Erde* so v. a. *Fürst, König* Râģa-Tar. 8,2192.

विश्वयशस् m. ein Mannsname Schol. zu P. 6,2,106 und 5,4,155.

विश्वयामति (विश्वया instr. adv. + मति) adj. *der überall seine Gedanken hat:* Indra RV. 8,57,1 (voc.). Padap. trennt in zwei Wörter.

विश्वयु m. *Wind, Luft* Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वयोनि m. f. *Urquell —, Schöpfer des Weltalls* Çvetâçv. Up. 5, 5. MBh. 6,1960. Hariv. 4336. Kumâras. 2,62. 6,9. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*, No. 43. 259,*b*,2.

विश्वरथ m. N. pr. 1) eines Sohnes des Gâdhi Hariv. 1459. 1766. — 2) des Autors des Piñgalaprakâça Colebr. Misc. Ess. II, 65.

विश्वराज् in den schwächsten Casus, विश्वाराज् im nom. sg. und vor

consonantisch anfangenden Casusendungen P. 6,3,128. Vop. 3,135.

विश्वराधस् adj. *allgewährend* AV. 7,17,2.

विश्वरुचि m. N. pr. eines göttlichen Wesens MBh. 7,2418. eines Dânava Kathâs. 47,25.

विश्वरूची f. N. einer der 7 Zungen des Feuers Muṇḍ. Up. 1,2,4 (ed. Pol., विश्वरूपी in der Bibl. ind.). Mahîdh. zu VS. 17,79.

1. विश्वरूप n. *allerlei Gestalten:* कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः M. 7,10. °प्रदर्शक Pañkar. 4,1,30. Weber, Râmat. Up. 362.

2. विश्वरूप 1) adj. (f. विश्वरूपा und विश्वरूपी) *a) alle Farben zeigend, vielfarbig, bunt:* अग्न ṚV. 1,162,2. Kâṭh. 13,1. धेनु ṚV. 3,1,7. 1,164, 9. 4,33,8. AV. 9,5,10. Kauç. 62. Daher auch ohne nähere Bestimmung f. *eine bunte Kuh* ṚV. 1,161,6. VS. 3,22. इडा TBr. 1,2,1,21. 4,2,1. 7, 6,7. pl. *das Gespann des* Bṛhaspati Naigh. 1,15. Stier ṚV. 3,56,3. Rosse 10,70,2. निष्क 2,33,10. Wagen des Savitar 1,35,4. 10,85,20. — 3,38,4. TS. 4,3,11,5. AV. 4,14,9. 6,59,3. 9,1,2. 5. Çat. Br. 1,6,2, 5. Kleid VS. 11,40. Çat. Br. 14,2,1,8. Himmel und Erde VS. 9,19. Feuer 13,41. Thore 29,5. — Maitrjup. 6,8. — *b) vielgestaltig, mannichfaltig, verschiedenartig, allerlei:* ओषधीः ṚV. 5,83,5. 10,88,10. AV. 4,15,2. वाज ṚV. 10,67,10. पशवः 8,89,11. क्रिमय: AV. 5,23,5. इन्दु TS. 3,3,10, 2 (विषुरूप v. l. der VS.). VS. 16,25. वाच् Lâṭj. 4,1,5. MBh. 5,1684. Speise Çat. Br. 11,2,6,8. यशस् 14,5,2,4. *formenreich:* Tvashṭar-Savitar ṚV. 10,10,5. 3,55,19. *in mancherlei Formen erscheinend:* Bṛhaspati 3,62,6. die Añgiras 10,78,5. — Khând. Up. 5,13,1. Çvetâçv. Up. 1,4. 9. Taitt. Up. 1,4,1. Hariv. 14117. Bhâg. P. 6,4,28. Mârk. P. 23,42. विश्वे देवाश्च यत्तस्मिन्विश्वरूपस्ततः स्मृतः (शिवः) MBh. 7,9621. 13,589. Verz. d. Oxf. H. 52,a,8. — 2) m. *a)* Bez. *best. Kometen* Varâh. Bṛh. S. 11,23. — *b)* ein N. Vishṇu's (Kṛshṇa's) Trik. 1,1,29. H. 215. Halâj. 1,21. Verz. d. Oxf. H. 183,b, No. 418. 190,b,11. 9,b,11. 37,a, No. 89. — *c)* N. pr. α) eines Sohnes des Tvashṭar, welchem Indra die drei Köpfe abschlägt, TS. 2,5,1,1. 6,3,7,4. Çat. Br. 1,6,3,1. 2,3,2. 5, 5,4,2. 12,7,1,1. ṚV. 2,11,19. 10,8,9. Ait. Br. 7,28. Ind. St. 3,459. 464. MBh. 12,13208. fgg. VP. 121. Bhâg. P. 5,7,1. 6,6,42. 7,25. 34. fgg. Schüler der Açvin Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28. — β) eines Asura MBh. 2,366. Hariv. 12697. — γ) verschiedener Männer, insbes. Gelehrter Med. Anh. 4. Verz. d. B. H. No. 802. Verz. d. Oxf. H. 151,a, 28. 162,b,25. 188,a,28. 227,13. 255,a,15. 257,b,14. 356,a,26. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 12. Colebr. Misc. Ess. II, 454. Wilson, Sel. Works I,154. Kull. zu M. 2,189. 4,215. 5,68. विश्वरूपाचार्य Verz. d. B. H. No. 616. 1045. Verz. d. Oxf. H. 236,a,4. 270,b,43. Hall 110. 227. निबन्धं च विश्वरूपकृतम् Verz. d. B. H. No. 1170. °निबन्ध 468 (b, 161). Verz. d. Oxf. H. 279,a,51. fg. — 3) f. आ Bez. gewisser Verse (z. B. ṚV. 5,81, 2) Ait. Br. 1,29. Shaḍv. Br. 1,4. Lâṭj. 1,8,5. 13. 16. — 4) f. ई N. einer der 7 Zungen des Feuers Muṇḍ. Up. 1,2,4.

विश्वरूपक n. *eine schwarze Art Aloeholz* Râǵan. im ÇKDr. Aush. 16.

विश्वरूपतीर्थ 1) n. N. pr. eines *heiligen Badeplatzes* Verz. d. Oxf. H. 67,a,29. — 2) N. pr. und ehrender Bein. eines Gelehrten Hall 200. Verz. d. B. H. No. 648.

विश्वरूपवत् adj. *in allerlei Formen erscheinend* R. 7,23,1,28.

विश्वरूपिन् 1) adj. dass. Hariv. 9547. Mârk. P. 42,2. — 2) f. °रूपिणी N. pr. einer Gottheit Verz. d. Oxf. H. 19,b,3.

विश्वरेतस् m. (sic) *der Same des Alls*, Bez. Brahman's Trik. 1,1,26. H. 212. Vishṇu's Pañkar. 4,3,38 (S. 250).

विश्वरोचन m. *Colocasia antiquorum Schott.* Trik. 2,4,32.

विश्वलोचन n. = विश्वप्रकाश Verz. d. Oxf. H. 135,b, No. 255. °कार 185,b,41. fg.

विश्वलोप m. TS. 3,3,8,2. — Vgl. वैश्वलोप.

विश्ववद् m. wohl = Viçpered Verz. d. Oxf. H. 33,b,3. Weber, Lit. 144.

विश्ववनि adj. *allgewährend:* Soma TS. 2,4,5,2.

विश्ववत् adj. *das Wort* विश्व *enthaltend* Çat. Br. 7,5,2,12.

विश्ववयस् m. N. pr. eines Mannes बम्बाविश्ववयसौ TS. 6,6,8,4. बम्भावि° Kâṭh. 29,7. लम्बावि° gaṇa वनस्पत्यादि zu P. 6,2,140.

विश्ववह्, °वाह् adj. nom. °वाट्, acc. °वाहम्, instr. विश्वौहा, f. विश्वौही P. 6,4,132, Schol. Vop. 3,102.

विश्ववाच् f. *Allrede*, Beiw. des Mahâpurusha Hariv. 14118.

विश्ववाज्ञिन् scheinbar Hariv. 11253, wo aber mit der neueren Ausg. दृश्य वा° zu lesen ist.

विश्ववार 1) adj. (f. आ) *alles Werthe —, alle Schätze enthaltend, — gebend* u. s. w.: रयि ṚV. 1,48,13. 3,36,10. द्रविण 6,5,1. दीधिति 3,4, 3. घृताची 5,28,1. नियुतः 6,22,11. 7,91,6. शाला AV. 9,3,1. 2. Agni, Ushas, Indra und Andere ṚV. 1,30,10. 113,19. 3,17,1. 7,5,8. 10,4. 70,1. 9,88,3. 97,26. 10,149,4. AV. 7,79,1. 12,3,11. VS. 7,14. 27,13. oxyt. Çat. Br. 1,5,2,2. — 2) f. आ N. pr. einer Frau mit dem patron. Âtrejî, Liedverfasserin von ṚV. 5,28.

विश्ववार्य adj. = विश्ववार ṚV. 8,19,11. 22,12.

विश्ववास m. *der Behälter von Allem* MBh. 6,2949 nach der Lesart der ed. Bomb. विश्वावास ed. Calc.

विश्वविख्यात adj. *in der ganzen Welt bekannt:* °कीर्ति Sarvadarçanas. 113,5.

विश्वविजयिन् adj. *Alles besiegend:* Kâma, Vishṇu Pañkar. 4,3,152.

1. विश्वविद् adj. *allkundig, allmerkend, allwissend:* वाच् ṚV. 1,164, 10. कविं विश्वविदममूरम् 3,19,1. 29,7. क्षेतृ 5,4,3. 10,91,3. Soma 9,27,3. 28,1. 97,56. TS. 5,6,8,6. Çvetâçv. Up. 6,16. MBh. 1,7691. Kusum. 48,6.

2. विश्वविद् adj. *allbesitzend:* Himmel und Erde ṚV. 6,70,6. समुद्र 9,86,29.

विश्वविद्वंस् adj. *allwissend* Verz. d. Oxf. H. 11,b,3 v. u.

विश्वविभावन n. *das Erschaffen des Alls* Bhâg. P. 4,8,20.

विश्वविश्रुत adj. *in der ganzen Welt berühmt* Kathâs. 37,3.

विश्वविश्व adj. etwa *Alles im All seiend*, unter den Beinamen Vishṇu's Pañkar. 4,3,41.

विश्वविसारिन् adj. *sich überallhin verbreitend:* तेजस् Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 23.

विश्ववृक्ष m. *der Baum des Alls*, unter den Beinamen Vishṇu's Pañkar. 4,3,81.

विश्ववृत्ति f. *eine allgemeine Handlungsweise* Kusum. 4,21. 8,15.

विश्ववेद् m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 609.

1. विश्ववेदस् adj. = 1. विश्वविद्. होतर् RV. 1,36,3. 44,7. दूत 4,8,1. Agni 1,143,4. 147,3. 3,25,1. Götter überh. 10,66,1. 5. 93,7. Varuṇa und die Âditja 5,67,3. 8,18,11. 27,21. 25,3. 42,1. 47,3. Pûshan 1,89,6. VS. 10,9. die Marut 5,60,7. AV. 3,3,1. 6,92,1.

2. विश्ववेदस् adj. = 2. विश्वविद् etwa RV. 1,139,3. VS. 3,38. 7,45. Bhâg. P. 8,3,26 (nach dem Comm.).

विश्ववेदिन् adj. *allwissend;* m. N. pr. eines Ministers Mârk. P. 118,28. fgg.

विश्वव्यचस् adj. *Alles in sich fassend, — aufnehmend* RV. 3,46,4. VS. 5,33. 13,56. 15,17. 18,41. AV. 9,7,15. 12,3,19. 53. TS. 1,1,2,1. 4,4,12,5. TBr. 1,5,1,5. 2,4,2,7.

विश्वव्यापिन् adj. *das All erfüllend* Weber, Râmat. Up. 328.

विश्वशंभु m. N. pr. eines Lexicographen Verz. d. B. H. No. 808. Verz. d. Oxf. H. 185,*b*,42. H. 226, Schol.

विश्वशंभू adj. *Allen zur Wohlfahrt dienend* RV. 1,23,10. 160,1. 4. 6,70,6. 10,81,7. आपः VS. 4,7.

विश्वशर्धस् adj. *in ganzer Schaar, vollzählig* RV. 5,34,8.

विश्वशारद adj. *alljährlich* oder *ein ganzes Jahr dauernd* AV. 9,8,6. 19,34,10.

विश्वशुच् adj. *allstrahlend* RV. 7,13,1.

विश्वश्चन्द्र (विश्व + श्च°) adj. (f. आ) *allblinkend, bunt, schillernd:* आपः RV. 1,165,8. 3,31,16. इषः 10,134,3. रयि 9,93,5. वाजाः 8,70,9.

विश्वश्रद्धाज्ञानबल n. Bez. *einer der 10 Kräfte eines* Buddha Buddh. Trigl. 8,*b*. Burnouf in Lot. de la b. l. 784.

विश्वसंवनन n. *ein Mittel Alle zu bezaubern* Spr. (II) 2752.

विश्वसख m. *Jedermanns Freund* Ragh. 18,23.

विश्वसत्तम adj. *der allerbeste:* Kṛshṇa MBh. 14,1485.

विश्वसनीय (von श्वस् mit वि) adj. *Vertrauen verdienend, — erweckend:* स्त्रियः Weber, Kṛshṇag. 266. der Liebesgott und der Mond Çâk. 32,5. आयुधं मन्मथस्य Mâlav. 37. n. impers.: नहि विश्वसनीयं स्यात्तपरच्छन्नस्थिते ऽधमे *man darf nicht trauen* Spr. 1510. तस्य Pańkat. 105,1. Davon °ता f. *das Einflössen von Vertrauen:* अक्षे दीप्तिमतो ऽपि विश्वसनीयतास्य वपुषः Çâk. 27,17. °त्व n. dass.: अविश्वसनीयत्वात्सख्यास्ते Mâlav. 52,17. — Vgl. विश्वसितव्य, विश्वास्य.

विश्वसंभव adj. *aus dem Alles entspringt:* महापुरुष Hariv. 14119. fg.

विश्वसह 1) m. N. pr. eines Sohnes des Dhjushitâçva (Abhjutthitâçva) Ragh. 18,23. VP. 386. des Ilavila (Aiḍaviḍa) 383. Bhâg. P. 9,9,41. — 2) f. आ N. einer der 7 Zungen des Feuers Gaṭâdh. im ÇKDr.: vgl. विश्वरूपी und विश्वरुची.

विश्वसहाय adj. *im Verein mit (nebst) den* Viçve Devâh Hariv. 12614.

विश्वसाक्षिन् adj. *Augenzeuge von Allem, allsehend* Prab. 113,7. 8.

विश्वसामन् m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âtreja, Liedverfassers von RV. 5,22,1. eine Personification VS. 18,39.

विश्वसार 1) m. N. pr. eines Sohnes des Kshatraugas Verz. d. Cambr. H. 7. v. l. विम्बिसार u. s. w. — 2) n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,*b*,15. 101,*b*,21. 104,*a*,23. Verz. d. B. H. No. 1335.

विश्वसारक n. *Cactus indicus Roxb.* (विटूर) Çabdak. im ÇKDr.

विश्वसाह्व m. N. pr. eines Sohnes des Mahasvant Bhâg. P. 9,12,7. °साह्वन् ed. Burn.

विश्वसिंह m. N. pr. eines Fürsten LIA. II,784.

विश्वसितव्य (von श्वस् mit वि) n. impers. *zu trauen:* तस्माद्विश्वसितव्यं च शङ्कितव्यं च केषुचित् MBh. 12,2994. 2272. Prab. 34,2. — Vgl. विश्वसनीय, विश्वास्य.

विश्वसुविद् adj. nach dem Comm. *Alles wohl verschaffend* RV. 1,48,2.

विश्वसू adj. *allgebärend* AV. 12,1,17.

विश्वसूत्रधृक् m. *der Baumeister des Weltalls:* Vishṇu Pańkar. 4,3,27.

विश्वसृज् (nom. °सृग्; °सृड् H. 212, Sch. °सृट् यत्र MBh. 7,1464 fehlerhaft für °सृग्यत्र, wie die ed. Bomb. liest) adj. *allschaffend,* m. *Schöpfer des Alls;* Bez. nicht näher bestimmter schöpferischer Wesen AV. 11,7,4. TBr. 3,12,9,2. Pańkav. Br. 25,18,1. fgg. प्रजापते विश्वसृज्जीवधन्यः (!) TBr. 2,8,1,4. Âçv. Çr. 2,14,12. Maitrjup. 6,8. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,86. M. 12,50. MBh. 7,1464. 14,1435. 1437. Ragh. 10,16. Kumâras. 1,50. 3,28. Çiç. 9,80. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 115. Bhâg. P. 1,3,2. 2,1,26. 9,17. 3,4,11. 5,9. 6,5. 7. 10. 10,27. 11,22. 18,3. 24,21. 4,2,34. 24,72. 6,3,15. 8,1,1. 3,26. 13,23. fg. 10,84,16. 85,6. 12,4,4. Pańkar. 2,2,95. विश्वसृजामयनम् *eine best. Feier* Âçv. Çr. 12,5,19. Kâtj. Çr. 14,5,25. Çâṅkh. Çr. 13,28,8. 14,72,1. Maçaka 11,10 in Verz. d. B. H. 74. °सृज् m. = ब्रह्मन् AK. 1,1,1,12. H. 212, Schol.

विश्वसृष्टि f. *die Schöpfung des Alls* Mârk. P. 99,44.

विश्वसेन m. 1) N. des 18ten Muhûrta Ind. St. 10,296. — 2) N. pr. eines Lehrers Wilson, Sel. Works I,338, N.

विश्वसेनराज् m. N. pr. des Vaters des 16ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37.

विश्वसौभग adj. *alles Glück bringend:* Pûshan RV. 1,42,6. der Wagen der Açvin 157,3.

विश्वस्त 1) adj. s. u. श्वस् mit वि. — 2) f. आ *Wittwe* AK. 2,6,1,11. Trik. 2,6,5. 3,3,183. H. 530. an. 3,301. Med. t. 155. Halâj. 2,332.

विश्वस्था f. 1) *Asparagus racemosus Willd.* (*sich überall findend*) Râǵan. im ÇKDr. — 2) schlechte v. l. für विश्वस्ता *Wittwe* Colebr. und Lois. zu AK. 2,6,1,11.

विश्वस्पृश् adj. unter den Beinamen des Mahâpurusha Hariv. 14120. दिवस्पृश् die neuere Ausg.

विश्वस्फटिक m. N. pr. eines Fürsten von Magadhâ VP. 479.

विश्वस्फाटि, विश्वस्फाणि und विश्वस्फार्णि Varianten von विश्वस्फटिक VP. (II) 4,217.

विश्वस्फूर्जि m. = विश्वस्फटिक Bhâg. P. 12,1,34. °स्फूर्ति v. l. VP. (II) 4,217.

विश्वह und विश्वहा adv. *allezeit, immerdar* RV. 1,111,3. 160,5. 2,12,15. 24,15. 35,14. 4,31,12. 6,1,3. 47,15. 7,21,9. द्रुह्वतांसि विश्वहा 8,43,26. 44,22. 48,14. 10,91,6. इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा 100,4. AV. 9,2,19. 12,1,17. 27. 19,50,2. — Vgl. विश्वध, विश्वाहा.

विश्वहर्तर् m. *Zerstörer des Weltalls:* Çiva Çiv.

विश्वहेतु m. *die Ursache von Allem:* Vishṇu Pańkar. 4,3,152.

विश्वाक्ष adj. *überall Augen habend:* महापुरुष Hariv. 14119.

विश्वाङ्ग adj. *mit allen Gliedern versehen, vollständig:* विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम AV. 12,3,10. विश्वाङ्गं रूपं युवतिर्बिभर्षि 19,49,8.

विश्वाङ्ग्य adj. *in allen Gliedern befindlich* AV. 9,8,4.

विश्वाची (विश्व + अञ्च्) Kâç. zu P. 6,3,92. 95, Vârtt. 3, Schol. 1) adj. f. etwa *allgemein*: आ विश्वाची विदथ्यामनक्तु ṚV. 7,43,3. विश्वाच्या धिया 9,101,3. स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीः 10,139,2. — 2) subst. f. *a*) eine Personification (nach der letzten Stelle) VS. 15,18. N. einer Apsaras Vjâḍi beim Schol. zu H. 183. MBh. 1,3055. 3172. 4821. 2,393. Hariv. 1636. 12475. R. 2,91,17. Brahma P. in LA. (III) 50,18. Mârk. P. 106,59. Vahni-P. im ÇKDr. — *b*) *eine best. Krankheit: Lähmung der Arme und des Rückens* Suçr. 1,256,9. 359,6. 360,19. Çârṅg. Saṁh. 1, 7,70. 2,43,15. — Vgl. विश्वाच.

विश्वाग्नि (विश्व + अ°) m. N. pr. P. 6,2,106, Vârtt. 1.

विश्वातीत adj. *über Alles erhaben* Verz. d. Oxf. H. 196, *a*, No. 455.

विश्वात्मक adj. *das Wesen der Welt bildend* Prab. 117,2.

विश्वात्मन् m. *die Allseele* Maitrjup. 5,1. 6,6. MBh. 12,11232. 14, 1485. Kumâras. 6,1. 88. Varâh. Bṛh. S. 1,1. Bhâg. P. 1,2,32. 8,30. 41. 3,3,19. 4,6,3. 7,38. 14,19. 20,19. 8,3,26. 9,16,27. Weber, Râmat. Up. 319. oft Vishṇu so genannt, daher als N. Vishṇu's aufgeführt Verz. d. Oxf. H. 185,*a*,5. — विश्वात्मनस् so v. a. *dem ganzen Wesen nach, vollständig* (kennen) Hariv. 11293 nach der Lesart der neueren Ausg.

विश्वाद् (विश्व + 2. अद्) adj. *Alles aufzehrend*: Agni ṚV. 8,44,26. 10,16,6. AV. 3,21,4. Çat. Br. 12,5,2,14.

विश्वादर्श (विश्व + आ°) m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1052. 1264.

विश्वाधायस् m. *ein Gott* ÇKDr. nach Siddh. K. — Vgl. विश्वधायस्.

विश्वाधार (विश्व + आ°) m. *die Stütze des Alls* Pañkar. 2,5,44. Weber, Râmat. Up. 350.

विश्वाधिप m. *der Herr des Alls* Çvetâçv. Up. 3,4.

विश्वानर (विश्व + नर) VS. Prât. 3,92. 101. 5,37. AV. Prât. 3,9. P. 6,3,129. 1) adj. *auf alle Männer (Menschen) bezüglich, alle Männer umfassend, bei allen Menschen vorhanden* u. s. w. (vgl. विश्वकृष्टि) Naigh. 5,5. 6. Nir. 7,21. 23. 11,9. 12,20. Savitar ṚV. 1,186,1. 7,76,1. Indra 10,50,1. विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः 8,57,4. — 2) m. N. pr. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. अश्वादि zu 110. als Gottheit Ind. St. 3, 237,*a*. Vater des Agni Verz. d. Oxf. H. 69,*a*,36. fg. ein neuerer Autor, = वल्लभाचार्य Hall 147. — Vgl. वैश्वानर.

विश्वान्तर m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 113,9. — Vgl. विश्वंतर.

विश्वापुष् (विश्व + पुष्) adj. VS. Prât. 3,100. *allgemeines Gedeihen schaffend*: रयि ṚV. 1,162,22.

विश्वाप्सु (विश्वऽप्सु Padap.) adj. ṚV. 1,148,1 nach dem Comm. so v. a. नानारूप, wohl = विश्वप्सु.

विश्वाभू (विश्व + 2. भू) adj. VS. Prât. 3,100. *in Allem —, allenthalben seiend* ṚV. 10,50,1.

विश्वामित्र (विश्व + मित्र) 1) m. VS. Prât. 3,101. 5,37. AV. Prât. 3,9. P. 6,3,130. 2,106, Vârtt. 1. 165, Vârtt. N. pr. eines berühmten Ṛshi, mit dem patron. Gâthina (Gâdheja), öfters zusammen mit Ǵamadagni genannt, Hauptverfasser von ṚV. 3. Nir. 2, 24. Trik. 2,7,20. H. 850. ṚV. 3,53,7. 12. 10,167,4. AV. 4,29,5. 18, 3,15. fg. Ait. Br. 6,18. 20. 7,16. fg. Çat. Br. 14,5,2,6. TS. 3,1,2,3. 5,2,2,4. Pañkav. Br. 14,3,12. Çâṅkh. Çr. 15,21,1. Âçv. Gṛhj. 3,4,2. क्षुधार्तश्चात्तुमभ्यागाद्विश्वामित्रः श्वजाघनीम् । चण्डालहस्तादादाय धर्माधर्मविचक्षणः ॥ M. 10,108. VP. 371. °प्रभृतयः प्राप्ता ब्रह्मत्वमव्ययम् MBh. 1,5432. 5,3907. fgg. 9,2296. fgg. 13,246. fgg. Hariv. 440. 725. fgg. 1457. fgg. 1766. fgg. 14148. R. 1,20,2. fgg. Spr. 2853. VP. 264. 400. 404. fg. Râǵa-Tar. 4,646. sein Zwist mit Vasishṭha MBh. 1,6710. fgg. 9, 2365. fgg. R. 1,51. fgg. VP. 373, N. 9. Verfasser eines Gesetzbuchs Ind. St. 1,22. 233. fg. 467. Verz. d. B. H. No. 1017. Verz. d. Oxf. H. 266,*b*, 20. 268,*b*,40. 270,*b*,44. 279,*a*,52. Kull. zu M. 3,254. des Dhanurveda Ind. St. 1,21. °कल्प 470. ein medicinischer Autor Verz. d. Oxf. H. 311, *b*,39. Schullehrer (दारकाचार्य) Lalit. ed. Calc. 142,4. fgg. Gâhnava Pañkav. Br. 21,12,2. विश्वामित्रस्य संजयः 1. dafür auch kurzweg विश्वामित्र m. N. eines Katuraha Kâtj. Çr. 23,2,14. auch = विश्वामित्रस्यानुवाकः Pat. zu P. 4,3,133. विश्वामित्रस्याघ्न्योद्वोहम् und विश्वामित्रस्यात्यर्धः Namen von Sâman Ind. St. 3,237,*a*. pl. Viçvâmitra's *Geschlecht* ṚV. 3,1,21. 18,4. 53,13. 10,89,17. AV. 18,3,6. 4,54. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,34. fgg. Etymologie des Namens MBh. 13, 4493. Mârk. P. 8,234. fg. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 6,334 (VP. 183); vgl. विश्वामित्रनदी 3,8362. — Vgl. वैश्वामित्र.

विश्वामित्रनदी f. N. pr. eines Flusses; vgl. विश्वामित्र 2).

विश्वामित्रप्रिय 1) adj. Viçvâmitra *lieb*. — 2) m. *a*) *der Kokosnussbaum* Çabdar. im ÇKDr. (sollte नारिकेल etwa aus कार्त्तिकेय verdorben sein?). — *b*) Viçvâmitra's *Freund*, Bein. Kârttikeja's MBh. 3,14635.

विश्वामृत adj. etwa *für allezeit unsterblich* Maitrjup. 6,9. = विश्वममृतयसि जीवयसि Comm.

विश्वायन adj. *überall hindringend, allwissend*: ब्रह्मन् Hariv. 11293. विश्वात्मनः die neuere Ausg., welches Nilak. durch साकल्यात् *vollständig, ganz* erklärt.

विश्वायु (विश्व + आयु) 1) adj. so v. a. विश्वकृष्टि. Agni ṚV. 1,27,3. 67,6. 10. 68,5. 128,8. 6,4,2. Varuṇa 4,42,1. Indra 1,9,7. 6,17,9. 8, 2,4. 10,104,9. Soma 9,86,41. Pûshan 10,17,4. राधस् 1,57,1. 5,53, 13. सखा 1,129,4. 6,33,4. अवितृ 34,5. तत्र 7,34,11. रयि 9,4,10. — 1,73,4. 3,31,18. 10,144,1. VS. 1,4. 22. 18,54. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Purûravas von der Urvaçî Hariv. 1373. 1414. zu den Viçve Devâḥ gezählt (wie Purûravas) MBh. 13,4359. Es könnte auch विश्वायुस् angenommen werden. — 3) n. *alle Leute*: महो द्रुहो अप विश्वायु धायि ṚV. 4,28,2. 6,20,5. प्रुक्षं परि प्रदक्षिणिद्विश्वायवे नि शिश्नथः 10,22,14. möglicher Weise auch 4,42,1; s. u. 1).

विश्वायुपोषस् adj. *allen Menschen Gedeihen schaffend*: रयि ṚV. 1,79, 9. 6,59,2.

विश्वायुवेपस् adj. *alle Leute erregend, — erschreckend* ṚV. 8,43,25.

विश्वायुस् (विश्व + आ°) n. in einer Formel *Gesammtleben, Gesammtgesundheit* TS. 4,4,2,2. Çâṅkh. Çr. 17,12,6. 11,5.

विश्वाराज् (विश्व + राज्) adj. (vor vocalisch anfangenden Casusendungen विश्वराज्) P. 6,3,128. Vop. 3,135. *allherrschend* TS. 1,3,2,1.

विश्वावट m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 7,618. 622. 630.

विश्वावत् (von विश्व) adj. etwa *allgemein* in einer Formel TS. 3,5, 6,2. Beiw. der Gaṅgâ MBh. 13,1849. nach Nilak. = विश्वमवती पा-

लयन्ती.

विश्वावसु (विश्व + वसु) VS. Prât. 3,100. AV. Prât. 3,9. P. 6,3,128. 1) adj. *Allen wohlthuend:* Vishṇu MBh. 6,2944. — 2) m. N. pr. *a)* eines Gandharva (Devagandharva) H. 289. Schol. zu 183. an. 4, 332. fg. ṚV. 10,85,21. fg. 139,4. 5. AV. 2,2,4. 14,2,35. VS. 2,3. TS. 6, 1,6,5. 11,5. Çat. Br. 3,2,4,2. 14,9,4,18. Pañkav. Br. 6,9,22. Âçv. Gṛhj. Pariç. 1,25. Liedverfasser von ṚV. 10,139. — MBh. 1,943. 2555. 4814. 6478. 7011. 3,1773. 8389. 11080 (S. 572). 12048. 16086. 13,1050. Hariv. 11248. 12474. R. 2,91,16 (100,14 Gorr.). Kumâras. 7,48. Bhâg. P. 3,20,39. 22,17. 4,18,17. 7,4,14. 8,11,41. Mârk. P. 21,28. Verz. d. B. H. No. 1050. Verz. d. Oxf. H. 150,*a*, No. 319. 251,*a*,44. — *b)* eines Sâdhja Hariv. 11536. — *c)* eines Marutvant Hariv. 11546. — *d)* eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Hariv. 11543. eines Sohnes des Purûravas (gehört zu den Viçve Devâḥ) VP. 398; vgl. विश्वायु. — *e)* eines Fürsten der Siddha Kathâs. 22,47. 167. 48,69. 90, 39. 50. Nâgân. 23,16. — *f)* eines Manu Uǵǵval. zu Uṇâdis. 1,11. — *g)* eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, No. 320. — 3) m. N. *des 59ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,41. Verz. d. Oxf. H. 332,*a*,2. — 4) f. *Nacht* H. an. — Vgl. वैश्वावसव्य.

विश्वावास (विश्व + आ°) m. *der Behälter von Allem* MBh. 6,2949 (विश्ववास ed. Bomb.). Mârk. P. 23,42.

विश्वास (von श्वस् mit वि) m. *Vertrauen* AK. 2,8,1,23. 3,4,24,149. H. 1518. Halâj. 4,84. 5,62. विश्वासः संपदां मूलम् Spr. 2837. विश्वासात्कथितम् R. 2,75,27. R. Gorr. 2,38,47. 3,66,2. °परम 5,34,21. Vikr. 71,13. नैतद्विश्वासकारणम् Spr. (II) 404. विश्वासोऽकितधी (I) 2838. विश्वासाय विहंगानाम् (subj.) Ragh. 1,51. किं तु मे नास्ति विश्वासस्तव चित्तमजानतः Kathâs. 33,122. यद्यस्ति मयि विश्वासः *zu mir* R. Gorr. 2,99, 30. Spr. (II) 900. (I) 1059. विश्वासं स्त्रीषु वर्जयेत् 1353. 2191. 5024. Kathâs. 20,3. Hit. 10,18. गुरुवेदान्तवाक्येषु Vedântas. (Allah.) No. 12. statt des loc. auch gen.: प्राणानामपि विश्वासो मम न स्यात् R. 5,53,6. तिरश्चाम् Spr. 1032. अन्योऽन्यस्य 5105. आगन्तुना सह Hit. 18,2. प्रमदाजन° Spr. (II) 316. विश्वासं तावदुत्पादयामि Hit. 17,16. 18,16. °प्रतिपन्न Spr. 2855. न जातु गच्छेद्विश्वासम् 1378. गन्तव्यो न तु विश्वासः R. 3,1,32. विश्वासमागत्य 52,49. विश्वासोपगम Çâk. 14. यस्मिन्विश्वासमायाति Spr. 5025. तस्य विश्वासं गत्वा Pañkat. 22,10. वैद्ये विश्वासमेति Suçr. 1,95,19. विश्वासं स्त्रीषु न व्रजेत् Kâm. Nîtis. 7,50. बृहस्पतेरपि प्राज्ञो न विश्वासं व्रजेन्नरः Spr. 1986. यदत्र मारात्मके विश्वासः कृतः Hit. 12,10. यस्य वचसि त्वया विश्वासः कृतः 41,17. नखिनां च नदीनां च शृङ्गिणां शस्त्रपाणिनाम् । विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ Spr. 1362. एकान्ततो न विश्वासः कार्यो विश्वासघातके: (st. loc.) MBh. 12,5160. विदेशगमने चास्य सैव (भार्या) विश्वासकारिका *Vertrauen einflössend* Spr. 4259. उपजातविश्वासा Hit. 86,7. °पात्र 88,12. Verz. d. Oxf. H. 154,*a*,14. विश्वासैकभू Kusum. 24,20. °घात *Missbrauch des Vertrauens, Verrath* Weber, Râmat. Up. 356 (zu lesen °घातजम् st. °घातनम्). °घातिन् *Verräther* R. Gorr. 2,79,17. Kathâs. 88,24. Pañkar. 1,6,45. 10,77. °घातक MBh. 12,5160. Spr. 1803. 2199. 2854. °कृन्तर् Mârk. P. 15,7. °कर्तर् MBh. 13,5466. राज° *ein vom König anvertrautes Geheimniss* Hit. 73,16. अ° (s. auch bes.) *Misstrauen* Spr. 1987. Daçak. 186,2. सर्वेषां कृतवैराणामविश्वासः सुखोदयः MBh. 12,5160. अन्यस्मिन् Kusum. 21,10. मा कृथा मय्यविश्वासम् Kathâs. 73,365.

विश्वासदेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Verz. d. Oxf. H. 292,*b*, No. 708. Verz. d. B. H. No. 1403.

विश्वासन (vom caus. von श्वस् mit वि) n. *das Erwecken von Vertrauen:* तयोर्विश्वासनार्थम् *um bei ihnen Vertrauen zu erwecken* Pañkat. 165,15.

विश्वासस्थान n. *Bürgschaft:* °स्थाने चतुरः शशकानत्र धृत्वा Pañkat. 55,22.

विश्वासह्, °साह् (विश्व + सह्, साह्) adj. VS. Prât. 3,100. 121. adj. *allüberwindend* ṚV. 3,47,5. 8,81,1. AV. 12,1,54. 13,1,28. TS. 4,4,8,1.

विश्वासिक (von विश्वासिन्) adj. *Jmdes Vertrauen besitzend:* नहि मे कश्चिदन्यो ऽस्ति विश्वासिकतरस्त्वया MBh. 1,5718.

विश्वासिन् (von श्वस् mit वि und von विश्वास) adj. 1) *vertrauend, Vertrauen habend* Kathâs. 60,88. अ° *misstrauisch* Spr. 1987. मयि Megh. 111. — 2) *Vertrauen besitzend, zuverlässig* Kâm. Nîtis. 15,42.

विश्वास्य adj. 1) *worauf* oder *auf wen man sich verlassen kann, Vertrauen verdienend, — einflössend:* अहमेव हि ते कृष्णे (voc.) विश्वास्यः सर्वकर्मसु MBh. 4,521. राज्ञा भवति भूतानां विश्वास्यो हिमवानिव 12,2075. 14,1299. सर्वजन्तुषु 13,5606. 5623. अमात्य R. 2,70,21. जयश्री Kathâs. 52,375. Daçak. 183,13. अ° MBh. 12,5552. Spr. 5158. Kathâs. 37,2. 62,46. 102,126. — 2) *dem man Muth zusprechen kann, Trost findend* Spr. (II) 1629.

विश्वाहा adv. = विश्वहा VS. Prât. 3,101. 5,37. ṚV. 1,25,12. व्रता रक्षन्ते वि° 90,2. 100,19. 160,3. 3,16,2. 4,42,10. 6,47,19. 75,8. 17. विश्वाहेदेति सूर्यः 10,37,3. 7. 53,11. AV. 3,15,8. 18,3,34.

विश्वेदेव 1) m. pl. die Viçve Devâḥ: विश्वेदेवानाम् Devala bei Kull. zu M. 3,208. विश्वेदेवैस् Bhâg. P. 6,7,3. 10,17. विश्वेदेवेभ्यस् Mârk. P. 29,17. विश्वेदेवभेदो बुद्धिनिराशः (?) Verz. d. Oxf. H. 79,*a*,2. — 2) adj. comp. संज्ञायाम् P. 5,4,155, Schol. als Beiw. Mahâpurusha's Hariv. 14115. 14119 nach der Lesart der neueren Ausg. (विश्वदेव die ältere). — 3) m. N. pr. eines Asura: विश्वेदेवेन विश्वेशः सहायुध्यत Hariv. 13190 (nach der Lesart der neueren Ausg.).

विश्वेदेवर् m. *Klitoris* Çabdârthak. bei Wilson.

विश्वेभोजस् Uṇâdis. 4,237. m. als N. Indra's Uǵǵval. Nach dem Sûtra könnte man eben so gut विश्वभोजस् bilden, welches wirklich vorkommt.

विश्वेवेदस् Uṇâdis. 4,237. m. als N. Agni's Uǵǵval. Nach dem Sûtra könnte man eben so gut विश्ववेदस् bilden, welches belegbar ist.

1. विश्वेश (विश्व + ईश) 1) m. *a) der Herr des Weltalls* (Beiw. und Bein. Brahman's, Vishṇu's und Çiva's) Hariv. 13190 (nach der Lesart der neueren Ausg.). MBh. 6,2944. R. Gorr. 1,67,16. Weber, Râmat. Up. 332. Kathâs. 11,32. 39,139. 47,46. Verz. d. Oxf. H. 160,*b*,4. Bhâg. P. 1,8,41. Vop. 25,32. Mârk. P. 23,42. 42,2. — *b)* N. pr. eines Mannes Hall 97. — 2) f. आ N. pr. einer Tochter Daksha's und Gattin Dharma's VP. 119, N. 12. — 3) n. N. eines Liñga Verz. d. Oxf. H. 64,*a*,8. °लिङ्ग 72,*a*,14.

2. विश्वेश (wie eben) adj. *die* Viçve Devâḥ *zur Gottheit habend;* n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Varâh. Bṛh. S. 9,33.

विश्वेशितर् (विश्व + ई°) m. *der Herr des Weltalls* Spr. 1550.

1. विश्वेश्वर (विश्व + ई°) 1) m. *a) der Herr des Weltalls,* = विश्वेश

MAITRJUP. 5,1. MBH. 6,2944. 13,773. WEBER, RÂMAT. UP. 332. RAGH. 18, 23. PRAB. 70,1. BHÂG. P. 2,2,14. 3,14,40. 6,8,20. 9,4,59. WEBER, KRSHNAG. 289. 295. SARVADARÇANAS. 96,21. 97,6. Verz. d. B. H. 147,*b* (98). °लिङ्ग ebend. (99). — *b*) N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 153,*b*,25. 226,*b*, No. 555. 228,*a*,36. 262,*b*, No. 633. 274,*b*, No. 651. fg. 277,*a*,8. Verz. d. B. H. No. 1403. HALL 6. 70. 182. 125. विश्वेश्वराश्रम 28. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 380,*a*, No. 401. °पण्डित HALL 106. °पूज्यपाद 97. °भट्ट Verz. d. Oxf. H. 292,*b*, 15. °मिश्र 133,*a*, No. 244. °सरस्वती 543,*c*. Verz. d. B. H. No. 626. Ind. St. 1,1. HALL 108. 119. 156. fg. = विश्वेश्वरानन्दसरस्वती 119. 145. COLEBR. Misc. Ess. I, 337. — 2) f. ई *a*) *die Herrin des Weltalls* Verz. d. Oxf. H. 80,*b*,31. — *b*) *eine best. Pflanze* VARÂH. BRH. S. 48,39. — 3) wohl n. N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*a*,36. *b*,27. — Vgl. भट्ट°.

2. विश्वेश्वर (wie eben) = 2. विश्वेश VARÂH. BRH. S. 10,15. 15,19.

विश्वेश्वरदत्त m. N. pr. eines Mannes: °मिश्र HALL 2. 12.

विश्वेश्वरस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit MBH. 13,7649.

विश्वैकसार (विश्व-एक-सार) n. N. pr. eines heiligen Gebietes RÂGA-TAR. 5,44.

विश्वौजस् (विश्व + ओ°) adj. *allkräftig* RV. 10,55,8. ÇÂNKH. ÇR. 16,18,4.

विश्वौषध (विश्व + औ°) n. *Panacee d. i. trockner Ingwer* RÂGAN. im ÇKDR. AUSH. 21.

विश्वौकी s. विश्ववक्.

विश्व्या (von विश्व) adv. *irgendwo* RV. 2,42,1. = सर्वतस् NIR. 9,4.

1. विष्, वेवेष्टि, वेविष्टे (व्याप्तौ) DHÂTUP. 25,13. P. 7,4,75. अवेवेट्, अवेविष्ट, वेविष्यात्, वेविषीत P., Schol. im VEDA und in den BRÂHMANA: विवेष्टि, विविष्मस्, अविवेस्, विवेस्, अविवेषीस्, विवेषस्, वेवेष्टि, वेविषति, वेविषाण, वेविषत्; पर्यवेषत् episch; अविषत् und अविक्षत् VOP. 8,38. 10,9. विवेष, विविषुस्; वेक्ष्यति (vgl. KÂr. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10) P. 8,2,41, Schol. विष्टी; partic. विष्ट. 1) *wirken, thätig sein; zu Stande bringen, ausrichten, thun:* समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः RV. 10,117,9. अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्मः 6,23,5. अविवे रपांसि 31,3. 1, 69,8. अर्थं दिवे दिवे विविषुरप्रमृष्यम् 6,32,5. अपांसि नर्याविवेषीः 4,19, 10. तद्विविड्ढि यत्त इन्द्रो जुजोषत् 8,85,12. 1,27,10. विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु 3,30,6. याभिर्विवेषो धीभिः 7,37,5. वेवेष्टि यज्ञम् ÇAT. BR. 1,1, 2,1. यस्य हव्या वेविषद्विषः RV. 8,19,11. ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः 10,109,5. इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः etwa so v. a. *unterstützt von* Indra 7,18,15. — 2) *dienend thätig sein* oder *ausführen, dienen:* तावत्त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः RV. 6,23,6. यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष 5,77,4. अन्यस्यैविह तन्वा विवेष 2,35,13. विष्ट्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया 3,60,3. 1,110,4. 10,94,2. — 3) *fertig bringen* so v. a. *bewältigen, in die Gewalt bekommen:* नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः। निवेशने शततमाविवेषीः *dass du 99 Festen an einem Tage, am Abend die hundertste gewannst* RV. 7,19,5. 21,4. अहिं वज्रेण 4,22,5. यो अस्य पारे (du.) रजसो विवेष *beherrscht* 10,27,7. विवेष यन्मा धिषणा 3,32,14. अकृन्यद्वत्रं नर्यं विवेरपः 10,147,1. 76,3. — 4) eine Speise *fertig bringen* so v. a. *aufzehren* NAIGH. 2,8. अन्ना वेविषत् RV. 10,91,7. स उद्वतो निवतो याति वेविषत् Agni 3,2,10. AV. 2,12,8.

— caus. *bekleiden:* ते वेषयित्वा स्त्रीवेषैः साम्बम् BHÂG. P. 10,1,14.

— आ, hierher gehört आविशन 5), welches demnach आवेषण zu schreiben wäre.

— उप *besorgen, bedienen:* उपवेषोपविड्ढि नः TBR. 3,3,11,1. ÇAT. BR. 1,2,1,3. Unbestimmt lassen wir RV. 10,61,12. — Vgl. उपवेष.

— नि s. निवेष्य.

— निस्, निर्विषन् unter परिविष fehlerhaft für निर्विशन्.

— परि, °वेविषाणि, °अवेविषम् P. 7,3,87, Schol. 1) *bedienen, aufwarten*, namentlich *Jmd* (acc.) *Speisen auftragen; Speisen zurüsten, anrichten:* दासा परिविषे (infin.) RV. 10,62,10. इमां देवतां परि वेवेष्मीत्येनं परि वेविष्यात् AV. 15,13,8. 9,6,53. अदितिं परिवेविषति AIT. BR. 1,17. TBR. 2,1,2,9. कनीयां ज्यायांसं परिवेवेष्टि KÂTH. 36,7. पात्रैर्निर्णिज्य परिवेविषति ÇAT. BR. 1,3,1,2. 5,1,26. 9,2,2,3. 3,41. PAÑKAV. BR. 15,7, 3. पर्यवेषन्द्विजातींस्तान् MBH. 14,2551. 3,8619. अवेदव्रतचारित्रास्त्रिभिर्वर्णैः — मल्लवत्परिविष्यन्ते 13,1618. fgg. (die ed. Bomb. an allen drei Stellen richtig ष). परिविष्यमाण so v. a. *beim Essen seiend* KHÂND. UP. 4,3,5. अग्नो यथा प्रार्थमोषसं परिवेवेष्टि TBR. 2,1,2,12. मल्लक्लीनं क्रियाक्लीनं यच्छ्राद्धे परिविष्यते (so ed. Bomb.) MBH. 13,1580. fg. अर्धसिद्धं परिविश्यमाणम् (lies परिविष्य°) MÂRK. P. 51,33. परिवेक्ष्यमाणां विलोक्याभक्ष्यम् BHÂG. P. 9,9,22. अन्नं परिविष्टं परिवेक्ष्यमाणं च KÂTJ. ÇR. Comm. 364,17. पक्वं परिविष्टमग्नो AV. 6,122,3. दृढ्विर्न जिह्वा परिविष्टमादत् RV. 10,68,6. — 2) pass. *einen Hof bekommen* oder *haben* (von Sonne und Mond): परिविष्यते SHADV. BR. 5,10. HARIV. 12792 (सततं परिविश्यते die ältere, अभीक्ष्णं परितप्यते die neuere Ausg.). आदित्ये परिविष्यमाणे GOBH. 4,5,25. परिविष्ट *mit einem Hofe versehen* MBH. 13,982. fg. VARÂH. BRH. S. 34,9. 15. — caus. *Jmd* (acc.) *Speisen auftragen* M. 3,228. MBH. 1,7182 (परिवेष्य ed. Bomb. st. परिवेश्य der ed. Calc.). R. 1,13,19 (पर्यवेशयन् 16 GORR.). R. GORR. 2,56,31 (fälschlich °वेश्य). BHÂG. P. 10,29,6. — Vgl. परिविष्टि, परिवेष fgg. und परिवेष्टर् fg.

— प्र desid. s. प्रवीविक्षु in den Nachträgen.

— सम् 1) *zubereiten, beschaffen:* अग्ने संविविषो रयिम् RV. 8,64,11. — 2) *kleiden:* पिशाचवेषेण संविष्टः HARIV. 14633.

2. विष् (= 1. विष्) 1) adj. *aufzehrend* in जरद्विष् *Dürres aufzehrend.* — 2) f. = व्यापन MED. sh. 24.

3. विष् (nom. विट्) f. SIDDH. K. 247,*b*,2 v. u. *faeces* AK. 2,6,2,19. 3, 4,26,199. H. 634. MED. sh. 24. HALÂJ. 3,15. SUÇR. 1,107,18. 2,109,1. विण्मूत्र (s. auch bes.) 1,45,15. 49,21. JÂGÑ. 1,152. BHÂG. P. 5,26,22. 6, 18,24. 7,14,13. मूत्रविट् M. 5,135. विण्मध्ये VARÂH. BRH. 25(23),8. Verz. d. B. H. No. 929, Çl. 42 (fälschlich विशि). — Vgl. विट्क, विट्कारिका, विट्चदिर, विट्चर, विट्पल, विट्सङ्ग, विड्वारिका, विड्वारी, विड्गन्ध, विड्ग्रह, विड्घात, विड्, विड्गन्ध, विड्भङ्ग, विड्भुज् (auch BHÂG. P. 5,5,1), विड्भेद, विड्भेदिन्, विड्भोजिन्, विड्लवण, विड्वराह (auch BHÂG. P. 2,3,19), विण्मूत्र, कर्ण°, गो°, धातु°, नेत्र°, बद्ध° und विष्ठा.

4. विष्, वेषति (सेचने) DHÂTUP. 17,47.

5. विष्, विष्णाति (विप्रयोगे) DHÂTUP. 31,54.

1. विषं (von 1. विष्) m. 1) *Diener, Aufwärter, Besorger* RV. 8,19, 11. 10,109,5. — 2) N. pr. eines Sâdhja HARIV. 11537 (n. A.).

2. विषं (wie eben; eig. *wirksam, bewältigend*) 1) n. TRIK. 3,5,7. m. n. SIDDH. K. 249,*b*,6. zu belegen nur n. *a*) *Gift* AK. 1,2,1,10. TRIK. 1,

2,4.5. H. 1195 (m.). an. 2,571. Med. sh. 25. Halâj. 3,19.24. 5,75. ṚV. 1,117,16.191,11.7,50,3. विषमैभ्यो ग्रस्त्वः 6,61,3. विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु so v. a. *Milch soll ihnen zu Gift werden* 10,87,18.23. केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह 136,7. AV. 4,6,2. fgg. 5,19,10. 6,90,2. Çat. Br. 2,4,2,2. 9,1,1,10. 10,5,2,20. विषेण तां समामोषधयो ऽक्ताः Pańkav. Br. 6,9,9. TBr. 2,1,1,1. M. 4,56 (pl.). 10,88. मद्यपातो विषास्वादः 11,9. विषमग्निं जलं रज्जुमास्थास्ये MBh. 3,2163. 2622. तीक्ष्ण 2838. राघवे विषं लिप्त्वा (मुक्त्वा ed. Bomb.) R. 2,43,2. संमोहादिव बालेन यथा स्याद्भक्षितं विषम् 63,11. R. Gorr. 1,46,31. Suçr. 1,2,16. 21,14. तीव्राणि — उत्कृति विषाणि नागः Çiç. 4,63. तीक्ष्णविषदिग्धेन शरेण MBh. 13,268. °दिग्धस्य भक्तस्य Spr. (II) 1506, v. l. °प्रदिग्ध Varâh. Bṛh. S. 78,1. 15,7. दुग्धमप्युरगे विषम् Spr. (II) 2088. मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम् (I) 1182, v. l. 1623. माता यदि विषं दद्यात् 2167. नानाकारमपि प्रशाम्यति विषं गारुत्मतादृश्मनः 2706. °हीनो नागः 2868. विषादप्यमृतं ग्राह्यम् 2869. fg. विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषम् (शक्यं वारयितुम्) 2929. यत्तदग्रे विषमिव परिणामे ऽमृतोपमम् 4769. संमानाद्ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव 5187. Bhâg. P. 4,18,22. विषाग्नि *brennendes Gift* Ṛt. 1,19. Varâh. Bṛh. S. 12,12. विषाग्निपा unter den Beiww. Çiva's MBh. 12,10436. विषानल Pańkar. 1,3,19. मदनविषानल Varâh. Bṛh. 24(22),7. ग्राल°, ग्रार्तव°, दृष्टि°, मूत्र° u. s. w. Suçr. 2,257. fgg. जङ्गम, स्थावर 251,9. Verz. d. Oxf. H. 314,*b*,12. fgg. °रक्त 98,*a*,5. °परीक्षा 86,*a*,5. °प्रतिषेध 309,*a*,6. 11.13.18. 357,*b*,2. °तन्त्र 309,*a*,6. Verz. d. B. H. No. 946. स्थावरजङ्गमविषदान 963. °प्रयोग 905. विषोपविषसाधन 967. विषाणां शोधनम् 969. विषं स्तम्भयति Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,118. °लड्डुक *vergiftet* Vet. in LA. (III) 9,11. fg. विषय° Bhâg. P. 5,1,22. कर्ण° *in's Ohr geträufeltes Gift* (uneig.) Spr. (II) 1546. दुरधीता विषं विद्या ग्रजीर्णे भोजनं विषम्। विषं गोष्ठी दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम्॥ (I) 1173. नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम् 1549. 2859. am Ende eines adj. comp. (f. ग्रा): व्याली तीक्ष्णमहाविषा R. Gorr. 2,9,40. व्याली घोरविषा 34,9. 75,17. सविषाणामन्नानाम् Spr. 4985. विष = वत्सनाभ Râǵan. im ÇKDr. — *b*) *Wasser* Naigh. 1,12. AK. 3,4,29,225. H. ç. 163. H. an. Med. Hierher ṚV. 10,136,1 nach Nir. 12,28. — *c*) mystische Bez. *des Buchstabens* म Weber, Râmat. Up. 317. fgg. — 2) adj. *giftig* (f. ग्रा) AV. 7,113,2 (im Wortspiel). — 3) f. ग्रा *eine best. Pflanze* (= ग्रति° u. s. w.) AK. 2,4,3,18. H. an. Med. Ratnam. 94. Suçr. 1,420,1. — Vgl. ग्र°, ग्रघ°, ग्रति°, उप°, दूषी°, दृग्विष, दृष्टि° (auch Kir. 14,25), नष्ट°, निर्विष, नेत्र°, प्रविषा, प्रतिविष, मन्द°, महा° (हालाहल° R. 1,45,21), मूत्र°, लाला°, लोम°.

3. विष (nom. act. von 1. विष् in दुर्विष; nach Nilak. = दुःखेन वेष्टुं व्याप्तुं प्रवेष्टुमशक्यः.

4. विष n. fehlerhafte Schreibart für बिस Mukuṭa zu AK. nach ÇKDr. *Myrrhe* Râǵan. im ÇKDr.

विषकण्टकिनी f. *eine best. giftige Pflanze*, = बन्ध्याकर्कोटकी Râǵan. im ÇKDr.

विषकन्द m. *ein best. giftiges Knollengewächs*, = नीलकन्द Râǵan. im ÇKDr.

विषकन्या f. *Giftjungfrau, ein Mädchen, das angeblich dem, der ihr beiwohnt, den Tod bringt*, Kathâs. 19,82. Mudrâr. 42,16. Verz. d. B. H. 263, N. — Vgl. विषाङ्गना und Gutschmid in Z. d. d. m. G. 15,94. fg.

विषकृत adj. *vergiftet*: भक्ष्य R. 2,88,20 (96,23 Gorr.). 98,4.

विषकृमि (विष = 3. विष् + कृ°) m. *Mistkäfer* Spr. 5015.

विषगिरि m. *Giftberg* AV. 4,6,7; vgl. 8.

विषघ 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. ग्रा *Cocculus cordifolius* Dc. (गुडूची) Çabdak. im ÇKDr.

विषघात m. *Giftarzt* R. Gorr. 2,90,24.

विषघातक adj. *durch Gift tödtend, Giftmörder* Varâh. Bṛh. S. 86,32.

विषघातिन् 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) m. *Mimosa Seeressa* (शिरीष) *Roxb.* Çabdam. im ÇKDr.

विषघ्न 1) adj. (f. ई) *Gift zerstörend*; n. *Antidoton* Suçr. 1,166,1. ग्रगद 240,6. 2,4,2. 251,5. 254,6. ग्रगद, रत्न M. 7,218. उदक, मणि Kâm. Nîtis. 7,10. ग्रङ्गुलीय Kathâs. 10,50. 95. क्रिया Pańkar. 3,14,40. चित्ताविषघ्नो ऽगदः Spr. 2342. — 2) m. Bez. verschiedener Pflanzen: *Mimosa Seeressa* (शिरीष) *Roxb.* H. an. 3,416. Med. n. 133. Çabdak. im ÇKDr. = यवास und विभीतक Râǵan. ebend. = चम्पक Gaṭâdh. ebend. — 3) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: *Hingcha repens Roxb.* Trik. 2,4,31. *Ipomoea Turpethum R. Br.* und *Cocculus cordifolius DC.* H. an. Med. *Tragia involucrata Lin.* Ratnam. 69. = हरिद्रा, शालपर्णी und इन्द्रवारुणी Aush. 55. = वनबर्बरिका, स्वल्पफला, भूम्यामली, रक्तपुनर्नवा, वृश्चिकाली und महाकारञ्ज Râǵan. im ÇKDr. — °पान Pańkar. 3,14,42.

विषङ्ग (von सञ्ज् mit वि) m. *das Hängen an*; s. निर्विषङ्ग.

विषङ्गिन् (von विषङ्ग) adj. am Ende eines comp. *behaftet* so v. a. *gesalbt mit*: दिव्यानुलेपन° Pańkar. 3,11,5.

विषजल n. *Giftwasser* Bhâg. P. 10,31,3.

विषजिह्व 1) adj. *giftzüngig* Çat. Br. 1,1,4,18. — 2) m. *Lipeocercis serrata Trin.* (देवताड) Ratnam. 62.

विषजुष्ट adj. *vergiftet*: शोणित Suçr. 1,93,1.

विषज्वर m. *Büffel* Çabdar. im ÇKDr. विषत्वर Wilson nach ders. Aut.

विषणि m. *eine Schlangenart* Çabdârthak. bei Wilson.

विषण्ड n. = मृणाल Çabdar. im ÇKDr.

विषण्ण s. u. सद् mit वि; davon °ता f. *Bestürzung* H. 312.

विषता (von 2. विष) f. *das Giftsein*: विषतां समुपैति *wird zu Gift* Çiç. 9,68.

विषतिन्दु m. N. zweier *Giftpflanzen*: = कारस्कर Râǵan. im ÇKDr. = कुपीलु Bhâvapr. im ÇKDr.

विषत्वर s. विषज्वर.

1. विषद 1) n. *grüner* (*schwarzer*) *Eisenvitriol* Râǵan. im ÇKDr. — 2) f. ग्रा = ग्रतिविषा und वृद्धकरेली (vulg.) Aush. 46.

2. विषद fehlerhaft für विशद.

विषदंष्ट्रा f. *eine best. Pflanze*, = सर्पकङ्काली Ratnam. im ÇKDr.

विषदन्तक m. *eine Schlange mit Giftzähnen* Çabdak. im ÇKDr.

विषदर्शनमृत्युक m. *eine Fasanart* (*beim Anblick von Gift den Tod findend*) H. 1340. — Vgl. विषमृत्यु.

विषदायक m. *Giftmischer* R. 2,75,38.

विषदूषण adj. *Gift zerstörend* AV. 6,100,1. 10,4,24.

विषद्रुम m. 1) *Giftbaum* Spr. 2755. Râǵa-Tar. 4,26. — 2) *ein best. Giftbaum*, = कारस्कर Râǵan. im ÇKDr.

विषधर m. *Giftschlange* AK. 1,2,1,7. H. 1303. Hâr. 15. Halâj. 3,18. Spr. 2250 (II). 2860. 2866. Git. 1,19. विषधरी f. Harb. Anth. 510, Çl. 3.

विषधर्मा f. *Mucuna pruritus Hook.* Çabdak. im ÇKDr.

विषधात्री f. N. pr. der Gattin Garatkâru's Çabdam. im ÇKDr.

विषधान m. *Giftbehälter* AV. 2,32,6.

विषनाडी f. *ein best. unheilbringender Zeitpunkt* (für die Geburt), *dessen Folgen durch eine Sühnungshandlung abzuwenden sind*, Saṁsk. K. 89,*a*,11. *b*,1. 11. 90,*a*,9. 10. 91,*a*,4.

विषनाशन 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) m. *Mimosa Seeressa* (शिरीष) *Roxb.* Hâr. 94. Ratnam. 159.

विषनाशिन् 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. °नाशिनी *eine best. Pflanze*, = सर्पकङ्काली Çabdak. im ÇKDr.

विषनुद् 1) adj. *Gift vertreibend.* — 2) m. *Calosanthes indica Blum.* Çabdak. im ÇKDr.

विषपत्त्रिका f. *eine best. Pflanze* (*giftige Blätter habend*) Suçr. 2,251,16.

विषपन्नग m. *Giftschlange* Kâm. Nîtis. 7,11.

विषपर्वन् m. N. pr. eines Daitja Kathâs. 45,379.

विषपादप m. *Giftbaum* Kâm. Nîtis. 14,30.

विषपुच्छ adj. (f. ई) *einen giftigen Schwanz habend* P. 4,1,55, Vârtt. 2.

विषपुट m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* gaṇa यस्कादि zu P. 2,4,63.

1. विषपुष्प n. 1) *eine giftige Blüthe* Kathâs. 70,91. — 2) n. *die Blüthe der blauen Wasserrose* Çabdam. im ÇKDr.

2. विषपुष्प 1) adj. *giftige Blüthen habend.* — 2) m. *Vangueria spinosa Roxb.* Ratnam. 29.

विंषपुष्पक 1) adj. *durch den Genuss giftiger Blumen erzeugt:* ज्वर P. 5,2,81. — 2) m. *Vangueria spinosa Roxb.* Bhâvapr. im ÇKDr.

विषप्रस्थ m. N. pr. eines Berges MBh. 3,8513.

विषभद्रा f. = बृहद्दन्ती Râgan. in Nigh. Pr.

विषभद्रिका f. = लघुदन्ती Ausb. 16.

विषभिषज् m. *Giftarzt* H. 474. Halâj. 2,458.

विषभुजंग m. *Giftschlange* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

विंषम (2. वि + सम) P. 8,3,88. = स्थपुट Trik. 3,1,2. Hâr. 124. विषमम् adv. P. 6,2,121, Schol. gaṇa तिष्ठद्ग्वादि zu 2,1,17. 1) adj. (f. आ) *uneben:* काल: समविषमकर: Spr. (II) 1693. समं च विषमं चैव न प्राज्ञायत (so ed. Bomb.) किं च न MBh. 6,5644. Boden 3,651. fg. 7,1954. Hariv. 360. 362. Kâm. Nîtis. 15,6. 19,14. Varâh. Bṛh. S. 51,4. अधन् Suçr. 1,198,3. R. Gorr. 2,86,17. कापथ R. Schl. 2,108,7. लङ्का (मु°) 5,9,27. उपलविषमे विन्ध्यपादे Megh. 19. Bhâg. P. 5,9,12. नद्या इव प्रवाहो विषमशिलासंकटस्खलितवेग: Spr. 1403. Pankat. 188,9 (शिला st. शील zu lesen). Brust Varâh. Bṛh. S. 68,29. Hände 70,22. Perlen 81, 4. 6. 19. — *b*) *ungleich, unähnlich, verschiedenartig, wechselnd* Nir. 6, 23. Ait. Br. 2,26. 6,13. TBr. 1,8,2,1. रशना: Çat. Br. 6,2,1,19. स्तोमा: 12,2,2,3. विषमर्च Çâṅkh. Gṛhj. 1,8. स्तव: Suçr. 1,23,8. Augen 115, 7. °प्राक्टिन् 25,21. व्रण 68,6. 2,6,11. मा कृथं विषमं समम् M. 4,225. पुत्रभाग 9,215. Sûrjas. 2,30. वृष्टि Varâh. Bṛh. S. 8,50. नाभि 68,22. विषमवलयो मनुष्या: 25. 27. दन्ता: 70,21. Ind. St. 8,180. 309. 326. 468. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,16. Verz. d. Cambr. H. 78. स्वशिविकायां विषमगतायाम् Bhâg. P. 5,10,7. 2. विषममुह्यते यानम् ebend. 8,23,8. 1,8,29. 3,15,32. 6,16,41. Daçak. 91,3. °रूप Nir. 11,23. 12,17. °रागता Ṛv. Prât. 14,4. अ° (दृष्टि) Bhâg. P. 3,15,29. — *c*) *unpaar, ungerade* (der Zahl nach) Spr. 1357. Varâh. Bṛh. S. 50,1. 20. 78,23. 96,9. 102,7. 104, 51. Bṛh. 4,11. Laghuǵ. 1,9 in Ind. St. 2,279. H. 15. *was nicht mehr ohne Bruch getheilt werden kann* (z. B. 1 unter 2, 2 unter 3, 3 unter 4 u. s. w.): अन्नाविकं सैकशफं न जातु विषमं भजेत् । अन्नाविकं तु विषमं ज्येष्ठस्यैव विधीयते ॥ M. 9,119. — *d*) *worüber man nicht glatt hinwegkommen kann, beschwerlich, schwierig, schlimm, gefährlich, bösartig:* दशा Spr. (II) 962. (I) 2862. Kathâs. 24,137. 101,132. काल R. 2,88,15. ग्रीष्मविषम: काल: Râǵa-Tar. 8,1634. अमित्रविषमे मार्गे 2052. राज्ञोपसेवन 2188. नयनविषमैर्विद्युद्दर्पै: 1558. विषमा वामा विधेर्वृत्तय: Spr. 1240. रोग Suçr. 1,171,16. विष Spr. 2866. Mârk. P. 41,3. वायु MBh. 7,8622. वज्रावपातविषमं भयम् Hariv. 5024. युद्ध 8871. व्यसन Mârk. P. 99,20. अटवी Kathâs. 20,39. भाव: पर्वतसूक्ष्ममार्गविषम: स्त्रीणाम् Spr. (II) 75. विषविषमबाणा 1129. विषवल्लीबीजविषमा: क्लेशा: 1312. शोकदहन (I) 4270. कर्मोर्मीणां विषमवलनै: (II) 1909. असिधाराव्रत (I) 1859. विरहविषम: काम: 2834. प्रवृत्ति *eine schlimme Nachricht* R. 5,33,42. कान्ताविश्लेषदु:खव्यतिकरविषमो यौवने चोपभोग: Spr. (II) 1851. विद्या गुरुविनयवृत्त्यातिविषमा 1871. अतिविषमविषयविषजालाशय Bhâg. P. 5, 1,22. 38. °लक्ष्मी so v. a. *Unglück* Varâh. Bṛh. S. 81,27. कठिनविषमामेकवेणीम् *unbequem* Megh. 89. *schwer zu verstehen:* विषमोक्तय: Goládhj. Anf. H. 256, Schol. नयने *grässlich, fürchterlich* R. 5,24,18. von *bösen, gefährlichen* Thieren und Menschen: योषित्सर्प Spr. (II) 410. कृपा: 1357. जिह्मगा: und खला: (I) 2864. नक्र 2865. Fürsten und Berge 1176 (मु°). 2863. M. 7,27. Spr. (II) 55. ज्ञातय: 2443. स्त्रिय: (I) 1393. विषधरतो ऽप्यतिविषम: खल: 2860. वाक्यवज्रविषमे ज्ञने 2928. 3298. Râǵa-Tar. 4,358. 6,280. विदैरसूयाविषमै: 8,2032. Varâh. Bṛh. S. 5,41. सुहृत्सु विषम: Bṛh. 18,5. 21 (19),8. Bhâg. P. 7,1,1. 13,42. °धी *feindselig* Pankar. 3,9,22. समविषममति Bhâg. P. 6,9,36. °चेतस् Spr. 1333. विषमाशया Râǵa-Tar. 6,198. नृशंसविषमक्रिय *schlecht, gemein* 5,350. विषमाचार R. 3,76,28. अविषममभिसमीतमाणायो: so v. a. *freundlich* Bhâg. P. 5,1,21. — *e*) *unpassend, falsch, unrichtig:* उपचार Suçr. 1,117,7. उपन्यास Sarvadarçanas. 50,9. दृष्टान्त Çaṅk. zu Brahmas. 1,1,5. — *f*) *unehrlich:* °व्यवहाराश्च विषमाश्चैव वृद्धिषु । लाभेषु विषमाश्चैव ते वै निरयगामिन: ॥ MBh. 13,1640. समैर्हि विषमं यस्तु चरेत् M. 9,287. — 2) n. *a*) *Unebenheit, rauher —, unwegsamer Boden, schlechter Weg* VS. 30,16. TS. 2,1,2,1. °सद् Çat. Br. 6,7,2,11. °लङ्घन Pâr. Gṛhj. 2,7. Gobh. 2,4,2. Âçv. Çr. 12,6,8. समानि विषमाणि च M. 1,24. MBh. 1, 4650. 5888. 3,13069. 14,181. Hariv. 361. R. 2,52,91. 79,13. R. Gorr. 2, 87,4. 3,45,12. 4,41,12. Suçr. 1,134,18. विषमावतार Vikr. 10,9. Spr. (II) 2177. विषमं च पदे पदे (I) 2484. 5179. Bhâg. P. 4,17,4. so v. a. *Abgrund* M. 8,232. MBh. 3,2545. त्यदये विषमे देहमात्मन: R. 3,51,40. 4,60,22. पर्वतं °घोरम् Spr. 1740. 2731. गर्ताविषमे वा प्रपतित: Pankat. 142,6. *rauhe Pfade* bildlich so v. a. *Noth, Bedrängniss, Ungemach:* दुर्गेषु विषमेषु च R. Gorr. 2,21,18. Spr. 3078. Kathâs. 123,339. विषमे Bhag. 2, 2. MBh. 5,1037. विषमे समुपस्थिते Spr. 2567. 2574. विषमे स्थित: R. 2, 74,19. °स्थित Spr. 1312. 2720. °पतित 2396. — *b*) in der Rhetorik

Incongruenz, *Unvereinbarkeit* (zweier Begriffe, der Ursache und Wirkung u. s. w.) PRATÂPAR. 91,*b*,9. KUVALAJ. 101. — *c*) भरद्वाजस्य विषमम् N. eines Sâman Ind. St. 3,227,*b*. — Vgl. वैषम्य.

विषमक (von विषम) adj. *etwas uneben*, *nicht recht glatt:* Perlen VARÂH. BṚH. S. 81,19.

विषमकर्ण adj. *ungleiche Diagonalen habend* (ein Tetragon) COLEBR. Alg. 58.

विषमकर्मन् n. *dissimilar operation; the finding of the quantities, when the difference of their squares is given, and either the sum or the difference of the quantities* COLEBR. Alg. 26. 324.

विषमखात n. *a cavity*, *the sides of which are unequal: an irregular solid* COLEBR. Alg. 97.

विषमचक्रवाल n. *Ellipse* (math.) Ind. St. 10,274.

विषमचतुरश्र m. *ein Viereck mit ungleichen Winkeln*, *Trapez* COLEBR. Alg. 58. 295. Ind. St. 10,274. 279.

विषमचतुष्कोण adj. dass. Ind. St. 10,274.

विषमच्छद (*Blätter von ungerader Zahl habend*) m. = सप्तच्छद AK. 2,4,2,3.

विषमज्वर m. *unregelmässiges Fieber* SUÇR. 1,179,1. 188,20. 201,17. 204,1. Verz. d. B. H. No. 905. 965.

विषमत्रिभुज m. *ein ungleichseitiges Dreieck* COLEBR. Alg. 295.

विषमत्व (von विषम) n. *Ungleichheit*, *Verschiedenheit* MAITRJUP. 5,2.

विषमनयन adj. *Augen von ungerader Zahl habend* d. i. *dreiäugig;* m. Bein. Çiva's HÂR. 8.

विषमनेत्र dass. H. 16. 196, Schol.

त्रिषमल्ल m. *Schlangenbeschwörer* ǴAṬÂDH. im ÇKDR.

विषमपद adj. (f. आ) 1) *ungleiche Schritte habend*, — *zeigend:* पदवी KIR. 5,40. — 2) *ungleichfüssig:* बृहती ṚV. PRÂT. 16,36. Ind. St. 8,130. 143.

विषमपलाश m. = सप्तपलाश H. 16.

विषमपाद adj. (f. आ) *aus ungleichen* Pâda *bestehend* Ind. St. 8,102.

विषमबाण adj. *Pfeile von ungerader Zahl habend;* m. = पञ्चबाण *der Liebesgott* H. 229, Schol.

विषममय adj. = विषमादागतम् ÇKDR. nach SIDDH. K.

विषमय (von 2. विष) adj. (f. ई, aus metrischen Rücksichten auch आ) *gifthaltig*, *giftig* Spr. (II) 346. 1989. (I) 2779.

विषमरूप्य adj. = विषममय ÇKDR. nach SIDDH. K.

विषमर्दनिका und विषमर्दनी f. *eine best. Pflanze*, = गन्धनाकुली RÂǴAN. im ÇKDR. विषमर्दिनी f. = नाकुली AUSH. 59.

विषमविशिख m. = विषमबाण ǴAṬÂDH. in Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,32.

विषमवृत्त n. *ein Metrum mit ungleichen* Pâda Ind. St. 8,331. fgg.

विषमव्याख्या f. *Erklärung des Schwierigen*, Titel eines Commentars HALL 181.

विषमशिष्ट adj. *ungenau vorgeschrieben;* davon nom. abstr. °त्व n.: अत्र कामत एव चान्द्रायणातप्तकृच्छ्रयोर्विषमशिष्टत्वेन इच्छाविकल्पासंभवात् कामतश्चान्द्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमिति प्रायश्चित्ततत्त्वम् ÇKDR.

विषमशील m. Bein. Vikramâditja's KATHÂS. 120,39. 121,48. 124,36. nach ihm der 18te Lambaka benannt 1,9. — PAÑKAT. 188,9 fehlerhaft für विषमशिला.

विषमस्थ adj. (f. आ) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124. *an einem Abgrunde* —, *an einer gefährlichen Stelle stehend:* स्वादुफल Spr. 2861. *in Nöthen* —, *in bedrängter Lage seiend* MBH. 3,2284. 2333. 2753. 5,6001. R. 2,109,32. 88,20 (96,23 GORR.). R. GORR. 2,39,6. 3,19,6. Spr. (II) 1472. (I) 5170. Verz. d. Oxf. H. 51,*b*,33. — Vgl. समस्थ und वैषमस्थ्य.

विषमाक्ष m. = विषमनयन Bein. Çiva's TRIK. 1,1,47. ÇIV.

विषमायुध m. = विषमबाण *der Liebesgott* H. 227. HALÂJ. 1,33. Spr. 2169.

विषमाशन (विषम + अ°) n. *ungleichmässiges Essen* (*bald viel bald wenig*) VÂGBH. 8,34. Spr. (II) 170 (hiernach die Uebersetzung zu verbessern).

विषमित (von विषम) adj. 1) *uneben* —, *unwegsam gemacht:* पङ्कविषमिततटाः सरितः KIR. 12,50. — 2) *ungleich gemacht*, *in eine schiefe Lage gebracht:* चक्षुस् KIR. 10,56. = कुटिलीकृत MALLIN. — 3) *gefährlich* —, *feindselig geworden:* कालविषमितराजकुल BHÂG. P. 5,14,16.

विषमीकर् (विषम + 1. कर्) 1) *uneben machen:* den Boden MBH. 7,4710. — 2) *feindselig machen:* मैरेयदोषेण विषमीकृतचेतसाम् BHÂG. P. 3,4,2.

विषमीभाव (von विषमीभू) m. *Störung des Gleichgewichts:* विषमीभावमाविशन्ति MBH. 6,184. st. dessen fehlerhaft विषयीभावमाचरन्ति 3,13929.

विषमीभू (विषम + 1. भू) *ungleichmässig werden:* अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे मार्गे पदानि खलु मे विषमीभवन्ति ÇÂK. 90.

विषमी॑य adj. von विषम *unebener Boden* gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. — Vgl. समीय.

विषमुच् adj. *giftspeiend:* वाच् Spr. 5283.

विषमुष्टि m. *eine best. Pflanze*, = केशमुष्टि RÂǴAN. im ÇKDR.

विषमुष्टिक m. = महानिम्ब (das auch = केशमुष्टि ist) AUSH. 16.

विषमृत्यु m. = विषदर्शनमृत्युक TRIK. 2,5,32. ǴAṬÂDH. im ÇKDR.

विषमेक्षण (विषम + ई°) m. = विषमनयन Bein. Çiva's WILSON.

विषमेण instr. von विषम als adv. gaṇa प्रकृत्यादि zu P. 2,3,18, Vârtt.

विषमेषु (विषम + इषु) m. = विषमबाण *der Liebesgott* H. 16.

विषमोन्नत (विषम + उ°) adj. *uneben und zwar bergig*, = स्थपुट H. 1468. HALÂJ. 4,68.

विषय (von 1. विष्) P. 8,3,70 (nach dem Schol. von सि mit वि). m. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Gebiet*, *Bereich*, *Reich;* = देश, उपवर्तन, जनपद, राष्ट्र P. 4,2,52. AK. 2,1,8. 3,4,25,186. TRIK. 3,3,320. H. 947. H. an. 3,506, MED. j. 105. HALÂJ. 2,129. = आशय AK. 3,3,11. — M. 5,82. 7,133. fg. 8,148. 387. MBH. 1,5937. कस्यैष विषयो रम्यः R. 1,9,61. °रक्षण, भ्रष्टो विषयाद्राजा 17,5. 47,22. 76,13. 2,35,11. 50,19. 59,8. 92,3. Spr. 2980. 3015. व्रजामो विषयादितः KATHÂS. 25,78. BHÂG. P. 4,14,22. 9,23,5. न पुनरात्मगत्या मानुषाणामेष विषयः so v. a. *hier haben aber Menschen nicht von selbst ihren Aufenthaltsort gewählt* ÇÂK. 104,14. यमस्य Jama's *Gebiet*, — *Reich* R. 3,55,52. सुरारि° 5,74,33. नग्न° KATHÂS. 18,314. लङ्के विषये RÂǴA-TAR. 5,51. लाटसिन्धु° VARÂH. BṚH. S. 69,11. गौडविषये HIT. 27,22. 39,4. 17. 113,19. पाताल° R. 5,74,33. pl.: पुरं च विषयाश्च नः MBH. 1,7541. विषयेषु तपस्विनः R. 2,91,7. विषयान्दापयामि ते *Ländereien* KATHÂS. 49,61. 53,192. 103,220. परिसरविषयेषु (= पर्यन्तदेशेषु) *in der nächsten Umgebung* KIR. 5,38. परस्परा-

त्तर्विषयौ हि तावुभौ बभूवतुः so v. a. *sie standen in einiger Entfernung von einander* R. 5,44,9. — 2) *Gebiet, Bereich* in übertr. Bed.; = गोचर् Trik. H. an. Med. चक्षुषोर्विषयः *Gesichtskreis, Sehweite* R. 5,24,17. चक्षुर्विषय (s. auch bes.) dass.: आ चक्षुर्विषयाच्चैनं ददर्श पुनः पुनः MBh. 14,1537. चक्षुर्विषयमागतः R. 6,81,18. fg. Mṛkkh. 109,12. चक्षुर्विषयातिक्रान्त Hit. 14,12. अचक्षुर्विषये (s. auch अचक्षुर्विषय) R. 2,63,21. दृग्विषयोपगत Varâh. Bṛh. S. 104,52. दृष्टिविषये Ragh. 15,79. नयन° s. bes. अवण° *Hörweite* Megh. 101. ज्ञान° Çâñkh. Çr. 13,5,1. MBh. 14,296. मनो° Kumâras. 6,17. या विषये स्थिताः so v. a. *dazwischenliegend* RV. Prât. 17,2. गन्धस्य विषयः ist die Erde MBh. 14,299. रसस्य das Wasser 392. रूपस्य das Licht 304. स्पर्शस्य die Luft 306. शब्दस्य der Aether 308. जीवितव्य° so v. a. *Lebensdauer* Pañkat. 4,16. fg. जीव° dass. ed. orn. 1,19. विषये *im Bereich von* so v. a. *in Bezug auf:* अत्र विषये *in Bezug darauf* MBh. 13,5682 nach der Lesart der ed. Bomb. Pañkat. 64,12. 14. 114,20. स्त्रीणां विषये को ऽत्र संदेहः 27,18. युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः Megh. 80. अहो बुद्धिप्रागल्भ्यमस्य नीतिविषये Pañkat. 112,19. तन्मयाप्यस्य मित्रविषये विश्वासः समुत्पन्नः 131,11. धनविषये त्वया संतापो न कार्यः 139,3. मन्ये त्वां विषये वाचां स्नातमन्यत्र च्छान्दसात् Bhâg. P. 1,4,13. परस्वविषये स्पृहा AK. 1,1,2,24. Sarvadarçanas. 84,7. 8. Am Ende eines adj. comp.: अल्पविषया मतिः *ein kleines Gebiet umfassend* Ragh. 1,2. — 3) *ein Gebiet, auf dem man sich heimisch fühlt, das man beherrscht, Jmdes Fach, — Sache;* = यस्य यो ज्ञातस्तत्र AK. 3,4,24,154. H. an. Med. सर्वत्रौदरिकस्याभ्यवहार्यमेव विषयः Vikr. 39,14. एष प्रव्राजकस्त्रीणां विषयः Kathâs. 32,126. योगिन्या मन्त्रमार्गो ऽयं नास्माकं विषयः पुनः 37,191. नात्रास्माकं गतिविषयः Pañkat. ed. orn. 53,20. विषये सति वक्ष्यामि so v. a. *wenn ich es weiss* MBh. 13,2206. न त्वामविषये नियोक्ष्यामि कथं च न 2207. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम Çâk. 55,20. — 4) *Wirkungskreis, Erscheinungsgebiet:* रवेरविषये so v. a. *wenn die Sonne nicht scheint* Spr. 1964. 2491. गुणसमुदायावाप्तिविषयां द्युतिम् so v. a. *sich in der Erlangung vieler trefflicher Eigenschaften manifestirend* 2822. अवकाशविषया निर्वृतिः *sich als Musse äussernd* 2879. — 5) *ein fest umgrenztes —, umschriebenes Gebiet:* छन्दसि विषये so v. a. *nur im* Veda Kâç. zu P. 1,2,36. संहिताविषये Schol. zu 39. am Ende eines adj. comp.: स्त्री° so v. a. *ein femininum tantum* Çânt. 1,5. 2,2. नब्विषय *ein neutrum tantum* 3. आब्विषय *stets auf* आ (femin.) *ausgehend* 1,20. छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि *die unter diese Kategorie fallen* P. 4,2,66. — 6) *ein für Etwas geeigneter Boden, das am-Platze-Sein:* क इह परितापस्य विषयः Spr. (II) 525. सामादीनां मध्ये कस्यात्र विषयः Pañkat. 227,22. — 7) *das Object eines Sinneswerkzeuges* (Laut u. s. w.) AK. 1,1,2,16. 3,4,24,154. H. 1384. H. an. Med. गन्धरूपरसस्पर्शशब्दाश्च विषयाः स्मृताः Jâgñ. 3,91. Amṛtan. Up. in Ind. St. 9,25. Çañk. ebend. 17, N. 2. Suçr. 1,311,1. Tattvas. 6. घ्राणो गन्धविषयं बुध्यते 14. Râga-Tar. 2,3. Sarvadarçanas. 24,1. श्रुतिविषयगुणा (तनु d. i. आकाश) Çâk. 1. तमेकदृश्यं नयनैः पिबन्त्यो नार्यो न जग्मुर्विषयान्तराणि Kumâras. 7,64 = Ragh. 7,12. Wenn मनस् zu den इन्द्रिय gezählt wird, erscheinen sechs विषयाः Nilak. 22. Colebr. Misc. Ess. I,290. — 8) Bez. *der Zahl fünf* Varâh. Bṛh. S. 8,21. 77,23. 98,1. Bṛh. 1,19. 7,1. — 9) pl. *die Sinnesobjecte* als *Gegenstände des Genusses, die Sinnenwelt, Sinnengenuss:* इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् Kathop. 3,4. इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु Spr. (II) 1113. ह्रियमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6,59. विषयेष्वप्रसक्तिः 1,89. विषयेषु सज्जति 6,55. 7,30. Spr. (II) 808. विषयेषु प्रजुष्टानि (इन्द्रियाणि) M. 2,96. यथा यथा निषेवन्ते विषयान्विषयात्मकाः 12,73. विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः Bhag. 2,59. विषयाणां सुखम् R. 1,9,3. असाराः Spr. (II) 776. स्वीकृताः (I) 1195. नोपभोक्तुं न च त्यक्तुं शक्नोति विषयाञ्जरी 1652. Brahma-P. in LA. (III) 54,22. अनाकृष्टस्य विषयैः Ragh. 1,23. मम सर्वे विषयास्त्वदाश्रयाः 8,68. निपच्छेद्विषयेभ्यो ऽज्ञान् Bhâg. P. 2,1,18. विषयान्प्रियान्भुञ्जानः 7,4,19. °सङ्ग M. 12,18. विषयोपसेवा 32. विषयैषिन् Ragh. 1,8. °व्यावृत्तात्मन् 3,70. Vikr. 9. निर्विष्टविषयस्नेह Ragh. 12,1. °लोलुप Kathâs. 40,51. विषयोपरम Sâñkhjak. 50. विषयासक्तमनस् Çuk. in LA. (III) 32,11. विषयासक्ति 33,15. विषयोपहास Verz. d. Oxf. H. 123,a,32. अविषयमनसां यतीनाम् Mâlav. 1. उपरताशेषविषयं मनः Sâh. D. 63,15. Ausnahmsweise sg.: पिबन्ति नाम विषयमसंख्याताः कुमारकाः Kûlikop. in Ind. St. 9,13. — 10) *Object* überh.: पुंविषयौ *Subject und Object* Sarvadarçanas. 69,11. MBh. 14,1373. fg. देह इन्द्रियं विषयः Bhâshâp. 36. विषयो द्व्यणुकादिश्च ब्रह्माण्डान्त उदाहृतः 37. दृष्टानुश्रविक° Jogas. 1,15. 2,54. विषयो ऽयं पुराणस्य यन्मां त्वं पृच्छसि *ein im* Purâṇa *behandelter Gegenstand* MBh. 1,1439. यत्र यत्र पुरुषस्य संदेहः स सर्वो ऽपि विचारशास्त्रस्य विषयो भविष्यति Sarvadarçanas. 127,10. fg. 159,1. In der Pûrvamîmâṃsâ ist विषय *der zu behandelnde Gegenstand* eines der 5 Glieder jedes Abschnittes oder Titels: ते च पञ्चावयवा विषयसंशयपूर्वपक्षसिद्धान्तसंगतिरूपाः 122,21. स्वाध्यायो ऽध्येतव्य इत्येतद्वाक्यं विषयः 22. fg. इषु° *der Gegenstand, auf den der Pfeil gerichtet wird, Ziel eines Pfeils* Çiç. 9,40. Häufig am Ende eines adj. comp. अन्य° *ein anderes Object habend, auf etwas Anderes gerichtet, — sich beziehend, Anderes betreffend:* दृष्टि Çâk. 30. कथाः Bhâg. P. 3,15,23. अनन्य° 1,8,13. त्वयि मे ऽनन्यविषया मतिः 42. यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयशब्दो यथार्थाक्षरः *keinem Andern zukommend* Vikr. 1. Kâvjâd. 2,331. इत्येवंविषया बुद्धिः Kull. zu M. 2,3. तद्विषया बुद्धिः Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 73. भगवद्विषया रतिः Sâh. D. 7,13. Bhâg. P. 1,6,4. 2,9,27. 6,2,10. Râga-Tar. 5,185. मम तावदेकैव बुद्धिः पलायनविषया *nur auf Flucht gerichtet* Pañkat. 247,6. अनुकरणमित्यादित्रिसूत्री स्वभावात्कृञ्विषया *bezieht sich auf* Siddh. K. zu P. 1,4,62. वयं तु तत्सर्गसर्गविषयाः so v. a. *beschäftigt mit* Bhâg. P. 8,7,34. — 11) *ein sich zu Etwas* (gen. dat.) *eignendes Object:* (सा) पुंसामिष्टश्च विषयो मैथुनाय MBh. 4,832. 858. (गन्नः) नैव विषयो वाहस्य दोहस्य वा Spr. (II) 1324. वराहो वा राज्ञः प्रभवति चमत्कारविषयः 1126. विषयो राज्ञा बभूवानन्दशोकयोः so v. a. *war zugänglich für* Râga-Tar. 8,1231. सकलवचनानामविषयः so v. a. *unbeschreiblich* Mâlatîm. 17,2. प्रभूणां हि विभूत्यन्धा धावत्यविषये मतिः so v. a. *nach Unerlaubtem* Kathâs. 17,138. — 12) im Tropus *der eigentlich gemeinte Gegenstand*, im Gegens. zum Bilde; z. B. in der Figur: sie schaut mit klaren Augen - Lotusen ist Auge विषय, Lotus विषयिन् Kuvalaj. 19,b. Pratâpar. 9,b,1. 78,a,9. — 13) verwechselt mit विषम in कान्तारविषयेषु R. 4,40,23. — Vgl. निर्विषय, बुद्ध°, यम°, स्व°, वैषय und वैषयिक.

विषयक am Ende eines adj. comp. = विषय. नैकमिन्द्रियं सर्वविषयकम्

Alles zum Object habend, auf Alles gerichtet Comm. zu Nâjas. 3,1,56. इदं किन्नं पिद्पिद्विषयकम् so v. a. *betrifft* Siddh. K. zu P. 1,2,6. Schol. zu Gaim. 1,1,3. Verz. d. Oxf. H. 38,*a*, No. 94. Kusum. 32,5. 36,18. Davon °त्व n. nom. abstr. 32,13. Nîlak. 168.

विषयग्राम m. *die Sinnenwelt* H. 1414. Halâj. 5,25. Spr. (II) 1079.

विषयता (von विषय) f. *das Objectsein:* तान्बुद्धेर्विषयतां गतान् Sâh. D. 32,4. Als nom. abstr. von einem auf विषय ausgehenden adj. comp. *das zum-Object-Haben, das Betreffen, das sich-Beziehen auf* Sarvadarçanas. 51,20. 52,16.

विषयतावाद m. Titel einer Schrift Hall 42.

विषयतावादार्थ m. desgl. Hall 41.

विषयताविचार m. = विषयतावादार्थ Hall 41. विषयविचार Verz. d. Oxf. H. 245,*a*, No. 614.

विषयत्व (von विषय) n. *das Objectsein* Sarvadarçanas. 47,14. 164,15. Als nom. abstr. von einem auf विषय ausgehenden adj. comp.: दीधीवेव्योरछन्दसविषयत्वात् *weil* दीधी *und* वेवी *nur im* Veda *erscheinen* Pat. zu P. 1,1,6. 2,6. *das zum-Object-Haben, das Betreffen, das sich-Beziehen auf:* प्रत्यत्त° Sarvadarçanas. 47,6. 129,22. 130,1. निषेधविषयत्वेन *weil es der Verneinung unterliegt* 14,10. fg.

विषयलौकिकप्रत्यत्तकार्यकारणभावरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 46.

विषयवत् (von विषय) adj. *objectiv:* को न्वयं भावः स्वप्ने विषयवानिव MBh. 12,7824. विषयवती प्रवृत्तिः *auf sinnliche Objecte gerichtet* Jogas. 1,35.

विषयवर्तिन् adj. *gerichtet auf* (gen.): नहि मे परदाराणां दृष्टिर्विषयवर्तिनी R. 5,14,57.

विषयवासिन् adj. *ein Gebiet bewohnend, Landesbewohner* R. 1,7,8. 77,24. 5,6,12. Çâk. 38,9 (im Prâkrit). अन्य° *in einem andern Lande wohnend* Pańkat. 129,14.

विषयसप्तमी f. *der Locativ in der Bedeutung von «ein Bezug auf»* Kâç. zu P. 1,1,57. Sâh. D. 112,5.

विषयाज्ञान n. *das Nichterkennen der Objecte* so v. a. तन्द्रा *Abspannung* Râgan. im ÇKDr.

विषयात्मक adj. *auf das Sinnliche gerichtet, den Sinnengenüssen fröhnend* M. 12,29. 73. Bhâg. P. 4,28,6. 7,6,18.

विषयाधिकृत m. *Gouverneur einer Provinz* Kathâs. 53,49.

विषयाधिप m. dass. Kathâs. 52,32. *Landesherr, Fürst* R. 5,81,19.

विषयानन्तर adj. *unmittelbar angrenzend:* राजन् AK. 2,8,1,9. H. 732.

विषयान्त m. *Landesgrenze* MBh. 14,2142. 2176. R. 2,49,2. Kathâs. 14,15, wo विशयान्तं (विषयान्तं) st. विषयं तं zu lesen ist.

विषयाभिमुखीकृति f. *das Richten* (इन्द्रियाणां *der Sinne*) *auf die Sinnenwelt* Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,22.

विषयायिन् m. 1) *Fürst.* — 2) *Sinnesorgan.* — 3) *ein an den Sinnengenüssen hängender Mann* (विषयासक्तपुरुष); *ein Materialist* (वैषयिकजन). — 4) *der Liebesgott* Med. n. 244.

विषयिक von विषय am Ende eines comp.: समस्त° *aus dem ganzen Reich* Journ. of the Am. Or. S. 7,45, 3 v. u. दार्ष्टि° (adj. von दृष्टिविषय) *im Bereich der Augen liegend, sichtbar* Nir. 7,8.

विषयित्व (von विषयिन्) n. *das Subjectsein* MBh. 14,1373.

विषयिन् (von विषय) gaṇa ग्रहादि zu P. 3,1,134 (देशे). 1) adj. *den Sinnengenüssen fröhnend, ein Genussmensch* H. an. 3,419. Med. n. 208. Jâǵń. 3,138. Spr. (II) 1942. (I) 1484. 1802. Kâṅ. 70 bei Weber; Çâk. 68, 14. Hit. 9,11. m. *ein Materialist* (वैषयिक) H. an. Med. = कामिन् *ein Verliebter* Trik. 3,3,261. — 2) m. *a*) *Fürst* H. an. Med. — *b*) *ein Untergebener:* एते विषयिणः सर्वे कृतज्ञस्य Pańkar. 1,14,10. — *c*) *Subject, das Ich* MBh. 14,1374. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 162. zu Brahmas. S. 7. Pańkar. 2,1,37. — *d*) *der Liebesgott* H. an. Med. — *e*) im Tropus *das Bild* im Gegens. zum eigentlich gemeinten Gegenstande (z. B. in Augen-Lotuse ist Auge विषय und Lotus विषयिन्) Kuvalaj. 19,*b*. Pratâpar. 9,*b*,1. 84,*b*,5. — 3) n. *Sinneswerkzeug* AK. 1,1,4,17. Trik. H. 1383. H. an. Med.

विषयीकर् (विषय + 1. कर्) 1) *verbreiten:* सर्वदिग्विषयीकृत *nach allen Weltgegenden verbreitet* Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,8. — 2) *zum Object machen* Vedântas. (Allah.) No. 109. 112. Kusum. 40,11. सकृत्प्रलापविषयीकृत Verz. d. Oxf. H. 136,*b*, No. 262. कथा कर्णविषयीकृता so v. a. *zu Ohren geführt* 153,*a*, No. 328.

विषयीकरण (von विषयीकर्) n. *das zum-Object-Machen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 163. Kusum. 17,5. अ° Vedântas. (Allah.) No. 118.

विषयीभाव MBh. 3,13928 fehlerhaft für विषमीभाव.

विषयीभू (von विषय + 1. भू) 1) *zu Jmdes Bereich werden:* यदेतद्वनम् पिङ्गलकनाम्नः सिंहस्य विषयीभूतम् Pańkat. 25,9. — 2) *zum Object werden* Çaṅk. zu Brahmas. S. 96.

विषयीय = विषय Kusum. 14,2.

विषरस m. *Gifttrank* Spr. (II) 1349; vgl. विषस्य रसः MBh. 3,1371.

विषरूपा f. *eine best. Pflanze,* = विषा, अतिविषा Râgan. im ÇKDr.

विषरोग m. *Vergiftung als Krankheit* Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,18.

विषल n. = विष *Gift* Çabdak. im ÇKDr.

विषलता f. = इन्द्रवारुणी Râgan. im ÇKDr.

विषलाङ्गल *eine best. Pflanze* Suçr. 2,70,10.

विषलाटा f. N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 8,178. 1076. 1664. विषलाएटा 691.

विषलाएटा s. विषलाटा.

विषवत् (von 2. विष) adj. *giftig* ṚV. 10,85,34. AV. 8,10,29. Gobh. 4,9,16. MBh. 8,1822. 4415. *vergiftet:* ओदन Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,14.

विषवल्लरी f. *ein giftiges Rankengewächs* Spr. 1549.

विषवल्लि f. dass. Spr. (II) 1312. Kathâs. 124,131. °वल्ली Ragh. 12,61.

विषविटपिन् m. *Giftbaum* Spr. 5305.

विषविद्या f. 1) *Giftkunde* Âçv. Çr. 10,7,5. — 2) *ein gegen Gift angewandter Zauberspruch* Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

विषवृत्त m. *Giftbaum* Spr. 1094 (II). 3079.

विषवैद्य m. *Giftarzt, Giftbeschwörer* AK. 1,2,1,12. Trik. 3,3,57. Mâlav. 46,23.

विषवैरिणी f. *eine best. Pflanze,* = निर्विषा Râgan. im ÇKDr.

विषशालूक m. *Lotuswurzel* Râgan. im ÇKDr.

विषशूक m. *Wespe* Bhûripr. im ÇKDr. Suçr. 1,290,17.

विषशृङ्गिन् m. *Wespe* Hâr. 217. — Vgl. विषसृक्कन्, वृषसृक्किन्.

विषसंयोग n. *Mennig* Aush. 21.

विषसूचक 1) adj. *Gift verrathend.* — 2) m. *eine Hühnerart, perdix rufa* H. 1339; vgl. चकोर 1).

विषसृक्कन् m. *Wespe* Trik. 2,5,34. — Vgl. विषशृङ्गिन्, वृषसृक्किन्.

1. **विषह्** m. nom. act. von सह् mit वि in दुर्विषह्.

2. **विषह्** (2. विष + ह्) 1) adj. *Gift zerstörend.* — 2) f. आ Bez. zweier Pflanzen, = देवदाली und निर्विषा Râǵan. im ÇKDr.

विषहन्तर् 1) nom. ag. *Gift zerstörend.* — 2) f. °हन्त्री Bez. zweier Pflanzen, = अपराजिता und निर्विषा Râǵan. im ÇKDr.

विषहर 1) adj. *Gift entfernend:* विषहराग्रिमन्त्र, वृश्चिकादिविषहरमन्त्र Verz. d. Oxf. H. 94,a,8. 9. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭa Hariv. 1991. — 3) f. ई ein N. der Göttin Manasâ Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 24,b,38. auch f. आ nach Çabdar.

विषहृदय adj. *Gift im Herzen bergend:* वाङ्मधुरो विषहृदयः Hit. 74,20.

विषह्य (von सह् mit वि) adj. 1) *tragbar:* अविषह्यं पृथिव्यापि तद्बलम् MBh. 5,2491. अविषह्यं गुरुं भारं सौभद्रे समवासृजत् 7,1518. Bhâg. P. 10,18,25. — 2) *erträglich,* अ° *unerträglich:* अविषह्यांशुरादित्यः R. 3,12,8. तेजस् Ragh. 6,47. Bhâg. P. 10,51,36. व्यसन Kumâras. 4,30. आतप Bhâg. P. 10,55,17. अविषह्यतमं दुःखम् R. 2,106,6. शोक R. Gorr. 2,114,31. — 3) *ausführbar:* तावदेव भवेत्तव । विषह्यमेतदस्माकम् MBh. 2,875. अ° *unausführbar:* कर्मन् 1,7300. न विद्यते ह्याम्बवतीसुतस्य रणे ऽविषह्यं (so ist zu lesen) हि रणोत्कटस्य 3,10271. 10275. 12062. तपस् 15,992. R. 3,18,44. अविषह्यतमं लोके विद्यते मे न किं च न 2,20,33. चक्षुषामविषह्यम् so v. a. *nicht sichtbar* MBh. 14,611. सीमा so v. a. *unbestimmbar* M. 8,265. विषह्यं कर्तुम् *ausführbar* MBh. 3,12061. — 4) *bezwingbar,* अ° *unbezwingbar, unwiderstehlich:* रामस्य पौरुषं सुरासुरैरप्यविषह्यमाहवे R. 4,10,36. धनुर्गज्ञो Bhâg. P. 4,16,23. समुद्र MBh. 8,1920. विषह्यं यं हि यो मेने सह् (सस ed. Bomb.) तेन समेयिवान् 3,16373. त्वं शत्रूणामविषह्यः पराक्रमे 8,1643. Hariv. 3744. R. 6,95,6. Bhâg. P. 4,24,65. 7,7,9. 8,15,25. 11,1,3. — Hier und da in der ed. Calc. des MBh. fälschlich विसह्य geschrieben. Vgl. दुर्विषह्य.

विषह्यता (von विषह्य) f. अ° *Unbezwingbarkeit, Unwiderstehlichkeit* Bhâg. P. 4,22,60.

1. **विषा** f. *eine best. Pflanze* s. 2. विष 3).

2. **विषा** Uṇâdis. 4,36. indecl. = बुद्धि Uǵǵval.

विषाग्रज (2. विष + अ°) m. *der ältere Bruder des Giftes*, bildliche Bez. *des Schwertes* H. ç. 144.

विषाङ्कुर (2. विष + अ°) m. 1) *Giftschössling* Spr. (II) 75. — 2) *Lanze* Trik. 2,8,55.

विषाङ्गना (2. विष + अ°) f. = विषकन्या Mudrâr. 42,19.

1. **विषाणा** n. vielleicht = अवसान ṚV. 5,44,11.

2. **विषाणा** m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. Siddh. K. 249,a,6. 1) m. f. n. (das f. आ nur in der älteren Sprache zu belegen, in der späteren nur n.) *Horn* AK. 3,4,12,58. H. 1264. an. 3,226. Med. ṇ. 77. fg. Halâj. 2,112. AV. 3,7,1. विषाणे वि ष्य गुष्पितम् 2. 6,121,1. Ait. Br. 2,11. Çat. Br. 7,3,2,17. Pâr. Gṛhj. 3,7. MBh. 1,5370. 3,17228. Hariv. 4103. R. 4,9,76. 79. Suçr. 1,99,9. 100,8. 363,1. Ragh. 9,62. Kumâras. 7,49. गो° Spr. (II) 253. 809. (I) 3250. कुरु° Varâh. Bṛh. S. 50, 25 = 54,116. 57,7. 61,2. Kathâs. 40,8. Bhâg. P. 9,19,4. Mârk. P. 43, 54. अ° adj. Çat. Br. 5,1,2,8. त्रि° MBh. 6,70. गवां रुरुकविषाणानाम् Bhâg. P. 9,4,33. °विषाणा adj. Mârk. P. 29,7. *Horn als Blasinstrument* Bhâg. P. 10,12,2. — 2) *Hauzahn des Elephanten,* m. f. n. AK. m. H. 1224. Halâj. 2,62. n. H. an. Med. nicht zu bestimmen ob m. oder n. MBh. 4,1707. 6,1763. 2870. 4676. fgg. R. 2,69,13. 3,32,20. 36,9. 5,14,16. 6,3,44. 93,19. Varâh. Bṛh. S. 67,9. स° adj. MBh. 3,15736. R. 3,7,7. सु° MBh. 12,4280. चतुर्विषाणा Hariv. 11853. Varâh. Bṛh. S. 58,42. n. vom *Hauzahn* Gaṇeça's Çiç. 1,60. Varâh. Bṛh. S. 58,58. *Hauzahn eines Ebers* H. an. Hariv. 2146. 16310. — 3) m. oder n. *Scheere eines Krebses* Pańkat. ed. orn. 42,23. — 4) n. *Horn* so v. a. *Spitze:* des Mondes Varâh. Bṛh. S. 4,10. der Sonne bei einer Eklipse 5,12. केतुपताकच्छत्त्रवज्रविषाणानि Shadv. Br. 6,10 in Ind. St. 1,41. स्वर्गाद्दुत्तुङ्गममलं विषाणं यत्र प्रूलिनः *der hornartig emporstehende Haarbüschel auf dem Scheitel* Çiva's MBh. 3,8333. *Spitze der Brust, Brustwarze* Bhâg. P. 5,2,11. — 5) *Schlachtmesser* R. 1,13,35. कृपाणा ed. Bomb. — 6) n. *Costus speciosus* oder *arabicus* Med. — 7) *Spitze* bildlich für *das Beste in seiner Art:* पौरवम् । विषाणाभूतं सर्वस्यां पृथिव्याम् MBh. 1,3735. धीविषाणामलत्व so v. a. *Schärfe des Verstandes* Varâh. Bṛh. 28(26),7. — 8) f. ई Bez. verschiedener Pflanzen: = अजशृङ्गी, मेषशृङ्गी AK. 2,4,4,7. H. an. Med. = क्षीरकाकोली H. an. = ऋषभ und कर्कटशृङ्गी Aush. 34. = तित्तिडी Çabdak. im ÇKDr. = वृश्चिकाली Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. कृष्ण°, गो°, निर्विषाणा, शश°, शशक°.

विषाणक 1) am Ende eines adj. comp. = विषाणा *Horn:* भग्न° (उक्षन्) H. 1259. — 2) f. विषाणकी *eine best. Pflanze* AV. 6,44,3. — 3) f. विषाणिका f. Bez. verschiedener Pflanzen: = मेषशृङ्गी Ratnam. im ÇKDr. = सातला, कर्कटशृङ्गी und आवर्तकी Râǵan. ebend. — Suçr. 1,144,16. 2,110,4. 174,12. 536,13. Wise 146 vermuthet *Asclepias geminata.* — Vgl. क्षीरविषाणिका und मेष°.

विषाणावत् (von विषाणा) adj. *mit hervorstehenden Hauzähnen versehen;* m. *Eber* Hariv. 16311. — Kathâs. 71,143 ist wohl विषादवान् st. विषाणावान् zu lesen.

विषाणान्त m. Bein. Gaṇeça's H. ç. 61.

विषाणिन् (von विषाणा) 1) adj. a) *gehörnt* Kaṇ. 2,1,8. 3,1,16. खड्ग Hariv. 11852. MBh. 6,71. हेम° *vergoldete Hörner habend* 2,1928. विषाणित्व n. *das Gehörntsein* Comm. zu Kaṇ. 2,1,8. 3,1,16. — b) *mit Hauzähnen versehen:* गज MBh. 3,959. 9,879. — 2) m. a) *Elephant* Hâr. 30. Hariv. 11852. Spr. 4416. Kâm. Nîtis. 14,34. Çiç. 4,63. — b) N. oder Beiname eines Volksstammes ṚV. 7,18,7. nach Sâj. *Hörner in der Hand haltend.* — c) Bez. zweier Pflanzen: = ऋषभ und शृङ्गाटक Râǵan. im ÇKDr.

विषातकी f. विषा विषातक्यसि AV. 7,113,2.

विषाद् (2. विष + 2. अद्) adj. *Gift essend:* eine Asurî Kâṭh. 25,4.

विषाद (von सद् mit वि) m. 1) *das Schlaffwerden, Erschlaffen:* दोर्विषाद Mâlatîm. 35,9. — 2) *Bestürzung, Niedergeschlagenheit, Kleinmuth, Verzagtheit, Verzweiflung* H. 312. प्रारब्धकार्यासिद्ध्यादेर्विषादः सत्त्वसंक्षयः । निःश्वासोच्छ्वाससंतापसहायान्वेषणादिकृत् ॥ Daçar. 4,29. उपायाभावजन्मा तु विषादः u. s. w. (wie eben) Sâh. D. 197. Nir. 14,7. Maitrjup. 3,5. Bhag. 1 in der Unterschr. 18,35. MBh. 1,7731. तेषां विषादो ऽज्ञा-

यत 3,15718. R. 1,3,13 (7 Gorr.). 2,47,3.13. Suçr. 2,259,19. fg. Kap. 1,128. Sâṁkhjak. 12. Tattvas. 20. Ragh. 3,40. 5,14. Çâk. 33,10. 90,20, v. l. 105,9. 107,23. हर्षविषादाभ्याम् Mâlav. 50,20. Spr. (II) 1508. न विषादे मनः कार्यं विषादो विषमुत्तमम् (I) 1472. विपदि न यस्य विषादः 2826. °विस्मयावेशवश Kathâs. 18,240. Gegens. धैर्य 37,42. 45,297. Kaurap. 43. Sâh. D. 167. Bhâg. P. 5,18,14. 6,12,6. 9,21,13. Vop. 8,126. कृत्त विषादे AK. 3,4,22(28),6. क्का विषादे 18. विषादे द्विस्त्रिरुक्तं वा न दुष्यति Cit. beim Schol. zu Çâk. 5,5. मुच्यतां विषादः Vikr. 5,16. अपोह्तुं विषादम् Ragh. 8,53. विषादं शमयन् Bhâg. P. 1,11,1. विषादमपनयतात् 3,9,24. जग्मुर्विषादम् MBh. 1,7677. 5,7286. R. 3,68,5. Kathâs. 18,222. Hit. 42,10. 128,17. Vet. in LA. (III) 7,21. विषादमुपयासि Spr. 1292. न तु कार्यो विषादस्ते R. 4,15,10. मा विषादं कृथा देवि भर्ता क्षितव जीवति 6,23,26. Pañkat. 221,5. Kathâs. 12,28. कृतविषादा *bestürzt* 57,98. विषं लोकविषादकृत् R. Gorr. 1,46,31. अ° *guter Muth* MBh. 1,7100. सविषादा *bestürzt* Pañkat. 129,13. सविषादम् adv. 107,19. Çâk. 66,1. 67,20. Vikr. 30,12. Prab. 64,6. — 3) *Widerwille, Ekel:* विषादं कर् *einen Widerwillen an den Tag legen* Spr. (II) 507. विरस = विषादजनक Schol. zu Prab. 96,1.

विषादन (vom caus. von सद् mit वि) 1) adj. *Bestürzung —, Verzweiflung bewirkend* R. 5,86,19. — 2) f. ई *eine best. Schlingpflanze,* = पलाशी Râǵan. im ÇKDr. — 3) n. = विषाद 2) Bhâg. P. 12,3,30. *niederschlagende Erfahrung:* इष्यमाणाविरुद्धार्थसंप्राप्तिस्तु विषादनम् Kuvalaj. 159,a (133,b).

विषादवत् (von विषाद) adj. *niedergeschlagen, bestürzt, kleinmüthig* Kathâs. 25,21. 57,47. 85,29. auch wohl 71,143, wo विषाणावत् gedruckt ist.

विषादिता (von विषादिन्) f. = विषाद 2) Spr. (II) 750. Kathâs. 27,84. 45,292. 119,189. न च हंसावलीक्रेोतः कार्या ते ऽत्र विषादिता 71,240. मा गमस्त्वं विषादिताम् 72,131. अ° *Unverzagtheit* Spr. 2360.

विषादित्व (wie eben) n. dass. Suçr. 1,312,21.

1. विषादिन् (von सद् mit वि oder von विषाद) adj. *niedergeschlagen, bestürzt, kleinmüthig, verzagend:* अलाभे न विषादी स्याल्लाभे चैव न हर्षयेत् M. 6,57. Bhag. 18,28. भीरुविषादिनः (so die ed. Bomb.) MBh. 3,13048. Spr. 2986. 4810. Kathâs. 53,36. अ° *unverzagt* MBh. 3,14078.

2. विषादिन् (2. विष + आ°) adj. *Gift schluckend* Spr. 2896.

विषानन (2. विष + आ°) m. *Schlange* Çabdam. im ÇKDr.

विषान्तक (2. विष + अ°) m. Bein. Çiva's (der das bei der Quirlung des Meeres entstandene *Gift verschluckte*) H. 197.

विषान्न (2. विष + अ°) n. *vergiftete Speise* Kathâs. 75,148. °परीता Verz. d. Oxf. H. 85,b,31.

विषापवादिन् (2. विष + अ°) adj. *Gift besprechend* Çâñkh. Br. 29,1.

विषापह् (2. विष + अ°) 1) adj. *Gift vertreibend, — zerstörend:* मन्त्र M. 7,217. अगद Suçr. 2,259,5. — 2) m. a) *ein best. Baum,* = मुष्कक Râǵan. im ÇKDr. — b) Bein. Garuḍa's H. ç. 78. — 3) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: = इन्द्रवारुणी und निर्विषा Râǵan. im ÇKDr. = नागदमनी Bhâvapr. ebend. = अर्कमूला Çabdak. ebend. = सर्पकङ्कालिका Ratnam. ebend.

विषापहरण (2. विष + अ°) n. *das Vertreiben —, Unschädlichmachen von Gift* Verz. d. Oxf. H. 123,a,33.

विषाभावा (2. विष + अभाव) f. *eine best. Pflanze,* = निर्विषा Râǵan. im ÇKDr.

विषामृत (2. विष + अ°) n. *Gift und Nektar,* Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 196,b,5.

विषामृतमय (von विषामृत) adj. (f. ई) *aus Gift und Nektar gebildet, das Wesen von Gift und Nektar habend:* कन्या Kathâs. 39,80.

विषाय् (von 2. विष) *zu Gift werden:* विषायते Spr. (II) 1492. (I) 2099. विषायति (II) 2454.

विषायिन् adj. von सा, स्यति mit वि gaṇa ग्रहादि zu P. 3,1,134.

विषायुध (2. विष + आ°) m. *Giftschlange (dessen Waffe Gift ist)* Hâr. 15. Çabdar. im ÇKDr.

विषायुधीय (von 2. विष + आयुध) adj. *giftige Waffen habend;* m. *ein giftiges Thier* Varâh. Brh. S. 5,40.

विषार (von 2. विष) m. *Giftschlange* Çabdak. im ÇKDr.

विषाराति (2. विष + अ°) m. *Feind —, Bekämpfer von Gift,* Bez. *einer Art von Stechapfel* (कृष्णधत्तूरक) Râǵan. im ÇKDr.

विषारि (2. विष + अरि) m. *Feind —, Bekämpfer von Gift,* Bez. *eines best. Andidoton* Suçr. 2,247,7. 256,18. nach Râǵan. im ÇKDr. = महाचञ्चु und घृतकरञ्ज.

विषालु (von 2. विष) adj. *giftig* Wilson.

विषासहि (vom intens. von सह् mit वि) adj. *überwältigend, übermächtig* RV. 10,159,1. 166,1. 174,5. AV. 17,1,1 (vgl. 19,23,27). Çat. Br. 14,5,4,7. Kaush. Up. 4,2. 9.

विषास्य (2. विष + आ°) 1) adj. *Gift im Munde führend.* — 2) m. *Giftschlange* Hâr. 15. Çabdar. im ÇKDr. — 3) f. आ *Tintenbaum* (s. भल्लातक) Çabdak. im ÇKDr.

विषास्त्र (2. विष + अ°) n. *ein vergifteter Pfeil* Trik. 3,2,6.

विषित s. u. सि mit वि.

विषितस्तुक (वि° + स्तुका) adj. *mit aufgelösten Haaren* RV. 1,167,5.

विषितस्तुप adj. AV. 6,60,1 wohl fehlerhaft für °स्तुप *mit aufgelöstem Schopf.*

विषिन् (von 2. विष) adj. *vergiftet* Pañkar. 3,14,36.

विषीभू (2. विष + 1. भू) *zu Gift werden:* °भूतमन्नम् Kathâs. 87,47.

विषु adv. *nach beiden —, nach verschiedenen Seiten;* nur in Ableitungen und Zusammensetzungen erhalten und vielleicht mit विश्व verwandt. Verdächtig ist das Wort in मुखवृत्तविषूपत्नैः Pañkar. 3,3,10. Beim Schol. zu P. 6,4,77, Vârtt. wird ein ved. acc. विष्वम् neben विषुवम् aufgeführt.

विषुण (von विषु) 1) adj. P. 5,2,100, Vârtt. 2 (oxyt.). Nir. 4,19. a) *verschiedenartig:* चरत्पतत्रि विषुणं जातम् RV. 3,54,8. बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवा vom *wechselnden* Monde 8,29,1. 7,21,5. — b) *abgewandt, abgeneigt:* घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः (संदृक्) RV. 4,6,6. सखायस्ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् 5,12,5. असुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः 34,6. — c) loc. *abseits:* हृत्समपश्यं विषुणे चरन्तम् RV. 8,85,14. — 2) m. = विषुव *Aequinoctium* Râmâçr. zu AK. 1,1,3,14 nach ÇKDr.

विषुर्णक् adv. *nach verschiedenen Seiten hin:* धनोरधि विषुणक्ते व्यायन् RV. 1,33,4.

विषुद्रुह् adj. so nach Sâj. *allverletzend* so v. a. *Pfeil:* विषुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा R̥V. 8,26,15. Wir nehmen eine Entstellung des Textes an aus विषूकुहेव d. i. °कुहम् इव; s. u. d. W.

विषुप n. = विषुव *Aequinoctium* Bhar. zu AK. 1,1,3,14 nach ÇKDr.

विषुरूप adj. *verschiedenfarbig, — artig* Nir. 11,23. अहनी R̥V. 1,123, 7. 6,58,1. विषुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन् 1,186,4. 5,15,4. 6,70,3. 10,10,2 (vgl. VS. 6,20. TS. 1,3,10,1). जन्मसु 64,5. इन्द्र VS. 8,30. छन्दांसि TS. 5,3,8,2. पशवः 3.

विषुव m. n. = विषुवत् *Aequinoctium* AK. 1,1,3,14. H. 146. Dvirûpak. in Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449. Weber, Ǵyot. 77. विषुवे MBh. 3,13475. fg. Bhâg. P. 7,14,20. Mârk. P. 31,21. °समये Hit. 114,22. — Vgl. जल°, महा° (महाविषुवसंक्रान्ती Hit. 114,22, v. l.).

विषुवत्स्तोम (विषुवत् + स्तोम) m. N. eines Ekâha Âçv. Çr. 10,1,3.

विषुवत् und विषूवत् (von विषु) 1) adj. (*an beiden Seiten gleichmässig Theil nehmend* u. s. w.) *die Mitte haltend, in der Mitte befindlich:* स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः R̥V. 1,84,10. प्रबाहुक्सतः शिर एव विषुवान् Ait. Br. 4,22. विषुवन्तो भवन्ति श्रेष्ठतामश्नुवते so v. a. *diejenigen, deren Entscheidung den Ausschlag giebt* ebend. TS. 7,4,3,4. — 2) m. *Mitteltag* (in einer best. Jahresfeier), so vielleicht schon AV. 11,7,15. एकविंशमेतदहरुपयन्ति विषुवन्तं मध्ये संवत्सरस्य Ait. Br. 4,18. 22. 3,41. 6,18. Çat. Br. 10,1,2,2. 3,14. 23. 4,2. 2,1,8. Çâṅkh. Br. 25,1. 26,1. Pańkav. Br. 4,5,2. 5,9,10. Kâtj. Çr. 24,3,20. 5,9.17. — 3) m. N. eines Ekâha Pańkav. Br. 20,5,2. Kâtj. Çr. 23,1,15. Maç. 2,5 in Verz. d. B. H. 72. — 4) m. n. *Aequinoctium* AK. 1,1,3,14. Trik. 3,3, 246. H. 146. Dvirûpak. in Verz. d. Oxf. H. 194,*b*, No. 449. Weber, Ǵyot. 77. fg. 108. 112. Jâǵń. 1,217 (neutr.). विषुवति MBh. 3,13477. विषुवत्पूर्णशीतांशु (so ist zu schreiben) Râǵa-Tar. 2,10. विषुवत्संक्रान्ती Hit. ed. Johns. 2434. विषुवत्कर्णा Sûrjas. 3,13. विषुवत्प्रभा 13. विषुवद्भा 7. विषुवद्दिन und विषुवद्दिवस Ganit. Spasht. 46. विषुवद्वलय *Aequator* Golâdhj. 5,10.17. विषुवद्वृत्त (Bikhvatbrit im Arabischen LIA. Anh. zum IIIten und IVten Bde S. 58) n. dass. Comm. zu 5.10. विषुवन्मण्डल n. dass. ebend. Sûrjas. 3,6. Ganit. Tripraçn. 13, Comm. — 5) m. *Scheitelpunkt, vertex* überh.: धूममारादपश्यं विषूवता पर एनावरेण R̥V. 1,164,43. अनुमोपश्यं वितंतं सहस्रातं विषूवति AV. 9,3,8. — Vgl. वैषुवत.

विषूकुह् adj. *nach beiden Seiten zerfallend, zweispältig:* विषूकुहमिव धन्वना व्यस्याः परिपन्थिनम् so v. a. *zerschneide mit dem Pfeile in zwei Stücke* Âçv. Çr. 5,3,22. परावद दुर्हार्दो ये विषूकुहः Lâtj. 3,11,3. In R̥V. 8,26,15 vermuthen wir विषूकुहेव d. h. °कुहमिव यज्ञम् *in zwei Theile getheilt* nämlich *für jeden* Açvin *einen Theil.*

विषूचक = विषूचिका, loc. °के (aus metrischen Gründen) MBh. 12, 11268 nach der Lesart der ed. Bomb., विस्रूचिके ed. Calc.

विषूचि = विषूचीन Bez. *des überall hindringenden* Manas Bhâg. P. 4,29,16 (ed. Bomb. fälschlich विषूचीर्मनः).

विषूचिका (von विषूची) f. *eine best. Krankheit* (*Indigestion mit Ausleerungen nach beiden Seiten* d. h. *nach oben und nach unten*) VS. 19,10. TBr. 2,6,2,5. nach Wise 330 *die Cholera in ihrer sporadischen Form.* Schiefner, Lebensb. 224 (94). Suçr. 1,82,5. 2,219,19. 429,19. 518,2. fgg. Vâgbh. 8, 5. 8. Verz. d. B. H. No. 955. 958. Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,22. 312,*b*,6. Varâh. Brh. S. 87,44. Tattvas. 50. Spr. (II) 103. Kathâs. 70,8. Pańkat. 138,8. Râǵa-Tar. 8,88. ईर्ष्याविषविषूचिका: 3,512. Wird häufig falschlich विसूचिका und विस्रूचिका geschrieben und Suçr. 2,518,5 auf सूची zurückgeführt.

विषूची s. विषञ्च्.

विषूचीन (von विषञ्च्) adj. *nach den Seiten hinaus gehend, auseinander fahrend, — stiebend* (Gegens. समीचीन) R̥V. 1,164,38. तेनेयं विषूचीनमनीनशत् AV. 3,7,1. 8,6,10. सपत्नान्विषूचीनान्व्यस्यताम् VS. 17, 64. विषूचीनं रेतः परासिञ्चन्ति *daneben, daran vorüber* TS. 5,2,6,3. 9,4. *sich überallhin verbreitend:* गन्ध Bhâg. P. 10,15,25. subst. Bez. *des überall hindringenden* Manas 4,25,55.

विषूवत् s. विषुवत्.

विषूवृत् (विषु + वृत्) adj. *das Gleichgewicht haltend:* रथ R̥V. 2,40, 3. को अस्मिन्नापो व्यदधाद्विषूवृतः *gleichmässig vertheilt* AV. 10,2,11. विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः *neutral* d. h. *unbetheiligt an* R̥V. 10,43,3.

विषोढ s. u. सह् mit वि.

विषोषधी (2. विष + ओ°) f. *Tiaridium indicum Lehm.* (नागदन्ती) Ratnam. im ÇKDr.

विष्क्, विष्कयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84,*b*, v. l.

विष्क m. *ein zwanzigjähriger Elephant* Çiç. 18,27 und Vaiś. bei Mallin. zu d. St. vielleicht nur fehlerhaft für विक्क.

विष्कन्ध (2. वि + स्कन्ध) n. vermuthlich Bez. *einer Krankheit* AV. 1,16,3. 2,4,2. fgg. 3,9,2. 6. 4,9,5. 19,34,5. TS. 7,3,11,1.

विष्कन्धदूषण adj. *das* Vishkandha *verderbend* AV. 2,4,1. 3,9,6.

विष्कम्भ (von स्कभ्, स्कम्भ् mit वि) m. 1) *Stütze:* (धारयति) प्रपतिष्यदिवागारं विष्कम्भः साधु योजितः Suçr. 1,87,11. am Wagen Lâtj. 1, 9,23. — 2) *Riegel* AK. 2,2,17. Schol. zu Ragh. ed. Calc. 16,6. — 3) *ein Pfosten, um den sich der Strick des Butterstössels windet,* H. 1023. — 4) *Breite, Durchmesser;* = विस्तृति, विस्तार H. an. 3,458. Med. bh. 19. MBh. 6,401. 405. fg. 409. 482. 484. fgg. Hariv. 8990. उच्छ्रायो ऽङ्गुलतुल्यो द्वारस्यार्धेन विष्कम्भः Varâh. Brh. S. 53,24. fg. 79,10. Mârk. P. 49, 44. H. 132, Schol. अन्तर° MBh. 6,200. 453. Verz. d. Oxf. H. 48,*a*,41. *Durchmesser eines Kreises* Colebr. Alg. 87. Ârjabhaṭîja 2,7. 10. विष्कम्भार्ध *Halbmesser* 11. — 5) *Hinderniss* H. an. Med. (प्रतिबिम्ब fehlerhaft für प्रतिबन्ध). Halâj. 4,84. — 6) in der Dramatik *Vorspiel am Anfange eines Actes, in welchem der Zuschauer mit dem bekannt gemacht wird, was ihm zum Verständniss des Folgenden unumgänglich nothwendig ist,* Bhar. Nâṭjaç. 18,34. Daçar. 1,52. fg. Sâh. D. 308. Pratâpar. 22,*b*,7. Ǵagaddhara in der Vorrede zu Daçar. 13. = रूपकावयव H. an. = रूपकाङ्गप्रभेद Med. Vgl. Böhtlingk in der Einl. zu Çâk. XII. fg. Bollensen in den Anmm. zu Vikr. S. 369. fg. — 7) *eine best. Stellung der* Jogin H. an. Med. — 8) Bez. *eines der 27 astr.* Joga *und zwar des ersten* H. an. Med. Colebr. Misc. Ess. II,363 (hier fehlerhaft विष्कुम्भ). Saṁsk. K. 2,*a*,3. — 9) N. pr. eines Gebirges Mârk. P. 54,19. 55,11. — 10) N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Hariv. 11543, wo vielleicht so zu lesen ist für विस्कुम्भु; निकुम्भ Langlois, विष्टर die neuere Ausg. — 11) *Baum* Aǵaja im ÇKDr. — Hier und da fälschlich विस्कम्भ geschrieben. Vgl. दण्ड°, वज्र°.

विष्कम्भक (wie eben) 1) adj. *stützend:* °काष्ठ *Stütze zum Tragen der Deichsel* Schol. zu Kâtj. Çr. 7,9,25. — 2) m. = विष्कम्भ 6) Bhar. Nâṭjaç. 18,35. Daçar. 3,25. Sâh. D. 308. Gagaddhara in der Vorrede zu Daçar. 13. Çâk. 31,13. 46,4. Vikr. 36,14. Uttarar. 31,3. 73,9. 106,9. Mâlatim. 146,4. Prab. 13,15. 69,7. मिश्र° Mâlav. 8,11. — 3) f. विष्कम्भिका *Stütze zum Tragen der Deichsel* Schol. zu Kâtj. Çr. 8,4,5.

विष्कम्भिन् (wie eben) 1) adj. unter den Beiww. Çiva's MBh. 13,1186. विष्कम्भो विस्तारस्तद्वान् Nîlak. — 2) m. N. pr. eines Bodhisattva Burn. Intr. 224. fgg.; vgl. सर्वनिवरण°. eine Tantra-Gottheit Kâlak̂akra 4,92.

विष्कर 1) m. *a) Riegel* AK. 2,2,17, v. l. — *b)* N. pr. eines Dânava MBh. 12,8265 nach der Lesart der Bomb. Ausg., विस्कर ed. Calc. — 2) n. Bez. *einer best. Fechtart* Hariv. 15978 nach der Lesart der neueren Ausg., विकर die ältere. — विष्कर H. ç. 191 fehlerhaft für विष्किर.

विष्किर (von 3. कर् mit वि) m. *Scharrer*, Bez. *der Hühnervögel wie Haushuhn, Rebhuhn, Pfau, Wachtel* u. s. w. P. 6,1,150. AK. 2,5,33. H. 1316. H. ç. 191 (fälschlich विष्कर, als Syn. von *Hahn*). Halâj. 2,83. Jâǵn. 1,173. Suçr. 1,57,16. 184,13. 201,2. Vâgbh. 6,47. Uttarar. 31,1 (40,13). °रस *Hühnerbrühe* Suçr. 2,499,17. Çârṅg. Saṁh. 3,4,33. — Vgl. नख°, स्मेर° und विकिर.

विष्ट् s. वेष्ट्.

विष्ट s. u. 1. विश् und 1. विष्.

विष्टकर्णी adj. *auf eine best. Weise am Ohr gezeichnet* P. 6,3,115.

विष्टप् f. *oberster Theil, Höhe, Oberfläche;* insbes. *die Höhe des Himmels*, parallel mit वर्ष्मन्, सानु, पृष्ठ. Auf *Sonne* oder *Himmel* gedeutet Naigh. 1,4. Nir. 2,14. bei Sâj. gewöhnlich mit स्थान umschrieben. ऊर्णायामधि विष्टपि ṚV. 1,46,3. न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर 8,32,3. आ यांहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः 34,13. यद्वासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि 86,5. übertragen auf die Soma-*Kufe* 9,12,6. 107,14. ऋतस्य 34,5. ऋतस्य सानावधि विष्टपि भ्राट् 10,123,2. नाकस्य AV. 11,1,7. 18,4,4. ब्रध्नस्य 10,10,31. उग्रद्ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि *die oberste Höhe, welche der Röthliche* d. h. *die Sonne erklimmt*, ṚV. 8,58,7. VS. 18,51. TS. 7,5,8,5. Âçv. Çr. 11,3,7. Pańkav. Br. 18,7,13.

विष्टप m. (dieses selten) und n. dass. Der acc. विष्टपम्, der auch hierher gehören könnte, ist für die ältere Sprache unter विष्टप् gesetzt. इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ṚV. 8,80,5. ब्रध्नस्य 9,113,10. VS. 14,23. Ait. Br. 1,30. स्वर्गो वै लोको ब्रध्नस्य विष्टपम् 4,4. 5,30. TS. 5,3,2,5. Çat. Br. 12,3,1,9. 13,1,2,3. Çâṅkh. Br. 17,3. masc. Pańkav. Br. 19,10,12. 23,3,5. 19,3. — संवत्सरस्य त्रयोदशो मासो विष्टपम् *das Hervorragende* TBr. 3,8,2,3. ऋषभस्य *der Höcker* ebend. Çat. Br. 13,1,2,2. In der Stelle विष्टपमभिनुक्रोति Çat. Br. 3,6,1,21 verstehen die Comm. *Verzweigung, Gabel des* Udumbara-*Zweiges* Schol. zu Kâtj. Çr. 703,1. Mahîdh. zu VS. 5,28, also wohl *der oberste* (zugleich *verzweigte*) *Theil*. विष्टप n. = जगत्, भुवन, लोक *Welt* AK. 2,1,6. H. 1365. Halâj. 1,133. ब्रध्नस्य M. 4,231, v. l. 9,137. °त्रय Ragh. 11,19. त्रयाणामपि विष्टपानाम् Kumâras. 3,20. °हारिन् (हर) Spr. 3288. — Vgl. त्रि° und पिष्टप.

विष्टपुर m. N. pr. eines Mannes gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. Verz. d. Oxf. H. 18,*b*,16. 19,*a*,42. — Vgl. वैष्टपुरेय.

विष्टब्धि (von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) f. *das Feststellen, Stützen* Anupada 3,11.

विष्टम्भ (wie eben) VS. Prât. 5,41. m. 1) *das Stützen:* पद° *des Fusses so v. a. das Auftreten* Kir. 13,16. — 2) *Stütze* ṚV. 9,2,5. 86,35. 108,16. AV. 13,4,10. VS. 14,9. 15,6. विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः TS. 4,4,12,5. देवेन्द्रबल° MBh. 12,10348. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 327. — 3) *Stützen* d. i. *Haltpunkte* heissen *gewisse in den Singsang der Litaneien eingeschobene Silben* Pańkav. Br. 12,10,7. Anupada 3,11. Nidânas. 3,12. — 4) *Hemmung, Unterdrückung;* = प्रतिबन्ध Med. bh. 20. वृष्टिविष्टम्भयत्न Bhâg. P. 5,22,12. भयानां च स्वसैन्यानां सम्यग्विष्टम्भलक्षणम् Kâm. Nîtis. 18,40. *Stopfung, Obstruction* Suçr. 2,403,13. 509,19. वायु° 194,10. = प्रभेदो ऽभयस्य Med. — 5) *eine best. Krankheit des Fötus* Çârṅg. Saṁh. 1,7,104. — 6) *das Ertragen, Trotzen, Widerstehen:* शीतोष्णवर्षपवनविष्टम्भविभिन्नसर्वत्वच MBh. 12,7002.

विष्टम्भकर adj. *stopfend, hemmend:* त्रिदोष° Suçr. 1,210,17.

विष्टम्भन (vom caus. von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) 1) adj. (f. ई) VS. Prât. 5,41. *stützend* VS. 14,5. — 2) m. *das Hemmen, Zurückhalten, Unterdrücken:* उच्छ्वासाविष्टम्भन Maitrjup. 2,2.

विष्टम्भयिषु (eine unregelmässige Bildung ohne Redupl. vom desid. des caus. von स्तभ्, स्तम्भ् mit वि) adj. *zu stützen —, zum Stehen zu bringen beabsichtigend:* ein fliehendes Heer MBh. 7,1746. संस्तम्भयिषु ed. Bomb.

विष्टम्भिन् adj. *stopfend, hemmend* Suçr. 1,51,21. 176,10. 178,10. 199,20. Vâgbh. 6,36. 38.

विष्टर (von स्तर् mit वि) VS. Prât. 5,41. 1) m. *Büschel von Schilf und dgl. zum Sitzen* (= कुशपूलक, दर्भासन nach den Comm.), = दर्भमुष्टि, कुशमुष्टि, बर्हिर्मुष्टि AK. 3,4,25,171. H. 835. an. 3,601. fg. Med. r. 216. — Âçv. Gṛhj. 1,24,7. 8. Gobh. 4,10,3. 4. Lâṭj. 1,2,2. Pâr. Gṛhj. 1,3. आसने विष्टरोत्तरे MBh. 3,1881. — 2) m. n. *Sitz* überh. P. 8,3,93. AK. Trik. 2,6,40. H. 684. H. an. Med. Halâj. 2,155. विष्टरार्थं कुशाः Jâǵn. 1,229. Mârk. P. 31,40. दक्षिणाग्रास्ततो दर्भा विष्टरेषु निवेशिताः MBh. 13,4339. काञ्चन 1,2218. R. 4,50,37. MBh. 5,3874. वरं तु विष्टरं कौश्यं कृष्णाजिनकुशोत्तरम् । प्रतिपेदे 15,739. fg. Hariv. 4448. Ragh. 8,18. 15,79. °भाज् 5,3. Kumâras. 7,72. Vikr. 86,15 (m.). सूत्राम° Râǵa-Tar. 1,100. 4,110. गजस्कन्धनिबद्ध 263. 555. 719. उत्तमश्लोकपदाब्ज° Bhâg. P. 6,16,32. Pańkar. 3,6,2. हृदयाम्भोज° adj. Bhâg. P. 3,28,16. पुष्कर° Bein. Brahman's 19,31. Als neutr. Hariv. 14544. 15711. Çatr. 14,51. — 3) m. *Baum* P. 8,3,93. AK. Trik. 2,4,2. H. 1114. H. an. Med. Halâj. 2,22. — 4) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten göttlichen Wesens Hariv. 11543 nach der Lesart der neueren Ausg. — 5) f. आ *ein best. Gras*, = गुण्डासिनी Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. सिंह°, विष्टार und विस्तर.

विष्टरश्रवस् (विष्टर = विस्तर + श्र°) adj. *weitberühmt;* m. Bein. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1,1,1,13. H. 218. Halâj. 1,24. MBh. 12,1370. 14,355. Hariv. 15883. 15932. Çiç. 14,12. Verz. d. Oxf. H. 72,*a*,32. Pańkar. 4,3,44. 8,38. Çiva Çiv. विष्टरे ऽश्वत्थवृक्षे श्रूयते नित्यं तत्र वसतीति विष्टरश्रवाः Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,226. विष्टराविव श्रवसी यस्य स

विष्टरश्रवाः MALLIN. zu ÇIÇ. 14,12. Hier und da fälschlich °श्रवम् geschrieben.

विष्टराज *Silber* AUSH. 25.

विष्टराश्व (विष्टर + अश्व) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu HARIV. 669. विषराश्व andere Autorr.

विष्टरूहा f. *eine best. Pflanze*, = स्वर्णकेतकी RÂGAN. im ÇKDR. विष्टारूहा v. l.; die richtige Lesart möchte विष्ठारूहा *auf Mist wachsend* sein.

विष्टा s. u. 1. und 2. विष्ठा.

विष्टान्त (विष्टऽग्रन्त Padap.) adj.: नेमधिता न पौंस्या वृथेव विष्टान्ता RV. 10,93,13. das Metrum ist nicht in Ordnung.

विष्टार (von स्तर् mit वि) m. 1) etwa *Streu* (des Barhis): यज्ञं विष्टार ओहते RV. 5,52,10. nach SÂJ. als nom. pl. = विस्तृताः सन्तः, was unmöglich ist. — 2) *ein best. Metrum* (vgl. die folgenden Wörter) P. 3, 3,34. 8,3,94.

विष्टारपङ्क्ति f. *ein best. Metrum:* 8 + 12 + 12 + 8 *Silben* VS. 15,4. TS. 4,3,12,3. RV. PRÂT. 16,39. COLEBR. Misc. Ess. II, 153 (V,4; hier fälschlich विस्तार°). Schol. zu P. 3,3,34. 8,3,94. Ind. St. 8,98. 249. सिद्धा 97. द्विपदा und प्रवृद्धपदा 102.

विष्टारबृहती f. *ein best. Metrum:* 8+10+10+8 *Silben* RV. PRÂT. 16,33. Schol. zu P. 8,3,94.

विष्टारिन् (von स्तर् mit वि oder von विष्टार) adj. heisst *eine best. Art von* Odana und *das Opfer desselben* AV. 4,34,1. fgg.

विष्टारूहा f. s. विष्टरूहा.

विष्टाव (2. वि + स्ताव) m. *Unterabtheilung der Perioden eines* Stoma, *Glied* LÂTJ. 2,6,6. 9. 6,1,18. 5,6. 6,16. 7,4. Schol. zu PAÑKAV. BR. 2,9,3.

1. विष्टि und विष्टिभिस् instr. pl. *wechselnd, vicibus:* युवाना पितरा पुनर्विष्ट्यक्रत *wieder* RV. 1,20,4. अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः 92,3. त्रिविष्टि adv. *dreimal* 4,6,4. 15,2. त्रिविष्टिधातु = त्रिधातु 1,102,8.

2. विष्टि (von 1. विष्) 1) f. *Frohne, Frohndienst, Zwangsarbeit:* तान्सर्वान्धार्मिको राजा बलिं विष्टिं च कारयेत् MBH. 12,2873. BHÂG. P. 5,9,9. 10,1. 12,7. 7,8,55. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,13. = आज्ञा AK. 1,2,2,3. H. 1358. an. 2,100. MED. t. 28. = मूल्य, वेतन H. an. MED. = कर्मन् MED. = प्रेषण H. an. = प्रेंखण (d. i. प्रेखण, प्रेषण) TRIK. 3,3,103. — 2) sg. (wohl f.) coll. *die Fröhner, Zwangsdiener:* रथा नागा हयाश्चैव पादाताश्चैव — विष्टिर्नावश्चराश्चैव (so ed. Bomb.) दैशिका इति चाष्टमम् ॥ अङ्गान्येतानि — प्रकाशानि बलस्य तु । MBH. 12,2162. fg. 4452. विष्टिकर्मान्तिकाः R. 2,82,19. Auch *der einzelne Fröhner:* व्युचरविष्टिसहस्रहार्य KATHÂS. 110,143. = कर्मकर H. an. und zwar adj. MED. — 3) f. N. *des 7ten beweglichen* Karaṇa (s. u. 2. करण 3) m) VARÂH. BṚH. S. 96,6. 98,13. 99,4. 7. 100,2. ÇATR. 14,291. Schol. zu KÂTJ. ÇR. 7,1,31. = भद्र TRIK. H. an. — 4) f. N. pr. einer Tochter des Sonnengottes von der Khâjâ Verz. d. Oxf. H. 34,b,41. — 5) m. N. pr. eines der sieben Ṛshi im 11ten Manvantara MÂRK. P. 94,20.

3. विष्टि (aus वृष्टि) f. = वर्षण *Regen* VIÇVA im ÇKDR.

विष्टिकर (2. वि° + 1. कर) m. 1) *Frohnherr, Zwingherr:* निर्विशेषा जनपदास्तदा विष्टिकरार्दिताः MBH. 3,13081. — 2) *Fröhner, Zwangsdiener* VARÂH. BṚH. 18(16),11.

विष्टिकृत् m. = विष्टिकर 2) VARÂH. BṚH. 18(16),18. 21(19),7.

विष्टिर् (von स्तर् mit वि) f. *Weite* (vgl. उर्वी): षळुस्तभा विष्टिरः पञ्च संदृशः RV. 2,13,10. स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति 1,140,7.

विष्टिव्रत n. Bez. *einer best. Begehung zu Ehren der* Vishṭi, *der Tochter des Sonnengottes* Verz. d. Oxf. H. 34,b,40 (Verz. d. B. H. 136,a,112).

विष्टीमिन् (von स्तीम् mit वि) adj. *nässend* VS. 23,29.

विष्टुति (von स्तु mit वि) f. *Recitationsweise (der* Stoma) VS. 19,28. PAÑKAV. BR. 2,1,1. 2,1. 3,1. 4,1. LÂTJ. 6,2,20. द्वात्रिंशे स्तोमे तिस्रो विष्टुतीः कुर्यात् 7,18. SHAḌV. BR. 3,2. 9. Verz. d. Oxf. H. 387,a,24.

विष्ठल (2. वि + स्थल) n. P. 8,3,96.

1. विष्ठा (स्था mit वि) f. *Art (verschiedene Einzelne umfassend), Form:* गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा (oder विष्ठाः, jenes nach Padap.) *volucrum genera* AV. 12,1,5. देवानां विष्ठामनु यो वितस्थे *die verschiedenen Götter* TBR. 3,7,5,3. सं प्रेरते अनु वातस्य विष्ठाः RV. 10,168,2. बुध्न्या उपमा विष्ठाः VS. 13,3. यज्ञस्य 23,57. fg. KAUÇ. 3. दर्शन्नु ता वरुण यास्ते विष्ठाः *verschiedene Arten des Erscheinens* AV. 5,1,8. 7,3,1 (vgl. TS. 1,7,12,2). स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इषं ऊर्जाम् *die Himmelswelten mit den Unsterblichen, die mancherlei* u. s. w. 18,4,4. त्रिवृन्नो विष्ठया (die Hdschrr. haben विष्टया; vgl. jedoch ÂÇV. ÇR. 4,12,2) स्तोमो अह्नाम् (पिपर्तु) *mit den verschiedenen Tagen* TS. 4,4,12,1. 3.

2. विष्ठा f. = 3. विष् *faeces* AK. 2,6,2,19. H. 634. HALÂJ. 3,15. पितृपितामहप्रपितामहाश्च विष्ठायां जायन्ते PAITHINASI in DÂJABH. 273,3. 4. M. 3,180 (= MBH. 13,4282). 4,220 (MBH. 12,1320). MBH. 5,5445. 13, 1551. 4827. SUÇR. 2,246,7. ÇÂRṄG. SAṂH. 1,3,16. Spr. (II) 1111. यदि काको गजेन्द्रस्य विष्ठां कुर्वीत मूर्धनि । स स्वभावो हि नीचानां यो गजो गज एव सः ॥ SUBHÂSH. 122. तस्योपरि बलाकया । विष्ठा कदाचिन्मुक्ताभूत् KATHÂS. 56,172. 70,91 (pl.). PAÑKAR. 1,2,43. 2,2,69. सुवर्णमयीं विष्ठां विधाय PAÑKAT. 192,16. विष्ठायां कृमिर्भूत्वा Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,28,12. BHÂG. P. 10,64,39. °करण VARÂH. BṚH. S. 95,14. अ° M. 10,91. काक° Verz. d. Oxf. H. 223,b, No. 544. Hier und da fälschlich विष्टा geschrieben. — Vgl. गो°, मुख°, वाग्नि°.

विष्ठाभू (2. वि° + 2. भू) m. *ein in Koth lebender Wurm* BHÂG. P. 3, 31,10. 24.

विष्ठाव्राजिन् adj. nach SÂJ. *an einer Stelle bleibend, sich nicht umhertreibend* ÇAT. BR. 5,5,2,12.

विष्ण, dat. विष्णाय fehlerhafter dat. für विष्णवे. मूर्खो वदति विष्णाय बुधो वदति विष्णवे । नम इत्येवमर्थं च द्वयोरेव समं फलम् ॥ PAÑKAR. 1,12,39.

विष्णापू m. N. pr. des Sohnes des Viçvaka RV. 1,116,23. 117,7. 8, 75,3. 10,65,12.

विष्णु UṆÂDIS. 3,39. 1) m. a) N. des Gottes AK. 1,1,1,13. H. 214. HALÂJ. 1,21. 5,70. zum oberen Gebiet gezählt NAIGH. 5,6. NIR. 12,18. sein Hauptwerk ist die Durchmessung des Luftkreises in drei Schritten; vgl. die Lieder RV. 1,154. fgg. 7,99. fg. उरुक्रम 1,90,9. 154,5. उरुगाय 3. 6. गिरिक्षित् 3. पर्वतानामधिपतिः TS. 3,4,5,1. पुरुदस्म 3,54,14. निषिक्तपा 7,36,9. शिपिविष्ट 100,5. 6. वृष (s. u. 3. वृष). विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः 3,55,10. मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहम् 1,61,7. Gefährte des Indra, namentlich beim Kampf gegen Ahi RV. 1,22,19. 156,4. 4,18,11. 6,20,2. TS. 2,4,12,2. 3,2,11,3. 6,5,1,3. इन्द्राविष्णू RV.

4,55,4. 7,99,5. 8,10,2. Indra trinkt bei und mit ihm Soma 8,3,8.12, 16. 2,22,1. 9,56,4. 4,63,3. Die drei पद् oder विक्रमण desselben 5,3,3. 6,49,13. 8,9,12. 12,27. 1,22,16. 155,4. 5. VS. 2,25. 12,5. ÇAT. BR. 1,9, 3,10. NIR. 12,19. AV. 10,5,25. Sinîvâlî heisst seine Gattin 7,46,3; vgl. विष्णुपत्नी. Mit Âditja's zusammen genannt AV. 11,6,2. आदित्यानामहं विष्णुः sagt Kṛshṇa BHAG. 10,21. द्वादशो विष्णुरुच्यते । जघन्यजस्तु सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः MBH. 1,2524. 13,914. HARIV. 175. 260. 594. 11549. 12912. 14167. VP. 122. 153. Thürhüter der Götter AIT. BR. 1,30. der räumlich höchste Gott 1,1. TS. 5,5,1,4. अग्नाविष्णू TS. 1, 1,12,1. AV. 7,29,1. 2. विष्णूवरुणा TBR. 2,8,4,5. विष्णुमुखा देवाः TS. 1, 7,5,4. — VS. 1,30. 2,6. 8. 5,21. 7,20. 8,17. 55. 57. AV. 5,26,7. 8,5, 10. 9,2,6. 12,1,10. 18,3,11. Vishṇu als Zwerg bei der Theilung der Erde zwischen Göttern und Asura (s. unter वामन) ÇAT. BR. 1,2,5,3; vgl. TS. 2,1,3,1. TBR. 1,6,1,5. sein abgeschlagenes Haupt wird zur Sonne ÇAT. BR. 14,1,1,10. PAÑKAV. BR. 7,5,6. Herr des 1ten Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus VARÂH. BṚH. S. 8,23. 26. कार्यो ऽष्टभुजो भगवांश्चतुर्भुजो द्विभुज एव वा विष्णुः । श्रीवत्साङ्कितवक्षाः कौस्तुभमणिभूषितोरस्कः ॥ 58,31. क्रान्ते विष्णुम् (संनिवेशयेत्) M. 12,121. विष्णुना सदृशो वीर्ये R. 1,1,18. शङ्खचक्रगदापाणिः पीतवासा जगत्पतिः 14,24. अमरेश्वर 77,29. येन लोकास्त्रयः सृष्टा दैत्याः सर्वाश्च देवताः । स एष भगवान्विष्णुः समुद्रे तप्यते तपः ॥ MBH. 13,312. sein Schlaf HARIV. 2819. fgg. 8795. fgg. 12308. fgg. VP. 634. jüngerer Bruder Indra's (vgl. उपेन्द्र) HARIV. 2383. Vishṇu in der Götterdreiheit der zweite, der Erhalter der Welt; Gatte der Lakshmî (Çrî) und Sarasvatî, Vater des Liebesgottes, ruht auf dem Schlangendämon Çesha, Garuḍa sein Reitthier Spr. (II) 1404. hat seinen Sitz im Âhavanîja-Feuer GṚHJAS. 1,7. steigt häufig auf die Erde herab (s. अवतार); als Zwerg HARIV. 12202. fgg. 12900. fgg. als Eber 12278. fgg. als Mannlöwe 12609. fgg. विष्णोरुपमर्णाम्, आग्येदोहम्, व्रतम्, साम und स्वरीयः Namen von Sâman Ind. St. 3,237,a. Etymologien des Namens MBH. 5,2562. 2571. VP. bei UǴǴVAL. zu UṆÂDIS. 3,39. — b) angeblich so v. a. *Opfer* NAIGH. 3,17. aus Stellen wie ṚV. 8,3,8 u. a. und zahlreichen Sentenzen der BRÂHMAṆA abgeleitet. यज्ञो वै विष्णुः ÇAT. BR. 1,1,2,13. 2,5,3. 14,1,1,15. TS. 6,2,4,2. PAÑKAR. BR. 13,2,3. यज्ञस्वरूपधृक् BHÂG. P. 4,1,4. — c) Bez. *des Monats* Kaitra (mit anderen Namen des Gottes werden die folgenden Monate bezeichnet) VARÂH. BṚH. S. 105,14. — d) Vishṇu mit dem patron. Prâǵâpatja Liedverfasser von ṚV. 10,184. Vishṇu als einer der Söhne des Manu Sâvarṇa MÂRK. P. 80,11. des Manu Bhautja 110,32. als Verfasser eines Gesetzbuchs JÂǴÑ. 1,4. Verz. d. Oxf. H. 266,b,1. 268,a,42. 269,a,1 v. u. 270,b,44. 279,b,1. 356,a,28. Verz. d. Cambr. H. 67; vgl. लघु°, बृहद्विष्णु, वृद्ध°. Vater des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 37. N. pr. verschiedener Männer Verz. d. Oxf. H. 203,a, No. 484. 246,b, No. 622. 318,a,34. 321,a, No. 761. Verz. d. Cambr. H. 41. 43. HALL 26. °भट्ट 75. °पण्डित COLEBR. Misc. Ess. II, 450. fg. विष्णूपाध्याय Notices of Skt Mss. 86. — e) = अग्नि ÇABDAM. im ÇKDR. — f) = वसुदेवता. — g) = शुद्ध DHAR. ebend. — 2) f. N. pr. der Mutter des 11ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 40. — Vgl. भूत°, महा° und वैष्णव.

विष्णुऋक्ष n. Bez. *des* Nakshatra Çravaṇâ TITHJÂDIT. im ÇKDR.

विष्णुकन्द m. *ein best. Knollengewächs* RÂǴAN. im ÇKDR.

विष्णुकवि m. N. pr. eines *Dichters* Verz. d. Oxf. H. 150,b, No. 320.

विष्णुकाञ्ची f. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 251,b,27.

विष्णुकान्ती f. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149,a,3.

विष्णुक्रम m. Vishṇu's *Schritt: drei von dem Opferer zu machende Schritte zwischen* Vedi *und* Âhavanîja TS. 5,2,1,1. 7. ÇAT. BR. 1,9, 3,8. 5,4,2,6. 6,8,1,3. KÂTJ. ÇR. 6,2,4. 17,1,1. KAUÇ. 6. Davon °क्रमीय adj.: अहन् ÇAT. BR. 6,7,4,15.

विष्णुक्रान्त Vishṇu's Tritt: 1) m. *ein best. Tact* SAṄGÎTARATNÂKARA im ÇKDR. Suppl. unter रथक्रान्त. — 2) f. आ *Clitoria ternatea Lin.* AK. 2, 4,2,22. PAÑKAR. 1,7,19. SAÑSK. K. 4,a,10. ÇÂRṄG. SAṂH. 2,5,8. *Evolvulus alsinoides* WATSON s. v. (auch विष्णुक्रान्ति). *dunkle* Çaṅkhapushpî DHANV. in NIGH. PR.

विष्णुक्षेत्र n. Bez. eines best. *heiligen Gebietes* LIA. I, 187, N. 1.

विष्णुगङ्गा f. N. pr. eines Flusses LIA. I, 49.

विष्णुगाथा f. *ein Gesang zu Ehren* Vishṇu's, pl. BHÂG. P. 1,19,15.

विष्णुगुप्त m. 1) = विष्णुकन्द RÂǴAN. im ÇKDR. = कृष्णमूल AUSH. 42. — 2) ein Name Kâṇakja's TRIK. 2,7,22. H. 854. KÂM. NÎTIS. 1,6. VARÂH. BṚH. S. 2, S. 5, Z. 13. BṚH. 7,7. 21,3. Spr. (II) 1848. PAÑKAT. II, 45. DAÇAK. 183,8. Verz. d. Oxf. H. 329,a,6. Verz. d. B. H. No. 865. Verz. d. Cambr. H. 54. ein Schüler Çaṁkarâkârja's Verz. d. Oxf. 248,a,2. N. pr. eines Buddhisten KATHÂS. 49,177.

विष्णुगुप्तक n. *eine Art Rettig,* = चाणक्यमूलक RÂǴAN. im ÇKDR.

विष्णुगूढ m. Titel einer Schrift Notices of Skt Mss. 86.

विष्णुगृह n. Vishṇu's *Wohnstatt,* ein N. von Tâmralipta H. 979.

विष्णुग्रन्थि m. Bez. *eines best. Gelenkes am Körper* Verz. d. Oxf. H. 235,b,32. — Vgl. ब्रह्मग्रन्थि.

विष्णुचक्र n. 1) Vishṇu's *Discus* R. 1,29,6 (30,6 GORR.). 56,10 (57, 9). 3,36,9. — 2) Bez. *eines best. mystischen Kreises* Verz. d. Oxf. H. 88,a,33. auf der Hand: विष्णुचक्रं करे चिह्नं सर्वेषां चक्रवर्तिनाम् । भवत्यव्याहतो यस्य प्रभावस्त्रिदशैरपि ॥ VP. 1,13 im ÇKDR.

विष्णुचन्द्र m. N. pr. eines Astronomen Verz. d. Oxf. H. 329,a, No. 780. Verz. d. Cambr. H. 30. COLEBR. Misc. Ess. II,379 u. s. w.

विष्णुज 1) adj. *unter* Vishṇu d. i. *im ersten Lustrum eines 60jährigen Jupitercyclus geboren* VARÂH. BṚH. S. 46,11. — 2) m. N. des 18ten Kalpa (*Tages* Brahman's; s. u. कल्प 2) d).

विष्णुतत्त्व n. Vishṇu's *wahres Wesen* SARVADARÇANAS. 73,20. °निर्णय m. Titel eines philosophischen Werkes 62,18. fg.

विष्णुतिथि m. f. Vishṇu's *lunarer Tag* d. i. *der eilfte oder zwölfte* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,13, Çl. 52; vgl. HALL ebend. S. 22 und विष्णुदैवत्या.

विष्णुतीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,a,9. 73,b,28.

विष्णुतैल n. Bez. *eines best. Oeles* BRAHMAVAIV. P. im ÇKDR.

विष्णुत्व n. Vishṇu's *Wesen, — Natur* R. 7,85,18. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,155. Spr. 5061. MÂRK. P. 46,14.

विष्णुदत्त 1) adj. *von* Vishṇu *gegeben:* विमान BHÂG. P. 6,17,4. — 2) m. ein Mannsname KATHÂS. 25,64. 32,43. SÂH. D. 171,1. Verz. d. Oxf.

H. 345,b,41. Bein. Parîkshit's Bhâg. P. 5,3,20. 9,21.

विष्णुदास m. Vishṇu's *Knecht*, N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 16,b,12. Notices of Skt Mss. 74.

विष्णुदेव m. N. pr. eines Mannes Hall 23.

विष्णुदेवाराध्य m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 244,a,No. 606.

विष्णुदैवत adj. Vishṇu *zur Gottheit habend* Vishṇudharmott. im ÇKDr.

विष्णुदैवत्य 1) adj. dass. ebend. — 2) f. श्रा Bez. *des eilften und zwölften Tages* ÇKDr.

विष्णुद्विष् m. *ein Feind* Vishṇu's, deren 9 aufgeführt H. 698. fg.

विष्णुद्वीप n. N. pr. einer *Insel* Wilson, Sel. Works 2,344.

विष्णुधर्म m. Vishṇu's *Gesetz*, — *Gesetzbuch* Verz. d. B. H. No. 150. 1176. Weber, Kṛshṇaǵ. 228. 239. Verz. d. Oxf. H. 279, b, 2. विष्णुधर्मादित्यधर्माः शिवधर्माश्च u. s. w. unter den 18 Purâṇa 30,b,16.

विष्णुधर्मन् m. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3598.

विष्णुधर्मोत्तर n. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. II, 324 u. s. w. Verz. d. B. H. No. 1025. 1162. fgg. Verz. d. Oxf. H. 87,b,35. 104,a,23. 268,a,20. 270,b,45. 279,b,2. Verz. d. Cambr. H. 43. 67. Weber, Kṛshṇaǵ. 222. 229. Titel eines Abschnittes im Mahâbhârata Verz. d. Oxf. H. 4, b, No. 33.

विष्णुधारा f. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60,a,35. fg.

विष्णुनदी f. N. pr. eines *Flusses* Verz. d. Oxf. H. 65,a,1.

विँष्णुपत्नी f. Vishṇu's *Gattin*, so heisst Aditi VS. 29,60. TS. 4,4, 12,5. 7,5,14,1. TBr. 3,1,2,6. Âçv. Çr. 4,12,2.

विष्णुपद 1) n. a) *Zenith, Scheitelpunkt* Nir. 12,19. Bhâg. P. 5,17,2. — b) *Luftraum* AK. 1,1,2,2. H. 163. an. 4,144. Med. d. 53. Halâj. 1,137. MBh. 7,2855. Ragh. 16,28. *Himmel* Çârṅg. Saṁh. 1,5,28. Weber, Râmat. Up. 357. — c) N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,6073. Verz. d. Oxf. H. 60,a,36. °तीर्थ 73,a,18. auf dem Kailâsa MBh. 5,3841. ein Berg 12, 928. Hariv. 1696; vgl. विष्णोः पदम् R. Gorr. 2,70,18. — d) *das Milchmeer* Med. masc. H. an. — e) *eine Lotusblüthe* H. an. — 2) f. ई gaṇa कुम्भपद्यादि zu P. 5,4,139. a) ein N. der Gaṅgâ AK. 1,2,3,30. H. 1082. H. an. Med. Halâj. 3,51. MBh. 13,1851. Hariv. 7168. 7579. 8888. 8919. R. 3,78,29. Verz. d. Oxf. H. 12,b,25. 24,a,6. Bhâg. P. 1,19,7. — b) ein N. der Stadt Dvârikâ H. an. — c) *der Eintritt der Sonne in die Zeichen Stier, Löwe, Scorpion und Wassermann* H. an. Med. Tithjâdit. im ÇKDr.

विष्णुपद्धति f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1112.

विष्णुपरायण m. N. pr. eines Verfassers von mystischen Gebeten bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,a,28.

विष्णुपर्णिका f. *Hedysarum lagopodioides Roxb.* Râǵan. in Nigh. Pr.

विष्णुपुत्र m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 36.

विष्णुपुर n. Vishṇu's *Stadt* Vop. 6,69.

विष्णुपुराण n. Titel eines Purâṇa (übersetzt von H. H. Wilson) Verz. d. Oxf. H. 62,b, No. 109. 113,b,44. 125,a,41. 182,b,1 v. u. 185,b,16. 42. 268,a,9. 38. 270,b,46. 279,b,3. Sarvadarçanas. 68,13. 173,20. 177,14. °क n. Pańkar. 2,7,32.

विष्णुपुरी 1) f. N. eines Berges im Himâlaja Ind. Bibl. 1,387. — 2) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 37, No. 90. 38,b,13. 227,a, No. 557. Verz. d. Tüb. H. 13.

विष्णुप्रिया f. *Basilienkraut* Dhanv. in Nigh. Pr.

विष्णुभक्त adj. *ein Verehrer* Vishṇu's Weber, Râmat. Up. 361. Verz. d. Oxf. H. 45,a,16. 85,b,14. 252,a,42.

विष्णुभक्ति f. Vishṇu-*Verehrung*, personif. als Jogini Prab. 31,6. °चन्द्रोदय m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 274, a, No. 649. °रहस्य n. desgl. 72,b,9. °लता f. desgl. Verz. d. B. H. No. 542.

विष्णुमत् (von विष्णु) 1) adj. Vishṇu *enthaltend:* गायत्री Pańćav. Br. 13,3,1. — 2) विष्णुमती f. N. pr. einer Fürstin Kathâs. 9,8. — Vgl. विष्णुवत्.

विष्णुमन्त्र m. *ein an* Vishṇu *gerichtetes Lied* Verz. d. Oxf. H. 99,b, 42. 106,a,18. fg.

विष्णुमय (von विष्णु) adj. (f. ई) *von* Vishṇu *kommend, ihm gehörig, sein Wesen habend* u. s. w. Vop. 7, 72. श्रभय Hariv. 2419. गणाः 12139. देव R. 7,110,13. रुद्र Hariv. 10665. MBh. 12,1685. VP. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,39. Verz. d. Oxf. H. 248,a,37.

विष्णुमाया f. Vishṇu's *Trugbild, eine Form der* Durgâ Verz. d. Oxf. H. 25,a,33. Kâlikâ-P. 5 im ÇKDr.

विष्णुमित्र m. ein häufiger Mannsname, der als Beispiel wie Cajus angewandt wird, Kâṇ. 3,2,17. Weber, Nax. 2,319. Bhâg. P. 5,14,24. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 7. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 255,a, 14. eines Scholiasten des ṚV. Prât. Einl.

विष्णुमिश्र m. N. pr. eines Grammatikers Colebr. Misc. Ess. II, 47.

विष्णुयशस् m. N. pr. = Kalkin oder Kalki MBh. 3,13101. Hariv. 2367. Vater Kalkin's Bhâg. P. 1,3,25. 12,2,18. Verz. d. Oxf. H. 23, b,19. Pańkar. 4,3,159, v. l. Kalki-P. 30 im ÇKDr. N. pr. eines Lehrers Verz. d. B. H. No. 306.

विष्णुयामल n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 88, a, 6 (°ज्ञामल gedr.). Ind. St. 2,252.

विष्णुरथ m. Vishṇu's *Vehikel* d. i. *der Vogel* Garuḍa AK. 1,1,1,25. Verz. d. Oxf. H. 190,a,22.

विष्णुरहस्य n. Vishṇu's *Mysterium*, Titel eines Abschnitts in Vasishṭha's Saṁhitâ Mack. Coll. 1,55. Verz. d. Oxf. H. 87,b,36. 273,b, 44. fg. 279,b,3. Weber, Kṛshṇaǵ. 223. 228. fg.

विष्णुराज m. N. pr. eines *Fürsten* Târan. 171. fg. 195.

विष्णुरात adj. *von* Vishṇu *verliehen;* m. Bein. Parîkshit's Bhâg. P. 1,12,17. 19,29. 2,8,27. 6,18,21. 8,24,4. 10,1,14. 80,5. 12,13,21.

विष्णुलिङ्गी f. *Wachtel* Trik. 2,5,31. Hâr. 184.

विष्णुलोक m. Vishṇu's *Welt* Weber, Kṛshṇaǵ. 307. Râǵa-Tar. 4, 507. VP. 213, N. 3. Pańkar. 1,3,88.

विँष्णुवत् (von विष्णु) adj. *von* Vishṇu *begleitet* ṚV. 8,35,14. श्रहन् so v. a. *ein eilfter* oder *zwölfter Tag* (vgl. विष्णुतिथि) Verz. d. Oxf. H. 48,b,7.

विष्णुवल्लभा f. 1) Vishṇu's *Geliebte* d. i. Lakshmî Tantras. im ÇKDr. — 2) *Basilienkraut* Râǵan. im ÇKDr. = श्रग्निशिखा Çabdak. ebend.

विष्णुवाजपेयिन् m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 279,b,4.

विष्णुवाहन n. Vishṇu's *Vehikel, der Vogel* Garuḍa H. 230.

विष्णुवाह्य m. dass. Çabdar. im ÇKDr.

विष्णुवृद्ध m. N. pr. eines Mannes, pl. *seine Nachkommen* Âçv. Çr. 12, 12,2. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,35.

1. विष्णुशक्ति f. Vishṇu's *Energie* d. i. Lakshmî H. ç. 76. Râǵa-

TAR. 3,391.

2. विष्णुशक्ति m. N. pr. eines Fürsten KATHÂS. 6,126.

विष्णुशर्मन् m. häufiger Mannsname. N. pr. eines Autors mystischer Gebete bei den Tântrika Verz. d. Oxf. H. 101,*b*,20. des Hauptes einer Bhakta genannten Secte 248,*a*,17. des Erzählers des Pańkatantra und Hitopadeça 124,*b*,44. PAŃKAT. Pr. 3. 4,21. fgg. HIT. 7,20. 45,2. — Verz. d. Oxf. H. 152,*b*,17.

विष्णुशिला f. = शालग्रामशिला MERUTANTRA 5 im ÇKDR.

विष्णुशृङ्खल m. Bez. eines best. astr. Joga ÇKDR. nach dem MÂTSJA-P. und VISHṆUDHARMOTTARA.

विष्णुश्रुत adj. *von* Vishṇu *erhört;* m. oxyt. als Mannsname P. 6,2,148, Schol.

विष्णुसरस् n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60,*a*,36.

विष्णुसर्वज्ञन m. N. pr. eines Lehrers HALL 161. fehlerhaft für °सर्वज्ञ. oder सर्वज्ञविष्णु, wie er SARVADARÇANAS. 1,6 genannt wird.

विष्णुसहस्रनामन् n. *die tausend Namen* Vishṇu's Verz. d. Oxf. H. 14,*b*,11. ein Abschnitt des Mahâbhârata 4,*b*, N. 30. HALL 127. °नामभाष्य n. ebend. विष्णोः सहस्रनामस्तोत्रम् Verz. d. B. H. No. 420.

विष्णुसिंह m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 285,*b*,3. 4.

विष्णुसूक्त n. *eine an* Vishṇu *gerichtete Hymne* Verz. d. Oxf. H. 398, *a*, No. 144. 405,*b*, No. 11.

विष्णुसूत्र n. *das von* Vishṇu *verfasste* Sûtra Ind. St. 1,246.

विष्णुस्वामिन् m. 1) *ein Heiligthum (eine Statue) des* Vishṇu RÂGA-TAR. 5,99. — 2) N. pr. verschiedener Männer KATHÂS. 20,115. 82,3. 93,32. 96,4. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*,6. SARVADARÇANAS. 101,14. 102,1. WILSON, Sel. Works I,34. fg. 119.

विष्णुहिता f. *Basilienkraut* AUSH. 42.

विष्णूत्सव (विष्णु + उ°) m. *ein Fest zu Ehren* Vishṇu's VOP. 2,1.

विष्णूय् (von विष्णु), °यति *wie mit* Vishṇu *verfahren mit Jmd* (loc.) VOP. 21,6.

विष्पन्द m. *ein Gericht aus Weizenmehl,* Ghṛta *und Milch gekocht,* auch *ein zusammengesetzteres ähnliches Gericht* SIDDH. in NIGH. PR. wohl fehlerhaft für विष्यन्द. विष्पन्द von स्पन्द् s. u. विस्पन्द.

विष्पर्धस् (von स्पर्ध् mit वि) 1) adj. etwa *wetteifernd* ṚV. 1,173,10. 5,87,4. 8,23,2. — VS. 15,5. — 2) m. N. pr. eines Mannes: विष्पर्धस आङ्गिरसस्य साम Ind. St. 3,237,*b*. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,237,*b*.

विष्पश् (स्पश् mit वि) m. *Aufseher:* अभिह्रुताम् ṚV. 1,189,6.

विष्पित n. etwa *Schwierigkeit, Gefahr* NAIGH. 4,3. = विप्राप्त NIR. 6,20. पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन् ṚV. 7,60,7. अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्षथ: 8,72,3.

विष्पुलिङ्गक adj. *Funken sprühend:* त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका विषस्य पुष्यमक्षन् ṚV. 1,191,12. nach SÂJ. *Zungen des Feuers* oder *Sperling;* vgl. विष्फुलिङ्ग.

विष्फार und विष्फाल s. विस्फार und विस्फाल.

विष्फुलिङ्ग (dieses in den älteren Schriften) und विस्फु° (von स्फुर् mit वि) m. 1) *Funke:* अग्नेः क्षुद्रा विष्फुलिङ्गा व्युच्चरन्ति ÇAT. BR. 14,5,1,23. 9,1,12. MAITRJUP. 6,26. KAUSH. UP. 3,3. 4,20. MBH. 1,1431. 4,1685. HARIV. 11703. GṚHJAS. 1,85. SUÇR. 2,315,9. VARÂH. BṚH. S. 32,25. 33,28. 46,22. 47,10. 60,13. 84,1. BHÂG. P. 3,28,40. 6,8,22. °मात्र Schol. zu ÂÇV. ÇR. 3,10,9. am Ende eines adj. comp. f. आ MBH. 7,3327. HARIV. 12764. विस्फुलिङ्गीभू *zu einem blossen Funken werden:* मध्याह्नार्को °बभूव Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 14. Vgl. विष्पुलिङ्गक. — 2) *ein best. Gift* H. 1199. HALÂJ. 3,25.

विष्य (von 2. विष) adj. gaṇa गवादि zu P. 5,1,2. *zu vergiften, den Tod durch Gift verdienend* P. 4,4,91. AK. 3,1,45.

विष्यन्द (von स्यन्द् mit वि) m. *Tropfen:* सोमस्य MBH. 13,3727. (विस्पन्द ed. Calc.). शुक्रस्य विष्यन्दान् (so ist zu lesen; विस्यन्दात् ed. Calc. विस्पन्दान् ed. Bomb.). R. GORR. 2,94,13 (विस्पन्द).

विष्यन्दक N. pr. einer Oertlichkeit PAŃKAR. 1,10,44 (विस्य° gedr.).

विष्यन्दन (von स्यन्द् mit वि) n. *das Träufeln, der Zustand des Tropfbarflüssigen* MBH. 12,9134 (विस्य° beide Ausgg.). SUÇR. 2,37,4.

विष्यन्दिन् (wie eben) adj. *tropfbarflüssig* SUÇR. 1,224,6 (विस्य° gedr.).

विष्व adj. = हिंस्र UṆÂDIK. im ÇKDR.

विष्वक् s. u. विष्वञ्च्.

विष्वक्सेन (विष्वञ्च् + सेना) 1) m. P. 8,3,99, Schol. 4,1,114, Vârtt. *a*) ein N. Vishṇu's oder Kṛshṇa's AK. 1,1,1,14. H. 214. an. 4,190. MED. n. 209. HALÂJ. 1,21. MBH. 6,2944. HARIV. 1639. 14114. R. 6,102,14. RAGH. 15,103. ÇIÇ. 10,55. Verz. d. Oxf. H. 250,*b*,28. 30. fg. BHÂG. P. 1,2,8. 3,13,3. 46. 19,4. 4,9,43. 20,17. 22,62. 6,8,27. 8,13,24. 11,27,43. PAŃKAR. 3,9,3. 4,3,41. विष्वक्सेनार्जुनौ (verstellt) gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. neben हरि unter den Namen Çiva's MBH. 13,1168. — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Vishṇu's WEBER, RÂMAT. UP. S. 288. BHÂG. P. 5,20,40. 8,21,16. PAŃKAR. 3,11,23. निर्माल्यधारी विष्णोस्तु विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः KÂLIKÂ-P. 82 im ÇKDR. ein Sâdhja HARIV. 13182. 13474. fgg. N. des 14ten (13ten nach ÇKDR.) Manu VP. 268, N. 8. ein alter Ṛshi Ind. St. 4,377. MBH. 2,300. ein Fürst R. GORR. 2,116,31. ein Sohn Brahmadatta's HARIV. 1066. 1273. VP. 453. BHÂG. P. 9,21,25. Çambara's HARIV. 9251. — 2) f. आ *eine best. Pflanze,* = प्रियङ्गु, फलिनी AK. 2,4,2,36. H. an. MED. RATNAM. 122. — Häufig fehlerhaft विश्व° geschrieben. Vgl. वैष्वक्सेन्य.

विष्वक्सेनप्रिया f. 1) Vishvaksena's d. i. Vishṇu's *Geliebte,* Lakshmî H. an. 6,5. MED. j. 134. — 2) *eine best. Pflanze,* = वाराही, त्रायमाणा AK. 2,4,5,16. H. an. MED.

विष्वगञ्चन (विष्वक् + अ°) n. P. 6,3,92, Schol.

विष्वगश्व (विष्वञ्च् + अश्व) m. N. pr. eines Sohnes des Pṛthu MBH. 1,225 (*b*). 2,1023. 3,13517. 13,3689. VP. 361. Die richtige Schreibart hat die Bomb. Ausg., विश्व° ed. Calc. des MBH. Derselbe Mann heisst anderwärts विष्टराश्व.

विष्वगेड n. N. eines Sâman KÂṬH. 34,6. PAŃKAV. BR. 10,11,1.

विष्वग्ज्योतिस् (विष्वञ्च् + ज्यो°) m. N. pr. eines Sohnes des Çatagit VP. 165. die richtige Schreibart in der neuen Ausg.

विष्वग्युज् (विष्वञ्च् + युज्) adj. P. 6,3,92, Schol.

विष्वग्लोप (विष्वञ्च् + लोप) m. *allgemeine Störung, ein vollständiges Durcheinander* MBH. 12,461. 2550. विश्व° ed. Calc.

विष्वग्वात (विष्वञ्च् + वात) m. *ein nach oder von allen Seiten blasen-*

der Wind TS. 4,3,2,2. MBh. 6,78. 7,29. 1842. 8,2801. Hariv. 7630. Spr. 5391. hier und da fälschlich विश्व° geschr.

विष्वग्वायु m. dass. Râǵav. im ÇKDr. (विश्व° gedr.).

विँष्वञ्च् (विषु + अञ्च्) 1) adj. (f. विँषूची) *nach beiden Seiten (allen Seiten) gewandt, auf beiden Seiten (überall) befindlich, (rechts und links) aus einander gehend; abgewandt, getrennt von* (abl. oder instr.) ṚV. 1,164,31. 3,55,15. व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः 2,33,2. 6,74,2. संसदं विषूचीं व्यनाशयः 8,14,15. दुरः 6,30,5. विषूचो अश्वान्युयुजान ईयते *hüben und drüben* 6,59,5. 10,59,7. Wagen der Sonne, *der in zwei Richtungen fährt,* 9,75,1. 7,85,2. 10,27,18. 90,4. विष्वञ्चो अस्मच्छरवः पतन्तु AV. 1,19,2. 27,2. 6,90,1. यावतीर्दिशः प्रदिशो विषूचीः *um uns her* 9,2,21. 19,8,6. 38,2. TBr. 1,2,2,1. विष्वङ् प्रजया पशुभिरेति *wird getrennt von* TS. 1,5,9,7. 2,3,2,6. इषुमात्रं विष्वङ्वर्धत *nach beiden Dimensionen* oder *nach jeder Richtung* 5,2,2. 6,5,4. 5,1,6,1. विषूचस्तस्मात्पशून्दधाति 2,9,4. विषूचः शत्रूनपबाधमानौ *von allen Seiten kommend* TBr. 3,1,1,12. Çat. Br. 3,4,2,5. 5,5,4,8. एतं मात्रा विष्वञ्चं कुर्वन्ति 4,5,2,10. 14,4,1,8. Shaḍv. Br. 2,8. विष्वङ्ङन्या (नाड्यः) उत्क्रमणे भवन्ति *nach allen Seiten auseinandergehend* Khând. Up. 8,6,6. दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता Kathop. 2,4. स्तोमाः *in umgekehrter Reihe folgend* Çâṅkh. Çr. 14,38,6. विष्वक्पतच *umherfliegend* Bhâg. P. 1,9,34. विष्वग्भुजानीकशत *nach jeder Richtung laufend* 7,8,22. यशस् 3,13,8. 2,6,20. तमस् *allgemeine Finsterniss* AK. 1,2,1,4. विश्वञ्च् ungenaue Schreibart. — 2) adv. विष्वक् *auf beiden Seiten, nach den Seiten, seitwärts; umher, nach allen Richtungen hin, allerwärts* AK. 3,5,13. H. 1529. Halâj. 5,88. यत्र विष्वक्पतन्ति दिद्यवः ṚV. 10,38,1. वि° वि व्रजन्त्यार्णाः 1,36,16. 146,3. 4,4,2. 12,4. 6,6,3. युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् 7,34,13. वि° वियन्ति वनिनो न शाखाः 43,1. विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् 10,89,4. AV. 3,1,4. विष्वग्भिन्द्धि *entzwei* 3,6,6. अञ्चति *überallhin* H. 444. विष्वक्सम *allerwärts, überall* AK. 3,3,36. विष्वग्विलुम्पच्छद (तरु) Spr. (II) 2309. Gît. 11,11. 12,29. विष्वग्वृतो भोगिभिः Sâh. D. 18,21. विष्वगवलोकते 57,19. विष्वगवेक्षणा 149. Varâh. Bṛh. S. 11,41. परीत Râǵa-Tar. 2,37. Bhâg. P. 4,22,37. 6,9,13. 7,3,4. 8,29. विष्वग्गमनवत् Vedântas. (Allah.) No. 54. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,6, Çl. 14. *rund um* mit gen. Bhâg. P. 10,13,8. विश्वक् Kâṭh. 11,1. 12,10 und häufig in späteren Schriften. — 3) f. विषूची *a)* = विषूचिका *die Cholera in ihrer sporadischen Form* Suçr. 2,518,4. Çârṅg. Saṁh. 1,7,7. auch fehlerhaft विसूची geschrieben. — *b)* N. pr. der Gattin Viraǵa's und Mutter von 100 Söhnen (darunter Çataǵit) und einer Tochter Bhâg. P. 5,15,13. Vishvaksena (Vishṇu) fährt in den Mutterleib einer Vishûkî (विसूची Burnouf) 8,13,24.

विष्वण (von स्वन् mit वि) nom. ag. *Fresser* in नर°.

विष्वाण (wie eben) n. *Frass, Speise* Trik. 2,9,18.

विष्वद्रीचीन (von विष्वद्र्यञ्च्) adj. *allseitig:* °सृष्टिस्थितिविलय Verz. d. Oxf. H. 143, *b*, No. 295.

विष्वद्र्यँञ्च् adj. = विष्वञ्च् P. 6,3,92. 95, Vârtt. Vop. 26,79. AK. 3,1,34. H. 444. विष्वद्रीचीर्विक्षिपन्सैन्यवीचीः (विष्वग्री° gedr.) *nach allen Richtungen gehend* Çiç. 18,25. विष्वद्री (!) ved. fem. Kâç. zu P. 6,3,92.

विष्वद्र्यक् adv. *nach den beiden Seiten hinaus, weg:* मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत् ṚV. 7,25,1.

विष्वाँच् nach Sâj. N. pr. eines Asura: ज्ञातं विष्वाचो अहतं विषेण ṚV. 1,117,16. — Vgl. विश्वाची.

विष्वाण (von स्वन् mit वि) m. *Essen* H. 424.

विसंवाद (von वद् mit विसम्) m. 1) *Wortbruch,* = विप्रलम्भ AK. 1,1,7,36. H. 1519. Halâj. 4,63. अ° MBh. 12,9240. — 2) *Widerspruch, Nichtübereinstimmung:* फलैर्विसंवादमुपागता गिरः Spr. (II) 305. न चास्मिन्विधौ विसंवादः शङ्क्यः Daçak. 108,9. कान्ति° Mâlav. 23. Kumârila bei Müller, SL. 107. Râǵa-Tar. 2,115. नास्त्यालेख्यविसंवादस्तव Kathâs. 51,146. 101,81. सह Schol. zu ṚV. Prât. 3,14. अ° Sarvadarçanas. 18,7.

विसंवादक (vom caus. von वद् mit विसम्) adj. *sein Wort brechend:* अ° *seinem Worte treu bleibend* Spr. (II) 697.

विसंवादन (wie eben) n. *das Brechen des Wortes, Wortbruch:* अ° *das Worthalten* Spr. (II) 698.

विसंवादिता (von विसंवादिन्) f. 1) *das Brechen des Wortes:* अ° *das Worthalten, das Beharren bei dem einmal Gesagten* Kâm. Nîtis. 8,9. — 2) *Widerspruch, Nichtübereinstimmung mit* (instr.) Sâh. D. 252,16.

विसंवादिन् (von वद् mit विसम्) adj. *widersprechend, nicht übereinstimmend, — zutreffend* Ragh. 15,67. Nîlak. 167. Râǵa-Tar. 2,6. अ° *übereinstimmend, entsprechend, zutreffend* 1,126. 5,193. Mârk. P. 125,40. Daçak. 88,12.

विसंशय (2. वि + सं°) adj. *keinem Zweifel unterworfen, ganz sicher:* परीक्षाकरण Spr. 4988.

विसंष्ठुल (2. वि + सं°) adj. *nicht fest stehend, wankend, schwankend* Kâvjapr. (1866) 105,1. Çatr. 14,244 (विसंस्थुल). Kusum. 24,6. राज्य Râǵa-Tar. 1,366. अति° Sâh. D. 339,3.

विसंसर्पिन् (von सर्प् mit विसम्) adj. *auseinandergehend, sich verbreitend:* तिर्यग्विसंसर्पिनखप्रभेण (aufzulösen in तिर्यग्विसंसर्पिणी नखप्रभा यस्य) पादेन Ragh. 6,15.

विसंस्थित (2. वि + सं°) adj. *nicht beendigt, unvollendet* Kâtj. Çr. 11,1,27. Çâṅkh. Çr. 6,13,9. 7,7,4.

विसंस्थुल s. विसंष्ठुल.

विसंकट s. विशङ्कट.

विसंचारिन् (von चर् mit विसम्) adj. *hinundherschweifend:* मनस् MBh. 12,7137. = विषयसंचारशील Nîlak.

विसंज्ञ (2. वि + संज्ञा) adj. (f. आ) *bewusstlos* MBh. 1,6732. 2,1927. 2240. 4,2116. 7,2767. 14,2274. R. 2,21,54. 30,26. 34,18. 38,5. 77,11. 87,5. 103,42 (111,49 Gorr.). 106,33. Suçr. 1,120,16. 2,193,6. 542,21. Kathâs. 96,17.

विसंज्ञागति f. *eine best. hohe Zahl* Lalit. ed. Calc. 169,3. richtiger विसंज्ञावती Vjutp. 184.

विसंज्ञित (von विसंज्ञ) adj. *des Bewusstseins beraubt* Hariv. 1014.

विसदृश् (2. वि + स°) adj. *unähnlich:* विपाक = कर्मणो ऽविसदृक्फलम् (so ist zu schreiben) so v. a. *entsprechend* Med. k. 158.

विँसदृश (2. वि + स°) adj. *unähnlich, ungleich, nicht entsprechend, unebenbürtig* ṚV. 1,113,6. Spr. 2178. Râǵa-Tar. 4,394. Bhâg. P. 5,26,3. 9,15,5. Sâj. zu ṚV. 3,53,23. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 55. Kull. zu M.

3,16. Schol. zu Kâtj. Çr. 67,24. Sarvadarçanas. 178,3. गो° Kusum. 30, 18. f. ई ebend. ग्रा Bhâg. P. 5,25,15. — Vgl. वैसादृश्य.

1. विसंधि (2. वि + सं°) m. *Nebengelenk:* संधिविसंधयः Saddh. P. 4,5,a.

2. विसंधि (wie eben) adj. 1) *ohne Gelenke:* शरीर MBh. 3,8746. — 2) *nicht im Bündniss mit Jmd stehend* Kâm. Nîtis. 15, 54. — 3) *ohne grammatischen* Saṁdhi, *wobei der* Saṁdhi *vernachlässigt ist* Verz. d. Oxf. H. 207,a,15. Pratâpar. 62,b,4. 63,a,7.

3. विसंधि (वि = विसर्ग + सं°) m. *die euphonischen Regeln über den* Visarga Vop. 2 in der Unterschr.

विसंधिक (2. वि + संधि) adj. *ohne grammatischen* Saṁdhi, *wobei der* Saṁdhi *vernachlässigt ist* Kâvjâd. 3,125.

विसंनाह (2. वि + सं°) adj. *ungepanzert* M. 7,92.

विसमाप्ति (2. वि + स°) f. *Nichtvollendung* P. 2,1,60, Vârtt. 5.

विसर (von सर् mit वि) m. 1) *Ausbreitung,* = प्रसर H. an. 3,605. Med. r. 219. — 2) *Fülle, Menge* AK. 2,5,39. H. 1411. H. an. Med. Halâj. 4,1. Mâlatim. 23,14. Kâvjapr. (1866) 79,9. Paňkar. 3,5,24. लावण्य° Kathâs. 15,139. — 3) *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 179. 181. Mél. asiat. 4, 638. — Vgl. विसार.

विसरण (wie eben) n. *das Sichausbreiten:* eines Ausschlags Suçr. 1, 283,6. *das Weit-, Schlaffwerden* (Gegens. संकोचन) 2,38,2.

विसर्ग (von सर्ज् mit वि) m. = त्याग H. an. 3,132. Med. g. 48. = मुक्ति Halâj. 5,49. 1) *das Aufhören, Ende:* तप्ता घर्मा ग्रश्नुवते विसर्गम् RV. 7, 103,9. पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ 10, 5, 6. व्रतादेशन° Pâr. Gṛhj. 1,10. Çâṅkh. Gṛhj. 1, 2. — 2) *Untergang der Welt* (= संहार oder विविधः सर्गः Comm.) Bhâg. P. 8,7,30. — 3) *das Loslassen, Oeffnen:* मुष्टि° Kâtj. Çr. 7,4,17. 8,1,11. — 4) *das Loslassen, Wiederfreigebung:* der Stimme Çâṅkh. Çr. 2,14,10. 4,7,2. Gobh. 2,3,12. im Gegens. zu नियम MBh. 14,1424 (= उत्पत्ति Nîlak.). — 5) *das Entlassen* so v. a. *Vonsichgeben:* तेजो° MBh. 13,4192. विष° Spr. 2866, v. l. des Wassers von Seiten der Wolken Ragh. 4,86. 16,38. — 6) *Entleerung* (das Geschäft des पायु) H. an. Med. Halâj. Çat. Br. 14,5,4,11. 7,3,12. MBh. 14,1127. Hariv. 11797. Suçr. 1,311,2. Bhâg. P. 3,6,20. 5,11,10. 7,12,27. 11,12, 19. Mârk. P. 45,52. Tattvas. 14. Vedântas. (Allah.) No. 74. — 7) *Entlassung* (einer Person), *Verabschiedung:* प्राणोत्सर्गं विसर्गं वा मत्स्यैर्याम्याम्यहं सह MBh. 13,2666. 5,6013. ग्रसमर्थस्य भृत्यस्य 12,1238. einer Gattin M. 9, 46. eines Gottes (Idols) Varâh. Bṛh. S. 43, 56. — 8) *Befreiung, Erlösung* Bhâg. P. 6,9,31. — 9) *das Spenden, Schenken* H. an. Med. Uçanas bei Kull. zu M. 7,154. MBh. 2,2578. 13,1582. धनानाम् 2872. धन° R. Gorr. 2,83,21. ग्रादानं हि विसर्गाय सताम् Ragh. 4, 86. Râǵa-Tar. 6,263. ग्रन्नादि° Kull. zu M. 3,255. — 10) *das Werfen, Schleudern, Abschiessen* Çâṅkh. Çr. 4,20,1. नानाशस्त्रविसर्गैः MBh. 1,1483. 8, 1258. Bhâg. P. 1,7,44. 10,59,21. विद्युद्विसर्ग Spr. 1238. लाज° *das Streuen von geröstetem Korn* Ragh. 7,22. 50,136. 51,224 (pl.). 103,193. ग्रपाङ्गविसर्गवीक्षितैः *das Schleudern von Blicken* Bhâg. P. 10,6,6. — 11) *das Schöpfen, Erzeugen* Bhag. 8,3. MBh. 2,1927. नवयोग 3,10666. Hariv. 53. 362. 1901 (sg. die neuere Ausg.). Bhâg. P. 3,8,33. 6,17,23. 9,8,21. लोक° 3,8,32. प्रजा° 2,9,18. 29. 4,30,15. 6,4,17. 12,2,22. गुणापायविसर्गलक्षण 6,4,29. Neben सर्ग (*der primitiven Schöpfung durch* Brahman) so v. a. *secundäre Schöpfung, die Schöpfung im Einzelnen durch* Purusha Bhâg. P. 2,10,1. 3. 12,7, 9. 12. — 12) *Schöpfung* in concretem Sinne, *Erzeugniss:* गुण° Bhâg. P. 5,1,7. 37. 7,9,12. so v. a. *Nachkommenschaft* 6,17. तेषां विसर्गाश्चत्वारः Hariv. 2000. — 13) *der Erzeugende, Hervorbringende, die Ursache* Bhâg. P. 7,9,22. — 14) *das männliche Glied* (= मेढ्र Comm.) Bhâg. P. 10,63,36. — 15) Visarga, *der am Ende von Wörtern erscheinende Hauch* (s. विसर्जनीय) H. an. Med. Çrut. 2. Ind. St. 8,215, N. 1. 10,438, N. 2. P. 1,1,9, Schol. 8,2, 70, Vârtt. 2, Schol. Verz. d. Oxf. H. 162,a,4. 164,a, No. 360. fg. 165, b, No. 367. 171,b,3. 4. 350,b, No. 824. Bhâg. P. 6,8,8. neben बिन्दु unter den Beinn. Çiva's MBh. 13,1241. विसर्गलुप्त n. *das Fehlen des* Visarga Pratâpar. 62, b, 6. लुप्तविसर्गक dass. 64, b, 4. लुप्ताहतविसर्गता Sâh. D. 575. — 16) = ग्रयनभेदो विभावसोः Med. *the southern course* (*of the sun*) Wilson. — Die Bed. *light, splendour* bei Wilson beruht auf einer falschen Auffassung von वर्चस् (*Ausleerung*) in H. an. — Vgl. गो°, लोक°, वाग्विसर्ग (*das Reden, Sprechen* Bhâg. P. 1,5,11 = 12,12,51).

विसर्गचुम्बन n. *Abschiedskuss* Ragh. 19,29.

विसर्गिक s. u. विसर्गिन् 2).

विसर्गिन् (von विसर्ग) adj. 1) *spendend, schenkend:* संचयान्न विसर्गी स्याद्राजा MBh. 12,4386. — 2) *schöpfend:* मतिं लोकविसर्गिणीम् MBh. 12,13522. °विसर्गिकीम् *auf das Schaffen der Welt gerichtet* ed. Bomb.

विसर्जन (von सर्ज् mit वि) 1) m. pl. N. pr. eines Geschlechts Bhâg. P. 11,30,18. — 2) f. ई Bez. *einer der drei Falten des Afters* (*die Entleerende*) Suçr. 1,258,11. — 3) n. proparox. a) *das Aufhören, Ende; das Aufhörenmachen, Entfernung:* रश्मेः RV. 5,59,3. व्रतस्य Çâṅkh. Çr. 2,13,7. Kauç. 42. 68. व्रत° Hariv. 14100. — Nir. 10,9. — b) *das Loslassen, Freiwerden:* der Stimme VS. 1,15. Çat. Br. 1,1,4,8. Kâtj. Çr. 4,10,6. 7,4,15. P. 8,3,110, Schol. — c) *das Entleeren:* ग्रवतस्य RV. 8,61,11. — d) *das Verlassen, Aufgeben, Fahrenlassen;* = परित्याग Med. n. 206. रथस्य, शस्त्राणाम् MBh. 7,9014. ग्रनिष्टानां च (so ed. Bomb.) संसर्गादिष्टानां च विसर्जनात् 11,85. देह° Ragh. 8,25. — e) *das Entlassen, Vonsichgeben:* वसुवृष्टि° Ragh. 9,6. विण्मूत्रस्य M. 4,48. 109. — f) *das Entlassen, Verabschieden* (einer Person); = संप्रेषण Med. Jâǵn. 1,251. MBh. 3,2347. 5,6013. R. 1,3,13 (7 Gorr.). 37. R. Gorr. 1,3,31. 34. fg. 4,47. 2,51 und 122 in der Unterschr. Çâk. 97,10. Kathâs. 70, 62. Mârk. P. 30,10. Kull. zu M. 3,265. Verz. d. Oxf. H. 79,a,29. महत्यप्यपराधे स्त्रीणां विसर्जनं दण्डः Vet. in LA. (III) 11,16. *das Entlassen eines Gottes* (*eines Idols*) Verz. d. Oxf. H. 103, b, 22. गो° *das Entlassen der Kühe aus dem Stalle, das Hinaustreiben derselben auf die Weide* Hall in der Einl. zu Vâsavad. 30. — g) *das Spenden, Schenken* AK. 2,7,28. H. 386. Med. सक्तुप्रस्थ° Spr. 2462. — h) *das Schleudern, Abschiessen:* इषीकास्त्र° R. 2,96 (105 Gorr.) in der Unterschr. — i) *Erschaffung* RV. 10,129,6. concret *Schöpfung:* त्वया सृष्टमिदं विश्वं धातर्गुणविसर्जनम् Bhâg. P. 10,16,57. — Vgl. मल°, वाग्विसर्जन.

विसर्जनीय 1) am Ende eines comp. adj. von विसर्जन, z. B. व्रत° Çat. Br. 5,5,3,2. — 2) (von सर्ज् mit वि oder von विसर्जन) m. (sc. वर्ण) *der am Ende von Wörtern erscheinende Laut,* Bez. *des Hauches* (der nach

indischer Ansicht in den meisten Fällen primitiv ist und beim Zusammenstoss mit andern Lauten in स, र u. s. w. übergeht) ṚV. PRÂT. 1,5. 17. 2,9. 4,8. 14,9. 10. 18,18. VS. PRÂT. 1,41. 71. 160. 3,5. 139. 4,33. 103. 112. 7,6. 7. 9. 8,24. AV. PRÂT. 1,5. 42. 2,25. fg. 40. 3,29. TS. PRÂT. 1,12. 18. P. 8,3,15. 34. Vârtt. und PAT. zu 37. ÇÂÑKH. ÇR. 1,2,9.

विसर्जयितव्य (vom caus. von सर्ज् mit वि) adj. *was zum After entlassen wird* PRAÇNOP. 4,8.

विसर्ज्य (wie eben) adj. *zu entlassen, zu verabschieden* MBH. 13,2442.

विसर्प (von सर्प् mit वि) m. gaṇa ज्योत्स्नादि zu P. 5,2,103, Vârtt. 1) *das Umsichgreifen:* विष° Spr. 2866, v. l. UTTARAR. 17,3 (23,6). — 2) *Rose, Rothlauf* und *ähnliche Entzündungen* RÂGAN. im ÇKDR. WISE 270. SUÇR. 1,283,2. 6. 326,8. 2,100,13. ÇÂRṄG. SAṂH. 1,7,66. Verz. d. Oxf. H. 306,*a*,37. 307,*a*,5. 314,*a*,28. 316,*b*,10. 337,*a*,4 v. u. Verz. d. B. H. No. 975. °क्लिन्नविग्रह RÂGA-TAR. 4,653. Auch वीसर्प SUÇR. 1,165, 2. VÂGBH. 12,57. Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,5. — 3) in der Dramatik *eine zum Unheil unternommene That:* विसर्पो यत्समारब्धं कर्मानिष्टफलदम् SÂH. D. 485. 471. — Vgl. मन्द° und वैसर्प.

विसर्पण (wie eben) n. 1) *das Verlassen seines Standortes, das vom-Platze-Rücken:* सूर्यांशुदग्धपत्नो ऽहं न समर्थो विसर्पणे R. 4,56,29. मेरोः MBH. 7,272 (= क्षेपण NILAK.). 8187. — 2) *das Sichausbreiten,* = प्रसर AK. 3,3,23. क्षत° SUÇR. 1,267,18. *Wachsthum, Zunahme* VJUTP. 172.

विसर्पि (wie eben) m. = विसर्प 2) RÂGAN. im ÇKDR. Hierher oder zu विसर्पिन् 2) Verz. d. B. H. 278, No. 929, Çl. 43.

विसर्पिका f. dass. VARÂH. BṚH. S. 32,14.

विसर्पिन् (von सर्प् mit वि) 1) adj. *a) hervorschiessend, hervorkommend:* कदलीषण्डैः — तीरात्तीरविसर्पिभिः MBH. 3,11127. गुहामुख° (प्रतिशब्द) KUMÂRAS. 6,64. VIKR. 16. 67,1. लाङ्गूलविक्षेपविसर्पिशोभ KUMÂRAS. 1,13. महोरगविसर्पिविक्रम *gegen grosse Schlangen hervortretend* RAGH. 11, 27. — *b) hinundherkreisend, — schwimmend, — sich bewegend:* रराज वसुधा कीर्णा विसर्पिभिरिवोरगैः (विसर्पद्भिरिवो° ed. Bomb.) MBH. 7, 7211. मेघाः 5,7652. प्लवाः R. 5,83,6. शैला इव विसर्पिणः 7,16,18. नौका च खलजिह्वा च प्रतिकूलविसर्पिणी Spr. 4483, v. l. महीतल° so v. a. *Erdenwaller* HARIV. 12085. — *c) umsichgreifend, sich verbreitend* SUÇR. 1,257,11. 259,6. 288,10. 2,2,20. व्यसन R. 6,95,31. दूरविसर्पिघोष KUMÂRAS. 7,53. मानविष ÇIÇ. 9,36. गन्ध KAURAP. 8. — 2) m. = विसर्प 2) SUÇR. 1,9,17; vgl. u. विसर्पि. — 3) f. विसर्पिणी *Ptychotis Ajowan Dec.* AUSH. 36. — Vgl. मन्द°.

विसर्मन् (von सर् mit वि) adj. *zerfliessend, flüchtig* ṚV. 5,42,9.

विसल n. = किसल *Blattknospe, junger Schoss* TRIK. 2,4,4.

विसल्य und विसल्यक (2. वि + स) m. *eine best. Krankheit* AV. 6, 127,1. 3. 9,8,2. 20. 19,44,2.

विसह्य s. विषह्य.

विसामग्री (2. वि + सा°) f. *das Fehlen von Mitteln* (= कारणाभाव Comm.) KUSUM. 10,2.

विसार (von सर् mit वि) m. 1) *das Zerfliessen:* रजसः ṚV. 1,79,1. — 2) *Verbreitung, Ausbreitung:* आत्तविसारा ह्यन्यश्रियः NALOD. 1,19. — 3) *Fisch* (*der Bewegliche*) P. 3,3,17, Vârtt. AK. 1,2,3,17. H. 1344. HALÂJ. 3,35; vgl. वैसारिण.

विसारथि (2. वि + सा°) adj. *ohne Wagenlenker:* स्यन्दन Spr. 2873. विसारथिध्वजघन *ohne Wagenlenker, Pferde und Banner:* रथ MBH. 5,2051.

विसारिन् (von सर् mit वि) P. 5,4,16. 1) adj. *a) hervorkommend:* गुहा° (घनगर्जित) so v. a. *widerhallend* RAGH. 13,28. — *b) umhergehend:* देवदत्त P. 5,4,16, Schol. — *c) sich verbreitend, umsichgreifend* AK. 3, 1,31. H. 390. परितो विसारिणा तेजसा RAGH. 3,15. विश्वविसारि तेजः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 23. गगनविसारिभिरंशुभिः KIR. 10,11. विसारिण्यो ज्वाला क्रव्यभुजः RÂGA-TAR. 8,982. — 2) f. विसारिणी *Glycine debilis Lin.* RÂGAN. im ÇKDR. — Vgl. अति° und वैसारिण.

विसिर (2. वि + सिरा) adj. (f. ई) *nicht mit* (hervortretenden) *Adern versehen:* जङ्घा VARÂH. BṚH. S. 70,2 (विशिर gedr.).

विसिस्मापयिषु (vom desid. des caus. von स्मि mit वि) adj. *Jmd* (acc.) *in Staunen zu versetzen beabsichtigend, — im Begriff stehend* MBH. 7, 3448. 4700. 8,1912.

विसुकल्प m. N. pr. eines Fürsten TÂRAN. 68.

विसुकृत् (2. वि + सु°) adj. *nichts Gutes thuend* ÇAT. BR. 14,9,4,4.

विसुकृत (2. वि + सु°) adj. *ohne gute Werke* KAUSH. UP. 1,4.

विसुख (2. वि + सुख) adj. *freudlos, keine Freuden kennend* VARÂH. BṚH. 20(18),1.

विसुत (2. वि + सुत) adj. (f. आ) *kinderlos* Spr. (II) 2617. VARÂH. BṚH. 23(21),5.

विसुहृद् (2. वि + सु°) adj. *ohne Freunde* VARÂH. BṚH. 18(16),17.

विसूचिका s. विषूचिका; विसूची s. u. विषञ्च्.

विसूत (2. वि + सूत) adj. *des Wagenlenkers beraubt* MBH. 7,8125.

विसूत्र (2. वि + सूत्र) adj. *verwirrt, in Unordnung seiend:* °व्यवहार RÂGA-TAR. 8,774. 882. *verwirrt* so v. a. *bestürzt, ausser sich* 1800.

विसूत्रण (von विसूत्रय्) n. *das Verwirren, in-Unordnung-Bringen:* एक एको ऽकरोद्योधः पृतनानां विसूत्रणम् RÂGA-TAR. 7,1479.

विसूत्रता (von विसूत्र) f. *Verwirrung, Unordnung:* इत्थं राज्यस्थितिरगादचिरेण विसूत्रताम् RÂGA-TAR. 1,361. *Verwirrung* so v. a. *Verlust des klaren Bewusstseins:* स्वैरेव शस्त्रिभिः सर्वैर्निन्ये भूभृद्विसूत्रताम् 8, 809. 1663.

विसूत्रय् (wie eben) *in Verwirrung bringen:* विसूत्रित von Personen RÂGA-TAR. 4,446. 7,1372.

विसूरण n. *Kummer* VIKR. 82 (im Prâkrit).

विसूरित 1) n. dass. GAṬÂDH. im ÇKDR. — 2) f. आ *Fieber* ÇABDÂRTHAK. bei WILSON.

विसूर्य (2. वि + सूर्य) adj. *der Sonne beraubt* HARIV. 12414 = R. ed. Bomb. 4,43,55.

विसृज्य (von सर्ज् mit वि) adj. *was hervorgebracht wird,* subst. *Wirkung* BHÂG. P. 7,9,22.

विसृत् s. unter सर् mit वि.

विसृत्वर (von सर् mit वि) adj. (f. ई) *sich ausbreitend, — weit verbreitend* AK. 3,1,31. H. 390.

विसृप् (abl. विसृपस्) s. u. सर्प् mit वि.

विसृप्ति (von सर्प् mit वि) f. *Ausbreitung:* श्लेष्मा शरीरे विसृप्तिं लभते KAR. 2,4.

विसृमर adj. = विसृत्वर AK. 3,1,31. H. 390.

विसृष्ट s. u. सर्ज् mit वि.

विँसृष्टधेन adj. etwa *Milchtrank strömend* ṚV. 7,24,2.

विँसृष्टराति adj. *Gaben spendend* (SÂJ.) ṚV. 1,122,10.

विसृष्टवाच् adj. *das Schweigen brechend* ÂÇV. ÇR. 1,12,30. 4,8,23.

विँसृष्टि (von सर्ज् mit वि) f. 1) *das Loslassen, Schuss* KÂṬH. 28,3. *das Entlassen:* मूत्र° VJUTP. 192. — 2) *Schöpfung* ṚV. 10,129,6. 7. ÇAT. BR. 10,5,2,3. 14,4,2,12. HARIV. 114. MÂRK. P. 102,19. पूर्व° HARIV. 25. 406. neben सृष्टि so v. a. *Schöpfung im Einzelnen* BRAHMAVAIV. P. bei BURNOUF, BHÂG. P. I, XLVI. — 3) *Nachkommenschaft* HARIV. 1997.

विसोमँ (2. वि + सोम) adj. (f. आ) 1) *ohne* Soma ÇAT. BR. 11,7,2,8. — 2) *ohne Mond:* शर्वरी Spr. 5027.

विसौख्य (2. वि + सौ°) n. *Leiden:* °भाज् R. 7,50,11.

विसौरभ (2. वि + सौ°) adj. *ohne Wohlgeruch:* कर्णिकार KATHÂS. 54, 55.

विस्कम्भ und विस्कुम्भु s. u. विष्कम्भ, विस्कार unter विष्किर.

विस्त m. *ein best. Gewicht: ein* Karsha *oder 16* Mâsha *Gold* AK. 2,9,87. H. 884. PRÂJAÇKITTEND. 7, *a*, 8. am Ende eines adj. comp. f. आ P. 4,1,22. — Vgl. कुरु°, त्रि°, बहु°.

विस्तर (von स्तर् mit वि) 1) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) Ausdehnung, Breite, Umfang;* = विस्तार MED. r. 216. उच्छ्रायायामविस्तरा: Verz. d. Oxf. H. 48,*a*,41. VARÂH. BṚH. S. 58,21. लोक° BHÂG. P. 1,3,3. आवासा बहुविस्तरा: R. 1,12,12. आकृतिविस्तरैर्मेघै: MṚKKH. 76, 20. खड्ग: सुविस्तर: MBH. 12,6187. eines Geschlechts 1,99. 2,570. बहु° adj. *weit verbreitet:* वैधर्म्य 3,13235. नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे (d. i. कृष्णस्य) BHAG. 10,19. न्याय° so v. a. *der umfangreiche* Njâja KÂM. NÎTIS. 2,13. पुराण° HARIV. 6786. ग्रन्थविस्तरसंक्षेपमात्रम् (so ist nach HALL zu lesen) *ein blosser Auszug eines umfangreichen Werkes* KATHÂS. 1,10. शास्त्रैर्मेकाविस्तरै: Spr. (II) 1721. शब्दब्रह्मणि — उरुविस्तरे BHÂG. P. 4, 29,45. बहुविस्तरं कर् *sich stark ausbreiten* Spr. (II) 888. सुविस्तरं या von einer Schatzkammer 705. मनस: *das Weiterwerden* (uneig.) *des Herzens* DAÇAK. 4,41; vgl. u. विस्तार 1) am Ende und विस्फार 2). — *b) Menge, Masse;* = समूह ÇABDAR. im ÇKDR. एककालं चरेद्भैक्षं न प्रसज्जेत विस्तरे M. 6,55. यज्ञसंभार° R. GORR. 1,11,17. 2,81,32. देवायतनविस्तरै: 7,101,15. भूषण° MṚKKH. 152,10. विभव° 23,17. ग्रन्थ° VARÂH. BṚH. S. 1,2.5. MAITRJUP. 6,34 (pl.). गुण° Spr. 2148. वस्तु° DAÇAR. 1,51. 3,25. SÂH. D. 314. *eine Menge von Menschen, eine grosse Gesellschaft* M. 3,125. fg. BHÂG. P. 7,15,3. 4. उभे पुरवरे रम्ये विस्तरैरुपशोभिते *mit einer Menge von Dingen* R. 7,101,14. चत्वार: सखिला वेदा: सरहस्या: सविस्तरा: *mit den vielen dazu gehörigen Schriften* HARIV. 9491. ब्रह्माधीत्य सविस्तरम् BHÂG. P. 3,3,2. बहु° adj. *mannichfach, verschiedenartig:* पेयै: MBH. 2,99. पुष्पै: HARIV. 10981. उपायै: 7204. — *c) hoher Grad, Intensität:* विभूते: BHAG. 10,40. दीप्ति: कान्तिस्तु विस्तर: DAÇAR. 2, 33. सुविस्तरम् *überaus heftig:* विललाप MBH. 3,17291. HARIV. 4839. आर्येण ह्नि परिक्रुष्टं लक्ष्मणेति सु° R. 3,66,7. बहुविस्तरम् dass.: रुरुदु: MBH. 12 5745. — *d) Detail, das Ausführliche, die einzelnen und genaueren Umstände einer Sache; Specification, ausführliche —, umständliche Darstellung; Weitschweifigkeit* P. 3,3,33. AK. 3,3,22. 3,4,5,29. H. 1432. MED. HALÂJ. 4,81. विस्तरैश्च समासैश्च धार्यते यद्विजातिभि: (ज्ञानम्) MBH. 1,27. तस्य शब्दस्य वक्ष्यामि विस्तरम् 12,6858. तस्य विस्तरमाख्यास्ये मनोर्वैवस्वतस्य ह HARIV. 280. 288. 2451. श्रुतास्ते विस्तरा: सर्वे 11046. श्रुतविस्तर adj. *der die Details gehört hat* 4274. कुब्जाया: श्रुतविस्तरो 4497. अश्रुत° R. GORR. 2,62,3. लोकादन्विष्य विस्तरम् R. 1, 3,1. तस्य देशस्य विस्तरं व्याहर्तुमुपचक्रमे 33, 25 (34, 23 GORR.). 37, 28 (38,31 GORR.). श्रूयतां विस्तरो राम सगरस्य 40, 3 (41,3 GORR.). 2, 59, 2. R. GORR. 1,27,6. 45,56. 7,55,1. कार्य° 100,8. SUÇR. 1,94,11. 229, 5. 2, 531,14. VARÂH. BṚH. S. 43,21. पठ्यते भृगुविस्तरे *im ausführlichen Werke* KÛLIKOP. in Ind. St. 9,15. समर्थनप्रपञ्चोक्तिरुक्तस्यार्थस्य विस्तर: PRATÂPAR. 69,*a*,6. अलमुक्त्वात्र विस्तरम् KATHÂS. 22,118. MÂRK. P. 53,8. SÂH. D. 407. Verz. d. Oxf. H. 50, *a*, 13. °शङ्कया SÂH. D. 124. °भीरु SARVADARÇANAS. 61,7. किं विस्तरेण Spr. 3096. कृतं विस्तरेण SARVADARÇANAS. 105,16. अलमतिविस्तरेण VIKR. 3,6. VARÂH. BṚH. S. 1,8. PRAB. 2,2. विस्तरेण *ausführlich* BHAG. 10,18. MBH. 1,7619. 3,2475. 11941. 16663. 16899. 5,6012. 6043. R. 1,8,29. VARÂH. BṚH. S. 47,1. 28. MÂRK. P. 72, 17. PAÑKAT. 41,21. विस्तरात् dass. VARÂH. BṚH. S. 60,22. BHÂG. P. 8,1, 1. MÂRK. P. 16,12. 69,1. PAÑKAR. 1,3,1. सुविस्तरात् 4, 2, 6. बहु° adj. *sehr ausführlich:* कथा R. GORR. 1, 38, 2. वाक्यमद्भुतविस्तरम् R. SCHL. 1,21,1. व्याख्यां स्वल्पातिविस्तराम् Verz. d. Oxf. H. 63, *a*, No. 111. अग्निर्नोर्द्वयोश्च सृष्टिरुक्ता सुविस्तरा *mit allen Details* 83, *a*, 10. सविस्तरम् adv. *ganz genau, ausführlich* KATHÂS. 49, 177. PAÑKAT. 114, 20. सुविस्तरम् PAÑKAR. 2,7,50. HIT. 73,15. बहुविस्तरसंयुक्तमाश्वासयत राक्षसान् so v. a. *nach allen Richtungen hin, in allen Stücken* R. 3, 31, 35. — *e)* = प्रणाय *Vertraulichkeit* u. s. w. MED. — *f)* = पीठ *Sitz* (vgl. विष्टर) ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) adj. (f. आ) *ausgedehnt, umfangreich:* कथा SÂH. D. 305; vgl. विस्तरता. — Vgl. अ°, न्यायमाला°, पुरार्ध°, मध्यान्तरविस्तरलिपि, विष्टर und विस्तार.

विस्तरक (von विस्तर), davon विस्तरकेण instr. *recht ausführlich* PAT. bei GOLD. MÂN. 91,*b*.

विस्तरणी (von स्तर् mit वि) f. Bez. einer best. Göttin: देवी विस्तरणी प्रिया (मे) sagt ein Brahmane MÂRK. P. 61, 65.

विस्तरतस् (von विस्तर) adv. 1) *der Breite nach:* आयामतो वि° BHÂG. P. 3, 8, 25. — 2) *mit allen Details, ausführlich* SUÇR. 2, 302, 9. VARÂH. BṚH. S. 1, 10. BHÂG. P. 9,1,7. Verz. d. Oxf. H. 74, *a*, 11. PAÑKAT. 181, 2.

विस्तरता (wie eben) f. *Ausbreitung:* स्वेदोद्गमो विस्तरतामुपैति ṚT. 6,7.

विस्तरशस् adv. = विस्तरतस् 2) M. 9,250. BHAG. 11, 2. 16, 6. MBH. 1,2043. 8,771. VARÂH. BṚH. S. 49,1. BHÂG. P. 3,29,2. MÂRK. P. 1,17. 57, 3. 75,1. Verz. d. Oxf. H. 38,*b*, No. 95. 74,*a*,5.

विस्तार (von स्तर् mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Ausdehnung, Breite, Umfang* P. 3,3,33. AK. 3,3,22. 3,4,14,69. 18,116. 32 (28), 15. TRIK. 3,3,369. H. 1432. an. 3,602. MED. r. 219. HALÂJ. 4,81. 5,62. 99. COLEBR. Alg. 97. 315. MBH. 1,337. 2,279. 1982. HARIV. 13793. R. 1,40,18 (41,20 GORR.). R. GORR. 2,108,18. 4,40,59. 41,31. 5,6,16. 18. 36, 17. fg. भग° SUÇR. 1,125,21. VARÂH. BṚH. S. 49, 3. 6. 53, 5. 11. 22. 56,11. fgg. 58,6. 26. MEGH. 18. BHÂG. P. 5,16,12. 20,2. 42. MÂRK. P. 54,4. 8. नातिविस्तारसंकट KÂM. NÎTIS. 16,2. अतिविस्तारविस्तीर्ण PAÑKAT. 245, 25. लताविस्तारसंकुल *sich weit verbreitende Schlingpflanzen* Verz. d. Oxf. H. 17,*a*, No. 63, Çl. 4. कातन्त्र° *das umfangreiche* Kâtantra COLEBR. Misc. Ess. II, 45. आपुरन्दराणां प्रकामविस्तारफलं हरिण्य: RAGH. 2,11. संहत-

द्युतिविस्तारां ताराम् R. 2,114,7 (125,8 Gorr.). यस्य (विश्वकर्तुः) विस्तार एवैष लोकः *Ausbreitung* Hariv. 14587. Bhag. 13,30. °गामिनी बुद्धिः *in's Weite schweifend* MBh. 13,4334. (लक्ष्मीः, छाया) विस्तारमुपगच्छति *sich ausbreiten, wachsen* Spr. 2650. चमत्कारश्चित्तविस्ताररूपः *Weitwerden des Herzens* Sâh. D. 23,14; vgl. u. विस्तर 1) am Ende und u. विस्फार 2). — 2) *Breite eines Kreises* so v. a. *Durchmesser* Colebr. Alg. 87. — 3) *Specification, eine Aufzählung —, Ausführung im Einzelnen* Jñân. 3,95. Suçr. 1,32,5. षड्विधविस्तारो रसः so v. a. *der Geschmack zerfällt in sechs Arten* MBh. 12,6852. 14,1411. द्वादशविस्तारं तेजसो रूपमुच्यते 1414. विस्तारेण *ausführlich* R. 3,4,4 wohl nur fehlerhaft für विस्तरेण. — 4) *ein Ast mit seinen Zweigen; Strauch* AK. 2,4,1,14. Trik. (स्तम्ब st. स्तम्भ zu lesen). H. 1124. H. an. Med. Halâj. 2,26. — Vgl. नक्षत्रकान्ति°, लोक°, विस्तर und विष्टार.

विस्तारिन् (von विस्तार) adj. *sich ausbreitend, breit, umfangreich:* त्रैलोक्यान्तर° Hariv. 2634. पदे पदे सतां मैत्र्यः सरित्समाः Spr. (II) 940. बीज Daçak. 1,16. द्विसाहस्रोच्छ्रयाः सर्वे तावद्विस्तारिणश्च ते Mârk. P. 54,11. पद्म Hariv. 14653. रत्नार्णव Prab. 81,11. पङ्क Mârk. P. 74,13. स्तनभार Spr. 2878. Uttarar. 116,14 (157,16). Mâlatîm. 131,10. दोस् 81,15. Kathâs. 100,18. भारत Verz. d. Oxf. H. 120,a,29.

विस्तीर्ण s. u. स्तर् mit वि.

विस्तीर्णकर्ण adj. *die Ohren ausgestreckt haltend* und zugleich *breitohrig*, Bez. des *Elephanten* Spr. 2053.

विस्तीर्णता (von विस्तीर्ण) f. *Geräumigkeit:* einer Burg Spr. 5028.

विस्तीर्णभेद m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5,17.

विस्तीर्णवती (von विस्तीर्ण) f. N. einer Welt Lot. de la b. l. 274.

विस्तृति (von स्तर् mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Breite* Trik. 3,3,369. H. an. 3,458. 602. Med. r. 219. Ârjabh. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 558. — 2) *Durchmesser eines Kreises* Colebr. Alg. 87. Z. f. d. K. d. M. 2,427,1.

विस्थान (2. वि + स्थान) adj. *einem andern Organ angehörig* RV. Prât. 4,3.

विस्पन्द s. विष्यन्द und विष्पन्द.

विस्पन्दन (von स्पन्द् mit वि) m. *das Erzittern:* तृण° MBh. 7,7993. प्रस्पन्दन ed. Bomb.

विस्पर्धा (von स्पर्ध् mit वि) f. *Wetteifer:* येषां व्रते ऽथ विस्पर्धा बले बलवतामिव MBh. 5,1602. fg.

विस्पर्धिन् (wie eben) adj. *wetteifernd:* शक्र° MBh. 9,3645. चन्द्रविस्पर्धिना मुखेन 4,189.

विँस्पष्ट (von स्पश् = पश् mit वि) adj. P. 6,2,24, Schol. *mit Augen zu sehen, offenbar, klar, deutlich, verständlich:* रुता MBh. 12,2088. विद्युद्विस्पष्टपिङ्गाक्ष 1,1241. सिंहविस्पष्टविक्रम Hariv. 3105. विस्पष्टेन्दुमुखी Mârk. P. 21,17. °कोप 116,57. विस्पष्टामर्षपूरित 123,29. विद्या 101, 18. Prab. 71,2. विस्पष्टार्थ M. 2,33. अविस्पष्टार्थ Nir. 1,15. अ° von einer Rede AK. 1,1,5,22. Halâj. 1,141. विस्पष्टम् adv.: यच्चेलितासि विस्पष्टं नाम MBh. 3,16446. नाविस्पष्टमधीयीत M. 4,99. in comp. mit einem adj. (der Ton ruht auf der ersten Silbe des comp.) P. 6,2,24. — Vgl. वैस्पष्ट्य.

विस्पष्टीकर् (विस्पष्ट + 1. कर्) *klar —, deutlich machen;* davon nom. act. °करण n. Müller, SL. 170.

विस्पृक्क adj. Bez. *eines besondern Geschmacks* Varâh. Brh. S. 51,32.

विस्फार (von स्फर् mit वि) m. P. 6,1,47, Schol. 1) *das Losschnellen eines Bogens und der dadurch bewirkte Laut* AK. 2,8,2,76. H. 1406. Halâj. 1,151. MBh. 3,16128. 4,163. 12,982. R. 5,39,17. 7,28,45. — 2) *das Aufklaffen, sich-weit-Oeffnen:* नयन° Sâh. D. 28,10. विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु । विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः ॥ 207; vgl. u. विस्तर 1) a) am Ende und unter विस्तार 1) am Ende. — Hier und da विष्फार geschrieben.

विस्फाल (von स्फल् mit वि) m. P. 6,1,47, Schol.

विस्फुट (von स्फुट् mit वि) adj. *aufgesprungen, klaffend:* विस्फुटीकर् *aufgesprungen —, klaffend machen:* °कृत Suçr. 1,301,12.

विस्फुर (von स्फुर् mit वि) adj. *die Augen aufreissend* R. 3,73,3.

विस्फुलिङ्ग s. विष्फुलिङ्ग.

विस्फूर्जथु (von स्फूर्ज् mit वि) m. *das Tosen:* महोर्मि° Ragh. 13,12 (विस्फूर्जित ed. Calc.). *das Rollen des Donners* Kan. 5,2,9 (विस्फु°, v. l. अवस्फूर्जथु). uneig.: विपाक° *das Donnern —, donnerähnliche Erscheinen des Lohnes der Werke* Ragh. 14,62.

विस्फूर्जन (wie eben) n. *das Aufklaffen, sich-weit-Oeffnen:* तत्र हसितं नाम कण्ठोष्ठपुटविस्फूर्जनपुरःसरमहहहेत्यट्टहासः Sarvadarçanas. 78,1. 2. विस्फु° gedr.

विस्फूर्जित 1) adj. und n. s. u. स्फूर्ज् mit वि. — 2) m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 87.

विस्फोट (von स्फुट् mit वि) m. 1) *das Krachen:* अशनेः MBh. 4,163. 1426. 6,2882. — 2) *eine aufplatzende Blase, Brandblase, Beule* AK. 2, 6,2,4. H. 466, Schol. Z. d. d. m. G. 9,676. ÇKDr. Suppl. u. ताम्रमाषक. Suçr. 1,58,16. fg. Çârñg. Sañh. 1,7,65. Verz. d. B. H. N. 975. Verz. d. Oxf. H. 314,a,29. 32. 316,b,10. 337,a,4 v. u. अग्निदग्धस्य विस्फोटशान्तिः स्यादग्निना ध्रुवम् Spr. 2276. Kathâs. 85,18. Râǵa-Tar. 8,1607. अयमपरो गण्डस्योपरि विस्फोटः Mudrâr. 120,14; vgl. Çâk. 20,10.

विस्फोटक 1) m. a) = विस्फोट 2) Schol. zu Çâk. 20,10. Suçr. 1,292,8. 293,19. 2,118,2. 188,9. *eine Art des Aussatzes* Çârñg. Sañh. 1,7,64. Pañkar. 3,14,47. Tithit. bei Wilson, Sel. Works II, 222. — b) N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 87. — 2) विस्फोटिका f. *Blase, Beule* Schol. zu Çâk. 20,10.

विस्फोटन (von स्फुट् mit वि) n. 1) *das Entstehen von Blasen:* दग्धस्य Kan. 5,1,12. — 2) *lautes Brüllen:* वृत्र° Bhâg. P. 6,11,7.

1. विस्मय (von स्मि mit वि) m. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *Dünkel, Hochmuth* H. an. 3,506. Med. j. 104. तपः क्षरति विस्मयात् M. 4,237. तस्मान्न विस्मयः कार्यः पुरुषेषु महात्मसु Bhâg. P. 6,17,35. गतविस्मया 36. — 2) *das Staunen, das Gefühl der Ueberraschung, Verblüfftheit* AK. 1,1,7,19. H. 303. H. an. Med. Halâj. 4,60. 1,91. बत विस्मये 5,92. AK. 3,4,22 (28),5. विविधार्थेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु । विस्फारश्चेतसो यस्तु स विस्मय उदाहृतः ॥ Sâh. D. 207. विस्मयो नः समुत्पन्नः MBh. 3,2472. विस्मयो मे महानभूत् 11965. Ragh. 10,51. Çâk. 72,8. Vikr. 78,5. Daçak. 4,72. विषादविस्मयाविष्ट Kathâs. 18,240. Râǵa-Tar. 3,71. 4,577. न विस्मयो ऽसौ त्वयि विश्वविस्मये (adj.) यो माययेदं ससृजे ऽतिविस्मयम् (adj.) Bhâg. P. 3,13,42. 4,1,28. °कारि चेष्टितम् Spr. (II) 2270. भयविस्मयकारिन् Çuk. in LA. (III) 38,6. Verz. d. Oxf.

H. 225,a,38 (pl.). प्रयाणे विस्मयः कुतः Spr. (II) 1238. 2582, v. l. नाम° 196, v. l. विस्मयात् *vor* —, *mit Staunen* Çâk. 100,23. Râǵa-Tar. 3,111. विस्मयान्वित AK. 3,1,26 (= विलक्ष). MBh. 3,2150. 2230. विस्मयो सर्वथा हेयः प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम् Spr. 2880. विपत्काले विस्मय एव कापुरुषलक्षणम् Hit. 13,19. परं विस्मयमागताः R. 1,4,14. Brahma-P. in LA. (III) 53,4. विस्मयं परमं ययौ MBh. 3,2795. R. 1,2,1. Pańkar. 1,6, 12. परं विस्मयमाययौ Râǵa-Tar. 3,452. 4,241. परं विस्मयमापन्नाः MBh. 3,2856. विस्मयं परमं चक्रे *gerieth in Staunen* R. Gorr. 1,35,50. दाने तपसि u. s. w. विस्मयो न च कर्तव्यः Spr. 1136. चकार — तेषु रक्षस्सु विस्मयम् *erregte Staunen* R. 5,40,11. जात° adj. 3,44,17. संजात° adj. Kathâs. 38,98. जनित° adj. 28,189. आगत° adj. Hariv. 9975. गतविस्मयो ऽत्र Bhâg. P. 3,1,42. स° adj. *erstaunt*, *überrascht* Ragh. 3,47. 5,29. 13,68. Kathâs. 22,130. 25,53. 154. 252. 26,91. 27,75. Râǵa-Tar. 4,268. 424. Pańkat. 44,24. Hit. 54,18. सविस्मयम् adv. Çâk. 48,6. 52, 21. Kathâs. 18,390. Râǵa-Tar. 6,359. Pańkat. 76,24. Hit. 14,22. सु° adj. Kathâs. 43,174.

2. विस्मय (2. वि + स्मय) adj. *frei von Dünkel*, — *Hochmuth* Bhâg. P. 3,17,31.

विस्मयंकर adj. *Staunen erregend* MBh. 8,1306.

विस्मयंगम adj. dass.: आत्मना (so ed. Bomb.) MBh. 1,5387.

विस्मयन (von स्मि mit वि) n. *das Erstaunen*: लोकविस्मयनार्थाय Verz. d. Oxf. H. 53,b,29.

विस्मयनीय adj. *Staunen erregend*: °रूप MBh. 8,4490. fg.

विस्मयविषादवत् (von विस्मय + विषाद) adj. *erstaunt und bestürzt* Kathâs. 121,176.

विस्मरण (von स्मर् mit वि) n. *das Vergessen* Kap. 4,16. Çâk. 119.

विस्मर्तव्य (wie eben) adj. *zu vergessen* Kathâs. 10,149. 18,183. Râǵa-Tar. 3,208. Pańkar. 4,2,23. Pańkat. 176,2. 3.

विस्मापक (vom caus. von स्मि mit वि) adj. *in Staunen versetzend* Kaitanjakandrodaja 6,6.

विस्मापन (wie eben) 1) adj. (f. ई) *in Staunen versetzend* MBh. 7,3362. 6676. 7889. Varâh. Bṛh. S. 55,26. Bhâg. P. 1,15,5. 3,2,12. 23,21. — 2) m. *a*) *Gaukler*. — *b*) *der Liebesgott*. — *c*) = गन्धर्वनगर H. an. 4, 190. Med. n. 206. — 3) n. *a*) *das in-Staunen-Versetzen* Hariv. 7238. — *b*) *Wundererscheinung* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 5, Z. 2 v. u.

विस्मापनीय adj. *Staunen erweckend*: जगत: Hariv. 7545.

विस्मापयनीय adj. dass. MBh. 7,4701.

विस्मारक (vom caus. von स्मर् mit वि) adj. *vergessen machend*: जगत्तिग्मांशुविस्मारकाः (दीपकाः) Spr. 2178.

विस्मारण (wie eben) adj. dass. Bhâg. P. 10,31,14.

विस्मित 1) adj. s. u. स्मि mit वि. — 2) n. *ein best. Metrum*: *4 Mal* ⏑ — — — — —, ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ ⏑ —, — ⏑ — — — — — Colebr. Misc. Ess. II,163 (XIV,2). Ind. St. 8,399. 417. विस्मिता f. 423.

विस्मृति (von स्मर् mit वि) f. *das Vergessen*, *Vergesslichkeit*, *Vergessenheit*: नाम° Spr. (II) 196. कृत° Varâh. Bṛh. S. 78,7. विस्मृतिमभिनीय Uttarar. 93,21 (122,5). अत्यन्त° Bhâg. P. 11,22,38. अनुभूताद्यविस्मृति H. 1373. विस्मृत्युज्झितपादप Kathâs. 65,21. यया तस्य निद्रा भोगाः सर्वे विस्मृतिमाययुः 44,96. पञ्चत्रिंशन्महीपाला मग्ना °सागरे Râǵa-Tar. 1,83. अनयत् — स तान्पश्चापि विस्मृतिम् 2,3.

विस्मेर (von स्मि mit वि) adj. *erstaunt* Çiç. 4,53.

विस्यन्द, विस्यन्दक, विस्यन्दन und विस्यन्दिन् s. u. विष्य°.

विस्र 1) adj. *muffig* (dem Geruch nach), *nach rohem Fleische* u. s. w. *riechend* AK. 1,1,4,21. H. 1392. Halâj. 3,9. Blut Suçr. 1,79,12. Çârṅg. Saṁh. 3,12,12. andere Flüssigkeit Suçr. 1,84,6. Meerwasser 173,20. विस्राङ्ग 2,384,5. मीनोदरदरीवास° Kathâs. 74,196. कूर्मं विस्रपिच्छिलम् 82,7. लोहानां मलनिचयः सविस्रगन्धः Varâh. Bṛh. S. 28,5. रुधिरामिषं (अर्हताम्) तु गोक्षीरधाराधवलं ह्यविस्रम् H. 57. im Prâkrit: विस्सगन्धी मच्छबन्धो Çâk. 74,10. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = हपुषा (?) Râǵan. im ÇKDr.; vgl. 2. विस्रगन्ध 2). — 3) n. *Blut* H. 621.

विस्रंस (von स्रंस् mit वि) m. *das Sichauflösen*, *Schlaffwerden*, *Nachlassen*: अ° Ait. Br. 1,13. Pańkav. Br. 10,5,7. Suçr. 1,51,5. 6. 16. बल° 2,192,10.

विस्रंसन (von स्रंस् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. *fallen machend*, *abwerfend*, *abziehend*: नीवि° (कर) MBh. 11,693 (Sâh. D. 113,16). — 2) n. *a*) *das Sichauflösen*, *Schlaffwerden*, *Nachlassen*: बलस्य Suçr. 1, 51,9. दोष° 10. — *b*) *das Abwerfen*, *Herunterreissen*: चलन्मन्दार° Gît. 9,11. — विश्रंसन fehlerhaft.

विस्रंसिन् (von स्रंस् mit वि) adj. *herabfallend*, — *rutschend*: किंचिद्विस्रंसिदूर्वाङ्कमधूकमाला Ragh. 6,25.

विस्रंसिका f. विस्रंसिकायाः काण्डाभ्यां (कर्णाभ्यां P. 8,3,110, Schol.) जुहोति Kâṭh. 15,1.

विस्रक adj. = विस्र 1): Blut Çârṅg. Saṁh. 3,12,9.

1. विस्रगन्ध m. *ein muffiger Geruch*: स° Varâh. Bṛh. S. 28,5.

2. विस्रगन्ध 1) adj. *muffig riechend*. — 2) f. आ *eine best. Pflanze*, = हपुषा (?) Râǵan. im ÇKDr.; vgl. विस्र 2).

विस्रगन्धि 1) adj, *muffig riechend*. — 2) n. *Auripigment* H. 1058.

विस्रता (von विस्र) f. *muffiger Geruch*: des Blutes Suçr. 1,43,20.

विस्रत्व (wie eben) n. dass.: अति° des Blutes Suçr. 1,84,19.

विस्रम्भ und विस्रम्भिन् s. विश्र°.

विस्रव (von स्रु mit वि) m. *Strom*: तं बालं पुपुषुः स्तन्यविस्रवैः MBh. 13,4098. शोणितविस्रवैः R. 7,21,38. Hariv. 13757. चपलैर्लावणैरम्बुविस्रवैः 2980. am Ende eines adj. comp.: महारुधिर° MBh. 10,219. गैरिकतोयविस्रवं गिरेर्यथा वज्रहतं महाशिरः 8,4803.

विस्रवण (wie eben) n. *das Zerfliessen* Nir. 6,3.

विस्रवन्मिश्र s. u. स्रु mit वि.

विस्रंस् (von स्रंस् mit वि) f. *das Zerfallen*, *Nachlass*: जरसा विस्रसामुं लोकमैति TBr. 3,8,20,5. AV. 19,34,3, wo die Hdschrr. विस्रसः betonen. Vgl. auch u. स्रंस् mit वि.

विस्रसा (wie eben) f. *das gebrechliche Alter* AK. 2,6,1,41. H. 340. Halâj. 2,348.

विस्रस्त s. u. स्रंस् mit वि.

विस्रंस्य (von स्रंस् mit वि) adj. *aufzulösen*: ein Knoten TS. 6,2,9,4.

विस्रावण (vom caus. von स्रु mit वि) n. *das Blutlassen* Suçr. 1,26,16. 2,3,15. 250,13.

विस्राव्य (wie eben) adj. 1) *abfliessen zu lassen*, *was man abfliessen lassen kann*: जलं विस्रावयेत्सर्वमविस्राव्यं च दूषयेत् MBh. 12,2634. —

2) *was da zergeht, flüssig wird;* davon °ता f. nom. abstr.: ओदनो विषवान्सान्द्रो यात्यविस्राव्यतामिव । चिरेण पच्यते पक्वो भवेत्पर्युषितोपमः ॥ Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,14.

विस्रि m. N. pr. eines Mannes gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. — Vgl. वैस्रेय.

1. विस्रुति (von स्रु mit वि) f. *das Ausfliessen:* गात्रेभ्यः क्षतजस्य Varâh. Bṛh. S. 88,30.

2. विस्रुति (von स्रु = श्रु mit वि) s. विश्रुति.

विस्रुह् (विऽस्रुह् Padap.) f. Naigh. 4,3. so v. a. *Gewässer* Nir. 6,3. मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः Ṛv. 5,44,3. वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः 6,7,6. etwa *sprossend, austreibend;* subst. *Schoss, Reis* (vgl. Sâj. zu der ersten Stelle).

विस्रोतस् (2. वि + स्रो°) n. *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 179. Mél. asiat. 4,638 (hier fälschlich विसोत).

1. विस्वर (2. वि + स्वर) m. *Misston* Pańkar. 1,12,9.

2. विस्वर (wie eben) adj. 1) *lautlos:* तमस् Kûlikop. in Ind. St. 9,10. — 2) *misstönend, einen falschen Ton von sich gebend, übel klingend:* तूर्य Varâh. Bṛh. S. 46,62. नाद Hariv. 14761. रव 15899. स्वर R. 3,51,23. गीतमविस्वरम् 1,3,60. विस्वरम् adv.: रुराव MBh. 2,2096. 10,407. Hariv. 5695. R. 3,24,23. 29,5. 66,13. अविस्वरम् Mârk. P. 25,10. — 3) *mit einer falschen Betonung gesprochen* Çikshâ 53 in Ind. St. 4,368. विस्वरम् adv. MBh. 13,4576. Kull. zu M. 2,110.

विह in den folgenden compp. = विहायस्.

विहग m. *Luftgeher* P. 3,2,38, Vârtt. 4. Vop. 26,61. 1) *Vogel* AK. 2,5,32. 3,4,2,20. H. 1316. Halâj. 2,82. MBh. 1,1113. 3,2416. 15668. R. 2,52,2 (49,2 Gorr.). 95. 96,13 (105,12 Gorr.). 43. 3,78,3. 5,16,34. Megh. 29. Ṛt. 1,23. Spr. 2839. 2922. Varâh. Bṛh. S. 3,35. 5,55. 17,25. 24,1. 30,31. Bhâg. P. 4,18,24. महा° Kathâs. 26,26. am Ende eines adj. comp. (f. आ) R. 2,59,12. 3,29,12. Spr. (II) 1047. — 2) *Pfeil* Çabdar. im ÇKDr. MBh. 7,9021. — 3) *die Sonne.* — 4) *der Mond* Çabdar. im ÇKDr. — 5) *Planet* Dhar. im ÇKDr. — 6) Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten* (ग्रह) *im 4ten und 10ten Hause stehen,* Varâh. Bṛh. 12,4. 13.

विहगालय (विहग + आ°) m. *die Stätte der Vögel,* Beiw. des Luftraums R. 5,3,60.

विहंग m. *Luftgeher* P. 3,2,38, Vârtt. 3. 1) *Vogel* AK. 2,5,32. H. 1316. Med. g. 49. Halâj. 2,82. M. 9,55. R. 5,4,11. 16,19. 42. 35,29. Ragh. 1,51. Spr. 2231. Varâh. Bṛh. S. 15,3. 17,26. 28,13. 30,7. Brahma-P. in LA. (III) 51,15. Bhâg. P. 3,33,18. 4,25,17. Pańkat. 114,11. 157,20. — b) *Pfeil* Med. Çabdar. im ÇKDr. MBh. 8,3343. — 3) *Wolke.* — 4) *die Sonne.* — 5) *der Mond* Çabdar. im ÇKDr. — 6) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2152. — Vgl. निर्विहंग.

विहंगक 1) m. *Vogel* Rantideva beim Schol. zu Vâsavad. S. 10. — 2) विहङ्गिका f. *Schulterjoch* AK. 2,10,30. H. 364. Hâr. 163.

विहंगम P. 3,2,38, Vârtt. 2. Vop. 26,61. 1) adj. *im Luftraum sich bewegend, den Luftraum durchziehend* MBh. 3,15927. Hariv. 994. R. 7,15,37. Mârk. P. 109,67. — 2) m. *a) Vogel* AK. 2,5,32. H. 1316. Halâj. 2,82. M. 1,39. R. 2,96,14. 39. 3,73,2. Spr. 2060, v. l. (II). 3326. Varâh. Bṛh. S. 47,25. 97,7. Kathâs. 26,37. Pańkat. 79,23. Hit. I,32.

विहंगमा f. Hariv. 8709. fg. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) MBh. 3,2668. R. 2,114,4 (125,4 Gorr.). 5,21,14. Ragh. 9,36. — *b) die Sonne* MBh. 1,6606. 3,17120. — *c)* pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 11ten Manu VP. 268. Bhâg. P. 8,13,26. Mârk. P. 94,17. fg. — 3) f. आ *Schulterjoch* Halâj. 4,73. Çabdar. im ÇKDr.

विहंगमिका f. *Schulterjoch* H. 364, Schol.

विहंगराज m. *der König der Vögel* d. i. Garuḍa Halâj. 1,30.

विहंगहन् m. *Vogeltödter, ein Vögeln nachstellender Jäger* MBh. 12,5480.

विहंगाराति m. *der Vögel Feind* d. i. Garuḍa (?) Vaiǵ. bei Wilson, Daçak. 93, N. 2.

विहत् f. = वेहत् Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

विहति (von हन् mit वि) f. *Verhinderung, Beseitigung* Verz. d. Oxf. H. 256,*b*,36. Sarvadarçanas. 82,7. 8.

विहनन (wie eben) n. 1) *das Schlagen, Tödten* (वध, हिंसा) H. an. 4,191. fg. Med. n. 208. — 2) *das Verhindern* (विघ्न) Med. — 3) *ein bogenförmiges Werkzeug zum Auseinanderzupfen von Baumwolle* H. 912. H. an. Med.

विहन्तर् (wie eben) nom. ag. *Zerstörer, Zertheiler:* तमसः Ṛv. 1,173,5. परकार्य° *der eine fremde Sache zu Grunde richtet, — hintertreibt* (neben स्वार्थसाधक) Spr. 4503.

विहन्तव्य (wie eben) adj. *zu vernichten, zu Grunde zu richten* Prab. 32,3.

विहर (von हर् mit वि) m. *das Verlegen, Versetzen, Wechseln:* कुटीर° Spr. (II) 2304. = वियोग ÇKDr. angeblich nach Halâj.; ohne Zweifel ein verlesenes विरह.

विहरण (wie eben) n. 1) *das Auseinandernehmen, Verbringen an einen andern Ort, Versetzen* (= स्वस्थानाद्विभज्यान्यत्र नयनम् Sâj. zu Ait. Br. 4,3): des Feuers auf die Feuerstellen Lâṭj. 2,2,3. 7,9. Mârk. P. 16,37. *das Versetzen von Wörtern* Ind. St. 8,30. 69. — 2) *das Aufreissen, Aufsperren:* आस्य° P. 1,3,20. — 3) *das Hinundhergehen, Bewegung, das Lustwandeln* Suçr. 1,311,2. Spr. 1956 (II). 4821. Bhâg. P. 10,31,10. Pańkat. 25,10. पाद° *das Gehen, Schreiten* P. 1,3,41. गदाविहरणेषु *das Schwingen der Keule* MBh. 7,597 = 9,601. — 4) *das Spazierenführen:* तन्ती° Gobh. 3,6,8. — Vgl. अग्नि°.

विहर्तर् (wie eben) nom. ag. 1) *Entwender, Räuber:* आढ्यादीनाम् Jâǵń. 2,26. भार्या° (भार्याभिहर्तर् MBh. 3,15761) Draup. 8,46. — 2) *der sich einem Vergnügen hingiebt, sich amüsirt* Ragh. 16,72.

विहर्य (wie eben) adj. s. अविहर्यक्रतु.

विहर्ष (2. वि + हर्ष) adj. *traurig:* वक्त्र Bhâg. P. 4,26,25.

विहल्ह m. von unbekannter Bed. AV. 6,16,1.

विहव (von हु = ह्वा mit वि) m. P. 3,3,72. *Anrufung* Ṛv. 3,8,10. 10,128,1. 2. Ait. Br. 6,6.

विहवीय adj. *das Wort* विहव *enthaltend* Kâtj. Çr. 25,14,18.

विहव्य und विहव्य (von हु = ह्वा mit वि) 1) adj. *herbeizurufen, einzuladen, zu begehren:* पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथ Ṛv. 2,18,7. अयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः 1,108,6. राज्ञामग्ने विहव्यो (VS. und TS. perisp.) दीदिहीह AV. 2,6,4. अयमुग्रो विहव्यो यथासत् VS. 8,46. अह्ये देवि सरस्वति काव्ये विहव्ये ved. Citat beim Schol. zu P. 8,1,73. — 2) m.

N. pr. des angeblichen Verfassers von ṚV. 10, 128 mit dem patron. Âṅgirasa ṚV. Anukr. Ind. St. 3,459. ein Sohn des Varka's (vgl. ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु ṚV. 10, 128, 1) MBh. 13, 2000. — 3) f. आ Bez. gewisser Ishṭakâ TS. 5,4,11,3. — 4) n. (sc. सूक्त) *das Lied* ṚV. 10, 128, *welches im Eingange das Wort* विहव *enthält:* स एतज्ञमदग्निर्विहव्यमपश्यत् TS. 3,1,7,3. Kâṭh. 34,4. Pañkav. Br. 9,4,14. Lâṭj. 4,10,8.

विहस्त (2. वि + हस्त) 1) adj. *a) handlos* Çabdar. im ÇKDr. — *b) behend, geschickt, erfahren;* = पण्डित H. an. 3,300. Med. t. 154. नानायुध° Hariv. 13238. — *b) ungeschickt, unerfahren:* अविहस्तः स्वविद्यासु संयुगे ऽथ पराक्रमे R. 5,81,31. — *c) verwirrt, benommen, befangen* AK. 3,1,43. H. 366. H. an. Med. Halâj. 2,227. रामापरित्राणविहस्तयोध so v. a. *ganz vertieft in, — beschäftigt mit* Ragh. 5,49. — 2) m. *Eunuch* Çabdar. im ÇKDr.; beruht wohl auf einer Verwechselung von पण्डित mit पण्ड.

विहस्तता (von विहस्त) f. *Verwirrung, Befangenheit:* तद्गीतरूपाभ्यां नीतं तस्य विहस्तताम् (हृदयम्) Kathâs. 52,199. भेजे कन्या विहस्तताम् 90,48.

विहस्तित (wie eben) adj. *verwirrt —, befangen gemacht:* प्रेम° Kathâs. 104,98.

विहा Uṇâdis. 4,36. indecl. = स्वर्ग Uǵǵval. Ein aus विहग u. s. w. geschlossenes Wort.

1. विहायस् (2. वि + हा°) adj. *kraftvoll, wirksam, stark, rüstig;* = महत् Naigh. 3,3. = वञ्चनवत् Nir. 4,15. = व्याप्तर् 10,26. वाजिन् ṚV. 4,11,4. ये ते मदा आहनसो विहायसः 9,75,5. 10,92,15. Soma 8,48,11. Ushas 1,123,1. Indra 3,36,2. Agni 6,13,6. 8,23,19. 24. Viçvakarman 10,82,2. die Marut Taitt. Âr. 1,27,7. उरुदृष्टिः कृतवीर्यो विहायाः AV. 17,1,27.

2. विहायस् (von हा, जिहीते mit वि) 1) *das Offene, Freie* d. i. *die freie Luft, Luftraum,* m. n. AK. 1,1,2,2. Med. s. 62. n. Trik. 1, 1, 81. 3,3,450. H. 163. an. 3,756. Halâj. 1,137. वारीयते स्वच्छतया विहायः Spr. (II) 2248. पतमानं विहायसः Hariv. 8534. R. 4,23,1. तीरोदके विहायसि निदध्युः *in's Freie stellen* Pâr. Gṛhj. 3,10. समिधः संनिदध्याद्विहायसि M. 2,186. विहायसि गता पपौ पानमुत्तमम् Hariv. 3345. गरुडेनाथ तस्थौ देवो वि° *in der Luft* 7556. स तया शुशुभे — विहायसि बलाकानां मालया तोयदो यथा R. 4,12,47. निरालम्बे विहायसि 6,10,4 Suçr. 2,311, 20. विहायसा instr. als indecl. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. H. 1526. Halâj. 1,137. *durch die Luft* (gehen u. s. w.) MBh. 1,1227. नेष्यामि त्वां वि° 5966. 3,2310. 16259. R. 3,44,25. 54,6. 55,35. 60,16. Çâk. 112,14. Bhâg. P. 2,2,24. 3,15,12. 4,19,12. Vop. 26,61. विहायस्तलम् Pañkat. ed. orn. 57,17. विहायःस्थली Verz. d. Oxf. H. 129,*a*,16. acc. विहायसम् haben wir zu विहायस gestellt. — 2) *Vogel,* m. AK. 2,5,32. Med. n. H. an. Halâj. 2,82. unbestimmt ob m. oder n. (da es zum folgenden comp. gezogen werden kann) H. 1316. विहायः (!) शकुने पुंसि Trik. 3, 3,450. — Vgl. वैहायस.

विहायस 1) = 2. विहायस् 1). m. Verz. d. Oxf. H. 184,*a*, 43. m. n. Mathureça zu AK. nach ÇKDr. तस्मिंस्विहायसे। अग्निं प्रणीयोपसमाधाय *in's Freie* Taitt. Âr. 1,22,9. विक्रमस्व विहायसम् *den Luftraum* MBh. 1,3677. 5,2457. अगमंस्ते विहायसम् Hariv. 8528. — 2) m. = 2. विहायस् 2) Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

विहार (von हर् mit वि) m. und n. (dieses nur durch Bhâg. P. 2,2, 22 zu belegen) gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. 1) *Vertheilung, Versetzung,* z. B. von Wörtern Ait. Br. 6,24. Lâṭj. 2,1,2. Schol. zu Çâṅkh. Çr. 12, 11,6. — 2) namentlich *die gesonderte Aufstellung der drei heiligen Feuer; die getheilten Feuer selbst und der zwischen ihnen liegende Raum:* विहारं प्रपद्यते पूर्वेणोत्करमपरेण प्रणीताः Âçv. Çr. 1,1,4. 3,1, 19. यदि पुरुषो विहारमन्तरियात् *wenn er zwischen den Feuern durchgeht* 10,10. 12,6,7. Kâtj. Çr. 6,10,11. Schol. zu 1,1,20. 4,15,4. 5,6,41. Çâṅkh. Çr. 3,4,2. Ind. St. 1,83. 5,15. 9,217. Bhâg. P. 4,5,14. Mârk. P. 51,92. — 3) *Veränderung der Stellung, Erweiterung, Entfernung:* der Sprachorgane ṚV. Prât. 14,2. — 4) *das Sichbewegungmachen, Spazieren* AK. 3,3,16. H. 1500. an. 3,603. Med. r. 220. Halâj. 4,41. °शय्यासनभोजनेषु Bhag. 11,42. Sâṁkhjak. 28. क्रीडाविहारे नारीभिः सेव्यमानमितस्ततः Hariv. 10053. क्रीडाविहाररम्याणि सानूनि Mârk. P. 61,21. विहारे सह कान्तेन क्रीडितं केलिरुच्यते Sâh. D. 153. पृष्ट्वा चैनं सुखं प्रह्वो विहारशयनासने R. Gorr. 2,13,10. Varâh. Bṛh. S. 78,11. स्थानासनविहारानाचरति Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 23. दुरमन्थरचरणविहारम् adv. Gît. 11,3. — 5) *Unterhaltung, Vergnügen, Belustigung;* = लीला H. an. Med. स्थानासनविहारैः Jâǵñ. 3,51. तैस्तैर्विहारैर्बहुभिर्दैत्यानां कामरूपिणाम्। समाः संक्रीडतां तेषामहरेकमिवाभवत्॥ MBh. 1,7651. 15, 203. R. 3,49,39. Ragh. 9,68. Spr. 1594. विहारैकरस Kathâs. 21,3. 29, 37. Bhâg. P. 3,12,47. 5,2,6. 6,9,33. 8,5,40. Häufig in Verbindung mit आहार *Essen* MBh. 3,116. युक्ताहार° adj. Bhag. 6,17. आहारे वा विहारे वा न कश्चिदकरोन्मनः R. 2,41,13. Suçr. 2, 170,13. मिथ्याहार° Çârṅg. Saṁh. 3,1,7. स्वेच्छाहारविहारं कुर्वाणाः Hit. 38,8. Vedântas. (Allah.) No. 146. °कालेषु MBh. 1,1812. Hariv. 15775. विहारमभिरमतुः MBh. 1,7716. वरं विहारः सह पन्नगैः कृतः Spr. 2729. कृत्वा विहारं ताभिः Pañkar. 1,10,53. स खलु सुखी विचरेदिमं विहारम् MBh. 12, 6689. सविहारं सुखं रम्यमुर्नगरं नागसाह्वयम् 1,7555. °शीलता Suçr. 1, 335,10. जल° *Belustigung mit —, im Wasser* MBh. 1,4994. अम्भो° Ragh. 16,67. मृगया° Kathârṇava in Z. d. d. m. G. 14,574,16. पद्मनाभस्य षोडशान्तःपुरविहारः Daçak. 64,11. fg. गृहीतहरि° Bhâg. P. 5,1, 39. am Ende eines adj. comp. *seine Freude habend an:* लोकहिंसा° R. 3,28,19. 51,20. 6,98,35. Suçr. 1,71,1. Bhâg. P. 5,9,18. 10,89,25. मृगया° 26,24. देवगन्धर्व° R. 7,20,18. — 6) *Erholungsort, Vergnügungsort, Belustigungsort* MBh. 1,1582. 3,10030. 11649. 12864. 7,2846. 8,1772. 12, 2606. सभाविहारभेत्तारः 15,200. R. 2,60,13. R. Gorr. 2,33,20. Ragh. 5,41. 6,75. Varâh. Bṛh. 2,12. Bhâg. P. 2,2,22 (neutr.). 3,23,39. 5,13,12. 9,10, 17. 14,24. 10,76,10. — 7) (Buddha's *Erholungsort*) *ein buddhistisches,* (oder Ǵaina-) *Kloster* H. 994. H. an. Med. Burn. Intr. 286. fg. 313. 630. Lot. de la b. l. 203. 206. Lalit. ed. Calc. 30,13. Vie de Hiouen-thsang 220. Mṛkkh. 177,12. Kathâs. 12,149. 28,7. 29,37. 65,132. 72,99. Râǵa-Tar. 1,93. fg. 169. 4,262. 5,261. 427. 6,137. Pañkat. 236,8. Hit. 49,10. विहारोद्देशक Vjutp. 210. — 8) N. pr. eines Landes (= Behar) Verz. d. Oxf. H. 67,*b*, No. 117. — Nach den Lexicographen noch 9) = स्कन्ध H. an. Med. — 10) = वैजयन्त Çabdam. im ÇKDr. — 11) *ein best. Vogel,* = बिन्दुरेखक Çabdâr. im ÇKDr. — Vgl. कच्छ°, निर्विहार, भद्र°, नि-

शा°, राज°, वारि°.

विहारक (von विहार) am Ende eines adj. comp. (f. विहारिका) 1) *Vergnügen findend —, seine Freude habend an:* गोवर्धन° Paṅkar. 4,8, 25. मन्वन्तर° 28. नदीनद° 45. वृन्दारण्य° 60 Beiww. Kṛshṇa's. — 2) *zu Jmdes Vergnügen —, Belustigung dienend:* अस्मद्विहारिकायाः — उद्यानवाटिकायाः Mâlatim. 104,9.

विहारक्रीडामृग m. *eine zur Belustigung und zum Spielen dienende Gazelle* Bhâg. P. 7,6,17.

विहारण n. = विहार *Unterhaltung, Vergnügen, Belustigung:* व्रजाङ्गन° adj. als Beiw. Kṛshṇa's Paṅkar. 4,8,10.

विहारदासी f. *eine zur Unterhaltung dienende Sclavin* Mâlatim. 8,4.

विहारदेश m. *Vergnügungsort* MBh. 1,8067. R. 3,65,19. Mârk. P. 128,20.

विहारभद्र m. N. pr. eines Mannes Daçak. 189,7.

विहारभूमि f. *Vergnügungsplatz* Hariv. 6414. विहारोद्यानभूमिषु Spr. 4424.

विहारयात्रा f. *ein zum Vergnügen unternommener Gang* MBh. 15,18.

विहारवत् (von विहार) adj. 1) *im Besitz eines Erholungsortes* u. s. w. *seiend:* स्थानासन° (das suff. gehört zum ganzen comp.) M. 2,248. *mit einem solchen Orte versehen:* भक्ष्यभोज्य° (das suff. gehört zum ganzen comp.) von einem Berge MBh. 14,1761. — 2) am Ende eines comp. *seine Freude an Etwas habend:* क्रूराचार° M. 10,9.

विहारवारि n. *zur Belustigung dienendes Wasser* Ragh. 13,38.

विहारशयन n. *ein zum Vergnügen bestimmtes Ruhebett* R. 2,30,11 (12 Gorr.).

विहारशैल m. *ein als Vergnügungsort dienender Berg* Ragh. 16,26.

विहारस्थान n. *Vergnügungsort* Bhâg. P. 3,23,21.

विहाराजिर (विहार + अ°) n. dass. Bhâg. P. 5,24,5.

विहारावसथ (विहार + आ°) m. *Lusthaus* MBh. 1,5014.

विहारिन् (von हृ mit वि oder von विहार) adj. 1) *spazierend, einhergehend, sich bewegend:* राजानं तत्रोद्याने विहारिणम् Kathâs. 28,56. Gît. 2,10. काम° MBh. 17,96. यथाकाम° 13,1935. देवारण्य° 1,7853. भवता मत्समीपविहारिणाजस्रं भवितव्यम् Paṅkat. 30,25. सदैकस्थानविहारिणौ कालं नयतः 43,2. हंसा जलविहारिणः R. 3,20,20. व्योमैकान्तविहारिणो विहगाः Spr. 2922. व्योम° Kathâs. 46,179. पराकाश° (हंस) 54,30. तीरविहारिभिर्हंसैः Râǵa-Tar. 1,206. पङ्क्तिविहारिभिर्भृङ्गैः R. 5, 74,29. धरातल° Verz. d. Oxf. H. 260,*b*, No. 629. गगन° (विधु) Spr. 3227. राज्ञस्तस्य बभूवाज्ञा तत्र स्वैरविहारिणी so v. a. *seine Autorität erstreckte sich von selbst bis dahin* Râǵa-Tar. 4,339. दैवीमृद्धिमनुप्राप्तो ब्रह्मलोकविहारिणीम् so v. a. *die sich erstreckte bis* R. 2,105,33 (दैवीं गतिमनुप्राप्तो दिव्यलोकविहारिणीम् 114,21 Gorr.). मम देहविहारिणः so v. a. *von meiner Person abhängig* MBh. 3,12972. — 2) *sich vergnügend, — sich amüsirend, seine Freude an Etwas habend, einem Vergnügen ergeben:* मृगया° Çâk. 17,21. Ragh. 18,34. वारि° 16,61. दार° MBh. 13, 6527. घनङ्गाङ्गविहारिणी *sich mit des Liebesgottes Körper vergnügend* so v. a. *des Liebesgottes Gattin* 4,389. मृगं मृगीयूथविहारिणम् Mârk. P. 65,21. रति° MBh. 2,2028. काम° 15,965. कामचार° (स्त्रियः) 1, 4719. स्वैर° Jâǵn. 1,328. स्वेच्छा° Kathâs. 35,74. निःशङ्क° Râǵa-Tar. 4,19. मिथ्याहार° *verkehrte Nahrung zu sich nehmend und verkehrten Vergnügungen nachgehend* Suçr. 1,252,21. किमाहार° Hariv. 11171. Die Bedeutungen sind oft schwer auseinanderzuhalten. — 3) *reizend:* जघन Spr. (II) 2529, v. l. — Vgl. गगण°.

विहारिसिंह m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,4, Çl. 3.

विहास (von हस् mit वि) m. *das Lachen, Gelächter:* हसन्विहासांश्च चकार (जहास die neuere Ausg.) Hariv. 8409. Paṅkar. 3,12,7. — Vgl. वैहासिक.

विहिंसक (von हिंस् mit वि) adj. *Jmd ein Leid zufügend:* न तस्य कालो मृत्युर्वा न व्याधिर्न विहिंसकाः R. 7,23,1,64. प्राणि°, सर्वप्राणि° MBh. 3,13068. 12,4290. Paṅkat. III, 143. भूत° Bhâg. P. 11,10,27. अ° *Niemanden ein Leid zufügend* MBh. 3,539. 5,1347. 13,5552 (अजंयिवाति° zu schreiben). भूतानाम् 12,2966. 13,4967. ब्रह्मस्वस्य *an Brahmaneneigenthum sich nicht vergreifend* R. Gorr. 1,7,10.

विहिंसता (nom. abstr. von विहिंस = विहिंसक) f. *das Zufügen eines Leides:* एतद्रूपमधर्मस्य भूतेषु हि विहिंसता MBh. 3,1296.

विहिंसन (von हिंस् mit वि) n. dass.: अप्रीणाम् (obj.) Bhâg. P. 10,4, 42. 12,28. नानादित्यविहिंसनम् (so ist zu lesen) Verz. d. Oxf. H. 78,*b*, 1. अ° Bhâg. P. 11,16,23.

विहिंसा (wie eben) f. dass. Trik. 3,3,266. MBh. 5,1644. 12,8628. 10735. R. Gorr. 2,109,22. अ° MBh. 12,9421. Spr. 2317.

विहिंसिन् scheinbar Verz. d. Oxf. H. 78,*b*,1, da °विहिंसनम् zu lesen ist.

विहिंस्र (2. वि + हिं°) adj. *Jmd ein Leid zufügend, Schaden bringend:* धर्मा अविहिंस्राः Bhâg. P. 3,22,19.

विहित s. u. 1. धा mit वि.

विहितसेन m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 17,34.

विहिति (von 1. धा mit वि) f. 1) *das Verfahren* Ait. Br. 8,14. — 2) *das Bewirken:* जितिविजितिस्थितिविहितिव्रत *ein Gelübde die Erde zu erobern und ihren Bestand zu bewirken* Kâvjâd. 3,85.

विहित्रिम (von 1. धा mit वि) adj. *verrichtet:* कर्मन् Bhaṭṭ. 1,13.

विहीन s. हा, जहाति mit वि.

विहीनता (von विहीन) f. *das Beraubtsein um, Ermangeln, Nichtbesitzen;* die Ergänzung im comp. vorangehend Hariv. 7277. Spr. 2298.

विहीनर m. N. pr. eines Mannes, erschlossen aus वैहीनरि (वै°), welches Andere auf वहीनर (व°) zurückführen. P. 7,3,1, Vârtt. und Pat.

विहीनित (von विहीन) adj. *beraubt —, gekommen um* (instr.): स भेमप्रवरो वीरस्तैः सहायैर्विहीनितः (विहीनतः die neuere Ausg.) Hariv. 8718. — Vgl. हीनित.

विहुण्डन m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210.

विहुत्मत् (2. वि + हु°) adj. *keine Opfer darbringend* ṚV. 1,134,6. *opfernd, anrufend* Sâj.

विह्नुत s. u. ह्वा mit वि; davon विह्नुतवत् adj. *das Wort* विह्नुत *enthaltend* Ait. Br. 5,18.

विहृत 1) adj. s. u. हृ mit वि. — 2) n. *unzeitiges Schweigen aus Verlegenheit* Daçar. 2,30. 39. H. 508; vgl. विकृत 3) *b*).

विहृति (von हृ mit वि) f. 1) *Ausdehnung, Erweiterung, Zuwachs, Zunahme:* विहृतिमियाय रुचिस्तडित्लतानाम् Kir. 10,19. — 2) *Ver-*

gnügen, *Belustigung* Nalod. 2,38.

विह्रृदय (2. वि + हृ°) n. *Muthlosigkeit* AV. 5,21,1.

विहेठक (von हेठ् mit वि) adj. *Jmd weh thuend, verletzend* Vjutp. 79. अतीव ह्यल्पन्दुर्वाचो भवतीह विहेठकः (विहेटकः ed. Calc.) MBh. 1,3076.

विहेठन (wie eben) n. = विबाधा Trik. 1,1,132. = विहिंसा und विडम्ब (विडम्बन) 3,3,265. fg. H. an. 4,189. fg. (विहेडन) und Med. n. 207. = मर्दन H. an. Med. *das Wehthun, Verletzen, Beleidigen* Vjutp. 24. 61. 127. 197.

विहेठा (wie eben) f. *Beleidigung*: मा च करोथ विहेठ (d. i. विहेठां) मानुषाणाम् Lalit. ed. Calc. 57,9.

विह्रादिन् (von 2. वि + ह्राद) adj. etwa *Tümpel* oder *Pfützen bildend* (Gegens. *ununterbrochen fliessend*): आपः Kāṭh. 23,6.

विह्रुत् (von ह्रु = ह्वर् mit वि) f. (*sich krümmend*) *ein schlangenähnliches Thier, Wurm* u. dgl. VS. 25,7.

विह्वल (von ह्वल् mit वि) 1) adj. (f. आ) *erschöpft, mitgenommen, ergriffen, seiner nicht ganz mächtig, verwirrt*; = विक्लव AK. 3,1,44. H. 448. Halâj. 2,231. विह्वलास्मि कृतानेन कर्षिता बलिना बलात् MBh. 2,2341. 3,2375. 2455. 2577. 15795. 5,3695 (nach der Lesart der ed. Bomb., विकल ed. Calc.). 7208. 6,31. 7,277. त्तीववत् 614. 9,616 (मु°). 13,4077. Hariv. 4764. R. 1,77,2. R. Gorr. 1,39,15. 3,35,85. 64,7. 68, 20. Suçr. 2,538,14. Ragh. 8,37. Kumâras. 4,4. Spr. (II) 1242. Kathâs. 15,91. 17,42. 18,93. विह्वलाकुल 97. 223. 24,179. 28,159. 37,125. 39, 119. Râga-Tar. 4,443. 8,1147. 1768. Bhâg. P. 3,2,33 (अति°). 8,11,25. 9,14,32. Mârk. P. 124,19. पतिशोकेन R. 4,20,19. 58,10. भयेन Kathâs. 54,117. मद° R. 1,9,25. 37. 3,23,35. Bhâg. P. 4,25,57. 5,9,19. Pańkat. ed. orn. 34,3. Kull. zu M. 3,34. शोकसंताप° R. Gorr. 2,15,7. 39,24. Kathâs. 12,105. 16,106. भय° MBh. 3,2552. Bhâg. P. 1,8,8. 17,29. रामागमन° R. Gorr. 1,78,2. अबलाविरहक्लेश° Spr. 1482. मदन° Sarvadarçanas. 96,16. स्मर° Verz. d. Oxf. H. 105,*b*,28. रामानुनय° R. Gorr. 2,120,21. अतिप्रमोदभर° Bhâg. P. 5,4,4. प्रीति° 8,17,5. प्रेम° 3,4,35. 4,9,42. 48. 7,15,78. प्रतिष्ठाविघ्न° Râga-Tar. 3,442. अश्रुकलाति° Bhâg. P. 4,4,2. पुलकाश्रु° 8,22,15. हृदयमन्तर्विह्वलम् Mâlatîm. 142,5. °चेतना MBh. 13,4072. °चेतस् Kathâs. 9,49. मृगयाविह्वलं चेतः Schol. zu Çâk. 22,5. हरिकुणकविरहविह्वलहृदय Bhâg. P. 5,8,12. स्त्रीप्रेक्षणप्रतिसमीक्षणविह्वलात्मन् 8,12,22. वडवा *erschöpft* R. Gorr. 2,17,24. विह्वलास्तस्य (गिरेः) पार्श्वेभ्यः सर्पा दग्धार्धदेहिनः — निश्चेरुः Hariv. 5330. क्रूदशोषविह्वला शफरी Kumâras. 4,39. निमेषोन्मिष° (कालचक्र) MBh. 14,1237. विह्वलाङ्ग Mârk. P. 134,58. मदविह्वलाङ्ग Pańkat. ed. orn. 32,21. 33, 12. मदनविह्वलसालसाङ्गी Kaurap. 1. मूर्छाविह्वलतनु Pańkat. ed. orn. 57,20. °लोचना MBh. 13,4074. मदविह्वललोचना Bhâg. P. 3,20,29. 8, 2,23. 9,17. कन्दुकविह्वलाक्षी 3,22,17. वाक्य MBh. 5,7190. शोकविह्वलं वाक्यम् R. 4,36,21. वित्तव्याधिविकारविह्वलगिरः Spr. 4544. संप्रश्रयप्रणयविह्वलया गिरा Bhâg. P. 3,23,9. अ° *gekräftigt, munter*: स्नातोपवृत्तैस्तुरगैर्लब्धतोयैरविह्वलैः MBh. 3,7164. चकर्ताविह्वलः शिरः so v. a. *wohlgemuth, ohne sich lange zu bedenken* Kathâs. 60,89. ततस्मै प्रादादविह्वलः 72,160. — 2) m. *Myrrhe* Ratnam. 143. — Vgl. गन्ध°, परि°.

विह्वलता f. nom. abstr. von विह्वल 1) MBh. 3,8680. Kathâs. 105, 11. विह्वलत्व n. desgl. MBh. 7,1680. 9,618. Kâm. Nîtis. 14,59.

विह्वलिन् (von ह्वल् mit वि) adj. = विह्वल Verz. d. Oxf. H. 117,*a*,34.

1. वी, वेति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). Dhâtup. 24,39 (गतिव्याप्तिप्रजननकान्त्यसनखादनेषु). वीथैस्, व्यन्ति, अव्यन्, व्यन्, वयत्, अवेषन्, वेस् 2. und 3. sg. अविवेषीम्, विवाय; partic. वीत s. bes. 1) *verlangend aufsuchen, — herbeikommen, appetere; gern annehmen, — geniessen*: हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं जुषेथाम् Ṛv. 1,93,7. घृतस्य AV. 7,29,1. वीतं पातं पयसः 73,5. वीहि स्वामाहुतिं जुषाणः 6,83,4. वेषि हव्यानि वीतये Ṛv. 1,74,4. ब्रह्माणि 2,5,2. 7,15,6. अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् 17,3. अध्वरम् 82,7. यद्य विशो वेः 6,15,14. शिप्रं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः 1,186,5. 189,7. होतारं व्यन्ति वार्या पुरु 5,23,3. 6,1,4. 10,114, 1. उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीः 5,46,8. आज्यं जुषाणा वियन्तु TS. 1,5,3,3. आज्यस्य Çat. Br. 2,2,3,19 und oft in stehenden Formeln. अग्ने वेर्होत्रम् Kâtj. Çr. 23,3,1. व्यन् Pańkav. Br. 24,1,9. — 2) *ergreifen*: आयुधानि Ṛv. 10,8,7. *unternehmen*: दूत्यम् 4,9,6. 7,8. — 3) *zu gewinnen suchen, verschaffen, herbeischaffen*: अग्निर्यद्वेर्मर्ताय देवान् Ṛv. 1,77,2. यन्ति वेषि च वार्यम् 7,16,5. 3,8,7. भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात् 10,11,8. वीहि मृळीकम् 4,1,5. — 4) *heimsuchen, rächen*: मा भ्रातुरग्ने अनृजोर्ऋणं वेः nämlich *an uns* Ṛv. 4,3,13. — 5) *losgehen auf, bekämpfen, anfallen*: तं मा व्यन्त्याध्यो३ वृको न तृष्णजं मृगम् Ṛv. 1,105,7. वेषीदेको युधये भूयसश्चित् 5,30,4. वर्पद्वत्सो वृषभं शूशुवानः 10,28,9. अहिं वज्रेण शवसाविवेषीः 4,22,5. द्रुहः 9,71,1.

— caus. वाययति und वापयति *befruchten* (vgl. u. प्र) P. 6,1,55. Vop. 18,17. वापयति वाययति वा गाः पुरोवातः। गर्भं ग्राहयतीत्यर्थः P., Schol.

— अति *überholen, überlegen sein*: वेत्यग्रुर्जनिवान्वा अति स्पृधः Ṛv. 5,44,7.

— अप *sich abwenden, abhold sein*: सुतसोमे न कामो अप वेति मे Ṛv. 5,61,18. न घा त्वद्रिगप वेति मे मनः 10,43,2.

— अभि, partic. अभिवीत *gesucht, begehrt*: दक्षिणा Ṛv. 7,27,4.

— अव *aufsuchen*: अवं वेति सुक्षयं सुते मधु Ṛv. 10,23,4.

— आ 1) *unternehmen, anstellen*: दूत्यम् Ṛv. 1,71,4. यः प्रथमो दक्षिणामाविवाय 10,107,5. यस्मिन्ना कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् 3,49,1. — 2) *herbeieilen*: प्रेषद्वेषद्वातो न सूरिरा Ṛv. 1,180,6. आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय 156,5. आ यो विवाय सख्या सखिभ्यः 10,6,2. — 3) *ergreifen, packen*: तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत् Ait. Up. 3,3,10. — आ वयति unter den अत्तिकर्माणः Naigh. 2,8.

— उपा *zu Hilfe kommen*: आ नो देवानामुप वेतु शंसः Ṛv. 10,31,1.

— उप *herzustreben*: अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु Ṛv. 5,11,4. 8,11,4. *anstreben, zu erzielen suchen*: शेषः Ṛv. 10,16,5.

— नि intens. *eindringen in, sich stürzen unter*: उत स्मासु प्रथमः सरिष्यन्नि वेवेति श्रेणिभी रथानाम् Ṛv. 4,38,6. नि वेवेति पलितो दूत आसु 3,55,9.

— प्र 1) *hinausstreben*: प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु Ṛv. 7,42,1. — 2) *zustreben auf, eingehen in*: प्र होत्रेण शिम्या वीथो अध्वरम् Ṛv. 1,151,3. अस्नातापो वृषभो न प्र वेति 10,4,5. *angreifen*: प्र प्र तान्दस्यूँरग्निर्विवाय 7,6,3. — 3) *inire, belegen, befruchten*: सद्यः प्रवीता वृषणं जजान Ṛv. 3,29,3. ओषधीः प्र वीयन्ते AV. 11,4,3. 12,4,37. अनस्थिकेन प्रजाः प्रवीयन्ते TS. 6,1,3,1. पराचीः प्रजाः प्रवीयन्ते *von hinten* 3,1,4. 4,10,4. Kâṭh. 12,8. — Vgl. अप्रवीत, अक्षतप्रवीत, प्रवय्या (*zu belegen, zu befruchten*).

— प्रति *in Empfang nehmen:* प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु RV. 7,1,18. 2,36,4. वेत्यध्वर्युः प्रति हव्यानि वीतये 8,90,10. प्रति तान्दिवशो विद्धि *je für die einzelnen Götter* 3,21,5.

2. वी (= 1. वी) adj. in 2. अ°, देव°, पद°. m. = गमन Ekâksharak. im ÇKDr.

3. वी, वेति, conj. वयति; वेस्; imper. वीहि, विडि; partic. वीत; = अज् in einigen Bildungen P. 2,4,56. fg. Vop. 8,59. 1) *antreiben, in Gang setzen; erregen, erwecken* Nir. 10,1. वेति सूर्यम् RV. 1,35,9. व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् *mögen den Muth wecken* 7,19,6. व्यन्तो विप्राय मतिम् VS. 9,4. वेति स्तोतव अव्यम् 8,61,5. 4,17. विद्धि होत्रा अवीता: 4,48,1. भुवो वरुणो यदृताय वेषि 10,8,5. 1,141,6. यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम् 2,24,15. — 2) *fördern —, führen zu* (mit 2. acc.): वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् RV. 6,2,11. (नू नो) वेषि रायः 4,8.

— अप etwa *abtreiben* in einer Worterklärung: यदेनया विद्धो ऽपवीयते Nir. 6,12.

— अभि *antreiben:* अपुरुषाभिवीता (गौः) Çat. Br. 4,5,8,11.

— आ *antreiben, hertreiben:* आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वेः RV. 1,63,2. आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यम् 8,21,10. — Vgl. 2. आवी.

— उद्, partic. उद्वीत *hinausgetrieben, weggejagt* AV. 12,5,18.

— प्र *antreiben; erregen, begeistern:* प्र विद्धि मनायतः RV. 2,26,2. एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नॄन्प्र च्यौत्नेन 10,49,1. — Vgl. 2. प्रवयण fg., प्रवायक, प्रवेतर् und प्रवेय.

4. वी (= 3. वी) adj. in 1. अ° (*nicht erregt, nicht begeistert*), अथर्वी अष्ट्रा° (s. Nachträge), तक्व°, पर्ण°.

5. वी stellen wir auf Grund von RV. 10,33,2 auf in der Bed. (ängstlich) *mit den Flügeln schlagen;* hierher vielleicht वि, वयस् *Vogel.* intens. *flattern:* वेर्न वेवीयते मतिः *wie ein Vogel flattert* d. h. *bebt* oder *zagt mein Herz* RV. 10,33,2.

— आ intens. *trepidare:* पुरास्य संवत्सराद्गृह आवेवीरन् *ehe ein Jahr vergeht soll man in seinem Hause verzagen* TS. 3,2,9,5. — Vgl. वेवी.

6. वी s. व्या.

7. वी (= 6. वी, व्या) adj. in हिरण्य°.

8. वी f. zu 1. वि *Vogel* Colebr. und Lois. zu AK. 2,5,33.

9. वी = 2. वि in वीकाश, °तंस, °नाह, °बर्ह, °मार्ग, °रुध् und °वध.

वीक Uṇâdis. 3,47. m. *Wind; Vogel* Uǵǵval. = मनस् Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr.

वीकाश (von काश् mit वि) m. P. 6,3,123. 1) *das in's-Licht-Treten, Hellwerden;* = प्रकाश AK. 3,4,28,217. = स्फुट Halâj. 5,51. — 2) *Verborgenheit* u. s. w.; = रहस् AK. Halâj. — Vgl. 1. विकाश.

वीक्षण (von ईक्ष् mit वि) n. 1) *das Schauen* Kauç. 65. यश्चन्तुराश्चैरपि निपुणतमो वीक्षणादिक्रियासु Verz. d. Oxf. H. 143,b, No. 295. *das Anschauen, Anblicken:* गवां रविवीक्षणम् Varâh. Bṛh. S. 28,8. वीक्षणं राज्ञदासीनाम् — नाचचार सः Râǵa-Tar. 3,155. यन्मुखवीक्षणैकविधुर Kusum. 42,7. अन्योऽन्यं कृतवीक्षणौ *sich gegenseitig anblickend* MBh. 2,905. *Betrachtung, Durchmusterung:* रथ्यालिवीक्षणनिवेशितलोलदृष्टि Spr. (II) 2497. unter den 18 संस्काराः कुण्डानाम् Verz. d. Oxf. H. 105,a,33. *Blick:* अर्धकटाक्षवीक्षणैः Spr. 3319. सस्मेरापाङ्गवीक्षणैः Pańkar. 4,6,6. Bhâg. P. 6,18,27. 8,9,18. मुदित° adj. 6,14,57. कटाक्षवीक्षणा adj. f. Varâh. Bṛh. S. 12,9. — 2) in der Astrol. *aspectus planetarum* Varâh. Bṛh. 2,13. 3,5. 4,11. 19,4. 9.

वीक्षणीय (wie eben) adj. *anzuschauen, anzublicken, zu betrachten:* वरचरनयनैर्मण्डलम् Spr. 1314. सुता नाहं त्वया वीक्षणीया Kathâs. 105, 60. *worauf man seine Aufmerksamkeit zu richten hat* Verz. d. Oxf. H 223,b, No. 544, Çl. 2.

वीक्षा (wie eben) f. gaṇa कृत्त्रादि zu P. 4,4,62. *das Anschauen, Anblicken:* सीताशपथवीक्षार्थं सर्वं एव समागताः R. 7,96,8. *Untersuchung:* न स्वपेच्च तथा गर्ते विना वीक्षां कथं च न Verz. d. Oxf. H. 268,a,40. सूक्ष्मदृष्ट्या वीक्षां चक्रे Pańkat. 62,12. *Einsicht, Erkenntniss* (= ज्ञान Comm.) Bhâg. P. 11,18,37. वीक्षापन्न *vor Staunen hinsehend, überrascht, erstaunt* H. 433. Hâr. 152. — Vgl. वैक्ष.

वीक्षितर् (wie eben) nom. ag. *Beschauer:* तद्वी° Bhâg. P. 7,13,18.

वीक्षितव्य (wie eben) adj. *zu schauen, zu sehen:* (त्वया) पृष्ठतो वीक्षितव्यं (impers.) च मुकुर्वलितकंधरम् Kathâs. 39,133.

वीक्ष्य (wie eben) 1) adj. dass. H. an. 2,382. Med. j. 55. — 2) m. *a) Tänzer.* — *b) Pferd* Med. — 3) n. *Verwunderung, Staunen* H. ç. 88. H. an. Med.

वीखा f. *das Gehen* d. i. *eine best. Bewegung* H. 1500. Halâj. 4,41. — Vgl. वीङ्खा.

वीङ्क n. N. eines Sâman Pańkav. Br. 14,6,9. Lâṭj. 3,4,13. fg. Ind. St. 3,237,b. 212,a (unter औदल). गृत्समदस्य (वसिष्ठस्य) वीङ्कम् 215, a. 233, b.

वीङ्खा (von ईङ्ख् mit वि) f. 1) *eine best. Bewegung* H. an. 2,25. *des Pferdes* Çabdar. im ÇKDr. *Tanz* H. an. — 2) = संधि Çabdar. im ÇKDr. — 3) *Carpopogon pruriens* Roxb. H. an. — Vgl. वीखा.

वीच = 2. वीचि in अम्बु°.

1. वीचि f. *Trug, Verführung:* कद्द ब्रव आहनो वीच्या नॄन् RV. 10, 10,6. — Vgl. व्याज.

2. वीचि Uṇâdis. 4,72. f. Siddh. K. 247,b, 1 v. u. m. f. AK. Med. 1) *Welle, Woge* AK. 1,2,3,5. Trik. 3,3,79. H. 1075. Med. k. 10. °मालाकुलस्य सागरस्य R. 5,74,35. नदीवीचिषु Megh. 102. 29. सरसि Ragh. 1,43. 12,100. पवनोद्भ्रान्तवीचिविभ्रमभङ्गुर Spr. 2036. को वा वीचिषु प्रत्ययः 2256. Varâh. Bṛh. S. 27,1. LA. (III) 88,3. Prab. 97,19. Râǵa-Tar. 4,149. 541. रोमाञ्च° Kaurap. 44. वीची Halâj. 3,31. H. an. 2,60 (विची gedr.). Hâr. 205. समुद्रवीचीव Spr. 3180. Varâh. Bṛh. S. 56, 4. सर्वः शब्दो नभोवृत्तिः श्रोत्रोत्पन्नस्तु गृह्यते। वीचीतरंगन्यायेन तदुत्पत्तिस्तु कीर्तिता ॥ Bhâshâpar. 164. Am Ende eines adj. comp.: पवनोद्धूतवीचिना सागरेण R. 5,9,14. Ragh. 6,56. सरितः स्फुरद्गिरिगुरुप्रावस्खलद्वीचयः Spr. 1619. Kathâs. 39,144. °वीचिक 43,136. — 2) *eine best. Hölle:* नरके °संज्ञके R. 7,59,3,50. wohl ऽवीचि° zu lesen. — 3) = सुख Trik. H. an. Med. — 4) = अवकाश H. an. Med. — 5) = स्वल्प Trik. = अल्प H. an. — 6) = आलि H. an. — 7) = किरण Gaṭâdh. im ÇKDr. — Vgl. अ°, महा°.

वीचिमालिन् m. *das Meer* H. 1073.

वीचीकाक m. *ein best. Vogel* Mârk. P. 15,22.

वीज्, वीजते (गतौ) Dhâtup. 6,25. act. वीजति (med. s. u. परि) *befächeln:* (तम्) वीजन्ति वालव्यजनैः Hariv. 13092. वीजन्मारुत *anwehend*

13444. *besprengen:* (तं विसंज्ञम्) जलेनात्यर्थशीतेन वीजन्तः पुण्यगन्धिना MBh. 7, 307. — caus. वीजयति Dhâtup. 35, 84, *q* (व्यजने). *befächeln:* (तम्) प्रमार्जयन्ती वीजयन्ती च मूर्छितम् R. 2,61,2. शाखाभिः Suçr. 1,371,7. व्यजनैः 2,36,6. पटान्तेन Mṛkkh. 134,11. Mâlatîm. 63, 9. R. Gorr. 2,35, 17. Kathâs. 25,7. Râǵa-Tar. 1,214. Bhâg. P. 10,60,7. प्रदीप्तमग्निं पवनस्तेषु वेश्मस्ववीजयत् *anfachen* R. 5,50,8. wohl *blasen auf* so v. a. *durch Blasen einen Ton hervorbringen auf:* न वीजयेत्केशमुखनखवस्त्रगात्राणि Suçr. 2,145,3. pass.: वीज्यमानो गन्धमादनवायुना *angeweht* MBh. 3,11087. R. 3,78,28. Kumâras. 2,42. व्यजनैः *befächelt werden* MBh. 5, 7105. 7,310. R. 2,26,11 (13 Gorr.). 42,15. Mṛkkh. 83,3. Spr. 2054. Kathâs. 20,178. Saddh. P. 4,12,*a* (fälschlich वीह्यमान gedr.). partic. वीजित *befächelt:* व्यजन° MBh. 13,4252. Hariv. 3824. Kathâs. 17,109. वासितानिल° *angeweht* (हिमवत्) Mârk. P. 61,25. Ghat. 15. — Vgl. व्यज् und व्यजन.

— अनु, partic. °वीजित *angeweht:* पुष्पगन्धवहैः पुण्यैर्वायुभिः MBh. 3,1764.

— अभि caus. *befächeln:* तं विप्रम् — क्लमापनयनार्थं स पक्षाभ्यामभ्यवीजयत् MBh. 12,6347. चामरशतैरभिवीज्यमानः Ṛt. 3,4.

— आ caus. dass. Hariv. 4444.

— उद् caus. *anwehen:* उद्वीज्यमानो वायुना पुण्यगन्धिना MBh. 3,1757.

— उप *befächeln:* यं पुरा व्यजनैरग्र्यैरुपवीजन्ति योषितः MBh. 11,501. — caus. dass. Çâk. 33,6. उपवीज्य 7. उपवीजयति als Erklärung von उपवाजयति Schol. zu Kâtj. Çr. 26,4,2. पुण्यैर्मारुतैरुपवीजितम् (वनम्) *angeweht* MBh. 1,1308. Mṛkkh. 91,11.

— परि *befächeln:* यं पुरा पर्यवीजन्त तालवृन्तैर्वरस्त्रियः MBh. 15,1060. 13,7773. — caus. dass.: व्यजनं गृह्य राघवं पर्यवीजयत् R. 6,112,25. Bhâg. P. 10,69,13. Mârk. P. 21,25. परिवीजित *befächelt* R. 5,45,9. छायायां करिणः श्राद्धं तत्कर्णपरिवीजिते (so die ed. Bomb., Nîlak. ergänzt देशे) *durchweht* MBh. 3,13471.

— सम् caus. *befächeln* Bhâg. P. 10,15,17.

वीजन 1) n. (von वीज्) *das Befächeln* Bhâg. P. 10,59,45. भेजे राजवधूमध्ये वालव्यजनवीजनम् Râǵa-Tar. 5,386. *das Zufächeln:* तदनु ज्वलनं मदर्पितं त्वरयेर्दक्षिणवातवीजनैः Kumâras. 4,36. Kathâs. 117,53. = व्यजन *Fächer* H. 687, Schol. Sârasvata im ÇKDr. — 2) n. = वस्तु Sârasvata ebend. — 3) m. Bez. zweier Vögel: = कोक und जीवंजीव ebend.

वीजर्या indecl. in Verbindung mit 1. कर् gaṇa साक्षादादि zu P. 1,4, 74. Hängt vielleicht wie बीजरुहा mit बीज zusammen, in welchem Falle es mit ब zu schreiben wäre.

वीट n. Siddh. K. 249,*a*,3. वीटा f. *ein runder Kieselstein,* Spielzeug von Kindern MBh. 1,5150. fg. 5156. fg. 5161. als Kasteiung im Munde gehalten 15,1022. °मुख 693. VP. (2te Aufl.) 2,104. — Vgl. नाग°.

वीटि und वीटी f. = वीटिका ÇKDr. ohne Angabe einer Aut.

वीटिका (von वीटा) f. 1) *Kugel,* insbes. *geschnittene, mit Gewürzen bestreute und in ein Betelblatt gewickelte Arecanuss in Kugelform:* वासताम्बूल° Daçak. 92,5. Kathâs. 55,40 (am Ende eines adj. comp.). Râǵa-Tar. 4,430. Vgl. पर्ण°. — 2) *die Bänder eines Mieders* Spr. (II) 2664.

वीड्, वीळयति, वीळयते act. *festmachen,* med. *fest —, hart sein* Nir. 9,12. यद्वीळयासि वीळु तत् Ṛv. 8,45,6. अरिषण्यन्वीळयस्वा वनस्पते 2,37,3. 3,53,19. VS. 6,35. Çâṅkh. Gṛhj. 1,19. partic. वीळित *hart, fest* Ṛv. 2,21,4. अश्मन्नश्मन्द्वळ्हानीदत्त वीळिता 24,3. 6,22,6. आयुध TS. 4,7,15,4.

वीडु, वीळु adj. f. वीड्वी *hart, fest;* n. *das Feste, fester Verschluss* Naigh. 2,9. Ṛv. 1,6,5. 39,2. 71,2. वीळौ चिद्दिन्द्रो यो असुन्वतो वधः 101,4. वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन् 3,31,5. अन्त 53,17.19. अंहस् 4,3, 14. येन दृळ्हा समत्स्वा वीळु चित्साहिषीमहि 8,40,1. 66,9. Agni 8, 44,27. अद्रयः 77,3. VS. 6,35. AV. 1,2,2 (wohl fehlerhaft).

वीळुजम्भ adj. *der ein hartes Gebiss hat* Ṛv. 3,29,13.

वीळुद्वेषस् adj. *unbeugsam hassend, — verfolgend* Ṛv. 2,24,13.

वीळुपत्मन् adj. *unnachgiebig fliegend* Ṛv. 1,116,2.

वीळुपवि adj. *mit harter Schiene beschlagen:* Wagen Ṛv. 5,58,6. 8,20,2.

वीळुपाणि und वीळुपाणि adj. *harthufig* Ṛv. 1,38,11. 7,73,4.

वीळुहरस् adj. *nachhaltig glühend* Ṛv. 10,109,1.

वीड्वङ्ग adj. *festgliederig* Nir. 9,12. Ṛv. 1,118,9. Wagen 6,47,26. 8, 74,7. VS. 11,44.

वीढ, तदभि निवीढं पर्युषति यथा न व्यथेत Çâṅkh. Çr. 17,10,16 wohl fehlerhaft für निबाढं (zu बंह्).

वीणय् s. उप°.

वीणा (वीणा Uṇâdis. 3,15) f. 1) *Laute* AK. 1,1,7,3. H. 286. fg. an. 2,154. Med. ṇ. 28. Halâj. 1,96. वाग्वनस्पतिषु वदति या दुन्दुभौ या तूणवे या वीणायाम् TS. 6,1,4,1. Çat. Br. 3,2,4,6. Kauç. 84. Kâth. 34, 5. Lâtj. 4,2,1. Haṁsanâdop. in Ind. St. 1,386. Megh. 84. Spr. (II) 735. Varâh. Bṛh. S. 69,29. शततन्त्री Çâṅkh. Çr. 17,3,1. सप्ततन्त्री MBh. 3, 10664. °भिदा विवेकः Verz. d. Oxf. H. 200,*b*,11. वीणेव मधुरालापा गान्धारं साधु मूर्छती MBh. 4,515. °शब्द Çâṅkh. Gṛhj. 4,7. वीणायाः क्वणितम् AK. 1,1,6,3. मृदङ्गवेणुवीणानां रम्यैः शब्दैः R. 1,5,19. वेणुवीणानिनादैः Weber, Kṛshṇaǵ. 287. वीणावेणवादिध्वनिवत् Sarvadarçanas. 157,22. वीणाः प्रमुमुचुः स्वरान् R. 2,91,26. वाद्यते Çat. Br. 13,1,5,1. Pańkat. 94,4. Hit. 63,13. संवादयन्वीणाम् Kathâs. 21,4. उद्धता Kâtj. Çr. 21,3, 7. वितुदन् (so ed. Bomb.) वीणाम् Bhâg. P. 4,8,38. °वाणी adj. Çrut. 15. महा°, पिशील° Lâtj. 4,2,4. सवेणुवीणम् adv. Varâh. Bṛh. S. 19,18. — 2) in der Astrol. Bez. *einer best. Constellation, wenn nämlich alle Planeten in 7 Häusern stehen,* Varâh. Bṛh. 12,17; vgl. वल्लकी. — 3) *Blitz* H. an. Med. — 4) N. pr. eines Flusses MBh. 6,328 (VP. 182); वाणी ed. Bomb. — 5) N. pr. einer Joginî, = Sambhogajakshiṇî Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,40. — Vgl. अलाबु° (unter अलाबु 1), काण्ड°, दक्ष°, राम°, सूत्र°, प्रवीण, वैणिक.

वीणाकर्ण m. N. pr. eines Mannes Hit. 27,13.

वीणागणगिन् m. *Musikmeister, Vorstand einer Bande* Çat. Br. 13, 4,3,3. 4,2. Çâṅkh. Çr. 16,1,29. Kâtj. Çr. 20,3,2.

वीणागाथिन् m. *Lautenspieler* TBr. 3,9,14,1. Çat. Br. 13,1,5,1. 4, 2,8. 11. 14. 3,5. Âçv. Gṛhj. 1,14,6. Pâr. Gṛhj. 1,15. Kâtj. Çr. 20,3,7. Çâṅkh. Çr. 16,1,29.

वीणातन्त्र n. N. eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,9. 40.

वीणादण्ड m. *der Hals einer Laute* AK. 1,1,7,7. Trik. 3,3,399.

वीणादत्त m. N. pr. eines Gandharva Kathâs. 106,1. fgg.

वीणानुबन्ध m. *das obere Ende des Halses der Laute, wo die Saiten*

befestigt werden, Hâr. 33.

वीणापाणि adj. *eine Laute in der Hand haltend;* m. Bein. Nârada's Pańkar. 1,7,9. — Vgl. वीणास्य.

वीणाप्रसेव m. *Dämpfer an der Laute* Trik. 3,3,285.

1. वीणारव m. *Lautenton;* am Ende eines adj. comp. f. आ Kathâs. 90,42.

2. वीणारव adj. *wie eine Laute summend;* f. आ N. pr. einer Fliege Pańkat. 81,5.

वीणार्ल adj. von वीणा gaṇa सिध्मादि zu P. 5,2,97.

वीणावत्सराज m. N. pr. eines *Fürsten* Pańkat. 242,15.

वीणावत् (von वीणा) 1) adj. *mit einer Laute versehen.* — 2) f. वीणावती N. pr. P. 6,1,219, Schol.

वीणावाद m. 1) *Lautenspieler* AK. 2,10,13. H. 924. VS. 30,20. Çat. Br. 14,5,4,8. 7,3,9. — 2) *Lautenspiel* Kathâs. 63,161.

वीणावादक m. = वीणावाद 1) Çabdar. im ÇKDr.

वीणावादन n. *Plectron* AK. 1,1,7,6.

वीणावाद्य n. *Lautenspiel* Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,9.

वीणाशिल्प n. *die Kunst des Lautenspiels* Pańkar. 1,11,29.

वीणास्य m. Bein. Nârada's Ǵatâdh. im ÇKDr. — Vgl. वीणापाणि.

वीणाहस्त adj. *eine Laute in der Hand haltend:* Çiva Çiv.

वीणिन् (von वीणा) adj. gaṇa व्रीह्यादि zu P. 5,2,116. *mit einer Laute versehen, die Laute spielend* Megh. 46. Kathâs. 86,44.

1. वीत (von 1. वी) partic. *begehrt, beliebt, gern genossen:* वीततमानि हव्या ṚV. 7,1,18. वीते अध्वरे 9,82,3. इष्टं वीतमभिगूर्तम् 1,162,15. इष्टं च वीतं चाभूत् Çâṅkh. Çr. 1,14,20. — Vgl. वीतहव्य.

2. वीत (von 3. वी) partic. n. *das Lenken eines Elephanten* (mit den Füssen und dem Haken) Trik. 3,3,184. H. 1231. an. 2,196. Med. t. 58. Halâj. 2,67. Çiç. 5,47.

3. वीत (von व्या) partic. *verborgen:* तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम् ṚV. 4,7,6.

4. वीत (von 3. इ mit वि) partic. *vergangen, geschwunden, nicht da seiend, fehlend:* °हिरण्मय *der kein goldenes* (Gefäss) *besitzt;* davon nom. abstr. °त्व Ragh. 5,2. Andere Belege s. u. 3. इ mit वि. — 2) *abgängig, unbrauchbar;* von Pferden und Elephanten AK. 2,8,2,11. Trik. 3,3,184. H. 1252. an. 2,196. Med. t. 58. — 3) *beruhigt* (vgl. वीतराग) H. an.

5. वीत 1) adj. *schlicht, geradlinig:* पृष्ठेव वीता (= कान्तानि Sâj.) वृजिना च ṚV. 4,2,11. स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् 9,97,17. — 2) f. आ *Reihe* (nebeneinander liegender Gegenstände): दर्भ° (= दर्भराजि Comm.) Âçv. Gṛhj. 4,8,27. — Vgl. °पृष्ठ und वीथि.

वीतंस (von 1. तन् mit वि) m. *jedes zum Fangen und Aufbewahren von Wild und Vögeln dienendes Geräth: Netz, Käfig* u. s. w. AK. 2,10, 26. H. 931. Med. s. 39. — Vgl. अवतंस und उत्तंस.

वीतक (von 3. वीत) m. = विवीत. अवीतके Jâǵn. 2,271.

वीतदम्भ (4. वीत + दम्भ) adj. *frei von Verstellung, — Heuchelei* H. 490.

वीतन m. du. *die zur Seite des Kehlkopfs liegenden Knorpeln* H. 587.

वीतपृष्ठ (5. वीत + पृष्ठ) adj. *schlichten Rücken habend* (als gute Eigenschaft des Rosses) ṚV. 1,162,7. 181,2. Rosse des Indra u. s. w. 3, 35,5. 5,45,10. 8,6,42. तन्वः VS. 19,44 (vgl. AV. 6,62,2. TBr. 1,4,8,2).

वीतभय (4. वीत + भय) adj. *frei von Furcht:* Vishṇu ÇKDr. (nach dem Vishṇusahasranâmastotra). Çiva Çiv.

वीतभीति (4. वीत + भी°) 1) adj. *frei von Furcht.* — 2) m. N. pr. eines Asura Kathâs. 44,144. 45,378. 49,1.

वीतराग (4. वीत + राग) adj. *frei von aller Leidenschaft, — allen weltlichen Begierden* MBh. 12,13684. Bhag. 2,56 (°भयक्रोध). 8,11. Spr. (II) 1574. (I) 1313. Hit. 19,21. Vet. in LA. (III) 20,6. Sarvadarçanas. 64, 16. Çiva Çiv. m. Bez. *eines* Buddha Trik. 1,1,11. Wilson, Sel. Works II, 27. Beiw. acht bestimmter Bodhisattva und zugleich Bez. *ihrer Symbole* 15. 17. fg. Burnouf in Lot. de la b. l. 500. fg. Bez. *eines* Arhant's *der* Ǵaina H. 25. Halâj. 1,86. Pârçvanâthak. 2,27 (nach Aufrecht).

वीतरागस्तुति f. Titel eines religiösen Gedichtes bei den Ǵaina Sarvadarçanas. 30,20.

वीतवत् adj. *ein* वीत (von 1. वी) d. h. वेतु, वीतम् *und andere Formen der Wurzel enthaltend* Âçv. Çr. 1,8,4.

वीतवार (5. वीत + 1. वार) adj. *einen schlichten Schweif habend:* Ross ṚV. 8,46,23.

वीतशोक (4. वीत + शोक) 1) adj. *frei von Kummer* Çvetâçv. Up. 2, 14. MBh. 3,12207. Davon nom. abstr. °ता f. Jâǵn. 1,265. — 2) m. = अशोक *Jonesia Açoka* Çabdam. im ÇKDr. MBh. 3,2503. — Vgl. वीताशोक.

वीतसूत्र n. = उपवीत Vikram. 157.

वीतहव्य (1. वीत + हव्य) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âṅgirasa, Liedverfassers von ṚV. 6,15. ṚV. Anukr. ṚV. 6,15,2. 3. 7, 19,3. AV. 6,137,1. Çrâjasa TS. 5,6,5,3. Pańkav. Br. 9,1,9. 25,16,3. ein Fürst (हैहय), der die Brahmanenwürde erlangt, MBh. 13,1942. fgg. वीतहव्योपाख्यान Vâsishṭharâmâjaṇa in Verz. d. Oxf. H. 354,*a*,33. Sohn Sunaja's (Çunaka's) und Vater Dhṛti's VP. 390. Bhâg. P. 9,13,26. unter den Beinn. Kṛshṇa's Pańkar. 4,8,42. pl. *die Söhne* Vîtahavja's MBh. 13,1952. 1977. — Vgl. वैतहव्य.

वीतहोत्र MBh. 7,2436 fehlerhaft für वीतिहोत्र, wie die ed. Bomb. liest.

वीताशोक m. N. pr. = विगताशोक Burnouf, Intr. 360, N. 2. 415. fgg. 425, N. 1. Târan. 287.

1. वीति (von 1. वी) 1) f. im ṚV. oxyt., in den übrigen Schriften parox. P. 3,3,96. *Genuss, Ergötzung, beliebtes Mahl* oder *Trank* (= भक्षण, अशन Trik. 3,2,9. H. an. 2,196. Med. t. 59); *Genuss* so v. a. *Vortheil;* dat. gewöhnlich infinitivisch. अरं गन्तं हविषो वीतये मे ṚV. 7,68, 2. 1,5,5. 13,2. यस्य वेषि हव्यानि वीतये 74,4. 6. 135,1. 3. 4. 142,13. 5,26,2. 51,5. 6,16,10. आ वक्षि प्रयांसि वीतये देवान् 44. 7,16,4. 57, 2. 8,49,4. 20,10. 16. 82,22. 9,62,23. स नः शर्माणि वीतये यच्छतु 3,13, 4. 5,59,8. उत नो गोषणिं धियं कृणुहि वीतये 6,53,10. instr.: प्र वीती होतारं दिव्यं जिगाति 6,6,1. वीती यो देवं मर्तो दुवस्येत् 16,46. वीत्यर्ष चनिष्ठया 9,9,2. 61,1. वीती जनस्य दिव्यस्य (सुवानः) 91,2. Vâlakh. 6,6. acc.: अभ्यर्ष देवानां वीतिमन्धसा ṚV. 9,1,4. इन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष 97,25. — H. an. und Med. geben noch folgende Bedd. (vgl. die aus dem Dhâtup. angegebenen Bedd. unter 1. वी): गति, प्रजन, दीप्ति und धावन. Die Bed. *Glanz* könnte man versucht sein anzunehmen im comp. सुवर्णवीतिप्रतिमाः (स्त्रियः) R. ed. Gorr. 2,100,43; aber hier ist वीति

wahrscheinlich nur verlesen für रीति *Glockengut.* — 2) m. Bez. des Agni, daher genommen, dass die an ihn gerichteten Sprüche das Wort वीति enthalten, Ait. Br. 7,6. — Vgl. गौरी°, देव°, रथ°.

2. वीति (von 3. इ mit वि) f. *Scheidung:* वीत्यै TBr. 3,2,6,2. TS. 5, 1,5,8. Kâtj. Çr. 25,11,33.

3. वीति m. = 3. पीति *Pferd* H. 1233. an. 2,196. Râǵa-Tar. 7,377.

वीतिन् m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁsk. K. 184,*a*,11.

वीतिराधस् (1. वीति + रा°) adj. *Genuss gewährend:* Soma R̥V. 9,62,29.

वीतिहोत्र (1. वीति + होत्रा) 1) adj. *a)* (Götter) *zum Genuss oder Mahl ladend:* को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः R̥V. 1,84,18. अभि वीतिहोत्रं स्वस्तौ 2,38,1. 8,31,9. Agni 3,24,2. 5,26,3. — *b)* etwa *zum Mahle geladen:* देवाः VS. 17,78. — 2) m. *a)* ein N. *des Feuers* AK. 1,1,1,48. H. 1098. an. 4,281. Med. r. 299. Halâj. 1,64. Râǵa-Tar. 7,377. 1499. 8,1473. Bhâg. P. 5,1,25. °प्रिया und °दयिता so v. a. स्वाहा Paṅkar. 2, 3,102. 3,8,15. — *b)* pl. Bez. *der Verehrer einer Form des Feuers* Verz. d. Oxf. H. 248,*b*,10. — *c) die Sonne* H. an. Med. — *d)* N. pr. eines Fürsten MBh. 1,226 (eig. 231). eines Sohnes des Prijavrata Bhâg. P. 5,1,25. 34. 20,31. des Indrasena 9,2,20. des Sukumâra 17,9. des Tâlaǵaṅgha 23,28. VP. 418. pl. *seine Nachkommen*, ein zu den Haihaja gezählter Stamm, N. 20. MBh. 7,2436 (वीत° ed. Calc.). Hariv. 1893. eine Dynastie, aus der 20 Fürsten hervorgegangen sein sollen, VP. 467, N. 17. sg. N. pr. eines Priesters Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,15.

वीत्त partic. praet. von 1. दा mit वि AV. Prât. 3,11, Schol.

वीथि und वीथी (verwandt mit 3. वीत) f. 1) *Reihe* AK. 2,4,1,4. Trik. 3,3,197. H. 1423. an. 2,220. Med. th. 12. Halâj. 4,36. बालपादप° Çâk. Ch. 45,3. चाण्डालागारवीथिषु Spr. 4967. क्रीडावसथवीथिषु Râǵa-Tar. 3,360. — 2) *Strasse, Weg* AK. 3,4,15,90. H. an. Med. MBh. 2,822. वीथीं कुर्वन् — द्रावयन्मम वाहिनीम् 5,2049. का वीथी भवतामिह 2982. 13,3248. 3510. माल्यापणानाम् Hariv. 4478. नगरापणवीथ्यन्तः Râǵa-Tar. 6,173. so v. a. आपण° *Marktstrasse* Çiç. 9,32. वीथ्यन्तरापणगत Varâh. Br̥h. 27 (25), 19. Hariv. 4533. R. 5,20,10. 95,13. 6,92,3. Spr. (II) 1658. (I) 1191. Verz. d. Oxf. H. 93,*b*, N. 1. Javaneçvara in Z. f. d. K. d. M. 4, 345. Paṅkat. 129,14. दरिद्र° Saddh. P. 4,13,*a*. bildlich: खिलीभूताः कृतघ्नस्य वीथयः Râǵa-Tar. 3,302. — 3) *Strasse am Himmel, eine drei* Nakshatra *umfassende Strecke einer Planetenbahn* Varâh. Br̥h. S. 9, 1. 5. 8. 9. VP. 266, N. 21. — 4) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Trik. H. an. Med. Hâr. 152. — 5) *Bildergallerie* Uttarar. 6,9 (वीथिका die neuere Ausg.). — 6) *ein best. einactiges Drama* H. 284. H. an. Med. Bhar. Nâṭjaç. 18,2. 59 (सवीथीक). 102. 20,26. Daçar. 1,8. 3,5. 6. 62. Sâh. D. 286. 433. 520. fg. नानारसानां चात्र मालात्रूपतया स्थितत्वाद्वीथीयं यथा मालविका (!) 532, Comm. Pratâpar. 20,*a*, 1. 23,*a*, 8. 24,*b*,9. — Vgl. अन्न°, उत्तर°, गज°, गो°, घन°, जारद्गव°, नक्षत्र°, नभो°, नाग°, पण्य°, पाद°, मृग°, रथ°, राज°, सुर°, सोम°, स्ववीथि.

वीथिका f. = वीथी Çabdar. im ÇKDr. 1) *Reihe:* तमालवनवीथिका adj. (भू) Kathâs. 73,30. — 2) *Strasse:* चत्वरापणवीथिकैः (वीथिकस्यास्त्रीत्वमार्षम् Comm.) R. 7,70,11. संवृतापणवीथिका adj. 2,41,21. — 3) *Terrasse, der freie Raum zwischen Haus und Strasse* Varâh. Br̥h. S. 53,20. am Ende eines adj. comp. f. Hariv. 12705. — 4) *Bildergallerie* (= चित्रपटगतपङ्क्ति Glosse) Uttarar. ed. Cow. 9,13. — 5) = वीथि 6) Bhar. Nâṭjaç. 18,103. — Vgl. पण्य°.

वीथीकर् *in Reihen aufstellen:* सुवर्णं °कृतम् (v. l. राशीकृतम्) MBh. 1,7364.

वीध्र (वीध्र Uṇâdis. 2,26) adj. = विमल AK. 3,2,5. H. 1436. Halâj. 1,132. n. = नभस्, वायु, अग्नि Uṇâdivr. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. वीध्रे *bei hellem Himmel* (vgl. κεδρο, αἴθρη): वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तम् AV. 4,20,7. यद्वीध्रे स्तनयति प्रजापतिः 9,1,24. Kâṭh. 13,12. °बिन्दु *bei Sonnenschein gefallener Tropfen* Kauç. 46.

वैध्य (von वीध्र) adj. *zum hellen Himmel gehörig* u. s. w. VS. 16,38. ईध्रिय v. l. TS.

वीनाह (von 1. नह् mit वि) m. *Brunnendeckel* AK. 1,2,3,26. H. 1092. MBh. 11,138. 146.

वीनाहिन् (von वीनाह) m. *Brunnen* Hâr. 41.

वीन्द्वर्क (2. वि + इन्दु - अर्क) adj. *ohne —, mit Ausnahme von Mond und Sonne* Varâh. Laghuǵ. 2,9 in Ind. St. 2,285.

वीप्सा (vom desid. von आप् mit वि) f. 1) *das durch das distributive «je»* (im Sanskrit durch Wiederholung des Wortes) *ausgedrückte Verhältniss* AV. Prât. 4,19. P. 1,4,90. 5,4,1. 8,1,4. AK. 3,4,33 (28), 6. — 2) *Wiederholung* (eines Wortes) Çaṁk. zu Khând. Up. S. 13. zu Br̥h. Âr. Up. S. 141. Schol. zu Kap. 1,165. Verz. d. Oxf. H. 178,*a*,11.

वीप्साविचार m. Titel einer Schrift Hall 60.

वीबर्ह (von बर्ह् mit वि) m. *das Zerstreuen, Verjagen* AV. 2,33,7. — Vgl. विबर्ह.

वीबुकोश m. *Fliegenwedel* (s. चामर) Çabdârthak. bei Wilson.

वीमार्ग (von 1. मर्ज् mit वि) m. P. 6,3,122, Schol.

वीर (zu derselben Wurzel wie 3. वयस्) Uṇâdis. 2,13. 1) m. *a) Mann;* bes. *ein kraftvoller Mann, Held;* pl. *Männer, Leute* Nir. 1,7. AK. 2,8, 2,45. H. 365. an. 2,457 (नट *Schauspieler* fehlerhaft für भट). Med. r. 68. Halâj. 2,199. Viçva bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,13. R̥V. 1,18,4. 114,8. 4, 29,2. गोभिः, वीरैः 5,20,4. 61,5. 6,53,2. 7,32,6. मर्त्य 4,15,5. 8,23,19. नर्य 7,1,21. अस्तार् 2,42,2. सुघि 6,23,3. दाश्वंस् 65,4. विदथ्य 7,36,8. रेवत् 7,42,4. AV. 2,26,4. 3,5,8. Çat. Br. 11,4,1,2. 14,8,14,1. Paṅkav. Br. 19,1,4. अस्मि वो वीरः so v. a. *ich bin euer Anführer* Ait. Br. 7,27. त्वया वीरेण वीरवो ऽभि ष्याम पृतन्यतः R̥V. 9,35,3. collect.: अर्धं वीरस्य 7,18,16. — मृगराज्ञो वृकश्चैव बुद्धिमानपि मूषिकः। निर्जिता यत्त्वया वीरास्तस्माद्वीरतरो भवान्॥ MBh. 1,5589. 3,2153. fg. पाण्डुपांश्च वीरान् 10081. वीरा रणे वीरतरेण भग्नाः 4,1673. 8,448. Hariv. 1945. 8402. R. 1,1,24. 2,27,3. Varâh. Br̥h. S. 101,11. अश्व, द्विप, वीर Ragh. 7,39. Spr. (II) 1282. 1833. 1947. Kathâs. 10,29. 47,93. Râǵa-Tar. 2,103. 5,234. 6,284. 349. प्रथम Prab. 70,6. 72,7. पयोधिगभीर° 74,6. 85,3. Bhâg. P. 4,10, 19. 17,35. fg. उत्थान° *ein Mann der That,* वाग्वीर *ein Mann des Wortes* Spr. (II) 1199. सैन्यं कृतवीरम् R. 2,52,38. पृतना कृतवीरेव R. Gorr. 2,51,5. नर° *ein heldenmüthiger —, ausgezeichneter Mann* MBh. 3,2722. नरवीरलोक so v. a. *die Menschenkinder* Spr. 2476. वीर = श्रेष्ठ H. an. Viçva a. a. O. = उत्तर (उत्तम?) Med. Am Anfange eines comp. als Attributiv P. 2,1,58. — *b) die Leute* so v. a. *die Mannschaft, Diener,*

Zugehörige u. s. w.: असुरस्य वीराः RV. 1,122,1. 2,30,4. 3,53,7. 56,8. 7,99,5. 10,10,2. 66,2. देवानाम् Çat. Br. 2,2,4,10. Kâtj. Çr. 25,5,28. RV. 2,14,7. वीरेभिर्वीरान्वनवद्वनुष्यतः 25,2. 5,85,4. अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु 10,103,11. मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् 10,18,1. Bhâg. P. 4,7,17. °समन्वित *von seinen Mannen umgeben* Spr. 4310. — c) Götter, namentlich Indra RV. 1,30,5. 40,3. 4,24,1. 6,21,1. 32,1. 7,90. 8,2,23. 10,28,12. नर्य 6,24,2. शिप्रिन् 8,32,24. Çat. Br. 1,6,4,2. die Açvin RV. 6,63,10. Vishṇu Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,82. 93. 143. 146. — d) *Mann* so v. a. *Gatte:* योषेव कृतवीरा MBh. 6,560. कृतवीरासु क्षत्रियासु 14,833. R. Gorr. 2,85,12. अवीरा *Wittwe* Bhâg. P. 6,19,25. °हीना स्त्री Mârk. P. 35,31. — e) *männliches Kind, Sohn;* collect. *männliche Nachkommenschaft* RV. 2,32,4. 3,4,9. 36,10. 7,34,20. 92,3. स वीरैर्दशभिर्वि यूयाः 104,15. 8,92,4. 10,80,1. AV. 3,23,2. VS. 4,23. 7,13. 29,9. TBr. 1,3,10,7. 2,1,14. तस्य चत्वारो वीरा अजायन्त TS. 7,1,8,1. Çat. Br. 2,2,4,10. Çâṅkh. Gṛhj. 1,5.9. Âçv. Gṛhj. 1,13,6. Kauç. 35. — f) *Männchen eines Thiers:* अश्व AV. 12,1,25. वत्स Çâṅkh. Çr. 2,6,6.7. — g) *der heroische Grundton* (रस) *in einem Kunstwerke* AK. 1,1,2,17. fg. H. 294. Med. Halâj. 1,92. Sâh. D. 38,13. 234. R. 1,4,7. R. Gorr. 1,3,46. Verz. d. Oxf. H. 123,a,33. Mâlav. 77. — h) bei den Tântrika *ein Eingeweihter* (steht zwischen दिव्य und पशु) Rudrajâmala im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 89,a,29. 94,b,24. 95,a,10. 101,b,7. — i) *Feuer* Mukuṭa zu AK. nach Wilson; *Opferfeuer* Bharata zu AK. nach ÇKDr. und Wilson; eine aus वीरहन् geschlossene Bed. *N. eines best. Feuers,* eines Sohnes des Tapas MBh. 3,14168. — k) Bez. verschiedener Pflanzen und Wurzeln: = वराहकन्द, लताकरञ्ज, करवीर, अर्जुन Râgan. im ÇKDr. — l) N. pr. α) ein Asura MBh. 1,2541. 2659. ein Sohn Dhṛtarâshṭra's 2738. Bharadvâga's 3,14138. ein Sohn des Purusha Vairâga und Vater des Prijavrata und Uttânapâda Hariv. 58. ein Sohn des Gṛṅgima 1943. zwei Söhne Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61,13. fg. der letzte Arhant der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 28. 30. H. an. Verz. d. Oxf. H. 186,b,17. 19. Çatr. 1,5. ein Sohn Kshupa's und Vater Viviṃça's Mârk. P. 120,13. Vater einer Lîlâvatî 123,17. ein Lehrer des Vinaja Wassiljew 80. — Kathâs. 54,220. 225. — β) pl. eine Gruppe von Göttern unter Manu Tâmasa Bhâg. P. 8,1,28. — 2) f. वीरा a) *eine Frau, deren Gatte und Söhne am Leben sind,* H. an. Med. Viçva a. a. O. — b) *ein berauschendes Getränk* Trik. 2,10,15. H. an. Med. Viçva a. a. O. — c) Bez. verschiedener Pflanzen und vegetabilischer Stoffe: = क्षीरकाकोली, तामलकी, एलवालु (एलवालुका) und रम्भा H. an. Med. und Viçva. = गम्भारिका (गम्भारी) H. an. und Viçva. = दुग्धिका und क्षीरविदारी H. an. Med. = गोष्ठिडुम्बरिका H. an. = मलपू Med. = काकोली, महाशतावरी, गृहकन्या, ब्राह्मी und अतिविषा Râgan. im ÇKDr. = शिंशपा Ratnam. ebend. — d) N. pr. der Gattin Bharadvâga's MBh. 3,14138. Karaṃdhama's Mârk. P. 123,1. 125,1.7. 129,34. — e) N. pr. eines Flusses MBh. 6,329 (VP. 183). वाणी ed. Bomb. — 3) N. = शृङ्गी H. an. Med. = शृङ्गाटक Viçva a. a. O. = नल (नड ÇKDr.) Med. = नत H. an. = मरिच, पुष्करमूल, काञ्जिक, उशीर und आरुक Râgan. im ÇKDr. — Vgl. अ°, अरिष्ट°, आत्म°, उग्र°, ऋष°, एक° (in der ersten Bed. auch Ragh. 7,53. 60), चतुर्वीर, दश°, दान°, धान्य°, निर्वीर, पुरु°, प्र°, प्रति°, बद्ध°, भूत°, मन्दवीर, महा°, लोक°, वज्र°, विप्र° (*ein heldenmüthiger Brahmane* Kathâs. 10,24), शतो°, सर्व°, सु°, स्पार्ह°, वीर्य, वैर und वैरेय.

वीरक (von वीर) 1) m. a) *Männchen* RV. 8,80,2. — b) = करवीर *wohlriechender Oleander* Râgan. im ÇKDr. — c) pl. N. pr. einer Völkerschaft MBh. 8,2066. — d) N. pr. eines der 7 Weisen unter Manu Kâkshusha Bhâg. P. 8,5,8. eines Stadtaufsehers Mṛkkh. 99,14. 147,25. 148,5. — 2) f. वीरिका N. pr. der Gemahlin eines Harsha Verz. d. Oxf. H. 372,b, No. 267.

वीरकरा s. u. वीरंकरा.

वीरकर्म adj. wohl Bez. *des männlichen Gliedes* RV. 10,61,5.

वीरकर्मन् adj. *Mannesarbeit verrichtend* Nir. 10,19.

वीरकाटी f. N. pr. eines Dorfes Kshitîç. 52,19.

वीरकाम adj. *nach Söhnen verlangend* Çâṅkh. Br. 8,5. Çr. 5,9,23. Âçv. Çr. 10,1,16.

वीरकुक्षि adj. *Söhne im Leibe tragend:* नारी RV. 10,80,1.

वीरकेतु m. N. pr. eines Mannes: पाञ्चालपुत्र MBh. 7,4893. 4899. ein Fürst von Ajodhjâ Kathâs. 88,4. fgg. von Pâṭali Daçak. 24,5.

वीरकेशरिन् m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 152,b,29.

वीरक्षुरिका f. *Dolch:* आकृष्ट° adj. Kathâs. 20,137.

वीरगति f. *das Loos eines Helden,* Indra's *Himmel:* °गतिमाप्नुयात् MBh. 13,6560. °गतिं गतः Bhâg. P. 1,7,13.

वीरगवान्त, °गवान्तः MBh. 7,6944 fehlerhaft für वीरा गवान्तः; s. u. विभु 2) d).

वीरगोत्र n. *eine Heldenfamilie* Mârk. P. 125,7.

वीरघ्नी f. *Männer tödtend* AV. 6,133,2. Vgl. वीरहन्.

वीरंकरा f. N. pr. eines Flusses (*Helden bildend*) MBh. 6,333 (VP. 183). वीरकरा ed. Bomb.

वीरचक्रेश्वर m. ein N. Vishṇu's (*Herr eines Heeres von Helden*) Pañkar. 4,3,70.

वीरचक्षुष्मत् adj. *das Auge eines Helden habend:* Vishṇu R. 7,23,1,83.

वीरचरित्र (°चारित्र?) n. Titel einer Schrift Mack. Coll. I, 98.

वीरचर्य m. N. pr. eines Fürsten Târan. 227.

वीरचर्या f. *das Umherziehen eines Helden, das Ausgehen auf Abenteuer* Kathâs. 83,30. 124,57. Râga-Tar. 3,337.

वीरजयन्तिका f. *Kriegstanz* H. 281.

वीरजात adj. wohl *von Mannesart, in Männern —, in Söhnen bestehend:* वसु RV. 10,36,11.

वीरजित m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 54,138.

वीरण 1) m. N. pr. eines Pragâpati MBh. 12,13587. fg. Hariv. 70 nach der Lesart der neueren Ausg. VP. 99, N. 1. 117. als N. pr. eines Lehrers 281, N. 5 fehlerhaft für वीरणिन्. — 2) f. ई a) *Andropogon muricatus:* °मूल H. 1158. Halâj. 2,467. — b) N. pr. einer Tochter des Pragâpati Vîraṇa Hariv. 69. VP. 99, N. 1; vgl. वीरिणी. — 3) n. = विरिण *Andropogon muricatus* AK. 2,4,5,29. H. an. 4,281. Med. r. 290. Hâr. 177. Shaḍv. Br. 5,2. Gobh. 3,9,4. Varâh. Bṛh. S. 30,24. 54,47. तं ददार लीलया वीरणावत् Bhâg. P. 10,11,50. °स्तम्ब, °स्तम्बक MBh. 1,1035. 1816. 1818. fg. R. 2,80,8 (87,10 Gorr.). — Vgl. वैरणक.

वीरणार्क (von वीरण) gaṇa ऋश्यादि zu P. 4,2,80. m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2159.

वीरणिन् m. N. pr. eines Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,a,36.

वीरतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 95,b,16. 101,a,27. b,1 v. u. 292,b,16.

वीरतम (superl. von वीर) m. *ein überaus kraftvoller Mann, der grösste Held:* वीरतमाय नृणाम् (इन्द्राय) ṚV. 3,52,8. Agni VS. 15,52. Çâṅkh. Çr. 3,20,4. 8,17,1. AV. 7,25,2. Hariv. 8402. am Ende eines adj. comp.: कृतवीरतमा ह्येषा धार्तराष्ट्री महाचमूः MBh. 8,423.

वीरतर (compar. von वीर) 1) m. *a) ein kraftvollerer Mann, ein grösserer Held* H. an. 4,280. Med. r. 290. न ब्रंह्म वीरतरस्त्वत् (इन्द्र) ṚV. 8,24,15. वीरा रणे वीरतरेण भग्नाः MBh. 4,1673.1,5589. 8,448. — *b) Pfeil* Hâr. 53. Bhûripr. im ÇKDr. — *c) Leichnam* H. an. Med. beruht wohl nur auf einer Verwechselung von शर mit शव. — 2) n. *Andropogon muricatus* AK. 2,4,5,29. H. an. Med. Ratnam. 320 (= bengal. देघान d. i. *Andr. saccharatus Roxb.*). Gobh. 2,7,6. °शङ्कु Pâr. Gṛhj. 1,15. गणो वीरतरादिकः Suçr. 2,54,21 scheint auf die Reihe 1,137,19 zu verweisen, welche aber mit वीरतरु (nicht वीरतर) beginnt; vgl. 138,1.

वीरतरासन n. Bez. *einer best. Art zu sitzen* Muṇḍamâlâtantra 3 im ÇKDr. — Vgl. वीरासन.

वीरतरु m. *der Baum des Helden* (d. i. Arǵuna's; vgl. MBh. 7,4228), *Terminalia Arguna* (s. अर्जुन) AK. 2,4,2,25. *Asteracantha longifolia Nees.* Ratnam. 75. = वीरतर *Andropogon muricatus* Bhâvapr. im ÇKDr. = बिल्वान्तरवृक्ष und भल्लातक Râǵan. im ÇKDr. — Suçr. 1,137,19. 145,16. 370,21. 2,96,4. 431,12. Schol. zu Pâr. Gṛhj. 1,15.

वीरता (von वीर) f. *Männlichkeit, Heldenmuth* VS. 7,12. वीरतायाम् धनंजयसमो ह्यसि MBh. 7,4228. Kathâs. 43,99. 108,207.

वीरत्व (wie eben) n. dass. Ind. St. 9,155.

वीरदत्त m. N. pr. eines Mannes: °गृहपतिपरिपृच्छा Titel eines Werkes Index des Kandjur S. 12.

वीरदामन् m. N. pr. eines Fürsten LIA. II, 757, N. 1.

वीरदेव m. N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 83,7. Râǵa-Tar. 5,468. LIA. II, 864, N. 3.

वीरद्युम्न m. N. pr. eines Fürsten MBh. 12,4673. 4687. fgg.

वीरधन्वन् m. *der Liebesgott* Çabdârthak. bei Wilson.

वीरधर m. N. pr. eines Wagners Pañkat. 185,10. — Vgl. वीरवर.

वीरनाथ 1) adj. (f. आ) *einen Mann —, einen Helden zum Schutz habend* R. 5,33,39. — 2) m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 6,110.

वीरनारायण m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 19. 23.

वीरंधर m. 1) *Pfau.* — 2) *Kampf mit wilden Thieren.* — 3) *ein ledernes Wamms.* — 4) N. pr. eines Flusses Çabdârthak. bei Wilson.

वीरपट्ट m. *Heldenbinde* (um die Stirn) Râǵa-Tar. 5,332. उष्णीषी वीरपट्टेन 7,1491. 8,846. 2019.

वीरपत्त्रा f. *eine best. Pflanze,* = विजया Râǵan. im ÇKDr.

वीरपत्नी f. *Weib eines tüchtigen Mannes, — Helden* AK. 2,6,1,16. H. 515. ṚV. 1,104,4. 6,49,7. Kauç. 6. MBh. 1,3657. 7981. 5,689. 3223. °व्रत Hariv. 2949. Mâlav. 91. Bhâg. P. 4,26,24. Mârk. P. 125,7. रघु° Ragh. 14,13.

वीरपर्ण n. = मुरपर्ण Râǵan. im ÇKDr.

वीरपस्त्य adj. *zu eines tapferen Mannes Hof gehörig* ṚV. 5,50,4.

वीरपाण und °पान (vgl. P. 8,4,10) n. *Heldentrank, ein von Kriegern vor* oder *nach der Schlacht eingenommener Trank* AK. 2,8,2,71. R. 4,9,72 (wo वीरपानं zu schreiben ist). °पाणाक n. dass. H. 802.

वीरपाण्ड्य m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 125,a,18.

वीरपान s. u. वीरपाण.

वीरपाल m. N. pr. eines Mannes Râǵa-Tar. 8,2183.

वीरपुर n. N. pr. einer *Stadt* im Gebiete von Kânjakubǵa Hit. 39,18. einer mythischen *Stadt* auf dem Himâlaja Kathâs. 52,169. 393.

वीरपुरुष m. *ein tapferer Mann, Kriegsheld* P. 2,1,58, Schol. Kathâs. 12,5. Pañkat. 218,2. am Ende eines adj. comp. (f. आ) Hariv. 3099. R. 2,33,27.

वीरपुष्पी f. = सिन्दूरपुष्पी Râǵan. im ÇKDr.

वीरपेशस् adj. *den Schmuck der Männer (Söhne) habend* oder *bildend:* द्रविणा ṚV. 4,11,3. 10,80,4.

वीरप्रजावती f. *Mutter eines Helden* Mârk. P. 125,7. 126,1.

वीरप्रभ m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 59,25.

वीरप्रमोक्ष N. pr. eines Tîrtha MBh. 3,8029.

वीरबलि m. Titel einer Schrift Hall 197.

वीरबाहु 1) adj. *Heldenarme habend,* unter den 1000 Namen Vishṇu's nach ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1,2738. 4551. 6,2838. 2844. 7,6938. verschiedener Fürsten und Männer aus der Kriegerkaste 3,2708 (Gatte der Sunandâ). Kathâs. 13,24. 52,316. 58,5. 61,223. 84,3. 112,147. Verz. d. Oxf. H. 152,b,27. N. pr. eines Affen R. 4,33,13. 6,82,20.

वीरबुक्क m. N. pr. eines der Gründer von Viǵajanagara im ersten Drittel des 14ten Jahrhunderts n. Chr. Burnouf in der Einl. zu Bhâg. P. I, lx, N. बुक्कमहीपति Sâj. in der Einl. zum ṚV.-Comm. 3; vgl. बुक्कराय.

वीरभट m. N. pr. eines Fürsten von Tâmraliptî Kathâs. 44,42.

वीरभद्र m. 1) *ein grosser Held* H. an. 4,280. Med. r. 289. — 2) *ein zum Opfer bestimmtes Ross* diess. — 3) *Andropogon muricatus* diess. und Hâr. 177. — 4) N. pr. *a)* eines Rudra Mit. 142,6. Weber, Râmat. Up. 304. 312. — *b)* eines Wesens im Gefolge Çiva's, das Daksha's Opfer zu Schanden macht, Vjâḍi beim Schol. zu H. 210. MBh. 12,10325. fgg. Verz. d. Oxf. H. 45,b,24. VP. 65. fgg. Bhâg. P. 4,5,17. Wilson, Sel. Works I, 212. Kathâs. 50,73. 147. Pañkar. 1,7,74. 15,7. °जित् unter den Namen Vishṇu's 4,3,74. °सुता Mârk. P. 123,17. — *c)* eines Kriegers auf der Seite der Pâṇḍava MBh. 7,7011. — *d)* eines Fürsten Hall 79. — *e)* eines Autors Hall in der Einl. zu Vâsavad. 11. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 95,b,16. Verz. d. Cambr. H. 54.

वीरभद्रक n. *Andropogon muricatus* Gaṭâdh. im ÇKDr.

वीरभवत् m. ehrendes Pronomen der 2ten Person mit dem Beiworte *Held:* तदर्थमेव चानीतो मया वीरभवानिह Kathâs. 10,44.

वीरभानु m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 154,b,3. eines Autors 143,a, No. 292.

वीरभार्या f. = वीरपत्नी AK. 2,6,1,16. H. 515.

वीरभुक्ति N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 338,b,35. 339,b,12. 45. nach AUFRECHT wohl fehlerhaft für तीरभुक्ति.

वीरभुज m. N. pr. zweier Fürsten KATHÂS. 39,3. 20. 42,137.

वीरभूपति m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 371,b, No. 248.

वीरमत्स्य m. pl. N. pr. eines Volkes R. 2,71,5.

वीरमय (von वीर) adj. bei den Tântrika *dem Eingeweihten gehörig, — zukommend:* दिव्यवीरमयो (das suff. gehört zu beiden Wörtern) भावः कलौ नास्ति कदा च न। केवलं पशुभावेन मन्त्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्॥ MAHÂNIRVÂṆATANTRA im ÇKDR. unter वीर.

वीरमर्दन m. N. pr. eines Dânava HARIV. 12943.

वीरमर्दल m. *Kriegstrommel* H. an. 4,131. °क (वीरमर्दनक gedr.) MED. th. 26.

वीरमातर् f. *Mutter eines Mannes (männlichen Kindes), — Helden* AK. 2,6,1,16. H. 558. MBH. 5,5966. BHÂG. P. 9,14,40.

वीरमानिन् adj. *sich für einen Mann haltend* BHÂG. P. 9,14,28. 15,21.

वीरमार्ग m. *die Laufbahn eines Helden* MBH. 13, 2967. HARIV. 4773.

वीरमित्रोदय m. Titel eines juristischen Werkes GILD. Bibl. 463. Verz. d. B. H. No. 1403.

वीरमिश्र m. N. pr. eines Juristen Ind. St. 1,238. fg. Verfassers des Vîramitrodaja GILD. Bibl. 463. मित्रमिश्र Verz. d. Oxf. H. 295,a, No. 713.

वीरमुकुन्ददेव m. N. pr. eines *Fürsten* Verz. d. Oxf. H. 181,b,6. — Vgl. मुकुन्ददेव.

वीरय् (von वीर), वीरयते DHÂTUP. 35,49 (विक्रान्तौ). *sich männlich benehmen, sich tapfer beweisen:* इन्द्रमनु वीरयध्वम् RV. 10,103,6. 128,5. 1,116,5. VS. 11,68. TBR. 2,7,8,1. NIR. 1,7. act. in einer Etymologie so v. a. *bewältigen* NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9,93.

वीरया (von वीरय्) instr. etwa *mit Kampfeslust* RV. 9,64,4.

वीरयु (wie eben) adj. *tapfer, kampflustig* RV. 8,81,28. 9,36,3.

वीरयोगवह adj. *die einem Manne, einem Helden anstehenden Mittel anwendend* MBH. 13,6562. वीरयोगसह *solchen Mitteln widerstehend* ed. Bomb.

वीररजस् n. *Mennig* RÂGAN. im ÇKDR.

वीरराघव m. N. pr. eines Mannes HALL 38.

वीररेणु m. Bein. Bhîmasena's TRIK. 2,8,15.

वीरललित n. *die natürliche, ungesuchte Handlungsweise eines Helden* (mit Anspielung auf ein Metrum gleiches Namens, das bei Anderen धीरललित heisst) VARÂH. BṚH. S. 104,41.

वीरलोक m. 1) *die Welt der Helden*, Indra's *Himmel* MBH. 6,116. 13,6562. R. 2,23,29. — 2) pl. *tapfere Männer:* कोव्यश्च वीरलोकानां समेताः कुरुजाङ्गले MBH. 6,160.

वीरवक्षणा adj. etwa *Männer stärkend* RV. 5,48,2.

वीरवत्सा adj. f. *männliche Nachkommenschaft habend, Mutter eines Sohnes* oder *von Söhnen* GAṬÂDH. im ÇKDR.

वीरवत् (von वीर) 1) adj. a) *Männer —, Mannschaft —, Söhne habend; männerreich:* सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम RV. 4,50,6. Ushas 7,41,7. 80,3. AIT. BR. 7,18. तैस्ते तत्र वीरवत्त श्रासुः *jene hatten sie zu tapfern Kämpfern* 7,27. राष्ट्र 8,9. वीरवत्तो भविष्यथ BHÂG. P. 9,16,35. स्त्रियः *Frauen, deren Männer am Leben sind*, 6,18,52. 19,18. *in* oder *aus Männern bestehend*, n. *Reichthum an Männern* oder *Söhnen* RV. 1,190,8. रयि 2,11,13. 5,4,11. रत्न 7,75,8. पोष 1,1,3. प्रजा TBR. 3,1,1,10. 2,2. मघोनीर्वीरवत्पत्यमानाः RV. 6,65,3. वीरवद्वात् गोमत् 7,23,6. 9,9,9. 63,18. — b) *männlich, heldenhaft:* यशस् RV. 4,32,12. 5,79,6. श्रवस् 4,36,9. इष् 1,12,11. 8,43,15. 9,30,3. Soma 35,3. — 2) f. वीरवती a) *eine best. wohlriechende Pflanze*, = मांसरोहिणी BHÂVAPR. im ÇKDR. — b) ein Frauenname KATHÂS. 53,90. 151. 78,9. 73. — c) N. pr. eines Flusses MBH. 6,332 (VP. 183).

वीरवर m. *ein ausgezeichneter Held*, N. pr. verschiedener Männer KATHÂS. 53,89. fgg. 78,8. fgg. HIT. III, 99. 98,7. fgg. VET. in LA. (III) 23,15. fgg.

वीरवरप्रताप m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 181,9. AUFRECHT scheint das Wort nicht als N. pr. gefasst zu haben.

वीरवर्मन् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. 116 (LXII). KATHÂS. 19,32.

वीरवह् oder °वाह् adj. *Männer fahrend:* Rosse (°वाहस्) RV. 7,42,2. Wagen 90,5.

वीरवाक्य n. *das Wort eines Helden, ein heldenmüthiges Wort* MÂRK. P. 63,12. Davon adj. °मय *aus solchen Worten bestehend:* वचस् KATHÂS. 109,110.

वीरवामन m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 239,a,12.

वीरविक्रम m. N. pr. eines Fürsten HIT. 63,6.

वीरविद् adj. *Männer verschaffend* AV. 11,1,15.

वीरविप्लावक m. *ein Brahmane, der ein Opfer mit Geldern von Çûdra vollbringt*, H. 861.

वीरविरुद n. Bez. *einer best. künstlichen Strophe* Verz. d. Oxf. H. 133,a, No. 244.

वीरवृत्त m. *Semecarpus Anacardium Lin.* AK. 2,4,2,23. H. an. 4, 323. MED. sh. 54. *Terminalia Arguna* (*der Baum des Helden* d. i. Arguna's; vgl. वीरतरु) H. an. MED. = बिल्वान्तर RÂGAN. im ÇKDR. = बहुद्वात RATNAM. 320.

वीरव्यूह m. *eine muthigen Kämpfern zusagende Schlachtaufstellung:* °रणे रतः R. 6,70,38.

वीरव्रत 1) adj. *nach Mannesart verfahrend* so v. a. *seinen Vorsätzen treu bleibend* BHÂG. P. 5,17,2. 10,87,45. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Madhu von der Sumanas BHÂG. P. 5,15,13.

वीरशय m. *das* (aus aneinandergelegten Pfeilen gebildete) *Ruhebett eines gefallenen* (oder *verwundeten*) *Helden* BHÂG. P. 3,17,31. 6,10,33.

वीरशयन n. dass. MBH. 5,4249. 4260. 6,5763. 13,1760. 7689. 14,2366. RÂGA-TAR. 7,1497. 8,2116.

वीरशय्या f. 1) dass. MBH. 6,1880. 5725. RÂGA-TAR. 5,335. 7,1668. 8,2330. BHÂG. P. 10,44,44. — 2) Bez. *einer best. Art des Liegens bei Asketen* MBH. 13,356. 6513.

वीरशर्मन् m. N. pr. eines Kriegers KATHÂS. 47,19. 52,43. fgg.

वीरशायिन् adj. *als gefallener Held auf einem* (aus Pfeilen gebildeten) *Ruhebette liegend* MBH. 13,2966. — Vgl. वीरशय.

वीरशुष्म adj. *männermuthig* RV. 1,53,5.

वीरशैव m. pl. Bez. einer Çiva'itischen Secte WILSON, Sel. Works I,

225. fgg.

वीरसरस्वती m. N. pr. eines Dichters Verz. d. T. H. 13.

वीरसिंह m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,16. verschiedener Fürsten 133,*b*,14. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,545,9. 7,5, Çl. 9. °देव 6,543,8. Verz. d. Oxf. H. 295,*a*, No. 713.

वीरसुख n. *die Freude eines Helden, — eines kriegerischen Lebens* (Gegens. ग्राम्यसुख) MBh. 5,3225.

वीरसू adj. *Männer gebärend*, f. *Mutter eines Sohnes* AK. 2,6,1,16. H. 558. RV. 10,85,44. AV. 14,2,18. Gobh. 2,7,12. Jâǵn. 1,76. MBh. 1, 7353. 3,1389. 1402. 5,3223. वीरसूत्वेन (माता स्मृता) वीरसूः 12,9512. R. 2,51,15. 86,16 (94,17 Gorr.). Ragh. 14,4. Mâlav. 91. Bhâg. P. 1,7, 45. 4,9,50 (°सुवस् gen.). 28,20. Spr. (II) 613. als masc.: वीरसूनां देशानां कुरुजाङ्गलम् *Helden erzeugend* MBh. 1,4360.

वीरसूत्व (von वीरसू) n. *das Gebären von Männern, — Söhnen* MBh. 12,9512.

वीरसेन (वीर + सेना) 1) m. N. pr. verschiedener Personen: Fürst von Nishadha und Vater Nala's MBh. 3,2067. 2072. 2466 (°सुतप्रिया = दमयन्ती). Fürst von Simhala Kathâs. 120,93. von Murala Daçak. 193,11. in Kânjakubǵa Hit. 39,17. Verz. d. Oxf. H. 153,*a*, No. 328. Mörder seines Bruders Bhadrasena, Fürsten von Kalinga, Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53. Heerführer Agnimitra's Mâlav. 9,10. 69, 1. 2. 70,12. ein Sohn Vigatâçoka's Târan. 2. 50. 52. 61. ein Dânava Kathâs. 47,17. — 2) n. *eine best. Pflanze*, = आरुक Râǵan. im ÇKDr.

वीरसोम m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 329,*a*, No. 780.

वीरस्थ adj. *bei einem (tapfern) Manne befindlich*: पशवः Kâth. 12,8.

वीरस्थान n. 1) *Ort* oder *Stellung eines tapfern Mannes* (= बलवत्स्थान Comm.) Shadv. Br. 4,5. — 2) Bez. *einer best. Stellung der Asketen*: (तपस्तेपे) स्थाणुभूतो महातेजा वीरस्थानेन (= वीरासनेन Nilak.) MBh. 3, 10317. 12,11273. वीरासनं वीरशय्यां वीरस्थानमुपागतः 13,356 (= स्वर्गलोक Nilak.). 2949. वीरशय्यामुपासद्भिर्वीरस्थानोपसेविभिः 6513 (= महारण्यं भीरुभिरप्रवेश्यम् Nilak.). — 3) N. pr. einer dem Çiva geheiligten Stätte MBh. 7,9609.

वीरस्थायिन् adj. *die* वीरस्थान *genannte Stellung einnehmend* MBh. 13,6560.

वीरस्वामिन् m. N. pr. eines Dânava Kathâs. 47,15.

वीरहत्या f. *Männermord* Taitt. Âr. 10,40. M. 11,41 (वीर = पुत्र Kull.). Nrs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,117. Weber, Râmat. Up. 333.

वीरहन् adj. 1) *Männer tödtend, Todtschläger* VS. 30,5. वीरहा देवानां यः सोममभिषुणोति Pankav. Br. 16,1,12. वीरहा वा एष देवानां यो ऽग्निमुद्वासयते (daher die Bed. 2) TS. 1,5,2,1. 2,2,5,5. TBr. 3,2,8,12. Kâth. 31,7. Pankav. Br. 12,6,8. वीरहणं परेषाम् (feindliche) *Männer tödtend* (vgl. पर°) R. 3,55,28. 7,23,1,83. गदा वीरहणी MBh. 9,3238. — 2) *der das heilige Feuer hat erlöschen lassen* AK. 2,7,52. H. 855. Halâj. 2,249. Mahidh. zu VS. 30,5.

वीरहोत्र m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,55.

वीराक्षरमालाविरुद n. Bez. *einer künstlichen Strophe im Panegyricus* (विरुद) Virudâvali, so genannt, weil die einzelnen Attribute des *Helden* (वीर) *in alphabetischer Ordnung* (अक्षरमाला) aufgezählt werden, Verz. d. Oxf. H. 133,*a*, No. 244.

वीराध्वन् (वीर + अ°) m. *die Laufbahn eines Helden* MBh. 13,6560. 6563. so v. a. *ein heldenvoller Tod* VP. (2te Aufl.) 2,104; vgl. महाप्रस्थान unter प्रस्थान 1).

वीरानक N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 5,213. fg. 8,411.

वीरापुर n. N. pr. einer *Stadt* Hall 123.

वीराम्ल m. = अम्लवेतस *Rumex vesicarius* Râǵan. im ÇKDr.

वीराय् (von वीर) *den Helden spielen*: वीरायितमनेन (impers.) Uttarar. 109,6. 7 (148,3).

वीरारुक n. *eine best. Pflanze*, = आरुक, वीरसेन Râǵan. im ÇKDr.

वीराशंसन (वीर + आ°) 1) adj. *Helden ankündigend*. — 2) n. *der Ort in der Schlacht, wo der Kampf am heftigsten wüthet*, AK. 2,8,2,68. H. 801.

वीराष्टक (वीर + अ°) adj. *aus acht Männern bestehend*, Bez. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 3,14398.

वीरासन (वीर + 1. आ°) n. 1) Bez. *einer best. Art zu sitzen bei Asketen*: वामोरूपरि दक्षिणाङ्घ्रिं प्रतिष्ठाप्य स्थितिर्वीरासनम् Comm. zu R. 7,10,4; vgl. Mallin. zu Kumâras. 3,45. Comm. zu Ragh. ed. Calc. 13, 52. Verz. d. Oxf. H. 102,*b*,20. fg. — 11,*a*, N. 1. 234,*a*,16. रात्रौ वीरासनं वसेत् M. 11,110. MBh. 13,356. R. Gorr. 2,28,25. 108,13 (100,14 Schl.). 7,10,4. Ragh. 13,52. Sarvadarçanas. 174,5. °गत R. 7,23,3,48. MBh. 12,11271. 13,6515. °गति (wohl °गत zu lesen; °रत ed. Bomb.) 6560. — 2) = ऊर्ध्वावस्थान *das Stehen auf einem erhöhten Platze* (nach dem Comm.) Bhâg. P. 5,9,14. an zwei anderen Stellen (1,16,17 und 9,2,3) nach dem Comm. *das Wachen bei Nacht mit einem Schwerte in der Hand*, welche Bed. auch 5,9,14 passen würde.

वीरिण m. (selten) und n. *Andropogon muricatus*, ein Gras mit wohlriechender Wurzel; die Halme von der Dicke eines Gänsekiels werden 4 bis 6 Fuss hoch. Çat. Br. 13,8,1,15. यस्मिन्कुशवीरिणं प्रभूतम् Âçv. Grhj. 2,7,4. Kauç. 18. 26. Schol. zu Kâtj. Çr. 8,3,26. °तूल Kauç. 25. कर्षूवीरिणवत् Kâtj. Çr. 21,3,26. — Vgl. वीरण, दुर्वीरिण und वैरिण.

वीरिणी (von वीरिन् und dieses von वीर) f. 1) *Mutter von Söhnen* RV. 10,86,9. — 2) Bein. der Asikni, der Gattin Daksha's, MBh. 1,3131. Verz. d. Oxf. H. 49,*a*,14. Kâlikâ-P. 8 im ÇKDr. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,506, Çl. 22; vgl. वीरणी unter वीरण und वैरणी. — 3) als N. pr. eines Flusses Matsjop. 5 fehlerhaft für चीरिणी, wie beide Ausgg. des MBh. lesen.

वीरुध् (रुध् = रुह् mit वि) f. (m. MBh. 1,1836) gana न्यङ्क्वादि zu P. 7,3,53. Vop. 26,82. *Gewächs, Kraut* RV. 1,67,9. 141,4. 2,1,14. 35, 8. 10,40,9. 45,4. 91,6. 145,1. AV. 1,32,3. 34,1. 2,7,1. 5,4,1. 19,35,4. वीरुधां पतिः 4,19,9. Soma RV. 9,114,2. der Mond MBh. 5,5289. fünf Reiche der Kräuter AV. 11,6,15. TS. 2,5,3,2. 3,12,6,3 (= वल्ली Comm.). — Jâǵn. 3,36. शरीरमसि वीरुधाम् (अग्ने) MBh. 1,8410. Hariv. 12181. Ragh. 8,36. Kumâras. 5,34. Çâk. 106. Vikr. 38. Spr. 1946. Uttarar. 33,15 (44,10). Bhâg. P. 3,10,18. 4,18,8 (mit ओषधि wechselnd). 5,20,46. कूपे वीरुत्तृणावृते MBh. 1,3296. Râǵa-Tar. 1,372. शुष्कपर्णतृणावीरुधा वर्तमानः Bhâg. P. 5,8,30. सुपक्वौषधीवीरुधः (जनपदाः) 1,8,40. सवनस्पतिवीरुधः — ओषधयः 10,5. 8,24,42. निवेश° Kir. 4,19. im System *kriechende Pflanzen und niedere Sträucher*: प्रतानवत्यः स्त-

म्बिन्यश्च वीरुधः Suçr. 1,4,17. वृत्ताणाम् — गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वीरुधाम् M. 11,142. गुल्मगुच्छकृतुपलताप्रतानौषधिवीरुधाम् Jâgn. 2,229. = गुल्मिनी AK. 2,4,1,9. H. 1118. Vaig. bei Mallin. zu Kir. 4, 19. = लता H. an. 2,250 (वीरुल्लतायां zu lesen). Med. dh. 36. = विटप diess. und Halâj. 2, 35. = कान्त 5, 47. AK. 3,4,29,221. = वल्ली Vaig. a. a. O. — Vgl. निर्वीरुध्.

वीरुध n. dass. AV. 6,21,2. वीरुधा f. dass. Çabdar. im ÇKDr. unbestimmt ob n. oder f.: वीरुधौषधिमानवान् Mârk. P. 17,12.

वीरुधि wohl f. dass.: वीरुधयः Varâh. Brh. S. 54,87.

वीरेण्य (von वीर) adj. *mannhaft:* वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिः Rv. 10,104,10.

वीरेश (वीर + ईश) m. 1) *eine Form* Çiva's, *n. ein* Liñga *desselben* Vireçvarastotra im ÇKDr. — 2) bei den ekstatischen Çaiva Bez. *eines Seligen auf einer best. Stufe* Sarvadarçanas. 88,5.

वीरेश्वर (वीर + ई°) 1) = वीरेश 1) Verz. d. B. H. 147,*a*,4. 6. 7. वीरेश्वरं लिङ्गं काश्याम् Kâçikh. 10 im ÇKDr. °लिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 71, *b*,39. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's, = वीरभद्र Çabdârthak. bei Wilson. eines Mannes aus dem 17ten Jahrh. n. Chr. Verz. d. Oxf. H. 380,*a*,5. °भट्ट 246,*a*, No. 618. °मल्हाडकर Hall 94. — Vgl. मनोहर°.

वीरोज्झ (वीर + उ) adj. *das Opfer unterlassend* H. 860.

वीरोपजीवक (वीर + उ°) adj. *betrügerischer Weise, als wenn es sich um die Unterhaltung des heiligen Feuers handelte, um Almosen bittend.* H. 860. वीरोपजीविक schlechte v. l.

वीर्त्सा (vom desid. von ऋध् mit वि) f. *das Vereitelnwollen* AV. 5,7,1.

वीर्य (von वीर) ved., वीर्य in der späteren Sprache Çânt. 4,9. n. (nach Bhar. zu AK. auch वीर्या f. ÇKDr.) 1) *Männlichkeit, Tapferkeit; Kraft, Wirksamkeit, Energie* AK. 1,1,2,29. 3,4,24,156. Trik. 1,1,129. H. 300. an. 2,382. Med. j. 40. Rv. 1,55,3. नकीन्द्र को वीर्या परः 80,15. 163,8. अग्निः सनोति वीर्याणि 3,25,2. प्रुष्म्या, वीर्येण 4,50,7. 8,24,21. Çat. Br. 3,3,2,3. 12,7,1,3. AV. 1,7,5. 3,19,1. Ait. Br. 3, 2. 4,3. Âçv. Grhj. 2, 6,3. Kenop. 18. विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः Spr. 5014. M. 11,31. fg. °संपन्न MBh. 3,2446. अर्जितं स्वेन वीर्येण फलशाकम् Spr. (II) 580. विष्णुना सदृशो वीर्ये R. 1,1,18. 3,9. 55, 20. कराभि वीर्याद्दुःखं ते 2,21,18. 36,4. 4, 5, 23. Spr. 2287. 2376. fgg. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः Ragh. 2,4. 3,62. समर्थये वीर्यशृङ्गमिव भग्नमात्मनः 11,72. Vikr. 16. Varâh. Brh. S. 46, 28. 63,3. 76,12. Kathâs. 32,73. Bhâg. P. 6, 17, 31. महावीर्यपराक्रम adj. MBh. 1, 5028. प्रख्यातो बलवीर्येण 3, 1807. व्याघ्रबलवीर्यान्वित (अनु) R. 2,70,23. शौर्यवीर्यगुणोपेत (सेनाध्यक्ष) Spr. 3174. सत्त्ववीर्यगुणोपेत (नाग) R. 1,6,22. वीर्यमोजो बलम् Bhâg. P. 4,18, 15. शौर्य, वीर्य, धृति, तेजस् beim Krieger 7,11,22. शक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य (*vigour, which counteracts change, as that of milk into curds, and obviates alteration in nature*) und तेजस् bei Vâsudeva Colebr. Misc. Ess. I, 415. अतिवीर्या तपस्विनी R. 5,51,20. उत्कृष्ट° adj. Spr. (II) 1671. अवार्य° adj. (der Liebesgott) 1554. समवीर्य adj. (I) 2495, v. l. भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः Ragh. 2,32. रेतसः Ait. Br. 4,9. छन्दसाम् 1,6. वाचः Çâñkh. Çr. 10,15,12. यथानलो दारुणि रूढवीर्यः Bhâg. P. 3,8,11. अग्नि° Suçr. 1,32,9. भेषज° 117,11. 147,2. 148,3. शीत°, स्निग्ध°, रूत°, उष्णवीर्यत्व 12. fgg. चरकस्त्वाह वीर्यं तत्क्रियते येन या क्रिया Vâgbh. 9,13. Çârñg. Samh. 1,2,12. धनुषः R. 1,33,10. धर्म° MBh. 13,4556. R. 1,3,4. तपसः 60,12. Çâk. 53. Brahma-P. in LA. (III) 49,17. तपो° 54, 6. मन्त्र° Râga-Tar. 4,602. योग° Bhâg. P. 5,1,12. विज्ञान° 10,19. तेषाममृतवीर्याणां रसानाम् MBh. 1,1138. *Kraft, Macht* eines Planeten Varâh. Brh. 2,21. 4,12.15. वीर्यान्वित 25(23),9. °ग *eine Stelle einnehmend, wo er (der Planet) mächtig ist*, 15,1. — 2) *Mannesthat, Heldenthat:* इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार Rv. 1,32,1. 131,4. 154,1. 3,12,9. 10,39, 5. तत्त्रियो वीर्यं कर्तुमर्हति Ait. Br. 8,17. कृतवान्वीर्याणि Bhâg. P. 1,1, 20. 3,22. 7,10,69. 10,37,21. अनिरुद्धस्य वीर्याढ्यो विवाहः क्रियताम् so v. a. *durch eine Heldenthat erreicht* Hariv. 10888. — 3) *männliche Kraft, Samen* AK. 2,6,2,13. 3, 4, 30, 229. Trik. 3, 3, 317. H. an. Med. Halâj. 3,16. 5,75. Çârñg. Samh. 1,5,25. तस्यां समभवद्गर्भो भृगुवीर्यसमुद्भवः MBh. 1,875.2389. चस्कन्द वीर्यमम्भसि 9,2219. अग्नौ तस्मिन्वीर्यं स्वमादधे Kathâs. 20,81. 32,102. Bhâg. P. 2,10,13. fg. 3,5,26. तस्यां ससर्ज कतिधा वीर्यम् 21,4. 7,7,9. 8,17,23. 9,20,36. बादरायणवीर्यज 3,5,19. 8, 13,34. Mârk. P. 63,4. तदुदरे वीर्याधानं चकार सः Pañkar. 2,3,33. — 4) *Gift* Bhâg. P. 10,6,10. — Vgl. अ°, अमित°, उक्थ°, गो°, दृष्ट°, नाना°, नि°, निर्वीर्य, प्रति°, बल°, बहु° (adj. *kräftig, sehr wirksam:* ओषधयः MBh. 13, 4699), बाहु° (auch MBh. 5, 7082. R. Gorr. 2,52,24. Spr. 4633), मत्त°, महा° (adj. auch MBh. 1,5878. 12,4264), मुनि°, यज्ञ°, यथावीर्यम्, वाग्वीर्य, विचित्र°, विश्वतो°, विश्वधा°, शत°, सु° u. s. w.

वीर्यकाम adj. *männliche Kraft wünschend* Ait. Br. 1,5. Bhâg. P. 2,3,3.

वीर्यकृत् adj. *Mannesthat verrichtend:* Indra VS. 10,25 (gen. °कृतम्). TBr. 2,7,15,6 (gen. °कृतम्).

वीर्यकृत adj. nach dem Comm. *mit Kraft begabt* TBr. 2,7,12,3. vermuthlich entstellt.

वीर्यचन्द्र m. N. pr. des Vaters der Vîrâ, der Gattin Karamdhama's, Mârk. P. 123,1.

वीर्यतम (von वीर्य mit dem suff. des superl.) adj. (ungrammatisch st. वीर्यवत्तम) *der kräftigste, wirksamste, mächtigste:* सर्वेषां भूतानां नृसिंहः Nrs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,94. अगद Bhâg. P. 6,2,19.

वीर्यधर m. pl. Bez. der Kshatrija (*Energie besitzend*) in Plakshadvîpa Bhâg. P. 5,20,11.

वीर्यपण adj. (f. आ) *durch Heldenmuth erkauft:* eine Gattin Bhâg. P. 4,28,29. — Vgl. वीर्यशुल्क.

वीर्यपारमिता s. u. पारमिता.

वीर्यप्रवाद n. Titel des 3ten der 14 Pûrva oder ältesten Schriften der Gaina H. 247.

वीर्यभद्र m. N. pr. eines Mannes Târan. 244.

वीर्यमत्त्व MBh. 3,16610 fehlerhaft für वीर्यमत्त, wie die ed. Bomb. liest.

वीर्यवत्तरत्व n. nom. abstr. vom compar. von वीर्यवत् Çank. zu Khând. Up. S. 45.

वीर्यवत्त्व (von वीर्यवत्) n. *Kraft, Macht* MBh. 4,1702.

वीर्यवत् (von वीर्य) 1) adj. *a) kräftig, wirksam, tüchtig, mächtig* Nir. 2,4. AV. 8,5,1. यो ब्राह्मणो बह्वृचो वीर्यवान्स्यात् Ait. Br. 2, 36. 4, 3. TBr. 2,1,4,8. Çat. Br. 1,2,4,6. 3,4,1. पशवः 8,2,4,19. Personen MBh. 1,6019. 3,16747. R. 1,1,2. 8,17. 2,55,15. 72,17. 96,44. 104,28. 4,9,

80. Bhâg. P. 2,3,3. 3,5,26. 6,6,42. 10,61,8. Planeten Varâh. Bṛh. 2, 21. त्वक्पत्त्रफलमूलानि MBh. 12,2680. ओषधानि Kumâras. 2,48. मुषल Mârk. P. 116,24. कर्मन् *Kraft erfordernd* Khând. Up. 1,3,5. compar. वीर्यवत्तर *wirksamer* 1,10. superl.: प्रजापतिर्देवानां वीर्यवत्तमः Çat. Br. 13, 1,2,5. विद्या M. 2,114. — b) *samenreich* Kâvjâd. 1,77 (zugleich in der Bed. a). — 2) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâh gezählten Wesens MBh. 13,4356. eines der Söhne des 10ten Manu Hariv. 474. Mârk. P. 94,15. — 3) f. वीर्यवती N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2626. — Vgl. वीर्यावत्.

वीर्यवाहिन् adj. *Samen führend* Çârṅg. Saṁh. 1,5,24.

वीर्यवृद्धिकर adj. *Samen fördernd;* n. *ein Aphrodisiacum* Râgan. im ÇKDr.

1. वीर्यशुल्क n. *Männlichkeit* oder *Heldenmuth als Kaufpreis* (einer Gattin) Ragh. 11,47.

2. वीर्यशुल्क adj. (f. आ) *durch Männlichkeit* oder *Heldenmuth erkauft* oder *zu erkaufen:* eine Gattin MBh. 1,3829. 5,5955. 5967. 6006. R. 1, 66,15. 17. 67,23. 25. 68,6. — Vgl. वीर्यपण.

वीर्यसत्त्ववत् (von वीर्य + सत्त्व) adj. *Männlichkeit und Muth besitzend* MBh. 3,2678.

वीर्यसह m. N. pr. eines Sohnes des Fürsten Saudâsa R. 7,65,10.

वीर्यसेन m. N. pr. eines Mannes Vie de Hiouen-thsang 113. — Vgl. वीरसेन.

वीर्यहारिन् adj. *die Manneskraft raubend;* m. N. eines bösen Geistes Mârk. P. 51,97.

वीर्यावत् adj. = वीर्यवत् 1) a) TS. 2,4,2,1. 5,2,1,3. TBr. 1,7,2,2. 2, 8,2,7. 3,1,2,4. Kâṭh. 27,5.

वीळु s. वीडु.

वीवध und वीवधिक s. विवध und विवधिक.

वीसर्प s. u. विसर्प 2).

वुड्, partic. वुडित als Umschreibung von मग्न *untergetaucht* Schol. zu Kâtj. Çr. 20,8,16. — Vgl. व्रुड्, क्रुड् und क्रुडन Schol. zu Kâtj. Çr. 5,5,31. Weber, Hâla S. 259.

वुङ्गा (बुङ्गा) s. नील°, श्वेत°.

वृर्य° s. होतृ°.

वृ॑क (von व्रश्च्) Çânt. 2,7 (वृ॑कः Uṇâdis. 3,41). 1) m. a) *Wolf* AK. 2,5, 7. H. 1291. Halâj. 2,73. ṚV. 1,42,2. 105,7. ते सेधन्ति पथो वृकम् 11. 116,14. 2,29,6. 6,51,14. 7,38,7. 68,8. उरां न धूनुते वृकः 8,34,3. 55,8. 9,79,3. 10,39,13. रभस 95,14. AV. 7,95,2. 12,1,49. अघायु VS. 4,34. 19, 10. 92. Çat. Br. 5,5,4,10. 11,5,1,8. 12,7,1,8. °लोमन् 5,5,4,18. 12,9, 1,6. Kâtj. Çr. 15,9,30. 19,2,23. Khând. Up. 6,9,3. अजाविके तु संरुद्धे वृकैः, यां प्रसह्य वृको हन्यात् M. 8,235. यामुत्प्लुत्य वृको हन्यात् 236. वृको (भवति) मृगेभम् (हत्वा) 12,67. वृकवच्चावलुम्पेत Spr. 2695. MBh. 1,5568. अवलुम्पनं कृत्वा 5586. 6,4357. °पद 12,4836. 12086. जरामृत्यू हि भूतानां खादितारौ वृकाविव Spr. (II) 2350. Suçr. 1,202,9. Varâh. Bṛh. S. 70,22. 86, 27. 88,3. Râga-Tar. 2,85. 4,693. Bhâg. P. 1,18,8. 3,10,22. 4,6,21. 29,53. 5, 8,9. 15. 14,3. Pañkat. 19,13. Am Ende eines comp. *ein Wolf unter, — von* gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. — b) *Hund* Nir. 5,21. — c) *Schakal* Hâr. 78. es könnte aber auch वृकधूर्त als ein Wort gefasst werden. — d) *Krähe* Viçva bei Uggval. zu Uṇâdis. 3,41. beruht vielleicht nur auf einer Verwechselung von काक mit कोक. — e) *Eule* (पेचक) Viçva a. a. O. — f) = स्तेन *Dieb* Naigh. 3,24. — g) *ein Kshatrija* Rabhasa bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — h) *Pflug* Nir. 6,26. यवं वृकेणाश्विना वपन्ता ṚV. 1, 117,21. यवं वृकेण कर्षथः 8,22,6. — i) = वज्र Naigh. 2,20. — k) *der Mond,* nach einer Deutung ṚV. 1,105,18. Nir. 5,20. 21. — l) *die Sonne,* nach einer Deutung des Mythus von der aus einem Wolfsrachen befreiten Wachtel, Nir. 5,21. — m) *eine best. Pflanze,* = बक Çabdar. im ÇKDr. — n) *ein best. Räucherwerk,* = सरलद्रव und अनेकधूप Rabhasa bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr.; vgl. वृकधूप. — o) N. pr. α) pl. eines Volkes MBh. 6,2106. Mârk. P. 57,33. VP. 193, N. 123. pl. zu वार्केण्य P. 5,3,115; vgl. 2,4,62. — β) sg. ein Fürst MBh. 1,6990. 13,5665. ein Sohn Ruruka's (Bharuka's Bhâg. P.) Hariv. 760. VP. 373. Bhâg. P. 9,8,2. Pṛthu's 4,22,54. 24,2. Çûra's 9,24,28. Vatsaka's 42. Kṛshṇa's 10,61,16. 90,33. VP. 591. ein Asura Bhâg. P. 7,2,18. 10,88,13. fgg. Verz. d. Oxf. H. 78,b,48. — 2) f. आ *eine best. Pflanze,* = अम्बष्ठा Ratnam. im ÇKDr. — 3) f. वृ॑की a) *Wölfin* ṚV. 1,116,16. 117,17. fg. 183,4. 6,51,6. 10,127,6. वृकीवारणमासाद्य मृत्युरादाय गच्छति MBh. 12, 6535 (9946. 12063). Spr. 4553. अत्रेर्वृकीव स्नुषायाः अश्रूमांसानि खादति Kathâs. 29,68. — b) *ein Schakal-Weibchen* Nir. 5,21. — c) *Clypea hernandifolia W. et A.* Râgan. im ÇKDr. — Vgl. अवृक, दस्यवे°, साला° (शाला°).

वृककर्मन् m. N. pr. eines Asura Verz. d. Oxf. H. 19,b,31.

वृकखण्ड m. N. pr. eines Mannes; vgl. वार्कखण्डि.

वृकगर्त N. pr. einer Oertlichkeit; davon adj. °गर्तीय P. 4,2,137. Schol.

वृकग्राह m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146. — Vgl. वार्कग्राहिक.

वृकजम्भ m. N. pr. eines Mannes; vgl. वार्कजम्भ.

वृ॑कताति (von वृक) f. *Mord-* oder *Raubanschlag:* यो नो वृकताति म॑र्त्यो रिपुर्दधे ṚV. 2,34,9.

वृ॑कति (von वृक) P. 5,4,41 (= वृक) 1) f. concret *Mörder, Räuber* ṚV. 4,41,4. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Gîmûta Hariv. 1992. Vṛkati und Vṛti als N. pr. zweier Söhne des Kṛshṇa Hariv. Langl. II, 158 fehlerhaft für वृकनिर्वृति.

वृकतेजस् m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi Hariv. 68. VP. 98.

वृकदंश m. *Hund* H. 1280 schlechte v. l. für मृगदंश.

वृकदीप्ति m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9189.

वृकदेव 1) m. N. pr. eines Sohnes des Vasudeva Hariv. 1956. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter Devaka's und Gattin Vasudeva's Hariv. 1949. 1957. 2027. वृकदेवा VP. 436.

वृ॑कद्वरस् adj. nach Sâj. so v. a. संवृतद्वार. वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ṚV. 2,30,4. man könnte वृकधरस् vermuthen.

वृकधूप m. 1) *Weihrauch* AK. 2,6,3,29. H. 648. an. 4,211. Med. p. 30. — 2) *Terpentin* AK. 2,6,3,30. H. an. Med.

वृकधूर्त m. *Schakal* 78 (es können auch zwei Namen des Schakals sein).

वृकनिर्वृति m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9188.

वृकबन्धु m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146. — Vgl. वार्कबन्धविक.

वृकरथ m. N. pr. eines Bruders des Karṇa MBh. 7,6942.

वृकल 1) m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi Hariv. 68. VP. 98. — 2) f. वृकला॑ *a) ein best. Eingeweide* Çat. Br. 12,5,2,5. — *b)* N. pr. eines Frauenzimmers (könnte auch ein Appellativ sein) gaṇa बाह्वादि zu P. 4,1,96; vgl. वार्कलि, वार्कलेय.

वृकवञ्चिक m. N. pr. eines Mannes gaṇa रेवत्यादि zu P. 4,1,146. — Vgl. वार्कवञ्चिक.

वृकस्थल n. N. pr. eines Dorfes MBh. 5,934. 2595. 3037. LIA. I,691. fg.

वृकाक्षी (von वृक + अक्ष *Auge*) f. *Ipomoea Turpethum R. Br.* Ratnam. im ÇKDr.

वृकाग्नि॑ (वृक + अ°) m. N. pr. eines Mannes P. 6,2,165; vgl. Kâr. 3 zu P. 4,3,60.

वृकायु॑ (von वृक) adj. *raub- —, mordlustig* Ṛv. 10,133,4.

वृकाराति (वृक + अ°) m. *Hund* (*der Feind des Wolfes*) Çabdam. im ÇKDr.

वृकारि (वृक + अरि) m. dass. Râǵan. im ÇKDr.

वृकाश्व (वृक + अश्व) m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁsk. K. 184,*a*,2. sg. ein Sohn Kṛshṇa's Hariv. 9188. वृकास्य die neuere Ausg.

वृकाश्वकि m. N. pr. eines Mannes; pl. *seine Nachkommen* Saṁsk. K. 184,*a*,11. man hätte वार्काश्वकि erwartet.

वृकास्य (वृक + आस्य) m. N. pr. eines Sohnes des Kṛshṇa Hariv. 9188 nach der Lesart der neueren Ausg., वृकाश्व die ältere.

वृकोदर (वृक + उ°) m. 1) Bein. Bhîmasena's Trik. 2,8,15. H. 707. Bhag. 1,15. MBh. 1,2444. 5343. 5902. 5923. 3,15694. Bhâg. P. 1,7,13. 10,10. 9,22,28. — 2) N. einer Gruppe von Kobolden im Gefolge Çiva's Revâmâh. 29 in Journ. of the Am. Or. S. 6,523..

वृकोदरमय adj. *von* Vṛkodara d. i. Bhîmasena *kommend:* भय MBh. 5,2183.

वृक्क 1) m. *a)* du. *die Nieren* Vjutp. 100. AV. 7,96,1. 9,7,13. VS. 25,8. Çat. Br. 3,8,3,17. Kâtj. Çr. 6,7,6. 25,7,34. Kauç. 45. 81. Çâṅkh. Çr. 4,14,14. Âçv. Gṛhj. 4,3,21. 24. Jâǵn. 3,97. Çârṅg. Saṁh. 1,5,23. — *b)* nach Sâj. so v. a. *Abwender* nämlich der Krankheit Ṛv. 1,187,10. — 2) f. आ = बुक्का = हृद् *Herz* H. 623.

वृक्कक m. du. = वृक्क *die Nieren* Jâǵn. 3,94.

वृक्ण s. u. व्रश्च्.

वृक्त s. u. वर्ज् und vgl. बाहुवृक्त.

वृक्तब॑र्हिस् adj. *derjenige, welcher das Gras zur Opferstreu ausgerauft* oder *abgeschnitten hat* so v. a. *zum Empfang der Götter gerüstet; opfernd, Opfer liebend* Naigh. 3,18. Ṛv. 1,12,3. 3,2,6. 59,9. 5,9,2. 6,68,1. 8,5,17. 7,20 (wohl वृक्तबर्हिषः zu betonen). 27,7. 76,3. 86,1. 10,91,9. Ind. St. 10,409.

वृक्ति (von वर्ज्) f. s. नमो° und सु°.

वृ॑क्या f. du. so v. a. वृक्क *die Nieren* TS. 5,7,19,1.

वृक्ष्, वृ॑क्षते Dhâtup. 16,3 (वरणे). वृक्षते वरं कन्या *erwählt* Durgâd. im ÇKDr. Diese unbelegte Wurzel hätte als वर्क्ष् aufgeführt werden müssen.

वृक्ष॑ Uṇâdis. 3,66 (von व्रश्च्). m. 1) *Baum* AK. 2,4,1,5. Trik. 2,4,2. H. 1114. Halâj. 2,22. 24. Ṛv. 1,164,20. 22. 2,14,2. निधिमन्त् 39,1. पक्व 4,20,5. 5,78,6. वि वृक्षान्हन्ति 83,2. उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम् 7,95,5. 10,31,7. निष्टक्षभार चमसं न वृक्षात् 68,8. 94,3. 127,4. सुपलाश 135,1. हरिकेश VS. 16,17. 19. 51. 58. AV. 1,14,1. वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षम् 2,12,3. 6,45,1. 12,1,27. 51. Çat. Br. 1,3,3,20. वृक्षे नावं प्रतिबध्नीष्व 8,1,6. 2,2,4,10. 6,2,17. 14,6,9,33. TS. 6,3,3,2. 3. Kâtj. Çr. 1,3,18. Çâṅkh. Gṛhj. 1,3. 22. Kauç. 79. Âçv. Gṛhj. 1,8,6. 2,6,9. Lâṭj. 1,1,14 (अ°). (यदा) वृक्षाः स्रवन्ति रुधिराणि Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,40. Çvetâçv. Up. 6,6. M. 3,9. 4,120. 7,76. वृक्षगुल्मावृत 192. वृक्षेष्वारूढ्य MBh. 3,2545. Ragh. 2,17. नदीकूले, नदीतीरे Spr. 1395. 4299. fg. नदीकूलं यथा वृक्षो वृक्षं वा शकुनिर्यथा (त्यजन्ति) 4298. वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः 2883. Varâh. Bṛh. S. 5,9. वृक्षगुल्मा लताश्च 29,14. 43,17. आत्मापराधवृक्षस्य फलानि Spr. 2644. मेध्य° M. 6,13. वृक्षांश्छित्त्वा Spr. 2884. फलदानां वृक्षाणां छेदनम् M. 11,142. °च्छेदन Verz. d. Oxf. H. 281,*b*,22. fg. °भञ्जन 26,*b*,25. वृक्षोद्यापन 35,*a*,*b*. 40,*b*,41. वृक्षोत्सर्ग ebend. °रोपण 12,*b*,24. 86,*b*,18. fg. 87,*a*,34. fg. Verz. d. Cambr. H. 64,9. °रोपक R. Gorr. 2,87,2. वृक्षारोपक M. 3,163. in comp. mit dem Namen des Baumes: कतक° 6,67. मन्दार° Çâk. 100,16. पर्कटी° Hit. 18,7. शिंशिपा° Vet. in LA. (III) 4,1. 2. वट° 21,11. am Ende eines adj. comp. f. आ MBh. 1,5320. 7,897. Ragh. 11,16. Im System *ein Baum, welcher* (sichtbare) *Blüthe und Frucht hat*, M. 1,47. Suçr. 1,4,17. die ganze Pflanzenwelt in fünf Klassen eingetheilt: वृक्षगुल्मलतावल्ल्यस्त्वक्सारास्तृणजातयः MBh. 6,171. 13,2992. *Pflanze* überh.: किंपाक° Spr. (II) 754. Halâj. 5,42 (करीर). — 2) *Todtenbaum, Sarg* AV. 18,2,25. — 3) *Stab des Bogens* Ṛv. 10,27,22. AV. 1,2,3. — 4) *Gestell* in einigen Compp. — 5) wohl so v. a. वृक्षक *Wrightia antidysenterica* Suçr. 2,434,7. — Vgl. अधिवृक्षसूर्य, कल्प°, कौमुदी°, क्षीर°, गुण°, चैत्य°, दश°, दीप°, निर्वृक्ष, पूति°, बीज°, बोधि°, ब्रह्म°, भार°, भूत°, भृङ्ग°, मह्वा°, रक्त°, राज°, सीमा°.

वृक्षक (von वृक्ष) m. 1) *ein armes Bäumchen* Kumâras. 5,14. आश्रम° Ragh. 1,70. am Ende eines adj. comp. ohne den Nebenbegriff: अ° *baumlos* R. 4,44,35. Ragh. 1,51. f. आ R. 1,9,5. Vgl. गन्ध°, फल° (in beiden compp. *Baum* überh.). — 2) *Wrightia antidysenterica* (ein mittelgrosser Baum, s. कुटज) Ratnam. 30. n. *die Frucht* Suçr. 1,182,15. 315,1. 431,11. 482,2. 2,52,6. 109,21. 135,5. 457,7.

वृक्षकन्द = विदारीकन्द *die Knolle von Batatas paniculata Chois.* Aush. 48.

वृक्षकुक्कुट m. *a wild cock* Wilson.

वृक्ष॑केश adj. *bewaldet:* ein Berg Ṛv. 5,41,11.

वृक्षख॑ण्ड m. *Baumgruppe* Kâç. zu P. 4,2,38. वृक्षषण्ड R. 4,48,3. 5,16,14.

वृक्षघट m. N. pr. eines Agrahâra Kathâs. 82,3.

वृक्षचन्द्र m. N. pr. eines Fürsten Târan. 2. 103. 126.

वृक्षचर m. *Affe* (*Baumwandler*) Dhanaṁǵaja im ÇKDr.

वृक्षच्छाय n. *Baumschatten*, f. आ *der Schatten eines einzelnen Baumes* (oder *zweier Bäume*) Bhar. zu AK. nach ÇKDr.

वृक्षतक्षक m. *dessen Amt es ist Bäume niederzuhauen* R. 2,80,2.

वृक्षतैल n. *Baumöl* d. i. *aus Baumfrüchten gewonnenes Oel* Schol. zu Kâtj. Çr. 1,8,37.

वृक्षत्व (von वृक्ष) n. *das Baum-Sein, der Gattungsbegriff Baum* Sarvadarçanas. 8,3.

वृक्षदल n. *Baumblatt* R. 2,46,14.

वृक्षदेवता f. *Baumgottheit, Dryade* Pañkat. 97,5.

वृक्षधूप m. *Terpentin* H. 648. an. 4,211.

वृक्षनाथ m. *der indische Feigenbaum* (वट) Çabdar. im ÇKDr.

वृक्षनिर्यास m. *Baumharz, Gummi* M. 5,6.

वृक्षपर्ण n. *Baumblatt* R. 2,56,32. R. Gorr. 2,56,21.

वृक्षपाक m. *der indische Feigenbaum* (वट) Çabdak. im ÇKDr.

वृक्षपाल m. = वनपाल *Waldhüter* R. 5,39,3.

वृक्षपुरी f. N. pr. einer *Stadt* Târan. 232.

वृक्षबाष्पनिकेत s. वृक्षवास्यनिकेत.

वृक्षभक्षा f. *Schmarotzerpflanze* Bhâvapr. im ÇKDr.

वृक्षभवन n. *Baumhöhle* Çabdak. im ÇKDr.

वृक्षभिद् *Axt* H. 918.

वृक्षभेदिन् n. *eines Zimmermanns Meissel* AK. 2,10,34. H. 919.

वृक्षमय (von वृक्ष) adj. (f. ई) *aus Holz gemacht, hölzern* Çântik. 5.

वृक्षमर्कटिका f. *Eichhörnchen* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वृक्षमूल n. *Baumwurzel* M. 4,73. 6,26. 44. 11,78. 128. R. 2,46,19. 22. 50,17.

वृक्षमूलता (von वृक्षमूल) f. *das Ruhen —, Schlafen auf Baumwurzeln* (eines im Walde lebenden Asketen) Kâm. Nîtis. 2,29.

वृक्षमूलिक (wie eben) adj. *auf Baumwurzeln seine Ruhe haltend* Vjutp. 34. Burn. Intr. 309.

वृक्षमृद्भू (वृक्ष-मृद्-2. भू) f. *eine Rohrart* (जलवेतस) Çabdak. im ÇKDr.

वृक्षराज् m. *der Fürst unter den Bäumen*, Bez. *des heiligen Feigenbaumes:* पिप्पलाज्जायते वह्निः पिप्पलो वृक्षराट् स्मृतः Pitâmaha in Mit. 148,1.

वृक्षराज m. *der Fürst der Bäume*, Bez. des पारिजात Hariv. 7003.

वृक्षरुहा f. *Schmarotzerpflanze* AK. 2,4,2,62. *eine best. Pflanze*, = अमृतस्रवा Râǵan. im ÇKDr.

वृक्षवाटिका f. *Baumgarten* AK. 2,4,1,2 (अमात्यगणिकागेहोपवन). Çâk. 8,21.

वृक्षवाटी f. dass. H. 1113.

वृक्षवास्यनिकेत m. N. pr. eines Jaksha MBh. 2,399 nach der Lesart der ed. Bomb., वृक्षवास्प° ed. Calc.

वृक्षश m. *Eidechse, Chamäleon* Wilson nach Çabdârthak.

वृक्षशायिका f. *Eichhörnchen* Suçr. 1,202,17.

वृक्षषण्ड s. वृक्षखण्ड.

वृक्षसंकट n. *Walddickicht* Kâm. Nîtis. 14,21.

वृक्षसर्प adj. (f. ई) *Baumkriecher* AV. 9,2,22.

वृक्षसारक m. *ein best. kleiner Strauch*, = द्रोणपुष्पी Aush. 16.

वृक्षस्नेह m. *Baumöl* d. i. *aus Baumfrüchten gewonnenes Oel* Schol. zu Kâtj. Çr. 1,8,37.

वृक्षाग्र (वृक्ष + अग्र) n. *Baumgipfel* R. 2,98,27.

वृक्षादन (वृक्ष + अ°) 1) adj. *am Baume fressend.* — 2) m. *a) eines Zimmermanns Meissel* AK. 2,10,34. H. 919. *Axt* Trik. 3,3,261. H. an. 4,193. Med. n. 211. neben वाशी MBh. 5,5250. — *b) der heilige Feigenbaum* (अश्वत्थ) und = मधुच्छत्र (?) H. an. Med. *Buchanania latifolia Roxb.* Dhar. im ÇKDr. — 3) f. ई *Schmarotzerpflanze* AK. 2,4,2,62. Trik. H. an. Med. = विदारीगन्धिका H. an. = विदारीकन्दक Med. *eine best. Gemüsepflanze* Suçr. 1,137,19. 220,6. 377,14. 2,59,14. 322,18. 431,12.

वृक्षादिनी f. = कामवृक्ष Aush. 57.

वृक्षादिरुहक n. und वृक्षादिरूढक n. *Umarmung* Çabdam. im ÇKDr. वृक्षादिरूढ n. Wilson nach Çabdârthak.

वृक्षाम्ल (वृक्ष + अम्ल) m. *Spondias mangifera* Çabdak. im ÇKDr. n. *die Frucht* AK. 2,9,35. H. 417. Hariv. 8440. Suçr. 2,453,7. Vâgbh. 6,130.

वृक्षायुर्वेद (वृक्ष + आ°) m. *die Lehre von der Pflege der Bäume* Varâh. Bṛh. S. 2, S. 7, Z. 3. Titel des 55ten Adhjâja in Varâh. Bṛh. S. und eines Kapitels im Âgneja-P. nach ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 125,*a*,41. 324,*b*, No. 768 (von Surapâla). °योग: unter den 64 Künsten 217,*a*,13.

वृक्षारक MBh. 7,1872 fehlerhaft für वृन्दारक, wie die ed. Bomb. liest.

वृक्षार्का (वृक्ष + अ°) f. *eine best. Heilpflanze*, = महामेदा Râǵan. im ÇKDr.

वृक्षालय (वृक्ष + आ°) m. *Vogel* (*auf Bäumen wohnend*) Çabdam. im ÇKDr.

वृक्षावास (वृक्ष + आ°) adj. *auf* oder *in Bäumen wohnend;* m. = वृक्षकोटरवासिन् ÇKDr. *an ascetic, one who lives in the hollows of trees; a bird* Wilson.

वृक्षाश्रयिन् (वृक्ष + आ°) m. *Käuzchen* Râǵan. im ÇKDr.

वृक्षीय adj. von वृक्ष gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90. एक° (s. auch u. एकवृक्ष) *von demselben Baume, von gleichem Holze* Kâtj. Çr. 2,8,1.

वृक्षेशय (वृक्षे, loc. von वृक्ष + शय) 1) adj. *auf Bäumen sich aufhaltend:* मयूराः Ragh. 16,14. — 2) m. *eine Schlangenart* (*in Bäumen liegend*) Suçr. 2,265,21.

वृक्षोत्पल (वृक्ष + उ°) m. *Pterocermum acerifolium Willd.* Halâj. 2,44.

वृक्ष्य (von वृक्ष) n. *Baumfrucht* Çat. Br. 1,1,2,10. Kâtj. Çr. 2,1,13, v. l.

वृगल (von वर्ज्) n. *Brocken, Stück:* पुरोडाश° Çat. Br. 4,3,2,1. Çâṅkh. Br. 28,4. Schol. zu Kâtj. Çr. 767,14. Âçv. Çr. 5,7,7 (hier दृगल). अर्ध° Çat. Br. 14,4,2,5.

वृचया f. N. pr. eines Mädchens ṚV. 1,51,13.

वृचीवन्त् m. pl. N. pr. eines Geschlechts ṚV. 6,27,5. fgg. Pañkav. Br. 21,12,2.

वृज् (nom. वृक्) so v. a. बल Naigh. 2,9. — Vgl. स्वा°.

1. वृजन (von वर्ज्) Uṇâdis. 2,81. n. 1) *Umhegung, umfriedigter —, befestigter Platz;* insbes. *die abgeschlossene Cultusstätte;* = बल Naigh. 2,9. न वा उ मां वृजने वारयन्ते ṚV. 10,27,5. सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूम 1,173,7. त्वं शुष्णं वृजने अक्रन् 63,3. वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष 3,34,6. अति स्रसेम वृजनं नांहः 6,11,6. 5,54,12. नदीनाम् *Bereich* 52,7. यमृत्विजो वृजने मानुषासो जीजनन्त 1,60,3. यत्परमे सधस्थे यद्वावमे वृजने मादयासे 101,8. 2,24,11. 9,96,7. महो अमत्रो वृजने विरप्शी *hier im Opferhof steht ein überschäumender Becher* 3,36,4 (wonach u. 1. अमत्र zu ändern ist). मरुद्गणो वृजने मन्म धीमहि 10,66,2. मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपाः 1,101,11. 2,2,1. 9. 34,7. 9,77,5. 82,4. — 2) *geschlossene Niederlassung: Hof, Flecken, Dorfschaft*, auch *oppidum;* sowohl *die Mark* als *die Bewohner:* अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम ṚV. 1,51,15. 73,2. 91,21. 105,19. मानुष 128,7. आ यत्ततनन्वृजने जनासः 166,14. जीरदानु 165,15. वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम *mit den Leuten unserer Gemeinde* 10,42,10. 9,97,10. प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते 7,61,4. 99,6. अज्ञाता वृजना *fremde Orte* 32,27. 10,27,4. विश्वेदेनं वृजनेषु पामि d. h. *wo er sich auch niederlasse* 28,2. प्र सूनव ऋभूणां बृहन्नवन्त वृजना *mit der ganzen Gemeinde* 10,176,1. वज्रेणान्यः

शर्वसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः Varuṇa 6,68,3. 9,87,3. Es versteht sich, dass einzelne Stellen sowohl unter 1) und 2) passen; unentschieden bleiben Ṛv. 5,44,1. 6,35,5. Vgl. व्रज. — 3) *der Luftraum* Uǵǵval. — 4) = निराकरण Uṇâdivṛ. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. — Vgl. im Zend verezéna und varezâna.

2. वृजन n. ग्रयन्ती वृजनं पद्वदीयत उत्पातयति पक्षिणः die Ushas Ṛv. 1,48,5. nach Sâj. = ग्राङ्गम; wohl coll. *Dorf* so v. a. *die angesiedelten Menschen* (neben Thieren und Vögeln). Der Unterschied des Tones wäre also zufällig.

3. वृजन 1) adj. (f. वृजनी) so v. a. वृजिन Uṇâdik. im ÇKDr. ग्रतिष्ठद्भीं वृजनीषु त्तः allegorisch, nach Sâj. *in der Wolke* Ṛv. 1,164,9. — 2) m. *(krauses) Haupthaar* Uṇâdik. im ÇKDr. — 3) f. ई *Rank, Tücke:* ग्ररिष्टासो वृजनीभिर्जयेम *durch Ränke nicht versehrt* AV. 7,50,7 als v. l. zu Ṛv. 10,42,10. Die Bed. von 1. वृजन wurde bereits nicht mehr verstanden. — 4) n. *eine böse That, Sünde* Uṇâdik. im ÇKDr. H. 1381 (nach der Lesart des Schol.).

वृजन्य (von 1. वृजन) adj. *was in Dörfern u. s. w. wohnt:* धर्मा भुवद्वृजन्यस्य राजा Ṛv. 9,97,23.

वृजि Siddh. K. 236,a,11. m. 1) pl. N. pr. einer Völkerschaft P. 4,2,131. Burn. Intr. 75. Târan. 7. Schiefner, Lebensb. 289 (59). Hiouen-thsang 1,402. fgg. 2,366. fg. वृजिगार्हपत n. P. 6,2,42, Vârtt. 1. वृजि f. = व्रजभूमि ÇKDr. ohne Angabe einer Aut. — 2) N. pr. eines Mannes LIA. II, 808. fg.

वृजिक adj. von वृजि 1) P. 4,2,131. = वार्ज्यो भक्तिरस्य 3,100, Schol.

वृजिन (von वर्ज्) Uṇâdis. 2,47. 1) adj. (f. ग्रा) a) *krumm* (AK. 3,2,20. H. 1457. an. 3,421. Med. n. 134. Halâj. 4,11); *falsch, ränkevoll* (Gegens. ऋजु, वीत, साधु): पथि Ṛv. 6,46,13. गातु 9,97,18. पृष्ठा 4,2,11. मुखानि AV. 7,56,4. Personen Ṛv. 3,34,6. MBh. 3,13746. Bhâg. P. 7,8,55. ग्रहंकार Spr. (II) 810. — b) *unheilvoll:* वृजिनां गतिमाप्नोति MBh. 2,857. — 2) m. *(krauses) Haupthaar* AK. 3,4,18,111. H. ç. 117. H. an. Med. Halâj. 5,11. — 3) f. ग्रा *Ränke, Falschheit, Trug:* मा नो विदद्वृजिना द्वेष्या या AV. 1,20,1. 5,3,6. वृजना v. l. TBr. 3,7,5,13. — 4) n. Siddh. K. 249,a,8. a) dass. Nir. 10,41. ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् Ṛv. 4,1,17. ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति 23,8. 2,27,3. 5,3,11. 12,5. 7,104,13. 10,87,15. 89,8. AV. 1,10,3. 11,8,20. TBr. 3,3,3,10. तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु *dem werden zur Qual seine eigenen Ränke* Ṛv. 6,52,2. ग्रवं नो वृजिना शिशीहि 10,105,8. — b) *Vergehen, Schlechtigkeit, Sünde* AK. 1,1,4,1. H. 1381 (nach der Lesart der Hdschrr.). H. an. Med. Halâj. 3,5. सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि Bhag. 4,36. वृजिनात्तारयन्ति MBh. 5,1224. किमिदं वृजिनं सुभ्रु कृतं वै कामलुब्धया 1,3425. 2,2582. कृत्वा वृजिनार्जनम् Spr. (II) 20. 1438. कच्चिन्न वाचा वृजिनं हि किंचिदुच्चारितं मे मनसो ऽभिषङ्गात् MBh. 5,867. कच्चिन्न वाचा वृजिनं कदाचिदकार्षं ते मनसो ऽभिषङ्गात् 13,4897. नहि मे वृजिनं किंचिद्विद्यते ब्राह्मणेष्विह 389. R. Gorr. 1,67,5. 6,103,10. वृजिनादृते Ragh. 14,57. वृजिनादस्ति चेन्नीतिः Râǵa-Tar. 6,27. वृजिनार्जितया श्रिया 137. शान्त° adj. 1,102. Bhâg. P. 3,15,49. 4,5,9. — c) *Leid, Unglück:* गौरवं कुलम् । वृजिनं नार्हति प्राप्तुम् Bhâg. P. 1,7,46. सद्वृजिनच्छिद् 2,4,13. विधेहि तन्नो वृजिनाद्विमोत्तम् 4,8,81. — d) = रक्तचर्मन् H. an. — Vgl. ग्र°.

वृजिनवत् (von वृजिन) m. N. pr. eines Sohnes des Kroshṭu, Sohnes des Jadu, Bhâg. P. 9,23,29. — Vgl. वृजिनीवत्.

वृजिनवर्तनि adj. *krumme Wege gehend, ränkevoll* Ṛv. 1,31,6.

वृजिनाय् denom. von वृजिन; partic. वृजिनायन्त् *trüglich, falsch* Ṛv. 10,27,1.

वृजिनीवत् m. N. pr. = वृजिनवत् MBh. 13,6833. Hariv. 1969. VP. 420.

वृण्, वृणोति, वृणुते Vop. in Dhâtup. 30,6 (भक्तौ). वर्णति (प्रीणने) Pat. in Dhâtup. 28,40. Auf das caus. dieser letzteren Wurzel mit वि führt der Comm. व्यवीवृणत् in der Stelle स्थाने रामायणकविर्देवीं वाचं व्य° Uttarar. 112,22 (152,9) zurück, indem er dieses Wort durch एतच्चरित्रवर्णनेन प्रीतां चकार erklärt. Wir nehmen keinen Anstand jene Form von वर्णय् mit वि in der Bed. *in der Schilderung übertreffen* abzuleiten.

1. वृत् (von 1. वर्) 1) adj. *einschliessend* in ग्रर्णो° und नदी°. — 2) f. *Begleitung, Gefolge; Heer:* कया शचिष्ठया वृता (न ग्रा भुवत्) Ṛv. 4,31,1. उभे वृतौ संयती सं जयाति 5,37,5. ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ 10,65,5. वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैः 6,1,3. वयं जयेम वृतम् 1,102,4. 4,17,9. ग्रयुद्ध इद्युधा वृतं शूर ग्राजति सत्वभिः 8,45,3. ग्रस्मा वृतं इन्द्र शूरपत्नीः 1,174,2.

2. वृत् (von वर्त्) 1) adj. am Ende eines adj. comp. in एक°, त्रि°, पञ्च°, पुत्र°, विषू°, सु°. — 2) *Schluss, Ende;* bezeichnet im Dhâtup. (z. B. nach 19,79. 23,41. 28,108. 143. 31,32) den *Schluss* einer zu einer bestimmten grammatischen Regel gehörenden Reihe von Wurzeln, die in der Grammatik durch die erste Wurzel mit nachfolgendem ग्रादि oder प्रभृति kurz angegeben wird. P. 7,2,59, Schol.

वृत 1) partic. s. u. 1. und 2. वर्. — 2) n. so v. a. धन Naigh. 2,10 (v. l. कृत); vielleicht aus वृतंचय erschlossen.

वृतक्षय m. *erwählter —, erwünschter Wohnsitz,* zur Erkl. von वृक्त Nir. 12,29.

वृतंचय (वृतम्, acc. von 1. वृत् + चय) adj. *ein Heer sammelnd:* Indra Ṛv. 2,21,3. sonach unter 2. चय zu streichen; nach Sâj. *Sammler des Erwünschten* oder *Feindeverderber.*

वृतपत्त्रा f. *eine best. Pflanze,* = पुत्रदात्री Râǵan. im ÇKDr.

वृता (von वर्त्) f. etwa *Fortschritt, Bewegung:* ता ग्रत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः Ṛv. 5,48,2.

वृतार्चिस् (वृत + ग्र°) f. *Nacht* H. ç. 18.

1. वृति (von 1. वर्) f. *Einzäunung, Zaun, Hecke* H. 982. an. 2,198. Med. t. 38. Halâj. 2,135. वृतिं तत्र प्रकुर्वीत यामुष्ट्रो न विलोकयेत् M. 8,239. वृतिमप्याश्रितः शत्रुर्वध्यः Spr. 2885. वृतिमिह कुरुते कोद्रवाणां समन्तात् 3311. °भङ्गं कृत्वा Pańkat. 248,2. वृतिं चूर्णयित्वा 249,13. °द्वार 4. प्राचीरं प्रान्ततो वृतिः AK. 2,2,3. कुम्बा सुगहना वृतिः (so ist zu schreiben) 7,18. H. 824. उपवन° Megh. 24. कुरवकवृतेर्माधवीमण्डपस्य 76.

2. वृति (von 2. वर्) f. *Wahl, Erwählung, ein erwähltes Gnadengeschenk;* = वरण H. an. 2,198. Med. t. 38. = वर AK. 3,3,8. H. 1523.

3. वृति fehlerhaft für वृत्ति MBh. 1,8350 (वृत्ति ed. Bomb.). Râǵa-Tar. 5,193 (वृत्ति ed. Calc.). für irgend ein anderes Wort in der Bed. मञ्जी und रुज् Med. t. 56 (das richtige वृति ebend. 38).

वृतिंकर (वृतिम्, acc. von 1. वृति + 1. कर्) 1) adj. *Hecken bildend.* — 2) m. *Flacourtia sapida Roxb.* Çabdar. im ÇKDr.

वृत्त (partic. von वर्त्) 1) adj. a) *gedreht, in Schwung gesetzt:* Rad Ṛv. 1,

155,6. 4,31,4. 5,36,3. — b) *rund* AK. 3,2,19. 3,4,14,81. Trik. 3,3,182. H. 1467. an. 2,197. Med. t. 60. Halâj. 4,68. वृत्तमिव हि शिश्नम् Çat. Br. 7,5,1,38. Kâtj. Çr. 17,5,3. °पुष्कर 1,3,38. 15,6,30. वृत्तपीनाभ्यां भुजाभ्याम् MBh. 3,1774. दीर्घवृत्तभुज R. Gorr. 2,52,3. वृत्तायतभुज 64,18. ऊरू 5,2,18. जङ्घे 6,23,11. वृत्तानुपूर्वे जङ्घे Kumâras. 1,35. चारुवृत्तपयोधरा MBh. 3,2664. स्तनौ 4,392. R. 3,52,25. स्तनौ समवृत्तौ Bhâg. P. 4,25,24. °पार्श्व R. 3,23,15. तनुवृत्तमध्य Ragh. 6,32. Varâh. Bṛh. S. 34,4. 56,23. 26. 58,53. 67,7. Verz. d. Oxf. H. 97,*b*,9. 12. 151,*a*,9. — c) *erfolgt, geschehen, Statt gefunden habend:* किं वृत्तम् R. 6,71,15. Prab. 84,17. चिरवृत्तमपि ह्येतत्प्रत्यक्षमिव दर्शितम् R. 1,4,16. अवदानं कर्म वृत्तम् (so ist zu schreiben) AK. 3,3,3. संबन्धमाभाषणपूर्वमाहुर्वृत्तः स नौ संगतयोर्वनान्ते Ragh. 2,58. समाजः सुमहान्वृत्तः *fand Statt* R. 5,27,19. वृत्ते रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने Çâk. 119. Bhatt. 6,27. वंशक्षये वृत्ते Râǵa-Tar. 5,242. °संकेत 3,374. °चौल (°चूड ed. Calc.) Ragh. 3,28. अवृत्ततद्विवाहा Kathâs. 33,214. वृत्तेन चैव मुक्तेन प्रवहणेन so v. a. *frei geworden* 18,306. क्लेशान्द्वादशवर्षवृत्तान् *zwölf Jahre gewährt* MBh. 7,6147. — d) *abgemacht, absolvirt:* एतद्वृत्तं पुरस्तात् Maitrjup. 1,2. = अधीत P. 7,2,26. Trik. H. an. Med. व्याकरण P., Schol. वृत्तो गुणश्छात्त्रेण so v. a. *sich zu eigen gemacht* Vop. 26,111. — e) *vorhanden, da seiend:* वृत्तौजस् adj. = ओजस्वत् (वृत्त = अप्रतिहत Kull.) M. 1,6. — f) *vergangen, verflossen, verstrichen, zu Ende gegangen* AK. 3,4,14,81. H. an. Med. अमावास्यायां वृत्तायाम् Kaush. Up. 2,8. उत्सवे वृत्तमात्रे MBh. 1,7652. 3,1839. Hariv. 6714. वृत्ता रजनी R. 3,5,4. 68,27. 4,58,1. वृत्ते शरावसंपाते M. 6,56. Varâh. Bṛh. S. 24,11. 26,14. Hit. IV, 1. वर्तमान, वृत्त, वर्तिष्यमाण Sarvadarçanas. 10,6. वृत्ते भाविनि वा रणे AK. 2,8,2,71. H. 802. — g) *mit dem es vorüber ist, der dahin ist, gänzlich erschöpft* (= श्रान्त Comm.): प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा वृत्तो ऽशयत् TBr. 1,2,6,1. — h) *verstorben* H. an. Med. M. 3,221. 9,195. 217. R. 2,51,18. 67,33. 73,1. 6. 77,22. 86,18. R. Gorr. 2,95,11. 97,11. 3,65,8. अ° 6,8,10. — i) *verfahren seiend gegen* (loc.), *sich benommen habend:* स च तस्यां कथं वृत्तः R. 5,56,2. सम्यग्वृत्तः सदा त्वयि MBh. 3,2284. 14,77 (nach der Lesart der ed. Bomb.). Spr. (II) 1838. — k) = दृढ *fest* u. s. w. AK. H. an. Med. — l) = वृत *erwählt* AK. 3,2,41. H. 1484. H. an. Med. — 2) m. a) *Schildkröte (rund)* Râǵan. im ÇKDr. — b) *eine Grasart,* = वृत्तगण्ड Râǵan. im ÇKDr. u. d. letzten W. — c) *eine runde Kapelle* Varâh. Bṛh. S. 56,18. — d) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,1555 (वृत्तसंवर्तकौ mit der ed. Bomb. zu lesen). 5,3630. — e) fehlerhaft für वृत्र (so ed. Bomb.) MBh. 12,3660. — 3) f. आ a) *ein best. Arzeneistoff* (रेणुका) Râǵan. im ÇKDr. — b) Bez. verschiedener Pflanzen: = किङ्किरिष्टा, प्रियङ्गु und मांसरोहिणी ebend. — c) = वृत्ता *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑, ⏑⏑⏑⏑– – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 10). Ind. St. 8,377. — 4) n. (m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31). a) *Kreis* Colebr. Alg. 87. Gaṇit. Tripraçn. 8. वृत्तस्य मध्यं किल केन्द्रमुक्तम् Golâdhj. 5,41. Z. f. d. K. d. M. 2,427. Weber, Râmat. Up. 308. fgg. 316. 324. *Epicykel* Sûrjas. 2,38. — b) *das Vorkommen, Erscheinen, Gebrauchtwerden:* बहुलमासां नैघण्टुकं वृत्तमाश्चर्यमिव प्राधान्येन Nir. 2,24. 11,2. Ṛv. Prât. 16,49. नकारस्योष्मवद्वृत्तम् so v. a. *die Verwandlung eines* न *in einen* Ûshman 10,13. — c) *Erscheinung:* क्षणिकमिति समस्तं विद्धि संसारवृत्तम् Spr. (II) 2051. किं° *eine Form von* किम् P. 3,3,6. 144. 8,1,48; vgl. यद्वृत्त. — d) *Ereigniss, Begebenheit* Sâh. D. 559. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 59. चितात्रदृश्यते वृत्तं किमेतत् so v. a. *was sieht man dort vorgehen?* Kathâs. 25,101. न मार्गवृत्तमेतन्मे वाच्यं पितृगृहे त्वया 58,116. रात्रौ वृत्तं ममाद्य यत् 69,22. 32. रात्रि° 73,319. तया सर्ववृत्तं राजकुमाराग्रे कथितम् Z. d. d. m. G. 14,574,20. इङ्गुदी° *was sich bei der* Iṅgudî *zugetragen hat* R. 2,88 (96 Gorr.) in der Unterschr. — e) *Sache, Angelegenheit* R. 1,68,16. 70,8. Kathâs. 12,137. — f) *Lebensart, Lebenswandel, Betragen, Benehmen, Handlungsweise, Thun und Treiben* AK. 3,4,14,81. 26,203. H. 838. 844. H. an. Med. Halâj. 2,242. Çat. Br. 14,7,2,1. Taitt. Up. 1,11,3. अनेन विप्रो वृत्तेन वर्तयन् M. 4,260. 5,166. 7,122. 135. 8,86. 187. 9,301. सतां वृत्तमनुष्ठिताः 10,127. Jâǵn. 3,44. MBh. 3,1877. 12476. 13,2167. R. 1,2,35. वृत्तमीदृशम् । आचरन्त्या 2,35,12. 40,6. 102,4. कस्य यास्याम्यहं वृत्तम् 109,8. Kâm. Nîtis. 3,36. 13,58. शत्रौ 8,57. Spr. (II) 930. 1820. Kumâras. 6,12. बाल्यवृत्तानि (so ed. Bomb.) MBh. 3,16865. रजनी° 1868. उदार R. 1,2,45. शुभैर्वृत्तैः Spr. 4256. महदद्भुतम् 4859. पर्वता इव निष्कम्पा वृत्ते महति तस्थुषः (तस्थिवांसो महावृत्ते निष्कम्पा इव पर्वताः die neuere Ausg.) Hariv. 4136. महा° adj. R. 2,112,5. स्वच्छ° adj. Kâm. Nîtis. 5,79. 48 (wo wohl eben so zu lesen ist). प्रज्ञा° adj. MBh. 14,2713. न्याय° adj. M. 7,32. R. 3,75,47. कल्याणवृत्ता 1,12. 53,54. राजवृत्तं चतुर्विधम् Spr. 1659. कुरु प्रियसखीवृत्तं सपत्नीजने Çâk. 93, v. l. आपद्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः Kathâs. 3,14. कामिजन°, स्व° Daçak. 65,17. पृथिव्याश्च तेजोवृत्तं नृपश्चरेत् M. 9,303. उज्झितधैर्यवृत्तम् adv. Vikr. 147. लोभ° adj. R. 4,17,33. यद्वृत्ताः सन्ति राजानस्तद्वृत्ताः सन्ति मानवाः Spr. (II) 1652. यन्मातापितरौ वृत्तं तनये कुरुतः सदा so v. a. *was Mutter und Vater an einem Sohne thun* R. 2,111,9. — g) *richtiger Wandel, gutes Betragen, richtiges Benehmen* Âçv. Gṛhj. 4,7,2. विद्याचरणवृत्तशीलसंपन्न Kauç. 67. नष्टः खलु भारतानां धर्मस्तथा क्षत्रविदां च वृत्तम् MBh. 2,2236. R. 2,33,11. 83,16. Spr. (II) 2351. 2593. (I) 2023. कुलं वृत्तेन रक्ष्यते 3134. 4345. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् । वृत्ततस्तु हतो हतः 5030. MBh. 3,17394. शीलवृत्तेन R. 1,58,20. 77,24. °संपन्न M. 8,179. R. 1,48,26. 6,103,6. श्रुतवृत्तोपपन्न M. 9,244. श्रुतवृत्ताढ्य R. Gorr. 1,79,16. वृत्ते स्थितस्याधिपतेः प्रजानाम् Ragh. 5,33. °हीन Spr. 4278. क्षत्रवृत्ते स्थितः MBh. 7,6741. — h) *Lebensunterhalt,* = वृत्ति H. an. Med. वृत्तानामेष (die neuere Ausg. richtiger वृत्तीनामेष) वो दाता भविष्यति नराधिपः Hariv. 335; vgl. 336. — i) *Rhythmus des Versschlusses* Ṛv. Prât. 1,15. 17,13. 16. 22. — k) *ein Metrum mit bestimmter Silbenzahl* (auch *Metrum* überh.) AK. H. an. Med. Ind. St. 8,180. 289. 326. fgg. 468. Kâvjâd. 1,11. Çrut. 43. Sâh. D. 566. हृत 220,15. Varâh. Bṛh. S. 54,99. 110. 104,2. 58 (hier zugleich *gutes Betragen*). 60. Bṛh. 1,2. — l) *ein aus 10 Trochäen bestehendes Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 163 (XV, 2). Ind. St. 8,400. — Vgl. आर्य°, इति°, उदीच्य°, एवं° (auch Jâǵn. 3,155), काम°, किं°, खण्डित°, गण°, गुरु°, छन्दो°, दुर्वृत्त, दृग्वृत्त, पाद°, पुरा°, पुरो°, पूर्व°, प्राग्वृत्त, भिन्न°, मङ्गलादेश°, मध्य°, मात्रा°, यथा°, यद्वृत्त (adj. *wie sich betragend* Spr. (II) 1652), राज° (auch MBh. 2,1950. R. 1,52,7 = 53,7 Gorr.), लोक° (*das Verfahren des grossen Haufens, der Unterthanen*) MBh. 2,1950. 4,90), वर्ण°, वस्तु°, विषम°, सद्वृत्त, साधु°, सु°.

वृत्तक 1) am Ende eines adj. comp. = वृत्त *Metrum* Sâh. D. 559. —

2) m. = श्रावक (Comm.) VARÂH. BṚH. S. 86,68; vgl. वृद्ध. — 3) n. *eine schlichte und dabei wohlklingende Prosa* Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 2. अकठोराक्षरं स्वल्पसमासं वृत्तकं मतम् 3. Beispiel 7. fgg.

वृत्तकर्कटी (वृत्त *rund* + क°) f. *Wassermelone* RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तकौतुक n. Titel einer *Metrik* Verz. d. B. H. No. 815. Ind. St. 8, 166. 215.

वृत्तकौमुदी f. desgl. COLEBR. Misc. Ess. II, 64, N. 3.

वृत्तखण्ड m. n. *Ausschnitt eines Kreises* COLEBR. Alg. 96.

वृत्तगन्धि oder °गन्धिन् n. *eine gekünstelte Prosa mit metrischen Partien* SÂH. D. 566. Verz. d. Oxf. H. 199, *a*, 6. 16. 207, *a*, 6. COLEBR. Misc. Ess. II, 133.

वृत्तगुण्ड m. *eine Grasart*, = दीर्घनाल RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तचेष्टा f. *Benehmen* MBH. 12, 4219.

वृत्ततण्डुल m. *Andropogon bicolor Roxb.* RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तत्व (von वृत्त) n. *Runde, Rundheit* Schol. zu NAISH. 22, 46.

वृत्तदर्पण m. Titel einer *Metrik* COLEBR. Misc. Ess. II, 64. fg.

वृत्तनिष्पाविका f. *eine best. Hülsenfrucht*, = नखनिष्पावी RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तपर्णी f. (*runde Blätter habend*) Bez. zweier Pflanzen: = महाशणपुष्पिका und पाठा RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तपुष्प m. (*runde Blüthen habend*) Bez. verschiedener Pflanzen: *Nauclea Cadamba Roxb.* HÂR. 96. RÂGAN. im ÇKDR. = शिरीष, वाणीर, कुब्जक und मुद्गर RÂGAN. ebend.

1. वृत्तफल n. *Pfeffer (runde Frucht)* RÂGAN. im ÇKDR.

2. वृत्तफल 1) adj. *runde Früchte habend.* — 2) m. *Granatbaum* und *Judendorn* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) f. आ Bez. verschiedener Pflanzen: = वार्त्ताकी, शशाण्डुली und आमलकी ebend.

वृत्तबन्ध m. *eine metrische Fessel*: वृत्तबन्धोज्झितं गद्यम् SÂH. D. 566.

वृत्तबीज 1) adj. *runden Samen habend.* — 2) m. *Abelmoschus esculentus W. und A.* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) f. आ *Cajanus indicus Spreng.* ebend.

वृत्तबीजका f. *ein best. Strauch*, = पाण्डुरफली RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तभूय adj.: अग्निनाविन्दुममृतं वृत्तभूयौ तिरो धत्तम् MBH. 1, 728. वृत्तं निर्वृत्तमुत्पन्नं विपदादि तस्य भूयं भावः। कृत्स्नप्रपञ्चात्मकावित्यर्थः NILAK. Verdorbene Lesart.

वृत्तमल्लिका f. Bez. zweier Pflanzen: = श्वेतार्क und मोदिनी RÂGAN. im ÇKDR.

वृत्तमाला f. *ein Kranz von Metren, Metrik* Verz. d. B. H. No. 814. वृत्तमुक्ताफलानां माला ebend.

वृत्तमुक्तावली f. Titel einer *Metrik* Verz. d. B. H. No. 814. COLEBR. Misc. Ess. II, 64. fg. 73. Ind. St. 8, 226.

वृत्तरत्नाकर m. desgl. Verz. d. B. H. No. 810. fgg. Verz. d. Oxf. H. 110, *b*, 15. 197, *b*. fgg., No. 462. fgg. MACK. Coll. I, 115. Verz. d. Kop. H. 15, *b*. COLEBR. Misc. Ess. II, 64 u. s. w. Ind. St. 8, 184. 206. fgg. 215. 218. °पञ्चिका 207. °टीका Verz. d. Oxf. H. 113, *a*, 43. °सेतु 198, *a*, No. 466.

वृत्तरत्नावली f. desgl. GILD. Bibl. 403.

वृत्तवत् (von वृत्त) adj. 1) *rund* MBH. 14, 1413. — 2) *einen guten Lebenswandel führend, tugendhaft* JÂGÑ. 1, 89. MBH. 3, 13779. 4, 593. 12, 9721. 13, 3302. HARIV. 13235.

वृत्तशत n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279, *b*, 4.

वृत्तशालिन् adj. = वृत्तवत् 2) R. GORR. 1, 72, 33.

वृत्तश्लाघिन् adj. *wegen seines Lebenswandels in gutem Rufe stehend*: क्षत्रिय MBH. 13, 5776.

वृत्तसादिन् adj. *gutes Betragen zu Schanden machend, sich schlecht betragend, unsittlich* R. 2, 34, 37.

वृत्तस्थ adj. *im guten Lebenswandel verharrend, einen guten Lebenswandel führend*: शूद्र M. 11, 126. 129. 12, 110. KATHÂS. 73, 23; vgl. वृत्ते स्थितः RAGH. 5, 33. तत्रवृत्ते स्थितः MBH. 7, 6741.

वृत्ताक्षेप (वृत्त + आ°) m. *eine Erklärung, dass man mit etwas Geschehenem nicht einverstanden sei, nicht recht daran glauben könne*, KÂVJÂD. 2, 122. Beispiel Spr. (II) 238. — Vgl. वर्तमानाक्षेप und भविष्यदाक्षेप.

वृत्ताध्ययनर्द्धि f. *Vortrefflichkeit des Lebenswandels und der Studien*; als Erkl. von ब्रह्मवर्चस AK. 2, 7, 38. H. 838. वृत्ताध्ययनसंपत्ति f. dass. HALÂJ. 2, 242.

वृत्तानुवर्तिन् adj. = वृत्तस्थ R. GORR. 2, 53, 12.

वृत्तान्त (वृत्त + अन्त) m. (n. wohl nur fehlerhaft ṚV. ANUKR. bei ROSEN zu ṚV. 1, 6, 5. KATHÂS. 2, 29. PAÑKAT. 30, 22) 1) *Geschichte, Vorfall, Begebenheit, Erlebnisse, Lebensumstände; Bericht über einen Vorfall* u. s. w.; = वार्त्ता AK. 1, 1, 5, 8. 3, 4, 14, 66. H. 260. an. 3, 304. MED. t. 160. HALÂJ. 1, 146. — ÇÂÑKH. BR. 26, 3. KÂTJ. ÇR. 25, 14, 28 (pl.). न ब्राह्मणक्षत्रिययोरापद्यपि हि तिष्ठतोः। कस्मिंश्चिदपि वृत्तान्ते शूद्रा भार्योपदिश्यते॥ M. 3, 14. MBH. 1, 102 (pl.). दृष्ट्वा चैनं ततो ऽपृच्छन्वृत्तान्तं सर्वमेव तम् 3, 2182. वृत्तान्तमुत्तरं ब्रूहि 11, 3. इत्येवं मम वृत्तान्तः कथ्यतां कौ युवामिति HARIV. 14618. 16355. R. 3, 19, 16. 5, 64, 14. Spr. 2886. RAGH. 3, 66. 14, 87. ÇÂK. 108, 16. SÂH. D. 407. KATHÂS. 1, 65. 7, 29. आमूलतः सर्वं वृत्तान्तं तमवर्णयत् 12, 191. 13, 161. 18, 198. 25, 54. 28, 135. 72, 11. fg. 90, 96. RÂGA-TAR. 1, 258. 319. 3, 15 (pl.). 323. 4, 77. 109. 338 (pl.). 5, 67. 6, 80. PRAB. 20, 6. 84, 1. 88, 12. PAÑKAR. 1, 4, 45. PAÑKAT. 38, 22. 130, 4. 10. 236, 1. HIT. 17, 4. 30, 18. 123, 14. VET. in LA. (III) 8, 15. 9, 6. 11, 3. 4. SÂJ. zu ṚV. 1, 114, 6. आजुहाव तं सूतं रामवृत्तान्तकारणात् *um Nachrichten von Râma zu erhalten* R. 2, 58, 1. कथयामास भूयो ऽपि रामवृत्तान्तविस्तरम् *Râma's Erlebnisse* 59, 2. जार° *die Erlebnisse mit dem Nebenmanne* Spr. 2712. उपकोशा° *Geschichte der* Up. KATHÂS. 4, 90. SARVADARÇANAS. 71, 8. समर° PRAB. 83, 9. कृप° RÂGA-TAR. 1, 252. तद्वृत्तान्ता न दर्शिताः 4, 307. PRAB. 25, 4. HIT. 65, 9. न कस्यचिदाख्येयो ऽयमस्मद्वृत्तान्तः PAÑKAT. 236, 3. आत्मवृत्तान्तः सर्वो निवेदितः 68, 21. तद्ब्रूहि निजवृत्तान्तं जन्मतः प्रभृति KATHÂS. 2, 28. स्व° 52. 7, 22. 34, 227. SÂJ. zu ṚV. 1, 123, 1. रात्रि° *was sich in der Nacht begeben hat* KATHÂS. 18, 124. कुशल° *Nachrichten über* R. 3, 79, 23. कार्यवृत्तान्तमपृच्छत् *Bericht über* 5, 56, 1. स्वागमन° Verz. d. Oxf. H. 128, *b*, 15. Am Ende eines adj. comp. (f. आ): सभापर्व बहुवृत्तान्तम् *mit vielen Geschichten* MBH. 1, 407. बहुवृत्तान्ता मिथिला *wo Vieles vorgefallen ist, von der man Vieles erzählt* 3, 13709. श्रुत° R. GORR. 2, 5, 25. KATHÂS. 12, 186. ज्ञात° 18, 344. RÂGA-TAR. 4, 437. अवगत° ÇÂK. 111, 4, v. l. विदित° RÂGA-TAR. 3, 281. PRAB. 113, 14. KATHÂS. 39, 88. उक्त° 52, 358. उक्तस्व° 21, 124. 123, 263. आख्याततद्वृत्तान्त 32, 122. यथावदधिगतनरपतिकोपाद्यशेषवृत्तान्त *vollständige Nachrichten über* Spr.

(II) 1704. — 2) *Hergang, die Art und Weise, wie Etwas vor sich geht, — geschieht:* लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राज्ञो जानाति नेतरः Spr. 1424. रमणीयः किल दिनावसानवृत्तान्तो राजवेश्मनः Vikr. 37,10. = प्रकार AK. 3,4,14, 66. H. an. (wo प्रकाश wohl nur Druckfehler für प्रकार ist). = प्रभेद Med. = भात्र Viçva im ÇKDr. Ausserdem noch folgende Bedd. bei den Lexicographen: कार्त्स्न्य AK. H. an. Med. प्रकरण AK. H. an. प्रक्रिया und प्रस्ताव Med. अवसर und एकान्त(वाचक) Viçva im ÇKDr. सद्वृत्तान्ताः Hit. 78,3 fehlerhaft für सद्वृत्ताश्च भूताः, wie die v. l. hat. — Vgl. प्रतिवृत्तान्तम् (*der Erzählung gemäss, wie berichtet wird* auch Râǵa-Tar. 1,189), प्राग्वृत्तान्त, यथा°, लोक°.

वृत्ति (von वर्त्) f. 1) *das Rollen* (von Thränen): स्तम्भितबाष्प° Çâk. 81, 3. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पम् 90; vgl. अश्रूणि वर्तय् *Thränen vergiessen* unter वर्त् caus. 1). — 2) *Art und Weise zu sein, — zu thun, — zu leben, Verfahren, Benehmen:* आहिताग्नि° Lâṭj. 10,18,11. त्रैविद्य° 8,6,29. वैश्य° Çâṅkh. Gṛhj. 4,11. एषोदिता गृहस्थस्य वृत्तिर्विप्रस्य M. 4,259. प्रबलतममामेवंप्रायाः प्रभेषु हि वृत्तयः Çâk. 183. Râǵa-Tar. 6,327. वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः Spr. (II) 1806. सरितामिव नारीणां वृत्तिर्निम्नानुसारिणी (I) 2135. 2887. 5369. किं दृत्तजीविकापि त्वमीदृशीं वृत्तिमाश्रिता Râǵa-Tar. 6,22. प्रमदाध्युषितां वृत्तिं सीता कच्चिन्न वर्तते R. 3,1,7. तस्यैवं वर्तमानस्य पूर्वेषां वृत्तिमन्वहम् Bhâg. P. 1,16,18. कां वृत्तिं वर्तयत्यसौ R. 7,88,3. तां वृत्तिमनुवर्तस्व 4,31,7. वयोबुद्ध्यर्थवाग्वेषश्रुताभिजनकर्मणाम् । आचरेत्सदृशीं वृत्तिमजिह्मामशठां तथा ॥ Jâǵń. 1, 123. शिष्यवृत्तिं समापन्नाः MBh. 15,40. इन्द्रस्तयोः स्वेच्छावृत्तिं न सहते Çuk. in LA. (III) 33,8. वर्तेत याम्यया वृत्त्या M. 8,173. R. 2,109,8. कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः Bhâg. P. 1,6,3. पूर्वराजर्षिवृत्त्या R. 2,23,27. नागरिकवृत्त्या संज्ञापयैनाम् Çâk. 60,2. प्रच्छन्नवृत्त्या Çuk. in LA. (III) 34, 10. मध्यां वृत्तिं समाश्रयेत् Spr. 2252. व्यपनयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः Mâlav. 1. आसुरीं वृत्तिमाश्रित्य Bhâg. P. 4,26,5. आश्रयेद्वैतसीं वृत्तिं न भौजंगीं कथं च न Spr. 3175. Kathâs. 5,6. सैंहीं वृत्तिमुपाश्रितः Spr. 2757. *Verfahren —, Benehmen gegen Jmd;* mit loc.: विद्यागुरुष्वेतदेव नित्या वृत्तिः M. 2,206. रिपौ Spr. (II) 206. Ragh. 10,30 (pl.). Mâlav. 9,2. पितुर्भगिन्यां मातृवद्वृत्तिमातिष्ठेत् M. 2,133. गुरोर्गुरौ संनिहिते गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् 205. 247. श्रेयस्सु गुरुवद्वृत्तिं नित्यमेव समाचरेत् 207. समां वृत्तिमवर्तन्त तयोः MBh. 15,9. R. 2,44,5. 58,17. fg. 73,8. 104,19 (112,23 Gorr.). R. Gorr. 2,75,25. 3,1,10. 4,17,52. कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने Çâk. 93. am Ende eines adj. comp.: तद्विपरीत° Ragh. 2,53. पराधीन° Megh. 8. आश्रमविरुद्ध° Çâk. 177. मेध्यविविक्त° Bhâg. P. 3,1,19. नास्तिक° M. 3,150. वृषल° 164. बक° 4,30. ज्येष्ठ°, अज्येष्ठ° 9,110. मुनि° Ragh. 1,8. पतंग° Spr. 1950. वेतस°, भुजंग° 3176. नेमि° Ragh. 1,17. — 3) *ein gutes, achtungsvolles, liebevolles Benehmen, ein Gefühl der Achtung und Liebe für Jmd* (vgl. गुरोर्गरीयसी वृत्तिर्या च शिष्यस्य MBh. 13,5114); die Ergänzung im gen. oder im comp. vorangehend: पितृ°, मातृ° MBh. 12,3996. गुरोः 3997. गुरु° 15,11. R. 2,30,36. 90,20. स कौरव्यः कुशली तात भीष्मो यथापूर्वं वृत्तिरस्त्यत्र कच्चित् MBh. 5,692. वृत्तिः = अस्मासु स्नेहः Nilak. वृत्ति v. l. für वृत्त *guter Wandel* Spr. (II) 71. — 4) *allgemeiner Gebrauch, Regel* ṚV. Prât. 4,12. AV. Prât. 1,8. — 5) *Art und Weise des Verhaltens; Wesen, Natur, Art:* संध्यक्षराणि संस्पृष्टवर्णान्येकवर्णवद्वृत्तिः AV. Prât. 1,40. आर्त्तेण वृत्तिः 95. परोक्षगुणावृत्तयः Spr. (II) 1566. कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः । मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य विशीर्यति वने ऽथ वा ॥ 1845. am Ende eines adj. comp.: भोगा भङ्गुरवृत्तयः (I) 2071. गुरु°, लघु° ṚV. Prât. 18,33. — 6) *Zustand:* सात्त्विकी, राजसी, तामसी Tattvas. 19. fg. — 7) *das Sichbefinden —, Vorkommen —, Erscheinen in, an:* अथ धर्मस्य कामादपक्रान्तस्य कुत्र वृत्तिः *wo befindet er sich?* Prab. 64,4. am Ende eines adj. comp.: नृभिर्गोधनैश्चापि वनवृत्तिभिः Hariv. 4285. उन्मार्ग° Kathâs. 22,239. समीप° (ed. Bomb. °वर्तिन्) Pańkat. 67,25. गुणकर्ममात्रवृत्ति — असमवायिहेतुत्वम् Bhâshâp. 22. 26. 164. नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषाः Tarkas. 4. पृथिवीजलतेजो° (रूप) 13. 54. परोक्ष° so v. a. *abwesend* Spr. (II) 1566. — 8) *das Vorkommen, Dasein:* अनुष्टुभाम् Lâṭj. 8,1,13. 5,15. गुणत्वोपाधिना सकलद्रव्यवृत्तिः Sarvadarçanas. 105,5. अनन्यथासिद्धकार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम् Tarkas. 21. प्रतिहततमो° (अधिकार) Vikr. 20. व्रतापदेशोज्झितगर्व° (वपुस्) 53. — 9) *das Obliegen, Hingegebensein* (die Ergänzung im loc. oder im comp. vorangehend) P. 1,3,38. Vop. 23,30. क्षत्रियस्य क्रमे वृत्तिः समाहिता MBh. 2,1951. प्राणैरपि हिते वृत्तिः Mahâvîraḱ. 92,15. सात्वधर्मार्थवृत्तिभिः Spr. (II) 1038. धर्म° (I) 5117. सेवावृत्तिविद् 2799. राग° Râǵa-Tar. 4,27. अद्रोह° 5,323. लब्धपरिपालन° Spr. (II) 1493. भोजनवृत्तिषु (I) 1303. जघन्यगुणवृत्तिस्थ (vgl. जघन्यगुणवृत्तिता MBh. 14,999) Bhag. 14,18. am Ende eines adj. comp.: शतैरक्ष्णामनिमेषवृत्तिभिः Ragh. 3,43. अशक्यारम्भ° Spr. (II) 713. धैर्य° 1519. मौन° 2247. द्रोह° 2399. Râǵa-Tar. 6,257. करुणा° Megh. 91. अनृशंस° R. 2,21,58. स्वबाहुं वः प्रतिकूलवृत्तिम् Bhâg. P. 3,16,6. — 10) sg. und pl. *Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe, Mittel zum Leben* AK. 2,9,1. 3,4,14,78. Trik. 3,3,183. H. 864. fg. an. 2,198. Med. t. 59. Halâj. 2,415. Vaiǵ. bei Mallin. zu Çiç. 2,112. Einschiebung nach Nir. 6,5. Kâtj. Çr. 20,2,14. Lâṭj. 8,7,10. M. 1,113. 3, 286 आत्मनो वृत्तिमन्विच्छन् 4,252. ज्यायसी 10,95. वृत्तिमाकाङ्क्षन् 121. Jâǵń. 2,48. 281. MBh. 3,8452. असृजद्वृत्तिमेवाग्रे प्रजानां हितकाम्यया 13, 3706. 3710. कर्षकाणां कृषिर्वृत्तिः पण्यं विपणिजीविनाम् । गावो ऽस्माकं परा वृत्तिः Hariv. 3809. अन्नार्जनोपाया वृत्तयः भैक्षोत्सृष्टयथालब्धाभिधा इति Sarvadarçanas. 75,18. fg. 74,14. विपुला Suçr. 2,395,12. Kâm. Nîtis. 2,19. 21. येन साधारणो वृत्तिः स शत्रुः Spr. 4453. वृत्त्यन्तराभावात् Kathâs. 20,23. Bhâg. P. 3,6,34. 12,35. 41. वृत्त्यर्थम् M. 2,141. 5,22. Spr. 2889. R. Gorr. 2,32,22. °हेतोस् M. 4,11. आत्मवृत्तये Jâǵń. 1,29. 216. M. 11, 7. दिने दिने स्वर्णशतं दीयते वृत्तये मम Kathâs. 53,83. तस्य वर्षं प्रति वृत्त्यै (so ist zu lesen) करभमेकं प्रयच्छति Pańkat. 229,6. भैक्षेण व्रतिनो वृत्तिः M. 2,188. फलैः Spr. 2939. 5374. Çâk. 171. राज्ञो वृत्तिः प्रजागोप्तुरविप्राद्वा करादिभिः Bhâg. P. 7,11,14. अतो ऽन्यतमया वृत्त्या जीवन् M. 4,13. 10,83. Jâǵń. 3,39. कया वृत्त्या वर्तितं वश्चरद्भिः क्षितिमण्डलम् Bhâg. P. 1,13,8. वृत्त्या स्वभावकृतया वर्तमानः 7,11,32. शूद्रवृत्त्यापि वर्तयेत् (वैश्यः) M. 10,98. लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति 4,200. वृत्त्युपजीविन् Mârk. P. 14,71. मयि पञ्चत्वमापन्ने कां वृत्तिं वर्तयिष्यति R. 2,63,30. तन्त्रवृत्तिं वर्तयेत् Lâṭj. 8,12,1. वृत्तिं समास्थाय M. 4,2. वैश्यवृत्तिमातिष्ठन्ब्राह्मणः 10,101. पुरुषो यया वृत्तिं प्रपद्यते Bhâg. P. 3,6,21. जघन्यो नोत्तमां वृत्तिमनापदि भजेन्नरः 7,11,17. मूलफलैर्वृत्तिं कुरुष *sein Leben unterhalten —, leben von* Spr. 4544. Kathâs. 4,126 (act.). 20,143. 56, 75. वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः Spr. 2386. यश्चास्य कुरुते वृत्तिम् *einen Lebensunterhalt gewähren* MBh. 13,3447. केन वृत्तिं कल्प-

यसि *wovon ernährst du dich* 1,700. भैक्षेण 701. वृत्तिं धर्म्यां प्रकल्पयेत् *einen Lebensunterhalt anweisen* M. 7,135. 10,124. 11,22. स्त्रीणां प्रेष्यजनस्य च । प्रत्यहं कल्पयेद्वृत्तिम् 7,125. 11,23. विधाय वृत्तिं भार्यायाः 9, 74. fg. Suçr. 2,394,17. Spr. 2504. Hariv. 336. वृत्तीनामेष (so die neuere Ausg.) वो दाता भविष्यति नराधिपः 335. स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेच्च यः Bhâg. P. 10,64,39. दृष्ट्वा दिवसवृत्तिं च तेषाम् Kathâs. 38, 32. 36,80. 53,84. वृत्तिं चास्य प्रदिष्टवान् 24,129. °कर्षित M. 2,24. 8,411. कालातिक्रमणं वृत्तेर्यो न कुर्वीत भूपतिः so v. a. *Sold* Spr. (II) 1697. वृत्तेर्निज्ञायाः क्षतिः (I) 5373. °क्षीण MBh. 13,3013. °वैकल्य M. 10, 85. °भङ्ग Spr. 5380. °च्छेद Kâm. Nîtis. 5,43. 15,4. °ह्रास Kusum. 24,5. हुताश° *Lebensunterhalt mittels des Feuers, Schmiedehandwerk* u. s. w.: जीवन्ति ये च हुताशवृत्त्या Varâh. Bṛh.S. 5,35. Am Ende eines adj. comp.: क्षीण° M. 8,341. क्षत° R. 2,32,28. धर्मोपार्जित° Pañkat. 6,5. द्यूत° *lebend von* M. 3,160. उञ्छ° 8,260. R. 2,32,34. उञ्छशिल° Kusum. 24, 3. अयाचित°, कृष्यादि°, सेवा° 4. वागुरा° M. 10,32. शस्त्र° 12,45. गो° Hariv. 4123. माल्य° 4479. वन्य° Ragh. 1,88. 2,38 (wo mit der ed. Calc. °वृत्तिः zu lesen ist). पयोद° Spr. (II) 914. षडंश° (I) 2037. वार्त्ता° Bhâg. P. 7,11,15. 11,23,6. दास° *als Knecht seinen Unterhalt findend* Varâh. Bṛh. 21,7. अ° *Mangel an Mitteln zum Leben, Nahrungssorgen* M. 4, 223. Spr. (II) 701. fg. °कर्षित M. 10,101. MBh. 4,229. — 11) *Wirkung, Thätigkeit, Function;* = प्रवर्तन Med. = परिणाम Comm. यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयोना उपशाम्यते। तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोना उपशाम्यते॥ Maitrjup. 6,34. Kap. 2,31. इन्द्रिय° 32. वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः 33. °निरोध 3,31. Sâṁkhjak. 12. fg. 28. fgg. Colebr. Misc. Ess. I, 382. मनो नवद्वारनिषिद्धवृत्ति Kumâras. 3,50. इन्द्रियाणाम् 73. 7,64. Nîlak. 45. 47. 55. 58. 169. 223. 238. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः Jogas. 1,2. 5. 2,11. गुण° 15. 50. धीवृत्तयः Bâlab. 1. अन्तःकरण° 11. प्राणानाम् Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 66. Prab. 41,3. 97,18. 98,1. Bhâg. P. 1,8,27. 9,31. 43. 3,5, 6. काल° 26. 6,27. 9,20. 12,2. 26,14. 22. 39. 29,28. 4,22,14. 55. 29,6. 5,11,8.9. बुद्धेर्जागरणं स्वप्नः सुषुप्तिरिति वृत्तयः 7,7,25. विषमा वामा विधेर्वृत्तयः Spr. (II) 2955. भाग्यवृत्तयः Râǵa-Tar. 5,261. विनयवारित° (मदन) Çâk. 44. — 12) *das Erscheinen —, Gebrauchtwerden eines Wortes in einer best. Bedeutung* (loc.), *die Function eines Wortes* Sâh. D. 23. 32. 267. 271. दक्षिणाशब्दस्य काले वृत्तिर्न भवति P. 5,3,28, Schol. दक्षिणा। उत्तर । इत्येताभ्यां दिग्देशकालवृत्तिभ्याम् ebend. गुरुशब्दश्चात्र मुख्यया वृत्त्या पितरि वर्तते so v. a. *nach seiner Hauptbedeutung* Mit. III, 64, *a*, 15. Sâh. D. 15,6. मुख्यार्थासंभवे च गौणी वृत्तिराश्रीयत एव Schol. zu Kâtj. Çr. 1,6,25. 4,3,25. Weber, Râmat. Up. 336. 315. तेरोव्यञ्जनपादवृत्ती तुल्यवृत्ती *werden auf gleiche Weise gebraucht, sind gleichbedeutend* AV. Prât. Comm. 154. — 13) *Art und Weise der Aussprache, — Recitation:* लेशवृत्तिरधिस्पर्शम् (यवयोः) AV. Prât. 2,24. द्रुता, मध्यमा, विलम्बिता Ṛ.V. Prât. 13,19. Çikshâ 22 in Ind. St. 4,269. — 14) im Drama *Stil, Charakter, genre*, deren vier angenommen werden: कैशिकी (hier und da fälschlich कौशिकी), सात्त्वती, आरभटी (die drei अर्थवृत्तयः) und भारती (शब्दवृत्ति); die Audbhaṭa nehmen noch eine fünfte Vṛtti an, ohne ihren Namen zu nennen; als Unterabtheilungen erscheinen मध्यमकैशिकी und मध्यमारभटी. AK. 3,4,14,75. H. 285. H. an. Med. Bharata, Nâṭjaç. 18,4. fgg. 20,1. fgg. Daçar. 2,44. 55. fgg. Sâh. D. 410. fgg. Pratâpar. 10,*a*,7. 24,*b*,1. Verz. d. Oxf. H. 86,*b*,51. 208,*a*, No. 489. Hierher wohl Kumâras. 7,91. — 15) *Alliteration, häufige Wiederholung desselben Consonanten:* रसविषयव्यापारवती वर्णरचना वृत्तिः Sâh. D. 259, 3. 4. fünf Arten aufgeführt: मधुरा प्रौढा परुषा ललिता भद्रेति वृत्तयः पञ्च Hall in der Einl. zu Daçar. S. 22. — 16) = वृत्त *Rhythmus des Versschlusses* Ind. St. 8,84. 113. 150. — 17) *Wortart, Wortform:* °सामान्य Nir. 2,1. वृत्तयः पञ्च कृत् तद्धित समास एकशेष सनाद्यन्तधातु इत्येतद्रूपाः P. 2,1,3, Schol. तत्र वृत्तिश्चतुर्धा समासतद्धितकृत्सनाद्यन्तधातुभेदात् Verz. d. Oxf. H. 178,*a*,8. fg. — 18) *Commentar* (zu einem Sûtra) AK. 3,4, 1,15. Trik. (विवृतौ zu lesen). H. 257. fg. H. an. Med. Vaiǵ. a. a. O. gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. कथादि zu 4,102. R. 7,36,45. Çiç. 2,112. माधुरी (माथुरी) P. 4,3,108, Schol. Colebr. Misc. Ess. I, 331. Verz. d. Oxf. H. 257,*b*,19. सूत्रं वृत्तिर्विवृतिः Sarvadarçanas. 90,19. — Vgl. अ°, आत्म°, ऋतु°, एकैक°, एवं°, क्षिति°, चित्त° (auch Râǵa-Tar. 5,193, wo mit der ed. Calc. so zu lesen ist), त्रि°, दुर्वृत्ति, देव°, धातु°, नग्न°, परोक्ष°, प्रति°, प्रतिकूल°, प्रत्यक्ष°, प्रयोग°, प्राचीन°, प्राच्य°, प्राण°, बहिर्वृत्ति, ब्रह्म°, भाग°, भाव° (unter भाववृत्त), भाषा°, भिक्षा°, भिन्न°, भैक्ष°, भोजन°, मध्यमक°, मनो°, यथा°, याम°, रण°, लिङ्ग°, वणिग्वृत्ति, वाक्य°, विश्व°, शरीर°, श्व°, स्व°, हृदय°, वार्त्तिक.

वृत्तिक am Ende eines adj. comp. (f. आ) 1) = वृत्ति 7): सर्वत्वग्वृत्तिको व्यानः H. 1109. — 2) = वृत्ति 10): अ° *keinen Lebensunterhalt gewährend:* देश Spr. (II) 699. प्रभु 700. — 3) = वृत्ति 11): मननवृत्तिकं मनः । मननमत्र निश्चयस्तद्वृत्तिका बुद्धिः Schol. zu Kap. 1,72. fg. Nîlak. 44. Sarvadarçanas. 164,5.

वृत्तिकर adj. (f. ई) *Lebensunterhalt gewährend* MBh. 13,3131. Suçr. 1, 3,16. Kathâs. 27,112. Bhâg. P. 3,3,27. 4,16,22. 17,10. 8,19,20.

वृत्तिकार m. *Verfasser eines* oder *des Commentars* (zu einem Sûtra) Colebr. Misc. Ess. I, 297. Ind. St. 3,396. Siddh. K. zu P. 3,1,96. Schol. zu 1,4,3 in der ed. Calc. Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,7. 210,*b*, No. 497. Verz. d. B. H. No. 757. Sarvadarçanas. 56,13. 21. 165,14. 168,2.

वृत्तिता f. am Ende eines comp. nom. abstr. eines auf वृत्ति ausgehenden adj. comp. 1) von वृत्ति 2): भिन्न° M. 12,33. MBh. 14,999. सिंह° Kâm. Nîtis. 11,45. सदृश° Spr. (II) 1180. — 2) von वृत्ति 9): जघन्यगुण° (vgl. जघन्यगुणवृत्तिस्थ Bhag. 14,18) MBh. 14,999. द्रोह° Râǵa-Tar. 4, 671. — 3) von वृत्ति 10): पयोमूलनीवारफल° Kâm. Nîtis. 2,27. अनायत्त° Spr. (II) 1451.

वृत्तित्व n. dass. 1) von वृत्ति 7) Bhâshâpar. 67. — 2) von वृत्ति 9): अहो वामैकवृत्तित्वं किमप्येतत्प्रजापतेः Kathâs. 21,48. — दीर्घ° MBh. 13,5115 fehlerhaft für दीर्घदर्शित्व, wie die ed. Bomb. liest.

वृत्तिद adj. (f. आ) *Lebensunterhalt gewährend, Ernährer* MBh. 13,3710. R. Gorr. 2,15,21. Bhâg. P. 3,13,7. 4,14,23. 18,30. 21,21. 23,2. 7,2,33. 15,15. Mârk. P. 99,28.

वृत्तिदातर् nom. ag. dass. MBh. 13,5129.

वृत्तिन् am Ende eines adj. comp. 1) = वृत्ति 9) MBh. 13,787. — 2) = वृत्ति 10): कृश° (so die ed. Bomb.) MBh. 13,1680. — Vgl. श्व°.

वृत्तिमत् adj. 1) von वृत्ति 2): क्षिति° *das Verfahren der Erde befolgend* Bhâg. P. 4,16,7. — 2) von वृत्ति 9): इदानीमिदमुद्धार्यमिति वृत्तिमतः पुरा। मम *diesem obliegend* so v. a. *mit diesem Gedanken beschäftigt* LA. (III)

88,11. fg. — 3) von वृत्ति 10) *einen Lebensunterhalt habend* Bhâg. P. 8, 19,36. am Ende eines comp.: मूलव्यसन° M. 10,38. चण्डालसम° MBh. 13,2589. — 4) von वृत्ति 11) *eine Thätigkeit —, eine Function ausübend:* चित्तं यत्र शरीरे वृत्तिमत् Sarvadarçanas. 162,13. निश्चय° *dessen Function* निश्चय *ist* Schol. zu Kap. 1,65.

वृत्तिकृशना f. N. pr. einer der Gattinnen Rudra's Bhâg. P. 3,12,13 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृत्तिसंग्रह m. Titel *eines gedrängten Commentars* zu den Sûtra Pâṇini's Colebr. Misc. Ess. II, 40.

वृत्तिस्थ m. *Chamäleon, Eidechse* Râǵan. im ÇKDr.

वृत्तिहन् adj. wohl *sich um den Lebensunterhalt bringend* Paramahaṁsop. in Ind. St. 2, 175, N. 1.

वृत्तिहन्तर् nom. ag. *Jmd den Lebensunterhalt entziehend* MBh.5,1346.

वृत्तेर्वारु (वृत्त + इ°) m. *Wassermelone* Râǵan. im ÇKDr.

वृत्तोक्तिरत्न (वृत्त - उक्ति - रत्न) n. Titel eines Commentars zum Piṅgala Colebr. Misc. Ess. II, 64.

वृत्य R. 3,46,7 fehlerhaft für वृत्त *Handlungsweise.*

वृत्त्यनुप्रास (वृत्ति + अ°) m. *Alliteration, häufige Wiederholung desselben Consonanten* Sâh. D. 635. Pratâpar. 72,b,1. Schol. zu Kâvjâd. 1,56.

वृत्त्युपाय (वृत्ति + उ°) m. *Mittel zum Leben* M. 10,2.

1. वृत्य partic. fut. pass. von वर् P. 3,1,109.101, Schol. Vop. 26,17. fg.

2. वृत्य partic. fut. pass. von वर्त् P. 3,1,110, Schol.

वृत्र (von 1. वर्) Uṇâdis. 2,13. 1) *Bedränger, Feind, feindliches Heer:* a) n. gew. pl.: इन्द्रेणा युजा तरुषेम वृत्रम् R̥V. 7,48,2. 8,9,4. युजं वृत्रेषु वज्रिणम् 1,7,5. यत्कारवे दश वृत्राण्यप्रति नि सहस्राणि बर्हयः 1, 53,6. 48,13. 3,49,1. 4,17,19. 22,9. 24,10. स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रून् 41,2. उभयानि 6,19,3. 26,2. वृत्रा, दस्यून् 29,6. वृत्रा, अमित्रान् 33,1. उभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च 3. 46,1. 7,83,1. वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः 34,3. 92,4. Vâlakh. 1,2. — b) m. = अरि, रिपु AK. 3,4,25,166. H. an. 2,459. Med. r. 86. Halâj. 5,60. Viçva bei Uǵǵval. वृत्रान्यञ्छरेत् TS. 2,4,12,1. — 2) m. N. eines von Indra bekämpften und erschlagenen Dämons, der die himmlischen Wasser raubt; häufig Vr̥tra Ahi genannt; ein Sohn Tvashṭar's von der Danâjus (Anâjushâ) AK. 3, 4,25,166. 31,240. Trik. 2,8,22. H. 174. H. an. Med. Halâj. Viçva a. a. O. R̥V. 1,32,5. 7. 51,4. 80,2. fgg. 121,11. 2,11,9. 18. अपो वव्रिवांसं वृत्रम् 14,2. 30,2. परिधिं नदीनाम् 3,33,6. नदीवृतम् 8,12,26. वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथाः 10,113,3. 6. AV. 6,85,3. 134,1. 8,5,3. 12, 1,37. 20,128,13. Çat. Br. 1,1,3,4. MBh. 1,2541. 2680. वलवृत्रौ 3, 12073. 5,7024. 12,3660 (fehlerhaft वृत्त ed. Calc.). Hariv. 2286. 7302. 12503. 13185. वलो वृत्रभ्राता 13187. वृत्रासुर 13589. 14289. °नाश R. 2, 25,30. Verz. d. Oxf. H. 59,b,25. 71,b,31. Bhâg. P. 6,9,17. °गाथाः 10, 27. Mancherlei Legenden über ihn, z. B. TS. 2,1,4,5. 4,12,2. 6,1,1,5. 5,1,1. Ait. Br. 3,15. Çat. Br. 1,6,3,17. 4,1. 4,1,4,8. Çâṅkh. Br. 15,3. Pañkav. Br. 18,5,2. MBh. 5,275. fgg. 12,10002. fgg. 14,298. fgg. Hariv. 13587. fgg. Bhâg. P. 6,9,11. fgg. — 3) m. *Gewitterwolke* Naigh. 1,10. H. an. Med. Viçva a. a. O. AV. 3,21,2. वृत्राज्जातो दिवाकरः 4,10,5. — 4) m. *Finsterniss* AK. 3,4,25,166. Trik. 1,2,2. H. ç. 19. H. an. Med. Halâj. Viçva a. a. O. — 5) n. so v. a. धन Naigh. 2,10. वित्त v. l. — 6) m. *Rad* (चक्र) Viçva. — 7) m. *Berg* H. an. Viçva; *ein best. Berg* Med. — 8) m. ein N. Indra's H. an. — 9) n. = ध्वनि Comm. zu Uṇâdis. in Siddh. K. ध्वनौ fehlerhaft für घने. — Vgl. वलवृत्रघ्न, वलवृत्रनिसूदन, वलवृत्रहन्.

वृत्रखादं adj. *den* Vr̥tra *verzehrend:* Indra R̥V. 3,45,2. 51,9. 10,65,10.

वृत्रघ्न m. nach Sâj. N. pr. eines Landstrichs an der Gaṅgâ: गङ्गायां वृत्रघ्ने ऽबध्नात्पञ्च पञ्चाशतं हयान् Ait. Br. 8,23. Offenbar dat. von वृत्रहन्. °घ्नी s. u. वृत्रहन्.

वृत्रतर compar. zu वृत्र. अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रः R̥V. 1,32,5. nach Sâj. so v. a. आवरणेन सर्वं तरति.

वृत्रतुर् adj. *Feinde* oder Vr̥tra *besiegend, siegreich:* Indra R̥V. 4, 42,8. 6,68,2. TS. 2,1,3,4. TBr. 2,8,3,8. Kâṭh. 13,3. दृह्लि सूनो सहसो वृत्रतुरम् R̥V. 6,20,1. इषं न वृत्रतुरं विक्षु धारयम् 10,48,8. Vâja 99,1. VS. 6,34. — Vgl. वार्त्रतुर.

वृत्रतूर्य n. *Besiegung der Feinde, —* Vr̥tra's; *siegreicher Kampf* Naigh. 2,17. R̥V. 1,106,2. 2,26,2. 6,13,1. 18,6. 8,7,24. 19,20. अपो महःसुनमनु वृत्रतूर्ये 10,66,8. इन्द्रो वृत्रमतरद्वृत्रतूर्ये TS. 2,8,3,6. VS. 1,13. TBr. 3,1, 2,1. Çâṅkh. Çr. 8,16,5.

वृत्रत्व n. nom. abstr. von वृत्र TS. 2,4,12,2.

वृत्रद्विष् m. Vr̥tra's *Feind* d. i. Indra H. 174, Schol.

वृत्रनाशन adj. Vr̥tra's *Tödter:* Indra Hariv. 7252.

वृत्रपुत्रा f. Vr̥tra's *Mutter* R̥V. 1,32,9.

वृत्रभोजन m. *eine best. Gemüsepflanze,* = गण्डीर Çabdak. im ÇKDr.

वृत्रवध m. *das Erschlagen des* Vr̥tra Nir. 7,10. Hariv. 2388. 7301. R. 4,38,4. Verz. d. Oxf. H. 12,b,48. 19,b, N. 6 (ein Schauspiel). 345, b,27. fg. Bhâg. P. 6,10. 12 in den Unterschrr.

वृत्रवैरिन् m. Vr̥tra's *Feind* d. i. Indra Kathâs. 20,95.

वृत्रशङ्कु m. nach Comm. zu Kâtj. Çr. 21,3,31 *Steinpfeiler* Çat. Br. 13,8,4,1.

वृत्रशत्रु m. Vr̥tra's *Feind* d. i. Indra MBh. 3,1778. R. 4,11,12. Kumâras. 1,20. Varâh. Bṛh. S. 19,21. Kathâs. 31,75.

वृत्रहं (वृत्र + ह) adj. *den Feinden verderblich:* शवस् R̥V. 6,48,21.

वृत्रहत्य n. *Kampf mit den Feinden, — mit* Vr̥tra R̥V. 1,52,4. 53, 6. स वृत्रहत्ये हव्यः 4,24,2. 6,47,2. 7,1,10. 10,48,8. 65,2. Çat. Br. 1, 6,4,12. Çâṅkh. Çr. 14,21,2. °हत्या f. Bhâg. P. 6,13,5. — Vgl. वार्त्रहत्य.

वृत्रहथ m. dass. R̥V. 3,16,1.

वृत्रहन् 1) adj. °हणम् P. 8,4,12. °घ्ने, °घ्ना 2, Vârtt. 1. °हणा (im Epos), f. °घ्नी *Feindetödter,* Vr̥tra*-Tödter, siegreich;* gewöhnlicher Bein. Indra's AK. 1,1,1,38. R̥V. 1,106,6. 2,70,7. वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् 6,47,6. ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे 8,59,1. 10,49,6. AV. 3,6,2. 4,24,1. Çat. Br. 11,1,5,5. 13,5,4,9. MBh. 3,596. 1781. 9,655. Hariv. 13024. Ragh. 3,62. Kumâras. 7,46. Varâh. Bṛh. S. 43,55. Bhâg. P. 9,7,18. Agni R̥V. 1,59,6. Sarasvatî 6,61,7. राजन् 1,91,5. Vâja 121,12. अंशु 6,17,4. अभ्वैः 60,3. 4,42,9. 5,86,3. superl. °हन्तम R̥V. 1,78,4. 5,35,6. Agni 6, 16,48. 7,94,11. बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् 8,78,1. AV. 7,110, 1. Çâṅkh. Çr. 2,15,3. — 2) f. °घ्नी N. pr. eines Flusses Mârk. P. 57,19. VP. 185, N. 80. — Vgl. वलवृत्रहन् und वार्त्रघ्न.

वृत्रहन्तर् m. *Tödter des* Vr̥tra d. i. Indra MBh. 3,12316.

वृत्रारि (वृत्र + अरि) m. Vr̥tra's *Feind* d. i. Indra Halâj. 1,52. Ka-

THÂS. 27,62. 121,130.

वृ॑थक् (von 2. वर्) adv. so v. a. वृथा; nach SÂJ. = पृथक्. वा॒र्तंतूता उप॑ घ॒वि । पतंते वृथ॒गग्नयः॑ RV. 8,43,4. 5.

वृ॑था (wie eben) adv. gaṇa स्वरादि zu P. 1,1,37. 1) *zufällig, nach Belieben; ohne Weiteres, wie sich's fügt; lustig:* आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत RV. 8,20,10. 1,38,4. 63,7. 88,6. उद्यत्प्तन्नरुणा भानवो वृथा 92,2. 140,5. अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययुः 168,4. वृथासृजन्त्पथिभिः (नदीः) 2,15,3. सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृथा 24,9. नि ये रिणान्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः 5,56,4. AV. 20,127,5. RV. 6,12,5. वृथा पवित्रे अर्षति 9,16,7. 30,1. 64,17. 88,6. अग्नेरिव भ्रमा वृथा 22,2. वृथा पाजांसि कृणुते नदीषा 76,1. 88,5. 109,21. वृथा क्रीळन्त इन्दवः 21,3. 97,9. 10,26,7. 61,24. 93,13. तान्येके वृथैवापास्यन्ति *werfen sie ohne Weiteres weg* TBR. 3,3,2,2. SHADV. BR. 3,1. वृथोदकानि *das nächste beste Wasser* ÇAT. BR. 9,4,2,9. °मांस *das erste beste Fleisch, nicht näher geprüftes und als der Vorschrift entsprechend befundenes —, nicht nach der Vorschrift behandeltes —, nur zum eigenen Genuss dienendes Fleisch* 11,7,1,2. M. 4,213. 5,34. JÂGN. 1,167. MBH. 1,6032. MÂRK. P. 34,56. Verz. d. Oxf. H. 281,b,35. °पक्व GOBH. 2,9,3. °पाकान्नभक्षणप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 281,b,34. °कृसरसंयाव M. 5,7. JÂGN. 1,173. °पशुघ्न *nur zu seiner Befriedigung ohne Berücksichtigung der Götter* M. 5,38. वृथा = अविधौ AK. 3,4,22 (28),9. H. an. 7,29. — 2) *unnützer Weise, für Nichts und wieder Nichts, vergebens, umsonst* AK. 3,4,22, (28),9. 3,5,4. H. 1534. H. an. MED. avj. 37. स नायज्ञुष्कमभिवास्यः । वृथैव स्यात् TBR. 3,2,8,8. तेनास्य तद्वृथान्नं संपद्यते KAUÇ. 68. न कुर्वीत वृथा चेष्टाम् M. 4,63. 8,111. MBH. 1,6032. 3,15551. 13,13354. R. GORR. 2,6,12. लङ्घनं च समुद्रस्य कथं तु (wohl नु zu lesen) न वृथा भवेत् 5,9,39. वृथा जातो मम श्रमः 15,1. RAGH. 2,34. 5,56. 12,81. ÇÂK. 72,10. 172. ad 54. ÇIÇ. 3,52. VARÂH. BṚH. S. 104,53. Spr. (II) 46. 1446. 2033. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम् (I) 2890. 5031. KATHÂS. 22,200. BHÂG. P. 1,7,51. P. 8,1,8, Schol. SARVADARÇANAS. 70,7. संश्रुत्य च पितुर्वाक्यं न कर्तव्यं वृथा *für Nichts und wieder Nichts gesprochen haben, ein Wort unerfüllt lassen* R. 2,21,41. 7,65,35. गर्जितेन वृथा किं ते कत्थितेन च MBH. 1,5995. वृथा जन्म ह्यपुत्रस्य 3,13353. वृथा जन्मानि चत्वारि वृथा दानानि षोडश 13352. 13357. MÂRK. P. 121,10. °वाच् GOBH. 3,5,11. °सुत NIR. 11,4. वृथोक्त MÂRK. P. 116,2. °ज्ञात M. 5,89. Spr. 1868. वृथोत्पन्न M. 9,147. वृथोच्छून SÂH. D. 214,3. वृथाख्या M. 7,47. वृथालम्भ 11,144. °छेद JÂGN. 3,276. °पाक MBH. 3,15552. °श्रम PANKAT. 116,23. वृथाकार Spr. 1261. यत्र वृथाभिनिवेशः HALÂJ. 4,99. °दान M. 8,159. JÂGN. 2,47. am Anfange eines adj. comp.: °लिङ्गा हिंसा MBH. 3,13059. °वादगतिस्मृति BHÂG. P. 3,5,14. वृथोद्यम 30,13. तेषां माता °प्रजा MÂRK. P. 22,42. — 3) *verkehrt, falsch, unrichtig, unwahr, mit Unrecht:* वृथा खलु मया मनसः संतापवृद्धिरुपेद्यते VIKR. 55,20. यत्रादण्ड्येषपापेषु दण्डो यैर्ध्रियते वृथा BHÂG. P. 6,2,2. °रूपसमावृत HARIV. 11151. °मार्गप्रदर्शिन् KATHÂS. 34,202. वृथाभिमान Spr. (II) 750. वृथाभिमानिन्, वृथोपदेशिन्, वृथानुष्ठान WEBER, GJOT. 111. am Anfange eines adj. comp.: °मति MBH. 2,594. वृथाचार 5,4149. °व्रत HARIV. 11187.

वृथात्व (von वृथा) n. *Vergeblichkeit* SÂH. D. 214,4.

वृथाषं॑ह् (वृथा + सह्) adj. *leicht bewältigend:* यद्ध पराचैर्वि दस्यूँर्योनावकृतो वृथाषाट् RV. 1,63,4.

1. वृद्ध॑ (partic. von 1. वर्ध्) 1) adj. P. 7,2,15, Schol. Der der Bedeutung nach entsprechende compar. ज्यायंस् und वर्षीयंस्, superl. ज्येष्ठ und वर्षिष्ठ P. 5,3,62. 6,4,157. VOP. 7,56. 58. zu belegen sind übrigens auch वृद्धतर und वृद्धतम. a) *erwachsen, gross geworden; gross, hoch* u. s. w.; = ऊढ, प्रवृद्ध H. an. 2,251. MED. dh. 18. त्वं (इन्द्र) सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः RV. 1,5,6. वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः 6,24,7. वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः 1,51,9. उत्सङ्गे वृद्धानां गुरुषु भवेत्कीदृशः स्नेहः VIKR. 148. पर्वत RV. 5,60,3. येन वृद्धो न शवसा 6,44,3. अप्तस 8,49,7. Indra 3,32,7. 4,19,1. AV. 11,8,34. VS. 18,4. क्रमवृद्धैर्दशोत्तरैः । तोयादिभिः *progressiv stets um das Zehnfache an Menge zunehmend* BHÂG. P. 3,26,52. अथ तेन सुवर्णेन वृद्धकोशो ऽचिरेण सः । बभूव पुत्रको राजा *angewachsen, vermehrt* KATHÂS. 3,24. वृद्धैर्धनैः HIT. 115,3. Spr. (II) 630. fgg. शीतवृद्धतरायामास्त्रियामा यान्ति *länger geworden* R. 3,22,12. °वेग *stark, heftig, gross* VARÂH. BṚH. S. 27,6. — b) *herangewachsen* (im Gegens. zu *jung*), *alt, bejahrt* (subst. *Greis*) AK. 2,6,1,12. 42. TRIK. 2,6,9. H. 339. H. an. MED. HALÂJ. 2,348. वृद्धः सप्तत्युत्तरवयस्कः MIT. I,23,a, 3 v. u. SUÇR. 1,129,1. 10. *über 80 Jahre alt* PRÂJAÇKITTENDUÇ. 2,b,4. — TS. 2,2,4,4. TBR. 1,7,2,3. SHADV. BR. 4,6. ÂÇV. GṚHJ. 1,7,21. 14,8. 3,10,6. M. 2,150. 4,154. 179. 184. 7,38. 8,66. 71. 312. 350. 395. 9,230. 283. MBH. 1,6032. 6130. R. 2,1,10. 50,19. 59,20. 63,30. 37. 64,34. RAGH. 9,78. 12,20. °सेवा KÂM. NITIS. 4,6. °सेवित 8,7. °सेविन् M. 7,38. वृद्धोपसेविन् Spr. (II) 504. 2836. (I) 4. न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः । यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥ 1392. 1968. 2891. fg. 4624. 4627. VARÂH. BṚH. 24,11. KATHÂS. 18,255. वृद्धबाल n. MBH. 5,5428. 5436. आवृद्धबालकम् LA. (III) 92,9. ज्ञानवृद्धो वयोबालः *an Kenntnissen ein Greis, an Jahren ein Kind* R. 2,45,8 (43,10 GORR.). अर्धवृद्धा AK. 2,6,1,17. अवृद्धा 18. वृद्धतम R. 5,1,97. वृद्धव्याघ्र HIT. I,4. वृद्धकुमारी P. 6,2,95, Schol. तापसवृद्धा ÇÂK. 68,17 (vgl. gaṇa कडारादि zu P. 2,2,38). हरिवीर° R. 5,60,20. कुरु° BHAG. 1,12. कुल° BHÂG. P. 4,9,39. पौर° MBH. 1,4615. DAÇAK. 94,8. ग्राम° MEGH. 31. घोष° RAGH. 1,45. शुद्धान्त° VIKR. 43. अन्तःपुर° KATHÂS. 32,174. गृह° 28,46. 96. कुलं सुवृद्धम् *ein sehr altes Geschlecht* Spr. (II) 1821. — c) *alt* so v. a. *erfahren, unterrichtet;* = पण्डित, प्राज्ञ, ज्ञ u. s. w. AK. 3,4,18,103. H. an. MED. HALÂJ. 2,177. 155. नाप्राप्तकालो म्रियते श्रुतं वृद्धानुशासनम् MBH. 3,2570. 3038. Spr. 2619. Schol. 2 zu BHAṬṬ. 1,27. — d) *hervorragend, sich auszeichnend durch* (die Ergänzung im instr. oder im comp. vorangehend): ज्ञानेन वयसौजसा R. 2,45,13. त्रैविद्य° M. 7,37. MBH. 13,5109. यशो° 1,4692. विद्याशीलवयोज्ञान° R. GORR. 1,80,14. कुलशील° 5,44,20. R. SCHL. 2,1,9. Spr. (II) 688. प्रज्ञा°, धर्म°, विद्या°, वयसा (I) 1834. धन° 5178. KUMÂRAS. 5,16. HIT. 19,3. जरा° R. 3,61,26. — e) *von grosser Bedeutung, wichtig* VS. PRÂT. 1,169. — f) *freudig gestimmt, ergötzt, fröhlich; hochfahrend:* अस्मे वृद्धा असन्निह RV. 1,38,15. (सुष्टुतिषु) वृद्धासु चिद्वर्धनो यासु चाकनत् *die freudigen Lieder, an welchen der Erfreuer* (Agni) *seine Lust haben mag,* 10,91,12. *stolz* 5,20,2. 7,18,12. — g) in der Grammatik *gesteigert* (zu आ, ऐ oder औ) AV. PRÂT. 4,55. LÂṬJ. 7,8,5. PUSHPAS. 5,1. fgg. *in der ersten Silbe ein* आ, ऐ *oder* औ *enthaltend* (oder *so behandelt, als wenn ein solcher Vocal dastände*)

P. 1,1,73. fgg. 4,1,148. 157. 171. 2,114. 120. 141. 3,144. Çânt. 2,33. — 2) m. f. *ein älterer Nachkomme, ein einen älteren Nachkommen bezeichnendes Patronymicum* oder *Metronymicum* (z. B. गार्ग्य) im Gegens. zu युवन् (z. B. गार्ग्यायण) P. 1,2,65. fg. 4,1,166. — 3) m. *a) ein Bettelmönch unter den* Çaiva Varâh. Brh. 15,1; vgl. वृत्तक 2) und वृद्धश्रावक. — *b)* = वृद्धदारक Râgan. im ÇKDr. — 4) f. श्रा N. pr. eines Weibes Vet. in LA. (III) 7,5. — 5) n. *Benzoe* AK. 2,4,4,10. H. an. Med. — Vgl. घृत°, तपो°, पर्जन्य°, ब्रह्म°, मद्°, महा°, यज्ञ°, वयो°, वर्ष°, विद्य°, वार्द्ध, वार्द्धक.

2. वृद्ध (partic. von 2. वर्ध्) adj. *abgeschnitten, in seiner Wurzel vernichtet:* वृद्धं (= छिन्न Nilak.) राष्ट्रं तत्रियस्य भवति ब्रह्म तत्रं यत्र विरुध्यतीह MBh. 12,2782.

वृद्धक (von 1. वृद्ध) adj. *alt, bejahrt;* m. *Greis* Hariv. 15651. अभुक्तवत्सु गर्भिणीवृद्धकादिषु MBh. 13,7338. — Vgl. वार्द्धक.

वृद्धकर्मन् m. N. pr. eines Fürsten VP. 384, N.

वृद्धकाक m. *Rabe* H. 1323.

वृद्धकात्यायन m. Kâtjâjana *der Aeltere* Ind. St. 1,235. Dâjabh. 148,13.

1. वृद्धकाल m. *Alter, Greisenalter* Spr. 2514. 5032.

2. वृद्धकाल m. N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 69,*b*,17.

वृद्धकावेरी f. *die alte* Kâverî (N. pr. eines Flusses): °माहात्म्य Mack. Coll. I, 84.

वृद्धकृच्छ्र n. Bez. *einer best. Kasteiung bei alten Leuten* (neben शिशुकृच्छ्र) Verz. d. Oxf. H. 283,*a*,12.

वृद्धकेशव m. *eine Form der Sonne* Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,7. Verz. d. B. H. 146,*b* (51).

वृद्धक्रम m. *das einem alten Manne gegenüber zu beobachtende Verfahren* MBh. 1,7064.

वृद्धतत्र m. N. pr. eines Mannes; s. वार्द्धतत्रि. — Vgl. तत्रवृद्ध.

वृद्धनेम m. desgl.; s. वार्द्धनेमि.

वृद्धगङ्गा f. N. pr. eines Flusses Kâlikâ-P. im ÇKDr.

वृद्धगङ्गाधर n. (sc. चूर्ण) Bez. *eines best. Pulvers gegen Durchfall* Çârṅg. Saṁh. 2,6,22.

वृद्धगर्ग m. Garga *der Aeltere* AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93,1 v. u. Verz. d. Oxf. H. 278,*a*,15. Verz. d. Cambr. H. 33. fg. 37. Varâh. Brh. S. 13,2. 48,2; vgl. Kern in der Vorrede S. 33. fg.

वृद्धगार्गीय adj. *von* Garga (Gârgja?) *dem Aelteren verfasst* Kern in der Vorrede zu Varâh. Brh. S. S. 33. fg.

वृद्धगार्ग्य m. Gârgja *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270,*a*,30. 278,*a*,17. Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Cambr. H. 66.

वृद्धगोनस m. *eine Schlangenart* Suçr. 2,265,12.

वृद्धगौतम m. Gautama *der Aeltere* Ind. St. 1,235. Verz. d. Oxf. H. 270,*a*,34. 278,*a*,26. Verz. d. B. H. No. 1166.

वृद्धचाणाक्य m. Kâṇakja *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 131,*b*, No. 238. Z. d. d. m. G. 19,322. Spr. (II) Vorwort S. XVI.

वृद्धता (von 1. वृद्ध) f. 1) *Alter, Greisenalter:* राज्ञायं वृद्धतां प्राप्तः प्रमाणे परमे स्थितः MBh. 15,157. — 2) *das Hervorragen:* ज्ञान° *durch Wissen* Prab. 105,14.

वृद्धतिक्ता f. *Clypea hernandifolia* Râgan. in Nigh. Pr.

वृद्धत्व (von वृद्ध) n. *Alter, Greisenalter* AK. 2,6,2,40. Ragh. 1,23. Spr. 2801. Verz. d. Oxf. H. 150,*b*, No. 320. Pańkat. 226,2. Sâj. zu RV. 1,125,1. *das Alter eines Planeten* so v. a. *die Zeit unmittelbar vor seinem Untergange* Ind. St. 5,297.

वृद्धदार m. = वृद्धदारक Râgav. im ÇKDr. unter वृद्धदारक.

वृद्धदारक m. *Argyreia speciosa oder argentea Sweet.* AK. 2,4,5,2.

वृद्धदारु n. dass. Râgan. im ÇKDr.

वृद्धद्युम्न m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Âbhipratâriṇa Ait. Br. 3,48. Çâṅkh. Çr. 15,16,10.

वृद्धधूप 1) *Acacia Seeressa* (शिरीष) *Roxb.* — 2) *Terpentin* Dhanv. in Nigh. Pr.

वृद्धनगर n. N. pr. einer *Stadt* Ind. St. 1,392. Verz. d. Oxf. H. 382, *b*, No. 451. 395,*b*, No. 121. fgg. 405,*a*, No. 3.

वृद्धनाभि adj. *einen hervorstehenden Nabel habend* AK. 2,6,2,12. H. 458.

वृद्धपराशर m. Parâçara *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 269,*a*,21. 34. 270,*b*,5. 278,*b*,26. Ind. St. 1,467.

वृद्धप्रपितामह m. *der Vater eines Urgrossvaters* Çabdar. und Çuddhit. im ÇKDr.

वृद्धबला f. *eine best. Pflanze,* = महासमङ्गा Râgan. im ÇKDr.

वृद्धबृहस्पति m. Bṛhaspati *der Aeltere* Kull. zu M. 9,181. Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,15.

वृद्धबौधायन m. Baudhâjana *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,17.

वृद्धभाव m. *Alter, Greisenalter* R. 2,21,19. R. Gorr. 2,32,43. 4,58,3. 62,2. Spr. (II) 2825. Pańkat. 50,8.

वृद्धभोज m. Bhoǵa *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Hall in der Einl. zu Vâsavad. 8. 9. 49.

वृद्धमनु m. Manu *der Aeltere* Ind. St. 1,58. 234. fg. Kull. zu M. 9,187. Verz. d. B. H. No. 1028. 1176. Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,27. 279,*a*,9. 10. 356,*a*,22.

वृद्धमहस् adj. *grossmächtig:* Indra RV. 6,20,3. 37,5.

वृद्धयवन m. Javana *der Aeltere* Wilson, Sel. Works I, 284. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,1. °जातक Ind. St. 1,467.

वृद्धयाज्ञवल्क्य m. Jâǵńavalkja *der Aeltere* Ind. St. 1,234. Verz. d. B. H. No. 1166. Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,34. 356,*a*,24.

वृद्धयोगतरंगिणी f. Titel eines Werkes ÇKDr. unter वसन्तकुसुमाकर.

वृद्धराज m. *Rumex vesicarius* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer best. Aut.

वृद्धवयस् adj. *hochkräftig* RV. 2,27,13.

वृद्धवसिष्ठ m. Vasishṭha *der Aeltere* Colebr. Misc. Ess. II, 392. Ind. St. 1,234. Verz. d. B. H. No. 1166. 1176. Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,38. 279,*a*,43. 356,*a*,25.

वृद्धवाग्भट m. Vâgbhaṭa *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,38.

वृद्धवादसूरि m. Vâdasûri *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 152,*a*, N. 3.

वृद्धवादिन् m. N. pr. eines Mannes Hall 166.

वृद्धवाशिनी f. *Schakal* Nir. 5,21.

वृद्धवाहन m. *der Mangobaum* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer best. Aut.

वृद्धविभीतक m. *Spondias mangifera* Çabdam. im ÇKDr.

वृद्धविष्णु m. Vishṇu (als Verfasser eines Gesetzbuchs) *der Aeltere* Ind. St. 1, 234. Verz. d. Oxf. H. 356,*a*,28. Mit. 207,13.

वृद्धवृष्ण adj. wohl so v. a. das folgende und danach zu verbessern AV. 7,62,1.

वृद्धवृष्णिय adj. *von hoher Manneskraft* TS. 4,4,12,2.

वृद्धवैयाकरणभूषण n. Titel einer Schrift (*das ältere* Vaij.) Verz. d. B. H. No. 764. fg.

वृद्धशङ्ख m. Çaṅkha *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,49. fg.

वृद्धशर्मन् m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,3150. Hariv. 990. 1476. 1931. Bhâg. P. 9,24,36. VP. 384, N.

वृद्धशवस् adj. *hochgewaltig:* die Marut Ṛv. 5,87,6. 8,25,10.

वृद्धशाकल्य m. Çâkalja *der Aeltere* Çâk. 101,6.

वृद्धशातातप m. Çâtâtapa *der Aeltere* Ind. St. 1, 234. Weber, Ġjot. 49. 53. Verz. d. B. H. No. 1024. 1149. 1166. Verz. d. Oxf. H. 271,*a*,1. 2. 279,*b*,15.

वृद्धशोचिस् adj. *gewaltig flammend* Ṛv. 5,16,3.

वृद्धशौनकी f. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1248.

वृद्धश्रवस् 1) adj. *mit grosser Schnelligkeit begabt:* Indra Ṛv. 1,89, 6. VS. 10,9. m. Bein. Indra's Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,226. AK. 1,1,1,37. H. 172. Halâj. 1,52. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 18, *b*,15. 19,*a*,35.

वृद्धश्रावक m. *ein Çiva'itischer Bettelmönch* Varâh. Bṛh. S. 51,20. Laghuǵ. in Ind. St. 2,287. — Vgl. वृद्ध 3) *a*).

वृद्धसंघ m. *eine Gesellschaft alter Leute* AK. 2,6,1,40.

वृद्धसुश्रुत m. Suçruta *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 311,*b*,40. fg.

वृद्धसूत्रक n. *in der Luft umherfliegende Baumwollenflocken* Hâr. 23.

वृद्धसेन (वृद्ध + सेना) 1) adj. *grosse Wurfgeschosse tragend:* die Marut Ṛv. 1,186,8. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Sumati's und Mutter der Devatâǵit Bhâg. P. 5,15,2.

वृद्धहारीत m. Hârîta *der Aeltere* Ind. St. 1,235. Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,34. 356,*a*,35.

वृद्धाचल (वृद्ध + अ°) n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 84,*a*,6.7.

वृद्धात्रि m. Atri *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 277,*b*,33.

वृद्धात्रेय m. Âtreja *der Aeltere* Verz. d. B. H. No. 941.

वृद्धादित्य m. *eine best. Form der Sonne* (आदित्य) Verz. d. Oxf. H. 70,*b*,33.

वृद्धान्त *Ehrenplatz* Burn. Intr. 402, N. 1.

वृद्धायु (वृद्ध + आयु) adj. *von hoher Lebenskraft* Ṛv. 1,10,12.

वृद्धार्यभट (so ist zu lesen) m. Ârjabhaṭa *der Aeltere* Verz. d. Oxf. H. 326,*a*, N. 1.

वृद्धि (von 1. वर्ध्) 1) f. = वर्धन Trik. 3,3,249. H. an. 2,251. Med. dh. 18. = स्फाति AK. 3,3,9. H. 1502. = कर्ष H. an. = अभ्युदय und समृद्धि Med. = समूह Çabdak. im ÇKDr. = धन Râǵan. ebend. *a*) *Wachsthum, Gedeihen; Zunahme; Ergötzen, Begeisterung:* वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः Ṛv. 1,10,12. VS. 18,4. 23,13. गर्भस्य Çat. Br. 10,2, 2,6. 7,4,1,45. 13,4,1,15. आ विंशतेर्वृद्धिः *bis zum 20sten Jahre wächst man* Suçr. 1,129,5. जन्मवृद्धितपेः M. 12,124. वृद्धिर्हि परमा प्राप्ता MBh. 3,12765. प्रभैः शरीरावयवैर्दिने दिने पुपोष वृद्धिम् Ragh. 3,22. जगाम वृद्धिम् Kathâs. 22,24. शनैर्वृद्धिमायपौ 154. ता वयं क्रमशः प्राप्ता वृद्धिमत्र पितुर्गृहे 26,55.43,151. आस्तां बालस्य संनद्धे द्वे धात्र्यौ तस्य वृद्धये Râǵa-Tar. 1,77. स शिशुर्वृद्धिमनीयत 5,77. Mârk. P. 25,13. तद्वृद्धौ (d. i. लोमवृद्धौ) श्मश्रु पुंमुखे AK. 2,6,2,50. सस्यस्य, सस्य° Varâh. Bṛh. S. 4,16. 8,36. 50. 22,5. 46,91. फलपुष्प° Ragh. 2,14. चन्द्रवृद्धिक्षयवशात् *das Wachsen und Abnehmen des Mondes* MBh. 1,1215. 9,2735. R. 5,3,3. Ragh. 5,16. Kumâras. 7,1. Verz. d. Oxf. H. 48,*b*,15. *das Wachsen, Anschwellen* (des Meeres, der Flüsse, des Wassers) MBh. 9,2735. Schol. zu Kap. 1,136. R. 1,36,12. Varâh. Bṛh. S. 46,89. Wilson, Sâṁkhjak. S. 23. वेला वृद्धिश्च वारिणः Halâj. 3,32. 46. H. 1076. 1087. अम्बुवाहस्य (zugleich *Gedeihen, Emporsteigen* einer Person) Râǵa-Tar. 2,149. ते (नराधिपाः) न वृद्ध्या प्रकाशन्ते गिरयः समुद्रे यथा so v. a. *hervorragen* R. ed. Bomb. 3,33,6. *das Aufsteigen* (des Bodens) Varâh. Bṛh. S. 53,117. कुलायं वृद्धिं नयति *vergrössert* Pańkat. 194,14. द्रव्य° *Vermehrung* M. 9,333. कोश° Râǵa-Tar. 4,363. अर्थ° Hit. 45,7. रतितं वर्धयेद्वृद्ध्या Spr. (II) 631. क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गः AK. 2,8,1,19. देवद्रव्येण या वृद्धिः *Bereicherung* Spr. (II) 2941. *Gewinn* (I) 1474. लब्धवृद्धि (दवाग्नि) *verstärkt, vermehrt* Ṛt. 1,25. Varâh. Bṛh. S. 104,55. तद्युष्माकं पक्षः पुनरप्येवं क्रमाद्गतो वृद्धिम् Kathâs. 45,385. धातूनां क्षयवृद्धी Suçr. 1,45,1. 48, 2. वृद्धिमाप्नोति मारुतः 152,14. अधिकतरवृद्धिगामिनी शर्वरी so v. a. *länger werdend* R. Gorr. 2,81,33. आयुर्वृद्धि *Verlängerung* Pańkat. 187, 7. अर्घ° *Zunahme, Steigen des Preises* Jâǵń. 2,249. Varâh. Bṛh. S. 17,25. क्षयं वृद्धिं च पण्यानाम् Jâǵń. 2,258. M. 8,401. स पुत्रपशुभिर्वृद्धिमश्नुते *eine Zunahme an* Spr. 4903. वृद्धौ *bei einer Zunahme an Zahl* Âçv. Gṛhj. 4,7,3. Jâǵń. 2,244. शते दशपला वृद्धिः 179. द्विगुणैर्द्विगुणैर्वृद्ध्या Mârk. P. 54,7. चतुर्वृद्ध्या Ind. St. 8,347. एकवृद्ध्या Varâh. Bṛh. 21,1. द्विगुणवृद्ध्या Pańkat. 88,14. मासवृद्ध्या *um einen Monat länger* Jâǵń. 1,258. षण्मासोत्तरवृद्ध्या *nach je sechs Monaten* Varâh. Bṛh. S. 5,19. प्रज्ञा° *Wachsthum, Zunahme* Çat. Br. 11,5,7,1. तपो° M. 2,175. MBh. 1,4. पाप्मनः Bhâg. P. 9,24,55. गुण° Râǵa-Tar. 4,634. धर्म° 5,243. व्याधि° Suçr. 1,34,16. वृद्धिं प्राप्य (रागः, शत्रुः) Spr. (II) 2380. *Zunahme an Macht und Glücksgütern, Wohlfahrt, Wohlergehen, Glück* VS. Prât. 1, 169. Jâǵń. 1,217. 249. MBh. 3,16880. R. 2,34,31. R. Gorr. 1,75,6. 2, 6,19 (Gegens. दुःख). विपुला 3,4,18. त्वत्परिग्रहो ऽपि मे वृद्धिहेतुः Mâlav. 22,13. परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम् Çiç. 15,1. आपत्काले, वृद्धिकाले Spr. (II) 952. (I) 2012. 2682. 3222 (Gegens. व्यसन). Varâh. Bṛh. S. 4,32. 10,16. 13,7. 19,10. 33,15. धर्मस्य देशस्य च 18,4. गृह° 53,116. personificirt (श्री°) als बोधिवृक्षदेवता Lalit. ed. Calc. 421,16. — *b*) *Anschwellung* Suçr. 1,82,8. *des Scrotums* H. 470. Wise 371. Suçr. 1,249, 10. fgg. 24,19. 2,111,2. fgg. Çârṅg. Saṁh. 1,7,48. Verz. d. B. H. No. 966. Verz. d. Oxf. H. 306,*a*,29. 313,*b*,32. — *c*) *Zins* (auf ein geliehenes Kapital) H. 881. H. an. Med. (कालान्तर zu lesen). Halâj. 2,417. P. 5,1,47. M. 8,140. 143. fg. 150. fg. 153. fg. 157. 10,117. MBh. 13,1640. Jâǵń. 2, 37. अवृद्धिक adj. 63. — *d*) in der Grammatik *die höchste Steigerung eines Vocals, die Vocale* आ, ऐ *und* औ VS. Prât. 5,29. P. 1,1,1. 3. 6,1, 88. 7,2,1. 114. 3,89. Râǵa-Tar. 4,634. Sarvadarçanas. 157,20. 167,19. गुणवृद्धी oder वृद्धिगुणौ gaṇa राजदन्तादि zu P. 2,2,31. — *e*) *ein best.*

Heilmittel AK. 2,4,3,31. H. an. Med. Suçr. 1,140,9. 2,220,14. = शैलेय Râǵan. im ÇKDr. — f) abgekürzt für वृद्धिश्राद्ध Çâṅkh. Gṛhj. 4,3. Âçv. Gṛhj. 2,5,13. Gobh. 4,3,34. — g) N. des 11ten astr. Joga (विष्कम्भादि ÇKDr.) Med. Koshṭhipr. im ÇKDr. — 2) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 124,b,46. — Vgl. अण्ड°, अन्न°, काम°, काल°, चक्र°, बुद्धि°, ब्रह्म°, भुक्त°, मनोज्ञ°, मूत्र°, वर्ष°, शक°.

वृद्धिक (von वृद्धि) 1) am Ende eines adj. s. u. वृद्धि 1) c). — 2) f. आ a) = वृद्धि 1) e) Çabdam. im ÇKDr. — b) Bez. einer Art von Dryaden: स्त्रियो मानुषमांसादा वृद्धिका नाम नामतः। वृक्षेषु जातास्ता देव्यो नमस्कार्याः प्रजार्थिभिः॥ MBh. 3,14529.

वृद्धिकर adj. (f. ई) *Wachsthum befördernd, Gedeihen bringend, mehrend, den Wohlstand vermehrend* Varâh. Bṛh. S. 41,9. 53,97. 59,13. 79,12. 94,14. तेमसस्य° 5,22. पशु° M. 7,212. स्तन्य° Suçr. 1,225,6. बुद्धि° M. 4,19. सत्त्व° 259. प्रीति° Râǵa-Tar. 5,367.

वृद्धिकर्मन् n. wohl so v. a. वृद्धिश्राद्ध Mârk. P. 51,58.

वृद्धिजीवक adj. *vom Wucher lebend* MBh. 13,5741. °जीवन ed. Bomb.

1. वृद्धिजीवन n. *Wucher* Halâj. 2,417.

2. वृद्धिजीवन adj. *vom Wucher lebend* MBh. 13,5741 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृद्धिजीविका f. *Wucher* AK. 2,9,4.

वृद्धिद adj. (f. आ) *Gedeihen bringend, die Wohlfahrt fördernd* Varâh. Bṛh. S. 53,37. 58,29. 63,1.

वृद्धिपत्त्र n. *eine best. Lanzette* Suçr. 1,26,11. 14. 20. 2,299,17. वृद्धिपत्त्रं तुराकारं छेदभेदनपाटने। ऋज्वग्रमुन्नते शोफे गम्भीरे च Vâgbh. 26,6.14.

वृद्धिमत् (von वृद्धि) adj. 1) = उत्थित AK. 3,4,14,88. *zunehmend, wachsend*: छाया, मैत्री Spr. (II) 1004. दण्ड *Strafe* Jâǵn. 2,248. *zur Macht gelangt* Spr. (II) 3032. — 2) *die* Vṛddhi *genannte Steigerung eines Vocals bewirkend* AV. Prât. 4,55, Schol.

वृद्धिश्राद्ध n. *ein Manenopfer bei bestimmten freudigen häuslichen und anderen Anlässen* (heisst auch आभ्युदयिकश्राद्ध und नान्दीमुख°) Colebr. Misc. Ess. I, 187. Saṁsk. K. 23,b,9. Comm. zu Kâtj. Çr. 350,5. zu Âçv. Gṛhj. 2,5,13. Verz. d. B. H. No. 139. 1245. Verz. d. Oxf. H. 40,a,14. 87,a,25. fg. 276,b,38. 286,a, No. 670. 288,a, No. 683. Verz. d. Cambr. H. 63.

वृद्धीभू (वृद्ध + 1. भू) *alt werden*: °भूत Kathâs. 72,320.

वृद्धोक्ष (वृद्ध + उक्षन्) m. *ein alter Stier* P. 5,4,77. Vop. 6,41. AK. 2,9,61. H. 1258. Halâj. 2,110. Kumâras. 5,70.

वृद्ध्याजीव (वृद्धि + आ°) adj. *vom Wucher lebend* AK. 2,9,5. H. 880. Halâj. 2,416.

वृद्ध्युपजीविन् (वृद्धि + उ°) adj. dass. R. Gorr. 2,90,17.

वृध् (von 1. वर्ध्) adj. *froh, heiter, begeistert*: इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणाम् (ईशे) RV. 10,89,10. जुषन्त वृधं सख्याय देवाः 1,167,4. इमं नरो मरुतः सश्चता वृधम् 3,16,2. Am Ende eines comp. auch in trans. Bed. *mehrend, stärkend*. Vgl. अन्ना°, आहुती°, ऋता°, ऋदू°, क्षत्र°, गिरा°, घृता°, तमो°, तुग्र्या°, त्वा°, दक्ष°, देवा°, नमो°, पयो°, पर्वता°, मधु°, महि°, यज्ञ°, रयि°, वयो°, सहो°, सु°.

वृध (wie eben) 1) adj. a) *sich ergötzend, — freuend; begeistert*: स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः RV. 8,13,2.1. अप्तुर्भिर्वृधो जुषाणो अर्कैः 10,6,4. 7,91,1. Indra 10,89,11. 147,3. — b) *erfreuend*, verbal constr.: होत्रा इन्द्रं वृधासः RV. 8,82,23. m. *Erfreuer; Förderer, Mehrer; Freund*: असि दभ्रस्य चिद्वृधः RV. 1,81,2. सखीनाम् 7,32,25. वाजानाम् 10,26,9. असुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः 5,34,6. 8,12,18. दक्षस्य 6,15,3. 20,11. यज्वनः 8,32,18. 72,2. अविता वृधश्च 6,34,5. 48,2. तं घेदग्निर्वृधावति (वृधम्) 8,64,14. भुवन्यथा नो विश्वे वृधासः 1,186,2. यूयं हि ष्ठा नमस इद्वृधासः 171,2. असाम यस्य विधतो वृधासः 4,2,10. — 2) m. *Erfreuung*: वयमिद्वो वृधाय हूमहे RV. 8,72,6. — Vgl. अ°, ऋता°, कवि°, त्वा°, देवा°, मरुद्वृध, सदा°.

वृधत् Opferruf s. u. 1) वर्ध् 2) d).

वृधन्वत् adj. *eine Form der Wurzel* 1. वर्ध् *enthaltend* Ait. Br. 4,31. TS. 2,5,2,5. TBr. 1,3,1,3. Âçv. Çr. 1,5,35. 2,1,25.

वृधम् Opferruf s. u. 1. वर्ध् 2) d).

वृधमान (partic. von 1. वर्ध्) Uṇâdis. 2,87. adj. *wachsend; sich ergötzend* RV. 2,2,5. 4,3,6. 6,12,3. m. = पुरुष Uǵǵval.

वृधसानु m. = पुरुष, पत्त्र und कृति Uṇâdik. im ÇKDr. — Vgl. वृधसान.

वृधस्नु (von 1. वर्ध्) adj. etwa *fröhlich*: अत्यो वृधस्नू रोहिता घृतस्नू RV. 4,2,3.

वृधीक (wie eben) m. *Förderer, Erfreuer* RV. 8,67,4.

वृधीय am Ende eines comp. von वृध; s. इषो°.

वृधु (von 1. वर्ध्) m. N. pr. eines Zimmermanns M. 10,107.

वृध्य (wie eben) partic. fut. pass. P. 3,1,110, Schol. Vop. 26,17. fg.

वृन्त 1) n. *Stiel eines Blattes, — einer Blüthe, — einer Frucht* AK. 2,4,1,15. H. 1127. an. 2,198. Med. t. 60. Halâj. 2,30. पलाश° Kâtj. Çr. 25,8,1. 15. Çâṅkh. Çr. 4,15,19. तालैरिव वृन्ताद्भ्रष्टैः MBh. 3,8718. °बद्धं महाफलम् 11,136. वृन्तादिव फलं पक्वं पतन्ति ते Spr. 4646. मा त्वां वृन्तादिव फलं पातयिष्ये रथोत्तमात् R. 3,56,15. मालतीपुष्पवृन्ताग्र *das obere Ende der Röhre der Jasminblüthe* Suçr. 1,25,8. 94,3. 2,215,3. फलमिव वृन्तबन्धनात् 1,277,13. शाल्मलि° 2,436,21. 440,21. 338,18. दुण्डुक° 131,16. दाडिमपुष्प° 153,7. वृन्ताच्छ्लथं हरति पुष्पमनोकहानाम् (वायुः) Ragh. 5,69. ad Çâk. 19. Mâlatim. 16,20. समेतु तेनासौ वृन्तेनेवार्तवी लता Kathâs. 25,169. प्रसून° 89,8. Râǵa-Tar. 2,83. *Stiel einer Schale* Kâtj. Çr. 9,2,22. Schol. zu 1,3,36 (60,5). — 2) n. *Brustwarze* H. an. Med. वक्षोज° Med. k. 197. — 3) = वृन्ताक *die Eierpflanze*: °फल Suçr. 1,26,20. 27,2. — 4) *ein best. kriechendes Thierchen (Raupe)* AV. 8,6,22. — 5) f. वृन्ता = वृत्ता *ein best. Metrum: 4 Mal* ⏑⏑⏑⏑, ⏑⏑⏑⏑ – – – Colebr. Misc. Ess. II, 160 (VI, 10). Ind. St. 8,376. — 6) सवृन्त Bhâg. P. 9,11,28 fehlerhaft für सवृन्द. — Vgl. कामवृन्ता, कालवृन्त, कृष्णवृन्ता, तालवृन्त, त्रि°, दीर्घ°, नील°, फल्गु°, रक्त°, राग°, शूक°, स्तन°.

वृन्तक (von वृन्त) 1) am Ende eines adj. comp. (f. वृन्तिका): अवृन्तक *ohne Stiel* (eine Schale) Schol. zu Kâtj. Çr. 24,4,40. Vgl. कृष्णवृन्तिका, दीर्घवृन्तक und नील°. — 2) f. वृन्तिका *Stiel*: पलाश° MBh. 1,1443. °वर्तिका ed. Bomb.

वृन्ताक m. = वार्त्ताकी *die Eierpflanze* Çabdar. im ÇKDr. f. ई dass. Râǵan. ebend. वृन्ताकविधि (?) Verz. d. Oxf. H. 34,b,36. — Vgl. फल्गुवृन्ताक, कण्टकवृन्ताकी, वन°.

वृन्तिता (von वृन्त) f. *eine best. Pflanze*, = कटुक Çabdak. im ÇKDr.

वृन्द 1) n. Naigh. 4,3. Nir. 6,34. a) *Schaar, Trupp, Heerde, Schwarm, Menge* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,98. AK. 2,5,40. H. 1411. Halâj. 4,1. MBh.

4,599. गण° (in Çiva's Gefolge) 13,892. प्रोषितानाम् Megh. 97. योगि° Spr. 1471. वादि° 1345. 5204. 5418. Çrut. 15. दिविषद्वन्दैः Git. 7,42. सखी° 12,1. Verz. d. Oxf. H. 120,a,37. 139,a,7. Pańkat. 223,2. Çuk. in LA. (III) 38,7. स्व° Râǵa-Tar. 3,112. 5,358. वानराणाम्, रक्षसाम्, राक्षसानाम् R. 6,99,24. सदृश° MBh. 6,2666. गजानाम् Kumâras. 7,52. AK. 2,8,2,4. बिडाल° Spr. 1594. शृगाल° Pańkat. 64,3. हंस° Spr. 1999. कलापिनाम् Kâvjâd. 2,118. Bhâg. P. 4,6,19. Bhaṭṭ. 8,10. अलि° Ragh. 12,102. नागेश्वराणाम् (Pflanzen) Pańkar. 1,6,22. रथ° MBh. 1,8228. 8,3006. घनानाम् *Wolken* Varâh. Bṛh. S. 24,18. मेघ° MBh. 1,7580. 3,8677. 5,7111. 8,2594. R. 1,16,33. 5,55,16. अभ्र° Megh. 64. Ragh. 7,66. 16,25. जलद° Ṛt. 3,22. रश्मि° Kathâs. 90,5. धातु° R. 5,54,4. केश° AK. 2,6,2,47. नीलालक° Bhâg. P. 4,25,31. कुटिलकुन्तल° 3,28,30. वृन्दं वृन्दं च तिष्ठताम् *schaarenweise, in Gruppen* R. 2,57,12. पद्यः तीवा वृन्दैरुदचरन् *in abgesonderten Gruppen* Bhaṭṭ. 8,31. वृन्दवृन्दैर्जनैः *in abgesonderten Gruppen stehend* R. Gorr. 2,4,16. Als m. fälschlich Ṛt. 1,23, v. l. — 2) n. *eine Menge beisammen stehender Blüthen* oder *Beeren, Traube:* सवृन्दैः कदलीस्तम्भैः पूगपोतैश्च तद्विधैः Bhâg. P. 4,9,54. 21,3. 9,11,28 (bei Burnouf fälschlich सवृत्तैः). — 3) n. *eine best. hohe Zahl,* 100000 Çańkha = 100,000,000,000 R. 6,4,57. m. = 10 Arbuda = 1000,000,000 Ǵjotisha im ÇKDr. — 4) m. *eine Geschwulst* oder *Afterbildung in der Kehle* Wise 311. Suçr. 1,92,9. 306,15. 308,4. 2,132,14. Çârṅg. Saṁh. 1,7,79. — 5) m. N. pr. eines medicinischen Autors Verz. d. B. H. No. 940. fg. 958. Verz. d. Oxf. H. 315,b, No. 750. 316,a, No. 751. 357,a, No. 849. fg. °टीका 311,b, 39. — 6) m. unter den Ǵinaçakti Vjâḍi zu H. 233; wohl fehlerhaft für वृन्दा. — 7) f. आ a) ein Name der Tulasî (*Basilienkraut*) Çabdar. im ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 24,a, 27. — b) ein Name der Râdhâ (Kṛshṇa's Geliebte) Pańkar. 2,4,7. 51. N. pr. der Gattin Ǵalaṁdhara's und einer Tochter des Fürsten Kedâra ÇKDr. — Vgl. एकवृन्द, गो°, ब्रह्मवृन्दा, मदवृन्द, मत्त°.

वृन्दरं adj. von वृन्द gaṇa अश्मादि zu P. 4,2,80.

वृन्दशस् (von वृन्द) adv. *in Gruppen, heerdenweise* R. Gorr. 2,57,12. Hariv. 3884. Bhâg. P. 10,35,5.

वृन्दार (von वृन्द, wie शृङ्गार von शृङ्ग) adj. = वृन्दारक = मनोज्ञ Çabdam. im ÇKDr.

वृन्दारक (von वृन्दार oder वृन्द) Nir. 6,34. P. 5,2,122, Vârtt. 4. Vop. 7,32. fg. 1) adj. (f. वृन्दारका und वृन्दारिका P. 7,3,45, Vârtt. 11. Vop. 4,7). P. 6,4,157. AK. 3,2,2,62. *an der Spitze einer Schaar stehend, der beste —, der schönste in seiner Art;* = यूथपातर् Vjâḍi bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. = मुख्य AK. 3,4,1,16. = श्रेष्ठ Trik. 3,3,34. H. an. 4,34. fg. Med. k. 203. = रूपिन् AK. = मनोरम H. an. = मनोज्ञ Med. वृन्दारक आप्यः Çat. Br. 14,6,11,1. कुरुमध्येषु MBh. 5,893. युवा वृन्दारकः शूरः 11,551. am Ende eines comp. P. 2,1,62. गो° Schol. समस्तमुनिमनुजवृन्द° Verz. d. Oxf. H. 120,a,37. fg. LA. (III) 88,6. im Prâkrit: गोविन्दारअोत्ति भणिदस्स रिसभस्स परिस्समो पास्सदि Çâk. Ch. 93,4. — 2) m. a) *ein Gott* AK. 1,1,1,4. Trik. H. 88. H. an. Med. Halâj. 1,4. यो चक्रतुर्मां मघवन्वृन्दारकमिवाजरम् MBh. 3,10380. Bhâg. P. 6,10,3. Mârk. P. 16,85. Verz. d. Oxf. H. 11,b,7 v. u. 146,b,1. 199,a, 18. Verz. d. B. H. 282,9. Çatr. 1,26. Pârçvanâthak. 3,228 (nach Aufrecht). — b) N. pr. eines der 100 Söhne des Dhṛtarâshṭra MBh. 1, 4547. 7,1610. वृन्दारकं (वृत्तारकं falschlich ed. Calc.) वीरं कुरूणां कीर्तिवर्धनम् 1872. — Vgl. गो°.

वृन्दारकाय् (von वृन्दारक) am Ende eines comp. *den besten unter — spielen, — vorstellen wollen:* मूढधीस्तद्वदिच्छामि कविवृन्दारकायितुम् Verz. d. Oxf. H. 120,b,12.

वृन्दारण्य n. = वृन्दावन Pańkar. 4,8,60. 64.

वृन्दावन (वृ° + वन) 1) n. N. pr. eines heiligen *Waldes* am linken Ufer der Jamunâ in der Nähe von Mathurâ, des Schauplatzes der Liebesspiele Kṛshṇa's mit Vṛndâ (= राधा und auch = तुलसी), Hariv. 3497. fgg. Ragh. 6,50. °विपिन Git. 1,33. 45. Verz. d. Oxf. H. 9,a, No. 47. 13,b,37. 14,b,30. 21,b,10. 24,b,45. 26,b,37. 27,a,4 4. 39,b,14. 128, b,27. 131,b, No. 239. 145,a,20. 237,a,23. 301,a,34. Pańkar. 1,1,67. 7, 60. 2,2,63. 4,7. 51. 4,1,27. Vop. 5,6. Hall 70. °नगर Verz. d. Oxf. H. 26,b,39. वृन्दावनेश Bein. Kṛshṇa's Pańkar. 1,5,21. वृन्दावनेश्वर desgl. Pâdma-P., Pâtâlakh. 9 und Pâdmottarakh. 67 im ÇKDr. वृन्दावनेश्वरी Bein. der Râdhâ ebend. वृन्दावनमाहात्म्य Verz. d. Pet. H. No. 18. °यमक Haeb. Anth. 453. fgg. °शतक 430. fgg. °चम्पू Colebr. Misc. Ess. II, 136. — 2) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218,a, N. 3. — 3) f. ई ein Name der Tulasî (*Basilienkraut*) Verz. d. Oxf. H. 24,a,27. — Vgl. तुलसी°, विवाह°.

वृन्दिन् (von वृन्द) adj. am Ende eines comp. *eine Schaar —, eine Menge von — enthaltend:* (सेनाम्) पदातिनीं नागवतीं रथिनीमश्ववृन्दिनीम् MBh. 5,5703.

वृन्दिष्ठ und वृन्दीयंस् (von वृन्द) adj. superl. und compar. zu वृन्दारक P. 6,4,157. Vop. 7,56. AK. 3,2,2,62.

वृशं Uṇâdis. 4,104. 1) m. a) N. pr. eines Mannes, Liedverfassers von ṚV. 5,2. mit dem patron. Ǵâra (Anukr. Çâṭj. Br.), Ǵâna (Pańkav. Br. 13,3,12. D. zu Nir. 4,18), Vaiǵâna (Sâj. in Ind. St. 10,32). वृषस्य जानस्य अभीवर्तः N. eines Sâman Ind. St. 3,212,b. Vgl. वार्श. — b) = वृष *Maus* oder *Ratte* Çabdar. im ÇKDr. — c) = वृष *Gendarussa vulgaris Nees.* Bhar. zu AK. 2,4,2,22 nach ÇKDr. = ओषधि Uǵǵval. — 2) f. आ *ein best. Kraut* Uṇâdik. im ÇKDr. — 3) f. ई Prab. 21,4 fehlerhafte Schreibung für बृसी.

वृश्चंद्दन (वृश्चत्, partic. von व्रश्च् + वन) *Bäume fällend, — spaltend* ṚV. 6,6,1.

वृश्चन m. = वृश्चिक *Scorpion* Râǵan. im ÇKDr. unter वृश्चिक.

वृश्चिक Uṇâdis. 2,40. 1) m. *Scorpion, Tarantel;* = आलि, द्रुण AK. 2,5,14. H. 1211. an. 3,100. Med. k. 159. Hâr. 218. Halâj. 3,23. = शूककीट AK. 2,5,14. 3,4,1,7. H. an. Med. = गोमयकीट und कर्कट Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — ṚV. 1,191,16. AV. 10,4,9. 15. 12,1,46. Suçr. 1,2,15. 62, 1. 2,257,17. 293,14. R. 2,25,16 (32 Gorr.). 28,21 (10 Gorr.). वृश्चिकस्य विषं पुच्छम् Spr. (II) 2471. Varâh. Bṛh. S. 50,3. 54,73. Bhâg. P. 3,30, 27. 7,9,14. 8,7,46. 10,46 (स° adj.). Mârk. P. 14,73. वृश्चिकादिविषक्रमत्व Verz. d. Oxf. H. 94,a,8. °लाङ्गूल Halâj. 3,23. उद्भिद्वृश्चिकवद्वर्णाः Kusum. 22,18. यथा वा वृश्चिकस्य गोमयाद्वृश्चिकाद्बाद्भवः 23,4. 5. P. 1,4, 30, Schol. वृश्चिकी f. Trik. 3,5,19. — b) *der Scorpion im Thierkreise* H. 116, Schol. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 184,b, No. 419. Weber, Ǵjot.

102. Varâh. Brh. S. 40,1. 10. fg. 42,9. Brh. 23 (21), 7. 27 (25), 22. fgg. Laghuǵ. 1,12 in Ind. St. 2,280. Bhâg. P. 5,21,5. Mârk. P. 58,77. Verz. d. Oxf. H. 97,b,32. — c) *ein best. Kraut* H. an. Med. *Boerhavia procumbens* Nigh. Pr. = मदन Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — d) = काल, कालिक Uṇâdivr. im Saṁkshiptas. nach ÇKDr. — e) = अग्रक्रायणामास Sârasundarî im ÇKDr. — 2) f. आ *ein best. Strauch*, = अलिपत्त्रिका Râǵan. im ÇKDr. — Der Form nach liesse sich das Wort leicht auf व्रश्च् zurückführen, aber die Bed. liegt zu weit ab. — Vgl. पत्त्र°.

वृश्चिकपत्त्रिका f. *eine best. Pflanze*, = पूतिका Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. अलिपत्त्रिका.

वृश्चिकर्णी f. *Salvinia cucullata Roxb.* (आखकर्णी d. i. आखु°) Râǵan. im ÇKDr. — Vgl. वृषकर्णी, वृषपर्णी.

वृश्चिकाली f. *Tragia involucrata* (ihre Haare *stechen* wie die der Nessel) Ratnam. 69. Suçr. 1,137,6. 138,13. 145,18. 157,16.

वृश्चिकेश (वृश्चिक + ईश) m. *der über den Scorpion im Thierkreise herrschende Planet* d. i. *Mercur* Varâh. Brh. 5,3.

वृश्चिपत्त्री f. = वृश्चिकाली Ratnam. im ÇKDr.

वृश्चीक m. *eine best. Pflanze* Suçr. 2,416,12. 531,4.

वृश्चीर m. *eine weiss blühende* पुनर्नवा Ratnam. im ÇKDr.

1. वृष 1) m. P. 6,1,203. = वृषन्; in der älteren Sprache nur am Ende eines comp.: एक° bis दश° AV. 5,16,1. fgg. अश्ववृष *Hengst* Çat. Br. 14,4,2,8. a) *Mann, Gatte*: स्ववृषं या परित्यज्य परवृषे वृषायते Kâçikh. 40,93 (nach Aufrecht). — b) *Stier* AK. 2,9,59. 3,4,29,222. Trik. 1,1,49. 2,9,19. H. 1256. 47. an. 2,571. Med. sh. 25. Halâj. 2,108. M. 8,242. 11,136. MBh. 13,3694. R. 3,22,18. 5,11,3. Ragh. 2,35. Kumâras. 5,80. Varâh. Brh. S. 24,35. 48,44. 76. Râǵa-Tar. 4,347. Bhâg. P. 3,14, 23. 5,9,11. Hit. 58,16. ज्येष्ठवृषाः M. 9,123. व्रजवृषाः Bhâg. P. 10,35, 5. त्रिणायनवृषोत्खात Megh. 53. ad 112. °कूसुमपर्णस्थाः Bhâg. P. 4,1, 24. 9,18,9. Varâh. Brh. S. 15,2. 68,31. °दान Verz. d. Oxf. H. 35,a,36. °मोक्षण (vgl. वृषोत्सर्ग) 9. अज° *Bock* Bhâg. P. 9,19,6. — c) *der Stier im Thierkreise* AK. 1,1,2,29. H. 116, Schol. H. an. Med. Weber, Nax. 2,358, N. 1. Varâh. Brh. S. 5,36. 40,1. 12. 42,3. Brh. 1,11. 14. 3,3. 5, 5. Laghuǵ. 1,12. 20 in Ind. St. 2,280. 282. Verz. d. Oxf. H. 40,a, N. 1. °राशि 339,b,30. Weber, Krshnaǵ. 224. °भवन Varâh. Brh. 27 (25), 6. — d) *ein geiler Mensch* (— *Bock*), = शुक्रल AK. 3,4,22,229. H. an. Med. in der Erotik Bez. einer der vier Arten von पुरुष (= पुंभेद H. an. Med.): वक्रगुणवक्रबन्धः शीघ्रकामी नताङ्गः। सकलरुचिरदेहः सत्यवादी वृषो ऽयम्॥ Ratim. im ÇKDr. *ein kräftiger Mann* Anekârthak. im ÇKDr. — e) *die Gerechtigkeit* oder *Tugend als Stier*, = धर्म, सुकृत AK. 1,1,4,2. 3,4,29,222. H. 1379. H. an. Med. Halâj. 1,125. वृषो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम्। वृषलं तं विदुर्देवाः M. 8,16. Bhâg. P. 1,17,2. 7. 13. 42. 3,15,15. Mârk. P. 5,21. Kâvjâd. 2,322. इदमेव व्रतं स्त्रीणामयमेव परो वृषः *Pflicht, moralisches Verdienst* Kâçikh. 4,30. न च श्रिया वियुज्येत संयुज्येत वृषेण च 60,2 (beide Stellen nach Aufrecht). — f) *der Beste in seiner Art*; gewöhnlich am Ende eines comp. gaṇa व्याघ्रादि zu P. 2,1,56. AK. 3,4,29,222. H. an. Med. कुरुचेदिवृषो MBh. 2,1071. राज° 13,3694. यदु° Hariv. 8088. दैत्य° 12948. रक्षो° 13131. दानव° R. 4,9,77. गज° 2,26,18. 6,70,2. द्विज° Bhâg. P. 3,23, 10. वृषो ऽङ्गुलीनाम् so v. a. *der Daumen* Çikshâ 43 in Ind. St. 4,365. षडो वृषः 8,259, N. 1. कुरिन्माणि° Bhâg. P. 3,28,25. कलिश्चैव वृषो भूत्वा गवाम् so v. a. *sich in den Hauptwürfel verwandelnd* MBh. 3,2259. दीव्याव वृषेण 2260. — g) = वृष्य *Aphrodisiacum* Verz. d. Oxf. H. 303,b, 3. — h) Bez. verschiedener göttlicher Wesen: Vishṇu's oder Kṛshṇa's Trik. 1,1,31. H. ç. 70. Vop. 5,27. MBh. 12,1507. Bhâg. P. 3,16,23. Çiva's MBh. 2,1642. 12,10372 (zwei Mal neben गोवृष!). 14,199. Indra's Mârk. P. 79,6 (pl.). der Sonne 107,4. des Liebesgottes Anekârthak. im ÇKDr. des Regenten des Karaṇa Ḱatushpada Varâh. Brh. S. 99,5. — i) N. pr. P. 4,1,155, Vârtt. α) des Indra im 11ten Manvantara VP. 268. Mârk. P. 94,19. — β) eines Sâdhja Hariv. 11537. विष die neuere Ausg. — γ) eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9,2566. — δ) eines Asura, = वृषभ Kâvjâd. 2,322. — ε) eines alten Fürsten MBh. 12,8263. — ζ) zweier Söhne Kṛshṇa's Bhâg. P. 10,61, 13. fg. — η) Bein. Karṇa's MBh. 3,16995. 17166. 6,5821. 8,16. — ϑ) eines Sohnes des Vṛshasena (वृषसेन ist = कर्ण) und Grossohnes des Karṇa Hariv. 1710. — ι) eines Jâdava und Sohnes des Madhu Hariv. 1896. fg. VP. 418. eines Sohnes des Sṛńgaja Bhâg. P. 9,24,41. — κ) eines der 10 Rosse des Mondes Vjâḍi beim Schol. zu H. 104. — k) Bez. verschiedener Pflanzen: *Gendarussa vulgaris* oder *Adhadota* AK. 2,4,3,2. H. 1140. H. an. Med. (व्यास fehlerhaft für वास = वासक). *Boerhavia variegata* Ratnam. 157. = ऋषभ AK. 2,4,4,4. = शृङ्गी (dass.) H. an. Med. वृष und यवाष Kâth. 30,1. — Suçr. 1,32,16. 223,8. 2,224, 8. 350,19. 415,19. 416,8. 418,4. 498,17. °पत्त्र Çârṅg. Saṁh. 2,1,28. — l) N. *des 15ten Jahres im 60jährigen Jupiter-Cyclus* Varâh. Brh. S. 8, 33. fg. Verz. d. Oxf. H. 331,b,5 v. u. — m) *eine best. Tempelform* Varâh. Brh. S. 56,18. 26. *ein zum Aufbau eines Hauses besonders zugerichteter Platz* (वास्तुस्थानभेद Med.); vgl. u. गज 4). — n) *Maus* oder *Ratte* AK. 3,4,29,222. H. 1300. H. an. Med. eine auf einer falschen Erklärung von वृषदंश beruhende Bedeutung. — o) = शत्रु *Feind* Gâdh. im ÇKDr. — 2) f. आ *Gendarussa vulgaris* oder *Adhadota* Halâj. 2,43. *Salvinia cucullata Roxb.* AK. 2,4,3,6. H. an. Med. *Mucuna pruritus Hook.* H. an. — 3) n. *Myrobalane* Aush. 101. — Vgl. इमा° (auch Râǵa-Tar. 4,6), खरी°, गो°, निर्वृष, नील°, पुं°, प्रति°, मधु°, महा° (in der 1ten Bed. auch Râǵa-Tar. 4,227), 2. वार्ष und वार्ष्यायणि.

2. वृष m. N. pr. fehlerhaft für वृश Ind. St. 3,212,b.

वृषक 1) m. a) *eine best. Pflanze*, wohl = वृष Suçr. 2,207,6. — b) N. pr. eines Kriegers, Sohnes eines Fürsten der Gândhâra, MBh. 1,6985. 2,1266. 5,5808. 6,3637. 7,1303. 1305. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses: वृषकाह्वया MBh. 6,343. वृषकाह्वा (nach Wilson ist das comp. der Name) VP. 184; vgl. वृषसाह्वया, वृषसाह्वा. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,237,b.

वृषकर्णी f. *eine best. Pflanze*, = सुदर्शना Ratnam. 227. — Vgl. वृषपर्णी, वृश्चिकर्णी.

वृषकर्मन् (वृषन्, वृष + क°) 1) adj. *Mannesthat verrichtend*: Indra RV. 1,63,4. 130,10. *wie ein Stier verfahrend*: Vishṇu MBh. 13,6961. — 2) m. Bez. *eines best. über Waffen gesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,6.

वृषकाम (वृषन् + काम) adj. *einen Mann begehrend* Kauç. 59.

वृषकृत॑ adj. अप्रवृद्धो वृषकृतो रथः gaṇa प्रवृद्धादि zu P. 6,2,147.

वृषकेतन adj. *einen Stier zum Attribut habend;* m. Bein. Çiva's MBh. 3,14561. — Vgl. वृषकेतु, वृषध्वज, वृषभध्वज.

वृषकेतु m. 1) Bein. Çiva's R. 6,74,38. — 2) N. pr. eines Kriegers Verz. d. Oxf. H. 4,*b*,12. Verz. d. B. H. 112 (IV).

वृँषक्रतु (वृषन् + क्रतु) adj. *männlich gesinnt:* Indra Ṛv. 5,36,5. 6,45,16.

वृँषखादि (वृषन् + खा°) adj. *grosse Spangen tragend* (wie Männer sie tragen): die Marut Ṛv. 1,64,10. *mit Ohrringen geschmückt* nach Bollensen, Or. und Occ. 2,461, Anm.

वृँषगण (वृषन् + गण) m. N. pr. eines Ṛshi gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. नडादि zu 99. Verz. d. Oxf. H. 199,*b*, No. 471. Vâsishṭha Ind. St. 3,237,*b*. pl. Ṛv. 9,97,8. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,17. — Vgl. वार्षगण, वार्षगण्य.

वृषगन्धा f. *eine best. Pflanze,* = वस्ताम्नी Râǵan. im ÇKDr.

वृषचक्र n. Bez. *eines best. mystischen Kreises* Ǵjotistattva im ÇKDr.

वृँषच्युत (वृषन् + च्युत) adj. *vom Starken* d. i. Soma *erregt:* मदासः Ṛv. 9,69,7. — Vgl. मदच्युत.

वृँषजूति (वृषन् + जू°) adj. *Mannesdrang habend* Ṛv. 5,35,3.

वृँषण (wohl verwandt mit वृषन्) 1) m. n. (zu belegen nur m.) Siddh. K. 249,*a*,5. 6. Trik. 3,5,15. du. *die Hoden* VS. 5,2. Çat. Br. 3,6,2,10. Kâtj. Çr. 25,7,30. Çâñkh. Çr. 4,15,25. Nir. 14,7. Jâǵñ. 3,97. 259. Hariv. 14274. R. 1,48,28 (49,28 Gorr.). R. Gorr. 1,50,6. Suçr. 1,273,6. 329,4. Varâh. Bṛh. 5,24. Pañkat. 136,1. plur. M. 8,283. MBh. 12,9377. Varâh. Bṛh. S. 61,16. Bhâg. P. 2,1,32. Vet. in LA. (III) 23,14. sg. *der Hodensack* AK. 2,6,2,27. H. 612. Halâj. 2,368. पद्मनं वृषणं छित्वा MBh. 12,474. Bhâg. P. 9,19,10. शिश्नवृषणौ M. 11,104. लिङ्गवृषणौ Mârk. P. 39,30. unbestimmt ob du. oder sg.: शकलवृषणम् Kâtj. Çr. 8,7,5. मेढ्रवृषणवेदना Suçr. 1,49,7. 125,18. °वातजित् Çârṅg. Saṁh. 2,1,11. Varâh. Bṛh. S. 51,8. 52,6. वृषभः स्थूलातिलम्बवृषणः 61,5. 68,9. वृषणाधम् Verz. d. Oxf. H. 102,*b*,17. Bhâg. P. 9,19,11. Pañkat. 10,12 (ed. orn. 6,7). स°, अ° adjj. R. 1,49,7. अवृषणीकृत R. Gorr. 1,50,6. Vgl. तीक्ष्ण°. — 2) m. Bein. Çiva's MBh. 13,1196. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Madhu Hariv. 1897. des Kârtavîrja VP. 417; vgl. वृष्णि.

वृषणकच्छू f. *beissender Ausschlag am Hodensack* Suçr. 1,292,13. 297,19. Çârṅg. Saṁh. 1,7,65.

वृषणश्व (वृषन् + अश्व) P. 1,4,18, Vârtt. 3. 1) adj. *mit Hengsten fahrend:* रथ Ṛv. 8,20,10. — 2) m. N. pr. *a*) eines Mannes Ṛv. 1,51,13. Shaḍv. Br. in Ind. St. 1,38. — *b*) eines Gandharva H. 183, Schol. (वृषणाश्व). — *c*) eines Rosses des Indra Trik. 1,1,60. H. ç. 33. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,34.

वृषण्य् (von वृषन्), वृषण्यँति P. 7,4,36. *brünstig sein* (vom Manne und Weibe) Ṛv. 9,5,6. कुविद्वृषण्यन्तीभ्यः पुनानो गर्भमादधत् 19,5. AV. 5,5,3. 6,9,1. 70,1.

वृषणाश्व s. u. वृषणश्व 2) *b*).

वृँषण्वन्त् (von वृषन्) adj. 1) *mit Hengsten bespannt, — fahrend:* Wagen Ṛv. 1,100,16. 182,1. Indra 173,5. ममत्तु वातो अग्रो वृषण्वान् 122,3. द्रेषु चेतद्वृषण्वत्यन्तःश्रेषु रूपा etwa *unter Hengsten befindlich* 8,57,18. — 2) *das Wort* वृषन् *enthaltend* TS. 2,5,8,4. Ait. Br. 4,31. 6,9. Çat. Br. 1,4,1,33.

वृँषण्वसु (वृषन् + वसु) P. 1,4,18, Vârtt. 3. 1) adj. etwa *grossen Besitz habend, grosses Gut mit sich führend:* die Açvin Ṛv. 2,41,8. 5,74,1. 8,26,1 u.s.w. Indra-Bṛhaspati 4,50,10. — 10,93,5. die Rosse Indra's हरी 1,111,1. — 2) m. N. von Indra's Walde (वन) oder Garten (उद्यान) Trik. 1,1,60. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,35. von Indra's Schatze (beruht auf einer Verwechselung von वन mit धन) Gaṭâdh. im ÇKDr.

वृषत्वँ (von वृषन्) n. *Mannheit* Ṛv. 1,54,2. instr. वृषत्वना 8,15,2. TS. 2,3,3,4.

वृषद् s. वार्षद.

वृषदंशँ (वृषन् + दंश) m. 1) (*ein starkes Gebiss habend*) *Katze* Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,40. Halâj. 2,81. VS. 24,31. TS. 5,5,21,1. Pañkav. Br. 8,2,2. MBh. 6,59. Hariv. 9869. R. 5,9,47. Suçr. 1,203,1 (ein in Löchern wohnendes Thier). Varâh. Bṛh. S. 48,76. °मुख adj. MBh. 9,2474. 2586. — 2) N. pr. eines Berges MBh. 7,2852. — Vgl. वार्षदंश.

वृषदंशक m. = वृषदंश 1) AK. 2,5,6. H. 1301. Sâh. D. 303,6. वृषदंशकक Med. l. 132.

वृषदञ्जि (वृषत्ऽअञ्जि Padap.) vielleicht N. pr.; pl. voc. Ṛv. 8,20,9. = वृषता (सोमेन) अञ्जन्तः Sâj.

वृँषदत् (वृषन् + दत्) adj. P. 5,4,15. *starke Zähne habend,* f. °दती AV. 1,18,4; vgl. वृषदंश.

वृषदन्त adj. dass. P. 5,4,145.

वृषदर्भ m. N. pr. eines Fürsten der Kâçi MBh. 2,337. 3,13262. fgg. (13321 beide Ausgg. बृहद्गर्भ). 13,2047. fgg. ein Sohn Çibi's Hariv. 1680. VP. 444. pl. Hariv. 1681. वृषदर्भ und वृषाकपि unter den Beinn. Kṛshṇa's MBh. 12,1508. — Vgl. वृषादर्भ, वृषादर्भि.

वृषदेवा f. N. pr. einer Gattin Vasudeva's VP. (2te Aufl.) 4,98. वृकदेवा v. l.

वृषद्रु m. N. pr. eines Fürsten MBh. 2,324. रूषद्रु ed. Bomb.; vgl. ऋषद्रु.

वृषद्वीप N. pr. einer *Insel* im südöstlichen Meere Varâh. Bṛh. S. 14,9.

वृँषधूत (वृषन् + धूत) adj. *von Männern gerüttelt* (*ausgepresst*): पिब वृषधूतस्य वृष्णः Ṛv. 3,36,2. 43,7.

1. वृषध्वज m. *ein Banner mit einem Stiere* Varâh. Bṛh. S. 58,43.

2. वृषध्वज 1) adj. *einen Stier im Banner habend.* — 2) m. *a*) Bein. Çiva's (vgl. MBh. 13,6401) AK. 1,1,1,29. H. 6. MBh. 2,481. 1640. 3,7099. 15802. 5,7380. 13,929. R. 1,37,9 (38,9 Gorr.). R. Gorr. 1,56,13. 6,102,3. Ragh. 11,44. Kir. 13,28. Kathâs. 10,31. 52,388. Bhâg. P. 4,4,23. 17,10. 7,10,60. Mârk. P. 23,61. 56,10. — *b*) N. pr. eines Fürsten Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,7. 8. 10. eines Verfassers von mystischen Gebeten bei den Tântrika 101,*a*,37. — *c*) N. pr. eines Berges Mârk. P. 58,11. — 3) f. आ Bein. der Durgâ Hariv. 10246.

वृषध्वाङ्क्षी f. *eine Cyperus-Art* (नागरमुस्ता) Râǵan. im ÇKDr.

वृँषन् Uṇâdis. 1,156. acc. वृषणम् und वृषाणम् Ṛv. 10,89,9. VS. 20,40. Çat. Br. 1,2,5,15. nom. pl. वृषणस् und वृषाणस् Çat. Br. 13,3,3,7. nach वृष्णो kein Abfall eines folgenden अ P. 6,1,118. Ind. St. 5,50. fg. adj. *männlich;* m. *Mann; Männchen des Thiers.* Die Wortspiele, in welchen das Wort auf beliebige Dinge angewandt wird (z. B. Ṛv. 2,

16,4—6. 5,36,5. 6,44,19. fg. 8,13,31—33. 33,10—12. 9,64,1—3. 10, 66,6. 7) zeigen, wie geläufig es den vedischen Dichtern für *alles durch kräftige Erscheinung Ausgezeichnete* war. In der späteren Sprache erscheint für वृषन् die schwächere Form वृष. 1) *Mann:* वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् RV. 1,32,7. AV. 5,20,2. अप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः RV. 1,179,1. 2,16,8. 35,13. वृषा जजान वृषणं रणाय 7,20,5. 5,47,6. वृषणः पौंस्यैः 4,41,6. वृषा शिशुः: *männliches Kind* 5,44,3. 7,95,3. वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि 3,27,15. AV. 4,4,2. न वीरो जायते वृषा 5,19,4. 6,86,1. VS. 8,10. वृषा वा ऋषभो योषा सुब्रह्मण्या Ait. Br. 6,3. Çat. Br. 1,1,4,18. 9,2,22. 7,2,11. 14,1,4,16. — 2) vom Ross: *Hengst* H. an. 2,286. fg. अश्व RV. 1,164,34. 7,69,1. 8,23,11. 46,29. VS. 23,62. अत्य RV. 1,177,2. वाजिन् 2,43,2. AV. 19,27,1. Agni's RV. 4,2,2. 6,9. Indra's 3,35,3. हरी 7,19,6. अचिक्रदद्वृषणं पत्न्यच्छ 4,24,8. 7,71,3. अश्वा वर्षभा वा वृषाणः: *Hengste oder Stiere* TBr. 3,8,21,1. die Sonne RV. 3,61,7. 7,88,1. Flammen Agni's 6,3,4. — 3) vom *Stier* H. an. AV. 5,20,3. 8,5,12. उस्रिय 1,12,1. RV. 9,74,3. वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् 1,140,6. क्रुद्ध 10,43,8. वृषभ 4,16,20. 5,1,12. वंसग 1,7,8. der Donnerkeil 10,89,9. — 4) von andern Thieren: Löwe RV. 3,2,11. Eber 10,67,7. Gazelle AV. 3,7,2. — 5) *gewaltig, gross, männlich;* von unbelebten Dingen: Donnerkeil RV. 1,131,3. 2,11,9. 9,106,3. Indra's Arme 8,50,18. Wagen der Götter 1,82,4. 157,2. 177,3. 5,75,1. Soma 1,175,1. 177,3. 3,36,2. 5,40,2. मद 6,24,1. 7,68,11. 9,2,1. 106,15. वृष्णः पीत्वा 10,44,8. die Steine 5,31,5. 40,2. 7,21,2. त्वच् 1,129,3. ऊधन् 4,22,6. पर्वतासः 3,54,20. मेघ 1,181,8. कृणोत धूमं वृषणं सखायः 3,29,9. स्वन 5,87,5. AV. 5,13,3. रयि RV. 10,47,1. मणि AV. 19,31,2. शुष्म RV. 4,24,7. 7,24,4. TBr. 1,2,1,21. — 6) Götter werden so bezeichnet, z. B. Indra (AK. 1,1,1,38. Trik. 1,1,57. H. 172. H. an. Med. n. 135. Halâj. 1,52) RV. 4,30,10. 5,36,5. 7,19,6. Ragh. 10,53. 17,77. Kumâras. 5,61. 80. Agni RV. 1,100,1. 4. 7,3,3. die Marut 1,64,1. 12. 85,12. शर्ध 8,20,9. गण 83,12. Mitra-Varuṇa 1,151,3. 6,68,11. 7,60,9. die Açvin 1,112,24. 117,3. 7,70,7. Rudra 2,34,2. Vishṇu 1,154,3 und andere. In comp. mit *Erde, Land* so v. a. इन्द्र *Herr:* क्षिति° *Fürst, König* Râǵa-Tar. 1,273. क्ष्मा° 5,126. — 7) m. Bez. *eines best. Metrums* RV. Prât. 17,4. Ind. St. 8,107. 111. — 8) m. N. pr. eines Mannes Sâj. zu Çat. Br. 1,1,4,10. पाथ्यो वृषा RV. 6,16,15. यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः 1,36,10; vgl. jedoch इति त्वोपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् 10,115,8. ein Âṅgirasa Ind. St. 3,237,*b*. Bein. Karṇa's Med. — 8) f. वृष्णी Schol. zu Lâṭj. 2,7,26. — 9) n. N. eines Sâman Lâṭj. 7,5,20. — Die Bedd. *pain, sorrow* und *insensibility from extrem pain* bei Wilson beruhen auf einer falschen Auffassung von Med. n. 135, wo nicht वेदनाज्ञानदुःखयोः, sondern वेदना ज्ञानदुःखयोः zu lesen ist; es sind nicht Bedeutungen von वृषन्, sondern mit वेदना (= ज्ञान und दुःख) beginnt ein neuer Artikel. Derselbe Fehler im ÇKDr. Vgl. त्रि° und कृत°. Da वृषन् niemals in Verbindung mit वर्ष् erscheint und diese Wurzel nur *regnen*, nicht aber *Samen ausspritzen* bedeutet, so muss die übliche Ableitung dahinfallen und statt dessen ein Zusammenhang des Wortes mit वर्ष्मन्, वर्षिष्ठ u. s. w. vermuthet werden. Dafür spricht besonders der Gebrauch unter 5). Vgl. auch Müller, Transl. I, 121. fgg.

वृषनाभि (वृषन् + ना°) adj. *eine gewaltige Nabe habend:* Wagen RV. 8,20,10.

वृषनामन्, मक्षूमे अस्य वृषनामे शूषे RV. 9,97,54. Padap. ohne Theilung; dürfte entstellt sein.

वृषनाशन m. *Embelia Ribes* (विडङ्ग) Çabdam. im ÇKDr.

वृषत्तम superl. zu वृषन्, *gewaltigst, männlichst:* Indra RV. 1,10,10. 100,2. 5,35,3. 6,37,4.

वृषपति m. Bein. Çiva's (*Herr des Stiers*) H. 13. = षण्ड *a bull set at liberty* ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वृषपत्त्रिका f. *eine best. Pflanze,* = बस्तान्त्री Râǵan. im ÇKDr.

वृषपत्नी adj. f. nach Sâj. *den Regner* (पर्जन्य) *zum Gatten* oder *Herrn habend:* Wasser RV. 8,15,6. richtiger wohl *die einen tüchtigen Gebieter* (Vṛtra) *haben.*

वृषपर्णी f. N. pr. zweier Pflanzen, = आखुपर्णी Ratnam. im ÇKDr. = सुदर्शना Râǵan. ebend. — Vgl. वृषकर्णी.

वृषपर्वन् (वृषन् + प°) 1) adj. *gewaltige Gelenke habend:* Indra RV. 3,36,2. — 2) m. *a) die Wurzel von Scirpus Kysoor* (कशेरु) *Roxb.* H. an. 4,194. Viçva im ÇKDr. — *b)* = भृङ्गारिन् H. an. = भृङ्गाह्वृद्त (!) Viçva im ÇKDr. — *c)* Bein. Çiva's Trik. 3,3,260. H. an. Med. n. 246. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,3. Vishṇu's MBh. 13,6977. — *d)* N. pr. eines Dânava, Vaters der Çarmishṭhâ, Trik. H. an. Med. MBh. 1,2352. 2651. fg. 3185. fgg. 5,5044. Hariv. 201. 13079. 13190. 13229. 13703. fgg. 14285. VP. 147. Bhâg. P. 6,6,31. 10,20. 8,10,29. 9,18,4. 26. — *e)* N. pr. eines Râǵarshi MBh. 3,11444. 11543. fgg. 12344. fg. Mârk. P. 134,5. — *f)* N. pr. eines Affen R. 5,9,65. — Vgl. वार्षपर्वणी.

वृषपाण (वृषन् + 1. पान) adj. *Männern zum Trunk dienend* RV. 1,51,12. वृषन्निन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुताः 139,6.

वृषपाणि (वृषन् + पा°) adj. *gross-, starkhufig* RV. 6,75,7.

वृषप्रभर्मन् (वृषन् + प्र°) adj. *dem der starke* (Soma) *vorgesetzt wird* (vgl. R. 1,14,4): Indra RV. 5,32,4.

वृषप्रयावन् (वृषन् + प्र°) adj. *mit Hengsten fahrend:* die Marut RV. 8,20,9.

वृषप्सु adj. nach Sâj. = वर्षणरूप; etwa *starkes —, männliches Aussehen habend:* die Marut RV. 8,20,7. der Wagen derselben 10.

वृषभ (von वृषन्) Uṇâdis. 3,123. im Wesentlichen so v. a. वृषन्. 1) adj. *gewaltig, männlich, tüchtig;* m. *Mann;* zuweilen mit वृषन् verbunden: वृषा शिशुर्वृषभः RV. 7,95,3. ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र (अत्याः) *Hengste* 1,177,2. वाजिन् AV. 7,80,2. Daher von verschiedenen Gegenständen gebraucht, für welche auch वृषन् vorkommt, z. B. den Soma-Steinen RV. 2,16,5. Donnerkeil 1,33,13. शुष्म 6,19,9. Soma 2,16,6. 6,41,3. भानु 2,16,4. Besonders ist es gebräuchlich geworden, ohne dass im Veda die in einander fliessenden Bedeutungen sich überall scheiden liessen, für *a) Stier* (AK. 2,9,59. 3,4,29,222. H. 1256. an. 3,459. Med. bh. 21. Halâj. 2,108. 114. 5,21): उस्रिय RV. 5,58,6. वृषभस्येव ते रवः 1,94,10. 160,3. बाधसे जनान्वृषभेव मन्युना 6,46,4. आ रोदसी वृषभो रोरवीति Bṛhaspati 73,1. Parǵanja 7,101,1. 6. 4,5,3. 41,5. 5,8,3. 7,19,1. 8,49,13. अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि 10,27,2. Soma-

Steine 94,3. सहस्रशृङ्ग *der Stier mit tausend Hörnern:* die Sonne AV. **13**, **1**,12. eben so nach Sâj. R̥V. 7,55,7, wo nach dem Zusammenhang eher der Mond zu verstehen ist. — यदन्यगोषु वृषभो वत्सानां जनयेच्छतम् M. 9, 50. 123. °षोडशाः (so ist mit der v. l. zu lesen) *fünfzehn Kühe und ein Stier* 124. **11**,116. 127. 130. श्वेत MBh. 2,415. R. 2,43,12 (42,11 Gorr.). °स्कन्ध adj. **3**,74,26. MBh. 3,17130. R. 5,35,26. Varâh. Br̥h. S. 61,5. 7. 87,22. Verz. d. B. H. No. 897. Verz. d. Oxf. H. 123,*a*,34. Hit. 46,13. Çiva's *Stier* Kathâs. 110,52. महा° R. **4**,41,58. *der Stier im Thierkreise* Weber, Nax. **2**, 358, N. 1. Varâh. Br̥h. S. 102,1. Br̥h. **1**, 13. 27 (25), 4. Bhâg. P. 5,21,4. — *b*) der *Stier* als Bild der Grösse, Macht u. s. w.: *der Stärkste, Grösseste, Erste, Beste; Anführer, Herr* u. s. w. H. an. Med. चर्षणीनाम् Agni R̥V. **6**,1,8. Indra 18,1. Br̥haspati **3**,62,6. क्षितीनाम् **1**,177,3. **6**,32,4. **7**,98,1. **10**,187,1. जनानाम् **1**, 177, 1. कृष्टीनाम् 7,26,5. मतीनाम् **6**,17,2. AV. **13**,1,33. पृथिव्याः R̥V. 6,44,21. 49, 6. सताम् 2,1,3. स्त्रियानाम् 7,5,2. 2,30,8. दिवो रजसः पृथिव्याः Vâlakh. 9,3. ओषधीनाम् AV. 7,39,1. मरुत्वत् Indra R̥V. **2**,33,6. **6**,19,11. 47,5. यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् Indra 22,1. **1**,33,10. 166,1. **4**,17,8. 5,32, 6. वज्री 7,49,1. Agni **1**,31,5. **3**,4,3. 15,3. 4. **5**,12,1. Mitra-Varuṇa **5**,63,2. Br̥haspati **1**,190,1. 8. Vishṇu MBh. 13, 6977. Pañkar. **4**, 3, 91. उपमं मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् Vâlakh. 5,1. R̥V. 8,82,1. चर्षणिप्र AV. **4**,24,3. — यत्र त्वमस्मान्वृषभो भर्ता भृत्यान् (so ed. Bomb.) न शाधि हि R. **2**,105,8. वृष्णीनाम् MBh. 3,1352. इक्ष्वाकु° R. 3,71,16. मुनि° **1**, 21,13 (20,24 Schl.). नर° **2**,18,56 (21,63 Schl.). Spr. (II) 1038, v. l. मन्त्रि° Kathâs. 17, 170. 40, 8. गीर्वाण° Bhâg. P. 3, 16, 32. शार्दूल° R. Gorr. **1**,49,3. — 2) m. *ein best. Heilkraut,* = ऋषभ, वृष AK. 2,4,4,4. — 3) m. *Ohrhöhle* Uṇâdik. im ÇKDr. — 4) m. N. des 28ten Muhûrta Ind. St. **10**,296. — 5) m. Bein. eines Mannes Daçadju R̥V. **1**, 33, 14. **6**,26,4. N. pr. eines von Vishṇu besiegten Asura Hariv. 2360 (ऋषभ die neuere Ausg.). वृषभासुरविध्वंसिन् Kr̥shṇa Pañkar. **4**,1,32. N. pr. eines der Söhne des 10ten Manu Mârk. P. 94,15. eines Kriegers MBh. 6,3997. eines Sohnes des Kuçâgra Hariv. 1807. fg. (ऋषभ die neuere Ausg.). des Kârtavîrja Bhâg. P. **9**,23,26. N. pr. des 1ten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpiṇî H. 29. Verz. d. Oxf. H. 186,*b*,14. H. an. Colebr. Misc. Ess. II, 208. — 6) m. N. pr. eines Berges in Girivraǵa MBh. 2,799. Hariv. Langl. II,371 (die gedruckten Ausgg. 12394 ऋषभ). R. **4**,41,58. Kathâs. 54,16. Mârk. P. 55,12. 56,18. — 7) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 6, 339 (VP. 184). — 8) f. ई *a*) *Wittwe.* — *b*) *Mucuna pruriens* Wilson nach Çabdârthak. — Vgl. गो°, मङ्गल°, शत°, वार्षभ und ऋषभ.

वृषभकेतु adj. *einen Stier zum Attribut habend;* m. Bein. Çiva's Mr̥kkh. 173,14.

वृषभगति adj. *auf einem Stiere reitend;* m. Bein. Çiva's Hâr. 8.

वृषभचरित adj. *von Stieren verübt:* दोषाः Varâh. Br̥h. S. 104,10 mit Anspielung auf den Namen eines gleichnamigen Metrums (*4 Mal* ⏑⏑⏑ ⏑⏑⏑–, ––––, ⏑–⏑⏑⏑–⏑–), welches sonst हारिणी genannt wird.

वृषभत्व n. nom. abstr. von वृषभ *Stier* Kathâs. 40,9.

वृषभध्वज = वृषध्वज 1) adj. *einen Stier im Banner habend.* — 2) m. *a*) Bein. Çiva's Çabdârthak. bei Wilson; MBh. 3,1634. 13,3724. Hariv. 264. R. **1**,55,13. R. Gorr. **1**,38,19. **5**,89,7. Ragh. 2,36. Kumâras. 3, 62. Kathâs. 110, 53. Weber, Râmat. Up. 344. Verz. d. Oxf. H. 38, *b*, No. 95. Verz. d. B. H. 146,*b* (62). — *b*) N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's MBh. 13, 7103. — *c*) N. pr. eines *Berges* (vgl. वृषभ 6) Varâh. Br̥h. S. 14,5.

वृषभवीथि f. Bez. *eines Neuntels der von Venus durchlaufenen Bahn;* es umfasst die Nakshatra Maghâ, Pûrvaphalgunî und Uttaraphalgunî Varâh. Br̥h. S. 9,1.

वृषभस्वामिन् m. N. pr. eines Fürsten, Gründers des Geschlechts des Ikshvâku und Vaters des Draviḍa, Çatr. 6,285. 7,1; vgl. S. 28.

वृषभाक्ष (वृषभ + अक्ष) 1) adj. *Augen eines Stiers habend* MBh. 6,4383 (ऋषभाक्ष ed. Bomb.). R. Gorr. 2, 61, 22. — 2) f. ई *die Koloquinthen-Gurke* Râǵan. im ÇKDr.

वृषभाङ्क (वृषभ + अङ्क) m. Bein. Çiva's MBh. **13**, 3725. 6339. R. Gorr. **2**,25,36. — Vgl. वृषभध्वज, वृषाङ्क u. s. w.

वृषभाणु m. N. pr. eines Vaiçja, Vaters der Râdhâ, Verz. d. Oxf. H. 23,*a*, N. 1. वृषभान ebend. und 25,*a*,7. वृषभानु 131,*b*. 132,*a*, No. 239. Wilson, Sel. Works I,175. — Vgl. वार्षभाणवी.

वृषभान्न (वृषभ + अन्न) adj. *kräftige Nahrung* (oder Soma; s. unter वृषन्) *geniessend* R̥V. **2**,16,5.

वृषभासा f. Indra's *Stadt* Trik. **1**,1,60.

वृषमणस् (वृषन् + मनस्) adj. *kräftig —, männlich gesinnt, muthig* R̥V. **1**,63,4. 167,7. **4**,22,6.

वृषमण्यु (वृषन् + मन्यु) adj. dass. R̥V. **1**,131,2.

वृषय् = वृषाय्; s. वृषयु.

वृषय Uṇâdis. 4,100. m. = आश्रय Uǵǵval.

वृषयु (von वृषय्) adj. *brünstig, ausgelassen:* अत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत् R̥V. 9,77,5.

वृषरथ (वृषन् + रथ) adj. *einen gewaltigen Wagen habend:* अत्याः R̥V. **1**,177,2. **5**,36,5. **6**,44,19.

वृषरश्मि (वृषन् + र°) adj. *gewaltige Zügel* oder *Stränge habend* R̥V. **6**,44,19.

वृषराजकेतन m. Bein. Çiva's Kumâras. 5,84. — Vgl. वृषकेतन.

वृषल (von वृषन्) Uṇâdis. 1,108. m. 1) *Männlein* so v. a. *ein geringer Mann, ein gemeiner Kerl;* der Kaste nach *ein* Çûdra (AK. **2**,10,1. H. 894. an. 3, 684. Med. l. 134. Halâj. 2, 431. = अधार्मिक Gaṭâdh. im ÇKDr.). f. ई P. **4**,1,63, Schol. *ein gemeines Weib, ein Weib aus der Kaste der* Çûdra. सो अग्रेरेते वृषलः पपाद R̥V. **10**, 34, 11. Nir. 3, 16. Çat. Br. **14**,9,4,12 (proparox.). Âçv. Gr̥hj. **4**,2,19. 21. Kauç. 91. Kâtj. Çr. **14**,2,30. Lâtj. **4**,3,2. नैको न वृषलैः सह ग्रामान्तरं गच्छेत् Gobh. 3, 5,20. M. 3,164. 249. 4,108. 140. 8,16 (= MBh. 12,3377). **11**,43. Jâǵn. 1,224. MBh. 3,12916. 13080. 13356. 8,2098. 12, 3376. 13,1587. 1882. R. 2,82,31. Spr. 3064. 5096. Uttarar. 30,10 (40,1). Ind. St. **2**,262 (angeblich *Tänzer*). Bhâg. P. **1**,16,21. 17,1. 9. 2,7,38. **5**,9,18. **9**,21,7. **12**, 1,20. °पति 5,9,13. °राज 17. वृषली M. 3,19. 191. 250. 11,178. MBh. 13, 4281. पितृवेश्मनि या कन्या रजः पश्यत्यसंस्कृता । अविवाह्या तु सा कन्या जघन्या वृषली स्मृता ॥ Spr. 1777. Kathâs. 24,40. स्ववृषं (वृष so v. a. *Gatte*) या परित्यज्य परवृषे वृषायते । वृषली सा हि (v. l. तु) विज्ञेया

न प्रदूषी वृषली भवेत् ॥ Kâçikh. 40,93 im ÇKDr. und bei Aufrecht, Unâdis. S. 251. Bhâg. P. 3, 14, 29 (= वेश्या Comm.). 6, 2, 26. °पति Âpast. 1,18,33. M. 3,155. MBh. 3,13356. 5,1345. Bhâg. P. 5, 26, 23. 6, 2, 33. Mârk. P. 31,29. P. 6,2,18, Schol. °पुत्र und वृषल्याःपुत्र (als comp.) 3, 22, Schol. — 2) ein N. Kandragupta's (der ein Çûdra war) Med. Mudrâr. 5,13. 7,5.12. — 3) *Pferd* H. an. Med. (wo वाजिनि st. राजिनि zu lesen ist). — 4) *eine Art Knoblauch* Med. — Vgl. वार्षल und वार्षलि.

वृषलक (von वृषल) m. *ein elender* Çûdra Uttarar. 32,2 (42,4).

वृषलक्ष्मन् m. Bein. Çiva's Spr. 1413. Kathâs. 20,68. — Vgl. वृषभाङ्क, वृषलाञ्छन, वृषाङ्क u. s. w.

वृषलता (von वृषल) f. *der Stand eines* Çûdra MBh. 14,831.

वृषलत्व (wie eben) n. dass. M. 10,43. MBh. 13,2103. 2159. 14,832.

वृषलाञ्छन m. = वृषलक्ष्मन् H. 13. 195, Schol.

वृषलोचन m. *Maus* oder *Ratze* (*Augen eines Stiers habend*) H. 1300.

वृषवत् (von वृष) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 55,4.

वृषवाह् adj. *auf einem Stiere reitend:* देवल Pankar. 1,2,69. 6,48.

वृषवाहन adj. dass.; Beiw. und Bein. Çiva's H. 12. Hariv. 14400. Çiv.

वृषवृष n. N. eines Sâman Ind. St. 3,210,*b*.

वृषव्रत (वृषन् + व्रत) adj. *gewaltige Herrschaft führend* oder *Männer beherrschend:* Soma R̥V. 9,62,11. 64,1.

वृषव्रात (वृषन् + व्रात) adj. *einen gewaltigen Haufen* oder *einen Männerhaufen bildend:* die Marut R̥V. 1,85,4.

वृषशत्रु m. *der Feind des* Asura Vr̥sha, Bein. Vishṇu's Trik. 1,1,29.

वृषशिप्र m. N. pr. eines Dämons R̥V. 7,99,4.

वृषशील adj. zur Erklärung von वृषल Nir. 3,16.

वृषशुष्ण m. N. pr. eines Lehrers mit dem patron. Vâtâvata Ind. St. 4,373. — Vgl. वृषशुष्म.

वृषशुष्म 1) adj. *starkmuthig* R̥V. 4,36,8. — 2) m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Vâtâvata Ait. Br. 5,29. Kaush. Br. in Ind. St. 1,215, N. 1; vgl. वृषशुष्ण.

वृषषण्ड m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,35. fg. — Vgl. वृकखण्ड.

वृषसव (वृषन् + सव) adj. *von Männern gepresst* oder *den Mann treibend:* Soma R̥V. 10,42,8.

वृषसाह्वया f. N. pr. eines Flusses MBh. 6,342 nach der Lesart der ed. Bomb.

वृषसाह्वा f. N. pr. eines Flusses (verschieden vom vorhergehenden) VP. 184, N. 77.

वृषसृक्किन् m. = विषशृङ्गिन्, विषसृक्कन् *Wespe* Çabdam. im ÇKDr.

वृषसेन (वृषन् + सेना) 1) adj. etwa *ein Männerheer habend* VS. 10,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des 10ten Manu Hariv. 475. Karṇa's 1710. MBh. 2, 324. 5, 5710. 7, 1121. 6941. VP. 446. Bhâg. P. 9, 23, 13. eines Urenkels Açoka's Burn. Intr. 430. Târan. 287.

वृषस्कन्ध adj. *Schultern eines Stieres habend* Ragh. 1,13. 12,34. Çiva MBh. 12,10361.

वृषस्तुभ् s. स्तुभ्.

वृषस्य् (von वृष), वृषस्यति *nach einem Manne —, nach einem Stiere verlangen, geil —, läufisch sein* P. 7,1,51 nebst Vârtt. Vop. 21,5. वृषस्यन्ती *geil* AK. 2,6,1,9. H. 527. Halâj. 2,330. Suçr. 1,319,5. Ragh. 12, 34. Kathâs. 17,139. Kull. zu M. 3,191. 250. गो Hârîta bei Kull. zu M. 5,8. लक्ष्मणं सा वृषस्यन्ती महोक्षं गौरिवागमत् Bhatt. 4,30.

वृषाकपायी f. *das Weib des* Vr̥shâkapi P. 4,1,37. Vop. 4,25. von den Comm. auf *die Morgenröthe* gedeutet Naigh. 5,6. Nir. 12,8. R̥V. 10,86,13. = श्री und गौरी AK. 3,4,24,158. H. an. 5,38. Med. j. 133. Verz. d. Oxf. H. 190,*b*,24. 191,*a*,23. = स्वाहा nach Bharata, = शची nach Svâmin zu AK. ÇKDr. Auch Bez. zweier Pflanzen: = जीवन्ती und शतावरी H. an. Med.

वृषाकपि (वृषन् + कपि) Uggval. zu Unâdis. 4,143. m. 1) *grosser Affe* oder *Mann-Affe*, nach den Comm. ein Sohn Indra's und auf *die Sonne* gedeutet, angeblicher Verfasser von R̥V. 10,86. Naigh. 5,6. Nir. 12,27. R̥V. 10,86,1. किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः 3.8.12.18.20. fgg. einfach als कपि bezeichnet 5. Bez. *der Sonne* MBh. 3,191. *des Feuers* H. 1098. an. 4,211. Med. p. 30. Hâr. 162. Hariv. 12292. Çiva's AK. 3, 4,20,132. H. an. Med. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,5. MBh. 7,9627. Kathâs. 50,92. eines der 11 Rudra MBh. 13,7091. Hariv. 166. Bhâg. P. 6,6, 17. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,25. fg. Vishṇu's AK. H. 215. H. an. Med. Halâj. 1,22. MBh. 12,13248. 13,6960. Hariv. 12374. 14114. Pankar. 4, 3,48. Indra's Bhâg. P. 6, 13, 10. unbestimmt 8,10,31. — 2) Bez. *des dem* Vr̥shâkapi *zugeschriebenen Liedes* Ait. Br. 5,15. 6,29. 32. Çâṅkh. Br. 30,5. Âçv. Çr. 8,3,4. 12,6,13. 13,1. — Vgl. वार्षाकप.

वृषाकर m. *Phaseolus radiatus Roxb.* Râgan. im ÇKDr.; vgl. 2. वृष्य 2).

वृषाकृति (वृष + आ°) adj. *Stiergestalt habend:* Vishṇu MBh. 13,6961.

वृषाक्ष (वृष + अक्ष) adj. *stieräugig;* m. Bein. Vishṇu's H. ç. 70. Hariv. 14189.

वृषाख्य (वृष + आख्या) m. Bez. *eines best. über Waffen ausgesprochenen Zauberspruches* R. Gorr. 1,31,6.

वृषागिर् m. N. pr. eines Mannes (*eine gewaltige Stimme habend*); s. वार्षागिर.

वृषाङ्क (वृष + अङ्क) 1) adj. *einen Stier zum Zeichen habend;* m. Bein. Çiva's Trik. 3,3,41. H. 195. an. 3,100. Med. k. 159. Hâr. 8. Halâj. 1, 12. MBh. 7,2894. 2901. 8,1436. Ragh. 3,23. Kumâras. 3, 14. Bhâg. P. 8,8,1. — 2) adj. *tugendhaft, gut* (वृष = धर्म); = साधु H. an. Med. — 3) m. *Eunuch* H. an. Med. (hier °मल्लकयोः st. °मल्लषयोः zu lesen). — 4) m. *Semecarpus Anacardium Lin.* Trik. H. an. Med.

वृषाङ्कज m. *eine Art Trommel* (डमरु) Çabdar. im ÇKDr.

वृषाञ्चन (वृष + अ°) adj. *auf einem Stiere reitend;* m. Bein. Çiva's Trik. 1,1,47.

वृषाणक m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's Trik. 1,1,50. Vjâḍi beim Schol. zu H. 210. Verz. d. Oxf. H. 191,*a*,12. — ÇKDr. und Wilson angeblich nach Trik. *eine Form* Çiva's.

वृषाण्ड (वृष + अ° oder आ°) m. N. pr. eines Asura (*Stier-Hoden habend*) MBh. 12,8265.

वृषादर्भ m. = वृषदर्भ N. pr. eines Sohnes des Çibi Bhâg. P. 9,23,3.

वृषादर्भि m. desgl. MBh. 12,5924. 8599. 13,4415. fgg.

वृषाद्रि (वृष + अ°) m. N. pr. eines *Berges* im Lande der Kerala Verz. d. Oxf. H. 254,*b*,35. 255,*a*,4.

वृषान्तक (वृष + अ°) m. *der Vernichter des* Asura Vṛsha, Bein. Vishṇu's Çabdar. im ÇKDr.

वृषामित्र (वृष + अ°) m. N. pr. eines Brahmanen MBh. 3,987.

वृषामोदिनी (वृषन् + मो°) adj. f. *mit dem Manne sich ergötzend* Kâṭh. 12,8.

1. वृषाय् (von वृषन्, वृष), वृषायते (वृषयते u. s. w. im Padapâṭha; vgl. ṚV. Prât. 9,30. VS. Prât. 3,111). 1) *in männliche Krafterregung gerathen: brünstig werden;* überh. *begierig sein, losgehen auf;* mit acc. oder dat.: इन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते ṚV. 10,94,9. वृषायमाणो ऽवृणीत सोमम् 1,32,3. इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते 55,2. वृषायते महे अत्याय पूर्वीः 3,7,9. 52,5. तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे 1,58,4. 9,71,3. यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते 108,2. 10,21,8. ऊर्ध्वः स्कम्भे धरुण आ वृषायसे 44,4. VS. 20,46. mit loc.: स्ववृषं या परित्यज्य परवृषे वृषायते Kâçikh. 40,93 nach ÇKDr. und Aufrecht. — 2) *wie ein Stier brüllen* MBh. 5,1958. Bhâg. P. 10,11,39.

— intens. Hierher scheint die unregelmässige Bildung वावृषाणाः zu gehören: ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः *entbrannt auf reichen Beutegewinn* ṚV. 6,26,1.

— आ *brünstig werden:* आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व AV. 6,101,1.

— उद् *in Aufregung gerathen:* मन्दान उद्वृषायते ṚV. 9,47,1.

2. वृषाय्. In Einladungsformeln des Rituals findet sich ein आ वृषायते (°वीवृषत, °वृषायिषत VS. Prât. 5,35) mit der Bed. *zu sich nehmen, sich einschenken lassen* u. s. w., welches mithin dem आ वृषते (s. u. वर्ष्) des ṚV. entspricht und mit Ausnahme von Çat. Br. 1,7,2,17 auf eine einzige Formel zurückgeht. Die auffallende Bildung mag aus falscher Analogie mit 1. वृषाय् entsprungen sein. अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमा वृषायध्वम् VS. 2,31. अमीमदन्त आ वृषायिषत ebend. Âçv. Çr. 2,7,1. Kauç. 88. Çâñkh. Çr. 1,17,15. 4,4,16. 19. Lâṭy. 2,10,4.5. हविर्जुषस्व हविरावृषायस्व Çat. Br. 1,7,2,17.

वृषायण (von 1. वृषाय्) m. *Sperling* (*der Geile*) Hâr. 89.

वृषायुध् (वृषन् + युध्) adj. *Männer bekämpfend* ṚV. 1,33,6.

वृषारव (वृषन् + रव) m. (*wie ein Stier brüllend*) 1) *ein best. Thier* ṚV. 10,146,2. — 2) *Schlegel* (von Holz zum Klopfen, Trommeln) TBr. 2,5, 5,6. आण्डयोरन्ते वृषारवौ (sonst अरणी) Çat. Br. 12,5,2,7. दृषदुपले वृषारवेणोच्चैः समाहन्ति Schol. zu TS. I,111,3.

वृषाललततायिन् Ind. St. 2,28, N. 1.

वृषाशील zur Erklärung von वृषल Nir. 3,16. — Vgl. वृषशील.

वृषाहार (वृष *Maus* + आ°) m. *Katze* Hâr. 83.

वृषाहिन् m. als Bein. Vishṇu's MBh. 13,6977.

वृषिन् m. *Pfau* Çabdam. im ÇKDr.

वृषिमन् m. nom. abstr. von वृष gaṇa पृथ्वादि zu P. 5,1,122.

वृषी fehlerhafte Schreibung für बृसी.

वृषीय् (denom. von वृष), वृषीयति Schol. zu P. 7,1,51. 4,36.

वृषेन्द्र (वृष + इ°) m. *ein stattlicher Stier* Bhâg. P. 4,4,4. 5. nach Burnouf N. pr. eines *Stiers*.

वृषोत्सर्ग (वृष + उ°) m. *Freilassung eines Stiers* (eine verdienstliche Handlung) Çâñkh. Gṛhy. 3,11. Pâr. Gṛhy. 3,9. Verz. d. B. H. 90 (19). No. 1122. 1150. fg. Pañkat. 9,3. Verz. d. Oxf. H. 8,b, No. 46. 35,a, 8. 9. 42,a,43. 273,b,34. 276,b,35. 277,b,2. 289,b, No. 693. 290, No. 697. °परिशिष्ट 383,b, No. 466. Ind. St. 1,59.

वृषोत्साह (वृष + उ°) m. Bein. Vishṇu's H. ç. 66 (वृषोत्शाह).

वृषोदर (वृष + उ°) m. desgl. H. ç. 70. MBh. 13,6977.

वृष्ट m. N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 435. Varianten: वृष्टि वह्नि, धृष्ट, धृष्णु.

वृष्टि (von वर्ष्) 1) f. oxyt. im ṚV. P. 3,3,96. in den übrigen Schriften meist paroxyt. *Regen* AK. 1,1,2,12. 3,4,29,226. H. 166. ṚV. 1,116, 12. यवो वृष्टीव मोदते 2,5,6. धन्वना यन्ति वृष्टयः 5,53,6. वृष्टिं वर्षयथ 55,5. 59,5. सूर्यमश्वो वृष्ट्या गूळ्हो दिवि 63,4. 84,3. अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि 7,94,1. मयोभुवः 101,5. दिव्या 152,7. नभस्वती 8,25,6. 10,74,3. पवस्व वृष्टिमा सु नः 9,49,1. पर्जन्यस्य AV. 3,31,11. 6,22,3. 54,1. असाविमां वृष्ट्याभ्युनत्ति Ait. Br. 1,7. Çat. Br. 7,4,2,22. 8,2,3,5. 12,1,1,3. अग्निरितो वृष्टिमुदीरयति TS. 2,4,10,2. 3. 3,3,4,1. TBr. 3,1,2,4. Kauç. 94. Maitrjup. 6,22. आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नम् M. 3,76. R. 1,8,24. 2,63, 16. 110,10. Suçr. 1,22,6. Ragh. 1,62. 2,14. 12,29. मरुस्थल्यां यथा वृष्टिः Spr. 2128. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु 2890. 5032. Varâh. Bṛh. S. 3,27. 4, 11. 5,59. महती 8,48. पुष्टा 9,27. 24,24. विपुला 29. शोभना 29,11. 14. निष्प्रिकृ° 25,3. सु° 9,31. 24,29. 25,3. 34,14. प्राज्य° adj. Çâk. 193. Mârk. P. 91,43. Râǵa-Tar. 3,359. अश्व° Vikr. 154. वृष्ट्यम्बु AK. 2,1,12. °कर *Regen bringend* Varâh. Bṛh. S. 30,8. 11. 24. 95,17. 96,5. वृष्टेर्विनिग्रहः 4,13. °विकार 46,46. °नाश 47,12. °विनाश 17,4. °निरोध 95, 59. °विष्टम्भ Bhâg. P. 5,22,12. वात° (मेघ) Megh. 20. तुमुलकारका° 55. शक्तिशूलासिवृष्टिभिः MBh. 3,12121. Mârk. P. 88,29. अस्त्र° Ragh. 3,58. अभिवर्ष त्वं धनरत्नौघवृष्टिभिः R. Gorr. 2,32,16. कुसुम° Bhâg. P. 4,1, 53. R. 2,91,25 (adj.). पुष्प° MBh. 1,1129. 3,2995. Ragh. 2,60. 12,94. H. 63. अनुग्रहदृष्टि° Bhâg. P. 2,7,28. स° adj. Halâj. 1,77. — 2) m. *a*) N. eines Ekâha Çâñkh. Çr. 14,35,1. — *b*) N. pr. eines Sohnes des Kukura VP. 2te Aufl. 4,97. Varianten: वह्नि, वृष्ट, धृष्ट, धृष्णु. — Vgl. अ° (auch Pañkat. 50,18; besser अनावृष्टि ed. Bomb.), दुर्वृष्टि, नक्षत्र°, वसु°, वात°, स्व° und वार्ष्टी.

वृष्टिकाम adj. *Regen wünschend* TS. 6,5,6,5. Çat. Br. 1,5,2,19. 8,2, 12. Pañkav. Br. 8,8,18. fg.

वृष्टिघ्न 1) adj. *Regen verscheuchend.* — 2) f. ई *kleine Kardamomen* Çabdac. im ÇKDr.

वृष्टिद्यावन् adj. vermuthlich falsche Nachbildung von वृष्टिद्यु. यज्ञं वृष्टिद्यावानममृतं स्वर्विदम् Kâṭh. 40,12.

वृष्टिद्यु adj. *im Regenhimmel wohnend* u. s. w.: Mitra-Varuṇa °द्यावा du. ṚV. 5,68,5. Âçv. Çr. 1,9,1. Himmel und Erde Çat. Br. 1,9, 1,6. °द्यावस् pl. (इन्दवः) ṚV. 9,106,9.

वृष्टिभू m. *Frosch* Hâr. 153. — Vgl. वर्षाभू.

वृष्टिमत् ṚV. und वृ° Çat. Br. (von वृष्टि) 1) adj. *regnerisch, regnend:* Parǵanja ṚV. 8,6,1. 9,2,9. 10,98,8. Çat. Br. 1,9,1,6. 3,3,4,11. MBh. 4,1898. 6,2804. 7,3153. Hariv. 12136. Wolken 2635. 3797. MBh. 13, 520. R. 5,40,7. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Kaviratha Bhâg. P. 9,22,40.

वृष्टिमारुत m. *von Regen begleiteter Wind* Hariv. 3896.

वृष्टिवनि adj. *Regen erlangend, — bringend* Nir. 2,12. ṚV. 10,98,7.

VS. 38,6. TS. 2,4,10,3. Ait. Br. 2,20. 3,18. Çat. Br. 14,2,1,21.

वृष्टिवात m. = वृष्टिमारुत Hariv. 3897.

वृष्टिसनि adj. = वृष्टिवनि TS. 4,4,6,2. Kâth. 22,5. Bez. gewisser Ishṭakâ TS. 5,3,1,3. 10,1. Kâth. 22,6.

वृष्ण m. N. pr. eines Mannes Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. 4,1,4 und Sâj. zu Çat. Br. 14,6,10,8. — Vgl. वार्ष्ण.

वृष्णि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,49. 1) adj. (neutr. वृष्णि) so v. a. वृषन् *gewaltig, männlich;* m. *Mann* u. s. w.: यूथेन वृष्णिरेजति so v. a. *Anführer des Haufens,* Indra ṚV. 1,10,2. वज्र 8,6,6. शवस् 5,35,4. 8,3,10. पौंस्य 7,23. = पाषण्ड und चण्ड Çabdar. im ÇKDr. st. dessen fälschlich पाण्डव und चन्द्र Med. ṇ. 28. *heretical, heterodox, a heretic, a sectary; angry, passionate* Wilson nach Çabdârthak. — 2) m. Siddh. K. 247,a,1 v. u. a) *Schafbock, Widder* AK. 2,9,77. Trik. 3,3,138. H. 1276. an. 2, 154. Med. Halâj. 2,124. VS. 14,9. TS. 2,3,7,4. 5,3,1,5. 7,10,1. वृष्णेः स्तुका: Çat. Br. 3,5,2,18. Kâtj. Çr. 5,4,17. 9,7,4. °पाल Daçak. 97,1 soll *Kuhhirt* bedeuten (वृष्णि = गो Aǵaja ebend. in d. N.). — b) pl. N. pr. eines Geschlechts (= यादव und माधव; क्षत्रियवैश्ययोः Uǵǵval.), zu denen auch Kṛshṇa gehört, häufig mit den Andhaka zusammen genannt, Trik. H. an. Med. P. 4,1,114. 6,2,34. वृष्णीनां वासुदेवो ऽस्मि sagt Kṛshṇa Bhag. 10,37. MBh. 1,2432. 7000. 7963. 3,15654. वृषणाद्भवयः सर्वे Hariv. 1898. 1907. Kâm. Nitis. 14,62. Spr. 2235. 2630. Râǵa-Tar. 1,66. VP. 418. Bhâg. P. 1,3,23. 8,41. 11,12. 9,23,29. Verz. d. Oxf. H. 40,a,39. °वृद्धाः Ind. St. 2,308. °पुर MBh. 3,12582. sg. als N. pr. verschiedener Fürsten Hariv. 1908. 2000. 2080. VP. 418. 422. 424. 417, N. 13. 2te Aufl. 4,97. Bhâg. P. 9,23,28. 24,3. 6. 7. 11. 14. Vishṇu (Kṛshṇa) so genannt Trik. 1,1,29. Verz. d. Oxf. H. 190,b,10. Çiva MBh. 14,198. — c) *Lichtstrahl* Halâj. 1,39. H. 99, Schol. (व्यष्णि). Çabdârthak. bei Wilson. aus पृश्नि entstanden. — d) *air or wind;* Indra; Agni Wilson nach Çabdârthak. — 3) n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 237,b. — Vgl. वार्ष्ण, वार्ष्णेय, वार्ष्ण्य.

वृष्णिक m. N. pr. eines Mannes gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — Vgl. वार्ष्णिक.

वृष्णिगर्भ m. Bein. Kṛshṇa's ÇKDr. angeblich nach Hâr.

वृष्णिमन्त् (von वृष्णि) m. N. pr. eines Fürsten VP. 462. Verz. d. Oxf. H. 40,b,11. fg. Verz. d. Cambr. H. 6.

वृष्णिय s. वृद्ध°; वृष्णिवृद्ध s. u. वृष्णि 2) b) und vgl. वार्ष्णवृद्ध.

वृष्ण्य (von वृषन्) 1) adj. *männlich, mächtig:* शवस् ṚV. 8,3,8. Vâlakh. 3,10. — 2) n. a) *Manneskraft, Muth, Macht* ṚV. 1,51,7. 54,8. प्र शत्रूणां वृष्ण्या रुज 102,4. वृष्ण्येभिः समोकाः 100,1. 108,5. 3,46,2. 4,19,20. 21,2. विश्वमधत्त वृष्ण्यम् 6,8,3. 8,6,31. 10,44,1. AV. 5,4,10. 6,89,1. Kauç. 68. — b) *männliche Kraft* so v. a. *Potenz* AV. 4,4,4. 5. 6,138,4.

वृष्ण्यावन्त् (von वृष्ण्य) adj. *manneskräftig* Nir. 10,11. ṚV. 5,83,2. वृषभ 6,22,1. TS. 3,5,6,2.

1. वृष्य (von वर्ष्) adj. = वर्ष्य P. 3,1,120. Vop. 26,19.

2. वृष्य (von वृषन्, वृष) 1) adj. (f. आ) *auf die Potenz wirkend, der Potenz zuträglich* (n. *Aphrodisiacum* Râǵan. im ÇKDr.) P. 5,1,7 nebst Vârtt. Suçr. 1,167,2. 174,13. 175, 8. 205,6. 2,228,12. Varâh. Bṛh. S. 16,28 (wo nach Kern mit der v. l. वृष्यान्न st. मृष्टान्न zu lesen ist). 104, 63. Verz. d. Oxf. H. 216,a,10. Kull. zu M. 3,49. Bhâvapr. (s. u. कुण्डलिन् 3) b). अति° Varâh. Bṛh. S. 76,9. अ° Suçr. 1,179,3. 187,13. वृष्य als Beiw. Çiva's MBh. 12,10372 wird von Nilak. durch धर्मवृद्धिकर्तृ (वृषो धर्मस्तत्र हितः) erklärt. — 2) m. *Phaseolus radiatus Roxb.* H. 1171. — 3) f. आ = ऋद्धिनामौषध Ratnam. im ÇKDr. = शतावरी und आमलकी Râǵan. ebend.

वृष्यकन्दा f. *eine best. Pflanze (deren Knolle auf die Potenz wirkt),* = विदारी Râǵan. im ÇKDr.

वृष्यगन्धा f. *eine best. Pflanze,* = वृद्धदारक Çabdar. im ÇKDr.

वृष्यगन्धिका f. *eine best. Pflanze,* = अतिबला Râǵan. im ÇKDr.

वृष्यता (von 2. वृष्य) f. *Potenz, Zeugungskraft* Verz. d. Oxf. H. 309,a,25.

वृष्यवल्लिका f. *eine best. Pflanze,* = विदारी Râǵan. im ÇKDr.

वेकट 1) m. = ज्ञाततारुण्य und मणिकार H. an. 3,171. = वैकटिक, मत्स्यभेद und युवन् Med. ṭ. 51. = विदूषक Çabdar. im ÇKDr. — 2) interj. अद्भुते Trik. 3,4,1.

वेक्न्, वेक्नयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84,b. — Vgl. वेक्नण und वेल्न्.

वेक्नण n. = अवेक्नण M. 9,11, v. l.; vgl. Kull.

वेग (von 1. विज्) m. parox. im AV., oxyt. nach gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1,160. am Ende eines adj. comp. f. आ. 1) *schnellende Bewegung, Ruck,* z. B. des Erdbebens AV. 12,1,18. क्षिपत्येकेन वेगेन पञ्च बाणशतानि यः MBh. 3,1018. दण्डं चिक्षेप सर्वप्राणेन वेगतः R. 2,32,36. — 2) *Andrang:* तेषामापततां वेगः करिणां दुःसहो ऽभवत् MBh. 3,2540. Bhâg. P. 4,4,32. यो हि शत्रोर्विवृद्धस्य पूर्वं न सहते वेगम् MBh. 12,4207. 3,676. चकार हनुमान्वेगं तेषु रक्षस्सु विस्मयम् R. 5,40,11. *Andrang, Schwall* (des Wassers, der Fluth), *starke Strömung;* = प्रवाह AK. 3,4,2,21. H. an. 2, 49. Med. g. 24. = जलोत्क्षेप Trik. 3,3,70. — AV. 4,15,3. बहूर्मि° R. 2,52,75. 59,29. महावेगः समुद्र इव पर्वणि 80,1. महतेवाम्बुवेगेन 105,3. Suçr. 2,405,17. fg. स्रोतो° Spr. 4787. नदी वेगेन प्रध्यति M. 5, 108. Spr. 4657. Çvetâçv. Up. 1,5. यथा नदीनां बहवो ऽम्बुवेगाः Bhag. 11,28. महावेगा नदी MBh. 6,2519. 4716. 7,6907. R. 4,8,18. 14,7. Spr. (II) 599. 1700. (I) 1403. 2684. Çâk. 21,20. Bhâg. P. 5,17,7. *starker Erguss* von Thränen: अश्रुवेगैः R. 2,40,47. 59,16. 31. 60,4. 4,5,17. 8,18. fg. 6,21,27. — 3) *heftige —, schnelle Bewegung, Ungestüm, Geschwindigkeit, Hast* AK. H. 494. H. an. Med. Halâj. 2,288. des Windes Spr. (II) 365. R. 1,54,6. 2,40,17. 41,12. 45,30. 60,16. R. Gorr. 2,52, 24. 3,72,8. 79,31. Ṛt. 1,22. 24. Mâlatîm. 127,12. Varâh. Bṛh. S. 2,4. 25,5. Kathâs. 26,12. von der *heftigen und schnellen Bewegung* geschwungener oder geworfener Waffen: गदया भीमवेगया MBh. 1,558. 3,1942. 16380. अवार्यवेगा गदा R. 3,35,45. गदयोरुवेगया Bhâg. P. 7,8, 25. महावेगमस्त्रम् R. 3,35,46. अविषह्य° (बाण) Kir. 13,24. Halâj. 2, 315. ऊरु° MBh. 1,5882. R. 5,3,42. पाद° Spr. (II) 3014. भुज° MBh. 1, 5875. वेगेन प्रहितं बाहुम् 6000. रथस्य Çâk. 5,13. 7,22. Vikr. 6,6. °संपन्नैर्हयैः R. 2,26,15. 93,11. Kathâs. 18,89. 103. 393. Bhâg. P. 4,12,38. श्येन° 7,8,28. वृद्ध° Varâh. Bṛh. S. 27,6. सु° (v. l. सुवेष) Kâm. Nitis. 7, 36. सुमहावेगा सौदामनी R. 6,80,24. वेगावतरणा Çâk. 99,7. समद्रवत्त वेगेन MBh. 3,2539. R. 1,54,5. 2,34,17. 68,15. 3,50,7. 75,6. Pańkar. 1,4, 62. Prab. 67,1. धावंस्ततो ऽतिवेगेन Râǵa-Tar. 3,406. खमुत्पतत वेगतः Kathâs. 61,63. fg. Pańkat. 237,17. अतिवेगतस् Çârṅg. Saṁh. 3,11,32.

सत्वरं तमभ्येत्य सवेगमुवाच Pańkat. 89,13. स तु केवलं वेगाद्वेगं (वेगाद्वेगतरं ed. Bomb.) गच्छति 258,21. मनोवचोवेगपुरोजव *Geschwindigkeit* Bhâg. P. 4,30,22. कृत्यं न कुरुते वेगात् *in der Uebereilung* Spr. 2018. — 4) *heftiges Auflodern, Ausbruch* (eines Schmerzes, einer Leidenschaft u. s. w.): अग्नेः R. 1,56,5. Ṛt. 1,24. चितायाः R. 3,75,54. संनिपच्छति यो वेगमुत्थितं क्रोधहर्षयोः Spr. 5160. प्रहर्ष° Bhâg. P. 1,11,18. 5,7,11. 7,8,35. अमर्षरोष° 5,25,6. शोक° R. 2,57,6. 5,37,27. शोकः मां संसाधयति वेगेन यथा कूलं नदीरयः 2,64,69. दुःख° Spr. (II) 431. कामक्रोधोद्भव Bhag. 5,23. मदवेगमत्ता गजेन्द्राः MBh. 1,7006. वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं हिंसावेगमुदरोपस्थवेगम्। एतान्वेगान्विषहेत् 12,9984. दोषौषधमलानाम् *Aufregung* Suçr. 1,372,19. 2,354,9. 405,19. fg. *Anfall, Paroxismus einer Krankheit:* °परिक्षय 1,46,5. 96,17. 131,5. 257,12. 2,42,8. 12. *Wirkung eines Giftes:* यस्य वेगैर्विना जीर्येत् (विषम्) Jâǵn. 2,111. विष° Mṛkkh. 48,8. Mâlav. 47,6. Daçak. 72,16. वेगोदग्रं भुजंगशिशोर्विषम् Spr. 5063. sieben Stadien einer solchen *Wirkung* gezählt Suçr. 2,255,2. fgg. 267,12. — 5) *Drang zur Ausleerung* Suçr. 1,258,5. 2,111,4. 144,18. 513,2. °विरोधिन् Çârṅg. Saṁh. 3,8,4. *die einzelne Ausleerung* (nach unten oder nach oben) 3,3,10. 4,10. = समुत्सर्ग Trik. — 6) *Anstoss, Impuls:* संयोगविभागवेगाः Kaṇ. 1,1,20. संस्कारस्त्रिविधो वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति Tarkas. 54. Suçr. 1,37,9. प्रारब्धकर्म° Nîlak. 31. — 7) *die Frucht einer best. Gurkenart* (महाकालफल) Trik. Med. — 8) Bez. einer best. Sippe böser Geister Hariv. 12867. — Vgl. कपोतवेगा, गरुड°, चण्डवेग (वायु Varâh. Bṛh. S. 25,5), नन्दि°, निर्वेग, पृथु°, प्र°, भीम°, मदन°, महावेग, महा°, मेघ°, वज्र°, वात°, वायु°, विजय°.

वेगग (वेग + 1. ग) adj. (f. आ) *stark strömend, rasch fliessend:* नदी Hariv. 5774.

वेगदर्शिन् m. N. pr. eines Affen R. 5,73,29. 6,112,63.

वेगन s. वेगान.

वेगनाशन m. = श्लेष्मन् Çabdar. im ÇKDr.

वेगनाश्यनाशकभावरहस्य n. Titel einer Schrift Hall 62 (°नासक° gedr.).

वेगरोध m. *check, remora; obstruction of the natural excretions* Wilson.

वेगवत् (von वेग) 1) adj. *a) schwallend, heftig wogend:* सरितां पतिः R. Gorr. 2,11,5. — *b) ungestüm, hastig, rasch zu Werke gehend:* वीरः शार्दूल इव वेगवान् MBh. 6,4344. R. 3,43,24. वेगवान्राघवो ययौ 50,5. 5,36,56. Kâm. Nîtis. 18,59. उग्र° MBh. 1,1179. प्लवग R. 5,7,32. तुरंगम *ein schnell laufendes Pferd* Kâm. Nîtis. 16,10. Kull. zu M. 8,209. वायु *heftig blasend, rasch dahinfliegend* R. 5,3,35. 7,35,26. Ragh. 8,34. Mârk. P. 17,3. अनिल im Körper Suçr. 1,254,9. गदा MBh. 3,677. 8,4225. चक्र 1,1180. शर 8282. 3,12108. 5,7236. अति° 3,15655. वाजीवात्यर्थवेगवान् *überaus ungestüm* Suçr. 2,153,17. आसारो वेगवान्वर्षः *ein heftiger Regen* H. 165. — 2) m. *a) Leopard* Mad. in Nigh. Pr. — *b)* N. pr. eines Asura MBh. 1,2646. 3,675. fgg. eines Vidjâdhara Kathâs. 105,66. eines Sohnes des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,61,13. eines Fürsten, Sohnes des Bandhumant, 9,2,30. VP. 383. N. pr. eines Affen R. 6,2,31. — 3) f. वेगवती *a) eine best. Arzeneipflanze* Suçr. 2,172,13. 173,13; vgl. महा°. — *b) ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 164 (VI, 3). Ind. St. 8,359. — *c)* N. pr. einer Vidjâdharî Kathâs. 105,42. fgg. — *d)* N. pr. eines Flusses R. 4,41,16.

वेगवाहिन् 1) adj. *schnell fliessend:* गङ्गा R. Gorr. 1,45,8. *schnell fliegend:* शर Râǵa-Tar. 5,217. — 2) f. °वाहिनी N. pr. eines Flusses MBh. 2,371. Mârk. P. 57,23.

वेगवृष्टि f. *ein heftiger Regen* Trik. 3,3,329 (°वृष्ति gedr.).

वेगसर (वेग + सर) m. *Maulthier* H. 1253. f. ई Kathâs. 123,256. 262. — Vgl. वेसर.

वेगातिग adj. MBh. 2,895 fehlerhaft für वेलातिग, wie die ed. Bomb. liest.

वेगान wohl eine Corruption von ग्रामगेयगान Ind. St. 1,30. वेगन Colebr. Misc. Ess. I,82.

वेगानिल (वेग + अ°) m. *ein heftiger Wind* Vikr. 4.

वेगित॑ (von वे॑ग) adj. gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. 1) *schwallend, heftig wogend:* समुद्रं शरवेगितम् (शरवेधनम् ed. Bomb.) MBh. 5,2042. — 2) *ungestüm, hastig, rasch zu Werke gehend, sich schnell bewegend, rasch fliegend:* प्रदुद्रुवुस्ते स्म वेगिताः (गजाः) MBh. 1,2843. 3,8812. तच्छ्रुत्वा त्वरितः कंसो रक्षिभिः सह वेगितः । आजगाम Hariv. 3333. शार्दूलानिव वेगितान् 5210. 13868. R. 4,15,23. सुपर्णगति° 26. 61, 44. सुपर्ण 63,24. 5,3,19. 29,24. 39,25. पतंग इव वेगितः 56,26. (वानराः) उत्पेतुर्गगनं शीघ्रं पवना इव वेगिताः 6,112,62. Bhâg. P. 6,5,16. Mârk. P. 127,3. हंसाः MBh. 8,3048. सायक 3,11727. 4,399 (°वेगिताः mit der ed. Bomb. zu lesen). R. 3,26,22. तोमरान् — शलभानिव वेगितान् MBh. 14,2187. सु° (शक्ति) MBh. 6,3677. अति° von Planeten Sûrjas. 2,10. — Vgl. प्र°.

वेगिन् (wie eben) adj. = वेगित 2) AK. 2,8,2,41. 3,4,18,130. Halâj. 2,203. MBh. 3,8812. शार्दूलमिव वेगिनम् 8,302. अश्व Hariv. 15063. R. 5,95,20. Kâm. Nîtis. 18,57. गङ्गा *schnell fliessend* MBh. 13,1840. R. 2,71,6. जलानि Kir. 8,39. अति° (जलौघ) Mârk. P. 74,10. परम° (इषु) *schnell fliegend* MBh. 7,8798. उद्धत° adj. von उद्धतवेग R. 2,45,30.

वेगिल (wie eben) m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 47,85.

वेगिहरिण (वेगिन् + ह°) m. *eine Gazellenart,* = श्रीकारिन् Râǵan. im ÇKDr.

वेङ्क m. pl. N. pr. eines Volkes im Süden der Halbinsel Bhâg. P. 5,6,8. 10.

वेङ्कट m. 1) N. pr. eines Berges im Lande der Drâviḍa Bhâg. P. 10,79,13. VP. 180, N. 3. °गिरि Colebr. Misc. Ess. I,299. Verz. d. Oxf. H. 251,*b*,26. वेङ्कटाद्रि Colebr. Misc. Ess. I,299. वेङ्कटाचल Mack. Coll. I,83. वेङ्कटेश्वर *der auf dem Berge* V. *verehrte* Vishṇu ebend. und 225. वेङ्कटाचलेश desgl. Verz. d. Oxf. H. 258,*a*,27. °पति ein *Fürst* Kuvalaj. 193,*b* (161,*b*). °नाथ ein Autor Sarvadarçanas. 53,12. वेङ्कटेशदीक्षित N. pr. eines Mannes Hall 70. वेङ्कटेश्वरदीक्षित desgl. 172. — 2) N. pr. verschiedener Gelehrter Verz. d. Oxf. H. 130,*a*, No. 236. 150,*a*, No. 319. 196,*a*, No. 455. 213,*a*, No. 505. वेङ्कटाचार्य Ind. St. 1,466. Hall 112. 137. वेङ्कटाध्वरिन् Verz. d. Oxf. H. 150,*a*, No. 319. वेङ्कटाद्रियज्वन् Hall 176. — Vgl. प्रसन्नवेङ्कटेश्वरमाहात्म्य.

वेचा f. v. l. für वेता = वेतन Halâj. 4,43.

वेजनवत् adj. zur Erklärung von वाजिन् Nir. 2,28. 3,3.

वेजानी f. *Vernonia anthelminthica Willd.* (सोमराजी) Çabdak. im ÇKDr.

वेट् ein Opferausruf VS. 17,12. 18,29. वेट्कार॑ m. Çat. Br. 9,2,1,7. 3,3,14.

वेट gaṇa मघादि zu P. 4,2,86.

वेटक m. N. pr. des Vaters des Mâdhava Dev. zu Naigh. Einl. — Vgl. वात°.

वेटवत् adj. von वेट gaṇa मघादि zu P. 4,2,86.

वेटाय्, वेटायति (विटीभावे) Gaṇaratnam. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

वेट्य्, वेट्यति (धौर्त्ये स्वप्ने च) gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27. वेष्ट्य्, वेष्ट्यति v. l.

वेड 1) n. = सान्द्रविच्छिन्नचन्दन Rāǵan. im ÇKDr. — 2) f. वेडा (वेडा) *Boot, Schiff* H. 877 (वेडी v. l.). Halāj. 3, 50.

वेढमिका f. *eine Art Gebäck* Bhāvapr. im ÇKDr.

वेण्, वेणति und °ते (गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु) Dhātup. 21,13. — Vgl. वेन्.

वेण 1) m. *a)* Bez. *einer best. Mischlingskaste: der Sohn eines* Vaidehaka *von einer* Ambashṭhī M. 10,19. वेणानां भाण्डवादनम् 49. 4, 215, v. l. (für वैण). Jāǵn. 3,207. — *b)* N. pr. des Vaters von Pṛthu: वेणो विनष्टो ऽविनयात् M. 7,41. 9,66. Verz. d. Oxf. H. 12,*b*,1 v. u. 13, *a*,1. 39,*a*,20. VP. 98. fgg. (वेन die neuere Ausg.). Bhāg. P. 2,7,9 (वेन ed. Bomb.). Die richtigere Lesart ist वेन. — *c)* N. pr. eines Vjāsa VP. 273. वेन die neuere Ausg. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses MBh. 3,8175. 8328. 12909. 14232. MBh. 6,335 (VP. 183). Hariv. 5290 nach der Lesart der neueren Ausg. उज्जयिन्यां वेणातटे Mṛkkh. 175,4. Varāh. Bṛh. S. 4,26. 14,12. 16,9. 80,6. Kathās. 123,204. Bhāg. P. 10,79,12. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,31; vgl. उप°, कु°, कृष्ण°, तुङ्ग°. — Vgl. वैण, वैण्य und वेन.

वेणातट m. pl. N. pr. eines Volkes AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). wohl richtiger वेणातट (*an den Ufern der* Veṇā *wohnend*) MBh. 2,1117 nach der Lesart der ed. Bomb. वेण्वातट ed. Calc. वेणातटे in der Bed. *am Ufer der* Veṇā Mṛkkh. 175,4.

वेणाविन् (von वेणु) adj. *mit einer Flöte versehen:* Çiva MBh. 13,1172 nach der Lesart der ed. Bomb. वैणाविन् ed. Calc.

वेणातट s. वेणातट.

वेणि (Uṇādis. 4,48. f. Siddh. K. 248,*a*,9) und वेणी (von 5. वा) f. 1) *Haarflechte*, insbes. *das in einen einzigen Zopf zusammengeflochtene Haar der Weiber* (gewöhnlich ein Zeichen der Trauer) AK. 2,6,2,49. H. 570. an. 2, 154. fg. Med. ṇ. 28. Halāj. 2,375. Kātj. Çr. 7,3,26. न प्रोषिते तु संस्कुर्यान्न वेणीं च प्रमोचयेदिति हारीतः Schol. in der ed. Calc. des Ragh. 14,12. तस्या दीर्घवेणी सुसंयता। ददृशे स्वसिता स्निग्धा काली व्यालीव मूर्धनि ॥ MBh. 3,16190. दीर्घां वेणीं विधुन्वानः (Arǵuna als Eunuch oder Zwitter) 4, 1261. 2150. Megh. 18. Spr. (II) 112. Rāǵa-Tar. 4,1. Nalod. 3,27. नीलनागाभया वेण्या जघनं गतयैकया R. 5,18,11. तस्याः सुविपुला दीर्घा दृश्यते वेणी व्यालीव परिवर्तिनी 26,2. वेण्यां ग्रथितमुत्तमं मणिरत्नम् 36,73. 68,30. गुम्फिता शिरसि वेणयः Çiç. 14,30. वेणीकृतशिरस् MBh. 4,54. वेणीविकृतकेशान्त 575. fg. ऊर्ध्ववेणीधरा 9,2652. वेणीभूतांश्च मूर्धजान् Bhāg. P. 3,23,24. 4,28,44. °मूल Varāh. Bṛh. S. 51,40. शस्त्रेण वेणीविनिगूहितेन 78,1 (Kull. zu M. 7,153). वेण्यां शस्त्रं समाधाय Kām. Nītis. 7,54. वेणीबन्धकपर्दिनी (पार्वती) Sāh. D. 54,1. विमुच्य वेणीम् MBh. 4,301. मोक्ष्यधे स्वर्गबन्दीनां वेणीबन्धान् so v. a. *von der Trauer erlösen* Ragh. 10,48. Kumāras. 2,61. Megh. 97. तस्याः पुरः (*Stadt*) — मुक्ता स्वयं वेणिरिवाबभासे Ragh. 14,12. एकवेणीधरा (vgl. u. एकवेणि) R. 5,18,21. एकवेणीधरा चेयं वसुधा त्वां प्रतीक्षते Hariv. 5399. एकवेणीधरत्व R. 5, 22,8. एकनिबद्धवेणी adj. Hariv. 7042. das Wasser eines Flusses mit einem *Zopfe* verglichen: वेणीभूतप्रतनुसलिला सिन्धुः Megh. 30. जलवेणिरम्यां (वेणि = प्रवाह Schol. in der ed. Calc.) रेवाम् Ragh. 6,43. प्रयागे गङ्गायमुनासरस्वतीमेलनं त्रिवेणी ÇKDr. daher वेणी = प्रवाह H. 1087. H. an. Halāj. 3, 47. वेणि = जलसमूह Gaṭādh. im ÇKDr. das Schwert (कृपाण) als *Zopf* der राजश्री Rāǵa-Tar. 5,449. — 2) वेणी abgekürzt für वेणीसंहार Sāh. D. 132,13. 144,16. — 3) वेणी *Lipeocercis serrata Trin.* (देवताड) AK. 2,4,2,49. H. an. Med. — 4) वेणी *Damm, Brücke* H. an. — 5) वेणी N. pr. eines Flusses Med. Hariv. 9510 nach der Lesart der neueren Ausg. Kathās. 49,177. Bhāg. P. 5,19,18. सर्वाश्चैव तथाभीरा वेण्यास्तीरनिवासिनः Mārk. P. 58,22. Verz. d. Oxf. H. 16,*b*,16. — 6) वेणि = वाणि *das Weben* Colebr. und Lois. zu AK. 2, 10,29. — Vgl. एक°, कु°, त्रि°, पद्य°, पुष्प°, प्र°, ग्रावेणिक.

वेणिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2097. वेत्रिक ed. Bomb.

वेणिका (von वेणि) f. *eine geflochtene Binde:* रज्जुवेणिकापट्ट° Suçr. 1,25,10. = वेणि 1) Çabdam. im ÇKDr.

वेणिन् (von वेणि) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2154.

वेणिमाधव m. N. eines in Prajāga stehenden vierhändigen steinernen Idols ÇKDr. — Vgl. वेणीमाधवबन्धु.

वेणिवेधनी f. *Blutegel* Trik. 1,2,25.

वेणी f. 1) = वेणि; s. das. — 2) *Schafmutter* H. 1277. — 3) MBh. 13,630 fehlerhaft für वेणु, wie die ed. Bomb. liest.

वेणीदत्त m. N. pr. des Verfassers der Padjaveṇī Hall in Journ. of the Am. Or. S. 6,524 und in der Einl. zu Vāsavad. S. 48.

वेणीदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 380,*a*,4.

वेणीमाधवबन्धु m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 135,*b*, No. 255 (hier °मधव° gedr., im Index richtig °माधव°). — Vgl. वेणिमाधव.

वेणीर m. *eine best. Pflanze*, = अरिष्ट Çabdak. im ÇKDr.

वेणीसंवरण n. = वेणीसंहार Verz. d. Oxf. H. 146,*a*, No. 307.

वेणीसंहरण n. dass. Verz. d. B. H. No. 553.

वेणीसंहार m. *die Wiederherstellung der Haarflechte* (der Draupadī), Titel eines Dramas des Bhaṭṭanārājaṇa Verz. d. Oxf. H. 145,*b*, No. 306. 146,*a*, No. 307. fgg. 203,*a*, No. 484. 208,*b*,39. 209,*a*,4.

वेणीस्कन्ध m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2154.

वेणु (AV. Çat. Br.) und वेणु (Uṇādis. 3,38 und TS.) P. 6,1,215. m. 1) *Rohr, Rohrstab*, insbes. *Bambusrohr* AK. 2,4,5,26. Trik. 3,3,138. H. 1153. an. 2,155. Med. ṇ. 29. Hār. 108 (रेणु gedr.). 176. Halāj. 2,49. Viçva bei Uǵǵval. AV. 1,27,3. नड, वेणु, इषीका Çat. Br. 1,1,4,19. 2,6,2,17. ते यथा वेणू संधाव्येते Kāṭh. 13,12. वेणोः सुषिरम् TS. 5,1,1,4. वेणुना विमिमीत आग्नेयो वै वेणुः 2,5,2. °भार 7,4,19,2. °यष्टि Çat. Br. 2,6, 2,17. Kauç. 47. Kātj. Çr. 5,10,21. 18,2,10.13. Āçv. Gṛhj. 3,8,20. M. 8,247. ताड्यः स्यू रज्ज्वा वेणुदलेन वा 299. Ind. St. 3,398. °वैदलभाण्ड M. 8,327. कीचकवेणूनां छाया MBh. 2,1858. 3,12294. °स्फोट 4,759. R. 2,94,8 (103,8 Gorr.). 3,17,9. 4,44,76. 78. fg. °शय्या 5,13,47. 95,8. Suçr. 1,29,6. 96,11. वेणोः करीराः 224,7. 9. 12. 2,5,19. °त्वच् 504,16. Ragh. 12,41. मलये ऽपि स्थितो वेणुर्वेणुरेव न चन्दनः Spr. (II) 349. संघातवान्यथा वेणुर्निबिडः कण्टकैर्वृतः। न शक्यते समुच्छेत्तुम् (I) 3104. Varāh. Bṛh. S. 81,1. 28. Kathās. 46,98. Bhāg. P. 1,6,13. 3,4,2. 8,24. 4,6,18. °गुल्म 6,1,14. °जाल LA. (III) ad 13,17. यथा च वेणुः कदली नलो वा फलत्यभावाय न भूतये ऽऽत्मनः MBh. 3,15647. तन्मा (so ed. Bomb.) दृक्षेर्वेणुमिवात्मपुष्पम् R. 2,38,7; vgl. H. v. Rheede, Hortus Indicus Mala-

baricus I, 25. fg. (angeführt von STENZLER in Z. f. d. K. d. M. 4,398.fg.): sexagesimo anno a satione, ut ferunt, haec arbor (das Bambusrohr) flores fert per unum ferme mensem; proxime ante florem exortum, primum omnibus foliis spoliatur, et postquam defloruit, emoritur. — 2) *Rohrpfeife, Flöte* TRIK. 1,1,123. ÇABDAR. im ÇKDR. MBH. 1,7018. 14, 1762. 15,630 (वेणी ed. Calc.). गोपवेणुं वादयन् HARIV. 3603. 5073. R. 1, 5,19. 2,39,40. 4,33,26. SUÇR. 1,107,9. RAGH. 19,35. VARÂH. BṚH. S. 19, 18. GÎT. 5,9. KHANDOM. 34. KATHÂS. 17,107. Verz. d. Oxf. H. 145,*a*,37. 39. रणद्वेणु BHÂG. P. 3,2,29. 6,8,18. WEBER, KṚSHṆÂG. 270. 287. MÂRK. P. 19,11. PAÑKAR. 3,5,16. वेणुं धमन् 11,6. °वाद्यविशारद (Kṛshṇa) 4, 1,32. BRAHMAVAIV. P. 2,50. PAÑKAT. 20,7. VOP. 5,5. so vielleicht auch in: शतं वेणून्कृतं पुनः शतं चर्माणि म्लातानि VÂLAKH. 7,3. — 3) N. pr. einer Gottheit des Bodhi-Baumes LALIT. ed. Calc. 347,8. eines Fürsten TRIK. 3,3,138. H. an. MED. VIÇVA a. a. O. eines Sohnes des Çatagit VP. 416. pl. *die Nachkommen* Veṇu's ÂÇV. ÇR. 12,14,6. — 4) N. pr. eines Berges MÂRK. P. 55,5. — 5) N. pr. eines Flusses H. ç. 162. — Vgl. अङ्गार°, त्रि° (nach NÎLAK. zu MBH. 3,12294 = अन्तकूबरयोः संधानार्थं त्रिशिखं दारु), भद्र°, वैणव, वैणविक, वैणुक.

वेणुक (von वेणु) gaṇa गर्हादि zu P. 4,2,138. oxyt. gaṇa ऋश्यादि zu 80. proparox. = ह्रस्वो वेणुः (संज्ञायाम्) 5,3,87, Schol. 1) m. *a) Rohrpfeife, Flöte* HARIV. 15399. — *b)* = वरका, एला (Comm.) *Amomum* BHÂG. P. 4,6,16. — *c)* pl. N. pr. eines Volkes MÂRK. P. 58,45; vgl. वेणुप. — 2) f. आ *eine best. Pflanze mit giftiger Frucht* SUÇR. 2,251,18. = एला *Amomum* Comm. zu BHÂG. P. 4,6,16. — 3) n. *ein Bambusrohr zum Antreiben eines Elephanten* (vgl. वैणुक) H. 1230. — Vgl. वैणुकीय.

वेणुकर्कर m. *Capparis aphylla Roxb.* (करीर) TRIK. 2,4,38.

वेणुकार m. *Flötenmacher* VJUTP. 97.

वेणुकीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von वेणु gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. वेणुकीया f. *ein mit Bambusrohr bestandener Ort* P. 6,4,153, Schol.

वेणुगध (!) m. *eine best. Pflanze* MÂRK. P. 49,72.

वेणुज (वेणु + 1. ज) 1) adj. *im Bambusrohr entstehend:* वह्नि BHÂG. P. 3,1,21. — 2) m. = वेणुयव RÂGAN. im ÇKDR. — 3) n. *Pfeffer* v. l. für वेणुन in RATNAM. nach ÇKDR.

वेणुजङ्घ (वेणु + जङ्घा) m. N. pr. eines Muni MBH. 2,113.

वेणुदत्त m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218,*a*,10. वैन्यदत्त v. l.

वेणुदारि m. N. pr. eines Fürsten MBH. 3,15251. HARIV. 4966. 5015. 5087. 5496. 6671. 6724. 9152. वेणुदारिन् SÂH. D. 104,10.

वेणुध्म adj. *auf der Flöte blasend,* m. *Flötenspieler* AK. 2,10,13. H. 925.

वेणुन n. *Pfeffer* RATNAM. im ÇKDR. वेणुज v. l.

वेणुनृत्या f. N. pr. einer Tantra-Gottheit KÂLAKAKRA 3,133.

वेणुप m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 5,4751 nach der Lesart der ed. Bomb. रेणुप ed. Calc.; vgl. वेणुक 1) *c*).

1. वेणुपत्त्र n. *das Blatt des Bambusrohrs* Verz. d. Oxf. H. 267,*b*,16.

2. वेणुपत्त्र 1) adj. *das Blatt des Bambusrohrs habend.* — 2) f. ई *eine best. Grasart,* = वंशपत्त्री RATNAM. 218.

वेणुपत्त्रक 1) m. *eine Schlangenart* SUÇR. 2,265,13. — 2) f. °पत्त्रिका *eine best. Grasart,* = वेणुपत्त्री, वंशपत्त्री SUÇR. 2,248,6.

वेणुबीज n. = वेणुयव RÂGAN. im ÇKDR.

वेणुमण्डल n. N. pr. des zweiten Varsha in Kuçadvîpa MBH. 6,453.

वेणुमत् (von वेणु) 1) adj. *mit einem Bambusrohr versehen* JÂGÑ. 1,133. — 2) m. N. pr. eines Berges HARIV. 8951. — 3) f. °मती gaṇa मध्वादि zu P. 4,2,86. N. pr. eines Flusses VARÂH. BṚH. S. 14,23. MÂRK. P. 58, 36. 39. — 4) n. N. pr. eines Waldes HARIV. 8955.

वेणुमय (wie eben) adj. (f. ई) *aus Bambusrohr bestehend:* यष्टि VARÂH. BṚH. S. 43,8.

वेणुमुद्रा f. Bez. *einer best. Stellung der Finger* PAÑKAR. 3,4,18.

वेणुयव 1) m. *Same des Bambus* BHÂVAPR. im ÇKDR. Comm. zu KÂTJ. ÇR. 4,6,17. Ind. St. 2,300. SUÇR. 1,73,6. 197,1. — 2) f. ई (sc. इष्टि) *eine Darbringung von Bambus-Samen* ÇÂÑKH. ÇR. 3,12,2.

वेणुवन n. 1) *ein Wald von Bambusrohr* Spr. (II) 2682. — 2) N. pr. eines best. *Waldes* VJUTP. 102. HIOUEN-THSANG I, 351. II, 32. WASSILJEW 42.

वेणुवाद m. *Flötenspieler* RATNAM. im ÇKDR.

वेणुवीणाधरा f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's (*eine Flöte und eine Laute haltend*) MBH. 9,2639.

वेणुहय m. N. pr. eines Nachkommen Jadu's HARIV. 1844. BHÂG. P. 9,23,21.

वेणुहोत्र m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭaketu HARIV. 1596. VP. 409, N. 15. 2te Aufl. 4,38. fg. MUIR, ST. I, 53. — Vgl. वैनहोत्र.

वेणा s. कृष्ण°.

वेण्या f. N. pr. zweier Flüsse (wohl nur fehlerhaft für वेणा) MÂRK. P. 57,24. 26. — Vgl. कृष्ण°.

वेण्वा f. N. pr. eines Flusses (fehlerhaft für वेणा) MBH. 2,371. HARIV. 5229. 5290 (die neuere Ausgg. वेणा an allen drei Stellen). 9510 (वेणी die neuere Ausg.). MÂRK. P. 57,19. — Vgl. कृष्ण°.

वेण्वातट MBH. 2,1117 fehlerhaft für वेणातट.

वेत m. = वेत्र RÂGAN. im ÇKDR.

वेतन UṆÂDIS. 3,150. n. SIDDH. K. 249,*a*,8. *Lohn* AK. 2,10,38. H. 362. HALÂJ. 4,43. वेतनादिभ्यो जीवति P. 4,4,12. पणो देयो ऽवकृष्टस्य षडुत्कृष्टस्य वेतनम् M. 7,126. 8,215. fgg. JÂGÑ. 2,196. यदि शिष्यो ऽसि मे वीर वेतनं दीयतां मम MBH. 1,5264. 6210. 2,182. fg. 186. 3,2639. 4,287. 6,3321 = 7,4445. R. GORR. 2,109,41. RÂGA-TAR. 6,48 (वेतान TR. वितान ed. Calc.). 54. 8,75. BHÂG. P. 5,9,9. मासं वेतनेन क्रीतः कर्मकरः P. 5,1,80, Schol. °दान 1,3,36, Schol. वेतनस्यानपक्रिया M. 8,214. वेतनस्यादानम् 5. वेतनादान 218. Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,24. अकर्मणो त्वया शीघ्रं कथयात्मवेतनम् MÂRK. P. 8,84. लब्धं गीतस्य वेतनम् Spr. 3231. कर्म° BHÂG. P. 5,9,12. रत्नपण° MÂRK. P. 18,7. आत्त° 50,75. पर्याप्त° adj. KÂM. NÎTIS. 16,7. दत्त° 4,65. कृत° *Lohn empfangend* 13,75. JÂGÑ. 2, 164. दीनारलक्षेण प्रत्यक्कं कृतवेतनः RÂGA-TAR. 4,494. गृहीतवेतना वेश्या JÂGÑ. 2,292. उभय° *von beiden Seiten Lohn empfangend, Verräther, Spion* KÂM. NÎTIS. 12,12. 17,22. PAÑKAT. 22,10. fg. HIT. 88,17. वेतन = जीविका *Lebensunterhalt* H. 865. = रूप्य *Silber* ÇABDAK. im ÇKDR. *Preis:* स्वसंचितानि स्वर्णानि विक्रीणानो ऽल्पवेतनैः RÂGA-TAR. 8,61. — Vgl. निर्वेतन und वैतनिक.

वेतनभुज् adj. *Lohn empfangend;* m. *Knecht, Diener* PAÑKAR. 1,4,16. 2,8,5.

वेतनिन् adj. von वेतन am Ende eines comp.: कुप्य°, अतिक्रान्त° MBH. 3,657.

वेतसं Uṇâdis. 3,118. 1) m. *ein rankendes Wassergewächs, Calamus Rotang Willd.* (AK. 2,4,2,10. H. 1137. Halâj. 2,46. Ratnam. 214) oder ein verwandtes, *spanisches Rohr; Ruthe, Stecken:* हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् Ṛv. 4,58,5. यो वेतसं हिरण्ययं तिष्ठन्तं सलिले वेद AV. 10, 7,41. 18,3,5. VS. 17,6. अप्सुज TS. 5,3,12,2. 4,4,2. Çat. Br. 9,1,2,22. 24. 13,2,2,19. Kâtj. Çr. 20,2,2. Lâtj. 4,1,7. Kauç. 8. 40. कृदिनीं वेतसैर्वृताम् MBh. 3,2511. 12361. 12,4199. fgg. 5837. Suçr. 1,26,13. 2,72, 17. Ragh. 9,75. °परिक्षिप्ते लतामण्डपे Çâk. 32,19. °गृह 74. Varâh. Bṛh. S. 54,6. 86. 101. 119. 124. 55,10. 22. Bhâg. P. 8,2,16. मञ्जरीभिर्विराजन्ते नदीकूलेषु वेतसाः । वक्तुकामा इवाङ्गुल्या को ऽस्माकं सदृशो नगः ॥ Vâmana-P. 6 (nach Aufrecht). °शाखा TBr. 3,8,4,3. TS. 5,4,4,3. Çat. Br. 9,1,2,20. 13,5,2,8. Kâtj. Çr. 18,2,10. 20,8,2. °पुष्प Varâh. Bṛh. S. 29, 6. तस्य शिरः । छित्वा वेतसपत्त्रेण Mârk. P. 127,24. 134,52. मु° MBh. 3, 17286. am Ende eines adj. comp. (f. आ) AK. 2,1,9. Gît. 7,9. — 2) f. ई gaṇa गौरादि zu P. 4,1,41. dass. Trik. 3,5,19. Çabdar. im ÇKDr. Kathâs. 121,162. °तरु Sâh. D. 5,3. — 3) n. *a) eine Lanzette in Gestalt eines Rotang-Blattes* Vâgbh. 26,9. — *b)* N. pr. einer Stadt Kathâs. 2,41. — Vgl. अम्ल°, वैतस.

वेतसक (von वेतस) 1) m. pl. N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 7,2095 nach der Lesart der ed. Bomb. चेतसक ed. Calc. — 2) f. वेतसिका desgl. MBh. 3,8034. — Vgl. वैतसक.

वेतसकीय adj. (चतुरर्थेषु) von वेतस gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. f. आ *ein mit Rotang bestandener Platz* 6,4,153, Schol.

वेतसाम्ल m. = अम्लवेतस Gaṭâdh. im ÇKDr.

वेतसिनी (f. von वेतसिन् und dieses von वेतस) f. N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 13.

वेतसु m. N. pr. eines von Indra überwundenen Feindes Ṛv. 6,20, 8. 26,4. pl. 10,49,4.

वेतस्वत् (von वेतस) P. 4,2,87. 6,1,161, Schol. adj. *mit Rotang bestanden* AK. 2,1,9. H. 954. als subst. N. pr. eines Ortes Pańkav. Br. 21,14,20.

वेता f. = वेतन Halâj. 4,43.

वेतान Râǵa-Tar. 6,48 fehlerhaft für वेतन.

वेताल 1) m. AK. 3,6,2,21. *a) Bez. eines Dämons, der von todten Körpern Besitz nimmt und sich derselben als Hülle bedient,* Hariv. 14533. Kâm. Nîtis. 17,52. Kathâs. 12,48. 18,151. 25,136. विक्रसन्नपि वेतालः (कृन्यात्) Spr. 1430. Râǵa-Tar. 1,292. 3,349. 351. 6,191. Bhâg. P. 2,10,39. 7,8,38. Verz. d. Oxf. H. 94,b,37. भूतवेतालमतनिबर्हणा 251,a,45. Wilson, Sel. Works I, 26. Hit. 65,11. fg. Vet. in LA. (III) 4,14 u. s. w. Târan. 228. °सिद्धि 206. Wassiljew 196. Verz. d. Oxf. H. 94,b,27. °साधन Kathâs. 26,235. °कर्मज्ञ Varâh. Bṛh. S. 15,4. वेतालोत्थापन Râǵa-Tar. 8,2188. Ind. St. 8,310, N. 4. वेतालाख्यायिका Verz. d. Oxf. H. 354,a,37. °पञ्चविंशति und °पञ्चविंशतिका *25 Erzählungen vom* Vetâla Gild. Bibl. 366. von Çivadâsa Colebr. Misc. Ess. II, 87. Verz. d. Oxf. H. 152,b,3. von Ǵambhaladatta 152, a, No. 327. von Somadeva 84,b,9. Kathâs. 75. fgg. — *b)* N. pr. α) eines Wesens im Gefolge Çiva's Vjâḍi beim Schol. zu H. 210. Kâlikâ-P. 45. 49 nach ÇKDr. — β) eines Lehrers Bhâg. P. 12,6,58. — *c)* = द्वारपालक Çabdar. im ÇKDr. — 2) f. ई ein N. der Durgâ Hariv. 10240. — 3) वेताली indecl. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्यादि zu P. 1,4,61. — Vgl. उष्ट्रवेताली (Hariv. 9542), लोमवेताल, वैतालीय. Das Wort wird gewöhnlich in वेत = अवेत + आल = आलय zerlegt und durch *in Verstorbenen hausend* übersetzt, wogegen zu bemerken ist, dass अवेत nicht = प्रेत ist.

वेतालजननी f. N. pr. einer der Mütter im Gefolge Skanda's MBh. 9,2631.

वेतालभट्ट m. N. pr. einer der 9 Perlen am Hofe Vikramâditja's Haeb. Anth. 1. ihm wird der Nîtipradîpa zugeschrieben ebend. 526. fgg.

वेत्तर् (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner:* स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता Çvetâçv. Up. 3,19. Bhag. 11,38. देवो हि वेत्ता परमं यदत्र MBh. 1, 7331. Hariv. 14188. वेदोपनिषदाम् MBh. 2,136. कालस्य 4,888. तत्त्वधर्मस्य 6,5732. अपि यज्ञस्य वेत्तारो दत्तस्य सुकृतस्य च (त्रिदशेश्वराः) 13, 7097. Hariv. 2169. 7429. (खरः) भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य Spr. 4780. Kâm. Nîtis. 18,36. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 4, Z. 4. Kathâs. 43,230. Pańkar. 3,7,2. अतीन्द्रियार्थ° R. Gorr. 1,7,10. 3,53,41. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 1 v. u. 69,14. Bṛh. 14,5. Verz. d. Oxf. H. 40,a,26. 135,a, No. 254. 166,b, No. 370. 255,b, 20. अस्य यज्ञस्य वेत्ता त्वं भविष्यसि जनार्दन so v. a. *Zeuge* MBh. 5,4784. *Empfinder:* अप्रिय° Khând. Up. 8,10,2. als fut.: तद्दीर्घकालं वेत्तासि *daran wirst du lange Zeit denken müssen* R. 7,36,34.

वेत्रं (von 3. वी) Uṇâdis. 4,166. m. *eine grössere Art Calamus*, etwa *fasciculatus*, zu Stöcken gebraucht, Râǵan. im ÇKDr. Kauç. 40. MBh. 3, 2404. 12,3241. वेत्रात्रूढमहावृता Hariv. 14432. यत्रोत्पन्ना महावेत्रा भूतानां दण्डतां ययुः 14804. R. 2,94,9. 3,17,9. °लताचयैः — सेतुं बबन्धुः 5,95,17. Suçr. 2,252,1. वेत्राम्ल 328,6. °फल 1,157,5. 209,5. °करीर 157,13. 221,6. वेत्राग्र 222,2. वेत्रासव 238,11. °कीचकवेणूनां गुल्मानि Bhâg. P. 8,4,17. LA. (III) ad 13,17. वेणुवेत्राणि R. 5,95,8. °यष्टि *Rohrstab* (beim Kańkukin) Çâk. 100. °लता (beim Thürsteher) Pańkat. 16, 1 (13,6 ed. orn.). वेत्र so v. a. वेत्रयष्टि Varâh. Bṛh. S. 72,4. Bhâg. P. 10,12,2 (zum Treiben des Viehes). पट्टिकावेत्रबाणविकल्पाः (so im Comm. zu Bhâg. P. 10,45,36) unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217, a, 11. प्राङ्गवेत्रकर (Kṛshṇa) Pańkar. 4,8,113. beim Thürsteher Bhâg. P. 3,15,30. 7,5,16. °व्यासक्तहस्त MBh. 9,1638. °पाणि Hariv. 5004. R. Gorr. 2,13,3. °कार्करपाणि 6,99,23. MBh. 6,4436. °हस्त Kathâs. 108, 2. 124,75. वामप्रकोष्ठार्पितहेम° Kumâras. 3,41. — वेत्र n. H. an. 2,449 und Med. r. 80 fehlerhaft für रेत्र. — Vgl. वैत्रक.

वेत्रकार m. *der Arbeiten aus dem* Vetra *genannten Rohre macht* R. Gorr. 2,90,16.

वेत्रकीय adj. (चतुरर्थेषु) von वेत्र gaṇa नडादि zu P. 4,2,91. वेत्रकीया f. *ein mit* Vetra *bestandener Platz* 6,4,153, Schol. वेत्रकीयगृह N. pr. einer Oertlichkeit MBh. 1,6213. वेत्रकीयवन (वैत्र° ed. Bomb.) desgl. 3,415 (= एकचक्रा Nîlak.).

वेत्रग्रहण n. *das Ergreifen des Rohrstabs* so v. a. *das Amt eines Thürstehers* oder *einer Thürsteherin:* °ग्रहणे नियुक्ता Ragh. 6,26.

वेत्रधर m. *Thürsteher* (*einen Rohrstock tragend*) H. 721, Schol. Halâj. 2,269. f. आ Ragh. 6,82.

वेत्रधारक m. dass. Trik. 2,8,24.

वेत्रवत् (von वेत्र) 1) adj. Vetra *enthaltend, aus ihnen bestehend:* कीचकवेणुवेत्रवद्विशालगुल्म (das suff. gehört auch zu den vorangehen-

den Wörtern) Bhâg. P. 8,2,19. — 2) m. N. pr. eines mythischen Wesens, eines Sohnes des Pûshan, Kathâs. 48,96. — 3) f. वेत्रवती Siddh. K. 230,a,6. a) *Thürsteherin* (vgl. वेत्रिन्) Çâk. 61,15. 90,10. Prab. 70,7 und 73,19 nach der richtigen v. l. — b) eine Form der Durgâ Hariv. 9533. चित्ररथी die neuere Ausg. — c) N. pr. eines in die Jamunâ sich ergiessenden Flusses AK. 1,2,3,33. LIA. I, 84. MBh. 3,12907. 14231. 6,323 (VP. 181). 13,7647. Hariv. 9515. 12827. R. 4,41,11. Megh. 25. Varâh. Bṛh. S. 16,9. Prâjaçkittend. 11,b,6. Kâd. in Z. d. d. m. G. 7, 583. Mârk. P. 57,20. — d) N. pr. der Mutter des Vetrâsura ÇKDr. nach dem Varâha-P.

वेत्रहन् m. Bein. Indra's ÇKDr. angeblich nach AK. offenbar ein verlesenes वृत्रहन्.

वेत्रावती f. N. pr. eines Flusses, = वेत्रवती (welches nicht zum Versmaass passte) Verz. d. Oxf. H. 10,a, N. 1. Râǵan. im ÇKDr.

वेत्रासन (वेत्र + 1. आ°) n. *Rohrsitz, Rohrstuhl* H. 684. Halâj. 2,156. Kumâras. 6,53.

वेत्रासुर (वेत्र + अ°) m. N. pr. eines Asura ÇKDr. nach dem Varâha-P. वैत्रासुर Verz. d. Oxf. H. 58,a,13. fg.

वेत्रिक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,2097 nach der Lesart der ed. Bomb. वेणिक ed. Calc.

वेत्रिन् (von वेत्र) 1) adj. am Ende eines comp. — *zum Rohrstock habend* Maitrjup. 6,28 (S. 152). — 2) *Stabträger, Thürsteher* H. 721. Râǵa-Tar. 6,3. 8,526.

वेत्रीय adj. (चतुर्थ्वर्थेषु) von वेत्र gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90.

वेथ्, वेथते (याचने) Dhâtup. 2,32. — Vgl. विथ् und 5. विध्.

वेथिलेक N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 339,a,9. 10.

1. वेद (von 1. विद्) m. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. 1) *Verständniss, theologische Kenntniss:* यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये। यो नमसा स्वध्वरः ṚV. 8,19,5. वेदेन रूपे व्यपिबत्सुतासुतौ प्रजापतिः VS. 19,78. Ait. Br. 7,18. — 2) *das heilige Wissen, überliefert in der dreifachen Form* (vgl. त्रयी विद्या) *der* Ṛk, Sâman *und* Jaǵus (dazu die Aṅgiras u. a.); später *die bekannten Sammlungen der* Ṛk u. s. w.: *die heilige Schrift;* sg. AK. 3,4,14,76. 18,117. 22,142. H. 249. Med. d. 15. Halâj. 1,9. 5,82. AV. 7,54,2. 10,8,17. 15,3,7. त्रय Çat. Br. 5,5,5,10. 13,4,3,3. Âçv. Gṛhj. 1,15,3. Nir. 1,2. 18. 20. वेदो ऽखिलो धर्ममूलम् M. 2,6. सर्वज्ञानमय 7. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः 10. 165. fg. वेदस्य संहिता 11,77. वेदं विप्लाव्य 198. त्रिवृत् 263. fgg. pl. AV. 4,35,6. 19,2,12 (वेदाः zu lesen). TS. 7,5,11,2. वेदा वा एते (*diese drei Berge sind* V.) अनन्ता वै वेदाः TBr. 3,10,11,4. Ait. Br. 5,32. 6,15. Çat. Br. 11,3,3,7. 12,3,4,11. 14,7,3,6. 9,2,4. Âçv. Gṛhj. 3,4,1. 11,1. Çr. 10,7. M. 2,97. 5,4. R. 1,1,94. 4,4. वेदैः पश्यन्ति वै द्विजाः Spr. (II) 2084. सत्यप्रतिष्ठानाः 2693. वेदेषु शास्त्रेषु च (I) 2270. वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणम् 5034. (धातुः) मुखतो निःसृतान्वेदान्हयग्रीवो ऽन्तिके ऽहरत् Bhâg. P. 8,24,8. वेदानां सामवेदो ऽस्मि (sagt Kṛshṇa) Bhag. 10,22. प्रणवः सर्ववेदेषु (ist Kṛshṇa) 7,8. अधीत्य सर्ववेदान् MBh. 13,363. त्रयो वेदाः AK. 1,1,5,4. Halâj. 1,8. Çat. Br. 10,4,2,25. M. 2,77. 230. Mârk. P. 23,36. त्रिवेदसंयोग Kâtj. Çr. 25, 14,37. °त्रय M. 2,76. °त्रयी Spr. (II) 2955. वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि 3,2. एकवेदस्याज्ञानाद्वेदास्ते बहवः कृताः (im Dvâpara) MBh. 3, 11253. 5,1663 (एकस्य वेदस्या° mit der ed. Bomb. zu lesen). चत्वारः H. 253. चतुर्धा वेद एव च (im Dvâpara) MBh. 3,11251. Hariv. 11516. 11668. fgg. 12436. Kathâs. 38,103. 118. व्यदधाद्यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम् Bhâg. P. 1,4,19. अथर्वाङ्गिरसं वेदम् 6,6,19. आथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम् (= व्याकरण Comm.) Khând. Up. 7,1,2. 4. चतुरो वेदान्सर्वानाख्यानपञ्चमान् MBh. 3,2247. 5,1661. ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः। इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते॥ Bhâg. P. 1,4, 20. पुराणं पञ्चमो वेदः Verz. d. Oxf. H. 65,a,13. अं° Çat. Br. 14,7,1,22. यथावेदम् Kâtj. Çr. 7,1,8. एक° adj. *einen* Veda *habend —, kennend* MBh. 3,11244. 11252. 5,1662. द्वि°, त्रि°, चतुर्वेद 3,11251. fg. 5,1661. fg. Kathâs. 38,102. 118. Veda unter den Beinn. Vishṇu's ÇKDr. nach dem Vishṇusahasranâmastotra. — 3) Bez. *der Zahl vier* Weber, Nax. 2,382, N. 1. Ǵjot. 101. Çrut. 13. 15. 39. Varâh. Bṛh. S. 77,24. Bṛh. 12, 1. Ind. St. 8,167. Sâh. D. 264. — 4) *das Empfinden* Vop. 21,10. — 5) = वृत्त Med. वित्त (vgl. 2. वेद) v. l. nach ÇKDr. — Vgl. अथर्व°, आयुर्वेद, ऋग्वेद, तन्त्र°, गन्धर्व°, चतुर्वेद, त्रि°, दुर्वेद, धनुर्वेद, प्रतिवेदम्, ब्रह्मवेद, यजुर्वेद, रात्रि°, साम°.

2. वेद (von 3. विद्) m. *Habe, Besitz:* वेदं सवित्रा प्रसूतं मघोनाम् Âçv. Gṛhj. 1,15,1; vgl. u. 1. वेद 5).

3. वेद m. gaṇa उञ्छादि zu P. 6,1,160 (करणे). *ein Büschel starken Grases* (Kuça, Muńǵa) *besenförmig gebunden, zum Fegen, Anfachen des Feuers u. s. w. gebraucht;* = यज्ञाङ्ग Nânârtharatnam. im ÇKDr. — AV. 7,28,1. VS. 2,21. TS. 1,7,4,6. 2,6,3,4. TBr. 3,3,2,2. Çat. Br. 1,3,1, 11. 9,2,1. 16. 22. fgg. Kâth. 31,7. 32,6. M. 4,36. Âçv. Çr. 1,11,1. °शिरस् 2. °तृणानि 4. 5. 9. °स्तरण 3,6,23. Kâtj. Çr. 1,3,23. 10,6. 2,5,25. मुञ्ज° 26,2,10. 5,15.

4. वेद 1) m. N. pr. eines Ṛshi Hariv. 9573 (वेदगाथो ऽग्रुमान् die neuere Ausg. st. वेदश्चाथांशुमान् der älteren). ein Schüler Âjoda's MBh. 1,684. — 2) f. आ N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 13.

वेदक (vom caus. von 1. विद्) adj. (f. वेदिका) *kund thuend, verkündend:* अवस्था° (श्लोक) Râǵa-Tar. 4,549. मतवेदिका Varâh. Bṛh. S. 90,5. *zum Bewusstsein bringend* Sarvadarçanas. 17,1. 14. — वेदिका subst. s. bes.

वेदकर्तर् m. *Verfasser des* Veda: die Sonne MBh. 3,149. Çiva Pańkar. 1,9,15. Vishṇu 4,3,55.

वेदकार m. dass. Kusum. 37,2.

वेदकारणकारण n. *die Ursache der Ursache des* Veda: Kṛshṇa Pańkar. 1,12,75.

वेदकुम्भ m. N. pr. eines Lehrers Kathâs. 7,56.

वेदकौलेयक m. Bein. Çiva's Çabdârthak. bei Wilson.

वेदगर्भ 1) adj. (f. आ) *den* Veda *im Schoosse tragend:* रेवा Verz. d. Oxf. H. 65, a, 2. — 2) m. a) Bein. Brahman's Trik. 1,1,26. H. 211. Bhâg. P. 2,4,25. 9,19. 3,9,29. 12,1. 13,6. 32,12. 33,8. 8,17,26 (auf Vishṇu übertragen). 18,16. — b) *ein Brahmane* H. 813. — c) N. pr. eines Brahmanen Kshitîç. 2,8. वेदगर्व Colebr. Misc. Ess. II, 188. — 3) f. आ Bein. der Sarasvatî Verz. d. Oxf. H. 110,a,32.

वेदगर्व s. u. वेदगर्भ 2) c).

वेदगाथ m. N. pr. eines Ṛshi Hariv. 9573 nach der Lesart der neueren Ausg.; vgl. unter 4. वेद 1).

वेदगुप्त adj. nach dem Comm. so v. a. गुप्तदेव *der den* Veda *bewahrt hat*, Beiw. Kṛshṇa's, Sohnes des Parâçara, Bhâg. P. 9,22,21.

वेदगुप्ति f. *die Bewahrung des* Veda (durch die Brahmanen) ÇKDr. und Wilson ohne Angabe einer Aut.

वेदगुह्य adj. *im* Veda *verborgen:* Vishṇu Pańkar. 4,3,48. वेदगुह्योपनिषद् Çvetâçv. Up. 5,6.

वेदघोष m. *das vom Hersagen des* Veda *herrührende Gemurmel* Ind. St. 1,153, N. 1. — Vgl. वेदनिर्घोष und ब्रह्मघोष.

वेदचक्षुस् n. *der* Veda *als Auge:* ब्राह्मणा वेदचक्षुषा (पश्यन्ति) Spr. (II) 2084, v. l. *das Auge des* Veda so v. a. *ein Auge zur Erkenntniss des* Veda Verz. d. B. H. No. 287.

वेदजननी f. *die Mutter des* Veda, Bez. der Gâjatrî Kûrma-P. im ÇKDr. unter वेदमातर्.

वेदज्ञ adj. Veda-*kundig* M. 12,101.

वेदतत्त्व n. *das wahre Wesen des* Veda: वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ Spr. 2893. 5033.

वेदतत्त्वार्थ m. *die wahre Bedeutung des* Veda M. 4,92. °विद् 5,42. °विद्वंस् 3,96.

वेदँता (von 2. वेद) f. etwa *Reichthum:* मेदँता वेदँता (instr.) वसो R̥V. 10,93,11.

वेदत्व (von 1. वेद) n. *das* Veda-*Sein, die Natur des* Veda Hariv. 11670.

वेददर्श m. N. pr. eines Lehrers des AV. Bhâg. P. 12,7,1; vgl. वेदस्पर्श.

वेददर्शन n. *das Vorkommen —, Erwähntwerden im* Veda: °दर्शनात् so v. a. *in Uebereinstimmung mit dem* Veda Sûrjas. 12,27.

वेददर्शिन् adj. *eine Einsicht in den* Veda *habend, denselben kennend* M. 11,234.

वेददान n. *das Mittheilen —, Lehren des* Veda Verz. d. B. H. No. 1218.

वेददीप m. *die Leuchte des* Veda, Titel von Mahîdhara's Commentar zur VS., herausgegeben von Albrecht Weber.

वेदधर m. N. pr. eines Mannes, = वेदेश, वेदेश्वर Hall in der Einl. zu Vâsavad. S. 46. Verz. d. Oxf. H. 136,*a*, No. 259.

वेदधर्म m. N. pr. eines Sohnes des Paila Verz. d. Oxf. H. 27,*b*,4 v. u.

वेदध्वनि m. = वेदघोष Comm. zu R. 7,2,17.

1. **वेदन** (von 1. विद् simpl. und caus.) 1) adj. *verkündend;* s. भग°. — 2) n. und वेदना f. (P. 3,3,107, Vârtt. 1. Vop. 26,194) *a) Erkenntniss, Kenntniss, das Wissen;* n. Nir. 3,12. 6,7. रहस्यज्ञान° MBh. 1,71. R. Gorr. 1,80,16. आत्मपर° Spr. (II) 909. धर्म° Prab. 52,4. Kull. zu M. 1,68. Sarvadarçanas. 15,16. 16,11. 58,6. 22. जन्मनाम्नोर्वेदने M. 5,60. fem. आ Trik. 3,3,262. H. an. 3,422. Med. n. 135. Spr. 2896 (zugleich *Schmerz*). — *b) das Kundthun;* n.: अवस्था° Râǵa-Tar. 3,180. — *c) Empfindung;* f. AK. 3,3,6. Halâj. 5,33. Verz. d. Oxf. H. 231,*a*,22. fgg. वेदना स्पर्शनेन्द्रियजं ज्ञानम् 24. कर्तृ° P. 3,1,18. विन्दति वेदनां Jâǵn. 3,143. eines der fünf Skandha bei den Buddhisten H. 233, Schol. Burnouf, Intr. 487. 499. 511. Hiouen-thsang I, 385. Colebr. Misc. Ess. I, 394. Sarvadarçanas. 20,11. 14. 16. 23,22. — *d) schmerzliche Empfindung, Schmerz;* n.: निर्वृत्तीर्वेदनानि च MBh. 2,893. कृच्छ्र° R. 7,37,5, 37. fem. Trik. H. 1370. H. an. Med. Halâj. 3,4. वेत्ति न वेदनाम् Jâǵn. 3,130. MBh. 3,13638. शिरसि 16749. 16888. वेदनां संनियम्य 6,5816. शारीरा मानसाश्चापि (मानसा वापि ed. Bomb.) वेदना भृशदारुणाः 14,442. R. 3,57,25. Suçr. 1,1,9. 16,3. 30,16. 2,6,8. Ragh. 8,49. Spr. (II) 1074. 1507. (I) 2872. 2896. Varâh. Bṛh. S. 78,20. तीव्र° AK. 1,2,2,3. H. 1358. मदन° Vikr. 22,12. विष° Kathâs. 38,111. 87,46. Bhâg. P. 3,30,19. 5,26,9. 15. Pańkat. 44,2. 120,12. 121,3. 146,23. विरह° Vet. in LA. (III) 6,2. अति° Kathâs. 29,167. am Ende eines adj. comp. (f. आ): गाढ° MBh. 4,1949. Ragh. 12,99. Bhâg. P. 3,31,7. सवेदनम् adv. Dhûrtas. 95, 11. der *Schmerz* personif. VP. 56. Mârk. P. 50,30. fg. — Vgl. प्रसववेदना (auch Pańkat. 228,14).

2. **वेँदन** (von 3. विद्) 1) adj. (f. ई) *findend;* s. नष्ट°; *verschaffend;* s. पति°. — 2) n. *a) das Finden, Habhaftwerden:* गोविन्दो वेदनाद्गवाम् MBh. 5,2572. — *b) das Heirathen* (von beiden Geschlechtern): उत्कृष्ट° M. 3,44. विधवा° 9,65. 10,24. Jâǵn. 1,62. — *c) Habe, Gut:* शत्रूयतामधरा वेदनाकः R̥V. 1,33,15. अस्मभ्यमस्य वेदनं दद्धि 176,4. 4,30,13. 7,32,7. 10,34,4. AV. 6,11,1. zur Erklärung von विदथ (auch स्वे गृहे nach D.) Nir. 1,7. — Vgl. पति°, सु°.

वेदनावत् (von वेदना; s. u. 1. वेदन) adj. *Schmerz empfindend* MBh. 18,62. *schmerzhaft* Suçr. 2,6,10.

वेदनिधि m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 15,*b*,2. 64,*b*,15.

वेदनिन्दक (m. = नास्तिक Gatâdh. im ÇKDr. = बुद्ध ÇKDr. = बौद्ध Wilson) und वेदनिन्दा s. unter निन्दक und निन्दा.

वेदनिर्घोष m. = वेदघोष Varâh. Bṛh. S. 43,26. 60,10.

वेदनीय (vom caus. von 1. विद्) adj. 1) *bezeichnet werdend, ausgedrückt, gemeint:* तत्र केवला प्रकृतिः प्रधानपदेन वेदनीया मूलप्रकृतिः Sarvadarçanas. 147,15. कुर्वद्रूपादिपद° 11,19. 20,4. 28,2. 54,14. 58,2. 74,1. 88,22. रत्नत्रयपदवेदनीयता 31,13. — 2) *empfunden werdend* Colebr. Misc. Ess. I, 384 (Wilson, Sel. Works I, 317). दृष्टादृष्टजन्म° Jogas. 2,12. प्रत्यात्म° Wilson, Sâṁkhjak. S. 9. अनुकूल°, प्रतिकूल° *als angenehm, als unangenehm* Tarkas. 53. Sarvadarçanas. 2,19. अनुकूलवेदनीयत्व n. 14,13. प्रतिकूलवेदनीयता 103,15. 115,20. Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 569. प्रतिकूलवेदनीयत्व Wilson, Sâṁkhjak. S. 10.

वेदपथ m. *Weg des* Veda Bhâg. P. 5,26,15. 12,2,12. लोकवेदपथानुग 3,3,19. st. वेदपन्थाः 16,23 liest die ed. Bomb. देव पन्थाः (dieses = वेदमार्ग nach dem Comm.).

वेदपाठ m. *ein festgesetzter* Veda-*Text,* Veda-*Redaction* Ind. St. 3,400.

वेदपारग adj. s. u. पारग.

वेदपारायणविधि m. Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 152.

वेदपुण्य n. *das aus dem Studium des* Veda *hervorgehende moralische Verdienst* P. 6,2,152, Schol. M. 2,78.

वेदपुरुष m. *der personificirte* Veda (*mit allen seinen Theilen* d. i. *Hilfswissenschaften*): तत्तदङ्गाध्ययनाभावे वेदपुरुषस्य तत्तदङ्गवैकल्यं भवति Sûrjadeva in der Einl. zur Bhaṭaprakâçikâ.

वेदप्रकाश m. Titel einer Schrift Hall 189.

वेदप्रदान n. *das Mittheilen —, Lehren des* Veda M. 2,171.

वेदप्रपद् f. Bez. *gewisser Formeln, in denen* प्रऽपद् *vorkommt* Kauç. 3.

वेदफल n. *der aus dem Studium des* Veda *hervorgehende Lohn* M. 1,109.

वेदबाहु m. N. pr. eines der 7 Weisen unter Manu Raivata Hariv. 430. Mârk. P. 75,73. eines Sohnes des Pulastja VP. 83, N. 5. des Kṛshṇa Bhâg. P. 10,90,34.

वेदबीज n. *der Same des* **Veda**: Krshṇa Paṅkar. **1**,12,75.

वेदब्रह्मचर्य n. Veda-*Lehrzeit* Âçv. Gṛhj. **1**,22,3. Pâr. Gṛhj. 2,5.

वेदब्राह्मण m. *ein Brahmane, der den* Veda *kennt, ein Brahmane im vollen Sinne des Wortes* (Gegens. ज्ञातिब्राह्मण) Burn. Intr. 139. fg.

वेदभाष्यकार m. *der Verfasser des Commentars zum* Veda, Bez. Sâjaṇa's Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,25.

वेदभू m. Bez. eines best. göttlichen Wesens MBh. 13,7635.

वेदभृत् m. N. pr. eines Mannes Saṁsk. K. 184,*b*,8.

वेदम् am Ende eines comp. absol. von 1. und 3. विद् P. **3**,4,29. fg. ब्राह्मणवेदं भोजयति *er speist so viele Brahmanen, als er nur kennt* 29, Schol. — Vgl. यावद्वेदम्, समस्त°.

वेदमल्ल m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58,6.

वेदमय (von 1. वेद) adj. (f. ई) *aus heiligem Wissen bestehend, dasselbe enthaltend* Ait. Br. 1,22. नौ MBh. 3,13362. ब्रह्मा वेदमयो निधिः 12,6780. ब्रह्मन् Hariv. 1321. Bhâg. P. 3,8,15. 13,43. 5,20,11. सर्व° 3,9,43.

वेदमातर् f. *die Mutter des* Veda, Bez. der Sarasvatî, Sâvitrî und Gâjatrî Taitt. Âr. 10,36 in Ind. St. **2**,194. MBh. 5,7127 (pl.). 6,804. 12,7205. Hariv. 7022. 11516. Paṅkar. **1**,12,54. 56. Kûrma-P. und Devî-P. im ÇKDr.

वेदमातृका f. dass., Bez. der Sâvitrî Paṅkar. **1**,3,41.

वेदमालि m. N. pr. eines Brahmanen Verz. d. Oxf. H. 11,*a*,2.

वेदमित्र m. N. pr. eines Veda-Lehrers ṚV. Prât. 1,11. Müller, SL. 136. 143. Colebr. Misc. Ess. I, 15. VP. 277. Verz. d. Oxf. H. 405,*b*, No. 10. — 74,*b*,2.

वेदमुख्या f. *eine geflügelte Wanze* Çabdârthak. bei Wilson.

वेदमुण्ड m. N. pr. wohl eines Asura: °वध Verz. d. B. H. 140 (V, 26).

वेदमूर्ति m. *eine Erscheinungsform des* Veda: der Sonnengott Mârk. P. 102,22.

वेदय nom. ag. vom caus. von 1. विद् P. **3**,1,138. Vop. 26,35.

वेदयज्ञ m. *ein im* Veda *vorgeschriebenes Opfer* M. 2,183. MBh. 2,277. °मय adj. *aus solchen Opfern gebildet, solche Opfer enthaltend* VP. bei Muir, ST. **4**,31. Mârk. P. 47,8.

वेदयितर् (vom caus. von 1. विद्) nom. ag. *Erkenner, Kenner*: वेद्यं वेदयिता (*qui scire facit* St.) चासि Kumâras. 2,15.

वेदरकर, वेदरुकर und वेदरुकर (dieses scheint die richtige Form zu sein; vgl. بيدار كر *Aufwecker*) m. Bein. Nṛsiṁha's oder Narasiṁha's, Vaters des Nârâjaṇa, der einen Commentar zu Buch XII. fgg. des Naishadhîjakarita verfasste, Naish. in den Unterschrr.

वेदरहस्य n. *die Geheimlehre des* Veda, *die* Upanishad MBh. 1,62.

वेदरात m. N. pr. Hariv. Langl. I, 166 fehlerhaft für देवरात; vgl. Hariv. 1993.

वेदराशि m. *der gesammte* Veda Kull. zu M. 1,21.

वेदवदन n. 1) *der Mund —, Eingang zum* Veda, Bez. *der Grammatik* Golâdhj. im ÇKDr. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,34.

वेदवत् (von 1. वेद) 1) adj. *mit dem* Veda *vertraut* Pârask. bei Müller, SL. 129. Hariv. 13235. — 2) f. °वती *a*) N. pr. eines Flusses MBh. 6,324 (VP. 182). 13,7651. Mârk. P. 57,19. — *b*) N. pr. einer Tochter Kuçadhvaga's, die später als Sîtâ (auch als Draupadî und Lakshmî) wiedergeboren wird, R. ed. Bomb. **6**,60,10. **7**,17,9. 38. Verz. d. Oxf. H. 24,*a*,10. fgg. — *c*) N. pr. einer Apsaras Vjâḍi beim Schol. zu H. 183. — *d*) Prab. 70,7 und 73,19 fehlerhaft für वेत्रवती, wie die v. l. hat.

वेदवाक्य n. *ein Ausspruch der heiligen Schrift* Sarvadarçanas. 72,19. 128,3. 4.

वेदवाद m. *ein Ausspruch der heiligen Schrift* und *das Sprechen über die heilige Schrift, theologische Unterhaltung*: °रत Bhag. 2,42. इति देवा व्यवसिता वेदवादाश्च शाश्वताः *Aussprüche des* V. MBh. 12,233. वेदवादाश्चानुयुगं ह्रसन्ति so v. a. *theologische Unterhaltungen* 8503. 13,3140. VP. bei Muir, ST. **1**,23. 147. **4**,3. Bhâg. P. **4**,2,22. **4**,19. **5**,11,2. **9**,22,16. **11**,18,30.

वेदवादिन् adj. *der über die heilige Schrift zu reden versteht*; m. *Theolog* MBh. 3,14693. Bhâg. P. **1**,5,23. **4**,12,40. **7**,5,13. Sarvadarçanas. 131,21.

वेदवास (1. वेद + 2. वास) m. *ein Brahmane* Çabdar. im ÇKDr.

वेदवाह adj. *dem Studium des* Veda *obliegend* MBh. 13,1369. = वेदपाठक Nîlak.; vgl. धर्मवाह unter वाह 1).

वेदवाहन adj. *den* Veda *tragend* oder *bringend*; Beiw. des Sonnengottes MBh. 3,149.

वेदवित्त्व (von वेदविद्) n. *Kenntniss des* Veda Mârk. P. 33,15.

वेदविद् adj. Veda-*kundig* Çat. Br. **14**,6,7,4. Çâṅkh. Gṛhj. 4,1.4. M. 2,78. 3,179. 7,38 u. s. w. Weber, Gjot. **110**. Bhag. 8,11. 15,1. 15. MBh. 3,2074. 2450. 5,6063. 7132. R. **1**,5,21. 6,1. Çâk. Ch. 18,8. अ° M. 4,192. वेदवेदाङ्गविद् R. **1**,1,15. वेदवित्तम M. 5,107.

वेदविद्या f. Veda-*Kunde*: °विद्याधिगम Maitrjup. 4,3. °विद् Kathâs. 27,164. °विद्यात्मक Mârk. P. 102,20. °विद्याधिप Paṅkar. **1**,8,24.

वेदविद्वंस् adj. = वेदविद् s. u. विद्वंस्.

वेदवृद्ध m. N. pr. eines Veda-Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,*a*,14.

वेदवैनाशिका f. N. pr. eines Flusses R. in VP. 2te Aufl. II, 145. °वैनासिका R. **4**,40,21.

वेदव्यास m. *der* Veda-*Diaskeuast*, = व्यास Trik. **2**,7,19. H. 846. MBh. 1,76. 13,680. 1337. Hariv. 2364. Varâh. Bṛh. S. 46,12. Verz. d. B. H. 13,5. 9. No. 392 (S. 104). 804. 1343. Verz. d. Oxf. H. 3,*a*, No. 24. 9,*b*,14. VP. 272. Ind. St. **1**,468. fg. **3**,396. Paṅkar. **2**,1,15. **3**,1,9.

वेदव्रत n. *eine im* Veda *vorgeschriebene Observanz*: °व्रतानां विधिः Titel eines Pariçishṭa des Kâtjâjana Verz. d. Oxf. H. 382,*a*,3. °परायण so v. a. *den* Veda *studirend und die Observanzen beobachtend* Varâh. Bṛh. S. 48,65.

वेदशब्द m. *ein Ausspruch des* Veda M. 1,21.

वेदशाखा f. Veda-*Zweig*, — *Schule* Ind. St. **1**,16,13. Bhâg. P. **5**,2,9. Verz. d. B. H. No. 1218. Verz. d. Oxf. H. 56,*a*,4. 86,*b*,47. °प्रणयन 8,*a*,31. — Vgl. प्रतिवेदशाखम्.

वेदशास्त्र n. sg. *die im* Veda *vorgetragene Lehre* M. 4,260. 5,2. 12,94. 99. fg. 102. 106. n. pl. *der* Veda *und andere Lehrbücher* Verz. d. Oxf. H. 91,*a*,4. वेदशास्त्रार्णव 2. वेदशास्त्रागमकथाः 11.

वेदशिर m. N. pr. eines Sohnes des Kṛçâçva Bhâg. P. **6**,6,20. statt des erforderlichen acc. °शिरम् hat die ed. Bomb. den nom. °शिरा[:].

1. **वेदशिरस्** (1. वेद + शि°) n. *das Haupt des* Veda, Bez. einer mythischen Waffe Verz. d. Oxf. H. 52,b,38. — Vgl. मनो°.

2. **वेदशिरस्** (wie eben) m. N. pr. eines Ṛshi MBh. 12,12759. Hariv. 430. 14153. VP. 82. Bhâg. P. 4,1,45. 6,15,14. 8,1,21. 5,3. Mârk. P. 52, 17. Verz. d. Oxf. H. 52,b,38. 71,a,23. 82,b, N. 2.

3. **वेदशिरस्** (3. वेद + शि°) n. *der Kopf des* Veda *genannten Besens* Âçv. Çr. 1,11,2. = ज्ञानुसदृशः प्रदेशः Comm.

वेदशीर्ष m. N. pr. eines Berges Verz. d. Oxf. H. 52,b,39.

वेदश्री m. N. pr. eines Ṛshi Mârk. P. 75,73. — Vgl. 2. वेदशिरस्.

वेदश्रुत m. pl. N. pr. einer Klasse von Göttern unter dem 3ten Manu Bhâg. P. 8,1,24.

वेदश्रुति f. 1) = वेदघोष *das vom Hersagen des* Veda *herrührende Gemurmel* R. 7,2,17. — 2) *die heilige Schrift, der* Veda MBh. 3,11214. 6,802 (°महापुण्या दुर्गा). R. 4,5,4. °श्रुती aus metrischen Rücksichten 3,55,34. 56,31. Mârk. P. 21,31. — 3) N. pr. eines Flusses R. 2,49,9 (46,10 Gorr.).

1. **वेदस्** (von 1. विद्) n. *Erkenntniss:* उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा RV. 3,60,1. — Vgl. केत°, ज्ञात°, 1. विश्व°.

2. **वेदस्** (von 3. विद्) n. *Habe, Besitz* Naigh. 2,10. Ṛ V. 1,70,10. 81, 9. 2,7,6. 3,53,14. 5,2,12. स नो वेदो अमात्यं रक्षतु 7,15,3. 19,1. 8,76, 2. अपुंद्धो अस्य वि भजाति वेदः 10,27,10. AV. 5,20,4. 10. pl. Ṛ V. 1,89, 5. AV. 6,66,3. — Vgl. अनष्ट°, केत°, ज्ञात°, 2. विश्व°.

वेदस = 2. वेदस् s. सर्व°.

वेदसंस्थित adj. *im* Veda *enthalten* Mârk. P. 102,20.

वेदसंहिता f. *der ganze* Veda *nach irgend einer Redaction* M. 11, 258; vgl. वेदस्य संहिता 77.

वेदसंन्यासिक adj. *der das* Veda-*Studium und alle frommen Werke schon hinter sich hat und sich ganz dem beschaulichen Leben hingiebt* M. 6,86; vgl. 95.

वेदसमाप्ति f. *Beendigung des* Veda-*Studiums* Âçv. Gṛhj. 1,22,18.

वेदसार m. *das Beste im* Veda: Vishṇu Pańkar. 4,3,50. °शिवस्तव m. oder °शिवस्तोत्र n. Titel einer Sammlung von Strophen, die Çiva verherrlichen, Haeb. Anth. 512. fgg.

वेदसिनी f. N. pr. eines Flusses VP. 182, N. 13. वेतसिनी v. l.

वेदसूत्र n. *ein zu einem* Veda *gehöriges* Sûtra MBh. 12,13069.

वेदस्तुति f. *Lob des* Veda, Titel des 87ten Adhjâja im 10ten Buche des Bhâg. P. °कारिका Hall 145.

वेदस्पर्श m. N. pr. eines Vêda-Lehrers Verz. d. Oxf. H. 55,b,30. 33. वेददर्श v. l.

वेदस्मृता f. N. pr. eines Flusses, = वेदस्मृति MBh. 6,324 (VP. 182).

वेदस्मृति f. N. pr. eines Flusses MBh. 13,7651. Bhâg. P. 5,19,18. Mârk. P. 57,19. VP. 176, N. 5. °स्मृती Varâh. Bṛh. S. 16,32.

वेदहीन adj. *mit dem* Veda *nicht vertraut* H. 856.

वेदाग्रणी (1. वेद + अ°) f. = सरस्वती Râǵan. im ÇKDr.

वेदाङ्ग (1. वेद + 3. अङ्ग) 1) n. *ein Glied des* Veda so v. a. *eine Hilfswissenschaft zum* Veda; es werden deren sechs gezählt: Çikshâ, Kalpa, Vjâkaraṇa, Nirukta, Ḱhandas und Ǵjotisha Sâj. in der Einl. zum Ṛ V. Roth, Einl. zu Nir. XV. fgg. Madhus. in Ind. St. 1,13,5. 6. Nir. 1,20. Ṛ V. Prât. 14,30. M. 2,141. 4,98. MBh. 2,450. 12,7661. R. 5,32,9. Bâshkalop. in Ind. St. 9,42. Sûrjas. 1,3. Verz. d. B. H. No. 840. 682. Verz. d. Oxf. H. 386,a, No. 502. वेदवेदाङ्गपारग MBh. 3,2481. R. 1,7,1. Brahma-P. in LA. (III) 48,16. वेदवेदाङ्गविद् R. 1,1,15. वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ Spr. 2893. 5033. °शास्त्राणि Weber, Ǵjot. 21. °त्व n. nom. abstr. Sarvadarçanas. 137,3. fgg. Vgl. 3. अङ्ग 5). — 2) m. Bein. der Sonne MBh. 3,149. N. pr. eines der 12 Âditja Weber, Râmat. Up. 304. 313. — Vgl. मुण्ड°.

वेदाङ्गराय m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 258. Notices of Skt Mss. 87.

वेदाचार्य (1. वेद + आ°) m. Veda-*Lehrer* Ind. St. 3,396.

वेदात्मन् (1. वेद + आ°) m. *die Seele des* Veda: Vishṇu R. 6,102, 17. Pańkar. 4,3,55. der Sonnengott Mârk. P. 102,20.

वेदादि (1. वेद + आदि) m. *der Anfang des* Veda: यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः nämlich das ओम् Taitt. Âr. 10,12,17. *das heilige* ओम् selbst: सावित्रीं वेदादिप्रभृतीनि च जपित्वा Çâńkh. Gṛhj. 4,5. Weber, Râmat. Up. 335. °रूपाय ओंकाराय 296. n. im Rudrajâmala nach ÇKDr. °बीज n. dass. ÇKDr. nach dem Râǵarâǵeçvarîtantra.

वेदाधिगम (1. वेद + अ°) m. Veda-*Studium* M. 2,2.

वेदाधिदेव (1. वेद + अ°) m. *der den* Veda *beschützende Gott:* Brahman Pańkar. 1,12,52.

वेदाध्यक्ष (1. वेद + अ°) m. *Aufseher über den* Veda, *Hüter des* Veda: Kṛshṇa Hariv. 10403.

वेदाध्ययन (1. वेद + अ°) n. Veda-*Studium* AV. Prât. 4,101. R. 1,50, 3. Spr. 1404. Verz. d. Oxf. H. 91,a,5. Sarvadarçanas. 123,7. 124,2. 128, 7. वेदानध्ययन n. *das Unterlassen des* Veda-*Studiums* M. 3,63.

वेदाध्याय (1. वेद + अ°) adj. *den* Veda *studirend* P. 3,2,1, Schol.

वेदाध्यायिन् (1. वेद + अ°) adj. dass.: तत्तद्वेद°, सकल° Ind. St. 3,396.

वेदानुवचन n. s. u. अनुवचन 1) und vgl. Notices of Skt Mss. 58.

वेदान्त (1. वेद + अन्त) m. 1) *das Ende des* Veda Taitt. Âr. 10,12,17 (s. u. वेदादि). °ग = वेदपारग *der den* Veda *durchstudirt hat, vollkommen vertraut mit dem* V. MBh. 12,1224. 13,1749. *Ende des* Veda-*Studiums:* वेदान्तावभृथप्लुत 2,1908. — 2) *ein den Schluss eines* Veda *bildender Text, eine* Upanishad (H. 250. an. 4,137. Med. d. 56. Halâj. 1,9) und *die auf den* Upanishad *ruhende theologisch-philosophische Lehre* (*die* Uttaramîmâṁsâ): °विज्ञानसुनिश्चितार्थ Muṇḍ. Up. 3,2, 6. Çvetâçv. Up. 6,22. वेदान्तोपगतं फलम् M. 2,160. वेदान्ताभिहित 6,83. वेदान्तं विधिवच्छ्रुत्वा 94. MBh. 13,1080. pl. 4,1593. सर्वे वेदान्ताः Nilak. 9. Ind. St. 1,19. 2,172. 208. 3,386. Vikr. 1. Çaṁk. zu Ḱhând. Up. S. 10. प्रत्यक्षादिप्रमासिद्धविरुद्धार्थाभिधायिनः । वेदान्ता यदि शास्त्राणि बौद्धैः किमपराध्यते ॥ Prab. 20,17. fg. Sarvadarçanas. 61,19. वेदान्तयोस्तैत्तिरीयबृहदारण्यसंज्ञयोः Verz. d. Oxf. H. 237,b, N. 6. °निष्ठ MBh. 13,3449. वेदैर्वेदान्तसाधनैः (so die ed. Bomb.) 14,345. °प्रणिहितधी Spr. 2031. °गम्य Mârk. P. 102,22. °रहस्यवेत्तर् Verz. d. Oxf. H. 255,b,20. °तात्पर्य Sarvadarçanas. 73,7. °वेदिन् Pańkar. 4,1,43. °कृत् Bhag. 15,15. Kaivaljop. in Ind. St. 2,13. °कर्तर् Pańkar. 4,3,155. °वाक्य Madhus. in Ind. St. 1,15,25. fg. 19,15. Sarvadarçanas. 55,13. 61,12. fg. °वाद 146,19. °वादिन् Tattvas. 22. वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणं तदुपकारी-

णि शारीरकादीनि च Vedântas. (Allah.) No. 3. 4. Colebr. Misc. Ess. I, 325. fgg. °शास्त्र Prab. 20, 15. Madhus. in Ind. St. 1, 13, 8. Werke, die über den Vedânta handeln: °कतक Hall 154. 165. °कल्पतरु 87. Colebr. Misc. Ess. I, 333. Verz. d. Oxf. H. 277, a, 13. 292, b, 17. Verz. d. Tüb. H. 18. °कल्पतरुटीका ebend. °कल्पतरुपरिमल Hall 88. Colebr. Misc. Ess. I, 333. °कल्पतरुमञ्जरी ebend. °कल्पलतिका 337. Hall 132. Verz. d. B. H. No. 627. Verz. d. Oxf. 226, b, No. 535. °चिन्तामणि Hall 97. °तत्त्वदीपन 89. °दीप 95. Verz. d. Tüb. H. 18. °नयनभूषण Hall 96. °न्यायरत्नावली ब्रह्माद्वैतामृतप्रकाशिका Verz. d. Tüb. H. 18. °परिभाषा 19. Hall 100. Colebr. Misc. Ess. I, 335. Mack. Coll. I, 15. °पारिजात Hall 114. °प्रदीप 92. Wilson, Sel. Works I, 43. Verz. d. Oxf. H. 221, b, No. 536. °भाष्य 393, a, No. 90. Mack. Coll. I, 15. °रत्नमञ्जूषा Hall 114. °रहस्य 104. °शतश्लोकी 119. °शिखामणि 100. Colebr. Misc. Ess. I, 304. 336. °संज्ञाप्रक्रिया Hall 127. °सार (zwei Werke dieses Titels) 92. 95. 101. Gild. Bibl. 421. fg. Wilson, Sel. Works I, 43. Verz. d. B. H. No. 619. Verz. d. Oxf. H. 226, a, No. 553. Verz. d. Tüb. H. 19. °सारसंग्रह Hall 101. °सारसार 102. °सिंह 119. °सिद्धान्त 131. 143. °सिद्धान्तदीपिका 131. 135. °सिद्धान्तबिन्दु Colebr. Misc. Ess. I, 337. °सिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी Hall 153. °सिद्धान्तसूक्तिमञ्जरीप्रकाश 154. °सुधारहस्य 96. °सूत्र 68. 86. 162. Colebr. Misc. Ess. I, 327. Gild. Bibl. 420. °सूत्रदीपिका Mack. Coll. I, 15. °सूत्रमुक्तावली Hall 93. Colebr. Misc. Ess. I, 334. °सूत्रव्याख्याचन्द्रिका ebend. °सौरभ Hall 114. °स्यमन्तक 103. वेदान्ताधिकरणमाला 98. वेदान्तार्थविवेचनमहाभाष्य 100.

वेदान्तवागीशभट्टाचार्य m. N. pr. eines Gelehrten Hall 104.

वेदान्ताचार्य m. desgl. Verz. d. Oxf. H. 130, a, 23.

वेदान्तिन् m. *ein Bekenner der* Vedânta-*Lehre* Spr. 2808. Nîlak. 70. Verz. d. B. H. 160, 16. No. 685. Verz. d. Oxf. H. 142, b, No. 291. Sarvadarçanas. 110, 10. 149, 17. Schol. zu Kap. 1, 22. वेदान्तिमहादेव m. N. pr. eines Lexicographen Hall in der Einl. zu Vâsavad. 48.

वेदापय्, °यति denom. von 1. वेद् P. 3, 1, 25, Vârtt. Vop. 21, 16.

वेदाप्ति (1. वेद + आ°) f. *im* Veda *erlangte Kenntnisse* Brahma-P. in LA. (III) 57, 3.

वेदाभ्यास s. u. अभ्यास 2).

वेदायन Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 36 fehlerhaft für वैदायन.

वेदार m. *Chamäleon, Eidechse* Trik. 2, 5, 11.

वेदार्णा (1. वेद + अर्णा = वर्णा) N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 149, a, 3. 4.

वेदार्थ (1. वेद + अर्थ) m. *Bedeutung —, Sinn des* Veda Hariv. 11219. Verz. d. B. H. 287 (pl.). °विप्रसभा 288. °विद् M. 3, 186. °चन्द्र m. Titel einer Schrift (= °प्रदीप) Hall 187. °दीपिका Titel eines Commentars zu Kâtjâjana's Sarvânukramaṇî von Shaḍguruçishja Verz. d. B. H. No. 53. Müller, SL. 216. °प्रकाश Titel von Sâjaṇa's (Mâdhava's) Commentar zum ṚV. und andern vedischen Schriften Verz. d. Oxf. H. 390, a, No. 24. fgg. 405, a, No. 1. 361, a, No. 2—4. °प्रदीप Titel einer Abhandlung über die Mîmâṁsâ Hall 187. °संग्रह Titel eines Werkes des Râmânuġa Sarvadarçanas. 51, 19. Hall 116.

वेदाश्वा f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 336 (VP. 183).

1. वेदि (von 1. विद्) 1) m. *ein kluger —, weiser Mann* H. an. 2, 234. Med. d. 15. — 2) f. वेदि a) *Kenntniss:* अ° *Unkenntniss* (nach Çaṁk. adj. *nicht wissend*) Bṛh. Âr. Up. 4, 4, 14. अवेदी st. अवेदिः Çat. Br. 14, 7, 2, 15. — b) *Siegelring* H. an. Med. — 3) f. वेदी Bein. der Sarasvatî Çabdam. im ÇKDr.

2. वेदि (Uṇâdis. 4, 118. f. Siddh. K. 247, b, 15) und वेदी (nach-vedisch) f. 1) *Opferbett, Opferbank, ein oberflächlich ausgegrabener und dann mit Streu belegter Raum in dem Opferhofe, die Stelle des Altars vertretend.* In der Vedi sind die Feuerheerde angebracht. Vorschriften über die Einrichtung z. B. Kâtj. Çr. 2, 6, 1. fgg. Ind. St. 10, 331. = परिष्कृता भूमिः AK. 2, 7, 17. H. 824. Halâj. 2, 260. = परिष्कृतभूतल Med. d. 15. = अलंकृतभूतल H. an. 2, 234. = स्थण्डिलसितक Hâr. 192. — ṚV. 1, 164, 35. 170, 4. 2, 3, 4. 5, 31, 12. 6, 1, 10. 7, 60, 9. 8, 19, 18. AV. 5, 22, 1. 10, 9, 2. 11, 1, 21. fgg. यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्याम् 12, 1, 13. 13, 1, 46. VS. 18, 21. 63. Ait. Br. 2, 22. Çat. Br. 1, 2, 5, 7. 9. 10, 2, 3, 1. fgg. Kâtj. Çr. 2, 8, 19. 7, 6, 10. चतुःस्रक्ति Çat. Br. 2, 6, 1, 10. Kâtj. Çr. 5, 8, 21. वेद्यंस Çat. Br. 3, 5, 1, 5. 6. Çâṅkh. Çr. 17, 15, 2. °श्रोणि Çat. Br. 5, 1, 5, 28. Kâtj. Çr. 2, 7, 22. 5, 4, 9. 13, 3, 10. वेद्यन्तर 5, 4, 11. °करण 2, 6, 30. °लक्षण AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 90 (24). °साधन No. 1085. — MBh. 2, 1313. Hariv. 11263. R. 1, 21, 5. प्रजज्वाल तदा वेदिः 32, 9 (33, 8 Gorr.). 73, 15. 2, 56, 29. 100, 18. R. Gorr. 2, 99, 3. 108, 18. 3, 43, 9. यज्ञमध्यस्था 62, 23. 77, 23. 5, 21, 13. वेद्यामिव हुताशनः 92, 19. Ragh. 11, 25. Çâk. 31, 6. 75. 83. Varâh. Bṛh. S. 44, 8. 14. 48, 34. 36. 45. 75. 68, 48. Nalod. 1, 9. Häufig wird die weibliche Taille mit *der in der Mitte schmalen* Vedi verglichen Çat. Br. 1, 2, 5, 16. 3, 5, 1, 11. वेदिप्रतिममध्यमा R. 3, 38, 14. मध्यं च वेदिः Spr. (II) 1322. Kumâras. 1, 39. Kaurap. 46. वेद्वय मध्ये किसा Dhûrtas. 82, 12. — 2) *eine überdeckte* Vedi-*förmige Terrasse im Hofraume,* = वितर्दि H. 1004. zu einer Hochzeit hergerichtet: कृतोपचारां चतुरस्रवेदीं ताविन्त्य Kumâras. 7, 88. Kathâs. 44, 78. वेदीमकारयत्सो ऽत्र सद्रत्नस्तम्भकुट्टिमाम् 50, 131. वेदीमारुह्य 16, 79. 45, 312. 50, 134. 71, 167. विवाह° 103, 185. सज्जितवेदीकं रत्नदत्तगृहम् 123, 177. — 3) *Gestell, Sockel, Untertерlage; Bank* Mṛkkh. 92, 4. Bhâg. P. 10, 41, 21. वालुकावेदिमध्ये तु तल्लिङ्गं स्थाप्य R. 7, 31, 43. जाम्बुनदमयी वेदी यत्र MBh. 4, 1780. आसीनं सूर्यसंकाशे काञ्चने परमासने। रुक्मवेदीगतं देवं ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ R. 3, 36, 4. 5. रणाग्निः — हूयते वसुरेत्तत्र रथवेद्यां सुसंस्कृतः Hariv. 13220. प्राग्द्वारवेदिविनिवेशितपूर्णकुम्भ Ragh. 5, 63. विद्रुम° Bhâg. P. 3, 23, 17. 4, 25, 16. मातङ्ग° *Sitz auf einem Elephanten* H. an. 4, 32. Med. k. 202. — 4) वेद्यर्ध *die Hälfte einer* Vedi, Bez. eines mythischen Gebietes der Vidjâdhara auf dem Himâlaja: इह विद्याधराणां द्वे वेद्यर्धे स्तो हिमाचले। उत्तरा दक्षिणा चैव नानातच्छृङ्गभूमिगे॥ परतः किल कैलासाडुत्तरा ऽर्वाक्तु दक्षिणा: । Kathâs. 107, 65. fg. 108, 126. कुरु दक्षिणवेद्यर्धे चक्रवर्तित्वमात्मनः। उत्तरस्मिंस्तु वेद्यर्धे देहि तच्छ्रुतशर्मणे ॥ 50, 100. 102. 44, 12. उभयवेद्यर्धचक्रवर्तिन् 109, 142. मर्त्यो ऽप्युभयवेद्येकचक्रवर्ती (wohl °वेद्यर्धचक्रवर्ती zu lesen; Brockhaus trennt उभयवेद्य् एक°) भविष्यति 44, 10. — 5) वेदी N. pr. eines Wallfahrtsortes MBh. 3, 8025. °तीर्थ 6069. — Vgl. अन्तर्वेदि, अन्तरा° (so v. a. *Scheidewand* Ragh. 12, 93), उत्तर°, उद्वेदि, बहिर्वेदि, ब्रह्म°, मख°, महा°.

3. वेदि n. = अम्बष्ठा Çabdak. im ÇKDr. वेदिन् n. Wilson nach ders. Aut.

वेदिक s. u. 3. वेदिका 3).

1. वेदिका f. von वेदक s. das.

2. वेदिका (von 1. वेदि) f. *Siegelring* HALÂJ. 5,37.

3. वेदिका (von 2. वेदि) f. 1) = 2. वेदि 1) VARÂH. BṚH. S. 70,10. — 2) = 2. वेदि 2) AK. 2,2,15. HALÂJ. 2,144. R. 5,14,14. पवाग्र्यलंकृतवेदिकामध्याधिष्ठितसिंहासन (so ist zu lesen) PAÑḰAT. 158,6. am Ende eines adj. comp. (f. श्रा) 129,17. सार्गलद्वारवेदिक HARIV. 4643. — 3) = 2. वेदि 3) MBH. 5,3355. HARIV. 4531. श्रारामप्रासादवेदिकायां क्रीडद्भिः पारावतैः MṚḰKH. 79,23. SUÇR. 1,107,14. घ्रजस्य HARIV. 13095. 13166. स्यन्दनवेदिकास्थ *Bank* 13092. काञ्चनी 12024. उदपानान् — वेदिकापरिमण्डितान् R. 2,80,12 (87,16 GORR.). वेदिकाश्चैत्यसंश्रयाः 5,15,13. 16,48. 72,15. सुवर्णवेदिकायुक्त (रथ) 6,75,27. देवदारुद्रुमवेदिकायामासीनः KUMÂRAS. 3,44. KATHÂS. 101,27. PRAB. 26,5. WEBER, RÂMAT. UP. 324, N. 1. वेदिक m. R. 5,17,2. 9,20. 16,39. HARIV. 9013. 16181. am Ende eines adj. comp. (f. श्रा) MBH. 2,90. 8,4712 (सवेदिक mit der ed. Bomb. zu lesen). 18,247. HARIV. 16171. 16177. R. 3,61,10. 11. 4,41,67. 44,56. 5, 16,37. 6,106,22. R. ed. Bomb. 4,40,55. 7,15,37. चित्र° (केतु) R. GORR. 4,40,54. — Vgl. श्रापण°.

वेदिजा (2. वेदि + 1. जा) f. Bein. der Draupadî TRIK. 2,8,18. H. 711.

वेदितृ (von 1. विद्) nom. ag. *Kenner*, *Wisser* H. 349. ṚV. 8,92,11. यो वै तान्विद्यात्सं ब्रह्मा वेदिता स्यात् AV. 10,7,24. ÇAT. BR. 14,6,9, 11. NIR. 13,12. MBH. 8,4576. SIDDH. K. zu P. 4,2,60. वेदानाम् MBH. 5, 1672. सत्कलानाम् Spr. (II) 813. कर्मणः पापकस्य 1438. सर्व° MBH. 13, 1067. करुणा° so v. a. करुणावेदिन्, कारुण्यवेदिन् (s. u. कारुण्य) *mitleidig* 9,1652. f. वेदित्री (सर्ववचसाम्) VARÂH. BṚH. S. 88,42.

वेदितव्य (wie eben) adj. *kennen zu lernen*, *zu erkennen*, *zu kennen*, *zu wissen* ÇAT. BR. 14,8,1,1. NIR. 2,21. 13,13. 14,9. MUṆḌ. UP. 1,1,4. 3,1,9. ÇVETÂÇV. UP. 1,12. MAITRJUP. 6,10. KAUSH. UP. 4,19. M. 10,40 (= MBH. 13,2591). BHAG. 11,18. MBH. 1,306. 594. 3,12516. 13,1077. 14, 23. HARIV. 3768. 9776. MALLIN. zu KUMÂRAS. 7,88. KÂÇ. zu P. 1,3,11. SARVADARÇANAS. 19,13. तस्य स्वमस्तीति स वेदितव्यः *von dem wisse man, dass* MBH. 5,1641. एवं वादी वेदितव्यः पाण्डवेयो ऽयमित्युत 6,12. पत्नो ऽनुरागी स हि वेदितव्यः KÂM. NITIS. 15,29. Verz. d. Oxf. H. 179, a, No. 410. SÂH. D. 31,18. Schol. zu P. 1,4,83 und 2,1,4. SARVADARÇANAS. 136,21. fg.

वेदिता (nom. abstr. von वेदिन्) f. am Ende eines comp.: करुणा° so v. a. *Mitleid* M. 7,211.

वेदित्व n. (wie eben) dass.: करुणा° R. GORR. 1,2,16. कारुण्य° R. SCHL. 1,2,17.

1. वेदिन् (von 1. विद्) 1) adj. *a*) *kennend*, *sich verstehend auf;* am Ende eines comp.: षाड्गुण्यगुण° M. 7,167. ज्ञानविज्ञान° 9,41. नानास्वाध्याय° MBH. 9,2202. श्रात्म° 13,1068. 1073. वेदवेदाङ्ग° 15,963. लोकवृत्तान्त° R. 1,8,14. श्रन्योऽन्यवेदिनः KÂM. NITIS. 12,34. चित्त° 37. 7,42. परकर्म° 15, 5. काल° 18,31. KATHÂS. 33,21. 69,73. कार्य° 18,402. तदभिप्राय° 27, 140. सदर्थ° RAGH. 8,27. पुरुषान्तर° VIKR. 36,10. कृत्य° RÂǴA-TAR. 4, 135. 5,238. BHÂG. P. 4,22,13. उक्त° 11,20,23. श्रतीतानागतवर्तमान° PAÑḰAT. 48,8. MÂRK. P. 101,7. कारुण्य° so v. a. *mitleidig* R. 4,16,12. कर्ण° (so die neuere Ausg. st. कर्म° der älteren) *sich auf die Ohren verstehend* so v. a. *auf Einflüsterungen hörend* HARIV. 11186. सर्व° (von सर्व + वेद) *alle* Veda *kennend* 11059. श्र° *keine Erkenntniss besitzend* ÇAT. BR. 14,7,2,15. पशव: MÂRK. P. 47,19. BHÂG. P. 3,10,19. — *b*) *empfindend:* गन्धरस° MBH. 12,6828. स्पर्श°, गन्ध° BHÂG. P. 3,29,29. प्रणायभङ्गार्ति° BRAHMA-P. in LA. (III) 55,10. — *c*) *ankündend*, *verkündend:* भय° (कङ्क) MBH. 6,53. R. GORR. 1,76,10. श्रनिष्ट° 2,71,2. — 2) m. Bein. Brahman's ÇABDÂRTHAK. bei WILSON. — 3) f. वेदिनी N. pr. eines Flusses R. GORR. 2,73,5. — Vgl. करुणा° (auch MBH. 3,13795. 15,150), गम्भीर° (चिरकालेन यो वेत्ति शिल्पं परिचितामपि । गम्भीरवेदी विज्ञेयः स गजो गजवेदिभिः ॥ Cit. beim Schol. zu RAGH. 4,39 in der ed. Calc.), निशा°, नीति°, ब्रह्म°, मर्म°, रात्रि°, विश्व°.

2. वेदिन् (von 3. विद्) adj. *heirathend:* शूद्रा° M. 3,16. — Vgl. कन्या°.

3. वेदिन् n. s. u. 3. वेदि.

वेदिमती (von 2. वेदि) f. N. pr. eines Frauenzimmers DAÇAK. 118,3.

वेदिमेखला (2. वेदि + मे°) f. *die Schnur*, *welche die* Uttaravedi (*nach dem Comm.*) *abgrenzt*, BHÂG. P. 4,5,15.

वेदिषद् (2. वेदि + सद्) 1) adj. *auf* —, *an dem Opferbett sitzend:* Agni ṚV. 1,140,1. 4,40,5. श्रसुरा रक्षांसि VS. 2,29. TBR. 1,2,1,23. — 2) m. ein anderer Name des Prâkînabarhis BHÂG. P. 4,24,27. 26,14.

वेदिष्ठ (superl. zu वेदितृ) adj. *am meisten wissend* oder *verschaffend* ṚV. 8,2,24.

वेदीतीर्थ s. u. 2. वेदि 5).

वेदीयस् (compar. zu वेदितृ) adj. *besser kennend* oder *findend* ṚV. 7,98,1.

वेदीश (1. वेदिन् + ईश) m. Bein. Brahman's TRIK. 1,1,26.

1. वेदुक (von 1. विद्) adj. *wissend* TS. 5,1,5,3. KÂṬH. 19,5.

2. वेदुक (von 3. विद्) adj. *erlangend* TBR. 3,9,22,2.

वेदेश (1. वेद + ईश) m. N. pr. eines Mannes, = वेदधर Verz. d. Oxf. H. 136,a, No. 259. वेदेश्वर HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 46.

वेदेशभिक्षु m. N. pr. eines Autors Verz. d. Oxf. H. 393,a, No. 90.

वेदेश्वर (1. वेद + ई°) s. u. वेदेश.

वेदोक्त (1. वेद + उक्त) adj. *im* Veda *erwähnt*, — *gelehrt:* कर्माणि NIR. 14,8. श्रायुस् M. 1,84. ज्ञपाः *im* Veda *enthalten* R. 2,56,30.

वेदोदय (1. वेद + उ°) m. *die Sonne* TRIK. 1,1,98. H. ç. 8.

वेदोदित (1. वेद + उ° von वद्) adj. *im* Veda *erwähnt*, — *geboten:* कर्मन् M. 4,14. 11,203.

वेदोपकरण (1. वेद + उ°) m. *Hilfsmittel* —, *Hilfswissenschaft zum* Veda M. 2,105. MADHUS. in Ind. St. 1,14,1. 2.

वेदोपग्रहण (1. वेद + उ°) n. *eine Zugabe* —, *Ergänzung zum* Veda R. 1,4,4. वेदोपबृंहण ed. Bomb.

वेदोपनिषद् f. *eine* Upanishad —, *eine Geheimlehre des* Veda TAITT. UP. 1,11,4.

वेदोपबृंहण (1. वेद + उ°) n. *eine Ergänzung zum* Veda R. ed. Bomb. 1,4,6. वेदोपग्रहण SCHL.

वेदोपस्थानिका (von 1. वेद + उपस्थान) f. *eine Aufwartung bei den* Veda HARIV. 9661.

वेद्धृ (von व्यध्) nom. ag. *Durchbohrer*, *Treffer* (eines Ziels): लक्ष्यं सर्वगतं चैव शरो मे सर्वतोमुखः । वेद्धा सर्वगतश्चैव Ind. St. 1,302, N. लक्ष्यस्य MBH. 1,7189. als fut.: लक्ष्यं यो वेद्धा स लब्धा मत्सुताम् 6955.

वेद्धव्य (wie eben) adj. *zu durchbohren*, *zu treffen* (ein Ziel): प्राणो धनुः

शरो ह्यात्मा ब्रह्म वेध्यमनुत्तमम् ॥ अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ Mârk. P. 42,7. 8. bildlich so v. a. *worin man eindringen muss:* तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं (मनसा ताडयितव्यं तस्मिन्मनःसमाधानं कर्तव्यम् Çaṁk.) Muṇḍ. Up. 2,2,2. — Vgl. वेध्य.

वेद्य् (denom. von वेद), वेद्यति (धौर्त्ये स्वप्ने च) v. l. im gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

1. वेद्य (von 1. विद्) adj. 1) *kundbar, berühmt:* रथ *Kriegsheld* ṚV. 2,2,3. 8,19,8. 73,1. प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे 5,15,1. AV. 19,3,4. अग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात् 6,4,2. — 2) *kennen zu lernen, zu erkennen, zu kennen, zu wissen, Gegenstand der Erkenntniss* Kâṭh. 30,1 in Ind. St. 3,462. स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता Çvetâçv. Up. 3,19. तं वेद्यं पुरुषं वेद Praçnop. 6,6. Bhag. 9,17. 11,38. वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः 15,15. MBh. 3,12468. 12471. 13495. 12,11765. 13,821. यं विदित्वा परं वेद्यं वेदितव्यं न विद्यते 1077. 6967. 7389. Hariv. 2175. 4873. 11681. Çâṇḍ. 42 (= प्रधान Comm.). Kumâras. 2,15. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 208: Windischmann, Sancara 90. Bhâg. P. 8,8,22. Sâh. D. 15,16. 116,19. 119,15. 339,9. Dhûrtas. 71,5. Sarvadarçanas. 17,1. 14. Pañkar. 4,3,21. अ° MBh. 12,11765. वेदावेद्य Pañkar. 1,12,31. 75. Mârk. P. 102,22. वासुदेवस्ततो वेद्यः *als V. zu erkennen* MBh. 5,2562. Bhâg. P. 1,1,2. Sâh. D. 56. Mârk. P. 51,45 (vielleicht वैद्यः zu lesen). मृड° *anzusehen als* Hariv. 7448.

2. वेद्य (von 3. विद्) adj. 1) *zu erwerben* in der Redensart वित्तं वेद्यं *Besitz und Erwerb* so v. a. *Habe und Gut* TS. 1,5,9,2. 6,2,4,3. VS. 18,11. — 2) *zu ehelichen:* अवेद्यावेदन M. 11,24.

3. वेद्य adj. von 1. वेद gaṇa गवादि zu P. 5,1,2. MBh. 13,7389 das eine Mal von Nîlak. durch वेदप्रतिपाद्य erklärt.

वेद्यत्व (von 1. वेद्य) n. *Erkennbarkeit* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 208. Nîlak. 229.

वेद्यन्त (2. वेदि + अन्त) m. *Ende* oder *Rand des Opferbettes* Çat. Br. 3,5,1,27. 5,1,5,13. 10,2,3,1. Lâṭy. 1,1,24. 2,2,25.

वेद्या (von 1. विद्) f. instr. plur. adv. *merklich, offenbar; wirklich, in der That:* रारणता मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त ṚV. 1,171,1. न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे 3,56,1. न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः 6,9,1. अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिः 10,71,8. Nir. 2,21. 13,13. ebenso instr. sg.: यस्ते गीर्भिरुक्थेभिर्मर्तो निशिशति वेद्यानट् ṚV. 6,13,4. Unerklärt bleibt die Bedeutung des Wortes in शचीभिर्वेद्यानाम् 10,22,14.

वेद्यर्ध s. u. 2. वेदि 4).

वेध (von व्यध्) 1) m. a) *Durchbohrung* AK. 3,3,8. H. 1523. von Perlen Varâh. Bṛh. S. 81,22. मणि° Sarvadarçanas. 180,6. *das Treffen eines Geschosses* MBh. 8,3615. बाणवेधे परं यत्नमकरोत् 12,6300. *Durchbruch:* यत्र यत्र विवेदौघवेधं सलिलविप्लवे । तत्र तत्र वितस्तायाः प्रवाहान्नूतनान्व्यधात् ॥ Râga-Tar. 5,95. — b) *Durchstich, Oeffnung* Schol. zu Kâtj. Çr. 6,1,29. 30. शोणितेन सिरावेधाद्विसर्पता Suçr. 2,344,20. — c) *Tiefe, Vertiefung* Colebr. Alg. 97. 103. अङ्गुलमेकं नाभिर्वेधेन Varâh. Bṛh. S. 58,23. — d) *Fixirung des Standes der Sonne oder der Sterne* Varâh. Bṛh. S. 3,3 (vgl. Kern in der Uebers. z. d. St.). Gaṇit. Bhagrahaj. 6, Comm. वेधेन ग्रहज्ञानम् Golâdhj. 11,13, Comm. Weber, Kṛshṇaǵ. 227. °वलय Colebr. Misc. Ess. II, 325. — e) Bez. *eines best. Processes, dem das Quecksilber unterworfen wird,* Sarvadarçanas. 100,7. लोह° 13. देह° 14. — f) *ein best. Zeitmaass,* = 100 Truṭi = $\frac{1}{3}$ Lava Bhâg. P. 3,11,6. VP. 22, N. 3. — g) N. pr.; s. u. वेधस् 5). — 2) f. आ mystische Bez. *des Buchstabens* म Weber, Râmat. Up. 336. — Vgl. अर्क°, कर्ण°, मत्स्य°, रोम°, शब्द°.

वेधक (wie eben) 1) m. a) nom. ag. *Durchbohrer:* नासानाम् MBh. 13,1651. *von Perlen u. s. w.* (= मणिमुक्तादिवेधकर्तर् Comm.) R. 2,83,14 (90,27 Gorr.). — b) *Kampher* (vgl. भस्म°) Trik. 2,6,39. — c) *eine Art Sauerampher, Rumex vesicarius* Râgan. im ÇKDr. — d) N. einer *Hölle, in welche Verfertiger von Pfeilen gelangen,* VP. 208. — 2) n. *Koriander* Râgan. im ÇKDr. — Vgl. कृत°, चक्र°, भस्म°.

वेधन (wie eben) 1) nom. ag. (f. ई). — 2) f. ई a) = कर्ण° ÇKDr. und Wilson nach Trik. 2,8,39, wo aber nach den Corrigg. कर्णवेधनी zu lesen ist. — b) *Bohrer* Çabdar. im ÇKDr. — c) *Trigonella foenum graecum* Bhâvapr. im ÇKDr. — 3) n. a) *das Durchbohren, Treffen mit dem Pfeile* MBh. 1,5522. कृत° adj. H. an. 2,558. Med. sh. 7. वेधन = विधा Trik. 3,3,222. — b) *das Behängen mit Etwas* (instr.): पाप्मना so v. a. *das Anhängen —, Anthun eines Uebels* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 88. — c) *Tiefe* Colebr. Alg. 97. समुद्रं शरवेधनम् MBh. 5,2042 nach der Lesart der ed. Bomb. — Vgl. कृत° (unter कृतवेधक), दृढ°, भस्म°, मत्स्य°, कर्णवेधनी, वेणि°.

वेधनिका (von वेधनी) f. *Bohrer* (zum Durchbohren von Perlen u. s. w.) AK. 2,10,34. H. 909.

वेधमय (von वेध) adj. (f. ई) *in der Durchdringung bestehend:* दीक्षा Verz. d. Oxf. H. 105,a,30.

वेधमुख्य 1) m. = वेधमुख्यक Râgan. im ÇKDr. — 2) f. आ *Moschus* ebend.

वेधमुख्यक m. *Curcuma Zerumbet Roxb.* AK. 2,4,4,23.

वेधस् (von 1. विध्) 1) adj. subst. *Verehrer, Diener der Götter; gläubig, fromm, getreu;* häufig parallel oder verbunden mit विप्र und कवि. = मेधाविन् Naigh. 3,15. = ज्ञ H. an. 2,592. = बुध Med. s. 40. = विद्वस् Hâr. 258. = पण्डित Viçva im ÇKDr. = विधातर् gewöhnlich bei den Comm. von 1. धा mit वि abgeleitet Uṇâdis. 4,224. Es heissen auch Götter so und zwar nicht bloss solche, die ein priesterliches Amt haben, wie Agni, Bṛhaspati, Soma (ṚV. 1,65,10. 5,43,12. 9,26,3. 102,4), sondern auch manche andere. Das Wort scheint also von dem Begriff *pius* ausgehend eine allgemeinere Bed. *tugendhaft* überh., *tüchti, brav* u. s. w. angenommen zu haben, wie das deutsche *fromm* den umgekehrten Weg machte. acc. auch वेधाम् ṚV. 9,26,3. 102,4. आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि 1,131,6. सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः Agni 3,14,1. वेधसे कवये वेद्याय 5,15,1. प्र वेधसश्चित्तिरसि मनीषाम् 4,6,1. 16,2. ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या 32,11. 7,26,3. अग्निं मन्थन्ति वेधसः 6,15,17. यदी वेधसः समिथे कृण्वन्ते 25,6. 8,43,1. अग्ने कविर्वेधा असि 49,3. त्वां विप्रास आ विवासन्ति वेधसः 5. सोमं हिन्वन्ति वेधसः 9,26,6. 29,2. विप्रा वचोविदो वेधसः 64,23. 101,15. 10,10,1. 61,16. 86,10. 122,8. 177,1. होतर् AV. 1,11,1. 32,2. 3,9,3. तथा तद्वेधसो विदुः 5,18,14. यानि घर्मे कपालान्युपचिन्वन्ति वेधसः TS. 1,1,7,2. die Marut

RV. 1,64,1. 5,52,13. 54,6. Indra 4,42,7. 6,22,11. Rudra 7,46,1. Çiva MBH. 3,1628. 12253. 14,191. HARIV. 14879. die Açvin RV. 1,181, 7. Dharma MBH. 5,3196. superl.: अग्निर्वेधस्तम ऋषिः RV. 6,14,2. die Bed. *klug, verständig* hat das Wort KÂM. NÎTIS. 1,6. 66. Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,22. — 2) auf der Herleitung des Wortes von 1. धा mit वि beruhen die Bedd. *a*) *vollbringend, verrichtend, zuwegebringend:* गम्भीर° BHÂG. P. 4,16,10. — *b*) *Autor* RÂGA-TAR. 4,117. SARVADARÇANAS. 70,16. — *c*) *Schöpfer:* प्रथम d. i. Brahman KUMÂRAS. 5,41. MÂLATIM. 14,4. कर्तारः कीर्तिकायस्य नाभूवन्कविवेधसः RÂGA-TAR. 1,45. so v. a. Pragâpati MBH. 3,12812. KUMÂRAS. 2,14. BHÂG. P. 4,7,7. KATHÂS. 34,45. Purusha oder Pumams 2,11. BHÂG. P. 4,17,33. Brahman AK. 1,1,1,12. 3,4, 1,5. H. 212. H. an. MED. HALÂJ. 1,6. RAGH. 1,29. 8,46. KUMÂRAS. 2,16. 7,44. Spr. (II) 171. 1108. 2227. 2330. 2685. (I) 2667. 2460. 2895. fg. 4303. KATHÂS. 20,66. 21,118. 28,3. 35,35. 37,131. 72,14. RÂGA-TAR. 2,60. NAISH. 22,48. BHÂG. P. 8,5,24. übertragen auf Vishnu (Krshna) AK. 3,4,20,230. H. 217. H. an. MED. HALÂJ. 1,25. BHÂG. P. 1,5,31. 2,4,24. 8,17,26. 9,19,29. 10,85,39. — 3) m. *die Sonne* ÇABDAR. im ÇKDR. — 4) *Calotropis gigantea* (श्वेतार्क) ÇABDAR. im ÇKDR. — 5) N. pr. des Vaters von Hariçkandra; s. वैधस. N. pr. eines Sohnes des Ananta ÇKDR. nach dem VAHNI-P.; im angeführten Texte heisst es aber अनन्तस्य च पुत्रो ऽभूद्वेधो नाम महाप्रभुः. — Vgl. कु°.

वेधस 1) n. = ब्रह्मतीर्थ (= अङ्गुष्ठमूल ÇKDR.) ÇABDAR. im ÇKDR. — 2) f. ई N. pr. eines Wallfahrtsortes Verz. d. Oxf. H. 18,*a*,29.

वेधस्या instr. *in Verehrung* u. s. w.: कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनम् RV. 9,82,2.

वेधित adj. = विद्ध (s. u. व्यध्) *durchbohrt* AK. 3,2,49. H. 1486.

वेधित्व (von वेधिन्) n. s. शब्द°.

वेधिन् (von व्यध्) 1) adj. *durchbohrend, treffend* (mit einem Geschosse) NIR. 6,33. निमित्त° *das Ziel treffend* MBH. 5,3480. 6,1658. शब्दबाणाग्र° *nach dem blossen Gehör* (ohne das Ziel zu sehen) *mit der Pfeilspitze treffend* R. GORR. 2,102,3. — 2) m. *eine Art Sauerampher, Rumex vesicarius* RÂGAN. im ÇKDR. — 3) f. वेधिनी *a*) *Blutegel* ÇABDAR. im ÇKDR. — *b*) *Trigonella foenum graecum* RÂGAN. ebend. — Vgl. कोटि°, दूर° (auch NIR. 6,33), मर्म°, राधा°, लघु°, शब्द°, सकृत्°.

वेध्य (wie eben) 1) adj. *zu durchbohren, zu durchstechen:* कर्णौ VARÂH. BRH. S. 98,17. रत्न KATHÂS. 40,11 (अ°). KULL. zu M. 9,286. आरामुखेन वै चर्म तुरप्रेण च कार्मुकम्। सूचीमुखेन कवचमर्धचन्द्रेण मस्तकम्। भल्लेन हृदयं वेध्यम् ÇÂRÑG. PADDH. 80,64 bei AUFRECHT, HALÂJ. Ind. unter आराग्र. *aufzustechen* z. B. eine Ader SUÇR. 1,14,20. 29,5. 92,16. 2, 270,18. — *b*) *nach dem Stande zu fixiren:* कीलेन रविरूदयो वेध्यः GANIT. BHAGAN. 6, Comm.; vgl. वेध. — *c*) fehlerhaft für बन्ध्य (बध्य) *anzubinden, anzuheften* im Çitat beim Schol. zu ÇÂK. 80. — 2) f. आ *ein best. musikalisches Instrument* H. ç. 87. — 3) n. *Ziel* H. 777. HALÂJ. 2,313. प्राणो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म वेध्यमुत्तमम् MÂRK. P. 42,7. — Vgl. ब्रह्मवेध्या, शब्दवेध्य und वेद्धव्य.

वेन्, वेनति NAIGH. 2,6 (कान्तिकर्मन्). 14 (गतिकर्मन्). 3,14 (अर्चतिकर्मन्). DHÂTUP. 21,13, v. l. (गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु). 1) *sich sehnen, verlangen* RV. 1,25,6. 43,9. विदा कामस्य वेनतः 86,8. 9,97,22. 10,61,18. वेनन्ति वेनाः 64,2. हृदा न वेनन्तः 123,6. ऊर्ध्वा अन्ये प्राणा वेनन्त्यवाञ्चो ऽन्ये *hinausstreben* AIT. BR. 1,20. यदा स्थानात्प्रच्युतो वेनेसि त्मना *wenn du Heimweh empfindest* TBR. 3,7,12,1. प्रजिज्ञनिषमाणो ऽवेनत् *sehnte sich nach der Geburt* ÇAT. BR. 7,4,1,14. — 2) *neidisch sein auf Etwas:* चमसं अवेनन्त्वष्टा चतुरो ददृश्वान् RV. 4,33,6. यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति 8,49,7. — Vgl. अवेनत्, 1. वन् und वेण.

— अनु *anzulocken suchen:* उत माता महिषमन्ववेनदमी त्वा जहति पुत्र देवाः RV. 4,18,11. अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति 10, 135,1. 2. TBR. 1,3,5,2.

— अप *sich verschmähend abwenden:* अभि प्रेहि मापं वेनः AV. 4,8,2.

— वि dass.: आ प्र द्रव मा वि वेनः RV. 5,31,2. 36,4. 75,7. 78,1. 6, 44,10. TBR. 2,4,3,4. — Vgl. अविवेनम्.

वेन (von वेन्) UNÂDIS. 3,6. 1) adj. *sehnsüchtig, verlangend, begierig; liebend;* = मेधाविन् NAIGH. 3,15. वेनो न प्रीणाधी हवम् RV. 8,3,18. बृहस्पतिर्यञ्जति वेन उक्षभिः 1,139,10. 8,52,1. 10,123,1. अभि वेना अनूषत 9,64,21. वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् 85,10. गिरो वेनानाम् 11. 73,2. गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा 1,56,2. वि सीमतः सुरुचो वेन आवः VS. 13,3. वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सत् 32,8. ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि 1,83,5. वेनी f.: तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्रो अवर्धयत् 8,41,3. — 2) m. *a*) *Sehnsucht, Verlangen, Wunsch;* = यज्ञ NAIGH. 3,17. आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो दधाता वेनमादिशे RV. 9,21,5. वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः 4,58, 4. आ यन्मा वेना अरुहन्नृतस्य 8,89,5. वेनन्ति वेनाः 10,64,2. 1,61,14. AV. 16,3,2. — *b*) *das mit den Worten* अयं वेनः *beginnende Lied* RV. 10, 123 ÇÂÑKH. BR. 8,5. — *c*) N. pr. eines Mannes gana कुर्वादि zu P. 4,1,151. RV. 10,93,14. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. 55,4. mit dem patron. Bhârgava Liedverfasser von RV. 9,85. 10,123. eines Fürsten, Vaters des Prthu, MBH. 1,227 (*b*.). 3140. 2,326. 12,2214. fgg. HARIV. 74. fgg. 293. fgg. VP. bei UGGVAL. zu UNÂDIS. 3,6. BHÂG. P. 4,13,18. fgg. 7,1,16. 10,73, 20. MÂRK. P. 27,15. eines Vjâsa Verz. d. Oxf. H. 80,*a*,13. पार्थववेनानाम् PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. 55,3; vgl. वेण, wie das Wort öfters unrichtig geschrieben wird. — *d*) nach den Commentatoren ein göttliches Wesen des mittleren Gebiets NAIGH. 5,4. NIR. 10,38. z. B. RV. 10,123,1. Indra ÇÂÑKH. BR. 8,5. die Sonne z. B. VS. 13,3. NIR. 1,7. ÇAT. BR. 7,4,1, 14; vgl. auch RV. 1,83,5. = प्रजापति UGGVAL. ein Gandharva SÂJ. zu MAHÂNÂR. UP. in Ind. St. 2,84. Beziehung des Wortes auf den Nabel AIT. BR. 1,20. SÂJ. z. d. St. — 3) f. आ *Sehnsucht* u. s. w.: सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः *euern Durst nach* Soma *kennt jeder* RV. 1,34,2. vielleicht nur Dehnung st. वेनम्. — Vgl. वैन्य und वेण.

वेनोविशाले n. du. N. zweier Sâman Ind. St. 3,237,*b*.

वेन्ना f. UNÂDIS. 3,8. N. pr. eines Flusses UGGVAL. — Vgl. वेणा, वेण्वा.

वेन्य (von वेन्) 1) adj. *begehrenswerth, liebenswerth:* इमा सातानि वेन्यस्य वाजिनः RV. 2,24,10. वपुर्दृशये वेन्यो व्यावः 6,44,8. — 2) m. N. pr. eines Mannes RV. 10,148,5. zweifelhaft 171,3.

वेप् s. 1. विप्.

वेप (von 1. विप्) 1) adj. (f. ई) *schwingend, bebend:* वेपी वक्करी यस्य नू गीः RV. 6,22,5. — 2) m. *das Beben, Zucken, Zittern:* अति° KAUÇ. 58. अङ्ग° BHÂG. P. 2,7,24.

वेपथु (wie eben) 1) m. *das Beben, Zucken, Zittern* P. 3,3,89, Schol.

(oxyt.). Vop. 26,178. AK. 1,1,2,38. H. 306. Halâj. 2,446. der Erde AV. 12,1,18. बाष्प° R. 3,59,27. वेपथुश्च शरीरे मे जायते Bhag. 1,29. हृदये MBh. 1,1593. मृत्युकाले हि भूतानां सद्यो जायेत वेपथुः 13,5706. °परीत R. 2,65,14. Suçr. 1,15,14. 256,1. Kâm. Nîtis. 7,25. 14, 61. भय° Ragh. 19,23. °भृतो नववधूकरतः Çiç. 9,73. स्तन° Çâk. 29. Spr. 2016. Sâh. D. 56,16. 167. 232. Pratâpar. 50,b,8. Bhâg. P. 1,14,11. 3,19,23. 8,17,6. 10,50,17. संजातवेपथुभिरङ्गैः Vikr. 147. Bhâg. P. 4,4,2.17,28.28,14. स° adj. *zitternd* Kathâs. 25, 90. *von Zittern begleitet*: सवेपथूनि सुरतानि Kumâras. 4,17. Suçr. 1,263,16. अति° adj. *heftig zitternd* Brahma-P. in LA. (III) 57,19. — 2) adj. (!) *zitternd* Varâh. Bṛh. S. 17,9.

वेपथुमत् (von वेपथु) adj. *zitternd*: दृष्टि Çâk. 22. कर Mârk. P. 74,17. Spr. 2470 (II). 2671. अति° Çiç. 9,77.

वेपन (von 1. विप् simpl. und caus.) 1) adj. *bebend, zuckend* TS. 2, 6, 5, 6. 9, 2. Çat. Br. 1, 5, 4, 2. Suçr. 1,256,5. Herz Varâh. Bṛh. S. 68,28. Sterne 3,32. das Licht einer Lampe 84,1. — 2) n. a) *das Beben, Zucken, Zittern* Çabdar. im ÇKDr. °कर R. 7,23,4,42. des Auges Gobh. 3,3,27. Suçr. 1,348,13. 365,15. Varâh. Bṛh. S. 46,23. गात्र° Pratâpar. 50,b,8. — b) *das Versetzen in eine schwingende Bewegung*: धनुषः R. 1,67,10. — Vgl. निर्वेपन.

वेपस् (von 1. विप्) n. *das Zucken, Beben, Zappeln; Aufgeregtheit*; = कर्मन् Naigh. 2,1. न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ṚV. 1,80,12. प्र विह्वया भरते वेपो अग्निः 10,46,8. वेपसा स्तवानः 4,11,2. = अनवद्य (vgl. रेपस्) Uṇâdik. im ÇKDr. — Vgl. गभीर°, गम्भीर°, गायत्र°, पुरु°, विश्वायु°.

वेपिष्ठ superl. zu विप्र. वेपिष्ठो अङ्गिरसां विप्रः ṚV. 6,11,3.

वेम (von 5. वा) m. *Webstuhl* Çabdar. im ÇKDr. सु° MBh. 1, 806. — Vgl. वेमन्.

वेमक m. wohl *Weber* Hariv. 11077. वेमकी *die Frau eines Webers* 11078. वेमको नाम स्वर्गस्थः कश्चिदृषिः Nîlak.

वेमचित्र m. N. pr. eines Fürsten der Asura Burn. Intr. 168. Lot. de la b. l. 3. Schiefner, Lebensb. 263 (33). °चित्रिन् Lalit. ed. Calc. 299,12.

वेमन् (von 5. वा) Uṇâdis. 4, 149. gaṇa संकलादि zu P. 4,2,75. पामादि zu 5,2,100. m. *Webstuhl* AK. 2,10,28. H. 913. m. n. Uǵǵval. zu Uṇâdis. तुरीवेमादिकम् Tarkas. 22. n. VS. 19, 83. *Weberblatt* Comm. zu TBr. 2,670. — Vgl. वेमन, वैमन.

वेमन adj. von वेमन् gaṇa पामादि zu P. 5,2,100. — Vgl. वैमन.

वेयच्छला f. Titel eines Kapitels in der Sâmavedakkhalâ Verz. d. Oxf. H. 387,a,20. fg.

वेर 1) m. n. *Körper* Trik. 3,3,372. H. 563. an. 2,459. Med. r. 86. Vgl. कुबेर. — 2) n. *Safran* Trik. H. an. Med. — 3) n. *die Eierpflanze* H. an. Med.

वेरक n. *Kampher* Hâr. 104.

वेरट m. (oder adj.) = मिश्रीकृत und नीच, n. = वरटीफल (d. i. बदरीफल) H. an. 3,171.

वेराचार्य (वैरा°?) m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 55.

1. वेल्, वेलति (चलने) Dhâtup. 15,28. — Vgl. वेल्ल्.

— उद्, उद्वेलत् Mâlatîm. 140,3 fehlerhaft für उद्वेल्लत्.

2. वेल्, वेलयति (कालोपदेशे) Dhâtup. 35,28. denom. von वेला.

वेल 1) n. *Garten, Park* H. 1111. — 2) *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 180. 182. Mél. asiat. 4, 639.

वेला f. 1) *Endpunkt, Grenze* AK. 3,4,26,200. H. an. 2,510. Med. l. 41. Çat. Br. 2,4,1,6. 12. चात्वाल° 7,1,1,36. आग्नीध्र° 9,2,3,15. ते रेतःसिचोर्वेलयोपदधाति *an dem Punkte* d. h. *in der Entfernung der beiden* Ret. 7,5,1,13. 8,1,3,10. 5,4,1. 6,1,4. लक्षणानि कुरुते रज्ज्वां वेलार्थानि *Zeichen, welche die bestimmten Punkte* d. h. *Entfernungen* oder *Maasse bezeichnen*, Kâtj. Çr. 17,4,26. यत्र स्थानीतां कुरुधर्मवेलां प्रेक्षन्ति MBh. 2,2236. अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिभिर्वानपि *Grenze* und *Küste* Spr. (II) 489. — 2) *Grenze des Landes und der See, Gestade, Küste* Trik. 3,3, 403. H. an. Med. Çâçvata bei Mallin. zu Kir. 3,60. वेलामिव समासाद्य व्यतिष्ठन् MBh. 1, 8260. ततः समुद्रः स्वां वेलामतिक्रामति 3, 12888. 4, 578. 6, 4784. तं निवारयामास तदा वेलेव मकरालयम् 14, 2206. Hariv. 786. मुमुचुः पुष्पसंघातं तोयं (so die neuere Ausg.; hiernach तोयवेला zu streichen) वेलेव वर्षति 12014. राज्यं च तव रक्षेयमहं वेलेव सागरम् R. 2,23,29. तवैव वचनं वयम्। नातिक्रमामहे सर्वे वेलां प्राप्येव सागराः॥ 67,32. 112, 18. R. Gorr. 2, 11,5. 30,30. 122,26. 3,41,25. 4,41,26. 5, 74,16. 6,93,28. 103,18. 108,20. 7,8,1. Ragh. 1,30. 8,79. 10,36. 13,15. 16,2. 27. 17,37. 18,42. Kumâras. 7,26. 73. Spr. (II) 1995. Râǵa-Tar. 3, 511. Bhâg. P. 4, 31, 2. 9, 10, 12. 10, 45, 38. 78, 3. वेलातिगो (so die ed. Bomb.) ऽर्णवः MBh. 2,895. वेलानिल *ein von der Küste blasender Wind* Ragh. 13,12. 16. Râǵa-Tar. 4,535. वेलालोलमहोर्मि *Wellen, die gegen die Küste rollen*, R. 5,9,13. °वीचि dass. Kir. 3,60. वेलोर्मि dass. Râǵa-Tar. 8,1594. क्षीरोदवेलानिलय *Küstenbewohner* R. 4,37,28. °वन *ein an der Küste gelegener Wald* Halâj. 3, 32. MBh. 3,16290 (°बल ed. Calc.). Hariv. 5170. R. Gorr. 1,43,14. 5,74,14. 24. Kathâs. 19, 109 (वेलावनेषु zu schreiben). 22, 177. 250. Râǵa-Tar. 3, 31. जलधिवेलाद्रि 4, 513. वेलाद्रि Kathâs. 91,4. °तट Ragh. 4,44. 18,22. Spr. 3253. Kathâs. 19, 91 (वेलातटान्ते). 22, 248. 67, 80. 83. भिन्नवेल इवार्णवः Hariv. 2465. उपगूढवेल Çiç. 9, 38. — 3) die personificirte *Küste* ist eine Tochter Meru's von der Dhâriṇî und Gattin Samudra's (*des Meergottes*) VP. 85, N. 11. — 4) *Zeitgrenze, Zeitpunkt, Zeitraum, Tageszeit, Stunde; Gelegenheit* AK. H. 1509. H. an. Med. संवत्सरवेलायाम् *binnen eines Jahres* Çat. Br. 7,4,2,38. 11, 1, 6, 1. यस्यामेवैनं वेलायां पुरा पिन्वयन्ति 4,5,2,4. अत्यवेलां प्रोष्य *über die Dauer von* Çâṅkh. Çr. 3,4,11. प्रातरनुवाक° 16,18,16. एतस्यां वेलायां प्राश्नीयुः *zu dieser Stunde* Lâṭj. 2, 2,8. 3,12. यव°, व्रीहि° 8,3,7. अग्नि° Âçv. Gṛhj. 4,6,5. संवेशन° Gobh. 4,9,11. Nir. 12,13. संगव° Khând. Up. 2,9,5. तं मुहूर्तं क्षपां वेलां दिवसं च युगोत्र ह MBh. 3,16753. Suçr. 1, 104,17. इमामुद्यातपां वेलाम् Çâk. 32, 13. fg. वेलोपलक्षणार्थम् 46,6. Varâh. Bṛh. S. 5,18. °हीने पर्वणि *bei einer vor der bestimmten Zeit stattfindenden Verfinsterung* 24. 32,27. Bṛh. 26 (24), 4. 11. 14. Kathâs. 30, 98. वेला व्यतिक्रान्ता ममाकारे कथं त्वया 60, 99. बहिर्वेलां तडुक्तामत्यवाहयन् Râǵa-Tar. 4,572. वेलातिक्रम Pańkat. 55, 5. 6. कथितवेलोपरि नागतः Çuk. in LA. (III) 37,15. fg. घोरतमा Bhâg. P. 3,14,22. विचार्य वेलां प्रष्टव्यः Verz. d. Oxf. H. 155,b,32. तासु वेलासु MBh. 1, 6445. अस्यां वेलायाम् 3,16839. Mṛkkh. 24,6. तां वेलाम् *zu dieser Stunde* MBh. 4,735. वेलायाम् *zur rechten Stunde* gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Bhâg. P. 8,16,8. संधि° M. 4,55. प्रभात° R. 1,28,38. मध्याह्न° Pańkat. 10, 5. अस्तमन° 163, 20. पश्चिमा *Abendstunde* MBh. 3, 2536.

Hariv. 2975. किमद्य चिरवेलया समायातो ऽसि *so spät* Pańkat. 207,13. प्रत्यूषसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः Spr. (II) 2468. युद्ध° Hariv. 2465. फल° Spr. (II) 679. प्रत्यादेशवेलायाम् Çâk. 82,8. तदुक्तं गुरुभिः सर्वज्ञनिराकरणवेलायाम् *bei der Gelegenheit als* Sarvadarçanas. 129,17. क्षेम° Bhâg. P. 9,16,3. आतिथ्य° 10,72,17. गरुड° Kathâs. 22,217. भित्तु° 63,83. अन्धः स्यादन्धवेलायाम् *wenn es gilt blind zu sein* Spr. (II) 360. mit infin. oder mit यद् und potent. P. 3,3,167. fg. वेलां प्रकृ *auf eine Gelegenheit warten, lauern* Râǵa-Tar. 8,524. सप्तवेलम् *sieben Mal* Çârṅg. Saṃh. 3,11,28. एकविंशति° 13,94. अनुवेलम् *gelegentlich* Bhâg. P. 3, 16,20. — 5) *die Essensstunde eines vornehmen Herrn* (ईश्वरस्य भोजनम्) Trik. 3,3,403. H. an. Med. *the food of* Çiva Wilson. — 6) = अन्तवेला *die letzte Stunde, Todesstunde:* स्वां वेलां प्राप्य Bhâg. P. 3, 18,25. = अक्लिष्टमरण *ein sanfter Tod* H. an. Med. — 7) *die Zeit des Meeres* so v. a. *Fluth* (Gegens. *Ebbe*) AK. H. 1076. H. an. Med. Halâj. 3,32. 5,53. Çâçvata a. a. O. समुद्र° Maitrjup. 4,2. °दोलानिलचल (so ed. Bomb.) MBh. 1,1214. क्रोधो ऽयं न शक्यते वारयितुं वेलेव लवणाम्भसा R. 3,28,2. Ragh. 12,36. वेलया वर्धमानया Râǵa-Tar. 4,539. सा दृष्ट्वानिरुद्धं तमुषा(:) साक्षादुपागतम्। अमृतांशुमिवाम्भोधिर्वेलयाङ्गेषवर्तत (so ist zu verbessern) ॥ Kathâs. 31,29. 43,195. 123,111.230. Pańkat. 75, 24. पूर्णिमादिने समुद्रवेला चटति (so ed. Bomb.) 74,22. Hit. 72,9. युगान्तानिलसंक्षुब्धौ महावेलाविवार्णवौ MBh. 1,5351. निवृत्तवेलः समये प्रसन्न इव सागरः R. 5,87,7. नदी° *starke Strömung eines Flusses* Spr. 2684, v. l. für नदीवेग. — 8) = रोग *Krankheit* Med. राग v. l. nach ÇKDr. — 9) *Zahnfleisch* Hâr. 268. — 10) = वाच् *Rede* Viçva im ÇKDr. — 11) N. pr. *a*) der Gattin Budha's H. an. Viçva im ÇKDr. — *b*) einer an einer *Küste* aufgefundenen Königstochter Kathâs. 67,83. fgg. nach ihr der 11te Lambaka in diesem Werke benannt 1,7. — Vgl. अकाल°, अतिवेलम् (auch MBh. 5,952. अनतिवेलम् *in ganz kurzer Zeit* Bhâg. P. 4,21,39), अनुवेलम् (*gelegentlich* Bhâg. P. 3,16,20), अन्तवेला, उद्वेल, ऋतुवेला, कुलिक°, प्रतिवेलम्, भोजनवेला, लग्न°, सु°.

1. वेलाकूल n. *Ufer* (und zwar *Flussufer*) Bhâg. P. 6,5,16.

2. वेलाकूल 1) adj. *an der Küste gelegen:* देश Bhâg. P. 10,67,5. — 2) n. = तामलिप्त Trik. 2,1,11.

वेलाय् denom. von वेला gaṇa कण्ड्वादि zu P. 3,1,27.

वेलायनि (wohl वै°) m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,29.

वेलावलि f. *a particular scale in Hindu music* As. Res. III, 78 nach Haughton.

वेलावित्त m. Bez. *eines best. Beamten* Râǵa-Tar. 6,73. 106. 127. 324.

वेलिका (von वेला) adj. f. *an der Küste gelegen:* भू Hariv. 8416.

वेलिभुकिप्रय *wohlriechender* Âmra Çabdar. im ÇKDr. wohl fehlerhaft für बलिभुकिप्रय.

वेलुव *eine best. hohe Zahl* Vjutp. 180. Mél. asiat. 4, 640.

वेल्ल्, वेल्लति (चलने) Dhâtup. 15,33. *taumeln, schwanken, sich wiegen, wogen:* वेल्लति नवपरिणया वधूः Kâvjapr. 154,10. दिव्यासवरसक्षीववेल्लद्विद्याधर (वल्लद् gedr.) Kathâs. 110,87. वेल्लद्बलाका घनाः Sâh. D. 16,5. वेल्लद्भैरवभूरिरण्डनिकरैः Uttarar. 93,12 (121,6). वेल्लद्वीचिमिन्हानदी Kathâs. 39,144. 120,11. वीचिवेल्लद्भुजलता 71,2. वातवेल्लत्तालजालतालवृत्तैः 196. 109,11. वातवेल्लच्चक्र 60,60. वेल्लद्गङ्गाङ्कूला Râǵa-Tar. 1,57. 84. वेल्लित *wogend* AK. 3,2,36. H. 1481. an. 3,305. Med. t. 161. कुसुमितलता Khandom. 98. *gebogen, gekrümmt* AK. 3,2,21. H. 1456. H. an. Med. Halâj. 4,11. किंचिद्वेल्लितोरुदण्डयुगल Daçak. 90,12. केशान्वेल्लितायान् *sich kräuselnd* (vgl. H. ç. 117) MBh. 4,244. भ्रूभङ्गवेल्लितवलीनिर्मितल्लाटभूः Râǵa-Tar. 8,2373. n. = गमन Med. *das Wälzen eines Pferdes* H. 1245. — Vgl. कुसुमितलतावेल्लिता.

— अनु partic. °वेल्लित *untergeschoben:* दक्षिणपादपार्ष्णिभागानुवेल्लितेतरचरणाग्रपृष्ठम् Daçak. 90,10. — Vgl. अनुवेल्लित.

— उद् *sich aufrichten, sich erheben:* उद्वेल्लद्वनरुण्डखण्डनिकर (उद्वेलद् gedr.) Mâlatim. 140,3. वायुः प्रावर्तताकस्माद्वातुमुद्वेल्लिताम्बुधिः Kathâs. 120,110. संभ्रमोद्वेल्लच्चमरीवालौघ 59,42.

— वि *beben, zittern:* आकृष्य केशेषु शिरस्तस्य विवेल्लतः। प्रत्रासकस्य चिच्छेद खड्गेन Kathâs. 18,174. 44,152.

वेल्ल n. *eine best. gegen Würmer angewandte Pflanze* AK. 2,4,2,24. — Vgl. कार°.

वेल्लक und वेल्लिका s. कार° unter कारवेल्ल und vgl. वेल्लिकाख्या.

वेल्लज n. *Pfeffer* AK. 2,9,35. H. 420. Halâj. 2,461.

वेल्लन (von वेल्ल्) 1) n. *a*) *das Wogen:* वेलोर्मि° Râǵa-Tar. 8,1594. *das Wälzen eines Pferdes* Trik. 2,8,46. — *b*) *Walze* (*zum Walzen von Teig*) Bhâvapr. im ÇKDr. — 2) f. ई *ein best. Gras,* = मालादूर्वा Râǵan. im ÇKDr.

वेल्लन्तर m. = वीरतरु Bhâvapr. im ÇKDr.

वेल्लहल m. = केलिनागर Gaṭâdh. im ÇKDr.

वेल्लि f. = लता Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. वल्लि.

वेल्लिकाख्या f. *Trigonella corniculata Lin.* Çabdaḱ. im ÇKDr. वेल्लिका Wilson nach ders. Aut.; vgl. u. वेल्लक.

वेल्लितक (von वेल्लित) 1) m. *eine best. Schlange* (*kreuzweis gestreift*) Suçr. 2,266,7. — 2) n. *Kreuzung:* वेल्लितकेन बद्धा *kreuzweise, gekreuzt* Suçr. 2,20,9. वेल्लितकं (adv.) सीव्येत् 1,93,17.

वेल्लूर N. pr. eines Districts, das jetzige Vellore, Varâh. Bṛh. S. 14,14 (hiernach कृष्ण° zu streichen).

वेविज् (vom intens. von 1. विज्) adj. *auffahrend, schnell* ṚV. 1,140,3.

वेवी, वेवीति (= वी) ved. Dhâtup. 24,69. Conjug. P. 6,1,6. 7,4,53. Pat. zu P. 7,2,10. Vop. 9,45. fg. वेव्यते P. 6,1,6, Schol. आवेव्य (absol.), आवेव्यते, आवेविता, आवेवीत 7,4,53, Schol. परिवेविषीध्वम् 8,3,78, Schol. — Vgl. 5. वी und आवेव्यक fg.

1. वेश (von 1. विश्) m. 1) (*abhängiger*) *Nachbar, Hintersass, Dienstmann:* वेश, आपि, भ्रातर् ṚV. 4,3,13. 5,85,7. अहं वेशं नम्रमायवे ऽकरम् 10,49, 5. श्रद्धा अस्य वेशा भवन्ति Kâṭh. 31,12. °यमन 32,4. Hierher dürfte auch वेंश (vgl. P. 3,3,16) gehören: वेशाँ अग्ने धारयेह् VS. S. 38,1 v. u. — 2) = वस्त्र° *Zelt* MBh. 5,5155. = गेह, गृह *Haus* H. an. 2,554. Med. ç. 13. — 3) *Prostitution, Hurenwirthschaft, Hurenhaus* AK. 2,2,1. H. 1003. H. an. Med. वेशेन जीवन् *Hurenwirth* (vgl. P. 4,4,12 nebst gaṇa वेतनादि) M. 4,84. दशशूनासमो वेशो दशवेशसमो नृपः 85. 9,264. Kathâs. 17,129. नन्दार्थैर्न्यायार्जितैरेव पुरुषा वेशमुपतिष्ठन्ति Daçak. 82,6. 7. न वेशजाताः प्रचयस्तथाङ्गनाः Spr. 1416. — 4) *Gewerbe* (zur Erklärung von वैश्य) Muir, ST. 1,6,1; vgl. u. 1. विश् 6). — Vgl. अग्नि°, अस्व°, दास°, प्रति°, वस्त्र°, स°, आनुवेश्य, वैशिक.

2. वेश s. वेष.

वेशक (von 1. वेश) m. *Haus* ÇABDAR. im ÇKDR.

वेशकुल (1. वेश + कुल) n. sg. *Huren* DAÇAK. 82,6.

वेशत्व (von 1. वेश) n. *Nachbarschaft, Sassenschaft* KÂTH. 12,5.

वेशन (von 1. विश्) n. *das Hereintreten* BHÂG. P. 10,12,26.

वेशनद् m. N. pr. eines *Flusses* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,539,4.

वेशन्त UṆÂDIS. 3,126. m. *Teich* AK. 1,2,3,28. H. 1095. HALÂJ. 3,53. वेशन्ता f. AV. 11,6,10. 20,128,8. 9. parox. TBR. 3,4,1,12. वेशन्ती AV. 1,3,7. वेशान्ता ÇAT. BR. 14,7,1,11 (= BṚH. ÂR. UP. 4,3,10. वेशान्त m. ed. Pol.). वेशन्त m. angeblich = अग्नि UṆÂDIK. im ÇKDR. — Vgl. वैशन्त.

वेशभाव m. *Hurenart* MṚKKH. 120,21.

वेशयुवति (1. वेश + यु°) f. *Buhldirne* BHAR. NÂṬJAÇ. 18,48.

वेशयोषित् (1. वेश + यो°) f. dass. HARIV. 8309. KATHÂS. 12,91.

वेशर् s. वेसर्.

वेशवधू f. = वेशयोषित् HARIV. 8426.

वेशवनिता f. dass. Spr. (II) 2570.

वेशवत् (von 1. वेश) adj. *ein Hurenhaus haltend, Hurenwirth* KULL. zu M. 4,84. fg.

वेशवार s. वेसवार.

वेशवास m. *Hurenhaus* MṚKKH. 13,12. fg.

वेशस् P. 4,4,131. m. = 1. वेश 1): कृतासो ऽस्य वेशसो कृतासः परि- वेशसः AV. 2,32,5. = बल P. 4,4,131, Schol.

वेशस s. यज्ञ°.

वेशस्त्री f. = वेशयोषित् MBH. 5,904 nach der Lesart der ed. Bomb. (वेश्मस्त्री ed. Calc.). BHAR. NÂṬJAÇ. 18,46. वेशकुलस्त्री° 49.

वेशान्त und वेशान्ता s. u. वेशन्त.

वेशि (aus dem griech. φασις) Bez. *des zweiten Hauses von demjenigen, in welchem die Sonne steht,* VARÂH. BṚH. 22(20),4. 23(21),7. LAGHUÉ. 9,6 in Ind. St. 2,254. f. ohne Angabe einer Bed. SIDDH. K. 247,b,1 v. u.

वेशिक n. Bez. *einer best. Kunst* LALIT. ed. Calc. 179,5. — Vgl. वैशिक.

1. वेशिन् (von 1. विश्) adj. *hereintretend:* काम° HARIV. 4512. कामवेषिन् *nach Belieben sich ein Aussehen gebend* würde auch passen; die neuere Ausg. hat eine ganz andere Lesart.

2. वेशिन् s. वेषिन्.

वेशी f. *Nadel* (nach SÂJ.): अवं स्तती वेश्यावृश्चत् ṚV. 7,18,17.

वेशीजाता f. *eine best. Pflanze,* = पुत्रदात्री RÂGAN. im ÇKDR.

वेशोभगीन und वेशोभग्य ved. adjj. von वेशस् + भग P. 4,4,132. 131.

वेश्मक adj. von वेश्मन् gaṇa ऋश्यादि zu P. 4,2,80.

वेश्मकलिङ्ग (वेश्मन् + क°) m. *Sperling* RÂGAV. im ÇKDR. — Vgl. das folgende Wort.

वेश्मकुलिङ्ग m. = गृहकुलिङ्ग SUÇR. 1,202,8.

वेश्मकूल m. eine best. Pflanze, = चचेण्डा RÂGAN. im ÇKDR.

वेश्मन् (von 1. विश्) n. 1) *Haus, Hof, Wohnung, Gemach* AK. 2,2,4. 3,4,13,53. H. 989. HALÂJ. 2,136. 144. ṚV. 10,107,10. 146,3. AV. 5,17, 13. यो वेश्मनि स गार्हपत्यः 9,6,30. AIT. BR. 8,24. ÇÂṄKH. BR. 27,6. GṚHJ. 1,12. राजापारां विशं प्रावसायाप्येकवेश्मनैव जिनाति ÇAT. BR. 1,3,2, 14. ÂPAST. 2,25,2. 3 (eines Fürsten). KHÂND. UP. 8,14. M. 4,73. 230. 5, 122. 9,85. 150. शूद्रस्य 11,13. MBH. 3,1834. 2144. 2155. 2279. 2721. आरोह महद्वेश्म 2868. 2882. R. 2,26,5. 32,24. 47,19. 77,3. SUÇR. 2,4,20. RAGH. 14,15. Spr. (II) 2578. VARÂH. BṚH. S. 33,4. 53,6. 65,1. 11. 89,6. 9. 92,3. KATHÂS. 18,261. 28,140. 29,169. RÂGA-TAR. 4,72. तमग्निं संपरिक्रम्य प्रविवेश स्ववेश्मवत् PAÑKAT. III, 172. BHÂG. P. 3,23,26. पितृ° M. 9,172. Spr. 1777. मातृ° Verz. d. Oxf. H. 268,a,38. अन्य° M. 11,164. परवेश्मस्था AK. 2,6,1,18. परवेश्मगा BHÂG. P. 9,11,9. भूपति° HALÂJ. 2, 150. वेश्या° RÂGA-TAR. 5,235. PRAB. 19,12. चाण्डाल° Spr. 1605. जतु° MBH. 1,7083. शिला° MEGH. 26. विश्राम° HARIV. 5965. अन्तर्वेश्मनि M. 7,223. 8,69. — 2) *Haus in astrol. Sinne* VARÂH. BṚH. 17,4. — 3) Bez. *des 4ten astrol. Hauses* (= ὑπόγειον, also eig. *ein unterirdisches Gemach*) VARÂH. BṚH. 1,18. LAGHUÉ. 1,16 in Ind. St. 2,281. — Vgl. एक°, क्रीडा°, गर्भ°, देव° (auch RÂGA-TAR. 5,167), पट°, पायुतालन°, प्रति°, बन्धन°, बलि°, मेघ°, राज्ञ°, लीला°, वस्त्र°, वास°, विद्या°, श्मशान° und वेश्मीय.

वेश्मनकुल (वेश्मन् + न°) m. *Moschusratze* TRIK. 2,5,11. ÇABDAR. im ÇKDR.

वेश्मभू (वेश्मन् + 2. भू) f. *der Platz, auf dem ein Haus steht,* AK. 2,2,19.

वेश्मवास m. = वासवेश्मन् *Schlafgemach* KATHÂS. 55,233.

वेश्मस्त्री f. MBH. 5,904 fehlerhaft für वेशस्त्री, wie die ed. Bomb. liest.

वेश्मान्त nach dem Comm. *das Innere eines Hauses;* am Ende eines adj. comp. f. आ R. 2,42,23 (41,21 GORR.).

वेश्य (von 1. वेश) 1) adj. parox. gaṇa दिगादि zu P. 4,3,54. am Ende eines comp. gaṇa वर्ग्यादि zu 6,2,131. — 2) f. आ a) *Hure* AK. 2,6,1, 19. 3,4,25,179. TRIK. 2,6,5. H. 532. an. 2,283. MED. j. 55. HALÂJ. 2, 335. M. 8,85, v. l. JÂGÑ. 1,141. 2,292. R. 1,8,23 (24 GORR.). R. GORR. 1,79,41 (in Verbindung mit वारमुख्या). MEGH. 36. Spr. (II) 516. 1110. 2993. (I) 2224. 2730. 2897. 3132. 3146. 4475. 5036. VARÂH. BṚH. S. 39, 2. 53,8. 87,15. Verz. d. Oxf. H. 216,a,7. 217,a,23. 282,a,41. KATHÂS. 3,54. 12,93. 21,56. 57,58. RÂGA-TAR. 4,664. 676. 5,293. 295. 6,74. SÂH. D. 111. 426. MÂRK. P. 16,20. PAÑKAR. 1,4,61. बलं वेषश्च वेश्यानाम् BRAHMAVAIV. P. im ÇKDR. unter बल. PRAB. 60,5. DHÛRTAS. 85,11. °गण ÇABDAM. im ÇKDR. °जनसमाश्रय AK. 2,2,1. वेश्याश्रय H. 1003. °वेश्मन् RÂGA-TAR. 5,235. PRAB. 19,12. °गृह TRIK. 3,3,432. °पति HALÂJ. 2,227. वेश्याचार्य H. 330. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 34,b,36. Im comp. auch वेश्य VARÂH. BṚH. S. 104,63. Vgl. स्ववेश्या. — b) *Clypea hernandifolia Wight. et Arn.* ÇABDAK. im ÇKDR. — c) *ein best. Metrum* COLEBR. Misc. Ess. II, 154, a. — 3) n. a) perisp. *Nachbarschaft, Verhältniss der Hörigkeit:* जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा वत्त्येत्राण्यर्णानि गन्म ṚV. 6,61,14. (पुरो व्यैरं) वेश्यं सर्वताता *das zugehörige Gebiet* 4,26,3. — b) *Hurenhaus* H. an. MED.

वेश्यस्त्री f. = वेशस्त्री *Hure* Spr. (II) 2942.

वेश्याङ्गना f. dass. Verz. d. Oxf. H. 92,a,20.

वेश्र m. = वेसर (वेशर) BHÛRIPR. im ÇKDR.

1. वैष (von 1. विष्) m. 1) *das Wirken, Besorgen;* = कर्मन् NAIGH. 2, 1 (v. l. वेश). कर्मणो वेषाय KAUÇ. 1. 58. KÂTJ. ÇR. 4,2,12. — 2) *Tracht, Anzug, das durch Kunst erzeugte Aeussere eines Menschen* AK. 2,6,3,1. H. 635. an. 2,554. MED. ç. 13. fg. HALÂJ. 2,384. 5,74. am Ende eines

adj. comp. f. श्रा. °वाग्बुद्धिसारूप्य M. 4,18. वेषाभरणसंयुक्ताः (स्त्रियः) 7, 219. श्रलिङ्गी लिङ्गिवेषेण यो वृत्तिमुपजीवति 4,200. Jâgn. 1,123. स्वतुल्यवेषालंकार Râga-Tar. 6,152. Prab. 47,4. वेषं मानितमाधाय रक्तेनैकेन वाससा MBh. 1,7719. स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः Kumâras. 7,22. पश्चात्तापसदृश° Çâk. 80,6. वेषभाषानुकरणं न कुर्यात्पृथिवीपतेः Spr. 5037. वाग्वेषचेष्टितैः Daçak. 2,46. Bhar. Nâṭjaç. 34,85. Suçr. 1,104,16 (pl.). वेषोपचारकुशल Sâh. D. 78. नरदेवो ऽसि वेषेण नटवत्कर्मणाद्विजः Bhâg. P. 1,17,5. बलं वेषश्च वेश्यानाम् Brahmavaiv. P. im ÇKDr. u. बल. °परिवर्तनं विधाय Pańkat. 169,15. °विपर्यय 37,2. °च्छन्न Kathâs. 38,74. °प्रच्छन्न 12,58. कृत्वा वेषं च सैरन्ध्र्याः nahm die Tracht — an, kleidete sich als MBh. 4,246. गोपानां कृत्वा वेषमनुत्तमम् 280. Kathâs. 29,99. 27,196. राजपुत्रस्य वेषेण तस्थौ ग्रामे 24,90. कैरातं वेषमास्थाय MBh. 3,1552. नानावेषधरैर्भूतैः 1554. किरातवेषसंछन्न 1555. समानव्रतवेषा 1554. नर्तन° 1874. Hariv. 8694. श्रार्य° R. 1,7,6. मुनि° 4,2. 9,9. 48,17. 2,25,14. 39,1. 104,28. गोप° Megh. 15. प्रवासस्थकलत्रवेषा Ragh. 16,4. Mâlav. 13. Spr. (II) 1634. उदीच्य° Varâh. Bṛh. S. 58,46. Kathâs. 13,146. वणिग्वेषं चकार सः 179. 12,168. 27,197. 29,102. 43,172. कार्पटिकवेषभृत् 38,18. Râga-Tar. 3,267. योषिद्वेषो मया कृतः Bhâg. P. 8,12,15. 47. पुरुषवेषा Kathâs. 27,198. तरुणीवेषा (प्रावृष्) Spr. (II) 2503. उन्मत्त° MBh. 3,2582. Kathâs. 12,57. हीनान्नवस्त्रवेषः स्यात् M. 2,194. चारु° R. 2,114,13. श्रभूषणानुष्ठितचारुवेषा Ragh. 14,13. मनोज्ञ° 6,1. शुद्ध° 1,46. महा° Kathâs. 4,49. यो नोद्धतं कुरुते जातु वेषम् Spr. 4907. श्रनुद्धत° Suçr. 1,30, 2. विनीतवेषाभरण M. 8,2. Çâk. 8,12. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 10. स्वभावदुर्गन्धिबीभत्सवेषा Prab. 71,1. कश्मल° Dhûrtas. 75,11. विधूत R. 5,16,21. श्रवधूत und श्रवधूत° Bhâg. P. 6,15,10. 1,19,25. 3,1,19. 5,5, 29. 6,6. नग्नां विकृतवेषाम् Kathâs. 12,173. नाना° beim Schauspieler Maitrjup. 4,2. कृताभिसरणवेषा Vikr. 40,17. कृतकौतुकमङ्गलवेषा Pańkat. 129,17. शृङ्गारवेषा MBh. 5,237. मृगया° Çâk. 24,15. *ein angenommenes Aeusseres*: वेषं विधा *eine fremde (andere) Gestalt annehmen* Bhâg. P. 2,7,37. वेषं गम् dass. 5,20,41. *Aussehen* überh. R. 3,75,15. गो° *einem Stiere gleichend* MBh. 4,588. श्रब्जानि चैव सत्त्वानि वेशैस्तैस्तैः पृथग्विधैः Hariv. 11798. सतां वेषधरः R. 4,16,17. fg. श्रधर्मं धर्मवेषेण 2,118,6. वेषमाच्छाद्य so v. a. *sich nicht zu erkennen gebend* TBr. Comm. 1,124, 3 v. u. प्रच्छन्नवेषेण dass. 129,3. वेश am Anf. eines comp. als Ausdruck des Lobes (!) im gaṇa काष्ठादि zu P. 1,8,67 gehört vielleicht hierher. Als n. Pańkar. 1,14,56. Das Wort wird häufig, aber äusserst selten in den Bomb. Ausgg., mit श geschrieben. Vgl. कृतवेश, केश° (*Haartracht* Âçv. Gṛhj. 1,17,18. °वेषान् v. l.), पुं°, प्राग्वेष, भूतवेषी, राजवेष, विवाह°, सु°.

2. वेष॑ (wie eben) adj. *wirkend, besorgend* VS. S. 58,2 v. u.

3. वेष m. fehlerhafte Schreibart für वेश Bhar. zu AK. 2,2,1 nach ÇKDr.

वेषकार (1. वेष + कार) m. als Erkl. von वेष्टन Trik. 3,3,261.

वेषण (von 1. विष्) 1) n. *Besorgung, Dienst*: परिविष्टी वेषणा दंसनाभिः ṚV. 4,33,2. श्रवं स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति 5,7,5. — 2) m. *Cassia Sophora Lin.* Hâr. 98. — 3) f. श्रा *Flacourtia cataphracta* Ratnam. im ÇKDr.

वेषदान (1. वेष + दान) m. *eine best. Pflanze*, = सूर्यशोभा (vgl. दिव्यवस्त्र) Çabdak. im ÇKDr. वेश° gedr.

वेषधारिन् (1. वेष + धा°) 1) adj. am Ende eines comp. *die Tracht —, den Anzug von — tragend*: तापसीवेषधारिणी R. 5,18,21. स्त्रीवेषधारी पुरुषः AK. 1,1,2,11. — 2) m. a) *ein Asket der Tracht nach, ein heuchlerischer Asket* Çabdar. im ÇKDr. गङ्गापुत्रस्य कन्यायां वीर्येण वेषधारिणः। बभूव वेषधारी (so ist zu lesen) च पुत्रो योगी (युङ्गी ÇKDr. u. d. W.) प्रकीर्तितः ॥ Verz. d. Oxf. H. 22,a,6. 7.

वेषवत् (von 1. वेष) adj. *gut angezogen, — gekleidet* Kâm. Nitis. 5, 17. सुवेषवान् (besser) st. स वेषवान् Comm.

वेषवार = वेसवार H. 417. Râjam. zu AK. nach ÇKDr.

वे॑षश्रि und °श्री adj. etwa *schön geschmückt* in einer Formel TS. 3, 5,2,5. 4,4,1,3. 5,3,6,3. Çat. Br. 8,5,8,3.

वेषिन् (von 1. वेष) adj. am Ende eines comp. *eine Tracht —, einen Anzug habend*: विकृत° Bhâg. P. 9,8,5. छद्म° *sich ein falsches Aussehen gebend* 7,5,27.

वे॑ष्क m. *Schlinge zum Erwürgen* Çat. Br. 3,8,1,15. Kâtj. Çr. 6,5,19. — Vgl. वेष्ट.

वेष्ट्, वेष्टते Dhâtup. 8,2 (वेष्टने); in der ältesten Sprache erscheinen auch Formen von विष्ट्. 1) *sich winden —, sich schlängeln um*: यस्य मन्दाकिनी चिरमवेष्टत पादमूले Sâh. D. 344,5. *sich hängen —, kleben an* (loc.): मयि ते वेष्टतां मनः AV. 6,102,2. — 2) *sich häuten* (*sich neu kleiden*): वेष्टमान इवोरगः R. 7,86,3.

— caus. aor. श्रविवेष्टत् und श्रववेष्टत् P. 7,4,96. Vop. 18,2. partic. वेष्टित = वलयित, रुद्ध u. s. w. AK. 3,2,40. H. an. 3,305. Med. t. 160. Halâj. 4,27. समन्ताद्वेष्टितः परिवृत उच्यते P. 4,2,10, Schol. 1) *überziehen, umwinden, umwickeln, umkleiden, bekleiden, umlégen, umstéllen, umringen, umzingeln, einschliessen*: वासोभिर्यूपो वेष्टितः Çat. Br. 5,2, 1,5. 3,1,11. 11,2,6,7. TBr. 1,3,7,3. उष्णीषेण शिरो वेष्टयते Pâr. Gṛhj. 2,6. Âçv. Çr. 5,12,7. Lâṭj. 2,6,2. Kâtj. Çr. 25,10,7. Kauç. 16. वेष्टितशिरस् M. 3,238 (= MBh. 13,4288). वस्त्रेण वेष्टितं कृत्स्नम् Weber, Kṛshṇaǵ. 278. वस्त्रवेष्टित Spr. 2225. पीताम्बरवेष्टित Varâh. Bṛh. S. 24,18. वेष्टितः खरचर्मणा 74,13. Bṛh. 27 (25),1. वस्त्रेण वेष्टयित्वाङ्कितं शिरः Kathâs. 13,152. श्रन्योऽन्यकेशपाशवेष्टितान्। कृत्वा 49,149. सप्तम्यस्य पत्राणि तावत्सूत्रेण वेष्टयेत् Jâgn. 2,103. श्राम्रवेष्टितसर्वाङ्गी Hariv. 14379. कलशाः सितसूत्रवेष्टितग्रीवाः Varâh. Bṛh. S. 48,37. Weber, Kṛshṇaǵ. 302, N. 2. R. 3,32,12. श्रवेष्टयन्त लाङ्गूलं जीर्णैः कार्पासिकैः पटैः 5,49,5. 56,138. Râga-Tar. 2,88. पाशवेष्टिताः 3,24. 4,1. (सर्पाः) वेष्टयन्तः परस्परम्। पुच्छैः शिरोभिश्च MBh. 1,2036. 1800. fg. 8,2591. Hariv. 11099 (S. 793). 10875. R. 7,28,30. Ragh. 11,59. Kathâs. 63,178. 65,119. Varâh. Bṛh. 5,3. fgg. 27 (25),12. ग्रीवायां वेष्टयित्वैनं (sc. करेण) स गजो हन्तुमैहत MBh. 7,1153. वाससावेष्ट्यहस्ते (sc. तम्) Kathâs. 61,262. मम। पुष्पदाम्ना वेष्टयित्वा कण्ठे (कण्ठम्?) Hariv. 7241. वल्ली वेष्टयते वृक्षम् MBh. 12, 6833. क्रिमवृष्टयः। वेष्टयन्ति तान्घोरान्दैत्यान् Hariv. 2595. 2594. कोशकार इवात्मानं वेष्टयन् so v. a. *sich einspinnen* MBh. 12,12449. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 259. पुष्पवेष्टितशाखाग्रैः *rund um besetzt* MBh. 2,801. वेष्टितं मेरुशिखरैः सतोयमिव तोयदम् R. 5,45,13. शुष्ककाष्ठैस्तृणैर्वेष्ट्य सर्वतः पर्वतान्तम् Hariv. 5516. पितृवनमुमनोभिर्वेष्टितं मे शरीरम् Mṛkkh. 137,9. Varâh. Bṛh. S. 77,2. Bhâg. P. 3,30,26. 10,6,33. Mârk. P. 45,68. Verz. d. Oxf. H. 105,b,29. Pańkar. 1,7,34. गोपगोपीकदम्बैश्च वेष्टिते (रासम-

एडले) Pańkar. 2,5,18. 3,15,27. भृङ्गैर्भृनन्द्नो ऽत्र सः । अवेष्ठत Kathâs. 73,164. गोमत्तं वेष्टयामासुः सागराः पृथिवीमिव Hariv. 5508. एवमेषा पुरी तिप्रं समत्ताद्वेष्टिता बलैः 5023. Kâm. Nîtis. 19,15. Ragh. 11,52. Kathâs. 29,117. 49,68. fg. Râǵa-Tar. 8,517. 915 (अवेष्ठत्त zu lesen). 1106 (वेष्टिता द्विषा zu lesen). Bhâg. P. 10,52,5. Bhaṭṭ. 15,61. 80. राजहंसः कुक्कुटेनागत्य वेष्टितः so v. a. *der Hahn versperrte ihm den Weg* Hit. 106,17. तमसा बहुद्रूपेण वेष्टिताः *umhüllt, eingehüllt in* M. 1,49. पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः *umgeben —, begleitet von* Spr. (II) 383. मायया वा एतत्सर्वं वेष्टितं भवति Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,109. ज्ञानं संमोहवेष्टितम् Pańkar. 1,15,15. चित्तावेष्टिता LA. (III) ad 19,15. पत्तिणी पत्ततुल्याभ्यामहोभ्यां वेष्टिता निशा *eine Nacht mit den beiden angrenzenden Tagen* H. 144. — 2) *úmwinden, úmwickeln, úmbinden, úmlegen:* उष्णीषं वेष्टयामास मूर्धनि MBh. 7,2921. वेष्टितकर (कर *Rüssel*) 1,1366. वेष्टितश्मश्रु Râǵa-Tar. 5,206. — 3) *winden* (einen Strick): तृणावेष्टिता रज्जुः (vgl. u. आ) Kathâs. 65,19. — 4) *zusammenschrumpfen machen:* यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः Çvetâçv. Up. 6,20. — 5) वेष्टित *a*) adj. s. u. 1), 2) und 3). — *b*) n. α) = लासक H. an. Med. — β) *quidam coeundi modus* diess. — 6) वेष्टयते MBh. 12,6867 fehlerhaft für चेष्टयते, wie die ed. Bomb. liest; वेष्टितौ R. 4,8,44 fehlerhaft für विष्ठितौ, wie die ed. Bomb. (4,9,11) liest. — Vgl. लतावेष्टित.

— अनु *hängen bleiben:* यज्ञो यदसृजत तस्योल्बमन्ववेष्टत Kâṭh. 12,4. — caus. 1) *überziehen, umwinden, überdécken:* लताभिरनुवेष्टितः MBh. 12,9118. R. 5,16,37. 17,3. — 2) *überdecken, auflegen, ausbreiten:* भित्त्यादिकमनुवेष्ट्य (भित्ति *Matte*) उपविष्ट आसीत Kull. zu M. 11,110.

— अप caus. *abstreifen* Pańkav. Br. 13,5,22.

— अभि caus. *bedecken, zudecken:* (वस्त्रैः) तैस्ते तान्यभ्यवेष्टयन् । चर्माणि Kathâs. 62,198. अभिवेष्टयेत्तदनु कुम्भमुखं नवनिर्मलांशुकयुगेन Pańkar. 3,7,23.

— आ *sich ausbreiten über* (loc.): फेनस्तप्यते यदप्स्वावेष्टमानः प्लवते so v. a. *das Wasser überziehend* Çat. Br. 6,1,3,3. — caus. 1) *umhüllen, umgében, bekleiden, bedecken:* उल्बेनावेष्टितः ṚV. 10,51,1. उष्णीषेण TS. 3,4,1,4. आवेष्टिता चर्मणा AV. 5,18,3. 28,1. उष्णीषेणावेष्ट्य Çat. Br. 4,5,2,7. Kâṭh. 13,10. वैश्यं लोहितदर्भैः तत्रियं शरपत्रैर्वावेष्ट्य Vasishṭha bei Kull. zu M. 8,377. Suçr. 1,358,18. 359, 2. 2,365, 6. मूलान्यावेष्टितानि R. Gorr. 2,108, 8. — 2) *winden* (einen Strick): तृणैरावेष्ट्यते रज्जुः Spr. 1957. — 3) *einschliessen, auf einen engen Kreis beschränken:* गोपाल इव दण्डेन यथा पशुगणान्वने । आवेष्टयत तां सेनां भगदत्तस्तथा मुहुः ॥ MBh. 7,1189. *schliessen* (die Hand): आवेष्टितकर 13, 764. — 4) आवेष्टयति TBr. 1,3,6,1 fehlerhaft für आचेष्टयति. — Vgl. आवेष्ट fgg.

— समा caus. *belegen, bedecken* Suçr. 2,109,6.

— उद् *sich in die Höhe winden:* छिन्ना भुजाः — उद्वेष्टन्ते विचेष्टन्ते पतन्ते चोत्पतन्ति च MBh. 8,2544. 7,3168. 9,429. — caus. *loswinden, aufdrehen:* तन्त्रीम् Kathâs. 49,21. उद्वेष्टनीया वेणी Megh. 89. *eröffnen, aufsiegeln:* लेखम् *einen Brief* Mâlav. 70,17. — Vgl. उद्वेष्टन.

— उप caus. *umwinden, umbinden:* लतोपवेष्टित (वृत्त) Mṛkkh. 115, 13. पाशोपवेष्टितगल Kathâs. 25,181.

— नि caus. 1) act. med. *einfassen* (in die Hand), *zudeckend packen* AV. 10,5,36. 16,8,1. योनिम् Kâṭh. 13,4. 23,4. हस्तै TS. 6,1,8,7. यथा प्रतीघातेनानिवेष्ट्यमानो धावयेत् Çâńkh. Br. 18,4. — 2) *umwickeln, umwinden:* लाङ्गूलेन निवेष्टिताः R. 6,84,26. सर्पनिवेष्टिताङ्ग Varâh. Bṛh. 27(25),36. wohl an beiden Stellen विवेष्टित zu lesen. — Vgl. निवेष्ट fg.

— उपनि *sich lagern um, umgeben:* गर्भमाप उपनिवेष्टन्ते Çat. Br. 5,3,4,11.

— निस् caus. 1) *zurückstreifen:* शेप इव निर्वेष्टितः *entblösst* Nir. 5, 8. — 2) *abwickeln* so v. a. *abnehmen um* (acc.): एकैकस्मिन्मण्डले मुहूर्तस्य द्वौ द्वावेकषष्टिभागौ दिवसत्तेत्रस्य निर्वेष्टयन् (= ह्रापयन्) Ind. St. 10, 265, N. 2. — Vgl. निर्वेष्टन.

— परि caus. 1) *umhüllen, umwinden, umwickeln, umschlingen, umlégen, umstéllen, umgében, umringen,* Çat. Br. 5,3,5,24. सूत्रैः Çâńkh. Çr. 4,15,31. मुखम् 7,15,2. वसनेन Lâṭy. 2,6,1. दर्भेण Kauç. 21. 38. 79. Nir. 9,15. Suçr. 2,346,2. पाशैः फलदं परिवेष्ट्य तम् MBh. 12,9119. रज्जुभिः Spr. 3342. कटकैरायसैः (so ist zu lesen) Râǵa-Tar. 4,263. भोगेन (सर्पस्य) MBh. 1,1802. 3,12403. तं परिवेष्टितवानहिः Kathâs. 65,122. भुजाभ्याम् 74, 52. प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च यत्पार्श्वतो भवति तत्परिवेष्टयन्ति Spr. (II) 1066. वृत्तान् — लताभिः परिवेष्टितान् R. 3,17,13. 78,22. Varâh. Bṛh. S. 95,37. जम्बुद्वीपः तारोदधिना परिवेष्टितः Bhâg. P. 5,20,2. Mârk. P. 54,7. प्राकारवलयपरिवेष्टित Pańkat. ed. orn. 3,9. Hariv. 9017. आदित्यः परिधिः परिवेष्टितः 9297. हुताशार्चिःपरिवेष्टिता (लङ्का) R. 5,50, 20. शमीकोटरं वह्निभोज्यद्रव्यैः परिवेष्ट्य Pańkat. 97,25. तमश्चाण्डकटाहेन समन्तात्परिवेष्टितम् VP. bei Muir, ST. 1,195. सिताभ्रपरिवेष्टित (विद्युत्पुञ्ज) Kathâs. 3,28. अग्निं वस्त्रेण परिवेष्टयन् *zudeckend* MBh. 11,40. धूमेन परिवेष्टितम् *eingehüllt in* Hariv. 3635. भस्मना 15861. Varâh. Bṛh. S. 12,12. शरैः सर्वतः परिवेष्टितः *überschüttet* Hariv. 10202. सिराभिः *überzogen mit* Kathâs. 97,22. पादपान्विविधैः खगैः परिवेष्टितान् *besetzt mit* Brahma-P. in LA. (III) 52,3. पत्राणि काण्टकशतैः परिवेष्टितानि Spr. 1690. अखिलनिगमनिवहगणपरिवेष्टित *umgeben von* Bhâg. P. 5,1,7. Çańk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 102. गोत्रजाः । पञ्चधा गृहमागत्य राजानं पर्यवेष्टयन् Kathâs. 58,4. Verz. d. Oxf. H. 28,*b*,16. शत्रुभिः परिवेष्टितः Spr. 2286. Kâm. Nîtis. 13,73. 19,55. Râǵa-Tar. 5,430. Kathâs. 106,151. स्थानं तत्पर्यवेष्टयत् 69,64. 116,1. Pańkat. 172,13. परिवेष्टित = वलयित u. s. w. H. 1474. — 2) *úmwinden, úmlegen:* अग्निष्ठे रशनाः Kâṭy. Çr. 8,8,16. शाटीं परितः कट्याः R. 2,32,36. — 3) *zusammenschrumpfen machen:* य इमां पृथिवीं कृत्स्नां चर्मवत्परिवेष्टयेत् (समवेष्टयत् ed. Bomb.) MBh. 7, 368. 2209. 12,4078. — Vgl. परिवेष्टन, परिवेष्टना (in den Nachträgen), परिवेष्टितर्.

— संपरि, caus. partic. °वेष्टित *umwunden* Suçr. 2,440,21.

— प्र caus. *umwinden* TS. 6,6,4,3. प्रवेष्टितो रोमभिः *besetzt —, bedeckt mit* MBh. 3,10047.

— संप्र caus. *umwinden* Suçr. 2,341,14. Schol. zu Kâṭy. Çr. 6,3,16.

— प्रति *sich zurückschieben:* अङ्गारा एव प्रतिवेष्टमाना अमित्राणामस्य सेनां प्रतिवेष्टयन्ति TS. 3,4,8,4. — caus. *zurückschieben —, streichen, — biegen* TS. a. a. O. die Zungenspitze VS. Prât. 1,78. AV. Prât. 1,22. Taitt. Prât. 2,37.

— वि caus. 1) *wegstreichen, abziehen:* त्वचम् AV. 12,5,68. — 2) *umwinden:* सर्पभोगैर्विवेष्टितः Hariv. 10200 (beide Ausgg. विचेष्टितः). ना-

गैर्विवेष्टितः 10226 (die neuere Ausg. विचेष्टितः). अङ्कस्थपार्वतीदृष्टिपाशैरिव विवेष्टितः Kathâs. 1,1.71,213. 72,7. *umringen, einschliessen:* कोट्टम् Râǵa-Tar. 8,2651.

— सम् *sich zusammenrollen, zusammenschrumpfen:* तावका दीनचेतसः । सर्पवत्समवेष्टन्त (सर्वतः समचेष्टन्त ed. Bomb.) MBh. 6,4069. — caus. 1) *umwinden, umschlingen, einschliessen:* संवेष्ट्य पाणिपादं च वाससा Kathâs. 64,142. ग्राहेण संवेष्टितसर्वगात्रः MBh. 3,12357. संवेष्ट्यमानं (so ed. Bomb.) मोहात्तन्तुभिरात्मजैः 12,12449. संवेष्ट्यमाने लाङ्गूले (पटैः) R. 5,49,6. संवेष्टितजटाभारो वीणासक्तेन बाहुना Hariv. 9610. मध्यस्थदेवावसथं संहताः समवेष्टयन् *einschliessen, umringen* Râǵa-Tar. 4, 325. *umhüllen, bedecken:* पयोदा नभस्तलम् । संवेष्टयित्वा MBh. 3,12889. संवेष्टयन्ननीकानि शरवर्षेण 7,1239. 8,3735. तमोमहद्दंखचराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघट Bhâg. P. 10,14,11. — 2) *úmlegen:* उष्णीषम् Kâtj. Çr. 15, 5,13. — 3) *zusammenrollen:* संवेष्टितं कटम् Gobh. 2,1,20. — 4) *zusammenschrumpfen machen:* त्वं क्रोध कोपात्पृथिवीमपीमां संवेष्टयेः MBh. 3, 10264. य इमां पृथिवीं कृत्स्नां चर्मवत्समवेष्टयत् (so ed. Bomb.) 7,368. 12, 932. दिवं देवेन्द्र पृथिवीं च सर्वां संवेष्टयेस्त्वं स्वबलेनेव शक्र 14,246.

— प्रतिसम् *zusammenschrumpfen:* प्रतिसंवेष्टते भूमिरग्नौ चर्माहितं यथा Spr. (II) 3101.

वेष्ट (von वेष्ट्) m. gaṇa उञ्छादि (करणे) zu P. 6,1,160. 1) *Schlinge, Binde* Kauç. 48. 75. कर्ण° *eine durch einen Elephantenrüssel gebildete Schlinge* MBh. 7,1154. = वेष्टन Çabdam. im ÇKDr. — 2) *Zahnhöhle* Suçr. 1,304,1. 6. दन्त° (s. auch bes.) 2,126,8. — 3) *Terpentin* Ratnam. 41. Râǵan. im ÇKDr. *Gummi; Harz* überh. ÇKDr. nach dem Vaidjaka. — Vgl. कर्ण°, केश°, दन्त°, पत्त्र°, लक्ष्मी°, लता°, शाल्मली°, शिरो°, श्री°.

वेष्टक (wie eben) 1) *Hülle* in अङ्गुलि° Bez. *eines best. Schmuckes der Finger*, etwa *Handschuh* MBh. 7,5688; vgl. अङ्गुलिवेष्टन unter वेष्टन. — 2) n. *Kopfbinde, Turban* Çabdar. im ÇKDr. — 3) m. = परिग्रह 20) *doppelte Aufführung eines Wortes, vor und nach* इति (gleichsam *eine Einfassung von* इति) Comm. zu RV. Prât. 3,14. zu VS. Prât. 4,91.177. 182. 187. — 4) m. *Benincasa cerifera Savi.* Hâr. 97. — 5) m. n. *Terpentin* Râǵan. im ÇKDr. n. *Gummi, Harz* überh. Çabdam. im ÇKDr. — 6) = प्राचीर, वृति ÇKDr. und Wilson nach H. 982, wo aber आवेष्टक steht. — Vgl. कर्ण°, दन्त°, वेष्टन°, शाल्मली°.

वेष्टन (wie eben) n. 1) *das Umwinden, Umschlingen, Umfassen:* यूप° Kâtj. Çr. 14,1,20. 5,33. Çâṅkh. Gṛhj. 3,1. Schol. zu Kâtj. Çr. 2,7,2. भोगिवेष्टनमार्गेषु चन्दनानाम् Ragh. 4,48. Râǵa-Tar. 5,343. कठिनतरदामवेष्टनलेखाः Vâsavad. 3. वेष्टनं कर् *umwinden, einen Verband machen* Kathâs. 13,155. *das Einschliessen, Umzingeln:* कोट्टाट्टालक° Râǵa-Tar. 8,2644. कृत° *eingeschlossen, umzingelt* 1434. — 2) *Spanne:* द्वे वितस्ती तथा हस्तो ब्राह्मतीर्थादिवेष्टनम् Mârk. P. 49,39. — 3) *Schlinge, Binde:* दर्भ° Pańkat. 147,2. मुख° Sâj. zu Çat. Br. 3,8,1,15. अङ्गुलि° (vgl. अङ्गुलिवेष्ट unter वेष्ट) Bez. *eines best. Schmuckes der Finger* MBh. 1,5158. — 4) *Kopfbinde, Turban* Med. n. 135. MBh. 11,801. 12,2299. Ragh. 1,42. 8,12. Khandom. 132. Kathâs. 61,184. *Diadem* Trik. 3,3,260. H. an. 3,421. — 5) *Zaun, Hecke;* = वृति Med. गति Trik. wohl nur fehlerhaft für वृति. कनककदली° adj. Megh. 75. — 6) *das äussere Ohr* H. 574. H. an. Med. — 7) *eine Art Waffe* (शस्त्रभेद) H. an. — 8) *Pongamia glabra Vent.* H. an. — 9) *Bdellion* Çabdak. im ÇKDr. — 10) = वेशकार (d. i. वेषकार) Trik. — Vgl. इन्तु°, 2. उद्वेष्टन, कर्ण°, न°, मूर्ध°, लता°, सूत्र°.

वेष्टनक (von वेष्टन) m. *quidam coeundi modus:* ऊर्ध्वगं पादमेकं च भुजान्तैर्वेष्टयेद्यदि (eine Silbe zu viel) । कान्तकान्ताश्रितां नारीं बन्धो वेष्टनकः स्मृतः ॥ Ratim. im ÇKDr.

वेष्टनवेष्टक m. desgl.: ऊर्ध्वं पादद्वयं नार्या भुजाभ्यां वेष्टयेद्यदि । कराभ्यां कण्ठमालिङ्ग्य बन्धो वेष्टनवेष्टकः ॥ Ratim. im ÇKDr.

वेष्टनिक s. पाद°.

वेष्टपाल m. N. pr. eines Mannes Târan. 130.

वेष्टवंश m. *Bambusa spinosa Roxb.* Çabdak. im ÇKDr.

वेष्टव्य partic. fut. pass. von 1. विश् P. 8,2,36, Schol.

वेष्टसार m. *Terpentin* Râǵan. im ÇKDr.

वेष्टितक (von वेष्टित, partic. von वेष्ट्) s. लता°.

वेष्प Uṇâdis. 3,23. m. *Wasser* Uǵǵval.

वेष्य = वेषेण संपादी P. 5,1,100. 1) perisp. m. etwa *Kopfbinde* VS. 1,30. — 2) (von 1. विष्) adj. *was vollbracht —, zu Stande gebracht wird:* हस्त° *Handarbeit* Pańkav. Br. 6,6,13. — 3) adj. (von 1. वेष) *costumirt, masquirt:* नट P. 5,1,100, Schol.

वेस्, वेसति Naigh. 2,6 (कान्तिकर्मन्). Dhâtup. 17,70 (गतौ).

वेसन n. *eine Art Mehl:* द्वालयश्चणकानां तु निस्तुषा यत्नपेषिताः । तच्चूर्णं वेसनं प्रोक्तं पाकशास्त्रविशारदैः ॥ Bhâvapr. im ÇKDr.

वेसर 1) m. *Maulthier* Trik. 2,8,44. H. 1253. Halâj. 2,295. Bala beim Schol. zu Naish. 10,8. Varâh. Bṛh. S. 16,20. 86,66. Bṛh. 8,15. Çiç. 12, 19. — 2) n. zur Erklärung von वासर Nir. 4,7.11. — Vgl. द्विवेशरा und वेगसर.

वेसवार m. *eine als Zuspeise gebrauchte teigartige Masse aus zerriebenen Stoffen, Mehl oder Fleisch, mit Gewürzen bereitet; a condiment consisting of splitpease, coriander seed, turmeric, peppers etc. fried together* Molesw.; nach Suçr. 1,231,10 *fein zerriebenes Fleisch mit Ingwer, Pfeffer und Zucker gemischt und in Butter eingekocht.* Zahlreiche Recepte findet man in Nigh. Pr. s. v. — AK. 2,9,35. H. 417. Halâj. 2,166. MBh. 13,2771 nach der Lesart der ed. Bomb. (nach der ersten Hälfte eingeschoben: वेसवारविकारांश्च पानकानि लघूनि च). Suçr. 1,234,20. सपिशित 21. विचित्रमत्स्यपिशित° 2,38,21. सर्पिर्मेदो° 429,10. 19,10. 42,4. 96,19. 182,13. 321,16. 389,1. 13. Vâgbh. 6,41.

वेह्, वेहति (प्रयत्ने) Dhâtup. 16,42; vgl. 2. वाह्. = वेहाय् Vop. 21,8.

वेहत् Uṇâdis. 2,85. *eine Kuh, welche zu verwerfen pflegt*, AK. 2,9, 70. H. 1266 (*eine Kuh, die nach dem Stier verlangt*). Halâj. 2,114 (*eine belegte Kuh*). VS. 18,27. 24,1. 28,33. AV. 3,23,1. 12,4,37. fg. Ait. Br. 1,15. Çat. Br. 12,4,4,6. TS. 2,1,5,3. am Ende eines comp. nach einer ज्ञाति P. 2,1,65. गो° Schol. — Vgl. उत्त°.

वेहाय्, वेहायते denom. von वेहत् (अभूततद्भावे) gaṇa भृशादि zu P. 3, 1,12. Vop. 21,8.

वेहार m. N. pr. eines Landes (Behar) Matsjasûkta 50 im ÇKDr. — Vgl. विहार 8).

वेह्ल्, वेह्लति (चलने) Dhâtup. 15,33, v. l.

वै postpositive Partikel (gaṇa चादि zu P. 1,4,57), die das vorange-

hende Wort hervorhebt (अवधारणे AK. 3,5,15. हेतौ H. an. 7,15. पादपूरणे ebend. und AK. 3,5,5. संबोधने und अनुनये ÇKDr. angeblich nach Med.). Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8,1,64. kommt in den Saṁhitâ selten, in den Brâhmaṇa und wo deren Stil nachgeahmt wird, so wie im Epos über die Maassen häufig vor; in den Sûtra meist nur in der Zusammenstellung यद्यु वै. स वा एष: Ait. Br. 2,9.14. स वै M. 1,76. 2,160. 10,18. MBh. 3,2642. 2731. 2908. 2956. 5,5423. R. Gorr. 1,79,44. Bhâg. P. 1,2,6. 13,24. तद्वै M. 1,73. 3,170. 238. Bhâg. P. 3,9,4. ते वै M. 9,49. ते वा ऋषयो ऽब्रुवन् Ait. Br. 2,19. तं वै Kâtj. Çr. 7,8,4. MBh. 3,2921. तस्य वै 2099. तस्माद्वै Çat. Br. 1,1,1,1. ततो वै MBh. 5,7243. तत्र वै R. 1,9,31. Spr. 5150. अस्य वै MBh. 3,2285. धनेनानेन वै 3042. केयं वै 1,5949. एष वै M. 3,147. 5,74. MBh. 3,3034. यो वै Ait. Br. 2,24. Spr. 1392. AK. 2,9,66. यद्वै किं च Ait. Br. 6,10. यद्वै R. 1,56,24. Bhâg. P. 4,1,30. यं वै 3,16,20. ये च वै R. 1,55,23. यत्र वै 9,11. R. Gorr. 1,51,4. 63,2. के वै भवन्त: MBh. 3,2136. कदा वै 2896. त्वं वै 2139. वयं वै 16880. R. 1,58,4. मम वा इदम् Ait. Br. 5,14. स्वयं वै MBh. 1,6186. सर्वं वै M. 1,100. कर्ता सुदासे अह वा उ लोकम् ṚV. 7,20, 2. इहा उ 1,105,2. 8,51,12. यद्दा उ 23,13. न वै 10,146,5. M. 11,36. Spr. 4350. fgg. 4355. Bhâg. P. 1,18,42. किं न वै MBh. 5,7116. उ खलु वै Ait. Br. 5,31. ह वै 30. 3,2. 18. 6,1. Kauç. 94. उ ह वै Bhâg. P. 5,2,19. ह स्म वै Ait. Br. 5,30. 6,14. एव वै 2,14. यद्यु वै 1,6. Gobh. 1,6,19. 8, 3. 4,1,13. Âçv. Gṛhj. 1,10,11. 12,2. इति, इत्यु वै TBr. 1,5,9,4. अपि वै Spr. 2201. तु वै M. 2,10. 22. तै (d. i. तु वै) gaṇa चादि zu P. 1,4,57. Vârtt. 1 zu P. 6,1,94. TS. 2,6,6,3. 3,2,9,2. Çat. Br. 9,4,3,12. 10,6, 1,5. 9. °वै s. bes. प्रातर्वै Ait. Br. 2,15. पूर्वाह्णे वै M. 8,87. अद्य वै MBh. 1,5980. 3,2628. भूयो वै Kâtj. Çr. 7,8,7. त्रिर्वै M. 11,77. दुःखं वै स निवत्स्यति MBh. 3,2623. यथासुखं वै जीव त्वम् 3052. सुदेवो नाम वै द्विज: 2660. 2744. अग्निर्वै देवानां होता Ait. Br. 3,14. देवा वै यज्ञमतन्वत 2,11. अज्ञो वै भवति बाल: M. 2,153. आपो वै नरसूनव: 1,10. 2,231. 11,93. अमेध्यो वै पुरुष:, मेध्या वा आप:, पवित्रं वा आप: Çat. Br. 1,1,1,1. आ वै भवति निन्दक: M. 2,201. वाक्क्षत्रं वै ब्राह्मणस्य 11,33. सान्त्रेणो वै भवेद्दम: 8,383. वेत्यग्रुर्ज्ञनिवान्वा अति स्पृध: समर्यता मनसा सूर्य: कवि: ṚV. 5,44,7. युवा वै ज्ञवसंपन्नो बुद्धिशाली न शक्यते (हन्तुम्) MBh. 1,5570. आर्ता वै परिगम्य ह 3,2507. पञ्च वै तेन मे दत्ता वरा: 16897. विंशतिर्वै दिनानि 5,7247. अहर्वै देवा अश्रयन्त रात्रिमसुरा: Ait. Br. 4,5. अमरान्वै निबोधास्मान् MBh. 3,2137. गोर्वै प्रतिधुक् Kâtj. Çr. 7,8,8. ऋतुपर्णस्य वै काममात्मार्थे च करोम्यहम् MBh. 3,2778. 2900. 1,2987. Comm. in der Einl. zu Kaurap. (गृह्णामि) शस्त्रं वै MBh. 5,7026. केनोपायेन वै R. 1, 8,17. मंदेषु वै ṚV. 7,20,4. वदतो वै वसिष्ठस्य R. 1,55,25. दक्षिणां वै दिशं प्रति 4,41,71. अवमन्येत वै भूक्षु: M. 4,135. तथा नश्यति वै क्षिप्रम् 9,43. Spr. 2126. उच्छोषयति वै प्राणान् R. 2,64,65. नरो भवति वै तत: Mârk. P. 15,33. घोषयामास वै पुरे MBh. 3,2304. R. 1,6,26. 62,25. पतितं वै मया पूर्वम् MBh. 1,6128. कदा नु खलु दुःखस्य पारं यास्यति वै प्रभा 3,2675. तस्माद्योत्स्यामि वै त्वया 5,7075. द्वैरथेनास्तु वै शान्ति: 3, 2037. वस वै मयि 2640. 2732. ज्ञवमास्थाय वै परम् 2793. R. 1,9,64. nach einem voc. MBh. 1,986 (zu schreiben आत्मनेऽरम वै कृतम्). Sehr beliebt ist वै am Ende eines Pâda M. 2,3. 8. 19. 3,268. fg. 12,90. MBh. 1,6155. 6198. 7699. 3,2167. 2249. fg. 2257. 2483. 2609. 2628. 2770. 2848. 2897. 2990. 16811. 5,5946. 5965. 5972. 5981. 7294. न स्त्रीभि: किंचिदन्यद्वै पापीयस्तरमस्ति वै 13,2213. R. 1,2,15. 8,14. 9,30. 33. 63. 57,19. R. Gorr. 2,12,14. 3,64,17. Spr. (II) 670. 2767. Brahma-P. in LA. (III) 56,4. Fehlerhaft für चेद् wenn Spr. (II) 1451.

वैंशतिकं adj. von विंशतिक P. 5,1,27.

वैकंसेयं m. metron. von विकंसा v. l. im gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैकक्ष (von 2. वि + कक्ष) n. *Obergewand, Ueberwurf* H. 672. Halâj. 2,255.

वैकक्षक (wie eben) n. *ein um die Schulter hängendes Blumengewinde* AK. 2,6,3,37. H. 652. Halâj. 2,398.

वैकङ्क (von 2. वि + कङ्क) m. N. pr. eines Berges VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27.

वैकङ्कतं und वैं° 1) adj. (f. ई) *vom Baume* विकङ्कत (*Flacourtia sapida* Roxb.) *kommend, an ihm befindlich, aus ihm verfertigt* gaṇa पलाशादि zu P. 4,3,141. इध्म AV. 5,8,1. TS. 3,5,7,3. 5,1,9,6. मन्थिपात्र 6,4,10, 6. संभार TBr. 1,1,3,12. Çat. Br. 1,3,3,20. स्रुव 5,2,4,15. 14,1,2,5. शकल 3,26. पात्राणि Kâtj. Çr. 1,3,31. 2,8,1. Varâh. Bṛh. S. 85,3. — 2) m. = विकङ्कत *Flacourtia sapida* Roxb. Çabdar. im ÇKDr.

वैकटिक (von विकट) m. *Juwelier* H. 910. Halâj. 2,433.

वैकट्य n. nom. abstr. von विकट adj. Sâh. D. 249,18.

वैकथिकं adj. = विकथायां साधु: gaṇa कथादि zu P. 4,4,102.

वैकयत gaṇa भौरिक्यादि zu P. 4,2,54. वैकयतविध = वैकयतानां विषयो देश: ebend.

वैकर adj. von विकर gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86.

वैकरञ्ज (von 2. वि + करञ्ज) m. Bez. *einer Gattung von Schlangen*, von welcher drei Arten gezählt werden, ungiftig Suçr. 2,263,4. 266,1. 6. वैकरञ्जोद्भव 263,5.

वैकर्णं (von विकर्ण) m. 1) du. N. pr. zweier Volksstämme: यो वैकर्णयोर्जनान्राजा न्यस्त: ṚV. 7,18,11; vgl. विकर्ण 2) c). — 2) m. patron., wenn ein वात्स्य gemeint ist, P. 4,1,117. — 3) हिरण्यपर्णो वैकर्ण: स त्वा मन्मनसां करोतु Pâr. Gṛhj. 2,4. nach dem Comm. Bez. *des Windes*; vgl. Ind. St. 5,309.

वैकर्णायन (so ist wohl zu lesen) m. patron. von विकर्ण Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,12.

वैंकर्णि m. desgl. Schol. zu P. 4,1,117. 124. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. Saṁsk. K. 184,a,1.

वैकर्णेयं m. patron. von विकर्ण, wenn ein Kâçjapa gemeint ist, P. 4,1,124.

वैकर्त (von विकर्त) n. *ein essbarer, nicht näher anzugebender Theil des Opferthiers* Ait. Br. 7,1.

वैकर्तन (von विकर्तन) adj. 1) Bein. Karṇa's MBh. 1,5655. 7094. 4, 990. 7,5419. Ursprung des Namens 1,2782. 4411. — 2) *zur Sonne in Beziehung stehend, der Sonne eigen:* °शक्ति Râghavapâṇḍ. 6,1. °कुल *das Sonnengeschlecht* Uttarar. 95,4 (विकर्तन° die neuere Ausg.). — 3) m. patron. Sugrîva's, *eines Sohnes des Sonnengottes*, Râghavapâṇḍ. 6,1.

वैकर्यं adj. von विकर gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80.

वैकल्प M. 8,95. MBh. 12,4361 und Râǵa-Tar. 3,277 fehlerhaft für वैकल्य.

वैकल्पिक (von विकल्प) adj. (f. ई) *beliebig, freigestellt, facultativ* Âçv.

Çr. 2,1,27. 7,1,17. Schol. zu VS. Prât. 1,75. zu Taitt. Prât. 22,7. zu P. 2,1,4. 4,3,31. 7,1,21. Kull. zu M. 2,6. 3,261. 11,92. Davon nom. abstr. °त्व n. Siddh. K. zu P. 4,4,110.

वैकल्य (von विकल) n. 1) *Gebrechlichkeit, Unvollkommenheit, Schwäche, Mangelhaftigkeit* MBh. 12,4361 (वैकल्प ed. Calc.). Suçr. 1,102,12. 353,7. 15. 2,37,18. 395,15. Hariv. 9588. Spr. 2898. शरीर° Hit. 121, 14. करणानाम् *der Organe* Suçr. 1,330,3. करण° Sâṅkhjak. 47. Gauḍap. zu 18. Varâh. Bṛh. S. 53,68. Schol. zu P. 6,2,6 (wohl करणवैकल्य zu lesen). चक्षुर्वैकल्य so v. a. *Blindheit* Kathâs. 74,310. पाद° 64,143. Varâh. Bṛh. S. 79,28. Râǵa-Tar. 8,689. 2169. एकचरण° Pańkat. ed. orn. 4,12. प्राण° Kathâs. 63,136. सर्वत्रापि वस्तुनि किंचिद्वैकल्यम् Mallin. zu Kumâras. 3,28. त्यज्यमानमकामानुर्विक्रमैः श्वापदैरपि । गिरिर्वैकल्यमायाति Hariv. 5534. एकाङ्ग° Weber, Ǵyot. 59. 111. अर्थ° (°वैकल्प fälschlich Lois.) M. 8,95. वृत्ति° 10,85. शक्ति° Spr. 2927. व्रत° Pańkat. 166,16. बुद्धि° 254,9. Kull. zu M. 8,67. उपलब्धि° ders. zu 66. आहार° *Mangel an Nahrung* Pańkat. 198,18. संकोच° *das Fehlen, Nichtdasein* Sarvadarçanas. 94,7. — 2) *Verstimmung, Kleinmuth, Verzagtheit* MBh. 7, 5412 (वैक्लव्य ed. Bomb.). Mârk. P. 70,23. fgg. 130,22. Râǵa-Tar. 3,277 (वैकल्प beide Ausgg.). अत्यन्त° Kull. zu M. 11,70. — 3) *Verwirrung:* चित्त° MBh. 10,112 (°वैक्लव्य ed. Bomb.).

वैकायन m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184,*b*,8.

वैकारिक (von विकार) 1) adj. (f. ई) *auf Umwandelung beruhend, eine Umwandelung erfahrend;* neben तैजस (ऐन्द्रिय) und तामस so v. a. सात्त्विक Hall in der Einl. zu Sâṅkhjapr. S. 66. Bhâg. P. 5,17,22. 10,8, 38. अहंकार MBh. 14,1098. 1101. Suçr. 1,310,8. 9. Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,24. Tattvas. 10. Bhâg. P. 2,5,24. 30. 3,5,29. fg. 26,24. Mârk. P. 45,38. 48. इन्द्रियाणि Tattvas. 15. 46. कर्मात्मन् 33. तेजस Bhâg. P. 7, 12,29. सर्ग 3,10,16. 25. Mârk. P. 45,48. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,14. देवाः (ऋषयः) MBh. 12,13626. 14,1054. Bhâg. P. 2,5,30. 3,5,30. Mârk. P. 45, 49. Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,24 (wohl अहंकाराद्देवा वै° zu lesen). पुरुष MBh. 12,13627. योनि 14,1066. निद्रा Suçr. 1,329,17. माया Bhâg. P. 10, 73,11. °बन्ध Tattvas. 46. बन्ध Wilson, Sâṅkhjak. S. 145. Leib (bei den Ǵaina) Colebr. Misc. Ess. II,194; vgl. Weber, Bhagav. 2,171. fg. — 2) n. = विकार *Veränderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung* R. 6,99,55.

वैकारिमत n. gaṇa राजदन्तादि (Composita mit Verstellung der Glieder) zu P. 2,2,31.

वैकार्य (von 1. विकार) n. *Umgestaltung, Umwandelung, Veränderung* MBh. 5,4891. अ° Ćâṇḍ. 37.

वैकालिक (von विकाल) adj. *abendlich;* °कम् adv. *in der Abendstunde* Vet. in LA. (III) 19,22.

वैकासेय m. patron. von विकास gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैकि m. patron. v. l. (für वैङ्कि) im gaṇa तैल्वल्यादि zu P. 2,4,61. pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58,1.

वैकिर (von विकिर) adj. vielleicht *aus einem Brunnen kommend:* Wasser Suçr. 1,173,17.

वैकुण्ड्यासीय adj. von विकुण्ड्यास gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैकुण्ठ (von विकुण्ठ) 1) adj. und m. Beiw. und Bein. Indra's H. an. 3,178. Med. th. 16. Çat. Br. 14,5,1,6 (= अप्रसह्य Comm.). Kaush. Up. 4,2. 7. — 2) m. ein N. Vishṇu's (Kṛshṇa's) AK. 1,1,1,13. H. 215. H. an. Med. Halâj. 1,22. MBh. 1,2505. 3,8755. 6,301. 13,6993. Hariv. 12563. Gît. 6 in der Unterschr. Prab. 81,17. Bhâg. P. 1,15,46. 8,44. 2,10,4. 3,14,47. 15,13. 14. 4,12,42. 13,1. 20,1. 8,5,4. 7,31. Weber, Kṛshnaǵ. 249. 294. Pańkar. 1,5,30. fg. 2,2,85. 4,3,36 (S. 249). 8,38. Padma-P. 2,2. *eine Statue* Vishṇu's Râǵa-Tar. 6,305. 8,2435. — 3) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern H. ç. 5. Bhâg. P. 8,5,4. Mârk. P. 75,71 (entweder pl. zu lesen oder गण zu ergänzen). Verz. d. Oxf. H. 56,*b*,34. — 4) m. n. Vishṇu's Himmel Spr. (II) 1783. Bhâg. P. 3, 16,1 (विकुण्ठ ed. Bomb.). 8,5,5. 9,4,60. Wilson, Sel. Works I,16. 123. 145. 149. 156. 166. Vop. 26,129. Pańkar. 2,3,62. 4,8,39. Weber, Kṛshnaǵ. 222. 250. °गति Pańkat. 48,3. Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,48. 62,*a*,41. 250, *b*,32. स्वर्ग Pańkat. ed. orn. 56,21. °स्वर्ग 53,14. °लोक Verz. d. Oxf. H. 8,*a*,30. °भुवन 248,*a*,22. fg. — 5) m. Bez. *des 24ten Tages im Monat* Brahman's; s. u. कल्प 2) *d*). — 6) m. *ein best. Tact;* s. u. प्रतिताल 1). — 7) m. N. pr. des Verfassers eines Mantra im Kâth. Ind. St. 3,458. eines Lehrers Hall 7. 132. °पुरी 205. Verz. d. Oxf. H. 227,*a*, No. 557. Wilson, Sel. Works I,231. °शिष्याचार्य Hall 135. — 8) f. आ *die* Çakti Vaikuṇṭha's (Vishṇu's) Pańkar. 3,2,8. — Vgl. नित्य°.

वैकुण्ठत्व n. nom. abstr. von वैकुण्ठ 2) Hariv. 2379.

वैकुण्ठीय adj. *zum Himmel* Vaikuṇṭha *in Beziehung stehend:* गति Pańkat. 48,3, v. l. in der ed. Bomb.

वैकृत (von विकृति) 1) adj. = विकृत P. 5,4,37, Vârtt. 5. *a*) *durch Umwandlung entstanden, abgeleitet, secundär* (Gegensatz प्राकृत): Laute ṚV. Prât. 2,13. 6,4. Comm. zu Taitt. Prât. 5,22. 6,14. 7,2. 13,13. 14,4. 5. सर्ग VP. 37. Bhâg. P. 2,10,46. 3,10,13. 17. 25. Mârk. P. 47,35. fg. Verz. d. Oxf. H. 82,*b*,18. fg. यज्ञाः Bhâg. P. 10,84,51. भावाः Sâṅkhjak. 43 (वैकृतिक alle Autt. gegen das Metrum). — *b*) *auf Umwandlung beruhend, eine Umwandlung erfahrend* (= वैकारिक und सात्त्विक): अहंकार Sâṅkhjak. 25. बन्ध Wilson, Sâṅkhjak. S. 145. subst. so v. a. अहंकार MBh. 13,1090. — *c*) *entstellt, hässlich, widerwärtig;* = बीभत्स Bhar. zu AK. 1,1,7,19 nach ÇKDr. वेष MBh. 7, 9512. वेषग्रहण° 2,840. — *d*) *nicht natürlich, künstlich:* कुलानि *nicht durch Zeugung, sondern durch Adoption u. s. w. fortgeführte Geschlechter* Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,30. — 2) m. Bez. eines best. Krankheitsdämons Hariv. 9560. — 3) n. = विकृति. *a*) *Umwandlung, Veränderung, Entstellung, Verunstaltung, ein veränderter —, abnormer Zustand* P. 6,1,139. MBh. 3,10774. प्रायेण गतसत्त्वानां पुरुषाणां गतायुषाम् । दृश्यमानेषु वक्त्रेषु परं भवति वैकृतम् ॥ R. ed. Bomb. 6,48,32 (23, 36 Gorr.). अङ्ग° R. Schl. 1,24,12. Suçr. 1,8,16. 43,9. 103,7. नेत्रादीनाम् 255,20. अश्मरि° 263,12. वैकृतापह 63,20. v. l. für विकृति 319, 16. Râǵa-Tar. 6,294. गर्भस्य Jâǵń. 3,163. स्वर° Verz. d. Oxf. H. 307, *b*,30. अधिकोद्भूतविद्रपानन° adj. Kathâs. 12,73. वागादि° Sâh. D. 75,20. वर्ण° *Ausartung der Kaste* Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,10. 14. — *b*) *eine unnatürliche Erscheinung, portentum:* तत्प्रतीपपवनादि वैकृतं प्रेक्ष्य Ragh. 11,62. Varâh. Bṛh. S. 21,26. 32,24. fg. दिव्यं प्रवृत्तवैकृतम् 46,4. 10. 12. fg. 23. fg. 32. Râǵa-Tar. 3,505. — *c*) *entstelltes Wesen* so v. a. *Ver-*

änderung im normalen Zustande des Gemüths, Alteration, Aufregung MBH. 13,2322. R. 1,9,45 (44 GORR.). ग्रामयार्तिरिपुत्रासतुद्दो Spr. (II) 974. भय° RÂGA-TAR. 8,1294. 1360 (am Ende eines adj. comp.). — d) *Wechsel der Gesinnung, Feindseligkeit, feindseliges Benehmen:* भवत: (so ist wohl zu lesen) प्रति MBH. 2,854. fg. HARIV. 4274. शान्त° adj. KATHÂS. 68,20. 70,73. कृतास्मै बकु वैकृतम् 79,2. ग्रवैकृता adj. 123,24. RÂGA-TAR. 4,707. 6,215. 8,1644. 2497. — Vgl. ग्रङ्ग°.

वैकृतवत् (von वैकृत n.) adj. *entstellt, krankhaft erregt:* द्वेषादि° Spr. (II) 3029.

वैकृति f. in वृद्धि° MBH. 10,116 fehlerhaft für °वैकृत n., wie die ed. Bomb. liest.

वैकृतिक (von विकृति) adj. *der Veränderung unterworfen,* = नैमित्तिक WILSON, SÂṄKHJAK. S. 141. fg. im Text 43 alle Autt. fehlerhaft für वैकृत (so bei LASSEN corrigirt), wie das Metrum zeigt.

वैकृत्य (von विकृत) n. 1) *Umwandelung, Veränderung:* मनस: R. 5, 14,59. *zum Schlechtern, Verschlimmerung, Ausartung:* चातुर्वर्ण्यस्य HARIV. 11311. — 2) *eine unnatürliche Erscheinung, portentum* MBH. 16, 232. VARÂH. BṚH. S. 46,30. 88. — 3) *eine feindselige Gesinnung* R. 5, 85,22. — 4) = बीभत्सरस *Widerlichkeit* ÇABDAR. im ÇKDR.

वैक्रान्त (von विक्रान्त) n. *ein dem Diamant ähnlicher Edelstein* RÂGAN. im ÇKDR.

वैक्रान्तक (von वैक्रान्त) n. *ein best. Mineral* Verz. d. Oxf. H. 321,*a*, No. 761.

वैक्रिय (von विक्रिया) adj. *auf Umwandlung beruhend, einer Umwandlung unterworfen:* देह WILSON, Sel. Works I, 309. ÇATR. 2, 599. °करण Ind. St. 10,312, N. 2.

वैक्लव (von विक्लव) n. *Befangenheit, Verwirrung, Kleinmuth* BHÂG. P. 1,11,33. MÂRK. P. 61,34.

वैक्लव्य (wie eben) n. 1) dass.: शोकवैक्लव्यकारक MBH. 1,590. वैक्लव्यं परमं गत्वा 3,2944. 7,5412 (nach der Lesart der ed. Bomb., वैकल्य ed. Calc.). HARIV. 11036 (S. 791). R. 3,27,5. 66,13. 4,6,6. 15,6. 5, 9,39. 6,21,33. 69,19. MṚKKH. 54,24. Spr. 4626. ÇÂK. 81. 111,3 (am Ende eines comp. f. ग्रा). MÂLATIM. 142,7. KATHÂS. 101,271. BHÂG. P. 1,6,19. 13,33. 42. 3,15,25. 4,26,18. 9,19,26. 10,17,25. 66,37. MÂRK. P. 122, 15. मनो° MBH. 1,591. चित्त° 10,112 (nach der Lesart der ed. Bomb.). SÂH. D. 76,2. इष्टनाशादिभिश्चेतोवैक्लव्यम् 75,21. ग्र° KATHÂS. 18,309. सवैक्लव्यम् adv. MÂLATIM. 164,7. PRAB. 90,1. Verz. d. Oxf. H. 142,*a*, No. 290, Z. 6. — 2) *Gebrechlichkeit, Schwäche:* जरावैक्लव्ययुक्तेन गात्रेण BHARATA beim Schol. zu ÇÂK. 60,11. wohl fehlerhaft für वैकल्य.

वैक्लव्यता f. = वैक्लव्य 1): सार्क त्वद्दर्शनाद्राम कामवैक्लव्यतां गता R. 3,23,40.

वैर्त adj. = विता शीलमस्य gaṇa छत्रादि zu P. 4,4,62.

वैखरी f. Bez. *eines best. Lautes* WEBER, RÂMAT. UP. 335. fg. Comm. zu BHÂG. P. 10,85,9. MAHÂBHÂSHJA S. 26,1 v. u.

वैखान als Bein. Vishṇu's MBH. 13,7055.

वैखानस (von विखानस) 1) m. pl. Bez. *einer Art von* Ṛshi PAṄKAV. BR. 14,4,7. TAITT. ÂR. 1,23,3. MBH. 1,7683. 13,4126. 4323. HARIV. 4333. R. 1,51,27. 3,10,2. 39,30. 4,40,60. 44,40. KARAKA, Einl. BHÂG. P. 3,12, 43. Verz. d. Oxf. H. 310,*a*,30. शतं वैखानसा: Liedverfasser von ṚV. 9, 66. ग्रङ्गिरस: Ind. St. 3,237,*a*. °मते स्थित: M. 6,21. वैखानसाश्रम MBH. 5,3831. °श्रौतसूत्र Ind. St. 9,175. °सूत्र Verz. d. Oxf. H. 270,*b*,46. वैखानसाचार्य Ind. St. 1,82. Bez. *best. Sterne am Himmel* VARÂH. BṚH. S. 48,67. — 2) m. *ein Brahmane im 3ten Lebensstadium, der das Haus verlassen hat und in den Wald gezogen ist; Einsiedler* TRIK. 2,7,2. H. 809. HALÂJ. 2,239. VAIG. beim Schol. zu BHAṬṬ. 3,46. = ग्रकृष्टपच्यवृत्ति R. ed. GORR. Bd. III, S. 467. — RAGH. 14,28. ÇÂK. 6,17. UTTARAR. 11,19 (16,5). 72,9 (93,5). PRAB. 43,6. 44,7. BHAṬṬ. 3,46. °सुसंमत (तपस्) BHÂG. P. 4,23,4. — 3) m. patron. des Vamra ṚV. ANUKR. des Puruhanman PAṄKAV. BR. 14,9,29. — 4) m. pl. Bez. einer best. Vishṇu'itischen Secte WILSON, Sel. Works I, 15. fg. Verz. d. Oxf. H. 248,*a*,15. 31. वैखानसाभ्यागमा: Verz. d. B. H. No. 1025. — 5) N. pr. eines Autors (m.) oder Titel eines Werkes (n.) Verz. d. B. H. No. 941. Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,4. 5. — 6) adj. *zu den* Vaikhânasa *oder zu einem Einsiedler in Beziehung stehend, ihnen zukommend* u. s. w.: सरस् MBH. 13,7280 (वि मानसं ed. Bomb.). HARIV. 12832. R. 4,44,42. सामन् Ind. St. 3,237, *a*. TS. 7,1,4,3. PAṄKAV. BR. 14,4,6. LÂṬJ. 7,3,15. 9,13. मार्ग R. 2,52, 65. व्रत ÇÂK. 26. तन्त्र *das* Tantra *der* Vaikhânasa *genannten Secte* BHÂG. P. ed. BURN. I, XCV.

वैखानसि m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 58,3 v. u.

वैगलेय adj.: गण N. einer best. *Sippe* böser Geister HARIV. 12867.

वैगुण्य (von विगुण) n. *fehlerhafte oder mangelhafte Beschaffenheit:* स्पर्श° SUÇR. 1,49,11. 91,6. ग्रनिल° 2,47,21. शिरस: 91,18. KÂTJ. ÇR. 1,6,14 (ग्र°). Comm. 133,14 (ग्र°). दर्शपूर्णमासयो: ÂÇV. ÇR. 12,4,14. स्थानकरण° ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 33. वर्णास्वरवैगुण्यरहित (वेद) KULL. zu M. 2,144. जन्मन: *Mangelhaftigkeit der Geburt* so v. a. *niedrige Herkunft* M. 10,68. *Mangelhaftigkeit, Fehlerhaftigkeit, Schlechtigkeit* von Personen MBH. 1,4283. 9,3435. 12,10655. R. 3,45,9. Spr. 1854. so v. a. *Ungeschicklichkeit:* प्राड्विवाकस्य M. 8,293.

वैग्रहि von विग्रह gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

वैग्रि von विग्र ebend.

वैग्रेय m. patron. von विग्र gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैघस (von विघस) m. N. pr. eines Jägers HARIV. 1206.

वैघसिक (wie eben) adj. *von Speiseüberresten lebend* MBH. 14,2852 nach der Lesart der ed. Bomb., वैघ्यसिक ed. Calc.

वैघात्य n. nom. abstr. von विघातिन् gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैङ्कि m. patron. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. pl. 66, Schol. — Vgl. वैकि.

वैङ्गि m. patron. (प्राच्यगोत्र); pl. वैङ्गीया: P. 4,2,113, Schol.

वैङ्ग्य N. pr. eines Gebietes LIA. II, 955.

वैचक्षण्य (von विचक्षण) n. *Erfahrenheit, das Bewandertsein, Geschicklichkeit* BHAR. NÂṬJAÇ. 19,130. धर्मार्थकाममोक्षेषु कलासु च Spr. (II) 3122. ग्रति° DAÇAK. 86,12.

वैचित्त्य (von 2. विचित्त) n. *Geistesverwirrung, Geistesabwesenheit* DHÂTUP. 26,89. SUÇR. 2,230,12. MÂLATIM. 36,9. 46,12. 66,16 (an den beiden letzten Stellen fehlerhaft वैचित्र्य). DAÇAR. 4,74. Hier und da fälschlich वैचित्य geschrieben.

वैचित्र (von विचित्र) 1) n. *Seltsamkeit, Absonderlichkeit, Wunderbar-*

keit: कर्मणां गते: Râǵa-Tar. 1,275. vielleicht nur fehlerhaft für वैचित्र्य. — 2) f. ई dass.: अहो सुन्दरनिर्माणवैचित्री काप्यसौ विधेः Kathâs. 59,7. वचनवैचित्रीयमाचार्यस्य Kull. zu M. 3,113. — Vgl. वैचित्र्य.

वैचित्रवीर्य (von विचित्रवीर्य) m. patron. Dhṛtarâshṭra's, Pâṇḍu's und Vidura's Kâṭh. 10,6 in Ind. St. 3,469. MBh. 1,500. 7382. 3,14744. 5,31. 6,4726 (वैचित्र्य° fälschlich ed. Calc.). 11,46. 15,46. Hariv. 3010. Bhâg. P. 4,23,38. 10,49,17.

वैचित्रवीर्यक (wie eben) adj. Vikitravîrja *gehörig* u. s. w.: क्षेत्र Hariv. 1826.

वैचित्रवीर्यिन् m. = वैचित्रवीर्य MBh. 9,2319.

वैचित्र्य (von विचित्र) n. 1) *Mannichfaltigkeit, Verschiedenartigkeit* Kap. 3,51. Nilak. 41. 114. Hit. Pr. 2. Spr. (II) 1375. Varâh. Bṛh. S. 80, 3. 88,15. Kathâs. 12,77. 94,136. Râǵa-Tar. 1,6. 8,2395. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 221. H. 70. Kusum. 4,21. 7,20. Sâh. D. 102,9. Bhâg. P. 5,26, 1. 6,1,46. — 2) *Seltsamkeit, Absonderlichkeit, Wunderbarkeit* Mâlatîm. 16,2. Sâh. D. 691. Kâç. zu P. 3,3,96. प्रभाव° Çatr. 3,1. भवस्वभाव° Râǵa-Tar. 8,1790.1792. — 3) fehlerhaft für वैचित्त्य Mâlatîm. 46,12. 66,16.

वैच्छन्दस adj. von विच्छन्दस् Lâṭj. 7,7,33. 9,6. 8,1,15.

वैच्युत (von विच्युत) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 53,*b*,19.

वैजघर्क adj. von विजघ gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80.

वैजन (von विजन), °देव N. pr. eines Fürsten, Verfassers der Prabodhakandrikâ, Verz. d. Oxf. H. 166,*b*, No. 370.

वैजनन (von विजनन) adj. *zur Niederkunft in Beziehung stehend;* in Verbindung mit मास् oder m. mit Ergänzung dieses Wortes *der Monat der Niederkunft, der letzte Monat in der Schwangerschaft* Râǵa-Tar. 1, 74. AK. 2,6,1,39. H. 541. Halâj. 2,344.

वैजन्य (von विजन) n. *Menschenleere, Einsamkeit* Râǵa-Tar. 8,1303.

वैजयत्त (von विजयत्त्, partic. praes. von 1. जि mit वि, oder von विजयत्त) Vop. 7,32. fg. 1) m. *a)* Indra's *Banner* H. 178. Med. t. 220. MBh. 2,872 (Indra's *Palast* nach Nilak.). 3,1721. — *b) Banner, Fahne* überh. AK. 2,8,2,67. H. an. 4,126. सवैजयत्ताश्च गजा: R. 2,89,20 (97,25 Gorr.). — *c)* Indra's *Palast* AK. 1,1,1,41. H. 178. H. an. Med. Lalit. ed. Calc. 67,12. 258,5. 260,6. Burn. Intr. 390. — *d)* pl. bei den Ǵaina Bez. einer Klasse von Göttern, einer Abtheilung der Anuttara, H. 94, Schol. — *e)* Bein. Skanda's H. ç. 62. H. an. गुह in Med. fehlerhaft für गुह. — *f)* N. pr. eines Berges Hariv. 8993. 9736. क्षीरोदस्य समुद्रस्य मध्ये स्फाटकसप्रभः MBh. 12,13721. — 2) f. ई *a) Banner, Fahne* H. 750. H. an. Med. Halâj. 2,303. MBh. 3,14531. 6,5224. 13,5276. Ragh. 6,8. Kathâs. 26,282. 81,35. Hit. 28,3. — *b) ein bes. Sieg verheissender Kranz* (माला, स्रज्) MBh. 1,2348. 7,1274. 9,2667. Bhâg. P. 3,17,21. 5,25,7. 8,8,15. 9,15,20. 10,21,5. 29,44. — *c)* Bez. zweier Pflanzen: *Sesbania aegyptiaca Pers.* H. an. Med. *Premna spinosa* H. an. Ausg. 42. Suçr. 1,157,16. 2,36,19. 77,21. — *d)* N. *der achten Nacht im* Karmamâsa Ind. St. 10,296. — *e)* Titel eines Wörterbuchs Verz. d. Oxf. H. 113,*b*,7. 8. 126,*a*,20. 164,*a*,5. Stenzler, de Lexicogr. sanscr. principiis S. 18. fgg. Schol. zu H. 623. 827. °कार 316. 604. °कारक 323. 584. — *f)* Titel eines Commentars zu Vishṇu's Dharmaçâstra Stenzler in der Einl. zu Jâǵn. S. VI. Ind. St. 1,467. — *g)* N. pr. einer Stadt oder eines Flusses AV. Pariç. in Ind. St. 93 (56). विज° wohl fehlerhaft. — 3) n. *a)* N. eines Thores in Ajodhjâ R. 2,71,30. — *b)* N. pr. einer Stadt R. Gorr. 2,8,12. 7,55,6. — Vgl. करिवैजयत्ती und प्रयोग°.

वैजयत्तिक (von वैजयत्ती) 1) m. *Fahnenträger* AK. 2,8,2,39. H. 764. — 2) f. आ *a) Banner, Fahne:* मकरकेतोर्गगहिजय° Mâlatîm. 13,19. — *b) eine Art Perlenschnur* Vikr. 12,17. fg. im Prâkrit. — *c) Sesbania aegyptiaca Pers.* AK. 2,4,2,46. *Premna spinosa* Râǵan. im ÇKDr. Ausg. 16.

वैजयि (von विजय) m. N. pr. des 3ten Kakravartin in Bhârata, = मघवन् H. 692.

वैजयिक (wie eben) adj. (f. ई) *Sieg verleihend, — verheissend* Varâh. Bṛh. S. 48,74. स्रज् Hariv. 13086. कर्मन् 13733. संग्रामतूर्य Pańkat. ed. orn. 57,14. वैजयिकीनां (वैजयिकानां im Comm. zu Bhâg. P. 10,45,36) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,20.

वैजयिन adj. = विजयिन् dass.: ततो ऽपश्यत्स्थितं द्वारि शुभं वैजयिनं (वै ज°?) गजम् MBh. 3,1752. विजयिनं Indr. 1,39. विजयिनमेव वैजयिनं स्वार्थे तद्धितः Nilak.

वैजर m. pl. N. einer Schule Müller, SL. 372, N. 14. वैजव Ind. St. 3,265.

वैजव s. u. वैजर und वैजवन.

वैजवन schlechte v. l. für पैजवन Spr. (II) 3109. वैजवन und वैजव Saṁsk. K. 185,*a*,9.

वैजात्य (von विजाति) n. *Ungleichartigkeit, Heterogeneität* Sarvadarçanas. 114,1. Kusum. 6,14. 7,7. 13. 16,3.

वैजान m. patron. des Vṛça Pańkav. Br. 13,3,12 nach Sâj. Ind. St. 10,32. nach Weber ist वै Partikel.

वैजापक und वैजापकर्क adjj. von विजापक gaṇa कच्छादि zu P. 4,2,133. fg.

वैजि (wohl वैजि) m. N. pr. eines Mannes Ind. St. 5,159.

वैज्ञानिक (von विज्ञान) adj. *kenntnissreich, erfahren* AK. 3,1,4. H. 343.

वैटप्य m. patron. von विटप gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वैटालिक, ये रूढमुपजीवत्ति कलौ वैटालिका नराः Verz. d. Oxf. H. 58, *b*,43. 59,*a*,1. गता वैटालिकाभवम् 58,*b*,38.

वैडव m. patron. von वीडु Pańkav. Br. 11,8,14.

वैडूर्य P. 4,3,84 (auf विदूर zurückgeführt) 1) n. (auch m.) *Beryll* (nicht *Lasurstein*) Trik. 2,9,29. H. 1063. Halâj. 2,20. Ind. St. 3,148. Adbh. Br. ebend. 1,40,8 und bei Weber, Omina 325. fg. MBh. 1,1380. 1429. 2,1893. मणिवैडूर्यलोचन (मार्जार) 12,4978. R. 2,91,29 (100,26 Gorr.). 72. °कृतिचक्र 3,59,21. 4,41,67. 44,89. 6,75,28. 112,53. 7, 13,5. Suçr. 1,228,5. 240,17. 2,166,12. °वर्णा विमला च दृष्टिः 319,7. Kumâras. 7,10. Megh. 74. Çic. 3,45. Varâh. Bṛh. S. 10,21. 28,3. 29,8. 30,20. 37,1. 43,33. 46. 50,22. 61,14. 64,3. 80,4. 84,2. Bhâg. P. 4,25, 15. 10,3,10. Mârk. P. 23,103. Hiouen-thsang 1,482. Vie de Hiouen-thsang 145. Wassiljew 161. °मणि Hâr. 27. MBh. 13,2076. R. 3,49,2. 54,15. 6,106,22. वैडूर्योपलक Suçr. 2,336,16. In Verbindung mit मणि m.: मणीनष्टौ च वैडूर्यान्क्षेमबद्धान् MBh. 4,1275. P. 4,3,84, Schol. नरवैडूर्य m. so v. a. *ein Juwel von Mensch* Bhâg. P. 10,55,31. Vgl. इन्द्रवैडूर्य. — 2) N. pr. der Gegend im südlichen Indien, wo *Berylle* vorzugsweise gefunden werden, Varâh. Bṛh. S. 14,14. °भू Râǵa-Tar. 4,300. N. pr. eines Berges: °पर्वत (मणिमय) MBh. 3,8343. 10306. Hariv. 9499.

12407. VP. 169. Bhâg. P. 5,16,27. Mârk. P. 55,9 (fehlerhaft वैडुर्य). 58, 24. Journ. of the Am. Or. S. 7,41. — 3) adj. (f. आ) *aus Beryll gemacht* MBh. 4,24. शक्तिं कनकवैडूर्याम् (°वैडूर्यभूषिताम् ed. Bomb.) 6,5150. 7, 8498. R. 5,13,38. Suçr. 2,324,17. Bhâg. P. 3,15,20. — Das Wort wird einer Volksetymologie zu Liebe in der Regel mit ड् geschrieben.

वैडूर्यकान्ति 1) adj. *die Farbe des Berylls habend* Varâh. Bṛh. S. 10,21. स्निग्ध° 28,3. — 2) m. N. eines Schwertes Kathâs. 70,61.

वैडूर्यप्रभ m. N. pr. eines Schlangendämons Vjutp. 87.

वैडूर्यमणिवत् (von वै° + म°) adj. *Berylle enthaltend* R. 4,50,30.

वैडूर्यमय (von वैडूर्य) adj. (f. ई) *aus Beryll bestehend, — gemacht* MBh. 6,198. R. 4,44,48. Spr. 3311.

वैडूर्यशिखर m. N. pr. eines Berges (*einen Gipfel von Beryll habend*) MBh. 3,8359.

वैडूर्यशृङ्ग n. N. pr. einer mythischen Stadt Kathâs. 65,57.

वैण (von वेणु) m. *Rohrarbeiter* M. 4,215 (वेण v. l.). Jâǵn. 1,161.

वैणव (von वेणु) 1) adj. (f. ई) *a) aus Rohr (Bambusrohr) bestehend oder gemacht* P. 4,3,136. Çat. Br. 6,3,1,31. 4,1,5. TS. 5,1,1,4. दण्ड Âçv. Gṛhj. 3,8,20. Gobh. 3,4,22. AK. 2,7,45. H. 815. Halâj. 4,41. Verz. d. Oxf. H. 269,a,43. Bhâg. P. 12,8,33. यष्टि M. 4,36. MBh. 1,2350. 14, 1253. पात्र Weber, Kṛshnaǵ. 278. fg. Suçr. 1,99,3. Pfeile MBh. 7,3673. निचया: *Vorräthe von Rohr* 12,3240. अग्नि *Feuer von Bambusrohr* Bhâg. P. 11,30,24. — *b) aus Körnern des Bambus bereitet:* चरु Kâtj. Çr. 4,6,17. — *c) von einer Flöte kommend:* निष्पत्तौ वैणव: शब्द: क्वणद्रोणासमो भवेत् Verz. d. Oxf. H. 235,b,38. — 2) m. *a) Flöte:* शङ्खवैणवनि:स्वनै: MBh. 5,3143. — *b)* patron. Âçv. Çr. 12,14,6. — 3) f. ई *Tabaschir* Râǵan. im ÇKDr. — 4) n. *a) die Frucht des* Veṇu AK. 2,4,1, 18. — *b) eine Art Gold* (वेणुतटीभव) H. ç. 162. — *c)* N. eines Sâman Ind. St. 3,237,b. — *d)* N. pr. eines Varsha in Kuçadvîpa Mârk. P. 53,25. eines heiligen Platzes Colebr. Misc. Ess. I, 157.

वैणविक (wie eben) m. *Flötenspieler* AK. 2,10,13. H. 925.

वैणविन् (von वैणव) adj. *mit einer Flöte versehen* MBh. 13,1172. वेणविन् ed. Bomb. und Nîlak.

वैणसोमक्रतवीय n. N. eines Sâman Ind. St. 3,237,b.

वैणहोत्र m. N. pr. eines Sohnes des Dhṛshṭaketu VP. 409. वैनहोत्र die neuere Ausg. — Vgl. वेणुहोत्र.

वैणावत, वैणावताय प्रतिधत्स्व शङ्कुम् Lâṭj. 3,10,9. es ist wohl *der Bogen* gemeint.

वैणिक (von वीणा) m. *Lautenspieler* AK. 2,10,13. H. 924. Kathâs. 63,160. 162. — Vgl. मृग°.

वैणुक (von वेणु) 1) adj. *a)* = वेणौ साधु gaṇa गुडादि zu P. 4,4,103. — *b)* adj. zu वेणुकीया gaṇa विल्वकादि zu P. 6,4,153. — 2) m. *Flötenspieler* Çabdar. im ÇKDr. — 3) n. *ein Bambusstock zum Antreiben des Viehes (Elephanten)* AK. 2,8,2,9. Trik. 3,3,352.

वैणुकीय adj. von वेणुक gaṇa गहादि zu P. 4,2,138.

वैणुकेय Med. m. 26 fehlerhaft für रैणुकेय.

वैण्य m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,264.

वैण्य s. वैन्य.

वैतंसिक (von वीतंस) 1) m. *Vogelsteller* (*Fleischer* AK. 2,10,14. H. 930. Halâj. 2,440): इमान्कुकुनकान्नाजन्हन्ति वैतंसिको यथा MBh. 3,1296. निकृत्या वञ्चनायोगैश्चरन्वैतंसिको यथा 4,1563. 12,3803. Govardhana, Ârjâsapt. 154,b (nach Benfey, der hier die gangbare Bed. annimmt). धर्म° (s. auch bes.) *der Tugend nachstellend* so v. a. *Tugend heuchelnd:* व्याजैर्धर्मं चरिष्यन्ति धर्मवैतंसिका नरा: MBh. 3,13022. 12,346. 5894. 14, 2836. R. 4,16,18. 36. द्यूत° wohl *zum Spiel verlockend* (u. d. W. anders erklärt) R. Gorr. 2,90,28. — 2) n. *hinterlistiges Nachstellen, — Fangen:* व्यलीकमपि यत्तत्र (यत्नत्र ed. Bomb.) चित्तवैतंसिकं (= चित्तबन्धनं Nîlak.) तव MBh. 12,1183. — Vgl. द्यूत°.

वैतण्डिक (von वितण्डा) adj. *mit der Chicane in der Disputation vertraut* gaṇa कथादि zu P. 4,4,102.

वैतण्डिन् (wie eben) m. N. pr. eines Ṛshi Hariv. 9573.

वैतण्ड्य (wie eben) m. N. pr. eines Sohnes des Âpa VP. 120.

वैतथ्य (von वितथ) n. *Unwahrheit, Falschheit* Bhâg. P. 5,14,10. Gauḍap. zu Mâṇḍ. Up. S. 402. 406. 411. fgg. वैतथ्योपनिषद् Notices of Skt Mss. 49. — Vgl. द्वैतवैतथ्योपनिषद्.

वैतनिक (von वेतन) adj. (f. ई) *Lohn empfangend, für Lohn dienend, Söldling* P. 4,4,12. AK. 2,10,15. H. 361.

वैतरण (von वितरण) 1) adj. (f. ई) *a) der über einen Fluss übersetzen gedenkt:* अत्र वैतरणी नाम नदी वैतरणैर्वृता MBh. 5,3792. विंतरणै: (वैतरणीनदीसंज्ञकनरकगामिभि: Nîlak.) ed. Bomb. — *b) über den Höllenfluss hinübergeleitend:* धेनु (die man Brahmanen schenkt) Colebr. Misc. Ess. I, 177. तां (वैतरणीं) ततुंकामो यच्छामि कृष्णां वैतरणीं तु गाम् Verz. d. B. H. No. 1111. subst. f. mit Ergänzung von गो u. s. w.: 1020. वैतरण्यादिदान 1106. fg. Verz. d. Oxf. H. 87,a,36. — 2) m. patron. RV. 10,61,17. N. pr. eines Arztes, eines Sohnes des Çatadhanvan, Hariv. 2037. 8057. 8078. Suçr. 1,1,8. Verz. d. Oxf. H. 358,a,5. — 3) f. वैतरणी *a)* N. pr. eines heiligen Flusses (in Kaliṅga) MBh. 2,373. 3,6054. 8148 (वतरणी in der ed. Calc. Druckfehler). 10098. 6,342 (VP. 184). Hariv. 7736. 9511. R. 4,44,65. Mârk. P. 57,24. Verz. d. Oxf. H. 46,b, N. 3. 77,b,22. LIA. I, 85. — *b)* N. pr. des Höllenflusses AK. 1,2,2,2. H. 1086. an. 4,88. Med. ṇ. 108. MBh. 1,6457. 5,3792. 6,2638 (महा°). 4719. 7,7730. 12,11128. 12075. 16,142. 18,84. R. 3,59,20. 7,21,14. Spr. (II) 1974. VP. 207. 209. Bhâg. P. 2,2,7. 5,26,7. 22. 7,9,43. वैतरणीनद्युत्तारिका गौ: Ind. St. 1,39,8. Colebr. Misc. Ess. I, 177. भव° Bhâg. P. 7,9,41. वैतरणि Uǵǵval. zu Uṇâdis. 2,103. — *c)* N. pr. der Mutter der Râkshasa H. an. Med.

वैतरणि f. s. u. वैतरण 3) *b)* am Ende.

वैतस (von वेतस) 1) adj. (f. ई) *aus spanischem Rohr bestehend oder gemacht:* कट TS. 5,3,12,2. TBr. 3,8,20,4. Çat. Br. 12,8,3,15. 13,2, 2,19. 3,1,3. वादन Kâtj. Çr. 13,2,20. *Korb aus Rohr* 19,2,11. — Kauç. 27. °शाखा: R. 2,55,15. अश्वमेधस्य चैकस्य (यज्ञस्य ed. Bomb.) वैतसो भाग इष्यते 1,13,42 (वैतसे कटे निधाय अवदातव्य इष्यते Comm.). वैतसी वृत्ति: *das Verfahren des spanischen Rohres* so v. a. *das Sichschmiegen, Sichfügen in die Verhältnisse* MBh. 4,1560. 12,4209. 15,231. Ragh. 4, 35. Spr. 3175. Kathâs. 5,6. 69,73. — 2) m. *a) Röhrchen*, nach Naigh. 3,29 und Nir. 3,21 euphem. so v. a. *das männliche Glied:* त्रि: स्म माह्न: श्नथयो वैतसेन RV. 10,95,5. 4. — *b) Rumex vesicarius* Gaṭâdh.

im ÇKDr.

वैतसक adj. von वेतसकीया gaṇa विल्वकादि zu P. 6,4,153.

वैतसेन m. patron. des Purûravas Bhâg. P. 11,26,35. वीता सेना स्त्रीभावं प्राप्ता यस्य तस्य स्त्रीभावं प्राप्तस्य पुत्रो वैतसेनः पुरूरवाः Comm. Aus dem missverstandenen instr. वैतसेन ṚV. 10,95,4 gebildet.

वैतस्त adj. *von der* Vitastâ *kommend, in ihr enthalten* Râǵa-Tar. 1, 28. 3,362.

वैतस्तिक (von वितस्ति) adj. *eine Spanne lang:* Pfeile (gebraucht, wenn der Feind unmittelbar vor Einem steht) MBh. 7,4920. fg. 8796. Hariv. 8488. 8491.

वैतहव्यँ (von वीतहव्य) 1) m. patron. Âçv. Çr. 12,10,10. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 55, 9. 11. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 508, Çl. 32. Aruṇa Verfasser von ṚV. 10, 91. ṚV. Anukr. plur. AV. 5, 18, 10. 19, 1. MBh. 13,1965. 1978. 2126. — 2) n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 9,1,8. Lâṭj. 7,2,1. 18. Ind. St. 3,237,*b*. वैतहव्यमेकोनिधनम् desgl. ebend.

वैताढ्य m. N. pr. eines Berges Çatr. 1,345. 2,349. vielleicht वैत्ताढ्य (von वित्ताढ्य) zu lesen.

वैतान (von वितान) 1) adj. *auf die vertheilten Feuer bezüglich* u. s. w. Çâñkh. Çr. 4,15,10. Pâr. Gṛhj. 3,10. वैताने कर्मणि तते MBh. 1,2437. 6387. 3,14953. Hariv. 13231. कर्म वैतानसंभवम् MBh. 3,15146. वैतानोपासनाः क्रियाः Jâǵñ. 3,17. अग्नयः M. 6,25. Çâk. 83. कल्प Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,38. शान्त्युदक Çâk. Ch. 43,12. n. so v. a. वैतानं कर्म. नित्यानि विनिवर्तन्ते वैतानवर्ज्यम् Pâr. bei Kull. zu M. 5,84. °कुशल M. 11, 37. °नित्य MBh. 12,2335. °स्थ 13,3515. वैताने समुपह्वरे 14,784. °कल्प AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 92 (49). °सूत्र, °प्रायश्चित्तसूत्र Ind. St. 9, 175. — 2) aus metrischen Rücksichten st. वितान *Traghimmel, Baldachin* Bhâg. P. 3,23,19. = वितानसमूह Comm., was aber nicht richtig ist, da das Wort im pl. steht und ausserdem विचित्र vor sich hat. — 3) m. patron. Ind. St. 3,281. वैतायन v. l.

वैतानिक (wie eben) adj. = वैतान 1): कर्मन् Âçv. Gṛhj. 1,1,1. Çr. 1, 1,2. M. 7,78. MBh. 13, 3067. Bhâg. P. 4,1,61. 6,3,25. विधि 7,14,16. Çuddhit. im ÇKDr. Feuer Kâtj. Çr. 1,1,18. Jâǵñ. 1,97. अग्निहोत्र M. 6, 9. शान्त्युदक Çâk. 31,11. द्विजाः *Brahmanen, welche die Vorschriften in Betreff der Vertheilung der Feuer beobachten,* Bhâg. P. 10,40,5.

वैतायन m. patron. Ind. St. 3,281. वैतान v. l.

वैताल adj. (f. ई) *zu den* Vetâla *in Beziehung stehend, sie betreffend:* कृत्यावैतालादिषु कर्मसु Varâh. Bṛh. S. 69,37. वैताली सुन्दरी *ein best. Metrum,* = वैतालीय Comm. zu Ghaṭ. 19.

वैतालकि m. N. pr. eines Lehrers des Ṛgveda VP. 278.

वैतालिक (von 2. वि + ताल) 1) m. *Barde, Lobsänger eines Fürsten* (sein Beruf ist es auch, die Tageszeiten anzugeben; im Drama erscheinen öfters ihrer zwei zugleich) AK. 2,8,2,65. H. 794. an. 4, 35. Med. k. 215. Halâj. 2,280. Pratâpar. 28,*a*,9. MBh. 1,6940. 12,1386. R. Gorr. 2,12,36. 117,17. Çiç. 5,67. Çâk. 62,1. Vikr. 17,4. 88,2. Mâlav. 61,18. Ratnâv. 18,4. Varâh. Bṛh. S. 87,12 (= नग्नाचार्य Comm.). Kathâs. 44, 185. Bhâg. P. 7,8,51. — 2) m. = खेट्टिताल Med. = खडताल H. an.; vgl. खेट्टिताल. Vielleicht ist षड्ताल zu lesen, womit *ein best. Tact* gemeint sein könnte. — 3) adj.: वैतालिकानां (man hätte वैतालिकीनां erwartet) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Comm. zu Bhâg. P. 10, 45,36. व्यायामिकीनां st. dessen Verz. d. Oxf. H. 217,*a*,20.

वैतालिन् m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBh. 9, 2569. Steht neben गीततालिन्, geht also gleichfalls auf 2. वि + ताल zurück.

वैतालीय 1) adj. *zu den* Vetâla *in Beziehung stehend, sie betreffend* u. s. w.: कर्मन् Varâh. Bṛh. S. 104,59. Ind. St. 8,310. — 2) n. *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. II, 78. fg. 155. Ind. St. 8, 307. fgg. Varâh. Bṛh. S. 104,54. 59. Verz. d. B. H. No. 814.

वैतुल (vielleicht von वितुल), वैँतुलकन्थ n. gaṇa चिह्णादि zu P. 6,2,125.

वैतृष्ण्य (von वितृष्ण) n. *Befreiung vom Durst, Stillung des Durstes:* आपः शुद्धा भूमिगता वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत् M. 5,128. *das Freisein von einem Begehren, Stillung des Verlangens, Gleichgiltigkeit gegen Etwas:* स्वादुकामुककामानां वैतृष्ण्यं किं न गच्छसि MBh. 12,11524. यत्प्रयुक्तो जन्तुरयं वैतृष्ण्यं नाधिगच्छति 14,880. Râǵa-Tar. 3,257. Bhâg. P. 9,18,40. चन्तुषः (subj.) Sâh. D. 168,11. गुण° *Gleichgiltigkeit gegen* Jogas. 1,16. Gauḍap. zu Sâñkhjak. 23. Sarvadarçanas. 59,9.

वैत्तपाल्य (von वित्तपाल) adj. *zu* Kubera *in Beziehung stehend, ihn betreffend* MBh. 7,9466.

वैत्रक adj. von वेत्रकीया gaṇa विल्वकादि zu P. 6,4,153.

वैत्रकीयवन n. N. pr. einer Oertlichkeit (= एकचक्रा Nîlak.) MBh. 3,415 nach der Lesart der ed. Bomb., वेत्र° ed. Calc.

वैत्रासुर m. N. pr. einer Asura Verz. d. Oxf. H. 58,*a*,13. — Vgl. वेत्रासुर.

वैद (von विद्) 1) parox. m. patron. P. 4,1,104. Schol. zu 2,4,58. des Hiranjadant Ait. Br. 3,6 (बैद v. l.). Âçv. Çr. 12,10,9. Sarvasâra in Ind. St. 1,388. f. वैँदी Schol. zu P. 4,1,15. 73. 8,2,4. वैद्यः स्त्रियः (dagegen विदाः von Männern) 2,4,64, Schol. — 2) oxyt. adj. von वैद 1) in Verbindung mit अङ्क, लक्षण, संघ (und घोष nach dem Vârtt.) P. 4, 3,127, Schol. m. Bez. eines Trirâtra Âçv. Çr. 10,2,10. Kâtj. Çr. 23, 2,8. Lâṭj. 2,2,4. 9,7,8. Maçaka in Verz. d. B. H. 73 (VI, 7).

वैदग्ध 1) n. = वैदग्ध्य Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDr. Spr. (II) 544, v. l. — 2) f. ई dass. Trik. 1,1,129. Schol. zu Kâtj. Çr. 30, 21. Daçar. 1,3. Sâh. D. 45,10. अहो निर्माणवैदग्धी विधातुः Dhûrtas. 91,13. Kathâs. 20,109.

वैदग्धकँ adj. von विदग्ध gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80.

वैदग्ध्य (von विदग्ध) n. *Scharfsinn, Gewandheit des Geistes, Klugheit, Erfahrenheit, Pfiffigkeit* Daçar. 2,45. 4,80. Sâh. D. 412. Pratâpar. 3,*a*,7. पाण्डित्यवैदग्ध्ययोः Mâlatîm. 3,20. 18,7. 9. 129,7. Spr. (II) 990. (I) 2858. Kathâs. 1,12. 6,52. 47,114. 49,14. 54. 57,66. 82,4. 124,166. Râǵa-Tar. 3,131. Verz. d. Oxf. H. 188,*a*,1. Kull. zu M. 2, 189. दुग्धजलभेदविधौ (हंसस्य) Spr. (II) 544. कलासु Kathâs. 49,53. वाग्वैदग्ध्य Sâh. D. 6,4. वचन° Kull. zu M. 3,115. तेजोवैदग्ध्यशीलवत् (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) Sâh. D. 64. अ° Spr. 4437. am Ende eines adj. comp.: ग्राम्यवैदग्ध्यया परिभाषया Bhâg. P. 5,2,17.

वैदत्ँ adj. = विदत् (partic. praes. von 1. विद्) gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38.

वैदथिनं m. patron. von विदथिन् P. 6, 4, 165. RV. 4, 16, 13. 5, 29, 11.

वैददश्वि m. patron. von विददश्व RV. 5, 61, 10. Pańkav. Br. 13, 7, 12.

वैदनृत n. N. eines Sâman Ind. St. 3, 238, a. wohl fehlerhaft.

वैदन्वत (von विदन्वत्) n. desgl. Pańkav. Br. 13, 11, 9. Lâṭj. 7, 1, 13. Ind. St. 3, 238, a. आद्यम्, तृतीयम्, चतुर्थम् desgl. ebend.

वैदभृतं m. pl. und वैदभृतीं f. patron. von विदभृत्. वैदभृतीपुत्र m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14, 9, 4, 32.

वैदभृत्य m. patron. von विदभृत् P. 5, 3, 108. gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. der entsprechende pl. ist वैदभृताः.

वैदम्भ neben दम्भ und अदम्भ unter den Beinn. Çiva's MBh. 13, 1192.

वैदर्भ 1) adj. (f. ई) *zu den* Vidarbha *in Beziehung stehend, ihnen zukommend* u. s. w.: Sprache Colebr. Misc. II, 67. — 2) m. a) *ein Fürst der* Vidarbha Ait. Br. 7, 34. MBh. 3, 8562. Hariv. 5015. Ragh. 5, 62. 6, 3. 7, 27. Mâlav. 8, 13. 9, 9. — b) pl. = विदर्भ (das Volk dieses Namens): वैदर्भयादवानाम् Hariv. 6723. Varâh. Bṛh. S. 9, 27. Mârk. P. 57, 47. Kâvjâd. 1, 54. °भूभुज् Kathâs. 56, 280. °देश Verz. d. Oxf. H. 352, b, 18. °रीति (vgl. 3) b) 199, a, 4. — 3) f. ई a) *eine Fürstin der* Vidarbha MBh. 1, 3770. fg. 3, 2146. 2261. 3002. 8833. 5, 3971. Hariv. 7731. R. 1, 34, 2. Bhâg. P. 4, 28, 29. 9, 20, 34. — b) (sc. रीति) *fliessende, wohlklingende und einfache Diction* Med. bh. 21. बन्धपारुष्यरहिता शब्दकाठिण्यवर्जिता । नातिदीर्घसमासा च वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥ Pratâpar. 11, a, 9. Sâh. D. 625. fg. Verz. d. Oxf. H. 204, a, 17. 207, a, 2. विदर्भादिषु दृष्टत्वात्तत्समाख्या । समग्रगुणा वैदर्भी N. 2. 208, a, No. 489. — 4) n. *eine zweideutige Redeweise* (वाक्यवक्रत्व) Med. — Vgl. दन्त° (auch Suçr. 1, 92, 14. 304, 11).

वैदर्भक m. *ein Angehöriger der* Vidarbha, *ein Bewohner von* Vid. Verz. d. Oxf. H. 217, b, 22. वैदर्भको राजा *ein Fürst der* Vidarbha R. 7, 78, 3.

वैदर्भि m. patron. von विदर्भ Praçnop. 1, 1. 2, 1. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57, 3 v. u. MBh. 13, 6255.

वैदर्व्य (von विदर्व्य oder विदर्वि) patron. Spielerei: श्वेताय वैदर्व्याय *dem Weissen, dem Sohne des Haubenlosen* Pâr. Gṛhj. 2, 14. वैदार्व्य Çâṅkh. Gṛhj. 4, 18. वैदार्व Âçv. Gṛhj. 2, 3, 3.

वैदल s. बैदल (auch in den Nachträgen). Hinzuzufügen wäre m. *ein best. giftiges Insect* oder *Wurm* u. s. w. Suçr. 2, 287, 14. वैदलिक s. बै°.

वैदल्य (richtiger बै° von विदल) Titel eines Werkes Târan. 302.

वैदायन m. patron. von विद gaṇa अश्वादि zu P. 4, 1, 110. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 58, 36 (वे° fehlerhaft).

वैदार्व und वैदार्व्य s. u. वैदर्व्य.

वैदि m. patron. von विद P. 4, 1, 104, Schol.

वैदिक (von वेद) adj. (f. ई) *vedisch, den* Veda *betreffend, dem* Veda *eigenthümlich, im* Veda *vorgeschrieben, mit dem* Veda *übereinstimmend* (Gegens. लौकिक und तान्त्रिक): वाक्यं द्विविधं वैदिकं लौकिकं च। वैदिकमीश्वरोक्तत्वात्सर्वमेव प्रमाणम् ॥ Tarkas. 51. श्रुति M. 2, 15. 7, 97. श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिकी च Kull. zu M. 2, 1. निगम M. 4, 19. शपथ 8, 190. शब्द Sarvadarçanas. 135, 14. संप्रदाय 154, 15. मन्त्र (Gegens. तान्त्रिक) 169, 18. °छन्दःप्रकाश Notices of Skt Mss. 13. Schol. zu P. 1, 1, 16. 6, 1, 129. AK. 3, 6, 4, 36. वैदिकाध्ययनानि *Studium des* Veda MBh. 1, 4924. °प्रयोग Vop. 26, 220. ज्ञान M. 2, 117. प्रक्रिया Verz. d. B. H. No. 735. fg. 739. कर्मन् M. 2, 26. 6, 75. 12, 86. 88. MBh. 13, 5564. 14, 340. Kathâs. 49, 226. Bhâg. P. 1, 4, 19. 7, 15, 47. Mârk. P. 61, 78. Wilson, Sel. Works 1, 251. कर्मयोग M. 2, 2. 12, 87. हुत्वेतिपञ्चतिक्रियाः 2, 84. संस्कार 67. यूपसत्क्रिया Kumâras. 5, 73. योग (Gegens. तान्त्रिक) Bhâg. P. 8, 6, 9. दीक्षा (Gegens. तान्त्रिकी) 11, 11, 37. हेतु Hariv. 14214. वैदिकं वाप्युदाहरेत् *eine Stelle aus dem* Veda M. 11, 96. ब्राह्मणानां वित्तं स्वामी राजेति वैदिकम् so v. a. *so lautet die Vorschrift im* Veda MBh. 12, 2878. 2884. Kâṅ. 5, 2, 10. प्रियतद्धिता दाक्षिणात्या यथा लोकवेदयोरिति प्रयोक्तव्ये यथा लौकिकवैदिकेष्विति प्रयुञ्जते Pat. in Mahâbh. ed. Ball. 54. वैदिको ऽप्सरसः *im* Veda *bekannt* Hariv. 12476 (st. dessen दैविकाः VP. 150, N. 21). *mit dem* Veda *vertraut* R. 7, 94, 8. Pańkar. 1, 2, 14. Colebr. Misc. Ess. II, 188. — सवैदिक MBh. 8, 4712 fehlerhaft für सवेदिक, wie die ed. Bomb. liest.

वैदिश 1) m. *ein Fürst von* Vidiçâ Hariv. 5021. 5502. Mâlav. 72 (wo die v. l. वैदिकानां nach Stenzler in वैदिशानां zu verbessern ist). — 2) m. pl. *die Bewohner von* Vidiçâ Mârk. P. 57, 54 (वैदिशास्तथा zu lesen). — 3) n. N. pr. *einer an der* Vidiçâ *gelegenen Stadt* P. 4, 2, 70, Schol. R. 7, 108, 10. fg. Mâlav. 70, 22. Mârk. P. 124, 20. वैदिशाधिपति 123, 20. °पुर Verz. d. Oxf. H. 153, b, 38.

वैदुरिक adj. *von* Vidura *kommend;* n. *ein Ausspruch* Vidura's Bhâg. P. 3, 1, 10.

वैदुर्य Mârk. P. 55, 9 fehlerhaft für वैडूर्य (वैदूर्य).

वैदुल adj. von विदुल 1) Suçr. 2, 12, 20.

वैदुषं adj. = विद्वंस् gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5, 4, 38.

वैदुष्य (von विद्वंस्) n. *Gelehrsamkeit* Râǵa-Tar. 1, 12 (वैदु° Tr.). 6, 290. Comm. zu R. 7, 36, 45.

वैदूरपति m. pl. N. einer Dynastie Bhâg. P. 12, 1, 33.

वैदूर्य und die damit zusammengesetzten und davon abgeleiteten Wörter s. u. वैडूर्य.

वैदेशिक (von विदेश) adj. *aus der Fremde gekommen,* m. *Fremdling* MBh. 12, 4762. Kathâs. 21, 125. 43, 142. 49, 44. Râǵa-Tar. 3, 161. 5, 353. 8, 1049. Çatr. 10, 167. Pańkat. 184, 4. °निवासिनाम् R. 1, 12, 11 nach dem Comm. *fremder und eingeborener.*

वैदेश्य (wie eben) dass. Mṛkkh. 52, 2.

वैदेह 1) adj. (f. ई) *im Lande der* Videha *lebend, von dorther kommend:* गावः TS. 2, 1, 4, 5 (विशिष्टदेहसंबन्धिन्यः Comm.). Kâṭh. 13, 4. ऋषभ ebend. — 2) m. a) *ein Fürst der* Videha TBr. 3, 10, 9, 9. Çat. Br. 11, 3, 1, 2. 6, 2, 1. 3, 1. 14, 6, 8, 2. Çâṅkh. Çr. 16, 29, 6. 9, 11. नमी साप्यो वैदेहो (streng genommen adj.) राजा Pańkav. Br. 25, 10, 17. MBh. 2, 122. मिथिलाधिप R. 1, 65, 37 (67, 29 Gorr.). 2, 30, 3. R. Gorr. 1, 72, 11. 7, 38, 2. यस्माद्विदेहात् (1. विदेह) संभूतो वैदेहस्तु ततः स्मृतः 57, 20. °सुता Ragh. 14, 39. Uttarar. 72, 16 (93, 12). Varâh. Bṛh. S. 9, 21. VP. 389. Bhâg. P. 9, 13, 13. — b) pl. = विदेह 1) a) MBh. 6, 364 (VP. 192). Varâh. Bṛh. S. 9, 13. 16, 16. Comm. zu Âçv. Gṛhj. bei Müller, SL. 52. °स्थ MBh. 2, 1089. °देश Kathâs. 19, 57. °राज Bhâg. P. 9, 10, 11. — c) Bez. einer Mischlingskaste: *der Sohn eines* Vaiçja *von einer Brahmanin* M. 10, 11. 17. 33. MBh. 13, 2582. Colebr. Misc. Ess. II, 183. treibt Handel, da-

her = वणिज् H. 868. Halâj. 2,416. — 3) f. ई *eine Fürstin der* Videha P. 4,1,178, Schol. Marjâdâ MBh. 1,3776. Sitâ Trik. 2,8,1. 3,3,461. H. 703. Med. h. 24. R. 1,2,37. 2,88,16. 3,49,12. Ragh. 12,20. Uttarar. 10,11 (14,9). Verz. d. Oxf. H. 143,*b*, No. 295. अजातशत्रुर्वैदेहीपुत्रः (वैदेही = श्रीभद्रा) Schiefner, Lebensb. 253 (23). Lot. de la b. l. 3. 304. 449. 482. °कुलं मगधेषु जनपदेषु Lalit. ed. Calc. 22,6. — *c*) f. zu वैदेह 2) *c*) M. 10,37. = वणिकस्त्री Trik. 3,3,461. Med. — *d*) *Piper longum Lin.* (पिप्पली) AK. 2,4,3,15. Trik. H. 421. Med. Halâj. 2,459. — *e*) *ein best. gelbes Pigment* (रोचना) Trik. Med. — वैदेहानाम् Lassen, Pentap. 66,31 fehlerhaft für वाह्लीकानाम् (बा°), wie MBh. 8,2056 gelesen wird.

वैदेहक (von विदेह) 1) adj. gaṇa धूमादि zu P. 4,2,127. *zu* Videha *in Beziehung stehend* u. s. w.: राजन् *Fürst der* Videha MBh. 2,1087. — 2) m. *a*) pl. = वैदेह 2) *b*) Varâh. Bṛh. S. 32,22. Mârk. P. 58,8. — — *b*) = वैदेह 2) *c*) AK. 2,10,3. H. 898, v. l. M. 10,13. 19. 26. Jâǵń. 1, 93. MBh. 12,10868. 13,2571. Kull. zu M. 10,36. 48. fälschlich als *Sohn eines* Çûdra *und einer Brahmanin* erklärt Trik. 3,3,42. H. an. 4,36 (वेश्या fehlerhaft für वैश्या). Med. k. 215. वैदेहकानां स्त्रीकार्यम् M. 10, 47. वैदेहक = वणिज् *Kaufmann* AK. 2,9,78. Trik. H. an. Med. — *c*) N. pr. eines Berges Schiefner, Lebensb. 291 (61).

वैदेहिक m. = वैदेह 2) *c*) H. 898 (वैदेहक v. l.). Sâras. zu AK. nach ÇKDr. M. 10,36. *Kaufmann* Kull. zu M. 7,154.

वैदेहिबन्धु (वैदेहि = वैदेही; vgl. P. 6,3,63) m. *Freund* —, *Gatte der* Sitâ d. i. Râma Ragh. 14,33.

वैद्य (von विद्या) gaṇa ऋगयनादि (भवे und व्याख्याने) zu P. 4,3,73. gaṇa प्रज्ञादि (angeblich = विद्या) zu 5,4,38. 1) adj. *mit der Wissenschaft vertraut, sein Fach kennend* Âçv. Gṛhj. 4,8,15. नाविद्यानां तु वैद्येन देयं विद्याधनं क्वचित् । समविद्याधिकानां तु देयं वैद्येन तद्धनम् ॥ Kâtj. im ÇKDr. MBh. 1,6143. द्विजेषु वैद्याः श्रेयांसो वैद्येषु कृतबुद्धयः (vgl. ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धयः M. 1,97) 5,110. 1491. चिकित्सक 5156. 12,3200. R. 2,77,21. 5,88,4. — 2) m. *Arzt* AK. 2,6,2, 8. 3,4,8,36. H. 472. Halâj. 2,457. M. 4,179. चतुर्विधाः (विषशल्यरोगकृत्याहराः Nilak.) MBh. 12,2654. 13,5820. R. 2,83,13 (90,14). 6,82,23. fg. Suçr. 1,14,12. 15,1. 30,4. 94,14. 122,13. 2,55,3. Ragh. 19,53. Spr. (II) 1299. 2601. (I) 1670. पानरत 2899. fg. वैद्यानामातुरः श्रेयान् 2901. राज्ञः प्रियंवदः 2902. Varâh. Bṛh. S. 5,41. 10,3. 15,26. 32,11. Kathâs. 18,248. Verz. d. B. H. No. 958. 973. Verz. d. Oxf. H. 315,*a*, No. 748. 316,*a*, No. 751. सद्वैद्य Pańkat. 183,21. Als Mischlingskaste *der Sohn eines* Çûdra *von einer* Vaiçjâ MBh. 13,2621. *der Sohn eines Brahmanen von einer* Vaiçjâ Colebr. Misc. Ess. II, 180. वैद्यो ऽश्विनीकुमारेण जातश्च विप्रयोषिति । वैद्यवीर्येण शूद्रायां बभूवुर्बहवो जनाः ॥ Verz. d. Oxf. H. 22,*a*, 26. fg. वैद्यी *die Frau eines Arztes* P. 6,4,150, Schol. — 3) m. *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdak. im ÇKDr. — 4) f. आ *eine best. Arzeneipflanze,* = काकोली ebend. — 5) als N. pr. eines Ṛshi MBh. 13,7108 fehlerhaft für रैभ्य, wie die ed. Bomb. liest. Lassen, Pentap. 67,43 fehlerhaft für वैद्य, wie MBh. 8,2069 gelesen wird. — Vgl. कु°, विष°, स्ववैद्य.

वैद्यक (von वैद्य) 1) m. *Arzt* Spr. (II) 1992. — 2) n. *Heilkunde* ÇKDr. Suçr. 1,311,20.

वैद्यकप्रयोगामृत n. Titel eines *medicinischen* Werkes; s. u. गज 5).

वैद्यकसर्वस्व n. desgl. Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,4.

वैद्यकसारसंग्रह m. desgl. ebend. 317,*a*, N. 1. — Vgl. वैद्यसंग्रह.

वैद्यकानन्त (so im Index, वैद्यकाननन्त im Text) N. pr. eines Mannes oder Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 182,*b*,1 v. u.

वैद्यग्रन्थ m. Titel *einer medicinischen Schrift* Mack. Coll. I, 134.

वैद्यचिन्तामणि m. N. pr. eines *medicinischen* Autors Verz. d. Oxf. H. 316,*a*, No. 751.

वैद्यजीवन n. Titel eines *medicinischen* Werkes Mack. Coll. I, 134. Verz. d. Oxf. H. 317,*a*, No. 754. Verz. d. B. H. No. 976.

वैद्यनरसिंहसेन m. N. pr. eines Scholiasten Verz. d. Oxf. H. 156,*b*, No. 332.

वैद्यनाथ 1) m. *eine Form* Çiva's Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,507, Çl. 29. n. N. eines Linga und des umliegenden Gebiets Wilson, Sel. Works I, 223. II, 220. fg. Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,18. 64,*a*,8. *b*,1. 102,*a*, No. 158. 149,*b*,4. Verz. d. B. H. No. 1242. °माहात्म्य Verz. d. Pet. H. No. 21. fg. °तीर्थ Verz. d. Oxf. H. 66,*a*,27. 39. fgg. 67,*b*,2. वैद्यनाथेश्वर n. 67,*a*,18. — 2) m. N. pr. verschiedener Männer Hall in der Einl. zu Vâsavad. 16. Ind. St. 2,252. 5,133. fg. Verz. d. Oxf. H. 124, *b*,46. 138,*b*, No. 272. 262,*b*, No. 632. Verz. d. Kop. H. 104,*a*. Verz. d. Pet. H. No. 81. Hall 83. 176. Notices of Skt Mss. 37. °सूरि 17. Weber, Nax. 2,358. Verz. d. B. H. No. 1169. °भट्ट Hall 175. पायगुण्डे 175. 207. Verz. d. Oxf. H. 165,*b*,2. aus der Familie Tatsat Hall 174. 183.

वैद्यबन्धु m. *Cathartocarpus (Cassia) fistula* Çabdak. im ÇKDr.

वैद्यभूषण n. Titel eines Werkes über *Arzeneistoffe* von Râmânandasvâmin Nigh. Pr. Einl.

वैद्यमातृ f. *Gendarussa vulgaris Nees.* AK. 2,4,3,21.

वैद्यरत्न m. N. pr. des Vaters von Vaidjakintâmani Verz. d. Oxf. H. 316,*a*, No. 751.

वैद्यराज् m. *der Fürst unter den Aerzten,* Bez. Dhanvantari's, übertragen auf Vishṇu Pańkar. 4,3,119.

वैद्यराज m. 1) Bez. Dhanvantari's R. Gorr. 1,46,30. — 2) N. pr. des Vaters von Çârngadhara Verz. d. Oxf. H. 318,*b*, No. 755.

वैद्यवल्लभ m. *Liebling der Aerzte,* Titel eines medicinischen Werkes des Çârngadhara Verz. d. Oxf. H. 318,*b*, No. 755.

वैद्यवाचस्पति m. N. pr. eines *Arztes* Verz. d. Oxf. H. 314,*b*, No. 746.

वैद्यविनोद m. Titel eines *medicinischen* Werkes Verz. d. B. H. No. 975.

वैद्यशास्त्र n. *ein Lehrbuch für Aerzte, Heilmittellehre* Verz. d. Oxf. H. 40,*a*, N. 2.

वैद्यसंग्रह m. Titel eines *medicinischen* Werkes Mack. Coll. I, 135. — Vgl. वैद्यकसारसंग्रह.

वैद्यसंदेहभञ्जन n. desgl. (*die Zweifel des Arztes beseitigend*) Verz. d. Oxf. H. 22,*b*,8.

वैद्यसर्वस्व n. desgl. Verz. d. B. H. No. 977.

वैद्यसिंही f. *Gendarussa vulgaris Nees.* Çabdar. im ÇKDr.; vgl. वैद्यमातृसिंह्यौ AK. 2,4,3,21. womit sowohl वैद्यमातृ und सिंही, als auch वैद्यमातृ und वैद्यसिंही gemeint sein können.

वैद्यासिक MBh. 14,2852 fehlerhaft für वैघसिक.

वैद्याधर adj. (f. ई) den Vidjâdhara eigen, zu ihnen in Beziehung stehend: महास्त्र R. 1,29,14. 56,11 (57,9). पद Kathâs. 26,108. 241. 42, 215. 52,63. लोक 253. पुरी 26,89. लक्ष्मी 34,122. 52,277. बल 66,189. योनि 22,58. ज्ञाति 162.

वैद्यानि m. patron. Anukr. zu Kâth. in Ind. St. 3,460.

वैद्युत (von 1. विद्युत्) 1) adj. dem Blitz zugehörig, von ihm kommend; blitzend, flimmernd VS. 24,10. Feuer Çat. Br. 12,4,4,4. Kâtj. Çr. 25,4, 33. वैश्वानरो यदि वा वैद्युतो ऽसि TBr. 3,10,5,1. Nir. 7,23. MBh. 3,149. 5,1830. 12,8787. R. 5,28,9. Suçr. 1,264,18. Ragh. 17,16. Vikr. 154. Kathâs. 123,37. Spr. (II) 2364. Râga-Tar. 8,1172. Mallin. zu Kumâras. 4,43. Bhâg. P. 7,10,59. 10,31,3. Mârk. P. 99,69. वैद्युतात्मना neben सूर्यात्मना Durga zu Nir. bei Muir, ST. 4,56. °त्विष् adj. MBh. 8,3772. °प्रभ adj. 13,5277. वैद्युतास्त्र Hariv. 9368. वैभव Verz. d. Oxf. H. 117, a, 25. व्यतिकर इव भीमस्तामसो वैद्युतश्च Uttarar. 96,8 (125,11). लोक Çat. Br. 14,9,4,18. Nir. 14,9. — 2) subst. (wohl n.) Blitzfeuer: अर्कोडुपचापवैद्युतैः Bhâg. P. 1,11,28. क्रमात्ते संभवन्त्यर्चिरहः शुक्लं तथोत्तरम्। अयनं देवलोकं च सवितारं च वैद्युतम् ॥ Jâǵn. 3,193. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Vapushmant Mârk. P. 53,27. — 4) m. pl. N. pr. einer Schule Ind. St. 3,273. — 5) m. N. pr. eines Berges Mârk. P. 57,13.

वैद्युद्वती f. (sc. ऋच्) blitzähnlich d. h. den Gegner zerschmetternd heissen die Abschnitte AV. 7,31. 34. 59. 108 Kauç. 48. — Vgl. विद्युद्वन्त्.

वैद्रुम (von 1. विद्रुम) adj. aus Korallen gemacht, — bestehend Suçr. 2,324,17. द्रुमाः Hariv. 12675. द्वार Kathâs. 50,174. दण्ड (vgl. विद्रुमदण्ड) 70,96.

वैध (von 1. विधि) adj. (f. ई) vorgeschrieben, ausdrücklich angeordnet (Gegens. ऐच्छिक) Nilak. zu MBh. 13,2456. Schol. zu Kâtj. Çr. 890,1. Comm. zu TS. I,257,3. अ° Kull. zu M. 5,50. 55. 6,31.

वैधर्म्य (von 2. विधर्म) n. 1) Ungesetzlichkeit, Ungerechtigkeit MBh. 3, 13235. 5,374 (pl.). R. 2,31,24. 7,81,19. — 2) Ungleichartigkeit (Gegens. साधर्म्य) Kaṇ. 1,1,4. 24. 2,1,22. 2,27. 5,2,19. Njâjas. 1,2,59. 5,1,1. 2. 5. अन्योऽन्य° Kap. 1,128. fg. Suçr. 1,311,11. Kusum. 30,16. Sâh. D. 647 (अ°). 282,4. 300,13. Bhâshâp. 28. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 10. Kull. zu M. 4,172.

वैधव (von 2. विधु) m. der Sohn des Mondes, patron. Budha's Vikr. 159.

वैधवेय (von विधवा) m. ein von einer Wittwe geborener Sohn gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. Çâk. 23,14 (वैधेय bessere Lesart).

वैधव्य (wie eben) n. Wittwenstand MBh. 5,3198. 8,4483. Hariv. 4256. 4794. 4843. 8856. R. Gorr. 2,68,19. 3,62,15. 4,18,29. 6,95,27. 7,24,30. 25,43. Ragh. 12,6. Kumâras. 4,1. Spr. (II) 1624. (I) 1563. 2184. Kir. 11,67. Weber, Kṛshṇaǵ. 307. Râga-Tar. 5,229. Kull. zu M. 9,72. बाल° Spr. (II) 1203. अवैधव्याशिषः (von Bopp und Benfey fälschlich als adj. gefasst) MBh. 3,16725 (Sâv. 4,12). 16873. 5,362. Schol. zu Bhaṭṭ. 3,22.

वैधस (von वेधस्) 1) adj. (f. ई) vom Schicksal herrührend: लिपिर्ललाटे Spr. (II) 549. von Brahman verfasst: सिद्धान्त Verz. d. Cambr. H. 49. — 2) m. patron. des Hariçkandra Ait. Br. 7,13. Çâṅkh. Çr. 15,17,1.

वैधातकि (!) m. = वैधात्र Lois. zu AK. 1,1,1,46.

वैधात्र (von विधातर्) 1) adj. (f. ई) von Brahman —, vom Schicksal herrührend: वामता Râga-Tar. 4,413. — 2) m. Brahman's Sohn, patron. Sanatkumâra's AK. 1,1,1,46. — 3) f. ई eine best. Pflanze, = ब्राह्मी Râǵan. im ÇKDr.

वैधुर्य (von विधुर) n. 1) das Alleinstehen, Verwaistsein: रामप्रवासवैधुर्यदुःखं पुर्याः Kathâs. 103,121. — 2) das Fehlen, Mangeln, Nichtdasein: शक्ति° Verz. d. Oxf. H. 109, b, No. 170 (fehlerhaft वैधूर्य). पदार्थान्वय° Sâh. D. 120, 12 = Kusum. 32, 4. — 3) eine verzweifelte Lage Kathâs. 26,198. Râga-Tar. 4,671.

वैधूमाग्नी f. N. pr. einer Stadt in Çâlva ÇKDr. nach Siddh. K.

वैधृत (von विधृति) 1) m. a) Bez. eines best. Joga und zwar eines Pâta, wenn nämlich Sonne und Mond bei gleicher Declination in demselben Ajana (Uttarâjaṇa oder Dakshiṇâjana) stehen und wenn die Summe ihrer Länge 360° beträgt, Gaṇit. Pâtâdh. 8. °दिन Varâh. Bṛh. S. 100,2. — b) N. pr. Indra's im 11ten Manvantara Bhâg. P. 8,13, 26. वैधृति ed. Bomb. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Ârjaka's und Mutter Dharmasetu's Bhâg. P. 8,13,27. — 3) n. वैधृतं वासिष्ठम् und वैधृतवासिष्ठ n. N. zweier Sâman Ind. St. 3,238, a.

वैधृति 1) = वैधृत 1) a) Saṁsk. K. 1, b, 2. 2, a, 4. 15, a, 10. Gjotistattva und Koshṭhîpradîpa im ÇKDr. — 2) m. = वैधृत 1) b) Bhâg. P. 8,13,26 nach der Lesart der ed. Bomb. — 3) m. pl. Bez. einer Klasse von Göttern: देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनयाः Bhâg. P. 8,1,29.

वैधृत्य = वैधृत 1) a): वैधृत्ये Kauç. 141.

वैधेय (von 1. विधि) 1) adj. (vom Schicksal getroffen) dumm, einfältig; m. Dummkopf AK. 3,1,48. H. 352. Halâj. 2,181. Çâk. 23,14 (nach der richtigen Lesart). Vikr. 30,14. Râga-Tar. 5,413. 6,159. 276. 7, 295. 8, 1260. — 2) m. N. pr. eines Schülers des Jâǵṅavalkja Vâju-P. in Verz. d. Oxf. H. 55, a, 33 (VP. 281, N. 5). pl. N. einer Schule Ind. St. 3, 262. 264. fg.

वैध्यत m. N. pr. des Thürstehers von Jama H. 186.

वैन (von वेन) m. patron. Pṛthi's Sâj. zu RV. 1,112,15. — Vgl. वैन्य.

वैनंशिन (von विनंशिन्) patron. Spielerei: मुग्ध VS. 9,20.

वैनतेय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von विनत gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैनतेय m. 1) ein Sohn der Vinatâ Schol. zu P. 4,1,113. 120. pl. MBh. 1,2548 (alle aufgezählt). 13,7644. metron. Garuḍa's AK. 1,1, 1,24. H. 221. 231. Med. j. 127. Hâr. 10. Halâj. 1,30. Bhag. 10,30. MBh. 1,7668. 13,870. R. 1,14,25. 42,17. 3,53,58. 4,40,40. Ragh. 11, 59. 16,88. Vikr. 6,7. Kathâs. 22,186. Nâgân. 44,3. 59,16. Pańkar. 1, 10,70. 13,15. Pańkat. 44,14. metron. Aruṇa's H. 102, Schol. Med. Matsja-P. im ÇKDr. N. pr. eines Sohnes des Garuḍa MBh. 5,3595. f. वैनतेयी Schol. zu P. 4,1,15. — 2) pl. N. einer Schule Ind. St. 3,265.

वैनत्य (von विनत) n. demüthiges Benehmen MBh. 2,524.

वैनद 1) adj. von विनद gaṇa उत्सादि zu P. 4,1,86. — 2) f. ई N. pr. eines Flusses VP. 183, N. 50. v. l. für विनदी.

वैनभृत m. patron. Saṁsk. K. 184, b, 7. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,275.

वैनयिक (von विनय) adj. (f. ई) 1) gutem —, gesittetem Benehmen entsprechend P. 5,4,34 (= विनय). दण्डे वैनयिकी क्रिया (आयत्ता) M. 7,65. सर्वं वैनयिकं कृत्वा विनयज्ञः MBh. 12,2538. बुद्धि R. 2,112,16. वैनयि-

कीनां (वैनयिकानां fehlerhaft im Comm. zu Bhâg. P. 10,48,36) विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217, a, 19. fg. — 2) *zu kriegerischen Uebungen dienend:* रथ H. 752. Halâj. 2,290.

वैनक्षेत्र s. वैणक्षेत्र.

वैनायक (von विनायक) 1) adj. (f. ई) *von* Ganeça *herrührend:* वदनविधुतय: Mâlatim. 1,8. — 2) m. pl. Bez. einer Klasse von Dämonen, = विनायक 1) c) Bhâg. P. 6,8,22.

वैनायिक m. *ein Buddhist* Trik. 3,1,22. fehlerhaft für वैनाशिक.

वैनाशिक (von विनाश) 1) adj. a) *vergänglich,* = क्षणिक H. an. 4,36. Med. k. 214. m. *an astrologer* (!) Wilson. — b) *an eine vollständige Vernichtung glaubend;* m. Bez. *der Buddhisten* Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. — c) *Verderben bringend:* ऋक्ष (= जन्मर्क्षावधि त्रयोविंशनक्षत्रम्) Gjotistattva und Tithjâditattva im ÇKDr. — d) *abhängig* (परायत्त) H. an. Med. — 2) m. *Spinne* diess. — Vgl. अर्ध°, पूर्ण°, सर्व°, वेदवैनाशिका (v. l. °वैनासिका).

वैनीतक (von विनीत) m. n. *eine Sänfte* u. s. w. *mit abwechselnden Trägern* AK. 2,8,2,26. H. 759.

वैनेय m. pl. N. einer Schule Ind. St. 3,262. 264.

वैन्ध्य adj. *zum* Vindhja *gehörig:* कटकान्तरेषु Ragh. 16,31.

वैन्य m. patron. von वेन gaṇa कुर्वादि zu P. 4,1,151. Âçv. Çr. 12,10, 11. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 60,26 (pl.). Pṛthî, Pṛthi oder Pṛthu Trik. 2,8,2. H. 700. ṚV. 8,9,10. Çat. Br. 5,3,5,4. Pañkav. Br. 13,5,20. MBh. 1,332. 466. 2,331. 1929. 3,12677. fgg. 6,314. 7,2394. fgg. 12,1030. fgg. Hariv. 77. Spr. (II) 1995. VP. bei Uǵǵval. zu Uṇâdis. 3,8. Bhâg. P. 4,15,9. 21. 8,19,23. 10,60,41. Verz. d. Oxf. H. 12, a, 13. 49, a, 4. 264, a, 6. Liedverfasser von ṚV. 10,148. Hier und da fehlerhaft वैण्य geschrieben.

वैन्यदत्त m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 218, a, 10. वेणुदत्त v. l.

वैन्यस्वामिन् m. N. eines Heiligthums Râǵa-Tar. 5,97. 99.

वैपश्चिक m. *Zeichendeuter* (!) Vjutp. 96.

वैपथक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von विपथ gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80.

वैपरीत्य (von विपरीत) 1) n. *umgekehrtes Verhältniss, Gegentheil* H. 1501. Halâj. 4,44. Spr. (II) 454, v. l. Mârk. P. 43,34. Verz. d. Oxf. H. 102, b, 5. Sâh. D. 12,17. 215, 22. Schol. zu Taitt. Prât. 16,26. zu Kap. 1,60. zu Sûrjas. 11,8. Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 49. — 2) m. f. (आ) *eine Art Mimosa* Râgan. im ÇKDr.

वैपश्चित (von विपश्चित्) m. patron. des Târkshja Âçv. Çr. 10,7,9.

वैपश्यत (von विपश्यत्, partic. von 1. पश् mit वि) m. desgl. Çat. Br. 13,4,3,13. Çâñkh. Çr. 16,2,26.

वैपात्य n. nom. abstr. von विपात gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैपादिक (von विपादिका) adj. *mit Blasen u. s. w. an den Füssen behaftet* gaṇa ज्योत्स्नादि zu P. 5,2,103, Vârtt.

वैपादिका f. = विपादिका 1) Wise 261.

वैपार्श्नि m. f. Trik. 3,5,17.

वैपाश m. metron. von विपाश् gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112.

वैपाशक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von विपाश gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80.

वैपाशायन m. pl. metron. von विपाश् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. der entsprechende sg. ist वैपाशायन्य.

वैपाशायन्य m. metron. von विपाश् gaṇa कुञ्जादि zu P. 4,1,98. der entsprechende pl. ist वैपाशायना:.

वैपुल्य (von विपुल) 1) n. *Dicke, Breite; grosser Umfang:* अष्टौ (Aṅgula) जानुमध्ये वैपुल्यम् Varâh. Bṛh. S. 58,22. भूमि° Râǵa-Tar. 7, 68. वंशो वैपुल्यमाययौ 4,712. °सूत्र oder einfach वैपुल्य *ein* Sûtra *von grossem Umfange,* Bez. best. Sûtra bei den Buddhisten Vjutp. 38. Burn. Intr. 62. 124. 127. 438. Wassiljew 109. fg. 128. 327. Târan. 314. — 2) m. N. pr. eines Berges Burnouf in Lot. de la b. l. 847. — Vgl. महा°.

वैप्रकर्षिक adj. = विप्रकर्षं नित्यमर्हति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64.

वैप्रचित adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von विप्रचित gaṇa सुतंगमादि zu P. 4,2,80.

वैप्रचित्त m. patron. von विप्रचित्ति. दानवा:, महासुरा: Mârk. P. 91,38. fg.

वैप्रयोगिक adj. = विप्रयोगं नित्यमर्हति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64.

वैप्रश्निक adj. = विप्रश्नं नित्यमर्हति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64.

वैफल्य (von विफल) n. *Erfolglosigkeit, Nutzlosigkeit, Vergeblichkeit* R. Gorr. 2,116,45. Kathâs. 28,5. 50,60. Râǵa-Tar. 3,157. Mârk. P. 8, 19. Sâh. D. 720. किमनुक्रोश्य वैफल्यमुत्पादयसि मे so v. a. *Unvermögen zu helfen* (Nilak. ergänzt जन्मन:) MBh. 13,285.

वैबाध (von विबाध) m. patron. *Sohn des Sprengers* so v. a. *Sprenger;* so heisst der auf dem Khadira wachsende und seine Unterlage *auseinander drängende* Açvattha AV. 3,6,2 (wo वैबाध दोधत: zu trennen ist). वैबाधप्रणुत्त 7.

वैबुध (von 1. विबुध) adj. (f. ई) *den Göttern eigen, göttlich* Kathâs. 9 Einl.

वैभग्रक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von विभग्र gaṇa वराहादि zu P. 4,2,80.

वैभडि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,30. vielleicht fehlerhaft für वैभण्डि oder वैभाण्डि; vgl. विभण्डक und वैभाण्डकि.

वैभव (von विभु) n. *Macht, Wirksamkeit; hohe Stellung:* महतां हि धैर्यमविचिन्त्यवैभवम् Kir. 12,3. Spr. (II) 2426, v. l. वितरणां (acc.) विना वैभवम् (nom.) 2792. (I) 4946. Kathâs. 21,60. निजवैभवोचितं विवाहसंभारविधिम् 34,249. 66,191. वीराणां वैद्युतं वैभवम् Verz. d. Oxf. H. 117, a, 25. 238, b, 4. Bhâg. P. 5,18,11. 10,14,38. 34,19. 12,10,39. उत्सवसंभारं स्वसिद्ध्युचितवैभवम् *Herrlichkeit, Pracht* Kathâs. 90, 91. am Ende eines adj. comp. f. आ 38,124. Verz. d. Oxf. H. 132, a, 1. — वैभव: MBh. 5,730 ist वै भव:.

वैभविक (von वैभव) adj. *mit Macht —, mit Wirksamkeit ausgestattet:* नानाशक्तिमतामेकं शक्तिवैभविकं (das suff. ist an शक्तिवैभव gefügt worden) Mârk. P. 23,44.

वैभाजन (von विभाजन) adj. etwa *nicht seines Gleichen habend:* स वै वैषुवतं स वै वैभाजनं पुरम् Âpast. 1,22,7.

वैभाजित्र adj. = विभाजयितुर्धर्म्यम् P. 4,4,49, Vârtt. 2.

वैभाज्यवादिन् Târan. 271. fg. fehlerhaft für विभज्य°; s. u. 2. विभज्य.

वैभाण्डकि (von विभाण्डक) m. patron. Ṛshjaçṛṅga's Hariv. 1700. R. 1,9,31.

वैभार m. N. pr. eines Berges Çatr. 1,345. 358. 5,593 (S. 22). 14,100. — Vgl. वैहार.

वैभाषिक (von विभाषा) 1) adj. *freigestellt, facultativ* Taitt. Prât. 22,7. — 2) m. *ein Anhänger der* Vibhâshâ (s. u. विभाषा 3), Bez. einer buddhistischen Schule Vjutp. 124. Madhus. in Ind. St. 1,13,21. Verz. d. Oxf. H. 259, b, N. 9. Colebr. Misc. Ess. I, 391. fg. Wilson, Sel. Works

I, 5. II, 363. Z. f. d. K. d. M. 4, 491. fg. BURN. Intr. 445. fgg. HIOUEN-THSANG I, 223. WASSILJEW 34 u. s. w. TÂRAN. 56. 59. 61. 67. 78. 295.

वैभाष्य n. = विभाषा 3) WASSILJEW 218. 266. 270.

वैभीतक adj. *vom* Vibhîtaka *kommend* u. s. w. gaṇa रजतादि zu P. 4, 3, 154. KÂTH. 11, 5. ÂÇV. ÇR. 9, 7, 7. SUÇR. 1, 215, 12. Würfel ÂPAST. 2, 25, 12.

वैभीदक adj. dass. TS. 2, 1, 5, 7. SHAḌV. BR. 3, 8. 4, 4. ÇÂÑKH. ÇR. 14, 22, 15.

वैभूतिक adj. von विभूति VJUTP. 173.

वैभूवस (वैभुऽवस Padap.; wohl von विभूवसु) m. patron. des Trita ṚV. 10, 46, 3.

वैभ्राज (von विभ्राज् und विभ्राज) 1) m. *a*) N. pr. einer Welt: वैभ्राजा (विभ्राजो सूर्यस्य NILAK.) नाम ते लोका दिवि भान्ति (सन्ति die neuere Ausg.) सुदर्शनाः। यत्र बर्हिषदो नाम पितरो दिवि विश्रुताः॥ HARIV. 974. Verz. d. Oxf. H. 39, *b*, 41. — *b*) patron. Vishvaksena's, Sohnes des Brahmadatta, HARIV. 1273. — *c*) N. pr. eines Berges MÂRK. P. 56, 13. 57, 12. — 2) n. *a*) N. pr. eines Götterhaines TRIK. 1, 1, 65. HÂR. 124. Verz. d. Oxf. H. 191, *a*, 38. HARIV. 1250 (auf den Fürsten Vibhrâga zurückgeführt). VP. 169. MÂRK. P. 55, 2. — *b*) N. pr. eines Teiches im Hain Vaibhrâga HARIV. 1250. — वैभ्राजाः VP. 213 fehlerhaft für वैराजाः.

वैभ्राजक n. = वैभ्राज 2) *a*) BHÂG. P. 5, 16, 15.

वैम adj. (चतुर्थर्षेषु) von वेमन् gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75; vgl. 6, 4, 144.

वैमतायन (von विमत) gaṇa अरीहणादि zu P. 4, 2, 80. Davon adj. (चतुर्थर्षेषु) वैमतायनक ebend.

वैमत्तायन (von विमत्त) und davon adj. वैमत्तायनक ebend. v. l.

वैमत्य (von 2. विमति) 1) m. oxyt. patron. gaṇa कुर्वादि zu P. 4, 1, 151. — 2) n. proparox. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. *Meinungsverschiedenheit* RÂGA-TAR. 3, 528 (°मुख्यामात्यवैमत्य° zu lesen). 5, 462. 7, 1412. 8, 2838.

वैमद adj. (f. ई) *zu* Vimada *in Beziehung stehend, von ihm stammend* AIT. BR. 5, 4. 6, 19. ṚV. PRÂT. 8, 11. 17, 25.

वैमन adj. von वेमन् P. 6, 4, 167, Schol.

वैमनस्य n. nom. abstr. von विमनस् gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123 (वै°). *Entmuthigung, Niedergeschlagenheit, Gefühl der Unlust, des Missvergnügens* AV. 5, 21, 1. MBH. 3, 14794. 9, 2786. 12, 7860. 13, 6035. 14, 680. ÇÂK. 79, 23. DHÛRTAS. 72, 5. BHÂG. P. 10, 54, 50. MÂRK. P. 55, 20 (pl.).

वैमन्य adj. von वेमन् P. 6, 4, 168, Schol.

वैमल्य (von विमल) n. *Reinheit, Lauterkeit, Klarheit* SUÇR. 1, 187, 20. इन्द्रियाणाम् 2, 240, 9. (लक्ष्मीः) वैमल्यमेति करिणीव कृताशशौचे Spr. 2486. वंश° MÂRK. P. 22, 39. प्रसादो ऽर्थवैमल्यम् SÂH. D. 251, 14.

वैमात्र (von विमातर्) adj. *von einer anderen Mutter stammend* GAṬÂDH. im ÇKDR. R. 3, 54, 4. भ्रातर् *Stiefbruder* 27, 17. 53, 19. 5, 32, 14. Schol. zu ÇÂÑKH. ÇR. 14, 39, 7. — Nach VJUTP. 167 *Verschiedenheit* oder *Reihe;* इन्द्रियवैमात्रता 38. वैमात्र als Bez. *einer best. hohen Zahl* 179. Mél. asiat. 4, 639.

वैमात्रेय (wie eben) adj. dass. gaṇa शुभ्रादि zu P. 4, 1, 123. AK. 2, 6, 1, 25. H. 546. KULL. zu M. 8, 116.

वैमानिक 1) adj. (f. ई) *in dem* विमान *genannten palastähnlichen Wagen der Götter fahrend:* मरुतः RAGH. 6, 1. पुण्यकृतः 10, 47. तापसा यतयो विप्रा ये च वैमानिका गणाः M. 12, 48. त्रयस्त्रिंशच्च वै देवास्तथा वैमानिका गणाः MBH. 3, 171. सुरगणाः VARÂH. BṚH. S. 48, 60. VP. 96. सुराः BHÂG. P. 4, 12, 33. देवी 10, 81, 27. m. pl. Bez. *best. himmlischer Wesen* und *der Götter* überh. H. 89, Schol. Verz. d. Oxf. H. 117, *a*, 33. MAHÂVIRAK. 51, 7. KATHÂS. 118, 98. BHÂG. P. 3, 15, 17. 23, 41. 33, 15. 8, 23, 26. 10, 33, 24. °स्त्री 8, 15, 20. °विमोहन RÂGA-TAR. 5, 370. sg.: पुण्यवत्यो पितृपितृवैमानिक (so ist nach KERN zu lesen) इवाम्बरात् 8, 1297. Bei den Gaina eine Klasse von Göttern, die wieder in zwei Unterabtheilungen zerfällt, in die Kalpabhava und Kalpâtîta, H. 92. fgg. — 2) adj. (vom vorhergehenden) *die Götter betreffend:* सर्ग so v. a. *die Schöpfung der Götter* LIÑGA-P. bei MUIR, ST. IV, 325. — 3) wohl n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes MBH. 13, 1709.

वैमित्रा (von 2. वि + मित्र) f. N. pr. einer der 7 Mütter Skanda's MBH. 3, 14396.

वैमुक्त adj. *das Wort* विमुक्त *enthaltend:* अध्याय, अनुवाक P. 5, 2, 61.

वैमुख्य (von विमुख) n. *Abneigung, das Nichtswissenwollen von Jmd oder Etwas, Widerwille* RÂGA-TAR. 1, 8. भक्तेर्वैमुख्यमेव चेत् 8, 697. °भाज् 6, 322. प्रियः (subj.) 2, 157. तृणादिमुख्यमायाति सांमुख्यं याति च त्वत्पात्। न हेतुं कंचिदीक्षन्ते पशुप्रायाः पृथग्जनाः॥ 8, 898. 1401. युवयोर्नास्ति वैमुख्यं संग्रामे दानवैरपि HARIV. 5388. न च तौ युद्धवैमुख्यं श्रमं वा प्युपजग्मतुः 3089. 5114. व्यय° KUVALAJ. 75, *a*.

वैमूल्य (von 2. वि + मूल्य) n. *Verschiedenheit des Preises* M. 9, 287.

वैमृध (von विमृध्) adj. (f. ई) *dem* Indra Vimṛdh *geweiht* u. s. w. TS. 2, 5, 2, 1. 4, 1. ÇAT. BR. 9, 5, 2, 5. ÇÂÑKH. ÇR. 3, 1, 7. wie विमृध् Bein. Indra's TS. 2, 2, 2, 4. 4, 2, 2.

वैमृध्य adj. dass. ÂÇV. ÇR. 2, 10, 13.

वैमेय m. = विमय, नैमेय *Tausch* H. 870. HALÂJ. 2, 418.

वैम्य m. patron.; pl. SAṂSK. K. 186, *a*, 7.

वैयग्र्य (von व्यग्र) adj. *das Beschäftigtsein mit Etwas, Obliegen:* कार्य° ÇUK. in LA. (III) 37, 16.

वैयधिकरण्य (von व्यधिकरण) n. *Nichtübereinstimmung im Casus* (Gegens. सामानाधिकरण्य) SÂH. D. 282, 2. 283, 7. PRATÂPAR. 80, *a*, 2. 4.

वैयमक m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 2, 1869.

वैयर्थ्य (von व्यर्थ) n. *Nutzlosigkeit* VIKR. 29, 18. Comm. zu TAITT. PRÂT. 1, 61. 2, 47. 4, 11. 23. 5, 22. KULL. zu M. 2, 139. 3, 284. KUSUM. 30, 11. 60, 11.

वैयल्कश adj. von व्यल्कश gaṇa द्वारादि zu P. 7, 3, 4. वैयल्कश VOP. 7, 4. 18.

वैयशन (von व्यशन) adj.: मूर्धन् als symbolischer Name eines Monats WEBER, Nax. 2, 349.

वैयश्व (von व्यश्व) 1) m. patron. *des* Viçvamanas (eines Liedverfassers) ṚV. 8, 23, 24. 24, 23. 26, 11. वैय्यश्व geschr. — 2) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3, 238, *a*. PAÑKAV. BR. 14, 10, 8. 15, 3, 26. LÂṬJ. 3, 6, 30.

वैयश्वि m. patron. von व्यश्व VOP. 7, 1. 4.

वैयसन adj. von व्यसन P. 7, 3, 3, Schol.

वैयाकरण (von व्याकरण) m. *Grammatiker* gaṇa ऋगयनादि zu P. 4, 3, 73. Schol. zu 2, 59 und 7, 3, 3. VOP. 7, 15. NIR. 1, 12. 9, 5. 13, 9. P. 6, 3, 7. सर्वार्थानां व्याकरणाद्वैयाकरण स उच्यते MBH. 5, 1681. Ind. St. 5, 159. SÂH. D. 119, 7. Schol. zu AV. PRÂT. 1, 1. zu VS. PRÂT. 4, 145. zu

Taitt. Prât. 5,1. 24,3. Verz. d. B. H. 160,17. प्रथम° P. 6,2,56, Schol. अ° Nir. 2,3. °खसूचि *der als Grammatiker mit der Nadel in die Luft fährt* so v. a. *schlecht beschlagen in der Grammatik* Schol. zu P. 2,1,53. वैयाकरणहस्तिन् *ein einem Grammatiker als Lohn geschenkter Elephant* zu 6,2,65. °भार्य *der eine Grammatikerin zur Frau hat* Vop. 6,14.

वैयाकरणभूषण n. Titel des Werkes eines *Grammatikers* Colebr. Misc. Ess. I, 263. II, 42. Hall 78. Verz. d. Oxf. H. 177,*a*, No. 402. °सार ebend. Colebr. Misc. Ess. II, 42. — Vgl. वृद्ध°.

वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा f. desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 42. Verz. d. Oxf. H. 177,*b*, No. 403.

वैयाकृत adj. = व्याकृत gaṇa प्रज्ञादि zu P. 5,4,38.

वैयाख्य adj. von व्याख्या; स° = सव्याख्य *mit einer Erklärung versehen* MBh. 1,50. 12,1353. 1839.

वैयाघ्र (von व्याघ्र) 1) adj. *a) vom Tiger kommend, aus Tigerfell gemacht, mit Tigerfell bezogen* AV. 8,7,14. चर्मन् Kâç. zu P. 4,2,12. Lâṭj. 9,2,22. Kauç. 17. Hariv. 13121. R. 3,7,8. 4,25,25. Varâh. Bṛh. S. 44, 13. Verz. d. Oxf. H. 46,*a*,41. °कोश MBh. 4,1336. रथ P. 4,2,12. AK. 2,8,2,21. H. 755. MBh. 2,2063. 7,3892. 8,3598. *in ein Tigerfell gehüllt* 4,1738. — *b) von* Vjâghra *herrührend:* धर्मा: Verz. d. Oxf. H. 266,*b*, 25. — 2) n. *Tigerfell* AV. 4,8,4. Çâñkh. Çr. 14,33,26. Hariv. 6199. °परिवारित MBh. 2,1854. 7,268. °परिवारण 5,2837. 7101. R. 7,23,4,32.

वैयाघ्रपदी f. zu वैयाघ्रपद्य *zu* Vjâghrapad *in Beziehung stehend* Weber, Nax. 2,392. patron.: °पुत्र N. pr. eines Lehrers Bṛh. Âr. Up. 6,5,1.

वैयाघ्रपद्य 1) adj. *von* Vjâghrapad *herrührend:* वार्त्तिक Verz. d. Oxf. H. 176,*a*, N. 1. — 2) m. patron. von Vjâghrapad gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Çat. Br. 10,6,1,1. 8. Lâṭj. 6,9,17. Khând. Up. 5,2,3. 14,1. MBh. 4,224. 1141. 13,634 (nach der Lesart der ed. Bomb.). pl. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,35.

वैयाघ्रपाद् MBh. 13,634 fehlerhaft für वैयाघ्रपद्य.

वैयाघ्र्य (von व्याघ्र) adj. *tigerähnlich:* आसन *Art zu sitzen* Verz. d. Oxf. H. 11,*a*, N. 1.

वैयात adj. = वियात P. 5,4,36, Vârtt. 5.

वैयात्य n. nom. abstr. von वियात gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. *Dreistigkeit, Unverschämtheit* P. 7,2,19. Spr. (II) 368. Râga-Tar. 5,384.

वैयावृत्ति, °कर als Bed. von भोगिन् H. an. 2,278.

वैयावृत्य (!), धर्मवैयावृत्यं करोति Burn. Intr. 273, N. 2. °कर *ein geistlicher Diener* (bei den Buddhisten) Vjutp. 203. Man könnte वैयापृत्य von व्यापृत vermuthen.

वैयास adj. *von* Vjâsa *herrührend* Çiç. 20,82; vgl. Verz. d. Oxf. H. 118,*a*, No. 194.

वैयासकि m. patron. von Vjâsa P. 4,1,97, Vârtt. Vop. 7,1. 5. MBh. 12,8485. 12044. Spr. 2871. Bhâg. P. 1,18,3. 16. 2,3,13. 25. 6,3,20. 10,1,14.

वैयासि m. desgl. Bhâg. P. 3,22,37.

वैयासिक adj. (f. ई) *von* Vjâsa *herrührend, von ihm verfasst* u. s. w.: शमगिर: Spr. 2828. सरस्वती Prab. 98,8. संहिता MBh. 1,1. 234 und Bhâg. P. in den Unterschrr. der Adhjâja.

वैयास्क. In Ṛv. Prât. 17,25 heisst es: न दाशतय्येकपदा काचिदस्तीति वैयास्क:. Man hat die Wahl वैयास्क: (von वियास्क) oder वै यास्क: zu lesen. Gegen dieses spricht, dass वै im Prât. nicht gebraucht wird, gegen beides der metrische Fehler. Wir sind daher geneigt वै für interpolirt und als ursprüngliche Lesart °ति यास्क: anzusehen, wobei यास्क: nach vedischer Art mit Vocaleinschub dreisilbig – ⏑ ⏓ zu sprechen wäre.

वैयुष्ट adj. = व्युष्टे दीयते कार्यं वा P. 5,1,97.

वैय्य° s. वैय°.

वैर (von वीर) 1) adj. *feindlich, rächerisch:* कर्त्र AV. 10,1,19. — 2) n. Siddh. K. 249,*b*,2. am Ende eines adj. comp. f. आ. *Feindschaft, Feindseligkeit, Fehde* AK. 1,1,7,25. H. 730. AV. 12,5,28. Pañkav. Br. 16,1,12. P. 4,3,125 (AK. 3,6,4,4). वानरराज्ञेन R. 1,1,60. कारणं (*Veranlassung, Ursache*) वैरस्य 4,8,29. °कारण Bhaṭṭ. 9,117. दंपत्योरन्योऽन्यम् Varâh. Bṛh. S. 5,97. स्नेहात्, वैरतम् Spr. (II) 259. °स्नेहयो: पारमनासाद्य Râga-Tar. 4,108. वैर, मैत्र Bhâg. P. 7,9,41. वैरं पञ्चसमुत्थानम् — स्त्रीकृतं वास्तुजं वाग्जं ससापत्नापराधजम् Spr. 5038. स्वाभाविक Pañkat. 66,10. वैरं तवायं किं निज: प्रकर्ष: (wo wir *Feind* sagen würden) Kathâs. 32,193. नायं वैरं विस्मरते कदाचित् MBh. 3,15705. (सन्त:) स्मरन्ति सुकृतान्येव न वैराणि कृतान्यपि Spr. 5329. न वैराण्यभिजानन्ति 4354. मित्रैरपि भूपानां जायते वैरम् Varâh. Bṛh. S. 8,4. तेषामथासुराणां च पुनर्वैरमजायत Kathâs. 46,223. नैव तिष्ठति तद्वैरं पुष्करस्थमिवोदकम् Spr. (II) 384. दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् 2766. न चापि वैरं वैरेण व्युपशाम्यति 3233. नहि वैर्याणि शाम्यन्ति दीर्घकालं धृतान्यपि MBh. 5,2642. नहि वैराणि शाम्यन्ति कुले 12,5205. न वैरमुद्दीपयति प्रशान्तम् Spr. 4353. उपशान्तवैरा Varâh. Bṛh. S. 8,30. विगत° adj. 32,22. निवृत्त° adj. 29. न वैरं कुर्वीत केनचित् Spr. (II) 153. R. 2,21,15. अकर्ता च वैराणाम् Kâm. Nîtis. 4,30. कृत° adj. MBh. 12,5160. R. 1,57,1 (58,1 Gorr.). 4,3,22. Spr. (II) 1864. अन्योऽन्यकृत° 384. fg. यस्य वै लोकवीरेण बद्धं वैरं महात्मना R. 5,38,49. पूर्वबद्ध° adj. 4,53,14. बद्धवैरस्य राक्षसै: 5,6,11. Çâk. 48. सार्धम् Râga-Tar. 6,194. Bhâg. P. 8,7,39. Liñga-P. bei Muir, ST. 4,325,23 (विद्ध° fälschlich). 326,6. सपत्नी ते कथं वैरं न पातयेत् R. Gorr. 2,7,31. तेन वैरं समासज्य Spr. 4701. वैरमारभते 2948. मित्राद्युत्पादितं वैरमपि मूलं निकृन्तति 2203. प्रयुक्तं राक्षसै: सह। वैरम् R. 3,67, 12. उपगृह्य वैराणि MBh. 12,5206. वैरस्यान्तं संविधाय 3,15705. नृपाणां वैरं विधाय Bhâg. P. 1,11,35. यत्नं वैरं दुस्त्यजमत्यज: 4,12,2. °त्याग Jogas. 2,35. °निलयो निषाद: R. 1,2,13. °प्रकोप Varâh. Bṛh. S. 20,9. °निर्बन्ध: कृतो राजमुखेन MBh. 1,1166. °साधन Pañkat. 81,24. पूग° *Feindschaft mit Vielen* MBh. 5,1085. 1224. मित्र° Varâh. Bṛh. S. 53,117. स° (रिपु) Spr. (II) 3234. Als m.: महान्तं (महानन्त: संहारो येन तन्महान्तम् Nilak.; sehr häufig steht महत् n. st. महान्तम् m.) वैरमास्थिता: (आश्रिता: ed. Bomb.) MBh. 1,1155. न मे वैरो निवसते (besser वैरं प्रवसति die neuere Ausg.) Hariv. 6059. — Vgl. निर्वैर (adj. mit loc. Bhâg. 11,55), प्रति°, शुष्क°.

वैरक am Ende eines adj. comp. von वैर 2): मुक्त° Bhâg. P. 4,4,11.

वैरकर adj. *Feindschaft bewirkend, — hervorrufend:* द्यूत M. 9,227. बहु° Varâh. Bṛh. S. 10,20.

वैरकरण n. *das Bewirken —, Erregen von Feindschaft* R. 3,13,7.

वैरकार adj. = वैरकर P. 3,2,23.

वैरकारक adj. dass.: प्रक्रिया वैरकारिका MBh. 12,4141.

वैरकारिता (von वैर + कारिन्) f. *Streitsucht* Kâm. Nîtis. 13,62.

वैरकि m. patron. von वीरक gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61.

वैरकृत् adj. *streitsüchtig, zänkisch, feindselig* Spr. (II) 786. (I) 4329.

वैरक्त n. nom. abstr. von विरक्त ÇKDr. वैरक्त्य n. *das Erkalten* (gegen eine Person), *Abholdwerden* Wilson so zu lesen st. वैरत्य Kathâs. 60, 145.

वैरंकर adj. *anfeindend:* अवैरिणाम् Bhâg. P. 6,5,39.

वैरङ्गिक (von 1. विरङ्ग) adj. = विरागं नित्यमर्हति gaṇa छेदादि zu P. 5,1,64. *frei von aller Leidenschaft, der Allem entsagt hat* H. 490. Halâj. 2,214. Pârçvanâthak. 5,92 (nach Aufrecht).

वैरट m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 519, Çl. 26. — Vgl. वैराट.

वैरट्टी f. N. pr. eines Frauenzimmers Burn. Intr. 162.

वैरणक adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von वीरण gaṇa अरीहणादि zu P. 4,2,80.

वैरणी f. *die Tochter* Vîraṇa's Hariv. 121. 142.

वैरण्डेय m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59,13.

वैरत m. pl. N. pr. eines Volkes: सिन्धुकालकवैरताः Mârk. P. 58,32.

वैरता f. = वैर 2) MBh. 5,3198.

वैरत्य adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von विरत gaṇa संकाशादि zu P. 4,2,80. fehlerhaft für वैरक्त्य Kathâs. 60,145.

वैरत्व n. = वैरता R. 6,66,27.

वैरदेय n. *Feindschaft, Rache* oder *Strafe*: स वैरदेयं इत्समः ṚV. 5,68, 1. als die Götter die Asura erschlugen वैरदेयाद्दोषमाणास्ते दिशो ऽभीक्ष्यन् Kâṭh. 23,8. 28,2. 3. 6.

वैरनिर्यातन n. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* oder *Sühne* AK. 2,8,2,79. H. 804. — Vgl. वैरयातन.

वैरन्त्य m. N. pr. eines Fürsten: (देवी निन्नधान) नूपुरेण च वैरन्त्यम् Kâm. Nîtis. 7,53.

वैरपुरुष m. *ein feindselig gesinnter Mann, Feind* MBh. 12,188.

वैरप्रतिक्रिया f. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* H. 804.

वैरभाव m. *Feindseligkeit* Bhâg. P. 7,10,34.

वैरमण (von विरमण) adj. *finalis:* त्र्यह Âpast. 1,10,2.

वैरयातन n. *Sühne* Âpast. 1,24,1. — Vgl. वैरनिर्यातन.

वैरल्य (von विरल) n. *geringe Anzahl, Geringigkeit* Râǵa-Tar. 7,1443.

वैरवत् (von वैर) adj. *feindselig, in Feindschaft lebend* MBh. 13,4522.

वैरविशुद्धि f. *Vergeltung von Feindseligkeiten, Rache* Râǵa-Tar. 4,283.

वैरशुद्धि f. dass. AK. 2,8,2,79. 3,4,18,122. H. 804.

वैरस (von विरस) n. = वैरस्य *Widerwille, Ekel:* कष्टजीवित° Kathâs. 104,70.

वैरस्य (wie eben) n. 1) *das Schlechtschmecken:* अन्नस्य Varâh. Bṛh. S. 46,35. आस्य° *schlechter Geschmack im Munde* Suçr. 1,156,14. मुख° 192, 21. 215,9. 288,19. *das Widerstehen* (in ästhetischem Sinne) Kâvjâd. 1, 63. — 2) *das keinen-Geschmack-an-Etwas-haben, Widerwille, Ekel* Suçr. 1,90,12. (आरामम्) सुराणां नन्दनोद्यानवासवैरस्यदायिनम् Kathâs. 28,52. वैरस्यं स्त्रीषु चेत्तव 49,224. वैरस्यं न प्रेत्तका गताः Râǵa-Tar. 2,156.

वैरहत्य (von वीरहन्) n. *Männermord* VS. 30,13. TBr. 1,5,9,5. — Vgl. अ° und वीरहत्या.

वैरागिक adj. = वैरङ्गिक ÇKDr. nach Siddh. K.

वैरागिन् adj. dass. Brahmavaiv. P., Brahmakhaṇḍa 24 im ÇKDr.

वैराग्य (von 2. विराग) n. 1) *das Sichentfärben, Bleichwerden:* चकोरस्याक्षिवैराग्यम् Suçr. 2,246,2; vgl. चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् Kâm. Nîtis. 7,12. — 2) *Gleichgiltigkeit aus Ueberdruss, Abneigung, Widerwille* (gegen Personen und Sachen) Ragh. 17,55. Spr. (II) 466. Varâh. Bṛh. S. 74,5. mit loc.: इन्द्रियार्थेषु Bhag. 13,8. Spr. (II) 3132. भवरसे (I) 1412. Verz. d. Oxf. H. 223,*b*, No. 544. 231,*b*,34. Pańkat. 132, 5. सर्वत्र ज्ञातवैराग्यः Bhâg. P. 3,27,27. mit abl.: विषयेभ्यः Madhus. in Ind. St. 1,22,14. in comp. mit der Ergänzung Spr. (II) 1466. Verz. d. Oxf. H. 231,*b*,33. ohne Ergänzung *Gleichgiltigkeit gegen die Welt, Lebensüberdruss* Maitrjup. 1,2. Bhag. 6,35. MBh. 5,1648. Sâṅkhjak. 45. Spr. (II) 1603. (I) 1475. 2006. 2075. 2903. Madhus. in Ind. St. 1,20,5. 22,20. Prab. 33,9. Kathâs. 28,14. 36,107. 64,147. Râǵa-Tar. 2,174. 4,389. Bhâg. P. 1,2,7. 12. 9,26 (Gegens. राग). 3,5,41. 45. 7,39. 13,38. 31,48. 4,23,18. 29,37. 6,1,31. वैराग्यं नास्य संजज्ञे भुञ्जतो विषयान्प्रियान् Mârk. P. 37,6. Weber, Râmat. Up. 286. 323. Pańkat. 50,16. 82, 13. 98,11 (भक्तितशिशुवै° ed. Bomb.). 116,11. 14. अ° Tattvas. 7. Weber, Râmat. Up. 324. सवैराग्यम् *gleichgiltig* Pańkat. 66,20. Dhûrtas. 93, 6. सहर्षवैराग्यम् 83,17.

वैराग्यता f. = वैराग्य 2) Pańkat. 50,15. मत्स्यादनं प्रति परमवैराग्यतया ed. Bomb. I,53,5. 6.

वैराग्यशतक n. *hundert Sprüche, welche die Gleichgiltigkeit gegen die Welt schildern*, Titel der dritten Centurie der Sprüche Bhartṛhari's.

वैराज 1) adj. von 1. विराज् 3) *von* Virâǵ *kommend, — stammend* u. s. w.: ब्रह्मसदन Hariv. 2255. 12629. °सदन MBh. 12,13722. Verz. d. Oxf. H. 19,*b*,7. °पिण्ड Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 89. patron. des Purusha Bhâg. P. 2,1,25. 9,45. 11,3,12. 17,12. Hariv. 52. Manu's oder der Manu 71. VP. 52, N. 5. Verz. d. Oxf. H. 39,*a*, N. 1. pl. Bez. *bestimmter Manen* MBh. 2,462. Hariv. 936. VP. 213. 321, N. 1. लोकाः Uttarar. 31,18 (41,14). कल्प VP. 213, N. des 27ten s. u. कल्प 2) *d*). — 2) adj. von 1. विराज् 4) *zur* Virâǵ *gehörig* u. s. w., *der* Virâǵ *analog* d. h. *aus Zehn bestehend, zehnsilbig* u. s. w. Çat. Br. 3,3,2,17. 9,4,19. वैराजो वै पुरुषः Pańkav. Br. 19,4,5. Çâṅkh. Çr. 15,1,31. Lâṭj. 3,12,10. इष्टिर्वैराजतन्त्रा Âçv. Çr. 2,1,34. 11,5. 12,6,29. पाद ṚV. Prât. 16,42. 17,10. 12,21. — 3) n. N. eines Sâman (eine der sechs Hauptformen) AV. 15,2,3. VS. 10,13. 21,26. Ait. Br. 4,28. Pańkav. Br. 8,9, 13. 12,10,6. 10. Khând. Up. 2,16,1. 2. Kaush. Up. 1,5. VP. 42. Mârk. P. 48,34. Ind. St. 3,238, *a*. °पृष्ठ Lâṭj. 10,13,10. Çâṅkh. Çr. 10,5,1. 16, 23,20. °गर्भ 15,7,2. °ऋषभम् Ind. St. 3,238, *a*. महा° ebend. इन्द्रस्य oder वसिष्ठस्य महावैराजम् 208, *a*. — 4) adj. *das* Sâman Vairâǵa *betreffend, — enthaltend* u. s. w. VS. 29,60. TS. 2,3,2,2. 7,5,14,1. Çâṅkh. Çr. 9,27,1. 10,5,23. — 5) m. N. pr. des Vaters von Aǵita Bhâg. P. 8,5,9. — Dunkel ist die Bed. in der Formel AV. 3,26,3.

वैराजक adj. Bez. des 19ten Kalpa Verz. d. Oxf. H. 52,*a*,2.

वैराज्य (von 1. विराज्) n. *ausgebreitete Herrschaft*, neben साम्राज्य und स्वाराज्य Ait. Br. 7,32. 8,6. 12. Lâṭj. 3,18,8. Bhâg. P. 10,83,41.

वैराट 1) adj. *zu* Virâṭa, *Fürsten der* Matsja, *in Beziehung stehend, von ihm handelnd, ihm gehörig:* पर्वन् MBh. 1,327. 481. °वेश्मन् Ka-

THÂS. 33,91. — 2) m. *ein Sohn* Virâṭa's MBH. 6,4349. f. ई *eine Tochter* Virâṭa's MBH. 1,328 (वैराव्याः पर्व mit der ed. Bomb. zu lesen). 7, 2766. 14,1836 (वैराटि mit der ed. Bomb. zu lesen). 1846. fg. 15,591. BHÂG. P. 1,8,14. — 3) N. pr. eines Landes: °देश Verz. d. Oxf. H. 352, b,10. °राज 280,b,5. — 4) m. *eine Art Edelstein*, = विराटज H. 1066, Schol. — 5) m. *Coccinelle, ein rother Käfer* H. 1209. — 6) *eine best. Farbe* oder *ein Object von bestimmter Farbe* ist gemeint im adj. °पृष्ठ (उत्तन्) MBH. 13,3777.

वैराटक n. *eine best. giftige Knolle* SUÇR. 2,252,6. — Vgl. विरातक.

वैराटि m. *ein Sohn* Virâṭa's MBH. 4,1098.

वैराव्या f. schlechte v. l. für वैरोव्या H. 240.

वैराणक (vgl. वीराणक) gaṇa उत्करादि zu P. 4,2,90. davon adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) वैराणकीय ebend.

वैराधय्य n. nom. abstr. von विराधय gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैरातङ्क (वैर + आ°) m. *Terminalia Arguna W. und A.* RÂGAN. im ÇKDR.

1. वैरानुबन्ध (वैर + अ°) m. *anhaltende Feindschaft* BHÂG. P. 7,1, 25. fg. 46. 10,37. 8,19,13. 22,6.

2. वैरानुबन्ध (wie eben) adj. *beständig anfeindend* BHÂG. P. 5,24,2.

वैरानुबन्धिन् adj. *Feindschaft nach sich ziehend*: कर्म महावैरानुबन्धि Spr. 1620. Davon nom. abstr. वैरानुबन्धिता f. KÂM. NÎTIS. 14,45.

वैराम m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 2,1832. oder ist etwa वै रामाः zu trennen?

वैराय् (von वैर), °यते *Feindseligkeiten beginnen, feindlich auftreten* P. 3,1,17. VOP. 21,10. वैरायितारः ÇIÇ. 2,115. वैरायमाण BHAṬṬ. 5,75. तान्प्रति Spr. 3159. महद्भिः (II) 3032.

वैरि m. = वैरिन् *Feind*: संसारवैरिः (°वैरी?) PAÑKAR. 4,1,29.

वैरिञ्च (von विरिञ्च) adj. (f. ई) *zu* Brahman *in Beziehung stehend* u. s. w.: सभा BHÂG. P. 11,17,5.

वैरिञ्च्य (wie eben) m. *ein Sohn* Brahman's BHÂG. P. 1,11,6.

वैरिण n. nom. abstr. von वैरिन्; s. निर्वैरिण, wo TATTVAS. st. TARKASAÑGR. zu lesen ist.

वैरिणि m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 59,10.

वैरिता (von वैरिन्) f. *Feindseligkeit, Feindschaft*: नश्येत्पूर्वा च वैरिता KATHÂS. 102,139. परं नयेत्र स्वयमेव वैरिताम् Spr. 1932. याति वैरिताम् KATHÂS. 14,10. अस्माकमुलूकैः सह 62,24. देवैः सह न ते कार्या तदकारणवैरिता 45,146.

वैरित्व (wie eben) n. dass.: काकोलूकस्य KATHÂS. 62,17.

वैरिन् (von वैर) adj. *feindselig*, m. *Feind* AK. 2,8,1,10. H. 729. HALÂJ. 2,301. M. 4,133. 8,64. BHAG. 3,37. MBH. 3,15761. 4,473. 6,4019. 13,2058. HARIV. 5539. 8148. R. 4,9,102. 12,8. 6,13,10. Spr. (II) 498. 2388. 2698. (I) 2160. 2940, v. l. 3325. 4329. 5319. 5393. RAGH. 12,104. KATHÂS. 19,54. 22,201. 27,138. 49,43. 54,218. RÂGA-TAR. 1,85. 3,330. 4,286. 6,201. BHÂG. P. 6,5,39. 7,22. 11,19. 7,10,38. VET. in LA. (III) 22,1. वैरिपक्ष MÂRK. P. 15,60. दृढ° MBH. 1,7128. निष्कारण° Spr. 2234. विधि *feindliches Geschick* MEGH. 100. वायुना द्रुमवैरिणा R. GORR. 2,120,25. वैरी न चेद्भवति वेपथुरन्तरायः SÂH. D. 56,16. स्फुटवैरिकैरव *der Sonne* Spr. (II) 1445. वैरिणी f. (I) 4540. KATHÂS. 29,112. — Vgl. धातु°, पूर्व° (auch PAÑKAT. 110,11), मुर°, वात°, विषवैरिणी.

वैरिवीर (वैरिन् + वीर) m. N. pr. eines Sohnes des Daçaratha VP. 384, N. इलविल v. l.

वैरिसिंह (वैरिन् + सिंह) m. N. pr. eines Fürsten Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,505, Çl. 18. fg. 519, Çl. 27.

वैरीभू (von वैर + 1. भू), °भवति *in Feindschaft übergehen*: अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम् ÇÂK. 120.

वैरूप (von विरूप) 1) m. patron. PRAVARÂDHJ. in Verz. d. B. H. 56,16. des Ashṭâdaṁshṭra PAÑKAV. BR. 8,9,21. ÂÇV. ÇR. 12,11,1. अङ्कतेर्वैरूपस्य साम Ind. St. 3,201,b. कुतोपादस्य वैरूपस्य साम 213,b. pl. eine Abtheilung der Añgiras ṚV. 10,14,5. — 2) n. N. eines Sâman (eine der sechs Hauptformen) VS. 10,12. 13,56. 21,25. AV. 15,2,3. 4,3. AIT. BR. 4,28.5,1. PAÑKAV. BR. 8,9,12. 12,4,17. ÇÂÑKH. ÇR. 10,4,16. KHÂND. UP. 2,15,1. 2. KAUSH. UP. 1,5. VP. 42 (MUIR, ST. 3,7). MÂRK. P. 48,33. Ind. St. 3,238,a. इन्द्रस्य oder वसिष्ठस्य वैरूपम् 208,b. पञ्चनिधनम् 222,a. °गर्भ ÇÂÑKH. ÇR. 15,7,4. °पृष्ठ 10,4,1. 16,23,19. LÂṬJ. 10,13,9. Vgl. अक्षो°, क्रुस्वा°. — 3) adj. von वैरूप 2) VS. 29,6. TS. 2,3,3,2. 7,5,11, 1. ÇÂÑKH. ÇR. 9,27,1.

वैरूपाक्ष (von विरूपाक्ष) m. 1) patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. — 2) Bez. eines Mantra GOBH. 4,5,4. 5. GṚHJAS. 1,96.

वैरूप्य (von 2. विरूप) n. nom. abstr. VOP. 7,19. 1) *Verschiedenartigkeit, Mannichfaltigkeit, Verschiedenheit*: विश्व° MBH. 5,1627. अन्योऽन्यवैरूप्ये 12,8805. MÂRK. P. 45,30. शास्त्रार्थ° ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 198. — 2) *deformitas* JÂGÑ. 3,79. देहे MBH. 3,15912. अङ्गज HARIV. 10863. अङ्गेषु R. 5,48,6. अङ्ग° 49,4. 7,30,22. RAGH. 12,40. Spr. 1912. रोग° *in Folge von Krankheit* KATHÂS. 12,71. 16,68. 20,109. 40,27. 56,351. 362. MAHÂNÂṬ. 312. BHÂG. P. 1,17,13. 3,30,15. 9,10,4. 10,54, 37. DAÇAK. 67,13. सिन्धुवैरूप्यकरण Verz. d. Oxf. H. 79,a,8.

वैरूप्यता f. = वैरूप्य 2): गात्र° MBH. 3,2803.

वैरेकीय (von विरेक) adj. *zum Purgiren dienend, purgirend, ausputzend*: °द्रव्य SUÇR. 1,161,15.

वैरेचन (von विरेचन) adj. dass. SUÇR. 1,161,1. 20. ÇÂRÑG. SAṀH. 3,8,6.

वैरेचनिक (wie eben) adj. dass. SUÇR. 1,163,5. 11. 2,97,5. 520,4.

वैरेय adj. (चतुर्ष्वर्थेषु) von वीर gaṇa सख्यादि zu P. 4,2,80.

वैरोचन (von विरोचन) 1) adj. *von der Sonne kommend*: मयूखाः *Sonnenstrahlen* KIR. 5,46. — 2) m. *a) ein Sohn der Sonne* H. an. 4,195. ÇABDAR. im ÇKDR. — *b) ein Sohn* Vishṇu's H. an. — *c) ein Sohn des Feuers* ÇABDAR. — *d) ein Sohn des* Asura Virokana, *patron.* Bali's, H. an. ÇABDAR. MBH. 1,5484. 2,364. 3,1029. 7,859. 12,8059. 13,4687. R. 7,12,23. BHÂG. P. 8,6,34. 10,16. 15,33. °निकेतन n. Bali's *Behausung* so v. a. *die Unterwelt* HALÂJ. 3,1. — *e)* N. pr. eines Fürsten AIT. BR. 8,22. — *f)* N. pr. eines Buddha ÇABDAR. BURNOUF Intr. 117. 557. WASSILJEW 129. 159. 183. 187. fg. WILSON, Sel. Works II, 12. 14. 35. HIOUEN-THSANG 2,227. Vie de HIOUEN-THSANG 282. TÂRAN. 327. LALIT. ed. Calc. 200,12. ein Sohn der Göttersippe Nîlakâjika LALIT. FOUC. 358. — *g)* N. pr. einer Sippe von Siddha's (सिद्धगण) ÇABDAR. im ÇKDR. — *h)* °मुहूर्त Bez. *eines best.* Muhûrta Verz. d. B. H. No. 912. — *i)* N. pr. einer best. Welt der Buddhisten WILSON, Sel. Works II, 36. — *k)* Bez. *eines best.* Samâdhi VJUTP. 17. — Vgl. वैरोचनि.

वैरोचनभद्र m. N. pr. eines Gelehrten Târan. 219.

वैरोचनरश्मिप्रतिमण्डित m. N. pr. einer best. Welt der Buddhisten Lot. de la b. l. 253.

वैरोचनि m. 1) = वैरोचन 2) a) Med. n. 212. — 2) = वैरोचन 2) d) Med. MBh. 3,12068. 12150. 5,4368. 7,3484. 5608. 13,329. Hariv. 9854. 10072. 12695. 12920. R. 1,31,4 (32,4 Gorr.). Varâh. Bṛh. S. 58, 30. Bhâg. P. 8,6,29. Mârk. P. 80,10. — 3) = वैरोचन 2) f) Med.

वैरोचि m. patron. Bâṇa's, eines Sohnes des Bali (Vairokana, Vairokani) Çabdar. im ÇKDr.

वैरोट्या f. N. pr. einer der 16 Vidjâdevî bei den Gaina H. 240.

वैरोद्धार (वैर + उ°) m. Rache Çabdar. im ÇKDr.

वैरोधक (von विरोधक) m. N. pr. eines Mannes Mudrâr. 43,4.

वैरोहित (von विरोहित) m. pl. patron. zum sg. वैरोहित्य gaṇa कण्वादि zu P. 4,2,111. Saṁsk. K. 183,b,10.

वैरोहित्य m. patron. von विरोहित gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105.

बैल (von बिल) adj. nach Nîlak. von Höhlen bewohnenden Thieren herkommend MBh. 2,1823 (वैल ed. Calc.).

वैलक्षण्य (von विलक्षण) n. 1) Verschiedenheit, Ungleichheit, Unterschiedenheit (in comp. sowohl mit einem im gen. als auch mit einem im abl. gedachten Begriffe) Râga-Tar. 4,635. Bhâg. P. 10,55,29. 11,11, 5. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 8. 34. Sâh. D. 13,10. Kuvalaj. 75,a,3. Kull. zu M. 1, 85. Schol. zu Çâk. 42. — 2) Unbestimmbarkeit, Unbeschreiblichkeit Schol. zu Kâvjâd. 2,263.

वैलक्ष्य (von विलक्ष) n. das Gefühl von Scham, Verlegenheit Hariv. 5135. Spr. 1797. Kathâs. 124,206. °क्षालन Râga-Tar. 8,1329. स° adj. (f. आ) beschämt, verlegen 5,60. Kathâs. 12,187. 45,356. 49,114. सवैलक्ष्यम् adv. 104,154. Mṛkkh. 15,24. 65,15. Vikr. 32,10. सवैलक्ष्यस्मितम् mit verlegenem Lächeln 45,1.

वैलस्थान n. von Sâj. zu विल (बिल) so v. a. गर्त gezogen, wäre also बैल° zu schreiben. Schlupfwinkel: वैलस्थानं परि तृळ्हा अशेरन् ṚV. 1, 133,1.

वैलात्य n. nom. abstr. von विलात gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

वैलेपिक adj. = विलेपिकाया धर्म्यम् gaṇa महिष्यादि zu P. 4,4,48.

वैवक्षिक (von विवक्षा) adj. beabsichtigt, bezweckt, worauf es gerade ankommt Sâh. D. 277,2. Mallin. zu Kir. 1,5.

वैवधिक = विवधिक, वीवधिक P. 4,4,17. Hausirer AK. 2,10,15. H. 364. वैवधिकी f. Râga-Tar. 6,308.

वैवर्ण्य (von विवर्ण) n. Entfärbung, Wechsel der natürlichen, gesunden Farbe H. 307. मुखं वैवर्ण्यमेति Jâgn. 2,13. MBh. 13,7446. 14,216. Hariv. 11174. R. Gorr. 2,62,17. 3,63,19. Suçr. 1,117,20. 156,3. 231, 12. Verz. d. Oxf. H. 307,a,39. Varâh. Bṛh. S. 104,22. Kathâs. 16,68. Sâh. D. 170. 189. 230. Bhâg. P. 5,16,26. देह° 24,13. मुख° Spr. (II) 988. वर्ण° R. 4,59,18.

वैवर्त (von विवर्त) und वैवर्तक s. ब्रह्म°.

वैवश्य (von विवश) n. Willenlosigkeit, das Nichtherrsein über sich selbst: वेश्या तस्य °कारिणी Râga-Tar. 6,74.

वैवस्वत (von विवस्वत्) 1) adj. (f. ई) von der Sonne kommend: प्रभा R. 6,99,44. — 2) m. ein Sohn Vivasvant's: a) patron. Jama's AK. 1, 1,1,54. Halâj. 1,71. ṚV. 9,113,8. 10,14,1. 57,7. 60,10. 164,2. AV. 6, 116,1. 2. 8,2,11. 18,3,13. Âçv. Çr. 10,7,2. Gṛhj., ed. Stenzler S. 47. Kathop. 1,7. Spr. 2404 (M.). MBh. 3,11996. 5,519. 13,3500. Hariv. 1003. 4921. 4923. 13133. R. 2,64,37. R. Gorr. 2,66,38. 4,16,39. 41,57. 6,5, 11. Ragh. 15,45. 57. Spr. (II) 1974. Varâh. Bṛh. S. 43,52. Râga-Tar. 4, 150. Bhâg. P. 5,26,6. वैवस्वतस्य सदनम् MBh. 1,1710. वैवस्वतस्यालयमभ्युपैति Varâh. Bṛh. S. 69,23. वैवस्वतालय Suçr. 1,116,17. °क्षय R. 3, 73,32. 4,21,5. °पुर MBh. 7,7082. वैवस्वतपथे (°वशे st. °पथे die neuere Ausg.) स्थितः Hariv. 4109. — b) patron. eines Manu AV. 8,10,24. Çat. Br. 13,4,3,3. Âçv. Çr. 10,7,1. MBh. 3,12755. Hariv. 410. 442. 542. 552 (मनुर्वैव° mit der neueren Ausg. zu lesen). R. 1,70,20. Ragh. 1,11. VP. 264. 266. 348. Bhâg. P. 1,3,15. Mârk. P. 53,7. °मन्वन्तर Verz. d. B. H. No. 1175. 1245. Verz. d. Oxf. H. 300,a,7. — c) patron. Saturns ÇKDr. und Wilson. — d) N. eines Rudra Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 190,a, 38. — 3) f. ई a) der Süden Râgan. im ÇKDr. — b) eine Tochter des Sonnengottes Vjutp. 107. तपती MBh. 1,3791. 6632. श्रद्धा वैवस्वती सेयं सूर्यस्य दुहिता 12,9449; vgl. Çat. Br. 12,7,3,11. — 4) adj. (f. ई) a) Jama Vaivasvata gehörig, zu ihm in Beziehung stehend Kauç. 82. 86. MBh. 6,5802. सभा 13,3499. लोक 15,903. — b) zu Manu Vaivasvata in Beziehung stehend: अन्तर, मन्वन्तर MBh. 12,12808. Hariv. 171. 177. VP. bei Muir, ST. 4,104. fg. 118. Mârk. P. 100,37.

वैवस्वततीर्थ n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 60,a,30.

वैवस्वतीय adj. zu Manu Vaivasvata in Beziehung stehend: मन्वन्तर Râga-Tar. 1,26.

वैवाह (von विवाह) adj. nuptialis: मुहूर्त R. Gorr. 1,75,9.

वैवाहिक (wie eben) 1) adj. (f. ई) dass.: विधि M. 2,67. Kathâs. 45, 177. Bhâg. P. 3,22,15. Mârk. P. 21,62. 75,52. क्रिया R. 1,73,17. कर्म R. Gorr. 1,75,12. Mârk. P. 116,72. कौतुकसंविधान Kumâras. 7,2. तिथि 6,93. ऋत Mârk. P. 75,55. अग्नि M. 3,67. भाण्ड MBh. 3,16691. द्रव्य 13,1670. संभार Hariv. 10891. वसु Devala in Dâjabh. 272,1. 2. वेष Hariv. 5202. रथ MBh. 7,392. पर्वन् über eine Hochzeit handelnd MBh. 1,314. 328. 1,193. fgg. 4,70. fgg. — 2) n. a) Vorbereitungen zur Hochzeit, Hochzeitsfeierlichkeit: राजापि दुहितुः सज्जं वैवाहिकमकारयत् MBh. 3,16690. यन्मयोक्तं विराटस्य पुरा वैवाहिके तदा 5,157. 6073 (wo wohl तत्तु zu lesen ist; nach Nîlak. zur Hochzeit gerüstet, — geschmückt). R. 1,71, 23 (73,22 Gorr.). 72,13. — b) Verschwägerung: द्विषोर्वैवाहिकं मिथः Bhâg. P. 10,61,20.

वैवाह्य (wie eben) 1) adj. a) nuptialis: Feuer Çâṅkh. Gṛhj. 1,1.17. — b) = विवाह्य 3) verschwägert, durch Heirath verwandt Çâṅkh. Gṛhj. 2,15. Pâr. Gṛhj. 1,13. तेषां च बहूनि कौशिकगोत्राणि अन्यान्तरेषु वैवाहिकानि भवन्ति VP. bei Muir, ST. 1,82, N. 48. — 2) n. Hochzeitsfeierlichkeit: कृत्वा वैवाह्यमुत्तमम् R. 1,73,11.

वैविक्त्य (von विविक्त) n. das Befreitsein von: दस्यु° Râga-Tar. 8,2837.

वैवृत्त (von विवृत्ति) adj. mit einem Hiatus in Verbindung stehend: स्वर ṚV. Prât. 3,10.

वैशद्य (von विशद) n. 1) Klarheit, Helle, Reinheit; Frische: स्फटिकस्य Râga-Tar. 8,1786. Suçr. 1,20,18. 151,15. 153,1. मुख° 218,8. 243, 20. 2,136,9. des Auges 348,15. eines Giftes u. s. w. 254,1. 477,6. Vâgbh.

9,9. einer Farbe Varâh. Bṛh. S. 72,2. श्रास्यस्य 76,34. मनसि *Heiterkeit des Gemüths* Sarvadarçanas. 129,10. — 2) *Klarheit* so v. a. *Deutlichkeit, Verständlichkeit* Sâh. bei Müller, SL. 170. Verz. d. Oxf. H. 241,*b*, No. 591. — Hier und da fälschlich वैषय्य geschrieben.

वैशन्तं (von वेशन्त) 1) adj. (f. ई) *im Teich befindlich, teichartig* P. 4,4,112. VS. 16,37. TS. 7,4,13,1. TBr. 3,1,2,3. Çat. Br. 5,3,4,14. Soma wohl so v. a. *sehr reichlich* Ṛv. 7,33,2. — 2) f. श्रा = वेशन्ता (und mit TS. 3,4,1,12 vielleicht so zu verbessern) VS. 30,16.

वैशंपायन m. patron. von विशंप gaṇa श्रश्वादि zu P. 4,1,110. 1) N. pr. eines alten Veda-Lehrers (im Epos ein Schüler Vjâsa's) Âçv. Gṛhj. 3,4,3. Çâṅkh. Gṛhj. 4,10. 6,6. Taitt. Âr. 1,7,5. Ind. St. 3,396. P. 4, 3,104 (Schol. zählt seine 9 Schüler auf). MBh. 1,11. 20. 97. 107. 2227. 2419. 13,331. Hariv. 18. AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 92. VP. 275. 279. Bhâg. P. 1,4,21. Verz. d. Oxf. H. 54,*b*,3. 5. 55,*a*,6. 19. 356,*a*, No. 842. fgg. °संहिता 95,*b*,17. 104,*a*,24. 110,*b*,9. 10. °गीता धर्माः 266,*b*,27. — 2) N. pr. eines Sohnes des Çukanâsa, Ministers des Târâpîḍa, der in einen Papagei verwandelt wird, Kâd. in Z. d. d. m. G. 7,583.

वैशंपायनीय adj. *von* Vaiçampâjana *herrührend* Verz. d. Oxf. H. 41,*a*,24.

वैशस 1) n. *a*) = विशसन *Schlächterei, Metzelei, Mord und Todtschlag, blutiger Zusammenstoss, Greuelthat, Tod und Verderben, Noth und Elend, Unheil* MBh. 1,623. 2,2670. 3,2551. 2567. मा त्वं प्राप्स्यसि वैशसम् 11171. fg. 4,1292. तावच्छाम्यतु वैशसम् so v. a. *Krieg, Feindschaft* 5,4216. fgg. कुरूणां वैशसे पाण्डवैः सह 6,91. 16,167. भारतं नाम वैशसम् Hariv. 5352. 11328. घोरं तु वैशसं मन्ये गते मयि भविष्यति R. 5, 15,53. विधिना कृतमर्धवैशसं ननु मां कामवधे विमुञ्चता Kumâras. 4,31. Uttarar. 88,8 (113,6). 118,3 (160,5). उपरोध° Mudrâr. 42,11. Kathâs. 97,20. 119,182. विकारच्छेद° Râga-Tar. 1,143. युक्तायुक्तविचारबाह्यमनसः सेवा महद्वैशसम् 6,208. 8,1001. 1275. 1374. Bhâg. P. 3,30,27. 4,4, 6. 11,10. 12,1. 20,28. 25,8. 5,9,16. 8,7,37. 22,8. किमिदं वैशसं दारेषु त्वया कृतम् *Greuelthat* Pańkat. ed. orn. 36,23. स्निग्धा वाचो ऽतिवैशसाः Bhâg. P. 3,19,21. तस्य प्रेम्णास्तदिदमधुना वैशसं पश्य जातम् so v. a. *das zu-Schanden-Werden* Spr. (II) 1939. — *b*) so v. a. *Hölle* und N. *einer best. Hölle* Bhâg. P. 4,25,53. 29,15. 5,26,25. — 2) adj. *Tod —, Verderben bringend:* वैशसे ऽहनि MBh. 5,2777.

वैशस्त्य n. nom. abstr. von विशस्ति (doch wohl eher von विशस्त) gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1,124.

वैशस्त्र adj. = विशसितुर्धर्म्यम् (विशसितृ st. विशस्तृ, weil dieses für vedisch gilt) P. 4,4,49, Vârtt. 2. nach Siddh. K. im ÇKDr. auch nom. abstr. von विशस्त्र.

वैशस्य Kathâs. 120,39 fehlerhaft für वैषम्य.

वैशाखं (von विशाख, विशाखा) 1) m. *a*) *ein best. Sommermonat* (neben Ǵjaishṭha) AK. 1,1,3,16. Trik. 3,3,51. H. 153. an. 3,115. Med. kh. 12. Çat. Br. 11,1,1,7. Lâṭj. 9,9,8. 10,5,18. MBh. 13,5155. Hariv. 9917. Varâh. Bṛh. S. 5,75. 7,17. 21,22. 25,6. 95,2. Râga-Tar. 5,260. Verz. d. Oxf. H. 14,*b*,31. 87,*b*,5. 217,*b*,45. 284,*b*,4. 44. Lalit. ed. Calc. 62, 14. Hiouen-thsang I,63. 323. Vie de Hiouen-thsang 131. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,33,6. — *b*) *Butterstössel* P. 5,1,110. AK. 2,9,74. Trik. H. 1023. H. an. Med. Hâr. 34. Halâj. 2,121. Çiç. 11,8. — *c*) Bez. *des 7ten Jahres im 12jährigen Umlauf des Jupiters* Varâh. Bṛh. S. 8,9. — 2) f. श्रा N. pr. einer Löwin (मृगारिमातृ) Verz. d. Oxf. H. 304,*a*,N. — 3) f. ई *a*) *der Vollmondstag im Monat* Vaiçâkha Kauç. 75. Kâtj. Çr. 24,7,1. Schol. zu 4,6,10. MBh. 13,3413. Pańkar. 2,7,38. Verz. d. Oxf. H. 34,*b*,29. Verz. d. B. H. No. 297. — *b*) N. pr. einer der 14 Gattinnen Vasudeva's Hariv. 1948. VP. 439, N. 2. — 4) n. *a*) *eine best. Stellung beim Schiessen* H. 777. nebst Schol. भूयः प्रहर्तुकामो मां वैशाखेनास्थितो महीम् Hariv. 6235. वैशाखं स्थानमासाद्य 6236. — *b*) N. pr. einer Stadt: वैशाखाख्ये पुरे Kathâs. 67,5. °पुर 107.

वैशाख्य (wie eben) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,14.

वैशारद (von विशारद) 1) adj. (f. ई) = विशारद *erfahren, kundig, gewiss, nicht irrend:* मति Bhâg. P. 1,3,34. धी 7,7,17. बुद्धि 11,10,13. ईक्षा 11,13. — 2) n. *gründliche Gelehrsamkeit* R. 7,36,45.

वैशारद्य (wie eben) n. nom. abstr. gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123. *Erfahrenheit, das Kundigsein:* वाग्मिनां प्रयोगेषु MBh. 12,4348. Sâh. D. 551. *Sicherheit in der Erkenntniss, Klarheit des Geistes:* निर्विचारवैशारद्ये (वैशारद्य = नैर्मल्य Comm.) ऽध्यात्मप्रसादः Jogas. 1,47. प्रज्ञामेधास्मृति° so v. a. *Unfehlbarkeit* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 133. Bei den Buddhisten nach Burnouf so v. a. *confiance* Lot. de la b. l. 346 (वैशारद्याश्च[!] यादृशाः). 402. Vjutp. 4. 24.

वैशाल 1) adj. *von* Viçâla *abstammend:* °भूपालाः Bhâg. P. 9,2,36. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 55,*b*,25. — 3) f. ई *a*) nach Nilak. *eine Tochter des Fürsten von* Viçâlâ: भद्रा MBh. 2,1570. N. einer der Gattinnen Vasudeva's VP. 439. — *b*) N. pr. einer von Viçâla gegründeten Stadt R. Gorr. 1,46,11. 48,14. VP. 353. fg. Bhâg. P. 9,2,33. Lalit. ed. Calc. 23,4 (वैशली gedr.). 295,8. 296,18. Burnouf, Intr. 74. 86. Wassiljew 56. 68. Wilson, Sel. Works I, 295. Hiouen-thsang 1,384. Vie de Hiouen-thsang 135. 160. Târan. 9. 41. 290.

वैशालाक्ष n. Titel *des von* Çiva *als* Viçâlâksha *verfassten* Çâstra MBh. 12,2203 nach der Lesart der ed. Bomb. विशा° ed. Calc.

वैशालायन m. patron. von विशाल gaṇa श्रश्वादि zu P. 4,1,110.

वैशालि (von विशाल) m. patron. des Suçarman Mârk. P. 70,3.

वैशालिक adj. *zu* Viçâlâ (Vaiçâlî) *in Beziehung stehend:* नृपाः R. 1,47,18 (48,20 Gorr.).

वैशालिनी f. patron. von विशाल Mârk. P. 123,20.

वैशालीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von विशाल gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैशालेयं (von विशाल) m. patron. Takshaka's AV. 8,10,29. Ind. St. 1,35. भोगिनः MBh. 8,4416.

वैशिक (von 1. वेश) 1) adj. (f. ई) = वेशेन चरति gaṇa वेतनादि zu P. 4,4,12. = वेशिका शीलमस्य gaṇa छत्रादि zu 62. *zur Buhlkunst in Beziehung stehend, sie betreffend, von ihr handelnd:* श्रधिकरण Verz. d. Oxf. H. 215,*b*,12. 14. 216,*a*,8. कला Mṛkkh. 1,15. *sich auf die Buhlkunst verstehend, mit Buhlerinnen sich abgebend:* नायको त्रिविधः। पतिरुपपतिर्वैशिकश्च। बहुवेश्याभोगोपरसिको (lies °वेश्योपभोगरसिको) वैशिकः ÇKDr. — 2) n. *Buhlkunst* Vjutp. 119. वैशिके परिनिष्ठिताः R. 1,9,8 (5 Gorr.). स्तौति नरो वैशिकेनार्याम् so v. a. *rühmt es an ihr, dass sie eine Buhlerin ist,* Varâh. Bṛh. S. 2,2. वैशिक Lalit. ed. Calc. 179,

5 wohl fehlerhaft.

वैशिक्य m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 57,47.

वैशिख adj. = विशिखा शीलमस्य gaṇa छत्त्रादि zu P. 4,4,62.

वैशिष्ट = वैशिष्ट्य ÇKDr. Sâh. D. 20,10. 21,3 (वैशिष्ट्य die ältere Ausg.).

वैशिष्ट्य (von विशिष्ट) n. 1) *Besonderheit, Eigenthümlichkeit* Çând. 32. Tarkas. 52. Sâh. D. 27. 31. Vedântas. (Allah.) No. 69. Kusum. 41,10. 44,16. H. 507, Schol. — 2) *Vorzüglichkeit, Vorzug, das Hervorragen, Ausgezeichnetsein, Superiorität:* विवाह° MBh. 13,2559. त्रिषु लोकेषु तावच्च वैशिष्ट्यं प्रतिपत्स्यसे 7441. कर्मणा तस्य वैशिष्ट्यं कथयेत् Kâm. Nîtis. 5,27. Çând. 70. Sâh. D. 109,14. 678. Comm. zu Taitt. Prât. 21,1. — Vgl. विशिष्टवैशिष्ट्य°.

वैशीति m. patron. von विशीत gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61.

वैशीपुत्र (वैशी = वैश्या + पुत्र) m. *der Sohn eines* Vaiçja-*Weibes* TBr. 3,9,7,3. Çat. Br. 13,2,9,8.

वैशेय m. patron. von विश gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123.

वैशेषिक (von विशेष) gaṇa विनयादि (स्वार्थे) zu P. 5,4,34. 1) adj. (f. ई) *a) besonder, specifisch, eigenthümlich* (Gegens. सामान्य) Suçr. 1,96,20. 97,2. आकाशस्य तु विज्ञेयः शब्दो वैशेषिको गुणः Bhâshâp. 43. 90. सत्त्वादीनि द्रव्याणि न वैशेषिका गुणाः Nîlak. 43. — *b) vorzüglich, hervorragend, ausserordentlich:* एक एव तु कर्तव्यो (पुरःसरः) यस्मिन्वैशेषिका गुणाः MBh. 7,148. 12,1658. ज्ञान 11874. अन्यामन्यां धनावस्थां प्राप्य वैशेषिकीं नराः Spr. (II) 375. — *c) zu den Besonderheiten der* Vaiçeshika *in Beziehung stehend, von ihnen handelnd, auf ihnen beruhend:* प्रकरण Verz. d. Oxf. H. 353,*b*, No. 839. नय Bhâshâp. 104. मत 140. कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत् Sâṁkhjapr. 6,14. Madhus. in Ind. St. 1,13, 7. 8. 18,27. Nîlak. 52. — 2) m. *ein Anhänger des* Vaiçeshika-*Systems* H. 862. Kap. 1,25. Schol. zu 1,19. Z. d. d. m. G. 7,307, N. 3. Verz. d. B. H. 160,15. fg. No. 626. Müller, SL. 84. Kusum. 29,13. Burn. Intr. 568. — 3) n. *a) Besonderheit* Kaṇ. 10,2,7. — *b) das* Vaiçeshika-*System:* न्यायवैशेषिकाभ्याम् Sâṁkhjapr. 3,21. Nîlak. 4. 52. Lalit. ed. Calc. 179,5. °सूत्र (hierher oder zu 2) Hall 27. 64. °सूत्रोपस्कार 68.

वैशेषिन् adj. *Besonderheiten habend, specifisch, individuell* Gauḍap. zu Sâṁkhjak. 41 wohl nur fehlerhaft für विशेषिन्.

वैशेष्य (von विशेष) n. 1) *Besonderheit* Taitt. Prât. 23,2. Suçr. 1,363, 10. Verz. d. Oxf. H. 307,*a*,24. — 2) *Vorzüglichkeit, Vorzug, Superiorität* M. 9,296. 10,3.

वैश्मीय adj. (चतुर्थ्यर्थेषु) von वेश्मन् gaṇa कृशाश्वादि zu P. 4,2,80.

वैश्य (von 2. विश्) 1) m. *a) ein Mann des Volkes, — der dritten Kaste* AK. 2,9,1. 3,4,24,148. 28,216. H. 864. Halâj. 2,237. 415. Specielles über Stellung, Ursprung u. s. w. der Vaiçja s. Ind. St. 10,1. fgg. Muir, ST. 1,5. fgg. — ṚV. 10,90,12. AV. 5,17,9. VS. 30,5. Ait. Br. 1,28. 7,29. TBr. 1,1,4,8. 9,7. 7,8,7. Çat. Br. 1,1,4,12. 3,2,15. 2,1,2,5. 5,5,4, 9. °कुल Kâtj. Çr. 4,7,16. Gobh. 1,1,15. Âçv. Gṛhj. 1,19,4. 3,8,13. °योनि Khând. Up. 5,10,7. M. 1,31. 90. 116. 2,31 u. s. w. MBh. 13,310. R. 1,6,16. 2,63,48. 82,31. 3,20,31. Suçr. 1,7,3. Varâh. Bṛh. S. 3,25. 9,43. 10,7 u. s. w. °घ्न 5,30. °धंसिन् 57. VP. 44. 292. °ज्ञातीय Weber, Kṛshṇaǵ. 284. °वृत्ति Çâṅkh. Gṛhj. 4,11. M. 10,83. 101. °कन्या 3,44. 10,8. Lalit. ed. Calc. 159,14. — *b)* pl. N. pr. einer Völkerschaft Varâh. Bṛh. S. 14,21. — 2) f. आ *a) eine Frau der dritten Kaste* Vop. 4, 15. AK. 2,10,2. H. 896. M. 8,382. 385. Jâǵn. 1,62. °ज M. 9,154. — °पुत्र 9,153. metron. Jujutsu's MBh. 1,2448. 2,2476. 5,697. 9,1652. 15,435. — वैश्यानरी 13,3140 fehlerhaft für वैश्वानरी, wie die ed. Bomb. liest. — *b)* N. pr. einer buddhistischen Gottheit Trik. 1,1,18. — 3) n. *das Verhältniss des Unterthanen, Abhängigkeit:* देवाः पराञ्चिग्याना असुराणां वैश्यमुपायन् TS. 2,3,7,1. — 4) adj. *einem Manne der dritten Kaste eigenthümlich:* कर्माणि MBh. 12,2348.

वैश्यता (von वैश्य) f. *der Stand eines* Vaiçja Ait. Br. 7,29. MBh. 13,1904. VP. 4,1,14 bei Muir, ST. 1,46. Bhâg. P. 9,2,23. Mârk. P. 114,2.

वैश्यत्व n. dass. Mârk. P. 113,36.

वैश्यभद्रा f. N. pr. einer buddhistischen Gottheit Târan. 70; vgl. भद्रा und वैश्या.

वैश्यभाव m. = वैश्यता M. 10,93.

वैश्यसव m. *eine best. Opferhandlung* TBr. II,753,3 v. u.

वैश्यस्तोम m. N. eines Ekâha Shaḍv. Br. 4,3. Lâṭj. 8,10,5.13. Kâtj. Çr. 22,9,7. 23,4,5. Maçaka 4,7 in Verz. d. B. H. 72.

वैश्रमण Lalit. ed. Calc. 378,5 fehlerhaft für वैश्रवण.

वैश्रम्भक (von विश्रम्भ) 1) adj. *Vertrauen erweckend;* subst. pl. *Vertrauen erweckendes Benehmen* Bhâg. P. 5,26,32. वैश्रम्भिक ed. Bomb., aber der Comm. वैश्रम्भकैः = विश्वासोपायैः. — 2) n. N. pr. eines Götterhains Bhâg. P. 3,23,40.

वैश्रवण (von विश्रवण) 1) m. *a)* patron. gaṇa शिवादि zu P. 4,1,112. Kubera's AK. 1,1,1,64. H. 189. Halâj. 1,78. 5,2. AV. 8,10,28. Çat. Br. 13,4,3,10. Taitt. Âr. 1,31,6. Shaḍv. Br. 5,6. Çâṅkh. Gṛhj. 1,11. Kauç. 25. 74. Ind. St. 4,371. MBh. 1,2100. 2,384. 3,2554. 15883. fgg. 13,1415.1417. राज्ञां वैश्रवणं प्रभुम् (अभ्यषेचयत्) Hariv. 259. 382. 12496. R. 1,1,32 (34 Gorr.). 6,3. 14,18. 22,17 (23,18 Gorr.). 4,44,30. दिशं वैश्रवणाभिगुप्ताम् 130. 5,89,5. 7,3,8. Spr. (II) 2020. Kathâs. 34,67. 72, 39. Râǵa-Tar. 1,155. VP. 153. Lalit. ed. Calc. 43,15. 136,2 (वैश्रवणः gedr.). 137,7 (verschieden von Kubera). 148,14. 248,1. 297,11. 313, 9. 378,5 (वैश्रमण gedr.). Lot. de la b. l. 3. 239. Schiefner, Lebensb. 280 (50). Hiouen-thsang I,30. 319. II,224. Gatte der Lakshmî Târan. 50. वैश्रवणानुज m. *der jüngere Bruder* Kubera's d. i. Râvaṇa R. 3, 55,3. 58,31. 34. — *b)* N. *des 14ten* Muhûrta Ind. St. 10,296. — 2) adj. (f. ई) *zu* Kubera *in Beziehung stehend, ihm gehörig:* सभा MBh. 2,383. ऋद्धि 12,4561.

वैश्रवणालय 1) m. Kubera's *Wohnstätte, Bez. der Ficus indica* H. 1132. — 2) N. pr. einer Oertlichkeit Verz. d. Oxf. H. 39,*b*,34.

वैश्रवणावास m. = वैश्रवणालय 1) Gaṭâdh. im ÇKDr.

वैश्रवणोदय m. dass. Ratnam. 189.

वैश्रेय m. patron. von विश्रि gaṇa गृष्ट्यादि zu P. 4,1,136. — Vgl. वैस्रेय.

वैश्लेषिक (von विश्लेष) adj. (f. ई): पङ्क्ति Verz. d. Cambr. H. 77.

वैश्व adj. *unter den* Viçve Devâḥ *stehend:* युग *das achte Lustrum im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,41. n. *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ 23,8. 32,16. 101,11. Sûrjas. 8,4. f. ई dass. H. 113.

वैश्वकथिक adj. = विश्वकथायां साधुः gaṇa कथादि zu P. 4,4,102.

वैश्वकर्मण adj. (f. ई) von Viçvakarman *herrührend, ihm geweiht* u.

s. w. AV. 13,1,18. VS. 13,55. Agni 18,64. Ait. Br. 4,22. TS. 3,2,9, 4. 5,4,5,4. 6,9,3. Çat. Br. 2,5,4,10. 4,6,4,6. 10,4,1,16. TBr. 1,6,7,5. 2,3,3.

वैश्वजनीन (von विश्वजन) adj. *gegen Jedermann freundlich* gaṇa प्रतिजनादि zu P. 4,4,99.

वैश्वजित adj. *zum* Viçvagit-*Opfer in Beziehung stehend:* क्रेतरु Ait. Br. 6,30.

वैश्वज्योतिष (von विश्वज्योतिस्) n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,*a*. द्वितीयम् ebend.

वैश्वदेव (von विश्वदेव) 1) adj. (f. ई) *allen Göttern* oder *den sogenannten* Viçve Devâḥ *geweiht* u. s. w.: das dritte Savana VS. 19,26. MBh. 13,3060. VS. 4,18. 19,44. 24,5. AV. 7,27,1. Ait. Br. 6,4. अग्निहोत्र TBr. 2,1,4,6. TS. 2,1,7,5. 5,3,5. Çat. Br. 2,5,1,18. 3,9,1,13. चरु Kâth. 37,3. Çat. Br. 5,5,1,1. अष्टका Âçv. Gṛhj. 2,4,12. विषयाः MBh. 12,11105. युग Weber, Gjot. 24. काण्ड Ind. St. 3,391. विधि Verz. d. Oxf. H. 85,*b*,28. 276,*b*,1 v. u. सूक्त Ind. St. 10,354. Sâj. zu ṚV. 1,105. Bhâg. P. 9,4,4. हविस् Çat. Br. 1,1,4,24. Ind. St. 10,20. MBh. 14,285. बलि R. 2,56,27. Verz. d. Oxf. H. 277,*a*,2.3. पिण्ड Mârk. P. 32,34. लोक M. 4,183 (wo wohl वैश्वदेवे ऽस्य st. वैश्वदेवस्य zu lesen ist). — 2) m. *a*) *ein best.* Graha VS. 18,20. Çat. Br. 4,3,1,26. 4,1,8. Kâtj. Çr. 9,5,23. 12,8. 14,1. — *b*) *ein dem* Vaiçvadeva Parvan *ähnlicher* Ekâha Çâñkh. Çr. 14,6,1. 7,1. 9,8. — 3) f. ई *a*) Bez. *gewisser* Ishṭakâ *der zweiten* Kiti Çat. Br. 8,2,2,1. 10,4,3,15. TS. 7,2, 5,5. Kâtj. Çr. 17,8,7. — *b*) *ein best. Festtag am 8ten Tage in der zweiten Hälfte des* Mâgha As. Res. 3,274 nach Haughton. — *c*) *ein best. Metrum: 4 Mal* — — — — —, — ◡ — — — ◡ — — Çrut. 27. Khandom. 46. Colebr. Misc. Ess. II,160 (VII,15). Ind. St. 8,381. — 4) n. *a*) *ein best.* Çastra Ait. Br. 2,31. 3,28. 31. 4,30. *das erste beim dritten* Savana Çat. Br. 13,5,1,11. 14,6,9,1. Çâñkh. Çr. 8,3,7. 7,10. 19. °सूक्त 13,19, 15. Âçv. Çr. 6,6,16. — *b*) *das erste* Parvan *der* Kâturmâsja (Vaiçvadeva, Varuṇapraghâsa, Sâkamedha) TBr. 1,4,9,5. 10,1. 6,8,1. Çat. Br. 2,6,4,5. 5,2,1. — *c*) *ein best.* Çrâddha, *eine Morgens und Abends vom Haushalter darzubringende Spende an die* Viçve Devâḥ M. 3,83. fg. 108. 121. Spr. (II) 2902. (I) 1422. 1925. VP. 327. Mârk. P. 29,24. 30,6. 50,62. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 270. Verz. d. B. H. No. 1061. fgg. 1127. 1141. Verz. d. Oxf. H. 267,*b*,40. 268,*a*,16. masc. 277, *a*, No. 654. — *d*) Bez. bestimmter Sprüche: स एतानि वैश्वदेवान्यपश्यत् TBr. 3,8,10,1. fgg. Çat. Br. 13,1,7,1. 4. 8,1. — *e*) Bez. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,*b*. Khând. Up. 2,24,11. — *f*) *das* Nakshatra Uttarâshâḍhâ Varâh. Bṛh. S. 11,59. Weber, Nax. 1,310. — Vgl. महा°.

वैश्वदेवक n. nom. abstr. von विश्वदेव gaṇa मनोज्ञादि zu P. 5,1,133.

वैश्वदेवत (von विश्वदेवता) m. *das* Nakatra Uttarâshâḍhâ Varâh. Bṛh. S. 6,6, v. l. °दैवत im Text.

वैश्वदेवस्तुत् m. N. eines Ekâha Çâñkh. Çr. 14,60,1. 16,15,8. 29,17. Kâtj. Çr. 21,2,4. 24,7,16.

वैश्वदेवहोम m. *ein Opfer mit den* Vaiçvadeva *genannten Sprüchen* Comm. zu TBr. 3,604. Verz. d. Oxf. H. 273,*b*,24.

वैश्वदेविक adj. = वैश्वदेव. अध्वरत्न R. 1,13,34 (32 Gorr.). Verz. d. Oxf. H. 56,*a*, N. 1. अर्घ्य Mârk. P. 31,42. *dem* Çrâddha *für alle Götter entsprechend* Jâgn. 1,228 (vgl. Mârk. P. 31,38). *zum* Vaiçvadeva Parvan *gehörig* Çâñkh. Çr. 3,14,3. 18,2. n. pl. Bez. *bestimmter Sprüche* Mârk. P. 31,57.

वैश्वदेव्य adj. *den* Viçve Devâḥ *geweiht:* Lied Nir. 7,23.

वैश्वदैवत s. वैश्वदेवत.

वैश्वदैविक v. l. für वैश्वदेविक Jâgn. 1,228.

वैश्वधे adj. = विश्वधा शीलमस्य gaṇa छत्त्रादि zu P. 4,4,62.

वैश्वधेनव (von विश्वधेनु) = वैश्वधेनव P. 7,3,25, Schol. वैश्वधेनवभक्त n. = वैश्वधेनवानां विषयो देशः gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54.

वैश्वधैनव = वैश्वधेनव P. 7,3,25, Schol.

वैश्वंतरि m. patron. von विश्वंतर; pl. Saṁsk. K. 183,*b*,10 (वैश्वतरयः gedr.).

वैश्वमनस (von विश्वमनस्) n. N. eines Sâman Pañkav. Br. 15,5,19. Lâtj. 7,5,19.

वैश्वमानव (von विश्वमानव) gaṇa ऐषुकार्यादि zu P. 4,2,54. वैश्वमानवभक्त n. = वैश्वमानवानां विषयो देशः ebend.

वैश्वरूप (von विश्वरूप) 1) adj. = विश्वरूप *mannichfaltig, verschiedenartig* Suçr. 2,539,5. — 2) n. *das Weltall* Sâñkhjak. 15.

वैश्वरूप्य 1) adj. = विश्वरूप *mannichfaltig, verschiedenartig:* वैश्वरूप्येण विधिना Hariv. 8322. वैश्वरूप्येण केतुना 8340. — 2) n. *Mannichfaltigkeit, Verschiedenartigkeit* Wilson, Sâñkhjak. S. 138. षोडशस्त्रीसहस्राणि जले — रामयामास गोविन्दो वैश्वरूप्येण so v. a. *auf verschiedene Weise* Hariv. 8313. — Die neuere Ausg. des Hariv. an allen drei Stellen विश्वरूप.

वैश्वलोप adj. (f. ई) *vom* Viçvalopa (ein Baum) *herrührend:* समिधः Kauç. 17.

वैश्वव्यचस adj. von विश्वव्यचस् VS. 13,56.

वैश्वसृज adj. von विश्वसृज्. अग्नि, चिति, चयन Taitt. Âr. 1,22,11. Ind. St. 1,73. fg. 3,386. fg.

वैश्वानर (von विश्वानर) 1) adj. (f. ई) *a*) *allen Männern gehörig: allgemein, allbekannt, allverehrt, überall wohnend* u. s. w. α) stehende Bez. für Agni, *dem Gast aller Menschen* (VS. 33,16) Naigh. 5,1. Nir. 7,21. fgg. अयमेव सो ऽग्निर्वैश्वानरः 31. AK. 1,1,1,48. H. 1098. Halâj. 1,62. ṚV. 1,59,1. 98,1. 3,2,1. fgg. 3,1. 26,1. 4,5,1. 5,27,1. 6,7,1. 8,1. 9,1. 7,5,1. 49,4. 10,88,12. fg. VS. 4,15. 33,60. AV. 3,21,3. 4,36,1. 2. 6,35,1. 36,1. Ait. Br. 7,9. Çat. Br. 1,4,1,10. 14. 10,6,1,11. 14,8,10, 1. Âçv. Gṛhj. 3,6,8. Maitrjup. 2,6. 6,9. Jâgn. 1,49. MBh. 2,1148. 3, 14192. 8,2160. 13,4093. 14,617. R. 3,9,3. 4,43,55. Uttarar. 129,8 (174, 3). Varâh. Bṛh. S. 43,52. Kathâs. 7,44. Bhâg. P. 2,2,24. Pañkat. 224, 20. fg. अहं (Kṛshṇa spricht) वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ Bhag. 15,14. als *besondere Form* Agni's unterschieden: एतं त्वा वृणाते ऽग्निं होत्राय सह पित्रा वैश्वानरेण Âçv. Çr. 1,3,23. Nir. 7,31. Çat. Br. 1,5,1,16. Pañkav. Br. 21,10,11. Kâtj. Çr. 23,3,1. auf das Jahr gedeutet Çat. Br. 1,5,1,16. 4,2,4,3. so heisst Agni विसर्गे Gṛhjas. 1,5. — β) *Sonne, Sonnenlicht* Nir. a. a. O. वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु AV. 6,62,1. Çâñkh. Br. 19,4. Çr. 3,3,2. 5. ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ṚV. 9,61,16. TS. 1,1,4,2. TBr. 1,2,1,27. — γ)

प्राण Praçnop. 1,7. आत्मन् Khând. Up. 5,11,2. der erste Pâda des Âtman Mâṇḍ. Up. 3. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,125. 133. Weber, Râmat. Up. 338. 342. = चैतन्य, विराज् Vedântas. (Allah.) No. 72. 74. — δ) इष्टि M. 11,27. Jâǵn. 1,126. 3,250. वाजिनो ऽश्वमेधः Hariv. 14227. — ε) भूमि MBh. 13,3140 nach der Lesart der ed. Bomb. (वैश्यानरी ed. Calc.). — b) *aus allen Männern bestehend, vollzählig, allgemein:* ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ṚV. 8,30,4. VS. 11,58. TS. 3,2,8,5. Çâṅkh. Çr. 4,10,3. वैश्वानरो (विश्वदेवो VS.) सूनृतामा रभधम् AV. 6,62,2. हविरसि वैश्वानरम् *allgemein d. h. allen Göttern gehörig* Lâṭj. 5,6,6. — c) *allgebietend:* Varuṇa AV. 1,10,4. — d) Agni Vaiçvânara *geweiht u. s. w.:* Vers TS. 5,2,4,2. पुरोडाश in zwölf Schalen Çat. Br. 2,2,3,6. 5,2,5, 13. 6,2,1,34. 9,3,1,1. 13. Kâtj. Çr. 25,8,16. Somagraha Çat. Br. 4, 2,4,1. Atirâtra Çâṅkh. Çr. 16,23,22. 25,3. 26,3. सैर्य° Nir. 7,23. — e) *von* Viçvânara *oder* Vaiçvânara *verfasst:* धर्माः Verz. d. Oxf. H. 266,b,17. — 2) m. वैश्वानर a) वै° patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. pl. N. pr. eines Ṛshi-Geschlechts MBh. 12,6143. — b) N. pr. eines Daitja Hariv. 200. 208. VP. 148. Bhâg. P. 6,6,32. fg. — c) N. pr. verschiedener Männer Kathâs. 7,44. 21,131. 34,116. — 3) f. ई (sc. वीथी) umfasst die beiden Bhadrapadâ und Revatî VP. 226, N. 21; vgl. °मार्ग. — 4) n. a) *Gesammtheit der Männer* TBr. 1,5,1,5. — b) N. eines Sâman Ind. St. 3,238,b; vgl. महावैश्वानरव्रत.

वैश्वानरज्येष्ठ adj. *den* Vaiçvânara *zum Ersten habend* AV. 3,21,7.

वैश्वानरज्योतिस् adj. Vaiçvânara's *Licht habend* VS. 20,23.

वैश्वानरदत्त m. N. pr. eines Brahmanen Kathâs. 20,8.

वैश्वानरपथ m. = वैश्वानरमार्ग R. 1,60,30 (62,31 Gorr.). Hariv. 4258.

वैश्वानरमार्ग m. Vaiçvânara's *Bahn*, Bez. einer best. Strecke der Mond- und Planetenbahn Varâh. Bṛh. S. 11,32; vgl. 7,3, die englische Uebers. und VP. 226, N. 21.

वैश्वानरमुख adj. Vaiçvânara *zum Munde habend:* Çiva MBh. 14, 201. — Vgl. अग्निमुख.

वैश्वानरविद्या f. Titel einer Upanishad Colebr. Misc. Ess. I, 326.

वैश्वानरायण m. patron. von विश्वानर gaṇa अश्वादि zu P. 4,1,110.

वैश्वानरीय adj. *zu* Vaiçvânara *in Beziehung stehend, von ihm handelnd* Ait. Br. 3,14. 35. Nir. 2,20. सूक्त 7,23. 31. Çâṅkh. Br. 25, 9. Çr. 8,6,3. 11,2,10. अग्नि Ind. St. 3,458.

वैश्वामनस n. N. verschiedener Sâman Ind. St. 3,238,b. — Vgl. वैश्वमनस.

वैश्वामित्र 1) adj. *zu* Viçvâmitra *in Beziehung stehend:* पदस्तोभाः Ind. St. 3,238,b. n. N. verschiedener Sâman ebend. — 2) m. patron. P. 4,1,114, Schol. Ait. Br. 7,17. fg. Âçv. Çr. 12,14,2. fgg. Pańkav. Br. 14,11,3. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 56,41. fg. 57,2. 3. des Ashṭaka, Ṛshabha u. s. w. ṚV. Anukr. plur. Bhâg. P. 9,16,37. वैश्वामित्री f. P. 4,1,78, Schol. — Vgl. महा°.

वैश्वामित्रि m. patron. von विश्वामित्र MBh. 3,13301.

वैश्वामित्रिक adj. *zu* Viçvâmitra *in Beziehung stehend:* अध्याय P. 4,3,69, Schol.

वैश्वावसव (von विश्वावसु) n. etwa *die Gesammtheit der* Vasu (entsprechend वैश्वानर) TBr. 1,5,1,5.

वैश्वावसव्य (wie eben) m. patron. gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105. Çat. Br. 10,3,4,1.

वैश्वासिक (von विश्वास) adj. *Vertrauen verdienend, zuverlässig:* ज्ञान Verz. d. Oxf. H. 216,b,40. Daçak. 61,1.

वैषघ्य s. वैशघ्य.

वैषम (von विषम) n. *Ungleichheit, Wechsel* Spr. (II) 1939, v. l. — Vgl. वैषम्य.

वैषमस्थ्य n. nom. abstr. von विषमस्थ gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1, 124.

वैषम्य (von विषम) n. nom. abstr. gaṇa ब्राह्मणादि zu P. 5,1, 124. 1) *Unebenheit* (des Bodens) MBh. 12,2235. अति° Spr. 5028. — 2) *Ungleichheit, Verschiedenartigkeit, Nichtübereinstimmung, ungleiche Vertheilung, Störung des richtigen Verhältnisses* Kâtj. Çr. 8,8,39. Lâṭj. 6, 5,17. फल° MBh. 3,13863. Spr. 4699. 1560. संख्या° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 20. MBh. I, S. 308. Verz. d. Oxf. H. 264,a,32. Kâvjâd. 3,182. Sâh. D. 633. Muir, ST. 2,190. Bhâg. P. 3,32,24. मति° 1,9,21. गुण° 2, 10,3. 3,10,14. 28,43. 11,10,32. Sâṁkhjak. 46. वातपित्तकफशोणितसंनिपात° Suçr. 1,4,8. 9. 2,5,16. Tattvas. 50. Çaṁk. zu Khând. Up. S. 57. Sarvadarçanas. 163,18. आहार° Suçr. 1,194,18. द्रव्यावयव° Bhâg. P. 3,26,45. — 3) *Schwierigkeit:* लोकव्यवहारस्य Mṛkkh. 149,1. *schwierige Lage, Noth, Bedrängniss:* वैषम्यं परमं प्राप्तः MBh. 3,2316. 13,2506. Spr. 2904. वैषम्याणां प्रशमनम् Kâm. Nîtis. 13,55. अ° so v. a. *Wohlfahrt* Mârk. P. 128,33. — 4) *Ungerechtigkeit, Unbilligkeit, rauhes, unfreundliches Benehmen:* मदन° Mâlav. 42,16. Bhâg. P. 6,2,3. 7,1,23. तथा विषमशीलश्च नाम्ना वैशस्यतो (lies वैषम्यतो) ऽरिषु Kathâs. 120,39. Sarvadarçanas. 80,14. fg. 121,8. भाग्य° *Missgeschick* R. 6,98,29. Mṛkkh. 152, 11. — 5) *Unangemessenheit, Falschheit, Unrichtigkeit* Sarvadarçanas. 127,7. 143,4. पाषण्डपथ° Bhâg. P. 3,7,31. संकल्प° 9,1,18. 20. कर्मसु *ein Versehen bei* 8,23,14. कर्म° 15.

वैषम्यकौमुदी f. Titel eines Werkes Colebr. Misc. Ess. II, 57.

वैषय n. = विषयाणां समूहः gaṇa भिक्षादि zu P. 4,2,38.

वैषयिक (von विषय) adj. (f. ई) 1) *das Reich betreffend:* पीडा Kâm. Nîtis. 10,3; vgl. 7. — 2) *einen bestimmten Bereich habend, auf Etwas gerichtet, — bezüglich:* आधार (z. B. मोक्ष इच्छास्ति) Siddh. K. zu P. 1, 4,45; vgl. विषयसप्तमी. — 3) *auf die Sinnenwelt gerichtet, dieselbe betreffend:* ज्ञान Pańkar. 1,1,52. सुख Sâh. D. 93,1. °जन und वैषयिक m. *ein Materialist* H. an. 3,419. Med. n. 244.

वैषुवत (von विषुवन्त्) 1) adj. (f. ई) *in der Mitte* (des Jahres u. s. w.) *befindlich, central* Âpast. 1,22,7. अहर् Çat. Br. 4,6,3,3. 12,2,3,6. 10. Çâṅkh. Br. 25,1. 9. कला *aequinoctial* Sûrjas. 13, 9. — 2) n. a) *Mittelpunkt:* कर्मणा उपपदो विख्यातसंस्था वैषुवतानि च Nidânas. bei Weber, Nax. 2,284. — b) *Aequinoctium:* उदगयनदक्षिणायनवैषुवतसंज्ञाभिर्गतिभिः Bhâg. P. 5,21,3.

वैषुवतीय adj. = वैषुवत. अहर् Çâṅkh. Br. 19,3.

वैष्किर adj. von विष्किर. रस *Hühnerbrühe* Suçr. 2,492,15.

वैष्टप adj. von विष्टप AV. 19,27,4.

वैष्टपुरेय m. patron. von विष्टपुर gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. Çat. Br. 14,5,5,20. 7,3,25.

वैष्टम्भ (von विष्टम्भ) n. N. eines Sâman Ind. St. 3,238,b. Pańkav. Br. 12,3,9. 10. महा° 4,19. Ind. St. 3,239,a. तुच्छक° 214,b.

वैष्टिक (von 2. विष्टि) m. *Fröhner, Zwangsdiener* SADDH. P. 4,13,a.

वैष्टुत 1) adj. *zu den* Vishṭuti *gehörig, dabei üblich:* वसन LĀṬJ. 2,6, 1.4. — 2) n. *die Asche bei einem Brandopfer* H. 837; vgl. वैष्टुभ und वैष्णव.

वैष्टुभ n. = वैष्टुत 2) TRIK. 2,7,7.

वैष्ट्र UṆĀDIS. 4,159. n. = पिष्टप UGGVAL. = द्यो, वायु, विष्णु UṆĀDIVṚ. im SAṂKSHIPTAS. nach ÇKDR.

वैष्णव 1) adj. VOP. 4,40. parox. (f. ई) *zu* Vishṇu *in Beziehung stehend, von ihm herrührend, an ihn gerichtet, ihm geweiht* u. s. w. VS. 5,21.23.25. 10,6. TS. 5,6,9,2.3. AIT. BR. 3,38. ÇAT. BR. 1,1,4,9 (s. Corrigg.). 3,5, 3,2. 4,9. 5,2,5,4. 11,5,3,5. MBH. 6,5801. VARĀH. BṚH. S. 80,8. 81,7. अद्भुतानि Ind. St. 1,37,3. अस्त्र MBH. 3,12021. Ind. St. 1,21,19. वायु 2, 70. यशस् MBH. 18,305. पद ebend. धामन् RAGH. 11,85. RĀGA-TAR. 5,125. जगत् MBH. 3,15847. BHĀG. P. 7,3,11. तेत्र 1,1,21. श्री 3,16,28. ज्वर 10, 63,23. तेजस् RAGH. 10,55. यूप R. 1,62,19. वर KATHĀS. 22,193. वचस् 71, 235. मूर्ति HARIV. 10946. तनु MĀRK. P. 109,71. पाद 58,81. बलि R. 2, 56,27. यज्ञ MBH. 3,15291. R. 7,25,8. 30,47.49. अनुध्यान GIT. 12,28. मन्त्र VARĀH. BṚH. S. 43,30. 44,6. WEBER, RĀMAT. UP. 355. सूक्त WEBER, KṚSHṆAG. 304. तन्त्र Verz. d. Oxf. H. 106,a,24. पर्वन् 30,a, No. 75. अनुस्मृति 4,b, No. 33. संहिता 8,a,11. पुराण (auch n. mit Ergänzung von पुराण) VP. 284. MĀRK. P. S. 659, Z. 3. Verz. d. Oxf. H. 8,a,1. 59,a,37. 65,a,32. b,9. 68,b,18. 79,b,37. 83,a,9. Verz. d. B. H. No. 1170. Ind. St. 1,18,8. पञ्चरात्र 23,5. शास्त्र 58,21. Verz. d. B. H. No. 327. वेदेभ्यो वैष्णवं (wohl शास्त्र zu ergänzen) परम् Verz. d. Oxf. H. 91,a,17.23.247,a, N. 3. वैद्यकशास्त्रे वैष्णवसंज्ञके 334,b,25. विद्या BHĀG. P. 6,7,39. — 2) proparox. patron. gaṇa विदादि zu P. 4,1,104. Soma, Herr der Apsaras ĀÇV. ÇR. 4,7,4. ÇAT. BR. 13,4,3,8 (oxyt.). अग्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्णं भूर्वैष्णवी सूर्यसुताश्च गावः MBH. 3,13480 (Journ. of the Am. Or. S. 7,45). पृथिवी 13,4350. गङ्गा ĀHNIKĀKĀRATATTVA im ÇKDR. इति पुत्रत्रयं तस्य ब्राह्मे ब्रह्मेशवैष्णवम् (das suff. gehört zu allen drei Namen) MĀRK. P. 17,10. — 3) m. (f. ई PAṄKAR. 4,1,5) *ein Verehrer* Vishṇu's UGGVAL. zu UṆĀDIS. 3,39. WILSON, Sel. Works I, 34. fgg. MBH. 18,304 = HARIV. 16361. VARĀH. BṚH. S. 86,33. Spr. (II) 3092, v. l. KATHĀS. 17,4. 36,10. RĀGA-TAR. 2,147. 5,43. PRAB. 86,6. MĀRK. P. 19,35. PAṄKAR. 4,1,5. Ind. St. 1,13,9. VOP. 3,132. Verz. d. Oxf. H. 14,b,42. 15,a,11. fg. 16,a, N. 1. 92,a,19. 242,b, No. 599. 301,b,16. fgg. Bez. *einer best.* Vishṇu'itischen *Secte* 248,a,15.18. fg. 258,b,11. — 4) *ein best. Mineral*, m. H. 1054, Schol. n. *ein* Mahârasa Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761. — 5) f. ई α) *die Energie* Vishṇu's (eine der Mütter) H. 201, Schol. MIT. 142,10. Verz. d. Oxf. H. 184,a,4.9. 25,b, N. 5. 39,b,36. 81,a,41. RĀGA-TAR. 3,471. = दुर्गा ÇABDAR. im ÇKDR. Verz. d. Oxf. H. 25,a,34. = मनसा 24,b,38. °मायाकथन Verz. d. B. H. 134,a (3). pl. im Gefolge Skanda's MBH. 9, 2656. — β) Bez. verschiedener Pflanzen: = अपराजिता ÇABDAK. im ÇKDR. = शतावरी RĀGAN. ebend. = तुलसी ÇABDAM. ebend. — 6) n. a) *das unter* Vishṇu *stehende* Naxatra Çravaṇa WEBER, Nax. I, 310. II, 355. SŪRJAS. 9,18. VARĀH. BṚH. S. 71,11. — b) N. eines Sâman LĀṬJ. 6,11,4. 7,2,1. वैष्णवाद्य und वैष्णवोत्तर n. desgl. Ind. St. 3,239,a. — Vgl. प्रभ°.

वैष्णवज्योतिषशास्त्र n. Titel eines Werkes MACK. Coll. I, 127.

वैष्णवतीर्थ n. *ein* Tîrtha *der* Vaishṇava oder N. pr. eines Tîrtha Verz. d. B. H. 146,b (61).

वैष्णवत्व n. nom. abstr. von वैष्णव 3) RĀGA-TAR. 5,124.

वैष्णववर्धन Titel eines Werkes WILSON, Sel. Works I, 168.

वैष्णववारुणँ adj. (f. ई) *an* Vishṇu *und* Varuṇa *gerichtet:* ऋच् ÇAT. BR. 4,5,3,7.

वैष्णवशास्त्र n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 333,b, No. 786. Verz. d. B. H. No. 880.

वैष्णवसिद्धान्तदीपिका f. desgl. Verz. d. Oxf. H. 161,b,22. वैष्णवमतसिद्धान्तदीपिका 31.

वैष्णवाकूतचन्द्रिका f. Titel eines Commentars zum 3ten und 4ten Buche des Vishṇupurâṇa Verz. d. Oxf. H. 63,a, No. 111. Verz. d. B. H. No. 487.

वैष्णवामृत n. Titel eines Werkes Verz. d. Oxf. H. 279,b,5. 292,b,17. Verz. d. Cambr. H. 67.

वैष्णवायनँ m. patron. von वैष्णव gaṇa हरितादि zu P. 4,1,100.

वैष्णवीतन्त्र n. Titel eines Tantra Verz. d. Oxf. H. 108,b,37. 109,a,24. fg.

वैष्णव्यँ adj. *zu* Vishṇu *in Beziehung stehend* VS. 1,12. GOBH. 1,7, 22. SHAḌV. BR. 5,1.

वैष्णावरुणँ adj. (f. ई) = वैष्णववारुण. वशा TS. 2,1,4,4.

वैष्णुवारुण adj. (f. ई) dass. AIT. BR. 3,38.

वैष्णुवृद्धि (von विष्णुवृद्ध) m. patron. so ist vielleicht nach WEBER zu lesen st. वैष्टुवृमि PRAVARĀDHJ. in Verz. d. B. H. 56,15.

वैष्वक्सेन्यँ m. patron. von विष्वक्सेन P. 4,1,114, Vârtt.

वैसर्गिक adj. = विसर्गाय प्रभवति gaṇa संतापादि zu P. 5,1,101.

वैसर्जनँ (von विसर्जन) adj. *auf das Entlassen* (des Soma aus der Hand?) *bezüglich*, n. Bez. gewisser Opferungen TS. 6,3,2,1.2. KĀṬH. 26,2.

वैसर्जनीय dass. Schol. zu ÇAT. BR. 3,6,3,1 und KĀTJ. ÇR. 11,1,16.

वैसर्जिनँ dass. ÇAT. BR. 3,6,3,2.3. 4,6,8,6. °होम Schol. zu KĀTJ. ÇR. 11,1,13.

वैसर्पँ adj. *mit der* विसर्प *genannten Krankheit behaftet* gaṇa ज्योत्स्नादि zu P. 5,2,103, Vârtt. Nach VJUTP. 220 als subst. = विसर्प *Rose, Rothlauf.*

वैसादृश्य (von विसदृश) n. *Unähnlichkeit, Verschiedenheit* BHĀG. P. 5, 26,3. 10,85,6. KULL. zu M. 9,174. Schol. zu ÇĀK. 42.

वैसारिणँ m. = विसारिन् *Fisch* P. 5,4,16. AK. 1,2,3,17. H. 1343. HALĀJ. 3,35.

वैसूचन (von विसूचन und dieses von सूच् mit वि) n. *Verkleidung als Weib* (im Drama) ÇKDR. und WILSON ohne Angabe einer Aut.

वैसृप (von विसृप und dieses von सर्प् mit वि) m. N. pr. eines Dânava HARIV. 203.

वैस्तारिक (von विस्तार) adj. *weit verbreitet, ausgedehnt* BURNOUF, Intr. 142.

वैस्तिक s. वङ्क°.

वैस्पष्ट्य (von विस्पष्ट) n. *Klarheit, Deutlichkeit, Offenbarkeit* P. 5,3, 66, Vârtt. 2.

वैस्रेयँ m. patron. von विस्रि gaṇa शुभ्रादि zu P. 4,1,123. — Vgl. वैश्रेय.

वैस्वर्य 1) adj. *die Stimme benehmend* SUÇR. 1,192,11. 215,1. — 2) n.

a) *Verlust der Stimme, — Sprache* Vâgbh. 6,156. Sâh. D. 167. 189. मतं गद्गदभाषित्वं वैस्वर्यं प्रमदादिजम् Pratâpar. 51,a,5. — b) *verschiedene Betonung:* अन्तरयो: Çâṅkh. Çr. 12,16,6.

वैहग (von विहग) adj. (f. ई) *zu einem Vogel in Beziehung stehend:* तनु *Vogelgestalt* Kathâs. 59,178.

वैहंग (von विहंग) adj. dass.: रस *Brühe von Vogelfleisch* Suçr. 2,459,4.

वैहति (von विहत) m. patron. gaṇa तौल्वल्यादि zu P. 2,4,61. — Vgl. वैहलि.

वैहलि m. patron.; pl. Saṁsk. K. 184,a,2. vielleicht fehlerhaft für वैहति.

वैहायन desgl.; pl. ebend. 184,a,5.

वैहायस (von 2. विहायस्) 1) adj. (f. ई) *in freier Luft —, offen daliegend* oder *stehend, in der Luft —, im Luftraum stehend* oder *sich bewegend* Gobh. 2,6,7. Pâr. Gṛhj. 2,2. पत्त्र MBh. 1,6954. शक्रस्य सभा 2, 284. Hariv. 12656. पुर MBh. 3,638. क्रूद् (so mit der ed. Bomb. zu lesen) 12,4662. रथ R. 6,19,55. यानं वैहायसं नाम Bhâg. P. 8,10,16. असुर 10, 55,21. वालखिल्या: MBh. 3,10903. °गत *das Fliegen* R. 2,27,9. वैहायसम् adv. *in freier Luft* Âpast. 2,4,8. लोष्टं वैहायसं निदध्यात् Gobh. 4, 9,13. — 2) m. pl. *Luft-, Himmelsbewohner* Bhâg. P. 2,2,22. Bez. best. Ṛshi (Lichterscheinungen im Luftraum) Varâh. Bṛh. S. 48,67. — 3) f. ई N. pr. eines Flusses Bhâg. P. 5,19,18. — 4) n. a) *der Luftraum:* वैहायसं प्राक्रमत् MBh. 7,5766. — b) *das Fliegen* Bhâg. P. 5,5,35.

वैहार (von विहार) m. N. pr. eines Berges in Magadha MBh. 2,799; vgl. LIA. 2,79, N. 4. Hiouen-thsang 3,379. fg. — Vgl. वैभार.

वैहार्य (wie eben) MBh. 5,4086 nach Nîlak. adj. *mit dem man seinen Spass hat, den man neckt und zum Narren hält;* könnte auch als n. in der Bed. *Belustigung, Spass* gefasst werden.

वैहासिक (von विहास) m. *Spassmacher, lustiger Geselle* H. 331. Halâj. 2,277.

वैह्वल्य (von विह्वल) n. *Erschöpfung, allgemeine Schwäche:* मुमूर्षोरिव तत्रास्य वैह्वल्यगलितस्मृते: Râǵa-Tar. 8,2248.

वोक्काण m. pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,20. 16,35. — Vgl. बोकाण.

वोटा f. *Dienerin, Sclavin* H. 534. Halâj. 2,337. als Nebenform von पोटा wohl richtiger बोटा zu schreiben. — Vgl. पूगवोट.

वोड m. Variante von कोड Çabdar. im ÇKDr.

वोड्ड 1) m. a) *eine Schlangenart* (गोनस) Vikramâditja bei Bhar. zu AK. nach ÇKDr. — b) *ein best. Fisch* Med. im ÇKDr. und bei Wilson. — 2) f. ई *der 4te Theil eines* Paṇa Med. ebend. — Die gedr. Ausg. der Med. r. 87 schreibt das Wort mit ट.

वोढ m. N. pr. eines Ṛshi Verz. d. B. H. No. 206. 366. 1144. Die richtigere Form ist vielleicht वोढु.

वोढर् (von 1. वह्) nom. ag. P. 6,3,112. 1) *fahrend, führend, ziehend, bringend; Zugpferd* RV. 1,44,3. 6,64,3. अत्यो न वोळ्हा 9,81,2. सुयम 96,15. 112,4. Çat. Br. 6,4,3,9. Çâṅkh. Çr. 8,18,9. इनो वसु स हि वोळ्हा RV. 8,2,35. Nir. 5,1. 11,16. 12,22. — रथस्य *Wagenpferd* AK. 2, 8,2,14. H. 1234. कूलस्य ein Stier MBh. 3,12724. 13,3599. AK. 2,9,64. युगादीनाम् ebend. H. 1261. धुर: MBh. 7,373. अग्र्यधुरायाम् ein Stier Paṅkat. 8,16. m. *Zugochs, Stier* Râǵan. im ÇKDr. MBh. 11,760. *Wagenlenker* H. an. 2,131. Med. ḍh. 4. देवानाम् *Führer* Çâṅkh. zu Bṛh. Âr. Up. S. 25. भागीरथीनिर्झरसीकराणाम् *zuführend* (Wind) Kumâras. 1,15. — कुरबकरजसाम् Mâlav. 44. कव्यकव्यानाम् *Darbringer* MBh. 13,2023. — 2) *Heimführer eines Mädchens, Ehegatte* Çabdar. im ÇKDr. M. 8,204. 9, 172. fg. MBh. 5,4733. वोढर् und अ° Kull. zu M. 9,32. कन्याम् P. 3,3, 169, Schol. — 3) *Träger, Lastträger* H. an. Med. Bhâg. P. 5,10,2. भार° Kathâs. 60,12. कृत्स्नभूभार° 55,29. 101,44. कविर्वोढर् Paṅkat. 3, 14, 22. — 4) = सूत (vielleicht fehlerhaft für सूत) Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. धूर्वोढर्.

वोढव्य (wie eben) partic. fut. pass. P. 6,3,112. Vop. 26,25. 1) *zu fahren, zu ziehen, zu führen, zu lenken:* रथ MBh. 13,2790. Verz. d. Oxf. H. 31,a,19. वोढव्या पुंगवेनेव धू: सदा रणमूर्धनि Hariv. 4049. आपत्स्वेव हि वोढव्यं (impers.) भवद्भि: पुंगवैरिव MBh. 12,3293. अनड्वानिव वोढव्य: 5,4572. धूर्तज्ञेन धार्या स्याद्वोढव्य इतरो जन: 2799. स (सहदेव:) ते ऽरण्येषु वोढव्यो याज्ञसेनि तपास्वपि (so ed. Bomb.) *zu leiten* 4,594. — 2) f. *heimzuführen, zu ehelichen* MBh. 13, 2449. Kull. zu M. 8,366. — 3) *zu tragen:* भार R. 1,12,4. R. Gorr. 2,31,3. — 4) *aufzuladen, zu übernehmen, auszuführen:* महद्धि कार्यं वोढव्यम् MBh. 5,73. पितृपैतामहे वृत्ते वोढव्ये ते ऽन्यथा मति: 3,1117.

वोढु m. = वोढ Paṅkar. 1,10,61. Verz. d. B. H. No. 1143. Gauḍap. zu Sâṅkhjak. 1. Âhnikatattva im ÇKDr. — Vgl. यज्ञवोढव्.

वोण्ट m. die vulgäre Form für वृन्त Çabdar. im ÇKDr.

वोद adj. = आर्द्र Trik. 3,1,8.

वोदाल m. *ein best. Fisch* Çabdar. im ÇKDr.

वोद्र und वोद्री s. u. वोड्ड.

वोन्धादेवी f. N. pr. einer *Fürstin* Journ. of the Am. Or. S. 6,517, e.

वोपदेव m. N. pr. eines überaus fruchtbaren Autors aus dem 12ten oder 13ten Jahrhundert n. Chr. Burnouf, Bhâg. P. I, xcvi. fgg. Wilson, Sel. Works 2,69. Colebr. Misc. Ess. I, 197. II, 44. fgg. Gild. Bibl. 382. fg. 397. fg. 594. Vop. S. 176. Verz. d. B. H. No. 790. 937. 978. fg. Verz. d. Oxf. H. 37,b, No. 92. 161,b,16. 164,a,1. 174,b, No. 394. 175,a,27. fgg. No. 397. 175,b, No. 398. 278,b,21. 279,b,5. Verz. d. Cambr. H. 13. fgg.

वोपालित m. N. pr. eines Lexicographen Med. Anh. 1. Halâj. 1, 2. Verz. d. Oxf. H. 182,b,1 v. u. 188,a,7. 195,b,1. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,56. 78.

वोरक m. *Schreiber* Trik. 2,8,26. — Vgl. वोलक.

वोरट m. *eine Jasminart* (कुन्द) Trik. 2,4,24.

वोरपट्टी f. *Matratze* Çabdam. im ÇKDr.

वोरव m. *eine best. Körnerfrucht* Râǵan. im ÇKDr.

वोरुखान m. *ein Pferd von blassrother Farbe* H. 1240. Wohl nach einem Lande, vielleicht Hyrkanien, benannt.

वोरुवाण Hariv. 7426 fehlerhaft für रोरुवाण, wie die neuere Ausg. liest.

वोल m. *Myrrhe* AK. 2,9,105. H. 1063. nach ÇKDr. auch n.

वोलक m. 1) *Strudel* H. 1076. — 2) *Schreiber* (vgl. वोरक) Çabdar. im ÇKDr.

वोल्लासक N. pr. einer Oertlichkeit Râǵa-Tar. 5,224.

वोल्लाह m. *ein kastanienbraunes Pferd, bei dem Mähne und Schweif hell sind,* H. 1239.

वोह्नित्थ n. *Schiff* H. 876.

वौक् für वाक् (von वाच्) Çat. Br. 1,7,2,21. 10,4,1,3. 8.

वौकक् für वौषट् Çat. Br. 2,2,2,19.25. Schol. zu Kâtj. Çr. 390,14. 391,4.

वौलि m. patron. Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 57,38. wohl fehlerhaft.

वौषट् indecl. gaṇa चादि zu P. 1,4,57. in Verbindung mit कर् u. s. w. gaṇa ऊर्यादि zu 61. ein Opferruf (eine Potenzirung von वषट्) AK. 3,5, 8. H. 1538. Ait. Br. 3,6. Çat. Br. 1,5,2,16. 10,4,1,3. 12,3,2,3. Hariv. 14115. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,91. Weber, Râmat. Up. 303. वौ३षट् P. 8,2,91. — Vgl. श्रौषट्.

व्यंश s. व्यंस.

व्यंस (2. वि + 2. अंस) 1) adj. *auseinanderstehende Schultern habend:* पृथु° *breitschulterig* MBh. 1,3971. 3,11689. vielleicht ein alter Fehler für पृथ°; vgl. am Ende des Artikels. — 2) m. N. pr. eines von Indra besiegten Dämons: अर्हन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसम् ṚV. 1,32,5. 101,2. 103,2. 2,14,5. 3,34,3. 4,18,9. eines Sohnes des Viprakitti von der Siṁhikâ Hariv. 215 (व्यंश die ältere Ausg.). VP. 148 (व्यंश). — In der Stelle पृथमात्रं व्यंसौ TBr. 1,6,1,3 ist zu zerlegen वि अंसौ *die Achseln stehen um einen* Pṛtha *von einander ab.*

व्यंसक (von अंसय् mit वि) nom. ag. *Betrüger* H. 377. Halâj. 2,194. — Vgl. छात्र°, मयूर°.

व्यंसयितव्य (wie eben) adj. *zu täuschen, zu betrügen* Pañkat. 202,25.

व्यक्त 1) adj. *a) herausgeputzt* u. s. w. s. u. अञ्ज् mit वि 2). — *b)* = स्फुट *offenbar, wahrnehmbar* H. 1467. an. 2,193. Med. t. 54. °कृत्य Râǵa-Tar. 6,331. °चैतन्य adj. Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,162. °दर्शन adj. Kûlikop. ebend. 16. यैरिवाव्यक्तशारदी Hariv. 7079. व्यक्ता वाक् *verständlich, articulirt* Dhâtup. 23,40. P. 1,3,48. Vop. 23,41. *sinnlich wahrnehmbar* im Gegens. zu अव्यक्त *übersinnlich* MBh. 3,13918. इन्द्रियैः सृज्यते यद्यत्तद्व्यक्तमिति स्मृतम् । तदव्यक्तमिति ज्ञेयं लिङ्गग्राह्यमतीन्द्रियम् ॥ 13931. 12,6964. 8672. fgg. Sâṁkhjak. 2. 10. 11. 14. VP. 9. Bhâg. P. 2,6,28. Verz. d. Oxf. H. 45,*a*,19. तावद्व्यक्त *eine bekannte Zahl* Colebr. Alg. 258. व्यक्तम् adv. *offenbar, deutlich* MBh. 13,236. Spr. (II) 344. (I) 2887. 3136. Kathâs. 12,166. Daçak. 91,14. व्यक्तावधूत im Gegens. zu गुप्तावधूत Wilson, Sel. Works I, 262. Vgl. unter अञ्ज् mit वि 3), अव्यक्त (als n. auch Jâǵñ. 3,178) und परि°. — *c) specialisirt, unterschieden* H. 327. *besonder* 14. — *d) klug, verständig, weise* AK. 3,4,11,65. H. 342. H. an. Med. Halâj. 2,178. — 2) m. N. pr. eines der 11 Gaṇâdhipa bei den Ǵaina H. 32 nebst Comm. Wilson, Sel. Works I, 299. fg.

व्यक्तगन्धा f. (*stark riechend*) *langer Pfeffer, Jasmin, Sanseviera* Râǵan. in Nigh. Pr.

व्यक्तता (von व्यक्त) f. *das Offenbarsein, Wahrnehmbarkeit:* प्रधानस्य व्यक्ततां गतस्य Maitrjup. 6,10. Kûlikop. in Ind. St. 9,20. यावत्पिशाचो व्यक्ततां गतः *bis der* Piç. *erscheint* Kathâs. 28,167. व्यक्ततया *deutlich, verständlich* Verz. d. Oxf. H. 198,*b*, No. 467.

व्यक्तदृष्टार्थ adj. *der Etwas mit eigenen Augen gesehen hat, Augenzeuge* Trik. 3,2,16.

व्यक्तमय (von व्यक्त) adj. *das sinnlich Wahrnehmbare betreffend* MBh. 12,8673. अव्यक्तमयी विद्या *das Uebersinnliche betreffend* ebend.

व्यक्तरसता (von व्यक्त + रस) f. *deutlicher —, hervorstechender Geschmack* Suçr. 1,171,2; vgl. 136,9.

व्यक्ति (von अञ्ज् mit वि) f. 1) *das Erscheinen, Offenbarwerden, deutliches Hervortreten, Manifestation:* नहि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः Bhag. 10,14. Bhâg. P. 3,7,35. 10,29,14. पुष्पफल° MBh. 12, 6830. व्यक्तिं भेदं च यो वेत्ति दोषाणाम् Suçr. 1,82,21. गोपालास्तापसा व्याधा ये चान्ये वनचारिणः । मूलाहाराश्च ये तेभ्यो भेषजव्यक्तिरिष्यते ॥ 80 v. a. *das Kundwerden* 136,3. 4. Varâh. Bṛh. S. 3,2. धर्म° MBh. 3, 12678. स्नेह° Megh. 12. Mâlatim. 17,7. दुर्नय° Kathâs. 21,94. 123,233. वर्णानां वदने Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,32. 105,*a*,1. 155,*a*,7. Bhâg. P. 6, 19,12. Sâh. D. 271. 408. अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः *in die Erscheinung getreten* Bhag. 7,24. व्यक्तिमायाति Sarvadarçanas. 90,2. व्यक्तिं भजन्ति *treten deutlich hervor* Çâk. 167. अविज्ञातस्थितामादौ पुनश्च व्यक्तिमागताम् *bekannt geworden* Kathâs. 19,117. Râǵa-Tar. 1, 231. Am Ende eines adj. comp.: मुखमसकलव्यक्ति Megh. 82. — 2) *Unterschiedenheit, Verschiedenheit:* तेजस्तेजस्विनोर्व्यक्तिं बुबुधे MBh. 12, 7893. यथार्थाव्रगता नग्यो व्यक्तीर्भक्ति नाम च 7972. अन्तरान्तरयोर्व्यक्तिं पृच्छामि 11215. दैवमानुषयोरद्य व्यक्ता व्यक्तिर्भविष्यति R. 2,23,19. Ragh. 1,10. राज्ञः समन्तमेवाद्ययोरधरोत्तरयोर्व्यक्तिर्भविष्यति Mâlav. 10,13. — 3) *ein von andern unterschiedenes Ding, Einzelwesen, Einzelding, Individuum* (Gegens. जाति) AK. 1,1,4,9. H. 1515. 14. Kap. 3,10. Nîlak. 36. अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे Bhag. 8,18. Varâh. Bṛh. S. 86,7. Bhâg. P. 3,26,39. 6,15,8. Ind. St. 8,341. fgg. Çañk. zu Khând. Up. S. 14. द्रव्यशब्दा एकव्यक्तिवाचिनः Sâh. D. 10,15. Kusum. 23,1. ऋषि° Müller, SL. 197. वर्ण° Müller, ṚV. Prât. XIII, N. 2. Sarvadarçanas. 4,14. Schol. zu P. 5,4,53. Siddh. K. zu 7,1,85. — 4) *Geschlecht* P. 1,2,51. Sâh. D. 17,12. नपुंसक° 18,2. — Vgl. अन्तर°, अर्थ°.

व्यक्तिविवेक m. Titel eines Buches: °कार Sâh. D. 6,5. 121,3. Verz. d. Oxf. H. 210,*a*, No. 495.

व्यक्तीकर् (व्यक्त + 1. कर्), °करोति *offenbaren* Kathâs. 29,46. °कृत 45,273. Prab. 1,13. Sâh. D. 22,14.

व्यक्तीभाव (von व्यक्तीभू) m. *das Offenbarwerden* Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 53. 154.

व्यक्तीभू (व्यक्त + 1. भू°), °भवति *in die Erscheinung treten, offenbar werden* Verz. d. Oxf. H. 155,*a*,6. °भूत MBh. 12,11416. Varâh. Bṛh. S. 47,21. Râǵa-Tar. 5,240.

व्यक्त = निरक्त adj. *keine Breite habend,* subst. *Aequator* Journ. of the Am. Or. S. 6,392.

व्यग्र (2. वि + अग्र) 1) adj. (f. आ) *a) seine Aufmerksamkeit auf keinen bestimmten Punkt richtend* (vgl. एकाग्र), *zerstreut, fahrig; ausser sich, in grosser Aufregung seiend;* = आकुल und व्याकुल AK. 3,4,23,192. Med. r. 84. H. 366. °चित्त Spr. (II) 87. Personen Maitrjup. 3,2. 6,30. Spr. (II) 1002 (Gegens. निराकुल). Varâh. Bṛh. S. 8,11. मन्त्रयामासिरे व्यग्राः (देवाः) Brahma-P. in LA. (III) 50,1. स्त्रीमुखालोकनतया Kâm. Nitis. 14,58. मद° R. 4,33,29. °हृदय Pañkat. 200,8. हरिभयाभिनिवेशव्यग्रहृदया Bhâg. P. 5,8,2. अव्यग्र *nicht aufgeregt, Besonnenheit zeigend, ruhig und besonnen zu Werke gehend, sich durch Nichts irre machen lassend* Maitrjup. 2,7. अव्यग्रो याहि MBh. 3,13342. प्राधावत्तूर्णमव्यग्रो जीवितेप्सुः सुदुःखितः 15777. 5,7001. Hariv. 8115. R. 1,70,5. 2,30,19.

32,12. 52,67. 81,12. R. Gorr. 2,36,16. 3,73,6. 4,9,1. 33,22. Bhâg. P. 11,29,28. Bhatt. 6,88. वचस्, वाक्य *besonnene Worte* R. 2,21,50. 5,47,1. व्हृदयवृत्तेरभिमतम् so v. a. *fest stehend* Spr. (II) 2810. — *b) von allem Andern abgelenkt, ganz von Etwas in Anspruch genommen, ganz mit Etwas beschäftigt;* = व्यासक्त AK. Med. Hariv. 3450. R. 7,105,4. unter den 1000 Beiww. Vishṇu's nach ÇKDr. die Ergänzung im instr.: वैवाह्किैः कौतुकसंविधानैः Kumâras. 7,2. Kathâs. 52,322 *(ganz mit Jmd beschäftigt, sich mit Jmd eifrig unterhaltend)*. im loc.: सीतामार्गणे R. 5,47,11. धर्मार्थयोः Kâm. Nitis. 13,60. उद्वाहमङ्गलोत्सवे Kathâs. 14,26. Râǵa-Tar. 3,370. Bhâg. P. 10,9,22. im comp. vorangehend: कर्म° Spr. 2121. उत्सव° Kathâs. 19,12. 20,49. 26,38. 34,147. 36,70. 46,55. Râǵa-Tar. 5,144. 6,311. 360. 8,1845. Pańkat. 121,14. तपस्विकार्यव्यग्रमनस् Çâk. 30,4. भगवद्गुणानुकथनश्रवणव्यग्रचेतस् Bhâg. P. 4,29,39. Ueberaus häufig von Armen, Händen und Fingern: वत्सव्यापारयुक्ताभ्यां व्यग्राभ्यां दण्डरज्जुभिः। भुजाभ्याम् Hariv. 3596. नानाप्रहरणाव्यग्रैर्भुजैः R. 6,91,4. Bhâg. P. 4,7,20. तोमरव्यग्रकर MBh. 8,464. Hariv. 6228. 9075. 13150. Spr. 2928. Ragh. 17,27. Vikr. 77,4. Prab. 101,13. कुसुमावचयव्यग्रहस्ता Mâlav. 50,5. केलिकेशग्रहव्यग्रगौरीकर Kathâs. 35,1. बीजग्रहव्यग्राग्राङ्गुलि Prab. 21,7. अव्यग्र *unbeschäftigt, Nichts zu thun habend* Uttarar. 38,20 (52,13). — *c) hinundher schwankend, Gefahren ausgesetzt;* अ° *ungefährdet, sicher:* त्रैलोक्य MBh. 1,7711. राज्य 3,3049. इक्ष्वाकुकुल R. 1,72,8. भवान्नो गतिरव्यग्रा MBh. 5,5430. आगमन R. 1,50,22. कुशल 68,5 (अव्यय ed. Bomb.). गच्छस्वारिष्टमव्यग्रं (अव्ययः ed. Bomb.) पन्थानमकुतोभयम् 2,34,31. योगक्षेम 76,8. — *d) in Bewegung seiend* (sinnlich): °चक्र Bhâg. P. 3,19,6. — 2) व्यग्रम् adv. *in grosser Aufregung* Varâh. Bṛh. S. 12,6. अव्यग्रम् *in aller Ruhe, mit einem Gefühl der Sicherheit, ganz behaglich* Hariv. 9034. R. 2,22,12. 34,25. Mâlatim. 78,18. Bhatt. 8,14. — Vgl. उग्र°, निर्व्यग्र, भोजन° und वैयग्र्य.

व्यग्रता f. nom. abstr. von व्यग्र 1) *b)*; am Ende eines comp.: तपस्विकार्य° Çâk. Ch. 41,1. Râǵa-Tar. 1,125. Pańkat. 252,24. fg. Kull. zu M. 8,65. कुतर्काभ्यास° Kusum. 24,12. fg.

व्यग्रत्व n. nom. abstr. 1) von व्यग्र 1) *a)* Maitrjup. 3,5. Spr. 2947. Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. — 2) von व्यग्र 1) *b)*: स्वकर्म° Kull. zu M. 8,65.

व्यङ्कुश (2. वि + अ°) adj. *keine Zügel —, keine Schranken kennend:* नृभिः Bhâg. P. 3,21,55.

1. व्यङ्ग (von अञ्ज् mit वि) 1) adj. *fleckig:* तक्मन् AV. 5,22,6. — 2) m. *a) Flecken im Gesicht* Suçr. 1,118,2. 292,12. 296,12. 326,5. Çârṅg. Saṁh. 1,7,65. — *b) Schandfleck:* व्यङ्गभूतः कुलस्य Hariv. 4889. — *c) Frosch* Trik. 1,2,26. H. 1354. an. 2,49. Med. g. 22. — *d) Stahl* Çârṅg. nach Nigh. Pr.

2. व्यङ्ग (2. वि + अङ्ग) adj. (f. आ) in Ableitungen die erste Silbe zu व्या, nicht zu वैय verstärkt, gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7. Vop. 7,3. 1) *entstellt an den Gliedern* oder *eines Gliedes entbehrend, krüppelhaft* AK. 3,4,25,179. H. an. 2,49. Med. g. 22. वक्रो विपर्ययव्यङ्गः AV. 7,56,4. M. 7,149. MBh. 1,1089. 2,259. Suçr. 1,109,4. Çârṅg. Saṁh. 1,3,7. Varâh. Bṛh. S. 86,79. Kull. zu M. 9,247. गो MBh. 13,3362. अ° Mârk. P. 28,18. Pańkat. 184,22. अव्यङ्गाङ्गी M. 3,10. °शरीर Varâh. Bṛh. S. 64,2. — 2) *keine Räder habend:* रथ Bhâg. P. 4,26,15. — 3) fehlerhaft für त्र्यङ्ग *dreigliedrig* (d. i. *aus Wagen, Reiterei und Fussvolk bestehend* oder n. *Wagen, Reiterei und Fussvolk*) MBh. 8,2526 (ed. Bomb. hat die richtige Lesart). त्र्यङ्ग (बल) ist auch 9,1388 zu lesen st. द्व्यङ्ग der ed. Calc. und व्यङ्ग der ed. Bomb. — Vgl. 1. अव्यङ्ग.

व्यङ्गक m. *Berg* Trik. 2,3,1.

व्यङ्गता (von 2. व्यङ्ग) f. *das Fehlen eines Gliedes, Krüppelhaftigkeit, Verstümmelung, das Abhauen eines Gliedes:* शरीरस्य MBh. 12,6190. Spr. (II) 664. प्राप्नोति च व्यङ्गताम् Varâh. Bṛh. 8,18. अ° MBh. 13,5599. 5601.

व्यङ्गय् (wie eben) *eines Gliedes berauben, verstümmeln:* व्यङ्गयितुम् Pańkat. 38,13. व्यङ्गित 40,24. fg. MBh. 13,5086. कर्णयोः so s. a. *durchlöcherte Ohrlappen habend* (nach Nilak.) 4386.

व्यङ्गार (2. वि + अ°), loc. व्यङ्गारे *wenn die Kohlen verloschen sind* M. 6,56. MBh. 12,264. 9975. 13,6503. Mârk. P. 41,6.

व्यङ्गिन् adj. = 2. व्यङ्ग 1) MBh. 13,5086. Mârk. P. 34,76.

व्यङ्गीकर् (2. व्यङ्ग + 1. कर्) *eines Gliedes berauben, verstümmeln:* °कृता रथद्विपाः MBh. 7,3877. °कृतवपुस् Hariv. 4318.

व्यङ्गुलि (2. वि + अ°) adj. *keinen Finger habend;* व्यङ्गुलीकृत *der Finger beraubt:* पाणि MBh. 7,6176.

व्यङ्गुष्ठ (2. वि + अ°) *eine best. Pflanze* H. an. 3,491. Med. j. 86.

व्यङ्ग्य (von अञ्ज् mit वि) adj. *was offenbar —, wahrnehmbar gemacht wird:* ध्वनिस्तात्वादिव्यङ्ग्यः प्राणिभिः Çañk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 287. eine Lampe ist व्यञ्जक, ein von ihr beleuchteter Krug व्यङ्ग्य Sâh. D. 24,9. Schol. zu Ǵaim. 1,2,11. in der Poetik *was verstanden —, implicite ausgesagt wird* Sâh. D. 10. fg. 19. 250. fg. 265. 5,17. 107,4. 291, 4. 8. Verz. d. Oxf. H. 209,*b*, No. 493. Pratâpar. 12,*a*, 9. *b*, 3.

व्यङ्ग्यता f. nom. abstr. von व्यङ्ग्य Sâh. D. 24,10. व्यङ्ग्यत्व n. desgl. 5,15. 24,14.

व्यच्, विचॅति Dhâtup. 28,12 (व्याजीकरणे). P. 6,1,6. Vop. 13,5 (व्याजे). zu belegen: विव्यक्ति, अविव्यक्, विव्यचत्, विविक्तम्, विव्याच (P. 6,1,17. Vop. 8,124), विव्यक्थ, विव्यचुस् und med. विव्यचत्त; bei den Grammatikern: विविचितुम् Siddh. K. zu P. 1,2,1. Vop. 13,5. व्यचिष्यति, व्यचिता (विचिता Vop. 13,6), विच्यात्, अव्याचीत् und अव्यचीत् Siddh. K. a. a. O. विचितवान् P. 6,1,16, Schol. *in sich fassen, aufnehmen:* मह्नाविव्यक्पृथिवीं पत्यमानः ṚV. 7,18,8. 21,6. नाह्के विव्याच पृथिवी चनैनम् 3,36,5. 8,6,15. 12,24. 77,5. विव्यक्थ महिना भूतं सोमस्य 81,23. 10,96,4. 112,4. Ait. Br. 4,12. Âraṇj. 1,6. ein unregelmässiges perf. aus विच् gebildet: अहं विविच पृथिवीमुत द्याम् AV. 6,61,2.

— intens. वेविच्यते P. 6,1,16, Schol.

— उद्, उद्विचिता Kâç. zu P. 1,2,1 in der ed. Calc.

— सम् 1) *in sich zusammenfassen* ṚV. 3,36,8. विश्वे देवा अनिमा सं विविक्तः 54,8. 10,111,2. कृतसंविक्त (कृतसंयुक्त v. l.) *vielleicht im Opfer aufgegangen* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,138. — 2) *zusammenfassen, — rollen, — packen:* चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि ṚV. 7,63,1. समविव्यचुरुत यान्यत्विषुः 10,56,4.

व्यॅचस् (von व्यच्) n. 1) *Umfänglichkeit, Capacität:* समुद्रो न व्यचो दधे ṚV. 1,30,3. न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचः 52,14. AV. 6,61,1. VS. 15,

4. — 2) *umfänglicher —, weiter Raum; Raum* überh. ṚV. **10**, 92, 14. AV. **4**, 19, 6. **8**, 10, 14. **10**, 2, 24. **12**, 1, 53. अन्तरा द्यां च पृथिवीं च यद्व्यचः **9**, 3, 15. **13**, 4, 53. यदा श्वोवेष उदेति । अथेदं सर्वं व्यचो भवति ÇAT. BR. **8**, 1, **2**, 1. 6, **1**, 18. **9**, 4, **1**, 10. अङ्गुष्ठेन व्यचस्करोति *erweitern, öffnen* KAUÇ. 79. व्यचस्काम 59. — Vgl. अ°, उरु°, देव°, विश्व°, समुद्र°.

व्यचस्वत् (von व्यचस्) adj. *geräumig, capax:* Thore ṚV. **2**, 3, 5. **10**, 110, 5. VS. 20, 60. Rosse Indra's: *umfangreich* ṚV. **6**, 25, 6. **10**, 105, 5. VS. **11**, 30. **13**, 17. **14**, 12. NIR. 8, 10.

व्यचिष्ठ (von व्यच् mit dem suff. des superl.) adj. *umfangreichst* ṚV. **2**, 10, 4. **5**, 66, 6.

व्यच्छ in गोव्यच्छ, womit irgend *ein Plager der Kuh* bezeichnet wird VS. 30, 18. KÂṬH. 15, 4. nach MAHÎDH. = गाः प्रति गमनशीलः (also in वी = गतौ und अच्छ = प्रति zerlegt?), nach TBR. Comm. = गवां विवासयिता *Austreiber, Verjager.*

व्यज् = वीज् *befächeln:* (तम्) विव्यजुर्व्यजनैः MBH. 9, 48. व्यज्येत SUÇR. **1**, 71, 18 wohl fehlerhaft für व्यजेत.

व्यज (von अज् mit वि) P. 3, 3, 119.

व्यजन (von व्यज्) n. *Fächer, Wedel* (häufig im du.) AK. **2**, 6, **3**, 41. 7, 23. M. 7, 219. MBH. 3, 1772. 4, 1774. 9, 48. 13, 4252. R. **2**, 26, 11. 91, 37 (100, 36 GORR.). R. GORR. **2**, 35, 17. **3**, 9, 7. **6**, 112, 25. SUÇR. **1**, 15, 3. 171, 21. 240, 6. स्नानं सव्यजनम् **2**, 149, 6. व्यजनानिलाः 475, 17. KÂM. NÎTIS. 12, 44. ṚT. 1, 8. RAGH. 8, 40. Spr. 1823. 2156. 3322. 5257. BHÂG. P. **1**, 10, 18. 11, 28. **3**, 15, 38. 23, 16. **4**, 4, 5. Verz. d. Oxf. H. 85, *b*, 23. पद्म° RAGH. 10, 63. चामर° MBH. 1, 4941. 2, 37. 6, 670. 3966. HARIV. 1290. R. GORR. **2**, 26, 13. चामरं (adj.) व्यजनम् 12, 9. व्यजनैर्बार्हचामरैः (cop. adj.) BHÂG. P. **8**, 10, 13. °चामर **4**, 7, 21 nach dem Comm. = चामर°. — Vgl. वाल° (auch R. **4**, 9, 3. **5**, 14, 8. SUÇR. **1**, 71, 18. **2**, 36, 6).

व्यजनक n. = व्यजन VARÂH. BṚH. S. 70, 10.

व्यजनीभू (व्यजन + 1. भू) *zu einem Fächer (Wedel) werden:* अयत्नवालव्यजनीबभूवुर्हंसा नभोलङ्घनलोलपक्षाः RAGH. 16, 33.

व्यञ्य (von अञ्ज् mit वि) adj. = व्यङ्ग्य; davon °त्व n. nom. abstr. Comm. zu GAIM. **1**, 2, 12.

व्यञ्च् (= व्यच्) adj. in उरु° und देव°; nach Analogie von उरूची könnte auch पुरूची (s. पुर्वञ्च्) hierher gehören.

व्यञ्चन HARIV. 7433 fehlerhaft für व्यञ्जन, wie die neuere Ausg. liest.

व्यञ्चनवत् adj. zur Erklärung von व्यचस्वत् NIR. 8, 10.

व्यञ्जक (vom caus. von अञ्ज् mit वि) 1) adj. (f. व्यञ्जिका) *offenbar machend, bekundend* BHÂG. P. **6**, 19, 12. Schol. zu GAIM. **1**, 2, 13. zu AV. PRÂT. **1**, 103. das obj. im gen. NṚS. TÂP. UP. in Ind. St. 9, 162. अर्थनिचयस्य Verz. d. Oxf. H. 211, *b*, No. 499. im comp. vorangehend: उत्पत्ति° M. 2, 68. कृतज्ञत्व° RÂGA-TAR. 6, 101. PAÑKAR. **4**, 3, 155. SÂH. D. 626. In der Poetik *zu verstehen gebend, implicite aussagend* SÂH. D. 31. 104, 9. 107, 4. PRATÂPAR. 10, *a*, 1, 3. — 2) m. *Ausdruck des Gefühls* AK. **1**, 1, **7**, 16. H. 282. MÂLATÎM. 154, 6.

व्यञ्जकत्व n. nom. abstr. von व्यञ्जक 1) Schol. zu GAIM. **1**, 2, 11. SÂH. D. 30. वाचकलक्षकव्यञ्जकत्वेन (das suff. gehört zu allen drei adjj.) त्रिविधं शब्दजातम् PRATÂPAR. 8, *b*, 4.

व्यञ्जन (vom caus. von अञ्ज् mit वि) 1) nom. ag. *offenbar machend, bekundend* HARIV. 7433 (nach der Lesart der neueren Ausg., व्यञ्चन die ältere). — 2) m. s. u. 4) *k*) am Ende. — 3) f. आ in der Poetik *das Zuverstehengeben, eine indirecte Aussage, — Ausdrucksweise* SÂH. D. 11. 23. 271. 117, 11. अन्वितेषु पदार्थेषु वाक्यार्थोपस्कारार्थमर्थान्तरविषयः शब्दव्यापारो व्यञ्जना वृत्तिः PRATÂPAR. 9, *b*, 4. — 4) n. *a*) *Schmuck:* आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम् ṚV. **8**, 67, 2. — *b*) *das Offenbarmachen, Bekunden:* °मूषिकादिदृष्टविषव्यञ्जनार्थम् SUÇR. **1**, 2, 15. पराजयव्यञ्जनार्थं नानालिङ्गानि पार्थिवाः । उग्रेण प्राक्तितास्तेन RÂGA-TAR. 4, 178. — *c*) *andeutender (indirecter, symbolischer* u. s. w.) *Ausdruck:* न व्यञ्जनेनोपक्तिेन वार्थः (= सूचकशब्द Comm.) ÂÇV. ÇR. **8**, 12, 13. Verz. d. Oxf. H. 246, *a*, No. 619. SÂH. D. 59. 106, 14. — *d*) *nähere Bestimmung:* व्यञ्जनमात्रं तत्तस्याभिधानस्य भवति NIR. 7, 13. — *e*) *Kennzeichen, Merkmal* AK. **3**, 4, **18**, 118. H. an. 3, 409. MED. n. 122. Verz. d. Oxf. H. 184, *b*, 6. स्त्री°, पुं° ÂPAST. beim Schol. zu KÂTJ. ÇR. 443, 4. वयो° *des Alters* Schol. zu KÂTJ. ÇR. **20**, 2, 10. SUÇR. **1**, 61, 7. **2**, 266, 17. neben लक्षण R. **1**, 16, 32. **5**, 31, 7. पार्थिव° **2**, 99, 7 (SCHL.). **3**, 23, 18. 25, 12. **4**, 2, 12. **5**, 30, 4. तपस्विव्यञ्जनोपेत *die äussern Abzeichen eines Büssers habend, als Büsser verkleidet* Spr. (II) 2574. अमात्य° adj. *nur das Aeussere eines Ministers habend* 2134. ज्ञानि° adj. KATHÂS. 30, 119. चर्म° *Zeichen auf der Haut, Muttermal, Leberfleck;* s. u. बन्धित्र. *Insignien eines Fürsten* (zugleich *Brühe*) Spr. 3363. — *f*) *Symptom* (einer Krankheit) Verz. d. Oxf. H. 312, *a*, No. 745. — *g*) *Geschlechtszeichen, Geschlechtsglied;* = अवयव AK. H. an. MED. VARÂH. BṚH. 1, 4. — *h*) *Zeichen der Pubertät: Bart* AK. H. ç. 121. H. an. MED. GṚHJAS. 2, 30. कुमाराः प्राग्व्यञ्जनेभ्यः ÂPAST. **2**, 26, 12. अजात° adj. R. **3**, 42, 33. बालमप्राप्तवयसमजातव्यञ्जनाकृतिम् MBH. 1, 6136. अ° *bartlos* HALÂJ. 2, 123. *die Schamhaare* (auch *Brüste*) *beim Weibe*, sg. und pl. Spr. 2906. fg. विवाक्तियायाः कन्याया क्रति व्यञ्जनम् MÂRK. P. 51, 104. अव्यञ्जना कन्या Spr. (II) 765. अनुपजातपयोधरादिस्त्रीव्यञ्जना (so ist zu lesen) ÇAṄK. zu KHÂND. UP. S. 80. — *i*) *Brühe* AK. **3**, 4, **16**, 93. **18**, 118. **6**, **2**, 23. H. 397. H. an. MED. HALÂJ. 2, 166. MBH. 3, 8530. 4, 29. R. **1**, 13, 15 (14 GORR.). **2**, 32, 20 (23 GORR.). P. **2**, 1, 34. **4**, 4, 26. SUÇR. **1**, 218, 3. KÂM. NÎTIS. 7, 18. Spr. (II) 2050. (I) 3363. KATHÂS. 49, 37. fg. 56, 405. अन्नानि व्यञ्जनानि च 61, 40. MÂRK. P. 31, 46. PAÑKAR. **2**, 4, 32. RÂGA-TAR. 7, 1693. PAÑKAT. 52, 1. 61, 12. मांस° KATHÂS. 54, 170. fg. °कार MBH. 4, 237. सूदव्यञ्जनकर्तृ KÂM. NÎTIS. 12, 45. — *k*) *Consonant* H. an. MED. ṚV. PRÂT. **1**, 1. 2. 18, 17. 19. VS. PRÂT. **1**, 38. 47. 59. 100. 107. 117. **3**, 15 u. s. w. AV. PRÂT. **1**, 43. 55. 60. 98. 102 u. s. w. TS. PRÂT. **1**, 6. 14. 17. 21. 27. 43 u. s. w. PARIBHÂSHÂ 1 zu P. **6**, 1, 223. Schol. zu 3, Vârtt. 2. Verz. d. Oxf. H. 171, *b*, 2. ÂÇV. ÇR. **1**, 5, 9. ÇÂÑKH. ÇR. **1**, 1, 19. 2, 12. LÂṬJ. **6**, 10, 16. PUSHPASÛTRA in Ind. St. **1**, 47. SARVASÂROP. 390. — **8**, 211. 467. ÇRUT. 3. MBH. **1**, 309. 3, 16773. 14, 1192. R. 7, 94, 31. MÂRK. P. 23, 47. MALLIN. zu ÇIç. **1**, 11 (*Silbe*). वाचा हीनव्यञ्जनया R. **2**, 64, 10. masc. Comm. zu VS. PRÂT. 4, 16. — *l*) *Tag* MED. — *m*) *Fächer, Wedel* H. 687. HALÂJ. 2, 155. fehlerhaft für व्यजन. — Vgl. उभय°, तैरो°, निर्व्यञ्जन, बाल°.

व्यञ्जनहारिका f. N. pr. einer bösen Fee, welche *einem Weibe die Schamhaare fortnimmt,* MÂRK. P. 51, 102; vgl. 104.

व्यञ्जनिक (von व्यञ्जन) n. स्वराणां व्यञ्जनिकम् Titel eines Pariçishṭa der VS. Ind. St. **3**, 270.

व्यड m. N. pr. eines Mannes Vop. 7, 3. — Vgl. व्याडि.

व्यडम्बक m. *Ricinus communis* (s. एरण्ड) AK. 2, 4, 2, 32. nach Colebr. und Lois. auch व्यडम्बन m.

व्यडु m. N. pr. eines Mannes Râga-Tar. 8, 184. 319. 351.

व्यडुमङ्गल m. desgl. ebend. 7, 1480.

व्यंति (von 1. अत् mit वि, Padap. ohne Trennung) m. Ross: चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् RV. 1, 155, 6. सकृत्नं व्यतीनां युक्तानाम् 4, 32, 17. ये व्यतीरपाणायत्सुयुंक्ता उप दाशुषे 8, 58, 13.

व्यतिकर (von 3. कर् mit व्यति) m. 1) *Mischung, Kreuzung; Zusammenstoss, Berührung;* = व्यतिषङ्ग Trik. 3, 3, 372. H. an. 4, 278. Med. r. 296. Suçr. 1, 284, 21. 2, 166, 1. दिशाम् Bhâg. P. 3, 15, 2. तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वोः Ragh. 8, 94. उभयोः सेनयोर्महाव्यतिकरो (महान्व्यातिकरो! ed. Bomb.) ऽभवत् MBh. 6, 828. रत्नच्छाया° Megh. 15. Çiç. 4, 53. Nâgân. 36, 17. धर्म° Bhâg. P. 1, 4, 16. 4, 19, 31. 35. गुण° 2, 5, 22. 3, 9, 1. 10, 11. 32, 14. fg. 4, 11, 16. 22, 36. 5, 3, 5. 7, 6, 21. 25. 9, 30. 8, 12, 8. 11, 10, 37. Spr. (II) 1074. वैदग्ध्यविमुग्धता° (I) 2858. यौवनशैशव° 2878. Mâlatim. 34, 11. मार्गाचल° *Zusammenstoss mit* Spr. (II) 2470. काङ्क्ष्यो ऽपि °मुखं कातराः स्वाङ्गदाने *Berührung, Vereinigung* Çâk. Ch. 58, 8. उमाकृतव्यतिकरे स्वाङ्गे Mâlav. 7, 4. दयितारति° Spr. (II) 112. कामः स्त्रीव्यतिकराभिलाषादि Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 286. मदन° Daçak. 92, 4. स्मरशरबाणा° Spr. (II) 1130. कान्ताविश्लेषदुःख° 1851. दैन्य° (I) 1753. अविरतविनोदव्यतिकरै र्विमर्दैः so v. a. *verbunden mit* Uttarar. 65, 7 (84, 2). — 2) *das sich-zu-schaffen-Machen mit Etwas, das Gehen an Etwas:* चरणानति° Spr. (II) 2528. 2915. अधिक्षेपवचन° Daçak. 67, 18. तत्तत्कर्मव्यतिकरकृत् (विधि) Râga-Tar. 2, 93. — 3) *ein schlimmer Fall, Unfall,* = व्यसन Trik. H. an. Med. Uttarar. 96, 8 (125, 11; = समूह Comm.). अस्मिन्व्यतिकरे वृत्ते Kathâs. 74, 89. Pañkat. 40, 18. 42, 5 (ed. orn. 38, 1). 237, 22. Hit. 110, 6. अयं व्यतिकरो ऽसंभाव्यो मम *dieser mir begegnete Unfall* Pañkat. 30, 8. दवदहनदाह° Spr. 1807. वार्ता° so v. a. *eine schlimme Neuigkeit* Pañkat. 130, 6 (auch hier liest ed. Bomb. so). 7. — 4) *Vernichtung, Untergang:* स्थिति° Bhâg. P. 4, 1, 56. लोक° 1, 7, 32. जगद्व्यतिकर 10, 67, 27. कल्प° 3, 9, 27. — Vgl. व्यतीकार.

व्यतिक्रम (von क्रम् mit व्यति) m. 1) *das Vorübergehen:* आयु° Suçr. 1, 102, 17. *das Gewinnen eines Vorsprungs:* ज्योतिषाम् MBh. 4, 1608. — 2) *das Verstreichen:* काल° R. 4, 28, 21. — 3) *das Ueberspringen, Uebergehen, Ausweichen, Entgehen, Sichbefreien von;* das obj. im gen.: मार्गस्य Spr. 4799. आश्रमानुक्रमः पूर्वैः स्मर्यते न व्यतिक्रमः Kir. 11, 76. भवितव्यस्य MBh. 3, 15864. भाषितस्य न व्यतिक्रमः *man kann dem Ausspruch nicht entgehen* so v. a. *der Ausspruch muss sich erfüllen* Varâh. Bṛh. S. 46, 97. — 4) *das Ueberschreiten, Uebertreten, Verletzung, Vernachlässigung, Unterlassung:* मर्यादा° Pañkat. 46, 20. fg. संविद्: M. 8, 5. संविद्व्यतिक्रमकारिन् Kull. zu M. 8, 218. समयस्याव्यतिक्रमः Spr. (II) 698. संध्यानित्यकार्य° Mârk. P. 50, 53. सत्यधर्म° R. Gorr. 1, 24, 2. धर्म° Kathâs. 113, 14. Bhâg. P. 9, 4, 44. P. 8, 1, 60, Schol. युद्ध° *der Gesetze beim Kampfe* Hariv. 4705. पूज्यपूजा° Ragh. 1, 79. नीति° Râga-Tar. 5, 398. स्वार्थ° *Beeinträchtigung* Bhâg. P. 4, 22, 32. — 5) *Verletzung der bestehenden Ordnung, Vergehen, Versehen, ein begangenes Unrecht* M. 8, 229. 244. 269. 355. MBh. 1, 771. 3, 1859. 4, 482. 5, 2704 (pl.). 13, 2574. 2591. 3474. 4809. 14, 739. 1620. Hariv. 963. व्यभिचारव्यतिक्रमैः = 4624. 5969. 9945. R. 1, 8, 12. 3, 46, 7. 56, 24. 4, 53, 9. 15. Spr. (II) 638. Kathâs. 121, 103. Bhâg. P. 1, 5, 15. 9, 1, 19. 8, 11. 13, 4. पितॄणाम् *gegen die Eltern* Hariv. 971. Mahâvîrak. 40, 21. गुरु° *gegen ehrwürdige Personen* Bhar. Nâṭjaç. 19, 90. Bhâg. P. 3, 16, 12. — 6) *Wechsel, Vertauschung, umgekehrte Ordnung* Âçv. Çr. 10, 5, 19. गायत्रीत्रिष्टुभोः Lâṭj. 7, 3, 11. Kauç. 6. भाषा° Daçak. 2, 61. सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता ग्रहीता च उदङ्मुखः। एष एव विधिर्दाने विवाहे च व्यतिक्रमः॥ Udvâhatattva im ÇKDr.

व्यतिक्रमण (wie eben) n. *das Begehen eines Unrechts gegen Jmd* (geht im comp. voran): ज्येष्ठ° Kathâs. 105, 91.

व्यतिक्रान्ति (wie eben) f. dass.: गुरु° *gegen* Sâh. D. 381.

व्यतिक्षेप MBh. 9, 789 wohl fehlerhaft für व्यधिक्षेप, wie die ed. Bomb. liest.

व्यतिचार (von चर् mit व्यति) m. *Umwechselung:* अ° Âçv. Çr. 2, 3, 6.

व्यतिपात (von 1. पत् mit व्यति) m. Bez. *eines best.* Joga, *wenn nämlich Sonne und Mond in den entgegengesetzten* Ajana *stehen und dieselbe Declination haben, während die Summe ihrer Längen 180° beträgt,* Ganit. Pâtâdh. 8. Colebr. Misc. Ess. I, 187. II, 363. Varâh. Bṛh. S. 100, 2. Verz. d. Cambr. H. 64, 3. Mârk. P. 31, 21. — Vgl. व्यतीपात.

व्यतिभेद (von 1. भिद् mit व्यति) m. *gleichzeitiges Hervorbrechen:* उत्पलपत्त्रशत° Sâh. D. 102, 4. 5.

व्यतिमिश्र (2. वि - अति + मिश्र) adj. *untereinander gemischt, mit einander verwechselt* Varâh. Bṛh. S. 67, 3. वासस् MBh. 1, 3284.

व्यतिमोह (von मुह् mit व्यति) m. *irrthümliche Verwechselung:* अ° Çat. Br. 13, 2, 1, 7.

व्यतिरिक्त s. u. रिच् mit व्यति. Davon °क n. Bez. *einer best. Art des Fluges* MBh. 8, 1902.

व्यतिरिक्तता (von व्यतिरिक्त) f. *Unterschiedenheit, Verschiedenheit* Bhâg. P. 4, 28, 40.

व्यतिरेक (von रिच् mit व्यति) m. 1) *das Gesondertsein, Ausgeschlossenheit, Ausschluss:* पृथग्विनान्तरेणार्ते व्यतिरेकार्थवाचकाः Halâj. 5, 90. Kan. 3, 2, 9. 18. यथा गन्धस्य भूमेश्च न भावो व्यतिरेकतः *eine gesonderte Existenz, eine Existenz für sich* Bhâg. P. 3, 27, 18. स्वव्यतिरेकतस् 10, 3, 18. आत्मनो ऽव्यतिरेकेण 11, 2, 22. Lâṭj. 10, 3, 14. लोकव्यतिरेकवर्तिनी पार्थिवता *im geraden Gegensatz zum Volke* Spr. (II) 1125. वीत° adj. *nicht abgesondert, für sich allein bestehend* Râga-Tar. 4, 1. व्यतिरेकेण und व्यतिरेकात् *mit Ausschluss von, mit Ausnahme von, ohne* Suçr. 1, 77, 20. 96, 10. न पतिव्यतिरेकेण सुस्त्रीणामपरा गतिः Kathâs. 39, 166. 120, 50. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 30. 114. 252. Kull. zu M. 2, 61. 4, 53. अस्मद्व्यतिरेक am Anfange eines comp. *ohne uns* Mâlatim. 140, 20. Tarkas. 50. *Negative* (Gegens. अन्वय) 37. Bhâshâp. 141. fgg. Kusum. 7, 10. 18, 16. Wilson, Sâṁkhjak. S. 58. Schol. zu Kap. 1, 40. 107. 133. Bhâg. P. 2, 9, 35. 7, 7, 24. Râga-Tar. 1, 33. 4, 605. Sâh. D. 4, 6. Comm. zu TBr. 1, 61, 7. अ° adj. Gaim. 1, 1, 5. — 2) in der Rhetorik *ein Gleichniss mit Hervorhebung einer Ungleichheit, Contrast, Antitheton* Kâvjâd. 2, 180. Sâh. D. 700. 104, 6. 105, 4. Kuvalaj. 59, a. Beispiele: Ragh. 4, 49. Çâk. 47. Spr. (II) 489. 517. 571. 2659. fg. (I) 5317.

व्यतिरेकिन् (von व्यतिरेक) adj. *ausschliessend, negirend* Kusum. 32.

15. अन्वय°, केवल° Tarkas. 37. अव्यतिरेकिन् Kusum. 28,21.

व्यतिरेचन (von रिच् mit व्यति) n. *das Contrastiren, Hervorheben eines Gegensatzes* (in einem Gleichniss) Sâh. D. 106,14.

व्यतिलङ्घिन् (von लङ्घ् mit व्यति) adj. *gewichen, abgerutscht:* स्वसंनिवेशाद्व्यतिलङ्घिनि किरीटे Ragh. 6,19.

व्यतिषङ्ग (von सञ्ज् mit व्यति) m. gaṇa न्यङ्क्वादि zu P. 7,3,53. = व्यतिकर Trik. 3,3,372. H. an. 4,278. Med. r. 296. 1) *gegenseitiger Zusammenhang, Relation; Verbindung, Verschlingung* ṚV. Prât. 13,16. Kâtj. Çr. 16,1,1. अङ्गौ: Pañkav. Br. 13,11,5. 14,3,4. व्यतिषङ्गो नाम द्वयोर्विच्छिद्य सहानुष्ठानात्मकस्तन्त्रविशेषः Pratâpar. 93,b,6. — 2) *feindlicher Zusammenstoss:* सेनयोः MBh. 12,3798. — 3) *Tausch:* अन्योऽन्यवित्त° Bhâg. P. 5,13,13. 14,37. — व्यतिषङ्गम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यतिहार (von हर् mit व्यति) m. *Vertauschung, Tausch* H. 870. अ° Kâth. 27,1. *Abwechselung* P. 3,4,19 (व्यतीहार, v. l. व्यति°). *Wechselseitigkeit, Gegenseitigkeit* Vop. 6,33. 23,55 (an beiden Stellen व्यती°). कर्म° P. 1,3,14 (v. l. °व्यतीहार). 3,3,43. 5,4,127. 7,3,6. क्रिया° Vârtt. zu P. 1,3,14. विक्रम° Ragh. 12,93. व्यतिहारम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यतीकार m. = व्यतिकर 1): परस्परव्यतीकारे रण आसीत्सुदारुणः *feindlicher Zusammenstoss* Hariv. 15111. Die beiden Längen werden durch das Metrum bedingt.

व्यतीपात m. 1) = व्यतिपात H. an. 4,125. Med. t. 217. Jâǵń. 1,218. Kṛshisaṁgr. 16,14. Saṁsk. K. 1,b,2. 2,a,4. 80,a,11. Bhâg. P. 4,12,48. 7,14,20. Schol. zu Kâtj. Çr. 7,1,31. °व्रत Verz. d. Oxf. H. 285,a,28. — 2) = उपद्रव, महोत्पात *eine grosse Calamität* H. an. Med. — 3) = अपयान *Flucht* diess. *disrespect, contempt* Wilson nach Med.; beruht auf einer Verwechselung von अपयान mit अपमान.

व्यतीहार m. = व्यतिहार (s. d.) Gaṭâdh. im ÇKDr.

व्यत्यय (von 3. इ mit व्यति) m. *Wechsel, Vertauschung* P. 3,1,85. Kâr. zu 6,2,199. व्यत्ययो ह्ययमत्यन्तं पतयोः शुक्लकृष्णयोः Spr. 5039. परावरेषां स्थानानां कालेन व्यत्ययो महान् Bhâg. P. 7,10,43. अज्ञातमत्कृतव्यत्यया (सक्तूनाम्) Kathâs. 71,272. *ein umgekehrtes Verhältniss* AK. 3,3,33. H. 1502. Halâj. 4,44. स्थलसलिलचराणाम् Varâh. Bṛh. S. 95,58. Spr. 5403. रति° = विपरीतरत (II) 1035. Schol. zu AV. Prât. 4,126. कर्मणाम् so v. a. *verkehrte Beschäftigung* Jâǵń. 1,96. व्यत्यये *im entgegengesetzten Falle* Varâh. Bṛh. S. 7,20. व्यत्ययेन *umgekehrt* (in prädicativem Verhältniss) 4,32. Suçr. 2,183,16. व्यत्ययात् dass. Çrut. 26. व्यत्ययग *auf umgekehrte Weise sich bewegend* Varâh. Bṛh. S. 88,29. — व्यत्ययम् absol. *wechselnd* Lâṭj. 1,5,20.

व्यत्यस्त partic. s. u. 2. अस् mit व्यति; als subst. *eine best. hohe Zahl* bei den Buddhisten Mél. asiat. 4,638, N. 34.

व्यत्यास (von 2. अस् mit व्यति) m. *Wechsel, Vertauschung* Lâṭj. 10,7,6. MBh. 12,1732. 13,231. 236. 239. Hariv. 1441. 3249. fg. Mallin. zu Kumâras. 4,8. P. 1,4,106, Schol. *ein umgekehrtes Verhältniss* AK. 3,3,33. H. 1501. Varâh. Bṛh. S. 54,53. *umgekehrte —, verstellte Lage* Kull. zu M. 2,72. instr. und abl. *in vertauschter Ordnung, umgekehrt:* हे नीले हे च मन्ये व्यत्यासेन Suçr. 1,350,16. व्यत्यासात्सिरां विध्येत् 2,113,4. 231,3. — व्यत्यासम् absol. s. unter der Wurzel.

व्यथ्, व्यथते Dhâtup. 19,2 (भयसंचलनयोः; v. l. दुःखचलनयोः, दुःखभयचलनयोः, दुःखभयचलने; पीडायाम् Vop. 8,123). विव्यथे P. 7,4,68. Vop. 8,124. व्यथिष्ठाम्; अव्यथिष्ये P. 3,4,10. act. in der älteren Sprache nur in der Formel ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः VS. 6,18 (TS. v. l.), im Epos häufiger aus metrischen Rücksichten. 1) *schwanken, taumeln, aus seiner natürlichen Lage* oder *Richtung kommen, fehltreten; nicht feststehen, zu Fall kommen:* यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहत् ṚV. 2,12,2. रसते व्यथते भूमिः कम्पतीव च सर्वशः MBh. 6,5204. स विव्यथे ऽत्यर्थमरिप्रताडितो यथातुरः पित्तकफानिलज्वरैः 8,4693. नास्य व्यथते पविः ṚV. 6,54,3. 3,54,8. पद्भ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् AV. 12,1,28. 4,40,1. 12,2,23. TBr. 2,4,2,8. न स राज्ञो व्यथते ṚV. 5,37,4. 54,7. 10,107,8. Çat. Br. 2,1,4,27. 2,2,2. न स्कन्दते न व्यथते (= भ्रश्यति Comm.) न विनश्यति कर्हिचित् — ब्राह्मणस्य मुखे हुतम् Spr. (II) 3493 (M. 7,84; vgl. Jâǵń. 1,315). मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च AV. 14,1,48. Ait. Br. 4,18. Shaḍv. Br. 2,9. Kaush. Up. 2,11. चारित्रतो न व्यथते *weicht nicht vom guten Wandel* P. 5,4,46, Schol. यद्यर्था व्यथेरन् *wenn die Sachen schief gehen* Âçv. Çr. 2,8,4. विव्यथे भरतो ऽतीव व्रणे तुन्नेव (so ed. Bomb.) सूचिना *zucken, zusammenfahren* R. 2,75,16. हृदयं व्यथतीव मे MBh. 4,1453. नास्खलन्नापि विव्यथुः R. 6,91,15. आकाशे विष्ठिताः शूराः स्वप्रभावान्न विव्यथुः *schwankten nicht, standen fest* 7,23,40. विषं विषेण व्यथते *weicht, wird wirkungslos* Kâm. Nîtis. 8,67. व्यथित *schwankend:* बभूव व्यथितस्तत्र भूमिकम्पे यथा द्रुमः R. Schl. 2,87,4. 3,53,61. °सिन्धु Kir. 5,11. भारपीडाव्यथितमस्तक Mârk. P. 14,78. *gewichen, verändert:* वर्ण *Gesichtsfarbe* Daçak. 81,11. — 2) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung kommen, seine Besonnenheit verlieren, ausser sich gerathen, verzagen, sich von einem Schmerz u. s. w. hinreissen lassen:* स तेनोऽग्निर्नाव्यथत Çat. Br. 2,5,2,2. (देवाः प्राणाः) न व्यथते ऽथो न रिष्यति 14,4,2,29. 6,9,28. दर्भं बिभ्रदात्मना न व्यथिष्ठाः AV. 19,33,5. नाधर्मेण स्थितः कश्चिद्व्यथते वै पराजये MBh. 2,2568. प्राप्यापदं न व्यथते कदाचित् 5,1077. 8,49. न व्यथन्ते न हृष्यन्ति Bhâg. P. 1,18,50. 4,3,19. 8,22,7. सुखार्हां दुःखितां दृष्ट्वा ममापि व्यथते मनः MBh. 3,2675. R. 5,85,19. Kaurap. 31. अकारणपरित्रस्तं हृदयं व्यथते मम Mṛkkh. 111,4. ज्वलितामिव कौन्तेये श्रियं दृष्ट्वा च विव्यथे MBh. 2,1802. 7,9352. R. 2,19,1. R. ed. Gorr. 2,16,23. 3,30,46. 7,69,11. Ragh. ed. Calc. 11,66 (विषसाद St. 67). स तु राजविरुद्धवदारिद्र्याभ्यां न विव्यथे Râǵa-Tar. 2,71. 8,807. Bhâg. P. 4,8,15. मा व्यथिष्ठाः Bhag. 11,34. Ragh. 14,72. प्रलये न व्यथन्ति च Bhag. 14,2. न सीदन्ति न च व्यथन्ति (v. l. व्यथन्ते) Spr. 5117. ये न हृष्यन्ति लाभेषु नालाभेषु व्यथन्ति च MBh. 12,5909. व्यथेत् 4,120. व्यथन् 2,2210. विव्यथुः 3,717. R. 3,30,36. mit dem gen. der Person *vor Jmd erschrecken* 7,23,2,30. व्यथित (könnte auch auf das caus. zurückgeführt werden) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung gekommen, in Aufregung versetzt, ausser sich, verzagt, von einem Schmerz u. s. w. hingerissen, mitgenommen* MBh. 1,7721. 3,2517. 5,7342. 13,7285. R. 1,8,20. 48,29. 2,47,15. 63,32. R. Gorr. 1,23,1. 5,28,12. Spr. 4558. 5040. Râǵa-Tar. 3,419. Bhâg. P. 3,14,48 (Gegens. हृष्ट). Pañkat. 69,2. मनस् MBh. 3,12114. R. Gorr. 1,22,20. 3,30,22. 66,4. हृदय MBh. 3,2912. चेतस् Ṛt. 6,18. अन्तरात्मन् R. Gorr. 2,39,52. 52,39. Bhâg. P. 5,13,5. भाव R. 4,3,1. इन्द्रिय R. Schl. 2,42,5. बाणाद्व्यथितमर्मा *schmerzend* 63,23. अतिव्यथितकर्णमूलहृदय Bhâg. P. 5,14,11. — Vgl. अव्यथमान.

— caus. व्यथयति Vop. 18,22. 1) *schwanken —, fehlgehen machen, zu Fall bringen; abbringen von* (abl.): मा वनिं व्यथयीर्मम AV. 5,7,2. 13, 1,31. अमित्रस्य व्यथया मन्युम् RV. 6,25,2. सत्पथात् Bhatt. 10,36. pass. *in unruhige Bewegung gesetzt werden:* व्यथ्यते ग्रन्थिः Suçr. 1,286,19. — 2) *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen, aufregen; in Schmerz versetzen* Bhag. 2,15. MBh. 3,16418. 7,335. तान्नैवार्था न चानर्था व्यथयन्ति Spr. 4886. R. 5,54,1. Khandom. 67. Daçak. 77,12. Bhatt. 15,86. Spr. (II) 1627 (Gegens. नन्दय्). विनाशो लब्धस्य व्यथयतितरां न तनुदयः 3045. Git. 2,20 (Gegens. सुखय्). 10,13. व्यथयन्ती मनो मम MBh. 2, 1814. Mrkkh. 162,13. व्यथयन्ति परं चेतो मनोरथशतैर्जनाः Spr. 2909. मन्मथायुधसंपातव्यथ्यमानमतिं Bhatt. 4,30.

— intens. वाव्यथ्यते P. 7,4,68, Schol.

— परि *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung bringen:* यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति Praçnop. 6,6.

— प्र 1) *erbeben:* दृष्ट्वैव हि परानाजौ मनः प्रव्यथतीव मे MBh. 4,1242. *aus seiner Ruhe —, aus der Fassung kommen, verzagen:* तदैव प्रव्यथन्तेऽस्य शत्रवो विनमन्ति च 5,4564. 14,271. प्रविव्यथे 7,1370. R. 2,18,41. प्राव्यथत् MBh. 3,14334. प्रविव्यथुः 6,3704. 10,363. Hariv. 12542. प्रव्यथित partic. Bhag. 11,20. 23. fg. 45. MBh. 1,7861. 2,1436. 6,1931. 2374. 12,8113. Hariv. 8174. R. 3,15,13. 4,51,4. 5,76,14. 101,1. 7,28, 15. Bhâg. P. 10,62,30. Mârk. P. 74,33. Daçak. 83,13. — 2) *ausser Fassung bringen, in Schmerz versetzen:* न त्वां प्रव्यथते (richtiger प्रव्यथयेद् ed. Bomb. und Schl.) दुःखं सुखं वापि प्रकर्षयेत् R. Gorr. 2,114,28. — caus. dass. MBh. 4,2113. Hariv. 2482. R. 2,106,2.

— संप्र, partic. °व्यथित *ausser Fassung gekommen, in grosse Aufregung versetzt:* °चेतना R. 1,38,16.

— वि, partic. °व्यथित dass. Spr. (II) 1604. MBh. 7,1272 (ऽतिव्यथित ed. Bomb.).

— सम् *aus der Fassung kommen, verzagen:* संविव्यथुः MBh. 6, 789.

व्यथ s. व्रल°.

व्यथक (vom caus. von व्यथ्) adj. *in Schmerz versetzend* H. 501. Halâj. 2,216. वचस् Kir. 2,4.

व्यथन (von व्यथ् simpl. und caus.) 1) adj. *in grosse Aufregung versetzend:* कर्मन् MBh. 3,16414. — 2) n. a) *das Schwanken, Nichtfeststehen u. s. w.* P. 5,4,46. — b) *Abänderung, Entstellung* (eines Lautes) RV. Prât. 14,1. — c) *Empfindung eines Schmerzes* Suçr. 1,269,3. 2,313,13. — d) *das Bereiten eines Schmerzes* Dhâtup. 28,1. — Vgl. अति°, निर्व्यथन.

व्यथयितर् (vom caus. von व्यथ्) nom. ag. *Jmd* (acc.) *in Schmerz versetzend, hart mitnehmend:* (अधिकारिणाकः) क्लीबान्पालयिता शठान्व्यथयिता Mrkkh. 137,25.

व्यथा (von व्यथ्) f. Vop. 26,192. 1) *das Fehlgehen, Misslingen:* अस्कन्नमव्यथं चैव — विप्राग्नौ हुतम् Jâgn. 1,315 (*keinen Schmerz verursachend* St.); vgl. M. 7,84 = Spr. (II) 3493. — 2) *Schaden, Verlust; Ungemach* Çat. Br. 3,5,1,30. Suçr. 1,7,17. Varâh. Brh. S. 89,5. — 3) *ein Gefühl peinlicher Unruhe, Unbehagen, Pein, Leid, Weh, Schmerz* AK. 1, 2,2,3. H. 1370. Halâj. 3,4. Bhag. 11,49. मा च ते शम्बरस्येयं पत्नीति भवतु व्यथा Hariv. 9475. सत्त्ववतां दारुणैरपि क्रियाविशेषैर्न व्यथा भवति Suçr. 1,86,10. व्यथया दीनः R. 2,22,1. व्यथातुर 51,21. Râga-Tar. 5,442. व्यथाक्रान्त Kathâs. 13,109. व्यथाकुल Pañkat. 215,19. मरणे नास्ति ते मे व्यथा R. 2,64,50. Uttarar. 6,3 (9,6). Kathâs. 22,92. भी, शोक, व्यथा R. Gorr. 2,53,3. 5,33,41. गुरुव्यथ adj. Vikr. 50. तीव्रोभवद्व्यथ adj. Râga-Tar. 6,99. व्यथां व्रह्नि MBh. 1,6145. अवधूय तद्व्यथाम् Ragh. 3,61. अपलघयत्स तद्व्यथाम् 11,62. गतव्यथ adj. MBh. 1,7711. 3,1736. Bhâg. P. 3,22, 24. वीतव्यथ adj. 6,11,12. महौषधिकृतव्यथ adj. (कृत st. कृत ed. Calc.) Ragh. 12,78. स कृच्छ्रकालं संप्राप्य व्यथां नैवैति कर्हिचित् Spr. 4557. ईदृग्दुःखमयं भुक्त्वा ह्यास्यत्यन्यव्यथां ध्रुवम् Râga-Tar. 5,198. अनुभाव्य व्यथाम् 4,654. प्रियाविरहजां त्वं तु व्यथां मा नुभूः Vikr. 110. अग्रायानां वक्त्रिदाकृसमुद्भवा। व्यथा विनाशमभ्येति Spr. (II) 1532. अकाण्डशूलजनिता Râga-Tar. 5,53. व्यथां कर् (act. und med.) *Jmd* (gen.) *in Leid versetzen, Jmd Schmerzen verursachen* Hariv. 12755. R. 5,49,25. Spr. (II) 1259. °कार (I) 2943. व्यथां मा कृथाः *gieb dich nicht dem Schmerz hin* (II) 867. न व्यथा कर्तव्या R. 3,73,17. मनसः R. Schl. 2,63,48. मानसी AK. 1,1,7,28. हृदि so v. a. *Herzklopfen* Suçr. 2,402, 8. हृदये 514, 7. हृद्व्यथा Vâgbh. 8,29. हृदय° *Seelenschmerz* Spr. (II) 1700. अङ्ग° Krshisangr. 6,8. मर्म° Git. 3,14. Râga-Tar. 3,277. शीर्ष° *Kopfschmerz* 4,14. किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि Spr. (II) 1737. गर्भवास° 2093. निस्तीर्य दोहृदव्यथाम् Ragh. 3,7. तद्वियोग° (pl.) Megh. 107. Spr. (II) 788. अव्यथ *sich nicht dem Schmerz hingebend, nicht verzagend* (I) 5008. सव्यथ *sich dem Schmerz hingebend, bekümmert* Çiç. 9,83. Hit. 113,13. — Vgl. अव्यथ, निर्व्यथ.

व्यथि (wie eben) s. अ°.

व्यथिते 1) adj. s. u. व्यथ्. — 2) n. *Schaden oder das Zagen* VS. 5, 9.

व्यथिन्, व्यथिष und व्याथिष्ये (von व्यथ्) s. अ°.

व्यथिम् (wie eben) adv. 1) *schwankend, schief:* नैर्न पूर्णा तरति व्यथिर्यती RV. 5,59,2. — 2) *heimlich, unbemerkt von* (gen.); *heimtückisch, hinterrücks:* माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् RV. 4,4,3. नास्ममित्रो व्यथिरा दधर्षति 6,28,2. व्यथिर्दाभ्रुषो मर्त्यस्य 62,3. यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि 8,45,19. परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः 10,86, 2. 31,10. Hierher auch पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शवः AV. 6, 33,2, wozu RV. 6,28,2 zu vergleichen und व्यथिः शवः zu vermuthen ist. — Vgl. कृष्ण°.

व्यथ्य (vom. caus. von व्यथ्) adj. s. अ°.

व्यध्यथः irrige v. l. für अव्ययथः Naigh. 1,14.

व्यद्वर (von 1. अद् mit वि) adj. *nagend*, m. *Nagethier* Çat. Br. 7,4, 1,27. व्यद्वरो AV. 3,28,2. Richtig wäre wohl व्यध्वर.

व्यध्, विध्यति Dhâtup. 26,72 (ताडने). P. 6,1,16. विव्याध 17. Vop. 8, 124. 11,3. विविधतुम् 11,3. विविधिस्, अव्यात्सीत्, (उप)विधन्, वेत्स्यामि (vgl. Kâr. 4 aus Siddh. K. zu P. 7,2,10), वेद्धा, विद्धा, विध्य, वेद्धुम्; pass. विध्यते, विद्धे. Hier und da aus metrischen Rücksichten auch med. 1) *durchbohren, durchstechen; erschiessen, treffen* (mit einem Geschosse) RV. 1,61,7. 86,9. तपुषाग्ने 2,30,4. 9. 4,4,1. तमस्ता विध्या शर्वा शिशानः 10,87,6. AV. 3,25,1. मर्माणि 5,8,9. VS. 16,23. TS. 2,2,2,4. 6,8,3. 6,5,5, 2. तमभ्यायत्याविध्यत् Ait. Br. 3,33. Çat. Br. 1,7,3,3. विध्यत्यघनुषा P. 4,4,83. मृगव्रातानि MBh. 4,143. उरसि 5,7176. R. 3,33,18. 4,8,12. Ragh. 9,60. अथैनमपरः कामस्तृष्णा विध्यति बाणवत् Spr. (II) 1646. (I) 2214. परश्चेदेनमतिवादबाणैर्भृशं विध्येत् 4509. Kathâs. 39,61. 47,82.

Bhâg. P. 4,10,10. 5,26,24. ज्योतिषी (*die Augen*) कण्टकेन 9,3,4. पादौ विध्यन्ति शर्कराः *wund stechen* Schol. zu P. 4,4,83. 6,3,58. करुहैर्विध्यन्ती *mit den Nägeln verwundend,* — *kratzend* Kathâs. 49,49. सिराम् *eine Ader schlagen* Suçr. 1,358,1. विव्याध MBh. 3,709. 15728. 4,1694. 1804. 13,7469. R. 1,28,25 (29,14 Gorr.). 3,34,27. 30. 5,31,30. 39,20. fg. Spr. 2583. Bhâg. P. 7,2,56. विव्यधुः MBh. 3,767. अव्यात्सीत् Bhatt. 5,52. 15,69. वेत्स्यामि MBh. 13,4634. लक्ष्यं यो वेद्धा 1,6955. med.: नैनं शस्त्राणि विध्यन्ते (so ed. Bomb.) 14,560. विध्येत य इदं लक्ष्यम् 1,7004. अविध्यत 4,1817. विव्यधे 6,3460. Bhâg. P. 10,47,17. वेत्स्यसे MBh. 13, 4635. विद्धा R. 3,34,19. Kathâs. 48,58. विध्य absol. MBh. 16,96. वेद्धुम् 1,5286. 16,35. R. 6,79,46. Bhâg. P. 10,83,21. pass.: शस्त्रैश्चापि न विध्यते MBh. 2,948. बालस्य कर्णौ विध्येते Suçr. 1,54,13. Kathâs. 40,12. AK. 3,3,36. विध्यमान Bhatt. 5,102. 9,66. विद्ध *durchbohrt, durchschossen, verwundet, getroffen* AK. 3,2,49. H. 1486. an. 2,249. Med. dh. 16. विद्धस्येव पदं नय *folge der Spur des Angeschossenen* AV. 10,1,26. विद्धस्य पदनीरिव (sonach ist unter पदनी zu setzen *der Spur nachfolgend*) 11,2,13. 2,29,7. Ait. Br. 3,33. M. 9,43. भृश° MBh. 5,7178. सुभृशं गाढविद्धः 7216. 7,8670. पृष्ठे 13,2796. 7470. R. 1,32,21. 2,30,23. Ṛt. 6,28. Ragh. 5,51. 14,70. शरशतैः Spr. (II) 3595. रोहते सायकैर्विद्धम् (I) 2647. Kathâs. 14,29. 26,179. fg. 33,203. 42,48. 61,102. Dhûrtas. 66,11. Daçak. 88,1. Bhâg. P. 2,7,8. हृदि दुरुक्तैः 4,6,6. 8,14. कुशकण्टक° MBh. 3,16862. Çâk. 89. Spr. (II) 1507. Bhâg. P. 9,11,19. Pañkat. 62,9. ककुद्मिनो ऽविद्धनसः *nicht durchstochen* Bhâg. P. 3,3,4. अविद्धमुक्ताफल Kumâras. 7,10. कीटैः *durchbohrt* Varâh. Brh. S. 79,37. Suçr. 1,155,20. शरदीवाम्बुजं फुल्लं विद्धं भास्कररश्मिभिः *getroffen von* R. 5,39,22. शूलायाम् *gespiesst auf* Kathâs. 25,130. शूलाग्रे 138. वृन्तेषु Ragh. 9,60. स्वैरिण्यपाङ्गविद्धधीः *getroffen von* Bhâg. P. 6,1,65. धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते। शल्यं चास्य न कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः॥ *verwundet, verletzt* Spr. (II) 3136. *beschädigt;* शर्करा° (वज्र) Varâh. Brh. S. 80,15. 82,2. (चामराणि) विद्धान्यल्पलूनानि न शोभनानि 72, 2. तत्त्रिपिष्टपसंकाशमिन्द्रप्रस्थं व्यरोचत। मेघवृन्दमिवाकाशे विद्धं (= मिथः श्लिष्टं Nilak.) विद्युत्समावृतम् *geborsten* MBh. 1,7580. विद्ध = विकुषित (nach Durga) Nir. 4,15. — 2) *bewerfen mit:* क्रिमेर्नाविध्यदर्बुदम् Ṛv. 8,32,26. सीसेन AV. 1,16,4. TS. 1,7,8,2. सर्वतो मामविध्यन्त (v. l. अचिन्वन्त) सरथं धरणीधरैः MBh. 3,12170. विद्ध = क्षिप्त *geworfen* H. an. Med. — 3) *behaften, Jmd* (acc.) *Etwas* (instr.) *anheften, anhängen* (ein Uebel u. s. w.): यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः Ṛv. 5,40,9. TS. 2,1,2,2. 6,1,10,4. Çat. Br. 1,5,2,8. 5,3,2,2. AV. 3,2,5. प्रज्ञा उदरेण Çat. Br. 1,6,3,17. पाप्मना 11,1,6,9. 14,4,1,3. तं ह्यासुरा पाप्मना विविधुः Khând. Up. 1,2,2. 3. कृत्यया Kauç. 39. शुचा Ait. Br. 6,36. Çat. Br. 3,5,2,8. लोहितेन AV. 15,1,8. बाह्लकैः 11,9,12. रजस्तमोभ्यां विद्धस्य देहिनः Maitrjup. 6,28. विद्ध (= दुःखादिसंबन्धिन् Comm.) Khând. Up. 8,4,2. — 4) *Eintrag thun, beeinträchtigen, nachtheilig wirken auf Etwas* (acc.), *schaden:* अविद्धवर्चम् Bhâg. P. 3,9,3. अविद्धदृग् 8,3,4. मार्गतरुकोणकूपस्तम्भभ्रमविद्धं द्वारम् Varâh. Brh. S. 53,76. रथ्या° (द्वार) 77. देवता° (द्वार) 78. Mârk. P. 50,70. विद्ध = बाधित Med. — 5) विद्ध *behaftet, versehen mit Etwas, das schaden kann:* राज्ञोपकरणात्रपेण्डकृच्छत्रचामरादिभिर्विद्धः (अर्कः) Varâh. Brh. S. 3,18. fg. 47,24. विद्धामर्षाशय (= अमर्षविद्धाशय) Bhâg. P. 7,10,15. — 6) विद्ध *versehen mit* überh.: तन्त्रीस्वरगुणैर्विद्धानातोद्यानन्ववादयन् (तन्त्रीं und विद्धाम् ed. Calc., तन्त्री und विद्धान्नातोद्यान् die neuere Ausg.) Hariv. 8688. विद्धमामारितं (विद्ध = रागान्तरमिश्र Nilak.) रम्यं ग्रामरे स्वरसंपदा 8690. die रोहिणीसहिताष्टमी ist vierfach: शुद्धा *rein,* विद्धा *gemischt, mit Anderem in Berührung kommend* (d. i. *mit dem Ende des 7ten Tages*), शुद्धाधिका oder विद्धाधिका Weber, Krshnaǵ. 227. fg. पूर्वविद्धा 225. 237; vgl. Verz. d. Oxf. H. 283, *b*, No. 662. — 7) *anstacheln, antreiben, in Bewegung versetzen:* (रजसा) गुणेन कालानुगतेन विद्धः (= संक्षोभितः Comm.) Bhâg. P. 3,8,13. देहेन्द्रियप्राणमनोधियो ऽमी यदंशविद्धाः (विद्ध = आविष्ट Comm.) प्रचरन्ति कर्मसु 6,16,24. — 8) *schütteln, bewegen:* चैलानि विव्यधुः MBh. 1, 7055; vgl. चैलानि दुधुवुः 6,1557. चेलावधूनन 8,4380. चेलावेध 2,2867. — 9) in der Astron. *fixiren, den Stand eines Gestirns bestimmen:* अग्रे पृष्ठतो वा दृष्टिं चालयित्वा ग्रहं विध्येत् Golâdh. Jantrâdh. 13, Comm. — 10) *sich hängen an:* ग्रात्यों वा ग्राकृतिं विध्यन्ति Çat. Br. 12,4,1,10. — 11) विद्ध *ähnlich* H. an. Med. पूर्णेन्दुविद्धानना (बिम्ब st. विद्ध Brockh.) Çrut. 43. — 12) विद्ध fehlerhaft für बद्ध Liñga-P. bei Muir, ST. 4,325, 23. — Vgl. विध्य, वेद्धर् fg., वेध fgg., वेधिन् fg., व्यध fg., व्यध्य, व्याधर, व्याध und अपापविद्ध.

— caus. = simpl. 1): काकमवेधयन् MBh. 12,3069. शरैश्चैवाप्यवीविधत् (nach der Lesart der ed. Bomb.) 7,8670. सिरां व्यधयेत् *eine Ader schlagen* Suçr. 2,250,13. वेधित = विद्ध AK. 3,2,49. H. 1486. an. 2, 249. Med. dh. 16.

— desid. *behaften wollen:* पाप्मनाविव्यत्सन् Çat. Br. 14,4,1,8.

— intens. वेविध्यते P. 6,1,16, Schol.

— अति *durchbohren; durchbrechen, mit Oeffnungen versehen* Ṛv. 4, 8,8. 8,85,2. वर्म AV. 8,5,19. शर्म नातिविधे dat. infin. Ṛv. 5,62,9. Çâṅkh. Çr. 17,3,6. 5,7. 15,5. अतिविद्ध *durchbohrt, getroffen* MBh. 6,2701. वागिषुभिः R. 2,9,51. वाक्येन महाप्रियेण घोरेण हृदये R. Gorr. 2,9,46. — Vgl. अतिव्याधिन्, अनतिव्याध्य.

— व्यति *durchbohren, durchschiessen:* नाराचैर्व्यतिविद्धानां शराणाम् MBh. 7,3626 nach der Lesart der ed. Bomb.

— अनु 1) *hinterdrein durchbohren, — verwunden:* विद्धमनुविध्यतः M. 9,43. — 2) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): अनुविद्ध R. 5,36,42. कामशरानुविद्ध Ṛt. 4,11. 6,13. कीटानुविद्धरत्नादि *durchbohrt, angebohrt* Sâh. D. 3,21. — 3) *durchziehen, mit Etwas erfüllen:* मृत्तिका तद्रसेनानुविध्यमाना Bhâg. P. 5,16,21. अनुविद्ध *durchzogen, besetzt mit, erfüllt —, begleitet von:* सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं Spr. 5190. इन्द्रनीलैर्मुक्तामयी यष्टिरिवानुविद्धा Ragh. 13,54. रत्नानुविद्धाङ्गद 6,14. रत्नानुविद्धार्णव 63. स्वेदानुविद्धार्द्रनखक्षत 16,48. अलकं बालकुन्दानुविद्धम् Megh. 66. सान्द्रकफानुविद्ध Suçr. 2,491,18. (केशाः) कौसुमगणानुविद्धाः Hariv. 8793. रत्नाङ्गुलीयप्रभयानुविद्धानन्तान् Ragh. 6,18. न तत्सत्यं यच्छलेनानुविद्धम् Spr. (II) 3483, v. l. सौरभ्यानुविद्ध Mârk. P. 14,21. Kathâs. 115,146. Mâlatîm. 15,13. काष्ठागतस्नेहरसानुविद्ध (भाव) Kumâras. 3,35. रजसा तमसानुविद्धो मदः Bhâg. P. 5,10,9. सुखानुविद्ध Verz. d. Oxf. H. 216, *a*, 30. — 4) *anstacheln, antreiben:* तेनानुविद्धः Bhâg. P. 3,26,51. कर्मस्वनुविद्धया धिया 29,5. — Vgl. अनुवेध.

— अप 1) *fortschnellen, fortschleudern, fortwerfen:* अप शत्रून्विध्य-

ताम् RV. 7,75,4. तण्डुलान् Lâṭy. 4,9,13. 5,2,6. Kauç. 18. 28. 30. 39. भूषणानि R. 4,58,20. पुरा श्मशाने स्रगिवापविध्यते MBh. 3,15686. अपविद्ध *fortgeschleudert* Kir. 5,30. चरणापविद्धा Bhâg. P. 3,14,25. 10,36,12. दोलया परिङ्खनापविद्धया *gestossen, in Bewegung gesetzt* Ragh. 19,44. *fortgeworfen* MBh. 6,2294. 3967. 14,2365. R. 5,13,67. 14,52. 19,11. 20,19. 6,99,42. Kumâras. 2,22. *verschleudert* Daçak. 83,2. *ausgesetzt, im Stich gelassen:* शव Bhâg. P. 5,14,20. गिरिदर्याम् 24,23. 13,9. ein Kriegswagen in der Schlacht Hariv. 13671. R. 3,67,17. 6,18,53. *verstossen* (ein Kind) Bhâg. P. 4,30,13. 5,8,4. 9,23,12. 10,68,8. *ausgestossen* (aus der Kaste u. s. w.) 4,7,29. Mârk. P. 32,21. *aufgegeben, fahren gelassen:* तनु Mârk. P. 48,6. लोक Bhâg. P. 6,11,21. *aufgeben, fahren lassen* s. v. a. *vernachlässigen, sich nicht kümmern um:* त्रीनग्नीन् MBh. 13,4523. 12,1213 (अपविध्येत st. परिमुच्येत ed. Bomb.). M. 11,41. अपविद्धास्तु यैर्वेदा वक्रपद्याहिताग्निभिः Mârk. P. 14,81. *aufgeben* so v. a. *sich befreien von:* अपविध्यन्ति पापानि दानयज्ञतपोबलैः MBh. 12,3585. — 2) *entreissen:* गदायामपविद्धायाम् Bhâg. P. 3,19,5. *mit sich fortreissen:* कमार्पविद्धधी 4,25,5. — 3) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): अपविद्धः शरैर्भृशम् MBh. 4,1952. — 4) अपविद्ध so v. a. अनुविद्ध *begleitet von:* वचो विप्रलापापविद्धम् (विप्रलापानुबद्धम् ed. Bomb.) MBh. 6,3776. — Vgl. अपविद्ध, अपवेध.

— व्यप 1) *auseinanderwerfen, zerbrechen:* आश्रमपदं व्यपविद्धबृसीमठम् (अपविद्ध° ed. Bomb.) MBh. 3,15763. — 2) *fortschleudern, fortwerfen, abwerfen:* °विद्ध R. 5,32,32. 6,70,42. 7,23,5,49. — 3) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): नाराचैर्व्यपविद्धानां (व्यतिविद्धानां ed. Bomb.) प्रूराणाम् (शराणाम् ed. Bomb.) MBh. 7,3626.

— अभि *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse) TS. 2,6,8,4. Kauç. 32. बाणैः स्तनान्तरे MBh. 6,5033. 7,3632 (med.). 8,4591. °विद्ध 4,1691. — Vgl. अभिव्याधिन्.

— अव *hinein —, hinabstürzen:* अप्सु RV. 1,82,6. समुद्रे 7,69,7. कर्ते 9,73,8. सुवर्गाल्लोकात् TBr. 1,6,2,7. = वैकल्यं कर् (nach Comm.) 2,5,5,6. 7,4,5,1.

— आ 1) *hineinwerfen:* लोष्टमायसमास्ये Çat. Br. 5,4,2,1. Kâty. Çr. 15,5,22. *schleudern:* आविद्ध = क्षिप्त, प्रक्षिप्त u. s. w. AK. 3,2,37. Trik. 3,3,214. H. 1482. an. 3,342. इषु M. 9,43. — 2) *verscheuchen, verjagen* R. 7,28,5. — 3) *verstossen, ausstossen:* पतिताविद्धचाण्डालमृतहारान् Mârk. P. 35,36. — 4) *anschiessen, verwunden:* आविद्ध TS. 2,6,8,3. Çat. Br. 1,7,4,9. 11,2,6,7. Lâṭy. 4,9,13. Pâr. Gṛhy. 1,3. पाणिनिः Gît. 12,11. = पराहत Med. dh. 28. — 5) *durchbohren:* अनाविद्धं रत्नम् Spr. (II) 271. *durchbrechen:* विद्युद्घनमिवाविध्य R. 3,58,27. *zerbrechen* 56,46. पादपाविद्धपरिघ Ragh. 12,73. — 6) *schwingen, im Kreise bewegen* R. 4,9,79. fg. आविध्याविध्य तौ वृत्तान्मुहूर्तमितरेतरम्। ताडयामासुः MBh. 3,11511. गदाम् 6,2799. 7,9100. Bhâg. P. 1,7,13. 10,55,19. आविध्य सद्मसामुच्चच्छिलाम् (so die neuere Ausg.) Hariv. 6859. आविध्य दण्डं चिक्षेप R. 2,32,36. शूलम् Bhâg. P. 6,12,2. 10,59,8. परिघम् 6,12,24. दर्पाविद्धसटानन Hariv. 3716. आविद्धपुच्छ 3717. 4101. मतिमन्थानमाविध्य Verz. d. Oxf. H. 12,a,28. 47,b,25. अमत्याविद्धमखिलं ब्रह्माण्डम् Mârk. P. 78,9. पवनाविद्धतोय *bewegt* Suçr. 2,199,15. आविद्ध n. *das Schwingen, Bez. einer best. Art zu fechten* Hariv. 11048 (S. 791). 13494. 15977. Hierher आविद्ध *gewunden, sich in Windungen bewegend, gekrümmt* (vgl. आविद्ध): सागर R. 5,74,32. °गतिसंचारा Sâh. D. 116. पथाविद्धं याति (नदी) Vikr. 115. — 7) *in Unruhe versetzen, aufregen:* कामादिभिरनाविद्धः Bhâg. P. 7,15,35. 1,2,19. अन्तःपुरमाविद्धम् (= दुःखाभिहतम् Comm.) R. 2,57,25. — 8) *aufsetzen:* आविध्य च स्रजम् Bhaṭṭ. 20,11. — Vgl. अनाविद्ध, आविद्ध, आवेध, आवेध्य, आव्याध fg.

— उपा s. उपाव्याध.

— व्या *schwingen, im Kreise bewegen:* गदाम् MBh. 3,677. R. 7,15,32. चक्रम् Hariv. 10720. व्याविद्ध *sich im Kreise bewegend* Mṛkkh. 76,19. *verdreht, verschoben, aus seiner Lage gekommen:* °नयनाम्बर MBh. 4,774. रशना R. 5,13,35. Daçak. 91,3 (व्यविद्ध, welches schon Benfey verbessert hat). Suçr. 2,31,3. *verzerrt* 316,20.

— समा 1) *schwingen, in schwingende Bewegung versetzen:* पादे तौ गृह्य पुरुषः समाविध्यावधूय च Hariv. 3339. गदाम् R. 7,15,11. समाविध्यत लाङ्गूलं चरणौ च 5,3,1. 5,25. 38,37. 42,19. 55,10. Ragh. 16,78. — 2) समाविद्ध *verwüstet, zerstört:* वन MBh. 15,1031.

— उद्, partic. उद्विद्ध *erhoben, hoch:* शृङ्ग MBh. 1,1107. शिखरैः खमिवोद्विद्धैः *sich hoch in die Lüfte erhebend* R. 2,94,4.

— उप *bewerfen, treffen:* उप ध्रजन्तमद्रयो विधन्नित् RV. 1,149,1. किमेवं मां वाक्शरैरुपविध्यसि (अपि कृन्तसि ed. Bomb.) MBh. 7,6534.

— नि 1) *hinschleudern, niederschiessen:* अत्रिणो नि पर्शाने विध्यतम् RV. 7,104,5. Çat. Br. 3,9,2,25. 5,4,1,9. *einwerfen, einschlagen:* न्यविध्यदिलीबिशस्य दृळ्हा RV. 1,33,12. AV. 5,29,4. (in den Boden) *einstossen* Çat. Br. 3,8,1,16. — 2) *beschiessen* (mit einem Geschosse), *treffen, durchbohren* RV. 1,164,8. 4,18,9. तं च भूयो न्यविध्यत MBh. 8,997. न रथानां न चाश्वानां न गजानां न वर्मणाम्। अनिविद्धं शितैर्बाणैरासीद्द्व्यङ्गुलमन्तरम्॥ 4,1700. — अनिविद्धं 1977 fehlerhaft für इति विद्धि, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. निव्याध fg.

— अधिनि *treffen in:* हृदये AV. 8,6,24.

— निस् 1) *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse) RV. 8,66,6. तेन मर्मणि निर्विद्धः शरेण R. 3,50,19. लघु निर्विध्य मृगान् *erlegen* Kathâs. 27,156. (गर्दभम्) निरविध्यत्प्रतोदेन नासिकायां पुनः पुनः *schlug* MBh. 13,1875. — 2) निर्विद्ध etwa *auseinanderstehend, von einander getrennt:* गोपुरैर्मन्दरोपमैः निर्विद्धैः MBh. 1,7576. nach Nîlak. = अच्छिद्र oder अभेद्य. — Vgl. निर्वेधिम.

— परा 1) *hinausschleudern:* यावदूर्ध्वः पराविध्यति TS. 2,4,12,1. — 2) *verwunden, treffen* (mit einem Geschosse): शरैः MBh. 8,3194. Bhâg. P. 4,29,54. — Vgl. पराविद्ध und पराव्याध.

— परि *beschiessen:* ततः सर्वान्महीपालान्पर्यविध्यत्त्रिभिस्त्रिभिः (शरैः) MBh. 1,4102. — Vgl. परिव्याध.

— प्र 1) *fortschleudern; stürzen, werfen:* पार्ष्ण्या AV. 8,6,17. तमसि RV. 1,182,6. 7,104,3. अप्सु Çat. Br. 6,1,2,12. 2,2,8. चात्वाले Lâṭy. 2,1,6. Çâṅkh. Br. 11,5. Kauç. 66. 75. 77. वेगप्रविद्ध (so ist zu lesen) *geschleudert* R. 4,9,82. प्रविद्धा रक्षसां भागः पर्वणीवाहिताग्निना *hingeworfen* 2,43,5. स पपात क्षितौ क्षीणः प्रविद्धाभरणाम्बरः MBh. 7,1628. प्रविद्धान्यासनानि *auseinandergeworfen* R. 3,67,1. वायुप्रविद्धाः शरदि मेघराज्य इवाम्बरे *zerstreut* 2,93,11 (102,12 Gorr.). प्रविद्धकलशोदक *vergossen* 63,34. प्रविद्ध n. *das Vorstossen, Bez. einer best. Art zu fechten*

HARIV. 15977. — 2) *Geschosse werfen, schiessen:* उदङ्ङुदश प्रव्याधान्प्रविध्यति ÇAT. BR. 5,1,5,13. AV. 3,26,4. — 3) *durchbohren, verwunden:* द्रोणं त्रिभिः (शरैः) प्रविव्याध MBH. 6,3592. जत्रुदेशे 14,2322. SUÇR. 1,279,2. — 4) *unterlassen, aufgeben:* देवतार्चाः प्रविद्धाः R. 2,71,37. — 5) प्रविद्ध *gespickt, erfüllt* MBH. 7,3910. — Vgl. प्रव्याध.

— अतिप्र *verscheuchen:* °विद्ध R. 4,1,15.

— विप्र, partic. °विद्ध *auseinandergeworfen, zerstreut* MBH. 6,4385. 7,784. 1575. 8,743. *zerpflückt, hart mitgenommen* RAGH. 14,54.

— प्रति 1) *schiessen* (gegen einen Feind), *beschiessen:* ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मत् RV. 4,4,5. स च तान्प्रतिविव्याध द्वाभ्यां द्वाभ्याम् MBH. 1,4103. 6567. 6570. 3,11960. 12124. 6,1703. BHÂG. P. 10,77,2. med. MBH. 3,14994. 4,1852. 1998. R. 5,41,35. 6,86,36. 7,28,11. °विद्ध MBH. 4,2209. अप्रतिविद्ध Agni TS. 1,5,10,1. *treffen in:* स्तनान्तरे MBH. 4, 1989. R. 3,34,26. med. 6,75,64. 78,12. — 2) pass. *betroffen werden, in Frage kommen* Comm. zu AV. PRÂT. 4,53, wo प्रतिविध्येते zu lesen ist; vgl. Ind. St. 4,293.

— वि *durchbohren, schiessen* VS. 16,24. 62. — Vgl. विव्याधिन्.

— सम् *beschiessen:* शरवर्षेण उलूकं समविध्यत MBH. 6,1747. 7,4501.

व्यध (von व्यध्) m. P. 3,3,61. *Durchstechung, Durchbohrung* AK. 3, 3,8. H. 1523. कर्ण° SUÇR. 1,54,12. सिरा° *das Aderschlagen* 9,10. 356,4. 357,16. 2,343,21. — Vgl. जल° und वेध.

व्यधन (wie eben) 1) adj. *durchstechend* SUÇR. 1,27,18. 56,20. — 2) f. ई *Nadel* TRIK. 3,3,79. — 3) n. *das Durchstechen* SUÇR. 1,26,17. सिरा° 45,11. 2,3,17. °साध्य 7,20. — Vgl. कृत°.

व्यधिक, व्यधिकं KÂM. NÎTIS. fehlerhaft und zwar wahrscheinlich für द्व्यधिकं.

व्यधिकरण (2. वि + अ°) 1) n. *Incongruenz* KUSUM. 46,14. Verz. d. Oxf. H. 241,a, No. 590. 242,a, No. 593. fgg. °धर्मावच्छिन्नाभावक्रोड Titel verschiedener Schriften HALL 33. 36. fg. — 2) adj. *auf ein anderes Subject sich beziehend* Schol. zu KAP. 1, 32. — Vgl. वैयधिकरण्य und समानाधिकरण.

व्यधिक्षेप (von 1. क्षिप् mit व्यधि) m. *das Schmähen, heftiges Anfahren* MBH. 9,789 nach der Lesart der ed. Bomb., व्यतिक्षेप ed. Calc.

व्यध्य (von व्यध्) 1) adj. *aufzustechen* SUÇR. 2,319,16. °सिर *dem eine Ader zu schlagen ist* 1,358,13. 359,1. — 2) m. *Bogensehne* TRIK. 2,8, 51. — Vgl. विध्य.

व्यध्व (2. वि + अध्वन्) 1) m. a) *der halbe Weg:* तूर्णं प्रत्यानयस्वैतान्कामं व्यध्वगतानपि (= दूरगतान् NÎLAK.) MBH. 2,2475. व्यध्वे (oxyt. im AV., properisp. im ÇAT. BR.) *halbwegs* AV. 13,2,31. ÇAT. BR. 6,3,3,5. 9,2,3,15. व्यध्वोदकान्तयोश्च so v. a. व्यध्वे चोदकान्ते च KÂTJ. ÇR. 10,8,17. — b) *ein schlechter Weg* AK. 2,1,17. H. 984. — 2) adj. (f. आ) *in der Luft zwischen Zenith und der Erdoberfläche liegend:* दिश् AV. 4,40,6; vgl. 14,8.

व्यध्वन् (wie eben) adj. *in der Mitte des Weges befindlich* oder *vom Wege abschweifend:* रज आ व्यध्वनः RV. 1,141,7. व्यध्वानः TBR. 3,9,1,2 ist nach dem Comm. in वि । अध्वानः zu zerlegen.

व्यध्वर (von व्यध्) adj. *anbohrend, anstechend:* Wurm AV. 2,31,4. 6, 50,3. विऽअध्वर irrig Padap. — Vgl. व्यद्वर.

व्यन्त (2. वि + अन्त) P. 6,2,181. adj. *getrennt, entfernt* (Gegens. von *confinis*) TBR. 2,1,3,1.

1. व्यन्तर (2. वि + अ°) n. 1) *Zwischenraum:* स° GOBH. 4,2,21. — 2) *Ununterschiedenheit:* निःसारे क्षुभिते लोके निष्क्रिये व्यन्तरे (= सर्ववर्णसाम्येन NÎLAK.) स्थिते HARIV. 11194.

2. व्यन्तर (wie eben) 1) adj. *in der Mitte stehend;* °राम् *mittelmässig:* उपांशु, व्य°, उच्चैः ÇAT. BR. 6,5,3,4. — 2) m. Bez. einer Gruppe von Göttern bei den Gaina, welche die Piçâka, Bhûta, Jaksha, Râkshasa, Kimnara, Kimpurusha, Mahoraga und Gandharva umfasst, H. 91. Ind. St. 10,312. व्यन्तरामर ÇATR. 14,24. 275. द्वात्रिंशद्व्यन्तराधिपाः 1,28. तत्र वृत्ते कश्चिद्व्यन्तर आसीत् PAÑKAT. 250,2. 7. विविधेषु शैलकन्दरान्तरवनविवरादिषु प्रतिवसन्तीति व्यन्तराः H. 91, Schol.

व्यन्तरपङ्क्ति f. Verz. d. Cambr. H. 77.

व्यप्, व्यापयति (क्षेपे) DHÂTUP. 32,95. (क्षये) KAVIKALPADRUMA im ÇKDR.

व्यपगम (von 1. गम् mit व्यप) n. *das Verstreichen:* त्रिरात्रव्यपगमे KULL. zu M. 5,66. *das Schwinden:* गौरव° Spr. 1896.

व्यपत्रपा (von त्रप् mit व्यप) f. *Schüchternheit, Verlegenheit:* सव्यपत्रप adj. (f. आ) *schüchtern, verlegen* Spr. (II) 1019 (सव्यपत्रपम् zu lesen). R. 2,92,16.

व्यपदेश (von 1. दिश् mit व्यप) m. 1) *Aufgebot:* सैन्य° R. 4,28 in der Unterschrift. — 2) *Bezeichnung, Benennung; Bezeichnungsweise* TRIK. 1,1,117. RV. PRÂT. 18,4. KAP. 1,126. KAN. 9,1,3. BÂDAR. 1,1,14. 17. 21. 4,1,13. घटस्येति व्यपदेशानुपपत्तिः ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 40. 157. BHÂSHÂP. 46. BHÂG. P. 5,20,44. 11,28,21. SÂH. D. 17,3. 24,12 (pl.). 108, 13. 188,19. वनमित्येकत्वव्यपदेशः VEDÂNTAS. (Allah.) No. 23. KULL. zu M. 1,4 (am Ende). 49. 58. 7,158. 9,178. 10,37. MUIR, ST. 4,219,9. तन्नाशे आत्मा नष्ट इति व्यपदेशमात्रम् Schol. zu KAP. 1,151. zu RV. PRÂT. 1,18. तथा ह्युदात्तैर्वा स्वरितैर्वा पदव्यपदेशः (nämlich als आद्युदात्त, मध्योदात्त u. s. w.) zu 3,4. लौकिक° NÎLAK. 182. अ° LÂTJ. 1,1,1. ÂPAST. 2,8,13. — 3) *das Sichberufen auf* (gen.) Spr. 2910. — 4) *Geschlechtsname:* न चेन्मुनिकुमारो ऽयम् अथ को ऽस्य व्यपदेशः (Antwort पुरुवंशः) ÇÂK. 104,6. व्यपदेशमाविलयितुं किमीहसे जनमिमं च पातयितुम् 117. — 5) *Geschwätz* (= उक्ति NÎLAK.): अलं व्यपदेशेन MBH. 3,8665. — 6) *Vorwand, Ausflucht* H. 378. HALÂJ. 4,24. °रूपिन् (अव्यपदेशरूपिन् BURNOUF und Comm.; = अनिरूक्तप्रपञ्चाकार Comm.) BHÂG. P. 5,18,31. व्यपदेशार्थम् M. 7,168. अलं ते व्यपदेशेन MBH. 14,1675. सकारणं व्यपदेशं तु कुर्यात् 5,1362. व्यपदेशेन केनचित् *unter einem bestimmten Vorwande* 15,191. व्यपदेशेन allein dass. HARIV. 7044. 7187. व्यपदेशेन जनकाद्युत्पत्तिर्वसुधातलात् so v. a. *nur angeblich* R. 6,101,17. मृगयाव्यपदेशेन प्रययौ MBH. 1,7935. 15, 87. RAGH. 14,45. KATHÂS. 10,107. 13,68. 155. उत्कण्ठाव्यपदेशतः 15, 107. 33,148. 72,343. SÂH. D. 59,10. रोगव्यपदेशपरगृहेक्षणिकाः VARÂH. BṚH. S. 78,11. त्रिदण्डिव्यपदेशजीविनः so v. a. *unter dem Scheine von* PRAB. 21,8. मन्त्रिमात्रव्यपदेशोपजीविनः (man hätte मन्त्रिव्यपदेशमात्रोप° erwartet) PAÑKAT. 196,19.

व्यपदेशक (wie eben) adj. *bezeichnend, benennend:* यस्मिन्हि शाको नाम महीरुहः स्वक्षेत्रव्यपदेशकः BHÂG. P. 5,20,24.

व्यपदेशिन् (wie eben) adj. am Ende eines comp. *sich berufend auf* so v. a. *sich richtend nach, Jmdes Rathschläge befolgend* (= नियोगवर्तिन्

Comm.): वसिष्ठ° R. 1,21,2.

व्यपदेश्य (wie eben) adj. 1) *zu bezeichnen, zu nennen, anzugeben* PAT. zu P. 1,2,49 (ed. Calc.). ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 159. KULL. zu M. 10,14. इयं तु भवतो भार्या दोषैरेतैर्विवर्जिता। श्लाघ्या च व्यपदेश्या च यथा देवेष्वरुन्धती ॥ so v. a. *verdient ehrende Beiwörter* R. 3,19,8 (13,7 ed. Bomb.). अ° *nicht zu bezeichnen* MÂṆḌ. UP. 7. WEBER, RÂMAT. UP. 338. Verz. d. Oxf. H. 229,b,40. — 2) *als tadelnswerth zu bezeichnen, zu tadeln:* न दृष्टं कश्यपकुले (so die neuere Ausg.) व्यपदेश्यम् HARIV. 7309.

व्यपनय (von 1. नी mit व्यप) m. *das Entziehen:* तस्याः पिण्डव्यपनयं (so ed. Bomb. st. °व्यपयनं der ed. Calc.) कुर्याद्स्मद्विधः कथम् MBH. 5,4761.

व्यपनयन (wie eben) n. *das Abreissen, Entfernen von seiner Stelle:* कृष्णाकेशोत्तरीयव्यपनयनपटु VEṆÎSAṂH. in SÂH. D. 196,10.

व्यपनुत्ति (von 1. नुद् mit व्यप) f. *das Vertreiben* AIT. BR. 8,10.

व्यपनेय (von 1. नी mit व्यप) adj. *zu vertreiben, zu verscheuchen:* मम दुःखं भगवता व्यपनेयम् MBH. 5,7029.

व्यपमूर्धन् (2. वि-अप + मू°) adj. *kopflos* MED. dh. 30.

व्यपयन (von 3. इ mit व्यप) n. *das Verschwinden, Aufhören;* s. u. व्यपनय.

व्यपयातव्य (von 1. या mit व्यप) partic. fut. pass. n. *abeundum, discedendum:* संग्रामात् MBH. 6,5081.

व्यपयान (wie eben) n. *Rückzug, Flucht* MBH. 5,2632. याने व्यपयाने च कोविदः 6,3320 = 7,4444.

व्यपरोपण (vom caus. von 1. रुह् mit व्यप) n. 1) *das Ausreissen, Abreissen:* केश° RAGH. 3,56. महीध्रपक्ष° 60. — 2) *das Entfernen:* व्यसनस्य KÂM. NÎTIS. 13,93.

व्यपवर्ग (von वर्ज् mit व्यप) m. *Trennung —, Scheidung in Zwei, Abschnitt* P. 8,2,19, Vârtt. 2, Schol.

व्यपसारण (vom caus. von सर् mit व्यप) n. *das Verscheuchen, Entfernen:* दोषान्धकार° RÂGHAVAPÂṆḌ. 1,46.

व्यपस्फुरण (von स्फुर् mit व्यप) n. *das Auseinanderschnellen* KÂTY. ÇR. 5,3,34.

व्यपाय (von 3. इ mit व्यप) m. 1) *das Aufhören, Schluss, Ende:* तपा° R. 5,19,35. रजनी° KÂM. NÎTIS. 15,37. जलद° MBH. 7,4688. घन° RAGH. 3,37. शुचि° (= ग्रीष्मकाल°) 3. शिशिर° MBH. 5,747. शरद्व्यपाय 12,6386. R. 3,22,1. हिम° KUMÂRAS. 3,33. — 2) *das Abgehen, Fehlen, Nichtdasein* KATHÂS. 94,131.

1. व्यपाश्रय (von श्रि mit व्यपा) m. 1) *Sitz, Standort;* am Ende eines adj. comp. *seinen Sitz habend in, befindlich an, — in:* व्रणाश्चलसंधिव्यपाश्रयाः SUÇR. 1,93,8. दोषा वर्त्मव्यपाश्रयाः 2,307,13. धर्मो रामव्यपाश्रयः R. 6,11,19. राज्यं सत्त्वबुद्धिव्यपाश्रयम् KÂM. NÎTIS. 1,16. मृदाद्युपादानस्वरूपव्यपाश्रयेणैव धर्मेण Comm. zu BÂDAR. 2,2,1. — 2) *Zuflucht, Verlass; Stützpunkt, Zufluchtsstätte, Gegenstand des Verlasses* MBH. 14,1029. न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः BHAG. 3,18. सत्त्वबलव्यपाश्रयात् R. GORR. 2,15,36. 26,27. 27,12. 3,44,23. Spr. (II) 2651. किं परतो व्यपाश्रयः BHÂG. P. 8,8,20. अव्यपाश्रयजीविन् *sich auf Niemanden verlassend* MBH. 13,3054. (तेषाम्) नेह कश्चिद्व्यपाश्रयः BHÂG. P. 6,17,31. स हि तेषां व्यपाश्रयः MBH. 1,7407. 7,379. R. 6,71,15. शक्रं कृत्वा व्यपाश्रयम् MBH. 3,14586. Am Ende eines adj. comp. (f. आ) *seine Zuversicht auf Jmd* oder *Etwas setzend, vertrauend auf* BHAG. 18,56. MBH. 3,12423. 6,5230. 5471. 13,6523. R. GORR. 2,60,7. 116,43. Spr. (II) 2651, v. l. BHÂG. P. 11,28,44.

2. व्यपाश्रय (2. वि + अपा°) adj. *sich auf Niemanden verlassend, selbstständig verfahrend, nur an sich denkend:* कृत्याकृत्यं व्यपाश्रयः KÂM. NÎTIS. 18,59. 62.

व्यपेक्षक (von ईक्ष् mit व्यप) adj. *Rücksicht nehmend —, achtend auf:* आत्मदोष° MBH. 14,540.

व्यपेक्षण (wie eben) n. *Berücksichtigung:* निमित्तगुणाव्यपेक्षणात् ÇÂṆḌ. 69.

व्यपेक्षा (wie eben) f. 1) *Betracht, Rücksicht:* व्यपेक्षा नैव कर्तव्या गतो ऽस्तमिति भास्करः MBH. 7,6219. नृपात्मजः सो ऽनुगतः पुरीमिति व्यपेक्षया ते नगरीं पुनर्ययुः R. GORR. 2,44,30. व्यपेक्षया भ्रातुः (obj.) MBH. 1,4255. तत्रधर्मव्यपेक्षया 5,7314. 12,1106. HARIV. 8612. R. GORR. 2,44,19. 49,36. 5,29,4. SUÇR. 1,26,6. KÂM. NÎTIS. 9,73 (°दोषव्य° zu lesen). SÂH. D. 9,8. 433. Am Ende eines adj. comp.: धर्म° *Rücksicht nehmend auf* R. GORR. 2,43,28. अस्मद्व्यपेक्ष R. Schl. 2,46,19. धर्माव्यपेक्ष 45,26. — 2) *Erwartung:* स्वजनव्यपेक्षया BHÂG. P. 4,3,18. am Ende eines adj. comp.: संप्राप्तशेषसखिसंगमसव्यपेक्ष KATHÂS. 71,305. — 3) *Erforderniss, Voraussetzung:* स° adj. am Ende eines comp. (f. आ) *erfordernd, voraussetzend:* स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षः UTTARAR. 108,2. 3 (146,6. 7). शुद्धिसव्यपेक्षा हि सिद्धयः KATHÂS. 107,127. — 4) *Rection* (in gramm. Sinne) Verz. d. Oxf. H. 162,b, N. 7. Schol. zu P. 2,1,1. 8,3,44. — Vgl. निर्व्यपेक्ष.

व्यपेत s. u. 3. इ mit व्यप. P. 7,4,67, Vârtt. 1 fehlerhaft für व्यवेत.

व्यपोह (von 1. ऊह् mit व्यप) m. 1) *Wegschaffung, Vertreibung:* पाप्म° ÂÇV. GṚHY. PARIÇ. 1,4. देव्या मन्युव्यपोहार्थम् MBH. 12,10304. सुखदुःखव्यपोहकृत् SUÇR. 2,475,2. °स्तव Verz. d. Oxf. H. 44,b,36. — 2) *das Leugnen, Verneinen* SÂH. D. 735. 332,14. — 3) *Kehricht:* भस्मव्यपोहाः (= समूह NÎLAK.) MBH. 13,4125.

व्यपोह्य (wie eben) adj. *zu leugnen:* अव्यपोह्यमाहात्म्या RÂGA-TAR. 3,391.

व्यभिचरित (von चर् mit व्यभि) partic. *der einen Fehltritt* (insbes. in geschlechtlicher Beziehung und zwar von Seiten der Frau) *begangen hat:* °स्त्रीवधप्रायश्चित्त Verz. d. Oxf. H. 87,b,17. fg. 281,b,17.

व्यभिचार (wie eben) m. 1) *das Auseinandergehen, Nichtzusammenfallen, Nichtzusammentreffen, Fehlgehen:* उभयव्यभिचारात् KAP. 1,40. न च घटादौ व्यभिचारः Comm. zu 34. BHÂSHÂP. 47. SÂH. D. 10,19. काल° Comm. zu TAITT. PRÂT. 1,33. सत्यत्व° Comm. zu GAIM. 1,1,4. BHÂSHÂP. 136. Verz. d. B. H. No. 675. स° adj. (हेत्वाभास) Z. d. d. m. G. 7,289. निराकाङ्क्षो राजपदपुरुषपदयोर्व्यभिचारात् so v. a. *weil die Worte* राजन् *und* पुरुष *Nichts mit einander zu thun haben* KUSUM. 34,3. अ° *das Zusammenfallen mit etwas Anderem; das Nichtfehlgehen, Unumgänglichkeit, absolute Nothwendigkeit* KAṆ. 3,2,18. 4,1,10. KAP. 2,41. इगुपधस्य सर्वस्य हलन्तत्वाव्यभिचारात् so v. a. *da jede* (Wurzel), *die einen* इच् *genannten Vocal zum vorletzten Buchstaben hat, nothwendig consonantisch auslauten muss,* P. 8,4,31, Schol. स्वसत्तायां प्रतीत्यव्यभिचारतः SÂH. D. 51. नियोगेन = अव्यभिचारेण *unter allen Umständen, durchaus* KÂÇ. zu P. 4,4,66. अव्यभिचारात् dass. P. 7,3,47, Schol. — 2) *Fehltritt, Vergehen* (insbes. in geschlechtlicher Beziehung und hier

wiederum insbes. von Seiten des Weibes): व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति गर्ह्यताम् *durch Untreue gegen den Gatten* M. 5,164 = 9,30. 21. अन्योऽन्यस्याव्यभिचारः *gegenseitige eheliche Treue* 101. Jâǵń. 1,72. MBh. 3,11078 (S. 572). Hariv. 4623. fg. 9945. Verz. d. Oxf. H. 277,b,8. वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे Ragh. 15,81. या तु व्यभिचारार्थं कुलान्यटति *um Unzucht zu treiben* P. 4,1,127, Schol. नप्तरि °कृत् Râǵa-Tar. 6,310. व्यभिचारोऽत्र को मम *Vergehen* MBh. 1,912. 13, 2387. Hariv. 909. 939. R. Gorr. 1,35,32. °विवर्जित (ein Minister) Spr. 5338. Bhâg. P. 9,1,20. 16,5. 10,47,60. तद्व्यभिचार *ein Vergehen gegen ihn* (= ईश्वरवियोग Comm.) 4,28,64. — 3) *Wechsel, Wandel:* अव्यभिचारेण भक्तियोगेन so v. a. *unwandelbar* Bhag. 14,26. — 4) *Uebertretung, Verletzung, Eingriff in:* वर्णानाम् M. 10,24. धर्मस्याव्यभिचारार्थम् 8,122. — 5) *das Hinausgehen über, Ueberschreiten:* चकारः संज्ञाव्यभिचारार्थः P. 3,3,19, Schol. बहुलग्रहणं सर्वोपाधिव्यभिचारार्थम् 2,1,32, Schol. Siddh. K. zu 3,3,113. — 6) °भाव Verz. d. Oxf. H. 213, No. 506 fehlerhaft für व्यभिचारिभाव. — Vgl. व्यभीचार.

व्यभिचारवत् (von व्यभिचार) adj. अ° *unumgänglich, unbedingt, bestimmt:* युद्धे मृत्युः सोऽव्यभिचारवान् (sc. स्वर्गयोनिः) MBh. 2,871.

व्यभिचारिता (von व्यभिचारिन्) f. 1) *das Auseinandergehen, Nicht-zusammenfallen, das Fehlgehen* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 31. Kusum. 6,8. Bhâshâp. 138. — 2) *das nicht-constant-Sein, ein wechselndes Verhältniss* Sâh. D. 204.

व्यभिचारित्व (wie eben) n. = व्यभिचारिता 2): एकशब्दस्य व्यभिचारित्वात् so v. a. *weil das Wort* एक *mannichfache Bedeutungen hat* P. 8,1,65, Schol.

व्यभिचारिन् (von चर् mit व्यभि) adj. 1) *abschweifend:* स्वमार्ग° Hariv. 5784. *auseinandergehend mit* (abl.), *nicht zusammenfallend, fehl gehend* Kathâs. 15,57. Kusum. 11,16. 28,5. अव्यभिचारी दृश्यतेऽतः Comm. zu Gaim. 1,1,5. अव्यभिचारि वचः *eintreffend, sich als wahr bewährend* Çâk. 81,9. Spr. 2374. Râǵa-Tar. 1,318. सिद्धि *nothwendig eintreffend* Spr. 3279. — 2) *vom Wege abgehend, sich auf Abwegen befindend* Spr. 1651 (Conj.). Bhâg. P. 11,3,38. *ausschweifend, untreu* (von einem Weibe) Jâǵń. 1,70. 2,142. Spr. (II) 1330. Kathâs. 34,182. Ind. St. 5,291, N. 5. पतीनाम् *gegen* MBh. 4,442. अ° *treu anhängend:* राजन् Kathâs. 110,10. राष्ट्र 12,38. मित्र Spr. (II) 296. eine Gattin Kathâs. 49,218. — 3) *wechselnd, wandelbar, nicht constant* (Gegens. स्थायिन्): प्राकृते हि लिङ्गं व्यभिचारि Ind. St. 10,277, N. 1. भाव Sâh. D. 7,20. 23,1. 168. 228. Pratâpar. 49,a,1. H. 325. fg. Verz. d. Oxf. H. 213, No. 506 (wo व्यभिचारिभाव° zu lesen ist). अ° *constant, unwandelbar:* भक्ति Bhag. 13,10. Verz. d. Oxf. H. 9,b,8. बुद्धि MBh. 14,1111. धर्म Râǵa-Tar. 1,281. Bhâg. P. 8,8,19. — 4) *übertretend, verletzend:* समय° M. 8,220. fg.

व्यभिहास (von हस् mit व्यभि) m. *Verspottung:* गुरोः Âpast. 1,8,15.

व्यभीचार (von चर् mit व्यभि) m. 1) *Fehltritt, Vergehen:* (पुरुषैः) अकार्येष्वव्यभीचारैः *sich Nichts zu Schulden kommen lassend* MBh. 12,3144. — 2) *Wechsel, Wandel:* न ते बुद्धिव्यभीचारमुपलप्स्यन्ति (so ed. Bomb.) MBh. 7,3070. — Vgl. व्यभिचार.

व्यभ्र (2. वि + अभ्र) adj. (f. आ) *wolkenlos, nicht in Wolken gehüllt:* नभस्, गगन, आकाश, ख MBh. 3,2704. 7,2474. 13,2069. Hariv. 3831. Varâh. Bṛh. S. 46,45. Bhâg. P. 10,25,25. शरद् 20,32. काल Suçr. 2, 46,19. विवस्वत्, अंशुमत् Ragh. 17,48. Bhâg. P. 9,16,23. पर्वतराज् MBh. 7,1264. व्यभ्रे *bei wolkenlosem Himmel* MBh. 13,6807. Hariv. 7856. Suçr. 1,359,16. Varâh. Bṛh. S. 32,15. 46,21. व्यभ्रज *bei wolkenlosem Himmel erscheinend* 35,4.

1. व्यय् (von व्यय), व्ययति und °ते *verausgaben, verthun, verschleudern:* कोशांस्त्वमव्ययीः Bhaṭṭ. 15,17. वारि व्ययति वारिदे Spr. (II) 3936. तुङ्गमायमनालोच्य व्ययमानः स्ववाञ्छया 2020. तदवशिष्टं च भोजनव्ययेन व्ययितम् Hit. 98,17. मांसम् 60,10. — व्यययति dass. (वित्तसमुत्सर्गे) Dhâtup. 35,78. गतौ und त्यागे Kavikalpadruma im ÇKDr.

2. व्यय्, व्ययति, °ते (गतौ) Dhâtup. 21,17.

3. व्यय्, व्याययति (क्षेपे) Dhâtup. 32,95, v. l. für व्यप्. नुदि (= प्रेरणे) Kavikalpadruma im ÇKDr.

व्यय (von 3. इ mit वि) 1) adj. *vergänglich* (stets in Verbindung mit अव्यय): संभवत्यव्ययाव्ययम् M. 1,19. MBh. 3,8353. 12,8525. VP. 13, N. 19. Mârk. P. 48,38. — 2) m. a) *Untergang, Verderben:* तेन देवासुरा राजन्नीताः सुबहवो व्ययम् MBh. 12,3388. *das Zerstieben, Vergehen, Verschwinden:* भारव्ययाय च भुवः Bhâg. P. 4,1,58. क्लेश° 2,7,26. प्राण° *das Ausgehen des Athems* Mṛkkh. 78,18. *Einbusse, Verlust* Nilak. 53. (कार्याणि) समव्ययफलानि Spr. (II) 479. सहस्रबाहोर्बाहूनां कृत्वा व्ययमनुत्तमम् Hariv. 11012. एकनेत्र° Ragh. 12,23. आयुषः Bhâg. P. 1,16,6. 8,22,9. Pańkar. 1,10,71. आयुर्व्यय 14,25. Bhâg. P. 7,6,4. तपसः R. 7, 18,32. Ragh. 15,3. Mârk. P. 20,46. Brahma-P. in LA. (III) 57,15. आपाद्यते न व्ययमन्तरायैः कच्चिन्महर्षेस्त्रिविधं तपस्तत् Ragh. 5,5. तपो° 15,37. तपोबलव्ययं कृत्वा सुचिरात्संभृतं तदा MBh. 15,754. संयम° Râǵa-Tar. 4,33. कीर्ति° 8,2721. मनोबलौजसाम् Bhâg. P. 8,2,29. स्वतपोभाग° so v. a. *Hingabe, Aufopferung* Kathâs. 28,89. पुत्रदार° 53,188. देह° 38,122. अङ्ग° Kumâras. 3,23. जीवित° Spr. 2036. असु° Prab. 64,12. प्राण° Mâlatîm. 70,14. Hit. I,40. Kathâs. 28,70. 46,178. 71,186. दृष्ट्वा वनचरान्नाथ किं न कुर्याः शरव्ययम् *warum opferst* (d. i. *gebrauchst*) *du nicht deine Pfeile?* R. 3,13,18. — b) in Verbindung mit कोशस्य, अर्थस्य, वित्तस्य, धनस्य, द्रविणस्य *Einbusse —, Hingabe —, Verausgabung —, Aufwand eines Schatzes* u. s. w.: काले चास्य (कोशस्य) व्ययं कुर्यात् Kâm. Nîtis. 5,87. अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् M. 9,11. अर्थ° Bhâg. P. 5,26,36. H. 387. वित्तस्य (विभूषणं) पात्रे व्ययः Spr. (II) 1487. वित्तस्य चोरुभारस्य चिकीर्षन्सद्व्ययम् Bhâg. P. 3,2,32. निजवित्तव्ययभयम् Spr. 2380. Sarvadarçanas. 3,5. धन° Varâh. Bṛh. S. 103,12 (°करी). Kathâs. 75,34. Râǵa-Tar. 8,748. Daçak. 62,10. लावण्यद्रविण° Spr. 2667. Ohne solche Ergänzung *Ausgabe, Aufwand* (Gegens. आय, आगम, लाभ) AK. 3,3,17. H. 1516. P. 1,3,36. Vop. 23,28. व्यये चामुक्तहस्ता Spr. 5140. °पराङ्मुखी Jâǵń. 1,83. °मध्ये Râǵa-Tar. 6,38. Kathâs. 52,317 (pl.). नानाव्ययेषु 57,138. एवं गुप्तनिगीर्णास्तान्मृगयस्वामुतो व्ययम् (wohl व्यये zu lesen) so v. a. *zu Ausgaben* 141. दीनारान्प्राग्गीर्णान्व्ययेप्सवात् 151. fg. विभज्यावस्तान्दीनारानस्ति मे व्ययः so v. a. *mir stehen Ausgaben bevor* 60,217. Varâh. Bṛh. S. 53,77. 79,5. 104,10. 18. Pańkat. 138,4. आयव्ययौ M. 8, 419. Jâǵń. 1,326. MBh. 3,8599. fg. आये व्यये महद्दुःखम् Spr. (II) 605. (I) 5055. क्रियतां व्ययः (so ed. Bomb., व्ययं ed. Calc.) MBh. 15,393. Mârk.

P. 81,14. नात्ययं च व्ययं कुर्यात् Kâm. Nîtis. 5,77. व्ययं व्यधा Râǵa-Tar. 4,661. कच्चिदायस्यार्धेन — व्ययः संशोध्यते तव *wird der Aufwand bestritten?* MBh. 2,204. तेन सर्वव्ययसंशुद्धिः संपद्यते Pańkat. 251,16. कुटुम्बार्थे कृतो व्ययः M. 8,166. कच्चिन्न पाने द्यूते वा क्रीडासु प्रमदासु च । प्रतिजानन्ति पूर्वाह्णे व्ययं व्यसनजं तव ॥ *Ausgaben für* MBh. 2,203. समुत्थान° M. 8,287. ताम्बूलादि° Kathâs. 57,149. भोजन° Hit. 98,17. गृह° Pańkat. 231,18. स्वल्प° Spr. 2222. 5394. Hit. 46,8 (°व्यये mit Johns. zu lesen). अति° Spr. (II) 154. 1959. Hit. 104,15. अतुल° adj. Râǵa-Tar. 8,733. नित्यव्यया adj. Spr. 3132. अर्घ्यपात्रानुमितव्ययस्य राघोः so v. a. *Verausgabung alles Geldes* Ragh. 5,12. कुड्य° *Kosten* Jâǵń. 2,223. *Mittel zum Aufwand, Geld* 2,276. — c) *Declination* (durch Casus) Nir. 1,8. 5,23. — d) Bez. *des 20ten Jahres im 60jährigen Jupitercyclus* Varâh. Bṛh. S. 8,36. Verz. d. Oxf. H. 331,*b*,3 v. u. — e) N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1,2157. अ° ed. Bomb. — 3) m. n. in der Astrol. Bez. *des 12ten Hauses* Varâh. Bṛh. S. 40,4. Laghuǵ. 1,15 in Ind. St. 2,281. Bṛh. 1,16. 2,18. 5,10. 6,4. 9,6. 11,6. °गृह 4,20. °भवन 7,3. °स्थान Verz. d. Oxf. H. 330,*b*,36. fg. °भावचिन्ता Verz. d. B. H. No. 878. — Vgl. अ°.

व्ययक (von व्यय) adj. *der die Ausgaben besorgt* Kâm. Nîtis. 12,45.

व्ययकर nom. ag. (f. ई) dass. MBh. 2,1294. धन° *Geld verschwendend* Varâh. Bṛh. S. 103,12.

व्ययकर्मन् n. *das Amt des Zahlmeisters, dessen, der die Ausgaben besorgt,* Jâǵń. 1,321. R. 2,1,19.

व्ययगत adj. *verarmt* MBh. 13,340, v. l. für व्ययगुण.

व्ययगुण adj. *verschwenderisch, der sein Vermögen verausgabt hat* MBh. 13,340.

व्ययन (von 3. इ mit वि) n. 1) *das Weggehen, Trennung* ṚV. 10,19,5. — 2) *Verbrauch, Verschwendung* Kâlakakra 5,207.

व्ययवत् (von व्यय) adj. 1) *unvollständig* ṚV. Prât. 11,31. — 2) *viel ausgebend:* निराया व्ययवत्तश्च (so ist zu lesen) Jâǵń. 2,268. — 3) *declinirt* VS. Prât. 2,26.

व्ययशील adj. *verschwenderisch* Spr. (II) 114. (I) 2911. Mârk. P. 81,14.

व्ययसह adj. *Ausgaben vertragend, unerschöpflich:* कोश Kâm. Nîtis. 4,63.

व्ययसहिष्णु adj. *Verluste ertragend, aus Verlusten sich Nichts machend:* नय° Kâm. Nîtis. 18,11. fg.

व्ययिन् (von व्यय) adj. *zu Grunde gehend:* उदय° (das suff. gehört zu beiden Wörtern) *der da steigt und fällt* Spr. 2560. — Vgl. अ°.

व्ययीकर् (व्यय + 1. कर्) *opfern, hingeben:* °कृताङ्ग Râǵa-Tar. 4,303. *verausgaben, verthun, verschleudern:* °चक्रे 8,1957. Kathâs. 57,117. °कृत्य 21. 53,163. °कृत Kâm. Nîtis. 13,66. Râǵa-Tar. 4,682.

व्यर्क (2. वि + अर्क) adj. *mit Ausschluss der Sonne* Varâh. Bṛh. 2,15.

व्यर्ण (2. वि + अर्ण) adj. *wasserlos* Kâtj. Çr. 24,6,33. 36. Pańkav. Br. 25,13,1. Lâṭj. 10,18,13. व्यर्ण nach P. 7,2,24 partic. von अर्द् mit वि.

व्यर्थ (2. वि + अर्थ) adj. (f. आ) 1) *zwecklos, unnütz, nutzlos, vergeblich:* यत्प्रयोजनशून्यं स्याद्व्यर्थं तत् Pratâpar. 65,*a*,9. MBh. 3,13355. 7,4257. R. 3,41,30. 4,5,28. 5,9,40. 29,13. 6,50,31. Ragh. 7,2. 14,41. Kumâras. 3,75. Spr. (II) 2377. (I) 1966. Kathâs. 7,52. Mârk. P. 116,53 (व्यार्थ gedruckt). 134,38. fg. Sâh. D. 45,10. Râǵa-Tar. 1,323. 4,614. Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 202. Pańkar. 2,2,66. Bhâg. P. 1,16,10. 3,9,9. 4,9,34. 11,22,33. Pańkat. 93,17. 94,24. 134,14. Sarvadarçanas. 6,11. Schol. zu Taitt. Prât. 1,21 u. s. w. zu P. 1,2,54. तस्य फलं जन्मनो व्यर्थम् so v. a. तस्य जन्म व्यर्थम् Spr. (II) 2964. व्यर्थम् adv. *unnützer Weise, vergeblich* 2670. Kathâs. 22,92. Pańkar. 1,2,15. Pańkat. ed. orn. 21,5. *unverrichteter Sache* Spr. 2183. — 2) *des Besitzes —, des Geldes beraubt* Spr. (II) 3068. — 3) *entblösst von* (instr.): द्रव्यपरिग्रहैः Âpast. 2,26,17. — 4) *sinnlos, widersinnig, einen Widerspruch enthaltend* Kâvjâd. 3,131. Verz. d. Oxf. H. 207,*a*,16. शब्द Hariv. 15607. °नामन् und °नामक so v. a. *einen Namen führend, der mit dem Wesen des Genannten im Widerspruch steht* (Gegens. अन्वर्थ), MBh. 5,4529. 4545. व्यर्थ allein dass. 8,339 (व्यर्थः mit der ed. Bomb. zu lesen). — Vgl. वैयर्थ्य.

व्यर्थक adj. = व्यर्थ 1) R. 5,15,4. AK. 3,5,4.

व्यर्थता (von व्यर्थ) f. 1) *Zwecklosigkeit, Nutzlosigkeit:* उपदेश° Kusum. 37,19. व्यर्थतां याति Pańkat. 128,1. गतः 215,22. क्रिमपातो व्यर्थतां नीयते so v. a. *verfehlt seinen Zweck, wird unschädlich* 169,14. — 2) *Sinnlosigkeit, Falschheit:* वचनस्य R. 4,17,8. इत्ययं वादः स गतो व्यर्थतां कथम् so v. a. *unwahr geworden* MBh. 2,2607.

व्यर्थत्व (wie eben) n. *Sinnlosigkeit, das im-Widerspruch-Stehen* Schol. zu Kâvjâd. 3,131. fg.

व्यर्थीकर् (व्यर्थ + 1. कर्) *nutzlos machen:* °कृत Prab. 31,3.

व्यर्धुक (von अर्ध् mit वि) adj. *verlustig gehend,* mit instr. der Sache: सोमपीथेन Kâṭh. 11,1. 26,8. अ° TS. 5,3,6,3. TBr. 2,1,6,3. 3,3,1,5.

व्यलीक (2. वि + अ°) 1) n. *Leid, Schmerz;* = पीडा AK. 3,4,1,12. = पीडन H. an. 3,94. Med. k. 154. = अकार्य Trik. 3,3,42. H. an. Med. = विप्रिय oder अप्रिय H. 744. H. an. Med. Halâj. 4,64. Uǵǵval. zu Uṇâdis. 4,25. = दुःख Jâdava bei Mallin. zu Kir. 3,19. = खेद Uǵǵval. नाहं तेन मम भ्रात्रा सुमहृममपि किं च न । व्यलीकं कृतपूर्वम् MBh. 3,270. व्यलीकं परं प्राप्तः 271. 17004. °स्थान (so mit der ed. Bomb. zu lesen) 4,112. 15,297. Hariv. 8420. R. 2,26,38 (39 Gorr.). 64,8. R. Gorr. 2,16,8. 30,19. 66,7. 5,37,43. 41,10. 47,19. Mṛkkh. 110,22. Kumâras. 3,25. शमितपराजय° adj. *Schmerz über* Ragh. 4,87. प्रत्यादेश° Çâk. 183. कुर्वन्नपि व्यलीकानि Spr. (II) 1818. Kir. 3,19 (= वैलक्ष्य nach Mallin.). Çiç. 9,85. अ° *dem es wohlgeht* (= निष्कपट Nîlak.) MBh. 5,698. — 2) adj. *unwahr, lügnerisch, heuchlerisch:* eine Person Bhâg. P. 5,11,17. वचस् 8,22,2. °कथा Spr. (II) 1505. व्यलीकम् adv.: रुरुदुः Bhâg. P. 6,14,48. अ° *ehrlich* Daçak. 2,23. *wahr:* वचस् Bhâg. P. 1,19,22. °व्रत 2,9,4. 4,8,19. अव्यलीकम् adv. 3,21,22. 10,51,32. — 3) n. *Falsch, Lüge, Unwahrheit, Betrug* H. 379. Halâj. 4,63. न व्यलीकं वदेत् Spr. 3208. Çiç. 7,54 (pl.; = अप्रियवचनानि Mallin.). Mârk. P. 15,2. Kathâs. 62,104. Prab. 97,1. Bhâg. P. 2,4,19. 8,21,34. — 4) n. = वैलक्ष्य Trik. 3,3,42. H. an. Med. Jâdava. — 5) m. = नागर Trik. 3,1,6. 3,42. Med. — 6) n. = व्यङ्ग H. an. — Vgl. निर्व्यलीक (*nicht falsch* Suçr. 2,55,15. *nicht entstellt* 153,4).

व्यल्कश Çânt. 4,7. gaṇa द्वारादि zu P. 7,3,4. Vop. 7,4 (व्यल्कस). f. आ *eine best. Pflanze* ṚV. 10,16,13. — Vgl. वैयल्कश.

व्यवकलन (von 2. कल् mit व्यव) n. *das Subtrahiren* Colebr. Alg. 5.

व्यवकलित (wie eben) n. dass. ebend.

व्यवकिरण (von 3. कर् mit व्यव) f. *Mischung* Vjutp. 175.

व्यवकीर्ण (wie eben) partic. *dazwischen erfüllt* oder *besetzt mit* (instr.) Kâm. Nîtis. 19,49.

व्यवच्छेद (von 1. छिद् mit व्यव) m. 1) *das Sichlosmachen —, Sichbefreien von Etwas* (instr. oder im comp. vorangehend) Bhâg. P. 4,29, 32. 36. — 2) *Trennung, das Auseinandergehen, Unterbrechung*: अ° Ait. Br. 2,29. Çat. Br. 9,3,2,6. 11,5,2,10. 12,8,2,18. 35. — 3) *Ausschliessung* Sâh. D. 9,14. H. 169, Schol. — 4) *Sonderung, Unterscheidung* Sâh. D. 278,6. 568. Gaudap. zu Sâṁkhjak. 30. Kusum. 46,5. — 5) *das Abschnellen eines Pfeils* H. 780. Halâj. 2,315. शरशतैस्तीक्ष्णैर्व्यवच्छेदप्रवेपितैः R. 6,79,35.

व्यवच्छेदक (wie eben) adj. 1) *sondernd, unterscheidend*; davon nom. abstr. °त्व n. Wilson, Sâṁkhjak. S. 86. — 2) *ausschliessend* Kull. zu M. 6,14. Comm. zu Taitt. Prât. 20,3. davon nom. abstr. °त्व n. zu 2,25.

व्यवच्छेद्य (wie eben) adj. *auszuschliessen* Sâh. D. 331,15. 18.

व्यवदान (von 7. दा mit व्यव) n. *das Reinigen, Läutern*: संक्लेश° Vjutp. 4.

व्यवदेश m. Kusum. 64,13 fehlerhaft für व्यपदेश.

व्यवधा (1. धा mit व्यव) f. *Verhüllung* AK. 1,1,2,14. H. 1477.

व्यवधातव्य (von 1. धा mit व्यव) partic. fut. pass. n. *zu trennen, zu scheiden* MBh. 12,4836.

व्यवधान (wie eben) n. 1) *das Dazwischenliegen, Dazwischentreten* Âçv. Çr. 12,4,17. Sâṁkhjak. 7. दृष्टिं विमानव्यवधानमुक्ताम् Ragh. 13,44. देश° Kap. 1,28. Schol. zu 109. तद्यवधानकृत् *zwischen sie* (Sonne und Mond) *tretend* Bhâg. P. 5,24,2. अत्र पूर्वोत्तरपदयोर्व्यञ्जनेन व्यवधानं कृतम् Schol. zu VS. Prât. 5,29. zu Ṛv. Prât. 3,15. zu AV. Prât. 1,99. fg. zu P. 8,1,38. 2,36. 3,58. 4,2. Kâç. zu 3,58. Siddh. K. zu 6,3,34. Comm. zu Vop. 3,30. अ° Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 94. व्यवधान = अन्तर Halâj. 5,85. Schol. zu Taitt. Prât. 2,25. व्यवधानेन so v. a. *mittelbar* Nîlak. bei Muir, ST. 4,221. — 2) *Verhüllung, Decke, Hülle* H. 1478. Halâj. 4,34. Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 191. — 3) *Scheidung, Sonderung* Kusum. 39,13. Bhâg. P. 3,28,35. 4,22,27. अ° 29,60. 5,5,35. Kull. zu M. 11,201. — 4) *Unterbrechung* Çiç. 9,51. अ° *ununterbrochen* Bhâg. P. 5,1,6. 18,7. — 5) *Schluss, Beendigung* Bhâg. P. 4,29,77.

व्यवधानवत् (von व्यवधान) adj. am Ende eines comp. *überdeckt*: देवदारुद्रुमवेदिकायां शार्दूलचर्मव्यवधानवत्याम् Kumâras. 3,44.

व्यवधायक (von 1. धा mit व्यव) adj. 1) *dazwischentretend* Comm. zu Taitt. Prât. 13,15 (व्यवधायिक gedruckt). zu Ṛv. Prât. 5,1. — 2) *unterbrechend, störend* Râga-Tar. 4,622. P. 3,4,57, Schol. Prâjaçkittaviveka im ÇKDr.

व्यवधायिक Comm. zu Taitt. Prât. 13,15 fehlerhaft für व्यवधायक.

व्यवधारण scheinbar bei Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 150, wo aber अर्थबलाद्यवधारणं zu lesen ist.

व्यवधि m. = व्यवधान Çabdar. im ÇKDr.

व्यवन zur Erklärung von व्योमन् Nir. 11,40.

व्यवलम्बिन् (von लम्ब् mit व्यव) adj. *sich stützend, fest stehend*: अव्यवलम्बि संवत्सरायतनम् Çâṅkh. Br. 26,1.

व्यववद्य (von वद् mit व्यव) adj. *zu beschreien* Pañkav. Br. 15,7,3.

व्यवशाद॑ (von शद् mit व्यव) m. *das Abfallen, Zerfallen* Çat. Br. 2,1,2,16.

व्यवसर्ग॑ (von सर्ज् mit व्यव) m. 1) *Freilassung* Çat. Br. 6,2,2,38. — 2) *das Spenden* P. 5,4,2. Vjutp. 31. °रत 77. °परिणात Burnouf in Lot. de l. b. l. 312.

व्यवसाय (von सा mit व्यव) m. 1) *Beschliessung; Beschluss, Entschluss, Vorsatz; Entschlossenheit*; = सत्त्व AK. 3,4,22,215. व्यवसायश्च विज्ञेयः प्रतिज्ञाहेतुसंभवः Sâh. D. 380. 378. Tattvas. 30. व्यवसायात्मिका बुद्धिः Bhag. 2,41. 10,36. 18,59. MBh. 1,2276. 7262. 2,2504. 2512. 3,2970. 8050. कृतं कीदृं व्यवसायश्च कारणम् 16719. एवं सर्वं विनिश्चित्य व्यवसायं स्वधर्मतः 4,970. °द्वितीयो ऽहं मनसा भारमुद्वहन् 7,6997. 13,399. बुद्धिर्हि व्यवसायेन लक्ष्यते (so ed. Bomb.) 14,1194. 15,227. पूर्वमेवैष हृदये व्यवसायो ऽभवन्मम 845. R. 2,30,41. 3,59,13. 4,14,11. 26,14. 31,36. 40,5. 42,11. 14. 5,19,30. 56,93. 6,1,10. Kâm. Nîtis. 16,37. Ragh. 8,64. Varâh. Bṛh. S. 16,38. Spr. (II) 1082. 1599. 2532. 3408. (I) 2879. 4634. Prab. 64,15. °बुद्धि adj. Bhâg. P. 2,2,1. 3. 5,14, 2. 7,3,20. Pañkat. 60,7 (अध्यवसाय ed. Bomb.). अत्रैव °परो भव 133,16. व्यवसायं विना कर्म न फलति 17. 134,10. 215,22. °वर्तिन् Kâm. Nîtis. 18,68. अर्थानर्थौ विनिश्चित्य व्यवसायं भजेत्ततः R. 5,90,12. व्यवसायं कर् MBh. 1,6176. Spr. (II) 1545. क्रियां प्रति MBh. 1,7260. 3,4811. आश्रित° Kâm. Nîtis. 17,32. कर्मसु MBh. 12,8217. भोक्तुं पुरुषकारेण दुष्टस्त्रियमिव श्रियम्। व्यवसायं सदैवेच्छेत् Spr. 4677. व्यवसायाद्विचलनम् Sâh. D. 94. रामाभिषेक° R. 2,1 in der Unterschr. R. Gorr. 2,126 in der Unterschr. Kumâras. 4,45. Spr. 2861. Prab. 92,7. Personificirt R. 7,109, 6. VS. 55. Mârk. P. 50,27. — 2) *erstes Innewerden* Nîlak. 49.

व्यवसायवत् (von व्यवसाय) adj. *Entschlossenheit besitzend, entschlossen, resolut, unternehmend* MBh. 7,6020. 6595. Hariv. 15183. अ° Trik. 3,1,11.

व्यवसायिन् (wie eben oder von सा mit व्यव) adj. dass. MBh. 9,2880. R. 4,26,12. 28,31. Kṛshis. 8,4. Suçr. 1,123,17. Spr. (II) 113 (M.). 1926. 2150. 2584. Kathâs. 87,23. 123,154. Mârk. P. 20,36. Sâh. D. 179,10. Bhâg. P. 11,16,31. Pañkat. 134,10. 138,7. अ° Bhag. 2,41. Spr. (II) 706.

व्यवसित s. u. सा mit व्यव.

व्यवसिति (von सा mit व्यव) f. = व्यवसाय als Erklärung von पद् AK. 3,4,16,96; vgl. Stenzler zu Kumâras. 6,14. *fester Vorsatz, Entschlossenheit* Spr. (II) 4022 (Conj.).

व्यवस्त partic. nach dem Comm. so v. a. बद्ध, अवनद्ध. अव्यवस्ता चेद्राटी Âçv. Çr. 4,9,4. 5.

व्यवस्था (स्था mit व्यव) f. = संस्था Halâj. 5,33. = स्थिति 51. = निष्ठा 67. = प्रतिनियम und नियम bei Comm. 1) *das je-anders-Sein, Besonderheit* Âçv. Çr. 10,6,18. Kâtj. Çr. 1,3,4. व्यवस्थातो नाना Kaṇ. 3,2,20. Kap. 1,29. Comm. zu 12. Wilson, Sâṁkhjak. S. 48. 70. Sâh. D. 3,11. Ind. St. 8,222. Comm. zu Kâtj. Çr. 2,7,6. Siddh. K. zu P. 1,2,36. Mit. 47,4 v. u. वर्णाश्रमव्यवस्थाश्च न तदासन्न संकरः Vâju-P. bei Muir, ST. 1,29, N. 49. Verz. d. Oxf. H. 16,b,21. 44,b,26. Bhâg. P. 5,19,4. 12,2,2. नष्टधर्मव्यवस्थ adj. R. 7,8,27. अहोरात्रव्यवस्थाया विना मासर्तुसंक्षयः: *wenn nicht Tag und Nacht von einander geschieden wären* Mârk. P. 16,34. मरुद्गत्पव्यवस्थया Bhâg. P. 12,7,10. शेषस्योदात्तता वा स्यात्स्वारता वा व्यवस्थया so v. a. *der Çesha ist entweder* udâtta

oder svarita, *in jedem einzelnen Falle bestimmt* (nicht ad libitum) Comm. zu Taitt. Prât. 19,3. व्यवस्थायाम् so v. a. *in allen und jeglichen Fällen* MBh. 5,3233. — 2) *Verbleib, das Verharren an einem Orte:* महारत्नानि शंकरः । उत्पाद्य भगवांस्तत्र व्यवस्थामादिदेश सः Kathâs. 109,71. — 3) *Bestand, Constanz:* अव्यवस्था सर्वत्र MBh. 13, 2194. अव्यवस्थाभवद्योगा ताभ्यामन्योऽन्यविग्रहे R. 6,69,37. भङ्गं जयं चापतुरव्यवस्थम् Ragh. 7,51. स्थलारविन्दश्रियमव्यवस्थाम् Kumâras. 1, 33. — 4) *das Feststehen, Ausgemachtsein; eine bestimmte Regel in Betreff von Etwas* (geht im comp. voran): एकशब्दस्य व्यवस्थार्थं समर्थग्रहणम् so v. a. *damit die Bedeutung des Wortes* एक *feststehe* P. 8,1, 65, Schol. Kull. zu M. 8,157. Kusum. 53,10. 55,14. Verz. d. Oxf. H. 163,*a*, No. 358. 164,*b*, No. 363. 165,*b*, No. 367. 171,*b*,39. fg. 350,*b*, No. 824. व्यवस्थया *in festgesetzter Weise* Bhâg. P. 9,1,39. fg. — 5) *feste Ueberzeugung, — Ansicht:* इति नास्ति व्यवस्थास्मिन्क्वेदं संतिष्ठते जगत् R. Gorr. 2,116,36. — 6) *ein bestimmtes Orts- oder Zeitverhältniss:* पूर्वापरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायाम् P. 1,1,34. Vop. 3,9. Comm. — 7) *Zustand, Lage:* चिन्तय स्वव्यवस्थाम् Spr. (II) 1409. Râga-Tar. 5,461. 6,6. 53.327. — 8) *Fall:* अमन्त्रयत कां कां न व्यवस्थां पार्षदां गणाः Râga-Tar. 8,907. कथाव्यवस्थासु so v. a. *Gelegenheit* 5,80.

व्यवस्थातर् (von स्था mit व्यव) nom. ag. (mit caus. Bed.) *Feststeller, Bestimmer:* अत्र कल्पे भवान्ब्रह्मा व्यवस्थाता च कर्मसु Pańkar. 1,14,27.

व्यवस्थान (wie eben) 1) nom. ag. etwa *Verharrer:* Vishṇu MBh. 13, 6991. — 2) n. *a) das Verbleiben, Verharren:* न विद्यते व्यवस्थानं (= मर्यादा Nîlak.) क्रुद्धयोः कृष्णयोः क्वचित् MBh. 8,4450. 12,322. धर्मे 1,4151. R. 7,13,18. अस्ति पाटलिपुत्राख्यं भुवो ऽलंकरणं पुरम् । पूर्णावर्णाव्यवस्थानिस्तैस्तैः सन्मणिभिः चितम् ॥ Kathâs. 35,54. *Standhaftigkeit:* आत्मव्यवस्थानकर (आत्मव्यवस्थान = मनःस्थैर्य Nîlak.) MBh. 3,66. अ° 9, 1765. — *b) Zustand* Bhâg. P. 2,8,22. 9,18,38. व्यवस्थाने ऽम्भसो वेला Halâj. 5,53.

व्यवस्थानप्रज्ञप्ति f. Bez. *einer best. hohen Zahl* Lalit. ed. Calc. 168,18. fg.

व्यवस्थापक (vom caus. von स्था mit व्यव) nom. ag. *feststellend;* davon nom. abstr. °त्व n. Kusum. 38,13. n. wohl nur fehlerhaft für व्यवस्थापन Müller, SL. 146. — Vgl. दुर्व्यवस्थापक.

व्यवस्थापत्र n. *Urkunde* Trik. Ind. S. 10,*a*,4 v. u.

व्यवस्थापन (vom caus. von स्था mit व्यव) n. 1) *das Aufrichten, Ermuthigen* R. 5,78 in der Unterschr. — 2) *das Feststellen* Kâm. Nîtis. 3 in der Unterschr. Nîlak. 53. Wilson, Sâṁkhjak. S. 158. Kusum. 58,18. Kull. zu M. 1,3. Müller, SL. 146 (व्यवस्थापक gedr.).

व्यवस्थापनीय (wie eben) adj. *festzustellen* Kull. zu M. 9,242.

व्यवस्थाप्य (wie eben) adj. *für jeden einzelnen Fall festzustellen* Vop. 4,24, v. l. impers. ebend. im Text.

व्यवस्थारत्नमाला f. Titel einer Schrift Gild. Bibl. 498.

व्यवस्थासारसंग्रह m. desgl. Verz. d. Tüb. H. 19.

व्यवस्थित s. u. स्था mit व्यव. Davon °त्व n. *Bestand, Constanz, das Bleibendsein* Suçr. 1,147,3.

व्यवस्थिति (von स्था mit व्यव) f. 1) *Besonderheit, Unterschiedenheit:* ज्ञानयोग° Bhag. 16,1. कार्याकार्य° 24. Sarvadarçanas. 6,2. Verz. d. Oxf. H. 137,*a*,12. — 2) *das Verbleiben, — Verharren:* स्वरूपेण Bhâg. P. 2, 10,6. Kusum. 57,11. सत्ये Bhâg. P. 10,1,59. 11,5,11. *Standhaftigkeit* MBh. 12,9872 (Nîlak. nimmt अ° an, was er durch अनिकेतत्व erklärt). *Bestand, Constanz* Kathâs. 94,4. — 3) *das Feststehen, Ausgemachtsein, Bestimmtsein, Bestimmung* M. 10,70. Kull. zu 8,156. इति धर्मव्यवस्थितिः (धर्मो व्यवस्थितः die neuere Ausg.) Hariv. 6096. — Vgl. वर्ण°.

व्यवस्रंस (von स्रंस् mit व्यव) m. *das Auseinanderfallen:* अ° Pańkav. Br. 13,11,5. 14,5,4.

व्यवहरण (von हर् mit व्यव) n. = व्यवहार *Rechtshandel* Lois. zu AK. 1,1,5,9.

व्यवहर्तर् (wie eben) nom. ag. 1) *der sich mit Etwas beschäftigt, — abgiebt* Wilson, Sâṁkhjak. S. 86. एभिः Jâǵn. 2,40. — 2) *Richter* Mit. im ÇKDr.

व्यवहर्तव्य (wie eben) partic. fut. pass. 1) n. *zu handeln, zu verfahren:* नयेन व्यवहर्तव्यं पार्थिवेन यथाक्रमम् Hariv. 5277. न स्वेच्छं Spr. (II) 483. यथावसरम् Hit. 62,9. Pańkat. ed. orn. 48,21. — 2) *zu gebrauchen, zu verwenden:* यत्र लोहादिपात्रे तैर्भुक्तं तत्संस्कृत्यापि न व्यवहर्तव्यम् Kull. zu M. 10,51.

व्यवहार (wie eben) m. in Ableitungen zu व्या° gesteigert gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7. Vop. 7,3. 1) *das Verfahren, Treiben, Handlungsweise* MBh. 12,3195. fg. 13,1640. व्यवहारं परिज्ञाय वध्यः पूज्यो ऽथ वा भवेत् Spr. (II) 2387. Sâh. D. 703. रविसंध्ययोर्नायकनायिकाव्यवहारः 307, 14. fg. मम व्यवहारमष्टौ लोकपाला एव जानन्ति Hit. 65,1. सकलराज्यव्यवहाराङ्गं ज्ञातम् 133,11. तत्कथं सुरक्षिते ऽप्यस्मिन्गृह एवंविधो व्यवहारः Pańkat. 45,13. तदद्यारभ्यास्मदाज्ञयास्मिन्नरण्ये व्यवहारः कार्यः Hit. 91,21. fg. तवोपरि न सदृशव्यवहारः (adj.) 69,4. व्याज° Dhûrtas. 76,9. — 2) *Verkehr* Nir. 1,2. भक्तिं मैत्रीं च शौचं च ज्ञानीपाद्यवहारतः Kâm. Nîtis. 4,38. व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा Spr. (II) 3189. 2593. समैः सख्यं व्यवहारं च (कुरुते) (I) 5180. °बहिष्कृत Kathâs. 7,23. अशिष्ट° mit Siddh. K. zu P. 2,3,27. — 3) *Thätigkeit:* व्यवहारे स्थितः Bâlab. 38. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,503, Çl. 6. *Beschäftigung, das sich-Abgeben mit Etwas:* कितव° (subj.) P. 2,1,10, Vârtt. 3. ऋत्विगादि° Müller, SL. 169. शस्त्र° (obj.) Ragh. 3,62. परदार° Çâk. 104,23. पटादिसंप्रदाय° Kusum. 48,15. fg. गपान° Bhâshâp. 105. वाणिज्य° Kathâs. 43,70. नास्य (नैष die ältere Ausg.) व्यवहारो ऽस्त्रेषु *er hat Nichts zu schaffen mit* Uttarar. 96,19 (127,3). किमत्र वाग्व्यवहारेण so v. a. *was soll man hier viele Worte verlieren?* Mâlav. 13,22. fg. — 4) *Geschäft, Handelsgeschäft, Handel* M. 3,64. MBh. 3,13119. R. 7, 101,13. Spr. (II) 2111. 2216. 3042. 3618. Kathâs. 23,84. Pańkat. 122, 2. वाणिज्यं व्यवहारेषु (शोभते) Spr. 5172. neben वणिक्कर्मन् Pańkat. 7, 9. गान्धिक° 17. व्यवहारेण जीवन् M. 7,137. पक्वान्नव्यवहारेण विपणितः परस्परम् Hariv. 11208. असंख्यहेमरत्नादिव्यवहारार्जितश्रियः Kathâs. 54,168. महतः कुर्वन्व्यवहारान् 67,47. (प्रावर्तताऽत्र) वणिक्कर्तुं व्यवहारं निजोचितम् 54,190. हिरण्यकोटीसहस्रैर्व्यवहारं कुर्वन् Saddh. P. 4,12,*a*. *Vertrag* M. 8,163. व्यवहारं यमाचरेत् 167. 10,53. Râga-Tar. 6, 53. 58. Pańkat. 88,15. = पण (गण Med.) H. an. 4,277. Med. r. 295. als Bed. von पण् Dhâtup. 12,6. — 5) *Hergang, Vorgang* Nîlak. 168. — 6) *Rechtshandel, Streitsache, Process; Rechtspflege* AK. 1,1,5,9. 3,4, 29,224. H. 262. व्यवहारान्दिदृक्षुः पार्थिवः M. 8,1. व्यवहाराणां द्रष्टा

AK. 2,8,1,5. H. 720. PAÑKAT. 165,6. 7. M. 8,7. 45. 49. 61. 148. 199. व्यवहारस्य निर्णयः 409. 9,250. 8,420. JÂGÑ. 1,342. 2,1. Verz. d. Oxf. H. 7,*b*,5. 86,*a*,8. MBH. 12,3205. 4416. fgg. 13,2058. R. 1,7,7. MṚKKH. 141,6. 142,20. केन सह मम व्यवहारः 146,1. 3. RAGH. 17,39. MÂLAV. 12,4. मतमातिकव्यवहारवत् MÜLLER, SL. 104. MÂRK. P. 120,2. = न्यास (d. i. न्याय) MED. — 7) *der gewöhnliche Hergang im Leben, das gemeine Leben, allgemeiner Brauch* PAT. in MAHÂBH. 39. BHÂG. P. 4,29,12. 5,10, 13. 22. 11,1. 12,4. 8. 12,4,30. इत्येतद्व्यवहारान्निर्णेतुं न शक्यते HIT. 73, 22. लोके तथा व्यवहारात् H. 228, Schol. व्यवहाराग्रि PAÑKAR. 1,14,33. °सिद्धान्त Schol. zu KAP. 1,106. इदानीं सूत्रधारः सर्वं प्रयोजयतीति व्यवहारः SÂH. D. 129,17. im Gegens. zu परमार्थ NILAK. 175. Ind. St. 10, 291. fg. कश्च व्यवहारस्तत्र (देशे) PAÑKAT. 233,10. देश° HIT. 58,18. wohl hierher die Bed. स्थिति H. an. MED. — 8) *Gebrauch eines Ausdrucks, das Reden von* KAP. 1,121. Schol. zu 88. Spr. (II) 3425. अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः, प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक् TARKAS. 11. Z. d. d. m. G. 6,29, N. 7. लोके धूमादिदर्शनानन्तरं वह्न्यादिव्यवहारश्च 7,299, N. 4. NILAK. 53. 64. MUIR, ST. 2,217,4 v. u. SÂH. D. 5,15. 6,12. 22,16. 116,9. KUSUM. 22,5. 6. 13. fg. 43,13. SARVADARÇANAS. 3,16. fg. 27,3. *Bezeichnung:* इत्यादिषु रुद्रशब्देन व्यवहारात् MUIR, ST. 4,258. 388, N. 21. Verz. d. Oxf. H. 109,*a*,29. Schol. zu GAIM. 1,1,18. — 9) in der Math. *Bestimmung* COLEBR. Alg. 103. 112. 286. — 10) bildliche Bez. *der Strafe* MBH. 12,4428. *des Schwertes* H. ç. 143. — 11) *ein best. Baum* H. an. MED. — Vgl. तत्र°, दुर्व्यवहार, मिश्र°, यथाव्यवहारम्, लोक° (als subst. auch Spr. 4481. MÜLLER, SL. 169. NILAK. 64. *allgemeiner Brauch* könnte hinzugefügt werden).

व्यवहारक (wie eben) 1) m. *Geschäftsmann* PAÑKAT. 138,15. — 2) f. व्यवहारिका *a) Dienerin* R. 2,66,13. die ed. Bomb. liest व्यावहारिकाः, das der Comm. als m. erklärt (व्यवहारे बाह्याभ्यन्तरसकलराज्यकृत्ये नियुक्ता अमात्याः); GORR. liest राजयोषितः. — *b) Handel und Wandel, das gewöhnliche Thun und Treiben* (लोकयात्रा). — *c) Besen.* — *d) Terminalia Catappa* (इङ्गुद, इङ्गुदी) H. an. 3,6. MED. k. 231.

व्यवहारज्ञ adj. *mit dem Hergang im Leben vertraut* so v. a. *erwachsen, mündig:* बाल आ षोडशाद्वर्षात्पोगण्डो ऽपि निगद्यते। परतो व्यवहारज्ञः स्वतन्त्रः पितरावृते॥ NÂRADA in VJAVAHÂRATATTVA nach ÇKDR.

व्यवहारतत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛtitattva, der über *den Process* handelt, GILD. Bibl. 465. 478. 489. Verz. d. Oxf. H. 290,*b*, No. 699. 279,*b*,6. 7.

व्यवहारतिलक Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 292,*b*,18.

व्यवहारत्व n. nom. abstr. zu व्यवहार 6) MBH. 12,4418. zu 7) KUSUM. 48,16.

व्यवहारदर्शन n. *das Prüfen einer Streitsache, Rechtsprechen* MIT. nach ÇKDR.

व्यवहारदीधिति f. Titel eines Abschnitts im Râgadharmakaustubha, der über *den Process* handelt, Verz. d. Oxf. H. 272,*b*, No. 645.

व्यवहारनिर्णय m. Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,7. 292,*b*,19. Verz. d. Cambr. H. 67.

व्यवहारपद n. *Rechtsfall* JÂGÑ. 2,5.

व्यवहारपाद m. *einer der 4 Theile* (*Anklage, Vertheidigung, Beweis, Spruch*) *in einem Processe* ÇKDR. und WILSON; vgl. व्यवहारस्य प्रथमः पादः MṚKKH. 142,20.

व्यवहारमयूख m. Titel eines Abschnittes im Bhagavadbhâskara, der über *den Process* handelt, Verz. d. Oxf. H. 280,*a*, No. 655. fg.

व्यवहारमातृका f. *der Process mit allen seinen Theilen* Verz. d. Oxf. H. 263,*a*,15. Verz. d. B. H. No. 1403.

व्यवहारमाधव Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. B. H. No. 1403.

व्यवहारमार्ग m. *Rechtsfall* ÇKDR. nach MIT.

व्यवहारमाला f. Titel einer Schrift über *den Process* MACK. Coll. 1,26.

व्यवहारयितव्य (vom caus. von हर् mit व्यव) adj. *zu beschäftigen mit* (instr.): कृषिवाणिज्यादिना MEDHÂT. bei KULL. zu 8,49.

व्यवहारवत् (von व्यवहार) m. *Geschäftsmann* Spr. 1987 (यथासंव्यव° liest der Comm.). am Ende eines comp. *sich beschäftigend mit:* त्वक्सार° M. 10,37 = MBH. 13,2588.

व्यवहारविधि m. *Rechtsverfahren; Rechtslehre* ÇKDR. nach MIT.

व्यवहारविषय m. *Rechtsfall* ÇKDR. und WILSON.

व्यवहारसमुच्चय m. Titel einer Schrift über *den Process* Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,8. 292,*b*,19. fg. Verz. d. Cambr. H. 68.

व्यवहारसार n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 279,*b*,8. Comm. zu KÂTJ. ÇR. 4,7,4.

व्यवहारसिद्धि f. desgl. TÂRAN. 302.

व्यवहारस्थान n. *Rechtsfall* ÇKDR. nach MIT.

व्यवहारासन (व्यवहार + 1. आस) n. *Richterstuhl* RAGH. 8,18.

व्यवहारिक fehlerhaft für व्यावहारिक.

व्यवहारिन् (von हर् mit व्यव) 1) adj. *verfahrend, zu Werke gehend:* असदृश° HIT. 69,4, v. l. यथाशास्त्र° KULL. zu M. 7,31. fg. — 2) adj. *Geschäfte machend:* विपणि° MBH. 12,8403. कूटस्वर्ण° JÂGÑ. 2,297. अयो° (= शस्त्रविक्रयक Comm.) VARÂH. BṚH. 19(18),1. m. *Geschäftsmann, Kaufmann* MBH. 15,210. Spr. (II) 3639. KATHÂS. 26,133. fg. RÂGA-TAR. 1,117. 4,711. Z. d. d. m. G. 14,570,8. ÇATR. 10,77. 14,104. समुद्र° ÇÂK. 90,18. — 3) m. N. einer mohammedanischen Secte WILSON, Sel. Works I, 264.

व्यवहार्य (wie eben) adj. 1) *womit man sich befassen kann:* अ° MÂṆḌ. UP. 7 = WEBER, RÂMAT. UP. 338. — 2) *mit dem man verkehren darf, verkehrsfähig* KÂTJ. ÇR. 22,4,28. JÂGÑ. 3,226. MBH. 4,1314. fg.

व्यवहित s. u. 1. धा mit व्यव.

व्यवहृति (von हर् mit व्यव) f. 1) *das Verfahren, Art und Weise zu handeln* RÂGA-TAR. 4,397. 8,1031. SÂH. D. 415. — 2) *Thätigkeit* RÂGA-TAR. 8,2464. — 3) *Verkehr* RÂGA-TAR. 8,1910. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*, No. 475. — 4) *geschäftlicher Verkehr, Handel* BHÂG. P. 10,87,36. — 5) *Rechtshandel, Streitsache, Process* Verz. d. Oxf. H. 265,*b*,2. °तत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛtitattva 289,*b*, No. 693.

व्यवाय (von 3. इ mit व्यव) 1) m. *a) das Dazwischentreten, Trennung durch Einschieben* LÂṬJ. 1,11,12. ÂÇV. ÇR. 3,10,13. संयोगानां स्वरभक्त्या व्यवायः ṚV. PRÂT. 14,25. व्यवाये शसलैः AV. PRÂT. 3,93. अकारव्यवाये 2,92. fg. P. 6,1,136. 8,3,58. 4,2. मात्रकाल° TAITT. PRÂT. 2,25,

Comm. व्यवायेषु (wohl fehlerhaft für व्यवायिषु) शसचटतवर्गीयेषु (so ist zu lesen) 13,15. अ° Kâtj. Çr. 8,7,11. 8,5. RV. Prât. 2,1. व्यवाय = विघ्न, अन्तराय H. 1509. Halâj. 2,246. = व्यवधान H. an. 3,503. = अन्तर्धि Med. j. 102. — b) coitus AK. 2,7,56. H. 538. H. an. Med. Halâj. 5,29. MBh. 1,111. Suçr. 1,18,9. 51,21. 175,10. 204,18. 318,4. 2,345,17. 466,10. Vâgbh. 11,32. Çârṅg. Saṁh. 3,8,24. Cit. beim Schol. zu Çâk. 20,9. Varâh. Bṛh. S. 28,7. Râǵa-Tar. 5,280. Bhâg. P. 1,16,23. 2,1,3. 4,11,15. 29,14. 5,13,18 (so v. a. Geilheit). 14,6. 32. 17,12. 6,4,52. 9,9,25. 11,5,11. 13. 12,3,40. Müller, SL. 52. Ind. St. 10,103, N. अति° Suçr. 2,147,7. — c) das Eindringen: यत्र सोमः सह्याग्निना । व्यवायं (= संचारं Nilak.) कुरुते नित्यम् MBh. 14,608. von Gift Suçr. 2,253,20. — d) Umwandlung (= परिणाम Comm.): गुण° Bhâg. P. 8,6,11. — e) = शुद्धि Dhar. im ÇKDr. — 2) n. = तेजस् Med.

व्यवायिन् (wie eben) adj. 1) dazwischen tretend, trennend P. 6,2,166. RV. Prât. 11,9. 10,2. AV. Prât. 2,38, Comm. पद° RV. Prât. 11,8. — 2) den Beischlaf vollziehend Çrâddhat. im ÇKDr. अति° Suçr. 2,445,17. — 3) eindringend, sich in einem Andern ausbreitend Suçr. 1,151,17. Oel 182,2. Salz 227,2. 247,11. 2,477,4. 253,15. व्यवायि तद्यथा भङ्गा फेनं चाहिसमुद्भवम् Çârṅg. Saṁh. 1,4,19.

व्यवेत (wie eben) partic. getrennt, geschieden RV. Prât. 11,9. Taitt. Prât. 13,7. पदेन RV. Prât. 10,2. Comm. zu AV. Prât. 1,101 und Taitt. Prât. 6,3. व्यञ्जन° AV. Prât. 1,98. 3,62. VS. Prât. 3,64. Taitt. Prât. 1,17. 4,51. 7,5. अकारव्यवेतत्व n. Comm. zu 1,19. — Vgl. unter 3. इ mit व्यव.

1. व्यशन (von 1. अश् mit वि) adj. in Verbindung mit अत्य symbolische Bez. eines Monats Kâth. 18,12 bei Weber, Ǵyot. 114. — Vgl. वैयशन.

2. व्यशन (2. वि + 2. अशन) adj. (f. आ) sich des Essens enthaltend Hariv. 7915 nach der Lesart der neueren Ausg.

व्यँश्निय m. in einer Formel TS. 1,7,9,1. 4,7,11,2.

व्यश्नुविन् m. in derselben Formel VS. 22,32. nach Mahidh. ein Genius der Speise.

व्यश्व (2. वि + अश्व) 1) adj. pferdelos Shaḍv. Br. 3,10. MBh. 8,4099. Ragh. 7,49. — 2) m. N. pr. eines Ṛshi RV. 1,112,15. 8,9,10. 23,16. 23. 24,22. 26,9. 9,65,7. Âṅgirasa, Verfasser von RV. 8,26. ein alter König MBh. 2,323. 328. plur. RV. 8,24,28. — Vgl. वैयश्व fg.

व्यष्टक m. s. u. मुष्टक.

व्यँष्टका (2. वि + अ°) f. der erste Tag in der dunklen Monatshälfte TS. 7,5,7,1. TBr. 1,8,10,2. Kâth. 33,7. Lâṭj. 9,3,8.

व्यँष्टि (von 1. अश् mit वि) 1) f. a) das Erlangen, Erfolg TS. 6,4,8,3. Çat. Br. 10,2,4,8. 12,3,3,2. 13,3,7,3. 4,1,1. सर्वा व्यष्टीर्व्यशिष्यन् Âçv. Çr. 10,6,1. Kaush. Up. 1,7. — b) Einzelding, Einzelwesen (Gegens. समष्टि) Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 14. 312. Vedântas. (Allah.) No. 23. 28. 30. Schol. zu Kap. 1,98. Weber, Râmat. Up. 348. 350. in dieser Bed. wohl auf 2. अस् mit वि zurückzuführen; vgl. Vedântas. 30. — 2) m. N. pr. eines Lehrers Çat. Br. 14,5,5,22. 7,3,28.

व्यस् s. u. 2. अस् mit वि.

1. व्यसन (von 2. अस् mit वि) n. 1) das Hinundherbewegen: पुच्छस्य P. 3,1,20, Vârtt. 3. — 2) Fleiss, Betriebsamkeit: विद्या नो व्यसनं विना Spr. (II) 3520. शस्त्रे (I) 2005. विद्यायाम् 2773. श्रुतौ 2825. — 3) das Hängen an Etwas mit ganzer Seele, leidenschaftliche Neigung zu Etwas, das Versessensein auf Etwas: दाने Spr. (II) 3132. (I) 3143. शिथिलीकृतकैलासनिवास° adj. Kathâs. 11,32. तत्सेवा° 27,148. दान° 35,35. दरिद्रस्य त्यागैकव्यसनस्य 36. वाद° 66,13. द्यूत° 73,186. Râǵa-Tar. 8,71. पानभोजनव्यवायादि° Bhâg. P. 5,14,6. किमिदानीमाशाव्यसनेन Mâlatîm. 154,13. व्यर्थजीवित° Pańkat. 235,9. वेश्या° Kathâs. 43,23. Hit. 71,5. मृग° Bhâg. P. 4,26,4. — 4) ohne Ergänzung Versessenheit, eine den Menschen beherrschende Leidenschaft, insbes. eine tadelnswerthe, eine schlechte Passion, Laster: हे साधो व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः Spr. 2487. Kathâs. 31,67. 32,14. 58,98. 60,76. 61,157. किमेष व्यसनं पुष्णाति 78,13. Bhâg. P. 4,26,26. Liebhaberei, Steckenpferd: °संस्थित Spr. (II) 861. व्यसनैर्धनानि (कृतानि) 1674. आरब्धैर्व्यसनैः Râǵa-Tar. 5,165. समानशीलव्यसनेषु सख्यम् Spr. 2236. — दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च । व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत् ॥ M. 7,45. fg. Varâh. in Ind. St. 10,167. R. Gorr. 2,2,28. कामसमुत्थानि चत्वारि 3,13,2. क्रोधाद्भवानि त्रीणि 3. Kâm. Nîtis. 14,6. 7. सप्त Spr. (II) 2993. H. 739. चत्वारि महोत्तिताम् Spr. (II) 2238. M. 7,52. Jâǵń. 3,240. MBh. 2,203. Spr. (II) 141. व्यसनेष्वसक्तः 1224. व्यसनेन तु मूर्खाणाम् (कालो गच्छति) 1711. 2288. (I) 1845. 2844. 2912. 3040. 4777. व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते 5041. 5043. व्यसने सज्जमानं हि क्लेशयेद्व्यसनाश्रयैः Kâm. Nîtis. 7,58. युवाप्यनर्थैर्व्यसनैर्विहीनः Ragh. 18,13. Çâk. 38. Kathâs. 26,198. Râǵa-Tar. 6,153. अ° adj. Jâǵń. 1,309. MBh. 12,3910 (ऽव्य° mit der ed. Bomb. zu lesen). वीत° adj. Spr. 2882. — 5) Missgeschick, Widerwärtigkeit, Unfall; Uebelstand: व्यसने चोत्थिते रिपोः M. 7,183. 9,299. Jâǵń. 2,118. MBh. 1,435. व्यसने यः परित्यागी 12,6270. R. 2,39,40. 51,21. 53,9. 73,21. 77,19. 92,26. 97,22. 104,24. 3,51,10. Spr. (II) 934. 1221. (I) 2263. 2644. व्यसनानन्तरं सौख्यं स्वल्पमप्यधिकं भवेत् 2914. व्यसनेष्वेव सर्वेषु यस्य बुद्धिर्न हीयते 2915. 3219. Suçr. 1,130,2. Varâh. Bṛh. S. 3,12. 30,13. 32,28. Vikr. 59,1. Kathâs. 33,63. LA. (III) 90,22. Râǵa-Tar. 4,522. Bhâg. P. 1,8,13. 13,32. 3,7,19. 31,21. भर्तृ° MBh. 3,2411. R. 2,51,16. 64,11. 6,72,19. Suçr. 1,122,17. Spr. (II) 3178. Prab. 82,12. Bhâg. P. 4,14,7. महत् R. 2,59,22. अविषह्य Kumâras. 4,30. दुरत्यय Bhâg. P. 1,19,2. 8,22,3. °वागुरा R. 3,72,27. °महार्णव Mṛkkh. 174,6. Bhâg. P. 3,14,17. व्यसनेनार्दितः MBh. 3,2505. व्यसनार्त AK. 3,1,43. H. 381. व्यसने वर्तमानः R. 3,75,18. मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे MBh. 12,8214. त्वां चेद्व्यसनमागतम् R. 2,52,16. व्यसनं प्राप्तः 100,15. 106,4. Spr. 2913. 3117. रामेण प्राप्तं व्यसनमत्युग्रम् MBh. 3,16602. Spr. (II) 1606. व्यसनं गतः Bhâg. P. 8,2,26. व्यसने संप्रवेश्यान्यान् Spr. 5042. व्यसनं दातुम् (II) 3476. °द R. 4,5,21. Varâh. Bṛh. S. 53,79. व्यसनं भेदनं चैव शत्रूणां कारयेत्ततः MBh. 15,238. °काल Spr. (II) 616. व्यसनागमे 1934. 2405. व्यसनोदये (I) 2141. व्यसनोदय adj. 3169. °प्राप्ति Sâh. D. 359. व्यसनात्यय Bhâg. P. 3,23,42. व्यसनावाप 4,22,13. अतिव्यसनापात Râǵa-Tar. 8,791. समान° adj. Ragh. 12,57. अदृष्टपूर्वव्यसना R. 2,38,15. 58,31. अभूतपूर्वव्यसना 6,74,24. Kumâras. 3,73. Bhâg. P. 6,14,48. — सप्तानां प्रकृतीनां राज्यस्य M. 9,295. Kâm. Nîtis. 13,94. राज्य° 14,1. 2. आयुध° M. 7,93. राष्ट्र° Kâm. Nîtis. 13,64. दुर्ग° 30. 65. Spr. (II) 23. बल° 2872. (I) 4630. Kâm. Nîtis. 13,72. कोश° 66. Spr. (II)

154. पान° Kâm. Nitis. 14,20. कर्म° 15,25. स्वबल° so v. a. *Verlust* Kir. 13,15. दुर्भिक्ष° so v. a. *Hungersnoth* Spr. 4630. मृगया° *Unfall —, schlimme Folge bei, von* Kâm. Nitis. 14,24. स्त्री° 57. पान° 61. — 6) *Untergang* (eines Gestirns): चन्द्र° Mṛkkh. 91,3. Çâk. 77. — 7) *Belagerung* oder *Belagerungstruppen* Ind. St. 10,165, N. 198. वसन v. l. — Die Lexicographen kennen folgende Bedd.: अघ AK. 3,4,24,28. अनय 24, 151. सक्तिः स्त्रीपानमृगयादिषु H. an. 3,408. fg. Med. n. 122. दोषः कामजकोपजः AK. 3,4,28,123. निष्फलोद्यम und दैवानिष्टफल Trik. H. an. Med. पाप und अशुभ H. an. Med. विपद् (विपत्ति) AK. H. an. Med. भ्रंश (3,4,18,123) und आधि (3,4,13,100) AK. Eine Etymologie des Wortes Kâm. Nitis. 13,19: यस्माद्धि व्यसति श्रेयस्तस्माद्व्यसनमुच्यते. — Vgl. दुर्व्यसन, नौ°, मारिव्यसनवारक, मूल° und वैयसन.

2. व्यसन adj. Hariv. 7915 fehlerhaft für व्यशन, MBh. 12,3910 für ऽव्यसन.

व्यसनवत् (von 1. व्यसन) adj. am Ende eines comp.: कोश° *der ein Ungemach mit seinem Schatze erlitten hat* Spr. (II) 1950.

व्यसनिता (von व्यसनिन्) f. 1) *Liebhaberei zu* (loc.): षड्भाषास्वपि दृश्यते व्यसनिता Kaurap. 19 in Journ. as. IV sér. t. XI, S. 472. *das Versessensein auf Etwas:* व्यसनितया विग्रहो न विधिः Hit. 94,3. — 2) *eine den Menschen beherrschende Leidenschaft, eine schlechte Passion* Kathâs. 11,23.

व्यसनित्व (wie eben) n. *das Fröhnen, Obliegen:* विषय° Râga-Tar. 5,252.

व्यसनिन् (von 1. व्यसन) adj. 1) am Ende eines comp. *leidenschaftlich ergeben, erpicht —, versessen auf:* समर° Mṛkkh. 1,20. अद्भुत° Spr. (II) 545. सत्यव्रत° (I) 2653. मानोत्सेकपराक्रम° 2879. सच्चरितोदय° 5146. मृगया° Kathâs. 11,10. 21,22. द्यूतक° 26,194. शम° Râga-Tar. 2, 143. दिग्विजय° 4,666. जीर्णोद्धृति° 8,78. 2381. तुरङ्गव्यसनी (so zu lesen) 1287. शकुनिबन्ध° Pańkat. 192,3. — 2) *bösen Neigungen fröhnend, schlechte Passionen habend, lasterhaft* H. 435. Jâǵn. 2,32. Hariv. 767. Kâm. Nitis. 4,56. 13,19. 59. Spr. (II) 23. 639. 1801. 2715. (I) 2901. 3298. 5041 (M.). Varâh. Bṛh. S. 101,13. Kathâs. 15,56. 16,21. 24,58. 26,199. 93,41. Daçak. 2,8. Sâh. D. 159. Pańkat. 163,14. अति° Kathâs. 43,25. अ° Suçr. 1,371,16. Varâh. Bṛh. S. 2, S. 3, Z. 4 v. u. Kâm. Nitis. 14,2. Spr. 2007. 5041 (M.). 5338. — 3) *den ein Unfall betroffen hat, unglücklich* MBh. 3,2741. 7,1276. यैरसि व्यसनी कृतः 11,586. R. 2,40,5. R. Gorr. 2,17,43. Kâm. Nitis. 11,75. Spr. (II) 2063. 2922 (Conj.). सूत° *der einen Unfall mit dem Wagenlenker gehabt hat* MBh. 5,7223. प्रत्यासन्न° *dem ein Unfall droht* (प्रत्यासन्नाः समीपस्थाः व्यसनिनश्चिरदुःखिनो भ्रात्रादयो यस्य सः Nilak.) 12,1422. दुर्भिक्ष° *der mit Hungersnoth zu kämpfen hat* Spr. (II) 2872.

व्यसनोत्सव m. *ein Fest, bei dem man seinen schlechten Passionen freien Lauf lässt, Orgien u. s. w.* Varâh. Bṛh. S. 78,11.

व्यसि (2. वि + असि) adj. *ohne Schwert:* कोश Spr. (II) 3023.

व्यसु (2. वि + असु) adj. (f. eben so) *entseelt, leblos* MBh. 1,958. 963. 8313. 3,2400. 4,777. 7,3318. Verz. d. Oxf. H. 257,a, N. 3. Bhâg. P. 3, 3,1. 5,18,15. 7,3,37 (= अप्राण Comm., Gegens. असुमत्). 10,58. बभूव प्राप्तराज्यः स दशभिर्दिवसैर्व्यसुः so v. a. *starb* Râga-Tar. 5,241. यो व्यधाऽच्छत्रून्व्यसून् so v. a. *tödtete* 3,57.

व्यसुत्व (von व्यसु) n. *Verlust des Lebens* Varâh. Bṛh. S. 71,7.

व्यस्त s. u. 2. अस् mit वि. Hinzugefügt könnte werden: = व्यास, व्याकुल Med. t. 54. *auseinandergerissen, voneinanderstehend, klaffend* Taitt. Prât. 2,12 (अति°). Comm. zu 13 (अति°). 14. शब्द (अ°) Lâṭj. 6,10,18 in Ind. St. 4,268, N. *zerstreut* Weber, Ǵjot. 109. °त्रैराशिक *rule of three terms inverse* Colebr. Alg. 34. °विधि *inversion* 21.

व्यस्तकेश adj. (f. ई) *struppig* AV. 8,1,19.

व्यस्तपद n. *Gegenklage* ÇKDr. nach Mit.

व्यस्तार n. *das Hervorquellen des Brunstsaftes aus den Schläfen eines Elephanten* Trik. 2,8,36. Hâr. 29.

व्यस्थक (2. वि + अस्थन्) adj. *knochenlos* Pańkav. Br. 24,18,7.

व्यह्न् und व्यह्न (2. वि + अ°), loc. व्यह्नि, व्यह्नि und व्यह्ने P. 6, 3,110. Vop. 3,42.

1. व्या, व्ययति Dhâtup. 23,38 (संवरणे). विव्याय P. 6,1,46. Vop. 8,138. विव्ययिथ P. 7,2,66. Vop. 8,62. 139. विव्ययतुस् und विव्यतुस् 139. अव्यत्; व्ययते, अव्यत, विव्ये, विव्याने; °व्याय und °वीय P. 6,1,43. fg. (°वीय angeblich nur nach परि). partic. वीत. med. *sich bergen —, hüllen in:* हरिः पवित्रे अव्यत Ṛv. 9,101,15. इन्दुरव्यत सानो अव्ये 97,12. partic. praes. pass.: पणिभिर्वीयमाणः (so in den Hdschrr. und in den Ausgg.) TS. 1,1,12,2. TBr. 3,3,9,6. entsprechend dem गुह्यमान VS. 2,17. जरायुणा वीतः (so Comm.; आवीतः nach Burnouf) *gehüllt in* Bhâg. P. 3,31,4. मौञ्ज्या मेखलया वीतः *umgürtet* 8,18,24. — Vgl. 7. वी, 3. वीत und वीतसूत्र.

— caus. व्यापयति P. 7,3,37. Vop. 18,6.

— intens. वेवीयते P. 6,1,19. Vop. 20,12. Vgl. 5. वी.

— अधि, °वीत *umwickelt:* अहीन्द्रभोगैः Bhâg. P. 3,8,29. अधिव्ययत्तौ MBh. 1,723 fehlerhaft; s. u. अव.

— अप 1) *abziehen, abdecken:* अपो महि व्ययति चक्षसे तमः Ṛv. 7, 81,1. तन्वोऽरपो ऽपाचीनमपं व्यये AV. 6,91,1. — 2) med. (*sich herauswickeln, sich frei machen*) *leugnen* (intrans.): हृत्वापव्ययते M. 8, 332. अर्थे ऽपव्ययमानः 51. 60. — Vgl. अनपव्ययत्.

— अपि *zudecken:* अद्याइत्रपिं व्ययामसि AV. 1,27,1.

— अभि med. *sich in Etwas hüllen:* अभि व्ययस्व खदिरस्य सारम् Ṛv. 3,53,19.

— अव *abziehen, abdecken:* अवव्ययन्नसितं वस्मे Ṛv. 4,13,4. अवव्ययत्तावसितम् (so ist zu lesen) *das schwarze* (Gewebe) *abdeckend* MBh. 1,723.

— आ *umnehmen* (als Hülle, mit acc.); *sich bergen in* (loc.): आ वो हार्दि भयमाना व्ययेयम् so v. a. *an eure Brust will ich mich flüchten* Ṛv. 2,29,6. आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत 1,166,4. आ जामिरत्के अव्यत 9,101,14. 107,13. — Vgl. unter dem simpl. am Ende, आवीतिन्, प्राचीनावीत, महावीत (?).

— उद्, उद्वीत MBh. 7,635 fehlerhaft für उद्धूत, wie die ed. Bomb. liest.

— उप *umnehmen, umhängen* (die heilige Schnur über die linke Schulter und unter den rechten Arm): उपवीतं देवानाम् उपव्ययते देवलक्ष्ममेव तत्कुरुते TS. 2,5,11,1. उपव्यय TBr. 1,6,8,2. Kâṭh. 36,12. महाधने दुकूलाग्र्ये परिधायोपवीय च Bhâg. P. 4,21,17. — Vgl. उपवीत (*heilige Schnur* auch Hariv. 14844. Ragh. 11,64. Bhâg. P. 5,9,11. 6,19,

7. 7,12, 4. 8,16,39. 18,24. Mârk. P. 34,43) und यज्ञोपवीत.

— नि *umhängen, umnehmen:* नूत्ने निवीय परिधाय च कौशिकाग्र्ये Bhâg. P. 10,83,28. निवीत *behängt* (am Halse): वनमालया 3,8,31. 15, 28. 6,4,37. 10,73,5. — Vgl. निवीत (über अघो° s. Stenzler zu Âçv. Gṛhj. 4,2,9), नीवि, नीवी.

— परि (°व्याय und °वीय absol. P. 6,1,44) *umhüllen, überziehen, herumschlingen; med. sich Etwas als Hülle umnehmen, sich bergen in:* यो युत्सु तन्वं परिव्यत ṚV. 2,17,2. स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत 9,86,32. अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व (= act.) 10,16,7. 9,98,2. मातुर्योना परिवीतो अन्तः 1,164,32. 3,8,4. 4,1,7. 3,2. वस्त्राणि परि गव्यान्यव्यत 9,8,6. 69,4. वाससा 5. 70,2. 107,18. 10,6,1. 46,6. VS. 6,6. 17,4. 5. TS. 6,3,4,5. यदेकस्मिन्यूपे द्वे रशने परिव्ययति 6,4,3. Âçv. Gṛhj. 4,8,15. Kâtj. Çr. 6,3,14. 8,8,15. वासुकिम् । परिवीय गिरौ तस्मिन्नेत्रम् *schlingen um* Bhâg. P. 8,7,1. काषायपरिवीत *gehüllt in* Ragh. 15,77. प्रक्षीर्णमयूखनिचयैः परिवीतमूर्तिः Kir. 5,42. सत्यपाशपरिवीत *umschlungen* Bhâg. P. 9,10,8. नागभोगपरिवीत 10,16,10. परिशोचद्भिः परिवीतः स्वबन्धुभिः *umgeben von* 3,30,18. अपरिवीत *nicht umhüllt:* यूपाः Çat. Br. 3,7,2,4. — Vgl. परिवी und परिव्ययण.

— सम् 1) *zusammenwickeln, zudecken:* पुनः समव्यद्विततं वयन्ती ṚV. 2,38,4. सोव्यत्तमोसि दुधिता समव्यत् 17,4. *hüllen in* (instr.): त्वक्कैः संविव्यधुर्देहान् Bhaṭṭ. 14,74. — 2) *anziehen, sich umgeben mit,* med.: वासो अग्ने विश्वरूपं सं व्ययस्व VS. 11,40. सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूम ṚV. 1,173,6. संविव्यान ओजसा 130,4. संविव्यानश्चिद्धियसे मृगं कः *sich verhüllend* 5,29,4. act.: वासो गुरुपुत्र्याः समव्ययत् Bhâg. P. 9,18,10. — 3) *Jmd Etwas anziehen* (wie ein Gewand) so v. a. *Jmd ausstatten mit:* तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु AV. 7,17,3 (v. l. TS. 3,3,11,3). युवं श्रुष्टिं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः ṚV. 6,72,5. *ausrüsten:* तास्त्वा जरसे सं व्ययन्तु AV. 14,1,45. येभिर्वाचं विश्वरूपां समव्ययत् TBr. 2,7,15,2. — 4) partic. संवीत mit einem im loc. gedachten Worte componirt gaṇa शौण्डादि zu P. 2,1,40. *a) gehüllt in* (instr. oder im comp. vorangehend), *bedeckt, umlegt, umwickelt, umgeben* AK. 3,2,40. H. 1476. Halâj. 4,58. 96. वस्त्रावकर्तन MBh. 3,2354. Spr. 2510. एकवस्त्र° MBh. 3,2336. 2393. 2505. 2597. 13,352. R. 2,12,94. R. Gorr. 2,5,7. 3,52,9. 5,45,4. Kâm. Nîtis. 17,51. Varâh. Bṛh. S. 43,24. Kathâs. 29,53. Mârk. P. 34,86. Bhâg. P. 8,8,45. अवगुण्ठन° Sâh. D. 116. पाण्डुकम्बल° (रथ) AK. 2,8,2,22. H. 754. नीहारेण MBh. 12,10969. छिन्नाभ्रैरिन्दुमण्डलम् R. 3,50,12. गभस्तिजाल° 7,16,2. वसुधारेणु° MBh. 1,6022. शर° 7,5087. दिव्यैः प्रसूनैर्नरनारायणौ (zwei Statuen) Râǵa-Tar. 3,452. भुजगाश्लेषसंवीतजानु Mṛkkh. 1,1. यज्ञोपवीतसंवीताङ्गुष्ठ Mâlav. 46,10. स्वेन सैन्येन संवीता यथादित्याः स्वरश्मिभिः MBh. 14,1896. so v. a. *versehen mit:* सुवर्णजाल° (प्रासाद) 1,6964. 2,1280. R. 3,61,10. 7,15,36. तप्तकाञ्चन° (श्रवण) 3,52,30. 7,18,32. जलकुक्कुट° (सरोवर) Vet. in LA. (III) 5,8. सागरानिल° (देश) Hariv. 6411. मह्रारसमुसंवीतैः सलिलैः R. 3,62,37. कर्ष° *erfüllt von* MBh. 7,8181. बाष्पेण शोकेन विपुलेन च R. 2,66,21. Ohne Ergänzung *verhüllt:* संवीताङ्ग M. 4,49. 8,23. °रुचिरस्तनी Bhâg. P. 3,23,36. अ° *unbekleidet* 5,6,8. 6,18,49. MBh. 3,2302. सु° *schön gekleidet* 14,1994. संवीत *geharnischt* MBh. 4,891. सु° 993. 5,7127. गाढ° R. 4,12,23. °राग *verhüllt* so v. a. *verschwunden* Hariv. 11276. — *b) umgethan, umgelegt:* सितांशुक Gît. 8,11. Kathâs. 73,283. 95,17. Râǵa-Tar. 1,294. — *c)* n. *Gewand:* वल्कलं संवीताय Spr. (II) 1076. — Vgl. संव्यान.

— अनुसम् *hüllen in:* एकवस्त्रानुसंवीता MBh. 11,683. एकवस्त्रार्धसंवीता ed. Bomb.

— उपसम् med. *dazu anziehen:* रायस्पोषमुपसंव्ययस्व AV. 2,13,3. कृष्णाजिनोपसंवीत *gehüllt in* MBh. 15,377. — Vgl. उपसंव्यान.

2. व्या = 3. वी *in Bewegung setzen;* so vermuthen wir für अवतमव्ययम् ṚV. 7,33,4.

3. व्या, व्याति scheinbar in der Stelle: आत्मा च व्याति तेत्रज्ञं कर्माणि च शुभाशुभे MBh. 12,11192. = व्याप्नोति Nilak. es ist aber aller Wahrscheinlichkeit nach ध्याति zu lesen.

व्याकरण (von 1. कर् mit व्या) n. 1) *das Sondern, Scheiden:* श्रुतौ संनिहितयोर्दर्शपूर्णमासयोर्व्याकरणेन Müller, SL. 170. व्यवसायात्मिका बुद्धिर्मनो व्याकरणात्मकम् MBh. 12,9098. 14,988. — 2) *Auseinandersetzung, detaillirte Beschreibung:* धर्म° MBh. 13,5929. Suçr. 1,9,8. 325,19. 336,19. 363,6. 366,16. — 3) *das Offenbaren, Kundthun:* सर्वार्थानाम् MBh. 5,1681. मन्त्र° (pl.) Hariv. 456. 458. — 4) *Enthüllung, Vorhersagung* (bei den Buddhisten) Vjutp. 4. Burnouf, Intr. 54. fgg. Saddh. P. 4,3,a. 6,b. Hiouen-thsang 1,78. Wassiljew 109. 215. — 5) *Entfaltung, Schöpfung* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 152. 160. 323. Windischmann, Sancara 130. Bhâg. P. 2,1,36. — 6) *Grammatik (Analyse)* H. 250. Nir. 1,15. Muṇḍ. Up. 1,1,5. P. Einl. 1. Ind. St. 1,48. 3,260. fg. 5,159. Pat. in Mahâbh. S. 15. 36. MBh. 13,4303. R. 7,36,44. Kathâs. 4,22. वाणी व्याकरणेन (so v. a. *grammatische Correctheit*) भाति Spr. (II) 3545. व्याकरणस्य कर्तुः पाणिनेः (I) 3253. Verz. d. Oxf. H. 7,b,17. 86,b,49. VP. 284. Madhus. in Ind. St. 1,13,5. 16,24. fgg. Râǵa-Tar. 1,176. 5,29. Comm. zu VS. Prât. 1,169. zu AV. Prât. 1,2. zu Taitt. Prât. 1,57. 2,47. 13,16. zu P. 2,4,21. 6,2,14. द्वादशभिर्वर्षैस्त्वावद्व्याकरणं श्रूयते Pañkat. 4,14. Lalit. ed. Calc. 179,4. Hiouen-thsang 1,125. 127. Vie de Hiouen-thsang 165. Wassiljew 218. 221. — Vgl. गर्भ° (zu ändern *detaillirte Beschreibung des Fötus*), प्रश्न°, राम° und वैयाकरण.

व्याकरणकौण्डिन्य m. N. pr. eines Brahmanen Burnouf, Intr. 530. Lot. de la b. l. 489.

व्याकर्तर् (von 1. कर् mit व्या) nom. ag. *Entfalter, Schöpfer* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 158. zu Khând. Up. S. 623.

व्याकार (wie eben) m. *Entwickelung, weitere Ausführung:* पूर्वोक्तस्य Kull. zu M. 11,46. ब्रह्माञ्जलिशब्दार्थ° zu 2,71. 7,182.

व्याकारदीपिका f. Titel einer Schrift Colebr. Misc. Ess. II, 46.

व्याकीर्ण n. *Verwirrung* (der Casus) Pratâpar. 63,a,9. — Vgl. auch unter 3. कर् mit व्या.

व्याकुचित (von कुञ्च्, कुच् mit व्या) adj. partic. *gebogen* Halâj. 4,11.

व्याकुल (von 3. कर् mit व्या) 1) adj. (f. आ) = विहस्त AK. 3,1,43. H. 366. Halâj. 2,227. *a) ganz erfüllt —, voll von* (instr. oder im comp. vorangehend) Pañkar. 1,6,15. बाष्पव्याकुललोचन MBh. 5,7007. अनलज्वालाधूमव्याकुलमूर्धज Kathâs. 25,100. शोकव्याकुलया वाचा R. Gorr. 2,36,26. निद्रा° so v. a. *schlaftrunken* Spr. (II) 675. मृगलोभव्याकुलचित्त Varâh. Bṛh. 27 (25), 6. — *b) ganz mit Etwas beschäftigt:* बलि° Megh. 83. तरुविटपलताग्रालिङ्गन° (पावक) Ṛt. 1,24. व्याकुलेनात्तरा-

त्मना विवेकास्तपस्तपस्यति Prab. 69,1. तपव्याकुलमानस R. 2,47,16. — c) *von einem Gedanken oder einem Gefühle ganz beherrscht, bestürzt, aufgeregt, ausser sich, seiner nicht mächtig* R. 2,37,13. 3,33,19. Kathâs. 21,91. 62,110. इन्द्रारि° (लोक) Bhâg. P. 1,3,28. Pańkat. 144,4. Hit. 9,8. कृतेन स सता नैवासता Spr. 5146. वृष्टिव्याकुलगोकुल Gît. 4, 23. Pańkar. 1,7,72. Z. d. d. m. G. 14,575,21. मनस् MBh. 13,1482. Pańkat. 21,19. °चित्त Suçr. 2,427,11. °चेतस् Mârk. P. 109,39. °हृदय Pańkat. 9,13. व्याकुलेन्द्रिय MBh. 3,15759. R. 2,64,2. 4,24,42. — d) *in Verwirrung —, in Unordnung seiend, verworren* (von Leblosem): मही तस्करशस्त्रनिपातैः Varâh. Brh. S. 3,22. जगत् R. Gorr. 2,116,39. (द्रुमाः) व्याकुलशाखाग्राः R. 2,28,22. हस्तिहस्तपरामृष्टां व्याकुलामिव पद्मिनीम् MBh. 3,2669. दिशः सर्वाः R. 1,65,12 (67,6 Gorr.). पाठ Verz. d. Oxf. H. 174,a,1. व्यवहार *Process* Mrkkh. 138,19. रव H. 1404. Halâj. 1,139. काकुव्याकुलं (adv.) व्याहरन्ती Gît. 6,10. — e) *zuckend:* विद्युत् Uttarar. 64,16 (83,5). — 2) m. N. pr. eines Fürsten (die Form des Wortes steht nicht sicher) Wassiljew 53. — Vgl. गन्ध°, निर्व्याकुल, आकुल, पर्याकुल, संकुल, समाकुल.

व्याकुलता f. nom. abstr. zu व्याकुल 1) c) Kathâs. 63,1. Pańkat. 58, 3. 143,4.

व्याकुलत्व n. dass. Mârk. P. 37,19. Pańkat. 76,12.

व्याकुलध्रुव m. N. pr. eines Fürsten Wassiljew 53. Die Form des Wortes steht nicht sicher.

व्याकुलय् (von व्याकुल), °यति 1) *Jmd in Aufregung versetzen, ausser sich bringen* Pańkar. 3,1,11. Pańkat. 89,14. Schol. zu Kâvjâd. 3,89. — 2) *Etwas in Verwirrung —, in Unordnung bringen:* वेदान्तशास्त्रम् Prab. 20,16. — 3) व्याकुलित partic. gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88. a) *erfüllt —, voll von:* स्मरशरश्रेणिव्रणव्याकुलितामिव Kathâs. 74,242. रोषव्याकुलितेन्नणा Hariv. 15817. स्नेहव्याकुलिताक्षर (वचन) R. Gorr. 1, 24,1. क्रोधव्याकुलिताक्षर 60,7. शोकव्याकुलिताक्षर 2,38,13. शोकव्याकुलितमनस् Pańkat. 142,14. 222,8. भयव्याकुलितहृदय ed. orn. 19,14. — b) *in Aufregung versetzt, bestürzt, ausser sich, seiner nicht mächtig* MBh. 3,686. Spr. (II) 2091. °चेतन R. 3,35,44. चौरानलव्याकुलितान्तरात्मन् Varâh. Brh. 27 (25), 36. °हृदय Pańkat. 55, 5. °मनस् ed. orn. 54,11. चिन्ताव्याकुलितेन्द्रिय R. 2,26,6. 62,2. 7,44,12. — c) *verworren, in Unordnung gebracht, gestört:* कफव्याकुलितानल Suçr. 1,257,16. वाक्यमीषद्याकुलिताक्षरम् R. 4,7,15.

व्याकुलितिन् adj. = व्याकुलितमनेन gaṇa इष्टादि zu P. 5,2,88.

व्याकुलीकर् (व्याकुल + 1. कर्) 1) *ganz mit Etwas erfüllen;* °कृत *erfüllt —, voll von:* सनागदैत्यधर्मिकव्याकुलीकृतसागर Pańkar. 4,3,106. 105. पिपीलिकाभिः सर्वतो व्याप्तो व्याकुलीकृतश्च Pańkat. 171,1. 2. भयव्याकुलीकृतमनस् 63,8. भोजनागमव्याकुलीकृतमनस् Varâh. Brh. 27(25), 31. — 2) *Jmd in Aufregung versetzen, verwirren, ausser sich bringen* Kathâs. 48,83. Prab. 71,8. Pańkat. 254,25. °कृत R. 4,62,3. °मानस Mârk. P. 125,44. — 3) *Etwas in Unordnung bringen, verwirren:* °कृतभूषण R. 5,54,15.

व्याकुलीभू (व्याकुल + 1. भू) *in Aufregung gerathen* u. s. w.: °भूत Pańkat. 46,1 (mit der ed. Bomb. °भूता st. भूत्वा zu lesen). 142,3. 4.

व्याकूति f. = भङ्गि Halâj. 4,77. — Vgl. आकूति.

व्याकृत s. u. 1. कर् mit व्या und vgl. वैयाकृत.

व्याँकृति (von 1. कर् mit व्या) f. 1) *Sonderung* Çat. Br. 3,2,2,16. 4, 1,2,11. — 2) *Auseinandersetzung, detaillirte Beschreibung, weitere Ausführung* Suçr. 1,9,10. *Erklärung:* वेदान्ततत्त्व° Verz. d. Oxf. H. 150,a, No. 319.

व्याकोप m. Kusum. 6,9.

व्याकोश (2. वि - 2. आ + कोश) 1) adj. *aufgeblüht, blühend* AK. 2,4, 1,7. H. 1127. Halâj. 2,32. MBh. 7,1365. 9,299. 12,899. R. 3,76,15. 6,75,16. Çiç. 4,46. Khandom. 112. Pańkar. 3,5,31. — 2) m. *Blüthe:* पद्म° Mrkkh. 47,11. — Wird weniger gut auch व्याकोष geschrieben.

व्याक्रोश (von क्रुश् mit व्या) m. *das Schelten, Schmähung* Prab. 75, 11. f. ई dass. Verz. d. Oxf. H. 131,a, N. 1. — Vgl. व्यावक्रोशी.

व्याक्रोशक (wie eben) adj. *der da schilt, schmäht* P. 3,2,147, Schol.

व्याक्षेप (von 1. क्षिप् mit व्या) m. 1) *Schmähung:* बहुव्याक्षेपयुक्तानि क्षमाह वचनानि सः MBh. 12,5843. Vgl. आक्षेप. — 2) *Zerstreutheit* (des Geistes): चिरं तु भवता कालं व्याक्षेपेण (= व्यासङ्गेन Nîlak.) विलम्बितम् (कालो und विलम्बितः die neuere Ausg.) Hariv. 4455. Varâh. Brh. S. 89,15 (= आकुलता Comm.). Mârk. P. 51,17. अव्याक्षेपो (= अविलम्बः Comm. in der Calc. Ausg.) भविष्यत्याः कार्यसिद्धेर्हि लक्षणम् Ragh. 10,6. चित्त° Kull. zu M. 8,10. H. 322, Schol.

व्याख्या (ख्या mit व्या) f. *Erklärung, Auseinandersetzung, Commentar* Halâj. 2,245. Maitrjup. 6,10. Hariv. 14467. Râǵa-Tar. 4,635. Bhâg. P. 7,9,46. 13,8. 11,11,1. Pańkar. 1,2,13. Kusum. 53,3. 6. Verz. d. Oxf. H. 63,a, No. 111. 243,a, No. 601. °कृत् 142,b,27. मल्लव्याख्याकृदाचार्यः AK. 2,7,7. टीका निरन्तर° H. 256. °श्लोक = कारिका Trik. 3,3,14. — Vgl. वैयाख्य.

व्याख्यातर् (von ख्या mit व्या) nom. ag. *Erklärer* MBh. 5,1676. Kathâs. 8,33. Râǵa-Tar. 5,29. Pańkar. 3,14,75. Verz. d. Oxf. H. 177,a, 13. Kull. zu M. 1,80. अमरव्याख्यातारः Siddh. K. 250,b,3. f. व्याख्यात्री Siddh. K. zu P. 4,1,49.

व्याख्यातव्य (wie eben) adj. *zu erklären* Nir. 1,1. P. 4,3,66. MBh. 12,12655.

व्याख्याँन (wie eben) 1) adj. (f. ई) a) *erklärend, erläuternd:* सुपां व्याख्यानः सौपो ग्रन्थः P. 4,3,66, Schol. — b) *bezeichnend:* पाटलिपुत्रस्य व्याख्यानी कोशला ebend. — 2) n. a) *Erzählung* Çat. Br. 3,6,2,7. — b) *das Hersagen, Recitation* Çat. Br. 4,6,9,18. Kâtj. Çr. 12,4,17. Schol. zu Pańkav. Br. 4,9,13. — c) *Erklärung, Auseinandersetzung* Çat. Br. 6,2,1,27. 33. 7,2,4,28. 14,5,4,10. 6,10,6. Âçv. Çr. 8,13,34. Maitrjup. 6,32. P. 4,3,66. MBh. 12,2452. 12655. Hariv. 9492. Weber, Ǵjot. 109. Râmat. Up. 300. Pańkar. 1,2,30. Çaṁk. zu Brh. Âr. Up. S. 269. Sâh. D. 18,14. Verz. d. Oxf. H. 20,b, 41. Kusum. 53,1. Mallin. zu Kumâras. 3, 14. Comm. zu Taitt. Prât. 9,8. 21,1. 23,17. zu P. 5,1,50. am Ende eines comp. oxytonirt P. 6,2,151. — Vgl. पाद°, वास्तु°.

व्याख्यानय् (von व्याख्यान), व्याख्यानयिता MBh. 12,2452 schlechte Lesart für आख्यानयिता der ed. Calc.

व्याख्यानशाला f. *Lehrstube* Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 507, Çl. 28.

व्याख्यापरिमल m. Titel eines *Commentars* Verz. d. Oxf. H. 243,a,

No. 601.

व्याख्याप्रदीप m. desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 55.

व्याख्यामृत n. desgl. ebend.

व्याख्यायुक्ति f. desgl. Wassiljew 296. Târan. 123. 318.

व्याख्यासार desgl. Colebr. Misc. Ess. II, 45.

व्याख्यासुधा f. desgl. ebend. 55. Verz. d. B. H. No. 792. Verz. d. Oxf. H. 182, *b*, No. 415. fg.

व्याख्यास्वर m. *Redeton* (*mittlerer Ton* Comm.) Âçv. Çr. 8, 13, 6.

व्याख्येय (von ख्या mit व्या) adj. *zu erklären* Comm. zu Kap. 1, 51.

व्याघात (von हन् mit व्या) m. 1) *Schlag, Hieb, Streich, Schuss, ictus;* = घात H. an. 3, 294. fg. = प्रहार Med. t. 152 (zu lesen °प्रहारयोः). तेन व्याघातमस्त्राणां क्रियमाणामवेद्य MBh. 1, 569. शर° neben शरमोत R. 6, 79, 34. — 2) *Erschütterung, Aufregung, Beunruhigung:* अद्य त्वां नाशयिष्यामि देवव्याघातकारिणम् (die neuere Ausg. व्यापार, welches Nîlak. durch स्वास्थ्यप्रच्युति erklärt) Hariv. 2732. ऋषीणामपि दिव्यानां मनो व्याघातकारणम् (त्राघनम्) MBh. 3, 1826. — 3) *Verhinderung; Hinderniss* H. an. Med. अभिषेकस्य R. Gorr. 1, 3, 6. 4, 31. कार्यस्य Varâh. Bṛh. S. 95, 36. °कर्तृ Mârk. P. 132, 23. आलस्यम् u. s. w. sind षड्व्याघाता महत्त्वस्य Spr. (II) 1029. — 4) (logischer) *Widerspruch* Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 147. zu Khând. Up. S. 15. Z. d. d. m. G. 7, 300, N. 3. Sarvadarçanas. 3, 7. Kusum. 28, 11. 59, 3. *eine best. rhetorische Figur, in welcher einer Ursache widersprechende Wirkungen zugeschrieben werden,* Kâvjapr. 184, 6. fgg. (349, 8. fgg.). Sâh. D. 726. Kuvalaj. 110, *b*. Pratâpar. 101, *b*, 8. Beispiel Spr. (II) 2926. — 5) *ein best. astron.* Joga (विष्कम्भादि) H. an. Med. As. Res. 3, 302 (nach Haughton). Saṁsk. K. 2, *a*. Gjotistattva und Koshṭhîpradîpa im ÇKDr.

व्याघारण (vom caus. von 1. घर् mit व्या) n. *das Umhersprengen* Kâtj. Çr. 8, 5, 2. 8, 31. 17, 6, 3. Pâr. Gṛhj. 3, 8.

व्याघ्र॑ ohne Avagraha VS. Prât. 5, 37. 1) m. *Tiger* (im ṚV. nicht genannt, im AV. häufig neben dem Löwen) AK. 2, 5, 1. 3, 4, 2, 11. Trik. 2, 5, 4. H. 1285. an. 2, 456. Med. r. 85. Halâj. 2, 71. 78. VS. 14, 9. 19, 10. AV. 4, 3, 1. 36, 6. 6, 38, 1. 110, 3. 140, 1. 12, 1, 49. 2, 43. 19, 46, 5. द्वीपिन् 49, 4. यथा व्याघ्रं सुप्तं बोधयति (vgl. *den schlafenden Löwen wecken*) TS. 5, 4, 10, 5. 6, 2, 5, 5. Çat. Br. 12, 7, 1, 8. Khând. Up. 6, 9, 3. M. 11, 112. 12, 43. 67. MBh. 1, 5568. fgg. 3, 2402. 15718. 12, 4273. fgg. R. 3, 33, 21. Ragh. 9, 63. Varâh. Bṛh. S. 48, 76. 51, 19. 68, 17. 86, 28. Weber, Kṛshṇaǵ. 221. Bhâg. P. 3, 10, 22. 4, 6, 20. Hit. 113, 10. fg. Die Urmutter der *Tiger* ist शार्दूली R. 3, 30, 26. ein königliches Thier AV. 4, 8, 4. 7. (उत्तमो ऽसि) व्याघ्रः श्वपदामिव 8, 5, 11. fg. Daher als Bild edler Männlichkeit Nir. 3, 18. Çânt. 2, 17. am Ende eines comp. P. 2, 1, 56. AK. 3, 2, 8. H. 1440. H. an. Med. नर° MBh. 1, 5909. 6038. 3, 2179. 2414. 2625. R. 3, 49, 20. पुरुष° MBh. 3, 2249. 2780. 3001. 15718. R. 2, 32, 27. मनुज° 104, 16. — *b*) *Pongamia glabra Vent.* und *rothblühender Ricinus* (रक्तैरण्ड) H. an. Med. (statt करण्ड ist in Med. mit ÇKDr. करञ्ज zu lesen). — *c*) N. pr. verschiedener Männer: Verfasser eines Dharmaçâstra Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 47. 279, *b*, 9. 356, *a*, 30. ein Fürst Târan. 3. — Râǵa-Tar. 8, 1304. fgg. — 2) f. व्याघ्री *a*) *Tigerin:* यथा व्याघ्री हरेत्पुत्रान्दंष्ट्राभिर्न च पीडयेत् Çikshâ 20 in Ind. St. 4, 268. Spr. (II) 2370. व्याघ्रीव तिष्ठति जरा (I) 2917. R. Gorr. 2, 9, 34. 3, 53, 46. 62, 37. मृगयाः परिभवो व्याघ्यामित्यवेहि त्वया कृतम् Ragh. 12, 37. P. 8, 4, 48, Schol. ein Ǵâtaka Buddha's Vjâḍi beim Schol. zu H. 233. Ǵâtakamâlâ 3. — *b*) *Solanum Jacquini* AK. 2, 4, 3, 12. H. 1157. H. an. Med. Halâj. 2, 464. — *c*) N. pr. einer buddh. Göttin Kâlakakra 5, 114. — Das Wort wird auf घ्रा mit व्या (das sonst nicht vorkommt) zurückgeführt Nir. 3, 18. P. 3, 1, 137, Schol. Wir würden uns eher für eine Herleitung von 1. घर् mit व्या (*der Gesprenkelte*) entscheiden. Vgl. निर्व्याघ्र, पुरुष°, पुष्कर°, वैयाघ्र und वैयाघ्य.

व्याघ्रक॑ m. Hypokoristikon von व्याघ्राजिन P. 5, 3, 82, Schol.

व्याघ्रकेतु m. N. pr. eines Mannes Hall in der Einl. zu Vâsavad. 53.

व्याघ्रग्रीव (व्याघ्र + ग्रीवा) m. pl. N. pr. eines Volkes Mârk. P. 58, 17.

व्याघ्रचर्मन् n. *Tigerfell* Ait. Br. 8, 5. Kâtj. Çr. 15, 5, 25. 7, 1. Pańkat. 157, 25.

व्याघ्रजम्भन॑ adj. *den Tiger vernichtend* AV. 4, 3, 7.

व्याघ्रतल m. *rothblühender Ricinus* Râǵan. im ÇKDr. unter व्याघ्रदल.

व्याघ्रता f. nom. abstr. von व्याघ्र *Tiger* MBh. 12, 4274. fg. Spr. (II) 3794. Hit. 113, 12.

व्याघ्रत्व n. dass. MBh. 12, 4298.

व्याघ्रदंष्ट्र (व्याघ्र + दंष्ट्रा) m. *Tribulus lanuginosus Lin.* Ausn. 29.

व्याघ्रदत्त m. N. pr. eines Mannes MBh. 7, 650. 652. 655.

व्याघ्रदल m. *Ricinus communis* Çabdam. im ÇKDr. — Vgl. व्याघ्रतल.

व्याघ्रनख 1) n. *eine von Fingernägeln herrührende Wunde von bestimmter Form* Med. kh. 16. fg. — 2) *ein best. wohlriechender Stoff*, vielleicht ὄνυξ des Dioscor., *unguis odoratus;* n. AK. 2, 4, 4, 17. Med. masc. H. an. 4, 45. unbestimmt ob m. oder n. Suçr. 1, 139, 8. 9. Varâh. Bṛh. S. 77, 6. 13. nach Râǵan. im ÇKDr. = व्यालनख. — 3) *Wurzel*, n. Med. m. H. an. *eine best. Wurzel* (in Med. kann अन्तर auch mit कन्द verbunden werden) ÇKDr. und Wilson. — 4) m. *Tithymalus antiquorum Moench.* Râǵan. im ÇKDr.

व्याघ्रनखक n. = व्याघ्रनख 1) Çabdam. im ÇKDr.

व्याघ्रनायक m. *Schakal* Râǵan. im ÇKDr.

व्याघ्रपद् (nom. °पाद्) Vop. 6, 31. m. 1) *Flacourtia sapida Roxb.* AK. 2, 4, 2, 18. — 2) N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. mit dem patron. Vâsishṭha, Liedverfasser von ṚV. 9, 97, 16–18. — Comm. zu Kâtj. Çr. 4, 1, 12. Verz. d. Oxf. H. 18, *b*, 13. 19, *a*, 35. Grammatiker 176, *a*, 3. Verfasser eines Dharmaçâstra 270, *b*, 47. plur. Kâr. zu P. 7, 1, 94. — Vgl. वैयाघ्रपद्य und व्याघ्रपाद.

व्याघ्रपद m. *eine best. Pflanze* Varâh. Bṛh. S. 54, 88.

व्याघ्रपद्य m. Khând. Up. 5, 16, 1 wohl nur fehlerhaft für वैयाघ्रपद्य.

व्याघ्रपराक्रम m. N. pr. eines Mannes Kathâs. 101, 48.

व्याघ्रपाद m. 1) *Flacourtia sapida Roxb.* Râǵan. im ÇKDr. — 2) N. pr. eines Ṛshi MBh. 13, 701. Grammatiker Colebr. Misc. Ess. II, 49. Verfasser eines Dharmaçâstra Verz. d. Oxf. H. 270, *b*, 47. 279, *b*, 9. 356, *a*, 30. Verz. d. B. H. No. 1166. 1403. — Vgl. व्याघ्रपद्.

व्याघ्रपुच्छ m. *Ricinus communis* AK. 2, 4, 2, 31.

व्याघ्रपुर n. N. pr. einer *Stadt* Verz. d. Oxf. H. 83, *b*, No. 141.

व्याघ्रपुष्पि m. N. pr. eines Mannes Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59, 2.

व्याघ्र॑प्रतीक adj. *das Ansehen eines Tigers habend* AV. 4, 23, 7.

व्याघ्रबल m. N. pr. eines Fürsten Kathâs. 120, 73.

व्याघ्रभट m. N. pr. eines *Kriegers* KATHÂS. 10,21. eines Asura 47,20.

व्याघ्रभूति m. N. pr. eines Grammatikers Kâr. 10 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. COLEBR. Misc. Ess. II, 49. Verz. d. Oxf. H. 162,*b*,26.

व्याघ्रमुख m. 1) N. pr. eines Fürsten BRAHMAGUPTA bei WEBER, ǴJOT. 9. — 2) pl. N. pr. eines Volkes VARÂH. BṚH. S. 14,5. — 3) N. pr. eines Berges MÂRK. P. 58,11.

व्याघ्रराज m. N. pr. eines *Fürsten* LIA. 2,955. TÂRAN. 266.

व्याघ्ररूपा (व्याघ्र + रूप) f. *eine Art Momordica* DHANV. in NIGH. PR.

व्याघ्रलोमन् n. *Tigerhaar* VS. 19,92. ÇAT. BR. 12,7,2,8. 9,1,6. KÂTJ. ÇR. 15,9,30.

व्याघ्रवक्त्र 1) adj. *ein Tigergesicht habend.* — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Çiva's HARIV. 14852. — 3) f. आ N. einer buddh. Göttin KÂLAK̓AKRA 3,134. 4,64. 5,13; vgl. व्याघ्रास्या.

व्याघ्रश्वन् m. *ein tigerähnlicher Hund* VOP. 6,42.

व्याघ्रसेन (व्याघ्र + सेना) m. N. pr. eines Mannes KATHÂS. 69,19. 100, 56. 101,3.

व्याघ्राक्ष adj. *tigeräugig;* m. N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9,2561. eines Asura HARIV. 12868. 12932.

व्याघ्राजिन (व्याघ्र + अ°) m. N. pr. eines Mannes P. 5,3,82, Schol.

व्याघ्राट (व्याघ्र + अट) m. *Feldlerche* AK. 2,5,15. TRIK. 3,3,85. H. 1340. HALÂJ. 2,93.

व्याघ्राण (von घ्रा mit व्या) n. *das Beriechen* (zur Etymologie von व्याघ्र) NIR. 3,18.

व्याघ्रादनी (व्याघ्र + अदन) f. *Ipomoea Turpethum R. Br.* ÇKDR. angeblich nach AK. व्याघ्रादिनी AUSH. 57.

व्याघ्रास्य (व्याघ्र + आस्य) 1) adj. *ein Tigergesicht habend.* — 2) m. *Katze* ÇABDAK̓. im ÇKDR. — 3) f. आ N. einer buddh. Göttin KÂLAK̓AKRA 4,39; vgl. व्याघ्रवक्त्रा.

व्याघ्रिणी (von व्याघ्र) f. bei den Buddhisten N. pr. eines Wesens im Gefolge der Mütter WILSON, Sel. Works 2,22. 33. — Vgl. सिंहिनी.

व्याघ्रेश्वर (व्याघ्र + ई°) und °लिङ्ग n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 44,*a*,5 v. u. 71,*a*,45.

व्याघ्र्य (von व्याघ्र) adj. *tigrinus* AV. 12,2,4.

व्याङ्गि m. patron. von व्यङ्ग gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3,7. VOP. 7,1.4.

व्याचिख्यासु (vom desid. von ख्या mit व्या) adj. *zu erläutern im Begriff stehend*, mit acc. MÜLLER, SL. 170. mit gen. ÇAṄK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 195.

व्याज (von अज् mit वि) m. (hier und da auch n.) *Betrug, Betrügerei, Hinterlist; Täuschung, falscher Schein, Vorwand;* = कपट AK. 1,1,2, 30. H. 378. HALÂJ. 4,24. = शाठ्य TRIK. 3,3,88. H. an. 2,77. MED. ǵ. 16. = अपदेश AK. 1,1,2,33. TRIK. H. an. MED. किंचिद्व्याजं कृत्वा तेषां युद्धं निवारयेत् BHAR. NÂṬJAÇ. 18,76. दृक्कुक्कवीर्यरहितः स कोऽत्यनेकान्व्याजान् शरन्निव युवाप्यबलामवाप्य VARÂH. BṚH. S. 76,12. व्याजं पद्मावतीहेतोः क्रियमाणं कदाचन। दोषायास्माकमेव स्यात् KATHÂS. 15,29. चकार वत्सराजस्य व्याजान्यागच्छतः पथि 19,80. वेश्याव्याजोपशिक्षितार्थम् 57,58. उक्तवद्धिजव्याजां ताम् 123,305. °पूर्व *den blossen Anschein von Etwas habend* RAGH. 11,66. व्याजेन वर्त् PAṄK̓AT. 147,15. व्याजेन चरते धर्ममर्थं व्याजेन रोचते। व्याजेन सिध्यमानेषु धनेषु MBH. 3,13903. R. 5,28,9. व्याजेनागतमावृणोति हसितम् Spr. (II) 1043. दानं व्याजेन भूषादेः DAÇAR. 4, 57. RÂǴA-TAR. 5,405. व्याजाद्धर्मं करोति च MBH. 3,13902. व्याजात्प्रतिच्छन्नः 4,299. युद्धं व्याजान्निवारयेत् DAÇAR. 3,68. व्याजैर्धर्मं चरिष्यन्ति MBH. 3,13022. am Anfange eines comp. = व्याजेन, z. B.: °हृत *durch Hinterlist* R. 4,20,9. व्याजार्धसंदर्शितमेखल *um zu täuschen* RAGH. 13,42. °सुप्त so v. a. *sich schlafend stellend* KATHÂS. 46,174. °निद्रिता RÂǴA-TAR. 3,504. °सप्रणयैर्वाक्यैः *dem Scheine nach* KATHÂS. 29,82. °व्यवहार *ein hinterlistiges Benehmen* DHÛRTAS. 76,9. व्याजसुप्तं विरचय *ein simulirter Schlaf* KATHÂS. 45,190. 70,33. °खेद 49,97. व्याजाभिप्राय 39,106. °विष्णु 12,165. °गुरु 19,76. °सखी 71,162. °हंसावली 168. 180. °तपोधन RÂǴA-TAR. 3,275. व्याजाह्वय BHÂG. P. 2,7,35. 8,21,9. Am Ende eines comp. 1) hinter dem, *was die Täuschung bereitet:* (तस्मै वह्निः) प्रदक्षिणार्चिर्व्याजेन हस्तेनेव जयं ददौ RAGH. 4,25. (उदन्वान्ददौ) अपरान्तमहीपालव्याजेन रघवे करम् 58. 10,76. Spr. (II) 2488. PAṄK̓AT. 75, 24. मदव्याजात् KATHÂS. 19,97. दत्तो नृहस्तस्ते रक्ताब्जव्याजतो ऽनया 108, 26. — 2) hinter dem, *was simulirt wird, blosser Schein, blosser Vorwand ist:* पुत्रव्याजमुपागतो रिपुः Spr. 1789. निद्राव्याजमुपागतस्य 3010. MÂLAV. 26. दुर्गव्याजेन बन्धनम् Spr. (II) 411. 2710. 3173. वणिज्याव्याजात् KATHÂS. 13,180. स्नानव्याजात् 4,60. मान्य° 24,167. 32,154. 63, 102. 71,95. प्रणयक्रीडाव्याजात् 37,153. RÂǴA-TAR. 1,269. 2,130. 5,369. 8,2124. DAÇAK. 70,6. PRAB. 1,13. SÂH. D. 60,5. MÂRK. P. 81,8. 116,52. BHÂG. P. 4,24,6. ग्रामान्तरव्याजं कृत्वा *sich stellend, als wenn er in ein anderes Dorf ginge*, PAṄK̓AT. 187,5. नैतद्देतेि यन्मठाश्रयव्याजेन नरकोपार्जनं क्रियते 118,3. तद्व्याजात् so v. a. *als wenn es diesem gälte* LA. (III) 89,18. WEBER, RÂMAT. UP. 297. — Am Ende eines adj. comp. *nur den Schein von — habend, in der Gestalt von — erscheinend:* नृप° BHÂG. P. 1,17,27. सूकरव्याजं सत्त्वम् 3,13,21. स्मरव्याजग्रह 6,1,63. अव्याज am Anfange eines comp. 1) = अव्याजेन *ohne Betrug, ohne angewandte Künste:* °मनोहर ÇÂK. 17. °सुन्दरी MÂLAV. 34. — 2) adj. *nicht simulirt, natürlich:* अव्याजोदार्यचर्य RÂǴA-TAR. 3,308. °धैर्य 8,2124. स्वव्याजेन कर्मणा *ganz ehrlich* MBH. 13,2079. — सव्याजम् adv. *verstellter Weise* ÇÂK. 18,21. VIKR. 12,18. — Vgl. निर्व्याज.

व्याजनिन्दा f. *ironischer Tadel* KUVALAJ. 90,*a*.

व्याजभानुजित् m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 199,*a*, No. 470.

व्याजमय (von व्याज) adj. (f. ई) *simulirt, erheuchelt:* तपस् KATHÂS. 24,104.

व्याजय् (wie eben), °यति *Jmd hintergehen, täuschen* KATHÂS. 50,158.

व्याजस्तुति f. *ironisches Lob* SÂH. D. 707. KUVALAJ. 88,*a*. PRATÂPAR. 96,*b*,3.

व्याजिह्म (2. वि - 2. आ + जि°) adj. *zur Seite gebogen, schief:* व्याजिह्माङ्गाः कुरङ्गा गीतमाकर्णयन्ति NÂGÂN. 7,11. धूमपटलव्याजिह्मरत्नत्विषः 63,16.

व्याजीकरण (von व्याज + 1. कर्) n. *das Hintergehen, Täuschen* DHÂTUP. 28,12.

व्याजोक्ति (व्याज + उ°) f. *heuchlerische Worte, Vertuschung*, Bez. einer best. rhetorischen Figur: व्याजोक्तिर्गोपनं व्याजादुद्भिन्नस्यापि वस्तुनः SÂH. D. 749. KUVALAJ. 146,*a* (174,*a*). PRATÂPAR. 88,*a*,2.

व्याड mit einem loc. componirt gaṇa शौण्डादि zu P. 2,1,40. m. 1) *Raubthier* AK. 3,4,22,45. TRIK. 2,5,3. H. an. 2,127. MED. ḍ. 25. अरण्यवासिन् R. ed. GORR. 2,25,31. MÂRK. P. 15,10 (व्याल MBH. 13,5473).

— 2) *Schlange* AK. H. an. Med. — 3) = वञ्चक (eher *Schakal* als *Betrüger*) Rājam. zu AK. nach ÇKDr. — 4) Bein. Indra's Çabdar. im ÇKDr. — Vgl. गेहे° und व्याल.

व्याडायुध (व्याड + आ°) n. *ein best. wohlriechender Stoff*, = व्यालायुध, व्याघ्रनख AK. 2,4,4,17.

व्याडि und व्याळि (von व्यड) m. patron. gaṇa स्वागतादि zu P. 7,3, 7. क्रौड्यादि zu 4,1,80. 6,2,14, Schol. Vop. 7,4. N. pr. verschiedener Männer: ein Grammatiker ṚV. Prât. 3,14. 17. 6,12. 13,15. संग्रहो °कृतो लक्षश्लोकसंख्यो ग्रन्थ इति प्रसिद्धिः Nâgeça in Mahâbh. S. 43. Kathâs. 2,40. fgg. 4,18. 93. fgg. ein Lexicograph Trik. 2,7,24. H. 852. Med. Anh. 4. Hâr. 273. Verz. d. Oxf. H. 160,a,29. 182,b,1 v. u. 188,a, 28. 189,b,13. Schol. zu H. 103. fg. 183. 201. 210. 233. fgg. 512. 616. 948. ein Mediciner Verz. d. B. H. No. 940. 1006 (व्यालि). Verz. d. Oxf. H. 321,a, No. 761. — 247,b,3. व्यालि Pravarâdhj. in Verz. d. B. H. 59, 1. Vgl. Gold. Mân. 209. fgg. und Weber in Ind. St. 5,41. 63. 95. 127. fgg.

व्याडिशाला gaṇa छात्र्यादि zu P. 6,2,86.

व्याडीय adj. von व्याडि gaṇa गहादि zu P. 4,2,138. m. pl. *die Anhänger* Vjâḍi's Ind. St. 5,134.

व्याड्या f. zu व्याडि gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4,1,80.

व्यात्त n. *der geöffnete Rachen* s. u. 1. दा mit व्या. Hierzu: अग्निर्मुखं वैश्वानरो व्यात्तम् TS. 7,5,25,1.

व्यात्युक्षी f. *Spiel im Wasser* Hâr. 116. — Vgl. व्याभ्युक्षी.

व्यादान (von 1. दा mit व्या) n. *das Aufsperren* (des Mundes, Rachens): मुख° Hit. 85,8.

व्यादिश् f. विदिशः, व्यादिशः und दिशः unter den 1000 Namen Vishṇu's MBh. 13,7049. vielleicht *der zwischen zwei* विदिश् *gelegene Punkt auf der Windrose*. ÇKDr. nimmt ein m. व्यादिश an.

व्यादीर्घ (2. वि-आ + दीर्घ) adj. *lang gestreckt:* भोगिन्, चक्षुस् Spr. (II) 935, v. l. °दीर्घास्य Varâh. Bṛh. S. 69,27. °दीर्घास्यशिरोधर Bṛh. 17(15),9.

व्यादीर्ण (partic. von 1. दर् mit व्या) adj. *aufgerissen, aufgesperrt:* व्यादीर्णास्य m. *Löwe* (*einen aufgesperrten Rachen habend*) H. ç. 183.

व्यादेश (von 1. दिश् mit व्या) m. *Anweisung, Vorschrift, Befehl:* व्यादेशः सर्वयोधानामद्यैव क्रियतामिह R. 5,81,54. 83,17.

व्याध (von व्यध्) m. P. 3,1,141. Vop. 26,37. 1) *Jäger* AK. 2,10,21. H. 927. an. 2,248. Med. dh. 15. Hâr. 27. Halâj. 2,441. M. 8,260. MBh. 3,2390. 13696. 13703. fgg. R. 1,2,32. 2,36,5. Suçr. 1,7,13. 136,3. Spr. (II) 986. 2573. Kathâs. 61,101. 103. Verz. d. Oxf. H. 66,a,23. Çuk. in LA. (III) 34,17. 35,9. Pañkat. 147,11. Hit. 9,6. 7. 34,18. Çiva MBh. 7, 2878. als Mischlingskaste *der Sohn eines* Kshatrija *und einer Frau aus der Mischlingskaste* Sarvasvin Brahmavaiv. P. im ÇKDr.; vgl. Verz. d. Oxf. H. 22,a,14. — 2) *ein roher Mensch*, = दुष्ट H. an. Med. Bhâg. P. 3,14,35 (= निर्दय Comm.). — Vgl. धर्म°, मृग°.

व्याधक m. = व्याध 1) Kauç. 102.

व्याधाम m. Indra's *Donnerkeil* H. 181. Halâj. 1,56.

व्याधाय् (von व्याध), °यते *einen Jäger darstellen* Spr. (II) 1124.

व्याधि (von 1. धा mit व्या) m. 1) *Krankheit* AK. 2,6,2,2. H. 312. 462. Med. dh. 15. Halâj. 2,445. मनस्तापाद्यभिभवाज्ज्वरादिर्व्याधिरिष्यते Pratâpar. 54,a,7. व्याधिर्ज्वरादिर्वातादैः Sâh. D. 192. Kauç. 26. Shaḍv. Br. 5,4. Çâñkh. Çr. 3,4,8. Khând. Up. 4,10,3. Bhag. 13,8. Suçr. 1,1,9. 3,5. 6. 89,1. fgg. 2,442,21. Spr. (II) 1205. 2358. (I) 5045. Bhâg. P. 4,29,23. व्याधेर्लक्षणम् Verz. d. Oxf. H. 311,b,6. व्याधीनां विविधानां निदानम् 281,a, No. 659. न च तृष्णापरो व्याधिः Spr. (II) 2011. नश्यौषधपरिज्ञानाद्व्याधेः शान्तिः क्वचिद्भवेत् (I) 3041. व्याधिभिश्च न पीड्यन्ते M. 5,50. °पीडित 4,67. 8,22. Spr. (II) 357. गुरुव्याधिपीडित 3720. व्याधिभिश्चोपपीडनम् M. 6,62. 12,80. व्याध्यार्त 8,64. व्याधिभिर्मथ्यमानः Spr. 5044. °भय Weber, Kṛshnag. 307. Varâh. Bṛh. S. 3,17. 8,4. 29,12. °कर 5,56. अपथ्यैः सह संभुक्तो व्याधिरन्नरसे यथा R. 2,64,57. केनात्ययगाढ्याधिना 72, 29. व्याधिर्न ते कच्चिच्छरीरं प्रतिबाधते 87,9. तं व्याधिः स्पृशति Spr. 5183. °बहुल (ग्राम) M. 4,60. व्याधयः प्रकुप्यन्ति Varâh. Bṛh. S. 9,33. °गत Shaḍv. Br. 4,6. दीर्घ° *an einer langwierigen Krankheit leidend* Âçv. Çr. 10,1,6. Kâtj. Çr. 22,2,17. कफज° Suçr. 1,159,16. उदर° Râga-Tar. 6,90. तद्व्याधेः फलमूलमस्ति शमनम् Spr. 3124. आधि° Mâlatîm. 69,5. कामव्याधिरसाध्यो मामप्याक्रामति MBh. 4,395. मार° Nalod. 3,35. द्विविधो जायते व्याधिः शारीरो मानसस्तथा MBh. 12,489. fg. 14,314. fg. स्त्री° *eine Plage von Weib* Varâh. Bṛh. S. 78,13. Personificirt ist die *Krankheit* ein Kind des Todes VP. 56. Mârk. P. 50,31. — 2) *Costus speciosus* oder *arabicus* (कुष्ठ; vgl. व्याप्य) AK. 2,4,4,14. Med. — Vgl. निर्व्याध, पवन°, महा°, वात°.

व्याधिघात m. (*Krankheit verscheuchend*) *Cathartocarpus* (*Cassia*) *fistula* Çânt. 1,2, Schol. AK. 2,4,2,4. Suçr. 2,66,11.

व्याधिघ्न m. dass. Dhanv. in Nigh. Pr.

व्याधित (von व्याधि) adj. (f. आ) *mit einer Krankheit behaftet, krank, kränklich* gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. AK. 2,6,2,9. H. 459. Âçv. Gṛhj. 1,23,20. 3,6,3. 7,1. Kauç. 7. 27. Kâtj. Çr. 15,1,23. M. 4,157. 7,149. 8,395. 9,72. 80. 167. Jâǵñ. 1,73. 138. Suçr. 1,33,16. 98,3. 123,20. Kâm. Nîtis. 13,67. 75. Spr. (II) 1136. 2431. 2714. 3734. (I) 2918. 3067. 4999. Varâh. Bṛh. 17(15),8. Kathâs. 29,157. 40,28. 66,31. 36. Mârk. P. 16, 15. Kull. zu M. 3,8.

1. व्याधिन् (von व्यध्) adj. *durchbohrend* VS. 16,18.

2. व्याधिन् (von व्याध) adj. *mit Jägern versehen:* वन Nalod. 3,35.

व्याधिरिपु m. (*Feind d. i. Verscheucher von Krankheit*) *Webera corymbosa Roxb.* Fl. ind. ed. Carey.

व्याधिल s. गो°.

व्याधिसंघविमर्दन Titel eines über *Heilung der Krankheiten* handelnden Werkes des Sahadeva Verz. d. Oxf. H. 22,b,5. 6.

व्याधिस्थान n. *der Standort der Krankheiten, Bez. des Körpers* H. ç. 117.

व्याधिहन्तर् m. (*Vertreiber der Krankheiten*) *Yamswurzel* Râǵan. im ÇKDr.

व्याधिहर adj. *Krankheit vertreibend* Suçr. 1,159,16.

व्याधी (von धी = ध्या mit व्या) f. *Sorge* AV. 7,114,2. — Vgl. 2. आधि.

व्याध्य als Beiw. Çiva's MBh. 7,2877. ed. Bomb. und Nilak. व्याध wie im folgenden Çloka.

व्यान (von 2. अन् mit वि) m. AV. Prât. 4,39 (mit Avagraha). *Athem, Hauch;* bei der gewöhnlichen Eintheilung in प्राण, उदान, व्यान und weiterhin अपान, समान, soll es *den im ganzen Körper sich ver-*

breitenden Lebenshauch bezeichnen. AK. 1,1,1,59. H. 1109. RV. 10,85, 12. AV. 5,4,7. 6,41,2. 10,2,13. 11,5,24. 18,2,46. व्यानोदानौ 11,8,4. 26. VS. 1,20. 13,19. 17,71. Ait. Br. 2,21. प्राणास्त्रेधा विहितः प्राणो ऽपानो व्यान इति 29.3,8. उदानव्यानौ TS. 1,6,3,3. 7,2,2. 5,5,5,3. Çat. Br. 1,1,3,3. 8,4,2,4. समानव्यानौ Kâtj. Çr. 3,4,30. Kauç. 3.72. Khând. Up. 1,3,3. Praçnop. 3,6.8. Amrtan. Up. in Ind. St. 9,37. MBh. 3,13967. 12,6844. 14,612. fgg. Suçr. 1,17,2. 248,1. 250,7. vermittelt die Circulation der Säfte, setzt Schweiss und Blut in Bewegung und seine heftige Erregung erzeugt Krankheiten, die sich über den ganzen Leib verbreiten, 18. Wise 44. Verz. d. Oxf. H. 225,*b*,3. Vedântas. (Allah.) No. 54. sieben AV. 15,15,2. 17,1. fgg. °भृत् Çat. Br. 8,1,3,6. °दृक् TS. 7,5,19,1. Personificirt ein Sohn Udâna's und Vater Apâna's MBh. 12,12397.

व्यानदा adj. *Athem gebend* VS. 17,15.

व्यानशि (von 3. नश् mit व्या) adj. *durchdringend* RV. 3,49,3. Soma 9,103,6.

व्यापक (von आप् mit वि) adj. (f. व्यापिका) *durchdringend, sich weithin erstreckend, allgemein verbreitet;* in der Logik *stets enthalten in, inhärirend* (Feuer z. B. ist व्यापक, Rauch व्याप्य) Suçr. 1,363,4. पुरुष Kathop. 6,8. MBh. 12,7400. सर्वत्र व्यापिका Brahmavaiv. P. im ÇKDr. तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्च व्यापको महिमा करेः Kumâras. 6,71. Mârk. P. 46,16. Bhâg. P. 7,6,22. 7,19. Verz. d. Oxf. H. 104,*b*,35. 37. Tarkas. 45. 52. Bhâshâp. 137. Schol. zu Kap. 1,101. 139. Kusum. 19,1. Schol. zu P. 2, 1,57. मन्त्रेण व्यापकं (sc. न्यासं) कृत्वा so v. a. *über den ganzen Körper auftragen* Pankar. 3,15,18. fg. Davon nom. abstr. °ता f. Bhâg. P. 4,28, 40. Tarkas. 46. °त्व n. 45. Çând. 87. Bhâshâp. 9. Z. d. d. m. G. 6,26, N. 1.

व्यापत्ति (von 1. पद् mit व्या) f. 1) *Unfall, Unglücksfall, Widerwärtigkeit, Calamität, Ungemach; das Verderben, in-Unordnung-Gerathen* Mrkkh. 98,5. Spr. 2004. Varâh. Brh. 8,18. पितृ° so v. a. *Tod* Ragh. 12,56. नास्ति व्यापत्तिमर्हति *dem Auge darf Nichts geschehen* Suçr. 2,335,3. हविषां व्यापत्तौ *wenn dem* Havis *Etwas geschieht, wodurch es unbrauchbar wird,* Âçv. Çr. 3,10,19. Kâtj. Çr. 1,7,28. Pâr. Grhj. 1,10. कर्मणाम् *Misslingen* MBh. 12,9374. अन्त° *Entstellung, Unregelmässigkeit* Nir. 2, 1. तकारस्य चकारव्यापत्त्या so v. a. *dadurch, dass* त *durch* च *verschwindet, diesem Platz macht* RV. Prât. 4,12, Comm. — 2) *die Verwandlung des* Visarga *in den* Ûshman RV. Prât. 5,1. अ° 4,12.

व्यापद् (1. पद् mit व्या) f. *Unfall, Unglücksfall, Widerwärtigkeit, Ungemach, Calamität; das Verderben, in-Unordnung-Gerathen* Spr. (II) 945 (pl.). (I) 2877. 4869 (pl.). Varâh. Brh. S. 89,1. 90,12. Brh. 8,12. Râga-Tar. 2,17. 4,523. दुस्तर° 8,2700. महाव्यापन्निमग्न 1853. व्यापद्गत AK. 3,4,18,131. मुक्त° adj. Hit. 44,6. कर्मणाः *Misslingen* MBh. 7,4271. सर्व° Ait. Br. 5,32. Suçr. 1,21,10. 51,5. 9. 2,354,12. बल° 409,15. *Fehler* z. B. beim Klystier 199,18. 200,15. व्यापत्सिद्धि, वस्तिव्यापत्सिद्धि Verz. d. B. H. No. 933. योनि° Verz. d. Oxf. H. 316,*b*,16. त्रिजगतीसर्गस्थितिव्यापदामीशः *Untergang* Spr. (II) 1889. स्नेहानाङ्कः किमपि विरहव्यापदः *durch Trennung schwindend* Megh. 111. *eine unheilvolle That:* श्वश्रूकृता व्यापदिहापि फलिता मम Kathâs. 29,109. — Vgl. गर्भ°.

व्यापन (von आप् mit वि) n. *das Durchdringen, Erfüllen* H. an. 2,194. Med. t. 57. Sâh. D. 293,16. Verz. d. Oxf. H. 200,*a*, No. 475.

व्यापनीय (wie eben) adj. *zu durchdringen, zu erfüllen* Nir. 5,13.

व्यापन्न partic. s. u. 1. पद् mit व्या. = मृत *todt* H. 374.

व्यापाद (von 1. पद् mit व्या) m. *Untergang, Tod* Râga-Tar. 8,2111. *böse Absicht* AK. 1,1,4,13. H. 1372.

व्यापादक (vom caus. von 1. पद् mit व्या) adj. *zu Grunde richtend, tödtlich:* आमय Râga-Tar. 4,524.

व्यापादन (wie eben) n. *Verderbniss* (trans.), *Zerstörung, zu-Grunde-Richtung, Tödtung* H. 370. Halâj. 2,323. सिरास्नायुसंध्यस्थि° Suçr. 1, 37,4. 5. 62,17. बालामात्यव्यापादनोद्यता Mârk. P. 21,32. आत्मव्यापादनोद्यता 64,12. सर्प° *Tödtung durch* Pankat. 265,16.

व्यापादनीय (wie eben) adj. *zu Grunde zu richten, zu tödten* Pankat. 220,6. Davon nom. abstr. °ता f. 143,25.

व्यापादयितव्य (wie eben) adj. dass. Hit. 110,3. 4. 111,19. ed. Johns. 1595.

व्यापार (von 3. पर् mit व्या) m. 1) *Beschäftigung, Geschäft, Thätigkeit, Function:* व्यापारेण धृतात्मानं निबद्धं समबुध्यत MBh. 5,3549. व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः Spr. (II) 931. व्यापारश्च बलं विशाम् 2008. रवेर्व्यापारमादत्ते प्रदीपो न पुनः शनिः 3341. न व्यापारशतेनापि शुकवत्पाठ्यते बकः so v. a. *hundertfache Bemühung* 3572. (I) 2626. विधातुर्व्यापारः फलतु Mâlatîm. 10,12. Varâh. Brh. S. 74,3. व्यापारो ऽस्माकमेषः Kathâs. 60,26. Hit. 50,4. निजं भागं व्यापाराद्यैर्वर्धयत् Kathâs. 61,301. Dhûrtas. 95,10. किमनेन व्यापारेणास्माकम् Hit. 49,5. Pankat. 57,9 (ed. orn. 48,7). 93,9. यदि त्वमस्माद्व्यापारान्न निवर्तसे 162,8. Sâh. D. 10,18. 186. Bhâshâp. 58. 64. fg. 79. Kusum. 14,14. 39,13. Tarkas. 49. Schol. zu Kâtj. Çr. 130,22. ज्ञानस्य Nilak. 30. 34. 41. पुरुषभाग्यानामचिन्त्याः खलु व्यापाराः Mrkkh. 157,16. विभावादेः Sâh. D. 40. (व्रतम्) व्यापाररोधि मदनस्य *Beschäftigung mit* Çâk. 26. प्राकृतेषु च देहेषु व्यापारो ऽस्य मया कृतः so v. a. *ich habe ihm seinen Wirkungskreis bestimmt* Pankar. 1,14, 30. fg. अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति *sich zu thun machen* Spr. (II) 707. तत्र व्यापारं कर्तुमर्हति *Hand anlegen, helfen* Kumâras. 6, 32. कायस्थो हि करोत्येको व्यापारं ब्रह्मरुद्रयोः *besorgt das Geschäft* Kathâs. 72,323. यदि व्यापारं व्रजसि मे शरीरे ऽस्मिन् *sich machen an* Vikr. 58. न दैवतानि लोके ऽस्मिन्व्यापारं यान्ति कस्यचित् so v. a. *kümmern sich um Niemanden* MBh. 13,318. तस्यानुमेने व्यापारमात्मनि सायकानाम् so v. a. *er gestattete, dass die Pfeile ihn zur Zielscheibe machten,* Kumâras. 7,93. In comp. *a*) mit einem subj.: प्राणापानव्यापाराववकुर्वन् Çank. zu Khând. Up. S. 43. मानस° Vedântas. (Allah.) No. 7. कारक°, कारण° Madhus. in Ind. St. 1,23. दृग्व्यापारः Râga-Tar. 5,366. 6,81. बुद्धि° Nilak. 47. — *b*) mit einem obj. (*Beschäftigung mit* u. s. w.): गृह° Spr. (II) 2190. गृहव्यापारं कुब्जः करोति Pankat. 262,7. शकुन्तला° Çâk. 19,1. परदारपृच्छा° 104,23, v. l. न यास्यामि सर्गव्यापारमात्मना Kumâras. 2,54. विषय° Weber, Râmat. Up. 343. धर्मव्यापारकारिन् so v. a. *obliegend* MBh. 12,5903. नियम° Spr. (II) 929. विलास° (pl.) 1123. अशेषदुःखशमन° 1450. 2032. 2304. परोपकार° (I) 1732. Prab. 2,9. 68,14. सुरत° Spr. (II) 1992. Sâh. D. 5,2. वाग्व्यापार so v. a. *das Reden, Sprechen, Gerede* Sâh. D. 285. Hit. 85,21. — अ° m. *Musse* Halâj. 5,65. *eine einem nicht zukommende Beschäftigung* Spr. (II) 707. — am Ende eines adj. comp. (f. आ): यथोक्तव्यापारा Çâk. 9,5. 33,5. 49,7. सू-

न्य॰ *unbeschäftigt* Prab. 100, 15. स॰ *beschäftigt* Megh. 86. — Hariv. 2732 als v. l. für व्याघात von Nilak. durch स्वास्थ्यप्रच्युति (!) erklärt. — 2) in der Astrol. Bez. *des 10ten Hauses* Varâh. Bṛh. 2,18. — Vgl. किं॰, निर्व्यापार (m. *Mangel an Beschäftigung* Uttarar. 109,17 = 148, 13 ed. Cow.), मिथ्या॰, मुक्त॰.

व्यापारक (von व्यापार) am Ende eines adj. comp. *die Function habend:* नियतविषयाभिमानव्यापारको ऽहंकारः स्वीकार्यः Kusum. 14,4. 5.

व्यापारण (vom caus. von 3. पर् mit व्या) n. *das Veranlassen zu einer Thätigkeit:* शब्देन als Erklärung von प्रैष P. 8,2,104, Schol.

व्यापारवत्ता (von व्यापारवत्) f. *das Haben einer Function:* अलौकिकविभावन॰ Sâh. D. 25,10. fg.

व्यापारवत् (von व्यापार) adj. *wirksam* Tarkas. 21.

व्यापारिन् (wie eben) adj. *sich beschäftigend mit:* लालालोहादि॰ Brahmavaiv. P. im ÇKDr.

व्यापित्व (von व्यापिन्) n. *weite Verbreitung, das Weitreichen, Allgemeinheit:* तत्त्वाणाम् Âçv. Çr. 12,10,2. शब्दस्य MBh. 12,9137. Mârk. P. 99,39. *das-sich-Verbreiten-über:* समस्तव्यस्त॰ Vedântas. (Allah.) No. 30.

व्यापिन् (von आप् mit वि) adj. *sich ausbreitend, sich weithin verbreitend, allgemein verbreitet, überall hindringend* Nir. 5,13. अर्म यज्ञाल-वद्यापि Suçr. 2,335, 6. आत्मन् MBh. 12, 8770. 13,4120. महाज्ञान R. Gorr. 1,13,19. Kap. 1,12. Bhâg. P. 3,7,42. 11,21,20. Siddh. K. 248,b, 10. अ॰ Kap. 1,125. Sâṅkhjak. 10. बहु॰ Sâh. D. 35,6. अंसव्यापि जटामण्डलम् *bis zur Schulter reichend* Çâk. 170. देह॰ *über den Körper verbreitet* Nilak. 122. Bhâshâp. 42. सर्वशरीर॰ Suçr. 1,328,1. वक्षःस्थलव्यापिरुचि (so ed. Calc.) Ragh. 6,49. पद्मान्तर॰ (बाष्पभर) Spr. (II) 85. व्योम॰ Râǵa-Tar. 4,203. वियद्व्यापिन् Bhâg. P. 3, 10, 7. दिग्व्यापिन् Kir. 5,18. मुक्तिपथ॰ Mârk. P. 38,10. जगद्व्यापिन् Prab. 1,13. Bhâg. P. 8,12,4. Mârk. P. 106,50. अखिलजगद्व्यापिन् 78,4. सर्व॰ Çvetâçv. Up. 1,16. 3,11. MBh. 2,530. 12,4410. 13,6450. 14,987. चतुर्दशवर्ष॰ *vierzehn Jahre umfassend, — während* Sâh. D. 137,9. — Vgl. काल॰ (auch AK. 3,2,33), विश्व॰.

व्यापीत (2. वि - 2. आ + 2. पीत) adj. *ganz gelb* Varâh. Bṛh. S. 72,4. Bṛh. 2,5.

व्यापृत s. u. 3. पर् mit व्या. Hinzuzufügen m. *Beamter* Jâǵñ. 1,327.

व्यापृति (von 3. पर् mit व्या) f. *Beschäftigung* Trik. 3,3,55.

व्याप्त s. u. आप् mit वि. = कीर्ण u. s. w. Halâj. 4,17. = ख्यात und समाक्रान्त Med. t. 57. *überallhin verbreitet* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9, 137. ॰तम superl. 146.

व्याप्ति (von आप् mit वि) f. 1) *das Erreichen, Erlangen, Zustandebringen:* ॰कर्मन् Naigh. 2,18. स व्याप्तिमभि लोकं जयतम् AV. 9,5,12. 11,7,22. नो ह्यवर्चसो व्याप्त्या चनार्थो ऽस्ति Çat. Br. 5,2,5,12. = लाभ Trik. 3,3,183. = लम्भन H. an. 2,194. = रम्भ Med. t. 57. — 2) *das Durchdringen, Erfüllen; das überallhin-Sicherstrecken, das überall-und-stets-Sein, Durchgängigkeit, Allgemeinheit;* = व्यापन H. an. Med. = संबन्ध Trik. गगणव्याप्तिकारक Mârk. P. 97,1. गेहादिद्रव्याणां विश्यादिक्रियाभिः साकल्येन संबन्धो व्याप्तिः P. 3,4,56, Schol. व्याप्तिं च भूतेष्वखिलेषु चात्मनः Bhâg. P. 7,8,18. व्याप्तिदेव्यै (व्याप्त्यै देव्यै Dev. 5, 35) Mârk. P. 85,33. Vop. 5,4. 21. 6,30. eine übernatürliche Kraft Verz. d. Oxf. H. 191,a,19. 105,a, N. 4. Paṅkar. 1,1,49. 2,8,2. न व्याप्तिरेषा *es ist dies keine Regel ohne Ausnahme* Spr. (II) 3458. व्याप्तिश्चोभयविधोपाधिविधुरः संबन्धः Sarvadarçanas. 4, 8. 9. 13. 5,13. Verz. d. Oxf. H. 241. fg. No. 590. fgg. Vedântas. (Allah.) No. 112. Schol. zu Ǵaim. 1,1,6. zu Kap. 1,101. Bhâshâp. 65. 67. fg. 136. Kusum. 29,3. 8. Tarkas. 29. 38. अ॰ Sâh. D. 3,4. Schol. zu Kap. 1,91. परिगणनं कर्तव्यमव्याप्त्यतिव्याप्तिवारणाय so v. a. *um das «nicht Alles oder zu Vieles» zu verhüten* P. 6,3,35, Schol. Am Ende eines adj. comp. व्याप्तिक Tarkas. 38.

व्याप्तिमत्त्व (von व्याप्तिमत्) n. *die Eigenschaft des Sicherstreckens auf Andere* Nir. 1,2.

व्याप्तिमत् (von व्याप्ति) adj. *sich erstreckend:* तावद्व्याप्तिमत्य आपः Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 295. *alldurchdringend, durchgängig, allgemein* M. 12,26. Tarkas. 37.

व्याप्य (von आप् mit वि) 1) adj. *das worin Etwas stets enthalten ist, — inhärirt* P. 2,1,57, Schol. Bhâg. P. 7,6,22. Schol. zu Kap. 1,152. Tarkas. 52. वह्निव्याप्यधूमवत् 29. 41. n. = साधन, लिङ्ग Trik. 3,2,1. 11. Davon nom. abstr. त्व॰ n. Tarkas. 43. Z. d. d. m. G. 6,26, N. 1. 7, 291, N. 1. 4. Bhâshâp. 9. 74. 76. Vedântas. (Allah.) No. 111. — 2) n. *Costus speciosus* oder *arabicus* (vgl. व्याध) AK. 2,4,4,14. st. सव्याम ist Varâh. Bṛh. S. 77,7 vielleicht सव्याप्य (oder सव्याध) zu lesen.

व्याभाषक nom. ag. von 1. भाष् mit व्या P. 3,2,146, Schol.

1. व्याम (zerfällt in वि ऽआम; vgl. समाम) m. 1) *das Maass der ausgespannten Arme: Klafter* AK. 2,6,2,38. 3,4,13,98. Trik. 1,1,127 (dis-regard, disrespect mit einem Fragezeichen bei Wilson; vgl. व्यामन). H. 600. Halâj. 5,19. AV. 6,137,2. Çat. Br. 10,2,2,1. 2. ॰मात्र 1,2,5, 14. 7,1,1,37. TS. 5,1,1,4. 2,5,1. Âçv. Gṛhj. 4,1,10. द्वि॰, त्रि॰ Kâtj. Çr. 6,3,15. 27. अर्ध॰ 7,2,3. 16,7,29. MBh. 3,424. 10207. 4,814. 5,2524. 7,2388. R. 6,2,30. Suçr. 1,338,2. 2,182,1. Daçak. 88,19. = 4 Aratni Schol. zu Çat. Br. 7,1,1,7. = 5 Aratni Schol. zu Âçv. Gṛhj. 4,1,9. — 2) *Quere:* पार्शान्मुञ्च पैः संमामे बध्यते पैव्यामे AV. 18,4,70. — 3) *Rauch* Çabdârthak. bei Wilson.

2. व्याम Varâh. Bṛh. S. 77,7 vielleicht fehlerhaft für व्याध oder व्याप्य *Costus speciosus* oder *arabicus*.

व्यामन n. = 1. व्याम 1) Trik. 1,1,127. *disregard, disrespect* Wilson nach ders. Aut.; mit अवज्ञा beginnt aber ein neuer Artikel in Trik.

व्यामिश्र (2. वि - 2. आ + मिश्र) adj. (f. आ) 1) *vermischt, vermengt, gemengt* so v. a. *mannichfaltig, vielartig, ungleichartig:* व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे Bhag. 3,2. MBh. 3,13872. 12,12446. 14,1350. R. Gorr. 2,109,51. Suçr. 1,131,4. P. 3,3,15, Schol. *vermischt —, vermengt mit, begleitet von, versehen mit;* die Ergänzung a) im instr. MBh. 3,13018. Hariv. 14564. Suçr. 1,81,19. 103, 9. — b) im comp. vorangehend Suçr. 1,16,11. Spr. 2162. वराहकर्णा॰ (शर) MBh. 4,1332. — 2) *zerstreut, unaufmerksam* MBh. 14,588. 590.

व्यामोह (von 1. मुह् mit व्या) m. *Verlust der Besinnung, Mangel an klarem Bewusstsein, das Irresein, Verblendung —, Verwirrung des Geistes* MBh. 7,9384. 8,215. Hariv. 5909. Spr. 2847. Kathâs. 52,154. 235. 56,409. Gît. 10,16. Prab. 76,9. 93,3. 94,5. Sâh. D. 135,21. Verz. d. Oxf. H. 241,b, No. 591. जनकधनग्रहणापिण्डदानव्यामोहनिरासार्थम् *das im-Ungewissen-Sein* Kull. zu M. 9,132. Kâvjâd. 3,101.

व्याम्य (von 1. व्याम) adj. *in die Quere gehend:* पाश AV. 4,16,8 (वरुणा voc. st. वरुणो herzustellen).

व्यायतत्व s. u. यम् mit व्या 2) c).

व्यायतन in einer Inschrift in Journ. of the Am. Or. S. 7,10, Çl. 36 in folgender Verbindung: व्यायतनैकघोषरुचिराः (ग्रामाः), was nur bedeuten kann *ansprechend durch das eine Geräusch, das aus verschiedenen Heiligthümern ertönt;* Hall übersetzt *adorned with ample and frequent habitations of herdsmen.* अकिंच° soll nach Stanislas Julien in Hiouen-thsang 1,368 *l'état où l'on est dégagé de tout* bedeuten.

व्यायाम (von यम् mit व्या) m. bei Ableitungen die erste Silbe nicht zu वैया verstärkt nach Vop. 7,3 (vgl. व्यायामिक). 1) *Kampf, Streit* AV. 2,4,4. अन्ये साम प्रशंसन्ति व्यायाममपरे जनाः MBh. 12,621. °कलहौ 14,1025. — 2) *körperliche Anstrengung, — Uebung;* = श्रम H. 320. an. 3,471. Med. m. 52. = पौरुष H. an. Med. — MBh. 1,2840. श्रमव्यायामकुशल 4354. °कर्षित 6654. Çârṅg. Saṃh. 3,1,14. MBh. 3,16748. fg. °सह 4,1309. 2246. 7,1939. 6511. व्यायामे कर्कशत्वम् 13,542. 14,2865. 15,132. R. 2,63,19. व्यायामेषु कुशलः R. Gorr. 1,80,28. 5,13,33. Suçr. 1,18,9. 51,21. 73,12. 130,1. 253,1. Kâm. Nîtis. 13,42. 14,25. 16,18. 21. 19,25. Mṛkkh. 121,7. Varâh. Bṛh. S. 86,77. Kathâs. 18,191. 27,146. 74,142. °पूर्वाणि कृत्यानि MBh. 2,2025. अश्वपृष्ठे रथे नागे व्यायामं कुरु नित्यशः R. Gorr. 1,79,21. व्यायामं मुष्टिभिः कृत्वा तलैरपि समागतैः MBh. 2,11974. अश्मभिः क्षेपणीयैश्च व्यायामं कुरुतः स्म तौ Hariv. 3737. Râga-Tar. 7,1716. 8,735. °विद्या 1073. 2117. °विद् 2323. °भूमि *ein für körperliche Uebungen bestimmter Platz, Exercirplatz* u. s. w. Kâm. Nîtis. 16,19. fg. वारि° *Anstrengung im Wasser* Kathâs. 54,109. वाग्व्यायाम *Anstrengung beim Sprechen* MBh. 15,120. Suçr. 1,70,15. धनुर्व्यायाम *die beim Bogenschiessen stattfindende Anstrengung, Uebung im Bogenschiessen* R. Gorr. 2,65,18. अ° Suçr. 2,363,13. 509,6. Kâm. Nîtis. 14,47. — 3) = 1. व्याम *Klafter* H. 600. H. an. द्वि° Çâṅkh. Çr. 17,2,4. विषम in Med. wohl nur ein Druckfehler für वियाम; daher die Bed. *a difficulty* bei Wilson. — 4) = दुर्गसंचार H. an. Med. — व्यायामाभ्यधिकम् MBh. 1,5014 fehlerhaft für व्यायम्याभ्यधिकम्, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. बाहु°.

व्यायामवत् (von व्यायाम) adj. *sich körperlich anstrengend, körperlichen Uebungen obliegend* gaṇa बलादि zu P. 5,2,136.

व्यायामिक (von व्यायाम; vgl. Vop. 7,3) adj. (f. ई) *körperliche Uebungen betreffend:* व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् unter den 64 Künsten Verz. d. Oxf. H. 217,a,20. वैतालिकानां Comm. zu Bhâg. P. 10,45,36.

व्यायामिन् adj. = व्यायामवत् gaṇa बलादि zu P. 5,2,136. Varâh. Bṛh. S. 69,27. Vâgbh. 7,46.

व्यायुक (von 3. इ mit वि) adj. *weglaufend* Kâṭh. 31,3.

व्यायुध (2. वि + आ°) adj. *waffenlos* MBh. 7,4007.

व्यायोग (von 1. युज् mit व्या) m. Bez. *einer best. Art einactiger Schauspiele* H. 284. Daçar. 1,8. Hall in der Einl. S. 6. Sâh. D. 514. Pratâpar. 24,b,4. Verz. d. Oxf. H. 140,a, No. 280.

व्यायोजिम (wie eben) adj. etwa *unzusammenhängend,* Bez. eines best. Verbandes Suçr. 1,55,21.

व्यारोष (von 1. रुष् mit व्या) m. *Groll, Unmuth* Vjutp. 6.

व्याल (विऽग्राल AV. Padap.) 1) adj. a) *tückisch, hinterlistig, boshaft, bösartig;* = शठ AK. 3,4,26,198. H. an. 2,509. = खल Med. l. 48 = धूर्त Gaṭâdh. im ÇKDr. Beiw. des Takman AV. 5,22,6. von Elephanten: गजं व्यालम् Kir. 17,25. °द्विप Çiç. 12,28. °गज Kathâs. 37,98. °वारण 52,118. अव्यालचेष्टित ein Elephant R. 1,6,22 (25 Gorr.). m. *ein tückischer Elephant* H. 1222. H. an. Med. Halâj. 2,70. Spr. 2920. — b) *verschwenderisch* Halâj. 5,46. — 2) m. a) *ein tückischer Elephant;* s. u. 1) a). — b) *Raubthier* AK. H. 1216. H. an. Med. Halâj. 5,46. M. 1,39. 43. MBh. 1,1105. 7,2239. R. 2,95,15. Suçr. 1,4,19. 24,1. 89,16. Spr. (II) 345. 3405. (I) 1740. — c) *Schlange* AK. 1,2,1,7. 3,4,26,198. H. 1303. H. an. Med. Halâj. 3,18. MBh. 3,11978. Spr. (II) 2655. (I) 2460. 2609. 2919. 5046. Varâh. Bṛh. S. 19,4. 33,28. als Verzierung an Indra's Banner 43,57. 65. Sâh. D. 54,1. am Ende eines adj. comp. f. आ Râga-Tar. 6,88. — b) c) unbestimmt ob *Raubthier* oder *Schlange* MBh. 3,2355. 15668. 13,5473. R. 2,59,10. 3,55,21. 5,41,37. Varâh. Bṛh. S. 16,5. Râga-Tar. 8,2188. Bhâg. P. 1,6,14. 4,7,28. 7,8,29. सव्याला भूः Kâm. Nîtis. 4,53. — d) *Löwe* H. an. *Tiger* und *Panther* Râgan. im ÇKDr. — e) *König, Fürst* Mathureça zu AK. nach ÇKDr. — f) Bez. *des zweiten Decans im Krebse, des ersten im Scorpion und des dritten in den Fischen* Varâh. Bṛh. 21 (19), 6. — g) *ein best. Metrum* Colebr. Misc. Ess. 2,164. Ind. St. 8,408, N. 2. — h) N. pr. eines Mannes: °कुल Verz. d. Oxf. H. 196,b,23. — 3) f. ई *Schlangenweibchen* MBh. 3,16143. 16191. 5,7071. 9,579. 14,2455. R. Gorr. 2,34,9. 75,17. 5,26,2. Mṛkkh. 10,19. Ragh. 12,32. Weber, Kṛshṇag. 221. — 4) n. Bez. *einer der 5 Stadien in der retrograden Bewegung des Planeten Mars* Varâh. Bṛh. S. 6,3.

व्यालक (von व्याल) m. 1) *ein tückischer Elephant* Trik. 2,8,35. — 2) *Raubthier* oder *Schlange* MBh. 13,5484.

व्यालकरज *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Nigh. Pr.

व्यालखड्ग m. dass. Râgan. im ÇKDr.

व्यालगन्धा f. *die Ichneumonpflanze* (नाकुली) Râgan. im ÇKDr.

व्यालग्राह m. *Schlangenfänger* Bhar. zu AK. 1,2,1,12 nach ÇKDr. M. 8,260. MBh. 3,13357.

व्यालग्राहिन् m. dass. AK. 1,2,1,12. 3,4,1,10. H. 488. Halâj. 2,458. Spr. 2919. sein Ursprung Verz. d. Oxf. H. 22,a,29. °ग्राहिणी f. Kâçikh. 45,7 (nach Aufrecht).

व्यालग्रीव m. pl. N. pr. eines Volkes Varâh. Bṛh. S. 14,9.

व्यालजिह्वा f. *eine best. Pflanze,* = महासमङ्गा Râgan. im ÇKDr.

व्यालत्व n. nom. abstr. von व्याल *ein tückischer Elephant* Spr. 5143.

व्यालदंष्ट्र m. *Asteracantha longifolia Nees* oder *Tribulus lanuginosus Lin.* Râgan. im ÇKDr. °क m. dass. Dhanv. in Nigh. Pr.

व्यालद्रेष्काण m. = व्याल 2) f) Comm. zu Varâh. Bṛh. 21 (19), 6.

व्यालनख m. *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Râgan. im ÇKDr.

व्यालपत्त्रा f. *Cucumis utilissimus Roxb.* Râgan. im ÇKDr.

व्यालपाणिज m. *ein best. Parfum,* = व्याघ्रनख Nigh. Pr.

व्यालप्रहरण n. desgl. ebend.

व्यालमृग m. *Raubthier* MBh. 3,11919. R. 2,37,32. R. Gorr. 2,99,3. 3,1,35. Varâh. Bṛh. S. 6,3 (दंष्ट्रिव्यालमृगेभ्यः *through mordacious animals, serpents and wild beasts* Kern). *ein best. Raubthier:* ईहामृगा व्या-

लमृगा माङ्गल्याश्च मृगद्विजाः MBH. 8,4417. बिडालमत्ति श्वा — श्वानं व्यालमृगस्तथा (= चित्रव्याघ्र NILAK.) 12,444.

व्यालम्ब (von लम्ब् mit व्या) 1) adj. *herabhängend:* °हस्त *mit herabhängendem Rüssel* MBH. 7,3192. कर्णा VARÂH. BṚH. S. 68,59. °कम्बल RÂGA-TAR. 8,2736. — 2) m. *rothblühender Ricinus* ÇKDR. nach dem VAIDJAKA.

व्यालम्बिन् (wie eben) adj. = व्यालम्ब MBH. 6,2599. HARIV. 13018. ṚT. 4,16 (mit der v. l. व्यालम्बिनील° zu lesen). VARÂH. BṚH. S. 73,5. BHÂG. P. 3,28,24. 4,25,31.

व्यालवर्ग m. VARÂH. BṚH. 25(23),13 nach dem Comm. = सर्पद्रेष्काण (= व्यालद्रेष्काण) aber zugleich erklärt als *die beiden ersten Decane im Krebs und im Scorpion und der dritte in den Fischen.*

व्यालवल m. ein best. Parfum, = व्याघ्रनख RÂGAN. im ÇKDR.

व्यालायुध n. = व्याडायुध = व्याघ्रनख *ein best. Parfum* MATHUREÇA zu AK. 2,4,4,17 nach ÇKDR. und NIGH. PR. m. RÂGAN. im ÇKDR.

व्यालि s. व्याडि.

व्यालिक adj. (f. ई) = व्यालेन चरति gaṇa पर्पादि zu P. 4,4,10.

व्यालीभू (व्याल + 1. भू) *zur Schlange werden:* °भूत MBH. 3,12526.

व्यालीय् (von व्याल), °यति *einer Schlange gleichen* GAURI bei HALL in der Einl. zu VÂSAVAD. 56.

व्यालोल (von लुल् mit व्या) adj. *sich hinundher bewegend, zitternd, wogend:* दीप Spr. 2589. अलक 2629. 2921. नेत्र KATHÂS. 73,345. KAURAP. 7. GÎT. 12,15. PAÑKAR. 3,5,22. RÂGA-TAR. 5,372. BHÂG. P. 10,5,11.

व्यावक्रोशी (von क्रुश् mit व्यव) f. *gegenseitiges Schmähen* Schol. zu P. 3,3,43. 5,4,14 und 7,3,6.

व्यावभाषी (von 1. भाष् mit व्यव) f. dass. RÂJAM. zu AK. nach WILSON; °भासी ÇKDR. nach ders. Aut.

व्यावर्ग (von वर्ज् mit व्या) m. *Abtheilung, Abschnitt* LÂṬJ. 7,6,8. 7,30.

व्यावर्त (von वर्त् mit व्या) m. = नाभिकण्टक ÇABDAR. im ÇKDR. आवर्तक v. l.

व्यावर्तक (vom caus. von वर्त् mit व्या) adj. (f. व्यावर्तिका) *beseitigend, ausschliessend* Spr. 1973. TARKAS. 56. NILAK. 203. Comm. zu TAITT. PRÂT. 21,7. Davon nom. abstr. °ता f. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 98. 100. °त्व n. P. 2,1,57, Schol.

व्यावर्तन 1) adj. (f. ई) wohl vom caus. von वर्त् mit व्या, *beseitigend, abwendend;* s. विग्रहव्यावर्तिनी. — 2) n. (von वर्त् simpl. mit व्या) a) proparox. *Wendung* (des Weges) AV. 6,26,2. KHÂND. UP. 5,3,2. — b) *das Sichabwenden* SÂH. D. 243,14. Verz. d. Oxf. H. 215,b,43. — c) *das Sichschlingen um Etwas* KIR. 5,30.

व्यावर्तनीय (vom caus. von वर्त् mit व्या) adj. *zurückzunehmen:* अ° MIT. 259,10.

व्यावर्त्य (wie eben) adj. *zu beseitigen, auszuschliessen* KUSUM. 25, 19. 26,1.

व्यावहारिक (von व्यवहार) gaṇa विनयादि zu P. 5,4,34. gaṇa स्वागतादि zu 7,3,7. 1) adj. (f. ई) a) *dem Verkehr —, dem Leben angehörig, hier gültig, — zur Erscheinung kommend, real* (im Gegens. zu *ideal*): वाच् *Umgangssprache* NIR. 13,9. धर्म M. 8,164. MBH. 12,7096. MÂRK. P. 26,16. नामन् WEBER, NAX. 2,317. Trans. R. A. S. 2,37 (nach HAUGHTON). पारमार्थिक, व्यावहारिक, प्रातिभासिक NILAK. 156. 171. COLEBR. Misc. Ess. 1,375. BÂLAB. 16. VEDÂNTAS. (Allah.) No. 50. अ° BHÂG. P. 10, 85,14. — b) *umgänglich* KÂM. NÎTIS. 18,29. — c) *zum Process gehörig* M. 8,78. — 2) m. a) *Beamter* R. ed. Bomb. 2,66,13. व्यवहारे बाह्याभ्यन्तरसकलराज्यकृत्ये नियुक्ता अमात्याः Comm. — b) N. einer buddhistischen Schule TÂRAN. 271; vgl. एकव्यवहारिक (lies एकव्या°). — 3) n. *Verkehr, Handel, Geschäft* BHÂG. P. 12,2,3.

व्यावहारिन् (wie eben) adj. *zur Anwendung kommend* VARÂH. BṚH. S. 104,2; vgl. Ind. St. 8,301.

व्यावहारी (von हृ mit व्यव) f. wohl *Umgang, Verkehr* VOP. 26,177.

व्यावहार्य (von व्यवहार) adj. *tauglich, brauchbar, noch frisch* (= व्यवहारयोग्य, अश्रान्त NILAK): सेनाग्र्य MBH. 4,1746.

व्यावहासी (von हस् mit व्यव) f. *allgemeines Lachen* Schol. zu P. 3, 3,43. 5,4,14. 7,3,6.

व्यावृत् (von वर्त् mit व्या) f. 1) *Unterscheidung, Auszeichnung, Vorrang vor* (gen. und instr.): व्यावृतमेव गच्छति श्रैष्ठ्यं समानानाम् TS. 5, 6,2,3. 2,2,8,5. अन्याभिर्देवताभिः 6,6,8,3. 7,2,5,2. TBR. 1,4,1,4. KÂTH. 21,5. 29,7. व्यावृत्काम TS. 2,3,5,6. 6,6,11,4. — 2) *das Aufhören:* श्रोष्मणो व्यावृतः (kann auch als infin. gefasst werden) *bis es zu dampfen aufhört* TBR. 1,3,10,6.

व्यावृतत्व n. MAITRJUP. 3,5 wohl fehlerhaft für व्यावृत्तत्व *das Sichabwenden —, Nichtswissenwollen von Jmd oder Etwas;* nach dem Comm. = व्यावृताभिप्रायत्वं गूढाभिसंधिता.

व्यावृत्ति (von वर्त् mit व्या) f. 1) *das Sichabwenden, Zukehren des Rückens:* अ° ÂÇV. ÇR. 1,1,11. LÂṬJ. 1,2,15. — 2) *Verdrehung* (der Augen) SUÇR. 2,192,19. ÇÂRÑG. SAṀH. 3,3,16. — 3) *das Sichlosmachen von Etwas:* पाप्मनः TS. 7,2,10,4 in Ind. St. 10,150. आमिषात् Spr. 5184. — 4) *das Ausgeschlossenwerden von, das Kommen um:* पितृलोकदेवलोकाभ्याम् ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 309. *das Ausgeschlossensein, Ausschluss, Beseitigung* KUMÂRAS. 2,27. ÇAÑK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 252. zu KHÂND. UP. S. 22. KÂVJÂD. 2,199. SÂH. D. 107,19. — 5) *Sonderung, Trennung, Unterscheidung* TBR. 2,1,3,6. 4,3. पापवस्यसस्य 8,2. 3,8, 19,2. TS. 6,1,1,5. KÂTH. 25,8. ÇAT. BR. 12,7,2,13. *Distinctheit* (der Stimme) KÂTH. 27,3. सोमपीथस्य चैषा सुरापीथस्य च व्यावृत्तिः *Unterschied* AIT. BR. 8,8. — 6) N. *eines best. Opfers* ÇAT. BR. 13,3,3,5. — Vgl. निर्व्यावृत्ति.

व्यावृत्सु (vom desid. von वर्त् mit व्या; eine ungrammatische Form ohne Reduplication) adj. *sich von Etwas loszumachen wünschend:* संसार° WILSON, SÂÑKHJAK. S. 6.

व्याशा (2. वि + 1. आशा) f. *Zwischengegend* (auf der Windrose) WEBER, RÂMAT. UP. 325.

व्याश्रय (von श्रि mit व्या) m. *Beistand, Parteinahme für Jmd* P. 5,4,48.

व्यास (von 2. अस् mit वि) m. 1) *das Auseinanderziehen,* ein Fehler der Aussprache ṚV. PRÂT. 14,2. 4. — 2) *Ausführlichkeit, ausführliche Darstellung* (Gegens. समास) AK. 3,3,22. TRIK. 3,3,451. H. 1432. an. 2,591. MED. s. 11. HALÂJ. 4,81. 5,19. MBH. 1,51. 85. 3,67. व्यासेन *ausführlich* SUÇR. 2,17,3. 513,6. PAÑKAR. 2,3,46. व्यासात् dass. SUÇR. 1, 261,3. व्यासतस् dass. 112,13. 2,332,9. व्याससमासतस् MBH. 12,1296.

समासव्यासयोगतस् Bhâg. P. 1,9,27. — 3) *Durchmesser* Colebr. Alg. 87. *Breite* Varâh. Bṛh. S. 53,12. 17. 23. fgg. = मानभेद Çabdar. im ÇKDr. — 4) *der auseinandergezogene Text*, Bez. des Padapâṭha AV. Prât. 3,68. 72. — 5) N. pr. eines mythischen Weisen, dem die Redaction und auch Abfassung einer Menge umfangreicher Texte (der Veda, des Mahâbhârata, der Purâṇa, des Vedânta u. s. w.) zugeschrieben werden; er gilt für einen Sohn Parâçara's von der Satjavatî (vgl. द्वैपायन, कृष्णद्वैपायन). Trik. 2,7,15. 3,3,451. H. 847. H. an. Med. Halâj. 2,258. Taitt. Âr. 1,9,2. Ind. St. 4,377. Bhag. 10,13. मुनीनामप्यहं व्यासः (sagt Kṛshṇa) 13,37. 18,75. MBh. 1,21. 2047. विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इति स्मृतः 2417. Hariv. 2. 4. 5.453.7999.10692. मत्सीतनूज Spr. (II) 1110. Verz. d. Oxf. H. 47,b,21. fgg. 59,a,35. Bhâg. P. 1,6,1. Burnouf, Intr. 568. Tattvas. 22. Hall 9. 86. Verfasser eines Gesetzbuchs Jâǵn. 1,5. Ind. St. 1,20. 232. fgg. 467. Gild. Bibl. 455. achtundzwanzig Vjâsa VP. 272. Verz. d. Oxf. H. 52,a. fgg. 80,a. Astronom Ind. St. 2,247. स्कान्द 3,280. °मातर् = सत्यवती Trik. 2,8,11. °सू desgl. 3,3,222. — 6) als v. l. für व्याम Varâh. Bṛh. S. 77,7 vielleicht fehlerhaft für व्याध oder व्याप्य *Costus speciosus* oder *arabicus*. — Vgl. दिनव्यासदल, बाबत्री°, बृहद्व्यास, वेद°, वैयास fgg.

व्यासकेशव m. N. pr. eines Autors Verz. d. B. H. No. 807.

व्यासगीता f. (sc. उपनिषद्) pl. Titel eines Theils des Kûrmapurâṇa Verz. d. Oxf. H. 8,a,33. Verz. d. B. H. 128,b. 129,a.

व्यासङ्ग (von सञ्ज् mit व्या) m. 1) *das Anhaften, Anhangen:* दानव्यानिविषादमूकमधुपव्यासङ्गदीनानन adj. (ein Elephant) Mâlatîm. 153,4. कलङ्क° Spr. 3080. — 2) *das Hängen an Etwas, Verlangen nach Etwas, Lust an Etwas, Leidenschaft für Etwas:* स्वर्गतरंगिणीतटभुवि व्यासङ्गमङ्गीकुरु Spr. 2256. विद्वत्कुलमनोभृङ्गरस° Verz. d. Oxf. H. 213,b, No. 507. यत्किंचिन्मनोव्यासङ्गकारकम् (परित्यज्य) MBh. 12,366. 13,318. Kathâs. 67,29. Bhâg. P. 11,26,26. — 3) *Verknüpfung, Zusammenhang* Kusum. 14,1. — 4) *Zerstreutheit* (als Erklärung von व्याक्षेप) Nîlak. zu Hariv. 4455. Çâk. 71,3, v. l.

व्यासतीर्थ 1) n. N. pr. eines Tîrtha Verz. d. Oxf. H. 66,b,8. — 2) m. N. pr. eines Mannes Colebr. Misc. Ess. 1,83. Verz. d. Oxf. H. 385,a, No. 484. 393,a, No. 90. °बिन्दु Hall 113. 205.

व्यासतुलसी m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 274,a, N. 649.

व्यासत्र्यम्बक m. desgl. ebend. 345,b,41. fg.

व्यासत्व n. nom. abstr. von व्यास 5) MBh. 1,4236.

व्यासदत्त m. N. pr. eines Sohnes des Vararuki Verz. d. Cambr. H. 15.

व्यासदास m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 248,a,33.

व्यासपरिपृच्छा f. Titel einer Schrift Vjutp. 42.

व्यासपूजा f. Vjâsa's *Ehren*, Bez. einer best. Begehung Verz. d. B. H. No. 1325. fg.

व्यासभाष्यव्याख्या f. Titel eines *Commentars* von Vâkaspatimiçra Sarvadarçanas. 165,22.

व्यासमूर्ति m. Bein. Çiva's Çiv.

व्यासयति m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 620. fg.

व्यासवन n. N. pr. eines heiligen *Waldes* MBh. 3,6063. Verz. d. Oxf. H. 46,b, N. 3.

व्यासवर्य m. N. pr. eines Mannes Hall 38.

व्यासशतक n. Vjâsa's *hundert* (Sprüche), Titel einer Schrift Verz. d. Kop. H. 11,b.

व्यासशुकसंवाद m. Vjâsa's *Unterredung mit* Çuka, Titel einer Schrift aus dem Mahâbhârata, Verz. d. Oxf. H. 228,b, No. 559.

व्याससमासिन् (von व्यास + समास) adj. *ausführlich und gedrängt:* वाच् MBh. 12,1604.

व्याससिद्धान्त m. Titel eines Werkes Verz. d. Cambr. H. 43.

व्याससूत्र n. Titel eines Sûtra Verz. d. Oxf. H. 279,b,11; vgl. 257,b,20. fg. °चन्द्रिका Hall 96. °वृत्ति Colebr. Misc. Ess. 1,334.

व्यासस्थली f. N. pr. eines heiligen Platzes MBh. 3,6066.

व्यासाचल (व्यास + अ°) m. N. pr. eines Dichters Verz. d. Oxf. H. 253,a,26. fg.

व्यासारण्य (व्यास + अ°) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 263,a,10.

व्यासाश्रम (व्यास + आ°) m. Bein. Analânanda's Colebr. Misc. Ess. 1,333.

व्यासाष्टक (व्यास + अ°) n. Vjâsa's *Oktade*, Bez. eines best. Liedes Verz. d. Oxf. H. 72,a,4. 5. 133,a,10.

व्यासीय adj. *von* Vjâsa *verfasst*, n. *ein Werk* Vjâsa's Verz. d. Oxf. H. 167,a,35.

व्यासुकि m. wohl patron. Vjâḍi's Verz. d. Oxf. H. 185,b,8.

व्यासेध (von सिध् mit व्या) m. *Verhinderung, Störung, Unterbrechung:* यज्ञव्यासेधकारिन् VP. 1,6,30.

व्यासेश्वर (व्यास + ई°) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 72,a,1. °तीर्थ 66,a,26. fg.

व्याहत s. u. 1. हन् mit व्या; davon °त्व n. (logischer) *Widerspruch:* अव्याहतत्वं वाचः H. 66.

व्याहति (von 1. हन् mit व्या) f. (logischer) *Widerspruch* Kâvjapr. 184,9 (349,11).

व्याहनस्य (2. वि + आ°) adj. *nicht geil, nicht zotenhaft* Ait. Br. 6,36.

व्याहन्तव्य (von 1. हन् mit व्या) adj. *zu übertreten:* अतस्ते शासनं भर्तुर्न व्याहन्तव्यमेव हि R. Gorr. 2,23,4.

व्याहरण (von हर् mit व्या) n. *das Aussprechen:* मम व्याहरणात् *weil ich es sage* MBh. 14,1861. नामव्याहरणं विष्णोः Bhâg. P. 6,2,10. विड्राग्मेदितं प्राज्ञा द्विस्त्रिर्व्याहरणं च यत् Halâj. 1,153.

व्याहर्तव्य (wie eben) adj. *zu sagen, mitzutheilen:* न विद्मः केषुचिद्व्याहर्तव्यम् MBh. 1,6237.

व्याहार (wie eben) m. 1) *Aeusserung, Gespräch, Unterhaltung* AK. 1,1,5,1. H. 241 (व्याहर fehlerhaft). Halâj. 1,138. आविर्भूतज्योतिषां ब्राह्मणानां ये व्याहारास्तेषु मा संशयो भूत् Uttarar. 81,4 (104,5). व्याहारे नौ नहि समुचिता युष्मदस्मत्प्रयोगः *wenn wir mit einander reden* Spr. 4602. Sâh. D. 329,19. Pańkat. ed. orn. 41,9. पशुशस्त्र° *das Sprechen des Viehes und der Waffen* (als portentum) Varâh. Bṛh. S. 46,71. परदार° *Gespräch über* Çâk. 104,23, v. l. — 2) *Gesang* (von Vögeln): पक्षि° Hariv. 4420. 14525. परभृतकलव्याहारेषु Mâlav. 76. — 3) in der Dramatik *eine witzige Aeusserung* u. s. w. Bhar. Nâṭjaç. 18,113. 19,66. 94. Daçar. 3,11. 18. Sâh. D. 521. 531. Pratâpar. 28,a,1.

व्याहारमय (von व्याहार) adj. (f. ई) *aus Aeusserungen —, aus Gesprächen über* (geht im comp. voran) *bestehend* Kathâs. 121,280.

व्याहारिन् (von हर् mit व्या) adj. 1) *sprechend, redend:* अल्प° Lâṭj. 9,8,7. मिथ्या° MBh. 15,199. — 2) *singend:* काम° (पत्रिन्) Hariv. 6929. *ertönend von:* मधुकर° (द्रुम) Prab. 96,18. — Vgl. अ°.

व्याहित s. u. 1. धा mit व्या.

व्याँहृति (von हर् mit व्या°) f. 1) *Aeusserung, Ausspruch* MBh. 13,3138. Varâh. Bṛh. S. 51,1. नहीश्वरव्याहृतयः कदाचित्पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम् Kumâras. 3,63. भूतार्थ° Ragh. 10,34. — 2) °ति und °ती *Spruch, Ausruf;* so heissen kurze, aus einzelnen abgerissenen Worten bestehende Formeln, namentlich die Worte भूस्, भुवस् und स्वर्, welche auch महाव्याहृतयस् genannt werden. Taitt. Prât. 3,7. TS. 1,6,10,2. 5,5,5,3. TBr. 2,2,4,3. Ait. Br. 5,32. 8,7.13. Çat. Br. 1,1,1,13. 2,5,13. 5,2,5.16. 2,1,4,10. Âçv. Çr. 2,15,28. Gṛhj. 3,4,1. Kauç. 72.fg. यत्र मन्त्रा न विद्यन्ते व्याहृतीस्तत्र योजयेत् Gobh. 2,16. Taitt. Up. 1,5,1 (तिस्रः). 3 (चतस्रः). Maitrjup. 6,2. M. 2,78. 6,70. 11,248. MBh. 13,7384. Hariv. 11499. Mârk. P. 101,24. Bhâg. P. 3,12,44. 5,9,5. सप्त Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,107. fg. Weber, Râmat. Up. 350. महा° Kâtj. Çr. 2,1,6. 19,4,16. Shaḍv. Br. 1,6. Gobh. 1,8,15. Nir. 13,9. P. 8,2,71. M. 2,81. 11,122. Jâǵn. 1,15. MBh. 3,14158 (पञ्च). Hariv. 12434. Suçr. 1,7,1. सव्याहृतिका गायत्री Jâǵn. 1,238. व्याहृति und °सामन् als Namen von Sâman Ind. St. 3,239. व्याहृतित्रयी als Tochter Savitar's von der Pṛçni Bhâg. P. 6,18,1.

व्याह्वृति (von ह्वर् mit व्या) f. N. eines Sâman, v. l. für व्याहृति Ind. St. 3,239,a.

व्युच्छित्ति (von 1. छिद् mit व्युद्) f. *Unterbrechung, Störung:* धर्म° MBh. 12,1189. यज्ञ° Mârk. P. 16,46. प्रवृत्तिमार्ग° VP. 1,6,31. अ° (वाचः) H. 71.

व्युच्छेत्तर् (wie eben) nom. ag. *Unterbrecher, Störer:* कुलदेशादिधर्माणामव्युच्छेत्ता MBh. 12,2901.

व्युँच्य (von वच् mit वि) adj. *zu verbessern, dareinzureden* TS. 7,3,1,2. Ait. Br. 3,35.

व्युत s. 5. वा mit वि.

व्युति f. = व्यूति Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDr.

व्युत्क्रम (von क्रम् mit व्युद्) m. 1) *Uebertretung:* मर्यादा° VP. bei Muir, ST. 1,193. *Fehltritt* Varâh. Bṛh. S. 74,12. — 2) *das Heraustreten* (aus der Ordnung), *Veränderung der Reihenfolge, umgekehrte Ordnung* H. 1511. Çâṇḍ. 92. °विवाह Verz. d. Oxf. H. 282,a,40. Kull. zu M. 10,16. उत्पत्ति° Vedântas. (Allah.) No. 93. Comm. zu Âçv. Çr. 1,12,31. zu Kâtj. Çr. 88,18.

व्युत्क्रमण (wie eben) n. *das Sichabsondern* P. 8,1,15. = पृथगवस्थान Schol.

व्युत्क्रान्त s. u. क्रम् mit व्युद्. °क्रान्ता f. (sc. प्रहेलिका) Bez. *einer Art von Räthseln* Kâvjâd. 3,99.

व्युत्थातव्य (von स्था mit व्युद्) partic. fut. pass. neutr. *die Nothwendigkeit von Etwas abzustehen:* अतो ऽस्मात्कामादिद्वषा व्युत्थातव्यम् Çaṅk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 260.

व्युत्थान (wie eben) n. 1) *das Abstehen von seinen Verpflichtungen,* *Versäumniss der Pflichten:* वृषलत्वं परिगता व्युत्थानात्क्षत्रधर्मिणः MBh. 14,832. — 2) *das Nachgeben* MBh. 13,1511. अ° 1515. — 3) Bez. *einer best. Stufe im* Joga: व्युत्थानं क्षिप्तमूढविक्षिप्ताख्यं भूमित्रयम् Verz. d. Oxf. H. 229,a, No. 561, Z. 36. fg. 231,a,27.30. Vedântas. (Allah.) No. 77. — Nach den Lexicographen = प्रतिरोध AK. 3,4,18,121. = प्रतिरोधन H. an. 3,420. = विरोधाचरण AK. H. an. Med. n. 134. = स्वतन्त्रता Trik. 3,3,259. = स्वैरवृत्ति H. an. = स्वातन्त्र्यकृत्य Med. = स्वतन्त्रवृत्ति Halâj. 4,93. = समाधिपारण H. an.

व्युत्पत्ति (von 1. पद् mit व्युद्) f. 1) *die Entstehung —, Ableitung —, Auflösung —, Etymologie eines Wortes* Sâh. D. 7,1. Schol. zu P. 5,2,93. 7,3,5. 8,3,6. Vop. 26,220. °रहिताः शब्दाः H. 2. Kusum. 48,15. Verz. d. Oxf. H. 185,b,8. — 2) *Wirkung:* प्रतिभा कारणं तस्य (काव्यस्य) व्युत्पत्तिश्च विभूषणम् Verz. d. Oxf. H. 214,a,5.6. — 3) *Abweichung im Tone, das Erklingen eines fremden Tones* Varâh. Bṛh. S. 46,61. — 4) *das Sichheranbilden, Bildung, Zunahme an Kenntnissen:* बालानाम् Madhus. in Ind. St. 1,14,4. Sâh. D. 2,3. 96,16. Tarkas. 59. Kusum. 23,9. — Vgl. महा°, यथा°.

व्युत्पत्तिवाद m. Titel zweier Werke Hall 55.

व्युत्पादक (vom caus. von 1. पद् mit व्युद्) adj. *ableitend, herleitend, etymologisch erklärend:* शब्दव्युत्पादकशास्त्र Durgâd. im ÇKDr.

व्युत्पादन (wie eben) n. *das Ableiten, Herleiten von* (abl.) Kumârila bei Müller, SL. 97. Madhus. in Ind. St. 1,19,1.

व्युत्पाद्य (wie eben) adj. *abzuleiten, herzuleiten:* शास्त्र° Wilson, Sâṅkhjak. S. 10.

व्युत्सर्ग (von सर्ज् mit व्युद्) m. *Erklärung, Aufhellung* Madhjam. 56.

व्युद (2. वि + उद) adj. *wasserlos, trocken* Bhâg. P. 10,25,26.

व्युदक (2. वि + उदक) adj. (f. आ) dass. Çâṅkh. Gṛhj. 4,12. Âpast. 1,11,28. Bhâg. P. 5,14,13. 9,6,28.

व्युदास (von 2. अस् mit व्युद्) m. 1) *das Fahrenlassen, Aufgeben:* एकान्त° MBh. 12,592. — 2) *Beseitigung, Ausschliessung* Sâh. D. 444. Verz. d. Oxf. H. 209,b,33. Schol. zu P. 7,2,74. 4,63. zu Kap. 1,88. Kull. zu M. 11,77. Comm. zu Taitt. Prât. 15,9. — 3) *Ausgang, Ende:* व्रतेद्युदासं नाहः Nalod. 4,14. — Vgl. क्षिति°.

व्युदूँहन (von 1. ऊह् mit व्युद्) n. *das Auskehren, Ausfegen* Çat. Br. 7,1,2,17. 13,8,2,3.

व्युद्ग्रथन (von ग्रन्थ् mit व्युद्) n. *das Aufbinden in mehreren Strängen*, eine Variation des einfachen Umwindens des Jûpa Kâtj. Çr. 14,1,20.

व्युँन्दन (von उन्द् mit वि) n. *das Benetzen* VS. 2,2.

व्युन्मिश्र (2. वि + उ°) adj. (f. आ) *vermischt —, versehen —, besudelt mit:* (गदाम्) व्युन्मिश्रां केशमज्जाभिः MBh. 6,2775. विमिश्रां ed. Bomb.

व्युपकार (von 1. कर् mit व्युप) m. *das Genügethun, vollkommene Beobachtung:* धर्मव्युपकारयोजित R. 6,96,6.

व्युपजाप (von जप् mit व्युप) m. *das Zuflüstern* Âpast. 1,8,15. st. dieser guten Lesart ist die des Haradatta (वकारप्रश्छान्दसो ऽपपाठो वा), व्युपजाव in den Text aufgenommen worden.

व्युपतोद (von 1. तुद् mit व्युप) m. *das Anstossen* ebend.

व्युपदेश m. *Vorwand* bei Wilson wohl nur fehlerhaft für व्यपदेश.

व्युपद्रव (2. वि + उ°) adj. *keinem unglücklichen Zufall ausgesetzt*

Suçr. 2,22,8.

व्युपरम (von रम् + व्युप) m. *das zur-Ruhe-Gelangen, Aufhören:* इन्द्रियाणाम् MBh. 12,9897. अस्त्र° 7,9280. क्रिया° 12,2147. युद्ध° Hariv. 4192. विकल्प° Uttarar. 117,11 (159,6). वेग° Mālatim. 86,16, v. l. दिन° *Neige des Tages* Hariv. 4357.

व्युपवीत (2. वि + उ°) adj. *ohne* Upavîta; s. u. बद्धशिख 1) *a*).

व्युपशम (von शम् mit व्युप) m. *das Aufhören, Weichen* Vjutp. 178. व्यथा° Sāh. D. 344,4. वेग° Mālatim. 86,16 (v. l. °व्युपरम).

व्युप्तकेश adj. *dessen Haar geschoren ist* (Mahīdh.) VS. 16,29. *dessen Haar verwühlt ist* (Comm. und Zusammenhang) Bhāg. P. 4,2,14. Das erste Mal ist वप् auf 1. वप् mit वि, das zweite Mal auf 2. वप् mit वि zurückzuführen.

1. व्युष् (von 2. वस् mit वि) f. *Morgenhelle, Tagesanbruch* AV. 13,3,21. Vgl. ausserdem den infin. Gebrauch unter 2. वस् mit वि und आव्युषम्, उपव्युषम्.

2. व्युष्, व्युष्यति (दाहे) Dhātup. 26,7. (विभागे) 106. व्योषयति (उत्सर्गे) 32,92.

व्युषम् (von 2. वस् mit वि) = 1. व्युष्; s. उपव्युषसम्.

व्युषित s. u. 2. वस् mit वि.

व्युषिताश्व m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1,4686. Hariv. 827 (ध्युषिताश्व die neuere Ausg.). Ragh. ed. Calc. 18,23. — Varianten dieses Namens: ध्युषिताश्व, अध्युषिताश्व und दूषिताश्व.

व्युष्ट adj. und n. *Tagesanbruch* (auch Hār. 253. Halāj. 1,111 und VP. 222) s. u. 2. वस् mit वि. Das m. personificirt als Sohn Pushpārṇa's von der Doshâ Bhāg. P. 4,13,14. als Sohn Vibhâvasu's von der Ushas 6,6,16. das n. = फल nach H. an. 2,99. — Vgl. अ° und वैयुष्ट.

व्युष्टि (von 2. वस् mit वि) f. 1) *das Aufleuchten der Morgenröthe, Hellwerden* ṚV. 1,124,12. 171,5. उषसो व्युष्टिषु 2,34,12. अह्नो व्युष्टौ परितक्म्यायाः 5,30,13. 6,24,9. 8,20,15. 9,98,11. 10,76,1. 99,1. AV. 8,9,10. 15. Çat. Br. 13,2,1,6. TS. 4,3,11,4. Paṅkav. Br. 8,1,13. — 2) *Anmuth, Schönheit* (= कान्ति, देहगतं लावण्यम् Çaṅk.) Khānd. Up. 3,13,4. — 3) *Lohn für* (gen. und loc.), *Vergeltung;* = फल AK. 3,4,9,41. H. 1446. an. 2,99. Med. ṭ. 28. Halāj. 4,92. = समृद्धि und ऋद्धि AK. H. an. Med. व्युष्टिरेषा स्त्रीणां पूर्वं भर्तुः परां गतिम् । गन्तुं सपुत्राणाम् MBh. 1,6164. सेयं दानकृता व्युष्टिरनुप्राप्ता सुखं त्वया 3,15466. महतस्तपसः 12,8336. दान° 13,3528. 3837. 5144. ब्राह्मणपूजायाम् 7185. 7355. fg. Spr. 5323. R. Gorr. 1,15,14. 6,72,28. 95,14 (*Strafe*). ed. Bomb. 4,20,11 (*Strafe*). Mārk. P. 16,45. — 4) *Lob* (स्तुति) H. an. — 5) Bez. gewisser Ishṭakâ TS. 5,3,4,7. — 6) N. eines Dvirâtra Kāṭh. 15,10. Kātj. Çr. 15,9,22. Lāṭj. 8,11,11. 9,3,5. 14. Maçaka in Verz. d. B. H. 72 (IV, 9). व्युष्टित्रिरात्र gaṇa युक्तारोह्यादि zu P. 6,2,81.

व्युष्टिमत् (von व्युष्टि) adj. 1) *mit Anmuth —, mit Schönheit ausgestattet* Khānd. Up. 3,13,4. — 2) *Lohn bringend:* फलवन्ति च कर्माणि व्युष्टिमन्ति (व्युष्टिमन्ति ed. Bomb.; व्युष्टिः पारमैश्वर्यं तद्वन्ति Nīlak.) MBh. 12,9672. 13,3077.

व्यूक m. pl. N. pr. eines Volkes MBh. 6,369 nach der Lesart der ed. Bomb., बक ed. Calc.

व्यूढ, व्यूळ्ह partic. s. u. 1. ऊह् mit वि. Nachzutragen ist: 1) *verrückt, verschoben, verzogen* Çāṅkh. Çr. 10,2,2. 3,2. Paṅkav. Br. 25,1,1. दशरात्र Āçv. Çr. 8,8,1. 12,25. 10,3,2. प्रातरनुवाक Ait. Br. 2,18. °छन्दस् *dessen Metra verschoben sind* Çāṅkh. Br. 22,7. 27,4. 7. Paṅkav. Br. 10,5,14. — 2) *auseinandergezogen:* °जानु adj. (durch Zwischenstrecken der Arme Comm.) Çāṅkh. Gṛhj. 1,10. — 3) *breit* Halāj. 4,14. व्यूढोरस् MBh. 1,2740. 4553 (ed. Calc. an beiden Stellen व्यूढोराः st. व्यूढोरः der ed. Bomb.). व्यूढोरस्क R. Gorr. 1,51,18. — 4) *ausgebreitet, ausgetheilt, angerichtet* TBr. 2,3,9,9.

व्यूढकङ्कट adj. s. u. 1. ऊह् mit वि 6).

व्यूति (von 5. वा mit वि) f. = व्युति *das Weben* AK. 2,10,29. Trik. 3,3,134. H. 913. an. 2,154. Med. n. 23. Çabdar. im ÇKDr.

व्यूह् (1. ऊह् mit वि, aber als simpl. behandelt) med. *in Schlachtordnung stellen:* अव्यूहत महाव्यूहम् MBh. 6,2100. 3542. 4500. उभयबलेषु व्यूहितेषु Paṅkat. ed. orn. 57,15. व्यूहितो दानवैर्व्यूहैः (दानवं व्यूहम् die neuere Ausg.) Hariv. 2436.

— प्रति *sich in Schlachtordnung aufstellen gegen* (acc.), *in Gegen-Schlachtordnung aufstellen* (das eigene Heer): प्रत्यव्यूहत (ohne acc.) MBh. 6,2411. तावकानां च तं व्यूहं प्रत्यव्यूहत । अर्धचन्द्रेण व्यूहेन 2412. प्रत्यव्यूहत पाण्डवान् 8,2126. कथं पाण्डुसुताश्चापि प्रत्यव्यूहन्त (so ed. Bomb.) मामकान् 2128. बार्हस्पत्यं विधिं कृत्वा प्रत्यव्यूहन्निशाचरम् 3,16370. एवमेतं महाव्यूहं प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवाः 6,2420. प्रत्यव्यूहत वाहिनीम् 3291.

1. व्यूह (von 1. ऊह् mit वि) m. 1) *Verschiebung, Verrückung:* स्थान° Nir. 7,11. Çat. Br. 10,4,2,17. 23. Lāṭj. 10,3,16. ग्रहाणाम् Schol. zu Kātj. Çr. 12,6,23. — 2) *Auseinanderrückung, Zerlegung von Halbvocalen und zusammengeschmolzenen Vocalen* ṚV. Prāt. 8,22. 16,14. 34. 50. अ° 18,27. — 3) *Vertheilung:* तद्दिग्व्यूहा जनाः Varāh. Bṛh. S. 6,7. सुव्यूहकान्त adj. (गृह) R. 5,12,49. चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानम् व्यूहो विशिष्टः संनिवेशः Verz. d. Oxf. H. 230,*b*,35. चरणव्यूहः । चरणाः शाखाः सूत्राणि च । व्यूहो विविच्य भेदः Müller, SL. 198. — 4) *Aufstellung eines Heeres, Schlachtordnung, ein Heer in Schlachtordnung* AK. 2,8,2,47. Trik. 3,3,460. H. 747. an. 2,602. fg. Med. h. 10. Halāj. 5,9. Vaig. bei Mallin. zu Çiç. 16,67. प्रविश्य च व्यूहमभेद्यम् MBh. 1,2755. परव्यूहविनाशन 3,2430. 6,674. 2409. 2412. R. 5,73,60. 82,21. 83,3. 6,31,33. फल्गु सैन्यस्य यत्किंचिन्मध्ये व्यूहस्य तद्भवेत् Spr. (II) 509. Ragh. 7,51 (du.). °छिद्र Kathās. 48,7. °द्वार 11. व्यूहानामुत्तमा मार्गाः सप्त चैव महापथाः Hariv. 8964. सप्ताङ्ग Kām. Nītis. 19,30. fgg. verschiedene Formen aufgezählt und beschrieben 18,48. fgg. शकट, वराह, मकर, सूचि, गरुड M. 7,187. पद्म 188. वज्र 191. औशनस MBh. 3,16369. अर्धचन्द्र 6,2412. गारुड R. 6,6,11. मकर° Çiç. 16,67. महासूचि° Kathās. 47,40. °रचनां विधाय *eine zum Kampf geeignete Stellung einnehmend* (von einem Löwen gesagt) Paṅkat. 9,22. आखेटव्यूहसंवृत *ein geordneter Jagdzug* Verz. d. Oxf. H. 13,*b*,43. — 5) *Gesammtheit, ein Ganzes, Complex;* = समूह, वृन्द AK. 2,5,39. 3,4,21,240. H. 1411. H. an. Med. Halāj. 4,2. पदार्थ° Schol. zu Kap. 1,62. प्रत्यूह° Çatr. 14,61. 265. विघ्न° Pārçvanāthak. 4,168 (nach Aufrecht). बुद्धक्षेत्रव्यूहेषु Saddh. P. 4,5,*b*. ग्रह° (?) Paṅkar. 3,14,19. बुद्धिमनोऽङ्गार्थगुणा° Bhāg. P. 4,29,70. आत्मतत्त्वव्यूहेनात्मना 5,17,14. Insbes. *die Viereinigkeit* Purushotta-

ma's als Vâsudeva, Samkarshana, Pradjumna und Aniruddha Sarvadarçanas. 54,18. व्यूहश्चतुर्विधो वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धसंज्ञकः 20. fg. 55,10. Weber, Râmat. Up. 326. Bhâg. P. 11,6,10. श्रीवैकुण्ठप्रथमव्यूहवर्णन, विष्णुव्यूहवर्णन Verz. d. Oxf. H. 14,*a*,2. 3. काय° Gît. 12,27. Pańkar. 1,1,50. 2,8,4. Auch Bez. *der einzelnen Erscheinungsform:* एकव्यूहविभाग, द्विव्यूहसमन्वित, त्रिव्यूह, चतुर्व्यूह als Beiww. Hari's MBh. 12,13603. fgg. महेश्वरः चतुर्व्यूहः Verz. d. Oxf. H. 47,*b*,30. एकादश° adj. (रुद्र) Bhâg. P. 5,25,3. Hierher vielleicht व्यूह = काय Trik. — 6) *Theil, Abschnitt, Kapitel:* योगशास्त्रं चतुर्व्यूहम् Sarvadarçanas. 180, 11. तदिदं शास्त्रं चतुर्व्यूहम् हेयं हेयसाधनं हानं हानसाधनं च Verz. d. Oxf. H. 237,*b*, No. 569. कारक° 246,*a*, No. 618. — 7) = निर्माण Trik. H. an. Med. — Vgl. करण्ड°, गर्भ°, घन°, चक्र° (auch Kathâs. 30,40), दण्ड°, नक्षत्र°, प्रभा°, भय°, महा°, ललित°, विमल°, वीर°, सुखवती°.

2. व्यूह (von 2. ऊह् mit वि) m. *Raisonnement, Speculation;* = तर्क H. an. 2,602. Med. h. 10. hierher vielleicht MBh. 14,1029. = व्यवहाररचनाकौशल Nîlak.

व्यूहन (von 1. ऊह् mit वि) 1) adj. *auseinanderrückend, sondernd:* Çiva Hariv. 7428. = जगत्क्षोभक Nîlak. — 2) n. *Verschiebung, Auseinanderrückung, gesonderte Aufstellung* Kâtj. Çr. 4,2,41. स्रुग्व्यूहन 5,9,27. 8,2,10. छन्दसाम् Schol. zu Kâtj. Çr. 12,6,23. Suçr. 1,25,2. 15. eine Eigenschaft des Windes Garbhop. in Ind. St. 2,66. Verz. d. Oxf. H. 225, *a*,8 v. u. Bhâg. P. 3,26,37 (= मेलनं तृणादेः Comm.). vom Winde bekommt der Fötus व्यूहन (*Entfaltung der Glieder* Stenzler) Jâǵń. 3,76.

व्यूहपार्ष्णि m. *Hintertreffen* AK. 2,8,2,47. H. 747.

व्यूहपृष्ठ n. dass. Trik. 3,3,134.

व्यूहमति m. N. pr. eines Devaputra Lalit. ed. Calc. 248,17.

व्यूहराज m. 1) *der Fürst unter den Schlachtordnungen, die Schlachtordnung der Schlachtordnungen* MBh. 6,2660. — 2) N. pr. eines Bodhisattva Lalit. ed. Calc. 365,6. Lot. de la b. l. 2. 254.

व्यूहीकर् (1. व्यूह + 1. कर्) *in Schlachtordnung stellen:* °कृतैर्बलैः Spr. (II) 3308.

व्यृद्ध partic. s. u. ऋध् mit वि. Nachzutragen wäre *vereitelt, misslungen* Çat. Br. 4,6,2,9. 12,7,2,12.

व्यृद्धि (von ऋध् mit वि) f. *Ausschliessung, Verlust; Misslingen, Missrathen, Vereitelung* AV. 8,8,9. 14,2,49. 12,5,29. VS. 30,17. Çat. Br. 2,3,1,7. यज्ञस्य 4,5,2,9. 12,7,2,12. इन्द्रस्यानु व्यृद्धिं तत्रं सोमपीथेन व्यार्ध्यत Ait. Br. 7,28. *Misswachs, Mangel* P. 2,1,6. शाकानाम् Schol. — Vgl. अ°.

व्येक (2. वि + एक) adj. (f. आ) *woran Eins fehlt* Varâh. Brh. S. 53,19.

व्येनस् (2. वि + एनस्) adj. *schuldlos* RV. 3,33,13.

व्येनी adj. f. zu व्येत (2. वि + एत) *bunt schillernd:* die Morgenröthe RV. 5,80,4.

व्येमान s. u. 2. अम् mit वि.

व्यैलब (2. वि + ऐ°) adj. *allerlei Lärm machend* AV. 12,1,41.

व्योकस् (2. वि + ओ°) adj. *auseinander wohnend* Çat. Br. 9,3,2,6. Pańkav. Br. 14,3,8.

व्योकार m. *Grobschmied* AK. 2,10,7. H. 920.

व्योदन (2. वि + ओ°) m. अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे RV. 8,52,9. = विविधे ऽन्ने लब्धे सति Sâj.

व्योम m. N. pr. eines Sohnes des Daçârha Bhâg. P. 9,24,3. व्योमन् Hariv. VP.; vgl. प्रतिव्योम.

व्योमक *ein best. Schmuck* Vjutp. 140. रत्न° als Beiwort von कूटागार Lalit. ed. Calc. 367,17.

व्योमकेश (1. व्योमन् + केश) adj. *die Luft zum Haar habend:* m. Bein. Çiva's AK. 1,1,1,30. H. 198. Halâj. 1,12. Çatar. in Ind. St. 2,39. MBh. 7,9626. Verz. d. Oxf. H. 101,*a*,37.

व्योमकेशिन् m. dass. ÇKDr.

व्योमग (1. व्योमन् + 1. ग) adj. *im Luftraum sich bewegend, fliegend* Kathâs. 118,54.

व्योमगङ्गा (1. व्योमन् + ग°) f. *die im Himmelsraum fliessende* Gangâ Trik. 3,3,191. MBh. 12,12421. Megh. 44. Ragh. 12,85. Kumâras. 6,5.

व्योमगमन adj. °गमनी विद्या *die Zauberkunst des Fliegens* Kathâs. 59,106.

व्योमगामिन् adj. = व्योमग Kathâs. 30,19. 31,56. 43,41. 223.

व्योमचर adj. dass. R. 5,55,13. Ragh. 5,51.

व्योमचारिन् 1) adj. dass. Varâh. Brh. S. 86,6. Kathâs. 22,56. पुर Bhûripr. im ÇKDr. — 2) m. *a) Vogel* Trik. 2,5,37. Med. n. 246. — *b) ein Gott* Med. Râǵa-Tar. 8,983. — *c) d)* = चिरजीविन् und द्विजाति Viçva im ÇKDr. *a saint; a Brahman* Wilson ohne Angabe einer Aut.

व्योमधूम (1. व्योमन् + धूम) m. *Himmelsrauch* so v. a. *Wolke* Trik. 1,1,82. H. ç. 26. Hâr. 18.

1. व्योमन् (vielleicht von 3. वा mit वि) 1) n. *a) Himmel, Himmelsraum, Luftraum* Naigh. 1,3 (= अन्तरिक्ष). 6 (= दिश्). AK. 1,1,2,1. 3,4,25,183. H. 163. Med. n. 136. Halâj. 1,137. 5,72. gewöhnlich durch व्यवन umschrieben Nir. 11,40. अस्य पारे रजसो व्योमनः RV. 1,52,12. ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि 5,87,9. नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् 10,129,1. am häufigsten mit dem Beiw. परम 1,62,7. 143,2. पृच्छामि वाचः परमं व्योम 164,34. fg. 39. 3,32,10. 7,5,7. विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामेनौ दधुः 82,2. 9,86,15. 10,5,7. AV. 6,123,1. 2. मदेम तत्र परमे व्योमन् 7,5,3. 8,9,8. सुधायां मा धेहि प° 17,1,6. 18,4,30. VS. 13,42. Taitt. Up. 2,1. प्रथमे व्योमनि देवानां सदने RV. 8,13,2. पूर्व्ये 9,70,1. ब्रह्मणः पद्व्यामानुस्मरणाम् Maitrjup. 6,34. भुवि दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्यात्मा प्रतिष्ठितः Mund. Up. 2,2,7. दिवं भूमिं च निर्ममे। मध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम् M. 1,13. व्योम्नि चन्द्रलेखेव MBh. 3,1831. 1782. 2671. R. 1,31,19. 2,72,20. 4,16,3. 44,44. व्योम पुप्लुवे 42,15. Megh. 52. Ragh. 12,67. व्योममध्ये Vikr. 20. व्योमैकान्तविहारिन् Spr. 2922. Varâh. Brh. S. 34,1. Naish. 22,54. Kathâs. 18,71. गतिर्व्योम्नि 186. 20,103. Râǵa-Tar. 3,81. 4,203. Dhûrtas. 74,1. व्योम्नो ऽवतरत्तं नारायणम् Pańkat. 46,15. व्योम्ना *durch den Luftraum* (sich bewegen so v. a. fliegen) Kathâs. 20,160. 25,262. 28,100. 42,156. व्योममार्गेण dass. 12,148. व्योमवर्त्मना dass. 44,184. व्योमाग्रसंचारिन् 28,191. व्योमकक्षा Sûrjas. 12,30. — *b) Aether* (als Element; vgl. आकाश u. s. w.) Suçr. 1,310,16. Spr. 2163. Bhâg. P. 3,12,11. Bhâshâp. 2. — *c) Wind im Körper* Bhâg. P. 2,7,49. — *d) Wasser* Naigh. 1,13. Med. — *e) Sonnentempel* Med. n. 136. — *f)* in der Astrol. *das 10te Haus* Varâh. Brh. 25 (23),8. — *g)* etwa *Aufnahme, Gedeihen* (= रक्षण Comm.): ऋतस्य व्योमने, विभूमने, विधर्मणे TS. 3,3,5,1. — 2)

m. a) in einer Formel (nach Mahîdh. Pragâpati oder das Jahr) VS. 14,23. TS. 4,3,8,1. 5,3,2,2. — b) N. eines Ekâha Çâñkh. Çr. 14,24, 1. Âçv. Çr. 9,8,6. — c) N. pr. eines Sohnes des Daçârha (vgl. व्योम) Hariv. 1991. VP. 422; vgl. प्रतिव्योमन्.

2. व्योमन् (2. वि + ओ° von अव्) adj. vielleicht *unrettbar:* वरुणो वा एतं गृह्णाति यं व्योमानं यक्ष्मो गृह्णाति Kâṭh. 13,16.

व्योमनासिका (1. व्योमन् + ना°) f. *Wachtel* Trik. 2,5,29.

व्योमपञ्चक (1. व्योमन् + प°) n. vielleicht *die fünf Oeffnungen* (vgl. ख) *im Körper* Verz. d. Oxf. H. 236,*a*, No. 567. Verz. d. B. H. No. 649.

व्योमपाद् (1. व्योमन् + पाद्) adj. *dessen Fuss im Luftraum steht,* Beiw. Vishṇu's Pañkar. 4,3,80.

व्योममञ्जर (1. व्योमन् + म°) n. *Fahne* Trik. 2,8,57.

व्योममण्डल (1. व्योमन् + म°) n. dass. Çabdar. im ÇKDr.

व्योममुद्गर (1. व्योमन् + म°) m. *Windstoss, Wirbelwind* Hâr. 210.

व्योममृग (1. व्योमन् + मृग) m. N. eines der 10 Rosse des Mondes Vjâḍi beim Schol. zu H. 104 (खाममृग die Hdschr.).

व्योमयान (1. व्योमन् + यान) n. *ein durch die Luft fliegender Wagen, Götterwagen* AK. 1,1,1,43. H. 89, Schol. Gaṭâdh. in Verz. d. Oxf. H. 191,*b*,4.

व्योमरत्न (1. व्योमन् + रत्न) n. *das Juwel am Himmel, die Sonne* H. 95, Schol.

व्योमशिवाचार्य m. N. pr. eines Autors Hall 166.

व्योमसद् (1. व्योमन् + सद्) adj. *im Himmel wohnend* Ṛv. 4,40,5. VS. 9,2.

व्योमसरित् (1. व्योमन् + स°) f. = व्योमगङ्गा Kathâs. 72,358.

व्योमस्थली (1. व्योमन् + स्थ°) f. *die Erde* (!) Bhûripr. im ÇKDr.

व्योमाभ (1. व्योमन् + आभा) m. *ein* Buddha Trik. 1,1,11.

व्योमारि (1. व्योमन् + अरि) m. N. pr. eines zu den Viçve Devâḥ gezählten Wesens MBh. 13,4360.

व्योमोदक (1. व्योमन् + उ°) n. *Regenwasser* Râgan. im ÇKDr.

व्योमोल्मुक (1. व्योमन् + उ°) m. *der Planet Mars* H. ç. 13.

व्योम्निक in परम° adj. von परम-व्योमन् *im höchsten Himmel thronend* Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,76.

व्योष (von 1. उष् mit वि) 1) adj. *glühend, brennend* AV. 3,25,3.4. — 2) m. *eine Elephantenart* Med. sh. 27. — 3) n. *die drei brennenden Species: schwarzer —, langer Pfeffer und getrockneter Ingwer* AK. 2,9,112. H. 422. Med. Halâj. 2,462. Suçr. 1,165,15. 179,14. 2,40,2. 294,2. 332,5. 360,2. Pañkar. 3,14,70.

व्रँ (von 1. वर्) 1) m. pl. व्रास् (*begleitender* oder *sich zusammenschliessender*) *Haufe, Schaar* Naigh. 4,2. Nir. 5,3. अञ्ज्यङ्क्ते समनगा इव व्राः Ṛv. 1,124,8. सुबन्धवो ये विश्या इव व्राः 126,5. तज्जानतीरभ्यनूषत व्राः 4,1,16. 10,123,2. AV. 2,1,1. यदीमन्ये अस्मन्मृगं न व्रा मृगयन्ते 8,2,6. wenn in der Stelle Ṛv. 4,1,16 जानतीः zu व्राः zu ziehen ist, wäre dieses als fem. anzusehen. — 2) sg. व्रश्च (व्रः Padap.) द्रश्चापि श्रीर्मयि AV. 11,7,3 von unbekannter Bedeutung; es scheint ein blosses Spiel mit verstümmelten Worten zu sein (vgl. द्रः im folgenden Verse).

व्रत scheinbar Verz. d. Oxf. H. 82,*a*, No. 138, Z. 7, wo aber हिरण्यकशिपोर्वतः zu lesen ist.

व्रज्, व्रँजति (गतौ) Dhâtup. 7,79. 40, v. l. वर्ञ्जति; अव्राजीत् P. 7,2,3. Vop. 8,47. 58. व्रजिष्यति; aus metrischen Rücksichten auch med. व्रजितुम्, व्रजित्वा, व्रजितँ. 1) *schreiten, gehen; fortgehen;* mit acc. des Ziels: वव्राजा सीमनदतीः Ṛv. 3,1,6. पृथग्व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन् 56,4. AV. 19,71,1. TBr. 2,3,10,3. Çat. Br. 6,8,1,7. वर्षत्यप्रावृतो व्रजेत् 7,5,2,41. 11,5,1,4. 6,1,2. ग्रामान्तरम् Gobh. 3,5,20. दूरम् Lâṭj. 1,1,22. गृहान् 3,3,1. अन्येन चेद्ब्रह्मा व्रजितः स्यात् *wenn der Brahman auf einem anderen Wege gegangen ist* 5,9,7. 3,7,8. उपानद्भ्याम् 9,1,24. Âçv. Çr. 4,10,7. Gṛhj. 3,4,6. 4,4,9. Khând. Up. 8,8,4. — अपराजितं वास्थाय व्रजेद्दिशम् M. 6,31. तिष्ठन्तीषु, व्रजन्तीषु (गोषु) 11,111. Bhag. 2,54 (med.). MBh. 1,5880. 3,2143. 2276. 16787. R. 1,1,25. 2,31,28. 85,7. 5,20,13. 56,31. Ragh. 1,46. Kâm. Nîtis. 5,42. Spr. (II) 3372. Varâh. Bṛh. S. 91, 1. Kathâs. 47,111. Bhâg. P. 3,5,21. 28,19. 4,3,25. 6,13. 5,10,1. द्रुतम् 4. Pañkat. 63,15. Vet. in LA. (III) 20,8. पद्भ्याम् Râga-Tar. 5,480. व्रजतो ब्रूयात् शीघ्रम् R. 2,40,46. अविनीतैर्धुर्यैः M. 4,67. fg. वृषस्थितः Bhâg. P. 9,18,9. पाकाय *um zu* Schol. zu P. 2,3,15. 3,3,11. भोक्तुम् dass. 10. काण्डलावः, गोदाय: dass. 12. करिष्यामीति dass. 13. अभ्यरि *gegen den Feind* H. 792. द्विषतो ऽभिमुखम् Kâm. Nîtis. 18,2. ohne Ergänzung dass. M. 7,206. Jâǵn. 1,347. *fortgehen aus dem Lande* M. 8, 124. — mit dem acc. des Wegemaasses: योजनानां शतम् M. 11,75. योजनमधनः 132. R. 5,1,44. — mit dem acc. des Weges: अरिष्टं व्रज पन्थानम् MBh. 2,2589 (vgl. अरिष्टं व्रज R. 5,8,18). mit dem instr. des Weges: अविज्ञातेन मार्गेण संकटेन च Kâm. Nîtis. 7,30. नयवर्त्मना 8,87. LA. (III) 87,12. — स्थानात् Varâh. Bṛh. S. 86,62. Bhâg. P. 10,44,16. इतस् *von hier* MBh. 3,2520. Kaurap. 15. — प्रतिलोमं व्रजन्त्येते व्य: ग्रस्तो मृगपक्षिणः Hariv. 4262. अधस् M. 6,35. 37. Spr. 2923. 5041. ऊर्ध्वम् Bhâg. P. 4,23,26. क्वचित् M. 2,56. 4,75. अन्यत्र Mârk. P. 61,61. अन्यतस् Ragh. 6,82. Pañkat. 21,4. — व्रजाय oder व्रजम् Vop. 5,19. पुरे ऽत्र Kathâs. 29,159. खाण्डवप्रस्थम् MBh. 1,2263 (med.). गयाम् Spr. (II) 1474. fgg. R. 2,21,61. 52,59. 4,14,28 (med.). Bhâg. P. 3,1,20. पितुर्यज्ञम् 4,19, 22. स्वर्गम् Hariv. 751 (med.). दिवम् R. 1,60,14. नरकम् M. 8,94. 307. Spr. (II) 957. अन्धतामिस्रम् Varâh. Bṛh. S. 2,18. यमक्षयम् R. 2,38,17. योनिं क्लिष्टानां सत्त्वानाम् M. 12,56. वैद्याधरं पदम् Kathâs. 26,108. व्रजामि मूर्ध्ना तव वीर पादौ R. 4,22,38. अन्तम् *an's Ende von* (gen.) *gelangen* Bhâg. P. 9,6,52. परमां गतिम् *des höchsten Lohnes theilhaftig werden* M. 10,130. MBh. 3,8087 (med.). R. 2,64,40. — ज्ञातीन् *zu den Verwandten* MBh. 3,2331. व्रजाम्येनमशङ्कितः 2432. Bhâg. P. 8,5,27 (med.). पूरुषम् *gelangen zu* 3,29,35. विद्विषम् *losgehen auf* Kâm. Nîtis. 10,40. मामेकं शरणं व्रज Bhag. 18,66. 13,1042 (med.). पदाम्बुजं ते। व्रजेम सर्वे शरणम् Bhâg. P. 3,5,42. 31,12. 6,9,26. 8,5,21. — 2) *zu einem Weibe* (acc.) *gehen* so v. a. *ihm beiwohnen* M. 3,45. 8,378. 382. fg. 385. Suçr. 2,147,11. — 3) von der *Bewegung* unbelebter und auch unkörperlicher Dinge: einer Wolke Megh. 27. किंचित्पश्चाद्व्रज लघुगतिः किंचिदेवोत्तरेण 16. न व्रजन्ति विमानानि विक्रायसि (st. des folgenden प्रभो ist mit der neueren Ausg. भयात् zu lesen) Hariv. 8225. यानं यदि गच्छेन्न व्रजेच्च *sich vorwärts bewegen* Varâh. Bṛh. S. 46,60. दिशः सर्वाः (शैलाः पत्त्रवन्तः) R. 5,7,41. व्रजत्यस्तं रविः Spr. (II) 3731. Varâh. Bṛh. S. 26,3. क्षितिजम् *am Horizont erscheinen* 5,17. अधस् von einer Speise M. 11,153.

सद्यैव मृत्युर्व्रजति Spr. 3218. व्रजन्तो विषयाः *fortgehen* (II) 668. यस्मिन्मनो व्रजति तत्र गतो ऽयमात्मा Varâh. Bṛh. S. 75,3. vom *Verstreichen der Zeit*: कथं वासराणि व्रजेयुः Megh. 104. व्रजतु तव निदाघः Ṛt. 1,28. काले व्रजति Kâm. Nîtis. 12,16. ad Çâk. 193. Spr. 2924. Kathâs. 23,87. Pańkat. 49,2. 117,9. 261,14. — 4) *in einen Zustand —, in eine Lage —, in ein Verhältniss gerathen*: जराम् *alt werden* MBh. 3,16541 (med.). मृत्युम् *sterben* Mârk. P. 26,39 (med.). यदि व्यापारं व्रजसि मे शरीरे ऽस्मिन् *sich machen an* Vikr. 58. विश्वासं स्त्रीषु *vertrauen* Kâm. Nîtis. 7,50. Spr. 1986 (विश्वासम् Conj. für विश्वासे). विनाशम् M. 3,179. 4,71. 8,346. नाशम् Varâh. Bṛh. S. 5,68. विलयम् R. 5,56,117. प्रध्वंसम् Spr. (II) 3217. ध्वंसम् Varâh. Bṛh. S. 5,71. क्षयम् 9,40. 47,12. उदयम् 7,1. दर्शनम् 9,36. महतीं पीडाम् 17,22. 31,4. संसर्गं सद्भिः M. 11,47. शोषम् R. Gorr. 2,15,29. शान्तिम् Suçr. 2,381,13. शमम् Mârk. P. 99,14. पाकम् Ṛt. 4,10. उपयोगम् Kumâras. 1,7. उद्वेगम् Ragh. 8,7. निर्वृतिम् Vikr. 28. संधानम्, व्यक्तिम् Çâk. 167, v. l. पुष्टिं परमाम् Spr. 2931. खेदम् Kathâs. 32,21. पशुताम् M. 3,104. 190. विह्वलताम् R. 6,82,22. सोपानत्वम् Megh. 61. Ragh. 18,16. Kâm. Nîtis. 4,13. 80. Çâk. 9. Varâh. Bṛh. 11,20. 24(22),3. Sâh. D. 43,12. 63,15. Mârk. P. 25,14 (med.). भस्मत्वम् (so ist zu verbinden) 115,2. Bhâg. P. 1,18,22. Pańkat. 33,7. — 5) mit पुनर् *in dieses Leben zurückkehren* Jâǵń. 3,196. — 6) an eine eigentliche *Bewegung* wird in folgenden Verbindungen gar nicht mehr gedacht: यदि जीवन्व्रजेत सः so v. a. *mit dem Leben davonkommen* R. 4,13,36. तं विना को व्रजेत्सुखम् so v. a. *sich wohl fühlen* Hariv. 15815. — Vgl. दुर्व्रजित.

— caus. व्राजयति (मार्गसंस्कारगत्योः, मार्गणसंस्कारे, मार्गणसंस्कारगत्योः; संस्कारे, सर्पणे Vop.) Dhâtup. 32,74.

— intens. वाव्रज्यते = कुटिलं व्रजति P. 3,1,23, Schol. Vop. 20,2.4.

— अति *vorüberschreiten*: अपरेण वेदिमतिव्रज्य Âçv. Çr. 2,3,11. 3,1,18. 4,10,1. Kauç. 24. *hinstreichen über*: अतिव्रजद्भिः पतंगैः Ṛv. 1,116,4. *durchstreichen, durchwandern, passiren*: अतिव्रज्य सुराष्ट्रम् Bhâg. P. 3,1,24. त्रिलोकीम् 4,12,34. *hinübergelangen über* (in übertr. Bed.): त्रिगुणाम् 3,29,14. गतीस्तिस्रः 11,29,44.

— व्यति *vorüberschreiten*: तूष्णीं व्यतिव्रजेत् Âpast. 1,28,8. *überschreiten*: मर्यादाम् Spr. 3193, v. l.

— अनु 1) *entlang gehen*: उत्तरमग्निम् Âçv. Çr. 2,17,6. 4,4,3. 10,2. सरस्वतीम् 12,6,3. — 2) *begleiten, nachgehen, folgen*: गाः Kauç. 51. Lâṭj. 5,7,3. व्रजन्तीष्वनुव्रजेत् M. 11,111. MBh. 13,350. Hariv. 6136. Jâǵń. 1,248. अतिथिमासीमान्तम् 113. MBh. 1,3448. 2,1605. 2593. 3,2592. सेनां द्रवमाणां पृष्ठतः 6,2480. राज्ञः कलेवरम् 15,1045. Hariv. 7695. 13639. R. 1,17,32. 2,26,14. यमिच्छेत्पुनरायान्तं नैनं दूरमनुव्रजेत् 40,48. 46,9 (44,9 Gorr.). R. Gorr. 1,1,28. fg. 2,13,19. यो मां द्रुतमनुव्रजेत् 5,3,63. Spr. (II) 3372. Kumâras. 7,38. Varâh. Bṛh. S. 95,48. Kathâs. 32,190. 52,387. 57,105. Bhâg. P. 8,19,20. 11,14,16. कन्दुकम् *einem Balle nachlaufen* 8,12,23. स्वजनैरनुव्रज्यमानः Pańkat. ed. orn. 4,4. आ श्मशानादनुव्रज्य इतरे ज्ञातिभिर्मृतः Jâǵń. 3,1. — 3) *besuchen, sich wohin begeben* Lâṭj. 5,4,3. तीर्थानि MBh. 3,8266. क्षेत्राणि हरेः Bhâg. P. 2,3,22. देवालयम् Çatr. 14,86. लोकाल्लोकम् Bhâg. P. 3,31,43. अनुव्रजे व्रजम् 10,25,7. योनिम् *eingehen in* 3,30,4. — 4) *in einen Zustand —, in eine Lage sich begeben*: मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति so v. a. *schliessen sich an* Spr. 2236. यथाग्निरग्नौ संक्षिप्तः समानत्वमनुव्रजेत् Mârk. P. 40,29. — Vgl. अनुव्रजन, अनुव्रज्या (auch M. 2,241, wo Westergaard und Benfey ein partic. fut. pass. annehmen).

— समनु *nachgehen —, folgen in Gemeinschaft* MBh. 2,1606. 12,1385.

— अप *weggehen* Âçv. Çr. 8,13,11.

— अभि *zugehen auf, durchlaufen*: अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः Ṛv. 1,58,5. 9,68,3. — 1,144,5. Kauç. 44. अरण्यस्यार्धमभिव्रज्य 106. 126. केरलान् *sich begeben zu* Bhâg. P. 10,79,19.

— आ 1) *herbeikommen, hinschreiten zu*: कुमारमादायाव्रज Çat. Br. 11,5,1,13. 14,6,10,1. Lâṭj. 2,1,9. दुन्दुभिम् 3,10,17. परिषदम् Kauç. 38. fg. आव्रजित 32. 34. सुराकर्मस्वाव्राजमासीत (आव्रज्याव्रज्य Comm.) Lâṭj. 5,4,11. 8,10. प्रत्युद्गम्य त्वाव्रजतः *herankommend* M. 2,196. यद्यन्यो ऽतिथिराव्रजेत् 3,108. Jâǵń. 1,65. MBh. 3,10081. 4,1209. गृहम् *kommen in* M. 3,111. काश्यम् *kommen —, sich begeben zu* Kaush. Up. 4,1. MBh. 3,2277. 4,215. Bhâg. P. 3,19,24. उपद्रष्टारम् Nṛs. Tâp. Up. in Ind. St. 9,166. पौरुषीं गतिम् *gelangen zu* Bhâg. P. 8,22,25. — 2) *zurückkommen, heimkehren*: स त्वमायुधमादाय क्षिप्रमाव्रज R. 2,31,31. पुरम् 6,102,31. Bhâg. P. 9,16,1. संसृतिम् 1,5,19. von einem Klystier, *das wieder abgeht*, Suçr. 2,211,12. Häufig mit पुनर् verbunden: को नाम जीवन्पुनराव्रजेत् MBh. 3,10273. R. 2,21,61. 5,1,22. 56,31. अत्र Bhâg. P. 3,30,35. पुरीम् 10,52,5. सद्म 89,14.

— उदा *vorwärts schreiten*: अनवेक्षमाणा ग्राममुदाव्रजन्ति Kauç. 7.18.fg.

— प्रत्युदा *nach der entgegengesetzten Richtung schreiten* Kauç. 68.140.

— उपा *sich hinbegeben zu*: मुनिमुपाव्रजेत् Bhâg. P. 11,18,38.

— प्रत्या *zurückgehen, zurückkehren*: येनेतो गच्छेयुरन्येन प्रत्याव्रजेयुः Lâṭj. 4,4,17. 1,5,12. 6,11. 4,9,4. Âçv. Gṛhj. 4,5,10. 6,4.

— समा *zurückkehren*: यः संप्राप्य रणे भीष्मं जीवमानः समाव्रजेत् MBh. 6,5449.

— उद् *das Haus verlassen*: अध्यायमुद्व्रजत् Pańkav. Br. 12,11,10. अध्यायमुद्व्रजितं रक्षो ऽगृह्णात् 15,5,20. स्वाध्यायमुद्वव्राज Khând. Up. 1,12,1.

— प्रत्युद् *sich aufmachen und Jmd entgegengehen* Ragh. 1,90. 13,33.

— उप 1) *hinzutreten, sich hinbegeben zu, nach*: तमिन्द्र उपव्रज्योवाच TBr. 3,10,11,3. Bhâg. P. 10,4,2. 11,13,20. कृष्णान्तिकम् 10,54,36. हरिम् 3,20,25. 4,14,13. 6,7,26. 14,46. 10,84,28. आनर्तान् 1,11,1. विन्ध्यपादान् 6,4,20. पुरीम् 9,7,19. वृतखण्डम् 10,39,39. वेलाम् 45,38. तत्र 7,8,37. — 2) *Jmd nachgehen, folgen* R. 5,20,18.

— प्रत्युप *in feindlicher Absicht auf Jmd* (acc.) *losgehen, angreifen* MBh. 12,3540.

— निस् *hinausschreiten* Kauç. 76.

— परि *herumschreiten, umwandeln; umherwandern*: मद्रेषु चरकाः पर्यव्रजाम Çat. Br. 14,6,3,1. उत्तरेण खरं परिव्रज्य Âçv. Çr. 4,6,1. प्रसव्यमायतनं परिव्रजन् 6,10,17. Gṛhj. 2,8,11. 9,7. 4,2,10. मनुजेश्वरालयम् R. 5,37,34. पुत्रस्यैश्वर्ये पिता वसेत् परि वा व्रजेत् *als obdachloser Bettler umherwandern* Kaush. Up. 2,15. वनेषु तु विहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः। चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा सङ्गान्परिव्रजेत् M. 6,33. 41. 85. Jâǵń. 3,58. MBh. 12,544. 550. 566. 13,6475. Çatr. 14,66. परिव्रजत्पदवी Bhâg. P. 3,24,34. 7,13,1. — Vgl. परिव्रज्या, परिव्राज् fgg.

— प्र *vorwärts schreiten, zugehen auf; weiter gehen, wandern:* प्र वा व्रजति प्र वा धावति *geht oder fährt* Çat. Br. 2,4,1,6. 9,4,4,17. ततः प्राङ्वव्राज 11,6,1,3. 14,7,2,25. 2, 2. 25. अरण्यम् Çâñkh. Çr. 16,16,4. Lâṭj. 8,8,6. Âçv. Gṛhj. 1,23,24. Çr. 2,5,4. Khând. Up. 8,8,3. रथमारुह्य प्रवव्राज Praçnop. 6,1. Kaush. Up. 4,19. MBh. 4,138. R. 2,22,14. 3,53, 21. महारण्यम् MBh. 4, 596. वने R. 3,53,16. वनाय MBh. 2,2613. ग्रामाय, वनाय, नाशाय 5,2605. पुण्यादिव प्रव्रजन्ति (पापानि कर्माणि) *abziehen* 3,13453. प्रव्रजित (s. auch bes.) *ausgewandert, fortgezogen* R. 2,48, 23. 51,12. 5,24,5. 6,19,52. वनम् 2,39,25. Spr. (II) 1562. धर्मः प्रव्रजितः 3092. प्रव्रजिताश्च adj. (so ed. Bomb.) *davongelaufen* MBh. 6,3142. Insbes. *das Haus verlassen um als Asket zu wandern:* प्रव्रजिष्यतो ऽयनम् Lâṭj. 10,19,11. M. 6, 34. MBh. 1, 3751. 12, 306. Bhâg. P. 1,2,2. 3,23, 49. 7,12,14. Burnouf, Intr. 46. गृहात् M. 6, 38. fg. Bhâg. P. 1, 13, 25. 4,31,1. ब्रह्मावर्तात् 5,5,28. वनम् MBh. 1,3544. प्रव्रजित (s. auch bes.) *der das Haus verlassen hat um als Asket zu wandern* M. 8,363 (fem.). 407. Burnouf, Intr. 168, N. 2. Hit. 64,4. गृहात् Bhâg. P. 2,1,16. वनम् 3,33,21. — Vgl. प्रव्रजन, प्रव्रजित, प्रव्रज्या (auch Maitrjup. 6,28), प्रव्राज् fgg., प्रव्राजिन्. — caus. प्रव्राजयति (प्रव्रज° R. 6,82,121 fehlerhaft). 1) *Jmd* (acc.) *verbannen* MBh. 2, 2674. 3, 2041. विषयात् 4, 227. 5,930. 14,248. वनम् R. 2,26,19. 58, 29. R. Gorr. 2, 8, 4. 45, 24. 61, 6. 78,19. Ragh. 12,6. प्रव्राज्यमान R. 2,54,14 (16 Gorr.). 64,62. प्रव्राजित MBh. 1,170. 5,756. R. 2,63,3. R. Gorr. 2, 8, 27. 58, 28. — 2) *Jmd als Asketen wandern lassen* Burnouf, Intr. 46. wohl hierher प्रव्राजयितुम् MBh. 13,446. विधिवत्स्वोचितं कर्म त्याजयितुम् Nilak. — 3) प्रव्राजित MBh. 6,3142 fehlerhaft für प्रव्रजित, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. प्रव्राजन. — desid. vom caus. s. प्रविव्राजयिषु.

— अनुप्र *Jmd* (acc.) *in die Verbannung folgen:* अनुप्रव्रजितो रामम् R. 5,36,61.

— अभिप्र *vorschreiten in der Richtung zu Jmd hin* Khând. Up. 8,7, 2. Kaush. Up. 2,3. 4. TBr. Comm. 1,89,2 v. u.

— विप्र *auseinandergehen* Kâtj. Çr. 24,6,13. — Vgl. विप्रव्राजिन्.

— प्रति *heimkehren:* मन्दिराय Bhaṭṭ. 8, 96.

— सम् *wandeln:* यत्रैव संव्रजन्नन्वाहार्यपचनमनुस्मरेत् Çat. Br. 2,3,2, 4. Kâtj. Çr. 4,15,32.

— अनुसम् *hinterhergehen, folgen:* प्रपाद्यमाने राजन्यप्रेणानो ऽनुसंव्रजेत् Âçv. Çr. 4,4,5. Gobh. 2,2,14. इमा (गाः) अनुसंव्रज Khând. Up. 4,4,5.

— उपसम् *hineintreten in:* (न) आकीर्णं भिक्षुकैर्वान्यैरागारमुपसंव्रजेत् M. 6,51.

व्रजँ (von वर्ज्) P. 3, 13, 119. m. (nach Siddh. K. 251, *a*, 1 v. u. auch neutr., das aber nicht zu belegen ist). 1) *Zaun, Umhegung, Einfriedigung;* besonders *Hürde zur Aufnahme des Viehs, Pferch; Stall;* = गोष्ठ, गोकुल AK. 3,4,2,32. H. 1273. an. 2, 76. Med. ǵ. 15. Halâj. 2, 107. व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन् ṚV. 4,51,2; vgl. 1,92,4. अति स्तेन इव व्रजमक्रमुः 10,97,10. परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम् *in den Armen wie mit einem Zaun umschliessend* 5,64,1. अभि व्रजं न तत्निषे 8, 6, 25. व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः 10,101,8. क्षोणीरप व्रजं दिवः 9,102,8. व्रजमा पशुर्गात् 2,38,8. 4,31,13. आ दैव्युं भजति गोमति व्रजे *reicher Viehstand* 5,34,5. 7,27,1. 32,10. 8,41,6. 24,6. Vâlakh. 3, 5. अश्विन् 10,25, 5. AV. 3,11,5. 4,38,7. व्रजं गच्छ गोष्ठानम् VS. 1,25. Çat. Br. 14,9,4, 22. Çâñkh. Âr. 2,16. TBr. 3,8,12,2. *der Ort, wo die von* Indra *zu befreiende Heerde eingesperrt ist;* daher = मेघ Naigh. 1,10. Nir. 6,2. व्रजो गोः पुरा कृतोर्व्यार ṚV. 3,30,10. 4,16,6. 20, 8. गव्य 1,131,3. 6, 45, 24. स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः 66, 8. 8, 32, 5. *Stall* als Gebäude: यमभि संचरन्ति गावं उष्णमिव व्रजम् 10,4,2. *Weideplatz:* व्रजं न आ प्रोषायति 26,3. ये न दुह्यन्ति ते मायं व्रज एव निवसन्ति *bleiben auf der Weide* Sâj. zu Ait. Br. 3,18. — व्रजे वाप्यथ वारण्ये *Pferch für Rinder, Hirtenstation* MBh. 3,13441. Hariv. 3371. 3648. fg. क्षत्रमग्निमिव व्रजे 3700. 8391. Kâm. Nîtis. 18, 60. Çiç. 2, 64. पुरग्रामव्रजाकराः Bhâg. P. 1,6,11. 10,4. 14,19. 2,7,28. °पशु ebend. 4,18,31. 5,5,30. 9,2,3. 24,66. 10,5,6. 11, 29. तस्मादद्य नवतृणं गच्छन्तु धनिनो व्रजाः *Heerden* Hariv. 3493. अवरुणाद्धि गां व्रजम् *Kuhstall* P. 1,4,51, Schol. Bhâg. P. 10,44,16. व्रजाङ्गन *Hofraum in einer Hirtenstation* Pañkar. 4, 8, 10. am Ende eines adj. comp. f. आ Hariv. 3922. — 2) Bez. der Umgegend von Agra und Mathurâ, dem Aufenthaltsort des Kuhhirten Nanda, Pflegevaters des Kṛshṇa, Inschr. in Z. f. d. K. d. M. 4,171. — 3) *Heerde, Trupp, Schwarm, Menge* AK. 2,5,39. 3,4,2,32. H. 1411. H. an. Med. Halâj. 4,1. गवाम् AK. 2,9,58. अर्वताम् Çiç. 12,31. मृग° 43. प्रियक° 4,32. द्विरद° Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7, Çl. 20. शलभ° MBh. 6,63. खगमानाम् 3797. भ्रमराणाम् 4543. अलि° Ragh. 9,34. जन° MBh. 1,5831. पुरुष° 2, 631. पथिक° Çiç. 6, 6. द्विज° 14, 33. अनुग° Râǵa-Tar. 8, 807. नेत्र° Ragh. 6,7. पद्मप्राप्त° Spr. 1720. शराणाम् MBh. 4,1864. बाण° R. 6,75, 14. अस्त्र° Ragh. 7,57. रथ° MBh. 4,1056. 6,5442. AK. 2,8,2,23. अनर्थ° Spr. 2595. संग्रामः सव्रजः *ein Kampf mit Vielen* Mârk. P. 68,20. व्रजो गिरिमयः wohl so v. a. गिरिव्रज Hariv. 7571. अनुव्रजम् *schaarenweise* Pañkar. 1,4,60. — 4) *Weg* AK. 3,4,2,32. H. an. Med. — 5) N. pr. eines Sohnes des Havirdhâna Hariv. 83. VP. 106. — Vgl. अश्म°, उद°, उरु°, गिरि°, गो°, दश°, मेरु°, शत°.

व्रजक (von व्रज्) m. *Asket* Çabdar. im ÇKDr.

व्रजकिशोर m. *Hirtenknabe*, Bez. Kṛshṇa's Vraǵabhaktivilâsa im ÇKDr.

व्रजक्षित् adj. *in der Umfriedigung bleibend* VS. 10,4.

व्रजन (von व्रज्) 1) n. *a*) *das Wandern, Hingehen an einen Ort:* अन्यत्र Pañkat. 116,24. *das in-die-Verbannung-Gehen* Spr. 2630, v. l. für प्र°. — *b*) *Bahn, Strasse* ṚV. 7,3,2. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Aǵamîḍha MBh. 1,3722. 3724.

व्रजनाथ m. *Beschützer der Rinderhürden*, Beiw. Kṛshṇa's MBh. 2, 2292.

व्रजभक्तिविलास m. Titel eines Abschnittes im Mâtsja-P. ÇKDr. unter व्रजकिशोर am Ende.

व्रजभाषा f. *die um* Agra *und* Mathurâ *gesprochene Sprache* Colebr. Misc. Ess. 2,33.

व्रजभू m. *ein best. Baum*, = केलिकदम्ब Çabdak. im ÇKDr.

व्रजमण्डल n. = व्रज 2) Vraǵabhaktivilâsa im ÇKDr.

व्रजमोहन adj. *die Hirten verwirrend*, Beiw. Kṛshṇa's ÇKDr. nach einem Purâṇa.

व्रजयुवति f. *Hirtin* Khandom. 138.

व्रजराजदीक्षित m. N. pr. eines Mannes **Hall** 77.

व्रजरामा f. *Hirtin* **Khandom.** 135.

व्रजलाल m. N. pr. eines Fürsten am Ende des vorigen Jahrhunderts Verz. d. Oxf. H. 215,*a*, No. 517.

व्रजवधू f. *Hirtin* Verz. d. B. H. No. 576.

व्रजवनिता f. dass. **Khandom.** 137.

व्रजवर adj. *der beste in der Hirtenstation* (um **Mathurâ**), Beiw. Krshṇa's **Vraǵabhaktivilâsa** im ÇKDr.

व्रजवल्लभ m. *der Liebling in der Hirtenstation* (um **Mathurâ**), Beiw. Krshṇa's ÇKDr. nach einem **Purâṇa**.

व्रजविलास m. Titel einer Schrift Ind. St. 1,471.

व्रजविहार m. Titel eines Gedichts, herausgegeben in **Haeb.** Anth. 519. fgg.

व्रजसुन्दरी f. *Hirtin* Git. 1,46. 3,1.

व्रजस्त्री f. desgl. **Râǵa-Tar.** 2,167. **Bhâg.** P. 1,10,28.

व्रजस्पति (व्रज + पति, künstliche und ungrammatische Bildung nach der Analogie von बृहस्पति u. s. w.) m. *Herr der Rinderhürden*, Beiw. Krshṇa's **Bhâg.** P. 10,39,23.

व्रजाङ्गना (व्रज + अ°) f. *Hirtin* **Khandom.** 40. 154.

व्रजावास (व्रज + आ°) m. *Hirtenniederlassung* **Bhâg.** P. 10,11,34.

व्रजिन् (von व्रज) adj. *im Stall befindlich* ṚV. 5,45,1.

व्रजेन्द्र (व्रज + इन्द्र) m. *Vorstand der Hirtenstation* (um **Mathurâ**), Beiw. Nanda's: °नन्दन patron. Krshṇa's **Pankar.** 4,8,10.

व्रजेश्वर (व्रज + ई°) m. *Vorstand der Hirtenstation* (um **Mathurâ**), Beiw. Krshṇa's **Pankar.** 4,8,10.

व्रजौकस् (व्रज + ओ°) m. *Hirt* **Bhâg.** P. 3,2,28. 7,7,54. 10,11,36. 33,28.

व्रज्य (von व्रज) adj. *zur Umfriedigung gehörig* VS. 16,44.

व्रज्या (von व्रज्) f. nom. act. **Nir.** 1,1. P. 3,3,98. **Vop.** 26,486. 1) *Aufbruch, Marsch* AK. 2,8,2,63. **Trik.** 3,3,320. H. 789. **Med.** j. 53. — 2) *das Umherstreichen* AK. 2,7,35. H. 1501. **Med. Halâj.** 4,91. — 3) = वर्ग (also wohl von वर्ज्) *Abtheilung, Gruppe, Klasse* **Trik. Med.** कोषः श्लोकसमूहस्तु स्यादन्योऽन्यानपेक्षकः । व्रज्याक्रमेण रचितः **Sâh.** D. 565. सजातीयानामेकत्र संनिवेशो व्रज्या Comm. — 4) = रङ्ग (रंग wohl nur ein verlesenes वर्ग) **Dhar.** im ÇKDr.

व्रज्यावत् (von व्रज्या) adj. *einen schönen Gang habend* **Bhatt.** 7,70.

व्रढिमन् m. nom. abstract. von वृढ partic. von वर्ह् (2. बर्ह्) gaṇa दृढादि zu P. 5,1,123.

व्रण् (ब्रण्), व्रणति (शब्दार्थ) **Dhâtup.** 13,8. व्रणतीति व्रणः **Suçr.** 2,2,1. — व्रणय् s. bes.

व्रण gaṇa पचादि zu P. 3,1,134. m. n. (das n. äusserst selten) AK. **Trik.** 3,5,13. **Siddh.** K. 249,*a*,5. 1) *Wunde, offener Schaden am Leibe* AK. 2,6,2,5. H. 464. **Hâr.** 156. **Halâj.** 3,8. **Wise** 164. व्रणतीति व्रणः **Suçr.** 2,2,1. वृणोति यस्माद्रूढे ऽपि व्रणवस्तु न नश्यति । आ देहधारणात्तस्माद्व्रण इत्युच्यते 1,83,2. 88,18. M. 8,287. प्रतिदिन व्रणा ये मे त्वया कृताः MBh. 13,2815. R. **Gorr.** 2,49,25. वज्राशनिकृत° 3,36,8. **Râǵa-Tar.** 4,653. मक्षिका व्रणमिच्छन्ति Spr. 4680. **Varâh. Bṛh.** S. 52,10. व्रणाङ्कितशिरस् **Bṛh.** 17 (15), 1. **Ragh.** 12,55. व्रणे क्षारमिवादधाः R. 2,73,3. व्रणे तुद्येव (so ed. Bomb.) सूचिना 75 16. व्रणावत 4,59,19. शरीरे व्रणाः समुत्पन्नाः **Pankat.** 170,25. 171,1. विस्तारितवक्त्र° 3 (zu lesen °व्रणा आभिः). व्रणे कृम्युत्पत्तिप्रायश्चित्तम् Verz. d. Oxf. H. 282,*b*,31. °विज्ञानप्रतिषेध 308,*b*,22. °वर्ण **Suçr.** 1,85,18. प्रदुष्ट 88,12. व्रणस्य षष्टिरुपक्रमाः 2,3,14. °कोविद 6,19. °ज्ञात 15,3. °क्रिया 17,3. व्रणाः संरोहन्ति 1,83,15. **Çârṅg. Saṃh.** 1,7,55. व्रणास्तस्य दिने दिने । न परं न हरोहैव यावन्नडीत्वमाययौ **Kathâs.** 28,160. °संरोहण R. **Gorr.** 2,8,15. रूढ° **Kathâs.** 65,15. **Râǵa-Tar.** 4,281. संरूढ° R. 3,73,6. °विरोपण **Çâk.** 89. °प्रश्न **Suçr.** 1,77,2. व्रणास्राव *Ausfluss aus Wunden* oder *offenen Geschwüren* 83,10. °वस्तु *Sitz —, Ort einer Wunde* 8. 11. °वेदना 85, 7. **Ragh.** 12,99. °धूपन **Suçr.** 1,133,12; vgl. °धूम 2,235,16. °शोषिन् *an Wunden —, an Geschwüren abzehrend* 2,6,14. °शोथ Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,2. दुष्ट° **Suçr.** 2,26,2. 399,10. Spr. (II) 1072. 3590. शारीर° Verz. d. Oxf. H. 314,*a*,5. सद्यो° 6. 7. 308,*b*,25. भग्न° 314,*a*,9.10. नाडी° 12. दन्त° *von einem Zahne herrührend* Spr. (II) 3567 (n.). कुलिश° **Ragh.** 3,68. — 2) *Scharte, Riss, Verletzung, Fehler:* an einem Schwerte **Varâh. Bṛh.** S. 50,1. 3. 10. an Edelsteinen 82,11. an einem goldenen पट्ट 49,7. °द्वाराणि MBh. 12,11311. स° **Hariv.** 12245. — Vgl. अ° (auch **Bhâg.** P. 8,5,27. दण्ड Verz. d. Oxf. H. 269,*b*,8. गाण्डीव MBh. 1,8181. 4,1310. असि 231. लिङ्ग 12,11310. व्रत **Bhâg.** P. 8,3,7), अकृत°, चक्र°, द्विज°, निर्व्रण (von Bäumen R. 6,113,6), मल्ल°, रत°, वसन्त°.

व्रणकारिन् adj. *Wunden erzeugend, wund machend* AK. 3,4,25,191, wo wohl °कार्यप्युरुष्कर: zu lesen ist.

व्रणकृत् 1) adj. dass. — 2) m. *Semecarpus Anacardium Lin.* **Ratnam.** 68.

व्रणकेतुघ्नी f. *ein best. Strauch,* = दुग्धफेनी **Râǵan.** im ÇKDr.

व्रणजिता f. *Schoenanthus indicus Roxb.* **Dhanv.** in **Nigh. Pr.**

व्रणद्विष् (nom. °द्विट्) m. *Clerodendrum Siphonanthus R. Br.* **Çabdak.** im ÇKDr.

व्रणपट्ट m. *Binde um eine Wunde:* आमुक्त° **Râǵa-Tar.** 4,454. °पट्टक m. dass. **Kathâs.** 28,159. 72,10 (am Ende eines adj. comp.), °पट्टिका f. dass. 65,13. 85,14 (am Ende eines adj. comp. f.). 101,321 (am Ende eines adj. comp. m.).

व्रणय् (von व्रण), °यति *verwunden* **Dhâtup.** 35,82. अधरम् Spr. 2990. व्रणित gaṇa तारकादि zu P. 5,2,36. *verwundet, wund* Spr. 4866. R. 3,34,17. 6,71,22. **Suçr.** 1,69,2. 2,17,2. **Uttarar.** 73,12 (94,12). **Kathâs.** 10,127. 26,173. 51,172. 60,150. 104,205. **Râǵa-Tar.** 3,32. रेणुव्रणितलोचन 401.

— निस्, साकूतनिर्व्रणितरूपयादिक (?) **Kathâs.** 38,28.

व्रणवत् (wie eben) adj. *wund, verletzt* MBh. 12,11313.

व्रणहन् 1) adj. *Wunden vertreibend.* — 2) m. *Ricinus communis* (एरण्ड). — 3) f. °घ्नी *Cocculus cordifolius DC.* **Çabdak.** im ÇKDr.

व्रणहृत् 1) adj. *Wunden vertreibend.* — 2) m. *Methonica superba Lam.* **Râǵan.** im ÇKDr.

व्रणायाम (व्रण + आ°) m. *Wundenschmerz* (vom humor der Luft herrührend) **Çârṅg. Saṃh.** 1,7,70.

व्रणारि (व्रण + अरि *Feind*) m. 1) *eine best. Pflanze,* = अगस्त्य. — 2) *Myrrhe* **Râǵan.** im ÇKDr.

व्रणिन् (von व्रण) adj. *wund, verwundet* **Suçr.** 1,8,11. 69,3. 2,24,13. 399,8. Spr. (II) 1895.

व्रणिल (wie eben) adj. *wund:* ein Baum Shadv. Br. 4,4.

व्रणीय (wie eben) adj. am Ende eines comp.: द्वि° *von den zweierlei Wunden* (शारीर und आगन्तुक, *den von selbst entstandenen* und *durch fremde Gewalt zugefügten*) *handelnd*, Suçr. 2,1,3. 8.

व्रण्य (wie eben) adj. *für Wunden zuträglich* Suçr. 1,190,3. 195,13. 214,20.

1. व्रत (von 2. वर्) 1) n. (nach AK. 2,7,37 und Trik. 3,5,11 auch masc., welches wir nur durch M. 2,3 zu belegen vermögen). am Ende eines adj. comp. f. आ. *a) Wille, Gebot; Gesetz, vorgeschriebene Ordnung* RV. 2,8,3. 38,7. 9. 3,56,1. तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः 7,31,11. 47,3. देवानामति व्रतम् *gegen den Willen der Götter* 10,33,9. प्रचाकशद्व्रतानि देवः सवितामि रक्षते (oder zu *d*) 4,53,4. 5,63,7. 7,83,9. अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि 1,24,10. अप्रच्युत 2,28,8. ध्रुव 5,69,4. व्रता ते अग्ने महतो महानि 3,6,5. 7,6,2. तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनु व्रतम् 1,136,5. 2,38,3. अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रः 4,13,2. 3,61,1. व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः *nach göttlicher Ordnung und menschlichen Satzungen* 3,60,6. 5,72,2. — *b) Botmässigkeit, Gehorsam; Dienst* RV. 1,31,1. यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः 101,3. 10,36,13. आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्राः 2,38,2. 5,83,5. 7,5,4. यस्ते शिक्षति व्रतेन *gehorsam* 3,59,2. आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तः 3. 6,54,9. वयं सोम व्रते तव प्रजावन्तः सचेमहि 10,57,5. AV. 4,25,3. यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे 7,40,1. मम वाचमेकव्रतो जुषस्व Âçv. Grhj. 1,21,7. — *c) Gebiet:* याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते RV. 5,46,7. 3,38,6. गुह्य 54,5. 1,163,3. 10,114,2. व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु AV. 7,68,1. तस्य व्रतं रक्षतं विशे जनाय शर्म यच्छतम् RV. 1,93,8. — *d) Ordnung* so v. a. *geordnete Reihe, Reich:* त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् RV. 2,27,8. जनयन्तो दैव्यानि व्रतानि 7,75,3. आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि 10,65,11. द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रताप ओषधीः *die Reiche* (der Natur) 66,9. शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः *sammt den* (verschiedenen) *Reichen* 7,35,9. hierher vielleicht auch यतो व्रतानि पस्पशे 1,22,19. 4,53,4. — *e) Beruf, Amt; gewohnte Thätigkeit, Thun, Treiben, Gewohnheit:* नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् RV. 9,112,1. विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रतम् *beobachtest eines Jeden Thun* 37,5. विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि *das alles ist* Varuṇa's *Amt* 8,42,1. सूर्यस्य व्रतानि *Weise —, Verhalten der Sonne* TS. 4,3,11,3. आदित्यस्य व्रतमनुपर्यावर्तन्ते *sie ahmen die Bewegung des* Âditja *(der Sonne) nach* Ait. Br. 3,11. अर्णवस्य व्रतामिनात् *das Treiben der Fluth* RV. 10,111,4. आ वंशिष्ठतमा वो व्रतमा वो अहं समितिं ददे 166,4. तन्वः, मनांसि, व्रता AV. 6,74,1. 64,2. 2,30,2. 3,8,5. VS. 12,58. नानामनसः खलु वै पशवो नानाव्रताः TS. 5,3,1,3. अर्क° (v. l. आदित्य°) Spr. (II) 743. शशि° (I) 1717. मारुत 1869. यम° 2321. पार्थिव 2325. वारुणीर्व्रतिः 2751. व्रतं वारुणम् 2752. आलम्ब्य कुमुदव्रतम् Kathâs. 72,287. चकोर° 76,11. योध° MBh. 8,2557. साधुव्रते स्थितः 4,81. निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् Spr. (II) 1737. सत्पुरुष° 3277 (pl.). (I) 2768. MBh. 7,6988. Kathâs. 101,37. महतां सतां व्रतम् 18,188. शिशु° Hariv. 3438. अकापुरुष° Spr. (II) 398. विनयो हि सतीव्रतम् Kathâs. 17,56. न मूढव्रतमाचरेत् Spr. 4778. समानव्रतभृत् *dieselbe Lebensweise befolgend* 4603. वैखानस Çâk. 26. तुल्यनाम° adj. Bhâg. P. 4,24,13. भग्न° adj. Ragh. 17,42. अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः so v. a. *wenn du ein reines Gewissen hast* Çâk. 123. शुचि° adj. (f. आ) M. 9,70. R. 2,77,10. शुभ° adj. 1,9,9. — *f) religiöse Pflicht, Gottesdienst; Pflicht* überh.; = कर्मन् Naigh. 2,1. Nir. 2,13. 12,45. — RV. 1,22,6. कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम् 31,2. 136,5. 144,1. अतस्य देवा अनु व्रता गुः 65,3. 3,7,7. तव व्रताय मतिभिर्जरामहे 2,23,6. अनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् 1,183,3. तस्य व्रतानि वयमुप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः 3,3,9. व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् 6,14,3. 8,92,1. 9,73,3. यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि *wenn wir unsere Pflichten gegen euch verabsäumen* 10,2,4. 25,3. AV. 7,74,4. MBh. 13,127. पत्यौ भक्तिर्व्रतं स्त्रीणामदृहो मन्त्रिणां व्रतम्। प्रजानुपालनानन्यकर्मता भूभृतां व्रतम् *Aufgabe* Spr. 4495. अहं ते संप्रदास्यामि करं वैश्यव्रते स्थितः *die Pflichten eines* Vaiçja *erfüllend* Mârk. P. 116,3. विष्णु° *Pflichten gegen* Bhâg. P. 8,4,7. तद्व्रत adj. *die Pflichten gegen sie* (die Gattin) *erfüllend* M. 3,45. पितृ° adj. Bhag. 9,25. अतिथि° adj. MBh. 13,2019. गृह° adj. so v. a. *die Pflichten eines Haushalters erfüllend* Bhâg. P. 7,5,30. — *g) jede übernommene religiöse oder asketische Begehung oder Observanz: Regel, Gelübde, heiliges Werk* (z. B. Fasten, Keuschheit) AK. 2,7,37. H. 843. Halâj. 5,67.74. व्रतं चरिष्यामि VS. 1,5. 19,30. व्रतं च श्रद्धां चोपैमि 20,24. घर्मस्य AV. 4,11,6. अनडुहः 11. 10,7,1. 11. 11,7,9. TBr. 1,4,4,2. यः संवत्सरं व्रतं चरति 5,2,4. तिस्रो रात्रीर्व्रतं चरेत् *er übe Enthaltsamkeit* 2,5,1,7. Çat. Br. 5,7,6,1. भृगूणां त्वा व्रतेनादधामि *nach der Regel der* Bhṛgu TBr. 1,1,4,8. सं हि नक्तं व्रतानि सृज्यन्ते TS. 1,5,9,5. तुरयवि नाम व्रतम् 6,2,5,2. तस्यैतद्व्रतं नानृतं वदेन्न मांसमश्नीयात् *für ihn gilt folgende Regel* 2,5,5,6. 5,5,4,3. Ait. Br. 8,28. Çat. Br. 1,1,1,1. fgg. अनशनमेव व्रतं मेने 7. 4,6,4,2. 10,3,4,2. 4. Kâtj. Çr. 1,10,12. 4,15,4. अन्नं न निन्द्यात् तद्व्रतम् Taitt. Up. 3,7. 8. दीक्षित° Ait. Br. 7,23. Çânkh. Çr. 3,8,10. Kâtj. Çr. 4,6,13. गृहमेधि° Gobh. 1,4,26. Âpast. 2,1,1. अर्धमास° Gobh. 4,5,21. °विसर्जन Kauç. 42. 68. °विसर्जनीय Çat. Br. 5,5,2,2. °विसर्ग Pańkav. Br. 2,10. °समापन Kauç. 42. व्रतादानीय 56. — M. 2,165. व्रतोपवासपरा R. 2,26,28. Spr. 2925. Brahma-P. in LA. (III) 49,14. न संतोषसमं व्रतम् Spr. (II) 3689. Ragh. 2,4. व्रतानि पञ्च भिक्षूणाम् Mârk. P. 41,16. °पञ्चाशीति Verz. d. Oxf. H. 34,b,44. एकब्रह्मव्रताचाराः AK. 2,7,11. H. 80. व्रतात् *in Folge eines Gelübdes* 810. °वशात् dass. AK. 2,7,43. व्रतं चर् M. 4,198. fg. Spr. (II) 3836. Bhâg. P. 3,1,19. 4,22,12. यथावच्चरित° adj. MBh. 3,2246. चरित° adj. R. 1,3,1. सुचरित° adj. M. 11,116. चीर्ण° adj. Bhâg. P. 9,10,33. तच्चैनं चारयेद्व्रतम् M. 11,176. एतदेव व्रतं कुर्युः 117. 170. 181. मौनं वर्षसहस्रस्य कृत्वा व्रतमनुत्तमम् R. 1,65,2. Kathâs. 13,77. व्रतानीमानि धारयेत् M. 4,13. Bhâg. P. 9,2,10. तेन सार्धं व्यधाद्व्रतम् Kathâs. 13,78. 21,142. कथमात्तमिदं कष्टमीदृशेन त्वया व्रतम् 28,20. 21,142. व्रतादान H. 81. Halâj. 4,91. व्रतं ग्रह् Kathâs. 66,91. °ग्रहण Pańkat. 34,9 (ed. orn. 30,13). व्रतमाश्रि Prab. 52,9. अध्यवसा Hit. 19,21. अनुष्ठा Bhâg. P. 8,17,1. समाप्त Varâh. Bṛh. S. 105,7. व्रतं समापयेत् Weber, Kṛshṇaǵ. 308. fg. आ व्रतस्य समापनात् M. 5,88. व्रतं पालयतः Ragh. 2,25. पारय् R. 2,55,19. MBh. 3,16719. °संपादन Vikr. 37,7. व्रतमादिश् M. 4,80. fg. R. 2,52,65. उद्दिश् MBh. 3,16716. हिनस्ति व्रतमात्मनः M. 2,180. °लोपन 11,61. °भङ्ग Verz. d. Oxf. H. 88,a,26. 282,b,41. fg. छिद् Bhâg. P. 6,18,57. अस्कन्दित° 1,6,32. शान्त° 3,21,37. फलित° Kathâs. 3,23. नियत° 35,26. यत° MBh. 1,6936. संशित° 5102. M. 1,104. R. 2,54,

10. 95, 7. विपुल° MBh. 1, 5126. वृथा° Hariv. 11187. शंकराराधन° Kathâs. 21, 142. ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः Brahma-P. in LA. (III) 50, 13. मम दीर्घं विरहव्रतं बिभर्ति Çâk. 180. मौन° adj. Pañkat. 94, 8. त्रैविदिक M. 3, 1. उत्तमं व्रतम् । उन्मत्ताख्यं समाश्रित्य Mârk. P. 17, 16. चान्द्रायण° Hit. 19, 1. शूद्रहत्या° M. 11, 131. 140. गुरुतल्प° 170. अवकीर्णि° 2, 187. ब्रह्मचारि° Bhag. 6, 14. गौरी° Hit. 42, 2. जन्माष्टमी° Weber, Kṛshṇaǵ. 264. 307. श्लोक° Bhâg. P. 8, 3, 7. एकपत्नी° adj. R. 2, 64, 42. ब्राह्मणस्यात्रतं मलम् Spr. (II) 278. अङ्गिरसां व्रतम् N. eines Sâman Ind. St. 3, 201, b. अग्निर्नार्व्रते heissen zwei Sâman Lâṭj. 1, 6, 34. ähnlich अग्रेर्व्रतं गायेत् 39. — h) *Gelübde* überh., *fester Vorsatz:* व्रतं चक्रे विनाशाय द्विजगानां धृतव्रतः MBh. 1, 982. यथेदं व्रतमारब्धं नलस्याराधने मया 3, 2210. इति मे व्रतमाहितम् 2600. 5, 7314. यदिदं ते व्यवसितं परहिंसाकृतं व्रतम् R. 3, 13, 7. तस्य प्राणैः सुतैर्दारैः स्वामिसंरक्षणं व्रतम् Kathâs. 78, 128. 91, 53. न त्वेवं दूषयिष्यामि शस्त्रग्रहमहाव्रतम् Mahâvîraḱ. 40, 22. — i) *beständiger Genuss einer und derselben Speise* H. 7; vgl. मधुव्रत *Biene* u. s. w. — k) *blosser Milchgenuss als eine Observanz nach bestimmten Regeln; diese Milch selbst* (क्षीरव्रत Kâtj. Çr. 7, 4, 20. पयो° Çat. Br. 9, 5, 1, 1): व्रतं कृणुत (nach Mahîdh. hierher) VS. 4, 11. पूर्वा व्रतस्य प्राश्नती (wohl hierher) AV. 6, 133, 2. सायंप्रातर्व्रतं प्रयच्छन्ति Ait. Br. 3, 40. व्रतं अपयन्ति Çat. Br. 3, 2, 2, 10. 14. 17. गृहपतये व्रतमभ्युत्सिच्य प्रयच्छेयुः 4, 2, 15. 9, 2, 1, 18. Kâtj. Çr. 7, 4, 29. 32. 8, 3, 17. 6, 30. 16, 6, 8. एक°, द्वि°, त्रि° TS. 6, 2, 5, 3. 4. तप्त° 2, 7. घृत° Pañkav. Br. 18, 2, 5. 6. Schol. zu Kâtj. Çr. 1, 4, 8. °मिश्र Kâtj. Çr. 8, 2, 2. 26, 3, 33. — l) so v. a. महाव्रत nämlich Stotra oder *der Tag desselben* Çat. Br. 10, 1, 2, 7. Pañkav. Br. 16, 7, 5. 21, 15, 4. Lâṭj. 8, 2, 20. 9, 4, 18. Kâtj. Çr. 24, 3, 27. 7, 33. — 2) m. N. pr. eines Sohnes des Manu von der Naḍvalâ Bhâg. P. 4, 13, 16. — Vgl. अ°, अनु°, अन्य°, अप°, अपि°, असिधारा° (unter असिधारा), आर्य°, इन्दु°, इन्द्र°, इष्ट°, कुल°, क्षीर°, गर°, गल°, गो°, घृत°, चारु°, तथा°, दान°, दृढ°, देव°, धुनि°, धृत°, निर्व्रत, नील°, पति° (auch R. 2, 27, 12), पतिव्रता, पयो° (als adj. auch Jâǵn. 3, 290), पुरु°, पुरुष°, प्रिय°, बक°, बाल°, बृहद्व्रत, ब्रह्म°, भद्रा°, भर्तृ° (auch MBh. 15, 1062. R. 2, 70, 8), भर्तृव्रता, भास्कर°, मङ्गला°, मधु°, मर्कटी°, महा°, महि°, मुनि°, मौन°, यज्ञ°, यम°, रोहिणी°, वि°, वीर°, वृष°, शुचि°, स°, सत्य°, सु°, स्तुति°, स्नातक°, हरि°.

2. व्रत m. in einem wahrscheinlich entstellten Texte: उतामृतासुर्व्रत (व्रतः Padap.) एमि कृण्वन् AV. 5, 1, 7.

व्रतक n. = व्रत 1) g) Hariv. 7097. 7685. 7772. 7823. fgg. 7837.

व्रतकल्पद्रुम m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 285, a, No. 665. fgg.

व्रतकालनिर्णय m. desgl. Mack. Coll. I, 29.

व्रतचर्या f. *Ausführung eines religiösen Werkes, einer Observanz* u. s. w., *Askese* Çat. Br. 2, 1, 4, 2. 5, 5, 2, 2. 6. 14, 1, 1, 33. 2, 26. M. 1, 111. MBh. 5, 7300. R. 1, 9, 40. R. Gorr. 1, 23, 5. Kathâs. 49, 238. Bhâg. P. 3, 9, 13. 23, 5. 8, 17, 17. 10, 60, 52. am Ende eines adj. comp. (f. आ): समान° MBh. 3, 8579.

व्रतचारिता f. nom. abstr. von व्रतचारिन् Kâm. Nîtis. 2, 28. 30, wo der Comm. वाग्यमो व्रत° liest.

व्रतचारिन् adj. *einer religiösen Observanz* u. s. w. *obliegend, unter einer Regel* oder *einem Gelübde stehend* ṚV. 7, 103, 1. Âçv. Gṛhj. 2, 2, 7. MBh. 5, 5426. Spr. 4494. Varâh. Bṛh. S. 16, 20. मम *mir zu Ehren* Verz. d. Oxf. H. 33, a, 20. भर्तृव्रतचारिणी *die Pflichten gegen den Gatten erfüllend, dem Gatten treu* R. 1, 17, 25 (14 Gorr.).

व्रततत्त्व n. Titel eines Abschnittes im Smṛtitattva Gild. Bibl. 465. 476. Verz. d. Oxf. H. 290, b, No. 700.

व्रतति f. = प्रतति 1) *Ausbreitung* AK. 3, 4, 14, 69. H. an. 3, 293. — 2) *Schlinggewächs, Kriechpflanze, Ranke* Nir. 1, 14. 6, 28. AK. 2, 4, 1, 9. 3, 4, 14, 69. H. 1117. H. an. Halâj. 2, 25. ṚV. 8, 40, 6. Âçv. Gṛhj. 4, 8, 15. TBr. 1, 5, 1, 3 (neben असिद्धि, wo etwa व्यृद्धि zu erwarten wäre). Kâm. Nîtis. 19, 11. 14. Çâk. 32. व्रतती Bharata im Dvirûpak. nach ÇKDr. Ragh. 14, 1. Khandom. 138.

व्रतदण्डिन् adj. *einen dem Gelübde entsprechenden Stab tragend* Hariv. 10679.

व्रतदान n. *das Auferlegen eines Gelübdes* Pañkat. ed. orn. 30, 5.

व्रतदुग्ध n. Vrata-*Milch* Schol. zu Kâtj. Çr. 8, 2, 2.

व्रतदुघा f. *die Kuh, welche die* Vrata-*Milch liefert,* Çat. Br. 3, 2, 2, 14. 14, 3, 1, 34. Kâtj. Çr. 7, 4, 19. acc. pl. °दुघस् Âçv. Çr. 12, 8, 27.

व्रतधर adj. = व्रतचारिन्. मौन° MBh. 1, 1960. ब्रह्म° Pañkat. 187, 12. महा° Bhâg. P. 6, 17, 8. भव° 4, 2, 28. — Vgl. दण्ड°, नग्न°.

व्रतधारण n. = व्रतचर्या Kâm. Nîtis. 2, 22 (व्रतचारण Comm. ohne Angabe einer abweichenden Lesart im Texte). कस्य देवताविशेषस्य व्रतधारणं श्रेयः Çaṁk. zu Bṛh. Âr. Up. S. 318. मदीय° Bhâg. P. 11, 11, 37. तद्° d. i. पति° 7, 11, 25.

व्रतनी adj. *botmässig* ṚV. 10, 65, 6. — Vgl. वशनी.

व्रतपक्ष m. du. N. zweier Sâman Lâṭj. 1, 6, 33. 3, 9, 10.

व्रतपति m. *Herr des Gottesdienstes, der religiösen Regeln* u. s. w.: Agni AV. 7, 74, 1. VS. 1, 5. 2, 28. 20, 24. Ait. Br. 7, 8. TS. 1, 6, 2, 2. 2, 2, 2. 5, 4, 5. 6, 1, 4, 6. TBr. 3, 7, 2, 5. Taitt. Âr. 4, 41, 3.

व्रतपत्नी f. *Herrin des Gottesdienstes* u. s. w.: आपः Kauç. 56.

व्रतपा adj. *die Ordnung —, die heilige Pflicht wahrend, — beobachtend:* Sûrja ṚV. 1, 83, 5. प्र मे देवानां व्रतपा उवाच 5, 2, 8. 10, 61, 7. Agni 1, 31, 10. 6, 8, 2. 8, 11, 1. VS. 5, 6. 40. TBr. 2, 4, 1, 11. Ait. Br. 7, 7. दैव्या होतारा ṚV. 3, 4, 7.

व्रतपारण s. u. 1. पारण 2).

व्रतप्रकाश m. = व्रतराज Verz. d. Oxf. H. 283, b, No. 663. fg.

व्रतप्रद adj. *die* Vrata-*Milch reichend* Ait. Br. 7, 1. Çat. Br. 3, 2, 2, 19.

व्रतप्रदान n. 1) *das Auferlegen eines Gelübdes* Pañkat. 34, 2. — 2) *das Gefäss, in welchem die* Vrata-*Milch gereicht wird,* Kâtj. Çr. 8, 1, 19.

व्रतभृत् adj. *Träger der Ordnung, — heiligen Handlung* u. s. w.: Agni Ait. Br. 7, 8. TS. 1, 6, 2, 2. TBr. 2, 4, 1, 11. Âçv. Çr. 3, 12, 13. Kâtj. Çr. 25, 4, 23. समान° *dieselbe Lebensweise führend* Spr. 4603.

व्रतमाला f. Titel einer Compilation Verz. d. Tüb. H. 19.

व्रतय् (von 1. व्रत), व्रतयति P. 3, 1, 21. *die* (heisse) Vrata-*Milch geniessen* Çat. Br. 3, 2, 2, 10. fgg. 6, 6, 4, 6. TS. 6, 2, 2, 7. Kâṭh. 24, 9. Çâṅkh. Çr. 7, 7, 3. 14, 16, 3. Comm. zu TS. I, 410, 9. 12. nach dem Schol. zu P. 3, 1, 21 ausserdem *vermeiden:* शूद्रान्नं व्रतयति = शू° वर्जयति d. h. *die Satzung beobachten in Bezug auf* Çûdra-*Speise*.

— उप *als* Vrata-*Zuspeise geniessen:* अन्यत्र सिद्धं गार्हपत्ये पुनर-

धिम्रित्योपव्रतयेरन् Âçv. Çr. 12,8,29.

व्रतराज m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 283,b, No. 663. fg.

व्रतवत् (von 1. व्रत) adj. 1) *eine Regel —, ein Gelübde u. s. w. erfüllend, denselben obliegend* Kauç. 67. 94. 100. वर्षाणां शतम् MBh. 1,1217. 10, 723. 14,913. 2763. Spr. (II) 3446. Hariv. 1191. Sâh. D. 115,8. विद्यावेद° (das suff. gehört zu allen drei Wörtern) MBh. 13,3054. — 2) *mit dem* Vrata d. h. Mahâvrata *verbunden* Lâṭj. 8,2,14. Kâtj. Çr. 23,4, 29. 24,2,27. 37. Âçv. Çr. 10,2,31. 11,2,3. 4,9. ein Pañkâha Kâtj. Çr. 23,4,26. — 3) *das Wort* व्रत *enthaltend* Çat. Br. 13,4,1,15.

व्रतशय्यागृह n. *ein zur Erfüllung einer religiösen Regel, — eines Gelübdes bestimmtes Schlafgemach* Kathâs. 46,173.

व्रतश्रपण m. *das Feuer zum Kochen der* Vrata-*Milch* Çâñkh. Çr. 6, 12,28. Br. 17,7.

व्रतसंग्रह m. *Uebernahme eines Gelübdes, Weihe zu einer religiösen Feier* H. 823.

व्रतस्थ adj. *einem Gelübde u. s. w. obliegend* M. 3,234. 11,210. MBh. 5,7362. Kathâs. 29,177. 35,65. Bhâg. P. 5,26,29. 6,18,57. कन्याव्रतस्था so v. a. *die Regeln habend* Kathâs. 26,56.

व्रतस्थित adj. *Gelübden obliegend* so v. a. *im Lebensalter eines* Brahmakârin *stehend:* स्तनपानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः Varâh. Bṛh. S. 96,17.

व्रतस्नात adj. *der das* Vrata (nicht aber den Veda) *absolvirt hat* R. 1,63,1 (65,1 Gorr.). Mârk. P. 45,16. वेदविद्या° M. 4,31. विद्यावेद° MBh. 13,3019. 3054. Vgl. व्रतैः स्नातः Bhâg. P. 1,5,7 und विद्या°.

व्रतस्नातक adj. dass. Pâr. Gṛhj. 2,5. Gobh. 3,5,12.

व्रतस्नान n. *das Absolviren des* Vrata R. 2,22,27. Râǵa-Tar. 5,79. Bhâg. P. 1,10,28.

व्रतातिपत्ति (1. व्रत + अ°) f. *Versäumniss dessen, was zu einem* Vrata *gehört,* Âçv. Çr. 3,13,2.

व्रतादेश (1. व्रत + आ°) m. *eine Anweisung zur Uebernahme eines* Vrata, *Auferlegung eines Gelübdes* u. s. w. R. 2,22,28. insbes. *des ersten Gelübdes beim* Brahmakârin Jâǵn. 3,23.

व्रतादेशन (1. व्रत + आ°) n. dass.: कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिष्यते M. 2,173.

व्रतार्क (1. व्रत + अर्क) m. Titel einer Compilation Verz. d. B. H. No. 1178. fgg. Hall 176. fg.

व्रतावली (1. व्रत + आ°) f. Titel einer Schrift Mack. Coll. 1,53. °कल्प desgl. 136.

व्रतिक (von 1. व्रत) adj. am Ende eines comp.: अ° *für den es kein Gelübde u. s. w. giebt* MBh. 12,1336. उमा° n. Hariv. 7820 fehlerhaft für °व्रतक, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. चान्द्र°, बक°, बिडाल°, बैडाल°, महा°.

व्रतिन् (wie eben) 1) adj. *in Erfüllung einer Observanz u. s. w. begriffen,* = यति u. s. w. H. 76, v. l. Halâj. 2,189. 254. Verz. d. Oxf. H. 186,b,28. = आदेष्टाध्वरे AK. 2,7,7. H. 817. Halâj. 2,265. — TS. 1, 3,4,3. Kauç. 82. M. 2,188. 5,91. 99. 11,121. 224. Jâǵn. 3,15. 28. MBh. 1,5120. 13,440. 4573. Hariv. 2078 (fem.). R. Gorr. 2,3,23. 5,22,26. Çâk. 106. Spr. 2223. Kathâs. 26,202. 37,68. Râǵa-Tar. 1,233. 2,49. 4, 518. Weber, Kṛshṇaǵ. 228. 309. Pañkar. 1,9,26. व्रतिनो जटा AK. 2,6, 2,48. Halâj. 2,377. व्रतिनामासनम् AK. 2,7,45. दण्डः Trik. 3,3,117. Halâj. 2,256. स्थानम् 143. वेश्म H. 994. अ° MBh. 13,1601. R. Gorr. 1,13,8. उपसद्व्रतिन् Çat. Br. 14,9,3,2. पाशुपत° Râǵa-Tar. 3,267. आर्य° so v. a. *sich wie ein* Ârja *benehmend* MBh. 7,643. अतिथि° *Gastfreundschaft übend* 3,15408. मिथुन° *obliegend* Bhâg. P. 9,6,51. ईश° *verehrend* ebend. — 2) m. N. pr. eines Muni Verz. d. Oxf. H. 80,a,12. — Vgl. गो°, देव°, बक°, भ्राष्ट्र°, महा° (in der ersten Bed. auch Kathâs. 25,81. 26,196. 43,175), मूल°, मौन°, राम°.

व्रतेयु (wie eben) m. N. pr. eines Sohnes des Raudrâçva VP. 447. Bhâg. P. 9,20,4.

व्रतेश (1. व्रत + ईश) m. *Herr der Observanzen u. s. w.:* Çiva MBh. 13,612.

व्रतोपनयन (1. व्रत + उ°) n. *das Einführen in ein* Vrata: der Gattin TBr. 3,3,3,2.

व्रतोपह (1. व्रत + उ°) m.: अङ्गिरसाम् N. eines Sâman Ind. St. 3,201,b.

व्रतोपायन (1. व्रत + उ°) n. *Eintritt in ein* Vrata Çat. Br. 11,1,7, 1. Kâtj. Çr. 2,2,5. 5,28. 5,4,22. 6,2,4. °वायन Trik. 2,9,14. °नीय *dazu gehörig u. s. w.* Çat. Br. 11,2,4,7. Kâtj. Çr. 2,1,10. ओदन Lâṭj. 10,20,2.

1. व्रत्य (von 1. व्रत) adj. *gehorsam, treu:* तव स्मसि व्रत्याः RV. 8,48,8.

2. व्रत्य (wie eben) adj. *einem* Vrata *angemessen, dazu geeignet, — gehörig, Theilhaber eines* Vrata TS. 1,8,10,2. 2,2,2,2. TBr. 1,7,4,3. अहर् 3,7,1,9. Çâñkh. Br. 27,3. Çr. 3,4,11. Kâtj. Çr. 8,7,23. 12,2,12. Âçv. Çr. 12,8,28. — Vgl. अ°.

व्रद्, व्रदते, व्रन्दति Nir. 5,15. *weich —, mürbe werden:* अश्रथ्नन्दृ-ळ्हाव्रदन्त वीळिता RV. 2,24,3.

व्रन्दिन् (von व्रन्द्) adj. *mürbe —, morsch werdend* Naigh. 4,2. Nir. 5, 15. fg. RV. 1,54,4. 5.

व्रयस् n. nach Sâj. = वर्जन. आ देवानामोहते वि व्रयो हृदि RV. 2,23, 16. vielleicht von व्री = व्ली, etwa *erdrückende Gewalt, Uebermacht.*

1. व्रश्च्, वृश्चति Naigh. 2,19 (वधकर्मन्). Dhâtup. 28,11 (छेदने). P. 6,1, 16. Vop. 13,1. वव्रश्च, वव्रश्चिथ 8,124. 135. 13,1. P. 6,1,17. व्रक्ष्यति; व्रष्टा P. 8,2,36, Schol. अव्रश्चीत् und अव्राक्षीत् Vop. 13,1. व्रश्चित्वा 26, 219. P. 7,2,55. वृक्त्वी; व्रष्टुम् P. 8,2,36, Schol. pass. वृश्च्यते, वृक्णः partic. वृक्ण (hier und da fälschlich वृक्क geschrieben) P. 6,1,16. Vop. 26,97. *abhauen, zerschneiden, spalten; fällen* (einen Baum): वना RV. 6,2,9. 10,28,8. परशुं येन वृश्चात् 53,9. क्रव्यादो वृक्णवपि धत्स्वासन् 87,2. 5. मूलम् 10. AV. 13,1,56. RV. 3,30,16. 9,91,4. 10,116,5. अद्रिम् 113,4. कुलिशेन AV. 2,12,3. शिरो वृश्चामि शकुनेरिव 25,2. बाहून् 3,19,2. 6, 65,2. आयुः 12,4,28. 50. 5,42. TS. 6,3,3,4. यूपम् Çat. Br. 3,6,4,1. 6. 11. दण्डम् Kauç. 47. पाशान् 49. TBr. 3,2,10,1. med.: समूलो यश्च (केशः) वृश्चते (वृश्च्यते?) AV. 6,136,3. — को ऽवृश्चत्तव पादांस्त्रीन् Bhâg. P. 1,17, 12. खड्गेन शिरांसि 6,11,15. 7,2,12. 10,66,21. 88,18. शस्त्राणि वव्रश्चुः Bhaṭṭ. 14,77. व्रश्चित्वा तद्वन् 9,41. व्रश्चति लोकसंशयम् Bhâg. P. 6,3,2. वृक्णान् partic. (!) 9,5,8. वृश्च्यमानमूल 5,26,9. — वृक्ण *abgehauen, gespalten, gefällt* AK. 3,2,53. H. 1490. ein Baum RV. 3,8,7. Çat. Br. 14, 6,9,33. संवत्सरे वृक्णमपि रोहति *der Schnitt verwächst* AV. 8,10,8. TS. 2,5,1,4. अग्रपरशु° 5,1,10,1. मूल Bhâg. P. 3,19,15. वृक्णायुधभुज 6,

12,16. 18,71. 9,2,7. 10,50,25. 11,29,39. Bhaṭṭ. 4,42. 12,75. 16,42.

— intens. वरीवृश्यते Pat. zu P. 7,4,90. Schol. zu 6,1,16.

— अपि *abhauen, zerhauen* Ṛv. 8,40,6. शीर्षाणि कृत्मापि वृश्च 10,87,16. AV. 1,7,7. 2,32,2. 10,6,1. वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम् Ṛv. 6,62,10 stellen wir hierher, weil वर्ज्, auf welches die Form wiese, sonst nicht mit अपि vorkommt; vielleicht wäre अप richtig.

— अव *abschneiden, abtrennen:* वृक्ण्या Ṛv. 1,51,7. अवं स्रक्तीर्वेश्या वृश्चत् 7,18,17. — Vgl. अवव्रश्च.

— आ *abtrennen von, ausser Verbindung bringen mit Jmd* (dat.): एताभ्यस्त्वा देवताभ्य आ वृश्चामः Çat. Br. 12,1,3,22. Kāṭh. 21,2. TBr. 3,7,6,17. mit loc. Shaḍv. Br. 2,10. pass. mit dat.: आ सूर्याय वृश्च्यते TBr. 2,1,3,10. आ वृश्च्यतामदितये दुरेवाः Ṛv. 10,87,18. देवेभ्यः AV. 15,2,1. TBr. 1,1,4,8. पितृभ्यः 3,10,7, wo statt वृश्चेत् des Textes und वृश्चेत des Comm. वृश्च्येत zu lesen sein wird, wie auch AV. 12,2,50. 15,2,1. 12,6 und anderwärts in den Brāhmaṇa die passive Form, welche die sorgfältigen Texte stets zeigen, wieder herzustellen ist. Mit loc.: देवेषु AV. 12,4,6. 15,12,6. Hierher ziehen wir auch wegen der Construction यत्ते तपस्तस्मै ते मा वृक्षि TS. 1,6,6,1. Çāṅkh. Çr. 4,13,3. — Vgl. आव्रश्चन fg.

— नि *niederhauen, fällen:* पव्येव राजन्नघशंसं नीचा नि वृश्च Ṛv. 6,8,5. प्रज्ञां च तस्य मूलं च नीचैर्देवा नि वृश्चत TBr. 3,7,6,16.

— निस् vgl. निर्व्रस्क.

— परि *beschneiden* Çat. Br. 6,7,2,8. °वृक्णा *verstümmelt* Khānd. Up. 8,9,1.

— प्र *abschneiden, abspalten; zerhauen* AV. 12,5,62. अग्रम् Çat. Br. 6,6,3,11. TBr. 2,2,1,7. भ्रातृव्यमुत्करे ऽधि प्रवृश्चति 3,2,10,1. घन्नम् Bhaṭṭ. 17,89. 107. प्रवृक्णा बाहवो मया Bhāg. P. 10,63,48. — Vgl. प्रव्रश्चन fg.

— वि *zerspalten, in Stücke hauen:* den Vṛtra Ṛv. 1,61,10. 10,113,6. die Schlange 2,19,2. 3,33,7. 4,17,7. भोगान् 5,29,6. 2,15,6. 3,53,22. अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः *zerhacken* (mit dem Schnabel) AV. 7,56,7. पाशम् Bhāg. P. 6,14,54. विवृश्च्य 11,12,24. विवृक्णा Ṛv. 1,32,5. Bhāg. P. 4,10,20. 5,9,19. 12,16. 9,15,32.

— सम् *in Stücke hauen, zerstückeln* AV. 12,5,62. पर्वाण्येषां पर्वशः संव्रश्चम् (absol.) Çat. Br. 11,6,1,3. 8. संव्रश्चमोषधिवनस्पतीनां प्रकिरति *stückweise* 13,7,1,9. Kātj. Çr. 21,2,6. Çāṅkh. Çr. 16,15,16. दुर्जरगेहप्रज्वलाः संवृश्च्य Bhāg. P. 10,32,22.

2. व्रश् (= 1. व्रश्) nom. ag. *abhauend* u. s. w.; nom. व्रट् P. 8,2,36. Vop. 3,77. fg. मूल° P., Schol.

व्रश्चन (von 1. व्रश्) 1) adj. *abhauend, fällend, zum Abhauen* u. s. w. *dienend:* इध्म° (कुठार) Siddh. K. 250,a,6. — 2) m. a) *Säge oder Feile* AK. 2,10,33. H. 920. — b) *durch Einschnitt in einen Baum gewonnenes Harz* Jāgn. 1,171; vgl. M. 5,6 unter 3). — 3) n. *das Abhauen, Spalten, Zerhauen, Einschneiden* u. s. w. Nir. 2,6. 12,29. Çat. Br. 3,6,4,7. वंश° Kāṭh. 30,2. वातरज्जूनाम् Maitrjup. 1,4. वृक्षनिर्यासान्व्रश्चनप्रभवान् M. 5,6.

व्रष्टव्य (wie eben) partic. fut. pass. P. 8,2,36, Schol.

व्रस्क (wie eben) adj. *behauend* s. यूप°.

व्राचड adj. Bez. eines Apabhramça-Dialects Verz. d. Oxf. H. 181, a, No. 412.

व्राज 1) = व्रज *Heerde, Haufen;* adv. व्राजम् *in Haufen:* ये ऽमावास्यांऽ रात्रिमुदस्थुर्व्राजमत्रिणः AV. 1,16,1. — 2) m. = ग्रामकुक्कुट H. ç. 192.

व्राजपति m. *Anführer des* oder *der Haufen,* etwa *Herzog:* परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम् Ṛv. 10,179,2.

व्राजबाहु m. du. nach dem Comm. *ausgestreckte Arme,* also etwa *Arme, die ein Gehege* (व्राज = व्रज) *bilden, denen man nicht entrinnt:* मृत्योर्ह वा एतौ व्राजबाहू Çāṅkh. Br. 2,9.

व्राजि f. = वायु ÇKDr. *a gale of wind* Wilson; beide ohne Angabe einer Aut.

व्राजिन् adj. in विष्ठा° nach dem Comm. *auf einer Stelle sitzend, nicht wandernd;* also etwa so v. a. *dessen Heerde* (*Pferch;* vgl. व्रज) *stationär ist* Çat. Br. 5,5,1,12. — Vgl. अ°.

व्रात (von 1. वृ; vgl. व्र) m. Siddh. K. 249,b,2 v. u. Verz. d. Oxf. H. 167,a,29. *Schaar, Haufen, Trupp* (AK. 2,5,39. H. 1411. Halāj. 4,1); *Abtheilung* (von Kriegern u. s. w.), *Gilde, Genossenschaft;* = अपत्य Naigh. 2,2. = मनुष्य 3. नानाजातीया अनियतवृत्तय उत्सेधजीविनः संघा व्राताः Pat. zu P. 5,2,21. व्रातं व्रातं गणं गणं मरुतामोजं ईमहे Ṛv. 3,26,2. 5,53,11. 1,163,8. der Würfel 10,34,8. 12. fünf 9,14,2. जीवं व्रातं सचेमहि 10,57,5. AV. 2,9,2. Pañkav. Br. 6,9,24. छन्दांसीव खलु वै व्राताः *bilden gleichsam eine Gilde* 25. 17,1,5. 12. VS. 16,25. सर्वे व्राता वरुणस्याभूवन् TS. 1,8,10,2. व्रातेन (= शरीरायासेन Schol. gegen Pat., der die gewöhnliche Bed. annimmt; vgl. noch Schol. zu Bhaṭṭ. 4,12) P. 5,2,21. 3,113. विद्याधर° Kathās. 35,20. तुरुष्कतुरग° 19,109. नानारण्यमृग° Bhāg. P. 4,25,19. नानारण्यपशु° 8,2,7. हंसपारावत° 3,23,20. मधुकर° *Bienenschwarm* 5,25,7. *Menge* überh. von Unbelebtem: रथानाम् MBh. 4,1667. रथ° 1070. 5,5960. शर° 4,1714. 1851. 5,2131. 14,2227. Hariv. 9322. R. 6,79,51. Ragh. 12,94. मलयमरुताम् Spr. 2130. घोरनिबिडधारा° Kathās. 75,42. मणि° Varāh. Bṛh. S. 44,23. अलक° Bhāg. P. 3,21,9. महामणिव्रातमय 4,9,60. — Vgl. भद्र°, महा°, वृष°.

व्रातपत adj. (f. ई) von व्रतपति. अन्न Kauç. 73. Âçv. Çr. 2,12,6. °पतीय Schol. zu Kātj. Çr. 25,5,1.

व्रातपति m. *Herr der Schaar, — Gilde* u. s. w. VS. 16,25.

व्रातसाह् adj. VS. Prāt. 3,121. *in Abtheilungen* (*Geschwadern*) *siegreich streitend* Ṛv. 6,75,9.

व्रातिक adj. von 1. व्रत. संवत्सर Gobh. 3,1,13. Çāṅkh. Gṛhj. 2,11.

व्रातीन adj. = व्रातेन जीवति P. 5,2,21. *einer schweifenden Bande angehörig* H. 480. *das Leben eines Vagabunden führend* Lāṭj. 8,5,1. Bhaṭṭ. 4,12.

1. व्रात्य (von 1. व्रत) adj. *zum* Vrata d. h. Mahâvrata *gehörig* Schol. zu Pañkav. Br. 18,7,13.

2. व्रात्य (von व्रात) 1) m. *einer schweifenden Bande angehörig, Landstreicher;* überh. *ein Umherschweifender; Mitglied einer Genossenschaft, welche ausserhalb der brahmanischen Ordnung steht,* AK. 2,7,53. H. 854. Halāj. 2,249. VS. 30,8. Lāṭj. 8,6,2. 7. 8. °गण Kātj. Çr. 22,4,3. °धन 9. Pañkav. Br. 17,1,16. °चरण Kātj. Çr. 22,4,23. °भाव 27. °चर्या Lāṭj. 8,6,28. °यज्ञ Pañkav. Br. 17,1,1. देवा व्रात्याः सत्त्रमासत बुधेन स्थपतिना 24,18,2. Schol. zu 17,1,1. Praçnop. 2,11. यथाका-

लमसंस्कृताः। सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः॥ M. 2,39. 10, 20. fgg. 11,197. Jâǵń. 1,38. 3,289. MBh. 5,1229. 13,2621. Verz. d. Oxf. H. 282,a,3 v. u. Varâh. Bṛh. S. 87,39. Prâjaçkittend. 32,b,7. Bhâg. P. 12,1,36. Ind. St. 1,445. 9,15. Anrede an den ankommenden Gast Âpast. 2,7,13. Den Preis des Vrâtja in AV. 15 betrachten wir als Idealisirung *des frommen Vaganten* oder *Bettlers* (परिव्राजक u. s. w.). — 2) f. श्रा a) f. zu 1) व्रात्य M. 8,373. — b) *umherschweifendes Leben:* व्रात्यां प्रवसत्तः Pańkav. Br. 17,1,1. 4,1. चरु 1,2. 3,1.2. — Vgl. अव्रात्य.

व्रात्यता f. nom. abstr. von व्रात्य 1) M. 11,62. Jâǵń. 3,234.

व्रात्यब्रुव m. *angeblicher* Vrâtja AV. 15,13,6.

व्रात्यस्तोम m. Bez. gewisser Ekâha Kâtj. Çr. 12,1,2. 22,4,1.27. Lâtj. 8,6,1.29. Âçv. Çr. 9,8,25. in Verbindung mit क्रतु *ein Opfer für Ausgestossene* Jâǵń. 1,38. व्रात्यः स्तोमः Maçaka in Verz. d. B. H. 72 (III, 9-11).

व्राध्, व्राधते *reizen, anspornen* (vgl. ἐρέϑω): तव त्ये अग्ने अर्चयो महि व्राधन्त वाजिनः ṚV. 5,6,7. partic. praes. व्राधत् (zum Zorn) *reizend, herausfordernd* (= महत् Naigh. 3,3) ṚV. 1,100,9. 122,10. कंसि व्राधन्तमोऽसा 4,32,3. 10,49,8. 69,10. fg. शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्रे महि व्राधन्त ओगणास इन्द्र 89,15. 99,9. vom Soma etwa *aufregend* 1,135,9. superl.: महो व्राधत्तमो दिवि 150,3.

व्रिश् nach Naigh. 2,5 so v. a. *Finger:* तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश व्रिशः ṚV. 1,144,5.

व्री, व्रीणाति und व्रिणाति Dhâtup. 31,33 (वरणे). Vop. 16,2.5. व्रीयते dass. Dhâtup. 26,31. — caus. व्रेपयति s. zu P. 7,3,36.

व्रीड्, व्रीड्यति (चोदने, लज्जायाम्) Dhâtup. 26,18. व्रीडते *verlegen werden, sich schämen:* व्रीडमाना MBh. 4,1185. नाति व्रीडे Bhâg. P. 8,22, 7. partic. व्रीडित *verlegen, beschämt* MBh. 3,2271. 2279. 16653. R. 1, 64,2. 2,36,17. 37,13. 98,20. fg. (107,10. fg. Gorr.). 3,68,48. 5,18,6. 7, 109,17. Vikr. 8,17. Bhâg. P. 3,12,33. 4,20,18. 8,12,26. 9,1,30. °लोचनानना: 1,11,32. मध्यमव्रीडिता Sâh. D. 100.

— caus. व्रीडयति (संस्तम्भकर्मन्) Nir. 5,16. 6,32.

व्रीड (von व्रीड्) m. *Verlegenheit, Scham* Trik. 1,1,128. 3,5,18. H. 311, Schol. अलं व्रीडेन R. 3,61,46 (55,34 ed. Bomb.). व्रीडमावहति मे Ragh. 11,73. व्रीडात् Kumâras. 7,67. Râǵa-Tar. 1,210. 6,98. Häufiger व्रीडा f. AK. 1,1,2,23. Trik. H. 311. Halâj. 2,412. = धार्ष्ट्यभाव Daçar. 4,22. Sâh. D. 194. व्रीडां न कुरुषे कथम् *sich schämen* MBh. 2,1577. परां व्रीडामुपागमत् R. 1,1,80. °युत् 4,10,31. Spr. 2016. Ragh. 15,27. Çâk. 50,15.132. Varâh. Bṛh. S. 74,20. 78,12. Daçar. 2,39. Râǵa-Tar. 1,254. 5,338. Bhâg. P. 1,10,16. 11,37. 2,1,32. 3,20,31. 23,9. 4,4,22. Am Ende eines adj. comp. (f. श्रा): वीत° Spr. (II) 526. दूरव्रीडा Sâh. D. 101. स्वल्प° 42,18. स° *verlegen, beschämt* MBh. 3,10348. 4,1129. 5,5969. 7528. R. 1, 55,8 (wohl सव्रीडश्चि° zu lesen). 63,10. 5,21,20. Spr. 1885. Vikr. 10, 12. Râǵa-Tar. 4,447. Bhâg. 3,22,1. 8,8,46. 22,14. सव्रीडम् adv. Çâk. 51, 12. Vikr. 28,14. Varâh. Bṛh. S. 32,3. Pańkat. 218,13. — Vgl. अव्रीड.

व्रीडन (wie eben) n. 1) *das Festandrücken:* der Kinnladen ṚV. Prât. 14,8; vgl. caus. von व्रीड्. — 2) = व्रीड, व्रीडा Çabdar. im ÇKDr.

व्रीडा s. u. व्रीड.

व्रीडावत् (von व्रीडा) adj. *verlegen, beschämt* MBh. 3,15034. Gît. 11,13.

व्रीस्, व्रीसयति (हिंसायाम्) Dhâtup. 32,121, v. l.

व्रीहि m. *Reis,* pl. *Reiskörner* (auch *Korn* überh. nach den Lexicographen) AK. 2,4,1,19. 9,15.21. H. 1168. Med. h. 9. Halâj. 2,424. 5, 28. P. 3,3,166, Vârtt. 1, Schol. Die verschiedenen Arten des Reises Suçr. 1,96,2. fgg. — AV. 6,140,2. 8,7,20. 9,6,14. व्रीहियवौ 11,4,13. 12,1,42. VS. 18,12. TS. 7,2,10,2. Ait. Br. 2,8. 11. 8,16. Âçv. Çr. 2,6, 5. व्रीहीनाहरेच्छुक्लांश्च कृष्णान् TS. 2,3,1,3. कृष्णाः 1,8,10,1. TBr. 1,7, 2,4. Kâth. 10,6. 11,5. कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषाम् Suçr. 1,196,6. व्रीहियवाः Pâr. Gṛhj. 2,17. Çat. Br. 5,5,5,9. 14,9,2,22. Âçv. Gṛhj. 1,9,6. 17,2. Kauç. 2.61. Muṇḍ. Up. 2,1,7. M. 3,267. 9,39. यत्पृथिव्यां व्रीहियवम् Spr. 2282. fgg. Varâh. Bṛh. S. 55,21. प्रस्थो व्रीहीणाम् P. 8,3,92, Schol. व्रीहीन्संपच्छते 1,3,75, Schol. व्रीहयस्त्रिवार्षिका सप्तवार्षिका वा Pańkat. 167,1.2. व्रीहीञ्छिलासति सितोत्तमतण्डुलाढ्यान्को नाम भोस्तुषकणोपचितान्चितार्थी Spr. (II) 2635. so v. a. *Reisfeld* Kâtj. Çr. 22,3,42. — Vgl. बह्व°, महा°, वन°.

व्रैहिक adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि P. 5,2,116.

व्रीहिकाञ्चन m. *Linsen* Trik. 2,9,3. Hâr. 182.

व्रीहिद्रोण m. *ein* Droṇa *Reis* MBh. 3,15404. fgg. Davon °द्रौणिक adj. *darauf bezüglich, darüber handelnd:* आख्यान 1,325. 482. °पर्वन् heissen die Adhjâja 258-260 im 3ten Buche.

व्रीहिन् adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि P. 5,2,116.

व्रीहिपर्णी f. *Desmodium gangeticum* Dev. Râǵan. im ÇKDr.

व्रीहिभेद् m. wohl nur eine Erklärung (*eine Art Korn*), nicht ein Synonym (wie die Erklärer annehmen) von अणु *Panicum miliaceum* AK. 2,9,20.

व्रीहिमत m. pl. N. pr. einer nicht zur brahmanischen Ordnung gehörigen Völkerschaft P. 5,3,113, Schol. — Vgl. व्रैहिमत्य.

व्रीहिमत् (von व्रीहि) adj. *mit Reis gemischt:* अद्भिः Âçv. Gṛhj. 1,11, 3. 2,8,15. 9,7. — व्रीहिमती (संज्ञायाम्) P. 6,3,119, Schol.

व्रीहिमय (wie eben) adj. *aus Reis gemacht:* पुरोडाश P. 4,3,148. अपूप Çat. Br. 2,2,2,12. पिण्ड 5,5,5,9. पशु MBh. 13,5649.

व्रीहिमुख adj. *dessen Spitze einem Reiskorn gleicht:* ein chirurgisches Instrument Suçr. 1,26,13. 17. 27,5. 2,112,14.

व्रीहिराजक m. = कामलिका (?) und चीनान्न H. an. 5,6.7. °राजिक (wohl richtiger) m. = कङ्गुधान्य und चीनकधान्य Med. k. 231.

व्रीहिल adj. (मत्वर्थे) von व्रीहि gaṇa तुन्दादि zu P. 5,2,117.

व्रीहिवेला f. *Zeit des Reises* d. h. *seiner Ernte* Lâtj. 8,3,7.

व्रीहिश्रेष्ठ m. *Reis* (*die vorzüglichste Kornart*) Râǵan. im ÇKDr.

व्रीह्यगार n. *Kornkammer* Trik. 2,9,6.

व्रीह्यपूप m. *Reiskuchen* Kâtj. Çr. 4,11,8.

व्रीह्याग्रयण n. *Reiserstlingsopfer* Schol. zu Kâtj. Çr. 1,8,6.

व्रीह्युर्वरा f. *Reisfeld* Lâtj. 8,3,4.

व्रुड्, व्रुडति (संवरणे, श्रुड्यर्थमज्जनयोः d. i. °मज्जनयोः) Dhâtup. 28,99. व्रुडित *untergesunken, versunken* Râǵa-Tar. 8,1068. im Schnee 2741. गहने so v. a. *verirrt* 2494. — Vgl. ब्रुड् und Weber, Hâla 259.

व्रूष्, व्रूस्, व्रूषयति und व्रूसयति (हिंसायाम्) Dhâtup. 32,121.

व्रैशी f. Bez. *der Wasser,* nach Mahîdh. *in der beweglichen Wolke ruhend* (व्रज् und शी) VS. 8,48. रेशी liest aber TS.

व्रैह्व (von व्रीहि) adj. *vom Reis kommend* u. s. w. gaṇa बिल्वादि zu P. 4,3,136.

व्रैहिमत्य m. *ein Fürst der* Vrīhimata P. 5,3,113, Schol.

व्रैहेय (von व्रीहि) adj. *mit Reis bestanden:* क्षेत्र P. 5,2,2. AK. 2,9, 6. H. 966. Halâj. 2,7.

व्लग्, व्लङ्ग् etwa verwandt mit वर्ज् (व्रज्). Mit अभि nach Sâj. *erwischen, habhaft werden;* wenn mit वर्ज् verwandt, etwa *erwürgen, den Hals umdrehen:* अभिव्लग्य यत्रं हृता अशैरन् Ṛv. 1,133,1. अभिव्लग्यं शीर्षा यातुमतीनां छिन्धि 2. — Vgl. अभिव्लङ्ग.

व्ली, व्लीनाति und **व्लिनाति** (गतौ, वरणे, धारणे, भरणे, वृत्याम्) Dhâtup. 31,32. व्लेष्यति, व्लीन. *zusammenknicken, —drücken, —fallen machen:* नैनं दक्षिणा व्लीनाति TBr. 2,2,5,1. तेनेदमुदरमसुर्यं व्लिनात्याकृतिभिः प्रातर्देवम् Çat. Br. 1,6,3,31. नेन्म इन्द्रं वीर्यं वोर्यमपां रसः संभृतो बाह्लं व्लिनात् 5,4,1,17. pass. *in sich zusammensinken, zusammenknicken, erliegen, zusammenfallen:* दिशो ऽव्लीयन्त ता उदस्तभ्नुवन् Paṅkav. Br. 8,8,12,3,10. 13. सैन्धव इव व्लीयन्ते Maitrjup. 6,35.

— caus. व्लेपयति P. 7,3,36. Vop. 18,8.

— intens.: प्रजा वरुणगृहीता अवेव्लीयन्तेव Kâṭh. 36,5.

— अभि pass. = simpl. pass.: सा नायच्छत्साभ्यव्लीयत तस्मात्सा कुब्जिमतीव Paṅkav. Br. 25,10,11.

— निस् s. निर्व्लयन und निर्व्लेतुक.

— प्र *zusammenknicken, erdrücken* (durch eine zu schwere Last): यज्ञः प्र यज्ञुरव्लीनात्प्र साम तमृगुदयच्छत् TS. 6,1,2,4. Kâṭh. 23,2. Çat. Br. 13,1,8,1. TBr. 3,11,8,8. प्रव्लीनो मृदितः शयाम् AV. 11,9,19. Ait. Br. 4,19. Çat. Br. 3,7,2,2. — Vgl. प्रव्लय.

— सम् dass.: यथा दृतिर्निष्पीत एवं संव्लीनः शिश्ये *in sich zusammengesunken* Çat. Br. 1,6,3,16. दिशः TS. 5,2,3,4. 3,2,2. Kâṭh. 20,1. 11. यज्ञो निर्मितो नाध्रियत समव्लीयत *als das Opfer fertig war, hielt es nicht, sondern fiel zusammen* TBr. 1,5,4,2. — Vgl. संव्लय.

व्लेत्, व्लेतयति (दर्शने) Dhâtup. 35,84,*b*, v. l.

Verbesserungen:

Sp. 40, Art. यथातथम् am Schluss lies याथातथ्य.

Sp. 55, Art. यद्दांवानद्दावर्य; lies यद्दावानद्दावर्यम् nom. pl. f. und am Ende: vgl. unter वानद्दावन्.

Sp. 95, Art. यष्टिनिवास; genauer übersetzt unter वासयष्टि.

Sp. 111, Art. या mit वि 2) Z. 4 lies 3,31,19 st. 3,31,9.

Sp. 143, Art. युक्ति Z. 2 v. u. lies वाचोयुक्तिपटुः und vgl. वाचोयुक्ति.

Sp. 189, Art. योगवर्त्तिका; lies °वर्तिका und *Zauberdocht* st. *Zauberlaterne.*

Sp. 219, Art. 2. रत्तस्; nach n. hinzuzufügen 1).

Sp. 248, Art. रतू; vgl. वतू.

Sp. 264. 1. रन्; vgl. Roth in Z. f. vgl. Spr. 20,69. fgg.

Sp. 313. fgg. Von Bogen 21* bis 26 ist die Pagination überall um 16 vorzurücken.

Sp. 317 (auf Bogen 21*), Z. 1; in राणि und पैलादि ist der Haken über dem ि abgebrochen.

Sp. 350, Art. रिश् mit वि Z. 1 lies *ausrenken* st. *ausrecken.*

Sp. 379, Z. 3 lies तनुरुद्धः.

Sp. 385, Art. रुध् mit वि caus. 3) Z. 4 und 5. देशकालविरोधिताः bedeutet *mit Ort und Zeit in Widerspruch gebracht.*

Sp. 461, Art. लद्; लदेत् in der Bed. *erkennen* MBh. 12,4813.

Sp. 477, Z. 1 lies कानिचिद्वासराणि.

Sp. 491. लञ्चा ist vor लञ्कन zu stellen.

Sp. 493 im Columnentitel ist लता st. लत zu lesen.

Sp. 510, Z. 15. Die richtige Lesart ist बम्बाविश्ववयसौ.

Sp. 553, Art. 3. ली Z. 1 lies Gaṇaratnam. st. Siddh. K.

Sp. 564, Art. लुभ् Z. 7 lies ल्वा, लोभित्वा.

Sp. 573, Art. लेलाय्; lies 3. st. 2.

Sp. 583, Art. लोकवर्तन; vgl. u. वर्तन 4) *f*).

Sp. 585, Art. लोकस्थिति. An den beiden ersten Stellen bedeutet das Wort *Bestand der Welt.*

Sp. 603, Art. 2. लौम; statt dessen zu lesen लौमन und am Schlus 167 st. 144.

Sp. 665, Art. 1. वन् Z. 7 ist «und वनेम» zu streichen und statt dessen in der vorangehenden Zeile nach वनोति einzuschalten वनाव.

Sp. 666, Z. 1 lies वनाव st. वनेम.

Sp. 672, Art. वनवासिन् 2) *b*) lies: Pflanzen und Wurzeln.

Sp. 694, Art. वयस्क Z. 2 lies 119,147.

Sp. 698, Z. 18. वारितवाम bedeutet *nach Verbotenem strebend.*

Sp. 700, Art. 1. वृ mit अपा Z. 2. Die Klammer ist nach 9,2 zu setzen.

Sp. 701, Z. 1 lies प्रावृत्य कृत्तवासांसि.

Sp. 705, Art. 1. वृ mit सम् 1) Z. 18 streiche 80,19.

Sp. 706, Z. 3 v. u. lies देव्यं.

Sp. 728, Art. वैरेण्यक्रेतु Z. 2 lies: Einschaltung nach 10,9 st. 10,9,12.

Sp. 741, Art. वर्णक 1) Z. 6. कृपण° u. s. w. zu streichen, da an der angeführten Stelle mit den Calc. Ausgg. कृपणावर्णा कमपि zu lesen ist; die Bed. ist *Gesichtsfarbe.*

Sp. 748, Art. वर्त् 7) Z. 9. 104,19 gehört zu 14).

Sp. 751, Art. वर्त् mit अति 1) Z. 24. R. Gorr. 2,30,30. 6,103,18 bedeutet das Wort *überschreiten* (वेलाम् *das Ufer*, und an der ersten Stelle zugleich धर्मम्).

Sp. 772, Art. वर्त् mit प्र 10) Z. 4 lies प्रवर्तमानम् st. वर्तमानम्.

Sp. 798, Z. 6 v. u. lies प्रवृष्टे st. प्रवृष्टे-.

Sp. 813, Z. 2 lies वन्दते st. वन्दने.

Sp. 817. Hinzuzufügen: वव्रय् (von वव्र), वव्रयते *sich zurückziehen* ṚV. 8,40,2.

Sp. 826, Art. 3. वस् Z. 2 füge bei वसिष्ठ ṚV. 2,36,1.

Sp. 831, Art. 5. वस् mit अधि caus. Die zweite Bedeutung ist zu streichen; vgl. वासय् mit अधि 2).

Sp. 840, Art. वसन्तक. Die zweite Bed. ist zu streichen, da a. a. O. वासन्तिका zu lesen ist.

Sp. 843, Art. वसिष्ठ 1) Z. 4. Indra 2,36,1 zu streichen.

Sp. 866, Z. 6 lies 864 st. 846.

Sp. 1016, Art. विच्छित्ति 3) Z. 2. Lies 3. 5 st. 3,5.

Sp. 1024, Art. विजिगीषेय (so zu lesen).

Sp. 1044, Art. 1. विद् caus. Z. 2 vom Ende zu lesen 123 st. 1,23.

Sp. 1050, Art. 3. विद् mit अधि Z. 5 ist ein तस्य zu streichen.

Sp. 1098, Z. 1 v. u. lies मरुतः.

Sp. 1106, Z. 2 v. u. ist ऽविसदृकफलम् zu lesen.

Sp. 1107 im Columnentitel विपाक zu lesen.

Sp. 1261, Art. विष्टिकर 1) Z. 2. कर könnte hier auch *Tribut* sein; Nilak. erklärt aber भृतिमदत्त्वा कारयन्ति ते.

Sp. 1307, Art. वुड्. Vgl. व्रुड् und Weber, Hâla 32. 68. 259.

Sp. 1339, Art. वृषन् 9) Z. 2 lies *extreme.*

Sp. 1435, Art. व्यत्यय Z. 11; व्यत्ययम् ist adv. acc.; der absol. wäre व्यत्यायम्.

Sp. 1439, Z. 10 v. u. lies श्वसुराः.

Sp. 1442, Art. व्यध् mit उद्; lies उद्विद्ध.

Theil II.

Sp. 815. Statt गोवपुष u. s. w. ist zu lesen: गोवपुस् *die Gestalt von Kühen habend.*